भूमिका

[कोशकार का प्रथम प्राक्कथन]

यह संस्कृत-हिन्दी कोश जो मैं आज जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, न केवल विद्यार्थी की चिर-प्रतीक्षित आवश्यकता को पूरा करता है, अपितु उसके लिए यह सुलभ भी है। जैसा कि इसके नाम से प्रकट है यह हाई स्कूल अथवा कालिज के विद्यार्थियों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार किया गया है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर मैंने वैदिक शब्दों को इसमें सम्मिलित करना आवश्यक नहीं समझा। फलतः मैं इस विषय में वेद के पश्चवर्ती साहित्य तक ही सीमित रहा। परन्तु इसमें भी रामायण, महाभारत पुराण, स्मृति, दर्शनशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, न्याय, वेदांत, मीमांसा, व्याकरण, अलंकार, काव्य, वनस्पति विज्ञान, ज्योतिष, संगीत आदि अनेक विषयों का समावेश हो गया है। वर्तमान कोशों में से बहुत कम कोशकारों ने ज्ञान की विविध शाखाओं के तकनीकी शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हाँ, वाचस्पत्य में इस प्रकार के शब्द पाये जाते हैं, परन्तु वह भी कुछ अंशों में दोषपूर्ण हैं। विशेष रूप से उस कोश से जो मुख्यतः विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए ही तैयार किया गया हो, ऐसी आशा नहीं की जा सकती। यह कोश तो मुख्य रूप से गद्यकथा, काव्य, नाटक आदि के शब्दों तक ही सीमित है, यह बात दूसरी है कि व्याकरण, न्याय, विधि, गणित आदि के अनेक शब्द भी इसमें सम्मिलित कर लिये गये हैं। वैदिक शब्दों का अभाव इस कोश की उपादेयता को किसी प्रकार कम नहीं करता, क्योंकि स्कूल या कालिज के अध्ययन काल में विद्यार्थी की जो सामान्य आवश्यकता है उसको यह कोश भलीभांति-बल्कि कई अवस्थाओं में कुछ अधिक ही पूरा करता है।

कोश के सीमित क्षेत्र के पश्चात् इसमें निहित शब्द योजना के विषय में यह बताना सर्वथा उपयुक्त है कि कोश के अन्तर्गत, शब्दों के विशिष्ट अर्थों पर प्रकाश डालने वाले उद्धरण, संदर्भ उन्हीं पुस्तकों से लिये गये हैं जिन्हें विद्यार्थी प्रायः पढ़ते हैं। हो सकता है कुछ अवस्थाओं में ये उद्धरण आवश्यक प्रतीत न हों, फिर भी संस्कृत के विद्यार्थी को, विशेषतः आरंभकर्ता को, उपयुक्त पर्यायवाची या समानार्थक शब्द ढूंढ़ने में ये निश्चय ही उपयोगी प्रमाणित होंगे।

दूसरी ध्यान देने योग्य इस कोश की विशेषता यह है कि अत्यन्त आवश्यक तकनीकी शब्दों की, विशेषतः न्याय, अलंकार, और नाट्यशास्त्र के शब्दों की—व्याख्या इसमें यथा स्थान दी गई है। उदाहरण के लिए देखो—अप्रस्तुत प्रशंसा, उपनिषद्, सांख्य, मीमांसा, स्थायिभाव, प्रवेशक, रस, वार्तिक आदि। जहाँ तक अलंकारों का सम्बन्ध है, मैंने मुख्य रूप से काव्य प्रकाश का ही आश्रय लिया है—यद्यपि कहीं-कहीं चन्द्रालोक, कुवलयानन्द और रसगंगाधर का भी उपयोग किया है। नाट्यशास्त्र के लिए साहित्य दर्पण को ही मुख्य समझा है। इसी प्रकार महत्त्वपूर्ण शब्दचय, वाग्धारा, लोकोक्ति अथवा विशिष्ट अभिव्यंजनाओं को भी यथा स्थान रखा है, उदाहरण के लिए देखो—गम्, सेतु, हस्त, मयूर, दा, कृ आदि। आवश्यक शब्दों से सम्बद्ध पौराणिक उपाख्यान भी यथा स्थान दिये हैं उदाहरणतः देखो—इंद्र, कार्तिकेय, प्रह्लाद आदि। व्युत्पत्ति प्रायः नहीं दी गई—हाँ अत्यन्त विशिष्ट यथा अतिथि, पुत्र, जाया, हृषीकेश आदि शब्दों में इसका उल्लेख किया गया है। तकनीकी शब्दों के अतिरिक्त अन्य आवश्यक शब्दों के विषय में दिया गया विवरण विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—उदा० मंडल, मानस, वेद, हंस। कुछ आवश्यक लोकोक्तियाँ 'न्याय' शब्द के अन्तर्गत दी गई हैं। प्रस्तुत कोश को और भी अधिक उपादेय बनाने की दृष्टि से अन्त में तीन परिशिष्ट भी दिये गये हैं। पहला परिशिष्ट

संस्कृत–हिन्दी कोश

वामन शिवराम आप्टे

ज्योतिष प्रकाशन
वाराणसी

प्रकाशक :
© ज्योतिष प्रकाशन
चौक वाराणसी-221001

संस्करण : 1999
पुनः मुद्रण : 2001

मूल्य : 225.00

मुद्रक : आर० के० ऑफसैट प्रोसैस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

भूमिका

[कोशकार का प्रथम प्राक्कथन]

यह संस्कृत-हिन्दी कोश जो मैं आज जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, न केवल विद्यार्थी की चिर-प्रतीक्षित आवश्यकता को पूरा करता है, अपितु उसके लिए यह सुलभ भी है। जैसा कि इसके नाम से प्रकट है यह हाई स्कूल अथवा कालिज के विद्यार्थियों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार किया गया है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर मैंने वैदिक शब्दों को इसमें सम्मिलित करना आवश्यक नहीं समझा। फलतः मैं इस विषय में वेद के पश्चवर्ती साहित्य तक ही सीमित रहा। परन्तु इसमें भी रामायण, महाभारत पुराण, स्मृति, दर्शनशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, न्याय, वेदांत, मीमांसा, व्याकरण, अलंकार, काव्य, बनस्पति विज्ञान, ज्योतिष, संगीत आदि अनेक विषयों का समावेश हो गया है। वर्तमान कोशों में से बहुत कम कोशकारों ने ज्ञान की विविध शाखाओं के तकनीकी शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हाँ, वाचस्पत्य में इस प्रकार के शब्द पाये जाते हैं, परन्तु वह भी कुछ अंशों में दोषपूर्ण हैं। विशेष रूप से उस कोश से जो मुख्यतः विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए ही तैयार किया गया हो, ऐसी आशा नहीं की जा सकती। यह कोश तो मुख्य रूप से गद्यकथा, काव्य, नाटक आदि के शब्दों तक ही सीमित है, यह बात दूसरी है कि व्याकरण, न्याय, विधि, गणित आदि के अनेक शब्द भी इसमें सम्मिलित कर लिये गये हैं। वैदिक शब्दों का अभाव इस कोश की उपादेयता को किसी प्रकार कम नहीं करता, क्योंकि स्कूल या कालिज के अध्ययन काल में विद्यार्थी की जो सामान्य आवश्यकता है उसको यह कोश भलीभांति-बल्कि कई अवस्थाओं में कुछ अधिक ही पूरा करता है।

कोश के सीमित क्षेत्र के पश्चात् इसमें निहित शब्द योजना के विषय में यह बताना सर्वथा उपयुक्त है कि कोश के अन्तर्गत, शब्दों के विशिष्ट अर्थों पर प्रकाश डालने वाले उद्धरण, संदर्भ उन्हीं पुस्तकों से लिये गये हैं जिन्हें विद्यार्थी प्रायः पढ़ते हैं। हो सकता है कुछ अवस्थाओं में ये उद्धरण आवश्यक प्रतीत न हों, फिर भी संस्कृत के विद्यार्थी को, विशेषतः आरंभकर्ता को, उपयुक्त पर्यायवाची या समानार्थक शब्द ढूंढ़ने में ये निश्चय ही उपयोगी प्रमाणित होंगे।

दूसरी ध्यान देने योग्य इस कोश की विशेषता यह है कि अत्यन्त आवश्यक तकनीकी शब्दों की, विशेषतः न्याय, अलंकार, और नाट्यशास्त्र के शब्दों की—व्याख्या इसमें यथा स्थान दी गई है। उदाहरण के लिए देखो—अप्रस्तुत प्रशंसा, उपनिषद्, सांख्य, मीमांसा, स्थायिभाव, प्रवेशक, रस, वार्तिक आदि। जहाँ तक अलंकारों का सम्बन्ध है, मैंने मुख्य रूप से काव्य प्रकाश का ही आश्रय लिया है—यद्यपि कहीं-कहीं चन्द्रालोक, कुवलयानन्द और रसगंगाधर का भी उपयोग किया है। नाट्यशास्त्र के लिए साहित्य दर्पण को ही मुख्य समझा है। इसी प्रकार महत्त्वपूर्ण शब्दचय, वाग्धारा, लोकोक्ति अथवा विशिष्ट अभिव्यंजनाओं को भी यथा स्थान रक्खा है, उदाहरण के लिए देखो—गम्, सेतु, हस्त, मयूर, दा, कृ आदि। आवश्यक शब्दों से सम्बद्ध पौराणिक उपाख्यान भी यथा स्थान दिये हैं उदाहरणतः देखो—इंद्र, कार्तिकेय, प्रह्लाद आदि। व्युत्पत्ति प्रायः नहीं दी गई—हाँ अत्यन्त विशिष्ट यथा अतिथि, पुत्र, जाया, हृषीकेश आदि शब्दों में इसका उल्लेख किया गया है। तकनीकी शब्दों के अतिरिक्त अन्य आवश्यक शब्दों के विषय में दिया गया विवरण विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—उदा० मंडल, मानस, वेद, हंस। कुछ आवश्यक लोकोक्तियाँ 'न्याय' शब्द के अन्तर्गत दी गई हैं। प्रस्तुत कोश को और भी अधिक उपादेय बनाने की दृष्टि से अन्त में तीन परिशिष्ट भी दिये गये हैं। पहला परिशिष्ट

छन्दों के विषय में है—इसमें गण, मात्रा, तथा परिभाषा आदि सभी आवश्यक सामग्री रख दी गई है। इसके तैयार करने में मुख्यतः वृत्तरत्नाकर और छन्दोमंजरी का ही आश्रय लिया है। परन्तु उन छंदों को भी जो माघ, भारवि, दण्डी, अथवा भट्टि ने अतिरिक्त रूप से प्रयुक्त किया है, इसमें रख दिया गया है। दूसरे परिशिष्ट में कालिदास, भवभूति और बाण आदि संस्कृत के महाकवियों की कृति, तथा जन्म विवरण आदि दिया गया है। इस विषय में मैंने मैक्समूलर की 'इंडिया' तथा वल्लभदेव की सुभाषितावली की भूमिका से जो कुछ ग्रहण किया है उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। तीसरा परिशिष्ट भौगोलिक शब्दों का संग्रह है, इसमें मैंने कनिंगहम के 'एन्शेंट ज्याग्राफी' से तथा इंग्लिश संस्कृत डिक्शनरी में उपसृष्ट श्री बोरूह के निबंध से बड़ी सहायता प्राप्त की है तदर्थ मैं हृदय से उनका आभार मानता हूँ।

कोश के शब्दक्रम का ज्ञान आगे दिये गये "कोश के देखने के लिए आवश्यक निर्देश" से भली-भाँति हो सकेगा। मैं केवल एक बात पर आपका ध्यान खींचना चाहता हूँ कि मैंने इस कोश में सर्वत्र 'अनुस्वार' का प्रयोग किया है। व्याकरण की दृष्टि से चाहे यह प्रयोग सर्वथा सही न हो, तो भी छपाई की दृष्टि से सुविधाजनक है। और मुझे विश्वास है कि कोश की उपयोगिता पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है।

समाप्त करने से पूर्व मैं उन सब विविध कृतियों का कृतज्ञ हूँ जिनसे इसको तैयार करने में मुझे सहायता मिली। इसके लिए सबसे पहली रचना प्रोफ़ेसर तारानाथ तर्कवाचस्पति की 'वाचस्पत्य' है। इस कोश में दी गई सामग्री का अधिकांश उसी से लिया गया है, यद्यपि कई स्थानों पर संशोधन भी करना पड़ा है। वर्तमान संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरियों में जो शब्द, अर्थ और उद्धरण उपलब्ध नहीं हैं वे इसी कोश से लिये गये हैं। दूसरा कोश "दी संस्कृत-इंग्लिश-डिक्शनरी" प्रो० मोनियर विलियम्स का है जिनका मैं बहुत ऋणी हूँ। इस कोष का मैंने पर्याप्त उपयोग किया है। अतः मैं इस सहायता का आभारी हूँ। अन्त में मैं 'जर्मन वर्टरबुश' के कर्ता डा० रॉथ और बॉथलिंक को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। इनके कोश में अनेक उद्धरण और संदर्भ हैं—परन्तु अधिकांश वैदिक साहित्य से लिये गये हैं! इसके विपरीत मैंने अधिकांश उद्धरण अपने उस संग्रह से लिये हैं जो भवभूति, जगन्नाथ पंडित, राजशेखर, बाण, काव्य प्रकाश, शिशुपालवध, किरातार्जुनीय, नैषधचरित, शंकर-भाष्य और वेणीसंहार आदि की सहायता से तैयार किया गया है। इसके अतिरिक्त उन ग्रन्थकर्ताओं और सम्पादकों का भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनकी सहायता यदा-कदा प्राप्त करता रहा हूँ।

अन्त में मुझे विश्वास है कि 'स्टुडेंट्स संस्कृत -हिन्दी कोश' केवल उन विद्यार्थियों के लिए ही उपयोगी सिद्ध नहीं होगी जिनके लिए यह तैयार की गई है—बाल्क संस्कृत के सभी पाठक इससे लाभ उठा सकेंगे। कोई भी कृति चाहे वह कितनी ही सावधानी से क्यों न तैयार की गई हो—सर्वथा निर्दोष नहीं होती। मेरा यह कोश भी कोई अपवाद नहीं है। और विशेष रूप से उस अवस्था में जबकि इसे छापने की शीघ्रता की गई हो। अतः मैं उन व्यक्तियों से, जो इस कोश को अपनाकर मेरा सम्मान करें, यह निवेदन करता हूँ कि जहाँ कहीं इसमें वे कोई अशुद्धि देखें, अथवा इसके सुधारने के लिए कोई उत्तम सुझाव देना चाहें, तो मैं दूसरे संस्करण में उनको समावेश करने में प्रसन्नता अनुभव करूँगा।

पूना, १५ फरवरी, १८९०। वी० एस० आप्टे

संकेत सूचि

अ०	अव्यय
अक०	अकर्मक
अलु० स०	अलुक् समास
अव्य० स०	अव्ययीभाव समास
आ०	आत्मने पद
उदा०	उदाहरणतः
उप० स०	उपपद समास
उभ०	उभयपदी
कर्म० स०	कर्मधारय समास
त० स०	तत्पुरुष समास
तृ० त०	तृतीया तत्पुरुष समास
दे०	देखो
द्व० स०	द्वन्द्व सभास
द्वि० क०	द्विकर्मक
द्वि० स०	द्विगु समास
द्वि० त०	द्वितीया तत्पुरुष समास
ष० त०	षष्ठी तत्पुरुष समास
न० स०	नञ् समास
तुल०	तुलनात्मक
ना० धा०	नामधातु
सम्प्र०	सम्प्रदान कारक
सम०	समस्त पद
तु०	तुलना करो
प्रेर०	प्रेरणार्थक
ज्यो०	ज्योतिष
उ० अ०	उत्तमावस्था
ए० व०	एक वचन
सा० वि०	सार्वनामिक (निर्देशक) विशेषण
वि०	विशेषण
बी० ग०	बीजगणित
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
वर्त०	वर्तमानकाल
भूत०	भूत काल
प्रा० स०	प्रादि समास
न० ब०	नञ् बहुव्रीहि समास
न० त०	नञ् तत्पुरुष समास
पुं०	पुंल्लिंग
नपुं०	नपुंसक लिंग
स्त्री०	स्त्री लिंग
सक०	सकर्मक
पृषो०	पृषोदरादित्वात्

पर०	परस्मैपद
ज्या०	ज्यामिति
कर्म० वा०	कर्म वाच्य
कर्तृ० वा०	कर्तृवाच्य
ब० व०	बहु वचन
म० अ०	मध्यमावस्था
अ० पु०	अन्यपुरुष
म० पु०	मध्यम पुरुष
उ० पु०	उत्तम पुरुष
ब० स०	बहुव्रीहि समास
भवि०	भविष्यत्काल
इच्छा०	इच्छार्थक, सन्नन्त
भू० क० कृ०	भूतकालिक कर्मणि कृदन्त (क्त)
सं० कृ०	संभाव्य कृदन्त (तव्यत्)
वर्त्त० कृ०	वर्तमानकालिक कृदन्त (शत्रन्त या शानजन्त)
विप०	विपरीतार्थक
करण०	करणकारक
कर्तृ०	कर्तृकारक
कर्म०	कर्मकारक
आलं०	आलंकारिक
वार्ति०	वार्तिक
वै०	वैदिक
अने० पा०	नाना पाठान्तर
संबो०	संबोधन
यङ०	यङ्लुङन्त
संबं०	संबंध
त०	तदेव
श०	शब्दशः
अधि०	अधिकरण कारक
उप०	उपसर्ग
भ्वा०	भ्वादिगण
अदा०	अदादिगण
जु०	जुहोत्यादिगण
स्वा०	स्वादिगण
दि०	दिवादिगण
तु०	तुदादिगण
क्र्या०	क्र्यादिगण
च०	चरादिगण
रु०	रुधादिगण
तना०	तनादिगण

संकेताक्षर–सूचि

अ० पु०	अग्नि पुराण
अ० श०	अन्यापदेश शतक
अ० सं०	अगस्त्य संहिता
अथर्व०	अथर्व वेद
अनर्घ०	अनर्घराघव
अन्न०	अन्नपूर्णाष्टक
अमर०	अमरकोश
अमरु०	अमरुशतक
अवि०	अविमारक
आनन्द०	आनन्द लहरी
आर्या०	आर्या सप्तशती
आश्व०	आश्वलायनसूत्र
ईश०	ईशोपनिषद्
उ० दू०	उद्धव दूत
उ० सं०	उद्धव संदेश
उणादि०	उणादि सूत्र
उत्त०	उत्तर रामचरित
ऋक्०	ऋग्वेद
एकार्थ०	एकार्थनाममाला
ऐत० उ०	ऐतरेय उपनिषद्
ऐत० ब्रा०	ऐतरेय ब्राह्मण
कठ०	कठोपनिषद
कथा०	कथासरित्सागर
कनक०	कनकधारास्तव
कर्पूर०	कर्पूर मंजरी
कलि	कलिविडंबन नीलकंठ दीक्षित कृत
कवि०	कविरहस्य
का०	कादम्बरी
कात्या०	कात्यायन
काम०	कामन्दकी नीति
काव्य०	काव्यप्रकाश
काव्या०	काव्यादर्श
काशि०	काशिकावृत्ति
कि०	किरातार्जुनीय
कीर्ति०	कीर्तिकौमुदी
कुमा०	कुमार संभव
कुव०	कुवलयानन्द
कृष्ण०	कृष्णकर्णामृत
केन०	केनोपनिषद्
कौ० अ०	कौटिल्य अर्थशास्त्र
कोश०	कोशकल्पतरु
कौशि०	कौशिकसूत्र
कौषी०	कौषीतकी उपनिषद्
ग० ल०	गंगा लहरी
घोषाल०	Ghosal's System of Revenue
चण्ड०	चण्ड कौशिक
गण०	गणरत्नमहोदधि—वर्धमान कृत
चन्द्रा०	चन्द्रालोक
चाण०	चाणक्य शतक
चात०	चातकाष्टक
चोल०	चोल चम्पू
चौर०	चौरपंचाशिका
छं०	छन्दोमंजरी
छा०	छान्दोग्योपनिषद
जानकी०	जानकीहरण
जै०	जैमिनी सूत्र
जै० न्या०	जैमिनीय न्यायमाला विस्तर
ज्यो०	ज्योतिष
त० कौ०	तर्क कौमुदी
तारा०	तारानाथ वाचस्पत्यम्
तै० आ०	तैत्तिरीय आरण्यक
तै० उ०	तैत्तिरीय उपनिषद
त्रिका०	त्रिकांड शेष
तै० सं०	तैत्तिरीय संहिता
तं० वा०	तंत्रवार्तिक
दाय०	दायभाग
दु० स०	दुर्गासप्तशती
दूत०	दूतवाक्यम्
दे० म०	देवी महात्म्य
नवरत्न०	नवरत्नमाला
ना० भा०	नारायण भाष्य
नागा०	नागानन्द
नाना०	नानार्थ मञ्जरी
नाभ०	नारायण भट्ट
नारा०	नारायणीय
निघ०	निघण्टु
नी०	नीतिसार
नीति०	नीति प्रदीप
नील०	नीलकण्ठ
नैष०	नैषध
पंच०	पंचतन्त्र

पञ्च०	पञ्चदशी
पञ्च०	पञ्चरात्रम्
पा०	पाणिनि की अष्टाध्यायी
पा० यो०	पातंजल योगशास्त्र
पुष्प०	पुष्पदन्त
प्रताप०	प्रतापरुद्रीय
प्रति०	प्रतिमा
प्रबोध०	प्रबोधचन्द्रोदय
प्रस०	प्रसन्नराघव
बं० शि०	बंगाल शिलालेख
बाल०	बालचरित
बाल० रा०	बालरामायण
बु०	बुद्ध साहित्य (बुद्धिस्ट लेख)
बु० च०	बुद्धचरितम्
बृ० उ० (बृहदा०)	बृहदारण्यक उपनिषद्
बृ० क०	बृहत् कथा
बृ० सं०	बृहत्संहिता—वराहमिहिर-कृत
भ० पु०	भविष्योत्तर पुराण
भग०	भगवद्गीता
भट्टि०	भट्टिकाव्य
भर्तृ०	भर्तृहरिशतकत्रयम् १. शृंगार, २. नीति ३. वैराग्य
भा०	भारत मञ्जरी
भा० प्र०	भावप्रकाश
भाग०	भागवत
भामि०	भामिनी विलास
भाषा०	भाषा परिच्छेद
भोज०	भोज चरित
म० ना०	महानारायण उपनिषद्
म० पु०	मत्स्य पुराण
मनु०	मनुस्मृति
मभा० (महाभा०)	महाभाष्य
महा०	महाभारत
महावीर०	महावीर चरित
मा०	मातंगलीला
मान०	मानसार
मार्क०	मार्कण्डेय पुराण
माल०	मालतीमाधव
मालवि०	मालविकाग्निमित्र
मी० सू०	मीमांसा सूत्र
मुंड०	मुंडकोपनिषद
मुख०	मुखपञ्चशती
मुग्ध०	मुग्धबोध
मेघ०	मेघदूत
मृच्छ०	मृच्छकटिक
याज्ञ०	याज्ञवल्क्य स्मृति
याद०	यादवाभ्युदय
योग०	योगसूत्र
रत्ना०	रत्नावली
रघु०	रघुवंश
रस०	रसगंगाधर
रसम०	रसमंजरी
रा०	रामायण
रति०	रतिमंजरी
राज०	राजप्रशस्ति
राजत०	राजतरंगिणी
राम०	रामचरितम्
ललित०	ललित सहस्रनाम
वन०	वनस्पतिशास्त्र
वराह०	वराहमिहिर की बृहत्संहिता
वाज०	वाजसनेयि संहिता
वा० प०	वाक्यपदीय
वास०	वासवदत्ता
वि०	विक्रमोर्वशीयम्
वि० पु०	विष्णु पुराण
विक्रम०	विक्रमांकदेवचरित
विश्व०	विश्व गुणादर्श चम्पू
वे० दे०	वेदान्त देशिका
वे० सा०	वेदान्त सार
वेणी०	वेणीसंहार
वेदपा०	वेदपादस्तव
वैज०	वैजयन्ती
श०	शकुन्तला नाटक
शंकर०	शंकर दिग्विजय
श० चि०	शब्दार्थ चिन्तामणि
शत०	शतपथ ब्राह्मण
शत श्लो०	शत श्लोकी
शार्ङ्ग०	शार्ङ्गधर
शब्द०	शब्दकल्पद्रुम
शाभा०	शारीर भाष्य
शालि०	शालिहोत्र
शि०	शिशुपालवध
शि० पु०	शिवपुराण
शि० म०	शिवमहिम्न स्तोत्र
शिव०	शिव भारत
शिवानन्द०	शिवानन्द लहरी
शिशु०	शिशुपालवध
शुक्र०	शुक्रनीति
शु०	शुल्बसूत्र
शृंगार०	शृंगार तिलक

श्याम०	श्यामलावण्डक	सु० (सुश्रु०)	सुश्रुत
श्रुत	श्रुतबोध	सुभा०	सुभाषित रत्नाकर
श्वेत० (श्वेता०)	श्वेताश्वतरोपनिषद	सुवासव०	सुबन्धु की वासवदत्ता
सर० कं०	सरस्वती कण्ठाभरण	सुभाषित०	सुभाषितरत्नभाण्डागार
सुधा०	सुधालहरी	सू० सि०	सूर्य सिद्धान्त
स्वप्न०	स्वप्नवासवदत्तम्	सौ०	सौन्दर्य लहरी
सर्व०	सर्वदर्शन संग्रह	हंस०	हंसदूत
सा० द०	साहित्य दर्पण	हनु०	हनुमन्नाटक
सां० का०	सांख्य कारिका	हर०	हरविजय
सा० प्र०	सांख्यप्रवचन भाष्य	हरि०	हरिवंशपुराण
सि०	सिद्धान्त कौमुदी	हला०	हलायुध
सिं० मु०	सिद्धान्त मुक्तावली	हर्ष०	हर्षचरित
सां० सू०	सांख्य सूत्र	हि०	हितोपदेश
सि० सं०	सिद्धान्तलेश संग्रह	हेम०	हेमचन्द्र

कोश देखने के लिए आवश्यक निर्देश

१. शब्दों को देवनागरी वर्णों में अकारादि क्रम से रक्खा गया है।

२. पुंल्लिग शब्दों का कर्तृकारक एकवचन रूप लिखा गया है, इसी प्रकार नपुंसक लिंग शब्दों का भी प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त रूप लिखा है। जो शब्द विभिन्न लिङ्गों में प्रयुक्त होता है, उसके आगे स्त्री०, या पुं० एवं नपुं० लिखकर दर्शाया गया है।

विशेषण शब्दों का प्रातिपदिक रूप रखकर उसके आगे वि० लिख दिया गया है।

३. जो शब्द क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं तथा विशेषण या संज्ञा से व्युत्पन्न होते हैं उन्हें उस संज्ञा या विशेषण के अन्तर्गत कोष्ठक के अन्दर रक्खा गया है जैसे 'पर' के अन्तर्गत परेण या परे अथवा 'समीप' के अन्तर्गत समीपतः या समीपे।

४. (क) शब्दों के केवल भिन्न-भिन्न अर्थों को पृथक् अंग्रेजी क्रमांक देकर दर्शाया गया है। सामान्य अर्थाभास को स्पष्ट करने के लिए एक से अधिक पर्याय रखे गये हैं।

(ख) उद्धृत प्रमाणों के उल्लेख में देवनागरी के अंकों का प्रयोग किया गया है।

५. जहाँ तक हो सका है शब्दों को प्रयोगाधिक्य तथा महत्त्व की दृष्टि से क्रमबद्ध किया गया है।

६. प्रत्येक मूल शब्द की संक्षिप्त व्युत्पत्ति [ ] प्रकोष्ठक में दे दी गई है जिससे कि शब्द का यथार्थ ज्ञान हो सके। प्रत्यय और उपसर्ग की सामान्य जानकारी के लिए—सामान्य प्रत्यय-सूचि साथ संलग्न है।

७. (क) समस्त शब्दों को मूल शब्द के अन्तर्गत ही पड़ी रेखा (=मूल शब्द) के पश्चात् रक्खा गया है, जैसे 'अग्नि' के अन्तर्गत—होत्र, 'अग्निहोत्र' प्रकट करता है।

(ख) समस्त शब्दों में—मूल शब्दों के पश्चात् उत्तरखंड—को मिलाने में सन्धि के नियमानुसार जो परिवर्तन होते हैं उन्हें पाठक को स्वयं जानने का अभ्यास होना चाहिये—यथा 'पूर्व' के साथ 'अपर' को मिलाने से 'पूर्वापर'; 'अधस्' के आगे 'गतिः' को मिलाने से 'अधोगति' बनता है। कई स्थानों पर उन समस्त शब्दों को जो सरलता से न समझे जा सकें पूरा का पूरा कोष्ठक में लिख दिया गया है।

(ग) जहाँ एक समस्त शब्द ही दूसरे समस्त शब्द के प्रथम खण्ड के रूप में प्रयुक्त हुआ है वहाँ उस पूर्वखण्ड को शीर्ष रेखा के साथ लगा कर दर्शाया गया है जैसे—द्विज (समस्त शब्द) में 'इन्द्र' या 'राज' जोड़ना है तो लिखेंगे—ॅइन्द्र,—ॅराज, और इसे पढ़ेंगे 'द्विजेन्द्र' या 'द्विजराज'।

(घ) सभी अलुक् समासयुक्त (उदा० कुशेशय, मनसिज, हृदिस्पृश् आदि) शब्द पृथक् रूप से यथास्थान रक्खे गये हैं। मूल शब्दों के साथ उन्हें नहीं जोड़ा गया।

८. कृदन्त और तद्धित प्रत्ययों से युक्त शब्दों को मूल शब्दों के साथ न रखकर पृथक् रूप से यथास्थान रक्खा गया है। फलतः 'कूलंकष' 'भयंकर' 'अन्नमय' 'प्रातस्तन' और 'हिमवत्' आदि शब्द कूल' और 'भय' आदि मूल शब्दों के अन्तर्गत नहीं मिलेंगे।

९. स्त्रीलिंग शब्दों को प्रायः पृथक् रूप से लिखा गया है, परन्तु अनेक स्थानों पर पुंल्लिग रूप के साथ ही स्त्रीलिंग रूप दे दिया गया है।

१०. (क) धातुओं के आगे आ० (आत्मनेपदी), पर० (परस्मैपदी) तथा उभ० (उभयपदी), के साथ गणद्योतक चिह्न भी लगा दिये गये हैं।

(ख) प्रत्येक धातु का पद, गण, लकार ( ) कोष्ठ के अन्दर धातु के आगे रूप के साथ दे दिया गया है।

(ग) धातु के लट् लकार का, प्रथम पुरुष का एक वचनांत रूप ही लिखा गया है।

श्याम०	श्यामलादण्डक	सु० (सुश्रु०)	सुश्रुत
श्रुत	श्रुतबोध	सुभा०	सुभाषित रत्नाकर
श्वेत० (श्वेता०)	श्वेताश्वतरोपनिषद	सुवासव०	सुबन्धु की वासवदत्ता
सर० कं०	सरस्वती कण्ठाभरण	सुभाषित०	सुभाषितरत्नभाण्डागार
सुधा०	सुधालहरी	सू० सि०	सूर्य सिद्धान्त
स्वप्न०	स्वप्नवासवदत्तम्	सौ०	सौन्दर्य लहरी
सर्व०	सर्वदर्शन संग्रह	हंस०	हंसदूत
सा० द०	साहित्य दर्पण	हनु०	हनुमन्नाटक
सां० का०	सांख्य कारिका	हर०	हरविजय
सा० प्र०	सांख्यप्रवचन भाष्य	हरि०	हरिवंशपुराण
सि०	सिद्धान्त कौमुदी	हला०	हलायुध
सिं० मु०	सिद्धान्त मुक्तावली	हर्ष०	हर्षचरित
सां० सू०	सांख्य सूत्र	हि०	हितोपदेश
सि० सं०	सिद्धान्तलेश संग्रह	हेम०	हेमचन्द्र

कोश देखने के लिए आवश्यक निर्देश

१. शब्दों को देवनागरी वर्णों में अकारादि क्रम से रक्खा गया है।

२. पुंल्लिग शब्दों का कर्तृकारक एकवचन रूप लिखा गया है, इसी प्रकार नपुंसक लिंग शब्दों का भी प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त रूप लिखा है। जो शब्द विभिन्न लिङ्गों में प्रयुक्त होता है, उसके आगे स्त्री०, या पुं० एवं नपुं० लिखकर दर्शाया गया है।
विशेषण शब्दों का प्रातिपदिक रूप रखकर उसके आगे वि० लिख दिया गया है।

३. जो शब्द क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं तथा विशेषण या संज्ञा से व्युत्पन्न होते हैं उन्हें उस संज्ञा या विशेषण के अन्तर्गत कोष्ठक के अन्दर रक्खा गया है जैसे 'पर' के अन्तर्गत परेण या परे अथवा 'समीप' के अन्तर्गत समीपतः या समीपे।

४. (क) शब्दों के केवल भिन्न-भिन्न अर्थों को पृथक् अंग्रेजी क्रमांक देकर दर्शाया गया है। सामान्य अर्थाभास को स्पष्ट करने के लिए एक से अधिक पर्याय रखे गये हैं।
(ख) उद्धृत प्रमाणों के उल्लेख में देवनागरी के अंकों का प्रयोग किया गया है।

५. जहाँ तक हो सका है शब्दों को प्रयोगाधिक्य तथा महत्त्व की दृष्टि से क्रमबद्ध किया गया है।

६. प्रत्येक मूल शब्द की संक्षिप्त व्युत्पत्ति [ ] प्रकोष्ठक में दे दी गई है जिससे कि शब्द का यथार्थ ज्ञान हो सके। प्रत्यय और उपसर्ग की सामान्य जानकारी के लिए—सामान्य प्रत्यय-सूचि साथ संलग्न है।

७. (क) समस्त शब्दों को मूल शब्द के अन्तर्गत ही पड़ी रेखा (=मूल शब्द) के पश्चात् रक्खा गया है, जैसे 'अग्नि' के अन्तर्गत—होत्र, 'अग्निहोत्र' प्रकट करता है।
(ख) समस्त शब्दों में—मूल शब्दों के पश्चात् उत्तरखंड—को मिलाने में सन्धि के नियमानुसार जो परिवर्तन होते हैं उन्हें पाठक को स्वयं जानने का अभ्यास होना चाहिये—यथा 'पूर्व' के साथ 'अपर' को मिलाने से 'पूर्वापर'; 'अधस्' के आगे 'गतिः' को मिलाने से 'अधोगति' बनता है। कई स्थानों पर उन समस्त शब्दों को जो सरलता से न समझे जा सकें पूरा का पूरा कोष्ठक में लिख दिया गया है।
(ग) जहाँ एक समस्त शब्द ही दूसरे समस्त शब्द के प्रथम खण्ड के रूप में प्रयुक्त हुआ है वहाँ उस पूर्वखण्ड को शीर्ष रेखा के साथ लगा कर दर्शाया गया है जैसे—द्विज (समस्त शब्द) में 'इन्द्र' या 'राज' जोड़ना है तो लिखेंगे—'इन्द्र,—'राज, और इसे पढ़ेंगे 'द्विजेन्द्र' या 'द्विजराज'।
(घ) सभी अलुक् समासयुक्त (उदा० कुशेशय, मनसिज, हृदिस्पृश् आदि) शब्द पृथक् रूप से यथास्थान रक्खे गये हैं। मूल शब्दों के साथ उन्हें नहीं जोड़ा गया।

८. कृदन्त और तद्धित प्रत्ययों से युक्त शब्दों को मूल शब्दों के साथ न रखकर पृथक् रूप से यथास्थान रक्खा गया है। फलतः 'कूलंकष' 'भयंकर' 'अन्नमय' 'प्रातस्तन' और 'हिमवत्' आदि शब्द कूल' और 'भय' आदि मूल शब्दों के अन्तर्गत नहीं मिलेंगे।

९. स्त्रीलिंग शब्दों को प्रायः पृथक् रूप से लिखा गया है, परन्तु अनेक स्थानों पर पुंल्लिग रूप के साथ ही स्त्रीलिंग रूप दे दिया गया है।

१०. (क) धातुओं के आगे आ० (आत्मनेपदी), पर० (परस्मैपदी) तथा उभ० (उभयपदी), के साथ गण-द्योतक चिह्न भी लगा दिये गये हैं।
(ख) प्रत्येक धातु का पद, गण, लकार ( ) कोष्ठ के अन्दर धातु के आगे रूप के साथ दे दिया गया है।
(ग) धातु के लट् लकार का, प्रथम पुरुष का एक वचनांत रूप ही लिखा गया है।

(घ) धातुओं के साथ उनके उपसर्गयुक्त रूप अकारादिक्रम से धातु के अन्तर्गत ही दिखलाये गये हैं।

(ङ) पद, वाच्य, विशेष अर्थ अथवा उपसर्ग के कारण धातुओं के परिवर्तित रूप ( ) कोष्ठकों में दिखलाये गये हैं।

११. धातुओं के तव्य, अनीय, और य प्रत्यययुक्त कृदन्त रूप प्रायः नहीं दिये गये। शत्रन्त और शानजन्त विशेषण तथा ता, त्व या य प्रत्यय के लगाने से बने भाववाचक संज्ञा शब्दों को भी पृथक् रूप से नहीं दिया गया। ऐसे शब्दों के ज्ञान के लिए विद्यार्थी को व्याकरण का आश्रय लेना अपेक्षित है।

जहां ऐसे शब्दों की रूपरचना या अर्थों में कोई विशेषता है उन्हें यथास्थान रख दिया गया है।

१२. शब्दों से संबद्ध पौराणिक अन्तःकथाओं को शब्दार्थ के यथार्थ ज्ञान के लिए —( ) कोष्ठकों में संक्षिप्त रूप से रक्खा गया है।

१३. जो शब्द या संबद्ध पौराणिक उपाख्यान मूल कोश में स्थान न पा सके उन्हें परिशिष्ट के रूप में कोश के अन्त में जोड़ दिया गया है।

१४. संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त छन्दों के ज्ञान के लिए, तथा अन्य भौगोलिक शब्द एवं साहित्यकारों की सामान्य जानकारी के लिए कोश के अन्त में परिशिष्ट जोड़ दिये गये हैं।

विशेष वक्तव्य

छात्रों की आवश्यकता का विशेष ध्यान रखकर इस कोष को और भी अधिक उपादेय बनाने के लिए प्रायः सभी मूल शब्दों के साथ उनकी संक्षिप्त व्युत्पत्ति दे दी गई है।

शब्दों की रचना में उपसर्ग और प्रत्ययों का बड़ा महत्त्व है इनकी पूरी जानकारी तो व्याकरण के पढ़ने से ही होगी। फिर भी इनका यहाँ दिग्दर्शन अत्यंत लाभदायक रहेगा।

उपसर्ग—"उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहार संहारविहारपरिहारवत्॥"

उपसर्ग धातुओं के पूर्व लग कर उनके अर्थों में विभिन्नता ला देते हैं —

उपसर्ग	**उदाहरण**	उप	उपगमनम्
		दुस्	दुस्तरणम्
अति	अत्यधिकम्	दुर्	दुर्भाग्यम्
अधि	अधिष्ठानम्	नि	निदेशः
		निस्	निस्तारणम्
अनु	अनुगमनम्	निर्	निर्वन
अप	अपयशः	परा	पराजयः
अपि	पिधानम्	परि	परिव्राजकः
अभि	अभिभाषणम्	प्र	प्रबल
अव	अवतरणम्	प्रति	प्रतिक्रिया
आ	आगमनम्	वि	विज्ञानम्
उत्	उत्थाय, उद्गमनम्	सु	सुकर

प्रत्यय—धातुओं के पश्चात् लगने वाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। शब्दों के पश्चात् लगने वाले प्रत्यय तद्धित कहलाते हैं।

		ऊक	जागरूक
कृत्प्रत्यय	**उदाहरण**	क (अ)	ज्ञः, दः,
		कि (इ)	चक्रिः,
अ, अ"ः	पिपठिपा	कुरच्	विदुर,
	छिदा,	क्त (त, न)	हत, छिन्न,
अच्, अप्	पचः, सरः	क्तवत् (तवत्)	उक्तवत्,
	करः	क्तिन् (ति)	कृतिः
अण्	कुम्भकारः	क्त्वा (त्वा)	पठित्वा
अथुच्	वेपथुः	क्नु (नु)	गृध्नु
अनीयर्	करणीय, दर्शनीय,	क्यच्	पुत्रीयति
आलुच्	स्पृहयालु	क्यप् (य)	कृत्य,
इक्	पचिः,	क्रु (रु)	भीरु
इत्नु	स्तनयित्नु	क्वरप् (वर)	नश्वर
इष्णुच्	रोचिष्णु	क्विप्	स्पृक्, वाक्
उ	जिगमिषुः	खच् (अ)	स्तनंधयः
उण्	कारुः,	घञ् (अ)	त्यागः, पाकः

घिनुण् (इन्)	योगिन्, त्यागिन्
घुरच् (उर)	भङ्गुर
ड (अ)	दूरगः,
डु (उ)	प्रभुः
ण (अ)	ग्राहः
णिनि (इन्)	स्थायिन्
णमुल (अम्)	स्मारं स्मारं
ण्यत् (य)	कार्यं
ण्वुल् (अक)	पाठक
तृच्	कर्तृ,
तुमुन् (तुम्)	कर्तुम्
नङ	प्रश्न
यत्	गेय, देय
र	हिंस्र
ल्यप् (य)	आदाय
ल्युट् (अन)	पठनं, करणम
वनिप्	यज्वन्
वरच्	ईश्वर
वुञ् (अक)	निन्दक
वुन्	
श (अ)	क्रिया
शतृ (अत्)	पचत्
शानच् (आन या मान)	शयान, वर्तमान
ष्ट्रन् (त्र)	शस्त्रम्, अस्त्रम्
तद्धित तथा उणादि प्रत्यय	**उदाहरण**
अञ् (अ)	औत्सः,
अण् (अ)	शैवः
असुन् (अस्)	सरस्, तपस्
अस्ताति (अस्तात्)	अधस्तात्
आलच्	वाचाल
आलुच्	दयालु
इञ्	दाशरथि,
इतच्	कुसुमित
इमनिच् (इमन्)	गरिमन्,
इलच्	फेनिल
इष्ठन्	गरिष्ठ
इस्	ज्योतिस्
ईकक् (ईक)	शाक्तीक,
ईयसुन् (ईयस्)	लघीयस्
ईरच्	शरीर
उरच्	दन्तुर
उलच्	हर्षुल
ऊङ	कर्कन्धू

ऋ	देवृ
एद्युसुच् (एद्युस्)	अन्येद्युः
क	राष्ट्रकम्, सुवर्णकम्
क्स्न (स्न)	कृत्स्नम्
खञ् (ईन)	महाकुलीन
ङीप् (ई)	मृगी,
चणम्	अक्षरचणः,
छ (ईय)	त्वदीय, भवदीय,
ञ (अ)	पौर्वशालः
ञ्य (य)	पाञ्चजन्यः
ट्युल् (तन)	सायंतन
ठक् (इक)	धार्मिक,
ठञ्	नैशिक
ठन्	बौद्धिक
डतमच् (अतम)	कतम
डतर (अतर)	कतर
ढक् (एय)	कौन्तेय, गाङ्गेय
ण्य (य)	दैत्य
तरप् (तर, तम)	प्रियतर
तमप्	प्रियतम
तसिल् (तस्)	मूलतः
त्यक्	पाश्चात्य
त्यप्	अत्रत्य
त्रल्	कुत्र, सर्वत्र
थाल्	सर्वथा
दघ्नच्	जानुदघ्न
फक् (आयन)	आश्वलायन
फञ्	वात्स्यायन
म	मध्यम
मतुप् (मत्)	धीमत्
मतुप् (वत्)	बलवत्
मयट्	जलमय
मात्रच्	ऊरुमात्र
य	सभ्यः
यञ्	गार्ग्यः
र	मधुर
लच्	मांसल
वलच्	रजस्वला
विनि	यशस्विन्
ष्कन् (क)	पथिक
ष्यञ् (य)	सौन्दर्यं, नैपुण्य
सन् (स)	चिकीर्षा
ह	इह

संस्कृत-हिन्दी कोश

आप्टे

संस्कृत-हिन्दी-कोश

अ

अ नागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर।

अः [अव्+ड] 1 विष्णु, पवित्र 'ओम्' को प्रकट करने वाली तीन (अ+उ+म्) ध्वनियों में से पहली ध्वनि —अकारो विष्णुरुद्दिष्ट उकारस्तु महेश्वरः। मकारस्तु स्मृतो ब्रह्मा प्रणवस्तु-त्रयात्मकः ॥ 2 शिव, ब्रह्मा, वायु, या वैश्वानर।

(अव्य०) 1 लैटिन के इन (in) अंग्रेजी के इन (in) या अन (un) तथा यूनानी के अ (a) या (un) के समान नकारात्मक अर्थ देने वाला उपसर्ग जो कि निषेधात्मक अव्यय नञ् के स्थान पर संज्ञाओं, विशेषणों एवं अव्ययों के (क्रियाओं के भी) पूर्व लगाया जाता है। यह 'अ' ही 'अऋणिन्' शब्द को छोड़कर शेष स्वरादि शब्दों से पूर्व 'अन्' बन जाता है।

'न' के सामान्यतया छः अर्थ गिनाये गये हैं:— (क) सादृश्य=समानता या सरूपता यथा 'अब्राह्मणः' ब्राह्मण के समान (जनेऊ आदि पहने हुए) परन्तु ब्राह्मण न होकर, क्षत्रिय वैश्य आदि। (ख) अभाव= अनुपस्थिति, निषेध, अभाव, अविद्यमानता यथा "अज्ञानम्" ज्ञान का न होना, इसी प्रकार, अक्रोधः, अनंगः, अकंटकः, अघटः' आदि। (ग) भिन्नता=अन्तर या भेद यथा 'अपटः' कपड़ा नहीं, कपड़े से भिन्न या अन्य कोई वस्तु। (घ) अल्पता=लघुता, न्यूनता, अल्पार्थवाची अव्यय के रूप में प्रयुक्त होता है—यथा 'अनुदरा' पतली कमर वाली (कृशोदरी या तनुमध्यमा)। (च) अप्राशस्त्य=बुराई, अयोग्यता तथा लघूकरण का अर्थ प्रकट करना—यथा 'अकालः' गलत या अनुपयुक्त समय; 'अकार्यम्' न करने योग्य, अनुचित, अयोग्य या बुरा काम। (छ) विरोध= विरोधी प्रतिक्रिया, वैपरीत्य यथा 'अनीतिः' नीति-विरुद्धता, अनैतिकता, 'असित' जो श्वेत न हो, काला। उपर्युक्त छः अर्थ निम्नांकित श्लोक में एकत्र संकलित हैं—तत्सादृश्यमभावश्च तदन्यत्वं तदल्पता। अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः ॥ दे० 'न' भी।

कृदन्त शब्दों के साथ इसका अर्थ सामान्यतः "नहीं" होता है यथा 'अदग्ध्वा' न जलाकर, 'अपश्यन्' न देखते हुए। इसी प्रकार 'असकृत्' एक बार नहीं।

कभी-कभी 'अ' उत्तरपद के अर्थ को प्रभावित नहीं करता यथा 'अमूल्य', 'अनुत्तम', यथास्थान।

2 विस्मयादि द्योतक अव्यय—यथा (क) 'अ अवद्यम्' यहाँ दया (आह, अरे) (ख) 'अ पचसि त्वं जाल्म' यहाँ भर्त्सना, निंदा (धिक्, छिः) अर्थ को प्रकट करता है। दे० 'अकरणि' 'अजीवनि' भी। (ग) संबोधन में भी प्रयुक्त होता है यथा 'अ अनन्त' (घ) इसका प्रयोग निषेधात्मक अव्यय के रूप में भी होता है। 3 भूतकाल के लकारों (लङ्, लुङ् और लृङ्) की रूपरचना के समय धातु के पूर्व आगम के रूप में जोड़ा जाता है यथा अगच्छत्, अगमत्, अगमिष्यत् में।

अऋणिन् (वि०) [नास्ति ऋणं यस्य न० ब०] (यहाँ 'ऋ' को व्यंजन ध्वनि माना गया) जो कर्जदार न हो, ऋणमुक्त ('अनृणिन्' शब्द भी इसी अर्थ म प्रयुक्त होता है।)

अंश् (चुरा० उभ० अशंयति-ते) बांटना, वितरण करना, आपस में हिस्सा बांटना, 'अंशापयति' भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है। **वि**—1 बांटना 2 धोखा देना।

अंशः [अंश्+अच्] 1 हिस्सा, भाग, टुकड़ा; सकृदंशो निपतति—मनु० ९।४७ रघु० ८।१६;—अंशेन दर्शितानुकूलता—का० १५९ अंशतः; 2 संपत्ति में हिस्सा, दाय—स्वतोंशतः—मनु० ८।४०८, ९।२०१; याज्ञ० २।११५; 3 भिन्न की संख्या, कभी-कभी भिन्न के लिए भी प्रयुक्त 4 अक्षांश या रेखांश की कोटि ५ कंधा (सामान्यतः 'कंधे' के अर्थ में, 'अंस' का प्रयोग होता है—दे०)। सम०—**अंशः** अंशावतार, हिस्से का हिस्सा; —**अंशि** (क्रि० वि०) हिस्सेदार; —**अवतरणम्** —**अवतारः**—पृथ्वी पर देवताओं के अंश को लेकर जन्म लेना, आंशिक अवतार, °तार इव धर्मस्य—दश० १५३; महाभारत के आदिपर्व के ६४–६७ तक अध्याय; —**भाज्**, —**हर**, **हारिन्** (वि०) उत्तराधिकारी, सहदायभागी—पिण्डदोंशहरश्चैषां पूर्वाभावे परः परः—याज्ञ० २।१३२–१३३—**सवर्णनम्**—भिन्नों को एक समान हर में लाना; —**स्वरः** मुख्य स्वर, मूलस्वर।

अंशकः [अंश्+ण्वुल्, स्त्रियां—अंशिका] 1 हिस्सेदार, सहदायभागी, संबंधी 2 हिस्सा, खण्ड, भाग, कम् सौर दिवस।

अंशनम् [अंश्+ल्युट्] बांटने की क्रिया।

अंशयितृ (पुं०) [अंश्+णिच्+तृच्] विभाजक, बांटने वाला ।

अंशल (वि०) [अंशं लाति — ला+क] साझीदार, हिस्सा पाने का अधिकारी । 2=अंसल दे०

अंशिन् (वि०) (अंश्+इनि) 1 हिस्सेदार, सहदायभागी, —(पुर्नविभागकरणे) सर्वे वा स्युः समांशिनः,— याज्ञ० २।११४, 2 भागों वाला, साझीदार ।

अंशुः [अंश्+कु] 1 किरण, प्रकाशकिरण, चंड°, घर्म° गरम किरणों वाला, सूर्य,-सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम् —कु० १।३२, चमक, दमक 2 बिन्दु या किनारा 3 एक छोटा या सूक्ष्म कण 4 धागे का छोर 5 पोशाक, सजावट, परिधान 6 गति । सम० —**उदकम्** ओस का पानी, **जालम्** रश्मिपुंज या प्रभामण्डल, —**धरः**, —**पतिः**,—**भृत्**,—**बाणः**,—**भर्तृ**—**स्वामिन्**—**हस्तः**—सूर्य (किरणों को धारण करने वाला या उनका स्वामी), —**पट्टम्** एक प्रकार का रेशमी कपड़ा,—**माला** प्रकाश की माला, प्रभामण्डल, —**मालिन्** (पुं०) सूर्य ।

अंशुकम् [अंशु+क-अंशवः सूत्राणि विषया यस्य] 1 कपड़ा, सामान्यतः पोशाक। सितांशुका–विक्रम० ३।१२ -यत्रांशुकाक्षेपविलज्जितानाम्–कु० १।१४, श० १।३२: 2 महीन या सफ़ेद कपड़ा—मेघ० ६४, प्रायः रेशमी कपड़ा या मलमल । 3 ऊपर ओढ़ा जाने वाला वस्त्र, लबादा, अधोवस्त्र भी, 4 पत्ता 5 प्रकाश की मंद लौ ।

अंशुमत् (वि०) [अंशु+मतुप्] 1 प्रभायुक्त, चमकदार, -ज्योतिषां रविरंशुमान्—भग० १०।२१ 2 नोकदार । —**मान्**(पुं०) 1 सूर्य, -बालखिल्यैरिवांशुमान्—रघु० १५।१०: 2 सगर का पौत्र, दिलीप का पिता और असमंजस का पुत्र ।

अंशुमत्फला—केले का पौधा ।

अंशुल (वि०) [अंशुं प्रभां प्रतिभां वा लाति-ला+क] चमकदार, प्रभायुक्त -लः चाणक्य मुनि ।

अंस् (चु० पर० अंसयति-अंसापयति) दे० अंश् ।

अंसः [अंस्+अच्] 1 भाग, खंड दे०अंश, 2 कंधा, अंसफलक, कंधे की हड्डी । सम० **कूटः** बैल या सांड का डिल्ल अथवा कुब्ब, कंधों के बीच का उभार,—**त्रम्** 1 कंधों की रक्षा के लिए कवच 2 धनुष,—**फलकः** रीढ़ का ऊपरी भाग —**भारः** कंधे पर रखा गया भार या जूआ,—**भारिक**,—**भारिन्** (वि०) (अंसे) कंधे पर जूआ या भार ढोने वाला—**विवर्तिन्** (वि०) कंधों की ओर मुड़ा हुआ,—मुखमंसविवर्ति पक्ष्मलाक्ष्याः,—श० ३।२४ ।

अंसल (वि०) [अंस्+लच्] बलवान्, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली मजबूत कंधों वाला,—युवा युगव्यायतबाहुरंसलः— रघु० ३।३४ ।

अंह् (भ्वा० आ० अंहते, अंहितुं, अंहित) जाना, समीप जाना, प्रयाण करना, आरम्भ करना, प्रेर० 1 भेजना 2 चमकना 3 बोलना ।

अंहतिः—ती (स्त्री०) [हन्+अति-अंहादेशश्च] 1 भेंट, उपहार 2 व्याकुलता, कष्ट, चिंता, दुःख, बीमारी (वेद०) ।

अंहस् (नपुं०)–(अंहः–हसी आदि) [अम्+असुन् हुक् च] 1 पाप–सहसा संहतिमंहसां विहन्तुं...अलम्—कि० ५।१७ 2 व्याकुलता, कष्ट, चिन्ता ।

अंहितिः— ती (स्त्री०) [अंह्+क्तिन् ग्रहादित्वात् इट्] उपहार, दान ।

अंह्रिः (अंह्+क्रिन्-अंहति गच्छत्यनेन) 1 पैर 2 पेड़ की जड़ तु० अंघ्रि, 3 चार की संख्या । सम०—**पः** जड़ (पैर) से पीने वाला, वृक्ष,—**स्कन्धः** पैर के तलवे का ऊपरी हिस्सा ।

अक् (भ्वा० पर० अकति, अकित) जाना, सांप की तरह टेढ़ा-मेढ़ा चलना ।

अकम् [न कम्–सुखम्] सुख का अभाव, पीड़ा, विपत्ति, पाप ।

अकच (वि०) [न. ब.] गंजा—**चः** केतु (अवपतनशील शिरोबिंदु) ।

अकनिष्ठ (वि०) [न कनिष्ठः–न० त०] जो सबसे छोटा न हो (जैसे सबसे बड़ा, मंझला) बड़ा, श्रेष्ठ —**ष्ठः** गौतम बुद्ध ।

अकन्या [न. त.] जो कुमारी न हो, जो अब कुमारी न रही हो ।

अकर (वि०) (न. ब.) 1 लूला, अपाहिज 2 कर या चुंगी से मुक्त 3 अक्रिय, निकम्मा, अकर्मण्य ।

अकरणम् [कृ भावे ल्युट् न. त.] अक्रिया, कार्य का अभाव अकरणात् मन्दकरणं श्रेयः—तु० अंग्रेजी की कहावतें 'सम थिंग इज़ बैटर दैन नथिंग'—(Something is better than nothing ;) बैटर लेट दैन नैवर, (Better late than never) न होने से कुछ होना भला है ; कभी न होने से देर में होना अच्छा है ।

अकरणिः (स्त्री०) [नञ्+कृ+अनिः] असफलता, निराशा, अप्राप्ति, अधिकांशतः कोसने या शाप देने में प्रयुक्त, -तस्याकरणिरेवास्तु—सिद्धा० भगवान् करे उसकी आशा पूरी न हो, उसे असफलता मिले ।

अकर्ण (वि०) [न. ब.] 1 जिसके कान न हों, बहरा 2 कर्णरहित —**र्णः** सांप ।

अकर्तन (वि०) [नञ्+कृत्+ल्युट् न. ब.] ठिंगना ।

अकर्मन् (वि०) (न. ब.) 1 निष्क्रिय, आलसी, निकम्मा 2 दुष्ट, पतित 3 (व्या०) अकर्मक —**र्म**(नपुं०) 1 कार्य का अभाव 2 अनुचित कार्य, दोष, पाप । सम०—**अन्वित** (वि०) 1 जिसके पास काम न हो, खाली, निठल्ला 2 अपराधी,—**कृत्** (वि०) कर्म से मुक्त या अनुचित कार्य करनेवाला,—**भोगः** कर्मफल भोगने से मुक्ति का अनुभव ।

अकर्मक (वि०) [नास्ति कर्म यस्य, ब० कप्] वह क्रिया जिसका कर्म न हो (स्त्री० --अकर्मिका) ।

अकल (वि०) [नास्ति कला अवयवो यस्य, न० ब०] अखंड, भागरहित, परब्रह्म की उपाधि ।

अकल्क (वि०) [न० ब०] 1 तलछट रहित, शुद्ध 2 निष्पाप (स्त्री०—**अकल्का**) चाँदनी, चन्द्रमा का प्रकाश ।

अकल्प (वि०) [न० ब०] 1 अनियंत्रित, जिस पर कोई नियंत्रण न हो, 2 दुर्बल, अयोग्य 3 अतुलनीय ।

अकस्मात् (अव्य०) [न कस्मात्—न० त०] अचानक, एकाएक, सहसा आकस्मिक रूप से – अकस्मादागंतुना सह विश्वासो न युक्तः–हि० १।२; अकारण, बिना किसी कारण के, व्यर्थ ही—नाकस्मात् शांडिलीमाता विक्रीणाति तिलैस्तिलान् —पं० २।६५–कथं त्वां त्यजेदकस्मात्पतिरार्यवृत्तः—रघु० १४ । ५५, ७३ ।

अकाण्ड (वि०) [न० ब०] 1 आकस्मिक, अप्रत्याशित, –सहसा पुनरकांडविवर्तनदारुणः—उत्तर० ४।१५, मा० ५।३१, 2 जिसमें तना या डाली न हो । सम०——**जात** (वि०) सहसा उत्पन्न या उत्पादित;—**ताण्डवम्** क्रोध पांडित्यादि का अप्रासंगिक प्रदर्शन –**पातः** आकस्मिक घटना —**पातजात** (वि०) जन्म होते ही मर जाने वाला,—**शूलम्** अचानक गुर्दे का दर्द ।

अकांडे (क्रि० वि०) अप्रत्याशित रूप से, एकाएक, सहसा, –दर्भांकुरेण चरणः क्षत इत्यकांडे तन्वीस्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा—श० २।१२।

अकाम (वि०) [न०ब०] 1 इच्छा, राग, या प्रेम से मुक्त 2 अनिच्छुक, अनभिलाषी, 3 प्रेम से अप्रभावित, प्रेम की अधीनता से मुक्त, श० १।२३ 4 अचेतन, अनभिप्रेत ।

अकामतः (क्रि० वि०) [अकाम–तसिल्] अनिच्छापूर्वक, बेमन से, बिना इरादे के, अनजानपने में –इतरे कृतवंतस्तु पापान्येतान्यकामतः —मनु० ९।२४२ ।

अकाय (वि०) [न० ब०] 1 शरीररहित, अशरीरी 2 राहु की एक उपाधि 3 परब्रह्म की उपाधि ।

अकारण (वि०) [न० ब०] कारणरहित, निराधार, स्वतःस्फूर्त,—**णम्** कारण प्रयोजन या आधार का अभाव—किमकारणमेव दर्शनं विलपन्त्यै रतये न दीयते—कु० ४।७ **अकारणम्, अकारणात्, अकारणे**–(क्रि० वि०) बिना कारण के, संयोगवश, व्यर्थ ।

अकार्य (वि०) [न० ब०] अनुपयुक्त—**र्यम्** अनुचित या बुरा काम, अपराधपूर्ण कार्य । सम०—**कारिन्** बुरा काम करने वाला, जो बुरा काम करे, कर्त्तव्य विमुख ।

अकाल (वि०) [न० ब०] असामयिक, प्राक्कालिक —**लः** गलत समय, अशुभ या कुसमय, (किसी बात के लिए) अनुपयुक्त समय—अत्यारूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः—रघु० १२।३३। सम० —**कुसुमम्**—**पुष्पम्** असमय पर खिलने वाला फूल,—**कूष्माण्डः** बिना ऋतु के उपजा हुआ कुम्हड़ा (आलं०) व्यर्थ जन्म,—**ज**, —**उत्पन्न**,—**जात** (वि०) बिना ऋतु के उपजा हुआ, प्राक्कालिक; —**जलदोदयः**,—**मेघोदयः** 1 असमय में बादलों का उठना या इकट्ठा होना; 2 कुहरा, धुंध, —**वेला** ऋतु के विपरीत या अनुपयुक्त समय, —**सह** (वि०) 1 समय की हानि या देरी को सहन न करने वाला, अधीर, 2 गढ़ की भांति दृढ़ता के साथ अधिक समय तक न टिकने वाला ।

अकिंचन (वि०) [नास्ति किंचन यस्य न० ब०] जिसके पास कुछ भी न हो, बिल्कुल गरीब, नितांत निर्धन– अकिंचनः सन् प्रभवः स सम्पदाम्—कु० ५।७७ ।

अकिंचिज्ज्ञ (वि०) [अकिंचित्+ज्ञा+क] कुछ न जानने वाला, निपट अज्ञानी; भर्तृ० २।८ ।

अकिंचित्कर (वि०) [उप० स०] 1 अर्थहीन,—परतंत्रमिदमकिञ्चित्करं च—वेणी० ३ । 2 भोला, सीधा ।

अकुण्ठ (वि०) [न० त०] 1 जो ठूंठा न हो, जिसकी गति अबाध हो—आशस्त्रग्रहणादकुंठपरशोः —वेणी० ३।२; 2 प्रबल, काम करने योग्य 3 स्थिर 4 अत्यधिक ।

अकुतः (क्रि० वि०) कहीं से नहीं (इसका प्रयोग केवल समस्तपदों में होता है) । सम०—**चलः** शिव का नाम,—**भय** (वि०) सुरक्षित, जिसे कहीं से भी भय न हो—मादृशानामपि अकुतोभयः संचारो जातः—उत्त० २, यानि त्रीण्यकुतोभयानि च पदान्यासन्खरायोधने (पाठान्तर) अपराङमुखाणि –उत्त० ५।३५ ।

अकुप्यम् (न०) [न० त०] 1 बिना खोट की धातु, सोना चाँदी, 2 कोई भी खोट की धातु ।

अकुशल (वि०) [न० त०] 1 अशुभ, दुर्भाग्यग्रस्त, 2 जो चतुर या होशियार न हो,—**लम्** अमंगल, दुर्भाग्य ।

अकूपारः [नञ्+कूप+ऋ+अण्] 1 समुद्र 2 सूर्य 3 कछुआ 4 कछुओं का राजा जिस पर पृथ्वी का भार है 5 पत्थर या चट्टान ।

अकृच्छ्र (वि०) [न० ब०] कठिनाई से मुक्त,—**च्छ्रम्** कठिनाई का अभाव, सरलता, सुविधा ।

अकृत (वि०) [नञ्+कृ+क्त] 1 जो किया न गया हो, 2 गलत या भिन्न तरीके से किया गया 3 अधूरा, जो तैयार न हो (जैसे रसोई), 4 अनिर्मित 5 जिसने कोई काम न किया हो 6 अपक्व, कच्चा; —**ता** जो बेटी होने पर भी बेटा न मानी जाकर पुत्रों के समकक्ष समझी जाय; –**तं**(नपुं०) कार्य जो किया न गया हो, काम का न किया जाना, जो काम कभी सुना न गया हो । सम०—**अर्थ** (वि०) असफल,—**अस्त्र** (वि०) जिसे हथियार चलाने का अभ्यास न हो,—**आत्मन्** (वि०) 1 अज्ञानी, मूर्ख, असंतुलित मस्तिष्क का 2 परब्रह्म या ब्रह्मा के स्वरूप से भिन्न—**उद्वाह** (वि०,

अविवाहित,—एनस् (वि०) अनपराधी,—ज्ञ (वि०) कृतघ्न—धी,—बुद्धि (वि०) अज्ञानी ।

अकृष्ट (वि०) [नञ्+कृष्+क्त] जो जोता न गया हो। सम०—पच्य,—रोहिन् (वि०) बिना जुते खेत में बढ़ने वाला या पकने वाला, बहुतायत से बढ़ने वाला —अकृष्टपच्या इव सस्यसंपदः—कि० १।१७, रघु० १४।७७ ।

अक्का (स्त्री०) [अक्+कन्+टाप्] माता, माँ ।

अक्त (वि०) [अक्+क्त] सना हुआ, अभिषिक्त, (इसका प्रयोग सामान्यतः समस्त पदों में होता है जैसे 'घृताक्त') —क्ता रात ।

अक्तम् [अञ्च्+क्त्र] कवच (वर्मन्) ।

अक्रम (वि०) [नास्ति क्रमो यस्य—न० ब०] अव्यवस्थित —मः [न क्रमः—न० त०] 1 क्रम या व्यवस्था का अभाव, गड़बड़ी, अनियमितता 2 औचित्य का उल्लंघन ।

अक्रिय (वि०) [नास्ति क्रिया यस्य—न० ब०] क्रिया शून्य, सुस्त—या [न० त०] क्रियाशून्यता, कर्तव्य की उपेक्षा ।

अक्रूर (वि०) [न० त०] जो निर्दय न हो. —रः एक यादव जो कृष्ण का मित्र और चाचा था ।

अक्रोध (वि०) [नास्ति क्रोधो यस्य—न० ब०] क्रोध रहित —धः [न०त०] क्रोध का अभाव या उसका दमन ।

अक्लिष्ट (वि०) [नञ्+क्लिश्+क्त] 1 न थका हुआ, क्लेश रहित, अनथक 2. जो विगड़ा न हो, अविकल श० ५।१९ ।

अक्ष् [भ्वा० स्वा० पर० अक० सेट्] (अक्षति—अक्ष्णोति, अक्षित) 1 पहुँचना, 2 व्याप्त होना, पैठना 3 संचित होना ।

अक्षः [अक्ष्+अच्—अश्+सः वा] 1 धुरी, धुरा 2 गाड़ी के बीच में लगा लकड़ी का वह भाग जिसमें लोहे या लकड़ी की वह छड़ फंसाई हुई होती है जिस पर पहिया चलता है 3 गाड़ी, छकड़ा, पहिया 4 तराजू की डंडी 5 भौमिक अक्षांश 6 चौसर, चौसर का पासा 7 रुद्राक्ष 8 कर्ष नामक १६ माशे की एक तोल 9 बहेड़े (विभीतक) का पौधा 10 साँप 11 गरुड़ 12 आत्मा 13 ज्ञान 14 कानूनी कार्य विधि, मुकदमा 15 जन्मांध; —क्षं 1 इन्द्रिय, इन्द्रिय-विषय 2 सामुद्रिक लवण 3 नीला थोथा । सम०—अग्रकील(—लकः) धुरे की कील —आवपनं चौसर का तख्ता, —आवापः जुआरी —कर्णः सम त्रिकोण में सामने की रेखा, —कुशल (वि०)—शौंड (वि०) जुआ खेलने में निपुण,—कूटः आंख की पुतली कोविद (वि०) —ज्ञ (वि०) चौसर खेलने में कुशल —ग्लहः जुआ खेलना, चौ[सर] खेलना —जं 1 प्रत्यक्षज्ञान, संज्ञान, 2 वज्र 3 ही[रा] —जः विष्णु; —तत्त्वं —विद्या जुआ खेलने की कला या विद्या; —दर्शकः —दृश् 1 न्यायाधीश 2 जुए [का] अधीक्षक; —देविन् जुआरी, जुएबाज़; —द्यूतं चौसर का खेल, जुआ; —धूर्तः जुएबाज़, जुआरी; —धूर्तिलः गाड़ी में जुता हुआ बैल या सांड —पटलं 1 न्यायालय 2 कानूनी दस्तावेजों के रखने का स्थान— पाटकः कानून का पंडित, न्यायाधीश; —पातः पासा फेंकना; —पादः गौतम ऋषि, न्यायदर्शन के प्रवर्तक या उसके अनुयायी; —भागः—अंशः अक्षरेखा, अक्षांश ।—भारः गाड़ीभर बोझ; —माला—सूत्रं रुद्राक्षमाला, हार—कृतोऽक्षसूत्रप्रणयी तया करः— कु० ५।११ —राजः जुए का व्यसनी, पासों में प्रधान, कलि नामक पासा; —वाटः जुआ-खाना, जुए की मेज़; —हृदयं जुए में पूर्ण दक्षता या निपुणता ।

अक्षणिक (वि०) [न० त०] स्थिर, दृढ़, जो चंचल न हो, जो थोड़ी देर रहने वाला न हो, दृढ़तापूर्वक जमा हुआ; (ताक लगाने या टकटकी के समान) ।

अक्षत (वि०) [नञ्+क्षण्+क्त—न० त०] (क) जिसे चोट न लगी हो—त्वमनंगः कथमक्षता रतिः— कु० ४।९ (ख) जो टूटा न हो, सम्पूर्ण, अविभक्त —तः 1 शिव 2 कूट-फटक कर धूप में सुखाए गए चावल । —ताः (बहु०) अनटूटा अनाज, सब प्रकार के धार्मिक उत्सवों पर काम आने वाले पिछोड़े, कूटे तथा जल से धोये हुये चावल—साक्षतपात्रहस्ता—रघु० २।२१ 3 जौ, यव—तं 1 धान्य, किसी भी प्रकार का अनाज 2 हिजड़ा (पुं०भी), —ता कुमारी, कन्या । सम०—योनिः (स्त्री०) वह कन्या जिसके साथ संभोग न किया गया हो—मनु० ९।१७६ ।

अक्षम (वि०) [न० त०] अयोग्य, असमर्थ, असहिष्णु, अधीर, रघु० १३।१६ —मा 1 अधैर्य, ईर्ष्या, 2 क्रोध, आवेश ।

अक्षय (वि०) [न० ब०] जिसका नाश न हो, अनश्वर, अचूक;—त्रिसाधनाशक्तिरिवार्थमक्षयम्—रघु० ४।१३। सम०—तृतीया (स्त्री) वैशाखमास के शुक्लपक्ष की तीज ।

अक्षय्य (वि) [न० त०] जो क्षय न हो सके, अविनाशी —तपःषड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः—श० २।१३ ।

अक्षर (वि०) [न० त०]। अविनाशी, अनश्वर— कु० ३।५०, भग० १५।१६ 2 स्थिर, दृढ़ ।—रः शिव 2 विष्णु । —रं। (क) वर्णमाला का एक अक्षर—अक्षराणामकारोऽस्मि—भग० १०।३३ त्र्यक्षर आदि । (ख) कोई एक ध्वनि,—एकाक्षरं परं ब्रह्म— मनु० २।८३ (ग) एक या अनेक वर्ण, समष्टिरूप से भाषा —प्रतिषेधाक्षरविक्लवाभिरामम्—श० ३।२५ 2 दस्तावेज, लिखावट (बहुव), 3 अविनाशी आत्मा, ब्रह्म 4 पानी 5 आकाश 6 परमानन्द, मोक्ष । सम०— —अर्थ शब्दों का अर्थ ;—चं(चुं) चुः,—चणः (नः)

लिपिक, लेखक, नकलनवीस। इसी प्रकार °जीवकः °जीवी, °जीविकः पेशेवर लेखक। —च्युतकं किसी अक्षर के लुप्त होने के कारण दूसरा ही अर्थ निकलना। —छंदस् (नपुं०) —वृत्तं वर्णों की संख्या से बद्ध छंद या वृत्त—जननी —तूलिका सरकंडा या कलम। —(वि) न्यास 1 लिखना, वर्णक्रम 2 वर्णमाला 3 वेद —भूमिका तख्ती—रघु० १८।४६ —मुखः विद्वान्, विद्यार्थी। —वर्जित (वि०) अशिक्षित, बिना पढ़ा-लिखा। —शिक्षा (स्त्री) गुह्य अक्षरों की विद्या। —संस्थानं वर्णविन्यास, लिखना, वर्णमाला।

अक्षरकं [स्वार्थे कन्] स्वर, अक्षर।

अक्षरशः (क्रि० वि०) [अक्षर+शस् (वीप्सार्थे)] एक एक अक्षर करके 2 शब्दशः, शब्द शब्द करके।

अक्षवती (स्त्री०) [अक्ष+मतुप्+ङीप्] खेल, पासे द्वारा खेल, जुए का खेल।

अक्षांतिः (स्त्री०) [न० त०] असहिष्णुता, स्पर्धा, ईर्ष्या।

अक्षार (वि०) [न० ब०] कृत्रिम लवणरहित। —रः प्राकृतिक लवण।

अक्षि (नपुं०) [अश्नुते विषयान्—अश्+क्सि] (अक्षिणी, अक्षीणि, अक्ष्णा, अक्ष्णः आदि) 1 आंख 2, दो की संख्या। सम० —कंपः झपकी—रघु० १४।६७। —कूटः —कूटकः—गोलः —तारा आँख का डेला, आँख की पुतली। —गत (वि०) 1 दृश्यमान, उपस्थित—शि० ९।८१, 2 आंख में रड़कने वाला, आंख का काँटा, घृणित—°तोऽहमस्य हास्यो जातः—दश० १५९। —पक्ष्मन्,—लोमन् (न०) पलक —पटलं 1 आंख की झिल्ली 2 झिल्ली से संबद्ध आंख का रोग —विकूणितं, —विकूशितं तिरछी नज़र, अधखुली आँखों से देखना।

अक्षुण्ण (वि०) [न० त०] न टूटा हुआ, अखण्ड 2 अविजित. सफल,—अक्षुण्णोऽनुनयः—वेणी० १।२, 3 जो कूटा पीटा न गया हो, असाधारण —शि० १।३२।

अक्षेत्र (वि०) [न० ब०] खेतों से रहित, बिना जुता। —त्रं1 खराब खेत 2 (आलं०) बुरा विद्यार्थी, कुपात्र। सम० —वाद् (वि०) आत्मज्ञान से विरहित।

अक्षोटः [अक्ष्+ओट] अखरोट, (मरा० डोंगरी अक्रोड)।

अक्षोभ्य (वि०) [न० त०] स्थिर, धीर—रघु १७।७४।

अक्षौहिणी (स्त्री) [अक्षाणां रथानां सर्वेषामिन्द्रियाणां वा ऊहिनी—ष० त०], [अक्ष्+ऊह्+णिनि+ङीप्] पूरी चतुरंगिणी सेना जिसमें २१८७० रथ, २१८७० हाथी, ६५६१० घोड़ तथा १०९३५० पदाति हों।

अखंड (वि०) [न० ब०] जो टूटा न हो, संपूर्ण, समस्त —अखंडं पुण्यानां फलमिव—श० २।१०—डम् (क्रि० वि०) निरन्तर, अविराम।

अखंडन (वि०) [न० ब०] जो टूटा न हो, टूट न सके, पूरा, संपूर्ण;—नं न टूटना, निराकरण न करना;—नः समय।

अखंडित (वि०) [न खंडितः—न० त०] 1 न टूटा हुआ, 2 विघ्नरहित, बाधारहित। सम० —उत्सव (वि०) सदा आमोदप्रिय; —ऋतुः वह समय या ऋतु जिसमें सदा की भांति पुष्पादि उत्पन्न हों; (वि०) फलदायी।

अखर्व (वि०) [न० त०] 1 जो बौना या छोटे कद का न हो, जिसकी शारीरिक वृद्धि न रुकी हो 2 अनल्प, बड़ा, —अखर्वेण गर्वेण विराजमानः—दश० 3।

अखात (वि०) [न० त०] न खुदा हुआ, न दफनाया हुआ —तः, तं 1 प्राकृतिक झील 2 मंदिर के सामने का पोखर।

अखिल (वि०) [नास्ति खिलम् अवशिष्टम् यस्य—न० ब०] 1 सम्पूर्ण, समस्त, पूरा; इसका प्रयोग प्रायः 'सर्व' के साथ पाया जाता है: —एतद्धि मत्तोऽधिजगे सर्वमेषोऽखिलं मुनिः—मनु० १।५९ °लेन (क्रि० वि०) पूर्ण रूप से 2 भूमि जो परत की न हो, जुती हुई हो।

अखेटिकः (पुं०) [नञ्+खिट्+पिकन् न० त०] 1 वृक्षमात्र 2 शिकारी कुत्ता।

अख्याति [न० त०] अपकीर्ति, अपयश। सम० —कर(वि०) अपकीर्तिकर, लज्जाजनक।

अग् (भ्वा० पर० अक० सेट् अगति, आगीत्, अगिष्यति, अगित) 1. सर्पिल गति से जाना, टेढे मेढ़े चलना, 2. जाना (अंगति आंगीत्-आदि)।

अग (वि०) [न गच्छतीति-गम्+ड, न० त०] 1. चलने में असमर्थ, अगम्य;—गः 1. वृक्ष 2. पहाड़, पत्थर 3. साँप 4. सूर्य 5. सात की संख्या। सम० —आत्मजा पर्वत की पुत्री, पार्वती।—ओकस् (पुं०) 1. पहाड़ी 2. पक्षी (वृक्षवासी) 3. 'शरभ' नामक जन्तु जिसकी आठ टांगे मानी जाती हैं 4. सिंह;—ज (वि०) पहाड़ों में घूमने वाला, जंगली,—जम् शिलाजीत।

अगच्छ (वि०) [गम्-बाहुलकात् श—न० त०] न जाने वाला। —च्छः (पु०) वृक्ष।

अगतिः (स्त्री०) [न० त०] 1. आश्रय या उपाय का अभाव, आवश्यकता 2. प्रवेश न होना (शा० और आलं०)।

अगति (ती) क (वि०) [न० ब०] निस्सहाय, निरुपाय, निराश्रय,—बालमेनामगतिमादाय—दश ९; दंडस्त्वगतिका गतिः —या० १।३४६।

अगद (वि०) [न० ब०] नीरोग, स्वस्थ, रोगरहित।—दः 1. औषधि. दवाई 2, स्वास्थ्य 3. विषहरण विज्ञान।

अगदंकारः (पु०) [अगदं करोति—अगद+कृ+अण् मुमागमश्च] वैद्य, चिकित्सक।

अगम्य (वि०) [न गन्तुमर्हति—गम्+यत् न० त०] 1. दुर्गम, न जाने योग्य, पहुँच के बाहर (शा० और

आलं०) योगिनामप्यगम्यः आदि 2. अकल्पनीय, अवोध्य—याः संपदस्ता मनसोऽप्यगम्याः—शि० ३।५९। 'गम्य' के अन्तर्गत भी देखिए। सम०—रूप (वि०) अकल्पनीय तथा अनतिक्रांत रूप या स्वभाव वाला—°रूपां पदवीं प्रपित्सुना—कि० १।९।

अगम्या (स्त्री०) वह स्त्री जिसके पास मैथुन के लिए जाना उचित नहीं, एक नीची जाति—°गमनं चैव जातिभ्रंशकराणि वा इत्यादि। सम०—गमनं अनुचित मैथुन, व्यभिचार—गामिन् (वि०) अनुचित मैथुन करने वाला, व्यभिचारी।

अगरु (न०) [न गिरति; गॄ+उ, न० त०] अगर—एक प्रकार का चंदन।

अगस्तिः, अगस्त्यः [विन्ध्याख्यम् अगम् अस्यति; अस्+क्तिच्—शक०] [अगं विन्ध्याचलं स्त्यायति स्तम्नाति—स्त्यै+क, वा अगः कुंभः तत्र स्त्यानः संहतः इत्यगस्त्यः] 1. 'कुम्भज' एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम 2. एक नक्षत्र का नाम।

अगस्त्यः=अगस्ति, दे० ऊपर।

अगाध (वि०) [न० ब०] अथाह, बहुत गहरा, अतल-अगाधसलिलात्समुद्रात्—हि० १।५२; (आलं०) गंभीर, सविवेक, बहुत गहरा—°सत्त्व-रघु० ६।२१;—यस्य ज्ञानं दयासिंधोरगाधस्यानघा गुणाः—अमर०; अथाह, अबोध्य;—धः—धं गहरा छेद या दरार; सम०—जलः गहरा तालाब, गहरी झील।

अगारं [अगं न गच्छन्तम् ऋच्छति प्राप्नोति-अग्+ऋ+अण्] घर; शून्यानि चाप्यगाराणि—मनु० ९।२६५; °दाहिन् घरफूंक आदमी।

अगिरः [न गीर्यते दुःखेन—गॄ बा० क—न० त०] स्वर्ग। सम०—ओकस् (वि०) स्वर्ग में रहने वाला (जैसे देवता)।

अगुण (वि०) [न० ब०] 1. निर्गुण (परमात्मा के संबंध में); 2. जिसमें अच्छे गुण न हों गुणहीन—अगुणोऽयमशोकः—मालवि०३;—णः दोष, अवगुण।

अगुरु (वि०) [न० त०] 1 जो भारी न हो, हल्का, 2. (छंद में) लघु 3. जिसका कोई शिक्षक न हो;—रुः (नपुं० भी) अगर की सुगन्धित लकड़ी और पेड़।

अगृहः (वि०) [न० ब०] बिना घर बार का घुमक्कड़, साधु।

अगोचर (वि०) [नास्ति गोचरो यस्य—न० ब०] जो इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष न हो, अस्पष्ट;—वाचामगोचरां हर्षावस्थामस्पृशत्—दश० १६९;—रं 1. अतीन्द्रिय, 2. अदृश्य, अज्ञेय 3. ब्रह्म।

अग्नायी (स्त्री०) [अग्नि+ऐङ+ङीप्] 1 अग्नि की पत्नी, अग्निदेवी' स्वाहा 2. त्रेतायुग।

अग्निः [अंगति ऊर्ध्वं गच्छति—अङ्ग्+नि नलोपश्च] आग 1. कोप°, चिता° आदि, 2. आग का देवता 3. तीन प्रकार की यज्ञीय अग्नि—गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण 4. जठराग्नि, पाचनशक्ति 5. पित्त 6. सोना 7. तीन की संख्या; द्वन्द्व समास में जब कि प्रथम पद में देवताओं के नाम या विशिष्ट शब्द हों तो 'अग्नि' के स्थान पर 'अग्ना' हो जाता है जैसे °विष्णु, ०मरुतौ; 'अग्नि' के स्थान पर 'अग्नी' भी हो जाता है जैसे—°पर्जन्यौ, °वरुणौ, °षोमौ। सम०—अ (आ) गारं—रः,—आलयः—गृहं अग्नि का मन्दिर—रघु ५।२५।—अस्त्रं आग बरसाने वाला अस्त्र, रॉकेट, इसी प्रकार ०बाणः—आधानं अग्नि की प्रतिष्ठा करना, इसी प्रकार ०आहितिः,—आधेयः वह ब्राह्मण जो अग्नि को प्रतिष्ठित रखता है, दे० आहिताग्निं,—उत्पातः अग्निसंबंधी उत्पात, उल्का या धूमकेतु आदि;—उपस्थानं अग्नि की पूजा, अग्निपूजा का सूक्त या मंत्र—कणः,—स्तोकः चिनगारी;—कर्मन् (नपुं०) 1. अग्नि क्रिया 2. अग्नि में आहुति, अग्नि की पूजा, इसी प्रकार ०कार्य;—निर्वर्तिताग्निकार्यः—का० १६;—कारिका 1 पवित्र अग्नि को प्रतिष्ठित करने का साधन, 'अग्नीध्र' नामक ऋचा, 2. अग्नि कार्य;—काष्ठं अगरु;—कुक्कुटः अग्नि-शलाका;—कुंडं अग्नि को स्थापित रखने के लिए स्थान, अग्नि पात्र;—कुमारः—तनयः—सुतः कार्तिकेय जो अग्नि से उत्पन्न हुए कहे जाते हैं, दे० कार्तिकेय;—केतुः धूआं;—कोणः—दिक् दक्षिण-पूर्वी कोना जिसका देवता अग्नि है;—क्रिया अन्त्येष्टिक्रिया, और्ध्वदैहिक संस्कार 2. दाह क्रिया;—क्रीड़ा आतिशबाजी, रोशनी;—गर्भ (वि०) आभ्यन्तर में आग रखते हुए, °र्भां शमीमिव-श० ४।३. (—र्भः) सूर्यकान्त मणि जिसे सूर्य की किरणों के स्पर्श से आग उगलने वाला माना जाता है; तु०-श० २।७ (—र्भा) 1. शमीवृक्ष 2. पृथ्वी;—चित् (पुं०) अग्नि को प्रज्वलित रखने वाला—यतिभिः सार्धमनग्निमग्निचित्—रघु० ८।२५;—चयः—चयनं—चित्या अग्नि को प्रतिष्ठित रखना, अग्न्याधान;—ज (वि०) अग्नि से उत्पन्न होने वाला;—जः—जातः 1. कार्तिकेय 2. विष्णु;—जं—जातंसोना,, इसी प्रकार °जन्मन्;—जिह्वा आग की लपट, अग्नि, की सात जिह्वाओं (कराली धूमिनी श्वेता लोहिता नीललोहिता। सुवर्णा पद्मरागा च जिह्वाः सप्त विभावसोः॥ में से एक;—तपस् (वि०) बढ़ता आहु आग के समान चमकने या जलने वाला;—त्रयं त्रेता (स्त्री०) तीन अग्नियां (अग्नि के अन्तर्गत देखिए); —द (वि०) 1 पौष्टिक, क्षुधावर्द्धक 2 दाहक;—दातृ (पुं०) मनुष्य का दाहकर्म करने वाला;—दीपन (वि०) क्षुधावर्द्धक, पौष्टिक:—दीप्तिः,—वृद्धिः बढ़ी हुई पाचन शक्ति, अच्छी भूख;—देवा

कृत्तिका नक्षत्र; —धानं पवित्र अग्नि को रखने का पात्र या स्थान, अग्निहोत्री का घर; —धारणं अग्नि को सदा प्रतिष्ठित रखना; —परिक्रि (ष्क्रि) या अग्नि-पूजा; —परिच्छदः यज्ञ के सारे उपकरण—मनु० ६।४; —परीक्षा (स्त्री०) अग्नि द्वारा परीक्षा; —पर्वतः ज्वालामुखी पहाड़; —पुराणं व्यास प्रणीत १८ पुराणों में से एक; —प्रतिष्ठा (स्त्री०) अग्नि की स्थापना, विशेष कर विवाह संस्कार की; —प्रवेशः —प्रवेशनं अग्नि में उतरना, अपने पति की चिता पर किसी विधवा का सती होना, —प्रस्तरः फलीता, चकमक पत्थर; —बाहुः धुआं; —भं 1 कृत्तिका 2 सोना; —भु (नपु०) 1 जल 2 सोना; —भूः अग्नि से उत्पन्न कार्तिकेय; —मणिः सूर्यकान्त मणि, फलीता; —मंथः —मंथनं घर्षण या रगड़ द्वारा आग पैदा करना; —मांद्यं पाचनशक्ति का मंद होना, भूख न लगना; —मुखः 1 देवता, 2 ब्राह्मणमात्र 3 मुंह में आग रखने वाला, जोर से काटने वाला, खटमल का विशेषण—पंच० १; —मुखी रसोई घर; —रक्षणं पवित्र गार्हपत्य या अग्निहोत्र की अग्नि को प्रतिष्ठित रखना; —रजः —रजस् (पु०) 1 इंद्रगोप नामक एक सिंदूरी कीड़ा 2 अग्नि की शक्ति 3 सोना; —लोकः अग्नि का वह संसार जो मेरु शिखर के नीचे स्थित है, —वधू (स्त्री०) स्वाहा, दक्ष की पुत्री और अग्नि की पत्नी; —वर्धक (वि०) पौष्टिक —वाहः 1 धूआं 2 बकरी; —वीर्यं 1 अग्नि की शक्ति 2 सोना —शरणं-शाला—शालं अग्नि का मन्दिर, वह स्थान या घर जहाँ पवित्र अग्नि रक्खी जाय—°रक्षणाय स्थापितोऽहम् वि० 3; —शिखः 1 दीपक राकेट, 2 अग्निमय बाण, 3 बाणमात्र 4 कुसुम या केसर का पौधा, 5 केसर; —शिखं 1 केसर 2 सोना; —ष्टुत्, —ष्टुभ्, —ष्टोम आदि दे० —°स्तुत्, —°स्तुभ् आदि—संस्कारः 1 अग्नि की प्रतिष्ठा 2 चिता पर शव की दाह क्रिया—नाऽस्य कार्योऽग्निसंस्कारः— मनु० ५।६९, रघु० १२।५६, —सखः —सहायः 1 हवा 2 जंगली कबूतर 3 धुआं; —साक्षिक (वि० या क्रि०वि०) अग्नि को साक्षी बनाना अग्नि के सामने; —पंचबाण° मालवि० ४।१२; —स्तुत् (पु०) एक दिन से अधिक चलने वाले यज्ञ का एक भाग; —स्तोमः (°ष्टोमः) बसन्त में कई दिन तक चलने वाला यज्ञीय अनुष्ठान या दीर्घकालिक संस्कार जो ज्योतिष्टोम का एक आवश्यक अंग है, —होत्रं 1 अग्नि में आहुति देना, 2 होम की अग्नि को स्थापित रखना और उसमें आहुति देना, —होत्रिन् (वि०) अग्निहोत्र करने वाला, या वह व्यक्ति जो अग्निहोत्र द्वारा होमाग्नि को सुरक्षित रखता है।

अग्निसात् (अव्य०) अग्नि की दशा तक, इसका प्रयोग समस्तपद में 'कृ' धातु (जलाना, भस्म करना) के साथ किया जाता है—'न चकार शरीरमग्निसात्—रघु० ८।७२; °भू जलाया जाना।

अग्र (वि०) [अङ्ग्+रन् नलोपश्च] 1 प्रथम, सर्वोपरि, मुख्य, सर्वोत्तम, प्रमुख; °महिषी मुख्य रानी; 2 अत्यधिक; —ग्रं 1 (क) सर्वोपरि स्थल या उच्चतम बिन्दु (विप०—मूलम्, मध्यम्); (आल°) तीक्ष्णता, प्रखरता, नासिका°—नाक का अग्रभाग, समस्ता एव विद्या जिह्वाग्रेऽभवन्—का० ३४६—जिह्वा के अग्र भाग पर थी, (ख) चोटी, शिखर, सतह—कैलास°, पर्वत° आदि 2 सामने 3 किसी भी प्रकार में सर्वोत्तम 4 लक्ष्य, उद्देश्य 5 आरम्भ 6 आधिक्य, अतिरेक. समस्त पदों में जब यह प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है— 'पूर्वभाग' 'सामने' 'नोंक' आदि; उदा० °पादः-चरणः। सम०—अनी (णी) कः (कम्) सैन्यमुख—मनु० ७।१९३—आसनं प्रमुख आसन, मान-आसन—मुद्रा० १।१२,—करः =अग्रहस्तः—गः नेता, मार्गदर्शक, सबसे आगे चलने वाला —गण्य (वि०) श्रेष्ठ, प्रथम श्रेणीमें रक्खे जाने योग्य; —ज पहले पैदा या उत्पन्न हुआ; —जः अग्रजन्मा, बड़ा भाई-अस्त्येव मन्युर्भरताग्रजे मे—रघु० १४।७३ 2 ब्राह्मण—जा बड़ी बहन, इसी प्रकार °जात, °जातक, °जाति। —जन्मन् (पु०) 1 पहले जन्मा हुआ, बड़ा भाई 2 ब्राह्मण—दश० १३,—जिह्वा जिह्वा की नोक; —दानिन् (वि०) पतित ब्राह्मण जो मृतक श्राद्ध में दान लेता है; —दूतः आगे-आगे जाने वाला दूत—कृष्णाक्रोधाग्रदूतः—वेणी० १।२२, रघु० ६।१२,—नीः (णीः) प्रमुख नेता—अप्यग्रणीर्मन्त्रकृतामृषीणाम्—रघु० ५।४; —पादः पैर का अगला हिस्सा, पैर का अगला पंजा,—पूजा आदर या सम्मान का सर्वोच्च या प्रथम चिह्न,—पेयं पीने में प्राथमिकता—भागः 1. प्रथम या सर्वोत्तम भाग 2. शेष, शेष भाग 3. नोक, सिरा; —भागिन् (वि०) (शेषभाग) को पहले प्राप्त करने का अधिकार प्रकट करने वाला; —भूः =°ज,—भूमिः (स्त्री०) महत्वाकांक्षा व लक्ष्य या उद्दिष्ट पदार्थ; —मांसं हृदय का मांस, हृदय—०सं चानीतम्—वेणी० ३; —यायिन् (वि०) नेतृत्व करना, सेना के आगे चलना, पुत्रस्य ते रणशिरस्यग्रयायी—श० ७।२६,—योधिन् (पु०) मुख्य वीर, मुख्य योद्धा,—संधानी यम द्वारा मनुष्यों के कार्यों का लेखा-जोखा रखने की बही; —संध्या (स्त्री०) प्रभात काल; कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रंजयत्यग्रसंध्या—श० ४ (पाठ०),—सर=यायिन्—नेतृत्व करने वाला—रघु० ९।२३; ५।७१; —हस्तः (पु०) (—°करः,—°पाणिः)

हाथ या भुजा का अगला भाग, हाथी की सूंड का सिरा; कभी २ उंगली या उंगलियों के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है; दाहिना हाथ—अथाग्रहस्ते मुकुलीकृतांगुलौ कुमा० ५।६३—हायनः (णः)—वर्षका आरम्भ, मार्गशीर्ष (मंगसिर) महीने का नाम; —हारः राजाओं द्वारा ब्राह्मणों को जीवननिर्वाहार्थ दान में दी गई भूमि —कस्मिंश्चिदग्रहारे—दश० ८।९ ।

अग्रतः (क्रि० वि०, [अग्रे अग्राद्वा—तसिल्] (संबन्धकारक के साथ) 1. सामने, के आगे, के ऊपर; आगे 2. की उपस्थिति में, 3. प्रथम । सम०—**सरः** नेता ।

अग्रिम (वि०) [अग्रे भवः—अग्र+डिमच्] 1. प्रथम (क्रम, श्रेणी आदि में); प्रमुख, मुख्य 2. बड़ा, ज्येष्ठ; —**मः** बड़ा भाई ।

अग्रिय (वि०) [अग्रे भवः—अग्र+घ] प्रमुख आदि, —**यः** बड़ा भाई ।

अग्रीय (वि०) [अग्रेभवः—अग्र+छ] प्रमुख, सर्वोत्तम आदि । दे० अग्रिम ।

अग्रे (क्रि० वि०) 1. के सामने, पहले (काल और देश वाचक) 2. की उपस्थिति में, 3. के ऊपर 4. बाद में फलतः—एवमग्रे वक्ष्यते, एवमग्रेऽपि द्रष्टव्यम् आदि 5. सबसे पहले, पहले 6. औरों से पहले । सम०—**गः** नेता,—**दिधिषुः-षूः** पहले तीन वर्णों में से कोई एक पुरुष जो विवाहित स्त्री से विवाह करता है, (पुनर्भूविवाहकारी); —**दिधिषूः** (स्त्री०) एक विवाहित स्त्री जिसकी बड़ी बहन अभी अविवाहित है—(ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यायामूह्यतेऽनुजा, सा चाग्रेदिधिषूर्ज्ञेया पूर्वा च दिधिषूः स्मृता); °पतिः अग्रेदिधिषू स्त्री का पति;—**वनं-णं** जंगल की सीमा या अन्तिम सिरा;—**सर** (वि०) आगे २ चलने वाला, नेता—मानमहतामग्रेसरः केसरी—भर्तृ० २।२९ ।

अग्र्य (वि० [अग्रे जातः–अग्र+यत्] 1. प्रमुख, सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, सर्वोच्च, प्रथम—तदङ्गमग्र्यं मघवन् महाक्रतोः—रघु० ३।४६, °महिषी १०।६६, अधिकरण के साथ भी; मनु० ३।१८४,—**र्यः** बड़ा भाई ।

अघ्=अंघ्—दे० (चु० उभ०) बुरा करना, पाप करना ।

अघं [अघ्+अच्] 1 पाप—अघौघविध्वंसविधौ पटीयसीः—शि० १।१८, २६. °मर्षण आदि 2. कुकृत्य, अपराध, दोष शि० ४।३७ 3. अपकृत्य, दुर्घटना, विपत्ति–क्रियादघानां मघवा विघातम्–कि० ३।५२; दे० अनघ 4. अपवित्रता, (अशौचं) 5. व्यथा, कष्ट —**घः** एक राक्षस का नाम, बक और पूतना का भाई जो कंस के यहां मुख्य सेनापति था । सम०—**असुरः** दे० ऊपर 'अघ',—**अहः** (अहन्) अपवित्रता का दिन, अशौच दिन;—**आयुस्** (वि०) गर्हित जीवन बिताने वाला;—**नाश—नाशन** (वि०) परिमार्जक, पापनाशक;—**मर्षण** (वि०) विशोधक, पाप को हटाने वाला, ऋग्वेद के मन्त्र जिनका सन्ध्या-प्रार्थना के समय प्रायः ब्राह्मणों द्वारा पाठ होता है (ऋग्मं० १० सू० १९०) सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वघमर्षणम्—अमर०,—**विषः** सांप;—**शंसः** दुष्ट आदमी जैसे चोर;—**शंसिन्** (वि०) किसी के पाप या अपराध को बतलाने वाला ।

अघर्म (वि०) [न० ब०] जो गरम न हो, ठंडा, °अंशु, °धामन्-चन्द्रमा जिसकी किरणें ठण्डी होती हैं ।

अघोर (वि०) [न० त०] जो भयानक न हो, भीषण न हो,—**रः** शिव या शिव का कोई रूप जिसमें अघोर =घोर हो । सम०—**पथः**—**मार्गः** शिव का अनुयायी, –**प्रमाणं** भीषण शपथ या अग्नि परीक्षा ।

अघोष (वि०) [नास्ति घोषो यस्य यत्र वा—न० ब०] ध्वनिहीन, निःशब्द,—**षः** प्रत्येक वर्ग के प्रथम दो अक्षर, श, ष, तथा स ।

अङ्क् (भ्वा० आ०) टेढ़ा-मेढा चलना, (चु०उभ०–अङ्कयति-ते, अङ्कयितुं, अङ्कित) 1. चिह्नित करना, छाप लगाना-स्वनामधेयाङ्कित–श० ४ नामाङ्कित - नयनोदबिंदुभिः अङ्कितं स्तनांशुकम्—विक्रम० ४।७, 2. गिनना, 3. धब्बा लगाना, कलङ्कित करना–तत्को नाम गुणो भवेत्सुगुणिनां यो दुर्जनैर्नाङ्कितः—भर्तृ० नी० ५४ 4. चलना, इठलाना, जाना ।

अङ्कः (पुं०)[अङ्क्+अच्] 1. गोद (नपुं० भी),—अङ्काद्ययावङ्कमुदीरिताशीः–कु० ७।५; 2. चिह्न, संकेत–अलक्तकाङ्कां पदवीं ततान–रघु० ७।०; धब्बा, लांछन, कलङ्क, दाग–इन्दोः किरणेष्विवाङ्कः–कु० १।३,–कट्यां कृताङ्को निर्वास्यः—मनु० ८।२८१; 3. अङ्क, संख्या, ९ की संख्या 4. पार्श्व, पक्ष, सान्निध्य, पहुँच,–समुत्सुकेवाङ्कमुपैति सिद्धिः–कि० ३।४०–सिंहो जम्बुकमङ्कमागतमपि त्यक्त्वा निहन्ति द्विपम् —भर्तृ० नी० ३०; 5. नाटक का एक खंड 6. कँटिया या मुड़ा हुआ उपकरण 7. नाट्यरचना का एक प्रकार, रूपक के दस भेदों में से एक, दे० सा० द० ५१९ 8. पंक्ति, मुड़ी हुई पंक्ति, सामान्यतः एक मोड़, भुजा में मोड़ । सम०–**अवतारः** जब नाटक के आगामी अङ्क से सातत्य प्रकट करता हुआ, पूर्वाङ्क के अन्त में–अङ्कसकेतं–किया जाता है उसे अङ्कावतार कहते हैं जैसे कि शकुन्तला का छठा अङ्क अथवा मालविकाग्निमित्र का दूसरा अङ्कः,–**तंत्र** संख्या-विज्ञान (अंकगणित या बीजगणित), –**धारणं-णा** (नपुं० स्त्री०) 1. चिह्न लगाना या संकेत करना 2. आकृति या मनुष्य को आंकने की रीति —**परिवर्तः** 1. दूसरी ओर मुड़ना 2. किसी की गोद में लुढ़कना या प्रेम के हाव-भाव दिखाना (आलिंगन के अवसर पर);–**पालिः**—**पाली** (स्त्री०) 1.

आलिंगन-तावद्गाढं वितर सकृदप्यङ्कपालीं प्रसीद-माल० ८।२; 2. दाई, नर्स; —पाशः अंकगणित में एक प्रकार की प्रक्रिया जिसमें १–२ आदि संख्याओं के अदल-बदल से एक विचित्र शृंखला सी बन जाती है; —भाज् (वि०) 1. गोद में बैठा हुआ या लिया हुआ जैसे कि एक बच्चा 2. सुगम, निकटस्थ, सुलभ—कि० ५।५२; —मुखं (या—आस्यम्) अङ्क का वह भाग जहाँ सब अङ्कों का विषय सूचित किया गया हो अङ्कमुख कहलाता है, इसी से बीज और फल का संकेत होता है—उदा० माल० १ में कामंदकी और अवलोकिता उस अंश का संकेत करती हैं जिसका अभिनय भूरिवसु और अन्य पात्रों को करना है। इसमें कथावस्तु का क्रम भी संक्षेप में बतला दिया जाता है; –विद्या संख्या-विज्ञान, अंकगणित।

अङ्कनं [अङ्क्+ल्युट्]1. चिह्न, प्रतीक 2. चिह्नित करने की क्रिया 3. चिह्न लगाने के साधन, मुहर लगाना आदि।

अङ्कतिः [अञ्च्+अति, कुत्वम्–अञ्चेः को वा–अञ्चतिः अङ्कतिर्वा] 1. हवा, 2. अग्नि 3. ब्रह्मा 4. वह ब्राह्मण जो अग्निहोत्र करता है।

अङ्कुटः [अङ्क्+उटच्] ताली, कुंजी।

अङ्कुरः [अङ्क्+उरच्] 1 अंखुवा, किसलय, कोंपल –दर्भाङ्कुरेण चरणः क्षतः—श० २।१०; समस्तपद के रूप में प्रायः इसका 'नुकीला' या 'तीक्ष्ण' अर्थ होता है–मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात्–भ० २।४ नुकीली दाढ़; (आलं०) कलम, संतान, प्रजा—अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण—श० ७।१९; 2. पानी 3. रुधिर 4. बाल 5. रसौली, सूजन।

अङ्कुरित (वि०) [अङ्कुर+इतच्] नवपल्लवित, उत्पन्न, °तं मनसिजेनेव—विक्रम० १।१२ मानों काम ने किसलय पैदा कर दिये हैं।

अङ्कुशः [अङ्क+उशच्] (लोहे का) काँटा या हांकने की छड़ी, (आलं०) नियंत्रक, संशोधक, प्रशासक, निदेशक, दबाव या रोक–निरङ्कुशाः कवयः; कवि नियंत्रण से मुक्त होते हैं या उन पर कोई बन्धन नहीं होता। सम०–ग्रहः पीलवान,–अन्वेतुकामोऽवमताङ्कुशग्रहः—शि० १२।१६; —दुर्धरः दुर्दान्त; —धारिन् (पु०) हाथीवान।

अङ्कुशित (वि०) [अङ्कुश+इतच्] अङ्कुश से हांका गया।

अङ्कुशिन् (वि०) [अङ्कुश+णिनि] अङ्कुश रखने वाला।

अङ्कूरः अंखुवा–दे० 'अङ्कुर'।

अङ्कूषः=दे० अङ्कुश।

अङ्कोटः-ठः-लः [अङ्क+ओट-ठ-ल] पिस्ते का वृक्ष।

अङ्कोलिका [अङ्क+उल+क+टाप् या अङ्क–पालिका का अपभ्रंश] आलिंगन।

अङ्क्य (वि०) [अङ्क्+ण्यत्] दागने योग्य, चिह्नित या अंकित करने योग्य; -क्यः एक प्रकार का ढोल या मृदंग।

अङ्ख् (चु० पर० अक० सेट्) [अङ्खयति-अङ्खित] 1. पेट के बल सरकना 2. चिपटना 3. रोकना।

अङ्ग् (भ्वा० पर० अक० सेट्) [अङ्गति, आनङ्ग, अङ्गितुम्, अङ्गित] जाना, चलना; (चु० पर०) 1. चलना, चक्कर काटना 2. चिह्न लगाना।

अङ्ग (अव्य०) [अङ्ग+अच्] संबोधक अव्यय, जिसका अर्थ है "अच्छा" 'अच्छा, श्रीमान्' 'निस्सन्देह' 'सच' 'हाँ' (जैसा कि 'अङ्गीकृ' में); –अङ्ग कच्चित्कुशली तातः —का० २२१; 'किम्' जोड़ कर इसका अर्थ होता है 'कितना कम' 'कितना अधिक'–तृणेन कार्यं भवतीश्वराणां किमङ्ग वाग्हस्तवता नरेण–पंच० १।७१। कोशकारों ने इसके निम्नांकित अर्थ बताये हैं– 'क्षिप्रे च पुनरर्थे च सङ्गमासूययोस्तथा। हर्षे संबोधने चैव ह्यङ्गशब्दः प्रयुज्यते।' "संस्कृत-रचना-छात्र निदेशिका' का § २४३ भी देखें। गं–1. शरीर 2. अंग या शरीर का अवयव–शेषाङ्गनिर्माणविधौ विधातुः–कुमा० १।३३; 3. (क) किसी संपूर्ण वस्तु का प्रभाग या विभाग, एक खण्ड या अंश, जैसे सप्ताङ्गं राज्यम्–चतुरङ्गं बलम्, अतः (ख) संपूरक या सहायक खण्ड, पूरक (ग) अवयव, सारभूत घटक –तदङ्गमग्र्यं मघवन् महाक्रतोः—रघु० ३।४६; (घ) विशेषणात्मक या गौणभाग, गौण, सहायक या आश्रित अंग (जो मुख्य वस्तु का सहायक है), (इसका विप० है 'प्रधान' या 'अङ्गिन्')–अङ्गी रौद्ररसस्तत्र सर्वेऽङ्गानि रसाः पुनः—सा० द० ५१७ (च) सहायक साधन या युक्ति 4. (व्याक०) शब्द का मूल रूप 5. (क) नाटकों में पांचों सन्धियों के उपभाग (ख) गौण लक्षणों से युक्त समस्त शरीर 6. छः की संख्या के लिए आलंकारिक कथन 7. मन; —गाः (पुं० ब० व०) एक देश का नाम, उस देश के वासी—यह प्रदेश बंगाल के वर्तमान भागलपुर के आस पास स्थित है। सम०—अङ्गि,–अङ्गीभवः शरीर के अंगों का संबंध, गौण अंगों का मुख्य अंग से संबंध या पोष्य अंग का पोषक अंग से संबंध (गौणमुख्यभावः, उपकार्योपकारकभावश्च); अविश्रान्तजुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वं तु संकरः—का० प्र० १०; (अनुग्राह्यानुग्राहकत्वम्) —अधीपः—अधीशः अंगों का स्वामी, कर्ण (तु० °राजः, °पतिः, °ईश्वरः, °अधीश्वरः), —ग्रहः ऐंठन; —ज,—जात (वि०) 1 शरीर पर उपजा हुआ, या शरीर में जन्मा हुआ, शारीरिक 2 सुन्दर, अलंकृत; —(जः)—जनुस् 1 पुत्र 2 शरीर के बाल (नपुं० भी), 3 प्रेम, काम, प्रेमावेश 4 शराबखोरी, मस्ती 5 एक रोग; —(जा) पुत्री; —(जं)

रुधिर; —द्वीप : छोटे छः द्वीपों में से एक; —न्यासः उपयुक्त मंत्रों के साथ हाथ से शरीर के अंगों को स्पर्श करना; —पालिः (स्त्री०) आलिंगन, —पालिका=दे०, अंकपालि —प्रत्यङ्गं छोटे वड़े सब अंग; —भूः 1 पुत्र 2 कामदेव; —भङ्गः 1 गात्रोपघात, लकवा—विकल इव भूत्वा स्थास्यामि—श० २; 2 अंगड़ाई लेना (जैसा कि सोकर उठते ही मनुष्य करता है) —मंत्र. एक मंत्र का नाम,—मर्दः 1 जो अपने स्वामी के शरीर पर मालिश करता है, 2 मालिश करने की क्रिया, इसी प्रकार °मर्दकः या °मर्दिन्, —मर्षः गठिया रोग; —यज्ञः,—यागः यज्ञ से संबद्ध गौण क्रिया,—रक्षकः शरीर रक्षक, व्यक्तिगत सेवक, पंच०,३—रक्षणं किसी व्यक्ति की रक्षा, —रक्षणी कवच, पोशाक — रागः 1 सुगन्धित लेप, शरीर पर सुगंधित उबटन का लेप, सुगन्धित उबटन, —रघु० १२।२७, ६।६० कुमा० ५।११, 2 लेपन क्रिया,—विकल (वि०) 1 अपाहज, लकवा मारा हुआ, 2 मूर्छित; —विकृतिः (स्त्री०) 1 शरीर में कोई विकार होना, अवसाद 2 मिरगी का दौरा, मिरगी —विकारः शारीरिक दोष,—विक्षेपः अंगों का हिलाना, शारीरिक चेष्टा;— विद्या 1 ज्ञान के साधनभूत व्याकरण आदि शास्त्र 2 अंगों की चेष्टा या चिन्हों को देखकर शुभाशुभ कहने की विद्या; बृहत्संहिता का ५१वां अध्याय जिसमें इस विद्या का पूर्ण विवरण निहित है —विधिः गौण या सहायक अधिनियम जो कि मुख्य नियम का सहकारी है; —वीरः मुख्य या प्रधान नायक,—वैकृतं 1 संकेत, इंगित या इशारा 2 सिर हिलाना, आँख झपकना, 3 परिवर्तित शारीरिक रूप; —संस्कारः, —संस्क्रिया शरीर को आभूषणों से सुशोभित करना, शारीरिक अलंकरण,—संहतिः (स्त्री०) अंगसमष्टि, अंगों का सामंजस्य, शरीर, देहशक्ति,—संगः शारीरिक संपर्क, मैथुन, संभोग; —सेवकः निजी नौकर,—हारः हाव भाव, नृत्य, —हारिः 1 हावभाव 2 रंग-भूमि; रंग-शाला; —हीन (वि०) 1 अपाहिज, विकलांग, 2 विकृत अंगवाला।

अङ्गकं [अङ्ग्+अच्, स्वार्थे कन्] 1. अङ्ग—अकतमधुरैरम्बानां मे कुतूहलमङ्गकैः—उत्त० ३।२०, २४. 2. शरीर—शि० ४।६६।

अङ्गणं=दे० अङ्गनम्।

अङ्गतिः [अङ्ग+अति] 1. सवारी, यान (स्त्री० भी), 2 अग्नि 3. ब्रह्मा 4. अग्निहोत्री ब्राह्मण।

अङ्गदं [अंगं दायति द्यति वा, दै—दो+क] आभूषण, कंकण जो कोहनी के ऊपर भुजा में पहना जाता है, बाजूबन्द,—तप्तचामीकराङ्गदः—विक्रम० १।१४; संघट्टयन्नङ्गदमङ्गदेन—रघु० ६।७३;—दः 1 किष्किंधा के वानरराज बालि का पुत्र; 2 ऊर्मिला से उत्पन्न लक्ष्मण का पुत्र—रघु० १५।९०, इसकी राजधानी का नाम अंगदीया था।

अङ्गनं-णं [अङ्ग्+ल्युट्] 1 टहलने का स्थान, आंगन, चौक, सहन, बगड़; गृह°, गगन° व्यापक अन्तरिक्ष; °भुवः केसरवृक्षस्य—माल० १; 2 सवारी 3 जाना, चलना आदि।

अङ्गना [प्रशस्तम् अङ्गम् अस्ति यस्याः—अङ्ग+न+टाप्] 1 स्त्रीमात्र, नृप°, गज°, हरिण° इत्यादि; 2 सुन्दर स्त्री 3 (ज्यो०) कन्या राशि। सम०—जनः 1 स्त्री जाति 2 स्त्रियां; —प्रिय (वि०) स्त्रियों का प्रिय, —प्रियः अशोकवृक्ष।

अङ्गस् (पुं०) [अञ्ज्+असुन् कुत्वम्] पक्षी।

अङ्गारः-रं [अङ्ग्+आरन्] 1 कोयला (जलता हुआ या बुझा हुआ, ठंडा);—उष्णो दहति चाङ्गारःशीतः कृष्णायते करम्—हि० १।८०;—त्वया स्वहस्तेनाङ्गाराः कर्षिताः —पंच० १ तुमने स्वयं अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारी, तु० 'अपने लिए स्वयं खाई खोदना' 2 मंगल ग्रह,—रं लाल रंग। सम०—धानिका अंगीठी, कांगड़ी, —पात्री, —शकटी अंगीठी, कांगड़ी; —वल्लरी —वल्ली नाना प्रकार के पौधों का नाम विशेषतः 'गुंजा' घुंघची।

अङ्गारकः-कं [अङ्गार+स्वार्थे कन्] 1 कोयला 2 मंगल ग्रह —°विरुद्धस्य प्रक्षीणस्य बृहस्पतेः—मृच्छ० ९।३३; —°चारः मंगल ग्रह का मार्ग 3 मंगलवार (°दिनं, °वासरः),—कं एक छोटी चिनगारी। सम०—मणिः मूंगा।

अङ्गारकित (वि०) [अङ्गारक+इतच्] झुलसा हुआ, भुना हुआ।

अङ्गारिः (स्त्री०) [अंगार-मत्वर्थे ठन्-पृषो० कलोपः] कांगड़ी, अंगीठी।

अङ्गारिका [अंगार-मत्वर्थे ठन्-कप् च] 1 कांगड़ी 2 गन्ने की पोरी 3 किंशुक वृक्ष की कली।

अङ्गारिणी [अंगार+इन्+ङीप्] 1 छोटी अंगीठी, 2 लता।

अङ्गारित (वि०) [अङ्गार+इतच्] झुलसा हुआ, भुना हुआ, अधजला —तः-तं पलाश वृक्ष की कली,—ता 1 =दे० अङ्गारधानी 2 कली 3 लता।

अङ्गारीय (वि०) [अङ्गार+छ] कोयला तैयार करने की सामग्री।

अङ्गिका [अङ्ग+क+टाप्] चोली, अंगिया।

अङ्गिन् (वि०) [अङ्ग+इन्] 1 शारीरिक, देहधारी,—धर्मार्थकाममोक्षाणामवतार इवाङ्गवान्—रघु० १०।८४, ३८; 2 गौण अंगों वाला, मुख्य, प्रधान—ये रसस्यांगिनो धर्माः, एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा—सा० द०।

अङ्गिरः, अङ्गिरस् (पुं०) [अङ्ग+अस्+इरुट्] ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का द्रष्टा एक प्रसिद्ध ऋषि; - -(ब० व०) अंगिरा ऋषि की सन्तान।

अङ्गीकरणम्, अङ्गीकारः, अङ्गीकृतिः (स्त्री०) [अङ्ग+च्वि+कृ+ल्युट्,—कृ+घञ्, कृ+क्तिन्] 1. स्वीकृति 2. सहमति, प्रतिज्ञा, जिम्मेदारी आदि।

अङ्गीय (वि०) [अङ्ग+छ] शरीर संबन्धी।

अङ्गुः [अङ्ग्+उन्] हाथ।

अङ्गुरिः-री=दे० अंगुलि।

अङ्गुलः [अङ्ग्+उलच्] 1. अंगुली 2. अंगूठा (नपुं० भी), 3. अंगुल भर की नाप (नपुं० भी) जो ८ जौ के बराबर होती है, १२ अंगुलियों की एक 'वितस्ति' या बालिस्त और २४ अंगुलियों का एक 'हाथ' का नाप होता है।

अङ्गुलिः-ली, अङ्गुरिः-री(स्त्री०) [अंग्+उलि] 1. अंगुली (पांचों अंगुलियों के नाम—अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा या कनिष्ठिका हैं)—पैरका पंजा-पांव की अंगुली कहलाती हैं 2. अंगूठा, पैर का अंगूठा 3. हाथी की सूंड की नोक 4.'अंगुल'नाप विशेष। सम०—तोरणं मस्तक पर चन्दन का अर्ध चन्द्राकार तिलक;—त्रं-त्राणं अंगूठे की रक्षा के निमित्त बना एक प्रकार का दस्ताना जिसे धनुर्धर पहनते हैं;—मुद्रा, -मुद्रिका मोहर लगाने की अंगूठी,—मोटनं,—स्फोटनं चुटकी बजाना, अंगुली चटकाना;—संज्ञा अंगुलियों से संकेत—मुखार्पितैकाङ्गुलिसंज्ञयैव-कुमा० ३।४१;—संदेशः अंगुलियों के इशारे से संकेत करना;—संभूतः नाखून।

अङ्गुलिका=अंगुलिः।

अङ्गुली-(री) यं,-कं-यकं [अंगुरि (लि)+छ—स्वार्थे कन्] अंगूठी—तव सुचरितमङ्गुलीयं नूनं प्रतनु ममेव-श० ६।१०;—(पुं०भी)-काकुत्स्थस्याङ्गुलीयकः भट्टि० ८।११८।

अङ्गुष्ठः [अंगु+स्था+क] 1. अंगूठा, पैर का अंगूठा 2. 'अंगूठा भर' नाप विशेष जो अंगुल के समान होती है। सम०—मात्र (वि०) अंगूठे की लम्बाई के बराबर °त्रं पुरुषं निश्चकर्ष बलाद्यमः-महा०।

अङ्गुष्ठ्यः [अङ्गुष्ठे भवः—यत्] अंगूठे का नाखून।

अङ्गुषः [अङ्ग्+ऊषन्] 1. नेवला 2. तीर।

अङ्घ् (भ्वा० आ० अक० सेट्) [अङ्घते-अङ्घित] 1. जाना. 2. आरंभ करना 3. शीघ्रता करना 4. धमकाना।

अङ्घस् (न०) [अङ्घ्+असुन्] पाप-वेणी० १।१२, (पाठांतर)

अंघ्रिः-अंह्रिः—[अङ्घ्+क्रिन्] 1. पैर 2. वृक्ष की जड़ 3. श्लोक का चौथा चरण। सम०—पः वृक्ष—दिक्षु व्यूढाङ्घ्रिपाङ्गः-वेणी० २।१८,—पान (वि०) बच्चे की भांति अपने पैर का अंगूठा चूसने वाला—स्कन्धः टखना।

अच् (भ्वा० उभ० इदित् अक० वेट्) [अचति—ते, अञ्चति, आनञ्च, अञ्चित,—अक्त] 1 जाना, हिलना; 2 सम्मान करना, प्रार्थना करना आदि; दे० 'अञ्च्' से संबद्ध —च् (पुं०) [व्या०] स्वरों के लिए प्रयुक्त शब्द।

अचक्षुस् (वि०) [न० ब०] नेत्रहीन, अंधा; °विषय (वि०) अदृश्य, (नपुं०) [न० त०] खराब आँख, रोगी आँख।

अचण्ड (वि०) [न० त०] जो क्रोधी स्वभाव का न हो, शान्त, सौम्य।

अचतुर (वि०) [न० ब०] 1 'चार' की संख्या से रहित 2 [न० त०] अनाड़ी।

अचर (वि०) [न० त०] स्थिर—चराचरं विश्वं—कुमा० २।५;—चराणामन्नमचराः—मनु० ५।२९।

अचल (वि०) [न० त०] दृढ़, स्थिर, निश्चित, स्थायी—चित्रन्यस्तमिवाचलं चामरम्—विक्रम० १।४,—लः 1 पहाड़, (कहीं २) चट्टान 2 कावला या कील 3 सात की संख्या, —ला पृथ्वी,—लं ब्रह्म। सम०—कन्यका, —तनया, —दुहिता, —सुता हिमालय पर्वत की पुत्री 'पार्वती' —कीला पृथ्वी;—ज, —जात (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न, —जा, —जाता पार्वती;—त्विष् (पुं०) कोयल,—द्विष् (पुं०) पर्वतों का शत्रु, इन्द्र का विशेषण जिसने पहाड़ों के पंख काट दिये थे।

अचापल—ल्य (वि०) [न० न०] चंचलतारहित, स्थिर, लं-ल्यं—[न० त०] स्थिरता।

अचित् (वि०) वै० [नञ्+चित्+क्विप् न० त०] 1 समझदारी से रहित, 2 धर्मशून्य 3 जड़।

अचित (वि०) वै० [न चित—इति न० त०] 1 गया हुआ 2 अविचारित 3 एकत्र न किया हुआ।

अचित्त (वि०) [न० ब०] 1. अकल्पनीय 2. बुद्धिरहित, अज्ञान, मूर्ख 3. न सोचा हुआ।

अचिन्तनीय-अचिन्त्य (वि०) [नञ्+चिन्त्+अनीयर्, चिंत्+यत्] जो सोचा भी न जा सके, समझ से परे, —°यस्तु तव प्रभावः-रघु० ५।३३,—न्त्यः शिव।

अचिन्तित (वि०) [न० त०] अप्रत्याशित, आकस्मिक, पंच० २।३।

अचिर (वि०) [न० त०] 1. संक्षिप्त, क्षणिक, क्षणस्थायी, दे० °द्युति, °भास्, °प्रभा आदि 2. नया-रघु० ८।२०; समस्त पदों में 'अचिर' का अर्थ है—हाल में, अभी, कुछ ही पहले-प्रवृत्तं ग्रीष्मसमयमधिकृत्य-श० १; अभी अभी, °प्रसूता-.।० ४-अभी २ जिसने बच्चे को पैदा किया है (यह एक हरिणी के विषय में कहा गया है जो प्रसवोपरान्त चल बसी है)-अथवा गाय जिसने

बछड़े को जन्म दिया है –रं [क्रि० वि०] [अचिरेण, अचिराय, अचिरात् और अचिरस्य भी इसी अर्थ के द्योतक हैं] 1. बहुत देर नहीं हुई, अभी कुछ पहले 2. हाल ही में, अभी, 3. शीघ्र, जल्दी, बहुत देर न करके। सम०– अंशु,– आभा,– द्युति,– प्रभा, – भास्,– रोचिस् (स्त्री०) बिजली–°शुविलासचंचला लक्ष्मीः– कि० २।१९, °भासां तेजसा चानुलिप्तैः–श० ७।७।

अचेतन (वि०) [न० ब०] 1 निर्जीव, अबोध,–चेतन °नेषु– मेघ० ५; 2. बोधरहित, अज्ञानी।

अच्छ (वि०) [नञ् + छो + क] स्वच्छ, निर्मल, पारदर्शक, विशुद्ध–मुक्ताच्छदन्तच्छविदन्तुरेयम्–उत्त० ६।२७, मेघ० ५१;–कि रत्नमच्छा मतिः–भामि० १।१६; –च्छः 1. स्फटिक 2. भालू–तु० °भल्ल भी। सम०– उदन् [अच्छोद] (वि०) स्वच्छ जल वाला –दं कादम्बरी में वर्णित हिमालय पर्वत पर स्थित एक झील,–भल्लः रीछ।

अच्छ-च्छा (अव्य०) वै०–की ओर, (कर्म कारक के साथ) की तरफ।

अच्छन्दस् (वि०) [न० ब०] 1. उपनीत न होने के कारण या शूद्र होने के कारण वेद को न पढ़ने वाला, 2. छंदरहित रचना।

अच्छावाकः [अच्छ + वच् + घञ्] सोमयाग का ऋत्विक् जो होता का सहायक होता है।

अच्छिद्र (वि०) [न० ब०] छिद्ररहित, अक्षत, निर्दोष, दोषरहित–जपच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं श्राद्धकर्मणि, सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः;–द्रं [न० त०] निर्दोष कार्य या दशा, दोष का अभाव, °द्रेण, बिना रुके, आदि से अन्त तक।

अच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1. अटूट, लगातार चलने वाला, अनवरत 2. जो कटा न हो, अविभक्त, अक्षत, अखंड्य।

अच्छोटनम् [नञ्–छुट् + णिच् + ल्युट्] आखेट, शिकार।

अच्युत (वि०) [न० त०] 1 अपने स्वरूप से न गिरा हुआ, दृढ़, स्थिर, निर्विकार, अचल 2. अनश्वर, स्थायी, –तः विष्णु, सर्वशक्तिमान् प्रभु,—गच्छाम्यच्युतदर्शनेन–काव्य० ५ (यहां अ° का भी अर्थ है–दृढ़, जो वासनाओं का शिकार न हो)। सम०–अग्रजः बलराम या इन्द्र,–अंगजः,–आत्मजः,–पुत्रः कामदेव, कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र,–आवासः,–वासः पीपल का वृक्ष।

अज् (भ्वा० पर० अक० सेट्०–आर्धधातुक लकारों में विकल्प से 'वी' आदेश होता है) [अजति, आजीत्, अजितुम्, अजित–वीत] 1. जाना 2. हांकना, नेतृत्व करना 3. फेंकना (उपसर्गों के साथ इस धातु का प्रयोग केवल वेद में ही पाया जाता है)।

अज (वि०) [न० त०–न जायते नञ्–जन् + ड] अजन्मा, अनादि,–अजस्य गृह्णतो जन्म–रघु० १०।२४;–जः 1. 'अज' सर्वशक्तिमान् प्रभु का विशेषण, विष्णु, शिव,ब्रह्मा 2. आत्मा, जीव 3. मेंढा, बकरा 4. मेषराशि 5. अन्न का एक प्रकार 6. चन्द्रमा, कामदेव। सम० –अवनी (स्त्री) कटीली काकमाची, घमासा,–अविकं छोटा पशु,–अश्वं बकरे और घोड़े,–एडकं बकरे और मेंढे,–गरः अजगर नामक भारी सांप जो, कहते हैं बकरियों को निगल जाता है;–(री) एक पौधे का नाम–गल दे० नी० 'अजागल';–जीवः,–जीविकः गडरिया, इसी प्रकार–°पः,–°पालः;–°मारः 1. कसाई, 2. एकप्रदेश का नाम (वर्तमान अजमेर),–मीढः 1. अजमेर नामक स्थान का नाम, 2. युधिष्ठिर की उपाधि,–मोदा,–मोदिका अजमोद–एक औषध का नाम जिसे मराठी में 'ओंवा' कहते हैं,–शृंगी 'मेंढासिंगी' पौधे का नाम।

अजकवः–वं [अजं विष्णुं कं ब्रह्माणं वातीति–वा + क] शिव का धनुष।

अजका-अजिका [स्वार्थे कन् + टाप्] छोटी बकरी, बकरी का बच्चा।

अजकावः–वं [अजं विष्णुं कं ब्रह्माणम् अवति इति अव् + अण्] शिव का धनुष, पिनाक।

अजगवं [अजगो विष्णुस्तं वातीति–वा + क] शिव का धनुष, पिनाक।

अजगावः [अजगो विष्णुस्तमवतीति–अव् + अण्] शिव का धनुष, पिनाक।

अजड (वि०) [न० ब०] जो जड न हो, समझदार।

अजन (वि०) [न० ब०] जनशून्य, बियाबान।

अजनिः (स्त्री०) [अज् + अनि) पथ, मार्ग।

अजन्मन् (वि०) अनुत्पन्न, 'अजन्मा' प्रभु का विशेषण, (पुं०) परमानन्द, छुटकारा, अपमुक्ति।

अजन्य (वि०) [न० त०] उत्पन्न होने के अयोग्य, मानव-जाति के प्रतिकूल,—न्यं अपशकुनसूचक अशुभ घटना जैसे कि भूचाल।

अजपः [न० ब०] वह ब्राह्मण जो सन्ध्योपासना उचित रूप से नहीं करता है।

अजंभ (वि०) [न० ब०] दांत रहित,–भः 1. मेंढक, 2. सूर्य 3. बच्चे की वह अवस्था जब उसके दांत नहीं निकले हैं।

अजय (वि०) [न० ब०] जो जीता न जा सके, जो हराया न जा सके, नाय;–यः हार, पराजय,–या भांग।

अजय्य (वि०) [नञ् + जि + यत् न० त०] जो जीता न जा सके, श० ६।२९, रघु० १८।८।

अजर वि० [न० त०] 1. जिसे कभी बुढ़ापा न आवे, सदा

जवान 2. जो कभी न मुर्झावे, अनश्वर;—पुराणमजरं विदुः—रघु० १०।१९—रः देवता,—रं परमात्मा।

अजर्यं [नञ्+जृ+यत् न० त०] (अभिहित या अध्याहृत 'संगतं' के साथ) मित्रता—मृगैरजर्यं जरसोपदिष्टम्—रघु० १८।७।

अजस्र (वि०) [नञ्+जस्+र न० त०] अविछिन्न, अनवरत, लगातार रहने वाला;—°दीक्षाप्रयतस्य—रघु० ३।४४;—स्रं (अव्य०) सदा, अनवरत, लगातार—तच्च धूनोत्यजस्रम्—उत्त० ४।२६।

अजहत्स्वार्था [न जहत् स्वार्थोऽत्र—हा+शतृ न० ब०] लक्षणा शक्ति का एक भेद जिसमें मुख्यार्थ पद-शून्यता के कारण नष्ट नहीं होता; जैसे कुंताः प्रविशंति=कुंत धारिणः पुरुषाः, इसे उपादान लक्षणा भी कहते हैं।

अजहल्लिगं [न जहत् लिङ्गं यत्, हा+शतृ न० ब०] संज्ञा शब्द जिसका लिंग नहीं बदलता चाहे वह विशेषण की भांति ही क्यों न प्रयुक्त किया जाय—उदा०—वेदः (अथवा) श्रुतिः प्रमाणम् (प्रमाणः अथवा प्रमाणा नहीं)।

अजा (स्त्री०) [नञ्+जन्+ड+टाप्] 1 (सांख्य दर्शन के मतानुसार) प्रकृति या माया; 2 बकरी। सम०—गलस्तनः बकरियों के गल में लटकने वाला थन; (आलं०) किसी वस्तु की निरर्थकता सूचित करने में इसका उपयोग होता है। धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते। °स्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम्॥—जीवः—पालकः गडरिया, दे० अजजीव आदि।

अजाजिः—जी (स्त्री०) [अजेन आजः त्यागः यस्याम्—अज+आज+इन्] सफेद या काला जीरा।

अजात (वि०) [न० त०] अनुत्पन्न—अजातमृतमूर्खेभ्यो मृताजातौ सुतौ वरम्—पंच० ९, जो अभी उत्पन्न न हुआ हो, पैदा न किया गया हो, अविकसित हो; °ककुद्, °पक्ष इत्यादि। सम०—अरि, —शत्रु (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो, जो किसी का शत्रु न हो; (—रिः—त्रुः) 'युधिष्ठिर' की उपाधियाँ—हंतु जातमजातारेः प्रथमेन त्वयारिणा—शिशु० २।१०२; न द्वेक्षि यज्जनमतस्त्वमजातशत्रुः—वेणी० ३।१२; शिव तथा दूसरे अनेक देवताओं की उपाधि;—ककुत् —द् (पुं०) थोड़ी उम्र का बैल जिसका कुब्ब अभी न निकला हो;—व्यंजन (वि०) जिसके दाढ़ी आदि अभिज्ञान चिह्न न हों;—व्यवहारः अवयस्क, नाबालिग जिसको अभी तक वयस्कता न मिली हो।

अजानिः [नास्ति जाया यस्य—जायाया निङादेशः—न० ब०] जिसके स्त्री न हो, पत्नीहीन, विधुर।

अजानिकः [अजेन आनो जीवनं यस्य—ठन्] गडरिया, बकरियों का व्यापारी।

अजानेय (वि०) [अजेऽपि आनेयः—यथास्थानं प्रापणीयः—इति अज्+अप—आ+नी+यत्] उत्तम कुल का, निर्भय (जैसे घोड़ा)।

अजित (वि०) [नञ्+जि+क्त] 1. जो जीता न जा सके, अजेय, दुर्धर °तं पुण्यं······ महः—उत्त० ५।२७ 2. न जीता हुआ (देश आदि) अनियन्त्रित, अनिरुद्ध; °आत्मन्, °इन्द्रिय=जिसने अपने मन या इन्द्रियों का दमन नहीं किया है;—तः विष्णु, शिव, या बुद्ध।

अजिनं [अज्+इनच्] बाघ, सिंह या हाथी आदि, विशेषकर काले हिरन की रोएँदार खाल जिसके आसन बनते हैं या जो पहनने के काम आती है—अथाजिनाषाढधरः—कुमा०५।३०, ६७; कि० ११।१५. 2. चमड़े का थैला या धौंकनी। सम०—पत्रा,—पत्री,—पत्रिका चमगादड़,—योनिः हरिण, कृष्णसार मृग—वासिन् (वि०) मृगचर्म पहनने वाला,—संधः मृगचर्म का व्यवसाय करने वाला।

अजिर (वि०) [अज्+किरन्] शीघ्रगामी, स्फूर्तिवान्;—रं 1. आंगन, अहाता, अखाड़ा; उटजाजिरप्रकीर्ण—का० ३९; 2. शरीर 3. इन्द्रियगम्य पदार्थ 4. वायु, हवा 5. मेंढक,—रा 1. एक नदी का नाम 2. दुर्गा का नाम।

अजिह्म (वि०) [न० त०] 1. सीधा 2. सच्चा, खरा, ईमानदार;—°गामिभिः—शि० १।६३, बेलाग और खरा;—ह्मः मेंढक। सम०—ग (वि०) सीधा चलने वाला,—ब्रजेद्दिशमजिह्मगः—मनु० ६।३१—गः तीर।

अजिह्वः [न० ब०] मेंढक।

अजीकवं [अज्या शरक्षेपणेन कं ब्रह्माणं वाति प्रीणाति वा+क] शिव का धनुष।

अजीगर्तः [अज्यै गमनाय गर्तं यस्य—ब० स०] साँप।

अजीर्ण (वि०) [न० त०] न पचा हुआ, न सड़ा हुआ,—र्णं अपच।

अजीर्णिः (स्त्री०) [नञ्+जृ+क्तिन्] 1 मन्दाग्नि—कैर-जीर्णभयाद् भ्रातर्भोजनं परिहीयते—हि० २।५७ 2. बल, शक्ति, क्षय का अभाव।

अजीव (वि०) [न० ब०] निर्जीव, जीव रहित;—वः [न० त०] सत्ता का अभाव, मृत्यु।

अजीवनिः (स्त्री०) [नञ्+जीव्+अनि] मृत्यु, सत्ता का अभाव (अभिशाप के रूप में प्रयुक्त)—अजीवनिस्ते शठ भूयात्—सिद्धा०—अरे दुष्ट! भगवान् तुम्हें मृत्यु दे, भगवान् करे, तुम मर जाओ।

अज्झलं 1. ढाल 2. जलता हुआ कोयला।

अज्ञ (वि०) [नञ्+ज्ञा+क न० त०] 1. न जानने वाला, ज्ञान रहित, अनुभवहीन—अज्ञो भवति वै बालः—मनु० २।१५२ 2. अज्ञानी, अनसमझ, मूर्ख, मूढ, जड़ (मनुष्यों और पशुओं के विषय में भी कहा जाता है)—अज्ञः

सुखमाराध्यः--भर्तृ० २० 3. अजान, समझ की शक्ति से हीन।

अज्ञात (वि०) [न० त०] न जाना हुआ, अप्रत्याशित, अनजान-°पातं सलिले ममज्ज-रघु० १६।७२। सम० -**चर्या,-वासः** छिप कर रहना (पाण्डवों के विषय में-'अज्ञातवास' प्रसिद्ध है)।

अज्ञान (वि०) [न० ब०] अनजान, बेसमझ,-**नं** [न० त०] 1. अनजानपना, 2. विशेष करके आध्यात्मिक अज्ञान-अर्थात् अविद्या जिसके वशीभूत हो कर मनुष्य अपने आप को ब्रह्म से पृथक् समझता है तथा भौतिक संसार की वास्तविकता को मानता है। समस्तपदों में 'अज्ञान' का अनुवाद 'अनजाने में' 'अनवधानता में' 'बेखबरी में' किया जा सकता है। °आचरित, °उच्चारित इत्यादि।

अञ्च् (भ्वा० उभ० सक० वेट्) [अञ्चति-ते, आनञ्च, अञ्चितुं, अञ्च्यात्--अंच्यात्, अक्त--अञ्चित] 1. झुकाना; शिरोऽञ्चित्वा--भट्टि० ९।४० 2. जाना, हिलना, झुकाव होना--स्वतन्त्रा कथमञ्चसि-भट्टि० ४।२२, त्वं चेदञ्चसि लोभम्-भामि० १।४६ लालायित होना 3. पूजा करना, सम्मान करना, आदर करना, सुशोभित करना, सम्मानित करना दे० आगे 'अञ्चित' 4. प्रार्थना-करना, इच्छा करना, 5. बुड़बुड़ाना, अस्पष्ट बोलना। प्रेर० या चु० उभ०-प्रकट करना, प्रकाशित करना,-मुदमञ्चय-गीत० १०। उपसर्गों के साथ प्रयोग, अप्-दूर करना, हटाना, हटजाना; आ--झुकाना; उत्-1. ऊपर उठना 2. उन्नत होना, प्रकट होना; उदञ्चनमात्मयं-गं० ल० ६, उप्-खींचना, (जल) ऊपर निकालना; नि-1. झुकाना, इच्छा करना 2. कम करना, अपेक्षा करना-न्यञ्चति वयसि प्रथमे-भामि० २।४७ परा-मोड़ना, मुड़ना-यातादचेन्न पराञ्चन्ति द्विरदानां रदा इव-भामि० १।६५; परि-घुमाना, भंवर में डालना, मरोड़ना; वि-खींचना, नीचे को झुकना, फैलना, फैलाना; सम्-भीड़ करना, इकट्ठे हांकना, इकट्ठे झुकना।

अञ्चलः-लं [अञ्च्+अलच्] 1 वस्त्र का छोर या किनारा, गोट या झालर--क्षौणाञ्चलमिव पीनस्तनजघनायाः--उद्भट, 2. कोना या आँख का बाहरी कोण-दृगञ्चलैः पश्यति केवलं मनाक्-उद्भट।

अञ्चित (भू० क० कृ०) [अंच्+क्त] 1 (क) मुड़ा हुआ, झुका हुआ, रघु० १८।५८; (ख) धनुषाकार, सुन्दर (जैसे कि भौहें); ०अक्षिपक्ष्मन् रघु० ५।७६; छल्लेदार, घुंघराले (जैसे कि बाल); 2. सम्मानित, अलंकृत, सुशोभित, शोभायमान, सुन्दर; गतेषु लीलाञ्चितविक्रमेषु-कु० १।३४, °ताभ्यां गताभ्याम्-रघु २।१८, ९।२४, 3. सिला हुआ, बुना हुआ, व्यवस्थित-अर्धाञ्चिता सत्वरमुत्थितायाः (रशना)-रघु० ७।१०, अर्धगुंफित या पिरोया हुआ। सम०-**भ्रूः** धनुषाकार या सुन्दर भौंओं वाली स्त्री।

अञ्ज् (रुधा० पर० सक० अनिट्) [कहीं कहीं--आत्मनेपद] अनक्ति-अंक्ते, अक्त) 1. लेपना, सानना, रंग पोतना 2. स्पष्ट करना, प्रस्तुत करना, चित्रण करना 3. जाना 4. चमकना 5. सम्मानित करना, समारंभ करना 6. सजाना; प्रेर०-1 सानना, 2 बोलना, चमकना उपसर्गों के साथ, अधि--उपकरण जुटाना, सुसज्जित करना; अभि-1. लीपना, सानना 2. कलुषित करना, मलिन करना, अभिवि- प्रकट करना, व्यक्त करना; आ- 1. लेप करना 2. सरल बनाना, तैयार करना, 3. सम्मानित करना, वि-प्रकट करना, व्यक्त करना, जाहिर करना-अकिञ्चनत्वं मखजं व्यनक्ति-रघु० ५।१६, शि० २६।

अञ्जनः [अञ्ज्+ल्युट्] (पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम दिशा के) रक्षक हाथी,-**नं** 1. लीपना पोतना, मिलाना 2. प्रकट करना, व्यक्त करना 3. काजल या सुरमा जो आंखों में लगाया जाता है;-विलोचनं दक्षिणमञ्जनेन सम्भाव्य-रघु० ७।८, असृत° उत्त० ४।१९, मृच्छ० १।३४; (आलं० भी) अज्ञानान्धस्य लोकस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै पाणिनये नमः॥ शिक्षा० ४५,(तु०)दारिद्र्यं परमांजनम् 4. लेप,सौंदर्यवर्धक उबटन 5. मसी 6. आग 7. रात्रि 8. (-नं, -ना) (सा० शा०) व्यंग्यार्थ, व्यंग्यार्थ के प्रकट होने की प्रक्रिया, अनेकार्थक शब्द का प्रयोग जिसका प्रसंगतः विशेष अर्थ होता है-अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते। संयोगाद्यैरवाच्यार्थधीकृद्व्यापृतिरञ्जनम्॥ काव्य २, दे० 'व्यंजना' भी। सम०-**अंभस्** (नपुं०) आँख का पानी,-**शलाका** सुरमा लगाने की सलाई।

अञ्जना (अञ्ज्+ल्युट्+टाप्) 1. उत्तर भारत की हथिनी 2. हनुमान् या मारुति की माता।

अञ्जलिः [अञ्ज्+अलि] 1 दोनों खुले हाथों को मिलाकर बनाया हुआ कटोरा, करसंपुट, अंजलिभर वस्तु-सुपूरो मूषिकाञ्जलिः- पंच० १।२५, प्रकीर्णः पुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलिरयम्-वेणी० १।१, अंजलिभर फूल; इसी प्रकार-जलस्यांजलयो दश--या० ३।१०५, दस अंजलियां अर्थात् जल से तर्पण; -श्रवणाञ्जलिपुटपेयम्-वेणी० १।४; अंजलिं रच्,-बंध्,-कृ या -आधा, हाथ जोड़कर नमस्कार करना 2. अत एव सम्मान या नमस्कार का चिह्न, रघु० ११।७८; 3. अनाज की माप=कुडव। सम०-**कर्मन्** (नपुं०) हाथ जोड़ना, आदरयुत नमस्कार;-**कारिका** मिट्टी की गुड़िया,-**पुटः-टं** दोनों खुले हाथों को जोड़ने से बने कटोरे के आकार का गर्त, हाथ की खुली हथेलियां।

अञ्जलिका [अञ्जलिरिव कायते प्रकाशते–कै+क+टाप्] एक छोटा चूहा।

अञ्जस (वि०) [स्त्रियाम्–अञ्जसी, अञ्ज्+असच्] अकुटिल, सीधा, ईमानदार, खरा।

अञ्जसा (अव्य०) 1. सीधी तरह से 2. यथावत्, उचित रूप से, ठीक तरह से–विघहे शठ पलायनच्छलान्यञ्जसा–रघु० १९।३१ 3. शीघ्र, जल्दी, तुरन्त।

अञ्जिष्ठः–ष्णुः [अंज्+इष्ठच्, इष्णुच् वा] सूर्य।

अञ्जीरः–रं [अञ्ज्+ईरन्] अंजीर वृक्ष की जातियाँ और उसके फल।

अट् (भ्वा० पर० अक० सेट्, आ० विरल) [अटति, अटित] इधर उधर घूमना (अधि० के साथ); (कई बार कर्म० के साथ), भो बटो भिक्षामट–सिद्धा० 'भिक्षा मांगने आओ'– आट नैकटिकाश्रमान्–भट्टि० ४।१२; (यङन्त) अटाट्यते, स्वभावतः इधर उधर घूमना जैसे कि कोई साधु संत घूमता है।

अट (वि०) [अट्+अङ्] घूमने वाला; (समास-प्रयोग)।

अटनं [अट्+ल्युट्] घूमना, भ्रमण करना—भिक्षा°, रात्रि° आदि।

अटनिः–नी (स्त्री०) [अट्+अनि, ङीप् वा] धनुष का खांचेदार सिरा, निन्यतुः स्थलनिवेशिताटनी लीलयैव धनुषी अधिज्यताम्–रघु० ११।१४।

अटा [अट्+अङ+टाप्] साधु संतों की भांति इधर उधर घूमने की आदत, इसी प्रकार अट्या, अटाट्या।

अटरू (रू) षः [अट+रुष्+क] अडूसा, वासक का पौधा।

अटविः–वी (स्त्री०) [अट्+अवि ङीप् वा] बन, जंगल –आहिंड्यते अटव्या अटवीम्–श० २।

अटविकः [अटवि—ठन्] बन में काम करने वाला, दे० 'आटविकः'।

अट्ट् (भ्वा० आ०) 1. वध करना 2. अतिक्रमण करना, परे जाना (आलं० रूप से भी); –प्रेर०–1. घटाना, कम करना 2. घृणा करना, तिरस्कृत करना।

अट्ट (वि०) [अट्ट्+अच्] 1. ऊंचा, उच्चस्वरयुक्त 2. बार-बार होनेवाला, लगातार आने वाला 3. शुष्क, सूखा –ट्टः [अट्ट्+घञ्] 1. अटारी 2. कंगूरा, मीनार, बुर्ज–नरेन्द्रमार्गाट्ट इव–रघु० ६।६७ 3. हाट, मंडी 4. महल, विशाल भवन,–ट्टं भोजन, भात, अट्टशूला जनपदाः–महा० (अट्टम् अन्नम् शूलं विक्रेयं येषां ते–नीलकंठ)। सम०–अट्टहासः ठहाका,–हासः–हसितं, –हास्यं जोर की हंसी या ठहाका, शिव का अट्टहास –त्र्यंबकस्य–मेघ० ५८; –हासिन् (पुं०) 1.शिव, 2. ठहाका लगाकर हंसने वाला।

अट्टकः [अट्ट्+अच् स्वार्थे कन्+टाप्] चौबारा, महल।

अट्टालः–अट्टालकः [अट्ट इव अलति–अल्+अच् स्वार्थे कन्] अटारी, बालाखाना, चौबारा, महल।

अट्टालिका [अट्टाल्+स्वार्थे कन्] महल, उत्तुंग भवन। सम०–कारः राज, चिनाई करने वाला, (राजमहलों का निर्माता)।

अड्डनं [अड्ड्+ल्युट्] ढाल।

अण् (भ्वा० पर०) 1. शब्द करना 2. (दिवा० आ०) सांस लेना, जीना ('अन्' के स्थान पर)।

अण (न) क (वि०) [अण्—अच् कुत्सायां कप् च] बहुत छोटा, तुच्छ, नगण्य, अधम इत्यादि, समास में–'ह्रास' और 'हीनावस्था' अर्थ को प्रकट करता है, °कुलालः–सिद्धा० हेय कुम्हार।

अणिः (स्त्री०–अणी) [अण्+इन् ङीप् वा] 1. सूई की नोक 2. धुरे की कील, कील या काबला जो गाड़ी के बांक को रोकने के लिए लगाया जाय 3. सीमा।

अणिमन् (पुं०) अणुता, अणुत्वं [अणु+इमनिच्, अणु+ता, अणु+त्व] 1. सूक्ष्मता, 2. आणव प्रकृति 3. आठ सिद्धियों में से एक दैवीशक्ति जिसके बल से मनुष्य 'अणु' जैसा छोटा बन सकता है।

अणु (वि०) (स्त्री०–णु–ण्वी) [अण्+उन्] सूक्ष्म, बारीक, नन्हा, लघु, परमाणु-संबंधी–अणोरणीयान्–भग० ८।९; –णुः 1. अणु=अणुं पर्वतीकृत–भर्तृ० 2. ७८, बढ़ा देना–तु० "तिल का ताड़" से 2. समय का अंश 3. शिव का नाम। सम०–भा बिजली,–रेणु आणव धूल,–वादः अणु-सिद्धान्त, अणुवाद।

अणुक (वि०) [स्वार्थे कन्] 1. अतितुच्छ, अत्यन्तह्रस्व, 2. सूक्ष्म, अत्यंत बारीक 3. तीक्ष्ण।

अणीयस्, अणिष्ठ (वि०) (अणु+ईयसुन, अणु+इष्ठन्] तुच्छतर, तुच्छतम, अत्यंत तुच्छ; अणोरणीयांसम्–भग० ८।९।

अण्डः–डं [अम्+ड] 1. अण्डकोष 2. फोता, 3. अंडा–ब्रह्मा के बीजभूत अंडे से उत्पन्न होने के कारण 'संसार' भी बहुधा 'ब्रह्मांड' कहलाता है 4. मृगनाभि या कस्तूरीकोष 5. वीर्य, 6. शिव। सम०–आकर्षणं बधिया करना, –आकार, –आकृति (वि०) अंडे के आकार का, अंडाकार, अंडवृत्ताकार, (–रः–तिः) अंडवृत्त–कोश(ष):–कोषकः फोते,–ज (वि०) अंडे से उत्पन्न, (–जः) 1. पक्षी, पंखदार जन्तु–कु० ३।४२ 2. मछली 3. सांप 4. छिपकली 5. ब्रह्मा, (–जा) कस्तूरी,–धरः शिव का नाम,–वर्धनं,–वृद्धिः (स्त्री०) फोतों का बढ़ जाना,–सू (वि०) पंखदार जन्तु।

अण्डकः [अण्ड-स्वार्थे कन्] फोता,–कं छोटा अंडा–जगदंडकैकतरखंडमिव–शि० ९।९।

अण्डालुः [अण्ड+आलुच्] मछली।

अण्डीरः [अण्ड+ईरच्] पूर्ण विकसित पुरुष, बलवान् हृष्टपुष्ट पुरुष।

अत् (भ्वा० पर० अक० वेट्) [अतति, अत्त-अतित] 1. जाना, चलना, घूमना, लगातार चलते रहना 2. प्राप्त-करना (बहुधा वे०) 3. बांधना।

अतट (वि०) [न० ब०] तटरहित, खड़ी ढाल वाला,–**टः** चट्टान, ढलवा चट्टान!

अतथा (अव्य०) [नञ्+तत्+था] ऐसा नहीं, °**उचित** (वि०) अनधिकारी, अनभ्यस्त।

अतदर्हम् (अव्य०) [नञ्+तदर्हम् न० त०] अनुचित रूप से, अनधिकृत रूप से।

अतद्गुणः (सा० श०) 'अतद्ग्राही', एक अलंकार का नाम जिसमें कि प्रतिपाद्य पदार्थ–कारण के विद्यमान रहते हुए भी दूसरे के गुण को ग्रहण नहीं करता–काव्य० १०।

अतन्त्र (वि०) [स्त्री० –न्त्री] [न० ब०] 1. बिना डोरी का, या बिना संगीत के तार का 2. बिना लगाम का. 3. विचारणीय नियम की कोटि से बाहर की वस्तु जो अनिवार्य रूप से बंधन की कोटि में न हो—ह्रस्व-ग्रहणमतंत्रम्–सिद्धा० 4. सूत्ररहित या अनुभव सिद्ध क्रिया।

अतन्द्र-अतन्द्रित-अतन्द्रिन्-अतन्द्रिल–(वि०) [नास्ति तन्द्रा यस्य–न० ब०, न तन्द्रितः न० त०,न० त०] सावधान, अम्लान, सतर्क, जागरूक; अतंद्रिता सा स्वयमेव वृक्ष-कान्–कु० ५।१४, रघु० १७।३९।

अतपस्-अतपस्क वि० [न० ब०] धार्मिक तपश्चर्या की अवहेलना करने वाला।

अतर्क (वि०) [न० ब०] तर्कहीन, युक्तिरहित,–**र्कः** [न० त०] 1. युक्ति या तर्क का अभाव, बुरा तर्क 2. तर्कहीन बहस करने वाला।

अतर्कित (वि०) [न० त०] न सोचा हुआ, अप्रत्या-शित,–**तं** (क्रि० वि०) अप्रत्याशित रूप से। सम० –**आगत,–उपनत** (वि०) अप्रत्याशित रूप से होने वाला, अकस्मात् होने वाला–°उपपन्नं दर्शनम्–कु० ६।५४।

अतल (वि०) [न० ब०] तल रहित,–**लं** [न० त०] पाताल,–**लः** शिव। सम०–**स्पृश्,–स्पर्श** (वि०) तल रहित, बहुत गहरा, अथाह।

अतस् (अव्य०) [इदम्+तसिल्] 1. इसकी अपेक्षा, इससे (बहुधा तुलनात्मक अर्थ वाला) किमु परमतो नर्तयसि माम्–भर्तृ० ३, ६. 2. इस या उस कारण से, फलतः, सो, इस लिए ('यत्' 'यस्मात्' और 'हि' का सहसंबंधी–अभिहित या अध्याहृत) रघु० २।४३, ३।५०; कु० २।५. 3. यहाँ से, अब से या इस स्थान से; (–परम्,–ऊर्ध्वम्) इसके पश्चात्। सम०–**अर्थं,–निमित्तं** इस कारण, फलतः, इस कारण से;–**एव** (अव्य०) इस ही लिए–ऊर्ध्वं अब से लेकर, इसके बाद;–**परं** (क) इसके आगे, और फिर, (अपा० के साथ) इसके पश्चात् (ख) इसके परे, इससे आगे; भाग्यायत्तमतः परम्—श० ४।१६।

अतसः [अत्+असच्] 1. हवा, वायु 2. आत्मा 3. अतसी के रेशों से बना हुआ कपड़ा (यह शब्द बहुधा नपुं० होता है)।

अतसी [अत्+असिच् ङीप्] 1. सन 2. पटसन 3. अलसी।

अति (अव्य०) [अत्+इ] 1. विशेषण और क्रिया-विशेषणों से पूर्व प्रयुक्त होने वाला उपसर्ग–बहुत, अधिक, अतिशय, अत्यधिक उत्कर्ष को भी यह शब्द प्रकट करता है, नातिदूरे अत्यधिक दूर नहीं; क्रिया और कृदन्त रूपों से पूर्व भी प्रयुक्त होता है–स्वभावो ह्यतिरिच्यते आदि 2. (क्रियाओं के साथ) ऊपर, परे; अति+इ–परे जाना, इसी प्रकार °क्रम, °चर् और °वह आदि, ऐसे अवसरों पर 'अति' उपसर्ग समझा जाता है। 3. (क) (संज्ञा व सर्वनामों के साथ) परे, पार करते हुए, श्रेष्ठतर, प्रमुख, पूज्य, उच्चतर, ऊपर, कर्मप्रवचनीय के रूप में द्वितीया विभक्ति के साथ; या बहुव्रीहि के प्रथम पद के रूप में, अथवा तत्पुरुष समास में सामान्यतः उच्चता और प्रमुखता के अर्थ को प्रकट करता है; अतिगो, °गार्ग्यः=प्रशस्ता गौः, शोभनो गार्ग्यः, °राजन्=बढ़िया राजा; अथवा द्वितीय पद के साथ लग कर इसका अर्थ—'अतिक्रांत' होता है, परन्तु इस अवस्था में द्वितीय पद में दूसरी विभक्ति होती है, अतिमर्त्यः=मर्त्यमतिक्रान्तः, °मालः =अतिक्रान्तो मालाम्, इसी प्रकार अतिकाय, दे० °केशर अति देवान् कृष्णः–सिद्धा० (ख) (कृदन्त शब्दों से पूर्व) अतिरंजित, अत्यधिक, अतिमात्र, उदा० °आदरः=अत्यधिक आदर, °आशा=अतिरंजित आशा, इसी प्रकार °भयम्, °तृष्णा, °आनन्दः इत्यादि (ग) अयोग्य, अनुचित, असंप्रति (अयुक्तता) तथा क्षेप (निन्दा) के अर्थ में, यथा–अतिनिद्रम=निद्रा संप्रति न युज्यते– सिद्धा०।

अतिकथा 1. अतिरंजित कहानी 2. निरर्थक भाषण।

अतिकर्षणं [अति+कृष्+ल्युट्] बहुत अधिक परिश्रम, अत्यधिक मेहनत।

अतिकश (वि०) [अतिक्रान्तः कशाम्–अ० स०] कोड़े को न मानने वाला, घोड़े की भांति वश में न आने वाला।

अतिकाय (वि०) [अत्युत्कटः कायो यस्य–ब० स०] भारी डील डौल वाला, विशालकाय।

अतिकृच्छ्र (वि०) [अत्युत्कटः कृच्छ्रः– प्रा० स०] अति कठिन,–**च्छ्रं** बहुत बड़ा कष्ट; १२ रात्रियों तक कठिन तपस्या करने का व्रत; मनु० ११।२१३–४।

अतिक्रमः [अति+क्रम्+घञ्] 1. सीमा या मर्यादा का उल्लंघन, हद से आगे बढ़ना 2. कर्तव्य या औचित्य का भंग, उल्लंघन, मर्यादा का अतिक्रमण, अवैध प्रवेश, अवज्ञा, चोट, विरोध, ब्राह्मण° त्यागो भवतामेव भूतये—महावीर० २।१०, 3. बीतना (समय का) गुजरना—अनेकसंवत्सरातिक्रमेऽपि—उत्त० ४, 4. जीत लेना, बढ़ जाना (बहुधा 'दुर्' के साथ)—स्वजातिर्दुरतिक्रमा 5. उपेक्षा, भूल, अप्रतिष्ठा 6. भारी आक्रमण 7. आधिक्य 8. दुरुपयोग 9. दुर्व्यवहार ।

अतिक्रमणं [अति+क्रम्+ल्युट्] आगे बढ़ जाना, समय का बीतना, आधिक्य, दोष, अपराध ।

अतिक्रमणीय (वि०) [अति+क्रम्+अनीयर्] मर्यादा भंग करने के योग्य, उपेक्षा करने के योग्य अथवा उल्लंघन करने के योग्य—°यं मे सुहृद्वाक्यम्—श० २, ३, ६, ७ ।

अतिक्रान्त (वि०) [अति+क्रम्+क्त] आगे बढ़ा हुआ, आगे गया हुआ, परे पहुंचा हुआ आदि—सोऽतिक्रान्तः श्रवणविषयं—मेघ० १०३, बीता हुआ, गया हुआ, पहला, (—तं) अतीत विषय, अतीत की बात, अतीत ।

अतिखट्व (वि०) [अतिक्रान्तः खट्वाम्—प्रा० स०] चारपाई रहित, चारपाई के बिना काम चलाने वाला ।

अतिग (वि०) [अति+गम्+ड] (समास में) बढ़ने वाला, बढ़चढ़कर काम करने वाला, सर्वोत्कृष्ट रहने वाला सर्वलोक° मुद्रा० १।२, किमौषधपथातिगैरुपहतो महाव्याधिभिः—मुद्रा० ६, औषधियों के प्रभाव को अनादृत करने वाले रोगों के द्वारा ।

अतिगन्ध (वि०) [अतिशयितो गन्धो यस्य—ब० स०] अत्यन्त तीक्ष्ण गंध वाला, —धः गंधक ।

अतिगव (वि०) [गामतिक्रान्तः प्रा० स०] 1. अत्यंत मूर्ख, बिल्कुल जड 2. वर्णनातीत ।

अतिगुण (वि०) [गुणमतिक्रान्तः प्रा० स०] 1. बढ़े चढ़े गुणों वाला, 2. गुणरहित, निकम्मा, —णः अत्यंत अच्छे गुण ।

अतिगो (स्त्री०) [गामतिक्रम्य तिष्ठति] अत्यंत बढ़िया गाय ।

अतिग्रह (वि०) [ग्रहम् अतिक्रान्तः—प्रा०स०] दुर्बोध,—हः, —ग्रहः 1 ज्ञानेन्द्रियों के विषय—जैसे त्वचा का स्पर्श जिह्वा का रस आदि, 2. सत्य ज्ञान 3. आगे बढ़ जाना, दूसरों को पीछे छोड़ देना—आदि ।

अतिचमू (वि०) [चमूमतिक्रान्तः—प्रा० स०] सेनाओं के ऊपर विजय प्राप्त करने वाला ।

अतिचर (वि०) [अति+चर+अच्] बहुत परिवर्तनशील, क्षणभंगुर, —रा कमलिनी का पौधा, पद्मिनी, स्थलपद्मिनी, पद्मचारिणी लता ।

अतिचरणं [अति+चर्+ल्युट्] अत्यधिक अभ्यास, शक्ति से अधिक करना ।

अतिचारः [अति+चर्+घञ्] 1. मर्यादा का उल्लंघन, 2. आगे बढ़ जाना 3. अतिक्रमण 4. ग्रहों की त्वरित गति, ग्रहों का एक राशि पर भोगफल समाप्त हुए बिना दूसरी राशि पर चले जाना ।

अतिच्छत्रः, अतिच्छत्रा, अतिच्छत्रका [अतिक्रान्तः छत्रम्—प्रा० स०] कुकुरमुत्ता, खुंब; सोया, सौंफ का पौधा ।

अतिजन (वि०) [अतिक्रान्तो जनम्] अनुषित, जो आबाद न हो ।

अतिजात (वि०) [अतिक्रान्तः जातं—जाति जनकं वा] पिता से बढ़ा हुआ ।

अतिडीनं [अति+डीङ्+क्त] (पक्षियों की) असाधारण उड़ान ।

अतितराम्-अतितमाम् (अव्य०) [अति+तरप् (तमप्)+आम्] अधिक, उच्चतर (अपा० के साथ) 2. अत्यधिक, अत्यंत, बहुत अधिक, बहुत ।

अतितृष्णा [तृष्णामतिक्रम्य—प्रा० स०] गृध्नुता, अत्यधिक लालच या लालसा, °ष्णा न कर्तव्या—पंच० ५—अत्यधिक लालच नहीं करना चाहिए ।

अतिथिः [अतति गच्छति, न तिष्ठति—अत्+इथिन्] मनु के अनुसार 'यात्री' का शब्दार्थ—एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः । अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते । मनु० ३।१०२, अभ्यागत (आलं० भी) अतिथिनेव निवेदितम्—श० ४, कुसुमलताप्रियातिथे—श० ६—प्रिय अथवा स्वागत के योग्य अभ्यागत । सम०—क्रिया,—पूजा,—सत्कारः,—सत्क्रिया,—सेवा अभ्यागतों का सत्कारयुक्त स्वागत, आतिथ्यक्रिया, अभ्यागतों की सेवा,—धर्मः आतिथ्य करने का अधिकार, अभ्यागतों का सत्कार ।

अतिदानं [अति+दा+ल्युट्] बहुत अधिक दान, अत्यधिक उदारता,—अतिदाने बलिर्बद्धः—चाण० ५० ।

अतिदेशः [अति+दिश्+घञ्] 1. हस्तान्तरण, समर्पण, सुपुर्द करना 2. (व्या०) अन्यत्र लागू होने वाली प्रक्रिया, सादृश्य के कारण प्रक्रिया, एक वस्तु के धर्म का दूसरी वस्तु पर आरोपण—अतिदेशो नाम इतरधर्मस्य इतरस्मिन् प्रयोगाय आदेशः (मीमांसा), या, अन्यत्रैव प्रणीतायाः कृत्स्नाया धर्मसंहतेः । अन्यत्र कार्यतः प्राप्तिरतिदेशः स उच्यते । "गोसदृशो गवयः" यह रूपातिदेश या सादृश्य का निदर्शन है ।

अतिद्वय (वि०) [द्वयमतिक्रान्तः—प्रा० स०] दोनों से बढ़ा हुआ, अद्वितीय, अनुपम, अतुलनीय, बेजोड़—धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा—का० ५—दोनों (बृहत्कथा और वासवदत्ता) से बढ़ी हुई ।

अतिधन्वन् (पु०) [अत्युत्कृष्टं धनुर्यस्य] अप्रतिद्वन्द्वी धनुर्धर या योद्धा ।

अतिनिद्र (वि०) [निद्रामतिक्रान्तः—प्रा० स०] 1. बहुत सोने

वाला, 2. निद्रा से वंचित, निद्रारहित,–त्रं निद्रा के समय से परे–द्रा बहुत अधिक सोना।

अतिनु-अतिनौ (वि०) [अतिक्रान्तः नावम्–प्रा० स०] नाव से उतरा हुआ, नाव से भूमि पर आया हुआ।

अतिपञ्चा [पञ्चवर्षमतिक्रान्ता प्रा. स०] पांच वर्ष से अधिक अवस्था की लड़की।

अतिपतनं [अति+पत्+ल्युट्] उड़कर आगे निकल जाना, भूल, उपेक्षा, अतिक्रमण, अत्यधिक, सीमा से बाहर जाना।

अतिपत्तिः [अति+पत्+क्तिन्] 1. सीमा से परे जाना, समय का बीतना, 2. कार्य का पूरा न होना, असफलता।

अतिपत्रः [अतिरिक्तं बृहत् पत्रं यस्य–ब० स०] सागौन का वृक्ष।

अतिपथिन् (पुं०) [पन्थानमतिक्रान्तः–प्रा० स०] सामान्य सड़कों की अपेक्षा अच्छा मार्ग, सन्मार्ग।

अतिपर (वि०) [अतिक्रान्तः परान्–प्रा० स०] जिसने अपने शत्रुओं को पराजित कर दिया है, –रः वह शत्रु जो शक्ति में बढ़ा चढ़ा हो।

अतिपरिचयः [प्रा० स०] अत्यधिक जान पहचान या घनिष्टता–किव० – अतिपरिचयादवज्ञा– (अतिपरिचय से होत है अरुचि अनादर भाय)।

अतिपातः [अति+पत्+घञ्] 1. (समय का) बीत जाना 2. उपेक्षा, भूल, अतिक्रमण–न चेदन्यकार्यातिपातः श० १; (यदि इस प्रकार दूसरे कर्तव्य की उपेक्षा न की गई), सर्वसम्मत नियम या प्रथाओं का उल्लंघन, 3. आ पड़ना, घटना 4. दुर्व्यवहार या दुष्प्रयोग 5. विरोध, वैपरीत्य।

अतिपातकः [अतिपात–स्वार्थे कन्] बड़ा जघन्य पाप, व्यभिचार।

अतिपातिन् (वि०) [अति+पत्+णिच्+णिनि] गति में आगे बढ़ जाने वाला, क्षिप्रतर (समास में) रघु० ३।३०।

अतिपात्य (वि०) [अति+पत्+णिच्+यत्] विलंबित या स्थगित करने योग्य–काममनतिपात्यं धर्मकार्यं देवस्य–श ५।

अतिप्रबंधः [अतिशयितः प्रबन्धः–प्रा० स०] अत्यंत सातत्य, बिल्कुल लगा होना; °प्रहितास्त्रवृष्टिभिः–रघु० ३।५८।

अतिप्रगे (अव्य०) [अति+प्र+गै+के] प्रभात में बहुत तड़के, प्रभात काल में–मनु० ४।६२।

अतिप्रश्नः [अति–प्रच्छ्+नङ्] इन्द्रियातीत सत्यता के विषय में प्रश्न, तंग करने वाला तर्कहीन प्रश्न–उदा० बृहदारण्यक उपनिषद् में बालाकि का याज्ञवल्क्य के प्रति ब्रह्म विषयक प्रश्न।

अतिप्रसङ्गः, अतिप्रसक्तिः (स्त्री०) [अति+प्र+संज्+घञ् क्तिन् वा] 1. अत्यधिक लगाव, 2. धृष्टता 3. किसी (व्या०) नियम का व्यर्थ अधिक विस्तार अर्थात् अतिव्याप्ति 4. बहुत घना संपर्क 5. प्रपञ्च, अलमतिप्रसंगेन–मुद्रा० १।

अतिबल (वि०) [ब० स०] बहुत बलवान् या शक्तिशाली,–लः अग्रगण्य या बेजोड़ योद्धा;—लं बड़ा बल, भारी शक्ति,—ला एक शक्ति शाली मंत्र या विद्या जिसे विश्वामित्र ने राम को सिखाया।

अतिबाला [अतिक्रान्ता बालां बाल्यावस्थाम्–प्रा० स०] दो वर्ष की अवस्था की गाय।

अतिभ (भा) रः [प्रा० स०] अत्यधिक बोझ, भारी वजन; सा मुक्त कंठं व्यसनातिभारात् चक्रन्द–रघु० १४।६८ अत्यधिक रंज के कारण। सम०–गः खच्चर।

अतिभवः [अति+ भू०+णिच्+अच्] उत्कृष्टता।

अतिभीः (स्त्री०) [अति+भी+क्विप्] बिजली, इन्द्र के वज्र की कौंध।

अतिभूमिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 आधिक्य, पराकाष्ठा, उच्चतम स्वर, °मिं गम्, या, आधिक्य या पराकाष्ठा तक पहुंचना—तत्र सर्वलोकस्य °मिगतः प्रवादः—माल०७, दूर तक प्रसिद्ध,—शि० ९।७८, १०।८० 2 साहसिकता, अनौचित्य, औचित्य की सीमाओं का उल्लंघन करना—शि० ८।२०, 3 प्रमुखता, उत्कृष्टता।

अतिमतिः (स्त्री०)—मानः [प्रा० स०] अहंकार, बहुत अधिक घमंड, अतिमाने च कौरवाः—चाण० ५०।

अतिमर्त्य-मानुष (वि०) अतिमानव।

अतिमात्र (वि०) [अतिक्रान्तो मात्राम्—प्रा० स०] मात्रा से अधिक, अत्यधिक, अतिशय—°सुदुःसहानि—श० ४।३, जिसका बिल्कुल समर्थन न किया जा सके, —मुनिव्रतैस्त्वामतिमात्रकर्शिताम्—कु० ५।४८, –त्रं —मात्रशः (अव्य०) मात्रा से अधिक, अतिशय, अत्यधिक।

अतिमाय (वि०) [अतिक्रान्तो मायाम्—प्रा० स०] पूर्णतः मुक्त, सांसारिक माया से मुक्त।

अतिमुक्त (वि०) [अतिशयेन मुक्तः—प्रा० स०] 1 पूर्णरूप से मुक्त 2 बंजर 3 मोतियों (की माला) से बढ़ कर,—क्तः,—क्तकः एक प्रकार की लता (माधवी) जो आम की प्रिया के रूप में आम के वृक्ष पर लिपटी रहती है।

अतिमुक्तिः (स्त्री०) **अतिमोक्षः** [प्रा० स०] (मृत्यु से) बिल्कुल छुटकारा।

अतिरंहस् (वि०) [अतिशयितं रंहो यस्मिन्—ब० स०] बहुत फुर्तीला या क्षिप्रतर—सारंगेणातिरंहसा—श० १।५।

अतिरथः [अतिक्रान्तोरथम्—प्रा० स०] एक अद्वितीय योद्धा जो अपने रथ में बैठा हुआ ही युद्ध करता है (अमितान्योधयेद्यस्तु संप्रोक्तोऽतिरथस्तु सः)।

अतिरभसः [प्रा० स०] बड़ी चाल, द्रुत गमन, हड़बड़ी।

अतिराजन् (पुं०) [प्रा० स०] 1 असाधारण या उत्कृष्ट राजा 2 राजा से बढ़-चढ़ कर।

अतिरात्रः [प्रा० स०] 1 ज्योतिष्टोम यज्ञ का एक ऐच्छिक भाग 2 रात्रि का मध्य भाग।

अतिरिक्त (वि०) [अति+रिच्+क्त] 1 आगे बढ़ा हुआ 2 फ़ालतू 3 अत्यधिक 4 अद्वितीय, उत्तुंग।

अति (ती) रेकः [अति+रिच्+घञ्] 1 आधिक्य, अतिशयता, महत्ता, गौरव 2 समधिकता, अधिशेष, बाहुल्य 3 अन्तर।

अतिरुच् (पुं०) [अति+रुच्+क्विप्] 1 घुटना, (स्त्री०—क्) एक अत्यन्त सुन्दरी स्त्री।

अतिरो (लो) मश (वि०) [अति+रो (लो) मन्+श] बहुत बालों वाला, बहुत रोम वाला,—शः 1 एक जंगली बकरा 2 बड़ा बन्दर।

अतिलंघनं [अति+लंघ्+ल्युट्] 1. अत्यधिक उपवास रखना 2. अतिक्रमण।

अतिलंघिन् (वि०) [अति+लंघ्+णिनि] गलतियां या भूलें करने वाला।

अतिवयस् (वि०) [अतिशयितं वयः यस्य—ब० स०] बहुत बूढ़ा, वृद्ध, अधिक आयु का।

अतिवर्णाश्रमिन् (पुं०) [प्रा० स०] जो वर्ण और आश्रमों की मर्यादा से परे हो।

अतिवर्तनं [अति+वृत्+ल्युट्] क्षम्य अपराध, सामान्य अपराध, दण्ड से मुक्ति—इस प्रकार के दस अपराधों का वर्णन मनु ने किया है—मनु० ८।२९०

अतिवर्तिन् (वि०) पार करने वाला, दूसरों से आगे निकलने वाला, आगे बढ़ने वाला, अतिक्रमण करने वाला, उल्लंघन करने वाला।

अतिवादः [अति+वद्+घञ्] अतिकठोर, गाली और अपमान युक्त वचन; भर्त्सना, झिड़की—अतिवादांस्तितिक्षेत—मनु० ६।४७।

अतिवादिन् [अति+वद्+णिनि] बहुत बोलनेवाला, वाग्मी।

अतिवाहनं [अति+वह्+णिच्+ल्युट्] 1. बिताना, यापन 2. बहुत अधिक परिश्रम करना या बहुत बोझा उठाना 3. प्रेषण, भेजना, छुटकारा पाना।

अतिविकट (वि०) [प्रा० स०] भीषण—टः दुष्ट हाथी।

अतिविषा [प्रा० स०] अतीस नामक विषैली औषधि का पौधा।

अतिविस्तरः [प्रा० स०]बहुत अधिक फैलाव, व्यापकता।

अतिवृत्तिः (स्त्री०) [अति+वृत्+क्तिन्] आगे बढ़ जाना, अतिक्रमण, अतिरंजना।

अतिवृष्टिः (स्त्री०) [अति+वृष्+क्तिन्] अत्यधिक या भारी वर्षा, ऋतु विषयक ६ विपत्तियों में से एक; दे० ईति।

अतिवेल (वि०) [अतिक्रान्तो वेलां मर्यादां कूलं वा—प्रा० स०] अत्यधिक, फ़ालतू, सीमारहित,—लं (क्रि० वि०) 1 अत्यधिकता से, 2 बिना ऋतु के, बिना मौसम के।

अतिव्याप्तिः (स्त्री०) [अति-वि+आप+क्तिन्] 1 किसी नियम या सिद्धांत का अनुचित विस्तार 2 प्रतिज्ञा में अनभिप्रेत वस्तु का मिला लेना, 3 लक्षण में लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य अनभिप्रेत वस्तु का भी आ जाना, (न्याय में) जिसके फलस्वरूप वह वस्तुएँ भी सम्मिलित हो जायँ जो लक्षण के अनुसार नहीं आनी चाहिए, लक्षण के तीन दोषों में से एक।

अतिशयः [अति+शी+अच्] 1 आधिक्य, प्रमुखता, उत्कृष्टता; वीर्य° रघु० ३।६२; तस्मिन् विधानातिशये विधातुः—रघु० ६।११; 2 श्रेष्ठता (गुण, पद और परिमाण आदि की दृष्टि से); समास में प्रायः विशेषणों के साथ प्रयुक्त होने पर "अधिकता के साथ" अर्थ होता है—आसीदतिशयप्रेक्ष्यः—रघु० १७। २५; (वि०) श्रेष्ठ, प्रमुख, अत्यधिक, बहुत बड़ा, बहुल। सम०—उक्तिः (स्त्री०) 1 बढ़ाकर या अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से कहे हुए वचन, अतिरंजना 2 अलंकार जिसके सा० द० कार ने ५ भेद तथा काव्य प्रकाशकार ने ४ भेद माने हैं।

अतिशयन (वि०) [अति+शी+ल्युट्] आगे बढ़ने वाला (समास में), बड़ा, प्रमुख, बहुल —नं आधिक्य, बहुतायत, बहुलता।

अतिशयालु (वि०) [अति+शी+आलुच्] आगे बढ़ जाने या बढ़-चढ़ कर रहने की प्रवृत्ति वाला।

अतिशयिन् (वि०) [अति+शी+णिनि] 1 श्रेष्ठ, बढ़िया, प्रमुख—इदमुत्तममतिशयिनि व्यंग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः—काव्य० १, विक्रम० ५।२१, 2 अत्यधिक, बहुल।

अतिशायनं [अति+शी+ल्युट्] उत्कृष्टता, श्रेष्ठता।

अतिशायिन् (वि०) [अति+शी+णिनि] आगे रहने वाला, आगे बढ़ जाने वाला 2 अत्यधिक।

अतिशेषः [अति+शिष्+अच्] अवशिष्ट भाग, बचा हुआ भाग (जैसे कि समय का), कुछ अवशेष।

अतिश्रेयसिः [श्रेयसीमतिक्रान्तः—प्रा० स०] सर्वोत्तम स्त्री से श्रेष्ठ पुरुष।

अतिश्व (वि०) [श्वानमतिक्रान्तः—प्रा० स०] 1 बल में कुत्ते से बढ़ा हुआ (जैसे कि सूअर) 2 कुत्ते से भी गया बीता; —श्वा सेवा।

अतिसक्तिः (स्त्री०) [अति+षंज्+क्तिन्] घनिष्ठ संपर्क या सान्निध्य, भारी आसक्ति।

अतिसंधानं [अति+सं+धा+ल्युट्] छल करना, धोखा देना,—परातिसंधान° श० ५।२५, चालाकी, जालसाजी।

अतिसरः [अति+सृ+अच्] 1 आगे बढ़ने वाला 2 नेता

अतिसर्गः [अति+सृज्+घञ्] 1 स्वीकार करना, देना—रघु० १०।४२, 2 अनुमति देना (जो इच्छा हो) 3 (नौकरी से) पृथक् करना, कार्यभार से मुक्त करना।

अतिसर्जनं [अति+सृज्+ल्युट्] 1 देना, स्वीकार करना, सौंपना-कु० ३।३२, 2 उदारता, दानशीलता 3 वध करना 4 वियोग।

अतिसर्व (वि०) [प्रा० स०] सर्वोत्तम या सर्वश्रेष्ठ,–र्वः परब्रह्म—अतिसर्वाय शर्वाय---मुग्ध०।

अति- (ती) - सारः [अति—सृ+णिच्+अच्] पेचिश, मरोड़ों के साथ दस्तों का आना।

अति(ती)सारिन् (पुं०) [अत्यंतं सारयति मलं] अतिसार नाम का रोग जिसमें बारबार शौच जाना पड़ता है; (वि०) –**अति(ती)सारकिन्** (वि०) [अतिसारो यस्यास्ति–इनि, कुक् च] अतिसार रोग से पीड़ित, पेचिश रोग से ग्रस्त।

अतिस्नेहः [प्रा० स०] अत्यधिक अनुराग; °हः पापशंकी—श० ४; बुराई की आशंका में प्रवण होता है।

अतिस्पर्शः [प्रा० स०] अर्धस्वर तथा स्वरों के लिए पारिभाषिक शब्द।

अतीत (वि०) [अति+इ+क्त] 1. परे गया हुआ, पार गया हुआ 2. आगे बढ़ने वाला, परे जाने वाला, गत, बीता हुआ आदि; मृत, **संख्यामतीत** या **संख्यातीत** अगण्य।

अतीन्द्रिय (वि०) [प्रा०स०] ज्ञानेन्द्रियों की पहुंच के बाहर, –**यः** आत्मा या पुरुष (सांख्य दर्शन); परमात्मा; –**यं** 1. प्रधान या प्रकृति (सां० द०) 2. मन (वेदान्त)।

अतीव (अव्य०) [अति+इव] खूब, अधिकता के साथ, बहुत अधिक, बिल्कुल, बहुत ही, °पीडित, °हृष्ट आदि।

अतुल (वि०) [न० त०] अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय, अतुलनीय, –**लः** 'तिल' का पौधा, तिल।

अतुल्य (वि०) [न० त०] अनुपम, बेजोड़।

अतुषार (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो। सम०–**करः** सूर्य; इसी प्रकार अतुहिनकरः °रश्मि, °धामन्, °रुचि आदि।

अतृण्या [न० त०] थोड़ा सा घास।

अतेजस् (वि०) [न० ब०] 1. जो चमकीला न हो, धुंधला 2. दुर्बल, निर्बल 3. निरर्थक, इसी प्रकार **अतेजस्क, अतेजस्विन्**; –**स्** (पुं०) [न० त०] धुंधलापन, छाया, अंधकार।

अत्ता [अत्+तक्+टाप्] 1. माता 2. बड़ी बहन 3. सास।

अत्तिः (स्त्री०) **अत्तिका** [अत्+क्तिन्, स्वार्थे कन् च] बड़ी बहन आदि।

अत्नः, अत्नुः [अतति सततं गच्छति—अत्+न, नु वा] 1. हवा 2. सूर्य।

अत्यग्निः [प्रा० स०] पाचन शक्ति की बहुत अधिकता।

अत्यग्निष्टोमः [प्रा० स०] ज्योतिष्टोम यज्ञ का दूसरा ऐच्छिक भाग।

अत्यंकुश (वि०) [प्रा० स०] निरंकुश, नियन्त्रण में रहने के अयोग्य, उच्छृंखल जैसे हाथी।

अत्यन्त (वि०) [अतिक्रान्तः अन्तम् सीमाम्—प्रा० स०] 1. अत्यधिक, अधिक, बहुत बड़ा, बहुत बलवान्; °वैरम्—बड़ी शत्रुता, इसी प्रकार °मैत्री 2. संपूर्ण, पूरा, नितांत 3. अनन्त, नित्य, चिरस्थायी; किं वा तवात्यन्तवियोगमोघे हतजीविते—रघु० १४।६५; कस्यात्यन्तं सुखमुपनतम्—मेघ० १०९,–**तं** (अव्य०) 1. अत्यधिक, बहुत अधिक, 2. हमेशा के लिए, आजीवन, जीवनभर। सम०—**अभावः** नितान्त या पूर्ण सत्ताहीनता, नितान्त अनस्तित्व,—**गत** (वि०) सदा के लिए गया हुआ, जो फिर कभी न आवेगा, कथमत्यन्तगता न मां दहेः–रघु० ८।५६,—**गामिन्** (वि०) 1 बहुत अधिक चलने वाला, बहुत तेज या शीघ्र चलने वाला, 2. अत्यधिक, अधिक;—**वासिन्** (पुं०) जो विद्यार्थी की भांति लगातार अपने गुरु के साथ रहता है;—**संयोगः** 1. घनिष्ट सामीप्य, अबाध नैरन्तर्य; कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे–; 2. अवियोज्य सहअस्तित्व।

अत्यन्तिक (वि०) [अत्यन्त+ठन्] 1. बहुत अधिक या बहुत तेज चलने वाला 2. बहुत निकट 3. जो समीप न हो, दूर,–**कं** घनिष्ट सामीप्य, अव्यवहित पड़ौस या अत्यंत समीप होना।

अत्यन्तीन (वि०) [अत्यंत+ख] 1. बहुत अधिक चलने वाला, बहुत तेज चलने वाला—लक्ष्मीं परंपरीणां त्वमत्यन्तीनत्वमुन्नय—भट्टि०।

अत्ययः [अति+इ+अच्] 1. चला जाना, बीत जाना, काल° 2. समाप्ति, उपसंहार, अवसान, अनुपस्थिति, अन्तर्धान 3. मृत्यु, नाश 4. भय, चोट, बुराई—प्राणात्यये च संप्राप्ते—या० १।१७९ 5. दुःख 6. दोष, अपराध, अतिक्रमण 7. आक्रमण, अभियान।

अत्ययिक=दे० आत्ययिक।

अत्ययित (वि०) [अत्यय+इतच्] 1. बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ, 2. उल्लंघन किया हुआ, जिस पर अत्याचार किया गया है।

अत्ययिन् (वि०) [अति+इ+णिनि] बढ़ने वाला, आगे निकलने वाला।

अत्यर्थ (वि०) [प्रा० स०], अत्यधिक, बहुत बड़ा, बेहद, –**र्थं** (क्रि० वि०) बहुत अधिक, निहायत, अत्यन्त।

अत्यह्न (वि०) [प्रा० स०] अवधि में एक दिन से अधिक रहने वाला।

अत्याकारः [प्रा० स०] 1. घृणा, कलंक, निन्दा, श्लाघात्याकारतदेवेतेषु पा० ५।१।१३४; 2. बड़ा डील डौल, विशाल शरीर।

अत्याचार (वि०) [आचार मति क्रान्तः] मानी हुई प्रथाओं और आचारों के विपरीत चलने वाला, उपेक्षक; –रः आचारानुमोदित कार्यों का न करना, धर्म के विपरीत आचरण।

अत्यादित्य (वि०) [प्रा० स०] सूर्य की ज्योति से अधिक चमकने वाला; –अत्यादित्यं हुतवहमुखे संभृतं तद्धि तेजः—मेघ० ४३।

अत्यानन्दा [प्रा० स०] मैथुन के प्रति उदासीनता।

अत्यायः [प्रा० स०] 1. अतिक्रमण, उल्लंघन 2. आधिक्य।

अत्यारूढ (वि०) [प्रा० स०] बहुत बढ़ा हुआ, –ढं,—ढिः (स्त्री०) बहुत ऊँची पदवी, अभ्युदय।

अत्याश्रमः [प्रा० स०] 1. जीवन का सबसे बड़ा आश्रम —संन्यास 2. इस आश्रम में स्थित - संन्यासिन्।

अत्याहितं [अति+आ+धा+क्त] 1. बड़ी विपत्ति भय, दुर्भाग्य, अनर्थ, दुर्घटना –न किमप्यत्याहितम्—श० १; प्रायः विस्मयादिद्योतक के रूप में प्रयोग —हाय दई, हाय रे 2. उद्दंड तथा साहसिक कार्य—पांडुपुत्रैर्न किमप्यत्याहितमाचेष्टितं भवेत्—वेणी० २।

अत्युक्तिः (स्त्री०) [अति+वच्+क्तिन्] बढ़ा चढ़ा कर कहना, अतिशयोक्ति, अधिकृष्ट रंगीन चित्रण—अत्युक्तौ यदि न प्रकुप्यसि मृषावादं च नो मन्यसे—उद्भट०; दे० अतिशयोक्ति भी।

अत्युपध (वि०) [उपधामतिक्रान्तः—प्रा० स०] परीक्षित, विश्वस्त।

अत्यूहः [प्रा० स०] 1. गहन चिन्तन या मनन गंभीर तर्कना, 2. जलकुक्कुट।

अत्र (अव्य०) [इदम्+त्रल्–प्रकृतेः अशृभावश्च] 1. इस स्थान पर, यहाँ—अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः—श० १; 2. इस विषय में, बात में, मामले में, इस संबंध में। सम०—**अन्तरे** (क्रि० वि०) इसी बीच में,—**भवत्** (पुं० —भवान्) सम्मानसूचक विशेषण जो 'आदरणीय' 'सम्माननीय' 'मान्यवर श्रीमान्' अर्थ को प्रकट करता है तथा उस व्यक्ति की ओर संकेत करता है जो वक्ता के पास उपस्थित या निकट विद्यमान हो; दूरवर्ती या परोक्ष के लिए तत्रभवत् शब्द है; °भवती =आदरणीय श्रीमती; (पूज्यं तत्रभवानत्रभवांश्च भगवानपि), अत्र भवान् प्रकृतिमापन्नः—श० २; वृक्षसेचनादेव परिश्रांतामत्रभवतीं लक्षये—श० १।

अत्रत्य (वि०) [अत्रभवः—अत्र+त्यप्] 1. इस स्थान का, या यहां से संबंध रखने वाला 2. यहां उत्पन्न, यहां पाया गया, या इस स्थान का, स्थानीय।

अत्रप (वि०) [न० ब०] निर्लज्ज, अविनीत, अशिष्ट।

अत्रिः(स० अत्रि) [अद्+त्रिन्] एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेद के कई सूक्तों के द्रष्टा हैं। सम०—**जः,–जातः,–दृग्जः, –नेत्रप्रसूतः,–प्रभवः,–भवः** चन्द्रमा, तु०,—अथ नयनसमुत्थं ज्योतिरत्रेरिव द्यौः–रघु० २।७५।

अथ (अव्य०)[अर्थ्+ड पृषो० रलोपः] 1. मंगलसूचक शब्द जो किसी रचना के आरंभ में प्रयुक्त होता है—और जिसका अनुवाद 'यहां' 'अब'=मंगल, आरंभ, अधिकार, किया जाता है। परन्तु यदि सही रूप से देखा जाय तो 'अथ' का अर्थ 'मंगल' नहीं है, तो भी इस शब्द का उच्चारण या श्रवणमात्र 'मंगल' का सूचक समझा जाता है, क्योंकि यह शब्द ब्रह्मा के कण्ठ से निकला हुआ माना जाता है—ओंकारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा। कंठं भित्त्वा विनिर्यातौ तेन मांगलिकावुभौ। और इसी लिए हम शांकरभाष्य में देखते हैं—अर्थान्तरप्रयुक्तः अथशब्दः श्रुत्या मंगलमारचयति, अथ निर्वचनम्, अथ योगानुशासनम् (बहुधा अंत में 'इति' शब्द का प्रयोग पाया जाता है—इति प्रथमोऽङ्कः समाप्तः—आदि) 2. तब, उसके पश्चात्—अथ प्रजानामधिपः प्रभाते वनाय धेनुं मुमोच—रघु० २।१; प्रायः 'यदि' या 'चेत्' का सहसंबन्धी 3. यदि, कल्पना करते हुए, अच्छा तो, ऐसी स्थिति में, परंतु यदि—अथ कौतुकमावेदयामि—का० १४४; अथ मरणमवश्यमेव जन्तोः किमिति मुधा मलिनं यशः कुरुध्वम्–वेणी० ४, 4. और, इसी से तो और भी, इसी भांति–भीमोऽथार्जुनः—गण० 5. प्रश्न आरंभ करते समय या पूछते समय, बहुधा प्रश्नवाचक शब्द के साथ—अथ सा तत्रभवती किमाख्यस्य राजर्षेः पत्नी—श० ७, 6. समष्टि, सम्पूर्णता, अथ धर्मं व्याख्यास्यामः—गण०, अब हम 'धर्म' की (विवरण सहित) पूरी व्याख्या करेंगे 7. संदेह, अनिश्चितता–शब्दो नित्योऽथानित्यः–गण०। सम०—**अपि** (अव्य०) और भी, और फिर आदि (='अथ' अधिकांश स्थानों पर),—**किम्** (अव्य०) और क्या, हाँ, ठीक ऐसा ही, बिल्कुल ऐसा ही, अवश्य ही,—**च** (अव्य०) और भी, इसी प्रकार, —**वा** (अव्य०) 1. या; 2. अधिकतर, क्यों, कदाचित्, पिछली बात को संशुद्ध करते हुए—गमिष्याम्युपहास्यताम्……अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्—रघु० १।३-४; अथवा मृदु वस्तु हिंसितुम्—८।४५, दीर्घे किं न सहस्रधाहमथवा रामेण किं दुष्करम्—उत्त० ६।४०।

अथर्वन् (पुं०)[अथ+ऋ+वनिप्] 1. अग्नि और सोम का उपासक पुरोहित 2. अथर्वा ऋषि की सन्तान–ब्राह्मण, (ब० व०), अथर्वा ऋषि की सन्तान, अथर्ववेद के सूक्त, (पुं०—अथर्वा तथा नपुं०—अथर्व), °वेदः अथर्ववेद जो चौथा वेद माना जाता है, तथा जिसमें

शत्रु-नाश के लिए अनेक अमंगलप्रार्थनाएँ और अपनी सुरक्षा के लिए तथा विपत्ति, पाप, बुराई, एवं दुर्भाग्य से बचाव के लिए असंख्य प्रार्थनाएं पाई जाती हैं, इसके अतिरिक्त दूसरें वेदों की भांति इसमें भी धार्मिक एवं औपचारिक संस्कारों में प्रयुक्त होने वाले अनेक सूक्त हैं जिनमें प्रार्थनाओं के साथ-साथ देवताओं का अभिनन्दन किया गया है। सम० —निधिः,-विद् (पुं०) अथर्ववेद के ज्ञान का भंडार, अथवा अथर्व-ज्ञान से संपन्न—गुरुणा अथर्वविदा कृतक्रियः—रघु० ८।४, १।५९।

अथर्वणिः [अथर्वन्+इस्, न टिलोपः] अथर्ववेद में निष्णात अथवा इसमें निर्दिष्ट संस्कारों के अनुष्ठान में कुशल ब्राह्मण।

अथर्वाणं [अथर्वन्+अच्-पृषो० दीर्घः] अथर्ववेद की अनुष्ठान पद्धति।

अथवा=दे० 'अथ' के अन्तर्गत।

अद् (अदा० पर० सक० अनिट्) [अत्ति, अन्न-जघ] 1. खाना, निगलना, 2. नष्ट करना 3. दे० 'अंद्', प्रेर० खिलवाना, सन्नन्त० जिघत्सति—खाने की इच्छा करना।

अद, अद (वि०) [अद्+क्विप्, अच् वा] (समास के अंत में) खाने वाला, निगलने वाला।

अदंष्ट्र (वि०) [न० ब०] दन्तहीन,—ष्ट्रः वह सॉप जिसके जहरीले दांत तोड़ दिये गये हैं।

अदक्षिण (वि०) [न० त०] 1. जो दायां न हो अर्थात् बायां 2. जिसमें पुरोहितों को दक्षिणा न दी जाय, बिना दक्षिणा का (जैसे यज्ञ) 3. सरल, दुर्बलमना, मूर्ख 4. अनुपस्थित, अदक्ष या अपटु, गंवार, 5. प्रतिकूल।

अदण्ड्य (वि०) [न० त०] 1. दण्ड का अनधिकारी, 2. दण्ड से मुक्त या बरी।

अदत् (वि०) [न० ब०] दन्तरहित, बिना दांतों का।

अदत्त (वि०) [न० त०] 1. न दिया हुआ 2. अनुचित तरीके से दिया हुआ 3. जो विवाह में न दिया गया हो,—त्ता अविवाहित कन्या—त्तं वह दान जो रद्द कर दिया गया हो। सम०—आदायिन् (वि०) जो न दी हुई वस्तुओं को उठा कर ले जाता है—जैसे कि चोर, —पूर्वा वह कन्या जिसकी सगाई न हुई हो—अदत्त पूर्वेत्याशंक्यते—माल० ४।

अदन्त (वि०) [न० ब०] 1. दन्त रहित 2. वह शब्द जिसके अन्त में 'अत्' या 'अ' हो,—तः जोंक।

अदन्त्य (वि०) [न० त०] 1 जो दांतों से संबंध न रखता हो 2 दांतों के लिए अनुपयुक्त, दांतों के लिए हानिकारक।

अदभ्र (वि०) [न० ब०] अनल्प, प्रचुर, पुष्कल।

अदर्शनं [न० त०] 1. न दिखना, अनवलोकन, अनुपस्थिति, दिखाई न देना 2. (व्या०) अन्तर्धान, लोप, लुप्ति —अदर्शनं लोपः पा० १।१।६०।

अदस् (सर्व०) [पुं०-स्त्री०—असौ, नपुं०—अदः] वह (किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करना जो अनुपस्थित हो या वक्ता के समीप न हो)-इदमस्तु सन्निकृष्टं समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्। अदसस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षे विजानीयात्। 'यह' 'यहां' 'सामने' अर्थ को भी प्रकट करता है। 'यत्' के सहसंबंधी 'तत्' के अर्थ में भी प्रायः प्रयुक्त होता है। परन्तु जब कभी यह 'संबंध वाचक सर्वनाम' के तुरन्त बाद प्रयुक्त होता है (योऽसौ, ये अमी आदि) तो इस का अर्थ होता है 'प्रसिद्ध' 'सुख्यात' 'पूज्य'; दे० तद् भी।

अदातृ (वि०) [न० त०] 1 न देने वाला, कृपण 2 लड़की का विवाह न करने वाला।

अदादि (वि०) [न० ब०] दूसरे गण की धातुओं का समूह, जो 'अद्' से आरम्भ होता है।

अदाय (वि०) [नास्ति दायो यस्य—न० ब०] जो (संपत्ति में) हिस्से का अधिकारी न हो।

अदायाद (वि०) [न० त०] 1. जो उत्तराधिकारी न बन सके, 2. [न० ब०] जिसके कोई उत्तराधिकारी न हो।

अदायिक (वि०) [स्त्री०—अदायिकी] [न दायमर्हति—नञ्+दाय+ठक् न० ब०] 1 जिसका कोई उत्तराधिकारी दावेदार न हो, जिसके कोई उत्तराधिकारी न हों,—अदायिकं धनं राज्यगामि—कात्य० 2 [न० त०] उत्तराधिकार से संबंध न रखने वाला।

अदितिः (स्त्री०) [दातुं छेत्तुम् अयोग्या—दो+क्तिन्] 1 पृथ्वी 2 अदिति देवता, आदित्यों की माता, पुराणों में इसका वर्णन देवों की माता के रूप में किया गया है, 3 वाणी 4 गाय। सम० —जः, —नंदनः देवता, दिव्य प्राणी।

अदुर्ग (वि०) [न० त०] 1 जो दुर्गम न हो, जहाँ पहुँचना कठिन न हो 2 [न० ब०] वह स्थान जहाँ किले न हों—°विषयः—एक दुर्गरहित देश।

अदूर (वि०) [न० त०] 1 जो दूर न हो, समीप (काल और देश की स्थिति से),—रं सामीप्य, पड़ौस —वसन्नदूरे किल चन्द्रमौलेः—रघु० ६।३४; त्रिशतोऽदूरे वर्तते इति अदूरत्रिंशाः—सिद्धा०; अदूरे-म्,-तः,-रात्,-रे,-रेण (सम्प्रदान या संबंध के साथ), अधिक दूर नहीं, बहुत दूर नहीं।

अदृश् (वि०) [नास्ति दृग् अक्षि यस्य न० ब०] दृष्टिहीन, अंधा।

अदृष्ट (वि०) [नञ्—दृश्+क्त] अदृश्य, अनदेखा, °पूर्व=जो पहले न देखा गया हो; 2 अननुभूत 3 अदृष्टपूर्व, अनवलोकित, बिना सोचा हुआ, अज्ञात 4

अननुमत, अस्वीकृत, अवैध,—ष्टं 1 अदृश्य 2 नियति भाग्य, प्रारब्ध (शुभ या अशुभ) 3 गुण तथा अवगुण जो कि सुख तथा दुःख के अनुवर्ती कारण हैं; 4 दैवी विपत्ति या भय (जैसा कि आग या पानी आदि से)। सम०—अर्थ (वि०) आध्यात्मिक या गूढ अर्थ वाला, आध्यात्मिक,—कर्मन् (वि०) अव्यावहारिक, अनुभवहीन —फल (वि०) जिसके परिणाम अदृश्य हों,—फलं शुभाशुभ कर्मों का आगे आने वाला फल।

अदृष्टिः (स्त्री०) [न० त०] बुरी या द्वेषपूर्ण दृष्टि, कुदृष्टि —ष्टि (वि०) [न० ब०] अंधा।

अदेय (वि०) [न० त०] जो देने के लिए न हो, जो दिया न जा सके या दिया न जाना चाहिए,—यम् जिसका देना न उचित है और न आवश्यक है, इस श्रेणी में पत्नी, पुत्र, धरोहर और कुछ अन्य वस्तुएँ आती हैं।

अदेव (वि०) [न० त०] 1. जो देवताओं की भांति न हो, या दिव्य न हो 2. देवविहीन, अपवित्र, अधार्मिक—वः जो देवता न हो। सम०—मातृक (वि०) जहाँ वर्षा न हुई हो; माता की भांति दूध पिलाने या पानी देने के लिए जहाँ वर्षा का देवता काम न करता हो,—वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन्कुरवश्चकासते—कि० १।१७।

अदेशः [न० त०] 1. अनुपयुक्त स्थान 2 बुरा देश। सम०—कालः अनुपयुक्त स्थान और अनुपयुक्त समय,—स्थ (वि०) अनुपयुक्त स्थान पर ठहरा हुआ, उपयुक्त स्थान से विरहित।

अदोष (वि०) [न० ब०] 1 दोष, बुराई और त्रुटि आदियों से मुक्त 2 अश्लीलता, ग्राम्यता आदि साहित्य के दोषों से मुक्त, दे० दोष,—अदोषौ शब्दार्थौ—काव्य० १, अदोषं गुणवत्काव्यम्—सर० क० १।

अदोहः [न० ब०] 1 वह समय जो दोहने के लिये व्यावहारिक न हो 2 [न० त०] न दुहा जाना।

अद्धा (अव्य०) 1 सचमुच, बिल्कुल, अवश्य, निस्सन्देह—रघु० १३।६५; 2 प्रकटतः, स्पष्टरूप से—व्यालाधिपं च यतते परिरब्धुमद्धा—भामि० १।९५।

अद्भुत (वि०) [अद्+भू+डुतच्—न भूतम् इति वा] आश्चर्यजनक, विचित्र, °कर्मन्, °गंध, °दर्शन, °रूप; गूढ, अलौकिक;—तं 1 आश्चर्य, आश्चर्यजनक बात या घटना, विलक्षण घटना, चमत्कार 2 अचम्भा, अचरज, आश्चर्य (पुं०) भी;—तः आठ या नौ रसों में से एक, अद्भुत (अनोखा) रस। सम०—सारः —खदिर या खैर की आश्चर्यजनक राल,—स्वनः शिवका नाम।

अद्मनिः—[अद्+मनिन्] अग्नि।

अद्मर (वि०) [अद्+क्मरच्] बहुत अधिक खाने वाला, पेटू।

अद्य (वि०) [अद्+यत्] खाने के योग्य—द्यम् भोजन, खाने के योग्य पदार्थ, (अव्य०) आज, इस दिन—अद्य त्वां त्वरयति दारुणः कृतान्तः—माल० ५।२५, °रात्री—आज की रात, यह रात। सम०—अपि अभी, अब तक, आज तक, अभी नहीं, —गुरुः खेदं खिन्ने मयि भजति नाद्यापि कुरुषु—वेणी ०१।११; (चौरपंचाशिका के ५० श्लोक 'अद्यापि' से आरंभ होते हैं),—अवधि (अव्य०) 1 आज से लेकर, 2 आज तक—पूर्वम् पहले, अब,—प्रभृति (अव्य०) आज से, इस दिन से लेकर, अद्य प्रभृत्यवनतांगि तवास्मि दासः—कु० ५।८६,—श्वीना (वि०) आसन्नप्रसवा, वह स्त्री जिसका प्रसव काल निकट है—अद्यश्वीनामवष्टब्धे—पा० ५।२।१३।

अद्यतन (वि०) (स्त्री० —नी) [अद्य+ट्यु, तुट् च] 1आज से संबंध रखते हुए, संकेत करते हुए या विस्तृत होते हुए; 2 आधुनिक;—नः चालू दिन, यह दिन, चालू दिन की अवधि, दे०'अनद्यतन' भी,—नी (अर्थात् वृत्तिः) लुङ् लकार का नाम (=°भूतः)।

अद्यतनीय=अद्यतन 1 आज का 2 आधुनिक।

अद्रव्यम्—[न० त०] तुच्छ वस्तु, निकम्मा पदार्थ; नाद्रव्ये विहिता काचित्क्रिया फलवती भवेत्—हि० प्र० ४३; निकम्मा या अकर्मण्य छात्र या विद्यार्थी।

अद्रिः—[अद्+क्रिन्] 1 पहाड़ 2 पत्थर 3 वज्र 4 वृक्ष 5 सूर्य 6 मेघ-राशि, बादल 7 एक प्रकार का माप 8 सात की संख्या। सम०—ईशः,—नाथः,—पतिः,—राजः आदि, 1 पर्वतों का स्वामी, हिमालय 2 शिव (कैलाशपति) —कीला पृथ्वी —कन्या,—तनया,—नंदिनी,—सुता आदि पार्वती,—जम् लाल खड़िया,—द्विष्,—भिद् (पुं०) पहाड़ों का शत्रु या उन्हें तोड़ने वाला, इन्द्र का विशेषण; —द्रोणि-णी (स्त्री०) 1 पहाड़ की घाटी 2 पर्वत से निकलने वाली नदी;—पतिः,—राजः आदि, देखिये °ईश, —शय्यः शिव, —शृंगम्, —सानु पहाड़ की चोटी,—सारः पहाड़ों का सत्त्व, लोहा।

अद्रोहः—[न० त०] द्वेषराहित्य, बुराई का न होना परिमितता, मृदुता—मनु० ४।२।

अद्वय (वि०) [नास्ति द्वयं यस्य न० ब०] 1 दो नहीं, 2 अद्वितीय, अनुपम, एकमात्र,—यः बुद्ध का नाम,—यम् [न० त०] द्वैत का अभाव, एकता, तादात्म्य, विशेषतया ब्रह्म और विश्व का तादात्म्य या प्रकृति और आत्मा का तादात्म्य, परम सत्य। सम०—वादिन् (=अद्वैत°) 1 विश्व और ब्रह्म तथा प्रकृति एवं आत्मा के तादात्म्य का प्रतिपादक 2 बुद्ध।

अद्वारम्—[न० त०] जो दरवाजा न हो, मार्ग या रास्ता जो नियमित रूप से द्वार न हो;—अद्वारेण न चातीयाद् ग्रामं वा वेश्म वा पुरम्—मनु० ४।७३ ।

अद्वितीय (वि०) [न० ब०] 1 जिसके समान कोई दूसरा न हो, बेजोड़, लासानी,—न केवलं रूपे शिल्पेऽप्यद्वितीया मालविका—मालवि० २; 2 बिना साथी के, अकेला, —**यम्** ब्रह्मा. ।

अद्वैत (वि०) [न० ब०] 1 द्वैत हीन, एकस्वरूप, एकस्वभाव, समभाव, अपरिवर्तनशील, °तं सुखदुःखयोः—उत्त० १।३९; 2 बेजोड़, लासानी, एकमात्र, अनन्य, —**तम्** 1 द्वैत का अभाव, तादात्म्य, विशेषतया ब्रह्म का विश्व या आत्मा के साथ, या प्रकृति का आत्मा के साथ; दे० 'अद्वय' भी 2 परमसत्य या स्वयं ब्रह्म। सम०—**वादिन्**=अद्वयवादिन् दे० ऊपर, वेदान्त का अनुयायी ।

अधम (वि) [अव्+अम, वस्य स्थाने धादेशः] निम्नतम, जघन्यतम, अत्यंत कमीना, बहुत बुरा, नीच या निकृष्ट (गुण, योग्यता और पदादिक की दृष्टि से) (विप० उत्तम),—**मः** निर्लज्ज लम्पट;—वापीं स्नातुमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम्—काव्य० १; —**मा** निकम्मी गृहस्वामिनी । सम०—**अङ्गम्** पैर, —**अर्धम्** नाभि से नीचे का शरीर,—**ऋणः**, —**ऋणिकः** कर्जदार (विप० उत्तमर्णः),—**भृतः**, —**भृतकः** कुली, साइस ।

अधर (वि०) [नञ्+धृ+अच्] 1 नीचे का, अवर, निचला 2 नीच, कमीना, जघन्य, गुणों में नीचे दर्जे का, घटिया, 3 निरुत्तर, दलित;—**रः** नीचे का (कभी ऊपर का)ओष्ठ, ओष्ठमात्र;—पक्वबिंबाधरोष्ठी—मे० ८२; पिबसि रतिसर्वस्वमधरम्—श० १।२४;—**रम्** 1 शरीर का निम्नतर भाग 2 अभिभाषण, व्याख्यान (विप०—उत्तर), कभी २ उत्तर के लिए भी प्रयुक्त होता है। सम०—**उत्तर**(वि०)1 उच्चतर और निम्नतर अच्छा और बुरा;—राज्ञः समक्षमेवावयोः °व्यक्तिर्भविष्यति—मालवि० १; 2 शीघ्र या विलम्ब से, 3 उलटे ढंग से, उलट-पलट 4 निकटतर और दूरतर,—**ओष्ठः** नीचे का ओष्ठ,—**कंठः** ग्रीवा का निचला भाग, —**पानम्** चुम्बन, शाब्द० अधरोष्ठ को पीना, —**मधु**,—**अमृतम्** ओष्ठों का अमृत,—**स्वस्तिकम्** अधोबिन्दु ।

अधरस्मात्,—**रतः**,—**स्तात्**,—**रात्**,—**तात्**,—**रेण** (अव्य०) नीचे, तले, निचले प्रदेश में ।

अधरीकृ (तना० उभ०) [अधर+च्वि+कृ] आगे बढ़ जाना, पटक देना, पराजित करना ।

अधरीण (वि०) [अधर+ख] 1 नीचे का 2 निंदित, कलंकित, तिरस्कृत ।

अधरेद्युः (अव्य०) [अधर+एद्युस्] 1 पहले दिन 2 परसों (जो बीत गया) ।

अधर्मः—[न० त०] 1 बेईमानी, दुष्टता, अन्याय; अधर्मेण अन्यायपूर्वक 2 अन्याय्य कर्म, अपराध या दुष्कृत्य, पाप । धर्म और अधर्म, न्यायशास्त्र में वर्णित २४ गुणों में दो गुण हैं और यह आत्मा से संबंध रखते हैं, ये दोनों क्रमशः सुख और दुःख के विशिष्ट कारण हैं, यह इन इन्द्रियों से प्रत्यक्ष नहीं हैं, परन्तु इनका अनुमान पुनर्जन्म तथा तर्कना के द्वारा लगाया जाता है 3 प्रजापति या सूर्य के एक अनुचर का नाम,—**र्मा** साकार बेईमानी,—**र्मम्** विशेषणों से रहित, ब्रह्मा की उपाधि । सम०—**आत्मन्**,—**चारिन्** (वि०) दुष्ट, पापी ।

अधवा (न० ब०) विधवा स्त्री ।

अधस्, **अधः** (अव्य०) [अधर+असि, अधरशब्दस्य स्थाने अधादेशः] 1 तले, नीचे—पतत्यधो धाम विसारि सर्वतः—शि० १।२, निम्नप्रदेश में, नारकीय प्रदेशों में या नरक में (प्रकरण के अनुसार 'अधः' शब्द का अर्थ कर्तृकारक का होता है—°अंशुकं आदि; अपादान के साथ—अधो वृक्षात् पतति या अधिकरण के साथ—अधो गृहे शेते), 2 संबंधकारक के साथ 'संबंधबोधक अव्ययों' की भांति प्रयुक्त 'के नीचे' 'के तले' अर्थ को प्रकट करते हैं—तरूणाम्°—श० १।१४, (जब द्विरुक्ति की जाती है तो अर्थ होता है)—नीचे-नीचे, तले-तले—अधोऽधो गंगेयं पदमुपगता स्तोकम्—भर्तृ० २० १०, (कर्मकारक के साथ) नीचे से, नीचे ही नीचे—नवानधोऽधोवृहतः पयोधरान्—शि० १।४। सम० —**अंशुकम्** अधोवस्त्र,—**अक्षजः**, विष्णु,—**अधस्** दे० ऊपर,—**उपासनम्** मैथुन,—**करः** हाथ का निचला भाग (करभ),—**करणम्** आगे बढ़ जाना, हरा देना, अपमानित करना,—**खननम्** अंदर-अंदर सुरंग खोदना,—**गतिः** (स्त्री०),—**गमनम्**,—**पातः** 1 नीचे की ओर गिरना या जाना, उतरना 2 अधःपतन, हार, —**गन्तृ** (पुं०) चूहा,—**चरः** चोर,—**जिह्विका** उपजिह्वा (मराठी में 'पडजीभ' कहते हैं)—**दिश्** (स्त्री०) अधोबिन्दु, दक्षिण की दिशा,—**दृष्टिः** (स्त्री०) नीचे की ओर देखना,—**पातः**=°गतिः दे० ऊपर, —**प्रस्तरः** घास का बना आसन विलाप करने वाले व्यक्तियों के बैठने के लिए,—**भागः** 1 शरीर का निचला भाग 2 किसी चीज का निचला हिस्सा—**भुवनम्**,—**लोकः** —पाताल लोक, निम्नतर प्रदेश,—**मुख**,—**वदन** (वि०) नीचे को मुख किये हुए,—**लंबः** 1 पंसाल, साहुल 2 खड़ी सरल रेखा,—**वायुः** अपानवायु, अफारा,—**स्वस्तिकम्** अधोबिन्दु ।

अधस्तन (वि०) [स्त्री०—**नी**] [अधस्+ट्यु, तुट् च] निचला, निम्न स्थान पर स्थित ।

अधस्तात् (क्रि० वि० या सं० बो० अव्य०) नीचे, तले, अवर, के नीचे, के तले आदि (संबंधकारक के साथ) दे० अधः, धर्मेण गमनमूर्ध्वं गमनमधस्ताद्भवत्यधर्मेण—सां० का० ।

अधामार्गवः=अपामार्गः ।

अधारणक (वि०) [स्वार्थे कन् ०त्र०] जो लाभदायक न हो—°कं मर्मतत्स्थानम्—पंच० २ ।

अधि (अव्य०) [आ+धा+कि पृषो० ह्रस्वः] 1 (धातु के साथ उपसर्ग के रूप में) ऊर्ध्व, ऊपर,—°रुह् अति उगना या ऊपर उगना; अधिकता के साथ भी 2 (पृथक् क्रि० वि० के रूप में) आगे बढ़ कर, ऊपर 3 (सं० बो० अव्य० के रूप में) (कर्म० के साथ) (क) ऊपर, आगे, पर, में (ख) संकेत करते हुए, के संबंध में, के विषय में (ग) (अधि० के साथ) आगे, ऊपर (किसी वस्तु पर प्रभुता या स्वामित्व प्रकट करते हुए) अधिभुवि रामः 4 (त० स० के प्रथम पद के रूप में) (क) मुख्य, प्रमुख, प्रधान,—°देवता प्रमुख देवता (ख) व्यतिरिक्त, फालतू,—°दन्तः=अध्यारूढः दंतः, अधिक; °अधिक्षेप अत्यधिक परिनिन्दन ।

अधिक (वि०) [अधि+क] 1 बहुत, अतिरिक्त, बृहत्तर (समास में संख्याओं के साथ) धन, से अधिक—अष्टाधिकं शतम्—१००+८=१०८ 2 (क) परिमाण में बढ़कर, अधिक संख्यावाला, यथेष्ट, अधिक, बहुल—समास में या करण कारक के साथ (ख) अतिमात्र, बढ़ा हुआ, से भरा हुआ, पूर्ण, कुशल—शिशुरधिकवयाः—वेणी० ३।३०, बड़ा, अधिक आयु का—भवनेषु रसाधिकेषु पूर्वम्—श० ७।२०, 3 बहुत, अधिकतर, बलवत्तर—ऊनं न सत्त्वेष्वधिको बबाधे—रघु० २।१४, बलवत्तर जन्तु ने अपने से दुर्बल जन्तु का शिकार नहीं किया 4 प्रमुख, असाधारण, विशेष, विशिष्ट—इज्याध्ययनदानानि वैश्यस्य क्षत्रियस्य च, प्रतिग्रहोऽधिको विप्रे याजनाध्यापने तथा । या० १।११८, श० ७, 5 व्यतिरिक्त, फालतू—°अंग व्यतिरिक्त अंग वाला—नोद्वहेत्कपिलां कन्यां नाधिकाङ्गीं न रोगिणीम्—मनु०३।८,—कम् 1 अधिशेष, अधिक बहुत—लाभोऽधिकं फलम्—अमर०, 2 व्यतिरिक्तता, फालतू होना 3 अतिशयोक्ति के समान अलंकार; (क्रि० वि०) 1 अधिकतर, अधिक मात्रा में रघु० ४।१, समास में—इयमधिकमनोज्ञा—श० १।२०,°सुरभि—मेघ० २१, 2 अत्यन्त, बहुत अधिक । सम०—अंग (वि०) [स्त्री०—गी] व्यतिरिक्त अंग रखने वाला;—अर्थ (वि०) बढ़ा कर कहा हुआ, °वचनं-अतिशय कथन, अतिशयोक्त वक्तव्य या वचन (चाहे प्रशंसा के हों या निन्दा के), —ऋद्धि (वि०) प्रचुर पुष्कल–रघु० १९।५,-तिथिः (स्त्री०),—दिनम्,—दिवसः बढ़ा हुआ चांद्र दिवस,—वाक्योक्तिः (स्त्री०) बढ़ा चढ़ाकर कहना, अतिशयोक्ति अलंकार ।

अधिकरणम्—[अधि+कृ+ल्युट्] 1 प्रधान स्थान पर रखना, नियुक्ति 2 संबंध, उल्लेख, संपर्क 3 (व्या०) अनुरूपता, लिंग, वचन, कारक और पुरुष की समानता, अन्वय, कारक चिह्नों का इतर शब्दों से संबंध 4 आशय, विषय, उपस्तर 5 अधिष्ठान, स्थान, अधिकरण कारक का अर्थ—आधारोऽधिकरणम्—पा० १।४।४५, 6 प्रस्ताव, विषय, किसी विषय पर पूर्ण तर्क, (मीमांसकों के अनुसार पूर्ण अधिकरण के ५ अंग होते हैं—विषयो विशयश्चैव पूर्वपक्षस्तथोत्तरम्, निर्णयश्चेति सिद्धान्तः शास्त्रेऽधिकरणं स्मृतम् ।) 7 न्यायालय, कचहरी, न्यायाधिकरण,—स्वान्दोषान् कथयंति नाधिकरणे—मृच्छ० ९।३, 8 दावा 9 प्रभुता । सम०—भोजकः न्यायाधीश,—मंडपः कचहरी या न्यायभवन,—सिद्धान्तः ऐसा उपसंहार जिसका प्रभाव औरों पर भी पड़े ।

अधिकरणिकः [अधिकरण+ठन्] 1 न्यायाधीश, दण्डाधिकारी मृच्छ० ९, 2 राजकीय अधिकारी ।

अधिकर्मन्(न०) [प्रा० स०] 1 उच्चतर या बढ़िया कार्य 2 अधीक्षण,—(पु०) जिसके ऊपर अधीक्षण का कार्य भार हो । सम०—करः,—कृत् एक प्रकार का सेवक, कर्मचारियों का अध्यवेक्षक ।

अधिकर्मिकः [अधिकर्मन्+ठ] किसी मंडी का अध्यवेक्षक जिसका कार्य व्यापारियों से कर उगाहने का हो ।

अधिकाम (वि०) [अधिकः कामो यस्य] 1 उत्कट अभिलाषी, आवेशपूर्ण, कामातुर,—मः उत्कट अभिलाषा ।

अधिकारः [अधि+कृ+घञ्] 1 अधीक्षण, देखभाल करना 2 कर्तव्य, कार्यभार, सत्ताधिकार का पद, प्रभुत्व—द्वीपिनस्ताम्बूलाधिकारो दत्तः पंच० १, स्वाधिकारात् प्रमत्तः—मेघ० १, अधिकारे मम पुत्रको नियुक्तः—मालवि० ५, 3 प्रभुसत्ता, सरकार या प्रशासन, न्यायक्षेत्र, शासन 4 हक, प्राधिकार, दावा, स्वत्व (धन, संपत्ति आदि का), स्वामित्व या कब्जे का अधिकार—अधिकारः फले स्वाम्यमधिकारी च तत्प्रभुः—सा० द० २९६ 5 विशेषाधिकार (राजा के) 6 प्रकरण, अनुच्छेद या अनुभाग, प्रायश्चित्त°—मिता०, दे० 'अधिकरण' 7 (व्या०) प्रधान या शासनात्मक नियम । सम०—विधिः किसी विशेष कार्य को करने के लिए पात्रता का कथन,—स्थ,—आरूढ (वि०) पद पर विराजमान ।

अधिकारिन्, अधिकारवत् (वि०) [अधिकार+णिनि, अधिकार+मतुप्] 1 अधिकार सम्पन्न, शक्तिसम्पन्न 2 स्वत्व सम्पन्न, हकदार, सर्वे स्युरधिकारिणः 3 स्वामी,

मालिक 4 उपयुक्त (पुं०—री,—वान्) 1 राजपुरुष, पदाधिकारी कार्यकर्ता, अधीक्षक, प्रधान, निर्देशक, शासक 2 सही दावेदार, मालिक, स्वामी।

अधिकृत (वि०) [अधि+कृ+क्त] अधिकार प्राप्त, नियुक्त आदि,—**तः** राजपुरुष, पदाधिकारी, किसी पद के कार्यभार को संभालने वाला।

अधिकृतिः (स्त्री०) [अधि+कृ+क्तिन्] हक़, प्राधिकार, स्वामित्व, दे० अधिकार।

अधिकृत्य (अव्य०) [अधि+कृ+ (क्त्वा) ल्यप्] उल्लेख करके, के विषय में, के संबंध में—ग्रीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम्—श० १; शकुंतलामधिकृत्य ब्रवीति—श० २।

अधिक्रमः, **अधिक्रमणम्** [अधि+क्रम्+घञ्, ल्युट् च] हमला, चढ़ाई।

अधिक्षेपः—[अधि+क्षिप्+घञ्] 1 गाली, दोषारोपण, अपमान, भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्—कि० १।२८ 2 पदच्युत करना।

अधिगत (वि०) [अधि+गम्+क्त] 1 अर्जित, प्राप्त आदि—भर्तृ० २।१७, 2 अधीत, ज्ञात, सीखा हुआ, किमित्येवं पृच्छस्यनधिगतरामायण इव—उत्त०६।३०।

अधिगमः, **अधिगमनम्** [अधि+गम्+घञ्, ल्युट् च] 1 अर्जन, प्रापण 2 पारंगति, अध्ययन, ज्ञान 3 व्यापारिक लाभ, लाभ, संपत्ति प्राप्त करना, निघ्यादेः प्राप्तिः—मिता० या धनप्राप्ति, 4 स्वीकृति 5 मैथुन।

अधिगुण (वि०) [अधिका गुणा यस्य] 1 श्रेष्ठ गुण रखने वाला, योग्य, गुणी—याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा—मेघ० ६, 2 जिसकी डोरी कसकर खिंची हो (जैसे धनुष)।

अधिचरणम्—[अधि+चर्+ल्युट्] किसी के ऊपर चलना।

अधिजननम्—[अधि+जन्+ल्युट्] जन्म।

अधिजिह्वः—[ब० स०] सांप—**ह्वा**—**जिह्विका** 1 ताल जिह्वा 2 जिह्वा की सूजन (रोग)।

अधिज्य (वि०) [अध्यारूढा ज्या यत्र, अधिगतं ज्यां वा] धनुप की डोरी को कस कर खींचे हुए, या कस कर खिंची हुई डोरी वाला (जैसा कि धनुष)। सम०—**धन्वन्**,—**कार्मुक** (वि०) धनुप की डोरी को ताने हुए—त्वयि चाधिज्यकार्मुके—श० १।६।

अधित्यका [अधि+त्यकन्+टाप्] गिरिप्रस्थ (पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि) उच्चसमभूमि—स्थाणुं तपस्यन्तमधित्यकायाम्—कु० ३।१७, अधित्यकायामिव धातुमय्याम्—रघु० २।२९।

अधिदन्तः [अध्यारूढो दन्तः—प्रा० स०] दांत के ऊपर निकलने वाला दांत।

अधिदेवः, **अधिदेवता** [प्रा० स० अधिष्ठाता—त्री देवः देवता वा] इष्टदेव प्रधान देव, अभिरक्षक देवता, ययाचे पादुके पश्चात्कर्तुं राज्याधिदेवते—रघु० १२। १७, १६।९, भामि० ३।३

अधिदैवम्, **अधिदैवतम्** [अधिष्ठातृ दैवं दैवतं वा] किसी वस्तु की अधिष्ठात्री देवता।

अधिनाथः [प्रा० स०] परमेश्वर।

अधिनायः [अधि+नी+घञ्] गन्ध, महक।

अधिपः, **अधिपतिः** [अधि+पा+क, डति वा] स्वामी, शासक, राजा, प्रभु, प्रधान—अथ प्रजानामधिपः प्रभाते—रघु० २।१ (अधिकतर समास में प्रयुक्त)।

अधिपत्नी [प्रा० स०] वैं०—शासिका, स्वामिनी।

अधिपु (पू) रुषः [प्रा० स०] पुरुषोत्तम, परमेश्वर।

अधिप्रज (वि०) [अधिका प्रजा यस्य ब० स०] बहुत संतान वाला (स्त्री या पुरुष)।

अधिभूः [अधि+भू+क्विप्] स्वामी, श्रेष्ठ, प्रमुख।

अधिभूतम् [अधि+भू+क्त प्रा० स०—भूतं प्राणिमात्रमधिकृत्य वर्तमानम्] परमेश्वर, परमात्मा या तत्संबंधी समस्त व्यापक प्रभाव।

अधिमात्र (वि०) [अधिका मात्रा यस्य ब० स०] मान से अधिक, बहुत अधिक, अपरिमित।

अधिमासः [प्रा० स०] लौंद का महीना, मलमास।

अधियज्ञः [प्रा० स०] 1 प्रधान यज्ञ 2 ऐसे यज्ञ का अभिकर्ता।

अधिरथ (वि०) [अध्यारूढो रथं रथिनं वा] रथारूढ,—**थः**—1 सूत, सारथि 2 सूत का नाम जो अंगदेश का राजा तथा कर्ण का पालक पिता था।

अधिराज्, (पुं०) **अधिराजः** [अधि+राज्+क्विप् राजन्+टच् वा] प्रभुसत्ता प्राप्त या परमशासक, सम्राट्,—अद्यास्तमेतु भुवनेष्वधिराजशब्दः—उत्त० ६।१६, राजा, प्रधान, स्वामी (मनुष्य और पश्वादिकों का), हिमालयो नाम नगाधिराजः—कु० १।१, इसी प्रकार मृग°, नाग° आदि।

अधिराज्यम्, **अधिराष्ट्रम्** [अधिकृतं राज्यं राष्ट्रम् अत्र] 1 शाही हकूमत या सम्राट् का शासन, सर्वोच्चता, शाही मर्यादा 2 साम्राज्य 3 देश का नाम।

अधिरूढ (वि०) [अधि+रुह्+क्त] 1 सवार, चढ़ा हुआ 2 बढ़ा हुआ।

अधिरोहः [अधि+रुह्+घञ्] 1 गजारोही 2 सवार होना, चढ़ना।

अधिरोहणम् [अधि+रुह्+ल्युट्] चढ़ना, सवार होना, चिता°—रघु० ८।५७—**णी** सीढ़ी, सीढ़ी का डंडा (लकड़ी आदि का)।

अधिरोहिन् (वि०) [अधि+रुह्+णिनि] चढ़ने वाला, सवार होने वाला, ऊपर उठने वाला,—**णी** सीढ़ी, जीने की पौड़ी या डंडा।

अधिलोकम् (अव्य०) [प्रा० स०] 1 विश्व से संबंध रखने वाला 2 विश्व में ।

अधिवचनम् [अधि+वच्+ल्युट्] 1 पक्षसमर्थन, पक्ष में बोलना, 2 नाम, उपनाम, अभिधान ।

अधिवासः [अधि+वस्+णिच्+घञ्] 1 आवास, निवास, वास, तस्यापि च स एव गिरिरधिवासः—का० १।३७, वसति, बसना 2 धरना देना 3 यज्ञारंभ के पूर्व देवता का आवाहन पूजन आदि 4 पोशाक, परावरण, लबादा 5 सुवासित और सुगंधित उबटन लगाना, सुगंधयुक्त तथा महकदार पदार्थों का सेवन—अधिवासस्पृहयेव मारुतः—रघु० ८।३४ शि० २।२० ।

अधिवासनम् [अधि+वस्+णिच्+ल्युट्] सुगंध से बसाना, मूर्ति की प्रारंभिक प्रतिष्ठा, मूर्ति में देवता की प्राण-प्रतिष्ठा करना ।

अधिविन्ना [अधि+विद्+क्त] वह स्त्री जिसके रहते हुए पति दूसरा विवाह कर ले, या० १।७३-४, मनु० ९।८०-८३ ।

अधिवेत्तृ (पु०) [अधि+विद्+तृच्] एक स्त्री के रहते हुए दूसरा विवाह करने वाला ।

अधिवेदः, अधिवेदनम् [अधि+विद्+घञ्, ल्युट् वा] एक स्त्री के रहते अतिरिक्त स्त्री से विवाह करना ।

अधिश्रयः [अधि+श्रि+अच्] 1 आधार 2 उबालना, (आग पर रखकर) गर्म करना ।

अधिश्रयणम्, अधिश्रपणम् [अधि+श्रि (श्री)+ल्युट्] गरम करना, उबालना,—णी [अधिश्रीयते पच्यतेऽत्र—आधारे ल्युट्+ङीप्] चूल्हा, अंगीठी ।

अधिश्री (वि०) [अधिका श्रीर्यस्य] ऊँची प्रतिष्ठा वाला, सर्वश्रेष्ठ, बड़ा धनाढ्य, प्रभुसत्तासम्पन्न स्वामी—इयं महेन्द्रप्रभृतीनधिश्रियश्चतुर्दिगीशानवमत्य मानिनी—कु० ५।५३ ।

अधिष्ठानम् [अधि+स्था+ल्युट्] 1 निकट होना, पास में स्थित होना, पहुँच 2 पद, स्थान, आधार, आसन, जगह, नगर 3 निवास स्थान, आवास, 4 अधिकार, शक्ति, नियंत्रणशक्ति 5 सरकार, उपनिवेश 6 चक्र, (गाड़ी आदि का) पहिया 7 दृष्टांत, निर्दिष्ट नियम 8 आशीर्वाद ।

अधिष्ठित (वि०) [अधि+स्था+क्त] 1 (कर्तृवाच्य के रूप में) (क) स्थित, विद्यमान (ख) अधिकृत (ग) निदेशन, प्रधानता करना 2 (कर्मवाच्य के रूप में) (क) व्यस्त, अधिकृत (ख) भरा हुआ, ग्रस्त, अधिभूत (ग) परिरक्षित, सुरक्षा प्राप्त, अधीक्षित (घ) नीत, संचालित, आदिष्ट, प्रधानता किया गया ।

अधीकारः—दे० अधिकार; स्वागतं स्वानधीकारानवलंब्य—कु०—२।१८ ।

अधीतिन् (वि०) [अधीत+इनि] खूब पढ़ा लिखा, निष्णात—अधीती चतुर्ष्वाम्नायेषु—दश० १२०,(वेद व्याकरण आदि में) ।

अधीतिः (स्त्री) [अधि+इ+क्तिन्] 1 अध्ययन, अनुशीलन °बोधाचरणप्रचारणैः—नैष० १।३, 2 स्मरण, प्रत्यास्मरण ।

अधीन (वि०) [अधिगतम् इनम् प्रभुम्—प्रा० स०] आश्रित, मातहत, निर्भर (बहुधा समस्त पदों में) स्थाने प्राणाः कामिनां दूत्यधीनाः—मालवि० ३।१४, त्वदधीनं खलु देहिनां सुखम्—कु० ४।१०, इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे त्वदधीना हि सिद्धयः—रघु० १।७२ ।

अधीयानः (व० कृ०) [अधि+इ+शानच्] विद्यार्थी, वेदपाठी ।

अधीर (वि०) [न० त०] 1 साहसहीन, भीरु 2 उद्विग्न, उत्तेजित, उतावला 3 अस्थिर 4 धैर्यरहित, चंचल,—रा 1. बिजली 2 सनकी या झगड़ालू स्त्री ।

अधीवासः [अधि+वस्+घञ्—उपसर्गस्य दीर्घत्वम्] एक लंबा कोट जिससे सारा शरीर ढक जाय, लबादा, दे० अधिवास भी ।

अधीशः [प्रा० स०] स्वामी, सर्वोच्च स्वामी या मालिक, प्रभुसत्तासंपन्न राजा—अंग°, मृग°, मनुज° आदि ।

अधीश्वरः [प्रा० स०] सर्वोच्च स्वामी या नियोक्ता ।

अधीष्ट (वि०) [अधि+इष्+क्त] अवैतनिक, प्रार्थित—ष्टः अवैतनिक पद या कर्तव्य, ऐसा कार्य जिसमें सामर्थ्य का उपयोग हो सके, (अधीष्टः—सत्कार-पूर्वको व्यापारः—सिद्धा०) ।

अधुना (अव्य०) [इदमोऽधुनादेशः—पा० ५।३।१७] अब, इस समय—प्रमदानामधुना विडंबना—कु० ४।११ ।

अधुनातन (वि०) [स्त्री०-नी] [अधुना+ट्युल्-तुट्च] वर्तमान काल से संबंध रखने वाला, आधुनिक ।

अधूमकः [न० त०] जलती हुई आग ।

अधृतिः (स्त्री०) [नञ्+धृ+क्तिन्] 1 दृढ़ता या संयम का अभाव शिथिलता 2 असंयम 3 दुःख ।

अधृष्य (वि०) [न० त०] 1 अजेय, दुर्धर्ष, अनभिगम्य (विप० अभिगम्य) अधृष्यश्चाभिगम्यश्च यादोरत्नैरिवार्णवः—रघु० १।१६, 2 लजीला, शर्मीला 3 घमंडी ।

अधोक्ष, अधोक्षज, अधोंऽशुक—दे० "अधस्" के नीचे ।

अध्यक्ष (वि०) [अधिगतम् अक्षम् इन्द्रियम्—प्रा० स०, अध्यक्ष्णोति व्याप्नोति इति—अधि+अक्ष+अच्] गोचर, दृश्य,—यैरध्यक्षैरथ निजसखं नीरदं स्मारयद्भिः—भामि० ४।१७, २ निरीक्षक, अधिष्ठाता,—क्षः अधीक्षक, प्रधान, मुख्य—मयाऽध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्—भग० ९।१०, प्रायः समस्त पदों में; गज°, सेना°, ग्राम°, द्वार° ।

अध्यक्षरम् [प्रा० स०] रहस्यमय अक्षर 'ओम्' ।

अध्यग्नि (अव्य०) विवाह संस्कार की अग्नि के निकट या ऊपर, (नपुं०—ग्नि) विवाह के अवसर पर अग्नि को साक्षी करके स्त्री को दिया जाने वाला उपहार, धन—विवाहकाले यत्स्त्रीभ्यो दीयते ह्यग्निसन्निधौ, तदध्यग्निकृतं सद्भिः स्त्रीधनं परिकीर्तितम् ।

अध्यधि (अव्य०) [अधि+अधि] ऊपर, ऊँचे (कर्म० के साथ) लोकम्—सिद्धा० ।

अध्यधिक्षेपः [प्रा० स०] अत्यन्त अपशब्द या दुर्वचन, कुत्सित गालियां ।

अध्यधीन (वि०) [प्रा० स०] नितान्त अधीन, बिल्कुल वशीभूत, जैसे कि दास सेवक—या० ३।२२८ ।

अध्ययः [अधि+इ+अच्] 1 ज्ञान, अध्ययन, स्मरण 2=दे० अध्याय ।

अध्ययनम् [अधि+इ+ल्युट्] सीखना, जानना, पढ़ना (विशेषतया वेदों का), ब्राह्मण के षट्कर्मों में से एक । वेदाध्ययन केवल प्रथम तीन वर्णों के लिए विहित है, शूद्र के लिए नहीं—मनु० १।८८-५१ ।

अध्यर्ध (वि०) [अधिकमर्धं यस्य] जिसके पास अतिरिक्त आधा हो—शतमध्यर्धमायता—महा० अर्थात् १५०, °योजनशतात्—पंच० २।१८ ।

अध्यवसानम् [अधि+अव+सो+ल्युट्] 1 प्रयत्न, दृढ़-निश्चय आदि, दे० अध्यवसाय 2 (सा० शा० में) प्रकृत और अप्रकृत दोनों वस्तुओं का इस ढंग से एक रूप करना जिससे कि एक वस्तु दूसरी में विलीन हो जाय; निगीर्याध्यवसानं तु प्रकृतस्य परेण यत्—काव्य० १०, इसी प्रकार की एकरूपता पर अतिशयोक्ति अलंकार और साध्यवसाना लक्षणा आश्रित हैं ।

अध्यवसायः [अधि+अव+सो+घञ्] 1 प्रयास, प्रयत्न, परिश्रम 2 दृढ़निश्चय, संकल्प, मानस प्रयत्न या विचारों का ग्रहण, 3 धैर्य, उद्यम, लगातार कोशिश ।

अध्यवसायिन् (वि०) [अधि+अव+सो+णिनि] प्रयत्नशील, दृढ़संकल्प वाला, धैर्यशाली, उत्साही ।

अध्यशनम् [अधि+अश्+ल्युट्] अधिक खाना, एक बार का खाना पचे बिना फिर खा लेना ।

अध्यात्म (वि०) [आत्मनः संबद्धम्] आत्मा या व्यक्ति से संबंध रखने वाला,—त्मम् (अव्य०) आत्मा से संबद्ध —त्मम् परब्रह्म (व्यक्ति के रूप में प्रकट) या आत्मा और परमात्मा का संबंध; सम०—ज्ञानम्,—विद्या आत्मा या परमात्मा संबंधी ज्ञान अर्थात् ब्रह्म एवं आत्म-विषयक जानकारी (उपनिषदों द्वारा बताये गये सिद्धांत)—रति (वि०) जो परमात्मचिन्तन में सुख का अनुभव करे ।

अध्यात्मिक (वि०) [स्त्री०—की] अध्यात्म से सम्बन्ध रखने वाला ।

अध्यापकः [अधि+इ+णिच्+ण्वुल्] पढ़ाने वाला, गुरु, शिक्षक-विशेषतया वेदों का, व्याकरण°; न्याय°; भृतक अर्थार्थी अध्यापक । विष्णुस्मृति के अनुसार अध्यापक दो प्रकार के हैं—एक तो 'आचार्य' जो कि बालक को यज्ञोपवीत पहनाकर वेद-पाठ में दीक्षित करते हैं, दूसरे 'उपाध्याय' जो अपनी जीविका कमाने के लिए अध्यापन कार्य करते हैं, दे० मनु० २।१४०-४१ ।

अध्यापनम् [अधि+इ+णिच्+ल्युट्] पढ़ाना, सिखाना, व्याख्यान देना, ब्राह्मण के षट्कर्मों में से एक, भारतीय स्मृतिकारों के अनुसार 'अध्यापन' तीन प्रकार का है 1धर्मार्थ किया जाने वाला 2 मजदूरी प्राप्त करने के लिए 3 की गई सेवा के बदले ।

अध्यापयितृ (पुं०) [अधि+इ+णिच्+तृच्] अध्यापक, शिक्षक ।

अध्यायः [अधि+इ+घञ्] 1 पढ़ना, अध्ययन, विशेषतः वेदों का, 2 पाठ या पढ़ने के लिए उचित समय 3 पाठ, व्याख्यान 4 खण्ड, किसी रचना के भाग, निम्नांकित कुछ ऐसे नाम हैं जो संस्कृत लेखकों ने 'खण्ड' या 'भाग' को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किये हैं—सर्गो वर्गः परिच्छेदोद्घाताध्यायाङ्कसंग्रहं, उच्छ्वासः परिवर्तश्च पटलः कांडमाननम्, स्थानं प्रकरणं चैव पर्वोल्लासाह्निकानि च, स्कंधांशौ तु पुराणादौ प्रायशः परिकीर्तितौ ।

अध्यायिन् (वि०) [अध्याय+णिनि] अध्ययन करने वाला, अध्ययनशील ।

अध्यारूढ (वि०) [अधि+आ+रुह्+क्त] 1 सवार, चढ़ा हुआ, 2 ऊपर उठा हुआ, उन्नत 3 ऊँचा, श्रेष्ठ; नीचा, निम्नतर ।

अध्यारोपः [अधि+आ+रुह्+णिच्+पुक्+घञ्] 1 उठना, उन्नत होना आदि 2 (वे० द० में) भ्रमवश एक वस्तु को अन्यवस्तु समझना, भ्रम के कारण एक वस्तु के गुण दूसरी वस्तु में जोड़ना, भ्रमवश रस्सी को सांप समझना—असर्पभूतरज्जौ सर्पारोपवत्, अजगद्रूपे ब्रह्मणि जगद्रूपारोपवत्, वस्तुनि अवस्त्वारोपोऽध्यारोपः वे० सा०, 3 भ्रान्तिपूर्ण ज्ञान ।

अध्यारोपणम् [अधि+आ+रुह्+णिच्+पुक्+ल्युट्] 1 उठना आदि 2 (बीज) बोना ।

अध्यावापः [अधि+आ+वप्+घञ्] 1 बीजादिक बखेरना या बोना 2 वह खेत जिसमें बीजादिक बो दिया गया हो ।

अध्यावाहनिकम् [अध्यावाहनं (पितृगृहात्पतिगृहगमनम्) लब्धार्थे ठन्] छः प्रकार के स्त्रीधनों (वह सम्पत्ति जो एक स्त्री अपने पिता के घर से पति के घर को विदा होते समय प्राप्त करती है) में से एक—यत्पुनर्लभते नारी नीयमाना तु पैतृकात् (गृहात्) अध्यावाहनिकं नाम स्त्रीधनं परिकीर्तितम् ।

अध्यासः, अध्यासनम् [अधि+आस्+घञ्, ल्युट् वा] 1 ऊपर बैठना, अधिकार में करना, प्रधानता करना 2 आसन, स्थान ।

अध्यासः [अधि+आस्+घञ्] 1 मिथ्या आरोपण, मिथ्या ज्ञान, दे० 'अध्यारोप' को भी 2 परिशिष्ट 3 कुचलना —पादाध्यासे शतं दमः—या० २।२१७ ।

अध्याहारः / **अध्याहरणम्** [अधि+आ+हृ+घञ्, ल्युट् वा] 1 न्यूनपदता को पूरा करना 2 तर्क करना, अनुमान करना, नई कल्पना, अन्दाजा या अनुमान ।

अध्युष्ट्रः [अविगतः उष्ट्रं वाहनत्वेन] ऊँटगाड़ी ।

अध्यूढ [अधि+वह्+क्त] उठा हुआ, उन्नत,—**ढः** शिव—**ढा** वह स्त्री जिसके पति ने उसके रहते हुए दूसरा विवाह कर लिया हो दे० अधिविन्ना ।

अध्येषणम् [अधि+इष्+ल्युट्] किसी कार्य को करने की प्रेरणा देना, विशेषतः आचार्य के द्वारा, अर्थात् आदर पूर्वक किसी कार्य में प्रवृत्त करना, —**णा** निवेदन, याचना ।

अध्रुव (वि०) [न० त०] 1 अनिश्चित, सन्दिग्ध 2 अस्थिर, चंचल, पृथक्करणीय, —**वम्** अनिश्चितता, यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते, ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव च ।

अध्वन् (पु०) [अद्+क्वनिप् दकारस्य धकारः] 1 रास्ता, सड़क, मार्ग, नक्षत्र मार्ग २(क) दूरी, स्थान (चलकर पार किया गया और पार करने के निमित्त)—अपि लंघितमध्वानं बुबुधे न बुधोपमः—रघु० १।४७, उल्लंघिताध्वा—मेघ० ४५ (ख) यात्रा, भ्रमण, प्रसरण, प्रस्थान—नैकः प्रपद्येताध्वानम् मनु० ४।६०, 3 समय (काल), मूर्तकाल 4 आकाश, अन्तरिक्ष 5 उपाय साधन, प्रणाली 6 आक्रमण । सम० —**गः** 1 मार्ग चलने वाला, यात्री, बटोही—सन्तानकतरुच्छायासुप्तविद्याधराध्वगम्—कु० ६।४६ (°गामिन्), 2 ऊँट 3 खच्चर 4 सूर्य, —**गा** गंगा, —**पतिः** सूर्य, —**रथः** 1 यात्रा करने के लिए गाड़ी 2 हरकारा जो चलने में चतुर हो ।

अध्वनीन / **अध्वन्य** (वि०) [अध्वन्+ख, यत् वा] यात्रा पर जाने के योग्य, तेज़ चलने वाला—क्षिप्रं ततोऽध्वन्यतुरंगयात्री—भट्टि० २।४४,—**नः**, —**न्यः** तेज चलने वाला यात्री, बटोही ।

अध्वरः [अध्वानं सत्पथं राति—इति अध्वन्+रा+क अथवा न ध्वरति कुटिलो न भवति नञ्+ध्वृ+अच्, ध्वरतिहिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधो निपातः अहिंस्र—निरु०] यज्ञ, धार्मिक संस्कार, सोमयाग, तमध्वरे विश्वजिति —रघु० ५।१, —**रः**, —**रम्** आकाश या वायु । सम० —**दीक्षणीया** अध्वर संबंधी संस्कार, इसी प्रकार °**प्रायश्चित्तिः**—प्रायश्चित्त, पापनिष्कृति, —**मीमांसा** जैमिनि की पूर्वमीमांसा ।

अध्वर्युः [अध्वर+क्यच्+युच्] 1 ऋत्विक्, पुरोहित, पारिभाषिक रूप से 'होतृ' 'उद्गातृ' तथा 'ब्रह्मन्' से अतिरिक्त ऋत्विक्, 2 यजुर्वेद । सम० —**वेदः** यजुर्वेद ।

अध्वाति=अध्वग ।

अध्वान्तम् [न० त०] संध्या, अन्धकार ।

अन् (अदा० पर० सेट्) [अनिति, अनित] 1 सांस लेना, 2 हिलना, जीना, प्रेर० आनयति, सन्नन्त० अनिनिषति । (दिवा० आ०) जीना, 'प्र' उपसर्ग के साथ—जीवित रहना—यदहं पुनरेव प्राणिमि—का० ३५, प्राणिमस्तव मानार्थ—भामि० ४।३८ ।

अनः [अन्+अच्] साँस, प्रश्वास ।

अनंश (वि०) [न० ब०] जिसका पैतृक सम्पत्ति पर कोई अधिकार न हो ।

अनकदुंदुभिः =दे० आनकदुंदुभिः ।

अनक्षः (वि०) [न० ब०] दृष्टिहीन, अंधा ।

अनक्षरः (वि०) [न० ब०] 1 बोलने में असमर्थ, मूक, गूंगा 2 अशिक्षित 3 बोलने के अयोग्य, —**रम्** दुर्वचन गाली, निन्दा या अपशब्द, (क्रि० वि०) बिना शब्दों के— °व्यंजित दौहृदेन रघु० १४।२६ ।

अनग्निः [न० त०] 1 अग्नि का न होना, अग्नि के बजाय कोई दूसरी वस्तु—यदधीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते, अनग्नाविव शुष्कैधो न तज्ज्वलति कर्हिचित् । नि० 2 अग्नि का अभाव, (वि०) [न० ब०] 1 जिसे अग्नि की आवश्यकता न हो—विदधे विधिमस्य नैष्ठिकं यतिभिः सार्धमनग्निमग्निचित्—रघु० ८।२५, 2 अग्निहोत्र न करने वाला, 3 श्रौतस्मार्त कर्म से विरहित, अधार्मिक 4 अग्निमांद्य रोग से ग्रस्त 5 अविवाहित ।

अनघ (वि०) [न० ब०] 1 निष्पाप, निरपराध—अवैमि चैनामनघेति—रघु० १४।४०, 2 निर्दोष, सुन्दर, —रूपमनघम्—श० २।१३, यस्य ज्ञानदयासिंधोरगाधस्यानघा गुणाः—अमर० 3 सकुशल, घातरहित, अक्षत, सुरक्षित—कच्चिन्मृगीणामनघा प्रसूतिः—रघु० ५।७, मृगवधूर्यदा अनघप्रसवा भवति—श०४, जिसका प्रसव सकुशल हो चुका हो या जो प्रसव के पश्चात् सकुशल शय्या पर लेटी हो 4 पवित्र, निष्कलंक,—**घः** 1 सफेद सरसों, 2 विष्णु या शिव का नाम ।

अनङ्कुश (वि०) [न० ब०] 1 उद्दंड, उच्छृंखल 2 (कवि की भांति) स्वच्छन्द ।

अनङ्ग (वि०) [न० ब०] देहरहित, अशरीरी, आकृतिहीन त्वमनंगः कथमक्षता रतिः —कु० ४।९, —**गः** (देहरहित), कामदेव —**गम्** 1 आकाश, वायु, अन्तरिक्ष, 2 मन । सम० —**क्रीडा** कामक्रीडा, —**लेख**=मदन

लेख, प्रेमपत्र, °लेखक्रियोपयोगं (व्रजन्ति) कु० १।७, °शत्रुः, °असुहृत् आदि—शिव जी के नाम।

अनञ्जन (वि०) [न० ब०] बिना अंजन, वर्णक या काजल के—नेत्रे दूर मनञ्जने—सा० द०, —**नम्** 1 आकाश, वातावरण 2 परब्रह्म विष्णु या नारायण (पुं० भी)।

अनडुह् (पुं०) [अनः शकटं वहति—नि०] [अनड्वान्, °ड्वाहौ, °डुद्भ्याम् आदि०] 1 बैल, सांड 2 वृष-राशि,—**ही** (अनड्वाही) गाय।

अनति (अव्य०) [न० त०] बहुत अधिक नहीं, 'अनति' से आरम्भ होने वाले समस्त पदों का विश्लेषण 'अति' से आरम्भ होने वाले शब्दों की भांति किया जा सकता है।

अनतिविलंबिता—विलम्ब का अभाव, व्याख्यानदाता का एक गुण धाराप्रवाहिता, ३५ वाग्गुणों में से एक।

अनद्यतन वि० [स्त्री०—नी] [न० त०] आज या चालू दिन से संबंध न रखने वाला, पाणिनि का एक पारि-भाषिक शब्द जो लङ् और लुट् लकार के अर्थ को प्रकट करता है, —**नः** जो चालू दिन न हो, अतीतायाः रात्रेः पश्चार्धेन आगामिन्या रात्रेः पूर्वार्धेन सहितो दिवसोऽनद्यतनः—सिद्धा०, तद्भिन्नः कालः।

अनधिक (वि०) [न० त०] 1 जो अधिक न हो, 2 असीम पूर्ण।

अनधीनः [न० त०] अपनी इच्छा से कार्य करने वाला स्वाधीन बढ़ई, कौटतक्ष।

अनध्यक्ष (वि०) [न० त०] 1 अप्रत्यक्ष, अदृश्य 2 शासक हीन।

अनध्यायः } **अनध्ययनम्** } [न० त०] न पढ़ना, पढ़ाई में विराम, वह समय जब कि इस प्रकार का विराम होता है या होना चाहिए, एक अवकाश का दिन (°दिवसः) अद्य शिष्टानध्यायः—उत्तर० ४–किसी पूज्य अतिथि के सम्मान में दिया गया अवकाश।

अननम् [अन्+ल्युट्] सांस लेना, जीना।

अननुभावुक (वि०) जो समझने के अयोग्य हो।

अनन्त (वि०) [नास्ति अन्तो यस्य न० ब०] अन्तरहित, अपरिमित, निस्सीम, अक्षय,—°रत्नप्रभवस्य यस्य—कु० १।३,—**तः** 1 विष्णु की शय्या शेषनाग, कृष्ण, बलराम, शिव, नागों का पति वासुकि 2 बादल 3 कहानी, 4 चौदह ग्रन्थियों से युक्त रेशमी डोरा जो अनंत चतुर्दशी के दिन दक्षिण भुजा पर बांधा जाता है;—**ता** 1 पृथ्वी (अन्तहीन) 2 एक की संख्या 3 पार्वती 4 शारिवा, अनंतमूल, दूर्वा आदि पौधे; —**तम्** 1 आकाश, वातावरण 2 असीमता 3 मोक्ष 4 परब्रह्म। सम०—**तृतीया** वैशाख, भाद्रपद और मार्गशीर्ष मास की शुक्लपक्ष की तीज—**दृष्टिः** शिव, इन्द्र,—**देवः** 1 शेषनाग 2 नारायण जो शेषनाग के ऊपर सोता है,—**पार** (वि०) असीम विस्तारयुक्त, निस्सीम, —°रं किल 'शब्दशास्त्रम्—पंच० १,—**रूप** (वि०) अगणित रूपवाला, विष्णु,—**विजयः** युधिष्ठिर का शंख—भग० १।१६।

अनन्तर (वि०) [नास्ति अंतरं यस्य—न० ब०] 1 अन्तर-रहित, सीमारहित 2 जिसके बीच देश काल का कोई अन्तर न हो, सटा हुआ, लगा हुआ 3 संसक्त, पड़ौस का, बिल्कुल मिला हुआ, निकटवर्ती (अपादान के साथ) ब्रह्मावर्तादनन्तरः—मनु० २।१९, 4 अनु-वर्ती, सन्निहित होना (समास में) 5 अपने से ठीक नीचे के वर्ण का,—**रम्** 1 संसक्तता, सन्निकटता 2 ब्रह्म, परमात्मा,—**रम्** (अव्य०) तुरन्त बाद, पश्चात् 2 (संबंधवाचकता की दृष्टि से) बाद में, (अपादान के साथ)—पुराणपत्त्रापगमानन्तरम्—रघु० ३।७, गोदानविधेरनन्तरम्—३।३३.३६,२,७१। सम०—**ज** या—**जा** 1 क्षत्रिय या वैश्य माता में, अपने से ठीक ऊपर के वर्ण के पिता के द्वारा उत्पन्न सन्तान—मनु० १०।४ 2 'तरपरिया' भाई बहन, (-**जा**) छोटी या बड़ी बहन—अनुष्ठितानंतरजाविवाहः—रघु० ७।३२ इसी प्रकार °जात।

अनन्तरीय (वि०) [अनंतर+छ] वंशक्रम में ठीक बाद का।

अनन्य (वि०) [न० त०] 1 अभिन्न, समरूप, वही, अद्वि-तीय 2 एकमात्र, अनुपम, जिसके साथ और दूसरा न हो 3 अविभक्त, एकाग्र, अन्य की ओर न जाने वाला, —अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते—भग० ९।२२, समास में 'अनन्य' शब्द का, अनुवाद किया जा सकता है—'दूसरे के द्वारा नहीं' और किसी ओर लग्न या निदेशित नहीं' 'एकाश्रयी'। सम०—**गतिः** (स्त्री०) एकमात्र सहारे वाला—अनन्यगतिके जने विगतपातके चातके—उद्भट; —**चित्त**,—**चित**,—**चेतस्**, —**मनस्**, —**मानस**,—**हृदय** (वि०) एकाग्रचित्त, जिसका मन और कहीं न हो;—**जः**,—**जन्मन्** (पुं०) कामदेव, प्रेम का देवता—मा मूमुहन्खलु भवंतमनन्यजन्मा—मा० १।३२,—**पूर्वः** वह पुरुष जिसके और कोई स्त्री न हो; (—**र्वा**) कुमारी,, बिनब्याही स्त्री—रघु० ४।७; —**भाज्** (वि०) किसी और व्यक्ति की ओर लगाव न रखने वाला; —अनन्यभाजं पतिमाप्नुहि—कु० ३।६३; —**विषय** (वि०) किसी और से संबंध न रखने वाला, —**वृत्ति** (वि०) 1 वैसे ही स्वभाव का 2 जिसकी दूसरी जीविका न हो 3 एकनिष्ठ मनोवृत्ति वाला; —**सामान्य**,—**साधारण** (वि०) दूसरे से न मिलने वाला, असाधारण, ऐकान्तिक रूप से लगा हुआ, बेल-गाव,—अनन्यनारी सामान्यो दासस्त्वस्याः पुरूरवाः—विक्रम० ३।१८ °राजशब्दः—रघु० ६।३८;—**सदृश** (वि०) [स्त्री०—**शी**] बेजोड़, अनुपम।

अनन्वयः [न० त०] 1. संबंध का अभाव 2 (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की तुलना उसी से की जाय—और उसको ऐसा बेजोड़ सिद्ध किया जाय जिसका कोई और उपमान ही न हो। जैसे गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः, रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव ॥

अनप (वि०) [न० ब०] जलहीन (जैसे क्षुद्रजलाशय)।

अनपकारणम्, अनपकर्मन्, अनपक्रिया [न० त०] 1 चोट न पहुंचाना 2 सुपुर्दगी का अभाव 3 (कानून में) ऋण न चुकाना।

अनपकारः (न० त०) अहित का अभाव—**कारिन्** (वि०) अहित न करने वाला, निर्दोष।

अनपत्य (वि०) [न० ब०] सन्तानहीन, निस्सन्तान, जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

अनपत्रप (वि०) [न० ब०] धृष्ट, निर्लज्ज।

अनपभ्रंशः [न० त०] वह शब्द जो भ्रष्ट न हो, व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध शब्द।

अनपसर (वि०) [न० ब०] जिसमें से निकलने का कोई मार्ग न हो, अन्यायोचित, अक्षम्य,—**रः** बल पूर्वक अधिकार करने वाला।

अनपाय (वि०) [न० ब०] 1 हानि या क्षय से रहित, 2 अनश्वर, अक्षीण, अक्षयी—प्रणमन्त्यनपायमुत्थितम् (चन्द्रम्) कि० २।११,—**यः** [न० त०] 1 अनश्वरता, स्थायिता 2 शिव।

अनपायिन् (वि०) [अनपाय+णिनि] अनश्वर, दृढ़, स्थिर, अचूक, सतत टिकाऊ, अचल—प्रसादाभिमुखे तस्मिन् श्रीरासीदनपायिनी—रघु० १७।४६, ८।१७, अनपायिनि संशयद्रुमे गजभग्ने पतनाय वल्लरी—कु० ४।३१।

अनपेक्ष-क्षिन् (वि०) [न० ब०, न० त०] 1 असावधान 2 लापरवाह, परवाह न करने वाला, उदासीन 3 स्वतंत्र, दूसरे की अपेक्षा न रखने वाला, 4 निष्पक्ष 5 असंबद्ध;—**क्षा** [न० त०] असावधानी, उदासीनता—**क्षम्** (क्रि० वि०) विना ध्यान के, स्वतंत्र रूप से, परवाह न करते हुए, वेपरवाही से।

अनपेत (वि०) [न० त०] 1 जो दूर न गया हो, बीता न हो 2 विचलित न हुआ हो (अपा० के साथ) अर्थादनपेतम् अर्थ्यम्—सिद्धा० 3 अविरहित, सम्पन्न—ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरमयं लोकोऽर्थतः सेवते—मुद्रा० १।१४।

अनभिज्ञ (वि०) [न० त०] अनजान, अपरिचित, अनभ्यस्त (प्रायः संब० के साथ) °ज्ञः कैतवस्य—श० ५, °ज्ञः परमेश्वरगृहाचारस्य—महा० २।

अनभ्यावृत्ति (स्त्री०) [न० त०] पुनरुक्ति का अभाव—मनागनभ्यावृत्त्या वा कामं क्षाम्यतु यः क्षमी—शि० २।४३

अनभ्याश—स (वि०) [न० ब०] जो निकटस्थ न हो, दूरस्थ आदि °समित्य (वि०) दूर से ही बिदकने वाला सिद्धा०।

अनभ्र (वि०) [न० ब०] बिना बादलों के, इयमनभ्रा वृष्टिः—यह तो बिना ही बादलों के आकाश से वृष्टि होने लगी—अर्थात् अप्रत्याशित या आकस्मिक घटना।

अनमः [न० त०] वह ब्राह्मण जो दूसरों को न तो नमस्कार करता है और न उनके नमस्कार का उत्तर देता है।

अनमितम्पच (=मितंपच) (वि०) [न० त०] कंजूस, मक्खीचूस।

अनम्बर (वि०) [न० ब०] वस्त्र न पहने हुए, नंगा—**रः** बौद्धभिक्षु।

अनयः [न० त०] 1 दुर्व्यवस्था, दुराचरण, अन्याय, अनीति 2 दुर्नीति, दुराचार, कुमार्ग 3 विपत्ति, दुःख, मनु० १०।९५, 4 दुर्भाग्य, बुरी किस्मत 5 जूआ खेलना।

अनर्गल (वि०)[न० ब०] स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित—तुरंगमुत्सृष्टमनर्गलम्—रघु० ३।३९ 2 जिसमें ताला न लगा हो।

अनर्घ (वि०) [न० ब०] अनमोल, अमूल्य, जिसके मूल्य का अनुमान न लगाया जा सके,—**घः** गलत या अनुचित मूल्य।

अनर्घ्य (वि०) [न० त०] अमूल्य, सर्वाधिक सम्मान्य।

अनर्थ (वि०) [न० ब०] 1 अनुपयुक्त, निकम्मा 2 भाग्यहीन, सुखरहित 3 हानिकारक 4 अर्थहीन, निरर्थक,—**र्थः** [न० त०] 1 उपयोग या मूल्य का न होना 2 निकम्मी या अनुपयुक्त वस्तु 3 विपत्ति, दुर्भाग्य—रंध्रोपनिपातिनोऽर्थाः—श० ६, छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति 4 अर्थ का न होना, अर्थ का अभाव। सम०—**कर** (वि०) [स्त्री०—री] अनिष्टकर, हानिकर।

अनर्थ्य, अनर्थक (वि०) [न० त०] 1 अनुपयुक्त, निरर्थक 2 सारहीन 3 अर्थ हीन 4 लाभरहित 5 दुर्भाग्यपूर्ण,—**कम्** अर्थहीन या असंगत बात।

अनर्ह (वि०) [न० त०] 1 अनधिकारी, अयोग्य 2 अनुपयुक्त (संब० के साथ या समास में)।

अनलः [नास्ति अलः पर्याप्तिर्यस्य—न० ब०] 1 आग 2 अग्नि या अग्निदेवता 3 पाचनशक्ति 4 पित्त। सम०—**द** (वि०) [अनलं द्यति] 1 गर्मी या आग को नष्ट करने वाला, 2=दे० अग्निद—**दीपन** (वि०) जठराग्नि या पाचनशक्ति को बढ़ाने वाला,—**प्रिया** अग्नि की पत्नी स्वाहा,—**सादः** क्षुधा का नाश, अग्निमांद्य।

अनलस (वि०) [न० त०] 1 आलस्यरहित, चुस्त, परिश्रमी 2 अयोग्य, असमर्थ।

अनल्प (वि०) [न० त०] 1 बहुसंख्यक 2 जो थोड़ा न हो, उदाराशय, उदार (जैसा कि मनु आदि) अधिक,

जल्पंत्यनल्पाक्षरम्—पंच० १।१३६ विकसितवदनामनल्पजल्पेपि—भामि० १।१००, २।१३८।

अनवकाश (वि०) [न० ब०] 1 अनाहूत, 3 अप्रयोज्य 2 जिसके लिए कोई गुंजायश या मौका न हो,—शः [न० त०] स्थान या कार्यक्षेत्र का अभाव।

अनवग्रह (वि०) [न० ब०] जो रोका न जा सके—सुकुमारकायमनवग्रहः स्मरः (अभिहंति) मा० १।३९।

अनवच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1 सीमांकन रहित, अपृथक्कृत 2 सीमारहित, अधिक 3 अनिर्दिष्ट, अविविक्त, अविकृत 4 अबाधित।

अनवद्य (वि०) [न० त०] निर्दोष, कलंकरहित, अनिंद्य—रघु० ७।७०। सम०—अंग,—रूप (वि०) निर्दोष या नितान्त सुन्दर अंगों वाला (—गी) रूपवती स्त्री।

अनवधान (वि०) [न० ब०] निरपेक्ष, ध्यान न देने वाला,—नम् [न० त०] प्रमाद, असावधानता, °ता—लापरवाही।

अनवधि (वि०) [न० ब०] असीमित, अपरिमित।

अनवम (वि०) [न० त०] जो नीच या तुच्छ न हो, बड़ा, श्रेष्ठ, सुधर्मानवमां सभाम्—रघु० १६।२७, ९।१४।

अनवरत (वि०) [न० त०] अविराम, निरंतर—°धनुर्ज्यास्फालनक्रूरपूर्वम् श० २।४,—तम् (क्रि० वि०) बिना रुके, लगातार।

अनवराध्यं (वि०) [अवरस्मिन् अर्घे भवः—इत्यर्थे नञ्+अवरार्ध+यत् न० त०] मुख्य, सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

अनवलंब—बन (वि०) [न० त०] अवलंबहीन, निराश्रित—**बः,—बनम्** स्वतंत्रता।

अनवलोभनम् [न० त०] गर्भ के तीसरे मास किया जाने वाला एक संस्कार।

अनवसर (वि०) [न० ब०] 1 व्यस्त 2 निरवकाश,—रः [न० त०]। अवकाश का अभाव, कुसमय होना, असामयिकता, कं याचे यत्र यत्र ध्रुवमनवसरग्रस्त एवार्थिभावः—मा० ९।३०।

अनवस्कर (वि०) [न० ब०] मलरहित, स्वच्छ, साफ।

अनवस्थ (वि०) [न० त०] अस्थिर,—स्था [न० त०] 1 अस्थिरता 2 अनिश्चित अवस्था 2 चरित्रभ्रष्टता, लम्पटता 3 (दर्शन० में) किसी अन्तिम निर्णय पर न पहुँचना, कार्य-कारण की ऐसी परंपरा जिसका अन्त न हो, तर्क का एक दोष—एवमप्यनवस्था स्याद्या मूलक्षतिकारिणी—काव्य० २ एवं च °प्रसंगः—शा०।

अनवस्थान (वि०) [न० ब०] अस्थायी, अस्थिर, चंचल,—नः वायु—नम् [न० त०] 1 अस्थिरता, 2 आचारभ्रष्टता, लम्पटता।

अनवस्थित (वि०) [न० त०] 1 अस्थिर, अस्थिरचित्त 2 परिवर्तित 3 आवारा।

अनवेक्षक (वि०) [न० त०] असावधान, बेपरवाह, उदासीन।

अनवेक्ष-क्षा=दे० अनपेक्ष-क्षा।

अनवेक्षणम् [नञ्+अव्+ईक्ष+ल्युट्] लापरवाही, अनवधानता।

अनशनम् [नञ्+अश्+ल्युट्] उपवास, आमरण उपवास।

अनश्वर (वि०) [स्त्री०—री] [न० त०] अविनाशी।

अनस् (पुं०) [अन्+असुन्] 1 गाड़ी 2 भोजन, भात 3 जन्म, 4 प्राणी 5 रसोईघर।

अनसूय—यक (वि०) [न० ब०] द्वेष रहित, ईर्ष्यारहित,—या [न० त०] 1 ईर्ष्या का अभाव, 2 अत्रि की पत्नी, स्त्रियोचित पतिभक्ति और सतीत्व का ऊँचा नमूना।

अनहन् (नपुं०) [न० त०] बुरादिन, दुर्दिन।

अनाकालः [न० न० नि०] 1 कुसमय 2 दुर्भिक्ष (संभवतः "अन्नाकाल" शब्द का अनियमित रूप)। सम०—भृतः—जो व्यक्ति दुर्भिक्ष में भूख से अपने आपको बचाने के लिए स्वयं दूसरे का दास बन जाता है।

अनाकुल (वि०) [न० त०] 1 शान्त, प्रकृतिस्थ, स्वस्थ 2 अटल।

अनागत (वि०) [न० त०] 1 न आया हुआ, न पहुंचा हुआ तावद्भयस्य भेतव्यं यावद्भयमनागतम्—हि० १।५७, 2 अप्राप्त, जो न मिला हो 3 भविष्यत्, आने वाला, दे० नीचे सम० को 4 अज्ञात,—तम् भविष्यत्काल, भविष्य। सम०—**अवेक्षणम्** भविष्य की ओर देखना, आगे की ओर दृष्टि रखना,—**अबाधः** आने वाला भौतिक कष्ट या विपत्ति,—**आर्तवा** वह कन्या जिसका मासिक स्राव अभी आरम्भ न हुआ हो, अरजस्का,—**विधातृ** (पुं०) आने वाले अनिष्ट का पहले ही से निराकरण करने वाला, भविष्य के विषय में सावधान, दूरदर्शी (पंच० १।३१८ तथा हि० ४।५ में इस नाम की एक मछली)।

अनागमः [न० त०] 1 न आना 2 अप्राप्ति।

अनागस् (वि०) [न० ब०] निरपराध, निर्दोष—आर्तत्राणाय वः शस्त्रं नः प्रहर्तुमनागसि—श० १।११।

अनाचारः [न० त०] अनुचित आचरण, दुराचरण, कुरीति।

अनातप (वि०) [न० ब०] धूप या गर्मी से युक्त, ताप रहित, ठंडा।

अनातुर (वि०) [ब० त०] 1 अनुत्सुक, उदासीन 2 न थका हुआ, अक्लांत—भेजे धर्ममनातुरः—रघु १।२१ ३ अच्छा, स्वस्थ।

अनात्मन् (वि०) [न० ब०] 1 आत्मा या मन से रहित 2 अनात्मिक 3 जिसने अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रक्खा है,—(पुं०) जो आत्मिक न हो, आत्मा से भिन्न अर्थात् नश्वर शरीर। सम०—**ज्ञ**,—**वेदिन्** (वि०)

अपने आपको न जानने वाला, मूर्ख, जड—मा तावदनात्मज्ञे—श० ६,—संपन्न (वि०) मूर्ख।

अनात्मनीन (वि०) [नञ्+आत्मन्+ख] जो अपने ही लाभ के लिए कार्य करने का अभ्यस्त न हो, निःस्वार्थ, स्वार्थ रहित।

अनात्मवत् (वि०) [आत्मा वश्यत्वेन नास्ति इत्यर्थे—नञ्+आत्मन्+मतुप् न० त०] असंयमी, इन्द्रिय परायण।

अनाथ (वि०) [न० ब०] असहाय, निर्धन, त्यक्त, मातृपितृहीन, बिना मां—बाप का बच्चा, विधवा स्त्री, सामान्यतः जिसका कोई रक्षक न हो—नाथवन्तस्त्वया लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे उत्तर० १।४३। सम० —सभा अनाथालय।

अनादर (वि०) [न० ब०] उदासीन, उपेक्षावान्, —रः [न० त०] अवहेलना, तिरस्कार, अवज्ञा—षष्ठी-चानादरे—पा० २।३, ३८।

अनादि (वि०) [न० ब०] आदि रहित, नित्य, अनादि-काल से चला आता हुआ, —जगदादिरनादिस्त्व—कु० २।६। सम०—अनन्त,—अन्त (वि०) आदि और अन्त रहित, नित्य (—तः) शिव,—निधन (वि०) जिसका आरंभ और समाप्ति न हो, शाश्वत,—मध्यान्त (वि०) जिसका आदि, मध्य और अन्त कुछ भी न हो, नित्य।

अनादीनव (वि०) [न० ब०] निर्दोष,—यद्वासुदेवेनादी-नमनादीनवमीरितम्—शि० २।२२।

अनाद्य (वि०) [न० त०] 1 =दे० अनादि, 2 अभक्ष्य, खाने के अयोग्य।

अनानुपूर्व्यम् [न० त०] 1 दूसरे पदों के बीच में आ जाने के कारण समास के विभिन्न पदों का पृथक्करण 2 नियत क्रम में न आना।

अनाप्त (वि०) [न० त०] 1 अप्राप्त 2 अयोग्य, अकुशल —प्तः अजनबी।

अनामक } (वि०) [न० ब० स्वार्थे कन्] बिना नाम का,
अनामन् } अप्रसिद्ध,—(पुं०) 1 मलमास 2 कनिष्ठिका तथा मध्यमा के बीच की अंगुली दे० नीचे 'अनामिका'।—(नपुं०) बवासीर।

अनामय (वि) [नास्ति आमयः रोगो यस्य न० ब०] स्वस्थ, तंदुरुस्त,—यः, —यम् स्वास्थ्य अच्छा होना—महाश्वेता कादम्बरीमनामयं पप्रच्छ—का० १९२, उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछताछ की,—यः विष्णु (कइयों के मत में 'शिव')।

अनामा, अनामिका [नास्ति नाम अन्यांगुलिवत् यस्याः—स्वार्थे कन्] कानी तथा बिचली अंगुली के बीच की अंगुली—इसका यह नाम इस लिए पड़ा कि दूसरी अंगुलियों की भांति इसका कोई नाम नहीं; पुरा कवीनां गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासा, अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव। सुभा०।

अनायत्त (वि०) [न० त०] जो दूसरे के वशीभूत न हो, °त्तो रोषस्य का० ४५ जो क्रोध के वशीभूत न हो, स्वतंत्र—एतावज्जन्मसाफल्यं यदनायत्तवृत्तिता—हि० २।२२, स्वतंत्र जीविका।

अनायास (वि०) [न० त०] जो कष्टप्रद या कठिन न हो, आसान,—ममाप्येकस्मिन् °से कर्मणि त्वया सहायेन भवितव्यम्—श० २,—सः 1 सरलता, कठिनाई का अभाव,—°सेन=आसानी से, बिना किसी कठिनाई के।

अनारत (वि०) [न० त०] 1. अनवरत, निरन्तर, अबाध 2 नित्य, —तम् (अव्य०) लगातार, नित्यरूप से—अनारतं तेन पदेषु लंभिताः—कि० १।१५, ४०।

अनारम्भः [न० त०] आरम्भ न होना—विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञात्वा °भः प्रतीकारस्य—श० ३।

अनार्जव (वि०) [न० त०] कुटिल, बेईमान—वम् 1 कुटिलता, कपट 2 रोग।

अनार्तव (वि०) [स्त्री०-वी] [न०त०] असामयिक—वा वह कन्या जो अभी तक रजस्वला न हुई हो।

अनार्य (वि०) [न० त०] अप्रतिष्ठित, नीच, अधम —र्यः 1 जो आर्य न हो, 2 वह देश जहाँ आर्य न हों, 3 शूद्र 4 म्लेच्छ 5 कमीना।

अनार्यकम् [अनार्य देशे भवम्—अनार्य+क] अगर की लकड़ी।

अनार्ष (वि०) [न० त०] 1 जो ऋषियों से सम्बन्ध न रखता हो, अवैदिक—संबुद्धौ शाकल्यस्येतौ अनार्षे—पा० १।१।१६, (=अवैदिके—सिद्धा०) 2 जो ऋषि-प्रोक्त न हो।

अनालंब (वि०) [न० ब०] असहाय, अवलंबहीन —बः अवलंब का अभाव, नैराश्य, —बी शिव की वीणा।

अनालंबु (भु) का [न० त०] रजस्वला स्त्री।

अनावर्तिन् (वि०) [न० त०] फिर न होने वाला, फिर न लौटने वाला।

अनाविद्ध (वि०) [न० त०] न बिधा हुआ, जिसमें छिद्र न किया गया हो।

अनावृत्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1 फिर न लौटना 2 फिर जन्म न होना, मोक्ष।

अनावृष्टिः (स्त्री०) [न० त०] सूखा पड़ना, 'ईति' का एक भेद।

अनाश्रमिन् (पु०) [न० त०] जो जीवन के चार आश्रमों में से किसी को न मानता हो, न किसी से सम्बन्ध रखता हो। अनाश्रमी न तिष्ठेत्तु क्षणमेकमपि द्विजः—स्मृ०।

अनाश्रव (वि०) [नञ्+आ+श्रु+अच्] जो किसी की न सुने, ढीठ, किसी की बात पर कान न दे—भिषजामनाश्रवः रघु० १९।४९।

अनाश्वस् (वि०) [नञ् + अश् + क्वसु नि०] जिसने भोजन न किया हो, उपवास रखने वाला !

अनास्था [न० त०] उदासीनता, तटस्थता, आस्था का अभाव—अनास्था बाह्यवस्तुषु—कु० ६।६३, पिंडेष्वनास्था खलु भौतिकेषु—रघु० २।५७, स्त्री पुमानित्यनास्थैषा वृत्तं हि महितं सताम्—कु० ६।१२, 2 श्रद्धा या विश्वास का अभाव, अनादर।

अनाहत (वि०) [न० त०] 1 आघातरहित, 2 कोरा या नया।

अनाहार (वि०) [न० ब०] बिना भोजन के रहने वाला, उपवास करने वाला —रः [न० त०] भोजन न करना, उपवास रखना।

अनाहुतिः (स्त्री०) [न० त०] 1 होम का न होना, कोई होम जो होम कहलाने के भी योग्य न हो 2 एक अनुचित आहुति।

अनाहूत (वि०) [न० त०] न बुलाया हुआ, अनिमन्त्रित,। सम०—**उपजल्पिन्** बिना बुलाया वक्ता, —**उपविष्ट** (वि०) अनिमंत्रित अभ्यागत के रूप में बैठा हुआ।

अनिकेत (वि०) [न० ब०] गृहहीन, आवारागर्द, जिसका कोई नियत वासस्थान न हो (जैसे संन्यासी)।

अनिगीर्ण (वि०) [न० त०] 1 न निगला हुआ 2 (सा० शा० में) जो गुप्त या छिपा हुआ न हो, प्रस्तुत, व्यक्त।

अनिच्छ-च्छक, **अनिच्छु-च्छुक**, **अनिच्छत्** (वि०) [नास्ति इच्छा यस्य न० ब०, नञ् + इच्छुक, नञ् + इष् + शतृ न० त०] न चाहता हुआ, इच्छारहित, बिना इच्छा के।

अनित्य (वि०) [न० त०] 1 जो नित्य न हो, सदा रहने वाला न हो, क्षणभंगुर, अशाश्वत, नश्वर 2 क्षणस्थायी आकस्मिक, जो नियमतः अनिवार्य न हो, विशेष, 3 असाधारण, अनियमित, 4 अस्थिर, चंचल, ५ अनिश्चित, संदिग्ध—विजयस्य ह्यनित्यत्वात्—पंच० ३। २२, —**त्यम्** (क्रि० वि०) कदाचित्, अकस्मात्। सम० —**कर्मन्**, —**क्रिया** आकस्मिक कार्य जैसा कि किसी विशेष निमित्त से किया जाने वाला यज्ञ, ऐच्छिक या सामयिक अनुष्ठान,—**दत्तः**, —**दत्तकः**, —**पत्रिमः**, माता पिता के द्वारा अस्थायी रूप से किसी को दिया गया पुत्र,—**भावः** क्षणभंगुरता, क्षणभंगुर स्थिति —**समासः** वह समास जो प्रत्येक स्थिति में अनिवार्य न हो (जिसका भाव अलग-अलग विश्लिष्ट पदों द्वारा भी समान रूप से प्रकट किया जाय)।

अनिद्र (वि०) [न० ब०] निद्रारहित, जागने वाला, (आलं०) जागरूक।

अनिन्द्रियम् [न० त०] 1 तर्क 2 जो इन्द्रिय का विषय न हो, मन।

अनिभृत (वि०) [न० त०] 1 सार्वजनिक, प्रकाशित, जो छिपा न हो, 2 धृष्ट, साहसी 3 अस्थिर, अदृढ़। दे० 'निभृत' भी।

अनिमकः [अन् + इमन्—अनिमः = जीवनं तेन कायते प्रकाशते कै + क] 1 मेंढक 2 कोयला 3 मधुमक्खी।

अनिमित्त (वि०) [न० ब०] निष्कारण, निराधार, आकस्मिक,—आलक्ष्यदंत मुकुलाननिमित्तहासैः—श० ७।१७, —**त्तम्** 1 पर्याप्त कारण का अभाव 2 अपशकुन, बुरा शकुन—ममानिमित्तानि हि खेदयंति—मृच्छ० १०,— (क्रि० वि०) °**तः**—अकारण, बिना हेतु के। सम० —**निराक्रिया** अपशकुनों का निराकरण।

अनिमि (मे) ष (वि०) [न० ब०] टकटकी लगाये एक स्थान पर जमा रहने वाला, बिना आँख झपके—शतैस्तमक्ष्णामनिमेषवृत्तिभिः—रघु० ३।४३,—**षः** 1 देवता 2 मछली 3 विष्णु। सम०—**दृष्टि**,—**लोचन** (वि०) टकटकी लगा कर या स्थिर दृष्टि से देखने वाला।

अनियत (वि०) [न० त०] 1 अनियंत्रित 2 अनिश्चित, संदिग्ध, अनियमित (रूप भी) °वेलम् आहारोऽश्यते —श० २, 3 कारणरहित, आकस्मिक 4 नश्वर। सम०—**अंकः** अनिश्चित अंक (गणित में),—**आत्मन्** (वि०) जिसका मन अपने वश में न हो,—**पुंस्का** दुश्चरणशील स्त्री, व्यभिचारिणी,—**वृत्ति** (वि०) 1 बंधा काम करने वाला, (शब्द) जिसका प्रयोग निश्चित न हो, जिसकी आय नियत न हो।

अनियंत्रण (वि०) [न० ब०] असंयत, अनियंत्रित, स्वतंत्र °अनुयोगो नाम तपस्विजनः—श० १।

अनियमः [न० त०] 1 नियम का अभाव; नियंत्रण; अधिनियम या निश्चित क्रम का अभाव, निदेश या व्यवस्थित नियम का अभाव—पंचमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः, षष्ठे पादे गुरुज्ञेयं शेषेष्वनियमो मतः। छं० मं० 2 अनिश्चितता, निश्चयाभाव, संदेह 3 अनुचित आचरण।

अनिरुक्त (वि०) [न० त०] 1 स्पष्ट रूप से न कहा हुआ 2 स्पष्ट रूप से व्याख्या न किया हुआ, जिसकी परिभाषा स्पष्ट न दी गई हो, अस्पष्ट निर्वचन सहित।

अनिरुद्ध (वि०) [न० त०] बिना रोकटोक वाला, स्वतंत्र, अनियंत्रित, स्वच्छंद, उच्छृंखल, उद्दाम,—**द्धः** 1 गुप्तचर 2 प्रद्युम्न के एक पुत्र का नाम। सम०—**पथम्** 1 ऐसा मार्ग जहाँ कोई रोक न हो, 2 आकाश, अन्तरिक्ष,—**भाविनी** अनिरुद्ध की पत्नी उषा।

अनिर्णयः [न० त०] अनिश्चितता, निर्णय का अभाव।

अनिर्दश, **अनिर्दशाह** (वि०) [न निर्गतानि दशाहानि यस्य] बच्चे के जन्म या मरण के फलस्वरूप अशौच के दस दिन जिसके न बीते हों।

अनिर्देशः [न० त०] निश्चित नियम या निदेश का अभाव।

अनिर्देश्य (वि०) [न० त०] अपरिभाषणीय, अवर्णनीय —श्यं परब्रह्म की उपाधि।

अनिर्धारित (वि०) [न० त०] जिसका कोई निर्णय या निश्चय न हुआ हो।

अनिर्वचनीय (वि०) [न० त०] 1 कहने के अयोग्य, अवर्णनीय 2 वर्णन करने के अयोग्य—यम् (वेदान्त में) 1 माया, भ्रम, अज्ञान, 2 संसार।

अनिर्वाण (वि०) [न० ब०] अनघुला, जिसने अभी स्नान नहीं किया।

अनिर्वेदः [न० त०] अनवसाद, विषाद या नैराश्य का अभाव, स्वावलंबन, उत्साह।

अनिर्वृत्त (वि०) [न० त०] खिन्न, अशान्त, दुःखी।

अनिर्वृतिः } (स्त्री०) [न० त०] 1 बेचैनी, विकलता 2
अनिर्वृत्तिः } निर्धनता—अनिर्वृतिनिशाचरी मम गृहांतरालं गता—उद्भट।

अनिलः [अन् + इलच्] 1 वायु 2 वायुदेवता 3 उपदेवता, जो संख्या में ४९ हैं तथा वायु की श्रेणी में आते हैं 4 शरीर में रहने वाली वायु—त्रिदोषों में से एक—वात 5 गठिया या और कोई रोग जो वातप्रकोप के कारण उत्पन्न माना जाता है। सम०—अयनम् वायु का मार्ग,—अशन,—आशिन् (वि०) वायुभक्षी, उपवास करने वाला (पुं०—न्) साँप—आत्मजः वायु का पुत्र, हनुमान् और भीम की उपाधि,—आमयः 1 वातरोग 2 गठिया,—सखः अग्नि (वायु का मित्र), इसी प्रकार °बंधुः।

अनिर्लोडित (वि०) [न० त०] जो सुविचारित न हो, सुनिर्णीत न हो—°कार्यस्य वाग्जालं वाग्मिनो वृथा—शि० २।२७।

अनिशम् (अव्य०) [न० ब०] लगातार, निरन्तर—अनिशमपि मकरकेतुर्मनसो रुजमावहन्नभिमतो मे—श० ३।४, भामि० २।१६२।

अनिष्ट (वि०) [न० त०] 1 न चाहा हुआ, जिसकी इच्छा न हो, अननुकूल 2 अनर्थ 3 बुरा, दुर्भाग्यपूर्ण, अमंगलसूचक 4 यज्ञ द्वारा असम्मानित, —ष्टम् 1 बुराई, दुर्भाग्य, विपत्ति, 2 असुविधा, अहित। सम० —आपत्तिः (स्त्री०)—आपादनम् अवांछित पदार्थ का प्राप्त करना, अवांछित घटना—ग्रहः बुरा या हानिकारक ग्रह, —प्रसंगः 1 अनीप्सित घटना 2 सदोष पदार्थ, तर्क या नियम से संबंध, —फलम् बुरा परिणाम —शंका बुराई की आशंका, —हेतुः अपशकुन।

अनिष्पत्रम् (अव्य०) [न० त०] इस प्रकार जिससे कि तीर का पंखयुक्त पक्ष दूसरी ओर न निकले—अर्थात् बहुत बलपूर्वक नहीं।

अनिस्तीर्ण (वि०) 1 जो पार न किया गया हो, जिससे छुटकारा न मिला हो 2 जिसका उत्तर न दिया गया हो, जिसका निराकरण न किया गया हो (दोषारोपण की भांति)।

अनीकः-कम् [अन् + ईकन] 1 सेना, सैन्यपंक्ति, सैनिक दस्ता, दल, दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकम्—भग० १।२; 2 समूह, वर्ग 3 संग्राम, लड़ाई, युद्ध 4 पंक्ति, श्रेणी, चलती हुई सेना की टुकड़ी 5 अग्रभाग, प्रधान, मुख्य। सम०—स्थः 1 योद्धा 2 सिपाही (सुसज्जित), पहरेदार 3 महावत या हाथी का प्रशिक्षक 4 युद्धभेरी या बिगुल 5 संकेतक, चिह्न, संकेत।

अनीकिनी [अनीकानां संघः—अनीक + इनि + ङीप्] 1 सेना, सैन्यदल, सैन्यश्रेणी 2 तीन सेनाएँ या पूर्ण सेना (अक्षौहिणी) का दशम भाग।

अनील (वि०) [न० त०] जो नीला न हो, श्वेत,—वाजिन् (पुं०) श्वेत घोड़े वाला, अर्जुन।

अनीश (वि०) [न० त०] 1 प्रमुख, सर्वोच्च 2 स्वामी या नियंता न होना (संबं० के साथ) गात्राणामनीशोऽस्मि संवृत्तः—श० २,—शः विष्णु।

अनीश्वर (वि०) [न० त०] 1 जिसके ऊपर कोई न हो, अनियंत्रित 2 असमर्थ—शयिता सविधेप्यनीश्वरा सफली कर्तुमहो मनोरथान्—भामि० २।१८२; 3 जो ईश्वर से संबंध न रक्खे 4 नास्तिक। सम०—वादः नास्तिक वाद; ईश्वर को सर्वोच्च शासक न मानने वाला, नास्तिक।

अनीह (वि०) [न० त०] उदासीन, इच्छारहित,—हा अवहेलना, उदासीनता।

अनु (अव्य०) [अव्ययीभाव समास बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है, या क्रिया अथवा कृदन्त शब्दों से पूर्व जोड़ा जाता है, अथवा स्वतंत्र संबंधबोधक अव्यय के रूप में कर्मकारक के साथ प्रयुक्त होता है और कर्म प्रवचनीय माना जाता है] 1 पश्चात्, पीछे; सर्वे नारदमनु उपविशंति—विक्रम० ५; क्रमेण सुप्तामनु संविवेश सुप्तोत्थितां प्रातरनूदतिष्ठत्—रघु० २।२४; अनुविष्णु=विष्णोः पश्चात् सिद्धा० 2 साथ-साथ, पास-पास; जलानि सा तीरनिखातयूपा वहत्ययोध्यामनुराजधानीम्—रघु० १३।६१; अनुगंगं वाराणसी—गंगा के साथ-साथ स्थित या बसी हुई; 3 के बाद, फलस्वरूप, संकेत किया जाता हुआ—जपमनु प्रावर्षत् 4 के साथ, साथ ही, संबद्ध—नदीमनु अवसिता सेना—सिद्धा० 5 घटिया या निम्न दर्जे का; अनुहरिं सुराः=हरेर्हीनाः; 6 किसी विशेष स्थिति या संबंधमें—भक्तो विष्णुमनु सिद्धा० 7 भाग, हिस्सा, या साझा रखने वाला—लक्ष्मीर्हरिमनु, 8 पुनरावृत्ति; अनुदिवसम्—दिन-ब-दिन, प्रति दिन 9 की ओर, दिशा में, के निकट, पर,—अनुवनमशनिर्गतः—सिद्धा०—°नदि—नदि शि० ७।२४; नदी के निकट 10 क्रमानुसार, के अनुसार, अनुक्रमम्, नियमित क्रम में, अनुज्येष्ठम्

(छोटे बड़े की दृष्टि से) 11 की भांति, के अनुकरण में—सर्व मामनु ते प्रियाविरहजां त्वं तु व्यथां मानुभूः—विक्रम० ४।२५; इसी प्रकार अनुगर्ज् =वाद में गरजना, गर्जने की नकल करना, 12 अनुरूप—तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात्—रघु० ४।१२, (अनुगतोऽस्य)।

अनुक (वि०) [अनु+कन्] 1 लालची, लोलुप 2 कामुक, विलासी।

अनुकथनम् [अनु+कथ्+ल्युट्] 1 बाद का कथन 2 संबंध, प्रवचन, वार्तालाप।

अनुकनीयस् (वि०) [अनु+अल्प (युवन)+ईयसुन् कनादेशः] छोटे से बाद का, सबसे छोटा।

अनुकंपक (वि०) [अनु+कंप्+ण्वुल्] दयालु, करुणा करने वाला।

अनुकंपनम् [अनु+कंप्+ल्युट्] करुणा, तरस, दयालुता, सहानुभूति।

अनुकंपा (स्त्री) [अनु+कंप्+अच्+टाप्] करुणा, दया।
नकंप्य (वि०) [अनुकंप्+यत्] दयनीय, सहानुभूति का पात्र;—कि तन्न येनासि ममानुकंप्या रघु० १४।७४; कु० ३।७६-प्यः हरकारा, द्रुतगामी दूत।

अनुकरणम्—**कृतिः** (स्त्री०) [अनुकृ+ल्युट्, क्तिन् वा] 1 नकल करना, प्रतिलिपि, अनुरूपता, समानता; शब्दानुकरणम्=एक अलंकार।

अनुकर्षः—कर्षणम् [अनु+कृष्+अच्, ल्युट् वा] 1 खिंचाव, आकर्षण, 2 (व्या०) पूर्व नियम में आगे वाले नियम का प्रयोग 3 गाड़ी का तला या धुरे का लट्ठा 4 कर्तव्य का विलंब से पालन, अनुकर्षन् भी।

अनुकल्पः [अनु+कल्प्+अच्] गुरु का गौण अनुदेश जो आवश्यकता होने पर उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब कि मुख्य निदेश का प्रयोग संभव नहीं—प्रभुः प्रथम कल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते—मनु० ११।३०, ३।१४७।

अनुकामीन (वि०) [अनुकाम+ख] अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला;—अनुकामीनतां त्यज—भट्टि०।

अनुकारः=दे० अनुकरणम्।

अनुकाल (वि०) समयोचित, सामयिक।

अनुकीर्तनम् [अनु+कृत्+ल्युट्] कथन, प्रकाशन।

अनुकूल (वि०) [अनु+कूल्+अच्] 1 मनोवांछित, अभिमत, जैसे कि वायु, भाग्य आदि 2 मित्रता पूर्ण कृपापूर्ण 3 अनुरूप,—लः निष्ठावान तथा कृपालु पति, (एकरतिः—सा० द० या, एकनिरतः एकस्यामेव नायिकायाम् आसक्तः) नायक का एक भेद—लम् अनुग्रह, कृपा—नारीणामनुकूलतामाचरसि चेत्—काव्य० ९।

अनुकूलयति (ना० धा०) अनुकूल या मुआफिक होना, प्रसन्न होना।

अनुक्रकच (वि०) [प्रा० स०] दंतुरित, 'दांतेदार जैसा कि आरा।

अनुक्रमः [अनु+क्रम्+अच्] 1 उत्तराधिकार, क्रम, तांता, क्रमस्थापन, क्रमबद्धता, उचितक्रम–प्रचक्रमे वक्तुमनुक्रमज्ञा—रघु० ६।७०, श्वश्रूजनं सर्वमनुक्रमेण—१४।६०; 2 विषय सूची, विषयतालिका।

अनुक्रमणम् [अनु+क्रम+ल्युट्] 1. क्रम पूर्वक आगे बढ़ना, 2 अनुगमन—णी,—णिका (स्त्री०) विषय सूची विषयतालिका जो किसी ग्रन्थ के क्रमवद्ध विषयों का दिग्दर्शन कराय।

अनुक्रिया=दे० अनुकरणम्।

अनुक्रोशः [अनु+क्रुश्+घञ्] दया, करुणा, दयालुता (अधि० के साथ)—भगवन्कामदेव न ते मय्यनुक्रोशः—श० ३, मेघ० ११५।

अनुक्षणम् (अव्य०) प्रतिक्षण, लगातार, बारबार।

अनुक्षत्तृ (पुं०—त्ता) [प्रा० स०] द्वारपाल या सारथि का टहलुआं।

अनुक्षेत्रम् [प्रा० स०] उड़ीसा के कुछ मन्दिरों में पुजारियों को दी जाने वाली वृत्ति।

अनुख्यातिः (स्त्री०) [अनु+ख्या+क्तिन्] 1 पता लगाना; 2 विवरण देना, प्रकट करना।

अनुग (वि०) [अनु+गम्+ड] (सम०) पीछे चलने वाला, मिलान करने वाला,—गः–अनुचर, आज्ञाकारी सेवक, साथी तद्भूतनाथानुग—रघु० २।५८, ९।१२।

अनुगतिः (स्त्री०) [अनु+गम्+क्तिन्] पीछे चलना—गतानुगतिको लोकः—पीछे चलने वाला, अनुकरण करने वाला—दे० 'गत' के अन्तर्गत।

अनुगमः,—मनम् [अनु+गम्+अप् ल्युट् वा] 1 अनुसरण 2 सहमरण, अपने स्वर्गीय पति की चिता पर विधवा स्त्री का सती होना 3 नकल करना, समीपतर आना 4 समरूपता, अनुरूपता।

अनुगर्जित (वि०) [अनु+गर्ज्+क्त] दहाड़ा हुआ,—तम् दहाड़।

अनुगवीनः [अनु+गु+ख] गोपाल, ग्वाला।

अनुगामिन् (पुं०) [अनु+गम्+णिच्+णिनि] अनुयायी, सहचर।

अनुगुण (वि०) [द० स०] समान गुण रखने वाला, उसी स्वभाव का, अनुकूल या रुचिकर, उपयुक्त, अनुरूप, समानशील; —(वीणा) उत्कंण्ठितस्य हृदयानुगुणा वयस्या—मृच्छ० ३।३ मन को सुखकर, अभिमत, मनोनुकूल (ता० वा० के अनुसार यहाँ 'णा से अभिप्राय 'तंत्रीयुक्त वीणा' से है)—णम् (क्रि० वि०) 1. अनुकूल, इच्छाओं के समरूप 2 अभिमतिपूर्वक या समरूपता के साथ (सम० में) 3 स्वभावतः।

अनुग्रहः—हणम् [अनु+ग्रह्+अप्, ल्युट् वा] 1 प्रसाद, कृपा, उपकार, आभार—निग्रहानुग्रहकर्ता–पंच० १ पादार्पणानुग्रहपूतपृष्ठम्—रघु० २।३५; 2 स्वीकृति 3 सेना के पृष्ठभाग की रक्षा करने वाला दल।

अनुग्रासकः [प्रा० स०] कौर, निवाला।

अनुचरः [अनु+चर्+ट] 1 सहचर, अनुयायी, नौकर, सेवक—तेनानुचरेण धेनोः—रघु० २।४, २६।५२; –रा,–री (स्त्री) दासी, सेविका।

अनुचारकः [अनु+चर्+ण्वुल्] अनुचर, सेवक,—रिका दासी सेविका।

अनुचित (वि०) [न० त०] 1 गलत, अनुपयुक्त 2 निराला, अयोग्य।

अनुचिन्ता, चिन्तनम् [अनु+चित्+अ+टाप्, ल्युट् वा] 1 याद करना, सोचना, मनन करना 2 प्रत्यास्मरण, फिर से ध्यान में लाना, 2 अनवरत सोच, चिन्ता।

अनुच्छादः [अनु+छद्+णिच्+घञ्] साड़ी या धोती का वह छोर जो कंधे के ऊपर होकर छाती पर लटकता रहता है।

अनुच्छित्तिः, (स्त्री०)–**च्छेदः** [अनु+छिद्+क्तिन्, घञ् वा] कट कर अलग न होना, नाश न होना, अनश्वरता।

अनुज–जात (वि०) [अनु+जन्+ड, क्त वा] बाद में उत्पन्न, पीछे जन्मा हुआ, छोटा भाई—असौ कुमार स्तमजोऽनुजातः रघु० ६।७८; –जः,–जातः छोटा भाई, –जा,–जाता छोटी बहन।

अनुजन्मन् (पुं०) [ब० स०] छोटा भाई—जननाथ तवानुजन्मनाम्—कि० २।१७।

अनुजीविन् (वि०) [अनुजीव+णिनि] आश्रित, परोपजीवी—(पुं०–वी) परावलंबी, सेवक, अनुचर–अवंचनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः–कि० १।४, १०।

अनुज्ञा—ज्ञानम् [अनु+ज्ञा+अङ्, ल्युट् वा] 1 अनुमति, सहमति, स्वीकृति 2 जाने की अनुमति या छुट्टी 3 बहाना 4 आज्ञा, आदेश।

अनुज्ञापकः [अनु+ज्ञा+णिच्+ण्वुल्] आज्ञा देने वाला, हुक्म देनेवाला।

अनुज्ञापनम्–ज्ञप्तिः (स्त्री०) [अनु+ज्ञा+णिच्+ ल्युट्, क्तिन् वा] 1 अधिकृत बनाना 2 आज्ञा या आदेश जारी करना।

अनुज्येष्ठम् (अव्य०) ज्येष्ठता की दृष्टि के अनुसार।

अनुतर्षः [अनु+तृष्+घञ्] 1 प्यास—सोपचारमुपशांतविचारं सानुतर्षमनुतर्षपदेन—शि० १०।२ (प्यास और सुरा), 2 कामना, इच्छा 3 जल पीने का पात्र 4 मद्य।

अनुतापः [अनु+तप्+घञ्] पश्चात्ताप, संताप—जातानुतापेव सा–विक्रम० ४।३८ संताप से पीडित।

अनुतर्षणम्=अनुतर्षः 3 और 4।

अनुतिलम् (अव्य० स०) दाना दाना करके अर्थात् कण कण करके, अत्यन्त सूक्ष्मता से।

अनुत्क (वि०) [न० त०] जो अधिक उत्सुक न हो, जो पश्चात्तापकारी या खेदयुक्त न हो।

अनुत्तम (वि०) [न० त०] 1 जिससे अच्छा कोई और न हो, जिससे बढ़िया कोई और न हो, सबसे अच्छा, सबसे बढ़िया, प्रमुख रूप से सर्वोपरि—सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम्—हि० प्र० ४;—कांक्षन् गतिमुत्तमाम्—मनु० २।२४२; 2 (व्या० में) जो उत्तम पुरुष में प्रयुक्त न किया जाय।

अनुत्तर (वि०) [न० त०] 1 प्रधान, मुख्य 2 बढ़िया, सर्वोत्तम 3 बिना उत्तर का, मूक, उत्तर देने में असमर्थ —भवत्यवज्ञा च भवत्यनुत्तरात्—नै० 4 निश्चित, स्थिर 5 निम्न, घटिया, खोटा, कमीना 6 दक्षिणी, —रम् उत्तर का अभाव, (टालमटूल या आनाकानी का उत्तर अनुत्तर समझा जाता है) —रा दक्षिण दिशा।

अनुत्तरंग (वि०) [न० ब०] स्थिर, अनुद्वेलित, अविक्षुब्ध —अपामिवाधारमनुत्तरंगम्—कु० ३।४८।

अनुत्थानम् [न० त०] प्रयत्न या सरगर्मी का अभाव।

अनुत्सूत्र (वि०) [न० त०] पाणिनि या नैतिकता के सूत्रों से अविरुद्ध, अविशृंखल, नियमित—°पदन्यासासद्वृत्तिः सन्निबंधना —शि० २।११२।

अनुत्सेकः [न० त०] घमंड या अहंकार का अभाव °कोलक्ष्म्यां—भग० २।६३, शालीनता।

अनुत्सेकिन् (वि०) [अनुत्सेक+णिनि] जो घमंड के कारण फूला हुआ न हो—भाग्येषु °नी भव—श० ४। १७।

अनुदर (वि०) [न० ब०] पतली कमर वाला, पतला, कृश, क्षीण (दे० 'अ')

अनुदर्शनम् [अनु+दृश्+ल्युट्] निरीक्षण।

अनुदात्त (वि०) [न० त०] गुरुस्वर, जो उदात्तस्वर की भाँति उच्च स्वर से उच्चरित न होता हो, स्वराघात हीन—त्तः गुरुस्वर।

अनुदार (वि०) अनु [न० त०] 1 जो उदार (दानशील) न हो, कंजूस, अनुत्तम, अभद्र 2 जो अपनी पत्नी के अनुकूल चलने वाला हो या वह जिसकी पत्नी पति के अनुकूल चलने वाली हो—यस्मिन्प्रसीदसि पुनः स भवत्युदारोऽनुदारश्च-काव्य० ४; ('अदाता' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है) 3 उपयुक्त और योग्य पत्नी वाला।

अनुदिनम्–दिवसम् (अव्य० स०) प्रतिदिन, दिन-ब-दिन।

अनुदेशः [अनु+दिश्+घञ्] 1 पीछे संकेत करना, नियम या निदेश जो पीछे किसी पूर्व नियम की ओर संकेत करे—यथासंख्यमनुदेशः समानाम्—पा० १।३।१०; 2 निदेश, आदेश।

अनुद्धत (वि०) [न० त०] जो अहंकारी या गर्वयुक्त न हो—°ताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः—श० ५।१२ ।

अनुद्भट (वि०) [न० त०] 1 जो साहसी न हो, विनीत, सौम्य 2 जो उन्नत या बहुत ऊँचा न हो ।

अनुद्रुत (वि०) [अनु+द्रु+क्त] 1 अनुगत, पीछा किया गया (कई बार कर्तृ० में प्रयुक्त) 2 भेजा हुआ या लौटाया हुआ (जैसे कि ध्वनि)—तम् संगीत में काल की माप=आधा द्रुत ।

अनुद्वाहः [न० त०] विवाह न होना, ब्रह्मचर्य पालन ।

अनुधावनम् [अनु+धाव्+ल्युट्] 1 पीछे जाना या भागना, पीछा करना, अनुसरण करना—तुरग° कंडितसंधेः—श० २; 2 किसी पदार्थ का अत्यंत पीछा करना, अनुसंधान, गवेषणा 3 किसी स्त्री को पाने का असफल प्रयत्न करना 4 सफाई, पवित्रीकरण ।

अनुध्यानम् [अनु+ध्या+ल्युट्] 1 विचार, मनन, धार्मिक चिंतन 2 सोचविचार, याद,—या नः प्रीतिर्विरूपाक्ष त्वदनुध्यानसंभवा—कु० ६।२१; 3 हितचिन्तन, स्निग्धचिन्तन ।

अनुनयः [अनु+नी+अच्] 1 मनावन, प्रार्थना प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति—श० ४; 2 शालीनता, शिष्टता, सान्त्वनायुक्त आचरण, 3 नम्रनिवेदन, मिन्नत, प्रार्थना, 'आमंत्रणम्–विनीत संबोधन 4 अनुशासन, प्रशिक्षण, आचरण के अधिनियम ।

अनुनादः [अनु+नद्+घञ्] शब्द, कोलाहल, गूंज, प्रतिध्वनि ।

अनुनायक (वि०) [अनु+नी+ण्वुल्] सुशील, विनम्र, विनीत ।

अनुनायिक (वि०) [अनु+नय+ठक्] मैत्रीपूर्ण,—का नाटक की मुख्य पात्र नायिका की अनुचरी जैसे कि सखी, धात्री या दासी आदि;—सखी प्रव्रजिता दासी प्रेष्या धात्रेयिका तथा । अन्याश्च शिल्पकारिण्यो विज्ञेया ह्यनुनायिकाः ।

अनुनासिक (वि०) [अनु+नासा+ठ] 1 नासिक्य, नासिका से उच्चरित,—कम् गुनगुनाना । सम०—आदिः अनुनासिक वर्ण (ङ ञ् ण न् म्) से आरंभ होने वाला संयुक्त व्यंजन ।

अनुनिर्देशः [अनु+निर्+दिश्+घञ्] पूर्ववर्ती अनुक्रम के अनुसार वर्णन,—भूयसामुपदिष्टानां क्रियाणामथ कर्मणाम् । क्रमशो योऽनुनिर्देशो यथासंख्यं तदुच्यते । सा० द० ।

अनुनीतिः=तु० अनुनयः

अनुपघातः [न० त०] उपघात या क्षति का अभाव, °—अर्जित बिना किसी क्षति के प्राप्त किया ।

अनुपतनम्—पातः [अनु+पत्+ल्युट्, घञ् वा] 1 ऊपर पड़ना, एक के बाद दूसरे का गिरना 2 पीछा करना, अनुसरण 3 भाग 4 त्रैराशिक—तम् (अव्य०) [पत्+णमुल्] क्रमिक अनुसरण, अनुगमन;—लतानुपातं कुसुमान्यगृह्णात्—भट्टि० २।११; (लतामनुपात्य—एक लता से दूसरी लता पर जाकर, या लताओं को झुका कर) ।

अनुपथ (वि०) [प्रा० स०] मार्ग का अनुसरण करने वाला,—थम् (क्रि० वि०) सड़क के साथ साथ ।

अनुपद (वि०) [प्रा० स०] नितान्त कदम कदम अनुसरण करता हुआ,—दम् सम्मिलित गायन, गीत का टेक, (अव्य०) 1 कदम के साथ-साथ, पैरों के निकट; 2 कदम कदम करके, प्रति पद; 3 शब्दशः 4 एड़ियों पर, बिल्कुल पीछे, तुरन्त बाद–गच्छतां पुरो भवन्तौ, अहमप्यनुपदमागत एव—श० ३ (प्रायः संब० के साथ, या समास में इसी अर्थ में); (तौ) आशिषामनुपदं समस्पृशत् पाणिना—रघु० ११।३१;—अमोघाः प्रतिगृह्णंतावर्घ्यानुपदमाशिषः—१।४४ ।

अनुपदवी [प्रा० स०] मार्ग, सड़क ।

अनुपदिन् (वि०) [अनुपद+णिनि] अनुसरण करनेवाला ढूंढने वाला अर्थात् अन्वेषक, या पृच्छक–अनुपदमन्वेष्टा गवामनुपदी सिद्धा० ।

अनुपदीना [अनुपद+ख+टाप्] जूता, बूट, ऊँची एड़ियों का जूता, या चप्पल ।

अनुपधः [न० ब०] उपधा रहित, ऐसा अक्षर जिसके पूर्व कोई दूसरा अक्षर न हो ।

अनुपधि (वि०) [न० ब०] छल रहित, कपट रहित—रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते—उत्त० २।२ ।

अनुपन्यासः [न० त०] 1 वर्णन न करना, बयान न देना 2 अनिश्चितता, सन्देह, प्रमाणाभाव ।

अनुपपत्तिः (स्त्री०) [न० अ०] 1 असफलता, असिद्धि,—लक्षणा शक्यसंबंधस्तात्पर्यानुपपत्तितः—भाषा० ८२, तात्पर्य° उद्दिष्ट या किसी संबद्ध अर्थ को प्राप्त करने में असफलता; 2 अव्यावहारिकता, व्यावहारिक न होना 3 अधूरीयुक्ति, तर्कयुक्त कारण का अभाव ।

अनुपम (वि०) [न० ब०] अतुलनीय, बेजोड़, सर्वोत्तम, अत्यंत श्रेष्ठ—मा दक्षिण पश्चिम प्रदेश की हथिनी (कुमुद की सखी) ।

अनुपमित } (वि०) [नञ्+उप+मा+क्त, अनुपमा
अनुपमेय } +य] बेजोड़, अतुलनीय ।

अनुपलब्धिः (स्त्री०) [न० त०] पहचान न होना, प्रत्यक्ष न होना, मीमांसकों की दृष्टि में ज्ञान का एक साधन, परन्तु नैयायिकों की दृष्टि में नहीं ।

अनुपलंभः [नञ्+उप+लभ्+णिच्+घञ्] बोध का अभाव, अप्रत्यक्ष होना ।

अनुपवीतिन् [न० त०] अपने वर्ण के अनुसार यज्ञोपवीत धारण न करने वाला ।

अनुपशयः [न० त०] रोग को उभाड़ने या भड़काने वाली परिस्थिति ।

अनुपसंहारिन् [न० त०] न्यायशास्त्र में हेत्वाभास का एक भेद जिसके अन्तर्गत पक्षसंबंधी सभी ज्ञात बातें आ जाती हैं, और दृष्टान्त द्वारा, चाहे वह विधेयात्मक हो या निषेधात्मक, कार्यकारण-सिद्धांत के सामान्य नियम का समर्थन नहीं हो पाता—यथा सर्वं नित्यं प्रमेयत्वात् ।

अनुपसर्गः [न० त०] 1 उपसर्ग की शक्ति से विरहित शब्द [निपात आदि] 2 (न० ब०) जिसमें कोई उपसर्ग न हो ।

अनुपस्थानम् [अनुप+स्था+ल्युट्] अभाव, निकट न होना ।

अनुपस्थित [नञ्+उप+स्था+क्त] जो उपस्थित नहीं, अप्रस्तुत ।

अनुपस्थितिः (स्त्री०) [अनुप+स्था+क्तिन्] 1 गैर-हाजरी 2 याद करने की अयोग्यता ।

अनुपहत (वि०) [न० त०] 1 जिसे चोट नहीं लगी 2 अप्रयुक्त, कोरा, नया (कपड़ा) ।

अनुपाख्य (वि०) [न० ब०] जो स्पष्ट रूप से दिखलाई न दे या पहचाना न जा सके ।

अनुपातः=तु० अनुपतनम् ।

अनुपातकम् [अनु+पत्+णिच्+ण्वुल्] जघन्य पातक जैसे चोरी, हत्या, व्यभिचार आदि, विष्णुस्मृति में ऐसे ३५ तथा मनुस्मृति में ३० पातक गिनाये गये हैं ।

अनुपानम् [अनु+पा+ल्युट्] दवा के साथ या पीछे पी जाने वाली वस्तु; औषधि लेने की मात्रा ।

अनुपालनम् [अनु+पाल्+ल्युट्] प्ररक्षण, सुरक्षण, आज्ञापालन ।

अनुपुरुषः [प्रा० स०] अनुयायी ।

अनुपूर्व (वि०) [प्रा० स०] 1 नियमित, उपयुक्त मान रखने वाला, क्रमबद्ध—वृत्तानुपूर्वे च न चातिदीर्घे—कु० १।३५ °केश जिसके बाल यथाक्रम हैं, °गात्र जिसके अंग सुगठित हैं, इसी प्रकार °दंष्ट्र, °नाभि, °पाणि 2 क्रमबद्ध सिलसिलेवार 1 सम०—ज(वि०)नियमित परम्परा में उत्पन्न,—वत्सा नियमित रूप से बच्चे देने वाली गाय ।

अनुपूर्वशः } **अनुपूर्वेण** } (क्रि० वि०) नियमित क्रम में, क्रमागत रीति से ।

अनुपेत (वि०) [न० त०] 1 विरहित २ यज्ञोपवीत धारण न किये हुए ।

अनुप्रज्ञानम् [अनु+प्र+ज्ञा+ल्युट्] पदचिह्नों का अनुसरण, टोह लगाना ।

अनुप्रपातम्, प्रपादम्—[अव्य० स०] क्रमागत रीतिपूर्वक—गेह °तम्-दम् आस्ते, गेहम् अनुप्रपातम्—दम् सिद्धा० ।

अनुप्रयोगः [प्रा० स०] अतिरिक्त उपयोग, आवृत्ति ।

अनुप्रवेशः [अनु+प्र+विश्+घञ्] 1 दाखला—रघु० ३।२२, १०।५१; 2 अनुकरण—अपने को दूसरे की इच्छा के अनुकूल ढालना ।

अनुप्रश्नः [प्रा० स०] बाद में किया जाने वाला प्रश्न । (अध्यापक के पूर्व कथन से संबद्ध) ।

अनुप्रसक्तिः (स्त्री०) [अनु+प्र+संज्+क्तिन्] 1 प्रगाढ़ संबंध 2 शब्दों का अत्यधिक तर्क संगत सम्बन्ध ।

अनुप्रसादनम् [अनु+प्र+सद्+णिच्+ल्युट्] आराधन, संराधन ।

अनुप्राप्तिः (स्त्री०) [अनु+प्र+आप्+क्तिन्] प्राप्त करना, पहुँचना ।

अनुप्लवः [अनु+प्लु+अच्] अनुयायी, सेवक—सानुप्लवः प्रभुरपि क्षणदाचराणाम्—रघु० १३।७५ ।

अनुप्रासः [अनु+प्र+अस्+घञ्] एक समान ध्वनियों अक्षरों या वर्णों की पुनरावृत्ति—वर्णसाम्यमनुप्रासः—काव्य०; परिभाषा और उदाहरणों के लिए दे० सा० द० ६३३–३८, और काव्य० ९वां उल्लास ।

अनुबद्ध (वि०) [अनु+बंध्+क्त] 1 बँधा हुआ, जकड़ा हुआ; 2 यथा क्रम अनुसरण करने वाला, फल स्वरूप आने वाला 3 संबद्ध 4 अनवरत चिपका हुआ, लगातार ।

अनुबंधः [अनु+बंध्+घञ्] 1 बंधन, कसना, संबंध, आसक्ति, बंधान (शब्द० आलं) 2 अबाध परम्परा, सातत्य, श्रेणी, शृंखला—बाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबंधम्—श० ४।१४; वैर°, मत्सर°; सानुबंधाः कथं न स्युः संपदो मे निरापदः—रघु० १।६४; 3 अनुक्रम, फल (शुभ या अशुभ) 4 इरादा, योजना, प्रयोजन, कारण—अनुबंधं परिज्ञाय देश-कालौ च तत्त्वतः । सारापराधौ चालोक्य दण्डं दंडयेषु पातयेत्—मनु० ८।१२६; 5 संबंध जोड़ने वाला, गौण 6 आरंभिक तर्क (वेदान्त के आवश्यक तत्त्व) 7 (व्या०) एक संकेतक अक्षर जो कि इस शब्द के स्वर या विभक्ति में कुछ विशेषता का द्योतक हो जिसके साथ वह जुड़ा हो—जैसे कि 'गम्लृ' में लृ 8 बाधा, रुकावट 9 आरंभ, उपक्रम 10 मार्ग, अनुगमन ।

अनुबंधनम् [अनु+बंध्+ल्युट्] संबंध, परम्परा, सिलसिला आदि ।

अनुबंधिन् (वि०) [अनुबंध+णिनि] [प्रायः समस्त पद के अन्त में] 1 संबद्ध, संसक्त, संयुक्त 2 क्रम, परिणामी, फलस्वरूप-दुःखं दुःखानुबंधि-विक्रम०; ४ एक दुःख के बाद दूसरा दुःख या दुःख कभी अकेला नहीं आता 3 फलता फूलता हुआ, सम्पन्न, अबाध—ऊर्ध्वं गतं यस्य न चानुबंधि—रघु० ६।६७, अबाध या सर्व व्यापक ।

अनुबंध्य (वि०) [अनु+बंध्+ण्यत्] 1 प्रधान, मुख्य; 2 मारे जाने के लिए (जैसे बैल) ।

अनुबलम् [प्रा० स०] पीछे स्थित सैन्यदल, मुख्य सेना की रक्षा के लिए पीछे आती हुई सहायक सेना।

अनुबोधः [अनु+बुध्+णिच्+घञ्] 1 बाद का विचार, प्रत्यास्मरण, 2 कम पड़ी हुई सुगंध को पुनर्जीवित करना।

अनुबोधनम् [अनु+बुध्+ल्युट्] प्रत्यास्मरण, पुनःस्मरण।

अनुभवः [अनु+भू+अप्] 1 साक्षात् प्रत्यक्ष ज्ञान, व्यक्तिगत निरीक्षण और प्रयोग से प्राप्त ज्ञान, मन के संस्कार जो स्मृतिजन्य न हों ज्ञान का एक भेद, दे० तर्क० ३४, (नैयायिक ज्ञान प्राप्ति के प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द नामक चार साधन मानते हैं; वेदान्ती और मीमांसक इनमें अर्थापत्ति और अनुपलब्धि नामक दो साधन और जोड़ देते हैं); 2 तजुर्बा—अनुभवं वचसा सखि लुम्पसि—नै० ४।१०५; 3 समझ 4 फल, परिणाम। सम०—**सिद्ध** (वि०) अनुभव द्वारा ज्ञात।

अनुभावः [अनु—भू+णिच्+घञ्] 1 मर्यादा, व्यक्ति की मर्यादा या गौरव राजसी चमक दमक, वैभवशक्ति, बल, अधिकार,—(परिमेयपुरः सरौ)। अनुभाव, विशेषात्तु सेनापरिवृताविव—रघु० १।३७;—संभावनीयानुभावा अस्याकृतिः —श० ७;२, (सा० शा० में) दृष्टि, संकेत आदि उपयुक्त लक्षणों द्वारा भावना का प्रकट करना,—भावं मनोगतं साक्षात् स्वगतं व्यंजयति ये तेऽनुभावा इति ख्याताः, यथा भ्रूभंगः कोपस्य व्यंजकः—दे० सा० द० १६२; 3 दृढ़ संकल्प विश्वास।

अनुभावक (वि०) [अनु+भू+णिच्+ण्वुल्] अनुभव कराने वाला, द्योतक।

अनुभावनम् [अनु+भू+णिच्+ल्युट्] संकेत और इंगितों द्वारा भावनाओं का द्योतक।

अनुभाषणम् [अनु+भाष्+ल्युट्] 1 कही हुई बात को खंडन के लिए फिर से कहना; 2 कही हुई बात की पुनरावृत्ति।

अनुभूतिः (स्त्री०)=तु० अनुभव।

अनुभोगः—[अनु+भुज+घञ्] 1 उपभोग 2 की हुई सेवा के बदले मिलने वाली माफी जमीन।

अनुभ्रातृ (पु०) [प्रा० स०] छोटा भाई।

अनुमत (वि०) [अनु+ मन्+क्त] 1 सम्मत, अनुज्ञात, इजाजत दिया हुआ, स्वीकृत, °गमना—श० ४।९, जाने के लिए अनुज्ञप्त 2 चाहा हुआ, प्रिय,—**तः** प्रेमी —**तम्** स्वीकृति, अनुमोदन, अनुज्ञप्ति।

अनुमतिः (स्त्री०) [अनु+मन्+क्तिन्] 1 अनुज्ञा, स्वीकृति, अनुमोदन 2 चतुर्दशी युक्त पूर्णिमा। सम० —**पत्रम्** स्वीकृति सूचक पत्र या लेख।

अनुमननम् [अनु+मन्+ल्युट्] 1 स्वीकृति, रजामंदी 2 स्वतंत्रता।

अनुमंत्रणम् [अनु+मन्त्र्+णिच्+ल्युट्] मंत्रों द्वारा आवाहन या प्रतिष्ठा।

अनुमरणम् [अनु+मृ+ल्युट्] पीछे मरना—त्वन्मरणे चानुमरणं करिष्यामीति मे निश्चयः—हि० ३; विधवा का सती होना।

अनुमा [मा+अङ] अनुमिति, दिये हुए कारणों से अनुमान, दे० अनुमिति।

अनुमानम् [अनु+मा+ल्युट्] 1 अनुमिति के साधन द्वारा किसी निर्णय पर पहुँचना, दिये हुए कारणों से अनुमान लगाना, अनुमान, उपसंहार, न्याय शास्त्र के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के चार साधनों में से एक 2 अटकल, अन्दाजा 3 सादृश्य 4 (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें प्रमाण निर्धारित वस्तु का भाव अनोखे ढंग से प्रकट किया जाता है— सा० द० ७११—यत्र पतत्यबलानां दृष्टिर्निशिता पतन्ति तत्र शराः; तच्चापरोपितशरो धावत्यासां पुरः स्मरो मन्ये॥ दे० काव्य० १०;। सम०—**उक्तिः** (स्त्री०) तर्कना, तर्क संगत अनुमान।

अनुमापक (वि०) [स्त्री० —पिका] अनुमान कराने वाला, जो अनुमान करने का आधार बन सके।

अनुमासः [प्रा० स०] आगामी महीना;—**सम्** (अव्य०) प्रतिमास।

अनुमितिः (स्त्री०) [अनु+मा+क्तिन्] दिये हुए कारणों से किसी निर्णय पर पहुँचना, वह ज्ञान जो निगमन द्वारा या न्यायसंगत तर्क द्वारा प्राप्त हो।

अनुमेय (वि०) [अनु+मा+यत्] अनुमान के योग्य, अनुमान किया जाने वाला—फलानुमेयाः प्रारम्भाः—रघु० १।२०।

अनुमोदनम् [अनु+मुद्+ल्युट्] सहमति, समर्थन, स्वीकृति, सम्मति।

अनुयाजः [अनु+यज्+घञ्] यज्ञीय अनुष्ठान का एक अंग, गौण या पूरक यज्ञानुष्ठान, [प्रायः 'अनूयाजः' लिखा जाता है 'अनुयाग' भी]।

अनुयातृ (पु०) [अनु+या+तृच्] अनुगामी।

अनुयात्रम्—**त्रा** [अनु+यातृ+अण् स्त्रियां टाप्] परिजन, अनुचरवर्ग, सेवा करना, अनुसरण।

अनुयात्रिकः [अनुयात्रा + ठन्] अनुचर, सेवक; श० १।२।

अनुयानम् [अनु+या+ल्युट्] अनुसरण।

अनुयायिन् (वि०) [अनु+या+णिनि] अनुगामी, सेवक, अनुवर्ती,—(पुं०) पीछे चलने वाला (श० आलं०) —रामानुजानुयायिनः—परावलंबी या सेवक,—न्यषेधि शेषोऽप्यनुयायिवर्गः—रघु० २।४, १९।

अनुयोक्तृ (पुं०) [अनु+युज्+तृच्] परीक्षक, जिज्ञासु, अध्यापक।

अनुयोगः [अनु+युज्+घञ्] 1 प्रश्न, पृच्छा, परीक्षा 2 निंदा, झिड़की 3 याचना 4 प्रयास 5 धार्मिक चिन्तन टीका-टिप्पण । सम०—**कृत्** (पु०) 1 प्रश्नकर्ता 2 अध्यापक, अध्यात्म गुरु ।

अनुयोजनम् [अनु+युज्+ल्युट्] प्रश्न, पृच्छा ।

अनुयोज्यः [अनु+युज्+ण्यत्] सेवक ।

अनुरक्त (वि०) [अनु+रंज्+क्त] 1 लाल किया हुआ, रंगीन 2 प्रसन्न, संतुष्ट, निष्ठावान् ।

अनुरक्तिः (स्त्री०) [अनु+रंज्+क्तिन्] प्रेम, आसक्ति, अनुराग, स्नेह ।

अनुरंजक (वि०) [अनु+रंज्+ण्वुल्] प्रसन्न करने वाला, सन्तुष्ट करने वाला ।

अनुरंजनम् [अनु+रंज्+ल्युट्] संराधन, सन्तुष्ट करना, सुख देना, प्रसन्न करना, सन्तुष्ट रखना ।

अनुरणनम् [अनु+रण्+ल्युट्] 1 अनुरूप लगना, नूपुर या घूंघरुओं की आवाज से उत्पन्न अनवरत प्रतिध्वनि, 2 'व्यंजना' नामक शब्द शक्ति, तु०, वास्तविक कथन से व्यंजित होने वाला अर्थ व्यंग्य—क्रमलक्ष्यत्वादेवानुरणनरूपो यो व्यंग्यः—सा० द० ४ ।

अनुरतिः (स्त्री०) [अनु+रम्+क्तिन्] प्रेम, आसक्ति ।

अनुरथ्या [प्रा० स०] पगडंडी, उपमार्ग ।

अनुरसः,—सितम् [प्रा० स०] गूंज, प्रतिध्वनि ।

अनुरहस (वि०) [प्रा० स०] गुप्त, एकान्तप्रिय, निजी, —**सं** (क्रि० वि०) एकान्त में ।

अनुरागः [अनु+रंज्+घञ्] 1 लालिमा 2 भक्ति, आसक्ति, निष्ठा, (विप० अपरागः) प्रेम, स्नेह (अधि० के साथ या समास में) कंटकितेन प्रथयति मय्यनुरागं कपोलेन—श० ३।१५, रघु० ३।१०, °इंगित संकेत या प्रेम को प्रकट करने वाला एक वाह्यसंकेत ।

अनुरागिन्, **अनुरागवत्** (वि०) [अनुराग+णिनि, मतुप् वा] आसक्त, प्रेम से उत्तेजित ।

अनुरात्रम् [क्रि० वि०] [अव्य० स०] रात में, हर रात, प्रति रात्रि ।

अनुराधा [प्रा० स०] २७ नक्षत्रों में से सतरहवां नक्षत्र, यह चार नक्षत्रों का समूह है ।

अनुरूप (वि०) [प्रा० स०] 1 सदृश, मिलता-जुलता, तदनुरूप, योग्य, अनुरूपं वरम्—श० १, 2 उपयुक्त या योग्य, अनुकूल, (संब० के साथ या समास में) —भव पितुरनुरूपस्त्वं गुणैर्लोककांतैः—विक्रम० ५।२१ ।

अनुरूपम्,—पतः, **—पेण,—पशः** (क्रि० वि०) समनुरूपता या अभिमतिपूर्वक ।

अनुरोधः—धनम् [अनु+रुध्+घञ्, ल्युट् वा] 1 विनय, आराधना, इच्छापूर्ति करना 2 समरूपता, आज्ञापालन, लिहाज, विचार—धर्मानुरोधात्—का० १६०, १८०, १९२; 3 आग्रहपूर्वक प्रार्थना, याचना, निवेदन 4 नियम का पालन ।

अनुरोधिन्–धक (वि०) [अनुरोध+णिनि, अनिरुध्+ण्वुल्] विनयी ।

अनुलापः [अनु+लप्+घञ्] आवृत्ति, पुनरुक्ति ।

अनुलासः,—स्यः [अनुलस्+घञ् यत् वा] मोर ।

अनुलेपः—लेपनम् [अनु+लिप्+घञ्, ल्युट् वा] 1 अभिषेक, तेलमर्दन 2 सुगंधित लेप, उबटन—सुरभिकुसुमधूपानुलेपनानि—का० ३२४ ।

अनुलोम (वि०) [प्रा० स०] 1 'बालों से'—ऊपर से नीचे की ओर आने वाला—नियमित, स्वाभाविक क्रमानुसार (विप० प्रतिलोम), (अतः) अनुकूल—°कृष्टं क्षेत्रं प्रतिलोमं कर्षति—सिद्धा०, नियमित दिशा में हल चलाया हुआ; 2 मिश्रित (जैसे कि जाति)—**मम्** (क्रि० वि०) स्वाभाविक या नियमित क्रम में —**माः** (ब० व०) मिश्रित जातियां । सम०—**अर्थ** (वि०) पक्ष में बोलने वाला,—जडानप्यनुलोमार्थान् प्रवाचः कृतिनां गिरः—शि० २।२५,—**ज,–जन्मन्** (वि०) ठीक क्रम में उत्पन्न, उच्चवर्ण के पिता तथा नीचवर्ण की माता से उत्पन्न सन्तान, मिश्रित जाति का ।

अनुल्वण (वि०) [न० त०] 1 अधिक नहीं, न कम न अधिक 2 स्पष्ट या साफ़ नहीं ।

अनुवंशः [प्रा० स०] वंशतालिका ।

अनुवक्र (वि०) [प्रा० स०] अत्यंत टेढ़ा, कुछ टेढ़ा या तिरछा ।

अनुवचनम् [अनु+वच्+ल्युट्] आवृत्ति, सस्वर पाठ, अध्यापन ।

अनुवत्सरः [प्रा० स०] वर्ष ।

अनुवर्तनम् [अनु+वृत्+ल्युट्] 1 अनुगमन (आलं० भी), अनुवर्तिता, आज्ञाकारिता, अनुरूपता 2 प्रसन्न करना, अनुग्रह करना 3 स्वीकृति 4 फल, परिणाम 5 पूर्वसूत्र से पूर्तिकरना ।

अनुवर्तिन् (वि०) [अनु+वृत्+णिनि] 1 अनुगामी, आज्ञाकारी 2 अनुरूप (कर्म० के साथ या समास में) ।

अनुवश (वि०) [प्रा० स०] दूसरे की इच्छा के अधीन, आज्ञाकारी —**शः** अधीनता, आज्ञाकारिता ।

अनुवाकः [अनु+वच्+घञ्] 1 आवृत्ति करना 2 वेद के उपभाग, अनुभाग, अध्याय ।

अनुवाचनम् [अनु+वच्+णिच्+ल्युट्] 1 सस्वर पाठ कराना, अध्यापन, शिक्षण 2 स्वयं पाठ करना, दे० 'वच्' अनु के साथ ।

अनुवातः [प्रा० स०] वह दिशा जिस ओर को हवा हो ।

अनुवादः [अनु+वद्+घञ्] 1 सामान्य रूप से आवृत्ति 2 व्याख्या, उदाहरण या समर्थन की दृष्टि से आवृत्ति 3 व्याख्यात्मक आवृत्ति या पूर्वकथित बात का

विशेष रूप से ब्राह्मण ग्रन्थों का वह भाग जिसमें आदेश या विधि की व्याख्या, चित्रण या उसके प्रयोजन निहित हैं और जो स्वयं कोई विधि या नहीं है 4 समर्थन 5 विवरण, अफवाह।

अनुवादक, वादिन् (वि०) [अनु+वद्+ण्वुल् – णिनि वा] 1 व्याख्यापरक 2 समरूप, समस्वर।

अनुवाद्य (वि०) [अनु+वद्+णिच्+यत्] 1 व्याख्येय, उदाहरणसापेक्ष 2 (व्या०) वाक्य में किसी उक्ति का कर्ता, 'विधेय' का विपरीतार्थक जो कि कर्ता के विषय में कुछ विधि या निषेध करता है, वाक्य में पहले से ज्ञात अनुवाद्य या कर्ता की पुनरुक्ति विधेयं के साथ संबंध जतलाने के लिए की जाती है, अतः उसे वाक्य में पहले रक्खा जाता है—अनुवाद्य-मनुक्त्वैव विधेयमुदीरयेत्।

अनुवारम् (अव्य०), समय समय पर, बार बार, फिर दोबारा।

अनुवासः—सनम् [अनु+वास्+घञ्, ल्युट् वा] 1 सामान्यतः धूप आदि सुगंधित द्रव्यों से सुवासित करना 2 कपड़ों के किनारे डुबोकर सुगंधित बनाना 3 (°नः मी) पिचकारी, तेल का एनिमा करना, या स्निग्ध बनाना।

अनुवासित (वि०) [अनु+वास्+क्त] धूपित, धूनी दिया हुआ, सुगंधित किया हुआ।

अनुवित्तिः (वि०) [अनु+विद्+क्तिन्] निष्कर्ष, प्राप्ति।

अनुविद्ध (वि०) [अनु+व्यध्+क्त] 1 छिदा हुआ, सूराख किया हुआ, कीटानुविद्धरत्नादिसाधारण्येन काव्यता—सा० द० 2 ऊपर फैला हुआ, अन्तर्जटित, पूर्ण, व्याप्त, मिश्रित, मिलावट वाला, अन्तर्मिश्रित—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्—श० १।२०, 3 संयुक्त, संबद्ध 4 स्थापित, जड़ा हुआ, चित्रित—रत्नानुविद्धार्णवमेखलाया दिशः सपत्नी भव दक्षिणस्याः—रघु० ६।६३।

अनुविधानम् [अनु+वि+धा+ल्युट्] 1 आज्ञाकारिता 2 आदेशादि के अनुरूप कार्य करना।

अनविधायिन् (वि०)[अनु+वि+धा+णिनि]आज्ञाकारी, विनीत।

अनुविनाशः[अनु+वि+नश्+घञ्] बाद में नष्ट होना।

अनुविष्टंभः[अनु+वि+स्तंभ्+घञ्] फलस्वरूप बाधा का होना।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्+क्त] 1 आज्ञाकारी, अनुगामी 2 अबाध, निरन्तर।

अनुवृत्तिः (स्त्री०) [अनु+वृत्+क्तिन्] 1 स्वीकृति 2 आज्ञाकारिता, अनुरूपता, अनुगामिता, नैरन्तर्य 3 अनुकूल या उपयुक्त कार्य करना, आज्ञापालन, मौन सहमति, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना-कांता° चातुर्यमपि शिक्षितं वत्सेन—उत्त० ३, मा० ९, 4 (व्या०) आगामी नियम में पिछले नियम की पुनरुक्ति या पूर्ति, पिछले नियम का आगामी नियम पर निरन्तर प्रभाव 5 पुनरुक्ति—वर्णानामनुवृत्तिरनुप्रासः।

अनुवेधः =तु० अनुव्याधः।

अनुवेलम् [अव्य०] [प्रा० स०] कभी-कभी, बारंबार, इति स्म पृच्छत्यनुवेलमादृतः—रघु० ३।५।

अनुवेशः—शनम् [अनु+विश्+घञ्, ल्युट् वा] 1 अनुगमन, बाद में दाखिल होना; 2 बड़े भाई के विवाह से पहले छोटे भाई का विवाह।

अनुव्यंजनम् [अनु+वि+अंज्+ल्युट्] गौण लक्षण या चिन्ह।

अनुव्यवसायः [अनु+वि+अव+सो+घञ्] (न्या० में) प्रत्यक्ष का बोध या चेतना; (वेदा० में) मनोभाव या निर्णय का प्रत्यक्षीकरण।

अनुव्याधः—वेधः [अनु+व्यध्+घञ्; विध्+घञ् वा] 1 चोट पहुँचाना, छेदना, सूराख करना—न हि कीटानुवेधादयो रत्नस्य रत्नत्व व्याहन्तुमीशाः—सा० द० १, 2 संपर्क, मेल—मुखामोदं मदिरया कृतानुव्याधमुद्वमन्—शि० २।२०, 3 मिश्रण 4 बाधा डालना।

अनुव्याहरणम्,—व्याहारः [अनुव्या+हृ+ल्युट्, घञ् वा] 1 पुनरुक्ति, बारंबार कथन 2 अभिशाप, कोसना।

अनुव्रजनम्-व्रज्या [अनु+व्रज्+ल्युट्, क्यप् वा] अनुसरण, अनुगमन, विशेषतया विदा होता हुआ अभ्यागत।

अनुव्रत (वि०) [प्रा० स०] भक्त, निष्ठावान्, संलग्न (कर्म० या संब० के साथ)।

अनुशतिक (वि०) [अनु+शत+ठन्] सौ के साथ या सौ में मोल लिया हुआ।

अनुशयः [अनु+शी+अच्] 1 पश्चात्ताप, मनस्ताप, खेद, रंज,—नन्वनुशयस्थानमेतत्—मा० ८,—इतो गतस्यानुशयो मा भूदिति—विक्रम० ४, शि० २।१४; 2 अति वैर या क्रोध,—शिशुपालोऽनुशयं परं गतः—शि० १६। २;—यस्मिन्नमुक्तानुशया सदैव जागर्ति भुजंगी—मा० ६।१; 3 घृणा 4 गहरा संबन्ध, जैसा कि क्रमागत, (किसी पदार्थ से) गहन आसक्ति 5 (वेदा० में) दुष्कर्मों का परिणाम या फल जो कि उनके साथ संयुक्त रहता है और पुनर्जन्म से अस्थायी मुक्ति का उपभोग कराके फिर जीव को शरीरों में प्रविष्ट करता है; 6 क्रय के मामलों में खेद जिसे पारिभाषिक रूप में 'उत्सादन' कहते हैं दे० क्रीतानुशय।

अनुशयान (वि०) [अनु+शी+शानच्] खेद प्रकट करता हुआ, —ना नायिका का एक भेद, यह नायिका अपने प्रेमी के वियोग का ख़याल करके उदास और खिन्न रहती है।

अनुशयिन् (वि०) [अनुशय+णिनि] 1 अनुरक्त, भक्त,

श्रद्धालु 2 पश्चात्ताप करने वाला, पछताने वाला 3 अत्यधिक घृणा करने वाला 4 मानों किसी फल के कारण संबद्ध।

अनुशरः [अनु+शृ+अच्] भूत प्रेत, राक्षस।

अनुशासक,-शासिन्, शास्तृ,-शासितृ (वि०) [अनु+शास्+ण्वुल्, णिनि तृच् वा] निदेशक, शिक्षक, शासन करने वाला, दंड देने वाला—कविं पुराणमनुशासितारम्—भग० ८।९, शासन कर्ता,-एष चोरानुशासी राजेति भयादुत्पतितः—विक्रम० ४।

अनुशासनम् [अनु+शास्+ल्युट्] आदेश, प्रोत्साहन, शिक्षण नियमों विधियों का बनाना—भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्—कि० १।२८; आदेश या शिक्षा के शब्द; —तन्मनोरनुशासनम्—मनु० ८।१३९; नामलिंग° संज्ञाओं के लिंग संबंधी नियमों का निर्धारण तथा व्याख्या—शब्दानुशासनम्—सिद्धा०।

अनुशिक्षिन् [अनुशिक्ष्+णिनि] क्रियाशील, सीखने वाला।

अनुशिष्टिः (स्त्री०) [अनुशास्+क्तिन्] शिक्षण, अध्यापन, आदेश, आज्ञा।

अनुशीलनम् [अनु+शील्+ल्युट्] अभिप्रेत तथा श्रमपूर्ण प्रयोग, सतत प्रयत्न या अभ्यास, सतत या बारंबार अभ्यास या अध्ययन।

अनुशोकः,—शोचनम् [अनु+शुच्+घञ्, ल्युट् वा] रंज, पश्चात्ताप, खेद, इसी अर्थ में अनुशु (शो) चितम्।

अनुश्रवः [अनु+श्रु+अच्] वैदिक परंपरा।

अनुषक्त (वि०) [अनु+षंज्+क्त] 1 संबद्ध 2 संलग्न या संसक्त।

अनुषंगः [अनु+षंज्+घञ्] 1 गहन लगाव, संबंध, संयोग, साहचर्य, 2 मेल 3 शब्दों का पारस्परिक संबंध 4 आवश्यक परिणाम 5 दया, तरस, करुणा।

अनुषंगिक (वि०) [अनुषंग—ठ] अनिवार्य फलस्वरूप, सहवर्ती।

अनुषंगिन् (वि०) अनु+षंज्+णिनि] 1 संबद्ध, अनुरक्त, संसक्त 2 अनिवार्य परिणाम के रूप में आने वाला, 3 व्यावहारिक, सामान्य, छा जाने वाला—विभुतानुषंगि भयमेति जनः—कि० ६।३५।

अनुषंजनीय (वि०) [अनु+षंज्+अनीय] (शब्द की भांति) पूर्ववाक्य से ग्राह्य।

अनुषेकः,—सेचनम् [अनु+सिच्+घञ्, युट् वा] दोबारा पानी देना, फिर से जल छिड़कना।

अनुष्टुतिः (स्त्री०) [अनु+स्तु+क्तिन्] प्रशंसा, सिफारिश (क्रमानुसार)।

अनुष्टुभ् (स्त्री०) [अनु+स्तुभ्+क्विप्] 1 प्रशंसा में अनुगमन, वाणी 2 सरस्वती 3 बत्तीस अक्षरों का एक छंद जिसमें आठ २ अक्षरों के चार २ पाद होते हैं।

अनुष्ठातृ,—ष्ठायिन् (वि०) [अनु+स्था+तृच्, णिनि वा] कार्य करने वाला, अनुष्ठान करने वाला।

अनुष्ठानम् [अनु+स्था+ल्युट्] 1 कार्य करना, धर्मकृत्य करना, कार्य में परिणत करना, कार्यनिष्पादन, आज्ञापालन, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्—श० ४; धार्मिक तपश्चर्याओं का प्रयोग 2 आरंभ, उत्तरदायित्व, कार्य में व्यस्तता 3 आचरणपद्धति, कार्यपद्धति, 4 धार्मिक संस्कारों या कृत्यों का प्रयोग।

अनुष्ठापनम् [अनु+स्था+णिच्+ल्युट्] कार्य कराना।

अनुष्ण (वि०) [न० त०] 1 जो गर्म न हो, ठंडा 2 वीतराग, सुस्त, शिथिल—ष्णः शीतस्पर्श,—ष्णम् कुमुद, नील कमल।

अनुष्यंदः [अनु+स्यन्द्+घञ्] पिछला पहिया।

अनुसंधानम् [अनुसम्+धा+ल्युट्] 1 पृच्छा, गवेषण, गहन निरीक्षण या परीक्षण, जांच 2 उद्देश्य 3 योजना, क्रमबद्ध करना, तत्पर होना 4 उपयुक्त संयोग।

अनुसंहित (वि०) [अनु+सम्+धा+क्त] पूछताछ किया गया, जांच पड़ताल किया गया,—तम् (क्रि० वि०) संहिता-पाठ में, संहिता-पाठ के अनुसार।

अनुसमयः [प्रा० स०] नियमित और उचित संयोग जैसे कि शब्दों का।

अनुसमापनम् [अनु+सम्+आप्+ल्युट्] नियमितरूप से किसी कार्य की समाप्ति।

अनुसंबद्ध (वि०) [अनु+सम्+बंध्+क्त] संयुक्त।

अनुसरः [अनु+सृ+अच्] अनुगामी, साथी, अनुचर।

अनुसरणम् [अनु+सृ+ल्युट्] 1 अनुगमन, पीछा करना, पीछे जाना 2 समनुरूपता।

अनुसर्पः [अनु+सृप्+अच्] सर्पसदृश जन्तु, सरीसृप।

अनुसवनम् (अव्य०) [प्रा० स०] 1 यज्ञ के पश्चात् 2 प्रत्येक यज्ञ में 3 प्रतिक्षण।

अनुसाम (वि०) [प्रा० स०] मनाया हुआ, मित्र सदृश, अनुकूल।

अनुसायम् (अव्य०) [प्रा० स०] प्रति सांयकाल।

अनुसूचनम् [अनु+सूच्+ल्युट्] संकेत करना, इशारा करना।

अनुसारः [अनु+सृ+घञ्] 1 पीछे जाना, अनुगमन (आलं० भी), पीछा करना—शब्दानुसारेण अवलोक्य—श० ७; जिधर से आवाज आ रही थी उस ओर देखते हुए 2 समनुरूपता, के अनुसार, प्रयोग के अनुरूप, 3 प्रथा, रिवाज, रस्म 4 माना हुआ अधिकार।

अनुसारक,—सारिन् (वि०) [अनु+सृ+ण्वुल् णिनि वा] 1 अनुगामी, पीछा करने वाला, पीछे जाने वाला, सेवा करने वाला—मृगानुसारिणं पिनाकिनम्—श० १।६; —कृपणानुसारि च धनम्—पंच० १।२७८; 2 के

अनुकूल या समनुरूप, बाद में आने वाला—यथाशास्त्र° मनु० ७।३१; 3 तलाश करना, ढूंढ़ना, खोजना, जांच करना।

अनुसारणा [अनु+सृ+णिच्+यच्+टाप्] पीछे जाना, पीछा करना—तस्मात्पलायमानानां कुर्यान्नात्यनुसारणाम् – महा०।

अनुसूचक (वि०) [अनु+सूच्+ण्वुल्] संकेत करने वाला, इशारा करने वाला।

अनुसृतिः (स्त्री०) [अनु+सृ+क्तिन्] पीछे जाना, अनुगमन, अनुरूप होना, अनुसार होना।

अनुसैन्यम् [प्रा० स०] सेना का पिछला भाग, अनुरक्षक सेना।

अनुस्कंदम् (अव्य०) [अव्य० स०] क्रमशः प्रविष्ट होकर क्रमानुसार अन्दर जाकर—गेहं गेहमनुस्कंदम्–सिद्धा०।

अनुस्तरणम् [अनु+स्तृ+ल्युट्] चारों ओर बखेरना या फैलाना, —णी गाय, विशेषतया वह गाय जिसका बलिदान अंत्येष्टि संस्कार के समय किया जाय।

अनुस्मरणम् [अनु+स्मृ+ल्युट्] 1 फिर से ध्यान में लाना, स्मरण करना, 2. बारंबार स्मरण करना।

अनुस्मृतिः (स्त्री०) [अनु+स्मृ+क्तिन्] 1 वह स्मृति या स्मरण जो प्रिय हो 2. अन्य विषयों को छोड़कर केवल एक ही बात का चिन्तन करना।

अनुस्यूत (वि०) [अनु+सिव्+क्त—ऊठ्] 1 नियमित तथा निर्बाध रूप से मिला कर बुना हुआ 2 सिला हुआ, बंधा हुआ, 3 सुग्रथित और सुश्रृंखलित।

अनुस्वानः [अनु+स्वन्+घञ्] 1 अनुरूप शब्द करना 2 बाद में शब्द करना, गूंज, दे० 'अनुरणन'।

अनुस्वारः [अनु+स्वृ+घञ्] नासिक्य ध्वनि जो पंक्ति के ऊपर एक बिन्दु लगा कर प्रकट की जाती है और जो सदैव पूर्ववर्ती स्वर से संबद्ध होती है।

अनुहरणम्, –हारः [अनु+हृ+ल्युट्, घञ् वा] नकल, मिलना-जुलना, समानता।

अनूकः,–कम् [अनु+उच्+क, कुत्वम् नि०] 1 कुल, वंश 2 मनोवृत्ति, स्वभाव, चरित्र, वंश की विशेषता।

अनूचान (वि०) या —नः [अनु+वच्+कान नि०] 1 अध्ययनशील, विद्वान् विशेषतया वेद, वेदांगों में ऐसा पारंगत विद्वान् जो उन्हें सुना सके और पढ़ा सके,—इदमूचुरनूचानाः—कु० ६।१५; 2 सुशील।

अनूढ (वि०) [न० त०] 1 न ले जाया गया, 2 अविवाहित, —ढा अविवाहित स्त्री। सम० —मान (वि०) लज्जालु,—गमनम् (°ढा°) कुमारी कन्या से संभोग, —भ्राता (पुं०) (°ढा°) 1 अविवाहित स्त्री का भाई 2 राजा की उपपत्नी का भाई।

अनूदकम् [उदकस्य अभावः न० त०] जल का अभाव, सूखा पड़ना।

अनूद्देशः [अनु+उत्+दिश्+घञ्] 'सापेक्ष क्रम' एक अलंकार का नाम जिसमें कि यथा क्रम पूर्ववर्ती शब्दोंका उल्लेख होता है;—यथासंख्यमनूद्देश उद्दिष्टानां क्रमेण यत्—सा० द० ७३२।

अनून (वि०) [न० त०] 1 जो घटिया न हो, कम न हो, अभाव वाला न हो—वृन्दावने चैत्ररथादनूने—रघु० ६।५०—गुणैरनूनां—रघु० ६।३७; 2 पूर्ण, समस्त, सकल, बड़ा, महान् शि० ४।११।

अनूप (वि०) [अनुगताः आपः यस्मिन्—अनु+अप्+अच्—ऊदनोर्देशे इति ऊ] जलीय, जलबहुल अथवा दलदल वाला प्रदेश—पः, पम् 1 जलबहुल स्थान या देश 2 एक देश का नाम (—पाः ब० व०)—रघु० ६।३७; 3 दलदल, कीचड़ 4 पानी का तालाब 5 नदी का किनारा, पर्वत का पहलू 6 भैंस 7 मेंढक 8 एक प्रकार का तीतर 9 हाथी। सम०—जम् आर्द्र, अदरक, —प्राय (वि०) दलदल वाला, कीचड़ से भरा हुआ।

अनूयाज, अनूराधा=अनुयाज, अनुराधा।

अनूरु (वि०) [न० ब०] जिसके जंघा न हो,—रुः सूर्य का सारथि अरुण (जिसका जंघारहित होने का वर्णन पाया जाता है) उषा, दे० अरुण। सम०—सारथि सूर्य (अनूरु जिसका सारथि है);—गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः—शि० १।२।

अनूर्जित (वि०) [न ऊर्जितः—न० त०] 1 अशक्त, दुर्बल, शक्तिहीन 2 दर्परहित।

अनूषर (वि०) [न ऊषरः—न० त०] 1. रेहीला, बंजर जैसी (भूमि) दे० उत्तम और अनुत्तम 2 जिसमें रेह न हो।

अनृच्—च (वि०) [न० ब०] 1 बिना ऋचा का 2 जो ऋग्वेद का ज्ञाता न हो, या ऋग्वेद का अध्येता न हो, यज्ञोपवीत न होने के कारण जिसे वेदाध्ययन का अधिकार न हो—अनृचो माणवकः—मुग्ध०।

अनृजु (वि०) [न० त०] जो सरल न हो, कुटिल (आलं), अयोग्य, दुष्ट, बेईमान।

अनृणं (वि०) [न० ब०] जो कर्जदार न हो—एनामनृणां करोमि—श० १;—प्राणैर्दशरथप्रीतेरनृणं (गृध्रं)—रघु० १२।५४; प्रत्येक द्विज को तीन ऋणों से उऋण होना पड़ता है—ऋषिऋण, देवऋण और पितृऋण। जो व्यक्ति वेदाध्ययन करके यज्ञ में देवताओं का आवाहन करता है, और फिर गृहस्थाश्रम में रह कर पुत्र प्राप्त करता है वही 'अनृण' कहलाता है दे० रघु०८।२०।

अनृणिन् (वि०) [न० त०]=अनृण।

अनृत (वि०) [न० त०] 1 जो सत्य न हो, मिथ्या (शब्द) प्रियं च नानृतं ब्रूयात्—मनु० ४।१३८, —तम् असत्यता, झूठ बोलना, धोखा, जालसाजी 2 कृषि (विप० 'सत्य') मनु० ४।५,। सम०—वदनम्, —भाषणम्,—आख्यानम् झूठ कहना, मिथ्या भाषण,

वादिन्,—वाच् (वि०) झूठ बोलने वाला,—व्रत (वि०) अपने वचन या प्रतिज्ञा का पालन न करने वाला।

अनृतुः [न० त०] अनुपयुक्त ऋतु, अनुचित समय, असमय। सम०—कन्या वह कन्या जो अभी रजस्वला न हुई हो।

अनेक (वि०) [न० त०] 1 जो एक न हो, एक से अधिक, बहुत से,—अनेकपितृकाणां तु पितृतो भागकल्पना—या० २।१२०; कि० १।१६; कई, कई एक 2 अलग-अलग, भिन्न भिन्न। सम०—अक्षर,—अच् (वि०) एक से अधिक अक्षर या स्वर वाला, नाना अक्षर सहित,—अंत (वि०) 1 अनिश्चित, संदिग्ध—अस्थिर-स्यादित्यव्ययमनेकांतयाचकम् 2=तु० अनेकांतिक (—तः) 1 अनिश्चित अवस्था, स्थायित्व का अभाव 2 अनिश्चितता, अनावश्यक अंश, जैसे कि कई 'अनुबंध' °वादः संशयवाद, स्याद्वाद, °वादिन् (पु०) स्याद्वादी, जैनियों के स्याद्वाद को मानने वाला,—अर्थ (वि०) 1 एक से अधिक अर्थ वाला, समनाम जैसे कि गो, अमृत, अक्ष आदि -अनेकार्थस्य शब्दस्य—काव्य० २; 2 'अनेक' शब्द के अर्थ वाला 2 बहुत से प्रयोजन या उद्देश्य रखने वाला (—र्थः) पदार्थों का बाहुल्य, विषयों की विविधता,—आश्रय,—आश्रित (वि०) (वैशे०) एक से अधिक स्थानों (जैसा कि 'संयोग' या 'सामान्य') पर रहने वाला,—गुण (वि०) बहुत प्रकार का, विविध प्रकार का, विभिन्न भेदों का,—गोत्र (वि०) दो कुलों से संबंध रखने वाला, एक तो अपने कुल से (जब तक कि गोद न लिया गया हो), तथा गोद लिये जाने पर गोद लेने वाले पिता के कुल से,—चित्त (वि०) चंचलमना,—ज (वि) एक से अधिकवार उत्पन्न, —जः पक्षी, —पः हाथी तु० 'द्विप' से, वन्येतरानेकपदर्शनेन—रघु० ५।४७; शि० ५।३५, १२।७५; —मुख (वि०) [स्त्री०—खी] (वि०) 1 बहुत मुंह वाला 2 तितर बितर, बहुत सी दिशाओं में फैलने वाला—(बलानि) जगाहिरेऽनेकमुखानि मार्गान्-भट्टि० २।५४; —युद्धविजयिन्, —विजयिन् (वि०) बहुत से युद्धों का विजेता, —रूप (वि०) 1 नाना रूपों का, बहुत रूपों वाला, 2 नाना प्रकार का 3 चंचल, परिवर्तनीय विविध स्वभाव वाला —वेश्यांगनेव नृपनीतिरनेकरूपा पंच० १।४२५; —लोचनः शिवजी, इन्द्र,—वचनम् बहुवचन, द्विवचन, —वर्ण (वि०) एक से अधिक राशियों वाला —विष (वि०) विविध, विभिन्न,—शफ (वि०) फटे हुए खुरों वाला, —साधारण (वि०) बहुतों के लिए सामान्य।

अनेकधा (अव्य०) [नञ्+एक+धा] विविध रीति से, नाना प्रकार से; —जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा—भग० ११।१३।

अनेकशः (अव्य०) 1 कई बार, बारंबार—अनेकशो निर्जितराजकस्त्वम्—भट्टि २।५२; 2 विविध रीति से, 3 बड़ी संख्या में या बड़े परिमाण में—पुत्रा अनेकशो मृता दाराश्च हि० १।

अनेडः [न एडः—न० त०] मूर्ख पुरुष, अज्ञानी व्यक्ति, मूढ़। सम० —मूक (वि०) गूंगा और बहरा °मूकताद्यैश्च यतु दोषैरसम्मतान्—का० ७ 2 अंधा 3 बेईमान दुष्ट, दुःशील।

अनेनस् (वि०) [न० ब०] निष्पाप, कलङ्करहित।

अनेहस् (पु०) [न हन्यते—हन्+असि धातोःएहादेशः—नञ्+एह+अस्] (हा—हसौ आदि) समय, काल।

अनैकांत (वि०) [न० त०] परिवर्त्य, अनिश्चित, अस्थिर, सामयिक।

अनैकांतिक (वि०) [नञ्+एकांत+ठक्—न० त०] (स्त्री०—की) 1 अस्थिर, जो बहुत आवश्यक न हो 2 (तर्क० में) हेत्वाभास के मुख्य पांच भागों में से एक, अन्यथा यह 'सव्यभिचार' कहलाता है, और तीन प्रकार का है:—(क) 'साधारण' जहाँ कि हेतु दोनों ओर—स्वपक्ष, तथा विपक्ष में—पाया जाय, फलतः तर्क अतिसामान्य हो जाय, (ख) 'असाधारण' जहाँ हेतु केवल पक्ष में ही पाये जायें फलतः तर्क अतिसामान्य न हो, (ग) 'अनुपसंहारी' जहाँ पक्ष में प्रत्येक ज्ञात बात तो सम्मिलित है, परन्तु तर्कों की अभी समाप्ति नहीं हुई है।

अनैक्यम् [न० त०] 1 एकता का अभाव, बहुवचनता 2 एकत्व की कमी, अव्यवस्था 3 अशान्ति, अराजकता।

अनैतिह्यम् [न० त०] परंपरागत प्रामाणिकता का अभाव, या जहां इस प्रकार की स्वीकृति अपेक्षित है।

अनो (अव्य०) [न० त०] नहीं, न।

अनोकशायिन् (पुं०—यी) [न० त०] घर में न सोने वाला, भिक्षुक।

अनोकहः [अनसः शकटस्य अकं गतिं हन्ति-हन्+ड] वृक्ष, —अनोकहा कम्पितपुष्पगंधी—रघु० २।१३, ५।६९।

अनौचित्यम् [नञ्+उचित+ष्यञ्] अनुपयुक्तता, अनुचितता—अनौचित्यादृते नान्यद्रसभंगस्य कारणम्—का० ७।

अनौजस्यम् [नञ्+ओजस्+ष्यञ्] शक्ति सामर्थ्य या बल का अभाव; सा० द०—दौर्गत्याद्यैरनौजस्यं दैन्यं मलिनतादिकृत्।

अनौद्धत्यम् [नञ्+उद्धत+ष्यञ्] 1 अहंकार से मुक्ति, शालीनता, विनय; 2 शान्ति, —नदीरनौद्धत्यमपङ्कता महीं—कि० ४।२२।

अनौरस (वि०) [न० त०] जो औरस—अर्थात् विवाहिता पत्नी से उत्पन्न न हो, अपना भी न हो, (पुत्र के रूप में) गोद लिया हुआ।

अंत (वि०) [अम्+तन्] 1 निकट 2 अन्तिम 3 सुन्दर, मनोहर,—मेघ० २३, शि० ४।४० (इसका सामान्य अर्थ—'सीमा' या 'छोर' है, यद्यपि 'शब्दार्णव' का उद्धरण देते हुए मल्लिनाथ इसका अर्थ 'रम्य' करते हैं) 4 नीचतम, निकृष्टतम 5 सबसे छोटा, —तः (कुछ अर्थों में नपुं०) 1 (वि०) छोर, मर्यादा, (देश-काल की दृष्टि से) सीमा, चरम सीमा, अन्तिम बिन्दु या पराकाष्ठा,—स सागरांतां पृथिवीं प्रशास्ति—हि० ४।५०,—दिगंते श्रूयंते भामि० १।२; 2 छोर, सरहद, किनारा, परिसर, सामान्य रूप से स्थान या भूमि,—यत्र रम्यो वनांतः, उत्त० २।२५,—ओदकांतात् स्निग्धो जनोऽनुगंतव्यः—श० ४, रघु० २।५८; 3 बुनी हुई किनारी का पल्ला—वस्त्र°, पट°; 4 सामीप्य, सन्निकटता, पड़ौस, विद्यमानता—गंगा प्रपातातविरूढशष्पं (गह्वरम्) रघु० २।२६, पुंसो यमांतं व्रजतः—पंच० २।११५; 5 समाप्ति, उपसंहार, अवसान,—सेकांते—रघु० १।५१, दिनांते निहितम् —रघु० ४।१, 6 मृत्यु, नाश, जीवन का अन्त,—राका भवेत्स्वस्तिमती त्वदंते—रघु० २।४८, अद्य कांतः कृतांतो वा दुःखस्यान्तं करिष्यति—उद्भट 7 (व्या० में) शब्द का अन्तिम अक्षर 8 समास में अंतिम शब्द 9 (प्रश्न का) निश्चय, निर्णीत या अंतिम निश्चय—उभयोरपि दृष्टोंऽतस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः भग० २।१६; 10 अंतिम अंश, अवशेष—यथा निशांत, वेदांत 11 प्रकृति, दशा, प्रकार, जाति 12 वृत्ति, तत्त्व शुद्धांतः। सम०—**अवशायिन्** (पुं०) चांडाल, —**अवसायिन्** (पुं०) 1 नाई 2 चांडाल, नीच जाति का, —**कर**, —**करण**, —**कारिन्** (वि०) घातक, मारक, संहारक, —**कर्मन्** (नपुं०) मृत्यु, —**कालः**, —**वेला** मृत्यु का समय,—**कृत्** (पुं०) मृत्यु,—**ग** (वि०) किनारे तक जाने वाला, पूरी तरह से जानकार या परिचित, (समास में) —**गति**, —**गामिन्** (वि०) नाश होने वाला, —**गमनम्** 1 समाप्त करना, पूरा करना 2 मृत्यु, —**दीपकम्** सा० शा० में एक अलंकार, —**पालः** 1 सीमा की रक्षा करने वाला, 2 द्वारपाल —**लीन** (वि०) गुप्त, छिपा हुआ, —**लोपः** शब्द के अंतिम अक्षर को निकाल देना,—**वासिन्** (°ते°) (वि०) सीमान्त प्रदेश के निकट रहने वाला, निकट ही रहने वाला, (—पुं०) विद्यार्थी (जो शिक्षा ग्रहण करने के निमित्त सदैव गुरु के निकट रहता है), चांडाल (जो गाँव के किनारे रहता है) —**वेला**=तु० °कालः—**शय्या** 1 भूमिशय्या 2 अंतिम शय्या, मृत्युशय्या 3 कब्रिस्तान या श्मशान भूमि, —**सत्क्रिया** अन्त्येष्टि संस्कार,—**सद्** (पुं०) विद्यार्थी, तमुपासते गुरुमिवांतसदः—कि० ६।३४।

अन्तक (वि०) [अन्तयति—अन्तं करोति—ण्वुल्] मारने वाला, नाश करने वाला, घातक—रघु० ११।२१, —**कः** 1 मृत्यु 2 साकार मृत्यु, संहारक, यम, मृत्यु का देवता,—ऋषिप्रभावान्मयि नान्तकोऽपि प्रभुः प्रहर्तुम् रघु० २।६२।

अंततः (अव्य) [अन्त+तसिल्] 1 किनारे से 2 आखिरकार, अन्त में, अंततोगत्वा, निदान 3 अंशतः, कुछ 4 भीतर, अन्दर 5 अधम रीति से ('अंत' के सभी अर्थ 'अंततः' में समा जाते हैं)

अन्ते (अव्य०) ['अन्त' का अधि०, क्रि० वि० में प्रयोग] 1 अन्त में, आखिरकार 2 भीतर 3 (की) उपस्थिति में, निकट, पास ही। सम० —**वासः** 1 पड़ौसी, साथी, 2 छात्र —शि० ३।५५, वेणी० ३।६ —**वासिन्**= तु० अंतवासिन्।

अंतर् (अव्य०) [अम्+अरन् तुडागमश्च] 1 [क्रियाओं के साथ उपसर्ग की भांति प्रयुक्त होता है तथा संबंध बोधक अव्यय समझा जाता है] (क) बीच में, के मध्य, में, के अन्दर °हन्, °धा, °गम्, °भू, °इ, °ली आदि (ख) के नीचे 2 (क्रि० वि० प्रयोग) (क) के मध्य, के बीच, के दरम्यान्, के अन्दर, मध्य में या अंदर, भीतर (विप० बहिः)—अदह्यतांतः रघु० २।३२, अन्तर्यश्च मृग्यते—विक्रम० १।१; आंतरिक रूप से, मन में (ख) ग्रहण करके या पकड़कर—अंतर्हत्वा गतः (हतं परिगृह्य) 3 (वियुक्त होने योग्य सम्बन्ध-बोधक के रूप में) (क) में, के मध्य, बीच में, के अन्दर (अधि० के साथ)—निवसन्नंतर्दारुणि लंघ्यो वह्निः—पंच० १।३१; अप्स्वंतरमृतमप्सु—ऋग् १।२३ (ख) के मध्य (कर्म० के साथ) वेद०—हिरण्मय्योर्ह कुश्योरंतरवहित आस—शत० (ग) में, के अन्दर, भीतर, बीच में (संबं० के साथ) प्रतिबल जलधेरंतरौर्वायमाणे—वेणी० ३।५, अंतः कंचुकिकंचुकस्य—रत्न० २।३;—लघुवृत्तितया भिदां गतं बहिरंतश्च नृपस्य मंडलम्—कि० २।५३; 4 समस्त शब्दों में यदि प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त किया जाय तो बहुधा निम्नांकित अर्थ होते हैं:—आंतरिक रूप से, के अन्दर, भीतर, भीतर रह कर, भरा हुआ, अन्दर की ओर, आंतरिक, गुप्त, तत्पुरुष तथा बहुव्रीहि समास के क्रियाविशेषणात्मक रूप बनाने वाला (नोट—समस्त पदों में 'अन्तर' का र् वर्ग के प्रथम द्वितीय वर्ण तथा श्, ष्, स् से पूर्व विसर्ग का रूप धारण कर लेता है जैसे अन्तःकरण, अन्तःस्थ आदि)। सम० —**अग्निः** आन्तरिक आग, वह अग्नि जो पाचन शक्ति को उत्तेजित करे, —**अंग** (वि०) 1 अंदर की ओर, आन्तरिक, अन्तर्गत (अपा० के साथ), त्रयमंतरंगं पूर्वेभ्यः—पातंजल० 2 शब्द के मूलरूप या अंग के आवश्यक भाग से संबद्ध, या अंग के आवश्यक भाग से संबद्ध, या उसका उल्लेख करने वाला, 3 प्रिय, प्रियतम (—गम्) 1 अंतरतम अंग,

हृदय, मन 2 घनिष्ठ मित्र, या विश्वस्त व्यक्ति;—आकाशः तेजोवह तत्त्व या ब्रह्म जो मनुष्य के हृदय में रहता है (उपनिषदों में प्रायः यह शब्द पाया जाता है) —आकूतम् गुप्त और छिपा हुआ प्रयोजन, —आत्मन् (पुं०—त्मा) 1 अंतस्तम प्राण या आत्मा, मन या आत्मा, आन्तरिक भावना, हृदय,—जीवसंज्ञोंतरात्मान्यः—मनु० १२।१३, भग० ६।४७, 2 (दर्श० में) अन्तर्हित सर्वोपरि प्राण या आत्मा (मानव के भीतर रहने वाला) अंतरात्मासि देहिनाम्—कु० ६। २१;—आराम (वि०) अपने आप में मस्त, अपने आत्मा या हृदय में ही सुख ढूंढ़ने वाला; योंतः सुखोंतरारामस्तथांतर्ज्योतिरेव सः—भग० ५।२४, —इन्द्रियम् आन्तरिक अंग या ज्ञानेन्द्रिय, —करणम् हृदय, आत्मा, विचार और भावना का स्थान, विचार शक्ति, मन, चेतना—प्रमाणं० प्रवृत्तयः—श० १।२२, —कुटिल (वि०) अन्दर से कपटी (आलं०) (—लः) सीप,—कोणः अन्दर का कोण,—कोपः गुप्त क्रोध, अन्दरूनी गुस्सा, —गडु (वि०) व्यर्थ, अनावश्यक, निष्फल—किमनेनांतर्गडुना—सर्व० —गम्, —गत दे० 'अन्तर्गम्' के नीचे, —गर्भ (वि०) पेट वाली, गर्भवती, —गिरम्, —गिरि (अव्य०) पहाड़ों में, —गूढ़ (वि०) अन्दर से छिपा हुआ, °विषः हृदय में जहर छिपाए हुए —गृहम्, —गेहम्, —भवनम् घर का भीतरी भाग, —घणः, —घणम् घर के अन्दर की खुली जगह, —चर (वि०) शरीर में व्याप्त, —जठरम् पेट, —ज्वलनम् जलन या सूजन, —ताप (वि०) अन्तर्दाह से युक्त (—पः) अन्दरूनी ज्वर या गर्मी, —श० ३।१३, —दहनम्, —दाहः 1 अन्दरूनी जलन 2 सूजन —देशः परिधि के बीच का प्रदेश, —द्वारम् घर के अंदर निजी या गुप्त दरवाजा, —धि —हित आदि दे० शब्द के नीचे —पटः, —पटम् दो व्यक्तियों के बीच में कपड़े का परदा —पदम् (अव्य०) पद (विभक्तियुक्त शब्द) के भीतर, —परिधानम् सबसे नीचे पहना जाने वाला कपड़ा, —पातः, —पात्यः 1 (व्या०) बीच में अक्षर रखना 2 यज्ञभूमि के मध्य में जमाया हुआ स्तंभ (संस्कार विधियों में प्रयुक्त), —पातित, —पातिन् (वि०) 1 बीच में समाविष्ट 2 सम्मिलित या समाविष्ट, अन्तर्गत होने वाला, —पुरम् 1 महल का अन्दरूनी भाग जो महिलाओं के उपयोग के लिए नियत किया गया हो, स्त्रियों के रहने का कमरा, रनवास,—कन्यांतःपुरे कश्चित् प्रविशति—पंच० १; 2 रनवास में रहने वाली स्त्रियां, रानी या रानियाँ, स्त्रियों का समुदाय—°विरहपर्युत्सुकस्य राजर्षेः श० ३, °अध्यक्षः, °रक्षकः, °वर्ती अन्तःपुर का अधीक्षक या संरक्षक, °चरः—कञ्चुकी, °जनः महल की स्त्रियां रनवास की महिलाएँ, °प्रचारः अन्तःपुर की गप्पें,—कदाचिदस्मत्प्रार्थनामंतःपुरेभ्यः कथयेत्—श० २; °सहायः अन्तःपुर से संबंध रखने वाला, —पुरिकः कंचुकी= °चरः, —प्रकृतिः (स्त्री०) 1 मनुष्य का शरीर या उसका आंतरिक स्वभाव 2 राजा का मंत्रालय या मंत्रिमंडल 3 हृदय या आत्मा, —प्रकोपनम् आंतरिक विरोध जमाना,—प्रतिष्ठानम्—भीतरी आवास,—बाष्प (वि०) 1 जिसने आंसुओं को रोका हुआ हो—अन्तर्बाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ—मेघ० ३; 2 जिसके आंसू अन्दर ही अन्दर निकल रहे हों, —भावः, —भावना दे० 'अंतर्भू' के अन्तर्गत, —भूमिः (स्त्री०) भूमि का भीतरी भाग,—भेदः वैमनस्य, आन्तरिक विरोध, —भौम (वि०) भूमि के नीचे रहने वाला—मनस् (वि०) उदास, व्याकुल, —मृत (वि०) गर्भ में ही मर जाने वाला,—यामः वाणी और श्वास को रोकना, —लीन (वि०) 1 निहित, गुप्त, अन्दर छिपा हुआ, °नस्य दुःखाग्नेः—उत्तर० ३।९ 2. अन्तर्निहित,—वंशः—°पुरम्, तु०,—वंशिकः, —वासिकः अन्तःपुर का अधीक्षक,—वत्नी गर्भवती स्त्री,—वस्त्रम्,—वासस् (नपुं.) अधोवस्त्र,—वाणि (वि०) बड़ा विद्वान्,—वेगः आन्तरिक बेचैनी या चिन्ता, आन्तरिक ज्वर,—वेदिः-दी गंगा और यमुना के बीच का भूभाग,—वेश्मन् (न०) घर के अन्दर का कमरा, भीतरी कोठा,—वेश्मिकः कंचुकी,—शरीरम् मनुष्य का आन्तरिक या आत्मिक भाग, शरीर का भीतरी भाग, —शिला विन्ध्य पहाड़ से निकलने वाली नदी,—संज्ञ (वि०) अन्तश्चेतन,—सत्त्वा गर्भवती स्त्री,—संतापः आन्तरिक पीडा, शोक, खेद,—सलिल (वि०) जिसका पानी भूमि के अन्दर बहता हो,—नदीमिवान्तःसलिलां सरस्वतीम्—रघु० ३।९,—सार (वि०) अन्दर से भरा हुआ, या शक्तिशाली, बलवान् भारी और जटिल—°र घन तुलयितुं नानिलः शक्ष्यति-त्वाम्—मेघ० २० (-रः) आन्तरिक कोष या भंडार, आन्तरिक निधि या तत्त्व,—सेनम् (अव्यय) सेनाओं के बीच में,—स्थः ('अंतस्थ' भी) अर्धस्वर, क्योंकि वे स्वर और व्यंजनों के बीच में स्थित हैं. और वागिन्द्रिय के जरा से संपर्क से बोले जाते हैं,—स्वेदः मस्त हाथी,—हासः गुप्त या दबाई हुई हँसी,—हृदयम् हृदय का भीतरी भाग।

अन्तर (वि०) [अन्तं रातिददाति-रा + क] 1 अंदर होने वाला, भीतर का, (विप० बाह्य) 2. निकट, समीप 3. संबद्ध, घनिष्ठ, प्रिय-अयमत्यन्तरो मम-भारत 4. समान ('अन्तरतम, भी) (ध्वनि और शब्दों के विषय में)-स्थानेऽन्तरतमः-पा० १।१।५०.5. से भिन्न, अन्य (अपा० के साथ) 6. बाहर का, बाह्यस्थित, बाहर रहने वाला

(इस अर्थ में इसके रूप विकल्प से कर्ता० ब० व०, अपा० और अधि० एक व० में 'सर्व' की भांति होते हैं) इसलिए—अन्तरायां पुरि, अन्तरायै नगर्यै,—रम् 1. (क.) भीतर का, अन्दर का—लीयन्ते मुकुलान्तरेषु—रत्न० १।२६, (ख.) छिद्र, सूराख 2. आत्मा, हृदय, मन—सदृशं पुरुषान्तरविदो महेन्द्रस्य—विक्रम० ३, 3. परमात्मा, 4. अन्तराल, मध्यवर्ती काल या देश—अल्पकुचान्तरा—विक्रम ४।२६, बृहद्भुजान्तरम्—रघु० ३।५४, 'अन्तरे' का बहुधा अनुवाद किया जाता है—मध्य में, बीच में—न मृणालसूत्रं रचितं स्तनान्तरे श० ६।१७, 5. स्थान, जगह, देश—मृणालसूत्रान्तरमप्यलभ्यम् कु० १।४०, पौरुषं श्रय शोकस्य नान्तरं दातुमर्हसि—रा० शोक मत करो,—अन्तरम्-अन्तरम्-मृच्छ० रास्ता छोड़ो, 6. पहुंच, अन्दर जाना, प्रवेश, कदम रखना—लेभेऽन्तरं चेतसि नोपदेशः—रघु० ६।६६ लब्धान्तरा सावरणेऽपि गेहे—१६।७, 7. अवधि (काल की), निर्दिष्ट अवधि,—मासान्तरे देयम्—अमर०, इति तौ विरहान्तरक्षमौ—रघु० ८।५६, 8. अवसर, संयोग, समय—यावत्त्वामिन्द्रगुरवे निवेदयितुमन्तरान्वेषी भवामि—श०, ७, 9. भेद (दो वस्तुओं के बीच) (सबं० के साथ या समास में)—तव मम च समुद्रपल्वलयोरिवान्तरम्—मालवि० १, यदन्तरं सर्षपशैलराजयोर्यदन्तरं वायसवैनतेययोः—रा०, द्रुम सानुमता किमन्तरम्—रघु० ८।९०, 10. (गणित) भिन्नता, शेष, 11. (क०) भेद, अन्य, दूसरा, परिवर्तित, बदला हुआ (रीति, प्रकार, ढंग आदि) (ध्यान रखिये इस अर्थ में 'अंतर' सदैव समस्तपद का उत्तर पद रहता है तथा इसका लिंग वही बना रहता है—अर्थात् नपुं० चाहे पूर्वपद का कुछ भी लिंग हो—कन्यान्तरम् (अन्याकन्या). राजान्तरं (अन्यो राजा), गृहान्तरम् (अन्यद् गृहम्), इसका अनुवाद बहुधा 'अन्य' शब्द से किया जाता है)—इदमवस्थान्तरमारोपिता—श० ३, परिवर्तित दशा, (ख) विविध, विभिन्न (ब० व० में प्रयुक्त)—लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु—श० ४।२, 12. विशेषता, (विशिष्ट) प्रकार, विभेद, या किस्म—व्रीह्यन्तरेऽप्यणुः—त्रि०, मीनो राश्यन्तरे-तद० 13. दुर्बलता, आलोच्य स्थल, असफलता, दोष, सदोष स्थल,—प्रहरेदन्तरे रिपुं—शब्द०, सुजयः खलु तादृगन्तरे—कि. २।५२, 14. जमानत, प्रत्याभूति, प्रतिभूति, 15. सर्व श्रेष्ठता,—गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातुः—मालवि० १।६ (यह अर्थ ११ संख्यान्तर्गत से भी जाना जा सकता है), 16. वस्त्र (परिधान) 17. प्रयोजन, आशय (मल्लि०—रघु० १६।८२) 18. प्रतिनिधि, स्थानापत्ति, 19. हीन होना। सम०—अपत्या गर्भवती स्त्री,—ज्ञ (वि०) अन्दर का रहस्य जानने वाला, प्राज्ञ, दूरदर्शी,—नान्तरज्ञाः श्रियो जातु प्रियैरासां न भूयते—कि० ११।२४,—दिशा (अन्तरा दिक्) परिधि का मध्यवर्ती प्रदेश या दिशा,—पु (पू) रुषः आन्तरिक मानव, आत्मा (मानव के अन्दर निवास करने वाला देवता जो कि उसके सब कार्यों को देखता है)—प्रभवः मिश्रित जाति में जन्म लेने वाला,—स्थ—स्थायिन्,—स्थित (वि०) 1. आभ्यन्तरिक, आंतरिक, अन्तर्हित 2. अन्तःक्षिप्तः, अन्तर्वर्ती।

अन्तरतः (अव्य०) [अन्तर+तसिल्] 1. भीतर, आंतरिक रूप में, मध्य, 2. के अन्दर (संब० के साथ)।

अन्तरतम (वि०) [अन्तर+तमप्] अत्यन्त निकट, आंतरिक, निकटतम, घनिष्ठतम, सदृशतम—मः उसी श्रेणी का अक्षर।

अन्तरयः—रायः [अन्तर+अय्+अच्] अवरोध, बाधा, रुकावट,—स चेत् त्वमन्तरायो भवसि च्युतो विधिः—रघु० ३।४५, १४।६५, अस्य ते बाणपथवर्तिनः कृष्णसारस्य अन्तरायौ तपस्विनौ संवृत्तौ—श० (पाठ०)

अन्तरयति [ना० धा०—पर०] 1. बीच में डालना, हटाना, स्थगित करना, भवतु तावदन्तरयामि—उत्तर० ६, 2. विरोध करना, 3. दूर हटाना, पीछे से धकेलना।

अन्तरयण=अन्तरय

अन्तरा (अव्य०) [अन्तरेति—इण्+डा] 1. (क्रि० वि० के रूप में) (क) भीतर, अन्दर, भीतर की ओर (ख) मध्य में, बीच में, त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ—श० २, रघु० १५।२०, (ग) मार्ग में, बीच में विलंबेथां च मांतरा—महावीर० ७।२८ (घ) पड़ौस में, निकट ही, लगभग (ङ) इसी बीच में (च) समय समय पर, यहाँ वहाँ, कभी कभी, कुछ समय तक, अब, अभी—अन्तरा पितृसक्तमन्तरा मातृसंबद्धमन्तरा शुकनासमयं कुर्वन्नालापं—का० ११८, 2. (कर्म के साथ सं० अव्य० की भांति) (क) अन्तरा त्वां मां च कमण्डलुः—महा० (ख) के बिना, सिवाय—न च प्रयोजनमन्तरा चाणक्यः स्वप्नेऽपि चेष्टते—मुद्रा० ३। सम०—अंसः छाती,—भवदेहः,—भवसत्त्वम्—आत्मा या जीवात्मा, जो जन्म और मरण की अवस्थाओं के बीच में रहता है,—दिश् दे०—अन्तर्दिश्—वेदिः-दी (स्त्री) 1.स्तंभाश्रित बरांडा, दहलीज, ड्योढ़ी 2. एक प्रकार की दीवार—रघु० १२।९३,—शृंगम् (अव्य०) सींगों के बीच में।

अन्तरायः=अंतरयः तु०

अन्तरालम्, **अन्तरालकम्** [अन्तरं व्यवधानसीमाम् आराति गृह्णाति—अन्तर+आ+रा+क रस्य लत्वम्] 1. मध्यवर्ती प्रदेश, स्थान, या काल, अवकाश—दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोरन्तरालं दक्षिणपूर्वा—सिद्धा०, अंतराले बीच में, के मध्य, के बीच, अवकाश के समय, बाष्पांभः परिपतनोद्गमान्तराले—उत्तर० १।३१,

2. भीतर, अन्दर, भीतरी या मध्यभाग 3. मिश्रित जाति या समुदाय।

अन्तरि(री)क्षम् [अन्तः स्वर्गपृथिव्योर्मध्ये ईक्ष्यते—इति—अन्तर्+ईक्ष्+घञ्, पृषो० ह्रस्वः वा] आकाश और पृथ्वी के बीच का मध्यवर्ती प्रदेश, वायु, वातावरण आकाश। सम०—**उदरम्** वातावरण का मध्य,—**गः**, —**चरः** पक्षी,—**जलम्** ओस,—**लोकः** मध्यवर्ती प्रदेश जो कि एक स्वतंत्र लोक समझा जाता है।

अन्तरित (वि०) [अन्तः+इ+क्त] 1. बीच में गया हुआ, अन्तर्वर्ती, 2. अन्दर गया हुआ, गुप्त, ढका हुआ, पृथक् किया हुआ, अदृश्य, पादपान्तरित एव विश्वस्तामेनां पश्यामि—श० १, लता के पीछे छिपा हुआ,—सारसेन स्वदेहान्तरितो राजा—हि० ३, पर्दे के पीछे छिपा हुआ 3. अंदर गया हुआ. प्रतिबिंबित—स्फटिकभित्त्यन्तरितान् मृगशावकान् (क) अवरुद्ध, बाधित, रोका गया—त्वद्वांच्छान्तरितानि साध्यानि मुद्रा० ४।१५, नोपालभ्यः देवान्तरितपौरुषः—पंच० २।१३, (ख) पृथक्कृत, अदृश्य, रुद्धदृष्टि, मुहूर्तान्तरितमाधवा दुर्मनायमाना माल० ८, मेघैरन्तरितः प्रिये तव मुखच्छायानुकारी शशी—सा० द० (ग) डूबा हुआ, तिरोहित 4. ओझल, नष्ट, वियुक्त, संहृत—अन्तरिते तस्मिन् शवरसेनापतौ का० ३३, 5. अतिक्रांत, भूला हुआ।

अन्तरीपः [अन्तर्मध्ये गता आपो यस्य—ब० स०, आत ईत्वम्] भूमि का टुकड़ा जो समुद्र के भीतर चला गया हो, भूनासिका, द्वीप।

अन्तरीयम् [अन्तर+छ] अधोवस्त्र।

अन्तरेण (अव्य०) [अन्तर+इण्+ण] 1. [कर्म० के साथ सं० अव्य० के रूप में] (क) सिवाय, के बिना, क्रियान्तरान्तरायमन्तरेण आर्यं द्रष्टुमिच्छामि—मुद्रा० ३, न राजापराधमन्तरेण प्रजास्वकालमृत्युश्चरति—उत्तर० २, मार्मिकः को मरन्दानामन्तरेण मधुव्रतम्—भामि० १।११७, (ख) के विषय में, संकेत करते हुए, के संबंध में—अथ भवन्तमन्तरेण कीदृशोऽस्या दृष्टिरागः—श० २, तदस्या देवीं वसुमतीमन्तरेण महदुपालम्भनं गतोऽस्मि—श० ५, (ग) के बीच में, त्वां मां चान्तरेण कमण्डलुः—महा० 2. (क्रि० वि०) (क) के बीच में, के मध्य (ख) हृदय में।

अन्तर्गत / **अन्तर्गामिन्** (वि०) [अन्तः+गम्+क्त, णिनिर्वा] 1. बीच में मध्य में, गया हुआ, (बुरे शब्द की भांति) बीच में आया हुआ, 2. अन्तःस्थित, अन्तःसम्मिलित, विद्यमान, संबद्ध 3. गुप्त, आन्तरिक, अन्दर की ओर, रहस्य, गूढ़,—अन्तर्गतमपास्तं मे रजसोऽपि परं तमः—कु० ६।६०, सौमित्रिरन्तर्गतबाष्पकंठः—रघु० १४।५३ नेत्रवक्त्रविकारैश्च लक्ष्यतेऽन्तर्गतं मनः—पंच० १।४४, 4. स्मृतिपथ से गया हुआ, भूला हुआ, 5. नष्ट हुआ हुआ, ओझल, 6. अदृष्ट। सम०—**उपमा** गुप्त उपमा,—**मनस्**=अंतर्मनस् तु०।

अन्तर्धा [अन्तर्+धा+अङ्] आच्छादन, गोपन,—अन्तर्धामुपययुरुत्पलावलीषु—शि० ८।१२।

अन्तर्धानम् [अन्तर्+धा+ल्युट्] अदृश्य होना, ओझलपना, दृष्टि से चूक जाना—°व्यसनरसिका रात्रिका पालिकीयम्—काव्य० १०; °गम् या इ=अदृश्य होना, ओझल होना।

अन्तर्धिः (स्त्री०) [अन्तर्+धा+कि] ओझल होना, गोपन।

अन्तर्भवः (वि०) [अन्तर् भवतीति—भू+अच्] अन्दर की ओर, आन्तरिक।

अन्तर्भावः [अन्तर्+भू+घञ्] 1 अन्तर्भूत या अन्तर्मिलित होना, अन्तर्गत होना,—तेषां गुणानामोजस्यन्तर्भावः—काव्य० ८, 2. अन्तर्हित भाव।

अन्तर्भावना [अन्तर्+भू+णिच्+ल्युट्] 1. सम्मिलित करना, 2. अन्तश्चिन्तन या चिन्ता।

अन्तर्य (वि०) [अन्तर्+यत्] आन्तरिक, बीच में।

अन्तर्हित (वि०) [अन्तर्+धा+क्त] 1. बीच में रक्खा हुआ, पृथक्कृत, दृष्टिरुद्ध, गुप्त, छिपा हुआ—अन्तर्हिता शकुंतला वनराज्या—श० ४, 2. ओझल हुआ, नष्ट, अदृश्य—अन्तर्हिते शशिनि—श० ४।२;। सम० —**आत्मन्** (पुं०) शिव।

अन्ति (अव्य०) [अन्त+इ] पास में (संब० के साथ), (स्त्री०—तिः) बड़ी बहन (नाटकों में)।

अन्तिका [अन्त+इ स्वार्थे कन् टाप्] 1. बड़ी बहन 2. चूल्हा, अंगीठी, 3. एक पौधे का नाम (सातलाख्य या शातलाख्य औषधि)।

अन्तिक (वि०) [अन्तः सामीप्यमस्यातीति—अन्त+ठन्] 1. निकट, समीप (संब० या अपा० के साथ), 2 पहुंचने वाला, 3. टिकाऊ, तक,—**कम्** निकटता, सामीप्य, पड़ौस, उपस्थिति,—न त्यजन्ति ममान्तिकम्—हि० १।४६, °न्यस्त—रघु० २।२४ कर्ण—°चर—श० १।२४, (क्रि० वि०) [संब० और अपा० के साथ अथवा समास के अन्त में] निकट, पड़ौस में,—अन्तिकं ग्रामात् ग्रामस्य वा—सिद्धा०, सामीप्य या सन्निधि में, अन्तिकेन—निकट (संब० के साथ) अन्तिकात्—निकट, पास से, से (अपा० या संब०) °कादागत,—अंतिके निकट, —दमयन्त्यास्तदान्तिके निपेतुः नल० १।२२। सम० —**आश्रयः** पास की वस्तु का सहारा लेने वाला, लगातार सहारा (जैसा कि वृक्ष के द्वारा लता को दिया जाता है)।

अन्तिम (वि०) [अन्त+डिमच्] 1. तुरन्त बाद आनेवाला, 2 आखरी, अन्त का, चरम—अजातमृतमूर्खाणां वरमाद्यौ न चान्तिमः—हि० १,। सम०—**अंकः** आखरी

अंक, नौ की संख्या,—अङ्गुलिः—छोटी (कनिष्ठिका) अंगुली।

अन्ती [अन्त+इ+ङीप्] चूल्हा, अंगीठी।

अन्ते—दे० "अन्ततः" के नीचे।

अन्त्य (वि०) [अन्त+यत्] 1. अन्तिम, चरम (अक्षर या शब्द आदि) अन्त में (समय, क्रम या स्थान की दृष्टि से) जैसे कि अक्षरों में 'ह', नक्षत्रों में 'रेवती', अन्त्ये वयसि-बूढ़ी अवस्था में-रघु० ९।७९, अन्त्यम् ऋणम्-रघु० १।७१ अन्तिम ऋण, °मंडनं—८।७१, कु० ४।२२, 2. तुरन्त बाद में, (समा०) 3. निम्नतम, अधम, घटिया, नीच, —न्त्यः 1. अधम जाति का मनुष्य, 2. शब्द का अंतिम अक्षर 3. अंतिम चांद्र मास अर्थात् फाल्गुन 4. म्लेच्छ,—न्त्या अधम जाति की स्त्री,—न्त्यम् 1. सौ नील की संख्या (१००००००००००००००००) 2. मीन राशि 3. प्रगति का अंतिम अंग। सम० —अवसायिन् (पुं०-यी, स्त्री-यिनी) अधम जाति की स्त्री या पुरुष, निम्नांकित सात इसी श्रेणी से संबंध रखने वाले समझे जाते हैं,—चांडालः श्वपचः क्षत्ता सूतो वैदेहकस्तथा, मागधायोगवौ चैव सप्तैतेऽन्त्यावसायिनः।—आहुतिः,—इष्टिः (स्त्री०)—कर्मन्,—क्रिया अन्त्येष्टि संस्कार की आहुतियाँ या और्ध्वदैहिक संस्कार,—ऋणम् तीन ऋणों में अंतिम जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति को उऋण होना है अर्थात् सन्तानोत्पत्ति करना, दे० अनृण,—जः,—जन्मन् (पुं०) 1. शूद्र 2. सात नीच जातियों (चांडाल आदि) में से एक;—जन्मन्,—जाति,—जातीय (वि०) 1. नीच जाति में उत्पन्न होने वाला, 2. शूद्र 3. चांडाल—भम् अंतिम चान्द्र नक्षत्र-रेवती,—युगम् अन्तिम अर्थात् कलियुग,—योनि (वि०) नीच वंश का मनु० ८।६८,—लोपः शब्द के अन्तिम अक्षर का लोप करना,—वर्णः,—वर्णा नीच जाति का पुरुष या स्त्री, शूद्र, या शूद्रा।

अन्त्यकः [अन्त्य एवेति स्वार्थे कन्] नीच जाति का पुरुष।

अन्त्रम् [अन्त्+ष्ट्रन्—अम्+क्त वा] आंत, अंतड़ी—अन्त्रभेदनं क्रियते प्रश्रयश्च—महावीर० ३। सम०—कूजः,—कूजनम्,—विकूजनम्—आंतों में होने वाली गड़गड़ाहट की आवाज,—वृद्धिः (स्त्री०) आंत उतरने की बीमारी, हरनिया, अंडकोश बढ़ने का रोग,—शिला विन्ध्य पहाड़ से निकलने वाली एक नदी,—स्रज् (स्त्री०) अंतड़ियों की माला (जिसको नृसिंह ने धारण किया)।

अन्त्रंधमिः (स्त्री०) अजीर्ण, अफारा।

अन्दुः—दूः (स्त्री०) } [अन्द्+कु पक्षे ऊङ्, स्वार्थे कन् च]
अन्दु (दू) कः } 1. शृंखला, या हथकड़ी बेड़ी, 2. हाथी के पैरों को बांधने के लिए जंजीर, 3. नूपुर।

अन्दोलनम् [अन्दोल्+ल्युट्] झूलना, घुमाऊ, कंपनशील —द्राक् चामरान्दोलनात्—उद्भट०।

अन्ध् (चु० उभ०) 1. अंधा बनाना, अंधा करना—अंधयन् भृंगमालाः शि० ११।१९, 2. अंधा होना।

अन्ध (वि०) [अन्ध्+अच्] 1. अंधा (शब्द० और आलं० प्रयोग] दृष्टिहीन, देखने में असमर्थ (किसी विशिष्ट समय पर), अंधा किया हुआ, स्रजं ... शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया—श० ७।२४, मदान्धः—नशे में अंधा, इसी प्रकार दर्पान्धः, क्रोधान्धः, 2. अंधा बनाने वाला, दृष्टि को रोकने वाला, नितांत पूर्ण अंधकार; सीदन्नन्धे तमसि—उत्तर० ३।३८—न्धम् 1. अंधकार 2. जल, पंकिल जल। सम०—कारः अंधेरा (शब्द० और आलं०), काम°, मदन°,—अन्धकारतामुपयाति चक्षुः—का० ३६, धूमिल हो जाती है,—कूपः 1. कुआँ जिसका मुंह ढंका हुआ होता है, ऐसा कुआँ जिसके ऊपर घास उगा हुआ हो 2. एक नरक का नाम,—तमसम्,—तामसम्, अन्धातमसम्—गहन अंधकार, पूरा अंधेरा—रघु० ११।२४,—तामिस्रः—स्रः (°तामिस्रम्) नितांत गहन अंधकार,—धी (वि०) मानसिक रूप से अंधा,—पूतना राक्षसी जो बच्चों में रोग फैलाने वाली मानी जाती है।

अन्धकरण (वि०) [अन्धकृ+ल्युट्] अंधा करने वाला।

अन्धंभविष्णु,—भावुक (वि०) [अन्धंभू+इष्णुच्, उकञ् वा] अंधा होने वाला।

अन्धक (वि०) [अन्ध+कन्] अंधा,—कः कश्यप और दिति का पुत्र जो राक्षस था और शिव के हाथों मारा गया था। सम०—अरिः,—रिपुः,—शत्रुः,—घाती,—असुहृद् अंधक को मारने वाला, शिव की उपाधि,—वर्तः पहाड़ का नाम,—वृष्णि (पुं० ब० व०) अंधक और वृष्णि के वंशज।

अन्धस् (न०) [अद्+असुन् नुम् धश्च] भोजन,—द्विजातिशेषेण यदेतदन्धसा—कि० १।३९.।

अन्धिका [अन्ध्+ण्वुल् इत्वम् टाप् च] 1 रात्रि, 2. एक प्रकार का खेल, आंखमिचौनी, जूआ 3. आँख का रोग।

अन्धुः [अन्ध्+कु] कुआँ।

अन्ध्राः [अन्ध्+र, ब० व०] 1 एकदेश तथा उसके निवासी 2. एक राजवंश का नाम 3. संकर वर्ण का पुरुष।

अन्नम् [अद्+क्त, अन्+नन् वा] 1. सामान्यतः भोजन, 2. अन्नमयकोश 3. भात—न्नः सूर्य। सम०—अद्यम् उपयुक्त आहार, सामान्य भोजन—आच्छादनम्,—वस्त्रम् भोजन वस्त्र,—कालः भोजन करने का समय,—किट्टः =°मल तु०,—कूटः भात का बड़ा ढेर,—कोष्ठकः 1. डोली, अनाज की कोठी 2. विष्णु 3. सूर्य,—गंधिः पेचिश दस्तों की बीमारी,

—**जलम्** अन्न और जल,—**वासः** भोजन मात्र पाकर सेवा करने वाला दास या नौकर, —**देवता** आहार की सामग्री की अधिष्ठात्री देवी, —**दोषः** निषिद्ध भोजन के खाने से उत्पन्न पाप, —**द्वेषः** भोजन में अरुचि, भूख का अभाव,—**पूर्णा** दुर्गा देवी का एक रूप (अर्थात् सम्पन्नता की देवी) —**प्राशः**, —**प्राशनम्** १६ संस्कारों में से एक संस्कार जबकि नवजात बालक को पहली बार विधिवत् भोजन देने की क्रिया सम्पादित की जाती है, यह संस्कार ५ से ८ महीने के मध्य (प्रायः छठे मास में—मनु० २।३४) किया जाता है, —**ब्रह्मन्**, —**आत्मन्** (पुं०) आहार का प्रतिनिधित्व करने वाला ब्रह्म,—**भुज्** (वि०) भोजन करने वाला, शिव की उपाधि, —**मय** (वि०) दे० नीचे, —**मलम्** 1. विष्ठा, 2. मदिरा,—**रक्षा** भोजन करने में सावधानी, —**रसः** आहार का सत्, पक जाने पर अन्न के भीतरी गूदे से बना रस, —**वस्त्रम्**=°**आच्छादनम्** तु० **व्यवहारः** खानपान संबंधी प्रथा या विधि अर्थात् दूसरों के साथ मिलकर खाना या न खाना, —**शेषः** जूठन, उच्छिष्ट—**संस्कारः** देवताओं के निमित्त अन्न का समर्पण।

अन्नमय (वि०) (स्त्री०—**यी**) [अन्न+मयट्] अन्न वाला या अन्न से बना पदार्थ; °**कोशः**—**षः** भौतिक शरीर, स्थूलशरीर, जो अन्न पर ही आधारित है तथा जो कि आत्मा का पाचवाँ वस्त्र या परिधान है, भौतिक संसार, स्थूलतम तथा निम्नतम रूप जिसके द्वारा ब्रह्म अपने आपको सांसारिक सत्ता के रूप में प्रकट करने वाला माना जाता है,—**यम्** अन्न की बहुतायत।

अन्य (वि०) [नपुं०—**अन्यत्**] 1. दूसरा, भिन्न, और; सामान्यतः दूसरा, और—स एव त्वन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत्—भर्तृ० नी० ४०, 2. अपेक्षाकृत दूसरा, से भिन्न, की अपेक्षा और (अपा० के साथ अथवा समास में अन्तिम पद) नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह सर्वजन्तूनाम्—का० ३५, उत्थितं ददृशेऽन्यच्च कबंधेभ्यो न किंचन—रघु १२।४९ 3. अनोखा, असाधारण, विशेष—अन्या जगद्धितमयी मनसः प्रवृत्तिः—भामि० १।६९, धन्या मृदन्यैव सा—सा० द०, 4. तुच्छ, कोई 5 अतिरिक्त, नया, अधिक, **अन्यच्च**—इसके अतिरिक्त, इसके साथ ही, तो फिर (वाक्यों का संयुक्त करने वाला); **एक-अन्य** एक-दूसरा-मेघ० ७८, दे०, एक के नीचे भी **अन्य-अन्य** और और, अन्यन्मुखे अन्यन्निर्वहणे—मुद्रा० ५, अन्यदुच्छृंखलं सत्त्वमन्यच्छास्त्रनियन्त्रितम्—शि० २।६२, **अन्य-अन्य-अन्य** आदि, पहला, दूसरा, तीसरा चौथा आदि। सम०—**असाधारण** (वि०) जो दूसरों के प्रति सामान्य न हो, विशेष, —**उदर्य** (वि०) दूसरे से उत्पन्न (—**र्यः**) सौतेली माता का पुत्र, अर्धभ्राता (—**र्या**) अर्ध-भगिनी, —**ऊढा** (वि०) दूसरे से विवाहित, दूसरे की पत्नी, —**क्षेत्रम्** 1. दूसरा खेत 2. दूसरा देश या विदेश 3. दूसरे की पत्नी, —**ग**, —**गामिन्** (वि०) 1. और के पास जाने वाला, 2. व्यभिचारी, लम्पट, —**गोत्र** (वि०) दूसरे कुल या वंश का, —**चित्त** (वि०) किसी और पदार्थ पर ध्यान लगाने वाला, दे० °**मनस्**, —**ज**, —**जात**(वि०) भिन्न कुल में उत्पन्न,—**जन्मन्** (नपुं०) दूसरा जीवन, पुनर्जन्म, आवागमन, —**दुर्वह** (वि०) जो दूसरे को सहन न कर सके—**देवत**,—**दैवत्य** (वि०) दूसरे किसी देवता को संबोधित करने वाला या मंत्र द्वारा उल्लेख करने वाला,—**नाभि** (वि०) किसी दूसरे कुल से संबंध रखने वाला, —**पदार्थः** 1. दूसरी वस्तु 2. दूसरे शब्द का भाव, °प्रधानो बहुव्रीहिः—बहुव्रीहि समास निश्चित रूप से अन्यपुरुषप्रधान होता है,—**पर** (वि०) 1. दूसरों का भक्त 2. किसी दूसरे का उल्लेख करने वाला—**पुष्टः**—**ष्टा**,—**भृतः**—**ता** दूसरे से पाला हुआ या पाली हुई, कोयल की उपाधि, जो कि कौवे के द्वारा पाली हुई समझी जाती है अत एव 'अन्यभृत्' कहलाती है—अप्यन्यपुष्टा प्रतिकूलशब्दा कु० १।४५, कलमन्यभृतासु भाषितम्—रघु० ८।५९, —**पूर्वा** 1. वह स्त्री जिसका वाग्दान किसी और के साथ हो चुका है 2. पुनर्विवाहित विधवा, —**बीजः**,—**बीजसमुद्भवः**,—**समुत्पन्नः** गोद लिया हुआ पुत्र (दूसरे माता पिताओं से उत्पन्न), वह जो कि औरस पुत्र के अभाव में गोद लिया जा सके, —**भृत्** (पुं०) कौवा (दूसरों को पालने वाला), —**मनस्**,—**मनस्क**, —**मानस** (वि०) 1. अवधानहीन 2. चंचल, अस्थिर,—**मातृजः** अर्धभ्राता (दूसरी मां से उत्पन्न),—**रूप** (वि०) परिवर्तित या बदले हुए रूप वाला,—**लिंग**,—**गक** (वि०) दूसरे शब्द के लिंग वाला अर्थात् नामशब्द, विशेषण, **वापः** कोयल, —**विवर्धित** (वि०)=**पुष्ट** कोयल,—**संगमः** दूसरी स्त्री से रति क्रिया, अवैध मैथुन,—**साधारण** (वि०) बहुतों के लिए सामान्य,—**स्त्री** दूसरे की पत्नी, जो अपनी पत्नी न हो (साहित्य शास्त्र में यह तीन मुख्य नायिकाओं—स्वीया, अन्या, साधारणी—में से एक है, 'अन्या' या तो किसी दूसरे की पत्नी होती है अथवा अविवाहित कन्या जो युवती तथा लज्जाशील होती है, दूसरे की पत्नी आमोद-प्रमोद तथा उत्सवों के लिए उत्सुक रहती है तथा अपने कुल के लिए कलक एवं नितान्त निर्लज्ज होती है—सा० द० १०८-११०) °**गः** व्यभिचारी।

अन्यक=अन्य।

अन्यतम (वि०) [अन्य+डतम] (संज्ञा शब्द की भांति कारक के रूप) बहुतों में से एक, बड़ी संख्या में से कोई एक.

अन्यतर (वि०) [अन्य+तरप्] (सर्वनाम की भांति रूप),

दो में से (पुरुष या पदार्थ) एक, दोनों में से कोई सा एक (संब० के साथ), संतः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते—मालवि० १।२, अन्यतरस्याम् (°रा का अधि० ए० व०) किसी तरह, दोनों तरह, इच्छानुरूप।

अन्यतरतः (क्रि० वि०) [अन्यतर+तसिल्] दो में से एक ओर।

अन्यतरेद्युः (अव्य०) [अन्यतरस्मिन्नहनि—अन्यतर+एद्युः नि०] दो में से किसी एक दिन, एक दिन, दूसरे दिन।

अन्यतः (अव्य०) [अन्य+तसिल्] 1. दूसरे से 2. एक ओर, अन्यतः—अन्यतः, एकतः—अन्यतः—एक ओर—दूसरी ओर, तपनमण्डलदीपितमेकतः सततनैशतमोवृतमन्यतः—कि० ५।२, 3. किसी दूसरे कारण या प्रयोजन से।

अन्यत्र (अव्य०) [अन्य+त्रल्] (प्रायः=अन्यस्मिन्—संज्ञा या विशेषण के बल से) 1. और जगह, दूसरे स्थान पर 2. किसी दूसरे अवसर पर 3. सिवाय, के बिना 4. अन्यथा, दूसरी अवस्था में।

अन्यथा (अव्य०) [अन्य+थाल्] 1. वरना, दूसरी रीति से, भिन्न तरीके से—यदभावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा—हि० १, अन्यथा-अन्यथा एक प्रकार से—दूसरे ढंग से, अन्यथाकृ दूसरी तरह करनी, परिवर्तन करना, बदलना, बिगाड़ना, मिथ्या करना—त्वया कदाचिदपि मम वचनं नान्यथाकृतम् पंच० ४, 2. नहीं तो, वरना, इसके विपरीत—व्यक्तं नास्ति कथमन्यथा वासंत्यपि तां न पश्येत्—उत्तर० ३, 3. इसके विपरीत 4. मिथ्यापन से, झूठपने से—किमन्यथा भट्टिनी मया विज्ञापितपूर्वा—विक्रम० २, 5. गलती से, भूल से, बुरे ढंग से जैसा कि अन्यथा सिद्ध दे० नीचे। सम० —अनुपपत्तिः (स्त्री०) दे० अर्थापत्ति,—कारः परिवर्तन, बदल बदल, (—कारम्) [क्रि० वि०] भिन्न तरीके से, भिन्न ढंग से—पा० ३।४।२७,—ख्यातिः (स्त्री०) शक्ति की गलत अवधारणा, सामान्य रूप से (दर्शनशास्त्र में) मिथ्या अवधारणा,—भावः अदलबदल, परिवर्तन, भिन्नता,—वादिन् (वि०) भिन्न रूप से या मिथ्या बोलने वाला, (विधि में) अपलापी साक्षी —वृत्ति (वि०) 1. परिवर्तित 2. बदला हुआ 3. भावाविष्ट, सबल संवेगों से विक्षुब्ध,—मेघ० ३,—सिद्ध (वि०) जो मिथ्या ढंग से प्रदर्शित या प्रमाणित किया गया हो, (न्याय में) उस कारण को कहते हैं जो सत्य न हो, तथा जो केवल मात्र आकस्मिक एवं दूरगामी परिस्थितियों का उल्लेख करे,—सिद्धम्,—सिद्धिः (स्त्री०) मिथ्या प्रदर्शन, अनावश्यक कारण, आकस्मिक या केवल मात्र सहवर्ती परिस्थिति—भाषा० प० १६,—स्तोत्रम्—व्यंग्योक्ति, ताना, व्यंग्य।

अन्यदा (अव्य०) [अन्य+दा] 1. किसी दूसरे समय, दूसरे अवसर पर, किसी दूसरे मामले में—अन्यदा भूषणं पुंसां क्षमा लज्जेव योषिताम् शि० २।४४, रघु० ११।७३, 2. एक बार, एक समय पर, एक अवसर पर, 3. किसी समय।

अन्यदीय (वि०) [अन्यदा+छ] 1. किसी दूसरे से संबंध रखने वाला 2. दूसरे में रहने वाला।

अन्यर्हि (अव्य०) [अन्य+र्हिल्] किसी दूसरे समय (=अन्यदा)।

अन्यादृश्—श्—श (वि०) [अन्य इव पश्यति—अन्यदृश्+क्स, क्विन्, कञ् वा आत्वम् च] परिवर्तित, असाधारण, अनोखा।

अन्याय (वि०) [न० ब०] न्यायरहित, अनुपयुक्त,—यः 1. कोई न्याय रहित या अवैधकृत्य—दे० 'न्याय', अन्यायेन अन्याय के साथ, अनुचित ढंग से 2. न्याय का अभाव, औचित्य का अभाव 3. अनियमितता।

अन्यायिन् (वि०) [अन्याय+णिनि] न्यायरहित, अनुचित।

अन्याय्य (वि०) [न० त०] 1. न्याय रहित, अवैध 2. अनुचित, अशोभनीय 3. अप्रामाणिक।

अन्यून (वि०) [न० त०] दोषरहित, त्रुटिहीन, पूर्ण, समस्त सकल,—°अधिक न त्रुटिपूर्ण न आवश्यकता से अधिक। सम०—अंग (वि०) निर्दोष अंगों वाला।

अन्येद्युः (अव्य०) [अन्य+एद्युः नि०] 1. दूसरे दिन, अगले दिन, अन्येद्युरात्मानुचरस्य भावं जिज्ञासमाना—रघु० २।२६, 2. एक दिन, एक बार।

अन्योन्य (वि०) [अन्य—कर्मव्यतिहारे द्वित्वम्, पूर्वपदे सुश्च] एक दूसरे को, परस्पर (सर्वनाम की भांति) प्रायः समस्त पदों में, °कलहः पारस्परिक झगड़ा, इसी प्रकार °घातः;—न्यम् (अव्य०) आपस में। सम० —अभावः पारस्परिक सत्ता का न होना, अभाव के दो प्रकारों में से एक, ('भेद' का समानार्थक),—आश्रय (वि०) आपस में एक दूसरे पर निर्भर, (—यः) आपस में या बदले की निर्भरता, कार्यकारण का (न्याय में) इतरेतर संबंध,—उक्तिः (स्त्री०) वार्तालाप,—भेदः पारस्परिक द्वेष या शत्रुता,—विभागः साझीदारों द्वारा रिक्थ का पारस्परिक विभाजन (बिना किसी और पक्ष के सम्मिलित हुए),—वृत्तिः (स्त्री०) किसी वस्तु का एक दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव,—व्यतिकरः,—संश्रयः इतरेतर क्रिया या प्रभाव, कार्य कारण का पारस्परिक संबंध।

अन्वक्ष (वि०) [अनुगतः अक्षम् इन्द्रियम्—ग० स०] 1. दृश्य 2. तुरन्त बाद में आने वाला,—क्षम् (अव्य०) 1. बाद में, पश्चात् 2. तुरंत बाद में, सामने, सीधे—या० ३।२१।

अन्वक् (अव्य०) [अनु+अञ्च्+क्विप् नपुं० ए० व०] 1. बाद में, 2. पीछे से 3. मैत्रीभाव से व्यवहृत, अनुकूल

रूप में, अन्वग्भूत्वा,—भावम्,—आस्ते मित्रतापूर्वक व्यवहृत होना 4. (कर्म० के साथ) पश्चात् ताम्···· अन्वगययौ मध्यमलोकपालः—रघु० २।१६ ।

अन्वञ्च् (वि०) [अनु+अञ्च्+क्विप्] पीछे जाने वाला, पीछा करने वाला, अनूचि पीछे की ओर, पीछे से ।

अन्वयः [अनु+इ+अच्] 1. पीछे जाना, अनुगमन, अनुगामी, परिजन, सेवकवर्ग—का त्वमेकाकिनी भीरु निरन्वयजने वने-भट्टि० ५।६६, 2. साहचर्य, मेलजोल, संबंध, 3. वाक्य में शब्दों का स्वाभाविक क्रम या संबंध, व्याकरण विषयक क्रम या संबंध,-तात्पर्याख्यां वृत्तिमाहुः पदार्थान्वयवोधने—सा० द०; शब्दों का युक्तियुक्त संबंध 4. तात्पर्य, अभिप्राय, प्रयोजन 5. जाति, कुल, वंश—रघूणामन्वयं वक्ष्ये—रघु० १।९, १२।६, 6. वंशज, सन्तति, वाद में आने वाली सन्तान—ताभ्य ऋते अन्वयः—या० १।११७, 7. कार्यकारण का तर्कसंगत संबंध, तर्कसंगत नैरन्तर्य,-जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतः—भाग० ८, (न्या० में) [हेतुसाध्ययोर्व्याप्तिरन्वयः]—भारतीय अनुमितिवाद में साध्य और हेतु की सतत तथा अपरिवर्त्य सहवर्तिता का वर्णन । सम०—आगत (वि०) आनुवंशिक,—ज्ञः वंशावली प्रणेता, रघु० ६।८,—व्यतिरेकः (°कौ या °कम) 1. विधायक और निषेधात्मक प्रतिज्ञा, सहमति और वैपरीत्य अर्थात् भिन्नता 2. नियम और अपवाद, —व्याप्तिः (स्त्री०) स्वीकारात्मक प्रतिज्ञा या सहमति, अंगीकारसूचक सामान्यपद ।

अन्वर्थ (वि०) [अनुगतः अर्थम्—प्रा० स०] शब्द की व्युत्पत्ति के द्वारा ही जिसका अर्थ आसानी से जाना जा सके, भाव के अनुकूल, सार्थक—तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात्–रघु० ४।१२, अन्वर्था तैवंसुन्धरा —कि० ११।६४ । सम०—**ग्रहणम्** शब्द के अर्थ को शब्दशः स्वीकार करना, (विप० रूढ़),—**संज्ञा** 1. उपयुक्त नाम, एक पारिभाषिक नाम जो अपना अर्थ स्वयं प्रकट करता है, 2. यथार्थ नाम जिसका अर्थ स्पष्ट है ।

अन्ववकिरणम् [अनु+अव+कृ+ल्युट्] क्रमपूर्वक चारों ओर वखेरना ।

अन्ववसर्गः [अनु+अव+सृज्+घञ्] 1. शिथिल करना 2. इच्छानुसार व्यवहार करने देना, कामचारानुज्ञा, 3. स्वेच्छाचारिता ।

अन्ववसित [अनु+अव+सो+क्त] (वि०) संयुक्त, संबद्ध, बंधा हुआ ।

अन्ववायः [अनु+अव+अय्+घञ्] जाति, कुल, वंश ।

अन्ववेक्षा [अनु+अव+ईक्ष्+अङ+टाप्] लिहाज विचार ।

अन्वष्टका [अनुगता अष्टकाम्—प्रा० स०] मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा के पश्चात् आने वाले पौष, माघ और फाल्गुन के कृष्णपक्ष की नवमी ।

अन्वष्टक्यम् [अन्वष्टका+यत्] अन्वष्टका के दिन होने वाला श्राद्ध या ऐसा ही कोई दूसरा अनुष्ठान ।

अन्वष्टमदिशम् (अव्य०) [प्रा० स०] उत्तर पश्चिम दिशा की ओर ।

अन्वहम् (अव्य०) [अनु+अहन्—प्रा० स०] दिन-ब-दिन, प्रति दिन।

अन्वाख्यानम्[अनु+आ+ख्या+ल्युट्]बाद में उल्लेख करना, या गिनना, पूर्वोक्त का उल्लेख करते हुए व्याख्या करना ।

अन्वाचयः [अनु+आ+चि+अच्] 1. प्रधान कार्य का कथन करके गौण कार्य की उक्ति, मुख्य पदार्थ के साथ गौण पदार्थ का जोड़ना, 'च' निपात का एक अर्थ—भो भिक्षामट गां चानय—यहां पर भिक्षुक के प्रधान कार्य —(भिक्षार्थ बाहर जाने) के साथ एक गौणकार्य (गाय का ले आना) भी जोड़ दिया गया है 2. इस प्रकार का स्वयं एक पदार्थ ।

अन्वाजे (अव्य०) [अनु+आजि+ङे] ('उपजे' की भांति इसका प्रयोग 'कृ' के साथ होता है) दुर्बल की सहायता करना, (यह विकल्प से उपसर्ग समझा जाता है) °कृत्य, या °कृत्वा ।

अन्वादिष्ट (वि०) [अनु+आ+दिश्+क्त] 1. बाद में या के अनुसार, कहा हुआ, पुनः काम पर लगाया हुआ 2. घटिया, गौण महत्त्व का ।

अन्वादेशः [अनु+आ+दिश्+घञ्] एक कथन के पश्चात् दूसरा कथन, पूर्वोक्त की पुनरुक्ति ।

अन्वाधानम् [अनु+आ+धा+ल्युट्] अग्निहोत्र की अग्नि में समिधाएँ रखना ।

अन्वाधिः [अनु+आ+धा+कि] (व्यवहारविधि में) 1. जमानत, किसी तीसरे व्यक्ति के पास धरोहर या प्रतिभूति जमा करना जिससे कि समय पर वह यथार्थ स्वामी को सौंपी जा सके 2. दूसरी धरोहर 3. अनवरत चिन्ता, खेद, पश्चात्ताप ।

अन्वाधेयम्-यकम् [अनु+आ+धा+यत् स्वार्थे कन् च] एक प्रकार का स्त्री-धन जो विवाह के पश्चात् पितृकुल या पतिकुल की ओर से या उसके अपने संबंधियों की ओर से उपहार स्वरूप दिया जाय—विवाहात्परतो यच्च लब्धं भर्तृकुलात्स्त्रिया, अन्वाधेयं तु तद्द्रव्यं लब्धं पितृ (बंधु) कुलात्तथा ।

अन्वारम्भः—भणम् [अनु+आ+रभ्+घञ्, ल्युट् वा मुम् च] स्पर्श, संपर्क, विशेषतया यजमान (यज्ञ का अनुष्ठाता) को पुनीत संस्कार के सुफल का अधिकारी बनाने के लिए स्पर्श करना ।

अन्वारोहणम् [अनु+आ+रुह्+ल्युट्] स्त्री का अपने पति के शव के साथ चिता पर बैठना ।

अन्वासनम् [अनु+आस्+ल्युट्] 1. सेवा, परिचर्या, पूजा 2. दूसरे के पीछे आसनग्रहण करना 3. खेद, शोक।

अन्वाहार्यः (–र्यम्), –र्यकम् [अनु+आ+हृ+ण्यत् स्वार्थे कन्] पितरों के सम्मान में अमावस्या के दिन किया जाने वाला मासिक श्राद्ध।

अन्वाहिक (वि०) [स्त्री०—की] दैनिक, प्रतिदिन का।

अन्वाहित=तु० अन्वाधेय।

अन्वित (वि०) [अनु+इ+क्त] 1. अनुगत, अनुष्ठित, सहित, युक्त, 2. अधिकार प्राप्त, रखने वाला, आहत, प्रभावित (करण के साथ या समास में) 3. संयुक्त, जोड़ा हुआ, क्रमागत 4. व्याकरण की दृष्टि से संयुक्त। सम०—अर्थ (वि०) प्रकरण से ही जिसके अर्थ आसानी से समझ में आ सकें,—अर्थवादः,—अभिधानवादः मीमांसकों का एक सिद्धांत जिसके अनुसार वाक्य में शब्दों का अर्थ सामान्य या स्वतंत्र रूप से नहीं होता, बल्कि किसी विशेष वाक्य में एक दूसरे से संवद्ध होकर शब्द का जो अर्थ निकलता है, वही होता है। दे० काव्य० २, अभिहितान्वयवाद भी यही सिद्धान्त है।

अन्वीक्षणम्—क्षा [अनु+ईक्ष्+ल्युट्, अच् वा] 1. खोज, ढूंढना, गवेषणा 2. प्रतिबिंब।

अन्वीत=तु० अन्वित।

अन्वृचम् (अव्य०) [प्रा० स०] एक ऋचा के पश्चात् दूसरी ऋचा।

अन्वेषः—षणम्—णा [अनु+इष्+घञ्, ल्युट् वा, स्त्रियां टाप्] ढूंढना, खोजना, देखभाल करना—वयं तत्त्वान्वेषान्मधुकर हताः—श० १।२४, रंध्रान्वेषणदक्षाणां द्विषां रघु० १२।११।

अन्वेषक, अन्वेषिन्, अन्वेष्टृ (वि०) [अनु+इष्+ण्वुल्, णिनि, तृच् वा] ढूंढने वाला, खोजने वाला, पूछ ताछ करने वाला।

अप् (स्त्री०) [आप्+क्विप्+ह्रस्वश्च] (परिनिष्ठित भाषा में केवल ब० व० में ही रूप होते हैं—यथा आपः, अपः, अद्भिः, अद्भ्यः २, अपाम्, अप्सु, परन्तु वेद में एक वचन और द्विवचन भी होते हैं) पानी, खानि चैव स्पृशेदद्भिः—मनु० २।६०, पानी बहुधा सृष्टि के पांच तत्त्वों में सब से पहला तत्त्व समझा जाता है यथा—अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्—मनु० १।८, श० १।१ परन्तु मनु० १।७८ में बतलाया गया है—कि मन, आकाश, वायु और ज्योति अथवा अग्नि के पश्चात् तेजस् या ज्योतिस् से जलों की उत्पत्ति हुई। सम०—चरः जलचर, जलीय जन्तु, —पतिः 1. जल का स्वामी वरुण 2. समुद्र, दूसरे समस्त पदों को शब्दों के अन्तर्गत देखो।

अप (अव्य०) 1. (धातु के साथ जुड़कर इसका निम्नांकित अर्थ होता है)—(क) से दूर, अपयाति अपनयति (ख) ह्रास,—अपकरोति-बुरी तरह से या गलत ढंग से करता है (ग) विरोध, निषेध, प्रत्याख्यान—अपकर्षति अपचिनोति (घ) वर्जन—अपवह्, अपसृ (प्रेर०), 2. त० और ब० स० का प्रथम पद होने पर इसके उपर्युक्त सभी अर्थ होते हैं—अपयानम्, अपशब्दः—एक बुरा या भ्रष्ट शब्द,—°भी निडर, अपरागः असन्तुष्ट (विप० अनुराग), अधिकांश स्थानों पर 'अप' को निम्न प्रकार से अनूदित कर सकते हैं—'बुरा' घटिया' 'भ्रष्ट' 'अशुद्ध' 'अयोग्य' आदि 3. पृथक्करणीय अव्यय (अपा० के साथ) के रूप में—(क) से दूर—यत्संप्रत्यपलोकेभ्यो लंकायां वसतिर्भवेत्—भट्टि० ८।८७ (ख) के बिना, के बाहर—अपहरेः संसारः—सिद्धा० (ग) के अपवाद के साथ, सिवाय—अप त्रिगर्तेभ्यो वृष्टो देवः—सिद्धा०,—के बाहर, को छोड़कर, इन वाक्यों में 'अप' के साथ क्रि० वि० (अव्ययीभाव समास) भी बनते हैं—°विष्णु संसारः—विना विष्णु के, °त्रिगर्तवृष्टो देवः—अर्थात् त्रिगर्त को छोड़कर अप निषेध और प्रत्याख्यान को भी जतलाता है—°कामं, °शंकम्।

अपकरणम् [अप+कृ+ल्युट्] 1. अनुचित रीति से कार्य करना 2. अनुपयुक्त काम करना, चोट पहुंचाना, दुर्व्यवहार करना, कष्ट पहुँचाना।

अपकर्तृ (वि०) [अप+कृ+तृच्] हानिकारक, कष्टदायक, (पुं०—र्ता) शत्रु।

अपकर्मन् [प्रा० स०] 1. ऋण से निस्तार 2. ऋणपरिशोध, —दत्तस्यानपकर्म च—मनु० ८।४, 2. अनुचित, अनुपयुक्त कार्य, दुष्कर्म, दुष्कृत्य 3. दुष्टता, हिंसा, उत्पीडन।

अपकर्षः [अप+कृष्+घञ्] 1. (क) नीचे की ओर खींचना, कम करना, घटाना, हानि, नाश—तेजोपकर्षः —वेणी० १, ह्रास (ख) अनादर, अपमान (सभी अर्थों में विप० उत्कर्ष) 2. बाद में आने वाले शब्दों का पूर्वविचार (व्या० काव्य और मीमांसा आदि में)।

अपकर्षक (वि०) [अप+कृष्+ण्वुल्] कम करने वाला घटाने वाला, से निकालने वाला—दोषास्तस्य (काव्यस्य) अपकर्षकाः—सा० द० १.।

अपकर्षणम् [अप+कृष्+ल्युट्] 1. दूर करना, खींचकर दूर करना या नीचे ले जाना, वञ्चित करना, निकाल देना 2. कम करना, घटाना 3. दूसरे का स्थान ले लेना।

अपकारः [अप+कृ+घञ्] 1 हानि, चोट, आघात, कष्ट (विप० उपकार) उपकर्त्रारिणा संधिर्न मित्रेणापकारिणा, उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयोः—शि० २।३७, अपकारोऽप्युपकारायैव संवृत्तः 2. दूसरे का बुरा चिन्तन, दूसरे को चोट पहुँचाना 3. दुष्टता,

हिंसा, उत्पीडन 4. गिरा हुआ, नीच कर्म। सम०—आर्थिन् (वि०) द्वेषी, दुरात्मा,—गिर् (स्त्री०—गीः) —शब्दः गालियाँ, भर्त्सना दायक तथा अपमानजनक शब्द।

अपकारक,—कारिन् (वि०) [अप+कृ+ण्वुल् णिनिर्वा] क्षति पहुँचाने वाला, अनिष्टकारी, कष्टप्रद, अहितकारी, पंच० १।९५, शि० २।३७—कः,—री बुरा करनेवाला।

अपकृति=तु० अपकार, इसी प्रकार **अपक्रिया**—आघात, चोट, अनिष्ट, कुकृत्य, ऋणपरिशोध।

अपकृष्ट (वि०) [अप+कृष्+क्त] 1. खींच कर बाहर किया गया, दूर हटाया गया 2. नीच, कमीना, अधम (विप० उत्कृष्ट) न कश्चिद्वर्णानामपथमपकृष्टोऽपि भजते—श० ५।१०,—ष्टः कौवा।

अपकौशली—समाचार, सूचना

अपक्तिः (स्त्री०) [नञ्+पच्+क्तिन्] 1. कच्चापन, परिपक्वता का अभाव 2. अपच, अजीर्ण।

अपक्रमः [अप+क्रम्+घञ्] 1. दूर चले जाना, पलायन, पीठ दिखाना, 2. (समय का) बीतना,—(वि०) 1. क्रमरहित 2. अनियमित, गलत क्रम वाला।

अपक्रमणम्—क्रामः [अप+क्रम्+ल्युट्, घञ् वा] पीछे मुड़ना, हटना, उड़ान, भागना।

अपक्रोशः [अप+क्रुश्+घञ्] गाली, भर्त्सना।

अपक्ष (वि०) [न० ब०] 1. पंखों से या उड़ान की शक्ति से रहित, 2. किसी पक्ष या दल से संबंध न रखने वाला 3. जिनके मित्र समर्थक न हों 4. निष्पक्ष, पक्षरहित। सम०—पातः निष्पक्षता,—पातिन् वि० पक्षपात रहित।

अपक्षयः [अप+क्षि+अच्] छीजना, ह्रास, नाश।

अपक्षेपः—क्षेपणम् [अप+क्षिप्+घञ् ल्युट् वा] 1. दूर करना या नीचे फेंकना 2. फेंक देना, नीचे रखना, वैशेषिक दर्शन में निर्दिष्ट पांच कर्मों में से एक कर्म, दे० कर्मन्।

अपगंडः [अपसि (वैध) कर्मणि गंडःत्याज्यः] जिसने वयस्कता प्राप्त कर ली है, दे० अपोगंड।

अपगमः—मनम् [अप+गम्+अप्, ल्युट् वा] 1. दूर जाना, हट जाना, वियोग, समागमाः सापगमाः—हि० ४।६५, 2. गिरना, हटना, ओझल होना—पुराणपत्रापगमादनन्तरं—रघु० ३।७, 3. मृत्यु, मरण।

अपगतिः (स्त्री०) [अप+गम्+क्तिन्] दुर्भाग्य।

अपगरः [अप+गॄ+अप्] 1. निंदा, भर्त्सना 2. निन्दक, भर्त्सक।

अपगर्जित (वि०) [अप+गर्ज+क्त] (बादलकी भांति) गर्जनाशून्य।

अपचयः [अप+चि+अच्] 1. न्यूनता, कमी, ह्रास, छीजन, गिरावट (आलं० भी)—कफापचयः—दश० १६०, 2. नाश, असफलता, दोष।

अपचरितम् [अप+चर्+क्त] दोष, दुष्कृत्य, दुष्कर्म—आहोस्वित् प्रसवो ममापचरितैर्विष्टंभितो वीरुधाम्—श० ५।९।

अपचारः [अप+चर्+घञ्] 1. प्रस्थान, मृत्यु—सिंहघोषश्च कांतकापचारं निर्भिद्य—दश० ७२, 2. कमी, अभाव 3. दोष, अपराध, दुष्कर्म, दुराचरण, जुर्म —राजन्प्रजासु ते कश्चिदपचारः प्रवर्तते—रघु० १५।४७ 4. हानिकर या कष्टप्रद आचरण, क्षति 5. दोष या कमी—नापचारमगमन् क्वचित्क्रियाः—शि० १४।३२, 6. अस्वास्थ्यकर या अपथ्य—कृतापचारोऽपि परैरनाविष्कृतविक्रियः, असाध्यः कुरुते कोपं प्राप्ते काले गदो यथा। शि० २।८४, (यहाँ अ° भी आघात या क्षति का अर्थ रखता है)।

अपचारिन् (वि०) [अप+चर्+णिनि] कष्ट पहुँचाने वाला, दुष्कर्म करने वाला, दुष्ट, बुरा।

अपचितिः (स्त्री०) [अप+चि+क्तिन्] 1. हानि छीजन, नाश 2. व्यय 3. प्रायश्चित्त, सम्पूर्ति, पाप का प्रायश्चित्त 4. सम्मानन, पूजन, आदर प्रदर्शन, पूजा—विहितापचितिर्महीभृता—शि० १६।९ (इसका अर्थ 'हानि' और 'नाश' भी है)।

अपच्छत्र (वि०) [ब० स०] विना छाते के, छतरी के विना।

अपच्छाय (वि०) [ब० स०] 1. छायारहित 2. चमकरहित, धुंधला —यः जिसकी छाया न होती हो, अर्थात् परमात्मा; तु० नै० १४।२१, श्रियं भजन्तां कियदस्य देवाश्छाया नलस्यास्ति तथापि नैषाम्, इतीरयन्तीव तया निरैक्षि सा (छाया) नैषधेन त्रिदशेषु तेषु।

अपच्छेदः—छेदनम् [अप+छिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1 काट कर दूर कर देना, 2. हानि 3. बाधा।

अपजयः [अप+जि+अच्] हार, पराजय।

अपजातः [अप+जन्+क्त] कुपुत्र, जो गुणों की दृष्टि से माता पिता से हीन हो—मातृतुल्यगुणो जातस्त्वनुजातः पितुः समः, अतिजातोऽधिकस्तस्मादपजातोऽधमाधमः—सुभा०।

अपज्ञानम् [अप+ज्ञा+ल्युट्] मुकरना, गुप्त रखना।

अपञ्चीकृतम् [न० त०] जिसका पंचीकरण न हुआ हो, पंचमहाभूतों का सूक्ष्म रूप।

अपटी [अल्पः पटः पटी—न० त०] 1. कपड़े का पर्दा या दीवार विशेष रूप से 'क़नात' जो तम्बू को चारों ओर से घेर लेती है 2. पर्दा। सम०—क्षेपः (अपटक्षेपः) पर्दे के एक ओर गायन, °क्षेपेण (=अकस्मात्) जल्दी से पर्दे को एक ओर करके, (यह शब्द बहुधा रंगमंच के निदेशार्थ प्रयुक्त होता है तथा भय, उतावली या घबराहट के कारण हड़बड़ाहट के

साथ पात्र के प्रवेश को प्रकट करता है जैसा कि बिना किसी भूमिका (ततः प्रविशति आदि) के, पात्र अकस्मात् पर्दे को उठा कर प्रविष्ट होता है)।

अपटु (वि०) [न० त०] 1. अनिपुण, अदक्ष, मंदबुद्धि, भोंदू, 2. जो बोलने में चतुर न हो 3. रोगी।

अपठ (वि०) [न० त० नञ्+पठ्+अच्] पढ़ने में असमर्थ, न पढ़ने वाला, दुष्पाठक तु०, 'अपच्'।

अपण्डित (वि०) [न० त०] 1. जो विद्वान् या बुद्धिमान् न हो, मूर्ख, अनाड़ी–विभूषणं मौनमपण्डितानाम्—भर्तृ० नी० ७, 2. जिसमें कुशलता, रुचि तथा गुणों की सराहना करने का अभाव हो।

अपण्य (वि०) [न० त०] जो बिक्री के लिए न हो, —जीविकार्थे चापण्ये–पा० ५।३।९९।

अपतर्पणम् [अप+तृप्+ल्युट्] 1. उपवास रखना (रुग्णावस्था में) 2. तृप्ति का अभाव।

अपतानकः [अप+तन्+ण्वुल्] एक प्रकार का रोग जिसमें अकस्मात् मूर्छा आती हैं, दौरे पड़ते हैं तथा पेशियों में सिकुड़न होती है।

अपति,–तिक (वि०) [न० ब०] जिसका स्वामी न हो, जिसका पति न हो, अविवाहित।

अपत्नीक (वि०) [न० ब०] जिसकी पत्नी न हो।

अपतीर्थम् [प्रा० स०–अप्रकृष्टं तीर्थम्] बुरा तीर्थस्थान।

अपत्यम् [न पतन्ति पितरोऽनेन—नञ्+पत्+यत्] 1. सन्तान, बच्चे, प्रजा, संतति (मनुष्यों की और पशुओं की), बेटा या बेटी; एक ही कुल में उत्पन्न पुत्र, पौत्र तथा प्रपौत्र आदि—अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्—पा० ४।२।६२,—अपत्यैरिव नीवारभागधेयोचितैर्मृगैः—रघु० १।५०, 2. अपत्यवाचक प्रत्यय। सम०—**काम** (वि०) सन्तान का इच्छुक,—**पथः** योनि, —**प्रत्ययः** अपत्यवाची प्रत्यय, —**विक्रयिन्** (वि०) सन्तान का विक्रेता, वह पिता जो धन के लालच से अपनी कन्या को भावी जामाता के हाथ बेच देता है; —**शत्रुः** 1. केंकड़ा 2. सांप।

अपत्रप (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज, बेहया, —**पा**, —**पणम्** लज्जा, हया।

अपत्रपिष्णु (वि०) [अप+त्रप्+इष्णुच्] शर्मीला, लजीला।

अपत्रस्त (वि०) [अप+त्रस्+क्त] डरा हुआ, अपभीत, तरंगापत्रस्तः—तरंगों से किंचित् भीत।

अपथ (वि०) [न० ब०] मार्गरहित, बिना सड़क के, —**थम्** (अपन्थाः) [न० त०] जो मार्ग न हो, मार्ग का अभाव, कुमार्ग (शाब्द०), (आलं०) नैतिक अनियमितता या स्खलन, दुष्पथ या कुमार्ग—अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजोनिमीलिताः—रघु० १।७४,। सम० —**गामिन्** (वि०) कुमार्ग पर चलने वाला, विधर्मगामी।

अपथ्य (वि०) [न० त०] 1 अयोग्य, अनुचित, असंगत, घृणित—अकार्यं कार्यसंकाशमपथ्यं पथ्यसंमितम्—रा० 2. (आयु० में) अस्वास्थ्यकर, रोगजनक (जैसा कि भोजन, पथ्यापथ्य) सन्तापयति कमपथ्यभुजं न रोगाः—हि० ३।११७, 3. बुरा दुर्भाग्यपूर्ण। सम० —**कारिन्** (वि०) कष्टप्रद।

अपदः [न० ब०] बिना पैर का, —**दम्** [न० त०] 1. आवास या स्थान का अभाव, 2. सदोष स्थान या अनुपयुक्त आवास 3. ऐसा शब्द जिसके साथ अभी विभक्ति-चिह्न न जुड़ा हो 4. अन्तरिक्ष। सम०—**अंतर** (वि०) संलग्न, संसक्त, समीपस्थ (—**रम्**) सामीप्य, संसक्तता।

अपदक्षिणम् (अव्य०) [अव्य० स०] बाईं ओर।

अपदम (वि०) [ब० स०] आत्मसंयम से हीन।

अपदश (वि०) [ब० स०] दस की संख्या से दूर।

अपदानम्—**दानकम्** [अप+दा+ल्युट् स्वार्थे कन् च] 1 पवित्राचरण, मान्य जीवनचर्या 2. उत्तम कार्य, सर्वोत्तम कार्य (कदाचित् 'अवदानम्' के स्थान पर) 3. भलीभांति पूर्ण रूप से किया गया कार्य, निष्पन्न कार्य।

अपदार्थः [न० त०] 1. कुछ नहीं, सत्ता का अभाव 2. वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ न होना—अपदार्थोऽपि वाक्यार्थः समुल्लसति-काव्य० 2.।

अपदिशम् (अव्य०) [अव्य० स०] मध्यवर्ती प्रदेश में, परिधि के दोनों प्रदेशों के बीच।

अपदेवता [प्रा० स०] पिशाच, भूत प्रेत।

अपदेशः [अप+दिश्+घञ्] 1. वक्तव्य, उपदेश, नाम का उल्लेख करते हुए संकेत करना—नैष न्यायो यद्दातुरपदेशः—दश० ६०, हेत्वपदेशात् प्रतिज्ञायाः पुनर्वचनं निगमनम्—न्या० शा० 2. बहाना, छल, कारण, व्याज—केनापदेशेन पुनराश्रमं गच्छामः—श० २, रक्षापदेशान्मुनिहोमधेनोः—रघु० २।८, 3. कारणों का वर्णन, तर्क प्रस्तुत करना, भारतीय न्यायवाद के पांच अंगों में से दूसरा—हेतु—(वैशे० के अनुसार) 4. निशाना, चिह्न 5. स्थान, दिशा 6. अस्वीकृति 7. प्रसिद्धि, यश 8 छल।

अपद्रव्यम् [प्रा० स०] बुरा द्रव्य, बुरी वस्तु।

अपद्वारम् [प्रा० स०] बगल का दरवाजा, असली द्वार के अतिरिक्त कोई दूसरा प्रवेश द्वार।

अपधूम (वि०) [ब० स०] जिसमें धूआं न हो, धूमरहित।

अपध्यानम् [प्रा० स०] बुरे विचार, अनिष्ट चिन्तन, मन ही मन कोसना।

अपध्वंसः [प्रा० स०] अधःपतन, गिरावट, लांछन। सम० —**जः**, —**जा** मिश्रित पतित तथा निन्द्य जाति में उत्पन्न—मनु० १०।४१, ४६।

अपध्वस्त (वि०) [अप+ध्वंस्+क्त] 1. झिड़का गया,

अभिशप्त, घृणित 2. अपूर्ण रूप से या बुरी तरह पीसा हुआ, 3. त्यक्त, —**स्तः** दुष्ट, पाजी, जिसमें बुरे भले की समझ न हो।

अपनयः [अप+नी+अच्] 1. ले जाना, हटाना, निराकरण करना 2. दुर्नीति या दुराचरण 3. क्षति, अपकार—ततः सपत्नापनयनस्मरणानुशयस्फुरा—शि० २।१४।

अपनयनम् [अप+नी+ल्युट्] 1. ले जाना, हटाना—नातिश्रमापनयनाय—श० ५।६, 2. आरोग्य देना, इलाज करना 3. ऋण परिशोध, कर्तव्य का निर्वाह।

अपनस (वि०) [ब० स०] बिना नाक का,—असिकौक्षेयमुद्यम्य चकारापनसं मुखम्—भट्टि० ४।३१।

अपनुत्तिः (स्त्री०) } [अप+नुद्+क्तिन्, घञ्, ल्युट्
अपनोदः-नोदनम् } वा] हटाना, ले जाना, नष्ट करना, प्रायश्चित्त, (पाप का) परिशोधन—पापानामपनुत्तये—मनु० ११।२१५।

अपपाठः [प्रा० स०] अशुद्ध पठन, बुरी तरह पढ़ना, पढ़ने में अशुद्धि,—द्वादशापपाठा अस्य जाताः।

अपपात्र (वि०) [ब० स०] सामान्य पात्रों के उपयोग से वंचित, नीची जाति का।

अपपात्रितः [पात्रभोजनाद् बहिष्कृतः—अपपात्र+इतच्] किसी बड़े पाप या अपराध के कारण जाति से बहिष्कृत होकर जो अपने संबंधियों के साथ सामान्य पात्रों में खान-पान के योग्य नहीं है।

अपपानम् [अप+पा+ल्युट्] अपेय, बुरा पेय।

अपपूत (वि०) [ब० स०] जिसके नितंबों या कूल्हों की बनावट सुडौल न हो—तौ बेढंगे कूल्हे।

अपप्रजाता [अपगतः प्रजातो यस्याः ब०स०] वह स्त्री जिसका गर्भपात हो गया हो।

अपप्रदानम् [अप+प्र+दा+ल्युट्] घूस, रिश्वत।

अपभय—भी (वि०) निडर, निर्भय, निश्शंक—रघु० ३।५१।

अपभरणी [अप+भृ+ल्युट्+ङीप्] अन्तिम नक्षत्रपुंज।

अपभाषणम् [अप+भाष्+ल्युट्] भर्त्सना, अपयश।

अपभ्रंशः [अप+भ्रंश्+घञ्] 1. नीचे गिरना, पतन,—अत्यारूढिर्भवति महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा—श० ४ 2. भ्रष्ट शब्द, भ्रष्टाचार (अतः) अशुद्ध शब्द चाहे वह व्याकरण के नियमों के विपरीत हो और चाहे वह ऐसे अर्थ में प्रयुक्त हुआ हो जो संस्कृत न हो 3. भ्रष्ट भाषा, (काव्य में) गड़रियों आदि के द्वारा प्रयुक्त प्राकृत बोली का निम्नतम रूप, (शास्त्र में) संस्कृत से भिन्न कोई भी भाषा—आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृता, शास्त्रेषु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितम—काव्यादर्श १।

अपमः (ज्यो० में) [अपकृष्टं मीयते—मा+क.वा०] कुतुबनुमा में सुई का उत्तर से ठीक पूर्व या पश्चिम की ओर घुमाव, क्रान्तिवलय।

अपमर्दः [अप+मृद्+घञ्] जो बुहारा जाता है, धूल, गर्दा।

अपमर्शः [अप+मृश+घञ्] छूना, चरना।

अपमानः [अप+मन्+घञ्] अनादर, सम्मान का न होना लांछन—लभ्यते बुद्धयवज्ञानमपमानं च पुष्कलम्—पंच० १।६३।

अपमार्गः [अप+मृग्+घञ्] छोटा रास्ता, बगल का मार्ग बुरा रास्ता।

अपमार्जनम् [अप+मार्ज्+ल्युट्] 1. धोकर साफ करना, मांजना, साफ करना, 2. हजामत बनवाना, नाखून कटाना।

अपमुख (वि०) [बं० स०] 1. औंधे मुंह वाला 2. विरूप, कुरूप।

अपमूर्धन् (वि०) [ब० स०] जिसके सिर न हो, °कलेवर-अमर०।

अपमृत्युः [प्रा० स०] 1. आकस्मिक या असामयिक मरण, दुर्घटना के कारण मृत्यु, 2. कोई भारी भय या रोग जिससे कि रोगी (जिसके जीने की आशा न रही हो) आशा के विपरीत स्वस्थ हो जाता है।

अपमृषित (वि०) [अप+मृष्+क्त] 1. जो समझ में न आ सके, अस्पष्ट जैसे कि कोई वाक्य या वक्तृता 2. जो सह्य न हो, जिसे कोई पसन्द न करे—विहितं मयाद्य सदसीदमपमृषितमच्युतार्चनम्, यस्य—शि० १५।४६।

अपयशस् (न०—शः) [प्रा० स०] बदनामी, कलंक, अपकीर्ति—अपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना—भर्तृ० नी० ५५।

अपयानम् [अप+या+ल्युट्] दूर जाना, वापिस मुड़ना, भागना।

अपर (वि०) [न० ब०] (कुछ अर्थों में 'सर्वनाम' की भांति प्रयुक्त होता है) 1. अप्रतिद्वन्द्वी, बेजोड़, तु० अनुत्तम, अनुत्तर 2. [न० त०] (क) दूसरा, अन्य (वि० व नाम की भांति प्रयुक्त) (ख) और, अतिरिक्त (ग) दूसरा, और (घ) भिन्न, अन्य —मनु० १।८५, (ङ) तुच्छ, मध्यम 3. किसी और से संबंध रखने वाला, जो अपना निजी न हो (विप० स्व) 4. पिछला, बाद का, दूसरा, बाद में (काल और देश की दृष्टि से) (विप० पूर्व), अन्तिम—रात्रेरपरः कालः निरु०, जब षष्ठीतत्पुरुष समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है तब 'पिछला भाग' 'उत्तरार्ध' अर्थ होता है;—°**पक्षः** मास का उत्तरार्ध, °**हेमंतः** सर्दियों का उत्तरार्ध, °**कायः** शरीर का पिछला भाग, आदि, °**वर्षा**, °**शरद्** बरसात या पतझड़ का उत्तरार्ध, 5. आगामी, अगला 6. पश्चिमी—शि० ९।१, कु० १।१, 7. घटिया

निम्नतर, 8. (न्या० में) अविस्तृत, अधिक न ढकने वाला; जब 'अपर' शब्द एक वचन में 'एक' (एक, पहला) के सह संबंधी के रूप में प्रयुक्त होता है तब इसका अर्थ होता है 'दूसरा, बाद का'—एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्यरम्यानपरो विदर्भान्—रघु० ५।६०, जब यह ब० व० में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है 'दूसरे' और इसके सहसंबंधी शब्द प्रायः 'एके' 'केचित्' 'काश्चित्' 'अपरे' 'अन्ये' आदि हैं—एके समूहुर्बलरेणुसंहतिं शिरोभिराज्ञामपरे महीभृतः—शि० १२।४५, कुछ और,—शाखिनः केचिदध्यष्ठुर्न्यमाङ्क्षुरपरेऽम्बुधौ, अन्ये त्वलंघिषुः शैलान् गुहास्त्वन्ये व्यलेषत, केचिदासिषत स्तब्धा भयात्केचिदघूर्णिषुः। उदतारिषुरम्बोधिं वानराः सेतुनापरे—भट्टि० १५।३१-३३,—रः 1. हाथी का पिछला पैर 2. शत्रु,—रा 1. पश्चिमी दिशा 2. हाथी का पिछला भाग 3. गर्भाशय, गर्भ की झिल्ली 4. गर्भावस्था में रुका हुआ रजोधर्म,—रम् 1. भविष्य 2. हाथी का पिछला हिस्सा,—रम् (क्रि० वि०) पुनः, भविष्य में, **अपरंच** इसके अतिरिक्त, **अपरेण** पीछे, पश्चिम में, के पश्चिम में (कर्म० या संब० के साथ)। सम०—**अग्नि** (अग्नि—द्वि० व०) दक्षिण और पश्चिमी अग्नियां (दक्षिण और गार्हपत्य),—**अंगम्** काव्य के द्वितीय प्रकार गुणीभूतव्यंग्य के आठ भेदों में से एक भेद, काव्य० ५, इसमें व्यंग्यार्थ किसी और का गौण अर्थ है, उदा०—अयं स रसनोत्कर्षी पीनस्तनविमर्दनः, नाभ्यूरुजघनस्पर्शी नीवीविस्रंसनः करः। यहाँ शृंगाररस करुण का अंग है;—**अंत** (वि०) पश्चिमी सीमा पर रहने वाला, (**न्तः**) 1. पश्चिमी सीमा या किनारा, अन्तिम छोर, पश्चिमी तट 2. (ब० व०) सह्य पर्वत का निकटवर्ती पश्चिमी सीमा प्रदेश या वहां के निवासी—अपरान्तजयोद्यतैः (अनीकैः) रघु० ४।५३, पश्चिमी लोग 3. इस देश के राजा 4. मृत्यु—**अन्तकः**=°अन्तः (ब०व०)—**अपराः**,—**रे**,—**राणि** दूसरे और दूसरे, कई, बहुत—**अर्धम्** उत्तरार्ध,—**अह्नः** दोपहर बाद, दिन का अन्तिम या समापक पहर,—**इतरा** पूर्वदिशा,—**कालः** बाद का समय,—**जनः** पश्चिम देश का वासी, पश्चिमी लोग,—**दक्षिणम्** (अव्य०) दक्षिण पश्चिम में,—**पक्षः** 1. मास का दूसरा या कृष्णपक्ष, 2. दूसरी या विपरीत दिशा, प्रतिवादी (विधि में),—**पर** (वि०) कई एक, बहुत से, विविध,—अपरपराः सार्थाः गच्छन्ति—पा० ६।१।१४४ सिद्धा०—कई समुदाय जा रहे हैं,—**पाणिनीयाः** पश्चिम के निवासी पाणिनि के शिष्य,—**प्रणेय** (वि०) जो दूसरों के द्वारा आसानी से प्रभावित हो सके, विधेय,—**रात्रः** रात्रि का उत्तरार्ध या रात का अन्तिम पहर,—**लोकः** दूसरी दुनिया, अगला लोक, स्वर्ग,—**स्वस्तिकम्** क्षितिज में पश्चिमी बिन्दु,—**हैमन** (वि०) सर्दी के उत्तरार्ध से संबंध रखने वाला।

अपरक्त (वि०) [अप+रञ्ज्+क्त] 1. रंगहीन, रुधिर-रहित, पीला,—श्वासापरक्ताधरः—श० ६।५, 2. असन्तुष्ट, सन्तोषरहित।

अपरता-त्वम् [अपर+तल्, त्वल् वा] दूसरा या भिन्न होना, (२४ गुणों में से एक), भिन्नता, विपर्यय, आपेक्षिकता।

अपरतिः (स्त्री०) [अप+रम्+क्तिन्] 1. विच्छेद (= अवरति तु०) 2. असन्तोष।

अपरत्र (क्रि० वि०) [अपर+त्रल्] दूसरे स्थान पर, और कहीं, **एकत्र** या **क्वचित्**—**अपरत्र** एक स्थान पर—दूसरे स्थान पर।

अपरवः [प्रा० स०] 1. झगड़ा, विवाद (संपत्ति के भोग के विषय में) °**उज्झित** बिना झगड़े के, बिना विवाद के (किसी वस्तु को अधिकार में करते समय), 2. बदनामी।

अपरस्पर (वि०) [द्व० स०—अपरंच परं च, पूर्वपदे सुश्च] एक के बाद दूसरा, निर्बाध, अनवरत, °राः सार्थाः गच्छन्ति सततमविच्छेदेन गच्छन्तीत्यर्थः—सिद्धा०।

अपराग (वि०) [ब० स०] रंगहीन,—**गः** [न० त०] 1. असंतोष, संतोष का अभाव, अनुराग का अभाव—अपरागसमीरणे रतः—कि० २।५०, 2. विराग, शत्रुता।

अपराञ्च् (वि०) [अपर+अञ्च्+क्विप्] (°राङ, °राची, °राक्) दूर न किया गया, मुंह न फेरा हुआ, संमुख होने वाला सामने होनेवाला, (अव्य०) (—**राक्**) के सामने। सम०—**मुख** (वि०) (स्त्री०—**खी**) 1. मुंह न मोड़े हुए, मह सामने किये हुए, 2. साहसपूर्ण पग रखते हुए।

अपराजित (वि०) [न० त०] जो जीता न गया हो, अजेय—**तः** 1. विषैला जन्तु 2. विष्णु, शिव—**ता** दुर्गादेवी जिसकी पूजा विजया दशमी के दिन की जाती है, एक प्रकार की औषधि जो कि ताबीज के रूप में भुजा में बांधी जाती है, 3. उत्तर-पूर्व दिशा।

अपराद्ध (भू० क० कृ०)[अप+राध्+क्त] 1. जिसने पाप किया है, किसी को कष्ट दिया है, अपराध का करने वाला, कष्ट देने वाला, (कर्त्रर्थ में भी प्रयुक्त)—कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शकुन्तला—श० ४, 2. जो चूक गया हो, निशाने पर न लगने वाला (तीर की भांति)—निमित्तादपराद्धेषोर्धानुष्कस्येव वल्गितम्—शि० २।२६ 3. जिसने उल्लंघन किया है, अतिक्रान्त,—**द्धम्** अपराध, कष्ट।

अपराद्धिः (स्त्री) [अप+राध्+क्तिन्] 1. दोष, अपराध, 2. पाप।

अपराधः [अप+राध्+घञ्] अपराध, दोष, जुर्म, पाप

—कमपराधलवं मयि पश्यसि—विक्र० ४।२९,—यथापराध-दंडानाम्—रघु० १।६ ।

अपराधिन् (वि०) [अप+राध्+णिनि] कष्टकर, दोषी ।

अपरिग्रहः [न० ब०] जिसके पास न कोई सामान हो, न नौकर चाकर; जो सब प्रकार से हीन हो—निराशीर-परिग्रहः,—हः 1. अस्वीकृति, इंकारी 2. दरिद्रता, गरीबी ।

अपरिच्छद (वि०) [न० ब०] गरीब, दरिद्र ।

अपरिच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1. जिसका अंतर न पहचाना गया हो, 2. सीमा रहित ।

अपरिणयः [न० त०] चिरकौमार्य, ब्रह्मचर्य ।

अपरिणीता [न० त०] अविवाहित कन्या ।

अपरिसंख्यानम् [न० त०] असीमता, असंख्यता ।

अपरीक्षित (वि०) [न० त०] 1. बिना परीक्षा लिया हुआ बिना जांचा हुआ, अप्रमाणित 2. अविचारित, मूर्खता-पूर्ण, विचारहीन (पुरुष या वस्तु) °कारकं नाम पंचमं तन्त्रम्—पंच ५, जो कर्ता विचारशील न हो, 3. जो स्पष्ट रूप से स्थापित या सिद्ध न हुआ हो ।

अपरुष् (वि०) [न० त०] क्रोधशून्य—अपरुषापरुषाक्षर-मीरिता रघु० ९।८ ।

अपरूप (वि०) [स्त्री०—पा,—पी] [ब० स०] कुरूप, विरूप, बेढंगी शक्ल वाला—पम् [प्रा० स०] विरूपता ।

अपरेद्युः (अव्य०) [अपर+एद्युस्] अगले दिन ।

अपरोक्ष (वि०) [न० त०] 1. दृश्य 2. प्रत्यक्ष 3. जो दूर न हो—क्षम् (क्रि० वि०) की उपस्थिति में (संब० के साथ), अपरोक्षात् प्रत्यक्ष रूप से, दृश्यतापूर्वक ।

अपरोधः [अप+रुध्+घञ्] वर्जन, निषेध ।

अपर्ण (वि०) [न० ब०] बिना पत्तों का,—र्णा पार्वती या दुर्गादेवी, कालिदास इस नाम का कारण बतलाते हुए कहते हैं :—स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता परा हि काष्ठा तपसस्तया पुनः, तदप्यपाकीर्णमिति प्रियंवदां वदन्त्य-पर्णेति च तां पुराविदः—कु० ५।२८ ।

अपर्याप्त (वि०) [न० त०] 1. जो यथेष्ट या काफी न हो, अपूर्ण, जो पर्याप्ति न हो 2. असीमित 3. अयोग्य, असमर्थ,—अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् —भग० १।३० ।

अपर्याप्तिः (स्त्री०) [नञ्+परि+आप्+क्तिन्] यथेष्टता का अभाव ।

अपर्याय (वि०) [न० ब०] क्रमरहित, —यः क्रम या प्रणाली का अभाव ।

अपर्युषित (वि०) [नञ्+परि+वस्+क्त] जो रात का रक्खा हुआ न हो, ताजा, नूतन ।

अपर्वन् (वि०) [न० ब०] जिसमें जोड़ न लगा हो, (नपुं०) [न० त०] 1. जोड़ या संयोग बिन्दु का अभाव 2. जो पर्व का दिन न हो—अर्थात् अनुपयुक्त समय या ऋतु ।

अपल (वि०) [न० ब०] बिना मांस का, —लम् कील या कुंडी ।

अपलपनम्-अपलापः [अप+लप्+ल्युट्, घञ् वा] 1. छिपाना, गोपन 2. छिपाव या जानकारी से मुकर जाना, टालमटोल,—न हि प्रत्यक्षसिद्धस्यापलापः कर्तुं शक्यते—शारी० 3. सत्यता, विचार व भावनाओं को छिपाना, घटाकर बतलाना । सम० —दण्डः (विधि में) उस व्यक्ति पर किया जाने वाला जुर्माना जो कि दोष सिद्ध होने पर भी अपने दोष को स्वीकार नहीं करता ।

अपलापिन् (वि०) [अप+लप्+णिनि] मुकरने वाला, दोष को स्वीकार न करने वाला, छिपाने वाला ।

अपलाषिका [अप+लष्+ण्वुल् स्त्रियां टाप्] अत्यधिक प्यास या इच्छा, या सामान्य तृषा (कई बार इसी अर्थ में 'अपलासिका' शब्द भी प्रयुक्त होता है, परन्तु उसे अशुद्ध समझा जाता है) ।

अपलाषिन्-लाषुक (वि०) [अप+लष्+णिनि, उकञ् वा] 1. प्यासा 2. प्यास या इच्छा से रहित—प्रला-पिनो भविष्यन्ति कदा न्वेतेऽपलाषुकाः—महाभा० ।

अपवन (वि०) [न० ब०] बिना वायु या हवा के, हवा से सुरक्षित—नम् [प्रा० स०] नगर के निकट लगाया हुआ बाग वाटिका या उपवन ।

अपवरकः-का [अप+वृ+वुन् स्त्रियां टाप्] 1. भीतर का कमरा, शयनागार 2. वातायन, मोघा—ततश्चैकस्मा-दपवरकात्—मुद्रा० ।

अपवरणम् [अप+वृ+ल्युट्] 1. आच्छादन, पर्दा 2. पोशाक, वस्त्र ।

अपवर्गः [अप+वृज्+घञ्] 1. पूर्ति, समाप्ति, किसी कार्य की पूर्णता या निष्पन्नता—अपवर्गे तृतीया—पा० २।३।६, क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः—कि० १।१४, अपवर्गे तृतीयेति भणतः पाणिनेरपि—नै० १७।६८, कि० १६।४९, 2. अपवाद, विशिष्ट नियम—अभिव्याप्या-पकर्षणमपवर्गः—सुश्रु० 3. मोक्ष, परमगति,—अपवर्ग-महोदयार्थयोर्भुवमंशाविव धर्मयोर्गतौ—रघु० ८।१६, 4. उपहार, दान 5. त्याग 6 छोड़ना (जैसे बाण का) ।

अपवर्जनम् [अप+वृज्+ल्युट्] 1. त्याग, (प्रतिज्ञा) पालन, (ऋणादि) परिशोध, 2. उपहार या दान 3. परमगति ।

अपवर्तः [अप+वृत्+घञ्] 1. निकाल लेना, दूर करना 2. (गण०) सामान्यविभाजक जो दोनों साम्य-राशियों में व्यवहृत होता है ।

अपवर्तनम् [अप+वृत्+ल्युट्] 1. दूर करना, स्थान° स्थानान्तरण 2. निकाल लेना, वञ्चित करना, न

त्यागोऽस्ति द्विपन्त्याश्च न च दायापवर्तनम्—मनु० ९।७९।

अपवादः [अप+वद्+घञ्] 1. निन्दा, भर्त्सना, कलंक —लोकापवादो बलवान्मतो मे—रघु० १४।४०, आक्षेप लोकनिन्दा,—देव्यामपि हि वैदेह्यां सापवादो यतो जनः —उत्तर० १।६, 2. सामान्य नियम को बाधित करने वाला विशेष नियम (विप० उत्सर्ग)—अपवादैरिवोत्सर्गाः कृतव्यावृत्तयः परैः—कु० २।२७, रघु० १५।७, 3. आदेश, आज्ञा—ततोपवादेन पताकिनीपतेश्चचाल निर्ह्रादवती महाचमूः—कि० १४।२७, 4. निराकरण, (वेदान्त०) मिथ्यारोपण या मिथ्याविश्वास का निराकरण,—रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववत्, वस्तुभूतब्रह्मणो विवर्तस्य प्रपञ्चादेः वस्तुभूतरूपतोऽपदेशः अपवाद—तारा० 5. भरोसा 6. प्रेम, घनिष्ठता।

अपवादक } (वि०) [अप+वद्+ण्वुल्, णिनि वा] 1.
अपवादिन् } कलंक लगाने वाला, निन्दक, बदनाम करने वाला—मृगयापवादिना माढव्येन श०२, 2. विरोध करने वाला, एक ओर रखने वाला, निकाल देने वाला।

अपवारणम् [अप+वृ+णिच्+ल्युट्] 1. आच्छादन, छिपाव, 2. ओझल होना।

अपवारित (भू० क० कृ०) [अप+वृ+णिच्+क्त] ढका हुआ, छिपा हुआ, —तम्, अपवारितकम् छिपा हुआ या गुप्त ढंग, —तम्, अपवारितकेन,, अपवार्य (अव्य०) (नाटकों में बहुधा प्रयुक्त) 'पृथक्' 'एक ओर' अर्थ प्रकट करने वाला अव्यय (विप० प्रकाशम्) यह इस ढंग से बोलने को कहते हैं कि केवल वही सुने जिसे कहा गया है—तद्भवेदपवारितं रहस्यं तु यदन्यस्य परावृत्य प्रकाश्यते, त्रिपताककरेणान्यमपवार्यान्तरां कथाम्—सा० द० ६।

अपवाहः-हनम् [अप+वह्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. दूर ले जाना, हटाना 2. घटाना, एक राशि में से दूसरी राशि को निकालना।

अपविघ्न (वि०) [ब० स०] निर्बाध, बाधारहित—रघु० २।३८

अपविद्ध (भू० क० कृ०) [अप+व्यध्+क्त] 1. दूर फेंका हुआ, त्यक्त, अस्वीकृत, उपेक्षित, दूरीकृत, मुक्त, विरहित 2. नीच, कमीना —द्धः, °पुत्रः माता या पिता या दोनों से त्यागा हुआ पुत्र जिसे किसी अपरिचित व्यक्ति ने गोद ले लिया हो, हिन्दुओं में १२ प्रकार के पुत्रों में से एक—मनु० ९।१७१, याज्ञ० २।१३२।

अपविद्या [प्रा० स०] अज्ञान, आध्यात्मिक अज्ञान, माया या भ्रम (अविद्या),—तत्त्वस्य संवित्तिरिवापविद्याम् कि० १६।३२।

अपवीण (वि०) [ब० स०] जिसके पास वीणा न हो, या खराब वीणा हो —णा [प्रा० स०] खराब वीणा।

अपवृक्तिः (स्त्री०) [अप+वृज्+क्तिन्] पूर्णता, निष्पन्नता, पूर्ति।

अपवृतिः (स्त्री०) [अप+वृ+क्तिन्] सूराख, छिद्र, रंध्र।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप+वृत्+क्तिन्] अन्त, समाप्ति।

अपवेधः [प्रा० स०] गलत जगह या बुरे ढंग से (मोती आदि में) छेद करना।

अपव्ययः [प्रा० स०] अत्यधिक खर्च, अपव्यय।

अपशकुनम् [प्रा० स०] असगुन, बुरा सगुन।

अपशङ्क (वि०) [ब० स०] निर्भय, निश्शंक, —कम् (क्रि० वि०) निडरता के साथ।

अपशदः=तु० अपसद।

अपशब्दः [प्रा० स०] 1. अशुद्ध शब्द (व्या० की दृष्टि से), भ्रष्ट शब्द (रूप और अर्थ की दृष्टि से),—त एव शक्तिवैकल्यप्रमादालसतादिभिः, अन्यथोच्चारिताः शब्दाः अपशब्दा इतीरिताः। अपशब्दशतं माघे—सुभा० 2. ग्राम्य शब्द 3. व्या० की दृष्टि से अशुद्ध भाषा 4. झिड़की वाला शब्द, गाली, दुर्वचन, निंदा।

अपशिरस् } (वि०) [अपगतं शिरः शीर्षं वा यस्य—
अपशीर्ष-र्षन् } ब० स०] सिर रहित, बे सिर का।

अपशुच् (वि०) [ब० स०] शोकरहित, (पुं) आत्मा।

अपशोक (वि०) [ब० स०] शोकरहित,—कः अशोकवृक्ष।

अपश्चिम (वि०) [न० त०] 1. जिसके पीछे कोई न हो, अंतिम (अधिकतर 'पश्चिम' शब्द के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है—तु० उत्तम और अनुत्तम, उत्तर और अनुत्तर),—अयमपश्चिमस्ते रामस्य शिरसि पादपङ्कजस्पर्शः—उत्तर० १. प्रसीदतु महाराजो मयानेनापश्चिमेन प्रणयेन—वेणी० ६, 2. अनन्तिम, प्रथम, सर्वप्रथम 3. चरम,—अपश्चिमामिमां कष्टामापदं प्राप्तवत्यहम् रामा०।

अपश्रयः [अप+श्रि+अच्] गद्दी, तकिया।

अपश्री (वि०) [ब० स०] सौन्दर्य से वञ्चित—शि० ११।५४।

अपश्वासः=दे० अपान।

अपष्ठम् [अप+स्था+क] हाथी के अंकुश की नोक।

अपष्ठु (वि०) [अप+स्था+कु] 1. विरुद्ध, विपरीत, 2. अननुकूल, प्रतिकूल 3. बायाँ,—ष्ठु (क्रि० वि०) 1. विरुद्ध, 2. असत्यतापूर्वक, 3. निर्दोषता के साथ भलीभांति, ठीक तरह से।

अपष्ठुर—ल (वि०) [अप+स्था+कुरच्, कुलच् वा] विरुद्ध, विपरीत।

अपसदः [अप+सद्+अच्] 1. जाति से बहिष्कृत, नीच पुरुष, प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त होकर अर्थ होता

है—दुष्ट,.पाजी, अभिशप्त,–कापालिक° मा० ५, रे रे क्षत्रियापसदाः—वेणी० ३, 2. छः प्रकार की अनुलोम सन्तान–अर्थात् पहले तीन वर्णों के मनुष्यों द्वारा अपने से नीच वर्ण की स्त्री में उत्पन्न सन्तान—विप्रस्य त्रिपु वर्णेषु नृपतेर्वर्णयोः द्वयोः, वैश्यस्य वर्णे चैकस्मिन् षडेतेऽपसदाः स्मृताः। मनु० १०।१०।

अपसरः [अप+सृ+अच्] 1. प्रस्थान, पलायन 2. उचित कारण।

अपसरणम् [अप+सृ+ल्युट्] जाना, वापिस मुड़ना, पलायन।

अपसर्जनम् [अप+सृज्+ल्युट्] 1 त्याग, उत्सर्ग, 2. उपहार या दान 3. मोक्ष।

अपसर्पः—**र्पकः** [अप+सृप्+ण्वुल्, स्वार्थे कन् च] गुप्तचर, जासूस, भेदिया,—सोपसर्पैर्जजागार यथाकालं स्वपन्नपि रघु० १७।५४; १४।३१।

अपसर्पणम् [अप+सृप्+ल्युट्] पीछे हटना, लौटना, जासूसी करना।

अपसव्य,—**सव्यक** [ब० स०] 1. जो बायां न हो, दायां —अपसव्येन हस्तेन,—मनु० ३।२१४, 2. विरुद्ध, विपरीत,—**व्यम्** (अव्य०) दाईं ओर, दाहिने कंधे के ऊपर से जनेऊ को शरीर के वाम भाग पर लटकाना (विप० सव्यम्—जब कि वह बायें कंधे के ऊपर से लटकता है) °**व्यं कृ** दाहिनी ओर रखते हुए किसी की परिक्रमा करना, जनेऊ को दायें कंधे से लटकाना।

अपसव्यवत् (वि०) [अपसव्य+मतुप्] दाहिने कंधे पर से यज्ञोपवीत पहनने वाला।

अपसारः [अप+सृ+घञ्] 1. बाहर जाना, लौटना 2. निर्गमस्थान निकास।

अपसारणम्-**णा** [अप+सृ+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] हटाकर दूर करना, हांकना, बाहर निकालना—किमर्थमपसारणा क्रियते—मुद्रा०, स्थान देना।

अपसिद्धान्तः [प्रा० स०] गलत या भ्रमयुक्त निर्णय।

अपसृप्तिः (स्त्री०) [अप+सृप्+क्तिन्] दूर चले जाना।

अपस्करः [अप+कृ+अप् सुडागमः] 1. पहिये को छोड़कर गाड़ी का कोई भाग (—**रम्** भी) 2. विष्ठा, मल 3. योनि 4. गुदा।

अपस्नानम् [अप+स्ना+ल्युट्] 1. किसी संबंधी की मृत्यु के उपरांत किया जाने वाला स्नान 2. मृतक स्नान, स्नान किये हुए पानी में स्नान करना।

अपस्पश (वि०) [ब० स०] जिसके पास भेदिय न हों, —शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा—शि० २।११२।

अपस्पर्श (वि०) [ब० स०] संज्ञाहीन।

अपस्मारः—**स्मृतिः** (स्त्री०) [अपस्मृ+घञ्, क्तिन् वा] 1. स्मरण शक्ति का अभाव 2. मिरगी रोग, मूर्छा रोग।

अपस्मारिन् (वि०) [अप+स्मृ+णिनि] मिरगी रोग से ग्रस्त।

अपस्मृति (वि०) [ब० स०] विस्मरणशील।

अपह (वि०) [अप+हा+ड] (समास के अन्त में) दूर हटाना, दूर करना, नष्ट करना,—स्त्रगियं यदि जीवितापहा—रघु० ८।४६।

अपहतिः (स्त्री०) [अप+हन्+क्तिन्] दूर करना, नष्ट करना।

अपहननम् [अप+हन्+ल्युट्] दूर हटाना, निवारण करना।

अपहरणम् [अप+हृ+ल्युट्] 1. दूर ले जाना, उड़ा ले जाना, दूर करना 2. चुराना।

अपहसितम्—**हासः** [अप+हस्+क्त, घञ् वा] अकारण हँसी, मूर्खता पूर्ण हँसी, ऐसी हँसी जिससे आंखों में आंसू आ जायँ (नीचानामपहसितम्)।

अपहस्तित (वि०) [अपहस्त+इतच्] दूर फेंका हुआ, रद्दी किया हुआ, परित्यक्त।

अपहानिः (स्त्री०) [अप+हा+क्तिन्] 1. त्याग, छोड़ देना 2. रुक जाना, ओझल होना 3. अपवाद, निकाल देना।

अपहारः [अप+हृ+घञ्] 1. उड़ा ले जाना, दूर ले जाना, चुरा लेना, नष्ट कर देना,—निद्रापहार, विष° 2. छिपाना, मालूम न पड़ने देना,—कथमात्मापहारं करोमि—शं० १, अपने आप को, अपने नाम को और अपने चरित्र को मैं किस प्रकार छिपाऊँ?

अपह्नवः [अप+ह्नु+अप्] 1. छिपाव, गोहन, अपनी भावना ज्ञान आदि को छिपाना, 2. सचाई से मुकर जाना, दुराव—°वे ज्ञः—पा० १।३।४४, 3. प्रेम, स्नेह।

अपह्नुतिः (स्त्री०) [अप+ह्नु+क्तिन्] 1. सत्य को छिपाना, मुकरना 2. एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत वस्तु के वास्तविक चरित्र को छिपा कर कोई और काल्पनिक या असत्य स्थापना की जाय—नेदं नभोमण्डलमम्बुराशिः, नैताश्च ताराः नवफेनभङ्गाः। काव्य०, १० वाँ समुल्लास तथा दे० सा० द० ६८३।८४ पृष्ठ।

अपह्रासः [अप+ह्रस्+घञ्] घटाना, कमी करना।

अपाक् (अव्य०) दे० अपाच्।

अपाकः [न० त०] 1. अपच, अजीर्णता 2. अपरिपक्वता।

अपाकरणम् [अप+आ+कृ+ल्युट्] 1. दूर कर देना, हटाना 2. अस्वीकृति, निराकरण 3. अदायगी, कारबार का समेट लेना।

अपाकर्मन् (न०–र्म) [अप+आ+कृ+मनिन्] चुकता कर देना, कारबार उठा देना।

अपाकृतिः (स्त्री०) [अप+आ+कृ+क्तिन्] 1. अस्वीकृति, दूर करना, 2. क्रोध से उत्पन्न संवेग, भय आदि—वि० १।२७।

अपाक्ष (वि०) [अपनतः अक्षमिन्द्रियम्] 1. विद्यमान, प्रत्यक्ष 2. [ब० स०] नेत्रहीन, खराब आंखों वाला।

अपाङ्क्त, अपाङ्क्तेय, अपाङ्क्त्य (वि०) [न०त०] जो समान पंक्ति में न हो, विशेषतः वह व्यक्ति जो बिरादरी में अपने बन्धु-बांधवों के साथ एक पंक्ति में बैठने का अधिकारी न हो, जाति बहिष्कृत।

अपाङ्गः—गकः [अपाङ्गं तिर्यक् चलति नेत्रं यत्र अप+अङ्ग् घञ्, कन् च] 1. आंख की बाहरी कोर, या आंख की कोण—चलापाङ्गां दृष्टि–श० १।२४, 2. सम्प्रदाय सूचक माथे का तिलक 3. कामदेव, प्रेम का देवता। सम०—**दर्शनम्**,—**दृष्टिः** (स्त्री०)—**विलोकितम्**,—**वीक्षणम्** तिरछी चितवन, कनखियों से देखना, पलक झपकना, —**देशः** आंख की कोर, —**नेत्र** (वि०) सुन्दर कनखियों से युक्त आँखों वाला (यह प्रायः स्त्रियों का विशषण है) यदियं पुनरप्यपाङ्गनेत्रा परिवृत्तार्धमुखी मयाद्य दृष्टा - विक्रम० १।१७।

अपाच्, अपांच् [अपाञ्चति–अञ्च्+क्विप्] 1. पीछे की ओर जाने वाला, या पीछे स्थित, 2. अमुक्त, अस्पष्ट 3. पश्चिमी 4. दक्षिणी—**क्** (अव्य०) 1. पीछे, पीछे की ओर 2. पश्चिम की ओर या दक्षिण की ओर।

अपाची [अप+अञ्च्+क्विन् स्त्रियां ङीप्] दक्षिण या पश्चिम दिशा, °**इतरा**—उत्तर दिशा।

अपाचीन (वि०) [अपाची+ख] 1. पीछे की ओर स्थित, पीछे की ओर मुड़ा हुआ 2. अदृश्य, अप्रत्यक्ष—ऋक् ७।६।४ 3. दक्षिणी 4. पश्चिमी 5. विरोधी।

अपाच्य (वि०) [अपाची+यत्] पश्चिमी और दक्षिणी।

अपाणिनीय (वि०) [न० त०] 1. जो पाणिनि के नियमों के अनुकूल न हो 2. जिसने पाणिनि-व्याकरण को भली भाँति नहीं पढ़ा हो, पल्लवग्राही विद्वान्, संस्कृत का अल्पज्ञान रखने वाला।

अपात्रम् [न० त०] 1. निकम्मा बर्तन 2. (आलं०) अयोग्य या अनधिकारी पुरुष, दान लेने के लिए अयोग्य 3. कुपात्र, जो उपहार दान आदि का अधिकारी न हो। सम० —**कृत्या**, **अपात्रीकरणम्** अनुचित तथा निर्मर्याद कर्म करना, अपात्रता, दे० मनु० ११।७०, —**दायिन्** अयोग्य पुरुषों को देने वाला, —**भृत्** (वि०) अयोग्य और निकम्मे व्यक्तियों का भरणपोषण करने वाला—प्रायेणापात्रभृद्भवति राजा—पंच० १।

अपादानम् [अप+आ+दा+ल्युट्] 1. ले जाना, दूर करना, अपसरण 2. (व्या० में) अपा० का अर्थ—ध्रुवमपायेऽपादानम्—पा० १।४।२४।

अपाध्वन् (पुं०) [अपकृष्टः अध्वा प्रा० स०] कुमार्ग, बुरामार्ग।

अपानः [अप+अन्+अच्, अपानयति मूत्रादिकम्—अप+आ+नी+ड वा] श्वास बाहर निकालना, श्वास लेने की क्रिया, शरीर में रहने वाले पाँच पवनों में से एक जो कि नीचे की ओर जाता है तथा गुदा के मार्ग से बाहर निकलता है; —**नः**, —**नम्** गुदा। सम० —**द्वारम्** गुदा, —**पवनः**, —**वायुः** प्राणवायु—जिसे अपान कहते हैं।

अपानृत (वि०) [ब० स०] मिथ्यात्व से रहित, सत्य।

अपाप-पिन् (वि०) [ब० स०, णिनि वा] निष्पाप, पवित्र पुण्यात्मा।

अपाम् (अप्-जल-का संबं० ब० व०)[समास में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त]—**ज्योतिस्** (न०) बिजली, —**नपात्** अग्नि और सावित्री की उपाधि, —**नाथः**, —**पतिः** 1. समुद्र 2. वरुण, —**निधिः** 1. समुद्र 2. विष्णु, —**पायस्** (नपुं०) भोजन, —**पित्तम्** अग्नि —**योनिः** समुद्र।

अपामार्गः [अप+मृज्+घञ्, कुत्वदीर्घौ] चिचड़ा, एक बूटी।

अपामार्जनम् [अप+मृज्+ल्युट्] सफ़ाई करना, शुद्धि करना, (रोग पापादिक) को दूर करना।

अपायः [अप+इ+अच्] 1. चले जाना, बिदाई 2. वियोग–ध्रुवमपायेऽपादानम्—पा० १।४।२४, येन जातं प्रियापाये कद्वदं हंसकोकिलम्—भट्टि० ६।७५, 3. ओझल होना, लोप, अभाव 4. नाश, हानि, संहार—करणापायविभिन्नवर्णया—रघु० ८।४२, 5. अनिष्ट, दुर्भाग्य, विपत्ति, भय (विप० उपाय) कायः संनिहितापायः—हि० ४।६५, 6. हानि, क्षति।

अपार (वि०) [न० त०] 1. जिसका पार न हो 2. असीम, सीमारहित 3. जो समाप्त न हो, अत्यधिक 4. पहुँच के बाहर 5. जिसे पार करना कठिन हो, जिस पर विजय न पाई जा सके, —**रम्** नदी का दूसरा तट।

अपार्ण (वि०) [अप+अर्द्+क्त] 1. दूरस्थ, दूरवर्ती, 2. निकटस्थ।

अपार्थ, अपार्थक (वि०) [अपगतः अर्थः यस्मात्—ब० स०] 1. व्यर्थ, अलाभकर, निकम्मा, 2. निरर्थक, अर्थहीन, —**र्थम्** अर्थहीन, या असंगत बात या तर्क (सा० शा० की दृष्टि से रचना संबंधी दोष तु० काव्य० ३।२८, समुदायार्थशून्यं यत्तदपार्थमितीष्यते)।

अपावरणम्, अपावृतिः (स्त्री०) [अप+आ+वृ+ल्युट्, क्तिन् वा] 1. उद्घाटन 2. ढकना, लपेटना, घेरना 3. छिपाना, गोपन करना।

अपावर्तनम्, अपावृत्तिः (स्त्री०) [अप+आ+वृत्+ल्युट्, क्तिन् वा] 1. लौटना, पीछे हटना, अपकर्षण 2. घूमना।

अपाश्रय (वि०) [ब० स०] आश्रयहीन, निरवलंब, असहाय, —**यः** शरण, सहारा, जिसका सहारा लिया जाय 2. चंदोवा, शामियाना, 3. सिरहाना।

अपासंगः [अप+आ+संज्+घञ्] तरकस।

अपासनम् [अप+अस्+ल्युट्] 1. फेंक देना, रद्दी कर देना 2. छोड़ देना 3. वध करना ।

अपासरणम् [अप+आ+सृ+ल्युट्] विदाई, लौटना, दूर हटना—दे० 'अपसरण' ।

अपासु (वि०) [ब० स०] निर्जीव, मृत ।

अपि (अव्य०) [कई बार भागुरि के मतानुसार 'अ' का लोप—वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः—पिधा, पिधानम् आदि] 1. (संज्ञा और धातुओं के साथ प्रयुक्त होकर) निकट या ऊपर रखना, की ओर ले जाना, तक पहुँचाना, सामीप्य सन्निकटता आदि 2. (पृथक् क्रि० वि० या संयो० अव्य० के रूप में) और, भी, एवम्, पुनश्च, इसके अलावा, इसके अतिरिक्त—अस्ति मे सोदरस्नेहोऽप्येतेषु—श० १, अपनी ओर से तो, अपनी बारी आने पर—विष्णुशर्मणापि राजपुत्राः पाठिताः—पंच० १; अपि अपि, अपि च, भी, और भी,—अपि स्तुहि, अपि सिंच—सिद्धा० न नापि न चैव, न वापि, नापि वा, न चापि न—न, 3. 'भी' 'अति' 'बहुत' शब्दों के अर्थ पर बल देने के लिए भी बहुधा इसका प्रयोग होता है, अद्यापि—आज भी, इदानीमपि—अब भी, यद्यपि—अगर्चे, चाहे, तथापि—तो भी, कई बार केवल 'तथापि' शब्द के प्रयोग से ही 'यद्यपि' का अध्याहार कर लिया जाता है—उदा० कि० १।२८, 4. अगर्चे (भी, चाहे)—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्—श० १।२०, चाहे ऊपर से ढका हुआ; इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी—श० चाहे वल्कल वस्त्र में 5. (वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होकर 'प्रश्न सूचक') अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः—श० १, अपि क्रियार्थसुलभं समित्कुशम्......अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे—कु० ५।३३, ३४, ३५, 6. आशा, प्रत्याशा (प्रायः विधिलिङ् के साथ) कृतं रामसदृशं कर्म, अपिजीवेत्स ब्राह्मणशिशुः—उत्तर० २ मुझे आशा है कि ब्राह्मण बालक जी उठेगा। विशे० इस अर्थ में 'अपि' बहुधा 'नाम' के साथ जुड़ कर निम्नांकित भाव प्रकट करता है (क) संभावना 'शक्यता' (ख) शायद, संभवतः (ग) 'क्या ही अच्छा हो यदि', 'मेरी आंतरिक इच्छा या आशा है कि—अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णक्षेत्र-संभवा स्यात्, श० १, श० ७, तदपि नाम मनागवतीर्णोसि रतिरमणबाणगोचरम्—मा० १, शायद, सम्भवतः—अपि नामाहं पुरूरवा भवेयम् विक्रम०—क्या ही अच्छा होता यदि मैं पुरूरवा होता 7. (प्रश्नवाचक शब्दों के साथ जुड़ कर 'अनिश्चितता' के अर्थ को बतलाता है) कोई, कुछ, कोपि—कोई, किमपि—कुछ, कुत्रापि—कहीं; इस शब्द को 'अज्ञात' 'अवर्णनीय' 'अनभिधेय' अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है—व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोपि हेतुः—उत्तर० ६।१२, 8. (संख्या वाचक शब्दों के पश्चात् प्रयुक्त होने पर 'कार्त्स्न्यं' और 'समस्तता' का अर्थ होता है) चतुर्णामपि वर्णानाम्—चारों वर्णों का, 9. (यह शब्द कभी २ 'संदेह' 'अनिश्चितता' और 'शंका' भी प्रकट करता है)—अपि चौरो भवेत्—गण० शायद वहाँ चोर है 10. (विधिलिङ् के साथ 'संभावना' अर्थ होता है)—अपि स्तुयाद्विष्णुम्, 11. घृणा, निन्दा—अपि जायां त्यजसि जातु गणिकामाधत्से गर्हितमेतत्—सिद्धा०, लज्जा की बात है, धिक्कार है—धिग्जाल्मं देवदत्तमपि सिंचेत्पलांडुम्, 12. लोट् लकार के साथ प्रयुक्त होकर 'वक्ता की उदासीनता' प्रकट करता है और दूसरे को यथारुचि कार्य करने देता है—अपि स्तुहि—सिद्धा० (आप चाहें तो) स्तुति करें,—अपि स्तुह्यपि सेधास्मांस्तथ्यमुक्तं नराशन—भट्टि० ८।८२ 13. कभी विस्मयादि द्योतक अव्यय के रूप में भी प्रयुक्त होता है 14. 'इसलिए' 'फलतः' (अत एव) के अर्थ में कभी ही प्रयुक्त होता है 15. संबं० के साथ प्रयुक्त होकर 'अध्याहार' के भाव को प्रकट करता है—उदा० - सर्पिषोऽपि स्यात्,—यहाँ (बिन्दुरपि—ज़रा सा, एक बूंद) जैसा कोई शब्द अध्याहृत किया जाता है, संभवतः 'एक बूंद घी' अभिप्रेत है ।

अपिगीर्ण (वि०) [अपि+गृ+क्त] 1. स्तुति किया गया, यशस्वी 2. कथित, वर्णित ।

अपिच्छिल (वि०) [न० त०] 1. जो गदला न हो, स्वच्छ अपंकिल 2. गहरा ।

अपितृक (वि०) [न० ब०] 1. जिसका पिता जीवित न हो, 2. अपैतृक ।

अपित्र्य (वि०) [न० त०] अपैतृक ।

अपिधानम्, पिधानम् [अपि+धा—ल्युट्, भागुरि के मत में विकल्प से 'अ' लोप] 1. ढकना, छिपाना 2. चादर, ढक्कन, आच्छादन (आलं० भी) ।

अपिधिः (स्त्री०) [अपि+धा+कि] छिपाव ।

अपिव्रत (वि०) [ब० स०-अपि संसृष्ट व्रतं भोजनं नियमो वा यस्य] धार्मिक कृत्य का सहभागी, रक्त द्वारा संबद्ध ।

अपिहित, पिहित [अपि+धा+क्त—भागुरिमतेन अकार लोपः] 1. बंद, बंद किया हुआ, ढका हुआ, छिपाया हुआ (आलं० भी) बाष्पापिहित—आँसुओं से ढका हुआ 2. जो छिपा न हो, सरल, स्पष्ट,—अर्थो गिरामपिहितः पिहितश्च किंचित् सत्यं चकास्ति मरहट्टवधूस्तनाभः—सुभा० ।

अपीतिः (स्त्री०) [अपि+इ+क्तिन्] 1. प्रवेश, उपागम 2. विघटन, नाश, हानि 3. प्रलय—अपीतौ तद्वत् प्रसंगादसमञ्जसम्—ब्रह्म० ।

अपीनसः [अपीनाय, अपीनत्वाय सीयते कल्पते कर्मकर्तरि क—तारा०] नाक की शुष्कता, जुकाम ।

अपुंस्का (स्त्री०) [नास्ति पुमान् यस्याः—न० ब०] विना पति की स्त्री—नापुंस्कासीति मे मतिः —भट्टि० ५।७०।

अपुत्रः [न० त०] जो पुत्र न हो, (वि०)—**पुत्रक**(वि०) (स्त्री० —**त्रिका**) जिसके कोई पुत्र या उत्तराधिकारी न हो।

अपुत्रिका (स्त्री०) [न० ब० कप्, टाप् इत्वं च] पुत्रहीन पिता की ऐसी कन्या जिसके कोई पुत्र न हो; जो पुत्राभाव की स्थिति में पिता द्वारा पुत्रोत्पत्ति के लिए नियत न की गई हो, तु० 'अकृता'।

अपुनर् (अव्य०) [न० त०] फिर नहीं, एक ही बार, सदा के लिए। सम०—**अन्वय** (वि०) न लौटने वाला, मृत,—**आदानम्** फिर न लेना, वापिस न लेना—**आवृत्तिः** (स्त्री०) फिर न लौटना, परम गति,—**प्राप्य** (वि०) जो फिर प्राप्त न हो सके,—**भवः** 1. जो फिर उत्पन्न न हो (रोगादिक भी), 2. मोक्ष या परमगति।

अपुष्ट (वि०) [न० त०] 1. जिसका पोषण ठीक तरह से न हुआ हो, दुबला पतला, जो स्थूल न हो 2. (स्वर) जो ऊँचा या भीषण न हो, मृदु, मन्द 3. (सा०शा०) जो (अर्थ का) पोषक या सहायक न हो असंबद्ध, अर्थदोषों में से एक—उदा० सा० द० ५७५—विलोक्य वितते व्योम्नि विधुं मुंच रुषं प्रिये—यहाँ आकाश का विशेषण 'वितत' शब्द क्रोध की शान्ति में कोई सहायता नहीं करता—इसलिए असंबद्ध है।

अपूपः [न पूयते विशीर्यते—पू+प. न० त० तारा०] मालपुआ, शर्करादिक डाल कर बनाया गया रोटी से मोटा पदार्थ, इसे 'पूड़ा' कहते हैं।

अपूपीय, अपूप्य (वि०) [अपूपाय हितम्—छ, यत् च] अपूप संबन्धी,—**प्यम्**—आटा, भोजन।

अपूरणी (स्त्री०) [न० त०] सेमल का पेड़।

अपूर्ण (वि०) [न० त०] जो पूरा या भरा न हो, अधूरा असम्पन्न—अपूर्णमेकेन शतं क्रतूनाम्—रघु० ३।८८; अपूर्ण एवं पंचरात्रे दोहदस्य—मालवि० ३।

अपूर्व (वि०) [न० ब०] 1. जैसा पहले न हुआ हो, जो पहले विद्यमान न था, बिल्कुल नया,—अपूर्वमिदं नाटकम्—श० १।२, 2. अनोखा, असाधारण, अद्भुत; —अपूर्वो दृश्यते वह्निः कामिन्याः स्तनमंडले, दूरतो दहतीवांगं हृदि लग्नस्तु शीतलः—शृंगार० १७, निराला, अनुद्यम, अभूतपूर्व—अपूर्वकर्मचाण्डालमपि मुग्धे विमुंच माम्—उत्तर० १।४६, अप्रतिम नृशंसता करने वाली 3. अज्ञात 4. अप्रथम,—**र्वम्** 1. किसी कार्य का दूरवर्ती फल जैसा कि सत्कार्यों के फलस्वरूप स्वर्गप्राप्ति 2. इष्ट और अनिष्ट जो भावी सुख दुःख के अन्तिम कारण हैं;—**र्वः** परब्रह्म। सम०—**पतिः** (स्त्री०) जिसे अभी तक पति प्राप्त नहीं हुआ, कुमारी कन्या,—**विधिः** नया आधिकारिक निदेश या आज्ञा।

अपृथक् (अव्य०) [न० त०] अलग से नहीं, साथ-साथ, समष्टि रूप से।

अपेक्षणम्, **अपेक्षा** } [अप्+ईक्ष्+ल्युट्, अप+ईक्ष्+अ] 1. प्रत्याशा, आशा, चाह, 2. आवश्यकता, जरूरत, कारण—प्रायः समास में स्फुलिंगावस्थया वह्निरेघापेक्ष इव स्थितः—श० ७।१५, जलने की प्रतीक्षा में 3. विचार उल्लेख, लिहाज—कर्म के साथ अधि० में, प्रायः समास में; करण० या कभी-कभी अधि० में, (अपेक्षया, अपेक्षायां) समास में बहुधा प्रयुक्त का अर्थ—'का उल्लेख करते हुए' 'लिहाज़ करके' 'के निमित्त' नियमापेक्षया—रघु०।४९, प्रथमसुकृतापेक्षया—मेघ० १७; अत्र व्यंग्यं गुणीभूतं तदपेक्षया वाच्यस्यैव चमत्कारित्वात्-काव्य० १, इसकी तुलना में 4. मेलजोल, संबंध 5. देखभाल, ध्यान, सावधानी —देशापेक्षास्तथा युयं याता दायांगुलीयकम्—भट्टि० ७।४९, 6. सम्मान, समादर 7. (व्या० में)= आकांक्षा।

अपेक्षणीय, **अपेक्षितव्य**, **अपेक्ष्य** } (वि०) [अप+ईक्ष+अनीयर्, तव्यत्, ण्यत् वा] अपेक्षा करने के योग्य, जिसकी आवश्यकता या आशा हो, जिसकी प्रत्याशा या विचार किया जा सके; वाञ्छनीय।

अपेक्षित (भू० क० कृ०) [अप+ईक्ष्+क्त] जिसकी तलाश की गई हो, जिसकी आशा की गई हो, जिसकी आवश्यकता हो, जिसका विचार किया गया हो, —**तम्** चाह, इच्छा, लिहाज़, उल्लेख।

अपेत (भू० क० कृ०) [अप+इ+क्त] 1. गया हुआ, ओझल हुआ, अपेतयुद्धाभिनिवेशसौम्या—शि० ३।१, 2. वियुक्त या विचलित, विरुद्ध (अपा० के साथ) अर्थादनपेतम् अर्थ्यम्—सिद्धा०, 3. मुक्त, वंचित (अपा० के साथ या समास में) सुखादपेतः—सिद्धा०, उदवहदनवद्या तामवद्यादपेतः—रघु० ७।१०, निर्दोष।

अपेहि (लोट् म० पु० ए० व०) (मयूरव्यंसकादि श्रेणी से संबद्ध समासों के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त) °करा, °द्वितीया, °स्वागता आदि जहाँ इस शब्द का अर्थ होता है "के बिना" "निकाल कर" "सम्मिलित न करके" उदा० °वाणिजा—इस प्रकार का समारोह जहाँ व्यापारियों को संमिलित न किया जाय,—इसी प्रकार °द्वितीया आदि।

अपोगंडः [अपसि (वैधकर्मणि) गंडः त्याज्यः—तारा०] 1. अधिक अंगों वाला, या कम अंगों वाला 2. जो सोलह बरस से कम आयु का न हो, मनु० २।१४८ 3. शिशु 4. अतिभीरु 5. झुर्रीदार।

अपोढ (वि०) [अप+वह्+क्त] दूर हटाया गया (अपा० के साथ); कल्पनापोढः=कल्पनायाः अपोढः; दे० अपपूर्वक 'वह्'।

अपोहः [अप+वह्+घञ्] 1. हटाना, दूर करना, विरोपण 2. तर्क शक्ति के प्रयोग द्वारा शङ्कानिवारण 3. तर्क देना, युक्ति देना 4. निषेधात्मक तर्कना (विप० ऊहः अपतर्कनिरासाय कृतो विपरीतस्तर्कः),—स्वयमूहापोहासमर्थः—महाभा०, ऊहापोहमिमं सरोजनयना यावद्विधत्तेतराम्—भामि० २।७४, अतः ऊहापोह= किसी प्रश्न से संबद्ध पूर्ण चर्चा 5. प्रसंगानुकूल वर्ग के अन्दर न आने वाली बातों को विचार-कोटि से निकाल देना; —तद्वानपोहो वा शब्दार्थः(यहाँ माहेश्वर 'अपोह' का अर्थ 'अतद्व्यावृत्तिः' अर्थात् 'तद्भिन्नत्यागः' करते हैं)।

अपोहनम् [अप+वह्+ल्युट्] 1. हटाना=अपोह, 2. तर्कशक्ति—मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च—भग०१५।१५,।

अपोहनीय } (वि०) [अप+वह्+अनीयर, ण्यत् वा]
अपोह्य } दूर हटाने या ले जाने के योग्य, प्रायश्चित्त (पाप का) करने के योग्य; तर्क द्वारा स्थापित करने के योग्य।

अपौरुष-अपौरुषेय (वि०) [नास्ति पौरुषं यस्मिन् न० ब० न पौरुषेयः—न० त०] 1. पुरुषार्थहीन, कायर, भीरु 2. अलौकिक, अपुरुषोचित, ईश्वरकृत—अपौरुषेया वेदाः अपौरुषेयप्रतिष्ठः सुवर्णबिन्दुरित्याख्याते—मा० ९, जो मनुष्य द्वारा न स्थापित किया गया हो। —षम्, षेयम् 1. कायरता 2. ईश्वरीय शक्ति।

अप्तोर्यामः,–मन् [अप्तोः शरीरस्य पावकत्वात् याम इव—अलुक् समासः] एक यज्ञ का नाम, सामवेद के एक मंत्र का नाम जो उक्त यज्ञ की समाप्ति पर बोला जाता है; ज्योतिष्टोम यज्ञ का अंतिम या सातवाँ भाग।

अप्ययः [अपि+इ+अच्] 1. उपागमन, सम्मिलन 2. (नदियों का) उमग्ना, 3. प्रवेश, नष्ट होना, अन्तर्धान, लय, किसी एक में लीन हो जाना 4. नाश।

अप्रकरणम् [न० त०] जो मुख्य या प्रधान विषय न हो, अप्रासंगिक या असंबद्ध विषय।

अप्रकाश (वि०) [न० ब०] 1. न चमकने वाला, अंधकारपूर्ण, प्रकाशरहित(आलं० भी)—प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोक इवाचलः—रघु० १।६८, 2. स्वतः प्रकाशित 3. गुप्त, रहस्य,—शम्,—शे(अव्य०) गुप्तरूप से, अप्रकट।

अप्रकृत (वि०) [न० त०] 1. जो मुख्य या प्रधान न हो, आनुषंगिक 2. अप्रस्तुत, विषय से असंबद्ध, दे० प्रकृत, प्रस्तुत, अप्रकृतमनुसंधा—इधर-उधरकी (विषय से बाहर की) बातें बनाना, विषयानुकूल बात न करना, —तम् (सा० शा० में) उपमान अर्थात् तुलना का मानक (विप० उपमेय)।

अप्रगम (वि०) [न० ब०] इतनी तेजी से जाने वाला कि दूसरे जिसका अनुसरण न कर सकें।

अप्रगल्भ (वि०) [न० त०] साहसहीन, शर्मीला, विनीत (विप० धृष्ट)—धृष्टः पार्श्वे वसति नियतं दूरतश्चाप्रगल्भः—हि० २।२६।

अप्रगुण (वि०) [न० ब०] विस्मित, व्याकुल।

अप्रज (वि०) [न० ब०] 1. निस्संतान, संतान रहित 2. अजात 3. जहाँ बस्ती न हो, बिना बसा।

अप्रजस् } (वि०) [न० ब०] संतान रहित, जिसके कोई
अप्रजात } बच्चा या संतान न हो—अतीतायामप्रजसि बांधवास्तदवाप्नुयुः—याज्ञ० २।१४४,—ता निस्संतान स्त्री, बांझ स्त्री।

अप्रतिकर्मन् (वि०) [न० ब०] 1. अनुपम कार्य करने वाला, 2. अनिवार्य।

अप्रति (ती) कार (वि०) [न०ब०] लाइलाज, असहाय।

अप्रतिघ (वि०) [न० ब०] 1. जिसे हराया न जा सके, अजेय 2. जिसे रोका न जा सके 3. अक्रुद्ध।

अप्रतिद्वन्द्व(वि०) [न०ब०] 1. युद्ध में जिसका कोई प्रतिद्वंद्वी न हो, अप्रतिरोध्य 2. अनूठा, लाजवाब।

अप्रतिपक्ष (वि०) [न० ब०] 1. अप्रतियोगी, विपक्षशून्य 2. अनुपम।

अप्रतिपत्तिः (स्त्री०) [न० ब०] 1. कार्य का सम्पन्न न होना, अस्वीकृति, 2. उपेक्षा, अवहेलना 3. समझदारी का अभाव 4. निश्चय का अभाव, अव्यवस्था, विह्वलता—°विह्वल आदि का० १५९ (अप्रतिपत्तिर्जडता स्यादिष्टानिष्टदर्शनश्रुतिभिः) °त्तिसाध्वसजडा—का० २४० 5. (अतः) स्फूर्ति का अभाव,—उत्तरस्याप्रतिपत्तिरप्रतिभा—गौतम०।

अप्रतिबन्ध (वि०) [न० ब०] 1. निर्बाध, बेरोकटोक 2. बिना झगड़े के जन्म से प्राप्त, जिसमें किसी दूसरे का भाग न हो (उत्तराधिकार की भाँति)।

अप्रतिबल (वि०) [न० ब०] अप्रतिरोध्य शक्ति वाला, अनुपम बलशाली।

अप्रतिभ (वि०) [न० ब०] 1. विनीत, सलज्ज 2. अप्रत्युत्पन्नमति, मंदबुद्धि।

अप्रतिभट (वि०) [न० ब०] अप्रतिद्वन्द्वी—टः बेजोड़ योद्धा।

अप्रतिम (वि०) [न० ब०] अतुलनीय, बेजोड़, अप्रतिद्वन्द्वी इसी प्रकार अप्रतिमान।

अप्रतिरथ (वि०) [न०ब०] ऐसा वीर पुरुष जिसके मुकाबले का योद्धा और कोई न हो, बेजोड़, अप्रतिद्वन्द्वी योद्धा—दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य—श० ४।२०, ७,७।३३।

अप्रतिरव (वि०) [न० ब०] निर्विरोध, निर्विवाद—वर्षशताधिकभोगः सन्ततोऽप्रतिरवः स्वत्वं गमयति—मिता०।

अप्रतिरूप (वि०) [न० ब०] 1. अननुरूप, अयोग्य 2. अनुपम रूप वाला 3. अनूठा।

अप्रतिवीर्य (वि०) [न० ब०] अतुलशक्तिशाली।

अप्रतिशासन (वि०) [न० ब०] जिसका प्रतिद्वन्द्वी शासक न हो, जहाँ एक ही व्यक्ति का राज्य हो—रघु० ८।२७।

अप्रतिष्ठ (वि०) [न० ब०] 1. अस्थिर, अदृढ़, अस्थायी 2. अलाभकर, व्यर्थ 3. बदनाम।

अप्रतिष्ठानम् [न० त०] अस्थिरता, दृढ़ता का अभाव (आलं० भी)—तर्काप्रतिष्ठानादप्यन्यथानुमेयम्—शारी०।

अप्रतिहत (वि०) [न० त०] 1. निर्बाध, बाधा रहित, अप्रतिरोध्य—अस्मद्गृहे °गतिः—पंच० १; जृम्भतामप्रतिहतप्रसरमार्यस्य क्रोधज्योतिः—वेणी० १; °शक्ति बेजोड़ शक्तिसम्पन्न 2. अक्षुण्ण, अक्षत, अप्रभावित; —सा बुद्धिरप्रतिहता—भर्तृ० २।४० पंच० ४।२६, इसी प्रकार °चित्त, °मनस् 3. जो निराश न हो। सम० —**नेत्र** (वि०) स्वस्थ आँखों वाला।

अप्रतीत (वि०) [न० त०] 1. अप्रसन्न, अप्रहृष्ट 2. (सा० शा० में) जो स्पष्ट रूप से न समझा जा सके, एक प्रकार का शब्ददोष (उस शब्द को 'अप्रतीत' कहते हैं जो किसी विशिष्ट स्थान पर ही प्रयुक्त होता हो, सामान्य प्रयोग का शब्द न हो)। दे० काव्य० ७।

अप्रत्ता [न० त०] कुमारी कन्या, जिसका दान न किया गया हो।

अप्रत्यक्ष (वि०) [न० ब०] 1. अदृश्य, अगोचर 2. अज्ञात अनुपस्थित।

अप्रत्यय (वि०) [न० ब०] 1. आत्मविश्वास रहित, अविश्वासी—(अधि० के साथ) बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः—श० १।२ 2. अनभिज्ञ 3. (व्या० में) प्रत्यय रहित,—**यः** 1 आशंका, अविश्वास, विश्वास का अभाव—क्षेत्रमप्रत्ययानाम्—पंच० १।१९१ 2. समझ में न आने वाला 3. जो प्रत्यय न हो—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५।

अप्रदक्षिणम् (अव्य०) [न० त०] बाएँ से दाहिनी ओर।

अप्रधान (वि०) [न० त०] अधीन, गौण, घटिया—आवां तावदप्रधानौ—हि० २,—**नम्** (°ता °त्वम्) 1. अधीनता, गौणस्थिति, घटियापन 2. गौण या अमुख्य कार्य ('अप्रधान' शब्द प्रायः नपुं० में प्रयुक्त होता है चाहे वह अकेला प्रयुक्त हो या समास में)।

अप्रधृष्य (वि०) [न० त०] जो जीता न जा सके, अजेय—यदाश्रौषं भीष्ममत्यन्तशूरं हतं पार्थेनाहवेष्वप्रधृष्यम्—महा०, मालवि० ५।१७।

अप्रभु (वि०) [न० त०] 1. शक्तिहीन, अशक्त 2. असमर्थ, अयोग्य, अक्षमः (संब० या अधि० के साथ)।

अप्रमत्त (वि०) [न० त०] जो प्रमादी न हो, खबरदार, सावधान, जागरूक।

अप्रमद (वि०) [न० ब०] आमोद-प्रमोद से विरत, उदास, अप्रसन्न।

अप्रमा [न० त०] भ्रांत ज्ञान (विप० प्रमा)।

अप्रमाण (वि०) [न० ब०] 1. असीमित, अपरिमित 2. अनधिकृत 3. अप्रामाणिक, अविश्वस्त—श० ५।२५—**णम्** [न० त०] जो किसी कार्य में प्रमाण रूप से प्रस्तुत न किया जा सके; अर्थात् वह कार्य जो अपरिहार्य न समझा जाय 2. असंबद्धता।

अप्रमाद (वि०) [न० ब०] खबरदार, जागरूक—**दः** [न० त०] खबरदारी, अवधान, जागरूकता।

अप्रमेय (वि०) [न० त०] 1. अपरिमित, असीमित, सीमारहित, 2. जिसका भलीभाँति निश्चय न किया जा सके, न समझा जा सके; अज्ञेय—अचिंत्यस्याप्रमेयस्य कार्यतत्त्वार्थवित्प्रभुः—मनु० १।३ —**यम्** ब्रह्म।

अप्रयाणिः (स्त्री०) [नञ्+प्र+या+अनि] न जाना, प्रगति न करना, (केवल कोसने के लिए ही प्रयुक्त होता है)—अप्रयाणिस्ते शठ भूयात्—सिद्धा० (भगवान् करे, तुम प्रगति न कर सको) दे० अजीवनि,

अप्रयुक्त (वि०) [न० त०] 1. जो इस्तेमाल न किया गया हो, जो काम में न लाया गया हो, अव्यवहृत, 2. गलत तरीके से काम में लाया गया शब्द 3. विरल, असामान्य (सा० शा० में), (शब्द के रूप में किसी विशेष अर्थ या लिंग में प्रयुक्त चाहे वह कोशकारों से सम्मत ही क्यों न हो,—तथा मन्ये दैवतोऽस्य पिशाचो राक्षसोऽथवा काव्य० ७, यहाँ 'दैवत' शब्द "अमरकोश" द्वारा सम्मत होने पर भी कवियों के द्वारा पुंलिंग में प्रयुक्त नहीं किया जाता—अतः यह 'अप्रयुक्त' है)।

अप्रवृत्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. कार्य में न लगना, प्रगति न करना, किसी बात का न होना 2. आलस्य, क्रियाशून्यता, उत्तेजन या प्रोत्साहन का अभाव।

अप्रसङ्गः [न० त०] 1. आसक्ति का अभाव 2. संबंध का अभाव 3. अनुपयुक्त समय या अवसर,—अप्रसङ्गाभिधाने च श्रोतुः श्रद्धा न जायते।

अप्रसिद्ध (वि०) [न० त०] 1. अज्ञात, तुच्छ,—कु० ३।१९, 2. असाधारण, असामान्य।

अप्रस्ताविक (वि०) [स्त्री०—की०] [न० त०] विषय से संबंध न रखने वाला, असंगत (=अप्रास्ताविक दे०)।

अप्रस्तुत (वि०) [न० त०] 1. जो समय या विषय के उपयुक्त न हो, जो प्रसंगानुकूल न हो, असंगत 2. बेहूदा, मूर्खतापूर्ण 3. आकस्मिक, असंबद्ध। सम० —**प्रशंसा**—एक अलंकार जिसमें विषय से भिन्न अर्थात् अप्रस्तुत का वर्णन करने से प्रस्तुत अर्थात् विषय का संकेत हो

जाता है—अप्रस्तुतप्रशंसा सा या सैव प्रस्तुताश्रया—काव्य० १०, इसके ५ भेद हैं:—कार्ये निमित्ते सामान्ये विशेषे प्रस्तुते सति, तदन्यस्य वचस्तुल्ये तुल्यस्येति च पंचधा—अर्थात् जबकि प्रस्तुत विषय पर (क) कार्य के रूप में दृष्टिपात किया जाय—जिसकी सूचना कारण बतलाकर दी जाती है, (ख) जब कार्य को बतलाकर कारण पर दृष्टिपात किया जाय। (ग) जब कोई विशेष निदर्शन देकर सामान्य बात पर दृष्टि डाली जाय (घ) जब किसी सामान्य बात का कथन करके विशेष निदर्शन पर दृष्टिपात किया जाय, अथवा (ङ) जब कि समान बात का कथन करके समान बात पर दृष्टिपात किया जाय, उदा० के लिए का० १० और सा० द० ७०६।

अप्रहत (वि०) [न० त०] 1. जिसे चोट न लगी हो 2. परत की भूमि, अनजुती 2. नया या कोरा कपड़ा।

अप्राकरणिक (वि०) [स्त्री—**की**] [न० त०] 1. जो प्रकरण से संबंध न रखता हो,—अप्राकरणिकस्याभिधानेन प्राकरणिकस्याक्षेपोऽप्रस्तुत प्रशंसा—काव्य० १०।

अप्राकृत (वि०) [न० त०] 1. जो गंवारू न हो 2. जो मौलिक न हो 3. जो साधारण न हो, असाधारण 4. विशेष।

अप्राग्र्य (वि०) [न० त०] गौण, अधीन, घटिया।

अप्राप्त (वि०) [न० त०] 1. जो प्राप्त न किया गया हो,—अप्राप्तयोस्तु या राशिः सैव संयोग ईरितः—भाषा० 2. जो न पहुँचा हो या जो न आया हो, 3. नियमतः अनधिकृत, अननुगामी 4. न आया हुआ, न पहुँचा हुआ। सम० —**अवसर**, —**काल**(वि०) बुरे समय का, असामयिक, जो ऋतु के अनुकूल न हो,—°कालं वचनं बृहस्पतिरपि ब्रुवन्, लभते बुद्ध्यवज्ञानमपमानं च पुष्कलम्—पंच० १।६३,—**यौवन** (वि०) अवयस्क, नाबालिग़, —**व्यवहार**, —**वयस्** (वि०) (विधि में) अल्पवयस्क, सार्वजनिक कार्यों में अपने उत्तरदायित्व के भरोसे भाग लेने के लिए जिस की आयु न हो, अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का) —अप्राप्तव्यवहारोऽसौ यावत् षोडशवार्षिकः—दक्ष०।

अप्राप्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. न मिलना,—तदप्राप्तिमहादुःखविलीनाशेषपातका—काव्य० ४, 2. जो किसी नियम से सिद्ध या स्थापित न हुआ हो;—विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति—मीमां० 3. किसी बात का न होना, किसी घटना का घटित न होना।

अप्रामाणिक (वि०) [स्त्री० —**की**] [न० त०] 1. जो प्रामाणिक न हो, अयुक्तियुक्त,—इदं वचनमप्रामाणिकम्— 2. अविश्वसनीय, जिस पर भरोसा न किया जा सके।

अप्रिय (वि०) [न० त०] 1. नापसंद, अनभिमत, अरुचिकर,—अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः—रामा०, मनु० ४।१३८, 2. निष्ठुर, अमित्र, —**यः** शत्रु, दुश्मन,—**यम्** शत्रुतापूर्ण या अनिष्टकर कर्म,—पाणिग्राहस्य साध्वी स्त्री नाचरेत्किंचिदप्रियम्—मनु० ५।१५६,। सम० —**कर**, —**कारिन्** —**कारक**, (वि०) अनिष्टकर, अरुचिकर —**वद** (°यं°), —**वादिन्** (वि०) निष्ठुर और कठोर शब्द बोलनें वाला, —वन्ध्यार्थघ्न्यप्रियंवदा—या० १।७३, माता यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रियवादिनी—चाण० ४४।

अप्रीतिः (स्त्री०) [न० त०] 1. नापसंदगी, अरुचि 2. शत्रुता।

अप्रौढ़ (वि०) [न० त०] 1. जो ढीठ न हो 2. भीरु, नम्र, असाहसी 3. जो वयस्क न हो, —**ढा** 1. अविवाहित कन्या 2. वह कन्या जिसका विवाह तो हो गया हो, परन्तु अभी तक वयस्क न हुई हो।

अप्लुत (वि०) [न० त०] वह स्वर जो आवाज़ की दृष्टि से लंबा न किया गया हो।

अप्सरस् (स्त्री०) (—**राः**, **रा**) [अद्भ्यः सरन्ति उद्गच्छन्ति–अप्+सृ+असुन्] [तु० रामा० अप्सु निर्मथनादेव रसात्तस्माद्वरस्त्रियः, उत्पेतुर्मनुजश्रेष्ठ तस्मादप्सरसोऽभवन्]। आकाश में रहने वाली देवांगनाएँ जो गन्धर्वों की पत्नियाँ समझी जाती हैं, उन्हें जलक्रीड़ा बड़ी रुचिकर है, वह अपना रूप बदल सकती हैं तथा दिव्य प्रभाव से युक्त हैं, वह प्रायः इन्द्र की नर्तकियाँ हैं और 'स्वर्वेश्याः' कहलाती हैं। बाण ने इस प्रकार की परियों के १४ कुलों का वर्णन किया है—दे० का० १३६; यह शब्द बहुधा बहुवचन में (स्त्रियां बहुष्वप्सरसः) प्रयुक्त होता है, परन्तु एक वचन में प्रयोग तथा 'अप्सरा' रूप कई बार देखने में आता है—नियमविघ्नकारिणी मेनका नाम अप्सराः प्रेपिता—श० १, एकाप्सरः आदि०—रघु० ७।५३,। सम० —**तीर्थम्** अप्सराओं के नहाने के लिए पवित्र तालाब, यह संभवतः किसी स्थान का नाम है—दे० श० ६, —**पतिः** अप्सराओं का स्वामी इन्द्र की उपाधि।

अफल (वि०) [न० ब०] 1 निष्फल, फलरहित, बंजर (श० और आलं०) °ला ओषधयः, °लकार्यं आदि 2. अनुर्वरा, निरर्थक, व्यर्थ,—यथा षंढोऽफलः स्त्रीषु यथा गौर्गवि चाफला, यथा यज्ञेऽफलं दानं तथा विप्रो ऽनृचोऽफलः। मनु० २।१५८। पुरुषत्व से हीन, बधिया किया हुआ,—अफलोऽहं कृतस्तेन क्रोधात्सा च निराकृता रामा०। सम० - **आकांक्षिन्**, - **प्रेप्सु** (वि०) जो पारिश्रमिक पाने की इच्छा नहीं रखता, स्वार्थरहित, —अफलाकांक्षिभिर्यज्ञः क्रियते ब्रह्मवादिभिः—महा०।

अफेन (वि०) [न० ब०] बिना झाग का, झाग रहित —**नम्** अफ़ीम ।

अबद्ध-द्धक (वि०) [न० त०] 1. स्वच्छन्द, न बंधा हुआ, बेरोक 2. अर्थहीन, बेमतलब, बेहूदा, विरोधी— उदा० यावज्जीवमहं मौनी ब्रह्मचारी च मे पिता, माता तु मम वंध्यासीदपुत्रश्च पितामहः । (विरोधी)- जरद्गवः कंबलपादुकाभ्यां द्वारि स्थितो गायति मङ्गलानि—अमर० रायमुकुट । सम०—**मुख** (वि०) दुर्मुख, गाली से युक्त, बदज़बान ।

अबन्धु-बान्धव (वि०) [न० ब०] मित्रहीन, एकाकी ।

अबल (वि०) [न० ब] 1. दुर्बल, बलहीन, 2. अरक्षित,—**ला** स्त्री (अपेक्षाकृत बलहीन होने के कारण);—नूनं हि ते कविवरा विपरीतबोधा ये नित्यमाहुरबला इति कामिनीनाम्, याभिर्विलोलतरतारकदृष्टिपातैः शक्रादयोऽपि विजितास्त्वबलाः कथं ताः— भर्तृ० १।११, °**जनः** स्त्री,—**बलम्** निर्बलता, बल की कमी, दे० बलाबलम् भी ।

अबाध (वि०) [न० ब०] 1. अनियन्त्रित, बाधारहित, 2. पीड़ा से मुक्त,—**धः** [न० त०] 1. बाधाहीनता 2. निराकरण का अभाव ।

अबाल (वि०) [न० त०] 1. जो बालक न हो, जवान, 2. छोटा नहीं, पूर्ण (जैसा कि चन्द्रमा) ।

अबाह्य (वि०) [न० त०] 1. जो बाहरी न हो, भीतरी 2. (आलं०) परिचित, जानकार ।

अबिन्धनः [आपः इन्धनं यस्य—ब० स०] वडवाग्नि, (जो समुद्री पानी पर पलती है)—अबिन्धनं वह्निमसौ बिभर्त्ति रघु० १३।४ ।

अबुद्ध (वि०) [न० त०] मूर्ख, नासमझ—अपवादमात्रमबुद्धानाम् सां० सू० ।

अबुद्धिः (स्त्री०) [न० त०] 1. समझ की कमी, 2. अज्ञान, मूर्खता । सम०—**पूर्व**, —**पूर्वक** (वि०) अनभिप्रेत (—**र्वं**,-**र्वकम्**) (क्रि० वि०) अनजानपने में, अज्ञात रूप से ।

अबुध्-बुध (वि०) [न० त०] मूर्ख, मूढ, (पुं०) जड़, (स्त्री०—**अभुत्**) अज्ञान, बुद्धि का अभाव ।

अबोध (वि०) [न० ब०] अनजान, मूर्ख, मूढ, —**धः** [न० त०] 1. अज्ञान, जडता, समझ का अभाव— °धोपहताश्चान्ये—भर्तृ० ३।२, निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः—कि० १।६, 2. न जानना, जानकारी न होना । सम०—**गम्य** (वि०) जो समझ में न आ सके, अकल्पनीय ।

अब्ज (वि०) [अप्सु जायते—अप्+जन्+ड] जल में पैदा हुआ या जल से उत्पन्न,—**ब्जम्** 1. कमल २. एक अरब की संख्या (१०००००००००) । सम० —**कर्णिका** कमल का छत्ता,—**जः**,—**भवः**,—**भूः**, —**योनिः** ब्रह्मा के विशेषण,—**बांधव** कमलों का मित्र सूर्य,—**वाहनः** शिव की उपाधि ।

अब्जा [स्त्रियां टाप्] सीपी ।

अब्जिनी [अब्ज+इनि, स्त्रियां ङीप्] 1. कमलों का समूह 2. कमलों से पूर्ण स्थान 3. कमल का पौधा । सम०—**पतिः** सूर्य ।

अब्दः [अपो ददाति—दा+क] 1. बादल 2. वर्ष (इस अर्थ में नपुं० भी) 3. एक पर्वत का नाम । सम० —**अर्धम्** आधा वर्ष,—**वाहनः** शिव,—**शतम्** शताब्दी, —**सारः** एक प्रकार का कपूर ।

अब्धिः [आपः धीयन्ते अत्र—अप्+धा+कि] 1. समुद्र, जलाशय, (आलं० भी) दुःख°, कार्य°, ज्ञान° आदि किसी चीज का भंडार या संग्रह 2. ताल, झील, 3. (गण० में) सात की संख्या, कई बार चार की संख्या । सम०—**अग्निः** वाडवाग्नि,—**कफः**,—**फेनः** समुद्रझाग,—**जः** 1. चन्द्रमा, 2. शंख, (—**जा**) 1. वारुणी (समुद्र से उत्पन्न), 2. लक्ष्मीदेवी,—**द्वीपा** पृथ्वी,—**नगरी** कृष्ण की राजधानी द्वारका,—**नवनीतकः** चन्द्रमा,—**मंडूकी** मोती की सीप,—**शयनः** विष्णु,—**सारः** रत्न ।

अब्रह्मचर्य (वि०) [न० ब०] जो ब्रह्मचारी न हो,—**र्यम्**, **र्यकम्** [न० त०] लम्पटता, कामुकता, 2. मैथुन ।

अब्रह्मण्य (वि०) [न० त०—नञ्+ब्रह्मन्+यत्] 1. जो ब्राह्मण के लिए उपयुक्त न हो,—अब्राह्मण्यमवर्णं स्यात् ब्रह्मण्यं ब्रह्मणो हितम्—हला० 2. ब्राह्मणों के लिए शत्रुवत्,—**ण्यम्** अब्राह्मणोचित कार्य, या जो ब्राह्मण के लिये योग्य न हो । नाटकों में प्रायः यह शब्द 'दुहाई देने के अर्थ मे प्रयुक्त होता है— अर्थात् 'रक्षाकरो' 'सहायता करो' 'एक अत्यन्त भीषण और जघन्य कर्म हो गया है' —अर्थैत्य योगनन्दस्य व्याडिनाक्रन्दितं पुरा, अब्रह्मण्यमनुत्क्रान्तजीवो योगस्थितो द्विजः—बृह० क० ।

अब्रह्मन् (वि०) [न० ब०] ब्राह्मणों से वियुक्त या विरहित—नाब्रह्मक्षत्रमृध्नोति—मनु० ९।३२२ ।

अभक्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. भक्ति या आसक्ति का अभाव 2. अविश्वास, सन्दिग्धता ।

अभक्ष्य (वि०) [न० त०] 1. जो खाने योग्य न हो । 2. खाने के लिये निषिद्ध,—**क्ष्यम्** खाने का निषिद्ध पदार्थ ।

अभग (वि०) [न० ब०] अभागा, बदकिस्मत ।

अभद्र (वि०) [न० त०] अशुभ, कुत्सित, दुष्ट,—**द्रम्** 1. दुष्कर्म, पाप, दुष्टता 2. शोक ।

अभय (वि०) [न० ब०] निर्भय, सुरक्षित, भयमुक्त, —वैराग्यमेवाभयम्—भर्तृ० ३।३५,—**यम्** 1. भय का अभाव, भय से दूर रहना, 2 सुरक्षा, बचाव, भय या

डर से रक्षा,—मया तस्याभयं दत्तम्—पंच० १, । सम०—कृत् (वि०) 1. जो भयानक न हो, मृदु, 2. सुरक्षा देने वाला,–डिंडिमः 1. सुरक्षा या विश्वसनीयता का ढिंढोरा, 2. युद्धभेरी,—द,–दायिन्,–प्रद (वि) सुरक्षा का वचन देने वाला,—दक्षिणा,—दानम्,—प्रदानम् भय से मुक्ति का वचन या सुरक्षा की गारंटी —सर्वप्रदानेष्वभयप्रदानं (प्रधानम्)—पंच० १।२९०, —पत्रम् सुरक्षा का विश्वास दिलाने वाला लिखित पत्र, तु० आधुनिक 'सुरक्षा आचरण'—याचना रक्षा के लिए प्रार्थना,—वचनम्—वाच् (स्त्री) सुरक्षा का वचन या भय से मुक्त कर देने की प्रतिज्ञा ।

अभयंकर—कृत (वि०) [न० त०] 1. जो भयानक न हो 2. सुरक्षा करने वाला

अभवः [न० त०] 1. अविद्यमानता,—मत्त एव भवाभवौ महा०, 2. छुटकारा मोक्ष, —प्राप्तुमभवमभिवाञ्छति वा—कि० १२।३०, १८।२७. 3. समाप्ति या प्रलय —भवाय सर्वभूतानामभवाय च रक्षसाम्—रामा० ।

अभव्य (वि०) [न० त०] 1. जो न होना हो 2. अनुपयुक्त, अशुभ 3. दुर्भाग्यपूर्ण, अभागा,— उपनतमवधीरयन्त्यभव्याः—कि० १०।५१ ।

अभाग (वि०) [न० ब०] 1. जिसका संपत्ति में कोई हिस्सा न हो, 2. अविभक्त ।

अभावः [न० त०] 1. न होना, अनस्तित्व,—गतो भावोऽभावम्–मृच्छ० १ (अन्तर्धान हो गया) 2. अनुपस्थिति, कमी, असफलता,–सर्वेषामप्यभावे तु ब्राह्मणा रिक्थभागिनः—मनु० ९।१८८, अधिकतर समास में, —सर्वाभावे हरेन्नृपः—१८९, सब कुछ विफल हो जाने पर 3. सर्वनाश, मृत्यु, विनाश, सत्ताशून्यता,—नाभाव उपलब्धेः—शारी० 4. (दर्शन० में) लोप, असत्ता, अविद्यमानता या निषेध, कणाद के मतानुसार सातवां पदार्थ या वर्ग, (इसके दो भेद हैं—संसर्गाभाव और अन्योन्याभाव, पहले के फिर तीन उपभेद हैं प्रागभाव प्रध्वंसाभाव, और अत्यंताभाव) ।

अभावना [न०त०] 1. सत्यविवेचन या निर्णय का अभाव 2 धार्मिक ध्यान का अभाव ।

अभाषित (वि०) [न० त०] न कहा हुआ । सम० —पुंस्कः वह शब्द जो कभी पुं० या स्त्री० में प्रयुक्त न होता हो अर्थात् नित्यस्त्रीलिंग ।

अभि (अव्य०) [नञ्+भा+कि] (धातु और शब्दों से पूर्व लगाया जाने वाला उपसर्ग) अर्थ—(क) 'की ओर', 'की दिशा में', अभिगम् की ओर जाना, अभिया, °गमनम्, °यानम् आदि (ख) 'के लिए' 'के विरुद्ध' °लप्, °पत् आदि (ग) 'पर' 'ऊपर' °सिच् पर छिड़कना आदि (घ) 'ऊपर से' 'ऊपर' 'परे' °भू हावी हो जाना, °तन् (ङ) 'अधिकता से' 'बहुत' °कंप 2. (विशेषण तथा स्वतन्त्र संज्ञा शब्दों से पूर्व लगने वाला उपसर्ग)—अर्थ—(क) तीव्रता और प्राधान्य, °धर्मः—प्रधान कर्तव्य, °ताम्र—अत्यंत लाल °नव-बिलकुल नया (ख) 'की ओर' 'की दिशा में', अव्ययीभाव समास बनाना °चैद्यम, °मुखम्, °दूति आदि 3. (कर्म० के साथ संबं० अव्य० के रूप में) (क) 'की ओर' 'की दिशा में' 'के विरुद्ध' (कर्म के साथ या इसी अर्थ में समास के साथ) अभ्यग्नि या अग्निमभि शलभाः पतंति, वृक्षमभिद्योतते विद्युत्—सिद्धा० (ख) 'निकट' 'पहले' 'सामने' 'उपस्थिति में' (ग) पर ऊपर, संकेत करते हुए, के विषय में—साधु देवदत्तो मातरमभि—सिद्धा० (घ) पृथक् पृथक्, एक-एक करके (विभाग द्वारा)—वृक्षं वृक्षमभिषिंचति —सिद्धा० ।

अभि (भी) क (वि०) [अभि+कन्] कामी, लंपट, विलासी,—सोऽधिकारमभिकः कुलोचितं काश्चन स्वयमवर्तयत्समाः—रघु १९।४, अपि सिंचेः कृशानौ त्वं दर्पं मय्यपि योऽभिकः—भट्टि० ८।९२ ।

अभिकांक्षा [अभि+कांक्ष्+अङ+टाप्] कामना, इच्छा, लालसा ।

अभिकांक्षिन् (वि०) [अभि+कांक्ष्+णिनि] लालसा रखने वाला, कामना करने वाला ।

अभिकाम (वि०) [अभिवृद्धः कामो यस्य—अभि+कम्+अच् ब० स०] स्नेही, प्रेमी, इच्छुक, कामनायुक्त, कामुक (कर्म० में या समास में)— याचे त्वामभिकामाहम्—महा०,—मः (प्रा० स०) 1. स्नेह, प्रेम 2. कामना, इच्छा ।

अभिक्रमः [अभि+क्रम्+घञ् अवृद्धिः] 1. आरम्भ, प्रयत्न, व्यवसाय,—नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते—भग० २।४, 2. निश्चित आक्रमण या धावा, अभियान, हमला 3. आरोहण, सवार होना ।

अभिक्रमणम्-क्रांतिः (स्त्री०) [अभि+क्रम्+ल्युट्, क्तिन् वा] उपागमन, आक्रमण करना=दे०ऊ०अभिक्रम ।

अभिक्रोशः [अभि+क्रुश्+घञ्] 1. पुकारना, चिल्लाना 2. अपशब्द कहना, निंदा करना ।

अभिक्रोशकः [अभि+क्रुश्+ण्वुल] पुकारने वाला, गाली देने वाला, कलंक लगाने वाला ।

अभिख्या [अभि+ख्या+अङ+टाप्] 1. चमक-दमक, शोभा कांति,—काप्यभिख्या तयोरासीद् व्रजतोः शुद्धवेषयोः रघु० १।४६, सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्- मेघ०, ८० कु० १।४३, ७।१८, 2. कहना, घोषणा करना, 3. पुकारना, संबोधित करना 4. नाम, अभिधान 5. शब्द, पर्याय 6. प्रसिद्धि, यश, कुख्याति, माहात्म्य ।

अभिख्यानम् [अभि+ख्या+ल्युट्] ख्याति, यश ।

अभिगमः—गमनम् [अभिगम्+अप्, ल्युट् वा] 1. (क) उपागमन, पास जाना या आना, दर्शनार्थ गमन, पहुँचना,—तवार्हतो नाभिगमेन तृप्तम्—रघु० ५।११, १७।७२, ज्येष्ठाभिगमनात्पूर्वं तेनाप्यनभिनन्दिता—१२।३५, 2. संभोग (स्त्री या पुरुष के साथ)—परदाराभिगमनम्—का० १४७, प्रसह्य दास्यभिगमे—या० २।२९१।

अभिगम्य (सं० कृ०) [अभिगम्+य] 1. उपागम्य, दर्शनीय अन्विष्य, कु० ६।५६, 2. प्राप्य, आमन्त्रक,—भीमकान्तैर्नृपगुणैः·····अधृष्यश्चाभिगम्यश्च—रघु० १।१६,।

अभिगर्जनम्, **अभिगर्जितम्** [अभिगर्ज्+ल्युट्, क्त वा] जंगली तथा भीषण दहाड़, चीत्कार।

अभिगामिन् (वि०) [अभि+गम्+णिनि] निकट जाने वाला, संभोग करने वाला, ।

अभिगुप्तिः (स्त्री०) [अभि+गुप्+क्तिन्] संरक्षण, बचाव।

अभिगोप्तृ (पुं०) [अभि+गुप्+तृच्] बचाने वाला, संरक्षक।

अभिग्रहः [अभि+ग्रह्+अच्] 1. छीन लेना, ठगना, लूटना 2. धावा, हमला 3. ललकार 4. शिकायत 5. अधिकार, प्रभाव।

अभिग्रहणम् [अभि+ग्रह्+ल्युट्] लूटना, छीन लेना।

अभिघर्षणम् [अभि+घृष्+ल्युट्] 1. रगड़ना, झगड़ना, 2. बुरी भावना से अधिकार करना।

अभिघातः [अभि+हन्+घञ्] 1. आघात करना, मारना चोट पहुँचाना, प्रहार,—तटाभिघातादिव लग्नपङ्के—कु० ७।४९, 2. विध्वंस, पूर्ण नाश, समूलोच्छेदन—दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदभिघातके हेतौ—सां० का० १, —**तम्** कठोर उच्चारण (सन्धि नियमों की उपेक्षा के कारण)।

अभिघातक (वि०) [स्त्री० —तिका] (मारकर) पीछे हटाने वाला, दूर कर देने वाला।

अभिघातिन् (पुं०) [अभि+हन्+णिनि] शत्रु।

अभिघारः [अभि+घृ+णिच्+घञ्] 1. घी 2. यज्ञ में घी की आहुति,—प्रणीतपृषदाज्याभिघारघोरस्तनूनपात्—महावी० ३।

अभिघारणम् [अभि+घृ+णिच्+ल्युट्] घी छिड़कना।

अभिघ्राणम् [अभि+घ्रा+ल्युट्] सिर सूंघना (स्नेहसूचक चिह्न)।

अभिचरः [अभि+चर्+अच्] अनुचर, सेवक।

अभिचरणम् [अभि+चर+ल्युट्] 1. झाड़ना-फूंकना, जादू टोना, बुरे कामों के लिए मंत्र पढ़ कर जादू करना, इन्द्रजाल 2. मारना।

अभिचारः [अभि+चर्+घञ्] 1. (मंत्रादि द्वारा) झाड़ फुंक करना, मंत्रमुग्ध करना, जादू के मंत्रों का बुरे कामों के लिए प्रयोग करना, जादू, करना 2. हत्या करना। सम०—**ज्वरः** जादू के मंत्रों द्वारा किया गया बुखार,—**मंत्रः** जादू का गुर, जादू करने के लिए मंत्र-फूंकना,—शि० ७।५८,—**यज्ञः**,—**होमः** जादू टोने के लिए किया जाने वाला यज्ञ, होम।

अभिचारक, **अभिचारिन्** (वि०) (स्त्रियाम्—**रिका**,—**रिणी**) [अभि+चर्+ण्वुल्, णिनि वा] अभिचार करने वाला, जादू टोना करने वाला,—**कः**,—**री** ऐन्द्रजालिक, जादूगर।

अभिजनः [अभि+जन्+घञ् अवृद्धिः] 1. (क) कुटुम्ब, वंश, अन्वय (ख) जन्म, उत्पत्ति, कुल 2. उत्तम कुल में जन्म, उत्तम कुटुम्ब में उत्पत्ति; — स्तुत्यं तन्महात्म्यं यदभिजनतो यच्च गुणतः—मा० २।१३, शीलं शैलतटात्पतत्वभिजनः संदह्यतां वह्निना—भर्तृ० २, ३९, 3. जन्मभूमि, मातृभूमि, बापदादाओं की जन्मभूमि (विप० निवास), यत्र पूर्वैरुषितं सोऽभिजनः—सिद्धा० 4. ख्याति, प्रतिष्ठा 5. घर का मुखिया या कुलभूषण (श्रेष्ठव्यक्ति), 6. अनुचर, परिजन।

अभिजनवत् (वि०) [अभिजन+मतुप्] उच्च कुल का, उत्तम वंश में उत्पन्न,—°वतोभर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणी पदे—श० ४।१८।

अभिजयः [अभि+जि+अच्] जीत, पूर्ण विजय।

अभिजात (भू० क० कृ०) [अभि+जन्+क्त] 1. (क) उत्पन्न, भग० १६।३।५, (ख) सर्वथा विकसित (ग) योग्य 2. जन्मा हुआ, पैदा हुआ 3. कुलीन, उच्चकुल में उत्पन्न, उच्च वंश में जन्म लेने वाला,—जात्यस्तेनाभिजातेन शूरः शौर्यवता कुशः—रघु० १७।४, शिष्ट, नम्र—अभिजातं खल्वस्य वचनम्—विक्रम० १, 4. योग्य, उचित उपयुक्त 5. मधुर, रुचिकर,—प्रजल्पितायामभिजातवाचि—कु० १।४५, 6. मनोहर, सुन्दर 7. विद्वान्, बुद्धिमान्, विवेकशील,—संकीर्णे नाभिजातेषु नाप्रबुद्धेषु संस्कृतम् (वदेत्)।

अभिजातिः (स्त्री०) [अभि+जन्+क्तिन्] उत्तम कुल में जन्म।

अभिजिघ्रणम् [अभि+घ्रा+ल्युट् जिघ्रादेशः] नाक से सिर का स्पर्श करना (स्नेहसूचक चिह्न)।

अभिजित् (पुं) [अभि+जि+क्विप्] 1. विष्णु 2. एक नक्षत्र का नाम।

अभिज्ञ (वि०) [अभि+ज्ञा+क] 1. जानने वाला, जानकार, अनुभवशील, कुशल (संब० या अधि० के साथ अथवा समास में)—यद्वा कौशलमिन्द्रसूनुदमने तत्राप्यभिज्ञो जनः—उत्तर० ५।३४, अभिज्ञाश्छेदपातानां क्रियन्ते नन्दनद्रुमाः—कु० २।४१, मेघ० १६, रघु० ७।६४, अनभिज्ञो भवान्सेवाधर्मस्य—१, 2. कुशल, दक्ष, चतुर,—**ज्ञा** 1. पहचान 2. याद, स्मृति चिह्न।

अभिज्ञानम् [अभि+ज्ञा+ल्युट्] 1. पहचान,—तदभिज्ञान-हेतोर्हि दत्तं तेन महात्मना—रामा० 2. स्मरण, प्रत्यास्मरण 3. (क) पहचान का चिह्न (पुरुष या वस्तु),—वत्स योगिन्यस्मि मालत्यभिज्ञानं च धारयामि—मा० ९, भट्टि० ८।११८, १२४ इसो प्रकार °शाकुन्तलं 4. चन्द्रमंडल में काला चिह्न। सम०—आभरणम् पहचान का भूषण, अंगूठी श० ४।

अभितः (अव्य०) [अभि+तसिल्] (क्रि० वि० के रूप में अथवा कर्म० के साथ संव० अव्य० के रूप में प्रयुक्त) 1. निकट, की ओर, सब ओर से,—अभितस्तं पृथासूनुस्नेहेन परितस्तरे—कि० ११।८, 2. (क) निकट मिला हुआ, समीप में,—ततो राजाब्रवीद्वाक्यं सुमंत्रमभितः स्थितम्—रामा० (ख) के सामने, की उपस्थिति में,—तन्वन्तमिद्धमभितो गुरुमंशुजालम्—कि० २।५९, 3. सम्मुख, मुंह के आगे, सामने कि० ६।११, ५, १४, 4. दोनों ओर,—चूडाचुंबितकंकपत्रमभितस्तूणीद्वयं पृष्ठतः—उत्तर० ४।२०, भट्टि० ९।१३७, 5. पहले और पीछे 6. सब ओर से, चारों ओर से, (कर्म० या संव० के साथ)—परिजनो यथाव्यापारं राजानमभितः स्थितः—मालवि० १।७, 7. पूर्ण रूप से, पूरी तरह से, सर्वत्र 8. शीघ्र ही।

अभितापः [अभि+तप्+घञ्] अत्यंत गर्मी—चाहे शरीर की हो या मन की, भावावेश, कष्ट, अधिक दुःख या पीड़ा—शि० ९।१, कि० ९।४, बलवान्पुनर्मे मनसोऽभितापः—विक्रम० ३।

अभिताम्र (वि०) [प्रा० स०] बहुत लाल, लालसुर्ख—रघु० १५।४९।

अभिदक्षिणम् (अव्य०) [अव्य० स०] दक्षिण की ओर (=तु० प्रदक्षिणम्)।

अभिद्रवः—**द्रवणम्** [अभिद्रु+अप्+ल्युट् वा] आक्रमण, हमला।

अभिद्रोहः [अभि+द्रुह्+घञ्] 1. चोट पहुंचाना, षड्यंत्र रचना, हानि, क्रूरता 2. गाली, निन्दा।

अभिधर्षणम् [अभि+धृष्+ल्युट्] 1. भूत प्रेतादि से आविष्ट होना 2. अत्याचार।

अभिधा [अभि+धा+अङ+टाप्] 1. नाम, संज्ञा (प्रायः समास में)—कुसुम वसन्ताद्यभिधः—सा० द० २ 2. शब्द, ध्वनि 3. शाब्दिक शक्ति या शब्दार्थ, संकेतन, शब्द की तीन शक्तियों में से एक,—वाच्यार्थोऽभिधया बोध्यः—सा० द० २ (अभिधा—शब्द के संकेतित अर्थ को बतलाती है) स मुख्योर्थस्तत्र मुख्यो यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते—काव्य० २। सम०—ध्वंसिन् (जि०) अपने नाम को नष्ट करने वाला—मूल (वि०) शब्द के संकेतित या मुख्यार्थ पर आधारित।

अभिधानम् [अभि+धा+ल्युट्] 1. कहना, बोलना, नाम रखना, संकेत करना,—एतावतामर्थानामिदमभिधानम् निरु० 2. प्रकथन, वचन दे० पा० २।३।२ सिद्धा० 3. नाम, संज्ञा, पद,—अभिधानं तु पश्चात्तस्याहमश्रौषम्—का० ३२, तवाभिधानात् व्यथते नताननः कि० १। ऋणाभिधानात् २४, (समस्तपद के अन्त में) पुकारा गया, नाम लिया गया—ऋणाभिधानात् बंधनात्—रघु० ३।२०, 4. भाषण, व्याख्यान 5. कोश, शब्दावली, लुग़त (अंतिम दो अर्थों में पुं० में भी) 1. सम०—कोशः,—माला शब्दकोश।

अभिधायक (स्त्री०—यिका, —यिनी) } (वि०)[अभि+धा
अभिधायिन् } +ण्वुल्, णिनि वा]
1. नाम रखने वाला, वाचक,—कर्पूः कुल्याभिधायिनो—अमर०,—संकेत करता है, अर्थ बतलाता है, भाव रखता है, 2. कहने वाला, बोलने वाला, बतलानेवाला,—लक्ष्मीमित्यभिधायिनि प्रियतमे—अमरु० २३, वाच्याभिधायी पुरुषः पृष्ठमांसाद उच्यते—त्रिका०।

अभिधावनम् [अभि+धाव्+ल्युट्] आक्रमण, पीछा करना।

अभिधेय (सं० कृ०) [अभि+धा+यत्] 1. नाम दिये जाने योग्य, कथनीय, वाच्य 2. नाम के योग्य (तर्क० में) अभिधेयाः पदार्थाः,—यम् 1. सार्थकता, अर्थ, भाव, तात्पर्य—कि० १४।५, 2. भावाशय 3. विषय,—इहाभिधेयं सप्रयोजनम्—काव्य० १, इति प्रयोजनाभिधेयसंबंधाः—मुग्ध० 4. मुख्यार्थ (=अभिधा)—अभिधेयाविनाभूतप्रतीतिर्लक्षणोच्यते—काव्य० २।

अभिध्या [अभि+ध्यै+अङ+टाप्] 1. दूसरे की संपत्ति के लिए ललचाना, 2. प्रबल कामना, चाह, सामान्य इच्छा,—अभिध्योपदेशात्—ब्रह्म० 3. ग्रहण करने की इच्छा।

अभिध्यानम् [अभि+ध्यै+ल्युट्] 1. चाहना, प्रबल इच्छा करना, ललचाना, कामना करना 2. मनन करना, प्रचिंतन।

अभिनन्दः [अभि+नन्द्+घञ्] 1. प्रहर्ष, प्रफुल्लता, प्रसन्नता 2. प्रशंसा, सराहना, अभिनन्दन, बधाई देना, 3. कामना, इच्छा, 4. प्रोत्साहन, कार्य में प्रेरणा।

अभिनन्दनम् [अभि+नन्द्+ल्युट्] 1. प्रहर्षण, अभिवादन, स्वागत करना, 2. प्रशंसा करना, अनुमोदन करना 3. कामना, इच्छा।

अभिनन्दनीय } (सं० कृ०) [अभि+नन्द्+अनीय, ण्यत्
अभिनन्द्य } वा] प्रहृष्ट होना, प्रशंसित होना, सराहा जाना,—काममेतदभिनन्दनीयम्—श० ५, रघु० ५।३१।

अभिनम्र (वि०)[प्रा० स०] झुका हुआ, विनीत,—स्तनाभिरामस्तवकाभिनम्राम् रघु० १३।३२।

अभिनयः [अभि+नी+अच्] 1 नाटक खेलना, अंगविक्षेप, नाटकीय प्रदर्शन (किसी मनोभाव या आवेश को

अभिमरः [अभि+मृ+अच्] 1. हत्या, नाश, वध करना 2. युद्ध, संघर्ष 3. अपने ही पक्ष द्वारा विश्वासघात, अपने ही पक्ष वालों से भय 4. बंधन, कैद, बेड़ी या हथकड़ी।

अभिमर्दः [अभि+मृद्+घञ्] 1. मलना, रगड़, 2. कुचलना, लूटखसोट, (शत्रु द्वारा) देश का उच्छेद, उजाड़ना 3. युद्ध, संग्राम 4. मदिरा, शराब।

अभिमर्दन (वि०) [अभि+मृद्+ल्युट्] कुचलने वाला, दमन करने वाला,—**नम्** कुचलना, दमन करना।

अभिमर्शः-र्शनम्, **अभिमर्षः-र्षणम्** [अभि+मृश् (ष्)+घञ्, ल्युट् वा] 1. स्पर्श, संपर्क 2. अभ्याघात, हिंसा, बलात्कार, संभोग,—कृताभिमर्शामनुमन्यमानः—श० ५।२०, इन्द्रियासक्ति के कारण किया गया आलिंगन अथवा सतीत्व भ्रष्ट करना या बलात्कार,—पराभिमर्शो न तवास्ति कु० ५।४३ (मल्लि०=परधर्षणम्) मनु० ८।३५२, याज्ञ० २।२८४।

अभिमर्शक-र्षक, **अभिमर्शिन्-र्षिन्** (वि०) [अभिमृश्(ष्)+ण्वुल्, णिनि वा] 1. स्पर्श करने वाला, संपर्क में आने वाला, 2. बलात्कार करने वाला,—त्वत्कलत्राभिमर्षी वैरास्पदं धनमित्रः—दश० ६३।

अभिमादः [अभि+मद+घञ्] नशा, मादकता।

अभिमानः [अभि+मन्+घञ्] 1. गौरव, स्वाभिमान, सम्माननीय या योग्य भावना,—सदाभिमानैकधनाः हि मानिनः—शि० १।६७, 2. अहंकार, घमंड, दर्प, अहंमन्यता, °**वत्** घमंडी, गर्वीला 3. सभी पदार्थों को आत्मा से संकेतित करना, अहंकार की क्रिया, व्यक्तित्व, 4. कल्पना, अवधारणा, अटकल, विश्वास, सम्मति 5. स्नेह, प्रेम 6. इच्छा, कामना 7. चोट पहुँचाना, हत्या करना, चोट पहुँचाने का प्रयत्न करना। सम० —**शालिन्** (वि०) घमंडी—**शून्य** (वि०) गर्व या घमंड से रहित, विनीत।

अभिमानिन् (वि०) [अभि+मन्+णिनि] 1. आत्माभिमानी 2. अहंमन्य, घमंडी, गर्वीला, दम्भी 3. सभी पदार्थों को आत्मा से संकेतित मानने वाला।

अभिमुख (वि०)[स्त्री०—**खी**] 1. जो किसी की ओर मुख किये हुए हो, की ओर, किसी की ओर मुड़ा हुआ, सामने, —अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितम् श० २।११, 2. पास आने वाला, समीप जाने वाला, निकट पहुँचने वाला, —विक्रम० २।९ 3. विचार करते हुए, प्रवृत्त, उद्यत (कुछ करने के लिए)—अस्ताभिमुखे सूर्ये—मुद्रा० २।१९, प्रसादाभिमुखो वेधाः प्रत्युवाच दिवौकसः कु० २।१६, ५।६०; उत्तर० ७।४, मा० १०।१३, 4. अनुकूल, अनुकूलतापूर्वक सम्पन्न 5. मुंह ऊपर को उठाये हुए,—**खं-खे** (अव्य०) की ओर, दिशा में सामना करते हुए, के सामने, की उपस्थिति में, के निकट (कर्म० या संब० के साथ अथवा समास में) —आसीताभिमुखं गुरोः—मनु० २।१९३, तिष्ठन्मुनेरभिमुखं स विकीर्णधाम्नः—कि० ३।५९, नेपथ्याभिमुखमवलोक्य,—श० १, कर्णं ददात्यभिमुखं मयि भाषमाणे—श० १।३१।

अभियाचनम्–याच्ञा [अभि+याच्+युच्, नङ् वा, स्त्रियां टाप् च] माँगना, प्रार्थना, अनुरोध, नम्र निवेदन।

अभियातिः, **यातिन्** —(पुं०—**ती**) शत्रुता की भावना के साथ पहुँचने वाला- शत्रु, दुश्मन, रघु० १२।४३।

अभियातृ—**यायिन्** (वि०) [अभि+या+तृच्, णिनि वा] निकट जानेवाला, आक्रमण करने वाला।

अभियानम् [अभि+या+ल्युट्] 1. उपागमन 2. चढ़ाई करना, धावा बोलना, आक्रमण करना,—रणाभियानेन—दश० १०, युद्ध के लिए प्रस्थान।

अभियुक्त (भू० क० कृ०) (वि०) [अभि+युज्+क्त] 1. (क) व्यस्त, लगा हुआ, लीन, जुटा हुआ (ख) परिश्रमी, धैर्यवान्, दृढ़संकल्प वाला, तुला हुआ, दत्तचित्त, सावधान,—इदं विश्वं पाल्यं विधिवदभियुक्तेन मनसा —उत्तर० ३।३०, 2. सुविज्ञ, दक्ष,—शास्त्रार्थेष्वभियुक्तानां पुरुषाणां—कुमारिल 3. (अतः) विद्वान्, सुप्रतिष्ठित, सुयोग्य न्यायाधीश, पण्डित (पुं०—इसी अर्थ में) न हि शक्यते दैवमन्यथाकर्तुमभियुक्तेनापि —का० ६२, 4. आक्रान्त, जिस पर हमला कर दिया गया हो,—अभियुक्तं त्वयैनं ते गन्तारस्त्वामतः परे— शि० २।१०१, मुद्रा० ३।२५, 5. जिस पर अभियोग लगाया गया हो, जिस पर दोषों का आरोपण किया गया हो, अभ्यारोपित, मृच्छ० ९।९, अभियोजित, प्रतिवादी,—अभियुक्तोऽभियोगस्य यदि कुर्यादपह्लवम्- नारद० 6. नियुक्त।

अभियोक्तृ (वि०) [अभि+युज्+तृच्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (पुं०—**क्ता**) 1. शत्रु, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2. (विधि में) आरोपक, वादी, मुद्दई, अभियोजक, मनु० ८।५२, ५८, याज्ञ० २।९५, 3. मिथ्याभियोगी।

अभियोगः [अभि+युज्+घञ्] 1. लगाव, लगन, मेलजोल,—गुरुचर्यातपस्तन्त्रमन्त्रयोगाभियोगजाम्—मा० ९। ५१, चौर० ११, 2. घना लगाव, धीरज, प्रबल, प्रयास,—संतः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः—भर्तृ० २।७३, 2. (क) किसी चीज को सीखने की लगन, —कल्यां कलायामभियोगो भवत्योः—मालवि० ५, (ख) सीखना, विद्वत्ता,—अभियोगश्च शब्दादेरशिष्टानाम् अभियोगश्चेतरेषाम्—शबरस्वामी 4. आक्रमण हमला, चढ़ाई (किसी देश या नगर पर),—क्षुभितं वनगोचराभियोगात्—कि० १३।१०, २।४६, 5. (विधि में) आरोप, दोषारोपण, पूर्वपक्ष—अभियोगमनिस्तीर्य नैनं प्रत्यभियोजयेत्—याज्ञ० २।९।

अभियोगिन् (वि०) [अभि+युज्+णिनि] मनोयोग पूर्वक लगा हुआ, तुला हुआ, 2. आक्रमणकारी, हमलावर 3. दोषारोपण करने वाला (पुं०) वादी, मुद्दई ।

अभिरक्षणम्, **अभिरक्षा** } [अभि+रक्ष्+ल्युट्, अङ वा] सब ओर से बचाव, पूरा २ बचाव,—प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया कि० १।१८ ।

अभिरतिः (स्त्री०) [अभि+रम्+क्तिन्] आनन्द, हर्ष, संतोष, आसक्ति, लगन,—न मृगयाभिरतिर्न दुरोदरम् (तमपाहरत्) रघु० ९।७, कि० ६।४४ ।

अभिराम (वि०) [अभि०+रम्+घञ्] 1. आनन्दकर, हर्षपूर्ण, मधुर, रुचिकर—मनोभिरामाः (केकाः) रघु० १।३०, २।७२, 2. सुन्दर, सुहावना, मनोहर, मनोरम,—स्यादस्थानोपगतयमुनासङ्गमेवाभिरामा—मेघ०५३, राम इत्यभिरामेण वपुषा तस्य चोदितः—रघु० १०।६७,—मम् (अव्य०) सुन्दर रीति से ग्रीवा-भंङ्गाभिरामं—श० १।७ ।

अभिरुचिः (स्त्री) [अभि+रुच्+इन्] 1. इच्छा, शौक, पसंदगी, रस, हर्ष, आनन्द,—यशसि चाभिरुचिः—भर्तृ० २।६३, परस्पराभिरुचिनिष्पन्नो विवाहः—का० २६७, 2. यश की इच्छा, महत्त्वाकांक्षा ।

अभिरुचितः [अभि+रुच्+क्त] प्रेमी,—, शि० १०।६८ ।

अभिरुतम् [अभि+रु+क्त] ध्वनि, चिल्लाहट, कोलाहल ।

अभिरूप (वि०) [अभि+रूप्+अच्] 1. अनुरूप, समनुरूप, उपयुक्त—अभिरूपमस्या वयसो वल्कलम्—श० १. पाठ०,2. सुखद, हर्षपूर्ण,—उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च (कन्यां दद्यात्) मनु० ९।८८, 3. प्रिय, प्यारा, इष्ट, कृपापात्र 4. विद्वान्, बुद्धिमान्, समझदार,—अभिरूपभूयिष्ठा परिषदियम्—श० १,—पः 1 चन्द्रमा, 2 शिव 3 विष्णु 4 कामदेव । सम०—पतिः 'रूचि के अनुकूल सुन्दर पति प्राप्त करना', नाम का एक संस्कार जो परलोक में अच्छा पति पाने की इच्छा से किया जाता है—मृच्छ० १ ।

अभिलङ्घनम् [अभि+लंघ्+ल्युट्] कूद कर पार करना, छलांग लगाना ।

अभिलषणम् [अभि+लष्+ल्युट्] इच्छा करना, चाहना ।

अभिलषित (भू० क० कृ०) [अभि+लष्+क्त] इच्छित चाहा हुआ, उत्कंठित,—तम् इच्छा, कामना, संकल्प ।

अभिलापः [अभि+लप्+घञ्] 1. कथन, शब्द, भाषण 2. घोषणा, वर्णन, विशेष विवरण, 3. किसी धार्मिक कर्तव्य या किसी उद्देश्य की प्रतिज्ञा की उद्घोषणा ।

अभिलावः [अभि+लू+घञ्] काटना, कटाई, लवन ।

अभिलाषः [कई बार °सः] [अभि+लष्+घञ्] इच्छा, कामना, उत्कंठा, अनुराग, प्रियतम से मिलने की उत्कंठा, प्रेम (प्रायः अधि० के साथ)—अतोऽभिलाषे प्रथमं तथाविधे मनो बबंध—रघु० ३।४, न खलु सत्यमेव शकुन्तलायां ममाभिलाषः—श० २, पंच० ५।६७ ।

अभिलाषक,—लाषि (षि)न्, **—लाषुक** } (वि०) [अभि+लष+ण्वुल्, णिनि, उकञ् वा] कामना या इच्छा करने वाला, (कर्म० अधि० के साथ या समास में) चाहने वाला, लालायित, लालची,—यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः—श० १।२२, जयमत्र-भवान् नूनमरातिष्वभिलाषुकः—कि० ११।१८, शि० १५।५९ ।

अभिलिखित (वि०) [अभि+लिख्+क्त] लिखा हुआ, खुदा हुआ—तम्, अभिलेखनम्, 1. लिखना, खोदना 2. लेख ।

अभिलीन (वि०) [अभि+ली+क्त] 1. चिपटा हुआ, सटा हुआ, आसक्त,—रघु० ३।८ 2. आलिंगन किये हुए, ढकते हुए—मेघ० ३६ ।

अभिलुलित (वि०)[अभि+लुड्+क्त डस्य लः] 1. क्षुब्ध, बाधायुक्त 2. क्रीडा युक्त, अस्थिर ।

अभिलूता (प्रा० स०) एक प्रकार की लकड़ी ।

अभिवदनम्[अभि+वद्+ल्युट्] 1. संबोधन 2. नमस्क्रिया ।

अभिवन्दनम् [अभि+वन्द्+ल्युट्] सादर नमस्कार, पाद° श्रद्धा और भक्ति के साथ दूसरों के चरण स्पर्श करना, नीचे दे० 'अभिवादन' ।

अभिवर्षणम् [अभि+वृष्+ल्युट्] बारिस होना, बरसना, पानी पड़ना ।

अभिवादः—**वादनम्** [अभि+वद्+घञ्, ल्युट् वा] सस-म्मान नमस्कार, छोटों के द्वारा बड़ों को प्रणाम, शिष्य के द्वारा गुरु को प्रणाम इसमें तीन बातें निहित हैं—(१) प्रत्युत्थान—अपने स्थान से उठना (२) पादोप-संग्रहः—पैर पकड़ना या छूना (३) अभिवाद—'प्रणाम' शब्द मुंह से कहना—जिसमें अभिवाद्य व्यक्ति की उपाधि तथा अभिवादक का नाम—वर्ण्य है ।

अभिवादक (वि०) [स्त्री—दिका] 1. नमस्कार करने वाला, 2. नम्र, सम्मान पूर्ण, विनीत ।

अभिविधि [अभि+वि+धा+कि] 1. पूरा सम्मिलन या संबोध, 'आ' का एक अर्थ—आङ् मर्यादाभिविध्योः—पा० २।१।१३ आरंभिक सीमा ('अन्तिम सीमा' का विरोधी), इसका अनुवाद 'से' 'के साथ' 'मिलाते हुए' शब्दों से किया जाता है उदा०—आबालम्=आबालेभ्यः हरिभक्तिः, 2. पूर्ण प्रसार ।

अभिविश्रुत (वि०) [अभि+वि+श्रु+क्त] सुविख्यात, सुप्रसिद्ध ।

अभिवृद्धिः (स्त्री०) [अभि+वृध्+क्तिन्] बढ़ना, विकास, योग, सफलता, सम्पन्नता ।

अभिव्यक्तः (भू० क० कृ०) [अभि०+वि+अंज्+क्त] 1. प्रकट किया हुआ,प्रकाशित, उद्घोषित 2. विविक्त, स्पष्ट, साफ़ ।

अभिव्यक्तिः (स्त्री०)[अभि+वि+अंज्+क्तिन्](कारण का कार्य रूप में) प्रकट होना, वैशिष्ट्य, दिखावा, प्रदर्शन,—सर्वांगसौष्ठवाभिव्यक्तये—मालवि० १, दूतीसंप्रेषणैर्नार्या भावाभिव्यक्तिरिष्यते—सा० द० ६।

अभिव्यञ्जनम् [अभि+वि+अञ्ज्+ल्युट्] प्रकट करना, प्रकाशन करना, ।

अभिव्यापक,—व्यापिन् (वि०) [अभि+वि०+आप्+ण्वुल्, णिनि वा] सम्मिलित करने वाला, समझने वाला, प्रसार करने वाला ।

अभिव्याप्तिः (स्त्री०)[अभि+वि+आप्+क्तिन्] सम्मिलित करना, संबोध, सर्वत्र फैलाव ।

अभिव्याहरणम्,—व्याहारः [अभि+वि+आ+हृ+ल्युट्, घञ् वा] 1. बोलना, उच्चारण करना, कसना 2. प्रांजल तथा सार्थक शब्द, संज्ञा, नाम ।

अभिशंसक,—शंसिन् (वि०) [अभि+शंस्+ण्वुल्, णिनि वा] दोषारोपक, कलंक लगाने वाला, अपमान करने वाला ।

अभिशंसनम् [अभि+शंस्+ल्युट्] दोषारोपण, दोष लगाना (चाहे सत्य हो या मिथ्या) मिथ्या—याज्ञ० २८९, गाली, अपमान, निरादर,—पंचाशद् ब्राह्मणो दण्ड्यः क्षत्रियस्याभिशंसने—मनु० ८।२६८।

अभिशङ्का [अभि+शङ्क्+अ+टाप्] संदेह, आशंका, भय, चिन्ता ।

अभिशपनम्,—शापः [अभि+शप्+ल्युट्, घञ् वा] 1. शाप, किसी का बुरा मनाना 2. गंभीर आरोप, दोषारोपण–याज्ञ० २।९९, अभिशापः पातकाभियोगः–मि० 3. लांछन, मिथ्या आरोप । सम०—ज्वरः शाप के उच्चारण से उत्पन्न होने वाला बुखार ।

अभिशब्दित (वि०) [अभि+शब्द्+क्त] उद्घोषित, प्रकाशित, कथित, नाम लिया हुआ ।

अभिशस्त(भू० क० कृ०)[अभि+शंस्+क्त]1. कलंकित, अभिशप्त, अपमानित—मनु० ८।११६, ३७३ याज्ञ० १।१६१, 2. चोट पहुंचाया हुआ, क्षतिग्रस्त, आक्रान्त ('अभिशस्' से बना समझा गया),–देवि ! केनाभिशस्तासि केन वासि विमानिता—रामा० 3. अभिशप्त 4. दुष्ट, पापी ।

अभिशस्तक (वि०)[अभिशस्त+कन्] मिथ्या दोषारोपित, बदनाम ।

अभिशस्तिः (स्त्री०) [अभि+शंस्+क्तिन्] 1. अभिशाप, 2. दुर्भाग्य, अनिष्ट, संकट 3. निंदा, लांछन, बदनामी, अपमान 4. पूछना, मांगना ।

अभिशापनम् [अभि+शप्+णिच्+ल्युट्] शाप देना, कोसना ।

अभिशीत (वि०) [अभि+श्यै+क्त] शीतल, ठंडा जैसा कि वायु ।

अभिशोचनम् [अभि+शुच्+ल्युट्] अत्यंत शोक या पीडा, कष्ट ।

अभिश्रवणम् [अभि+श्रु+ल्युट्]श्राद्धके अवसर पर बैठे हुए ब्राह्मणों द्वारा वेदमंत्रों का पाठ ।

अभिषङ्गः–सङ्गः [अभि+षंज्+घञ्] 1. पूरा संपर्क या मेल, आसक्ति, संयोग 2. हार, वैराग्य, पराजय,—जाताभिषङ्गो नृपतिः–रघु० २।३०, 3. अचानक आया हुआ आघात, शोक, दुःख, संकट या दुर्भाग्य—ततोऽभिषङ्गानिलविप्रविद्धा—रघु० १४।५४, ७७, °जडं विजज्ञिवान्—रघु० ८।७५, 4. भूत प्रेतादिक से आविष्ट होना,–अभिघाताभिषङ्गाभ्यामभिचाराभिशापतः – माघ० 5. शपथ 6. आलिंगन, संभोग 7. अभिशाप, कोसना, दुर्वचन कहना 8. मिथ्या दोषारोपण, बदनामी या लांछन 9. घृणा, अनादर ।

अभिषञ्जनम् =तु० अभिषंगः ।

अभिषवः [अभि+षु+अप्] 1. सोमरस निचोड़ना, 2. शराब खींचना 3. धार्मिक कृत्यों या संस्कारों से पूर्व किया जाने वाला स्नान या, आचमन 4. स्नान या आचमन 5. यज्ञ,—वम् कांजी ।

अभिषवणम् [अभि+षु+ल्युट्] स्नान ।

अभिषिक्त (भू०क०कृ०) [अभि+सिच्+क्त] 1. छिड़का हुआ, आर्द्र किया हुआ,—सङ्के पुनर्वहुतराममृताभिषिक्ताम्—चौर० २९, 2. जिसका अभिषेक हो चुका हो, प्रतिष्ठापित, पदारूढ़ ।

अभिषेकः [अभि+सिच्+घञ्] 1. छिड़कना, पानी के छींटे देना 2. राज्यतिलक करना, राजा या मूर्ति आदि का जलसिंचन द्वारा प्रतिष्ठापन, 3. (विशेषतः) राजाओं का सिंहासनारोहण, प्रतिष्ठापन, पदारोहण, राज्यतिलक संस्कार,—अथाभिषेकं रघुवंशकेतोः—रघु० १४।७, 4. प्रतिष्ठापन के अवसर पर काम आने वाला पवित्र जल,– रघु० १७।१४, 5. स्नान, आचमन, पवित्र या धर्मस्नान,—अभिषेकोत्तीर्णाय काश्यपाय—श० ४, अत्राभिषेकाय तपोधनानाम्—रघु० १३।५१ 6. उस देवता पर जल छिड़कना जिसकी पूजा की जा रही है । सम०—अहः राजतिलक का दिवस, –शाला राज्याभिषेक का मंडप ।

अभिषेचनम् [अभि+सिच्+ल्युट्] 1. जल छिड़कना 2. राजतिलक, राज्यप्रतिष्ठापन ।

अभिषेणनम् [सेनया सह शत्रोः अभिमुखं यानम्—इति—अभि+सेना+णिच्+ल्युट्] शत्रु पर चढ़ाई करने के लिए कूच करना, शत्रु का मुकाबला करना ।

अभिषेणयति (ना० धा०) (सेना के साथ) कूच करना, आक्रमण करना, सेना द्वारा शत्रु का मुकाबला करना,—कः सिंधुराजमभिषेणयितुं समर्थः—वेणी० २।२५, शि० ६।६४ ।

अभिष्टवः [अभि+स्तु+अप्] प्रशंसा, स्तुति ।

अभिष्यं (स्यं)दः [अभि+स्यन्द्+घञ्] 1. स्राव, बहाव, टपकना 2. आंख आना 3. अतिवृद्धि, अतिरेक, आधिक्य, अतिरिक्त भाग,—स्वर्गाभिष्यन्दवमनं कृत्वेवोपनिवेशितम् (ओपधिप्रस्थम्) कु० ६।३७, अतिरिक्त जनसंख्या को दूर करके, अर्थात् उत्प्रवासन द्वारा—तु०—रघु० १५।२९ ।

अभिष्वङ्गः [अभि+स्वञ्ज्+घञ्] 1. संपर्क 2, अत्यधिक आसक्ति, प्रेम, स्नेह,—विद्यास्वभिष्वंगः—दश० १५५, अहो अभिष्वङ्गः—मा० १ ।

अभिसंश्रयः [अभि+सम्+श्रि+अच्] शरण, आश्रय ।

अभिसंस्तवः [अभि+सम्+स्तु+अप्] महती प्रशंसा ।

अभिसंतापः [अभि+सम्+तप्+घञ्] युद्ध, संग्राम, संघर्ष—जन्यं स्यादभिसन्तापः —हला० ।

अभिसन्देहः [अभि+सम्+दिह्+घञ्] 1. विनिमय, 2. जननेन्द्रिय ।

अभिसन्धः–धकः [अभि+सम्+धा+क, स्वार्थे कन् च] 1. धोखा देने वाला, वंचक, 2. निन्दक, लांछन लगाने वाला ।

अभिसन्धा [अभि+सम्+धा+अङ्+टाप्] 1. भाषण, उद्घोषणा, शब्द, कथन, प्रतिज्ञा,—तेन सत्याभिसन्धेन त्रिवर्गमनुतिष्ठता –रामा०, वचन का पालन करने वाला, 2. धोखा ।

अभिसन्धानम् [अभि+सम्+धा+ल्युट्] 1. भाषण, शब्द, सोद्देश्य उद्घोषणा, प्रतिज्ञा, सा हि सत्याभिसन्धाना—रामा०, 2. ठगना, धोखा देना –पराभिसन्धानपरं यद्यप्यस्य विचेष्टितम्—रघु० १७।७६ 3. उद्देश्य, इरादा, प्रयोजन—अन्याभिसन्धानेनान्यवादित्वमन्यककर्तृत्वं च—मिता० 4. सन्धि करना ।

अभिसन्धायः =अभिसंधि ।

अभिसन्धिः [अभि+सम्+धा+कि] 1. भाषण, सोद्देश्य उद्घोषणा, प्रतिज्ञा 2. इरादा, लक्ष्य, प्रयोजन, उद्देश्य 3. निहितार्थ, अभिप्रेत अर्थ, जैसा कि—अयमभिसंधिः (व्याख्यात्मक सूचियों में बहुधा प्रयुक्त) 4. सम्मति, विश्वास 5. विशेष अनुबंध, अनुबंध की शर्तें, प्रतिबंध, करार ।

अभिसमवायः [अभि+सम्+अव+इ+अच्] एकता ।

अभिसम्पत्तिः (स्त्री०) [अभि+सम्+पद्+क्तिन्] पूर्ण रूप से प्रभावित होना, अपने मत को बदल देना, परिवर्तन, बदल जाना ।

अभिसम्परायः [अभि+सम्+परा+इ+अच्] भविष्यत् काल ।

अभिसम्पातः [अभि+सम्+पत्+घञ्] 1. इकट्ठे मिलना, समागम, संगम 2. युद्ध, संग्राम, संघर्ष, 3. अभिशाप ।

अभिसम्बन्धः [अभि+सम्+बन्ध्+घञ्] संबंध, रिश्ता, संयोजन, संपर्क, मैथुन—मनु० ५।६३ ।

अभिसम्मुख (वि०) [प्रा० ब०] संमुख होने वाला, सामने खड़ा हुआ, सम्मान की दृष्टि से देखने वाला ।

अभिसरः [अभि+सृ+अच्] 1. अनुगामी, अनुचर, 2. साथी ।

अभिसरणम् [अभि+सृ+ल्युट्] 1. उपागमन, मुकाबला करने के लिए जाना, 2. सम्मिलन, संकेतस्थान, नायक या नायिका द्वारा मिलने का स्थान नियत करना—त्वदभिसरणरभसेन वलन्ती पतति पदानि कियन्ति चलन्ती—गीत० ६ ।

अभिसर्गः [अभि+सृज्+घञ्] सृष्टि, रचना ।

अभिसर्जनम् [अभि+सृज्+ल्युट्] 1. उपहार, दान 2. हत्या ।

अभिसर्पणम् [अभि+सृप्+ल्युट्] उपागमन, मुकाबला करने के लिए शत्रु के निकट जाना ।

अभिसां (शां) त्वः,—त्वनम् [अभि+सान्त्व्+घञ्, ल्युट् वा] सुलह, समझौता, ढाढस, तसल्ली ।

अभिसायम् (अव्य०) [अव्य०स०] सूर्यास्त के समय, संध्या-समय–श्रितोदयाद्रेरभिसायमुच्चकैः—शि० १।१६ ।

अभिसारः [अभि+सृ+घञ्] प्रिय से मिलने के लिए जाना, (मिलन स्थान) नियत करना या स्थिर करना, –रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेशम्-गीत० ५. २. वह स्थान जहाँ नायक नायिका नियत समय पर मिलते हैं, संकेतस्थल,–त्वरितमुपैति न कथमभिसारम्-गीत० ६, 3. हमला, आक्रमण, श्वोऽभिसारः पुरस्य नः –रामा०। सम०—स्थानम् मिलने के लिए उपयुक्त स्थान, दे० 'अभिसारिका' के नीचे ।

अभिसारिका [अभि+सृ+ण्वुल्+टाप्] वह स्त्री जो अपने प्रिय से मिलने जाती है, या उसके द्वारा नियत संकेत का पालन करती है कु० ६।४३, रघु० १६।१२, –कान्तार्थिनी तु या याति सङ्केतं साभिसारिका–अमर० सा० द० निम्नांकित ८ स्थान नायक नायिकाओं के मिलने के लिए निर्धारित करता है (१) खेत (२) बाग (३) भग्न मंदिर (४) दूती का घर (५) जंगल (६) तीर्थ स्थान (७) श्मशानभूमि (८) नदीतट, क्षेत्रं वाटी भग्नदेवालयो दूतीगृहं वनम्, मालयं च श्मशानं च नद्यादीनां तटी तथा ।

अभिसारिन् (वि०) [अभि+सृ+णिनि] मिलने, दर्शन करने, आक्रमण करने, जाने वाला; जल्दी से बाहर जाने वाला—युद्धाभिसारिणः—उत्तर० ५,—णी =दे० ऊपर अभिसारिका ।

अभिस्नेहः [अभि+स्निह्+घञ्] आसक्ति, अनुराग, प्रेम, इच्छा, यः सर्वत्रानभिस्नेहः—भग० २।५७ ।

अभिस्फुरित (वि०) [अभि+स्फुर्+क्त] पूर्ण रूप से फैला हुआ, पूर्ण विकसित (जैसे कि फूल) ।

दृष्टि, संकेत या मुद्रादि से प्रकट करने वाला)—नृत्याभिनयक्रियाच्युतम्—कु० ५।७९, अभिनयान् परिचेतुमिवोद्यता—रघु० ९।३३, नर्तकीरभिनयातिलंघिनीः, १९।१४ 2. नाटकीय प्रदर्शनी, स्वांग, मंच पर प्रदर्शन करना,—ललिताभिनयं तमद्य भर्ता मरुतां द्रष्टुमनाः सलोकपालः—विक्रम० २।१८, सा० द० अभिनय का निरूपण इस प्रकार करता है:—भवेदभिनयोऽवस्थानुकारः स चतुर्विधः,आङ्गिको वाचिकश्चैवमाहार्यः सात्विकस्तथा। १७४। अभिनय—किसी दशा का अनुकरण करना है, यह चार प्रकार का है:—(१) आंगिक—शारीरिक चेष्टाओं द्वारा व्यक्त होने वाला (२) वाचिक—शब्दों द्वारा प्रकट होने वाला (३) आहार्य-वेशभूषा, अलंकार, सजावट आदि से व्यक्त होने वाला (४) सात्विक—स्वेद, रोमांच आदि के द्वारा आन्तरिक भावनाओं को प्रकट करने वाला।

अभिनव (वि०) [प्रा० स०] 1. बिल्कुल नया या ताजा (सर्वथा) पदपङ्क्तिर्दृश्यतेऽभिनवा—श० ३।८, ५।१, °वा वधूः का० २, नवोढ़ा 2. बहुत छोटा, अनुभवहीन। सम०—यौवन—वयस्क, नौ जवान, बहुत छोटा।

अभिनहनम् [अभि+नह्, ल्युट्] आँख पर बाँधने की पट्टी, अंधा।

अभिनियुक्त (वि०) [अभि+नि+युज्+क्त] काम में लगा हुआ, व्यस्त।

अभिनिर्मुक्त (वि०)[अभि+निर्+मुच्+क्त] 1 सूर्यास्त होने के कारण छूटा हुआ कार्य या छोड़ा हुआ कार्य 2 सूर्यास्त के समय सोया हुआ।

अभिनिर्याणम् [अभि+निर्+या+ल्युट्]। 1. प्रयाण 2. आक्रमण, किसी शत्रु के सामने अभिप्रस्थान।

अभिनिविष्ट [भू० क० कृ०] [अभि+नि+विश्+क्त] 1. तुला हुआ, लीन, जुटा हुआ 2. दृढ़ता पूर्वक जमा हुआ सावधान, लगा हुआ 3. सम्पन्न, अधिकार युक्त,—गुरुभिरभिनिविष्टं (गर्भं) लोकपालानुभावैः—रघु० २।७५, 4. दृढ़निश्चयी, कृतसंकल्प 5. (कदर्थ०) हठी, दुराग्रही।

अभिनिविष्टता [अभिनिविष्ट+तल्+टाप्] दृढ़संकल्पता, दृढ़निश्चय, निंदाक्षेपापमानादेरमर्पोऽभिनिविष्टता—सा० द०—अर्थात् निंदा, बदनामी या अपमान की परवाह न करते हुए अपने उद्देश्य पर दृढ़ता से आगे बढ़ते जाना।

अभिनिवृत्तिः (स्त्री०) [अभि+नि+वृत्+क्तिन्] निष्पन्नता, पूर्ति।

अभिनिवेशः [अभि+नि+विश्+घञ्]1 लगन, आसक्ति एकनिष्ठता, दृढ़ विनियोग (अधि० के साथ या समास में), कतमस्मिंस्ते भावाभिनिवेशः—विक्रम० ३, अहो निरर्थकव्यापारेष्वभिनिवेशः का० १२०, बलीयान्खलुमेऽभिनिवेशः—श० ३, असत्यभूते वस्तुन्यभिनिवेशः—मिता० २. 2. उत्कट अभिलाष, दृढ़ प्रत्याशा 3. दृढ़संकल्प, दृढ़ निश्चय, धैर्य,—जनकात्मजायां नितांतरूक्षाभिनिवेशमीशम्—रघु० १४।४३, अनुरूप शतोषिणा कु० ५।७, 4. (योगदर्शन में) एक प्रकार का अज्ञान जो मृत्यु के भय का कारण हो, सांसारिक विषय-वासनाओं तथा शारीरिक आमोदप्रमोद में व्यस्त रहना साथ ही यह भय भी लगा रहे कि मृत्यु के द्वारा इन सब से वियोग हो जाना है।

अभिनिवेशिन् (वि०) [अभि+नि+विश्+णिनि] 1. आसक्त, संसक्त 2. जमा रहने वाला, अनन्यचित्त, 3. दृढ़ निश्चयी, कृतसकल्प।

अभिनिष्क्रमणम् [अभि+निस्+क्रम्+ल्युट्] बाहर निकलना।

अभिनिष्टानः [अभि+नि+स्तन्+घञ्—सस्य षत्वम्] वर्णमाला का अक्षर।

अभिनिष्पतनम् [अभि+निस्+पत्+ल्युट्] टूट पड़ना, निकल पड़ना।

अभिनिष्पत्तिः (स्त्री०) [अभि+निस्+पद्+क्तिन्] पूर्ति, समाप्ति, निष्पन्नता, पूर्णता।

अभिनिह्नवः [अभि+नि+ह्नु+अप्] मुकरना, छिपाना।

अभिनीत (भू० क० कृ०) [अभि+नी+क्त] 1. निकट लाया गया, पहुंचाया गया 2. किया गया, नाटक के रूप में खेला गया 3. सुसज्जित, अलंकृत, अत्यन्त श्रेष्ठ 4. उपयुक्त, उचित, योग्य,—अभिनीततरं वाक्यमित्युवाच युधिष्ठिरः—महा० 5. सहनशील, दयालु, समचित्त 6. क्रुद्ध 7. कृपालु, मित्र सदृश।

अभिनीतिः (स्त्री०) [अभि+नी+क्तिन्] 1. इंगित, भावपूर्ण अंग विक्षेप, 2. कृपालुता, मित्रता, सहिष्णुता,—सान्त्वपूर्वमभिनीतिहेतुकम् कि० १३।३६।

अभिनेतृ (पुं०) नाटक का पात्र,—त्री नाटक की पात्री।

अभिनेतव्य, **अभिनेय** } (सं० कृ०) [अभि+नी+यत्, तव्यत् वा] नाटक के रूप में खेले जाने योग्य,—दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपात्तु रूपकम्—सा०द० २७३, तस्य (प्रबन्धस्य) एकदेशः अभिनेयार्थः कृतः—उत्तर० ४, इसका एक अंश रंग मंच के उपयुक्त बना दिया गया।

अभिन्न (वि०) [न० त०] 1. न टूटा हुआ, अनकटा 2. अविकृत 3. अपरिवर्तित, 4. जो अलग न हो, वही, एकरूप (अपा० के साथ),—जगन्मिथोभिन्नमभिन्नमीश्वरात्—प्रबोध०।

अभिपतनम् [अभि+पत्+ल्युट्] 1. उपागमन 2. टूट पड़ना, आक्रमण करना, चढ़ाई करना 3. कूच करना, रवानगी।

अभिपत्तिः (स्त्री०) [अभि+पद्+क्तिन्] 1. उपागमन, निकट जाना 2. पूर्ति।

अभिपन्न (भू० क० कृ०) [अभि+पद्+क्त] 1. समीप गया हुआ या आया हुआ, उपागत, की ओर दौड़ा हुआ या गया हुआ 2. भागा हुआ, भगोड़ा शरणार्थी, 3. पराभूत, पराजित, पीडित, गिरफ्तार किया हुआ, पकड़ा हुआ,—कालाभिपन्नाः सीदन्ति सिकतासेतवो यथा—रामा०, दोष°, कश्मल°, व्याघ्र° आदि 4. भाग्यहीन, संकटग्रस्त, 5. स्वीकृत 6. दोषी।

अभिपरिप्लुत (वि०) [अभि+परि+प्लु+क्त] डूबा हुआ, भरा हुआ, बाढ़ग्रस्त, उखड़ा हुआ,—शोक, क्रोध आदि से।

अभिपूरणम् [अभि+पृ+ल्युट्] भरना, काबू में लाना।

अभिपूर्वम् (अव्य०) [अव्य० स०] क्रमशः।

अभिप्रणयनम् [अभि+प्र+नी+ल्युट्] वेदमंत्रों के द्वारा संस्कार करना।

अभिप्रणयः [अभि+प्र+नी+अच्] प्रेम, कृपादृष्टि, अनुरंजन।

अभिप्रणीत (भू०क०कृ०) [अभि+प्र+नी+क्त] 1. संस्कार किया हुआ,—जज्वाल लोकस्थितय स राजा यथाध्वरे वह्निरभिप्रणीतः—भट्टि० १।४, 2. लायाहुआ।

अभिप्रथनम् [अभि+प्रथ्+ल्युट्] फैलाना, विस्तार करना, ऊपर से डालना।

अभिप्रदक्षिणम् (अव्य०] [अव्य० स०] दाहिनी ओर।

अभिप्रवर्तनम् [अभि+प्र+वृत्+ल्युट्] 1. आगे बढ़ना 2. प्रगमन, आचरण 3. बहना, बाहर आना जैसे पसीने का निकलना।

अभिप्राप्तिः = दे० प्राप्तिः।

अभिप्रायः [अभि+प्र+इ+अच्] 1. लक्ष्य, प्रयोजन, उद्देश्य, आशय, कामना, इच्छा,—अभिप्राया न सिध्यन्ति तेनेदं वर्तते जगत्—पंच० १।१५८, साभिप्रायाणि वचांसि—पंच २, गम्भीर शब्द, भाव: कवेरभिप्रायः 2. अर्थ, भाव, तात्पर्य, या शब्द अथवा किसी परिच्छेद का उपलक्षितभाव, तेषामयमभिप्रायः—इस प्रकार का उनका आशय है, तात्पर्य (परिच्छेद का) 3. सम्मति, विश्वास, 4. संबंध, उल्लेख।

अभिप्रेत (भू० क० कृ०) [अभि+प्र+इ+क्त] 1. अर्थपूर्ण, उद्दिष्ट, साशय, आकल्पित,—अत्रायमर्थोऽभिप्रेतः; निवेदयाभिप्रेतम् -पंच० १, 2. इष्ट, अभिलषित, —यथाभिप्रेतमनुष्ठीयताम् —हि० १ 3. सम्मत, स्वीकृत 4. प्रिय, रुचिकर।

अभिप्रोक्षणम् [अभि+प्र+उक्ष्+ल्युट्] छिड़कना, छिड़काव।

अभिप्लवः [अभि+प्लु+अप्] 1. कष्ट, बाधा 2. बाढ़, उतरा कर बहना।

अभिप्लुत (भू० क० कृ०) [अभि+प्लु+क्त] पराभूत, व्याकुल (शा० तथा आलं०)।

१०

अभिबुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] बुद्धीन्द्रिय या ज्ञानेन्द्रिय (विप० कर्मेंद्रिय), आंख, जिह्वा, कान, नाक और त्वचा।

अभिभवः [अभि+भू+अप्] 1. हार, पराभव, दमन; —स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोभिभवाद्वमन्ति —श०२।७, (जब दूसरी शक्ति के द्वारा आक्रान्त, अवरुद्ध या पराभूत हो)—अभिभवः कुत एव सपत्नजः—रघु० ९।४, 2. पराभूत होना,—जराभिभवविच्छायं—का० ३४६, आक्रान्त या प्रभावित होना, (ज्वरादिक से) मूर्छित होना 3. तिरस्कार, अपमान,—निरभिभवसाराः परकथाः—भर्तृ० २।६४, 4. निरादर, मानभंग,—अलभ्यशोकाभिभवेयमाकृतिः—कु० ५।४९, 5. प्रबलता, उद्भव, विस्तार,—अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः—भग० १।४१, कि० २।३७।

अभिभवनम् [अभि+भू+ल्युट्] हावी होना, पराजित करना, जीतना, पराभूत होना।

अभिभावनम् [अभि+भू+णिच्+ल्युट्] विजयी कराना, पराजित करने वाला बनाना।

अभिभाविन्—भाव (बु) क (वि०) [अभि+भू+णिनि, उकञ् वा] 1. पराजित करने वाला, हराने वाला, जीतने वाला 2. दूसरों से आगे बढ़ने वाला, परमोत्कृष्ट, श्रेष्ठ होने वाला,—सर्वतेजोऽभिभाविना—रघु० १।१४, कि० ११।६।

अभिभाषणम् [अभि+भाष्+ल्युट्] सम्बोधित करते हुए बोलना, भाषण देना।

अभिभूतिः (स्त्री०) [अभि+भू+क्तिन्] 1. प्रधानता, प्रभुत्व 2. जीतना, हराना, पराभव,—अभिभूतिभयादसूनतः सुखमुज्झन्ति न धाम मानिनः—कि० २।२०, 3. अनादर, अपमान।

अभिमत (भू० क० कृ०) (अभि+मन्+क्त]. इष्ट, अभीष्ट, प्रिय, प्यारा, रुचिकर, वाञ्छनीय—नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनां—३५, ५८, अभिमतफलशंसी चारु पुस्फोर बाहुः—भट्टि० १।२७, 2. सम्मत, स्वीकृत, माना हुआ,—न किल भवतां स्थानं देव्या गृहेऽभिमतं ततः—उत्तर० ३।३२, प्रसिद्धमाहात्म्याभिमतानामपि कपिलकणभुक्प्रभृतीनां —शारी०, सम्मानित, आदृत,—तम् कामना, इच्छा. —तः प्रियव्यक्ति, प्रेमी।

अभिमनस् (वि०) [प्रा० स०] 1. तुला हुआ, इच्छुक, आतुर, उत्कंठित,—भवतोऽभिमनाः समीहते सरुषः कर्तुमुपेत्य माननाम्—शि० १६।२, (यहाँ अ°भी "निश्शंक" अर्थ को प्रकट करता है)।

अभिमन्त्रणम् [अभि+मन्त्र्+ल्युट्] 1 विशेष मंत्रों को पढ़कर संस्कारयुक्त करना, या पवित्र करना,—याज्ञ० १।२३७, 2. सुहावना, मनोहर 3. संबोधित करना, आमंत्रित करना, परामर्श देना।

अभिमरः [अभि+मृ+अच्] 1. हत्या, नाश, वध करना 2. युद्ध, संघर्ष 3. अपने ही पक्ष द्वारा विश्वासघात, अपने ही पक्ष वालों से भय 4. बंधन, कैद, बेड़ी या हथकड़ी।

अभिमर्दः [अभि+मृद्+घञ्] 1. मलना, रगड़, 2. कुचलना, लूटखसोट, (शत्रु द्वारा) देश का उच्छेद, उजाड़ना 3. युद्ध, संग्राम 4. मदिरा, शराब।

अभिमर्दन (वि०) [अभि+मृद्+ल्युट्] कुचलने वाला, दमन करने वाला,—नम् कुचलना, दमन करना।

अभिमर्शः-र्शनम् } **अभिमर्षः-र्षणम्** } [अभि+मृश् (ष्)+घञ्, ल्युट् वा] 1. स्पर्श, संपर्क 2. अभ्याघात, हिंसा, बलात्कार, संभोग,—कृताभिमर्शामनुमन्यमानः—श० ५।२०, इन्द्रियासक्ति के कारण किया गया आलिंगन अथवा सतीत्व भ्रष्ट करना या बलात्कार,—पराभिमर्शो न तवास्ति कु० ५।४३ (मल्लि०=परधर्षणम्) मनु० ८।३५२, याज्ञ० २।२८४।

अभिमर्शक-र्षक } **अभिमर्शिन्-र्षिन्** } (वि०) [अभिमृश्(ष्)+ण्वुल्, णिनि वा] 1. स्पर्श करने वाला, संपर्क में आने वाला, 2. बलात्कार करने वाला,—त्वत्कलत्राभिमर्षी वैरास्पदं धनमित्रः—दश० ६३।

अभिमादः [अभि+मद+घञ्] नशा, मादकता।

अभिमानः [अभि+मन्+घञ्] 1. गौरव, स्वाभिमान, सम्माननीय या योग्य भावना,—सदाभिमानैकधनाः हि मानिनः—शि० १।६७, 2. अहंकार, घमंड, दर्प, अहंमन्यता, °वत् घमंडी, गर्वीला 3. सभी पदार्थों को आत्मा से संकेतित करना, अहंकार की क्रिया, व्यक्तित्व, 4. कल्पना, अवधारणा, अटकल, विश्वास, सम्मति 5. स्नेह, प्रेम 6. इच्छा, कामना 7. चोट पहुँचाना, हत्या करना, चोट पहुँचाने का प्रयत्न करना। सम०—शालिन् (वि०) घमंडी—शून्य(वि०) गर्व या घमंड से रहित, विनीत।

अभिमानिन् (वि०) [अभि+मन्+णिनि] 1. आत्माभिमानी 2. अहंमन्य, घमंडी, गर्वीला, दम्भी 3. सभी पदार्थों को आत्मा से संकेतित मानने वाला।

अभिमुख (वि०)[स्त्री०—खी] 1. जो किसी की ओर मुख किये हुए हो, की ओर, किसी की ओर मुड़ा हुआ, सामने,—अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितम् श० २।११, 2. पास आने वाला, समीप जाने वाला, निकट पहुँचने वाला,—विक्रम० २।९ 3. विचार करते हुए, प्रवृत्त, उद्यत (कुछ करने के लिए)—अस्ताभिमुखे सूर्ये—मुद्रा० २।१९, प्रसादाभिमुखो वेधाः प्रत्युवाच दिवौकसः कु० १।१६, ५।६०; उत्तर० ७।४, मा० १०।१३, 4. अनुकूल, अनुकूलतापूर्वक सम्पन्न 5. मुंह ऊपर को उठाये हुए,—खं-खे (अव्य०) की ओर, दिशा में सामना करते हुए, के सामने, की उपस्थिति में, के निकट (कर्म० या संब० के साथ अथवा समास में) —आसीताभिमुखं गुरोः—मनु० २।१९३, तिष्ठन्मुनेरभिमुखं स विकीर्णधाम्नः—कि० २।५९, नेपथ्याभिमुखमवलोक्य,—श० १, कर्णं ददात्यभिमुखं मयि भाषमाणे—श० १।३१।

अभियाचनम्-याच्ञा [अभि+याच्+युच्, नङ् वा, स्त्रियां टाप् च] माँगना, प्रार्थना, अनुरोध, नम्र निवेदन।

अभियातिः, यातिन् —(पुं०—ती) शत्रुता की भावना के साथ पहुँचने वाला- शत्रु, दुश्मन, रघु० १२।४३।

अभियातृ—यायिन् (वि०) [अभि+या+तृच्, णिनि वा] निकट जानेवाला, आक्रमण करने वाला।

अभियानम् [अभि+या+ल्युट्] 1. उपागमन 2. चढ़ाई करना, धावा बोलना,आक्रमण करना,—रणाभियानेन—दश० १०, युद्ध के लिए प्रस्थान।

अभियुक्त (भू० क० कृ०) (वि०) [अभि+युज्+क्त] 1.(क)व्यस्त, लगा हुआ, लीन, जुटा हुआ (ख) परिश्रमी, धैर्यवान्, दृढ़संकल्प वाला, तुला हुआ, दत्तचित्त, सावधान, - इदं विश्वं पाल्यं विधिवदभियुक्तेन मनसा—उत्तर० ३।३०, 2. सुविज्ञ, दक्ष,—शास्त्रार्थेष्वभियुक्तानां पुरुषाणां—कुमारिल 3. (अतः) विद्वान्, सुप्रतिष्ठित, सुयोग्य न्यायाधीश, पण्डित (पुं०—इसी अर्थ में) न हि शक्यते दैवमन्यथाकर्तुमभियुक्तेनापि—का० ६२, 4. आक्रान्त, जिस पर हमला कर दिया गया हो,—अभियुक्तं त्वयैनं ते गन्तारस्त्वामतः परे—शि० २।१०१, मुद्रा० ३।२५, 5. जिस पर अभियोग लगाया गया हो, जिस पर दोषों का आरोपण किया गया हो, अभ्यारोपित, मृच्छ० ९।९, अभियोजित, प्रतिवादी,—अभियुक्तोऽभियोगस्य यदि कुर्यादपह्नवम्—नारद० 6. नियुक्त।

अभियोक्तृ (वि०) [अभि+युज्+तृच्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (पुं०—क्ता) 1. शत्रु, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2. (विधि में) आरोपक, वादी, मुद्दई, अभियोजक, मनु० ८।५२, ५८, याज्ञ० २।९५, 3. मिथ्याभियोगी।

अभियोगः [अभि+युज्+घञ्] 1. लगाव, लगन, मेल-जोल,—गुरुचर्या—तपस्तन्त्रमन्त्रयोगाभियोगजाम्—मा० ९। ५१, चौर० ११, 2. घना लगाव, धीरज, प्रबल, प्रयास, संतः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः—भर्तृ० २।७३, 2. (क) किसी चीज को सीखने की लगन,—कलयां कलायाभियोगो भवत्योः—मालवि० ५,(ख) सीखना, विद्वत्ता,—अभियोगश्च शब्दादेरशिष्टानाम् अभियोगश्चेतरेषाम्—शबरस्वामी 4. आक्रमण हमला, चढ़ाई (किसी देश या नगर पर),—क्षुभितं वनगोचराभियोगात्—कि० १३।१०, २।४६, 5. (विधि में) आरोप, दोषारोपण, पूर्वपक्ष—अभियोगमनिस्तीर्य नैनं प्रत्यभियोजयेत्—याज्ञ० २।५।

अभियोगिन् (वि०) [अभि+युज्+णिनि] मनोयोग पूर्वक लगा हुआ, तुला हुआ, 2. आक्रमणकारी, हमलावर 3. दोषारोपण करने वाला (पुं०) वादी, मुद्दई।

अभिरक्षणम् } **अभिरक्षा** } [अभि+रक्ष्+ल्युट्, अङ वा] सब ओर से बचाव, पूरा २ बचाव,—प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया कि० १।१८।

अभिरतिः (स्त्री०) [अभि+रम्+क्तिन्] आनन्द, हर्ष, संतोष, आसक्ति, लगन,—न मृगयाभिरतिर्न दुरोदरम् (तमपाहरत्) रघु० ९।७, कि० ६।४४।

अभिराम (वि०) [अभि०+रम्+घञ्] 1. आनन्दकर, हर्षपूर्ण, मधुर, रुचिकर—मनोभिरामाः (केकाः) रघु० १।३०, २।७२, 2. सुन्दर, सुहावना, मनोहर, मनोरम,—स्यादस्थानोपगतयमुनासङ्गमेवाभिरामा—मेघ०५३, राम इत्यभिरामेण वपुषा तस्य चोदितः—रघु० १०।६७,—मम् (अव्य०) सुन्दर रीति से ग्रीवाभंङ्गाभिरामं—श० १।७।

अभिरुचिः (स्त्री) [अभि+रुच्+इन्] 1. इच्छा, शौक, पसंदगी, रस, हर्ष, आनन्द,—यशसि चाभिरुचिः—भर्तृ० २।६३, परस्पराभिरुचिनिष्पन्नो विवाहः—का० २६७, 2. यश की इच्छा, महत्त्वाकांक्षा।

अभिरुचितः [अभि+रुच्+क्त] प्रेमी,—, शि० १०।६८।

अभिरुतम् [अभि+रु+क्त] ध्वनि, चिल्लाहट, कोलाहल।

अभिरूप (वि०) [अभि+रूप्+अच्] 1. अनुरूप, समनुरूप, उपयुक्त—अभिरूपमस्या वयसो वल्कलम्—श० १. पाठ०,2. सुखद, हर्षपूर्ण,—उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च (कन्यां दद्यात्) मनु० ९।८८, 3. प्रिय, प्यारा, इष्ट, कृपापात्र 4. विद्वान्, बुद्धिमान्, समझदार, —अभिरूपभूयिष्ठा परिषदियम्—श० १,—पः 1 चन्द्रमा, 2 शिव 3 विष्णु 4 कामदेव। सम०—पतिः 'रूचि के अनुकूल सुन्दर पति प्राप्त करना', नाम का एक संस्कार जो परलोक में अच्छा पति पाने की इच्छा से किया जाता है—मृच्छ० १।

अभिलङ्घनम् [अभि+लंघ्+ल्युट्] कूद कर पार करना, छलांग लगाना।

अभिलषणम् [अभि+लष्+ल्युट्] इच्छा करना, चाहना।

अभिलषित (भू० क० कृ०) [अभि+लष्+क्त] इच्छित चाहा हुआ, उत्कंठित,—तम् इच्छा, कामना, संकल्प।

अभिलापः [अभि+लप्+घञ्] 1. कथन, शब्द, भाषण 2. घोषणा, वर्णन, विशेष विवरण, 3. किसी धार्मिक कर्तव्य या किसी उद्देश्य की प्रतिज्ञा की उद्घोषणा।

अभिलावः [अभि+लू+घञ्] काटना, कटाई, लवन।

अभिलाषः [कई बार °सः] [अभि+लष्+घञ्] इच्छा, कामना, उत्कंठा, अनुराग, प्रियतम से मिलने की उत्कंठा, प्रेम (प्रायः अधि० के साथ)—अतोऽभिलाषे प्रथमं तथाविधे मनो बबंध—रघु० ३।४, न खलु सत्यमेव शकुन्तलायां ममाभिलाषः—श० २, पंच० ५।६७।

अभिलाषक,—लाषि (ि)न् } **—लाषुक** } (वि०) [अभि+लष+ण्वुल्, णिनि, उकञ् वा] कामना या इच्छा करने वाला, (कर्म० अधि० के साथ या समास में) चाहने वाला, लालायित, लालची, —यदार्यमस्याभिलाषि मे मनः—श० १।२२, जयमत्रभवान् नूनमरातिष्वभिलाषुकः—कि० ११।१८, शि० १५।५९।

अभिलिखित (वि०) [अभि+लिख्+क्त] लिखा हुआ, खुदा हुआ—तम्, **अभिलेखनम्**, 1. लिखना, खोदना 2. लेख।

अभिलीन (वि०) [अभि+ली+क्त] 1. चिपटा हुआ, सटा हुआ, आसक्त,—रघु० ३।८ 2. आलिंगन किये हुए, ढकते हुए—मेघ० ३६।

अभिलुलित (वि०)[अभि+लुड्+क्त डस्य लः] 1. क्षुब्ध, बाधायुक्त 2. क्रीडा युक्त, अस्थिर।

अभिलूता (प्रा० स०) एक प्रकार की लकड़ी।

अभिवदनम्[अभि+वद्+ल्युट्] 1. संबोधन 2. नमस्क्रिया।

अभिवन्दनम् [अभि+वन्द्+ल्युट्] सादर नमस्कार, पाद° श्रद्धा और भक्ति के साथ दूसरों के चरण स्पर्श करना, नीचे दे० 'अभिवादन'।

अभिवर्षणम् [अभि+वृष्+ल्युट्] बारिस होना, बरसना, पानी पड़ना।

अभिवादः—**वादनम्** [अभि+वद्+घञ्, ल्युट् वा] ससम्मान नमस्कार, छोटों के द्वारा बड़ों को प्रणाम, शिष्य के द्वारा गुरु को प्रणाम इसमें तीन बातें निहित हैं—(१) प्रत्युत्थान—अपने स्थान से उठना (२) पादोपसंग्रहः—पैर पकड़ना या छूना (३) अभिवाद—'प्रणाम' शब्द मुंह से कहना—जिसमें अभिवाद्य व्यक्ति की उपाधि तथा अभिवादक का नाम—वर्ण्य है।

अभिवादक (वि०) [स्त्री—दिका] 1. नमस्कार करने वाला, 2. नम्र, सम्मान पूर्ण, विनीत।

अभिविधि [अभि+वि+धा+कि] 1. पूरा सम्मिलन या संबोध, 'आ' का एक अर्थ—आङ मर्यादाभिविध्योः —पा० २।१।१३ आरंभिक सीमा ('अन्तिम सीमा' का विरोधी), इसका अनुवाद 'से' 'के साथ' 'मिलाते हुए' शब्दों से किया जाता है उदा०—आबालम्= आबालेभ्यः हरिभक्तिः, 2. पूर्ण प्रसार।

अभिविश्रुत (वि०) [अभि+वि+श्रु+क्त] सुविख्यात, सुप्रसिद्ध।

अभिवृद्धिः (स्त्री०) [अभि+वृध्+क्तिन्] बढ़ना, विकास, योग, सफलता, सम्पन्नता।

अभिव्यक्तः (भू० क० कृ०) [अभि०+वि+अंज्+क्त] 1· प्रकट किया हुआ,प्रकाशित, उद्घोषित 2. विविक्त, स्पष्ट, साफ़।

अभिव्यक्तिः (स्त्री०) [अभि+वि+अंज्+क्तिन्] (कारण का कार्य रूप में) प्रकट होना, वैशिष्ट्य, दिखावा, प्रदर्शन,—सर्वांगसौष्ठवाभिव्यक्तये—मालवि० १, दूतीसंप्रेषणैर्नार्या भावाभिव्यक्तिरिष्यते—सा० द० ६।

अभिव्यञ्जनम् [अभि+वि+अञ्ज्+ल्युट्] प्रकट करना, प्रकाशन करना, ।

अभिव्यापक,—व्यापिन् (वि०) [अभि+वि०+आप्+ण्वुल्, णिनि वा] सम्मिलित करने वाला, समझने वाला, प्रसार करने वाला ।

अभिव्याप्तिः (स्त्री०) [अभि+वि+आप्+क्तिन्] सम्मिलित करना, संबोध, सर्वत्र फैलाव ।

अभिव्याहरणम्,—व्याहारः [अभि+वि+आ+हृ+ल्युट्, घञ् वा] 1. बोलना, उच्चारण करना, कसना 2. प्रांजल तथा सार्थक शब्द, संज्ञा, नाम ।

अभिशंसक,—शंसिन् (वि०) [अभि+शंस्+ण्वुल्, णिनि वा] दोषारोपक, कलंक लगाने वाला, अपमान करने वाला ।

अभिशंसनम् [अभि+शंस्+ल्युट्] दोषारोपण, दोष लगाना (चाहे सत्य हो या मिथ्या) मिथ्या°—याज्ञ० २८९, गाली, अपमान, निरादर,—पंचाशद् ब्राह्मणो दण्ड्यः क्षत्रियस्याभिशंसने—मनु० ८।२६८।

अभिशङ्का [अभि+शङ्क्+अ+टाप्] संदेह, आशंका, भय, चिन्ता ।

अभिशपनम्,—शापः [अभि+शप्+ल्युट्, घञ् वा] 1. शाप, किसी का बुरा मनाना 2. गंभीर आरोप, दोषारोपण—याज्ञ० २।९९, अभिशापः पातकाभियोगः—मि० 3. लांछन, मिथ्या आरोप । सम०—ज्वरः शाप के उच्चारण से उत्पन्न होने वाला बुखार ।

अभिशब्दित (वि०) [अभि+शब्द्+क्त] उद्घोषित, प्रकाशित, कथित, नाम लिया हुआ ।

अभिशस्त (भू० क० कृ०) [अभि+शंस्+क्त] 1. कलंकित, अभिशप्त, अपमानित—मनु० ८।११६, ३७३ याज्ञ० १।१६१, 2. चोट पहुंचाया हुआ, क्षतिग्रस्त, आक्रान्त ('अभिशस्' से बना समझा गया),—देवि ! केनाभिशस्तासि केन वासि विमानिता—रामा० 3. अभिशप्त 4. दुष्ट, पापी ।

अभिशस्तक (वि०) [अभिशस्त+कन्] मिथ्या दोषारोपित, बदनाम ।

अभिशस्तिः (स्त्री०) [अभि+शंस्+क्तिन्] 1. अभिशाप, 2. दुर्भाग्य, अनिष्ट, संकट 3. निंदा, लांछन, बदनामी, अपमान 4. पूछना, मांगना ।

अभिशापनम् [अभि+शप्+णिच्+ल्युट्] शाप देना, कोसना ।

अभिशीत (वि०) [अभि+श्यै+क्त] शीतल, ठंडा जैसा कि वायु ।

अभिशोचनम् [अभि+शुच्+ल्युट्] अत्यंत शोक या पीडा, कष्ट ।

अभिश्रवणम् [अभि+श्रु+ल्युट्] श्राद्ध के अवसर पर बैठे हुए ब्राह्मणों द्वारा वेदमंत्रों का पाठ ।

अभिषङ्गः—सङ्गः [अभि+षंज्+घञ्] 1. पूरा संपर्क या मेल, आसक्ति, संयोग 2. हार, वैराग्य, पराजय,—जाताभिषङ्गो नृपतिः—रघु० २।३०, 3. अचानक आया हुआ आघात, शोक, दुःख, संकट या दुर्भाग्य—ततोऽभिषङ्गानिलविप्रविद्धा—रघु० १४।५४, ७७, °जडं विजज्ञिवान्—रघु० ८।७५, 4. भूत प्रेतादिक से आविष्ट होना,—अभिघाताभिषङ्गाभ्यामभिचाराभिशापतः— माघ० 5. शपथ 6. आलिंगन, संभोग 7. अभिशाप, कोसना, दुर्वचन कहना 8. मिथ्या दोषारोपण, बदनामी या लांछन 9. घृणा, अनादर ।

अभिषञ्जनम् =तु० अभिषंगः ।

अभिषवः [अभि+षु+अप्] 1. सोमरस निचोड़ना, 2. शराब खींचना 3. धार्मिक कृत्यों या संस्कारों से पूर्व किया जाने वाला स्नान या, आचमन 4. स्नान या आचमन 5. यज्ञ,—वम् कांजी ।

अभिषवणम् [अभि+षु+ल्युट्] स्नान ।

अभिषिक्त (भू०क०कृ०) [अभि+सिच्+क्त] 1. छिड़का हुआ, आर्द्र किया हुआ,—सङ्गे पुनर्बहुतराममृताभिषिक्ताम्—चौर० २९, 2. जिसका अभिषेक हो चुका हो, प्रतिष्ठापित, पदारूढ़ ।

अभिषेकः [अभि+सिच्+घञ्] 1. छिड़कना, पानी के छींटे देना 2. राज्यतिलक करना, राजा या मूर्ति आदि का जलसिंचन द्वारा प्रतिष्ठापन, 3. (विशेषतः) राजाओं का सिंहासनारोहण, प्रतिष्ठापन, पदारोहण, राज्यतिलक संस्कार,—अथाभिषेकं रघुवंशकेतोः—रघु० १४।७, 4. प्रतिष्ठापन के अवसर पर काम आने वाला पवित्र जल,—रघु० १७।१४, 5. स्नान, आचमन, पवित्र या धर्मस्नान,—अभिषेकोत्तीर्णाय काश्यपाय—श० ४, अत्राभिषेकाय तपोधनानाम्—रघु० १३।५१ 6. उस देवता पर जल छिड़कना जिसकी पूजा की जा रही है । सम०—अहः राजतिलक का दिवस, —शाला राज्याभिषेक का मंडप ।

अभिषेचनम् [अभि+सिच्+ल्युट्] 1. जल छिड़कना 2. राजतिलक, राज्यप्रतिष्ठापन ।

अभिषेणनम् [सेनया सह शत्रोः अभिमुखं यानम्—इति—अभि+सेना+णिच्+ल्युट्] शत्रु पर चढ़ाई करने के लिए कूच करना, शत्रु का मुकाबला करना ।

अभिषेणयति (ना० धा०) (सेना के साथ) कूच करना, आक्रमण करना, सेना द्वारा शत्रु का मुकाबला करना,—कः सिंधुराजमभिषेणयितुं समर्थः—वेणी० २।२५, शि० ६।६४ ।

अभिष्टवः [अभि+स्तु+अप्] प्रशंसा, स्तुति ।

अभिष्यं (स्यं)दः [अभि+स्यन्द्+घञ्] 1. स्राव, बहाव, टपकना 2. आंख आना 3. अतिवृद्धि, अतिरेक, आधिक्य, अतिरिक्त भाग, —स्वर्गाभिष्यन्दवमनं कृत्वेवोपनिवेशितम् (ओपधिप्रस्थम्) कु० ६।३७, अतिरिक्त जनसंख्या को दूर करके, अर्थात् उत्प्रवासन द्वारा—तु० —रघु० १५।२९ ।

अभिष्वङ्गः [अभि+स्वञ्ज्+घञ्] 1. संपर्क 2, अत्यधिक आसक्ति, प्रेम, स्नेह, —विद्यास्वभिष्वंगः—दश० १५५, अहो अभिष्वङ्गः—मा० १ ।

अभिसंश्रयः [अभि+सम्+श्रि+अच्] शरण, आश्रय ।

अभिसंस्तवः [अभि+सम्+स्तु+अप्] महती प्रशंसा ।

अभिसंतापः [अभि+सम्+तप्+घञ्] युद्ध, संग्राम, संघर्ष —जन्यं स्यादभिसन्तापः —हला० ।

अभिसन्देहः [अभि+सम्+दिह्+घञ्] 1. विनिमय, 2. जननेन्द्रिय ।

अभिसन्धः—धकः [अभि+सम्+धा+क, स्वार्थे कन् च] 1. धोखा देने वाला, वंचक, 2. निन्दक, लांछन लगाने वाला ।

अभिसन्धा [अभि+सम्+धा+अङ्+टाप्] 1. भाषण, उद्घोषणा, शब्द, कथन, प्रतिज्ञा,—तेन सत्याभिसन्धेन त्रिवर्गमनुतिष्ठता –रामा०, वचन का पालन करने वाला, 2. धोखा ।

अभिसन्धानम् [अभि+सम्+धा+ल्युट्] 1. भाषण, शब्द, सोद्देश्य उद्घोषणा, प्रतिज्ञा, सा हि सत्याभिसन्धाना—रामा०, 2. ठगना, धोखा देना –पराभिसन्धानपरं यद्यप्यस्य विचेष्टितम्—रघु० १७।७६ 3. उद्देश्य, इरादा, प्रयोजन—अन्याभिसन्धानेनान्यवादित्वमन्यककर्तृत्वं च—मिता० 4. सन्धि करना ।

अभिसन्धायः =अभिसंधि ।

अभिसन्धिः [अभि+सम्+धा+कि] 1. भाषण, सोद्देश्य उद्घोषणा, प्रतिज्ञा 2. इरादा, लक्ष्य, प्रयोजन, उद्देश्य 3. निहितार्थ, अभिप्रेत अर्थ, जैसा कि—अयमभिसंधिः (व्याख्यात्मक सूचियों में बहुधा प्रयुक्त) 4. सम्मति, विश्वास 5. विशेष अनुबंध, अनुबंध की शर्तें, प्रतिबंध, करार ।

अभिसमवायः [अभि+सम्+अव+इ+अच्] एकता ।

अभिसम्पत्तिः (स्त्री०) [अभि+सम्+पद्+क्तिन्] पूर्ण रूप से प्रभावित होना, अपने मत को बदल देना, परिवर्तन, बदल जाना ।

अभिसम्परायः [अभि+सम्+परा+इ+अच्] भविष्यत् काल ।

अभिसम्पातः [अभि+सम्+पत्+घञ्] 1. इकट्ठे मिलना, समागम, संगम 2. युद्ध, संग्राम, संघर्ष, 3. अभिशाप ।

अभिसम्बन्धः [अभि+सम्+बन्ध्+घञ्] संबंध, रिश्ता, संयोजन, संपर्क, मैथुन—मनु० ५।६३ ।

अभिसम्मुख (वि०) [प्रा० ब०] संमुख होने वाला, सामने खड़ा हुआ, सम्मान की दृष्टि से देखने वाला ।

अभिसरः [अभि+सृ+अच्] 1. अनुगामी, अनुचर, 2. साथी ।

अभिसरणम् [अभि+सृ+ल्युट्] 1. उपागमन, मुकाबला करने के लिए जाना, 2. सम्मिलन, संकेतस्थान, नायक या नायिका द्वारा मिलने का स्थान नियत करना—त्वदभिसरणरभसेन वलन्ती पतति पदानि कियन्ति चलन्ती—गीत० ६ ।

अभिसर्गः [अभि+सृज्+घञ्] सृष्टि, रचना ।

अभिसर्जनम् [अभि+सृज्+ल्युट्] 1. उपहार, दान 2. हत्या ।

अभिसर्पणम् [अभि+सृप्+ल्युट्] उपागमन, मुकाबला करने के लिए शत्रु के निकट जाना ।

अभिसां (शां)त्वः,—त्वनम् [अभि+सान्त्व्+घञ्, ल्युट् वा] सुलह, समझौता, ढाढस, तसल्ली ।

अभिसायम् (अव्य०) [अव्य०स०] सूर्यास्त के समय, संध्या-समय–श्रितोदयाद्रेरभिसायमुच्चकैः—शि० १।१६ ।

अभिसारः [अभि+सृ+घञ्] प्रिय से मिलने के लिए जाना, (मिलन स्थान) नियत करना या स्थिरकरना, –रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेशम्-गीत० ५. २. वह स्थान जहाँ नायक नायिका नियत समय पर मिलते हैं, संकेतस्थल,–त्वरितमुपैति न कथमभिसारम्-गीत० ६, 3. हमला, आक्रमण, ·श्वोऽभिसारः पुरस्य नः –रामा०। सम०—स्थानम् मिलने के लिए उपयुक्त स्थान, दे० 'अभिसारिका' के नीचे ।

अभिसारिका [अभि+सृ+ण्वुल्+टाप्] वह स्त्री जो अपने प्रिय से मिलने जाती है, या उसके द्वारा नियत संकेत का पालन करती है कु० ६।४३, रघु० १६।१२, –कान्तार्थिनी तु या याति सङ्केतं साभिसारिका–अमर० सा० द० निम्नांकित ८ स्थान नायक नायिकाओं के मिलने के लिए निर्धारित करता है (१) खेत (२) बाग (३) भग्न मंदिर (४) दूती का घर (५) जंगल (६) तीर्थ स्थान (७) श्मशानभूमि (८) नदीतट, क्षेत्रं वाटी भग्नदेवालयो दूतीगृहं वनम्, मालयं च श्मशानं च नद्यादीनां तटी तथा ।

अभिसारिन् (वि०) [अभि+सृ+णिनि] मिलने, दर्शन करने, आक्रमण करने, जाने वाला; जल्दी से बाहर जाने वाला—युद्धाभिसारिणः—उत्तर० ५,—णी =दे० ऊपर अभिसारिका ।

अभिस्नेहः [अभि+स्निह्+घञ्] आसक्ति, अनुराग, प्रेम, इच्छा, यः सर्वत्रानभिस्नेहः—भग० २।५७ ।

अभिस्फुरित (वि०) [अभि+स्फुर्+क्त] पूर्ण रूप से फैला हुआ, पूर्ण विकसित (जैसे कि फूल) ।

अभिहत (वि०) [अभि+हन्+क्त] प्रहृत (आलं° से भी) पीटा गया, आहत, घायल किया गया—धाराभिरातप इवाभिहतं सरोजं—मालवि० ५, अमरु० २, 2. जिस पर प्रहार किया गया है, अभिभूत, पराभूत, शोक°, काम°, दुःख° 3. बाधामय 4. (गण०) गुणित ।

अभिहतिः (स्त्री०)[अभि+हन्+क्तिन्] 1. प्रहार करना, पीटना, चोट पहुँचाना 2. (गण०) गुणन, गुणा ।

अभिहरणम् [अभि+हृ+ल्युट्] 1. निकट लाना, जाकर लाना—रघु० ११।४३, 2. लूटना ।

अभिहवः [अभि+ह्वे+अप्] 1. आवाहन, आमंत्रण 2. पूर्ण रूप से यज्ञानुष्ठान 3. यज्ञ, बलिदान ।

अभिहारः [अभि+हृ+घञ्] 1. ले जाना, लूट लेना, चुरा लेना 2. हमला, आक्रमण 3. शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना, शस्त्र ग्रहण करना ।

अभिहासः [अभि+हस्+घञ्] दिल्लगी, मजाक, विनोद ।

अभिहित (भू० क० कृ०) [अभि+धा+क्त] 1. कहा गया, बोला गया, घोषित किया गया, 2. संबोधित किया गया, पुकारा गया । सम०—**अन्वयवादः**, —**वादिन्** (पुं०) नैयायिकों का एक विशेष प्रकार का सिद्धान्त (या उस सिद्धांत के अनुयायी) । इस सिद्धान्त के अनुसार नैयायिकलोग मानते हैं कि शब्द स्वतंत्र रूप से अपना अर्थ रखते हैं, जो बाद में वाक्य में प्रयुक्त होने पर एक संयुक्त विचार को अभिव्यक्त करते हैं, दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि यह वाक्य के शब्दों का तर्कसंगत संबंध ही है जो वाक्य के अभीष्ट अर्थ को प्रकट करता है न कि शब्दों का केवल अपना भाव । अतः वे 'तात्पर्यार्थ' में विश्वास रखते हैं जो कि वाच्यार्थ से भिन्न है—काव्य. २ ।

अभिहोमः [प्रा० स०] घी की आहुति देना ।

अभी (वि०) [न० ब०] निर्भय, निडर, रघु० ९।६३, १५।८।

अभीक (वि०) [अभि+कन् दीर्घः] 1. प्रबल इच्छा रखने वाला, आतुर 2. कामुक विषयासक्त, विलासी—मेदस्विनः सरभसोपगतानभीकान्—शि० ५।६४, 3. निर्भय, निडर ।

अभीक्ष्ण (वि०)[अभि+क्ष्णु+ड, दीर्घः] 1. दुहराया हुआ, बार २ होने वाला 2. सतत, निरन्तर 3. अत्यधिक, —**क्ष्णम्** (अव्य०) 1. बारंबार, पुनः पुनः 2. लगातार 3. अत्यंत, बहुत अधिक ।

अभीघात=तु० अभिघात ।

अभीप्सित (वि०) [अभि+आप्+सन्+क्त] चाहा हुआ अभीष्ट,—**तम्** कामना, इच्छा ।

अभीप्सिन् } (वि०) [अभि+आप्+सन्+णिनि, उ वा]
अभीप्सु } इच्छुक, प्राप्त करने की इच्छा वाला ।

अभीरः [अभिमुखी कृत्य ईरयति गाः, अभि+ईर्+अच्] 1. अहीर, गोपाल, गड़रिया 2. ग्वाला, (दे० आभीर)। सम०—**पल्ली** ग्वालों का गाँव ।

अभीशापः [अभि+शप्+घञ्] कोसना, दे० अभिशाप ।

अभीशुः—**षुः** [अभि+अश्+उन् पृषो० अत इत्वम्–अभि+इष्+कु वा] 1. बागडोर, लगाम—तेन हि मुच्यन्तामभीशवः—श० १, 2. प्रकाशकिरण—प्रफुल्लतापिच्छनिभैरभीषुभिः—शि० १।२२, °मत् अत्युज्वल, अत्युत्तम 3. इच्छा 4. आसक्ति ।

अभीषङ्ग=तु० अभिषंग ।

अभीष्ट (भू० क० कृ०) [अभि+इष्+क्त] 1. चाहा हुआ, इच्छित 2. प्रिय, कृपापात्र, प्रियतम—**ष्टः** प्रियतम, **ष्टा** गृहस्वामिनी, प्रेमिका—**ष्टम्** 1. अभीष्ट पदार्थ 2. रुचिकर पदार्थ—अन्यस्मै हृदयं देहि नानभीष्टे घटामहे—भट्टि० २०।२४ ।

अभुग्न (वि०) [न० त०] 1. जो झुका हुआ या टेढ़ा मेढ़ा न हो, सीधा 2. स्वस्थ, रोगमुक्त ।

अभुज (वि०) [न० ब०] बाहुरहित, लूला ।

अभुजिष्या [न० त०] जो दासी या सेविका न हो, स्वतन्त्र स्त्री ।

अभूः [न० त०] विष्णु, जो पैदा न हुआ हो ।

अभूत (वि०) [न० त०] सत्ताहीन, जो हुआ न हो, अविद्यमान, अवास्तविक, मिथ्या । सम०—**आहरणम्** अवस्तु कथन, कपटपूर्ण या व्यंगमय बात कहना, —**तद्भावः** जो पहले विद्यमान न हो उसका होना, या बनना, या बदलना—अभूततद्भावे च्विः, अकृष्णः कृष्णः संपद्यते तं करोति कृष्णीकरोति—सिद्धा०, तु० पयोधरीभूतचतुःसमुद्राम्—रघु० २।३, —**पूर्व** (वि०) जो पहले न हुआ हो, जिससे आगे कोई न बढ़ा हो—अभूत °र्वो राजा चिंतामणिर्नाम, वासव० १, वेणी० ३।२, —**प्रादुर्भावः** जो पहले न हुआ हो उसका प्रकट होना, —**शत्रु** (वि०) शत्रुहीन, जिसका कोई शत्रु न हो ।

अभूतिः (स्त्री०) [न०त०] 1. सत्ता हीनता, अविद्यमानता 2. निर्धनता ।

अभूमिः (स्त्री०) [न० त०] 1. भूमि का न होना, भूमि को छोड़कर अन्य कोई पदार्थ, 2. अनुपयुक्त स्थान या पदार्थ, अनुचित स्थान, —अभूमिरियमविनयस्य श० ७, स खलु मनोरथानामप्यभूमिर्विसर्जनावसरसंस्कारः —त० मेरी आशाओं से बहुत अधिक आगे बढ़ा हुआ—शि० १।४२ ।

अभृत, अभृत्रिम (वि०) [न० त०] 1. जिसका भाड़ा न दिया गया हो 2. जिसको समर्थन प्राप्त न हो ।

अभेद (वि०) [न० ब०] 1. अविभक्त 2. समरूप, वही —**दः** [न० त०] 1. भिन्नता का अभाव, समरूपता या समानता का होना,—तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमे-

यो:— काव्य० १०, 2. घनिष्ट एकता— इच्छतां सह वधूभिरभेदम्—कि० ९।१३, हि० ३।७९, आवामहे विग्रहयोरभेदम्—भर्तृ० १।२४।

अभेद्य, } (वि०) [न० त०] 1. जो बेधा न जा सके 2. **अभैदिक** } अविभाज्य,—द्यम् हीरा।

अभोज्य (वि०) [न० त०] 1. खाने के अयोग्य, भोजन के लिए निषिद्ध, अपवित्र 'अन्न (वि०) जिसका भोजन दूसरों के लिये खाने के अनुपयुक्त हो।

अभ्यग्र (वि०) [ब० स०] 1. निकट, समीप 2. ताजा, नया इदं शोणितमभ्यग्रे संप्रहारेऽच्युतत् तयोः—महा०,—ग्रम् सामीप्य, सान्निध्य।

अभ्यक्त (वि०) [प्रा० स०] हाल ही का निहित।

अभ्यङ्गः [अभि+अञ्ज्+घञ्] 1. किसी तेल या चिकने पदार्थ को शरीर पर मलना, तेल की मालिश— अभ्यङ्गनेपथ्यमलञ्चकार—कु० ७।७, 2. मालिश, लेप, 3. उबटन।

अभ्यञ्जनम् [अभि+अञ्ज्+ल्युट्] 1. चिकने पदार्थों को शरीर पर मलना, 2. मालिश करना 3. आँखों में काजल डालना 4. चिकना पदार्थ, तेल, उबटन।

अभ्यधिक (वि०) [प्रा० स०] 1. अपेक्षाकृत अधिक 2. बढ़ चढ़ कर, गुण या परिमाण में अपेक्षाकृत अधिक, अधिक ऊँचा, अधिक बड़ा—नत्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यः—भग० ११।४३, (कई बार अपा० और करण० के साथ)—धान्यं दशभ्यः कुम्भेभ्यो हरतोऽभ्यधिकं वधः—मनु० ८।३२०, 3. सामान्य से अधिक, असाधारण, प्रमुख—भव पंचाभ्यधिकः श० ६।२।

अभ्यनुज्ञा—ज्ञानम् [अभि+अनु+ज्ञा+अङ्+टाप्, ल्युट् वा] 1. स्वीकृति, 2. सहमति, अनुमति—कृताभ्यनुज्ञा गुरुणा गरीयसा कु० ५।७, रघु० २।६९ 2. आज्ञा, आदेश 3. छुट्टी स्वीकार करना, बर्खास्त करना 4. तर्क को स्वीकार करना।

अभ्यन्तर (वि०) [प्रा० स०] 1. भीतरी भाग, आन्तरिक, अन्दरूनी (विप० बाह्य) रघु० १७।४५, का० ६६, याज्ञ० ३।२९३, 2. अन्तर्गत होना, किसी समूह या शरीर का एक अंग—देवी परिजनाभ्यन्तरः मालवि० ५, 3. दीक्षित, परिचित, कुशल (अधि० के साथ या समास में)—सङ्गीतकेऽभ्यन्तरे स्वः—मालवि० ५, अहो प्रयोगाभ्यन्तरः प्राश्निकः—मालवि० २, 4. निकटतम, घनिष्ट, अत्यन्त संबद्ध—त्यक्ताश्चाभ्यन्तरा येन—पंच० १।२५९,—रम् 1. भीतर का, भीतरी, अन्दर का, (किसी वस्तु का) अन्दरूनी भाग, भीतरी स्थान शमीमिवाभ्यन्तरलीनपावकाम्—रघु० ३।९, भग० ५।२७, 2. सम्मिलित किया हुआ स्थल, समय या स्थान का अवकाश—षण्मासाभ्यन्तरे पंच० ४, 3. मन। सम०—करण (वि०) अन्दर ही अन्दर गुप्त अंगों वाला, प्रत्यक्षज्ञान की शक्ति को अन्दर रखने वाला, विक्रम० ४,—कला गुप्त कला, प्रेम लीला या हावभाव प्रदर्शित करने की कला।

अभ्यन्तरकः [अभ्यन्तर+कन्] घनिष्ट मित्र।

अभ्यन्तरीकृ [अभ्यन्तर+च्वि+कृ] (तना० उभ०) 1. दीक्षित करना, परिचित करना—प्रागल्भ्याद्वक्तुमिच्छन्ति मन्त्रेष्वभ्यन्तरीकृताः—रामा० 2. परिचय कराना—सर्वविश्रंभेषु अभ्यन्तरीकरणीया—का० १०१, दश० १५९, १६२, 3. किसी को निकटमित्र बनाना—वाताः ...भ्यन्तरीकृताः—पंच० १।२५९।

अभ्यन्तरीकरणम् [अभ्यंतर+च्वि+कृ+ल्युट्] दीक्षित करना, परिचय कराना—सजीवनिर्जीवाकु च द्यूतकलास्वभ्यन्तरीकरणम्—दश० ३९।

अभ्यमनम् [अभि+अम्+ल्युट्] 1. प्रहार, क्षति २. रोग।

अभ्यमित-अभ्यान्त (भू० क० कृ०) [अभि+अम्+क्त] 1. रोगी, बीमार 2. चोट खाया हुआ, घायल।

अभ्यमित्रम् [अव्या० स०] शत्रु के ऊपर आक्रमण (क्रि० वि०) शत्रु की ओर या शत्रु के विरुद्ध चढ़ाई करना।

अभ्यमित्रीणः—य: } [अभि+अमित्र+ख, छ, यत् वा]
अभ्यमित्र्यः } वह योद्धा जो वीरतापूर्वक शत्रु का सामना करता है—उद्योगमभ्यमित्रीणो यथेष्टं त्वं च संतनु—भट्टि० ५।४७, मारीचोऽनुनयं त्रासादभ्यमित्र्यो भवामि ते—४६।

अभ्ययः [अभि+इ+अच्] 1. आना, पहुँचना 2. (सूर्य का) अस्त होना।

अभ्यर्चनम्-अभ्यर्चा [अभि+अर्च्+ल्युट्, अङ्+टाप् वा] पूजा, सजावट, समादर।

अभ्यर्ण (वि०) [अभि+अर्द्+क्त] निकट, समीप, स्थान के निकट या समीप होने वाला, समीप आने वाला— अभ्यर्णमागमकृतमरणशङ्कि:—रघु० २।३२,—र्णम् सामीप्य, सान्निध्य अन्धकारिणि वनाभ्यर्णे किमुद्भ्राम्यति गीत० ७, अभ्यर्णे परिरम्य निर्भरभरः प्रेमान्धया राधया —गीत० १, शि० ३।२१।

अभ्यर्थनम्-ना [अभि+अर्थ्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] प्रार्थना, अनुरोध, दरख्वास्त, नालिश 'नाभङ्गभयेन—कु० १।५२।

अभ्यर्थिन् (वि०) [अभि+अर्थ्+णिनि] याचना या प्रार्थना करने वाला।

अभ्यर्हणा [अभि+अर्ह्+युच्, स्त्रियां टाप्] 1. पूजा, 2. आदर, सम्मान, समादर।

अभ्यर्हित (वि०) [अभि+अर्ह्+क्त] 1. सम्मानित, प्रतिष्ठित, अत्यादरणीय 2. योग्य, सुहावना, उपयुक्त, —अभ्यर्हिता बन्धुषु तुल्यरूपा वृत्तिविशेषेण तपोधनानाम्—कि० ३।११।

अभ्यवकर्षणम् [अभि+अव+कृष्+ल्युट्] निकालना, खींचकर बाहर करना।

अभ्यवकाशः [अभि+अव+काश्+घञ्] खुली जगह।

अभ्यवस्कन्दः—**दनम्** [अभि+अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1. डट कर शत्रु का मुकाबला करना, शत्रु पर चढ़ाई करना 2. शत्रु को निश्शस्त्र करने के लिए प्रहार करना 3. आघात।

अभ्यवहरणम् [अभि+अव+हृ+ल्युट्] 1. नीचे फेंक देना 2. भोजन ग्रहण करना, गले के नीचे उतारना (कण्ठादधोनयनम्—मिता०)।

अभ्यवहारः [अभि+अव+हृ+घञ्] 1. भोजन ग्रहण करना, आहार लेना, खाना पीना आदि 2. आहार — जम्भशब्दोऽभ्यवहारार्थवाची—काशी०, °संवादापेक्षी —मालवि० ४।

अभ्यवहार्य (वि०) [अभि+अव+हृ+ण्यत्] खाने के योग्य, भोज्य,—र्यम् आहार,—सर्वत्रौदरिकस्य अभ्यवहार्यमेव विषयः—विक्रम० ३।

अभ्यसनम् [अभि+अस्+ल्युट्] 1. बार-बार करना, बार-बार किया गया अभ्यास 2. निरन्तर अध्ययन, अनुशीलन—(ताम्) विद्याभ्यसनेनेव प्रसादयितुमर्हसि—रघु० १।८८।

अभ्यसूयक (वि०) [स्त्री—यिका] [अभि+असु+ण्वुल्] ईर्ष्यालु, डाहभरा, निन्दक, कलंक लगाने वाला, —मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषंतोऽभ्यसूयकाः—भग० १६।१८।

अभ्यसूया [अभि+असु+यक्+अ+टाप्] डाह, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध,—शक्राभ्यसूयाविनिवृत्तये यः—रघु० ६।७४, रूपेषु वेशेषु च साभ्यसूयाः—७।२, ९।६४।

अभ्यस्त (भू० क० कृ०) [अधि+अस्+क्त] 1. बार बार दोहराया गया, बार बार अभ्यास किया गया, —नयनयोरभ्यस्तमामीलनम्—अमरु० ९२, प्रयोग में लाया गया, आदत डाली हुई,—अनभ्यस्तरथचर्या —उत्तर० ५, 2. सीखा हुआ, पढ़ा हुआ,—शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां—रघु० १।८, भर्तृ० ३।८९, 3. (गण०) गुणा किया गया 4. (व्या० में) द्वित्व किया गया।

अभ्याकर्षः [अभि+आ+कृष्+घञ्] हाथ से छाती ठोक कर ललकारना (जैसे पहलवान कुश्ती के लिए)।

अभ्याकाङ्क्षितम् [अभि+आ+काङ्क्ष्+क्त] 1. मिथ्या आरोप, निराधार शिकायत 2. इच्छा।

अभ्याख्यानम् [अभि+आ+ख्या+ल्युट्] मिथ्या आरोप, लाञ्छन, निन्दा, बदनामी।

अभ्यागत (भू० क० कृ०) [अभि+आ+गम्+क्त] 1. निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ 2. अतिथि के रूप में आया हुआ,—सर्वत्राभ्यागतो गुरुः—हि० १।१०८,—तः अतिथि, दर्शक।

अभ्यागमः [अभि+आ+गम्+घञ्] 1. निकट आना या जाना, पहुँच, दर्शनार्थ गमन—तपोधनाभ्यागमसंभवा मुदः—शि० १।२३, किं वा मदभ्यागमकारणं ते—रघु० १६।८, महावी० २।२२, 2. सामीप्य, पड़ौस, 3. मुकाबला, हमला 4. युद्ध, संग्राम 5. शत्रुता, विद्वेष।

अभ्यागमनम् [अभि+आ+गम्+ल्युट्] उपागमन, पहुँच, दर्शनार्थ गमन, हेतुं तदभ्यागमने परीप्सुः—कि० ३।४।

अभ्यागारिकः [अभि+आगार+ठन्] परिवार के पालन में यत्नशील।

अभ्याघातः [अभि+आ+हन्+घञ्] हमला, आक्रमण।

अभ्यादानम् [अभि+आ+दा+ल्युट्] उपक्रम, प्रारम्भ, सूत्रपात करना।

अभ्याधानम् [अभि+आ+धा+ल्युट्] रखना, डालना (जैसा कि ईंधन)।

अभ्यान्त (वि०)[अभि+आ+अम्+क्त] बीमार रुग्ण, रोगी।

अभ्यापातः [अभि+आ+पत्+घञ्] संकट, दुर्भाग्य।

अभ्यामर्दः-**मर्दनम्** [अभि+आ+मृद्+घञ्, ल्युट् वा] युद्ध, संग्राम, संघर्ष, आक्रमण।

अभ्यारोहः-**रोहणम्** [अभि+आ+रुह्+घञ्, ल्युट् वा] चढ़ना, सवार होना, ऊपर तक जाना।

अभ्यावृत्तिः (स्त्री०) [अभि+आ+वृत्+क्तिन्] दोहराना, बार-बार होना, दे० 'अनभ्यावृत्ति' भी।

अभ्याश (वि०) [अभि+अश्+घञ्] निकट, समीप —शः 1. पहुँचना, व्याप्त होना 2. समीपस्थ पड़ौस, आस पास का (दे० 'अभ्यास'),—वायसाभ्याशे समुपविष्टः —पंच० २, सहसाभ्यागतां भैमीमभ्याशपरिवर्तिनीम्-महा०, दश० ६२, 3. परिणाम, फल 4. अभ्युदय, प्रत्याशंसा, अतः 'शीघ्रता' के अर्थ में प्रायः प्रयुक्त।

अभ्यासः [अभि+आ+अस्+घञ्] आवृत्ति,—व्याख्याता-व्याख्याता इति पदाभ्यासोऽध्यायपरिसमाप्ति द्योतयति—शारी०, नाभ्यासक्रममीक्षते-पंच १।१५१, 2. बार-बार किसी कार्य को करना, लगातार किसी कार्य में लगे रहना,—अविरतश्रमाभ्यासात्—का० ३०, अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते—भग० ६।३५, ४४ अनवरत अभ्यास के द्वारा, (पवित्र और अविकृत रहना) १२।१२, °निगृहीतेन मनसा—रघु० १०।२३, इसी प्रकार शर,° अस्त्र° आदि 3. आदत, प्रथा, चलन, —अमङ्गलाभ्यासरतिम्-कु० ५।६५, या० ३।६८, 4. शस्त्रास्त्र विषयक अनुशासन, कवायद, सैनिक कवायद 5. पाठ करना, अध्ययन करना,—काव्यज्ञ-शिक्षयाभ्यासः काव्य० १ 6. आसपास का, सामीप्य, पड़ौस ('अभ्याश' केलिए)—चूतयष्टिरिवाभ्यासे (शे) मधौ परभृतोन्मुखी —कु० ६।२, ('अभ्यासे-शे मधौ का यहाँ अर्थ 'मधु' को संबोधित करना है जो कि उसके निकट है—अर्थात् अपने आपको पूर्ण रूप से उसके सामने प्रकट करके।

यहाँ पावती की उपमा पूर्णतः सुरक्षित है—अर्थात् स्वयं चुप रहते हुए अपनी सखी को संबोधित करने के बहाने अपने प्रियतम से बात करना); अर्पितेयं तवाभ्यासे सीता पुण्यव्रता वधूः—उत्तर० ७।१७, आपको सौंपी हुई; अभ्यासा (शा) बागतः—सिद्धा० (अलुक् समास के रूप में) 7. (व्या० में) द्वित्व होना 8. द्वित्व हुए मूलशब्द का प्रथम अक्षर, द्वित्व अक्षर 9. (गण० में) गुणा 10. सम्मिलित गान, गीत की टेक। सम०—गत (वि०) उपागत, निकट गया हुआ,—योगः अनवरत गहन चिंतन से उत्पन्न मनोयोग,—अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय—भग० १२।९,—लोपः द्वित्व किये हुए अक्षर को हटा देना,—व्यवायः द्वित्व अक्षर से उत्पन्न अन्तराल।

अभ्यासादनम् [अभि+आ+सद्+णिच्+ल्युट्] शत्रु का सामना करना या उस पर हमला करना।

अभ्याहननम् [अभि+आ+हन्+ल्युट्] 1. प्रहार करना, चोट पहुँचाना, हत्या करना 2. रोक लगाना, बाधा डालना।

अभ्याहारः [अभि+आ+हृ+घञ्] 1. निकट लाना, ले जाना 2. लूटना।

अभ्युक्षणम् [अभि+उक्ष्+ल्युट्] 1. (जल) छिड़कना, तर करना,—परस्पराभ्युक्षणतत्पराणाम् (तासाम्) रघु० १६।५७, 2. अभिषेक द्वारा संस्कार।

अभ्युचित (वि०) [प्रा० स०] प्रचलित, प्रथा के अनुकूल।

अभ्युच्चयः [अभि+उत्+चि+अच्] 1. वृद्धि, आगम 2. सम्पन्नता।

अभ्युत्क्रोशनम् [अभि+उत्+क्रुश्+ल्युट्] ऊँचे स्वर से चिल्लाना।

अभ्युत्थानम् [अभि+उद्+स्था+ल्युट्] 1. (अपने आसन से) सत्कारार्थ उठना, किसी के सम्मान में खड़े होना 2. रवाना होना, प्रस्थान करना, कूच करना 3. उठना (शा० आल०), उन्नति, सम्पन्नता, मर्यादा,—(तस्य) नवाभ्युत्थानदर्शिन्यो ननन्दुः सप्रजाः प्रजाः—रघु० ४।३, यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्—भग० ४।७।

अभ्युत्पतनम् [अभि+उत्+पत्+ल्युट्] किसी पर उछलना, कूदना; अकस्मात् झपटना, हमला करना—अलक्षिताभ्युत्पतनो नृपेण—रघु० २।२७।

अभ्युदयः [अभि+उद्+इ+घञ्] 1. सूर्य चन्द्रादि का निकलना, सूर्योदय 2. उन्नति, सम्पन्नता, सौभाग्य, ऊंचा उठना, सफलता—स्पृशंति नः स्वामिनमभ्युदयाः—रत्न० १, भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्—रघु० ३।१४, 3. उत्सव, उत्सव का अवसर 4. उपक्रम, आरम्भ।

अभ्युदाहरणम् [अभि+उद्+आ+हृ+ल्युट्] विपरीत बात के द्वारा उदाहरण या निदर्शन देना।

अभ्युदित (भू० क० कृ०) [अभि+उद्+इ+त] 1. निकला हुआ 2. उन्नत 2. सूर्योदय के अवसर पर सोया हुआ।

अभ्युद्गमः-गमनम्, **अभ्युद्गतिः** (स्त्री०) [अभि+उद्+गम्+घञ्, ल्युट्, क्तिन् वा] 1. किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति या अतिथि के सम्मानार्थ उठकर चलना 2. निकलना, होना, उत्पन्न होना।

अभ्युद्यत [भू० क० कृ०] [अभि+उद्+यम्+क्त] 1. उठा हुआ, ऊपर उठाया हुआ, जैसा कि °आयुध, °शस्त्र 2. तत्पर, तैयार, प्रयत्नशील ('तुमुन्नन्त' सम्प्र० अधि० के अथवा समास में) 3. आगे गया हुआ, निकला हुआ, सामने दिखाई देने वाला, निकट आने वाला,—कुलमभ्युद्यतनूतनेश्वरम्—रघु० ८।१५, 4. अयाचित दिया हुआ या लाया हुआ।

अभ्युन्नत (वि०) [अभि+उद्+नम्+क्त] 1. उठा हुआ, ऊँचा किया हुआ,श० ३, 2. ऊपर को उभरा हुआ, बहुत ऊँचा—कु० १।३३।

अभ्युन्नतिः (स्त्री०) [अभि+उद्+नम्+क्तिन्] बड़ी उन्नति या समृद्धि।

अभ्युपगमः [अभि+उप+गम्+घञ्] 1. उपागमन, पहुंच 2. स्वीकार करना, मानना, सत्य समझना, (दोष) मान लेना 3. जिम्मेदारी, प्रतिज्ञा करना, निर्णय° मालवि० १, संविदा, करार, प्रतिज्ञा। सम०—सिद्धांतः मानी हुई प्रस्तावित योजना या सूक्ति।

अभ्युपपत्तिः (स्त्री०) [अभि+उप+पद्+क्तिन्] 1. सहायतार्थ निकट जाना, दया करना, कृपा करना, अनुग्रह, कृपा,—अनयाभ्युपपत्त्या—श० ४, 2. ढाढ़स, तसल्ली 3. रक्षा, बचाव,—ब्राह्मणाभ्युपपत्तौ च शपथे नास्ति पातकम्—मनु० ८।११२, 4. इकरार नामा, स्वीकृति, प्रतिज्ञा 5. स्त्री का गर्भवती होना (विशेषतः भाई की विधवा पत्नी का नियोग द्वारा)।

अभ्युपायः [अभि+उप+इ+अच्] 1. प्रतिज्ञा, वादा, इकरार 2. साधन, युक्ति, उपचार,—अस्मिन्सुराणां विजयाभ्युपाये—कु० ३।१९।

अभ्युपायनम् [अभि+उप+अय्+ल्युट्] सम्मानसूचक उपहार, प्रलोभन, रिश्वत।

अभ्युपेत (भू० क० कृ०) [अभि+उप+इ+क्त] 1. निकट आया हुआ, उपागत 2. प्रतिज्ञात, स्वीकृत, अंगीकृत—मेघ० ३८।

अभ्युपेत्य (अव्य०)[अभि+उप+इ+ल्यप् (क्त्वा)] पहुँच कर, स्वीकार करके, प्रतिज्ञा करके। सम०—अशुश्रूषा—हिन्दूधर्मशास्त्र के १८ अधिकारों में से एक, स्वामी और सेवक के मध्य की हुई संविदा का भंग।

अभ्युषः, **अभ्यूषः**, **अभ्योषः** [अभितः उ-ऊष्यते अग्निना दह्यते—उष् बाहु० क] एक प्रकार की रोटी,

बाटी।

अभ्यूहः [अभि+ऊह्+घञ्] 1. तर्क करना, दलील देना, विचार विमर्श करना 2. आगमन (घटाना), अनुमान, अटकल,—पराम्यूहस्थानान्यपि तनुतराणि स्थगयति —मा० १ १४, 3. अध्याहार करना, 4. समझना।

अभ्र् (भ्वा० पर०) [अभ्रति, आनभ्र, अभ्रित] जाना, इधर उधर घूमना—वनेष्वानभ्र निर्भयः—भट्टि० ४।११, १४।११०।

अभ्रम् [अभ्र्+अच् या अप्+भृ अपो बिभर्त्ति—भृ+क] 1. बादल 2. वायुमंडल, आकाश—परितो विपाण्डु दधदभ्रशिरः—शि० ९।३, दे० अभ्रंलिह आदि 3. चिल-चिल, अबरक 4. (ग० में) शून्य। सम० —अवकाशः बचाव के लिए केवल मात्र बादल, बारिश होना,—अवकाशिक,—अवकाशिन् (वि०) बारिश में रहकर (तपस्या करने वाला) बारिश से बचाव का कोई उपाय न करने वाला,—उत्थः आकाश में उत्पन्न इन्द्र का वज्र,—नागः ऐरावत नाम का हाथी जो धरती को धारण किये हुए है,—पथः 1. वायुमंडल 2. गुब्बारा,—पिशाचः,—पिशाचकः राहु की उपाधि, मेघासुर,—पुष्पः एक प्रकार की बेंत,—पुष्पम् 1. पानी 2. असंभव बात, हवाई किला,—मातंगः इन्द्र का हाथी ऐरावत,—माला,—वृन्दम् बादलों की पंक्ति या समूह।

अभ्रंलिह (वि०) [अभ्र+लिह्+खश् मुमागमः] 'बादलों को चूमने वाला' स्पर्श करने वाला अर्थात् बहुत ऊँचा; —अभ्रंलिहाग्राः प्रासादाः—मेघ०६६, प्रासादमभ्रंलिहमारुरोह—रघु० १४।२९;—हः वायु, हवा।

अभ्रकम् [अभ्र+कन्] चिलचिल, अबरक। सम०—भस्मन् (नपुं०) अबरक का कुश्ता, अबरक की भस्म —सत्त्वम् इस्पात।

अभ्रङ्कष (वि०) [अभ्र+कष्+खच् मुमागमः] बादलों को छूने वाला, बहुत ऊँचा,—आदायाभ्रङ्कषं प्रायान्मलयं फलशालिनम्—भट्टि०,—षः 1. वायु, हवा 2. पहाड़।

अभ्रमुः (स्त्री०) [अभ्र+मा+उ] इन्द्र के हाथी ऐरावत की सहचरी, पूर्वदिशा के दिग्गज की हथिनी। सम० —प्रियः,—वल्लभः ऐरावत।

अभ्रिः-भ्री (स्त्री०) [अभ्र+इन् ङीप् वा] 1. लकड़ी की बनी हुई नोकदार फरही जिससे नाव की सफाई की जाती है, 2. कुदाल, खुरपी।

अभ्रित (वि०) [अभ्र+इतच्] बादलों से आच्छादित, बादलों से घिरा हुआ—रघु० ३।१२।

अभ्रिय (वि०) [अभ्र+घ] बादलों से संबंध रखने वाला, आकाश या मुस्ता अथवा बादलों से उत्पन्न,—यः बिजली, —यम् गरजने वाले बादलों का समूह।

अभ्रेषः [न० त०] अव्यत्यय, योग्यता, उपयुक्तता।

अम् (अव्य०) [अम्+क्विप्] 1. जल्दी, शीघ्र 2. जरा, थोड़ा।

अम् (भ्वा० प०) [अमति, अमितुम्, अमित] 1. जाना, की ओर जाना 2. सेवा करना, सम्मान करना 3. शब्द करना 4. खाना, (चु० प० या प्रेर०) [आमयति] 1. टूट पड़ना, आक्रमण करना, रोग से कष्ट होना, किसी व्याधि से पीड़ित होना 2. रोगी होना, कष्टग्रस्त या रोगग्रस्त होना।

अम (वि०) [अम्+घञ् अवृद्धिः] कच्चा (जैसा कि फल),—मः 1. जाना, 2. रुग्णता, रोग 3. सेवक, अनुचर 4. यह, स्वयम्।

अमङ्गल-ल्य (वि०) [ब० स०, न० त०] 1. अशुभ, बुरा, अकल्याणकर—रघु० १२।४३,—°अभ्यासरतिम् कु० ५।६५, अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलम् —पुष्प० 2. भाग्यहीन, दुर्भाग्य पूर्ण, —लः एरण्ड का वृक्ष,—लम् अशोभनीयता, दुर्भाग्य, अकल्याण, प्रायः नाट्य-शास्त्र में प्रयुक्त,—शांतं पापं प्रतिहतममङ्गलम्—तु० भगवान् कल्याण करे!

अमण्ड (वि०) [न० ब०] 1. बिना सजावट का, अलंकार रहित 2. बिना झाग का, या बिना मांड का (उबला हुआ चावल),—डः एरण्ड का वृक्ष।

अमत (वि०) [न० त०] 1. अननुभूत, मन के लिए असंलक्ष्य, अज्ञात 2. नापसन्द, अमान्य,—तः 1. समय 2. रुग्णता, रोग, 3. मृत्यु।

अमति (वि०) [न० ब०] दुर्मना, दुष्ट, दुश्चरित्र, —तिः 1. धूर्त, कपटी 2. चाँद 3. समय,—तिः (स्त्री०) [न० त०] अज्ञान, संज्ञाहीनता, ज्ञान का अभाव, अदूरदर्शिता—अमत्यैतानि षड् जग्ध्वा —मनु० ५।२०, ४।२८२,। सम०—पूर्व (वि०) संज्ञाहीन, विचारहीन।

अमत्त (वि०) [न० त०] जो नशे में न हो, सही दिमाग़ का।

अमत्रम् [अमति भुक्ते अन्नमत्र—अम्+आधारे अत्रन्] 1. बर्तन, बासन, पात्र 2. सामर्थ्य, शक्ति।

अमत्सर (वि०) [न० ब०] जो ईर्ष्यालु या डाहयुक्त न हो, उदार।

अमनस्, **अमनस्क** (वि०) [न० ब०, कप् च] 1. बिना मन या ध्यान के 2. बुद्धिहीन (जैसे कि बालक) 3. ध्यान न देने वाला, 4. जिसका अपने मन के ऊपर कोई नियंत्रण न हो 5. स्नेहहीन—(नपुं०—नः) 1. जो इच्छा का अंग न हों, प्रत्यक्षज्ञान का अभाव 2. ध्यानशून्य (पुं०—नाः) परमेश्वर। सम०—गत (वि०) अज्ञात, अविचारित,—ज्ञ,—नीत, नापसंद, रद्द किया गया, धिक्कृत,—योगः ध्यान न देना,—हर (वि०) जो सुखकर न हो, जो रुचिकर न हो।

अमनाक् (अव्य०) [न० त०] थोड़ा नहीं, बहुत, अत्यधिक ।

अमनुष्य (वि०) [न० ब०] 1. अमानुषिक, जो मनुष्योचित न हो 2. जहाँ मनुष्य का आना जाना बहुत कम हो,—ष्यः [न० त०] 1 जो मनुष्य न हो, 2. राक्षस ।

अमन्त्र,-त्रक (वि०) [न० ब० कप् च] 1. वैदिक मंत्रों से रहित, वह संस्कार जिसमें वेदमंत्रों के पाठ की आवश्यकता न हो 2. जिसे वेद के पढ़ने का अधिकार न हो जैसे शूद्र या स्त्री 3. जो वेदपाठ से अनभिज्ञ हो,—अव्रतानाममन्त्राणाम्—मनु० १२।११४, 4. रोग की वह चिकित्सा जिसमें जादूमंत्र की क्रिया न की जाती हो,—अनया कथमन्यथावलीढा न हि जीवन्ति जना मनागमन्त्राः—भामि० १।१११ ।

अमन्द (वि०) [न० त०] 1. जो सुस्त या मंद न हो, फुर्तीला, बुद्धिमान् 2. तेज, प्रबल, प्रचण्ड (वायु आदि) 3. अनल्प, अति, अधिक, बहुत, तीव्र,—अमन्दमदर्दुदिन—उत्तर० ५।५, अमन्दमिलदिन्दिरे निखिलमाधुरीमन्दिरे—भामि० ४।१ ।

अमम (वि०) [न० ब०] बिना अहंकार के, स्वार्थ या सांसारिक आसक्ति से शून्य, ममतारहित,—शरणेष्वममश्चैव वृक्षमूलनिकेतनः—मनु० ६।२६ ।

अममता-त्वम् [न० त०] उदासीनता, स्वार्थराहित्य ।

अमर (वि०) [न० त० मृ—पचाद्यच्] जो कभी मृत्यु को प्राप्त न हो, न मरने वाला, अविनाशी,—अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च साधयेत्—हि०, पंच० ३, मनु० २।१४८,—रः 1. देव, देवता 2. पारा 3. सोना 4. तेंतीस की संख्या (क्योंकि गिनती में इतने ही देवता हैं) 5. अमरसिंह 6. हड्डियों का ढेर—रा 1. इन्द्र का आवासस्थान (तु० अमरावती) 2. नाल 3. योनि 4. गृहस्तम्भ,—री 1. देवपत्नी, देवकन्या 2. इन्द्र की राजधानी । सम०—अङ्गना,—स्त्री दिव्य अप्सरा, देवकन्या—मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः —शि० १।५१,—अद्रिः देव-पर्वत अर्थात् सुमेरु पहाड़ —अधिपः, —इन्द्रः, —ईशः, —ईश्वरः, —पतिः, —भर्ता,—राजः देवताओं का स्वामी, इन्द्र की उपाधि, कई बार विष्णु और शिव की भी उपाधि —आचार्यः, —गुरुः, —पूज्यः देवताओं के गुरु, बृहस्पति की उपाधि, —आपगा, —तटिनी, —सरित् (स्त्री) स्वर्गीय नदी, गंगा की उपाधियाँ,—°तटिनीरोधसि वसन्—भर्तृ० ३।१२३, —आलयः देवताओं का आवासस्थान, स्वर्ग, —कंटकम् विंध्यपर्वतश्रेणी के उस भाग का नाम जो नर्मदा नदी के उद्गम स्थान के निकट है — कोशः,—कोषः अमरसिंह द्वारा रचित संस्कृत भाषा का एक सुप्रसिद्ध कोश —तरुः, —दारुः 1. दिव्य वृक्ष, इन्द्र के स्वर्ग का एक वृक्ष,—अमरतरुकुसुमसौरभसेवनसंपूर्णसकलकामस्य—भामि० १।२८ 2. =देव दारु 3. कल्पवृक्ष, —द्विजः देवल ब्राह्मण जो मंदिर या मूर्ति संबंधी कार्य करता हो, मन्दिर का अधीक्षक,—पुरम्, देवताओं का—आवासस्थान, दिव्य स्वर्ग,—पुष्पः,—पुष्पकः कल्पवृक्ष, —प्रख्य,—प्रभ (वि०) देवताओं जैसा,—रत्नम् स्फटिक,—लोकः देवताओं की दुनियाँ, स्वर्ग, °ता स्वर्गीय सुख,—तेषु सम्यग्वर्तमानो गच्छत्यमरलोकताम्—मनु० २।५,—सिंहः अमरकोश के रचयिता का नाम, वह जैन धर्मावलम्बी थे, कहा जाता है कि विक्रमादित्य महाराज के नवरत्नों में एक रत्न थे ।

अमरता-त्वम् [अमर+तल्, त्वल् वा] देवत्व ।

अमरावती [अमर+मतुप्, दीर्घः] देवताओं का आवासस्थान, इन्द्र का घर,—ससंभ्रमेन्द्रद्रुतपातितार्गला निमीलिताक्षीव भियाऽमरावती । शिशु० ।

अमर्त्य (वि०) [न० त०] जो मरणधर्मा न हो, दिव्य, अविनाशी,—°भावेऽपि रघु० ७।५३, °भुवनम्—स्वर्ग, °ता अविनश्वरता,—र्त्यः देवता, । सम०—आपगा देवनदी, गंगा की उपाधि—विक्रमांक० १८।१०४ ।

अमर्मन् (नपुं०) [न० त०] शरीर का वह अंग जो मर्मस्थल न हो । सम०—वेधिन् मर्मस्थल को न बींधने वाला, मृदु, कोमल ।

अमर्याद (वि०) [न० ब०] 1. उचित सीमाओं को पार करने वाला, सीमा को उल्लंघन करने वाला, अनादर करने वाला, अनुचित,—मर्यादायाममर्यादाः स्त्रियस्तिष्ठन्ति सर्वदा—पंच० १।१४२, तादृशं त्वममर्यादं कर्म कर्तुं चिकीर्षसि—रामा०, 2. सीमारहित, असीम—दा [न० त०] उचित सीमा का उल्लंघन करना, आचरणहीनता, अप्रतिष्ठा, उचित सम्मान की अवहेलना ।

अमर्ष (वि०) [न० ब०] असहनशील,—र्षः [न० त०] 1. असहिष्णुता, असहनशीलता, धैर्यशून्यता,—अमर्षशून्येन जनस्य जंतुना न जातहार्देन न विद्विषादरः—कि० १।३३, ईर्ष्या, ईर्ष्यायुक्त क्रोध,—किन् भवतस्तातप्रतापोत्कर्षेऽप्यमर्षः—उत्तर० ५, सा० शा० में ३३ व्यभिचारी भावों में से एक—अमर्ष दे० सा० द०; रस० निम्नपरिभाषा बताता है:—परकृतावज्ञानादिनानापराधजन्यो मौनवाक्पारुष्यादिकारणभूतश्चित्तवृत्तिविशेषोऽमर्षः 2. क्रोध, आवेश, कोप,—पुत्रवधामर्षोद्दीपितेन गांडीविना—वेणी० २, सामर्ष क्रुद्ध, कुपित, सामर्षम् क्रोधपूर्वक 3. तीव्रता, प्रचण्डता । सम०—ज (वि०) क्रोध या असहनशीलता से उत्पन्न, —हासः क्रोधपूर्ण हंसी, खिल्ली उड़ाना ।

अमर्षण,-र्षित, अमर्षिन्,-र्षवत् (वि०) [न० ब०, न० त०] धैर्यहीन, असहनशील, क्षमा न करने वाला—पंच०

१।३२६, २. क्रुद्ध, कुपित, प्रचण्ड स्वभाव का—हृदि क्षतो गोत्रभिदप्यमर्षणः—रघु० ३।५३—अभिमन्युवधामर्षितैः पाण्डुपुत्रैः—वेणी० ४, 3. प्रचण्ड, दृढ़-संकल्प।

अमल (वि०) [न० ब०] 1. मलरहित, मलमुक्त, पवित्र, निष्कलंक, विमल,—अमलाः सुहृदः—पंच० २।१७१, विशुद्ध, निष्कपट 2. श्वेत उज्ज्वल,—कर्णावसक्तामलदन्तपत्रम्—कु० ७।२३, रघु० ६।८०,—ला 1. लक्ष्मी देवी 2. नाल 3. आँवले का वृक्ष,—लम् 1. पवित्रता 2. अबरक, 3. परब्रह्म। सम०—पतत्रिन् [पुं०—त्री] जंगली हंस,—रत्नम्,—मणिः स्फटिक पत्थर।

अमलिन (वि०) [न० त०] स्वच्छ, बेदाग, पवित्र, (नैतिक रूप से भी)—कुलममलिनं नत्वेवायं जनो न च जीवितम्—मा० २।२,।

अमसः [अम्+असच्] 1. रोग 2. मूर्खता 3. मूर्ख 4. समय।

अमा (वि०) [न० त०] अपरिमित—(अव्य०) 1. से, निकट, पास 2. के साथ, से मिलकर, जैसा कि अमात्य, अमावस्या (स्त्री) नूतन चन्द्रमा का दिन, सूर्य और चन्द्र के संयोग का दिन,—अमायां तु सदा सोम ओषधीः प्रतिपद्यते—व्यास 2. चन्द्रमा की सोलहवीं कला, पुं०—आत्मा। सम०—अन्तः नूतन चन्द्रमा के दिन की समाप्ति,—पर्वन् (नपुं०) अमा का पवित्र काल, नूतन चन्द्रमा का दिवस।

अमांस (वि०) [न० ब०] 1. बिना मांस का, मांस रहित, 2. दुबला-पतला, बलहीन,—सम् [न० त०] जो मांस न हो, मांस को छोड़ कर और कोई वस्तु। सम०—ओदनिक (वि०)[स्त्री०—की] मांसयुक्त बने हुए चावलों से संबंध न रखने वाला।

अमात्यः [अमा+त्यक्] राजा का सहचर, या अनुयायी, मंत्री, अमात्यपुत्रैः सवयोभिरन्वितः—रघु० ३।२८।

अमात्र (वि०) [न० ब०] 1. सीमारहित, अपरिमित अपूर्ण, असमस्त 3. जो आरम्भिक न हो,—त्रः परब्रह्म,।

अमाननम्-ना [न० त०] अनादर, अपमान, अवज्ञा।

अमानस्यम् [न० त०] पीड़ा।

अमानिन् (वि०) [न० त०] विनम्र, विनीत।

अमानुष (वि०) [स्त्री०—षी] [न० त०] अमानवी, मनुष्य से संबंध न रखने वाला, अलौकिक, अपार्थिव, अपौरुषेय, —आकृतिरेवानुमापयत्यमानुषताम्—का० १३२।

अमानुष्य (वि०)[न० त०] अमनुष्योचित, अपौरुषेय आदि।

अमाम (मा) सी=अमावसी या अमावस्या।

अमाय (वि०) [न० ब०] 1.अकुटिल, पारखी, मायारहित, निष्कपट 2. जो मापा न जा सके;—या 1. कपट-शून्यता, ईमानदारी, निष्कपटता 2. (वेदा० में) भ्रम का अभाव, परमात्मा का ज्ञान—यम् परब्रह्म।

अमायिक,—मायिन् (वि०) [न० त०] मायारहित, निश्छल, ईमानदार।

अमावस्या,—वास्या
अमावसी,—वासी
(अमामसी,-मासी) } [अमा+वस्+यत्, ण्यत् वा; अमा+वस्+अप्, घञ् वा] नूतन चन्द्रमा का दिन, वह समय जब कि सूर्य और चन्द्रमा दोनों संयुक्त रहते हैं, प्रत्येक चान्द्र मास के कृष्ण पक्ष का पन्द्रहवाँ दिन—सूर्याचन्द्रमसोः यः परः संन्निकर्षः साऽमावस्या—गोभिल०।

अमित (वि०) [न० त०] 1. जो मापा न गया हो, असीम, सीमारहित, विशाल–मितं ददाति हि पिता मितं भ्राता मितं सुतः, अमितस्य हि दातारं भर्तारं का न पूजयेत्—रामा० 2. उपेक्षित, अनादृत 3. अज्ञात 4. असंस्कृत। सम०—अक्षर (वि०) गद्यात्मक,—आभ (वि०) अतिकांतियुक्त, असीम प्रभायुक्त,—ओजस् (वि०) असीम तेजोयुक्त, अखिल शक्तिसंपन्न, सर्वशक्तिमान्—तेजस्,—द्युति (वि०) असीम तेज या कांतियुक्त—विक्रमः 1. असीम बल शाली, 2. विष्णु।

अमित्रः [अम्+इत्र] जो मित्र न हो, शत्रु, विरोधी, वैरी, प्रतिद्वंद्वी, त्रिपक्षी,—स्याताममित्रौ मित्रे च सहजप्राकृतावपि—शि० २।३६, तस्य मित्राण्यमित्रास्ते—१०१, प्रकृत्यमित्रा हि सतामसाधवः—कि० १४।२१,। सम०—घात,—घातिन्,—घ्न,—हन् शत्रुओं को मारने वाला, —जित्(वि०) अपने शत्रुओं को जीतने वाला, अमित्रजिन्मित्रजिदोजसा च यत्—नै० १।१३।

अमिथ्या (क्रि० वि०) [न० त०] जो मिथ्या न हो, सचमुच, —तामूचतुस्ते प्रियमप्यमिथ्या—रघु० १४।६।

अमिन् (वि०) [अम्+णिनि] बीमार, रोगी।

अमिषम् [अम्+इषन्] 1. सांसारिक सुख के पदार्थ, विलास की सामग्री 2. ईमानदारी, निश्छलता, निष्कपटता, 3. मांस।

अमीवा [अम्+वन् इडागमः] 1. कष्ट, बीमारी, रोग 2. दुःख, त्रास—वम् कष्ट, दुःख, पीड़ा, चोट।

अमुक (नि० वि०) [अदस्–टेरकच् उत्वमत्त्वे—तारा०] कोई व्यक्ति या पदार्थ, फलां २, ऐसा-ऐसा (जब व्यक्ति को नाम से संबोधित न किया जाय), मतं मेऽमुकपुत्रस्य यदत्रोपरि लेखितम्—याज्ञ० २।८६, ८७, उभयाभ्यर्थितेनैतन्मया ह्यमुकसूनुना, लिखितं ह्यमुकेनेति लेखकोऽन्ते ततो लिखेत्—८८।

अमुक्त (वि०) [न० त०] 1. जिसके बंधन खोले न गये हों, जो जाने में स्वतंत्र नहीं 2. जन्ममरण के बंधन से जिसे छुटकारा न मिला हो, जिसे मोक्ष प्राप्त न हुआ हो,—क्तम् एक हथियार (चाकू या तलवार आदि) जो सदैव पकड़ा जाता है, फेंका नहीं जाता। सम०

—हस्त (वि०) मितव्ययी, कंजूस (कदर्थना के लिए) अल्पव्ययी, परिमितव्ययी,—सदा प्रहृष्टया भाव्यं व्यये चामुक्तहस्तया—मनु० ५।१५० ।

अमुक्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. स्वातंत्र्यशून्यता 2. स्वतंत्रता या मोक्ष का भाव ।

अमुतः (अव्य०) [अदस्+तसिल् उत्व-मत्व] 1. वहां से, वहां 2. उस स्थान से, ऊपर से अर्थात् परलोक से या स्वर्ग से 3. इस पर, ऐसा होने पर, अब से आगे ।

अमुत्र (अव्य०) [अदस्+त्रल् उत्व-मत्व] (विप० इह) 1. वहां, उस स्थान पर, वहां पर, अमुत्रासन् यवनाः —दश०१२७ 2. वहां, (जो कुछ पहले हो चुका है या कहा गया है) उस अवस्था में 3. वहां, ऊपर, परलोक में, आगामी जन्म में—यावज्जीवं च तत्कुर्याद्येनामुत्र सुखं वसेत् 4. वहां—अनेनैवार्भका सर्वे नगरेऽमुत्र भक्षिताः—कथा० ।

अमुथा (अव्य०) [अदस्+थाल् उत्व-मत्व] इस प्रकार, इस रीति से ।

अमुष्य (अदस्-संब०) ऐसे का (केवल समास में) । सम० —**कुल** [अलुक् स०] (वि०) ऐसे कुल से संबंध रखने वाला (—लम्) प्रसिद्ध घराना,—पुत्रः,—पुत्री ऐसे प्रसिद्ध कुल का पुत्र या पुत्री, दे० आमुष्यायण ।

अमूदृश्,—श, क्ष (वि०) [स्त्री०—शी,—क्षी] [अदस् +दृश+क्विन्, कञ्, क्स वा स्त्रियां ङीप्] ऐसा, इस प्रकार का, इस रूप या ढंग का ।

अमूर्त (वि०) [न० त०] आकारहीन, अशरीरी, शरीर रहित (विप०—मूर्त-मूर्तत्वम्=अवच्छिन्नपरिमाणवत्त्वम्—मुक्ता०),—र्तः शिव । सम०—गुणः (वैशे०में) धर्म, अधर्म जैसे गुणों को अमूर्त या अशरीरी समझा जाता है ।

अमूर्ति (वि०) [न० ब०] आकार हीन, रूपरहित,—र्तिः विष्णु,—र्तिः (स्त्री०) [न० त०] रूप या आकार का न होना ।

अमूल—लक (वि०) [न० ब०] 1. निर्मूल (शा०), (आलं०) बिना किसी आधार के, निराधार, आधार रहित 2. बिना किसी प्रमाण के, जो मूल में न हो —नामूलं लिख्यते किंचित्—मल्लि०, 3. बिना किसी भौतिक कारण के जैसा कि सांख्य का 'प्रधान' ।

अमूल्य (वि०) [न० ब०] अनमोल, बहुमूल्य ।

अमृणालम् [सादृश्ये न० त०] एक सुगन्धित घास की जड़, (खस या उशीर) जिस के परदे या टट्टियां बनती है ।

अमृत (वि०) [न० त०] 1. जो मरा न हो 2. अमर 3. अविनाशी, अनश्वर,—तः 1. देव, अमर, देवता, 2. देवों के वैद्य धन्वन्तरि,—ता 1. मादक शराब 2. नाना प्रकार के पौधों के नाम,—तम् 1. (क) अमरता (ख) परममुक्ति, मोक्ष—मनु० १२।१०४, स श्रिये चामृताय च—अमर०, 2 देवों का सामूहिक शरीर 3 अमरता की दुनिया, स्वर्गलोक 4. सुधा, पीयूष, अमृत (विप० विष) जो समुद्र मंथन के फल स्वरूप प्राप्त समझा जाता है—देवासुरैरमृतमम्बुनिधिर्ममन्थे —कि० ५।३०, विषादप्यमृतं ग्राह्यम्—मनु० २।२३९, विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया— रघु० ८।४६,(प्रायः वाच्, वचनम्, वाणी आदि शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है) कुमारजन्मामृतसंमिताक्षरम्— रघु० ३।१६ 5. सोमरस 6. विष नाशक औषध 7 यज्ञशेष—मनु० ३।२८५, 8 अयाचितभिक्षा (दान), बिना मांगे दान मिलना—मृतं स्याद्याचितं भैक्ष्यममृतं स्यादयाचितम्—मनु० ४।४, ५, 9 जल—अमृताध्मात जीमूत—उत्तर० ६।२१, तु० भोजन के पूर्व या अन्त में आचमन करते हुए ब्राह्मणों के द्वारा पढ़े जानवाले मंत्र (अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा, अमृतापिधानमसि स्वाहा) 10 औषधि 11 घी,—अमृतं नाम यत्सन्तो मन्त्र जिह्वेषु जुह्वति—शि० २।१०७, 12 दूध 13 आहार 14 उबले हुए चावल, भात 15 मिष्ट पदार्थ, कोई भी मधुर वस्तु 16 सोना 17 पारा 18 विष 19 परब्रह्म । सम०—अंशुः,—करः,—दीधितिः,—द्युतिः,— रश्मिः चन्द्रमा के विशेषण,—अमृतदीधितिरेष विदर्भजे—नै० ४।१०४, —अन्धस्,—अशनः,—आशिन् (पुं०) वह जिसका भोजन अमृत है, देवता, अमर,—आहरणः गरुड़ जिसने एक बार अमृत चुराया था,—उत्पन्ना—मक्खी (—न्नम्), —उद्भवम् एक प्रकार का सुर्मा,—कुंडम् वह बर्तन जिसमें अमृत रक्खा हो,—क्षारम् नौसादर,—गर्भ (वि०) अमृत या जल से भरा हुआ, अमृतमय (—र्भः) 1. आत्मा 2. परमात्मा,—तरंगिणी ज्योत्स्ना, चांदनी, —द्रव (वि०) चन्द्रकिरण जो अमृत छिड़कती हैं (—वः) अमृत प्रवाह,—धारा 1. एक छन्द का नाम 2. अमृत का प्रवाह,—पः 1 अमृत पान करने वाला, देव या देवता 2. विष्णु 3 शराब पीने वाला,—ध्रुवममृतपनामवाञ्छयासावधरममुं मधुपस्तवाजिहीते—शि० ७।४२, (यहां अ° का 'अमृत पीनेवाला' भी अर्थ है) —फला अंगूरों का गुच्छा, अंगूरों की बेल, दाख, द्राक्षा,—बंधुः 1 देव, देवता 2 घोड़ा, चन्द्रमा,—भुज् (पुं०) अमर, देव, देवता जो यज्ञशेष का स्वाद लेता है,—भू (वि०) जन्ममरण से मुक्त,—मंथनम् अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र का मंथन,—रसः 1 अमृत, पीयूष,—काव्यामृतरसास्वादः—हि०, विविधकाव्यामृतरसान् पिबामः—भर्तृ० ३।४०, 2 परब्रह्म,—लता, —लतिका अमृत देने वाली बेल,—वाक् अमृत जैसे मधुर वचन बोलने वाला,—सार (वि०) अमृतमय (—रः)घी,—सूः—सूतिः 1 चन्द्रमा(अमृत चुवाने वाला) 2 देवताओं की माता,—सोदरः अमृत का गर्द, "उच्चैः-

श्रवाः" नामक घोड़ा,—स्रवः अमृत का प्रवाह,—स्रुत् (वि०) अमृत चुवाने वाला—कु० १।४५।

अमृतकम् [अमृत+कन्] अमृत, अमरतत्व प्रदायक रस।

अमृतता—त्वम् [अमृत+तल्, त्वल् वा]अमरत्व, अमरता।

अमृतेशयः [अलुक् स०] विष्णु (क्षीर सागर में सोने वाला)।

अमृषा (अव्य०) [न० त०] झूठपने से नहीं, सचमुच।

अमृष्ट (वि०) [न० त०] न मसला हुआ, न रगड़ा हुआ। सम०—मृज (वि०) अक्षुण्ण पवित्रता वाला।

अमेदस्क (वि०) [न० ब० कप् च) जिसमें चर्बी न हो, दुबला-पतला।

अमेधस् (वि०) [न० ब०] बुद्धिहीन, मूर्ख, जड़।

अमेध्य (वि०) [न० त०] 1. जो यज्ञ के योग्य, या अनुमत न हो 2. यज्ञ के अयोग्य—नामेध्यं प्रक्षिपेदग्नौ —मनु० ४।५३, ५६, ५।५, १३२, 3. अपवित्र, मलयुक्त, मैला, गदा, अस्वच्छ—भग० १७।१०, भर्तृ० ३।१०६,—ध्यम् 1. विष्ठा, लीद—समुत्सृजेद्राजमार्गे वस्त्वमेध्यमनापदि—मनु० ९।२८२, ५।१२६ 2. अपशकुन, अशुभशकुन—अमेध्यं दृष्ट्वा सूर्यमुपतिष्ठेत —कात्या०। सम० —कुणपाशिन् (वि०) मुर्दा खाने वाला, —युक्त, —लिप्त (वि०) मलयुक्त, मैला, मलिन, गंदा।

अमेय (वि०) [न० त०] 1. अपरिमेय, सीमारहित —अमेयो मितलोकस्त्वम्—रघु० १०।१८ 2. अज्ञेय। सम० —आत्मन् अपरिमेय आत्मा को धारण करने वाला, महात्मा, महामना, (पुं०) विष्णु।

अमोघ (वि०)[न० त०] 1. अचूक, ठीक निशाने पर लगने वाला—धनुष्यमोघं समधत्त बाणम्—कु० ३।६६, रघु० ३।५३, १२।९७, कामिलक्ष्येष्वमोघैः—मेघ० ७३, 2. निर्भ्रान्त, अचूक (शब्द, वरदान आदि) —अमोघाः प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमाशिषः—रघु० १।४४, 3. अव्यर्थ, सफल, उपजाऊ—यदमोघमपामन्तरुप्तं बीजमज त्वया—कु० २।५, इसी प्रकार °बलम्, °शक्ति, °वीर्यं, °क्रोध आदि, —घः 1. अचूक 2. विष्णु। सम०—दण्डः दंड देने में अटल, शिव, —दर्शिन् –दृष्टि (वि०) निर्भ्रान्ति मन वाला, अचूक नज़र वाला, —बल (वि०) अटूट शक्ति सम्पन्न, —वाच् (स्त्री०) वाणी जो व्यर्थ न जाय, वाणी जो अवश्य पूरी हो, (वि०) जिसके शब्द कभी व्यर्थ न हों —वांछित (वि०) जो कभी निराश न हो, —विक्रमः अटूट शक्तिशाली, शिव।

अम्ब् (भ्वा० पर०) 1. जाना 2. (आ०) शब्द करना।

अम्बः [अम्ब्+घञ्, अच् वा] पिता, —बम् 1. आँख, 2. जल, —ब (अव्य०) स्वीकृति बोधक 'हाँ' 'बहुत अच्छा' अव्यय।

अम्बकम् [अम्ब्+ण्वुल] 1. आँख ('त्र्यम्बक' में) 2. पिता।

अम्बरम् [अम्बः शब्दः तं राति धत्ते इति—अम्ब+रा+क] 1. आकाश, वायुमंडल, अन्तरिक्ष—तावतजैयदम्बरे—रघु० १२।४१, 2. कपड़ा, वस्त्र, परिधान, पोशाक—दिव्यमाल्यांबरधरम्—भग० ११।११, रघु० ३।९, दिगंबर, सागराम्बरा मही—समुद्र की परिधि से युक्त पृथ्वी 3. केसर 4. अबरक 5. एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य। सम० —अन्तः 1. वस्त्र की किनारी 2. क्षितिज, —ओकस् (पुं०) स्वर्ग में रहने वाला, देवता,—(भस्मरजः) विलिप्यते मौलिभिरंबरौकसाम् —कु० ५।७९, —बम् कपास,—मणिः सूर्य,—लेखिन् (वि०) गगनचुंबी—रघु० १३।२६।

अम्बरीषम् [अम्ब+अरिष् नि० दीर्घ०] (कुछ अर्थों में 'अम्बरीषम्' भी) 1. भाड़, कड़ाही 2. खेद, दुःख 3. युद्ध, संग्राम 4. नरक का एक भेद 5. छोटा जानवर, बछड़ा 6. सूर्य 7. विष्णु 8. शिव।

अम्बष्ठः[अम्ब+स्था+क]1. ब्राह्मण पिता तथा वैश्यमाता से उत्पन्न सन्तान—ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायामम्बष्ठो नाम जायते—मनु० १०।८, याज्ञ० १।९१, 2. महावत 3. (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम, —ष्ठा कुछ पौधों के नाम—(क) गणिका, यूथिका (जूही), (ख) पाठा (ग) चुक्रिका (घ) अँबाड़ा, —ष्ठा, —ष्ठी अम्बष्ठ जाति की स्त्री।

अम्बा [अम्ब्+घञ्+टाप्] (वैदिक संबोधन—अंबे; बाद की संस्कृत में—अम्ब) 1. माता, (स्नेह अथवा आदर पूर्ण संबोधन में भी इसका प्रयोग होता है)—भद्र महिला, भद्र माता—किमम्बाभिः प्रेषितः, अम्बानां कार्यं निर्वर्तय- श० २, कृताञ्जलिस्तत्र यदम्ब सत्यात् —रघु० १४।१६, 2. दुर्गा, भवानी 3. पांडु की माता, काशिराज की कन्या [यह और इसकी दो बहनें भीष्म के द्वारा सन्तानहीन विचित्रवीर्य के लिए अपहृत की गई थीं। क्योंकि अम्बा की सगाई पहले ही शाल्व के राजा से हो चुकी थी, अतः इसे उन्हीं के पास भेज दिया गया। परन्तु दूसरे के घर में रही होने के कारण शाल्व के राजा ने उसे ग्रहण नहीं किया, अतः वह वापिस आई और उसने भीष्म से प्रार्थना की कि वह अब उसे स्वीकार करें, परन्तु उन्होंने अपना आजन्मब्रह्मचर्य भंग करना उचित नहीं समझा, फलतः वह जंगल में जाकर भीष्म से प्रतिशोध लेने की तपश्चर्या करने लगी। शिव उस पर प्रसन्न हुए और उन्होंने उसके दूसरे जन्म में अभीष्ट प्रतिशोध दिलाने की प्रतिज्ञा की। बाद में वह द्रुपद के घर शिखण्डिनी के रूप में पैदा हुई, और शिखंडी कहलाने लगी, और अंत में वही भीष्म की मृत्यु का कारण बनी]।

अम्बाडा-ला [अम्बा+ला+क+टाप्—डलयोरभेदात् अम्बाडा अपि] माता।

अम्बालिका [अम्बाला+क+टाप् इत्वम्] 1. माता, भद्र महिला, (सम्मान तथा स्नेहसूचक शब्द) 2. अंबाडा नामक पौधा 3. काशिराज की सबसे छोटी पुत्री—विचित्रवीर्य की पत्नी, (जब, सत्यवती ने निस्सन्तान विचित्रवीर्य के लिए एक पुत्र पैदा करने के लिए व्यास का आवाहन किया —तब व्यास के द्वारा उत्पन्न 'पांडु' की यह माता बनी)।

अम्बिका [अम्बा+कन्+टाप् इत्वम्] 1. माता, भद्र महिला, ('अम्बा' की भाँति स्नेह और आदर सूचक शब्द),—अत्तिके अम्बिके शृणु मम विज्ञप्तिम्—मृच्छ० १, 2. शिव की पत्नी पार्वती,—आशीर्भिरेधयामासुः पुरःपाकाभिरम्बिकाम्—कु० ६।९०, 3. काशिराज की मझली पुत्री, तथा विचित्रवीर्य की ज्येष्ठ पत्नी, अपनी छोटी बहन की भाँति इसके भी कोई संतान नहीं हुई, फिर व्यास के द्वारा इसमें उत्पन्न पुत्र 'धृतराष्ट्र' कहलाये ऊपर दे० 'अम्बा'। सम० —**पतिः**, —**भर्ता** शिव, —**पुत्रः**, —**सुतः** धृतराष्ट्र।

अम्बिकेयः,—यकः [अम्बिका+ढ] [अधिक शुद्ध रूप—'आंबिकेय' है] गणेश या कार्तिकेय, या धृतराष्ट्र।

अम्बु (नपुं०) [अम्ब्+उण्] 1. जल—गांगमम्बु सितमम्बु यामुनं—काव्य० १०, 2. रुधिर के अन्तर्गत जलीय तत्त्व। सम० —**कणः** पानी की बूँद, —**कण्टकः** (छोटी नाक वाला) घड़ियाल, —**किरातः** घड़ियाल, —**कोशः**, —**कूर्मः** कछुवा, —**केशरः** नींबू का पेड़, —**क्रिया** पितृ तर्पण, पितरों को जलदान, —**ग**,—**चर**, —**चारिन्** (वि०) जल में रहने वाला, जलचर, —**घनः** ओला,—**चत्वरम्** झील,—**ज** जल में उत्पन्न, जलज (विप० स्थलज)—सुगंधीनि च माल्यानि स्थलजान्यम्बुजानि च—रामा० (**जः**) 1. चन्द्रमा, 2. कपूर 3. सारस पक्षी 4. शंख, (**जम्**) 1. कमल, —इंदीवरेण नयनं मुखमम्बुजेन—शृंगार० ३, 2. इन्द्र का वज्र, °**भूः**, °**आसनः** कमल से उत्पन्न देवता, ब्रह्मा, °**आसना** लक्ष्मीदेवी,—**जन्मन्** (नपुं०) कमल, (पुं०) 1. चन्द्रमा 2. शंख 3. सारस पक्षी,—**तस्करः** जलचोर, सूर्य, —**द** (वि०) जल देने वाला (—**दः**) बादल—नवाम्बुदानीकमुहूर्तलांछने—रघु० ३।५३,—**धरः**। 1. बादल —वशिनश्चाम्बुधराश्च योनयः—कु० ४।४३, शरत्प्रमृष्टाम्बुधरोपरोधः रघु० ६।४४, 2. अभ्रक, —**धिः** 1. पानी का आशय, जलपात्र, —अम्बुधिर्घटः—सिद्धा०, 2. समुद्र, —क्षार° भर्तृ० २।६, 3. चार की संख्या,—**निधिः** पानी का खजाना, समुद्र, —देवासुरैरमृतमम्बुनिधिर्ममन्थ—कि० ५।३०, —**प** (वि०) पानी पीने वाला (—**पः**) 1. समुद्र 2. वरुण—जल का स्वामी,—**पातः** जलधारा, जलप्रवाह, नदी या झरना गङ्गाम्बुपातप्रतिमा गृहेभ्यः—भट्टि० ११८, —**प्रसादः**, —**प्रसादनम्** कतक, निर्मली का पेड़—फलं कतकवृक्षस्य यद्यम्बुप्रसादकम्, न नामग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति 1. —**भवम्** कमल,—**भृत्** (पुं०) 1. जलवाहक, बादल 2. समुद्र 3. अभ्रक,—**मात्रज** (वि०) जो केवल जल में ही उत्पन्न हो (—**जः**) शंख—**मुच्** (पुं०) बादल, —ध्वनितसूचितमम्बुमुचां चयम्—कि० ५।१२,—**राजः** 1. समुद्र 2. वरुण,—**राशिः** जलाशय या पानी का भंडार, समुद्र—त्वयि ज्वलत्यौर्वमिवाम्बुराशौ—श० ३।३, चन्द्रोदयारम्भ इवाम्बुराशिः—कु० ३।६७, रघु० ६।५७, ९।८२. —**रुह्** (नपुं०) 1. कमल 2. सारस,—**रुहः**,—**रुहम्** कमल—विपुलिनाम्बुरुहा न सरिद्वधूः—कि० ५।१०,—**रोहिणी** कमल,—**वाहः** 1. बादल —तडित्वन्तमिवाम्बुवाहम्—कि० ३।१, भर्तुर्मित्रं प्रियमविधवे विद्धि मामम्बुवाहम् —मेघ० १०१, 2. झील 3. जलवाहक,—**वाहिन्** (वि०) पानी ले जाने वाला (—पुं०) बादल,—**वाहिनी** काठ का डोल, एक प्रकार का पानी उलीचने का बर्तन—**विहारः** जल क्रीड़ा, —**वेतसः** एक प्रकार का बेत, नरकुल जो जल में पैदा होता है,—**सरणम्** जलप्रवाह, जलधारा,—**सर्पिणी** जोंक —**सेचनी** जल छिड़कने का पात्र।

अम्बुमत् (वि०) [अम्बु+मतुप्] पनीला, जिसमें जल हो, —**ती** एक नदी का नाम।

अम्बूकृत(वि०) [अम्बु+च्वि+कृ+क्त] बड़ बड़ाया हुआ, होठों को बन्द करके अस्पष्ट रूप से कहा हुआ, मुंह में ही कहा हुआ, मुंह से थूक उछालते हुए कहा हुआ। —**तम्** बड़बड़ाने का शब्द, भालू के गुर्राने का शब्द—दधति कुहरभाजामत्र भल्लूकयूनामनुरसितगुरूणि स्त्यानमम्बूकृतानि—उत्तर० २।२१, मा० ९।६. महावी० ५।४१।

अम्भ् (भ्वा० आ०)[अम्भते, अम्भित] शब्द करना, आवाज करना।

अम्भस् (नपुं०)[आप्(अम्भ्)+असुन्] 1 जल—कथमप्यम्भसामन्तरानिष्पत्तेः प्रतीक्षते—कु० २।२७, स्वेद्यमामज्वरं प्राज्ञः कोऽम्भसा परिषिञ्चति—शि० २।४५, अम्भसाकृतम्—जल द्वारा किया हुआ, पा० ६।३।३, 2. आकाश 3. जन्मकुंडली में लग्न से चौथा स्थान। सम०, —**ज** (वि०) जल में उत्पन्न (—**जः**) 1. चन्द्रमा 2. सारस पक्षी, (—**जम्**) कमल—बाले तव मुखांम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्—शृंगार० १७, इसी प्रकार पाद°, नेत्र°, °**खंडः**-**डम्** कमलों का समूह—कुमुदवनमपश्रि श्रीमदम्भोजखण्डम्—शि० ११६४, °**जन्मन्** (पुं०), —**जनिः**,—**योनिः** कमलोत्पन्न देवता, ब्रह्मा की उपाधि,—**जन्मन्** (नपुं०) कमल,—**दः**,—**धरः** बादल,

—धिः,-निधिः,-राशिः जल का भंडार, समुद्र—संभूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा–शि० २।१००, यादवाम्भोनिधीन्रुन्धे वेलेव भवतः क्षमा —५८, इसी प्रकार— अम्भसां निधिः, शिखाभिराश्लिष्ट इवाम्भसां निधिः–शि० १।२०, °वल्लभः मूंगा,--रुह् (नपुं०–ट्) –रुहम् कमल--हेमाम्भोरुहसस्यानां तद्वाप्यो धाम सांप्रतम्—कु० २।४४, (पुं०) सारस पक्षी,—सारम् मोती,—सूः धूआं, अंधकार।

अम्भोजिनी [अम्भोज+इनि+ङीप्] 1.कमलका पौधा, कमलों का समूह,—°वननिवासविलासम्—भर्तृ० २।१८, 2. कमलों का समूह 3. वह स्थान जहाँ कमल वहुतायत से हों।

अम्मय (वि०) [स्त्री०—यी] [अप्+मयट्] जलीय, या जल से बना हुआ।

अम्र=तु० आम्र।

अम्ल (वि०) [अम्+क्ल्+अच्] 1.खट्टा, तीखा,—कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः (आहाराः)—भग० १७।९,--म्लः खटास, तीखापन, ६ प्रकार के रसों में से एक, 2. सिरका 3. नोनिया साग, इमली, 4. नीबू का वृक्ष 5. उद्वमन। सम०—अक्त (वि०) खट्टा किया हुआ,—उद्गारः खट्टी डकार,—केशरः चकोतरे का वृक्ष,—गंधि(वि०) खट्टी गंध वाला,—गोरसः खट्टी छाछ,—जंबीरः,-निंबकः नीबू का वृक्ष,—पित्तम् एक रोग जिसमें आहार आमाशय में पहुँच कर अम्ल हो जाता है, खट्टा पित्त,—फलः इमली का वृक्ष, (–लम्) इमली,—रस (वि०) खट्टे स्वाद वाला (–सः) खटास, तेजाबी अंश,—वृक्षः इमली का वृक्ष, --सारः नींबू का पौधा,—हरिद्रा आंवाहल्दीका पौधा।

अम्लकः [अम्ल+कन् (अल्पार्थे)] लकुच, बड़हर।

अम्लान (वि०) [न० त०] 1. जो मुर्झाया न हो (पुष्पादिक) 2. स्वच्छ, साफ उज्ज्वल (चेहरा), निर्मल, बिना बादलों का,—पदार्थन्यायवादेषु कणोऽप्यम्लानदर्शनः, —नः बाणपुष्पवृक्ष, दुपहरिया।

अम्लानि (वि०) [न० ब०] सशक्त, न मुर्झाने वाला,—निः (स्त्री०) [न० त०] 1. शक्ति 2. ताजगी, हरियाली।

अम्लानिन् (वि०) [न० त०] स्वच्छ, साफ,—नी बाणपुष्पवृक्षों का समूह।

अम्लि (म्ली) का [अम्ला+कन् टाप् इत्वम्, अम्ल+ङीप्+क+टाप् वा] 1. मुँह का खट्टा स्वाद, खट्टी डकार 2. इमली का वृक्ष।

अम्लिमन् (पुं०) [अम्ल+इमनिच्] खटास, खट्टापन।

अय् (भ्वा०आ०) [कई बार भी, प०, विशेषतः उद् उपसर्ग के साथ] [अयते, अयांचक्रे, अयितुम्, अयित] जाना। अन्तर्° अन्तःप्रवेश करना, हस्तक्षेप करना,—दर्दुरक उपसृत्यान्तरयति—मृच्छ० २, अभ्युद्° 1. निकलना (जैसा कि चन्द्रमा, सूरज) 2. फलना-फूलना, समृद्ध होना, उद्° 1. निकलना, उगना (जैसा कि सूर्य)—उदयति हि शशाङ्कः कामिनीगण्डपाण्डुः—मृच्छ० १।५७, 2. प्रकट होना, दिखलाई देना—मुहूर्तो यज्ञियः प्राप्तश्चोदयन्तीह याजकाः–महा० 3. फूटना, उदय होना, जन्म लेना, उत्पन्न होना—तदोदयेदन्यवधूनिषेधः---नै० ३।९२, यथाग्नेर्धूम उदयते—शत०, परा° (र को ल हो जाने पर) भागना, वापिस होना, भाग जाना।

अयः [इ+अच्] 1. जाना, चलना, फिरना (अधिकतर समास में—अस्तमय), 2. पूर्वजन्म के अच्छे कृत्य 3. अच्छा भाग्य, अच्छी किस्मत—शुद्धपाष्णिरयान्वितः—रघु० ४।२६, 4. खेलने का पासा। सम०—अन्वित, अयवत् (वि०) सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मत वाला, —सुलभैः सदा नयवताऽयवता–कि० ५।२०।

अयक्ष्मम् स्वास्थ्य का होना, नीरोगता।

अयज्ञ (वि०) [न० ब०] यज्ञ न करने वाला—ज्ञः [न० त०] यज्ञ का न होना, बुरा यज्ञ।

अयज्ञिय (वि०) [न० त०] 1. जो यज्ञ के योग्य न हो (जैसा कि उड़द) 2. जो यज्ञ करने का अधिकारी न हो (जैसा कि यज्ञोपवीत से हीन बालक) 3. लौकिक, गंवारू।

अयत्न (वि०) [न० ब०] बिना ही यत्न किये होनेवाला —°पटवासताम्–रघु० ४।५५-—त्नः (न० त०) श्रम या उद्योग का अभाव, अयत्नेन,—त्नतः—त्नात्, अनायास, बिना परिश्रम के, आसानी से, तत्परता के साथ।

अयथा (अव्य०) [न० त०] जिस प्रकार होना चाहिए वैसे न होना, अनुपयुक्त रूप से, अनुचित ढंग से, गलत तरीके से। सम०—अर्थ (वि०) 1. जो नितांत भाव के अनुकूल न हो, अर्थहीन, भावरहित 2. असंगत, अयोग्य, मिथ्या श० ३।२, अशुद्ध, गलत—अनुभवो द्विविधो यथार्थोऽयथार्थश्च—तर्क सं०, °अनुभवः अशुद्ध या असत्य ज्ञान, गलत भाव,—इष्ट (वि०) 1. जो इच्छानुकूल न हो, नापसंद 2. अपर्याप्त, नाकाफी —उचित (वि०) अयुक्त, अनुपयुक्त,–तथ (वि०) 1. जो जैसा होना चाहिए वैसा न हो, अयुक्त, अनुपयुक्त, अयोग्य,—इदमययातथं स्वामिनश्चेष्टितम्–वेणी० २, 2. अर्थहीन, व्यर्थ, लाभरहित (—थम्) (अव्य०) 1. अयुक्तता के साथ, अनुपयुक्तता के साथ, 2. व्यर्थ, अकारथ, बेकार,—द्गच्छति अ°—मनु० ३।२४०, —तथ्यम् अनुपयुक्तता, असंगतता, व्यर्थता,—द्योतनम् आशातीत घटना का होना,—पुर,—पूर्व (वि०) जो पहले कभी न हुआ हो, अभूतपूर्व, अनुपम,--वृत्त (वि०) गलत तरीके से कार्य करने वाला,—शास्त्रकारिन् (वि०) शास्त्रानुकूल कार्य न करने वाला, अधार्मिक, —अयथाशास्त्रकारी च न विभागे पिता प्रभुः–नारद०।

अयथावत् (अव्य०) गलती से, अनुचितरीति से।

अयनम् [अय्+ल्युट्] 1. जाना, हिलना, चलना, जैसा कि 'रामायणम्' में 2. राह, पथ, मार्ग, सड़क—अगस्त्य-चिह्नादयनात्—रघु० १६।४४, 3. स्थान, जगह, घर, 4. प्रवेशद्वार, व्यूह में प्रवेश करने का मार्ग—अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः—भग० १।११ 5. सूर्य का मार्ग, सूर्य की विषुवत् रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर गति, 6. (अत एव) इस मार्ग का अवधि-काल, छः मास, एक अयनबिंदु से दूसरे अयनबिंदु तक जाने का समय—दे० उत्तरायण, दक्षिणायन, 7. विषुव और अयनसंबंधी बिन्दु,—दक्षिणम् अयनम्-शिशिरऋतु का अयन; उत्तरम् अयनम्-ग्रीष्म अयन 8. अन्तिममुक्ति—नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय-श्वेता०। सम०—कालः दोनों अयनों के मध्य की अवधि (दोनों अयनों का संधिकाल),—वृत्तम् ग्रहणरेखा।

अयन्त्रित (वि०) [न० त०] अनियंत्रित, जिसको रोका न जा सके, स्वेच्छाचारी, मनमानी करने वाला।

अयमित (वि०) [न० त०] 1. अनियंत्रित, 2. जिस पर प्रतिबंध न लगा हो 3. जिसकी काट-छांट न की गई हो, असज्जित (जैसा कि नाखून आदि),—मेघ० ९२।

अयशस् (वि०) [न० ब०] यशोहीन, बदनाम, अकीर्तिकर ('अयशस्क') भी इसी अर्थ में, (नपुं०—शः) बदनामी, अपकीर्ति, कुख्याति, अवमान, निन्दा—अयशो महदाप्नोति—मनु० ८।१२८, किमयशो ननु घोरमतः परम्—उत्तर० ३।२७, स्वभावलोलेत्ययशः प्रमृष्टम्—रघु० ६।४१, । सम०—कर (वि०) (स्त्री०—री) बदनाम, कलंकी।

अयशस्य (वि०) [न० त०] बदनाम, कलंकी।

अयस् (नपुं०) [इ+असुन्] 1. लोहा,—अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु—रघु० ८।४३, 2. इस्पात, 3. सोना, 4. धातु, 5. अगर नामक लकड़ी। (पुं०) अग्नि। सम०—अग्रम्,—अग्रकम् हथौड़ा, मूसल,—कांडः 1. लोहे का बाण 2. बढ़िया लोहा 3. लोहे का बड़ा परिमाण,—कान्तः (अयस्कान्तः) 1. चुंबक, चुंबक पत्थर,—शम्भोर्यतध्वमाक्रष्टुमयस्कान्तेन लोहवत्,—कु० ३।५९ स चकर्ष परस्मात्तदयस्कान्त इवायसम्—रघु० १७।६३, उत्तर० ४।२१, 2. मूल्यवान् पत्थर, °मणिः चुंबक पत्थर—अयस्कान्तमणिशलाकेव लोहधातुमन्तःकरणमाकृष्टवती—मा० १,—कारः लुहार, लोहे का काम करने वाला,—कीटम् लोहे का जंग या मुर्चा—कुंभः लोहे का बर्तन, इंजिन का बायलर आदि, इसी प्रकार—पात्रम्,—घनः लोहे का हथौड़ा—अयोघनेनाय इवाभितप्तम्—रघु० १४।३३,—चूर्णम् लोहे का चूरा,—जालम् लोहे की जाली,—दंडः लोहे की मुद्गर,—धातुः लोहधातु—उत्तर० ४।२१,—प्रतिमा लोहे की मूर्ति,—मलम् लोहे का जंग, इसी प्रकार °रजः, °रसः,—मुखः लोहे की नोक लगा हुआ बाण—भेत्स्यत्यजः कुम्भमयोमुखेन रघु० ५।५५,—शंकुः 1. लोहे की बर्छी 2. लोहे की कील, नोकदार लोहे की छड़—रघु० १२।९५,—शूलम् 1. लोहे का भाला 2. प्रबल साधन, तीक्ष्ण उपाय-सिद्धा०, (तु० आयःशूलिकः काव्य० १०, अयःशूलेन अन्विच्छतीत्यायःशूलिकः),—हृदय (वि०) लोह-हृदय, कठोर, निष्ठुर,—सुहृदयो हृदयः प्रतिगर्जताम् रघु० ९।९।

अयस्मय (अयोमय) (नपुं०) [स्त्री०—यी] [अयस्+मयट्] लोहे या और किसी धातु का बना हुआ।

अयाचित (वि०) [न० त०] न मांगा हुआ, अप्रार्थित (भिक्षा, आहार आदि)—अमृतं स्याद याचितम्—मनु० ४।५,—तम् अप्रार्थित भिक्षा। सम०—उपनत,—उपस्थित बिना निमंत्रण या प्रार्थना के पहुंचा हुआ,—अयाचितोपस्थितमंबु केवलम्—कु० ५।२२,—वृत्तिः बिना मांगी या अप्रार्थित भिक्षा पर जीवित रहना।

अयाज्य (वि०) [न० त०] 1. (व्यक्ति) जिसके लिए यज्ञ नहीं करना चाहिए, या जो यज्ञ करने का अधिकारी न हो (शूद्रादिक), 2. (अत एव) जाति-बहिष्कृत, पतित 3. यज्ञ करने का अनधिकारी। सम०—याजनम्,—संयाज्यम् उस व्यक्ति के लिए यज्ञ करना जिसके लिए किसी को यज्ञ नहीं करना चाहिए—मनु० ३।६५, ११।६०।

अयात (वि०) [न० त०] न गया हुआ,। सम०—याम (वि०) जो बासी न हो, ताजा, जो उपयोग में आने के कारण जीर्ण-शीर्ण न हुआ हो,—°मं च यौवनम्—दश० १२३, ताजा, खिला हुआ।

अयाथार्थिक (वि०) [स्त्री०—की] [न० त०] 1. जो सत्य न हो, न्याय विरुद्ध, अनुचित 2. अवास्तविक, असंगत, बेतुका।

अयाथार्थ्यम् [न० त०] 1. अयोग्यता, अशुद्धता 2. बेतुकापन, असंगतता।

अयानम् [न० त०] 1. न जाना, न हिलना-डुलना, ठहरना, टिकना 2. स्वभाव।

अयि (अव्य०) [इ+इनि] 1. मित्रादिकों के प्रति नम्र संबोधन, ओह, ए, अरे आदि सामान्य संबोधन बोधक अव्यय,—अयि विवेकविश्रांतमभिहितम्—मालवि० १, अयि भो महर्षिपुत्र—श० ७, अयि विद्युत्प्रमदानां त्वमपि च दुःखं न जानासि—मृच्छ० ५।३२, दे० भामि० १।५, ११,४४। 2. प्रार्थना या अनुरोध बोधक अव्यय—अयि संप्रति देहि दर्शनम्—कु० ४।२८, प्रोत्साहन तथा अनुनय के अर्थ में भी—अयि मन्दस्मितमधुरं वदनं तन्वंगि यदि मनाक्कुरुषे—भामि० २।१५०, 3. सामान्य सानुग्रह-पृच्छा बोधक अव्ययत

—अयि जीवितनाथ जीवसि—कु० ४।३,—अयीदमेवं परिहासः—५।६२ ।

अयुक्त (वि०) [न० त०] 1. जो जुता न हो, या जिस पर जीन न कसा गया हो, 2. जो मिला हुआ न हो, संबद्ध या संयुक्त न हो 3. जो भक्त या धार्मिक न हो. ध्यान रहित, उपेक्षाशील 4. अभ्याससापेक्ष, अनभ्यस्त, जो नियुक्त न हुआ हो, °बुद्धि, °चार 5. अयोग्य, अनुचित, अनुपयुक्त—अयुक्तोऽयं निर्देशः—पा० ४।२। ६४, महा० 6. झूठ, गलत । सम०—**कृत्** अनुचित या गलत काम करने वाला,—**पदार्थः** शब्द का वह अर्थ जो दिया न गया हो, जैसे कि 'अपि' शब्द,—**रूप** (वि०) असंगत, अनुपयुक्त,—अयुक्तरूपं किमतः परं वद—कु० ५।५९ ।

अयुग—गल (वि०) [न० त०] 1. पृथक्, अकेला 2. ऊबड़-खाबड़, विषम । सम०—**अचिस्** (पुं०) आग,—**नेत्रः**—**नयनः**,—**शरः** दे० अयुग्म के अन्तर्गत,—**सप्तिः** सात घोड़ों वाला, सूर्य ।

अयुगपद् (अव्य०) [न० त०] 1. सब एक साथ नहीं, क्रमशः यथाक्रम, । सम०—**ग्रहणम्**—क्रमपूर्वक समझना,—**भावः** अनुक्रम, आनुक्रमिकता ।

अयुग्म (वि०) [न० त०] 1. अकेला, न्यारा 2. निराला, विषम, (संख्या), । सम०—**छदः**,—**पत्रः** सप्तपर्ण नामक पौधा, —**नयनः**,—**नेत्रः**,—**लोचनः** विषम (३) आँखों वाला, शिव—कु० ३।५१।६९,—**बाणः**,—**शरः** विषम (५) बाणों वाला, कामदेव,—**वाहः**,—**सप्तिः** सात घोड़ों वाला सूर्य ।

अयुज् (वि०) [न० त०] निराला, विषम (विप० युज् =सम) । सम०—**इषुः**,—**बाणः**,—**शरः** पांच बाणों वाला, कामदेव,—**छदः**=सप्तपर्णः—वपुरयुक्छदगुच्छसुगन्धयः—शि० ६।५०,—**पलाशः**=सप्तपलाशः, —**पाद**,—**यमकम्** पहले और तीसरे पाद में भिन्न अर्थों वाले एक से अक्षर रखने वाला अनुप्रास का एक भेद,—**नेत्र**,—**लोचन**,—**अक्ष**,—**शक्ति** शिव ।

अयुत (वि०) [न० त०] न मिला हुआ, पृथक्कृत, असंबद्ध,—**तम्** दस हजार, दस सहस्र की संख्या । सम०—**अध्यापकः** अच्छा अध्यापक,—**सिद्ध** (वि०) (वैशे० में) अपृथक्करणीय, अन्तर्निहित,—**सिद्धिः** (स्त्री०) ऐसा प्रमाण जिससे निश्चय हो कि कुछ वस्तुएं तथा मान्यताएं अपृथक्करणीय, तथा अन्तर्हित हैं ।

अये (अव्यय) [इ+एच्] 1. संबोधनात्मक अव्यय या संबोधन का नम्र प्रकार (=अयि)—अये गौरीनाथ त्रिपुरहर शंभो त्रिनयन—भर्तृ० ३।१२३ 2. विस्मयादि द्योतक अव्यय—(क) ओह, अये आदि शब्दों में अनूदित आश्चर्य तथा विस्मय की भावना,—अये मातलिः—श० ६ (ख) उदासी, खिन्नता—अये देवपादपद्मोपजीविनोऽवस्थेयम्—मुद्रा० २, शोक (ग) क्रोध (घ) खलबली, क्षोभ (ङ) प्रत्यास्मरण (च) भय (छ) थकावट ।

अयोगः [न० त०] 1. अलगाव, वियोग, अन्तराल 2. अयोग्यता, अनौचित्य, असंगति 3. अनुचित संबंध 4. विधुर, अनुपस्थित प्रेमी या पति 5. हथौड़ा (अयोघ तथा अयोघन) 6. अरुचि ।

अयोगवः (स्त्री०—**वा**,—**वी**) [अय इव कठिना गौर्वाणी यस्य—ब० स० नि० अच्] शूद्र पिता और वैश्य माता की सन्तान दे० आयोगव ।

अयोग्य (वि०) [न० त०] जो योग्य न हो, अनुपयुक्त, निरर्थक ।

अयोध्य (वि०) [न० त०] जिस पर आक्रमण न किया जा सके, जिसका मुकाबला न किया जा सके, —अद्यायोध्या महाबाहो अयोध्या प्रतिभाति नः —रामा०,—**ध्या** सरयू नदी के तट पर स्थित वर्तमान अयोध्या नगरी, रघुवंश में उत्पन्न सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी ।

अयोनि (वि०) [न० ब०] 1. अजन्मा, नित्य,—जगद्योनिरयोनिस्त्वम्—कु० २।९ 2. जो कोख से उत्पन्न न हो, अधर्म अथवा अवैध रूप से उत्पन्न,—**निः** (स्त्री०) [न० त०] जो योनि न हो,—**निः** ब्रह्मा, शिव, । सम०,—**ज**,—**जन्मन्** (वि०) जो जरायु से न जन्मा हो, सामान्य जन्मपद्धति के अनुसार जिसने जन्म न लिया हो—तनयाम् अयोनिजाम्—रघु० ४८, कन्यारत्नमयोनिजन्म भवतामास्ते—महावी० १।३०, °**ईशः ईश्वरः** शिव, (—**जा**)—**संभवा** जनक की पुत्री सीता जो कि खेत के खूड से उत्पन्न हुई थी ।

अयौगपद्यम् [न० त०] समकालीनता का अभाव ।

अयौगिक (वि०) [स्त्री०—**की**] [न० त०] व्याकरण के नियमानुसार जो शब्द व्युत्पन्न न हो ।

अरः [ऋ+अच्] पहिये के अरे या पहिये का अर्धव्यास (°रं भी)—अरैः संधार्यंते नाभिः नाभौ चाराः प्रतिष्ठिताः—पंच० १।८१, । सम०—**अंतर** (ब० व०) अरों का अन्तराल—विक्रम० १।४,—**घट्टः**,—**घट्टकः** 1. रहट जिसके द्वारा कुएँ से पानी निकाला जाता है, °घटी रहट में प्रयुक्त किया जाने वाला डोल,—कूपमासाद्य °टीमार्गेण सर्पस्तेनानीतः—पंच० ४, 2. गहरा कुआँ ।

अरजस्, अरज, अरजस्क (वि०) [न० ब०] 1. धूल या गर्द से रहित, साफ स्वच्छ (आलं० भी) 2, रज या वासना से मुक्त 3. जिसे मासिक धर्म न होता हो, (स्त्री०—**जाः**) वह कन्या जिसे अभी रजोधर्म आरंभ नहीं हुआ ।

अरज्जु (वि०) [न० ब०] जिसमें रस्सियां न लगी हों, रस्सियों से विरहित; (नपुं०) कारागार।

अरणिः (पुं०,स्त्री०) [स्त्री०—णी] शमी की लकड़ी का टुकड़ा, जिसके घर्षण से यज्ञ के अवसर पर अग्नि जलाई जाती है, आग उत्पन्न करने वाली लकड़ी—तु०, पंच० १।२१६,—णी (द्वि० व०) यज्ञाग्नि प्रज्वलित करने के लिए लकड़ी की दो समिधाएँ,—णिः 1. सूर्य, २ आग 3. फलीता, चकमक पत्थर।

अरण्यम् (कई बार पुं० भी) [अर्यते गम्यते शेषे वयसि—ऋ+अन्य] जंगल, वन, उजाड़, —प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति—उत्तर० ६।३०, माता यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रियवादिनी, अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम्—चाण० ४४, जंगली, जंगल में उत्पन्न (यदि समस्त पद का प्रथम खण्ड हो), °**बीजम्** जंगली बीज, इसी प्रकार °**मार्जार,** °**मूषकः**। सम०—**अध्यक्षः** वन की देख रेख करने वाला, राजिक,—**अयनम्,**—**यानम्** जंगल में चले जाना, वानप्रस्थ लेना,—**ओकस्,**—**सद्** (वि०) 1. अरण्यवासी, जंगल में रहने वाला—वैक्लव्यं मम तावदीदृशमपि स्नेहादरण्यौकसः—श० ४।५, 2. विशेषतः वह जिसने अपना परिवार छोड़ दिया हो और वानप्रस्थी हो गया हो, जंगल में रहने वाला,—**कदली** जंगली केला,—**गजः** जंगली हाथी (जो पालतू न हो),—**चटकः** जंगली चिड़िया —**चंद्रिका** (शा०) जंगल में चन्द्रमा का प्रकाश (आलं०) निरर्थक श्रृंगार या आभूषण, ऐसा बनाव-सिंगार जिसे कोई देखने-सराहने वाला न हो, इसी लिए मल्लिनाथ—स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेषः—कु० ७।२२, पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं—अन्यथाऽरण्यचन्द्रिका स्यादिति भावः;—**चर** (°**ण्येचर** भी), —**जीव** (वि०) जंगली,—**ज** (वि०) वन्य,—**धर्मः** जंगली अवस्था या प्रथा, जंगली स्वभाव,—तथारण्यधर्माद्वियोज्य ग्राम्यधर्मे नियोजितः—पंच० १,—**नृपतिः**—**राज्** (ट्)—**राजः** जंगल का स्वामी, सिंह या व्याघ्र का विशेषण, इसी प्रकार—अरण्यानां पतिः,—**पंडितः** 'वन में विद्वान्' (आलं०) मूर्ख पुरुष जो वन में ही (जहाँ कोई सुनने-टोकने वाला नहीं होता) अपना पांडित्य प्रकट कर सके;—**भव** (वि०) जंगल में उत्पन्न, जंगली,—**मक्षिका** डांस,—**यानम्** जंगल में चले जाना,—**रक्षकः** अरण्यपाल,—**रुदितम्** (°**ण्ये**°) जंगल में रोना, अरण्यरोदन, (आलं०) ऐसा रोना जिसे कोई सुनने वाला न हो, निष्फल कथन—अरण्ये मया रुदितम्—श० २, प्रोक्तं श्रद्धाविहीनस्य अरण्यरुदितोपमम्—पंच० १।३९३, तदलमघुनारण्यरुदितैः—अमरु० ७६,—**वायसः** जंगली कौवा, पहाड़ी कौवा,—**वासः,**—**समाश्रयः** जंगल में चले जाना, जंगल में आवास,—**वासिन्** (वि०) जंगल में रहने वाला (पुं०) अरण्यवासी, वानप्रस्थी,—**विलपितम्,** —**विलापः** (°**ण्ये**°) = °रुदितम्—**श्वन्** (पुं०) जंगली कुत्ता, भेड़िया,—**सभा** जंगल की कचहरी।

अरण्यकम् [अरण्य+कन्] जंगल, बन।

अरण्यानिः-नी (स्त्री०) [अरण्य+आनुक् ङीप् च] एक बड़ा जंगल, या बीहड़ मरुभूमि, विस्तृत उजाड़।

अरत (वि०) [न० त०] 1. मन्द, विरक्त, अनासक्त 2. असंतुष्ट, तुष्टिरहित, पराङमुख,—**तम्** अमैथुन। सम०—**त्रप** (वि०) मैथुन करने में न लजाने वाला (—**पः**) कुत्ता (गलियों में बिना किसी प्रकार की लज्जा के मैथुन करने वाला)।

अरति (वि०) [न० ब०] 1. असन्तुष्ट 2. सुस्त, निढाल, —**तिः** (स्त्री०) [न० त०] 1. आमोद-प्रमोद का अभाव (प्रेम की प्रबल उत्कण्ठा से पैदा होने वाला), —स्वाभीष्टवस्त्वलोभेन चेतसो या ऽनवस्थितिः अरतिः सा—सा० द० 2. पीड़ा, कष्ट 3. चिन्ता, खेद, बेचैनी, क्षोभ,—संघत्ते भृशमरतिं हि सद्वियोगः—कि० ५।५१, 4. असन्तोष, संतोषाभाव, 5. निढालपना, सुस्ती 6. एक पैत्तिक रोग।

अरत्निः (पुं० स्त्री०) [ऋ+कत्नि=रत्निः, स नास्ति यत्र] 1. कुहनी, कई बार मुक्का, 2. एक हाथ की माप, कुहनी से कानी उंगली के छोर तक की माप, लंबाई नापने का पैमाना—अरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना—अमर°, मध्यांगुलिकूर्परयोर्मध्ये प्रामाणिकः करः, बद्धमुष्टिकरो रत्निररत्निः सकनिष्ठिकः। हला०, कि० १८।६,।

अरत्निकः [अरत्नि+कन्] कुहनी।

अरम् (अव्य०) [ऋ+अम्] 1. तेजी से, निकट, पास ही, उपस्थित 2. तत्परता के साथ।

अरमण, अरममाण (वि०) [न० त०] 1. जो सुखकर न हो, असन्तोषजनक, अरुचिकर 2. अविराम, अनवरत।

अररम् [ऋ+अरन्] किवाड़ का दिला—सरभसमरराणि द्रागपावृत्य महावी० ६।२७, (—**रः**—**री, मी**)—**चञ्चुकोटिविपाटितार**रपुटो यास्याम्यहं पञ्जरात्—भामि० १।५८, 2. ढक्कन, म्यान,—**रः** आरी।

अररे (अव्य०) [अर+रा+के] (क) बड़े उतावलेपन (ख) तथा घृणा और अवज्ञा को प्रकट करने वाला संबोधन बोधक अव्यय—अररे महाराजं प्रति कुतः क्षत्रियाः—गण०।

अरविन्दम् [अरान् चक्राङ्गानीव पत्राणि विन्दते—अर+विन्द्+श] 1. कमल (कामदेव के पाँच बाणों में से एक—दे० 'पंचबाण' के नीचे)—शक्यमरविन्दसुरभिः—श० ३।६, यह सूर्य-कमल है—तु०सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम्—कु० १।३२; स्थल°, चरण°, मुख° आदि 2. लाल या नील कमल,—**न्दः** 1. सारस पक्षी, 2.

तांबा। सम०—**अक्ष** (वि०) कमल जैसी आंखों वाला, विष्णु की उपाधि,—**दलप्रभम्** तांवा,—**नाभिः,** —**भः** विष्णु,–हृदयो मदीये देवश्चकास्तु भगवानरविन्दनाभः—भामि० ४।८,—**सद्** (पुं०) ब्रह्मा।

अरविन्दिनी [अरविन्द+इनि+ङीप्] 1. कमल का पौधा —प्रपीतमधुका भृंगाः सुदिवेवारविन्दिनी—भट्टि० ५।७०, 2. कमल फूलों का समूह 3. वह स्थान जहाँ कमल बहुतायत से होते हों।

अरस (वि०) [न० ब०] 1. रसहीन, नीरस, फीका 2. मंद. बुद्धिहीन 3. निर्बल, बलहीन, अयोग्य।

अरसिक (वि०) [न० त०] 1. रूखा, रसहीन, फीका, बिना स्वाद का, 2. भावना या स्वाद से विरहित, मन्द, काव्यादि का रस लेने में असमर्थ, कविता के मर्म को न जानने वाला,—अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख, मा लिख, मा लिख-उद्भट०।

अराग, अरागिन् (वि०) [न० ब०, न० त०] शान्त, वासना रहित,—तमहमरागमकृष्णं कृष्णद्वैपायनं वन्दे—वेणी० १।४।

अराजक (वि०) [न० ब०] बिना राजा का, जहाँ राजा न हो—नाराजके जनपदे रामा०, मनु० ७।३, अराजके जीवलोके दुर्बला बलवत्तरैः, पीड्यंते न हि वित्तेषु प्रभुत्वं कस्यचित्तदा। महा०, शोच्यं राज्यमराजकम्—चाण० ५७।

अराजन् (पुं०) [न० त०] जो राजा न हो। सम० —**भोगीन** (वि०) राजा के काम के अनुपयुक्त,—**स्थापित** (वि०) जो किसी राजा द्वारा प्रतिष्ठित न किया गया हो, अवैध, गैरकानूनी।

अरातिः [न० त०] 1. शत्रु, दुश्मन,—देशः सोऽयमरातिशोणितजलैर्यस्मिन् ह्रदाः पूरिताः—वेणी० ३।३१, 2. छः की संख्या। सम०—**भंगः** शत्रुओं का नाश।

अराल (वि०) [ऋ-विच् अरम् आलाति, ला+क] मुड़ा हुआ, टेढ़ा,—पादावरालांगुली—मालवि० २।३,—**लः** 1. वक्र भुजा 2. मतवाला हाथी,—**ला** पुंश्चली, वेश्या, वारांगना। सम०—**केशी** घुंघराले बालों वाली स्त्री, —भित्वा निराक्रामदरालकेश्याः—रघु० ६।८१,—**पक्ष्मन्** (वि०) मुड़ी हुई पलकों वाला—कु० ५।४९।

अरिः [ऋ+इन] 1. शत्रु, दुश्मन,—विजितारिपुरःसरः—रघु० १।५९, ६१, ४।४ 2. मनुष्य जाति का शत्रु (मनुष्य के मन को व्याकुल करने वाले ६ शत्रु बताये गये हैं—कामः क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सरः; —कृतारिषड्वर्गजयेन—कि० १।९ 3. छः की संख्या 4. गाड़ी का भाग 5. पहिया। सम०—**कर्षण** (वि०) शत्रुओं को पीडित या पराभूत करने वाला,—**कुलम्** 1. शत्रुओं का समूह, 2. शत्रु,—**घ्नः** शत्रुओं का नाश करने वाला,—**चिंतनम्,**—**चिंता** शत्रुओं के नाश के लिए बनाई हुयी योजनाएँ, विदेश विभाग का प्रशासन, —**नन्दन** (वि०) शत्रु को प्रसन्न करने वाला, शत्रु को विजय दिलाने वाला,–**भद्रः** बड़ा शक्तिशाली शत्रु–रघु० १४।३१,—**सूदनः,**–**हन्,**–**हिंसकः** शत्रुओं का नाश करने वाला—रघु० ९।१८।

अरिक्थभाज्, अरिक्थीय (वि०) [न० त०] जो पैतृक संपत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी न हो (जैसे कि कोई नपुंसकता आदि अवगुणों के कारण अनधिकृत कर दिया गया हो)।

अरित्रम् [ऋ+इत्र] 1. डांड,—लोलैररित्रैश्चरणैरिवाभितः —शि० १२।७१, 2. पतवार, लंगर।

अरिन्दम (वि०) [अरि+दम्+खच्, मुमागमः] शत्रुओं का दमन करने वाला, शत्रु-विजयी, शत्रु को जीतने वाला।

अरिषम् [न० त०] लगातार वर्षा होना,—**षः** एक प्रकार का गुदारोग।

अरिष्ट (वि०) [न० त०] अक्षत, पूर्ण, अविनाशी, निरापद —**ष्टः** 1. बगुला, 2. जंगली कौवा 3. शत्रु 4. नाना प्रकार के पौधों के नाम (क) रीठे का वृक्ष (ख) नीम का वृक्ष 5 लहसुन,—**ष्टम्** 1. दुर्भाग्य, अनिष्ट, बदकिस्मती 2. दुर्भाग्यमिश्रित अनिष्टसूचक घटना, अपशकुन 3. प्रतिकूल लक्षण-विशेषतः मृत्युसूचक —रोगिणो मरणं यस्मादवश्यं भावि लक्ष्यते, तल्लक्षणमरिष्टं स्यादिष्टमप्यभिधीयते 4. सौभाग्य, अच्छी किस्मत, सुख 5. सौरी 6. छाछ 7. मादक शराब—शि० १८।७७,। सम०—**गृहम्** सूतिकागृह,—**ताति** (वि०) सौभाग्यशाली या सुखी बनाने वाला, शुभ, —**तिः** (स्त्री०) सुरक्षा, सौभाग्य का उत्तराधिकार, अनवरत सुख,—तदत्रभवता निष्पन्नाशिषां काममरिष्टतातिमाशास्महे—महावी० १, —**मथनः** शिव, विष्णु,—**शय्या** प्रसूता का पलंग—अरिष्टशय्यां परितो विसारिणा—रघु० ३।१५,—**सूदनः,**—**हन्** (पुं०) अरिष्टनाशक, विष्णु की उपाधि।

अरुचिः (स्त्री०) [न० त०] 1. अनिच्छा, किसी वस्तु का अच्छा न लगना,—क्व सा भोगानामुपर्यरुचिः—का० १४६ 2. भूख न लगना, स्वादु न लगना, उकता जाना—सन्निपातक्षयश्वासकासहिक्कारुचिप्रणुत्–सुश्रु० 3. संतोषजनक व्याख्या का अभाव।

अरुचिर, अरुच्य (वि०) [न० त०] भला न लगने वाला अरुचिकर, उकताहट पैदा करने वाला।

अरुज् (वि०) [न० त०] रोगमुक्त, स्वस्थ, नीरोग।

अरुज (वि०) [न० त०] स्वस्थ, नीरोग।

अरुण (वि०) (स्त्री–णा,–णी) [ऋ+उनन्] 1. अर्धरक्त या कुछ २ लाल, भूरा, पिंगल, लाल, गुलाबी (सांध्यलालिमा के विपरीत प्रभातकालीन सूर्य का रंग) —नयनान्यरुणानि घूर्णयन्—कु० ४। १२, 2. विस्मित,

व्याकुल 3. मूक–णः 1. लाल रंग, उषा का रंग या प्रातः कालीन संध्यालोक, 2. सूर्य का सारथि—मूर्त ऊषा, —आविष्कृतारुण पुरःसरःएकतोऽर्कः—श० ४।१, ७।४ विभावरी यद्यरुणाय कल्पते—कु० ५।४४, रघु० ५।७१, 3. सूर्य–रागेण बालारुणकोमलेन कु० ३।३०, संसृज्यते सरसिजैररुणांशुभिन्नैः—रघु० ५।६९,–णम् 1 लाल रंग, 2. सोना 3. केसर। सम०—**अग्रजः** गरुड,—**अनुजः**,–**अवरजः** अरुण का छोटा भाई, गरुड़, —**अर्चिस्** (पुं०) सूर्य,—**आत्मजः** 1. अरुण का पुत्र जटायु, 2. शनि, सावर्णि मनु, कर्ण, सुग्रीव, यम और अश्विनीकुमार (–जा) यमुना, ताप्ती,—**ईक्षण** (वि०) लाल आंखों वाला—**उदयः** दिन निकलना, उषा, —चतस्रो घटिका प्रातररुणोदय उच्यते,–**उपलः** लाल, **कमलम्** लाल कमल,—**ज्योतिस्** (पुं०) शिव,—**प्रियः** लाल फूल या कमलों का प्यारा, सूर्य (–या) 1. सूर्य पत्नी 2. छाया,–**लोचन** (वि०) लाल आंखों वाला (–नः) कबूतर,—**सारथिः** जिसका सारथि अरुण है, सूर्य।

...णित, अरुणीकृत (वि०) [अरुण+क्विप् (ना० धा०)+क्त, अरुण+च्वि+कृ+त ईत्वम्] लाल किया हुआ, लालरंग में रंगा हुआ, पिंगल रंग का किया हुआ स्तनाङ्गरागारुणिताच्च कन्दुकात्—कु० ५।११।

...न्तुद (वि०)[अरुंषि मर्माणि तुदति–इति–अरुस्+तुद्+खश् मुम् च] मर्मस्थानों को छेदने वाला, घायल करने वाला, पीडाजनक, तीक्ष्ण, मर्मवेधी–अरुन्तुदमिवालानमनिर्वाणस्य दन्तिनः—रघु० १।७१, कि० १४।५५, 2. तीक्ष्ण, उग्र कटुस्वभाव।

...न्धती [न रुन्धती प्रतिरोधकारिणी] 1. वशिष्ट की पत्नी—अन्वासितमरुन्धत्या स्वाहयेव हविर्भुजम्—रघु० १।५६, 2. प्रभात कालीन तारा, वशिष्ठ की पत्नी, सप्तर्षिमंडल का एक तारा (पुराणों के अनुसार वशिष्ठ सप्तर्षियों में एक हैं तथा अरुन्धती उनकी पत्नी। अरुन्धती, कर्दम प्रजापति की (देवहूति से उत्पन्न) ९ पुत्रियों में से एक थी। वह दाम्पत्य-महत्ता का सर्वश्रेष्ठ नमूना है, भार्योचित भक्ति के कारण विवाह संस्कारों में वर के द्वारा उसका आवाहन किया जाता है। स्त्री होते हुए भी उसको वही सम्मान दिया गया है, जो सप्तर्षियों को तु० कि० ६।१२, अपने पति की भांति वह भी रघुवंश के अपने निजी विभाग की निर्देशिका और नियंत्रिका रही, राम से परित्यक्त सीता का निर्देशन देवदूत के रूप में उसी ने किया। कहते हैं कि जिनका मरण-काल निकट हो, उन्हें अरुंधती तारा दिखलाई नहीं देता—हि० १।७६)। सम०—**जानिः**,—**नाथः**—**पतिः** वशिष्ठ, सप्तर्षिमंडल का एक तारा,—**दर्शनन्यायः** दे० 'न्याय' के नीचे।

अरुष्-ष्ट (वि०) [न० त०] अक्रुद्ध, शान्त।

अरुष (वि०) [न० त०] 1. अक्रुद्ध, 2. चमकीला, उज्ज्वल।

अरुस् (वि०) [ऋ+उसि] घायल, चोट खाया हुआ,—(पुं–रुः) 1. आक का पौधा, मदार 2. लाल खदिर,—(नपुं०) 1. मर्मस्थल, घाव, व्रण (पुं० भी)। सम०—**कर** (वि०) क्षतविक्षत करने वाला, घायल करने वाला।

अरूप (वि०) [न० ब०] 1. रूप रहित, आकार शून्य 2. कुरूप, विरूप 3. विषम, असम,–पम् 1. एक बुरी या भद्दी आकृति 2. सांख्यों का प्रधान तथा वेदान्तियों का ब्रह्म। सम०—**हार्य** (वि०) जो सौन्दर्य से आकृष्ट या वशीभूत न किया जा सके, अरूपहार्यं मदनस्य निग्रहात्—कु० ५।५३।

अरूपक (वि०) [न० ब०] बिना किसी आकृति या रूपक के, जो आलंकारिक न हो, शाब्दिक।

अरे (अव्य०) [ऋ+ए] एक संबोधनात्मक अव्यय—(क) छोटों को बुलाने के लिए—आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यः, न वा अरे पत्युः कामायास्याः पतिः प्रियो भवति - शत० (याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी से कहा) (ख) क्रोधावेश में—अरे महाराजं प्रति कुतः क्षत्रियाः—उत्तर० ४ (ग) ईर्ष्या प्रकट करने के लिए।

अरेपस् (वि०) [न० ब०] 1. निष्पाप, निष्कलंक 2. निर्मल पवित्र।

अरे रे (अव्य०) [अरे-अरे इति वीप्सायां द्वित्वम्] विस्मयादि बोधक अव्यय (क) क्रोध पूर्वक बुलाना —अरे रे दुर्योधनप्रमुखाः कुरुबलसेनाप्रभवः—वेणी० ३, अरे रे वाचाट—त० (ख) अपने से छोटों को संबोधित करना या घृणापूर्वक बुलाना—अरे रे राधागर्भभारभूत सूतापसद—त०।

अरोक (वि०) [न० ब०] कान्तिहीन, मलिन, धुंधला।

अरोग (वि०) [न० ब०] रोगमुक्त, नीरोग, स्वस्थ, अच्छा,—अरोगाः सर्वसिद्धार्थाश्चतुर्वर्षशतायुषः—सुश्रु०,—**गः** अच्छा स्वास्थ्य —न नाममात्रेण करोत्यरोगम्—हि० १।१६७।

अरोगिन्, अरोग्य (वि०) [न० ब०] नीरोग, स्वस्थ।

अरोचक (वि०) [स्त्री०—चिका] [न० त०] 1. जो चमकीला न हो 2. भूख मंद करने वाला,—**कः** भूख का कम लगना, अरुचिकर, जुगुप्सा।

अर्क् (चु० प०) 1. गर्म करना 2. स्तुति करना।

अर्कः [अर्क्+घञ्–कुत्वम्] 1. प्रकाशकिरण, बिजली की चमक 2. सूर्य,—आविष्कृतारुणपुरःसरः एकतोऽर्कः—श० ४।१, 3. अग्नि 4. स्फटिक 5. तांबा 6. रविवार 7. आक का पौधा, मदार—अर्कस्योपरि शिथिलं च्युतमिव नवमल्लिकाकुसुमम्—श० २।९ यमाश्रित्य न विश्रामं क्षुधार्ता यान्ति सेवकाः, सोऽर्कवन्नृपतिस्त्याज्यः

सदापुष्पफलोऽपि सन्—पंच० १।५१, 8. इन्द्र, 9. आहार 10 बारह की संख्या। सम० —**अश्मन्** (पुं०) —**उपलः** सूर्यकान्तमणि,—**आह्वः** मदार, आक,—**इन्दुसङ्गमः** सूर्य और चन्द्रमा का संयोग,(दर्श, या अमावस्या), —**कान्ता** सूर्यपत्नी,—**चन्दनः** एक प्रकार का रक्तचन्दन,—**जः** कर्ण की उपाधि, यम, सुग्रीव (—**जौ**) स्वर्ग के वैद्य अश्विनीकुमार,—**तनयः** 'सूर्य पुत्र' कर्ण का विशेषण, यम और शनि दे० 'अरुणात्मज' (—**या**) यमुना और ताप्ती नदियाँ,—**त्विष्** (स्त्री०) सूर्य की ज्योति,—**दिनम्**,—**वासरः** रविवार,—**नन्दनः**, —**पुत्रः**,—**सूतः**,—**सुनुः** शनि, कर्ण और यम के नाम, —**बन्धुः**,—**बान्धवः** कमल (सूर्य-कमल),—**मण्डलम्** सूर्यमंडल,—**विवाहः** मदार से विवाह (तीसरा विवाह करने वाले पुरुष के लिए पहले मदार से विवाह करने का विधान किया गया है, ताकि तीसरी पत्नी चौथी हो जाय); —चतुर्थादिविवाहार्थं तृतीयेऽर्कं समुद्वहेत् —काश्यप०।

अर्गलः—लम्, **अर्गला—ली** [अर्ज्+कलच् न्यङ्क्वादि° कुत्वं—तारा०] अगड़ी, किल्ली या मूसल (यह दरवाजे को बन्द करके रोकने के लिए लकड़ी के बने यन्त्र हैं) ब्योंड़ा, सिटकिनी, आगल, —पुरार्गलादीर्घभुजो बुभोज—रघु० १८।४, १६।६, अनायतार्गलम्—मृच्छ० २, ससंभ्रमेन्द्र द्रुतपातितार्गला निमीलिताक्षीव भियाऽमरावती—शि० १, आलं० से यह शब्द बाधा, रोक या अवरोध के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होता है—ईप्सितं तदवज्ञानाद्विद्धि सार्गलमात्मनः—रघु० १।७९, बाधित—वार्यर्गलाभङ्ग इव प्रवृत्तः—५।४५, कंठे केवलमर्गलेव निहिता जीवस्य निर्गच्छतः—काव्य० ८, दे० 'अनर्गल' भी, 2. तरंग या झाल।

अर्गलिका [अर्गला+कन्+टाप् इत्वम्] छोटी आगल, छोटी चटखनी।

अर्घ् (भ्वा० पर०) [अर्घति, अर्घित] मूल्यवान् होना, मूल्य रखना, मूल्य लगना,—परीक्षका यत्र न सन्ति देशे नार्घन्ति रत्नानि समुद्रजानि —सुभाषि०।

अर्घः [अर्घ्+घञ्] 1. मूल्य, क़ीमत—कुर्युरर्घं यथापण्यं—मनु० ८।३९८ याज्ञ० २।२५१, कुत्स्याः स्युः कुपरीक्षका हि मणयो यैरर्घतः पातिताः—भर्तृ० २।१५, वास्तविक मूल्य से घटी हुई, अवमूल्यित, इसी प्रकार **अनर्घ** अमूल्य, **महार्घ** मूल्यवान् 2. पूजा की सामग्री, देवताओं या सम्मान्य व्यक्तियों को सादर आहुति या उपहार, —कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै—मेघ० ४ (इस आहुति का सामान निम्नांकित है: -आपः क्षीरं कुशाग्रं च दधि सर्पिः सतण्डुलम्। यवः सिद्धार्थकश्चैव अष्टाङ्गोऽर्घः प्रकीर्तितः। दे० 'अर्घ्य' नीचे। सम० —**अर्ह** (वि०) सामान्य उपहार के योग्य,—**बलाबलम्** मूल्य की दर, उचित मूल्य, मूल्यों में घटत बढ़त, —**सङ्ख्यानम्**,—**संस्थापनम्** मूल्यांकन, वस्तुओं का मूल्यनिर्धारण करना, कुर्वीत चैषां (वणिजाम्) प्रत्यक्षमर्घसंस्थापनं नृपः—मनु० ८।४०२।

अर्घीशः (पुं०) शिव।

अर्घ्य (वि०) [अर्घ+यत् अर्घमर्हति] 1. मूल्यवान्, **अनर्घ्य**—अनमोल दे० श० के नी० 2. सम्माननीय—तानर्घ्यानर्घ्यमादाय दूरात्प्रत्युद्ययौ गिरिः—कु० ६।५०, शि० १।१४,—**र्घ्यम्** किसी देवता या सम्मान्य व्यक्ति को सादर आहुति या उपहार,—अर्घ्यमस्मै—विक्रम० ५, ददतु तरवः पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युतः—उत्तर० ३।२४, अर्घ्यमर्घ्यमिति वादिनं नृपम्—रघु० ११।६९, कु० १-५८, ६।५०।

अर्च् (भ्वा० उभ०) [अर्चति-ते, अर्चित] 1. (क) पूजा करना, अभिवादन करना, सत्कार करना—रघु० १।६, ९०; २।२१, ४।८४, १२।८९, मनु० ३।९३ —आर्चीद् द्विजातीन् परमार्थविन्दान्—भट्टि० १।१५, १४।६३, १७।५ (ख) सम्मान करना अर्थात् अलंकृत करना, सजाना—उत्तर० २।९, 2. स्तुति करना. (वेद०), (चु० पर० या प्रेर०) सम्मान करना, अलंकृत करना, पूजा करना —स्वर्गौकसामर्चितमर्चयित्वा —कु० १।५९, अभि—,**समभि**—. पूजा करना, अलंकृत करना, सम्मान करना,—आशीर्भिरभ्यर्च्य ततः क्षितीन्द्रं—भट्टि० १।२४, भग० १८।४६ **प्र**—1. स्तुति करना, स्तुतिगान करना 2. सम्मान करना, पूजा करना,—प्रानर्चुरर्च्या जगदर्चनीयम्—भट्टि० २।२०।

अर्चक (वि०) [अर्च्+ण्वुल्] पूजा करने वाला, आराधना करने वाला, —**कः** पूजक —गुरुदेवद्विजार्चकः—मनु० ११।२२५।

अर्चन (वि०) [अर्च्+ल्युट्] पूजा करने वाला, स्तुति करने वाला, —**नम्**, —**ना** पूजा, अपने से बड़ों का और देवों का आदर व सम्मान।

अर्चनीय, अर्च्य (स० कृ०) [अर्च्+अनीय, ण्यत् वा] पूजा या आराधना करने के योग्य, सम्माननीय, आदरणीय—रघु० २।१०, भट्टि० ६।७०।

अर्चा [अर्च्+अङ+टाप्] 1. पूजा, आराधना 2. वह प्रतिमा या मूर्ति जिसकी पूजा की जाय—मौर्यैर्हिरण्यार्थिभिरर्चाः प्रकल्पिताः—महा०।

अर्चिः (स्त्री०) [अर्च्+इन्] किरण, (आग की) ज्वाला या (प्रातः-कालीन या सांध्य) ज्योति,—आसीदासन्ननिर्वाणप्रदीपार्चिरिवोषसि—रघु० १२।१, नैशस्यार्चिर्हुतभुज इव छिन्नभूयिष्ठधूमा—विक्रम०।

अर्चिष्मत (वि०) [अर्चिस्+मतुप्] लपटवाला, उज्ज्वल, चमकदार-विक्रम० ३।२, (पुं०) 1. अग्नि, 2. सूर्य।

अर्चिस् (न०) (–र्चिः) [अर्च् + इसि] 1. प्रकाशकिरण, लौ,—प्रदक्षिणार्चिर्हविरादवे—रघु० ३।१४, 2. प्रकाश, चमक,—प्रशमादर्चिषाम्—कु० २।२०, रत्न० ४।१६, (स्त्री० भी), (पुं०) 1. प्रकाशकिरण 2. अग्नि।

अर्ज् (भ्वा० पर०) [अर्जति, अर्जित] 1. उपार्जन करना, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, कमाना—प्राय: प्रेर०, इस अर्थ में—पितृद्रव्याविरोधेन यदन्यत्स्वयमर्जितम्—या० २।११८, 2. ग्रहण करना—आनर्जुर्नृभुजोऽस्त्राणि भट्टि० १४।७४, (चु० पर०—या प्रेर०) उपार्जन करना, अधिकार में करना, प्राप्त करना —**स्वयमर्जित**, **स्वार्जित**, अपने आप कमाया हुआ। **उप—** प्राप्त करना या उपार्जन करना।

अर्जक (वि०) [स्त्री०—र्जिका] [अर्ज् + ण्वुल्] उपार्जन करने वाला, अधिकार में करने वाला, प्राप्त करने वाला।

अर्जनम् [अर्ज् + ल्युट्] प्राप्त करना, अधिग्रहण करना —अर्थानामर्जने दुःखम्—पंच० १।१६३, अर्जयितृ-व्यापारोऽर्जनम्—दाय०।

अर्जुन (वि०) [स्त्री० —ना, —नी] [अर्ज + उनन्, णिलुक् च] 1. सफेद, चमकीला, उज्ज्वल, दिन जैसा रंगीन,—पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविम्—शि० १।६, 2. रुपहला,—नः 1. श्वेतरंग 2. मोर 3. गुणकारी छाल वाला अर्जन नामक वृक्ष 4. इन्द्र द्वारा कुन्ती से उत्पन्न तृतीय पांडव (इसीलिए इसे 'ऐन्द्रि' भी कहते हैं) [अपने कार्यों में पवित्र और विशुद्ध होने के कारण—वह अर्जुन कहलाया। द्रोणाचार्य से उसने शस्त्रास्त्र की शिक्षा ली, अर्जुन द्रोण का प्रिय शिष्य था। अपने शस्त्र-कौशल के द्वारा ही उसने स्वयंवर में द्रौपदी को जीता। अनिच्छापूर्वक किसी नियम का उल्लंघन हो जाने के कारण उसने अल्पकालिक निर्वासन ग्रहण किया तथा इसी बीच परशुराम से शस्त्रविज्ञान का अध्ययन किया। उसने नागराजकुमारी उलूपी से विवाह किया—जिससे इरावत् नामक पुत्र पैदा हुआ। उसके पश्चात् उसने मणिपुर के महाराज की कन्या चित्रांगदा से विवाह किया—इससे बभ्रुवाहन का जन्म हुआ। इसी निर्वासन-काल में वह द्वारका गया और वहाँ कृष्ण के परामर्शानुसार सुभद्रा से विवाह करने में सफलता प्राप्त की। सुभद्रा से अभिमन्यु का जन्म हुआ। उसके पश्चात् उसने खांडव-वन को जलाने में अग्नि की सहायता की जिससे कि उसने 'गांडीव' धनुष प्राप्त किया। जब उसके ज्येष्ठ भ्राता धर्मराज ने जूए में राज्य खो दिया और पांचों भाई निर्वासित कर दिए गए तो वह देवताओं का अनुरंजन करने के लिए हिमालय पर्वत पर गया जिससे कि कौरवों के साथ होने वाले युद्ध में उपयोग करने के लिए उनसे दिव्य शस्त्रास्त्र प्राप्त कर सके। वहाँ उसने किरातवेषधारी शिव से युद्ध किया, परन्तु जब उसे अपने विपक्षी के वास्तविक चरित्र का ज्ञान हुआ तो उसने उनकी पूजा की, शिव ने भी प्रसन्न होकर अर्जुन को पाशुपतास्त्र दिये। इन्द्र, वरुण, यम और कुबेर ने भी अपने-अपने अस्त्र उसे उपहारस्वरूप दिए। अपने निर्वासनकाल के तेरहवें वर्ष में पांडव राजा विराट् की नौकरी करने लगे—अर्जुन कंचुकी के रूप में नृत्यगान का शिक्षक बना। कौरवों के साथ महायुद्ध में अर्जुन ने अद्भुत शौर्य का परिचय दिया। उसने कृष्ण की सहायता प्राप्त की, उसे अपना सारथि बनाया। जिस समय युद्ध के पहले ही दिन अर्जुन ने अपने बंधु-बांधवों के विरुद्ध धनुष उठाने में संकोच किया—उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन को 'भगवद्-गीता' का उपदेश दिया। उस महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने कौरव सेना के जयद्रथ, भीष्म तथा कर्ण आदि अनेक दुर्दान्त योद्धाओं को मौत के घाट उतारा। जिस समय युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राज्यसिंहासन पर आसीन हुआ—तो उसने अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प किया—फलतः अर्जुन की संरक्षकता में एक घोड़ा छोड़ा गया। अर्जुन ने अनेक राजाओं से युद्ध किया तथा अनेक नगर और देशों में घोड़े का अनुसरण किया। मणिपुर पहुँचने पर उसे अपने ही पुत्र बभ्रुवाहन से युद्ध करना पड़ा। फलतः अर्जुन, जब इस प्रकार बभ्रुवाहन से लड़ता हुआ युद्ध में मारा गया तो अपनी पत्नी उलूपी द्वारा दिये गए जादू-तन्त्र से वह पुनर्जीवित किया गया। उसने इस प्रकार सारे भारतवर्ष में भ्रमण किया। जब नाना प्रकार की भेंट, उपहार तथा अपहृत संपत्तियों के साथ वह हस्तिनापुर वापिस आया—तो उस समय अश्वमेध यज्ञ किया गया। उसके पश्चात् कृष्ण ने उसे द्वारका में बुलाया—और जब पारस्परिक गृह-युद्ध में यादवों का अंत हो गया तो अर्जुन ने वसुदेव और कृष्ण की अन्त्येष्टि-क्रिया की। इसके बाद शीघ्र ही पांडवों ने अभिमन्यु के एक मात्र पुत्र परीक्षित को हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बिठा दिया तथा स्वयं स्वर्ग की यात्रा को चल दिये। पाँचों पांडवों में अर्जुन सबसे अधिक पराक्रमी, उदार, गंभीर, सुंदर और उच्च विचारों का मनुष्य था—अपने सब भाइयों में वही प्रमुख व्यक्ति था] 5. कार्तवीर्य—जिसे परशुराम ने मौत के घाट उतारा था—दे० कार्तवीर्य, 6. अपनी माता का एक मात्र पुत्र, —नी 1. दूती, कुटनी 2. गौ 3. एक नदी जिसे 'करतोया' कहते हैं, —नम् घास। सम०—**उपमः** सागवान का वृक्ष, —**छवि** (वि०)

उज्ज्वल, उज्ज्वल रंग वाला, —ध्वजः श्वेत-ध्वजा वाला, हनुमान् ।

अर्णः [ऋ+न] 1. सागवान का वृक्ष 2. (वर्णमाला का) एक अक्षर ।

अर्णवः [अर्णांसि सन्ति यस्मिन्—अर्णस्+व, सलोपः] (फेनयुक्त) समुद्र, सागर (आलं० भी) शोक° शोक का समुद्र, इसी प्रकार चिंता°, जन° जनसमुद्र, संसारार्णवलंघन—भर्तृ० ३।१० । सम०—अन्तः सागर की सीमा,—उद्भवः चन्द्रमा (–वा) लक्ष्मी, (–वम्) अमृत,—पोतः,—यानम् किश्ती या जहाज,—मंदिरः 1. सागर वासी वरुण, जलों का स्वामी 2. विष्णु ।

अर्णस् (नपुं०) [ऋ+असुन् नुट् च] जल । सम०—दः बादल,—भवः शंख ।

अर्णस्वत् (वि०) [अर्णस्+मतुप्] बहुत अधिक पानी रखने वाला, (पुं०) सागर ।

अर्तनम् [ऋत्+ल्युट्] निन्दा, फटकार, अपशब्द या गाली ।

अर्तिः (स्त्री०) [अर्द्+क्तिन्] 1. पीड़ा, शोक, दुःख—शिरोऽर्तिः सिर-दर्द 2. धनुष का किनारा ।

अर्तिका [ऋत्=ण्वुल्] बड़ी बहन (नाटय साहित्य में) ।

अर्थ् (चु० आ०) [अर्थयते, अर्थित] 1. प्रार्थना करना, याचना करना, गिड़गिड़ाना, मांगना, अनुरोध करना, दीन भाव से मांगना (द्विकर्मक)—त्वामिममर्थमर्थयते—दश० ७१, तमभिक्रम्य सर्वेऽद्य वयं चार्थामहे वसु—महा०, प्रहस्तमर्थयांचक्रे योद्धुम् भट्टि० १४।९९, 2. प्राप्त करने का प्रयत्न करना, चाहना, इच्छा करना, अभि—मांगना, गिड़गिड़ाना, प्रार्थना करना—इमं सारङ्गं प्रियाप्रवृत्तिनिमित्तमभ्यर्थये—विक्रम० ४, अवकाशं किलोदन्वान् रामायाभ्यर्थितो ददौ—रघु० ४।३८, अभिप्र—1. मांगना, प्रार्थना करना 2. चाहना, प्र—1. मांगना, प्रार्थना करना, याचना, प्रार्थना —तेन भवन्तं प्रार्थयते-श० २, 2. चाहना, आवश्यकता होना, इच्छा करना, प्रबल अभिलाष रखना,—अहो विघ्नवत्यः प्रार्थितार्थसिद्धयः—श० ३, स्वर्गंति प्रार्थयन्ते—भग० ९।२०, भट्टि० ७।४८, रघु० ७।५०, ६४, 3. ढूंढ़ना, तलाश करना, खोज करना,—प्रार्थयध्वं तथा सीताम्—भट्टि० ७।४८, 4. आक्रमण करना, टूट पड़ना—असौ अश्वानीकेन यवनानां प्रार्थितः —मालवि० ५, दुर्जयो लवणः शूली विशूलः प्रार्थ्यतामिति—रघु० १५।५, ९।५६, प्रति –1. (युद्ध के लिए) ललकारना, मुकाबला करना, शत्रुवत् व्यवहार करना—एते सीताद्रुहः संङख्ये प्रत्यर्थयत राघवम्—भट्टि० ६।२५, 2. किसी को शत्रु बनाना, सम्—1. विश्वास करना, सोचना, खयाल रखना, चिंतन करना—समर्थये यत्प्रथमं प्रियां प्रति—विक्रम० ४।३९, मया न साधु समर्थितम्—विक्रम० २, अनुपयुक्तमिवात्मानं समर्थये—श० ७, 2. समर्थन करना, सहागता करना, प्रमाणद्वारा सिद्ध करना—उक्तमेवार्थमुदाहरणेन समर्थयति, **समभि**—,**संप्र**—याचना करना, प्रार्थना करना आदि ।

अर्थः [ऋ+थन्] 1. आशय, प्रयोजन, लक्ष्य, उद्देश्य, अभिलाष, इच्छा—ज्ञातार्थो ज्ञानसंबन्धः श्रोतुं श्रोता प्रवर्तते, सिद्ध° °परिपंथी—मुद्रा० ५, समास के उत्तर पद के रूप में प्रायः इसी अर्थ में प्रयुक्त होता तथा निम्नांकित अर्थों में अनूदित किया जाता है :—'के लिए' 'के निमित्त' 'की खातिर' 'के कारण' 'के बदले में'; संज्ञाओं को विशेषित करने के लिए विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होता है—सन्तानार्थाय विधये—रघु० १।३४ तां देवतापित्रतिथिक्रियार्थां (धेनुम्) २।१६, द्विजार्था यवागूः सिद्धा०, यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र—भग० ३।९; क्रिया विशेषण के रूप में भी यह इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है यथा—**अर्थम्**, **अर्थे** या **अर्थाय**; **किमर्थम्**—किस प्रयोजन के लिए, वेलोपलक्षणार्थम्—श० ४, तद्दर्शनादभूच्छम्भोर्भूयान्दारार्थमादरः—कु० ६।१३, गवार्थे ब्राह्मणार्थे च—पंच० १।४२०, मदर्थे त्यक्तजीविताः—भग० १।९, प्रत्याख्याता मया तत्र नलस्यार्थाय देवताः—नल० १३।१९, ऋतुपर्णस्य चार्थाय—२३।९; 2. कारण, प्रयोजन, हेतु, साधन—अलुप्तश्च मुनेः क्रियार्थः—रघु० २।५५, साधन या हेतु 3. अभिप्राय, तात्पर्य, सार्थकता, आशय—अर्थ तीन प्रकार का है :—वाच्य (अभिव्यक्त), लक्ष्य (संकेतित या गौण) और व्यंग्य (ध्वनित)—तददोषौ शब्दार्थौ—काव्य० १, अर्थो वाच्यश्च लक्ष्यश्च व्यङग्यश्चेति त्रिधामतः—सा० द० २, 4. वस्तु या विषय, पदार्थ, सारांश—अर्थो हि कन्या परकीय एव—श० ४।२१, जो ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जाना जा सके, ज्ञानेन्द्रिय की वस्तु; इंद्रिय°—हि० १।१४६, कु० ७।७१ इन्द्रियेभ्यः पराह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः—कठ० (ज्ञानेन्द्रियों के विषय पाँच हैं—रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द) 5. (क) मामला, व्यापार, बात, कार्य,—प्राक् प्रतिपन्नोऽयमर्थोऽङ्गराजाय—वेणी० ३, अर्थोऽयमर्थान्तरभाव्य एव—कु० ३।१८, अर्थोऽर्थानुबन्धी—दश, ६७, सङ्गीतार्थः—मेघ० ५६, गायन-व्यापार अर्थात् समवेत गान (गायनोपकरण), सन्देशार्थाः—मेघ० ५, संदेश की बातें अर्थात् संदेश (ख) हित, इच्छा (स्वार्थसाधनतत्परः—मनु० ४।१९६; द्वयमेवार्थसाधनम्—रघु० १।१९, दुरापेऽर्थे १।७२, सर्वार्थचिन्तकः—मनु० ७।१२१, मालविकायां न मे कश्चिदर्थः—मालवि० (ग) विषय-सामग्री, विषय-सूची—त्वामवगतार्थं करिष्यति—मुद्रा० (मैं आपको विषय-सामग्री से परिचित कराऊँगा),

तेन हि अस्य गृहीतार्थो भवामि—विक्रम० २, (यदि ऐसी बात है तो मुझे इस विषय की जानकारी होनी चाहिए), 6. दौलत, धन, सम्पत्ति, रुपया—त्यागाय संभृतार्थानाम्—रघु० १।७, धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः—पंच० १।१६३, 7. धन या सांसारिक ऐश्वर्य का प्राप्त करना, जीवन के चार पुरुषार्थों में से एक—अन्य तीन हैं :—धर्म, काम और मोक्ष; अर्थ, काम और धर्म मिलकर प्रसिद्ध त्रिक बनता है, तु० कु० ५।३८,—अप्यर्थकामौ तस्यास्तां धर्म एव मनीषिणः—रघु० १।२५, 8. (क) उपयोग, हित, लाभ, भलाई; —तथा हि सर्वे तस्यासन् परार्थैकफला गुणाः—रघु० १।२९, यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके—भग० २।४६, दे० व्यर्थ और निरर्थक भी (ख) उपयोग, आवश्यकता, जरूरत, प्रयोजन—करण० के साथ; —कोऽर्थः पुत्रेण जातेन—पंच० १ (उस पुत्र के पैदा होने से क्या लाभ ?) कश्च तेनार्थः—दश० ५९, कोऽर्थस्तिरश्चां गुणैः—पंच० २।३३, क्रूर व्यक्ति गुणों की क्या परवाह करते हैं ? भर्तृ० २।४८;—योग्येनार्थः कस्य न स्याज्जनेन—शि० १८।६६, नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन—भग० ३।१८, 9. मांगना, याचना, प्रार्थना, दावा, याचिका 10. कार्यवाही, अभियोग (विधि०) 11 वस्तुस्थिति, याथार्थ्य, जैसा कि यथार्थ, और अर्थतः में—°तत्त्वविद् 12. रीति, प्रकार, तरीका 13. रोक, दूर रखना—मशकार्थो धूमः, प्रतिषेध, उन्मूलन 14. विष्णु। सम० —अधिकारः रुपये-पैसे का कार्यभार, कोषाध्यक्ष का पद०, °रे न नियोक्तव्यौ—हि० २,—अधिकारिन् (पुं०) कोषाध्यक्ष,—अन्तरम् 1. अन्य अभिप्राय या भिन्न अर्थ 2. दूसरा कारण या प्रयोजन—अर्थोऽयमर्थान्तरभाव्य एव—कु० ३।१८ 3. एक नई बात या परिस्थिति, नया मामला 4. विरोधी या विपरीत अर्थ, अर्थ में भेद, °न्यासः एक अलंकार जिसमें सामान्य से विशेष या विशेष से सामान्य का समर्थन होता है, यह एक प्रकार का विशेष से सामान्य अनुमान है अथवा इसके विपरीत—उक्तिरर्थान्तरन्यासः स्यात सामान्यविशेषयोः। (१) हनूमानब्धिमतरद् दुष्करं किं महात्मनाम्। (२) गुणवद्वस्तुसंसर्गाद्याति नीचोऽपि गौरवम्, पुष्पमालानुषङ्गेण सूत्रं शिरसि धार्यते॥ कुवल०, तु० काव्य० १० और सा० द० ७०९, —अन्वित (वि०) 1. धनवान्, दौलतमंद 2. सार्थक, —अर्थिन् (वि०) जो अपना अभीष्ट सिद्ध करने के लिए या धन प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है, —अलंकारः साहित्यशास्त्र में वह अलंकार जो या तो अर्थ पर निर्भर हो, या जिसका निर्णय अर्थ से किया जाय, शब्द से नहीं (विप० शब्दालंकार), —आगमः 1. धन की प्राप्ति, आय 2. किसी शब्द के अभिप्राय को बतलाना,—आपत्तिः (स्त्री०) 1. परिस्थितियों के आधार पर अनुमान लगाना, अनुमानित वस्तु, फलितार्थ, ज्ञान के पाँच साधनों में से एक अथवा (मीमांसकों के अनुसार) पाँच प्रमाणों में से एक, प्रतीयमान असंगति का समाधान करने के लिए यह एक प्रकार का अनुमान है, इसका प्रसिद्ध उदाहरण है :—पीनो देवदत्तः दिवा न भुङ्क्ते, यहाँ देवदत्त के 'मोटेपन' और 'दिन में न खाने' की असंगति का समाधान 'वह रात्रि को अवश्य खाता होगा' अनुमान से किया जाता है; 2. एक अलंकार (कुछ साहित्यशास्त्रियों के अनुसार) जिसमें एक संवद्ध उक्ति से ऐसे अनुमान का सुझाव मिलता है जो प्रस्तुत विषय से कोई संबंध नहीं रखता—या इसके ठीक विपरीत है; यह कैमुतिकन्याय या दण्डापूपन्याय से मिलता जुलता है; उदा०—हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले, मुक्तानामप्यवस्थेयं के वयं स्मरकिंकराः। अमरु० १००, अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु—रघु० ८।४३,—उत्पत्तिः (स्त्री०) धन प्राप्ति, इसी प्रकार °उपार्जनम्;—°उपक्षेपकः (नाटकों में) एक परिचयात्मक दृश्य—अर्थोपक्षेपकाः पंच—सा० द० ३०८,—उपमा जो उपमा अर्थ पर निर्भर रहे, शब्द पर नहीं दे० 'उपमा' के नीचे—उष्मन् (पुं०) धन की चमक या गर्मी —अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव—भर्तृ० २।४०,—ओघः—राशिः कोष, धन का भंडार,—कर (स्त्री०—री),—कृत् (वि०) 1. धनी बनाने वाला 2. उपयोगी, लाभदायक,—काम (वि०) धन का इच्छुक, (—मौ—द्वि० व०) धन और चाह या सुख, रघु० १।२५,—कृच्छ्रम् 1. कठिन बात 2. आर्थिक कठिनाई—न मुह्येदर्थकृच्छ्रेषु—नीति०—कृत्यम् किसी कार्य का सम्पन्न करना—अभ्युपेतार्थकृत्याः —मेघ० ३८,—गौरवम् अर्थ की गहराई—भारवेरर्थगौरवम्—उद्भट०, कि० २।२७,—घ्न (वि०) (स्त्री० घ्नी) अतिव्ययी, अपव्ययी, फ़िज़ूलखर्च,—जात (वि०) अर्थ से परिपूर्ण (—तम्) 1. वस्तुओं का संग्रह 2. धन की बड़ी रकम, बड़ी सम्पत्ति,—तत्त्वम् 1. वास्तविक सचाई, यथार्थता, 2. किसी वस्तु की वास्तविक प्रकृति या कारण,—द (वि०) 1. धन देने वाला, 2. लाभदायक, उपयोगी 3. उदार,—दूषणम् 1. अतिव्यय, अपव्यय 2. अन्यायपूर्वक किसी की संपत्ति ले लेना, या किसी का उचित पावना न देना, —दोषः (अर्थ की दृष्टि से) साहित्यिक त्रुटि या दोष, साहित्य-रचना के चार दोषों में से एक—दूसरे तीन हैं :—पद दोष, पदांशदोष और वाक्य दोष, इनकी परिभाषाओं के लिए दे० काव्य० ७,—निबंधन (वि०)

धन के ऊपर आश्रित,—निश्चयः निर्धारण, निर्णय, —पतिः 1 'धन का स्वामी', राजा,—किंचिद्विहस्यार्थपति बभाषे—रघु० १।५९, २।४६, ९।३, १८।१, पंच० १।७४, 2. कुबेर की उपाधि,—पर,—लुब्ध (वि०) 1 धन प्राप्त करने पर जुटा हुआ, लालची 2. कंजूस,—प्रकृतिः (स्त्री०) नाटक के महान् उद्देश्य का प्रमुख साधन या अवसर, (इन साधनों की संख्या पाँच हैं,—बीजं बिन्दुः पताका च प्रकरी कार्यमेव च, अर्थप्रकृतयः पञ्च ज्ञात्वा योज्या यथाविधि—सा० द० ३१७), —प्रयोगः ब्याजखोरी,—बंधः शब्दों का यथाक्रम रखना, रचना, पाठ, श्लोक, चरण—श० ७।५ ललितार्थबंधम् विक्रम० २।१४,—बुद्धि (वि०) स्वार्थी,—बोधः वास्तविक आशय का संकेत,—भेदः अर्थों में भेद—अर्थभेदेन शब्दभेदः,—मात्रम्,—त्रा सम्पत्ति, धन-दौलत, —युक्त (वि०) सार्थक,—लाभः धन की प्राप्ति,—लोभः लालच,—वादः 1. किसी उद्देश्य की घोषणा, 2. निश्चयात्मक घोषणा, घोषणाविषयक प्रकथन, व्याख्यापरक टिप्पणी, किसी आशय की उक्ति या कथन, वाक्य (इसमें उचित अनुष्ठान के करने से उत्पन्न फलों का वर्णन करते हुए किसी विधि की अनुशंसा की जाती है, साथ ही अपने पक्ष के समर्थन में ऐतिहासिक निदर्शन देकर यह बतलाया जाता है कि इसका उचित अनुष्ठान न करने से अनिष्ट फल मिलता है) 3. प्रशंसा, स्तुति;—अर्थवाद एषः, दोषं तु मे कंचित्कथय—उत्तर० १,—विकल्पः 1 सचाई से इधर-उधर होना, तथ्यों का तोड़-मरोड़, 2. अपलाप, °वैकल्प्यम् भी, —वृद्धिः (स्त्री०) धन-संचय,—व्ययः धन का खर्च करना, °ज्ञ (वि०) रुपये-पैसे की बातों का जानकार—शास्त्रम् 1 धन-विज्ञान (सार्वजनिक अर्थशास्त्र) २. राजनीति-विज्ञान, राजनीतिविषयक शास्त्र, राजनय —द० १२०, इह खलु अर्थशास्त्रकारास्त्रिविधां सिद्धिमुपवर्णयंति —मुद्रा० ३. °व्यवहारिन् राजनीतिज्ञ, 3. व्यावहारिक जीवन का शास्त्र,—शौचम् रुपये-पैसे के मामले में ईमानदारी या खरापन—सर्वेषां चैव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्—मनु० ५।१०६, —संस्थानम् 1. धन का संचय 2. कोष,—संबन्धः वाक्य या शब्द से अर्थ का संबंध,—सारः बहुत धन—पंच० २।४२,—सिद्धिः (स्त्री०) अभीष्ट सिद्धि, सफलता।

अर्थतः (अव्य०) [अर्थ+तसिल्] 1. अर्थ या किसी विशेष उद्देश्य का उल्लेख करते हुए,—यच्चार्थतो गौरवम्—मा० १।७, अर्थ की गहराई, 2. वस्तुतः, वास्तव में, सचमुच,—न नामतः केवलमर्थतोऽपि—शि० ३।५६, 3. धन के लिए, लाभ या प्राप्ति के लिए—ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरमयं लोकोर्थतः सेवते—मुद्रा० १।१४. 4. के कारण।

अर्थना [अर्थ्+युच्+टाप्] प्रार्थना, अनुरोध, नालिश, याचिका—नै० ५।११२।

अर्थवत् (वि०) [अर्थ+मतुप्] 1. धनवान् 2. सार्थक, अभिप्रायः या अर्थ से परिपूर्ण,—अर्थवान् खलु मे राजशब्दः—श० ५, 3. अर्थ रखने वाला—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५ 4. किसी प्रयोजन को सिद्ध करने वाला, सफल, उपयोगी।

अर्थवत्ता [अर्थ+मतुप्+तल्+टाप्] धन-दौलत, सम्पत्ति।

अर्थात् (अव्य०) ['अर्थ' का अपा० का रूप] 1. सच बात तो यह है कि, निस्सन्देह, वस्तुतः—मूषिकेण दण्डो भक्षित इत्यनेन तत्सहचरितमपूपभक्षणमर्थादायातं भवति—सा० द० १०, 2. परिस्थिति के अनुसार, तथ्यानुसार 3. कहने का भाव यह है कि, नामों के अनुसार।

अर्थिकः [अर्थयते इत्यर्थी+कन्] 1. चिल्लाने वाला, चौकीदार, 2. विशेषतः भाट जिसका कर्तव्य दिन के विभिन्न निश्चित समयों की (जैसा कि जागने का, सोने का, या भोजन करने का) घोषणा करना है।

अर्थित (भू० क० कृ०) [अर्थ्+क्त] प्रार्थित, याचित, इच्छित—तम् चाह, इच्छा, नालिश।

अर्थिता-त्वम् [अर्थिन्+तल् टाप्, त्वल् वा] 1. मांगना, प्रार्थना करना, 2. चाह, इच्छा।

अर्थिन् (वि०) [अर्थ्+इनि] 1. प्राप्त करने की चेष्टा करने वाला, अभिलाषी, इच्छुक—करण० के साथ अथवा समास में—कोषदण्डाभ्याम्—मुद्रा० ५, को वचेन ममार्थी स्यात्—महा०, अर्थार्थी—पंच० १।४।९, 2. अनुरोध करने वाला, या किसी से कुछ मांगनेवाला (संब० के साथ)—अर्थी वररुचिर्मेऽस्तु—कथा० 3. मनोरथ रखने वाला, (पुं०) 1. याचक, प्रार्थयिता, भिक्षुक, दीन याचक, निवेदक, विवाहार्थी—यथाकामार्चितार्थिनाम् —रघु० १।६, २।६४, ५।३१, ९।२७, कोऽर्थी गतो गौरवम्—पंच० १।१४६, कन्यारत्नमयोनिजन्म भवतामास्ते वयं चार्थिनः—महावी० १।३०, 2. (विधि में) वादी, अभियोक्ता, प्राभियोजक,—स धर्मस्थसखः शश्वदर्थिप्रत्यर्थिनां स्वयं, ददर्श संशयच्छेद्यान् व्यवहारानतन्द्रितः—रघु० १७।३९, 3. सेवक अनुचर। सम० —भावः याचना, माँगना, प्रार्थना– मा० ९।३०, —सात् (क्रि० वि०) भिखारियों के अधिकार में करके —विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृतः— नै० १।१६।

अर्थीय (वि०) [अर्थ+छ] 1. पूर्वनिर्दिष्ट, अभिप्रेत, कष्ट उठाना भाग्य में बदा था—शरीरं यातनार्थीयं—मनु० १२।१६, 2. संबंध रखने वाला—कर्म चैव तदर्थीयं—भग० १७।२७।

अर्थ्य (वि०) [अर्थ+ण्यत्] 1. जिससे सर्वप्रथम याचना की जाय, 2. योग्य, उचित 3. उपयुक्त, आशय से

इधर उधर न होने वाला, सार्थक—स्तुत्यं स्तुतिभिरर्थ्याभिरुपतस्थे सरस्वती—रघु० ४।६, कु० २।३, 4. धनी, दौलतमंद 5. समझदार, बुद्धिमान्,—र्थ्यम् गेरु।

अर्द् (भ्वा० पर०) [अर्दति, अर्दित] 1. दुःख देना, व्यथित करना, प्रहार करना, चोट पहुँचाना, मारना—रक्षः सहस्राणि चतुर्दशार्दीत्—भट्टि० १२।५६ दे० नीचे प्रेर०, 2. मांगना, प्रार्थना करना, निवेदन करना—निर्गलिताम्बुगर्भं शरद्घनं नार्दति चातकोऽपि—रघु० ५।१७, (प्रेर० या चु० पर०) 1. (क) सताना, पीड़ित करना, दुःखाना—कामार्दित, कोप°, भय° आदि (ख) प्रहार करना, चोट पहुँचाना, घायल करना, वध करना—येनार्दिदत् दैत्यपुरं पिनाकी—भट्टि० २।४६, अति—अधिक सताना, आक्रमण करना, टूट पड़ना—अत्यार्दीत् वालिनः पुत्रम्—भट्टि० १५।११५, अभि—दुःखाना, सताना, पीड़ित करना।

अर्दन (वि०) [अर्द्+ल्युट्] दुःखाने वाला, सतानेवाला,—नम् पीड़ा, कष्ट, चिन्ता, उत्तेजना, क्षोभ,—नम्,—ना 1. जाना, हिलना 2. पूछना, मांगना 3. वध करना, चोट पहुंचाना, पीड़ा देना।

अर्ध (वि०) [ऋध्+णिच्+अच्] आधा, आधा भाग बनाने वाला,—र्धम्,—र्धः 1. आधा, आधा भाग—सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः; गतमर्धं दिवसस्य—विक्रम० २, यदर्धे विच्छिन्नं—श० १।९, आधा-आधा बँटा हुआ (अर्ध शब्द को लगभग सब संज्ञा व विशेषण शब्दों के साथ जोड़ा जा सकता है—संज्ञा के साथ समास में प्रथमपद के रूप में इसका अर्थ है:—'आधा' °कायः=अर्धंकायस्य, विशेषणों के साथ इसका अर्थ क्रियाविशेषणात्मक है; °श्याम=आधा काला, क्रमसूचक संख्याओं के साथ "संख्या का आधा" अर्थ होता है, °तृतीयम्=दो और आधा तीसरा अर्थात् अढ़ाई। सम०—अक्षि (नपुं०) अपांगदृष्टि, आँख का झपकना—मृच्छ० ८।४२,—अङ्गम् आधा शरीर,—अंशः, आधा भाग, आधा हिस्सा,—अंशिन् (वि०) आधे का हिस्सेदार,—अर्धः,—अर्धम् 1. आधे का आधा, चौथाई—चरोरर्धार्धभागाभ्यां तामयोजयतामुभे—रघु० १०।५६, 2. आधा और आधा,—अवभेदकः आधासीसी, आधे सिर की पीड़ा,—अवशेष (वि०) जिसके पास केवल आधा ही शेष बचे,—आसनम् 1. आधा आसन—अर्धासनं गोत्रभिदोऽधितष्ठौ—रघु० ६।७३, मम हि दिवौकसां समक्षमर्धासनोपवेशितस्य—श० ७ (आगंतुक अतिथि को अपने ही आसन पर अर्धासन देना अत्यधिक सम्मान का चिह्न समझा जाता था) 2. सम्मानपूर्वक अभिवादन करना 3. निन्दा से मुक्ति—इन्दुः 1. आधा चाँद, दूज का चाँद, 2. अंगुली के नाखून की अर्धवर्तुलाकार छाप, बालेन्दु के आकार की नख-छाप—नै० ६।२५, 3. बालचन्द्र के आकार के समान सिर वाला बाण (=अर्धचन्द्र नी०), °मौलि शिव,—मेघ० ५६,—उक्त (वि०) आधा कहा हुआ,—रामभद्र इति अर्धोक्ते महाराज—उत्तर० १, उक्तिः (स्त्री०) भग्नवाणी, अन्तर्बाधित वाणी,—उदयः 1. अर्ध चन्द्रमा का निकलना 2. आंशिक उदय, °आसनम् समाधि में बैठने का एक प्रकार का आसन,—ऊरुकम् स्त्रियों के पहनने का अन्तर्वस्त्र, पेटीकोट,—कृत (वि०) आधा किया हुआ, अपूर्ण,—खारम्,—री एक प्रकार का माप, आधी खारी—गंगा कावेरी नदी, इसी प्रकार °जाह्नवी,—गुच्छः २४ लड़ियों का हार,—गोलः गोलार्द्ध,—चंद्र (वि०) बालेन्दु के आकार वाला, (—न्द्रः) 1. आधा चन्द्रमा, बालेन्दु—सार्धचन्द्रं बिभर्ति यः—कु० ६।७५, 2. मोर की पूंछ पर अर्धवर्तुलाकार चिह्न, 3. बालचन्द्र के आकार के सिरे वाला बाण—अर्धचन्द्रमुखैर्बाणैश्चिच्छेद कदलीसुखम्—रघु० १२।९६, 4. बालचन्द्र के आकार की नख-छाप 5. अर्धवृत्त के रूप में झुका हुआ हाथ, जो कि किसी वस्तु को पकड़ने के लिए मोड़ा गया हो. °दं वा—गर्दनिया देकर बाहर निकालना—दीयतामेतस्यामर्धचन्द्रः—पंच० १,—चन्द्राकार,—चन्द्राकृति (वि०) आधे चन्द्रमा के आकार वाला,—चोलकः अंगिया,—दिनम्—दिवसः 1. आधा दिन, दिन का मध्यभाग, 2. १२ घण्टे का दिन,—नाराचः बालचन्द्र के आकार का लोहे की नोक वाला बाण,—नारीशः,—नारीश्वरः शिव का एक रूप (आधा पुरुष तथा आधी स्त्री),—नावम् आधी किस्ती,—निशा मध्यरात्रि, आधी रात—पञ्चाशत् (स्त्री०) पच्चीस,—पणः आधे पण की माप,—पथम् आधा मार्ग (—थे) मार्ग के मध्य में,—प्रहरः आधा पहरा, डेढ़ घण्टे का समय,—भागः आधा, आधा भाग या हिस्सा,—तदर्धभागेन लभस्व काङ्क्षितम्—कु० ५।५०, रघु० ७।४५,—भागिक (वि०) आधे भाग का साझीदार,—भाज् (वि०) 1. आधे भाग का हिस्सेदार, आधे भाग का अधिकारी, 2. साथी, साझीदार,—भास्करः दिन का मध्यभाग, दोपहर,—माणवकः,—माणवः १२ लड़ियों का हार, (माणवक २४ लड़ियों का होता है),—मात्रा 1. आधी मात्रा, 2. व्यंजन वर्ण,—मार्गे (अव्य०) मार्ग के बीच में—विक्रम० १।३,—मासः आधा महीना, एक पक्ष,—मासिक (वि०) 1. प्रत्येक पक्ष में होने वाला 2. एक पक्ष तक रहने वाला,—मुष्टिः (स्त्री०) आधा भिंचा हुआ हाथ,—यामः आधा पहर,—रथः किसी दूसरे के साथ रथ पर बैठ

कर युद्ध करने वाला योद्धा (जो कि स्वयं 'रथी' के समान कुशल नहीं होता)—रणे रणेऽभिमानी च विमुखश्चापि दृश्यते, घृणी कर्णः प्रमादी च तेन मेऽर्धरथो मतः महा०, —रात्रः आधीरात—अथार्धरात्रे स्तिमितप्रदीपे —रघु० १६।४,—विसर्गः,—विसर्जनीयः क् ख् तथा प् फ् से पूर्व विसर्गध्वनि,—वीक्षणम् तिरछी चितवन, कनखी,—वृद्ध (वि०) अधेड़ उम्र का, —वैनाशिकः कणाद का अनुयायी (अर्धविनाश का तार्किक)—वैशसम् आधा या अपूर्णवध—कु० ४।३१, —व्यासः वृत्त में केन्द्र से परिधि तक की दूरी, —शतम् पचास,—शेष (वि०) जिसके पास केवल आधा ही शेष रहा है,—श्लोकः आधाश्लोक या श्लोक के दो चरण,—सीरिन् (पुं०) 1. बटाईदार, अपने परिश्रम के बदले आधी फ़सल लेने वाला किसान —याज्ञ० १।१६६, 2. =दे० अधिक,—हारः ६४ लड़ियों का हार,—ह्रस्वः लघु स्वर का आधा।

अर्धक (वि०) [अर्ध+कन्] आधा, दे० 'अर्ध'।

अर्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [अर्धमर्हति—अर्ध+ठन्] 1. आधी नाप रखने वाला 2. आधे भाग का अधिकारी,—कः वर्णसंकर,—वैश्यकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः, अर्धिकः स तु विज्ञेयो भोज्यो विप्रैर्न संशयः—पराशर०।

अर्धिन् (वि०) [अर्ध+इनि] आधे भाग का साझीदार।

अर्पणम् [ऋ+णिच्+ल्युट् पुकागमः] 1. रखना, स्थिर करना, जमाना,—पादार्पणानुग्रहपूतपृष्ठम्—रघु० २।३५, 2. बीच में डालना, रखना, 3. देना, भेंट करना, त्यागना,—स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण—रघु० २।५५, मुखार्पणेषु प्रकृतिप्रगल्भाः—१३।९, तत्कुरुष्व मदर्पणम्—भग० ९।२७, 4. वापस करना, देना, लौटा देना न्यास° अमर० 5. छेदना, गोदना—तीक्ष्णतुण्डार्पणैर्ग्रीवां नखैः सर्वां व्यदारयत्—रामा०।

अर्पिसः [ऋ+णिच्+इसुन् पुकागमः] हृदय, हृदय का मांस।

अर्ब् (भ्वा० पर०) [अर्बति, आनर्ब, अर्बितुम्] 1. की ओर जाना, 2. वध करना, चोट मारना।

अर्बु (र्बु) दः—दम् [अर्ब् (र्व्)+विच्—उद्—इ+ड] 1. सूजन, (नाना प्रकार की) रसौली 2. दस करोड़ की संख्या 3. भारत के पश्चिम में स्थित आबू पहाड़, 4. साँप, 5. बादल 6. मांस पिंड 7. सांप जैसा राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था।

अर्भक (वि०) [अर्भ+कन्] 1. छोटा, सूक्ष्म, थोड़ा 2. दुबला, पतला 3. मूर्ख 4. बच्चा, छौना,—कः 1. बालक, बच्चा—श्रुतस्य यायादयमन्तमर्भकः—रघु० ३।२१, २५; ७।६७, 2. किसी जानवर का बच्चा 3. मूर्ख जड़।

अर्य (वि०) [ऋ+यत्] 1. श्रेष्ठ, बढ़िया 2. आदरणीय,—र्यः 1. स्वामी, प्रभु 2. तीसरे वर्ण का व्यक्ति, वैश्य,—र्या वैश्य की स्त्री। सम०—वर्यः सम्मान्य वैश्य।

अर्यमन् (पुं०) [अर्यं श्रेष्ठं मिमीते—मा+कनिन् नि०] 1. सूर्य 2. पितरों के प्रधान—पितृणामर्यमा चास्मि —भग० १०।२९, 3. मदार का पौधा।

अर्याणी [अर्य+ङीष्, आनुक्] वैश्य जाति की स्त्री।

अर्वन् (पुं०) [ऋ+वनिप्] 1. घोड़ा,—इत्थीकृतप्रग्रहमर्वतां व्रजाः—शि० १२।३१, 2. चन्द्रमा के दस घोड़ों में से एक 3. इन्द्र 4. गोकर्णपरिमाण—ती 1. घोड़ी 2. कुटनी, दूती।

अर्वाच् (वि०) [अवरे काले देशे वा अञ्चति अञ्च+क्विन् पृषो० अवदिशः] 1. इस ओर आते हुए (विप० परञ्च्) 2. की ओर मुड़ा हुआ, किसी से मिलने के लिए आता हुआ 3. इस ओर होने वाला 4. नीचे या पीछे होने वाला 5. बाद में होने वाला, बाद का —क् (अव्य०) 1. इस ओर, इधर की तरफ़ 2. किसी एक स्थान से 3. पहले (समय या स्थान की दृष्टि से) —यत्सृष्टेरर्वाक् सलिलमयं ब्रह्माण्डमभूत्—का० १२५ अर्वाक् संवत्सरात्स्वामी हरेत परतो नृपः—याज्ञ० २।१७३, ११३, १।२५४, 4. नीचे की ओर, पीछे, नीचे (विप० ऊर्ध्व) 5. बाद में, पश्चात् 6. (अधि० के साथ) के अन्दर, निकट—एते चार्वागुपवनभुवि छिन्नदर्भाङ्कुरायाम्—श० १।१५। सम०—कालः बाद में आने वाला समय,—कालिक (वि०) आसन्नकाल से संबंध रखने वाला, आधुनिक, °ता आधुनिकता, उत्तरकालीनता,—कूलम् नदी का निकटस्थ तट।

अर्वाचीन (वि०) [अर्वाच्+ख] 1. आधुनिक, हाल का 2. उलटा, विरोधी,—नम् (अव्य०) (अपा० के साथ) 1. इस ओर 2. के बाद का—यदूर्ध्वं पृथिव्या अर्वाचीनमन्तरिक्षात्—शत०।

अर्शस् (नपुं०) [ऋ+असुन् व्याधौ शुट् च] बवासीर। सम०—घ्न (वि०) बवासीर को नष्ट करने वाला (—घ्नः) सूरण, भिलावा (क्योंकि कहते हैं कि यह बवासीर नाशक है)।

अर्शस (वि०) [अर्शस्+अच्] बवासीर से पीड़ित।

अर्ह् (भ्वा० पर०) [अर्हति, आनर्ह, अर्हितुम्, अर्हित] (आर्ष प्रयोग—आ०, रावणो नार्हते पूजाम्—रामा०) 1. अधिकारी होना, योग्य होना (कर्म० तथा तुमुन्नन्त के साथ)—किमिव नायुष्मानमरेश्वरान्नार्हति —श० ७, 2. अधिकार रखना, अधिकारी बनना—ननु गर्भः पित्र्यं रिक्थमर्हति—श० ६, न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति—मनु० ९।३ 3. योग्य होना, पात्र बनना —अर्यनग मयि भवद्भिः कर्तुमर्हति—नै०५।११३, दश०

१३७, 4. समान होना, योग्य होना—न ते गात्राण्युपचारमर्हन्ति—श० ३।१८, सर्वे ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्—मनु० २।८६, 5. योग्य होना, अनुवाद 'सकता'—न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति—श० ४ 6. पूजा करना, सम्मान करना नीचे प्रेर० दे० 7. (मध्यम पुरुष के साथ—कभी-कभी अन्यपुरुष के साथ भी—तुमुन्नन्त का प्रयोग होता है), 'अर्ह्' धातु मृदु आदेश, शिष्ट प्रार्थना तथा परामर्श के लिए प्रयुक्त होता है—इसका अनुवाद होता है :—कृपा करना, अनुग्रह करना, प्रसन्न होना—द्वित्राण्यहान्यर्हसि सोढुमर्हन्—रघु० ५।२५, कृपया प्रतीक्षा कीजिए; —नार्हसि मे प्रणयं विहन्तुम्—२।५८, [प्रेर० या चु० पर०] सम्मान करना, पूजा करना, —राजार्जिहत्तं मधुपर्कपाणिः—भट्टि० १।१७, मनु० ३।११९।

अर्ह (वि०) [अर्ह्+अच्] 1. आदरणीय, आदर योग्य, पात्र, अधिकारी—अर्हाविभोजयन् विप्रो दण्डमर्हति माषकम्—मनु० ८।३९२, 2. योग्य, दावेदार, अधिकारी, (कर्म०, तुमुन्नन्त, तथा समास में)—नैवार्हः पैतृकं रिक्थं पतितोत्पादितो हि सः—मनु० ९।१४४, संस्कारमर्हस्त्वं न च लप्स्यसे—रामा०, तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान् स्वबान्धवान्—भग० १।३७, इसी प्रकार मान° वध° दंड° आदि 3. सुहावना, उचित, उपयुक्त—केवलं यानमर्हं स्यात्—पंच० ३, (संबं० के साथ भी)—स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् पंच० १।८७-९२, 4. उचित मूल्य का, कीमत का, दे० नीचे,—र्हः 1. इन्द्र 2. विष्णु 3. मूल्य (जैसा कि 'महार्ह' में)—महार्हशय्यापरिवर्तनच्युतैः—कु० ५।१२, (महानर्हो यस्याः—मल्लिनाथ)—र्हा पूजा, आराधना।

अर्हणम्-णा [अर्ह्+भावे ल्युट्] पूजा, आराधना, सम्मान, आदर तथा सम्मान के साथ व्यवहार करना—अर्हणामर्हते चक्रुर्मुनयो नयचक्षुषे—रघु० १।५५, शि० १५।२२।

अर्हत् (वि०) [अर्ह्+शतृ] योग्य, अधिकारी, पूजनीय—(पुं०) 1. बुद्ध 2. बौद्धधर्म की पुरोहिताई में उच्चतम पद 3. जैनियों के पूज्य देवता, तीर्थंकर—सर्वज्ञो जितरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजितः, यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वरः।

अर्हन्त (वि०) [अर्ह्+झ वा०] योग्य, अधिकारी,—तः 1. बुद्ध 2. बौद्धभिक्षु।

अर्हन्ती (स्त्री०) पूजा के योग्य होने का गुण, सम्मान, पूजा,—श्रोत्राहन्तीचणैर्गुण्यैः—सिद्धा०।

अर्ह्य (स० कृ०) [अर्ह्+ण्यत्] 1. योग्य, आदरणीय, 2. प्रशंसा के योग्य।

अल् (भ्वा० उभ०) [अलति-ते, अलितुम्, अलित] 1. सजाना, 2. योग्य या सक्षम होना 3. रोकना, दूर रखना, दे० अलम्।

अलम् [अल्+अच्] 1. बिच्छू का डंक जो उसकी पूंछ में होता है 2. पीली हरताल।

अलकः [अल्+क्वुन्] 1. घुंघराले बाल, जुल्फें, बाल—ललाटिका चन्दनधूसरालका—कु० ५।५५,अलके बालकुन्दानुविद्धम्—मेघ० ६७, (यह शब्द नपुं० भी है जैसा कि मल्लिनाथ केउद्धरण—स्वभाववक्राण्यलकानि तासाम्—से प्रकट होता है) 2. मस्तक के घूंघर 3. शरीर पर मला हुआ केसर,—का 1. आठ से दस वर्ष तक की आयु की कन्या 2. यक्षों के स्वामी कुबेर की राजधानी—विभाति यस्यां ललितालकायां मनोहरा वैश्रवणस्य लक्ष्मीः—भामि० २।१०, गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्—मेघ० ७। सम०—अधिपः,—ईश्वरः,—पतिः अलका का स्वामी, कुबेर—अत्यजीवदमरालकेश्वरौ—रघु० १९।१५,—अन्तः घूंघर का किनारा या लट,—नन्दा 1. गंगा, गंगा में गिरने वाली नदी, 2. आठ से दस वर्ष के बीच की आयु की लड़की,—प्रभा कुबेर की राजधानी,—संहतिः घूंघरों की पंक्तियाँ—शि० ६।३।

अलक्तः-क्तकः [न रक्तोऽस्मात्, यस्य लत्वम्—स्वार्थे कन्—तारा०] कुछ वृक्षों से निकलने वाली राल, लाल रंग की लाख महावर (प्राचीन काल में स्त्रियों द्वारा शरीर के कुछ अंग इसके द्वारा रंगे जाते थे—विशेषरूप से पैरों के तल और ओष्ठ)—(दन्तवाससा) चिरोज्झितालक्तकपाटलेन—कु० ५।३४, मालवि० ३।५, अलक्तकाङ्कां पदवीं ततान—रघु० ७।७, स्त्रियो हृतार्थं पुरुषं निरर्थं निष्पीडितालक्तकवत्त्यजन्ति-मृच्छ० ४।१५। सम०—रसः महावर, लाक्षारस—अलक्तरसरक्ताभावलक्तरसवर्जितौ, अद्यापि चरणौ तस्याः पद्मकोशसमप्रभौ—रामा०,—रागः महावर का लाल रंग।

अलक्षण (वि०) [न० ब०] 1. चिह्नरहित 2. परिचायक चिह्न से हीन, परिभाषारहित, 3. जिसमें कोई अच्छा चिह्न न हो, अशुभ, अपशकुन—क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाहम्—रघु० १४।५.—णम् 1. बुरा या अशुभ चिह्न 2. जो परिभाषा न हो, बुरी परिभाषा।

अलक्षित (वि०) [न० त०] अदृष्ट, अनवलोकित—अलक्षिताभ्युत्पतनो नृपेण—रघु० २।२७।

अलक्ष्मीः (स्त्री०)[न० त०] दुर्भाग्य, बुरी किस्मत, निर्धनता।

अलक्ष्य (वि०) [न० त०] 1. अदृश्य, अज्ञात, अनवलोकित 2. चिह्नरहित, 3. जिस पर कोई विशिष्ट चिह्न न हो 4. देखने में नगण्य 5. जिसमें कोई बहाना न हो, छल-कपट से रहित 6. अर्थों की दृष्टि से गौण। सम०—गति (वि०) अदृश्य रूप से घूमने वाला,—जन्मता अज्ञात जन्म, अप्रकटक जन्म

—वपुर्विरूपाक्षमलक्ष्यजन्मता—कु० ५।७०,—लिंग (वि०) जो वेश बदले हुए हो, जिसका नाम पता छिपा हो,—वाद् (वि०) किसी अदृश्य वस्तु को संबोधित करके बोलने वाला—कु० ५।५७।

अलगर्दः [लगति स्पृशति इति लग्+क्विप्, लग् अर्दयति इति अर्द्+अच्, स्पृशन् सन्, अर्दो न भवति] पानी का साँप।

अलघु (वि०) [स्त्री० घु—घ्वी] [न० त०] 1. जो हल्का न हो, भारी, बड़ा 2. जो छोटा न हो, लम्बा (छंदः शास्त्र में) 3. संगीन, गंभीर 4. गहन, प्रचण्ड, बहुत बड़ा। सम०—उपलः चट्टान,—प्रतिज्ञ (वि०) गंभीर प्रतिज्ञा करने वाला।

अलङ्करणम् [अलम्+कृ+ल्युट्] 1. सजावट, सजाना 2. आभूषण (श० तथा आलं०)—सृजति तावदशेषगुणाकरं पुरुषरत्नमलङ्करणं भुवः—भर्तृ० १।९२।

अलङ्करिष्णु (वि०) [अलम्+कृ+इष्णु च्] 1. आभूषणों का शौक़ीन, 2. सजाने वाला, सजाने की क्रिया में कुशल।

अलङ्कारः [अलम्+कृ+घञ्] 1. सजावट, सजाने या अलंकृत करने की क्रिया 2. आभूषण (आलं० से भी)—अलङ्कारः स्वर्गस्य—विक्रम० १, 3. अलंकार जिसके शब्द°, अर्थ° तथा शब्दार्थ° के अनुसार तीन भेद हैं 4. काव्य के गुण दोष बताने वाला शास्त्र। सम०—शास्त्रम् काव्य कला तथा साहित्य शास्त्र,—सुवर्णम् आभूषण घड़ने के लिए सोना।

अलङ्कारकः [अलम्+कृ+घञ्, स्वार्थे कन्] आभूषण, सजावट मनु० ७।२२०, [अलम्+कृ+ण्वुल्] सजाने वाला।

अलङ्कृतिः (स्त्री०) [अलम्+कृ+क्तिन्] 1 सजावट 2. आभूषण, कर्णालङ्कृतिः—अमरु० १३, 3. साहित्यिक आभूषण, अलंकार—तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि—काव्य० १; यो विद्वान्मन्यते काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती, असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलं कृती—चन्द्रा० सालङ्कृतिः श्रवणकोमलवर्णराजिः—भामि० ३।६, 'यहाँ अ° द्वितीय तथा तृतीय अर्थ प्रकट करता है)

अलङ्क्रिया [अलम्+कृ+श+टाप्] अलंकृत करना, आभूषित करना, सजाना। (आलं० भी)।

अलङ्घनीय (वि०) [न० त०] जो लांघा न जा सके, पार न किया जा सके, जहाँ पहुँचा न जा सके, पहुँच के बाहर।

अलजः [अल+जन्+ड] एक प्रकार का पक्षी।

अलञ्जरः,—जुरः [अलं सामर्थ्यं जृणाति—जृ+अच् पृषो० उत् तारा०] मिट्टी का बर्तन, मर्तबान, घड़ा।

अलम् (अव्य०) [अल्+अम् बा०] 1. (क) पर्याप्त, यथेष्ट, काफी (संप्र० या तुमुन्नन्त के साथ)—तस्यालमेषा क्षुधितस्य तृप्त्यै—रघु० २।३९, अन्यथा प्रातराशाय कुर्याम त्वामलं वयम्—भट्टि० ८।९८, (ख) समकक्ष, तुल्य (संप्र० के साथ) दैत्येभ्यो हरिरलम् सिद्धा०, अलं मल्लो मल्लाय—महाभा० 2. योग्य, सक्षम (तुमुन्नन्त के साथ)—अलं भोक्तुम्—सिद्धा०, वरेण शमितं लोकानलं दग्धुं हि तत्तपः—कु० २।५६, (अधि० के साथ भी)—त्रयाणामपि लोकानामलमस्मि निवारणे—रामा० 3. बस, बहुत हो चुका, कोई आवश्यकता नहीं, कोई लाभ नहीं (निषेधात्मक बल रखना), करण० या क्त्वान्त के साथ, अलमन्यथा गृहीत्वा—मालवि० १।२०, आलप्यालमिदं बभ्रोर्यत्स दारानपाहरत्—शिव० २।४०, अलं महीपाल तव श्रमेण—रघु० २।३४, कु० ५।८२, अलमियद्भिः कुसुमैः—श० ४, इतने फूल पर्याप्त हैं, 4. (क) पूर्णरूप से, पूरी तरह से—अर्हस्येनं शमयितुमलं वारिधारा सहस्रैः—मेघ० ५३, त्वमपि विततमज्ञः स्वर्गिणः प्रीणयाऽलम्—श० ७।३४, (ख) बहुत, अत्यधिक, बहुत ही अधिक,—तुदन्ति अलम् का० २, यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति—अमर०। सम०—कर्मीण (वि०) कार्य-करने में सक्षम, दक्ष, कुशल, -कृ दे० 'कृ' के नीचे,—जीविक (वि०) जीविका के लिए यथेष्ट,—धन (वि०) यथेष्ट धन रखने वाला, धनवान्,—निरादिष्टधनश्चेत्तु प्रतिभूः स्यादलंधनः—मनु० ८।१६२, —धूमः अधिक धूआँ, धूम्रपुंज, धूएँ का अंबार,—पुरुषीण (वि०) 1. जो मनुष्य के योग्य हो, मनुष्य के लिए पर्याप्त हो,—बल (वि०) पर्याप्त बल शाली, यथेष्ट शक्तिशाली,—बुद्धिः पर्याप्त समझ,—भूष्णु (वि०) योग्य, सक्षम—विनाप्यस्मदलंभूष्णुरिज्यायै तपसः सुतः—शि० २।९।

अलम्पट (वि०) [न० त०] जो लंपट या विषयी न हो, शुद्ध चरित्र वाला,—टः अन्तः पुर।

अलम्बुषः [अलं पुष्णाति इति—पुष्+क पृषो० पस्य बः] 1. वमन, छर्दि, 2. खुले हुए हाथ की हथेली।

अलय (वि०) [न० ब०] 1. गृहहीन, आवारा 2. नाश न होने वाला, अविनश्वर,—यः [न० त०] 1. अनश्वरता, स्थायित्व 2. जन्म, उत्पत्ति।

अलर्कः [अलम् अर्क्यते अर्च्यते वा अर्क्+अच्, अर्च्+घञ् वा शक० पररूपम्] 1. पागल कुत्ता या मदोन्मत्त व्यक्ति 2. सफ़ेद मदार।

अलले (अव्य०) [अर+रा+के रस्य लः] बहुधा नाटकों में प्रयुक्त होने वाला पैशाची बोली का शब्द जिसका कोई अपना तात्पर्य नहीं।

अलवालम् [न० त०] वृक्ष में पानी देने के लिए जड़ में बना हुआ स्थान दे० 'आलवाल'।

अलस् (वि०) [न० त० लस्+क्विप्] न चमकने वाला।
अलस (वि०) [न लसति व्याप्रियते—लस्+अच्] 1. अक्रिय, स्फूर्तिहीन, सुस्त, आलसी 2. थका हुआ, श्रान्त, क्लान्त,—मार्गश्रमादलसशरीरे दारिके—माल-वि० ५, अमरु० ४।९०, विक्रम० ३।२, गगन—मलसम्—मा० १।१७, 3. मृदु, कोमल 4. ढीला, मन्द (गति में)—श्रोणीभारादलसगमना—मेघ० ८२,। सम०—**ईक्षणा** वह स्त्री जिसकी मदभरी दृष्टि हो।
अलसक (वि०) [अलस+कन्] अकर्मण्य, सुस्त,—**कः** अफारा, पेट का एक रोग।
अलातः—**तम्** [न० त०] अंगार, अधजली लकड़ी—निर्वाणालातलाघवम् कु० २।२३।
अलाबुः—**बूः** (स्त्री) [न—लम्बते; न+लम्ब्+उ—णित् नलोपश्च वृद्धिः—तारा०] लंबी लौकी—**बु** (नपुं०) 1. तुमड़ी का बना पान-पात्र 2. तुमड़ी का हलका फल जो पानी पर तैरता है—किं हि नामैतत् अम्बुनि मज्जन्त्यलाबूनि ग्रावाणः प्लवन्त इति—महावी० १, मनु० ६।५४। सम०—**कटम्** लौकी का कसा हुआ चूरा,—**पात्रम्** तुमड़ी का बना बर्तन।
अलारम् [ऋ+यङ्, लुक्+अच् रस्य लः] दरवाजा।
अलिः [अल्+इन्] 1. भौंरा 2. बिच्छू 3. कौवा 4. कोयल 5. मदिरा। सम०—**कुलम्** भौंरों का झुंड, °संकुल मक्खियों के झुंड से भरा हुआ—अलिकुल सङ्कुलकुसुमनिराकुलनवदलमालतमाले—गी० °**संकुल** कुब्ज नामक पौधा,—**जिह्वा**,—**जिह्विका** गले के भीतर का कौवा, घांटी, कोमल तालु—**प्रिय** जो भौंरों को अच्छा लगे (—**यः**) लाल कमल, (—**या**) बिगुल जैसा फूल,—**माला** भौंरों का समूह,—**विरावः**,—**रुतम्** भौंरों का गुंजार,—**वल्लभः**= °प्रियः तु०।
अलिकम् [अल्यते भूष्यते—अल्+कर्मणि इकन्] मस्तक,—अलिकेन च हेमकान्तिना—भामि० २।१७१, विद्धशा० ३।६,।
अलिन् (पुं०) [अल्+इनि] 1. बिच्छू 2. भौंरा,—मलिनिमाऽलिनि माधवयोषिताम्—शि० ६।४,—**नी** भौंरों का झुंड,—अरमतालिनी शिलीन्ध्रे—शि० ६।७२, अलिनीजिष्णुः कचानां चयः—भर्तृ० १।५।
अलिगर्दः [दे० 'अलगर्द'] एक प्रकार का सांप।
अलिङ्ग (वि०) [न० ब०] 1. जिसका कोई विशिष्ट चिह्न न हो, चिह्न रहित 2. बुरे चिह्नों वाला 3. (व्या० में) जिसका कोई लिंग न हो।
अलिञ्जरः [अलनम्—अलिः अल्=इन् तं जरयति इति जृ+अच् पृषो० मुम्] जलपात्र, दे० 'अलंजर'।
अलिन्दः [अल्यते भूष्यते, अल्—कर्मणि किंदच्] 1. घर के दरवाजे के सामने का चबूतरा—मत्तालिन्दतोरणम्—मालवि० ५, 2. दरवाजे पर बनी चौकोर जगह।
अलिपकः [न० त०] 1. कोयल 2. भौंरा 3. कुत्ता।
अलिमकः=दे० अनिमक।
अलिम्पक—**वक**=दे० अनिमक।
अलीक (वि०) [अल्+वीकन्] 1. अप्रिय, अरुचिकर 2. असत्य, मिथ्या, मनगढ़न्त—अलीककोपकान्तेन—का० १४७, °वचन—अमरु० २३, ३८, ४३,—**कम्** 1. मस्तक 2. मिथ्यात्व, असत्यता।
अलीकिन् (वि०) [अलीक+इनि] 1. अरुचिकर, अप्रिय 2. मिथ्या, छलने वाला।
अलुः [अल्+उन्] छोटा जल-पात्र।
अलुक्, °**समासः** [नास्ति विभक्तेः लुक् लोपो यत्र] एक समास जिसमें पूर्व पद की विभक्ति का लोप नहीं होता, उदा०—सरसिजम्, आत्मनेपदम्।
अले, अलेले (अव्य०) [अरे, अरेरे इत्येव रस्य लः] बहुधा नाटकों में प्रयुक्त निरर्थक शब्द जो पिशाची बोली में पाये जाते हैं।
अलेपक (वि०) [न० ब० कप्] बेदाग—**कः** परब्रह्म।
अलोक (वि०) [न० ब०] 1. जो दिखाई न दे—जैसा कि—लोकालोक इवाचलः—रघु० १।६८ [न लोक्यत इति अलोकः—मल्लि०] 2. जिसमें लोग न हों 3. (अच्छे कर्म न होनेके कारण) जो मृत्यु के उपरांत किसी दूसरे लोक में नहीं जाता,—**कः**—**कम्** [न० त०] 1. जो लोक न हो, 2. संसार की समाप्ति या नाश, लोगों का अभाव—रक्ष सर्वानिमांल्लोकान् नालोकं कर्तुमर्हसि—रामा०। सम०—**सामान्य** असाधारण, असामान्य।
अलोकनम् [न० त०] अदृश्यता, दिखाई न देना, अंतर्ध्यान होना।
अलोल (वि०) [न० त०] 1. शान्त, क्षोभरहित 2. दृढ़, स्थिर, 3. अचंचल 4. जो प्यासा न हो, इच्छा रहित।
अलोलुप (वि०) [न० त०] 1. इच्छाओं से मुक्त 2. जो लालची न हो, विषयों से उदासीन।
अलौकिक (वि०) [स्त्री०—**की**] [न० त०] 1. जो लोक में प्रचलित न हो, असाधारण, लोकोत्तर 2. जो सामान्य भाषा में प्रचलित न हो, धर्म-लेखों के लिए विशिष्ट, श्रेण्य साहित्य में अप्रयुक्त, वैदिक 4. प्राक्काल्पनिक, °**त्वम्** किसी शब्द का विरल प्रयोग—अलौकिकत्वादमरः स्वकोपे न यानि नामानि समुल्लिलेख, विलोक्य तैरप्यधुना प्रचारमयं प्रयत्नः पुरुषोत्तमस्य—त्रिका०।
अल्प (वि०) [अल्+प] 1. तुच्छ, महत्त्वहीन, नगण्य (विप० महत् या गुरु) मनु० ११।३६. 2. छोटा, थोड़ा, सूक्ष्म, जरा सा (विप० बहु)—अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्—रघु० २।४७, १, २, 3. मरणशील जो थोड़ी देर जीवे 4. कभी-कभी होने वाला, विरल,

—ल्पम्,—ल्पेन,—ल्पात् (क्रि० वि०) 1. जरा 2. जरा से कारण से,–प्रीतिरल्पेन भिद्यते–रामा० 3. अनायास, बिना किसी कष्ट या कठिनाई के। सम० —**अल्प** (वि०) बहुत ही जरा सा, सूक्ष्म; थोड़ा-थोड़ा करके, —**असु**= प्राण दे०, **आकांक्षिन्** (वि०) थोड़ा चाहने वाला, संतुष्ट, थोड़े से ही संतुष्ट,—**आयुस्** (वि०) थोड़ी देर जीने वाला—मेघ० ४।१५७, (—युः पुं०) 1. छोटी आयु का, बच्चा, 2. बकरी,—**आहार**, —**आहारिन्** (वि०) मिताहारी, खाने में औसतदर्जे का (—रः) परिमितता, भोजन में संयम—**इतर** (वि०) 1. जो छोटा न हो, बड़ा 2. जो कम न हो, बहुत, जैसे ॰राः कल्पनाः, नाना प्रकार के विचार,—**ऊन** (वि०) ईषद्दोषी, अधूरा, —**उपायः** छोटे साधन,—**गंध** (वि०) थोड़ी गंध वाला (—**धम्**) लाल कमल, —**चेष्टित** (वि०) क्रियाशून्य,—**छद**, —**छाद** (वि०) थोड़े वस्त्र धारण किये हुए—मृच्छ० १।३७,—**ज्ञ** (वि०) थोड़ा जानने वाला, उथले ज्ञान वाला, मोटी जानकारी रखने वाला,—**तनु** (वि०) 1. ठिगना, छोटे कद का 2. दुर्बल, पतला,—**दृष्टि** (वि०) जिसका मन उदार न हो, अदूरदर्शी,—**धन** (वि०) जो धनवान् न हो, धनहीन,—मनु० ३।६६, ११।४[illegible] दुर्बलमना, मूर्ख,—**प्रजस्** (वि०) थोड़ी संतान वाला, —**प्रमाण**,—**प्रमाणक** (वि०) 1. थोड़े वजन का, थोड़ी माप का, 2. थोड़े प्रमाणों वाला, थोड़े से साक्ष्य पर निर्भर रहने वाला,–**प्रयोग** (वि०) विरलता से प्रयुक्त, कभी-कभी प्रयुक्त,—**प्राण**,—**असु** (वि०) थोड़ा श्वास रखने वाला, दमे का रोगी (—णः) 1. थोड़ा श्वास लेना, दुर्बल श्वास 2. (व्या० में) वर्णमाला के महाप्राणताहीन अक्षर—उदा० स्वर, अर्धस्वर, अनुनासिक तथा क् च् ट् त् प् ग् ज् ड् द् ब् अक्षर; —**बल** (वि०) दुर्बल, बलहीन, कम शक्ति रखने वाला, —**बुद्धि**, —**मति** (वि०) दुर्बलबुद्धि, मूर्ख, अज्ञानी —मनु० १२।७४, —**भाषिन्** (वि०) वाक्-कृपण, थोड़ा बोलने वाला, —**मध्यम** (वि०) पतली कमर वाला,—**मात्रम्** (वि०) थोड़ा सा, ज़रा सा,—**मूर्ति** (वि०) छोटे कद का, ठिगना (—**र्तिः**—स्त्री०) छोटी आकृति या वस्तु, —**मूल्य** (वि०) थोड़ी कीमत का सस्ता,—**मेधस्** (वि०) थोड़ी समझ का, अज्ञानी, मूर्ख, —**वयस्** (वि०) थोड़ी आयु का, कमसिन, —**वादिन्** (वि०) अल्पभाषी, —**विद्य** (वि०) अज्ञानी, अशिक्षित, —**विषय** (वि०) सीमित परास या धारिता से युक्त,—क्वचाल्पविषया मतिः—रघु० १।२, —**शक्ति** (वि०) कमजोर, दुर्बल, —**सरस्** (नपुं०) पोखर, छोटा जोहड़ (जो गर्मियों में सूख जाता है)।

अल्पक (वि०) [स्त्री० —**ल्पिका**] [अल्प+कन्] 1. छोटा, थोड़ा 2. क्षुद्र, नीच।

अल्पम्पच (वि०) [अल्प+पच्+खश् मुम्] (थोड़ा पकाने वाला) लालची, कंजूस, मक्खीचूस;—**चः** कृपण।

अल्पशः (अव्य०) [अल्प+शस्] 1. थोड़े अंश में, जरा, थोड़ा—बहुशो ददाति आभ्युदयिकेषु, अल्पशः श्राद्धेषु —पा० ५।४।४२, टीका, 2. कभी-कभी, यदा कदा।

अल्पित (वि०) [अल्प कृतार्थे णिच् कर्मणि—क्त] 1. घटाया हुआ, 2. सम्मान की दृष्टि से नीचा, तिरस्कृत —मृषा न चक्रेऽल्पितकल्पपादपः—नै० १।१५

अल्पिष्ठ (वि०) [अतिशयेन अल्पः—इष्ठन्] न्यूनातिन्यून, छोटे से छोटा, अत्यन्त छोटा।

अल्पीकृ (तना० उभ०) छोटा बनाना, घटाना, संख्या में कमी करना।

अल्पीयस् (वि०) [अतिशयेन अल्पः—ईयसुन्] अपेक्षाकृत छोटा, दूसरे से कम, बहुत थोड़ा।

अल्ला [अल्यते इति अल्+क्विप्, अले भूषार्थे लाति गृह्णाति—ला+क] माता (संबोधन अल्ल)।

अव् (भ्वा० पर०) [अवति, अवित या ऊत] 1. रक्षा करना, बचाना,–यमवतामवतां च धुरि स्थितः–रघु० ९।१, प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः—श० १।१, 2. प्रसन्न करना, संतुष्ट करना, सुख देना, विक्रमस्ते न मामवति नाजिते त्वयि—रघु० ११।७५, न मामवति सद्वीपा रत्नसूरपि मेदिनी—१।६५, 3. पसन्द करना, कामना करना, इच्छा करना 4. कृपा करना, उन्नत करना (धातुपाठ में इस धातु के और अनेक अर्थ दिये गये हैं, परन्तु श्रेण्य साहित्य में उनका प्रयोग विरल होता है)।

अव (अव्य०) [कई बार आरंभिक 'अ' को लुप्त कर दिया जाता है जैसा कि "पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य" कु० १।१ में] [अव्+अच्] 1. (सं० बो० अव्य० के रूप में) दूर, परे, फ़ासले पर, नीचे, 2. (क्रिया से पूर्व उपसर्ग के रूप में) यह प्रकट करता है (क) संकल्प, दृढ़ निश्चय—अवधृ (ख) विसरण, परिव्याप्ति—अवकॄ (ग) अनादर—अवज्ञा (घ) थोड़ापन, व्रीहीनवहन्ति (ङ) आश्रय लेना, सहारा लेना अवलम्ब् (च) पवित्रीकरण—अवदात (छ) अवमूल्यन, पराजय—अवहन्ति शत्रून् (पराभवति) (ज) आदेश देना—अवक्लृप् (झ) अवसाद, नीचे झुकना—अवतॄ, अवगाह (ञ) ज्ञान—अवगम्—अवइ, 3. तत्पुरुष समास के प्रथम खण्ड के रूप में इसका अर्थ होता है:—अवक्रुष्ट, उदा०—अवकोकिलः=अवक्रुष्टः कोकिलया सिद्धा०।

अवकट (वि०) [अव—स्वार्थे—कटच्] 1. नीचे की

ओर, पीछे की ओर 2. विपरीत, विरोधी, —टम् विरोध, वैपरीत्य ।

अवकरः [अव+कृ+अप्] धूल, बुहारन ।

अवकर्तः [अव+कृत्+घञ्] टुकड़ा, धज्जी ।

अवकर्तनम् [अव+कृत्+ल्युट्] काटना, धज्जियाँ करना ।

अवकर्षणम् [अव+कृष्+ल्युट्] 1. बाहर निकालना, खींचना 2. निष्कासन ।

अवकलित (वि०) [अव+कल्+क्त] 1. दृष्ट, अवलोकित 2. ज्ञात 3. लिया हुआ, गृहीत ।

अवकाशः [अव+काश्+घञ्] 1. अवसर, मौका,—नाते चापद्वितीये वहति रणधुरां को भयस्यावकाशः—वेणी० ३।७, लभ् के साथ प्रयुक्त होकर इसका अर्थ होता है—कार्य के लिए क्षेत्र या अवसर प्राप्त करना, —लब्धावकाशोऽविध्यन्मां तत्र दग्धो मनोभवः—कथा० १।४१ 2. (क) स्थान, जगह, ठौर—अवकाशं किलोदन्वान्रामायाभ्यर्थितो ददौ —रघु० ४।५८ इसी प्रकार —अन्यमवकाशमवगाहे—विक्रम० ४, यथावकाशं नी उचित स्थान पर ले जाना —रघु० ६।१४,—अस्माकमस्ति न कथंचिदिहावकाशः—पंच० ४।८, अवकाशो विविक्तोऽयं महानद्योः समागमे—रामा० (ख) पदार्पण, प्रवेश, पहुँच, अन्तर्गमन (छाया) शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा—श० ७।३२, लभ् के साथ बहुधा इन्हीं अर्थों में प्रयोग—लब्धावकाशो मे मनोरथः —श०१, शोकावेगदूषिते मे मनसि विवेक एव नावकाशं लभते—प्रबो०. कृ या दा से पूर्व लगकर भी अर्थ होता है—'स्थान देना' 'प्रवेश कराना' 'मार्ग देना'—असौ हि दत्त्वा तिमिरावकाशम् —मृच्छ० ३।६, तस्माद्देयो विपुलमतिभिर्नावकाशोऽधमानाम् —पंच० १।३६६; अवकाशं रुध् रोकना, बाधा डालना—नयनसलिलोत्पीडरुद्धावकाशा (निद्रा)—मेघ० ९१, 3. अन्तराल, बीच का स्थान या समय 4. द्वारक, विवर ।

अवकीर्णिन् (वि०) [अवकीर्ण+इनि] संयम का उल्लंघन करने वाला, ब्रह्मचर्य व्रत को तोड़ देने वाला, (पुं०—र्णी) धर्मनिष्ठ विद्यार्थी जिसने (मैथुनादिक करके) अपने ब्रह्मचर्य व्रत को तोड़ा और संयमहीनता का परिचय दिया;—अवकीर्णी भवेद्गत्वा ब्रह्मचारी तु योषितम्, गर्दभं पशुमालभ्य नैर्ऋतं स विशुध्यति—याज्ञ० ३।२८०, मनु० ३।१५५ ।

अवकुञ्चनम् [अव+कुञ्च्+ल्युट्] झुकाव, मोड़, सिकुड़न ।

अवकुण्ठनम् [अव+कुण्ठ्+ल्युट्] 1. घेरना, घेरा डालना 2. आकृष्ट करना, कस के पकड़ना ।

अवकुण्ठित (वि०) [अव+कुण्ठ्+क्त] 1. घेरा हुआ, परिवेष्टित 2. आकृष्ट ।

अवकृष्ट (भू० क० कृ०) [अव+कृष्+क्त] 1. खींचकर नीचे किया हुआ, 2. दूर हटाया हुआ 3. निष्कासित, बाहर निकाला हुआ 4. घटिया, नीच, पतित, बहिष्कृत (विप० उत्कृष्ट या प्रकृष्ट) —ष्टः वह नौकर जो झाड़ू-बुहारु आदि का काम करता है (संमार्जनशोधनविनियुक्त); —पणो देयोऽवकृष्टस्य, षडुत्कृष्टस्य वेतनम्—मनु० ७।१२६ ।

अवक्लृप्तिः (स्त्री०) [अव+क्लृप्+क्तिन्] 1. संभव समझना, संभावना, संभाव्यता—क्वेव भोक्ष्यसे अनवक्लृप्तावेव—सिद्धा० (अनवक्लृप्तिरसम्भावना) 2. उपयुक्तता ।

अवकेशिन् (वि०) [अवच्युतं कं सुखं यस्मात्—अवकम् (फलशून्यता) तदीशितुं शीलमस्य इति अवक+ईश्+णिनि] फलहीन, बंजर (जैसा कि वृक्ष) ।

अवकोकिल (वि०) [अवक्रुष्टः कोकिलया] कोयल द्वारा तिरस्कृत ।

अवक्र (वि०) [न० त०] जो टेढ़ा न हो, (आलं०) ईमानदार, सच्चा ।

अवक्रन्द (वि०) [अव+क्रन्द्+घञ्] शनैः २ रुदन करने वाला, दहाड़ने वाला, हिनहिनाने वाला,—दः चिल्लाना, चीख, चीत्कार ।

अवक्रन्दनम् [अव+क्रन्द्+ल्युट्] जोर से चिल्लाना, ऊँचे स्वर से रोना ।

अवक्रमः [अव+क्रम्+घञ्] नीचे उतरना, उतार ।

अवक्रयः [अव+क्री+अच्] 1. मूल्य 2. मजदूरी, किराया, खेत का भाड़ा 3. किराये पर देना, पट्टे पर देना 4. (राजा को दिया जाने वाला) कर या राजस्व, शुल्क (राजग्राह्यं द्रव्यम् सिद्धा०) ।

अवक्रान्तिः (स्त्री०) [अव+क्रम्+क्तिन्] 1. उतार 2. उपागम ।

अवक्रिया [अव+कृ+श+टाप्] भूल, चूक ।

अवक्रोशः [अव+क्रुश्+घञ्] 1. बेमेल ध्वनि 2. कोसना 3. दुर्वचन, निन्दा ।

अवक्लेदः [अव+क्लिद्+घञ्] 1. टपकना, ओस पड़ना 2. कचलहू, पीप ।

अवक्लेदनम् [अव+क्लिद्+ल्युट्] बूंद २ टपकना, ओस या कुहरे का गिरना ।

अवक्वणः [अव+क्वण्+अच्] बेसुरा अलाप ।

अवक्वाथः [अव+क्वथ्+घञ्] अधूरा पचन या अधूरा उबालना ।

अवक्षयः [अव+क्षि+अच्] नाश, बरबादी, ध्वंस, तबाही ।

अवक्षयणम् [अव+क्षि+ल्युट्] (आग आदि को) बुझाने के साधन ।

अवक्षेपः [अव+क्षिप्+घञ्] 1. लांछन, निन्दा 2. आक्षेप ।

अवक्षेपणम् [अव+क्षिप्+ल्युट्] 1. नीचे की ओर फेंकना, कर्म के पाँच प्रकारों में से एक, दे० 'कर्म' 2. घृणा, नफ़रत 3. बदनामी, लांछन 4. पराजित करना, दमन करना---णी बागडोर, लगाम।

अवखण्डनम् [अव+खण्ड्+ल्युट्] बांटना, नष्ट करना।

अवखातम् [प्रा० स०] गहरी खाई।

अवगणनम् [अव+गण्+ल्युट्] 1. अवज्ञा, तिरस्कार, अवहेलना 2. निंदा, लांछन 3. अपमान, मानभंग।

अवगण्डः [प्रा० स०] फोड़ा फुंसी जो गाल पर होती हैं।

अवगतिः (स्त्री०) [अव+गम्+क्तिन्] 1. ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण, समझ, सत्य और निश्चित ज्ञान---ब्रह्मावगतिर्हि पुरुषार्थः ब्रह्मावगतिस्तत्प्रतिज्ञाता---शत०।

अवगमः---गमनम् [अव+गम्+घञ्, ल्युट् वा] 1. निकट जाना, नीचे उतरना 2. समझना, प्रत्यक्षीकरण, ज्ञान।

अवगाढ (भू० क० कृ०) [अव+गाह्+क्त] 1. डुबकी लगाया हुआ, घुसा हुआ, डूबा हुआ,---अमृतह्रदमिवावगाढोऽस्मि---श० ७, 2. नीचे दबाया गया,---नीचा, गहरा (श० आलं०)---अभ्युन्नता पुरस्तादवगाढा जघनगौरवात्पश्चात्---श० ३।७, 3. घनीभूत, जमा हुआ (जैसे रक्त)।

अवगाहः-गाहनम् [अव+गाह्+घञ्, ल्युट् वा] 1. स्नान, ---सुभगसलिलावगाहाः---श० १।३ सदावगाहक्षमवारिसंचयः ---ऋतु० १।१ 2. डुबकी लगाना, डुबाना, घुसना---परवेशावगाहनात्---हि० ३।९५, जलावगाहक्षणमात्रशान्ता---रघु० ५।४७, दग्धानामवगाहनाय विधिना रम्यं सरो निर्मितम्---शृंगार० १, 3. (आलं०) निष्णात होना, सीख लेना 4. स्नानागार।

अवगीत (भू० क० कृ०) [अव+गै+क्त] 1. बेमेल स्वर से गाया हुआ, बुरी तरह से गाया हुआ 2. धमकाया हुआ, गाली दिया हुआ, कोसा गया 3. दुष्ट बदमाश 4. गान द्वारा व्यंग्यात्मक ढंग से चोट किया गया; ---तम् 1. व्यंग्यगान, परिहास 2. धिक्कार, लांछन।

अवगुणः [प्रा० स०] अपराध, दोष, बुराई---अन्यदोषं परावगुणम्---मल्लि० कि० १३।४८।

अवगुण्ठनम् [अव+गुण्ठ्+ल्युट्] 1. घूंघट निकालना, छिपाना, बुर्का ओढ़ना 2. पर्दा (मुंह के लिए) (आलं० भी)---अवगुण्ठनसंवीता कुलजाभिसरेद्यदि---सा० द०---कृतशीर्षावगुंठनः---मुद्रा० ६, 3. घूंघट, बुर्का।

अवगुंठनवत् (वि०) [अवगुण्ठन+मतुप्] घूंघट से ढका हुआ, पर्दे से आवृत, ---नी नारी---दश० ५।

अवगुण्ठिका [अव+गुण्ठ+ण्वुल्+टाप्] 1. घूंघट, पर्दा 2. आवरण 3. चिक का पर्दा।

अवगुण्ठित (भू० क० कृ०) [अव+गुण्ठ्+क्त] पर्दा पड़ा हुआ, ढका हुआ, छिपा हुआ - रजनीतिमिरावगुण्ठिते---कु० ४।११।

अवगुरणम्,---गोरणम् [अव+गुर्+ल्युट्] घुड़कना, धमकाना, मार डालने के इरादे से प्रहार करना, शस्त्रों से आक्रमण करना।

अवगूहनम् [अव+गूह्+ल्युट्] 1. छिपाना, प्रच्छन्न रखना 2. आलिंगन करना।

अवग्रहः [अव+ग्रह्+घञ्] 1. समस्त पद के घटक शब्दों को अलग अलग करना, सन्धिच्छेद करना 2. इस प्रकार की पृथकता को द्योतन करने वाला चिह्न 3. विराम, सन्धि का न होना (जैसा कि---धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च---इसमें च+इमां=चेमां सन्धि नहीं हुई) 4. ए और ओ से परे 'अ' का लोप हो जाने पर ऽ चिह्न 5. वर्षा का न होना, सूखा पड़ना, अनावृष्टि---वृष्टिर्भवति शस्यानामवग्रहविशोषिणाम्---रघु० १।६२, १०।४८, नभोनभस्ययोर्वृष्टिमवग्रह इवान्तरे---१२।२९, वृषेव सीतां तदवग्रहक्षताम् कु० ५।६१, 6. बाधा, रोक 7. हाथियों का समूह 8. हाथी का मस्तक 9. प्रकृति, मूलस्वभाव 10. दण्ड (विप० अनुग्रह) 11. कोसना गाली देना।

अवग्रहणम् [अव+ग्रह्+ल्युट्] 1. बाधा, रुकावट 2. अनादर, अवहेलना

अवग्राहः [अव+ग्रह्+घञ्] 1. टूटना, वियोजन 2. अड़चन 3. शाप दे० 'अवग्रह'।

अवघट्टः [अव+घट्ट्+घञ्] 1. बिल, गुहा, मांद 2. शिला, चक्की (अनाज पीसने के लिए), 3. जोर से हिलाना।

अवघर्षणम् [अव+घृष्+ल्युट्] 1. रगड़ना 2. मलना 3. पीसना।

अवघातः [अव+हन्+घञ्] 1. प्रहार करना 2. चोट पहुँचाना, मारना 3. प्रचण्ड आघात, तीव्र आघात---कर्णाविघातनिपुणेन च ताड्यमाना दूरीकृताः करिवरेण (भृंगाः)---नीति० २, 4. धान आदि को ओखल में डालकर मूसल से कूटना।

अवघूर्णनम् [अव+घूर्ण्+ल्युट्] घुमेरी आना, चक्कर आना।

अवघोषणम् ---णा [अव+घुष्+ल्युट्] 1. घोषणा करना 2. उद्घोषणा।

अवघ्राणम् [अव+घ्रा+ल्युट्] सूंघने की क्रिया।

अवचन (वि०) [न० ब०] न बोलने वाला, चुप, वाणी रहित---शकुन्तला साध्वसादवचना तिष्ठति---श० १, ---नम् 1. उक्ति का अभाव, चुप्पी, मौन 2. निन्दा, लांछन, भर्त्सना---कर (वि०) आज्ञा न मानने वाला।

अवचनीय (वि०) [न० त०] 1. जो कहने के या उच्चारण करने के योग्य न हो, अश्लील या अशिष्ट (भाषा) —वादेष्ववचनीयेषु तदेव द्विगुणं भवेत्-मनु० ८।२६९, 2. जो निन्दा या लांछन के योग्य न हो, निन्दा से मुक्त—लोकैरवचनीया भवति—मृच्छ० २, °ता कहने में अनौचित्य, निन्दा से मुक्ति—सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतो ह्यवचनीयता—उत्तर० १।५।

अवच (चा) यः [अव+चि+अच्, घञ् वा] चयन करना (फल फूल आदि का)—ततः प्रविशतः कुसुमावचयमभिनयन्त्यौ सख्यौ—श० ४, अविरतकुसुमावचायखेदात्—शि० ७।७१।

अवचारणम् [अव+चर्+णिच्+ल्युट्] किसी काम पर नियुक्त करना, प्रयोग, प्रगमन की पद्धति।

अवचूडः-लः [अवनता चूडा अग्रं यस्य वा डो लः] रथ के ऊपर लहराता हुआ कपड़ा, ध्वजा के शिरोभाग में बंधा हुआ (चौरी जैसा) अधोमुख वस्त्रखंड,—पिच्छावचूडमनुमाधवधाम जग्मुः—शि० ५।१३, दिवसकरवारणस्यावचूलचामरकलापः—का० २६।

अवचूर्णनम् [अव+चूर्ण्+ल्युट्] 1. चूरा करना, पीसना, चूर्ण बनाना 2. चूरा बुरकाना विशेषकर कोई सूखी दवा घाव पर बुरकाना।

अवचूल=दे० अवचूड।

अवचूलकः-कम् [अवनता चूडा यस्य, डस्य लत्वम्—संज्ञायां कन्] मक्खियों को उड़ाने के लिए ब्रुश या चंवर।

अवच्छ (च्छा) दः [अव+छद्+क] आवरण, ढक्कन—काञ्चनावच्छदान् (खरान्)—रामा०।

अवच्छिन्न (भू० क० कृ०) [अव+छिद्+क्त] 1. काटा हुआ 2. अलगाया हुआ, बंटा हुआ, पृथक् किया हुआ 3. (तर्कशास्त्र में) अपने विहित विशिष्ट गुणों द्वारा दूसरी सब वस्तुओं से पृथक् की गई वस्तु 4. सीमित, विकृत, निश्चित—दिक्कालाद्यनवच्छिन्न-भर्तृ० २।१, 5. किसी विशेषण से युक्त, विशिष्ट, विविक्त तथा उपलक्षित।

अवच्छुरित (वि०) [अव+छुर्+क्त] मिश्रित—तम् अट्टहास।

अवच्छेदः [अव+छिद्+घञ्] 1. खंड, अंश 2. सीमा, मर्यादा 3. विच्छेद 4. भेद, विवेचन, (विशेषणों द्वारा), विशिष्टीकरण 5. दृढ़ निश्चय, निर्णय, फैसला—शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृतिहेतवः—वाक्० ६, 6. पदार्थ का वह गुण जो उसे औरों से अलग कर दे, लक्षणदर्शी गुण 7. सीमा बाँधना, परिभाषा करना।

अवच्छेदक (वि०) [अव+छिद्+ण्वुल्] 1. वियोजक 2. निर्धारक, निर्णायक 3. सीमा बाँधने वाला 4. विवेचक, विशिष्टीकारक 5. विशेष लक्षण—**कः** 1. जो विवेचन करे 2. विधेय, लक्षण, गुण।

अवजयः [अव+जि+अच्] पराजय, दूसरों पर विजय,—येनेन्द्रलोकावजयाय दृप्तः—रघु० ६।६२।

अवजितिः (स्त्री०) [अव+जि+क्तिन्] विजय, पराजय।

अवज्ञा [अव+ज्ञा+क] अनादर, तिरस्कार, अवमति, अवहेलना (कर्म०, करण०, अधि० या संबं० के साथ) —आत्मन्यवज्ञां शिथिलीचकार—रघु० २।४१, ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञाम्—मा० १।६। सम० —उपहत तिरस्कारपीडित, नीचा दिखाया गया—**दुःखम्** नीचा दिखाये जाने की वेदना—मा जीवन् यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति—शि० २।४५।

अवज्ञानम् [अव+ज्ञा+ल्युट्] अनादर, तिरस्कार।

अवटः [अव्+अटन्] 1. विवर, गुफा 2. गर्त—अवटे चापि मे राम प्रक्षिपेमं कलेवरं, अवटे ये निधीयंते—रामा० 3. कुआं 4 शरीर का कोई दवा हुआ या नीचा भाग, नाड़ीव्रण,—अवटश्चैवमेतानि स्थानान्यत्र शरीरके—याज्ञ० ३।९८ 5. बाजीगर। सम०—**कच्छपः** गढ़े में घुसा हुआ कछुवा (आलं०) अनुभवशून्य, जिसने संसार का कुछ न देखा हो।

अवटिः-टी (स्त्री०) [अव्+अटि पक्षे ङीष्] 1. विवर 2. कुआँ।

अवटीट (वि०) [नासिकायाः नतं अवटीटम्, अव+टीटच् नासिकायाः संज्ञायाम् नासिकाप्यवटीटा, पुरुषोऽप्यवटीटः] जिसकी नाक चपटी है, चपटी नाक वाला।

अवटुः [अव+टीक्+डुः] 1. बिल 2. कुआं 3. गरदन का पृष्ठभाग, 4 शरीर का दवा हुआ अंग—**टुः** (स्त्री०) गरदन का उठा हुआ भाग,—**टु** (नपुं०) विवर, दरार।

अवडीनम् [अव+डी+क्त] पक्षी की उड़ान, नीचे की ओर उड़ना।

अवतंसः-सम् [अव+तंस्+घञ्] 1. हार 2. कर्णाभूषण, अंगूठी के आकार का आभूषण, कान का गहना (आलं० भी)—गणा नमेरुप्रसवावतंसाः—कु० १।५५, स्ववाहनक्षोभचलावतंसाः—७।३८, रघु० १३।४९, 3. शिरोभूषण, मुकुट (आलं०) आभूषण का काम देने वाली कोई भी वस्तु—तामरसावतंसाः जलसंनिवेशाः—चात० २।३, पुंडरीकावतंसाभिः परिखाभिः—रामा० —पुष्पावतंसं सलिलम्—सुश्रु०।

अवतंसकः [अव+तंस्+ण्वुल्] कर्णाभूषण, आभूषण।

अवतंसयति (ना० धा० पर०) कर्णाभूषण के रूप में प्रयुक्त करना, कानों की बालियाँ बनाना—अवतंसयन्ति दयमानाः प्रमदाः शिरीषकुसुमानि—श० १।४।

अवततिः (स्त्री०) [अव+तन्+क्तिन्] फैलाव, प्रसार।

अवतप्त (भू० क० कृ०) [अव+तप्+क्त] गरम किया हुआ, चमकाया हुआ—अवतप्ते नकुलस्थितम्—आंखेटी नेवले का गर्म भूमि पर खड़ा होना, (रूपक के

ढंग से इस प्रकार मनुष्य की अस्थिरता के विषय में कहा जाता है)—अवतप्ते नकुलस्थितं त एतत् —सिद्धा० ।

अवतमसम् [प्रा० स०] झुटपुटा, अल्पांधकार—क्षीणेऽवतमसं तमः—अमर०, अंधकार—अवतमसभिदायै भास्वताम्युद्गतेन—शि० ११।५७, (यहाँ मल्लि० कहता है :—यद्यपि क्षीणेऽवतमसं तम इत्युक्तं तथापि इह विरोधाद्विशेषतादरेण सामान्यमेव ग्राह्यम्) ।

अवतरः [अव+तृ+अप्] उतार, नै० ३।५३, शि० १।४३ ।

अवतरणम् [अव+तृ+ल्युट्] 1. स्नान करने के लिए पानी में नीचे उतरना, उतार, नीचे आना 2. अवतार दे० 'अवतार' 3. पार करना 4. स्नान करने का पवित्र स्थान 5. एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना 6. परिचय 7. उद्धृत किया हुआ, उद्धरण ।

अवतरणिका [अवतरणी+कन् ह्रस्वः टाप्] 1. ग्रन्थ के आरम्भ में किया गया मंगलाचरण, जो कि, कहते हैं, संबोधित किये गये देवताओं को स्वर्ग से नीचे उतार लाता है, 2. प्रस्तावना, भूमिका ।

अवतरणी [अवतरति ग्रन्थोऽनया—अवतॄ+करणे ल्युट्] भूमिका ।

अवतर्पणम् [अव+तृप्+ल्युट्] शान्ति देने वाला उपचार ।

अवताडनम् [अव+तड्+णिच्+ल्युट्] 1. कुचलना, रौंदना,—नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि—उत्तर० १।१४ 2. मारना ।

अवतानः [अव+तन्+घञ्] 1. फैलाव 2. धनुष का तनाव 3. आवरण, चंदोवा ।

अवतारः [अव+तृ+घञ्] 1. उतार, उदय, आरंभ —वसन्तावतारसमये—श० १, 2. रूप, प्रकट होना —मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवताऽवतावसुधाम्—शंकर० 3.देवता का भूमि पर पदार्पण, अवतार लेना.—कोऽप्येष संप्रति नवः पुरुषावतारः उत्तर० ५।३३ धर्मार्थकामामोक्षाणामवतार इवाङ्गवान्—रघु० १०।८४, 4. विष्णु का अवतार—विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे—भर्तृ० ३।९५, (विष्णु के दस अवतार नीचे लिखे श्लोक में बताये गये हैं :—वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते, दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते । पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते, म्लेच्छान्मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥ मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः, रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की च ते दश ॥ गीत०) 5. नया दर्शन, विकास, जन्म—नवावतारं कमलादिवोत्पलम्—रघु० ३।३६, ५।२४, 6. तीर्थ स्थान 7. (जहाज से) उतरने का स्थान 8. अनुवाद 9. जोहड़, तालाब 10 प्रस्तावना, भूमिका ।

अवतारक (वि०) (स्त्री० —रिका) [अव+तृ+णिच्+ण्वुल्] 1. किसी को जन्म देने वाला 2. अवतार लेने वाला ।

अवतारणम् [अव+तृ+णिच्+ल्युट्] 1. उतारना 2. अनुवाद 3. किसी भूत प्रेत का आवेश 4. पूजा, आराधना 5. भूमिका या प्रस्तावना ।

अवतीर्ण (भू० क० कृ०) [अव+तृ+क्त] 1. नीचे आया हुआ, उतरा हुआ 2. स्नात 3. पार गया हुआ, पार किया हुआ —अपि नामावतीर्णोऽसि वाणगोचरम्—मा० १ ।

अवतोका [अवपतितं तोकम् अस्याः, प्रा० ब०] स्त्री या गाय जिसका किसी दुर्घटना के कारण गर्भ गिर गया हो ।

अवत्तिन् (वि०) [अव+दो+इनि] जो विभाजन करता है, काटकर पृथक् करता है; पंच° पांच भागों में बाँटने वाला ।

अवदंशः [अव+दंश्+घञ्] ऐसा चरपरा भोजन जिसके खाने से प्यास लगे, उत्तेजक ।

अवदाघः [अव+दह्+घञ् ह्रस्य घः] 1. गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु ।

अवदात (वि०) [अव+दै+क्त] 1. सुन्दर—अवदातकांतिः—दश० १०७, 2. स्वच्छ, पवित्र, निर्मल, परिष्कृत—सर्वविद्यावदातचेताः—का० ३६, 3. उज्ज्वल, श्वेत—रजनिकरकलावदातं कुलम्—का० २३३, कुंदावदाताः कलहंसमालाः—भट्टि० २।१८, 4. गुणी, सद्गुणी अन्यस्मिन् जन्मनि न कृतमवदातं कर्म—का० ६२, 5. पीला—तः श्वेत या पीला रंग ।

अवदानम् [अव+दो+ल्युट्] 1. पवित्र एवं मान्यता प्राप्त वृत्ति 2. सम्पन्न कार्य 3. शौर्य सम्पन्न या कीर्तिकर कार्य, पराक्रम, शूरवीरता, प्रशस्त सफलता, संगीयमान त्रिपुरावदानः—कु० ७।४८, प्रापदस्त्रमवदानतोषितात्—रघु० ११।२१, 4. कथावस्तु 5. काट कर टुकड़े २ करना ।

अवदारणम् [अव+दृ+णिच्+ल्युट्] 1. फाड़ना, बांटना, खोदना, काट कर टुकड़े २ करना 2. कुदाल, खुर्पा ।

अवदाहः [अव+दह्+घञ्] गर्मी, जलन ।

अवदीर्ण (भू० क० कृ०) [अव+दृ+क्त] 1. बाँटा हुआ, टूटा हुआ 2. पिघलाया हुआ, खंडित 3. हड़बड़ाया हुआ ।

अवदोहः [अव+दुह्+घञ्] 1. दुहना, 2. दूध ।

अवद्य (वि०) [न० त०] त्याज्य, निंद्य, प्रशंसा के अयोग्य—न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्—मालवि०

१।२, 2. सदोष, दोष युक्त, निन्दार्ह, अरुचिकर, अप्रिय—उदवहृदनवद्यां तामवद्यादपेतः—रघु० ७।७०, 'अनवद्य' भी 3. चर्चा के अयोग्य, 4. नीच, अधम, —द्यम् 1. अपराध, दोष, खोट 2. पाप, दुर्व्यसन 3. लांछन, निन्दा, झिड़की—उदवहृदनवद्यां तामवद्यादपेतः—रघु० ७।७० ।

अवद्योतनम् [अव+द्युत् +ल्युट्] प्रकाश ।

अवधानम् [अव+धा+ल्युट्] 1. ध्यान—अवधानपरे चकार सा प्रलयान्तोन्मिषिते विलोचने—कु० ४।२, एकाग्रता, सावधानी—दत्तावधानः शृणोति—सावधानतापूर्वक सुनता है 2. लगन, सतर्कता, चौकसी; अवधानात् सतर्कतापूर्वक, ध्यानपूर्वक,—शृणुत जना अवधानात् क्रियामिमां कालिदासस्य—विक्रम० १।२, (पाठ०) ।

अवधारः [अव+धृ+णिच्+घञ्] सही निश्चय, सीमा ।

अवधारक (वि०) [अव+धृ+णिच्+ण्वुल्] सही निश्चय करने वाला ।

अवधारण (वि०) [अव+धृ+णिच्+ल्युट्] प्रतिबंधक, सीमाबन्धन करने वाला, णम्,—णा 1. निश्चय, निर्धारण 2. पुष्टीकरण, बल 3. सीमा नियत करना (शब्दों के अर्थों की)—यावदवधारणे, एवावधारणे, मात्रं कात्स्न्र्येऽवधारणे—अमर० 4. किसी एक निदर्शन तक—या सबसे पृथक् करके—प्रतिबंध लगाना ।

अवधिः [अव+धा+कि] 1. प्रयोग, ध्यान 2. सीमा, मर्यादा—अन्तर्भूतकारी या एकान्तिक—(स्थान और समय की दृष्टि से), सिरा, समाप्ति—स्मरशापावधिदां सरस्वतीं—कु० ४।४३, उपसंहार, प्रायः समास के अन्त में अर्थ होता है—'के साथ समाप्त होते हुए' 'यथासंभव' 'तक' एष ते जीवितावधिः प्रवादः—उत्तर० १, 3. नियतकाल, समय—रघु० १६।५२, शेषान् मासान् विरहदिवसस्थापितस्यावधेर्वा —मेघ०८९, यदवधि—तदवधि जबसे—तबसे, जबतक —तबतक 4. पूर्वनियुक्ति 5. नियुक्ति 6. प्रभाग, जिला, विभाग 7. विवर, गर्त ।

अवधीर् (चु० पर०) अवहेलना करना, अनादर करना, नीचा दिखाना,—अवधीरितसुहृद्वचनस्य—हि० १, घृणा करना, तिरस्कार करना ।

अवधीरणम् [अव+धीर्+ल्युट्] अनादर पूर्वक बर्ताव करना ।

अवधीरणा [अव+धीर्+ल्युट्+टाप] अनादर, तिरस्कार,—कृतवत्यसि नावधीरणामपराद्धेऽपि यदा चिरं मयि—रघु० ८।४८, मालवि० ३।१९, अयं स ते तिष्ठति सङ्गमोत्सुको विशङ्कसे भीरु यतोऽवधीरणाम्—श० ३।१४ ।

अवधूत (भू० क० कृ०) [अव+धू+क्त] 1. हिलाया हुआ, लहराया हुआ 2. त्यागा हुआ, अस्वीकृत, घृणित —रघु० १९।४३, 3. अपमानित, तिरस्कृत,—तः वह सन्यासी जिसने सांसारिक बंधनों तथा विषय-वासनाओं को त्याग दिया है—यो विलंघ्याश्रमान् वर्णानात्मन्येव स्थितः पुमान्, अतिवर्णाश्रमी योगी अवधूतः स उच्यते । या—अक्षरत्वात् वरेण्यत्वात् धूतसंसारबंधनात्, तत्त्वमस्यर्थसिद्धत्वादवधूतोऽभिधीयते ।

अवधूननम् [अव+धू+ल्युट्] 1. हिलाना, लहराना 2. क्षोभ, कंपकंपी 3. अवहेलना ।

अवध्य (वि०) [न० त०] मारने के अयोग्य, पवित्र, मृत्यु से मुक्त ।

अवध्वंसः [प्रा० स०] 1. परित्याग, उन्मोचन 2. चूरा, राख 3. अनादर, निंदा, लांछन, 4. गिर कर अलग होना 5. बुरकना ।

अवनम् [अव्+ल्युट्] 1. रक्षा, प्रतिरक्षा—नलो० १।४, 2. तृप्तिकर, प्रसन्नतादायक 3. कामना, इच्छा 4. हर्ष, संतोष ।

अवनत (भू० क० कृ०) [अव+नम्+क्त] 1. नीचे झुका हुआ, खिन्न, विनय°, प्रश्रय° 2. डूबता हुआ झुकता हुआ, नीचे गिरता हुआ ।

अवनतिः (स्त्री०) [अव+नम्+क्तिन्] 1. झुकना, मस्तक झुकाना, झुकाव,—अवनतिमवनेः—मुद्रा० १।२, शि० ९।८, 2. पश्चिम में छिपना, डूबना 3. प्रणाम, दंडवत् 4. झुकाव (जैसे धनुष का)—धनुषामवनतिः का० (यहाँ अ° का अर्थ 'अवनमन' भी होता है) 5. शालीनता, विनम्रता ।

अवनद्ध (भू० क० कृ०) [अव+नह्+क्त] 1. निर्मित, बना हुआ 2. स्थिर, बैठाया हुआ, बांधा हुआ, जुड़ा हुआ, एक जगह रक्खा हुआ,—द्धम् ढोल ।

अवनम्र (वि०) [प्रा० स०] अवनत, झुका हुआ—पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा—कु० ३।५४, पाद° पैरों पर गिरा हुआ ।

अवन (ना) यः [अव+नी+अच्, घञ् वा] 1. नीचे ले जाना 2. नीचे उतारना ।

अवनाट (वि०) [नतं नासिकायाः, अव+नाटच्, दे० अवटीट] चपटी नाक वाला ।

अवनामः [अव+नम्+घञ्] 1. झुकना, नमस्कार करना, पैरों पर गिरना 2. नीचे झुकाना ।

अवनाहः [अव+नह्+घञ्] बांधना, पेटी लगाना, कसना ।

अवनिः—नी (स्त्री०)[अव्+अनि, पक्षे ङीप्] 1. पृथ्वी 2. आकृति 3. नदी । सम०—ईशः,—ईश्वरः, —नाथः,—पतिः,—पालः भूस्वामी, राजा —पतिरवनिपतीनां तैश्चकाशे चतुर्भिः रघु०—१०।८६, ११।९३,

—चर (वि०) पृथ्वी पर घूमने वाला, आवारागर्द, घुमक्कड़,—ध्रः पहाड़,—तलम् पृथ्वीतल,—मंडलम् भूमंडल,—रुहः,—रुट् वृक्ष ।

अवनेजनम् [अव+निज्+ल्युट्] 1. प्रक्षालन, मार्जन—न कुर्याद्गुरुपुत्रस्य पादयोश्चावनेजनम् मनु० २।२०९, 2. धोने के लिए पानी, पैर धोना 3. श्राद्ध में पिंडदान की वेदी पर बिछाये हुए कुशों पर जल छिड़कना ।

अवन्तिः–ती (स्त्री०) [अव+झिच् बा०; पक्षे ङीप्] 1. एक नगर का नाम, वर्तमान उज्जयिनी, हिन्दुओं के सात पवित्र नगरों में से एक, कहा जाता है कि यहाँ मरने से शाश्वत सुख मिलता है—अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्चिरवन्तिका, पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः । अवन्ती की स्त्रियां काम-कला में अत्यन्त कुशल होती हैं, तु० आवंत्य एव निपुणाः सुदृशो रतकर्मणि—बालरा० १०।८२; 2. एक नदी का नाम,—(पुं० ब० व०) एक देश का नाम जिसे आजकल मालवा कहते हैं, तथा वहाँ के निवासी, इसकी राजधानी सिप्रा नदी के तट पर स्थित उज्जयिनी नगरी है—इसके नगरांचल में महाकाल का एक मन्दिर भी है; अवन्तिनाथोऽयमुदग्रबाहुः—रघु० ६।३२, असौ महाकालनिकेतनस्य वसन्नदूरे किल चन्द्रमौलेः—६।३४, ३५, प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्—मेघ० ३०, अवन्तीपूज्जयिनी नाम नगरी—का० ५२ । सम०—पुरम् अवन्ती नामक नगर, उज्जयिनी ।

अवन्ध्य (वि०) [न० त०] जो बंजर न हो, उर्वर, उपजाऊ ।

अवपतनम् [अव+पत्+ल्युट्] उतरना, नीचे आना ।

अवपाक (वि०) [अवकृष्टः पाको यस्य ब० स०] बुरी तरह पकाया हुआ,—कः बुरी तरह से पकाना ।

अवपातः [अव+पत्+घञ्] 1. नीचे गिरना—अवदचरणावपातम्—भर्तृ० ३।३१, पैरों पर गिरना, (आलं०) चापलूसी 2. उतरना, नीचे आना 3. विवर, गर्त 4. विशेषकर हाथियों को पकड़ने के लिए बनाया गया बिल या गर्त—अवपातस्तु हस्त्यर्थे गर्ते छन्ने तृणादिना—यादवः रोधांसि निघ्नन्नवपातमग्नः करीव वन्यः परुषं ररास—रघु० १६।७८ ।

अवपातनम् [अव+पत्+णिच्+ल्युट्] गिराना, ठुकराना, नीचे फेंकना ।

अवपात्रित (वि०) [अवपात्र (ना० धा०)+णिच्+क्त] जातिबहिष्कृत, ऐसा व्यक्ति जिसको बिरादरी के लोग अपने पात्र में भोजन कराने के लिए अनुमति न देते हों ।

अवपीडः [अव+पीड्+णिच्+घञ्] 1. नीचे दबाना, दबाव 2. एक प्रकार की औषधि जिसके सूंघने से छींकें आती हैं, नस्य ।

अवपीडनम् [अव+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1. दबाने की क्रिया 2. नस्य,—ना क्षति, आघात ।

अवबोधः [अव+बुध्+घञ्] 1. जागना, जागरूक होना (विप० स्वप्न)—यौ तु स्वप्नावबोधौ तौ भूतानां प्रलयोदयौ—कु० २।८, भग० ६।१७, 2. ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण—स्वभर्तृनामग्रहणाद्बभूव सान्द्रे रजस्यात्मपरावबोधः—रघु० ७।४१, ५।६४, प्रतिकूलेषु तैक्ष्ण्यस्यावबोधः क्रोध इष्यते—सा० द०, 3. विवेचन, निर्णय 4. शिक्षण, संसूचन ।

अवबोधक (वि०) [अव+बुध्+ण्वुल्] संकेतक, दर्शाने वाला,—कः 1. सूर्य, 2. भाट 3 अध्यापक ।

अवबोधनम् [अव+बुध्+ल्युट्] ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण ।

अवभङ्गः [अव+भञ्ज्+घञ्] नीचा दिखाना, जीतना, हराना ।

अवभासः [अव+भास्+घञ्] 1. चमक-दमक, कान्ति, प्रकाश 2. ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण 3 प्रकट होना, प्रकाशन, अन्तः प्रेरणा 4. स्थान, पहुंच, क्षेत्र 5. मिथ्याज्ञान ।

अवभासक (वि०) [अव+भास्+ण्वुल्] प्रकाशक,—कम् परब्रह्म ।

अवभुग्न (वि०) [अव+भुज्+क्त] सिकुड़ा हुआ, झुका हुआ, टेढ़ा किया हुआ ।

अवभृथः [अव+भृ+क्थन्] 1. मुख्य यज्ञ की समाप्ति पर शुद्धि के लिए किया जाने वाला स्नान—भुवं कोष्णेन कुण्डोध्नी मेध्येनावभृथादपि—रघु० १।८४, ९।२२, ११।३१, १३।६१, 2. मार्जन के लिए जल 3. अतिरिक्त यज्ञ जो पूर्वकृत मुख्य यज्ञ की त्रुटियों की शांति के लिए किया जाता है, सामान्य यज्ञानुष्ठान—स्नातवत्यवभृथे ततस्त्वयि—शि० १४।१० । सम०—स्नानम् यज्ञानुष्ठान की समाप्ति पर किया जाने वाला स्नान ।

अवभ्रः अपहरण, उठाकर ले जाना ।

अवभ्रट (वि०) [नतं नासिकायाः—अव+भ्रटच्] चपटी नाक वाला ।

अवम (वि०) [अव्+अमच्] 1. पापपूर्ण 2. घृणित, कमीना 3. खोटा, नीच, घटिया (विप० परम)—अनलकानलकानवमां पुरीम्—रघु० ९।१४, दे० 'अधम' 4. अगला, घनिष्ट 5. पिछला, सबसे छोटा ।

अवमत (भू० क० कृ०) [अव+मन्+क्त] घृणित, कुत्सित । सम०—अङ्कुशः अंकुश को न मानने वाला हाथी, मदमत्त—अन्वेतुकामोऽवमतांकुशग्रहः—शि० १२।१६ ।

अवमतिः (स्त्री०) [अव+मन्+क्तिन्] 1. अवहेलना, अनादर 2. अरुचि, नापसंदगी ।

अवमर्दः [अव+मृद्+घञ्] 1. कुचलना, 2. बर्बाद करना, अत्याचार करना ।

अवमर्शः [अव+मृश्+घञ्] स्पर्श, संपर्क ।

अवमर्षः [अव+मृष्+घञ्] 1. विचारविमर्श, आलोचना, 2 नाटक की पाँच मुख्य सन्धियों में से एक—यत्र मुख्यफलोपाय उद्भिन्नो गर्भतोऽधिकः, शापाद्यैः सान्तरायश्च सोऽवमर्ष इति स्मृतः। सा० द० ३६६; विमर्ष' भी इसी को कहते हैं, 3. आक्रमण करना।

अवमर्षणम् [अव+मृष्+ल्युट्] 1. असहनशीलता, असहिष्णुता 2. मिटा देना, मिटा डालना, स्मृतिपथ से निष्कासन।

अवमानः [अव+मन्+घञ्] अनादर, तिरस्कार, अवहेलना।

अवमाननम्-ना [अव+मन्+णिच्+ल्युट् युच् वा] अनादर, तिरस्कार।

अवमानिन् [अव+मन्+णिच्+णिनि] तिरस्कार करने वाला, घृणा करने वाला, अपमान करने वाला धिङ्मामुपस्थितश्रेयोऽवमानिनम्—श० ६, अयि आत्म-गुणावमानिनि—श० ३।

अवमूर्धन् (वि०) [अवनतो मूर्धाऽस्य] सिर झुकाये हुए। सम०—**शय** (वि०) सिर को नीचे लटका कर लेटा हुआ, जैसे कि मनुष्य (विप० देव)—उत्तानशया देवा अवमूर्धशया मनुष्याः।

अवमोचनम् [अव+मुच्+ल्युट्] स्वतंत्र करना, मुक्त करना, ढीला करना।

अवयवः [अव+यु+अच्] 1. (शरीर का) अंग—मुखावयवलूनां ताम्—रघु० १२।४३ अमरु० ४०, ४६; सदस्य,—कस्मिंश्चिदपि जीवति नन्दान्वयावयवे—मुद्रा० १ 2. भाग, अंश 3. तर्कसंगत युक्ति या अनुमान का घटक या अंग (यह पाँच हैं:— प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन) 4. शरीर 5. घटक, संविधायी, उपादान (जैसे किसी संमिश्रण के)। सम०—**अर्थः** शब्द के संविधायी अंशों का आशय।

अवयवशः (अव्य०) [illegible] अलग २, टुकड़े टुकड़े करके।

अवयविन् (वि०) [अवयव+इनि] अवयव, अंश या उपभागों से बना हुआ, (पुं०—वी) 1. पूर्ण 2. अनुमान-वाक्य या कोई तर्कसंगत संधि।

अवर (वि०) [न वरः इति अवरः न० त०, वृ+अप् बा०] 1. (क) आयु में छोटा, मासेनावरः= मासावरः—सिद्धा० (ख) बाद का, पश्चवर्ती, पिछला (समय और स्थान की दृष्टि से)—यदवरं कौशाम्ब्याः, यदवरमाग्रहायण्याः—सिद्धा० 2. अनुवर्ती, उत्तरवर्ती 3. नीचे, अपेक्षाकृत नीचा, घटिया, कम 4. नीच, महत्त्वहीन, सबसे बुरा, निम्नतम (विप० उत्तम) अव्यङ्ग्यमवरं स्मृतम्—काव्य० १, दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय—भग० २।४९, श्रद्दधानः शुभां विद्यामाददीतावरादपि—मनु० २।२३८ 5. अन्तिम (विप० प्रथम) सामान्यमेषां प्रथमावरत्वम्—कु० ७।४४, 6. न्यूनातिन्यून, (प्रायः समास के उत्तरपद के रूप में अंकों के साथ)—त्र्यवरैः साक्षिभिर्भाव्यः—मनु० ८।६०, त्र्यवरा परिषद् ज्ञेया—१२।११२, याज्ञ० २।६९, 7. पश्चिमी,—**रम्** हाथी की पिछली जांघ (—रा भी)। सम०—**अर्धः** 1. थोड़े से थोड़ा भाग, न्यूनातिन्यून 2. उत्तरार्ध 3. शरीर का पिछला भाग, —**अवर** (वि०) नीचतम, सबसे घटिया—न हि प्रकृष्टान् प्रेष्यांस्तु प्रेषयन्त्यवरावरान्—रामा०—**उक्त** (वि०) अन्त में कहा हुआ,—**ज** (वि०) अपेक्षाकृत छोटा, कनीयान् (—जः) छोटा भाई—विदर्भराजावरजा रघु० ६।५८, ८४, १२।३२,—**वर्ण** (वि०) नीच जाति का (—र्णः) 1. शूद्र 2. अन्तिम या चौथा वर्ण, —**वर्णकः**—**वर्णजः** शूद्र.—**व्रतः** सूर्य,—**शैलः** पश्चिमी पहाड़ (जिसके पीछे सूर्य डूबता हुआ समझा जाता है)।

अवरतः (अव्य०) [अवर+तसिल्] पीछे, बाद में, पिछला, पश्चवर्ती।

अवरतिः (स्त्री०) [अव+रम्+क्तिन्] 1. ठहरना, रुकना 2. विराम, विश्राम, आराम।

अवरीण (वि०) [अवर+ख] 1. पदावनत, खोट मिला हुआ 2. घृणित।

अवरुग्ण (वि०) [अव+रुज्+क्त] 1. टूटा हुआ, फटा हुआ 2. रोगी।

अवरुद्धिः (स्त्री०) [अव+रुध्+क्तिन्] 1. रुकावट, प्रतिबन्ध 2. घेरा 3. प्राप्ति।

अवरूप (वि०) [ब० स०] कुरूप, विकलांग।

अवरोचकः [अव+रुच्+ण्वुल्] भूख न लगना।

अवरोधः [अव+रुध्+घञ्] 1. बाधा, रुकावट 2. प्रतिबंध अनः प्राणावरोधः—मृच्छ० ११, 3. अन्तःपुर, जनानखाना, रनवास निन्ये विनीतैरवरोधदक्षैः—कु० ७।७३, °गृहेषु राज्ञः—श० ५।३, ६।११, 4. राजा की रानियाँ (समष्टि रूप से) (प्रायः ब० व०);—अवरोधे महत्यपि—रघु० १।३२, ४।६८, ८७, ६।४८, १६।५८, 5. घेरा, बन्दीकरण 6. किलाबंदी, नाकेबंदी, 7. ढक्कन 8. बाड़ा, गोठ 9. चौकीदार 10. हलकापन, खोखलापन।

अवरोधक (वि०) [अव+रुध्+ण्वुल्] 1. बाधा डालने वाला, 2. घेरा डालने वाला,—**कः** पहरेदार,—**कम्** रोक, बाड़।

अवरोधनम् [अव+रुध्+ल्युट्] 1. किलाबंदी, नाकेबंदी 2. बाधा, 3. रुकावट, अड़चन 4. राजा का अंतःपुर राजावरोधनवधूस्तनारयन्तः—शि० ५।१८।

अवरोधिक (वि०) [अवरोध+ठन्] 1. बाधाजनक, अड़चन डालने वाला 2. घेरा डालने वाला।—**कः**

अंतःपुर का पहरेदार,—का अंतःपुर की पहरेदार-स्त्री—ययुस्तुरङ्गाधिरुह्योऽवरोधिकाः - शि० १२।२०।

अवरोधिन् (वि०) [अवरोध+इनि] 1. रुकावट डालने वाला, बाधा डालने वाला, 2. घेरा डालने वाला।

अवरोपणम् [अव+रुह्+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. उन्मूलन 2. नीचे उतारना 3. ले जाना, वञ्चित करना, घटाना।

अवरोहः [अव+रुह्+घञ्] 1. उतार 2. नीचे से चोटी तक वृक्ष के ऊपर लिपटने वाली लता 3. आकाश 4. लटकती हुई शाखा (जैसे बड़ की)—अवरोहशताकीर्णं वटमासाद्य तस्थतुः—रामा० 5. (संगीत में) स्वरों का ऊपर से नीचे आना।

अवरोहणम् [अव+रुह्+ल्युट्] 1. उतरना, नीचे आना 2. चढ़ना।

अवर्ण (वि०) [न० ब०] 1. रंगहीन 2. बुरा, नीचा, —र्णः 1. लोकापवाद, अपकीर्ति, कलंक, बट्टा,—सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे—रघु० १४।३८, 2. लांछन, निन्दा —न चावदद्भर्तुरवर्णमार्या '५७, कोई दुर्वचन नहीं कहा।

अवलक्ष (वि०) [अव+लक्ष्+घञ्] ['वलक्ष' भी लिखा जाता है] श्वेत,—क्षः श्वेत वर्ण।

अवलग्न (वि०) [अव+लग्+क्त] चिपका हुआ, लगा हुआ, सटा हुआ,—ग्नः कमर।

अवलम्बः [अव+लम्ब्+घञ्] 1. नीचे लटकना 2. सहारे लटकना, सहारा (आलं० भी)—तन्तुजालावलम्बाः—मेघ० ७०, कुनृपति भवनद्वार सेवा भर्तृ० १।६७, 3. स्तंभ, आड़, आश्रय (शा० तथा आलं०)—सावलम्बगमना—रघु० १९।५०, दूसरों के सहारे चलने वाली,—सन्ततिविच्छेदनिरवलम्बानाम् - श० ६, दैवेनेत्थं दत्तहस्तावलम्बे—रत्न० १।८, 4. अत. बैसाखी या छड़ी जो सहारे के लिए रक्खी जाती है।

अवलम्बनम् [अव+लम्ब्+ल्युट्] 1. स्तंभ, सहारा, आड़ —अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि शि० ९।६, प्रस्थानविक्लवगतेरवलम्बनार्थं श० ५।३, मम पुच्छे करावलम्बनं कृत्वोत्तिष्ठ हि० १, 2. सहायता, मदद।

अवलिप्त (भू० क० कृ०) [अव+लिप्+क्त] 1. घमंडी, उद्धत, अभिमानी 2. लिपा पुता, सना हुआ।

अवलीढ (भू० क० कृ०) [अव+लिह्+क्त] 1. खाया हुआ, चबाया हुआ—दर्भैरर्धावलीढैः श० १।७, 2. चाटा हुआ, लप लप करके पीया हुआ, स्पर्श (आलं० भी) नवयौवनावलीढावयवा दश० १३ जवानी से व्याप्त, -अस्त्रज्वालावलीढप्रतिबलजलधेरन्तरौर्वायमाणे—वेणी० ३।५, चारों ओर से घिरा हुआ 3. निगला हुआ, नष्ट किया हुआ।

अवलीला [अवरा लीला—प्रा० स०] 1. क्रीडा, खेल, प्रमोद 2. तिरस्कार।

अवलुञ्चनम् [अव+लुञ्च्+ल्युट्] 1. काटना, फाड़ना, उखाड़ना,—केश° 2. उन्मूलन।

अवलुण्ठनम् [अव+लुण्ठ्+ल्युट्] 1. भूमि पर लोटना या लुढ़कना 2. लूटना।

अवलेखः [अव+लिख्+घञ्] 1. तोड़ना, खरोंचना, छीलना 2. खुरची हुई कोई वस्तु।

अवलेखा [अव+लिख्+अ+टाप्] 1. रगड़ना 2. किसी को सुसज्जित करना।

अवलेपः [अव+लिप्+घञ्] 1. अहंकार, घमंड प्रियसंगमेष्वनवलेपमदः—शि० ९।५१, (यहां अ° का अर्थ 'लेप करना' भी हो सकता है),—व्यक्तमानावलेपाः मुद्रा० ३।२२, 2. अत्याचार, आक्रमण, अपमान, बलात्कार—किं भवतीनामसुरावलेपेनापराद्धम्—विक्रम० १, ददृशे पवनावलेपजं सृजति बाष्पमिवाञ्जनाविलम् - रघु० ८।३५ 3. लीपना पोतना, 4. आभूषण 5. संघ, समाज।

अवलेपनम् [अव+लिप्+ल्युट्] 1. लीपना पोतना 2. तेल, कोई चिकना पदार्थ 3. संघ 4. घमंड।

अवलेहः [अव+लिह्+घञ्] 1. चाटना, लपलपाना 2. अर्क 3. चटनी।

अवलेहिका—अवलेह (3)।

अवलोकः [अव+लोक्+घञ्] 1. देखना, दृष्टि डालना, 2. दृष्टि।

अवलोकनम् [अव+लोक्+ल्युट्] 1. अवलोकन करना, दृष्टि डालना, देखना,—नो बभूवुरवलोकनक्षमाः—रघु० ११।६०, 2. दृष्टि में रखना पर्यवेक्षण करना—दीर्घिकावलोकनगवाक्षगताः—मालवि० १, 3. दृष्टि, आँख 4. नजर, झांकी योगनिद्रान्तविशदैः पावनैरवलोकनैः —रघु० १०।१४, 5. खोज करना, पूछताछ।

अवलोकित (भू० क० कृ०) [अव+लोक्+क्त) देखा हुआ,—तम् दृष्टि, झांकी।

अववरकः [अव+वृ+अप् ततः संज्ञायां वुन्] 1. रन्ध्र, छिद्र 2. खिड़की, दे० 'अपवरक'।

अववादः [अव+वद्+घञ्] 1. निन्दा 2. विश्वास, भरोसा 3. अवहेलना, अनादर 4. सहारा, आश्रय 5. बुरी रिपोर्ट 6. आदेश।

अवव्रश्चः [अव+व्रश्च्+अच्] छिपटी, खपची।

अवश (वि) [न० त०] 1. स्वतंत्र, मुक्त 2. जो वश्य या आज्ञाकारी न हो, अवज्ञाकारी, स्वेच्छाचारी 3. जो किसी के अधीन न हो अवशो विषयाणाम् का० ४५, 4. लाचार, इन्द्रियों का दास कु० ६।९५, 5. पराश्रित, असहाय, शक्तिहीन कार्यते ह्यवशः—भग० ३।५, कथमवशो ह्ययशोविषं पिबामि—मृच्छ०

१०।१३ । सम०—**इन्द्रियचित्त** (वि०) जिसका मन और इन्द्रियाँ किसी दूसरे के अधीन न हो ।

अवशङ्गमः [न० त०] जो दूसरे की इच्छा के अधीन न हो।

अवशातनम् [प्रा० स०] 1. नष्ट करना 2. काटना, काट गिराना 3. मुर्झाना, सूख जाना ।

अवशेषः [अव+शिष्+घञ्] बचा हुआ, शेष, बाकी, —वृत्तांत°—माल वि० ५, कथा का शेष भाग, अर्घ° या नाम° जिसका केवल नाम ही जीवित हो या कथा कहानी में ही जिसका वर्णन हो—अथवा जिसका केवल नाम ही शेष रहा हो, आल० रूप से मृत पुरुष के लिए प्रयुक्त,—सावशेषमिव भट्टिन्या वचनम्—मालवि० ४, असमाप्त –शृणु मे सावशेष वचः—श० २, मेरी बात सुनो, मुझे अपनी बात पूरी करने दो ।

अवश्य (वि०) [न० त०] 1. जो वश में न किया जा सके, जिसको नियन्त्रण में न लाया जा सके 2. अनिवार्य –अथ मरणमवश्यमेव जन्तोः –वेणी० ४।४, 3. अनुपेक्ष्य, आवश्यक । सम०—**पुत्रः** ऐसा बेटा जिसको सिखाना या शासन में रखना असंभव हो ।

अवश्यम् (अव्य०) [अव+श्यै+डमु –तारा०] 1. आवश्यकरूप से, अनिवार्य रूप से—त्वामप्यस्रं नवजलमयं मोचयिष्यन्त्यवश्यम्—मेघ० ९५, 2. निश्चय से, चाहे कुछ भी हो, सर्वथा, यकीनन, निस्संदेह –अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषयाः–भर्तृ० ३।१६, तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नीम् (द्रक्ष्यसि) मेघ०, १०।६३, **अवश्यमेव** अत्यन्त निश्चयपूर्वक, यदि इसे स० कृ० के साथ जोड़ा जाता है तो इसका अन्त्य अननासिकत्व लुप्त हो जाता है **अवश्यपाच्य** —जो निश्चित रूप से पकाया जाय, **अवश्यकार्य** जो निश्चित रूप से किया जाता है ।

अवश्यम्भाविन् (वि०) [अवश्यम्+भू+इनि] अवश्य होने वाला, अनिवार्य —अवश्यम्भाविनो भावा भवन्ति महतामपि –हि० प्र० २८ ।

अवश्यक (वि०) [अवश्य+कन्] आवश्यक, अनिवार्य, अनुपेक्ष्य ।

अवश्या [अव+श्यै+क] कुहरा, पाला, धुंद ।

अवश्यायः [अव+श्यै+ण] 1. कुहरा, ओस 2. पाला, सफेद ओस—अवश्यायावसिक्तस्य पुण्डरीकस्य चारुताम् — उत्तर० ६।२९, 3. घमंड ।

अवश्रयणम् [अव+श्रि+ल्युट्] आग के ऊपर से कोई वस्तु उतारना (वि० 'अधिश्रयणम्') अधिश्रयणावश्रयणान्तादिर्पूर्वापरीभूतो व्यापारकलापः पाकादिशब्द वाच्यः– सा० द० २ ।

अवष्टब्ध (भू० क० कृ०) [अव+स्तम्भ्+क्त] 1. सहारा दिया गया, थामा गया, पकड़ा गया 2. से पर लटका हुआ 3. निकटवर्ती, संसक्त 4. बाधायुक्त, झुका हुआ 5. बांधा हुआ, बंधा हुआ ।

अवष्टम्भः [अव+स्तम्भ्+घञ्] 1. टेक लगाना, सहारा लेना 2. आश्रय, आधार—पक्षाभ्यामीषत्कृतावष्टम्भः—का० ३४, खड्गलतावष्टम्भनिश्चलः—मा० ३, तत्कथमहं धैर्यावष्टंभं करोमि—पंच० १, 3. अहंकार, घमंड 4. थूनी, स्तंभ 5. सोना 6. उपक्रम, आरम्भ 7. ठहराना, रोक 8. साहस, दृढ़ निश्चय 9. पक्षाघात, स्तब्धता ।

अवष्टम्भनम् [अव+स्तम्भ्+ल्युट्] 1. टिकना, सहारा लेना 2.थूनी, स्तम्भ ।

अवष्टम्भमय (वि०)[स्त्री०—यी] [अवष्टम्भ+मयट्] सुनहरी, सोने का बना हुआ, अथवा खंभे के बराबर लंबा, –रघोरवष्टम्भमयेन पत्रिणा –रघु० ३।५३ (अ° का अर्थ उपर्युक्त ढंग से किया जाता है, परन्तु प्रस्तुत प्रसंग में इसका अर्थ होगा 'ओजस्वी, साहसी') ।

अवसक्त (भू० क० कृ०)[अव+सञ्ज्+क्त]1. स्थगित, प्रस्तुत 2. संपर्कशील, स्पर्शी ।

अवसक्थिका [अवबद्धे सक्थिनी यस्यां कप्] 1. कपड़े की पट्टी जो घुटनों के नीचे पैरों में लपेटी जाती है, इस प्रकार पट्टी या पटुके से बांधना या पटुका बांध कर विशेष मुद्रा में होना—शयानः प्रौढपादश्च कृत्वा चैवावसक्थिकाम्—मनु० ४।११२, 2. अतः वेष्टन, पटका या पट्टी ।

अवसण्डीनम् [अव+सम्+डी+क्त] पक्षियों के झुंड की नीचे की ओर उड़ान ।

अवसथः [अव+सो+कथन्] 1. आवासस्थान, घर 2. गाँव 3. विद्यालय या महाविद्यालय, दे० 'आवसथ' ।

अवसथ्यः [अवसथ+यत्] महाविद्यालय, विद्यालय ।

अवसन्न (भू० कृ० कृ०) [अव+सद्+क्त] 1. उदास (आल० भी) शिथिल 2. समाप्त, अवसित, बीता हुआ –अवसन्नायां रात्रौ –हि० १, 3. खोया हुआ, वंचित रघु० ९।७७ ।

अवसरः [अव+सृ+अच्] 1. मौका, सुयोग, समय —नास्यावसरं दास्यामि –श० २, भवद्गिरामवसरप्रदानाय वचांसि नः –शि० २।८, विसर्जन सत्कारः श० ७, °प्राप्तम्—मौके के मुताबिक—मालवि० १. २ (अतः) उपयुक्त सुयोग –शशंस सेवावसरं सुरेभ्यः कु० ७।४०, अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम् – श० १, दे० 'अनवसर' भी 3. स्थान, जगह, क्षेत्र 4. अवकाश, लाभप्रद अवस्था 5. वत्सर 6 वर्षण 7. उतार 8. गुप्त परामर्श ।

अवसर्गः [अव+सृज्+घञ्] 1 मुक्त करना, ढीला करना 2. स्वेच्छानुसार कार्य करने देना 3 स्वतंत्रता।

अवसर्पः [अव+सृप्+घञ्] भेदिया, गुप्तचर।

अवसर्पणम् [अव+सृप्+ल्युट्] नीचे उतरना, नीचे जाना।

अवसादः [अव+सद्+घञ्] 1 उदासी, मूर्च्छा, सुस्ती 2. बर्बादी, विनाश—विपदेति तावदवसादकरी—कि० १८।२३, ६।३१, 3. अन्त, समाप्ति, 4. स्फूर्ति का अभाव, थकान, थकावट 5. (विधि में) अभियोग का खराब होना, पराजय, हार।

अवसादक (वि०) [अव+सद्+णिच्+ण्वुल्] 1. उदास करने वाला, मूर्छित करने वाला, असफल बनाने वाला 2. खिन्नता लाने वाला, थकान पहुंचाने वाला।

अवसादनम् [अव+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. पतन, नाश, 2. उत्पीडन 3. समाप्त कर देना।

अवसानम् [अव+सो+ल्युट्] 1. ठहरना 2. उपसंहार, समाप्ति, अन्त,—दोहावसाने पुनरेव दोग्ध्रीम्—रघु० २।२३, तच्छिष्याध्ययननिवेदितावसानाम्—१।९५, 3. मृत्यु, रोग-वेणी० ५।३८, मूलपुरुषावसाने संपदः परमुपतिष्ठंन्ति—श० ६, 4. सीमा, मर्यादा 5. (व्या० में) किसी शब्द या अवधि का अन्तिम अंश (विप० आदि) 6. विराम 7. स्थान, विश्रामस्थल, आवासस्थान।

अवसायः [अव+सो+घञ्] 1. उपसंहार, अन्त, समाप्ति 2. अवशिष्ट, 3. पूर्ति 4. संकल्प, दृढ़निश्चयः, निर्णय।

अवसित (भू० क० कृ०) [अव+सो+क्त) 1. समाप्त, अन्त किया गया, पूरा किया गया,—यूपवत्यवसिते क्रियाविधौ—रघु०-११।३७, अवसितश्च पशुरसौ—दश० ९१, उस पशु का काम तमाम हो चुका है,—वचस्यवसिते तस्मिन्ससर्ज गिरमात्मभूः—कु० २।५३, 2. ज्ञात, अवगत 3. प्रस्तावित, निर्धारित, निश्चय किया गया 4. जमा किया हुआ, एकत्र किया हुआ (जैसा कि अन्न), 5. बंधा हुआ, नत्थी किया हुआ, बांधा हुआ।

अवसेकः [अव+सिच्+घञ्] 1. छिड़काव, भिगोना —देशः को नु जलावसेकशिथिलः—मृच्छ० ३।१२।

अवसेचनम् [अव+सिच्+ल्युट्] 1. छिड़कना 2. छिड़कने के लिए पानी—पाद°—मनु० ४।१५१ 3. रुधिर निकालना।

अवस्कन्दः-न्दनम् [अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1. आक्रमण करना, आक्रमण, हमला 2. उतार 3. शिविर।

अवस्कन्दिन् (वि०) [अव+स्कन्द+णिन्] आक्रमणकारी, हमलावर, बलात्कार करने वाला।

अवस्करः [अवकीर्यते इति-अवस्करः, कृ+अप, सुट्] 1. विष्ठा, मल 2. गुह्यदेश (योनि, लिंग, गुदा आदि) 3. गर्द, बुहारन।

अवस्तरणम् [अव+स्तृ+ल्युट्] बिछौना, बिछावन।

अवस्तात् (अव्य०) [अवरस्मिन् अवरस्मात् अवरमित्यर्थे—अवर+अस्ताति अवादेशः] 1. नीचे, नीचे से, नीचे की ओर 2. अधस्तात् नीचे।

अवस्तारः [अव+स्तृ+घञ्] 1. पर्दा, 2. चादर, कनात 3. चटाई।

अवस्तु (नपुं०) [न० त०] 1. निकम्मी वस्तु, तुच्छ बात —अवस्तुनिबन्धपरे कथं नु ते—कु० ५।६६, 2. अवास्तविकता, सारहीनता—वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽज्ञानम।

अवस्था [अव+स्था+अङ] 1. हालत, दशा, स्थिति —स्वामिनो महत्यवस्था वर्तते—पंच० १, विषम दशा, —तुल्यावस्थः स्वसुः कृतः—रघु० १२।८०, तां तामवस्थां प्रतिपद्यमानम्—१३।५, ईदृशीमवस्थां प्रपन्नोऽस्मि—श० ५, कु० २।६ (प्रायः समास में)—तदवस्थः पंच ५, उस दशा को पहुंचा हुआ, 2. हालत, परिस्थिति —3. काल, दशाक्रम, यौवन°,—वयोवस्थां तस्याः शृणुत—मा० ९।२९, 4. रूप, छवि 5. दर्जा, अनुपात 6. स्थिरता,-दृढ़ता जैसा कि 'अनवस्थ' में दे० 7. न्यायालय में उपस्थित होना। सम०—**अन्तरम्** बदली हुई दशा,—**चतुष्टय** मानवजीवन की चार दशाएँ (बाल्य, कौमार, यौवन और वार्धक्य),—**त्रयम्** तीन अवस्थाएं (जाग्रत, स्वप्न, तथा सुषुप्ति),—**द्वयम्** जीवन के दो पहलू—सुख और दुःख।

अवस्थानम् [अव+स्था+ल्युट्] 1. खड़ा होना, रहना, बसना 2. स्थिति, हालत 2. आवासस्थान, घर, ठहरने का स्थान 3. ठहरने का समय।

अवस्थायिन् (वि०) [अव+स्था+णिनि] ठहरने वाला, रहने वाला।

अवस्थित (भू० क० कृ०) [अव+स्था+क्त], 1. रहा हुआ, ठहरा हुआ,—एवमवस्थिते—का० १५८, इन परिस्थितियों में, 2. उद्देश्य में स्थिर, दृढ़ 3. टिका हुआ, सहारा लिये हुए।

अवस्थितिः (स्त्री०) [अव+स्था+क्तिन्] 1. निवास करना, बसना 2. निवासस्थान, आवास।

अवस्यन्दनम् [अव+स्यन्द्+ल्युट्] बूंद २ टपकना, रिसना।

अवस्रंसनम् [अव+स्रंस्+ल्युट्] नीचे टपकना, नीचे गिरना, अधःपात।

अवहतिः (स्त्री०) [अव+हन्+क्तिन्] पीटना, कुचलना।

अवहननम् [अव+हन्+ल्युट्] 1. चावल कूटना, पीटना —अवहननायोलूखलम्—महा० 2. फेफड़े—वपावसावहननम्—याज्ञ० ३।९४, (अवहननम्=फुप्फुसः—मिता०)।

अवहरणम् [अव+हृ+ल्युट्] 1. ले जाना, हटाना 2. फेंक देना 3. चुराना, लूटना 4. सुपुर्दगी 5. युद्ध का अस्थायी स्थगन, सन्धि।

अवहस्तः [अवरं हस्तस्य इति—ए० त०] हथेली की पीठ।

अवहानिः [प्रा० स०] खो जाना, घाटा।
अवहारः [अव+हृ+ण] 1. चोर, 2. शार्क नाम की मछली 3. अस्थायी युद्धविराम, सन्धि, 4. बुलावा, आमंत्रण 5. धर्मत्याग 6. सुपुर्दगी, वापस लेना।
अवहारकः [अव+हृ+ण्वुल्] शार्क मछली।
अवहार्य (सं० कृ०) [अव+हृ+ण्यत्] 1. ले जाने के योग्य, हटाने के योग्य 2. दंड के योग्य, सजा दिये जाने के योग्य, 3. पुनः प्राप्त करने योग्य, फिर मोल लेने के योग्य।
अवहालिका [अव+हल्+ण्वुल्+टाप् इत्व] दीवार।
अवहासः [अव+हस्+घञ्] 1. मुस्कराना, मुस्कान, 2. दिल्लगी, मजाक, उपहास—यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि—भग० ११।४२।
अव (ब) हित्था-त्थम् [न बहिः तिष्ठति इति– स्था+क पृषो०] 1. पाखंड, 2. आन्तरिक भावगोपन, ३३ व्यभिचारिभावों में से एक-भयगौरवलज्जादेर्हर्षाद्याकार-गुप्तिरवहित्था—सा० द०; रस० के अनुसार—व्रीडादिना निमित्तेन हर्षाद्यनुभावानां गोपनाय जनितो भावविशेषोऽवहित्थम्—उदा० कु० ६।८४, भामि० २।८०।
अवहेलः—ला [अव+हेल्+क, स्त्रियां टाप्] अनादर, तिरस्कार, अवहेलना—अवहेलां कुटज मधुकरे मा गाः—भामि० १।६।
अवहेलनम्—ना [अव+हेल्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] अवज्ञा।
अवाक् (अव्य०) [अव+अंच्+क्विन्] 1. नीचे की ओर 2. दक्षिणी, दक्षिण की ओर। सम०—**ज्ञानम्** अनादर,—**भव** (वि०) दक्षिणी,—**मुख** (वि०) (स्त्री—**खी**) 1. नीचे की ओर देखने वाला—अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः—रघु० २।६०, १५।७८, 2. सिर के बल—**शिरस्** (वि०) नीचे को सिर लटकाये हुए—स मूढो नरकं याति कालसूत्रमवाक्शिराः—मनु० ३।२४९, ८।९४।
अवाक्ष (वि०) [अवनतान्यक्षाणि इन्द्रियाणि यस्य— ब० स०] अभिभावक, संरक्षक।
अवाग्र (वि०) [अवनतमग्रमस्य— ब० स०] नीचे को सिर किये हुए, नीचे को झुके हुए।
अवाच् (वि०) [न० ब०] वाणीरहित, मूक— (नपुं०) —ब्रह्म।
अवाच्, अवाञ्च् (वि०) [अव+अञ्च्+क्विन्] 1. नीचे की ओर झुका हुआ, मुड़ा हुआ—कुर्वन्तमित्यतिभरेण नगानवाचः—शि० ६।७९. 2. नीचे की ओर स्थित, अपेक्षाकृत नीचा 3. सिर के बल 4. दक्षिणी—(पुं० नपुं०) ब्रह्म,—**ची** 1. दक्षिणदिशा, 2. निम्नप्रदेश।
अवाचीन (वि०) [अवाच्+ख] 1. नीचे की ओर, सिर के बल 2. दक्षिणी 3. उतरा हुआ।

अवाच्य (वि०) [न० त०] 1. जिसे संबोधित करना उचित न हो,—अवाच्यो दीक्षितो नाम्ना यवीयानपि यो भवेत्—मनु० २।१२८, 2. बोले जाने के अयोग्य, निकृष्ट, दुष्ट—अवाच्यं वदतो जिह्वा कथं न पतिता तव—रामा०, भग० २।३६ 3. अस्पष्ट उक्ति, शब्दों द्वारा अकथनीय। सम० —**देशः** बोलने के अयोग्य स्थान, योनि।
अवांचित (वि०) [अव+अञ्च्+क्त] झुका हुआ, नीचा।
अवानः [अव+अन्+अच्] सांस लेना, श्वास अंदर को ओर ले जाना।
अवान्तर (वि०) [प्रा० स०] 1. बीच में स्थित या खड़ा हुआ—दे० समास 2. अंतर्गत, सम्मिलित 3. अधीन, गौण 4. घनिष्ट संबंध से रहित, असंबद्ध, अतिरिक्त। सम०— **दिश्**— दिशा मध्यवर्ती दिशा (जैसा कि - आग्नेयी, ऐशानी, नैर्ऋती और वायवी),—**देशः** दो स्थानों का मध्यवर्ती स्थान, अन्तःप्रवेश।
अवाप्तिः (स्त्री) [अव+आप्+क्तिन्] प्राप्त करना, ग्रहण करना—तपः किलेदं तदवाप्तिसाधनम्—कु० ५।६४।
अवाप्य (स० कृ०) [अव+आप्+ण्यत्] प्राप्त करने के योग्य।
अवारः—रम् [न वार्यते जलेन—वृ+कर्मणि घञ्] 1. नदी का निकटस्थ किनारा 2. इस ओर। सम० - **पारः** समुद्र,—**पारीण** (वि०) 1. समुद्र से संबंध रखने वाला 2. समुद्र को पार करने वाला।
अवारीणः [अवार+ख] नदी को पार करने वाला।
अवावटः प्रथम पति को छोड़कर उसी जाति के किसी दूसरे पुरुष से उत्पन्न हुआ किसी स्त्री का पुत्र—द्वितीयेन तु यः पित्रा सवर्णायां प्रजायते, अवावट इति ख्यातः शूद्रधर्मा स जातितः॥
अवावन् (पुं०) [ओण् (यङ) +वनिप्] चोर, चुराकर ले जाने वाला।
अवासस् (वि०) [न० ब०] वस्त्र न पहने हुए, नंगा (पुं०) बुद्ध।
अवास्तव (वि०) [स्त्री०— **वी**] 1. अवास्तविक 2. निराधार, विवेक शून्य।
अविः [अव्+इन्] 1. मेष [इसी अर्थ में—स्त्री० भी] —जीनकार्मुकवस्तावीन्—मनु० ११।१३८, ३।६, 2. सूर्य 3. पहाड़ 4. वायु, हवा 5. ऊनी कंबल, 6. शाल 7. दीवार, बाड़ा 8. चूहा,— **विः** (स्त्री०) 1. भेड़ 2. रजस्वला स्त्री। सम०—**कटः** रेवड़,—**कटोरणः** एक प्रकार का उपहार (जो भेड़ों के रूप में दिया जाता है)—**दुग्धम्**—**दूसन्**,—**मरीसम्**,—**सोढम्** भेड़ का दूध,— **पटः** भेड़ की खाल, ऊनी कपड़ा,—**पालः** गडरिया,—**स्थलम्** भेड़ों का स्थान, एक नगर का

नाम—अविस्थलं वृकस्थलं माकन्दी वारणावतम् —महाभा० ।

अविकः [अवि+कन्] भेड़,—का भेड़,—कम् हीरा ।

अविका [अवि+कन्+टाप्] भेड़, भेड़ी ।

अविकत्थ (वि०) [न० ब०] जो शेखी न मारता हो, अभिमान न करता हो ।

अविकत्थन (वि०) [न० ब०] जो शेखी न बघारे, जो अभिमान न करे—विद्वांसोऽविकत्थना भवन्ति —मुद्रा० ३ ।

अविकल (वि०) [न० त०] 1. अक्षत, समस्त, पूरा, सम्पूर्ण, सारा—तानीन्द्रियाण्यविकलानि—भर्तृ० २।४०, °लं फलम् —मेघ० २४।३४, °शरच्चन्द्रमधुरः—मा० २।११, पूर्ण, पूर्णगोलाकार 2. नियमित, सुव्यवस्थित, सुसंगत, शान्त—कलमविकलतालं गायकैर्बोधहेतोः शि० ११।१० ।

अविकल्प (वि०) [न० ब०] अपरिवर्तनीय,—ल्पः 1 संदेह का अभाव 2. इच्छा या विकल्प का अभाव 3. विधि या नियम,—ल्पम् (अव्य०) निस्सन्देह, निस्संकोच ।

अविकार (वि०) [न० ब०] निर्विकार—रः अविकृति, अपरिवर्तनशीलता ।

अविकृतिः (स्त्री०) [न० त०] 1. परिवर्तन का अभाव 2. (सांख्य द० में) अचेतन सिद्धान्त जिसे प्रकृति कहते हैं और जो इस विश्व का भौतिक कारण है,—मूलप्रकृतिरविकृतिः—सां० का० ।

अविक्रम (वि०) [न० ब०] शक्तिहीन, दुर्बल,—मः कायरता ।

अविक्रियः (वि०) [न० ब०] अपरिवर्तनशील, निर्विकार, —यम् ब्रह्म ।

अविक्षत (वि०) [न० त०] अक्षत, पूर्ण, समस्त—विक्रेतुः प्रतिदेयं तत्तस्मिन्नेवाह्न्यविक्षतम्—स्मृति ।

अविग्रह (वि०) [न० त०] शरीररहित, परब्रह्म का विशेषण,—हः (व्या० में) नित्यसमास—जिसके विधायक खंडों से पृथक्-पृथक् अर्थ की अभिव्यक्ति न हो सके ।

अविघात (वि०) [न० ब०] बाधारहित, बिना रुकावट के, °गति (वि०) अपने मार्ग में निर्बाध ।

अविघ्न (वि०) [न० ब०] निर्बाध,—घ्नम् बाधा या रुकावट से मुक्ति, कल्याण (यह शब्द नपुंसक लिंग है, यद्यपि 'विघ्न' पुं० है)—साधयाम्यहमविघ्नमस्तु ते—रघु० ११।१९ अविघ्नमस्तु ते स्थेयाः पितेव धुरि पुत्रिणाम्—१।९१ ।

अविचार (वि०) [न त०] विचारशून्य, विवेकरहित—रः [न० त०] अविवेक, नासमझी ।

अविचारित (वि०) [न० त०] बिना विचारा हुआ, जो भली-भांति विचारा न गया हो । सम०—निर्णयः पक्षपात, पक्षपातपूर्ण सम्मति ।

अविचारिन् (वि०) [न० त०] 1. उचित अनुचित का विचार न करने वाला, विवेकहीन 2. आशुकारी ।

अविज्ञात् (वि०) [न० त०] अनजान—(पुं०—ता) परमेश्वर ।

अविडीनम् [न० त०] पक्षियों की सीधी उड़ान ।

अवितथ (वि०) [न० त०] 1. जो झूठा न हो, सच्चा—तदवितथमवादीर्यन्ममयं प्रियेति—शि० ११।३३, अवितथा वितथा सखि मा गिरः—६।१८, 2. पूरा किया हुआ, सकल,—थम् [न० त०] सचाई,— अवितथमाह प्रियंवदा—श० ३ प्रियंवदा ठीक (सही) कहती है, —थम् (अव्य०) जो मिथ्या न हो, सचाईपूर्वक—मनु० २।१४४ ।

अवित्यजः-जम् [न० त०] पारा ।

अविदूर (वि०) [न० त०] जो दूर न हो, निकटस्थ, समीपस्थ—रम् सामीप्य—रम् (अव्य०) निकट, दूर नहीं, इसी प्रकार—अविदूरेण, अविदूरात्,—दूरतः,—दूरे ।

अविद्य (वि०) [न० त०] अशिक्षित, मूर्ख, नासमझ,—द्या [न० त०] 1. अज्ञान, मूर्खता, ज्ञान का अभाव 2. आध्यात्मिक अज्ञान 3. भ्रम, माया (यह शब्द वेदान्त में बहुधा प्रयुक्त होता है, इसी माया के द्वारा व्यक्ति विश्व को (जिसका वस्तुतः कोई अस्तित्व नहीं) ब्रह्म में अन्तर्हित कर देता है, यह ब्रह्म ही सत् है) ।

अविद्यामय (वि०) [अविद्या मयट्] जो अज्ञान या भ्रम के द्वारा उत्पन्न हो ।

अविधवा [न० त०] जो विधवा न हो, विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित हो—भर्तुर्मित्रं प्रियमविधवे विद्धि-मामम्बुवाहम्—मेघ० ९९ ।

अविधा (अव्य०) विस्मयादिद्योतक अव्यय जो भय के अवसर पर सहायतार्थ बुलाने के लिए "सहायता, सहायता" बोला जाता है ।

अविधेय (वि०) [न० त०] जिसे वश में न किया जा सके, विपरीत,— विधेरविधेयतास्—मुद्रा० ४।२।

अविनय (वि०) [न० ब०]अविनीत, दुर्विनीत, अशिष्ट—यः [न० त०] 1. शिष्टता या शालीनता का अभाव 2. दुर्व्यवहार, उजड्डपन, अशिष्ट या उजड्डव्यवहार -अयमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु—श० १।२५, अभद्रता, आचरण का अनौचित्य, 3. अशिष्टाचार, अनादर 4. अपराध, जुर्म, दोष 5. घमंड, अहंकार, धृष्टता—अविनयमपनय विष्णो—शं० ।

अविनाभावः [न०त०] 1. वियोग का अभाव 2. अन्तर्हित या अनिवार्य चरित्र, वियुक्त न होने योग्य संबंध 3. संबंध —अविनाभावोऽत्र सम्बन्धभावं न तु नान्तरीयकत्वम्—काव्य० २ ।

अविनीत (वि०) [न० त०] 1. विनयशून्य, दुःशील 2. धृष्ट, उजड्ड ।

अविभक्त (वि०)[न० त०] 1. न बंटा हुआ, अविभाजित, संयुक्त (जैसे कि पारिवारिक सम्पत्ति) 2. जो टूटा न हो, समस्त।

अविभाग (वि०) [न० ब०] जो बांटा न गया हो, अविभक्त—**गः** [न० त०] 1. बंटवारा न होना 2 बिना बंटा दायभाग।

अविभाज्य (वि०) [न० त०] जो बाँटा न जा सके —**ज्यम्** 1. न बाँटा जाना, 2. जो बँटवारे के योग्य न हो (कुछ ऐसी वस्तुएँ होती हैं जो बँटवारे के समय भी बाँटी नहीं जाती)—उदा० वस्त्रं पात्रमलंकारं कृतान्नमुदकं स्त्रियः, योगक्षेमं प्रचारं च न विभाज्यं प्रचक्षते—मनु० ९।२१९, °ता न बाँटा जाना, बँटवारे की अयोग्यता।

अविरत (वि०) [न० त०] विरामशून्य, न रुकने वाला, सतत, निरन्तर—अविरतोत्कण्ठमुत्कण्ठितेन—मेघ० १०२, लो० मन्दोऽप्यविरतोद्योगः सदैव विजयी भवेत् 'करतर अभ्यास के जड़मति होत सुजान'—**तम्** (अव्य०) नित्यतापूर्वक, लगातार—अविरतं परकार्यकृतां सताम्—भामि० १।११३।

अविरति (वि०) [न० ब०] निरन्तर —**तिः** (स्त्री०) [न० त०] 1. सातत्य, निरन्तरता 2. कामातुरता।

अविरल (वि०) [न० त०] 1. घना, सघन, —°वारिधारा —उत्तर० ६, तेज़ बौछार 2. सटा हुआ 3. स्थूल, मोटा, ठोस 4. निर्बाध, लगातार, —**लम्** (अव्य०) 1. घनिष्ठतापूर्वक—अविरलमालिङ्गितु पवनः—श० ३।७, 2. निर्बाधरूप से; लगातार।

अविरोधः [न० त०] सुसंगतता, अनुकूलता —सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये—भर्तृ० २।७४, अपने स्वार्थ के अनुकूल।

अविलम्ब (वि०)[न० ब०] आशुकारी—**बः** [न० त०] विलंब का अभाव, आशुकारिता—**बम्**, **अविलम्बेन** (अव्य०) बिना देर किये, शीघ्र ही।

अविलंबित (वि०) [न० त०] बिना देर किये, शीघ्रकारी, क्षिप्र, आशुकारी,—**तम्** (अव्य०) शीघ्रतापूर्वक, बिना देर किये।

अविला [अव्+इलच्] भेड़।

अविवक्षित (वि०) [न० त०] 1. अनभिप्रेत, अनुद्दिष्ट —भ्रातरः इत्यत्र एकशेषग्रहणमविवक्षितम् 2. जो बोलने या कहने के लिए न हो।

अविविक्त (वि०) [न०त०] 1. जिसकी छानबीन न की गई हो, जो भली-भांति विचारा न गया हो 2. जो विशेषता या भेद न जानता हो, विस्मित 3. सार्वजनिक।

अविवेक (वि०) [न० ब०] विचारशून्य, विवेकशून्य—**कः** [न० त०] 1. भेदक ज्ञान या विचार का अभाव, अविचार—अविवेकः परमापदां पदम्—कि० २।३० 2. जल्दबाजी, उतावलापन।

अविशङ्क (वि०) [न० ब०] भयरहित, संदेहशून्य, निडर —का संदेह या भय का प्रभाव, भरोसा,—**कम्**, **अविशंकेन** (अव्य०) निस्संदेह, निस्संकोच।

अविशङ्कित (वि०)[न० त०] 1. निःशंक, निडर 2. निस्संदेह, विश्वासी,—गृध्रवाक्यात्कथं मूढास्त्यजध्वमविशंकिताः काव्य०।

अविशेष (वि०) [न० ब०] बिना किसी अन्तर या भेद के, बराबर, समान,—**षः**,—**षम्** 1. अन्तर का अभाव, समानता 2. एकता, समता। सम०—**ज्ञ** चीजों के अन्तर को न समझने वाला, अविभेदक।

अविष (वि०) [न० ब०] 1. जो जहरीला न हो,—**षः** 1. समुद्र 2. राजा—**षी** 1. नदी 2. पृथ्वी 3. आकाश।

अविषय (वि०) [न० ब०] अगोचर, अदृश्य —**यः** [न० त०] 1. अभाव 2. अविद्यमानता—रवेरविषये किं न दीपस्य प्रकाशनम्—हि० २।७९, 3. निर्विषय, जो पहुँच के अन्दर न हो, परे, बढ़चढ़कर—न कश्चिद्धीमतामविषयो नाम—श० ४, सकल वचनानामविषयः—मा० १।३०, शब्दों की शक्ति से बाहर, 3. इन्द्रियार्थों की उपेक्षा।

अवी [अवत्यात्मानं लज्जया इति—अव्+ई] रजस्वला स्त्री।

अवीचि (वि०) [न० ब०] तरंगशून्य—**चिः** नरक-विशेष।

अवीर (वि०) [न० ब०] 1. जो वीर न हो, कायर 2. जिसके कोई पुत्र न हो,—**रा** वह स्त्री जिसके न कोई पुत्र हो, न पति हो (विप० 'वीरा' जिसकी परिभाषा यह है:—पतिपुत्रवती नारी वीरा प्रोक्ता मनीषिभिः) अनर्चितं वृथा मांसमवीरायाश्च योषितः—मनु० ४। २१३।

अवृत्ति (वि०) [न० ब०] 1. जिसकी सत्ता न हो, जो विद्यमान न हो 2. जिसकी कोई जीविका न हो, —**त्तिः** (स्त्री०) [न० त०] 1. वृत्तिका अभाव, जीविका का कोई साधन न होना, अपर्याप्त आश्रय—अवृत्तिकर्षिता हि स्त्री प्रदुष्येत् स्थितिमत्यपि—मनु० ९।७४, १०।१०१, आददीताममेवास्मादवृत्तावेकरात्रिकम्—४। २२३, 2. पारिश्रमिक का अभाव, °त्वं अनस्तित्व।

अवृथा (अव्य०) [न० त०] व्यर्थ नहीं, सफलता पूर्वक। सम०—**अर्थ** (वि०) सफल।

अवृष्टि (वि०) [न० ब०] वारिश न करने वाला,—**ष्टिः** (स्त्री०) [न० त०] वृष्टि का अभाव, अनावृष्टि।

अवेक्षक (वि०) [अव+ईक्ष्+ण्वुल्] निरीक्षण करने वाला, देखरेख करने वाला, अधीक्षक।

अवेक्षणम् [अव+ईक्ष्+ल्युट्] 1. किसी ओर देखना, नजर डालना 2. रखवाली करना, देखरेख रखना, सेवा

करना, अधीक्षण, निरीक्षण—वर्णाश्रमावेक्षणजागरूक: --रघु० १४।८५, 3. ध्यान, देखरेख, पर्यवेक्षण 4. खयाल करना, ध्यान रखना—दे० 'अनवेक्षण'।

अवेक्षणीय (सं० कृ०) [अव+ईक्ष्+अनीयर्] देखने के योग्य, आदर करने के योग्य, ध्यान रखने के योग्य, विचार किये जाने के योग्य--तपस्विसामान्यमवेक्षणीया—रघु० १४।६७।

अवेक्षा [अव+ईक्ष्+अङ+टाप्] 1. देखना, दृष्टि डालना 2. ध्यान, देखरेख, खयाल।

अवेद्य (वि०) [न० त०] 1. न जानने योग्य, गुप्त 2. प्राप्त करने के योग्य,—द्यः बछड़ा।

अवेल (वि०) [न० ब०] 1. असीम, सीमारहित, निस्सीम 2. असामयिक,—लः [न० त०] जानकारी का छिपाव,—ला प्रतिकूल समय।

अवैध (वि०) [स्त्रियाम्—धी] [न० त०] 1. अनियमित, जो नियम या कानून के अनुसार न हो—अवैधं पञ्चमं कुर्वन् राज्ञो दण्डेन शुध्यति 2. जो शास्त्रविहित न हो।

अवैमत्यम् [न० त०] एकता।

अवोक्षणम् [अव+उक्ष्+ल्युट्] झुके हुए हाथ से छिड़काव करना--उत्तानेनैव हस्तेन प्रोक्षणं परिकीर्तितम्, न्यञ्चताम्युक्षणं प्रोक्तं तिरश्चावोक्षणं स्मृतम्॥

अवोदः [अव+उन्द्+घञ्, नि० न लोपः] छिड़काव करना, गीला करना।

अव्यक्त (वि०) [न० त०] 1. अस्पष्ट, अप्रकट, अदृश्यमान अनुच्चरित—°वर्ण अस्पष्ट भाषण—श० ७।१७, 2. अदृश्य, अप्रत्यक्ष, 3. अनिश्चित—अव्यक्तोयमचिन्त्योऽयम्—भग० २।२५, ८।२०, 4. अविकसित, अरचित 5 (बीज० में) अज्ञात,—क्तः 1. विष्णु 2. शिव 3. कामदेव 4. मूल प्रकृति 5 मूर्ख,—क्तम् (वेदान्त० में) 1. ब्रह्म, 2. आध्यात्मिक अज्ञान, (सां० द० में) सर्व कारण, प्रजननात्मक नियम का मूलतत्त्व जिससे भौतिक संसार के सारे तत्त्व विकसित हुए हैं--बुद्धेरिवाव्यक्तमुदाहरन्ति—रघु० १३।६०, महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः परः—कठ० 3. आत्मा,—क्तम् (अव्य०) अप्रत्यक्षरूप से, अस्पष्ट रूप से। सम० —अनुकरणम् अनुच्चरित तथा निरर्थक ध्वनियों की नकल करना,—आदि (वि०) जिसका आरम्भ अगाध हो,—क्रिया बीजगणित का एक हिसाब,—पद (वि०) अनुच्चरित शब्द,—मूलप्रभवः सांसारिक अस्तित्व रूपी वृक्ष (सां० में),—राग (वि०) हलका लाल, गुलाबी (—गः) ऊषा का रंग,—अव्यक्त रागस्त्वरुणः --अमर०,—राशिः (बीजगणित में) अज्ञात अंक या परिमाण,—लक्षणः,—व्यक्तः शिव,—वर्त्मन्,—मार्ग (वि०) जिसके मार्ग अगाध और अभेद्य हैं,—वाच् (वि०) अस्पष्ट रूप से बोलने वाला,—साम्यम् अज्ञात परिमाणों की समीकरण राशि।

अव्यग्र (वि०) [न० त०] 1. अक्षुब्ध, अनाकुल, स्थिर, शान्त 2. किसी काम में न लगा हुआ।

अव्यङ्ग (वि०) [न० त०] जो क्षतविक्षत या दोषयुक्त न हो, सुनिर्मित, ठोस, पूरा।

अव्यञ्जन (वि०) [न० ब०] 1. चिह्नरहित, लक्षणरहित, (जैसे कि लिंगभेदक) °ना कन्या 2. अस्पष्ट,—नः बिना सींग का पशु (सींग आने की आयु होने पर भी)।

अव्यथ (वि०) [न० ब०] पीडा से मुक्त,—थः सांप।

अव्यथिषः [न-व्यथ्+टिषच्] 1. सूर्य, 2. समुद्र,—षी 1. पृथ्वी 2. आधीरात, रात।

अव्यभि (भी) चारः [न० त०] वियोग का अभाव —अन्योन्यस्याव्यभीचारो भवेदामरणान्तिकः—मनु० ९।१०१ 2 एकनिष्ठता, वफादारी।

अव्यभिचारिन् (वि०) [न० त०] 1. अविरोधी, अप्रतिकूल, अनुकूल कु० ६।८६, 2. अपवादरहित,—यदुच्यते पार्वति पापवृत्तये न रूपमित्यव्यभिचारि तद्वचः—कु० ५।३९ रंध्रोपनिपातिनोऽनर्था इति यदुच्यते तदव्यभिचारिवचः—श० ६, 3. सद्गुणी, सदाचारी, ब्रह्मचारी (सती), 4. स्थिर, स्थायी, श्रद्धालु।

अव्यय (वि०) [न० ब०] 1. (क) अपरिवर्तनशील, अविनश्वर, अखंडित—वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्—भग० २।२१, विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति—१७ (ख) नित्य, शाश्वत—अश्वत्थं प्राहुरव्ययम्—भग० १५।१, अकीर्तिं कथयिष्यंति तेऽव्ययाम्—२।३४, 2. जो खर्च न किया गया हो, जो व्यर्थ नष्ट न किया गया हो 3. मितव्ययी 4. शाश्वत फल देने वाला,—यः 1. विष्णु 2. शिव,—यम् 1. ब्रह्म, 2. (व्या० में) वह शब्द जिसके रूप में वचन लिंग आदि के कारण कोई विकार नहीं होता—सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्। सम०—आत्मन् (वि०) अविनश्वर या नित्य (—त्मा) आत्मा या ब्रह्म—वर्गः अव्ययों की सूची।

अव्ययीभावः [अनव्ययमव्ययं भवत्यनेन, अव्यय+च्वि+भू+घञ्] 1. संस्कृतभाषा के चार मुख्य समासों में से एक, क्रियाविशेषण समास (अव्यय से बना हुआ अर्थात् अव्यय अथवा क्रिया विशेषण तथा संज्ञा के मेल से बना हुआ) अधिहरि, सतृणम्—आदि 2. व्यय का अभाव (दरिद्रता के कारण)—द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः, तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः। उद्भट० (जो संस्कृत के समासों को आंखों के सामने रख देता है) 3. अनश्वरता।

अव्यलीक (वि०) [न० त०] 1. जो झूठा न हो, सच्चा

2. प्रिय, अरुचिकर भावनाओं से रहित,—इत्थं गिरः प्रियतमा इव सोऽव्यलीकाः शुश्राव सूततनयश्च तदा व्यलीकाः—शि० ५।१।

अव्यवधान (वि०) [न० ब०] 1. मिला हुआ, पास का, अन्तररहित 2. खुला हुआ 3. जो ढका न हो, नंगा 4. असावधान, लापरवाह,—**नम्** लापरवाही।

अव्यवस्थ (वि०) [न० ब०] 1. जो नियत न हो, हिलने-डुलने वाला, अस्थिर—स्थलारविंदश्रियमव्यवस्थाम्—कु० १।३३ 2. अनिश्चित, विशृंखल, अनियमित—**स्था** 1. अनियमितता, मान्यता-प्राप्त नियम से स्खलन 2. शास्त्रविरुद्ध व्यवस्था।

अव्यवस्थित (वि०) [न० त०] 1. जो प्रचलित व्यवस्था या कानून के अनुरूप न हो 2. विनियमरहित, चंचल, अस्थिर—अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयङ्करः—नीति० ९, 3. जो क्रमबद्ध न हो, विधिपूर्वक न हो।

अव्यवहार्य (वि०) [न० त०] 1. जो अपने जातिबन्धुओं के साथ खाने पीने का अधिकारी न हो, जातिबहिष्कृत 2. जो मुकदमे का विषय न बनाया जा सके, व्यवहार के अयोग्य।

अव्यवहित (वि०) [न० त०] व्यवधानरहित, साथ मिला हुआ।

अव्याकृत (वि०) [न० त०] 1. अविकसित, अस्पष्ट—तद्धेदं तर्ह्यव्याकृतमासीत् इदं नामरूपाभ्यामव्याकृतम्—शत० 2. प्रारंभिक,—**तम्** (वेदान्त०) 1. प्रारंभिक तत्त्व—ब्रह्म के समनुरूप—इससे संसार की सभी वस्तुएँ बनी 2. (सांख्य० में) प्रधान—प्रकृति का प्राथमिक अणु।

अव्याजः—जम् [न० त०] 1. छल-कपट का अभाव, ईमानदारी 2. सादगी, अकृत्रिमता—बहुधा समास में 'सुन्दर' और 'मनोहर' के साथ—प्राकृतिकता या अकृत्रिमता के अर्थ में प्रयुक्त—इद किलाव्याजमनोहरवपुः—श० १।१८।

अव्यापक (वि०) [न० त०] 1. जो बहुत विस्तीर्ण न हो 2. जिसने समस्त को न व्यापा हो, विशेष।

अव्यापार (वि०) [न० ब०] जिसके पास कोई कार्य न हो, काम में न लगा हुआ,—**रः** [न० त०] 1. काम से विराम 2. ऐसा काम जो न तो किया जा सके, न समझ में आवे 3. जो अपना निजी व्यापार न हो,—अव्यापारेषु व्यापारम्—दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करना।

अव्याप्तिः (स्त्री) [न० त०] 1. अपर्याप्त विस्तार, या प्रतिज्ञा पर अधूरी व्याप्ति 2. परिभाषा में दिये गये लक्षण का घटित न होना, परिभाषा के तीन दोषों में से एक—लक्ष्यैक देशे लक्षणस्यावर्तनमव्याप्तिः।

अव्याप्य (वि०) [न० त०] जो सारी स्थिति के लिए लागू न हो, समस्त विस्तार पर छाया हुआ न हो—वह्निर्धूमस्याव्याप्यः। सम०—**वृत्तिः** (स्त्री) [वैशे० द० में] सीमित प्रयोग की एक श्रेणी, देशकाल की स्थिति से आंशिक विद्यमानता—जैसे सुख-दुःख—अव्याप्यवृत्तिः क्षणिको विशेषगुण इष्यते—भाषा० २७।

अव्याहत (वि०) [न० त०] न टूटा हुआ, बाधारहित, निर्बाध; मानी हुई (आज्ञा)—भर्तुरव्याहताज्ञा—रघु० १९।५७।

अव्युत्पन्न (वि०) [न० त०] 1. अकुशल, अनुभवशून्य, अव्यवहृत, अनाड़ी—अव्युत्पन्नो बालभावः—का० १९६, 2. (शब्द) जिसकी व्युत्पत्ति नियमित न हो, —**न्नः** भाषा के व्याकरण तथा वाग्धारा आदि के ज्ञान से शून्य व्यक्ति, पल्लवग्राही भाषाशास्त्री।

अव्रत (वि०) [न० ब०] जो धार्मिक संस्कार तथा अन्य धर्मानुष्ठान का पालन न करता हो—अव्रतानाममन्त्राणां जातिमात्रोपजीविनाम्, सहस्रशः समेतानां परिषत्त्वं न विद्यते। मनु० १२।११४, ३।१७०।

अश् 1. (स्वा० आ०) [अश्नुते, अशित—अष्ट] 1. व्याप्त होना, पूरी तरह से भरना, प्रविष्ट होना—खं प्रावृषेण्यैरिव चानशेऽब्दैः—भट्टि० २।३० कि० १२।२१, 2. पहुंचना, जाना या आना, उपस्थित होना, प्राप्त करना—सर्वमानन्त्यमश्नुते—या० १।२६१, 3. प्राप्त करना, ग्रहण करना, आनंद लेना, अनुभव प्राप्त करना—अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते—हि० १।८०, रघु० ९।९. न वेदफलमश्नुते—मनु० १।१०९, फलं दृशोरानशिरे महिष्यः—नै० १।४३। उप—प्राप्त करना, उपभोग करना, ग्रहण करना—न च लोकानुपाश्नुते—महा०, क्रियाफलमुपाश्नुते—मनु० ६।८२. वि—पूर्ण रूप से भरना, व्याप्त होना, स्थान ग्रहण करना—प्रतापस्तस्य भानोश्च युगपद् व्यानशे दिशः—रघु० ४।१५, भट्टि० ९।४, १४।९६।

अश् 2. (क्र्या० पर०) [अश्नाति अशित] 1. खाना, उपभोग करना—निवेद्य गुरवेऽश्नीयात्—मनु० २।५१, अश्नीमहि वयं भिक्षाम्—भर्तृ० ३।११७. 2. स्वाद लेना, रस लेना—यद्ददाति यदश्नाति तदेव धनिनो धनम्—हि० १।१६४-६५. अश्नन्ति दिव्यान् दिवि देवभोगान्—भग० ९।२०, प्रत्यक्षं फलमश्नन्ति कर्मणाम्—महा०, (प्रेर०—आशयति) खिलाना, भोजन कराना, खिलवाना पिलवाना (कर्म० के साथ)—आशयच्चामृतं देवान् सिद्धा०, प्र—1. पीना,—न प्राश्नोतोदकमपि—महा०, 2. खाना, निगलना—प्राश्नन्नथ सुरामिपम्—भट्टि० १७।३, ३।१३, १५।२९, सम्—1. खाना,—नक्तं चान्नं

समश्नीयात् मनु० ६।१९. ११।२१९, 2. स्वाद लेना. अनुभव लेना. रस लेना —यथा फलं समश्नाति —महा० ।

अशकुनः—**नम्** [न० त०] अशुभ या बुरा शकुन ।

अशक्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. कमजोरी, शक्तिहीनता 2. अयोग्यता, अक्षमता,–श्रमेण तदशक्त्या वा न गुणानामियत्तया रघु० १०।३२

अशक्य (वि०) [न० त०] असंभव. अव्यवहार्य ।

अशङ्क, अशङ्कित (वि०) [न० ब०. न० त०] 1. निर्भय निश्शंक - प्रविशत्यशङ्कः - हि० १।८१. 2 सुरक्षित. सन्देह रहित ।

अशनम् [अश्+ल्युट्] 1. व्याप्ति, प्रवेशन 2. खाना. खिलाना 3. स्वाद लेना. रस लेना 4. आहार—अशन धात्रा मरुत्कल्पितं व्यालानाम्—भर्तृ० ३।१०. (बहुधा विशेषण (बहुव्रीहि) समास के अन्त में 'खाने वाला' 'जिसका भोजन है...') फलमूलाशन. हुताशन. पवनाशन आदि ।

अशना–[अशन मिच्छति—अशन+क्यच्+क्विप्] खाने की इच्छा, भूख ।

अशनाया [अशनमिच्छति—अशन+क्यच् स्त्रियां भावे अ] भूख, च्युताशनायः फलवद्विभूत्या—भट्टि० ३।४०. अन्नाद्वाऽशनाया निवर्तते पानात्पिपासा—शत० ।

अशनायित. अशनायुक (वि०) [अशन+क्यच् (ना० धा०)+क्त. पक्षे उकञ्] भूखा ।

अशनिः (पु० स्त्री०) [अश्नुते संहति—अश्+अनि] 1. इन्द्र का वज्र. शक्रस्य महाशनिध्वजम्—रघु० ३।५६ 2. बिजली की चमक—अनुवनमशनिर्गतः—सिद्धा०. अशनिः कल्पित एव वेधसा रघु० ८।४७. अशनेरमृतस्य चोभयोर्वशिनश्चाम्बुधराश्च योनयः—कु० ४।४३. 3. फेंक कर मारेजाने वाला अस्त्र 4. अस्त्र की नोक—**निः** (पु०) 1. इन्द्र. 2. अग्नि 3. बिजली से पैदा हुई आग ।

अशब्द (वि०) [न० ब०] जो शब्दों में न कहा गया हो –किमर्थमशब्दं रुद्यते–का० ६०, जो सुनाई न दे,–**ब्दम्** 1. अव्यक्त अर्थात् ब्रह्म 2. (सां० द० में) प्रधान या प्रकृति का आरम्भिक अणु ईक्षतेर्नाशब्दम्—शारी० १।१ ।

अशरण (वि०) [न० ब०] असहाय, परित्यक्त, शरणरहित —बलवदशरणोऽस्मि—श० ६, इसी प्रकार'अशरण्य' ।

अशरीर (वि०) [न ब०] शरीररहित, बिना शरीर का —**रः** 1. परमात्मा, ब्रह्म, 2. कामदेव, प्रेम का देवता 3. संन्यासी जिसने अपने सांसारिक संबंध त्याग दिये हैं ।

अशरीरिन् (वि०) [न० त०] शरीररहित, अपार्थिव, स्वर्गीय (प्रायः वाणी, वाक् आदि शब्दों के साथ) ।

अशास्त्र (वि०) [न० ब०] जो धर्मशास्त्र के अनुकूल न हो, पाखंड । सम०—**विहित,–सिद्ध** जो धर्मशास्त्र से अनुमोदित न हो ।

अशास्त्रीय (वि०) [न० त०] शास्त्रविरुद्ध, विधि-विरुद्ध, अनैतिक ।

अशित (भू० क० कृ०) [अश्+क्त] 1. खाया हुआ, तृप्त 2. उपभुक्त ।

अशितङ्गवीन (वि०) [अशितास्तृप्ताः गावोऽत्र] वह स्थान जहाँ पहले मवेशी चरा करते थे, पशुओं के चरने का स्थान । दे० "आशितङ्गवीन" ।

अशित्रः [अश्+इत्र] 1. चोर 2. चावल की आहुति ।

अशिरः [अश्+इरच्] 1. आग 2. सूर्य 3. वायु 4 पिशाच, —**रम्** हीरा ।

अशिरस् (वि०) [न० ब०] बिना सिर का—(पुं०) बिना सिर का शरीर, कबंध, धड़, तना ।

अशिव (वि०) [न० ब०] 1. अशुभ, अमंगलकारी –अशिवा दिशि दीप्तायां शिवास्तत्र भयावहाः (रुरुदुः) रामा० 2. अभागा, बदकिस्मत,—**वम्** 1. दुर्भाग्य, बदकिस्मती 2. उपद्रव । सम०—**आचारः** 1. अनुचित व्यवहार, आचरण की अशिष्टता 2. दुराचरण ।

अशिष्ट (वि०) [न० त०] 1. शिष्टतारहित, उजड्ड, 2. असंस्कृत, असभ्य, अयोग्य 3. नास्तिक, भक्तिशून्य 4. जो किसी प्रामाणिक ग्रन्थ द्वारा सम्मत न हो 5 जो किसी प्रामाणिक शास्त्र द्वारा विहित न हो ।

अशीत (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो, गर्म । सम० —**करः,–रश्मिः** सूर्य ।

अशीतिः (स्त्री०) [निपातोऽयम्] अस्सी (यह शब्द सदैव स्त्रीलिंग एक व० में प्रयुक्त होता है चाहे इसका विशेष्य कुछ ही हो) ।

अशीर्षक (वि०)=दे० अशिरस् ।

अशुचि (वि०)[न० ब०] 1. जो साफ न हो, गंदा, मलिन, अपवित्र,–सोऽशुचिः सर्वकर्मसु,—विलाप या मातम के अवसर पर 2. काला,—**चिः** (स्त्री०) [न० त०] 1. अपवित्रता 2. अधः पतन ।

अशुद्ध (वि०) [न० त०] 1. अपवित्र 2. अशुद्ध, गलत ।

अशुद्धि (वि०) [न० ब०] 1. अपवित्र, मलिन 2. दुष्ट, —**द्धिः** (स्त्री०) [न० त०] अपवित्रता, मलिनता ।

अशुभ (वि०) [न० ब०] 1. अमंगलकारी 2. अपवित्र, मलिन (विप० शुभ) 3. अभागा, बदकिस्मत,—**भम्** 1. अमंगलता, 2. पाप 3. दुर्भाग्य, विपत्ति—नाथे कुतस्त्वय्यशुभं प्रजानाम्—रघु० ५।१३, । सम० —**उदयः** अशुभ शकुन ।

अशून्य (वि०) [न० त०] 1. जो रिक्त या शून्य न हो 2. परिचर्या किया गया, पूरा किया गया, निष्पादित

--स्वनियोगमशून्य कुरु (नाटकों में प्रायः प्रयुक्त) अपना कार्य सम्पन्न करो।

अशृत (वि०) [न० त०] बिना पकाया हुआ, कच्चा, अनपका।

अशेष (वि०) [न० ब०] जिसमें कुछ बाकी न बचा हो, सम्पूर्ण, समस्त, पूरा, समग्र --अशेषशेमुषीमोपं मापमश्नामि केवलम् --उद्भट०, ऋतोरशेषेण फलेन युज्यता --रघु० ३।६५, ४८. --षः [न० त०] जो बाक़ी न बचा हो,--षम्, अशेषेण, अशेषतः (क्रि० वि०) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से,--तथाविधस्तावदशेषमस्तु सः --कु० ५।८२, येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि --भग० ४।३५, १०।१६, मनु० १।५९।

अशोक (वि०) [न० ब०] जिसे कोई रंज न हो, जो किसी प्रकार के रंज या शोक का अनुभव न करता हो,--कः 1. लाल फूलों वाला एक प्रसिद्ध वृक्ष (कविसमय है कि स्त्रियों के चरणस्पर्श से इसमें फूल खिल जाते हैं) तु० --असूत सद्यः कुसुमान्यशोकः पादेन नापेक्षत सुन्दरीणां संपर्कमाशिञ्जितनूपुरेण --कु० ३।२६, मेघ० ७८, रघु० ८।६२, मालवि० ३।१२, १६, 2. विष्णु 3. मौर्यवंश का एक प्रसिद्ध राजा, --कम् 1. अशोक वृक्ष का फूलना (कामदेव के पाँच बाणों में से एक) 2. पारा। सम० --अरिः कदंबवृक्ष, --अष्टमी चैत्र कृष्णपक्ष की अष्टमी, --तरुः, --नगः, --वृक्षः अशोकवृक्ष, --त्रिरात्रः, --त्रम् एक उत्सव का नाम जो तीन रात तक रहता है,--वनिका अशोक वृक्षों का उद्यान, °न्याय दे० 'न्याय' के नीचे।

अशोच्य (वि०)[न० त०] जिसके लिए शोक करना उचित नहीं --अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे --भग० २।११।

अशौचम् [न० त०] 1. पवित्रता, मैलापन, मलिनता--पंच० १।१९५ 2. (किसी बच्चे के जन्म के कारण --जननाशौच) सूतक, (किसी बंधु की मृत्यु के कारण--मृताशौच) पातक--अहोरात्रमुपासीरन्नशौचं बान्धवैः सह--मनु० ११।१८३।

अश्नया=भूख।

अश्नीतपिबता [अश्नीत पिबत इत्युच्यते यस्यां निदेशक्रियायां --पा० २।१।७२] खाने पीने के लिए निमंत्रण, दावत जिसमें खाने पीने के लिए लोग आमंत्रित किये जाते हैं--अश्नीतपिबतीयंती प्रसृता स्मरकर्मणि--भट्टि० ५।९२।

अश्मकः (ब० व०) [अश्मेव स्थिरः, इवार्थे कन्] 1. दक्षिण में एक देश 2. उस देश के निवासी।

अश्मन् (पुं०) [अश्+मनिन्] 1. पत्थर--नाराचक्षेपणीयाश्मनिष्पेषोत्पतितानलम्--रघु० ४।७७ 2. फलीता, चकमक पत्थर 3. बादल 4. वज्र। सम०--उत्थम् शिलाजीत,--कुट्ट,--कुट्टक (वि०) पत्थर पर रखकर चीज तोड़ने वाला (ट्टः,ट्टकः) भक्तों का समुदाय, वानप्रस्थ--याज्ञ० ३।४९, मनु० ६।१७,--गर्भः, --गर्भम्,--गर्भजः,--जम्,--योनिः पन्ना,--जः,--जम् 1. गेरू, 2. लोहा,--जतु (नपुं०),--जतुकम् --शिलाजीत,--जातिः पन्ना, --दारणः पत्थर तोड़ने के लिए हथौड़ा, --पुष्पम् शिलाजीत,--भालम् पत्थर की खरल या लोहे का इमामदस्ता, --सार (वि०) पत्थर या लोहे जैसा (--रः, --रम्) 1. लोहा 2. नीलमणि।

अश्मन्तम् [अश्मनोऽन्तोऽत्र शकं० पररूपम्] 1 अंगीठी, अलाव 2. खेत, मैदान 3. मृत्यु।

अश्मन्तकः --कम् [अश्मानमन्तयति इति--अश्मन्+अंत्+णिच्+ण्वुल्] अलाव, अंगीठी,--कः एक पौधे का नाम जिसके रेशों से ब्राह्मण की तगड़ी बनाई जाती है।

अश्मरी (आयु० में)[अश्मानं राति इति रा+क+ङीप्] (मूत्राशय में) एक रोग का नाम जिसे पथरी कहते हैं, मूत्रकृच्छ्र।

अश्रम् [अश्नुते नेत्रम्--अश्+रक्] 1. आँसू, 2. रुधिर (प्रायः 'अस्र' लिखा जाता है),--श्रः किनारा (बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त होता है)। सम०--पः रुधिर पीने वाला, राक्षस, नरभक्षक।

अश्रवण (वि०) [न० ब०] बहरा, जिसके कान न हों, --णः साँप।

अश्राद्ध (वि०) [न० त०] श्राद्ध का अनुष्ठान न करने वाला, --द्धः श्राद्ध का अनुष्ठान न करना। सम० --भोजिन् (वि०) जिसने श्राद्ध-अनुष्ठान में भोजन न करने का व्रत ले लिया है।

अश्रान्त (वि०) [न० त०] 1. न थका हुआ, अथक 2. अनवरत, लगातार--तम् (अव्य०) निरन्तर, लगातार।

अश्रिः --श्री (स्त्री०) [अश्+क्रि पक्षे ङीप्] 1. (कमरे का या घर का) किनारा, कोण समास के अन्त में चतुर्, त्रि, षट् तथा और कुछ शब्दों के साथ बदल कर 'अस्र' हो जाता है--दे० चतुरस्र) 2. (शस्त्र की) तेज धार--वृत्रस्य हन्तुः कुलिशं कुण्ठिताश्रीव लक्ष्यते--कु० २।३०, 3. किसी वस्तु का तेज किनारा, धार।

अश्रीक --ल (वि०) [न० ब० कप्, रस्य लः] 1. श्रीहीन, असुन्दर विवर्ण, शि० १५।९६ 2. भाग्यहीन, जो सम्पन्न न हो।

अश्रु (नपुं०)[अश्नुते व्याप्नोति नेत्रमदर्शनाय--अश्+क्रुन्] आँसू --पपात भूमौ सह सैनिकाश्रुभिः--रघु० ३।६१। सम०--उपहत (वि०) आंसुओं से ग्रस्त, आँसुओं से ढका हुआ.--कला आँसू की बूंद, अश्रुबिंदु.--परिपूर्ण (वि०) आंसुओं से भरा हुआ. °अक्ष आसुओं से भरी हुई आँखों वाला. --परिप्लुत (वि०) आँसुओं से भरा हुआ. अश्रुस्नात,--पातः आँसू गिरना, आँसुओं का

गिराना, —**पूर्ण** (वि०) आंसुओं से भरा हुआ, °आकुल आंसुओं से भरा हुआ तथा व्याकुल —रघु० २।१. —**मुख** (वि०) आंसुओं से युक्त, अचानक आंसू गिराने वाला,—**लोचन**,—**नेत्र** (वि०) आंसुओं से भरी हुई आंखों वाला, जिसकी आंखें आंसुओं से भरी हुई हों।

अश्रुत (वि०) [न० त०] 1. न सुना हुआ, जो सुनाई न दे 2. मूर्ख, अशिक्षित।

अश्रौत (वि०) [न० त०] अवैदिक, जो वेदों के द्वारा अनुमोदित न हो।

अश्रेयस् (वि०) [न० त०] 1. अपेक्षाकृत जो उत्कृष्ट न हो, घटिया (नपुं०—स्) बुराई, दुःख।

अश्लील (वि०) [न श्रियं लाति—ला+क] 1. भद्दा, कुरूप 2. ग्राम्य गन्दा, अक्खड़—अश्लीलप्रायान् कलकलान्—दश० ४९, °परिवाद—याज्ञ० १।३३. 3. अपभाषित,—**लम्** 1. देहाती या गंवारू भाषा, गाली 2. (सा० शा० में) रचना का एक दोष जिसमें ऐसे शब्द प्रयुक्त किये जायँ जिनसे श्रोता के मन में शर्म, जुगुप्सा और अमंगल की भावना पैदा हो—उदा० साधनं सुमहद्यस्य, मुग्धा कुड्मलिताननेन दधती वायुं स्थिता तत्र सा, तथा—मृदुपवनविभिन्नो मत्प्रियाया विनाशात्—में साधन, वायु और विनाश शब्द अश्लील हैं और क्रमशः शर्म, जुगुप्सा और अमंगल की भावना पैदा करते हैं—'साधन' शब्द तो लिंग (पुरुष की जननेन्द्रिय), 'वायु' शब्द अपान (गुदा से निकलने वाली दुर्गंधयुत वायु) तथा 'विनाश' मृत्यु को प्रकट करता है।

अश्लेषा [न श्लिष्यति यत्रोत्पन्नेन शिशुना, श्लिष्+घञ्, तारा०] 1. नवां नक्षत्र जिसमें पांच तारे होते हैं 2. अनैक्य, वियोग। सम०—**जः**,—**भवः**,—**भूः** केतुग्रह अर्थात् उतार का शिरोबिन्दु।

अश्वः [अंश्+क्वन्] 1. घोड़ा 2. सात की संख्या का प्रकट करने वाला प्रतीक 3. (घोड़े जैसा बल रखने वाले) मनुष्यों की दौड़,—काष्ठतुल्यवपुर्धृष्टो मिथ्याचारश्च निर्भयः, द्वादशांगुलमेढ्रश्च दरिद्रस्तु हयो मतः।—**श्वौ** (द्वि० व०) घोड़ा और घोड़ी। सम०—**अजनी** हंटर, —**अधिक** (वि०) जो अश्वारोहियों में प्रबल हो, जिसके पास घोड़े अधिक हों,—**अध्यक्षः** अश्वारोहियों का सेनापति,—**अनीकम्** अश्वारोहियों की सेना,—**अरिः** भैंसा,—**आयुर्वेदः** अश्वचिकित्सा-विज्ञान—**आरोह** (वि०) घोड़े पर चढ़ा हुआ (—**हः**) 1. घुड़सवार, अश्वारोही 2. घुड़सवारी,—**उरस्** (वि०) घोड़े की भांति चौड़ी छाती वाला,—**कर्णः**,—**कर्णकः** 1. एक वृक्ष 2. घोड़े का कान,—**कुटी** घुड़साल,—**कुशल**, —**कोविद** (वि०) घोड़ों को सधाने में चतुर,—**खरजः** खच्चर,—**खुरः** घोड़े का सुम,—**गोष्ठम्** घुड़साल, अस्तबल,—**घासः** घोड़े की चरागाह,—**चलनशाला** घोड़ों को घुमाने का स्थान,—**चिकित्सकः**,—**वैद्यः** शालिहोत्री, पशुओं का डाक्टर,—**चिकित्सा** घोड़े की चिकित्सा, पशुचिकित्साविज्ञान,—**जघनः** नराश्व (जिसका शरीर घोड़े का, तथा गर्दन मनुष्य की होती है),—**दूतः** घुड़सवार दूत,—**नायः** घोड़ों को चराने वाला, घोड़ों का समूह,—**निबन्धिकः** घोड़ों का साइस, घोड़ों को बांधने वाला,—**पः** साइस,—**पालः**,—**पालकः**,—**रक्षः** घोड़ों का साइस,—**बंधः** साइस,—**भा** बिजली,—**महिषिका** भैंसे और घोड़े के बीच रहने वाली स्वाभाविक शत्रुता, —**मुख** (वि०) जिसका मुंह घोड़े जैसा है (—**खः**) घोड़े के मुंह वाला पशु, किन्नर, देवदूत (—**खी**) किन्नर स्त्री,-भिन्दन्ति मन्दां गतिमश्वमुख्यः-कु० १।११, —**मेधः** एक यज्ञ जिसमें घोड़े की बलि चढ़ाई जाती है—यथाश्वमेधः क्रतुराट् सर्वपापापनोदनः—मनु० ११।२६१.—**मेधिक**,—**मेधीय** (वि०) अश्वमेध के उपयुक्त या अश्वमेध से संबंध रखने वाला (—**कः**—**यः**) अश्वमेध के उपयुक्त घोड़ा,—**युज्** (वि०) जिसमें घोड़े जुते हुए हों (जैसे कि घोड़ागाड़ी), (स्त्री०) 1. एक नक्षत्रपुञ्ज,अश्विनी नक्षत्र 2. मेष राशि 3. आश्विनमास,—**रक्षः** अश्वारोही या घोड़े का रखवाला, साइस,—**रथः** घोड़ागाड़ी (—**था**) गंधमादन पर्वत के निकट बहने वाली एक नदी,—**रत्नम्**,—**राजः** बढ़िया घोड़ा, या घोड़ों का स्वामी—अर्थात् उच्चैःश्रवाः,—**लाला** एक प्रकार का सांप,—**वक्त्र**=अश्वमुख, दे० किन्नर और गंधर्व,—**वडवम्** सांड घोड़ों की जोड़ी,—**वहः** अश्वारोही,—**वारः**,—**वारकः** अश्वारोही, साइस,—**वाहः**,—**वाहकः** घुड़सवार,—**विद्** (वि०) 1. घोड़ों को सधाने में कुशल 2. घोड़ों का दलाल (पुं०) 1. पेशेवर घुड़सवार 2. नल का विशेषण, —**वृषः** बीजाश्व, सांडघोड़ा,—**वैद्यः** घोड़ों का चिकित्सक,—**शाला** अस्तबल,—**शावः** बछेरा, बछेरी, —**शास्त्रम्** शालिहोत्र, पशु चिकित्सा-विज्ञान की पाठ्यपुस्तक,—**शृगालिका** घोड़े और गीदड़ की स्वाभाविक शत्रुता,—**सादः**,—**सादिन्** (पुं०) घुड़सवार, अश्वारोही अश्वसैनिक रघु० ७।४७,—**सारथ्यम्** कोचवानी, सारथिपना, घोड़ों और रथों का प्रबंध—सूतानामश्वसारथ्यम्—मनु० १०।४७,—**स्थान** (वि०) अस्तबल में उत्पन्न (—**नम्**) घुड़साल, तबेला,—**हारकः** घुड़चोर, घोड़ों को चुराने वाला,—**हृदयम्** 1. घोड़े की इच्छा 2. अश्वारोहिता।

अश्वक (वि०) [अश्व+कन्] घोड़े जैसा—**कः** 1. छोटा घोड़ा, 2. भाड़े का टट्टू 3. सामान्य घोड़ा।

अश्वकिनी [अश्वस्य कं मुखं तत्सदृशाकारोऽस्त्यस्य इनि ङीप्—तारा०] अश्विनी नक्षत्र।

अश्वतरः (स्त्री०—री) [अश्व+ष्टरच्] खच्चर।

अश्वत्थः [न श्वदिचरं शाल्मलीवृक्षादिवत् तिष्ठति—स्था +क पृषो० तारा०] पीपल का पेड़,—ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनः—कठ०, भग० १५।१।

अश्वत्थामन् (पुं०) [अश्वस्येव स्थाम बलमस्य, पृषो० तु० महा०—अश्वस्येवास्य यत्स्थाम नदतः प्रदिशोगतम्, अश्वत्थामैव बालोऽयं तस्मान्नाम्ना भविष्यति] द्रोण और कृपी का पुत्र, कुरुराज दुर्योधन की ओर से लड़ने वाला ब्राह्मण योद्धा व सेनापति (यह अत्यन्त शूरवीर, प्रचण्डक्रोधी, युवक योद्धा था, इसका ब्रह्मतेज कर्ण के साथ वाग्युद्ध में प्रकट हुआ, जब कि द्रोणाचार्य के पश्चात् कर्ण को सेनापतित्व दिया गया—दे० वेणी० तृतीय अंक, यह सात चिरंजीवियों में से एक है)।

अश्वस्तन,—स्तनिक (वि०) [न श्वो भवः इति—श्वस्+ट्युल् तुट् च, न० त०] [श्वस्तन+ठन् च न० त०] 1, जो आगामी कल का न हो, आज का 2 जो आगामी कल का प्रबंध नहीं रखता है मनु० ४।७,।

अश्विक (वि०) [अश्व+ठन्] जो घोड़ों से खींचा जाय।

अश्विन् (पुं०) [अश्व+इन्] 1. अश्वारोही, घोड़ों को सधाने वाला—नौ (द्वि० व०) देवताओं के दो वैद्य जो कि सूर्य के द्वारा घोड़ी के रूप में एक अप्सरा से जुड़वें पैदा हुए थे।

अश्विनी [अश्व+इनि+ङीप्] 1. २७ नक्षत्रों में सबसे पहला नक्षत्र (जिसमें तीन तारे होते हैं), 2. एक अप्सरा जो बाद में अश्विनीकुमारों की माता मानी जाने लगी, सूर्य पत्नी जो कि घोड़ी के रूप में छिपी हुई थी। सम०—**कुमारौ,—पुत्रौ—सुतौ** सूर्यकी पत्नी अश्विनी के यमज पुत्र।

अश्वीय (वि०) [अश्व+छ] घोड़ों से संबंध रखनेवाला घोड़ों का प्रिय,—**यम्** घोड़ों का समूह, अश्वारोही सेना—शि० १८।५।

अषडक्षीण (वि०) [न सन्ति षडक्षीणि यत्र—न० ब०, ततः—ख] जो छः आँखों से न देखा जा सके, जो केवल दो व्यक्तियों के द्वारा निश्चित या निर्णीत किया जाय,—**णम्** रहस्य।

अषाढः [अषाढया युक्ता पौर्णमासी आषाढी सा अस्ति यत्र मासे अण् वा ह्रस्वः] अषाढ़ का महीना (प्रायः 'आषाढ़' लिखा जाता है)।

अष्टक वि० [अष्टन्+कन्] आठ भागों वाला, आठ तह वाला,—**कः** जो पाणिनि निर्मित आठों अध्यायों का जानकार है, या उनका अध्ययन करता है,—**का** पूर्णिमा के पश्चात् सप्तमी से आरंभ करके आने वाले तीन (सप्तमी, अष्टमी और नवमी) दिन 2. उन तीन महीनों की अष्टमियां, जबकि पितरों का तर्पण होता है, 3. उपर्युक्त दिनों में किया जाने वाला श्राद्ध-अनुष्ठान,—**कम्** 1. आठ अवयवों की बनी कोई समूची वस्तु 2. पाणिनिसूत्रों के आठ अध्याय 3. ऋग्वेद का एक खंड (ऋग्वेद ८ अष्टक या दस मंडलों में विभक्त है) 4. आठ वस्तुओं का समूह—यथा वानराष्टकम्, ताराष्टकम्, गंगाष्टकम् आदि 5. आठ की संख्या। सम०—**अंगः,** —**गम्** एक प्रकार का फलक या कपड़ा जिस पर आठ खाने बने होते हैं और जो पाँसा खेलने के काम आता है।

अष्टन् (सं० वि०) [अश्+कनिन्, तुट् च] (कर्तृ०, कर्म०—**अष्ट—ष्टौ**) आठ, कुछ संज्ञाओं तथा संख्यावाचक शब्दों से मिलकर इसका रूप समास में 'अष्टा' रह जाता है, उदा० अष्टादशन्, अष्टाविंशतिः, अष्टापद आदि। सम०—**अंग** वि० जिसके आठ खंड या अवयव हों —**गम्** 1. शरीर के आठ अंग जिनसे अति नम्र अभिवादन किया जाता है, °**पातः,—प्रणामः साष्टाङ्गनमस्कारः** शरीर के आठों अंगों से किया जाने वाला नम्र अभिवादन—जानुभ्यां च तथा पद्भ्यां पाणिभ्यामुरसा धिया, शिरसा वचसा दृष्ट्या प्रणामोऽष्टाङ्ग ईरितः॥ 2. योगाभ्यास अर्थात् मन की एकाग्रता के आठ भाग 3. पूजा की सामग्री, °**अर्घ्यम्** आठ वस्तुओं का उपहार, °**धूपः** आठ औषधियों से बनी एक प्रकार की ज्वर उतारने वाली धूप, °**मैथुनम्** आठ प्रकार का संभोग-रस, प्रणय की प्रगति में आठ अवस्थाएँ—स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्, संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्पत्तिरेव च।,—**अध्यायी** पाणिनि मुनि का बनाया व्याकरणग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं,—**अस्रम्** अष्टकोण,—**अस्रिय** अष्टकोणीय —**अह(न्)** (वि०) आठ दिन तक होने वाला, —**कर्ण** (वि०) आठ कानों वाला, (—**र्णः**) ब्रह्मा की उपाधि,—**कर्मन्** (पुं०),—**गतिकः** राजा जिसने अपने आठ कर्तव्य पूरे करने हैं (आठ कर्तव्य—आदाने च विसर्गे च तथा प्रैषनिषेधयोः, पंचमे चार्थवचने व्यवहारस्य चेक्षणे, दंडशुद्धयोः सदा रक्तस्तेनाष्टगतिको नृपः।—**कृत्वस्** (अव्य०) आठ बार,—**कोणः** आठ कोण वाला, अठपहल,—**गवम्** आठ गौओं का लहँडा; —**गुण** (वि०) आठ तह वाला,—दाप्योऽष्टगुणमत्ययम् मनु० ८।४००, (—**णम्**) वह आठ गुण जो ब्राह्मण में अवश्य पाये जाने चाहिए—दया सर्वभूतेषु, क्षांतिः, अनसूया, शौचम्, अनायासः, मंगलम्, अकार्पण्यम्, अस्पृहा चेति—गौ०। °**आश्रय** (वि०) इन आठ गुणों से युक्त,—**ष्ट** (**ष्टा**) **चत्वारिंशत्** (वि०) अड़तालीस, **तय** (वि०) आठ तहों वाला,—**त्रिंशत्**, (—**ष्टा**) (वि०) अड़तीस,—**त्रिकम्** चौबीस, —**दलम्** 1. आठपंखड़ियों वाला कमल, 2. अठकोन, —**दशन्** (°**ष्टा**°) नीचे दे०,—**दिश्** (स्त्री०) आठ

दिग्बिन्दु—पूर्वाग्नेयी दक्षिणा च नैर्ऋती पश्चिमा तथा, वायवी चोत्तरैशानी दिशा अष्टाविमाः स्मृताः। °करिण्यः आठ दिग्बिन्दुओं पर स्थित आठ हथिनियाँ, °पालाः आठों दिशाओं के आठ दिशापाल "इन्द्रो वह्निः पितृपतिः (यमः) नैर्ऋतो वरुणो मरुत् (वायुः), कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्—अमर०, °गजाः आठों दिशाओं की रक्षा करने वाले आठ हाथी—ऐरावतः पुंडरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः, पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः—अमर०, °धातुः आठ धातुओं का समुदाय—स्वर्णं रूप्यं च ताम्रं च रङ्गं यशदमेव च, शीसं लौहं रसश्चेति धातवोऽष्टौ प्रकीर्तिताः।—पद,—द् (°ष्ट या °ष्टा) वि० 1. आठ पैरों वाला, 2. कथा में वर्णित शरभ नाम का जन्तु, 3. सिटकिनी 4. कैलास पर्वत (—दः, —दम्) 1. सोना—आवर्जिताष्टापदकुंभतोयैः—कु० ७।१०, शि० ३।२८, 2. पासा खेलने के लिए बिसात या एक फलक, फट्टा,—पत्रम् सोने की पट्टी, —मङ्गलः एक घोड़ा जिसका मुंह, पूंछ, अयाल, छाती तथा सुम सफेद हों (—लम्) आठ सौभाग्यसूचक वस्तुओं का संग्रह, कुछ के मतानुसार वे ये हैं:—मृगराजो वृषो नागः कलशो व्यजनं तथा, वैजयन्ती तथा भेरी दीप इत्यष्टमङ्गलम्। दूसरों के मतानुसार—लोकेऽस्मिन्मङ्गलान्यष्टौ ब्राह्मणो गौर्हुताशनः, हिरण्यं सर्पिरादित्य आपो राजा तथाष्टमः।—मानम् एक 'कुडव' नामक माप,—मासिक (वि०) आठ महीनों में एक बार होने वाला,—मूर्तिः अष्टरूप, शिव का विशेषण—आठ रूप हैं—पांच तत्त्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश), सूर्य, चन्द्रमा, तथा यज्ञ करने वाला पुरोहित—तु०, श० १।१, या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री, ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्। यामाहुः सर्वभूतप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः, प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः॥ या संस्कृत में संक्षेप से कहे गये निम्नांकित क्रमानुसार नामः—जलं वह्निस्तथा यष्टा सूर्याचंद्रमसौ तथा, आकाश वायुरवनी मूर्तयोऽष्टौ पिनाकिनः। °धरः आठ रूपों वाला, शिव,—रत्नम् समष्टि रूप से ग्रहण किये गये आठ रत्न,—रसाः नाटकों में प्रयुक्त आठ रस—शृंगारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः, बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः। काव्य० ४, (इनमें नवां रस 'शान्त' भी जोड़ दिया जाता है:—निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः—तु०) °आश्रय (वि०) आठ रसों से सम्पन्न, या आठ रसों को प्रदर्शित करने वाला—विक्रम० २।१८,—विध (वि०) आठ तह वाला, या आठ प्रकार का,—विंशतिः (स्त्री०) (°ष्टा°) अठाईस,—श्रवणः,—श्रवस् ब्रह्मा, (आठ कान या चार सिर रखने वाला)।

अष्टतय (वि०) [अष्टन्+तयप्] आठ खंड या आठ अंगों वाला—यम् सब मिलाकर आठ वाला।

अष्टधा (अव्य०) [अष्टन्+धा] 1. आठ तह वाला, आठ बार 2. आठ भागों या अनुभागों में—भिन्ना प्रकृतिरष्टधा भ० ७।४, भिन्नोऽष्टधा विप्रससार वंशः—रघु० १६।३।

अष्टम (वि०) [स्त्री० मी] [अष्टन्+डट् मट् च] आठवां,—मः आठवां भाग,—मी चांद्रमास के दोनों पक्षों का आठवां दिन। सम०—अंशः आठवां भाग,—कालिक (वि०) जो व्यक्ति सात समय (पूरे तीन दिन तथा चौथे दिन का प्रातःकाल) भोजन न करके आठवें समय पर ही भोजन ग्रहण करता है—मनु० ६।१९।

अष्टमक (वि०) [अष्टम+कन्] आठवाँ,—योंशमष्टकं हरेत्—याज्ञ० २।२४४।

अष्टमिका [अष्टमी+कन् ह्रस्वः, टाप्] चार तोले का वजन।

अष्टादशन् (वि०) [अष्ट च दश च] अठारह। सम० —उपपुराणम् गौण या छोटे पुराण, अष्टान्युपपुराणानि मुनिभिः कथितानि तु, आद्यं सनत्कुमारोक्तं नारसिंहमतः परम्, तृतीयं नारदं प्रोक्तं कुमारेण तु भाषितम्, चतुर्थं शिवधर्माख्यं साक्षान्नन्दीशभाषितम्, दुर्वाससोक्तमाश्चर्यं नारदोक्तमतः परम्, कापिलं मानवं चैव तथैवोशनसेरितम्, ब्रह्माण्डं वारुणं चाथ कालिकाह्वयमेव च, माहेश्वरं तथा साम्ब सौरं सर्वार्थसञ्चयम्, पराशरोक्तं प्रवरं तथा भागवतद्वयम्। इदमष्टादशं प्रोक्तं पुराणं कौर्मसंज्ञितम्, चतुर्धा संस्थितं पुण्यं संहितानां प्रभेदतः—हेमाद्रि।—पुराणम् अठारह पुराण, —ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा, तथान्यन्नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम्, आग्नेयमष्टकं प्रोक्तं भविष्यन्नवमं तथा, दशमं ब्रह्मवैवर्तं लिङ्गमेकादशं तथा, वाराहं द्वादशं प्रोक्तं स्कान्दं चात्र त्रयोदशम्, चतुर्दशं वामनं च कौर्मं पंचदशं तथा, मत्स्यं च गारुडं चैव ब्रह्मांडाष्टादशं तथा।—विवादपदम् मुकदमेबाजी के अठारह विषय (झगड़े के कारण)—दे० मनु० ८।४-७।

अष्टिः (स्त्री०) [अस्+क्तिन् पृषो० षत्वम्] 1. खेल का पासा 2. सोलह की संख्या 3. बीज 4. गुठली।

अष्ठीला [अष्ठिस्तत्तुल्यकठिनाश्मानं राति—रा+क रस्य लः दीर्घः—तारा०] 1. गोल मटोल शरीर, 2. गोल कंकरी या पत्थर 3. गिरी, गुठली 4. बीज का अनाज।

अस् 1. (अदा० पर०) [अस्ति, आसीत्, अस्तु, स्यात्—आर्धधातुक लकारों में सदोष रूपरचना—अर्थात् भू

धातु से] 1. होना, रहना, विद्यमान होना (केवल सत्ता)— नासदासीन्नो सदासीत्—ऋग्० १०।१२९, —नत्वेवाहं जातु नासम्—भग० २।१२, आसीद्राजा नलो नाम—नल० १।१, 2. होना (अपूर्ण विधेयक की क्रिया या विधेयक शब्द के रूप में प्रयुक्त, बाद में संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण या और कोई समानार्थक शब्द आता है) धार्मिके सति राजनि—मनु० ११।११, आचार्ये संस्थिते सति—५।८०, 3. संबंध रखना, अधिकार में करना (अधिकर्ता में संब०)—यन्ममास्ति हरस्व तत्—पंच० ४।७६, यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा—५।७०, 4. भागी होना—तस्य प्रेत्य फलं नास्ति मनु० ३।१३९ 5. उदय होना, घटित होना—आसीच्च मम मनसि—का० १४२, 6. होना 7. नेतृत्व करना, हो जाना, प्रमाणित होना (संप्र० के साथ) स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः—विक्रम० १।१, 8. पर्याप्त होना (संप्र० के साथ) सा तेषां पावनाय स्यात्—मनु० ११।८६, अन्यैर्नृपालैः परिदीयमानं शाकाय वा स्यात् लवणाय वा स्यात्—जगन्नाथ, 9. ठहरना, बसना, रहना, बसना, आवास करना,—हा पितः क्वासि हे सुभ्रु—भट्टि० ६।११, 10. विशेष संबंध रखना, प्रभावित होना (अधि० के साथ)—किं नु खलु यथा वयमस्यामेवमियमप्यस्मान् प्रति स्यात्—श० १, अस्तु—अच्छा, होने दो, एवमस्तु, तथास्तु—ऐसा ही होवे, स्वस्ति, अव्युक्त पूर्ण भूतकालिक क्रिया का रूप बनाने के लिए धातु से पूर्व जोड़ा जाने वाला "आस" कई बार धातु से पृथक् करके लिखा जाता है—तं पातयां प्रथममास पपात पश्चात्—रघु० ९।६१, १६।८६, अति—समाप्त होना, श्रेष्ठ होना, बढ़ चढ़ कर होना, अभि—संबंध रखना, अपने भाग का हिस्सेदार बनना—यन्ममाभिष्यात्—सिद्धा०, आविस्—निकलना, उभरना, दिखाई देना—आचार्यकं विजयि मान्मथमाविरासीत्—मा० १।२६, प्रादुस्—प्रकट होना, ऊपर को उभरना,—प्रादुरासीत्तमोनुदः—मनु० १।६, रघु० ११।१५, व्यति (आ० व्यतिहे, व्यतिसे, व्यतिस्ते) बढ़ जाना, बढ चढ़ कर होना, श्रेष्ठ या बढ़िया होना, मात कर देना—अन्यो व्यतिस्ते तु ममापि धर्मः—भट्टि० २।३५।

अस् (दिवा० पर०) [अस्यति, अस्त] 1. फेंकना, छोड़ना, जोर से फेंकना, (बन्दूक) दागना, निशाना लगाना, ('निशाना' में अधि०) तस्मिन्नास्थदिषीकास्त्रम्—रघु० १२।२३, भट्टि १५।९१, 2. फेंकना, ले जाना, जाने देना, छोड़ना, छोड़ देना, जैसा कि 'अस्तमान' 'अस्तशोक' और 'अस्तकोप' में, दे० अस्त; अति—, निशाने से परे (तीर गोली आदि) फेंकना, हावी होना; अत्यस्त दूर परे निशाना लगाकर, बढ़ चढ़ कर, (द्वि० त० स० में जुड़ कर,) अधि—, 1. एक के ऊपर दूसरी वस्तु रखना 2. जोड़ना, 3. एक वस्तु की प्रकृति को दूसरी में घटाना,—बाह्यधर्मानात्मन्यध्यस्यति—शारी०, अप—1. फेंक देना, दूर करना, छोड़ना, त्याग देना, रद्दी में डालना, अस्वीकार करना—किमित्यपास्याभरणानि यौवने—कु० ५।४४, सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु—पंच० १, शि० १।५५, संगरमपास्य- वेणी० ३।४, इत्यादीनां काव्यलक्षणत्वमपास्तम् स० द०, अस्वीकृत, निराकृत 2. हांक कर दूर कर देना, तितर बितर करना, अभि—, 1. अभ्यास करना, मश्क करना—अभ्यस्यतीव व्रतमासिधारम्—रघु० १३।६७, मा० ९।३२ 2. किसी कार्य को बार-बार करना, दोहराना—मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु—श० २।६, कु० २।५०, 3. अध्ययन करना, सस्वर पढ़ना, पढ़ना—वेदमेव सदाऽभ्यस्येत् मनु० २।१६६, ४।१४७, उद्—, 1. उठाना, ऊपर करना, सीधा करना—पुच्छमुदस्यति सिद्धा०, 2. मुड़ जाना, 3. निकाल देना, बाहर कर देना, उपनि—1. निकट रखना, धरोहर रखना 2. कहना, संकेत करना सुझाव देना, प्रस्तुत करना—किमिदमुपन्यस्तम्—श० ५, सदुपन्यस्यति कृत्यवर्त्म यः—कि० २।३, 3. सिद्ध करना, 4. किसी की देख रेख में देना, सुपुर्द करना 5. सविवरण वर्णन करना, नि—1. उपक्रम करना, रखना, नीचे फेंकना—शिखरिषु पदं न्यस्य मेघ० १३; दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं—मनु० ६।४६, 2. एक ओर रखना, छोड़ना, त्यागना, परित्याग करना, तिलांजलि देना—स न्यस्तचिह्नामपि राजलक्ष्मीं—रघु० २।७, न्यस्तशस्त्रस्य—वेणी० ३।१८, इसी प्रकार—प्राणान् न्यस्यति—3. अन्दर रखना, किसी वस्तु पर रखना (अधि० के साथ)—शिरस्याज्ञा न्यस्ता—अमरु ८२, चित्रन्यस्त - चित्र में उतारा हुआ—विक्रम० १।४, स्तनन्यस्तोशीरम्—श० ३।९, लगाया हुआ—अयोग्ये न मद्विधो न्यस्यति भारमग्र्यम्—भट्टि० १।२२, मेघ० ५९, 4. सौंपना, हवाले करना, देखरेख में रखना—अहमपि तव सूनौ न्यस्तराज्यः—विक्रम० ५।१७, भ्रातरि न्यस्य मां—भट्टि० ५।८२, 5. देना, प्रदान करना, वितरण करना—रामे श्रीर्न्यस्यतामिति—रघु० १२।२, 6. कहना, सामने रखना, प्रस्तुत करना—अर्थान्तरं न्यस्यति—मल्लि० शि० १।१७ पर, निस्—1. निकाल फेंकना, फेंक देना, छोड़ना, छोड़ देना, वापिस मोड़ देना,—निरस्तगाम्भीर्यमपास्तपुष्पकम्—शि० १।५५, ९।६३ 2. नष्ट करना, दूर करना, हराना, मारना, मिटाना—अह्नाय तावदरुणेन तमो निरस्तम्—रघु० ५।७१, रक्षांसि वेदीं परितो निरास्थत्

—भट्टि० १।१२, २।३६, 3. निकालना, निष्कासन, निर्वासित करना—गृहान्निरस्ता न तेन वैदेहसुता मनस्तः—रघु० १४।८४, 4. बाहर फेंकना, (तीर) छोड़ना 5. अस्वीकार करना, (सम्मति आदि का) निराकरण करना 6. ग्रहण लगना, छिप जाना, पृष्ठभूमि में गिर पड़ना—भट्टि० १।३, परा—, छोड़ना, त्यागना, त्याग देना,—छोड़ देना—परास्त-वसुधा सुधाधिवसति—कि० ५।२७, 2. निकाल देना 3. अस्वीकार करना, निराकरण करना, प्रत्याख्यान करना—इति यदुक्तं तदपि परास्तम्—सा० द० १, परि— 1. चारों ओर फेंकना, सब ओर फैलाना, प्रसार करना 2. फैला देना, घेरना—ताम्रोष्ठपर्यस्त-रुचः स्मितस्य—कु० १।४४, 3. मोड़ लेना—पर्यस्त विलोचनेन—कु० ३।६८, 4. (आँसू) गिराना, नीचे फेंकना—रघु० १०।७६, मनु० ११।१८३ 5. उलट देना, पलट देना, 6. बाहर फेंकना—रघु० १३।१३, ५।४९ परिनि—, फैलाना, बिछाना, पर्युद्—, 1. अस्वीकार करना, निकाल देना 2. निषेध करना, आक्षेप करना, प्र—, फेंकना, फेंक देना, उछाल देना, वि—, उछालना, बखेरना, अलग-अलग फेंकना, फाड़ देना, नष्ट करना —भट्टि० ८।११६, ९।३१, 2. खंडों में विभक्त करना, पृथक् करना, क्रम से रखना—स्वयं वेदान् व्यस्यन्—पंच० ४।५०, विव्यास वेदान् यस्मात्स तस्माद् व्यास इति स्मृतः,—महा०, रघु० १०।८५, 3. अलग-अलग लेना, एक-एक करके लेना—तदस्ति किं व्यस्तमपि त्रिलोचने—कु०५।७२, 4. उलट देना, पलट देना 5. निकाल देना, हटा देना—विनि—, 1. रखना, जमा करना, रख देना—विन्यस्यन्ती भुवि गणनया देहलीदत्तपुष्पैः—मेघ० ८८, भट्टि० ३।३, 2. जमा देना, किसी की ओर निर्देश करना —रामे विन्यस्तमानसाः—रामा०, 3. सौंपना, दे देना, सुपुर्द कर देना, किसी के जिम्मे कर देना,—सुत-विन्यस्तपत्नीकः—याज्ञ० ३।४५, 4. क्रम में रखना, सँवारना, विपरि—, 1. उलट देना, पलट देना, औंधा कर देना, 2. बदलना, परिवर्तन करना—उत्तर० १, 3. भ्रमग्रस्त होना, गलत समझना,—प्रतीकारो व्याधेः सुखमिति विपर्यस्यति जनः—भर्तृ० ३।९२, 4. परि-वर्तित होना (अक०) सम्— 1. मिलना, एकत्र करना, मिलाना, जोड़ देना—मनु० ३।८५, ७।५७, 2. समास में जोड़ देना, समासकरना 3. सामुदायिक रूप से ग्रहण करना—समस्तैरथवा पृथक्—मनु० ७।१९८, संयुक्त रूप से या अलग अलग, संनि—, 1. रखना, सामने लाना, जमा करना, 2. एक ओर रखना, छोड़ना, त्यागना, छोड़ देना—संन्यस्तशस्त्रः—रघु० २।५९, संन्यस्ताभरणं गात्रम्—मेघ० ९३, कु० ७।६७, 3. दे देना, सौंपना, सुपुर्द करना, हवाले करना—भग० ३।३०, 4. (अक० के रूप में प्रयुक्त) संसार को त्यागना, सांसारिक बंधन तथा सब प्रकार की आस-क्तियों को त्याग कर विरक्त हो जाना—संदृश्य क्षण-भङ्गुरं तदखिलं धन्यस्तु संन्यस्यति - भर्तृ० ३।१३२, ।

अस् (भ्वा० उभ०) [असति—ते, असित] 1. जाना, 2. लेना, ग्रहण करना, पकड़ना 3. चमकना (इस अर्थ को दर्शाने के लिए प्रायः निम्नांकित उदाहरण दिये जाते हैं—निष्प्रभश्च प्रभुरास भभृताम्—रघु० ११। ८१, तेनास लोकः पितृमान् विनेत्रा—१४।२३, लाव-ण्य उत्पाद्य इवास यत्नः—कु० १।३५, वामन ने यहाँ 'दिदीपे' (चमका) अर्थ को माना है—चाहे यह दुरूह ही है; उपर्युक्त उदाहरणों में 'आस' को 'बभूव' का समानार्थक मान लेना अधिक उपयुक्त है—चाहे इसे शाकटायन की भांति—तिङन्तप्रति-रूपकमव्ययम्—अव्यय मानें, या वल्लभ की भांति इसे व्याकरणविरुद्ध प्रामादिक प्रयोग—दे० मल्लि० कु० १।३५ पर)।

असंयत (वि०) [न० त०] 1. संयमरहित, अनियंत्रित 2. बंधनहीन, जैसे—असंयतोऽपि मोक्षार्थी—में।

असंयमः [न० त०] संयम हीनता, नियन्त्रण का अभाव, विशेषतः ज्ञानेन्द्रियों के ऊपर।

असंव्यवहित (वि०) [न० त०] व्यवधान रहित, अवकाश रहित (समय और काल का)।

असंशय (वि०) [न० ब०] संदेह से मुक्त, निश्चयवान् —यम् (अव्य०) निस्सन्देह, असन्दिग्धरूप से, निश्चय ही,—असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा—श० १।२२।

असंश्रव (वि०) [न० ब०] जो सुनने से बाहर हो, जो सुनाई न दे, असंश्रवे—सुनने के क्षेत्र से बाहर—मेघ० २।२०३।

असंसृष्ट (वि०) [न० त०] 1. अमिश्रित, अयुक्त 2. जो सबके साथ मिल कर न रहता हो, संपत्ति का बँटवारा होने के पश्चात् जो फिर न मिला हो (उत्तराधिकारी के रूप में)।

असंस्कृत (वि०) [न० त०] 1. संस्कारहीन, अपरिष्कृत, अपरिमार्जित 2. जो सँवारा न गया हो, सजाया न गया हो 3. जिसका कोई शोधनात्मक या परिष्कारा-त्मक संस्कार न हुआ हो,—तः व्याकरणविरुद्ध, अपशब्द।

असंस्तुत (वि०) [न० त०] 1. अज्ञात, अनजाना, अपरि-चित—असंस्तुत इव परित्यक्तो बांधवो जनः—का० १७३, कि० ३।२, 2. असाधारण, विचित्र 3. सामंजस्य रहित—धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः—श० १।३४।

असंस्थानम् [न० त०] 1. संसक्ति का अभाव 2. अव्य-वस्था, गड़बड़ 3. कमी, दरिद्रता।

असंस्थित (वि०) [न० त०] 1. अव्यवस्थित, क्रमरहित 2. असंगृहीत ।

असंस्थितिः (स्त्री०) [न० त०] 1. अव्यवस्था, गड़बड़ ।

असंहत (वि०) [न० त०] 1. न जुड़ा हुआ, असंयुक्त, बिखरा हुआ, 2. —तः पुरुष या आत्मा (सां०द० में) ।

असकृत् (अव्य०) [न० त०] एक बार नहीं, बार-बार, बहुधा—असकृदेकरथेन तरस्विना—रघु० ९।२३, मेघ० ९२, ९३, । सम०—**समाधिः**—बारंबार चिंतन, मनन,—**गर्भवासः** बारंबार जन्म ।

असक्त (वि०) [न० त०] 1. अनासक्त, बेलगाव, उदासीन—असक्तः सुखमन्वभूत्—रघु० १।२१, 2. न फँसा हुआ—श० २।१२, 3. सांसारिक भावनाओं तथा संबंधों के प्रति अनासक्त,—**क्तम्** (अव्य०) 1. अनासक्तिपूर्वक, 2. अनवरत, बिना रुके ।

असक्थ (वि०) [न० ब०] जंघारहित ।

असखिः [न० त०] शत्रु, विरोधी ।

असगोत्र(वि०)[न०त०]जो एक ही गोत्र या कुलका न हो।

असङ्कुल (वि०) [न०त०] जहाँ भीड़-भड़क्का न हो, खुला हुआ, चौड़ा (जैसे कि सड़क)—लः चौड़ी सड़क ।

असङ्ख्य (वि०) [न० ब०] गिनती से परे, गणनारहित, अनगिनत, मनु० १।८०, १२।१५, °ता—त्वम् अनंतता ।

असङ्ख्यात (वि०) [न० त०] गणनारहित, अनगिनत ।

असङ्ख्येय (वि०) [न० त०] अनगिनत,—यः शिव की उपाधि ।

असङ्ग (वि०) [न० ब०] 1. अनासक्त, सांसारिक बंधनों से मुक्त 2. बाधारहित, निर्बाध, अकुण्ठित 3. असंयुक्त अकेला, निर्लिप्त,—गः [न० त०] 1. अनासक्ति—मनु० ६।७५, 2. पुरुष या आत्मा (सां० द०) ।

असङ्गत(वि०)[न०त०]1. न जुड़ा हुआ, न मिला हुआ 2. अनुचित, बेमेल 3. उजड्ड, अशिष्ट, अपरिष्कृत ।

असङ्गतिः (स्त्री०) [न०त०] 1. मेल का न होना 2. असंबद्धता, अनौचित्य 3. (सा० शा०) एक अलंकार जिसमें कार्य और कारण की स्थानीय अनुकूलता न पाई जाय—जहाँ कारण और कार्य के प्रतीयमान संबंध का उल्लंघन हो ।

असङ्गम (वि०) [न० ब०] न मिला हुआ,—मः 1. वियोग, अलगाव 2. असंबद्धता ।

असङ्गिन् (वि०) [न० त०] 1. न मिला हुआ, असंबद्ध 2. सांसारिक विषयों में अनासक्त ।

असंज्ञ (वि०) [न० ब०] संज्ञाहीन,—ज्ञा वियोग, असहमति, असामंजस्य ।

असत् (वि०) [न० त०] 1. अविद्यमान, जिसका अस्तित्व न हो—असति त्वयि—कु० ४।१२, मनु० ९।१५४, 2. सत्ताहीन, अवास्तविक,—आत्मनां ब्रह्मणाऽभेदमसन्तं कः करिष्यति 3. बुरा (विप० सत्) सदसद्व्यक्तिहेतवः—रघु० १।१०, 4. दुष्ट, पापी, निंद्य जैसे विचार 5. अव्यक्त 6. गलत, अनुचित, मिथ्या, असत्य—इति यदुक्तं तदसत् (प्रायः विवादास्पद रचनाओं में प्रयुक्त)—(पुं०—न्) इन्द्र, (नपुं०—त्) 1. अनस्तित्व, असत्ता 2. झूठ, मिथ्यात्व—ती दुश्चरित्रा स्त्री—असती भवति सलज्जा—पंच० १।४१८ । सम०—**अध्येतृ** (पुं०) वह ब्राह्मण जो पाखंडयुक्त रचनाओं को पढ़ता है, जो अपनी वेदशाखा की उपेक्षा करके दूसरी शाखा का अध्ययन करता है शाखारंड कहलाता है—स्वशाखां यः परित्यज्य अन्यत्र कुरुते श्रमम्, शाखारंडः स विज्ञेयो वर्जयेत्तं क्रियासु च । —**आगमः** 1. धर्मविरुद्ध शास्त्र या सिद्धांत 2. अनुचित साधनों से (धन की) प्राप्ति 3. बुरा साधन—**आचार** (वि०) दुराचारी, बुरा आचरण करने वाला, दुष्ट (—रः) अशिष्ट-आचरण, —**कर्मन्**,—**क्रिया** 1. बुरा काम 2. बुरा व्यवहार, —**कल्पना** 1. गलत कार्य, 2. मिथ्या प्रपंच,—**ग्र(ग्रा)हः** 1. बुरा दाँव 2. बुरी राय, पक्षपात 3. बच्चों जैसी इच्छा,—**चेष्टितम्** क्षति, आघात—प्राणिष्वसच्चेष्टितम्—श० ५।६,—**दृश्** (वि०) बुरी दृष्टि वाला —**पथः** 1. बुरा मार्ग 2. अनिष्ट-आचरण या सिद्धांत; —नाशो हन्त सतामसत्पथजुषामायुः समानां शतम्—भा० ४।३६,—**परिग्रहः** बुरे मार्ग को ग्रहण करना,—**प्रतिग्रहः** 1. बुरी वस्तुओं का उपहार 2. (तिल आदि) अनुपयुक्त उपहार ग्रहण करना या अनुचित व्यक्तियों से लेना,—**भावः** 1. अनस्तित्व, अभाव 2. बुरी राय या दुर्गति 3. अहितकर स्वभाव,—**वृत्ति**,—व्यवहार (वि०) अनिष्टकर आचरण करने वाला, दुष्ट —**त्तिः**(स्त्री०)) 1. नीच या अपमानजनक पेशा 2. दुष्टता,—**शास्त्रम्** 1. गलत सिद्धांत, 2. धर्मविरुद्ध सिद्धांत,—**संसर्गः** बुरी संगति—**हेतुः** बुरा या आभासी कारण, दे० 'हेत्वाभास' ।

असतायी दुष्टता ।

असत्ता [न० त०] 1. अनस्तित्व, 2. जो सचाई न हो 3. दुष्टता, बुराई ।

असत्त्व (वि०) [न० ब०] 1. शक्तिहीन, सत्तारहित 2. जिसके पास कोई पशु न हो,—**त्वम्** [न० त०] 1. अनस्तित्व, 2. अवास्तविकता, असत्यता ।

असत्य (वि०) [न० त०] 1. झूठ, मिथ्या 2. काल्पनिक, अवास्तविक—त्यः झूठा,—त्यम् मिथ्यात्व, झूठ बोलना, झूठ । सम०—**वादिन्**(वि०)झूठ बोलने वाला,—**संध** (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहने वाला,झूठा, कमीना, धोखेबाज़; °धे जने सखी पदं कारिता—श० ।

असदृश (वि०) [स्त्री०—शी] [न० त०] 1. असमान, बेमेल 2. अयोग्य, अनुपयुक्त, असंबद्ध, °संयोगकारिन्

—का० १२. अयोग्य -मात: किमप्यसदृशं विकृतं वचस्ते —वेणी० ५।३ ।

असद्यस् (अव्य०) [न० त०] तुरन्त नहीं, देरी करके ।

असन् (नपुं०) (केवल 'असृज्' शब्द की रूपरचना में द्वि० वि० ब० के पश्चात् प्रयुक्त) रुधिर ।

असनम् [अस्+ल्युट्] फेंकना, (बन्दूक) दागना, (तीर) चलाना, जैसा कि 'इष्वसन' —धनुष में, —नः पीतसाल नाम का वृक्ष—निरसनैरसनैरवृथार्थता शि० ६·४७ ।

असन्दिग्ध (वि०) [न० त०] 1. जिसमें सन्देह न हो, स्पष्ट, साफ 2. निश्चित, शंकारहित, —ग्धम् (अव्य०) निश्चय ही, निस्संदेह ।

असन्धि (वि०) [न० ब०] 1. जिनका जोड़ न हुआ हो (जैसे कि शब्द), 2. बंधनरहित, अबद्ध, स्वतन्त्र, —धिः संधि का अभाव ।

असन्नद्ध (वि०) [न० त०] 1. जो शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित न हो 2. धूर्त, घमंडी, पंडितंमन्य ।

असन्निकर्षः [न० त०] 1. पदार्थों का दृष्टिगोचर न होना, मन को वस्तुओं का बोध न होना 2. दूरी ।

असन्निवृत्तिः (स्त्री०) [न० त०] वापिस न मुड़ना —असंनिवृत्त्यै तदतीतमेव —श० ६।९, बीत गया सदा के लिए —रघु० ८।४९ ।

असपिण्ड (वि०) [न० त०] जो पिंडदान से संबद्ध न हो, जो रुधिर-संबंध से संयुक्त न हो, जो अपने वंश या कुल का न हो ।

असभ्य (वि०) [न० त०] सभा में बैठने के अयोग्य, गँवार, नीच, अश्लील, अशिष्ट (शब्द) ।

असम (वि०) [न० त०] 1. जो बराबर न हो, विषम (जैसा कि संख्या) 2. असमान (स्थान, संख्या और मर्यादा की दृष्टि से) -असमैः समीयमानः— पंच० १।७४, 3. असदृश, बेजोड़, अनूठा । सम०—**इषुः**, —**बाणः**, —**सायकः** विषम संख्या के तीरों को धारण करने वाला, कामदेव जिसके पांच बाण हैं,—**नयन**, —**नेत्र**, —**लोचन** (वि०) विषम संख्या की आँखों वाला, शिव जिसके तीन आँखें हैं ।

असमञ्जस (वि०) [न० त०] 1. अस्पष्ट, जो बोधगम्य न हो— स्खलदसमञ्जसमुग्धजल्पितं ते— उत्तर० ४।४, मा० १०।२, 2. अयुक्त, अनुचित,—यद्यपि न कापि हानिर्द्राक्षामन्यस्य रासभे चरति, असमंजसमिति मत्वा तथापि तरलायते चेतः—उद्भट० 3. बेतुका, निरर्थक, मूर्खतापूर्ण ।

असमवायिन् (वि०) [न० त०] जो घनिष्ट या अन्तर्हित न हो, आनुषंगिक, विच्छेद्य । सम०—**कारणम्** (तर्कशास्त्र में) आनुषंगिक कारण, अन्तर्हित या घनिष्ट संबन्ध न होना, गुणकर्ममात्रवृत्तिज्ञेयमथाप्यसमवायिहेतुत्वं—भाषा० यथा तंतुयोगः पटस्य ।

असमस्त (वि०) [न० त०] 1. अपूर्ण, आंशिक, अधूरा 2. (व्या० में०) समास से युक्त न हो जिसमें समास न हुआ हो 3. पृथक्, वियुक्त, असंबद्ध (विप० व्यस्त) —**स्तम्** विना समास की रचना (समास के विग्रह को प्रकट करने वाला वाक्य) ।

असमाप्त (वि०) [न० त०] 1. जो अभी पूरा न हुआ हो, अधूरा रहा हुआ, - रघु० ८।७६, कु० ४।१९, 2. जो पूरी तरह ग्रहण न किया गया हो, अपूर्ण ।

असमीक्ष्य (अव्य०) विना भली भांति विचार किये । सम०—**कारिन्** (वि०) विना विचारे काम करने वाला, अविवेकी, असावधान ।

असम्पत्ति (वि०) [न० ब०] दरिद्र, दुःखी—त्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. दुर्भाग्य 2. कार्य का पूरा न होना, असफलता ।

असम्पूर्ण (वि०) [न० त०] 1. जो पूरा न हो, अधूरा 2. जो सारा न हो 3. अपूर्ण, आंशिक—जैसा कि चाँद चन्द्रमसम्पूर्णमण्डलमिदानीम् – मुद्रा० १।६ ।

असम्बद्ध (वि०) [न० त०] 1. जो जुड़ा हुआ न हो, असंगत 2. निरर्थक, बेतुका, अर्थहीन, °आ(प्र)लापिन् निरर्थक बातें करने वाला—असम्बद्धः खल्वसि—मृच्छ० ९, बेहूदा व्यक्ति 3. अनुचित, ग़लत—मनु० १२।६, —**द्धम्** बेतुका वाक्य, निरर्थक या अर्थहीन भाषण जैसे कोई कहे—यावज्जीवमहं मौनी—आदि—दे० 'अवद्ध' भी ।

असम्बन्ध (वि०) [न० ब०] जिसका कोई सम्बन्ध न हो, किसी से संबन्ध न रखने वाला—**धः** [न० त०] संबन्ध का न होना, संबन्ध का अभाव—यद्वा साध्यवदन्यस्मिन्नसंबन्ध उदाहृतः —भाषा० ६८ ।

असम्बाध (वि०) [न० ब०] 1. जो संकीर्ण न हो, विस्तृत 2. जहाँ लोगों की भीड़-भाड़ न हो, अकेला, एकान्त 3. खुला हुआ, सुगम ।

असम्भव (वि०) [न० त०] जो संभव न हो, असंभाव्य —**वः** 1. अनस्तित्व, 2. असंभाव्यता 3. असंभावना ।

असम्भव्य, असम्भाविन् (वि०) [न० त०] 1. अशक्य 2. अबोध्य ।

असम्भावना [न० त०] समझने की कठिनाई या अशक्यता, असंभाव्यता ।

असम्भृत (वि०) [न० त०] जो कृत्रिम उपायों से प्रकाशित न किया गया हो, अकृत्रिम, प्राकृतिक,—असम्भृतं मण्डनमङ्गयष्टेः—कु० १।३१, 2. जो भलीभांति पाला पोसा न गया हो ।

असम्मत (वि०) [न० त०] 1. अननुमोदित, अननुज्ञात, अस्वीकृत 2. नापसंद, अरुचिकर 3. असहमत, भिन्न मत रखने वाला,—**तः** शत्रु—घ्नतु दोषैरसम्मतान् काव्य० ७ । सम०—**आदायिन्** (वि०) स्वामी की

स्वीकृति के बिना उसकी चीज उठा ले जाने वाला, चोर।

असम्मतिः (स्त्री०) [न० त०] 1. विमति, असहमति 2. अस्वीकृति, नापसंदगी।

असम्मोहः [न० त०] 1. मोह का अभाव 2. अचलता, स्थैर्य, शान्तचित्तता 3. वास्तविक ज्ञान, सच्ची अन्तर्दृष्टि।

असम्यच् (वि०) [स्त्री० – **मीची**] [न० त०] 1. बुरा, अनुचित, अशुद्ध 2. अपूर्ण, अधूरा।

असलम् [अस्+कलच्] 1. लोहा 2. अस्त्र छोड़ते समय पढ़ा जाने वाला मंत्र 3. हथियार।

असवर्ण (वि०) [न० त०] भिन्न जाति या वर्ण का —अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णक्षेत्रसंभवा स्यात्—श० १।

असह (वि०) [न० ब०] 1. जो सहा न जाय, असह्य, अधीर 2. असहिष्णु, (प्रायः संब० के साथ कर्म० के रूप में)—सा स्त्रीस्वभावादसहा भरस्य—मुद्रा० ४।१३।

असहन (वि०) [न० ब०] असहिष्णु, असहनशील, ईर्ष्यालु,—**नः** शत्रु, **नम्** [न० त०] असहिष्णुता, अधीरता, परगुणासहनम्=असूया।

असहनीय, असहितव्य, असह्य, (वि०) [न० त०] जो सहा न जाय, दुःसह, अक्षन्तव्य—असह्यपीड भगवन्नृणमन्त्यमवेहि मे—रघु० १।७१, १८।२५, कु० ४।१।

असहाय (वि०) [न० ब०] 1. मित्रहीन, अकेला, एकाकी 2. बिना संगी साथियों के—मनु० ७।३०, ५५, °ता,—**त्वम्** अकेलापन, एकाकीपन।

असाक्षात् (अव्य०) [न० त०] 1. जो आँखों के सामने न हो, अदृश्य रूप से, अप्रत्यक्ष रूप से।

असाक्षिक (वि०) [स्त्री०—**की**] [न० ब०] 1. जिसका कोई गवाह न हो, बिना साक्ष्य के, जिसका कोई साक्षी न हो—असाक्षिकेषु त्वर्थेषु मिथो विवदमानयोः—मनु ८।१०९।

असाक्षिन् (वि०) [न० त०] 1. जो चश्मदीद गवाह न हो 2. जिसका साक्ष्य कानूनी दृष्टि से ग्राह्य न हो 3. जो किसी कानूनी दस्तावेज को प्रमाणित करने का अधिकारी न हो।

असाधनीय, असाध्य (वि०) [न० त०] 1. जो सम्पन्न न किया जा सके, या पूरा न किया जा सके 2. जो प्रमाणित होने के योग्य न हो 3. जिसकी चिकित्सा न हो सके (रोग या रोगी)—असाध्यः कुरुते कोपं प्राप्ते काले गदो यथा—शि० २।८४।

असाधारण (वि०) [न० त०] 1. जो सामान्य न हों, असामान्य, विशेष, विशिष्ट, 2. (तर्क शास्त्र में) जो सपक्ष या विपक्ष किसी में भी हेतु के रूप में विद्यमान न हो—यस्तूभयस्माद् व्यावृत्तः स त्वसाधारणो मतः 3. निजी, जिसका कोई और दावेदार न हो—**णः** तर्कशास्त्र में हेत्वाभास, अनैकांतिक के तीन भेदों में से एक।

असाधु (वि०) [न० त०] 1. जो अच्छा न हो, बुरा, स्वादरहित, अप्रिय,—अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा—कि० १।४, 2. दुष्ट 3. दुश्चरित्र (अधि० के साथ) असाधुर्मातरि—सिद्धा० 4. भ्रष्ट, अपभ्रंश (शब्द)।

असामयिक (वि०) [स्त्री०—**की**] [न० त०] बिना अवसर का, जो ऋतु के अनुकूल न हो—कि० २।४०।

असामान्य (वि०) [न० त०] 1. जो साधारण न हो, विशेष—रघु० १५।३९, 2. असाधारण—**न्यम्** विशेष या विशिष्ट संपत्ति।

असाम्प्रत (वि०) [न० त०] 1. अनुपयुक्त, अशोभन, अनुचित,—**तम्** (अव्य०) अनुचित रूप से, अयोग्यतापूर्वक [क्रियाविशेषण के रूप में बहुधा प्रयुक्त] =असांप्रत—विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्—कु० २।५५, सम्प्रत्यसाम्प्रतं वक्तुमुक्तं मुसलपाणिना—शि० २।७१, रघु० ८।६०।

असार (वि०) [न० ब०] 1. नीरस, स्वादहीन 2. (क) रसहीन, निरर्थक (ख) निकम्मा, अशक्त, सारहीन —असारं संसारं परिमुषितरत्नं त्रिभुवनम्—मा० ५। ३०, उत्तर० १, असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम्—धर्म० १२।१३, 3. व्यर्थ, अलाभकर 4. निर्बल, कमजोर, बलहीन,—बहूनामप्यसाराणां संहतिः कार्यसाधिका (समवायो हि दुर्जयः) पंच० १।३३१, शि० २।५०,—**रः**,—**रम्** [न० त०] 1. अनावश्यक, या महत्त्वहीन भाग 2. एरंड वृक्ष 3. अगर की लकड़ी।

असारता [असार+तल्+टाप्] 1. नीरसता, 2. निकम्मापन, 3. सारहीन प्रकृति, क्षणभंगुर अवस्था —धिगिमां देहभृतामसारताम्—रघु० ८।५१।

असाहसम् [न० त०] बलप्रयोग का अभाव, सुशीलता।

असिः [अस्+इन्] 1. तलवार 2. पशुओं की हत्या करने वाला चाकू—**सि** (अव्य०) तू, तु० अस्मि। सम०—**गंडः** गालों के नीचे रखा जाने वाला छोटा तकिया,—**जीविन्** तलवार ही जिसकी जीविका का साधन है, वेतन पाने वाला सैनिक योद्धा, **दंष्ट्रः**,—**दंष्ट्रकः** मगरमच्छ, घड़ियाल,—**दंतः** घड़ियाल,—**धारा** तलवार की धार—सुरगज इव दन्तैर्भग्नदैत्यासिधारैः—रघु० १०।८६, ४१,—**धाराव्रतम्** 1. (किन्हीं के मतानुसार) तलवार की धार पर खड़े होने की प्रतिज्ञा—(दूसरों के मतानुसार) युवती पत्नी के साथ रह कर भी उसके साथ मैथुन की इच्छा को दृढ़ता पूर्वक रोकना;—यत्रैकशयनस्थापि प्रमदा नोप-

भुज्यते, असिधाराव्रतं नाम वदन्ति मुनिपुंगवाः । अथवा—युवा युवत्या सार्धं यन्मुग्धभर्तृवदाचरेत्, अन्तर्निवृत्तसंगः स्यादसिधाराव्रतं हि तत्—यादव 2. (अतः आलं०) कोई भी अत्यन्त कठिन कार्य —सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्—भर्तृ० २।२८, ६४,—धावः,—धावकः शस्त्रकार, सिकलीगर या शस्त्र-परिष्कारक,—धेनुः,—धेनुका चाकू—विक्रमांक० ४।६९,—पत्र (वि०) जिसके पत्ते तलवार की आकृति के हैं—रघु० १४।४८, (—त्रः) 1. गन्ना, ईख 2. एक प्रकार का वृक्ष जो कि निचले संसार में उगता है, (—त्रम्) 1. तलवार का फल 2. म्यान °वनं एक प्रकार का नरक जहाँ वृक्षों के पत्ते ऐसे तीक्ष्ण होते हैं जैसे कि तलवार,—पत्रकः गन्ना, ईख,—पुच्छः, —पुच्छकः सूंस, शिशुनार, सकुची मछली—पुत्रिका, —पुत्री छुरी,—मेदः विट्खदिर,—हत्यम् तलवार या छुरियों से लड़ना,—हेतिः खड्गधारी पुरुष, तलवार रखने वाला ।

असिकम् [असि+कन्] ठोडी और निचले ओठ के बीच का भाग ।

असिक्नी [सिता केशादौ शुभ्रा जरती तद्भिन्ना अवृद्धा —असित—तकारस्य क्नादेशः ङीप् च] 1. अन्तः पुर की युवती परिचारिका 2. पंजाब देश की एक नदी ।

असिक्निका [संज्ञायां कन् ह्रस्वः] युवती सेविका ।

असित (वि०) [न० त०] जो सफेद न हो, काला, नीला, गहरे रंग का,—असिता मोहरजनी—शा० ३।४, याज्ञ० ३।१६६, °लोचना, °नयना आदि,—तः 1. गहरा नीला रंग 2. चान्द्रमास का कृष्ण पक्ष 3. शनिग्रह, 4. काला साँप,—ता 1. नील का पौधा, 2. अन्तः पुर की दासी (जिसके बाल अधिक आयु के कारण सफेद न हुए हों) दे० 'असिक्नी' 3. यमुना नदी । सम०—अंबुजम् —उत्पलम् नील कमल,—अचिस् (पुं०) अग्नि, —अश्मन् (पुं),—उपलः गहरा नीला पत्थर,—केशा काले बालों वाली स्त्री,—केशांत (वि०) काली जुल्फों वाला,—गिरिः,—नगः नील गिरि,—ग्रीव (वि०) काली गर्दन वाला(—वः) अग्नि,—नयन (वि०) काली आँखों वाला—मेघ० ११२,—पक्षः कृष्ण पक्ष,—फलम् मीठा नारियल—मृगः काला हरिण ।

असिद्ध (वि०) [न० त०] 1. जो पूरा या संपन्न न हो 2. अपूर्ण, अधूरा 3. अप्रमाणित 4. अनपका, कच्चा 5. जो अनुमेय न हो,—द्धः हेत्वाभास के पाँच मुख्य भागों में से एक, यह तीन प्रकार का है (1) आश्रयासिद्ध —जहाँ गुण के आश्रय की सत्ता सिद्ध न हो (2) स्वरूपासिद्ध—जहाँ निर्दिष्ट स्वरूप पक्ष में न पाया जाय ,तथा (3) व्याप्यतासिद्ध—जहाँ सहवर्तिता की उक्त स्थिरता वास्तविक न हो ।

असिद्धिः (स्त्री) [न० त०] 1. अपूर्ण निष्पन्नता, विफलता 2. परिपक्वता की कमी 3. निष्पत्ति का अभाव (योग० में) 4. (तर्क० में) वह उपसंहार जो प्रतिज्ञा से सम्मोदित न हो ।

असिरः [अस्+किरच्] 1. शहतीर, किरण 2. तीर, सिटकिनी ।

असुः [अस्+उन्] 1. श्वास, प्राण, आध्यात्मिक जीवन 2. मृतात्माओं का जीवन 3. (ब० ब०) शरीर में रहने वाले पाँच प्राण—असुभिः स्थास्नु यशश्चिचीषतः—कि० २।१९, (नपुं०—सु) शोक, दुःख । सम०—धारणम् - णा जीवन धारण, जीवन, अस्तित्व, —भंगः 1. जीवन का नाश, जीवहानि—मलिनमसुभङ्गेऽप्यसुकरम्—भर्तृ० २।२८, 2. जीवन का भय या आशंका,—भृत् (पुं०) जीवित जन्तु, प्राणी, —सम (वि०) प्राणों के समान प्यारा (—मः) पति, प्रेमी ।

असुमत् (वि०) [असु+मतुप्] 1. जीवित, प्राणी—(पुं०) 1. जीवित प्राणी ४।२९, 2. जीवन ।

असुख (वि०) [न० ब०] 1. अप्रसन्न, दुःखी 2. जिसका प्राप्त करना आसान न हो, कठिन—खम् [न० त०] दुःख, पीडा । सम०—आवह (वि०) दुःख से पीड़ित,—आविष्ट (वि०) अत्यन्त पीड़ाकर,—उदय (वि०) अप्रसन्नता पैदा करने वाला मनु० ११।१०, —जीविका विपण्ण जीवन ।

असुखिन् (वि०) [न० त०] अप्रसन्न, दुःखी ।

असुत (वि०) [न० ब०] निस्सन्तान, पुत्रहीन ।

असुरः [असु+र, न सुरः इति न० त० वा] 1 दैत्य, राक्षस —रामायण में नामों का कारण बतलाया गया है —सुराप्रतिग्रहाद्देवाः सुरा इत्यभिविश्रुता, अप्रतिग्रहणात्तस्या दैतेयाश्चासुरास्तथा । 2. देवताओं का शत्रु, दैत्य, दानव 3. भूत, प्रेत 4. सूर्य 5. हाथी 6. राहु, 7. बादल—रा 1. रात्रि 2. राशिविषयक संकेत 3. वेश्या —री दानवी, असुर की पत्नी । सम० —अधिपः,—राज्—राजः 1. असुरों का स्वामी 2. बलि की उपाधि, प्रह्लाद का पौत्र,—आचार्यः,—गुरुः 1. असुरों के गुरु शुक्राचार्य 2. शुक्रग्रह,—आह्वम् तांबे और टीन की मिश्रित धातु,—क्षयण,—क्षिति (वि०) राक्षसों का नाश करने वाला,—द्विष् (पुं०) राक्षसों का शत्रु अर्थात् देवता,—माया राक्षसी जादू,—रिपुः,—सूदनः राक्षसों का हन्ता, विष्णु—हन् (पुं०) 1. राक्षसों का नाश करने वाला, अग्नि इन्द्र आदि 2. विष्णु ।

असुरसा [न० ब० न सुष्ठु रसो यस्याः] एक प्रकार का पौधा, तुलसी का एक भेद ।

असुर्य (वि०) [असुराय हिताः गवा० यत्] राक्षसी, आसुरी ।

असुलभ (वि०) [न० त०] जो आसानी से उपलब्ध न हो सके, प्राप्त करने में कठिन —विक्रम० २ । ९ ।

असुसुः [असून् प्राणान् सुवति—सू+क्विप्] तीर;—स सासिः सासुसू: सासो येयायेयाययायय:—कि० १५ । ५ ।

असुहृद् (पुं०) [न० त०] शत्रु—शि० २ । ११७ ।

असूक्षणम् [सूक्ष् आदरे+ल्युट्, न० त०] अपमान, अनादर ।

असूत, असूतिक (वि०) [न० त०, न० ब० कप्] जिसने कुछ पैदा नहीं किया है, बांझ ।

असूतिः (स्त्री०) [न० त०] 1. पैदा न करना, बांझपना 2. अड़चन, स्थानान्तरण ।

असूयति (ना० धा० पर०) 1. डाह करना, ईर्ष्यालु होना —कथं चित्रगतो भर्ता मया ऽसूयितः—मालवि० २. मान घटाना, अप्रसन्न होना, घृणा करना, असन्तुष्ट होना, क्रुद्ध होना (संप्र० के साथ)—असूयन्ति सचिवोपदेशाय—का० १०८, असूयन्ति मह्यं प्रकृतयः विक्रम० ४. भग० ३ । ३१ ।

असूयक (वि०) [असूय्+ण्वुल्] 1. ईर्ष्यालु, मान घटाने वाला, निंदक 2. असन्तुष्ट, अप्रसन्न,—**कः** अपमान कर्ता, ईर्ष्यालु व्यक्ति,—मनु० २ । ११४, शा० ३।६, याज्ञ० १ । २८ ।

असूयनम् [असूय्+ल्युट्] 1. अपमान, निन्दा 2. ईर्ष्या, डाह ।

असूया [असूय्+अङ+टाप्] 1. ईर्ष्या, असहिष्णुता, डाह —क्रुधद्रुहेर्ष्या सूयार्थानां यं प्रति कोपः—पा० १।४। ३६, सासूयम् ईर्ष्या के साथ, 2. निन्दा, अपमान —असूया परगुणेषु दोषाविष्करणम्—सिद्धा०, रघु० ४ । २३, 3. क्रोध, रोष—वधूर सूयाकुटिलं ददर्श —रघु० ६ । ८२ ।

असूयुः [असूय्+उ] 1. ईर्ष्यालु, डाह करने वाला 2. अप्रसन्न ।

असूर्य (वि०) [न० ब०] सूर्यरहित ।

असूर्यम्पश्य (वि०) [सूर्यमपि न पश्यति—दृश्+खश् मुम् च] सूर्य को भी न देखने वाला—(अन्तः पुर की रानियों के विषय में कहा जाता है कि उन्हें सूर्य देखना भी दुर्लभ था)—असूर्यम्पश्या राजदाराः—सिद्धा० 2.—**श्या** सती पतिव्रता स्त्री ।

असृज् (नपु०) [न सृज्यते इतररागवत् संसृज्यते सहजत्वात्—न+सृज्+क्विन्-तारा०] 1. रुधिर 2. मंगल ग्रह 3. केसर । सम०—**करः** लसिका,—**धरा** त्वचा, चमड़ी—**धारा** 1. रुधिर की धार 2. चमड़ी,—**पः** —**पाः** लोहू पीने वाला राक्षस—**पातः** रुधिर का गिरना,—**वहा** रक्त वाहिका, नाड़ी,—**विमोक्षणम्** रुधिर का बहना,—**श्रा(स्रा)वः** रुधिर का बहना ।

असेचन,—नक (वि०) [न० त०] जिसे देखते २ जी न भरे, मनोहर, सुन्दर ।

असौष्ठव (वि०) [न० ब०] 1. सौन्दर्यविहीन, लावण्यरहित, जो सजीला न हो—शरीरमसौष्ठवम्—मा० १ । १७, 2. कुरूप, तिकलांग—**वम्** 1. निकम्मापन, गुणों की हीनता 2. विकलांगता, कुरूपता ।

अस्खलित (वि०) [न० त०] 1. अटल, दृढ़, स्थायी 2. अक्षत 3. अविचलित, सावधान—रघु० ५।२० ।

अस्त (भू० क० कृ०) [अस्+क्त] 1. फेंका हुआ, क्षिप्त, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ—असमये यत्त्वयाऽस्तोऽभिमानः —वेणी० ६, 2. समाप्त 3. भजा हुआ । सम०—**करुण** (वि०) दयारहित—**धी** (वि०) मूर्ख,—**व्यस्त** (वि०) इधर उधर बिखरा हुआ अव्यवस्थित, क्रमरहित,—**संख्य** (वि०) अनगिनत ।

अस्तः [अस्यन्ते सूर्यकिरणा यत्र—अस्+आधारे क्त] अस्ताचल या पश्चिमाचल (जिसके पीछे सूर्य डूबता हुआ माना जाता है)—अधिरोढुमस्तगिरमभ्यपतत्—शि० ९।१; विडम्बयत्यस्तनिमग्नसूर्यम्—रघु० १६।११; श० ४।१; 2. सूर्य का डूबना 3. डूबना, (आलं०) गिरना, पतन—दे० नीचे, अस्तं+गम्,—या,—इ, प्राप् (क) डूबना, पश्चिमी क्षितिज में गिरना, गतोऽस्तमर्कः—सूर्य डूब गया (ख) रुकना, नष्ट होना, दूर हटना, अंतर्धान होना, समाप्त होना—विषयिणः कस्यापदोऽस्तं गताः —पंच० १।१४६; धृतिरस्तमिता—रघु० ८।६६; (ग) मरना—अथ चास्तमिता त्वमात्मना—रघु० ८।५१, १२।११, । सम०—**अचलः,—अद्रिः,—गिरिः,** —**पर्वतः,** अस्ताचल पहाड़ या पश्चिमी पहाड़,—**अवलम्बनम्** क्षितिज के पश्चिमी भाग पर आकाशस्थित सूर्य चन्द्रादिक का डूबते समय आराम करना—**उदयौ** (द्वि० ब०) डूबना और निकलना, उदय और पतन, —अस्तोदयावदिशदप्रविभिन्नकालम्—मुद्रा० ३।१७, —**ग** (वि०) डूबने वाला, तारे की भांति अदृश्य हो जाने वाला,—**गमनम्** 1. डूबना, छिपना 2. मृत्यु, जीवन के सूर्य-प्रदीप का बुझना, मा० ९ ।

अस्तमनम् [अन्+अप् (वा०) अस्तम्=अदर्शनंस्य अनम् =गतिः] (सूर्य का) डूबना ।

अस्तमयः [अस्तमीयते गम्यतेऽस्मिन् इति अस्तम्+इ+अच्] 1. (सूर्य का) डूबना—करोत्यकालास्तमयं विवस्वतः—कि० ५।३५, (विप० उदयः) 2. नाश, अन्त, पतन, हानि 3. पात, अभिभव—उदयमस्तमयं च रघूद्वहात्—रघु० ९।९ 4. तिरोधान, अन्धकार ग्रस्त होना, प्रभाप्ररोहास्तमयं रजांसि—रघु० ६।३३, 5. (किसी ग्रह का) सूर्य से संयोग ।

अस्ति (अव्य०) [अस्+श्तिप्] 1. होना, सत्, विद्यमान, जैसा कि—अस्तिक्षीरा में, °काय, 2. प्रायः किसी घटना

या कहानी के आरंभ में या तो केवल "अनुपूरक" अर्थ में प्रयुक्त होता है, अथवा 'अतः यह है कि' अर्थ को प्रकट करता है—अस्ति सिंहः प्रतिवसति स्म—पंच० ४। सम०—**कायः** वर्ग या अवस्था (जैन मतानुसार) —**नास्ति** (अव्य०) सन्दिग्ध, आंशिक रूप से सत्य।

अस्तित्वम् [अस्ति+त्व] सत्ता, विद्यमानता।

अस्तेयम् [न० त०] चोरी न करना।

अस्त्यानम् [न० त०] झिड़की, कलंक।

अस्त्रम् [अस्+ष्ट्रन्] 1. फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार,—प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात्—रघु० २।३४, प्रत्याहृतास्त्रो गिरिशप्रभावात्—२।४१, ३।५८, अशिक्षतास्त्रं पितुरेव—रघु० ३।३१, आयुधविज्ञान 2. तीर, तलवार 3. धनुष। सम०—**अ (आ) गारम्** शस्त्रशाला, तोपखाना, आयुधागार—**आघातः** व्रण, घाव,—**कंटकः** तीर,—**कारः,—कारकः,—कारिन्** हथियार बनाने वाला,—**चिकित्सकः** चीरफाड़ या शल्य क्रिया करने वाला, जर्राह,—**चिकित्सा** चीरफाड़ या शल्य क्रिया, जर्राही,—**जीवः—जीविन्** (पुं०)—**धारिन्** (पुं०) सैनिक, योद्धा,—**निवारणम्** हथियार के वार को रोकना,—**मंत्रः** अस्त्रचालन या प्रत्याहरण के समय पढ़ा जाने वाला मंत्र,—**मार्जः,—मार्जकः** सिकलीगर,—**युद्धम्** हथियारों से लड़ना,—**लाघवम्** अस्त्रधारण या चालन में कुशलता, —**विद्** (वि०) आयुध विज्ञान में दक्ष,—**विद्या,—शास्त्रम्,** —**वेदः** अस्त्रचालन विज्ञान या कला, आयुधविज्ञान, —**वृष्टिः** (स्त्री०) अस्त्रों की बौछार,—**शिक्षा** सैनिक अभ्यास, अस्त्र चालन व प्रत्याहरण की शिक्षा।

अस्त्रिन् (वि०) [अस्त्र+इन्] अस्त्र से युद्ध करने वाला, धनुर्धारी।

अस्त्री [न० त०] 1. जो स्त्री न हो 2. (व्या० में) पुंल्लिङ्ग और नपुंसक लिंग।

अस्थान (वि०) [न० ब०] बहुत गहरा,—**नम्** [न० त०] 1. बुरा स्थान, 2. अनुचित स्थान, पदार्थ या अवसर।

अस्थाने (अव्य०) बिना ऋतु के, उपयुक्त स्थान से बाहर, बिना अवसर के, गलत जगह पर, अयोग्य वस्तु पर—अस्थाने महानर्थोत्सर्गः क्रियते—मुद्रा० ३।

अस्थावर (वि०) [न० त०] 1. चर, जंगम, अस्थिर 2. (विधि में) निजी चल वस्तु जैसे कि संपत्ति, पशु, धन आदि (=जंगम)।

अस्थि (नपुं०) [अस्यते—अस्+क्थिन] 1. हड्डी (कई समस्त पदों के अंत में बदल कर 'अस्थ' रह जाता है—दे० अनस्थ, पुरुषास्थ) 2. फल की गिरी या गुठली—न कार्पासास्थि न तुषान्—मनु० ४।७८। सम०—**कृत्,— तेजस्** (पुं०),—**संभवः,—सारः,** —**स्नेहः** चर्बी, वसा,—**जः** 1. चर्बी, 2. वज्र,—**तुण्डः** एक पक्षी,—**धन्वन्** (पुं०) शिव,—**पंजरः** हड्डियों का ढांचा, कंकाल,—**प्रक्षेपः** मृतक की हड्डियों को गंगा या किसी अन्य पवित्र जल म प्रवाहित करना, —**भक्षः,—भुक्** हड्डियों को खाने वाला, कुत्ता —**भंगः** हड्डी का टूट जाना,—**माला** 1. हड्डियों का हार 2. हड्डियों की पंक्ति,—**मालिन्** (पुं०) शिव,—**शेष** (वि०) ठठरी मात्र,—**संचयः** 1. शवदाह के पश्चात् उसकी हड्डियों और भस्मावशेष को एकत्र करना, 2. हड्डियों का ढेर,—**संधिः** जोड़, जोड़बन्दी,—**समर्पणम्** मृतक की अस्थियों को गंगा या किसी अन्य पवित्र जल में प्रवाहित करना,—**स्थूणः** हड्डियों को स्तम्भ के रूप में धारण करने वाला, शरीर।

अस्थितिः (स्त्री०) [न० त०] 1. दृढ़ता या जमाव का अभाव (आलं० भी) 2. मर्यादा या शिष्ट व्यवहार का अभाव।

अस्थिर (वि०) [न० त०] जो स्थिर या दृढ़ न हो, डावाँडोल, चंचल।

अस्पर्शनम् [न० त०] संपर्क का न होना, (किसी चीज के) स्पर्श को टालना—प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनम् वरम्—तु० 'इलाज से बचाव अच्छा'।

अस्पष्ट (वि०) [न० त०] 1. जो स्पष्ट न हो, स्पष्ट रूप से दिखाई न देता हो 2. धुंधला, जो साफ़ समझ में न आवे,संदिग्ध—अस्पष्टब्रह्मलिङ्गानि वेदान्तवाक्यानि —शारी०।

अस्पृश्य (वि०) [न० त०] 1. जो छूने के योग्य न हो 2. अशुचि, अपावन।

अस्फुट (वि०) [न० त०] दुरूह, अस्पष्ट,—**टम्** दुर्बोध भाषण। सम०—**फलम्** धुंधला या दुरूह परिणाम, —**वाच्** (वि०) तुतला कर बोलने वाला, अस्पष्टभाषी।

अस्मद् (सर्व०) [अस्+मदिक्] सर्वनामविषयक प्रातिपदिक जिससे कि उत्तमपुरुषसंबंधी पुरुषवाचक सर्वनाम के अनेक रूप बनते हैं, यह अपा० का ब० व० का रूप भी है,—पुं० प्रत्यगात्मा, जीवात्मा। सम० —**विध, अस्मादृश** (वि०) हमारे समान या हम जैसा।

अस्मदीय (वि०) [अस्मद्+छ] हमारा, हम सब का, —यदस्मदीयं न हि तत्परेषाम्—पंच० २।१०५, भग० १२।२६।

अस्मार्त (वि०) [न० त०] 1. जो स्मृति के भीतर न हो, स्मरणातीत 2. अवैध, आर्य-धर्मशास्त्रों के विपरीत 3. स्मार्त संप्रदाय से संबंध न रखने वाला।

अस्मि (अव्य०) [अस्+मिन्] ('अस्'—होना धातु का वर्तमान काल, उत्तम पुरुष, एक वचन) मैं—अहम्; —आसंसृतेरस्मि जगत्सु जातः—कि० ३।६, अन्यत्र यूयं कुसुमावचायं कुरुध्वमत्रास्मि करोमि सख्यः—काव्य० ३।

अस्मिता [अस्मि+तल्+टाप्] अहंकार।

अस्मृतिः (स्त्री०) [न० त०] स्मृति का अभाव, भूलना।

अस्रः [अस्+रन्] 1. किनारा, कोश 2. सिर के बाल, **—स्रम्** 1. आँसू 2· रुधिर। सम०**—कंठः** बाण, **—जम्** मांस, **—पः** रुधिर पीने वाला राक्षस, **—पा** जोंक **—मातृका** अन्नरस, आमरस, आँव।

अस्व (वि०) [न० ब०] 1. अकिंचन, निर्धन 2. जो अपना न हो।

अस्वतंत्र (वि०) [न० त०] 1. आश्रित, अधीन, पराधीन —अस्वतंत्रा स्त्री पुरुषप्रधाना—वशिष्ठ 2. विनीत।

अस्वप्न (वि०) [न० ब०] निद्रारहित, जागरूक, **—प्नः** 1. देवता 2. अनिद्रा।

अस्वरः [न० त०] 1. मन्द स्वर 2. व्यंजन, **—रम्** (अव्य०) ऊँचे स्वर से नहीं, धीमी आवाज से।

अस्वर्ग्य (वि०) [न० त०] जो स्वर्ग प्राप्त करने के योग्य न हो—अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टं धर्ममप्याचरेन्न तु–या० १।१५६।

अस्वस्थ (वि०) [न० त०] 1. जो नीरोग न हो, रोगी — बलवत् अस्वस्था–श० ३, अतिरुग्ण।

अस्वाध्यायः [न स्वाध्यायो वेदाध्ययनमस्य—न० ब०] 1. जिसने अभी अध्ययन आरंभ नहीं किया. जिसका अभी यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो 2. अध्ययन में रुकावट (जैसे कि अष्टमी, ग्रहण आदि के कारण अनध्याय)।

अस्वामिन् (वि०)[न० त०] जो किसी वस्तु का अधिकारी न हो, जो स्वामी न हो। सम०**—विक्रयः** बिना स्वामी बने किसी वस्तु का बेचना।

अह् (भ्वा० आ० या चुरा० उभ०)=तु० अंह्।

अह (अव्य०) [अंह्+घञ् पृषो० न लोपः] निम्न अर्थों को प्रकट करने वाला निपात या अव्यय— (क) स्तुति (ख) वियोग (ग) दृढ़संकल्प या निश्चय (घ) अस्वीकृति (च) प्रेषण तथा (छ) पद्धति या प्रथा की अवहेलना।

अहंयु (वि०) [अहम्+युस्] घमंडी, अहंकारी, स्वार्थी —भट्टि० १।२०।

अहत (वि०) [न० त०] 1. अक्षत, अनाहत 2. बिना धुला, नया, **—तम्** बिना धुला (कोरा), या नया कपड़ा, तु० 'अप्रहत'।

अहन् (नपुं०) [न जहाति त्यजति सर्वथा परिवर्तनं, न+हा+कनिन् न० त०] (कर्तृ० अहः, अह्नी-अहनी, अहानि—अह्ना अहोभ्याम् आदि) 1. दिन (दिन और रात दोनों को मिलाकर)—अघाहानि – मनु० ५। ८४, 2. दिन का समय—सव्यापारामहनि न तथा पीडयेन्मद्वियोगः—मेघ० ९०,—यदह्ना कुरुते पापम्—दिन में, (समस्त पद के अन्त में 'अहन्' बदल कर 'अहः—अहम् या अह्न' रह जाता है परन्तु समस्त पद के आदि में यह 'अहस्—या अहर्' बन जाता है यथा —अहःपति या अहर्पतिः आदि)। सम०**—आगमः** (अहरा°) दिन का आना, **—आदिः** उषःकाल, **—करः** सूर्य, **— गणः** (°हर्ग°) 1. यज्ञ के दिनों का सिलसिला, 2. महीना, **—दिवम्** (अव्य०) प्रतिदिन, हर रोज़, दिन प्रति दिन, **—निशम्** दिन-रात, **—पतिः** सूर्य, **—बांधवः** सूर्य, **—मणिः** सूर्य, **— मुखम्** दिन का आरंभ, प्रभात, उषःकाल—त्रिंशत्कला मुहूर्तः स्यादहोरात्रं तु तावतः–मनु० १। ६४, ६५, **—शेषः,—षम्** सायंकाल।

अहम् (सर्व) ['अस्मद्' शब्द का कर्तृ कारक ए० व०] मैं। सम०**—अग्रिका** श्रेष्ठता के लिए होड़, प्रतिद्वन्द्विता, **—अहमिका** 1. होड़, प्रतियोगिता, अपनी श्रेष्ठता का दावा—अहमहमिकया प्रणामलालसानाम्— का० १४, 2. अहंकार 3. सैनिक अहंमन्यता, **—कारः** 1. अभिमान, आत्मश्लाघा, वेदान्त दर्शन में 'आत्मप्रेम' अविद्या या आध्यात्मिक अज्ञान समझा जाता है,–भग० २। ७१, ७। ४, मनु० १। १४, 2. घमंड, स्वाभिमान, गर्व 3. (सां० द० में) सृष्टि के मूलतत्त्व या आठ उत्पादकों में से तीसरा अर्थात् आत्माभिमान या अपनी सत्ता का बोध, **—कारिन्** (वि०) घमंडी, स्वाभिमानी, **—कृतिः** (स्त्री०) अहंकार, घमंड, **— पूर्व** (वि०) होड़ में प्रथम रहने का इच्छुक, **—पूर्विका, — प्रथमिका** 1. होड़ के साथ सैनिकों की दौड़, होड़, प्रतियोगिता—जवादहपूर्विकया यियासुभिः– कि० १४। ३२, 2. डींग मारना, आत्मश्लाघा, **—भद्रम्** स्वाभिमान, अपनी श्रेष्ठता का दृढ़ विचार, **— भावः** 1. घमंड, अहंकार–भामि० ४।१०, २=°मति तु०**—मतिः** (स्त्री०) 1. आत्मरति या स्वानुराग जो आध्यात्मिक अज्ञान समझा जाता है (वेदा०) 2. दम्भ, घमंड, अहंकार।

अहरणीय, अहार्य (वि०) [न० त०] 1. जो चुराये जाने के योग्य न हो, या हटाये जाने अथवा दूर ले जाये जाने के योग्य न हो—अहार्यं ब्राह्मणद्रव्यं राज्ञां नित्यमिति स्थितिः—मनु० ९। १८९, 2. श्रद्धालु, निष्ठावान् 3. दृढ़, अविचल, अननुनेय—कु० ५। ८, **— र्यः** पहाड़।

अहल्य (वि०) [न० त०] बिना जोता हुआ, **—ल्या** गौतम की पत्नी (रामायण के अनुसार अहल्या सबसे पहली स्त्री थी जिसे ब्रह्मा ने पैदा किया—और गौतम को दे दिया, इन्द्र ने उसके पति का रूप धारण करके उसे सत्पथ से फुसलाया इस प्रकार उसे धोखा दिया। दूसरे कथानक के अनुसार वह इन्द्र को जानती थी और उसके अनुराग तथा नम्रता के वशीभूत हो वह उसकी चापलूसी का शिकार बन गई थी। इसके अतिरिक्त एक और कहानी है जिसके अनुसार इन्द्र ने चन्द्रमा की सहायता प्राप्त की। चन्द्रमा ने मुर्गा बनकर आधी रात को ही बांग दे दी। इस बांग ने

गौतम को अपने प्रातःकालीन नित्यकृत्य करने के लिए जगा दिया। इन्द्र ने अन्दर प्रविष्ट होकर गौतम का स्थान ग्रहण किया। जब गौतम को अहल्या के पथभ्रष्ट होने का ज्ञान हुआ तो उसने उसे आश्रम से निर्वासित कर दिया और शाप दिया कि वह पत्थर बन जाय तथा तब तक अदृश्य अवस्था में पड़ी रहे जब तक कि दशरथ के पुत्र राम का चरण-स्पर्श न हो, जो कि अहल्या को फिर पूर्वरूप प्रदान करेगा। उसके पश्चात् राम ने उस दीन-दशा से उसका उद्धार किया—और तब उसका अपने पति से पुनर्मिलन हुआ। अहल्या प्रातःस्मरणीय उन पाँच सती तथा विशुद्ध चरित्र महिलाओं में एक है जिनका प्रातःकाल नाम लेना श्रेयस्कर है—अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा मंदोदरी तथा, पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातक—नाशिनीः। सम०—जारः इन्द्र,—नन्दनः शतानन्द मुनि, अहल्या का पुत्र।

अहह (अव्य०) [अहं जहाति इति—हा+क पृषो०] विस्मयादि द्योतक निपात निम्नांकित अर्थों में प्रयुक्त होता है—(क) शोक, खेद—अहह कष्टमपण्डितता विधेः—भर्तृ० ०।९२, ३।११, अहह ज्ञानराशिर्विनष्टः—मुद्रा० २ (ख) आश्चर्य, विस्मय—अहह महतां निस्सीमानश्चरित्रविभूतयः—भर्तृ० २।३५, ३६, (ग) दया, तरस—भामि० ४।३९ (घ) बुलाना (ङ) थकावट।

अहिः [आहन्ति—आ+हन्+इण् स च डित् आङो ह्रस्वश्च] 1. साँप, अजगर—अहयः सविषाः सर्वे निर्विषाः डुंडुभाः स्मृताः—कथा० १४।८४, 2. सूर्य 3. राहुग्रह 4. वृत्रासुर 5. धोखेबाज, बदमाश 6. बादल। सम०—**कांतः** वायु, हवा,—**कोषः** साँप की केंचुली—**छत्रकम्** कुकुरमुत्ता,—**जित्** (पुं०) 1. कृष्ण (कालिय नाग को मारने वाला) 2. इंद्र—**तुंडिकः** साँप पकड़ने वाला, सपेरा, बाजीगर,—**द्विष्**,—**द्रुह्**,—**मार**,—**रिपु**,—**विद्विष्** (पुं०) 1. गरुड़ 2. नेवला 3. मोर 4. इन्द्र 5. कृष्ण—कि० ४।२७, शि० १।३१,—**नकुलम्** साँप और नेवले,—**नकुलिका** साँप और नेवले के मध्य स्वाभाविक वैर,—**निर्मोकः** साँप की केंचुली,—**पतिः** 1. साँपों का स्वामी, वासुकि 2. कोई बड़ा साँप, अजगर साँप—**पुत्रकः** साँप के आकार की बनी किश्ती,—**फेनः**,—**नम्** अफीम,—**भयम्** किसी छिपे हुए साँप का भय, धोखे की शङ्का, अपने मित्रों की ओर से भय,—**भुज्** (पुं०) 1. गरुड़ 2. मोर 3. नेवला—**भृत्** (पुं०) शिव।

अहिंसा [न० त०] 1. अनिष्टकारिता का अभाव, किसी प्राणी को न मारना, मन वचन कर्म से किसी को पीड़ा न देना—अहिंसा परमोधर्मः—भग० १०।५, मनु० १०।६३, ५।४४, ६।७५, 2. सुरक्षा।

अहिंस्र (वि०) [न० त०] अनिष्टकर, निर्दोष, अहिंसक—मनु० ४।२४६.।

अहिकः एक अंधा साँप।

अहित (वि०) [न० त०] 1. जो रक्खा न गया हो, धरा न गया हो, जमाया न गया हो 2. अयोग्य, अनुचित—मनु० ३।२०, 3. क्षतिकर, अनिष्टकर 4. अनुपकारक 5. अपकारी, विरोधी,—**तः** शत्रु—अहितानलोद्धूतैस्तर्जयन्निव केतुभिः—रघु० ४।२८, ९।१७, ११।६८,—**तम्** हानि, क्षति।

अहिम (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो, गर्म। सम०—**अंशुः**,—**करः**,—**तेजस्**,—**द्युतिः**,—**रुचिः**, सूर्य।

अहीन (वि०) [न० त०] 1. अक्षुण्ण, पूर्ण, समस्त 2. जो छोटा न हो, बड़ा—अहीनबाहुद्रविणः शशास—रघु० १८।१४, 3. जो वञ्चित न हो, अधिकार प्राप्त—मनु० २।१८३ 4. जातिबहिष्कृत न हो, दुश्चरित्र न हो,—**नः** कई दिनों तक होने वाला यज्ञ, (नम्-भी)। सम०—**वादिन्** (पुं०) गवाही देने में असमर्थ, अयोग्य गवाह।

अहीरः [आभारी+पृषो० साधुः] ग्वाला, अहीर।

अहुत (वि०) [न० त०] जो यज्ञ न किया गया हो, जो (आहुति के रूप में) हवन में प्रस्तुत न किया गया हो—मनु० १२।६८,—**तः** धर्मविषयक चिन्तन, मनन, प्रार्थना और वेदाध्ययन (पांच महायज्ञों और कर्तव्यों में से एक)—मनु० ३।७३, ७४।

अहे (अव्य०) [अह+ए] (क) झिड़की, भर्त्सना (ख) खेद तथा (ग) वियोग को प्रकट करने वाला निपात।

अहेतु (वि०) [न० ब०] निष्कारण, स्वतः स्फूर्त—अहेतुः पक्षपातो यः—उत्तर० ५।१७।

अहे (है) तुक (वि०) [न० ब० कप्] निराधार, निष्कारण, निष्प्रयोजन—भग० १८।२२।

अहो (अव्य०) [हा+डो न० त०] निम्नांकित अर्थों को प्रकट करने वाला अव्यय—(क) आश्चर्य या विस्मय—बहुधा रुचिकर—अहो कामी स्वतां पश्यति—श० २।२, अहो मधुरमासां दर्शनम् श० १, अहो बकुलावलिका—मालवि० १, अहो रूपमहो वीर्यमहो सत्त्वमहो द्युतिः—रामा० (अहो उसका रूप आश्चर्य जनक है—आदि) (ख) पीडाजनक आश्चर्य—अहो ते विगत चेतनत्वम्—का० १४६, 2. शोक या खेद—अहो दुष्यन्तस्य संशयमारूढाः पिंडभाजः—श० ६, विधिरहो बलवानिति मे मतिः—भर्तृ० २।९१, 3. प्रशंसा (शाबास, बहुत खूब)—अहो देवदत्तः पचति शोभनम्—सिद्धा० 4. झिड़की (धिक्,) 5. बुलाना, संबोधित करना 6. ईर्ष्या, डाह 7. उपभोग, तृप्ति 8. थकावट 9. कई बार केवल अनुपूरक के रूप में—अहो नु खलु (भोः), सामान्य रूप से आश्चर्य जो रोचक हो—अहो नु खलु ईदृशीमवस्थां प्रपन्नोऽस्मि—श० ५, अहो नु खलु भोस्तदेत-

त्काकतालीयं नाम—मा० ५, 'अहो वत' प्रकट करता है (क) दया, तरस तथा खेद -अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्–भग० १।४४, (ख) संतोष–अहो वतासि स्पृहणीयवीर्यः–कु० ३।२० (मल्लि० यहाँ 'अहो वत' को संबोधन के रूप में ग्रहण करता है (ग) संबोधित करना, बुलाना (घ) थकावट। सम० —पुरुषिका=तु० आहोपुरुषिका।

अह्लाय (अव्य०) [ह्ल्+घञ् वृद्धि, पृषो० वस्य यत्वम्] तुरन्त, शीघ्र, फौरन—अह्लाय सा नियमजं क्लममुत्ससर्ज—कु० ५।८६ अह्लाय तावदरुणेन तमो निरस्तम्—रघु० ५।७१ कि० १६।१६।

अह्लीक(वि०)[न० ब० कप्] निर्लज्ज, ढीठ–कः बौद्ध भिक्षुक।

आ

आ देवनागरी वर्णमाला का द्वितीय अक्षर।

आ 1. विस्मयादिद्योतक अव्यय के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) स्वीकृति 'हाँ' (ख) दया 'आह्' (ग) पीड़ा या खेद (बहुधा—आस् या आः लिखा जाता है) 'हा 'हंत' (घ) प्रत्यास्मरण 'अहो–ओह' आ एवं किलासीत्—उत्तर० ६ (च) कई बार केवल अनुपूरक के रूप में प्रयुक्त होता है—आ एवं मन्यसे 2. (संज्ञा और क्रियाओं के उपसर्ग के रूप में) (क) 'निकट' 'पार्श्व' 'की ओर' 'सब ओर से' 'सब ओर' (कुछ क्रियाओं को देखो) (ख) गत्यर्थक नयनार्थक, तथा स्थानान्तरणार्थक क्रियाओं से पूर्व लगकर विपरीतार्थ का बोध कराता है—यथा गम्=जाना, आगम्=आना, दा=देना, आदा=लेना 3. (अपा० के साथ वियुक्त निपात के रूपमें प्रयुक्त होकर) निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है :—(क) आरम्भिक सीमा, (अभिविधि), 'से', 'से लेकर' 'से दूर' 'में से'–आमूलात् श्रोतुमिच्छामि—श० १, आ जन्मनः—श०।५।२५ (ख) पृथक्करणीय या उपसंहारक सीमा (मर्यादा) को प्रकट करता है—'तक' 'जबतक कि नहीं' 'यथाशक्ति' 'जबतक कि'—आ परितोषाद्विदुषां श० १।२,–कैलासात्–मेघ० ११, कैलास तक (ग) इन दोनों अर्थों को प्रकट करने में 'आ' या तो अव्ययीभाव समास में अथवा सामासिक विशेषण का रूप धारण कर लेता है–आबालम् (आबालेभ्यः) हरिभक्तिः, कई बार इस प्रकार का बना हुआ समस्त पद अन्य समासों का प्रथम खण्ड बन जाता है–सोऽहमाजन्म शुद्धानामाफलोदयकर्मणाम्, आ समुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम्—रघु०।२।५, आगण्ड विलम्बि—श० ७।१७. 4. विशेषणों के साथ (कई बार संज्ञाओं के साथ) लग कर 'आ' अल्पार्थवाची हो जाता है—आपांडुर =ईषत्श्वेत, कुछ सफेद, अलक्ष्य —श० ७।१७, आकम्पः=मृदु कम्पन, इसी प्रकार 'आनील' 'आरक्त'।

आं=तु० आम्।

आः 1.=तु० आम् 2. लक्ष्मी (आ)।

आकत्थनम् [आ+कत्थ्+ल्युट्] डींग मारना, शेखी बघारना।

आकम्पः [आ+कम्प्+घञ्] 1. मृदु कंप 2. हिलना, काँपना।

आकम्पनम् [आ+कम्प्+ल्युट्] कंपयुक्त गति, हिलना।

आकम्पित, आकम्प्र [आ+कम्प्+क्त, र वा] हिलता हुआ, कांपता हुआ, हिला-डुला, विक्षुब्ध।

आकरः [आकुर्वन्त्यस्मिन्-आ+कृ+घ] 1. खान—मणिराकरोद्भवः—रघु० ३।१८, आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः—हि० प्र० ४४ (आलं०) खान या किसी वस्तु का समृद्ध साधन—मासो नु पुष्पाकरः—विक्रम० १।९, अशेषगुणाकरम्—भर्तृ० २।६५ कु० २।२९, 3. सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

आकरिक (वि०) [आकर+ठन्] (राजा के द्वारा) नियत व्यक्ति जो खान का अधीक्षण करता है।

आकरिन् (वि०) [आकर+इनि] 1. खान में उत्पन्न, खनिज 2. अच्छी नसल का - दयतमाकरिभिः करिभिः क्षतैः—कि० ५।७,।

आकर्णनम् [आ+कर्ण+ल्युट्] सुनना, कान लगा कर सुनना।

आकर्षः [आ+कृष्+घञ्] 1. खिचाव या (अपनी ओर) खींचना, 2. खींच कर दूर ले जाना, पीछे हटाना 3. (धनुष) तानना 4. प्रलोभन, सम्मोहन 5. पासे से खेलना 6. पासा या चौसर 7. पासों से खेलने का फलक, बिसात 8. ज्ञानेन्द्रिय 9. कसौटी।

आकर्षक (वि०) [आ+कृष्+ण्वुल्] खिचाव करने वाला, प्रलोभक—कः चुंबक, लोहचुंबक।

आकर्षणम् [आ+कृष्+ल्युट्] 1. खींचना, खींच लेना, सम्मोहन 2. पथभ्रष्ट करने के लिए फुसलाना, —णी वृक्षों से फल फूल आदि उतारने के लिए किनारे पर से मुड़ी हुई लकड़ी, लग्गी।

आकर्षिक (वि०) [स्त्री०—की] [आकर्ष+ठन्] चुंबकीय, सम्मोहक।

आकर्षिन् (वि०) [आ+कृष्+णिनि] खींचने वाला (जैसे कि दूर की गंध)।

आकलनम् [आ+कल्+ल्युट्] 1. हाथ रखना, पकड़ना —मेखलाकलन—का० १८३, बन्दीगृह में रहना 2. गिनना, हिसाब लगाना, 3. चाह इच्छा 4. पूछ ताछ 5. समझ-बूझ ।

आकल्पः [आ+कृप्+णिच्+घञ्] 1. आभूषण, अलंकार—आकल्पसारो रूपाजीवाजनः—दश० ६३, रघु० १७।२२, १८।५२, 2. वेशभूषा 3. रोग, बीमारी ।

आकल्पकः [आ+कृप्+णिच्+ण्वुल्] 1. दुःखपूर्ण स्मृति, स्मृति का लोप 2. मूर्छा 3. हर्ष या प्रसन्नता 4. अंधकार गांठ या जोड़ ।

आकषः [आ+कष्+अच्] कसौटी ।

आकषिक (वि०) [आकषेण चरति-इति आकष+ष्ठन्] परखने वाला, कसौटी पर कसने वाला ।

आकस्मिक (वि०) (स्त्री०-की)[अकस्मात्+ठक् टिलोपः] 1. अचानक होने वाला, अचिंतित, अप्रत्याशित, सहसा 2. निष्कारण, निराधार— नन्वदृष्टानिष्टौ जगद्वैचित्र्यमाकस्मिकं स्यात्—शारी० ।

आकाङ्क्षा [आ+काङ्क्ष्+अ+टाप्] 1. इच्छा, चाह-भक्त°—शुश्रु०, अमरु ४१, 2. (व्या० में) अर्थ को पूरा करने के लिए आवश्यक शब्द की उपस्थिति, किसी विचार या वाक्य के भाव को पूरा करने के लिए तीन आवश्यक तत्त्वों में से एक (दूसरे दो हैं—योग्यता और आसत्ति) आकाङ्क्षा प्रतीतिपर्यवसानविरहः—सा० द० २. अर्थ की पूर्ति का अभाव 3. किसी की ओर देखना 4. प्रयोजन, इरादा 5. पूछ-ताछ 6. शब्द की यथार्थता ।

आकायः [आ+चि+कर्मणि घञ् चितौ कुत्वम्] 1. चिता पर रक्खी हुई अग्नि, 2. चिता ।

आकारः [आ+कृ+घञ्] 1. रूप, शक्ल, आकृति—द्विधा° दो रूपों की या दो प्रकार की 2. पहलू, सूरत, मुखाकृति, चेहरा—आकारसदृशप्रज्ञः रघु० १।१५, १६।७, 3. (विशेषतः) चेहरे का रंग ढंग-जिससे मनुष्य के आन्तरिक विचार तथा मनोवृत्ति का पता लग सके-तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च—रघु० १।२०, भवानपि संवृताकारमास्तां-विक्रम० २, 4. इशारा, संकेत, निशानी । सम०—गुप्तिः (स्त्री०),—गोपनम्,—गूहनम् छिपाव, मन के भावों को छिपाना ।

आका (क) रण,—णा [आ+कृ+णिच्+ल्युट्, युच् वा] 1. आमंत्रण, बुलावा—भवदाकारणाय—दश० १७५, 2. आह्वान ।

आकालः [आ+कु+अल्+अच् कोः कादेशः] ठीक समय ।

आकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [अकाल+ठञ्] 1. क्षणिक, अल्पकालिक—मनु० ४।१०३, 2. बेमौसिम, अकालपक्व, असामयिक—आकालिकीं वीक्ष्य मधुप्रवृत्तिम्—कु० ३।३४, मृच्छ० ५।१,—की बिजली ।

आकाशः—शम् [आ+काश्+घञ्] 1. आसमान —आकाशभवा सरस्वती—कु० ४।३९, °ग, °चारिन् आदि 2. अन्तरिक्ष (पाँचवाँ तत्त्व) 3. सूक्ष्म और वायविक द्रव्य जो समस्त विश्व में व्याप्त है, वैशेषिक द्वारा माने हुए ९ द्रव्यों में से एक, यह 'शब्द' गुण का आधार है—शब्दगुणकमाकाशम्—तु०—श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्—श० १। १, अथात्मनः शब्दगुणं गुणज्ञः पदम् (नामतः—आकाश) विमानेन विगाहमानः—रघु० १३। १, 4. मुक्त स्थान 5. स्थान—सपर्वतवनाकाशां पृथिवीम्—महा०, भवनाकाशमजायताम्बुराशिः—भामि० २। १६५, 6. ब्रह्म (अन्तरिक्ष स्वरूप) आकाशस्तल्लिङ्गात्—ब्रह्म०—यावानयमाकाशस्तावानयमन्तर्हृदयाकाशः—छा० 7. प्रकाश, स्वच्छता, 'वायु में' अर्थ को प्रकट करने वाला 'आकाशे' शब्द नाटकों में प्रयुक्त होता है—जब कि रंगमंच पर स्थित पात्र प्रश्न किसी ऐसे व्यक्ति से पूछता है जो वहाँ उपस्थित न हो, और ऐसे काल्पनिक उत्तर को सुनता है जो 'किं ब्रवीषि,' 'किं कथयसि' आदि शब्दों से आरम्भ होता है—दूरस्थाभाषणं यत्स्यादशरीरनिवेदनम्, परोक्षान्तरितं वाक्यं तदाकाशे निगद्यते ।। भरत—तु० निम्नांकित आकाशभाषित की—(आकाशे) प्रियंवदे कस्येदमुशीरानुलेपनं, मृणालवन्ति च नलिनीपत्राणि नीयन्ते । (श्रुतिमभिनीय) किं ब्रवीषि—आदि०—श० ३। सम०—ईशः 1. इन्द्र 2. (विधि में) असहाय व्यक्ति (जैसे कि बच्चा, स्त्री, दरिद्र) जिसके पास वायु के अतिरिक्त और कोई वस्तु नहीं है—कक्षा क्षितिज,—कल्पः ब्रह्म,—गः पक्षी (—गा) आकाशस्थित गंगा,—गङ्गा दिव्य गंगा —नदत्याकाशगङ्गायाः स्रोतस्युद्दामदिग्गजे—रघु० १। ७८,—चमसः चन्द्रमा,—जननिन् (पुं) झरोखा, प्राचीर में बना तोप का झरोखा, बन्दूक या तोप आदि चलाने के लिए भित्ति में बना छिद्र 1.—दीपः —प्रदीपः 1. कार्तिक मास में दिवाली के अवसर पर लक्ष्मी या विष्णु का स्वागत करने के लिए हठड़ी पर रक्खा हुआ दीपक, 2. बाँस के सिरे पर बाँध कर जलाया जाने वाला दीया या लालटेन, प्रकाशस्तम्भ पर रक्खा हुआ दीया या लैम्प,—भाषितम् —1. रंगमंच पर अनुपस्थित व्यक्ति से भाषण करना, एक काल्पनिक भाषण जिसका उत्तर इस प्रकार दिया जाय—मानो यह बात वस्तुतः कही और सुनी गई है—किं ब्रवीषीति यन्नाट्ये विना पात्रं प्रयुज्यते, श्रुत्वेवानुक्तमप्यर्थं तत्स्यादाकाशभाषितम्—सा० द० ४२५, 2. आकाश में कही बात या शब्द,—मंडलम् खगोल, —यानम् 1. हवाई जहाज, गुब्बारा 2. आकाश में घूमने वाला,—रक्षिन् (पुं०) किले की बाहरी दिवारों

की रक्षा करने वाला,—**वचनम्** °भाषितम्—दे० —**वर्त्मन्** (नपुं०) 1. अन्तरिक्ष 2. वायुमंडल, वायु, —**वाणी** आकाश से आई हुई आवाज़, अशरीरिणी वाणी,—**सलिलम्** वर्षा, ओस—**स्फटिकः** ओला।

आकिञ्चनम्, आकिञ्चन्यम् [अकिञ्चन+अण्, ष्यञ् वा] गरीबी, धन का अभाव।

आकीर्ण (भू० कं० कृ०) [आ+कृ+क्त] 1. बिखरा हुआ, फैला हुआ भरा हुआ, व्याप्त, संकुल—खचाखच भरा हुआ, परिपूर्ण, भरपूर—जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव—श० ५। १०, आकीर्णमृषिपत्नीनामुटजद्वाररोधिभिः—रघु० १।५०।

आकुञ्चनम् [आ+कुञ्च्+ल्युट्] 1. झुकाना, सिकोड़ना, संकोचन 2. पाँच कर्मों में से एक—सिकुड़न 3. एकत्र करना, ढेर लगाना 4 टेढ़ा होना।

आकुल (वि०) [आ+कुल्+क] 1. भरपूर, भराहुआ —प्रचलदूर्मिमालाकुलं (समुद्रम्)—भर्तृ० २।४, वाष्पाकुलां वाचं—नल० ४।१८, आलापकुतूहलाकुलतरे श्रोत्रे—अमरु ८१, 2. प्रभावित, प्रभावग्रस्त, पीड़ित, आहत—हर्ष°, शोक°, विस्मय°, स्नेह° आदि 3. व्यस्त, लीन 4. घबराया हुआ, विक्षुब्ध, उद्विग्न—अभिचैद्यं प्रतिष्ठासुरासीत्कार्यद्वयाकुलः—शि० २।१, विस्मित किंकर्तव्यविमूढ, अनिर्धारित, °आकुल, अत्यन्त क्षुब्ध 5. बिखरे बाल वाला, अव्यवस्थित 6. असंगत, विरोधी,—**लम्** आबाद जगह।

आकुलित (वि०) [आ+कुल+क्त] 1. दुःखी, उद्विग्न, विक्षुब्ध—मार्गाचलव्यतिकराकुलितेव सिंधुः—कु० ५।८५, 2. फँसा हुआ, 3. मलिन, धूमिल,—धूमदृष्टेः—श०४, 4. अभिभूत, पीड़ित,—शोक°, पिपासा° आदि।

आकूणित (वि०) [आ+कूण्+क्त] कुछ संकुचित—मदनशरशल्यवेदनाकूणितत्रिभागेन—का० १६६, ८१।

आकूतम् [आ+कू+क्त] 1. अर्थ, इरादा, प्रयोजन—इतीरिताकूतमनीलवाजिनम्—कि० १४।२६, 2. भावना, हृदय की स्थिति, संवेग,—चूड़ामण्डल बन्धनं तरलयत्याकूतजो वेपथुः—उत्तर० ५।३६, भावाकूत—अमरु ४ मा० ९।११, साकूतम्—भावनापूर्वक, साभिप्राय (प्रायः नाटकों में रंगमंच के निदेश के रूप में) 3. आश्चर्य या जिज्ञासा 4. चाह, इच्छा।

आकृतिः (स्त्री०) [आ+कृ+क्तिन्] 1. रूप, प्रतिमा, शक्ल—गोवर्धनस्याकृतिरन्वकारि—शि० ३।४, 2. शरीर, काया—किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्—शि० १।२०, विकृताकृति—मनु० ११।५३ इस प्रकार घोर° 3. दर्शन, सुन्दर रूप, भद्ररूप,—न ह्याकृतिः सुसदृशं विजहाति वृत्तम्—मृच्छ० ९।१६, यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति—सुभाषित० 4. नमूना, लक्षण 5. कबीला, जाति। सम०—**गणः** व्याकरण के किसी विशेष नियम से संबंध रखने वाले शब्दों की सूची—जो केवल नमूनों की सूची है (बहुधा गणपाठ में अंकित) यथा अर्शादिगण, स्वरादिगण, चादिगण आदि,—**छत्रा** घोषातकी नाम की लता।

आकृष्टिः (स्त्री०) [आ+कृष्+क्तिन्] 1. आकर्षण 2. खिंचाव, गुरुत्वाकर्षण (गणित ज्योतिष);—आकृष्टिशक्तिश्च मही तया यत्स्वस्थं गुरु स्वाभिमुखं स्वशक्त्या, आकृष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात् क्व पतत्वियं खे। गोलाध०।, 3. धनुष का खींचना या झुकाना, ज्या°—अमरु०।

आकेकर (वि०) [आके अन्तिके कीर्यते इति आ+कृ+अप्+टाप्—आकेकरा दृष्टिः सा अस्ति अस्य इति—आकेकरा+अच्] अधमुंदा, अर्धनिमीलित (आँखें)—निमीलिदाकेकरलोलचक्षुषा कि० ८।५३, मु० ३।२१, दृष्टिराकेकरा किंचित्स्फुटापांगे प्रसारिता, मीलितार्धपुटालोके ताराव्यावर्तनोत्तरा।

आकोकेरः (ग्रीक शब्द) मकर राशि।

आक्रन्दः [आ+क्रन्द्+घञ्] 1. रोना, चिल्लाना 2. पुकारना, आह्वान करना, 3. शब्द, चिल्लाहट 4. मित्र, रक्षक 5. भाई 6. रोने का स्थान 7 वह राजा जो अपने मित्र राजा को दूसरे की शत्रुता करने से रोके वह राजा जिसकी राजधानी मिलती हुई किसी दूसरी राजधानी के पास है।—मनु० ७।२०७।

आक्रन्दनम् [आ+क्रन्द्+ल्युट्] 1. विलाप, रुदन 2. ऊँचे स्वर से पुकारना।

आक्रन्दिक (वि०) [आक्रन्दं धावति इति आक्रन्द+ठञ्] वह व्यक्ति जो किसी दुखिया के रोने को सुनकर दौड़ कर उसके पास आता है।

आक्रन्दित (भू० क० कृ०) आ+क्रन्द्+क्त] 1 दहाड़ने वाला, या फूट २ कर रोने वाला, 2. आहूत, बुलाया हुआ,—**तम्** चिल्लाना, दहाड़ना।

आक्रमः—क्रमणम् [आ+क्रम्+घञ्, ल्युट् वा] 1. निकट आना, उपागमन 2. टूट पड़ना, आक्रमण करना, हमला 3. पकड़ना, ढकना, कब्जे में करना, 4. पार करना, प्राप्त करना, 5. विस्तार करना, चक्कर लगाना, बढ़ चढ़ कर होना 6. शक्ति से अधिक बोझा लादना।

आक्रान्त (भू० क० कृ०) [आ+क्रम्+क्त] 1. पकड़ा हुआ, अधिकार में किया हुआ, पराजित, पराभूत—आक्रान्तविमानमार्गम्—रघु० १३।३७, तक पहुँचना, भरपूर, अधिकृत, ढका हुआ—शुशुभे तेन चाक्रान्तं मङ्गलायतनं महत्—रघु० १७।२९, बलिभिर्मुखमाक्रान्तम्—भर्तृ० ३।१४, इसी प्रकार मदन° भय°, शोक° आदि, 2. लदा हुआ (मानों बोझ से) 3. बढ़ा हुआ, ग्रहण लगा हुआ, आगे बढ़ा हुआ—रघु०

१०।३८, मालवि० ३।५, 4. प्राप्त किया हुआ, अधिकार में किया हुआ।

आक्रान्तिः (स्त्री०) [आ+क्रम्+क्तिन्] 1. ऊपर रखना अधिकार में करना, पददलित करना—आक्रान्तिसंभावितपादपीठम्—कु० २।११ 2. पराभूत करना, दवाना, लादना 3. आरोहण, आगे बढ़ जाना 4. शक्ति, शौर्य, बल।

आक्रानकः [आ+क्रम्+ण्वुल्] आक्रमणकर्ता, हमलावर।

आक्रीडः-डम् [आ+क्रीड्+घञ्] 1. खेल, क्रीडा, आमोद 2. प्रमदवन, क्रीडोद्यान—आक्रीडपर्वतास्तेन कल्पिताः स्वेषु वेश्मसु—कु० २।४३, कमप्याक्रीडमासाद्य तत्र विशिश्रमिषुः—दश० १२।

आक्रुष्ट (भू० क० कृ०) [आ+क्रुश्+क्त] 1. डांट-डपट किया हुआ, निन्दित, तिरस्कृत, कलंकित—शि० १२। २७, 2. ध्वनित, चीत्कारपूर्ण 3. अभिशप्त,—ष्टम् 1. जोर की पुकार 2. घोर शब्द या रुदन, गालीगलौज-युक्त भाषण—मार्जारमूषिकास्पर्शे आक्रुष्टे क्रोधसंभवे—कात्या०।

आक्रोशः-शनम् [आ+क्रुश्+घञ्, ल्युट् वा] 1. पुकारना या जोर से चिल्लाना, उच्चस्वर से रोना या शब्द 2. निन्दा, कलंक, भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना—याज्ञ० २।३०२ 3. अभिशाप, कोसना 4. शपथ लेना।

आक्लेदः [आ+क्लिद्+घञ्] आर्द्रता, गीलापन, छिड़काव।

आक्षद्यूतिक (वि०) (स्त्री०—की) [अक्षद्यूतेन निर्वृत्तम् इति—ठक्] जूए से प्रभावित या समाप्त किया हुआ।

आक्षपणम् [आ+क्षप्+ल्युट्] 1. उपवास रखना, उपवास या व्रत द्वारा आत्मशुद्धि, संयम।

आक्षपाटिकः [अक्षपट+ठक्] 1. द्यूतक्रीडा का निर्णायक, द्यूतगृह का अधीक्षक 2. न्यायाधीश।

आक्षपाद (वि०) (स्त्री०—दी) [अक्षपाद+अण्] अक्षपाद या गौतम का शिष्य,—दः न्यायशास्त्र का अनुयायी, नैयायिक, तार्किक।

आक्षारः [आ+क्षर्+णिच्+घञ्] कलंक लगाना, (व्यभिचारादिकका) दोषारोपण करना।

आक्षारणम्-णा [आ+क्षर्+णिच्+ल्युट्] कलंक, दोषारोपण (विशेषतः व्यभिचार का)।

आक्षारित (भू० क० कृ०) [आ+क्षर्+णिच्+क्त] 1. कलंकित 2. दोषी, अपराधी।

आक्षिक (वि०) (स्त्री०—की) [अक्षेण दीव्यति जयति जितं वा—अक्ष+ठक्] 1. पासों से जूआ खेलने वाला, 2. जूए से जीता हुआ 3. जूए से संबंध रखने वाला—आक्षिकं ऋणम्—मनु० ८। १५९, जूए में किया हुआ कर्जा,—कम् 1. जूए में जीता हुआ धन 2. जूए का ऋण।

आक्षिप्तिका [आ+क्षिप्+क्त+टाप्, क, इत्वम्] रंगमंच पर आते हुए किसी पात्र के द्वारा गान विशेष—विक्रम० ४।

आक्षीब (वि०) [आ+क्षीव्+क्त नि०] 1. जिसने कुछ मद्यपान किया हुआ हो 2. मस्त, नशे में चूर।

आक्षेपः [आ+क्षिप्+घञ्] 1. दूर फेंकना, उछालना, खींचकर दूर करना, छीन लेना—अंशुकाक्षेपविलज्जितानाम्—कु० १।१४, पीछे हटना 2. भर्त्सना, झिड़कना, कलंक लगाना, अपशब्द कहना, अवज्ञापूर्ण निन्दा—°प्रचंडतया—उत्तर० ५।२९, विरुद्धमाक्षेपवचस्तितिक्षितम्—कि० १४।२५ 3. मन की उचाट, मन का खिचाव—विषयाक्षेपपर्यस्तबुद्धेः—भर्तृ० ३।४७, २३, 4. प्रयुक्त करना, लगाना, भरना (जैसे कि रंग)—गोरोचनाक्षेपनितान्तगौरैः—कु० ७।१७, 5. संकेत करना, (किसी दूसरे शब्दार्थ को) मान लेना, समझ लेना—स्वसिद्धये पराक्षेपः—काव्य०२, 6. अनुमान 7. धरोहर 8. आपत्ति या संदेह 9. (सा० शा० में) एक अलंकार जिसमें विवक्षित वस्तु को एक विशेष अर्थ जतलाने के लिए प्रकटतः दवा दिया जाय या निषिद्ध कर दिया जाय—काव्य० १०, सा० द० ७१४, और रसगंगाधर का आक्षेपप्रकरण।

आक्षेपकः [आ+क्षिप्+ण्वुल्] 1. फेंकनेवाला, 2 उचाट करने वाला, कलंक लगाने वाला, दोषारोपण करने वाला 3. शिकारी।

आक्षेपणम् [आ+क्षिप्+ल्युट्] फेंकना, उछालना।

आक्षोटः-डः [आ+अक्ष्+ओट् (ड्)+अण्] अखरोट की लकड़ी। दे० 'अक्षोट'।

आक्षोदनम् [आच्छोदनम्] आखेट, शिकार।

आखः, आखनः [आ+खन्+ड, घ वा] फावड़ा, खुर्पा।

आखण्डलः [आखण्डयति भेदयति पर्वतान्—आ+खण्ड्+डलच्, डस्य नेत्वम्—तारा०] इन्द्र—आखण्डलः काममिदं बभाषे,—कु० ३।११, तमीशः कामरूपाणामत्याखण्डलविक्रमम्—रघु० ४।८३, मेघ० १५।

आखनिकः [आ+खन्+इकन्] 1. खोदने वाला, खनिक 2. चूहा या मूसा 3. सूअर 4. चोर 5. कुदाल।

आखरः [आखन्+डर] 1. फावड़ा 2. खोदने वाला, खनिक।

आखातः—तम् [आ+खन्+क्त] प्राकृतिक तालाब, या जलाशय, खाड़ी।

आखानः [आ+खन्+घञ्] 1. चारों ओर से खोदना 2. फावड़ा 3. कुदाल, बेलदार।

आखुः [आ+खन्+कु डिच्च] 1. मूषिक, चूहा, छछूंदर,—अनुं वांछति शांभवो गणपतेराखुं क्षुधार्तः फणी—पंच० १।१५९, 2. चोरः 3. सूअर 4. फावड़ा

5. कंजूस -- विभवे सति नैवात्ति न ददाति जुहोति न. तमाहुराखुम् --। सम० उत्करः वल्मीक, वमी,---उत्थ (वि०) चूहों से उत्पन्न (--त्थम्) चूहों का निकलना, चूहों का समूह; --गः, --पत्रः, --रथः,--- वाहनः गणेश जिसका वाहन चूहा है,---घातः शूद्र, नीचजाति का पुरुष, (शा०) चूहों को पकड़ने और मारने वाला. चूहड़ा,---पाषाणः चुम्बक पत्थर,-- भुज्, भुज. बिल्ला, ।

आखेटः [आखिट्यन्ते त्रास्यन्ते प्राणिनोऽत्र -- आ+खिट्+घञ्, तारा०] शिकार करना, पीछा करना । सम० ---शीर्षकम् 1. चिकना फर्श 2. खान, गुफा ।

आखेटक (वि०) [आखेट + कन्] शिकार करने वाला ---कः शिकारी,-- कम् शिकार ।

आखेटिकः [आखेटे कुशलः ठक्] 1. शिकारी 2. शिकारी कुत्ता ।

आखोटः [आखः खनित्रमिव उटानि पर्णानि अस्य -- ब० स०] अखरोट का वृक्ष ।

आख्या [आख्यायतेऽनया --आख्या+अङ] 1. नाम, अभिधान-- किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या --श० ७।७, ३३, पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम कु० १।२६, तदाख्यया भुवि पप्रथे --रघु० १५।१०१; बहुधा समास के अन्त में जब प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है 'नामक' या 'नाम वाला' --अथ किमाख्यस्य राजर्षेः सा धर्मपत्नी श० ७, रघुवंशाख्यं काव्यम् आदि ।

आख्यात (भू० क० कृ०) [आ+ख्या+क्त] 1. कहा हुआ. बताया हुआ, घोषणा किया हुआ 2. गिना हुआ, पाठ किया हुआ, जतलाया हुआ 4. नामपद या क्रियापद,---तम् क्रिया, भावप्रधानमाख्यातम्---नि०, धात्वर्थेन विशिष्टस्य विधेयत्वेन बोधने, समर्थः स्वार्थयत्नस्य शब्दो वाख्यातमुच्यते ॥

आख्यातिः (स्त्री०) [आ+ख्या+क्तिन्] 1. कहना, समाचार, प्रकाशन 2. यश 3. नाम ।

आख्यानम् [आ+ख्या+ल्युट्] 1. बोलना, घोषणा करना, जतलाना, समाचार 2. किसी पुरानी कहानी की ओर निर्देश करना ---आख्यानं पूर्ववृत्तोक्तिः --सा० द० (उदा०---देशः सोऽयमरातिशोणितजलैर्यस्मिन् ह्रदाः पूरिताः---वेणी० ३।३१) 3. कथा, कहानी विशेषरूप से काल्पनिक या पौराणिक, उपाख्यान ---अप्सराः पुरूरवसं चकम इत्याख्यानविद आचक्षते ---मा० २, मनु० ३।२२३, 4. उत्तर---प्रश्नाख्यानयोः पा० ८।२।१०५ 5. भेदक धर्म ।

आख्यानकम् [आख्यान+कन्] कथा, छोटी पौराणिक कहानी, कथानकः;---आख्यानकाख्यायिकेतिहासपुराणाकर्णनेन---का० ७ ।

आख्यायक (वि०) [आ+ख्या+ण्वुल्] कहने वाला, सूचना देने वाला, कः 1. दूत, हरकारा --आख्यायकेभ्यः श्रुतमृत्युवृत्तिः-- भट्टि० २।४४, 2. अग्रदूत, संदेशवाहक ।

आख्यायिका [आख्यायक+टाप् इत्वम्] 'गद्य' रचना का नमूना , सुसंगत कहानी,---आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशादिकीर्तनम्, अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं गद्यं क्वचित् क्वचित्, कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते । आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसां येन केनचित् । अन्यापदेशेनाश्वासमुखे भाव्यर्थसूचनम्-- सा० द० ५६८, (साहित्य शास्त्र के लेखक 'गद्यरचना' को प्रायः दो (कथा और आख्यायिका) भागों में बांटते हैं, वह बाण के हर्षचरित को 'आख्यायिका' तथा कादम्बरी को 'कथा' के नाम से पुकारते हैं । दण्डी इस प्रकार के भेद को स्वीकार नहीं करता ---काव्या० १।२८ -- तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञाद्वयांकिता ॥

आख्यायिन् (वि०) [आ+ख्या+णिनि] जो व्यक्ति कहता है, सूचना या समाचार देता है---रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदुकर्णान्तिकचरः--श० १।२४ ।

आख्येय (स० कृ०) [आ+ख्या+यत्] कहने या समाचार देने के योग्य, शब्दों में कहने के योग्य, मौलिक संदेश मेघ० १०३ ।

आगतिः (स्त्री०) [आ+गम्+क्तिन्] 1. पहुंचना, आगमन---लोकस्यास्य गतागतिम्---रामा०, इति निश्चित प्रियतमागतयः शि० ९। ४३ 2. अधिग्रहण 3. वापसी 4. उद्गम ।

आगन्तु (वि०) [आ+गम्+तुन्] 1. आने वाला, पहुँचनेवाला, 2. भटका हुआ, 3. बाहर से आने वाला, बाह्य (कारण आदि) 4. नैमित्तिक, आनुषंगिक, आकस्मिक,---तुः नवागंतुक, अजनबी, अतिथि । सम० ---ज (वि०)आनुषंगिक रूप से या अकस्मात् उत्पन्न होने वाला ।

आगन्तुक (वि०) (स्त्री०---का,-- की) 1. अपनी इच्छा से आने वाला, बिना बुलाये आने वाला---आगन्तुका वयम् --धूर्त० 2. भूला-भटका (जैसे कि जानवर) ---याज्ञ० २। १६३ 3. आनुषंगिक आकस्मिक, नैमित्तिक --इत्यागन्तुका विकाराः---आश्व० 4. प्रक्षिप्त, क्षेपक (पाठ)---अत्र गन्धवद्गन्धमादनमित्यागन्तुकः पाठः---मल्लि० कु० ६। ४६ पर,---कः 1. अन्तःक्षेपक, हस्तक्षेपक 2. अजनबी, अतिथि, नवागंतुक ।

आगमः [आ+गम्+घञ्] 1. आना, पहुंचना, दर्शन देना---लतायां पूर्वलूनायां प्रसूनस्यागमः कुतः---उत्तर० ५।२०, अव्यक्ताद् व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे, राम्यागमे प्रलीयन्ते---भग० ८। १८, रघु० १४। ८०, पंच० ३। ४८, 2. अधिग्रहण---एषोऽस्या मुद्राया

आगमः—मुद्रा० १, श० ६, विद्यागमनिमित्तम् —विक्रम० ५, 3. जन्म, मूल, उत्पत्ति—आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत—भग० २।१४, 4. संकलन, संचय (धनका) अर्थ,° धन° आदि 5. प्रवाह, जलमार्ग, धारा (पानी की) रक्त,° फेन° 6. बीजक या प्रमाणक—दे० अनागम 7. ज्ञान —शिष्यप्रदेयागमाः भर्तृ० २।१५ प्रज्ञया सदृशागमः, आगमः सदृशारम्भः—रघु० १। १५ 8. आय, राजस्व 9. किसी वस्तु का वैध अधिग्रहण—आगमेऽपि बलं नैव भुक्तिः स्तोकापि यत्र नो—याज्ञ० २। २७ 10. संपत्ति की वृद्धि, 11. परंपरागत सिद्धांत या उपदेश, धार्मिक लेख, धर्मग्रन्थ, शास्त्र—अनुमानेन न चागमः क्षतः—कि० २। २८, परिशुद्ध आगमः—३३, 12. शास्त्राध्ययन, वेदाध्ययन 13. विज्ञान, दर्शन,—बहुधाप्यागमैर्भिन्नाः पन्थानः सिद्धिहेतवः—रघु० १०। २६, 14. वेद, धर्मग्रन्थ—न्यायनिर्णीतसारत्वान्निरपेक्षमिवागमे—कि० ११। ३९ 15. चार प्रकार के प्रमाणों में से अन्तिम जिसे नैयायिक 'शब्द' या 'आप्तवाक्य' कहते हैं ('वेद' ही ऐसे प्रमाण समझे जाते हैं) 16. उपसर्ग या प्रत्यय 17. (शब्द साधन में) वर्ण की वृद्धि या अन्तःक्षेप 18. वृद्धि—इडागमः 19. सिद्धान्त का ज्ञान (विप० प्रयोग)। सम०—नीत (वि०) अधीत, पठित, परीक्षित,—वृद्ध (वि०) ज्ञान में बढ़ा हुआ बहुत विद्वान् पुरुष—प्रतीप इत्यागमवृद्धसेवी—रघु० ६। ४१,—वेदिन् (वि०) 1. वेदों का जानने वाला 2. शास्त्रनिष्णात—सापेक्ष (वि०) प्रमाणकनापेक्षी, प्रमाणक से समर्थित।

आगमनम् [आ+गम्+ल्युट्] 1. आना, उपागमन. पहुँचना—रघु० १२। २४, 2. लौटना 3. अधिग्रहण 4. मैथुनेच्छा के लिए किसी स्त्री के पास पहुँचना।

आगमिन्, आगामिन् (वि०) [आगम्+णिनि, वा ह्रस्वः] 1. आने वाला, भावी 2. आसन्न, पहुँचने वाला।

आगस् (नपुं०) [इ+असुन्, आगादेशः] 1. दोष, अपराध, उल्लंघन—सहिष्ये शतमागांसि सूनोस्त इति यत्त्वया—शि० २। १०८ द्वौ रिपू मम मतौ समागसौ—रघु० ११। ७४, कृतागाः—मुद्रा० ३। ११ 2. पाप। सम०—कृत् (वि०) अपराध करने वाला, अपराधी, जुर्म करने वाला—अभ्यर्णमागस्कृतमस्पृशद्भिः—रघु० २-३२।

आगस्ती [अगस्त्यस्य इयम्, अण्—यलोपः] दक्षिण दिशा।

आगस्त्य (वि०) [अगस्त्यस्येदम्, यञ्—यलोपः] दक्षिणी।

आगाध (वि०) [अगाध एव स्वार्थे अण्] बहुत गहरा, अथाह, (आलं० भी)।

आगामिक (वि०) (स्त्री०—की) [आगाम+ठक्] 1. भविष्यत्काल से सम्बन्ध रखनें वाला—मतिरागामिका ज्ञेया बुद्धिस्तत्कालदर्शिनी—हैम० 2. आसन्न, आने वाला।

आगामुक (वि०) [आ+गम्+उकञ्] 1. आने वाला, 2. पहुंचने वाला 3. भावी।

आगारम् [आगमृच्छति—ऋ+अण्] घर, आवास। सम०—दाहः घर को आग लगा देना,—दाहिन् (वि०) घर फूंक व्यक्ति, गृहदाहक (बम आदि),—धूमः किसी घर से निकलने वाला धूआं।

आगुर् (स्त्री०) [आ+गुर्+क्विप्] स्वीकृति, सहमति, प्रतिज्ञा।

आगु (गू) रणम् [आ+गुर्+ल्युट्] गुप्त सुझाव।

आगूः (स्त्री०) सहमति, प्रतिज्ञा।

आग्निक (वि०) (स्त्री०—की) [अग्नेरिदं वा०—ठक्] अग्नि से संबंध रखने वाला, यज्ञाग्नि से संबद्ध।

आग्नीध्रम् [अग्निमिन्धे अग्नीत्, तस्य शरणम्, रण् भत्वाभ्रजश्—तारा०], यज्ञाग्नि जलाने का स्थान, हवनकुंड,—ध्रः यज्ञाग्नि जलाने वाला पुरोहित।

आग्नेय (वि०) (स्त्री०—यी) 1. आग से संबंध रखने वाला, प्रचंड 2. अग्नि को अर्पित,—यः 1. स्कंद या कार्तिकेय की उपाधि 2. दक्षिण-पूर्वी (आग्नेय कोण) दिशा,—यम् 1. कृत्तिका नक्षत्र 2. सोना 3. रुधिर 4. घी 5. आग्नेयास्त्र।

आग्रभोजनिकः [अग्रभोजनं नियतं दीयते अस्मै—ठक्] भोज में सर्वप्रथम या सबसे आगे आसन ग्रहण करने का अधिकारी ब्राह्मण।

आग्रयणः [अग्रे अयनं शस्य।देर्येन कर्मणा पृषो० ह्रस्व दीर्घ व्यत्ययः] अग्निष्टोम याग में सोम की प्रथम आहुति,—णम् वर्षा ऋतु के अन्त में नये अन्न तथा फलादिक से युक्त हवि।

आग्रहः [आ+ग्रह्+अच्] 1. पकड़ना, ग्रहण करना 2. आक्रमण 3. दृढ़ संकल्प, दृढ़भक्ति, दृढ़ता—चलेऽपि काकस्य पदार्पणाग्रहः—नै०, कु० ५।७ पर मल्लि०, 4. कृपा, संरक्षण।

आग्रहायणः [अग्रहायण+अण्] मार्गशीर्ष का महीना,—णी 1. मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा 2. मृगशिरस् नाम का नक्षत्र-पुंज।

आग्रहायण (णि) कः [आग्रहायणी पौर्णमास्यस्मिन् मासे—ठक्] मार्गशीर्ष का महीना।

आग्रहारिक (वि०) (स्त्री०—की) अग्रहार (ब्राह्मणों को दान में दी जाने वाली भूमि) प्राप्त करने का अधिकारी ब्राह्मण।

आघट्टना [आ+घट्ट+णिच्+युच्+टाप्] 1. हिलना-डुलना, कांपना, किसी से रगड़ना—रणद्भिराघट्टनया नभस्वतः—शि० १।१० 2. घर्षण, रगड़।

आघर्षः,-र्षणम् [आ+घृष्+घञ्, ल्युट् वा] मालिश

करना, रगड़, किसी से रगड़ना—गंडस्थलाघर्षगलन्म-दोदकद्रवद्रुमस्कंध निलायिनोऽलय: -शि० १२।६४ ।

आघाट: [आ+हन्+घञ् निपातः] हद, सीमा ।

आघात: [आ+हन्+घञ्] 1. प्रहार करना, मारना, 2. चोट, प्रहार, घाव,—तीव्राघातप्रतिहततरुस्कन्धलग्नैकदन्तः—श० १।३३, अभ्यस्यन्ति तटाघातम्—कु० २।५०, 3. बदकिस्मती, विपत्ति 4. कसाई-खाना —आघातं नीयमानस्य—हि० ४।६७ ।

आघार: [आ+घृ+घञ्] 1. छिड़काव 2. विशेषकर यज्ञ की अग्नि में घी डालना 3. घी ।

आघूर्णनम् [आ+घूर्ण+ल्युट्] 1. लोटना 2. उछालना, घूमना, चक्कर खाना, तैरना ।

आघोष: [आ+घुष्+घञ्] बुलावा, आवाहन ।

आघोषणम्–णा [आ+घुष्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] उद्घोषणा, ढिंढोरा,—एवमाघोषणायां कृतायाम्—पंच० ५ ।

आघ्राणम् [आ+घ्रा+ल्युट्] 1. सूंघना 2. संतोष, तृप्ति ।

आङ्गारम् [अङ्गाराणां समूहः—अण्] अंगारों का समूह ।

आङ्गिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. शारीरिक, कायिक 2. हाव-भाव से युक्त, शारीरिक चेष्टाओं से व्यक्त —अंङ्गिकोऽभिनयः, दे० 'अभिनय'—क: तबलची या ढोलकिया ।

आङ्गिरस: [अंगिरस्+अण्] बृहस्पति, अंगिरा की संतान (पुत्र) ।

आचक्षुस् (पुं०) [आ+चक्ष्+उसि वा०] विद्वान् पुरुष ।

आचम: [आ+चम+घञ्] कुल्ला करना, आचमन करना (हथेली पर जल लेकर पीना) ।

आचमनम् [आ+चम्+ल्युट्]. कुल्ला करना, धार्मिक अनुष्ठानों से पूर्व तथा भोजन के पूर्व और पश्चात् हथेली में जल लेकर घूंट-घूंट करके पीना—दद्यादाचमनं ततः—याज्ञ० १।२४२ ।

आचमनकम् [स्वार्थे आधारे वा कन्] पीकदान ।

आचय: [आ+चि+अच्] 1. इकट्ठा करना, बीनना 2. समूह ।

आचरणम् [आ+चर्+ल्युट्] 1. अभ्यास करना, अनुकरण करना, अनुष्ठान-धर्म°, मंगल° आदि 2. चालचलन, व्यवहार,—अधीतिबोधाचरणप्रचारणैः—नै० १।४, उदाहरण (विप० उपदेश) 3. प्रथा, परिपाटी 4. संस्था ।

आचान्त (वि) [आ+चम्+क्त] 1. जिसने कुल्ला करके मुंह शुद्ध कर लिया है, या जिसने आचमन कर लिया है 2. आचमन के योग्य ।

आचाम: [आ+चम्+घञ्] 1. आचमन करना, कुल्ला करके मुंह साफ करना 2. पानी या गर्म पानी के झाग ।

आचार: [आ+चर्+घञ्] 1. आचरण, व्यवहार, काम करने की रीति, चालचलन 2. प्रथा, रिवाज, प्रचलन - यस्मिन्देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः मनु० २।१८, 2. लोकाचार, प्रथा संबंधी कानून (विप० व्यवहार) समास में प्रथम पद के रूप में यदि प्रयुक्त हो तो अर्थ होता है : —'प्रथासंबंधी', 'पूर्ववत्' 'व्यवहार या प्रचलन के अनुसार'—दे० °धूम, °लाज 4. रूप, उपचार,—आचार इत्यवहितेन मया गृहीता—श० ५।३, महावी० ३।२६, रिवाजी या रूढ उपचार—आचारं प्रतिपद्यस्व—श० ४ । सम०—दीप: आरती उतारने का दीप,—धूमग्रहणम् सांस के द्वारा धूँआँ ग्रहण करने का संस्कार-विशेष जो कि यज्ञानुष्ठान के समय किया जाता है;—रघु० ७।२७, कु० ७।८२, —पूत (वि०) शुद्धाचारी—रघु० २।१३,—भेद: आचरण संबंधी नियमों का अन्तर,—भ्रष्ट,—पतित (वि०) स्वधर्म भ्रष्ट, जिसका आचार—व्यवहार बिगड़ गया हो, या जो आचरण से पतित हो गया हो,—लाज (पुं०, ब० व०) धान की खीलें जो कि सम्मान प्रदर्शित करने के लिए किसी राजा या प्रतिष्ठित महानुभाव पर फेंकी जाती हैं—रघु० २।१०,—वेदी पुण्यभूमि आर्यावर्त ।

आचारिक (वि०) [आचार+ठक्] प्रचलन या नियम के अनुरूप, अधिकृत ।

आचार्य: [आ+चर्+ण्यत्] 1. सामान्यतः अध्यापक या गुरु 2. आध्यात्मिक गुरु (जो उपनयन कराता है तथा वेद की शिक्षा देता है)—उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः, संकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते । —मनु० २।१४०, दे० 'अध्यापक' शब्द भी 3. विशिष्ट सिद्धान्त का प्रस्तोता 4. (जब व्यक्ति वाचक संज्ञाओं से पूर्व लगता है) विद्वान्, पंडित (अंग्रेजी के 'डाक्टर' शब्द का कुछ समानार्थक),—र्या गुरु (स्त्री), आध्यात्मिक गुरुआनी । सम०—उपासनम् धार्मिक गुरु की सेवा करना,—मिश्र (वि०) प्रतिष्ठित, सम्माननीय ।

आचार्यकम् [आ+चर्+वुञ्] 1. शिक्षण, अध्यापन, (पाठादिक का) पढ़ाना—लङ्कास्त्रीणां पुनश्चक्रे विलापाचार्यकं शरैः—रघु० १२।७८,—आचार्यकं विजयि मान्मथमाविरासीत्—मा० १।२६, 2. आध्यात्मिक गुरु की कुशलता ।

आचार्यानी [आचार्य+ङीप्—आनुक्] आचार्य या धर्म गुरु की पत्नी, शत्रुमलमनुलाय न पुनर्द्रष्टुमुत्सहे, त्र्यंबकं देवमाचार्यमाचार्यानीं च पार्वतीम् - महावी० ३।६ ।

आचित (भू० क० कृ०) [आ+चि+क्त] 1. पूर्ण, भरा हुआ, ढका हुआ—कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ —कि० १।३६, आचितनक्षत्रा द्यौः—आदि 2. बँधा हुआ, गुथा हुआ, बुना हुआ—अर्धाचिता सत्वरमुत्थितायाः—रघु० ७।१०, कु० ७।६१, 3. एकत्रित, संचित, ढेर किया हुआ,—तः 1. गाड़ी भर बोझ 2. (नपुं०

भी) दस भार या गाड़ी भर की तोल (८०,००० तोला)।

आचूषणम् [आ+चूष्+ल्युट्] 1. चूसना, चूस लेना 2. चूस कर बाहर निकाल देना, (आयु० में) सिंगी लगाना।

आच्छादः [आ+छद्+णिच्+घञ्] कपड़ा, पहनने का वस्त्र।

आच्छादनम् [आ+छद्+णिच्+ल्युट्]1. ढकना, छिपाना 2.ढक्कन, म्यान 3. कपड़ा, वस्त्र --भूषणाच्छादनाशनैः —याज्ञ० १।८२, 4. छाजन।

आच्छुरित (वि०) [आ+छुर्+क्त] 1. मिश्रित, मिलाया हुआ 2. खरोंचा हुआ, खुजलाया हुआ,—**तम्** 1. नखों को आपस में एक दूसरेसे रगड़ कर एक प्रकार का शब्द पैदा करना, नखवाद्य 2. ठहाका मार कर हंसना, अट्टहास।

आच्छुरितकम् [आच्छुरित+कन्] 1. नाखून की खरोंच 2. अट्टहास।

आच्छेदः —दनम् [आ+छिद्+घञ्+ल्युट् वा] 1. काट देना, अपच्छेदन 2. जरा सा काटना।

आच्छोटनम् [आ+स्फुट्+ल्युट्—पृषो०] अँगुलियाँ चटकाना।

आच्छोदनम् [आ+छिद्+ल्युट् पृषो० इत ओत्] शिकार करना, पीछा करना।

आजकम् [अजानां समूहः अज+वुञ्] रेवड़, बकरों का झुंड।

आजगवम् [अजगव+अण्] शिव का धनुष।

आजननम् [आ+जन्+ल्युट्] ऊंचे कुल में जन्म होना, प्रसिद्ध या विख्यात कुल।

आजानः [आ+जन्+घञ्] जन्म, कुल,—**नम्** जन्मस्थान।

आजानेय (वि०) (स्त्री०—**यी**) [आजे विक्षेपेऽपि आनेयः अश्ववाहो यथास्थानमस्य ब० स०] 1. अच्छी नस्ल का (जैसे घोड़ा) 2. निर्भय निश्शंक,—**यः** अच्छी नस्ल का घोड़ा शक्तिभिर्भिन्नहृदयाः स्खलन्तोऽपि पदे पदे, आजानन्ति यतः संज्ञामाजानेयास्ततः स्मृताः —शब्दक०।

आजिः [अजन्त्यस्याम्, अज्+इण्] 1. युद्ध, लड़ाई, संघर्ष ते तु यावन्त एवाजौ तावान् स ददृशे परैः—रघु० १२।४५, 2. कुश्ती या दौड़ की प्रतियोगिता 3. रणक्षेत्र—शस्त्राण्याजौ नयनसलिलं चापि तुल्यं मुमोच —विक्रम० ३।९।

आजीवः,—वनम् [आ+जीव्+घञ्, ल्युट् वा] 1. जीविका, जीवननिर्वाह का साधन, भरण—भवत्याजीवनं तस्मात्—पंच० १।४८,तु० रूपाजीव, अजाजीव, शस्त्राजीव आदि शब्दों की 2. पेशा, वृत्ति,—**वः** जैन-भिक्षुक।

आजीविका [आ+जीव्+अ+कन्+टाप्, अत इत्वम्] पेशा, जीवन निर्वाह का साधन, वृत्ति।

आजुर्—आजू (स्त्री०) [आ+ज्वर्+क्विप्, आ+जू+क्विप् च] 1. बेगार, बिना पारिश्रमिक प्राप्त किये काम करना 2. बेगार में काम करने वाला 3. नरक वास।

आज्ञप्तिः (स्त्री०) [आ+ज्ञा+णिच्+क्तिन, पुकागमः, ह्रस्वश्च] आदेश, हुकुम, आज्ञा।

आज्ञा [आ+ज्ञा+अङ+टाप्] 1. आदेश, हुकुम—तथेति शेषामिव भर्तुराज्ञाम्— कु० ३।२२ 2. अनुज्ञा, अनुमति। सम०—**अनुग,—अनुगामिन्,—अनुयायिन्,—अनुवर्तिन्,—अनुसारिन्,—संपादक,—वह** (वि०) आज्ञाकारी, आज्ञानुवर्ती, **कर,—कारिन्** (वि०) आज्ञा मानने वाला, आदेश का पालन करने वाला, आज्ञाकारी, (—**रः**) सेवक, **करणम्,—पालनम्** आज्ञा मानना, आदेश का पालन करना,—**पत्रम्** हुक्मनामा, लिखित आदेश, **प्रतिघातः,—भंगः** आज्ञा न मानना, आज्ञा के विरुद्ध कार्य करना नाज्ञाभङ्गं सहन्ते नृवर नृपतयस्त्वादृशाः सार्वभौमाः—मुद्रा० ३।२२।

आज्ञापनम् [आ+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. आदेश देना, हुक्म देना 2. जतलाना।

आज्यम् [आज्यते—आ+अञ्ज्+क्यप्] 1. पिघलाया हुआ घी,—मन्त्रोहमहमेवाज्यम्—श० १ (यह बहुधा 'घृत' से भिन्न समझा जाता है—सर्पिर्विलीनमाज्यं स्याद् घनीभूतं घृतं भवेत्)। सम० **पात्रम्—स्थाली** पिघले हुए घी को रखने का बर्तन,—**भुज्** (पुं०) 1. अग्नि का विशेषण 2. देवता।

आञ्चनम् [आ+अञ्च्+ल्युट्] सींग, तीर या किसी ऐसे ही और शस्त्र को थोड़ा खींच कर शरीर से बाहर निकालना।

आञ्छ (भ्वा० पर०)[आञ्छति, आञ्छित]1. लंबा करना, विस्तार करना, 2. विनियमित करना, (हड्डी या टांग आदि को) ठीक बैठाना।

आञ्छनम् [आञ्छ्+ल्युट्] (हड्डी या टांग का) ठीक बैठाना।

आञ्जनम् [अञ्जनस्येदम्—अण्]1. मरहम, विशेषतः आंखों के लिए 2. चर्बी,—**नः** मारुति या हनुमान्,—दाशरथिवर्लैरिवाञ्जननीलनलपरिगतप्रान्तैः—का० ५८।

आञ्जनी [अञ्जनस्येदम्—अण्, स्त्रियां ङीप्] आंखों में डालने का मरहम या अंजन। सम०—**कारी** लेप या उबटन आदि तैयार करने वाली स्त्री।

आञ्जनेयः [अंजना+ढक्] हनुमान्।

आटविकः [अटव्यां चरति भवो वा—ठक्] 1. वनवासी जंगल में रहने वाला पुरुष 2. मार्गदर्शक, अगुआ।

आटिः [आ+अट्+इण्] 1. एक प्रकार का पक्षी (शरारि)।

आटीकनम् [आटीक्+ल्युट्] बछड़े की उछल-कूद ।

आटीकरः [आटी+कृ+अप्] साँड ।

आटोपः [आ+तुप्+घञ्, पृषो० टत्वम्] 1. घमंड, स्वाभिमान, हेकड़ी, **साटोपम्**—घमंड के साथ, राजकीय या शाही ढंग से (रंगमंच के निर्देश के रूप में प्रायः प्रयुक्त) 2. सूजन, फैलाव, विस्तार, फुलाना —लो०—फटाटोपो भयङ्करः—शि० ३।७४ ।

आडम्बरः [आ+डम्ब्+अरन्] 1. घमंड, हेकड़ी 2. दिखावा, संपत्ति, बाहरी ठाठ-बाट—विरचितनारसिंहरूपाडम्बरम्—का० ५, निर्गुणः शोभते नैव विपुलाडम्बरोऽपि ना—भामि० १।११५, 3. आक्रमण के संकेतस्वरूप बिगुल का बजना 4. आरंभ 5. प्रचण्डता, रोष, आवेश 6. हर्ष, प्रसन्नता 7. बादलों की गरज, हाथियों की चिंघाड़ 8. युद्धभेरी 9. युद्ध का कोलाहल या शोर-गुल ।

आडम्बरिन् (वि०) [आडम्बर+इनि] हेकड़, घमंडी ।

आढकः—कम् [आ+ढौक्+घञ्, पृषो०] अनाज की माप, चौथाई द्रोण –अष्टमुष्टिर्भवेत् कुंचिः कुंचयोऽष्टौ तु पुष्कलम्, पुष्कलानि च चत्वारि आढकः परिकीर्तितः ।

आढ्य (वि०) [आ+ध्यै+क, पृषो०—तारा०] 1. धनी, धनवान्—आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया—भग० १६।१५, पंच ५।८, 2. (क) सम्पन्न, समृद्ध, सम्पन्नतायुक्त, (करण० या समास के अंतिम पद के रूप में)—सत्य° पंच ३।९, बिल्कुल सच्चा —वंशसंपल्लावण्याढ्याय—दश० १८ (ख) मिश्रित, सिञ्चित, गन्धाढ्यः, स्रज उत्तमगन्धाढ्याः– महा० 3. प्रचुर, पर्याप्त । सम० – चर (वि०) [स्त्री०—री] जो कभी ऐश्वर्यशाली रहा हो ।

आढ्यङ्करण (वि०) [स्त्री०—णी] समृद्ध करना,—**णम्** समृद्ध करने का साधन, धन ।

आढ्यम्भविष्णु,—भावुक (वि०) [आढ्यं—भू+इष्णुच्, उकञ् वा] धन सपन्न या प्रतिष्ठित होने वाला ।

आणक (वि०) [अणक+अण्] नीच, ओछा, अधम—**कम्** विशेष आसन में होकर मैथुन करना, रतिबंध—आणकं सुरतं नाम दम्पत्योः पार्श्वसंस्थयोः ।

आणव (वि०) (स्त्री०—वी) [अणु+अण्] अत्यन्त छोटा,—**वम्** अत्यंत छोटापन या सूक्ष्मता ।

आणिः (पुं० स्त्री०) [अण्+इण्] 1. गाड़ी के धुरे की कील, अक्षकील 2. घुटने के ऊपर का भाग 3. हद, सीमा 4. तलवार की धार ।

आण्ड (वि०) [अण्डे भवः—अण्] अंडे से पैदा होने वाला (जैसे कि पक्षी),—**डः** हिरण्यगर्भ या ब्रह्मा की उपाधि —**डम्** 1. अंडों का ढेर, पशु-पक्षियों का समूह, पक्षिशावक 2. अंडकोष, फोता ।

आण्डीर (वि०) [आण्डमस्ति अस्य—ईरच्] 1. बहुत अंडे रखने वाला, 2. वयस्क, पूर्णवयस्क (जैसे कि सांड) ।

आतङ्कः [आ+तङ्क्+घञ्, कुत्वम्] 1. रोग, शरीर की बीमारी—दीर्घतीव्रामयग्रस्तं ब्राह्मणं गामथापि वा, दृष्ट्वा पथि निरातङ्कं कृत्वा वा ब्रह्महा शुचिः—याज्ञ० ३।२४५ 2. पीड़ा, आधि, व्यथा, वेदना—किन्निमित्तोऽयमातङ्कः—श० ३, आतङ्कस्फुरितकठोरगर्भगुर्वी—उत्तर० १।४९, विक्रम० ३।३, डर, आशंका —पुरुषायुषजीविन्यो निरातङ्का निरीतयः—रघु० १।६३, भीति, त्रास 4. ढोल या तबले की आवाज ।

आतञ्चनम् [आ+तञ्च्+ल्युट्] 1. जमाना, गाढ़ा करना, 2. जमा हुआ दूध 3. एक प्रकार की छाछ 4. प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना 5. भय, संकट 6. गति, वेग ।

आतत (वि०) [आ+तन्+क्त] 1. फैलाया हुआ, विस्तारित 2. ताना हुआ (जैसे कि धनुष की डोरी) ।

आततायिन् (वि० या-संज्ञा) [आततेन विस्तीर्णेन शस्त्रादिना अयितुं शीलमस्य—तारा०] 1. किसी का वध करने के लिए प्रयत्नशील, साहसी—गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतं, आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् । मनु० ८।३५०-१, भग० १।३६, 2. जघन्य पाप करने वाला जैसे कि चोर, अपहरणकर्ता, हत्यारा, आग लगाने वाला महापातकी आदि—अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रोन्मत्तो धनापहः, क्षेत्रदारहरश्चैतान् षड् विद्यादाततायिनः—शुक्र० ।

आतपः [आ+तप्+घञ्] 1. गर्मी (सूर्य, अग्नि आदिकी) धूप,—आतपायोज्झितं धान्यं —महा०, धूप में डाला हुआ; प्रचंड°—ऋतु० १।११ 2. प्रकाश । सम०—**अत्ययः** सूर्य की गर्मी (धूप) का गुजरना, या बीत जाना, सूर्यास्त —आतपात्ययसंक्षिप्तनीवारासु—रघु० १।५२,—**अभावः** छाया,—**उदकम्** मरीचिका,—**त्रम्**,—**त्रकम्** छाता —तमातपक्लान्तमनातपत्रं—रघु० २।१३, ४७, पद्म° ४।५ राज्यं स्वहस्तधृतदण्डमिवातपत्रम्—श० ५।६, —**लङ्घनम्** गर्मी या धूप में रहना, लू लग जाना —आतपलङ्घनाद्बलवदस्वस्थशरीरा शकुन्तला—श० ३, —**वारणम्** छाता छतरी—नृपतिककुदं दत्वा यूने सितातपवारणम्—रघु० ३।७०, ९।१५,—**शुष्क** (वि०) धूप में सुखाया हुआ ।

आतपनः [आ+तप्+णिच्+ल्युट्] शिव ।

आत (ता) रः [आतरति अनेन आ+तृ+अप्, घञ् वा] दरिया की उतराई, मार्गव्यय, भाड़ा ।

आतर्पणम् [आ+तृप्+ल्युट्] 1. सन्तोष 2. प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, 3. दीवार या फर्श पर सफेदी करना (उत्सव आदि के अवसर पर) ।

आतापि (वि) न् [आ+तप् (ताप्)+णिनि] एक पक्षी, चील ।

आतिथेय (वि०) [स्त्री०—**यी**] [अतिथिषु साधुः—ढञ्, अतिथये इदं ढक् वा] 1. अतिथियों की सेवा करने वाला, अतिथियों के उपयुक्त—प्रत्युज्जगामातिथिमातिथेयः रघु० ५।२. १२।२५. तमातिथेयी बहुमानपूर्वया—कु० ५।३१, 2. अतिथि के उचित या उपयुक्त — आतिथेयः सत्कारः श० १,—**यम्** अतिथि-सत्कार —आतिथेयमनिवारितातिथिः—शि० १४।३८, सज्जातिथेया वयं–मा० २।५०,–**यी** सत्कार, मेहमान नवाज़ी —भामि० १।८५ ।

आतिथ्य (वि०) [अतिथि+ष्यञ्] सत्कारशील, अतिथि के लिए उपयुक्त—**थ्यः** अतिथि,—**थ्यम्** सत्कारपूर्वक स्वागत, अतिथि-सत्कार—तयातिथ्यक्रियाशांतरथक्षोभपरिश्रमम् – रघु० १।५८ ।

आतिदेशिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [अतिदेश+ठक्] (व्या० में) अतिदेश से सम्बद्ध–तु०।

आतिरे (रै) क्यम् [अतिरेक+ष्यञ्, पक्षे उभयपद वृद्धिः] फालतूपन, अधिकता, बहुतायत ।

आतिशय्यम् [अतिशय+ष्यञ्] अधिकता, बहुतायत, बृहत् परिमाण ।

आतुः [अत्+उण्] लट्ठों का बना बेड़ा, घन्नई (घड़ों को बाँध कर बनाई गई नौका) ।

आतुर (वि०) [ईषदर्थे आ+अत्+उरच्] 1. चोटिल, घायल 2. (रोग से) ग्रस्त, प्रभावित, पीड़ित—रावणावरजा तत्र राघवं मदनातुरा—रघु० १२।३२; काम°, भय° आदि 3. रुग्ण (मन या शरीर से), आकाशेशास्तु विज्ञेया बालवृद्धकृशातुराः मनु० ४।१८३, 4. उत्सुक, उतावला 5. दुर्बल, कमजोर—**रः** रोगी । सम०—**शाला** हस्पताल ।

आतोद्यम्,—द्यकम् [आ+तुद्+ण्यत्, स्वार्थे कन् च] एक प्रकार का वाद्ययंत्र—आतोद्यविन्यासादिका विषयः —वेणी० १ स्रजमातोद्यशिरोनिवेशिताम्—रघु० ८। ३४, १५।८८, उत्तर० ७ ।

आत्त (भू० क० कृ०) [आ+दा+क्त] 1. लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ—एवमात्तरतिः– रघु० ११।५७, मालवि० ५।१, 2. अंगीकार किया हुआ, उत्तरदायित्व लिया हुआ 3. आकृष्ट 4. खींचा हुआ, निस्सारित—गामात्तसारां रघुरप्यवेक्ष्य—रघु० ५।२६ इसी प्रकार आत्तबलं ११।७६, ले जाया गया । सम०—**गन्ध** (वि०) 1 जिसका घमंड निकाल दिया गया हो, आक्रान्त, पराजित—केनात्तगन्धो माणवकः—शं० ६ 2. सूंघा हुआ (जैसे कि फूल)—आत्तगन्धमवधूय शत्रुभिः—शि० १४।८४ (यहाँ आ° नं० 1 में बताये अर्थ भी रखता है),—**गर्व** (वि०) अवमानित, तिरस्कृत, अनादृत,—**दण्ड** (वि०) राजकीय दण्ड को धारण करने वाला,—**मनस्क** (वि०) जिसका मन (हर्ष आदि के कारण) स्थानान्तरित हो गया हो ।

आत्मक (वि०) [आत्मन्+कन्] (समास के अन्त में) से बना हुआ, से रचा हुआ, स्वभाव का, लक्षण का, पंच° पाँच तहों वाला, संशय° = संदिग्ध स्वभाव का, इसी प्रकार दुःख°, दहन° ।

आत्मकीय, आत्मीय (वि०) [आत्मक (न्)+छ] अपनों से सम्बन्ध रखने वाला, अपना—सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति श० २, स्वामिनमात्मीयं करिष्यामि –हि० २, जीत लेना,—प्रसादमात्मीयमिवात्मदर्शः—रघु० ७।६८, कु० २।१९, बन्धु, सम्बन्धी, बान्धव ।

आत्मन् (पुं०) [अत्+मनिण्] 1. आत्मा, जीव—किमात्मना यो न जितेन्द्रियो भवेत्–हि० १, आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु—कठ० ३।३, 2. स्व, आत्म– इस अर्थ में प्रायः यह शब्द तीनों पुरुषों में तथा पुंल्लिंग के एक वचन में प्रयुक्त होता है चाहे उस संज्ञा शब्द का लिंग, वचन कुछ ही हो जिसका यह उल्लेख करता है —आश्रमदर्शनेन आत्मानं पुनीमहे—श० १, गुप्तं ददृशुरात्मानं सर्वाः स्वप्नेषु वामनैः—रघु० १०।६०, देवी …. प्राप्तप्रसवमात्मानं गङ्गादेव्यां विमुञ्चति —उत्तर० ७।२, गोपायन्ति कुलस्त्रिय आत्मानमात्मना —महा०, 3. परमात्मा, ब्रह्म तस्माद्वा एतस्मादात्मनः आकाशः संभूतः – उप०, उत्तर० १।१, 4. सार, प्रकृति दे० 'आत्मक' ऊपर 5. चरित्र, विशेषता 6. नैसर्गिक प्रकृति या स्वभाव 7. व्यक्ति या समस्त शरीर– स्थितः सर्वोन्नतेनोर्वीं क्रान्त्वा मेरुरिवात्मना —रघु० १।१४, मनु० १२।१२, 8. मन, बुद्धि – मंदात्मन्, महात्मन् आदि 9. समझ – तु० आत्मसम्पन्न, आत्मवत् आदि 10. विचारणशक्ति, विचार और तर्कशक्ति 11. सप्राणता, जीवट, साहस 12. रूप, प्रतिमा 13. पुत्र —आत्मा वै पुत्रनामासि 14. देखभाल, प्रयत्न 15. सूर्य 16. अग्नि 17. वायु—'से बना या से युक्त अर्थ को प्रकट करने के लिए 'आत्मन्' शब्द समास के अन्त में प्रयुक्त होता है—दे० आत्मक । सम० —**अधीन** (वि०) अपने ऊपर आश्रित, स्वाश्रित, निराश्रित (–**नः**) 1. पुत्र 2. साला, पत्नी का भाई 3. मसखरा या विदूषक (नाट्य साहित्य में),—**अनुगमनम्** व्यक्तिगत सेवा,—**अपहारः** —अपने आप को छिपाना—कथं वा आत्मापहारं करोमि—श० १, —**अपहारकः** छद्मवेषी, कपटी,—**आराम** (वि०) 1 ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील (जैसे कि कोई योगी), आत्मज्ञान का अन्वेषक—आत्मारामा विहितरतयो निर्विकल्पे समाधौ—वेणी० १।२३, 2. अपने आप में प्रसन्न,—**आशिन्** (पुं०) मछली (ऐसा समझा जाता है कि मछली अपने बच्चों को या अपनी जाति के

सबसे कमजोर जीवों को खाकर पलती है) तु०—मत्स्या इव जना नित्यं भक्षयन्ति परस्परम्—रामा०,—**आश्रयः** अपने ऊपर निर्भर करना,—**ईश्वर** (वि०) आत्मसात्कृत, अपना स्वामी आप—आत्मेश्वराणां न हि जातु विघ्नाः समाधिभेदप्रभवो भवन्ति—कु० ३।४०, —**उद्भवः** 1. पुत्र 2. कामदेव (—**वा**) पुत्री,—**उपजीविन्** (पुं०) 1. जो अपने परिश्रम पर निर्भर करता है, श्रमिक 2. मजदूर 3. जो अपनी पत्नी के ऊपर आश्रित रहता है (मनु० ८।३६२ पर कुल्लूक), 4. पात्र, सार्वजनिक अभिनेता,—**काम** (वि०) 1. अपने आप को प्रेम करने वाला, अभिमान से युक्त, घमंडी 2. ब्रह्म या परमात्मा को प्रेम करने वाला,—**गत** (वि०) मन में उपजा हुआ,—°तो मनोरथः—श० १, (—**तम्**) [अव्य०] एक ओर, जो मन में कहा हुआ समझा जाय (विप० **प्रकाशम्**—जोर से) (यह बहुधा रंगमंच के निर्देश के रूप में नाटकों में प्रयुक्त होता है) —यह 'स्वगत' का ही पर्याय है जिसकी परिभाषा यह है:—अश्राव्यं खलु यद्वस्तु तदिह स्वगतं मतम्—सा० द० ६,—**गुप्तिः** (स्त्री०) गुफा, किसी जानवर के छिपने का स्थान,—**ग्राहिन्** (वि०) स्वार्थी, लालची, —**घातः** 1. आत्महत्या, 2. नास्तिकता,—**घातकः**, —**घातिन्** (पुं०) 1. आत्महत्यारा अपने आप को स्वयं मारनेवाला,—व्यापादयेत् वृथात्मानं स्वयं योऽग्न्युदकादिभिः, अवैधेनैव मार्गेण आत्मघाती स उच्यते ॥ 2. नास्तिक,—**घोषः** 1. मुर्गा 2. कौवा —**जः**—**जन्मन्** (पुं०),—**जातः**,—**प्रभवः**,—**सम्भवः** 1. पुत्र—तमात्मजन्मानमजं चकार—रघु० ५।३६, तस्यामात्मानुरूपायामात्मजन्मसमुत्सुकः—रघु० १।३३, मा० १, कु० ६।२८, 2. कामदेव,—**जा** 1. पुत्री—वंद्यं युगं चरणयोर्जनकात्मजायाः—रघु० १३। ७८, तु० नगात्मजा आदि 2. तर्कशक्ति, समझ,—**जयः** अपने ऊपर विजय प्राप्त करना, आत्मत्याग, आत्मोत्सर्ग,—**ज्ञः**,—**विद्** (पुं०) ऋषि, जो अपने आप को जानता है,—**ज्ञानम्** 1. आत्मा या परमात्मा की जानकारी, 2. अध्यात्म ज्ञान,—**तत्त्वम्** आत्मा या परमात्मा की वास्तविक प्रकृति,—**त्यागः** 1. स्वार्थत्याग 2. दूसरे के भले के लिए अपनी हानि करना, आत्महत्या,—**त्यागिन्** (पुं०) 1. आत्महत्या करने वाला—आत्म त्यागिन्यो नाशौचोदकभाजनाः—याज्ञ० ३।६, 2. नास्तिक —**त्राणम्** 1. आत्मरक्षा 2. शरीर-रक्षक,—**दर्शः** आईना—प्रसादमात्मीयमिवात्मदर्शः—रघु० ७।६९, —**दर्शनम्** 1. अपने आपको देखना 2. आध्यात्मिक ज्ञान,—**द्रोहिन्** (वि०) 1. अपने आपको पीडित करने वाला 2. आत्महत्या करने वाला—**नित्य** (वि०) लगातार हृदय में होने वाला, अपने आपको अति प्रिय, —**निन्दा** अपनी निंदा,—**निवेदनम्** अपने आपको प्रस्तुत करना (जैसे किसी प्राणी का किसी देवता के प्रति बलिदान)—**निष्ठ** (वि०) आत्मज्ञान का अनवरत अन्वेषक,—**प्रभ** (वि०) स्वयं प्रकाशवान् —**प्रभवः**=°जः,—**प्रशंसा** अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनना,—**बन्धुः**,—**बान्धवः** अपना निजी संबंधी—आत्ममातुः स्वसुः पुत्रा आत्मपितुः स्वसुः सुताः, आत्ममातुलपुत्राश्च विज्ञेया ह्यात्मबान्धवाः—शब्दक०। अर्थात् मौसी का पुत्र, भुवा का पुत्र, और मामा का पुत्र,—**बोधः** 1. आध्यात्मिक ज्ञान 2. आत्मा का ज्ञान,—**भूः**, —**योनिः** 1. ब्रह्मा,—वचस्यवसिते तस्मिन् ससर्ज गिरमात्मभूः—कु० २।५३, 2. विष्णु 3. शिव—श० ७। ३५ 4. कामदेव, प्रेम का देवता 5. पुत्र (स्त्री०—**भूः**) 1. पुत्री 2. बुद्धिवैभव, समझ,—**मात्रा** परमात्मा का अंश,—**मानिन्** (वि०) 1. स्वाभिमानी, आदरणीय 2. घमंडी,—**याजिन्** (वि०) अपने लिए यज्ञ करने वाला, (पुं०) विद्वान् पुरुष जो शाश्वत आनन्द प्राप्त करने के लिए अपने तथा दूसरे व्यक्तियों की आत्मा का अध्ययन करता है, जो सब प्राणियों को अपने समान समझता है—सर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि, समं पश्यन्नात्मयाजी स्वाराज्यमधिगच्छति —मनु० १२।९१,—**योनिः**=°भू (पुं०), कु० ३।७० —**रक्षा** अपना बचाव,—**लाभः** जन्म, उत्पत्ति, मूल —यैरात्मलाभस्त्वया लब्धः—मुद्रा० ३।१,५।२३, कि० ३।२३ १७।१९,—**वंचक** (वि०) अपने आपको धोखा देने वाला,—**वंचना** आत्म-भ्रम, अपने को धोखा देना, —**वधः**,—**वध्या**,—**हत्या** अपनी हत्या स्वयं करना, —**वश** (वि०) अपनी इच्छा पर आश्रित रहने वाला (—**शः**) 1. आत्मनियन्त्रण, आत्म-प्रशासन 2. अपना नियन्त्रण, अधीनता, °शं नी, °वशीकृ अधीन करना, विजय प्राप्त करना,—**वश्य** (वि०) अपने ऊपर नियन्त्रण रखने वाला, आत्मसंयमी, अपने मन व इन्द्रियों को वश में रखने वाला,—**विद्** (पुं०) बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि, जैसा कि 'तरति शोकमात्मवित्' में,—**विद्या** आत्मा का ज्ञान, अध्यात्म-ज्ञान,—**वीरः** 1. पुत्र 2. पत्नी का भाई 3. विदूषक (नाटकों में),—**वृत्ति** (वि०) आत्मा में रहने वाला (**त्तिः**—स्त्री०) 1. हृदय की अवस्था, अपने से संबंध रखने वाली चेष्टाएँ, अपनी निजी अवस्था या परिस्थिति—विस्माययन् विस्मितमात्मवृत्तौ—रघु० २।३३,—**शक्तिः** (स्त्री०) अपनी निजी सामर्थ्य या योग्यता, अन्तर्हित शक्ति या बल —दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या—पंच० १।३६१, अपनी शक्ति के अनुसार,—**श्लाघा**,—**स्तुतिः** (स्त्री०) अपनी प्रशंसा स्वयं करना, शखी बघारना, डींग मारना,—**संयमः** अपनी इन्द्रियों पर काबू रखना,

—संभवः—समुद्भवः 1. पुत्र—चकार नाम्ना रघुमात्मसंभवम्—रघु० ३।२१, ११।५७, १८।८ 2. प्रेम का देवता, कामदेव 3. ब्रह्मा की उपाधि, शिव, विष्णु (—वा) 1. पुत्री 2. समझ,—संपन्न (वि०) 1. स्वस्थचित्त, 2. बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली,—हन् = घातिन्, —हननम्,—हत्या आत्मघात,—हित (वि०) अपने लिए हितकर, (—तम्) अपना निजी भला या कल्याण।

आत्मना (अव्य०) ['आत्मन्' का करण० ए० व०] आत्मवाची कर्तृकारक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है—अय चास्तमिता त्वमात्मना—रघु० ८।५१, तुम स्वयम्, यह प्रायः क्रमिक संख्यासूचक शब्दों के साथ जोड़ा जाता है—उदा०—°द्वितीयः आप सहित दूसरा अर्थात् वह तथा स्वयं।

आत्मनीन (वि०) [आत्मन्+ख] 1. अपने से संबंध रखने वाला, अपना निजी,—कस्यैष आत्मनीनः—मालवि० ४, 2. अपने लिए हितकर—आत्मनीनमुपतिष्ठते—कि० १३।६९,—नः 1. पुत्र 2. पत्नी का भाई 3. विदूषक (नाटकों में)।

आत्मनेपदम् [आत्मने आत्मार्थ-फलबोधनाय पदम्—अलुक् स०] 1. आत्मवाची क्रियापद, दो प्रकार के क्रियापदों (परस्मैपद तथा आत्मनेपद) में से एक जिनमें कि संस्कृत भाषा की धातु—रूपावली पाई जाती है, 2. आत्मनेपद के प्रत्यय।

आत्मम्भरि (वि०) [आत्मानं बिभर्ति इति—आत्मन्+भृ+खि, मुम् च] स्वार्थी, लालची, (जो केवल अपनी ही उदरपूर्ति करता है)—आत्मम्भरिस्त्वं पिशितैर्नराणाम्—भट्टि० २।३३, हि० ३।१२१।

आत्मवत् (वि०) [आत्मन्+मतुप्—मस्य वः] 1. स्वस्थचित्त, 2. शान्त, दूरदर्शी, बुद्धिमान्—किमिवावसादकरमात्मवताम्—कि० ६।१९।

आत्मवत्ता [आत्मवत्+तल्+टाप्] स्वस्थचित्तता, स्वनियंत्रण, बुद्धिमत्ता—प्रकृतिष्वात्मजमात्मवत्तया—रघु० ८।१०, ८४।

आत्मसात् (अव्य०) [आत्मन्+साति] अपने अधिकार में, अपना निजी, (प्रायः 'कृ' और 'भू' के साथ]—दुरितैरपि कर्तुमात्मसात् - रघु० ८।२।

आत्यंतिक (वि०) (स्त्री०—की) [अत्यन्त+ठञ्] 1. सतत, अनवरत, अनन्त, स्थायी, नित्यस्थायी—स आत्यन्तिको भविष्यति—मुद्रा० ४, विष्णुगुप्तहतकस्यात्यन्तिकश्रेयसे—७।१५, भग० ६।२१, 2. अत्यधिक, प्रचुर, सर्वाधिक 3. सर्वोच्च, पूर्ण—आत्यन्तिकी स्वत्वनिवृत्तिः—मिता०।

आत्ययिक (वि०) [स्त्री०—की] [अत्यय+ठक्] 1. नाशकारी, सर्वनाशकर 2. पीडाकर, अमंगलकर, अशुभसूचक 3. अत्यावश्यक, अपरिहार्य, आपाती।

आत्रेय (वि०) (स्त्री०—यी) [अत्रि+ढक्] अत्रि से संबंध रखने वाला, या अत्रि की संतान,—यः अत्रि का वंशज,—यी 1. अत्रि की पुत्री 2. अत्रि की पत्नी 3. रजस्वला स्त्री।

आत्रेयिका [आत्रेयी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] रजस्वला स्त्री।

आथर्वण (वि०) (स्त्री०—णी) [अथर्वन्+अण्] अथर्ववेद या अथर्वा ऋषि से संबंध रखने वाला,—णः 1. अथर्ववेद का अध्येता या ज्ञाता ब्राह्मण 2. यज्ञ का पुरोहित जिससे संबद्ध यज्ञ कर्म पद्धति का विधान अथर्ववेद में निहित है 3. स्वयं अथर्ववेद 4. गृहपुरोहित।

आथर्वणिकः [अथर्वन्+ठक्] अथर्ववेद का अध्येता ब्राह्मण।

आदंशः [आ+दंश्+घञ्] 1. डंक, डंक मारने से पैदा हुआ घाव, 2. डंक, दांत।

आदरः [आ+दृ+अप्] 1. आदर, पूज्यभाव, सम्मान, —निर्माणमेव हि तदादरलालनीयम्—मा० ९।४९, न जातहार्देन न विद्विषादरः—कि० १।३३, कु० ६।२० 2. अवधान, सावधानी, सम्मान्य व्यवहार, कु० ६।९१, 3. उत्सुकता, इच्छा, स्नेह—भूयान्दारार्थमादरः कु० ६।९३, यत्किञ्चनकारितायामादरः—का० १२२, 4. प्रयत्न चेष्टा—गृहयंत्रपताकाश्रीरपौरादरनिर्मिता—कु० ६।४१, 5. उपक्रम, आरंभ 6. प्रेम, आसक्ति।

आदरणम् [आ+दृ+ल्युट्] सत्कार, इज्जत, सम्मान।

आदर्शः [आ+दृश्+घञ्] 1. आईना, मुंह देखने का शीशा, दर्पण—आत्मानमालोक्य च शोभमानमादर्शबिंबे स्तिमितायताक्षी—कु० ६।२२, 2. मूल पांडुलिपि जिससे प्रतिलिपि तैयार की जाय, (आलं०) नमूना, प्रतिकृति, प्रकार,—आदर्शः शिक्षितानाम् - मृच्छ० १।४८; आदर्शः सर्वशास्त्राणाम् - का० ५, इसी प्रकार,—गुणानाम्—आदि 3. कार्य की एक प्रतिलिपि 4. टीका, भाष्य।

आदर्शकः [आदर्श+कन्] दर्पण, आईना।

आदर्शनम् [आ+दृश्+ल्युट्] 1. दिखलावा, प्रदर्शन 2. दर्पण।

आदहनम् [आ+दह्+ल्युट्] 1. जलन 2. चोट पहुँचाना, हत्या करना 3. खरी-खोटी सुनाना, घृणा करना 4. श्मशान।

आदानम् [आ+दा+ल्युट्] 1. लेना, स्वीकार करना, पकड़ना—कुशाङ्कुरादानपरिक्षताङ्गुलिः—कु० ५।११, आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव—रघु० ४।८६, 2. उपार्जन, प्रापण 3. (रोग का) लक्षण।

आदायिन् (वि०) [आ+दा+णिनि] ग्रहण करने वाला, प्राप्त करने वाला।

आदि (वि०) [आ+दा+कि] 1. प्रथम, प्राथमिक, आदिम—निदानं त्वादिकारणम्—अमर०, 2. मुख्य,

पहला, प्रधान, प्रमुख—प्रायः समास के अन्त में—इसी अर्थ में नी० दे० 3. समय की दृष्टि से प्रथम,—दिः 1. आरंभ, उपक्रम (विप० 'अन्त')—अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्—मनु० १।८, भग० २।४१, जगदादिरनादिस्त्वम्—कु० २।९, समास के अन्त में प्रयुक्त होकर बहुधा निम्नांकित अर्थों में अनूदित किया जाता है—'आरंभ करके' 'वगैरा' २ 'इसी प्रकार और भी (उसी प्रकृति और प्रकार के), 'ऐसे'—इन्द्रादयो देवाः—इन्द्र तथा अन्य देवता, या 'भू' आदि से आरंभ होने वाले शब्द धातु कहलाते हैं और पाणिनि के द्वारा वह प्रायः व्याकरण के शब्द-समूह को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किये गये हैं—अदादि, दिवादि, स्वादि इत्यादि, 2. पहला भाग या खंड, 3. मुख्य कारण। सम०—अन्त (वि०) जिसका आरंभ और समाप्ति दोनों हों (—तम्) आरंभ और अन्त; °वत्—सान्त, समापिका,—उदात्त (वि०) वह शब्द जिसके आरम्भिक अक्षर पर स्वराघात हो,—करः,—कर्तृ,—कृत् (पुं०) सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा का विशेषण—भग० ११।३७—कविः प्रथम कवि, ब्रह्मा की उपाधि—क्योंकि उसी ने संसार की सर्वप्रथम रचना की तथा वेदों का ज्ञान दिया, वाल्मीकि की उपाधि—क्योंकि उसी ने सर्वप्रथम कवियों का पथप्रदर्शन किया—जब कि उसने क्रौंच दम्पती के एक पक्षी को व्याध के द्वारा मारा जाता हुआ देखा, उसने उस दुष्ट व्याध को शाप दिया और उसका वही शोक अपने आप कविता के रूप में प्रकट हुआ (श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः), इसके पश्चात् ब्रह्मा ने वाल्मीकि को राम का चरित लिखने के लिए कहा, फलस्वरूप संस्कृत साहित्य में प्रथम काव्य 'रामायण' के रूप में प्रकट हुआ,—काण्डम् रामायण का प्रथम खण्ड,—कारणम् (विश्व का) प्रथम या मुख्य कारण, जो कि वेदान्तियों के अनुसार 'ब्रह्म' है, तथा नैयायिकों—विशेषतः वैशेषिकों—के अनुसार विश्व का प्रथम या भौतिक कारण 'अणु' है, परमात्मा नहीं;—काव्यम् प्रथम काव्य—अर्थात् वाल्मीकि रामायण—दे० 'आदि कवि,'—देवः 1. प्रथम या सर्वोच्च परमात्मा—पुरुषं शाश्वतं दिव्यं आदिदेवमजं विभुम्—भग० १०।१२, ११।३८, 2. नारायण या विष्णु 3. शिव 4. सूर्य,—दैत्यः हिरण्यकशिपु की उपाधि,—पर्वन् महाभारत का प्रथम खंड,—पु (पू) रुषः 1. सर्वप्रथम या आदिम प्राणी, सृष्टि का स्वामी 2. विष्णु, कृष्ण या नारायण—तं च प्रापुरुदन्वन्तं बुबुधे चादिपूरुषः—रघु० १०।६७ तमर्घ्यमर्घ्यादिकयादिपूरुषः—शि० १।१४—बलम् जननात्मक शक्ति, प्रथम वीर्य,—भव,—भूत (वि०) 1. सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ, (—वः,—तः) 'आदिजन्मा' आदिम प्राणी, ब्रह्मा की उपाधि. 2. विष्णु—रसातलादादिभवेन पुंसा—रघु० १३।८, 3. बड़ा भाई,—मूलम् पहली नींव, आदिम कारण,—वराहः 'प्रथमशूकर' विष्णु की उपाधि—उसके तृतीय अवतार (वराहावतार) की ओर संकेत—शक्तिः (स्त्री०) 1. माया की शक्ति 2. दुर्गा की उपाधि,—सर्गः प्रथम सृष्टि।

आदितः, आदौ (अव्य०) [आदि+तसिल्, अधि० ए० व०] आरंभ से लेकर, सबसे पहले—तद्दैवेनादितो हतम्—उत्तर० ५।२०।

आदितेयः [अदिति+ढक्] 1. अदिति का पुत्र 2. देवता, सामान्य देव।

आदित्यः [अदिति+ण्य] 1. अदिति का पुत्र, देव, देवता 2. बारह आदित्यों (सूर्य के भाग) का समुदायवाचक नाम—आदित्यानामहं विष्णुः—भग० १०।२१, कु० २।२४ (यह बारह आदित्य केवल प्रलयकाल में उदित होते हैं)—तु० वेणी० ३।६, दग्धुं विश्वं दहनकिरणैर्नोदिता द्वादशार्काः 3. सूर्य 4. विष्णु का पाँचवाँ अवतार, वामनावतार। सम०—मंडलम् सूर्यमंडल,—सूनुः सूर्य का पुत्र, सुग्रीव, यम, शनि, कर्ण।

आदि (दी) नवः—वम् [आ+दी+क्त=आदीनस्य वानम्—वा+क] 1. दुर्भाग्य, कष्ट, 2. दोष—दे० 'अनादीनव'।

आदिम (वि०) [आदौ भवः—आदि+डिमच्] प्रथम, पुरातन, मौलिक।

आदीनव—दे० 'आदिनव'।

आदीपनम् [आ+दीप्+ल्युट्] 1. आग लगाना 2. भड़काना, भड़कना 3. उत्सवादिक अवसर पर दीवार फर्श आदि को चमका देना।

आदृत (भू० क० कृ०) [आ+दृ+क्त] 1. सम्मानित, प्रतिष्ठित, 2. (कर्तृवाच्य के रूप में) (क) उत्साही, परिश्रमी, दत्तचित्त, सावधान, (ख) सम्मान युक्त।

आदेवनम् [आ+दिव्+ल्युट्] 1. जूआ खेलना 2. जूआ खेलने का पासा 3. जूआ खेलने की बिसात, खेलने का स्थान।

आदेशः [आ+दिश्+घञ्] 1. हुक्म, आज्ञा—भ्रातुरादेशमादाय—रामा०, आदेशं देशकालज्ञः प्रतिजग्राह—रघु० १।९२, राजद्विष्टादेशकृतः—याज्ञ० २।३०४, राजा के द्वारा निषिद्ध कार्यों को करने वाला 2. सलाह, निर्देश, उपदेश, नियम 3. विवरण, सूचना, संकेत 4. भविष्यकथन—विप्रश्निकादेशवचनानि—का० ६४, 5. (व्या०) स्थानापन्न—धातोः स्थान इवादेशं सुग्रीवं संन्यवेशयत्—रघु० १२।५८।

आदेशिन् [आ+दिश्+णिनि] 1. आदेश देने वाला, हुक्म देने वाला 2. उत्तेजक, भड़काने वाला—रघु० ६८, —(पुं०) 1. सेनापति, आज्ञप्ता 2. ज्योतिषी ।

आद्य (वि०) [आदौ भवः—यत्] 1. प्रथम, आदि कालीन 2. मुखिया, प्रमुख, अगुआ—आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव—रघु० १।११ 3. (समास के अन्तमें) आरंभ करके, वगैरा २, दे० आदि,—द्या 1. दुर्गा की उपाधि 2. मास का पहला दिन,—द्यम् 1. आरंभ 2. अनाज, आहार। सम०—कविः 'आदिकवि' ब्रह्मा या वाल्मीकि की उपाधि, दे० 'आदिकवि' ।—बीजम् विश्व का मुख्य या भौतिक कारण जो सांख्य मतानुसार 'प्रधान' या जडनियम कहलाता है ।

आद्यून (वि०) [आ+दिव्+क्त, ऊठ् नत्वं च, 'अद्' खाना से व्युत्पन्न प्रतीत होता है] बहुभोजी, घाउघप, पेटू, भुक्खड़—कि० ११।५ ।

आद्योतः [आ+द्युत्+घञ्] प्रकाश, चमक ।

आधमनम् [आ+धा+कमनन्] 1. धरोहर, निक्षेप-एको ह्यनीशः सर्वत्र दानाधमनविक्रये कात्या०; योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम्—मनु० ८।१६५, 2. विक्री के सामान का धूर्तता के साथ मूल्य चढ़ाना ।

आधमर्ण्यम् [अधमर्ण+ष्यञ्] कर्जदारी ।

आधर्मिक (वि०) [अधर्म+ठञ्] अन्यायी, बेईमान ।

आधर्षः [आ+धृष्+घञ्] 1. घृणा 2. बलात् चोट पहुँचाना ।

आधर्षणम् [आ+धृष्+ल्युट्] 1. दोष या अपराध का निश्चय, दण्डादेश 2. निराकरण 3. चोट पहुँचाना, सताना ।

आधर्षित (भू० क० कृ०) [आ+धृष्+क्त] 1. चोट पहुंचाया हुआ, 2. तर्क द्वारा निराकृत 3. दण्डादिष्ट, सिद्ध-दोष ।

आधानम् [आ+धा+ल्युट्] 1. रखना, ऊपर रख देना 2. लेना, मान लेना, प्राप्त करना, वापिस लेना, 3. यज्ञाग्नि को स्थापित करना (अग्न्याधान)—पुनर्दारक्रियां कुर्यात् पुनराधानमेव च—मनु० ५।१६८, 4. करना कार्य में परिणत करना, निष्पन्न करना 5. बीच में रखना, रख देना,=गुणो विशेषाधानहेतुः सिद्धो वस्तुधर्मः—सा० द० २, प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि—रघु० १।२४ 6. बीजारोपण, उत्पादन—कौतुकाधानहेतोः—मेघ० ३, गर्भाधानक्षणपरिचयात्—९, 7. निक्षेप, धरोहर—याज्ञ० २।२३८, २४७ ।

आधानिकः [आधान+ठञ्] सहवास के पश्चात् गर्भाधान के निमित्त किया जाने वाला संस्कार ।

आधारः [आ+धृ+घञ्] 1. आश्रय, स्तंभ, टेक 2. (अतः) संभाले रखने की शक्ति, सहायता, संरक्षण, मदद—त्वमेव चातकाधारः—भर्तृ० २।५०, 3. भाजन आशय—तिष्ठन्त्वाप इवाधारे—पंच० १।६७, चराचराणां भूतानां कुक्षिराधारतां गतः—कु० ६।६७, कु० ३।४८, श० १।१४, 4. आलवाल,—आधारबन्धप्रमुखैः प्रयत्नैः—रघु० ५।६, 5. पुलिया, बाँध, पुश्ता, (तटबन्ध) 6. नहर 7. अधिकरण कारक का भाव, स्थान—आधारोऽधिकरणम् ।

आधिः [आ+धा+कि] 1. मानसिक पीड़ा, वेदना, चिन्ता (विप० व्याधि=शारीरिक पीड़ा)—न तेषामापदः सन्ति नाधयो व्याधयस्तथा—महा०,—मनोगतमाधिहेतुम्—श० ३।११, रघु० ८।२७, ९।५४, भर्तृ० ३।१०५, भामि० ४।११, 2. विपत्ति, अभिशाप, सन्ताप—यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः—श० ४।१७, महावी० ६।२८, 3. निक्षेप, धरोहर, गिरवी, रेहन—याज्ञ० २।२३, मनु० ८।१४३, 4. स्थान, आवास 5. अवस्थान, ठिकाना 6. परिवार के भरण-पोषण के लिए चिन्तातुर। सम०—ज्ञ (वि०) पीड़ाग्रस्त,—भोगः धरोहर की चीज़ का उपयोग (जैसे घोड़े गाय आदि का),—स्तेनः स्वामी से पूछे बिना धरोहर की राशि को खर्च करने वाला व्यक्ति ।

आधिकरणिकः [अधिकरण+ठक्] न्यायाधीश—मृच्छ० ९ ।

आधिकारिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ 2. अधिकारी ।

आधिक्यम् [अधिक+ष्यञ्] अधिकता, बहुतायत, प्राचुर्य ।

आधिदैविक (वि०) (स्त्री०—की) [अधिदेव+ठञ्] 1. अधिदेव या इन्द्रियों के अधिष्ठातृ देव से सम्बन्ध रखने वाला (जैसा कि एक मन्त्र) मनु० ६।८३, 2. दैवकृत, भाग्य में लिखी हुई—(पीड़ा आदि), सुश्रुत के अनुसार पीड़ा तीन प्रकार की है—आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक ।

आधिपत्यम् [अधिपति+यक्] 1. सर्वोपरिता, शक्ति, प्रभुसत्ता—राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यं (अवाप्य)—भग० २।८, 2. राजा का कर्तव्य—पाण्डोः पुत्रं प्रकुरुष्वाधिपत्ये—महा० ।

आधिभौतिक (वि०) (स्त्री०—की) [अधिभूत+ठञ्] 1. प्राणियों—पशुपक्षियों-से उत्पन्न (पीड़ा आदि) 2. प्राणियों से सम्बन्ध रखने वाला 3. प्रारम्भिक, भौतिक ।

आधिराज्यम् [अधिराज+ष्यञ्] अधिराज का पद या अधिकार, प्रभुसत्ता, सर्वोपरि प्रभुत्व—बभौ भूयः कुमारत्वादाधिराज्यमवाप्य सः—रघु० १७।३० ।

आधिवेदनिकम् [अधिवेदनाय हितं—ठक्, तत्र काले दत्तं—ठञ् वा] सम्पत्ति, उपहार आदि जो दूसरा विवाह करने पर पहली पत्नी को सन्तोषार्थ दिया जाय;

—यच्च द्वितीयविवाहार्थिना पूर्वस्त्रियै पारितोषिकं धनं दत्तं तदाधिवेदनिकम्—विष्णु०, तु० याज्ञ० २।१४३, १४८।

आधुनिक (वि०) (स्त्री०—की) [अधुना+ठञ्] नया, आजकल का, अब का, हाल का।

आधोरणः [आ+घोर्+ल्युट्—घोर्ऋ गतिचातुर्ये] महावत, पीलवान,—आधोरणानां गजसन्निपाते—रघु० ७।४६, ५।४८, १८।३९।

आध्मानम् [आ+ध्मा+ल्युट्] 1. फूंक मारना, फुलाव (आलं०) वृद्धि 2. शेखी बघारना 3. धौंकनी 4. पेट का फूलना, शरीर का फुलाव, जलोदर।

आध्यात्मिक (वि०) (स्त्री०—की) [अध्यात्म+ठञ्] 1. परमात्मा से सम्बन्ध रखने वाला 2. आत्मा सम्बन्धी, पवित्र 3. मन से सम्बन्ध रखने वाला 4. मन से उत्पन्न (पीड़ा, दुःख आदि) दे० "आधिदैविक"।

आध्यानम् [आ+ध्यै+ल्युट्] 1. चिन्ता 2. दुःख पूर्ण प्रत्यास्मरण 3. मनन।

आध्यापकः [अध्यापक+अण्] शिक्षक, धर्मोपदेष्टा, दीक्षागुरु।

आध्यासिक (वि०) (स्त्री०—की) [अध्यास+ठक्] अध्यास द्वारा उत्पन्न अर्थात् (वेदान्त० में) एक वस्तु के गुण व प्रकृति को दूसरी वस्तु पर आरोप करके।

आध्वनिक (वि०) (स्त्री०=की) [अध्वन्+ठक्] यात्रा पर, यात्री—कान्तारेष्वपि विश्रामो जनस्याध्वनिकस्य वै—महा०।

आध्वर्यव (वि०) (स्त्री०—वी) [अध्वर्यु+अञ्] अध्वर्यु या यजुर्वेद से सम्बन्ध रखने वाला,।—वम् 1. यज्ञ में किया जाने वाला कार्य 2. विशेषतः अध्वर्यु नामक पुरोहित का कार्य।

आनः [आ+अन्+क्विप्, ततः अण्] 1. वायु भीतर खींचना 2. श्वास लेना, फूंक मारना।

आनकः [आनयति उत्साहवतः करोति अण्+णिच्+ण्वुल् - तारा०] 1. बड़ा सैनिक ढोल—नगाड़ा—पणवानकगोमुखाः सहसैवाभ्यहन्यन्त—भग० १।१३, 2. गरजने वाला बादल। सम०—दुंदुभिः कृष्ण के पिता वासुदेव की उपाधि (—भिः,—भी (स्त्री०)) बड़ा ढोल, नगाड़ा।

आनतिः (स्त्री०) [आ+नम्+क्तिन्] 1. झुकना, नमस्कार करना, झुकाव (आलं० भी)—गुणवन्मित्रमिवानतिं प्रपेदे—कि० १३।१५, 2. नमस्कार या अभिवादन 3. श्रद्धांजलि, सत्कार, श्रद्धा।

आनद्ध (वि०) [आ+नह्+क्त] 1. बांधा हुआ, मढ़ा हुआ 2. बद्धकोष्ठ, अवरुद्धमल (जैसा कि उदर) —**द्धः** 1. ढोल 2. वस्त्रों का पहनना, बनाव-सिंगार।

आननम् [आ+अन्+ल्युट्] 1. मुंह, चेहरा—रघु० ३।३, —नृपस्य कांतं पिबतः सुताननं—१७, 2. किसी ग्रन्थ या पुस्तक के बड़े २ खण्ड (उदा० रसगंगाधर के दो आनन)।

आनन्तर्यम् [अनन्तर+ष्यञ्] 1. अव्यवहित उत्तराधिकार 2. व्यवधान रहित आसन्नता।

आनन्त्यम् [अनन्त+ष्यञ्] 1. असमापकता, अनन्तता (काल, स्थान और संख्या की दृष्टि से)—आनन्त्याद् व्यभिचाराच्च—काव्य० २, 2. असीमता 3. अनश्वरता नित्यता 4. ऊर्ध्वलोक, स्वर्ग, भावी सुख—यस्तु नित्यं कृतमतिर्धर्ममेवाभिपद्यते, अशङ्कमानः कल्याणि सोऽमुत्रानन्त्यमश्नुते—महा०।

आनन्दः [आ+नन्द्+घञ्] 1. प्रसन्नता, हर्ष, खुशी, सुख,— आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्न बिभेति कदाचन, 2. ईश्वर, परमात्मा (नपुं० भी इसी अर्थ में) 3. शिव। सम०-काननम्, वनम् काशी,—पटः दुलहिन के वस्त्र,—पूर्ण (वि०) आनन्द से ओतप्रोत (—र्णः) परमात्मा,—प्रभवः वीर्य।

आनन्दथु (वि०) [आ+नन्द्+अथुच्] प्रसन्न, हर्षोत्फुल्ल, —थुः प्रसन्नता, हर्ष, सुख।

आनन्दन (वि०) [आ+नन्द्+ल्युट्] सुखकर, प्रसन्न करने वाला,—नम् 1. खुश करना, प्रसन्न करना 2. प्रणाम करना 3. मित्र या अतिथियों के साथ, मिलने पर अथवा विदा होते समय समुचित व्यवहार, सौजन्य, शिष्टता।

आनन्दमय (वि०) [आनन्द+मयट्] 1. आनन्द से परिपूर्ण, सुख या हर्ष सहित,—यः परमात्मा, "कोषः अन्तस्तम आवरण या शरीर का परिधान।

आनन्दिः [आ+नन्द्+इन्] 1. हर्ष, प्रसन्नता 2. जिज्ञासा।

आनन्दिन् (वि०) [आ+नन्द्+णिनि] 1. प्रसन्न, खुश 2. सुखकर।

आनर्तः [आ+नृत्+घञ्] 1. रंगमंच, नाट्यशाला, नाचघर 2. युद्ध, लड़ाई 3. देश का नाम ('सौराष्ट्र' भी इसी देश का नाम है)।

आनर्थक्यम् [अनर्थस्य भावः—ष्यञ्] 1. अनुपयुक्तता, निरर्थकता—श्रुत्यानर्थक्यमितिचेत्—कात्या०, आम्नायस्य क्रियार्थत्वादानर्थक्यमतदर्थानाम्—जै० गा० 2. अयोग्यता।

आनायः [आ+नी+घञ्] जाल।

आनायिन् (पुं०) [आनाय+इनि] मछुवा, धीवर —आनायिभिस्तामपकृष्टनक्राम्—रघु० १६।५५, ७५।

आनाय्य (वि०) [आ+नी+ण्यत्, आयादेशः] निकट लाने के योग्य,—य्यः गार्हपत्याग्नि से ली हुई संस्कृत अग्नि ('दक्षिणाग्नि' भी कहलाती है)।

आनाहः [आ+नह्+घञ्] 1. बन्धन 2. मलावरोध क़ब्ज़ 3. लम्बाई (विशेषतः कपड़े की)।

आनिल (वि०) (स्त्री०—ली) [अनिल+अण्] वायु से उत्पन्न,—लः,—आनिलिः हनुमान्, भीम।

आनील (वि०) [प्रा० स०] हल्का काला या नीला,—लः काला घोड़ा।

आनुकूलिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुकूल+ठक्] हितकर, अनुरूप।

आनुकूल्यम् [अनुकूल+ष्यञ्] 1. हितकारिता, उपयुक्तता —यत्रानुकूल्यं दम्पत्योस्त्रिवर्गस्तत्र वर्धते—याज्ञ० १। ७४, 2. कृपा, अनुग्रह।

आनुगत्यम् [अनुगत+ष्यञ्] जान-पहचान, परिचय।

आनुगुण्यम् [अनुगुण+ष्यञ्] हितकारिता, उपयुक्तता, अनुरूपता।

आनुग्रामिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुग्राम+ठञ्] देहाती, ग्रामीण, गँवार।

आनुनासिक्यम् [अनुनासिक+ष्यञ्] अनुनासिकता।

आनुपदिक (वि०)(स्त्री०—की) [अनुपद+ठक्] अनुसरण करने वाला, पीछा करने वाला, पदचिह्न या लीक के सहारे पीछा करने वाला, अध्ययन करने वाला।

आनुपूर्व्यम्,—र्व्य—र्वी [अनुपूर्वस्य भावः ष्यञ्, ततो वा ङीषि य-लोपः] 1. क्रम, परम्परा, सिलसिला मनु० २।४१ 2. (विधि में) वर्णों का नियमित क्रम—षडानुपूर्व्या विप्रस्य क्षत्रस्य चतुरोऽवरान्—मनु० ३।२३।

आनुपूर्वे,—र्व्ये,—ण (अव्य०) एक के बाद दूसरा, ठीक क्रमानुसार।

आनुमानिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुमान+ठक्] 1. उपसंहार से सम्बन्ध रखने वाला 2. अनुमान प्राप्त,—कम् सांख्यों का 'प्रधान'—आनुमानिकमप्येकेषामिति चेन्न—ब्रह्म०।

आनुयात्रिकः [अनुयात्रा+ठक्] अनुयायी, सेवक, अनुचर।

आनुरक्तिः [आ+अनु+रञ्ज्+क्तिन्] राग, स्नेह, अनुराग।

आनुलोमिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुलोम+ठक्] 1. नियमित, क्रमबद्ध 2. अनुकूल।

आनुलोम्यम् [अनुलोम+ष्यञ्] 1. नैसर्गिक या सीधा क्रम, उपयुक्त व्यवस्था—आनुलोम्येन संभूता जात्या ज्ञेयास्त एव ते—मनु० १०।५, १३ 2. नियमित सिलसिला या परंपरा 3. अनुकूलता।

आनुवेश्यः [अनुवेश+ष्यञ्] वह पड़ोसी जिसका घर अपने घर से एक छोड़कर हो—प्रातिवेश्यानुवेश्यौ च कल्याणे विंशति द्विजे—मनु० ८।३९२ (इस पर कुल्लूक कहता है:—निरन्तर गृहवासी प्रातिवेश्यः—तदनन्तरगृहवास्यानुवेश्यः) यह शब्द 'अनुवेश्य' लिखा भी पाया जाता है।

आनुषङ्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [अनुषङ्ग+ठक् स्त्रियां ङीप्] 1. संबद्ध, सहवर्ती 2. ध्वनित 3. अनिवार्य, आवश्यक 4. अप्रधान, गौण—असुभिः स्यात्नु यशश्चिचीषतः······ननु लक्ष्मीः फलमानुषङ्गिकम्—कि० २।१९, अन्यतरस्यानुषङ्गिकत्वेऽन्वाचयः—सिद्धा० दे० 'अन्वाचय' 5. संलग्न, शौकीन 6. आपेक्षिक, आनुपातिक 7. (व्या०) अध्याहार्य।

आनूप (वि०) (स्त्री०—पी) [अनूपदेशे भवः—अण्] 1. जलीय, दलदलीय, आर्द्र 2. दलदल-भूमि में उत्पन्न,—पः दलदली भूमि में घूमने वाला पशु (जैसे भैंस)।

आनृण्यम् [अनृण+ष्यञ्] ऋणपरिशोध, दायित्व निभाना, उऋणता, दे० अनृणता।

आनृशंस-स्य (वि०) [अनृशंस्+अण् (स्वार्थे) ष्यञ् वा] मृदु, कृपालु, दयालु,—सं, स्यम् 1. मृदुता 2. कृपा—मनु० १।१०१, ८।४११, 3. करुणा, दया, अनुकम्पा।

आनैपुणम्-ण्यम् [अनिपुण+अण्, ष्यञ् वा] भद्दापन, जाड्य।

आन्त (वि०) (स्त्री०—ती) [अन्त+अण् स्त्रियां ङीप्] अन्तिम, अन्त का,—तम् (अव्य०) पूर्णरूप से, अन्त तक।

आन्तर (वि०) [आन्तर+अण्] 1. आंतरिक, गुप्त, छिपा हुआ—उत्तर० ६।१२, मा० १।२४, 2. अन्तस्तम, अन्तर्वर्ती,—रम् अन्तस्तम स्वभाव।

आन्तरि(री)क्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) [अन्तरिक्ष+अण्—स्त्रियां ङीप्] 1. वायव्य, स्वर्गीय, दिव्य 2. वायु में उत्पन्न,—क्षम् व्योम, पृथ्वी और आकाश के बीच का प्रदेश।

आन्तर्गणिक (वि०) (स्त्री०—की) [अन्तर्गण+ठक्] सम्मिलित (जैसे श्रेणी में, सेना में)।

आन्तर्गेहिक (वि०) (स्त्री०—की) [अन्तर्गेह+ठक्] घर में रहने वाला, या घर में उत्पन्न।

आन्तिका [अन्तिका+अण्+टाप्] बड़ी बहन।

आन्दोल् (म्वा० पर०) [दोलयति, दोलित] 1. झूलना, इधर से उधर या उधर से इधर स्पन्दन 2. हिलाना, कंपकंपाना।

आन्दोलः [आं+दोल्+घञ्] 1. झूलना, झूला 2. हिलना डुलना।

आन्दोलनम् [आन्दोल्+ल्युट्] 1. झूलना 2. हिलना-डुलना, स्पंदन, कंपित होना;—किस्वासामरविन्दसुन्दरदृशां द्राक् चामरान्दोलनात्—उद्भट० 3. कांपना।

आन्धसः [अन्धस्+अण्] मांड।

आन्धसिकः [अन्धस्+ठक्] रसोइया।

आन्ध्यम् [अन्ध+ष्यञ्] अंधापन।

आन्ध्र (वि०) [आ+अध्+रन्] आंध्र देश की (जैसे कि भाषा) —ध्राः (ब० व०) तेलुगू देश, वर्तमान तेलंगाना; दे० अंध्र।

आन्वयिक (वि०) (स्त्री०—की) [अन्वय+ठक्] 1. अच्छे कुल में उत्पन्न, सुजात, अभिजात 2. क्रमबद्ध।

आन्वाहिक (वि०) (स्त्री०—की) [अन्वह+ठञ्] प्रतिदिन होने वाला, प्रतिदिन किया जाने वाला—पर्ङ्क्ति चान्वाहिकीम्—मनु० ३।६७।

आन्वीक्षिकी [अन्वीक्षा+ठञ्+ङीप्] 1. तर्क, तर्कशास्त्र 2. आत्मविद्या—आन्वीक्षिक्यात्मविद्या स्यादीक्षणात्सुखदुखयोः, ईक्षमाणस्तया तत्त्वं हर्षशोकौ व्युदस्यति; —काम० २।११, आन्वीक्षिकी श्रवणाय—मा० १, मनु० ७।४३।

आप् (स्वा० पर०) [आप्नोति, आप्त] 1. प्राप्त करना, उपलब्ध करना, हासिल करना—पुत्रमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि—श० १।१२, अनुद्योगेन तैलानि तिलेभ्यो नाप्तुमर्हति—हि० प्र० ३०, शतं क्रतूनामपविघ्नमाप सः—रघु० ३।३८, इसी प्रकार फलं, कीर्ति, सुखं आदि के साथ 2. पहुँचना, जाना, पकड़ लेना, मिलना—भट्टि० ६।५९ 3. व्याप्त होना, जगह घेरना। 4. भुगतना, कष्ट भोगना, कठिनाइयों का सामना करना—दिष्टान्तमाप्स्यति भवान्—रघु० ९।६९। **अनुप्र—**, 1. हासिल करना, प्राप्त करना, 2. पहुँचना, जाना, पकड़ लेना गंगानदीमनुप्राप्ताः—महा०, 3. आ पहुँचना, आना; **अव—**, 1. हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना पुत्रं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि—श० ४।६, रघु० ३।३३, अवाप्तोत्कण्ठानाम्—मा० २।१२ 2. पहुँचना, पकड़ लेना, **परि—**, (प्रायः 'क्तान्त' रूप प्रयोग में आता है) 1. समर्थ होना—पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीष्माभिरक्षितम्—भग० १।१०, मनु० ११।७, 2. योग्य होना 3. पूरा होना जैसा कि 'पर्याप्तकल.' और 'पर्याप्तदक्षिण:' में है 4. बचाना, रक्षा करना, परिरक्षण करना—इमां परीप्सुर्दुर्जातेः—मालवि० ५।११, 5. काम तमाम करना, समाप्त करना, **प्र—**, 1. हासिल करना, प्राप्त करना, 2. जाना, पहुँचना—यथा महाह्रदं प्राप्य क्षिप्तं लोष्टं विनश्यति—मनु० ११।२६४, रघु० १।४८, भट्टि० १५।१०६ इसी प्रकार आश्रमं, नदीं, वनम् आदि के साथ 3. मिल जाना, पकड़ लेना भट्टि० ५।९६, दे० प्राप्त, **वि—**, 1. पूरी तरह से भर देना, व्याप्त हो जाना—श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्—श० १।१, इसी प्रकार विक्रम० १।१, भग० १०।१६, रघु० १८।४०, भट्टि० ७।५६, **सम्—**, 1 हासिल करना, प्राप्त करना, 2. समाप्त करना, पूरा (प्रेरणार्थक रूप भी) करना—यावतैषां समाप्येरन् यज्ञाः पर्याप्तदक्षिणाः—रघु० १७।१७, २४, समाप्य साध्यं च विधिं—२।२३।

आपकर (वि०) (स्त्री०—री) [अपकर+अण्, अञ् वा, स्त्रियां ङीप्] अनिष्टकर, अमैत्रीपूर्ण, बुराई करने वाला।

आपक्व (वि०)[आ+पच्+क्त] अनपका, अधपका—क्वम् चपाती, रोटी।

आपगा [अपां समूहः आपम्, तेन गच्छति—गम्+ड] दरिया, नदी—फेनायमानं पतिमापगानाम्—शि० ३।७२।

आपगेयः [आपगा+ढक्] दरिया का पुत्र, भीष्म या कृष्ण की उपाधि।

आपणः [आपण्+घञ्] मंडी, दुकान।

आपणिक (वि०) (स्त्री०—की) [आपण+ठक्] 1. व्यापार या मंडी से सम्बन्ध रखने वाला, व्यापारिक 2. मंडी से प्राप्त किया हुआ,—कः दुकानदार, सौदागर, वितरक या विक्रेता।

आपतनम् [आ+पत्+ल्युट्] 1. निकट आना, टूट पड़ना 2. घटित होना, घटना 3. प्राप्त करना, 4. ज्ञान, —क्वचित्प्राकरणिकादर्थादप्राकरणिकस्यार्थस्यापतनम् —सा० द० १०, 5. नैसर्गिक क्रम, स्वाभाविक परिणाम।

आपतिक (वि०) (स्त्री०—की) [आपत्+इकन्] आकस्मिक, अदृष्ट, दैवी—कः बाज़, श्येन।

आपत्तिः (स्त्री०) [आ+पद्+क्तिन्] 1. बदलना, परिवर्तित होना 2. प्राप्त करना, उपलब्ध करना, हासिल करना 3. मुसीबत, संकट 4. (दर्शन० में) अवांछित उपसंहार या अनिष्ट प्रसंग।

आपद् (स्त्री०) [आ+पद्+क्विप्] 1. संकट, मुसीबत, खतरा—दैवीनां मानुषीणां च प्रतिहर्ता त्वमापदाम् —रघु० १।६०, अविवेकः परमापदां पदम्—कि० २।३०, १४—प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः—भर्तृ० २।९०। **सम०—कालः** विपत्ति के दिन, कष्ट का समय,—**गत,—ग्रस्त,—प्राप्त** (वि०) 1. मुसीबत में पड़ा हुआ 2. दुर्भाग्य-ग्रस्त, पीड़ित, —**धर्मः** अत्यन्त कष्ट या संकट के समय अनुमति दिये जाने योग्य आचरण या वृत्ति, या कोई कार्यविधि जो प्रायः किसी वर्ण या जाति के लिए उपयुक्त न हो।

आपदा [आपद्+टाप्] मुसीबत, संकट।

आपनिकः [आ+पन्+इकन्] 1. पन्ना, नीलम 2. किरात या असभ्य व्यक्ति।

आपन्न (भू० क० कृ०)[आ+पद्+क्त] 1. लब्ध, प्राप्त —जीविकापन्नः 2. गया हुआ, कम हुआ, ग्रस्त—कष्टां दशामापन्नोऽपि—भर्तृ० २।२९ इसी प्रकार दुःख°

पीड़ित, कष्टग्रस्त, कठिनाई में फँसा हुआ—शापन्नभयसत्रेषु दीक्षिताः खलु पौरवाः—श० २।१६, मेघ० ५३। सम०—सत्त्वा गर्भवती, गर्भगुर्वी, गर्भवती स्त्री—समापन्नसत्त्वास्ता रेजुरापाण्डुरत्विषः—रघु० १९।५९।

आपमित्यक (वि०) [अपमित्य परिवर्त्य निर्वृत्तम्—कक्] विनियम द्वारा प्राप्त,—कम् विनिमय द्वारा प्राप्त वस्तु या सम्पत्ति।

आपराह्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [अपराह्ण+ठञ्] तीसरे पहर होने वाला।

आपस् (नपुं०) [आप्+असुन्] 1. जल—आपोभिर्मार्जिनं कृत्वा 2 पाप।

आपातः [आ+पत्+घञ्] 1. टूट पड़ना, गिर पड़ना, हमला करना, आ धमकना, उतरना—तदापातभयात्पथि—कु० २।४५, गरुड़ापातविश्लिष्टमेघनादास्त्रबन्धनः—रघु० १२।७६ 2. उतरना, गिरना, नीचे डालना 3. (क) वर्तमान क्षण या काल—आपातरम्या विषयाः पर्यन्तपरितापिनः कि० ११।१२, आपातसुरसे भोगे निमग्नाः किं न कुर्वते—सा० द० भामि० १।११५, मा० ५ (ख) प्रथम दर्शन—दे० 'आपाततः' 4. घटित होना, प्रकट होना।

आपाततः (अव्य०) [आपात+तसिल्] पहली निगाह में, हमला करते ही, तुरंत।

आपादः [आ+पद्+घञ्] 1. अवाप्ति, प्राप्ति 2. पारितोषिक, पारिश्रमिक।

आपादनम् [आ+पद्+णिच्+ल्युट्] पहुँचाना, प्रकाशित करना, झुकाव होना—द्रव्यस्य संख्यान्तरापादने—सिद्धा०।

आपानम्—नकम् [आ+पा+ल्युट्] 1. मद्यपों की मंडली, पानगोष्ठी - मृच्छ० ८, आपाने पानकलिता दैवेनाभिप्रणोदिताः—महा०, 2. मद्यशाला, मदिरालय—ताम्बूलीनां दलैस्तत्र रचितापानभूमयः—रघु० ४।४२, कु० ६।४२, आपानकमुत्सवः—का० ३२।

आपालिः [आ+पा+क्विप्=आपा, तदर्थमलति—अल्+इन्] जूं।

आपीडः [आ+पीड्+घञ्, अच् वा] 1. पीडा देना, चोट पहुँचाना 2. निचोड़ना, भींचना 3. कण्ठहार, माला—चूडापीडकपालसङ्कुलगलन्मन्दाकिनीवारयः—मा० १।२, 4. (अतः) मुकुटमणि तस्मिन्कुलापीडनिभे विपीडम्—रघु० १८।२९ मा० १।६, ७।

आपीन (भू० क० कृ०) [आ+प्यै+क्त] बलवान्, मोटा, सबल,—नः कुआँ,—आपीनोऽन्धुः—सिद्धा०,—नम् ऐन, थन का अग्रभाग—आपीनभारोद्वहनप्रयत्नात्—रघु० २।१८।

आपूपिक (वि०) (स्त्री०—की) [अपूप+ठक्] 1. अच्छे पूए बनाने वाला 2. जिसे पूए अधिक पसंद हों,—कः पूए बनाने वाला, हलवाई,—कम् पूओं का ढेर।

आपूप्यः [अपूपाय साधुः बा० य, अपूप+ञ्य वा] आटा।

आपूरः [आ+पॄ+घञ्] 1. प्रवाह, धारा, परिमाण—स्वेदापूरो युवतिसरितां व्याप गण्डस्थलानि—शि० ७।७४, 2. भरना, पूरा भरना।

आपूरणम् [आ+पॄ+ल्युट्] भरना, भर कर पूरा करदेना, गर्त° कृतम्—पंच० १।

आपूषम् [आ+पूष्+घञ्] धातु की एक प्रकार (संभवतः 'टीन')।

आपृच्छा [आ+प्रच्छ्+अङ्+टाप्] 1. समालाप 2. बिदा करना, 3. जिज्ञासा।

आपोशानः [आपसा जलेन अशानम् इति—अश्+आनच्] भोजन से पूर्व और पश्चात् आचमन करने के मंत्र (क्रमशः—अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा, और अमृतापिधानमसि स्वाहा) याज्ञ० १।३१, १०६,—नम् भोजन के लिए स्थान बनाना, तथा भोजन को ढक देना।

आप्त (भू० क० कृ०) [आप्+क्त] 1. हासिल किया, प्राप्त किया, उपलब्ध किया—°कामः, °शापः आदि 2. पहुँचा हुआ, जा पकड़ा हुआ, 3. विश्वास योग्य, विश्वसनीय, प्रामाणिक (समाचार आदि), 4. विश्वस्त, गोपनीय, निष्ठावान् (पुरुष)—रघु० ३।१२, ५।३९, 5. घनिष्ट, सुपरिचित 6. तर्कसंगत, समझदारी से युक्त,—प्तः 1. विश्वासयोग्य, विश्वसनीय, योग्य व्यक्ति, विश्वस्त पुरुष या साधन,—आप्तः यथार्थवक्ता—तर्क सं०, 2. संबंधी, मित्र,—निग्रहात्स्वसुराप्तानां वधाच्च धनदानुजः—रघु० १२।५२ कथमाप्तवर्गोऽयं भवत्याः—मालवि० ५,—प्तम् 1. लब्धि 2. आघातसाम्य। सम०—काम (वि०) 1. जिसने अपनी इच्छा पूर्ण करली है 2. जिसने सांसारिक इच्छाओं और आसक्तियों का त्याग कर दिया है (—मः) परमात्मा,—गर्भा गर्भवती स्त्री,—वचनम् किसी विश्वास योग्य या विश्वस्त व्यक्ति के शब्द—रघु० ११।४२, १५।४८,—वाच् विश्वास के योग्य, जिसके शब्द प्रामाणिक और विश्वसनीय होते हैं—परातिसन्धानमधीयते यैर्विद्येति ते सन्तु किलाप्तवाचः—श० ५।२५,(—स्त्री०) 1. किसी मित्र या विश्वसनीय पुरुष की सलाह 2. वेद, श्रुति, प्रामाणिक वचन (यह शब्द स्मृति इतिहास और पुराणों पर भी लागू होता है जो कि प्रामाणिक समझे जाते हैं)—आप्तवागनुमानाभ्यां साध्यं त्वां प्रति का कथा—रघु० १०।२८, श्रुतिः (स्त्री०) 1. वेद 2. स्मृतियाँ आदि।

आप्तिः (स्त्री०) [आप्+क्तिन्] 1. हासिल करना, प्राप्त करना, लाभ, अधिग्रहण 2. जा पहुँचना, (दुर्घटना में) ग्रस्त होना 3. योग्यता, अभिवृत्ति, औचित्य 4. सम्पूर्ति, पूरा करना।

आप्य (वि०) [अपाम् इदम्—अण्, ततः स्वार्थे ष्यञ्] 1. जलमय 2. [आप्+ण्यत्] प्राप्त करने के योग्य, प्राप्य ।

आप्यान (भू० क० कृ०) [आ+प्याय्+क्त] 1. मोटा, बलवान्, हृष्टपुष्ट, ताकतवर 2. प्रसन्न, संतुष्ट,—नम् 1. प्रेम 2. वृद्धि, बढ़ना ।

आप्यायनम् —ना [आ+प्याय्+ल्युट्, युच् वा] 1. पूरा भरना, मोटा करना, 2. संतोष, तृप्ति—देवस्याप्यायना भवति—पंच० १, 3. आगे बढ़ना, पदोन्नति करना 4. मोटापा 5. बल-वर्धक औषधि ।

आप्रच्छनम् [आ+प्रच्छ्+ल्युट्] 1. विदा करना, विदा माँगना 2. स्वागत करना, सत्कार करना ।

आप्रपदीन (वि०) [आप्रपदं व्याप्नोति—ख] पैरों तक पहुँचनेवाला (वस्त्र आदि) ।

आप्लवः,—प्लवनम् [आ+प्लु+अप्, ल्युट् वा] 1. स्नान करना, पानी में डुबा देना 2. चारों ओर पानी का छिड़काव करना । सम०—व्रतिन् या आप्लुतव्रतिन् (पुं०) दीक्षित गृहस्थ (जिसने ब्रह्मचर्य अवस्था पार करके गार्हस्थ्य अवस्था में पदार्पण किया है) तु० 'स्नातक' ।

आप्लावः [आ+प्लु+घञ्] 1. स्नान 2. छिड़काव 3. बाढ़, जल-प्लावन ।

आफूकम् [ईषत्फूत्कार इव फेनोऽत्र—पृषो०] अफीम ।

आबद्ध (भू० क० कृ०) [आ+बन्ध्+क्त] 1. बाँधा हुआ, बँधा हुआ 2. जमाया हुआ—रघु० १।४० 3. निर्मित, बना हुआ—आबद्धमंडला तापसपरिषद्—का० ४९, मंडलाकार बैठी हुई, 4. प्राप्त 5. बाधित,—द्धम् ('द्धः' भी) 1. बाँधना, जोड़ना 2. जूवा 3. आभूषण 4. स्नेह ।

आबन्धः,—धनम् [आ+बन्ध्+घञ्, ल्युट् वा] 1. बंध, बन्धान (आलं०)—प्रेमाबन्धविवर्धित—रत्न० ३।१८, अमरु ३८, 2. जूवे की रस्सी 3. आभूषण, सजावट 4. स्नेह ।

आबर्हः [आ+बर्ह्+घञ्] 1. फाड़ डालना, खींचकर बाहर निकालना 2. मारडालना ।

आबाधः [आ+बाध्+घञ्] 1. कष्ट, चोट, तकलीफ, सताना, हानि—न प्राणाबाधमाचरेत्—मनु० ४।५४, ५१,—धा 1. पीड़ा, दुःख 2. मानसिक वेदना, आधि ।

आबुत्त=दे० आवुत्त ।

आबोधनम् [आ+बुध्+ल्युट्] 1. ज्ञान, समझदारी 2. शिक्षण, सूचन ।

आब्द (वि०) (स्त्री०—ब्दी) [अब्द+अण्] बादल संबंधी या बादल से उत्पन्न ।

आब्दिक (वि०) (स्त्री०—की) [अब्द+ठञ्, स्त्रियां ङीप्] वार्षिक, सालाना—आब्दिकः करः—मनु० ७।१२९, ३।१।

आभरणम् [आ+भृ+ल्युट्] 1 आभूषण, सजावट (आलं०)—किमित्यपास्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्धकशोभि वल्कलम्—कु० ५।४४, प्रशमाभरणं पराक्रमः—कि० २।३२ 2. पालन पोषण करना ।

आभा [आ+भा+अङ्] 1. प्रकाश, चमक, कान्ति,—दीपाभां शलभा यथा—पंच० ४, 2. वर्ण, आभास, रूप —प्रशान्तमिव शुद्धाभम्—मनु० १२।२७ 3. सादृश्य, मिलना-जुलना—इन्हीं दो अर्थों को प्रकट करने के लिए यह शब्द प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त होता है—यम-दूताभम्—पंच० १।५८, मरुत्सखाभम्—रघु० २।१० 4. प्रतिबिम्बित प्रतिमा, छाया, प्रतिबिम्ब ।

आभाणकः [आ+भण्+ण्वुल्] कहावत, लोकोक्ति ।

आभाषः [आ+भाष्+घञ्] 1. सम्बोधन 2. प्रस्तावना, भूमिका ।

आभाषणम् [आ+भाष्+ल्युट्] 1. सम्बोधित करना, सम्बोधन 2. समालाप—सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः —रघु० २।५८ ।

आभासः [आ+भास्+अच्] 1. चमक, प्रकाश, कान्ति 2. प्रतिबिम्ब—तत्राज्ञानं धिया नश्येदाभासात्तु घटः स्फुरेत्—वेदान्त, 3. (क) मिलना-जुलना, समानता (प्रायः समास के अन्त में)—नभश्च रुधिराभासम् —रामा० (ख) आकृति, छायापुरुष—तत्साहसाभा-सम्—मा० २, सनकीपन की भांति दिखाई देता है, 4. अवास्तिक या आभासी रूप (जैसा कि 'हेत्वाभास' में) 5. हेत्वाभास, तर्क का रूप दे० 'हेत्वाभास' 6. आशय, प्रयोजन ।

आभास् (स्व) र (वि०) 1. शानदार, उज्ज्वल,—रः ६४ उपदेवताओं का समुदाय वाचक नाम ।

आभिचारिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिचार+ठक्] 1. जादू संबंधी 2. अभिशापात्मक, अभिशापपूर्ण, —कम् अभिचार, इन्द्रजाल, जादू ।

आभिजन (वि०) (स्त्री०—नी) [अभिजन+अण्, स्त्रियां ङीप्] जन्म से संबंध रखने वाला, कुलसूचक (नाम आदि)—तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना—कु० १।२६, —नम् कुलीनता, उच्च कुल में जन्म ।

आभिजात्यम् [अभिजात+ष्यञ्] 1. जन्म की श्रेष्ठता —रत्न० ३।१८ 2. कुलीनता 3. पांडित्य 4. सौंदर्य ।

आभिध [अभिधा+अण्] 1. ध्वनि, शब्द 2. नाम, वर्णन—दे० 'अभिधा' ।

आभिधानिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिधान+ठक्] जो किसी शब्द-कोश में हो,—कः कोशकार ।

आभिमुख्यम् [अभिमुख+ष्यञ्] किसी के संमुख होना —°ख्यं याति—सामना करने या मिलने के लिए जाता है 2. के सामने होना, आमने सामने—नीताभि-मुख्यं पुनः—रत्न० १।२, 3. अनुकूलता ।

आभिरूपकम्, आभिरूप्यम् [अभिरूप+वुञ्, ष्यञ् वा] सौंदर्य, लावण्य ।

आभिषेचनिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [अभिषेचन + ठञ्] राजतिलक से संबन्ध रखने वाला—आभिषेचनिकं यत्ते रामार्थमुपकल्पितम्—रामा०, महावी० ४।

आभिहारिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [अभिहार + ठञ्] उपहार के रूप में देय, —**कम्** भेंट, उपहार।

आभीक्ष्ण्यम् [अभीक्ष्णस्य भावः—ष्यञ्] अनवरत आवृत्ति, बहुलमाभीक्ष्ण्ये —पा० ३।२।८१।

आभीरः [आ समन्तात् भियं राति-रा + क तारा०] ग्वाला, —आभीरवामनयनाहृतमानसाय दत्तं मनो यदुपते तदिदं गृहाण उद्भट 2. (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासी,—**री** 1. ग्वाले की पत्नी 2. आभीरजाति की स्त्री। सम०—**पल्लिः,**—**पल्ली** (स्त्री०),—**पल्लिका** ग्वालों का आवासस्थान, ग्वालों के रहने का गाँव।

आभील (वि०) [आभियं लाति ददाति—ला + क] भयानक, भीषण,—**लम्** चोट, शारीरिक पीडा।

आभुग्न (वि०) [आ + भुज् + क्त] कुछ मुड़ा हुआ या झुका हुआ।

आभोगः [आ + भुज् + घञ्] 1. घेरा, परिधि, विस्तार, विस्तारण (दीर्घीकरण), परिसर, पर्यावरण—अकथितोऽपि ज्ञायत एव यथायमाभोगस्तपोवनस्येति—श० १, गगनाभोगः—नभो विस्तार 2. लंबाई-चौड़ाई, परिमाण—गंडाभोगात्—मेघ० ९२, विस्तृत गाल से 3. प्रयत्न 4. साँप का विस्तृत फण (जिसे वरुण छतरी के रूप में प्रयुक्त करता है) 5. उपभोग, तृप्ति-विषयाभोगेषु नैवादरः—शान्ति०।

आभ्यन्तर (वि०) (स्त्री०—**री**) [अभ्यन्तर + अण्] भीतरी, आन्तरिक, अंदरूनी।

आभ्यवहारिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [अभ्यवहार + ठक्] भोज्य, खाने के योग्य (आहारादिक)।

आभ्यासिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [अभ्यास + ठक्] 1. अभ्यासजनित 2. अभ्यास करने वाला, दोहराने वाला 3. निकटस्थ, पड़ौस में रहने वाला, संलग्न (आभ्यासिक)।

आभ्युदयिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [अभ्युदय + ठक्] 1. मङ्गलोन्मुख, समृद्धिजनक—अनाभ्युदयिकं श्रमणकदर्शनम्—मृच्छ० ८, 2. उन्नत, गौरवशाली, महत्त्वपूर्ण, —**कम्** श्राद्ध या पितरों को भेंट या उपहार, हर्ष का अवसर।

आम् (अव्य०) [अम् + णिच्—वा० ह्रस्वाभावः—ततः क्विप्] निम्नांकित भावनाओं को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय—(क) अंगीकरण, स्वीकृति —'ओह'—'हाँ'—आं कुर्मः—मालवि० १ (ख) प्रत्यास्मरण—आं ज्ञातम्—श० ३—ओह अब पता लगा (ग) निश्चयेन 'निश्चय ही' 'अवश्य ही'—आं चिरस्य खलु प्रतिबुद्धोऽस्मि (घ) उत्तर।

आम (वि०) [आम्यते ईषत् पच्यते—आ + अम् + कर्मणि घञ्—तारा०] 1. कच्चा, अनपका, अपक्व (विप० 'पक्व') आमान्तम्—मनु० ४।२२३ 2. हरा, अपरिपक्व 3. आवे में न पकाया हुआ (बर्तन आदि) 4. अनपचा,—**मः** 1. रोग, बीमारी 2. अजीर्ण, क़ब्ज़ 3. भूसी से अलग किया हुआ अनाज। सम०—**आशयः** अनपचे भोजन का (पेट में) स्थान, उदर का ऊपरी भाग, पेट,—**कुंभः** कच्ची मिट्टी का घड़ा—हि० ४। ६६,—**गंधि** (नपुं०) कच्चे मांस या शव के जलने की दुर्गंध,—**ज्वरः** एक प्रकार का बुखार—तु०—स्वेद्यमामज्वरं प्राज्ञः कोऽम्भसा परिषिञ्चति—शि० २।५४, —**त्वच्** (वि०) कोमल त्वचा वाला,—**पात्रम्** बिना तपाया हुआ बर्तन,—विनाशं व्रजति क्षिप्रमामपात्रमिवांभसि मनु० ३।१७९,—**रक्तम्** पेचिश,—**रसः** आमाशय में बनने वाला भोजन का अम्ल,—**वातः** क़ब्ज़, —**शूलः** अजीर्ण की पीड़ा, गुर्दे का दर्द।

आमञ्जु (वि०) [प्रा० स०] प्रिय, मनोहर।

आमंडः [प्रा० स०] एरंड का पौधा।

आम (मा) नस्यम् [अमनस् + ष्यञ्] पीडा, शोक।

आमन्त्रणम्-णा [आ + मन्त्र + णिच् + ल्युट्, युच् वा] 1. संबोधित करना, बुलाना, आवाज देना 2. विदा लेना, विदा होना 3. अभिवादन 4. निमन्त्रण अनिन्द्यामन्त्रणादृते—याज्ञ० १।११२ 5. अनुमति 6. समालाप, —अन्योन्यामन्त्रणं यत्स्याज्जनान्ते तज्जनान्तिकम् सा० द० ६, 7. संबोधन कारक।

आमन्द्र (वि०) [आ + मन्द्र + अच्] कुछ गम्भीर स्वर वाला, गड़गड़ाहट करने वाला—आमंद्राणां फलमविकलं लप्स्यसे गर्जितानां—मेघ० ३४,—**न्द्रः** जरा गंभीर स्वर, गड़गड़ाहट।

आमयः [आ + मी + करणे अच्—तारा०, आमेन वा अय्यते इति आमयः] 1. रोग, बीमारी, मनोव्यथा दुर्गामयः महावी० ४।२२, आमयस्तु रतिरागसंभवः—रघु० १९।४८, शि० २।१०, 2. हानि, क्षति।

आमयाविन् (वि०) [आमय + विन् नि०] बीमार, मंदाग्निपीडित, अग्निमांद्य रोग से ग्रस्त,।

आमरणान्त, तिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [प्रा० स० —आमरणं अन्तो यस्य ब० स०] मृत्यु पर्यंत रहने वाला, आजीवन—आमरणान्ताः प्रणयाः कोपास्तत्क्षणभङ्गुराः—हि० १।११८, अन्योन्यस्याव्यभीचारी भवेदामरणान्तिकः—मनु० ९।१०१,

आमर्दः [आ + मृद् + घञ्] 1. कुचलना, मसलना, निचोड़ना 2. विषम व्यवहार।

आमर्शः [आ + मृश् + घञ्] 1. स्पर्श करना, रगड़ना 2. सलाह, परामर्श।

आमर्षः,—**र्षणम्** [आ + मृष् + घञ्, ल्युट् वा] क्रोध, कोप, असहनशीलता दे० 'अमर्ष'।

आमलकः,—**की** [आ+मल्+वुन्—स्त्रियां ङीप्] आँवले का वृक्ष,—**कम्** आँवला (फल),–बदरामलकाम्रदाडिमानां—भामि० २।८।

आमात्यः [अमात्य+अण्] मंत्री, परामर्शदाता—दे० 'अमात्य'।

आमानस्यम् [अमानस+ष्यञ्] पीड़ा, शोक।

आमिक्षा [आमिष्यते सिच्यते—मिष्+सक्—तारा०] जमा हुआ दूध व छाछ, उबले और फटे दूध का मिश्रण, छेना।

आमिषम् [अम+टिषच्, दीर्घश्च] 1. मांस—उपानयत् पिंडमिवामिषस्य—रघु० २।६९ 2. (आलं०) शिकार, बलि, उपभोग्य वस्तु (राज्यम्)—रन्ध्रान्वेषणदक्षाणां द्विषामामिषतां ययौ—रघु० १२।११ शिकार को गया, दश० १६४, 3. आहार, शिकार के लिए चारा 4. रिश्वत, 5. इच्छा, लालसा 6. उपभोग, सुखद और प्रिय वस्तु।

आमीलनम् [आ+मील्+ल्युट्] आँखों का बन्द करना या मूंदना।

आमुक्तिः (स्त्री०) [आ+मुच्+क्तिन्] पहनना, धारण करना (वस्त्र, कवचादिक)।

आमुखम् [प्रा० स०] 1. आरंभ 2. (नाटकों में) प्राक्कथन, प्रस्तावना (संस्कृत का प्रत्येक नाटक 'आमुख' से आरंभ होता है) सा० द० में दी गई परिभाषा—नटी विदूषको वाऽपि पारिपार्श्वक एव वा, सूत्रधारेण सहिताः संलापं यत्र कुर्वते। चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः, आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनाऽपि सा॥ २८७,—**खम्** (अव्य०) मुंह के सामने।

आमुष्मिक (वि०) (स्त्री०—**की**) परलोक से संबंध रखने वाला—आमुष्मिकं श्रेयः—सुश्रुत, नैवालोच्य गरीयसीरपि चिरादामुष्मिकीर्यातनाः—सा० द०।

आमुष्यायण (वि०)—**णः** (स्त्री०—**णी**) [अमुष्य ख्यातस्यापत्यं नडा° फक् अलुक्] सत्कुल में उत्पन्न, ऐसे उच्चवंशीय व्यक्ति का पुत्र या सुविख्यात कुल में उत्पन्न,—आमुष्यायणो वै त्वमसि–शत०, तदामुष्यायणस्य तत्रभवतः सुगृहीतनाम्नो भट्टगोपालस्य पौत्रः—मा० १, महावी० १।

आमोचनम् [आ+मुच्+ल्युट्] 1. ढीला करना, स्वतंत्र करना 2. उत्सर्जन, निकालना, सेवामुक्त करना 3. धारण करना, सांटना।

आमोटनम् [आ+मुट्+ल्युट्] कुचलना—मा० ३।

आमोदः [आ+मुद्+घञ्] 1. हर्ष, प्रसन्नता, खुशी 2. सुगंध (व्यापी), सौरभ—आमोदमुपजिघ्रन्तौ स्वनिःश्वासानुकारिणम्—रघु० १।४३ आमोदं कुसुमभवं मृदेव धत्ते मृद्गन्धं न हि कुसुमानि धारयन्ति–सुभाषित, शि० २।२०, मेघ० ३१।

आमोदन (वि०) [आ+मुद्+ल्युट्] खुश करने वाला प्रसन्न करने वाला—**नम्** 1. खुशी, प्रसन्नता 2. सुगन्धित करना।

आमोदिन् (वि०) [आ+मुद्+णिनि] 1. प्रसन्न, 2. सुगन्धित—भर्तृ० १।३५।

आमोषः [आ+मुष्+घञ्] चोरी, डाका।

आमोषिन् (पुं०) [आ+मुष्+णिनि] चोर।

आम्नात (भू० क० कृ०) [आ+म्ना+क्त] 1. विचार किया हुआ, सोचा हुआ, कथित–समो हि शिष्टैराम्नातौ वर्त्स्यन्तावामयः स(शत्रुः) च–शि० २।१०, 2. अधीत, आवृत्त 3. प्रत्यास्मृत 4. परम्पराप्राप्त,—**तम्** अध्ययन।

आम्नानम् [आ+म्ना+ल्युट्] 1. वेद या धर्म ग्रंथों का सस्वर पाठ या अध्ययन 2. उल्लेख, आवृत्ति।

आम्नायः [आ+म्ना+घञ्] 1. (क) पुण्य-परम्परा (ख) अतः वेद, सांगोपांग वेद (ब्राह्मण, उपनिषद् तथा आरण्यक सहित)–अधीती चतुर्ष्वाम्नायेषु—दश० १२०, आम्नायवचनं सत्यमित्ययं लोकसंग्रहः, आम्नायेभ्यः पुनर्वेदाः प्रसृताः सर्वतोमुखाः। महा० 2. परम्परा प्राप्त प्रचलन, कुल या राष्ट्रीय प्रथाएँ 3. आदत्त सिद्धान्त, 4. परामर्श या शिक्षण।

आम्बिकेयः [अम्बिका+ढक्+] धृतराष्ट्र और कार्तिकेय की उपाधि।

आम्भसिक (वि०) (स्त्री०—**की**) जलीय,—**कः** मछली।

आम्रः [अम्+रन्, दीर्घः] आम का वृक्ष—**म्रम्** आम का फल। सम०—**कूटः** एक पहाड़का नाम—सानुमानाम्रकूटः—मेघ० १७,—**पेशी** अमचूर, अमावट,—**वणम्** आमों का बाग, अमराई—सोहमाम्रवणं छित्वा—रामा०।

आम्रातः [आम्रं आम्ररसं अतति—अत्+अच् तारा०] 1. अमरे का पेड़,—**तम्**—अमरे का फल (अमरा आम जैसा एक खट्टा फल होता है)।

आम्रातकः [आम्रात+कन्] 1. अमरे का वृक्ष 2. अमावट।

आम्रेडनम् [आ+म्रिड्+णिच्+ल्युट्] पुनरुक्ति, शब्द या ध्वनि की आवृत्ति।

आम्रेडितम् [आ+म्रिड्+णिच्+क्त] 1. शब्द या ध्वनि की आवृत्ति 2. (व्या०) द्वित्व होना, (द्वित्व हुए शब्दों में से) दूसरा शब्द।

आम्लः—**म्ला** [आ सम्यक् अम्लो रसो यस्य—ब० स० स्त्रियां टाप्] इमली का पेड़—**म्लम्** खटास, अम्लता।

आम्लि (**म्ली**) **का** [आम्ल+कन्+टाप्, इत्वम्, पक्षे पृषो० दीर्घः] 1. इमली का वृक्ष 2. पेट की अम्लता (खटास)।

आयः [आ+इ+अच्, अय्+घञ् वा] 1. पहुँचना, आ जाना 2. धनागम, धनार्जन (विप० 'व्यय') 3. आमदनी, राजस्व, प्राप्त द्रव्य—ग्रामेषु स्वामिग्राह्यो भाग आयः–सिद्धा०, याज्ञ० १।३२२, ३२६, मृच्छ० २।६,

मनु० ८।४१९, आयाधिकं व्ययं करोति—अपनी आमदनी से अधिक खर्च करता है, 4. नफ़ा, लाभ 5. अन्तःपुर का रक्षक । सम०—**व्ययौ** (द्वि० व०) आय और व्यय ।

आयःशूलिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [अयःशूल+ठक्] सक्रिय, परिश्रमी, अथक,—**कः** जो ... उद्देश्य की सिद्धि के लिए सबल उपायों का सहारा लेता है (तीक्ष्णोपायेन योऽन्विच्छेत्स आयःशूलिको जनः) तु० काव्य० १०, अयःशूलेन अन्विच्छति इति आयःशूलिकः ।

आयत (भू० क० कृ०) [आ+यम्+क्त] 1. लम्बा —शतमध्यर्धं (योजनम्) आयता - महा० 2. विकीर्ण, अतिविस्तृत 3. बड़ा, विस्तृत, गम्भीर 4. खींचा हुआ, आकृष्ट 5. संयत, नियन्त्रित,—**तः** आयताकार (रेखागणित में) । सम०—**अक्ष** (वि०) (स्त्री०—**क्षी**) —**ईक्षण,—नेत्र,—लोचन** (वि०) बड़ी आंखों वाला,—**अपांग** (वि०) लम्बी कोर की आँखों वाला, —**आयतिः** (स्त्री०) दीर्घ निरंतरता, बहुत देर बाद आने वाला भविष्य—शि० १४।५,—**च्छदा** केले का पौधा (पेड़),—**लेख** (वि०) दीर्घवक्राकार—कु० १। ४७,—**स्तूः** (पुं०) चारण, भाट ।

आयतनम् [आयतन्तेऽत्र आयत्+ल्युट्] 1. स्थान, आवास, घर, विश्रामस्थल (आलं० भी)—शूलायतनाः—मुद्रा० ७, जल्लाद, स्नेहस्तदेकायतनं जगाम—कु० ७।५, उसमें केन्द्रित हो गया, रघु० ३।३६, सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनम्—का० १०३, (अतः) आश्रय, घर 2. यज्ञ अग्नि का स्थान, वेदी 3. पवित्र स्थान, पुण्यभूमि—जैसा कि—देवायतनं, महायतनम् आदि में 4. मकान बनाने का स्थान ।

आयतिः (स्त्री०) [आ+या+डति] 1. लम्बाई, विस्तार 2. भावी समय, भविष्यत्, °भंगः—का० ४४—भूयसी तव यदायतायतिः - शि० १४।५, रहयत्यापदुपेतमायतिः—कि० २।१४, 3. भावी फल या परिणाम —आयतिं सर्वकार्याणां तदात्वं च विचारयेत्—मनु० ७।१७८, कि० १।१५, २।४३, 4. महिमा, प्रताप 5. हाथ फैलाना, स्वीकार करना, प्राप्त करना 6. कर्म —यथामित्रं ध्रुवं लब्ध्वा कृशमप्यायतिक्षमम्—मनु० ७।२०८ (कर्मक्षमम्—कुल्लूक) 7. नियन्त्रण, (मन का) निग्रह ।

आयत्त (भू० क० कृ०) [आ+यत्+क्त] 1. अधीन, आश्रित, सहारा लिए हुए (अधि० के साथ या समास में)—दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्—वेणी० ३।३३, भाग्यायत्तमतः परम्—श० ४।१६, 2. वश्य, विनीत ।

आयत्तिः (स्त्री०) [आ+यत्+क्तिन्] 1. आश्रय, अधीनता 2. स्नेह 3. सामर्थ्य, शक्ति 4. हद, सीमा 5. युक्ति, उपाय 6. महिमा, प्रताप 7. आचरण की स्थिरता ।

आययातथ्यम् [अयथातथ+ष्यञ्] अयोग्यता, अनुपयुक्तता अनौचित्य=शि० २।५६ ।

आयमनम् [आ+यम्+ल्युट्] 1. लम्बाई, विस्तार 2. नियंत्रण, निग्रह 3. (धनुष की भांति) तानना ।

आयल्लकः [आयन्निव लीयते अत्र ली+ड (बा०) संज्ञायां कन्] धैर्य का अभाव, प्रबल लालसा ।

आयस (वि०) (स्त्री०—**सी**) [आयसो विकारः अण्] लौह निर्मित, लोहा धातुनिर्मित—आयसं दंडमेव वा—मनु० ८।३१४, सखि मा जल्प तवायसी रसज्ञा—भामि० २।५९,—**सी** कवच, बख्तर,—**सम्** 1. लोहा, मूढं बुद्धमिवात्मानं हैमीभूतमिवायसम्—कु० ६।५५, स चकर्ष परस्मात्तदयस्कान्त इवायसम् रघु० १७।६३, 2. लोहनिर्मित वस्तु 3. हथियार ।

आयस्त (भू० क० कृ०) [आ+यस्+क्त] 1. पीड़ित, दुःखी 2. चोट खाया हुआ 3. क्रुद्ध, नाराज़ 4. तीक्ष्ण ।

आयानम् [आ+या+ल्युट्] 1. आना, पहुँचना 2. नैसर्गिक मनोभाव, स्वभाव ।

आयामः [आ+यम्+घञ्] 1. लम्बाई—तिर्यगायामशोभी —मेघ० ५७, 2. प्रसार, विस्तार—कि० ७।६, 3. फैलाना, विस्तार करना 4. निग्रह, नियंत्रण, रोकथाम —प्राणायामपरायणाः—भग० ४।२९, प्राणायामः परं तपः—मनु० २।८३ ।

आयामवत् (वि०) [आयाम+मतुप्] विस्तारित, लम्बा —विक्रम० १।४, शि० ११।६५ ।

आयासः [आ+यस्+घञ्] 1. प्रयत्न, प्रयास, कष्ट, कठिनाई, श्रम—बहुलायास—भग० १८।२४, तु० 'अनायास' 2. थकावट, थकन, स्नेहमूलानि दुःखानि देहजानि भयानि च, शोकहर्षौ तथायासः सर्वस्नेहात् प्रवर्तते । महा० ।

आयासिन् (वि०) [आ+यस्+णिनि] 1. परिश्रान्त, थका हुआ 2. प्रयास करने वाला, प्रबल उपयोग करने वाला—मनस्तु तद्भावदर्शनायासि—श० २।१, ५।१ ।

आयुक्त (भू० क० कृ०) [आ+युज्+क्त] 1. नियुक्त, कार्यभार-युक्त (संब० या अधि०) भट्टि० ८।११५, 2. संयुक्त, प्राप्त,—**क्तः** मंत्री, अभिकर्ता या कमिश्नर ।

आयुधः—**धम्**—[आ+युध्+घञ्] हथियार, ढाल, शस्त्र (यह तीन प्रकार के हैं—(क) प्रहरण—खड्गादिक (ख) हस्तमुक्त—चक्रादिक (ग) यंत्रमुक्त—बाणादिक;—न मे त्वदन्येन विसोढमायुधम्—रघु० ३।६३। सम०—**अ(आ)गारम्** शस्त्रागार, हथियार गोदाम —अहमप्यायुधागारं प्रविश्यायुधसहायो भवामि—वेणी० १, मनु० ९।२८०,—**जीविन्** (वि०) शस्त्रास्त्र से जीवन-निर्वाह करने वाला, (—पुं०) योद्धा, सिपाही ।

आयुधिक (वि०) [आयुध+ठञ्] शस्त्रास्त्रों से सम्बन्ध रखने वाला—कः सिपाही, सैनिक।

आयुधिन्, आयुधीय (वि०) [आयुध+इनि. छ वा] हथियारों को धारण करने वाला, (पुं०--धी)—धीयः, योद्धा।

आयुष्मत् (वि०) [आयुस्+मतुप्] 1. जीवित, जीता हुआ 2. दीर्घायु (नाटकों में प्रायः वृद्ध पुरुष सत्कुलोद्भव व्यक्तियों को इसी नाम से सम्बोधित करते हैं; उदा० एक सारथि राजा को 'आयुष्मन्' कह कर सम्बोधित करता है; ब्राह्मण को भी अभिवादन करने के लिए इसी प्रकार सम्बोधित किया जाता है—तु० मनु० ४।१२५,–आयुष्मन्, भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने)।

आयुष्य (वि०) [आयुस्+यत्] लम्बा जीवन करने वाला, जीवनप्रद, जीवनसंधारक—इदं यशस्यमायुष्यमिदं निःश्रेयसं परम्—मनु० १।१०६, ३।१०६,—ष्यम् जीवन प्रद शक्ति।

आयुस् (नपुं०) [आ+इ+उस्] 1. जीवन, जीवनावधि —दीर्घमायुः—रघु० ९।६२, तक्षकेणापि दष्टस्य आयुर्मर्माणि रक्षति—हि० २।१६, शतायुर्वै पुरुषः —ऐत० 2. जीवन दायक शक्ति 3. आहार (वाक्य रचना में 'आयुस्' का अन्तिम 'स्' बदलकर अघोष व्यंजनों से पूर्व 'ष्' तथा घोष व्यंजनों से पूर्व 'र्' बन जाता है)। सम०—**कर** (वि०) (स्त्री०–री) दीर्घजीवन करने वाला,—**काम** (वि०) दीर्घायु या स्वास्थ्य की कामना करने वाला,—**द्रव्यम्** 1. औषधि 2. घी,—**वृद्धिः** (स्त्री०) लम्बा जीवन दीर्घायु,—**वेदः** स्वास्थ्य या औषधि-विज्ञान—**वेददृश्**,—वैदिक, —**वेदिन्** (वि०) औषध से सम्बन्ध रखने वाला, (–पुं०) वैद्य, डाक्टर,—**शेषः** जीवन का शेष भाग, °शेषतया–पंच० १।२, जीवन का ह्रास या अवसान, —**स्तोमः** (आयुष्टोमः) दीर्घायु पाने के लिए किया जाने वाला यज्ञ।

आये (अव्य०) [प्रा० स०] स्नेहबोधक सम्बोधनात्मक अव्यय।

आयोगः [आ+युज्+घञ्] 1. नियुक्ति 2. क्रिया, कार्यसम्पादन 3. पुष्पोपहार 4. समुद्रतट या नदी किनारा।

आयोगवः [अयोगव+अण्] शूद्र द्वारा वैश्य स्त्री से उत्पन्न पुत्र (इसका व्यवसाय बढ़ईगिरी है—तु० मनु० १०।४८),—**वी** इस जाति की स्त्री।

आयोजनम् [आ+युज्+ल्युट्] 1. सम्मिलित होना 2. पकड़ना, ग्रहण करना 3. प्रयास, प्रयत्न।

आयोधनम् [आ+युध्+ल्युट्] 1. युद्ध, लड़ाई, संग्राम —आयोधने कृष्णगतिं सहायं—रघु० ६।४२, आयोधनाग्रसरतां त्वयि वीर याते ५।७१, 2. युद्धभूमि।

आरः—**रम्** [आ+ऋ+घञ्] 1. पीतल 2. अशोधित लोहा 3. कोण, किनारा,—**रः** 1. मंगल ग्रह 2. शनिग्रह,—**रा** 1. मोची की रांपी, 2. चाकू, क्षत-शलाका। सम०—**कूटः**,—**टम्** पीतल, उत्तर० ५।१४।

आरक्ष (वि०) [आ+रक्ष्+अच्] परिरक्षित,—**क्षः**, —**क्षा** 1. प्ररक्षण, परिरक्षण, रक्षक (पहरेदार, सन्तरी)—आरक्षे मध्यमे स्थितान्—रामा०, शा० ३।५, मनु० ३।२०४ 2. हाथी की कुंभसंधि, 3. सेना।

आरक्ष (क्षि) क (वि०) [आ+रक्ष्+ण्वुल, आरक्ष+ठञ् वा] 1. पहरेदार, सन्तरी 2. देहाती या पुलिस का दण्डाधिकारी (मैजिस्ट्रेट)।

आरटः [आ+रट्+अच्] नट, नाटक का पात्र।

आरणिः [आ+ऋ+अनि] भँवर, जलावर्त।

आरण्य (वि०) (स्त्री०—ण्या,—ण्यी) [अरण्य+अण्, स्त्रियां टाप्, ङीप् वा] जंगली, जंगल में उत्पन्न।

आरण्यक (वि०) [अरण्य+वुञ्] वन संबंधी, वन में उत्पन्न, जंगली, जंगल में उत्पन्न,—**कः** जंगल में रहने वाला, जंगली, वनवासी,–तपः षड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः—श० २।१३,—**कम्** आरण्यक ग्रंथ, (यह ब्राह्मणग्रंथों से संबद्ध धार्मिक तथा दार्शनिक रचनाओं का एक समुदाय है जो या तो जंगल में रचे गये हैं या वहाँ उनका अध्ययन किया गया है) —अरण्येऽनूच्यमानत्वात् आरण्यकम्–बृहदा०, अरण्येऽध्ययनादेव आरण्यकमुदाहृतम्।

आरतिः (स्त्री०) [आ+रम्+क्तिन्] 1. विराम, रोक 2. प्रतिमा के सामने दीप-दान, या कपूर-दीपक घुमाना, आरती उतारना।

आरनालम् [आ+ऋ+अच्, नल्+घञ् आरो नालो गंधो यस्य -ब० स०] माँड, चावल का पसाव।

आरब्धिः (स्त्री०) [आ+रभ्=क्तिन्] आरम्भ, शुरु।

आरभटः [आरभ्+अट] उपक्रमशील या साहसी पुरुष, —**टः**—**टी** दिलेरी, विश्वास,—**टी** 1. नाट्यकला की शाखा, दे० सा० द० ४२० तथा आगे 2. साहित्य की एक शैली 3. विशेष नृत्यशैली।

आरम्भः [आ+रभ्+घञ् मुम् च] 1. आरम्भ, शुरू; °उपायः प्रारंभिक योजना—नृत्यारम्भे हर पशुपतेरार्द्रनागाजिनेच्छाम् मेघ० ९९, 2. प्रस्तावना 3. कार्य, व्यवसाय, कृत्य, काम—आगमैः सदृशारंभः—रघु० १।१५, ७।८१, भग० १२।१६, 4. त्वरा, वेग 5. प्रयास, प्रयत्न–भग० १४।१२, 6. दृश्य, कर्म—चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे—रघु० २।३१, 7. मार डालना, हत्या करना।

आरम्भणम् [आ+रभ्+ल्युट् मुम् च] 1. काबू में करना, पकड़ना 2. पकड़ने का स्थान, दस्ता, बींटा।

आर (रा) वः [आ+ऋ+अप्, घञ् वा] 1. आवाज़ 2. चिल्लाना, गुर्राना ।
आरस्यम् [अरस+ष्यञ्] नीरसता, स्वादहीनता ।
आरा=दे० 'आर' के नीचे ।
आरात् (अव्य०) [आ+रा बा० आति—तारा० 'आर' का अपा० ए० व०] 1. निकट, के पास (अपा० के साथ या स्वतंत्र)—तमर्च्यमारादभिवर्तमानं—रघु० २।१०, ५।३ 2. से दूर, (कर्म० के साथ—इन दोनों अर्थों में) शि० ३।३१, दूर, दूरस्थ 3. फ़ासले पर, दूरी से उत्तर० २।२४ ।
आरातिः [आ+रा+क्तिच्] शत्रु ।
आरातीय (वि०) [आरात्+छ] 1. निकट, आसन्न 2. दूर का।
आरात्रिकम् [अरात्रावपि निर्वृत्तम्- ठञ्] 1. रात के समय भगवान् की मूर्त्ति के सामने आरती उतारना—सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारान् आरात्रिकं भक्तजनस्तु कुर्यात् 2. आरती उतारने का दीपक—शिरसि निहितभारं पात्रमारात्रिकस्य भ्रमयति मयि भूयस्ते कृपार्द्रः कटाक्षः—शंकर ।
आराधनम् [आ+राध्+ल्युट्] 1. प्रसन्नता, सन्तोष, सेवा (खातिर)—येषामाराधनाय—उत्तर० १, यदि वा जानकीमपि आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा—१।१२ 2. सेवा, पूजन उपासना, अर्चना, (देवता की),—आराधनायास्य सखीसमेताम्—कु० १।५८, भग० ७।२२ 3. प्रसन्न करने के उपाय—इदं तु ते भक्तिनम्रं सतामाराधनं वपुः—कु० ६।७३ 4. सम्मान करना; आदर करना—उत्तर० ४।१७ 5. पकाना 6. पूर्ति, दायित्व निभाना, निष्पत्ति,—ना सेवा,—नी (देवता की) पूजा, उपासना, अर्चना ।
आराधयितृ (वि०) [आ+राध्+णिच्+तृच्] उपासक, विनम्र सेवक, पूजक ।
आरामः [आ+रम्+घञ्] 1. खुशी, प्रसन्नता—इन्द्रियारामः—भग० ३।१६, आत्मारामाः—वेणी० १।३१, एकाराम—याज्ञ० ३।५८ 2. बाग, उद्यान—प्रियारामा हि वैदेह्यासीत्—उत्तर० २, आरामाधिपतिर्विवेकविकलः—भामि० १।३१.
आरामिकः [आराम+ठक्] माली ।
आरालिकः [अराल+ठक्] रसोइया ।
आरुः [ऋ+उण्] 1. सूअर 2. केंकड़ा ।
आरु (वि०) [ऋ+ऊ+णित्] भूरे रंग का ।
आरूढ (भू० क० कृ०) [आ+रुह्+क्त] सवार, चढ़ा हुआ, ऊपर बैठा हुआ—आरूढो वृक्षो भवता—सिद्धा०, प्रायः कर्तृवाच्य में प्रयुक्त—आरूढमद्रीन्—रघु० ६।७७ ।
आरूढिः (स्त्री०)[आ+रुह्+क्तिन्] चढ़ाव ऊपर उठना, उन्नयन (आलं० व शा०)—अत्यारूढिर्भवति महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा—श० ४, ५। ।
आरेकः [आ+रिच्+घञ्] 1. रिक्त करना, 2. संकुचित करना ।
आरेचित [आ+रिच्+णिच्+क्त] भींची हुई या सिकोड़ी हुई (आँख की भौहें) ।
आरोग्यम् [अरोग+ष्यञ्] अच्छा स्वास्थ्य ।
आरोपः [आ+रुह्+णिच्+घञ्, पुकागमः] 1. एक वस्तु के गुणों को दूसरी वस्तु में आरोपित करना—वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः—वे० सू०, गले मढ़ना—दोषारोपो गुणेष्वपि—अमर० 2. मान लेना (जैसा कि 'सारोपा लक्षणा' में) 3. अध्यारोपण 4. बोझा लादना, दोषारोपण करना, इलज़ाम लगाना ।
आरोपणम् [आ+रुह्+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. ऊपर रखना या जमाना, रखना—आर्द्राक्षतारोपणमन्वभूताम् रघु० ७।२०, कु० ७।२८ (आलं) संस्थापन, जमा देना—अधिकारारोपणम्—नु० ३, 2. पौधा लगाना, 3. धनुष पर चिल्ला चढ़ाना ।
आरोहः [आ+रुह्+घञ्] 1. चढ़ने वाला, सवार, जैसा कि 'अश्वारोह' तथा 'स्यंदनारोह' 2. चढ़ाव, ऊपर जाना, सवारी करना 3. ऊपर उठी हुई जगह, उभार, ऊँचाई 4. हेकड़ी, घमंड 5. पहाड़, ढेर 6. स्त्री की छाती, नितम्ब,—सा रामा न वरारोहा—उद्भट, आरोहैर्निबिडबृहन्नितम्बबिम्बैः—शि० ८।८, 7. लम्बाई, 8. एक प्रकार की माप 9. खान ।
आरोहकः [आ+रुह्+ण्वुल्] सवार, चालक (हांकने वाला) ।
आरोहणम् [आ+रुह्+ल्युट्] 1. सवार होने, ऊपर चढ़ने या उदय होने की क्रिया—आरोहणार्थं नवयौवनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम्—कु० १।३९, 2. (घोड़े की) सवारी करना 3. ज़ीना, सीढ़ी ।
आर्किः [अर्कस्यापत्यम्—इञ्] अर्क का पुत्र, यम की उपाधि, शनि ग्रह, कर्ण, सुग्रीव, वैवस्वत मनु ।
आर्क्ष (वि०) (स्त्री०—र्क्षी) [ऋक्ष+अण्] तारकीय, तारों द्वारा व्यवस्थित अथवा तारों से सम्बद्ध ।
आर्घा [आ+अर्घ्+अच्+टाप्] एक प्रकार की पीली मधु-मक्खी ।
आर्घ्यम् [आर्घा+यत्] जंगली शहद ।
आर्च (वि०) (स्त्री०—र्ची) [अर्चा अस्त्यस्य ण] भक्त, पूजा करने वाला, पुण्यात्मा ।
आर्चिक (वि०) (स्त्री०—की) [ऋच्+ठञ्] ऋग्वेद संबंधी, या ऋग्वेद की व्याख्या करने वाला,—कम् सामवेद का विशेषण ।
आर्जवम् [ऋजु+अण्] 1. सरलता 2. स्पष्टवादिता, सद्भाव, खरापन, ईमानदारी, निष्कपटता, उदारहृदय होना—अहिंसा क्षान्तिरार्जव—भग० १३।७, क्षेत्रमार्जवस्य—का० ४५—3. शालीनता, विनम्रता ।

आर्जुनिः [अर्जुनस्यापत्यम्–इञ्] अर्जुन का पुत्र, अभिमन्यु।

आर्त (वि०) [आ+ऋ+क्त] 1. कष्ट प्राप्त, उपहत, पीड़ित, प्रायः समास में—कामार्त, क्षुधार्त, तृषार्त, आदि 2. बीमार, रोगी—आर्तस्य यथौषधम्—रघु० १।२८, मनु० ४।२३६ 3. दुःखित, कष्टप्राप्त, संकटग्रस्त, अत्याचार-पीड़ित, अप्रसन्न—आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि—श० १।११, रघु० २।२८, ८।३१, १२।१०, ३२। सम०—नादः,—ध्वनिः,—स्वरः दर्दभरी आवाज,—बन्धुः,—साधुः दुःखियों का मित्र।

आर्तव (वि०) (स्त्री०—वा,—वी) [ऋतुरस्य प्राप्तः–अण्] 1. ऋतु के अनुरूप ऋतुसम्बंधी, मौसमी—अभिभूय विभूतिमार्तवीम्—रघु० ८।३६, कु० ४।६८, वसन्तकालीन—रघु० ९।२८, 2. मासिक स्राव सम्बन्धी,—वः वर्ष का अनुभाग, वर्ष—वी घोड़ी—वम् 1. (स्त्रियों का) मासिक स्राव—नोपगच्छेत्प्रमत्तोऽपि स्त्रियमार्तवदर्शने—मनु० ४।४०, ३।४८ 2. मासिक-स्राव के पश्चात् गर्भाधान के लिए उपयुक्त दिन 3. फूल।

आर्तवेयी रजस्वला स्त्री।

आर्तिः (स्त्री०) [आ+ऋ+क्तिन्] 1. दुःख, कष्ट, व्यथा पीड़ा, क्षति (शारीरिक या मानसिक)—आर्ति न पश्यसि पुरूरवसस्तदर्थे—विक्रम० २।१६, आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्—मेघ० ५३ 2. मानसिक वेदना, दारुण दुःख—उत्कण्ठार्ति–अमरु ३९, 3. बीमारी, रोग 4. धनुष की नोक 5. विनाश, विध्वंस।

आर्त्विजीन (वि०)(स्त्री०–नी) [ऋत्विजं तत्कर्मार्हति खञ्] ऋत्विज् के पद के उपयुक्त।

आर्त्विज्यम् [ऋत्विज्+ष्यञ्] ऋत्विज् का पद, मर्यादा।

आर्थ (वि०) (स्त्री०–र्थी) 1. किसी वस्तु या पदार्थ से सम्बन्ध रखने वाला 2. अर्थ सम्बन्धी, अर्थाश्रित, (विप० शाब्द) आर्थी उपमा आदि।

आर्थिक (वि०) (स्त्री०–की) [अर्थ+ठक्] 1. सार्थक 2. बुद्धिमान् 3. धनवान् 4. तथ्यपूर्ण, वास्तविक।

आर्द्र (वि०) [अर्द्+रक् दीर्घश्च] 1. गीला, नमीदार, सीला—तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः—मेघ० ८०, ४३, 2. अशुष्क, हरा, रसीला 3. ताज़ा, नया—कामीवार्द्रापराधः—अमरु २, कान्तमार्द्रापराधम्—मालवि० ३। १२, 4. मृदु, कोमल—प्रायः स्नेह, दया, तथा करुणा जैसे शब्दों के साथ क्रमशः "खिला हुआ" "पसीजा हुआ" "पिघला हुआ" अर्थ प्रकट करता है—स्नेहार्द्रहृदय—दया से पिघले हुए दिल वाला,—र्द्रा छठा नक्षत्र। सम०—काष्ठम् हरी लकड़ी, —पृष्ठ (वि०) सींचा हुआ, विश्रांत किया हुआ —आर्द्रपृष्ठाः क्रियन्तां वाजिनः—श० १,—शाकं ताज़ा अदरक।

आर्द्रकम् [आर्द्रा+वुन्] हरा अदरक, गीला अदरक।

आर्द्रयति (ना० धा०–पर०) गीला करना, तर करना —भर्तृ० २।५१।

आर्ध (वि०) [अर्ध+अण्] (समास के आरम्भ में ही प्रयुक्त) आधा। सम०–धातुक (वि०) (स्त्री०–की) (व्या० में) आधी धातुओं में लागू होने वाला, —(कम्) आर्धधातुक छः गणों से सम्बन्ध रखने वाली विभक्तियाँ व प्रत्यय (विप० 'सार्वधातुक') —मासिक (वि०) (स्त्री०–की) आधे महीने रहने वाला।

आर्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [अर्ध+ठक्] आधे का साझीदार, आधे से संबंध रखने वाला,—कः जो आधी फसल के लिए खेत जोतता है, वैश्य स्त्री से उत्पन्न सन्तान जिसका पालन-पोषण ब्राह्मण के द्वारा होता है, दे० उद्धरण, 'अधिक' के नीचे।

आर्य (वि०) [ऋ+ण्यत्] 1. आर्यन, या अर्य के योग्य 2. योग्य, आदरणीय, सम्माननीय, कुलीन, उच्चपदस्थ —यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः—श० १।२२, यह शब्द प्रायः नाटकोपयोगी भाषा में सम्मान सूचक विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, संबोधन की आदरपूर्ण पद्धति है, आर्य सम्माननीय या आदरणीय श्रीमान् जी। आर्ये आदरणीय या सम्माननीय श्रीमती जी। लोगों को संबोधित करने के लिए 'आर्य' शब्द के प्रयोग के निम्नांकित नियम हैं—(क) वाच्यौ नटीसूत्रधारावार्यनाम्ना परस्परम् (ख) वयस्येत्युत्तमैर्वाच्यो मध्यैरार्येति चाग्रजः (ग) (वक्तव्यो) अमात्य आर्येति चेतरैः (घ) स्वेच्छया नामभिर्विप्रैर्विप्र आर्येति चेतरैः—सा० द० ४३१, 3. अत्युत्कृष्ट, मनोहर, श्रेष्ठ,—र्यः 1. ईरान के लोग, हिन्दूजाति जो अनार्य, दस्यु तथा दास से भिन्न हैं। 2. जो अपने देश के नियम तथा धर्म के प्रति निष्ठावान् हैं—कर्तव्यमाचरन् कार्यमकर्तव्यमनाचरन्, तिष्ठति प्रकृताचारे स वा आर्य इति स्मृतः। 3. पहले तीन वर्ण (विप० शूद्र) 4. सम्माननीय या आदरणीय पुरुष प्रतिष्ठित व्यक्ति 5. सत्कुलोत्पन्न पुरुष 6. सच्चरित्र पुरुष 7. स्वामी, मालिक 8. गुरु, अध्यापक 9. मित्र 10. वैश्य 11. श्वसुर (जैसा कि "आर्यपुत्र" में) 12. बुद्धभगवान्,—र्या 1. पार्वती 2. श्वश्रू 3. आदरणीय महिला 4. छन्द, दे० परिशिष्ट। सम०—आवर्तः श्रेष्ठ और उत्तम (आर्य) लोगों का आवास, विशेषतः वह भूमि जो पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक फैली हुई है तथा जिसके उत्तर में हिमालय एवं दक्षिण में विन्ध्य पर्वत है—तु० मनु० २।२२, आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्राच्च पश्चिमात्, तयोरेवान्तरं गिर्योः (हिमविन्ध्ययोः) आर्यावर्तं विदुर्बुधाः। १०।३४ भी—गृह्य (वि०) 1. श्रेष्ठ पुरुषों से सम्मानित, श्रेष्ठ पुरुषों का मित्र, सम्मा-

ननीय व्यक्तियों के पास जिसकी पहुंच अनायास होती है,—तमार्यगृह्यं निगृहीतधेनुः रघु० २।३३, 2. आदरणीय, भद्र,—**देशः** वह देश जहाँ आर्य लोग बसे हुए हैं,—**पुत्रः** 1. सम्माननीय व्यक्ति का बेटा 2. आध्यात्मिक गुरु का पुत्र 3. बड़े भाई के पुत्र का सम्मान सूचक पद, पत्नी का पति के लिए तथा सेनापति का राजा के लिए सम्मानसूचक पद 4. श्वसुर का पुत्र अर्थात् पति (प्रत्येक नाटक में, बहुधा संबोधन के रूप में, अन्तिम दो अर्थों के लिए प्रयुक्त), -**प्राय** (वि०) 1. जहाँ आर्य लोग बसे हों 2. जहाँ प्रतिष्ठित व्यक्ति रहते हों,—**मिश्र** (वि०) आदरणीय, योग्य, पूज्य (—**श्रः**) सज्जनपुरुष, गौरवशाली पुरुष, (ब० व०) 1. योग्य और आदरणीय व्यक्ति, सभ्य या सम्माननीय व्यक्ति—आर्यमिश्रान् विज्ञापयामि—विक्रम० १, 2. श्रद्धेय, मान्यवर (आदरयुक्त संबोधन)—नन्वार्यमिश्रैः प्रथममेव आज्ञप्तम्—श० १,—**लिंगिन्** (पुं०) पाखंडी —**वृत्त** (वि०) सदाचारी, भद्र—रघु० १४।५५—**वेश** (वि०) अच्छी वेशभूषा में, आदरणीय वेश धारण किये हुए,—**सत्यम्** अत्युत्कृष्ट और अलौकिक सत्य —**हृद्य** (वि०) जो श्रेष्ठ व्यक्तियों को रुचिकर हो।

आर्यकः [आर्य+स्वार्थे कन्] 1. सम्माननीय या आदरणीय पुरुष, 2. बाबा, दादा।

आर्यका, आर्यिका [आर्या+कन् ह्रस्वः, पक्षे इत्वम्] आदरणीय महिला।

आर्ष (वि०) (स्त्री०—**र्षी**) [ऋषेरिदम्– अण्] 1. केवल ऋषि द्वारा प्रयुक्त, ऋषिसंबंधी, आर्ष, वैदिक (विप० **'लौकिक या श्रेण्य'**)—आर्षः प्रयोगः, संबुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे—सिद्धा० 2. पवित्र, पावन; अतिमानव,—**र्षः** विवाह का एक प्रकार, आठभेदों में से विवाह का एक भेद जिसमें दुलहिन का पिता वर महोदय से एक या दो जोड़ी गाय प्राप्त करता है—आदायार्षस्तु गोद्वयम्—याज्ञ० १।५९, मनु० ९।१९६, विवाह के आठ प्रकारों के नामों के लिए दे० 'उद्वाह', —**र्षम्** पावन पाठ, वेद।

आर्षभ्यः [ऋषभ+ण्य] बछड़ा जो पर्याप्त बड़ा हो गया हो, काम में लाया जा सके या सांड़ बनाकर छोड़ा जा सके।

आर्षेय (वि०) (स्त्री०—**यी**) [ऋषि+ढक्] 1. ऋषि से संबंध रखने वाला 2. योग्य, महानुभाव, आदरणीय।

आर्हत (वि०) (स्त्री०—**ती**) [अर्हत्+अण्] जैनधर्म के सिद्धांतों से संबंध रखने वाला,—**तः** जैन, जैनधर्म का अनुयायी,—**तम्** जैनधर्म के सिद्धान्त।

आर्हन्ती,—न्त्यम् [अर्हत्+ष्यञ्, नुम् च] योग्यता।

आलः—लम् [आ+अल्+अच्] 1. अंडों का ढेर, मछली आदि के अंडे, 2. पीला संखिया।

आलगर्दः [अलगर्द+अण्] पनिया साँप।

आलभनम् [आ+लभ्+ल्युट्] 1. पकड़ना, कब्जा करना 2. छूना 3. मार डालना।

आलम्बः [आ+लम्ब्+घञ्] 1. आश्रय 2. थूनी, टेक (जिसके सहारे मनुष्य खड़ा होकर विश्राम करता है) —इह हि पततां नास्त्यालंबो न चापि निवर्तनम् —शा० ३।२, 3. सहारा, रक्षा—तवालम्बादम्ब स्फुरदलघुगर्वेण सहसा—जग० 4. आशय।

आलम्बनम् [आ+लम्ब्+ल्युट्] 1. आश्रय, 2. सहारा, थूनी, टेक–कि० २।१३, सहारा देते हुए—मेघ० ४, 3. आशय, आवास 4. कारण, हेतु 5. (सा० शा० में) जिस पर रस आश्रित रहता है, वह पुरुष या वस्तु जिसके उल्लेख से रस की निष्पत्ति होती है, रस को उत्तेजित करने वाले कारण का रस से नैसर्गिक और अनिवार्य संबंध, रस की निष्पत्ति के कारण (विभाव) के दो भेद हैं—आलंबन और उद्दीपन, उदा० बीभत्स में दुर्गंधयुक्त मांस रस का आलंबन है, तथा दूसरी प्रस्तुत परिस्थितियाँ जो मांसगत कीड़े आदि की घिनौनी भावनाओं को उत्तेजित करती हैं इसके उद्दीपन हैं, दूसरे रसों के विषय में—दे० सा० द० २१०-२३८।

आलम्बिन् (वि०) [आ+लम्ब्+णिनि] 1. लटकता हुआ, सहारा लेता हुआ, झुकता हुआ 2. सहारा देने वाला, बनाये रखने वाला, थामने वाला 3. पहने हुए।

आलम्भः-भनम् [आ+लभ्+घञ्, मुम् च, पक्षे ल्युट्] 1. पकड़ना, कब्जा करना, स्पर्श करना 2. फाड़ना 3. मार डालना (विशेषतः यज्ञ में पशु—बलि देना) अश्वालम्भ, गवालम्भ।

आलयः-यम् [आ+ली+अच्] 1. आवास, घर, निवास गृह—न हि दुष्टात्मनामार्या निवसन्त्यालये चिरम्-रामा०—सर्वाञ्जनस्थानकृतालयान्—रामा० जो जनस्थान में रहा 2. आशय, आसन या जगह—हिमालयो नाम नगाधिराजः—कु० १, इसी प्रकार देवालयम्, विद्यालयम् आदि।

आलर्क (वि०) [अलर्कस्येदम्–अण्] पागल कुत्ते से संबंध रखने वाला या उससे उत्पन्न—आलर्कं विषमिव सर्वतः प्रसृतम्—उत्तर० १।४०।

आलवण्यम् [अलवणस्य भावः—ष्यञ्] 1. फीकापन, स्वादहीनता 2. कुरूपता।

आलवालम् [आसमन्तात् लवं जललवम् आलाति—आ+ला+क तारा०] (वृक्ष की जड़ के चारों ओर) पानी भरने का स्थान, खाई,—°पूरणे नियुक्ता—श० १—विश्वासाय विहगानामालवालाम्बुपायिनाम्-रघु० १।५१।

आलस (वि०) (स्त्री०—**सी**) [आलसति ईषत् व्याप्रियते —अच्] सुस्त, काहिल, ढीला-ढाला।

आलस्य (वि०) [अलसस्य भावः—ष्यञ्] सुस्त, ढीला-ढाला, काहिल,—स्यम् सुस्ती, शिथिलता, स्फूर्ति का अभाव—शक्तस्य चाप्यनुत्साहः कर्मस्वालस्यमुच्यते —सुश्रुत; आलस्य (स्फूर्ति का अभाव) ३३ व्यभिचारिभावों में से एक है—उदा० न तथा भूषयत्यङ्गं न तथा भाषते सखीम्, जृम्भते मुहुरासीना बाला गर्भभरालसा—सा० द० १८३।

आलातम् [अलात+अण्] जलती हुई लकड़ी।

आलानम् [आ+ली+ल्युट्] 1. वह स्तंभ जिससे हाथी बांधा जाय, बांधे जाने वाला खंबा, रस्सा भी जिससे हाथी बाँधा जाता है—अरुन्तुदमिवालानमनिर्वाणस्य दन्तिनः—रघु० १।७१, ४।६९, ८१, आलाने गृह्यते हस्ती—मृच्छ० १।५०, 2. हथकड़ी, बेंध 3. जंजीर, रस्सा 4. बंधना, बांधना।

आलानिक (वि०) (स्त्री०—की) [आलान+ठञ्] उस थूनी का काम देने वाली वस्तु जिसके सहारे हाथी बांधा जाता है,—आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः—रघु० १४।३८।

आलापः [आ+लप्+घञ्] 1. बातचीत, भाषण, समालाप—अये दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालाप इव श्रूयते —श० १, 2. कथन, उल्लेख।

आलापनम् [आ+लप्+णिच्+ल्युट्] बोलना, बातचीत करना।

आलाबुः-बूः (स्त्री०) घीया, पेठा कद्दू, कुम्हड़ा। दे० 'अलाबु'।

आलावर्तम् [आलं पर्याप्तिमावर्त्यते इति—आल+आ+वृत्+णिच्+अच्] कपड़े का बना पंखा।

आलि (वि०) [आ+अल्+इन्] 1. निकम्मा, सुस्त 2. ईमानदार—लिः 1. बिच्छू 2. मधुमक्खी,—लिः,—ली (स्त्री०) 1. (किसी स्त्री की) सहेली—निवार्यतामालि किमप्ययं वटुः—कु० ५।८३, ७।६८, अमरु २३, 2. पंक्ति, परास, अविच्छिन्न रेखा (तु० आवलि)—तोयान्तर्भास्करालीव रेजे मुनिपरम्परा—कु० ६।४९, रथ्यालि—अमरु ८२, 3. रेखा, लकीर 4. पुल 5. पुलिया, बांध।

आलिङ्गनम् [आ+लिङ्ग्+ल्युट्] परिरंभण, गले लगाना, गलबाहीं देना—(स प्राप) आलिङ्गननिर्वृतिम्—रघु० १२।६५।

आलिङ्गिन् (वि०) [आ+लिङ्ग+इनि] गलबाहीं देने वाला, (पुं०—गी), आलिङ्ग्यः जौ के दाने के आकार जैसा बना छोटा ढोल।

आलिञ्जरः [अलिञ्जर एव स्वार्थे अण्] मिट्टी का बड़ा घड़ा।

आलिन्दः—न्दकः [आलिन्द+अण्, स्वार्थे कन् च] 1. घर के सामने बना चौतरा, चबूतरा 2. सोने के लिए ऊँचा बनाया हुआ स्थान।

आलिम्पनम् [आ+लिप्+ल्युट्, मुम् च] उत्सवों के अवसर पर दीवारों पर सफेदी करना, फर्श लीपना आदि; तु० 'आदीपनम्'।

आलीढम् [आ+लिह्+क्त] बन्दूक से निशाना लगाते समय दाहिने घुटने को आगे बढ़ा कर और बायें पैर को मोड़ कर बैठना,—अतिष्ठदालीढविशेषशोभिना —रघु० ३।५२, दे० कु० ३।७० पर मल्लि०।

आलुः [आ+लु+डु] 1. उल्लू 2. आबनूस, काला आबनूस,—लुः (स्त्री०) घड़ा,—लु (नपुं०) लट्ठों को बाँध कर बनाया गया बेड़ा, धन्नई (दो घड़ों को बांध कर बनाई गई नौका)।

आलुञ्चनम् [आ+लुञ्च्+ल्युट्] फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना।

आलेखनम् [आ+लिख्+ल्युट्] 1. लिखना 2. चित्रण करना 3. खुरचना,—नी कूंची, कलम।

आलेख्यम् [आ+लिख्+ण्यत्] 1. चित्रकारी, चित्र—इति संरम्भिणो वाणीर्बलस्यालेख्यदेवताः—शि० २।६७, रघु० ३।१५, 2. लिखना। सम०—लेखा बाहरी रूपरेखा, चित्रण,—शेष (वि०) चित्र को छोड़ कर जिसका और कुछ शेष न रहा हो अर्थात् मृत, मरा हुआ —आलेख्यशेषस्य पितुः—रघु० १४।१५,

आलेपः-पनम् [आ+लिप्+घञ्, ल्युट् वा] 1. तेल या उबटन आदि का मलना, लीपना, पोतना 2. लेप।

आलोकः-कनम् [आ+लोक्+घञ्, ल्युट् वा] 1. दर्शन करना, देखना 2. दृष्टि, पहलू, दर्शन—यदालोके सूक्ष्मम्—श० १।९, कु० ७।२२, ४६, सुख°—विक्रम० ४।२४, 3. दृष्टि-परास—आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा—मेघ० ८५, रघु० ७।५ कु० २।४५, 4. प्रकाश, प्रभा, कान्ति—निरालोकं लोकं—मा० ५।३० ९।३७, 5. भाट, विशेषतः भाट द्वारा उच्चरित स्तुति-शब्द (जैसे 'जय, आलोकय')—ययावुदीरितालोकः —रघु० १७।२७, २।९, का० १४।

आलोचक (वि०) [आ+लोच्+ण्वुल्] आलोचना करने वाला, देखने वाला,—कम् दर्शन-शक्ति, दृष्टि का कारण।

आलोचनम्-ना [आ+लोच्+ल्युट्, युच् वा] 1. दर्शन करना, देखना, सर्वेक्षण, समीक्षा 2. विचार करना, विचार-विमर्श।

आलोडनम्—ना [आ+लुड्+णिच्+ल्युट्] 1. बिलोना हिलाना, क्षुब्ध करना 2. मिश्रण करना।

आलोल (वि०) [प्रा० स०] 1. कुछ कांपता हुआ, (आँखों को) घुमाता हुआ 2. हिलाया हुआ, विक्षुब्ध—अमरु ३, मेघ० ६१।

आवनेयः [अवनि+ढक्] भूमिपुत्र, मंगल ग्रह की उपाधि।

आवन्त्य (वि०) [अवन्ति+ञ्यङ्] अवन्ति से आने वाला, या संबन्ध रखने वाला,—न्त्यः अवन्ती का राजा,

अवन्ती का निवासी, पतित ब्राह्मण की सन्तान—दे० मनु० १०।२१ ।

आवपनम् [आ+वप्+ल्युट्] 1. बोना, फेंकना, बखेरना 2. बीज बोना 3. हजामत करना 4. वर्तन, मर्तबान, पात्र ।

आवरकम् [आ+वृ+ण्वुल्] ढक्कन, पर्दा ।

आवरणम् [आ+वृ+ल्युट्] 1. ढकना, छिपाना, मूंदना, —सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा —रघु० ५।१३, १०।४६, १९।१६, 2. बंद करना, घेरना 3. ढकना 4. बाधा 5. बाड़ा, अहाता, चहारदीवारी—रघु० १६।७, कि० ५।२५, 6. कपड़ा, वस्त्र 7. ढाल । सम०—शक्तिः मानसिक अज्ञान (जिससे वास्तविकता पर पर्दा पड़ा रहता है) ।

आवर्तः [आ+वृत्+घञ्] 1. चारों ओर मुड़ना, चक्कर काटना 2. जलावर्त, भँवर—नृपं तमावर्तमनोज्ञनाभिः —रघु० ६।५२, दर्शितावर्तनाभेः—मेघ० १८, आवर्तः संशयानाम्—पंच० १।१९१, 3. पर्यालोचन, (मनमें) घूमना 4. बालों के पट्ठे, अयाल 5. घनीबस्ती (जहाँ बहुत पुरुष इकट्ठे रहते हों) 6. एक प्रकार का रत्न ।

आवर्तकः [आवर्त+कन्] 1. मूर्त्त बादल का एक प्रकार —जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्—मेघ० ६, कु० २।५० 2. जलावर्त 3. क्रान्ति, घुमाव 4. घुंघराले बाल ।

आवर्तनम् [आ+वृत्+ल्युट्] 1. चारों ओर मुड़ना, चक्कर काटना 2. वृत्ताकार गति, घूर्णन 3. (धातुओं का) पिघलाना, गलाना 4. आवृत्ति करना,—नः विष्णु,—नी कुठाली ।

आवलिः—ली (स्त्री०) [आ+वल्+इन् पक्षे ङीप्] 1. रेखा, पंक्ति, परास—अरावलीम्—विक्रम० १।४, इसी प्रकार अलक° दंत°, हार° रत्न° आदि 2 सिलसिला, अविच्छिन्न लकीर ।

आवलित (वि०) [आ+वल्+क्त] जरा सा मुड़ा हुआ ।

आवश्यक (वि०) (स्त्री०—की) [अवश्य+वुञ्] अनिवार्य, जरूरी—एतेष्वावश्यकस्त्वसौ—भाषा० २२, —कम् 1. जरूरत, अनिवार्यता, कर्तव्य 2. अनिवार्य फल ।

आवसतिः (स्त्री०) [प्रा० स०] रात्रि (विश्राम करने का समय), आधीरात ।

आवसथः [आ+वस्+अथच्] 1. आवास, आवास-स्थान, घर, निवास—निवसन्नावसथे पुराद्बहिः—रघु० ८।१४ 2. विश्राम करने का स्थान, विश्रामस्थल 3. छात्रावास, संन्यासाश्रम ।

आवसथ्य (वि०) [आवसथ+ञ्य] गृही, घर में विद्यमान, —थ्यः (अग्निहोत्र की) पावन अग्नि जो घर में रक्खी जाती है, यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली पंचाग्नियों में से एक, दे० 'पंचाग्नि,'—थ्यः—थ्यम् छात्रावास, संन्यासाश्रम,—थ्यम् घर ।

आवसित (वि०) [आ+अव+सो+क्त] 1. समाप्त, पूर्ण किया गया 2. निर्णीत, निर्धारित, निश्चित,—तम् पका हुआ अनाज (खलिहान से लाया हुआ) ।

आवह (वि०) [आ+वह्+अच्] (समास का अन्तिम पद) उत्पन्न करने वाला, राह दिखाने वाला, देखभाल करने वाला, लाने वाला,—क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाऽहम् —रघु० १४।५, इसी प्रकार दुःख°, भय° ।

आवापः [आ+वप्+घञ्] 1. बीज बोना 2. बखेरना, फेंकना 3. आलवाल 4. वर्तन, अनाज रखने का मटका 5. एक प्रकार का पेय 6. कंकण 7. ऊबड़-खाबड़ भूमि ।

आवापकः [आवाप+कन्] कंकण ।

आवापनम् [आ+वप्+णिच्+ल्युट्] करघा, खड्डी ।

आवालम् [आ+वल्+णिच्+अच्] थांवला, आलवाल ।

आवासः [आ+वस्+घञ्] 1. घर, निवास 2. शरण-स्थान, मकान —आवासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि—रघु० २।१७ ।

आवाहनम् [आ+वह्+णिच्+ल्युट्] 1. बुलवाना, निमंत्रण, पुकारना 2. देवता का (यज्ञ में उपस्थित होने के लिए) आवाहन करना (विप० **विसर्जन**) 3. अग्नि में आहुति डालना—याज्ञ० १।२५१ ।

आविक (वि०) (स्त्री०—की) [अवि+ठक्] 1. भेड़ से संबंध रखने वाला,—आविकं क्षीरम्—मनु० ५।८, २।४१ 2. ऊनी,—कम् ऊनी कपड़ा ।

आविग्न (वि०) [आ+विज्+क्त] दुःखी, कष्टग्रस्त ।

आविद्ध (भू० क० कृ०) [आ+व्यध्+क्त] 1. बिधा हुआ, छेदा हुआ 2. मुड़ा हुआ, टेढ़ा 3. बलपूर्वक फेंका हुआ, गति दिया हुआ ।

आविर्भावः [आविस्+भू+घञ्] 1. अभिव्यक्ति, उपस्थिति, प्रकट होना 2. अवतार ।

आविल (वि०) [आविलति दृष्टिं स्तृणाति—विल्+क तारा०] 1. पंकिल, मैला, गदला—पङ्कच्छिदः फलस्येव निकषेणाविलं पयः—मालवि० २।८, तस्याविलाम्भः परिशुद्धिहेतोः—रघु० १३।३६ 2. अपवित्र, दूषित (आलं० भी),—त्वदीयैश्चरितैरनाविलैः—कु० ५।५७, 3. काले रंग का, हलके काले रंग का 4. धुंधला, निष्प्रभ—आविलां मृगलेखाम्—रघु० ८।४२ ।

आविलयति (ना० धा० पर०) धब्बा लगाना, कलंक लगाना ।

आविष्करणम्, आविष्कारः [आविस्+कृ+ल्युट्+घञ् वा] अभिव्यक्ति, दर्शन देना, प्रकट करना—असूया गुणेषु दोषाविष्करणम्—अमर० ।

आविष्ट (भू० क० कृ०) [आ+विश्+क्त] 1. प्रविष्ट 2. (भूत प्रेतादिक से) ग्रस्त 3. संपन्न, भरा हुआ, वशीकृत,

काबू पाया हुआ, भय° क्रोध° 4. निमग्न, लीन अधिकार में किया हुआ, जुटा हुआ।

आविस् (अव्य०)[आ+अव्+इस्] निम्नांकित अर्थ प्रकट करने वाला अव्यय—'आंखों के सामने' 'खुले रूप में' 'प्रकटतः' (प्रायः यह अव्यय—अस्, भू और कृ धातु से पूर्व लगता ह)—आचार्यकं विजयि मान्मथमाविरासीत्—मा० १।२६, (याति) आविष्कृतारुणपुरस्सर एकतोऽर्कः—श० ४।१, तेषामाविरभूद्ब्रह्मा—कु० २।२ रघु० ९।५५।

आवीतम् [आ+व्ये+क्त] यज्ञोपवीत (चाहे किसी प्रकार सव्य, अपसव्य पहना हुआ हो)।

आवुकः (नाटचशालीय भाषा में) पिता।

आवुत्तः [आप्+क्विप्, आपमुत्तनोति इति उद्+तन्+ड] बहनोई, जीजा,—उत्तर० १, श० ६।

आवृत् (स्त्री०) [आ+वृत्+क्विप्] 1. मुड़ती हुई, प्रविष्ट होती हुई 2. क्रम, आनुपूर्व्य, पद्धति, रीति—अनयैवावृता कार्यं पिण्डनिर्वपणं सुतैः—मनु० ३।१४८ याज्ञ० ३।२, 3. रास्ते का मोड़, मार्ग, दिशा 4. शुद्धीकरण संबंधी संस्कार—मनु० २।६६।

आवृत्त (भू० क० कृ०) [आ+वृत्+क्त] 1. मुड़ा हुआ, चक्कर खाया हुआ, लौटा हुआ 2. दोहराया हुआ,—द्विरावृत्ता दश द्विदशाः—सिद्धा० 3. याद किया हुआ, अध्ययन किया हुआ।

आवृत्तिः (स्त्री०) [आ+वृत्+क्तिन्] 1. मुड़ना, लौटना, वापिस आना,—तपोवनावृत्तिपथम्—रघु० २।१८, भग० १।२३, 2. प्रत्यावर्तन, प्रतिनिवर्तन 3. चक्कर खाना, चारों ओर जाना 4. (सूर्य का) उसी स्थान पर फिर लौटना—उदगावृत्तिपथेन नारदः—रघु० ८।३३, 5. जन्म-मरण का बार २ होना, सांसारिक जीवन,—अनावृत्तिभयम् कु० ६।७७ 6. आवृत्ति, दोहराना, संस्करण (आधुनिक प्रयोग), 7. दोहराया हुआ पाठ, अध्ययन—आवृत्तिः सर्वशास्त्राणां बोधादपि गरीयसी—उद्भट०।

आवृष्टिः (स्त्री०) [आ+वृष्+क्तिन्] बरसना, बारिश की बौछार।

आवेगः [आ+विज्+घञ्] 1. बेचैनी, चिन्ता, उत्तेजना, विक्षोभ, घबड़ाहट—अलमावेगेन श० ३, अमरु ८३ 2. उतावली, हड़बड़ी 3. क्षोभ—(३३ व्यभिचारि-भावों में से एक समझा जाता है)।

आवेदनम् [आ+विद्+णिच्+ल्युट्] 1. समाचार देना, सूचना देना 2. अभ्यावेदन 3. अभियोग का वर्णन (विधि० में) 4. अभिवाचन, अर्जीदावा।

आवेशः [आ+विश्+घञ्] 1. प्रविष्ट होना, प्रवेश 2. अधिकार में करना, प्रभाव, अभ्यास, स्मय° अभिमान का प्रभाव—रघु० ५।१९ 3. एकनिष्ठता, किसी पदार्थ के प्रति अनुरक्ति 4. घमंड, हेकड़ी 5. हड़बड़ी, क्षोभ, क्रोध, प्रकोप 6. आसुरी भूतबाधा 7. लकवे की बेहोशी या मिरगी की मूर्छा।

आवेशनम् [आ+विश्+ल्युट्] 1. प्रविष्ट होना, प्रवेश 2. आसुरी प्रेतबाधा 3. प्रकोप, क्रोध, प्रचण्डता 4. निर्माणी, कारखाना—मनु० ९।२६५, 5. घर।

आवेशिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. विशिष्ट, निजी 2. अन्तर्हित—कः अतिथि, दर्शक।

आवेष्टकः [आ+वेष्ट्+णिच्+ण्वुल्] दीवार, बाड़, अहाता।

आवेष्टनम् [आ+वेष्ट्+णिच्+ल्युट्] 1. लपेटना, बंधना, बांधना 2. ढकना, लिफ़ाफ़ा 3. दीवार, बाड़, अहाता।

आश (वि०) [अश्+अण्] खानेवाला, भोक्ता (बहुधा समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त होता है) उदा० हुताश, आश्रयाश,—शः [अश्+घञ्] खाना (जैसा कि 'प्रातराश' में)।

आशंसनम् [आ+शंस्+ल्युट्] 1. प्रत्याशा, इच्छा—इष्टाशंसनमाशीः—सिद्धा० 2. कहना, घोषणा करना।

आशंसा [आ+शंस्+अ] 1. इच्छा, अभिलाष, आशा—निदधे विजयाशंसां चापे सीतां च लक्ष्मणे—रघु० १२।४४, भट्टि० १९।५, 2. भाषण, घोषणा 3. कल्पना—आशंसापरिकल्पितास्वपि भवत्यानन्दसान्द्रो लयः—मा० ५।७।

आशंसु (वि०) [आ+शंस्+उ] इच्छुक, आशावान्।

आशङ्का [आ+शङ्क्+अ] 1. भय, भय की सम्भावना,—नष्टाशङ्काहरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति—श० १।१६, आशङ्कया मुक्तम्—भर्तृ० ३।५, 2. सन्देह, अनिश्चयात्मकता,—इत्याशङ्कायामाह—गदाधर 3. अविश्वास, शक।

आशङ्कित (भू० क० कृ०) [आ+शङ्क्+क्त] 1. भीत, डरा हुआ,—तम् 1 भय, 2 सन्देह 3 अनिश्चयात्मकता।

आशयः [आ+शी+अच्] 1. शयनकक्ष, विश्रामस्थल, शरणागार 2. निवास-स्थान, आवास, आसन, आश्रय-स्थान—वायुर्गन्धानिवाशयात्—भग० १५।८, अपृथक्°—उत्तर० १।४५, 3. पात्र, आधार—विषमोऽपि विगाह्यते नयः कृततीर्थः पयसामिवाशयः—कि० २।३, तु० जलाशय, आमाशय, रक्ताशय आदि 4. पेट 5. अर्थ, इरादा, प्रयोजन, भाव—इत्याशयः, एवं कवेराशयः (टीकाकारों के द्वारा बहुधा प्रयुक्त दे० 'अभिप्राय') 6. भावनाओं का स्थान, मन, हृदय—अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः—भग० १०।२०, महावी० २।३७, 7. सम्पन्नता 8. कोठार 9. मन, इच्छा 10. भाग्य, किस्मत 11. (जानवरों को पकड़ने के लिए बनाया गया) गर्त—आस्ते परमसंतप्तो नूनं सिंह इवाशये—महा०। सम०—आशः अग्नि।

आशरः [आ+शृ+अच्] 1. अग्नि 2. असुर, राक्षस 3. वायु ।

आशवम् [आशोर्भावः—अण्] 1. वेग फुर्ती 2. खींची हुई शराब, अरिष्ट (अधिकतर 'आसव' लिखा जाता है) ।

आशा [आ+अश्+अच्] 1. (क) उम्मीद, प्रत्याशा, भविष्य—तामाशां च सुरद्विषाम्—रघु० १२।९६, आशा हि परमं दुःखं नैराश्यं परमं सुखम्—सुभाष०, त्वमाशे मोघाशे 2. मिथ्या आशा या प्रत्याशा 3. स्थान, प्रदेश, दिग्देश, दिशा—अगस्त्याचरितामाशामनाशास्यजयो ययौ—रघु० ४।४४, कि० ७।९ । सम० —अन्वित,—जनन (वि०) आशावान्, आशा बढ़ाने वाला,—गज दिग्गज दे० 'अष्टदिग्गज',—तन्तुः आशा की डोर, क्षीण आशा—मा० ४।३, ९।२६—पालः दिक्पाल दे० 'अष्टदिक्पाल',—पिशाचिका आशा की कल्पना-सृष्टि,—बन्धः 1. आशा का बन्धन, विश्वास, भरोसा, प्रत्याशा—गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्ध. साहयति—श० ४।१५, मेघ० १०, 2. तसल्ली 3. मकड़ी का जाला,—भंगः निराशा, नाउम्मीद,—हीन (वि०) निराश, हताश ।

आशाढः दे० 'अ(आ)षाढः' ।

आशास्य (स० कृ०) [आ+शास्+ण्यत्] 1. वरदान द्वारा प्राप्य 2. अभिलषणीय, वांछनीय—रघु० ४।४४, —स्यम् वाञ्छनीय पदार्थ, चाह, इच्छा,—मालवि० ५।२०, 3. आशीर्वाद, मंगलाचरण—आशास्यमन्यत्पुनरुक्तभूतम्—रघु० ५।३४ ।

आशिञ्जित (वि०) [आ+शिञ्ज्+क्त] झनकार (आभूषणों की) कु० ३।२६ ।

आशित (वि०) [आ+अश्+क्त] 1. भुक्त, खाया हुआ 2. खाकर तृप्त,—तम् भोजन करना ।

आशितङ्गवीन (वि०) [आशिता अशनेन तृप्ता गावो यत्र, —खञ्, निपातनात् मुम्] पहले पशुओं द्वारा चरा हुआ ।

आशितंभव (वि०) [आशित+भू+खच्, मुम्] तृप्त होने वाला, संतृप्त होने वाला (भोजन के रूप में)—वम् 1. आहार, भोज्य पदार्थ 2. अघाना, तृप्ति (पुं० भी) —फलैर्येप्वाशितंभवम्—भट्टि० ४।११ ।

आशिर (वि०) [आ+अश्+इरच्] भोजनभट्ट,—रः 1. अग्नि 2. सूर्य 3. राक्षस ।

आशिस् (स्त्री०) (°शीः, °शीर्म्याम्-आदि) [आ+शास् +क्विप्, इत्वम्] 1. आशीर्वाद, मंगलकामना (परिभाषा—वात्सल्याद्यत्र मान्येन कनिष्ठस्याभिधीयते, इष्टावधारकं वाक्यमाशीः सा परिकीर्तिता ।) 'आशिस्' और 'वर' भिन्नार्थक शब्द हैं, आशीर्वाद तो केवलमात्र किसी की मंगलकामना या सद्भावना की अभिव्यक्ति है—वह चाहे पूरी हो या न हो, इसके विपरीत 'वर' शब्द की भावना अधिक स्थायी और पूर्णता की निश्चायक है—तुल०—वरः खल्वेष नाशीः—श० ४, आशिसो गुरुजनवितीर्णा वरतामापद्यन्ते—का० २९१, अमोघाः प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमाशिषः—रघु० १।४४, जयाशीः—कु० ७।४७, 2. प्रार्थना, चाह, इच्छा-कु० ५।७६, भग० ४।२१, 3. सांप का विषैला दांत (तु० 'आशीविष') । सम०—वादः,—वचनम् (आशीर्वादः आदि), आशीर्वाद, मंगलाचरण, किसी प्रार्थना या सद्भावना की अभिव्यक्ति—आशीर्वचनसंयुक्तां नित्यं यस्मात् प्रकुर्वते—सा० द० ६, मनु० २।३३,—विषः (आशीर्विषः) सांप ।

आशी [आशीयंते अनया आ+शॄ+क्विप्—पृषो०,] 1. सांप का विषैला दांत, 2. एक प्रकार का सर्पविष 3. आशीर्वाद, मंगलाचरण । सम०—विषः 1. साँप, —गरुत्मदाशीविषभीमदर्शनैः—रघु० ३।५७, 2. एक विशेष प्रकार का साँप—कर्णाशीविषभोगिनि प्रशमिते. —वेणी० ६।१ ।

आशु (वि०) [अश्+उण्] तेज़, फ़ुर्तीला,—शुः,—शु (नपुं०) चावल (जो बरसात में ही शीघ्रतापूर्वक पक जाते हैं) —शु (अव्य०) तेजी से, जल्दी से, तुरन्त, सीधा —वर्त्म भानोस्त्यजाशु—मेघ० ३९।२२ । सम०—कारिन्, —कृत् (वि०) जल्दी करने वाला, चुस्त, फ़ुर्तीला —कोपिन् (वि०) गुस्सैला, चिड़चिड़ा,—ग (वि०) फ़ुर्तीला, तेज़ (—गः) 1. वायु 2. सूर्य 3. बाण—पपावनास्वादितपूर्वमाशुगः—रघु० ३।५४, ११।८२, १२।९१ —तोष (वि०) अनायास प्रसन्न होन वाला (—षः) शिव की उपाधि,—व्रीहिः बरसात में ही पक जाने वाले चावल ।

आशुशुक्षणिः [आ+शुष्+सन्+अनि] 1. वायु, हवा 2. अग्नि—मंत्रपूतानि हवींषि प्रतिगृह्णात्येतत्प्रीत्याशुशुक्षणिः—४४ ।

आशोकुटिन् (पुं०) [आशेतेऽस्मिन् इति-आ+शी+विच् स इव कुटति इति णिनि] पहाड़ ।

आशोषणम् [आ+शुष्+णिच्+ल्युट्] सुखाना ।

आशौचम् [अशौच+अण्] अपवित्रता—दे० 'अशौच' दशाहम् शावमाशौचं ब्राह्मणस्य विधीयते—मनु० ५।५९, ६१, ६२, याज्ञ० ३।१८

आश्चर्य (वि०) [आ+चर्+ण्यत् सुट्] चमत्कारपूर्ण, विलक्षण, असाधारण, आश्चर्यजनक, अद्भुत—आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन—सिद्धा०, तदनु ववृषुः पुष्पमाश्चर्यमेघाः—रघु० १६।८७ आश्चर्यदर्शनो मनुष्यलोकः —श० ७,—र्यम् 1. अचम्भा, चमत्कार, कौतुक —किमाश्चर्यं क्षारदेशे प्राणदा यमदूतिका—उद्भट, कर्माश्चर्याणि—उत्तर० १—आश्चर्यजनक काम—भग० ११।६, २।२९ 2. अचरज, विस्मय, अचम्भा 3.

(विस्मयादि द्योतक अव्य० के रूप में प्रयुक्त) आश्चर्य (कितना अचम्भा है, कितनी अजीब बात है)—आश्चर्यं परिपीडितोऽभिरमते यच्चातकस्तृष्णया—चात० २१४।

आश्चो (श्च्यो) तनम् [आ+श्चु (श्च्यु) त्+ल्युट्] 1. सिंचन, छिड़काव 2. पलकों के घी चुपड़ना।

आश्म (वि०) (स्त्री०—श्मी) [अश्मन्+अण्] पत्थर का बना हुआ, पथरीला।

आश्मन (वि०) (स्त्री०—नी) [अश्मनो विकारः—अण्] पथरीला, पत्थर का बना हुआ,—नः 1. पत्थर की बनी कोई वस्तु 2. सूर्य का सारथि अरुण।

आश्मिक (वि०) (स्त्री०—की) [अश्मन्+ठण्] 1. पत्थर का बना हुआ 2. पत्थर ढोने वाला।

आश्यान (भू० क० कृ०) [आ+श्यै+क्त] 1. जमा हुआ, संघनित—कि० १६।१०, 2. कुछ सूखा—पथश्चाश्यानकर्दमान्—रघु० ४।२४, कु० ७।९, धूएँ के सहारे सुखाये हुए (जैसे बाल)—रघु० १७।२२।

आश्रपणम् [आ+श्रा+णिच्+ल्युट्] पकाना, उबालना।

आश्रम् [अश्रमेव—स्वार्थेऽण्] आँसू।

आश्रमः—मम् [आ+श्रम्+घञ्] 1. पर्णशाला, कुटिया, कुटी, झोंपड़ी, संन्यासियों का आवास या कक्ष 2. अवस्था, संन्यासियों का धर्मसंघ, ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चार अवस्थाएँ (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ तथा संन्यास), क्षत्रिय (और वैश्य) भी पहले तीन आश्रमों में पदार्पण कर सकते हैं, तु० श० ७।२०, विक्रम० ५, कुछ लोगों के विचारानुसार वह चौथे आश्रम में भी प्रविष्ट हो सकते हैं (तु०—स किलाश्रममन्त्यमाश्रितः—रघु० ८।१४) 3. महाविद्यालय, विद्यालय 4. जंगल, झाड़ी (जहाँ संन्यासी लोग तपस्या करते हैं)। सम०—**गुरुः** धर्मसंघ के प्रधान, प्रशिक्षक, आचार्य,—**धर्मः** 1. जीवन के प्रत्येक आश्रम के विशिष्ट कर्तव्य 2. वानप्रस्थी के कर्तव्य य इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते—श० १, —**पदम्**, —**मण्डलम्**, —**स्थानम्** संन्यासाश्रम (आस-पास की भूमि समेत), तपोवन —शान्तमिदमाश्रमपदम्—श० १।१६ —**भ्रष्ट** (वि०) धर्मसंघ से बहिष्कृत, स्वधर्मच्युत, —**वासिन्**, —**आलयः**, —**सद्** (पु०) संन्यासी, वानप्रस्थ।

आश्रमिक, आश्रमिन् (वि०) [आश्रम+ठन्, इनि वा] धार्मिक जीवन के चार काल या पदों में किसी एक से संबंध रखने वाला।

आश्रयः [आ+श्रि+अच्] 1. विश्रामस्थल, सदन, अधिष्ठान —सौहृदादपृथगाश्रयामिमाम्—उत्तर० १।४५, ५।१, 2. जिसके ऊपर कोई वस्तु आश्रित रहती है 3. ग्रहण करने वाला, भाजन—तमाश्रयं दुष्प्रसहस्य तेजसः—रघु० ३।५८ 4. (क) शरणस्थान, शरणगृह—भर्ता वै ह्याश्रयः स्त्रीणाम् वेना०, तदहमाश्रयोन्मूलनेनैव त्वामकामां करोमि—मुद्रा० २, (ख) आवास, घर 5. सहारा लेने वाला (प्रायः समास में) 6. निर्भर करना (प्रायः समास में) 7. पालक, प्रतिपोषक —विनाश्रयं न तिष्ठन्ति पण्डिता वनिताः लताः—उद्भट 8. थूनी, स्तंभ—रघु० ९।६० 9. तरकस—बाणमाश्रयमुखात् समुद्धरन् रघु० ११।२६ 10. अधिकार, संमोदन, प्रमाण, अधिकार पत्र 11. मेलजोल, संबन्ध, साहचर्य 12. दूसरे का संश्रय लेने वाला, छः गुणों में से एक। सम०—**असिद्धः**,—**द्धिः** (स्त्री०) हेत्वाभास का एक प्रकार, असिद्ध के तीन उपभागों में से एक, —**आशः**,—**भुज्** (वि०) संपर्क में आने वाली वस्तुओं का उपभोग करने वाला (—**शः**,—**क्**) अग्नि, —दुर्वृत्तः क्रियते धूर्तैः श्रीमानात्मविवृद्धये, किं नाम खलसंसर्गः कुरुते नाश्रयाशवत्—उद्भट,—**लिंगम्** विशेषण (अपने विशेष्य के अनुरूप अपना लिंग रखने वाला शब्द)।

आश्रयणम् [आ+श्रि+ल्युट्] 1. दूसरे के संरक्षण में रहना, शरण लेना 2. स्वीकार करना, छांटना 3. शरण, शरणस्थान।

आश्रयिन् (वि०) [आश्रय+इनि] 1. सहारा लेने वाला, निर्भर करने वाला 2. संबद्ध, विषयक—विक्रम० ३।१०।

आश्रव (वि०) [आ+श्रु+अच्] आज्ञाकारी, आज्ञापालक —भियजामनाश्रवः—रघु० १९।४९, नै० ३।८४, —**वः** 1. नदी, दरिया 2. प्रतिज्ञा, वादा 3. दोष, अतिक्रमण—दे० 'आस्रव' भी।

आश्रिः (स्त्री०) [प्रा० स०] तलवार की धार।

आश्रित (भू० क० कृ०) [आ+श्रि+क्त] (कर्म० के साथ कर्तृवाच्य में प्रयुक्त) 1. सहारा लेते हुए—कृष्णाश्रितः=कृष्णमाश्रितः—सिद्धा० 2. रहने वाला, वास करने वाला, किसी स्थान पर स्थिर रहने वाला 3. काम में लाने वाला, सेवा में रखने वाला 4. अनुसरण करने वाला, अभ्यास करने वाला, पालन करने वाला —कु० ६।६, भट्टि० ७।४२, 5. निर्भर करने वाला 6. (कर्मवाच्य के रूप में प्रयुक्त) सहारा लिया हुआ, बसा हुआ,—**तः** पराधीन, सेवक, अनुचर; —अस्मदाश्रितानाम्—हि० १, प्रभूणां प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु कु० ३।१।

आश्रुत (भू० क० कृ०) [आ+श्रु+क्त] 1. सुना हुआ, 2. प्रतिज्ञात, सहमत, स्वीकृत,—**तम्** पुकार जो दूसरा सुन सके।

आश्रुतिः (स्त्री०) [आ+श्रु+क्तिन्] 1. सुनना 2. स्वीकार करना।

आश्लेषः [आ+श्लिष्+घञ्] 1. आलिंगन, परिरम्भण. कोला-कोली —आश्लेषलोलुपवधूस्तनकार्कश्यसाक्षिणीं

—शि० २।१७, अमरु, १५।७२, ९४, कण्ठाश्लेष-प्रणयिनि जने—मेघ० ३।१०६, 2. संपर्क, घनिष्ट संबंध, संबंध,—षा ९वाँ नक्षत्र।

आश्व (वि०) (स्त्री०—श्वी) [अश्व+अण्] घोड़े से सम्बन्ध रखने वाला, घोड़े के पास से आने वाला, —श्वम् घोड़ों का समूह।

आश्वत्थ (वि०) (स्त्री०-त्थी) [अश्वत्थ+अण्] पीपल के वृक्ष से संबंध रखने वाला, या पीपल से बना हुआ,—त्थम् पीपल का फल, वरबँटे।

आश्वयुज (वि०) (स्त्री०—जी) [अश्वयुज्+अण्] आश्विन मास से संबंध रखने वाला,—जः आश्विन मास—मनु० ६।१५,—जी आश्विन की पूर्णिमा का दिन।

आश्वलक्षणिकः [अश्वलक्षण—ठक्] सलोतरी, अश्व-चिकित्सक, साइस, (घोड़े की देखभाल करने वाला)।

आश्वासः [आ+श्वस्+घञ्] 1. सांस लेना, मुक्त श्वास लेना, चेतना लाभ 2. तसल्ली, प्रोत्साहन 3. रक्षा और सुरक्षा की गारंटी 4. रोकथाम 5. किसी पुस्तक का पाठ या अनुभाग।

आश्वासनम् [आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] प्रोत्साहन, दिलासा, तसल्ली—तदिदं द्वितीयं हृदयाश्वासनम् —श० ७।

आश्विकः [अश्व+ठञ्] घुड़सवार।

आश्विनः [अश्+विनि ततः अण्] मास का नाम (जिसमें चन्द्रमा अश्विनी नक्षत्र के निकट होता है)

आश्विनेयौ (द्वि० व०) [अश्विनी+ढक्] 1. दो अश्विनी कुमार (देवताओं के वैद्य) 2. नकुल और सहदेव के नाम, पाँच पांडवों में से अन्तिम दो।

आश्विन (वि०) (स्त्री०—नी) घोड़े द्वारा व्याप्त (यात्रा आदि) °नोऽध्वा—सिद्धा०।

आषाढः [आषाढ़ी पूर्णिमा अस्मिन्मासे अण्] 1. हिन्दुओं का एक महीना (जून और जुलाई में आने वाला), —आषाढस्य प्रथमदिवसे—मेघ० २, शेते विष्णुः सदाषाढे कार्तिके प्रतिबोध्यते—वि० पु० 2. ढाक की लकड़ी का दण्ड जिसे संन्यासी धारण करते हैं—अथाजिनाषाढधरः प्रगलभवाक्—कु० ६।३०,—ढा २०वाँ या २१ वाँ नक्षत्र—पूर्वाषाढ़ा तथा उत्तराषाढा,—ढी आषाढ़ मास की पूर्णिमा।

आष्टमः [अष्टम+ञ] आठवां भाग।

आस्, आः (अव्य०) निम्नांकित अर्थों को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय—(क) प्रत्यास्मरण —आः उपनयतु भवान् भूर्जपत्रम्—विक्रम० २ (ख) क्रोध—आः कथमद्यापि राक्षसत्रासः—उत्तर० १—आः पापे तिष्ठ तिष्ठ—मा० ८ (ग) पीड़ा—आः शीतम् —काव्य १० (घ) अपाकरण (सरोष विरोध) —आः क एष मयि स्थिते—मुद्रा० १—आः वृथा-मंगलपाठक—वेणी० १ (ङ) शोक, खेद—विद्यामातरमाः प्रदर्श्य नृपशून् भिक्षामहे निस्त्रपाः—उद्भट।

आस् (अदा० आ०) (आस्ते, आसित) 1. बैठना, लेटना, आराम करना,—एतदासनमास्यताम्—विक्रम० ५ —आस्यतामितिचोक्तः सन्नासीताभिमुखं गुरोः—मनु० २।१९३ 2. रहना, वास करना—तावद्वर्षाण्यासते देवलोके—महा०, यत्रास्मै रोचते तत्रायमास्ताम् का० १९६—कुरूनास्ते—सिद्धा० 3. चुपचाप बैठे रहना, शत्रुतापूर्ण व्यवहार न करना, बेकार बैठना—आसीनं त्वामुत्थापयति द्वयम्—शि० २।५७, 4. होना, अस्तित्व या विद्यमानता होना, 5. स्थित होना, रक्खा होना —जगन्ति यस्यां सविकाशमासत—शि० १।२३ 6. मानना, टिके रहना, किसी अवस्था में ठहरना या निरन्तर रहना (अनवरत या निर्बाध क्रिया को प्रकट करने के लिए बहुधा वर्तमान कालिक कृदन्त प्रत्ययों के साथ इस धातु का प्रयोग होता है—विदारयन्प्रगर्जंश्चास्ते —पंच० १, फाड़ता रहा और गरजता रहा 7. परिणत होना, परिणाम होना (सम्प्र० के साथ)—आस्तां मानसतुष्टये सुकृतिनां नीतिर्नवोढेव वः—हि० १।२१२ 8. जाने देना, एक ओर कर देना या रख देना,—आस्तां तावत्—रहने दो, जाने दो, प्रेर०—बिठाना, बिठलवाना, स्थिर करना—आसयत्सलिले पृथ्वीम्—सिद्धा०, अधि—लेटना, बसना, अधिकार करना, प्रविष्ट होना (स्थान में कर्म० के साथ)—निदष्टां कुलपतिना स पर्णशालामध्यास्य—रघु० १।९५, २।१७, ४।७६, ६।१०, भगवत्या प्राश्निकपदमध्यासितव्यम्—मालवि० १, अनु—1. निकट बैठाया जाना 2. सेवा करना, सेवा में प्रस्तुत रहना—सखीभ्यामन्वास्यते—श० ३, अन्वासितमरुन्धत्या—रघु० १।५६ 3. धरना देना —तामन्वास्य—रघु० २।२४, उद्—उदासीन या बेलाग होना, निश्चिन्त या निरपेक्ष होना, निष्क्रिय या अकर्मण्य होना—तत्किमित्युदासते भरताः—मा० १—विधाय वैरं सामर्षे नरोऽरौ य उदासते—शि० २।७२, भग० ९।९, मुद्रा० १, उप—1. सेवा में प्रस्तुत होना, सेवा करना, पूजा करना—अम्बामुपास्य सदयाम्—अस्व० १३, उद्यानपालसामान्यमृतवस्तमुपासते कु० २।३६ 2. उपागमन करना, की ओर जाना—उपासांचक्रिरे द्रष्टुं देवगन्धर्वकिन्नराः—भट्टि० ५।१०७, ७।८९, 3. भाग लेना, (पुण्य कृत्यों का) अनुष्ठान करना 4. (समय) बिताना—उपास्य रात्रिशेषं तु—रामा० 5. भोगना, झेलना—अलं ते पांडुपुत्राणां भक्त्या क्लेशमुपासितुं—महा०, मनु० ११।१८४ 6. आश्रय लेना, काम में लगाना, प्रयोग करना—लक्षणोपास्यते यस्य कृते—सा० द० २, 7. धनुर्विद्या का अभ्यास करना 8.

प्रत्याशा करना, प्रतीक्षा करना, पर्युप—1. उपासना करना, पूजा करना, अर्चना करना—पर्युपास्यन्त लक्ष्म्या —रघु० १०।६२, कु० २।३८, मनु० ७।३७, 2. (रक्षा के लिए) पहुँचना, शरण लेना, या संरक्षण में आना — अशक्ता एव सर्वत्र नरेन्द्रं पर्युपासते–पंच० १।२४१, 3. घेरना, घेरा डालना 4. भाग लेना, हिस्सा लेना 5. आश्रय लेना, सम्—1. बैठ जाना—प्रत्युवाच समासीनं वसिष्ठम्—रामा० 2. मिल कर बैठना, समुप—1. सेवा के लिए प्रस्तुत रहना, पूजा करना, सेवा करना—समुपास्यत पुत्रभोग्यया स्नुषयेवाविकृतेन्द्रियः श्रियः—रघु० ८।१४, 2. अनुष्ठान करना—ते त्रयः संध्यां समुपासत—रामा० ।

आसः [आस्+घञ्] 1. आसन 2. धनुष (—सम्, भी) स सासिः सा सुसूः सासः—कि० १५।५ ।

आसक्त (भू० क० कृ०) [आ+सञ्ज्+क्त] 1. अत्यनुरक्त, कृतसंकल्प, जुटा हुआ, लगा हुआ—(प्राय: अधि० के साथ या समास में) 2. स्थिर, टिका हुआ—शिखरासक्तमेघाः—कु० ६।४०, 3. निरन्तर, अनवरत, शाश्वत । सम० - चित्त,—चेतस्,—मानस् एकनिष्ठ, एकाग्र ।

आसक्तिः (स्त्री०) [आ+सञ्ज्+क्तिन्] 1. अनुराग, भक्ति, लगाव—बालिशचरितेष्वासक्तिः—का० १२०, 2. उत्सुकता, लगाव ।

आसङ्गः [आ+संज्+घञ्] 1. अनुराग, भक्ति—सुखासङ्गलुब्धः—का० १७३, 2. सम्पर्क, अनुरक्ति, चिपकाव —(पङ्कजं) स शैवलासङ्गमपि प्रकाशते—कु० ५।९, ३।४६ 3. साहचर्य, संयोग, सम्मिलन,—त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं—भग० ४।२०, इसी प्रकार 'कान्तासङ्गम्' —आदि 4. स्थिरीकरण, बन्धन ।

आसङ्गिनी [आसङ्ग+इनि+ङीप्] चक्रवात, बगूला, हूला ।

आसञ्जनम् [आ+सञ्ज्+ल्युट्] 1. बाँधना, जमाना, (शरीर पर) धारण करना 2. फँस जाना, चिपकना —व्रततिवलयासञ्जनात्—श० १।३३, ५।११ 3. अनुराग, भक्ति 4. सम्पर्क, सामीप्य ।

आसत्तिः [आ+सद्+क्तिन्] 1. मिलन, संयोग 2. अंतरंग मेल, घनिष्ठ सम्पर्क,—किमपि किमपि मन्दं मन्दमासत्तियोगात्—उत्तर० १।२७, 3. उपलब्धि, लाभ, उपार्जन, 4. (तर्क० में) सामीप्य दो या दो से अधिक निकटस्थ राशियों का सम्बन्ध और उनके द्वारा अभिव्यक्त भाव—कारणं सन्निधानं तु पदस्यासत्तिरुच्यते —भाषा० ८३ ।

आसन् (नपुं०) मुख (कर्म० द्वि० व० के पश्चात् सभी विभक्तियों में 'आस्य' के स्थान में विकल्प से आदेश होने वाला शब्द) ।

आसनम् [आस्+ल्युट्] 1. बैठना, 2. आसन, स्थान, स्टूल —स वासवेनासनसंनिकृष्टम्—कु० ३।२, आसनं मुच् —अपना आसन छोड़ना, उठना—रघु० ३।११, 3. एक विशेष अंगविन्यास या बैठने का ढंग—तु० पद्म° वीर° 4. बैठ जाना या ठहरना 5. रतिक्रिया की विशेष विधि 6. शत्रु के विरुद्ध किसी स्थान पर डटे रहना (विप० यानम्), विदेशनीति के ६ प्रकारों में से एक—संधिर्नाविग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः—अमर० मनु० ७।१६०, याज्ञ० १।३४६ 7. हाथी के शरीर का अगला भाग, घोड़े का कन्धा,—ना 1. आसन, तिपाई जिस पर बैठा जाय, टेक 2. बैठने का एक छोटा स्थान स्टूल 3. दुकान, आर्पणिका । सम० - बंधधीर (वि०) बैठने के लिए दृढ़ संकल्पवाला, अपने आसन पर दृढ़, —निषेदुषीमासनबन्धधीरः—रघु० २।६ ।

आसन्दी [आसद्यतेऽस्याम्—आ+सद्+ट, नुम् नि० ङीप्] तकियेदार आराम कुर्सी ।

आसन्न (भू० क० कृ०) [आ+सद्+क्त] 1. उपागत (काल, स्थान और संख्या की दृष्टि से) निकट, —आसन्नविंशाः—बीस के लगभग या निकट 2. निकटवर्ती, सन्निहित—आसन्नपतने कूले—शारी०, । सम० —कालः 1. मृत्यु का समय 2. जिसकी मृत्यु निकट, हो,—परिचारकः—चारिका व्यक्तिगत सेवक, शरीर रक्षक ।

आसम्बाध (वि०) [आसमन्तात् सम्बाधा यत्र ब० स०] 1. समवरुद्ध, रोका हुआ, (चारों ओर से) घेरा हुआ —आसम्बाधा भविष्यन्ति पन्थानः शरवृष्टिभिः— रामा० ।

आसवः [आ+सु+अण्] 1. अर्क, 2. काढ़ा 3. मद्यनिष्कर्ष —अनासवाख्यं करणं मदस्य—कु० १।३१, द्राक्षा° आदि ।

आसादनम् [आ+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. प्राप्त करना, उपलब्ध करना 2. आक्रमण करना ।

आसारः [आ+सृ+घञ्] 1. (किसी वस्तु की) मूसलाधार बौछार—आसारसिक्तक्षितिबाष्पयोगात्—रघु० १३। २९, मेघ० १७, पुष्पासारैः—४३, इसी प्रकार तुहिन°, रुधिर° आदि—धारासारैर्वृष्टिर्बभूव—हि० ३, मूसलाधार बारिश हुई 2. शत्रु को घेरा डालना 3. आक्रमण, अचानक हमला 4. अपने किसी मित्र राजा की सेना 5. रसद, आहार—पंच० ३।४१ ।

आसिकः [असि+ठक्] खड्गधारी, तलवार लिए हुए ।

आसिधारम् [असिधारा इव अस्त्यत्र अण्] एक प्रकार का व्रतविशेष—अभ्यस्तीव व्रतमासिधारम्—रघु० १३।६७, व्याख्या के लिए दे० असि के नीचे 'असिधारा' शब्द ।

आसुतिः (स्त्री०) [आ+सु+क्तिन् [1. अर्क, 2. काढ़ा ।

आसुर (वि०) (स्त्री०—री) [असुर+अण्] (विप०

देवी) 1. असुरों से संबन्ध रखने वाला 2. भूत-प्रेतों से संबंध रखने वाला,—आसुरी माया, आसुरी रात्रिः आदि 3. नारकीय, राक्षसी—आसुरं भावमाश्रितः भग० ७।१५, (आसुर-आचरण के पूर्ण विवरण के लिए दे० भग० १६। ७—२४)—रः 1. राक्षस, 2. आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें कि वर, वधू को उसके पिता या पैतृकबांधवों से खरीद लेता है (दे० उद्वाह)—आसुरो द्रविणादानात्—याज्ञ० १।६१, मनु० ३।३१,—री 1. शल्यचिकित्सा, जर्राही 2. राक्षसी—संभ्रमादासुरीभिः—वेणी० १।३।

आसूत्रित (वि०) [आ+सूत्र्+क्त] 1. माला पहने हुए या माला के रूप में, 2. अंतर्ग्रथित।

आसेकः [आ+सिच्+घञ्] गीला करना, खींचना, ऊपर से उंडेलना।

आसेचनम् [आ+सिच्+ल्युट्] ऊपर से उंडेलना, गीला करना, छिड़कना।

आसेधः [आ+सिध्+घञ्] गिरफ्तारी, हिरासत, कानूनी प्रतिबंध यह चार प्रकार का है:—स्थानासेधः कालकृतः प्रवासात् कर्मणस्तथा—नारद।

आसेवा—वनम् [प्रा० स०] 1. सोत्साह अभ्यास, किसी क्रिया का सतत अनुष्ठान, 2. बारंबार होना, आवृत्ति —पा० ८।३।१०२, आसेवनं पौनःपुन्यम्—सिद्धा०।

आस्कन्दः—दनम् [आ+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] 1. आक्रमण, हमला, सतीत्वनाश; परवनिता °प्रगल्भस्य —वेणी० २, 2. चढ़ना, सवारी करना, रौंदना, 3. भर्त्सना, दुर्वचन 4. घोड़े की सरपट चाल 5. लड़ाई, युद्ध।

आस्कन्दितम्—तकम् [आ+स्कन्द्+क्त, स्वार्थे कन् वा] घोड़े की चाल, घोड़े की सरपट चाल।

आस्कन्दिन् (वि०) [आ+स्कन्द्+णिनि] चढ़ बैठने वाला, टूट पड़ने वाला—रघु० १७।५२।

आस्तरः [आ+स्तृ+अप्] 1. चादर, ओढ़ने का वस्त्र 2. दरी, बिस्तरा, चटाई—श० ३।२० 3. विस्तरण, फैलाव (वस्त्रादि)।

आस्तरणम् [आ+स्तृ+ल्युट्] 1. विस्तरण, बिछावन 2. बिस्तरा, तह, कुसुम° फूलों की क्यारी—कु० ४। ३५, तमालपत्रास्तरणासु रन्तुम्—रघु० ६।६४ 3. गद्दा, रजाई, बिस्तर के कपड़े 4. दरी 5. हाथी की जीन-पोश, साज-सामान, रंगीन झूल।

आस्तारः [आ+स्तृ+घञ्] फैलाना, बिछाना, बखेरना। सम०—पङ्क्तिः छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट।

आस्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [अस्ति+ठक्] 1. जो ईश्वर और परलोक में विश्वास रखता है 2. अपनी धर्म-परंपरा में विश्वास रखने वाला 3. पवित्रात्मा, भक्त, श्रद्धालु—आस्तिकः श्रद्दधानश्च—याज्ञ० १।२६८।

आस्तिकता,—त्वम्, आस्तिक्यम् [आस्तिक+तल् त्वल् ष्यञ् वा] 1. ईश्वर और परलोक में विश्वास 2. पवित्रता, भक्ति, श्रद्धा—भग० १८।४२ आस्तिक्यं श्रद्दधानता परमार्थेष्वागमार्थेषु—शंकर०।

आस्तीकः एक प्राचीन मुनि, जरत्कारु का पुत्र (जरत्कारु के बीच में पड़ने से ही जनमेजय ने तक्षक नाग को छोड़ दिया था, जिसके कारण कि सर्पयज्ञ रचा गया था)।

आस्था [आ+स्था+अङ] 1. श्रद्धा, देखभाल, आदर, विचार, ध्यान रखना (अधि० के साथ)—मर्त्येष्वा-स्थापराङ्मुखः—रघु० १०।४३ मय्यप्यास्था न ते चेत् —भर्तृ० ३।३० दे० 'अनास्था' भी 2. स्वीकृति, वादा 3. थूनी, सहारा, टेक 4. आशा, भरोसा 5. प्रयत्न 6. दशा, अवस्था 7. सभा।

आस्थानम् [आ+स्था+ल्युट्] 1. स्थान, जगह 2. नींव, आधार 3. सभा 4. देखभाल, श्रद्धा, दे० 'आस्था' 5. सभागृह 6. विश्रामस्थान,—नी सभा-भवन। सम० —गृहम्,—निकेतनम्,—मंडपः सभाभवन।

आस्थित (भू० क० कृ०) (कर्तृवाच्य के रूप में प्रयुक्त) रहने वाला, बसने वाला, आश्रय लेने वाला, काम में लगने वाला, अभ्यास करने वाला, अपने आपको ढालने वाला।

आस्पदम् [आ+पद्+घ सुट् च] 1. स्थान, जगह, आसन, ठौर—तस्यास्पदं श्रीयुवराजसंज्ञितम्—रघु० ३।३६, ध्यानास्पदं भूतपतेर्विवेश—कु० ३।४३, ५।१०, ४८, ६९, 2. (आलं०) आवास, स्थल, आशय—करिण्यः कारुण्यास्पदम्—भामि० १।२, 3. श्रेणी, दर्जा, केन्द्र-स्थान 4. मर्यादा, प्रामाणिकता, पद 5. व्यवसाय, काम 6. थूनी, आश्रय।

आस्पन्दनम् [आ+स्पन्द्+ल्युट्] धड़कना, कांपना।

आस्पर्धा [प्रा० स०] होड़, प्रतिद्वंद्विता।

आस्फालः [आ+स्फल्+णिच्+अच्] 1. मारना, रगड़ना, शनैः २ चलाना 2. फड़फड़ाना 3. विशेष रूप से हाथी के कानों की फड़फड़ाहट।

आस्फालनम् [आ+स्फल्+णिच्+ल्युट्] 1. रगड़ना, दबा कर रगड़ना, (पानी आदि का), हिलना फड़फड़ाना —अनवरतधनुर्ज्यास्फालनक्रूरपूर्वम्—श० २।४, आसां जलास्फालनतत्पराणाम्—रघु० १६।६२, ३।५५, ६। ७३, अमरु ५४, ऐरावत° कर्कशेन हस्तेन कु० ३।२२ 2. घमंड, हेकड़ी।

आस्फोटः [आ+स्फुट्+अच्] 1. आक या मदार का पौधा 2. ताल ठोकना,—टा नवमल्लिका का पौधा, जङ्गली चमेली।

आस्फोटनम् [आ+स्फुट्+ल्युट्] 1. फटकना 2. कांपना 3. फूंक मारना, फुलाना 4. सिकोड़ना, बन्द करना 5. ताल ठोकना।

आस्माक (वि०) (स्त्री०—की), आस्माकीन (वि०) [अस्मद्+अण्, खञ्, अस्माक आदेश:] हमारा, हम सब का—आस्माकदन्तिसान्निध्यात्—शि० २।६३, ८।५० ।

आस्यम् [अस्यते ग्रासोऽत्र—अस्+ण्यत्] 1. मुंह, जबड़ा —आस्यकुहरे विवृतास्य: 2. चेहरा, आस्यकमलम् 3. मुख का वह भाग जिससे वर्णोच्चारण में काम लिया जाता है, 4. मुंह, विवर—व्रणास्यम्, अङ्कास्यम् आदि । सम०—आसवः लार, लुआब,—पत्रम् कमल,—लाङ्गलः 1 कुत्ता, 2 सूअर —लोमन् (नपुं०) दाढ़ी ।

आस्यन्दनम् [आ+स्यन्द्+ल्युट्] बहना, रिसना ।

आस्यन्धय (वि०) [आस्यं धयति—धे+ख मुम्] मुखचुम्बन करने वाला ।

आस्या=[आस्+क्यप्] दे० आसना ।

आस्रम् [अस्र+अण्] रुधिर । सम०—पः खून पीने वाला, राक्षस ।

आस्रवः [आ+स्रु+अप्] 1. पीडा, कष्ट, दु:ख 2. बहाव, स्रवण 3. (मवाद आदि का) बहना, निकलना, 4. अपराध, अतिक्रमण 5. उबलते हुए चावलों का झाग ।

आस्रावः [आ+स्रु+घञ्] 1. घाव 2. बहाव, निकास 3. लार 4. पीड़ा, कष्ट

आस्वादः [आ+स्वद्+घञ्] 1. चखना, खाना—चूताङ्कुरास्वादकषायकण्ठः—कु० ३।३२, हि० १।१५२ 2. स्वाद लेना—ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः—मेघ० ४१, सुखास्वादपरः—हि० ४।७६ 3. सुखोपभोग करना, अनुभव करना, °वत् (वि०) स्वादिष्ट, रसीला—आस्वादवद्भिः कवलैस्तृणानाम् —रघु० २।५ ।

आस्वादनम् [आ+स्वद्+णिच्+ल्युट्] चखना, खाना ।

आह (अव्य०) [आ+हन्+ड] 1. निम्नांकित भावनाओं को द्योतन करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय—(क) झिड़की (ख) कठोरता (ग) आज्ञा (घ) फेंकना, भेजना 2. 'कहना' 'बोलना' अर्थ को प्रगट करने वाली सदोष क्रिया के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के एक वचन का अनियमित रूप (भारतीय वैयाकरणों के मतानुसार यह रूप 'ब्रू' धातु का है तथा पाश्चात्य विद्वान् इसको 'अह्' से बना हुआ मानते हैं, संस्कृत भाषा में इस धातु के वर्तमान रूप—आह, आहतुः, आहुः आत्थ, और आहथुः हैं) ।

आहत (भू० क० कृ०) [आ+हन्+क्त] 1. जिस पर प्रहार या आघात किया गया हो, पीटा गया (ढोल आदि) 2. रौंदा गया – पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति—शि० २।४६ 3. घायल, मारा हुआ 4. गुणित (गणित में) 5. लुढ़काया हुआ (पासा) 6. मिथ्या कहा हुआ,—तः ढोल,—तम् 1. नई पोशाक, नया वस्त्र 2. भावहीन या निरर्थक भाषण, असम्भावना की दृढोक्ति—उदा० एष वंध्यासुतो याति—सुभा० । सम० —लक्षण (वि०)=आहितलक्षण ।

आहतिः (स्त्री०) [आ+हन्+क्तिन्] 1. हत्या करना 2. प्रहार, चोट, मारना, पीटना 2. यष्टि, छड़ी ।

आहर (वि०) [आ+हृ+अच्](समास के अन्त में) लाने वाला, ले आने वाला, ग्रहण करने वाला, पकड़ने वाला—समित्कुशफलाहरैः—रघु० १।४९,—रः 1. ग्रहण करना, पकड़ना 2. पूरा करना, सम्पन्न करना 3. यज्ञ करना ।

आहरणम् [आ+हृ+ल्युट्] 1. ले आना, (निकट) लाना —समिदाहरणाय प्रस्थिता वयम्—श० १ 2. पकड़ना, ग्रहण करना 3. हटाना, निकालना 4. सम्पन्न करना, (यज्ञादिक) पूरा करना 5. विवाह के समय दुलहिन को उपहार के रूप में दिया जाने वाला धन, दहेज, —सत्त्वानुरूपाहरणीकृतश्रीः—रघु० ७।३२ ।

आहवः [आ+ह्वे+अप्] 1. युद्ध, संग्राम, लड़ाई—एवं विधेनाहवचेष्टितेन—रघु० ७।६७, हत्वा स्वजनमाहवे —भग० १।३१ 2. ललकार, चुनौती, आह्वान, °काम्या लड़ने की इच्छा 3. यज्ञ—तत्र नाभवदसौ महाहवे —शि० १४।४४ ।

आहवनम् [आ+हु+ल्युट्] 1. यज्ञ—द्रष्टुमाहवनमग्रजन्मनाम्—शि० १४।३८ 2. आहुति ।

आहवनीय (सं० कृ०) [आ+हु+अनीयर्] आहुति देने के योग्य,—यः गार्हपत्याग्नि से ली हुई अभिमन्त्रित अग्नि, तीन अग्नियों में से एक(पौर्व)जो यज्ञ में प्रज्वलित की जाती है । दे० 'अग्नित्रेता' शब्द 'अग्नि' के नीचे ।

आहारः [आ+हृ+घञ्] 1. लाना, ले आना, या निकट लाना 2. भोजन करना 3. भोजन—°वृत्तिमकरोत् —पंच० १, भोजन किया । सम०—पाकः भोजन का पचना,—विरहः भोजन की कमी, भूखों मरना,—सम्भवः —शरीर का रस, लसीका ।

आहार्य (सं० कृ०) [आ+हृ+ण्यत्] 1. ग्रहण करने या पकड़ने के योग्य 2. लाने या ले आने के योग्य 3. कृत्रिम, नैमित्तिक, बाह्य—आहार्यशोभारहितैरमायैः —भट्टि० २।१४, न रम्यमाहार्यमपेक्षते गुणम्—कि० ४।२३, कु० ७।२० पर मल्लि० भी, 4. साभिप्राय, अभिप्रेत,—उदा० रूपक में उपमेय या उपमान का आरोप जिसके विषय में वक्ता पूर्ण रूप से जानकार होता है । 5. श्रृंगार या आभूषा से संप्रेषित या प्रभावित, अभिनय के चार प्रकारों में से एक ।

आहावः [आ+ह्वे+घञ्] 1. पशुओं को पानी पिलाने के लिए कुएँ के पास बनी कूंड 2. संग्राम, युद्ध 3. आह्वान, ललकार 4. अग्नि ।

आहिण्डिकः [आहिंड+ठक्] निषाद पिता और वैदेही माता से उत्पन्न वर्णसंकर,—आहिंडिको निषादेन वैदेह्यामेव जायते—मनु० १०।३७।

आहित (भू० क० कृ०) [आ+धा+क्त] 1. स्थापित, जड़ा गया, जमा किया गया (धरोहर के रूप में रक्खा गया) 2. अनुभूत, सत्कृत 3. सम्पन्न, किया गया। सम०—**अग्निः** ब्राह्मण जो यज्ञ की पावन अग्नि को अभिमंत्रित करता है,—**अंक** (वि०) चिह्नित, चित्तीदार,—**लक्षण** (वि०) परिचायक चिह्न वाला, —ककुत्स्थ इत्याहितलक्षणोऽभूत्—रघु० ६।७१ (मल्लि० के अनुसार=अच्छे गुणों के कारण प्रख्यात)।

आहितुण्डिकः [अहितुण्डेन दीव्यति ठक्] बाजीगर, सपेरा, ऐन्द्रजालिक या जादूगर—अहं खल्वाहितुण्डिको जीर्णविषो नाम—मुद्रा० २।

आहुतिः (स्त्री०) [आ+हु+क्तिन्] 1. किसी देवता को आहुति देना, पुण्यकृत्यों के उपलक्ष्य में किये जाने वाले यज्ञों में हवनसामग्री हवन कुंड में डालना —होतुराहुतिसाधनम्—रघु० १।८२, 2. किसी देवता को उद्दिष्ट करके दी गई आहुति (हवनसामग्री)।

आहूतिः (स्त्री०) [आ+ह्वे+क्तिन्] चुनौती, ललकार, आह्वान।

आहेय (वि०) [अहि+ढक्] साँपों से संबंध रखने वाला —पंच० १।१११।

आहो (अव्य०) निम्नांकित भावनाओं को व्यक्त करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय, (क) सन्देह या विकल्प, प्रायः 'किम्' का सहसंबंधी—किं वैखानसं व्रतं निषेवितव्यम्........ आहो निवत्स्यति समं हरिणांगनाभिः—श० १।२७, दारत्यागी भवाम्याहो परस्त्रीस्पर्शपांसुलः—श० ५।२६ (ख) प्रश्नवाचकता —। सम०—**पुरुषिका** 1. अत्यधिक अहंमन्यता या घमंड—आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि —अमर०, आहोपुरुषिकां पश्य मम सद्रत्नकान्तिभिः —भट्टि० ५।२७, 2. सैनिक आत्मश्लाघा, शेखी बघारना 3. अपने पराक्रम की डींग मारना—निजभुजबलाहोपुरुषिकाम्—भामि०१।८४,—**स्वित्** (अव्य०) 'संदेह' 'संभावना' 'संभाव्यता' आदि भावनाओं को प्रकट करने वाला अव्यय ('किम्' का सहसंबंधी) —आहोस्वित्प्रसवो ममापचरितैर्विष्टम्भितो वीरुधाम् —श० ५।९, किं द्विजः पचति आहोस्विद् गच्छति —सिद्धा०।

आह्नम् [अह्नां समूहः—अञ्] दिनों का समूह, बहुत दिन।

आह्निक (वि०) (स्त्री०—की) [अह्नि भवः, अह्ना निर्वृत्तः साध्यः—ठञ्] 1. दैनिक, प्रति दिन का, प्रति दिन किया गया, दिन भर किया गया धार्मिक संस्कार या कर्तव्य जो प्रति दिन नियत समय पर किया जाने वाला है, प्रतिदिन किया जाने वाला कार्य, जैसे कि भोजन करना, स्नान करना आदि —कृताह्निकः संवृत्तः—विक्रम० ४, 2. दैनिक भोजन 3. दैनिक कार्य या व्यवसाय।

आह्लादः [आ+ह्लाद्+घञ्] खुशी, हर्ष—साह्लादं वचनम्—पंच० ४।

आह्लादनम् [आ+ह्लाद्+ल्युट्] प्रसन्न करना, खुश करना।

आह्व (वि०) [आ+ह्वे+ड] 1. जो पुकारता है, बुलाता है, बुलाने वाला—**ह्वा** [आ+ह्वे+अङ्+टाप्] 1. बुलाना, पुकारना 2. नाम, अभिधान (प्रायः समास के अन्त में)—अमृताह्वः, शताह्वः, आदि।

आह्वयः [आ+ह्वे+श—वा०]—1. नाम, अभिधान (समास का अन्तिम पद) काव्यं रामायणाह्वयम् —रामा० 2. एक कानूनी अभियोग जो मुर्गों की लड़ाई जैसे पशु-खेलों में होने वाले झगड़ों से पैदा हो (कानून के १८ नामों में से एक)—पणपूर्वकं पक्षिमेषादियोधनं आह्वयः—मनु० ८।७ पर राघवानन्द की व्याख्या।

आह्वयनम् [आ+ह्वे+णिच्+ल्युट्] नाम, अभिधान।

आह्वानम् [आ+ह्वे+ल्युट्] 1. ललकार, आमन्त्रण 2. बुलावा, निमन्त्रण, आमन्त्रित करना, सुहृदाह्वानं प्रकुर्वीत—पंच० ३।४७, 3. कानूनी आमंत्रण (कचहरी या सरकार से किसी न्यायाधिकरण के सन्मुख उपस्थित होने के लिये बुलावा) 4. देवता का संबोधन —मनु० ९।१२६, 5. चुनौती 6. नाम, अभिधान।

आह्वायः [आ+ह्वे+घञ्] 1. बुलावा 2. नाम।

आह्वायकः [आ+ह्वे+ण्वुल्] 1. दूत, संदेशवाहक —आह्वायकान् भूमिपतेरयोध्याम्—भट्टि० २।४३।

इ

इ [अ+इञ्] कामदेव (अव्य०) (क) क्रोध (ख) पुकार (ग) करुणा (घ) झिड़की तथा (ङ) आश्चर्य की भावना को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय।

इ (क) (अदा० पर०) (एति, इत:) 1. जाना, की ओर जाना, निकट आना—शशिनं पुनरेति शर्वरी—रघु० ८।५६ 2. पहुँचना, पाना, प्राप्त करना, चले जाना —निर्बुद्धिः क्षयमेति—मृच्छ० १।१४, नष्ट हो जाता है, बर्बाद होता है, इसी प्रकार वशं, शत्रुत्वं, शूद्रताम् आदि, (ख) (भ्वा० उभ०)=दे० अय् (ग) (दिवा० आ०) 1. आना, आ धमकना 2. भागना घूमना 3. शीघ्र जाना, बार बार जाना। अति—1. परे चले जाना, पार करना, ऊपर से चले जाना—जवादतीये हिमवानधोमुखैः—कि० १४।५४,—स्थातव्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानुः—मेघ० ३४, दृष्टि से ओझल हो जाता है 2. आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना, पछाड़ देना,—सत्यमतीत्य हरितो हरींश्च वर्तन्ते वाजिनः—श० १, त्रिस्रोतसः कान्तिमतीत्य तस्थौ—कु० ७।१५, शि० २।२३ 3. पास से निकल जाना, पीछे छोड़ देना, भूल जाना, उपेक्षा करना—श० ६।१६, रघु० १५।३७ 4. बिताना, बीतना (समय का)—अत्येति रजनी या तु—रामा०, अतीते दशरात्रे, दे० 'अतीत', अधि—1. याद रखना, चिन्तन करना, खेद पूर्वक याद करना (संब० के साथ) —रामस्य दयमानोसावध्येति तव लक्ष्मणः—भट्टि० ८।११, १८।३८, कि० ११।७४ 2. ('अधीते' इस अर्थ में सदैव 'आत्मनेपद') शिक्षा प्राप्त करना, अध्ययन करना, पढ़ना—उपाध्यायादधीते—सिद्धा०, सोऽध्यैष्ट वदान्—भट्टि० १।२, (—प्रेर० अध्यापयति, इच्छा०—अधिजिगांसते) अनु—, 1. अनुसरणकरना, पीछे चलना—प्रयतां प्रातरन्वेतु—रघु० १।९० 2. सफल होना 3. अनुगमन (व्या० या रचना में) 4. आज्ञा मानना, अनुरूप होना, अनुकरण करना, अन्वा—, पीछे जाना, अनुसरण करना, अन्तर्—1. बीच में जाना, हस्तक्षेप करना 2. रोकना, बाधा डालना 3. छिपाना, गुप्त रखना, परदा डालना—दे० 'अन्तरित', अप—1. चले जाना, विदा होना, पीछे हटना, लौट पड़ना, अपेहि—दूर हो जाओ, दूर हटो 2. वंचित होना, मुक्त होना—दे० 'अपेत' 3. मरना, नष्ट होना, अभि—, 1. जाना, पहुँचना, निकट जाना —अस्मानत्तुमितोऽभ्येति—भट्टि० ७।८४ 2. अनुसरण करना, सेवा करना 3. प्राप्त करना, मिलना, भुगतना, (अच्छी बुरी बातें) भोगना, अभिप्र—, की ओर जाना, इरादा करना, अर्थ रखना, उद्देश्य बना कर—कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानम्—पा० १।४।३२ अभ्या—पहुँचना, अभ्युद्—, 1. उठना, ऊपर जाना 2. (आलं०) फलना-फूलना, समृद्ध होना, अभ्युप—1. निकट जाना, पहुंचना आपहुंचना—व्यतीतकालस्त्वहमभ्युपेतः—रघु० ५।१४, १६।२२, 2. विशिष्ट दशा को पहुँच जाना, प्राप्त करना—सत्यं न तद्यच्छलमभ्युपैति—हि० ३।६१, 3. जिम्मेवारी लेना, सहमत होना, स्वीकार करना, (कोई काम करने की) प्रतिज्ञा करना;—मन्दायंते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः—मेघ० ३८ 4. मानलेना, अपना लेना, स्वीकार करना, 5. आज्ञा मानना, अधीनता स्वीकार करना, अव—, जानना, ज्ञान प्राप्त करना, जानकार होना—अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः—रघु० २।३५, कु० ३।१३, ४।९, आ—, आना, निकट खिसकना, उद्—1. (तारे आदि का) उदय होना, (आलं० भी) आना, ऊपर उठना—उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्—श० ७।३०, उदेति सविता ताम्रः—आदि 2. उठना, उछलना, पैदा किया जाना 3. फलना-फूलना, समृद्ध होना, उप—, 1. पहुंचना, निकट खिसकना, पास जाना—योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्—भग० ८।२८ 2. निकट जाना, में से निकलना, प्राप्त करना, (किसी दशा को) पहुंच जाना,—उपैति सस्यं परिणामरम्यताम्—कि० ४।२२, 3. आ पड़ना, निर्—, विदा होना, प्रस्थान करना, परा—, 1. चले जाना, दौड़ जाना, भाग जाना, वापिस मुड़ना,—यः परैति स जीवति—पंच० ५।८८ 'भागने वाला अपनी जान बचा लेता है', तु०, 'जान बचाने के लिए भागना, 2. पहुँचना, प्राप्त करना—कि० १।३९ 3. इस संसार से कूच करना, मरना, दे० परेत, परि—,1. परिक्रमा करना, प्रदक्षिणा करना,—चरणन्यासं भक्तिनम्रः परीयाः—मेघ० ५५, मनु० २।४८, 2. घेरना, चारों ओर चक्कर लगाना—हुतवहपरीतं गृहमिव—श० ५।१०, विपत्रलिभिः परीताभिर्महीपथिः—रघु० १२।६१, इसी प्रकार 'कोपपरीत' 3. पास जाना, (चीजों का) चिन्तन करना 4. बदलना, रूपान्तरित होना, प्र—,1. निकल जाना, विदा होना,—धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति—केन० 2. (अतः) जीवन से विदा लेना, मरना, प्रेत्य—मर कर—न च तत्प्रेत्य नो इह—भग० १७।२८ मनु० २।९, २६, प्रति—, 1. वापिस जाना, लौट जाना, —प्रतीयाय गुरोः सकाशम्—रघु० ५।३५, भट्टि० ३।१९ 2. विश्वास करना, भरोसा करना—कः प्रत्येति संवेयमिति—उत्तर० ४, 3. ज्ञान प्राप्त करना, समझना, जानना—प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः—कि० १।२०, शि० १।६९ 4. विख्यात होना, प्रसिद्ध होना—सोऽयं वटः श्याम इति प्रतीतः—रघु० १३।५३ 5. प्रसन्न होना, संतुष्ट होना—रघु० ३।१२, १६।२१ (प्रेर०—प्रत्याययति) विश्वास दिलाना, भरोसा पैदा करना —बलवत्तु दूयमानं प्रत्याययतीव मे हृदयम् श० ५।२१, ताः स्वचारित्र्यमुद्दिश्य प्रत्याययतु मैथिली—रघु० १५।७३, प्रत्युद्—, स्वागत या सत्कार करने के लिए

उठ कर अगवानी करना—सपर्यया प्रत्युदियाय पार्वती —कु० ५।३१, वि—, 1. चले जाना, विदा होना —तस्यामहं त्वयि च संप्रति वीतचिन्तः—श० ५।१२, इसी प्रकार वीतभय, वीतक्रोध 2. परिवर्तित होना —सदृशं त्रिषु लिंगेषु यन्न व्येति तदव्ययम्—सिद्धा० 3. खर्च करना—दे० व्यय, विपरि—, बदलना (बुराई के लिये) दे० विपरीत, व्यति—, 1. बाहर जाना, पथविचलित होना, अतिक्रमण करना—रेखामात्रमपि क्षुण्णादा मनोर्वर्त्मनः परम् , न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः। रघु० १।१७, 2. (समय का) गुजरना, व्यतीत होना—सप्तव्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य दिनानि—रघु० २।२५, व्यतीते काले-आदि 3. परे चले जाना, पीछे छोड़ना—रघु० ६।६७, व्यप— 1. विदा होना विचलित होना, मुक्त होना—व्यपेतमदमत्सरः—याज्ञ० १।२६७. स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेण —२।५, 2. चले जाना, जुदा होना, अलग-अलग होना —समेत्य च व्यपेयाताम्—हि० ४।६, मनु० ९।१४२, ११।९७, सम्—, इकट्ठे आना, इकट्ठे मिलना, समनु—, साथ चलना, अनुसरण करना, समव—, 1. एकत्र होना, इकट्ठे आना—समवेता युयुत्सवः—भग० १।१, 2. संबद्ध होना, संयुक्त होना दे० समवाय, समा—, इकट्ठे आना या मिलना—समेत्य च व्यपेयाताम्—हि० ४।६९, समुद्—, एकत्र होना, संचित होना—अयं समुदितः सर्वो गुणानां गणः—रत्न० १।६, समुप—, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, संप्रति—, निर्णय करना, निश्चित करना, निर्धारित करना, अनुमान लगाना —किं तत्कथं वेत्युपलब्धसंज्ञा विकल्पयन्तोऽपि न संप्रतीयुः—भट्टि० ११।१० ।

इक्षवः (ब० व०) गन्ना, ईख, ऊख ।

इक्षुः [इष्यतेऽसौ माधुर्यात्—इष्+क्सु] गन्ना, ईख । सम०—**काण्डः**,—**ण्डम्** गन्ने की दो जातियाँ—काश और मुञ्जतृण,—**कुट्टकः** गन्ने इकट्ठे करने वाला —**दा** एक नदी का नाम,—**पाकः** गुड़, शीरा, राब, —**भक्षिका** गुड़ और शक्कर से बना भोज्य पदार्थ, —**मती**,—**मालिनी**,—**मालवी** एक नदी का नाम, —**मेहः** मधुमेह,—**यन्त्रम्** गन्ना पेलने का कोल्हू, —**रसः** 1. गन्ने का रस 2. गुड़, राब या शक्कर, —**वणम्** गन्ने का खेत, गन्ने का जंगल,—**वाटिका**, —**वाटी**, गन्नों का उद्यान,—**विकारः** शक्कर, गुड़ या राब,—**सारः** गुड़ या राब ।

इक्षुकः [स्वार्थे कन्] गन्ना, ईख, दे० इक्षु ।

इक्षुकीया [इक्षुक+छ स्त्रियां टाप्] गन्नों की क्यारी ।

इक्षुरः [इक्षुम् राति—इति रा+क] गन्ना, ईख ।

इक्ष्वाकुः [इक्षुम् इच्छाम् आकरोति इति—इक्षु+आ—कृ +डु] अयोध्या में राज्य करने वाले सूर्यवंशी राजाओं का पूर्व पुरुष, यह वैवस्वत मनु का पुत्र था—और सूर्यवंशी राजाओं में सबसे प्रथम पुरुष था।—इक्ष्वाकुवंशोभिमतः प्रजानाम्—उत्तर० १।४४ 2. इक्ष्वाकु की सन्तान—गलितवयसामिक्ष्वाकूणामिदं हि कुलव्रतम् —रघु० ३।७० ।

इख्, इंख् (भ्वा० पर०) (एखति, इङ्खति) जाना, हिलना-डुलना, (प्रायः 'प्र' के साथ) हिलना-डुलना, कांपना—मा० ६ ।

इङ्ग् (भ्वा० उभ०) (इङ्गति—ते, इङ्गित) 1. हिलना, कांपना, क्षुब्ध होना—यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते —भग० ६।१९, १४।२३ 2. जाना, हिलना-डुलना ।

इङ्ग (वि०) [इङ्ग्+क] 1. हिलने डुलने योग्य 2. आश्चर्यजनक, विस्मयकारी,—**गः** 1. इशारा या संकेत 2. इंगित द्वारा मनोभाव का संकेत देना ।

इङ्गनम् [इङ्ग्+ल्युट्] 1. हिलना-डुलना, कांपना 2. ज्ञान, दे० 'इंग' ।

इङ्गितम् [इङ्ग्+क्त] 1. धड़कना, हिलना 2. आन्तरिक विचार, इरादा, प्रयोजन—°आकारवेदिभिः—का० ७, पंच० १।४३, अगूढसद्भावमितीङ्गितज्ञया—कु० ५।६२, रघु० १।२०, शि० ९।६९ 3. इशारा, संकेत, अंगविक्षेप—पंच० १।४४. 4. विशेषतः शरीर के विभिन्न अंगों की चेष्टा जो आन्तरिक इरादों का आभास दे देती हैं, अंगविक्षेप आन्तरिक भावनाओं को प्रकट करने में समर्थ है—आकारैरिङ्गितैर्गत्या...... गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः—मनु० ८।२६, । सम०—**कोविद**, —**ज्ञ** (वि०) बाहरी अंगचेष्टाओं के द्वारा आन्तरिक मनोभावों की व्याख्या करने में कुशल, संकेतों को जानने वाला ।

इङ्गुदः,—**दी** [इङ्ग्+उ=इङ्गुः तं द्यति खंडयति इति—दो+क] एक औषधि का वृक्ष, हिंगोट का वृक्ष, मालकंगनी —इङ्गुदीपादपः सोऽयम्—उत्तर० १।१४, —**दम्** इंगुदी का फल ।

इच्छा [इष्+श+टाप्] 1. कामना, अभिलाष, रुचि,—इच्छया—रुचि के अनुसार 2. (गणित में) प्रश्न या समस्या 3. (व्या० में) सन्नन्त का रूप । सम०—**दानम्** अभिलाष का पूर्ण होना,—**निवृत्तिः** (स्त्री०) कामनाओं की शान्ति, सांसारिक इच्छाओं के प्रति उदासीनता, —**फलम्** किसी प्रश्न या समस्या का समाधान —**रतम्** अभिलषित खेल—मेघ० ८९, —**वसुः** कुबेर —**संपद्** (स्त्री०) किसी की कामनाओं का पूर्ण होना ।

इज्यः [यज्+क्यप्] 1. अध्यापक 2. देवों के अध्यापक बृहस्पति की उपाधि ।

इज्या [इज्य+टाप्] 1. यज्ञ—जगत्प्रकाशं तदशेषमिज्यया —रघु० ३।४८ १।६८, १५।२, 2. उपहार, दान 3.

प्रतिमा 4. कुट्टिनी, दूतिका, गाय। सम० —शीलः सदा यज्ञ करने वाला।

इट्चरः [इषा कामेन चरति—इष्+क्विप्=इट्+चर्+अच्] बैल या बछड़ा जो स्वच्छन्दता पूर्वक घूमने के लिए छोड़ दिया जाय।

इडा-ला [इल्+अच् , लस्य डत्वम्] 1. पृथ्वी 2. भाषण 3. आहार 4. गाय 5. एक देवी का नाम, मनु की पुत्री 6. बुध की पत्नी तथा पुरूरवा की माता।

इडिका [इडा+क, इत्वम्] पृथ्वी।

इतर (सा० वि०) (स्त्री०—रा, नपुं०—रत्) [इना कामेन तरः—इति—तॄ+अप्] 1. अन्य, दूसरा, दो में से अवशिष्ट—इतरो दहने स्वकर्मणाम् रघु० ८।२०, अने० पा० 2. शेष या दूसरे (ब० व०) 3. दूसरा, से भिन्न (अपा० के साथ)—इतरतापशतानि यथेच्छया वितर तानि सहे चतुरानन—उद्भट, इतरो रावणादेव राघवानुचरो यदि—भट्टि० ८।१०६ 4. विरोधी, या तो अकेला स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है अथवा विशेषण के साथ, या समास के अन्त में—जङ्गमानीतराणि च—रामा०, विजयायेतराय वा—महा० इसी प्रकार दक्षिण° (बायां) वाम° (दायां) आदि 5. नीच अधम, गंवार, सामान्य—इतर इव परिभूय ज्ञानं मन्मथेन जडीकृतः-का०–१५४। सम०—**इतर**(सा० वि०) पारस्परिक, स्व-स्व, अन्योन्य—°आश्रयः—पारस्परिक निर्भरता, अन्योन्य संबंध °योगः 1. पारस्परिक संबंध या मेल, शि० १०।२४, 2. द्वन्द्व समास का एक प्रकार (विप० **समाहार द्वन्द्व**) जहाँ कि प्रत्येक अंग पृथक् रूप से देखा जाता है।

इतरतः, इतरत्र (अव्य०) [इतर+तसिल्, त्रल् वा] अन्यथा, उससे भिन्न, अन्यत्र—दे० अन्यतः, अन्यत्र।

इतरथा (अव्य०) [इतर+थाल्] 1. अन्य रीति से, और ढंग से 2. प्रतिकूल रीति से 3. दूसरी ओर।

इतरेद्युः (अव्य०) [इतर+एद्युस्] अन्य दिन, दूसरे दिन।

इतस् (अव्य०) [इदम्+तसिल्] 1. अतः, यहाँ से, इधर से, 2. इस व्यक्ति से, मुझ से—इतः स दैत्यः प्राप्तश्रीर्नेत एवार्हति क्षयम्—कु० २।२५ 3. इस दिशा में, मेरी ओर, यहाँ—इतो निपीदेति विसृष्टभूमिः—कु० ३।२, प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात्—रघु० २।३४, इत इतो देवः—इधर इस ओर महाराज! (नाटकों में) 4. इस लोक से, 5. इस समय से, **इतः—इतः**—एक ओर—दूसरी ओर या एक स्थान में—दूसरे स्थान पर, यहाँ—वहाँ।

इति (अव्य०) [इ+क्तिन्] 1. यह अव्यय प्रायः किसी के द्वारा बोले गये, या बोले समझे गये शब्दों को वैसा का वैसा ही रख देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जिसको कि हम अंग्रेजो में अवतरणांश चिन्हों द्वारा प्रकट करते हैं, इस प्रकार कही गई बात हो सकती है (क) एक अकेला शब्द जो शब्द के स्वरूप को दर्शाने के लिए प्रयुक्त किया गया हो(शब्दस्वरूपद्योतक)—राम रामेति रामेति कूजन्तं मधुराक्षरं—रामा०, अतएव गवित्याह—भर्तृ०, (ख) या कोई प्रातिपदिक जो कि अपने अर्थों को संकेतित करने के लिए कर्तृकारक में प्रयुक्त होता है (प्रातिपादिकार्थद्योतक)—चयस्त्विषामित्यवधारितं पुरा……क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः—शि० १।३, अवैमि चैनामनघेति—रघु० १४।४०, दिलीप इति राजेंदुः—रघु० ११२, (ग) या पूरा वाक्य जब कि 'इति' शब्द वाक्य के केवल अंत में ही प्रयुक्त किया जाता है (वाक्यार्थद्योतक), —ज्ञास्यसि कियद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणांक इति—शि० १।१३, 2. इस सामान्य अर्थ के अतिरिक्त 'इति' के निम्नांकित अर्थ हैं (क) 'क्योंकि', 'यतः' 'कारण यह कि' आदि शब्दों से व्यक्तीकरण—वैदेशिकोऽस्मीति पृच्छामि—उत्तर० १ पुराणमित्येव न साधु सर्वम्—मालवि० १।२, प्रायः 'किम्' के साथ (ख) अभिप्राय या प्रयोजन—रघु० १।३७ (ग) उपसंहार द्योतक (विप० 'अथ'), इति प्रथमोऽङ्कः—यहाँ प्रथम अंक का उपसंहार होता है (घ) अतः, इस प्रकार, इस रीति से—इत्युक्तवन्तं परिरभ्य दोर्भ्याम्—कि० ११।८० (ङ) इस स्वभाव या विवरण वाला—गौरश्वः पुरुषो हस्तीतिजातिः (च) जैसा कि नीचे है, नीचे लिखे परिणामानुसार—रामाभिधानो हरिरित्युवाच—रघु० १३।१ (छ) जहाँ तक…, की हैसियत से, के विषय में (धारिता और संबंध प्रकट करते हुए)—पितेति स पूज्यः, अध्यापक इति निन्द्यः, शीघ्रमिति सुकरम्, निभृतमिति चिन्तनीयं भवेत्—श० ३. (ज) निदर्शन (प्रायः 'आदि' के साथ) इन्दुरिन्दुरिव श्रीमानित्यादौ तदनन्वयः—चन्द्रा० गौः शुक्लश्चलो डित्थ इत्यादौ—काव्य० २, (झ) मानी हुई सम्मति या उद्धरण—इति पाणिनिः, इत्यापिशलिः, इत्यमरः विश्वः आदि (ञ) स्पष्टीकरण। सम० —**अर्थः** भावार्थ, सार,—**अर्थम्** (अव्य०) इस प्रयोजन के लिए, अतः,—**कथा** अर्थहीन या निरर्थक बात, —**कर्तव्य,—करणीय** (वि०) नियमतः उचित या आवश्यक (व्यम्,–यम्) कर्तव्य, दायित्व, °ता,—**कार्यता,—कृत्यता** कोई भी उचित या आवश्यक कार्य,—**कर्तव्यतामूढः** किं कर्तव्य विमूढ, असमंजस में पड़ा हुआ, व्याकुल, हतबुद्धि,—**मात्र** (वि०) इतने विस्तार वाला, या ऐसे गुण का,—**वृत्तम्** 1. घटना, बात 2. कथा, कहानी।

इतिह (अव्य०) [इति एवं ह किल—द्व० स०] ठीक इस प्रकार, बिल्कुल परंपरा के अनुरूप।

इतिहासः [इति+ह+आस (अस् धातु, लिट् लकार, अन्य पु०, ए० व०)] 1. इतिहास (परंपरा से प्राप्त उपाख्यान समूह)—धर्मार्थकाममोक्षाणामुपदेशसमन्वितम्, पूर्ववृत्तं कथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते। 2. वीरगाथा (जैसा कि महाभारत) 3. ऐतिहासिक साक्ष्य, परंपरा (जिसको पौराणिक एक प्रमाण मानते हैं)। सम०—**निबन्धनम्**—उपाख्यानयुक्त या वर्णनात्मक रचना।

इत्थम् (अव्य०) [इदम्+थमु] इस लिए, अतः, इस रीति से--इत्थं रतेः किमपि भूतमदृश्यरूपम्—कु० ४।४५, इत्थं गते—इन परिस्थितियों के कारण। सम०—**कारम्** (अव्य०) इस प्रकार,--**भूत** (वि०) 1. इस प्रकार परिस्थितियों में फंसा हुआ, ऐसी दशा में ग्रस्त—कु० ६।२६ कथमित्थंभूता—मालवि० ५, का० १४६, 2. सच्चा, यथातथ्य, सही (जैसे कि कहानी),—**विध** (वि०) 1. इस प्रकार का 2. इस प्रकार के गुणों से युक्त।

इत्य (वि०) [इण्+क्यप्, तुक्] जिसके पास जाया जाय, जहाँ पहुँचना उपयुक्त हो--इत्यः शिष्येण गुरुवत्,—**त्या** 1. जाना, मार्ग 2. डोली, पालकी।

इत्वर (वि०) (स्त्री०—री) [इण्+क्वरप्, तुक्] 1. जाने वाला, यात्रा करने वाला, यात्री 2. क्रूर, कठोर 3. नीच, अधम 4. घृणित, निंद्य 5. निर्धन,—**रः** हिजड़ा,—**री** 1. व्यभिचारिणी, कुलटा 2. अभिसारिका।

इदम् (सा० वि०)[पुं०—अयम्, स्त्री०—इयम्, नपुं०—इदम्] [इन्द्+कमिन्] 1. यह—जो यहाँ है (वक्ता के निकट की वस्तु की ओर संकेत करते हुए---इदमस्तु संनिकृष्टं रूपम्) इदं तत्··· इति यदुच्यते--श० ५, यह है कथन की सत्यता 2. उपस्थित, वर्तमान ('यहाँ' की भावना को प्रकट करने के लिए कर्तृकारक के रूप प्रयुक्त किये जाते हैं--इयमस्मि—यह रही मैं, इसी प्रकार,—इमे स्मः, अयमागच्छामि—यह मैं आता हूँ) 3. यह शब्द तुरन्त ही बाद में आने वाली वस्तु की ओर संकेत करता है जब कि 'एतद्' शब्द पूर्ववर्ती वस्तु की ओर अनुकल्पस्त्वयं ज्ञेयः सदा सद्भिरनुष्ठितः--मनु० ३।१४७. (अयम्=वक्ष्यमाणः—कुल्लू०) श्रुत्वैतदिदमूचुः--4. किसी वस्तु को अधिक स्पष्टतया या बलपूर्वक बतलाने या कई बार शब्दाधिक्य प्रकट करने के लिए यह शब्द यत्, तत्, एतद्, अदस्, किम् अथवा किसी पुरुष वाचक सर्वनाम के साथ जुड़ कर प्रयुक्त होता है-- कोऽयमाचरत्यविनयम् श० १।२५, सेयम्, सोऽयम्—यह यहाँ, --अयमहं भो -श०, ४, अरे यहाँ तो मैं हूँ।

इदानीम् (अव्य०) [इदम्+दानीम्, इश् च] अब, इस समय, इस विषय में, अभी, अब भी--वत्से प्रतिष्ठस्वेदानीम् श० ४, आर्यपुत्र इदानीमसि—उत्तर० ३, इदानीमेव--अभी, इदानीमपि—अब भी, इस विषय में भी।

इदानीन्तन (वि०) (स्त्री०—नी) वर्तमान, क्षणिक, वर्तमान कालिक।

इद्ध (भू० क० कृ०) [इन्ध्+क्त] जला हुआ, प्रकाशित —**द्धम्** 1. धूप, गर्मी 2. दीप्ति, चमक 3. आश्चर्य।

इध्मः—ध्मम् [इध्यतेऽग्निरनेन – इन्ध्+मक्] इंधन, विशेषकर वह जो यज्ञाग्नि में काम आता है-- रघु० १४।७०,। सम०—**जिह्वः** अग्नि,—**प्रवश्चनः** कुल्हाड़ी, कुठार (परशु)।

इध्या [इन्ध्+क्यप्+टाप्] प्रज्वलन, प्रकाशन।

इन (वि०) [इण्+नक्] 1. योग्य, शक्ति शाली, बलवान् 2. साहसी,—**नः** 1. स्वामी २. सूर्य—शि० २।६५ 3. राजा – न न महीनमहीनपराक्रमम्—रघु० ९।५।

इन्दिन्दिरः [इन्द्+किरच् नि०] बड़ी मधु-मक्खी--लोभादिन्दिन्दिरेषु निपतत्सु – भामि० २।१८३।

इन्दिरा [इन्द्+किरच्] लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी। सम० —**आलयम्** इन्दिरा का आवास, नील कमल,—**मन्दिरः** विष्णु का विशेषण (—**रम्**) नील-कमल।

इंदीवरिणी [इन्दीवर+इनि+ङीप्] नील-कमलों का समूह।

इन्दीवारः [इंद्याः वारो वरणम् अत्र—ब० स०] नील कमल।

इन्दुः [उनत्ति क्लेदयति चन्द्रिकया भुवनम्—उन्द्+उ आदेरिच्च] 1. चंद्रमा—दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव—रघु० १।१२, 2. (गणित में) 'एक' की संख्या 3. कपूर। सम०—**कमलम्** सफेद कमल, --**कला** चन्द्रमा की कला या अंश (यह कलाएं गिनती में १६ हैं, पौराणिक कथाओं के आधार पर इनमें से प्रत्येक कला क्रमशः १६ देवताओं के द्वारा निगली जाती है)—**कलिका** 1. केतकी का पौधा 2. चन्द्रमा की एक कला,—**कान्तः** चन्द्रकान्तमणि (—**ता**) रात,—**क्षयः** 1. चन्द्रमा का प्रतिदिन घटना 2. नूतनचन्द्र दिवस, प्रतिपदा,—**जः**,—**पुत्रः** बुधग्रह (—**जा**) रेवा या नर्मदा नदी,—**जनकः** समुद्र,—**दलः** चन्द्रमा की कला, अर्धचन्द्रः,—**भा** कुमुदिनी,—**भृत्**,—**शेखरः**, —**मौलिः** मस्तक पर चन्द्र को धारण करने वाला देवता, शिव,—**मणिः** चन्द्रकान्तमणि,—**मंडलम्** चन्द्रमा का परिवेश, चन्द्र मण्डल,—**रत्नम्**—मोती,—**ले (रे) खा** चन्द्रमा की कला,—**लोहकम्**,—**लौहम्** चाँदी,—**वदना** छन्द का नाम दे० परिशिष्ट,—**वासरः** सोमवार।

इन्दुमती [इन्दु+मतुप्+ङीप्] 1. पूर्णिमा 2. 'अज' की पत्नी, 'भोज' की बहन।

इन्दूरः [इन्दु+र पृषो० ऊत्वम्] चूहा, मूसा।

इन्द्रः [इन्द्+रन्, इन्दतीति इन्द्रः, इदि ऐश्वर्ये---मल्लि०] 1. देवों का स्वामी 2. वर्षा का देवता, वृष्टि 3. स्वामी या शासक (मनुष्यादिक का), प्रथम, श्रेष्ठ (पदार्थों के किसी वर्ग में), सदैव समास के अन्तिम पद के रूप में, नरेन्द्रः--मनुष्यों का स्वामी अर्थात् राजा इसी प्रकार मृगेन्द्रः-शेर;—गजेन्द्रः, योगीन्द्रः, कपीन्द्रः;—द्रा इन्द्र की पत्नी, इन्द्राणी (अन्तरिक्ष का देवता इन्द्र भारतीय आर्यों का वृष्टि-देवता है, वेदों में प्रथम श्रेणी के देवताओं में इनका वर्णन मिलता हैं, परन्तु पुराणों की दृष्टि से यह द्वितीय श्रेणी के देवता माने जाते हैं। यह कश्यप और अदिति के एक पुत्र हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश के त्रिक से यह निम्नतर है, परन्तु यह और दूसरे देवताओं में प्रमुख हैं और सामान्यतः इन्हें सुरेश या देवेन्द्र आदि नामों से पुकारा जाता है। जैसा कि वेदों में वर्णित है उसी प्रकार पुराणों में भी यह अन्तरिक्ष तथा पूर्व दिशा के अधिष्ठातृ देवता माने जाते हैं, इनका लोक स्वर्ग कहलाता है। यह वज्र धारण करते हैं, बिजली को भेजते हैं और वर्षा करते हैं, यह असुरों के साथ प्रायः युद्ध में लगे रहते हैं और उनको भयभीत करते रहते हैं, परन्तु कई बार उनसे परास्त भी हो जाते हैं। पुराणों में वर्णित इन्द्र कामुकता और व्यभिचार के लिए प्रख्यात हैं, इसका सबसे बड़ा उदाहरण उनके द्वारा गौतम की पत्नी अहल्या का सतीत्वहरण है जिसके कारण इन्द्र अहल्या-जार कहलाता हैं। गौतम ऋषि के शाप से इन्द्र के शरीर पर स्त्री-योनि जैसे हजार चिह्न बन जाते हैं इसीलिए उसे सयोनि कहते हैं, परन्तु बाद में यह चिह्न 'आँख' के रूप में बदल जाते हैं इस लिए यह सहस्रनेत्र, सहस्रयोनि या सहस्राक्ष कहलाने लगते हैं। रामायण में वर्णन आता है कि रावण के पुत्र मेघनाद ने इन्द्र को परास्त कर दिया तथा वह उसे उठा कर लंका में ले गया, इसी साहसिक कार्य करने के उपलक्ष में मेघनाद को 'इन्द्रजित्' की उपाधि मिली। ब्रह्मा तथा दूसरे देवताओं के बीच में पड़ने पर कहीं इन्द्र का छुटकारा हुआ। इन्द्र के विषय में बहुधा वर्णन मिलता है कि वह सदैव राजाओं को १०० यज्ञ पूरा करने से रोकता रहता है, क्योंकि यह विश्वास किया जाता है कि जो कोई १०० यज्ञ पूरा कर लेगा, वही इन्द्र का पद प्राप्त कर लेगा, यही कारण है कि वह सगर और रघु के यज्ञीय घोड़ों को उठा कर ले गया, दे० रघु० तृतीय सर्ग। यह सदैव घोर तपश्चर्या करने वाले ऋषि-मुनियों से भयभीत रहता है और अप्सराएं भेज कर उनके मार्ग में विघ्न डालने का प्रयत्न करता है (दे० अप्सरस्)। कहा जाता है कि उसने पर्वत के पंख काट डाले जब कि वह कष्ट देने लगे थे। उसी समय उसने बल तथा वृत्र की हत्या कर दी। इनकी पत्नी पुलोमा राक्षस की पुत्री है, इनके पुत्र का नाम जयन्त है। यह अर्जुन के पिता भी कहे जाते हैं)। सम०—**अनुजः**, —**अवरजः** विष्णु और नारायण की उपाधि,—**अरिः** एक राक्षस,—**आयुधम्** इन्द्र का शस्त्र, इन्द्रधनुष् रघु० ७।४,—**कीलः**—1. 'मंदर' पर्वत का नाम 2. चट्टान (—**लम्**) इन्द्र की ध्वजा,—**कुञ्जरः** इन्द्र का हाथी, ऐरावत,—**कूटः** एक पर्वत का नाम—**कोशः** (**षः**),—**षकः** 1. कौच, सोफा 2. प्लैटफार्म या समतल बना चबूतरा 3. खूंटी या ब्रैकेट जो दीवार के साथ लगा हो,—**गिरिः** महेन्द्र पर्वत,—**गुरुः**,—**आचार्यः** इन्द्र का अध्यापक, अर्थात् बृहस्पति,—**गोपः**,—**गोपकः** एक प्रकार का कीड़ा जो सफेद या लाल रंग का होता है,—**चापम्**,—**धनुस्** (नपुं०) 1. इन्द्रधनुष् 2. इन्द्र की कमान,—**जालम्** 1. एक शस्त्र जिसे अर्जुन ने प्रयुक्त किया था, युद्ध का दांव-पेंच 2. जादूगरी, बाजीगरी—स्वप्नेन्द्रजालसदृशः खलु जीवलोकः —शा० २।२, **जालिक** (वि०) छद्मपूर्ण, अवास्तविक, भ्रमात्मक (—**कः**) बाजीगर, जादूगर,—**जित्** (पुं०) इन्द्र को जीतने वाला, रावण का पुत्र जो लक्ष्मण के द्वारा मारा गया [रावण के पुत्र मेघनाद का दूसरा नाम 'इन्द्रजित्' है। जब रावण ने स्वर्ग में जाकर इन्द्र से युद्ध किया तो मेघनाद उसके साथ था—वह बड़ी बहादुरी के साथ लड़ा। 'शिव' से अदृश्य होने की शक्ति प्राप्त कर लेने के कारण मेघनाद ने अपनी इस जादू की शक्ति का उपयोग किया, फलतः इन्द्र को बांध कर वह उसे लंका में उठा लाया। ब्रह्मा तथा अन्य देवता उसे मुक्त कराने के लिए आये और उन्होंने मेघनाद को 'इन्द्रजित्' की उपाधि दी, परन्तु मेघनाद इन्द्र को मुक्त करने के लिए राजी न हुआ जब तक कि उसे 'अमरता' का वरदान न दिया जाय। ब्रह्मा ने उसकी इस अनुचित मांग को मानने से इंकार कर दिया, परन्तु मेघनाद अपनी मांग का निरन्तर आग्रह करता रहा और अन्त में अपना अभीष्ट प्राप्त कर लिया। रामायण में लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का सिर काटे जाने का वर्णन है जब कि वह यज्ञ कर रहा था] °हंतृ,—**विजयिन्** (पुं०) लक्ष्मण,—**तूलम्**,—**तूलकम्** रूई का गद्दा,—**दारुः** देवदारु का वृक्ष,—**नीलः** नीलकान्तमणि,—**नीलकः** पन्ना —**पत्नी** इन्द्र की पत्नी शची,—**पुरोहितः** बृहस्पति —**प्रस्थम्** यमुना के किनारे स्थित एक नगर जहां पांडव रहते थे (यही नगर आज कल वर्तमान दिल्ली है)।—इन्द्रप्रस्थगमस्तावत्कारि मा सन्तु चेदयः—शि० २।६३,—**प्रहरणम्** इन्द्र का शस्त्र, वज्र,—**भेषजम्**

सोंठ,—**महः** 1. इन्द्र के सम्मान में किया जाने वाला उत्सव 2. बरसात,—**लोकः** इन्द्र का संसार, स्वर्गलोक, —**वंशा**,—**वज्रा** दो छंदों के नाम दे० परिशिष्ट, —**शत्रुः** 1. इन्द्र का शत्रु या इन्द्र को मारने वाला (जब कि स्वराघात अन्तिम स्वर पर है), प्रह्लाद की उपाधि,— रघु० ७।३५, 2. इन्द्र जिसका शत्रु है, वृत्र का विशेषण (जब कि स्वराघात प्रथम स्वर पर है) [यह घटना शतपथ ब्राह्मण के एक उपाख्यान की ओर संकेत करती है, यहाँ बतलाया गया है कि वृत्र के पिता न अपने पुत्र को इन्द्र के मारने वाला बनाने का विचार किया और उसे "इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व" बोलने को कहा, परन्तु भूल से उसने प्रथम स्वर पर बलाघात किया और इन्द्र के द्वारा मारा गया—तु० शिक्षा—५२—मंत्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह, स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेंद्रशत्रुः स्वरतोपराधात् ।]—**शलभः** एक प्रकार का कीड़ा, वीरबहूटी,—**सुतः**,—**सूनुः** (क) जयन्त का नाम (ख) अर्जुन का नाम (ग) वानरराज वालि का नाम, —**सेनानीः** इन्द्र की सेनाओं का नेता, कार्तिकेय की उपाधि ।

इन्द्रकम् [इन्द्रस्य राज्ञः कं सुखं यत्र—तारा०] सभा-भवन, बड़ा कमरा ।

इन्द्राणी [इन्द्रस्य पत्नी आनुक्+ङीप्] इन्द्र की पत्नी, शची ।

इन्द्रियम् [इन्द्र+घ—इय] 1. बल, शक्ति (वह गुण जो इन्द्र में विद्यमान था) 2. शरीर के वह अवयव जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है, ऐसे अवयव (इन्द्रियां) दो प्रकार के हैं (क) ज्ञानेन्द्रियाँ या बुद्धीन्द्रियाँ—श्रोत्रं त्वक्चक्षुषी जिह्वा नासिका चैव पंचमी (कुछ के अनुसार 'मन' भी) (ख) कर्मेन्द्रियाँ—पायूपस्थं हस्तपादं वाक् चैव दशमी स्मृता मनु० २।९९, 3. शारीरिक या पुरुषोचित शक्ति, ज्ञानशक्ति 4. वीर्य 5. पांच की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति । सम०—**अगोचर** (वि०) जो दिखलाई न दे सके,—**अर्थः** 1. इन्द्रियों के विषय (वह विषय ये हैं:—रूपं शब्दो गंधरसस्पर्शाश्च विषया अमी—अमर०), भग० ३।३४, रघु० १४।२५,—**आयतनम्** इन्द्रियों का आवास अर्थात् शरीर,—**गोचर** (वि०) जो इन्द्रियों द्वारा देखा या जाना जा सके (—**रः**) ज्ञान का विषय,—**ग्रामः**,—**वर्गः** इन्द्रियों का समूह, समष्टि रूप से ग्रहण की गई पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ —बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति—मनु० २।२१५, निर्विवार मधुनीन्द्रियवर्गः—शि० १०।३, —**ज्ञानम्** चेतना, प्रत्यक्ष करने की शक्ति,—**निग्रहः** ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण,—**वधः** अज्ञेयता,—**विप्रतिपत्तिः** (स्त्री०) इन्द्रियों का उन्मार्गगमन,—**सन्निकर्षः** ज्ञानेन्द्रिय का संपर्क (चाहे वह बाह्य विषयों से हो या मन से)—**स्वापः** अज्ञेयता, अचेतना, जड़िमा ।

इन्ध् (रु० आ०) (इंद्धे या इंधे, इद्ध) प्रज्वलित करना, जलाना, आग लगाना, (कर्मवा०—इध्यते) जलाया जाना, प्रदीप्त होना, लपटें उठना, **सम्**—, प्रज्वलित करना ।

इन्धः [इन्ध्+घञ्] इंधन, (लकड़ी कोयला आदि) ।

इन्धनम् [इन्ध्+ल्युट्] 1. प्रज्वलित करना, जलाना 2. इंधन (लकड़ी आदि) ।

इभः [इ+भन्, किच्च] हाथी,—**भी** हथिनी । सम०—**अरिः** सिंह,—**आननः** गणेश तु० 'गजानन'—**निमीलिका** चतुराई, बुद्धिमत्ता, सतर्कता,—**पालकः** महावत, —**पोटा** अल्पवयस्का हथिनी,—**पोतः** अल्पवयस्क हाथी, हाथी का बच्चा,—**युवतिः** (स्त्री०) हथिनी ।

इभ्य (वि०) [इभं गजमर्हति—यत्] धनाढ्य, धनवान् —**भ्यः** 1. राजा 2. महावत,—**भ्या** हथिनी ।

इभ्यक (वि०) [स्वार्थे कन्] धनाढ्य, धनी ।

इयत् (वि०) [इदम्+वतुप्] इतना अधिक, इतना बड़ा, इतने विस्तार का—इयत्तवायुः—दश० ९३, इयन्ति वर्षाणि तया सहोग्रम् रघु० १३।६७, इतने वर्ष'—द्वयं नीतिरितीयती—शि० २।३०, इतनी ।

इयत्ता, इयत्त्वम् [इयत्+तल्+टाप्, त्वल् वा] 1. (क) इतना, निश्चित माप या परिमाण—ईदृक्तया रूपमियत्तया वा—रघु० १३।५, न······यशः परिच्छेतुमियत्तयालम्—६।७७ (ख) सीमित संख्या, सीमा —न गुणानामियत्तया रघु० १०।३२, 2. सीमा, मानक ।

इरणम् [ऋ+अण् पृषो०] 1. मरुस्थल 2. रिहाली या लुनई भूमि, बंजर भूमि, तु० 'इरिण' ।

इरम्मदः [इरया जलेन माद्यति वर्धते इति—इरा-मद्+खश्, ह्रस्वः मुम्] 1. बिजली की कौंध, बिजली के गिरने से पैदा हुई आग, 2. बाडवानल ।

इरा [इ+रन्, इं कामं राति—रा+क वा तारा०] 1. पृथ्वी 2. वक्तृता 3. वाणी की देवता सरस्वती 4. जल 5. आहार 6. मदिरा । सम०—**ईशः** वरुण, विष्णु, गणेश,—**चरम्** ओला, इसी प्रकार 'इरांबरम्' ।

इरावत् (पुं०) [इरा+मतुप्] समुद्र ।

इरिणम् [ऋ+इनच्, किदिच्च] लुनई भूमि, रिहाली जमीन ।

इर्वारु—**रु** (वि०) [उर्व+आरु, पृषो०] नाशक, हिंसक —**रुः** (पुं० स्त्री०) ककड़ी ।

इल् (तु० पर०) (इलति, इलित) या (चु० उभ०) 1. जाना, चलना-फिरना 2. सोना 3. फेंकना, भेजना, डालना ।

इला [इल्+क+टाप्] 1. पृथ्वी 2. गाय 3. वक्तृता —दे० 'इडा' । सम०—**गोलः**—**लम्** पृथ्वी, धरती भूमंडल,—**धरः** पहाड़ ।

इलिका [इला+कन्, इत्वम्] पृथ्वी, धरती ।

इल्वकाः—लाः (ब० व०) [इल्+वल, इल्+क्विप्+वलच् वा] मृगशिरा नक्षत्र के ऊपर स्थित पाँच तारे ।

इव (अव्य०) [इ+क्वन् वा०] 1. की तरह, जैसा कि (उपमा दर्शाते हुए)—वागर्थाविव संपृक्तौ—रघु० १।१, 2. मानों, (उत्प्रेक्षा को दर्शाते हुए)—पश्यामीव पिनाकिनम्—श० १।६, लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः—मृच्छ० १।३४ 3. कुछ, थोड़ा सा, कदाचित्—कडार इवायम्,—गण०, 4. (प्रश्नवाचक शब्दों से जुड़े हुए) 'संभवत:' 'बतलाइये तो' 'निस्सन्देह'—विना सीता देव्या किमिव हि न दुःखं रघुपतेः—उत्तर० ६।३०, क इव—किस प्रकार का, किस भांति का, मुहूर्तमिव—केवल क्षण भर के लिए, किंचिदिव—जरा सा, थोड़ा सा; इसी प्रकार ईषदिव, नाचिरादिव आदि ।

इशीका=इषीका ।

इष् (क) (तु० पर०) (इच्छति, इष्ट) 1. कामना करना, चाहना, प्रबल इच्छा होना—इच्छामि संवर्धितमाज्ञया ते—कु० ३।३, 2. छाँटना, 3. प्राप्त करने का प्रयत्न करना, तलाश करना, ढूंढना, 4. अनुकूल होना 5. हाँ करना, स्वीकृति देना—(भा० वा०) 1. चाहा जाना 2. नियत किया जाना—हस्तच्छेदनमिष्यते—मनु० ८।३२२, **अनु**—, ढूंढना, कोशिश करना, प्रयत्न करना, **अभि**—, जी करना, चाहना, **परि**—, ढूंढना, **प्रति**—, प्राप्त करना, स्वीकार करना—देवस्य शासनं प्रतीष्य—श० ६, (ख) (दि० पर०) (इष्यति, इषित) 1. जाना, चलना-फिरना 2. फैलाना 3. डालना, फेंकना, **अनु**—ढूंढना, ढूंढने के लिए जाना—न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्—कु० ५।४५, **प्र**—(प्रायः 'प्रेर०') 1. भेज देना, डाल देना, फेंक देना—भट्टि० १५।७७ 2. भेजना, प्रेषण करना—किमर्थमृषयः प्रेषिताः स्युः—श० ५, (ग) (क्र्या० पर०) (एषित) जाना, चलना-फिरना, **अनु**—, अनुसरण करना ।

इषः [इष्+अच्] 1. बलशाली, शक्ति सम्पन्न 2. आश्विन मास,—ध्वनिमिषेऽनिमिषेक्षणमग्रतः—शिव० ६।४९ ।

इषि (षी) का [इष् गत्यादौ क्वुन् अत इत्वम्] 1. सरकंडा, नरकुल, °अस्त्रम् —रघु० १२।२३ 2. बाण ।

इषिरः [इष्+किरच्] अग्नि ।

इषुः [इष्+उ] 1. बाण 2. पाँच की संख्या । सम०—**अग्रम्**—**अनीकम्** बाण की नोक,—**असनम्**,—**अस्त्रम्** धनुष्, रघु० ११।३७,—**आसः** 1. धनुष् 2. धनुर्धर, योद्धा, भग० १।४, १७,—**कारः**,—**कृत्** (पुं०) बाण बनाने वाला,—**धरः**—**भृत्** धनुर्धर,—**पथः**,—**विक्षेपः** तीर जाने का स्थान, बाण का परास,—**प्रयोगः** बाण छोड़ना, तीर चलाना ।

इषुधिः [इषु+धा+कि] तरकस ।

इष्ट (भू० क० कृ०) [इष्+क्त] 1. कामना किया गया, चाहा गया, जो से चाहा हुआ, अभिलषित 2. प्रिय, पसंद किया गया, अनुकूल, प्यारा 3. पूज्य, आदरणीय 4. प्रतिष्ठित, सम्मानित 5. उत्सृष्ट, यज्ञों से पूजा गया—**ष्टः** प्रेमी, पति,—**ष्टम्** 1. चाह, इच्छा 2. संस्कार 3. यज्ञ; (अव्य०) स्वेच्छापूर्वक । सम०—**अर्थः** अभीष्ट पदार्थ,—**आपत्तिः** (स्त्री०) चाही हुई बात का होना, वादी का वक्तव्य जो प्रतिवादी के भी अनुकूल हो—इष्टापत्तौ दोषान्तरमाह—जग०,—**गन्ध** (वि०) सुगंध युक्त (—**धः**) सुगंधित पदार्थ (—**धम्**) रेत,—**देवः**,—देवता अनुकूल देव, अभिभावक देव ।

इष्टका [इष्+तकन्] ईंट-मृच्छ० ३ । सम०—**गृहम्** ईंटों का घर,—**चित** (वि०) ईंटों से बना ('इष्टकचित' भी),—**न्यासः** घर की नींव रखना,—**पथः** ईंटों से बना मार्ग ।

इष्टापूर्तम् [समाहार द्व० स० पूर्वपददीर्घः] यज्ञादिक पुण्यकार्यों का अनुष्ठान, कूएँ खोदना तथा दूसरे धर्मकार्यों का सम्पादन—इष्टापूर्तविधेः सपत्नशमनात्—महावी० ३।११ ।

इष्टिः (स्त्री०) [इष्+क्तिन्] 1. कामना, प्रार्थना, इच्छा 2. इच्छुक होना या कोशिश करना 3. अभीष्ट पदार्थ 4. अभीष्ट नियम या आवश्यकता की पूर्ति (भाष्यकार द्वारा कात्यायन के वार्तिकों अथवा पतंजलि के भाष्य में कुछ अतिरिक्त जोड़ना—इष्टयो भाष्यकारस्य) तु० 'उपसंख्यानम्' 5. आवेग, शीघ्रता 6. आमंत्रण, आदेश 7. यज्ञ । सम०—**पचः** कंजूस, इसी प्रकार °मुष्,—**पशुः** यज्ञ में बलि दिया जाने वाला जानवर ।

इष्टिका [इष्ट+तिकन्+टाप्] ईंट आदि, दे० 'इष्टका' ।

इष्मः [इष्+मक्] 1. कामदेव 2. वसन्त ऋतु ।

इष्यः **ष्यम्** [इष्+क्यप्] वसन्त ऋतु ।

इस् (अव्य०) [इं कामं स्यति—सो+क्विप् नि० ओलोपः] क्रोध, पीड़ा और शोक की भावना को अभिव्यक्त करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय ।

इह (अव्य०) [इदम्+ह इशादेशः] 1. यहाँ (काल, स्थान या दिशा की ओर संकेत करते हुए), इस स्थान पर, इस दशा में 2. इस लोक में (विप० परत्र या अमुत्र) । सम०—**अमुत्र** (अव्य०) इस लोक में और परलोक में, यहाँ और वहाँ,—**लोकः** यह संसार या जीवन,—**स्थ** (वि०) यहाँ विद्यमान ।

इहत्य (वि०) [इह+त्यप्] यहाँ रहने वाला, इस स्थान का, इस लोक का ।

ई

ईः (पुं०) [ई+क्विप्] कामदेव (अव्य०) (क) खिन्नता (ख) पीडा (ग) शोक (घ) क्रोध (ङ) अनुकंपा (च) प्रत्यक्षज्ञान या चेतना (छ) तथा संबोधन की भावना को अभिव्यक्त करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय।

ई (क) (दिवा० आ०) (ईयते) जाना (ख) (अदा० पर०) 1. जाना 2. चमकना 3. व्याप्त होना 4. चाहना, कामना करना 5. फेंकना 6. खाना 7. प्रार्थना करना (आ०) 8. गर्भवती होना।

ईक्ष् (भ्वा० पर०) (ईक्षते, ईक्षित) 1. देखना, ताकना, आलोचना करना, अवलोकन करना, टकटकी लगा कर देखना या घूरना 2. खयाल रखना, विचारना, समझना—सर्वभूतस्थमात्मानं······ईक्षते योगयुक्तात्मा —भग० ६।२९, 3. हिसाब में लगाना, परवाह करना —नाभिजनमीक्षते—का० १०४, न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते—कु० ५।८२ 4. सोचना, विचार करना —तत्तेज ऐक्षत बहुस्यां प्रजायेय—छा० 5. सावधान रहना या किसी के भले बुरे का ध्यान करना (सम्प्र० के साथ)—कृष्णाय ईक्षते गर्गः—सिद्धा० (शुभाशुभं पर्यालोचयति इत्यर्थः) अधि—, आशंका करना कुहकचकितो लोकः सत्येऽप्यपायमधीक्षते—हि० ४।१०२, अने० पा०, अनु—ध्यान में रखना, खोज करना, ढूंढना, पूछ-ताछ करना, अप—, 1. प्रतीक्षा करना, इंतजार करना—न कालमपेक्षते स्नेहः मृच्छ० ७, कु० ३।२६ 2. आवश्यकता होना, जरूरत होना, कमी होना—शब्दार्थौ सत्कविरिव द्वयं विद्वानपेक्षते—शि०। २।८६, विक्रम० ४।१२, कु० ३।१८ 3. सावधान रहना, खयाल रखना, ध्यान रखना—किमपेक्ष्य फलम् कि० २।२१, यतः शब्दोऽयं व्यञ्जकत्वेऽर्थान्तरमपेक्षते —सा० द० ४, हिसाब में लगाना, सोचना, विचार करना, आदर करना (प्रायः 'न' के साथ)— तदानपेक्ष्य स्वशरीरमार्दवम्—कुं० ५।१८, अभिवि—, की ओर देखना, अव—, 1. दृष्टि डालना, प्रेक्षण करना, अवलोकन करना 2. निशाना लगाना, ध्यान में रखना —योत्स्यमानानवेक्षेऽहम्—भग० १।२८, सम्मान करना—रघु० ३।२१, त्रिदिवोत्सुकयाप्यवेक्ष्य माम् —८।६०, मेरे सम्मान की खातिर 3. रखवाली करना, रक्षा करना—श्लाघ्यां दुहितरमवेक्षस्व—उत्तर० १, 4. सोचना, विचारना—यदवोचदवेक्ष्य मानिनी—कि० २।३, उद्—, 1. ढूंढ़ना, खोजना, देखना—सप्रणाममुदीक्षिताः—कु० ६।७, ७।६७, 2. प्रतीक्षा करना —त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती—मनु० ९। ९०, उत्प्र—, 1. आशा करना, भविष्य में देखना, उत्प्रेक्षमाणा जघनाभिघातम्—मुद्रा० २, 2. अनुमान लगाना, अंदाज करना—किमुत्प्रेक्षसे कुतस्त्योऽयमिति —उत्तर०४, 3. विश्वास करना, सोचना—उत्प्रेक्षामो वयं तावन्मतिमन्तं विभीषणम्—रामा०, उद्वि—, मुंह ताकना, उप—, 1. अवहेलना करना, नजर अंदाज करना, परवाह न करना;—उत्प्रेक्षते यः श्लथलम्बिनीर्जटाः—कु० ५।४७, रघु० १४।३४, 2. भाग जाने देना, जाने देना, टालमटोल करना;—नोपेक्षेत क्षणमपि राजा साहसिकं नरम्—मनु० ८।३४४, 3. ध्यान से देखना, विचारना, निर्—, 1. टकटकी लगाकर देखना, पूरी तरह से देखना, —धेन्वा······निरीक्षमाणः सुतरां दयालुः —रघु० २।५२, भग० १।२२, मनु० ४।३८, 2. ढूंढ़ना, खोजना—निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कंटकजालमेव—विक्रमांक०, परि—, 1. जांच करना, ध्यानपूर्वक जांच पड़ताल करना—अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात्संगतं रहः—श० ५।२४, मालवि० १।२, मनु० ९।१४, 2. परीक्षण करना, जांच करना, परीक्षा लेना—मायां मयोद्भाव्यपरीक्षितोऽसि—रघु० २।६२, यत्नात्परीक्षितः पुंस्त्वे—याज्ञ० १।५५, पौरुष के विषय में ध्यानपूर्वक जांचा गया, प्र—, देखना, ताकना, प्रत्यक्ष करना—तमायान्तं प्रेक्ष्य—पंच० १, रघु० १२।४४, कु० ६।४७ मनु० ८।१४७ प्रति—, इन्तजार करना —संपत्स्यते वः कामोऽयं कालः कश्चित्प्रतीक्ष्यताम्—कु० २।५४ मनु० ९।७७, प्रतिवि—, प्रत्यवलोकन करना, वि०—, देखना, ताकना,—तं वीक्ष्य वेपथुमती—कु० ५।८५, व्यप—, ध्यान करना, खयाल रखना, सम्मान करना (प्रायः 'न' के साथ)—न व्यपैक्षत समुत्सुकाः प्रजाः—रघु० १९।६, सम्—, 1. देखना, ताकना 2. चिन्तन करना, विचार करना, हिसाब में लगाना —तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते—रघु० ११।१, कु० ५।१६, 3. ध्यानपूर्वक जांचना—असमीक्ष्यकारिन्, समव—, 1. देखना, निरीक्षण करना, 2. सोचना समुप—, अवहेलना करना, निरादर करना—दे० 'उप' ऊपर।

ईक्षकः [ईक्ष्+ण्वुल्] दर्शक।

ईक्षणम् [ईक्ष्+ल्युट्] 1. देखना, ताकना 2. दृष्टि, दृश्य 3. आंख—इत्यद्रिशोभाप्रहितेक्षणेन—रघु० २।२७, इसी प्रकार 'अलसेक्षणा'!

ईक्षणिकः [ईक्षण+ठन्] ज्योतिषी, भविष्यवक्ता।

ईक्षतिः [ईक्ष्+शतिप्] देखना, दृष्टि—ईक्षतेर्नाशब्दम् —ब्रह्म०।

ईक्षा [ईक्ष्+अ+टाप्] 1. दृश्य 2. नजर डालना, विचार करना।

ईक्षिका [ईक्ष्+ण्वुल्, ईक्षा+कन्+टाप् वा इत्वम्] 1. आँख 2. झाँकना,-झलक ।

ईक्षित (भू० क० कृ०) [ईक्ष्+क्त] देखा हुआ, ताका हुआ, खयाल किया हुआ,–तम् 1. दृष्टि, दृश्य 2. आँख —अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितम्—श० २।११ ।

ईख्, ईंख् (भ्वा० पर०) (ईखति, ईंखित) 1. जाना, हिलना-डुलना, डाँवाडोल होना, प्रे०—झूलना, घूमना 2. हिलना, प्र—हिलाना, डगमगाना —प्रेङ्खच्च क्षुभिता क्षितिः—भट्टि० १७।१०८, प्रेङ्खद्भूरिमयूख—मा० ६।५, अमरु १ ।

ईज्, इञ्ज् (भ्वा० आ०) 1. जाना 2. निंदा करना, कलंक लगाना ।

ईड् (अदा० आ०) (ईडे, ईडित) स्तुति करना—अग्निमीड पुरोहितम्—ऋक्–१।१।१ शालीनतामव्रजदीड्यमानः—रघु० १८।१७, भट्टि० ९।५७, १८।१५ ।

ईडा [ईड्+अ+टाप्] स्तुति, प्रशंसा ।

ईड्य (सं० कृ०) [ईड्+ण्यत्] प्रशंसनीय, श्लाघ्य–भवन्त मीड्यं भवतः पितेव—रघु० ५।३४

ईतिः (स्त्री०) [ई+क्तिच्] 1. महामारी, दुःख, मौसम। संकट, ईति बहुधा ६ कही जाती हैं -१. अतिवृष्टि २. अनावृष्टि ३. टिड्डीदल ४. चूहे ५. तोते और ६. बाहर से आक्रमण —अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभाः मूषकाः शुकाः, प्रत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः । —निरातंका निरीतयः—रघु० १।६३, 2. संक्रामक रोग 3. (विदेश में) घूमना. विदेश यात्रा 4. दंगा ।

ईदृक्ता [ईदृश्+तल्+टाप्] गुण (विप० 'इयत्ता')–विष्णो रिवास्यानवधारणीयम् ईदृक्तया रूपमियत्तया वा —रघु० १३।५ ।

ईदृक्ष—श (वि०) (स्त्री०-क्षी-शी) (ईदृश् भी)–ऐसा, इस प्रकार का, इस पहलू का, ऐसे गुणों से युक्त ।

ईप्सा [आप्तुमिच्छा—आप्+सन्+अ] 1. प्राप्त करने की इच्छा 2. कामना, इच्छा ।

ईप्सित (वि०) [आप्+सन्+क्त] इच्छित, अभिलषित, प्रिय—तम् इच्छा, कामना ।

ईप्सु (वि०) [आप्+सन्+उ] प्राप्त करने का प्रयत्न करने वाला, ग्रहण करने की कामना या इच्छा करने वाला (कर्म० और तुमु० के साथ परन्तु प्रायः समास में) — सौरम्यमीप्सुरिव ते मुखमारुतस्य - रघु० ५।६३ ।

ईर् (अदा० आ०) (ईर्ते, ईर्ण) (भ्वा० पर० भी) (क्तान्त -ईरित) 1. जाना, हिलना-डुलना, हिलाना (सक० भी) 2. उठना, निकलना, उगना; (चुरा० —उभ०) या प्रेर० (ईरयति, ईरित) 1. फेंकना, छोड़ना, (तीर) चलाना, डालना—ऐरिरच्च महाद्रुमम् —भट्टि० १५।५२ 2. कहना, उच्चारण करना, दोहराना —इतीरयन्तीव तया निरैक्षि—नै० १४।२१, शि० ९।६९, कि० १।२६, रघु० ९।८, मा० १।२५ 3. चलाना, हिलना-डुलना, हिलाना—वातेरितपल्लवांगुलिभिः—श० १, 4. नियुक्त करना, काम लेना, उद्—, उठना (प्रेर०) 1. कहना, उच्चारण करना, कथन करना, बोलना,—उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते —पंच० १।४३, रघु० २।९, 2. आगे प्रस्तुत करना - - यदशोको यमुदीरयिष्यति —रघु० ८।६२ 3. फेंकना, (पासा आदि) लुढ़काना रघु० ६।१८, 4. (धूलि आदि) उठना 5. प्रदर्शन करना, प्रकाशित करना, प्र —1. डालना, फेंकना–श० २।२ 2. प्रेरित करना, धकेलना—रघु० ४।२४, 3. उकसाना, भड़काना, चलाना, सम्—, 1. कहना 2. हिलाना, हिलना-डुलना, समुद्—, कहना, बोलना ।

ईरणः [ईर्+ल्युट्] वायु, –णम् 1. क्षुब्ध करने वाला, हिलाने वाला, चलाने वाला, 2. जाने वाला 3.=इरण ।

ईरिण (वि०) [ईर्+इनन्] मरुस्थल, बंजर,—णम् ऊसर, बंजर भूमि—मुहूर्तमिव निःशब्दमासीदीरिणसंनिभम् —रामा० ।

ईर्क्ष्य्=ईर्ष्य् ।

ईर्मम् [ईर्+मक्] घाव ।

ईर्या [ईर्+ण्यत्+टाप्] (धार्मिक भिक्षु के रूप में) इधर उधर घूमना ।

ईर्वारुः (पुं० स्त्री०) [ईर् ऋ+उण् बा०] ककड़ी ।

ईर्षा=ईर्ष्या ।

ईर्ष्य्, ईर्क्ष्य् (भ्वा० पर०) (ईर्ष्यति, ईर्ष्यित) डाह करना, ईर्ष्यालु होना, दूसरों की सफलता को देखकर असहिष्णु होना, (संप्र० के साथ)–हरये ईर्ष्यति—सिद्धा०, शि० ८।३६ ।

ईर्ष्य, ईर्ष्यु, ईर्ष्यक (वि०) [ईर्ष्य्+अच्, उण्, ण्वुल् वा] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु ।

ईर्ष्या, ईर्षा [ईर्ष्य्+अप्, ईर्ष्य्+घञ्, यलोपः] डाह, जलन, दूसरों की सफलता को देखकर जलन पैदा होना ।

ईर्ष्या (र्षा) लु, ईर्ष्यु (र्षु) (वि०) [ईर्ष्य्+आलुच्, उ वा] डाह करने वाला, असहिष्णु ।

ईलिः (ली) (स्त्री०) [ईड्+कि डस्य लः] एक हथियार, डंडा, छोटी तलवार ।

ईश् (अदा० आ०) (ईष्टे, ईशित) 1. राज्य करना, स्वामी होना, शासन करना, आदेश देना (संबं० के साथ) —अर्थानामीशिषे त्वं वयमपि च गिरामीश्महे यावदर्थम्—भर्तृ० ३।३० 2. योग्य होना, शक्ति रखना, ('तुम्' के साथ) माधुर्यमीष्टे हरिणान् ग्रहीतुम् —रघु० १८।१३, 3. स्वामी होना, अधिकार में करना ।

ईश (वि०) [ईश्+क] 1. अपनाने वाला, स्वामी, मालिक, दे० नीचे 2. शक्तिशाली 3. सर्वोपरि,—**शः** 1. मालिक, स्वामी (संबं० के साथ या समास में); कथंचिदीशा मनसां बभूवुः –कु० ३।३४ इसी प्रकार वागीश और सुरेश आदि 2. पति 3. ग्यारह ४. शिव, —**शा** 1. दुर्गा 2. ऐश्वर्यशालिनी स्त्री, धनाढ्य महिला। सम० –**कोणः** उत्तर पूर्वी दिशा,—**पुरी**, —**नगरी** बनारस, वाराणसी,–**सखः** कुबेर का विशेषण।

ईशानः [ईश् ताच्छील्ये चानश्] 1. शासक, स्वामी, मालिक 2. शिव—कु० ७।५६ 3. सूर्य (शिव के रूप में) 4. विष्णु,—**नी** दुर्गा।

ईशिता-त्वम् [ईशिनो भावः—ईशिन्+तल्+टाप्, त्वल् वा] सर्वोपरिता, महत्त्व, शिव की आठ सिद्धियों में एक, दे० 'अणिमन्' या 'सिद्धिः'।

ईश्वर (वि०) (स्त्री०—रा—री) 1. शक्तिसम्पन्न, योग्य, समर्थ ('तुमुन्' के साथ) कु० ४।११, 2. धनाढ्य, दौलतमंद,—**रः** 1. मालिक, स्वामी—ईश्वरं लोकोऽर्थतः सेवते—मुद्रा० १।१४ 2. राजा, राजकुमार, शासक 3. धनाढ्य या बड़ा आदमी—मा प्रयच्छेश्वरे धनम् हि० १।१५, तु० 'उलटे बांस बरेली को' 4. पति—कि० ९।३९, 5. परमेश्वर 6. शिव—विक्रम० १।१ 7. कामदेव,—**रा**,—**री** दुर्गा। सम०—**निषेधः** परमात्मा के अस्तित्व को न मानना, नास्तिकता, —**पूजक** (वि०) पुण्यात्मा, भक्त,—**सद्मन्** (नपुं०) मन्दिर,—**सभम्** राजकीय दरबार या सभा।

ईष् (भ्वा० उभ०) (ईषति-ते, ईषित) 1. उड़ जाना 2. देखना, नजर डालना 3. देना 4. मार डालना।

ईषः [ईष्+क] आश्विन मास, तु० 'ईष्'।

ईषत् (अव्य०) [ईष्+अति] 1. जरा, कुछ सीमा तक, थोड़ा सा—ईषत् चुम्बितानि–श० १।३। सम०—**उष्ण** (वि०) गुनगुना –**कर** (वि०) 1. थोड़ा करने वाला अनायास पूरा हो जाने वाला, –**जलम्** उथला पानी, –**पाण्डु** (वि०) हल्का पीला, कुछ सफेद,—**पुरुषः** अधम और घृणित व्यक्ति,—**रक्त** (वि०) पीला लाल, हल्का लाल,—**लभ**,—**प्रलंभ** (वि०) थोड़े से में सुलभ,—**हासः** थोड़ी हंसी, मुस्कराहट।

ईषा [ईष्+क+टाप्] 1. गाड़ी की फड़, 2. हलस।

ईषिका [ईषा+कन्, इत्वम्] 1. हाथी की आँख की पुतली 2. रंगसाज की कूँची 3. हथियार, तीर, बाण।

ईषिरः [ईष्+किरच्] अग्नि, आग।

ईषीका [ईष्+क्वुन्, इत्वम्, दीर्घश्च] 1. रंगसाज की कूँची, 2. ईंट 3. इषीका।

ईष्मः,-ष्वः=इष्मः, इष्वः।

ईह् (भ्वा० आ०) (ईहते, ईहित) 1. कामना करना, चाहना, सोचना (कर्म० या तुमुन् के साथ)—भग० १६।१२, भट्टि० १।११ 2. प्राप्त करने का प्रयत्न करना 3. लक्ष्य बनाना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, कोशिश करना,—माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते—भर्तृ० २।६, याज्ञ० २।११६, **सम्**—1. कामना करना, इच्छा करना, 2. करने का प्रयत्न करना, कोशिश करना –प्रियाणि वाञ्छत्यसुभिः समीहितुम्—कि० १।१९।

ईहा [ईह्+अ] 1. कामना, इच्छा 2. प्रयत्न, प्रयास, चेष्टा मनु० ९।२०५। सम० –**मृगः** 1. भेड़िया 2. नाटक का एक खंड जिसमें ४ अंक होते हैं, परिभाषा के लिए दे०, सा० द० ५१८,—**वृकः** भेड़िया।

ईहित (भू० क० कृ०) [ईह्+क्त] चाहा हुआ, खोजा हुआ, प्रयत्न किया हुआ.—**तम्** 1. कामना, इच्छा 2. प्रयत्न, प्रयास, 3. अध्यवसाय, काय, कृत्य–कि० १।२२।

उ

उः [अत्+डु] शिव का नाम, ओम् के तीन अक्षरों (अ+उ+म्) में से दूसरा –दे० अ, –(अव्य०) 1. पूरक के रूप में काम में आने वाला अव्यय—उ उमेशः —सिद्धा० 2. निम्न अर्थों को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय, (क) पुकार,–उ मेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम—कु० १।२६(ख) क्रोध (ग) अनुकम्पा (घ) आदेश (ङ) स्वीकृति (च) प्रश्न वाचकता या केवल (छ) पूरणार्थक; श्रेण्य साहित्य में मुख्य रूप से अथ (अथो), न (नो) और किम् (किमु) के साथ प्रयुक्त होता है, दे० शब्दों को।

उक्त (भू० क० कृ०) [वच्+क्त] 1. कहा हुआ, बोला हुआ 2. कथित, बताया हुआ (विप० अनुमित या संभावित) 3. बोला हुआ, संबोधित—असावनुक्तोऽपि सहाय एव–कु० ३।२६ 4. वर्णन किया गया, बयान किया हुआ,—**क्तम्** भाषण, शब्दसमुच्चय, वाक्य। सम०—**अनुक्त** कहा और बिना कहा हुआ,

---उपसंहारः संक्षिप्त वर्णन, सारांश, इतिश्री,—**निर्वाहः** कही बात का निर्वाह करना, **पुंस्कः** ऐसा शब्द (स्त्री० या नपुं०) जो पुं० भी हो, और जिसका पुं० से भिन्न अर्थ लिङ्ग की भावना से ही प्रकट होता है,—**प्रत्युक्त** भाषण और उत्तर, व्याख्यान।

उक्तिः (स्त्री०) [वच्+क्तिन्] 1. भाषण, अभिव्यक्ति, वक्तव्य --उक्तिरर्थान्तरन्यासः स्यात्सामान्यविशेषयोः, चन्द्रा० ५।१२०, मनु० ८।१०४ 2. वाक्य 3. अभिव्यक्त करने की शक्ति, शब्द की अभिव्यञ्जनाशक्ति —जैसा कि -एकयोक्त्या पुष्पवंतौ दिवाकरनिशाकरौ -अमर०।

उक्थम् [वच्+थक्] 1. कथन, वाक्य, स्तोत्र 2. स्तुति, प्रशंसा 3. सामवेद।

उक्ष् (भ्वा० उभ०) (उक्षति, उक्षित) 1. छिड़कना, गीला करना, तर करना, बरसाना -औक्षन् शोणितमम्भोदाः —भट्टि० १७।९, ३।५, शि० ५।३०, रघु० ११।५, २०, कु० १।५४ 2. निकालना, विकीर्ण करना, अभि—, पवित्र तथा अभिमंत्रित जल छिड़कना, —शिरसि शकुन्तलामभ्युक्ष्य---श० ४, परि—इधर-उधर छिड़कना, प्र -, पवित्र जल के छींटे देकर अभिमंत्रित करना,—प्राणात्यये तथा श्राद्धे प्रोक्षितं द्विजकाम्यया—याज्ञ० १।१७९ मनु० ५।२७, संप्र—, जल के छींटों से अभिमंत्रित करना--याज्ञ० १।२४।

उक्षणम् [उक्ष्+ल्युट्] 1. छिड़काव 2. छींटे देकर अभिमंत्रित करना—वसिष्ठमन्त्रोक्षणजात् प्रभावात्—रघु० ५।२७।

उक्षन् (पुं०) [उक्ष्+कनिन्] बैल या सांड़—कु० ७।७० (कुछ समासों में उक्षन् का 'उक्ष' रह जाता है —महोक्षः, वृद्धोक्षः आदि)। सम०—**तरः** छोटा बैल तु० वत्सतर।

उख्, उङ्ख् (भ्वा० पर०) (ओखति, उङ्खति, ओखित, उंखित) जाना, हिलना-डुलना।

उखा [उख्+क+टाप्] पतीली, डेगची।

उख्य (वि०) [उखायां संस्कृतम् यत्] 1. पतीली में उबाला हुआ—शूल्यमुख्यं च हामवान्—भट्टि० ४।९।

उग्र (वि०) [उच्+रन् गश्चान्तादेशः] 1. भीषण, क्रूर, हिंस्र, जंगली (दृष्टि आदि से) °दर्शनः 2. प्रबल, डरावना, भयानक, भयंकर—सिंहनिपातमुग्रम्—रघु० ३।६०, मनु० ६।७५, १२।७५, 3. शक्तिशाली, मजबूत, दारुण, तीव्र---उग्रां तपां वेलाम्—श० ३, अत्यंत गर्म --उग्रशोकाम्–मेघ० ११३, अने० पा० 4. तीक्ष्ण, प्रचण्ड, गर्म 5. ऊंचा, भद्र, -ग्रः 1. शिव या रुद्र 2. वर्णसंकर जाति---क्षत्रिय पिता और शूद्र माता की संतान 3. केरल देश (वर्तमान मलाबार) 4. रौद्र-रस। सम०—**गंध** (वि०) तीक्ष्ण गंध वाला (—धः) 1. चम्पक वृक्ष 2. लहसुन,—**धारिणी**, —**चंडा** दुर्गा देवी,—**जाति** (वि०) नीच वंश में उत्पन्न, जारज,—**दर्शनरूप** (वि०) घोर दर्शन वाला, भयानक दृष्टि वाला,—**धन्वन्** (वि०) मजबूत धनुष् को धारण करने वाला; (पुं०) शिव, इन्द्र, —**शेखरा** शिव की चोटी, गंगा,—**सेनः** मथुरा का राजा और कंस का पिता (कंस ने अपने पिता को गद्दी से उतार कर कारागार में डाला था, परन्तु कृष्ण ने कंस को मार कर उसके पिता को कारागार से मुक्त कर सिंहासनासीन किया)।

उग्रंपश्य (वि०) [उग्र+दृश्+खश्, मुमागमः] भीषण दृष्टिवाला, डरावना, विकराल।

उच् (दिवा० पर०) (उच्यति, उचित या उग्र—अधिकांश में भू० क० कृ० के रूप में प्रयुक्त) 1. संचय करना, एकत्र करना, 2. शौकीन होना, प्रसन्नता अनुभव करना 3. उचित या योग्य होना, अभ्यस्त होना।

उचित (भू० क० कृ०) [उच्+क्त] 1. योग्य, ठीक, सही, उपयुक्त—उचितस्तदुपालम्भः—उत्तर० ३, प्रायः तुमुन् के साथ—उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम् —श० ४ 2. प्रचलित, प्रथानुरूप,—उचितेषु करणीयेषु -- श० ४ 3. अभ्यस्त, प्रचलित (समास में)—नीवारभागधेयोचितैः—रघु० १।५०, २।२५, ३।५४, ६०, ११।९, कि० १।३४, 4. प्रशंसनीय।

उच्च (वि०) [उद्+चित्+ड] 1. (सभी बातों में) ऊंचा, लम्बा—क्षितिधारणोच्चम्—कु० ७।६३, उन्नत, उत्कृष्ट (परिवार आदि) 2. ऊंचा, ऊंची आवाज वाला—उच्चाः पक्षिगणाः—शि० ४।१८ 3. तीव्र, दारुण, घोर। सम०—**तरुः** नारियल का पेड़,—**तालः** ऊंचा संगीत, नृत्य आदि,—**नीच** (वि०) 1. ऊंचा नीचा 2. विविध, —**ललाटा**,—**टिका**, ऊंचे मस्तक वाली स्त्री, -**संश्रय** (वि०) ऊंचा पद ग्रहण करने वाला (नक्षत्रादिक) रघु० ३।१३, दे० इस पर मल्लि०।

उच्चकैः (अव्य०) [उच्चैस्+अकच्] 1. ऊंचा, ऊंचाई पर, उत्तुंग, (आलं० भी)—श्रितोदयाद्रेरभिसायमुच्चकैः —शि० १।१६, १६।४६ 2. ऊंचे स्वर वाला।

उच्चक्षुस् (वि०) [ब० स०] 1. ऊपर को आंखें किए हुए, ऊपर की ओर देखते हुए 2. जिसकी आंखें निकाल दी गई हों, अंधा।

उच्चण्ड (वि०) [प्रा० स०] 1. भीषण, भयानक, उग्र 2. फ़ुर्तीला 3. ऊंची आवाज वाला 4. क्रोधी, चिड़चिड़ा।

उच्चन्द्रः (उच्छिष्टः चंद्रो यत्र—अत्या० स०) रात का अन्तिम पहर।

उच्चयः [उद्+चि+अच्] 1. संग्रह, राशि, समुदाय

—रूपोच्चयेन—श० २।९, तु० 'शिलोच्चयः' भी 2. एकत्र करना, संचय करना (फूल आदि)—पुष्पोच्चयं नाटयति—श० ४, कु० ३।६१, 3. स्त्री के ओढ़ने की गाँठ 4. समृद्धि, अभ्युदय ।

उच्चरणम् [उद्+चर्+ल्युट्] 1. ऊपर या बाहर जाना 2. उच्चारण करना ।

उच्चल (वि०) [उद्+चल्+अच्] हिलने-डुलने वाला, —लम् मन ।

उच्चलनम् [उद्+चल्+ल्युट्] चले जाना, कूच करना ।

उच्चलित (भू० क० कृ०) [उद्+चल्+क्त] चलने के लिए तत्पर, प्रस्थान करने वाला—रघु० २।६ ।

उच्चाटनम् [उद्+चट्+णिच्+ल्युट्] 1. हांक कर बाहर करना, निकाल देना 2. वियोग 3. दूर हटाना, (पौधे का) उन्मूलन 4. एक प्रकार का जादू-टोना 5. जादूमंत्र चलाना, शत्रु का नाश करना ।

उच्चारः [उद्+चर+णिच्+घञ्] 1. कथन, उच्चारण, उद्घोषणा 2. विष्ठा, गोबर—मातुरुच्चार एव सः—हि० प्र० १६, मनु० ४।५० 3. छोड़ना।

उच्चारणम् [उद्+चर्+णिच्+ल्युट्] 1. बोलना, कथन करना,—वाचः—शिक्षा० २, वेद° 2. उद्घोषणा, उदीरणा ।

उच्चावच (वि०) [मयूरव्यंसकादिगण—उदक् च अवाक् च] 1. ऊँचा,—नीचा, अनियमित—मनु० ६।७३ 2. विविध, विभिन्न—मनु० १।३८, शि० ४।४६ ।

उच्चूडः—लः [उद्गता चूडा यस्य—ब० स०] ध्वजा पर फहरान वाला झंडा, ध्वज ।

उच्चैः (अव्य०) [उद्+चि+डैस्] 1. उत्तुंग, ऊँचा, ऊँचाई पर, ऊपर (विप० नीचैः—चैः)—विपद्युच्चैः स्थेयम्—भर्तृ० २।२८, उच्चैरुदात्तः—पा० १।२।२९ 2. ऊँची आवाज़ से, कोलाहलपूर्वक 3. प्रबलता से, अत्यन्त, अत्यधिक—विदधति भयमुच्चैर्वीक्ष्यमाणा वनान्ताः—रघु० १।२२ 4. (समास में विशेषण के रूप में प्रयुक्त) (क) उन्नत, कुलीन—जनोऽयमुच्चैः पदलङ्घनोत्सुकः—कु० ५।६४, श० ४।१५, रत्ना० ४। १९ (ख) पूज्य, प्रमुख, प्रसिद्ध—उच्चैरुच्चैःश्रवास्तेन—कु० २।४७ । सम०—घुष्टम् 1. हंगामा, हल्लागुल्ला, गुलगपाड़ा 2. ऊँची आवाज में की गई घोषणा,—वादः बड़ी प्रशंसा,—शिरस् (वि०) उदाराशय, महानुभाव —कु० १।२२,—श्रवस्,—स (वि०) 1. बड़े कानों वाला 2. बहरा; (पुं०) इन्द्र का घोड़ा (जो 'समुद्र-मन्थन से प्राप्त'—कहा जाता है) ।

उच्चैस्तमाम् (अव्य०) [उच्चैस्+तमप्+आम्] 1. अत्यंत ऊँचा 2. बहुत ऊँचे स्वर से ।

उच्चैस्तरम्—राम् (अव्य०) [उच्चैस्+तरप्+आम् च] 1. ऊँचे स्वर से 2. अत्यन्त ऊँचा—कु० ७।६८ ।

उच्छ् (तुदा० पर०) (उच्छति, उष्ट) 1. बांधना 2. पूरा करना 3. छोड़ देना, त्याग देना ।

उच्छन्न (वि०) [उद्+छद्+क्त] 1. नष्ट किया हुआ, उखाड़ा हुआ (कदाचित् 'उत्सन्न') दे० उच्छिन्न 2. लुप्त (रचना आदि) ।

उच्छलत् (शत्रन्त—वि०) [उद्+शल्+शतृ] 1. चमकता हुआ, इधर-उधर हिलता-डुलता हुआ 2. हिलता-डुलता, चलता-फिरता 3. ऊपर को उड़ता हुआ, ऊपर ऊँचाई पर जाता हुआ ।

उच्छलनम् [उद्+शल्+ल्युट्] ऊपर को जाना, सरकना या उड़ना ।

उच्छादनम् [उद्+छद्+णिच्+ल्युट्] 1. चादर, ढकना 2. तेल मलना, लेप या उबटन से शरीर पोतना ।

उच्छासन (वि०) [उत्क्रान्तः शासनम्] नियंत्रण में न रहने वाला, निरंकुश, उद्दंड ।

उच्छास्त्र, °**वर्तिन्** [उद्गतः शास्त्रात्—ग० स०] 1. शास्त्र (नागरिक और धार्मिक—विधि-ग्रन्थ) के विरुद्ध आचरण करने वाला 2. विधि-ग्रंथों का उल्लंघन करने वाला ।

उच्छिख (वि०) [उद्गता शिखा यस्य] 1. शिखा युक्त 2. चमकीला, जिसकी ज्वाला ऊपर की ओर जा रही हो—रघु० १६।८७ ।

उच्छित्तिः (स्त्री०) [उद्+छिद्+क्तिन्] मूलोच्छेदन, विनाश । कोसल°—रत्ना० ४ ।

उच्छिन्न (भू० क० कृ०) [उद्+छिद्+क्त] 1. मूलोच्छिन्न, विनष्ट, उखाड़ा हुआ—उच्छिन्नाश्रयकातरेव कुलटा गोत्रान्तरं श्रीर्गता—मुद्रा० ६।५ 2. नीच, अधम ।

उच्छिरस् (वि०) [उन्नतं शिरोऽस्य—ब० स०] 1. ऊँची गर्दन वाला (शा०) 2. उन्नत 3. (अतः) कुलीन, श्रेष्ठ, महानुभाव—शैलात्मजापि पितुरुच्छिरसोऽभिलाषम्—कु० ३।७५, ६।७० ।

उच्छिलीन्ध्र (वि०) [ब० स०] कुकुरमुत्ता (साँप की छतरी) से भरा स्थान,—कर्तुं यच्च प्रभवति महीमुच्छिलीन्ध्रामवन्ध्याम् मेघ० ११,—ध्रम् कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी ।

उच्छिष्ट (भू० क० कृ०) [उत्+शिष्+क्त] 1. शेष, बचा हुआ, 2. अस्वीकृत, त्यक्त—रघु० १२।१५ 3. बासी, °कल्पना, पुराने विचार या आविष्कार, —ष्टम् 1. जूठन, खंड, अवशिष्ट (विशेषतः यज्ञ या आहार का)—नोच्छिष्टं कस्यचिद्दद्यात्—मनु० २।५६ । सम०—अन्नम् जूठन, भुक्तावशेष—मोदनम् मोम ।

उच्छीर्षकम् [उत्थापितं शीर्षं यस्मिन्] 1. तकिया 2. सिर ।

उच्छुष्क (वि०) [उद्+शुष्+क्त तस्य कः] सूखा, मुर्झाया हुआ ।

उच्छून (वि०) [उद्+श्वि+क्त] 1. सूजा हुआ —प्रबलरुदितोच्छूननेत्रं प्रियायाः—मेघ० ८६, उत्तानोच्छून-

मण्डूकपातितोदरसंनिभम्—काव्य० ७, अनवरतरुदितोच्छूनताम्रदृष्टम्—दश० ९५ 2. मोटा 3. ऊँचा, उत्तुंग ।

उच्छृङ्खल (वि०) [उद्गतः शृङ्खलातः—ब० स०] 1. बेलगाम, अनियंत्रित, निरंकुश—°वाचा—पंच० ३, अन्यदुच्छृङ्खलं सत्त्वमन्यच्छास्त्रनियन्त्रितम्—शि० २।६२ 2. स्वेच्छाचारी 3. अनियमित, क्रमहीन ।

उच्छेदः -दनम् [उद्+छिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1. काट कर फेंक देना 2. मूलोच्छेदन, उखाड़ देना, काम तमाम कर देना—सतां भवोच्छेदकरः पिता ते—रघु० १४।७४ 3. अपच्छेदन ।

उच्छेषः—षणम् [उद्+शिष्+घञ्, ल्युट् वा] अवशेष ।

उच्छोषण (वि०) [उद्+शुष्+णिच्+ल्युट्] 1 सुखाने वाला, मुर्च्छा देने वाला—यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्—भग० २।८ 2. जलना,—णम् सुखा देना, कुम्हलाना, मुर्झाना ।

उच्छ्र (च्छ्रा) यः [उद्+श्रि+अच्+घञ् वा] 1. (तारों आदि का) उदय होना 2. उठाना, उत्थापन 3. ऊँचाई, उत्सेध (शारीरिक और नैतिक)—शृङ्गोच्छ्रायैः कुमुदविशदैर्यो वितत्य स्थितः खम्—मेघ० ६०, कि० ७।२७, ८।२३, 4. विकास, वृद्धि, गहनता, गुण°—कि० ८।२१ नीतोच्छ्रायम्—५।३१, 5. घमंड ।

उच्छ्रयणम् [उद्+श्रि+ल्युट्] उन्नयन, उत्थापन ।

उच्छ्रित (भू० क० कृ०) [उद्+श्रि+क्त] 1. उठाया हुआ, उत्थापित 2. ऊपर गया हुआ, उद्गत 3. ऊँचा, लंबा, उत्तुंग, उन्नत 4. पैदा किया हुआ, जात 5. वर्धमान, समृद्ध, बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 6. अभिमानी ।

उच्छ्रितिः=उच्छ्रयः

उच्छ्वसनम् [उद्+श्वस्+ल्युट्] 1. सांस लेना, आह भरना 2. गहरी साँस लेना ।

उच्छ्वसित (भू० क० कृ०) [उद्+श्वस्+क्त] (कर्तरि प्रयोग) 1. गहरी सांस लेना, सांस लेना 2. मुंह से भाप बाहर निकालना 3. पूरा खिला हुआ, विवृत 4. तरोताजा—मेघ० ४२, 5. आश्वसित—उत्कंठोच्छ्वसितहृदया—मेघ० १००,—तम् 1. सांस, प्राण —सा कुलपतेरुच्छ्वसितमिव—श० ३, 2. प्रफुल्ल, फूंक मारना 3. साँस बाहर निकालना—रघु० ८।३, 4. गहरी सांस लेना, उभार, धड़कन ५. शरीर में रहने वाले पाँच प्राण ।

उच्छ्वासः [उद्+श्वस्+घञ्] 1. सांस, सांस अन्दर खींचना, सांस बाहर निकालना—मुखोच्छ्वासगन्धम् —विक्रम० ४।२२, ऋतु० १।३, मेघ० १०२ 2. प्राणों का आश्रय 3. आह भरना 4. आश्वासन, प्रोत्साहन —अमरु ११, 5. फूंकनी 6. पुस्तक का खंड या भाग (जैसे हर्षचरित का) तु० अध्याय ।

उच्छ्वासिन् (वि०) [उच्छ्वास+इनि] 1. सांस लेने वाला 2. गहरी सांस लेने वाला, आह भरने वाला 3. मिटने वाला, मुर्झानेवाला ।

उज्जय (यि) नी [प्रा० स०] एक नगर का नाम, मालवा प्रदेश में वर्तमान उज्जैन, हिन्दुओं की सात पुण्य-नगरियों में से एक, (तु० अवन्ति)—सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः—मेघ० २७ ।

उज्जासनम् [उद्+जस्+णिच्+ल्युट्] मारना, हत्या करना—चौरस्योज्जासनम्—सिद्धा० ।

उज्जिहान (वि०) [उद्+हा+शानच्] ऊपर जाता हुआ, (सूर्य की भांति) उदय होता हुआ—उज्जिहानस्य मानोः—मुद्रा० ४।२१ 2. विदा होता हुआ, बाहर जाता हुआ, °जीवितां वराकीम्—मा० १० ।

उज्जृम्भ (वि०) [ब० स०] 1. फूंक भरा हुआ, फुलाया हुआ—उज्जृम्भवदनाम्भोजा भिनत्यङ्गानि सज्वना—सा० द० 2. दरारदार, खुला हुआ,—भः 1. विवर, फुलाव, फूंक मारना 2. तोड़ कर टुकड़े करना, जुदा करना

उज्जृम्भा-भणम् [उद्+जृम्भ्+अ, ल्युट् वा] 1. जम्हाई लेना 2. मुंह बाना, 3. फैलाना, वृद्धि ।

उज्ज्य (वि०) [उद्गता ज्या यस्य—ब० स०] वह धनुर्धर जिसके धनुष की डोरी खुली हुई हो ।

उज्ज्वल (वि०)[उद्+ज्वल्+अच्] 1. उजला, चमकीला, कांतियुक्त—उज्ज्वलकपोलं मुखम्—शि० ९।४८ 2. प्रिय, सुन्दर—सर्गो निसर्गोज्ज्वलः—नै० ३।१३६ 3. फूंक भरा हुआ, फुलाया हुआ 4. अनियंत्रित,—लः प्रेम, राग,—लम् सोना ।

उज्ज्वलनम् [उद्+ज्वल्+ल्युट्] 1. जलना, चमकना 2. कान्ति, दीप्ति ।

उज्झ् (तुदा० पर०) (उज्झति, उज्झित) 1. त्यागना, छोड़ना, तिलांजलि देना—सपदि विगतनिद्रस्तल्पमुज्झांचकार—रघु० ५।७५, १।४०, ५१ आतपायोज्झितं धान्यम्—महा०, धूप में डाला हुआ 2. टालना, बचना —उदये मदवाच्यमुज्झता—रघु० ८।८४ 3. उत्सर्जन करना, बाहर निकालना—अविरतोज्झितवारिविपाण्डुभिः—कि० ५।६, शि० ४।६३ ।

उज्झकः [उज्झ्+ण्वुल] 1. बादल 2. भक्त ।

उज्झनम् [उज्झ्+ल्युट्] त्यागना, दूर करना, छोड़ना ।

उञ्छ् (तुदा० पर०) (उंछति, उंछित) बालें इकट्ठी करना, बीनना (एक-एक करके)—शिलानप्युञ्छतः —मनु० ३।१००

उञ्छः [उञ्छ्+घञ्] बालें इकट्ठी करना या अनाज के दाने बीनना, तान्युञ्छषष्ठाङ्कितसैकतानि—रघु० ५।८, मनु० १०।११२,—छम् बालें इकट्ठी करना । सम० —वृत्ति,—शील (वि०) जो शिलोंछन से अपनी जीविका चलाता है, खेत में बचे अनाज के कणों को चुन कर पेट भरने वाला ।

—रूपोच्चयेन—श० २१९, तु० 'शिलोच्चयः' भी 2. एकत्र करना, संचय करना (फूल आदि) —पुष्पोच्चयं नाटयति—श० ४, कु० ३।६१, 3. स्त्री के ओढ़ने की गाँठ 4. समृद्धि, अभ्युदय ।

उच्चरणम् [उद्+चर्+ल्युट्] 1. ऊपर या बाहर जाना 2. उच्चारण करना ।

उच्चल (वि०) [उद्+चल्+अच्] हिलने-डुलने वाला, —लम् मन ।

उच्चलनम् [उद्+चल्+ल्युट्] चले जाना, कूच करना ।

उच्चलित (भू० क० कृ०) [उद्+चल्+क्त] चलने के लिए तत्पर, प्रस्थान करने वाला—रघु० २।६ ।

उच्चाटनम् [उद्+चट्+णिच्+ल्युट्] 1. हांक कर बाहर करना, निकाल देना 2. वियोग 3. दूर हटाना, (पौधे का) उन्मूलन 4. एक प्रकार का जादू-टोना 5. जादूमंत्र चलाना, शत्रु का नाश करना ।

उच्चारः [उद्+चर+णिच्+घञ्] 1. कथन, उच्चारण, उद्घोषणा 2. विष्ठा, गोबर—मातुरुच्चार एव सः—हि० प्र० १६, मनु० ४।५० 3. छोड़ना।

उच्चारणम् [उद्+चर्+णिच्+ल्युट्] 1. बोलना, कथन करना,—वाचः-शिक्षा० २, वेद° 2. उद्घोषणा, उदीरणा ।

उच्चावच (वि०) [मयूरव्यंसकादिगण—उदक् च अवाक् च] 1. ऊँचा,—नीचा, अनियमित—मनु० ६।७३ 2. विविध, विभिन्न—मनु० १।३८, शि० ४।४६ ।

उच्चूडः—लः [उद्गता चूडा यस्य—ब० स०] ध्वजा पर फहरान वाला झंडा, ध्वज ।

उच्चैः (अव्य०) [उद्+चि+डैस्] 1. उत्तुंग, ऊँचा, ऊँचाई पर, ऊपर (विप० नीचैः—चैः)—विपद्युच्चैः स्थेयम्—भर्तृ० २।२८, उच्चैरुदात्तः—पा० १।२।२९ 2. ऊँची आवाज से, कोलाहलपूर्वक 3. प्रबलता से, अत्यन्त, अत्यधिक—विदधति भयमुच्चैर्वीक्ष्यमाणा वनान्ताः—रघु० १।२२ 4. (समास में विशेषण के रूप में प्रयुक्त) (क) उन्नत, कुलीन—जनोऽप्यमुच्चैः पदलङ्घनोत्सुकः—कु० ५।६४, श० ४।१५, रत्ना० ४। १९ (ख) पूज्य, प्रमुख, प्रसिद्ध—उच्चैरुच्चैःश्रवास्तेन—कु० २।४७ । सम०—घुष्टम् 1. हंगामा, हल्लागुल्ला, गुलगपाड़ा 2. ऊँची आवाज में की गई घोषणा,—वादः बड़ी प्रशंसा,—शिरस् (वि०) उदाराशय, महानुभाव —कु० १।२२,—श्रवस्,—स (वि०) 1. बड़े कानों वाला 2. बहरा; (पुं०) इन्द्र का घोड़ा (जो 'समुद्र-मन्थन से प्राप्त'—कहा जाता है) ।

उच्चैस्तमाम् (अव्य०) [उच्चैस्+तमप्+आम्] 1. अत्यंत ऊँचा 2. बहुत ऊँचे स्वर से ।

उच्चैस्तरम्—राम् (अव्य०) [उच्चैस्+तरप्+आम् च] 1. ऊँचे स्वर से 2. अत्यन्त ऊँचा—कु० ७।६८ ।

उच्छ् (तुदा० पर०) (उच्छति, उष्ट) 1. बांधना 2. पूरा करना 3. छोड़ देना, त्याग देना ।

उच्छन्न (वि०) [उद्+छद्+क्त] 1. नष्ट किया हुआ, उखाड़ा हुआ (कदाचित् 'उत्सन्न') दे० उच्छिन्न 2. लुप्त (रचना आदि) ।

उच्छलत् (शत्रन्त—वि०) [उद्+शल्+शतृ] 1. चमकता हुआ, इधर-उधर हिलता-डुलता हुआ 2. हिलता-डुलता, चलता-फिरता 3. ऊपर को उड़ता हुआ, ऊपर ऊँचाई पर जाता हुआ ।

उच्छलनम् [उद्+शल्+ल्युट्] ऊपर को जाना, सरकना या उड़ना ।

उच्छादनम् [उद्+छद्+णिच्+ल्युट्] 1. चादर, ढकना 2. तेल मलना, लेप या उबटन से शरीर पोतना ।

उच्छासन (वि०) [उत्क्रान्तः शासनम्] नियंत्रण में न रहने वाला, निरंकुश, उद्दंड ।

उच्छास्त्र, °वर्तिन् [उद्गतः शास्त्रात्—ग० स०] 1. शास्त्र (नागरिक और धार्मिक—विधि-ग्रन्थ) के विरुद्ध आचरण करने वाला 2. विधि-ग्रंथों का उल्लंघन करने वाला ।

उच्छिख (वि०) [उद्गता शिखा यस्य] 1. शिखा युक्त 2. चमकीला, जिसकी ज्वाला ऊपर की ओर जा रही हो—रघु० १६।८७ ।

उच्छित्तिः (स्त्री०) [उद्+छिद्+क्तिन्] मूलोच्छेदन, विनाश । कोसल°—रत्ना० ४ ।

उच्छिन्न (भू० क० कृ०) [उद्+छिद्+क्त] 1. मूलोच्छिन्न, विनष्ट, उखाड़ा हुआ—उच्छिन्नाश्रयकातरेव कुलटा गोत्रान्तरं श्रीर्गता—मुद्रा० ६।५ 2. नीच, अधम ।

उच्छिरस् (वि०) [उन्नतं शिरोऽस्य—ब० स०] 1. ऊँची गर्दन वाला (शा०) 2. उन्नत 3. (अतः) कुलीन, श्रेष्ठ, महानुभाव—शैलात्मजापि पितुरुच्छिरसोऽभिलाषम्—कु० ३।७५, ६।७० ।

उच्छिलीन्ध्र (वि०) [ब० स०] कुकुरमुत्ता (साँप की छतरी) से भरा स्थान,—कर्तुं यच्च प्रभवति महीमुच्छिलीन्ध्राम-वन्ध्याम् मेघ० ११,—ध्रम् कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी ।

उच्छिष्ट (भू० क० कृ०) [उत्+शिष्+क्त] 1. शेष, बचा हुआ, 2. अस्वीकृत, त्यक्त—रघु० १२।१५ 3. बासी, °कल्पना, पुराने विचार या आविष्कार, —ष्टम् 1. जूठन, खंड, अवशिष्ट (विशेषतः यज्ञ या आहार का)—नोच्छिष्टं कस्यचिद्दद्यात्—मनु० २।५६ । सम०—अन्नम् जूठन, भुक्तावशेष—मोदनम् मोम ।

उच्छीर्षकम् [उत्थापितं शीर्षं यस्मिन्] 1. तकिया 2. सिर ।

उच्छुष्क (वि०) [उद्+शुष्+क्त तस्य कः] सूखा, मुर्झाया हुआ ।

उच्छून (वि०) [उद्+श्वि+क्त] 1. सूजा हुआ—प्रबल-रुदितोच्छूननेत्रं प्रियायाः—मेघ० ८६, उत्तानोच्छून-

मण्डूकपाटितोदरसंनिभम्—काव्य० ७, अनवरतरुदितोच्छूनताम्रदृष्टम्—दश० ९५ 2. मोटा 3. ऊँचा, उत्तुंग।

उच्छृङ्खल (वि०) [उद्गतः शृङ्खलातः—ब० स०] 1. बेलगाम्, अनियंत्रित, निरंकुश—°वाचा—पंच० ३, अन्यदुच्छृङ्खलं सत्त्वमन्यच्छास्त्रनियन्त्रितम्—शि० २।६२ 2. स्वेच्छाचारी 3. अनियमित, क्रमहीन।

उच्छेदः – **दनम्** [उद्+छिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1. काट कर फेंक देना 2. मूलोच्छेदन, उखाड़ देना, काम तमाम कर देना—सतां भवोच्छेदकरः पिता ते—रघु० १४।७४ 3. अपच्छेदन।

उच्छेषः—**षणम्** [उद्+शिष्+घञ्, ल्युट् वा] अवशेष।

उच्छोषण (वि०) [उद्+शुष्+णिच्+ल्युट्] 1 सुखाने वाला, मुर्झा देने वाला—यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्—भग० २।८ 2. जलना,—**णम्** सुखा देना, कुम्हलाना, मुर्झाना।

उच्छ्र (**च्छ्रा**) **यः** [उद्+श्रि+अच्+घञ् वा] 1. (तारों आदि का) उदय होना 2. उठाना, उत्थापन 3. ऊँचाई, उत्सेध (शारीरिक और नैतिक)—शृङ्गोच्छ्रायैः कुमुदविशदैर्यो वितत्य स्थितः खम्—मेघ० ६०, कि० ७।२७, ८।२३, 4. विकास, वृद्धि, गहनता, गुण°—कि० ८।२१ नीतोच्छ्रायम्—५।३१, 5. घमंड।

उच्छ्रयणम् [उद्+श्रि+ल्युट्] उन्नयन, उत्थापन।

उच्छ्रित (भू० क० कृ०) [उद्+श्रि+क्त] 1. उठाया हुआ, उत्थापित 2. ऊपर गया हुआ, उद्गत 3. ऊँचा, लंबा, उत्तुंग, उन्नत 4. पैदा किया हुआ, जात 5. वर्धमान, समृद्ध, बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 6. अभिमानी।

उच्छ्रितिः=उच्छ्रयः

उच्छ्वसनम् [उद्+श्वस्+ल्युट्] 1. सांस लेना, आह भरना 2. गहरी साँस लेना।

उच्छ्वसित (भू० क० कृ०) [उद्+श्वस्+क्त] (कर्तरि प्रयोग) 1. गहरी सांस लेना, सांस लेना 2. मुंह से भाप बाहर निकालना 3. पूरा खिला हुआ, विवृत 4. तरोताजा—मेघ० ४२, 5. आश्वसित—उत्कंठोच्छ्वसितहृदया—मेघ० १००,—**तम्** 1. सांस, प्राण—सा कुलपतेरुच्छ्वसितमिव—श० ३, 2. प्रफुल्ल, फूंक मारना 3. साँस बाहर निकालना—रघु० ८।३, 4. गहरी सांस लेना, उभार, धड़कन ५. शरीर में रहने वाले पाँच प्राण।

उच्छ्वासः [उद्+श्वस्+घञ्] 1. सांस, सांस अन्दर खींचना, सांस बाहर निकालना—मुखोच्छ्वासगन्धम्—विक्रम० ४।२२, ऋतु० १।३, मेघ० १०२ 2. प्राणों का आश्रय 3. आह भरना 4. आश्वासन, प्रोत्साहन—अमरु ११, 5. फूंकनी 6. पुस्तक का खंड या भाग (जैसे हर्षचरित का) तु० अध्याय।

उच्छ्वासिन् (वि०) [उच्छ्वास+इनि] 1. सांस लेने वाला 2. गहरी साँस लेने वाला, आह भरने वाला 3. मिटने वाला, मुर्झानेवाला।

उज्जय (**यि**) **नी** [प्रा० स०] एक नगर का नाम, मालवा प्रदेश में वर्तमान उज्जैन, हिन्दुओं की सात पुण्यनगरियों में से एक, (तु० अवन्ति)—सौधोत्संगप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः—मेघ० २७।

उज्जासनम् [उद्+जस्+णिच्+ल्युट्] मारना, हत्या करना— चौरस्योज्जासनम्—सिद्धा०।

उज्जिहान (वि०) [उद्+हा+शानच्] ऊपर जाता हुआ, (सूर्य की भांति) उदय होता हुआ—उज्जिहानस्य भानोः—मुद्रा० ४।२१ 2. विदा होता हुआ, बाहर जाता हुआ, °जीवितां वराकीम्—मा० १०।

उज्जृम्भ (वि०) [ब० स०] 1. फूंक भरा हुआ, फुलाया हुआ—उज्जृम्भवदनाम्भोजा भिनत्त्यङ्गानि सङ्गना—सा० द० 2. दरारदार, खुला हुआ,—**भः** 1. विवर, फुलाव, फूंक मारना 2. तोड़ कर टुकड़े करना, जुदा२ करना

उज्जृम्भा-**भणम्** [उद्+जृम्भ्+अ, ल्युट् वा] 1. जम्हाई लेना 2. मुंह बाना, 3. फैलाना, वृद्धि।

उज्ज्य (वि०) [उद्गता ज्या यस्य—ब० स०] वह धनुर्धर जिसके धनुष की डोरी खुली हुई हो।

उज्ज्वल (वि०) [उद्+ज्वल्+अच्] 1. उजला, चमकीला, कांतियुक्त—उज्ज्वलकपोलं मुखम्—शि० ९।४८ 2. प्रिय, सुन्दर—सर्गो निसर्गोज्ज्वलः—नै० ३।१३६ 3. फूंक भरा हुआ, फुलाया हुआ 4. अनियंत्रित,—**लः** प्रेम, राग,—**लम्** सोना।

उज्ज्वलनम् [उद्+ज्वल्+ल्युट्] 1. जलना, चमकना 2. कान्ति, दीप्ति।

उज्झ् (तुदा० पर०) (उज्झति, उज्झित) 1. त्यागना, छोड़ना, तिलांजलि देना—सपदि विगतनिद्रस्तल्पमुज्झांचकार—रघु० ५।७५, १।४०, ५१ आतपायोज्झितं धान्यम्—महा०, धूप में डाला हुआ 2. टालना, बचना—उदये मदवाच्यमुज्झता—रघु० ८।८४ 3. उत्सर्जन करना, बाहर निकालना—अविरतोज्झितवारिविपाण्डुभिः—कि० ५।६, शि० ४।६३।

उज्झकः [उज्झ्+ण्वुल] 1. बादल 2. भक्त।

उज्झनम् [उज्झ्+ल्युट्] त्यागना, दूर करना, छोड़ना।

उञ्छ् (तुदा० पर०) (उंञ्छति, उंञ्छित) बालें इकट्ठी करना, बीनना (एक-एक करके)—शिलानप्युञ्छतः—मनु० ३।१००

उञ्छः [उञ्छ्+घञ्] बालें इकट्ठी करना या अनाज के दाने बीनना, तान्युञ्छषष्ठाङ्कितसैकतानि—रघु० ५।८, मनु० १०।११२,—**छम्** बालें इकट्ठी करना। सम०—**वृत्ति**,—**शील** (वि०) जो शिलोंछन से अपनी जीविका चलाता है, खेत में बचे अनाज के कणों को चुन कर पेट भरने वाला।

उञ्छनम् [उञ्छ्+ल्युट्] खेत में पड़े अनाज के दानों को एकत्र करना।

उटम् [उ+टक्] 1. पत्ता 2. घास। सम०—जः—जम् —(उटेभ्यो जायते) झोंपड़ी, कुटिया, आश्रम (पर्णशाला)—उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः—श० ४।२०, रघु० १।५०, ५२।

उडुः (स्त्री०) **उडु** (नपुं०) [उड्+कु वा०] 1. नक्षत्र, तारा—इन्दुप्रकाशान्तरितोडुतुल्याः—रघु० १६।६५, 2. जल (केवल नपुं० में)। सम०—चक्रम्—राशिचक्र,—पः,—पम् लट्ठों का बना बेड़ा,—तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्—रघु० १।२, केनोडुपेन परलोकनदीं तरिष्ये—मृच्छ० ८।२३ (—पः) चंद्रमा —मृच्छ० ४।२४—पतिः,—राज् चन्द्रमा—जितमुडुपतिना—रत्ना० १।५, रसात्मकस्योडुपतेश्च रश्मयः —कु० ५।२२—पथः आकाश, अन्तरिक्ष।

उडुम्बरः [उं शम्भुं वृणोति—उ+वृ+खच्, मुम् उत्कृष्टः उम्बरः—प्रा० स० दस्य डत्वम्] 1. गूलर का वृक्ष (औदुम्बर), 2. घर की देहली या ड्योढ़ी 3. हिजड़ा 4. एक प्रकार का कोढ़ (—रम् भी),—रम् 1. गूलर का फल 2. तांबा।

उडूपः=उडुपः।

उड्डयनम् [उद्+डी+ल्युट्] ऊपर उड़ना, उड़ान लेना —गतो विरत्योड्डयने निराशताम्—नै. १।१२५।

उड्डामर (वि०) [प्रा० स०] 1. रुचिकर, श्रेष्ठ 2. प्रबल, भयावह—उड्डामरव्यस्तविस्तारिदोःखण्डपर्यासितक्ष्माधरम् —मा० ३।२३।

उड्डीन (भू० क० कृ०) [उद्+डी+क्त] उड़ा हुआ, ऊपर उड़ता हुआ,—नम् 1. ऊपर उड़ना, उड़ान लेना 2. पक्षियों की एक विशेष उड़ान।

उड्डीयनम् [उड्डः स इव आचरति—क्यङ्, उड्डीय +ल्युट्] उड़ान।

उड्डीशः [उद्+डी+क्विप्—उड्डी तस्य ईशः] शिव।

उड्रः [उड्+रक्] देश का नाम, वर्तमान उड़ीसा, दे० ओड्र।

उण्डेरकः [?] आटे का लड्डू, गोला, रोटी—तथैवोंडेरकस्रजः—याज्ञ० १।१२८।

उत् (अव्य०) [उ+क्विप्] (क) सन्देह (ख) प्रश्न वाचकता (ग) सोचविचार और (घ) तीव्रता।

उत (अव्य०)[उ+क्त] 1. निम्नांकित भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाला अव्यय —(क)सन्देह, अनिश्चितता अनुमान (या),—तत्किमयमातपदोषः स्यादुत यथा मे मनसि वर्तते—श० ३, स्थाणुरयमुत पुरुषः—गण० (ख) विकल्प, प्रायः 'किं' का सहवर्ती (या),—किमिदं गुरुभिरुपदिष्टमुत धर्मशास्त्रेषु पठितमुत मोक्षप्राप्तियुक्तिरियम्—का० १५५, कु० ६।२३, 'उत' के स्थान में 'आहो' या 'आहोस्वित्' भी प्रयुक्त होता है, कई बार तो 'आहो' 'आहोस्वित्' या 'स्वित्' को 'उत' से जोड़ दिया जाता है (ग) साहचर्य, संयोग ('और' 'भी' शब्दों द्वारा समुच्चयात्मकता का बोध कराने वाला)—उत बलवानुताबलः (घ) प्रश्नवाचकता— —उत दण्डः पतिष्यति 2. प्रति–,इसके विपरीत, दूसरी ओर, बल्कि— सामवादाः सकोपस्य तस्य प्रत्युत दीपकाः - शि० २।५५ 3. किम् –,कितना अधिक, कितना कम दे० किम्, उत—उत या-या–एकमेव वरं पुंसामुत राज्यमुताश्रमः —गण०।

उतथ्यः (?) अंगिरा का पुत्र, तथा बृहस्पति का बड़ा भाई।—अनुजः,—अनुजन्मन् (पुं०) बृहस्पति, देवताओं का गुरु,— तथ्यमुतथ्यानुजवज्जगादाग्रे गंदाग्रजम् —शि० २।६९।

उत्क (वि०) [उद्-स्वार्थे कन्] 1 इच्छुक, लालायित, उत्कंठित (समास में)–अद्रिसुतासमागमोत्कः—कु० ६।९५ मानसोत्काः–मेघ० ११, कई बार तुमुन् के साथ–शि० ४।१८, 2. खिद्यमान, दुःखी, शोकान्वित 3. उन्मना।

उत्कञ्चुक (वि०) [ब० स०] बिना अंगिया पहने या बिना कवच धारण किये हुए।

उत्कट (वि०) [उद्+कटच्] 1. बड़ा, प्रशस्त—उत्तर० ४।२९ 2. शक्तिशाली, ताकतवर, भीषण 3. अत्यधिक, ज्यादह—अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते—हि० १।८५, 4. भरपूर, समृद्ध 5. मदिरासेवी, मदमत्त, उन्मत्त, मदोत्कट 6. श्रेष्ठ, उत्तम 7. विषम,—टः 1. हाथी के मस्तक से बहनेवाला मद 2. मदयुक्त हाथी।

उत्कण्ठ (वि०) [उन्नतः कण्ठो यस्य] 1. गर्दन ऊपर को उठाये हुए, (अतः) तत्पर, तैयार, करने के लिए उत्सुक (समास में)— आज्ञापनोत्कण्ठः— श० २, रथस्वनोत्कण्ठमृगे वाल्मीकीये तपोवने—रघु० १५।११ 2. (अतः) चिन्तातुर, उत्सुक,–ठः,—ठा संभोग करने की एक रीति।

उत्कण्ठा [उद्+कण्ठ्+अ+टाप्] 1. चिन्तातुरता, बेचैनी— —यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया—श० ४।५, 2. प्रिय वस्तु या प्रियतम पाने की लालसा —दृष्टिरधिकं सोत्कण्ठमुद्वीक्षते—अमरु २४, 3. खेद, शोक, किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति का लुप्त हो जाना —गाढोत्कण्ठा —मा० १।१५, मेघ० ८३।

उत्कण्ठित (भू० क० कृ०)[उद्+कण्ठ्+क्त] 1. चिन्तातुर, व्यथित होनेवाला, शोकान्वित 2. किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति के लिए लालायित,—ता अपने अनुपस्थित प्रेमी या पति से मिलने की प्रबल लालसा रखने वाली नायिका, आठ नायिकाओं में से एक— सा० द० १२१ में दी गई परिभाषा—आगन्तुं कृतचित्तोऽपि दैवान्नायाति यत्प्रियः, तदनागमदुःखार्ता विरहोत्कण्ठिता तु सा।

उत्कन्धर (वि०) [उन्नतः कन्धरोऽस्य—ब० स०] गर्दन ऊपर उठाये हुए, उद्ग्रीव—उत्कन्धरं दारुकमित्युवाच—शि० ४।१८।

उत्कम्प (वि०) [ब० स०] कांपता हुआ, —पः,—पनम् कांपना, कंपकंपी, क्षोभ—किमधिकत्रासोत्कम्पं दिशः समुदीक्षसे —अमरु २८, मालवि० ७२।

उत्करः [उद्+कृ+अप्] 1. ढेर, समुच्चय 2. अम्बर, चट्टा 3. मलबा —मृच्छ० ३।

उत्कर्करः [ब० स०] एक प्रकार का वाद्य-उपकरण, बाजा।

उत्कर्तनम् [उद्+कृत्+ल्युट्] 1. काट देना, फाड़ देना 2. उखाड़ देना, मूलोच्छेदन।

उत्कर्षः [उद्+कृष्+घञ्] 1. ऊपर को खींचना 2. उन्नति, प्रमुखता, उदय, समृद्धि—निनीषुः कुलमुत्कर्षम् —मनु० ४।२४४,९।२४ 3. वृद्धि, बहुतायत, अधिकता—पंचानामपि भूतानामुत्कर्षं पुपुषुर्गुणाः—रघु० ४।११ 4. उत्कृष्टता, सर्वोपरि गुण, यश —उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले—श० २, 5. अहंमन्यता, शेखी 6. प्रसन्नता।

उत्कर्षणम् [उद्+कृष्+ल्युट्] 1. ऊपर खींचना, ऊपर लेना, ऊपर करना।

उत्कलः [उद्+कल्+अच्] 1. एक देश का नाम, वर्तमान उड़ीसा या उस देश के निवासी (ब० व०), जगन्नाथ-प्रान्तदेश उत्कलः परिकीर्तितः—दे० 'ओड्' —उत्कलादर्शित पथः—रघु० ४।३८ 2. बहेलिया, चिड़ीमार 3. कुली।

उत्कलाप (वि०) [ब० स०] पूंछ फैलाये हुए और सीधी उठाये हुए—रघु० १६।६४।

उत्कलिका [उद्+कल्+वुन्] 1. चिन्तातुरता, बेचैनी —जाता नोत्कलिका—अमरु ७८, 2. लालसा करना, खेद प्रकाश करना, किसी वस्तु या व्यक्ति का लुप्त हो जाना 3. काम क्रीडा, हेला, 4. कली 5. तरंग —क्षुभितमुत्कलिकातरलं मनः— तरंगों द्वारा क्षुब्ध—मा० ३।१०, (यहाँ स्वयं 'उत्कलिका' का अर्थ 'चिन्तातुरता' है) शि० ३।७०। सम० —प्रायम् गद्यरचना का एक प्रकार जिसमें समास बहुत हों तथा कठोर वर्ण हों—भवेदुत्कलिकाप्रायं समासाढ्यं दृढाक्षरम्—छं०।

उत्कषणम् [उद्+कष्+ल्युट्] 1. फाड़ना, ऊपर को खींचना 2. जोतना, (हल आदि), खींच कर ले जाना —सद्यः सीरोत्कषणसुरभि क्षेत्रमारुह्य मालम्—मेघ० १७, 3. रगड़ना—भामि० १।७३।

उत्कारः [उद्+कृ+घञ्] 1. अनाज फटकना 2. अनाज की ढेरी लगाना 3. अनाज बोने वाला।

उत्कासः, -सनम्, उत्कासिका [उत्क+अस्+अण्, ल्युट्, ण्वुल् वा] खखारना, गले को साफ़ करना।

उत्किर (वि०) [उद्+कृ+श] हवा में उड़ता हुआ, ऊपर को बिखरता हुआ, धारण करता हुआ—कु० ५।२६, ६।५, रघु० १।३८।

उत्कीर्तनम् [उद्+कृ+ल्युट्] 1. प्रशंसा करना, कीर्तिगान करना 2. घोषणा करना।

उत्कुट—[उन्नतः कुटो यत्र ब० स०] ऊपर को मुंह करके लेटना या सोना, चित लेटना।

उत्कुणः [उत्+कुण्+क] 1. खटमल 2. जूं।

उत्कुल (वि०) [उत्क्रान्तः कुलात् —अत्या० स०] पतित, कुल को अपमानित करने वाला—यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा, त्वमसि किं पितुरुत्कुलया त्वया—श० ५।२७।

उत्कूजः [प्रा० स०] (कोयल की) कूक।

उत्कूटः [उन्नतं कूटमस्य—ब० स०] छाता, छतरी।

उत्कूर्दनम् [उद्+कूर्द्+ल्युट्] कूदना, ऊपर को उछलना।

उत्कूल (वि०) [उत्क्रान्तः कूलात्—अत्या० स०] किनारे से बाहर निकल कर बहने वाला।

उत्कूलित (वि०) [उद्+कूल्+क्त] किनारे तक पहुँचने वाला—शि० ३।७०।

उत्कृष्ट (भू० क० कृ०) [उद्+कृष्+क्त] 1. उखाड़ा हुआ, उठाया हुआ, उन्नत 2. श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम, सर्वोच्च —मनु० ५।१६३, ८।२८१ बल°—पंच० ३।३६, बलवत्तर 3. जोता हुआ, हल चलाया हुआ।

उत्कोचः [उत्कुच्+घञ्] रिश्वत—उत्कोचमिव ददती —का० २३२ याज्ञ० १।३३८।

उत्कोचकः [उत्कोच्+कन्] 1. घूस, रिश्वत 2. (वि०) [उद्+कुच्+ण्वुल्] रिश्वतखोर, घूस लेने वाला —मनु० ९।२५८।

उत्क्रमः [उद्+क्रम्+घञ्] 1. ऊपर जाना, बाहर निकलना, प्रस्थान 2. क्रमोन्नति 3. विचलन, अतिक्रमण, उल्लंघन।

उत्क्रमणम् [उद्+क्रम्+ल्युट्] 1. ऊपर जाना, बाहर निकलना, प्रस्थान 2. चढ़ाई 3. पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना 4. (शरीर में से) आत्मा का पलायन अर्थात् मृत्यु—मनु० ६।६३।

उत्क्रान्तिः (स्त्री०) [उद्+क्रम्+क्तिन्] 1. बाहर निकलना, ऊपर जाना, कूच करना 2. आगे बढ़ जाना 3. उल्लंघन, अतिक्रमण।

उत्क्रामः [उत्+क्रम्+घञ्] 1. ऊपर या बाहर जाना, प्रस्थान करना 2. आगे बढ़ जाना 3. उल्लंघन अतिक्रमण।

उत्क्रोशः [उद+क्रुश्+अच्] 1. हल्ला-गुल्ला, गुलगपाड़ा 2. घोषणा 3. कुररी।

उत्क्लेदः [उद्+क्लिद्+घञ्] आर्द्र या तर होना।

उत्क्लेशः [उद्+क्लिश्+घञ्] 1. उत्तेजना, अशान्ति

2. शरीर का ठीक हालत में न रहना 3. रोग, विशेषकर सामुद्रिक रोग।

उत्क्षिप्त (भू० क० कृ०) [उद्+क्षिप्+क्त] 1. ऊपर को फेंका हुआ, उछाला हुआ, उठाया हुआ 2. पकड़ा हुआ, सहारा दिया हुआ, 3. ग्रस्त, अभिभूत, आहत—विस्मय°—रत्ना०, 4. गिराया हुआ, ध्वस्त, —**प्तः** धतूरा, धतूरे का पौधा।

उत्क्षिप्तिका [उत्क्षिप्त+कन्+टाप् इत्वम्] चन्द्रकला के आकार का कान का आभूषण।

उत्क्षेपः [उद्+क्षिप्+घञ्] 1. फेंकना, उछालना —पक्ष्मोत्क्षेप—मेघ० ४९, 2. जो ऊपर फेंका या उछाला जाय—विन्दूत्क्षेपान् पिपासुः—मालवि० २।१३ 3. भेजना, प्रेषित करना 4. वमन करना।

उत्क्षेपक (वि०) [उद्+क्षिप्+ण्वुल्] ऊपर फेंकने या उछालने वाला, उन्नत करने वाला या ऊपर उठाने वाला—याज्ञ० २।२७४,—**कः** 1. कपड़े आदि चुराने वाला—वस्त्राद्युत्क्षिपत्यपहरतीत्युत्क्षेपकः—मिता० 2. भेजने वाला या आदेश देने वाला।

उत्क्षेपणम् [उद्+क्षिप्+ल्युट्] 1. ऊपर फेंकना, उठाना या उछालना—अतिमात्रलोहिततलौ बाहू घटोत्क्षेपणात् —श० १।३० 2. वैशेषिकों के मतानुसार पाँच कर्मों में से एक कर्म 'उत्क्षेपण' 3. वमन करना 4. भेजना, प्रेषित करना 5. (अनाज साफ करने के लिए) छाज 6. पंखा।

उत्खचित (वि०) [उद्+खच्+क्त] मिलाकर गुंथा हुआ, बुना हुआ या जड़ा हुआ—कुसुमोत्खचितान् वलीभृतः—रघु० ८।५३, १३।५४।

उत्खला [उद्+खल्+अच्+टाप्] एक प्रकार का सुगन्ध।

उत्खात (भू० क० कृ०) [उद्+खन्+क्त] 1. खोदा हुआ, खोद कर निकाला हुआ 2. उद्धृत, बाहर निकाला हुआ—उत्तर० ३ 3. जड़ से उखाड़ा हुआ, जड़ समेत तोड़ा हुआ (शा०),—लीला°—उत्तर० ३।१६ 4. (आलं०) (क) उन्मूलित, बिल्कुल नष्ट किया हुआ, ध्वस्त—किमुत्खातं नन्दवंशस्य—मुद्रा० १, °लवणो मधुरेश्वरः प्राप्तः—उत्तर० ७, (ख) पदच्युत, अधिकार या शक्ति से वंचित किया हुआ—फलैः संवर्धयामासुरुत्खातप्रतिरोपिताः—रघु० ४।३७ (यहाँ 'उत्खात' का अर्थ 'उन्मूलित' भी है),—**तम्** एक गर्त, रन्ध्र, ऊबड़-खाबड़ भूमि। सम०—**केलिः** (स्त्री०) खेल-खेल में सींग या दांत से धरती खोदना—उत्खातकेलिः शृंगाद्यैर्वप्रक्रीड़ा निगद्यते।

उत्खातिन् (वि०) [उत्खात+इनि] विषम, ऊँची-नीची, विषम (विप० **'सम'**)—उत्खातिनी भूमिरिति मया रश्मिसंयमनाद्रथस्य मन्दीकृतो वेगः—श० १।

उत्त (वि०) [उन्द्+क्त] आर्द्र, गीला।

उत्तंसः [उद्+तंस्+अच्] 1. शिखा, मोर का चूड़ा, मुकुट के ऊपर धारण किया जाने वाला आभूषण —उत्तंसानहरत वारि मूर्धजेभ्यः—शि० ८।५७—तु० 'कर्णोत्तंस' 2. कान का आभूषण—मा० ५।१८, भामि० २।५५।

उत्तंसित (वि०) [उत्तंस+इतच्] 1. कानों में आभूषण पहने हुए 2. शिखा में धारण किया हुआ—भर्तृ० ३।१२९।

उत्तट (वि०) [उत्क्रान्तः तटम्—अत्या० स०] किनारे के बाहर निकल कर बहने वाला—रघु० ११।५८।

उत्तप्त (भू० क० कृ०) [उद्+तप्+क्त] जलाया हुआ, गरम किया हुआ, झुलसाया हुआ—°कनक —का० ४३,—**प्तम्** सूखा माँस।

उत्तम (वि०) [उद्+तमप्] 1. सर्वोत्तम, श्रेष्ठ (बहुधा समास में) द्विजोत्तम—इसी प्रकार सुर° आदि—प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते—भर्तृ० २।६७, 2. प्रमुख, सर्वोच्च, उच्चतम, 3. उन्नततम, मुख्य, प्रधान 4. सबसे बड़ा, प्रथम, मनु० २।२४९,—**मः** 1. विष्णु 2. अन्तिम पुरुष (अंग्रेजी में इसी 'उत्तम पुरुष' को प्रथम पुरुष कहते हैं),—**मा** श्रेष्ठ महिला। सम०—**अङ्गम्** शरीर का श्रेष्ठ अंग, सिर, —कश्चिद् द्विषत्खड्गहृतोत्तमाङ्गः—रघु० ७।५१, मनु० १।९३, ८।३०० कु० ७।४१, भग० ११।२७,—**अधम** (वि०) ऊँचा-नीचा °**मध्यम**, अच्छा, बीच के दर्जे का, और बुरा,—**अर्धः** 1. बढ़िया आधा 2. अन्तिम आधा,—**अहः** अंतिम या बाद का दिन, अच्छा दिन, भाग्यशाली दिन,—**ऋणः**,—**ऋणिकः** (उत्तमर्णः) उधार देने वाला, साहूकार (विप० **'अधमर्ण'**),—**पदम्** ऊँचा पद,—**पु(पू)रुषः** 1. क्रिया के रूपों में अन्तिम पुरुष (अंग्रेजी वाक्यरचना के अनुसार प्रथम पुरुष) 2. परमात्मा 3. श्रेष्ठ पुरुष,—**श्लोक** (वि०) उत्तम ख्याति का, श्रीमान्, यशस्वी, सुविख्यात,—**संग्रहः** (°स्त्री°) पर-स्त्री के साथ सांठ-गांठ अर्थात् प्रेम संबंधी बातें करना,—**साहसः**,—**सम्** उच्चतम आर्थिक दण्ड, १००० पण का दण्ड (कुछ औरों के मतानुसार ८००००)।

उत्तमीय (वि०) [उत्तम+छ] सर्वोच्च, उच्चतम, सर्वश्रेष्ठ, प्रधान।

उत्तम्भः,—**भनम्** [उद्+स्तम्भ्+घञ्, ल्युट् वा] 1. संभालना, थामे रखना, सहारा देना—भुवनोत्तम्भनस्तम्भान्—का० २६०, 2. थूनी, टेक, सहारा 3. रोकना, गिरफ्तार करना।

उत्तर (वि०) [उद्+तरप्] 1. उत्तर दिशा में पैदा होने वाला, उत्तरीय (सर्व० की भांति रूप रचना) 2. उच्चतर, अपेक्षाकृत ऊँचा (विप० **'अधर'**)—अवनतोन्नरं कायम्—रघु० ९।६० 3. (क) बाद का, दूसरा, अनुवर्ती, उत्तरवर्ती (विप० **पूर्व**) पूर्व मेघः —उत्तर मेघः—°मीमांसा, उत्तरार्धः आदि—°राम-

चरितम् (ख) आगामी, उपसंहारात्मक 4. बायां (विप० दक्षिणं) 5. बढ़िया, मुख्य, श्रेष्ठ 6. अपेक्षाकृत अधिक, से अधिक (बहुधा संख्याओं से युक्त समस्त पदों में अन्तिम खंड के रूप में प्रयुक्त)—षड्नुत्तरा विंशतिः=२६, अष्टोत्तरं शतम् १०८, 7. से युक्त या सहित, पूर्ण, मुख्यतया…से युक्त, से अनुगत (समास के अन्त में)—राज्ञां तु चरितार्थता दुःखोत्तरैव श० ५, अस्रोत्तरमीक्षितां—कु० ५।६१ 8. पार किया जाना,—रः 1. आगामी समय, भविष्यत्काल 2. विष्णु 3. शिव 4. विराट राजा का पुत्र,—रा 1. उत्तर दिशा—अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा—कु० १।१ 2. एक नक्षत्र 3. विराट राजा की पुत्री और अभिमन्यु की पत्नी,—रम् 1. जवाब,—प्रचक्रमे च प्रतिवक्तुमुत्तरम् —रघु० ८।४७,—उत्तरादुत्तरं वाक्यं वदतां संप्रजायते —पंच० १।६० 2. (विधि में) प्रतिवाद, प्रत्युक्ति 3. समास का अंतिम पद 4. (मीमांसा में) अधिकरण का चौथा अंग—उत्तर 5. उपसंहार 6. अवशेष, अवशिष्ट 7. अधिकता, आवश्यकता से ऊपर, दे० ऊपर उत्तर (वि०) 8. अवशेष, अन्तर (गणित में), —रम् (अव्य०) 1. ऊपर 2. बाद में—तत उत्तरम्, इत उत्तरम् आदि। सम०—अधर (वि०) उच्चतर और निम्नतर (आलं० भी),—अधिकारः,—रिता, —स्वम् सम्पत्ति में अधिकार, विरासत, बपौती —अधिकारिन् (पुं०) किसी के बाद उसकी संपत्ति पाने का हक़दार,—अयनम् (°यणम् न को ण हो गया) 1. सूर्य की (भूमध्य रेखा से) उत्तर की ओर गति भग० ८।२४ 2. मकर से कर्क संक्रान्ति तक का काल, —अर्धम् 1. शरीर का ऊपरी भाग 2. उत्तरी भाग 3. दूसरा आधा—उत्तरार्ध (विप० 'पूर्वार्ध'),—अहः आगामी दिन,—आभासः मिथ्या उत्तर,—आशा उत्तर दिशा, °अधिपतिः,—पतिः कुबेर का विशेषण,—आषाढा २१ वाँ नक्षत्र जिसमें तीन तारों का पुंज है,—आसंगः ऊपर पहनने का वस्त्र—कृतोत्तरासंगं-का० ४३, शि० २।१९, कु० ५।१६,—इतर (वि०) उत्तर से भिन्न अर्थात् दक्षिणी,(—रा) दक्षिण-दिशा,—उत्तर (वि०) 1. अधिक और अधिक, उच्चतर और उच्चतर 2. क्रमागत, लगातार वर्धनशील—°स्नेहेन दृष्टिः —पंच० १, याज्ञ० २।१३६ (—रम्) प्रत्युत्तर, उत्तर का उत्तर—अलमुत्तरोत्तरेण—मुद्रा० ३,—ओष्ठः ऊपर का होठ(उत्तरो—रौ-ष्ठः),—काण्डम् रामायण का सातवाँ काण्ड,—कायः शरीर का ऊपरी भाग—रघु० ९।६०, —कालः भविष्यत्काल,—कुरु (पुं० ब० व०) संसार के ९ भागों में से एक, उत्तरी कुरुओं का देश,—कोसलाः (पुं० ब० व०) उत्तरी कोशल देश—पितुरनन्तरमुत्तरकोसलान्—रघु० ९।१,—क्रिया अन्त्येष्टि संस्कार, और्ध्वदेहिक श्राद्धादिक कर्म,—छदः बिस्तर की चादर, बिछावन (सामान्य)—रघु० ५।६५, १७।२१,—ज (वि०) बाद में पैदा होने वाला,—ज्योतिषाः (पुं० ब० व०) उत्तरी ज्योतिष प्रदेश,—दायक (वि०) जो आज्ञाकारी न हो, जवाब देने वाला, धृष्ट,—दिश् (स्त्री०) उत्तर दिशा °ईशः,—पालः उत्तर दिशा का पालक या स्वामी कुबेर,—पक्षः 1. उत्तरी कक्ष 2. चांद्रमास का कृष्ण पक्ष 3. किसी विषय का द्वितीय पक्ष—अर्थात् उत्तर, उत्तर में प्रस्तुत तर्क बहस का जवाब सिद्धान्त पक्ष (विप० 'पूर्वपक्ष')—प्रापयन् पवन व्याधेर्गिरमुत्तरपक्षताम्—शि० २।१५ 4. प्रदर्शन की गई सचाई या उपसंहार 5. अनुमान की प्रक्रिया में गौण उक्ति 6. (मी० में) अधिकरण का पाँचवाँ अंग (सदस्य),—पटः 1. ऊपर पहनने का वस्त्र 2. बिछावन या उत्तरच्छद,—पथः उत्तरी मार्ग, उत्तर दिशा को ले जाने वाला मार्ग,—पदम् 1. समास का अन्तिम पद 2. समास में दूसरे शब्द के साथ जोड़ा जाने वाला शब्द,—पश्चिमा उत्तर-पश्चिम दिशा,—पादः कानूनी अभियोग का दूसरा भाग, दावे का जवाब,—पुरुषः =उत्तम पुरुषः,—पूर्वा उत्तर-पूर्व दिशा,—प्रच्छदः रज़ाई का खोल या उच्छाल, रज़ाई,—प्रत्युत्तरम् 1. तर्क-वितर्क, वाद-विवाद, प्रत्यारोप 2. कानूनी मुक़दमें में पक्ष-समर्थन,—फ (फा) ल्गुनी १२ वाँ नक्षत्र जिसमें दो तारों का पुंज होता है,—भाद्रपद्—दा २६ वाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे रहते हैं,—मीमांसा बाद में प्रणीत मीमांसा—वेदान्त दर्शन (मीमांसा—जिसे प्रायः पूर्व मीमांसा कहते हैं—से भिन्न),—लक्षणम् वास्तविक उत्तर का संकेत,—वयसं,-स् (नपुं०) वृद्धावस्था, जीवन का ह्रासमान काल,—वस्त्रं—वासस् (नपुं०) ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र, दुपट्टा, चोगा या अंगरखा, —वादिन् (पुं०) प्रतिवादी, मुद्दआलह,—साधक सहायक, मददगार।

उत्तरङ्ग (वि०) [ब० स०] 1. तरंगित, जलप्लावित, क्षुब्ध —मुद्रा० ६।३, 2. उछलती हुई लहरों वाला—रघु० ७।३६, कु० ३।४८।

उत्तरतः,—रात् (अव्य०)[उत्तर+तस्, आति वा] 1. उत्तर से, उत्तर दिशा तक 2. बाईं ओर को (विप० दक्षिणतः) 3. पीछे 4. बाद में।

उत्तरत्र (अव्य०) [उत्तर+त्रल्] पश्चात्, बाद में, फिर, नीचे (किसी रचना में), अन्तिम रूप में।

उत्तराहि (अव्य०) [उत्तर+आहि] उत्तर दिशा की ओर, (अपा० के साथ) के उत्तर में,—भट्टि० ८।१०७।

उत्तरीयम्—यकम् [उत्तर+छ, वा कप्] ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र।

उत्तरेण (अव्य०) [उत्तर+एनप्] (संबं०, कर्म० के साथ अथवा समास के अन्त में) उत्तर की ओर,…के उत्तर दिशा की ओर—तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम्—मेघ० ७७ अने० पा०, मा० ९।२४।

उत्तरेद्युः (अव्य०) [उत्तर+एद्युस्] अगले दिन, आगामी दिन, कल।

उत्तर्जनम् [उद्+तर्ज्+ल्युट्] जबरदस्त झिड़की।

उत्तान (वि०) [उद्गतस्तानो विस्तारो यस्मात्—ब० स०] 1. पसारा हुआ, फैलाया हुआ, विस्तार किया हुआ, प्रसृत किया हुआ—उत्तर० ३।२३, 2. (क) चित लेटा हुआ—मा० ३,—उत्तानोच्छूनमंडूकपाटितोदर संनिभे—काव्य० ७, (ख) सीधा, खड़ा 3. खुला 4. स्पष्ट, निष्कपट, खरा—स्वभावोत्तानहृदयं श० ५, स्पष्टवक्ता 5. नतोदर 6. छिछला। सम०—पादः एक राजा, ध्रुव का पिता, °जः ध्रुव (उत्तानपाद का पुत्र), ध्रुव तारा,—शय (वि०) पीठ के बल सोता हुआ, चित लेटा हुआ—कदा उत्तानशयः पुत्रकः जनयिष्यति मे हृदयाह्लादम्—का० ६२, (—यः,—या) छोटा बच्चा, दूध-पीता या दुधमुँहा बच्चा, शिशु।

उत्तापः [उद्+तप्+घञ्] 1. भारी गर्मी, जलन 2. कष्ट, पीडा 3. उत्तेजना, जोश।

उत्तारः [उद्+तॄ+घञ्] 1. परिवहन, वहन 2. घाट उतरना 3. तट पर लगना, तट पर उतारना 4. मुक्ति पाना 5. वमन करना।

उत्तारकः [उद्+तॄ+णिच्+ण्वुल्] 1. उद्धारक, बचाने वाला 2. शिव।

उत्तारणम् [उद्+तॄ+णिच्+ल्युट्] उतारना, उद्धार करना, बचाना,—णः विष्णु।

उत्ताल (वि०) [अत्या० स०] 1. बड़ा, मजबूत 2. प्रबल, घोर—शि० १२।३१ 3. दुर्धर्ष, भयानक, भीषण—उत्तालास्त इमे गभीरपयसः पुण्याः सरित्सङ्गमाः—उत्तर० २।३०, शि० २०।६८, मा० ५।११, २३, 4. दुष्कर, कठिन 5. उन्नत, उत्तुंग, ऊंचा—शि० ३।८,—लः लंगूर।

उत्तुङ्ग (वि०) [प्रा० स०] उच्च, ऊँचा, लंबा—करप्रचेयामुत्तुङ्गः प्रभुशक्तिं प्रथीयसीम्—शि० २।८९, °हेमपीठानि २।५।

उत्तुषः [उद्गतः तुषोऽस्मात्—ब० स०]—भूसी से पृथक् किया हुआ या भुना हुआ (लाजा) अन्न।

उत्तेजक (वि०) [उद्+तिज्+णिच्+ण्वुल्] 1. भड़काने वाला, उकसाने वाला, उद्दीपक—क्षुध्°, काम° आदि।

उत्तेजनम्,—ना [उद्+तिज्+णिच्+ल्युट्, युज् वा] 1. जोश दिलाना, भड़काना, उकसाना—°समर्थैः श्लोकैः—मुद्रा० ४, महावी० २, 2. ढकेलना, हाँकना 3. भेजना, प्रेषित करना 4. तेज करना, धार लगाना, (शस्त्रादिक) चमकाना 5. बढ़ावा देना, प्रोत्साहन देना।

उत्तोरण (वि०) [ब० स०] उठी हुई या खड़ी मेहराबों आदि से सजा हुआ—उत्तोरणं राजपथं प्रपेदे—कु० ७। ६३, रघु० १४।१०।

उत्तोलनम् [उद्+तुल्+णिच्+ल्युट्] ऊपर उठाना, उभारना।

उत्यागः [उद्+त्यज्+घञ्] 1. तिलांजलि देना, छोड़ देना 2. फेंकना, उछालना 3. सांसारिक वासनाओं से संन्यास।

उत्त्रासः [उद्+त्रस्+घञ्] अत्यन्त भय, आतंक।

उत्थ (वि०) [उद्+स्था+क] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त) 1. से पैदा या उत्पन्न, उदय होने वाला, जन्म लेने वाला—दरीमुखोत्थेन समीरणेन कु० १।८, ६।५९, रघु० १२।८२ 2. ऊपर उठता हुआ, ऊपर आता हुआ।

उत्थानम् [उद्+स्था+ल्युट्] 1. उदय होने या ऊपर उठने की क्रिया, उठना—शनैर्यष्ट्युत्थानम्—भर्तृ० ३।९, 2. (नक्षत्रादिक का) उदय होना—रघु० ६।३१ 3. उद्गम, उत्पत्ति 4. मृतोत्थान 5. प्रयत्न, प्रयास, चेष्टा—मेदश्छेदकृशोदरं लघुभवत्युत्थानयोग्यं वपुः श० २।५, यद्युत्थानं भवेत्सह—मनु० ९।२१५, (धन के लिए) प्रयत्न, सम्पत्ति-अभिग्रहण 6. पौरुष 7. हर्ष, प्रसन्नता 8. युद्ध, लड़ाई 9. सेना 10. आँगन, यज्ञमंडप 11. अवधि, सीमा, हद 12. जागना,—एकादशी देव-उठनी कार्तिक-सुदी एकादशी, विष्णुप्रबोधिनी।

उत्थापनम् [उद्+स्था+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1. उठाना खड़ा करना, जगाना 2. उभारना, उन्नत करना, 3. उत्तेजित करना, भड़काना 4. जगाना, प्रबुद्ध करना (आलं० भी) 5. वमन करना।

उत्थित (भू० क० कृ०) [उद्+स्था+क्त] 1. उदित, या (अपने आसन से) उठा हुआ—वचो निगम्योत्थितमुत्थितः सन्—रघु० २।६१, ७।१०, ३।६१, कु० ७।६१, 2. उठाया हुआ, ऊपर गया हुआ—शि० ११।३, 3. जात, उत्पन्न, उद्गत,—उदितवचः—रघु० २।६१; फूट पड़ा (जैसा कि आग) 4. बढ़ता हुआ, वर्धनशील (बल में), प्रगति करता हुआ 5. सीमा-बद्ध 6. विस्तृत, प्रसृत—श० ४।४। सम०—अंगुलिः फैलाई हुई हथेली।

उत्थितिः (स्त्री०) [उद्+स्था+क्तिन्] उन्नति, ऊपर उठना।

उत्पक्ष्मन् (वि०) [ब० स०] उलटी पलकों वाला—उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिम्—श० ४।१५, विक्रम० २।

उत्पतः [उद्+पत्+अच्] पक्षी।

उत्पतनम् [उद्+पत्+ल्युट्] 1. ऊपर उड़ना, उछलना 2. ऊपर उठना या जाना, चढ़ना।

उत्पताक (वि०) [उत्तोलिता पताका यत्र—ब. स०] झंडा

ऊपर उठाए हुए, जहाँ झंडे फहरा रहे हों—पुरंदरश्रीः पुरमुत्पताकम्—रघु० २।७४।

उत्पतिष्णु (वि०) [उद्+पत्+इष्णुच्] उड़ता हुआ, ऊपर जाता हुआ।

उत्पत्तिः (स्त्री०) [उद्+पद्+क्तिन्] 1. जन्म—विपदुत्पत्तिमतामुपस्थिता—रघु० ८।८३, 2. उत्पादन,—कुसुमे कुसुमोत्पत्तिः श्रूयते न तु दृश्यते—शृंगार० १७, 3. स्रोत, मूल—उत्पत्तिः साधुतायाः—का० ४५, 4. उठना, ऊपर जाना, दिखाई देना 5. लाभ, उपजाऊपन, पैदावार। सम०—**व्यंजकः** जन्म का एक प्रकार (उपनयन संस्कार करके या यज्ञोपवीत पहना कर छात्र को दीक्षित करना), द्विजत्व का चिह्न—मनु० २।६८।

उत्पथः [उत्क्रान्तः पन्थानम्—प्रा० स०] कुमार्ग (आलं० भी)—गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः, उत्पथप्रतिपन्नस्य न्याय्यं भवति शासनम्। महा०, (परित्यागो विधीयते—पंच० १।३०६,) शि० १२।२४, —**थम्** (अव्य०) कुमार्ग पर, पथभ्रष्ट (भूला-भटका)।

उत्पन्न (भू० क० कृ०) [उद्+पद्+क्त] 1. जात, पैदा हुआ, उदित 2. उठा हुआ, ऊपर गया हुआ 3. अवाप्त।

उत्पल (वि०) [उत्क्रान्तः पलं मांसम्—उद्+पल्+अच्] मांसहीन, क्षीण, दुबला-पतला,—**लम्** 1. नील कमल, कमल, कुमुद—नवावतारं कमलादिवोत्पलम्—रघु० ३।३६, १२।८६, मेघ० २६, नीलोत्पलपत्रधारया—श० १।१८, इसी प्रकार—रक्त° 2. सामान्यतः पौधा। सम०—**अक्षः,—चक्षुस्** (वि०) कमल जैसी आँखों वाला,—**पत्रम्** 1. कमल का पत्ता 2. किसी स्त्री के नाखून से की गई खरोंच, नखक्षत।

उत्पलिन् (वि०) [उत्पल+इनि] कमलों से भरपूर,—**नी** 1. कमलों का समूह, 2. कमल का पौधा जिसमें कमल लगे हों।

उत्पवनम् [उद्+पू+ल्युट्] मार्जन करना, शोधन करना—मनु० ५।११५।

उत्पाटः [उद्+पट्+णिच्+घञ्] 1. मूलोच्छेदन, उन्मूलन 2. बाह्य कान में शोथ।

उत्पाटनम् [उद्+पट्+णिच्+ल्युट्] उखाड़ना, मूलोच्छेदन, उन्मूलन।

उत्पाटिका [उद्+पट्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] वृक्ष की छाल।

उत्पाटिन् (वि०) [उद्+पट्+णिच्+णिनि] (बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त) मूलोच्छेदन करने वाला, फाड़ने वाला—कीलोत्पाटीव वानरः—पंच० १।२१।

उत्पातः [उद्+पत्+घञ्] 1. उड़ान, छलांग, कूदना—एकोत्पातेन—एक छलांग में 2. उलट कर आना, ऊपर उठना (आलं० भी)—करनिहतकन्दुकसमाः पातोत्पाता मनुष्याणाम्—हि० १, अने० पा० 3. अनहोनी, संकटसूचक अशुभ या आकस्मिक घटना,—उत्पातेन ज्ञापिते च—वार्ति०, वेणी० १।२२, सापि सुकुमारसुभगेत्युत्पातपरंपरा केयम्—काव्य० १० 4. कोई सार्वजनिक संकट (ग्रहण, भूचाल आदि), °केतु—का० ५, °धूमलेखाकेतु—मा० ९।४८। सम०—**पवनः,—वातः,—वातालिः** अनिष्टसूचक या प्रचण्ड वायु, बवंडर या आंधी—रघु० १५।२३।

उत्पाद (वि०) [ब० स०] जिसके पैर ऊपर उठे हों,—**दः** जन्म, उत्पत्ति, प्रादुर्भाव—दुःखे च शोणितोत्पादे शाखाङ्गछेदने तथा—याज्ञ० २।२२५, °भङ्गुरम्—पंच० २।१७७। सम०—**शयः,—यनः** 1. बच्चा 2. एक प्रकार का तीतर।

उत्पादक (वि०) (स्त्री०—**दिका**) [उद्+पद्+णिच्+ण्वुल्, स्त्रियां टाप् इत्वं च] उपजाऊ, फलोत्पादक, पैदा करने वाला,—**कः** पैदा करने वाला, जनक पिता,—**कम्** उद्गम, कारण।

उत्पादनम् [उद्+पद्+णिच्+ल्युट्] जन्म देना, पैदा करना, जनन—उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम् मनु० ९।२७।

उत्पादिका [उद्+पद्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. एक प्रकार का कीड़ा, दीमक 2. माता।

उत्पादिन् (वि०) [उद्+पद्+णिच्+णिनि] पैदा हुआ, जात—सर्वमुत्पादि भङ्गुरम्—हि० १।२०८।

उत्पाली [उद्+पल्+घञ्+ङीप्] स्वास्थ्य।

उत्पिंजर-ल (वि०) [अ०ग० स०] 1. मुक्त, जो पिंजड़े में बन्द न हो 2. क्रमहीन, अव्यवहित।

उत्पीडः [उद्+पीड्+घञ्] 1. दबाव 2. (क) धाराप्रवाह, धाराप्रवाही बहाव—बाष्पोत्पीडः—का० २९६—उत्पीड इव धूमस्य मोहः प्रागावृणोति माम्—उत्तर० ३।९, नयनसलिलोत्पीडरुद्धावकाशाम्—मेघ० ९१ (ख) उत्प्रवाह, आधिक्य,—पूरोत्पीडे तडागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया—उत्तर० ३।२९ 3. झाग, फेन।

उत्पीडनम् [उद्+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1. दबाना, निचोड़ना 2. पेलना, आघात करना—का० ८२।

उत्पुच्छ (वि०) [ब० स०] जिसकी पूंछ ऊपर उठी हो।

उत्पुलक (वि०) [ब० स०] 1. रोमांचित, जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों 2. हर्षोत्फुल्ल, प्रसन्न।

उत्प्रभ (वि०) [ब० स०] प्रकाश बखेरने वाला,—प्रभापूर्ण,—**भः** दहकती हुई आग।

उत्प्रसवः [उद्+प्र+सू+अच्] गर्भपात।

उत्प्रासः-सनम् [उद्+प्र+अस्+घञ्, ल्युट् वा] 1 फेंकना, पटकना 2. मजाक, मखौल 3. अट्टहास 4. खिल्ली उड़ाना, उपहास करना, व्यंग्योक्ति।

उत्प्रेक्षणम् [उद्+प्र+ईक्ष्+ल्युट्] 1. दृष्टिपात करना,

प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना 2. ऊपर की ओर देखना 3. अनुमान, अटकल 4. तुलना करना।

उत्प्रेक्षा [उद्+प्र+ईक्ष+अ] 1. अटकल, अनुमान 2. उपेक्षा, उदासीनता 3. (अलं० शा० में) एक अलंकार जिसमें उपमान और उपमेय को कई बातों में समान समझने की कल्पना की जाती है, और उस समानता के आधार पर उनके एकत्व की संभावना की ओर स्पष्ट रूप से या किसी तात्पर्यार्थ के द्वारा संकेत किया जाता है—उदा० लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः—मृच्छ० १।३४ स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः—कु० १।१, तु० सा० द० ६८६-९२, और उत्प्रेक्षा के प्रसंग में रस०।

उत्प्लवः [उद्+प्लु+अप्] उछल-कूद, छलांग,—वा किश्ती।

उत्प्लवनम् [उद्+प्लु+ल्युट्] कूदना, उछलना, ऊपर से छलांग लगाना।

उत्फलम् [प्रा० स०] उत्तम फल।

उत्फालः [उद्+फल्+घञ्] 1. कूद, छलांग, द्रुतगति—मृच्छ० ६, 2. कूदने की स्थिति।

उत्फुल्ल (भू० क० कृ०) [उद्+फुल्+क्त] 1. खुला हुआ, (फूल की भांति) खिला हुआ 2. खूब खुला हुआ, प्रसारित, विस्फारित (आंखें) 3. सूजा हुआ, शरीर में फूला हुआ 4. पीठ के बल सोया हुआ, तु० उत्तान,—ल्लम् योनि, भग।

उत्सः [उनत्ति जलेन, उन्द्+स किच्च नलोपः] 1. झरना, फौवारा 2. जल का स्थान।

उत्सङ्गः [उद्+सञ्ज्+घञ्] 1. गोद,—पुत्रपूर्णोत्सङ्गा—उत्तर० १, विक्रम० ५।१० न केवलमुत्सङ्गश्चिरान्मनोरथोऽपि मे पूर्णः—उत्तर० ४, मेघ० ८७ 2. आलिंगन, संपर्क, संयोग—मा० ८।६, 3. भीतर, पड़ोस—दरीगृहोत्सङ्गनिषक्तभासः—कु० १।१०, शय्योत्सङ्गे—मेघ० ९३ 4. सतह, पार्श्व, ढाल—दृषदो वासितोत्सङ्गाः—रघु० ४।७४, १४।७६ 5. नितंब के ऊपर का भाग या कूल्हा 6. ऊपरी भाग, शिखर 7. पहाड़ की चढ़ाई—तुङ्गं नगोत्सङ्गमिवारुरोह—रघु० ६।३ 8. घर की छत।

उत्सङ्गित (वि०) [उत्सङ्ग+इतच्] 1. संयुक्त सम्मिलित, संपर्क में लाया हुआ—शि० ३।७९, 2. गोद में लिया हुआ।

उत्सञ्जनम् [उद्+सञ्ज्+ल्युट्] ऊपर को फेंकना, ऊपर उठाना।

उत्सन्न (भू० क० कृ०) [उद्+सद्+क्त] 1. सड़ा हुआ 2. नष्ट, बर्बाद, उखाड़ा हुआ, उजाड़ा हुआ—उत्सन्नोऽस्मि—का० १६४, बर्बाद—मकरध्वज इवोत्सन्नविग्रहः—का० ५४, भग० १।४४ °निद्रा—का० १७१, 3. अभिशप्त, आफत का मारा 4. व्यवहार में न आने वाला, विलुप्त (पुस्तकादिक)।

उत्सर्गः [उद्+सृज्+घञ्] 1. एक ओर रख देना, छोड़ देना, तिलांजलि देना, स्थगन—कु० ७।४५, 2. उडेलना, गिरा देना, निकालना—तोयोत्सर्गद्रुततरगतिः मेघ० १९।३७ 3. उपहार, दान, प्रदान—मनु० ११।९४ 4. व्यय करना 5. ढीला करना, खुला छोड़ देना—जैसा कि 'वृषोत्सर्ग' में 6. आहुति, तर्पण 7. विष्ठा, मल आदि—पुरीष°, मलमूत्र° 8. पूर्ति (अध्ययन या व्रतादिक की) तु०—उत्सृष्टा वै वेदाः 9. सामान्य नियम या विधि (विप० अपवाद—एक विशेष नियम)—अपवादैरिवोत्सर्गाः कृतव्यावृत्तयः परैः—कु० २।२७. अपवाद इवोत्सर्गं व्यावर्तयितुमीश्वरः—रघु० १५।७ 10. गुदा।

उत्सर्जनम् [उद्+सृज्+ल्युट्] 1. त्याग, तिलांजलि देना, ढीला करना, मुक्त करना आदि 2. उपहार, दान 3. वेदाध्ययन का स्थगन 4. इस स्थगन से संबद्ध एक पाण्मासिक संस्कार—वेदोत्सर्जनाख्यं कर्म करिष्ये—श्रावणी मंत्र—मनु० ४।९६।

उत्सर्पः,—सर्पणम् [उद्+सृप्+घञ्, ल्युट् वा] 1. ऊपर को जाना या सरकना 2. फूलना, हाँफना।

उत्सर्पिन् (वि०) [उद्+सृप्+णिनि] 1. ऊपर को जाने या सरकने वाला, उठने वाला—रघु० १६।६२, 2. उड़ने वाला, प्रोन्नत—उत्सर्पिणी खलु महतां प्रार्थना—श० ७।

उत्सवः [उद्+सू+अप्] 1. पर्व, हर्ष या आनन्द का अवसर, जयन्ती,—रत° श० ६।१९, तांडव° आनन्द या हर्षनृत्य, उत्तर० ३।१८ मनु० ३।५९ 2. हर्ष, प्रमोद, आमोद—स कृत्वा विरतोत्सवान्—रघु० ४।१७, १६।१०, पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्—कि० १।४१, 3. ऊँचाई, उन्नति 4. रोष 5. कामना, इच्छा। सम०—संकेताः (पु० ब० व०) एक जाति, हिमालय स्थित एक जंगली जाति—शरैरुत्सवसंकेतान् स कृत्वा विरतोत्सवान्—रघु० ४।७८।

उत्सादः [उद्+सद्+णिच्+घञ्] नाश, अपक्षय, बर्बादी, हानि—गीतमुत्सादकारि मृगाणाम्—का० ३२।

उत्सादनम् [उद्+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. नाश करना, उथल देना—उत्सादनार्थं लोकानां—महा०, भग० १७।१९ 2. स्थगित करना, बाधा डालना 3. शरीर पर सुगंधित पदार्थ मलना—मनु० २।२०९, २११, 4. घाव भरना 5. ऊपर जाना, चढ़ना, उठना 6. उन्नत होना, उठाना 7. खेत को भली-भांति जोतना।

उत्सारकः [उद्+सृ+णिच्+ण्वुल्] 1. आरक्षी 2. पहरेदार 3. कुली, डयोढ़ीवान।

उत्सारणम् [उद्+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. हटाना, दूर रखना, मार्ग में से हटा देना 2. अतिथि का स्वागत करना।

उत्साहः [उद्+सह्+घञ्] 1. प्रयत्न, प्रयास—धृत्युत्साह-समन्वितः—भग० १८।२६ 2. शक्ति, उमंग, इच्छा—मन्दोत्साहकृतोऽस्मि मृगयापवादिना माढव्येन—श० २, ममोत्साहभङ्गं मा कृथाः—हि० ३, मेरे उत्साह को मत तोड़ो 3. धैर्य, ऊर्जा या तेज, राजा की तीन शक्तियों में से एक (प्रभाव और मंत्र दो शक्तियाँ और हैं) कु० १।२२. 4. दृढ़ संकल्प, दृढ़ निश्चय—हसितेन भाविमरणोत्साहस्तया सूचितः—अमरु १०, 5. सामर्थ्य, योग्यता—मनु० ५।८६ 6. दृढ़ता, सहन-शक्ति, बल 7. (अलं० शा० में) दृढ़ता और सहन-शक्ति वह भावना मानी जाती है जिससे वीर रस का उदय होता है—कार्यारम्भेषु संरम्भः स्थेयानुत्साह उच्यते—सा० द० ३, परपराक्रमदानादिस्मृतिजन्मा औन्नत्याख्य उत्साहः रस० 8. प्रसन्नता। सम०—**वर्धनः** वीररस (—**नम्**) ऊर्जा या तेज की वृद्धि, शौर्य, —**शक्तिः** (स्त्री०) दृढ़ता, तेज, दे० (३) ऊपर, —**हेतुकः** (वि०) कार्य करने की दिशा में प्रोत्साहन देने वाला या उत्तेजित करने वाला।

उत्साहनम् [उद्+सह्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रयत्न, अध्यवसाय 2. उत्साह बढ़ाना, उत्तेजना देना।

उत्सिक्त (भू० क० कृ०) [उद्+सिच्+क्त] 1. छिड़का हुआ 2. घमण्डी, अहंकारी, उद्धत 3. बाढ़ग्रस्त, उमड़ता हुआ, अत्यधिक - दे० सिच् (उद्-पूर्वक) 4. चंचल, अशान्त—जानीयादस्थिरां वाचमुत्सिक्त-मनसां तथा—मनु० ८।७१।

उत्सुक (वि०) [उद्+सू+क्विप्+कन् ह्रस्वः] 1. अत्यन्त इच्छुक, उत्कण्ठित, प्रयत्नशील (करण या अधिकरण के साथ अथवा समास में)—निद्रया निद्रायां वोत्सुकः - सिद्धा०, मनोनियोगक्रिययोत्सुकं मे—रघु० २।४५, मेघ० ९९, संगम°—श० ३।१४ 2. बेचैन, उद्विग्न, आतुर—रघु० १२।२४, 3. बहुत चाहने वाला, आसक्त - वत्सोत्सुकापि—रघु० २।२२, 4. खिद्यमान, कुड़बुड़ाने वाला, शोकान्वित।

उत्सूत्र (वि०) [उत्क्रान्तः सूत्रम्—अत्या० स०] 1. डोरी से न बंधा हुआ, ढीला, (रस्सी के) बंधन से मुक्त—शि० ८।६३, 2. अनियमित 3. (पाणिनि के नियम के) विपरीत—शि० २।११२।

उत्सूरः [उत्क्रान्तः सूरं=सूर्यम्—अत्या० स०] सायंकाल, संध्या।

उत्सेकः [उद्+सिच्+घञ्] 1. छिड़काव, उड़ेलना 2. फुहार छोड़ना, बौछार करना 3. उमड़ना, वृद्धि आधिक्य—रुधिरोत्सेकाः—महावी० ५।३३ दर्प°, बल° आदि 4. घमंड, अहंकार, धृष्टता—उपदा विविशुः शश्वन्नोत्सेकाः कोसलेश्वरम्—रघु० ४।७०, अनुत्सेको लक्ष्म्याम्—भर्तृ० २।६४।

उत्सेकिन् (वि०) [उत्सेक+इनि] 1. उमड़ने वाला, अत्यधिक 2. घमंडी अहंकारी, उद्धत—भाग्येष्वनु-त्सेकिनी—श० ४।१७।

उत्सेचनम् [उद्+सिच्+ल्युट्] फुहार छोड़ना या बौछार करना।

उत्सेधः [उद्+सिध्+घञ्] 1. ऊँचाई, उन्नतता (आलं० भी)—पयोधरोत्सेधविशीर्णसंहति (वल्कलम्) कु० ५।८, २४, ऊँची या उभरी हुई छाती 2. मोटाई, मोटापा 3. शरीर,—**धम्** मारना, वध करना।

उत्स्मयः [उद्+स्मि+अच्] मुस्कराहट।

उत्स्वन (वि०) [ब० स०] ऊँची आवाज करने वाला, —**नः** [प्रा० स०] ऊँची आवाज।

उत्स्वप्नायते (ना० धा० आ०) [उद्+स्वप्न+क्यङ्] सुप्तावस्था में बोलना, बड़बड़ाना, उद्विग्नता के कारण स्वप्न आना।

उद् (उप०) [उ+क्विप्, तुक्] नाम और धातुओं से पूर्व लगने वाला उपसर्ग, गण० में निम्नांकित अर्थ उदाहरणसहित बतलाये गये हैं:—1. स्थान, पद, या शक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठता, उच्च, उद्गत, ऊपर, पर, अतिशय, ऊँचाई पर (उद्बल) 2. पार्थक्य, वियोजन, बाहर, से बाहर, से, अलग अलग आदि (उद्गच्छति) 3. ऊपर उठना (उत्तिष्ठति) 4. अभिग्रहण, उपलब्धि—(उपार्जति) 5. प्रकाशन (उच्चरति) 6. आश्चर्य, चिन्ता (उत्सुक) 7. मुक्ति—(उद्गत) 8. अनुपस्थिति (उत्पथ) 9. फूंक मारना, फुलाना, खोलना—(उत्फुल्ल) 10. प्रमुखता—(उद्दिष्ट) 11. शक्ति—(उत्साह)—संज्ञाओं के साथ लगकर इससे विशेषण और अव्ययीभाव समास बनाये जाते हैं—उर्दर्चिस्, उच्छिख, उद्बाहु, उन्निद्रम्, उत्पथम् और उद्दामम् आदि।

उदक् (अव्य०) [उद्+अञ्च्+क्विन्] उत्तर की ओर, के उत्तर में, ऊपर (अपा० के साथ)।

उदकम् [उन्द्+ण्वुल् नि० नलोपः] पानी,—अनीत्वा पङ्कतां धूलिमुदकं नावतिष्ठते—शि० २।३४,। सम०—**अन्तः** पानी का किनारा, तट, तीर—ओदकान्तात्स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते—श० ४,—**अर्थिन्** (वि०)प्यासा,—**आधारः** जलाशय, हौज, कुआँ,—**उदञ्चनः** पानी का बर्तन, सुराही, - **उदरम्** जलोदर (एक रोग जिसमें—पेट में पानी भर जाता है), —**कर्मन्**,—**कार्यम्**,—**क्रिया**,—**दानम्** मृत पूर्वजों या पितरों का जल से तर्पण करना—वृकोदरस्योदक-क्रियां कुरु—वेणी० ६, याज्ञ० ३।४,—**कुंभः** पानी का घड़ा,—**गाहः** पानी में घुसना, स्नान करना, —**ग्रहणम्** पानी पीना,—**दातृ**,—**दायिन्**, दानिक जल देने वाला (—**यः**) 1. पितरों को जल-दान करने

वाला 2. उत्तराधिकारी, बन्धु-बांधव,—**दानम्**=°कर्मन्,—**धरः** बादल,—**भारः**,—**वीवधः** पानी ढोने की बहंगी,—**वज्रः** गरज के साथ बौछार,—**शाकम्** कोई भी बनस्पति जो जल में पैदा होती है,—**शान्तिः** (स्त्री०) ज्वर दूर करने के लिए रोगी के ऊपर अभिमंत्रित जल छिड़कना—तु० शान्त्युदकम्,—**स्पर्शः** शरीर के विभिन्न अंगों पर जल के छींटे देना,—**हारः** पानी ढोने वाला कहार।

उदक(कि)ल (वि०) [उदक+लच्, इलच् वा] पनीला, रसेदार, जलमय।

उदकेचरः [अलुक् स०] जलचर, जल में रहने वाला जन्तु।

उदक्त (वि०) [उद्+अञ्च्+क्त] उठाया हुआ, ऊपर को उभारा हुआ,—उदक्तमुदकं कूपात्—सिद्धा०।

उदक्य (वि०) [उदकमर्हति—दण्डा०—उदक+यत्] जल की अपेक्षा करन वाला,—**क्या** ऋतुमती स्त्री, रजस्वला स्त्री।

उदग्र (वि०) [उद्गतमग्रं यस्य—ब० स०] 1. उन्नत शिखर वाला, उभरा हुआ, ऊपर की ओर संकेत करता हुआ, यथा—°दंत 2. लंबा, उत्तुंग, ऊँचा, उन्नत, उच्छ्रित (आलं०)—उदग्रदशनांशुभिः—शि० २।२१, ४।१९. उदग्रः क्षत्रस्य शब्दः—रघु० २।५३, उदग्रप्लुतत्वात्—श० १।७, ऊँची छलांगें 3. विपुल विशाल, विस्तृत बड़ा—अवन्तिनाथोऽयमुदग्रबाहुः—रघु० ६।३२ 4. वयोवृद्ध 5. उत्कृष्ट, पूज्य, श्रेष्ठ, अभिवृद्ध, वर्धित—स मंगलोदग्रतरप्रभावः—रघु० २।७१, ९।६४, १३।५० 6. प्रखर, असह्य (तापादिक), 7. भीषण, भयावह—संदधे दृशमुदग्रतारकाम्—रघु० ११।६९, 8. उत्तेजित प्रचण्ड, उल्लसित—मदोदग्राः ककुद्मन्तः—रघु० ४।२२।

उदङ्कः [उद्+अञ्च्+घञ्] (तेल आदि रखने के लिए) चमड़े का बर्तन, कुप्पा।

उदच्, उदञ्च् [उद्+अञ्च्+क्विप्] (पुं०—उदङ्, नपुं०—उदक्, स्त्री०—उदीची) 1. ऊपर की ओर मुड़ा हुआ, या जाता हुआ, 2. ऊपर का, उच्चतर 3. उत्तरी, उत्तर की ओर मुड़ा हुआ 4. बाद का। सम०—**अद्रिः** उत्तरी पहाड़, हिमालय,—**अयनम्** (=उत्तरायण), भूमध्यरेखा से उत्तर की ओर सूर्य की प्रगति—**आवृत्तिः** (स्त्री०) उत्तर दिशा से लौटना,—उदगावृत्तिपथेन नारदः—रघु० ८।३३,—**पथः** उत्तरी देश,—**प्रवण**। (वि०) उत्तरोन्मुख, उत्तर की ओर झुका हुआ,—**मुख** (वि०) उत्तराभिमुख, उत्तर की ओर मुंह किये हुए—उत्पतोदङ्मुखः खम्—मेघ० १४।

उदञ्चनम् [उद्+अञ्च्+ल्युट्] 1. बोका, डोल,—उदञ्चनं सरज्जु पुरः चिक्षप—दश० १३०, 2. उदय होता हुआ, चढ़ता हुआ 3. ढकना, ढक्कन।

उदञ्जलि (वि०) [ब० स०] दोनों हथेलियों को मिला कर संपुट बनाये हुए।

उदण्डपालः [अत्यो० स०] 1. मछली 2. एक प्रकार का सांप।

उदधिः दे० 'उदन्' के नीचे।

उदन् (नपुं०) [उन्द्+कनिन्=उदक इत्यस्य उदन् आदेश;] जल, (यह शब्द प्रायः समास के आरंभ या अन्त में प्रयुक्त होता है, और कर्म० के द्वि० व० के पश्चात्—'उदक' के स्थान में विकल्प से आदेश होता है, सर्वनामस्थान में इसका कोई रूप नहीं होता, समास में अन्तिम न् का लोप हो जाता है उदा० उदधि, अच्छोद, क्षीरोद आदि)। सम०—**कुंभः** जल का घड़ा—मनु० २।१८२, ३।६८,—**ज** (वि०) जलीय, पनीला,—**धानः** 1. पानी का बर्तन 2. बादल,—**धिः** 1. पानी का आशय, समुद्र—उदधेरिव निम्नगाशतेष्वभवन्नास्य विमानना क्वचित्—रघु० ८।८, 2. बादल, 3. झील, सरोवर 4. पानी का घड़ा—°**कन्या**, °**तनया**, °**सुता** समुद्र की पुत्री लक्ष्मी, °**मेखला** पृथ्वी, °**राजः** जलों का राजा अर्थात् महासागर,—**सुता** लक्ष्मी, द्वारका (कृष्ण की राजधानी),—**पात्रम्**,—**श्री** पानी का घड़ा, बर्तन,—**पानः**—**नम्** कुएँ के निकट का जोहड़ या कुआँ, °**मंडूकः** (शा०) कुएँ का मेंढक, (आलं०) अनुभवहीन, जो केवल अपने आस-पास की वस्तुओं का ही सीमित ज्ञान रखता है—तु० कूपमंडूक,—**पेषम्** लेप, लेई, पेस्ट,—**बिन्दुः** जल की बूंद कु० ५।२४,—**भारः** जल धारण करने वाला अर्थात् बादल,—**मन्थः** जौ का पानी,—**मानः**—**नम्** आढक का पचासवां भाग,—**मेघः** पानी बरसाने वाला बादल,—**लावणिक** (वि०) नमकीन या खारी,—**वज्रः** बादल की गरज के साथ बौछार, पानी की फुआर,—**वासः** जल में रहना या वसति,—सहस्यरात्रीरुदवासतत्परा—कु० ५।२७,—**वाह** (वि०) पानी लाने वाला (—**हः**) बादल,—**वाहनम्** पानी का बर्तन,—**शरावः** पानी से भरा कसोरा,—**श्वित्** [उदकेन जलेन श्वयति] छाछ, मट्ठा (जिसमें दो भाग पानी तथा एक भाग मट्ठा हो),—**हरणः** पानी निकालने का बर्तन।

उदन्तः [उद्गतोऽन्तो यस्य—ब० स०] 1. समाचार, गुप्तवार्ता, पूरा विवरण, वर्णन, इतिवृत्त—श्रुत्वा रामः प्रियोदन्तं—रघु० १२।६६, कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः सङ्गमात्किंचिदूनः—मेघ० १०० 2. पवित्रात्मा, साधु।

उदन्तकः [उदन्त+कन्] समाचार, गुप्त बातें।

उदन्तिका [उद+अन्त्+णिच्+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] संतोष, संतृप्ति।

उदन्य (वि०) [उदक+क्यच् नि० उदन् आदेशः+क्विप्] प्यासा,—**न्या** प्यास,—निर्वर्त्यतामुदन्याप्रतीकारः—वेणी० ६, भट्टि० ३।४०।

उदन्वत् (पुं०) [उदक+मतुप्, उदन् आदेशः, मस्य वः] समुद्र,—उदन्वच्छन्नाभूः—बालरा० १।८, रघु० ४।५२, ५८, १०।६, कु० ७।७३।

उदयः [उद्+इ+अच्] 1. निकलना, उगना (आलं० भी)—चंद्रोदय इवोदधेः—रघु० १२।३६, २।७३ ऊपर जाना 2. आविर्भाव, उत्पादन—घनोदयः प्राक्—श० ७।३०, फलोदय—रघु० १।५, फल का निकलना या निष्पन्न होना—कु० ३।१८ 3. सृष्टि (विप० प्रलय) कु० २।८ 4. पूर्वाद्रि (उदयाचल—जिसके पीछे से सूर्य का उदय होना माना जाता है)—उदयगूढ़शशाङ्कमरीचिभिः—विक्रम० ३।६ 5. प्रगति, समृद्धि, उदय (विप० 'व्यसन')—तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्याम्—श० ४।१, रघु० ८।८४, ११।७३, 6. उन्नयन, उत्कर्ष, उदय, वृद्धि—उदयमस्तमयं च रघूद्वहात्—रघु० ९।८९, 7. फल, परिणाम 8. निष्पन्नता, पूर्णता—उपस्थितोदयम्—रघु० ३।१, प्रारम्भसदृशोदयः १।१५, 9. लाभ, नफा 10. आय, राजस्व 11. ब्याज 12. प्रकाश, चमक। सम०—अचलः,—अद्रिः,—गिरिः,—पर्वतः,—शैलः पूर्व दिशा में होने वाला उदयाचल, जहाँ से सूर्य और चन्द्रमा का उदय होना माना जाता है—उदयगिरिवनालीबालमन्दारपुष्पम्—उद्भट, श्रितोदयाद्रेरभिसायमुच्चकैः—शि० १।१६, तत उदयगिरेरिवैक एव—मा० २।१०,—प्रस्थः उदयाचल का पठार जिसके पीछे से सूर्य का उदय होना समझा जाता है।

उदयनम् [उद्+इ+ल्युट्] 1. उगना, चढ़ना, ऊपर जाना 2. परिणाम,—नः 1. अगस्त्य मुनि 2. वत्सदेश का राजा—प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्—मेघ० ३०, (उदयन प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा था, यह वत्सराज के नाम से विख्यात है। उदयन कौशाम्बी में राज्य करता था। उज्जयिनी की राजकुमारी वासवदत्ता ने उसे स्वप्न में देखा, तथा देखते ही वह उस पर मोहित हो गई। चण्ड महासेन ने उदयन को धोखे से पकड़ लिया और कारागार में डाल दिया, परन्तु बाद में मन्त्री के द्वारा मुक्त किये जाने पर वह वासवदत्ता को उसके पिता तथा अपने प्रतिद्वन्द्वी से निकाल कर ले भागा। रत्नावली नामक नाटिका का नायक भी उदयन है। इसके जीवन की घटनाओं के आधार पर और कई रचनाएँ हो चुकी हैं) दे 'वत्स' भी।

उदरम् [उद्+दृ+अप्] 1. पेट—दुष्पूरोदरपूरणाय—भर्तृ० २।११९, तु० कृशोदरी, उदरंभरि आदि 2. किसी वस्तु का भीतरी भाग, गह्वर, तडाग°. पंच० २।१५० रघु० ५।७०, त्वां कारयामि कमलोदरबन्धनस्थम्—श० ६।१९, १।१९, अमरु ८८, 3. जलोदर रोग के कारण पेट का फूल जाना—तस्य होदरं जज्ञे—ऐत० 4. वध करना। सम०—आध्मानः पेट का फूलना,—आमयः पेचिश, अतिसार,—आवर्तः नाभि,—आवेष्टः केचुआ, फीताकृमि,—त्राणम् 1. वक्षस्त्राण या अँगिया, कवच या जिरहबख्तर जो केवल छाती पर पहना जाय 2. पेट को कसने वाली पट्टी,—पिशाचः (वि०) पेटू, खाऊ, (बहुभोजी जिसकी भूख राक्षसों जैसी होती है),(—चः) भोजनभट्ट,—पूरम् (अव्य०) जब तक पूरा पेट न भर जाय—उदरपूरं भुंक्ते—सिद्धा०, पेट भर कर खाता है,—पोषणम्,—भरणम् पेट भरना, पालन पोषण करना,—शय (वि०) पेट के बल लेट कर सोने वाला (—यः) भ्रूण,—सर्वस्वः पेटू, बहुभोजी, स्वादलोलुप, (जिसके लिए पेट ही सब कुछ है)।

उदरथिः [उद्+ऋ+थिन्] 1. समुद्र 2. सूर्य।

उदरंभरि (वि०) [उदर+भृ+इन्, मुमागमः] 1. केवल अपना पेट भरने वाला, स्वार्थी 2. पेटू, बहुभोजी।

उदरवत्,—उदरिक—ल (वि०) [उदर+मतुप् मस्य वः, उदर+ठन्, इलच् वा] बड़ी तोंद वाला, स्थूलकाय, मोटा।

उदरिन् (वि०) [उदर+इनि] बड़ी तोंद वाला, मोटा, स्थूलकाय,—णी गर्भवती स्त्री।

उदर्कः [उद्+अर्क् (अर्च्)+घञ्—उद्+ऋच्+यङ+घञ्] 1. (क) अन्त, उपसंहार,—सुखोदर्कम्—का० ३२८, (ख) फल, परिणाम, किसी क्रिया का भावी फल—किन्तु कल्याणोदर्कं भविष्यति—उत्तर० ४, प्रयत्नः सफलोदर्क एव—मा० ८, मनु० ४।१७६, ११।१० 2. भविष्यत्काल, उत्तरकाल।

उदर्चिस् (वि०) [ऊर्ध्वमर्चिः शिखाऽस्य ब० स०] चमकने वाला, ऊपर की ओर ज्वाला विकीर्ण करने वाला, ज्योतिर्मय, उज्ज्वल—स्फुरन्नुदर्चिः सहसा तृतीयादक्ष्णः कृशानुः किल निष्पपात—कु० ३।७१, ७।७९, रघु० ७।२४, १५।७६,—(पुं०) 1. अग्नि—प्रक्षिप्योदर्चिषं कक्षे शेरते तेऽभिमारुतम्—शि० २।४२ २०।५५, 2. कामदेव 3. शिव।

उदवसितम् [उद्+अव+सो+क्त] घर, आवास।

उदश्रु (वि०) [उद्गतान्यश्रूणि यस्य—ब० स०] फूट-फूट कर रोने वाला, जिसके अविरल आँसू बह रहे हों, रोने वाला—रघु० १२।१४, अमरु ११।

उदसनम् [उद्+अस्+ल्युट्] 1. फेंकना, उठाना, सीधा खड़ा करना 2. बाहर निकाल देना।

उदात्त (वि०) [उद्+आ+दा+क्त] 1. उच्च, उन्नत—अन्वयैः—का० ९२, वेणी० १, 2. भद्र, प्रतिष्ठित 3. उदार, वदान्य 4. प्रसिद्ध, विख्यात, महान्—ललितोदात्तमहिमा—भामि० १।७९, 5. प्रिय, प्रियतम

6. उच्च स्वराघात दे० नी०,—त्तः 1. उच्च स्वर में उच्चरित—उच्चैरुदात्तः—पा० १।२।२९, ताल्वादिषु स्थानेषूर्ध्वभागे निष्पन्नोऽनुदात्तः—सिद्धा०, अनुदात्त के नीचे भी दे०,—निहन्त्यरीनेकपदे य उदात्तः स्वरानिव—शि० २।९५, 2. उपहार, दान 3. एक प्रकार का वाद्य—उपकरण, बड़ा ढोल,—त्तम् (अलं० शा०) एक अलंकार—सा० द० ७५२, तु० काव्य० १०, उदात्तं वस्तुनः संपन्महतां चोपलक्षणम् ।

उदानः [उद्+अन्+घञ्] 1. ऊपर को सांस लेना 2. सांस लेना, श्वास, 3. पांच प्राणों में से एक जो कण्ठ से आविर्भूत होकर सिर में प्रविष्ट होता है—अन्य चार हैं:—प्राण, अपान, समान और व्यान;—स्पन्दयत्यधरं वक्त्रं गात्रनेत्रप्रकोपनः, उद्वेजयति मर्माणि उदानो नाम मारुतः । 4. नाभि ।

उदायुध (वि०) [ब० स०] जिसने शस्त्र उठा लिया है, शस्त्र ऊपर उठाये हुए—मनुजपशुभिर्निर्मर्यादैर्भवद्भिरुदायुधैः, वेणी० ३।२२; उदायुधानापततस्तान्दृप्तान्प्रेक्ष्य राघवः—रघु० १२।४४ ।

उदार (वि०) [उद्+आ+रा+क] 1. दानशील, मुक्तहृदय, दानी 2. (क) भद्र, श्रेष्ठ—स तथेति विनेतुरुदारमतेः—रघु० ८।९१ ५।१२, भग० ७।१८ (ख) उच्च, विख्यात, पूज्य,—°कीर्तेः—कि० १।१८, 3. ईमानदार, निष्कपट, खरा 4. अच्छा, बढ़िया, उमदा —उदारः कल्पः—श० ५ 5. वाग्मी 6. बड़ा, विस्तृत, विशाल, शानदार—रघु० १३।७९,—उदारनेपथ्यभृताम्—६, 6. मूल्यवान् वस्त्र पहने हुए 7. सुन्दर, मनोहर, प्यारा—कु० ७।१४, शि० ५।२१,—रम् (अव्य०) जोर से—शि० ४।३३ । सम०—आत्मन्, —चेतस् -चरित,—मनस्—तत्त्व (वि०) विशालहृदय, महामना—उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् —हि० १, धी (वि०) उदात्त प्रतिभाशील, अत्यन्त बुद्धिमान्—रघु० ३।३०,—दर्शन (वि) जो देखने में सुन्दर है, बड़ी आंखों वाला—कु० ५।३६ ।

उदारता [उदार+तल्+टाप्] 1. मुक्तहस्तता, 2. समृद्धि (अभिव्यक्ति की)—वचसाम्—मा० १।७ ।

उदास (वि०) [उद्+अस्+घञ्] तटस्थ, वीतराग, बेलाग,—सः, 1. निःस्पृह, दार्शनिक 2. तटस्थता, अनासक्ति ।

उदासिन् (वि०) [उद्+आस्+णिनि] 1. निःस्पृह, 2. तत्त्ववेत्ता ।

उदासीन (वि०) [उद्+आस्+शानच्] 1. तटस्थ, बेलाग, निष्क्रिय—तद्दर्शिनमुदासीनं त्वामेव पुरुषं विदुः—कु० २।१३, (मौतिक संसार की रचना में कोई भाग न लेते हुए) दे० सांख्य 2. (विधि में) अभियोग से असंबद्ध व्यक्ति 3. निष्पक्ष (जैसा कि राजा या राष्ट्र),—नः 1. अजनबी 2. तटस्थ —भग० ६।९ 3. सामान्य परिचय ।

उदास्थितः [उद्+आ+स्था+क्त] 1. अधीक्षक 2. द्वारपाल 3. भेदिया, गुप्तचर 4. तपस्वी जिसका व्रत भङ्ग हो गया है ।

उदाहरणम् [उद्+आ+हृ+ल्युट्] 1. वर्णन, प्रकथन, कहना 2. वर्णन करना, पाठ करना, समालाप आरंभ करना—अथाङ्गिरसमग्रण्यमुदाहरणवस्तुषु—कु० ६।५५, 3. प्रकथनात्मक गीत या कविता, एक प्रकार का स्तुतिगान जो 'जयति' जैसे शब्द से आरंभ हो तथा अनुप्रास से युक्त हो—चरणेभ्यस्त्वदीयं जयोदाहरणं श्रुत्वा—विक्रम० १, जयोदाहरणं बाह्वोर्गापयामास किन्नरान्—रघु० ४।७८, विक्रम० २।१४, (येन केनापि तालेन गद्यपद्यसमन्वितम्, जयत्युपक्रमं मालिन्यादिप्रासविचित्रितम्, तदुदाहरणं नाम विभक्त्यष्टाङ्गसंयुतम्—प्रतापरुद्र । 4. निदर्शन, मिसाल, दृष्टांत—समूलघातमघ्नन्तः परान्नोद्यन्ति मानिनः, प्रध्वंसितान्धतमसस्तत्रोदाहरणं रविः । शि० २।३३ 5. (न्या० में) अनुमानप्रक्रिया के पांच अंगों में से तीसरा 6. (अलं० शा०) 'दृष्टान्त' जो कुछ अलंकारशास्त्रियों द्वारा अलंकार माना जाता है—यह अर्थान्तरन्यास से मिलता जुलता है— उदा० अमितगुणोऽपि पदार्थो दोषेणैकेन निन्दितो भवति, निखिलरसायनराजो गन्धेनोग्रेण लशुन इव । रस०, (दोनों अलंकारों में भेद स्पष्ट करने के लिए 'उदाहरण' के नी० दे० रस०) ।

उदाहारः [उद्+आ+हृ+घञ्] 1. मिसाल या दृष्टांत 2. किसी भाषण का आरम्भ ।

उदित (भू० क० कृ०) [उद्+इ+क्त] 1. उगा हुआ, चढ़ा हुआ—उदितभूयिष्ठः—मा० १, भामि० २।८५ 2. ऊँचा, लंबा, उत्तुंग 3. बढ़ा हुआ, आवर्धित 4. उत्पन्न, पैदा हुआ, 5. कथित, उच्चरित (वद् का यङन्त रूप) । सम०—उदित (वि०) शास्त्रों में पूर्ण-शिक्षित ।

उदीक्षणम् [उद्+ईक्ष्+ल्युट्] 1. ऊपर की ओर देखना 2. देखना, दृष्टिपात करना ।

उदीची [उद्+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] उत्तर दिशा, —तेनोदीचीं दिशमनुसरेः—मेघ० ५७ ।

उदीचीन (वि०) [उदीची+ख] 1. उत्तर दिशा की ओर मुड़ा हुआ 2. उत्तर दिशा से संबंध रखने वाला ।

उदीच्य (वि०) [उदीची+यत्] उत्तर दिशा में होने या रहने वाला,—च्यः 1. सरस्वती नदी के पश्चिमोत्तर में स्थित एक देश 2. (ब० व०) इस देश के निवासी —रघु० ४।६६,—च्यम् एक प्रकार की सुगन्ध ।

उदीपः [उद्गता आपो यत्र—उद्+अप् (ईप्) ब० स०] बहुत पानी, जलप्लावन बाढ़ ।

उदीरणम् [उद्+ईर्+ल्युट्] 1. बोलना, उच्चारण, —अभिव्यंजना उद्घातः प्रणवो यासां न्यायैस्त्रिभिरुदीरणम्—कु० २।१२, 2. बोलना, कहना 3. फेंकना, (शस्त्रादिक का) चलाना ।

उदीर्ण (भू० क० कृ०) [उद्+ईर्+क्त] 1. बढ़ा हुआ, उगा हुआ, उत्पन्न 2. फूला हुआ, उन्नत 3. वर्धित, गहन ।

उदुम्बरः दे० उडुम्बर ।

उदूखल=उलूखल ।

उढ़ा [उद्+वह्+क्त—टाप्] विवाहित स्त्री ।

उदेजय (वि०) [उद्+एज्+णिच्+खश्] हिलाने वाला, कंपाने वाला, भयंकर—उदेजयान् भूतगणान् न्यषेधीत्—भट्टि० १।१५ ।

उद्गतिः (स्त्री०) [उद्+गम्+क्तिन्] 1. ऊपर जाना, उठना, चढ़ना 2. आविर्भाव, उदय, जन्मस्थान 3. वमन करना ।

उद्गन्धि (वि०) [उद्गतो गन्धोऽस्य—ब० स० इत्वम्] 1. सुगंधयुक्त, खुश्बूदार—विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु—रघु० २६।४७ 2. तीव्र गंध वाला ।

उद्गमः [उद्+गम्+घञ्] 1. ऊपर जाना, (तारों आदि का), उगना चढ़ना—आज्यधूमोद्गमेन—श० १।१५, 2. (बालों का) सीधे खड़े होना—रोमोद्गमः प्रादुरभूदुमायाः—कु० ७।७७, मालवि० ४।१ अमरु ३६, 3. बाहर जाना, विदा 4. जन्म, उत्पत्ति, रचना —पारिजातस्योद्गमः—मा० २, आविर्भाव—फलेन सहकारस्य पुष्पोद्गम इव प्रजाः–रघु० ४।९, कतिपय–कुसुमोद्गमः कदम्बः—उत्तर० ३।२०, अमरु ८१, 5. उभार, उन्नयन 6. (किसी पौधे का) अंकुरण—हरिततृणोद्गमशङ्कया मृगीभिः—कि० ५।३८, 7. वमन करना, उगलना ।

उद्गमनम् [उद्+गम्+ल्युट्] उगना, दिखाई देना ।

उद्गमनीय (स० कृ०) [उद्+गम्+अनीयर्] ऊपर जाने या चढ़ने के योग्य, —यम् धुले कपड़ों का जोड़ा (तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम्)—धौतोद्गमनीयवासिनी—दश० ४२, गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा—कु० ७।११ (यहाँ मल्लि० 'उ-°' का अनुवाद 'धौतवस्त्र' करते हैं और कहते हैं कि 'युगग्रहणं तु नायिकाभिप्रायम्' दे० वहीं) ।

उद्गाढ (वि०) [उद्+गाह्+क्त] गहरा, गहन, अत्यधिक, अत्यंत—उद्गाढरागोदयाः—मा० ५।७, ६।६, —ढम् आधिक्य,—(अव्य०) अत्यधिक, अत्यन्त ।

उद्गातृ (पुं०) [उद्+गै+तृच्] यज्ञ के मुख्य चार ऋत्विजों में से एक जो सामवेद के मंत्रों का गान करता है ।

उद्गारः [उद्+गॄ+घञ्] 1. (क) निष्कासन, थूकना, वमन करना, कह डालना, उत्सर्जन—खर्जूरीस्कन्धनद्धानां मदोद्गारसुगन्धिषु–रघु० ४।५७, भर्तृ० २।३६, मेघ० ६३,६९, शि० १२।९, (ख) क्षरण, प्रवाह दिल में भरी हुई बात का बाहर निकालना—रघु० ६।६०, महावी० ६।३३, 2. बार बार कहना, वर्णन—मा० २।१३, 3. थूक, लार 4. डकार, कंठगर्जन ।

उद्गारिन् (वि०) [उद्+गॄ+णिनि] 1 ऊपर जाने वाला, उगने वाला 2. वमन करने वाला, बाहर भेजने वाला—रघु० १३।४७ ।

उद्गिरणम् [उद्+गॄ+ल्युट्] 1. वमन करना 2. थूक या लार गिराना 3. डकारना 4. उन्मूलन ।

उद्गीतिः (स्त्री०) [उद्+गै+क्तिन्] 1. ऊँचे स्वर से गान करना 2. सामवेद के मन्त्रों का गान 3. आर्या छंद का एक भेद—दे० परिशिष्ट ।

उद्गीथः [उद्+गै+थक्] 1. सामवेद के मंत्रों का गायन (उद्गाता का पद) 2. सामवेद का उत्तरार्ध—भूयांस उद्गीथविदो वसन्ति—उत्तर० २।३, 3. 'ओम्' जो परमात्मा का तीन अक्षरों का नाम है ।

उद्गीर्ण (वि०) [उद्+गॄ+क्त] 1. वमन किया हुआ 2. उगला हुआ, बाहर उडेला हुआ ।

उद्गूर्ण (वि०) [उद्+गुर्+क्त] ऊँचा किया हुआ, ऊपर उठाया हुआ—वेणी० ६।१२ ।

उद्ग्रन्थः [उद्+ग्रन्थ्+घञ्] अनुभाग, अध्याय ।

उद्ग्रन्थि (वि०) [ब० स०] बन्धनमुक्त (आलं० भी) ।

उद्ग्रहः,—हणम् [उद्+ग्रह्+अच् ल्युट् वा] 1. लेना, उठाना, 2. ऐसा कार्य जो धार्मिक अनुष्ठान अथवा अन्य कृत्यों से सम्पन्न हो सकता है 3. डकार ।

उद्ग्राहः [उद्+ग्रह्+घञ्] 1. उठाना या लेना, 2. बाद का उत्तर देना, प्रतिवाद ।

उद्ग्राहणिका [उद्+ग्रह्+णिच्+युच्+टाप्+क, इत्वम्] वाद का उत्तर देना ।

उद्ग्राहित (भू० क० कृ०) [उद्+ग्रह्+णिच्+क्त] 1. ऊपर उठाया हुआ या लिया हुआ 2. हटाया हुआ 3. श्रेष्ठ, उन्नत 4. न्यस्त, मुक्त किया गया 5. बद्ध, नद्ध 6. प्रत्यास्मृत, याद किया गया ।

उद्ग्रीव, उद्ग्रीविन् (वि०) [उन्नता ग्रीवा यस्य—ब० स०, उन्नता ग्रीवा—प्रा० स०—उद्ग्रीवा+इनि] गर्दन ऊपर उठाये हुए—उद्ग्रीवैर्मयूरैः—मालवि० १।२१, अमरु ६३ ।

उद्घः [उद्+हन्+ड] 1. श्रेष्ठता, प्रमुखता (समास के अन्त में) ब्राह्मणोद्घः=एक श्रेष्ठ ब्राह्मण—उद्घादयश्च नियतलिङ्गा न तु विशेष्यलिङ्गाः—सिद्धा०, तु० मतल्लिकामचर्चिका प्रकाण्डमुद्घतल्लजौ, प्रशस्तवाचकान्यमूनि—अमर० 2. प्रसन्नता 3. अंजलि 4. अग्नि 5. नमूना ६. शरीरस्थित आंगिक वायु ।

उद्घनः [उद्+हन्+अप्] लकड़ी का तख्ता जिस पर बढ़ई लकड़ी रख कर घड़ता है, आगड़ी—लौहोद्घनघनस्कन्धां ललितापघनां स्त्रियम्—भट्टि० ७।६२।

उद्घट्टनम्-ना [उद्+घट्ट्+ल्युट्, युच् वा] रगड़, …से टकराना—मेघ० ६१।

उद्घर्षणम् [उद्+घृष्+ल्युट्] 1. रगड़ना, घोटना—यस्योद्घर्षणलोष्टकैरपि सदा पृष्ठे न जातः किणः—मृच्छ० २।११, 2. सोटा।

उद्घाटः [उद्+घट्+घञ्] चौकीदार या चौकी (जिसमें सैन्य संरक्षक दल ठहरे)।

उद्घाटकः [उद्+घट्+णिच्+ण्वुल्] 1. कुंजी 2. कुएँ की रस्सी और डोल, कुएँ की चर्खी (—कम् भी)।

उद्घाटन (वि०) (स्त्री०—नी) [उद्+घट्+णिच्+ल्युट्] खोलना, ताला खोलना—धर्मं यो न करोति निन्दितमतिः स्वर्गार्गलोद्घाटनम्—हि० १।१५३,—नम् 1. प्रकट करना—वेणी० १ 2. उन्नत करना, ऊपर उठाना 3. कुंजी 4. कुएँ पर की रस्सी व डोल, पानी निकालने की चर्खी।

उद्घातः [उद्+हन+घञ्] 1. आरंभ, उपक्रम—उद्घातः प्रणवो यासाम्—कु० २।१२, आकुमारकथोद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः—रघु० ४।२० 2. संकेत, उल्लेख 3. प्रहार करना, घायल करना 4. प्रहार, थप्पड़, आघात 5. हचकोला, झकझोरना, (गाड़ी आदि का) धचका—शि० १२।२, रघु० २।७२, वेणी० २।२८, 6. उठना, उन्नत होना 7. मुद्गर 8. शस्त्र 9. पुस्तक भाग, अध्याय, अनुभाग, परिच्छेद।

उद्घोषः [उद्+घुष्+घञ्] 1. ऊँची आवाज में कहना ढिंढोरा पीटना 2. सर्वजन प्रिय बात, सामान्य विवरण।

उद्दंशः [उद्+दंश्+अच] 1. खटमल 2. जूँ 3. मच्छर।

उद्दण्ड (वि०) [अत्या० स०] 1. जिसका तना, डंठल या ध्वज उठा हुआ हो—उद्दण्डपद्मं गृहदीर्घिकाणाम्—रघु० १६।४६, °धवलातपत्राः मा० ६, 2. मजबूत, भयानक। सम०—पालः 1. दंड देने वाला 2. एक प्रकार की मछली 3. एक प्रकार का सांप।

उद्दन्तुर (वि०) [प्रा० स०] 1. जिसके दाँत लंबे, या बाहर निकले हुए हों 2. ऊँचा, लंबा 3. भयानक, मजबूत।

उद्दानम् [उद्+दो+ल्युट्] 1. बंधन, कैद—उद्दाने क्रियमाणे तु मत्स्यानां तव रज्जुभिः—महा० 2. पालतू बनाना, वश में करना 3. मध्यभाग, कटि 4. चूल्हा, अंगीठी, 5. वडवानल।

उद्दान्त (वि०) [उद्+दम्+क्त] 1. ऊर्जस्वी 2. विनीत।

उद्दाम (वि०) [प्रा० स०] 1. निर्बंध, अनियंत्रित, निरंकुश, मुक्त—शि० ४।१० 2. (क) सबल, सशक्त—पंच० ३।१४८ (ख) भीषण, नशे में चूर—स्रोतस्युद्दामदिग्गजे—रघु० १।७८—शि० ११।१९ 3. भयावह 4. स्वेच्छाचारी 5. अतिबहुल, विशाल, बड़ा, अत्यधिक—मेघ० २५, रत्ना० २।४,—मः 1. यम 2. वरुण,—मम् (अव्य०) प्रचण्डता के साथ, भीषणतापूर्वक, बलपूर्वक—अथोद्दामं ज्वलिष्यतः—उत्तर० ३।९।

उद्दालकम् [उद्+दल्+णिच्+अच्+कन्] एक प्रकार का शहद, लसोड़े का फल।

उद्दित (वि०) [उद+दो+क्त] बंधा हुआ, बद्ध।

उद्दिष्ट (भू० क० कृ०) [उद्+दिश्+क्त] 1. बताया हुआ, विशिष्ट, विशेष रूप से कहा गया 2. इच्छित 3. चाहा हुआ 4. समझाया गया, सिखाया गया।

उद्दीपः [उद्+दीप्+घञ्] 1. प्रज्वलित करने वाला, जलाने वाला 2. प्रज्वालक।

उद्दीपक (वि०) [उद्+दीप्+णिच्+ण्वुल्] 1. उत्तेजक 2. प्रकाशक, प्रज्वालक।

उद्दीपनम् [उद्+दीप्+णिच्+ल्युट्] 1. जलाने वाला, उत्तेजना देने वाला 2. (अलं० शा०) जो रस को उत्तेजित करे, दे० 'आलंबन' 3. प्रकाश करना, जलाना 4. शरीर को भस्म करना।

उद्दीप्र (वि०) [उद्+दीप्+रन्] चमकता हुआ, दहकता हुआ,—प्रः,—प्रम् गुग्गुल।

उद्दृप्त [उद्+दृप्+क्त] घमंडी, अभिमानी।

उद्देशः [उद्+दिश्+घञ्] 1. संकेत करने वाला, निदेश करने वाला 2. वर्णन, विशिष्ट वर्णन 3. निदर्शन, व्याख्यान, दृष्टान्त 4. निश्चयन, पृच्छा, समन्वेषण, खोज 5. संक्षिप्त वक्तव्य या वर्णन—एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया—भग० १०।४०, 6. दत्तकार्य 7. अनुबन्ध 8. अभिप्राय, प्रयोजन 9. स्थान, प्रदेश, जगह—अहो प्रवातसुभगोऽयमुद्देशः—श० ३, मालवि० ३।

उद्देशकः [उद्+दिश्+ण्वुल्] 1. निदर्शन, दृष्टांत 2. (गणित में) प्रश्न, समस्या।

उद्देश्य (सं० कृ०) [उद्+दिश्+ण्यत्] 1. उदाहरण देकर स्पष्ट करने या समझाये जाने के योग्य 2. अभिप्रेत, लक्ष्य,—श्यम् 1. लक्ष्यार्थ, प्रोत्साहक 2. किसी उक्ति (क्रिया) का कर्ता, (विप० विधेय) दे० 'अनुवाद्य' भी।

उद्द्योतः [उद्+द्युत्+घञ्] 1. प्रकाश, प्रभा (शा० और आलं०)—त्रिभिर्नेत्रैः कृतोद्द्योतम्—महा०, कुलोद्द्योतकरी तव—रामा० अलंकृत करते हुए 2. किसी पुस्तक के प्रभाग, अध्याय, अनुभाग या परिच्छेद।

उद्द्रावः [उद्+द्रु+घञ्] भागना, पीछे हटना।

उद्धत (भू० क० कृ०) [उद्+हन्+क्त] 1. ऊँचा किया हुआ, उन्नत, ऊपर उठाया हुआ—लाङ्गूलमुद्धतं धुन्वन्—भट्टि० ९।७ आत्मोद्धतैरपि रजोभिः—श० १।८, उठाई हुई, रघु० ९।५० हांफा हुआ—कि० ८।५३

2. अतिशय, अत्यन्त, अत्यधिक 3. अभिमानी, निरर्थक, व्यर्थ फूला हुआ—अक्षवचोद्धतः—रघु० १२।६३ 4. कठोर 5. उत्तेजित, भड़काया हुआ, प्रचंड °मनोभवरागा—कि० ९।६८, ६९, मदोद्धताः प्रत्यनिलं विचेरुः कु० ३।३१ 6. शानदार, राजसी—वीरोद्धता नमयतीव गतिर्धरित्रीम्—उत्तर० ६।१९, अक्खड़, अशिष्ट,—तः राज-मल्ल। सम०—मनस्,—मनस्क (वि०) दम्भी, अहंकारी, घमंडी।

उद्धतिः (स्त्री०) [उद्+हन्+क्तिन्] 1. उन्नयन 2. घमंड, अभिमान,—शि० ३।२८, 3. अक्खड़पना, धृष्टता 4. प्रहार।

उद्धमः [उद्+ध्मा+श- धमादेशः] 1. आवाज निकालना, बजाना 2. घोर सांस लेना, हाँफना।

उद्धरणम् [उद्+हृ+ल्युट्] 1. निकालना, बाहर करना, (वस्त्रादिक) उतारना 2. निचोड़ना, निस्सारण, उखाड़ लेना,—कंटक° मनु० ९।२५२, चक्षुषोरुद्धरणम्—मिता०, 3. उद्धार करना, मुक्त करना, अभय करना—दीनोद्धरणोचितस्य—रघु० २।२५, स बन्धुर्यो विपन्नानामापदुद्धरणक्षमः—हि० १।३, 4. उन्मूलन, ध्वंस, पदच्युति 5. उठाना, ऊपर करना 6. वमन करना 7. मोक्ष 8. ऋणपरिशोध।

उद्धर्तृ-उद्धारक (वि०) [उद्+(हृ)धृ+तृच्, ण्वुल् वा] 1. ऊपर उठाने वाला 2. साझीदार, संपत्ति का हिस्सेदार।

उद्धर्ष (वि०) [उद्+हृष्+घञ्] खुश, प्रसन्न,—र्षः 1. बहुत प्रसन्नता 2. किसी कार्य को संपन्न करने के लिए उत्तरदायित्व लेने का साहस 3. उत्सव (धार्मिक पर्व)।

उद्धर्षणम् [उद्+हृष्+ल्युट्] 1. प्राण फूंकना 2. रोमांच होना, पुलक।

उद्धवः [उद्+हु+अच्] 1. यज्ञाग्नि 2. उत्सव, पर्व 3. इस नाम का यादव जो कृष्ण का चाचा तथा मित्र था (जब अक्रूर द्वारा कृष्ण मथुरा ले जाये गये, तो गोकुल वासियों ने उद्धव से मथुरा जाने और वहां से कृष्ण को वापिस लिवा लाने की प्रार्थना की। यादवों के अवश्यंभावी विनाश को देख कर उद्धव कृष्ण के पास गये और पूछा कि अब क्या करें, कृष्ण ने तब उद्धव को बतलाया कि वह बदरिकाश्रम जाकर तपस्या करें तथा स्वर्गलाभ करें। 'उद्धवदूत' और 'उद्धवसंदेश' की रचना का विषय 'उद्धव' है)।

उद्धस्त (वि०) [ब० स०] हाथ आगे पसारे हुए या उठाये हुए।

उद्धानम् [उद्+धा+ल्युट्] 1. चूल्हा, अंगीठी, यज्ञकुण्ड 2. उगल देना, वमन करना।

उद्धान्त (वि०) [उद्+हा+क्त बा०] उगला हुआ, वमन किया हुआ,—तः हाथी जिसके मस्तक से मद चूना बन्द हो गया हो।

उद्धारः [उद्+हृ+घञ्] 1. खींचकर बाहर निकालना, निस्सारण 2. मुक्ति, त्राण, बचाव, अपमोचन, छुटकारा 3. उठाना, ऊपर करना 4. (विधि में) पैतृक सम्पत्ति में से पृथक् किया गया वह भाग जिसका लाभ केवल ज्येष्ठ पुत्र ही उठा सके, छोटे भाइयों को दिय जाने वाले भाग के अतिरिक्त वह अंश जो कानूनन बड़े भाई को ही मिले—मनु० ९।११२, 5. युद्ध की लूट का छठा भाग जिसका स्वामी राजा होता है—मनु० ७।९७, 6. ऋण, 7. सम्पत्ति का फिर से प्राप्त हो जाना 8. मोक्ष।

उद्धारणम् [उद्+हृ(धृ)+णिच्+ल्युट्] 1. उठाना ऊँचा करना 2. बचाना, भय से निकाल लेना, छुटकारा, मुक्ति।

उद्धुर (वि०) [उद्+धुर्+क] 1. अनियन्त्रित, निरंकुश, मुक्त 2. दृढ़, निश्शंक 3. भारी, भरपूर—शि० ५।६४ 4. मोटा, फूला हुआ, स्थूल 5. योग्य, सक्षम—भामि० ४।४०।

उद्धूत (भू० क० कृ०) [उद्+धू+क्त] 1. हिलाया हुआ, गिरा हुआ, उठाया हुआ, ऊपर फेंका हुआ—मारुतभरोद्धूतोऽपि धूलिव्रजः—धन० 2. उन्नत, ऊँचा।

उद्धूननम् [उद्+धू+ल्युट्, नुगागमः] 1. ऊपर फेंकना, उठाना 2. हिलाना।

उद्धूपनम् [उद्+धूप्+ल्युट्] धूनी देना, धुपाना।

उद्धूलनम् [उद्+धूल्+णिच्+ल्युट्] चूरा करना, पीसना; धूल या चूरा बुरकना—भस्मोद्धूलन—काव्य० १०।

उद्धषणम् [उद्+धूप्+ल्युट्] रोंगटे खड़े होना, पुलकना, रोमांचित होना।

उद्धृत (भू० क० कृ०) [उद्+हृ (धृ)+क्त] 1. बाहर खींचा हुआ, निकाला हुआ, निचोड़ कर निकाला हुआ 2. उठाया हुआ, उन्नत, ऊँचा किया हुआ 3. उखाड़ा हुआ, उन्मूलित—उद्धृतारिः—रघु० २।३०।

उद्धृतिः (स्त्री०) [उद्+हृ (धृ)+क्तिन्] 1. खींच कर बाहर निकालना, निचोड़ना 2. निचोड़, चुना हुआ संदर्भ 3. मुक्त करना, बचाना 4. विशेषतः पाप से मुक्ति दिलाना, पवित्र करना, मोक्ष—चयन्ते तीर्थानि त्वरितमिह यस्योद्धृतिविधौ—गंगा० २८।

उद्ध्मानम् [उद्+ध्मा+ल्युट्] अंगीठी, चूल्हा, स्टोव।

उद्ध्यः [उज्झत्युदकमिति मल्लि०—उद्+उज्झ्+क्यप्, नि० उज्झेर्धत्वम्] एक दरिया का नाम तोयदागम इवोद्ध्यभिद्ययोः—रघु० ११।८।

उद्बन्ध (वि०) [अत्या० स०] ढीला किया गया—न्धः,—न्धनम् 1. बंधना, लटकना 2. स्वयं फांसी लगा लेना।

उद्बन्धकः [उद्+बन्ध्+ण्वुल्] वर्णसंकर जाति जो धोबी का काम करती है—तु०—उशना—आयोगवेन

विप्रायां जातास्ताम्रोपजीविनः, तस्यैव नृपकन्यायां जातः सूनिक उच्यते। सूनिकस्य नृपायां तु जाता उद्‌बन्धकाः स्मृताः, निर्णेजयेयुर्वस्त्राणि अस्पृशाश्च भवन्त्यतः।

उद्‌बल (वि०) [ब० स०] सबल, सशक्त।

उद्‌बाष्प (वि०) [ब० स०] अश्रुपरिपूर्ण, अश्रुपरिप्लावित कि० ३।५९।

उद्‌बाहु (वि०) [ब० स०] भुजाएँ ऊपर उठाये हुए, भुजाओं को फैलाये हुए—प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्‌बाहुरिव वामनः-- रघु० १।३।

उद्‌बुद्ध (भू० क० कृ०) [उद्+बुध्+क्त] 1. जागा हुआ, जगाया हुआ, उत्तेजित 2. खिला हुआ, फैला हुआ, पूर्ण विकसित—मा० १।४०, 3. याद दिलाया गया 4. प्रत्यास्मृत।

उद्‌बोधः,—धनम् [उद्+बुध्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. जगाना, ध्यान दिलाना 2. प्रत्यासमरण करना, उठाना—ननु कथं रामादिरत्याद्युद्‌बोधकारणैः सीतादिभिः सामाजिकानां रत्युद्‌बोधः—सा० द० ३, इसी प्रकार—रस°।

उद्‌बोधक (वि०) [उद्+बुध्+णिच्+ण्वुल्] 1. ध्यान दिलाने वाला, 2. उत्तेजना देने वाला,—कः सूर्य।

उद्भट (वि०) [उद्+भट्+अप्] 1. श्रेष्ठ, प्रमुख—पदे पदे सन्ति भटा रणोद्भटाः—नै० १।१३२ 2. उत्कृष्ट, महानुभाव,—टः 1. अनाज फटकने के लिए छाज 2. कछुवा।

उद्भवः [उद्+भू+अप्] 1. उत्पत्ति, रचना, जन्म, प्रसव (शा० तथा आलं०) इति हेतुस्तदुद्भवे—काव्य० १, याज्ञ० ३।८०, बहुधा समास के अन्त में "से उत्पन्न" अर्थ को प्रकट करता है—ऊरूद्भवा—विक्रम० १।३ मणिराकरोद्भवः—रघु० ३।१८ 2. स्रोत, उद्‌गमस्थान 3. विष्णु।

उद्भावः [उद्+भू+घञ्] 1. उत्पत्ति, सन्तति 2, औदार्य।

उद्भावनम् [उद्+भू+णिच्+ल्युट्] 1. चिन्तन, कल्पना 2. उत्पत्ति, उत्पादन, सृष्टि 3. अनवधान, उपेक्षा, अवहेलना।

उद्भावयितृ (वि०) [उद्+भू+णिच्+तृच्] ऊपर उठाने वाला, उत्कृष्ट बनाने वाला।

उद्भासः [उद्+भास्+घञ्] चमक, प्रभा।

उद्भासिन्, उद्भासुर (वि०) [उद्भास्+इनि, घुरच् वा] देदीप्यमान, चमकीला, उज्ज्वल;—विभूषणोद्भासि पिनद्धभोगि वा—कु० ५।७८ मृच्छ० ८।३८, अमरु ८१।

उद्भिद् (वि०) [उद्+भिद्+क्विप्] उगने वाला, अंकुर फूटने वाला—(पुं०) 1. पौधे का अंकुर—अङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि—अमर० 2. पौधा 3. झरना, फ़ौवारा। सम०—ज (वि०) (उद्भिज्ज) फूटने वाला, (पौधे की भाँति) उगने वाला--(—ज्जः) पौधा,—विद्या वनस्पति विज्ञान।

उद्भिद (वि०) [उद्भिद्+क] फूटने वाला, उगने वाला।

उद्भूत (भू० क० कृ०) [उद्+भू+क्त] 1. जात, उत्पन्न, प्रसूत 2. (शा० तथा आलं०) उत्तुंग 3. गोचर जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जाना जा सके (गुणादि)।

उद्भूतिः (स्त्री०) [उद्+भू+क्तिन्] 1. प्रजनन, उत्पादन 2. उन्नयन, उत्कर्षण, समृद्धि —वरः शम्भुरलं ह्येष त्वत्कुलोद्भूतये विधिः—कु० ६।८२।

उद्भेदः—दनम् [उद्+भिद्+घञ्, ल्युट् वा] 1. फूट पड़ना, बेधना, दिखाई देना, आविर्भाव, प्रकट होना, उगना—उमास्तनोद्भेदमनुप्रवृद्धः—कु० ७।२४, तं यौवनोद्भेदविशेषकान्तं—रघु० ५।३८ शि० १८।३६ 3. निर्झर, फौवारा 4. रोमांच जैसा कि 'पुलकोद्भेदः' में।

उद्भ्रमः [उद्+भ्रम्+घञ्] 1. आघूर्णन, चक्कर देना, (तलवार आदि का) घुमाना 2. घूमना, 3. खेद।

उद्भ्रमणम् [उद्+भ्रम्+ल्युट्] 1. इधर-उधर—हिलना-जुलना, घूमना 2. उगना, उठना।

उद्यत (भू० क० कृ०) [उद्+यम्+क्त] 1. उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ—°असिः, °पाणिः आदि 2. सँभाल कर रखने वाला, परिश्रमी, चुस्त 3. तुला हुआ, तना हुआ (धनुष आदि)-कि० १।२१ 4. आमादा, तैयार, तत्पर, उत्सुक, तुला हुआ, लगा हुआ, व्यस्त (संप्र०, अधि० तथा तुमुन्नन्त के साथ या बहुधा समास में)—उद्यतः स्वेषु कर्मसु—रघु० १७।६१, हन्तुं स्वजनमुद्यताः—भग० १।४५ जय°, वध° आदि०।

उद्यमः [उद्+यम्+घञ्] 1. उठाना, उन्नयन 2. सतत प्रयत्न, चेष्टा, परिश्रम, धैर्य—निशम्य चैनां तपसे कृतोद्यमाम् कु० ५।३—शशाक मेना न नियन्तुमुद्यमात् —५ दृढ़ संकल्प—उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः—पंच० २।१३१ 3. तैयारी, तत्परता। सम० —भृत् (वि०) घोर परिश्रम करने वाला—भर्तृ० २।७४।

उद्यमनम् [उद्+यम+ल्युट्] उठाना, उन्नयन।

उद्यमिन् (वि०) [उद्+यम्+णिनि] परिश्रमी, सतत प्रयत्नशील।

उद्यानम् [उद्+या+ल्युट्] 1. भ्रमण करना, टहलना 2. बाग, बगीचा प्रमोदवन,—बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या—मेघ० ७, २६, ३३ 3. अभिप्राय, प्रयोजन। सम०—पालः,—पालकः,—रक्षकः माली, बाग़ का रखवाला,।

उद्यानकम् [उद्+या+ल्युट्+कन्] बाग़, बग़ीचा।

उद्यापनम् [उद्+या+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] व्रतादिक का पारण, समाप्ति।

उद्योगः [उद्+युज्+घञ्] 1. प्रयत्न, चेष्टा, काम-धंधा —तद्दैवमिति संचिन्त्य त्यजेन्नोद्योगमात्मनः—पंच० २।१४० 2. कार्य, कर्तव्य, पद—तुल्योद्योगस्तव दिनकृतश्चाधिकारो मतो नः—विक्रम० २।१, धैर्य, परिश्रम।

उद्योगिन् [उद्+युज्+घिनुण्] चुस्त, उद्यमी, उद्योगशील।

उद्रः [उन्द्+रक्] एक प्रकार का जल जन्तु।

उद्रथः [उद्गतो रथो यस्मात्—ग० स०] 1. रथ के धुरे की कील, सकेल 2. मुर्गा।

उद्रावः [उद्+रु+घञ्] शोरगुल, कोलाहल।

उद्रिक्त (भू० क० कृ०) [उद्+रिच्+क्त] 1. बढ़ा हुआ अत्यधिक, अतिशय 2. विशद, स्पष्ट।

उद्रुज (वि०) [उद्+रुज्+क] नष्ट करने वाला, जड़ खोदने वाला (तट—आदि) यथा 'कूलमुद्रुज' में।

उद्रेकः [उद्+रिच्+घञ्] वृद्धि, आधिक्य, प्राबल्य, प्राचुर्य —ज्ञानोद्रेकाद्विघटिततमोग्रन्थयः सत्त्वनिष्ठाः—वेणी० १।२३, गत्वोद्रेकं जघनपुलिने—शि० ७।७४।

उद्वत्सरः [उद्+वस्+सरन्] वर्ष।

उद्वपनम् [उद्+वप्+ल्युट्] 1. उपहार, दान 2. उडेलना, उखाड़ना।

उद्वमनम्,-उद्वान्तिः (स्त्री०) [उद्+वम्+ल्युट्, क्तिन् वा] वमन करना, उगलना।

उद्वर्तः [उद्+वृत्+घञ्] 1. अवशेष, आतिशय्य 2. आधिक्य, बाहुल्य 3. (तेल, उबटन आदि) सुगंधित पदार्थों की मालिश।

उद्वर्तनम् [उद्+वृत्+ल्युट्] 1. ऊपर जाना, उठना 2. उगना, बाढ़ 3. समृद्धि, उन्नयन 4. करवट बदलना, उछाल लेना—चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि—मेघ० ४० 5. पीसना, चूरा करना 6. सुगंधित उबटन आदि पदार्थों का शरीर पर लेप करना, या पीडा आदि को दूर करने के लिए सुगंधित लेप।

उद्वर्धनम् [उद्+वृध्+ल्युट्] 1. वृद्धि, 2. दबाई हुई हँसी।

उद्वह (वि०) [उद्+वह्+अच्] 1. ले जाने वाला, आगे बढ़ने वाला 2. जारी रहने वाला, निरन्तर रहने वाला (वंश आदि), कुल°—उत्तर० ४, इसी प्रकार रघूद्वह° ४।२२, रघु० ९।९, ११।५४,—**हः** 1. पुत्र 2. वायु के सात स्तरों में से चौथास्तर, 3. विवाह,—**हा** —पुत्री।

उद्वहनम् [उद्+वह्+ल्युट] 1. विवाह करना 2. सहारा देना, संभाले रखना, उठाये रखना—भुवः प्रयुक्तोद्वहनक्रियायाः—रघु० १३।१, १४।२०, रघु० २।१८, कु० ३।१३ 3. ले जाया जाना, सवारी करना मनु० ८।३७०।

उद्वान (वि०) [उद्+वन्+घञ] वमन किया हुआ, उगला हुआ,—**नम्** 1. उगलना, वमन करना, 2. अंगीठी, स्टोव।

उद्वान्त (वि०) [उद्+वम्+क्त] 1. वमन किया हुआ 2. मद रहित (हाथी)।

उद्वापः [उद्+वप्+घञ्] 1. उगलना, बाहर फेंकना 2. हजामत करना 3. (तर्क० में) पूर्व पद के अभाव में पश्चवर्ती उत्तरांग के अस्तित्व का अभाव (विल्सन)।

उद्वासः [उद्+वस्+घञ्] 1. निर्वासन 2. तिलांजलि देना 3. वध करना।

उद्वासनम् [उद्+वस्+णिच्+ल्युट्] 1. बाहर निकालना, निर्वासित कर देना 2. तिलांजलि देना 3. (आग से) निकालकर दूर करना 4. वध करना।

उद्वाहः [उद्+वह्+घञ्] 1. संभालना, सहारा देना 2. विवाह, पाणिग्रहण—असवर्णास्वयं ज्ञेयो विधिरुद्वाहकर्मणि—मनु० ३।४३ (स्मृतियों में आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन है—ब्राह्मो दैवस्तथा चार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः, गांधर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमः स्मृतः)।

उद्वाहनम् [उद्+वह्+णिच्+ल्युट्] 1. उठाना 2. विवाह,—**नी** 1. बंधनी, रस्सी 2. कौड़ी, वराटिका।

उद्वाहिक (वि०) [उद्वाह+ठन्] विवाह से संबंध रखने वाला, विवाह विषयक (मंत्रादिक) मनु० ९।९५।

उद्वाहिन् (वि०) [उद्+वह्+णिनि] 1. उठाने वाला, खींचने वाला 2. विवाह करने वाला,—**नी** रस्सी, डोरी।

उद्विग्न (भू० क० कृ०) [उद्+विज्+क्त] संतप्त, पीडित, शोकग्रस्त, चिंतित।

उद्वीक्षणम् [उद्+वि+ईक्ष्+ल्युट्] 1. ऊपर की ओर देखना 2. दृष्टि, आँख, देखना, नज़र डालना—सखीजनोद्वीक्षणकौमुदीमुखम्—रघु० ३।१।

उद्वीजनम् [उद्+वीज्+ल्युट्] पंखा झलना।

उद्वृंहणम् [उद्+वृंह्+ल्युट्] वर्धन, वृद्धि।

उद्वृत्त (भू० क० कृ०) [उद्+वृत्+क्त] 1. उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ 2. उमड़कर बहता हुआ, उमड़ा हुआ—उद्वृत्तः क इव सुखावहः परेषाम्—शि० ८।१८ (यहाँ 'उद्वृत्त' का अर्थ 'विचलित, दुर्वृत्त' है)।

उद्वेगः [उद्+विज्+घञ्] 1. कांपना, हिलना, लहराना 2. क्षोभ, उत्तेजना—भग० १२।१५ 3. आतंक, भय —शान्तोद्वेगस्तिमितनयनं दृष्टभक्तिर्भवान्या—मेघ० ३६, रघु० ८।७ 4. चिन्ता, खेद, शोक 5. विस्मय, आश्चर्य,—**गम्** सुपारी।

उद्वेजनम् [उद्+विज्+ल्युट्] 1. क्षोभ, चिन्ता 2. पीडा पहुँचाना, कष्ट देना—उद्वेजनकरैर्दण्डैश्चिह्नयित्वा प्रवासयेत—मनु० ८।३५२, 3. खेद।

उद्वेदि (वि०) [उन्नता वेदिर्यत्र ब० स०] जहाँ आसन या गद्दी ऊँची हो—विमानं नवमुद्वेदि—रघु० १७।९।
उद्वेपः [उद्+वेप्+अच्] हिलना, कांपना, अत्यधिक कंपकंपी।
उद्वेल (वि०) [उत्क्रान्तो वेलाम्—अत्या० स०] 1. अपने तट से बाहर उमड़ कर बहने वाला (नदी आदि) —रघु० १०।३४, का० ३३३ 2. उचित सीमा का उल्लंघन।
उद्वेल्लित (भू० क० कृ०) [उद्+वेल्ल्+क्त] हिलाया हुआ, उछाला हुआ,—तम् हिलाना, झझोड़ना।
उद्वेष्टन (वि०) [ग० स०] 1. ढीला किया हुआ—कयाचिदुद्वेष्टनवान्तमाल्यः—रघु० ७।६, कु० ७।५७, 2. बन्धनमुक्त, बन्धनरहित,—नम् 1. घेरा डालना, 2. बाड़ा, बाड़ 3. पीठ या कूल्हों में पीड़ा।
उद्वोढ़ (पुं०) [उद्+वह्+तृच्] पति।
उधस् (नपुं०) [उन्द्+असुन्] ऐन, औड़ी दे० 'ऊधस्'।
उन्द् (रुधा० पर०) (उनत्ति, उत्त—उन्न) आर्द्र करना, तर करना, स्नान करना—याः पृथिवीं पयसोन्दन्ति।
उन्दनम् [उन्द्+ल्युट्] तर करना, आर्द्र करना।
उन्दरुः, उन्दुरः, उन्दुरुः, उन्दूरुः [उन्द्+उर—उरु वा] मूसा, चूहा।
उन्नत (भू० क० कृ०) [उद्+नम्+क्त] 1. उठाया हुआ, उन्नत किया हुआ, ऊपर उठाया हुआ (आलं० भी)—भर्तृ० ३।२४, शि० ९।७९, नतोन्नतभूमिभागे —श० ४।१४ 2. ऊँचा (आलं० भी) लम्बा, उत्तुंग, बड़ा, प्रमुख—रघु० १।१४, विक्रम० ५।२२, किं० ५। १५, १४।२३, 3. मांसल, भरा-पूरा (स्त्री का वक्षस्थल आदि),—तः अजगर,—तम् 1. उन्नयन 2. उत्थान, ऊँचाई। सम०—आनत (वि०) उन्नत और दलित, विषम—बन्धुरं तून्नतानतम्—अमर०,—चरण(वि०) दुर्दान्त —शिरस् (वि०) अहंमन्य, बड़ा घमंडी।
उन्नतिः (स्त्री०) [उद्+नम्+क्तिन्] 1. उन्नयन, ऊँचाई (आलं० भी) नीचे दे० 'उन्नतिमत्' 2. उत्कर्ष, मर्यादा, अभ्युदय, समृद्धि—स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्यधोगतिम्—पंच० १।१५०, शि० १६।२२, भामि० १। ४०—महाजनस्य संपर्कः कस्य नोन्नतिकारकः—हि० ३ 3. उठाना। सम०—ईशः गरुड़, (उन्नति का स्वामी)।
उन्नतिमत् (वि०) [उन्नति+मतुप्] उन्नत, उभरता हुआ, फूला हुआ (जैसे कि स्त्री का वक्षस्थल)—सा पीनोन्नतिमत्पयोधरयुगं धत्ते—अमरु ३०, शि० ९।७२।
उन्नमनम् [उद्+नम्+ल्युट्] 1. ऊपर उठाना, ऊँचा करना 2. ऊँचाई।
उन्नम्र (वि०) [उद्+नम्+रन्] खड़ा, सीधा, उत्तुंग, ऊँचा (आलं० भी)—उन्नम्रताम्रपटमण्डपमण्डितम् तत्—शि० ५।३१।
उन्नयः, उन्नायः [उद्+नी+अच्, घञ् वा] 1. उठाना, ऊँचा करना 2. ऊँचाई उन्नयन 3. सादृश्य, समता 4. अटकल।
उन्नयनम् [उद्+नी+ल्युट्] 1. उठाना, ऊँचा करना, ऊपर उठाना 2. पानी खींचना 3. पर्यालोचन, विचार-विमर्श 4. अटकल।
उन्नस (वि०) [उन्नता नासिका यस्य ब० स०] ऊँची नाक वाला,—उन्नसं दधती वक्त्रम्—भट्टि० ४।१८।
उन्नादः [उद्+नद्+घञ्] चिल्लाहट, दहाड़, गुंजन, चहचहाना।
उन्नाभ (वि०) [उन्नता नाभिर्यस्य—ब० स०] जिसकी नाभि उभरी हुई हो, तुंदिल, तोंद वाला।
उन्नाहः [उद्+नह्+घञ्] 1. उभार, स्फीति 2. बाँधना, बंधनयुक्त करना,—हम् चावलों के माँड़ से बनी काँजी।
उन्निद्र (वि०) [उद्गता निद्रा यस्य—ब० स०] 1. निद्रा रहित, जागा हुआ—तामुन्निद्रामवनिशयना सौधवातायनस्थः—मेघ० ८८ विगमयत्युन्निद्र एव क्षपाः—श० ६।४, मुद्रा० ४ 2. प्रसृत, पूर्णविकसित मुकुलित (कमल आदि)—उन्निद्रपुष्पाक्षिसहस्रभाजा—शि० ४। १६, ८।२८।
उन्नेतृ [उद्+नी+तृच्] उठाने वाला—(पुं०) यज्ञ के १६ ऋत्विजों में से एक।
उन्मज्जनम् [उद्+मस्ज्+ल्युट्] बाहर निकलना, पानी से बाहर निकलना।
उन्मत्त (भू० क० कृ०) [उद्+मद्+क्त] 1. मद्यप, नशे में चूर 2. विक्षिप्त, उन्मत्त, पागल—द्वावत्रोन्मत्तौ —विक्रम० २, मनु० ९।७९, 3. फूला हुआ, उच्छ्रित, वहशी—पंच० १।१६१, शि० ६।३१ 4. भूत या प्रेत से आविष्ट—याज्ञ० २।३२, मनु० ३।१६१, (वातपित्तश्लेष्मसंनिपातग्रहसंभवेनोपसृष्टः—मिता०),—त्तः धतूरा। सम०—कीर्तिः,—वेशः शिव,—गंगम् एक देश का नाम (यहाँ गंगा भीषण कल्लोल करती हुई बहती है) —दर्शन,—रूप (वि०) देखने में पागल,—प्रलपित (वि०) पागल की बहक (—तम्) पागल के शब्द।
उन्मथनम् [उद्+मथ्+ल्युट्] 1. झाड़ना, फेंक देना 2. वध करना,—अन्योन्यसूतोन्मथनात्—रघु० ७।५२।
उन्मद (वि०) [उद्गतो मदो यस्य—ब० स०] 1. नशे में चूर, शराबी; रघु० २।९, १६।५४ 2. पागल, क्रोधोद्दीप्त, उड़ाऊ—शि० १०।४, १६।६९ 3. नशा करने वाला, मादक—मधुकराङ्गनया मुहुरुन्मदध्वनिभृता निभृताक्षरमुज्जगे—शि० ६।२०,—दः 1. विक्षिप्ति 2. नशा।

उन्मदन (वि०) [उद्भूतो मदनोऽस्य—ब० स०] प्रेम-पीडित, प्रेमोद्दीप्त—तदाप्रभृत्युन्मदना पितुर्गृहे—कु० ५।५५।

उन्मदिष्णु (वि०) [उद्+मद्+इष्णुच्] 1. पागल 2. नशे में चूर, जिसने मदिरा पी हुई हो 3. जिसे मद चूता हो (हाथी)।

उन्मनस्-नस्क (वि०) [उद्भ्रान्तं मनो यस्य—ब० स०, कप् च] 1. उत्तेजित, विक्षुब्ध, संक्षुब्ध, बेचैन—रघु० ११।२२, कि० १४।४५ 2. खेद प्रकट करना, किसी मित्र के विछोह से उदास 3. आतुर, उत्सुक, उतावला।

उन्मनायते (ना० धा०, आ०—उन्मनीभू) बेचैन होना, मन में क्षुब्ध होना।

उन्मन्थः [उद्+मन्थ्+घञ्] 1. क्षोभ 2. वध करना, हत्या करना।

उन्मन्थनम् [उद्+मन्थ्+ल्युट्] 1. हिलाना, क्षुब्ध करना 2. वध करना, हत्या करना, मारना 3. (लकड़ी आदि से) पीटना।

उन्मयूख (वि०) [ब० स०] प्रकाशमान, चमकीला—रघु० १६।६९।

उन्मर्दनम् [उद्+मृद्+ल्युट्] 1. रगड़ना, मलना 2. मालिश करने के लिए सुगंधित (तैलादिक)।

उन्माथः [उद्+मथ्+घञ्] 1. यातना, अतिपीडा 2. हिला देना, क्षुब्ध करना 3. वध करना, हत्या करना 4. जाल, पाश।

उन्माद (वि०) [उद्+मद्+घञ्] 1. पागल, विक्षिप्त 2. असंतुलित,—दः 1. पागलपन, विक्षिप्ति—अहो उन्मादः—उत्तर० ३ 2. तीव्र संक्षोभ 3. विक्षिप्तता, सनक (मानसिक विकार) 4. (अलं० शा० में) ३३ संचारिभावों में से एक—चित्तसंमोह उन्मादः कामशोकभयादिभिः—सा० द० ३, या विप्रलम्भमहापत्तिपरमानन्दादिजन्माऽन्यस्मिन्नन्याववभास उन्मादः—रस० 5. खिलना—उन्मादं वीक्ष्य पद्मानाम्—सा० द० २।

उन्मादन (वि०) [उद्+मद्+णिच्+ल्युट्] पागल बना देने वाला, मादक,—नः कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

उन्मानम् [उद्+मा+ल्युट्] 1. तोलना, मापना 2. माप, तोल 3. मूल्य।

उन्मार्ग (वि०) [उत्क्रान्तः मार्गात्—अत्या० स०] कुमार्गगामी,—र्गः 1. कुमार्ग, सुमार्ग से विचलन (आलं० भी) 2. अनुचित आचरण बुरी चाल—उन्मार्गप्रस्थितानि इन्द्रियाणि—का० १६५, °प्रवर्तकः—१०३,—र्गम् (अव्य०) भूला-भटका—पंच० १।१६१।

उन्मार्जनम् [उद्+मृज्+णिच्+ल्युट्] रगड़ना, पोंछना, मिटाना।

उन्मितिः [उद्+मा+क्तिन्] नाप, तोल, मूल्य।

उन्मिश्र (वि०) [प्रा० स०] मिला-जुला, चित्र-विचित्र।

उन्मिषित (भू० क० कृ०) [उद्+मिष्+क्त] खुला हुआ (आँख आदि), खिला हुआ, फुलाया हुआ,—तम् दृष्टि, झलक—कु० ५।२५।

उन्मीलः—लनम् [उद्+मील्+घञ्, ल्युट् वा] 1. (आखों का) खोलना, जागर्ति 2. प्रकाशित करना, खोलना—उत्तर० ६।३५ 3. फुलाना, फूंक मारना।

उन्मुख (वि०) (स्त्री०—खी) [उद्—ऊर्ध्वं मुखं यस्य—ब० स०] 1. मुंह ऊपर की ओर उठाये हुए, ऊपर देखते हुए—अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किंस्विदित्युन्मुखीभिः—मेघ० १४,१००, रघु० १।३९, ११।२६, आश्रम° १।५३ 2. तैयार, तुला हुआ, निकटस्थ, उद्यत—तमरण्यसमाश्रयोन्मुखम्—रघु० ८।१२, बन में चले जाने के लिए तत्पर—१६।९, ३।१२ 3. उत्सुक, प्रतीक्षक, उत्कंठित—तस्मिन् संयमिनामाद्ये जाते परिणयोन्मुखे—कु० ६।३४, रघु० १२।२६, ६।२१, ११।२३ 4. शब्दायमान, शब्द करता हुआ—कु० ६।२।

उन्मुखर (वि०) [प्रा० स०] ऊँचा शब्द करने वाला, कोलाहलमय।

उन्मुद्र (वि०) [उद्गता मुद्रा यस्मात्—ब० स०] 1. बिना मुहर का 2. खुला हुआ, खिला हुआ, (फूल की भाँति) फूला हुआ।

उन्मूलनम् [उद्+मूल्+ल्युट्] जड़ से फाड़ लेना, उखाड़ना, मूलोच्छेदन करना—न पादपोन्मूलनशक्ति रंहः—रघु० २।३४।

उन्मेदा [प्रा० स०] स्थूलता, मोटापा।

उन्मेषः—षणम् [उद्+मिष्+घञ्, ल्युट् वा] 1. (आखों का) खोलना, पलक मारना—मुद्रा० ३।२१, 2. खिलना, खुलना, फूलना—उन्मेषं यो मम न सहते जातिवैरी निशायाम्—काव्य० १०, दीर्घिकाकमलोन्मेषः कु० २।३३ 3. प्रकाश, कौंध, दीप्ति - सतां प्रज्ञोन्मेषः—भर्तृ० २।११४ विद्युदुन्मेषदृष्टिम्—मेघ० ८१ 4. जाग जाना, उठना, दिखलाई देना, प्रकट होना, ज्ञान°—शा० ३।१३।

उन्मोचनम् [उद्+मुच्+ल्युट्] खोलना, ढीला करना।

उप (उप०) 1. यह उपसर्ग क्रिया या संज्ञाओं से पूर्व लग कर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है—(क) निकटता, संसक्ति—उपविशति, उपगच्छति (ख) शक्ति, योग्यता—उपकरोति (ग) व्याप्ति—उपकीर्ण (घ) परामर्श, शिक्षण (जो अध्यापक द्वारा प्राप्त हो) उपदिशति, उपदेश (ङ) मृत्यु, उपरति—उपरत (च) दोष, अपराध—उपघात (छ) देना—उपनयति, उपहरति

(ज) चेष्टा, प्रयत्न—उपत्वा नेष्य (झ) उपक्रम, आरम्भ—उपक्रमते, उपक्रमः (ञ) अध्ययन—उपाध्यायः, (ट) आदर, पूजा—उपस्थानम्, उपचरति पितरं पुत्रः 2. जिस समय यह उपसर्ग क्रियाओं से संबद्ध न होकर संज्ञा शब्दों से पूर्व लगता है तो उस समय—सामीप्य, समता, स्थान, संख्या, काल और अवस्था आदि की संसक्ति, तथा अधीनता की भावना आदि अर्थों को प्रकट करता है। उपकनिष्ठिका—कनिष्ठिका के पास वाली अंगुली, उपपुराणम्—अनुषंगी पुराण, उपगुरुः—सहायक अध्यापक, उपाध्यक्षः—उपप्रधान, अव्ययीभाव समासों में भी इन्हीं अर्थों में इसका उपयोग होता है :—उपगङ्गम्=गंगायाः समीपे, उपकूलम्, °वनम् आदि 3. संख्यावाचक शब्दों के साथ लग कर संख्याबहुव्रीहि बन जाता है और 'लगभग' 'प्रायः' 'तकरीबन' अर्थ को प्रकट करता है,—उपत्रिंशाः—लगभग तीस 4. पृथक् रहता हुआ भी यह (क) कर्म के साथ 'हीनता' को प्रकट करता है—उपहरिं सुराः—सिद्धा० देवता हरि के निकट हैं (ख) अधि० के साथ यह 1. 'अधिकता' और 'उत्कृष्टता' को—उपनिष्के कार्षापणम्, उपपरार्धे हरेर्गुणाः 2. तथा योग या जोड़ को प्रकट करता है।

उपकण्ठः—कण्ठम् [उपगतः कण्ठम्—अत्या० स०] 1. सामीप्य, सान्निध्य, पड़ोस—प्राप तालीवनश्याममुपकण्ठं महोदधेः—रघु० ४।३४, १३।४८ कु० ७।५१. मा० ९।२ 2. ग्राम या उसकी सीमा के पास का स्थान—(अव्य०) 1. गर्दन के ऊपर, गले के निकट 2. के निकट, नजदीक।

उपकथा [प्रा० स०] छोटी कहानी, किस्सा।

उपकनिष्ठिका कन्नी अंगुली के पास वाली अंगुली।

उपकरणम् [उप+कृ+ल्युट्] 1. सेवा करना, अनुग्रह करना, सहायता करना 2. सामग्री, साधन, औजार, उपाय—उपकरणीभावमायाति—उत्तर० ३।३, परोपकारोपकरणं शरीरम्—का० २०७, याज्ञ० २।२७६, मनु० ९।२७० 3. जीविका का साधन, जीवन को सहारा देने वाली कोई बात 4. राजचिह्न।

उपकर्णनम् [उप+कर्ण्+ल्युट्] सुनना।

उपकर्णिका [उपकर्णं (अव्य०)+कन्+टाप् इत्वम] अफ़वाह, जनश्रुति।

उपकर्तृ (वि०) [उप+कृ+तृच्] उपकार करने वाला, अनुग्रहकर्ता, उपयोगी, मित्रवत्—हीनान्यनुपकर्तृणि प्रवृद्धानि विकुर्वते—रघु० १७।५८—उपकर्त्री रसादीनाम्—सा० द० ६२४, शि० २।३७।

उपकल्पनम्—ना [उप+कृप्+णिच्+ल्युट्, युच् वा] 1. तैयारी 2. कपोलकल्पित (तथ्यों का) सृजन करना, गढ़ना।

उपकारः [उप+कृ+घञ्] 1. सेवा, सहायता, मदद, अनुग्रह, आभार (विप० 'अपकार')—उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयोः—शि० २।३७, शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः—कु० २।४० ३।७३, याज्ञ० ३।२८४ 2. तैयारी 3. आभूषण, सजावट,—री 1. राजकीय तंबू 2. महल 3. सराय, धर्मशाला।

उपकार्य (वि०) [उप+कृ+ण्यत्] सहायता करने के उपयुक्त,—र्या राजभवन, महल—रम्यां रघुप्रतिनिधिः स नवोपकार्यां बाल्यात्परामिव दशां मदनोऽध्युवास—रघु० ५।६३, शाही खेमा—५।४१, ११।९३, १३।७९, १६।५५, ७३।

उपकुञ्चिः,—चिका [उप+कुञ्च्+कि, कन् टाप् च] छोटी इलायची।

उपकुम्भ (वि०) [अत्या० स०] 1. निकटस्थ, संसक्त 2. अकेला, निवृत्त, एकान्त।

उपकुर्वाणः [उप+कृ+शानच्] ब्राह्मण ब्रह्मचारी जो गृहस्थ बनना चाहता है।

उपकुल्या [उप+कुल+यत्+टाप्] नहर, खाई।

उपकूपम्—पे (अव्य०) [अत्या० स०] कुएँ के निकट, °जलाशयः कुएँ के पास बना चुबच्चा जिसमें गाय भैंस पानी पीते हैं।

उपकृतिः (स्त्री०)—उपक्रिया [उप+कृ+क्तिन्, श वा] अनुग्रह, आभार।

उपक्रमः [उप+क्रम्+घञ्] 1. आरंभ, शुरू—रामोपक्रममाचख्यौ रक्षःपरिभवं नवम्—रघु० १२।४२ राम के द्वारा आरम्भ किया गया 2. उपागमन, साहस° बल पूर्वक आगे बढ़ना—मा० ७, इसी प्रकार—योषितः सुकुमारोपक्रमाः—त० 3. उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवसाय, कार्य, जोखिम का काम 4. योजना, उपाय, तरकीब, युक्ति, उपचार—सामादिभिरुपक्रमैः—मनु० ७।१०७, १५९, रघु० १८।१५, याज्ञ० १।३४५, शि० २०।७६, 5. परिचर्या, चिकित्सा 6. ईमानदारी की जांच दे० 'उपधा'।

उपक्रमणम् [उप+क्रम+ल्युट्] 1. उपागमन 2. उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवसाय 3. आरम्भ 4. चिकित्सा, उपचार।

उपक्रमणिका [उपक्रमण+ङीप्, कन्, टाप् ह्रस्व] भूमिका, प्रस्तावना।

उपक्रीडा [अत्या० स०] खेल का मैदान, खलने का स्थान।

उपक्रोशः—शनम् [उप+क्रुश्+घञ्, ल्युट्] निन्दा, झिड़की, अपकर्ष—प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा—रघु० २।५३।

उपक्रोष्टृ (पुं०) [उप+क्रुश्+तृच्] (जोर से रेंगता हुआ) गधा।

उपक्व (क्वा)णम् [उप+क्वण्+अप् घञ् वा] वीणा की झंकार।

उपक्षयः [उप+क्षि+अच्] 1. रद्द करना, ह्रास, हानि 2. व्यय।

उपक्षेपः [उप+क्षिप्+घञ्] 1. फेंकना, उछालना 2. उल्लेख, इंगित, संकेत, सुझाव—कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि रचयन्—मुद्रा० ४।३—दारुणः खलूपक्षेपः पापस्य—वेणी० ५ 3. धमकी, विशेष दोषारोपण।

उपक्षेपणम् [उप+क्षिप्+ल्युट्] 1. नीचे फेंकना, डाल देना 2. दोषारोपण, दोषी ठहराना।

उपग (वि०) [उप+गम्+ड] (केवल समासान्त में) 1. निकट जाने वाला, पीछे चलने वाला, सम्मिलित होने वाला 2. प्राप्त करने वाला—मनु० १।४६, शि० १६।६८।

उपगणः [प्रा० स०] अप्रधान श्रेणी।

उपगत (भू० क० कृ०) [उप+गम्+त] 1. गया हुआ, निकट पहुँचा हुआ 2. घटित 3. प्राप्त 4. अनुभूत 5. प्रतिज्ञात, सहमत।

उपगतिः (स्त्री०) [उप+गम्+क्तिन्] 1. उपागमन, निकट जाना 2. ज्ञान, जानकारी 3. स्वीकृति 4. उपलब्धि, अवाप्ति।

उपगमः-मनम् [उप+गम्+अप्, ल्युट् वा] 1. जाना, आकृष्ट होना, निकट जाना—सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्—मेघ० ६५, तुम्हारा आना—व्यावर्तान्योपगमात्कुमारी रघु०६।६९, ९।५० 2. ज्ञान, जानकारी 3. उपलब्धि, अवाप्ति—विश्वासोपगमादभिन्नगतयः—श० १।१४ 4. संभोग (स्त्री-पुरुष का) 5. समाज, मण्डली—न पुनरवमानामुपगमः—हि० १।१३६ 6. झेलना, भुगतना, अनुभव करना 7. स्वीकृति 8. करार, प्रतिज्ञा।

उपगिरि-रम् (अव्य०) [अव्य० स०—टच् (सेनकस्य मतेन)] पहाड़ के निकट,—रिः उत्तर दिशा में पहाड़ के समीप स्थित देश।

उपगु (अव्य०) गौ के समीप,—गुः ग्वाला।

उपगुरुः [प्रा० स०] सहायक अध्यापक।

उपगूढ (भू० क० कृ०) [उप+गूह्+क्त] गुप्त, आलिंगित,—ढम् आलिंगन—उपगूढानि सवेपथूनि च—कु० ४।१७, शि० १०।८८, कण्ठाश्लेषोपगूढम्—भर्तृ० ३।८२, मेघ० ९७।

उपगूहनम् [उप+गूह्+ल्युट्] 1. गुप्त रखना, छिपाना 2. आलिंगन 3. आश्चर्य, अचम्भा।

उपग्रहः [उप+ग्रह्+अप्] 1. कैद, पकड़ 2. हार, भग्नाशा—मुद्रा० ४।१२ 3. कैदी 4. सम्मिलित होना, जोड़ना 5. अनुग्रह, प्रोत्साहन 6. लघु ग्रह (राहु, केतु आदि)।

उपग्रहणम् [उप+ग्रह्+ल्युट्] 1. पकड़ना (नीचे से) संभाले रखना, (जैसा कि 'पादोपग्रहणम्' में) 2. पकड़, गिरफ्तारी 3. सहारा देना, बढ़ावा देना 4. वेदाध्ययन—वेदोपग्रहणार्थाय तावग्राहयत प्रभुः—रामा०।

उपग्राहः [उप+ग्रह्+घञ्] 1. उपहार देना 2. उपहार।

उपग्राह्यः [उप+ग्रह्+ण्यत्] 1. भेंट या उपहार 2. विशेष रूप से वह भेंट जो किसी राजा या प्रतिष्ठित व्यक्ति को दी जाय, नज़राना।

उपघातः [उप+हन्+घञ्] 1. प्रहार, चोट, अधिक्षेप—मनु० २।१७९, याज्ञ० २।२५६ 2. विनाश, बर्बादी 3. स्पर्श, संपर्क 4. संप्रहार, उत्पीडन 5. रोग 6. पाप।

उपघोषणम् [उप+घुष्+ल्युट्] ढिंढोरा पीटना, प्रकाशित करना, विज्ञापन देना।

उपघ्नः [उप+हन्+क] 1. अनवरत सहारा—छेदादिवोपघ्नतरोर्व्रततयौ—रघु० १४।१ 2. शरण, सहारा, संरक्षा।

उपचक्रः [प्रा० स०] एक प्रकार का लाल हंस।

उपचक्षुस् (नपुं०) [प्रा० स०] चक्षुताल, चश्मा।

उपचयः [उप+चि+अच्] 1. इकट्ठा होना, जोड़, अभिवृद्धि 2. वृद्धि, बाढ़, आधिक्य—बल° का० १०५, स्वशक्त्युपचये शि० २।५७, ९।३२ 3. परिमाण, ढेर 4. समृद्धि, उत्थान, अभ्युदय।

उपचरः [उप+चर्+अच्] 1. इलाज, चिकित्सा 2. निकट जाना।

उपचरणम् [उप+चर्+ल्युट्] निकट या समीप जाना।

उपचाय्यः [उप+चि+ण्यत्] एक प्रकार की यज्ञाग्नि।

उपचारः [उप+चर्+घञ्] 1. सेवा, शुश्रूषा, सम्मान, पूजा, सत्कार - अस्खलितोपचाराम्—रघु० ५।२० 2. शिष्टता, नम्रता, सौजन्य, नम्र व्यवहार (सौजन्य का बाह्य प्रदर्शन) °परिभ्रष्टः—हि० १।१३३, °विधिर्मनस्विनाम्—मालवि० ३।३, °पदं न चेदिदं—कु० ४।९ केवल सम्मान सूचक उक्ति, चाटुकारितापूर्ण अभिनन्दन 3. अभिवादन, प्रथानुकूल नमस्कार, श्रद्धांजलि—नोपचारमर्हति—श० ३।१८, °यंत्रणया—मालवि० ४ °अंजलिः—रघु० ३।११, नमस्कार करते समय दोनों हाथ जोड़ना 4. संबोधन या अभिवादन की रीति का एक रूप.—रामभद्र इत्येव मां प्रत्युपचारः शोभते तातपरिजनस्य—उत्तर० १, यथा गुरुस्तथोपचारेण—६ 5. बाह्य प्रदर्शन या रूप, संस्कार,—प्रावृषेण्यैरेव लिङ्गैर्मम राजोपचारः - विक्रम० ४ 6. चिकित्सा, उपचार, इलाज या चिकित्सा का प्रयोग, शिशिर°—दश० १५ 7. अभ्यास, अनुष्ठान, संचालन, प्रबंध—व्रतचर्या° मनु० ११।१११, १०।३२, कामोपचारेषु—दश० ८१, प्रेम—वार्ता के संचालन में 8. श्रद्धांजलि अर्पित करने या सम्मान प्रदर्शित करने के

साधन —प्रकीर्णाभिनवोपचारम् (राजमार्गम्) रघु० ७।४, ५।४१, 9. अतः (पूजा, उत्सव या सजावट आदि की) कोई भी आवश्यक वस्तु—सन्मंगलोपचाराणाम् —रघु० १०।७७, कु० ७।८८, रघु० ६।१, पूजा की वस्तुओं या उपचारों की संख्या भिन्न-भिन्न (५, १०, १६, १८ या ६४) बतलाई गई है 10. व्यवहार, शील, आचरण—वैश्य-शूद्रोपचारं च—मनु० ११।११६ 11. काम में आना, उपयोग 12. धर्मानुष्ठान, संस्कार —प्रयुक्त पाणिग्रहणोपचारौ—कु० ७।८६, महावी० १।२४ 13. (क) आलंकारिक या लाक्षणिक प्रयोग, गौण प्रयोग (विप० 'मुख्य' या 'प्राथमिक भाव') —अचेतनेऽपि चेतनवदुपचारदर्शनात्—शारी०, न चास्य करधृतत्वं तत्त्वतोऽस्ति इति मुख्येऽपि उपचार एव शरणं स्यात्—काव्य० १० (ख) समता के आधार पर बना काल्पनिक अभिज्ञान—उभयरूपा चेयं शुद्धा उपचारेणामिश्रितत्वात्—काव्य० २ 14. रिश्वत 15. बहाना—शि० १०।२ 16. प्रार्थना, याचना 17. विसर्गों के स्थान में स् या ष् का होना

उपचितिः (स्त्री०) [उप+चि+क्तिन्] इकट्ठा करना, संचय करना, वर्धन, वृद्धि।

उपचूलनम् [उप+चूल्+ल्युट्] गरम करना, जलाना।

उपच्छदः [उप+छद्+णिच्+घ] ढक्कन, चादर।

उपच्छन्दनम् [उप+छन्द्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रलोभन देकर मनाना या फुसलाना, समझा बुझा कर किसी कार्य के लिए उकसाना—उपच्छन्दनैरेव स्वं ते दापयितुं प्रयतिष्यते—दश० ६५ 2. आमंत्रण देना।

उपजनः [उप+जन्+अच्] 1. जोड़, वृद्धि 2. परिशिष्ट 3. उगना, उद्गमस्थान।

उपजल्पनम्-पिल्म् [उप+जल्प्+ल्युट्, वा] बात, बातचीत।

उपजापः [उप+जप्+घञ्] 1. चुपचाप कान में फुसफुसाना या समाचार देना—परकृत्य° मुद्रा० २ 2. शत्रु के मित्रों के साथ गुप्त बातचीत, फूट के बीज बोकर विद्रोह के लिए भड़काना—उपजापः कृतस्तेन तानाकोपवतस्त्वयि—शि० २।९९, उपजापसहान् विलङ्घयन् स विधाता नृपतीन्मदोद्धतः—कि० २।४७, १६। ४२ 3. अनैक्य, वियोग।

उपजीवक,-विन् (वि०) [उप+जीव्+ण्वुल्, णिनि वा] किसी दूसरे के सहारे रहने वाला, से जीविका करने वाला (करण० के साथ या समास में)—जातिमात्रोपजीविनाम्—मनु० १२।११४, ८।२०, नानापण्योपजीविनाम्—९।२५७, द्यूतोपजीव्यस्मि—मृच्छ० २,—(पुं०) पराश्रित, अनुचर—भीमकान्तैर्नृपगुणैः स बभूवोपजीविनाम्—रघु० १।१६।

उपजीवनम्,—जीविका [उप+जीव्+ल्युट्, क्वुन् वा] 1. जीविका 2. जीवन-निर्वाह का साधन, गुजारा या वृत्ति—निन्दितार्थोपजीवनम्—याज्ञ० ३।२३६ 3. जीविका का साधन, संपत्ति आदि—किंचिद्दत्वोपजीवनम्—मनु० ९।२०७।

उपजीव्य (वि०) [उप+जीव्+ण्यत्] 1. जीविका प्रदान करने वाला—याज्ञ० २।२२७ 2. संरक्षक, संरक्षण देने वाला 3. (आलं०) लिखने के लिए सामग्री देने वाला, जिससे कि मनुष्य सामग्री प्राप्त करे —सर्वेषां कविमुख्यानामुपजीव्यो भविष्यति—महा०, —व्यः 1. संरक्षक 2. स्रोत या प्रामाणिक ग्रंथ (जिससे कि मनुष्य सामग्री प्राप्त करे)—इत्यलमुपजीव्यानां मान्यानां व्याख्यानेषु कटाक्षनिक्षेपेण—सा० द० २।

उपजोषः,-षणम् [उप+जुष्+घञ्, ल्युट् वा] 1. स्नेह 2. सुखोपभोग 3. बार-बार करना।

उपज्ञा [उप+ज्ञा+अङ्] 1. अन्तःकरण में अपने आप उपजा हुआ ज्ञान, आविष्कार (प्रायः समास में जहाँ नपुं० समझा जाता है) पाणिनेरुपज्ञा पाणिन्युपज्ञं ग्रन्थः —सिद्धा०, प्राचेतसोपज्ञं रामायणम्—रघु० १५।६३ 2. व्यवसाय जो पहले कभी न किया गया हो—लोकेऽभूद्यदुपज्ञमेव विदुषां सौजन्यजन्यं यशः—रघुवंश पर मल्लि०।

उपढौकनम् [उप+ढौक्+ल्युट्] सम्मानपूर्ण भेंट या उपहार, नज़राना।

उपतापः [उप+तप्+घञ्] 1. गर्मी, आँच 2. कष्ट, दुःख, पीडा, शोक—सर्वथा न कञ्चन न स्पृशन्त्युपतापाः —का० १३५ 3. संकट, मुसीबत 4. बीमारी 5. शीघ्रता, हड़बड़ी।

उपतापनम् [उप+तप्+णिच्+ल्युट्] 1. गरम करना 2. कष्ट देना, सताना।

उपतापिन् (वि०) [उप+तप्+णिनि] 1. तपाने वाला, जलाने वाला 2. गर्मी या पीडा को सहन करने वाला, बीमार रहने वाला।

उपतिष्यम् [अत्या० स०] 1. आश्लेषा नक्षत्रपुंज 2. पुनर्वसु नक्षत्र।

उपत्यका [उप+त्यकन्—पर्वतस्यासन्नं स्थलमुपत्यका —सिद्धा०] पर्वत की तलहटी, निम्नभूभाग—मलयाद्रेरुपत्यकाः—रघु० ४।४६, एते खलु हिमवतोगिरेरुपत्यकारण्यवासिनः सम्प्राप्ताः—श० ५।

उपदंशः [उप+दंश्+घञ्] 1. भूख या प्यास लगाने वाली वस्तु, चाट, चटनी अचार आदि—द्वित्रानुपदंशानुपपाद्य—दश० १३३, अग्रमांसोपदंशं पिब नवशोणितासवम्—वेणी० ३ 2. काटना, डङ्क मारना 3. आतशक रोग।

उपदर्शकः [उप+दृश्+णिच्+ण्वुल्] 1. मार्गदर्शक, निर्देशक 2. द्वारपाल, साक्षी, गवाह।

उपदश (वि०) [ब० व०—ब० स०] लगभग दस।

उपदा [उप+दा+अङ] 1. उपहार, किसी राजा या महापुरुष को दी गई भेंट, नज़राना,—उपदा विविशुः शश्वन्नोत्सेकाः कोशलेश्वरम् रघु० ४।७०, ५।४१, ७।३० 2. रिश्वत, घूस।

उपदानम्,—नकम् [उप+दा+ल्युट्, कन् च] 1. आहुति, उपहार 2. संरक्षा या अनुग्रह प्राप्त करने के लिए दी गई भेंट, जैसे कि रिश्वत।

उपदिश् (स्त्री०), **उपदिशा** [प्रा० स०] मध्यवर्ती दिशा, जैसे कि ऐशानी, आग्नेयी, नैर्ऋती और वायवी।

उपदेवः,—देवता [प्रा० स०] छोटा देवता, घटिया देवता।

उपदेशः [उप+दिश्+घञ्] 1. शिक्षण, अध्ययन, नसीहत, निर्देशन—सुशिक्षितोऽपि सर्वं उपदेशेन निपुणो भवति—माल वि० १, स्थिरोपदेशामुपदेशकाले प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः—कु० १।३०, मालवि० २।१०, श० २।३ मनु० ८।२७२, अमरु० २६, रघु० १२।५७ परोपदेशे पाण्डित्यम्—हि० १।१०३ 2. विशिष्ट निर्देश, उल्लेख 3. व्यपदेश, वहाना 4. दीक्षा, दीक्षा-मन्त्र देना—चन्द्रसूर्यग्रहे तीर्थे सिद्धक्षेत्रे शिवालये, मन्त्रमात्र-प्रकथनमुपदेशः स उच्यते।

उपदेशक (वि०) [उप+दिश्+ण्वुल्] शिक्षण प्रदान करने वाला, अध्यापन करने वाला,—कः शिक्षक, निर्देशक, गुरु या उपदेष्टा।

उपदेशनम् [उप+दिश्+ल्युट्] नसीहत करना, शिक्षण देना।

उपदेशिन् (वि०) [उप+दिश्+णिनि] नसीहत करने वाला, शिक्षण देनें वाला।

उपदेष्टृ (वि०) [उप+दिश्+तृच्] नसीहत या शिक्षण देने वाला, (पुं०—ष्टा) अध्यापक, गुरु, विशेषकर अध्यात्म गुरु,—चत्वारो वयमृत्विजः स भगवान्कर्मोपदेष्टा हरिः—वेणी० १।२३।

उपदेहः [उप+दिह्+घञ्] 1. मल्हम 2. चादर, ढक्कन।

उपदोहः [उप+दुह्+घञ्] 1. गाय के स्तनों का अग्रभाग 2. दूध दूहने का पात्र।

उपद्रवः [उ+द्रु+अप्] 1. दुःखद दुर्घटना, मुसीबत, संकट 2. चोट, कष्ट, हानि—पुंसामसमर्थानामुपद्रवायात्मनो भवेत्कोपः—पंच० १।३२४, निरुपद्रवं स्थानम्—पंच० १ 3. बलात्कार, उत्पीडन 4. राष्ट्र-संकट (राजा, दुर्भिक्ष या ऋतु के प्रकोप से) 5. राष्ट्रीय अशान्ति, विद्रोह 6. लक्षण, अकस्मात् आ टपकने वाला रोग।

उपधर्मः [उप+धृ+मन्] उपविधि, एक अप्रधान या तुच्छ धर्म-नियम (विप० 'पर')—मनु० २।२३७, ४।१४७।

उपधा [उप+धा+ अङ] 1. छल, जालसाजी, धोखादेही, कपट—मनु० ८।१९३ 2. ईमानदारी की जाँच या परीक्षण (—धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम्—यह चार प्रकार [निष्ठा, निर्लिप्तता, संयम तथा साहस] का कहा गया है); (शोधयेत्) धर्मोपधाभिर्विप्रांश्च सर्वाभिः सचिवान् पुनः—कालिका प्र० 3. उपाय, तरकीब—अयशोभिदुरालोके कोपधा मरणादृते—शि० १९।५८ 4. (व्या० में) अन्त्याक्षर से पहला। सम०—भूतः बेईमान सेवक,—शुचि (वि०) परीक्षित, निष्ठावान्।

उपधातुः [प्रा० स०] 1. घटिया धातु, अर्धधातु—यह गिनती में सात हैं :—सप्तोपधातवः स्वर्णमाक्षिकं तारमाक्षिकम्, तुत्थं कांस्यं च रातिश्च सिन्दूरं च शिलाजतु। सोनामाखी, रूपामाखी, तूतिया, कांसा, मुर्दाशंख, सिंदूर और शिलाजीत। 2. शरीर के अप्रधान स्राव जो गिनती में छः हैं—स्तन्यं रजो वसा स्वेदो दन्ताः केशास्तथैव च, औजस्यं सप्तधातूनां क्रमात्सप्तोपधातवः —(दूध, रज, चर्बी, पसीना, दांत, बाल और ओज)।

उपधानम् [उप+धा+ल्युट्] 1. ऊपर रखना या आराम करना 2. तकिया, गद्‌देदार आसन—विपुलमुपधानं भुजलता—भर्तृ० ३।७९ 3. विशेषता, व्यक्तित्व 4. स्नेह, कृपा 5. धार्मिक अनुष्ठान 6. श्रेष्ठता, श्रेष्ठ गुण—सोपधानां धियं धीराः स्थेयसीं खट्वयन्ति ये—शि० २।७७, (यहाँ 'उपधान' का अर्थ तकिया भी है)।

उपधानीयम् [उप+धा+अनीयर्] तकिया।

उपधारणम् [उप+धृ+णिच्+ल्युट्] 1. संचिन्तन, विचार-विमर्श 2. खींचना, (अंकुड़ी द्वारा) खिचाव।

उपधिः [उप+धा+कि] 1. धोखादेही, बेईमानी,—अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशा विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि—कि० १।४५, दे० 'अनुपधि' भी 2. (विधि में) सचाई को दबाना, झूठा सुझाव—मनु० ८।१६५, 3. त्रास, धमकी, बाध्यता, मिथ्या फुसलाहट—बलोपधिविनिर्वृत्तान् व्यवहारान्निवर्तयेत्—याज्ञ० २।३१, ८९ 4. पहिये का वह भाग जो नाभि और पुट्ठी के बीच का स्थान है, पहिया।

उपधिकः [उपधि+ठन्] धोखेबाज, प्रवञ्चक—(दे० 'औपधिक' अधिक शुद्ध रूप)।

उपधूपित (वि०) [उप+धूप्+क्त] 1. धूनी दिया गया 2. मरणासन्न, अत्यन्त पीड़ा-ग्रस्त,—तः मृत्यु।

उपधृतिः (स्त्री०) [उप+धृ+क्तिन्] प्रकाश की किरण।

उपध्मानः [उप+ध्मा+ल्युट्] ओष्ठ,—नम् फूंक मारना, सांस लेना।

उपध्मानीयः [उप+ध्मा+अनीयर्] प् और फ् से पूर्व रहने वाला महाप्राण विसर्ग—उपूपध्मानीयानामोष्ठौ—सिद्धा०

उपनक्षत्रम् [प्रा० स०] गौण नक्षत्र पुंज, अप्रधान तारा (ऐसे तारे गिनती में ७२९ बतलाये जाते हैं)।

उपनगरम् [प्रा० स०] नगरांचल।

उपनत (भू० क० कृ०) [उप+नम्+क्त] आया हुआ, पहुँचा हुआ, प्राप्त, आ टपका हुआ आदि।

उपनतिः (स्त्री०) [उप+नम्+क्तिन्] 1. पास जाना 2. झुकना, नति, नमस्कार।

उपनयः [उप+नी+अच्] 1. निकट लाना, ले जाना 2. उपलब्धि, अवाप्ति, खोज लेना 3. काम पर लगाना 4. उपनयन संस्कार—जनेऊ पहनाना, वेदाध्ययन की दीक्षा देना—गृह्योक्तकर्मणा येन समीपं नीयते गुरोः, बालो वेदाय तद्योगात् बालस्योपनयं विदुः। 5. तर्कशास्त्र में भारतीय अनुमान प्रक्रिया के पाँच अंगों में से चौथा—प्रस्तुत विशिष्ट तर्क का प्रयोग—व्याप्तिविशिष्टस्य हेतोः पक्षधर्मता प्रतिपादकं वचनमुपनयः—तर्क०।

उपनयनम् [उप+नी+ल्युट्] 1. निकट ले जाना 2. उपहार, भेंट 3. जनेऊ-संस्कार —आसमावर्तनात्कुर्यात्कृतोपनयनो द्विजः—मनु० २।१०८, १७३।

उपनागरिका [प्रा० स०] वृत्त्यनुप्रास का एक भेद, यह माधुर्य-व्यंजक वर्णों के योग से बनता है, उदा० तु० काव्य० ९ में दिये गये उदाहरण की—अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः, अलमलमालि मृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला।

उपनायः,—नायनम्=दे० उपनय।

उपनायकः [उप+नी+ण्वुल्] 1. नाट्य-साहित्य या किसी अन्य रचना में वह पात्र जो नायक का प्रधान सहायक हो, उदा० रामायण में लक्ष्मण, मालतीमाधव में मकरन्द आदि 2. उपपति, प्रेमी।

उपनायिका [प्रा० स०] नाट्य-साहित्य या किसी अन्य रचना में वह पात्र जो नायिका की प्रधान सखी या सहेली हो जैसे मालतीमाधव में मदयन्तिका।

उपनाहः [उप+नह्+घञ्] 1. गठरी 2. किसी घाव पर लगाई जाने वाली मल्हम 3. वीणा की खूंटी जिसको मरोड़ने से सितार के तार कसे जाते हैं।

उपनाहनम् [उप+नह्+णिच्+ल्युट्] 1. उबटन आदि का लेप 2. मालिश करना, लेप करना।

उपनिक्षेपः [उप+नि+क्षिप्+घञ्] 1. धरोहर या न्यास के रूप में रखना 2. खुली धरोहर, कोई वस्तु जिसका रूप, परिमाण आदि बता कर उसे दूसरे को संभाल दिया जाता है—याज्ञ० २।२५, (इस पर मिता० कहती है—उपनिक्षेपो नाम रूपसंख्याप्रदर्शनेन रक्षणार्थं परस्य हस्ते निहितं द्रव्यम्)।

उपनिधानम् [उप+नि+धा+ल्युट्] 1. निकट रखना 2. जमा करना, किसी की देख-रेख में रखना 3. धरोहर।

उपनिधिः [उप+नि+धा+कि] 1. धरोहर, अमानत 2. (विधि में) मुहरबंद अमानत—याज्ञ० २।२५, मनु० ८।१४५, १४९, तु० मेधातिथि—यत्प्रदर्शितरूपं सचिह्नवस्त्रादिना पिहितं निक्षिप्यते—तु० याज्ञ० २।६५, और मिता० में उत्कथित नारद।

उपनिपातः [उप+नि+पत्+घञ्] 1. निकट पहुँचना, निकट आना 2. आकस्मिक तथा अप्रत्याशित आक्रमण या घटना।

उपनिपातिन् (वि०) [उप+नि+पत्+णिनि] अचानक आ टपकने वाला,—रन्ध्रोपनिपातिनोऽनर्थाः—श० ६।

उपनिबन्धनम् [उप+नि+बन्ध्+ल्युट्] 1. किसी कार्य को सम्पादित करने का उपाय 2. बंधन, जिल्द।

उपनिमन्त्रणम् [उप+नि+मन्त्र्+णिच्+ल्युट्] आमन्त्रण, बुलाना, प्रतिष्ठापन, उद्घाटन।

उपनिवेशित (वि०) [उप+नि+विश्+णिच्+क्त] रक्खा गया, स्थापित किया गया, बसाया गया—कु० ६।३७, रघु० १५।२९।

उपनिषद् (स्त्री०) [उप+नि+सद्+क्विप्] 1. ब्राह्मण ग्रन्थों के साथ संलग्न कुछ रहस्यवादी रचना जिसका मुख्य उद्देश्य वेद के गूढ अर्थ का निश्चय करना है—भामि० २।४०, मा० १।७ (निम्नांकित व्युत्पत्तियाँ उसके नाम की व्याख्या करने के लिए दी गई हैं—(क) उपनीय तमात्मानं ब्रह्मापास्तद्वयं यतः, निहन्त्यविद्यां तज्जं च तस्मादुपनिषद्भवेत्। या (ख) निहत्यानर्थमूलं स्वाविद्यां प्रत्यक्तया परम्, नयत्यपास्तसंभेदमतो वोपनिषद्भवेत्। या (ग) प्रवृत्तिहेतून्निःशेषांस्तन्मूलोच्छेदकत्वतः, यतोवसादयेद्विद्यां तस्मादुपनिषद्भवेत्। मुक्तकोपनिषद् में १०८ उपनिषदों का उल्लेख हैं, परन्तु इस संख्या में कुछ और वृद्धि हुई है 2. (क) एक गूढ या रहस्यमय सिद्धान्त (ख) रहस्यवादी ज्ञान या शिक्षा—महावी० २।२ 3. परमात्मा के संबंध में सत्य ज्ञान 4. पवित्र एवं धार्मिक ज्ञान 5. गोपनीयता, एकान्तता 6. समीपस्थ भवन।

उपनिष्करः [उप+निस्+कृ+घ] गली, मुख्यमार्ग, राजमार्ग।

उपनिष्क्रमणम् [उप+निस्+क्रम्+ल्युट] 1. बाहर जाना, निकलना 2. एक धार्मिक अनुष्ठान या संस्कार जिसमें बच्चे को सर्वप्रथम बाहर खुली हवा में निकाला जाता है (यह संस्कार प्रायः चार मास की आयु होने पर मनाया जाता है) तु०—मनु० २।३४ 3. मुख्य या राजमार्ग।

उपनृत्यम् [ब० स०] नाचने का स्थान, नृत्यशाला।

उपनेतृ (वि०) [उप+नी+तृच्] जो नेतृत्व करता है, या निकट लाता है, ले आने वाला—कु० १।६०,

मालत्यभिज्ञानस्योपनेत्री—मा० ९, (पुं०—त्ता) उपनयन संस्कार को कराने वाला गुरु।

उपन्यासः [उप+नि+अस्+घञ्] 1. निकट रखना, अगल बगल रखना 2. धरोहर, अमानत 3. (क) वक्तव्य,सुझाव, प्रस्ताव—पावकः खलु एष वचनोपन्यासः—श० ५ (ख) भूमिका, प्रस्तावना—निर्यातः शनकैरलीकवचनोपन्यासमालीजनः—अमरु २३ (ग) संकेत, उल्लेख—आत्मन उपन्यासपूर्वम्—श० ३ 4. शिक्षा, विधि।

उपपतिः [प्रा० स०] प्रेमी, जार—उपपतिरिव नीचैः पश्चिमान्तेन चन्द्रः—शि० ११।६५. १५।६३, मनु० ३।१५५, ४।२१६, २१७।

उपपत्तिः (स्त्री०) [उप+पद्+क्तिन्] 1. होना, घटित होना, आविर्भाव, उत्पत्ति, जन्म—शि० १।६९, भग० १३।९ 2. कारण, हेतु, आधार—कि० ३।५२ 3. तर्क, युक्ति—उपपत्तिमदूर्जितं वचः—कि० २।१, युक्तियुक्त 4. योग्यता, औचित्य 5. निश्चयन, प्रदर्शन, प्रदर्शित उपसंहार—उपपत्तिरुदाहृता बलात्—कि० २।२८ 6. (अंकगणित या ज्यामिति में) प्रमाण ,प्रदर्शन 7. उपाय, तरकीब 8. करना, अमल में लाना, प्राप्त करना, सम्पन्न करना—स्वार्थोपपत्तिं प्रति दुर्बलाशः—रघु० ५।१२, तात्पर्यानुपपत्तितः—भाषा० दे० अनुपपत्ति 9. अवाप्ति, प्राप्ति—असंशयं प्राक् तनयोपपत्तेः—रघु० १४।७८ कि० ३।१।

उपपदम् [प्रा० स०] 1. वह शब्द जो किसी से पूर्व लगाया गया हो या बोला गया हो—धनुरुपपदं वेदम् —कि० १८।४४, (धनुर्वेदं)—तस्याः स राजोपपदं निशान्तम्—रघु० १६।४० 2. पदवी, उपाधि, सम्मानसूचक विशेषण यथा आर्य, शर्मन्—कथं निरुपपदमेव चाणक्यमिति न आर्य चाणक्यमिति—मुद्रा० ३ 3. वाक्य का गौणशब्द, किसी क्रिया या क्रिया से बने संज्ञा (कृदन्त) शब्दों से पूर्व लगाया गया उपसर्ग, निपात आदि शब्द।

उपपन्न (भू० क० कृ०) [उप+पद्+क्त] 1. प्राप्त, सेवित, सहित, युक्त 2. ठीक, योग्य, उचित, उपयुक्त (संबं० या अधि० के साथ)—उपपन्नमिदं विशेषणं वायोः—विक्रम० २, उपपन्नमेतदस्मिन् राजनि —श० २।

उपपरीक्षा,-क्षणम् [उप+परि+ईक्ष्+अङ, ल्युट् वा] अनुसंधान, जाँच पड़ताल।

उपपातः [उप+पत्+घञ्] 1. अप्रत्याशित घटना 2. संकट, मुसीबत, दुर्घटना।

उपपातकम् [प्रा० स०] तुच्छ पाप, जुर्म,—महापातकतुल्यानि पापान्युक्तानि यानि तु, तानि पातकसंज्ञानि तन्न्यूनमुपपातकम्। याज्ञ० ३।२१०।

उपपादनम् [उप+पद्+णिच्+ल्युट्] 1. कार्यान्वित करना, अमल में लाना, संपन्न करना 2. देना, सौंपना, प्रस्तुत करना 3. प्रमाणित करना, प्रदर्शन, तर्क द्वारा स्थापना 4. परीक्षा, निश्चयन।

उपपापम्=उपपातकम।

उपपार्श्वः-र्श्वम् [अत्या० स०] 1. कंधा 2. पार्श्वांग, पार्श्व 3. विरोधी पक्ष।

उपपीडनम् [उप+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1. पेलना, निचोड़ना, बर्बाद करना, उजाड़ना 2. प्रपीडित करना, चोट पहुँचाना—व्याधिभिश्चोपपीडनम्—मनु० ६।६२, १२।८० 3. पीडा, वेदना।

उपपुरम् [प्रा० स०] नगरांचल।

उपपुराणम् [प्रा० स०] गौण या छोटा पुराण (इनके नामों को जानने के लिए दे० 'अष्टादशन्')

उपपुष्पिका [अत्या० स०—संज्ञायां कन्, टाप्, इत्वम्] जम्हाई लेना, हाँफना।

उपप्रदर्शनम् [प्रा० स०] निर्देश करना, संकेत करना।

उपप्रदानम् [प्रा० स०] 1. दे देना, सौंप देना 2. रिश्वत, उपायन—उपप्रदानैर्मार्जारो हितकृत्प्रार्थ्यते जनैः—पंच० १।१९५ 3. उपहार।

उपप्रलोभनम् [प्रा० स०] 1. बहकाना, फुसलाना 2. रिश्वत, फुसलाहट, ललचाव—उच्चावचान्युपप्रलोभनानि—दश० ४८।

उपप्रेक्षणम् [प्रा० स०] उपेक्षा करना, अवहेलना करना।

उपप्रैषः [प्रा० स०] आमन्त्रण, बुलावा।

उपप्लवः [उप+प्लु+अप्] 1. विपत्ति, दुष्कृत्य, संकट, दुःख, आपदा—अथ मदनवधूरुपप्लवान्तं परिपालयांबभूव—कु० ४।४६ जीवन्पुनः शश्वदुपप्लवेभ्यः प्रजाः पासि—रघु० २।४८ 2. (क) दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना, आघात, कष्ट—क्वचिन्न वाय्वादिरुपप्लवो वः—रघु० ५।६ मेघ० १७ (ख) बाधा, रुकावट 3. उत्पीडन, सताना, कष्ट देना—उपप्लवाय लोकानां धूमकेतुरिवोत्थितः—कु० २।३२ 4. डर, भय, दे० नी० 'उपप्लविन्' 5. अपशकुन, अनिष्टकर दैवी उपद्रव 6. विशेषकर सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहण 7. राहु 8. अराजकता।

उपप्लविन् (वि०) [उपप्लव+इनि] 1. दुःखी, कष्टग्रस्त 2. अत्याचार से पीडित—नृपा इवोपप्लविनः परेभ्यः —रघु० १३।७।

उपबन्धः [उप+बन्ध्+घञ्] 1. संबंध 2. उपसर्ग 3. रतिक्रिया का आसन विशेष।

उपबर्हः,-बर्हणम् [बर्ह्+घञ्, ल्युट् वा] तकिया।

उपबहु (वि०) [प्रा० स०] कुछ, थोड़े बहुत।

उपबाहुः [अत्या० स०] कोहनी से नीचे का हाथ का भाग।

उपभङ्गः [उप+भंज्+घञ्] 1. भाग जाना, पश्चगमन 2. (कविता का) एक भाग।

उपभाषा [प्रा० स०] बोलचाल की गौण भाषा ।

उपभृत् (स्त्री०) [उप+भृ+क्विप्, तुकागमः] यज्ञों में प्रयुक्त होने वाला गोल प्याला ।

उपभोगः [उप+भुज्+घञ्] 1. (क) रसास्वादन, खाना, चखना—न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति—मनु० २।९४, याज्ञ० २।१७१, काम°—भग० १६।११ (ख) उपयोग, प्रयोग—श० ४।४ 2. रति-सुख, स्त्रीसहवास- रघु० १४।२४ 3. फलोपभोग 4. आनन्द, संतृप्ति ।

उपमन्त्रणम् [उप+मन्त्र्+ल्युट्] 1. संबोधित करना, आमंत्रण, बुलावा 2. उकसाना, उपच्छंदन ।

उपमन्थनी [उप+मन्थ्+ल्युट्+ङीप्] अग्नि को उद्दीप्त करने वाली लकड़ी ।

उपमर्दः [उप+मृद्+घञ्] घर्षण, रगड़, दबाव, बोझ के नीचे कुचल जाना,—अन्यासु तावदुपमर्दसहासु भृङ्ग लोलं विनोदय मनः सुमनोलतासु—सा० द० (यहाँ 'उपमर्द' का अर्थ है—उद्धत व्यवहार या संभोगजन्य रतिसुख) 2. नाश, आघात, वध करना 3. झिड़कना, दुर्वचन कहना, अपमानित करना 4. भूसी अलग करना 5. आरोप का निराकरण ।

उपमा [उप+मा+अङ+टाप्] 1. समरूपता, समता साम्य—स्फुटोपमं भूतिसितेन शम्भुना—शि० १।४, १७।६९, 2. (अलं० शा०) एक दूसरे से भिन्न दो पदार्थों की तुलना, तुल्यता, तुलना—साधर्म्यमुपमा भेदे—काव्य० १०, सादृश्यं सुंदरं वाक्यार्थोपस्कारक-मुपमालंकृतिः—रस०, या—उपमा यत्र सादृश्यलक्ष्मी-रुल्लसति द्वयोः, हंसीव कृष्ण ते कीर्तिः स्वर्गङ्गामवगाहते। चन्द्रा०, ५।३, उपमा कालिदासस्य—सुभा० 3. तुलना का मापदण्ड—उपमान, यथा वातो निवातस्थो नेंगते सोपमा स्मृता—भग० ६।१९ दे० °द्रव्य नी०, बहुधा समासान्त में 'की भांति' 'मिलते-जुलते'—वुबुधे न बुधोपमः—रघु० १।४७, इसी प्रकार अमरोपम, अनुपम आदि 4. समानता (चित्र, मूर्ति आदि की) । सम० —द्रव्यम् तुलना के लिए प्रयुक्त किये जाने वाला पदार्थ—सर्वोपमाद्रव्यसमुच्चयेन—कु० १।४९ ।

उपमातृ (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. दूसरी माता, दूध पिलाने वाली धाय 2. निकट संबंधिनी स्त्री—मातृष्वसा मातुलानी पितृव्यस्त्री पितृष्वसा, श्वश्रूः पूर्वजपत्नी च मातृतुल्याः प्रकीर्तिताः—शब्द० ।

उपमानम् [उप+मा+ल्युट्] 1. तुलना, समरूपता—जाता-स्तद्र्वोरुपमानबाह्याः—कु० १।३६ 2. तुलना का माप-दण्ड जिनसे किसी की तुलना की जाय (विप० उपमेय) उपमा के चार अपेक्षित गुणों में से एक—उपमानम-भूद्विलासिनाम्—कु० ४।५, उपमानस्यापि सखे प्रत्युप-मानं वपुस्तस्याः—विक्रम० २।३, शि० २०।४९, 3. (न्या० दर्शन में) सादृश्य, समानता की मान्यता, चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जो यथार्थ ज्ञान तक पहुँचाने में सहायक होता है—इसकी परिभाषा —प्रसिद्धसाधर्म्यात् साध्यसाधनम्, या, उपमितिकर-णमुपमानं तच्च सादृश्यज्ञानात्मकम्—तर्क० ।

उपमितिः (स्त्री०) [उप+मा+क्तिन्] 1. समरूपता, तुलना, समानता—पल्लवोपमितिसाम्यसपक्षम्—सा० द०, तदाननस्योपमितौ दरिद्रता—नै० १।२४ 2. (न्या० द० में) सादृश्य, नियमन, सादृश्य से प्राप्त वस्तुज्ञान, उपमान के द्वारा निगमित उपसंहार—प्रत्य-क्षमप्यनुमितिस्तथोपमितिशब्दजे—भाषा० ५२ 3. एक अलंकार=उपमा ।

उपमेय (सं० कृ०) [उप+मा+यत्] समानता या तुलना करने के योग्य, तुल्य (करण० के साथ या समास में) भूयिष्ठमासीदुपमेयकान्तिः गुहेन—रघु० ६।४, १८।३४, ३७, कु० ७।२,—यम् तुलना करने का विषय, तुलनीय (विप० उपमान)—उपमानोपमेयत्वं यदेकस्यैव वस्तुनः—चन्द्रा० ५।७, ९ । सम०—उपमा एक अलंकार जिसमें उपमेय और उपमान की तुलना इस दृष्टि से की जाती है कि उनके समान कोई और वस्तु है ही नहीं,—विपर्यास उपमेयोपमानयोः—काव्य० १० ।

उपयन्तृ (पुं०) [उप+यम्+तृच्] पति—अथोपयन्तार-मलं समाधिना कु०—५।४५, रघु० ७।१, शि० १०।४५ ।

उपयन्त्रम् [प्रा० स०] चीरफाड़ का एक छोटा उपकरण ।

उपयमः [उप+यम्+अप्] 1. विवाह, विवाह करना —कन्या त्वजातोपयमा सलज्जा नवयौवना—सा० द० 2. प्रतिबंध ।

उपयमनम् [उप+यम्+ल्युट्] 1. विवाह करना 2. प्रतिबंध लगाना 3. अग्नि को स्थापित करना ।

उपयष्टृ (पुं०) [उप+यज्+तृच्] यज्ञ के सोलह ऋत्विजों में से 'उपयज्' का पाठ करने वाला प्रति-प्रस्थाता नामक ऋत्विक् ।

उपयाचक (वि०) [उप+याच्+ण्वुल्] मांगने वाला, प्रार्थी, विवाहार्थी, भिक्षुक ।

उपयाचनम् [उप+याच्+ल्युट्] निवेदन करना, मांगना, प्रार्थना करने के लिए किसी के निकट जाना ।

उपयाचित (भू० क० कृ०) [उप+याच्+क्त] जिससे मांगा गया हो, या प्रार्थना की गई हो,—तम् 1. निवेदन या प्रार्थना 2. मनौती, अपनी अभीष्टसिद्धि हो जाने पर देवता को प्रसन्न करने के लिए प्रतिज्ञात भेंट (चाहे वह कोई पशु हो या मनुष्य)—निक्षेपी म्रियते तुभ्यं प्रदास्याम्युपयाचितम्—पंच० १।१४. अद्य मया भगवत्याः करालायाः प्रागुपयाचितं स्त्रीरत्नमुपहर्तव्यम्

—मा० ५ 3. अपनी इष्टसिद्धि के लिए देवता के प्रति प्रार्थना या निवेदन।

उपयाचितकम्=ऊपर दे०, उपयाचित-सिद्धायतनानि कृत-विविधदेवतोपयाचितकानि—का० ६४।

उपयाजः [उप+यज्+घञ्] यज्ञ के अतिरिक्त यजुर्वेदीय मंत्र।

उपयानम् [उप+या+ल्युट्] पहुँचना, निकट आना, —हरोपयाने त्वरिता बभूव—कु० ७।२२।

उपयुक्त (भू० क० कृ०) [उप+युज्+क्त] 1. संलग्न 2. योग्य, सही, उचित 3. सेवा के योग्य, काम का।

उपयोगः [उप+युज्+घञ्] 1. काम, लाभ, प्रयोग, सेवन —व्रजन्ति ·····अनङ्गलेखक्रिययोपयोगम्—कु० १।७ 2. औषधि तैयार करना या देना 3. योग्यता, उपयुक्तता, औचित्य 4. संपर्क, आसन्नता।

उपयोगिन् (वि०) [उप+युज्+धिनुण्] 1. काम में आने वाला, लाभदायक 2. सेवा के योग्य, काम का 3. योग्य, उचित।

उपरक्त (भू० क० कृ०) [उप+रञ्ज्+क्त] 1. कष्टग्रस्त, संकटग्रस्त, दुःखी 2. ग्रहण-ग्रस्त 3. रंजित, रंगीन —शि० २।१८,—**क्तः** ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा।

उपरक्षः [उप+रक्ष्+अच्] अंग रक्षक।

उपरक्षणम् [उप+रक्ष्+ल्युट्] पहरेदार, गारद, चौकी।

उपरत (भू० क० कृ०) [उप+रम्+क्त] 1. निवृत्त, विरक्त—रजस्युपरते—मनु० ५।६६ 2. मृत —अद्य दशमो मासस्तातस्योपरतस्य—मुद्रा० ४। सम०—**कर्मन्** (वि०) सांसारिक कार्यों पर भरोसा न करने वाला, —**स्पृह** (वि०) इच्छा से शून्य, सांसारिक आसक्ति और सम्पत्तियों के प्रति उदासीन।

उपरतिः (स्त्री०) [उप+रम्+क्तिन्] 1. विरक्ति, निवृत्ति 2. मृत्यु 3. विषय-भोग से विरक्ति 4. उदासीनता 5. यज्ञादि विहित कर्मों से विरक्ति, प्रथापालन के हेतु किये जाने वाले कर्मकांड में अविश्वास।

उपरत्नम् [प्रा० स०] अप्रधान या घटिया रत्न,—उपरत्नानि काचश्च कर्पूरोऽश्मा तथैव च, मुक्ता शुक्तिस्तथा शंख इत्यादीनि बहून्यपि। गुणा यथैव रत्नानामुपरत्नेषु ते तथा, किन्तु किंचित्ततो हीना विशेषोऽयमुदाहृतः।

उपर (रा) मः [उप+रम्+घञ्] 1. विरक्ति, निवृत्ति 2. परिवर्जन, त्याग 3. मृत्यु।

उपरमणम् [उप+रम्+ल्युट्] 1. रति सुख से विरक्ति 2. प्रथानुरूप कर्मकाण्ड से विरति 3. विरक्ति, निवृत्ति।

उपरसः [प्रा० स०] 1. अप्रधान खनिज धातु 2. गौण भाव या आवेश 3. अप्रधान रस।

उपरागः [उप+रञ्ज्+घञ्] 1. सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण —उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणी योगम् —श० ७।२२, शि० २०।४५ 2. राहु या शिरोबिंदु की ओर चढ़ने वाला 3. लाली, लाल रंग, रंग 4. संकट, कष्ट, आघात,—मृणालिनी हैममिवोपरागम्—रघु० १६।७ 5. झिड़की, निन्दा, दुर्वचन।

उपराजः [प्रा० स०] वाइसराय, राजप्रतिनिधि, उपशासक।

उपरि (अव्य०) [ऊर्ध्व+रिल्, उप आदेशः] पृथक्रूप से प्रयुक्त होने वाला संबंधबोधक अव्यय (बहुधा संबं० के साथ; कर्म० तथा अधि० के साथ विरल प्रयोग), निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है—(क) ऊपर, अधिक, पर, पै, की ओर (विप० अधः) (संबं० के साथ—गतमुपरि घनानाम्—श० ७।७, अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः पपात—रघु० २।६०, अर्कस्योपरि —श० २।८, बहुधा समास के अंत में, रथ°, तरुवर° (ख) समाप्ति पर,—सिर पर, सर्वानन्दानामुपरि वर्तमाना—का० १५८ (ग) परे, अतिरिक्त,—याज्ञ० २।२५३ (घ) के संबंध में, के विषय में, की ओर, पर —परस्परस्योपरिपर्यचीयत—रघु० ३।२४—शा० ३।२३, तवोपरि प्रायोपवेशनं करिष्यामि—तुम्हारे कारण (ङ) के बाद,—मुहूर्तादुपरि उपाध्यायश्चेदागच्छेत् —पा० ३।३।९ सिद्धा०। सम०—**उपरि** (**उपर्युपरि**) 1. (कर्म० और संबं० के साथ अथवा स्वतन्त्र रूप से) निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) जरा ऊपर, —लोकानुपर्युपर्यास्ते माधवः—वोप०(ख) उच्च से उच्चतर, कहीं ऊँचा, ऊपर, ऊँचाई पर—उपर्युपरि सर्वेषामादित्य इव तेजसा—मा० 2. (क्रियाविशेषण के रूप में) अर्थ है (क), अत्यंत ऊँचाई पर, पर, ऊपर की ओर(विप० अधः)—उपर्युपरि पश्यन्तः सर्वे एव दरिद्रति —हि० २।२, बहुधा समास में—स्वमुद्रोपरिचिह्नितम् —याज्ञ० १।३१९ (ख) इसके सिवाय, इसके अतिरिक्त, अधिक, और—शतान्युपरि चैवाष्टौ तथा भूयश्च सप्ततिः—महा० (ग) बाद में—यदा पूर्वं नासीदुपरि च तथा नैव भविता—शा० २।७, सर्पिः पीत्वोपरि पयः पिबेत्—सुश्रुत,—**चर** (वि०) ऊपर विचरने वाला (पक्षी आदि)—**तन**,—**स्थ** (वि०) अधिक ऊपर का, अपेक्षाकृत ऊँचा,—**भागः** ऊपर का अंश या पार्श्व, -**भावः** ऊपर या अपेक्षाकृत ऊँचाई पर होना —**भूमिः** (स्त्री०) ऊपर वाली धरती।

उपरिष्टात् (अव्य०) [ऊर्ध्व+रिष्टातिल्, उप आदेशः] 1. क्रियाविशेषण के रूप में इसका अर्थ है:—(क) अधिक, ऊपर, ऊँचे—भर्तृ० ३।१३१, याज्ञ० १।१०६ (ख) इसके आगे, बाद में, इसके पश्चात्—कल्याणावतंसा हि कल्याणसंपदुपरिष्टाद्भवति—मा० ६, इदमुपरिष्टात् व्याख्यातम्, अन्त में (ग) के पीछे (विप० पुरस्तात्)

2. संबंधबोधक अव्यय के रूप में इसका अर्थ है:—(क) अधिक, पर (संबं० के साथ, कर्म० के साथ विरल प्रयोग,) शि० ११।३ (ख) सिर से पैर तक (ग) के पीछे (संबं० के साथ)।

उपरीतक: [उपरि+इ+क्त+कन्] रतिक्रिया का आसन विशेष ('विपरीतक' भी कहलाता है)—ऊरावेकपदं कृत्वा द्वितीयं स्कन्धसंस्थितं, नारीं कामयते कामी बन्धः स्यादुपरीतकः। शब्द०।

उपरूपकम् [उपगतं रूपकं दृश्यकाव्यं सादृश्येन—प्रा० स०] घटिया प्रकार का नाटक, इसके निम्नांकित १८ भेद गिनाये गए हैं:—नाटिका त्रोटकं गोष्ठी सट्टकं नाट्यरासकम्, प्रस्थानोल्लाप्य काव्यानि प्रेंखणं रासकं तथा, संलापकं श्रीगदितं शिल्पकं च विलासिका, दुर्मल्लिका प्रकरणी हल्लीशो भाणिकेति च। सा० द० २७६।

उपरोध: [उप+रुध्+घञ्] 1. अवबाधा, रुकावट, रोक—रघु० ६।४४ शि० २०।७४ 2. बाधा, कष्ट—तपोवननिवासिनामुपरोधो मा भूत्—श० १, अनुग्रहः खल्वेष नोपरोधः—विक्रम० ३ 3. आच्छादित करना, घेरा डालना, अवरुद्ध करना 4. संरक्षा, अनुग्रह।

उपरोधक (वि०) [उप+रुध्+ण्वुल्] 1. अवबाधक 2. आड़ करने वाला, घेरा डालने वाला,—कम्, भीतर का कमरा, निजी कमरा।

उपरोधनम् [उप+रुध्+ल्युट्] अवबाधा, रुकावट आदि दे० उपरोध।

उपल: [उप+ला+क] 1. पत्थर, पाषाण—उपलशकलमेतद्भेदकं गोमयानाम्—मुद्रा० ३।१५—कान्ते कथं घटितवानुपलेन चेतः—शृंगार० ३, मेघ० १९, श० १।१४ 2. मूल्यवान् पत्थर, रत्न, मणि।

उपलक: [उपल+कन्] पत्थर,—ला 1. रेत, बालुका 2. परिष्कृत शर्करा।

उपलक्षणम् [उप+लक्ष्+ल्युट्] 1. देखना, दृष्टि डालना, अंकित करना—त्रैलोपलक्षणार्थम्—श० ४ 2. चिह्न, विशिष्ट या भेदक रूप—विक्रम० ४।३३ 3. पद, पदवी 4. किसी ऐसी बात का ध्वनित होना जो वस्तुतः कही न गई हो, किसी अतिरिक्त वस्तु की ओर या अन्य किसी समरूप पदार्थ की ओर संकेत जबकि केवल एक का ही उल्लेख किया गया हो, समस्त वस्तु के लिए उसके किसी एक भाग का कथन, पूरी जाति को प्रकट करने के लिए व्यक्ति की ओर संकेत आदि (स्वप्रतिपादकत्वे सति स्वेतरप्रतिपादकत्वम्)—मन्त्रग्रहणं ब्राह्मणस्याप्युपलक्षणम् पा० ११।४।८० सिद्धा०।

उपलब्धि: (स्त्री०) [उप+लभ्+क्तिन्] 1. प्राप्ति, अवाप्ति, अभिग्रहण—वृथा हि मे स्यात्स्वपदोपलब्धिः—रघु० ५।५६, ८।१७ 2. पर्यवेक्षण, प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान—नाभाव उपलब्धेः—तु० न्या० सू० २।२८ 3. समझ, मति 4. अटकल, अनुमान 5. संलक्ष्यता, आविर्भाव (मीमांसकों ने 'उपलब्धि' को प्रमाण का एक भेद माना है) दे० 'अनुपलब्धि'।

उपलम्भ: [उप+लभ्+घञ्, नुम्] 1. अभिग्रहण—अस्मादङ्गुलीयोपलम्भात्स्मृतिरुपलब्धा—श० ७ 2. प्रत्यक्षज्ञान, अभिज्ञान, स्मृति से भिन्न संबोध (अर्थात् अनुभव)—प्राक्तनोपलंभ मा० ५ ज्ञातौ सुतस्पर्शसुखोपलम्भात्—रघु० १४।२ 3. निश्चय करना, जानना—अविघ्नक्रियोपलम्भाय—श० १।

उपलालनम् [उप+लल्+णिच्+ल्युट्] लाड प्यार करना।

उपलालिका [उप+लल्+ण्वुल्, इत्वम्] प्यास।

उपलिङ्गम् [प्रा० स०] अपशकुन, दैवी घटना जो अनिष्ट सूचक हो।

उपलिप्सा [उप+लभ्+सन्+अ+टाप्] प्राप्त करने की इच्छा।

उपलेप: [उप+लिप्+घञ्] 1. लेप, मालिश 2. सफाई करना, सफ़ेदी पोतना 3. अवबाधा, जड होना, (ज्ञानेन्द्रियों का) सुन्न होना।

उपलेपनम् [उप+लिप्+ल्युट्] 1. मालिश, लेप, पोतना 2. मलहम, उबटन।

उपवनम् [प्रा० स०] बाग, बगीचा, लगाया हुआ जंगल—पाण्डुच्छायोपवनवृतयः केतकैः सूचिभिन्नैः—मेघ० २३, रघु० ८।७३, १३।७९, °लता—उद्यान की बेल।

उपवर्ण: [उप+वर्ण्+घञ्] सूक्ष्म या ब्योरेवार वर्णन।

उपवर्णनम् [उप+वर्ण्+ल्युट्] सूक्ष्म वर्णन, ब्योरे वार चित्रण—अतिशयोपवर्णनं व्याख्यानम्—सुश्रुत, याज्ञ० १।३२०।

उपवर्तनम् [उप+वृत्+ल्युट्] 1. व्यायामशाला 2. जिला या परगना 3. राज्य, 4. कीचड़, दलदल।

उपवसथ: [उप+वस्+अथ] गाँव।

उपवस्तम् [उप+वस् (स्तम्भे)+क्त] उपवास, व्रत।

उपवास: [उपवस्+घञ्] 1. व्रत—सोपवासस्त्र्यहं वसेत्—याज्ञ० १।१७५, ३।१९०, मनु० ११।१९६ 2. यज्ञाग्नि का प्रदीप्त करना।

उपवाहनम् [उप+वह्+णिच्+ल्युट्] ले जाना, निकट लाना।

उपवाह्य:,-ह्या [उप+वह्+ण्यत्, स्त्रियां टाप्] 1. राजा की सवारी का हाथी या हथिनी,—चन्द्रगुप्तोपवाह्यां गजवशां—मुद्रा २ 2. राजकीय सवारी।

उपविद्या [प्रा० स०] सांसारिक ज्ञान, घटिया ज्ञान।

उपविष:-षम् [प्रा० स०] 1. कृत्रिम जहर 2. निद्राजनक, मूर्च्छाकारी नशीली औषध—अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं तथैव कलिहारिका, धत्तूरः करवीरश्च पंच चोपविषाः स्मृताः।

उपवीणयति (ना० धा० पर०) (किसी देवता के आगे) वीणा या सारंगी बजाना—उपवीणयितुं ययौ रवेरुदयावृत्तिपथेन नारदः—रघु० ८।३३, नै० ६।६५, कि० १०।३८।

उपवीतम् [उप+वे+क्त] 1. जनेऊ संस्कार, उपनयन संस्कार 2. जनेऊ या यज्ञोपवीत जिसको हिन्दू जाति के प्रथम तीन वर्ण धारण करते हैं—पित्र्यमंशमुपवीतलक्षणं मातृकं च धनुरूर्जितं दधत्—रघु० ११।६४, कु० ६।६, शि० १।७, मनु० २।४४, ६४, ४।३६।

उपबृंहणम् [उप+बृंह्+ल्युट्] वृद्धि, सञ्चय।

उपवेदः [प्रा० स०] घटिया ज्ञान, वेदों से निचले दर्जे का ग्रन्थसमूह। उपवेद गिनती में चार हैं, और प्रत्येक वेद के साथ एक एक उपवेद संलग्न हैं—उदा०, ऋग्वेद के साथ आयुर्वेद (सुश्रुत आदि विद्वानों के मतानुसार आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है) यजुर्वेद के साथ धनुर्वेद या सैनिक शिक्षा, सामवेद के साथ गांधर्ववेद या संगीत और अथर्ववेद के साथ स्थापत्य-शस्त्रवेद या यान्त्रिकी।

उपवेशः-शनम् [उप+विश्+घञ्, ल्युट् वा] 1. बैठना, आसन जमाना जैसा कि प्रायोपवेशन में 2. संलग्न होना 3. मलोत्सर्ग।

उपवैणवम् [उप+वेणु+अण्] दिन के तीन काल—अर्थात् प्रातःकाल, मध्याह्नकाल और सायंकाल—त्रिसंध्या।

उपव्याख्यानम् [प्रा० स०] बाद में जोड़ी हुई व्याख्या या टीका।

उपव्याघ्रः [प्रा० स०] एक छोटा शिकारी चीता।

उपशमः [उप+शम्+घञ्] 1. शान्त होना, उपशान्ति, सान्त्वना—कुतोऽस्या उपशमः—वेणी० ३, मन्युर्दुःसह एष यात्युपशमं नो सान्त्ववादैः स्फुटम्—अमरु ६, निवृत्ति, रोक, परिसमाप्ति 2. विश्राम, छुट्टी, विराम 3. शान्ति, स्थैर्य, धैर्य 4. ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण।

उपशमनम् [उप+शम्+णिच्+ल्युट्] 1. शान्त करना, शान्ति रखना, चुप करना 2. लघूकरण, 3. बुझाना, विराम।

उपशयः [उप+शी+अच्] 1. पास लेटना 2. मांद, घात का स्थान—शि० २।८०।

उपशल्यम् [अत्या० स०] ग्राम या नगर के बाहर का खुला स्थान, नगरांचल, उपनगर—अर्थोपशल्ये रिपुमग्नशल्यः—रघु० १६।३७, १५।५०, शि० ५।८।

उपशाखा [प्रा० स०] गौण शाखा, अप्रधान शाखा।

उपशान्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. विराम, शमन, प्रशमन—रघु० ८।३१., अमरु ६५ 2. आश्वासन, अभिशमन।

उपशायः [उप+शी+घञ्] बारी-बारी से सोना, दूसरे पहरेदारों के साथ रात को सोने की बारी।

उपशालम् [अत्या० स०] घर के निकट का स्थान, घर के आगे का सहन,—लम् (अव्य०) घर के निकट।

उपशास्त्रम् [प्रा० स०] लघु विज्ञान या ग्रन्थ।

उपशिक्षा-क्षणम् [उप+शिक्ष्+अ, ल्युट् वा] अधिगम, सीखना, प्रशिक्षण।

उपशिष्यः [प्रा० स०] शिष्य का शिष्य—शिष्योपशिष्यैरुपगीयमानमवेहि तन्मण्डनमिश्रधाम—उद्भट।

उपशोभनम्-शोभा [उप+शुभ्+ल्युट्, अ वा] सजाना, अलंकृत करना।

उपशोषणम् [उप+शुष्+णिच्+ल्युट्] सूखना, मुर्झाना।

उपश्रुतिः (स्त्री०) [उप+श्रु+क्तिन्] 1. सुनना, कान देना 2. श्रवण-परास 3. रात को सुनाई देने वाली मूर्तिमती निशादेवी की भविष्यसूचक देववाणी—नक्तं निर्गत्य यत्किंचिच्छुभाशुभकरं वचः, श्रूयते तद्विदुर्धीरा देवप्रश्नमुपश्रुतिम्। हारा०, परिजनोऽपि चास्याः सततमुपश्रुत्यै निर्जगाम—का० ६५ 4. प्रतिज्ञा, स्वीकृति।

उपश्लेषः,-षणम् [उप+श्लिष्+घञ्, ल्युट् वा] 1. पास पास रखना, संपर्क 2. आलिंगन।

उपश्लोकयति (ना० धा० पर०) कविता में स्तुति करना, प्रशंसा करना।

उपसंयमः [उप+सम्+यम्+अप्] 1. दमन करना, रोकना, बांधना 2. सृष्टि का अंत, प्रलय।

उपसंयोगः [उप+सम्+युज्+घञ्] गौण संबंध, सुधार।

उपसंरोहः [उप+सम्+रुह्+घञ्] एक साथ उगना, ऊपर उगना, अंगूर आना (ज़ख्म भरना)।

उपसंवादः [उप+सम्+वद्+घञ्] करार, संविदा।

उपसंव्यानम् [उप+सम्+व्ये+ल्युट्] अन्तःपट,—अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः—पा० १। १।३६।

उपसंहरणम् [उप+सम्+हृ+ल्युट्] 1. हटा लेना, वापिस लेना 2. रोक रखना 3. बाहर निकालना 4. आक्रमण करना, हमला करना।

उपसंहारः [उप+सम्+हृ+घञ्] 1. एक स्थान पर कर देना, सिकोड़ देना 2. वापिस लेना, रोक रखना 3. संचय, संघात 4. बटोरना, समेटना, समाप्ति 5. (किसी भाषण की) इति श्री 6. सारसंग्रह, संक्षिप्त विवरण 7. संक्षेप, संहृति 8. पूर्णता 9. विनाश, मृत्यु 10. आक्रमण करना, हमला करना।

उपसंहारिन् (वि०) [उप+सम्+हृ+णिनि] 1. समाविष्ट करने वाला 2. एकांतिक, अपवर्जी।

उपसंक्षेपः [उप+सम्+क्षिप्+घञ्] सार, सारांश, संक्षिप्त विवरण।

उपसंख्यानम् [उप+सम्+ख्या+ल्युट्] 1. जोड़ना

2. बाद में जोड़ा हुआ, वृद्धि, अतिरिक्त निर्देशन (यह शब्द प्रायः कात्यायन के वार्तिकों के लिए प्रयुक्त होता है, जिनका आशय पाणिनि के सूत्रों में रही छूट व भूलों को सुधारना है, अतः ये परिशिष्ट का काम देते हैं) उदा०—जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम् तु० इष्टि 3. (व्या० में) रूप और अर्थ की दृष्टि से प्रत्यादेश।

उपसंग्रहः,-हणम् [उप+सम्+ग्रह्+अप्,ल्युट् वा] 1. प्रसन्न रखना, सहारा देना, निर्वाह करना 2. सादर अभिवादन (चरण स्पर्श करते हुए) स्फुरति रभसात्पाणिः पादोपसंग्रहणाय च—महावी० २।३० 3. स्वीकरण, दत्तक लेना 4. विनम्र संबोधन, अभिवादन 5. एकत्रीकरण, मिलाना 6. ग्रहण करना, (पत्नी के अंगीकार करना रूप में)—दारोपसंग्रहः—याज्ञ० १।५६ 7. (बाहरी) परिशिष्ट, कोई ऐसी वस्तु जो या तो उपयोगी हो, अथवा सजावट के काम आवे, उपकरण।

उपसत्तिः (स्त्री०) [उप+सद्+क्तिन्] 1. संयोग, मेल 2. सेवा, पूजा, परिचर्या 3. भेंट, दान।

उपसदः [उप+सद्+क] 1. निकट जाना 2. भेंट, दान।

उपसदनम् [उप+सद्+ल्युट्] 1. निकट जाना, समीप पहुँचना 2. गुरु के चरणों में बैठना, शिष्य बनना —तत्रोपसदनं चक्रे द्रोणस्येष्वस्त्रकर्मणि—महा० 3. पास-पड़ौस 4. सेवा।

उपसंतानः [उप+सम्+तनु+घञ्] 1. अव्यवहित संयोग 2. संतति।

उपसंधानम् [उप+सम्+धा+ल्युट्] जोड़ना, मिलाना।

उपसंन्यासः [उप+सम्+नि+अस्+घञ्] डाल देना, छोड़ देना, त्याग देना।

उपसमाधानम् [उप+सम्+आ+धा+ल्युट्] एकत्र करना, ढेर लगाना—उपसमाधानं राशीकरणम् —सिद्धा०।

उपसंपत्तिः (स्त्री०) [उप+सम्+पद्+क्तिन्] 1. समीप जाना, पहुँचना 2. किसी अवस्था में प्रविष्ट होना।

उपसंपन्न (भू० क० कृ०) [उप+सम्+पद्+क्त] 1. उपलब्ध 2. पहुँचा हुआ, 3. उपस्कृत, अन्वित 4. यज्ञ में बलि दिया गया (पशु), बलि दिया गया—मनु० ५।८१,—न्नम् मसाला।

उपसंभाषः,-षा [उप+सम्+भाष्+घञ्, अ वा] 1. वार्तालाप—कि० ३।३ 2. मैत्रीपूर्ण अनुरोध—उपसंभाषा उपसांत्वनम्-पा० १।३।४७ सिद्धा०।

उपसरः [उप+सृ+अप्] 1. (सांड़ का गाय की ओर) अभिगमन 2. गाय का प्रथम गर्भ-गवामुपसरः-सिद्धा०।

उपसरणम् [उप+सृ+ल्युट्] 1. (किसी की ओर) जाना 2. जिसकी शरण ग्रहण की जाय।

उपसर्गः [उप+सृज्+घञ्] 1. बीमारी, रोग, रोग से उत्पन्न कृशता आदि विकार—क्षीणं हन्युश्चोपसर्गाः प्रभूताः—सुश्रुत 2. मुसीबत, कष्ट, संकट, आघात, हानि—रत्न० १।१० 3. अपशकुन, अनिष्टकर प्राकृतिक घटना 4. ग्रहण 5. मृत्यु का लक्षण या चिह्न 6. धातु के पूर्व लगने वाला उपसर्ग—निपाताश्चादयो ज्ञेयाः प्रादयस्तूपसर्गकाः, द्योतकत्वात् क्रियायोगे लोकादवगता इमे। गिनती में उपसर्ग २० हैं—तथाहि प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस् या निर्, दुस् या दुर्, वि, आ (ङ्) नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप; या २२ यदि निस्-निर् और दुस्-दुर् को अलग २ शब्द समझा जाय। इन उपसर्गों की विशेषता के सम्बन्ध में दो सिद्धान्त हैं। एक सिद्धान्त के अनुसार तो धातुओं के अनेक अर्थ होते हैं (अनेकार्था हि धातवः), जब उपसर्ग उन धातुओं के पूर्व जोड़े जाते हैं तो वह केवल धातुओं में पहले से विद्यमान—परन्तु गुप्त पड़े हुए—अर्थ को प्रकाशित कर देते हैं, वह स्वयं अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं करते क्योंकि वह हैं ही अर्थहीन। दूसरे सिद्धान्त के अनुसार उपसर्ग अपना स्वतंत्र अर्थ प्रकट करते हैं, वह धातुओं के अर्थों में सुधार करते हैं, बढ़ाते हैं, और कई उनके अर्थों को बिल्कुल बदल देते हैं—तु० सिद्धा० —उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते, प्रहाराहार-संहारविहारपरिहारवत्। और तु० धात्वर्थं बाधते कश्चित्कश्चित्तमनुवर्तते, तमेव विशिनष्टयन्य उपसर्गगतिस्त्रिधा।

उपसर्जनम् [उप+सृज्+ल्युट्] 1. उड़ेलना 2. मुसीबत, संकट (ग्रहण आदि), अपशकुन 3. छोड़ना 4. ग्रहण लगना 5. अधीनस्थ व्यक्ति या वस्तु, प्रतिनिधि 6. (व्या० में) वह शब्द जिसका अपना मूल स्वतंत्र स्वरूप व्युत्पत्ति के कारण या रचना में प्रयुक्त होने के कारण नष्ट हो गया हो और जब कि वह दूसरे शब्द के अर्थ का भी निर्धारण करे (विप० प्रधान)।

उपसर्पः [उप+सृप्+घञ्] समीप जाना, पहुँच।

उपसर्पणम् [उप+सृप्+ल्युट्] निकट जाना, पहुँचना, अग्रसर होना।

उपसर्या [उप+सृ+यत्+टाप्] गर्माई हुई या ऋतुमती गाय जो सांड़ के उपयुक्त हो।

उपसुन्दः [प्रा० स०] एक राक्षस, निकुंभ का पुत्र तथा सुंद का भाई।

उपसूर्यकम् [उपसूर्य+कन्] सूर्यमण्डल या परिवेश।

उपसृष्ट (भू० क० कृ०) [उप+सृज्+क्त] 1. मिलाया हुआ, संयुक्त, संलग्न 2. भूत-प्रेताविष्ट, या भूत-प्रेत-ग्रस्त—उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठितभवनाः—का० १०७ 3. कष्टग्रस्त, अभिभूत, क्षतिग्रस्त—रोगोपसृष्टतनुदुर्व-

सति मुमुक्षुः—रघु० ८।९४ 4. ग्रहण-ग्रस्त 5. उपसर्ग-युक्त (धातु)—क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म—पा० १।४। ३८,—ष्टः ग्रहण से ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा,—ष्टम् मैथुन, संभोग ।

उपसेकः-उपसेचनं [उप+सिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. उड़ेलना, छिड़कना सींचना 2. भीगना, रस,—नी कड़छी या कटोरी जिससे उड़ेला जाय ।

उपसेवनम्, -सेवा [उप+सेव्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1. पूजा करना, सम्मान करना, आराधना 2. उपासना —राज°—मनु० ३।६४ 3. लिप्त होना—विषय° 4. काम लेना, (स्त्री का) उपभोग करना —परदार° —मनु० ४।१३४ ।

उपस्करः [उप+कृ+अप्, सुट्] 1. जो किसी दूसरी वस्तु को पूरा करने के काम आवे, संघटक, अवयव 2. (अतः) (सरसों, मिर्च आदि) मसाला जो भोजन को स्वादिष्ट बनाये 3 सामान, उपबन्ध, उपांग, उपकरण —शि० १८।७२ 4. घर-गृहस्थी के काम की वस्तु (जैसे झाड़ू) याज्ञ० १।८३, २।१९३, मनु० ३।६८, १२।६६, ५।१५० 5. आभूषण 6. निन्दा, बदनामी ।

उपस्करणम् [उप+कृ+ल्युट्, सुट्] 1. वध करना, क्षत-विक्षत करना 2. संचय 3. परिवर्तन, सुधार 4. अध्याहार, 5. बदनामी निन्दा ।

उपस्कारः [उप+कृ+घञ्,सुट्] 1. अतिरिक्तक, परिशिष्ट, 2. अध्याहार —(न्यून पद की पूर्ति)—साकांक्षमनुपस्कारं विष्वग्गतिनिराकुलम्—कि० ११।३८ 3. सुन्दर बनाना, सजाना, शोभायुक्त करना—उक्तमेवार्थं सोपस्कारमाह—रघु० ११।४७ पर मल्लि० 4. आभूषण 5. प्रहार 6. संचय ।

उपस्कृत (भू० क० कृ०) [उप+कृ++क्त, सुट्] 1. तैयार किया हुआ 2. संचित 3. सजाया गया, अलंकृत किया गया 4. अध्याहृत 5. सुधारा गया ।

उपस्कृतिः (स्त्री०) [उप+कृ+क्तिन्, सुट्] परिशिष्ट ।

उपस्तम्भः-भनम् [उप+स्तम्भ्+घञ्, ल्युट् वा] 1. टेक, सहारा 2. प्रोत्साहन, उकसाना, सहायता 3. आधार, नींव, प्रयोजन ।

उपस्तरणम् [उप+स्तृ+ल्युट्] 1. फैलाना, बिछाना, बखेरना 2. चादर, 3. विस्तरा 4. कोई बिछाई हुई (चादर आदि)—अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।

उपस्त्री (स्त्री०) [प्रा० स०] रखैल ।

उपस्थः [उप+स्था+क] 1. गोद 2. (शरीर का) मध्य भाग, पेडू,—स्थः—स्थम् 1. (स्त्री या पुरुष की) जननेन्द्रिय, विशेषतः योनि—स्नानं मौनोपवासेज्या स्वाध्यायोपस्थनिग्रहाः—याज्ञ० ३।३१४ (पुरुष का लिंग) स्थूलोपस्थस्थलीषु—भर्तृ० १।२० (स्त्री की योनि); हस्तौ पायुरुपस्थश्च—याज्ञ० ३।९२ (यहाँ यह शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त है) 2. गुदा 3. कूल्हा । सम०—निग्रहः इन्द्रियदमन, संयम—याज्ञ० ३।३१४,—दलः—पत्रः, पीपल का वृक्ष (क्योंकि इसके पत्ते स्त्री-योनि के आकार के समरूप होते हैं) ।

उपस्थानम् [उप+स्था+ल्युट्] 1. उपस्थिति, सामीप्य 2. पहुँचना, आना, प्रकट होना, दर्शन देना 3. (क) पूजा करना, प्रार्थना, आराधना, उपासना—सूर्योपस्थानात्प्रतिनिवृत्तं पुरूरवसं मामुपेत्य—विक्र० १, सूर्यस्योपस्थानं कुर्वः—विक्रम० ४, याज्ञ० १।२२, (ख) अभिवादन, नमस्कार 4. आवास 5. देवालय, पुण्यस्थल, मन्दिर 6. स्मरण, प्रत्यास्मरण, स्मृति—याज्ञ० ३। १६० ।

उपस्थापनम् [उप+स्था+णिच्+ल्युट्] 1. निकट रखना, तैयार होना 2. स्मृति को जगाना 3. परिचर्या, सेवा ।

उपस्थायकः [उप+स्था+ण्वुल्] सेवक ।

उपस्थितिः (स्त्री०) [उप+स्था+क्तिन्] 1. पास जाना 2. सामीप्य, विद्यमानता 3. अवाप्ति, प्राप्ति 4. सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना 5. स्मरण, प्रत्यास्मरण 6. सेवा, परिचर्या ।

उपस्नेहः [उप+स्निह्+घञ्] गीला होना ।

उपस्पर्शः-र्शनम् [उप+स्पृश्+घञ्, ल्युट् वा] 1. स्पर्श करना, सम्पर्क 2. स्नान करना, संक्षालन, धोना 3. कुल्ला करना, आचमन करना, मार्जन करना, (अंगो पर जल के छींटे देना—एक धार्मिक कृत्य) ।

उपस्मृतिः (स्त्री०) [प्रा० स०] लघु धर्मशास्त्र या विधि ग्रन्थ (यह संख्या में १८ हैं) ।

उपस्रवणम् [उप+स्रु+ल्युट्] 1. रज का मासिक स्राव होना 2. बहाव ।

उपस्वत्वम् [प्रा० स०] राजस्व, लाभ (जो भूमि अथवा पूँजी से प्राप्त हो) ।

उपस्वेदः [उप+स्विद्+घञ्] गीलापन, पसीना ।

उपहत (भू० क० कृ०) [उप+हन्+क्त] 1. क्षत-विक्षत, जिस पर आघात किया गया हो, क्षीण, पीडित, चोट लगा हुआ कु० ५।७६ 2. अभिभूत, आबद्ध, आहत, पराभूत—दारिद्र्य°, लोभ°, दर्प°, काम°, शोक° आदि 3. सर्वथा विनष्ट—कथमत्रापि दैवेनोपहता वयम्—मुद्रा० २, दैवेनोपहतस्य बुद्धिरथवा पूर्वं विपर्यस्यति-मुद्रा० ६।८ 4. निंदित, भर्त्सना किया गया, उपेक्षित 5. दूषित, कलुषित, अपवित्रीकृत—शारीरैर्मलैः सुराभिर्मद्यैर्वा यदुपहतं तदत्यन्तोपहतम्—विष्णु । सम०—आत्मन् क्षुब्धमना, उद्विग्नमना,—दृश् (वि०) चौंधियाया हुआ, अंधा किया गया—कि० १२।१८, —धी (वि०) मूढ़ ।

उपहतक (वि०) [उपहत+कन्] हतभाग्य, अभागा ।

उपहतिः (स्त्री०) [उप+हन्+क्तिन्] 1. प्रहार 2. वध, हत्या ।

उपहत्या [प्रा० स०] आँखों का चौंधियाना ।

उपहरणम् [उप+हृ+ल्युट्] 1. निकट लाना, जाकर लाना 2. ग्रहण करना, पकड़ना 3. देवता आदि को भेंट प्रस्तुत करना 4. बलिपशु देना 5. भोजन परोसना या बाँटना ।

उपहसित (भू० क० कृ०) [उप+हस्+क्त] मज़ाक उड़ाया गया, भर्त्सना किया गया,—**तम्** व्यंग्यपूर्ण अट्टहास, हंसी उड़ाना ।

उपहस्तिका [उपहस्त+कन्+टाप्, इत्वम्] पान-दान, —उपहस्तिकायास्ताम्बूलं कर्पूरसहितमुद्धृत्य—दश० ११६ ।

उपहारः [उप+हृ+घञ्] 1. आहुति 2. भेंट, उपहार —रघु० ४।८४ 3. बलि-पशु, यज्ञ, देवता का नज़राना —रघु० १६।३९ 4. सम्मान-सूचक भेंट, अपने बड़ों को उपहार देना 5. सम्मान 6. शांति के मूल्य स्वरूप क्षति पूरक उपहार—हि० ४।११० 7. अभ्यागतों में परोसा गया भोजन ।

उपहारिन् (वि०) [उपहार+णिनि] देने वाला, उपहार प्रस्तुत करने वाला, लाने वाला ।

उपहालकः [?] कुन्तल देश का नाम ।

उपहासः [उप+हस्+घञ्] 1. मजाक उड़ाना, हंसी-दिल्लगी—रघु० १२।३७ व्यंग्यपूर्ण अट्टहास 3. हंसी मज़ाक, खेलकूद । सम० —**आस्पदम्**—**पात्रम्** उपहास की सामग्री, भांड, उपहास्य ।

उपहासक (वि०) [उप+हस्+ण्वुल्] हंसी-मज़ाक उड़ाने वाला,—**कः** विदूषक, दिल्लगी बाज़ ।

उपहास्य (वि०, सं० कृ०) [उप+हस्+ण्यत्] मज़ाकिया —°**तां गम्** या **या**—हंसी मज़ाक की वस्तु बनना, ठिठोलिया—गमिष्याम्युपहास्यताम् रघु० १।३ ।

उपहित (वि०) [उप+धा+क्त] रक्खा गया, दे० उप-पूर्वक 'धा' ।

उपहूतिः (स्त्री०) [उप+ह्वे+क्तिन्] बुलावा, आह्वान, निमंत्रण,—शि० १४।३० ।

उपह्वरः [उप+ह्वृ+घ] एकान्त या अकेला स्थान, निजी जगह—उपह्वरे पुनरित्यशिक्षयं घनमित्रम् -दश० ५४ 2. सामीप्य ।

उपह्वानम् [उप+ह्वे+ल्युट्] 1. बुलाना, निमंत्रित करना 2. प्रार्थना मंत्रों के साथ आवाहन करना ।

उपांशु (अव्य०) [उपगता अंशवो यत्र] 1. मन्द स्वर से, कानाफूसी 2. चुपके से, गुप्तरूप से—परिचेतुमुपांशु-धारणाम्—रघु० ८।१८—**शुः** मन्द स्वर में की गई प्रार्थना, मंत्रों का जप करना तु०, मनु० २।८५ ।

उपाकरणम् [उप+आ+कृ+ल्युट्] 1. आरंभ करने के लिए निमंत्रण, निकट लाना 2. तैयारी, आरम्भ, उपक्रम 3. प्रारंभिक अनुष्ठान करने के पश्चात् वेद-पाठ का उपक्रम—तु० उपाकर्मन्,—वेदोपाकरणाख्यं कर्म करिष्ये—श्रावणी मंत्र ।

उपाकर्मन् (नपुं०) [उप+आ+कृ+मनिन्] 1. तैयारी, आरंभ, उपक्रम 2. वर्षारंभ के पश्चात् वेदपाठ के उपक्रम से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान (तु० श्रावणी) याज्ञ० १।१४२, मनु० ४।११९ ।

उपाकृत (भू० क० कृ०) [उप+आ+कृ+क्त] 1. निकट लाया हुआ 2. यज्ञ में बलि दिया गया 3. आरब्ध, उपक्रांत ।

उपाक्षम् (अव्य०) [अव्य० स०] आँखों के सामने, अपने समक्ष ।

उपाख्यानम्-नकम् [उप+आ+ख्या+ल्युट् पक्षे कन् च] छोटी कथा, गल्प या आख्यायिका—उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः—महा० ।

उपागमः [उप+आ+गम्+अप्] 1. निकट जाना, पहुँचना 2. घटित होना 3. प्रतिज्ञा, करार 4. स्वीकृति ।

उपाग्रम् [प्रा० स०] 1. चोटी या किनारे के निकट का भाग 2. गौण अंग ।

उपाग्रहणम् [उप+आ+ग्रह्+ल्युट्] दीक्षित होकर वेदाध्ययन करना ।

उपाङ्गम् [प्रा० स०] 1. उपभाग, उपशीर्षक 2. कोई छोटा अंग या अवयव 3. परिशिष्ट का पूरक 4. घटिया प्रकार का अतिरिक्त कार्य 5. विज्ञान का गौण भाग —वेदांगों के परिशिष्ट स्वरूप लिखा गया ग्रन्थ समूह (ये चार हैं - पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राणि) ।

उपचारः [उप+आ—चर+घञ्] 1. (वाक्य में शब्द का) स्थान 2. कार्यविधि ।

उपाजे (अव्य०) (केवल 'कृ' धातु के साथ प्रयोग) —सहारा देना—उपाजेकृत्य या कृत्वा—सहारा देकर —पा० १।४।७३ सिद्धा० ।

उपाञ्जनम् [उप+अञ्ज्+ल्युट्]—मलना, लीपना (गोबर आदि से) पोतना (सफ़ेदी, चूना आदि)—मनु० ५।१०५, १२२।१२४, मठादेः (सुधागोमयादिना संमार्जनानु-लेपनम्—मेधातिथि) ।

उपात्ययः [उप+अति+इ+अच्] उल्लंघन करना, (प्रचलित प्रथा से) विचलन ।

उपादानम् [उप+आ+दा+ल्युट्] 1. लेना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना, अवाप्त करना—विश्रब्धं ब्राह्मणः शूद्रात् द्रव्योपादानमाचरेत्—मनु० ८।४१७, विद्या°—का० ७५ 2. उल्लेख, वर्णन 3. समावेश, मिलाना 4. सांसारिक पदार्थों से अपनी ज्ञानेन्द्रियों व मन को हटाना 5. कारण, प्रयोजन, प्राकृतिक या तात्कालिक कारण—पाटवोपादानो भ्रमः—उत्तर० ३, अने० पा० 6. सामग्री जिनसे कोई वस्तु बने, भौतिक कारण—निमित्तमेव ब्रह्म स्यादुपादानं च

वेक्षणात्—अधिकरणमाला 7. अभिव्यंजना की एक रीति जिसमें अपने वास्तविक अर्थ को प्रकट करने के अतिरिक्त न्यूनपद की पूर्ति भी अध्याहार द्वारा कर ली जाती है–स्वसिद्धये पराक्षेपः···उपादानम्–काव्य० २। सम०—कारणम् भौतिक कारण—प्रकृतिश्चोपादानकारणं च ब्रह्माप्युपगन्तव्यम्–शारी०,–लक्षणा =अजहत्स्वार्था, दे० काव्य० २, सा० द० १४ भी।

उपाधिः [उप+आ+धा+कि] 1. जालसाजी, धोखा, दाँव 2. प्रवंचना, (वेदान्त में) छद्मवेष धारण करना 3. विवेचक या विभेदक गुण, विशेषण, विशेषता —तदुपधावेव सङ्केतः—काव्य० २, यह चार प्रकार का है—जाति, गुण क्रिया, तथा संज्ञा 4. पद, उपनाम (भट्टाचार्य, महामहोपाध्याय, पंडित आदि) 5. सीमा, (देश काल आदि की) अवस्था (बहुधा वेदान्तदर्शन में) 6. प्रयोजन, संयोग, अभिप्राय 7. (तर्क में) किसी सामान्य बात का विशेष कारण 8. जो व्यक्ति अपने परिवार का भरण-पोषण करने में सावधान है।

उपाधिक (वि०) [अत्या० स०] अधिक, अधिसंख्य, अतिरिक्त।

उपाध्यायः [उपेत्याधीयते अस्मात् —उप+अधि+इ+घञ्] 1. अध्यापक, गुरु 2. विशेषतः अध्यात्मगुरु, धर्मशिक्षक (उपशिक्षक—जो वेद के किसी भाग को केवल पारिश्रमिक प्राप्त करने के लिए पढ़ाता है—आचार्य से निम्न पदवी का) तु०—मनु० २।१४१, एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः, योऽध्यापयति वृत्त्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते। दे० 'अध्यापक' और 'आचार्य' के नीचे भी,—या स्त्री-अध्यापिका,—यी 1. अध्यापिका 2. गुरुपत्नी।

उपाध्यायानी [उपाध्याय+ङीप्, आनुक्] गुरुपत्नी।

उपानह् (स्त्री०) [उप+नह्+क्विप् उपसर्गदीर्घः] चप्पल, जूता—उपानद्गूढपादस्य सर्वा चर्मावृतेव भूः —हि० १।१२२, मनु० २।२४६, श्वा यदि क्रियते राजा स किं नाश्नात्युपानहम्—हि० ३।५८।

उपान्तः [प्रा० स०] 1. किनारी, छोर, गोट, पल्ला, सिरा —उपान्तयोर्निष्कुषितं विहङ्गैः—रघु० ७।५०, कु० ३।६९, ७।३२, अमरु २३, उत्तर० १।२६ वल्कलोपान्त —का० १०६ 2. आँख की कोर—रघु० ३।२६ 3. अव्यवहित सान्निध्य, पड़ौस—तयोरुपान्तस्थित सिद्धसैनिकम्—रघु० ३।५७, ७।२४, १६।२१, मेघ० २४ 4. पार्श्वभाग, नितम्ब—मेघ० १८।

उपान्तिक (वि०) [प्रा० स०] निकटस्थ, समीपी, पड़ौसी, —कम् पड़ौस, सामीप्य।

उपान्त्य (वि०) [उपान्त+यत्] अन्तिम से पूर्व का —उत्तमपदमुपान्त्यस्योपलक्षणार्थम्–सिद्धा०,–त्यः आँख की कोर,–त्यम् पड़ौस।

उपायः [उप+इ+घञ्] 1. (क) साधन, तरकीब, युक्ति—उपायं चिन्तयेत्प्राज्ञस्तथापायं च चिन्तयेत् —पंच० १।४०६, अमरु २१, मनु० ७।१७७ ८।४८, (ख) पद्धति, रीति, कूटचाल 2. आरम्भ, उपक्रम 3. प्रयत्न, चेष्टा—भग० ६।३६, मनु० ९।२४८, १०।२ 4. शत्रु पर विजय पाने का साधन (यह चार हैं —सामन्, समझौता-वार्ता, दानम्–रिश्वत, भेदः–फूट डालना और दंडः–सजा देना (सीधा धावा बोलना), कुछ लोग तीन और जोड़ देते हैं—माया—धोखा, उपेक्षा–दाँव-पेच, अवहेलना, इंद्रजाल–जादू-टोना करना, इस प्रकार कुल संख्या सात हुई),—चतुर्थोपायसाध्ये तु रिपौ सान्त्वमपक्रिया—शि० २।५४, सामादीनामुपायानां चतुर्णामपि पण्डिताः–मनु० ७।१०९ 5. सम्मिलित होना (गायन आदि में) 6. पहुँचना। सम०—चतुष्टयम्, शत्रु के विरुद्ध की जाने वाली चार तरकीबें—दे० ऊ०,—ज्ञ (वि०) तरकीब निकालने में चतुर—तुरीयः चौथी तरकीब अर्थात् दंड,—योगः साधन या युक्ति का प्रयोग—मनु० ९।१०।

उपायनम् [उप+अय्+ल्युट्] 1. निकट जाना पहुँचना 2. शिष्य बनना 3. किसी धार्मिक संस्कार में व्यस्त रहना 4. उपहार, भेंट—मालविकोपायनं प्रेषिता—मालवि० १, तस्योपायनयोग्यानि वस्तूनि सरितां पतिः—कु० २।३७, रघु० ४।७९।

उपारम्भः [उप+आ+रभ्+घञ्, नुम्] आरंभ, उपक्रम, शुरू।

उपार्जनम्—ना [उप+अर्ज्+ल्युट्, युच् वा] कमाना, लाभ उठाना।

उपार्थ (वि०) [ब० स०] थोड़े मूल्य का।

उपालम्भः,—भनम् [उप+आ+लभ्+घञ्, नुम्, ल्युट् वा] 1. दुर्वचन, उलाहना, निन्दा—अस्या महदुपालम्भनं गतोऽस्मि—श० ५, तवोपालम्भे पतितास्मि—मालवि० १, तुम्हारा उलाहना सिर–माथे पर 2. विलंब करना, स्थगित करना।

उपावर्तनम् [उप+आ+वृत्+ल्युट्] 1. वापिस आना या मुड़ना, लौटना–त्वदुपावर्तनशङ्कि मे मनः (करोति) – रघु० ८।५३ 2. घूमना, चक्कर काटना 3. पहुँचना।

उपाश्रयः [उप+आ+श्रि+अच्] 1. अवलंब, आश्रय, सहारा—भर्तृ० २।४८ 2. पात्र, पाने वाला 3. भरोसा, निर्भर रहना।

उपासकः [उप+आस्+ण्वुल्] 1. सेवा में उपस्थित, पूजा करने वाला 2. सेवक, अनुचर 3. शूद्र, निम्नजाति का व्यक्ति।

उपासनम्—ना [उप+आस् ल्युट्, युच् वा] 1. सेवा, हाजरी, सेवा में उपस्थित रहना 2. शील खलोपास-

नात् (विनश्यति) पंच० १।१६९, उपासन्नामेत्य पितुः स्म सृज्यते—नै० १।३४, मनु० ३।१०७, भग० १३।७, याज्ञ० ३।१५६ 2. व्यस्त, तुला हुआ, जुटा हुआ —संगीत° मृच्छ० ६, मनु० २।६९ 3. पूजा, आदर, आराधना, शराभ्यास 5. धार्मिक मनन 6. यज्ञाग्नि ।

उपासा [उप+आस्+अ+टाप्] 1. सेवा, हाजरी 2. पूजा, आराधना 3. धार्मिक मनन ।

उपास्तमनम् [प्रा० स०] सूर्य छिपना ।

उपास्तिः (स्त्री०) [उप+आस्+क्तिन्] 1. सेवा, सेवा में उपस्थित रहना (विशेषतः देवता की) 2. पूजा, आराधना ।

उपास्त्रम् [प्रा० स०] गौण या छोटा हथियार ।

उपाहारः [प्रा० स०] हल्का जलपान (फल, मिष्टान्न आदि) ।

उपाहित (भू० क० कृ०) [उप+आ+धा+क्त] 1. रक्खा गया, जमा किया गया, पहना गया आदि 2. संबद्ध, सम्मिलित,—**तः** आग से भय, या आग से होने वाला विनाश ।

उपेक्षणम्=उपेक्षा ।

उपेक्षा [उप+ईक्ष्+अ+टाप्] 1. नजर-अंदाज करना, लापरवाही बरतना, अवहेलना करना 2. उदासीनता, घृणा, नफ़रत—कुर्यामुपेक्षां हतजीवितेऽस्मिन्—रघु० १४।६५ 3. छोड़ना, छुटकारा देना 4. अवहेलना, दांव पेंच, मक्कारी (युद्ध में विहित ७ उपायों में से एक) ।

उपेत (भू० क० कृ०) [उप—इ+क्त] 1. समीप आया हुआ, पहुँचा हुआ 2. उपस्थित 3. युक्त, सहित (करण० के साथ या समास में)—पुत्रमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि—श० १।१२ ।

उपेन्द्रः [उपगत इन्द्रम्—अनुजत्वात्] विष्णु या कृष्ण, (इन्द्र के छोटे भाई के रूप में अपने पाँचवें अवतार (वामन) के अवसर पर) दे० इन्द्र, उपेन्द्र—वज्रादपि दारुणोऽसि—गीत० ५, यदुपेन्द्रस्त्वमतीन्द्र एव सः—शि० ११।७० ।

उपेयः (सं० कृ०) [उप+इ+यत्] 1. पहुँचने के योग्य 2. प्राप्त कर लेने के योग्य 3. किसी भी साधन से प्रभावित होने के योग्य ।

उपोढ (भू० क० कृ०) [उप+वह्+क्त] 1. संचित, एकत्र किया हुआ, जमा किया हुआ 2. निकट लाया हुआ, निकटस्थ 3. युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध 4. आरब्ध 5. विवाहित ।

उपोत्तम (वि०) [अत्या० स०] अन्तिम से पूर्व का, —**मम्** (अक्षरम्) अन्तिम अक्षर से पूर्व का अक्षर ।

उपोद्घातः [उप+उद्+हन्+घञ्] 1. आरम्भ 2. प्रस्तावना, भूमिका, 3. उदाहरण, समुपयुक्त तर्क या दृष्टान्त 4. सुयोग, माध्यम, साधन—तत्प्रतिच्छन्दकमुपोद्घातेन माधवान्तिकमुपेयात्—मा० १ 5. विश्लेषण, किसी वस्तु के तत्त्वों का निश्चय करना ।

उपोद्बलक (वि०) [उप+उद्+बल्+ण्वुल्] पुष्ट करने वाला ।

उपोद्बलनम् [उप+उद्+बल्+ल्युट्] पुष्ट करना, समर्थन करना ।

उपोषणम्—**उपोषितम्** [उप+वस्+ल्युट्, क्त वा] उपवास रखना, व्रत ।

उप्तिः (स्त्री०) [वप्+क्तिन्] बीज बोना ।

उब्ज् (तुदा० पर०) (उब्जति, उब्जित) 1. भींचना, दबाना 2. सीधा करना ।

उभ्, उम्भ् (तुदा० क्रया० पर०) (उभति या उम्भति, उम्नाति, उम्भित) 1. संसीमित करना 2. संक्षिप्त करना 3. भरना—जलकुम्भमुम्भितरसं सपदि सरस्याः समानयन्त्यास्ते—भामि० २।१४४ 4. आच्छादित करना, ऊपर बिछाना—सर्वमर्मसु काकुत्स्थमौम्भत्तीक्ष्णैः शिलीमुखैः —भट्टि० १७।८८ ।

उभ (सर्व० वि०) (केवल द्विवचन में प्रयुक्त) [उ+भक्] दोनों,—उभौ तौ न विजानीतः—भग० २।१९, कु० ४।४३ मनु० २।१४, शि० ३।८ ।

उभय (सर्व०, वि०) (स्त्री०—**यी**) [उभ्+अयट्] (यद्यपि अर्थ की दृष्टि से यह शब्द द्विवचनांत है, परन्तु इसका प्रयोग एक वचन और बहुवचन में ही होता है, कुछ वैयाकरणों के मतानुसार द्विवचन में भी) दोनों (पुरुष या वस्तुएँ)—उभयमप्यपरितोषं समर्थये —श० ७, उभयमानशिरे वसुधाधिपाः—रघु० ९।९, उभयीं सिद्धिमुभाववापतुः—८।२३, १७।३८, अमरु ६०, कु० ७।७८, मनु० २।५५, ४।२२४, ९।३४ । सम०—**चर** (वि) जल, स्थल या आकाश में विचरण करने वाला, जल स्थल चारी,—**विद्या** दो प्रकार की विद्याएँ, परा और अपरा, अर्थात् अध्यात्म विद्या और लौकिक ज्ञान, -**विध** (वि०) दोनों प्रकार का, —**वेतन** (वि०) दोनों स्थानों से वेतन ग्रहण करने वाला, दो स्वामियों का सेवक, विश्वासघाती,—**व्यंजन** (वि०) (स्त्री और पुरुष) दोनों के चिह्न रखने वाला, —**संभवः** उभयापत्ति, दुविधा ।

उभयतः (अव्य०) [उभय+तसिल्] 1. दोनों ओर से, दोनों ओर, (कर्म० के साथ)—उभयतः कृष्णं गोपाः —सिद्धा० याज्ञ० १।५८, मनु० ८।३१५ 2. दोनों दशाओं में 3. दोनों रीतियों से—मनु० १।४७, । सम० —**दत्,**—**दन्त** (वि०) दोनों ओर (नीचे और ऊपर) दाँतों की पंक्ति वाला, —मनु० १।४३,—**मुख** (वि०) 1. दोनों ओर देखने वाला 2. दुमुंहा (मकान आदि) (—**खी**) ब्याती हुई गाय—याज्ञ० १।२०६-७ ।

उभयत्र (अव्य०) [उभय+त्रल्] 1. दोनों स्थानों पर, 2. दोनों ओर 3. दोनों अवस्थाओं में—मनु० ३।१२५, १६७।

उभयथा (अव्य०) [उभय+थाल्] 1. दोनों रीतियों से —उभयथापि घटते—विक्रम० ३ 2. दोनों दशाओं में।

उभय (ये) द्युः (अव्य०) [उभय+द्युस्, एद्युस् वा] 1. दोनों दिन 2. आगामी दोनों दिन।

उम् (अव्य०) [उम्+डुम्] (क) क्रोध (ख) प्रश्नवाचकता (ग) प्रतिज्ञा या स्वीकृति और (घ) सौजन्य या सान्त्वना को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।

उमा [ओः शिवस्य मा लक्ष्मीरिव, उं शिवं माति मन्यते पतित्वेन मा+क वा तारा०] 1. हिमवान् और मेना की पुत्री, शिव की पत्नी, कालिदास नाम की व्युत्पत्ति इस प्रकार करता है—उ मेति (ओह, बस अब तपस्या न करें) मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम—कु० १।२६, उमावृषाङ्कौ—रघु० ३।२३ 2. प्रकाश, आभा 3. यश, ख्याति 4. शान्ति, प्रशान्तता 5. रात 6. हल्दी, 7. सन। सम०—**गुरुः**—**जनकः** हिमालय पर्वत (उमा का पिता होने के नाते),—**पतिः** शिव—मुहुरनुस्मरयन्तमनुक्षपं त्रिपुरदाहमुमापतिसेविनः —कि० ५।१४, इसी प्रकार °ईशः, °वल्लभः, °सहायः आदि,—**सुतः** कार्तिकेय या गणेश।

उम्ब (बु) रः [उम्+वृ+अच् पृषो०] तरंगा, द्वार की चौखट की ऊपर वाली लकड़ी।

उरः [उर्+क] भेड़।

उरगः (स्त्री०—गी) [उरसा गच्छति, उरस्+गम्+ड, सलोपश्च] 1. सर्प, साँप—अंगुलीवोरगक्षता—रघु० १।२८, १२।५, ९१ 2. नाग या पुराणों में वर्णित मानव मुख वाला अर्धदिव्य साँप—देवगन्धर्वमानुषोरगराक्षसान्—नल० १।२८, मनु० ३।१९६ 3. सीसा,—**गा** एक नगर का नाम—रघु० ६।५९। सम०—**अरिः** —**अशनः**,—**शत्रुः** 1. गरुड़ (साँपों का शत्रु) 2. मोर, —**इन्द्रः**,—**राजः** वासुकि या शेषनाग,—**प्रतिसर** (वि०) विवाह—मुद्रिका के स्थान में साँप रखने वाला,—**भूषणः** शिव (साँपों से सुभूषित),—**सारचन्दनः**,—**नम्** एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी,—**स्थानम्** नागों का आवासस्थान अर्थात् पाताल।

उरङ्गः—**गमः** [उरस्+गम्+खच्, सलोपः, मुमागमश्च] साँप।

उरणः (स्त्री०—णी) [ऋ+क्यु, उत्वं, रपरश्च] 1. भेड़ा, भेड़—वृकीवोरणमासाद्य मृत्युरादाय गच्छति—महा० 2. एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मार दिया था,—**णी** भेड़ी।

उरणकः [उरण+कन्] 1. भेड़ा, मेष 2. बादल।

उरभ्रः [उरु उत्कटं भ्रमति इति—उरु+भ्रम्+ड पृषो० उलोपः] भेड़, मेष।

उररी (अव्य०) [उर्+अरीक् वा०] 1. सहमति या स्वीकृति बोधक अव्यय (इस अर्थ में यह शब्द कृ, भू और अस् धातुओं के साथ प्रयुक्त होता है—तथा गतिसंज्ञक या उपसर्ग समझा जाता है, इसी लिए 'उररीकृत्वा' न बनकर 'उररीकृत्य' बनता है, इस शब्द के रूपान्तर हैं—उरी, उररी, ऊरी और ऊररी) 2. विस्तार (**उररीकृ** [तना० उभ०] सहमति देना, अनुमति देना, स्वीकार करना—गिरं न कां कामुररीचकार —भामि० २।१३, शि० १०।१४)

उरस् (नपुं०—उरः) [ऋ+असुन्, उत्वं रपरश्च] छाती, वक्षःस्थल—व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः—रघु० १।१३, कु० ६।५१, **उरसि कृ** छाती से लगाना। सम०—**क्षतम्** छाती की चोट,—**ग्रहः**—**घातः** छाती का रोग, फेफड़े की झिल्ली की सूजन, प्लूरिसी,—**छदः** चोली, अँगिया, —**त्राणम्** कवच, सीनाबन्द—शि० १५।८०,—**जः**, —**भूः**, **उरसिजः**, **उरसिरुहः** स्त्री की छाती, स्तन, —रेजाते रुचिरदृशामुरोजकुम्भौ—शि० ८।५३, २५, ५९,—**भूषणम्** छाती का आभूषण,—**सूत्रिका** मोतियों का हार जो छाती के ऊपर लटक रहा हो,—**स्थलम्** छाती, वक्षःस्थल।

उरसिल (वि०) [उरस्+इलच्] विशाल वक्षःस्थल वाला।

उरस्य (वि०) [उरस्+यत्] 1. औरस सन्तान 2. एक ही वर्ण के विवाहित दम्पती का पुत्र या पुत्री 3. उत्तम, —**स्यः** पुत्र।

उरस्वत् (वि०) [उरस्+मतुप्, मस्य वः] विशाल वक्षःस्थल वाला, चौड़ी छाती वाला।

उरी स्वीकृतिबोधक अव्यय—दे० उररी (**उरीकृ** अनुमति देना, अनुज्ञा देना, स्वीकृति देना—दक्षेणोरीकृतं त्वया —भट्टि० ८।११, रघु० १५।७० 2. अनुसरण करना, आश्रय लेना. अयि रोषमुरीकरोषि नोचेत्—भामि० १।४४।

उरु (वि०) (स्त्री०—रु,—र्वी) तु० (वरीयस्, उ० अ० वरिष्ठ) 1. विस्तृत, प्रशस्त 2. महान्, बड़ा—रघु० ६।७४ 3. अतिशय, अधिक, प्रचुर 4. श्रेष्ठ, मूल्यवान् कीमती। सम०,—**कीर्ति** (वि०) प्रख्यात, सुविख्यात —रघु० १४।७४,—**क्रमः** वामनावतार के रूप में विष्णु भगवान्,—**गाय** (वि०) उत्तम व्यक्तियों द्वारा जिसका स्तुतिगान किया गया हो—अस्व० ६१,—**मार्गः** लंबी सड़क,—**विक्रम** (वि०) पराक्रमी, बलशाली, —**स्वन** (वि०) ऊँची आवाज़ वाला, अत्युच्च शब्दकारी,—**हारः** मूल्यवान् हार।

उररी=उररी

उलूकः=उलूक: ।

उर्णनाभः [उर्णेव सूत्रं नाभौ गर्भेऽस्य—ब० स०] मकड़ी, तु० ऊर्णनाभ ।

उर्णा [ऊर्णु+ड ह्रस्वः] 1. ऊन, नमदा या ऊनी कपड़ा 2. भौवों के बीच केशवृत्त—दे० ऊर्णा ।

उर्वटः [उरु+अट्+अच्] 1. बछड़ा 2. वर्ष ।

उर्वरा [उरु शस्यादिकमृच्छति—ऋ+अच्] 1. उपजाऊ भूमि—शि० १५।६६ 2. भूमि ।

उर्वशी [उरून् महतोऽपि अश्नुते वशीकरोति—उरु+अश्+क गौरा० ङीष्—तारा०] इन्द्रलोक की एक प्रसिद्ध अप्सरा जो पुरूरवा की पत्नी बनी; (उर्वशी का ऋग्वेद में बहुत उल्लेख मिलता है; उसकी ओर दृष्टि डालते ही मित्र और वरुण का वीर्य स्खलित हो गया—जिससे अगस्त्य और वशिष्ठ का जन्म हुआ [दे० अगस्त्य] मित्र और वरुण द्वारा शाप दिये जाने पर वह इस लोक में आई और पुरूरवा की पत्नी बनी, जिसको कि उसने स्वर्ग से उतरते हुए देखा था तथा जिसका उसके मन पर अनुकूल प्रभाव पड़ा। वह कुछ समय तक पुरूरवा के साथ रही, परन्तु शाप की समाप्ति पर फिर स्वर्गलोक चली गई। पुरूरवा को उसके वियोग से अत्यन्त दुःख हुआ, परन्तु वह एक बार फिर उसे प्राप्त करने में सफल हो गया। उर्वशी से 'आयुस्' नाम का पुत्र पैदा हुआ—और फिर वह सदा के लिए पुरूरवा को छोड़ कर चली गई। विक्रमोर्वशीय में दिया गया वृत्त कई बातों में भिन्न है, पुराणों में उसको नारायण मुनि की जंघा से उत्पन्न बताया गया है) । सम०—रमण—वल्लभः—सहायः, पुरूरवा ।

उर्वारुः [उरु+ऋ+उण्] एक प्रकार की ककड़ी, दे० 'इर्वारु' ।

उर्वी [ऊर्णु+कु, नलोपः, ह्रस्वः, ङीष्] 1. 'विस्तृत प्रदेश' भूमि—स्तोकमुर्व्यां प्रयाति—श० १।७, जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम् रघु० २।३, १।१४, ३०, ७५, २।६६ 2. पृथ्वी, धरती 3. खुली जगह, मैदान । सम०—ईशः,—ईश्वरः,—धवः, —पतिः राजा,—धरः 1. पहाड़ 2. शेषनाग,—भृत् (पुं०) 1. राजा 2. पहाड़, —रुहः वृक्ष—शि० ४।७ ।

उलपः [वल्+कपच्, संप्रसारण] 1. लता, बेल 2. कोमल तृण—गोर्गभिणीप्रियनवोलपमालभारिसव्योपकण्ठविपिनावलयो भवन्ति—मा० ९।२, शि० ४।८ ।

उलूप=दे० उलप ।

उलूकः [वल्+ऊक संप्रसारण] 1. उल्लू—नोलूकोप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्—भर्तृ० २।९३, त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः—शि० ११।६४ 2. इन्द्र ।

उलूखलम् [ऊर्ध्वं खम् उलूखम्, पृषो० ला+क] ओखली (जिसमें धान कूटे जाते हैं)—अवहननायोलूखलम्—महा०, मनु० ३।८८, ५।११७ ।

उलूखलकम् [उलूखल+कन्] खरल ।

उलूखलिक (वि०) [उलूखल+ठन्] खरल में पीसा हुआ ।

उलूतः [उल्+ऊतच्] अजगर, शिकार को दबोच कर मारने वाला विषहीन सर्प ।

उलूपी [?] नाग कन्या (यह कौरव्य नाग की पुत्री थी, एक दिन जब वह गंगा में स्नान कर रही थी, उसकी दृष्टि अर्जुन पर पड़ी। वह उसके रूप पर मुग्ध हो गई, फलतः उसने अर्जुन को अपने घर पाताल लोक में लिवा लाने का प्रबन्ध किया। वहाँ पहुँचने पर उसने अर्जुन से अपने आपको पत्नीरूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की जिसे अर्जुन ने बड़े संकोच के साथ स्वीकार किया। 'इरावान्' नाम का एक पुत्र उलूपी से पैदा हुआ। जब बभ्रुवाहन के तीर से अर्जुन का सिर कट गया था तो उस समय उलूपी की सहायता से ही उसे पुनर्जीवन मिला) ।

उल्का [उष्+कक्+टाप्, षस्य लः] 1. आकाश में रहने वाला दाहक तत्त्व, लूक—शि० १५।९१, मनु० १।३८. याज्ञ० १।१४५ 2. जलती हुई लकड़ी, मशाल 3. अग्नि, ज्वाला—मेघ० ५३ । सम०—धारिन् (वि०) मशालची—पातः उल्कापिंड का टूट कर गिरना,—मुखः एक राक्षस या प्रेत (अगिया बैताल)—मनु० १२।७१, मा० ५।१३ ।

उल्कुषी [उल+कुष्+क+ङीष्] 1. केतु, उल्का 2. मशाल ।

उल्बम्,—बम् [उच+ब (व) न्, चस्य लः,वम्] 1. भ्रूण 2. योनि 3. गर्भाशय ।

उल्ब (ब) ण (वि०) [उत्+ब (व) ण्+अच् पृषो०] 1. गाढ़ा, जमा हुआ पर्याप्त, प्रचुर (रुधिर आदि) 2. अधिक, अतिशय, तीव्र—शि० १०।५४, कु० ७।८४ 3. दृढ़, बलशाली, बड़ा—शि० २०।४१ 4. स्पष्ट, साफ—तस्यासीदुल्वणो मार्गः—रघु० ४।३३ ।

उल्मुकः [उष्+मुक्, षस्य लः] जलती लकड़ी, मशाल ।

उल्लङ्घनम् [उद्+लङ्घ्+ल्युट्] 1. छलांग लगाना, लांघना 2. अतिक्रमण, तोड़ना ।

उल्लल (वि०) [उद्+लल्+अच्] 1. डांवाडोल, कंपनशील 2. घने बालों वाला, लोमश ।

उल्लसनम् [उद्+लस्+ल्युट्] 1. आनन्द, हर्ष 2 रोमांच ।

उल्लसित (भू० क० कृ०) [उद्+लस्+क्त] 1. चमकीला, उज्ज्वल, आभायुक्त 2. आनन्दित, प्रसन्न ।

उल्लाघ (वि०) [उद्+लाघ्+क्त] 1. रोग से मुक्त,

स्वास्थ्योन्मुख 2. दक्ष, चतुर, कुशल 3. पवित्र 4. आनन्दित, प्रसन्न।

उल्लापः [उद्+लप्+घञ्] 1. भाषण, शब्द,—श्रुता मयार्यपुत्रस्योल्लापाः—उत्तर० ३ 2. अपमानजनक-शब्द, सोपालंभ भाषण, उपालंभ—खलोल्लापाः सोढाः—भर्तृ० ३।६ 3. ऊँची आवाज से पुकारना 4. संवेग या रोग आदि के कारण आवाज में परिवर्तन 6. संकेत, सुझाव।

उल्लाप्यम् [उद्+लप्+णिच्+यत्] एक प्रकार का नाटक—दे० सा० द० ५४५।

उल्लासः [उद्+लस्+घञ्] 1. हर्ष, खुशी—सोल्लासम् उत्तर० ६, सकौतुकोल्लासम्—उत्तर० २, उल्लासः फुल्लपङ्केरुहपटलपतन्मत्तपुष्पन्धयानाम्-—सा० द० 2. प्रकाश, आभा 3. (अलं० शा० में) एक अलंकार—परिभाषा—अन्यदीयगुणदोषप्रयुक्तमन्यस्य गुण दोषयोराधानमुल्लासः—रस०, उदाहरणों के लिए दे०, रस०, या चन्द्रा० ४।१३१, १३३ 4. पुस्तक के प्रभाग-अध्याय, अनुभाग, पर्व, कांड आदि, जैसे कि काव्य के दस उल्लास।

उल्लासनम् [उद्+लस्+णिच्+ल्युट्] आभा।

उल्लिङ्गित (वि०) [उद्+लिंग्+क्त] प्रसिद्ध, विख्यात।

उल्लीढ (वि०) [उद्+लिह्+क्त] रगड़ा हुआ, जिला किया गया—मणिः शाणोल्लीढः—भर्तृ० २।४४।

उल्लुञ्चनम् [उद्+लुञ्च्+ल्युट्] 1. तोड़ना, काटना—पादकेशांशुककरोल्लुञ्चनेषु पणान् दश (दमः)—याज्ञ० २।२१७ 2. बालों को नोचना, उखाड़ना।

उल्लुण्ठनम्—उल्लुण्ठा [उद्+लुण्ठ्+ल्युट्, अ वा] व्यंग्योक्ति--धीरा-धीरा तु सोल्लुण्ठभाषणैः खेदयेद-मुम्—सा० द० १०५—सोल्लुण्ठनम्—व्यङ्ग्यपूर्वक; नाटकों में प्रायः मञ्चनिर्देश के रूप में प्रयुक्त।

उल्लेखः [उद्+लिख्+घञ्] 1. संकेत, जिक्र 2. वर्णन उक्ति 3. सूराख करना, खुदाई 4. (अलं० शा० में) एक अलंकार—बहुभिर्बहुधोल्लेखादेकस्योल्लेख इष्यते, स्त्रीभिः कामोऽथिभिः स्वर्द्रुः कालः शत्रुभिरैक्षि सः—चन्द्रा० ५।१९, तु०, सा० द० ६८२ 5. रगड़ना, खुरचना, फाड़ना,—खुरमुखोल्लेख-का० १९१, कुट्टिम° २३२।

उल्लेखनम् [उद्+लिख्+ल्युट्] 1. रगड़ना, खुरचना, छीलना आदि 2. खोदना—याज्ञ० १।१८८, मनु० ५।१२४ 3. वमन करना 4. जिक्र, संकेत 5. लेख, चित्रण।

उल्लोचः [उद्+लोच्+घञ्] वितान या शामियाना चंदोआ, तिरपाल।

उल्लोल (वि०) [उद्+लोड्+घञ्, डस्य लत्वम्] अति चंचल, अत्यन्त कंपनशील—भा० ५।३,—लः एक बड़ी लहर या तरंग।

उल्व, उल्वण—दे० उल्ब, उल्बण।

उशनस् (पुं०) [वश्+कनसि—संप्र०] (कर्तृ०, ए० व०—उशना, संबो० ए० व० उशनन्, उशन, उशनः) शुक्र-ग्रह का अधिष्ठातृ देवता, भृगु का पुत्र, राक्षसों का गुरु, वेद में इनका नाम 'काव्य' संभवतः इनकी बुद्धिमत्ता की ख्याति के कारण मिलता है—तु० कवीनामुशना कविः; भग० १०।३७, ये गृह्य व धर्मशास्त्र के प्रणेता माने जाते हैं—याज्ञ० १।४, नागरिक राज्य व्यवस्था पर भी वह प्रमाणस्वरूप समझे जाते हैं—शास्त्रमुशनसा प्रणीतम्—पंच० ५, अध्यापितस्योशनशनसापि नीतिम्—कु० ३।६।

उशी [वश्+ई, संप्र०] कामना, इच्छा।

उशी (षी) रः,—रम्, उशी (षी) रकम् [वश्+ईरन्, कित्, सम्प्र०, उष्+कीरच् वा, स्वार्थे कन् च] वीरण-मूल, खस—स्तनन्यस्तोशीरम्—श० ३।९।

उष् (भ्वा० पर०) (ओषति, ओषित-उषित-उष्ट) 1. जलाना, उपभोग करना, खपाना,—ओषांचकार कामाग्निर्दश-वक्त्रमहर्निशम्—भट्टि० ६।१, १४।६२, मनु० ४।१८९ 2. दण्ड देना, पीटना—दण्डेनैव तमप्योषेत्—मनु० ९।३७३ 3. मार डालना, चोट पहुँचाना।

उषः [उष्+क] 1. प्रभात काल, पौ फटना 2. लम्पट 3. रिहाली धरती।

उषणम् [उष्+ल्युट्] 1. काली मिर्च 2. अदरक।

उषपः [उष्+कपन्] 1. अग्नि 2. सूर्य।

उषस् (स्त्री०) [उष्+असि] 1. पौ फटना, प्रभात—प्रदीपाचिरिवोषसि—रघु० १२।१, उषसि उत्थाय—प्रभात काल में उठकर 2. प्रातः कालीन प्रकाश 3. सांध्यकालीन (प्रातः और सायं) अधिष्ठातृदेवी (द्वि० व० में प्रयोग)।—सी दिन का अवसान, सायंकालीन संध्या। सम०— बुधः अग्नि—उत्तर० ६।

उषा [ओषत्यन्धकारम्—उष्+क] 1. प्रभात काल, पौ फटना 2. प्रातः कालीन प्रकाश 3. संध्या 4. रिहाली धरती 5. डेगची, बटलोही 6. बाण राक्षस की पुत्री तथा अनिरुद्ध की पत्नी [उषा ने अनिरुद्ध को स्वप्न में देखा, और उस पर मोहित हो गई। उसने अपनी सखी चित्रलेखा की सहायता माँगी—चित्रलेखा ने उसे परामर्श दिया कि वह आस पास रहने वाले सभी राजकुमारों के चित्र अपने साथ ले ले। जब ऐसा किया गया, तो उसने अनिरुद्ध को पहचान लिया और उसे अपने नगर में लिवा ले गई, जहाँ कि उसका अनिरुद्ध से विवाह हो गया—दे० 'अनिरुद्ध' भी)। सम०—ईशः उषा का स्वामी अनिरुद्ध,—कालः मुर्गा,—पतिः,—रमणः अनिरुद्ध, उषा का पति।

उषित (वि०) [वस् (उष्)+क्त] 1. बसा हुआ 2. जला हुआ।
उशीर=दे० उशीर।
उष्ट्रः [उष्+ष्ट्रन, कित्] 1. ऊँट,—अयोष्ट्रवामीशतवाहितार्थम्—रघु० ५।३२, मनु० ३।१६२, ४।१२०, ११।२०२ 2. भैंसा 3. ककुद्मान् सांड,—ष्ट्री ऊँटनी।
उष्ट्रिका [उष्ट्र+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. ऊँटनी 2. ऊँट की शक्ल की मिट्टी की बनी मदिरा रखने की सुराही —शि० १२।२६।
उष्ण (वि०) [उष्+नक्] 1. तप्त, गर्म—°अंशुः, °करः आदि 2. तीक्ष्ण, स्थिर, फुर्तीला—आददे नातिशीतोष्णो नभस्वानिव दक्षिणः—रघु० ४।८, (यहाँ 'उष्ण' का अर्थ 'गर्म' भी है) 3. रिक्त, तीखा, चरपरा 4. चतुर, प्रवीण 5. क्रोधी,—ष्णः,—ष्णम् 1. ताप, गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु 3. धूप। सम०—अंशुः,—करः,—गुः,—दीधितिः,—रश्मिः,—रुचिः गर्म किरणों वाला, सूर्य—रघु० ५।४ ८।३०, कु० ३।२५—अभिगमः,—आगमः,—उपगमः गर्मी का निकट आना, ग्रीष्म ऋतु,—उदकम् गर्म या तप्त पानी,—कालः,—गः गर्म ऋतु—वाष्पः। 1. आँसू 2 गर्म भाप,—वारणः—णम् छाता छतरी,—यदर्थम्भोजमिवोष्णवारणम्,—कु० ५।५२।
उष्णक (वि०) [उष्ण+कन्] 1. तेज, फुर्तीला, सक्रिय 2. ज्वरग्रस्त, पीड़ित 3. गर्मी पहुँचाने वाला, गर्म करने वाला,—कः 1. ज्वर 2. निदाघ, ग्रीष्म ऋतु।
उष्णालु (वि०) [उष्ण+आलुच्] गर्मी न सह सकने योग्य, दग्ध, संतप्त,—उष्णालुः शिशिरे निषीदति तरोर्मूलालवाले शिखी—विक्रम० २।२३।
उष्णिका [अल्प+कन्, नि० उष्ण आदेशः, टाप्+इत्वम्] मांड।
उष्णिमन् (पुं०) [उष्ण+इमनिच्] गर्मी।
उष्णीषः,—षम् [उष्णमीषते हिनस्ति—ईष्+क तारा०] 1. जो सिर के चारों ओर बाँधी जाय 2. अतः पगड़ी, साफ़ा, शिरोवेष्टन, मुकुट—वलाकापाण्डुरोष्णीषम्—मृच्छ० ५।१९ 3. प्रभेदक चिह्न।
उष्णीषिन् (वि०) [उष्णीष+इनि] शिरोवेष्टन पहने हुए या राजमुकुट धारण किए हुए—का० २२९,—(पुं०) शिव।
उष्मः,—उष्मकः [उष्+मक्, कन् च] 1. गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु 3. क्रोध 4. सरगरमी, उत्सुकता, उत्कण्ठा। सम०—अन्वित (वि०) क्रुद्ध,—भास् (पुं०) सूर्य,—स्वेदः बफ़ारा, भाप से स्नान।
उष्मन् (पुं०) [उष्+मनिन्] 1. ताप, गर्मी—अर्थोष्मन्—भर्तृ० २।४०, मनु० ९।२३१, २।२३, कु० ५।४६, ७।१४ 2. वाष्प, भाप—कु० ५।२३ 3. ग्रीष्म ऋतु 4. सरगरमी, उत्सुकता 5. (व्या० में), श् ष् स् और ह् अक्षर दे० 'ऊष्मन्'।
उस्रः [वस्+रक्, संप्र०] 1. (प्रकाश की) किरण, रश्मि—सर्वैरुस्रैः समग्रैस्त्वमिव नृपगुणैर्दीप्यते सप्तसप्तिः—मालवि० २।१३, रघु० ४।६६ कि० ५।३१ 2. सांड़ 3. देवता,—स्रा 1 प्रभात काल, पौ फटना 2. प्रकाश 3. गाय।
उह् (भ्वा० पर०) (ओहति, उहित) 1. चोट मारना, पीड़ित करना 2. मार डालना, नष्ट करना—अप या व्यप के साथ—दे० 'ऊह्'।
उह, उहह (अव्यय०) बुलाने या पुकारने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।
उह्रः [वह्+रक् संप्र०] सांड।

ऊ

ऊः [अवतीति—अव्+क्विप् ऊठ्] 1. शिव, 2. चन्द्रमा —(अव्यय०) 1. आरम्भ-सूचक अव्यय 2. (क) बुलावा (ख) करुणा (ग) तथा संरक्षा को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय।
ऊढ (वि०) [वह्+क्त संप्र०] 1. ढोया गया, ले जाया गया (बोझा आदि) 2. लिया गया 3. विवाहित,—ढः विवाहित पुरुष,—ढा विवाहिता लड़की। सम०—कंकट (वि) कवचधारी,—भार्य (वि०) जिसने विवाह कर लिया है,—वयस्‌ः नवयुवक।
ऊढिः (स्त्री०) [वह्+क्तिन्] विवाह।
ऊतिः (स्त्री०) [अव्+क्तिन्] 1. बुनना, सीना 2. संरक्षा 3. उपभोग 4. क्रीड़ा, खेल।
ऊधस् (नपुं०) [उन्द्+असुन्, ऊध आदेशः] ऐन, औड़ी (बहुव्रीहि समास में बदल कर 'उधन्' हो जाता है)।
ऊधन्यम्, ऊधस्यम् [ऊधस् (न्)+यत्] दूध (औड़ी से उत्पन्न) ऊधस्यमिच्छामि तवोपभोक्तुम्—रघु० २।६६।
ऊन (त्रि०) [ऊन्+अच्] 1. अभावग्रस्त, अधूरा, कम—किंचिदूनमनूनर्धेः शरदामयुतं ययौ—रघु० १०।१ अपूर्ण, अपर्याप्त 2. (संख्या, आकार या अंश में) अपेक्षाकृत कम—ऊनद्विवर्षं निखनेत्—याज्ञ० ३।१, दो वर्ष से कम आयु का 3. अपेक्षाकृत दुर्बल, घटिया—ऊनं न सत्त्वेष्वधिको बबाधे—रघु० २।१४ 4. घटा कर (संख्याओं के साथ इसी अर्थ में) एकोन=एक घटा कर,—°विंशतिः एक घटाकर बीस=१९।

ऊम् (अव्य०) [ऊय्+मुक्] (क) प्रश्नवाचकता (ख) क्रोध (ग) भर्त्सना, दुर्वचन (घ) धृष्टता और (ङ) ईर्ष्या को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय।

ऊय् (भ्वा० आ०) (ऊयते, ऊत) बुनना, सीना।

ऊररी=दे० उररी।

ऊरव्यः (स्त्री० –व्या) [ऊरु+यत्] वैश्य, तृतीय वर्ण का पुरुष (ब्रह्मा या पुरुष की जंघाओं से पैदा होने के कारण) तु०, मनु० १।३१, ८७।

ऊरुः (पुं०) [ऊर्णु+कु, नुलोपः] 1. जंघा—ऊरू तदस्य यद्वैश्यः—ऋक् १०।९०।१२। सम०—**अष्ठीवम्** जंघा और घुटना,—**उद्भव** (वि०) जंघा से उत्पन्न–विक्रम० १।३,—**ज**,—**जन्मन्**,—**संभव** (वि०) जंघा से उत्पन्न –(पुं०) वैश्य,—**दघ्न**,–**द्वयस्**,—**मात्र** (वि०) जंघाओं तक पहुंचने वाला, घुटनों तक,—**पर्वन्** (पुं०) (नपुं०) घुटना,—**फलकम्** जाँघ की हड्डी, कूल्हे की हड्डी।

ऊरुरी=दे० उररी।

ऊर्ज् (स्त्री०) [ऊर्ज्+क्विप्] 1. सामर्थ्य, बल 2. सत्त्व, भोजन।

ऊर्जः [ऊर्ज्+णिच्+अच्] 1. कार्तिक का महीना—शि० ६।५० 2. स्फूर्ति 3. शक्ति, सामर्थ्य 4. प्रजननात्मक शक्ति 5. जीवन, प्राण,—**र्जा** 1. भोजन, 2. स्फूर्ति 3. सामर्थ्य, सत्त्व 4. वृद्धि।

ऊर्जस् (नपुं०) [ऊर्ज्+असुन्] 1. बल, स्फूर्ति 2. भोजन।

ऊर्जस्वत् (वि०) [ऊर्जस्+मतुप्] 1. भोज्य-समृद्ध, रसीला 2. शक्तिशाली।

ऊर्जस्वल (वि०) [ऊर्जस्+वलच्] बड़ा, शक्तिशाली, दृढ़, ताकतवर—रघु० २।५०, भट्टि० ३।५५।

ऊर्जस्विन् (वि०) [ऊर्जस्+विन्] ताकतवर, दृढ़, बड़ा।

ऊर्जित (वि०) [ऊर्ज्+क्त] 1. शक्तिशाली, दृढ़, ताकतवर—मातृकं च धनुरूर्जितं दधत्—रघु० ११।६४, बलशाली, दृढ़ (वाणी)-शि० १६।३८ 2. पूज्य, बढ़िया, श्रेष्ठ, सुन्दर—°श्रीः—शि० १६।८५, मकरोर्जित केतनम्—रघु० ९।३९ 3. उच्च, भव्य, तेजस्वी—°आश्रयं वचः—कि० २।१ जोशीला या शानदार,—**तम्** 1. सामर्थ्य, ताकत 2. स्फूर्ति।

ऊर्णम् [ऊर्णु+ड] 1. ऊन 2. ऊनी वस्त्र। सम०—**नाभः**, —**नाभिः**,—**पटः** मकड़ी—**म्रद**,—**दस्**—(वि०) ऊन की भांति नरम।

ऊर्णा [ऊर्ण+टाप्] 1. ऊन—रघु० १६।८७ 2. भौंहों का मध्यवर्ती केशपुंज। सम०—**पिंडः** ऊन का गोला।

ऊर्णायु (वि०) [ऊर्णा+यु] ऊनी,—**युः** 1. मेंढा 2. मकड़ी —भामि० १।९० 3. ऊनी कंबल।

ऊर्णु (अदा० उभ०) (ऊर्णौ(र्णौ)ति, उर्णुते ऊर्णित) ढकना, घेरना, छिपाना—भट्टि० १४।१०३, शि० २०।१४ (प्रेर०) ऊर्णावयति, (इच्छा०) ऊर्णुनूषति, उर्णुन—नु —विषति; प्र—ढकना, छिपाना आदि।

ऊर्ध्व (वि०) [उद्+हा+ड पृषो० ऊर आदेशः] 1. सीधा, खड़ा, ऊपर का, °केश आदि, ऊपर की ओर उठता हुआ 2. उठाया हुआ, उन्नत, सीधा खड़ा —°हस्तः, °पादः आदि 3. ऊंचा, बढ़िया, अपेक्षाकृत ऊंचा या ऊपर का 4. खड़ा हुआ (विप० आसीन) 5. फटा हुआ, टूटा हुआ (बाल आदि),—**र्ध्वम्** उन्नतता, ऊँचाई,—**र्ध्वम्** (अव्य०) 1. ऊपर की ओर, ऊंचाई पर, ऊपर 2. बाद में (=उपरिष्टात्) 3. ऊँचे स्वर से, जोर से 4. बाद में, पश्चात् (अपा० के साथ) —ते त्र्यहादूर्ध्वमाख्याय—कु० ६।९३, रघु० १४।६६। सम०—**कच**,—**केश** (वि०) 1. खड़े बालों वाला 2. जिसके बाल टूट गये हों (—**चः**) केतु,—**कर्मन्** (नपुं०) —क्रिया 1. ऊपर को गति 2. ऊँचा पद प्राप्त करने के लिए चेष्टा (—पुं०) विष्णु,—**कायः**,—**कायम्** शरीर का ऊपरी भाग,—**गः**,—**गामिन्** (वि०) ऊपर जाने वाला, चढ़ा हुआ, उठता हुआ,—**गति** (त्रि०) ऊपर की ओर जाने वाला (स्त्री०—**तिः**)—**गमः**,—**गमनम्** 1. चढ़ाव, उन्नतता 2. स्वर्ग में जाना,—**चरण**,—**पाद** (वि०) ऊपर को पैर किये हुए (—**णः**) शरभ नाम का एक काल्पनिक जन्तु,—**जानु**,—**ज्ञ**,—**ज्ञु** (वि०) 1. घुटने उठाये हुए, पुट्ठों के बल बैठा हुआ—शि० ११।११ 2. उकड़ूं बैठा हुआ,—**दृष्टि**,—**नेत्र** (वि०) 1. ऊपर को देखता हुआ 2. (आलं०) उच्चाकांक्षी, महत्त्वाकांक्षी (स्त्री०—**ष्टिः**) भौंओं के बीच में अपनी दृष्टि को संकेन्द्रित करना (यो० द०),—**देहः** अन्त्येष्टि संस्कार,—**पातनम्** ऊपर चढ़ाना, परिष्करण (जैसे पारे का),—**पात्रम्** यज्ञीय पात्र–याज्ञ० १।१८२, —**मुख** (वि०) ऊपर को मुंह किये हुए, उन्मुख —कु० १।१६, रघु० ३।५७,—**मौहूर्तिक** (वि०) थोड़ी देर के पश्चात् होने वाला,—**रेतस्** (वि०) अनवरत ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, स्त्री-संभोग से सदैव विरत रहने वाला,–(पुं०) 1. शिव 2. भीष्म, —**लोकः** ऊपर की दुनिया, स्वर्ग,—**वर्त्मन्** (पुं०) पर्यावरण,—**वातः**,—**वायुः** शरीर के ऊपरी भाग में रहने वाली वायु,—**शायिन्** (वि०) ऊपर को मुंह (बच्चे की भाँति) करके चित सोया हुआ—(पुं०) शिव,—**शोधनम्** वमन करना,—**श्वासः** साँस छोड़ना, प्राण त्यागना,—**स्थितिः** (स्त्री०) 1. अश्व पालन 2. घोड़े की पीठ 3. उन्नतता, श्रेष्ठता।

ऊर्मिः (पुं०, स्त्री०) [ऋ+मि, अर्तेरुच्च] 1. लहर, झाल—पयोवेत्रवत्याश्चलोर्मि—मेघ० २४ 2. धारा प्रवाह 3. प्रकाश 4. गति, वेग 5. वस्त्र की शिकन या चुन्नट 6. पंक्ति, रेखा 7. कष्ट, बेचैनी, चिन्ता।

सम०—मालिन् (वि०) तरंग मालाओं से विभूषित –(पुं०) समुद्र।

ऊर्मिका [ऊर्मि+कन्+टाप्] 1. लहर 2. अंगूठी (लहर की भांति चमकीली) 3. खेद, खोई वस्तु के लिए शोक 4. मक्खी का भिनभिनाना 5. वस्त्र में पड़ी शिकन या चुन्नट।

ऊर्व (वि०) [ऊरु+अ] विस्तृत, बड़ा,—र्वः बडवानल।

ऊर्वरा [उरु शस्यादिकमृच्छति—ऋ+अच्+टाप्] उपजाऊ भूमि।

ऊलुपिन् [दे० उलुपिन्] शिशुक, सूंस।

ऊलूक=दे० उलूक।

ऊष् (भ्वा० पर०) (ऊषति) रुग्ण होना, अस्वस्थ होना, बीमार होना।

ऊषः [ऊष्+क] 1. रिहाली धरती 2. अम्ल 3. दरार, तरेड़ 4. कर्णविवर 5. मलय पर्वत 6. प्रभात, पौ फटना, कुछ लोगों के मतानुसार (—षम्) भी।

ऊषकम् [ऊष+कन्] प्रभात, पौ फटना।

ऊषणम्–णा [ऊष्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. काली मिर्च, 2. अदरक।

ऊषर (वि०) [ऊष्+रा+क] नमक या रेहकणों से युक्त,—रः,—रम् बंजर भूमि जो रिहाल हो—शि० १४।४६।

ऊषवत्=दे० (वि०) ऊपर।

ऊष्मः [ऊष्+मक्] 1. ताप 2. ग्रीष्म ऋतु।

ऊष्मण,—ष्म्य (वि०) [ऊष्म+नं] [ऊष्मन्+यत्] गर्म, भाप निकालने वाला।

ऊष्मन् (पुं०) [ऊष्+मनिन्] 1. ताप, गर्मी 2. ग्रीष्म-ऋतु, निदाघ 3. भाप, वाष्प, उच्छ्वास 4. सरगरमी, जोश, प्रचण्डता 5. (व्या० में) श्, ष्, स् और ह् की ध्वनियां। सम०—उपगमः ग्रीष्म ऋतु का आगमन, —पः 1. अग्नि 2. पितरों की (ब० व० में) एक श्रेणी।

ऊह् (भ्वा० उभ०) (ऊहति—ते, ऊहित) 1. टांकना, अंकित करना, अवेक्षण करना 2. अटकल लगाना, अंदाज करना, अनुमान लगाना—अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः—पंच० १।४३ 3. समझना, सोचना, पहचानना, आशा करना—ऊहाञ्चक्रे जयं न च—भट्टि० १४।७२ 4. तर्क करना, विचार करना—(प्रेर०) तर्क या चिन्तन करवाना, अनुमान या अटकल लगवाना —कि० १६।१९, अप—, 1. हटाना, दूर करना—स हि विघ्नानपोहति—श० ३।१ 2. तुरन्त अनुकरण करना, अपवि—, रोकना, हटाना, अभि—, अटकल लगाना अंदाज लगाना 2. ढकना, उप—, निकट लाना, निर्वि—, सम्पन्न करना, प्रकाशित करना (दे० निर्व्यूढ) परिसम्—, इधर-उधर छिड़कना, प्रति—, 1. विरोध करना, बाधा डालना, रुकावट डालना 2. मुकरना (दे० प्रत्यूह) प्रतिवि—, शत्रु के विरुद्ध सैनिक मोर्चा लगाना, वि—, युद्ध के अवसर पर सेना की व्यवस्था करना—सूच्या वज्रेण चैवेतान् व्यूहेन व्यूह्य योधयेत् —मनु० ७।१९१, सम्—, एकत्र करना, इकट्ठे होना।

ऊहः [ऊह्+घञ्] 1. अटकल, अंदाज 2. परीक्षण, निर्धारण 3. समझ-बूझ 4. तर्कना, युक्ति देना 5. अध्याहार (न्यूनपद की पूर्ति) करना। सम०—अपोहः पूरी चर्चा, अनुकूल व प्रतिकूल स्थितियों पर पूरा सोच-विचार,—भामि० २।७४ दे० 'अपोह'।

ऊहनम् [ऊह्+ल्युट्] अनुमान लगाना, अटकलबाजी।

ऊहनी [ऊहन+ङीप्] झाड़ू, बुहारी।

ऊहिन् (वि०) [ऊह्+इनि] तर्क करने वाला, अनुमान लगाने वाला,—नी 1. संघात, संचय 2. क्रम, क्रमबद्ध समुदाय (तु० 'अक्षौहिणी')

ऋ

ऋ (अव्य०) (क) बुलाना (ख) परिहास और (ग) निन्दा या अपशब्दव्यंजक विस्मयादिबोधक अव्यय।

ऋ i (भ्वा० पर०) (ऋच्छति. ऋत—प्रेर० अर्पयति, इच्छा० अरिरिषति) 1. जाना. हिलना-डुलना—अम्भश्छायामच्छामृच्छति—शि० ४।४४ 2. उठाना, उन्मुख होना।

ii (जु० पर०) (इयर्ति, ऋत) (बहुधा वेद में प्रयुक्त) 1. जाना 2. हिलना-डुलना, डगमग होना 3. प्राप्त करना, अवाप्त करना, अधिगत करना, भेंट होना, 4. चलायमान करना, उत्तेजित करना।

iii (स्वा० पर०) (ऋणोति, ऋण) 1. चोट पहुँचाना, घायल करना 2. आक्रमण करना—प्रेर०—(अर्पयति, अर्पित) 1. फेंकना, डालना, स्थिर करना या जमाना —रघु० ८।८७ 2. रखना, स्थापित करना, स्थिर करना, निर्देश देना या (आँख आदि का) फेरना 3. रखना, सम्मिलित करना, देना, बैठा देना, जमा

देना 4. सौंपना, दे देना, सुपुर्द कर देना, हवाले कर देना —इति सूतस्याभरणान्यर्पयति श० १।४, १९।

ऋक्ण (वि०) [व्रश्च्+क्त पृषो० वलोपः] घायल, क्षत-विक्षत, आहत।

ऋक्थम् [ऋच्+थक्] 1. धन-दौलत 2. विशेषकर सम्पत्ति, हस्तगत सामग्री या सामान (मृत्यु हो जाने पर छोड़ा हुआ), दे० 'रिक्थ' 3. सोना। सम० —ग्रहणम् प्राप्त करना या उत्तराधिकार में (संपत्ति) पाना,—ग्राहः उत्तराधिकारी या संपत्ति का प्राप्तकर्ता, —भागः 1. संपत्ति का बँटवारा, विभाजन 2. अंश, दाय, —भागिन्,—हर,—हारिन् (पुं०) 1. उत्तराधिकारी 2. सह उत्तराधिकारी।

ऋक्षः [ऋष्+स किच्च] 1. रीछ—मनु० १२।६७ 2. पर्वत का नाम,—क्षः,—क्षम् 1. तारा, तारकपुंज, नक्षत्र—मनु० ३।१०१ 2. राशिमाला का चिह्न, राशि,—क्षाः (पुं-ब० व०) कृत्तिका-मंडल के सात तारे, जो बाद में सप्तर्षि कहलाये—रघु० १२।२५, —क्षा उत्तर दिशा,—क्षी रीछनी, मादा भालू। सम० —चक्रम् तारामंडल,—नाथः,—ईशः 'तारों का स्वामी' चन्द्रमा,—नेमिः विष्णु,—राज्,—राजः 1. चन्द्रमा 2. रीछों का स्वामी, जांबवान्,—हरीश्वरः रीछों और लंगूरों का स्वामी रघु० १३।७२।

ऋक्षरः [ऋष्+क्सरन्] 1. ऋत्विज् 2. काँटा।

ऋक्षवत् [ऋक्ष+मतुप्-मस्य वः] नर्मदा के निकट स्थित एक पहाड़,—वप्रक्रियामृक्षवतस्तटेषु—रघु० ५।४४; ऋक्षवन्तं गिरिश्रेष्ठमध्यास्ते नर्मदां पिबन्—रामा०।

ऋच् (तुदा० पर०) (ऋचति) 1. प्रशंसा करना, स्तुति गान करना 2. ढकना, पर्दा डालना 3. चमकना।

ऋच् (स्त्री०) [ऋच्+क्विप्] 1. सूक्त 2. ऋग्वेद का मंत्र, ऋचा (विप० यजुस् और सामन्) 3. ऋक्संहिता (ब० व०) 4. दीप्ति ('रुच्' के लिए) 5. प्रशंसा 6. पूजा। सम०—विधानम् ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ करके कुछ संस्कारों का अनुष्ठान,—वेदः चारों वेदों में सबसे पुराना वेद, हिन्दुओं का अत्यंत पवित्र और प्राचीन ग्रन्थ,—संहिता ऋग्वेद के सूक्तों का क्रमबद्ध संग्रह।

ऋचीषः [ऋच्+ईषन्] घण्टी,—षम् कड़ाही।

ऋच्छ् (तुदा० पर०) (ऋच्छति) 1. कड़ा, या सख्त होना 2. जाना 3. क्षमता का न रहना।

ऋच्छका [ऋच्छ+कन्+टाप्] कामना, इच्छा।

ऋज् i (भ्वा० आ०) (अर्जते, ऋजित) 1. जाना 2. प्राप्त करना, हासिल करना 3. खड़े होना या स्थिर होना 4. स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट होना।

ii (भ्वा० पर०) अवाप्त करना, उपार्जन करना, तु० 'अर्ज्'।

ऋजीष—दे० 'ऋचीप'।

ऋजु, ऋजुक (वि०) [अर्जयति गुणान्, अर्ज्+उ] (स्त्री० —जु—ज्वी) (म० अ०—ऋजीयस्, उ० अ० ऋजिष्ठ) 1. सीधा (आलं० भी)—उमां स पश्यन् ऋजुनैव चक्षुषा —कु० ५।३२ 2. खरा, ईमानदार, स्पष्टवादी—पंच० १।४१५ 3. अनुकूल, अच्छा। सम०—गः 1. व्यवहार में ईमानदार 2. तीर,—रोहितम् इन्द्र का सीधा लाल धनुष।

ऋज्वी [ऋजु+ङीप्] 1. सीधीसादी सरल स्त्री 2. तारों की विशेष गति।

ऋणम् [ऋ+क्त] 1. कर्ज़ा (तीनों प्रकार का ऋण, दे० अनृण), अंत्यं ऋणं (पितृणम्) पितरों को दिया जाने वाला अन्तिम ऋण—अर्थात्—पुत्रोत्पादन 2. कर्तव्यता, दायित्व 3. (बीजग० में) नकारात्मक चिह्न या परिमाण, घटा-चिह्न (विप०-धन) 4. किला, दुर्ग 5. पानी 6. भूमि। सम०—अन्तकः मंगल ग्रह,—अपनयनम्,—अपनोदनम्,—अपाकरणम्,—दानम्, —मुक्तिः,—मोक्षः,—शोधनम् ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना,—आदानम् कर्जा वसूल करना, उधार दिया हुआ द्रव्य वापिस लेना,—ऋणम् (ऋणार्णम्) एक कर्ज़ के लिए दूसरा कर्ज़, एक ऋण चुकाने के लिए दूसरा ऋण ले लेना,—ग्रहः 1. रुपया उधार लेना 2. उधार लेने वाला,—दातृ,—दायिन् (वि०) जो ऋण दे देता है,—दासः वह क्रीत दास जिसका ऋण परिशोध करके उसे लिया गया है—ऋणमोचनेन दास्यत्वमभ्युपगतः ऋणदासः—मिता०,—मत्कुणः, —मार्गणः प्रतिभूति, जमानत,—मुक्त (वि०) ऋण से मुक्त,—मुक्तिः आदि दे० 'ऋणापनयनम्',—लेख्यम् 'ऋण-बन्धपत्र' तमस्सुक जिसमें ऋण की स्वीकृति दर्ज हो (विधि में)।

ऋणिकः [ऋण+ष्ठन्] क़र्ज़दार याज्ञ० २।५६, ९३।

ऋणिन् (वि०) [ऋण+इनि] कर्ज़दार, ऋणग्रस्त, अनुगृहीत (किसी भी बात से)।

ऋत (वि०) [ऋ+क्त] 1. उचित, सही 2. ईमानदार, सच्चा—भग० १०।१४ 3. पूजित, प्रतिष्ठाप्राप्त —तम् (अव्य०) सही ढंग से, उचित रीति से,—तम् (लौकिक साहित्य में इसका प्रयोग प्रायः नहीं मिलता) 1. स्थिर और निश्चित नियम, विधि (धार्मिक) 2. पावन प्रथा 3. दिव्य नियम, दिव्य सचाई 4. जल 5. सचाई, अधिकार 6. खेतों में उञ्छवृत्ति द्वारा जीविका (विप० कृषि), ऋतमुञ्छशिलं वृत्तम्—मनु० ४।५। सम०—धामन् (वि०) सच्चे या पवित्र स्वभाव वाला,—(पुं०) विष्णु।

ऋतीया [ऋत+ईयङ्+टाप्] निन्दा, भर्त्सना।

ऋतु [ऋ+तु, कित्] 1. मौसम, वर्ष का एक भाग, ऋतुएँ

गिनती में छः हैं—शिशिरश्च वसन्तश्च ग्रीष्मो वर्षा शरद्धिमः—कभी कभी ऋतुएँ पाँच समझी जाती हैं (शिशिर और हिम या हेमन्त एक गिने जाने पर) 2. युगारंभ, निश्चित काल 3. आर्तव, ऋतुस्राव, माहवारी 4. गर्भाधान के लिए उपयुक्त काल—वरमृतुषु नैवाभिगमनम्—पंच० १, मनु० ३।४६, याज्ञ० १।११ 5. उपयुक्त मौसम या ठीक समय 6. प्रकाश, आभा 7. छः की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। सम०—**कालः**,—**समयः**,—**वेला** 1. गर्भाधान के लिए अनुकूल समय अर्थात् ऋतुस्राव से लेकर १६ रातें, दे० उ० ऋतु 2. मौसम की अवधि,—**गणः** ऋतुओं का समुदाय,—**गामिन्** (गर्भाधान के लिए उपयुक्त समय पर अर्थात् मासिकधर्म के पश्चात्) स्त्री से संभोग करने वाला,—**पर्णः** अयोध्या के एक राजा का नाम, अयुतायु का पुत्र, इक्ष्वाकु की संतान, (अपना राज्य छिन जाने पर निषध देश का राजा नल जब आपद्ग्रस्त हुआ तो वह राजा ऋतुपर्ण की सेवा में आया। द्यूतक्रीड़ा में बड़ा कुशल था। अतः उस राजा ने नल से द्यूतक्रीड़ा सीखी तथा बदले में उसे अश्वसंचालन का काम सिखाया। फलतः इसी की बदौलत राजा ऋतुपर्ण, इसके पूर्व कि दमयन्ती अपना दूसरा पति चुनने के विचार को कार्य में परिणत करे, नल को कुण्डिनपुर पहुंचाने में सफल हुआ),—**पर्यायः**,—**वृत्तिः** ऋतुओं का आना-जाना,—**मुखम्** ऋतु का आरम्भ या पहला दिन —**राजः** बसन्त ऋतु,—**लिंगम्** 1. रजःस्राव का लक्षण या चिह्न (जैसे की बसन्त ऋतु में आम के बौर आना) 2. मासिक स्राव का चिह्न,—**संधिः** दो ऋतुओं का मिलन,—**स्नाता** रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करके निवृत्त हुई, और इसीलिए संभोग के लिए उपयुक्त स्त्री—धर्मलोपभयाद्राज्ञीमृतुस्नातामिमां स्मरन्—रघु० १।७६,—**स्नानम्** रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करना।

ऋतुमती [ऋतु+मतुप्+ङीप्] रजस्वला स्त्री।

ऋते (अव्य०) सिवाय, बिना (अपा० के साथ)—ऋते क्रौर्यात्समायातः—भट्टि० ८।१०५ अवेहि मां प्रीतमृते तुरङ्गमात्—रघु० ३।६३ पापादृते—श० ६।२२, कु० १।५१, २।५७, (कभी-कभी कर्म० के साथ) ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे—भग० ११।३२ (करण० के साथ विरल प्रयोग)।

ऋत्विज् (पुं०) [ऋतु+यज्+क्विन्] यज्ञ के पुरोहित के रूप में कार्य करने वाला, चार मुख्य ऋत्विज—होता, उद्गाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा हैं, बड़े २ संस्कारों में ऋत्विजों की संख्या १६ तक होती है।

ऋद्ध (भू० क० कृ०) [ऋध्+क्त] 1. सम्पन्न, फलता-फूलता, धनवान्—रघु० १४।३०, २।५०, ५।४० 2. वृद्धि-प्राप्त, वर्धमान 3. जमा किया हुआ (अन्नादिक), —**द्धः** विष्णु—**द्धम्** 1. वृद्धि, विकास 2. प्रदर्शित उपसंहार, स्पष्ट परिणाम।

ऋद्धिः (स्त्री०) [ऋध्+क्तिन्] 1. विकास, वृद्धि 2. सफलता, सम्पन्नता, बहुतायत 3. विस्तार, विस्तृति, विभूति 4. अतिप्राकृतिक शक्ति, सर्वोपरिता 5. सम्पन्नता।

ऋध् (दिवा० स्वा० पर०) (ऋध्यति, ऋध्नोति, ऋद्ध) 1. संपन्न होना, समृद्ध होना, फलना-फूलना, सफल होना 2. विकसित होना, बढ़ना (आलं० भी) 3. संतुष्ट करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना, मनाना—मा० ५।२९, सम्—फलना-फूलना।

ऋभुः [अरि स्वर्गे अदितौ वा भवति इति—ऋ+भू+डु] देवता, दिव्यता, देव।

ऋभुक्षः [ऋभवो देवा क्षियन्ति वसन्ति अत्रेति—ऋभु+क्षि+ड] 1. इन्द्र 2. (इन्द्र का) स्वर्ग।

ऋभुक्षिन् (पुं०) (कर्तृ०- ऋभुक्षाः, कर्म० ब० व० —ऋभुक्षः) [ऋभुक्षः वज्रं स्वर्गो वास्यास्ति—इनि] इन्द्र।

ऋल्लकः [?] एक प्रकार के वाद्ययंत्र को बजाने वाला।

ऋश्यः [ऋश्+क्यप्] सफेद पैरों वाला बारहसिंघा हरिण, —**श्यम्** हत्या। सम०—**केतुः**,—**केतनः** 1. अनिरुद्ध, प्रद्युम्न का पुत्र 2. कामदेव।

ऋष् i (तुदा० पर०—ऋषति, ऋष्ट) 1. जाना, पहुँचना 2. मार डालना, चोट पहुँचाना।
ii (भ्वा० पर०—अर्षति) 1. बहना 2. फिसलना।

ऋषभः [ऋष्+अभक्] 1. साँड़ 2. श्रेष्ठ, सर्वश्रेष्ठ (समास के अंतिम पद के रूप में) यथा पुरुषर्षभः, भरतर्षभः, आदि 3. संगीत के सात स्वरों में से दूसरा —ऋषभोऽत्र गीयत इति-आर्या० १४१ 4. सूअर की पूँछ 5. मगरमच्छ की पूँछ,—**भी** 1. पुरुष के आकार-प्रकार की स्त्री (जैसे कि दाढ़ी आदि का होना) 2. गाय 4. विधवा। सम०—**कूटः** एक पहाड़ का नाम, —**ध्वजः** शिव।

ऋषिः [ऋष्+इन्, कित्] 1. एक अन्तःस्फूर्त कवि या मुनि, मंत्र द्रष्टा 2. पुण्यात्मा मुनि, संन्यासी, विरक्त योगी 3. प्रकाश की किरण। सम०—**कुल्या** पवित्र नदी,—**तर्पणम्** ऋषियों की सेवा में प्रस्तुत किया गया तर्पण—(अर्घ्यादिक),—**पंचमी** भाद्रपदकृष्णा पंचमी को होने वाला (स्त्रियों का) एक पर्व,—**लोकः** ऋषियों का संसार,—**स्तोमः** 1. ऋषियों का स्तुति-गान, 2. एक दिन में समाप्त होने वाला एक विशेष यज्ञ।

ऋष्टिः (पुं०—स्त्री०) [ऋष्+क्तिन] 1. दुधारी तलवार 2. (सामान्यतः) तलवार, कृपाण 3. शस्त्र (बर्छी, भाला आदि)।

ऋष्यः [ऋष्+क्यप्] सफेद पैरों वाला बारहसिंघा

हरिण। सम०—अंकः,—केतनः,—केतुः अनिरुद्ध,—मूकःपंपा सरोवर के निकट स्थित एक पर्वत जहां कुछ दिनों तक राम वानरराज सुग्रीव के साथ रहे थे—ऋष्यमूकस्तु पम्पायाः पुरस्तात्पुष्पितद्रुमः,—शृङ्गः एक मुनि का नाम (यह विभाण्डक का पुत्र था, इसके पिता ने जंगल में ही इसका पालन-पोषण किया, जब तक यह वयस्क न हुआ तब तक इसने किसी दूसरे मनुष्य को नहीं देखा। जब अनावृष्टि के कारण अंगदेश बर्बाद सा हो गया तो उसके राजा लोमपाद ने, ब्राह्मणों के परामर्शानुसार ऋष्यश्रृंग को कुछ कन्याओं द्वारा बुलाया, और अपनी पुत्री शान्ता (यह दत्तक पुत्री थी, इसके वास्तविक पिता राजा दशरथ थे) का विवाह इनसे कर दिया। ऋष्यश्रृंग ने इस बात से प्रसन्न होकर उसके राज्य में पर्याप्त वर्षा कराई। यही वह ऋषि था जिसने राजा दशरथ के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान किया—जिसके फलस्वरूप राम और उनके तीन भाइयों का जन्म हुआ)।

ऋष्यकः [ऋष्य+कन्] चित्तीदार सफ़ेद पैरों वाला बारहसिंघा हरिण।

ॠ

ॠ (अव्य०) (क) त्रास (ख) दुरदुराना (ग) भर्त्सना, निन्दा (घ) करुणा तथा (ङ) स्मृति का व्यंजक विस्मयादिद्योतक अव्यय (पुं०—ॠः) 1. भैरव 2. एक राक्षस।

ॠ (क्र्या० पर०—ॠणाति, ईर्ण) जाना, हिलना-डुलना।

ए

एः (पुं०) [इ+विच्] विष्णु, (अव्य०) (क) स्मरण (ख) ईर्ष्या (ग) करुणा (घ) आमन्त्रण और (ङ) घृणा तथा निन्दा व्यंजक (विस्मयादि द्योतक) अव्यय।

एक (सर्व० वि०) [इ+कन्] 1. एक, अकेला, एकाकी, केवल मात्र 2. जिसके साथ कोई और न हो 3. वही, बिलकुल वही, समरूप—मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्—हि० १।१०१ 4. स्थिर, अपरिवर्तित 5. अपनी प्रकार का अकेला, अद्वितीय, एक वचन 6. मुख्य, सर्वोपरि, प्रमुख, अनन्य—एको रागिषु राजते—भर्तृ० ३।१२१ 7. अनुपम, बेजोड़ 8. दो या बहुत में से एक—मेघ० ३०।७८ 9. बहुधा अंग्रेजी के अनिश्चयवाचक निपात (a या an) की भांति प्रयुक्त—ज्योतिरेकं—श० ५।३०, एक, दूसरा; 'कुछ' अर्थ को प्रकट करने के लिए बहुवचनांत प्रयोग; अन्ये, अपरे इसके सहसम्बन्धी शब्द हैं। सम०—अक्ष (वि०) 1. एक धुरी वाला 2. एक आँख वाला (—क्षः) 1. कौवा 2. शिव,—अक्षर (वि०) एक अक्षर वाला (—रम्) 1. एक अक्षर वाला 2. पावन अक्षर 'ओम्'—अग्र (वि०) 1. केवल एक पदार्थ या बिन्दु पर स्थिर 2. एक ही ओर ध्यान में मग्न, एकाग्रचित्त, तुला हुआ,—रघु० १५।६६, मनुमेकाग्रमासीनम्—मनु० १।१ 3. अव्यग्र, अचंचल,—अग्र्य=°अग्र (—ग्र्यम्) एकाग्रता,—अंगः 1. शरीर रक्षक 2. मंगलग्रह या बुध ग्रह,—अनुदिष्टम् अन्त्येष्टि संस्कार जो केवल एक ही पूर्वज (सद्यो मृत) को उद्देश्य करके किया गया हो,—अंत (वि०) 1. अकेला 2. एक ओर, पार्श्व में 3. जो केवल एक ही पदार्थ या बिन्दु की ओर निर्दिष्ट हो 4. अत्यधिक, बहुत—कु० १।३६ 5. निरपेक्ष, अचल, सतत—स्वायत्तमेकान्तगुणम्—भर्तृ० २।७, मेघ० १०९, (—तः) एकमात्र आश्रय, निश्चित नियम—तेजः क्षमा वा नैकान्तं कालज्ञस्य महीपतेः—शि० २।८३, (—तम्,—तेन,—ततः,—ते) (अव्य०) 1. केवल मात्र, अवश्य, सदैव, नितांत 2. अत्यन्त, बिलकुल, सर्वथा—वयमप्येकान्ततो निःस्पृहाः—भर्तृ० ३।२४, दुःखमेकान्ततो वा—मेघ० १०९,—अन्तर (वि०) अगला, जिसमें केवल एक का ही अन्तर रहे, एक के बाद एक को छोड़ कर—श० ७।२७,—अंतिक (वि०) अन्तिम निर्णायक,—अयन (वि०) 1. जहां से केवल एक ही जा सके, (जैसे कि पगडंडी या बटिया) 2. नितान्त ध्यानमग्न, तुला हुआ दे० एकाग्र (—नम्) 1. एकान्त स्थल या विश्राम स्थली 2. मिलने का स्थान, संकेत-स्थल 3. अद्वैतवाद 4. केवलमात्र

उद्देश्य—सा स्नेहस्य एकायनीभूता—मालवि० २।१५, —अर्थः 1. वही वस्तु, वही पदार्थ या वही आशय 2. वही भाव,—अहन् (हः) 1. एक दिन का समय 2. एक दिन तक चलने वाला यज्ञ,—आतपत्र (वि०) एकच्छत्र से विशिष्टीकृत (विश्वभर की प्रभुता को दर्शाने वाला)—एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वम्—रघु० २।४७, शि० १२।३३ विक्रम० ३।१९,—आदेशः दो या दो से अधिक अक्षरों का एक स्थानापन्न (या तो एक स्वर का लोप करके या दोनों को मिला कर प्राप्त किया गया) जैसे कि 'एकायन' में आ,—आवलिः, —ली (स्त्री०) मोतियों की या अन्य मनकों की एक लड़, --एकावली कण्ठविभूषणं वः—विक्रमांक० १।३०, लताविटपे एकावली लग्ना—विक्रम० १।२, (अलं० शा० में) ऐसी उक्तियों की पंक्ति जिसमें कर्ता का विधेय और विधेय का कर्ता के रूप में नियमित संक्रमण पाया जाय—स्थाप्यतेऽपोह्यते वापि यथापूर्वं परस्परम्, विशेषणतया यत्र वस्तु सैकावली द्विधा —काव्य० १०,—उदकः (संबंधी) जो एक ही मृत पूर्वज से जल के तर्पण द्वारा संबद्ध हो। —उदरः,—रा सगा (भाई या बहन),—उद्दिष्टम् श्राद्धकृत्य जो केवल एक ही मृत व्यक्ति को (दूसरे पूर्वजों को सम्मिलित न करके) उद्देश्य करके किया गया हो,—ऊन (वि०) एक कम, एक घटाकर, - एक (वि०) एक एक करके, व्यष्टिरूप से, एक अकेला—रघु० १७।४३, (—कम्)=एकैकशः (अव्य०) एक२ करके, व्यक्तिशः, पृथक्-पृथक्, —ओघः एक सतत धारा,—कर (वि०) (स्त्री० —री) 1. एक ही कार्य करने वाला 2. (—रा) एक ही हाथ वाली 3. एक किरण वाली,—कार्य (वि०) मिलकर काम करने वाला, सहयोगी, सहकारी (—र्यम्) एक मात्र कार्य, वही कार्य,—कालः 1. एक समय 2. उसी समय,—कालिक,—कालीन (वि०) 1. केवल एक बार होने वाला 2. समवयस्क, समसामयिक,—कुंडलः कुबेर, बलभद्र, शेषनाग,—गुरु, —गुरुक (वि०) एक ही गुरु वाला (—रुः,—रुकः) गुरुभाई,—चक्र (वि०) 1. एक ही पहिये वाला 2. एक ही राजा द्वारा शासित, (—क्रः) सूर्य का रथ, —चत्वारिंशत् (स्त्री०) इकतालीस,—चर (वि०) 1. अकेला घूमने या रहने वाला—कि १३।३, 2. एक ही अनुचर रखने वाला 3. असहाय रहने वाला —चारिन् (वि०) अकेला, (—णी) पतिव्रता स्त्री, —चित्त (वि०) केवल एक ही बात को सोचने वाला (—त्तम्) 1. एक ही वस्तु पर चित्त की स्थिरता 2. ऐकमत्य—एकचित्तीभूय - हि० १—एक मत से, —चेतस्,—मनस् (वि०) एक मत, दे० °चित्त,

—जन्मन् (पुं०) 1. राजा 2. शूद्र, दे० नी०, °जाति —जात एक ही माता-पिता से उत्पन्न,—जातिः शूद्र (विप० द्विजन्मन्) ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः, चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पंचमः —मनु० १०।४, ८।२७०,—जातीय (वि०) एक ही प्रकार का या एक ही परिवार का,—ज्योतिस् (पुं०) शिव,—तान (वि०) केवल एक पदार्थ पर स्थिर या केन्द्रित, नितान्त ध्यानमग्न—ब्रह्मैकतानमनसो हि वशिष्ठमिश्राः—महावी० ३।११,—तालः संगति, गीतों का यथार्थ समंजन, नृत्य, वाद्य यंत्र (तु० तौर्यत्रिकम्) —तीर्थिन् (वि०) 1. उसी पावन जल में स्नान करने वाला 2. एक ही धर्मसंघ से संबंध रखने वाला—याज्ञ० २।१३७,—(पुं०) सहपाठी, गुरुभाई,—त्रिंशत् (स्त्री०) इकतीस,—दंष्ट्रः,—दन्तः 'एक दांत वाला', गणेश का विशेषण,—दंडिन् (पुं०) सन्यासियों या भिक्षुकों का एक समुदाय, (जो 'हंस' कहलाते हैं) इनके चार संघ हैं:—कुटीचको बहूदको हंसश्चैव तृतीयकः, चतुर्थः परहंसश्च यो यः पश्चात्स उत्तमः। हारीत°,—दृश,—दृष्टि (वि०) एक आँख वाला, —(पुं०) 1. कौवा 2. शिव 3. दार्शनिक,—देवः परब्रह्म, —देशः 1. एक स्थान या स्थल 2. (समग्र का) एक भाग या अंश,--एक पार्श्व—तस्यैकदेशः—उत्तर ०४, विभावितैकदेशेन देयं यदभियुज्यते—विक्रम० ४।१७, जिस अंश का दावा किया जाता है, वह उसी व्यक्ति के द्वारा दिया जाना चाहिए जो उसके एक अंश का प्राप्तकर्ता प्रमाणित हो जाय (इसी बात को कभी-कभी 'एकदेशविभावितन्याय' कहते हैं)—धर्मन्,—धर्मिन् 1. एक ही प्रकार के गुणों को रखने वाला, या एक ही प्रकार की संपत्ति को रखने वाला 2. एक ही धर्म को मानने वाला,—धुर,—धुरावह,—धुरीण (वि०) 1. जो एक ही प्रकार कर सके 2. जो एक ही प्रकार से जुत सके (जैसे कि विशेष बोझ के लिए कोई पशु) —पा० ४।४।७९,—नटः नाटक में प्रधान पात्र, सूत्रधार जो नान्दीपाठ करता है,—नवतिः (स्त्री०) इक्यानवे,—पक्षः एक पक्ष या दल—°आश्रय विक्लवत्वात्—रघु० १४।३४,—पत्नी 1. पतिव्रता स्त्री (पूर्णतः सती साध्वी) 2. सपत्नी, सौत —सर्वासामेकपत्नीनामेका चेत्पुत्रिणी भवेत्—मनु० ९।१८३,—पदी पगडंडी,—पदे (अव्य०) अकस्मात्, एकदम, अचानक—निहन्त्यरीनेकपदे य उदात्तः स्वरानिव—शि० २।९५, रघु० ८।४८,—पादः 1. एक या अकेला पैर 2. एक या वही चरण 3. विष्णु, शिव, —पिंगः,—पिंगलः कुबेर,—पिंड (वि०) अन्त्येष्टि पिंड-दान के द्वारा संयुक्त,—भार्या एक पतिव्रता और सती स्त्री, (—र्यः) केवल एक पत्नी रखने वाला,

—भाव (वि०) सच्चा भक्त, ईमानदार,—यष्टिः, यष्टिका मोतियों की एक लड़ी,—योनि (वि०) 1. सहोदर 2. एक ही कुल या जाति के—मनु० ९।१४८, —रसः 1. उद्देश्य या भावना की एकता 2. केवल मात्र रस या आनन्द,—राज्,—राजः (पुं०) निरंकुश या स्वेच्छाचारी राजा,—रात्रः एक पूरी रात तक रहने वाला पर्व—,रिक्थिन् (पुं०) सह-उत्तराधिकारी,—रूप (त्रि०) 1. एक सा, समान 2. समरूप,—लिंगः 1. एक ही लिंग रखने वाला शब्द 2. कुबेर,—वचनम् एक संख्या को प्रकट करने वाला शब्द,—वर्णः एक जाति, —वर्षिका एक वर्ष की वछिया,—वाक्यता अर्थ की संगति, ऐकमत्य, विभिन्न उक्तियों का सामंजस्य, —वारम्,—वारे (अव्य०) 1. केवल एक बार 2. तुरन्त, अकस्मात् 3. एक ही समय,—विंशतिः (स्त्री०) इक्कीस,—विलोचन (वि०) एक आँख वाला दे० 'एकदृष्टि,—विषयिन् (पुं०) प्रतिद्वन्द्वी,—वीरः प्रमुख योद्धा या शूरवीर—महावी० ५।४८,—वेणिः, —णी (स्त्री०) बालों की एक मात्र चोटी (जिसे स्त्री पति-वियोग के चिह्न स्वरूप धारण करती है)—गण्डाभोगात्कठिनविषमामेकवेणीं करेण—मेघ० ९२, श० ७।२१,—शफ (त्रि०) अखंड खुर वाला (—फः) ऐसा पशु जिसके खुर या सुम फटे हुए न हों जैसे घोड़ा गधा आदि,—शरीर (वि०) रक्तसंबद्ध एक खून का, °अन्वयः एक ही गोत्र की सन्तान °अवयवः एक रक्त के वन्धु-बांधव,—शाखः एक ही शाखा या विचार का ब्राह्मण,—शृङ्ग (वि०) केवल एक सींग धारी (—गः) 1. अरण्याश्व, गेंडा 2. विष्णु,—शेषः 'एकशेष' द्वन्द्व समास का एक भेद जिसमें केवल एक ही पद अवशिष्ट रहता है—उदा० 'पितरौ' माता और पिता (=मातापितरौ) इसी प्रकार 'श्वशुरौ' 'भ्रातरः,' आदि,—श्रुत (त्रि०) एक ही बार सुना हुआ °धर (वि०) एक बार सुनी हुई बात को ध्यान में रखने वाला,—श्रुतिः (स्त्री०) एकस्वरता,—सप्ततिः (स्त्री०) इकहत्तर,—सर्ग (वि०) नितांत ध्यानमग्न, —साक्षिक (त्रि०) एक व्यक्ति द्वारा देखा हुआ, —हायन (त्रि०) एक वर्ष की आयु का—मा० ४।८, उत्तर० ३।२८, (—नी) एक वर्ष की वछिया।

एकक (त्रि०) [एक+कन्] 1. इकहरा, अकेला, एकाकी, बिना किसी सहायक के—उत्तर० ५।५ 2. वही, समरूप।

एकतम (त्रि०) (नपुं०—तमत्, स्त्री०—तमा) [एक+डतमच्] 1. बहुतों में से एक 2. एक (अनिश्चयवाचक रूप में प्रयुक्त)।

एकतर (नपुं०—तरम्) [एक+डतरच्] 1. दो में से एक, कोई सा 2. दूसरा, भिन्न 3. बहुतों में से एक।

एकतः (अव्य०) [एक+तसिल्] 1. एक ओर से, एक ओर 2. एक एक करके, एक एक, एकतः-अन्यतः एक ओर, दूसरी ओर—रघु० ६।८५, कि० ५।२।

एकत्र (अव्य०) [एक+त्रल्] 1. एक स्थान पर 2. इकट्ठे, सब इकठ्ठे मिल कर।

एकदा (अव्य०) [एक+दा] 1. एक बार, एक दफ़ा, एक समय 2. उसी समय, सर्वथा एक बार, साथ ही साथ—हि० ४।९३।

एकधा (अव्य०) [एक+धा] 1. एक प्रकार से 2. अकेले 3. तुरन्त, उसी समय 4. मिलकर, साथ साथ।

एकल (वि०) [एक+ला+क] अकेला, एकाकी—उत्तर० ४।

एकशः (अव्य०) [एक+शस्] एक एक करके, अकेले।

एकाकिन् (वि०) [एक+आकिनच्] अकेला, केवल एक।

एकादशन् (सं० वि०) [एकेन अधिका दश इति] ग्यारह।

एकादश (वि०) (स्त्री—शी) ग्यारहवाँ,—शी चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष का ग्यारहवाँ दिन, विष्णु संबंधी पुनीत-दिवस। सम०—द्वारम् शरीर के ग्यारह छिद्र दे० 'ख',—रुद्राः (ब० व०) ११ रुद्र—दे० रुद्र।

एकीभावः [एक+च्वि+भू+घञ्] 1. संहति, साहचर्य 2. सामान्य स्वभाव या गुण।

एकीय (वि०) [एक+छ] एक का या एक से—यः तरफ़दार, सहकारी।

एज् (भ्वा० आ० (म० का० में पर०)—एजते, एजित) 1. कांपना 2. हिलना-डुलना, 3. चमकना (पर०), अप—, दूर हांक देना, उद्—, उठना, ऊपर को होना।

एजक (वि०) [एज्+ण्वुल्] कांपता हुआ, हिलता हुआ।

एजनम् [एज्+ल्युट्] कांपना, हिलना।

एठ् (भ्वा० आ०—एठते, एठित) छेदना, रोकना, विरोध करना।

एड (वि०) [इल्+अच्, डलयोरभेदः] बहरा,—डः एक प्रकार की भेड़,। सम०—मूक (वि०) 1. बहरा और गूगा—तु० अनेडमूक 2. दुष्ट, कुटिल।

एडकः [एड+कन्] 1. भेड़ा, 2. जंगली बकरा,—का, भेड़ी।

एणः, एणकः [एति द्रुतं गच्छति इति—इ+ण, एण+कन् च] एक प्रकार का काला बारासिंघा हरिण, निम्नांकित श्लोक में अनेक प्रकार के हरिणों का उल्लेख है: —अनृचो माणवो ज्ञेय एणः कृष्णमृगः स्मृतः, रुरुर्गौरमुखः प्रोक्तः शंबरः शोण उच्यते। सम०—अजिनम् मृगचर्म,—तिलकः,—भृत् चन्द्रमा, इसी प्रकार °अंकः, °लांछनः आदि,—दृश् (वि०) हरिण जैसी आँखों वाला,-(पुं०) मकर राशि।

एणी [एण+ङीप्] काली हरिणी।

एत (वि०) (स्त्री०—एता, एनी) रंगविरंगा, चमकीला —तः हरिण या बारासिंघा ।

एतद् (सर्व० वि०) (पुं०—एषः, स्त्री०—एषा, नपुं० —एतद्) [इ+अदि, तुक्] 1. यह, यहाँ, सामने (वक्ता के निकटतम वस्तु का उल्लेख करना—समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्), इस अर्थ में 'एतद्' शब्द कई बार पुरुषवाचक सर्वनाम पर बल देने के लिए प्रयुक्त होता है,—एषोऽहं कार्यवशादायोध्यिकस्तदानीन्तनश्च संवृत्तः—उत्तर० १ 2. यह प्राय: अपने पूर्ववर्ती शब्द की ओर संकेत करता है, विशेषकर जबकि यह 'इदम्' या किसी और सर्वनाम के साथ संयुक्त किया जाय —एष वै प्रथमः कल्पः—मनु० ३।१४७, इति यदुक्तं तदेतच्चिन्त्यम् 3. यह संबंधबोधक वाक्यखंड में भी प्राय: प्रयुक्त होता है और उस अवस्था में-संबंधबोधक बाद में आता है—मनु० ९।२५७, (अव्य०) इस रीति से, इस प्रकार, अतः, ध्यान दो,—'एतद्' शब्द उन समासों में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है—जो प्राय: निगदव्याख्यात या स्वतः स्पष्ट हों—उदा० —°अनन्तरम् इसके तुरन्त बाद, °अंत—इस प्रकार समाप्त करते हुए । सम०—द्वितीय (वि०) जो किसी कार्य को दोबारा करे,—प्रथम (वि०) जो किसी को पहली बार करे ।

एतदीय (वि०) [एतद्+छ] इसका, के, की ।

एतनः [आ+इ+तन] श्वास, साँस छोड़ना ।

एतर्हि (अव्य०) [इदम्+हिल्, एत आदेशः] अब, इस समय, वर्तमान समय में ।

एतादृश,—दृश,—दृक्ष, (वि०) [स्त्री०—शी,—क्षी] 1. ऐसा, इस प्रकार का—सर्वेऽपि नैतादृशाः—भर्तृ० २। ५१ 2. इस प्रकार का ।

एतावत् (वि०) [एतद्+वतुप्] इतना अधिक, इतना बड़ा, इतने अधिक, इतना विस्तृत, इतनी दूर, इस गुण का या ऐसे प्रकार का—एतावदुक्त्वा विरते मृगेन्द्रे—रघु० २।५१, कु० ६।८९ एतावान्मे विभवो भवन्तं सेवितुम्—मालवि० २, (अव्य०) इतनी दूर, इतना अधिक, इतने अंश में, इस प्रकार ।

एध् (भ्वा० आ०—एधते, एधित) 1. उगना, बढ़ना—पंच० २।१६४ 2. फलना-फूलना, सुख में जीवन बिताना द्वावेतौ सुखमेधेते—पंच० १।३१८, प्रेर० उगवाना, बढ़वाना, अभिवादन करना, सम्मान करना —कु० ६।९० ।

एधः [इन्ध्+घञ्, नि०] ईंधन,—स्फुलिङ्गावस्थया वह्निरेधापेक्ष इव स्थितः—श० ७।१५, शि० २।९९ ।

एधतुः [एध्+चतु] 1. मनुष्य 2. अग्नि ।

एधस् (नपुं०) [इन्ध्+असि] ईंधन—यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन —भग० ४।३७ अनलायागुरुचन्दनैधसे —रघु० ८।७१ ।

एधा [एध्+अ+टाप्] फलना-फूलना, हर्ष ।

एधित (भू० क० कृ०) [एध्+क्त] 1. विकसित, बढ़ा हुआ 2. पाला पोसा—मृगशावैः सममेधितो जनः—श० २।१८ ।

एनस् (नपुं०) [इ+असुन्, नुडागमः] 1. पाप, अपराध, दोष शि० १४।३५ 2. कुचेष्टा, जुर्म 3. खिन्नता 4. निन्दा, कलंक ।

एनस्वत्, एनस्विन् (वि०) [एनस्+मतुप्, व आदेशः, विनि वा] दुष्ट, पापी ।

एरण्डः [आ+ईर्+अण्डच्] अरंडी का पौधा (बहुत थोड़े पत्तों वाला एक छोटा वृक्ष)—अत एव लो०—निरस्तपादपे देशे एरण्डोपि द्रुमायते ।

एलकः [इल्+अच्+कन्] मेढ़ा, दे० 'एडक' ।

एलवालु (नपुं०), **एलवालुकम्** [एला+वल्+उण् ह्रस्वः, कन् च] 1. कैथ वृक्ष की सुगंधयुक्त छाल 2. एक रवेदार या दानेदार द्रव्य (जो औषधि या सुगंध के रूप में प्रयुक्त होता है) ।

एलविलः [इलविला+अण्] कुबेर, दे० 'एलविल' ।

एला [इल्+अच्+टाप्] 1. इलायची का पौधा—एलानां फलरेणवः, रघु० ४।४७, ६।६४ 2. इलायची (इलायची के बीज) । सम०—पर्णी लाजवन्ती जाति का एक पौधा ।

एलीका [आ+ईल्+ईकन्+टाप्] छोटी इलायची ।

एव (अव्य०) [इ+वन्] किसी शब्द द्वारा कहे गये विचार पर बल देने के लिए बहुधा इस अव्यय का प्रयोग होता है 1. ठीक, बिल्कुल, सही तौर पर —एवमेव—बिल्कुल ऐसा ही, ठीक इसी प्रकार का 2. वही, सही, समरूप—अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव—भर्तृ० २।४० 3. केवल, अकेला, मात्र (बहिष्करण की भावना रखते हुए)—सा तथ्यमेवाभिहिता भवेन—कु० ३।६३, केवलमात्र सचाई, सचाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं 4. पहले ही 5. कठिनाई से, उसी क्षण, ज्यूंही (मुख्यतया-कृदन्तों के साथ)—उपस्थितेयं कल्याणी नाम्नि कीर्तित एव यत्—रघु० १। ८७ 6. की भांति, जैसे कि (समानता प्रकट करते हुए) —श्रीस्त एव मेऽस्तु—गण० (=तव इव) और 7. सामान्यतः किसी उक्ति पर बल देने के लिए—भवितव्यमेव तेन—उत्तर० ४, यह बात निश्चित रूप से होगी, निम्नांकित अर्थ भी इस शब्द द्वारा प्रकट होते हैं 8. अपयश 9. न्यूनता 10. आज्ञा 11. नियंत्रण तथा 12. केवल पूर्ति के लिए ।

एवम् (अव्य०) [इ+वमु (बा०)] 1. अतः, इसलिए, इस रीति से—अस्त्येवम्—पंच० १, यह इस प्रकार है,—एवंवादिनि देवर्षौ—कु० ६।८४; ब्रूया एवम्—मेघ० १०१ (जो कुछ बाद में आता है)—एवमस्तु—ऐसा

ही हो,—स्वस्ति, यद्येवम्,—यदि ऐसा है 2. बिल्कुल ऐसा ही (स्वीकृति रखते हुए)—एवं यदात्थ भगवान्—कु० २।३१। सम०—अवस्थ (वि०) इस प्रकार स्थित, या ऐसी परिस्थितियों में फँसा हुआ,—आदि,—आद्य (वि०) ऐसा और इस प्रकार का,—कारम् (अव्य०) इस रीति से,—गुण (वि०) ऐसे गुणों वाला—श० ११२,—प्रकार,—प्राय (वि०) इस प्रकार का—उत्तर० ५।२९ श० ७।२४,—भूत (वि०) इस प्रकार के गुणों का, ऐसा, इस ढंग का,—रूप (वि०) (वि०) इस प्रकार का, ऐसे रूप का,—विध (वि०) इस प्रकार का, ऐसा।

एष् (भ्वा० उभ०—एषति—ते, एषित) 1. जाना, पहुँचना 2. शीघ्रता से जाना, दौड़ कर जाना, परि—, ढूँढ़ना।

एषणः [एष्+ल्युट्] लोहे का तीर,—णम् 1. ढूँढ़ना 2. कामना करना,—णा कामना, इच्छा।

एषणिका [इष्+ल्युट्+कन्, टाप्, इत्वम्] सुनार का काँटा तोलने की तराजू।

एषा [इष्+अ+टाप्] इच्छा, कामना।

एषिन् (वि०) [इष्+णिनि] इच्छा करते हुए, कामना करते हुए (समास के अन्त में), —यौवन विषयैषिणाम् रघु० १।८।

ऐ

ऐः (पुं०) [आ+इ+विच्] शिव, (अव्य०) (क) बुलाने (ख) स्मरण करने, या (ग) आमंत्रण को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक चिह्न।

ऐकध्यम् (अव्य०) तुरन्त।

ऐकध्यम् [एकधा+ध्यमुञ् (वास्याने)] समय या घटना की ऐकान्तिकता।

ऐकपत्यम् [एकपति+ष्यञ्] परम प्रभुता, सर्वोपरि-शक्ति।

ऐकपदिक (वि०) (स्त्री०—की) [एकपद+ठञ्] एक पद से संबंध रखने वाला।

ऐकपद्यम् [एक पद+ष्यञ्] 1. शब्दों की एकता 2. एक शब्द बनना।

ऐकमत्यम् [एकमत+ष्यञ्] एकमतता, सहमति—रघु० १८।३६।

ऐकागारिकः [एकागार+ठक्] चोर,—केनचित्तु हस्तवतैकागारिकेण—दश० ६७, शि० १९।१११ 2. एक घर का मालिक।

ऐकाग्र्यम् [एकाग्र+ष्यञ्] एक ही पदार्थ पर जुट जाना, एकाग्रता।

ऐकाङ्गः [एकाङ्ग+अण्] शरीर रक्षक दल का एक सिपाही—राजत० ५।२४९।

ऐकात्म्यम् [एकात्मन्+ष्यञ्] 1. एकता, आत्मा की एकता 2. समरूपता, समता 3. परमात्मा के साथ एकता या तादात्म्य।

ऐकाधिकरण्यम् [एकाधिकरण+ष्यञ्] 1. संबंध की एकता 2. एकही विषय में व्याप्ति, (तर्क० में)—सह विस्तृति, साव्येन हेतोरैकाधिकरण्यं व्याप्तिरुच्यते—भाषा० ६९।

ऐकान्तिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. पूर्ण, समग्र, पूरा 2. विश्वस्त, निश्चित 3. अनन्य।

ऐकान्यिकः [एकान्य+ठक्] वह शिष्य जो वेद का सस्वर पाठ करने में एक अशुद्धि करे।

ऐकार्थ्यम् [एकार्थ+ष्यञ्] 1. उद्देश्य या प्रयोजन की समानता 2. अर्थों की संगति।

ऐकाहिक (वि०) (स्त्री०—की) [एकाह+ठक्] 1. आह्निक 2. एक दिन का, उसी दिन का, दैनिक।

ऐक्यम् [एक+ष्यञ्] 1. एकपना, एकता 2. एकमतता, 3. समरूपता, समता 4. विशेष कर मानव आत्मा की समरूपता, या विश्व की परमात्मा से एकरूपता।

ऐक्षव (स्त्री०—वी) [इक्षु+अण्] गन्ने से बना या उत्पन्न,—वम् 1. चीनी 2. मादक शराब।

ऐक्षव्य (वि०) [इक्षु+ष्यत्] गन्ने से बना पदार्थ।

ऐक्षुक (वि०) [इक्षु+ठञ्] 1. गन्ने के लिए उपयुक्त 2. गन्ने वाला,—कः गन्ने ले जाने वाला।

ऐक्षुभारिक (वि०) [इक्षुभार+ठक्] गन्ने का बोझा ढोने वाला।

ऐक्ष्वाक (वि०) [इक्ष्वाकु+अ] इक्ष्वाकु से संबंध रखने वाला,—कः, कुः 1. इक्ष्वाकु की सन्तान,—सत्यमैक्ष्वाकः खल्वसि—उत्तर० ५. २. इक्ष्वाकु वंश के लोगों द्वारा शासित देश।

ऐङ्गुद (वि०) [स्त्री०—दी] [इङ्गुदी+अण्] इंगुदी वृक्ष से उत्पन्न,—दम् इंगुदी वृक्ष का फल।

ऐच्छिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. इच्छा पर निर्भर, इच्छापरक 2. मनमाना।

ऐडक (वि०) (स्त्री०—की) भेड़ का,—कः भेड़ की एक जाति।

ऐड (ल) विडः (लः) [इडविडा+अण् पक्षे डलयोरभेदः] कुबेर।

ऐण (वि०) (स्त्री०—णी) बारहसिंघा हरिण की (खाल, ऊन आदि) याज्ञ० १।२५९।

ऐणेय (वि०) (स्त्री०—यी) [एणी+ढक्] काली हरिणी या तत्संबंधी किसी पदार्थ से उत्पन्न,—यः काला हरिण, —यम् रतिबंध, रतिक्रिया का एक प्रकार।

ऐतदात्म्यम् [एतदात्मन्+ष्यञ्] इस प्रकार के गुण या विशिष्टता को रखने की अवस्था।

ऐतरेयिन् [ऐतरेय+इनि] ऐतरेय ब्राह्मण का अध्येता।

ऐतिहासिक (वि०) (स्त्री०—की) [इतिहास+ठक्] 1. परम्परा प्राप्त 2. इतिहास संबंधी,—कः 1. इतिहासकार 2. वह व्यक्ति जो पौराणिक उपाख्यानों को जानता है या उनका अध्ययन करता है।

ऐतिह्यम् [इतिह+ष्यञ्] परम्परा प्राप्त शिक्षा, उपाख्यानात्मक वर्णन,—ऐतिह्यमनुमानं च प्रत्यक्षमपि चागमम्—रामा०, किलेत्यैतिह्ये (पौराणिक 'ऐतिह्य' को प्रत्यक्ष, अनुमान आदि के साथ प्रमाण का एक भेद मानते हैं—दे० 'अनुभव')।

ऐदम्पर्यम् [इदम्पर+ष्यञ्] आशय, क्षेत्र, संबंध (शा० इदंपर होने की अवस्था अर्थात् अर्थ, आशय या क्षेत्र रखना)—इदं त्वैदम्पर्यम्—मा० २।७।

ऐनसम् [एनस्+अण्] पाप।

ऐन्दव (वि०) (स्त्री०—वी) [इन्दु+अण्] चंद्रमा संबंधी,—वः चांद्रमास।

ऐन्द्र (वि०) (स्त्री०—ऐन्द्री) [इन्द्र+अण्] इन्द्र संबंधी या इन्द्र के लिए पवित्र,—रघु० २।५०,—न्द्रः अर्जुन और वाली,—न्द्री 1. ऋग्वेद का मन्त्र जिसमें इन्द्र को संबोधित किया गया है—इत्यादिका काचिदैन्द्री समाम्नाता—जै० न्या० 2. पूर्व दिशा (इस दिशा का अधिष्ठातृदेवता इन्द्र है) कि० ९।१८ 3. मुसीबत, संकट 4. दुर्गा की उपाधि 5. छोटी इलायची।

ऐन्द्रजालिक (वि०) (स्त्री०—की) [इन्द्रजाल+ठक्] 1. धोखे में डालने वाला, 2. जादू-टोना विषयक 3. मायावी, भ्रान्ति जनक 2. जादू-टोने का जानकार, —कः बाजीगर—शि० १५।२५।

ऐन्द्रलुप्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [इन्द्रलुप्त+ठक्] गंजरोग से पीड़ित, गंजा।

ऐन्द्रशिरः [इन्द्रशिर+अण्] हाथियों की एक जाति।

ऐन्द्रिः [इन्द्रस्यापत्यम्—इन्द्र+इञ्] 1. जयन्त, अर्जुन, वानरराज वालि 2. कौवा—ऐन्द्रिः किल नखैस्तस्या विददार स्तनौ द्विजः—रघु० १२।२२।

ऐन्द्रिय,—यक (वि०) [इन्द्रिय+अण्, वुञ् वा] 1. इन्द्रियों से संबंध रखने वाला, विषयी 2. विद्यमान, ज्ञानेन्द्रियों के लिए प्रत्यक्ष इन्द्रियगोचर,—यम् ज्ञानेन्द्रियों का विषय।

ऐंधन (वि०) (स्त्री०—नी) [इन्धन+अण्] जिसमें इन्धन विद्यमान हो,—नः सूर्य।

ऐयत्यम् [इयत्+ष्यञ्] परिमाण, संख्या।

ऐरावणः [इरा आपः ताभिः वनति शब्दायते—इरा+वन्+अच् इरावणः—ततः अण्] इन्द्र का हाथी।

ऐरावतः [इरा आपः तद्वान् इरावान् समुद्रः, तस्मादुत्पन्नः अण्] 1. इन्द्र का हाथी 2. श्रेष्ठ हाथी 3. पाताल निवासी नागजाति का एक मुखिया 4. पूर्व दिशा का दिग्गज 5. एक प्रकार का इन्द्रधनुष,—ती 1. इन्द्र की हथिनी 2. बिजली 3. पंजाब में बहने वाली नदी, राप्ती (इरावती)।

ऐरेयम् [इरायाम् अन्ने भवम्—इरा+ढक्] मदिरा (जो भोज्य पदार्थ से तैयार की जाय)।

ऐलः [इलाया अपत्यम्—अण्] 1. पुरूरवा (इला और बुध का पुत्र) 2. मंगलग्रह।

ऐलबालुकः [एलवालुक+अण्] एक सुगंध-द्रव्य।

ऐलविलः [इलविला+अण्] 1. कुबेर—शि० १३।१८ 2. मंगलग्रह।

ऐलेयः [इला+ढक्] 1. एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य 2. मंगल ग्रह।

ऐश (वि०) (स्त्री०—शी) [ईश+अण्] 1. शिव से सम्बन्ध रखने वाला—रघु० २।७५ 2. सर्वोपरि, राजकीय।

ऐशान (वि०) [ईशान+अण्] शिव से सम्बन्ध रखने वाला,—नी 1. उत्तरपूर्वी दिशा 2. दुर्गादेवी।

ऐश्वर (वि०) (स्त्री०—री) [ईश्वर+अण्] 1. शानदार 2. शक्तिशाली, ताकतवर 3. शिव से सम्बन्ध रखने वाला—रघु० ११।७६ 4. सर्वोपरि, राजकीय 5. दिव्य,—री दुर्गादेवी।

ऐश्वर्यम् [ईश्वर+ष्यञ्] 1. सर्वोपरिता, प्रभुता—एकैश्वर्यस्थितोऽपि—मालवि० १।१ 2. ताकत, शक्ति, आधिपत्य 3. उपनिवेश 4. विभव, धन, बड़प्पन 5. सर्वशक्तिमत्ता तथा सर्वव्यापकता की दिव्य शक्तियाँ।

ऐषमस् (अव्य०) [अस्मिन् वत्सरे इति नि० साधुः] इस वर्ष में, चालू वर्ष में।

ऐषमस्तन,—मस्त्य (वि०) [ऐषमस्+तनप्, त्यप् वा] चालू वर्ष से सम्बन्ध रखने वाला।

ऐष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [इष्टि+ठक्] यज्ञसम्बन्धी, संस्कार विषयक। सम०—पूर्तिक (त्रि०) इष्टापूर्त (यज्ञ अथवा अन्य धार्मिक कृत्य) से सम्बन्ध रखने वाला।

ऐहलौकिक (वि०) (स्त्री०—की) [इहलोक+ठञ्] इस संसार से सम्बन्ध रखने वाला, या इस लोक में घटित होने वाला, ऐहिक, दुनियावी (विप० पारलौकिक)।

ऐहिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. इस लोक या स्थान से सम्बन्ध रखने वाला, सांसारिक, दुनियावी, लौकिक 2. स्थानीय,—कम् व्यवसाय (इस संसार का)।

ओ

ओ (पुं०—औः) [उ+विच्] ब्रह्मा (अव्य०) 1. सम्बोधनात्मक (ओः) अव्यय 2. (क) बुलावा (ख) स्मरण करना और (ग) करुणा बोधक विस्मयादि द्योतक चिह्न।

ओकः [उच्+क नि० चस्य कः] 1. घर 2. शरण, आश्रय 3. पक्षी 4. शूद्र।

ओकणः (णिः) [ओ+कण्+अच्, इन् वा] खटमल, इसी प्रकार 'ओकोदनी'।

ओकस् (नपुं०) [उच्+असुन्] 1. घर, आवास—जैसा कि दिवौकस् या स्वर्गौकस् (देवता) में 2. आश्रय, शरण।

ओख् (भ्वा० पर०—ओखति, ओखित) 1. सूख जाना 2. योग्य होना, पर्याप्त होना 3. सजाना, सुशोभित करना 4. अस्वीकृत करना, 5. रोक लगाना।

ओघः [उच्+घञ्, पृषो०] 1. जलप्लावन, नदी, धारा—पुनरोघेन हि युज्यते नदी—कु० ४।४४ 2. जल की बाढ़ 3. राशि, परिमाण, समुदाय 4. समग्र 5. सातत्य 6. परम्परा, परम्पराप्राप्त उपदेश 7. एक प्रमुख नृत्य।

ओंकारः [ओम्+कारः] दे० 'ओम्' के नीचे।

ओज् (भ्वा० चुरा० उभ०—ओजति, ओजयति-ते, ओजित) सक्षम या योग्य होना।

ओज (वि०) [ओज्+अच्] विषम, असम,—जम्= ओजस्।

ओजस् (नपुं०) [उब्ज्+असुन् बलोपः, गुणश्च] 1. शारीरिक सामर्थ्य, बल, शक्ति 2. वीर्य, जननात्मक शक्ति 3. आभा, प्रकाश (आलं० शा० में) 4. शैली का विस्तृत रूप, समास की बहुलता (दण्डी के अनुसार यही गद्य की आत्मा है)—ओजः समासभूयस्त्वमेतद्-गद्यस्य जीवितम्—काव्या० १।८०, रसगंगाधर में इसके पाँच भेद बतलाये गये हैं 5. पानी 6. धातु की चमक।

ओजसीन, ओजस्य (वि०) [ओजस्+ख, यत् वा] मजबूत, शक्तिशाली।

ओजस्वत्, ओजस्विन् [ओजस्+मतुप्, विनि वा] मजबूत, वीर्यवान्, तेजस्वी, शक्तिशाली।

ओड्रः (पुं० ब० व०) एक देश का तथा उसके निवासियों का नाम, (आधुनिक उड़ीसा)—मनु० १०।४४,—ड्रम् जवाकुसुम।

ओत (वि०) [आ+वे+क्त] बुना हुआ, धागे से एक सिरे से दूसरे तक सिला हुआ। सम०—प्रोत (वि०) 1. लम्बाई और चौड़ाई के बल आर-पार सिला हुआ 2. सब दिशाओं में फैला हुआ।

ओतुः [अव्+तुन्, ऊठ्, गुणः] बिलाव (स्त्री० भी) बिल्ली—जैसा कि 'स्थूलो (ली) तुः' में।

ओदनः—नम् [उन्द्+युच्] 1. भोजन, भात,—उदा० दध्योदन और घृत° 2. दलिया बना कर दूध में पकाया हुआ अन्न।

ओम् (अव्य०) [अव्+मन्, ऊठ्, गुणः] 1. पावन अक्षर 'ओम्' वेद-पाठ के आरम्भ और समाप्ति पर किया गया पावन उच्चारण, या मंत्र के आरम्भ में बोला जाने वाला 2. अव्यय के रूप में यह (क) औपचारिक पुष्टीकरण तथा सम्माननीय स्वीकृति (एवमस्तु, तथास्तु) (ख) स्वीकृति, अंगीकरण (हाँ, बहुत अच्छा)—ओमित्युच्यताममात्यः—मा० ६, ओमित्युक्तवतोथशार्ङ्गिण इति शि० १।७५, द्वितीयश्चेदोमिति ब्रूमः—सा० द० १ (ग) आदेश (घ) मांगलिकता (ङ) दूर करना या रोक लगाना की भावना को प्रकट करने वाला अव्यय 3. ब्रह्म। सम०—कारः 1. पवित्र ध्वनि 'ओम्' 2. पवित्र उद्गार 'ओम्'।

ओरम्फः [?] गहरी खरोंच—मा० ७।

ओल (वि०) [आ+उन्द्+क पृषो०] आर्द्र, गीला।

ओलंड् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—ओलंडति, ओलंडयति, ओलंडित) ऊपर की ओर फेंकना, ऊपर उछालना।

ओल्ल (वि०) [ओल-पृषो०] आर्द्र, गीला,—ल्लः प्रतिभू, °आगतः प्रतिभू या जामिन के रूप में आया हुआ (यह शब्द एक दो बार विद्धशालभञ्जिका में आया है)।

ओषः [उष्+घञ्] जलन, संदाह।

ओषणः [उष्+ल्युट्] तिक्तता, तीक्ष्णता, तीखा रस।

ओषधिः,—धी (स्त्री०) [ओष+धा+कि, स्त्रियां ङीप्] 1. जड़ीबूटी, वनस्पति 2. औषधि का पौधा, ओषधि 3. फसली पौधा या जड़ी बूटी जोकि पक कर सूख जाती है। सम०—ईशः—गर्भः,—नाथः चन्द्रमा (वनस्पतियों का अधिदेवता तथा पोषक)—ज (वि०) वनस्पति से उत्पन्न,—धरः,—पतिः 1. ओषधि-विक्रेता 2. वैद्य 3. चन्द्रमा,—प्रस्थः हिमालय की राजधानी—तत्प्रयातौषधिप्रस्थं स्थितये हिमवत्पुरम्—कु० ६। ३३, ३६।

ओष्ठः [उष्+थन्] होठ (ऊपर का या नीचे का)। सम०—अधरौ-रम्, ऊपर और नीचे का होठ,—ज (वि०) ओष्ठस्थानीय,—जाहः होठकी जड़,—पल्लवः,—वम् किसलय जैसा, कोमल ओष्ठ—पुटम् होठों को खोलने पर बना हुआ गड्ढा।

ओष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+यत्] 1. होठों पर रहने वाला 2. ओष्ठ—स्थानीय (ध्वनि आदि)।

ओष्ण (वि०) [ईषद् उष्णः—प्रा० स०] थोड़ा गरम, गुनगुना।

औ

औ [आ+अव्+क्विप्, ऊठ] (क) आमंत्रण (ख) संबोधन (ग) विरोध तथा (घ) शपथोक्ति अथवा संकल्पद्योतक अव्यय।

औक्थिक्यम् [उक्थ+ठक्+ष्यञ्] उक्थ का पाठ; सामवेद।

औक्थम् [उक्थ+अण्] पाठ करने की विशेष ('उक्थ' अंग से संबंध रखने वाली) रीति।

औक्षकम्,—औक्षम् [उक्ष्णां समूहः इत्यर्थे उक्षन्+अण्, टिलोपः वुञ् वा] बैलों का झुण्ड—शि० ५।६२।

औग्र्यम् [उग्र+ष्यञ्] दृढ़ता, भीषणता, भयंकरता, क्रूरता आदि।

औघः [ओघ+अण्] बाढ़, जलप्लावन।

औचित्यम्, औचिती [उचित+ष्यञ्, स्त्रियां ङीष्, यलोपश्च] 1. उपयुक्तता, योग्यता, उचितपना 2. संगति या योग्यता, वाक्य में शब्द के यथार्थ अर्थ का निर्धारण करने के लिए कल्पित परिस्थितियों में से एक—सामर्थ्यमौचिती देशः कालो व्यक्तिः स्वरादयः—सा० द० २।

औच्चैःश्रवसः [उच्चैःश्रवस्+अण्] इन्द्र का घोड़ा।

औजसिक (वि०) (स्त्री०—की) [ओजस्+ठक्] ऊर्जस्वी, बलवान्।—**कः** नायक शूरवीर।

औजस्य (वि०) [ओजस्+ष्यञ्] बल और स्फूर्ति का संचारक,—**स्यम्** सामर्थ्य, जीवनशक्ति, ऊर्जा, स्फूर्ति।

औज्ज्वल्यम् [उज्ज्वल+ष्यञ्] उज्ज्वलता, कान्ति।

औडुपिक (वि०) (स्त्री०—की) [उडुप+ठक्] किश्ती में बैठ कर पार करने वाला,—**कः** किश्ती या लठ्ठे का यात्री।

औडुम्बर [उडुम्बर+अञ्]=दे० औदुम्बर।

औड्रः [ओड्र+अण्] ओड्र (वर्तमान उड़ीसा) देश का निवासी या राजा।

औत्कण्ठ्यम् [उत्कण्ठा+ष्यञ्] 1. इच्छा, लालसा 2. चिन्ता।

औत्कर्ष्यम् [उत्कर्ष+ष्यञ्] श्रेष्ठता, उत्कृष्टता।

औत्तमिः [उत्तम+इञ्] १४ मनुओं में से तीसरा।

औत्तर (वि०) (स्त्री०—री,—रा) उत्तरी। सम०—**पथिक** उत्तर दिशा की ओर जाने वाला।

औत्तरेयः (उत्तरा+ढक्) अभिमन्यु और उत्तरा का पुत्र परीक्षित्।

औत्तानपादः,—पादिः [उत्तानपाद+अण्, इञ् वा] 1. ध्रुव 2. उत्तर दिशा में वर्तमान तारा।

औत्पत्तिक (वि०) (स्त्री—की) [उत्पत्ति+ठक्] 1. अन्तर्जात, सहज 2. एक ही समय पर उत्पन्न।

औत्पात (वि०) [उत्पात+अण्] अपशकुनों का विश्लेषक।

औत्पातिक (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पात+ठक्] अमंगलकारी, अलौकिक, संकटमय—रघु० ४४, ५३,—**कम्** अपशकुन या अमंगल।

औत्संगिक (वि०) (स्त्री०—की) [उत्संग+ठक्] कूल्हे पर रक्खा हुआ, या कूल्हे पर धारण किया हुआ।

औत्सर्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [उत्सर्ग+ठञ्] 1. सामान्य विधि (जैसे कि व्याकरण का नियम) जो अपवाद रूप में ही त्यागने के योग्य हो 2. सामान्य (विप० विशेष), प्रतिबन्धरहित, सहज 3. व्युत्पन्न, यौगिक।

औत्सुक्यम् [उत्सुक+ष्यञ्] 1. चिन्ता, बेचैनी 2. प्रबल इच्छा, उत्सुकता, उत्साह—औत्सुक्यमात्रमवसाययति प्रतिष्ठा ५।६, औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया—रत्न० १।२।

औदक (वि०) (स्त्री०—की) [उदक+अण्] जलीय, पनीला, जल से संबंध रखने वाला।

औदञ्चन (वि०) (स्त्री०—नी) [उदञ्चन+अण्] डोल या घड़े में रक्खा हुआ।

औदनिकः (दञ्च) [ओदन+ठञ्] रसोइया।

औदरिक (वि०) (स्त्री०—की) [उदर+ठक्] बहुभोजी, पेटू, खाऊ सर्वत्रौदरिकस्याभ्यवहार्यमेव विषयः——विक्रम० ३, मालवि० ४।

औदर्य (वि०) [उदरे भवः यत्] 1. गर्भस्थित, 2. गर्भान्तः-—प्रविष्ट।

औदश्वितम् [उदश्वित्+अण्] आधा पानी मिलाकर तैयार किया हुआ मट्ठा।

औदार्यम् [उदार+ष्यञ्] 1. उदारता, कुलीनता, महत्ता 2. बड़प्पन, श्रेष्ठता 3. अर्थगांभीर्य (अर्थसंपत्ति)—स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे—कि० १।३, दे० कि० ११।४० पर मल्लि० और 'उदार' के नी० उदारता।

औदासीन्यम्, औदास्यम् [उदासीन+ष्यञ्, उदास+ष्यञ्] 1. उपेक्षा, निःस्पृहता—पर्याप्तोसि प्रजाः पातुमौदासीन्येन वर्तितुम्—रघु० १०।२५, इदानीमौदास्यं यदि भजसि भागीरथि—गंगा० ४ 2. एकान्तिकता, अकेलापन 3. पूर्ण विराग (सांसारिक विषयों से), वैराग्य।

औदुंबर (वि०) (स्त्री०—री) [उदुम्बर+अञ्] गूलर के वृक्ष से बना या उससे प्राप्त,—**रः** ऐसा प्रदेश जहाँ गूलर के वृक्ष बहुतायत से हों,—**री** गूलर की शाखा,—**रम्** 1. गूलर की लकड़ी 2. गूलर का फल 3. तांबा।

औद्गात्रम् [उद्गातृ+अञ्] उद्गाता ऋत्विज का पद या कार्य।

औद्दालकम् [उद्दाल+अण्, संज्ञायां कन्] मधु जैसा एक पदार्थ जो तीखा और कड़वा होता है।

औद्देशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उद्देश+ठक्] प्रकट करने वाला, निर्देशक, संकेतक।

औद्धत्यम् [उद्धत+ष्यञ्] 1. हेकड़ी, ढीठपना 2. साहसिकता, जीवटवाले कार्यों में हिम्मत—औद्धत्यमायोजितकामसूत्रम्—मा० १।४।

औद्धारिक (वि०) (स्त्री०—की) [उद्धार+ठञ्] पैतृक सम्पत्ति में से घटाया हुआ, विभक्त करने योग्य, दाययोग्य,—कम् (पैतृक सम्पत्ति में से घटाया गया) एक अंश या दायभाग।

औद्भिदम् [उद्भिद्+अण्] 1. झरने का पानी 2. सेंधा नमक।

औद्वाहिक (वि०) (स्त्री०—की) [उद्वाह+ठञ्] 1. विवाह से संबंध रखने वाला 2. विवाह में प्राप्त—याज्ञ० २।११८, मनु० ९।२०६,—कम् विवाह के अवसर पर वधू को दिये गये उपहार, स्त्रीधन।

औधस्यम् [ऊधस्+ष्यञ्] दूध (औड़ी से प्राप्त) रघु० २।६६ अने० पा०।

औन्नत्यम् [उन्नत+ष्यञ्] ऊँचाई, ऊँचा उठना (नैतिक रूप से भी)।

औपकर्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपकर्ण+ठक्] कान के निकट रहने वाला।

औपकार्यम्,—र्या [उपकार्य+अण्, स्त्रियां टाप् च] आवास, तम्बू।

औपग्रस्तिकः,—ग्रहिकः [उपग्रस्त+ठञ्, उपग्रह+ठञ्] 1. ग्रहण 2. ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा।

औपचारिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपचार+ठक्] लाक्षणिक, आलंकारिक, गौण (विप० मुख्य),—कम् आलंकारिक प्रयोग।

औपजानुक (त्रि०) (स्त्री०—की) [उपजानु+ठक्] घुटनों के पास होने वाला।

औपदेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपदेश+ठक्] 1. अध्यापन या उपदेश द्वारा जीविका कमाने वाला 2. शिक्षण द्वारा प्राप्त (जैसे कि धन)।

औपधर्म्यम् [उपधर्म+ष्यञ्] 1. मिथ्या सिद्धान्त, धर्मद्रोह 2. घटिया गुण या गुण का अपकृष्ट नियम।

औपधिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाधि+ठञ्] धूर्त, धोखेबाज।

औपधेयम् [उपाधि+ढञ्] रथ का पहिया, रथांग।

औपनायनिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपनयन+ठक्] उपनयन सम्बन्धी, या उपनयन (जनेऊ के साथ दीक्षा देने का संस्कार) के काम का—मनु० २।६८।

औपनिधिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपनिधि+ठक्] धरोहर से सम्बन्ध रखने वाला,—कम् धरोहर या अमानत जो वस्तु धरोहर या अमानत के रूप में रक्खी जाय याज्ञ०—२।६५।

औपनिषद (वि०) (स्त्री०—दी) [उपनिषद्+अण्] 1. उपनिषदों में बताया हुआ या सिखाया हुआ, वेद विहित, आध्यात्मिक 2. उपनिषदों पर आधारित, स्थापित या उपनिषदों से गृहीत—औपनिषदं दर्शनम् (वेदा० द० का दूसरा नाम)—दः 1. परमात्मा, ब्रह्म 2. उपनिषदों के सिद्धान्तों का अनुयायी।

औपनीविक (वि०) (स्त्री०—की) [उपनीवि+ठक्] —स्त्री या पुरुषों की धोती की गांठ या नाड़े के निकट रक्खा हुआ,—औपनीविकमरुन्द्ध किल स्त्री (करम्) —शि० १०।६०, भट्टि० ४।२६।

औपपत्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपपत्ति+ठक्] 1. तैयार, निकट 2. योग्य, समुचित 3. प्राक्काल्पनिक।

औपमिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपमा+ठक्] 1. तुलना या उपमान का काम देने वाला 2. उपमा द्वारा प्रदर्शित।

औपम्यम् [उपमा+ष्यञ्] तुलना, समरूपता, सादृश्य—आत्मौपम्येन भूतेषु दयां कुर्वन्ति साधवः—हि० १।१२।

औपयिक (त्रि०) (स्त्री०—की) [उपाय+ठक्] 1. समुचित, योग्य, यथार्थ 2. प्रयत्नों द्वारा प्राप्त,—कः,—कम् उपाय, तरकीब, युक्ति—शिवमौपयिकं गरीयसीम् —कि० २।३५।

औपरिष्ट (वि०) (स्त्री०—ष्टी) [उपरिष्ट+अण्] ऊपर होने वाला, ऊपर का।

औपरो (रौ) धिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपरोध+ठक्] 1. अनुग्रह सम्बन्धी, कृपा सम्बन्धी, अनुग्रह या कृपा के फलस्वरूप 2. विरोध करने वाला, बाधा डालने वाला —कः पीलू वृक्ष की लकड़ी का डंडा।

औपल (वि०) (स्त्री०—ली) [उपल+अण्] प्रस्तरमय, पत्थर का।

औपवस्तम् [उपवस्त+अण्] उपवास रखना, उपवास।

औपवस्त्रम् [उपवस्त्र+अण्] 1. उपवास के उपयुक्त भोजन, फलाहार 2. उपवास करना।

औपवास्यम् [उपवास+ष्यञ्] उपवास रखना।

औपवाह्य (वि०) [उपवाह्य+अण्] 1. सवारी के काम आने वाला,—ह्यः 1. राजा का हाथी 2. कोई राजकीय सवारी।

औपवेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपवेश+ठञ्] पूरी लगन के साथ काम कर के अपनी आजीविका कमाने वाला।

औपसङ्ख्यानिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपसङ्ख्यान+

ठक्] 1. जिसका परिशिष्ट में वर्णन किया गया हो 2. परिशिष्ट।

औपसर्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपसर्ग+ठञ्] 1. विपत्ति का सामना करने योग्य 2. अमङ्गल सूचक।

औपस्थिक (वि०) [उपस्थ+ठक्] व्यभिचार द्वारा अपनी जीविका चलाने वाला।

औपस्थ्यम् [उपस्थ+ष्यञ्] सहवास, स्त्रीसंभोग।

औपहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपहार+ठक्] उपहार या आहुति के काम आने वाला,—**कम्** उपहार या आहुति।

औपाधिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाधि+ठञ्] 1. विशेष परिस्थितियों में होने वाला 2. उपाधि या विशेष गुणों से सम्बन्ध रखने वाला, फलित कार्य।

औपाध्यायक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाध्याय+वुञ्] अध्यापक से प्राप्त या आने वाला।

औपासन (वि०) (स्त्री०—नी) [उपासन+अण्] गृह्याग्नि से सम्बन्ध रखने वाला,—**नः** गार्हस्थ्य पूजा के लिए प्रयुक्त अग्नि, गृह्याग्नि।

औम् (अव्य०) शूद्रों के लिए पावनध्वनि (क्योंकि 'ओम्' का उच्चारण शूद्रों के लिए वर्जित है)।

औरभ्र (वि०) (स्त्री०—भ्री) [उरभ्र+अण्] भेड़ से सम्बन्ध रखने वाला, या भेड़ से उत्पन्न,—**भ्रम्** 1. भेड़ या बकरे का मांस 2. ऊनी वस्त्र, मोटा ऊनी कम्बल (°भ्रः भी)।

औरभ्रकम् [उरभ्राणां समूहः—वुञ्] भेड़ों का झुण्ड।

औरभ्रिकः [उरभ्र+ठञ्] गड़रिया।

औरस (वि०) (स्त्री०—सी) [उरसा निर्मितः—अण्] कोख से उत्पन्न, विवाहिता पत्नी से उत्पन्न, वैध—रघु० १६। ८८,—**सः,**—**सी** वैध पुत्र या पुत्री—याज्ञ० २।१२८।

औरस्य=औरस।

और्ण, और्णक, और्णिक (वि०) (स्त्री०—र्णी,—की) [ऊर्णा+अञ्, वुञ् वा] ऊनी, ऊन से बना हुआ।

और्ध्वकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [ऊर्ध्वकाल+ठञ्] पिछले समय से संबद्ध या बाद का।

और्ध्वदेहम् [ऊर्ध्वदेह+अण्] अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म।

और्ध्वदे(दै)हिक (वि०) (स्त्री०—की) [ऊर्ध्वदेहाय साधु—ठञ्] मृत व्यक्ति से संबद्ध, अन्त्येष्टि, °क्रिया प्रेतकर्म, अन्त्येष्टि संस्कार,—**कम्** अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म।

और्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [ऊरु+अण्] 1. धरती से सम्बन्ध रखने वाला 2. जंघा से उत्पन्न,—**र्वः** एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम (यह भृगुवंश में उत्पन्न हुआ था। महाभारत में वर्णन मिलता है कि भृगु के वंशजों का नाश करने की इच्छा से कार्तवीर्य के पुत्रों ने गर्भस्थित बालकों को भी मौत के घाट उतार दिया। उस वंश की एक स्त्री ने अपने गर्भ की रक्षा के लिए उसे अपनी जंघा में छिपा लिया—इसीलिए जंघा से जन्म होने के कारण वह और्व कहलाया। उसको देख कर कार्तवीर्य के पुत्र अंधे हो गये, उसके क्रोध से उठी ज्वाला ने समस्त संसार को भस्म कर देना चाहा। परन्तु अपने पितरों—भार्गवों—की इच्छा से उसने अपनी क्रोधाग्नि को समुद्र में फेंक दिया जहाँ वह घोड़े के रूप में गुप्त पड़ा रहा—तु० वडवाग्नि। बाद में और्व अयोध्या के राजा सगर का गुरु हुआ) 2. वडवाग्नि,—त्वयि ज्वलत्यौर्व इवाम्बुराशौ श० ३।३, इसी प्रकार °अनलः।

औलूकम् [उलूकानां समूहः—अञ्] उल्लुओं का झुंड।

औलूक्यः [उलूकस्यापत्यं—यञ्] वैशेषिक दर्शन के निर्माता कणाद मुनि (दे० सर्व० में औलूक्यदर्शन)।

औल्वण्यम् [उल्वण+ष्यञ्] आधिक्य, बहुतायत, प्राबल्य।

औशन, औशनस (वि०) (स्त्री०—नी,—सी) उशना अर्थात् शुक्राचार्य से सम्बन्ध रखने वाला, उशना से उत्पन्न या उशना से पढ़ा हुआ,—**सम्** उशना का धर्मशास्त्र (नागरिक शास्त्र व्यवस्था पर लिखा गया ग्रन्थ)।

औशीनरः [उशीनरस्यापत्यम्—अण्] उशीनर का पुत्र,—**री** राजा पुरूरवा की पत्नी।

औशीरम् [उशीर+अण्] 1. पंखे या चँवर की डंडी 2. बिस्तरा—औशीरे कामचारः कृतोऽभूत्—दश० ७२ 3. आसन (कुर्सी, स्टूल आदि) 4. खस का लेप 5. खस की जड़ 6. पंखा।

औषणम् [उषण+अण्] 1. तीक्ष्णता, तीखापन 2. काली मिर्च।

औषधम् [औषधि+अण्] 1. जड़ी-बूटी, जड़ी बूटियों का समूह 2. दवादारू, सामान्य औषधि 3. खनिज।

औषधिः, **धी** (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. जड़ी-बूटी, वनस्पति—दे० ओषधि 2. रोगनाशक जड़ी-बूटी—अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः—रत्न० २ 3. आग उगलने वाली जड़ी—विरमन्ति न ज्वलितुमौषधयः—कि० ५। २४, (तृणज्योतींषि—मल्लि०) तु० कु० १।१० 4. वर्षभर रहने वाला या सालाना पतझड़ वाला पौधा, °धिपतिः सोम, औषधियों का स्वामी।

औषधीय (वि०) [औषध+छ] औषधि संबन्धी रोगनाशक, जड़ी-बूटियों से युक्त।

औषरम्,—रकम् [उषरे भवम्—अण्, ततः कन्] सेंधा नमक, पहाड़ी नमक।

औषस (वि०) (स्त्री०—सी) [उषस्+अण्] उषा या प्रभात से सम्बन्ध रखने वाला,—**सी** पौ फटना, प्रभात काल।

औषसिक, औषिक (वि०) (स्त्री०—की) [उषस्+ठञ्, उषा+ठञ् वा] जिसने प्रभातकाल में जन्म लिया है, उषः काल में उत्पन्न।

औष्ट्र (वि०) (स्त्री०—ष्ट्री) [उष्ट्र+अण्] 1. ऊँट से उत्पन्न या ऊँट से सम्बन्ध रखने वाला 2. जहाँ ऊँटों की बहुतायत हो,—ष्ट्रम् ऊँटनी का दूध।

औष्ट्रकम् [उष्ट्र+वुञ्] ऊँटों का झुंड—शि० ५।६५।

औष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+यत्] होठ से सम्बद्ध, ओष्ठ स्थानीय। सम०—**वर्णः** ओष्ठस्थानीय अक्षर—अर्थात् उ ऊ, प् फ् ब् भ् म् और व्,—**स्थान** (द्वारा) होठों द्वारा उच्चरित,—**स्वरः** ओष्ठस्थानीय स्वर।

औष्णम् [उष्ण+अण्] गर्मी, ताप।

औष्ण्यम्, औष्म्यम् [उष्ण+ष्यञ्, उष्म+ष्यञ्] गर्मी —रघु० १७।३३।

क

कः [कच्+ड] 1. ब्रह्मा 2. विष्णु 3. कामदेव 4. अग्नि 5. वायु 6. यम 7. सूर्य 8. आत्मा 9. राजा या राज कुमार 10. गांठ या जोड़ 11. मोर 12. पक्षियों का राजा 13. पक्षी 14. मन 15. शरीर 16. समय 17. बादल 18. शब्द, ध्वनि 19. बाल,—**कम्** 1. प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द (जैसा कि स्वर्ग में) 2. पानी—सत्येन माभिरक्ष त्वं वरुणेत्यभिशाप्य कम् —याज्ञ० २।१०८ केशवं पतितं दृष्ट्वा पाण्डवा हर्षनिर्भराः—सुभा० (यहाँ 'केशव' में श्लेष है) 3. सिर —जैसा कि 'कंधरा' (=कं शिरो धारयतीति) में।

कंसः,—सम् [कम्+अ] 1. जल पीने का पात्र, प्याला, कटोरा 2. कांसा, सफ़ेद तांबा 3. 'आढ़क' नाम की एक विशेष माप,—**सः** मथुरा का राजा, उग्रसेन का पुत्र, कृष्ण का शत्रु (कंस की कालनेमि नामक राक्षस से समता की जाती है, कृष्ण के प्रति शत्रुता का व्यवहार करते करते यह कृष्ण का घोर शत्रु बना। जिन परिस्थितियों में इसने ऐसा किया वह निम्नांकित हैं, "देवकी का वसुदेव के साथ विवाह हो जाने के बाद जब कि कंस अपना सुखसम्पन्न दाम्पत्यजीवन बिता रहा था, उसे आकाशवाणी सुनाई दी जिसने उसे सचेत किया कि देवकी का आठवां पुत्र उसका मारनेवाला होगा। फलतः उसने दोनों को कारागार में डाल दिया, मजबूत हथकड़ी और बेड़ियों से जकड़ दिया, और उनके ऊपर सख्त पहरा लगा दिया। ज्यूंही देवकी ने बच्चे को जन्म दिया त्यूंही कंस ने उसे छीन कर मौत के घाट उतार दिया, इस प्रकार उसने छः बच्चों का काम तमाम कर दिया। परन्तु सातवाँ और आठवाँ (बलराम और कृष्ण) बच्चा इतनी सावधानी रखते हुए भी सकुशल नन्द के घर पहुँचा दिया गया। भविष्यवाणी के अनुसार कंसहन्ता कृष्ण नन्द के यहाँ पलता रहा। जब कंस ने सुना तो वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ, उसने कई राक्षस कृष्ण को मारने के लिए भेजे, परन्तु कृष्ण ने उन सबको आसानी से मार गिराया। अन्त में उसने उन बालकों को मथुरा लिवा लाने के लिए अक्रूर को भेजा। फिर कंस और कृष्ण में घोर मल्लयुद्ध हुआ जिसमें कृष्ण के हाथों कंस मारा गया) सम०—**अरिः,—अरातिः,—जित्,—कृष्,—द्विष्,—हन्** (पुं०) कंस का मारने वाला अर्थात् कृष्ण—स्वयं संधिकारिणा कंसारिणा दूतेन—वेणी० १, निपेदिवान् कंसकृषः स विष्टरे—शि० १।१६,—**अस्थि** (नपुं०) कांसा,—**कारः** (स्त्री०—री) 1. एक वर्णसंकर जाति, कसेरा—कंसकारशंखकारौ ब्राह्मणात्संबभूवतुः—शब्द० 2. जस्ता या सफ़ेद पीतल के बर्तन बनाने वाला, कांसे की ढलाई का काम करने वाला।

कंसकम् [कंस+कन्] कांसा, कसीस या फूल।

कक् (भ्वा० आ०—ककते, ककित) 1. कामना करना 2. अभिमान करना 3. अस्थिर हो जाना, दे० कंक्।

ककुंजलः [कं जलं कूजयति याचते—क+कूज्+अलच् पृषो० नुम् ह्रस्वश्च] चातक, पपीहा।

ककुद् (स्त्री०) [कं सुखं कौति सूचयति—क+कु+क्विप्, तुकागमः, तस्य दः] 1. चोटी, शिखर 2. मुख्य, प्रधान—दे० नी० 'ककुद' 3. भारतीय बैल या सांड़ के कंधे के ऊपर का कूबड़ या उभार 4. सींग 5. राजचिह्न (छत्र, चामर आदि) (पाणिनि सूत्र ५।४।१४६-७ के अनुसार 'ककुद' के स्थान में बहुव्रीहि समास में 'ककुद्' आदेश होता है—उदा० त्रिककुद्)। सम०—**स्थः** इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न सूर्यवंशी राजा शशाद का पुत्र पुरंजय,—इक्ष्वाकुवंश्यः ककुदं नृपाणां ककुत्स्थ इत्याहितलक्षणोऽभूत्—रघु० ६।७१ (पौराणिक कथा के अनुसार राक्षसों के साथ देवों के युद्ध में जब देवों को मुँहकी खानी पड़ी तो वह इन्द्र के नेतृत्व में पुरंजय के पास गये और उनसे युद्ध में साथ देने के लिये प्रार्थना की। पुरंजय ने इस शर्त पर स्वीकार किया कि इन्द्र उसे अपने कंधे पर उठा कर चले। फलतः इन्द्र ने बैल का रूप धारण किया और पुरंजय उसके कंधे पर बैठा—इस प्रकार पुरंजय ने

राक्षसों का सफ़ाया कर दिया। इसीलिए पुरंजय 'ककुत्स्थ'—'कूबड़ पर बैठा हुआ' कहलाता है)।

ककुदः—दम् [कस्य देहस्य सुखस्य वा कुं भूमिं ददाति —दा+क] 1. पहाड़ का शिखर या चोटी 2. कूबड़ या डिल्ला (भारतीय बैल के कंधे का उभार) 3. मुख्य, सर्वोत्तम, प्रमुख—ककुदं वेदविदां तपोधनश्च —मृच्छ० १।५, इक्ष्वाकुवंश्यः ककुदं नृपाणाम् —रघु० ६।७१ 4. राजचिह्न—नृपतिककुदं रघु० ३।७०, १७।२७।

ककुद्मत् (वि०) [ककुद्+मतुप्] 1. कूबड़ या डिल्ले से युक्त—(पुं०) पहाड़ (जिसके शृंग हों) 2. भैंसा —महोदग्रः ककुद्मन्तः— रघु० ४।२२, कूबड़ वाला बैल १३।२७, कु० १।५६.—ती कूल्हा और नितंब।

ककुद्मिन् (वि०) [ककुद्+मिनि] शिखरधारी, कूबड़ युक्त (पुं०) 1. कूबड़धारी बैल 2. पहाड़ 3. राजा रैवतक का नाम,—°कन्या—सुता बलराम की पत्नी रेवती—शि० २।२०।

ककुद्वत् (पुं०) [ककुद्+मतुप्—वत्वम्] कूबड़धारी भैंसा।

ककुन्दरम् [कस्य शरीरस्य कुम् अवयवं दृणाति— कर्कु+दृ+खच्, मुम्] नितंबों का गड्ढा, जघनकूप—याज्ञ० ३।९६।

ककुभ् (स्त्री०) [क+स्कुभ्+क्विप्] 1. दिशा, भू-परिधि का चतुर्थ भाग—वियुक्ताः कान्तेन स्त्रिय इव न राजंति ककुभः मृच्छ० ५।२६, शि० ९।२५ 2. आभा, सौन्दर्य 3. चम्पक पुष्पों की माला 4. शास्त्र 5. शिखर, चोटी।

ककुभः [कस्य वायोः कुः स्थानं भाति अस्मात्—कक्कु+भा+क पृषो० वा कं वातं स्कुम्नाति विस्तारयति-क+स्कुभ्+क] 1. वीणा के सिरे पर मुड़ी हुई लकड़ी 2. अर्जुनवृक्ष—ककुभसुरभिःशैलः—उत्तर० १।३३,—भम् कुटज वृक्ष का फूल—मेघ० २२।

कक्कुलः [कक्क्+उलच्] बकुल वृक्ष।

कक्कोल.,—ली [कक्+क्विप्, कुल्+ण—कक् च कोल-श्चेति कर्म० स० स्त्रियां ङीप्] फलदार वृक्ष —कक्कोली फलजग्धि—मा० ६।१९ अने० पा०,—लम्, —लकम् 1. कक्कोल का फल 2. इसके फलों से तैयार किया गया गन्धद्रव्य।

कक्खट (वि०) [कक्ख्+अटन्] 1 कठोर, ठोस 2. हंसने वाला।

कक्खटी [कक्खट+ङीप्] खड़िया।

कक्षः [कष्+स] 1. छिपने का स्थान 2. नीचे पहने जाने वाले वस्त्र का सिरा, कच्छे का सिरा 3. बेल, लता 4. घास, सूखी घास—यतस्तु कक्षस्तत एव वह्निः —रघु० ७।५५, ११।७५, मनु० ७।११० 5. सूखे वृक्षों का जंगल, सूखी लकड़ी 6. काख—प्रक्षिप्योर्दाचिषं कक्षे शेरते तेऽभिमारुतम्—शि० २।४२ 7. राजा का अन्तःपुर 8. जंगल का भीतरी भाग—आशु निर्गत्य कक्षात्—ऋतु० १।२७ कक्षांतरगतो वायुः—रामा० 9. (किसी वस्तु का) पार्श्व 10. भैंसा 11. द्वार 12. दलदली भूमि,—क्षा 1. ककराली या कांख का फोड़ा जिसमें पीड़ा होती है 2. हाथी को बांधने की रस्सी, हाथी का तंग 3. स्त्री की तगड़ी, कटिबन्ध, करधनी, कटिसूत्र—शि० १७।२४ 4. चहारदीवारी की दीवार 5. कमर, मध्यभाग 6. आँगन, सहन 7. बाड़ा 8. भीतर का कमरा, निजी कमरा, सामान्य कमरा—कु० ७।७०, मनु० ७।२२४, गृहकलहंसकाननुसरन् कक्षांतरप्रधावितः—का० ६३, १८२ 9. रनिवास 10. समानता 11. उत्तरीय वस्त्र 12. आपत्ति, सतर्क उत्तर (तर्क० में) 13. प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वन्द्विता 14. लांग 15. लांग बांधना 16. कलाई,—क्षम् 1. तारा 2. पाप। सम०—अग्निः जंगली आग, दावाग्नि—रघु० ११।९२,—अन्तरम् भीतर का या निजी कमरा,—अवेक्षकः 1. अन्तः पुर का अधीक्षक 2. राजोद्यानपाल 3. द्वारपाल 4. कवि 5. लम्पट 6. खिलाड़ी, चित्रकार 7. अभिनेता 8. प्रेमी 9. रस या भावना की शक्ति,—धरम् कन्धों का जोड़,—पः कछुवा,—(क्षा) पटः लंगोट,—पुटः काँख,—शायः,—युः कुत्ता।

कक्ष्या [कक्ष+यत्+टाप्] 1. घोड़े या हाथी का तंग 2. स्त्री की तगड़ी या करधनी—शि० १०।६२ 3. उत्तरीय वस्त्र 4. वस्त्र की किनारी 5. महल का भीतरी कमरा 6. दीवार, घेर या बाड़ा 7. समानता।

कख्या [कख्+यत्+टाप्] घेर या बाड़ा, विशाल भवन का प्रभाग या खण्ड।

कङ्कः [कङ्क्+अच्] 1. बगला 2. आम का एक प्रकार 3. यम 4. क्षत्रिय 5. बनावटी ब्राह्मण 6. विराट के महल में युधिष्ठिर द्वारा रक्खा गया अपना नाम। सम० —पत्र बगले के परों से सुसज्जित (—त्रः) बगले के पंखों से युक्त बाण—रघु० २।३१, उत्तर० ४।२० महावी० १।१८,—पत्रिन् (पुं०) =कंकपत्रः,—मुखः चिमटा—वेणी० ५।११,—शाय, कुत्ता (बगले की भांति सोता हुआ)।

कङ्कटः, कङ्कटकः [कङ्क्+अटन्, कन् वापि] 1. कवच, रक्षात्मक जिरह बख्तर, सैनिक साज-सामान—वेणी० २।२६, ५।११, रघु० ७।५९ 2. अंकुश।

कङ्कणः,—णम् [कम् इति कणति, कम्+कण्+अच्] 1. कड़ा—दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन विभाति भर्तृ० २।७१, इदं सुवर्णकङ्कणं गृह्यताम् हि० १ 2. विवाह-सूत्र, कंगना (कलाई के चारों ओर बँधा हुआ) —उत्तर० १।१८, मा० ९।९, देव्यः कङ्कणमोक्षाय

मिलिता राजन् वरः प्रेष्यताम्—महावी० २।५० 3. सामान्य आभूषण 4. कलगी,—णः पानी की फुहार —नितंबे हाराली नयन युगले कङ्कणभरम्—उद्भट,—णी, कङ्कणिका 1. घूंघरु 2. घूंघरु-जड़ा आभूषण ।

कङ्कतः,—तम्, कङ्कती,—तिका [कङ्क+अतच्] कंघी, बाल वाहने की कंघी—शि० १५।३३ ।

कङ्करम् [कं सुखं किरति क्षिपति—कृ+अच्] मट्ठा (पानी मिला हुआ) ।

कङ्कालः—लम् [कं शिरः कालयति क्षिपति—कम्+कल्+णिच्+अच्] अस्तिपंजर—मा० ५।१४, । सम० —पालिन् (पुं०) शिव, -शेष (वि०) कमजोर होकर जो हड्डियों का ढाँचा रह गया हो—उत्तर० ३।४३ ।

कङ्कालयः [कंकाल+या+क] शरीर ।

कङ्केल्लः,— ल्लिः [कङ्क्+एल्लः, एल्लिः वा] अशोक वृक्ष ।

कङ्कोली [कंक्+ओलच्+ङीष्]=दे० कक्कोली ।

कङ्गुलः [कंगु+ला+क] हाथ ।

कच् i (भ्वा० पर०—कचति, कचित) चिल्लाना, रोना ।

ii (भ्वा० उभ०) 1, बाँधना, जकड़ना (आ-पूर्वक), त्वक्त्रं चाचकचे वरम्—भट्टि० १४।९४ 2. चमकना ।

कचः [कच्+अच्] 1, बाल (विशेषकर सिरके)—कचेषु च निगृहीतान्—महा०, दे० नी० °ग्रह;—अलिनीजिष्णुः कचानां चयः—भर्तृ० १।५ 2. सूखा या भरा हुआ घाव, क्षतचिह्न या किण 3. बंधन, पट्टी 4. कपड़े की गोट 5. बादल 6. बृहस्पति का एक पुत्र (राक्षसों के साथ लंबे युद्ध में देवता बहुधा हारा करते थे और असहाय हो जाते थे, परन्तु जो राक्षस युद्ध में मारे जाते थे, उनको फिर उनका गुरु शुक्राचार्य अपने गुप्तमंत्र (यह मंत्र केवल शुक्राचार्य के पास ही था) द्वारा पुनर्जीवित कर देता था । देवों ने इस मन्त्र को, यथा शक्ति, प्राप्त करने का संकल्प किया और कच को शुक्राचार्य के पास उसका शिष्य बन कर मंत्र सीखने के लिए फुसलाया । फलतः कच शुक्राचार्य के पास गया, परन्तु राक्षसों ने उसकी दो बार इसलिए हत्या की कि कहीं वह इस ज्ञान में पारंगत न हो जाय परन्तु दोनों ही बार, शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री देवयानी के (जिसका कि कच से प्रेम हो गया था) बीच में पड़ने से उसे फिर जिला दिया । इस प्रकार परास्त हो राक्षसों ने उसकी तीसरी बार हत्या करके, उसके शव को जला दिया और उसकी राख शुक्राचार्य की मदिरा में मिला दी । परन्तु देवयानी ने उस युवक को पुनर्जीवित करने की अपने पिता से फिर प्रार्थना की । उसके पिता ने उसे फिर जिला दिया । तब से लेकर देवयानी उसको और भी अधिक प्रेम करने लगी, परन्तु कच ने उसके प्रेम-प्रस्ताव को ठुकरा दिया और कहा कि तुम मेरी छोटी बहन हो । इस बात पर देवयानी ने युवक को शाप दे दिया कि यह महामंत्र जो उसने सीखा है शक्तिहीन हो जायगा । बदले में कच ने भी उसे शाप दिया कि उससे कोई ब्राह्मण विवाह नहीं करेगा, और उसे क्षत्रिय की पत्नी बनना पड़ेगा), —चा हथिनी । सम०—अग्रम् घूंघट, अलकें,—आचित बिखरे बालों वाला—कि० १।३६, —ग्रहः बाल पकड़ना, बालों से पकड़ने वाला—रघु० १०।४७, १९।३१, —पक्षः,—पाशः,—हस्तः चिचपिन्न या अलंकृत बाल (अमर कोश के अनुसार यह तीन शब्द 'समूह' को व्यक्त करते हैं:—पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे),—मालः धूआँ ।

कचङ्गनम् [कचस्य जनरवस्य अङ्गनम्—ष० त०, शक० पररूपम्] वह मंडी जहाँ सामान पर किसी प्रकार का कोई शुल्क न देना पड़े ।

कचङ्गलः [कच्यते रुध्यते वेलया—कच्+अङ्गलच्] समुद्र ।

कचाकचि (अव्य०) [कचेषु कचेषु गृहीत्वेदं युद्धं प्रवृत्तम् ब० स० इच्, पूर्वपददीर्घः] 'बाल के बदले' एक दूसरे के बाल पकड़ कर (खींच कर, नोच कर) युद्ध करना ।

कचाटुरः [कचवत् मेघ इव शून्ये अटन्ति—कच+अट्+उरच्] जलकुक्कुट ।

कच्चर (वि०) [कुत्सितं चरति कु+चर+अच्] 1. बुरा, मलिन 2. दुष्ट, नीच, अधम ।

कच्चित् (अव्य०) [कम्+विच्, चि+क्विप् पृषो० मस्य दत्वम्—कच्च चिच्च द्वयोः समाहारः-द्व० स०] (क) प्रश्नवाचकता ('मुझे आशा हैं' प्रायः ऐसा अनुवाद)—कच्चित् अहमिव विस्मृतवानसि त्वं—श० ६, कच्चिन्मृगीणामनघा प्रसूतिः—रघु० ५।७, ५, ६, ८ व ९ भी (ख) हर्ष तथा (ग) माङ्गलिकता-सूचक अव्यय ।

कच्छः—च्छम् [केन जलेन छ्णाति दीप्यते छाद्यते वा—क+छो+क] 1. तट, किनारा, गोट, सीमावर्ती प्रदेश (चाहे पानी के निकट हो या दूर)—यमुनाकच्छमवतीर्णः —पंच० १, गन्धमादन कच्छोऽध्यासितः—विक्रम० ५, शि० ३।८० 2. दलदल, कीचड़, पंकभूमि 3. अधोवस्त्र की गोट या झालर जो लाँग का काम दे—दे० कक्षा 4. किश्ती का एक भाग 5. कछुवे का अंग विशेष (जैसा कि 'कच्छप' में),—च्छा झींगुर । सम०—अंतः झील या नदी का किनारा—पः (स्त्री०—पी) 1. कछुवा, कछुवी,—केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे—गीत० १, मनु० १।४४, १२।४२ 2. मल्लयुद्ध में एक स्थिति 3. कुबेर की नौ निधियों मे से एक (—पी) 1. कछुवी 2. एक प्रकार की वीणा, सरस्वती की वीणा,—भूः (स्त्री०) दलदली भूमि, पङ्कभूमि ।

कच्छ (च्छा) टिका, कच्छाटी (कच्छ+अट्+अच्+कन्, इत्वम्, शक० पररूपम्, पररूपाभावे 'कच्छाटिका' ङीपि कृते 'कच्छाटी'] धोती का छोर जो शरीर पर चारों ओर लपेटने के बाद इकट्ठा करके लाँग की भाँति पीछे टाँग लिया जाता है।

कच्छुः, कच्छू (स्त्री०) [कष्+ऊ, छ आदेशः, विकल्पेन ह्रस्वश्च] खुजली, खाज।

कच्छुर (वि०) [कच्छू+र ह्रस्वश्च] 1. खाज वाला, खुजली की बीमारी वाला 2. कामुक, लम्पट।

कज्जलम् [कुत्सितं जलमस्मात्प्रभवति—कोः कदादेशः] दीपक की कालिमा जो औषध के रूप में आँखों में आँजी जाती हैं, काजल—यथा यथा चेयं चपला दीप्यते तथा तथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति—का० १०५, अद्यापि तां विधृतकज्जललोलनेत्राम्—चौर० १५, °कालिमा—अमरु ८८ 2. सुर्मा (जो अंजन की भांति प्रयुक्त किया जाता है) 3. स्याही, मसी। सम०—ध्वजः दीपक, लैम्प, —रोचकः,—कम् दीवट, (लकड़ी का बना दीपक का स्टैण्ड)।

कञ्च् (भ्वा० आ०) 1. बांधना 2. चमकना।

कञ्चारः [कम्+चर्+णिच्+अच्] 1. सूर्य 2. मदार का पौधा।

कञ्चुकः [कञ्च्+उकन्] 1. बख्तर, कवच 2. साँप की त्वचा, केंचुली—पंच० १।६६ 3. पोशाक, वस्त्र, कपड़ा – धर्म° प्रवेशितः—श० ५ 4. अंगरखा, चोगा —अन्तः कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः —रत्न० २।३, पंच० २,६४ 5. चोली, अंगिया —क्वचिदिवेन्द्रगजाजिनकञ्चुकाः–शि० ६।५१, १२।२० अमरु ८१, (उक्ति—निन्दति कञ्चुककारं प्रायः शुष्कस्तनी नारी—तु० 'नाच न जाने आंगन टेढ़ा')।

कञ्चुकालुः [कञ्चुक+आलुच्] साँप।

कञ्चुकित (वि०) [कञ्चुक+इतच्] 1. बख्तर से सुसज्जित, कवच धारण किये हुए 2. पोशाक पहने हुए —कंथा° –भर्तृ० ३।१३०।

कञ्चुकिन् (वि०) [कञ्चुक+इनि] कवच या जिरहबख्तर से सुसज्जित,—(पुं०) 1. अन्तःपुर का सेवक, जनानी ड्योढ़ी का द्वारपाल (नाटकों में आवश्यक पात्र —अन्तःपुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वितः, सर्वकार्यार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते) 2. लम्पट, व्यभिचारी 3. साँप 4. द्वारपाल 5. जौ।

कञ्चुलिका, कञ्चुली कञ्च्+उलच्+ङीप्+कन्, ह्रस्वः] चोली—त्वं मुग्धाक्षि विनैव कंचुलिकया धत्से मनोहारिणीं लक्ष्मीम्—अमरु २७।

कञ्जः [कम्+जन्+ड] 1. बाल 2. ब्रह्मा,—जम् 1. कमल 2. अमृत, सुधा। सम०—जः ब्रह्मा,—नाभः विष्णु।

कञ्जकः, —की [कञ्जः केश इव कायति—कञ्ज+कै+क] एक प्रकार का पक्षी।

कञ्जनः [कम्+जन्+अच्] 1. कामदेव 2. एक प्रकार का पक्षी (कोयल)।

कञ्जरः, कञ्जारः [कम्+जॄ+अक्, अण् वा] 1. सूर्य 2. हाथी 3. पेट 4. ब्रह्मा की उपाधि।

कञ्जलः [कञ्ज्+कलच्] एक प्रकार का पक्षी।

कट् (भ्वा० पर० —कटति, कटित) 1. जाना 2. ढकना। प्र — 1. प्रकट होना 2. चमकना (प्रेर०—कटयति) प्रकट करना, प्रदर्शित करना, दिखलाना, स्पष्ट करना —औज्ज्वल्यं परमागतः प्रकटयत्याभोगभीमं तमः —मा० ५।११, सुहृदिव प्रकटय्य सुखप्रदां प्रथममेकरसामनुकूलताम्—उत्तर० ४।१५, रत्न० ४।१६,

कटः [कट्+अच्] 1. चटाई —मनु० २।२०४ 2. कूल्हा 3. कूल्हा और कटिदेश, कूल्हे के ऊपर का गर्त 4. हाथी का गंडस्थल –कण्डूयमानेन कटं कदाचित् —रघु० २।३७, ३।३७, ४।४७ 5. एक प्रकार का घास 6. शव 7. शववाहन, अरथी 8. पासे का विशेष प्रकार से फेंकना—निन्दितदर्शितमार्गः कटेन विनिपातितो यामि मृच्छ० २।८ 9. आधिक्य (जैसा कि 'उत्कट' में) 10. बाण 11. प्रथा 12 श्मशानभूमि, कबरिस्तान। सम०—अक्षः नजर, तिरछी निगाह, विक्षेप—गाढं निखात इव मे हृदये कटाक्षः – मा० १।२९, २५, २८, मेघ० ३५,—उदकम् 1. (मृत पितरों को) तर्पण के लिए जल 2. मद, (हाथी के मस्तक से बहने वाला तरल पदार्थ),—कारः 1. संकर जाति (निम्न सामाजिक अवस्था की) (शूद्रायां वैश्यतश्चौर्यात् कटकार इति स्मृतः—उशना) 2. चटाई बुनने वाला,—कोलः पीकदान,—खादक 1. गीदड़ 2. कौवा 3. शीशे का बर्तन,—घोषः गोपालपुरी,—पूतनः, —ना एक प्रकार के प्रेतात्मा—अमेध्यकुणपाशी च क्षत्रियः कटपूतनः—मनु० १२।७१, उत्तालाः कटपूतनाप्रभृतयः सांराविणं कुर्वते—मा० ५।१२, (°पूतन—अनं० पा०) २३ भी,—प्रूः 1. शिव 2. भूत या, पिशाच 3. क्रीड़ा,—प्रोथः, —थम् नितंब, —भंगः 1. हाथों से दाने एकत्र करना (शिलोञ्छन) 2. राजसंकट,—मालिनी शराब।

कटकः—कम् [कट्+वुन्] 1. कड़ा— आवद्धहेमकटकां रहसि स्मरामि—चौर० १५ 2. मेखला, करधनी 3. रस्सी 4. शृंखला की एक कड़ी 5. चटाई 6. खारी नमक 7. पर्वत पार्श्व – प्रफुल्लवृक्षैः कटकैरिव स्वैः कु० ७।५२, रघु० १६।३१ 8. अधित्यका – शि० ४।६५ 9. सेना, शिविर—मुद्रा० ५।१० 10. राजधानी

11. घर या आवास 12. वृत्त, पहिया।

कटकिन् (पुं०) [कटक+इनि] पहाड़।

कटङ्कटः [कट+कट्+खच् बा०, मुम्] 1. आग 2. सोना 3. गणेश – याज्ञ० १।२८५।

कटनम् [कट्+ल्युट्] घर की छत या छप्पर।

कटाहः [कट+आ+हन्+ड] 1. कड़ाई 2. कछुवे की कड़ी खाल 3. कूआँ 4. पहाड़ी मिट्टी का टीला 5. टूटे बर्तन का खंड—शि० ५।३७, नै० २२।३२।

कटिः,—टी (स्त्री०) [कट+इन, कटि+ङीप् वा] 1. कमर 2. नितंब (साहित्य शास्त्री इस बात को 'ग्राम्य' समझते हैं, इसका उदाहरण सा० द० ५७४ पृष्ठ पर —कटिस्ते हरते मनः) 3. हाथी का गंडस्थल। सम० —**तटम्** कूल्हा—कटीतटनिवेशितम्—मृच्छ० १।२७, —**त्रम्** 1. धोती 2. मेखला, करधनी, **प्रोथः** नितंब, —**मालिका** स्त्री की तगड़ी या करधनी, **रोहकः** महावत, पीलवान,—**शीर्षकः** कूल्हा,—**शृंखला** घूंघरू जड़ी करधनी,— **सूत्रम्** करधनी या मेखला।

कटिका [कटि+कन्+टाप्] कूल्हा, कमर।

कटीरः,—रम् [कट्+ईरन्] 1. गुफा, खोखर 2. कूल्हों का गर्त,—**रम्** कूल्हा।

कटीरकम् [कटीर+कन्] नितम्ब, चूतड़।

कटु (वि०) (स्त्री०—टु या ट्वी) [कट्+उ] 1. तिक्त, कड़वा, चरपरा (रस का एक भेद माना जाता है, रस छः हैं:—कटु, अम्ल, मधुर, तिक्त, कषाय और लवण) —भग० १७।९ 2. गंधयुक्त, तीक्ष्ण गंध वाला —रघु० ५।४३ 3. दुर्गन्धयुत, बदबूवाला 4. (क) कटु, व्यंग्यात्मक (शब्द), याज्ञ० ३।१४२ (ख) अरुचिकर, अप्रिय —श्रवणकटु नृपाणामेकवाक्यं विवव्रुः रघु० ६।८५ 5. ईर्ष्यालु 6. गरम, प्रचण्ड,—**टुः** तीखापन, तिक्तता, कड़ुवापन, (६ रसों में से एक),—**टु** (नपुं०) 1. अनुचित कार्य 2. लोकापवाद, दुर्वचन, निन्दा। सम० —**कीटः—कीटकः** डांस, मच्छर,—**क्वाणः** टटिहिरी, —**ग्रंथि** (नपुं०) सोंठ, इसी प्रकार °भंगः, °भद्रम् सोंठ या अदरक,—**निष्पलावः** अनाज जो जल की बाढ़ में न आया हो,—**मोदम्** एक सुगन्धित द्रव्य,—**रवः** मेंढक।

कटुक (वि०) [कटु+कन्] 1. तीक्ष्ण, चरपरा 2. प्रचंड, गरम 3. अप्रिय, अरुचिकर,—**कः** तीखापन, खटास (६ रसों में से एक) दे० ऊ० 'कटु'।

कटुकता [कटुक+ता] अशिष्ट व्यवहार, अक्खड़पना।

कट्वरम् [कट+उरन्] पानी मिला हुआ मट्ठा।

कटोरम् [कट्+ओलच् रलयोरभेदः] मिट्टी का कसोरा।

कटोलः [कट्+ओलच्] 1. चरपरा स्वाद 2. नीच जाति का पुरुष, जैसा कि चाण्डाल।

कठ् (भ्वा० पर०) कठिनाई से रहना—दे० 'कण्ठ्'।

कठः [कठ्+अच्] एक मुनि का नाम, वैशम्पायन का शिष्य यजुर्वेद की कठ शाखा का प्रवर्तक,—**ठाः** कठ मुनि के अनुयायी। सम०—**धूर्तः** यजुर्वेद की कठ शाखा में निष्णात ब्राह्मण,—**श्रोत्रियः** यजुर्वेद की कठ शाखा में पारंगत ब्राह्मण।

कठमर्दः [कठ+मृद्+अण्] शिव।

कठर (वि०) [कठ्+अरन्] कड़ा, सख्त।

कठिका [कठ्+वुन् बा०] खड़िया।

कठिन (वि०) [कठ्+इनच्] 1. कड़ा, सख्त कठिनविषमामेकवेणीं सारयन्तीम्—मेघ० ९२, अमरु ७२ इसी प्रकार °स्तनौ 2. कठोर-हृदय, क्रूर, निर्दय—न विदीर्ये कठिनाः खलु स्त्रियः—कु० ४।५ पंच० १।६४ अमरु० ६, इसी प्रकार °हृदय 3. कठोर, अनम्य 4. तीक्ष्ण, प्रचंड, उग्र (पीड़ा आदि)—नितान्तकठिनां रुजं मम न वेद सा मानसीम्– विक्रम० २।११ 5. पीड़ा देने वाला,—**नः** झुरमुट,—**ना** 1. साफ़ की हुई शक्कर से बनी मिठाई 2. खाना बनाने के लिए मिट्टी की हाँड़ी (—इस अर्थ में नपुं० भी)।

कठिनिका, कठिनी [कठिन+ङीप्, कन्+टाप्, इत्वम्] 1. खड़िया 2. कन्नी अंगुली।

कठोर (वि०) [कठ्+ओरन्] 1. कड़ा, ठोस—कठोरास्थिग्रंथि—मा० ५।३४ 2. क्रूर, कठोर-हृदय, निर्दय—अयि कठोर यशः किल ते प्रियम्—उत्तर० ३।२७, इसी प्रकार °हृदय, °चित्त 3. तीक्ष्ण, चुभने वाला, °अंकुशः— शा० १।२२ 4. पूर्ण विकसित, पूर्ण, पूरा उगा हुआ,—कठोरगर्भां जानकीं विमुच्य—उत्तर० १।१, ४९, इसी प्रकार—कठोरताराधिपलाञ्छनच्छविः– शि० १।२० 5. (आलं०) परिपक्व, परिष्कृत—कलाकलापालोचनकठोरमतिभिः—का० ७।

कड्=दे० कंड्।

कड (वि०) [कड्+अच्] 1. गूंगा 2. कर्कश 3. अनजान, मूर्ख।

कडङ्ग (क) रः [कड+कृ(गृ वा)+खच्, मुम्] तिनका।

कडंग (क) रीय (वि०) [कडंग(क)र+छ] जिसको तिनका खिलाया जाय,—**यः** घास खाने वाला पशु (गाय, भैंस आदि) रघु० ५।९।

कडत्रम् [गडयते सिच्यते जलादिकम् अत्र—गड्+अत्रन्, गकारस्य ककारः] एक प्रकार का बर्तन।

कडन्दिका [कलंडिका] विज्ञान, शास्त्र।

कड (लं)म्बः कड्+अम्बच्, डस्य लः] डंठल, (साग भाजी का)।

कडार (वि०)- [गड्+आरन् कडादेश] 1. भूरे रंग का 2. घमंडी, अभिमानी, ढीठ,—**रः** 1. भूरा रंग 2. सेवक।

कडितुलः [कट्यां तोलनं ग्रहणं यस्य, पृषो० टस्य ड] तलवार, खड्ग।

कण् i (भ्वा० पर०--कणति, कणित) 1. शब्द करना, चिल्लाना, (दुःख में) कराहना 2. छोटा होना 3. जाना।
ii (चुरा० पर० या प्रेर०) आँख झपकना, पलक बन्द करना।

कणः [कण्+अच्] 1. अनाज का दाना—तण्डुलकणान् —हि० १, मनु० ११।९२ 2. अणु या (किसी—वस्तु का) लव 3. बहुत ही थोड़ा परिमाण द्रविण° श० १।१९, ३।५ 4. धूल का जर्रा---रघु० १।८५, पराग —विक्रम० २।७ 5. (पानी की) बूंद या फुहार —कणवाही मालिनीतरङ्गाणाम्—श० ३।५, अंबु°, अश्रु°,–मेघ० २६, ४५, ६९, अमरु ५४ 6. अनाज की बाल 7. (आग की) चिंगारी। सम०—अदः,—भक्षः, —भुज् (पुं) वैशेषिक दर्शन के निर्माता का नाम (जिसे अणुवाद का सिद्धांत कह सकते हैं)—जीरकम् सफेद जीरा,—भक्षकः एक प्रकार का पक्षी,—लाभः भंवर, जलावर्त।

कणपः [कण्+पा+क] लोहे का भाला या छड़,–लोहस्तम्भस्तु कणपः--वैज० चापचक्रकणपकर्पणम्—आदि० दश०।

कणशः (अव्य०) [कण+शस्] छोटे २ अंशों में, दाना-दाना, थोड़ा-थोड़ा, बूंद-बूंद --तदिदं कणशो विकीर्यते (भस्म) कु०—४।२७।

कणिकः [कण्+कन्, इत्वम्] 1. अनाज का दाना 2. एक छोटा कण 3. अनाज की बाल 4. भुने हुए गेहूँ का भोजन।

कणिका [कण+ठन्+टाप्] 1. अणु, एक छोटा अथवा सूक्ष्म जर्रा 2. (पानी की) बूंद—मेघ० ९८ 3. एक प्रकार का अन्न या चावल।

कणिशः -शम् [कणिन्+शी+ड] अनाज की बाल।

कणीक (वि०) [कण्+ईकन्] छोटा, नन्हा।

कणे (अव्य०) [कण्+ए] इच्छा-संतृप्ति का अभिप्रायक अव्यय (श्रद्धाप्रतीघात),–कणेहत्य पयः पिबति–सिद्धा० 'वह मन भर कर दूध पीता है।'

कणेरा—रुः (स्त्री०)[कणेर+टाप्, कण्+एरु] 1. हथिनी 2. वेश्या, रंडी।

कण्टकः,—कम् [कण्ट्+ण्वुल्] 1. काँटा,–पादलग्नं करस्थेन कण्टकेनैव कण्टकम् (उद्धरेत्)—चाण० २२ 2. फांस, डंक—याज्ञ० ३।५३ 3. (आलं०) ऐसा दुःखदायी व्यक्ति जो राज्य के लिए काँटा तथा अच्छे प्रशासन एवं शान्ति का शत्रु हो—उत्खातलोकत्रयकण्टकेऽपि —रघु० १४।७३, त्रिदिवमुद्धृतदानवकण्टकम्–श० ७।३, मनु० ९।२६० 4. (अतः) सताने या क्लेश पहुँचाने का मूल-कारण, उत्पात—मनु० ९।२५३ 5. रोमाँच होना, रोंगटे खड़े होना 6. अंगुली का नाखून 7. कष्ट पहुँचाने वाला भाषण,—कः 1. बाँस 2. कारखाना, निर्माणी। सम० अशनः,—भक्षकः --भुज् (पुं०) ऊँट,—उद्धरम् 1. (शा०) काँटा निकालना, नलाई करना 2. (आलं) जनसाधारण को सताने वाले तथा चोर आदि उत्पातकारियों को दूर करना,–कण्टकोद्धरणे नित्यमातिष्ठेद्यत्नमुत्तमम् -मनु० ९।२५२ ---द्रुमः 1. काँटा, झाड़ी—भवन्ति नितरां स्फीताः सुक्षेत्रे कण्टकद्रुमाः—मृच्छ० ९।७ 2. सेमल का वृक्ष,—फलः कटहल, गोखरू, रेंड़ या धतूरे का पेड़,—मर्दनम् उत्पात शान्त करना, —विशोधनम् सब प्रकार क्लेशों के स्रोतों का उन्मूलन करना,—राज्यकण्टकविशोधनोद्यतः— विक्रमांक० ५।१।

कण्टकित (वि०) [कण्टक+इतच्] 1. काँटेदार 2. खड़े हुए रोंगटों वाला, पुलकित, रोमांचित—प्रीतिकण्टकितत्वचः—कु० ६।१५, रघु० ७।२२।

कण्टकिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कण्टक+इनि] 1. काँटेदार, कंटीला,—कण्टकिनो वनान्ताः--विक्रमांक० १।११६ 2. सताने वाला, कष्टदायक। सम० -फलः कटहल।

कण्टकिलः [कण्टक+इलच्] काँटेदार बाँस।

कण्ठ्(भ्वा०, चुरा० उभ०---कण्ठति–ते, कंठयति-ते, कण्ठित) 1. विलाप करना, शोक करना 2. चूकना, आतुर होना, लालायित होना, खेद के साथ स्मरण करना (इस अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु के पूर्व 'उद्' उपसर्ग लगा कर संब०, अधि० या सम्प्र० की संज्ञा के साथ इस क्रिया का प्रयोग करते हैं)--परिष्वङ्गस्य वात्सल्यादयमुत्कण्ठते जनः--उत्तर० ६।२१, यथा स्वर्गाय नोत्कण्ठते—विक्रम० ३, सुरतव्यापारलीलाविधौ चेतः समुत्कण्ठते—काव्य० १।

कण्ठः, –ठम् [कण्ठ्+अच्] 1. गला,—कण्ठे निपीडयन् मारयति—मृच्छ०८, कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः—श० ४।५ कण्ठेषु स्खलितं गतेपि शिशिरे पुंस्कोकिलानां रुतम् ६।३ 2. गर्दन—कण्ठाश्लेष परिग्रहे शिथिलता—पंच० ४।६; कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे—मेघ० ३।९७ ११२, अमरु १९।५७, कु० ५।५७ 3. स्वर आवाज --सा मुक्तकण्ठं चक्रन्द—रघु० १४।६५, किन्नरकण्ठि ८।६३, आर्यपुत्रोपि प्रमुक्तकण्ठं रोदिति—उत्तर० ३ 4. बर्तन की गर्दन या किनारा 5. पड़ौस, अविच्छिन्न सामीप्य (जैसा कि 'उपकण्ठ' में)। सम० —आभरणम् गले का आभूषण---परीक्षितं काव्यसुवर्णमेतल्लोकस्य कण्ठाभरणत्वमेतु—विक्रमांक० १।२४ तु० सरस्वती कण्ठाभरण जैसे नाम,—कूणिका भारतीय वीणा, --गत (वि०) गले में रहने वाला, गले में आने वाला अर्थात् वियुक्त होने वाला,--न वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि—सुभा०, तटः,--टम्,—टी गले का पार्श्व या भाग,—दघ्न (वि०) गर्दन तक पहुँचने वाला,

—**नीडकः** चील,—**नीलकः** बड़ा लैंप या मशाल,—**पाशकः** 1. हाथी की ग्रीवा के चारों ओर बंधी हुई रस्सी 2. रोकने वाला,—**भूषा** छोटा हार—विदुषां कण्ठभूपात्वमेतु-विक्रमांक० १८।१०२, —**मणिः** 1. गले में पहनने का मणि 2. प्रिय वस्तु,—**लता** 1. पट्टा 2. घोड़े को रोकने वाला,—**वर्तिन्** (वि०) गले में होने वाला अर्थात् विदा होने वाला—प्राणैः—रघु० १२।५४, —**शोषः** (शा०) 1. गले का सूख जाना, खुश्क हो जाना 2. (आलं०) निष्फल प्रतिवाद,—**सज्जनम्** गर्दन के सहारे लटकना,—**सूत्रम्** एक प्रकार का आलिंगन —यत्कुर्वते वक्षसि वल्लभस्य स्तनाभिघातं निबिडोपगूहात्, परिश्रमार्थं शनकैर्विदग्धास्तत्कण्ठसूत्रं प्रवदंति संतः,कंठसूत्रमपदिश्य योषितः—रघु० १९।२२ ('स्तनालिंगन' भी कहलाता है),—**स्थ** (वि०) 1. गले में होने वाला 2. कंठस्थानीय।

कण्ठतः (अव्य०) [कण्ठ+तसिल्] 1. गले से 2. स्पष्ट रूप से, स्फुटरूप से।

कण्ठालः [कण्ठ्+आलच्] 1. किश्ती 2. फावड़ा, कुदाली 3. युद्ध 4. ऊँट,—**ला** वर्तन जिसमें दूध बिलोया जाय।

कण्ठिका [कण्ठ+ठन्+टाप्, इत्वम्] एक लड़का हार या माला।

कण्ठी (स्त्री०) [कण्ठ+ङीष्] 1. गर्दन, गला 2. हार, पट्टी 3. घोड़े की गर्दन के चारों ओर बंधी रस्सी। सम०—**रवः** 1. सिंह 2. मदमाता हाथी—कंठीरवो महाग्रहेण न्यपतत्—दश० ७ 3. कबूतर 4. स्पष्ट घोषणा या उल्लेख (इति कण्ठीरवेणोक्तम्)।

कण्ठीलः [कण्ठ्+ईलच्] ऊँट।

कण्ठेकालः [कण्ठे कालो विषपानजो नीलिमा यस्य— अलु० स०] शिव।

कण्ठ्य (वि०) [कण्ठ+यत्] 1. गले से संबन्ध रखने वाला गले के उपयुक्त, या गले में होने वाला 2. कंठस्थानीय। सम०—**वर्णः** कण्ठस्थानीय अक्षर—नामतः, अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ् और ह,—**स्वरः** कण्ठस्थानीय स्वर (अ और आ)।

कण्ड् (भ्वा० उभ०) 1. प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना 2. घमंडी होना 3. कूटकर भूसी अलग करना, (चुरा० उभ० —कण्डयति-ते, कण्डित) 1. (अनाज), गाहना दाने अलग करना 2. रक्षा करना, बचाना।

कण्डनम् [कण्ड्+ल्युट्] 1. फटकना, दानों से भूसी अलग करना —अजानतार्थं तत्सर्वं (अध्ययनम्)तुषाणां कण्डनं यथा 2. भूसी,—**नी** 1. ओखली 2. मूसल।

कण्डरा [कंड्+अरन्] नस।

कण्डिका [कंड्+ण्वुल्+टाप्] छोटा अनुभाग, छोटे से छोटा अनुच्छेद (जैसा कि शुक्ल यजुर्वेद में)।

कण्डुः (पुं० स्त्री०), **कण्डूः** (स्त्री०) [कण्डू+कु, कण्डू+यक्+क्विप्, अलोपः यलोपः] 1. खुरचना 2. खुजाना —कपोलकण्डूः करिभिर्विनेतुम्—कु० १।९, शा० ४।१७।

कण्डूतिः (स्त्री०) [कण्डू+यक्+क्तिन्] 1. खुरचना 2. खुजली, खुजाना।

कण्डूयति—ते (ना० धा०, उभ०) (भू० क० कृ०—कण्डूयित) 1. खुरचना, शनैः २ मसलना—कण्डूयमानेन कटं कदाचित्—रघु० २।३७, मृगीमकण्डूयत् कृष्णसारः —कु० ३।३६, शृंगे कृष्णमृगस्य वामनयनं कण्डूयमानां मृगीम्—श० ६।१६, मनु० ४।४२।

कण्डूयनम् [कण्डू+यक्+ल्युट्] खुरचना, मसलना—कण्डूयनैर्दंशनिवारणैश्च—रघु० २।५,—**नी** मसलने के लिए ब्रुश।

कण्डूयनकः [कण्डूयन+कन्] खुजली पैदा करने वाला, गुदगुदी करने वाला—पंच० १।७१।

कण्डूया [कण्डू+यक्+अ+टाप्] 1. खुरचना 2. खुजलाना।

कण्डूल (वि०) [कण्डू+लच्] जिसे खुजली का विकार हो, जो खुजली अनुभव करता हो, या खुजलाहट पैदा करने वाला—कण्डूलद्विपगण्डपिण्डकणोत्कंपेन संपातिभिः — उत्तर० २।९।

कण्डोलः [कण्ड्+ओलच्] 1. (वेत या बाँस की बनी) टोकरी जिसमें अनाज रखा जाय 2. डोली, भण्डार-गृह 3. ऊँट,—**ली** चांडाल की वीणा।

कण्डोषः [कण्ड्+ओषन्] झांझा, एक तरह का फुनगा।

कण्वः [कण्+क्वन्] एक ऋषि का नाम, शकुन्तला का धर्मपिता, काण्व ब्राह्मणवंश का प्रवर्तक। सम० —**दुहितृ**,—**सुता** शकुन्तला, कण्व की पुत्री।

कतः, **कतकः** [कं जलं शुद्धं तनोति—तन्+ड—तारा०] निर्मली का पौधा (इसका फल गदले पानी को स्वच्छ कर देने वाला बतलाया जाता है) रीठा—फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यंबुप्रसादनम्, न नामग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति। मनु० ६।६७,—**तम्**—**तकम्** इस वृक्ष का फल, रीठा, दे० 'अंबुप्रसादन' भी।

कतम (सर्व० वि०) (नपुं०—मत्) [किम्+डतमच्] कौन या कौन सा—अपि ज्ञायते कतमेन दिग्भागेन गतः स जाल्म इति—विक्रम० १, अथ कतमं पुनर्ऋतुमधिकृत्य गास्यामि - श० १, कतमे ते गुणास्तत्र यानुदाहरन्त्यार्यमिश्राः—मा० १, (कभी कभी 'किम्' के स्थान में बलप्राप्त प्रत्यादेश के रूप में प्रयुक्त होता है)।

कतर (सर्व० वि०) (नपुं०—°रत्) [किम्+डतरच्] कौन, दो में से कौन सा,—नैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः—भग० २।६।

कतमालः [कस्य जलस्य तमाय शोषणाय अलति पर्याप्नोति अल्+अच्] अग्नि, तु० खतमाल।

कति (सर्व० वि०) [किम् डति] (सदैव ब० व० में प्रयुक्त—कति, कतिभिः) 1. कितने—कत्यग्नयः, कति

सूर्यासः—ऋक्० १०।८८।१८ 2. कुछ (जब 'कति' के साथ चिद्, चन या अपि जोड़ दिया जाता है, तो शब्द की प्रश्नवाचकता नष्ट हो जाती है, और वह अनिश्चयार्थक बन जाता है—अर्थ होता है- कुछ, कई, थोड़े से—तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा–श० २।१२, कत्यपि वासराणि–अमरु २५, तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी नीत्वा मासान्—मेघ० २)।

कतिकृत्वः (अव्य०) [कति+कृत्वसुच्] कितनी बार।

कतिधा (अव्य०) [कति+धा] 1. कई बार 2. कितने स्थानों पर, या कितने भागों में।

कतिपय (वि०) [कति+अयच्, पुक् च] कुछ, कई, कई एक—कतिपयकुसुमोद्गमः कदम्बः—उत्तर० ३।२०, मेघ० २३,—कतिपयदिवसापगमे – कुछ दिनों के बीत जाने पर—वर्णैः कतिपयैरेव ग्रथितस्य स्वरैरिव—शि० २।७२।

कतिविध (वि०) [ब० स०] कितने प्रकार का।

कतिशः (अव्य०) [कति+शस्] एक बार में कितना।

कत्थ् (भ्वा० आ०—कत्थते, कत्थित) 1. शेखी बघारना, इतरा कर चलना—कृत्वा कत्थिष्यते न कः—भट्टि० १६।४, कृत्वैतत्कर्मणा सर्वं कत्थेथाः—महा० 2. प्रशंसा करना, प्रसिद्ध करना 3. गाली देना, दुर्वचन कहना। **वि**—, 1. शेखी मारना, —का खल्वनेन प्रार्थ्यमाना विकत्थते—विक्रम० २ 2. दाम घटाना, तुच्छ करना, उपेक्षित करना—सदा भवान् फाल्गुनस्य गुणैरस्मान् विकत्थते—महा०।

कत्थनम्,—ना [कत्थ्+ल्युट्. युच् वा] डींग मारना, शेखी बघारना।

कत्सवरम् [कत्स+वृ+अप्] कंधा।

कथ् (चुरा० उभ०–कथयति, कथित) 1. कहना, समाचार देना, (प्रायः सम्प्र० के साथ)—राममिष्वसनदर्शनोत्सुकं मैथिलाय कथयांबभूव सः—रघु० ११।३७ 2. घोषणा करना, उल्लेख करना—भग० २।३४, रघु० ११।१५ 3. वार्तालाप करना, बातें करना, बातचीत करना —कथयित्वा सुमन्त्रेण सह—रामा० 4. संकेत करना, निर्देश करना, दिखलाना–विक्रम० १।७, आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति—श० ७ 5. वर्णन करना, बयान करना,—किं कथ्यते श्रीरुभयस्य तस्य– कु० ७। ७८ कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते—हि० १।१, 6. सूचना देना, सूचित करना, शिकायत करना —मृच्छ० ३।

कथक (वि०) [कथ्+ण्वुल्] कहानी कहने वाला, वर्णन करने वाला,—कः 1. मुख्य अभिनेता 2. झगड़ालू 3. कहानी सुनाने वाला।

कथनम् [कथ्+ल्युट्] कहानी कहना, वर्णन करना, बयान करना।

कथम् (अव्य०) [किम्-प्रकारार्थे थमु कादेशश्च] 1. कैसे किस प्रकार, किस रीति से, कहाँ से—कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः - हि० १, सानुबन्धाः कथं न स्युः संपदो मे निरापदः—रघु० १।६४, ३।४४, कथमात्मानं निवेदयामि कथं वात्मापहारं करोमि—श० १ (यहाँ बोलने वाले को अपने कथन के औचित्य में सन्देह है) 2. यह बहुधा आश्चर्य प्रकट करता है—(अहो,) कथं मामेवोद्दिशति—श० ६ 3. यह प्रायः 'इव, नाम, नु, वा, स्विद्' के साथ जोड़ दिया जाता है जब कि इसका अर्थ होता है:—'क्या, सचमुच,' 'क्या सम्भावना है' 'मुझे बतलाइए तो' (यहाँ प्रश्न का सामान्यीकरण कर दिया जाता है)—कथं वा गम्यते—उत्तर० ३, कथं नामैतत्—उत्तर० ६ 4. जब यह 'चिद्, चन या अपि' के साथ जोड़ दिया जाता है तो इसका अर्थ हो जाता है 'हर प्रकार से' 'किसी तरह से हो' 'किसी न किसी प्रकार' 'बड़ी कठिनाई से' या 'बड़े प्रयत्नों से' –तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः–मेघ० ३, कथमप्युन्नमितं न चुम्बितं तु—श० ३।२५, न लोकवृत्तं वर्तेत वृत्तिहेतोः कथंचन—मनु० ४।११, ५।१४३, कथंचिदीशां मनसां बभूवुः—३।३४, कथं कथमपि उत्थितः—पंच० १, विसृज्य कथमप्युमाम् – कु० ६।३, मेघ० २२, अमरु १२, ३९, ५०, ७३। सम०—**कथिक**: जिज्ञासु, पूछ-ताछ करने वाला,—**कारम्** (अव्य०) किस रीति से, कैसे —कथंकारमनालम्ब्य कीर्तिर्द्यामधिरोहति—शि० २।५२, कथंकारं भुङ्क्ते–सिद्धा०, नै० १७।१२६, —**प्रमाण** (वि०) किस माप तोल का,—**भूत** (वि०) किस स्वभाव का, किस प्रकार का (प्रायः टीकाकारों द्वारा प्रयुक्त),—**रूप** (वि०) किस शक्ल सूरत का।

कथन्ता [कथम्+तल्] क्या प्रकार, क्या रीति।

कथा [कथ्+अङ्+टाप्] 1. कथा, कहानी 2. कल्पित या मनगढ़ंत कहानी— कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते—हि० १।१ 3. वृत्तान्त, संदर्भ, उल्लेख —कथापि खलु पापानामलमश्रेयसे यतः– शि० २।४० 4. बातचीत, वार्तालाप, वक्तृता 5. गद्यमयी रचना का एक भेद जो आख्यायिका से भिन्न है—(प्रबन्धकल्पनां स्तोकसत्यां प्राज्ञाः कथां विदुः, परंपराश्रया या स्यात् सा मताख्यायिका बुधैः) 'आख्यायिका' के नीचे भी देखें। का कथा, या प्रति पूर्वक कथा (क्या कहना) 'क्या कहने की आवश्यकता है' 'कहना नहीं' 'कुछ नहीं कहना' 'और कितना अधिक' 'और कितना कम' आदि अर्थों को प्रकट करते हैं—का कथा बाणसन्धाने ज्याशब्देनैव दूरतः, हुंकारेणेव धनुषः स हि विघ्नानपोहति—श० ३।१, अमितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु—रघु० ८।४३, आप्तवागनुमानाभ्यां साध्यं त्वां प्रति का कथा—१०।२८, वेणी० २।२५,।

सम०—अनुरागः वार्तालाप करने में आनन्द प्राप्त करना,—अन्तरम् 1. वार्तालाप के मध्य में—स्मर्तव्योऽस्मि कथान्तरेषु भवता—मृच्छ० ७।७ 2. दूसरी कहानी,—आरम्भः कहानी का आरम्भ,—उदयः कहानी की शुरुआत,—उद्घातः 1. प्रस्तावना के पाँच भेदों में से दूसरा प्रकार जब कि चुपके से सुनने के बाद प्रथम पात्र सूत्रधार के शब्दों या भाव को दोहराता हुआ रंगमंच पर आता है—दे० सा० द० २६०, उदा० रत्न०, वेणी० या मुद्रा० 2. किसी कहानी का आरम्भ—आकुमारकथोद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः—रघु० ४।२०,—उपाख्यानम् वर्णन करना, बयान करना,—छलम् 1. कथा के बहाने 2. मिथ्या वृत्तांत बनाते हुए,—नायकः,—पुरुषः (कहानी का) नायक,—पीठम् कथा या कहानी का परिचयात्मक भाग,—प्रबन्धः कहानी, बनावटी कहानी, कपोलकल्पित कहानी,—प्रसङ्गः 1. वार्तालाप, बातचीत या बातचीत के दौरान में—नाना कथा प्रसंगावस्थितः—हि० १,—मिथः कथाप्रसङ्गेन विवादं किल चक्रतुः—कथा० २२, १८१, नै० १।३५, 2. विषचिकित्सक—कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतात्—कि० १।२४ (यहाँ शब्द 'प्रथम अर्थ' को भी प्रकट करता है),—प्राणः अभिनेता,—मुखम् कहानी का परिचयात्मक भाग,—योगः बातचीत के मध्य,—विपर्यासः कहानी का मार्ग बदलना,—शेष,—अवशेष (वि०) जिसका केवल 'वृत्तांत' ही बाकी रह गया है अर्थात् 'मृत' (कथाशेषतां गतः—मृत, मृतक) (—षः) कहानी का बचा हुआ भाग।

कथानकम् [कथ्+आनक बा०] छोटी कहानी—उदा० वेतालपञ्चविंशति।

कथित (भू० क० कृ०) [कथ्+क्त] 1. कहा हुआ, वर्णित, बयान किया हुआ 2. अभिहित, वाच्य। सम०—पदम् पुनरुक्ति, दोहराना, ('पुनरुक्ति'—वाक्य में एक प्रकार का रचना विषयक दोष है जब कि एक शब्द का बिना किसी विशिष्ट अभिप्राय के दोबारा प्रयोग किया जाता है) काव्य० ७, सा० द० ५७५, एत०।

कद् i (दिवा० आ०—कद्यते) हतबुद्धि हो जाना, घबरा जाना, मन में दुःखी होना, ii (भ्वा० आ०—कदते, भ्वा० पर० भी) 1. चिल्लाना, रोना, आँसू बहाना 2. शोक करना 3. बुलाना 4. मारना, प्रहार करना—दे० कंद्।

कद् (अव्य०) [कद्+क्विप्] (समास में 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होने वाला अव्यय) बुराई, अल्पता, ह्रास, निरर्थकता, तथा दोष आदि को प्रकट करने वाला अव्य०। सम०—अक्षरम् 1. बुरा अक्षर 2. बुरी लिखाई,—अग्निः थोड़ी आग,—अध्वन् बुरा मार्ग,—अन्नम् बुरा भोजन,—अपत्यम् बुरा बच्चा,—अभ्यासः बुरी आदत, बुरी प्रथा,—अर्थ (वि०) निरर्थक, अर्थहीन,—अर्थनम्,—ना कष्ट देना, दुःखी करना, सताना,—अर्थयति (ना० धा०, पर०) 1. घृणा करना, तिरस्कार करना 2. कष्ट देना, सताना—भर्तृ० ३।१००, नै० ८।७५,—अर्थित (वि०) 1. घृणित, उपेक्षित, तिरस्कृत—कदर्थितस्यापि हि धैर्यवृत्तेर्न शक्यते धैर्यगुणः प्रमार्ष्टुम्—भर्तृ० २।१०६ 2. सताया गया, पीड़ित किया गया—आः कदर्थितोऽहमेभिर्वारं वारं वीरसंवादविघ्नकारिभिः—उत्तर० ५ 3. तुच्छ, नीच 4. बुरा, दुष्ट,—अर्यः कंजूस—मनु० ४।२१०, २२४, याज्ञ० १।१६१, °भावः लोलुपता, सूमपन,—अश्वः बुरा घोड़ा—आकार (वि०) विकृतरूप, कुरूप,—आचार (वि०) दुराचारी, दुष्ट, दुश्चरित्र (—रः) दुराचरण,—उष्ट्रः बुरा ऊंट,—उष्ण (वि०) गुनगुना, थोड़ा गरम (—ष्णम्) गुनगुनापन,—रथः बुरा रथ या गाड़ी—युधि कद्रथवद्भीमं बभंज ध्वजशालिनम्—भट्टि० ५।१०३,—वद (वि०) 1. दुर्वचन कहने वाला, अयथार्थ या अस्पष्ट वक्ता—येन जातं प्रियापाये कद्वदं हंसकोकिलम् भट्टि० ६।७५, वाग्विदां वरमकद्वदो नृपः—शि० १४।१ 2. दुष्ट, घृणायोग्य।

कदकम् [कदः मेघ इव कायति प्रकाशते—कद+कै+क] शामियाना, चंदोआ।

कदनम् [कद्+ल्युट्] 1. विनाश, हत्या, तबाही 2. युद्ध 3. पाप।

कदम्बः,—**कदम्बकः** [कद्+अम्बच्] 1. एक प्रकार का वृक्ष (बादलों की गरज के साथ इसकी कलियों का खिलना प्रसिद्ध है)—कतिपयकुसुमोद्गमः कदम्बः—उत्तर० ३।२०, मा० ३।७, उत्तर० ३।४१ मेघ० २५, रघु० १२।९९ 2. एक प्रकार का घास 3. हलदी,—कम् 1. समुदाय—छायाबद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु—श० २।६ 2. कदंब वृक्ष का फूल—पृथुकदम्बकदम्बकराजितम्—कि० ५।९। सम०—अनिलः (कदंब पुष्पों की सुगन्ध से युक्त) सुगन्धित वायु; ते चोन्मीलितमालतीसुरभयः प्रौढाः कदम्बानिलाः—काव्य० १ 2. वसंत,—कोरकन्यायः न्याय के नी० दे०,—वायुः सुगंधित पवन=°अनिलः।

कदरः [कं जलं दारयति नाशयति—क+दृ+अच्] 1. आरा 2. अंकुश,—रम् जमा हुआ दूध।

कदलः,—**कदलकः** [कद्+कलच्, कन् च] केले का पेड़,—ऊरुद्वयं मृगदृशः कदलस्य काण्डौ—अमरु ९५,—ली 1. केले का वृक्ष—कि यासि बालकदलीव विकम्पमाना—मृच्छ० १।२०, यास्यत्यूरुः सरसकदलीस्तम्भगौरश्चलत्वम्—मेघ० ९६, ७७, कु० १।३६, रघु० १२।९६, याज्ञ० ३।८ 2. एक प्रकार का मृग 3. हाथी के द्वारा वहन की जा रही ध्वजा 4 ध्वजा या झंडा।

कदा (अव्य०) [किम्+दा] कब, किस समय—कदा गमिष्यसि—एष गच्छामि, कदा कथयिष्यसि आदि, अपि जोड़ने पर यह शब्द 'कभी-कभी' 'किसी समय' 'समय निकाल कर' अर्थ प्रकट करता है; **न कदापि** कभी नहीं, यदि 'चन' आगे जोड़ दिया जाय तो इसका अर्थ हो जाता है 'किसी समय' 'एक दिन' 'एक बार' 'एक दफ़ा'—आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्न बिभेति कदाचन—मनु० २।५४, १४४, ३।२५, १०१; यदि 'चित्' आगे जोड़ दिया जाय तो इसका अर्थ हो जाता है—'एक बार' 'एक दफ़ा' 'किसी समय' अथ **कदाचित्**=एक बार—रघु० २।३७, १२।२१, नाक्षैः क्रीडेत्कदाचित्तु—मनु० ४।७४, ६५, १६९—कदाचित्-कदाचित् 'अब-अब' कभी-कभी कदाचित् काननं जगाहे कदाचित् कमलवनेषु रेमे-का० ५८, अमु० ।

कद्रु (वि०) (स्त्री० द्रु या द्रू) [कद्+रु] भूरे रंग का, —द्रुः,—द्रू (स्त्री०) कश्यप की पत्नी तथा नागों की माता । सम०—पुत्रः,—सुतः साँप ।

कनकम् [कन्+वुन्] सोना—कनकवलयं स्रस्तं स्रस्तं मया प्रतिसार्यते—श० ३।१३, मेघ० २, ३७, ६७,—**कः** 1. ढाक का वृक्ष 2. धतूरे का वृक्ष 3. पहाड़ी आवनूस । सम०—**अंगदम्** सोने का कड़ा,—**अचलः**,—**अद्रिः**,—**गिरिः**,—**शैलः** सुमेरु पहाड़ के विशेषण,—अधुना कुचौ ते स्पर्धेते किल कनकाचलेन सार्धम्—भा० २।९—**आलुका** सोने का कड़ा या फूलदान,—**आह्वयः** धतूरे का पौधा,—**टङ्कः** सोने की कुल्हाड़ी—**दण्डम्**,—**दण्डकम्** (सोने के डंडे वाला) राजच्छत्र,—**पत्रम्** सोने का बना कान का आभूषण—जीवेति मंगलवचः परिहृत्य कोपात् कर्णे कृतं कनकपत्रमनालपन्त्या—चौर० १०,—**परागः** सुनहरी रज,—**रसः** 1. हड़ताल 2. पिघला हुआ सोना,—**सूत्रम्** सोने का हार,—काक्या कनकसूत्रेण कृष्णसर्पो विनाशितः—पंच० १।२०७,—**स्थली** स्वर्णभूमि, सोने की खान ।

कनकमय (वि०) [कनक+मयट्] सोने का बना हुआ, सुनहरी ।

कनखलम् [?] एक तीर्थस्थान (हरद्वार) का नाम तथा उसके साथ लगी पहाड़ियाँ, (तीर्थं कनखलं नाम गंङ्गाद्वारेऽस्ति पावनम्)—तस्माद्गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णां जह्नोः कन्याम्—मेघ० ५० ।

कनन (वि०) [कन्+युच्] एक आँख का तु० 'काण' ।

कनयति (ना० धा० पर०) कम करना, घटाना, छोटा करना, न्यून करना—कीर्ति नः कनयन्ति च—भट्टि० १८।२५ ।

कनिष्ठ (वि०) [अतिशयेन युवा अल्पो वा—कनादेशः—कन्+इष्ठन्] 1. सबसे छोटा, कम से कम 2. आयु में सबसे छोटा ।

कनिष्ठिका [कनिष्ठ+कन्+टाप्] सबसे छोटी अंगुली—कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासा—सुभा० ।

कनीनिका, कनीनी [कनीन+कन्+टाप्, इत्वम्—कन्+ईन्+ङीप्] 1. छोटी अंगुली—कन्नो 2. आँख की पुतली ।

कनीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [अयमनयोरतिशयेन युवा अल्पो वा कनादेशः, कन्+ईयसुन्, स्त्रियां ङीप्] 1. दो में से छोटा, अपेक्षाकृत कम 2. आयु में छोटा—कनीयान् भ्राता, कनीयसी भगिनी आदि ।

कनेरा [कन्+एरन्+टाप्] 1. वेश्या 2. हथिनी (तु० कणेरा) ।

कन्तुः [कन्+तु] 1. कामदेव, 2. हृदय (विचार और भावना का स्थान) 3. अनाज की खत्ती ।

कन्था [कम्+थन्+टाप्] थेगली लगा वस्त्र, गुदड़ी, झोली (जिसे संन्यासी धारण करते हैं)—जीर्णा कन्था ततः किम्—भर्तृ० ३।७४, १९।८६, शा० ४।५, १९, । सम०—**धारणम्** थेगली लगे कपड़े पहनना जैसा कि कुछ योगी करते हैं,—**धारिन्** (पुं०) धर्म-भिक्षु, योगी ।

कन्दः,—दम् [कन्द्+अच्] 1. गाँठदार जड़ 2. गाँठ—भर्तृ० ३।६९ (आलं० भी)—ज्ञानकन्दः 3. लहसुन 4. ग्रन्थि,—**दः** 1. बादल 2. कपूर । सम०—**मूलम्** मूली,—**सारम्** नन्दन-कानन, इन्द्र का उद्यान ।

कन्दट्टम् [कन्द्+अटन्] श्वेत कमल—तु० कन्दोट ।

कन्दरः,—रम् [कम्+दृ+अच्] गुफा, घाटी—किं कन्दाः कन्दरेभ्यः प्रलयमुपगताः—भर्तृ० ३।६९ वसुधाधरकन्दराभिसर्पी—विक्रम० १।१६, मेघ० ५६,—**रः** अंकुश, **रा,—री** गुफा, घाटी, खोखला स्थान । सम०—**आकारः** पहाड़ ।

कन्दर्पः [कं कुत्सितो दर्पो यस्मात्—ब० स०] 1. कामदेव—प्रजनश्चास्मि कंदर्पः—भग० १०।२८, कन्दर्प इव रूपेण—महा० 2. प्रेम । सम०—**कूपः** योनि,—**ज्वरः** काम ज्वर, आवेश, प्रबल इच्छा,—**दहनः** शिव,—**मुषलः**—**मुसलः** पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग,—**शृंखलः** 1. मेहन 2. रतिक्रिया का विशेष प्रकार, रतिबंध ।

कन्दलः,—लम् [कन्द्+अलच्] 1. नया अंकुर या अँखुवा उत्तर० ३।४० 2. झिड़की, निन्दा 3. गाल, गाल और कनपटी 4. अपशकुन 5. मधुर स्वर 6. केले का पेड़—कन्दलदलोल्लासाः पयोबिन्दवः—अमरु ४८,—**लः** 1. सोना 2. युद्ध, लड़ाई 3. (अतः) वाग्युद्ध, वादविवाद,—**लम्** कन्दल का फूल—विदलकन्दलकम्पनलालितः—शि० ६।३०, रघु० १३।२९ ।

कन्दली [कन्दल+ङीप्] 1. केले का पेड़—आरक्तराजिभिरियं कुसुमैर्नवकन्दली सलिलगर्भैः, कोपादन्तर्बाष्पे स्मरयति मां लोचने तस्याः । विक्रम० ४।५, मेघ० २१, ऋतु० २।५ 2. एक प्रकार का मृग 3. झंडा 4. कमलगट्टा या कमल का बीज । सम०—**कुसुमम्** कुकुरमुत्ता ।

कन्दुः (पुं० स्त्री०) [स्कन्द्+उ, सलोपश्च] पतीली, तंदूर।

कन्दुकः,—कम् [कम्+दा+डु+कन्] खेलने के लिए गेंद, —पातितोऽपि कराघातैरुत्पतत्येव कन्दुकः—भर्तृ० २।८५, कु० १।२९, ५।११, १९, रघु० १६।८३। सम०—लीला गेंद का खेल।

कन्दोटः (**ट्टः**) [कन्द+ओटन्] 1. श्वेत कमल, 2. नील कमल, (नीलोत्पल का प्रान्तीय रूप)—मोहमुकुलायमाननेत्रकन्दोटयुगलः - मा० ७।

कन्धरः [कं शिरो जलं वा धारयति—कम्+धृ+अच्] 1. गर्दन 2. 'जलधर' बादल,—**रा**—गर्दन—कन्धरां समपहाय कंधरां प्राप्य संप्रति जहास कस्यचित्—याज्ञ० २। २२०, अमरु १६, दे० 'उत्कंधर' भी।

कन्धिः [कं शिरो जलं वा धीयतेऽत्र—कम्+धा+कि] समुद्र; (स्त्री०) गर्दन।

कन्नम् [कद्+क्त] 1. पाप 2. मूर्छा, बेहोशी का दौरा।

कन्यका [कन्या+कन्, ह्रस्वता] 1. लड़की—संवद्धवैखानसकन्यकानि—रघु० १४।२८, ११।५३ 2. अविवाहित लड़की, कुमारी, कुँआरी या (अपरिणीता) तरुणी —गृहे गृहे पुरुषा कुलकन्यकाः समुद्वहन्ति—मा० ७, याज्ञ० १।१०५ 3. दशवर्षीय कन्या (अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी, दशमे कन्यका प्रोक्ता अत ऊर्ध्वं रजस्वला—शब्द०) 4. (अलं० शा० में) अनेक प्रकार की नायिकाओं में से एक, कुमारी कन्या (जो किसी काव्यकृति में मुख्य पात्र समझी जाती है) दे० 'अन्य स्त्री' के नी० 5. कन्या राशि। सम०—**छलः** फुसलाना—पैशाचः कन्यकाच्छलात्—याज्ञ० १।६१,—**जनः** कुमारियाँ, —विशुद्धमुग्धः कुलकन्यकाजनः मा० ७।१,—**जातः** कुमारी कन्या का पुत्र—याज्ञ० २।१२९ (=कानीन)।

कन्यसः [कन्य+सो+क] सबसे छोटा भाई—**सा** कानी उँगली,—**सी** सब से छोटी बहन।

कन्या [कन्+यक्+टाप्] 1. अविवाहित लड़की या पुत्री —रघु० १।५१, २।१०, ३।३३, मनु० १०।८ 2. दशवर्षीय कन्या 3. अक्षतयोनि, कुमारी—मनु० ८।३६७, ३।३३ 4. (सामान्य) स्त्री 5. छठी राशि अर्थात् कन्या राशि 6. दुर्गा 7. बड़ी इलायची। सम० —**अन्तः पुरम्** रनवास,—सुरक्षितेऽपि कन्यान्तःपुरे कश्चित्प्रविशति—पंच० १, महावी० २।५०,—**आट** (वि०) युवती लड़कियों का पीछा करने वाला (—**टः**) 1. घर का भीतरी कमरा 2. जो तरुणी कन्याओं के पीछे फिरता रहता है,—**कुब्जः** एक देश का नाम (—**ब्जम्**) भारत के उत्तर में एक प्राचीन नगर जो कि गंगा की सहायक नदी के किनारे स्थित है, वर्तमान कन्नौज,—**गतम्** कन्या राशि में गया हुआ नक्षत्र, —**ग्रहणम्** विवाह में कन्या को स्वीकार करना,—**दानम्** कन्या का विवाह करना,—**दूषणम्** कौमार्य भंग करना, —**दोषः** कन्या में दोष का होना, बदनामी (जैसे कि किसी रोग के कारण),—**धनम्** दहेज,—**पतिः** पुत्री का पति, दामाद, जामाता,—**पुत्रः** कुँआरी कन्या का पुत्र ('कानीन' कहलाता है),—**पुरम्** जनान-खाना,—**भर्तृ** (पुं०) 1. जामाता 2. कार्तिकेय,—**रत्नम्** अत्यन्त सुंदरी कन्या—कन्यारत्नमयोनिजन्म भवतामास्ते —महावी० १।३०,—**राशिः** कन्याराशि,—**वेदिन्** (पुं०)दामाद (जामाता)—याज्ञ० १।२६२,—**शुल्कम्** कन्या के मूल्य के रूप में कन्या के पिता को दिया गया धन, कन्या का क्रयमूल्य,—**स्वयंवरः** किसी कुमारी कन्या के द्वारा अपना पति चुनना,—**हरणम्** कौमार्यभंग के विचार से किसी तरुणी कन्या को फुसलाना —मनु० ३।३३।

कन्याका, कन्यिका [कन्या+कन्+टाप्, इत्वं वा] 1. तरुणी लड़की 2. कुमारी (अपरिणीता लड़की)।

कन्यामय (वि०) [कन्या+मयट्] कन्याओं वाला, कन्यास्वरूप रघु० ६।११, १६।८६,—**यम्** अन्तःपुर (जिसमें अधिकांश लड़कियाँ ही हों)।

कपटः,—टम् [के मूर्ध्नि पट इव आच्छादकः] जालसाजी, धोखादेही, चालाकी, प्रवंचना—कपटशतमयं क्षेत्रम-प्रत्ययानाम्—पंच० १।१९१, कपटानुसारकुशला —मृच्छ० ९।५। सम०—**तापसः** पाखण्डी संन्यासी, बनावटी साधु,—**पटु** (वि०) धोखा देने में चतुर, छलपूर्ण—छलयन् प्रजास्त्वमनृतेन कपटपटुरैन्द्रजालिकः —शि० १५।३५,—**प्रबन्धः** छल से भरी हुई चाल —हि० १,—**लेख्यम्** जाली दस्तावेज,—**वचनम्** धोखे की बात,—**वेश** (वि०) बनावटी भेस वाला, नकाबपोश (—**शः**) कपटवेशधारी।

कपटिकः [कपट+ठन्] बदमाश, छलिया।

कपर्दः,—कपर्दकः [पर्व्+क्विप्, वलोपः पर्, कस्य गंगाजलस्य परा पूरणेन दापयति शुध्यति -क+पर्+दैप्क, कपर्द+कन् वा] 1. कौड़ी 2. जटा (विशेषतः शिव का जटाजूट)—गंगा० २२।

कपर्दिका [कपर्दक+टाप्, इत्वम्] कौड़ी (जो सिक्के के रूप में प्रयुक्त होती है)—मित्राण्यमित्रतां यान्ति यस्य न स्युः कपर्दि (र्द) काः—पंच० २।९८।

कपर्दिन् (पुं०) [कपर्द+इनि] शिव की उपाधि।

कपाटः,—टम् [कं वातं पाटयति तद्गतिं रुणद्धि—तारा०, क+पट्+णिच्+अण्] 1. किवाड़ का फलक या दिला —कपाटवृक्षाः परिणद्धकन्धरः—रघु० ३।३४, स्वर्गद्वारकपाटपाटनपटुर्धर्मोऽपि नोपार्जितः—भर्तृ० ३।११ 2. दरवाजा—शि० ११।६०। सम०—**उद्घाटनम्** दरवाजा खोलना,—**घ्नः** सेंध लगाने वाला, चोर, —**सन्धिः** किवाड़ों के दिलों का जोड़।

कपालः,—लम् [कं शिरो जलं वा पालयति—क+पाल्

+अण्] 1. खोपड़ी, खोपड़ी की हड्डी—चूडापीड कपालसङ्कुलगलन्मन्दाकिनीवारयः– मा० १।२, रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः–भर्तृ० २।९५ 2. टूटे बर्तन का खंड, ठीकरा, कपालेन भिक्षार्थी —मनु० ८।९३ 3. समुदाय, संचय 4. भिक्षुक का कटोरा—मनु० ६।४४ 5. प्याला, बर्तन—पंचकपालः 6. ढक्कन। सम०—पाणिः,– भृत्,—मालिन्, —शिरस् (पुं०) शिव की उपाधि,—मालिनी दुर्गादेवी।

कपालिका [कपाल+कन्+टाप्, इत्वम्] ठीकरा—मनु० ४।७८, ८।२५०।

कपालिन् (वि०) [कपाल+इनि] 1. खोपड़ी रखने वाला, –याज्ञ० ३।२४३ 2. खोपड़ी पहने हुए—कपालि वा स्यादथवेन्दुशेखरम् (वपुः)—कु० ५।७८; (पुं०) 1. शिव का विशेषण,— करं कर्णे कुर्वंत्यपि किल कपालिप्रभृतयः—गंगा० २८ 2. नीच जाति का पुरुष (ब्राह्मण माता तथा मछवे पिता की सन्तान)।

कपिः [कम्प्+इ, नलोपः] 1. लंगूर, बन्दर—कपेरत्रासिपुर्नादात्—भट्टि० ९।११ 2. हाथी। सम०—आख्यः धूप, लोबान आदि,—इज्यः 1. राम का विशेषण, 2. सुग्रीव का विशेषण,— इन्द्रः (बन्दरों का मुखिया) 1. हनुमान का विशेषण— नश्यंति ददर्श वृंदानि कपीन्द्र —भट्टि० १०।१२ 2. सुग्रीव का विशेषण— व्यर्थं यत्र कपीन्द्रसख्यमपि मे—उत्तर० ३।४५ 3. जांबवान् का विशेषण,—कच्छुः (स्त्री०) एक प्रकार का पौधा, केवांच,—केतनः,—ध्वजः अर्जुन का नाम, भग० १। २०,—जः—तैलम्.— नामन् (नपुं०) शिलाजीत, गुग्गुल,— प्रभुः राम का विशेषण, लोहम् पीतल।

कपिञ्जलः [क+पिज्+कलच्] 1. पपीहा 2. टिटिहिरी।

कपित्थः [कपि+स्था+क] कैथ का वृक्ष,—त्थम् कैथ का फल। सम०—आस्यः एक प्रकार का बन्दर।

कपिल (वि०) [कम्प्+इलच्, पादेशः] 1. भूरे रंग का, आरक्त—वाताय कपिला विद्युत्—महा० 2. भूरे बालों का—मनु० ३।८ (कुल्लू०—कपिलकेशा),—लः 1. एक ऋषि का नाम (सगर के साठ हजार पुत्र थे, अपने पिता के यज्ञीय घोड़े को ढूंढते हुए ये कपिलमुनि से लड़ पड़े और उन पर घोड़ा चुराने का आरोप लगाया इससे क्रुद्ध हो कपिल ने इन सब को भस्म कर दिया—दे० उत्तर० १।२३) यह सांख्य दर्शन का प्रवर्तक समझा जाता है 2. कुत्ता 3. लोबान 4. धूप 5. अग्नि का एक रूप 6. भूरा रंग,—ला 1. भूरी गाय 2. एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य 3. एक प्रकार का शहतीर 4. जोंक। सम०—अश्वः इन्द्र की उपाधि, –द्युतिः सूर्य,—धारा गंगा की उपाधि,—स्मृतिः (स्त्री०) कपिल मुनि का सांख्य-सूत्र।

कपिश (वि०) [कपि+श] 1. भूरे रंग का, सुनहरी 2. आरक्त—(छायाः) संध्यापयोदकपिशाः पिशिताशनानाम् —श० ३।२७, तोये कांचनपद्मरेणुकपिशे— ७।१२, विक्रम० २।७, मेघ० २१, रघु० १२।२८,—शः 1. भूरा रंग 2. शिलाजीत या लोबान,—शा 1. माधवी लता 2. एक नदी का नाम।

कपिशित (वि०) [कपिश+इतच्] भूरे रंग का—शि० ६।१५।

कपुच्छलम्, कपुष्टिका [कस्य शिरसः पुच्छमिव लाति—क +पुच्छ+ला+क—कस्य शिरसः पुष्टचै पोषणाय कायति— क+पुष्टि+कै+क+टाप्] 1. मुण्डन-संस्कार 2. सिर के दोनों ओर रक्खे हुए केशसमूह।

कपूय (वि०) [कुत्सितं पूयते—कु+पूय्+अच्, पृषो० उलोपः] अधम, निकम्मा, कमीना, नीच।

कपोतः [को वातः पोत इव यस्य—ब० स०] 1. पारावत, कबूतर 2. पक्षी। सम० - अङ्घ्रिः एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य,—अञ्जनम् सुर्मा,— अरिः बाज, शिकरा, —चरण एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य,—पालिका, —पाली (स्त्री०) चिड़ियाघर, कबूतरों का दड़बा, कबूतरों की छतरी,—राजः कबूतरों का राजा,— सारम् सुर्मा,— हस्तः, डर या अनुनय-विनय के अवसर पर हाथ जोड़ने का ढंग।

कपोतक [कपोत+कन्] छोटा कबूतर,—कम् सुर्मा।

कपोलः [कपि+ओलच्] गाल— क्षामक्षामकपोलमाननम् —श० ३।१०, ६।४, रघु० ४।६८। सम० · काषः जिससे गाल मसले जायें – कि० ५।३६,· फलकः चौड़े गाल, – भित्तिः (स्त्री०) कनपटी और गाल, चौड़ा गण्डस्थल,— तु० गण्डभित्ति,— रागः गालों की लाली।

कफः [केन जलेन फलति—फल्+ड तारा०] 1. बलगम, कफ या श्लेष्मा (शरीर के तीन रसों में से एक—शेष दो हैं— वात और पित्त) कफापचयादारोग्यैकमूलमाशयाग्निदीप्तिः—दश० १६०, प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्तैः कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते—उद्भट 2. रसीला झाग, फेन। सम०—अरिः सोंठ,—कूर्चिका लार, थूक,—क्षयः फेफड़े का क्षय रोग,—घ्न,— नाशन, —हर (वि०) कफ को दूर करने वाला, कफ नाशक, - ज्वरः बलगम अधिक हो जाने से उत्पन्न बुखार।

कफणिः, कफोणिः (स्त्री० - णी) [केन सुखेन फणति स्फुरति—क+फण्+इन्, क+फण् (स्फुर्)+इन् पृषो० कफोणि+ङीप्] कोहनी।

कफल (वि०) [कफ+लच्] जिसे बलगम अधिक आता हो, कफप्रकृति।

कफिन् (वि०) (स्त्री०— नी) [कफ+इनि] कफ की अधिकता से पीड़ित, कफग्रस्त।

कबन्धः,—धम् [कं मुखं बध्नाति क+बन्ध्+अण्] सिर-

रहित धड़ (विशेषतः जब कि उसमें प्राण बाकी हों) (स्त्रं) नृत्यत्कबन्धं समरे ददर्श—रघु० ७।५१, १२। ४९,—धः 1. पेट 2. बादल 3. धूमकेतु 4. राहु 5. जल (इस अर्थ में यह शब्द नपुं० भी होता है) —शि० १६।६७ 6. रामायण में वर्णित बलवान् राक्षस (जब राम और लक्ष्मण दण्डक वन में रहते थे तो एक बार कवन्ध राक्षस ने इन पर आक्रमण किया परन्तु युद्ध में मारा गया—कहते हैं कि इन्द्र द्वारा शाप दिये जाने से उसे राक्षस का रूप धारण करना पड़ा और जब तक कि राम और लक्ष्मण ने नहीं मारा वह राक्षस बना रहा)।

कबर,—री (प्रायः कवर,—री लिखे जाते हैं)।

कबित्थः [कपित्थः—पृषो० साधुः] कैथ का वृक्ष।

कम् (चुरा० आ०—कामयते, कामित, कान्त) 1. प्रेम करना, अनुरक्त होना, प्रेम करने लगना—कन्ये कामयमानं मां न त्वं कामयसे कथम्—काव्या०, १।६३, (ग्राम्यता का एक उदाहरण)—कलहंसको मन्दारिकां कामयते—मा० १ 2. प्रबल लालसा करना, कामना करना, इच्छा करना—न वीरसू शब्दमकामयेताम् -रघु० १४।४, निष्क्रष्टुमर्थं चकमे कुबेरात्—५।२६, ४।२८, १०।५३, भट्टि० १४।८२, अभि—1. प्रेम करना 2. चाहना, नि—,प्र—अधिक चाहना, प्रबल इच्छा करना।

कमठः [कम्+अठन्] 1. कछुवा—संप्राप्तः कमठः स चापि नियतं नष्टस्त्वदादेशतः—पंच० २।१८४ 2. बाँस 3. जल का घड़ा,—ठी कछुवी या छोटा कछुवा। सम०—पतिः कछुवों का स्वामी।

कमण्डलुः—लु [कस्य जलस्य मण्डं लाति क+मण्ड+ला+कु] (लकड़ी या मिट्टी का) जलपात्र जो संन्यासी रखते हैं,—कमण्डलूपमोऽमात्यस्तनुत्यागो बहुग्रहः—हि० २।९१, कमण्डलुनोदकं सिक्त्वा—मनु० २।६४, याज्ञ० १।१३३। सम०—तरुः वह वृक्ष जिसके कमंडलु बनते हैं,—धरः शिव का विशेषण।

कमन (वि०) [कम्+ल्युट्] 1. विषयी, लम्पट 2. मनोहर सुन्दर, -नः 1. कामदेव 2. अशोक वृक्ष 3. ब्रह्मा।

कमनीय (वि०) [कम्+अनीयर्] 1. जो चाहा जाय, चाहने के योग्य,—अनन्यनारीकमनीयमङ्कम्—कु० १।३७ 2. मनोहर, सुहावना, सुन्दर—शाखावसक्तकमनीयपरिच्छदानां—कि० ७।४०, तदपि कमनीयं वपुरिदम्—श० ३।९ अने० पा०।

कमर (वि०) [कम्+अरच्] विषयी, इच्छुक।

कमलम् [कं जलमलति भूषयति कम्+अल्+अच्] 1. कमल—कमलमनम्भसि कमले च कुवलये तानि कनकलतिकायाम्—काव्य० १०, इसी प्रकार हस्त°, नेत्र° चरण° आदि 2. जल 3. ताँबा 4. दवादारु, औषधि 5. सारस पक्षी 6. मूत्राशय,—लः 1. सारस पक्षी 2. एक प्रकार का मृग। सम०—अक्षी (स्त्री) कमल जैसी आँखों वाली स्त्री,—आकरः 1. कमलों का समूह 2. कमलों से भरा सरोवर,—आलया लक्ष्मी की उपाधि—मुद्रा० २,—आसनः कमल पर स्थित, ब्रह्मा—कान्तानि पूर्वं कमलासनेन—कु० ७।७०,—ईक्षणा कमल जैसे नेत्रों वाली स्त्री,—उत्तरम् कुसुंभ का फूल,—खंडम् कमलों का समूह,—जः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. रोहिणी नाम का नक्षत्र,—जन्मन् (पुं०)—भवः,—योनिः,—संभवः कमल से उत्पन्न ब्रह्मा की उपाधि।

कमलकम् [कमल+कन्] छोटा कमल।

कमला [कमल+अच्+टाप्] 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. श्रेष्ठ स्त्री। सम०—पतिः,—सखः विष्णु की उपाधि।

कमलिनी [कमल+इनि+ङीप्] 1. कमल का पौधा;—साऽभ्रेऽह्नीव स्थलकमलिनीं न प्रबुद्धां न सुप्ताम्—मेघ० ९०, रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः—श० ४।१०, रघु० ९।३०, १९।११ 2. कमलों का समूह 3. कमल-स्थली (जहाँ कमल बहुतायत से हों)।

कमा [कम्+णिङ्+अ+टाप्] सौंदर्य, मनोहरता।

कमितृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [कम्+तृच्] विषयी, लम्पट।

कम्प् (भ्वा० आ०—कम्पते, कम्पित) हिलना-डुलना, काँपना, इधर-उधर आना-जाना (आलं० भी)—चकम्पे तीर्णलौहित्ये तस्मिन् प्राग्ज्योतिषेश्वरः—रघु० ४।८१ मृच्छ० ४।८, भट्टि० १४।३१, १५।७०, अनु—तरस खाना, करुणा करना—नीयमाना भुजिष्यात्वं कम्पसे नानुकम्पसे—मृच्छ० ४।८, किं वराकीं नानुकम्पसे मा० १०, (प्रेर०), तरस खाना—कु० ४।३९, आ—हिलना-डुलना, काँपना; (प्रेर०) हिलाना-डुलाना, कँपाना—अनोकहाकम्पितपुष्पगन्धी—रघु० २।१३, ऋतु० ६। २२, प्र हिलना, काँपना—प्राकम्पत भुजः सव्यः—रामा०, प्राकम्पत महाशैलः—महा०, (प्रे०) हिलाना, चलाना—भट्टि० १५।२३, वि—हिलना, काँपना,—किं यासि बालकदलीव विकम्पमाना—मृच्छ० १।२०, स्फुरति नयनं वामो बाहुर्मुहुश्च विकम्पते—९।३० भग० २।३१; (प्रेर०) हिलाना-डुलाना—रघु० ११।१९, ऋतु० २।१७, समनु—तरस खाना, करुणा करना—रघु० ९।१४।

कम्पः [कम्प्+घञ्] 1. हिल-जुल, थरथराहट—कम्पेन किंचित्प्रतिगृह्य मूर्ध्नः—रघु० १३।४४ जरा सा सिर हिला कर या मोड़ कर, १३।२८, कु० ७।४६ भयकम्पः, विद्युत्कम्पः आदि 2. स्वरित स्वर का रूपान्तर,—पा हिलाना, चलायमान करना, थरथराहट। सम०—अन्वित (वि०) कम्पायमान, क्षुब्ध,—लक्ष्मन् (पुं०) वायु।

कम्पन (वि०) [कम्प्+युच्] कम्पायमान, हिलने वाला, —नः शिशिर ऋतु (नवम्बर, दिसम्बर)—**नम्** 1. हिलना, कंपकंपी 2. लड़खड़ाता उच्चारण।

कम्पाकः [कम्पया चलनेन कायति—कम्पा+कै+क] वायु।

कम्पिल्ल=कांपिल्ल।

कम्प्र (वि०) [कम्प्+र] हिलने वाला, कम्पायमान, चलायमान, हलचल पैदा करने वाला—विधाय कम्प्राणि मुखानि कं प्रति - नै० १।१४२ कम्प्रा शाखा —सिद्धा०।

कम्ब् (भ्वा० पर०—कम्बति, कम्बित) जाना, चलना—फिरना।

कम्बर (वि०) [कम्ब्+अरन्] रंगबिरंगा,—**रः** चित्र-विचित्र रंग।

कम्बलः [कम्+कल, बुकागमः] 1. (ऊनी) कंबल—कम्बल-वन्तं न बाधते शीतम् सुभा०, कम्बलावृतेन तेन —हि० ३ 2. सास्ना, गाय बैल के गले में नीचे लटकने वाली खाल 3. एक प्रकार का मृग 4. ऊपर से पहनने का ऊनी वस्त्र 5. दीवार, —**लम्** जल। सम० —**वाह्यकम्** बहली (चारों ओर मोटे कपड़े से ढकी हुई गाड़ी जिसमें बैल जुते हों)।

कम्बलिका [कम्बल+ई+कन्+ह्रस्वः, टाप्] 1. एक छोटा कंबल 2. एक प्रकार की मृगी।

कम्बलिन् (वि०) [कंबल+इनि] कम्बल से ढका हुआ, —(पुं०) बैल, बलीवर्द। सम०—**वाह्यकम्** बहली (मोटे कंबल से ढकी गाड़ी जिसमें बैल जुते हों), बैलगाड़ी।

कम्बी (वी) (स्त्री०) [कम्+विन् वा० ङीप्] कड़छी, चम्मच।

कम्बु (वि०) (स्त्री० बु या बू) चितकबरा, रंगबिरंगा, —**बुः**, - **बु** (पुं०, नपुं०) शंख, सीपी—स्मरस्य कम्बुः किमयं चकास्ति दिवि त्रिलोकी जयवादनीयः नै० २२।२२,—**बुः** 1. हाथी 2. गर्दन 3. चित्रविचित्र रंग 4. शिरा, शरीर की नस 5. कड़ा 6. नलीनुमा हड्डी। सम०— **कंठी** शंख जैसी गर्दन वाली स्त्री, —**ग्रीवा** 1. शंखनुमा गर्दन (अर्थात् शंख की भांति तीन रेखाओं से युक्त—यह चिह्न सौभाग्यसूचक समझा जाता है) 2. स्त्री जिसकी गर्दन शंख जैसी हो।

कम्बोजः [कम्ब्+ओज] 1. शंख 2. एक प्रकार का हाथी 3. (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासी—कम्बोजाः समरे सोढुं तस्य वीर्यमनीश्वराः—रघु० ४।६९ अने० पा०।

कम्र (वि०) [कम्+र] मनोहर, सुन्दर।

कर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [प्रायः समास के अंत में] [करोति, कीर्यते अनेन इति, कृ (कॄ)+अप्] जो करता है या कराता है, दुःख°, सुख°, भय°, —**रः** 1. हाथ—करं व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरम् —श० १।२४ 2. प्रकाश-किरण, रश्मिमाला—यमुद्धर्तुं पूषा व्यवसित इवालम्बितकरः—विक्रम० ४।३४, प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता, अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि—शि० ९।६ (यहाँ शब्द प्रथम अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है) 3. हाथी की सूंड,—सेकः सीकरिणा करेण विहितः—उत्तर० ३।१६ भर्तृ० ३।२० 4. लगानं, शुल्क, भेंट—युवा कराक्रान्तमहीभृदुच्चकैः-संशयं संप्रति तेजसा रविः—शि० १।७० (यहाँ 'कर' का अर्थ 'किरण' भी है) (ददौ) अपरान्तमहीपाल-व्याजेन रघवे करम् रघु० ४।५८ मनु ७।१२८ 5. ओला 6. २४ अंगूठे की माप 7. हस्त नाम नक्षत्र।

सम० —**अग्रम्** 1. हाथ का अगला भाग 2. हाथी के सूंड़ की नोक, —**आघातः** हाथ से की गई चोट,—**आरोटः** अंगूठी,—**आलम्बः** हाथ से सहारा देना, सहायक बनना —**आस्फोटः** 1. छाती 2. थप्पड़,—**कंटकः**,—**कम्** नाखून, —**कमलं**,—**पङ्कजम्**, **पद्मम्** कमल जैसा हाथ, सुन्दर हाथ—करकमलवितीर्णैरम्बुनीवारशष्पैः—उत्तर० ३।२५, —**कलशः**,—**शम्** हाथ की अंजलि (पानी लेने के लिए),—**किसलयः**,—**यम्** 1. कोंपल जैसा हाथ, कोमल हाथ—करकिसलयतालैर्मुग्धया नर्त्यमानम् —उत्तर० ३।१९, ऋतु० ६।३० 2. अंगुलि,—**कोषः** हथेली का गर्त, हस्तांजलि—°पेयमंबु—घट० २२, **ग्रहः**,—**ग्रहणम्** 1. लगान या शुल्क लेना 2. विवाह में हाथ पकड़ना 3. विवाह, —**ग्राहः** 1. पति 2. शुल्क लेने वाला,—**जः** नाखून—तीक्ष्णकरजक्षुण्णात्—वेणी० ४।१, इसी प्रकार अमरु ८५, (**जम्**) एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य,—**जालम्** प्रकाश की धारा,—**तलः** हथेली—बनदेवताकरतलैः - श० ४।४, करतलगतमपि नश्यति यस्य तु भवितव्यता नास्ति—पंच० २।१२४, °**आमलकम्** (शा०) हथेली पर रक्खा हुआ आँवला—(आलं०) प्रत्यक्षीकरण की सुगमता तथा स्पष्टता जैसा कि हथेली पर रक्खे फल के विषय में स्वाभाविक है—तु० करतलामलकफलवदखिलं जगदालोकयताम्—का० ४३, °**स्थ** (वि०) हथेली पर रक्खा हुआ,—**तालः**,—**ताल-कम्** 1. तालियाँ बजाना—स जहास दत्तकरताल-मुच्चकैः शि० १५।३९ 2. एक प्रकार का वाद्य-यंत्र, संभवतः झांझ,— **तालिका**,— **ताली** 1. तालियाँ बजाना —उच्चाटनीयः करतालिकानां दानादिदानीं भवतीभिरेषः —नै० ३।७ 2. तालियाँ बजा कर समय बिताना, —**तोया** एक नदी का नाम, —**द** (वि०) 1. लगान या शुल्क देनेवाला 2. सहायक—करदीकृताखिलनृपां मेदिनीम्—वेणी० ६।१८,—**पत्रम्** आरा,—**पत्रिका** स्नान

या जल-क्रीड़ा करते समय जल उछालना,—**पल्लवः** 1. कोमल हाथ 2. अंगुलि—तु० °किसलय,—**पालः,** —**पालिका,** 1. तलवार 2. कुदाली,—**पीडनम्** विवाह तु० पाणिपीडन,—**पुटः** दोनों हाथ मिला कर (दोनों की भांति) बनाई हुई अंजलि,—**पृष्ठम्** हथेली की पीठ,—**बालः,—वालः** 1. तलवार—अघोरघंटः करवालपाणिर्व्यापादितः—मा० ९, म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्—गीत० १ 2. नाखून,—**भारः** लगान या शुल्क की भारी राशि,—**भूः** नाखून,—**भूषणम्** कड़ा या कंकण आदि कलाई में पहनने का गहना,—**मालः** धूआँ,—**मुक्तम्** वड़ा हथियार—दे० आयुध,—**रुहः** 1. नाखून—अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः—श० २।२०, मेघ० ९६ 2. तलवार,—**वीरः,—वीरकः** 1. तलवार या खड्ग 2. कब्रिस्तान 3. चोदि देश का एक नगर 4. कनेर,—**शाखा** अंगुलि,—**शीकरः** हाथी की सूंड़ द्वारा फेंका हुआ पानी,—**शूकः** नाखून,—**सादः**—किरणों का मंद पड़ जाना,—**सूत्रम्** कंगना या विवाह-सूत्र जो कलाई में बांधा जाता है,—**स्थालिन्** (पुं०) शिव,—**स्वनः** तालियां बजाना।

करकः,—कम् [किरति करोति वा जलमत्र कॄ (कृ)+वुन्] (संन्यासी का) जलपात्र—का० ४१,—**कः** अनार का वृक्ष,—**कः,—कम्,**—का ओला,—तान्कुर्वीथास्तुमुलकरकावृष्टिपातावकीर्णान्-मेघ० ५४, भामि० १।३५,। सम०—**अम्भस्** (पुं०) नारियल का पेड़,—**आसारः** ओलों की बौछार,—**जम्** पानी,—**पात्रिका** संन्यासियों का जलपात्र।

करङ्कः [कस्य रङ्क इव ष० त०] 1. अस्थिपंजर 2. खोपड़ी—प्रेत-रङ्कः करङ्कादङ्कस्थादस्थिसंस्थं स्थपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति—मा० ५।१६, ५।१९ 3. (नारियल का बना) छोटा पात्र,छोटा बक्स या डिब्बा—जैसा कि 'ताम्बूलकरङ्क वाहिनी' (कादम्बरी में प्रयुक्त)।

करञ्जः [कं शिरोजलं वा रञ्जयति—तारा०] एक वृक्ष का नाम (इससे औषधियाँ तैयार की जाती हैं)।

करटः [किरति मंदम्—कॄ+अटन्] 1. हाथी का गंडस्थल 2. कुसुम्भ का फूल 3. कौवा—शा० ४।१९ 4. नास्तिक, ईश्वर और वेद में विश्वास न रखने वाला 5. पतित ब्राह्मण।

करटकः [करट+कन्] 1. कौवा—मृच्छ० ७ 2. चौर्य कला व विज्ञान का प्रवर्तक कर्णीरथ 3. हि० और पंच० में गीदड़ का नाम।

करटिन् (पुं०) [करट+इनि] हाथी—दिगन्ते श्रूयन्ते मदमलिनगण्डाः करटिनः—भामि० १।२.।

कर (रे) टुः [कॄ+अटु, के जले वायौ वा रेटति—क+रेट्+कु] एक प्रकार का पक्षी, सारस।

करणम् [कृ+ल्युट्] 1. करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना, परहित°, संध्या°, प्रिय° आदि 2. कृत्य, कार्य 3. धार्मिक कृत्य 4. व्यवसाय, धंधा 5. इन्द्रिय—वपुषा करणोज्झितेन सा निपतन्ती गतिमप्यपातयत्—रघु० ८।३८, ४२, पटुकरणैः प्राणिभिः—मेघ० ५, रघु० १४।५० 6. शरीर—उपमानमभूद्विलासिनां करणं यत्तव कान्तिमत्तया—कु० ४।५ 7. कार्य का साधन या उपाय—उपमितिकरणमुपमानम्—तर्क सं० 8. (तर्क० में) साधनविषयक हेतु जिसकी परिभाषा है—व्यापारवदसाधारणं कारणं करणम् 9. कारण या प्रयोजन 10. (व्या० में) करण कारक द्वारा अभिव्यक्त अर्थ—साधकतमं करणम्—पा. १।४।४२ या क्रियायाः परिनिष्पत्तिर्यद्व्यापारादनन्तरम्, विवक्ष्यते यदा यत्र करणं तत्तदा स्मृतम् 11. (विधि में) दस्तावेज, तमस्सुक, लिखित प्रमाण—मनु० ८।५१,५२, १५४ 12. लयात्मक विरामविशेष, समय काटने के लिए ताली बजाना—कु० ६।४० 13. (ज्योतिष में) दिन का एक भाग (यह करण गिनती में ११ हैं)। सम०—**अधिपः** आत्मा,—**ग्रामः** इन्द्रियों का समूह—**त्राणम्** सिर।

करण्डः [कृ+अण्डन्] (बांस की बनी) छोटी डलिया या टोकरी—करण्डपीडिततनोः भोगिनः—भर्तृ० २।८४, सर्वमायाकरण्डम् १।७७ 2. मधुमक्खियों का छत्ता 3. तलवार 4. एक प्रकार की बत्तख, कारण्डव।

करण्डिका, करण्डी (स्त्री०) [करण्ड+ङीष्, टाप्, ह्रस्व] बांस का बना छोटा सन्दूक, बांस की पिटारी।

करन्धय (वि०) [कर+धे+खश्, मुम्] हाथ चूमने वाला।

करभः [कृ+अभच्] 1. हाथ की पीठ (कलाई से लेकर नाखूनों तक)—मूलहस्त; जैसा कि 'करभोपमोरुः—रघु० ६।८३ में, दे० नी० करभोरु 2. हाथी की सूंड़ 3. हाथी का बच्चा 4. ऊँट का बच्चा 5. ऊँट 6. एक सुगंधित द्रव्य। सम०—**ऊरूः** (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी जंघाएँ हाथ के अग्रभाग की पीठ से मिलती जुलती हैं—अङ्के निधाय करभोरु यथासुखं ते—श० ३।२१, शि० १०।६९—अमरु ६९, (दूसरी व्याख्या के अनुसार)—जिसकी जंघाएँ हाथी के सूंड़ से मिलती जुलती हैं।

करभकः [करभ+कन्] ऊँट।

करभिन् (पुं०) [करभ+इनि] हाथी।

करम्ब, करम्बित (वि०)[कृ+अम्बच्, करम्ब+इतच् च] 1. मिश्रित, मिला-जुला, चित्रविचित्र, रंगबिरंगा,—प्रकाममादित्यमवाप्य कण्टकैः करम्बिता मोदभरं विवृण्वती—नै० १।११५, स्फुटतरफेनकदम्बकरम्बितमिव यमुनाजलपूरम् गीत० ११ 2. बैठाया हुआ जड़ा हुआ।

करम्भः (बः) [क+रम्भ्+घञ्] 1. दही मिला आटा या अन्य भोज्यपदार्थ 2. कीचड़—करम्भबालुकाता-

पान्—मनु० १२।७६, (यहाँ इस शब्द की अनेक व्याख्याएँ की गई हैं, परन्तु मेधातिथि इसका अर्थ 'कीचड़' ही मानते हैं)।

करहाटः [कर+हट्+णिच्+अण्] 1. एक देश का नाम (संभवतः सतारा जिले का वर्तमान कर्हाद),—करहाटपतेः पुत्री त्रिजगन्नेत्रकार्मणम्—विक्रमांक० ८।२ 2. कमल का डंठल या रेशेदार जड़।

कराल (वि०) [कर+आ+ला+क] 1. भयानक, भीषण, डरावना, भयंकर—उत्तर० ५।५, ६।१, मा० ३, भग० ११।२३, २५, २७, रघु० १२।९८, महावी० ३।४८ 2. जंभाई लेता हुआ, पूर्णतया खोलता हुआ—उत्तर० ५।६ 3. बड़ा, विस्तृत, ऊँचा, उत्तुंग 4. असम, जिसमें झटका या हचकोला लगे, नोकदार—वेणी० १।६, मा० १।३८,—ला दुर्गा का प्रचण्ड रूप, °आयतनम्, न करालोपहाराच्च फलमन्यद्विभाव्यते—मा० ४।३३,। सम०—दंष्ट्र डरावने दाँतों वाला,—वदना दुर्गा की उपाधि।

करालिकः [कराणां करसदृशशाखानाम् आलिः श्रेणी यत्र—ब० स० कप्] 1. वृक्ष 2. तलवार।

करिका [कर+अच्+ङीप्+कन्, टाप् ह्रस्वः] खरोंच, नखाघात से हुआ घाव।

करिणी (स्त्री०) [कर+इनि+ङीप्] हथिनी—कथमेत्य मतिविपर्ययं करिणी पङ्कमिवावसीदति—कि० २।६, भामि० १।२।

करिन् (पुं०) [कर+इनि] 1. हाथी 2. (गण०) आठ की संख्या। सम०—इन्द्रः,—ईश्वरः,—वरः बड़ा हाथी, विशालकाय हाथी—सदादानः पग्क्षिीणः शस्त एव करीश्वरः—पंच० २।७०, दूरीकृताः करिवरेण मदान्धबुद्ध्या—नीति० २,—कुंभः हाथी के मस्तक का अग्रभाग—भामि० २।१७७,—गर्जितम् हाथी की चिंघाड़, (बृंहितं करिगर्जितम्—अमर०),—दंतः हाथी दांत,—पः महावत,—पोतः,—शावः,—शावकः हाथी का बच्चा,—बंधः स्तंभ जिससे हाथी बांधा जाय—माचलः सिंह,—मुखः गणेश का विशेषण,—वरः=°इन्द्रः,—वैजयन्ती (पुं०) झंडा जो हाथी के द्वारा ले जाया जा रहा हो,—स्कंधः हाथियों का समूह।

करीरः [कृ+ईरन्] 1. बांस का अंकुर 2. अंकुर—आनिन्यिरे वंशकरीरनीलैः—शि० ४।१४ 3. कांटेदार वृक्ष जो मरुस्थल में पैदा होता है तथा जिसे ऊंट खाते हैं,—पत्रं नैव यदा करीरविपटे दोषो वसन्तस्य किम्—भर्तृ० २।९३, तु०—किं पुष्पैः किं फलैस्तस्य करीरस्य दुरात्मनः, येन वृद्धिं समासाद्य न कृतः पत्रसंग्रहः।—सुभा०, 4. पानी का घड़ा।

करीषः,—षम् [कृ+ईषन्] सूखा गोबर। सम०—अग्निः सूखे गोबर या कंडों की आग।

करीषङ्कषा [करीष+कष्+खच्, मुम्] प्रबल वायु या आंधी।

करीषिणी [करीष+इनि+ङीप्] संपत्ति की अधिष्ठात्री देवी।

करुण (वि०) [करोति मनः आनुकूल्याय, कृ+उनन्—तारा०] कोमल, मार्मिक, दयनीय, करुणाजनक, शोचनीय—करुणध्वनिः—उत्तर० १, शि० ९।६७, विफलकरुणैरार्यचरितैः—उत्तर० १।२८,—णः 1. दया, अनुकम्पा, दयालुता 2. करुण रस, शोक, रंज (आठ या नौ रसों में से एक)—पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः—उत्तर० ३।१, १३, विलपन्······ करुणार्थग्रथितं प्रियां प्रति—रघु० ८।७०,। सम०—मल्ली मल्लिका का पौधा,—विप्रलम्भः (अलं० शा० में) वियुक्तावस्था में प्रेम-भावना।

करुणा [करुण+टाप्] अनुकंपा, दया, दयालुता—प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा मेघ० ९३, इसी प्रकार 'सकरुण=सदय' तथा "अकरुण=निर्दय"। सम०—आर्द्र (वि०) कोमल-हृदय, दया से पसीजा हुआ, संवेदनशील,—निधिः दया का भण्डार,—पर,—मय (वि०) अत्यन्त कृपालु,—विमुख (वि०) निर्दय, क्रूर—करुणाविमुखेन मृत्युना—रघु० ८।६७।

करेटः [करे+अट्+अच्, अलुक् स०] अंगुली का नाखून।

करेणुः [कृ+एणु—अथवा के मस्तके रेणुरस्य तारा०] 1. हाथी,—करेणुरारोहयते निषादिनम्—शि० १२।५, ५।४८ 2. कर्णिकार वृक्ष,—णुः (स्त्री०) 1. हथिनी—ददौ रसात्पंकजरेणुगन्धि गजाय गण्डूषजलं करेणुः कु० ३।३७, रघु० १६।१६ 2. पालकाप्य की माता। सम०—भूः,—सुतः हस्तिविज्ञान का प्रवर्तक पालकाप्य।

करोटम्, करोटिः (स्त्री०) [क+रुट्+अच्, इन वा] 1. खोपड़ी—महावी० ५।१९ 2. कटोरा या पात्र।

कर्कः [कृ+क] 1. कैंकड़ा 2. कर्क राशि, चतुर्थराशि 3. आग 4. जलकुंभ 5. दर्पण 6. सफ़ेद घोड़ा।

कर्कटः,—टकः [कर्क्+अटन्, स्वार्थे कन् च] 1. कैंकड़ा 2. कर्कराशि, चतुर्थराशि, 3. वृत्त, घेरा।

कर्कटिः,—टी (स्त्री०) [कर+कट+इन्, शक० पररूपम्; ङीप्] एक प्रकार की ककड़ी।

कर्कन्धुः,—धूः [कर्कं कण्टकं दधाति —धा+कू] 1. उन्नाव का पेड़—कर्कन्धूफलपाकमिश्रपचनामोदः परिस्तीर्यते—उत्तर० ४।१, कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसंध्या—श० ४, अने० पा० 2. इस वृक्ष का फल—याज्ञ० १।२५०।

कर्कर (वि०) [कर्क+रा+क] 1. कठोर, ठोस 2. दृढ़,—रः 1. हथौड़ा 2. दर्पण 3. हड्डी, (खोपड़ी का) भग्न टुकड़ा, खंड,—मा० ५।१९ 4. फीता या चमड़े की

पेटी। सम०—अक्षः हिलती पूंछ वाला (खजन) पक्षी,—अंगः खंजन पक्षी,—अंधुकः अंधा कुआं, तु०, अंधकूप।

कर्कराटुः [कर्कं हासं रटति प्रकाशयति, कर्क+रट्+कुञ्] तिरछी दृष्टि, कनखी, कटाक्ष।

कर्करालः [कर्कर+अल्+अच्] घुंघराले बाल, चूर्णकुन्तल।

कर्करी [कर्कर+ङीप्] ऐसा जलपात्र जिसकी तली में चलनी की भाँति छिद्र हों।

कर्कश (वि०) [कर्क+श] 1. कठोर, कड़ा (विप० कोमल या मृदु) सुरद्विपास्फालनकर्कशाङ्गुलौ—रघु० ३।५५, ऐरावतास्फालनकर्कशेन हस्तेन पस्पर्श तदङ्गमिन्द्रः—कु० ३।२२, १।३६, शि० १५।१० 2. निष्ठुर, क्रूर, निर्दय (शब्द, आचरण आदि) 3. प्रचण्ड, प्रबल अत्यधिक—तस्य कर्कशविहारसंभवम्—रघु० ९।६८ 4. निराश 5. दुराचारी, दुश्चरित्र, स्वामिभक्ति से हीन (जैसा कि कोई स्त्री) 6. समझ में न आने योग्य, दुर्बोध—तर्के वा भृशकर्कशे मम समं लीलायते भारती—प्रस० ४,—शः तलवार।

कर्कशिका, कर्कशी [कर्कश+कन्+टाप्, इत्वम्, ङीप् वा] जङ्गली बेर, झड़बेर।

कर्किः [कर्क्+इन्] कर्क राशि, चतुर्थ राशि।

कर्कोटः,—टकः [कर्क्+ओट, स्वार्थे कन्] आठ प्रधान सांपों में से एक (जब राजा नल को कलि के दुष्प्रभाव से नाना प्रकार की यातनाएँ सहन करनी पड़ी तो उस समय कर्कोट नें, जिसे नल ने एक बार आग से बचाया था, ऐसा विकृत कर दिया कि विपत्काल में भी उसे कोई पहचान न सके)।

कर्चूरः [कर्ज्+ऊर, पृषो० च आदेशः] एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष,—रम् 1. सोना 2. हरताल।

कर्ण् (चुरा० उभ०—कर्णयति—ते, कर्णित) 1. छेद करना सूराख करना 2. सुनना (प्रायः 'आ' उपसर्ग के साथ) **आ—, समा—**, सुनना, ध्यान से सुनना—सर्वे सविस्मयमाकर्णयन्ति—श० १, आकर्णयन्नुत्सुकहंसनादान्—भट्टि० ११।७।

कर्णः [कर्ण्यते आकर्ण्यते अनेन—कर्ण्+अप्] 1. कान—अहो खलभुजङ्गस्य विपरीतवधक्रमः, कर्णे लगति चान्यस्य प्राणैरन्यो वियुज्यते। पंच० १।३००, ३०५, **कर्णं दा** ध्यान से सुनना, **कर्णमागम्** कान तक आना, ज्ञात होना—रघु० १।९, **कर्णे कृ** कान में डालना,—चौर० १०, **कर्णे कथयति** कान में कहता है, दे० षट्कर्ण, चतुष्कर्ण 2. गंगाल का कड़ा 3. नाव की पतवार 4. त्रिभुज के समकोण के सामने की रेखा 5. महाभारत में वर्णित कौरव पक्ष का एक महारथी (जब कुन्ती अपने पिता के घर रहती थी, उस समय सूर्य देव के संयोग से कुन्ती की अविवाहितावस्था में कर्ण का जन्म हुआ। (दे० कुंती) बालक उत्पन्न होने पर कुन्ती ने अपने बन्धु-बान्धवों की निन्दा तथा लोक-लज्जा के कारण उसे नदी में फेंक दिया। धृतराष्ट्र के सारथि अधिरथ ने उसे नदी से निकाल कर अपनी पत्नी राधा को दे दिया। उसने उसे पालपोस कर बड़ा किया, इसी लिए कर्ण को सूतपुत्र या राधेय कहते हैं। बड़ा होने पर दुर्योधन ने कर्ण को अङ्ग देश का राजा बना दिया। अपनी दानशीलता के कारण वह दानवीर कर्ण कहलाया। एक बार इन्द्र (जो अपने पुत्र अर्जुन पर अनुग्रह करने के लिए आतुर रहता था) ने ब्राह्मण का वेश धारण किया और कर्ण को झांसा देकर उसके दिव्य कवच व कुंडल हथिया लिये, बदले में उसे एक शक्ति या बरछी दे दी। युद्ध की कला में अपने आप को दक्ष बनाने की इच्छा से कर्ण ब्राह्मण बन कर परशुराम के पास गया वहाँ उसने परशुराम से अस्त्र-संचालन की शिक्षा प्राप्त की। परन्तु यह भेद बहुत दिन तक छिपा न रहा। एक बार जब परशुराम अपना सिर कर्ण की जंघा पर रख कर सो रहे थे, तो एक कीड़ा (कई लोगों के मतानुसार इन्द्र ने कर्ण को विफल करने की दृष्टि से 'कीड़े' का रूप धारण किया था) कर्ण की जंघा को खाने लगा, उसने जंघा में गहरा घाव कर दिया, परन्तु उस पीड़ा से भी कर्ण टस से मस न हुआ। इस अनुपम सहन शक्ति से परशुराम को कर्ण की असलियत का पता लग गया, फलतः उसने कर्ण को शाप दे दिया कि आवश्यकता के समय—उसकी विद्या—काम नहीं आवेगी। एक दूसरे अवसर पर उसे एक ब्राह्मण ने (जिसकी गौएँ अनजाने में पीछा करते हुए कर्ण द्वारा मारी गई थी) शाप दे दिया कि संकट आ पड़ने पर उसके रथ का पहिया पृथ्वी खा लेगी। इस प्रकार की कठिनाइयों के होते हुए भी कर्ण ने भीष्म और द्रोण के पतन के पश्चात् कौरव सेना के सेनापति के रूप में कौरव-पाण्डवों के युद्ध में अपना युद्ध कौशल खूब दिखाया। तीन दिन तक वह पाण्डवों के सामने रणक्षेत्र में डटा रहा। परन्तु अन्तिम दिन जब कि उसके रथ का पहिया पृथ्वी में धँस गया था, वह अर्जुन के द्वारा मारा गया। कर्ण, दुर्योधन का अत्यन्त घनिष्ठ मित्र था, पाण्डवों का नाश करने के लिए शकुनि से मिल कर जो योजनाएँ या षड्यन्त्र दुर्योधन ने किये, उन सब में कर्ण उसके साथ था)। सम०—अंजलिः बाहरी कान का श्रवण-मार्ग,—अनुजः युधिष्ठिर,—अन्तिक (वि०) कान के निकट—स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः—श० १।२४,—अन्दुः—दू (स्त्री०) कान का आभूषण, कान की बाली,—अर्पणम्, कान देना, ध्यान से सुनना,—आस्फालः हाथी के कानों की फड़फड़ाहट,—उत्तंस

कान का आभूषण या (कइयों के मतानुसार) केवल आभूषण, (मम्मट कहता है कि यहाँ 'कान' का अर्थ 'कान में स्थिति' है—तु० उसका एत० टिप्पण—कर्णावतंसादिपदे कर्णादिध्वनिर्निर्मितः. सन्निधानार्थबोधार्थं स्थितेष्वेतत्समर्थनम् । काव्य० ७),—उपकर्णिका अफ़वाह (शा० 'एक कान से दूसरे कान तक'),—क्ष्वेडः (आयु० में) कान में लगातार गूंज होना,—गोचर (वि०) जो कानों को सुनाई पड़ें,—ग्राहः कर्णधार,—जप (वि०) (कर्णेजपः भी) रहस्य की बात बतलाने वाला, पिशुन, मुखबिर,—जपः,—जापः झूठी निन्दा करना, चुगली करना, कलंक लगाना,—जाहः कान की जड़—अपि कर्णजाहविनिवेशितानन:—मा० ५।८,—जित् (पुं०) कर्णविजेता, अर्जुन, तृतीय पांडव,—तालः हाथी के कानों की फड़फड़ाहट, या उससे उत्पन्न आवाज—विस्तारितः कुंजरकर्णतालैः—रघु० ७।३९, ९।७१, शि० १३।३७,—धारः मल्लाह, चालक—अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव – हि० ३।२, अविनयनदीकर्णधारकर्ण—वेणी० ४,—धारिणी हथिनी—पथः श्रवणपरास,—परम्परा एक कान से दूसरे कान, अनुश्रुति—इति कर्णपरम्परया श्रुतम्—रत्न० १,—पालिः (स्त्री०) कान की लौ,—पाशः सुन्दर कान,—पूरः 1. (फूलों का बना) कान का आभूषण, कान की बाली—इदं च करतलं किमिति कर्णपूरतामारोपितम्—का० ६० 2. अशोकवृक्ष,—पूरकः 1. कान की बाली 2. कदम्ब वृक्ष 3. अशोक वृक्ष 4. नील कमल,—प्रान्तः कान की पाली,—भूषणम्,—भूषा कान का गहना,—मूलम् कान की जड़—रघु० १२।२,—मोटी दुर्गा का एक रूप,—वंशः बाँसों से बना ऊँचा मचान,—वर्जित (वि०) बिना कानों का, (—तः) सांप,—विवरम् कान का श्रवण-मार्ग,—विष् (स्त्री०) घूघ, कान का मैल,—वेधः (वालियां पहनने के लिए) कानों का बींधना,—वेष्टः,—वेष्टनम् कान की बाली,—शष्कुली (स्त्री०) कान का बाहरी भाग (श्रवण मार्ग पर ले जाने वाला) नै० २।८,—शूलः,—लम् कानों में पीड़ा,—श्रव (वि०) जो सुनाई दे, ऊँचा (स्वर)—कर्णश्रवेऽनिले—मनु० ४।१०२,—स्रावः,—संस्रवः कानों का बहना, कान से मवाद निकलना,—सूः (स्त्री०) कर्ण की माता, कुन्ती,—हीन (वि०) कर्णरहित (—नः) सांप।

कर्णाकर्णि (वि०) [कर्णे कर्णे गृहीत्वा प्रवृत्तं कथनम्—व्यतिहारे इच्, पूर्वस्य दीर्घश्च] कानों कान, एक कान से दूसरे कान।

कर्णाटः [कर्ण+अट्+अच्] भारत प्रायोद्वीप के दक्षिण में एक प्रदेश—(काव्यं) कर्णाटेन्दोर्जगति विदुषां कण्ठभूषात्वमेतु—विक्रमांक० १८।१०२,—टी (स्त्री०) उपर्युक्त देश की स्त्री—कर्णाटी चिकुराणां ताण्डवकरः—विद्ध० शा० १।२९।

कर्णिक (वि०) [कर्ण+इकन्] 1. कानों वाला 2. पतवार धारी,—कः केवट,—का 1. कानों की बाली 2. गाँठ, गोल गिल्टी 3. कमल का फल, कंवलगट्टा 4. एक छोटी कूची या कलम 5. मध्यमा अंगुली 6. फल का डंठल 7. हाथी के सूंड़ की नोक 8. खड़िया।

कर्णिकारः [कर्णि+कृ+अण्] 1. कनियार का वृक्ष—निर्भिद्योपरि कर्णिकारमुकुलान्यालीयते षट्पदः—विक्रम० २।२३, ऋतु० ६।६, २० 2. कमल का फल, कंवलगट्टा—रम् कनियार का फूल, अमलतास का फूल (यद्यपि यह फूल बड़े सुन्दर रंग का होता है, परन्तु सुगन्ध न होने के कारण इसे कोई पसन्द नहीं करता—तु० कु० ३।२८,—वर्णप्रकर्षे सति कर्णिकारं दुनोति निर्गन्धतया स्म चेतः, प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः।

कर्णिन् (वि०) [कर्ण+इनि] 1. कानों वाला 2. लम्बे कानों वाला 3. फल लगा हुआ (जैसे तीर)—(पुं०) 1. गधा 2. मल्लाह 3. गाँठों से सम्पन्न बाण।

कर्णी (स्त्री०) [कर्ण+ङीप्] 1. पुंखदार या विशेष आकार का बाण 2. चौर्य कला व विज्ञान के पिता मूलदेव की माता। सम०—रथः बन्द डोली, स्त्रियों की सवारी, पालकी—कर्णीरथस्थां रघुवीरपत्नीम्—रघु० १४।१३,—सुतः चौर्यकला व विज्ञान के जन्मदाता मूलदेव—कर्णीसुतकथेव संनिहितविपुलाचला—का० १९, कर्णीसुतप्रहिते च पथि मतिमकरवम्—दश०।

कर्तनम् [कृत्+ल्युट्] 1. काटना, कतरना—याज्ञ० २। २२९, २८६ 2. रूई कातना (तर्कुः कर्तनसाधनम्)।

कर्तनी (स्त्री०) [कर्तन+ङीप्] क़ैंची।

कर्तरिका, कर्तरी (स्त्री०) 1. क़ैंची 2. चाकू 3. खड्ग, छोटी तलवार।

कर्तव्य (सं० कृ०) [कृ+तव्यत्] 1. जो कुछ उचित हो या होना चाहिए,—हीनसेवा न कर्तव्या कर्तव्यो महदाश्रयः—हि० ३।११, मया प्रातर्निःसत्त्वं वनं कर्तव्यम्—पंच० १ 2. जो काटना या कतरना चाहिए, नष्ट करने योग्य—पुत्रः सखा वा भ्राता वा पिता वा यदि वा गुरुः, रिपुस्थानेषु वर्तन्तः कर्तव्या भूतिमिच्छता—महा०,—व्यम्, कर्तव्यता, जो होना चाहिए, धर्म, आभार—कर्तव्यं वो न पश्यामि—कु० ६।२१, २।६२, याज्ञ० १।३३०।

कर्तृ (वि०) [कृ+तृच्] 1. करने वाला, कर्ता, निर्माता, सम्पादक—व्याकरणस्य कर्ता=रचयिता, ऋणस्य कर्ता=क़र्ज करने वाला, हितकर्ता=भला करने वाला, सुवर्णकर्ता=सुनार 2. (व्या० में) अभिकर्ता (करण

कारक का अर्थ) 3. परब्रह्म 4. ब्रह्मा का विशेषण विष्णु या शिव

कर्त्री (स्त्री०) [कर्तृ+ङीप्] 1. चाकू 2. क्रैंची।

कर्दः, कर्दटः [कर्द्+अच्, कर्द+अट्+अच्, पररूपम्] कीचड़।

कर्दमः [कर्द्+अम] 1. कीचड़, दलदल, पंक—पादौ नूपुर लग्नकर्दमधरौ प्रक्षालयन्ती स्थिता—मृच्छ० ५।३५, पथश्चाश्यानकर्दमान्—रघु० ४।२४ 2. कूड़ा, मल 3. (आलं०) पाप,—**मम्** मांस। सम०—**आटकः** मलपात्र, मलमार्ग आदि।

कर्पटः,—टम् [कृ+विच्=कर् स च पटश्च कर्म० स०] 1. पुराना, जीर्ण-शीर्ण या थेगली लगा कपड़ा 2. कपड़े का टुकड़ा, धज्जी 3. मटियाला या लाल रंग का कपड़ा।

कर्पटिक,—न् (वि०) [कर्पट+ठन्, इनि वा] जीर्ण शीर्ण कपड़ों (चिथड़ों) से ढका हुआ।

कर्पणः [कृप्+ल्युट्] एक प्रकार का हथियार—चापचक्र-कणपकर्पणप्रासपट्टिश आदि—दश० ३५।

कर्परः [कृप्+अरन् बा०] 1. कड़ाह, कड़ाही 2. बर्तन 3. ठीकरा, टूटे बर्तन का टुकड़ा—जैसा कि घट कर्पर में —जीयेत येन कविना यमकैः परेण तस्मै वहेयमुदकं घटकर्परेण—घट० २२ 4. खोपड़ी 5. एक प्रकार का हथियार।

कर्पासः,—सम्,—सी [कृ+पास, स्त्रियां ङीष्] कपास का वृक्ष।

कर्पूरः,—रम् [कृप्+ऊर] कपूर। सम०—**खंडः** 1. कपूर का खेत 2. कपूर का टुकड़ा,—**तैलम्** कपूर का तेल।

कर्फरः [कृ+विच्=कर्, फल्+अच्, रस्य लः, कीर्यमाणः फलः प्रतिबिम्बो यत्र ब० स०] दर्पण।

कर्बु (वि०) [कर्व् (र्ब्)+उन्] रंगबिरंगा, चित्तीदार —याज्ञ० ३।१६६।

कर्बुर (वि०) [कर्व् (र्ब्)+उरच्] 1. रंगबिरंगा, चितकबरा—क्वचिल्लसद्घनिकुरम्बकर्बुरः—शि० १७।५६ 2. कबूतर के रंग का, सफेद सा, भूरा—पवनैर्भस्म-कपोतकर्बुरम् कु० ४।२७,—**रः** चित्रविचित्र रंग 2. पाप 3. भूत, पिशाच 4. धतूरे का पौधा,—**रम्** 1. सोना, 2. जल।

कर्बुरित (वि०) [कर्बुर+इतच्] रंगबिरंगा—उत्तर० ६।४।

कर्मठ (वि०) [कर्मन्+अठच्] 1. कार्यप्रवीण, चतुर 2. परिश्रमी 3. केवल धार्मिक अनुष्ठानों में संलग्न, —**ठः** यज्ञ निदेशक।

कर्मण्य (वि०) [कर्मन्+यत्] कुशल, चतुर,—**ण्या** मजदूरी, —**ण्यम्** सक्रियता।

कर्मन् (नपुं०) [कृ+मनिन्] 1. कृत्य, कार्य, कर्म 2. कार्यान्वयन, सम्पादन 3. व्यवसाय, पद, कर्तव्य—संप्रति विषवैद्यानां कर्म—मालवि० ४ 4. धार्मिक कृत्य (यह चाहे, नित्य हो, नैमित्तिक हो या काम्य हो) 5. विशिष्ट कृत्य, नैतिक कर्तव्य 6. धार्मिक कृत्यों का अनुष्ठान (कर्मकाण्ड) जो ब्रह्मज्ञान या कल्पना प्रवण धर्म का विरोधी है (विप० ज्ञान)—रघु० ८।२० 7. फल, परिणाम 8. नैसर्गिक या सक्रिय सम्पत्ति (धरती के आश्रय के रूप में) 9. भाग्य, पूर्वजन्म के किये हुए कर्मों का फल—भर्तृ० २।४९ 10. (व्या०) कर्म का उद्देश्य—कर्तुरीप्सिततमं कर्म—पा० १।४।७९ 11. (वैशे० द० में) गति या कर्म जो सात द्रव्यों में एक माना जाता है, (परिभाषा इस प्रकार है:- एकद्रव्यमगुणं संयोगविभागेष्वनपेक्षकारणं कर्म—वैशे० सू०, कर्म पाँच प्रकार का है—उत्क्षेपणं ततोऽवक्षेपणमाकुञ्चनं तथा, प्रसारणं च गमनं कर्माण्येतानि पञ्च च—भाषा० ६। सम०—**अक्षम** (वि०) कार्य करने में असमर्थ, —**अङ्गम्** कार्य का अंश, यज्ञीय कृत्य का भाग (जैसा कि दर्श यज्ञ का प्रयाज),—**अधिकार** धर्मकृत्यों को सम्पन्न करने का अधिकार,—**अनुरूप** (वि०) 1. किसी विशेष कार्य या पद के अनुसार 2. पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों के अनुसार,—**अन्तः** 1. किसी कार्य या व्यवसाय की समाप्ति 2. कार्य, व्यवसाय, कार्य सम्पादन 3. कोष्ठागार, धान्यागार—मनु० ७।६२, (कर्मान्तः इक्षुधान्यादिसंग्रहस्थानम्—कुल्लू०) 4. जुती हुई भूमि, —**अन्तरम्** 1. कार्य में भिन्नता या विरोध 2. तपस्या, प्रायश्चित्त 3. किसी धार्मिक कृत्य का स्थगन,—**अन्तिक** (वि०) अन्तिम (—**कः**) सेवक, कार्मिक,—**आजीवः** किसी पेशे से (जैसे शिल्पकार का) अपनी जीविका चलाने वाला,—**आत्मन्** (वि०) कार्य के नियमों से युक्त, सक्रिय—मनु० १।२२,२३; (पुं०) आत्मा,—**इन्द्रियम्** काम करने वाली इन्द्रियाँ जो ज्ञानेन्द्रियों से भिन्न हैं (वे यह हैं—वाक्पाणिपादपायूपस्थानि—मनु० ११।९१, 'इन्द्रिय' शब्द के नी० भी दे०,—**उदारम्** साहसिक या उदार कार्य, उच्चाशयता, शक्ति,—**उद्युक्त** (वि०) व्यस्त, संलग्न, सक्रिय, सोत्साह,—**करः** 1. भाड़े का मजदूर (वह सेवक जो दास न हो)—कर्मकराः स्थपत्यादयः—पंच १, शि० १४।१६ 2. यम,—**कर्तृ** (पुं०) (व्या० में) कर्ता जो साथ ही साथ कर्म भी है—उदा० पच्यते ओदनः, इसकी परिभाषा यह है:—क्रियमाणं तु यत्कर्म स्वयमेव प्रसिध्यति, सुकरैः स्वैर्गुणैः कर्तुः कर्मकर्तेति तद्विदुः। —**काण्डः,—डम्** वेद का वह विभाग जो यज्ञीय कृत्यों, संस्कारों तथा उनके उचित अनुष्ठान से उत्पन्न फल से सम्बन्ध रखता है,—**कारः** 1. जो किसी व्यवसाय को करता है, कारीगर, शिल्पकार (जो भाड़े पर काम करने वाला न हो) 2. कोई भी मजदूर (चाहे भाड़े

का हो या विना भाड़े का) 3. लुहार,—हरिणाक्षि कटाक्षेण आत्मानमवलोकय, न हि खड्गो विजानाति कर्मकारं स्वकारणम् । उद्भट 4. सांड़,—कारिन् (पुं०) मज़दूर कारीगर,—कार्मुकः—कम् एक मजबूत धनुष, —कीलकः धोबी,—क्षम (वि०) कोई कार्य या कर्तव्य सम्पादन करने के योग्य,–आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः—रघु० १।१३,—क्षेत्रम् धार्मिक कृत्यों की भूमि अर्थात् भारतवर्ष, तु० कर्मभूमि,—गृहीत (वि०) कार्य करते समय पकड़ा हुआ (जैसे कि चोर),—घातः कार्य को छोड़ बैठना या स्थगित कर देना,—चं (चां) डालः 1. काम करने में नीच, नीच या निकृष्ट कर्म करने वाला व्यक्ति, वशिष्ट उनके प्रकारों का उल्लेख करता है—असूयकः पिशुनश्च कृतघ्नो दीर्घरोषकः, चत्वारः कर्मचाण्डालाः जन्मतश्चापि पञ्चमः । 2. जो अत्याचार पूर्ण कार्य करता है—उत्तर० १।४६ 3. राहु,—चोदना 1. यज्ञानुष्ठान में प्रेरित करने वाला प्रयोजन 2. धार्मिक कृत्य की विधि,—ज्ञः धार्मिक अनुष्ठानों से परिचित,—त्यागः सांसारिक कर्तव्य और धर्मानुष्ठान को छोड़ देना,—दुष्ट (वि०) कार्य करने में भ्रष्ट, दुष्ट, दुराचारी अनादरणीय,—दोषः 1. पाप, दुर्व्यसन —मनु० ६।६१, ९५ 2. त्रुटि, दोष, (कार्य करने में) भारी भूल–मनु० ११।१०४ 3. मानवी कृत्यों के दुष्परिणाम 4. निंद्य आचरण,—धारयः समास, तत्पुरुष का एक भेद (इसमें प्रायः विशेषण व विशेष्य का समास होता है),—तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः —उद्भट,—ध्वंसः 1. धर्मानुष्ठानों से उत्पन्न फल का नाश 2. निराशा,—नामन् (व्या० में) कृदन्तक संज्ञा, —नाशा काशी और विहार के मध्य बहने वाली एक नदी,—निष्ठ (वि०) धर्मानुष्ठान के सम्पादन में संलग्न,—पथः 1. कार्य की दिशा या स्रोत 2. धर्मानुष्ठान का (कर्म) मार्ग (विप० ज्ञान मार्ग),—पाकः कार्यों की परिपक्वावस्था, पूर्वजन्म में किये गये कर्मों का फल,—प्रवचनीय कुछ उपसर्ग तथा अव्यय जो क्रियाओं के साथ संबद्ध न होकर केवल संज्ञाओं का शासन करते हैं उदा० 'आ मुक्ते संसारः' में 'आ' कर्मप्रवचनीय है, इसी प्रकार 'जपमनु प्रावर्षत्' में 'अनु', तु० उपसर्ग, गति या निपात,—न्यासः धर्मानुष्ठानों के फलों का परित्याग, फलम् पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का फल या पारितोषिक (दुःख, सुख),—बन्धः, बन्धनम् जन्म-मरण का बन्धन, धर्मानुष्ठानों के फल चाहे शुभ हों या अशुभ (इनके कारण आत्मा सांसारिक विषय-वासनाओं में लिप्त रहता है),—भूः, —भूमिः (स्त्री०) 1. धर्मानुष्ठान की भूमि—अर्थात् भारतवर्ष 2. जुती हुई भूमि,—मीमांसा संस्कारादिक अनुष्ठानों का विचारविमर्श या मीमांसा,—मूलम् कुश नामक पवित्र घास,—युगम् चौथा (वर्तमान) युग, अर्थात् कलियुग,—योगः 1. सांसारिक तथा धार्मिक अनुष्ठानों का सम्पादन 2. सक्रिय चेष्टा, उद्योग,—वशः भाग्य जो पूर्व जन्म में किये गये कार्यों का अनिवार्य परिणाम है,—विपाकः=कर्मपाक,—शाला कारखाना, —शील,—शूर (वि०) कर्मवीर, उद्योगी, परिश्रमी, —संग सांसारिक कर्तव्य तथा उनके फलों म आसक्ति। —सचिवः मंत्री,—संन्यासिकः,—संन्यासिन् (पुं०) 1. धर्मात्मा पुरुष जिसने प्रत्येक सांसारिक, कार्य से विरक्ति पा ली है 2. वह संन्यासी जो कर्म फल का ध्यान न करते हुए धर्मानुष्ठानों का सम्पादन करता है, —साक्षिन् (पुं०) 1. आँखों देखा गवाह, प्रत्यक्षदर्शी साक्षी—कु० ७।८३ 2. जो मनुष्य के शुभाशुभ कर्मों को प्रत्यक्ष देखता रहता है (इस प्रकार के नौ देवता हैं जो मनुष्य के समस्त कार्यों को प्रत्यक्ष देखते हैं —तथाहि—सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पंच च, एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ।—सिद्धिः (स्त्री०) अभीष्ट कार्य की सिद्धि, सफलता—कु० ३।५७,—स्थानम् सार्वजनिक कार्यालय, काम करने का स्थान ।

कर्मन्दिन् [कर्मन्द+इनि] संन्यासी, धार्मिक भिक्षु ।

कर्मारः [कर्मन्+ऋ+अण्] लुहार—याज्ञ० १।१६३, मनु० ४।२१५ ।

कर्मिन् (वि०) [कर्मन्+इनि] 1. कार्य करने वाला, क्रियाशील, कार्यरत 2. किसी कार्य या व्यवसाय में व्यापृत 3. जो फल की इच्छा से धर्मानुष्ठान करता है—कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन —भग० ६।४६; (पुं०) कारीगर, शिल्पकार—याज्ञ० २।२६५ ।

कर्मिष्ठ (वि०) [कर्मिन्+इष्ठन्, इनो लुक्] व्यापार-कुशल, चतुर, परिश्रमी ।

कर्वटः [कर्व्+अटन्] बाजार, मंडी या किसी जिले (जिसमें २०० से ४०० तक गांव हों) का मुख्य नगर ।

कर्षः [कृष्+अच् घञ् वा] 1. रेखा खींचना, घसीटना, खींचना—याज्ञ० २।२१७ 2. आकर्षण 3. हल जोतना 4. हल-रेखा, खाई 5. खरोंच,—र्षः,—र्षम्—चांदी या सोने का १६ माशे का वजन । सम०—आपण= कार्षापण ।

कर्षक (वि०) [कृष्+ण्वुल्] खींचने वाला,—कः किसान, खेतिहर—याज्ञ० २।२६५ ।

कर्षणम् [कृष्+ल्युट्] 1. रेखा खींचना, घसीटना, खींचना, झुकाना, (धनुष का)—भज्यमानमतिमात्रकर्षणात्—रघु० ११।४६ ७।६२ 2. आकर्षण 3. हल जोतना, खेती करना 4. क्षति पहुँचाना, कष्ट देना, पीडित करना—मनु० ७।११२ ।

कर्पिणी [कृष्+णिनि+ङीप्] लगाम का दहाना।

कर्षूः (स्त्री०) [कृष्+ऊ] 1. हल-रेखा, खूड 2. नदी 3. नहर (पुं०) 1. सूखे कंडों की आग 2. कृषि, खेती 3. जीविका।

कर्हिचित् (अव्य०) [किम्+र्हिल्, कादेशः,+चित्] किसी समय, (प्रायः 'न' के साथ प्रयोग) मनु० २।४, ४०, ९७; ४।७७, ६।५०।

कल् i (भ्वा० आ०—कलते, कलित) 1. गिनना, 2. शब्द करना।

ii (चुरा० उभ०—कलयति-ते, कलित) 1. धारण करना, रखना, ले जाना, संभालना, पहनना, करालकरकन्दलीकलितशस्त्रजालैर्बलैः—उत्तर० ५।५, म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्—गीत० १, कलितललितवनमालः; हलं कलयते—त०, कलयवलयश्रेणीं पाणौ पदे कुरु नूपुरौ—१२, शा० ४।१८ 2. गिनना, हिसाब लगाना—कालः कलयतामहम्—भग० १०।३० 3. धारण करना, लेना, रखना, अधिकार में करना —कलयति हि हिमांशोर्निष्कलङ्कस्य लक्ष्मीम्—मा० १।२२, शि० ४।३६, ९।५९ 4. जानना समझना, पर्यवेक्षण, ध्यान देना, सोचना—कलयन्नपि सव्यथोऽवतस्थे—शि० ९।८३, कोपितं विरहखेदितचित्ता कान्तमेव कलयन्त्यनुनिन्ये - १०।२९, नै० २।६५, ३।१२ मा० २।९ 5. सोचना, आदर करना, खयाल करना —कलयेदमानमनसं सखि माम् - शि० ९।५८, ६।५४, शा० ४।१५, व्यालनिलयमिलनेन गरलमिव कलयति मलयसमीरम्—गीत० ४।७ 6. सहन करना, प्रभावित होना—मदलीलाकलितकामपाल—मा० ८, धन्यः कोऽपि न विक्रियां कलयति प्राप्ते नवे यौवने—भर्तृ० १।७२ 7. करना, सम्पादन करना 8. जाना 9. आसक्त होना, लेटजाना, सुसज्जित होना,। आ— 1. पकड़ना, ग्रहण करना—शि० ७।२१,—कुतूहलाकलितहृदया—का० ४९ 2. खयाल करना, आदर करना, जानना, ध्यान देना—स्पर्शमपि पावनमाकलयन्ति —का० १०८, खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलयामि —गीत० ३ 3. बांधना, जकड़ना, बंधन युक्त होना, रोकना या इकट्ठे पकड़ना—शि० १।६, ९।४५, का० ८४, ९९ 4. प्रसार करना, फेंकना—शि० ३।७३ 5. हिलाना, परि—, 1. जानना, समझना, खयाल करना, आदर करना 2. जानकार होना, याद करना वि—, अपांग करना, विकलांग करना. विकृत करना, सम्—, 1. जोड़ना, एकत्र करना - तु० संकलन 2. खयाल करना, आदर करना।

iii (चुरा० उभ०—कालयति—ते, कलित) प्रोत्साहित करना, हांकना, प्रेरणा देना।

कल (वि०) [कल् (कड्)+घञ्, अवृद्धिः, डलयोरभेदः] 1. मधुर, और अस्पष्ट (अस्पष्टमधुर)—कर्णे कलं किमपि रौति—हि० १।८१, सारसैः कलनिर्ह्रादैः—रघु० १।४१, ८।५९, मालवि० ५।१, 2. मन्द मधुर (स्वर) 3. कोलाहल करने वाला, झनझनाता हुआ, टनटन करता हुआ—भास्वत्कलनूपुराणां—रघु० १६।१२, कलकिंकिणीरवम्—शि० ९।७४, ८२, कलमेखलाकलकलः ६।१४, ४।५७ 4. दुर्बल 5. अनपका, कच्चा,—लः मन्द या मृदु और अस्पष्ट स्वर,—लम् वीर्य। सम०—अङ्कुरः सारस पक्षी,—अनुनादिन् (पुं०) 1. चिड़िया 2. मधुमक्खी 3. चातक पक्षी,—अविकलः चिड़ा,—आलापः 1. मधुर गुंजार 2. मधुर और रुचिकर प्रवचन—स्फुरत्कलालापविलासकोमला करोति रागं हृदि कौतुकाधिकम्—का० २ 3. मधुमक्खी,—उत्ताल (वि०) ऊँचा, तीक्ष्ण,—कण्ठ (वि०) मधुर कंठ वाला (—ठः) (स्त्री०—ठी) 1. कोयल, 2. हंस, राजहंस 3. कबूतर,—कलः 1. भीड़ की मर्मरध्वनि या भनभनाहट 2. अस्पष्ट या संक्षुब्ध ध्वनि—चलितया विदधे कलमेखलाकलकलोऽलकलोलदृशान्यया—शि० ६।१४, नेपथ्ये कलकलः (नाटकों में), भर्तृ० १।२७ ३७, अमरु २८ 3. शिव,—कूजिकाः—कूणिका छिनाल स्त्री, घोषः कोयल,—तूलिका लम्पट या छिनाल स्त्री,—धौतम् 1. चाँदी—शि० १३।५१ ४।४१ 2. सोना—विमलकलधौतत्सरुणा खड्गेन—वेणी० ३ °लिपिः (स्त्री०) 1. सुनहरी पांडु लिपि की जगमगाहट 2. स्वर्णाक्षर —मरकतशतकललितकलधौतलिपेरिव रतिजयलेखम् —गीत० ८,—ध्वनिः 1. मन्दमधुर ध्वनि 2. कबूतर 3. मोर 4. कोयल,—नादः मन्द मधुर स्वर,—भाषणम् तुतलाना,—बालकलरव=बचपन की चहक,—रवः 1. मन्द मधुर ध्वनि 2. कबूतरी 3. कोयल,—हंसः 1. हंस, राजहंस—वधूदुकूलं कलहंसलक्षणम्—कु० ५।६७ 2. बतख, पुंकारण्डव, भट्टि० २।१८, रघु० ८।५९ 3. परमात्मा।

कलङ्कः [कल्+क्विप्, कल् चासौ अङ्कश्च कर्म० स०] 1. धब्बा, चिह्न, काला धब्बा (शा०) रघु० १३।१५, 2. (आलं०) दाग, बट्टा, गर्हा, बदनामी—व्यपनयतु कलंङ्कं स्वस्वभावेन सैव मृच्छ० १०।३४, रघु० १४।३७, इसी प्रकार—कुल° 3. अपराध, दोष—भर्तृ० ३।४८ 4. लोहे का जंग, मोर्चा।

कलङ्कषः (स्त्री०—षी) [करेण कषति हिनस्ति—कल+कष्+खच्, मुम्] सिंह, शेर।

कलङ्कित (वि०) [कलङ्क+इतच्] 1. धब्बेदार, लांछित, बदनाम।

कलङ्कुरः [कं जलं लङ्कयति भ्रामयति, क+लङ्क्+णिच् +उरच्] जलावर्त, भंवर।

कलञ्जः [कं लञ्जयति—क+लञ्ज्+अण्] 1. पक्षी

2. विषैले शस्त्र से आहत मृग आदि जन्तु,—जम् ऐसे जन्तु का मांस ।

कलत्रम् [गड्+अत्रन्, गकारस्य ककारः, डलयोरभेदः] 1. पत्नी,—वसुमत्या हि नृपाः कलत्रिणः—रघु० ८।८३, १।३२, १२।३४, यद्भर्तुरेव हितमिच्छति तत्कलत्रम् भर्तृ० २।६८ 2. कूल्हा या नितम्ब—इन्दुमूर्तिमिवोद्दामन्मथ विलासगृहीतगुरुकलत्राम्—का० १८९ (यहाँ 'कलत्रम्' के दोनों अर्थ हैं) कि० ८।९, १७ 3. राजकीय दुर्ग ।

कलनम् [कल्+ल्युट्] 1. धब्बा, चिह्न 2. विकार, अपराध, दोष 3. ग्रहण करना, पकड़ना, थामना—कलनात्सर्वभूतानां स कालः परिकीर्तितः 4. जानना, समझना, बोध पाना 5. ध्वनि करना,—ना 1. लेना, पकड़ना, थामना—काल कलना—आन० २९ 2. करना, क्रियान्वयन 3. वश्यता 4. समझ, समवबोध 5. पहनना, वसन-धारण करना ।

कलन्दिका [कल+दा+क+कन्+टाप्, इत्वम्, पृषो० मुम्] बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा ।

कलभः (स्त्री० —भी) [कल्+अभच्, करेण शुण्डया भाति भा+क रस्य लत्वम्—तारा०] 1. हाथी का बच्चा, वन पशु-शावक—ननु कलभेन यूथपते रनुकृत्तम् —मालवि० ५, द्विपेन्द्रभावं कलभः श्रयन्निव—रघु० ३।३२, ११।३९, १८।३७ 2. तीस वर्ष का हाथी 3. ऊँट का बच्चा, जन्तु शावक ।

कलमः [कल्+अम्] 1. मई-जून में बोया हुआ चावल जो दिसम्बर-जनवरी में पक जाता है—सुतेन पाण्डोः कलमस्य गोपिकाम्—कि० ४।९, ३४, कु० ५।४७, रघु० ४।३७ 2. लेखनी, काने की कलम 3. चोर 4. दुष्ट, बदमाश ।

कलम्बः [कल्+अम्बच्] 1. तीर 2. कदम्ब वृक्ष ।

कलम्बुटम् [क+लम्ब्+उटन्] (ताजा) मक्खन नवनीत ।

कललः,—**लम्** [कल्+कलच्] भ्रूण, गर्भाशय ।

कलविङ्कः,—**गः** [कल्+वङ्क्+अच्, पृषो० इत्वम्] 1. चिड़िया, मनु० ५।१२, याज्ञ० १।१७४ 2. धब्बा, दाग या लांछन ।

कलशः,—**सः** [केन जलेन लश(स)ति—तारा०] (—शम्, —सम्) घड़ा जलपात्र, करवा, तस्तरी—स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशावित्युपमितौ—भर्तृ० ३।२०, १।९७ स्तनकलसः—अमरु ५४ °जन्मन्, °उद्भवः अगस्त्य मुनि ।

कलशी (सी) (स्त्री०) [कलश(स)+ङीप्] घड़ा, करवा । सम०—सुतः अगस्त्य ।

कलहः,—**हम्** [कलं कामं हन्ति—हन्+ड तारा०] 1. झगड़ा, लड़ाई-भिड़ाई—ईर्ष्याकलहः—भर्तृ० १।२, लीला° शृंगार० ८, इसी प्रकार शुष्ककलहः, प्रणयकलहः आदि 2. संग्राम, युद्ध, 3. दाँव, धोखा, मिथ्यापन 4. हिंसा, ठोकर मारना, पीटना आदि—मनु० ४। १२१ (यहाँ मेधातिथि और कुल्लूक, कलह शब्द की व्याख्या क्रमशः 'दंडादिनेतरेतरताडनम्' और 'दंडादंडचादि' करते हैं) । सम०—अन्तरिता अपने प्रेमी से झगड़ा हो जाने के कारण उससे वियुक्त (जो क्रुद्ध भी है साथ ही अपने किये पर खिन्नमाना भी), सा० द० इस प्रकार परिभाषा करता है—चाटुकारमपि प्राणनाथं रोषादपास्य या, पश्चात्तापमवाप्नोति कलहान्तरिता तु सा । ११७,—अपहृत (वि०) बलपूर्वक अपहरण किया गया,—प्रिय (वि०) जो लड़ाई-झगड़ा कराने में प्रसन्न होता है—ननु कलहप्रियोऽसि—मालवि० १, (—यः) नारद की उपाधि ।

कला [कल्+कच्+टाप्] 1. किसी वस्तु का छोटा खण्ड, टुकड़ा, लवमात्र,—कलामप्यकृतपरिलम्बः—का० ३०४ सर्वे ते मित्रगात्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्—पंच० २।५९, मनु० २।८६, ८।३६ 2. चन्द्रमा की एक रेखा (यह १६ अंश है) जगति जयिनस्ते ते भावा नवेन्दुकलादयः—मा० १।३६ कु० ५।७२, मेघ० ८९ 3. मूलधन पर ब्याज (लिये हुए धन के उपयोग के विचार से)—घनवीथिवीथिमवतीर्णवतो निधिरम्भसामुपचयाय कलाः—शि० ९।३२, (यहाँ कला का अर्थ रेखा भी है) 4. विविध प्रकार से आकलित समय का प्रभाग (एक मिनट, ४८ सैकण्ड या ८ सैकण्ड) 5. राशि के तीसवें भाग का साठवाँ अंश, किसी कोटि का एक अंश 6. प्रयोगात्मक कला (शिल्पकला, ललित कला) इस प्रकार की ६४ कलाएँ हैं, जैसे कि संगीत, नृत्य आदि 7. कुशलता, मेधाविता 8. जालसाज़ी, धोखादेही 9. (छन्दः शास्त्र में) मात्रा छंद 10. किश्ती 11. रजःस्राव । सम०—**अन्तरम्** 1. दूसरी रेखा 2. ब्याज, लाभ—मासे शतस्य यदि पञ्चकलान्तरं स्यात्—लीला०, —**अयनः** कलाबाज, नट, तलवार की तीक्ष्ण धार पर नाचने वाला,—**आकुलम्** भयंकर विष,—**केलि** (वि०) छबीला, विलासी (—**लिः**) काम का विशेषण,—**क्षयः** (चन्द्रमा का) क्षीण होना—रघु० ५।१६,—**धरः**,—**निधिः** —**पूर्णः** चन्द्रमा,—अहो महत्त्वं महतामपूर्वं विपत्तिकालेऽपि परोपकारः, यथास्यमध्ये पतितोऽपि राहोः कलानिधिः पुण्यचयं ददाति । उद्भट,—**भृत्** (पुं०) चन्द्रमा, इसी प्रकार कलावत् (पुं०)—कु० ५।७२ ।

कलादः,—**दकः** [कला+आ+दा+क] सुनार ।

कलापः [कला+आप्+अण, घञ्] 1. जत्था, गठरी —मुक्ताकलापस्य च निस्तलस्य—कु० १।४३, मोतियों का हार—रशनाकलापः—घुंघरूदार मेखला 2. वस्तुओं का समूह या संचय—अखिलकलाकलापालोचन—का० ७ 3. मोर की पूँछ—तं मे जातकलापं प्रेषय मणिकण्ठकं

शिखिनम्—विक्रम० ५।१३, पंच० २।८० ऋतु० १।१६, २।१४ 4. स्त्री की मेखला या करधनी (प्रायः 'कांची' और 'रशना' आदि के साथ) भर्तृ० १।५७, ६७, ऋतु० ३।२०, मृच्छ० १।२७ 5. आभूषण 6. हाथी के गले का रस्सा 7. तरकस 8. बाण 9. चन्द्रमा 10. चलता-पुरजा, बुद्धिमान् 11. एक ही छंद में लिखी गई कविता,—पी घास का गट्ठर।

कलापकम् [कलाप+कन्] एक ही विषय पर लिखे गये चार श्लोकों का समूह (जो व्याकरण की दृष्टि से एक ही वाक्य हो) (चतुर्भिस्तु कलापकम्) उदाहरण के लिए दे०, कि० ३।४१, ४२, ४३, ४४ 2. वह ऋण जिसका परिशोध उस समय किया जाय जब मोर अपनी पूँछ फैलावे,—कः 1. एक जत्था या गट्ठर 2. मोतियों की लड़ी 3. हाथी की गर्दन के चारों ओर लिपटने वाला रस्सा 4. मेखला या करधनी (=कलाप) शि० ९।४५ 5. (संप्रदायद्योतक) मस्तक पर तिलकविशेष।

कलापिन् (पुं०) [कलाप+इनि] 1. मोर—कलाविलापि कलापिकदम्बकम्—शि० ६।३१, पंच० २।८०, रघु० ६।९ 2. कोयल 3. अंजीर का वृक्ष (प्लक्ष)।

कलापिनी [कलापिन्+ङीप्] 1. रात 2. चाँद।

कलायः [कला+अय्+अण्] मटर, शि० १३।२१।

कलाविकः [कलम् आविकायति विशेषेण रौति—कल+आ+वि+कै+क] मुर्गा।

कलाहकः [कलम् आहन्ति—कल+आ+हन्+ड+कन्] एक प्रकार का बाजा।

कलिः [कल्+इनि] 1. झगड़ा, लड़ाई-भिड़ाई, असहमति, मतभेद—शि० ७।५५, कलिकामजित्—रघु० ९।३३, अमरु १९ 2. संग्राम, युद्ध 3. सृष्टि का चौथा युग, कलियुग (इस युग की आयु ४३२००० मानव वर्ष है तथा ईसापूर्व ३१०२ वर्ष की १३ फरवरी को इसका आरंभ हुआ था) मनु० १।८६, ९।३०१,—कलिवर्ज्यानि इमानि आदि० 4. मूर्तरूप कलियुग (इसने नल को यातना दी थी) 5. किसी वर्ग का निकृष्टतम व्यक्ति 6. विभीतक या बहेड़े का वृक्ष 7. पासे का पहलू जिस पर एक का अंक अंकित है 8. नायक 9. बाण —(स्त्री०) बिना खिला फूल। सम०—**कारः**, —**कारकः**,—**क्रियः** नारद का विशेषण,—**द्रुमः**, —**वृक्षः** विभीतक या बहेड़े का वृक्ष,—**युगम्** कलिकाल, लौहयुग—मनु० १।८५।

कलिका, कलिः (स्त्री०) [कलि+कन्+टाप्] 1. अनखिला फूल कली,—चूतानां चिरनिर्गतापि कलिका बध्नाति न स्वं रजः—श० ६।६, किमाम्रकलिकाभङ्गमारभसे—श० ६, ऋतु० ६।१७, रघु० ९।३३ 2. अंक, रेखा।

कलिङ्गाः (ब० व०) [कलि+गम्+ड] एक देश और उसके निवासियों का नाम;—उत्कलादर्शितपथः कलिङ्गाभिमुखो ययौ—रघु० ४।३८, (तंत्रों में इसकी स्थिति इस प्रकार बताई गई है—जगन्नाथात्समारभ्य कृष्णातीरान्तगः प्रिये, कलिङ्गदेशः संप्रोक्तो वाममार्गपरायणः।

कलिञ्जः [क+लञ्ज्+अण् नि० साधु०] चटाई, परदा।

कलित (वि०) [कल्+क्त] थामा हुआ, पकड़ा हुआ, लिया हुआ, दे० कल्।

कलिन्दः [कलि+दा+खच्, मुम्] 1. वह पर्वत जिससे यमुना नदी निकलती है 2. सूर्य। सम०—**कन्या**, —**जा**,—**तनया**,—**नन्दिनी** यमुना नदी की उपाधियाँ —कलिन्दकन्या मथुरां गतापि—रघु० ६।४८, कलिन्दजानीर—भामि० २।१२०, गीत० ३,—**गिरिः** कलिन्द नाम का पर्वत, °जा, °तनया, °नंदिनी यमुना, नदी की उपाधियाँ—भामि० ४।३, ४।

कलिल (वि०) [कल्+इलच्] 1. ढका हुआ, भरा हुआ 2. मिला, घुला-मिला—तत एवाक्रन्दकलिलः कलकलः—महावी० १ 3. प्रभावित, बशर्ते कि,—अकल्ककलिलः शि० १९।९८ 4. अभेद्य, अछेद्य,—**लम्** 1. बड़ा ढेर, अव्यवस्थित राशि—विशसि हृदय क्लेशकलिलं—भर्तृ० ३।३४ 2. गड़बड़, अव्यवस्था—यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति—भग० २।५२।

कलुष (वि०) [कल्+उषच्] मलिन, गन्दा, कीचड़ से भरा हुआ, मैला—गंगा रोधःपतनकलुषा गृह्णतीव प्रसादम्—विक्रम० १।८, कि० ८।३२, घट० १३ 2. श्वासावरुद्ध, बेसुरा, भर्राया हुआ—कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः—श० ४।६ 3. धुंधला, भरा हुआ ६।४ 4. क्रुद्ध, अप्रसन्न, उत्तेजित—भावाववोधकलुषा दयितेव रात्रौ - रघु० ५।६४ (मल्लि० 'कलुष' का अर्थ 'अयोग्य' और 'अक्षम' मानता है) 5. दुष्ट, पापी, बुरा 6. क्रूर, निन्दनीय रघु० १४।७३ 7. अन्धकार युक्त, अन्धकारमय 8. निठल्ला, आलसी,—**षः** भैंसा, —**षम्** 1. गन्दगी, मैल, कीचड़—विगतकलुषमम्भः —ऋतु० ३।२२ 2. पाप 3. क्रोध। सम०—**योनिज** हरामी, वर्णसंकर—मनु० १०।५७, ५८।

कलेवरः,—रम् [कले शुक्रे वरं श्रेष्ठम्—अलुक् स०] शरीर,—यावत्स्वस्थमिदं कलेवरगृहम्—भर्तृ० ३।८८, हि० १।४७, भग० ८।५, भामि० १।१०३, २।४३।

कल्कः,—ल्कम् [कल्+क] 1. चिपचिपी गाद जो तेल आदि के नीचे जम जाती है, कीट 2. एक प्रकार की लेई या पेस्ट—याज्ञ० १।२७७ 3. (अतः) गंदगी, मैल 4. लीद, विष्ठा 5. नीचता, कपट, दंभ शि० १९।९८ 6. पाप 7. घुटा पिसा चूर्ण—तां लोध्रकल्केन हृताङ्गतैलाम्—कु० ७।९। सम०—**फलः** अनार का पौधा।

कल्कनम् [कल्क्+णिच्+ल्युट्] धोखा देना, प्रतारणा, मिथ्यापना ।

कल्किः, कल्किन् (पुं०) [कल्क्+णिच्+इन्, कल्क+इनि] विष्णु का अन्तिम और दसवाँ अवतार (संसार का उसके शत्रुओं से उद्धार करने वाला तथा दुष्टों का हनन करने वाला) [विष्णु के अवतारों का उल्लेख करते हुए जयदेव कल्कि नामक अन्तिम अवतार का इस प्रकार निर्देश करता है—म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्, धूमकेतुमिव किमपि करालम्, केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे—गीत० ११।१० ।]

कल्प (वि०) [क्लृप्+अच्, घञ् वा] 1. व्यवहार में लाने योग्य, सशक्त संभव 2. उचित, योग्य, सही 3. समर्थ, सक्षम (संबं०, अधितुमुन्नन्त के साथ अथवा समास के अन्त में)—धर्मस्य, यशसः कल्पः—भाग० अपना कर्तव्य आदि करने में समर्थ,—स्वक्रियायामकल्पः त०, अपना कर्तव्य पूरा करने में असमर्थ, इसी प्रकार —स्वभरणाकल्पः आदि,—ल्पः 1. धार्मिक कर्तव्यों का विधि-विधान, नियम, अध्यादेश 2. विहित नियम, विहित विकल्प, ऐच्छिक नियम—प्रभुः प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते—मनु० ११।३० अर्थात् उस विहित विधि का अनुसरण करने में समर्थ जिसको दूसरे सब नियमों की अपेक्षा अविमान्यता दी जाती है, प्रथम कल्पः—मालवि० १, अर्थात् बहुत अच्छा विकल्प,—एष वै प्रथमः कल्पः प्रदाने हव्यकव्ययोः—मनु० ३।१४७ 3. (अतः) प्रस्ताव, सुझाव, निश्चय, संकल्प—उदारः कल्पः—श०७ 4. कार्य करने की रीति, कार्य विधि, रूप, तरीका, पद्धति (धर्मानुष्ठानों में)—क्षात्रेण कल्पेनोपनीय—उत्तर० २, कल्पवित्कल्पयामास वन्यामेवास्य संविधाम्—रघु० १।९४, मनु० ७।१८५ 5. सृष्टि का अन्त, प्रलय 6. ब्रह्मा का एक दिन या १००० युग, मनुष्यों का ४३२०००००० वर्ष का समय, तथा सृष्टि की अवधि का माप; श्रीश्वेतवाराह कल्पे (वह कल्प जिसमें अब हम रहते हैं)—कल्पं स्थितं तनुभृतां तनुभिस्ततः किम्—श० ४।२ 7. रोगी की चिकित्सा 8. छः वेदांगों में से एक—नामतः —जिसमें यज्ञ का विधि-विधान निहित है तथा जिसमें यज्ञानुष्ठान एवं धार्मिक संस्कारों के नियम बतलाये गये हैं, दे० 'वेदांग' के नी० 9. संज्ञा और विशेषणों के अंत में जुड़ कर निम्नांकित अर्थ बतलाने वाला शब्द —"अपेक्षाकृत कुछ कम" 'प्रायः ऐसा ही' 'लगभग बराबर' (हीनता की अवस्था के साथ २ समानता को प्रकट करना)—कुमारकल्पं सुषुवे कुमारम्—रघु० ५।३६, उपपन्नमेतदस्मिन्नविकल्पे राजनि—श० २, प्रभातकल्पा शशिनेव शर्वरी—रघु० ३।२, इसी प्रकार मृतकल्पः, प्रतिपन्नकल्पः आदि । सम०—अन्तः सृष्टि की समाप्ति, प्रलय—भर्तृ० २।१६, °स्थायिन् (वि०) कल्प के अन्त तक ठहरने वाला,—आदिः सृष्टि में सभी वस्तुओं का पुनर्नवीकरण,—कारः कल्पसूत्र का रचयिता,—क्षयः सृष्टि का नाश, प्रलय—उदा०—पुरा कल्पक्षये वृत्ते जातं जलमयं जगत्—कथा० २।१०, —तरुः,—द्रुमः,—पादपः,—वृक्षः 1. स्वर्गीय वृक्षों में से एक या इन्द्र का स्वर्ग, रघु० १।७५, १७।२६, कु० २।३९, ६।४१ 2. इच्छानुरूप फल देने वाला काल्पनिक वृक्ष कामना पूरी करने वाला वृक्ष—नाबद्ध कल्पद्रुमतां विहाय जातं तमात्मन्यसिपत्रवृक्षम्—रघु० १४।४८, नै० १।१५ 3. (आलं०) अत्यन्त उदार पुरुष—सकलार्थिसार्थकल्पद्रुमः—पंच० १,—पालः शराब बेचने वाला, —लता,—लतिका 1. इन्द्र की नन्दनकानन की लता—भर्तृ० १।९०, 2. सब प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण करने वाली लता—नानाफलैः फलति कल्पलतेव भूमिः—भर्तृ० २।४६, तु० ऊ० 'कल्पतरु' से,—सूत्रम् सूत्रों के रूप में यज्ञ-पद्धति ।

कल्पकः [क्लृप्+ण्वुल्] 1. संस्कार 2. नाई ।

कल्पनम् [क्लृप्+ल्युट्] 1. रूप देना, बनाना, क्रमबद्ध करना 2. सम्पादन करना, कराना, कार्यान्वित करना 3. छंटाई करना, काटना 4. स्थिर करना 5. सजावट के लिए एक दूसरी पर रक्खी हुई वस्तु,—ना 1. जमाना, स्थिर करना—अनेकपितृकाणां तु पितृतो भागकल्पना—याज्ञ० २।१२०, २४७, मनु० ९।११६ 2. बनाना, अनुष्ठान करना, करना 3. रूप देना, व्यवस्थित करना—मृच्छ० ३।१४ 4. सजाना, विभूषित करना 5. संरचन 6. आविष्कार 7. कल्पना, —विचार कल्पनापोढः—सिद्धा०=कल्पनाया अपोढः 8. विचार, उत्प्रेक्षा, प्रतिमा (मन में कल्पना की हुई) —शा० २।७ 9. बनावट, मिथ्या रचना 10. जालसाजी 11. कपट-योजना, कूटयुक्ति 12. (मीमां० द० में)=अर्थापत्ति ।

कल्पनी [कल्पन+ङीप्] कैंची ।

कल्पित (वि०) [क्लृप्+णिच्+क्त] व्यवस्थित, निर्मित, संरचित, बना हुआ, दे० क्लृप् (प्रेर०) ।

कल्मष (वि०) [कर्म शुभकर्म स्यति नाशयति—पृषो० साधुः] 1. पापी, दुष्ट 2. मलिन, मैला,—षः,—षम् 1. लांछन, गन्दगी, उच्छिष्ट 2. पाप, स हि गगनविहारी कल्मषध्वंसकारी—हि० १।२१, भग० ४।३०, ५।१६, मनु० ४।२६०, १२।१८, २२ ।

कल्माष (वि०) (स्त्री०—षी) [कलयति, कल्+क्विप्, तं माषयति अभिभवति, माष्+णिच्+अच्, कल् चासौ माषश्च—कर्म० स०] 1. रंगबिरंगा, चित्तीदार, काला और सफेद,—षः 1. चित्रविचित्र रंग

2. काले और सफेद का मिश्रण 3. पिशाच, भूत,—षी यमुना नदी। सम०—कण्ठः शिव की उपाधि।

कल्य (वि०) [कल्+यत्] 1. स्वस्थ, नीरोग, तन्दुरुस्त —सर्वः कल्ये वयसि यतते लब्धुमर्थान्कुटुम्बी–विक्रम० ३, याज्ञ० १।२८, यावद्देव भवेत्कल्यः तावच्छ्रेयः समाचरेत्—महा० 2. तत्पर, सुसज्जित—कथयस्व कथामेतां कल्याः स्मः श्रवणे तव - महा० 3. चतुर 4. रुचिकर, मङ्गलमय (जैसा कि प्रवचन) 5. बहरा और गूंगा 6. शिक्षाप्रद,—ल्यम् 1. प्रभात, पौ फटना 2. आने वाला कल 3. मादक शराब 4. बधाई, मंगल कामना 5. शुभ समाचार। सम०—आशः—जग्धिः (स्त्री०) सवेरे का भोजन, कलेवा,—पालः,—पालकः कलवार, शराब खींचने वाला—वर्तः सवेरे का भोजन, कलेवा (र्तम्) (अतः) कोई भी हल्की चीज, तुच्छ या महत्त्वहीन, मामूली—ननु कल्यवर्तमेतत्—मृच्छ० २, क्षुद्र वस्तु—स्त्रीकल्यवर्तस्य कारणेन ४, स इदानीमर्थकल्यवर्तस्य कारणादिदमकार्यं करोति ९।

कल्या [कलयति मादयति कल्+णिच्+यक्+टाप्] 1. मादक शराब 2. बधाई। सम०—पालः,—पालकः शराब खींचने वाला, कलवार।

कल्याण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [कल्ये प्रातः अण्यते शब्द्यते—अण्—घञ्] 1. आनन्ददायक, सुखकर, सौभाग्यशाली, भाग्यवान्—त्वमेवं कल्याणि तयोस्तृतीया—रघु० ६।२९, मेघ० १०९ 2. सुन्दर, रुचिकर, मनोहर 3. श्रेष्ठ, गौरवयुक्त 4. शुभ, श्रेयस्कर, मंगलप्रद, भद्र—कल्याणानां त्वमसि महतां भाजनं विश्वमूर्ते — मा० १।३,—णम् 1. अच्छा भाग्य, आनन्द, भलाई समृद्धि—कल्याणं कुरुतां जनस्य भगवांश्चन्द्रार्धचूड़ामणिः—हि० १।१८५, तद्रक्ष कल्याणपरम्पराणां भोक्तारमूर्जस्वलमात्मदेहम्—रघु० २।५०, १७।१, मनु० ३।६० इसी प्रकार °अभिनिवेशी—का० १०४ 2. गुण 3. उत्सव 4. सोना 5. स्वर्ग। सम०—कृत् (वि०) 1. सुखकर, लाभदायक, हितकर—भग० ६। ४० 2. मंगलप्रद, भाग्यशाली 3. गुणी,—धर्मन् (वि०) गुणसम्पन्न,—वचनम् मित्रवत् भाषण, शुभ कामना।

कल्याणक (वि०) (स्त्री०—णिका) [कल्याण+कन्] शुभ, समृद्धिशाली, आनन्ददायक।

कल्याणिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कल्याण+इनि] 1. प्रसन्न, समृद्धिशाली 2. सौभाग्यशाली, भाग्यवान्, आनन्ददायक 3. मंगलप्रद, शुभ।

कल्याणी [कल्याण+ङीप्] गाय—रघु० १।८७।

कल्ल (वि०) [कल्ल्+अच्] बहरा।

कल्लोलः [कल्ल्+ओलच्] 1. बड़ी लहर, ऊर्मि,—आयुः कल्लोललोलम्—भर्तृ० ३।८२, कल्लोलमालाकुलम्—भामि० १।५९ 2. शत्रु 3. हर्ष, प्रसन्नता।

कल्लोलिनी [कल्लोल+इनि+ङीष्] नदी—स्वर्लोककल्लोलिनि त्वं पापं तिरयाधुना मम भवव्यालावलीढात्मनः —गंगा० ५०, इसी प्रकार—विपुलपुलिनाः कल्लोलिन्यः।

कव् (भ्वा० आ०—कवते, कवित) 1. स्तुति करना 2. वर्णन करना, (कविता) रचना करना 3. चित्रण करना, चित्र बनाना।

कवकः [कव्+अच्+कन्] मुट्ठीभर,—कम् कुकुरमुत्ता —विड्जानि कवकानि च – याज्ञ० १।१७१, मनु० ५। ५, ६।१४।

कवचः,—चम् [कु+अच] 1. सन्नाह, जिरह बख्तर, वर्म, रक्षाकवच, तावीज, रहस्यपूर्ण अक्षर (हुं, हूँ) जो कि रक्षाकवच की भाँति प्ररक्षक समझे जाते हैं 3. धौंसा, ताशा। सम०—पत्रः भोजपत्र का पेड़, पाकर का वृक्ष,—हर (वि०) 1. कवचधारी 2. कवच धारण करने योग्य आयु का—कवचहरः कुमारः—पा० ३।२। १० पर सिद्धा०, तु० वर्महर—रघु० ८।९४।

कवटी [कु+अटन्+ङीष्] दरवाजे का दिला या पल्ला।

कव (ब) र (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [कु+अरन्] 1. मिश्रित, अन्तर्मिश्रित—शि० ५।१९ 2. जटित, खचित, जड़ा हुआ 3. चित्रविचित्र रंगबिरंगा,—रः,—रम् 1. नमक 2. खटास, अम्लता,—रः चोटी, जूड़ा।

कव (ब) री [कवर+ङीप्] चोटी, जूड़ा—दधती विलोलकबरीकमाननम्—उत्तर० ३।४, शि० ९।२८ अमरु ५।९। सम०—भरः—भारः गुथी हुई चोटी—घटय जघने कांचीमंच स्रजा कबरीभरम्—गीत० १२।

कवलः,—लम् [केन जलेन वलते चलति—वल्+अच् तारा०] 1· मुट्ठीभर—आस्वादवद्भिः कवलैस्तृणानाम् —रघु० २।५,९।५९, कवलच्छेदेषु सम्पादिताः—उत्तर० ३।१६।

कवलित (वि०) [कवल+इतच्] 1. खाया हुआ, निगला हुआ (मुट्ठीभर) 2. चबाया हुआ 3. (अतः) लिया हुआ, पकड़ा हुआ—जैसा कि 'मृत्युना कवलितः'।

कवाट [कलं शब्दम् अटति, कु+अप, अट्+अच्] दे० 'कपाट'।

कवि (वि०) [कु+इ] 1. सर्वज्ञ—भग० ८।९, मनु० ४।२४ 2. प्रतिभाशाली, चतुर, बुद्धिमान् 3. विचारवान्, विचारशील 4. प्रशंसनीय,—विः 1. बुद्धिमान् पुरुष, विचारक ऋषि—कवीनामुशना कविः—भग० १०। ३७, मनु० ७।४९, २।१५१ 2. काव्यकार—तद् ब्रूहि रामचरितं आद्यः कविरसि—उत्तर० २, मन्दः कवियशःप्रार्थी—रघु० १।३, इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे—उत्तर० १।१ शि० २।८६ 3. असुरों के आचार्य शुक्र की उपाधि 4. वाल्मीकि, आदिकवि 5. ब्रह्मा 6. सूर्य—(स्त्री०) लगाम का दहाना—दे० कवि-

का। सम०—ज्येष्ठः आदिकवि वाल्मीकि की उपाधि, —पुत्रः शुक्राचार्य की उपाधि,—राजः 1. महाकवि —(श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालंकारहीरःसुतम्—यह वाक्य नैषधचरित के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में पाया जाता है) 2. कवि का नाम, 'राघवपाण्डवीय' नामक काव्य का रचयिता,—रामायणः वाल्मीकि की उपाधि।

कविकः,—का [कवि+कन्, स्त्रियां टाप् च] लगाम का दहाना।

कविता [कवि+तल्+टाप्] काव्य,—सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् भर्तृ० २।२१।

कवि (वी) यम् [कवि+छ] लगाम का दहाना।

कवोष्ण (वि०) [कुत्सितम् ईषत् उष्णम् कर्म० स०, कोः कवादेशः] कुछ थोड़ा गर्म, गुनगुना—रघु० १।६७, ८४।

कव्यम् [कूयते हीयते पितृभ्यः यत्, अन्नादिकम्—कु+यत्] (विप० हव्यम्) मृत पितरों के लिए अन्न की आहुति —एष वै प्रथमः कल्पः प्रदाने हव्यकव्ययोः—मनु० ३।१४७, ९७, १२८,—व्यः पितरों का समूह। सम० —वाह् (पुं०),—वाहः,—वाहनः अग्नि।

कशः [कश्+अच्] कोड़ा (प्रायः बहुवचनान्त),—शा चाबुक —इदानीं सुकुमारेऽस्मिन् निःशंकं कर्कशाः, कशाः, तव गात्रे पतिष्यन्ति सहास्माकं मनोरथैः। मृच्छ० ९।३५ (यहाँ कशा शब्द स्त्रीलिंग और पुंल्लिंग दोनों में हो सकता है) 2. कोड़े लगाना 3. डोरी, रस्सी।

कशिपु (पुं० या नपुं०) [कशति दुःखं कश्यते वा, मृगय्वादित्वात् निपातनात् साधुः] 1. चटाई 2. तकिया 3. बिस्तरा,—पुः 1. भोजन 2. वस्त्र 3. भोजन-वस्त्र (विश्वकोश के अनुसार)।

कशे (से) रु (पुं०, नपुं०) [के देहे शीर्यते, कं जलं वा शृणाति, क+शृ+उ, एरङादेशः, कस्+एरुन् वा] 1. रीढ़ की हड्डी 2. एक प्रकार का घास।

कश्मल (वि०) [कश्+अल, मुट्] मैला, गन्दा, अकीर्तिकर, कलंकी—मत्सम्बन्धात्कश्मला किंवदन्ती स्याच्चेदस्मिन्हन्त धिङ् मामधन्यम्—उत्तर० १।४२,—लम् मन की खिन्नता, उदासी, अवसाद—कश्मलं महदाविशत् —महा०, कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् —भग० २।२ 2. पाप 3. मूर्छा।

कश्मीर (ब० व) [कश्+ईरन्, मुट्] एक देश का नाम, वर्तमान कश्मीर (तन्त्र ग्रन्थों में इसकी स्थिति इस प्रकार बताई गई है—शारदामठमारभ्य कुंकुमादितटांतकः, तावत्कश्मीरदेशः स्यात् पंचाशद्योजनात्मकः) सम०—जः,—जम्,—जन्मन् (पुं० नपुं०) केसर, जाफ़रान—कश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तरम्या—भामि० १।७१।

कश्य (वि०) [कशामर्हति—कशा+य] कोड़े या चाबुक लगाये जाने के योग्य—श्यम् मादक शराब।

कश्यपः [कश्य+पा+क] 1. कछुवा 2. एक ऋषि, अदिति और दिति के पति, अतः देवता और राक्षस दोनों के पिता। (ब्रह्मा का पुत्र मरीचि था, मरीचि का पुत्र कश्यप हुआ, सृष्टि के कार्य में कश्यप ने बड़ा योग दिया। महाभारत तथा दूसरे ग्रंथों के अनुसार उसका विवाह अदिति तथा दक्ष की अन्य १३ पुत्रियों के साथ हुआ। अदिति से उसके द्वारा १२ आदित्यों का जन्म हुआ—अपनी दूसरी १२ पत्नियों से उसके अनन्त और विविध प्रकार की सन्तान हुई— साँप, रेंगने वाले जन्तु, पक्षी, राक्षस, चन्द्रलोक का नक्षत्रपुंज तथा परियाँ। इस प्रकार वह देव, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी और सरीसृप आदिकों का वस्तुतः सभी जीवधारी प्राणिमात्र का पिता था। इसी लिए उसे बहुधा प्रजापति कहा जाता है)।

कष् (भ्वा० उभ०—कषति—ते, कषित) 1. मसलना, खुरचना, कसना—समूलकाषं कषति—सिद्धा०, भट्टि० ३।४९ 2. परीक्षा करना, जाँच करना, कसौटी पर कसना (सोना आदि)—छदहेम कषन्निवालसत्कषपाषाणनिभे नभस्तले—नै० २।६९ 3. चोट मारना, नष्ट करना 4. खुजाना।

कष (वि०) [कष्+अच्] 1. रगड़ने वाला, कसने वाला, —षः रगड़ कसना 2. कसौटी—छदहेम कषन्निवालसत्कषपाषाणनिभे नभस्तले—नै० २।६९, मृच्छ० ३।१७।

कषणम् [कष्+ल्युट्] रगड़ना, चिह्नित करना, खुरचना —कण्डूलद्विपगण्डपिण्डकषणोत्कम्पेन संपातिभिः—उत्तर० २।९, कषणकम्पनिरस्तमहाहिभिः—कि० ५।४७ 2. कसौटी पर कस कर सोने को परखना।

कषा=कशा।

कषाय (वि०) [कषति कण्ठम्—कष्+आय] 1. कसैला —श० २ 2. सुगंधित—स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः —मेघ० ३१, उत्तर० २।२१ महावी० ५।४१ 3. लाल, गहरा लाल—चूतांकुरस्वादकषायकंठः—कु० ३।३२ 4. (अतः) मधुर-स्वर वाला—मा० ७ 5. भूरा, 6. अनुपयुक्त, मैला—यः,—यम् 1. कसैला स्वाद या रस (६ रसों में से एक) दे० कटु 2. लाल रंग 3. एक भाग औषधि, चार आठ या १६ भाग पानी में मिलाकर बनाया हुआ (सब को मिलाकर उबालना जब तक कि चौथाई न रह जाय), काढ़ा —मनु ११।१५४ 4. लेप करना, पोतना—कु० ७। १७, चुपड़ना 5. उबटन लगा कर शरीर को सुवासित करना—ऋतु० १।४ 6. गोंद, राल, वृक्ष का निःश्रवण 7. मैल, अस्वच्छता 8. मन्दता, जड़िया 9. सांसारिक

विषयों में आसक्ति,—यः 1. आवेश, संवेग 2. कलियुग।

कषायित (वि०) कषाय+इतच्] 1. हलके रंग वाला, लाल रंग का, रंगीन—अमुनैव कषायितस्तनी—कु० ४।३४, शि० ७।११ 2. ग्रस्त।

कषि (वि०) [कषति हिनस्ति कष्+इ] हानिकारक, अनिष्टकर, पीडाकर।

कषे (से) रुका [कष् (स)+एरक्, उत्वम्, कन्+टाप्] रीढ़ की हड्डी मेरुदण्ड।

कष्ट (वि०) [कष्+क्त] 1. बुरा, अनिष्टकर, रोगी, गलत—रामहस्तमनुप्राप्य कष्टात् कष्टतरं गता—रघु० १५।४३, अर्थात् अधिक बुरी अवस्था हो गई (दुर्दशाग्रस्त हो गई) 2. पीडामय, संतापकारी—मोहादभूत्कष्टतरः प्रबोधः—रघु० १४।५६, कष्टोऽयं खलु भृत्यभावः—रत्न० १, चिन्ताओं से भरा हुआ—मनु० ७।५०, याज्ञ० ३।२९, कष्टा वृत्तिः पराधीना कष्टो वासो निराश्रयः, निर्धनो व्यवसायश्च सर्वकष्टा दरिद्रता। चाण० ५९ 3. कठिन—स्त्रीषु कष्टोऽधिकारः—विक्रम० ३।१ 4. दुर्धर्ष (शत्रु की भाँति) मनु० ७।१८६, २१० 5. अनिष्टकर, पीडाकर, हानिकर 6. गर्हित, —ष्टम् 1. दुष्कर्म, कठिनाई, संकट, व्यथा, यन्त्रणा, पीडा—कष्टं खल्वनपत्यता—श० ६, धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः—पंच० १।१६६ 2. पाप, दुष्टता 3. कठिनाई, प्रयास, **कष्टेन** किसी न किसी प्रकार,—ष्टम् (अव्य०) हाय!—हा धिक् कष्टं, हा कष्टं जरयाभिभूतपुरुषः पुत्रैरवज्ञायते—पंच० ४।७८, सम०—आगत (वि०) कठिनाई से आया हुआ, पहुँचा हुआ,—कर (वि०) पीडा कर, दुःखदायी—तपस् (वि०) घोर तपस्या करने वाला—श० ७,—साध्य कठिनाई से पूरा किये जाने के योग्य—स्थानम् बुरा स्थान, अरुचिकर या कठिन जगह।

कष्टि (स्त्री०) [कष्+क्तिन्] 1. परख, जाँच 2. पीडा, कष्ट।

कस् i (भ्वा० पर०—कसति, कसित) हिलना-डुलना, जाना, पहुँचना, निस्—, (प्रेर०) 1. निकालना, बाहर खींचना 2. मोड़ना, बाहर हाँक देना, निर्वासित करना, निष्कासन करना—निरकासयद्रविमपेतवसुं वियदालयादपरदिग्गणिका—शि० ९।१० येनाहं जीवलोकान्निष्कासयिष्ये—मुद्रा० ६, प्र—, खोलना, प्रसार करवाना—घनमुक्तांबुलवप्रकाशितैः (कुसुमैः)—घट० १९, वि—, खुलना, प्रसृत होना (आलं० भी) विकसति हि पतंगस्योदय पुण्डरीकम्—मा० १।२८, शि० ९।४७, ८२ कु ७।५५, निजहृदि विकसन्तः—भर्तृ० २।७८ (प्रेर०) खोलना, प्रसार करवाना—चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम्—भर्तृ० २।७३, शि० १५।१२, अमरु ८४।

ii (अदा० आ०—कस्ते, कंस्ते) 1. जाना 2. नष्ट करना।

कस्तु (स्तू) रिका, कस्तूरी [कसति गन्धोऽस्याः—कस्+ऊर्+ङीष्, तुद्, कन्+टाप् ह्रस्वः] मुश्क, कस्तूरी—कस्तूरिकातिलकमालि विधाय सायम्—भामि० २।४, १।१२१, चौर० ७। सम०—मृगः कस्तूरीमृग—(वह हरिण जिसकी नाभि से कस्तूरी नामका सुगन्धित द्रव्य निकलता है)।

कह्लारम् [के जले ह्लादते—क+ह्लाद्+अच् पृषो० दस्य रः] श्वेत कमल—कह्लारपद्मकुसुमानि मुहुर्विधुन्वन्—ऋतु० ३।१५।

कह्वः [के जले ह्वयति शब्दायते स्पर्धते वा—क+ह्वे+क] एक प्रकार का सारस।

कांसीयम् [कंसाय पानपात्राय हितम्—कंस+छ+अण्] जस्ता।

कांस्यः (वि०) [कंसाय पानपात्राय हितं कंसीयं तस्य विकारः—यञ्, छलोपः] कांसे या जस्त का बना हुआ मनु० ४।५,—स्यम् 1. कांसा, या जस्ता—मनु० ५।११४; याज्ञ० १।१९० 2. कांसे का बना घड़ियाल—स्यः,—स्यम् जल पीने का वर्तन (पीतल का) प्याला—शि० १५।८१। सम०—कारः (स्त्री०—री) कसेरा, ठठेरा,—तालः झांझ, करताल,—भाजनम् पीतल का बर्तन,—मलम् ताम्रमल, तांबे का जंग।

काकः [कै+कन्] 1. कौवा—काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते—पंच० १।२४ 2. (आलं०) घृणित व्यक्ति, नीच और ढीठ पुरुष 3. लंगड़ा आदमी 4. केवल सिर को भिगोकर स्नान करना (जैसा कि कौवे करते हैं),—की कौवी,—कम् कौवों का समूह। सम०—अक्षिगोलकन्याय दे० 'न्याय' के नीचे,—अरिः उल्लू,—उदरः साँप,—काकोदरो येन विनीतदर्पः—कविराज,—उलूकिका,—उलूकीयम्, कौवे और उल्लू की नैसर्गिक शत्रुता (काकोलूकीय—पंचतन्त्र के तीसरे तंत्र का नाम है),—चिंचा गुंजा या घुंघची का पौधा (रत्ती), छदः,—छदिः खंजनपक्षी 2. अलकें—दे० नी० 'काकपक्ष',—जातः कोयल,—तालीय (वि०) जो बात अकस्मात् अप्रत्याशित रूप से हो दुर्घटना—अहो नु खलु भोः तदेतत् काकतालीयं नाम—मा० ५, काकतालीयवत्प्राप्तं दृष्ट्वापि निधिमग्रतः—हि० प्र० ३५, कभी कभी क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'संयोग से' अर्थ को प्रकट करता है—फलन्ति काकतालीयं तेभ्यः प्राज्ञा न बिभ्यति—वेणी० २।१४,—°न्याय, दे० 'न्याय' के नीचे,—तालुकिन् (वि०) घृणित, निंद्य,—दन्तः (शा०) कौवे का दाँत, (आलं०) असंभव बात जिसका अस्तित्व न हो, °**गवेषणम्** असंभव बातों की खोज करना (व्यर्थ और

अलाभकर कार्यों के संबंध में कहा जाता है),—**ध्वजः** वाडवानल,—**निद्रा** हल्की नींद या झपकी जो आसानी से टूट जाय,—**पक्षः,—पक्षकः** (विशेष कर क्षत्रियों के) बालकों और तरुणों की कनपटियों के लंबे बाल या अलकें—काकपक्षधरमेत्य याचितः—रघु० ११।१, ३१, ४२, ३।२८, उत्तर० ३,—**पदम्** हस्तलिखित पुस्तक या लेखों में चिह्न (‸) जो यह प्रकट करता है कि यहाँ कुछ छूट गया है,—**पदः** संभोग की एक विशेष रीति,—**पुच्छः,—पुष्टः** कोयल,—**पेय** (वि०) छिछला—काकपेया नदी—सिद्धा०,—**भीरुः** उल्लू,—**मद्गुः** जलकुक्कुट,—**यवः** अन्न का वह पौधा जिसकी बाल में दाने न हो—यथा काकयवाः प्रोक्ता यथारण्यभवास्तिलाः, नाममात्रा न सिद्धौ हि धनहीनास्तथा नराः । पंच० २।८६,—तथैव पांडवाः सर्वे यथा काकयवा इव—महा० (काकयवाः=निष्फलतृणधान्यम्),—**रुतम्** कौवे की कर्कश ध्वनि (काँव काँव) जिससे परिस्थिति के अनुसार भावी शुभाशुभ का ज्ञान होता है—शि० ६।७६,—**वन्ध्या** ऐसी स्त्री जिसके एक पुत्र होने के पश्चात् फिर कोई सन्तान न हो,—**स्वरः** कर्कश ध्वनि (जैसे कि कौवे की काँव काँव) ।

काकरु (रू)क (वि०) 1. डरपोक, कायर 2. नंगा 3. गरीब, दरिद्र,—**कः** 1. औरत का गुलाम, पत्नीभक्त 2. (स्त्री०—**की**) 2. उल्लू 3. जालसाजी, धोखा, दाँवपेच ।

काक (का) लः [का इत्येवं कलो यस्य—ब० स०] पहाड़ी कौवा,—**लम्** कंठमणि ।

काकलिः,—ली (स्त्री०) [कल्+इन=कलिः, कु ईषत् कलिः, कोः कादेशः, स्त्रियां ङीष् च] 1. मन्द मधुर स्वर—अनुबद्धमुग्धकाकलीसहितम्—उत्तर० ३, ऋतु० १।८ 2. एक प्रकार का मन्द स्वर का बाजा जिसके द्वारा चोर यह पता लगाते हैं कि लोग सोये हैं या नहीं—फणिमुखकाकलीसंदंशक······प्रभृत्यनेकोपकरणयुक्तः—दश० ४९ 3. कैंची 4. घुंघची का पौधा । सम०—**रवः** कोयल ।

काकिणी, काकिणिका [कक्+णिनि+ङीप्=काकिणी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. सिक्के के रूप में प्रयुक्त होने वाली कौड़ी 2. एक सिक्का जो २० कौड़ी या चौड़ाई पण के बराबर होता है 3. चौथाई माशे के बराबर वजन 4. माप का एक अंश 5. तराजू की डंडी 6. हस्त, (एक प्राचीन माप जिसकी लम्बाई एक हाथ के बराबर होती है) ।

काकिनी (स्त्री०) [कक्+णिनि+ङीप्] 1. पण का चौथाई 2. माप का चौथाई 3. कौड़ी—हि० ३।१२३ ।

काकुः (स्त्री०) [कक्+उण्] 1. भय, शोक, क्रोध आदि संवेगों के कारण स्वर में परिवर्तन—भिन्नकण्ठध्वनिर्धीरैः काकुरित्यभिधीयते—सा० द०, अलीककाकुकरणकुशलतां—का० २२२ (अतः) 2. निषेधात्मक शब्द जो इस ढंग से प्रयुक्त किया जाय कि विरुद्ध (स्वीकारात्मक) अर्थ को प्रकट करे (इस प्रकार के अवसरों पर स्वर की विकृति से ही अभीष्ट अर्थ प्रकट किया जाता है) 3. बुड़बुड़ाना, गुनगुनाना 4. जिह्वा ।

काकुत्स्थः [ककुत्स्थ+अण्] ककुत्स्थवंशी, सूर्यवंशी राजाओं की उपाधि,—काकुत्स्थमालोकयतां नृपाणाम्—रघु० ६।२, १२।३०, ४६, दे० 'ककुत्स्थ' ।

काकुदम् [काकुं ध्वनिभेदं ददाति—काकु+दा+क] तालु ।

काकोलः [कक्+णिच्+ओल] 1. पहाड़ी कौवा—याज्ञ० १।१७४ 2. साँप 3. सूअर 4. कुम्हार 5. नरक का एक भाग—याज्ञ० ३।२२३ ।

काक्षः [कुत्सितम् अक्षं यत्र—कोः कादेशः] तिरछी चितवन, कनखियों से देखना,—**क्षम्** त्यौरी चढ़ना, अप्रसन्नता की दृष्टि, द्वेषपूर्ण निगाह—काक्षेणानादरेक्षितः—भट्टि० ५।२८ ।

कागः (पुं०) कौवा, तु० 'काक' ।

काङ्क्ष् (भ्वा० पर० (महाकाव्यों में आ० भी)—काङ्क्षति, काङ्क्षित) 1. कामना करना, चाहना, लालायित होना—यत्काङ्क्षति तपोभिरन्यमुनयस्तस्मिस्तपस्यन्त्यमी—श० ७।१२, न शोचति न काङ्क्षति—भग० १२।१७, न काङ्क्षे विजयं कृष्ण—१।३२, रघु० १२।५८, मनु० २।२४२ 2. प्रत्याशा करना, प्रतीक्षा करना, अभिलालायित होना, कामना करना, **आ—**,1. चाहना, लालसा करना, कामना करना,—**प्रत्या**श्वसंतं रिपुराचकाङ्क्ष—रघु० ७।४७, ५।३८, मनु० २।१६२, मेघ० ९१, याज्ञ० ३।१५३ 2. अपेक्षा करना आवश्यकता होना,—**प्रत्या—**,घात में रहना, सेवा में उपस्थित रहना **वि—**कामना करना, चाहना लालसा करना, **समा—**कामना करना, चाहना ।

कांङ्क्षा [काङ्क्ष्+अ+टाप्] 1. कामना, इच्छा 2. रुचि, अभिलाषा जैसा कि 'भक्तकांक्षा' में ।

काङ्क्षिन् (वि०) (स्त्री०—**णी**) [काङ्क्ष्+णिनि] कामना करने वाला, इच्छुक, दर्शन°, जल° आदि—भग० ११।५२ ।

काचः [कच्+घञ्] 1. शीशा, स्फटिक—आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः—हि० प्र० ४४, काचमूल्येन विक्रीतो हंत चिंतामणिर्मया—शा० १।१२ 2. फंदा, लटकता हुआ (अलमारी का) तख्ता, जुए से बंधी हुई रस्सी जो बोझ को सहार ले 3. आंख का एक रोग, आंख की नाड़ी का रोग जिससे दृष्टि धुंधली हो जाय । सम०—**घटी** शीशे की झारी या जग,—**भोजनम्** शीशे का पात्र,—**मणिः** स्फटिक, बिल्लौर,—**मलम्,—लवणम्,—संभवम्** काला नमक या सोडा ।

काचनम्, काचनकम् [कच्+णिच्+ल्युट्, कन् च] डोरी या फीता जिससे कागज़ों का बण्डल या हस्तलिखित पत्र बाँधे जाते हैं—तु० कचेल ।

काचनकिन् (पुं०) [काचनक+इनि] हस्तलिखित ग्रन्थ, लेख ।

काचूकः [कच्+ऊकञ् वा०] 1. मुर्गा 2. चकवा ।

काजलम् [ईषत् कुत्सितं जलम्—कोः कादेशः] 1. थोड़ा पानी 2. स्वादहीन पानी ।

काञ्चन (वि०) (स्त्री०—नी) [काञ्च्+ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] सुनहरी, सोने का बना हुआ—तन्मध्ये च स्फटिकफलका काञ्चनी वासयष्टिः,—मेघ० ७९, काञ्चनं वलयम्—श० ६।५, मनु० ५।११२, —नम् 1. सोना —(ग्राह्यम्) अमेध्यादपि काञ्चनम्—मनु०२।२३९ 2. प्रभा, दीप्ति 3. सम्पत्ति, धन-दौलत 4. कमल तन्तु, —नः 1. धतूरे का पौधा 2. चम्पक का पौधा । सम० —अङ्गी सुनहरी रंगरूप की स्त्री—भामि० २।७२, —कन्दरः सोने की कान,—गिरिः मेरु नामक पहाड़, —भूः (स्त्री०) 1. सुनहरी (पीली) भूमि 2. स्वर्णरज,—सन्धिः समता के आधार पर दो दलों में हुई सुलह । तु० हि० ४।११३ ।

काञ्चनारः (लः) [काञ्चन+ऋ(अल्)+अण्] कचनार का पेड़ ।

काञ्चिः,—ची (स्त्री०)[काञ्च्+इन्=कांचि+ङीप्] स्त्री की (छोटे २ घुंघरुओं युक्त) मेखला या करधनी —एतावता नन्वनुमेयशोभि काञ्चीगुणस्थानमनिन्दितायाः—कु० १।३७, ३।५५, मेघ० २८ शि० ९।३२, रघु० ६।४३ 2. दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर जो हिन्दुओं का एक पावन नगर समझा जाता है (सात नगरों के नामों के लिए दे० 'अवन्ति') । सम० —पुरी,—नगरी 1. कांची (नगर) 2.—पदम् कूल्हा, नितम्ब ।

काञ्जिकम्, काञ्जिका [कुत्सिका अञ्जिका प्रकाशो यस्य—कु+अञ्ज्+ण्वुल्+टाप् इत्वम् कोः कादेशः] खटास से युक्त एक प्रकार का पेय, काँजी ।

काटुकम् [कटुकस्य भावः—अण्] खटास, अम्लता ।

काठः [कठ्+घञ्] चट्टान, पत्थर ।

काठिनम्,—न्यम् [कठिन+अण्, ष्यञ् वा] 1. कठोरता, कड़ापन—काठिन्यमुक्तस्तनम्—श० ३।११ 2. निष्ठुरता, निर्दयता, क्रूरता ।

काण (वि०) [कण्+घञ्] 1. एक आँख वाला—अक्ष्णा काणः—सिद्धा०, काणेन चक्षुषा किं वा—हि० प्र० १२, मनु० ३।१५५ 2. छिद्रवाला, फटा हुआ (जैसे कि कौड़ी)—प्राप्तः काणवराटकोऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुंच माम्—भर्तृ० ३।४, फूटी कौड़ी ।

काणेयः,—रः [काणा+ढक्, ढ्रक् वा] कानी स्त्री का पुत्र ।

काणेली [काण+इल्+अच्+ङीप्] 1. असती या व्यभिचारिणी स्त्री 1. अविवाहिता स्त्री । सम०—मातृ (पुं०) अविवाहिता माता का पुत्र, हरामी (तिरस्कार सूचक शब्द जो केवल सम्बोधन में प्रयुक्त होता है) —काणेलीमातः अस्ति किंचिच्चिह्नं यदुपलक्षयसि —मृच्छ० १ ।

काण्डः,—डम् [कण्+ड, दीर्घः] 1. अनुभाग, अंश, खंड 2. पौधे का एक गाँठ से दूसरी गाँठ तक का भाग, पोरी 3. डंठल, तना, शाखा—लीलोत्खातमृणालकाण्डकवलच्छेदेषु—उत्तर० ३।१६, अमरु ९५, मनु० १।४६, ४८ 4. ग्रन्थ का भाग, जैसे कि किसी पुस्तक का अध्याय, जैसे रामायण के सात काण्ड 5. एक पृथक् विभाग या विषय—उदा० ज्ञानं°, कर्म° आदि 6. झुंड, गट्ठर, समुदाय 7. वाण 8. लम्बी हड्डी, भुजाओं या पैरों की हड्डी 9. बेत, सरकण्डा 10. लकड़ी, लाठी 11. पानी 12. अवसर, मौका 13. निजी जगह 14. अनिष्ट कर, बुरा, पापमय (केवल समास के अन्त में) सम०—कारः वाणों का निर्माता,—गोचरः लोहे का वाण,—पटः,—पटकः कनात, परदा शि० ५।२२,—पातः तीर की मार, वाण का परास,—पृष्ठः 1. शस्त्रजीवी, सैनिक 2. वैश्य स्त्री का पति 3. दत्तक पुत्र, औरस से भिन्न कोई अन्य पुत्र 4. (तिरस्कार सूचक शब्द) अधम कुल, जाति-धर्म या अपने व्यवसाय को कलंक लगाने वाला, कमीना, नमकहराम, महावी० ३ में शतानन्द ने जामदग्न्य को 'काण्डपृष्ठ' नाम से सम्बोधित किया है (स्वकुलं पृष्ठतः कृत्वा यो वै परकुलं व्रजेत्, तेन दुश्चरितेनासौ काण्डपृष्ठ इति स्मृतः),—भंगः किसी अंग या हड्डी का टूटना—वीणा चाण्डाल की वीणा, —सन्धिः ग्रन्थि, जोड़ (जैसे कि पौधे की कलम लगाना),—स्पृष्टः शस्त्रजीवी, योद्धा, सैनिक ।

काण्डवत् (पुं०) [काण्ड+मतुप् मस्य वः] धनुर्धारी ।

काण्डीरः [काण्ड+ईरन्] धनुर्धारी (कई अवसरों पर यह शब्द 'काण्डपृष्ठ' शब्द की तरह तिरस्कार सूचक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है तु० महावी० ३)

काण्डोलः [काण्डोल्+अण्] नरकुल की बनी टोकरी, दे० 'कण्डोल' ।

कात् (अव्य०) [कुत्सितम् अतति अनेन कु+अत्+क्विप् कोः कादेशः] तिरस्कार सूचक उद्गार, प्रायः कृ के साथ, कात्कृ अपमानित करना, तिरस्कार करना —यन्मयैश्वर्यमत्तेन गुरुः सदसि कात्कृतः—भाग० ।

कातर (वि०) [ईषत् तरति स्वकार्यसिद्धिं गच्छति—तृ+अच् कोः कादेशः—तारा०] 1. कायर, डरपोक, हतोत्साह—वर्जयन्ति च कातरान्—पंच० ४।४२, अमरु ७, ३०, ७५, रघु० ११।७८ मेघ० ७७ 2. दुःखी, शोकान्वित, भयभीत—किमेवं कातरासि श० ४

3. विक्षुब्ध, विस्मित, उद्विग्न—भर्तृ० १।६० 4. भय के कारण कांपने वाला (जैसे आँख का फरकना) रघु० २।५२, अमरु ७९ ।

कातर्यम् [कातर+ष्यञ्] कायरता,—कातर्यं केवला नीतिः शौर्यं श्वापदचेष्टितम्—रघु० १७।४७ ।

कात्यायनः [कतस्य गोत्रापत्यम्, कत+यञ्+फक्] 1. एक प्रसिद्ध वैयाकरण जिसने पाणिनि के सूत्रों पर अनुपूरक वार्तिक लिखे हैं 2. एक ऋषि जिसने श्रौतसूत्र व गृह्य सूत्र की रचना की है—याज्ञ० १।४ ।

कात्यायनी [कात्यायन+ङीष्] 1. एक प्रौढ़ा या अधेड़ विधवा (जिसने लाल वस्त्र पहने हुए हों) 2. पार्वती । सम०—पुत्रः,—सुतः कार्तिकेय ।

काथञ्चित्क (वि०) (स्त्री—की) [कथंचित्+ठक्] किसी न किसी प्रकार (कठिनाइयों के साथ) सम्पन्न ।

काथिकः [कथा+ठक्] कहानी सुनाने वाला, कहानी-लेखक, कहानीकार ।

कादम्बः [कदम्ब+अण्] 1. कलहंस,—रघु० १३।५५, ऋतु० ४।९ 2. बाण—शि० १८।२९ 3. ईख, गन्ना 4. कदम्ब वृक्ष,—बम् कदम्ब वृक्ष का फूल,—रघु० १३।२७ ।

कादम्बरम् [कादम्ब+ला+क, लस्य रः] कदम्ब के फूलों से खींची हुई शराब—निषेव्य मधु माधवाः सरसमत्र कादम्बरम्—शि० ४।६६,—री 1. कदम्ब वृक्ष के फूलों से खींची हुई शराब 2. शराब—कादम्बरीसाक्षिकं प्रथम सौहृदमिष्यते—श० ६ या कादम्बरीमदविघूर्णितलोचनस्य युक्तं हि लाङ्गलभृतः पतनं पृथिव्याम्—उद्भट 3. मदमाते हाथी की कनपटियों से बहने वाला मद 4. सरस्वती की उपाधि, विद्यादेवी 5. मादा कोयल ।

कादम्बिनी (स्त्री०) [कादम्ब+इनि+ङीप्] बादलों की पंक्ति—मदीयमतिचुम्बिनी भवतु कापि कादम्बिनी—रस०, भामि० ४।९ ।

कादाचित्क (वि०) (स्त्री०—त्की) [कदाचित्+ठञ्] सांयोगिक, आकस्मिक ।

काद्रवेयः [कद्रोः अपत्यम्—कद्रु+ढक्] एक प्रकार का सांप ।

काननम् [कन्+णिच्+ल्युट्] 1. जङ्गल, बाग—रघु० १२।२७, १३।१८ मेघ० १८, ४२, काननावनि—जङ्गल की भूमि 2. घर, मकान । सम०—अग्निः जंगली आग, दावानल,—ओकस् (पुं०) 1. जंगलवासी 2. बन्दर ।

कानिष्ठिकम् [कनिष्ठिका+अण्] हाथ की सबसे छोटी (कन्नो) अंगुली, ।

कानिष्ठिनेयः,—यी [कनिष्ठा+अपत्यार्थे ठक्, इनङ च] सबसे छोटी लड़की की सन्तान ।

कानीनः [कन्यायाः जातः—कन्या+अण्, कानीन् आदेश] अविवाहिता स्त्री का पुत्र—कानीनः कन्यकाजातो मातामहसुतो मतः—याज्ञ० २।१२९, मनु० ९।१७२ में दी गई परिभाषा भी देखिए 2. व्यास 3. कर्ण ।

कान्त (वि०) [कन् (म्)+क्त] 1. इष्ट, प्रिय, अभीष्ट,—अभिमतकान्तं क्रतुं चाक्षुषं—मालवि० १, ४. 2. सुखकर, रुचिकर—भीमकान्तैर्नृपगुणैः—रघु० १।१६ 3. मनोहर, सुन्दर—सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति—श० २,—तः 1. प्रेमी 2. पति - कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः सङ्गमात्किचिदूनः—मेघ० १००, शि० १०।३, २९ 3. प्रेमपात्र 4. चन्द्रमा 5. वसन्त ऋतु 6. एक प्रकार का लोहा 7. रत्न (समास में सूर्य, चन्द्र और अयस् के साथ) 8. कार्तिकेय की उपाधि,—तम् केसर, जाफ़रान, सम०—आयसम्, चुम्बक, अयस्कान्त ।

कान्ता [कम्+क्त+टाप्] 1. प्रेमिका या लावण्यमयी स्त्री 2. गृह स्वामिनी, पत्नी—कान्तासखस्य शयनीयशिलातलं ते उत्तर० ३।२१, मेघ० १९, शि० १०, ७३ 3. प्रियङ्गु लता 4. बड़ी इलायची 5. पृथ्वी । सम०—अङ्घ्रिदोहदः अशोक वृक्ष—दे० अशोक ।

कान्तारः,—रम् [कान्त+ऋ+अण्] 1. विशाल बियाबान जङ्गल,—गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते—पंच० ४।८१, भर्तृ० १।८६ याज्ञ० २।६८ 2. खराब सड़क 3. सूराख, छिद्र,—रः 1. लाल रंग की जाति का गन्ना 2. पहाड़ी आबनूस ।

कान्तिः (स्त्री०) [कम्+क्तिन्] 1. मनोहरता, सौन्दर्य—मेघ० १५, अक्लिष्टकान्ति—श० ५, १९ 2. चमक, प्रभा, दीप्ति—मेघ० ८४ 3. व्यक्तिगत सजावट या शृङ्गार 4. कामना, इच्छा 5. (अलं० शा० में) प्रेमोद्दीप्त सौन्दर्य (सा० द० शोभा और दीप्ति से कान्ति को इस प्रकार भिन्न बताता है—रूपयौवनलालित्यं भोगाद्यैरङ्गभूषणम्, शोभा प्रोक्ता सैव कान्तिर्मन्मथाप्यायिता द्युतिः, कान्तिरेवाति विस्तीर्णा दीप्तिरित्यभिधीयते—१३०, १३१) 6. मनोहर या कमनीय स्त्री 7. दुर्गा की उपाधि । सम०—कर (वि०) सौन्दर्य बढ़ाने वाला, शोभा बढ़ाने वाला,—द (वि०) सौन्दर्य देने वाला, अलंकृत करने वाला (दम्) 1. पित्त 2. घी,—द,—दायक,—दायिन् (वि०) अलंकृत करने वाला,—भृत् (पुं०) चन्द्रमा ।

कान्तिमत् (वि०) [कान्ति+मतुप्] मनोहर, सुन्दर, भव्य कु० ४।५, ५।७१, मेघ० ३०—(पुं०) चन्द्रमा ।

कान्दवम् [कन्दु+अण्] लोहे की कढ़ाई या चूल्हे में भुनी हुई कोई वस्तु ।

कान्दविक (वि०) [कान्दव+ठक्] नानबाई, हलवाई ।

कान्दिशीक (वि०) [कां दिशां यामीत्येवं वादिनोऽर्थे ठक्, पृषो० साधुः] 1. उड़ने वाला, भागने वाला, भगोड़ा—मृगजनः कान्दिशीकः संवृत्तः पंच० १।२, (अतः) त्रस्त, भयभीत—भामि० २।१७८ ।

कान्यकुब्जः [कन्या कुब्जा यत्र—कन्याकुब्ज+अण् पृषो० साधुः] एक देश का नाम दे० 'कन्याकुब्ज'।

कापटिक (वि०) (स्त्री०—की) [कपट+ठक्] 1. जालसाज, बेईमान 2. दुष्ट, कुटिल,—**कः** चापलूस, चाटुकार, पिछलग्गू।

कापट्यम् [कपट+ष्यञ्] दुष्टता, जालसाजी, धोखादेही।

कापथः [कुत्सितः पन्थाः] खराब सड़क (शा० और आलं०)

कापालः, कापालिकः [कपाल+अण्, ठक् वा] शैव सम्प्रदाय के अन्तर्गत विशिष्ट सम्प्रदाय का अनुयायी (वामाचारी) जो मनुष्य की खोपड़ियों की माला धारण करते हैं और उन्ही में खाते पीते हैं, पंच० १।२१२।

कापालिन् (पुं०) [कपाल+अण्+इनि] शिव।

कापिक (वि०) (स्त्री०—की) [कपि+ठक्] बन्दर जैसी शक्ल सूरत का या बन्दरों की भांति व्यवहार करने वाला।

कापिल (वि०) (स्त्री०—ली) [कपिल+अण्] 1. कपिल से सम्बन्ध रखने वाला या कपिल का 2. कपिल द्वारा शिक्षित या कपिल से व्युत्पन्न,—**लः** कपिल मुनि द्वारा प्रस्तुत सांख्यदर्शन का अनुयायी 2. भूरा रंग।

कापुरुषः [कुत्सितः पुरुषः—कोः कदादेशः] नीच घृणित व्यक्ति, कायर, नराधम, पाजी—सुसन्तुष्टः कापुरुषः स्वल्पकेनापि तुष्यति पंच० १।२५, ३६१।

कापेयम् [कपि+ठक्] 1. बन्दर की जाति का 2. बन्दर जैसा व्यवहार बन्दर जैसे दांव पेंच।

कापोत (वि०) (स्त्री०—ती) [कपोत+अण्] भूरे रंग का, धूसर रंग का,—**तम्** 1. कबूतरों का समूह 2. सुर्मा,—**तः** भूरा रंग। सम०—**अंजनम्** आंखों में आँजने का सुर्मा।

काम् (अव्य०) आवाज देकर बुलाने के लिए प्रयुक्त होने वाला अव्यय।

कामः [कम्+घञ्]। कामना, इच्छा—सन्तानकामाय—रघु० २।६५, ३।६७, (प्रायः तुमुन्नन्त के साथ प्रयुक्त) गन्तुकामः—जाने का इच्छुक—भग० २।६२, मनु० २।९४ 2. अभीष्ट पदार्थ—सर्वान् कामान् समश्नुते—मनु० २।५ 3. स्नेह, अनुराग 4. प्रेम या विषम भोग की इच्छा जो जीवन के चार उद्देश्यों (पुरुषार्थ) में से एक है—तु० अर्थ और अर्थ काम 5. विषयों से तृप्ति की इच्छा, कामुकता मनु० २।२१४ 6. कामदेव 7. प्रद्युम्न 8. बलराम 9. एक प्रकार का आप—**मम्** 1. विषय, इच्छित पदार्थ 2. वीर्य, धातु (हिन्दू पौराणिकता के अनुसार काम ही कामदेव है—वही कृष्ण व रुक्मिणी का पुत्र है। उसकी पत्नी रति है, जिस समय देवताओं को तारक के विरुद्ध युद्ध करने के निमित्त अपनी सेनाओं के लिए सेनापति की आवश्यकता हुई तो उन्होंने कामदेव से सहायता मांगी जिससे कि शिव का ध्यान पार्वती की ओर आकृष्ट हो, यही एक बात थी जो राक्षसों का काम तमाम कर सकती थी। कामदेव ने इस बात का बीड़ा उठा लिया परन्तु शिव ने अपनी तपस्या के विघ्न से क्रुद्ध हो अपने तृतीय नेत्र की अग्नि से काम को भस्म कर दिया। उसके पश्चात् रति की प्रार्थना पर शिव ने कामदेव को प्रद्युम्न के रूप में जन्म लेने की अनुमति दे दी। उसका घनिष्ठ मित्र वसन्त ऋतु और पुत्र अनिरुद्ध है, वह धनुर्बाण से सुसज्जित है—भ्रमरपंक्ति ही उसके धनुष की डोरी है—और पांच विविध पौधों के फूल ही उसके बाण हैं)। सम—**अग्नि** 1. प्रेम की आग, प्रचंड प्रेम 2. उत्कट इच्छा, कामोन्माद, °**संदीपनम्** 1. कामाग्नि को प्रज्वलित करना 2. कोई कामोद्दीपक पदार्थ,—**अङ्कुशः** 1. अंगुली का नाखून 2. पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग—**अङ्गः** आम का वृक्ष,—**अधिकारः** प्रेम या इच्छा का प्रभाव,—**अधिष्ठित** (वि०) प्रेम के वशीभूत,—**अनलः** देखो 'कामाग्नि',—**अंध** (वि०) प्रेम या कामोन्माद के कारण अन्धा, (—**धः**) 'कोयल',—**अंधा** कस्तूरी,—**अन्निन्** (वि०) जब इच्छा हो तभी भोजन पाने वाला,—**अभिकाम** (वि०) कामुक, कामासक्त,—**अरण्यम्** प्रमोद वन या सुहावना उद्यान,—**अरि** शिव की उपाधि,—**अर्थिन्** (वि०) शृंगार प्रिय, विषयी, कामासक्त,—**अवतारः** प्रद्युम्न,—**अवसायः** प्रणयोन्माद या काम का दमन, वैराग्य,—**अशनम्** 1. जब चाहे तब भोजन करना, इच्छानुकूल खाना 2. अनियन्त्रित सुखोपभोग,—**आतुर** (वि०) प्रेम का रोगी, काम वेग के कारण रुग्ण —कामातुराणां न भयं न लज्जा—सुभा०,—**आत्मजः** प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध का विशेषण—**आत्मन्** (वि०) विषयी, कामुक, आसक्त—मनु० ७।२७,—**आयुधम्** 1. कामदेव का बाण 2. जननेन्द्रिय (**धः**) आम का वृक्ष,—**आयुः** (पुं०) 1. गिद्ध 2. गरुड़,—**आर्त** (वि०) प्रेम का रोगी, कामाभिभूत—कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु—मेघ० ५,—**आसक्त** (वि०) प्रेम या इच्छा के वशीभूत, कामोन्मत्त, कामासक्त,—**ईप्सु** (वि०) अभीष्ट पदार्थ प्राप्त करने के लिए सचेष्ट,—**ईश्वरः** 1. कुबेर का विशेषण 2. परमात्मा,—**उदकम्** 1. जल का ऐच्छिक तर्पण 2. विधि द्वारा विहित अधिकारियों को छोड़ कर दिवंगत मित्रों का जल से ऐच्छिक तर्पण—याज्ञ० ३।४, **उपहत** (वि०) कामोन्माद के वशीभूत, या प्रणय रोगी,—**कला** काम की पत्नी रति,—**काम—कामिन्** (वि०) प्रेम या

कामोन्माद के अधिदेशों का अनुयायी,—**कार** (वि०) इच्छानुकूल काम करने वाला, अपनी कामनाओं में लिप्त रहने वाला (—रः) 1. ऐच्छिक कार्य, स्वतः स्फूर्त कर्म—मनु० ११।४१, ४५ 2. इच्छा, इच्छा का प्रभाव—भग० ५।११,—**कूटः** 1. वेश्या का प्रेमी 2. वेश्यावृत्ति,—**कृत्** (वि०) 1. इच्छानुसार समय पर कार्य करने वाला, इच्छानुकूल कार्य करने वाला 2. इच्छा को पूरी करने वाला, (पुं०) परमात्मा,—**केलि** वि०) कामासक्त (लिः) 1. प्रेमी 2. संभोग —**क्रीडा** 1. प्रेम की रंगरेली, शृंगारी खेल 2. संभोग, —**ग** (वि०) इच्छानुकूल जाने वाला, इच्छानुसार आने जाने या कार्य करने के योग्य (—गा) असती तथा कामुक स्त्री—याज्ञ० ३।६,—**गति** (वि०) अभीष्ट स्थान पर जाने के योग्य—रघु० १३।७६,—**गुणः** 1. प्रणयोन्माद का गुण, स्नेह 2. संतृप्ति, भरपूर सुखोपभोग 3. विषय, इन्द्रियों को आकृष्ट करने वाले पदार्थ,—**चर**—**चार** (वि०) बिना किसी प्रतिबंध के स्वतंत्र रूप से घूमने वाला, इच्छानुकूल भ्रमण करने वाला—कु० १।५०,—**चार** (वि०) अनियंत्रित, प्रतिबंधरहित (—रः) 1. अनियन्त्रित गति 2. स्वतंत्र या स्वेच्छापूर्वक कार्य, स्वेच्छाचारिता—न कामचारो मयि शङ्कनीयः—रघु० १४।६२ 3. अपनी इच्छा या अभिलाषा, स्वतंत्र इच्छा, कामचारानुज्ञा—सिद्धा०, मनु०, २।२२० 4. विषयासक्ति 5. स्वार्थ,—**चारिन्** (वि०) 1. बिना किसी प्रतिबंध के घूमने वाला —मेघ० ६३ 2. कामासक्त, विषयी 3. स्वेच्छाचारी (पुं०) 1. गरुड़ 2. चिड़िया,—**ज** (वि०) इच्छा या कामोन्माद से उत्पन्न—मनु० ७।४६, ४७, ५०, —**जित्** (वि०) कामोन्माद या प्रेम को जीतने वाला —रघु० ९।३३, (पुं०) 1. स्कंद की उपाधि 2. शिव, —**तालः** कोयल,—**द** (वि०) इच्छा पूरी करने वाला, प्रार्थना स्वीकार करने वाला,—**दा**=कामधेनु,—**दर्शन** (वि०) मनोहर दिखाई देने वाला,—**दुघ** (वि०) अपनी इच्छाओं को दोहने वाला, अभीष्ट पदार्थों को देने वाला—प्रीता कामदुघा हि सा—रघु० १।८०, २।६३, मा० ३।११,—**दुघा**—**दुह्** (स्त्री० सब इच्छाओं को पूरा करने वाली काल्पनिक गाय—भग० १०।२८,—**दूती** मादा कोयल,—**देवः** प्रेम का देवता, —**धेनुः** (स्त्री०) समृद्धि की गौ, सब इच्छाओं को पूरा करने वाली स्वर्गीय गाय,—**ध्वंसिन्** (पुं०) शिव की उपाधि,—**पति**,—**पत्नी** (स्त्री०) कामदेव की स्त्री रति,—**पालः** बलराम,—**प्रवेदनम्** अपनी इच्छा, कामना या आशा की अभिव्यक्त करना—कच्चित् कामप्रवेदने—अमर०,—**प्रश्नः** अनियन्त्रित या मुक्त प्रश्न—**फलः** आम के वृक्ष की एक जाति,—**भोगाः** (ब.व.) विषयोपभोग में तृप्ति,—**महः** चैत्रपूर्णिमा को मनाया जाने वाला कामदेव का पर्व,—**मूढ**—**मोहित** (वि०) प्रेमप्रभावित या प्रेमाकृष्ट—उत्तर० २।५, —**रसः** वीर्यपात,—**रसिक** (वि०) कामासक्त, कामार्त —क्षणमपि युधा कामरसिकः—भर्तृ० ३।११२,—**रूप** (वि०) 1. इच्छानुकूल रूप धारण करने वाला, —जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः मेघ० ६ 2. सुन्दर, सुहावना (—पाः) (ब० व०) बंगाल के पूर्व में स्थित एक जिला (आसाम का पश्चिमी भाग) —रघु० ४।८०, ८४,—**रेखा**,—**लेखा** वेश्या, रंडी, —**लता** पुरुष की जननेंद्रिय, लिंग,—**लोल** (वि०) कामोन्मत्त, प्रेम का रोगी,—**वरः** इच्छानुकूल चुना हुआ उपहार,—**वल्लभः** 1. वसन्त ऋतु 2. आम का वृक्ष (—भा) ज्योत्स्ना, चाँदनी,—**वश** (वि०) प्रेम-मुग्ध, (शः) प्रेम के वशीभूत होना,—**वश्य** (वि०) प्रेमासक्त,—**वाद** (वि०) इच्छानुसार कुछ भी कहना, मनमाना कहना,—**विहंतृ** (वि०) इच्छाओं का हनन करने वाला,—**वृत्त** (वि०) विषय वासना में लिप्त, स्वेच्छाचारी, व्यसनासक्त—मनु० ५।१५४,—**वृत्ति** (वि०) इच्छानुसार काम करने वाला, स्वेच्छाचारी, स्वतंत्र—न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते कु० ५।८२, (स्त्री०—त्तिः) 1. मुक्त अनियंत्रित कार्य 2. मन की स्वतंत्रता,—**वृद्धिः** (स्त्री०) कामेच्छा में वृद्धि,—**वृन्तम्** शृंगवल्ली का फूल,—**शरः** 1. प्रेम का बाण 2. आम का वृक्ष,—**शास्त्रम्** प्रेमविज्ञान रतिशास्त्र,—**संयोगः** अभीष्ट पदार्थों की प्राप्ति,—**सखः** वसन्त ऋतु,—**सू** (वि०) इच्छा को पूरा करने वाला—रघु० ५।३३, —**सूत्रम्** वात्स्यायनमुनिकृत रतिशास्त्र,—**हैतुक** (वि०) बिना वास्तविक कारण के केवल इच्छामात्र से उत्पन्न—भग० १६।८

कामतः (अव्य०) [काम+तसिल्] 1. स्वेच्छा से, इच्छापूर्वक 2. अपनी इच्छा से, ज्ञानपूर्वक, इरादतन, जानबूझ कर—मनु० ४।१३०,—पदास्पृष्टं च कामतः —याज्ञ० १।१६८ 3. प्रेमावेश में, भावनावश, कामुकतावश—मनु० ३।१७३ 4. इच्छापूर्वक, स्वतन्त्रता से, बिना किसी नियन्त्रण के।

कामन (वि०) [कम्+णिङ्+युच्] कामासक्त, कामातुर;—**नम्** चाह, कामना,—**ना** कामना, इच्छा।

कामनीयम् [कमनीयस्य भावः—अण्] सौन्दर्य, आकर्षकता।

कामन्धमिन् (पुं०) [कामं यथेष्टं धमति—काम+ध्मा +णिनि, धमादेशः मुम् च नि०] कसेरा, ठठेरा।

कामम् (अव्य०) [कम्+णिङ्+अम्] 1. कामना या रुचि के अनुसार, इच्छानुसार, कामङ्गामी 2. सहमतिपूर्वक चाहना—मुद्रा० १।२५ 3. मन भर कर—उत्तर०

३।१६ 4. इच्छापूर्वक, प्रसन्नता के साथ—श० ४।४ 5. अच्छा, बहुत अच्छा (स्वीकृतिबोधक अव्यय), ऐसा हो सकता है कि—मनागनभ्यावृत्त्या वा कामं क्षाम्यतु यः क्षमी—शि० २।४३ 6. मान लिया (कि) यह सच है कि, निस्सन्देह (प्रायः इसके पश्चात् 'तु' 'तथापि' का प्रयोग होता है)—कामं न तिष्ठति मदाननसंमुखी सा भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्याः श० १।३१, २।१, रघु० ४।१३, ६।२२, १३।७५, मा० ९।३४ 7. बशक, सचमुच, वास्तव में,—रघु० २।४३ (बहुधा अनिच्छा या विरोध निहित रहता है) 8. अधिक अच्छा, चाहे (प्रायः 'न' के साथ)—काममामरणात्तिष्ठेद् गृहे कन्यर्तुमत्यपि, न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कहिचित्—मनु० ७।८९।

कामयमान, कामयान, कामयितृ (वि०) [कम्+णिङ्+शानच्, पक्षे मुक्, तृच् वा] कामासक्त, कामुक—रघु० १९।५० श० ३।

कामल (वि०) [कम्+णिङ्+कलच्] कामासक्त, कामुक —लः 1. वसन्त ऋतु 2. मरुस्थल।

कामलिका [कमल+कन्+टाप्, इत्वम्] मादक शराब।

कामवत् (वि०) [काम+मतुप्, मस्य वत्वम्] 1. इच्छुक, चाहने वाला 2. कामासक्त।

कामिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कम्+णिनि] 1. कामासक्त 2. इच्छुक 3. प्रेमी, प्रिय, (पुं०) 1. प्रेम करने वाला कामुक (स्त्रियों की ओर विशेष ध्यान देने वाला) —त्वया चन्द्रमसा चातिसन्धीयते कामिजनसार्थः—श० ३, त्वां कामिनो मदनदूतिमुदाहरन्ति—विक्रम० ४।११, अमरु २, मालवि० ३।१४ 2. जोरु का गुलाम, 3. चकवा 4. चिड़िया 5. शिव की उपाधि 6. चंद्रमा 7. कबूतर,—नी 1. प्रेम करने वाली, स्नेहमयी, प्रिय स्त्री—मनु० ८।११२ 2. मनोहर और सुन्दर स्त्री—उदयति हि शशांकः कामिनीगण्डपाण्डुः—मृच्छ० १।५७ केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय—प्रस० १। २२ 3. सामान्य स्त्री—मृगया जहार चतुरेव कामिनी—रघु० ९।६९, मेघ० ६३, ६७, ऋतु० १।२८ 4. भीरु स्त्री 5. मादक शराब।

कामुक (वि०) (स्त्री०—का, —की) [कम्+उकञ्] 1. कामना करता हुआ, इच्छुक 2. कामासक्त, कामातुर, —कः 1. प्रेमी, कामातुर—कामुकैः कुम्भीलकैश्च परिहर्तव्या चन्द्रिका—मालवि० ४, रघु० १९।३३, ऋतु० ६।९ 2. चिड़िया 3. अशोकवृक्ष —का) धन की इच्छुक स्त्री (—की) कामातुर या कामासक्त स्त्री।

काम्पिल्लः, काम्पीलः [कम्पिला नदी विशेषः तस्याः अदूरे भवः—कम्पिला+अण्=काम्पिल+अरम् नि० साधुः कम्पिला+अण् नि० दीर्घः,] एक वृक्ष का नाम—मा० ९।३१।

काम्बलः [कम्बलेन आवृतः—कम्बल+अण्] ऊनी कपड़े या कंबल से ढकी हुई गाड़ी।

काम्बविकः [कम्बु+ठक्] शंख या सीपी के बने आभूषणों का विक्रेता, शंख या सीपी का व्यापारी।

काम्बोजः [कम्बोज+अण्] 1. कंबोज देश का निवासी —मनु० १०।४४ 2. कंबोज का राजा 3. पुन्नाग वृक्ष 4. कंबोज देश के घोड़ों की एक जाति।

काम्य (वि०) [कम्+णिङ्+यत्] वांछनीय, इच्छा के उपयुक्त—सुधा विष्ठा च काम्याशनम्—श० २।८ 2. ऐच्छिक, किसी विशेष उद्देश्य से किया गया (विप० नित्य)—अन्ते काम्यस्य कर्मणः—रघु० १०।५०, मनु० २।२, १२।८९, भग० १८।२ 3. सुन्दर, मनोहर, लावण्यमय, खूबसूरत—नासौ न काम्यः—रघु० ६। ३०, उत्तर० ५।१२,—म्या कामना, इच्छा, इरादा, —प्रार्थना ब्राह्मणकाम्या—मृच्छ० ३, रघु० १।३५, भग० १०।१। सम०—अभिप्रायः स्वार्थनिहित प्रयोजन, —कर्मन् (नपुं०) किसी विशेष उद्देश्य तथा भावी फल की दृष्टि से किया गया धर्मानुष्ठान,—गिर् (स्त्री०) रुचि के अनुकूल भाषण,—दानम् 1. स्वीकार करने योग्य उपहार 2. स्वतंत्र इच्छा से दिया गया उपहार, ऐच्छिक भेंट,—मरणम् स्वेच्छापूर्वक मरना, आत्महत्या,—व्रतम् ऐच्छिक व्रत।

काम्ल (वि०) [कु ईषत् अम्लः—कोः कादेशः] कुछ थोड़ा खट्टा, ईषदम्ल।

कायः,—यम् [चीयतेऽस्मिन् अस्थ्यादिकमिति कायः, चि+घञ्, आदेः ककारः] 1. शरीर—विभाति कायः करुणापराणां परोपकारैर्न तु चन्दनेन—भर्तृ० २।७१, कायेन मनसा बुद्ध्या—भग० ५।११ इसी प्रकार कायेन, वाचा, मनसा आदि 2. वृक्ष का तना 3. वीणा का शरीर (तारों को छोड़कर वीणा का ढांचा) 4. समुदाय, जमघट, संचय 5. मूलधन, पूंजी 6. घर, आवास, वसति 7. कुंदा, चिह्न 8. नैसर्गिक स्वभाव —यम् ('तीर्थ' के साथ या 'तीर्थ' के बिना) अंगुलियों से नीचे का हाथ का भाग, विशेषकर कन्नो अंगुली (यह अंगुली प्रजापति के लिए पावन मानी जाती है—और 'प्रजापति तीर्थ' कहलाती है—तु० मनु० २।५८,५९),—यः आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसे 'प्राजापत्य' कहते हैं—याज्ञ० १।६०, मनु० ३।३८। सम०—अग्निः पाचनशक्ति,—क्लेशः शरीर का कष्ट या पीड़ा,—चिकित्सा आयुर्वेद के आठ विभागों में से तीसरा, समस्त शरीर में व्याप्त रोगों की चिकित्सा,—मानम् शरीर की माप,—वलनम् कवच, —स्थः 1. लेखक जाति (क्षत्रियपिता और शूद्र माता की संतान) 2. इस जाति का पुरुष—कायस्थ इति लघ्वी मात्रा—मुद्रा० १, याज्ञ० १।३३६ मृच्छ० ९,

(स्त्री०—स्था) 1. कायस्थ जाति की स्त्री 2. आंवले का वृक्ष (स्त्री०—स्थी) कायस्थ की पत्नी, —स्थित (वि०) शरीरगत, शारीरिक ।

कायक (स्त्री०—यिका), कायिक (स्त्री०—की) (वि०) [काय+वुञ्, स्त्रियां टाप्, इत्वम्—काय+ठक् स्त्रियां ङीप्] शरीर संबंधी, शारीरिक, शरीर विषयक—कायिकतपः—मनु० १२।८,—का ब्याज (धन के उपयोग के बदले में जो कुछ दिया जाय) । सम० —वृद्धिः (स्त्री०) धरोहर रक्खे हुए किसी पशु या वाणिज्य-सामग्री के उपयोग के बदले मुजरा दिया गया ब्याज 2. एसा ब्याज जिसकी अदायगी से मूलधन पर कोई प्रभाव न पड़े, धरोहर रक्खे हुए पशु को उपयोग म लाना ।

कार (वि०) (स्त्री०—री) [कृ+अण्, घञ् वा] (समास के अन्त में) बनाने वाला, करने वाला, सम्पादन करन वाला, कार्य करने वाला, निर्माता, कर्ता, रचयिता —ग्रंथकारः=रचयिता, कुंभकारः, स्वर्णकारः आदि, —रः 1. कृत्य, कार्य जैसा कि 'पुरुषकार' में 2. किसी एसी ध्वनि या शब्द को प्रकट करने वाला पद जो विभक्ति चिह्न से युक्त न हो जैसा कि अकार,—मनु० २।७६, १२६, ककार, फूत्कार आदि 3. प्रयास, चेष्टा —शि० १९।२७ 4. धार्मिक तप 5. पति, स्वामी, मालिक 6. संकल्प 7. शक्ति, सामर्थ्य 8. कर या चुंगी 9. हिम का ढर 10 हिमालय पर्वत । सम०—अवरः एक मिश्रित या नीचजाति का पुरुष जो निषाद पिता व वैदेही माता से उत्पन्न हुआ—तु० मनु० १०।३६, —कर (वि०) कार्य करने वाला, अभिकर्ता,—भूः चुंगीघर ।

कारक (वि०)(स्त्री०—रिका) [कृ+ण्वुल्] (प्रायः समास के अन्त में) 1. बनान वाला, अभिनय करने वाला, करने वाला, सम्पादन करने वाला, रचने वाला, कर्ता आदि—स्वप्नस्य कारकः—याज्ञ० ३।१५०, २।१५६, वर्णसंकरकारकैः—भग० १।४२, मनु० ७।२०४ पंच० ५।३६ 2. अभिकर्ता—कम् । (व्या० में) संज्ञा और क्रिया के मध्य रहने वाला संबंध (या संज्ञा और उससे संबद्ध अन्य शब्द) इस प्रकार के कारक गिनती म छः ह जो 'संबंधकारक' को छोड़कर शेष विभक्तियों से संबद्ध हैं १. कर्ता २. कर्म ३. करण ४. सम्प्रदान ५. अपादान और ६. अधिकरण 2. व्याकरण का वह भाग जो इनके व्यवहार को बतलाता है—अर्थात् वाक्य रचना या कारक-प्रकरण । सम०—दीपकम् (अलं० शा० म) एक अलंकार जिसमें एक ही कारक उत्तरोत्तर अनेक क्रियाओं से संयुक्त हो—उदा० —खिद्यति कूणति वेल्लति विचलति निमिषति विलोकयति तिर्यक्, अन्तर्नंदति चुम्बितुमिच्छति नवपरिणया वधूः शयने—काव्य० १०, —हेतुः क्रियात्मक या क्रियापरक कारण (विप० ज्ञापक हेतु) ।

कारणम् [कृ+णिच्+ल्युट्] 1. हेतु, तर्क —कारणकोपाः कुटुम्बिन्यः—मालवि० १।१८, रघु० १।७४, भग० १३।२१ 2. आधार, प्रयोजन, उद्देश्य—किं पुनः कारणम्—महा०, याज्ञ० २।२०३, मनु० ८।३४७, कारणमानुषीं तनुम्—रघु० १६।२२ 3. उपकरण, साधन—याज्ञ० ३।२० ६५ 4. (न्या० द० में) वह कारक जो निश्चित रूप से किसी फल का पूर्ववर्ती कारण हो, या 'मिल' के मतानुसार—'पूर्ववर्ती कारण या उनका समूह जिन पर कार्य निश्चित रूप से, बिना किसी लागलपेट के निर्भर करता है; नैयायिकों के मतानुसार इसके तीन भेद हैं:—(क) समवायि (घनिष्ठ और अन्तर्हित) जैसा कि कपड़े का कारण तन्तु,—धागे (ख) असमवायि (जो न तो घनिष्ठ हो न अन्तर्हित) जैसा कि कपड़े के लिए तन्तुओं का संयोग (ग) निमित्त (उपकरणात्मक) जैसा कि कपड़े के लिए जुलाहे की खड्डी 5. जननात्मक कारण—सृष्टिकर्ता, पिता,—कु० ५।८१ 6. तत्त्व, तत्त्व-सामग्री—याज्ञ० ३।१४८, भग० १८।१३ 7. किसी नाटक या काव्य का मूल या कथावस्तु आदि 8. इन्द्रिय 9. शरीर 10 चिह्न, दस्तावेज, प्रमाण या अधिकार-पत्र—मनु० ११।८४ 11 जिसके ऊपर कोई मत या व्यवस्था निर्भर करती है । सम०—उत्तरम् विशेष तर्क, अभियोग के कारण को मुकरना (स्वीकार न करना), आरोप को सामान्यतः मान लेना परन्तु वास्तविक (वैध) तथ्य को अस्वीकृत कर देना,—कारणम् प्रारंभिक या प्राथमिक कारण, अणु,—गुणः कारण का गुण,—भूत (वि०) 1. जो कारण बना हो 2. कारण बनने वाला,—माला एक अलंकार 'कारणों की श्रृंखला'—यथोत्तरं चेत्पूर्वस्य पूर्वस्यार्थस्य हेतुता, तदा कारणमाला स्यात्—काव्य० १०—उदा० भग० २।६२, ६३, सा० द० ७२८,—वादिन् (पुं०) अभियोक्ता, वादी, —वारि (नपुं०) सृष्टि के आरंभ में उत्पन्न मूल जल,—विहीन (वि०) बिना कारण के,—शरीरम् (वेदान्त द०) शरीर का आन्तरिक बीजारोपण, मूलसूत्र, या कारणों की रूपरेखा ।

कारणा [कृ+णिच्+युच्+टाप्] 1. पीड़ा, वेदना 2. नरक में डालना ।

कारणिक (वि०) [कारण+ठक्] 1. परीक्षक, निर्णायक 2. कारण परक, नैमित्तिक ।

कारण्डवः [रम्+ड=रण्डः, ईषत् रण्डः=कारण्डः तं वाति—वा+क] एक प्रकार की बत्तख—तप्तं वारि विहाय तीरनलिनीं कारण्डवः सेवते—विक्रम० २।२३ ।

कारन्धमिन् (पुं०) [कर एव कारः, तं धमति, कार+ध्मा

+इनि पृषो०] 1. कसेरा 2. खनिज विद्या को जानने वाला ।

कारवः [का इति रवो यस्य ब० स०] कौवा ।

कारस्करः [कारं करोति—कार+कृ+ट, सुट्] किंपाक वृक्ष ।

कारा [कीर्यते क्षिप्यते दण्डार्हो यस्याम्—कृ+अङ, गुणः, दीर्घः नि०] 1. कारावास, बन्दीकरण 2. जेलखाना, बन्दीगृह 3. वीणा का गर्दन के नीचे का भाग, तूंबी 4. पीडा, कष्ट 5. दूती 6. सोने का काम करने वाली स्त्री । सम०—अगारम्,—गृहम्—वेश्मन् बन्दीघर, जेलखाना—कारागृहे निर्जितवासवेन लङ्केश्वरेणोषितमाप्रसादात्—रघु० ६।४०, शा० ४।१०, भर्तृ० ३।२१, —गुप्तः बन्दी, कैदी,—पालः बन्दीगृह का रखवाला, कारागार का अधीक्षक ।

कारिः (स्त्री०) [कृ+इञ्] कार्य, कर्म, (पुं०-स्त्री०) कलाकार, शिल्पकार ।

कारिका [कृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. नर्तकी 2. व्यवसाय, धंधा 3. व्याकरण, दर्शन तथा विज्ञान से संबद्ध काव्य, या पद्य संग्रह—उदा०, (व्या० पर) भर्तृहरि की कारिका, सांख्यकारिका 4. यन्त्रणा, यातना 5. व्याज ।

कारीषम् [करीष+अण्] सूख गोबर की करसियों का ढेर ।

कारु (वि०) (स्त्री०—रू) [कृ+अण्] 1. निर्माता, कर्ता, अभिकर्ता, नौकर 2. कारीगर, शिल्पकार, कलाकार—कारुभिः कारितं तेन कृत्रिमं स्वप्नहेतवे —विद्धशा० १।१३, इति स्म सा कारुतरेण लेखितं नलस्य च स्वस्य च सख्यमीक्षते—नै० १।३८, याज्ञ० २।२४९, १।१८७, मनु० ५।१२८, १०।१२, (वे ये हैं—तक्षा च तन्त्रवायश्च नापितो रजकस्तथा, पंचमश्चर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः।)—रुः—देवताओं के शिल्पी विश्वकर्मा 2. कला, विज्ञान । सम० —चौरः सेंध मारने वाला, डाकू—जः 1. शिल्प से बनी कोई वस्तु, शिल्पकर्म द्वारा निर्मित वस्तु 2. युवा हाथी या हाथी का बच्चा 3. पहाड़ी, बमी 4. फेन, झाग ।

कारुणिक (वि०) (स्त्री०—की) [करुणा+ठक्] दयालु, कृपालु, सदय—नागा० १।१ ।

कारुण्यम् [करुणा+ष्यञ्] दया, कृपा, रहम—कारुण्यमातन्यते—गीत० १, करिण्यः कारुण्यास्पदम्—भामि० १।१ ।

कार्कश्यम् [कर्कश+ष्यञ्] 1. कठोरता, रूखापन 2. दृढ़ता 3. ठोसपन कड़ापन, शि० २।१७ पंच० १।१९० 4. कठोरहृदयता, सख्ती, क्रूरता—कार्कश्यं गमितेऽपि चेतसि—अमरु २४ ।

कार्तवीर्यः [कृतवीर्य+अण्] कृतवीर्य का पुत्र, हैहय देश का राजा, जिसकी राजधानी माहिष्मती नगरी थी (पूजा के फलस्वरूप,उसने दत्तात्रेय से कई वर प्राप्त किये जैसे कि हजार भुजायें, स्वर्णमय रथ जो इच्छानुसार जहाँ चाहे जा सकता था, न्याय द्वारा अनिष्ट निवारण की शक्ति, दिग्विजय, शत्रुओं द्वारा अपराजेयता आदि (तु० रघु० ६।३९) । वायुपुराण के अनुसार धर्म तथा न्याय पूर्वक उसने ८५००० वर्ष तक राज्य किया तथा १०००० यज्ञ किए । वह रावण का समकालीन था, उसने रावण को अपनी नगरी के एक कोने में पशु की भाँति बन्दीखाने में डाल दिया —तु० रघु० ६।४०, कार्तवीर्य को परशुराम ने मार डाला, क्योंकि वह परशुराम के पूज्य पिता जमदग्नि की कामधेनु को उड़ा कर ले गया था । कार्तवीर्य को सहस्रार्जुन भी कहते हैं) ।

कार्तस्वरम् [कृतस्वर+अण्] सोना,—स तप्तकार्तस्वरभासुराम्बरः—शि० १।२०, °दंडेन—का० ८२ ।

कार्तान्तिकः [कृतान्त+ठक्] ज्योतिषी, भाग्यवक्ता—कार्तान्तिको नाम भूत्वा भुवं बभ्राम—दश० १३० ।

कार्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [कृत्तिका+अण्] कार्तिक मास से संबंध रखने वाला—रघु० १९।३९,—कः 1. वह महीना जब कि पूरा चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र के निकट रहता है (अक्तूबर-नवम्बर महीना) 2. स्कन्द का विशेषण, (—की) कार्तिक मास की पूर्णिमा ।

कार्तिकेयः [कृत्तिकानामपत्यं ढक्] स्कन्द (क्योंकि उसका पालन-पोषण छः कृत्तिकाओं द्वारा हुआ था) भारतीय पौराणिकता के अनुसार कार्तिकेय युद्ध का देवता है, शिव जी का पुत्र है, (परन्तु उसके जन्म में किसी स्त्री का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं है) उसके जन्म के विषय में बहुत सी परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है । शिव ने अपना वीर्य अग्नि में फेंका (जो कि कबूतरी के रूप में शिव के पास गई जब कि वह पार्वती के साथ सहवास का सुखोपभोग कर रहे थे) जिसने इसे सहन न करने के कारण गंगा में फेंक दिया (इसीलिए स्कन्द को अग्निभू या गंगापुत्र भी कहते हैं) । उसके पश्चात् यह छः कृत्तिकाओं (जब वह गंगा में स्नान करने गई) में संक्रांत कर दिया गया । फलस्वरूप वह सब गर्भवती हुई और प्रत्येक ने एक-एक पुत्र को जन्म दिया परन्तु बाद में इन छः पुत्रों को बड़े रहस्यमय ढंग से जोड़ कर एक कर दिया गया, इस प्रकार वह छः सिर, बारह हाथ तथा बारह आँखों वाला असाधारण रूप का व्यक्ति बना (इसीलिए उसे कार्तिकेय, षडानन या षण्मुख कहते हैं) । दूसरी कहानी के अनुसार गंगा ने शिव के वीर्य को सरकंडों में फेंक दिया, इसी कारण उसे शर

वनभव या शरजन्मा कहते हैं। कहते हैं कि उसने क्रौंच पहाड़ को विदीर्ण कर दिया इसीलिए वह क्रौंचदारण कहलाता है। एक शक्तिशाली राक्षस तारक के विरुद्ध युद्ध में वह देवताओं की सेना का सेनापति था—जिसमें उसने राक्षसों को परास्त करके तारक को मार डाला, इसीलिए उसका नाम सेनानी और तारकजित् है, उसका चित्रण मयूरारोही के रूप में किया जाता है)। सम०—प्रसूः (स्त्री०) पार्वती, कार्तिकेय की माता।

कार्त्स्न्यम् [कृत्स्न+ष्यञ्] पूर्णता, समग्रता, समूचापन —तान्निबोधत कार्त्स्न्येन द्विजाग्र्यान् पङ्क्तिपावनान् —मनु० ३।१८३।

कार्दम (वि०) (स्त्री०—मी) [कर्दम+अण्] कीचड़ से भरा हुआ, मिट्टी से सना हुआ या गारे से लथपथ।

कार्पटः [कर्पट+अण्] 1. आवेदक, अभियोक्ता, अभ्यर्थी 2. चिथड़ा 3. लाक्षा।

कार्पटिकः [कर्पट+ठक्] 1. तीर्थयात्री 2. तीर्थों के जलों को ढोकर अपनी आजीविका कमाने वाला 3. तीर्थयात्रियों का दल 4. अनुभवी पुरुष 5. पिछलग्गू।

कार्पण्यम् [कृपण+ष्यञ्] 1. गरीबी, दरिद्रता, गरीबीव्यक्तकार्पण्या 2. दया, रहम 3. कंजूसी, वुद्धिदौर्वल्य —भग० २।७ 4. लघुता, हल्कापन।

कार्पास (वि०) (स्त्री०—सी) [कर्पास+अण्] रूई का बना हुआ,—सः,—सम् रूई की बनी हुई कोई वस्तु —मनु० ३८।३२६, १२।६४ 2. कागज,—सी रूई का पौधा, वाड़ी। सम०—अस्थि (नपुं०) कपास का बीज विनौला,—नासिका तकुआ,—सौत्रिक (वि०) रूई के सूत से बना हुआ—याज्ञ० २।१७९।

कार्पासिक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्पास+ठक्] कपास का या रूई से बना हुआ।

कार्पासिका, कार्पासी [कार्पासी+कन्+टाप् ह्रस्व, कार्पास+ङीप्] रूई या कपास का पौधा, वाड़ी।

कार्मण (वि०) (स्त्री०—णी) [कर्मन्+अण्] 1. काम को पूरा करने वाला 2. कार्य को पूर्ण रूप से भलीभांति करने वाला,—णम् जादू, अभिचार—निखिलनयनाकर्षणे कार्मणज्ञा—भामि० २।७९, विक्रमांक० २।१४, ८।२।

कार्मिक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्मन्+ठक्] 1. हस्तनिर्मित, हाथ से बना हुआ 2. बेलबूटों से युक्त, रंगीन धागों से अन्तर्मिश्रित 3. रंगविरंगा या बेलबूटेदार वस्त्र।

कार्मुक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्मन्+उकञ्] काम करने योग्य, भलीभांति और पूर्णतः काम करने वाला,—कम् 1. धनुष—त्वयि चाधिज्यकार्मुके—श० १।६ 2. बांस।

कार्य (सं० कृ०) [कृ+ण्यत्] जो किया जाना चाहिए, बनना चाहिए, सम्पन्न होना चाहिए, कार्यान्वित किया जाना चाहिए आदि,—कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा मालिनी—श० ६।१६, साक्षिणः कार्याः—मनु० ८।१६, इसी प्रकार दण्डः, विचारः आदि,—र्यम् 1. काम, मामला, बात—कार्यं त्वया नः प्रतिपन्नकल्पम् —कु० ३।१४, मनु० ५।१५० 2. कर्तव्य—शि० २।१ 3. पेशा, जोखिम का काम, आकस्मिक कार्य 4. धार्मिककृत्य या अनुष्ठान 5. प्रयोजन, उद्देश्य, अभिप्राय—शि० २।३६, हि० ४।६१ 6. कमी, आवश्यकता, प्रयोजन, मतलब (करण० के साथ)—किं कार्यं भवतो हृतेन दयितास्नेहस्वहस्तेन मे—विक्रम० २।२०, तृणेन कार्यं भवतीश्वराणाम्—पंच० १।७१, अमरु ७१ 7. संचालन, विभाग 8. कानूनी अभियोग, व्यावहारिक मामला, झगड़ा आदि—बहिर्निष्क्रम्य ज्ञायतां कः कः कार्यार्थीति—मृच्छ० ९, मनु० ८।४३ 9. फल, किसी कारण का अनिवार्य परिणाम (विप० कारण) 10 (व्या० में) क्रियाविधि, विभक्तिकार्य—रूपनिर्माण 11. नाटक का उपसंहार—कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि रचयन्—मुद्रा० ४।३ 12. स्वास्थ्य (आयु०) 13. मूल। सम०—अक्षम (वि०) अपना कार्य करने में असमर्थ अक्षम,—अकार्यविचारः किसी वस्तु के औचित्य से संबंध रखने वाली चर्चा, किसी कार्यप्रणाली के अनुकूल या प्रतिकूल विचारविमर्श,—अधिपः 1. किसी कार्य या विषय का अधीक्षक 2. वह ग्रह या नक्षत्र जो ज्योतिष में किसी प्रश्न का निर्णायक होता है,—अर्थः किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य का उद्देश्य, प्रयोजन मनु० ७।१६७ 2. सेवानियुक्ति के लिए आवेदनपत्र 3. उद्देश्य या प्रयोजन,—अर्थिन् (वि०) 1. प्रार्थना करने वाला 2. अपना उद्देश्य या प्रयोजन सिद्ध करने वाला 3. सेवा नियुक्ति की खोज करने वाला 4. न्यायालय में अपने पक्ष का समर्थन करना, न्यायालय में जाने वाला—मृच्छ० ९—आसनम् किसी कार्य को संपन्न करने के लिए बैठने का स्थान, गद्दी,—ईक्षणम् सरकारी कार्यों की देखभाल—मनु० ७।१४१,—उद्धारः कर्तव्य को पूरा करना,—कर (वि०) अचूक, गुणकारी,—कारणे (द्वि० व०) कारण और कार्य, उद्देश्य और प्रयोजन,० भावः कारण और कार्य का संबंध,—कालः काम करने का समय, मौसम, उपयुक्त समय या अवसर,—गौरवम् किसी कार्य की महत्ता, —चिंतक (वि०) 1. दूरदर्शी, सावधान, सतर्क, (—कः) किसी व्यवसाय का प्रबन्धकर्ता, कार्यकारी अधिकारी याज्ञ० २।१९१,—च्युत (वि०) कार्यरहित, बेकार, किसी पद से बर्खास्त,—दर्शनम् 1. किसी कार्य का निरीक्षण करना 2. सार्वजनिक मामले की पूछताछ —निर्णयः किसी बात का फैसला,—पुटः 1. निरर्थक

काम करने वाला आदमी 2. पागल, सनकी विक्षिप्त 3. आलसी व्यक्ति, —प्रद्वेषः काम करने में अरुचि, आलस्य, सुस्ती, —प्रेष्यः अभिकर्ता, दूत, —वस्तु (न०) लक्ष्य और उद्देश्य, —विपत्तिः (स्त्री०) असफलता, प्रतिकूलता, दुर्भाग्य, —शेषः 1. बचा हुआ कार्य—मनु० ७।१५३ 2. कार्य की पूर्ति 3. किसी कार्य का अंश, —सिद्धिः (स्त्री०) सफलता, —स्थानम् काम करने की जगह, कार्यालय, —हंतृ 1. दूसरे के कार्य में बाधा डालने वाला, —हि० १।७७ 2. दूसरे के हितों का विरोधी। —कार्यतः (अव्य०) [कार्य+तसिल्] 1. किसी उद्देश्य या प्रयोजन के कारण 2. फलतः, अनिवार्यतः।

कार्श्यम् [कृश्+ष्यञ्] 1. पतलापन, दुर्बलता, दुबलापन —मेघ० २९ 2. छोटापना, अल्पता, कमी—रघु० ५।२१।

कार्षः [कृषि+ण] किसान, खेतीहर।

कार्षापणः, —णम् (या पणकः) [कर्ष्+अण्=कार्षः, आ+पण्+घञ्=आपणः, कार्षस्य आपणः ब० स०] भिन्न भिन्न मूल्य का सिक्का या बट्टा—मनु० ८।१३६, ९।२८२, (=कर्ष), —णम् धन।

कार्षापणिक (वि०) (स्त्री०—की) [कार्षापण+ठिन्] एक कार्षापण के मूल्य का।

कार्षिक=कार्षापण।

कार्ष्ण (वि०) (स्त्री०—र्ष्णी) [कृष्ण+अण्] 1. कृष्ण या विष्णु से सम्बन्ध रखने वाला, —रघु० १५।२४ 2. व्यास से सम्बन्ध रखने वाला 3. काले हरिण से सम्बन्ध रखने वाला—मनु० २।४१ 4. काला।

कार्ष्णायस (वि०) (स्त्री०—सी) [कृष्णायस्+अण्] काले लोहे से बना हुआ, —सम् लोहा।

कार्ष्णिः [कृष्णस्य अपत्यम्—कृष्ण+इञ्] कामदेव की उपाधि —शि० १९।१०।

काल (वि०) (स्त्री०—ली) [कु ईषत् कृष्णत्वं लाति ला+क, कोः कादेशः] 1. काला, काले या काले-नीले रंग का 2. समय—विलंबितफलैः कालं निनाय स मनोरथैः—रघु० १।३६, तस्मिन् काले—उस समय, काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्—हि० १।१, बुद्धिमान् अपना समय बिताते हैं 3. उपयुक्त या समुचित समय (किसी कार्य को करने के लिए) उचित समय या अवसर (संबं०, अधि०, सम्प्र० तथा तुमुन्नंत के साथ) —रघु० ३।१२, ४।६, १२।६९, पर्जन्यः कालवर्षी—मृच्छ० १०, ६० 4. काल का अंश या अवधि (दिन के घण्टे या पहर) —षष्ठे काले दिवसस्य —विक्रम० २। मनु० ५।१५३ 5. ऋतु 6. वैशेषिकों के द्वारा नौ द्रव्यों में से 'काल' नामक एक द्रव्य 7. परमात्मा जो कि विश्व का संहारक है, क्योंकि वह संहारक नियम का मूर्तरूप है—कालः काल्या भुवनफलके क्रीडति प्राणिशारैः—भर्तृ० ३।३९ 8. मृत्यु का देवता यम, —कः कालस्य न गोचरान्तरगतः —पंच० ११।१४६ 9. भाग्य, नियति 10. आँख की पुतली का काला भाग 11. कोयल 12. शनिग्रह 13. शिव 14. काल की माप (संगीत और छन्दः शास्त्र में) 15. कलाल, शराब खींचने तथा बेचने वाला 16. अनुभाग, खण्ड, —लम्, लोहा 2. एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य। सम०—अक्षरिकः साक्षर, पढ़ा लिखा, —अगुरुः एक प्रकार का चन्दन का वृक्ष, काला अगर—भामि० १।७०, रघु० ४।८१ (नपुं०) उस वृक्ष की लकड़ी, ऋतु० ४।५, ५।५, —अग्निः, —अनलः सृष्टि के अन्त में प्रलयाग्नि, —अंग (वि०) काले नीले शरीर वाला, (जैसे कि काली नीली धारवाली तलवार), —अजिनम् काले हरिण की खाल, —अञ्जनम् एक प्रकार का अंजन या—सुर्मा कु० ७।२०, ८२, —अण्डजः कोयल, —अतिरेकः समय की हानि, विलंब, —अत्ययः 1. विलंब 2. समय का बीतना 3. काल के बीत जाने के कारण हानि, —अध्यक्षः 1. 'समय का प्रधायक' सूर्य की उपाधि 2. परमात्मा, —अनुनादिन् (पुं०) 1. मधुमक्खी 2. चिड़िया 3. चातक पक्षी, —अन्तकः समय जो मृत्यु का देवता माना जाता है, सर्वसंहारक, —अन्तरम् 1. अन्तराल 2. समय की अवधि 3. दूसरा समय या अवसर, °आवृत्त (वि०) काल के गर्भ में छिपा हुआ, °क्षम (वि०) विलम्ब को सहन करने के योग्य—अकालक्षमा देव्याः शरीरावस्था—का० २६२, श० ४, °विषः चूहे की भाँति केवल क्रोधित किये जाने पर ही जहरीला जन्तु, —अभ्रः काला जल से भरा हुआ बादल, —अयसम् लोहा, —अवधिः नियत किया हुआ समय, —अशुद्धिः (स्त्री०) शोक मनाना, सूतक, पातक या जन्म-मरण से पैदा होने वाला अशौच, दे० अशौच, —आयसम् लोहा, —उप्त (वि०) ऋतु आने पर बोया हुआ, —कञ्जम् नीलकमल, —कटम्, —कटः शिव की उपाधि, —कण्ठः 1. मोर 2. चिड़िया 3. शिव की उपाधि —उत्तर० ६, —करणम्, समय का नियत करना —कर्णिका, —कर्णी दुर्भाग्य, मुसीबत, —कर्मन् (न०) मृत्यु, —कीलः कोलाहल, —कुण्ठः यम, —कूटः, —टम् (क) हलाहल विष (ख) समुद्र मन्थन से प्राप्त तथा शिव द्वारा पिया गया—अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूटम्—चौर० ५०, —कृत् (पुं०) 1. सूर्य 2. मोर 3. परमात्मा, —क्रमः समय का बीतना, समय का अनुक्रम—कालक्रमेण—समय पाकर, समय के अनुक्रम या प्रक्रिया में, कु० १।१९, —क्रिया 1. समय नियत करना 2. मृत्यु, —क्षेपः 1. विलंब, समय की हानि —मेघ० २२, मरणे कालक्षेपं मा कुरु—पंच० १ 2. समय बिताना, —खञ्जनम्, —खण्डम् यकृत्, जिगर,

—गंगायमुनानदी,—ग्रन्थिः एक वर्ष,—चक्रम् 1. समय का चक्र (समय सदैव घुमते हुएं पहिए के रूप में वर्णित किया जाता है) 2. चक्र 3. (अतः) (आलं०) संपत्ति का चक्र, जीवन की परिस्थितियां,—चिह्नम् मृत्यु के निकट आने का समय,—चोदित (वि०) यमदूतों के द्वारा बुलाया हुआ—ज्ञ (वि०) (किसी कार्य के) उचित समय या अवसर को जानने वाला—अत्यारूढों हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः—रघु० १२।३३, शि० २।८३—ज्ञः 1. ज्योतिषी 2. मुर्गा,—त्रयम् तीन काल, भूत, भविष्य और वर्तमान—°दर्शी—का० ४६,—दण्डः मृत्यु,—धर्मः,—धर्मन् (पुं०) 1. किसी विशेष समय के लिए उपयुक्त आचरण रेखा 2. निर्दिष्ट काल, मृत्यु—न पुनर्जीवितः कश्चित्कालधर्ममुपागतः—महा०, परीताः कालधर्मणा—आदि,—धारणा समय-वृद्धि,—नियोगः भाग्य या नियति का समादेश, भाग्य-निर्णय—कि० ९।१३,—निरूपणम् समय का निर्धारण करना, कालविज्ञान,—नेमिः 1. समय चक्र का घेरा 2. एक राक्षस जो रावण का चाचा था और जिसे हनुमान् को मारने का काम सौंपा गया था 3. सौ हाथों वाला राक्षस जिसे विष्णु ने मारा था,—पक्व (वि०) अपने समय पर पका हुआ—अर्थात् स्वतः स्फूर्त—मनु० ६।१७, २१, याज्ञ० ३।४९,—परिवासः थोड़े समय तक पड़े रहने वाला जिससे कि वासी जाय,—पाशः यम या मृत्यु का जाल,—पाशिकः जल्लाद,—पृष्ठम् 1. काले हरिण की जाति 2. बगला (कम्) 1. कर्ण का धनुष—वेणी० ४ 2. सामान्य धनुष,—प्रभातम् शरत्काल (बरसात के पश्चात् आने वाले दो मास का समय सर्वोत्तम समझा जाता है),—भक्षः शिव की उपाधि,—मानम् समय का मापना,—मुखः लंगूरों की एक जाति,—मेषी मंजिष्ठा पौधा,—यवनः यवनों का राजा कृष्ण का शत्रु, यादवों के कृष्ण के लिए अपराजेय शत्रु, युद्ध क्षेत्र में उसका मारना असम्भव समझ कर कृष्ण ने उसको कपट से मुचकुन्द की गुफा में धकेल दिया जिसने उसको भस्म करके उसका काम तमाम कर दिया।—यापः,—यापनम् टालमटोल करना, देर लगाना, स्थगित करना,—योगः भाग्य, नियति,—योगिन् (पुं०) शिव की उपाधि,—रात्रिः,—रात्री (स्त्री०) 1. अन्धेरी रात 2. विश्व की समाप्तिसूचक महाप्रलय की रात (दुर्गा के साथ संमरूपता दिखाई गई है),—लोहम्—स्टील, इस्पात,—विप्रकर्षः काल की वृद्धि,—वृद्धिः (स्त्री०) सामयिक व्याज (मासिक. त्रैमासिक या बँधे समय पर देय)—मनु० ८।१५३,—वेला शनिकाल, अर्थात् दिन का विशिष्ट समय (प्रतिदिन आधा पहर) जब कि किसी भी प्रकार के धर्मकृत्य का करना उचित समझा जाता है,—संरोधः 1. बहुत देर तक काम में हाथ न डालना—मनु० ८।१४३ 2. किसी लम्बे समय का क्षय होना,—सदृश (वि०) उपयुक्त, सामयिक,—सर्पः काले और अत्यन्त विषैले सांप की जाति,—सारः काला हरिण,—सूत्रम्,—सूत्रकम् 1. समय या मृत्यु की डोरी 2. एक विशेष नरक का नाम—याज्ञ० ३।२२२, मनु० ४।८८—स्कन्धः तमाखू का पेड़,—स्वरूप (वि०) मृत्यु जैसा भयङ्कर,—हरः—शिव की उपाधि,—हरणम् समय की हानि, विलम्ब—श० ३, उत्तर० ५,—हानिः (स्त्री०) विलम्ब—रघु० १३।१६।

कालकम् [काल+कन्] यकृत्, जिगर,—कः 1. मस्सा, झाईं 2. पनीला सांप 3. आंख की पुतली काला भाग।

कालञ्जरः [कालंजरयति-काल+जृ+णिच्+अच्] 1. एक पहाड़ तथा उसका समीपवर्ती प्रदेश (वर्तमास कलिंजर 2. धार्मिक भिक्षुओं या साधुओं की सभा 3. शिव की उपाधि।

कालशेयम् [कलशि+ढक्] छाछ, मट्ठा (मन्थन के द्वारा जो कलशी में उत्पन्न होता है)।

काला [काल+अच्+टाप्] दुर्गा की उपाधि।

कालापः [कालो मृत्युः आप्यते यस्मात्—काल+आप्+घञ्] 1. सिर के बाल 2. सांप का फण 3. राक्षस, पिशाच, भूत 4. 'कलाप' व्याकरण का विद्यार्थी 5. 'कलाप' व्याकरण का वेत्ता।

कालापकः [कालाप+वुन्] 1. 'कलाप' के विद्यार्थियों का समूह 2. कलाप की शिक्षा या उसके सिद्धांत।

कालिक (वि०) (स्त्री०—की) [काल+ठक्] 1. काल संबंधी 2. कालाश्रित विशेषः कालिकोऽवस्था—अमर० 3. मौसम के अनुकूल, सामयिक,—कः 1. सारस, 2. बगला,—का 1. कालापन, काला रंग 2. मसी, स्याही, काली मसी 3. कई किस्तों में दिया जाने वाला मूल्य 4. निर्दिष्ट समय पर दिया जाने वाला सामयिक व्याज 5. बादलों का समूह, घनघोर घटा. जिसके बरसने का डर हो—कालिकेव निबिडा बलाकिनी—रघु० ११।१५ 6. सोने में मिलाया जाने वाला खोट 7. यकृत्, जिगर 8. कौवी 9. बिच्छू 10. मदिरा 11. दुर्गा,—कम् काले चन्दन की लकड़ी।

कालिङ्ग (वि०) (स्त्री०—गी) [कलिङ्ग+अण्] कलिंग देश में उत्पन्न या उस देश का,—गः कलिंग देश का राजा—प्रतिजग्राह कालिङ्गस्तमस्त्रैर्गजसाधनः—रघु० ४।४० 2. कलिंग देश का सांप 3. हाथी 4. एक प्रकार की ककड़ी,—गाः (ब० व०) कलिंग देश—दे० कलिंग,—गम् तरबूज।

कालिन्द (वि०) (स्त्री०—दी) [कलिन्द+अण्+कलिन्द पहाड़ या यमुना नदी से प्राप्त या संबद्ध—कालिन्द्याः पुलिनेषु केलिकुपिताम्—वेणी० १।२, रघु० १५।२८

शा० ४।१३। सम०—कर्षणः,—भेदनः बलराम का विशेषण,—सूः (स्त्री०) सूर्य की पत्नी संज्ञा,—सोदरः मृत्यु का देवता यम।

कालिमन् (पुं०) [काल+इमनिच्] कालापन—अमरु ८८ शि० ४, ५७।

कालियः [के जले आलीयते—क+आ+ली+क] अत्यन्त विशालकाय सर्प जो कि यमुना नदी की तली में रहता था। यह स्थान सौभरि ऋषि के शाप के कारण साँपों के शत्रु गरुड़ के लिए निषिद्ध था। कृष्ण ने जब कि अभी वह बालक ही था उस साँप को कुचल दिया —रघु० ६।४९। सम०—दमनः—मर्दनः कृष्ण के विशेषण।

काली [काल+ङीष्] 1. कालिमा 2. मसी, काली मसी 3. पार्वती की उपाधि, शिव की पत्नी 4. काले बादलों की पंक्ति 5. काले रंग की स्त्री 6. व्यास की माता सत्यवती 7. रात,—तनयः भैंसा।

कालीकः [के जले अलति पर्याप्नोति—क+अल्+इकन् पृषो० दीर्घः] एक प्रकार का बगला, क्रौञ्च पक्षी।

कालीन (वि०) [काल+ख] 1. किसी विशिष्ट समय से सम्बन्ध रखने वाला 2. ऋतु के अनुकूल।

कालीयम्,—कम् [काल+छ, कन् वा] एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी।

कालुष्यम् [कलुष+ष्यञ्] 1. मलिनता, गन्दगी, गन्दलापन, पंकिलता (आलं० से भी)—कालुष्यमुपयाति बुद्धिः —का० १०३, गन्दली या मलिन हो जाती है 2. धुंधलापन 3. असहमति।

कालेय (वि०) [कलि+ढक्] कलि-युग से सम्बन्ध रखने वाला,—यम् 1. जिगर 2. काली चन्दन की लकड़ी —कु० ७।९ 3. केसर, ज़ाफ़रान।

कालेयकः (पुं०) 1. कुत्ता 2. चन्दन की जाति।

काल्पनिक (वि०) (स्त्री०—की) [कल्पना+ठक्] 1. केवल विचारों की, बनावटी—काल्पनिकी व्युत्पत्तिः—2. खोटा, बनावटी (किसी कला से)।

काल्य (वि०) [काल्=यत्] 1. समय पर, ऋतु के अनुकूल, रुचिकर, सुहावना, शुभ,—ल्यः पौ फटना, प्रभातकाल होना।

काल्याणकम् [कल्याण+वुञ्] मांगल्य, शुभ।

कावचिक (वि०) (स्त्री०—की) [कवच+ठञ्] जिरह बख्तर सम्बन्धी कवचधारी,—कम् कवचधारी व्यक्तियों का समूह।

कावृकः [कुत्सतो वृक इव, वा ईषत् वृक इव, कोः कादेशः] 1. मुर्गा 2. चक्रवाक पक्षी।

कावेरम् [कस्य सूर्यस्य इव, वा ईषत् वेरम् अङ्गं यस्य ज्योतिर्मयत्वात्] केसर, ज़ाफ़रान।

कावेरी [कं जलमेव वेरं शरीरमस्याः—क+वेर+अण्+ङीप्] दक्षिणभारत में बहने वाली एक नदी—कावेरीं सरितां पत्युः शङ्कनीयामिवाकरोत्- रघु० ४।४५ 2. [कुत्सितं वेगं शरीरमस्याः] वेश्या, रंडी।

काव्य (वि०) [कवि+ष्यत्] 1. ऋषि या कवि के गुणों से युक्त 2. मंत्रद्रष्टाविषयक या पैगम्बरी, प्रेरणा-प्राप्त, छन्दोबद्ध,—व्यः राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य,—व्या 1. प्रज्ञा 2. सखी,—व्यम् 1. कविता, महाकाव्य,—मेघदूतं नाम काव्यम् 2. काव्य, कविता, कवितामयी रचना (काव्य शास्त्र के रचयिताओं ने काव्य की भिन्न भिन्न परिभाषाएँ दी हैं—तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि—काव्य० १, वाक्यं रसात्मकं काव्यम् —सा० द० १, रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् —रस०, शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली —काव्या० १।१०, दे० चन्द्रा० १।७ भी 3. प्रसन्नता, कल्याण 4. बुद्धिमत्ता, अन्तः प्रेरणा। सम० —अर्थः कवितासम्बन्धी चिन्तन या विचार, °चौरः दूसरे कवि के विचारों का चोर, काव्य चोर,—यदस्य दैत्या इव लुण्ठनाय काव्यार्थचोराः प्रगुणीभवन्ति —विक्रम० १।११,—चौरः दूसरे व्यक्तियों की कविताओं को चुराने वाला,—मीमांसकः साहित्यशास्त्री, विवेचक,—रसिक (वि०) जो काव्य के सौन्दर्य को सराह सके या काव्यरस रखता हो,—लिंगम् एक अलंकार, इसकी परिभाषा—काव्यलिङ्गं हेतोर्वाक्यपदार्थता —काव्य० १०, उदा०—जितोऽसि मन्द कन्दर्प मच्चित्तेऽस्ति त्रिलोचनः—चन्द्रा० ५।११९।

काश् (भ्वा०, दिवा० आ०—काश—श्य—ते, काशित) 1. चमकना, उज्ज्वल या सुन्दर दिखाई देना—रघु० १०।८६, ७।२४, कु० १।२४, भट्टि० २।२५, शि० ६।७४ 2. प्रकट होना, दिखाई देना,—नैवभूमिर्न च दिशः प्रदिशो वा चकाशिरे—महा० 3. प्रकट होना, की भांति दिखाई देना, निस् —, (प्रेर०) 1. निकाल देना, निर्वासित करना, ठेल देना, जलावतन करना—दे० निस् पूर्वक कस्—1. खोलना 2. प्रकाशित करना 3. दृष्टि के सामने प्रस्तुत करना, प्र—,चमकना, उज्ज्वल दिखाई देना 2. दिखाई देना, प्रकट होना —एषु सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते—कठ० 3. की भांति दिखाई देना या प्रकट होना (प्रेर०) 1. दिखाना, प्रदर्शित करना, आविष्कार करना, उद्घाटित करना, व्यक्त करना—अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम्—श० १, सां० का० ५९ 2. प्रकाश में लाना, प्रकाशित करना, उद्घोषणा करना—कदाचित्कुपितं मित्रं सर्वदोषं प्रकाशयेत्—चाण० २० 3. मुद्रित करवाना, प्रकाशित करना (पुस्तक आदि)—प्रणीतः न तु प्रकाशितः—उत्तर० ४ 4. रोशनी करना, (दीपक) जलाना—यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोक-

मिमं रविः—भग० १३।३३, ५।१६, **प्रति—**, 1. की तरह प्रकट होना 2. विरोध या विषमतास्वरूप चमकना, **वि—**, 1. खिलना, खुलना (फूल की भांति) 2. चमकना,—**सम्**—, की भाँति दिखाई देना।

काशः,—शम् [काश्+अच्] छत में या चटाइयों के बनाने के लिए प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का घास —ऋतु० ३।१ २,—**शम्** 'काश नामक घास का फूल—कु० ७।११, रघु० ४।१७, ऋतु० ३।२८,—**शः** =कासः।

काशि (पुं० ब० व०) [काश्+इक्] एक देश का नाम।

काशिः,—शी (स्त्री०) [काश्+इन्, काश्+अच्+ङीष्] गंगा के किनारे स्थित एक प्रसिद्ध नगरी, वर्तमान वाराणसी, सात पावन नदियों में से एक—दे० कांची। सम०—**पः** शिव की उपाधि,—**राजः** एक राजा का नाम, अंबा, अंबिका और अंबालिका के पिता।

काशिन् (वि०) (स्त्री०—**नी**) (प्रायः समास के अंत में) [काश्+इन्, स्त्रियां ङीप्] दीप्यमान, किसी का रूप धारण किये हुए दिखाई देने वाला या प्रकट होने वाला, उदा० जितकाशिन्— जो काशि के विजेता की भांति व्यवहार करता है—दे०।

काशी—दे० काशि। सम०—**नाथः** शिव की उपाधि, —**यात्रा** वाराणसी की तीर्थयात्रा।

काश्मरी [काश्+वनिप, र, ङीप्, पृषो० मत्वम्] एक पौधा जिसे लोग बहुधा गांवारी के नाम से पुकारते हैं,—काश्मर्याः कृतमालमुद्गतदलं को यष्टिकष्टीकते —मा० ९।७।

काश्मीर (वि०) (स्त्री—**री**) [कश्मीर+अण्] काश्मीर में उत्पन्न, काश्मीर का या काश्मीर से आने वाला, —**राः** (ब० व०) एक देश और उसके निवासियों का नाम—दे० कश्मीर भी, —**रम्** 1. केसर, जाफरान —काश्मीरगन्धमृगनाभिकृताङ्गरागाम्—चौर० ८, भर्तृ० १, ४८, काश्मीरगौरवपुषामभिसारिकाणाम् —गीत० ११, १ भी 2. वृक्ष की जड़। सम०—**जम्,** —**जन्मन्** (नपुं०) केसर, ज़ाफ़रान—भामि० १।७१, शि० ११।५३।

काश्यम् [कुत्सितम् अश्यं यस्मात् ब० स०] मदिरा। सम० —**पम्** मांस।

काश्यपः [कश्यप+अण्] 1. एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम 2. कणाद। सम०—**नन्दनः** 1. गरुड़ की उपाधि 2. अरुण का नाम।

काश्यपिः [कश्यप्+इञ्] गरुड़ और अरुण का विशेषण।

काश्यपी [काश्यप+ङीप्] पृथ्वी,—तानपि दधासि मातः काश्यपि यातस्तवापि च विवेकः—भामि० १।६८।

काषः [कष्+घञ्] 1. रगड़ना, खुरचना—पथिषु विटपिनां स्कन्धकाषैः स धूमः—वेणी० २।१८ 2. जिससे कोई वस्तु रगड़ी जाय (जैसे कि वृक्ष का तना) —लीनालिःसुरकरिणां कपोलकाषः—कि० ५।२६, दे० 'कपोलकाष'।

काषाय (वि०) (स्त्री०—**यी**) [कषाय+अण्] लाल, गेरुए रंग में रंगा हुआ—काषायवसनाधवा—अमर०, —**यम्** लाल कपड़ा या वस्त्र—इमे काषाये गृहीते मालवि० ५, रघु० १५।७७।

काष्ठम् [काश्+क्थन्] 1. लकड़ी का टुकड़ा, विशेषकर ईंधन की लकड़ी मनु० ४।४९, २४१, ५।६८ 2. लकड़ी, शहतीर लकड़ी का लट्ठा या टुकड़ा—यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महोदधौ—हि० ४।६९ मनु० ४।४० 3. लकड़ी—याज्ञ० २।२१८ 4. लम्बाई मापने का उपकरण। सम०—**अगारः**—**अगारम्** लकड़ी का घर या घेरा,—**अम्बुवाहिनी**—लकड़ी का डोल,—**कदली** जंगली केला,—**कीटः** घुण, एक छोटा कीड़ा जो सूखी लकड़ी में पाया जाता है,—**कुट्टः**, —**कूटः** खुटबढ़ई, कटफोड़वा—पंच० १।३३२, (जंगल में पाया जाने वाला जन्तु),—**कुदालः** लकड़ी की बनी एक कुदाल जो किश्ती में से पानी उलीचने या उसकी तली को खुरचने और साफ़ करने के काम आती है,—**तक्ष्** (पुं०)—**तक्षकः** बढ़ई,—**तन्तुः** शहतीर में पाया जाने वाला छोटा कीड़ा,—**दारुः** दियार या देवदारु का वृक्ष,—**द्रुः** पलाश (ढाक) का वृक्ष, —**पुत्तलिका** कठपुतली, काठ की बनी प्रतिमा, —**भारिकः** लकड़हारा,—**मठी** (स्त्री०) चिता, —**मल्लः** अर्थी, लकड़ी का चौखटा जिस पर मुर्दे को रख कर ले जाते हैं,—**लेखकः** लकड़ी में पाया जाने वाला छोटा कीड़ा, काष्ठकूट,—**लोहिन्** (पुं०) लोहा जड़ा हुआ सोटा,—**वाटः**,—**टम्** लकड़ी की बनी दीवार।

काष्ठकम् [काष्ठ+कन्] अगर की लकड़ी।

काष्ठा [काश्+क्थन्+टाप्] 1. संसार का कोई भाग या प्रदेश दिशा, प्रदेश—कि० ३।५५ 2. सीमा, हद—स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता परा हि काष्ठा तपसः—कु० ५।२८ 3. अन्तिम सीमा, चरम सीमा, आधिक्य —काष्ठगतस्नेहरसानुविद्धम्—कु० ३।३५ 4. घुड़दौड़ का मैदान, मैदान 5. चिह्न, निर्दिष्ट चिह्न 6. अन्तरिक्ष में बादल और वायु का मार्ग 7. काल की माप= $\frac{1}{30}$ कला।

काष्ठिकः [काष्ठ+ठन्] लकड़हारा।

काष्ठिका [काष्ठिक+टाप्] लकड़ी का छोटा टुकड़ा।

काष्ठीला (स्त्री०) [कुत्सिता ईषत् वा अष्ठीलेव, कोः कादेशः] केले का पेड़।

कास् (भ्वा० आ० —कासते, कासित) 1. चमकना, दे० काश् 2. खांसना, किसी रोग को प्रकट करने वाली आवाज़ करना।

कासः,-सा [कास्+घञ्] 1. खांसी, ज़ुकाम 2. छींक आना, सम०—कुण्ठ (वि०) खांसी से पीडित,—घ्न, —हृत् (वि०) खांसी दूर करने वाला, कफ निकालने वाला।

कासरः (स्त्री०—री) [के जले आसरति—क+आ+सृ +अच्] भैंसा।

कासारः,-रम् [कास्+आरन्, कस्य जलस्य आसारो यत्र ब० स०] जोहड़, तालाब, सरोवर – भामि० १।४३, भर्तृ० १।३२, गीत० २।

कासू (शू) (स्त्री०) [कास्+ऊ] 1. एक प्रकार का भाला 2. अस्पष्ट भाषण 3. प्रकाश, प्रभा 4. रोग 5. भक्ति।

कासृतिः (स्त्री०) [कुत्सिता सरणिः कोः कादेशः] पगडंडी, गुप्त मार्ग।

काहल (वि०) [कुत्सितं हलं वाक्यं यत्र ब० स०] 1. शुष्क, मुर्झाया हुआ 2. शरारती 3. अत्यधिक, प्रशस्त विशाल,—लः 1. बिल्ला 2. मुर्गा 3. कौवा 4. सामान्य ध्वनि,—लम् अस्पष्ट भाषण,—ला बड़ा ढोल (सैनिक), —ली (स्त्री०) तरुण स्त्री

किंवत् (वि०) [किम्+मतुप्, मस्य वः] निर्धन, तुच्छ, नगण्य।

किंशारुः [किम्+शृ+ञुण्] 1. अनाज की बाल का अग्रभाग, बाल का सूत, सस्यशूक 2. बगला, 3. तीर।

किंशुकः [किंचित् शुकः शुकावयवविशेष इव—] ढाक का पेड़ जिसके फूल बड़े सुन्दर परन्तु निर्गन्ध होते हैं (विद्याहीना न शोभन्ते निर्गंधा इव किंशुकाः–चाण० ७, ऋतु० ६।२०, रघु० ९।३१,—कम् ढाक का फूल, टेसू,—किंकिंशुकैः शुकमुखच्छविभिर्न दग्धम्— ऋतु० ६।२१।

किंशुलुकः [किंशुक नि० साधुः] ढाक का वृक्ष, दे० किंशुक।

किङ्किः [कक्+इन् पृषो० इत्वम्] 1. नारियल का पेड़ 2. नीलकण्ठ पक्षी 3. चातक, पपीहा (इस पक्षी को किंकिन, किंकिदिवि, और किकीदिवि भी कहते हैं)।

किङ्कणी, किङ्किणिका, किङ्किणी, किङ्कणीका [किंचित् कणति कण्+इन्+ङीप्, पृषो० साधुः—किंकिणी+कन्+टाप्, ह्रस्वश्च] घूंघरुदार आभूषण, करधनी —क्वणत्कनककिङ्किणी झणझणायितस्यन्दनैः उत्तर० ५।५, ६।१, शि० ९।७४, कु० ७।४९।

किङ्करः [किम्+कृ+क] 1. घोड़ा 2. कोयल 3. मधुमक्खी 4. कामदेव 5. लाल रंग,—रम् गजकुंभ, —रा रुधिर।

किङ्किरातः [किंकिर+अत्+अण्] 1. तोता 2. कोयल, 3. कामदेव 4. अशोक वृक्ष।

किञ्जलः,—किञ्जल्कः [किंचित् जलं यत्र ब० स०, किंचित् जलम् अपवारयति—किम्+जल+क] कमल का सूत या फूल या कोई दूसरा पौधा—आकर्षद्भिः पद्मकिञ्जल्कगन्धान्—उत्तर० ३।२, रघु० १५।५२।

किटिः [किट्+इन्+किच्च] सूअर।

किटिभः [किटि+भा+क्] 1. जूं, लीक 2. खटमल।

किट्टम्, किट्टकम् [किट्+क्त, स्वार्थे कन् च] स्राव या कीट, विष्ठा, गाद, मैल—अन्न°।

किट्टालः [किट्ट्+अल्+अच्] 1. तांबे का पात्र 2. लोहे का जंग या मुर्चा।

किणः [कण्+अच् पृषो० इत्वम्] 1. अनाज, घट्ठा, चकत्ता, घाव का चिह्न,–ज्ञास्यसि कियद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणाङ्क इति—श० १।१३, मृच्छ० २।११, रघु० १६। ८४, १८।४७, गीत० १ 2. चर्मकील, तिल या मस्सा 3. घुण।

किण्वम् [कण्+क्वन्, इत्वम्] पाप—ण्वः,—ण्वम् मदिरा के निर्माण में खमीर उठाने वाला बीज, या औषधि —मनु० ८।३२६।

कित् (भ्वा० पर०—केतति) 1. चाहना 2. रहना 3. (चिकित्सति) स्वस्थ करना, चिकित्सा करना।

कितवः (स्त्री०—वी) [कि+क्त=कित+वा+क] 1. धूर्त, झूठा, कपटी—अर्हति किल कितव उपद्रवम् —मालवि० ४, अमरु १७, ४१, मेघ० १११ 2. धतूरे का पौधा 3. एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

किन्धिन् (पुं०) [किं कुत्सिता धीर्बुद्धिरस्य—किंधी +इनि] घोड़ा।

किन्नर=दे० 'किम्' के नीचे।

किम् (अव्य०) [कु+डिमु बा०] 'बुराई', 'ह्रास' 'दोष' 'कलंक' और निन्दा के भाव को प्रकट करने के लिए यह समस्त शब्द के आदि में केवल 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होता है—उदा०–किसखा बुरा मित्र, किन्नरः —बुरा या विकृत पुरुष आदि, नीचे के समस्त पदों को देखो। सम०—दासः बुरा गुलाम या नौकर, —नरः बुरा या विकृत पुरुष, पुराणोक्त पुरुष जिसका सिर घोड़े का हो तथा शेष शरीर मनुष्य का—जयोदाहरणं बाह्वोर्गापयामास किन्नरान्–रघु० ४।७८—कु० १।८, °ईशः °ईश्वरः कुबेर का विशेषण (स्त्री०—री) 1. किन्नरी —मेघ० ५६ 2. एक प्रकार की वीणा, —पुरुषः घृणा के योग्य नीच पुरुष, किन्नर—कु० १। १४, °ईश्वरः कुबेर का विशेषण,—प्रभुः बुरा स्वामी या राजा—हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः,–कि० १।५, —राजन् (वि०) बुरे राजा वाला, (पुं०) बुरा राजा, —सखि (पुं०) (कर्तृ०, ए० व०,—किंसखा) बुरा

मित्र,—स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपम्—कि० १।५।

किम् (सर्व० वि०) (कर्तृ० ए० व०, पुं०—कः) [स्त्री० —का] [नपुं०—किम्] 1. कौन, क्या, कौनसा (प्रश्नवाचक के रूप में)—प्रजासु कः केन पथा प्रयातीत्यशेषतो वेदितुमस्ति शक्तिः—श० ६।२६, करुणाविमुखेन मृत्युना हरता त्वां वद किं न मे हृतम् —रघु० ८।६७, का खल्वनेन प्रार्थ्यमानात्मना विकत्थते—विक्रम० २, कः कोऽत्र भोः, सर्वनाम के रूप में यह शब्द कभी कभी 'कार्य करने की शक्ति या अधिकार' को जताने के लिए प्रयुक्त होता है—उदा० के आवां परित्रातुं दुष्यन्तमाक्रन्द—श० १, 'हम कौन हैं ?' अर्थात् 'हममें क्या शक्ति है ?' आदि 2. नपुं० (किम्) संज्ञा शब्दों के करण० के साथ प्रयुक्त होकर बहुधा अर्थ होता है, क्या लाभ है ?—किं स्वामिचेष्टानिरूपणेन—हि० १, 'लोभश्चेदगुणेन किम्' आदि भर्तृ० २।५५, 'किं तया दृष्ट्या' श० ३, किं कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्—मृच्छ० ९।७, प्रायः 'अनिश्चय' अर्थ को प्रकट करने के लिए, 'किम्' के साथ 'अपि' 'चित्' 'चन' 'चिदपि' या 'स्वित्' जोड़ दिया जाता है—विवेश कश्चिज्जटिलस्तपोवनम्—कु० ५।३० कोई तपस्वी·····; कापि तत एवागतवती —मा० १, कोई स्त्री; कस्यापि कोऽप्यीति निवेदितं च— १।३३, किमपि किमपि·····जल्पतोरक्रमेण —उ. १।२७; कस्मिंश्चिदपि महाभागधेयजन्मनि मन्मथविकारमुपलक्षितवानस्मि—मा० १, **किमपि, किंचित्** 'थोड़ा सा' 'कुछ'—याज्ञ० २।११६, उत्तर० ६।३५, 'किमपि' का अर्थ 'अवर्णनीय' भी है, दे० अपि, 'संभावना' के अर्थ को जतलाने के लिए कभी कभी 'किम्' के साथ 'इव' भी जोड़ दिया जाता है (अधिकतर काल के साथ बल और सौंदर्य को जोड़ने वाला) –विना सीतादेव्या किमिव हि न दुःखं रघुपतेः–उत्तर० ६।३०, किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्—शा० १।२०, 'इव' को भी दे०, (अव्य०) 1. प्रश्नवाचक निपात,—जातिमात्रेण किं कश्चिद्धन्यते पूज्यते क्वचित् —हि० १।५८, 'मारा जाता है या पूजा जाता है' आदि, ततः किम्—तो फिर क्या 2. 'क्यों' 'किसलिए' अर्थ को प्रकट करने वाला अव्यय—किमकारणमेव दर्शनं विलपन्त्यै रतये न दीयते—कु० ४।७ 3. क्या, प्रश्नवाचक या ('या' की भावना को प्रकट करने वाले सहसंबंधी शब्द—किम्, उत, उताहो, आहोस्वित्, वा, किंवा, अथवा, इन शब्दों को देखो)। सम०—**अपि** (अव्य०) 1. कुछ अंश तक, कुछ, बहुत अंशों तक 2. बर्णनातीत रूप से, अवर्णनीय रूप से (गुण, परिमाण व प्रकृति आदि) 3. अत्यधिक, कहीं अधिक,—किमपि कमनीयं वपुरिदम्—श० ३, किमपि भीषणं किमपि करालम्—आदि,—**अर्थ** (वि०) किस उद्देश्य या प्रयोजन वाला—किमर्थोऽयं यत्नः,—**अर्थम्** (अव्य०) क्यों, किसलिए,—**आख्य** (वि०) किस नाम वाला —किमाख्यस्य राजर्षेः सा पत्नी.—श० ७,—**इति** (अव्य०) क्यों निस्सन्देह, किस लिए निश्चयार्थ, किस प्रयोजन के लिए (प्रश्न पर बल देने वाला), तत्किमित्युदासते भरताः—मा० १, किमित्यपास्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्धकशोभि वल्कलम्—कु० ५।४४, —**उ**,—**उत** 1. क्या, या (सन्देह या अनिश्चय को प्रकट करने वाला);—किमु विषविसर्पः किमु मदः —उत्तर० १।३५, अमरु ९ 2. क्यों (निस्संदेह), प्रियसुहृत्सार्थः किमु त्यज्यते 3. और कितना अधिक, कितना कम,—यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता, एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्। हि० प्र० ११, सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनं किमुत समवायः—का० १०३, रघु० १४।६५, कु० ७।६५ —**करः** नौकर, सेवक, दास—अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः—रघु० २।३५, (रा) सेविका, नौकरानी (री) सेवक की स्त्री,—**कर्तव्यता**—**कार्यता** वह अवस्था जब कि मनुष्य अपन मन में सोचता है कि अब क्या करना चाहिए,—किंकर्तव्यनामूढः (यह समझने में असमर्थ या घबराया हुआ कि अब क्या करना चाहिए), —**कारण** (वि०) क्या कारण या क्या तर्क रखने वाला,—**किल** (अव्य०) कैसी दयनीय अवस्था (असंतोष या दुःख, को अभिव्यक्त करने वाला—पा० ३।३।१५१), न संभावयामि न मर्षयामि तत्रभवान् किं किल वृषलं याजयिष्यति—सिद्धा०,—**क्षण** (वि०) जो कहता है कि 'एक मिनट का है ही क्या', एक आलसी पुरुष जो क्षणों की परवाह नहीं करता है —हि० २।९१,—**गोत्र** (वि०) किस परिवार से सम्बन्ध रखने वाला,—**च** (अव्य०) इसके अतिरिक्त और फिर, आगे,—**चन** (अव्य०) कुछ दर्जे तक, थोड़ा सा,—**चित्** (अव्य०) कुछ दर्जे तक, कुछ, थोड़ा सा —किंचिदुत्क्रान्तशैशवौ—रघु० १५।३३, २।४६, १२।२१, °**ज्ञ** (वि०) थोड़ा सा जानने वाला, पल्लवग्राही, °**कर** (वि०) कुछ करने वाला, उपयोगी, —°**कालः**—कुछ समय, थोड़ा सा समय °**प्राणः** थोड़ा सा जीवन रखने वाला, °**मात्र** (वि०)—थोड़ा सा, —**छन्दस्** (वि०) किस वेद से अभिज्ञ,—**तर्हि** (अव्य०) तो फिर क्या, परन्तु, तथापि,—**तु** (अव्य०) परन्तु, तो भी, तथापि, इतना होते हुए भी—अवैमि चैनामनघेति किन्तु लोकापवादो बलवान्मतो मे—रघु० १४।४०, १।६५,—**दैवत** (वि०) किस देवता से सम्बद्ध,—**नामधेय**,—**नामन्** (वि०) किस नाम वाला,

—**निमित्त** (वि०) किस कारण या हेतु को रखने वाला, किस प्रयोजन वाला,—**निमित्तम्** (अव्य०) क्यों, किस लिए,—**नु** (अव्य०) 1. क्या—किंनु मे मरणं श्रेयो परित्यागो जनस्य वा —नल० १०।१० 2. और भी अधिक, और भी कम–अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किन्नु महीकृते—भग० १।३५ 3. क्या, निस्सन्देह–किन्नु मे राज्येनार्थः,—**नु खलु** (अव्य०) 1. किस प्रकार से, सम्भवतः, कैसे है कि, क्या निस्सन्देह, क्यों, सचमुच—किन्नु खलु गीतार्थमाकर्ण्य इष्टजनविरहादृतेऽपि बलवदुत्कण्ठितोऽस्मि—श० ५ 2. ऐसा न हो कि—किन्नु खलु यथा वयमस्यामेवमियमप्यस्मान् प्रति स्यात्—श० १,—**पच**,—**पचान** (वि०) कञ्जूस, कृपण,—**पराक्रम** (वि०) किस शक्ति या स्फूर्ति से युक्त,—**पुनर्** (अव्य०) कितना और अधिक या कितना और कम—स्वयं रोपितेषु तरुषूत्पद्यते स्नेहः किं पुनरङ्गसंभवेष्वपत्येषु—का० २९१, मेघ० ३, १७, विक्रम ३,—**प्रकारम्** (अव्य०) किस प्रकार से, —**प्रभाव** (वि०) किस शक्ति से सम्पन्न,—**भूत** (वि०) किस प्रकार का या किस स्वभाव का,—**रूप** (वि०) किस शक्ल का, किस रूप का,—**वदन्ति**, —**ती** (स्त्री०) जनश्रुति, अफ़वाह—मत्सम्बन्धात् कश्मला किंवदन्ती—उत्तर० १।४२, उत्तर० १।४, —**वराटकः** अमितव्ययी, खर्चीला,—**वा** (अव्य०) 1. प्रश्नवाचक अव्यय—किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या श० ७ 2. या (किम्—(क्या) का सहसम्बन्धी) —राजपुत्रि सुप्ता किं वा जागर्षि—पंच० १, तत्किं मारयामि किं वा विषं प्रयच्छामि किं वा पशुधर्मेण व्यापादयामि—त०, शृङ्गार० ७,—**विद** (वि०) क्या जानने वाला,—**व्यापार** (वि०) किस कार्य को करने वाला,—**शील** (वि०) किस आदत का,—**स्वित्** (अव्य०) क्या, किस तरह—अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किंस्विदित्युन्मुखीभिः—मेघ० १४।

कियत् (वि०) [किं परिमाणमस्य किम्+वतुप्, घः, किमः कि आदेशः] (कर्तृ०, ए० व०, पु०—कियान्, स्त्री० —कियती, नपुं०—कियत्) 1. कितना बड़ा, कितनी दूर, कितना, कितने, कितने विस्तार का, किन गुणों का (प्रश्नवाचकता का बल रखने वाला)—कियान्कालस्तवैवंस्थितस्य संजातः—पंच० ५, नै० १।१३०, अयं भूतावासो विमृश कियतीं याति न दशाम्—शा० १।२५, ज्ञास्यति कियद्भुजो मे रक्षति—श० १।१३, कियदवशिष्टं रजन्याः—श० ४ 2. किस गिनती का अर्थात् किसी अर्थ का नहीं, निकम्मा—राजेति कियती मात्रा—पंच० १।४०, मातः कियन्तोऽरयः, वेणी० ५।९ 3. कुछ, थोड़ा सा, थोड़ी संख्या, चन्द (अनिश्चित बल रखने वाला)—निजहृदि विकसन्तः सन्तिः सन्तः कियन्तः—भर्तृ० २।७८, त्वदभिसरणरभसेन वलन्ती पतति पदानि कियन्ति चलन्ती—गीत० ६। सम०—**एतिका** प्रयास, शक्तिशालीन धैर्ययुक्त चेष्टा,—**कालः** (अव्य०) 1. कितनी देर 2. कुछ थोड़ा समय,—**चिरम्** (अव्य०) कितनी देर तक–कियच्चिरं श्राम्यसि गौरि—कु० ५।५०,—**दूरम्** (अव्य०) 1. कितनी दूर, कितनी दूरी पर, कितने फ़ासले पर —कियद्दूरे स जलाशयः—पंच० १, नै० १।१३७ 2. थोड़ी देर के लिए जरा सी दूर।

किरः [कृ+क] सूअर।

किरकः [कृ+ण्वुल्] 1. लिपिक 2. [किर+कन्] सूअर

किरणः [कृ+क्यु] 1. प्रकाश की किरण, सूर्य, चन्द्रमा या किसी दीप्यमान ज्योति की) किरण—रविकिरणसहिष्णु—श० २।४, एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः—कु० १।३, शा० ४।६, रघु० ५।७४, शि० ४।५८, °मय 1. चमकदार, उज्ज्वल 2. रजकण। सम०,—**मालिन्** (पुं) सूर्य।

किरातः [किरं पर्यन्तभूमिम् अतति गच्छतीति किरातः] एक पतित पहाड़ी जाति जो शिकार करके अपनी जीविका चलाती है, पहाड़ी,—वैयाकणकिरातादपशब्दमृगाः क्व यान्तु संत्रस्ताः, यदि नटगणकचिकित्सकवैतालिकवदनकन्दरा न स्युः। 1. सुभा०, कु० १।६, १५, रत्न० २।३ 2. वहशी, जंगली 3. बौना 4. साईस, अश्वपाल 5. किरातवेशधारी शिव,—**ताः** (ब० व०) एक देश का नाम,—सम०—**आशिन्** (पुं०) गरुड की उपाधि।

किराती [किरात+ङीप्] 1. किरात जाति की स्त्री, 2. चंवर डुलाने वाली स्त्री—रघु० १६।५७ 3. कुट्टिनी, दूती 4. किरात के वेश में पार्वती 5. स्वर्गंगा।

किरिः [कृ+इ] 1. सूअर, वराह 2. बादल।

किरीटः,-टम् [कृ+कीटन्] मुकुट, ताज, चूड़ा, शिरोवेष्टन–किरीटबद्धाञ्जलयः—कु० ७।९२ 2. व्यापारी। सम०—**धारिन्** (पुं०) राजा। —**मालिन्** (पुं०) अर्जुन का विशेषण।

किरीटिन् (वि०) [किरीट+इनि] ताज या मुकुट पहनने वाला,—भग० ११।१७, ४६, पंच० ३,—(पुं०) अर्जुन—भग० ११।३५, (महा० में इस नामकरण की व्याख्या इस प्रकार है—पुरा शक्रेण मे दत्तं युध्यतो दानवर्षभैः, किरीटं मूर्ध्नि सूर्याभं तेनाहुर्मां किरीटिनम्।

किर्मीर (वि०) [कृ+ईरन्, मुट्] चित्रविचित्र रंग का, चितकबरा, चित्तीदार,—**रः** 1. एक राक्षस जिसको भीम ने मारा था—वेणी० ६ 2. शबल या बहुरंगी रंग। सम०—**जित्**,—**निषूदनः**,—**सूदनः** भीम के विशेषण।

किल: [किल्+क] क्रीडा, तुच्छ, खेलखेल में हो जाने वाला। सम०—**किंचितम्**, प्रेमी-मिलन के अवसर पर शृंगारी उत्तेजन, रुदन, हास, रोष आदि भाव।

किल (अव्य०) [किल्+क] निश्चय ही, बेशक, निस्संदेह, अवश्य—अर्हति किल कितव उपद्रवम्—मालवि० ४, इदं किलाव्याजमनोहरं वपु:—श० १।१८ 2. जैसा कि लोग कहते हैं, जैसा कि बतलाया जाता है (विवरण या परंपरा दर्शाने वाला)—बभूव योगी किल कार्तवीर्य:—रघु० ६।३८, जघान कंसं किल वासुदेव:—महा० 3. झूठमूठ का कार्य, प्रसह्य सिंह: किल तां चकर्ष रघु० २।२७, कि० ११।२ 4. आशा, प्रत्याशा, संभावना पार्थ: किल विजेष्यते कुरून्—गण० 5. असंतोष, अरुचि,—एवं किल केचिद्वदन्ति—गण० 6. घृणा—त्वं किल योत्स्यसे—गण० 7. कारण, हेतु—(अत्यंत विरल)—स किलैवमुक्तवान्—गण० 'क्योंकि उसने ऐसा कहा'।

किलकिल:,-ला [किल्+क, प्रकारे वीप्सायां वा द्वित्वम्, पक्षे टाप्] किलकारी, हर्ष और प्रसन्नतासूचक चीख।

किलकिलायते (ना० धा० आ०) किलकारी मारना, कोलाहल करना—भट्टि० ७।१०२।

किलिजम् [किलि+जन्+ड] 1. चटाई 2. हरी लकड़ी का पतला तख्ता, फलक।

किल्विन् (पुं०) [किल्+क्विप्, किल्+विनि] घोड़ा।

किल्विषम् [किल्+टिषच्, वुक्] 1. पाप, मनु० ४।२४३, १०।११८, भग० ३।१३, ६।४५ 2. त्रुटि, अपराध, क्षति, दोष—मनु० ८।२३५ 3. रोग, बीमारी।

किशलय:,—यम् [किंचित् शलति—किम्+शल्+कयन् बा०, पृषो० साधु:] पल्लव, कोंपल, अंकुर, अंखुआ—दे० 'किसलय'।

किशोर: [किम्+शॄ+ओरन्] 1. बछेरा, वन्य पशु-शावक, किसी जानवर का बच्चा—केसरिकिशोर:—आ० 2. तरुण, बालक, १५ वर्ष से कम आयु का, अवयस्क (विधि में) 3. सूर्य—,री एक नवयुवती, तरुणी।

किष्किन्ध:, -न्ध्य: [किं किं दधाति—किं+किं+धा+क, पूर्वस्य किमो मलोप:, सुट्, षत्वम्,—किष्किन्ध+यत्] एक देश का नाम 2. उस प्रदेश में स्थित एक पहाड़ का नाम—,धा,—ध्या एक नगरी, किष्किन्धा की राजधानी।

किष्कु (वि०) [कै+कु नि० साधु:] दुष्ट, निन्द्य, बुरा,—ष्कु: (पुं० स्त्री०) 1. कोहनी से नीचे भुजा 2. एक हस्त परिमाण, हाथ भर की लम्बाई, एक बालिश्त।

किसल:,—लम्, किसलय:,—यम्, [किञ्चित् शलति—किम्+शल्+क (कयन्) बा०, पृषो० साधु:] पल्लव, कोमल अंकुर या कोंपल—अधर: किसलयराग:, श० १।२१, किसलयमलूनं कररुहै:—२।१०, किसलयै: सलयैरिव पाणिभि:—रघु० ९।३५।

कीकट (वि०) (स्त्री०—टी) [की शनै: द्रुतं वा कटति गच्छति—की+कट्+अच्] 1. गरीब, दरिद्र 2. कञ्जूस,—ट: घोड़ा,—टा: (ब० व०) एक देश का (विहार) नाम।

कीकस (वि०) [की कुत्सितं यथा स्यात्तथा कसति—की+कस्+अच्] कठोर, दृढ,—सम् हड्डी।

कीचक: [चीकयति शब्दायते—चीक्+वुन्, आद्यन्तविपर्यय:] 1. खोखला बांस 2. हवा में खड़खड़ाते या सांय सांय करते हुए बांस—शब्दायन्ते मधुरमनिलै: कीचका: पूर्यमाणा:—मेघ० ५६, रघु० २।१२, ४।७३, कु० १।८ 3. एक जाति का नाम 4. विराट राज का सेनापति (जब द्रौपदी, सैरन्ध्री के वेश में, भेस बदले हुए अपने पाँचों पतियों के साथ राजा विराट के दरबार में रह रही थी, उस समय एक बार कीचक ने उसे देखा, द्रौपदी के सौन्दर्य से उसके हृदय में कामाग्नि प्रज्वलित हुई; तब से लेकर उसकी पाप दृष्टि द्रौपदी पर लगी रही और उसने अपनी बहन (राजा विराट की पत्नी) की सहायता से उसके सतीत्व को भंग करने की चेष्टा की। द्रौपदी ने अपने प्रति उसके अशिष्ट व्यवहार की शिकायत राजा से की, परन्तु जब राजा ने हस्तक्षेप करने में आनाकानी की तो उसने भीम से सहायता मांगी, और उसके सुझाव को मानकर उसने कीचक के प्रस्ताव के प्रति अनुकूलता दर्शाई। तब यह निश्चय किया गया कि वे दोनों आधी रात के समय महल के नाच घर में मिलें, फलत: कीचक वहाँ गया और उसने द्रौपदी का आलिङ्गन करने का प्रयत्न किया, परन्तु अन्धेरा होने के कारण वह दुष्ट द्रौपदी के बजाय भीम के भुजपाश में फंस गया—और उसके बलवान् हाथों से वह वहीं कुचला जाकर मौत का शिकार हुआ)। सम०—**जित्** (पुं०) द्वितीय पाण्डवराज भीम का विशेषण।

कीट: [कीट्+अच्] 1. कीड़ा, कृमि—कीटोऽपि सुमन:—सङ्गादारोहति सतां शिर:—हि० प्र० ४५ 2. तिरस्कार व घृणा को व्यक्त करने वाला शब्द (बहुधा समास के अन्त में) द्विपकीट:—अधम हाथी, इसी प्रकार पक्षिकीट: आदि। सम०—**घ्न:**—गंधक,—**जम्** रेशम,—**जा** लाख,—**मणि:** जुगनू।

कीटक: [कीट+कन्] 1. कीड़ा 2. मगध जाति का भाट।

कीदृक्ष (स्त्री० - क्षी), **कीदृश्, कीदृश** (स्त्री—शी) [किम्+दृश्+क्त, क्विन्, कञ् वा, किम: की आदेश:] किस प्रकार का, किस स्वभाव का,—तद्भो: कीदृगसौ विवेकविभव: कीदृक् प्रबोधोदय:—प्रबो० १, नै० १।१३७।

कीनाश (वि०) [क्लिश् कन्, ई उपधाया ईत्वम्, लस्य लोपो नामागमश्च] 1. भूमिधर 2. गरीब, दरिद्र 3. कृपण 4. लघु, तुच्छ,—**शः** मृत्यु के देवता यम की उपाधि 2. एक प्रकार का बन्दर।

कीरः [की इति अव्यक्तशब्दम् ईरयति—की+ईर्+अच्] 1. तोता—एवं कीरवरे मनोरथमयं पीयूषमास्वादयति—भामि० १।५८,—**राः** (ब० व०) काश्मीर देश तथा उसके निवासी,—**रम्** मांस। सम०—**इष्टः** आम का वृक्ष (इसे तोते बहुत पसन्द करते हैं)। —**वर्णकम्** सुगन्धों का शिरोमणि।

कीर्ण (वि०) [कॄ+क्त] 1. छितराया हुआ, फैलाया हुआ, फेंका हुआ, बखेरा हुआ 2. ढका हुआ, भरा हुआ 3. रक्खा हुआ, धरा हुआ 4. क्षत, चोट पहुँचाया गया—दे० कॄ।

कीर्णिः (स्त्री०) [कॄ+क्तिन्] 1. बखेरना 2. ढकना, छिपाना, गुप्त कर देना 3. घायल करना।

कीर्तनम् [कॄत्+ल्युट्] 1. कथन, वर्णन 2. मन्दिर,—**ना** 1. कीर्तिवर्णन 2. सस्वर पाठ 3. यश, कीर्ति।

कीर्तय्=कॄत्।

कीर्तिः (स्त्री०) [कॄत्+क्तिन्] 1. यश, प्रसिद्धि, कीर्ति —इह कीर्तिमवाप्नोति—मनु० २।९, वंशस्य कर्तारमनन्तकीर्तिम्—रघु० २।६४, मेघ० ४५ 2. अनुग्रह, अनुमोदन 3. मैल, कीचड़ 4. विस्तृति, विस्तार 5. प्रकाश, प्रभा 6. ध्वनि। सम०—**भाज्** (वि०) यशस्वी, विख्यात, प्रसिद्ध (पुं०) द्रोण का विशेषण जो कि कौरवों और पांडवों का सैन्य-शिक्षाचार्य था, —**शेषः** केवल यश के रूप में जीवित रहना, यश के अतिरिक्त और कुछ नहीं छोड़ना अर्थात् मृत्यु—तु० नामशेष, आलेख्यशेष।

कील् (भ्वा० पर०) 1. बांधना 2. नत्थी करना 3. कील गाड़ना।

कीलः [कील्+घञ्] 1. फन्नी, खूंटी—कीलोत्पाटीव वानरः—पंच० १।२१ 2. भाला 3. बल्ली, खंभा 4. हथियार, 5. कोहनी 6. कोहनी का प्रहार 7. ज्वाला 8. परमाणु 9. शिव का नाम।

कीलकः [कील+कन्] 1. फन्नी या खूंटी 2. खंबा, स्तंभ —दे० कील।

कीलालः [कील+अल्+अण्] 1. अमृतोपम स्वर्गीय पेय, देवताओं का पेय 2. मधु 3. हैवान,—**लम्** 1. रुधिर 2. जल। सम०—**धिः** समुद्र,—**पः** पिशाच, भूत।

कीलिका [कील+कन्+टाप्, इत्वम्] धुरे की कील।

कीलित (वि०) [कील्+क्त 1. बंधा हुआ, बद्ध 2. स्थिर कील से गड़ा हुआ, कील ठोक कर जड़ा हुआ—तेन मम हृदयमिदमसमशरकीलितम्—गीत० ७, सा नश्चेतसि कीलितेव—मा० ५।१०।

कीश (वि०) [क+ईश्+क] नंगा,—**शः** 1. लंगूर, बन्दर 2. सूर्य 3. पक्षी।

कुः (स्त्री०) [कु+डु] 1. पृथ्वी 2. त्रिभुज या सपाट आकृति की आधार-रेखा, सम०—**पुत्रः** मंगलग्रह।

कु (अव्य०) 'खराबी', ह्रास, अवमूल्यन, पाप, भर्त्सना, ओछापन, अभाव, त्रुटि आदि भावों को संकेत करने वाला उपसर्ग; इसके स्थानापन्न अनेक हैं, उदा० कद् (कदश्वः), कव (कवोष्ण), का (कोष्ण), किं (किंप्रभुः)—पंच० ५।१७। सम०—**कर्मन्** (नपुं०) बुरा कार्य, नीच कर्म,—**ग्रहः** अमंगल-ग्रह,—**ग्रामः** छोटा गाँव या पुरवा (जहाँ राजा का अधिकारी, अग्निहोत्री, डाक्टर या नदी न हो),—**चेल** (वि०) फटे पुराने वस्त्र पहने हुए,—**चर्या** दुष्टता, अशिष्टाचरण, अनौचित्य,—**जन्मन्** (वि०) नीच कुल में उत्पन्न,—**तनु** (वि०) विकृतकाय, कुरूप (**नुः**) कुबेर का विशेषण—**तंत्री** खराब बीणा,—**तर्कः** 1. कूटतर्कात्मक, हेत्वाभासरूप 2. धर्मविरुद्ध सिद्धान्त स्वतंत्र चिन्तन—कुतर्केष्वभ्यासः सततपरपैशुन्यमननम् —गंगा० ३१, **पथः** तर्क करने की झूठी रीति —**तीर्थम्** खराब अध्यापक—**दृष्टिः** (स्त्री०) 1. कमजोर नजर 2. पापदृष्टि, कुटिल आंख (आलं०) 3. वेदविरुद्ध सिद्धान्त, धर्मविरुद्ध सिद्धांत—मनु० १२।९५,—**देशः** 1. बुरा देश या बुरी जगह 2. वह देश जहाँ जीवन की आवश्यक सामग्री उपलब्ध न हो, या जो अत्याचार से पीड़ित हो,—**देह** (वि०) कुरूप, विकृतकाय (**हः**) कुबेर का विशेषण,—**धी** (वि०) 1. मूर्ख, बुद्धू, बेवकूफ़ 2. दुष्ट,—**नटः** बुरा पात्र, —**नदिका** छोटी नदी, क्षुद्र नदी, लघु स्रोत—सुपूरा स्यात्कुनदिका—पंच० १।२५,—**नाथः** बुरा स्वामी, —**नामन्** (पुं०) कंजूस,—**रथः** 1. कुमार्ग, बुरा रास्ता (आलं० भी) 2. धर्मविरुद्ध सिद्धान्त,—**पुत्रः** बुरा या दुष्ट पुत्र,—**पुरुषः** नीच या दुष्ट पुरुष,—**पूय** (वि०) नीच दुष्ट, तिरस्करणीय,—**प्रिय** (वि०) अरुचिकर, तिरस्करणीय, नीच, अधम,—**प्लवः** बुरी किश्ती—कुप्लवैः संतरन् जलम्—मनु० ९।१६१, —**ब्रह्मः**,—**ब्रह्मन्** पतित ब्राह्मण,—**मंत्रः** 1. बुरा उपदेश 2. बुरे कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त मंत्र,—**योगः** अशुभ संयोग (ग्रहों का),—**रस** (वि०) बुरे रस या स्वाद वाला, (**सः**) एक प्रकार की मदिरा,—**रूप** (वि०) कुरूप, विकृत रूप, पंच० ५।१९,—**रूप्यम्** टीन, जस्ता,—**वंगः** सीसा,—**वचस्**, **वाक्य** (वि०) गाली देने वाला, अश्लील भाषी, दुर्वचन या कुभाषा बोलने वाला (नपुं०) दुर्वचन, दुर्भाषा,—**वर्षः** आकस्मिक प्रचंड बौछार,—**विवाहः** विवाह का भ्रष्ट या अनुचित रूप—मनु० ३।६३,—**वृत्तिः**

(स्त्री) बुरा व्यवहार,—**वैद्यः** खोटा वैद्य, कठवैद्य, नीम हकीम,—**शील** (वि०) अक्खड़, दुष्ट, अशिष्ट, दुष्ट स्वभाव,—**स्थलम्** बुरी जगह,—**सरित्** (स्त्री०) क्षुद्र नदी, छोटा स्रोत—उच्छिद्यन्ते क्रियाः सर्वाः ग्रीष्मे कुसरितो यथा—पंच० २।८५ **सृतिः** (स्त्री०) 1. दुराचरण, दुष्टता 2. जादू दिखाना 3. धूर्तता,—**स्त्री** खोटी स्त्री ।

कु i (भ्वा० आ०—कवते) ध्वनि करना ।
ii (तुदा० आ० -कुवते) 1. बड़बड़ाना, कराहना 2. चिल्लाना, क्रंदन करना ।
iii (अदा० पर०—कौति) भिनभिनाना, कूजना, गुंजन करना (मधुमक्खी की भांति) ।

कुकभम् [कुकेन आदानेन पानेन भाति —कुक+भा+क] एक प्रकार की तीक्ष्ण मदिरा ।

कुकीलः [कौ पृथिव्यां कीलः इव] पहाड़ ।

कुकु (कू) दः [कुकु वा कू इत्यव्ययम्—अलंकृता कन्या तां सत्कृत्य पात्राय ददाति कुकुं (कू)+दा+क] उपयुक्त शृंगारों से सुभूषित (अलंकृत) कन्या को विधिपूर्वक विवाह में देने वाला ।

कुकुन्द (दु) रः [स्कंद्यते कामिना अत्र, नि० साधुः] जघन-कूप, कूल्हे के दो गर्त जो नितम्ब के ऊपरी भाग में होते हैं, दे० 'ककुन्दर' ।

कुकुराः (ब० व०) [कु+कुर्+क] एक देश का नाम, इसे 'दशार्ह' भी कहते हैं ।

कुकूलः,—लम् [कू+ऊलच्, कुगागमः] 1. चोकर, भूसी —कुकूलानां राशौ तदनु हृदयं पच्यत इव—उत्तर० ६। ४० 2. भूसी से बना आग,—**लम्** [कोः कूलम् ष० त०] 1. छिद्र, खाई (खूंटे स्थूणादिकों से भरी हुई) 2 कवच, बख्तर ।

कुक्कुटः [कुक्+क्विप्, तेन कुटति, कुक्+कुट्+क] 1. मुर्गा, जंगली मुर्गा 2. जले हुए भुस का फिसफिसाना, जलती हुई लकड़ी 3. आग की चिंगारी ।

कुक्कुटिः,—टी (स्त्री०) [कुक्कुट+इन्, पक्षे ङीप्] दम्भ, पाखण्ड, धार्मिक अनुष्ठानों से स्वार्थसिद्धि ।

कुक्कुभः [कुक्कु शब्दं भाषते कुक्कु+भाष्+ड वा०] 1. जंगली मुर्गा 2. मुर्गा 3. वानिश ।

कुक्कुरः (स्त्री०—री) [कोकते आदत्ते—कुक्+क्विप्, कुक् किंचिदपि गृह्णन्तं जनं दृष्ट्वा कुरति शब्दायते—कुक्+कुर्+क] कुत्ता—यस्यैतच्च न कुक्कुरैरहरहर्जङ्घांतरं चव्यते—मृच्छ० २।१२ । सम०—**वाच्** (पुं०) हरिणों की एक जाति ।

कुक्षः [कुष्+स] पेट ।

कुक्षिः [कुष्+क्सि] 1. पेट - जिह्मिताध्मातकुक्षिः (भुजगपतिः) मृच्छ० ९।१२ 2. गर्भाशय, पेट का वह भाग जिसमें भ्रूण रहता है—कुम्भीनरसाश्च कुक्षिजः रघु० १५।१५, शि० १३।४० 3. किसी चीज़ का भीतरी भाग—रघु० १०।६५ (यहाँ शब्द द्वितीय अर्थ को भी प्रकट करता है) 4. गर्त 5. गुफा, कन्दरा—रघु० २। ३८, ६७ 6. तलवार का म्यान 7. खाड़ी । सम०—**शूलः** पेट दर्द, उदरशूल ।

कुक्षिम्भरि (वि०) [कुक्षि+भृ—इन्, मुम्] अपना पेट भरने की चिन्ता करने वाला, स्वार्थी, पेटू, बहुभोजी ।

कुङ्कुमम् [कुक्+उमक्, नि० मुम्] केसर, ज़ाफ़रान—लग्नकुङ्कुमकेसरान् (स्कन्धान्)—रघु० ४।६७, ऋतु० ४।२, ५।९, भर्तृ० १।१०, २५, । सम०—**अद्रिः** एक पहाड़ का नाम ।

कुच् i (तुदा० पर० – कुचति, कुचित) 1. (पक्षी की भाँति) कर्कश ध्वनि करना 2 जाना 3. चमकाना 4. सिकोड़ना, झुकाना 5. सिकुड़ना 6. बाधा उपस्थित करना 7. लिखना, अंकित करना, **सम्**—, 1. टेढ़ा होना, 2. संकुचित करना, 3. संकुचित होना—यथा—गात्रं संङ्कुचितं, मृगपतिरपि कोपात् सङ्कुचत्युत्पतिष्णुः—पंच० ३।४३ 3. बन्द करना मुर्झाना—कमलवनानि समकुचन्—दश०, (प्रेर०) बन्द करना, सिकोड़ना, घटाना ।
ii (भ्वा० पर० (कुञ्च् भी)—कोचति, कुञ्चति, कुञ्चित) 1. कुटिल बनाना, झुकाना या टेढ़ा करना 2. टेढ़ी तरह से चलना 3. छोटा करना, घटाना 4. सिकुड़ना, संकुचित होना 5. की ओर जाना, आ—, सिकोड़ना, टेढ़ा करना, झुकाना (प्रेर० भी) कु० ३।७० रघु० ६।१५, भर्तृ० १।३,—**वि**—, सिकोड़ना, टेढ़ा करना ।

कुचः [कुच्+क] स्तन, उरोज, चूची—अपि वनान्तरमल्पकुचान्तरा—विक्रम० ४।२६ । सम—**अग्रम्,—मुखम्,** चूचक,—**तटम्,—तटी** 1. (स्त्रियों के) स्तन का उतार, —**फलः** अनार का वृक्ष ।

कुचर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) 1. शनैः शनैः जाने वाला, रेंग कर जाने वाला 2. दुष्ट, नीच, दुश्चरित 3. अपमानित करने वाला, छिद्रान्वेषी,—**रः** स्थिर तारा ।

कुच्छम् [कु+छो+क] कमल की एक जाति, कुमुद ।

कुजः [कु+जन्+ड] 1. वृक्ष 2. मंगल ग्रह 3. एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मार गिराया था ('नरक' भी इसी का नाम है),—**जा** सीता ।

कुजम्भलः कुजम्भिलः [कोः पृथिव्याः जम्भनमिव अत्र०ब०स०, कोः पृथिव्याः की पृथिव्यां वा जंभलः—प० त० वा स० त०] सेंध लगाकर घर में चोरी करने वाला चोर ।

कुज्झटिः, कुज्झटिका, कुज्झटी [कुज्+क्विप्, झट्+इन्, कुज् चासौ झटिश्च कर्म० स०, कुज्झटि+कन्+टाप्, कुज्झटि+ङीप्] कुहरा, धुन्ध ।

कुञ्च् दे० कुच् ii

कुञ्चनम् [कुञ्च्+ल्युट्] टेढ़ा करना, झुकाना, सिकोड़ना।

कुञ्चिः [कुच्+इन्] आठ मुट्ठियों या अंजलियों की धारिता का माप अष्टमुष्टिर्भवेत्कुञ्चिः।

कुञ्चिका [कुच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. कुंजी, चाबी —भर्तृ० १।६३ 2. बाँस का अंकुर।

कुञ्चित (वि०) [कुंच्+क्त] सिकुड़ा हुआ, टेढ़ा किया हुआ झुकाया हुआ।

कुञ्जः—,जम् [कु+जन्+ड, पृषो० साधुः] 1. लताओं तथा पौधों से आच्छादित स्थान, लतावितान, पर्णशाला, —चल सखि कुञ्जं सतिमिरपुंजं शीलय नीलनिचोलम् —गीत० ५, वंजुललताकुंजे—१२, मेघ० १९, रघु० ९।६४ 2. हाथी का दाँत। सम०—**कुटीरः** लतामण्डप, लताओं तथा पौधों से परिवेष्टित स्थान—गुञ्जत्कुञ्ज-कुटीरकौशिकघटा—उत्तर० २।२९, मा० ५।१९, कोकिलकूजितकुंजकुटीरे—गीत० १।

कुञ्जरः [कुञ्जो हस्तिहनुः सोऽस्यास्ति—कुञ्ज+र] 1. हाथी 2. (समास के अन्त में) कोई सर्वोत्तम या श्रेष्ठ वस्तु —अमरकोश इस प्रकार के निम्नांकित प्रयोग बतलाता है—स्युरुत्तरपदे व्याघ्र पुंगवर्षभकुञ्जराः, सिंह शार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थवाचकाः। 3. पीपल का वृक्ष (अश्वत्थ) 4. हस्त नामक नक्षत्र। सम०—**अनीकम्** सेना का एक प्रभाग जिसमें हाथी हों, हस्ति-सेना, —**अशनः** अश्वत्थ वृक्ष,—**अरातिः** 1. शेर 2. शरभ (आठ पैर का एक काल्पनिक जन्तु),—**ग्रहः** हाथी पकड़ने वाला।

कुट् i (भ्वा० पर०—कुटति, कुटित) 1. कुटिल या वक्र होना 2. टेढ़ा करना या झुकाना 3. बेईमानी करना, छल करना, धोखा देना।
ii (दिवा० पर०—कुट्यति) तोड़ कर टुकड़े टुकड़े करना, फाड़ देना, विभक्त करना, विघटित करना।

कुटः,—टम् [कुट्+कम्] जलपात्र, करवा, कलश,—**टः** 1. किला, दुर्ग 2. हथोड़ा 3. वृक्ष 4. घर 5. पहाड़। सम०—**जः** 1. एक वृक्ष का नाम—मेघ० ४, रघु० १९।३७, ऋतु० ३।१३, भर्तृ० १।४२ 2. अगस्त्य 3. द्रोण—**हारिका** सेविका, नौकरानी।

कुटकम् [कुट+कन्] बिना हलस का हल।

कुटङ्कः [कु+टङ्क+घञ्] छत, छप्पर।

कुटङ्गकः [कुटस्य अङ्गकः—ष० त०] 1. वृक्ष के ऊपर फैली हुई लताओं से बना लतामण्डप 2. छोटा घर, झोंपड़ी कुटिया।

कुटपः [कुट+पा+क] 1. अनाज की माप (=कुडव) 2. घर के निकट वाटिका 3. ऋषि, संन्यासी,—**पम्** कमल।

कुटरः [कुट्+करन् बा०] वह थूणी जिसमें मथते समय रई की रस्सी लिपटी रहती है।

कुटलम् [कुट्+कलच्] छत, छप्पर।

कुटिः [कुट्+इन्] 1. शरीर 2. वृक्ष (स्त्री०) 1. कुटिया, झोंपड़ी 2. मोड़, झुकाव। सम०—**चरः** सूंस, शिशुक।

कुटिरम् [कुट्+इरन्] कुटिया, झोंपड़ी।

कुटिल (वि०) [कुट्+इलच्] 1. टेढ़ा, झुका हुआ, मुड़ा हुआ, घूंघरदार—भेदात् भ्रुवोः कुटिलयोः—श० ५।२३, रघु० ६।८२, १९।१७ 2. घुमावदार, बलखाती हुई—क्रोशं कुटिला नदी—सिद्धा० 3. (आलं०) कपटी, जालसाज, बेईमान। सम०—**आशय** (वि०) दुरात्मा, दुर्गति,—**पक्ष्मन्** (वि०) मुड़ी हुई पलकों वाला, —**स्वभाव** (वि०) कुटिल प्रकृति, बेईमान, दुर्गति।

कुटिलिका [कुटिल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. दबे पाँव आना (जिस प्रकार कि शिकारी अपने शिकार पर आते हैं) दुबक कर चलना, 2. लुहार की भट्टी।

कुटी [कुटि+ङीष्] 1. मोड़ 2. कुटिया, झोंपड़ी—प्रासादीयति कुट्याम्—सिद्धा०—मनु० ११।७२, पर्ण°, अश्व° आदि 3. कुट्टिनी, दूती। सम०—**चकः** किसी संघविशेष का संन्यासी—चतुर्विधा भिक्षवस्ते कुटीचक-बहूदकौ, हंसः परमहंसश्च यो यः पश्चात् स उत्तमः। —महा०,—**चरः** एक संन्यासी जो अपने परिवार को अपने पुत्र की देख रेख में छोड़कर अपने आपको पूर्णतया धर्मानुष्ठान एवं तपश्चर्या में लगा देता है।

कुटीरः, रम्
कुटीरकः] [कुटी+र, कुटीर+कन्] झोंपड़ी, कुटिया, —उत्तर० २।२९, अमरु ४८।

कुट्टनी [कुट्+उन्+ङीप्] कुट्टिनी, दूती—दे० कुट्टनी।

कुटुम्बम्, कुटुम्बकम् [कुटुम्ब्+अच्, कुटुम्ब+कन्] 1. गृहस्थी, परिवार—उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्—हि० १।७०, याज्ञ० १।४५ मनु० ११।१२, २२, ८।१६६ 2. परिवार के कर्तव्य और चिंताएँ—तदुपहित-कुटुंबः—रघु० ७।७१,—**बः,—बम्** 1. बंधु, वंश या विवाह के फलस्वरूप संबंध 2. बालबच्चे, संतान 3. नाम 4. वंश। सम०—**कलहः,—हम्** घरेलू झगड़े —**भरः** परिवार का भार—भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धम्—श० ४।१९, **व्यापृत** (वि०) (वह पिता) जो पालन पोषण करता है, तथा परिवार की भलाई का ध्यान रखता है।

कुटुम्बिकः, कुटुम्बिन् (पुं०) [कुटुम्ब+ठन्, इनि वा] गृहस्थ, कुल पिता, जिसे परिवार का भरण पोषण करना पड़ता है, या जो देखभाल करता है—प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः—कु० ६।८५, विक्रम० ३।१, मनु० ३।८०, याज्ञ० २।४५ 2. परिवार का एक सदस्य,—**नी** 1. गृहपत्नी, गृहिणी (गृह स्वामिनी), भवतु कुटुम्बिनीमाहूय पृच्छामि—मुद्रा० १, प्रभवन्त्योऽपि हि भर्तृषु कारणकोपाः कुटुम्बिन्यः—मालवि० १। १७, रघु० ८।८६, अमरु ४८ 3. स्त्री।

कुट्ट (चुरा० उभ०—कुट्टयति, कुट्टित) 1. काटना, बांटना 2. पीसना, चूर्ण करना 3. दोष देना, निन्दा करना 4. गुणा करना।

कुट्टकः [कुट्ट्+ण्वुल्] कूटने वाला, पीसने वाला।

कुट्टनम् [कुट्ट्—ल्युट्] 1. काटना 2. कूटना 3. दुर्वचन कहना, निन्दा करना।

कुट्ट (ट्टि) नी [कुट्टयति नाशयति स्त्रीणां कुलम्—कुट्ट्+णिच्+ल्युट्+ङीप्, कुट्ट+इनि वा] कुटनी, दूती, दल्ली।

कुट्टमितम् [कुट्ट्+घञ्, तेन निर्वृत्त इत्यर्थे कुट्ट+इमप्+इतच्] प्रियतम के प्यार का दिखावटी तिरस्कार (झूठमूठ ठुकराना) (नायिका के २८ हावभाव तथा अनुनय, में से एक) सा० द० परिभाषा देता है—केशस्तनावरादीनां ग्रहे हर्षेपि संभ्रमात्, प्राहुः कुट्टमितं नाम शिरःकरविधूननम्, १४२।

कुट्टाक (वि०) (स्त्री०—की) [कुट्ट्+षाकन्] जो विभक्त करता है या काटता है—सारङ्गसङ्गरविघाविभकुम्भकूटकुट्टाकपाणिकुलिशस्य हरेः प्रमादः—मा० ५।३२।

कुट्टारः [कुट्ट+आरन्] पहाड़,—रम् 1. मैथुन 2. ऊनी कंबल 3. एकान्त।

कुट्टिमः,—मम् [कुट्ट्+इमप्] 1. खड़ंजा, छोटे-छोटे पत्थरों को जमा कर बनाया हुआ फर्श, पक्का फर्श—कांतेन्दुकान्तोपलकुट्टिमेषु—शि० ३।४०, रघु० ११।९ 2. भवन बनाने के लिए तैयार की गई भूमि 3. रत्नों की खान 4. अनार 5. झोंपड़ी, कुटिया, छोटा घर।

कुट्टिहारिका—[कुट्टि मत्स्यमांसादिकं हरति इति—कुट्टि+हृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] सेविका, दासी।

कुड्मल=कुड्मल।

कुठः [कुठ्यते छिद्यते—कुठ्+क] वृक्ष।

कुठर—दे० 'कुटर'।

कुठारः (स्त्री०—री) [कुठ्+आरन्] कुल्हाड़ा (परशु), कुल्हाड़ी—मातुः केवलमेव यौवनवनच्छेदे कुठारा वयम्—भर्तृ० ३।११।

कुठारिकः [कुठार+ठन्] लकड़हारा, लकड़ी काटने वाला।

कुठारिका [कुठार+ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्वश्च] छोटा कुल्हाड़ा, फरसा।

कुठारुः [कुठ्+आरु] 1. वृक्ष 2. लंगूर, बन्दर।

कुठिः [कुठ्+इन्+कित्] 1. वृक्ष 2. पहाड़।

कुडङ्गः (पुं०) कुंज, लतागृह।

कुडवः (पः) [कुड्+कवन्, कपन् वा] एक चोथाई प्रस्थ के बराबर या बारह मुट्ठी (अंजलि) अनाज की तोल।

कुड्मल (वि०) [कुड्+कल, मुट्] खुलता हुआ, पूरा खिला हुआ, लहराता हुआ (जैसे खिला हुआ फूल)—रघु० १८।३७,—लः खुलना, कली—विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु—रघु० १६।४७, उत्तर० ६।१७, शि० २।७,—लम् एक प्रकार का नरक—मनु० ४।८९, याज्ञ० ३।२२२।

कुड्मलित (वि०) [कुड्मल+इतच्] 1. कलीदार, खिला हुआ 2. प्रसन्न, हंसमुख।

कुड्यम् [कु+यक्, डुगागमः] 1. दीवार—भेदे कुड्यावपातने—याज्ञ० २।२२३, शि० ३।४५ 2. (दीवार पर) पलस्तर करना, लीपना, पोतना 3. उत्सुकता, जिज्ञासा। सम०—छेदिन् (पुं०) घर में सेंध लगाने वाला, चोर,—छेद्यः खोदने वाला, (द्यम्) खाई, गड्ढा, (दीवार में) दरार।

कुण् (तुदा० पर०—कुणति, कुणित) 1. सहारा देना, सहायता देना 2. शब्द करना।

कुणकः [कुण्+क+कन्] किसी जानवर का अभी पैदा हुआ बच्चा।

कुणप (वि०) (स्त्री०—पी) [कुण्+कपन्] 1. मुर्दे जैसी दुर्गंध देने वाला, बदबूदार—पः,—पम् मुर्दा, शव—शासनीयः कुणपभोजनः—विक्रम० ५ (गिद्ध),—अमेध्यः कुणपाशी च—मनु० १२। ७१, जीवित जन्तुओं के प्रति घृणा व तिरस्कार का द्योतक शब्द,—पः 1. बर्छी 2. दुर्गंध, बदबू।

कुणिः [कुण्+इन्] लुंजा, जिसकी एक बाँह सूख गई हो।

कुण्टक (वि०) (स्त्री०—की) [कुण्ट्+ण्वुल्] मोटा, स्थूल।

कुण्ठ् (भ्वा० पर०—कुण्ठति, कुण्ठित) 1. कुण्ठित, ठूण्ठा या मन्द हो जाना 2. लंगड़ा, और विकलांग होना 3. मंदबुद्धि या मूर्ख होना, सुस्त होना 4. ढीला करना (प्रेर० या चुरा० पर०) छिपाना।

कुण्ठ (वि०) [कुण्ठ्+अच्] 1. ठूंठा, सुस्त, वज्रं तपोवीर्यमहत्सु कुण्ठम्—कु० ३।१२, प्रभावरहित हो गया, कुण्ठीभवन्त्युपलादिषु क्षुराः—शारी० 2. मन्द, मूर्ख, जड 3. आलसी, सुस्त 4. दुर्बल।

कुण्ठकः [कुण्ठ्+ण्वुल्] मूर्ख।

कुण्ठित (भू० क० कृ०) [कुठ्+क्त] 1. ठूंठा, मन्दीकृत (आलं० भी)—बिभ्रतोऽस्त्रमचलेप्यकुण्ठितम्—रघु० ११।७४, भामि० २।७८, कु० २।२०, शास्त्रेष्वकुंठिताबुद्धिः—रघु० १।१९, निर्बाध रही 2. जड 3. विकलांग।

कुण्डः,-डम् [कुण्+ड] 1. प्याले की शक्ल का बर्तन, चिलमची, कटोरा 2. हौज 3. कूंड, कुंड—अग्निकुण्डम् 4. पोखर या पल्वल—विशेषतः जो किसी देवता के नाम पर धर्मार्थ समर्पित कर दिया गया हो 5. कमंडलु या

भिक्षापात्र, -ड: (स्त्री०—डी) पति के जीवित रहते व्यभिचार द्वारा किसी दूसरे पुरुष के संयोग से उत्पन्न सन्तान—पत्यौ जीवति कुंड: स्यात् --मनु० ३।१७४, याज्ञ० १।२२२। सम०—आशिन् (पुं०) भड़ुवा, विट, अपनी जीविका के लिए जो कुण्ड पर निर्भर करता है अर्थात् वर्णसंकर, जारज,—मनु० ३।१५८ याज्ञ० १।२२४,—ऊधस् (कुण्डोध्नी) 1. वह गाय जिसका ऐन या औड़ी भरी हुई हो 2. भरे पूरे स्तनों वाली स्त्री,—कीट: 1. रखली स्त्रियाँ रखने वाला 2. चार्वाकमतावलंबी, नास्तिक, जारज ब्राह्मण,—कील: नीच या दुश्चरित्र व्यक्ति,—गोलम्—गोलकम् 1. कांजी 2. कुण्ड और गोलक का समुदाय।

कुण्डल:,-लम् [कुण्ड+मत्वर्थे ल] 1. कान की बाली, कान का आभूषण—श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन—भर्तृ० २।७१, चौर० ११, ऋतु० २।२०, ३।१९, रघु० ११।१५ 2. कड़ा 3. रस्सी का गोला।

कुण्डलना [कुण्डल्+णिच्+युच्+टाप्] घेरा डालना (शब्द को गोल घेरे में रखना) यह प्रकट करने के लिए कि यह भाग छोड़ देना या इस पर विचार नहीं करना है;—तदोजसस्तद्यशसः स्थिताविमौ वृथेति चित्ते कुरुते यदा यदा, तनोति भानोः परिवेषकैतवात्तदा विधिः कुण्डलनां विधोरपि। नै० १।१४, तु० २।९५ से भी।

कुण्डलिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुण्डल+इनि] 1. कुण्डलों से विभूषित 2. गोलाकार, सर्पिल 3. घुमावदार, कुण्डली मारे हुए (साँप की भांति)—पुं० 1. सांप 2. मोर 3. वरुण की उपाधि।

कुण्डिका [कुंड+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. घड़ा 2. कमंडलु।

कुण्डिन् (पुं०) [कुण्ड्+इनि] शिव की उपाधि।

कुण्डिनम् [कुण्ड्+इनच्] एक नगर का नाम, विदर्भदेश की राजधानी।

कुंडि (डी) र (वि०) [कुण्ड्+इ (ई) रन्] बलवान्, —र: मनुष्य।

कुत: (अव्य०) [किम्+तसिल्] 1. कहाँ से, किधर से —कस्य त्वं वा कुत आयात:—मोह० ३ 2. कहाँ, और कहाँ, और किस स्थान पर आदि—ईदृग्विनोद: कुत:—श० २।५ 3. क्यों, किस लिए किस कारण से, किस प्रयोजन से—कुत इदमुच्यते—श० ५ 4. कैसे, किस प्रकार—स्फुरति च बाहु: कुत: फलमिहास्य—श० १।१५ 5. और अधिक, और कम—न त्वत्समोस्त्यभ्यधिक: कुतोऽन्य:—भग० ११।४३, ४।३१, न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो ⋯न स्वैरी स्वैरिणी कुत:—छा० 6. क्योंकि, कभी कभी कुत:' केवल 'किम्' शब्द के अपादान के रूप में ही प्रयुक्त होता है—कुत: कालात्समुत्पन्नम्—वि० पु० (=कस्मात् कालात्), जब 'कुत:' के आगे 'चिद्' 'चन' या 'अपि' जोड़ दिया जाता है तो यह अनिश्चयबोधक बन जाता ह।

कुतप: [कु+तप्+अच्] 1. ब्राह्मण 2. द्विज 3. सूर्य 4. अग्नि 5. अतिथि 6. बैल, सांड 7. दोहता 8. भानजा 9. अनाज 10 दिन का आठवाँ मुहूर्त—अह्नो मुहूर्ता विख्याता दश पंच च सर्वदा, तत्राष्टमो मुहूर्तो य: स काल: कुतप: स्मृत:।—पम् 1. कुश घास 2. एक प्रकार का कंबल।

कुतस्त्य (वि०) [कुतस्+त्यप्] 1. कहाँ से आया हुआ 2. कैसे हुआ।

कुतुकम् [कुत्+उकञ्] 1. इच्छा, रुचि 2. जिज्ञासा (कौतुक) 3. उत्सुकता, उत्कण्ठा, उत्कटता—केलिकलाकुतुकेन च काचिदमुं यमुनाजलकूले, मंजुलवंजुलकुंजगतं विचकर्ष करेण दुकूले—गीत० १।

कुतुप:, कुतू: (स्त्री०) [कुतू+डुप पृषो०, कु+तन्+कू टिलोप: वा०] कुप्पी (तेल डालने के लिए चमड़े की बनी)।

कुतूहल (वि०) [कुतू+हल्+अच्] 1. आश्चर्यजनक 2. श्रेष्ठ सर्वोत्तम 3. प्रशंसाप्राप्त, प्रसिद्ध,—लम् 1. इच्छा, जिज्ञासा—उज्झितशब्देन जनितं न: कुतूहलम्—श० १, यदि विलासकलासु कुतूहलम्—गीत० १, (पपौ) कुतूहलेनेव मनुष्यशोणितम्—रघु० ३।५४, १३।२१, १५।६५ 2. उत्सुकता 3. जिज्ञासा को उत्तेजित करने वाला, सुहावना, मनोरंजक, कौतुक या जिज्ञासा।

कुत्र (अव्य०) [किम्+त्रल्] 1. कहाँ, किस बात में,—कुत्र मे शिशु:—पंच० १, प्रवृत्ति: कुत्र कर्तव्या—हि० १ 2. किस विषय में—तेजसा सह जातानां वय: कुत्रोपयुज्यते—पंच० १।३२८ (कभी कभी 'कुत्र' का प्रयोग 'किम्' शब्द अधि० एक० व० के लिए किया जाता है), जब 'कुत्र' के साथ चिद्, चन, या अपि, जोड़ दिया जाता है तो वह अर्थ की दृष्टि से अनिश्चयात्मक बन जाता है, कुत्रापि, कुत्रचित् किसी जगह, कहीं, न कुत्रापि—कहीं नहीं; कुत्रचित्–कुत्रचित्—एक स्थान पर—दूसरे स्थान पर, यहाँ-यहाँ—मनु० ९।३४।

कुत्रत्य (वि०) [कुत्र+त्यप्] कहाँ रहने वाला या कहाँ वास करने वाला।

कुत्स् (चुरा० आ०—कुत्सयते, कुत्सित) गाली देना, बुराभला कहना, निन्दा करना, कलंक लगाना, मनु० २।५४, याज्ञ० १।३१, शा० २।२८।

कुत्सनम्, कुत्सा [कुत्स्+ल्युट्, कुत्स्+अ+टाप्] दुर्वचन, घृणा, भर्त्सना, गाली देना—देवतानां च कुत्सनम्—मनु० ४।१६३।

कुत्सित (वि०) [कुत्स्+क्त] 1. घृणित, तिरस्करणीय 2. नीच, अधम, दुश्चरित्र।

कुथ: [कु+थक्] कुशा नामक घास।

कुथः,-थम्,-था 1. छींट की बनी हाथी की झूल 2. दरी ।

कुद्दारः,-लः,-लकः [कु+दृ+णिच्+अण्, पृषो०, कु+दल्+णिच्+अण् पृषो०, कुद्दाल+कन्] 1. कुदाली, खुर्पा 2. कांचन वृक्ष ।

कुद्मलम्=कुड्मलम् ।

कुद्रङ्कः-गः [कुद्र+कै+क नि० साधुः, कु+उत्+रञ्ज्+घञ्] 1. चौकी 2. मचान पर बना मकान ।

कुनकः [?] कौवा ।

कुन्तः [कु+उन्द्+क्त, वा० शाक० पररूपम्] 1. भाला, पंखदार बाण, बर्छी—कुन्ताः प्रविशन्ति—काव्य० २ (अर्थात्—कुन्तधारिणः पुरुषाः); विरहिनिकृन्तनकुन्तमुखाकृतिकेतकिदन्तुरिताशे—गीत० १ 2. छोटा जन्तु, कीड़ा ।

कुन्तलः [कुन्त+ला+क] 1. सिर के बाल, बालों का गुच्छा,—प्रतनुविरलैः प्रान्तोन्मीलन्मनोहरकुन्तलैः—उत्तर० १।२०, चौर० ४, ६, गीत० २ 2. कटोरा 3. हल,—लाः (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम ।

कुन्तयः ('कुंत' का ब० व०, पुं०) एक देश और उसके निवासियों का नाम ।

कुन्तिः [कमु+झिच्] एक राजा का नाम, क्रथ का पुत्र । सम०—**भोजः** एक यादव राजकुमार, कुन्तिदेश का राजा, जिसने निस्सन्तान होने के कारण कुन्ती को गोद ले लिया था ।

कुन्ती [कुन्ति+ङीप्] 'शूर' नामक यादव की पुत्री पृथा जिसको कुंतिभोज ने गोद लिया । (यह पांडु की पहली पत्नी थी, किसी शाप के कारण पांडु से संतान न हुई, उसने इसी लिए कुंती को अनुमति दे दी कि वह दुर्वासा ऋषि से प्राप्त अपने मंत्र का प्रयोग करे जिसके द्वारा वह किसी भी देवता का आवाहन करके उससे पुत्र प्राप्त कर सकती है । फलतः उसने धर्म, वायु और इन्द्र का आवाहन किया और उनसे क्रमशः युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को प्राप्त किया । वह कर्ण की भी माता थी उसने अपनी कौमार्य—अवस्था में मंत्र का परीक्षण करने के लिए सूर्य का आवाहन किया और उसके संयोग से उसने कर्ण को प्राप्त किया)

कुन्थ् (भ्वा०-क्र्या० पर०—कुन्थति, कुथ्नाति, कुन्थित) 1. कष्ट सहन करना 2. चिपकना 3. आलिंगन करना 4. चोट पहुँचाना ।

कुन्द,-दम् [कु+दै (दो)+क, नि० मुम्, या कु+दत्, नुम्] चमेली का एक भेद, मोतिया (सफेद और कोमल) कुन्दावदाताः कलहंसमालाः—भट्टि० २।१८, प्रातः कुन्दप्रसवशिथिलं जीवितं धारयेथाः—मेघ० ११३,—दम् इस पौधे का फूल—अलके बालकुन्दानुविद्धम्—मेघ० ६५, ४७,—दः 1. विष्णु की उपाधि 2. खैराद । सम०—**करः** खैरादी ।

कुन्दमः [कुन्द+मा+क] बिल्ली ।

कुन्दिनी [कुन्द्+इनि+ङीप्] कमलों का समूह ।

कुन्दुः [कु+दृ+डु बा० नुम्] चूहा, मूसा ।

कुप् (दिवा० पर०—कुप्यति, कुपित) 1. क्रुद्ध होना (प्रायः उस व्यक्ति के लिए सम्प्र० जिस पर क्रोध किया जाय, परन्तु कभी कभी कर्म० या संबं० भी प्रयुक्त होते हैं) कुप्यन्ति हितवादिने—का० १०८, मालवि० ३।२१, उत्तर० ७, चुकोप तस्मै स भृशम्—रघु० ३।५६ 2. उत्तेजित होना, सामर्थ्य ग्रहण करना प्रचंड होना, जैसा कि—दोषाः प्रकुप्यन्ति—सुश्रु० अति—, क्रुद्ध होना, भट्टि० १५।५५, परि—, क्रुद्ध होना, प्र—, 1. क्रुद्ध होना,—निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति—पंच० १।२८३, 2. उत्तेजित होना, बल प्राप्त करना, बढ़ना (प्रेर०) उभारना, चिढ़ाना खिझाना ।

कुपिन्द=दे० कुविंद ।

कुपिनिन् (पुं०) [कुपिनी मत्स्यधानी अस्ति अस्य—कुपिनी+इन्] मछुवा ।

कुपिनी [कुप्+इनि+ङीप्] छोटी-छोटी मछलियाँ पकड़ने का एक प्रकार का जाल ।

कुपूय (वि०) [कु+पूय्+अच्] घृणित, नीच, अधम, तिरस्करणीय ।

कुप्यम् [गुप्+क्यप्, कुत्वम्] 1. अपधातु 2. चाँदी और सोने को छोड़ कर और कोई धातु—कि० १।३५, मनु० ७।९६, १०।११३ ।

कुबे (वे) रः [कुत्सितं बे (वे) रं शरीरं यस्य सः] धन दौलत और कोष का स्वामी, उत्तरदिशा का स्वामी—कुबेरगुप्तां दिशमुष्णरश्मौ गन्तुं प्रवृत्ते समयं विलंघ्य—कु० ३।२५ (इस पर मल्लि० की टीका के अनुसार) [कुबेर इडविडा में उत्पन्न विश्रवा का पुत्र है, और इसीलिए यह रावण का आधा भाई है । धन और उत्तर दिशा का स्वामी होने के अतिरिक्त यह यक्ष और किन्नरों का राजा तथा रुद्र का मित्र है, इसका वर्णन विकृत शरीर के रूप में पाया जाता है, इसके तीन टाँगे और आठ दाँत थे, और एक आँख के स्थान में एक पीला चिह्न था], अचलः,—अद्रिः कैलास पर्वत की उपाधि,—दिश् (स्त्री०) उत्तर दिशा ।

कुब्ज (वि०) [कु ईषत् उब्जमार्जवं यत्र शकं० तारा०] कुबड़ा, कुटिल,—ब्जः 1. मुड़ी हुई तलवार 2. पीठ पर निकला हुआ कूब,—ब्जा कंस की एक सेविका, कहते हैं कि उसका शरीर तीन स्थानों पर विकृत था (कृष्ण और बलराम ने, जब वह मथुरा जा रहे थे राजमार्ग पर कुब्जा को देखा, वह कंस के लिए उबटन ले जा रही थी । उन्होंने उसमें से कुछ उबटन माँगा, कुब्जा ने जितना वे चाहते थे, उबटन उनको दे दिया । कृष्ण

उसके इस अनुग्रह से अत्यन्त प्रसन्न हुआ, उसने उसका कूब मिटाकर उसे पूरी तरह सीधा कर दिया, तब से वह अत्यन्त सुन्दरी स्त्री लगने लगी)।

कुब्जकः [कुब्ज+कन्] एक वृक्ष का नाम+मनु० ८। २४७, ५१२।

कुब्जिका [कुब्जक+टाप्, इत्वम्] आठवर्ष की अविवाहित लड़की।

कुभृत् (पुं०) [कु+भृ+क्विप्, तुकागमः] पहाड़।

कुमारः [कम्+आरन्, उपधायाः उत्वम्] 1. पुत्र, बालक, युवा—रघु० ३।४८ 2. पांच वर्ष से कम आयु का बालक 3. राजकुमार, युवराज (विशेषतः नाटकों में)—विप्रोषितकुमारं तद्राज्यमस्तमितेश्वरम् रघु० १२।११, कुमारस्यायुषो बाणः—विक्रम० ५, उपवेष्टुमर्हति कुमारः—मुद्रा० ४ (मलयकेतु ने राक्षस को कहा) 4. युद्ध के देवता कार्तिकेय,—कुमारकल्पं सुषुवे कुमारम् रघु० ५।३६, कुमारोऽपि कुमारविक्रमः—३।५५ 5. अग्नि 6. तोता 7. सिन्धु नदी। सम०—पालन 1. बच्चों की देखरेख रखने वाला 2. राजा शालिवाहन,—भृत्या 1. छोटे-छोटे बच्चों की देखरेख 2. गर्भावस्था में स्त्री की देखरेख, प्रसूति विद्या—रघु० ३।१२ —वाहिन्,—वाहनः मोर,—सूः (स्त्री०) 1. पार्वती का विशेषण 2. गंगा का वि०।

कुमारकः [कुमार+कन्] 1. बच्चा, युवा 2. आँख का तारा।

कुमारयति (ना० धा० पर०) खेलना, क्रीडा करना (बच्चे की तरह)।

कुमारिक (वि०) (स्त्री० की) } [कुमारी+ठन्,
कुमारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) } कुमारी+इनि]
जिसके लड़कियाँ हों, जहाँ लड़कियों की बहुतायत हो।

कुमारिका, कुमारी [कुमारी+ठन्+टाप्, कुमार+ङीष्] 1. दस से बारह वर्ष के बीच की लड़की 2. अविवाहिता तरुणी, कन्या—त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती—मनु० ९।९०, ११।५८, व्यावर्तन्यान्योपगमात्कुमारी रघु०६।६९ 3. लड़की, पुत्री 4. दुर्गा 5. कुछ पौधों के नाम। सम०—पुत्रः अविवाहिता स्त्री का पुत्र,—श्वशुरः विवाह से पूर्व भ्रष्ट लड़की का श्वसुर।

कुमुद् (वि०) [कु०+मुद्+क्विप्] 1. कृपाशून्य, अमित्र 2. लोभी (नपुं०) 1. सफ़ेद कुमुदिनी 2. लाल कमल।

कुमुदः,—दम् [को मोदते इति कुमुदम्] 1. सफ़ेद कुमुदिनी, जो कहते हैं कि चन्द्रोदय के समय खिलती है—नोच्छ्वसिति तपनकिरणैश्चन्द्रस्येवांशुभिः कुमुदम्—विक्रम० ३।१६, इसी प्रकार श० ५।२८, ऋतु० ३।२, २१, २३, मेघ० ४० 2. लाल कमल,—दम् चाँदी,—दः 1. विष्णु का विशेषण 2. दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम 3. कपूर 4. बन्दरों की एक जाति 5. एक नाग जिसने अपनी छोटी बहन कुमुद्वती को राम के पुत्र कुश को प्रदान किया।—दे० रघु० १६।७५-८६। सम० —आकारः, चाँदी,—आकरः, आवासः कमलों से भरा हुआ सरोवर,—ईशः चन्द्रमा,—खण्डम् कमलों का समूह,—नाथः,—पतिः,—बन्धुः,—बान्धवः,—सुहृद् (पुं०) चन्द्रमा।

कुमुदवती [कुमुद+मतुप्+ङीप्, वत्वम्] कमल का पौधा।

कुमिदिनी [कुमुद+इनि] 1. सफ़ेद फूलों की कुमुदिनी —यथेन्दावानन्दं व्रजति समुपोढे कुमुदिनी—उत्तर० ५। २६, शि० ९।३४ 2. कमलों का समूह 3. कमलस्थली। सम० —नायकः, —पतिः चन्द्रमा।

कुमुद्वत् (वि०) [कुमुद्+मतुप्, वत्वम्] जहाँ कमलों की बहुतायत हो—कुमुद्वत्सु च वारिषु—रघु०४।१९,—ती 1. सफ़ेद फूलों की कुमुदिनी (जो चन्द्रमा के उदय होने पर खिलती है)—अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती में दृष्टि न नन्दयति संस्मरणीयशोभा—श० ४।२, कुमुद्वती भानुमतीव भावं (न बबंध)—रघु० ६।३६ 2. कमलों का समूह 3. कमलस्थली,—°ईशः चन्द्रमा।

कुमोदकः [कु+मुद्+णिच्+ण्वुल्] विष्णु का विशेषण।

कुम्बा [कुम्ब्+अङ+टाप्] यज्ञभूमि का अहाता।

कुम्भः [कुं भूमि कुत्सितं वा उम्भति पूरयति—उम्भ्+अच् शकं० तारा०] 1. घड़ा, जलपात्र, करवा—इयं सुस्तनी मस्तकन्यस्तकुम्भा जग०, वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्—हि० १।७७, रघु० २।३४ इसी प्रकार कुच°, स्तन° 2. हाथी के मस्तक का ललाट स्थल —इभकुम्भ—मा० ५।३२, मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः—भर्तृ१।५९ 3. राशिचक्र में ग्यारहवीं राशि कुम्भ 4. २० द्रोण के बराबर अनाज की तौल—मनु० ८। ३२० 5. (योग दर्शन में) श्वास को स्थगित करने के लिए नाक तथा मुखविवर को बन्द करना 6. वेश्या का प्रेमी। सम०—कर्णः 'घड़े के सदृश कान वाला' एक महाकाय राक्षस जो रावण का भाई था तथा राम के हाथों मारा गया था (कहते हैं कि इस राक्षस ने हजारों प्राणी, ऋषि तथा स्वर्गीय अप्सराओं को अपने मुँह का ग्रास बना लिया, देवता उत्सुकतापूर्वक उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे, जब कि इस शक्तिशाली राक्षस से मुक्ति मिले। इन्द्र और उसके हाथी ऐरावत के दैन्यभाव के कारण ब्रह्मा ने इसे शाप दिया। तब से कुम्भकर्ण अत्यन्त घोर तपस्या करने लगा। ब्रह्मा प्रसन्न हुआ, और उसे वरदान देने ही वाला था कि देवों ने सरस्वती से प्रार्थना की कि वह कुम्भकर्ण की जिह्वा पर बैठकर उसे बदल दे। तदनुसार जब वह ब्रह्मा के पास गया तो 'इन्द्रपद' मांगने के बजाय उसके मुंह से 'निद्रापद' निकला, जो उसी समय

स्वीकार कर लिया गया। कहते हैं कि वह छः महीने सोता था और फिर केवल एक दिन के लिए जागता था। जब लंका को राम की वानरसेना ने घेर लिया तो रावण ने बड़ी कठिनाई के साथ कुंभकर्ण को जगाया जिससे कि वह उसकी प्रबल शक्ति का उपयोग कर सके। २००० कलश सुरा पीने के पश्चात् कुम्भकर्ण ने हजारों बन्दरों को अपना मुखग्रास बनाने के अतिरिक्त सुग्रीव को बन्दी बना लिया। अन्त मे कुंभकर्ण राम के हाथों मारा गया),—**कारः** 1. कुम्हार—याज्ञ० ३।१४६ 2. वर्ण संकर जाति (वेश्यायां विप्रतश्चौर्यात्कुम्भकारः स उच्यते—उशना, या मालाकारात्कर्मकर्यां कुम्भकारो व्यजायत - पराशर), —**घोणः** एक नगर का नाम,—**जः**,—**जन्मन्** (पुं),—**योनिः**,—**संभवः** 1. अगस्त्य मुनि के विशेषण—प्रससादोदयादम्भः कुम्भयोनेर्महौजसः —रघु० ४।२२, १५।५५ 2. कौरव और पांडवों के सैन्यशिक्षाचार्य गुरु द्रोण का विशेषण 3. वशिष्ठ का विशेषण,—**दासी** कुट्टिनी, दूती (कभी कभी यह शब्द गाली के रूप मे प्रयुक्त होता है)—**लग्नम्** दिन का वह समय जब कि राशि चक्र क्षितिज के ऊपर उदय होता है,—**मंडूकः** 1. (शा०) घड़े का मेंढक 2. (आलं०) अनुभवशून्य मनुष्य—तु० कूपमंडूक, —**संधिः** हाथी के सिर पर ललाटस्थलियों के बीच का गर्त।

कुम्भकः [कुम्भ+कन्+कै+क वा] 1. स्तंभ का आधार 2. (योगदर्शन में) प्राणायाम का एक प्रकार जिसमें दाहिने हाथ की अंगुलियों से दोनों नथुने और मुख बंद करके सांस रोका जाता है।

कुम्भा [कुत्सितम् उम्भति पूरयति इति—उम्भ्+अच्+टाप् शकं° पररूपम्] वेश्या, वारांगना।

कुम्भिका [कुम्भ+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. छोटा बर्तन 2. वेश्या।

कुम्भिन् [कुम्भ+इनि] 1. हाथी - भामि० १।५२ 2. मगरमच्छ। सम०—**नरकः** एक विशेष प्रकार का नरक,—**मदः** हाथी के मस्तक से बहने वाला मद।

कुम्भिलः [कुम्भ+इलच्] 1. सेंघ लगा कर घर में घुसने वाला चोर 2. काव्य चोर, लेख चोर 3. साला, पत्नी का भाई 4. गर्भ पूरा होने से पहले ही उत्पन्न बालक।

कुम्भी [कुम्भ+ङीप्] पानी का छोटा पात्र, घड़िया। सम०,—**नसः** एक प्रकार का विषैला साँप—उत्तर० २।२९ —**पाकः** (ए० व० या ब० व०) एक विशेष प्रकार का नरक जिसमें पापी जन कुम्हार के बर्तनों की भांति पकाये जाते हैं—याज्ञ० ३।२२५, मनु० १२।७६।

कुम्भीकः [कुंभी+कै+क] पुन्नागवृक्ष। सम०—**मक्षिका** एक प्रकार की मक्खी।

कुम्भीरः [कुम्भिन्+ईर्+अण्] घड़ियाल,।

कुम्भीरकः, कुम्भीलः, कुम्भीलकः [कुम्भीर+कनु, रस्य लः, ततः कन् च] चोर—लोप्त्रेण गृहीतस्य कुम्भीरकस्यास्ति वा प्रतिवचनम्—विक्रम० २, कुम्भीलकैः कामुकैश्च परिहर्तव्या चन्द्रिका—मालवि० ४।

कुर् (तुदा० पर०—कुरति) शब्द करना, ध्वनि करना

कुरंकरः, कुरंकुरः [कुरम् इति अव्यक्तशब्दं करोति—कुरम्+कृ+ट, कुरम्+कुर्+शच् च] सारस पक्षी।

कुरंगः (स्त्री०—गी) [कृ+अङ्गच्] 1. हरिण—तन्मे ब्रूहि कुरंग कुत्र भवता किं नाम तप्तं तपः—शा० १।१४, ४।६ लवंगी कुरंगी दृगंगीकरोतु—जग० 2. हरिण की एक जाति (कुरंग ईषत्ताम्रः स्याद्धरिणाकृतिको महान्)। सम०—**अक्षी,—नयना,—नेत्रा** हरिण जैसी आँखों वाली स्त्री,—**नाभिः** कस्तूरी।

कुरंगमः [कुर+गम्+खच्, मुम्] दे० 'कुरंग'।

कुरचिल्लः [कुर+चिल्ल्+अच्] केकड़ा

कुरटः [कुर्+अटन्+कित्] जूता बनाने वाला, मोची।

कुरंटः, कुरंटकः, कुरंटिका [कुर्+अण्टक्, कुरण्ट+कन्, स्त्रियां टाप् इत्वम्] पीला सदाबहार, कटसरैया।

कुरंडः [कुर्+अण्डक्] अण्डकोश की वृद्धि, एक रोग जिसमें पोते बढ़ जाते हैं।

कुररः (लः) [कु+क्रुरच्, रलयोरभेदः] क्रौंच पक्षी, समुद्री उकाब।

कररी [कुरर+ङीष्] 1. मादा क्रौंच,—चक्रन्द विग्ना कुररीव भूयः—रघु० १४।६८ 2. भेड़। सम०—**गणः** क्रौंच पक्षियों का झुंड।

कुरवः (बः), **कुरव** (ब) **कम्** [ईषत् रवो यत्र इति, कुरव+कन्] सदाबहार या कटसरैया की जाति,—कुरवकाः रवकारणतां ययुः—रघु० ९।२९, मेघ० ७८, ऋतु० ६।१८—**वं** (**बं**),—**व** (**ब**) **कम्** सदाबहार का फूल —चूडापाशे नवकुरवकम्—मेघ० ६।५, प्रत्याख्यात विशेषकम् कुरवकं श्यामावदातारुणम्—मालवि० ३।५।

कुरीरम् [कृ+ईरन्, उकारादेशः] स्त्रियों का एक प्रकार का सिर पर ओढ़ने का कपड़ा।

कुरुः (ब०व०) [कृ+कु उकारादेशः] 1. वर्तमान दिल्ली के निकट भारत के उत्तर में स्थित एक देश—श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्—कि० १।१, चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासते—१।१७ 2. इस देश के राजा—**रुः** 1.पुरोहित 2. भात। सम०—**क्षेत्रम्** दिल्ली के निकट एक विस्तृत क्षेत्र जहाँ कौरव पाण्डवों का महायुद्ध हुआ था—धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेताः युयुत्सवः—भग० १।१, मनु० २।१९,—**जाङ्गलम्**=कुरुक्षेत्र—**राज** (पुं०)—**राजः** दुर्योधन का विशेषण,—**विस्तः** ७०० ट्राय ग्रेन के बराबर (४ तोले) सोने का तोल। —**वृद्धः** भीष्म का विशेषण।

कुरुंटः (पुं०) लालरंग का सदावहार,—**टी** काठ की गुड़िया पुत्तलिका।

कुरुलः (पुं०) बालों का गुच्छा, विशेषकर माथे पर बिखरी हुई जुल्फ।

कुरुवक=कुरवक।

कुरुविंदः,-दम् [कुरु+विद्+श, मुम्] लालमणि—**दम्** 1. काला नमक 2. दर्पण।

कुर्कुटः [कुर्+कुट्+क] 1. मुर्गा 2. कूड़ा-करकट।

कुर्कुरः [कुर्+कुर्+क] कुत्ता,+उपकर्तुमपि प्राप्तं निःस्वं मन्यंति कुर्कुरम्—पंच० २।९०, अने० पा०।

कूर्चिका=कूचिका।

कुर्द्,कुर्दन=दे० कुर्द, कूर्दन।

कु (कू) र्परः [कुर्+क्विप्, कुर्+पृ+अच् पक्षे दीर्घः नि०] 1. घुटना 2. कोहनी।

कु (कू) र्पासः, कु (कू) र्पासकः [कुर्पर+अस्+घञ्, पृषो०, कुर्पास (कूर्पास)+कन्] स्त्रियों के पहनने के लिए एक प्रकार की अँगिया या चोली 1. मनोज्ञकूर्पासकपीडितस्तनाः—ऋतु० ५।८, ४।१६ अने० पा०।

कुर्वत् (शत्रन्त) [कृ+शतृ] करता हुआ—(पुं०) 1. नौकर 2. जूते बनाने वाला।

कुलम् [कुल+क] 1. वंश, परिवार—निदानमिक्ष्वाकुकुलस्य सन्ततेः—रघु० ३।१ 2. पारिवारिक आवास, आसन, घर, गृह—वसन्नृषिकुलेषु सः—रघु० १२।२५ 3. उत्तम-कुल, उच्च वंश, भला घराना—कुले जन्म—पंच० ५।२, कुलशीलसमन्वितः—मनु० ७।५४, ६२, इसी प्रकार कुलजा, कुलकन्यका आदि 4. रेवड़, दल, झुंड, संग्रह, समूह—मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु—श० २।५ अलिकुलसङ्कुल—गीत० १, शि० ९।७१, इसी प्रकार गो°, कृमि° महिषी° आदि 5. चट्टा, टोली, दल (बुरे अर्थ में) 6. शरीर 7. सामने का या अगला भाग,—**लः** किसी निगम या संघ का अध्यक्ष। सम०—**अकुल** (वि०) 1. मिश्र चरित्रवल का 2. मध्यम श्रेणी का, °**तिथिः** (पुं०—स्त्री०) चांद्रमास के पक्ष की द्वितीया, षष्ठी और दशमी, °**वारः** बुधवार,—**अङ्गना** आदरणीय तथा उच्च वंश की स्त्री,—**अङ्गारः** जो अपन कुल को नष्ट करता है,—**अचलः,—अद्रिः, पर्वतः,—शैलः** मुख्य पहाड़, जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खंड में विद्यमान माने जाते हैं उन सात पहाड़ों में से एक, उनके नाम ये हैं:—महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमान् ऋक्षपर्वतः, विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वताः।—**अन्वित** (वि०) उच्चकुल में उत्पन्न,—**अभिमानः** कुल का गौरव,—**आचारः** किसी परिवार या जाति का विशेष कर्तव्य या रिवाज,—**आचार्यः** 1. कुलपुरोहित या कुलगुरु 2. वंशावलीप्रणेता,—**आलम्बिन्** (वि०) परिवार का पालन पोषण करने वाला,—**ईश्वरः** 1. परिवार का मुखिया 2. शिव का नाम,—**उत्कट** (वि०) उच्चकुलोद्भव (**टः**) अच्छी नसल का घोड़ा०—**उत्पन्न,—उद्गत,—उद्भव** (वि०) भले कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव,—**उद्वहः** कुटुंब का मुखिया या उसे अमर बनाने वाला—दे० उद्वह,—**उपदेशः** खानदानी नाम,—**कज्जलः** कुलकलंक,—**कण्टकः** जो अपने कुटुंब के लिए कांटे की भांति कष्टदायक हो,—**कन्यका,—कन्या** उच्चकुल में उत्पन्न लड़की—विशुद्धमुग्धः कुलकन्यकाजनः—मा० ७।१, गृहे-गृहे पुरुषाः कुलकन्यकाः समुद्वहन्ति—मा० ७,—**करः** कुलप्रवर्तक, कुल का आदिपुरुष,—**कर्मन्** (नपुं०) अपने कुल की विशेष रीति,—**कलङ्कः** जो अपने कुल के लिए अपमान का कारण हो,—**क्षयः** 1. कुटुंब का नाश 2. कुल की परिसमाप्ति,—**गिरिः,—भूभृत्** (पुं०)—**पर्वतः** दे० 'कुलाचल' ऊपर,—**घ्न** (वि०) कुल को बर्बाद करने वाला—दोषैरेतैः कुलघ्नानाम्—भग० १।४२,—**ज,—जात** (वि०) 1. अच्छे कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव 2. कुलक्रमागत, आनुवंशिक—कि० १।३१ (दोनों अर्थों में प्रयुक्त),—**जनः** उच्चकुलोद्भव या संमाननीय पुरुष,—**तन्तुः** जो अपने कुल को बनाये रखता है,—**तिथिः** (पुं० स्त्री०) महत्त्वपूर्ण तिथि, नामतः चांद्र पक्ष की चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी और चतुर्दशी,—**तिलकः** कुटुंब की कीर्ति, जो अपने कुल को सम्मानित करता है, **दीपः—दीपकः** जिससे कुल का नाम उजागर हो,—**दुहितृ** (स्त्री०) दे० कुलकन्या,—**देवता** अभिभावक देवता, कुल का संरक्षक देवता—कु० ७।२७—**धर्मः** कुल की रीति, अपने कुल का कर्तव्य या विशेष रीति—उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन—भग० १।४३ मनु० १।११८, ८।१४,—**धारकः** पुत्र,—**धुर्यः** परिवार का भरणपोषण करने में समर्थ (पुत्र), वयस्क पुत्र—न हि सति कुलधुर्ये सूर्यवंश्या गृहाय—रघु० ७।७१,—**नन्दन** (वि०) अपने कुल को प्रसन्न तथा सम्मानित करने वाला,—**नायिका** वाममार्गी शाक्तों की तान्त्रिकपूजा के उत्सव के अवसर पर जिस लड़की की पूजा की जाय,—**नारी** उच्चकुलोद्भव सती साध्वी स्त्री,—**नाशः** 1. कुल का नाश या बरबादी 2. विधर्मी, आचारहीन, बहिष्कृत 3. ऊँट,—**परम्परा** वंश को बनाने वाली पीढ़ियों की श्रेणी,—**पतिः** 1. कुटुंब का मुखिया 2. वह ऋषि जो दस सहस्र विद्यार्थियों का पालनपोषण करता है तथा उन्हें शिक्षित करता है—परिभाषा—मुनीनां दशसाहस्रं योऽन्नदानादिपोषणात्, अध्यापयति विप्रर्षिरसौ कुलपतिः स्मृतः।—अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णक्षेत्रसंभवा स्यात्—श० १, रघु० १।९५, उत्तर० ३।४८,—**पांसुका** कुलटा स्त्री जो अपने कुल को कलंक लगावे, व्यभिचारिणी स्त्री,—**पालिः—पालिका,**

—पाली (स्त्री०) उच्चकुलोद्भूत सती स्त्री,—पुत्रः अच्छे कुल में उत्पन्न बेटा—इह सर्वस्वफलिनः कुलपुत्रमहाद्रुमाः—मृच्छ० ४।१०,—पुरुषः 1. सम्मान के योग्य तथा उच्चकुल में उत्पन्न पुरुष—कश्चुम्बति कुलपुरुषो वेश्याधरपल्लवं मनोज्ञमपि—भर्तृ० १।९२ 2. पूर्वज,—पूर्वगः पूर्व पुरुष,—भार्या सती साध्वी पत्नी, —भृत्या गर्भवती स्त्री की परिचर्या,—मर्यादा कुल का सम्मान या प्रतिष्ठा,—मार्गः कुल की रीति, सर्वोत्तमरीति या ईमानदारी का व्यवहार,—योषित्, —वधू (स्त्री०) अच्छे कुल की सदाचारिणी स्त्री, —वारः मुख्य दिन (अर्थात् मंगलवार और शुक्रवार) —विद्या कुलक्रमागत प्राप्त ज्ञान, परंपराप्राप्त ज्ञान, —विप्रः कुलपुरोहित,—वृद्धः परिवार का बूढ़ा तथा अनुभवी पुरुष,—व्रतः,—तम् कुल का व्रत या प्रतिज्ञा —गलितवयसामिक्ष्वाकूणामिदं हि कुलव्रतम्—रघु० ३।७०, विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः —भामि० १।११३,—श्रेष्ठिन् (पुं०) किसी कुटुंब या श्रमिकसंघ का मुखिया 2. उच्चकुल में उत्पन्न शिल्पकार,—संख्या 1. कुल की प्रतिष्ठा 2. सम्मानित परिवारों में गणना—मनु० ३।६६,—सन्ततिः (स्त्री०) संतान, वंशज, वंशपरम्परा—मनु ५।१५९,—संभव (वि०) प्रतिष्ठित कुल में उत्पन्न,—सेवकः श्रेष्ठ नौकर,—स्त्री उच्च कुल की स्त्री, कुललक्ष्मी,—अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः—भग० १।४१, —स्थितिः (स्त्री०) कुटुम्ब की प्राचीनता या समृद्धि।

कुलक (वि०) [कुल+कन्] अच्छे कुल का, अच्छे कुल में जन्मा हुआ,—कः 1. शिल्पियों की श्रेणी का मुखिया 2. उच्च कुल में उत्पन्न शिल्पकार 3. बांबी,—कम् 1. संग्रह, समूह 2. व्याकरण की दृष्टि से सम्बद्ध श्लोकों का समूह, (पाँच से पन्द्रह तक के श्लोकों का समूह जो एक वाक्य बनाते हों) उदा० दे० शि० १।१-१०, रघु० १।५—९, इसी प्रकार कु० १।११—६।

कुलटा [कुल+अट्+अच्+टाप् शक० पररूपम्] व्यभिचारिणी स्त्री—मुद्रा० ६।५, याज्ञ० १।२१५। सम० —पतिः भ्रष्टा या जारिणी स्त्री का स्वामी।

कुलतः (अव्य०) कुल+तसिल्] जन्म से।

कुलत्थः [कुल+स्था+क पृषो० साधुः] कुलथी, एक प्रकार की दाल।

कुलन्धर (वि०) [कुल+धृ+खच्, मुम्] अपने कुल का सिलसिला चलाने वाला।

कुलम्भरः,—लः [कुल+भृ+खच्, मुम्] चोर।

कुलवत् [कुल+मतुप्, मस्य वत्वम्] कुलीन, अच्छे घराने में उत्पन्न।

कुलायः,—यम् [कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र—कुल+अय्+घञ्] पक्षियों का घोंसला,—कूजक्लान्तकपोतकुक्कुटकुलाः कूले कुलायद्रुमाः—उत्तर० २।९, नै० १।१४१ 2. शरीर 3. स्थान, जगह 4. बुना हुआ वस्त्र, जाला 5. बक्स या पात्र। सम०—निलायः घोंसले में बैठना, अंडे सेना, अंडों में से बच्चे निकालने के लिए अंडों के ऊपर बैठना।—स्थः पक्षी।

कुलायिका [कुलाय+ठन्+टाप्] पक्षियों का पिंजड़ा, चिड़ियाघर, कबूतरखाना, दड़बा।

कुलालः [कुल्+कालन्] 1. कुम्हार,—ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे—भर्तृ० २।९५ 2. जंगली मुर्गा।

कुलिः [कुल्+इन्, कित्] हाथ।

कुलिक (वि०) [कुल+ठन्] अच्छे कुल का, उत्तम कुल में उत्पन्न,—कः 1. स्वजन—याज्ञ० २।२३३ 2. शिल्पिसंघ का मुखिया 3. उच्चकुलोद्भव कलाकार। सम० —वेला दिन का वह समय जबकि कोई शुभ कार्य आरम्भ नहीं करना चाहिए।

कुलिङ्गः [कु+लिङ्ग+अच्] 1. पक्षी 2. चिड़िया।

कुलिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुल+इनि] कुलीन, उच्चकुलोद्भव, (पुं०) पहाड़।

कुलिन्दः (ब० व०) [कुल्+इन्द] एक देश तथा उसके शासकों का नाम।

कुलिरः,—रम् [कुल+इरन्,, कित्] 1. केकड़ा 2. राशिचक्र में चौथी राशि, कर्कराशि।

कुलि (ली) शः,—शम् [कुलि+शी+ड, पक्षे पृषो० दीर्घः] इन्द्र का वज्र—वृत्रस्य हन्तुः कुलिशं कुण्ठिताश्रीव लक्ष्यते—कु० २।२०, अवेदनाज्ञं कुलिशक्षतानाम् —१।२०, रघु० ३।६८, ४।८८, अमरु ६६ 2. वस्तु का सिरा या किनारा—मेघ० ६१: सम०—धरः, —पाणिः इन्द्र का विशेषण,—नायकः मैथुन की विशेष रीति, रतिसंबंध।

कुली [कुलि+ङीप्] पत्नी की बड़ी बहन, बड़ी साली।

कुलीन (वि०) [कुल+ख] ऊँचे वंश का, अच्छे कुल का, उत्तम परिवार में जन्म हुआ, दिव्ययोषितमिवाकुलीनाम्—का० ११,—नः अच्छी नसल का घोड़ा।

कुलीनसम् [कुलीनं भूमिलग्नं द्रव्यं स्यति - कुलीन+सो+क] पानी।

कुलीरः,—रकः [कुल+ईरन्, कित्; कुलीर+कन्] 1. केकड़ा 2. राशिचक्र में चौथी राशि, कर्क राशि।

कुलुक्कगुञ्जा [कौ पृथिव्यां लुक्का, लुक्कायिता गुञ्ज इव] लुकाठी, जलती हुई लकड़ी।

कुलूतः (ब० व०) एक देश और उसके शासकों का नाम।

कुल्माषम् [कुल्+क्विप्, कुल् माषोऽस्मिन् ब० स०] कांजी,—षः एक प्रकार का अनाज। सम०—अभिषुतम् कांजी।

कुल्य (वि०) [कुल+यत्] 1. कुटुंब, वंश या निगम से संबंध रखने वाला 2. सत्कुलोद्भव,--ल्यः प्रतिष्ठित मनुष्य,—ल्यम् 1. कौटुंबिक विषयों में मित्रों की भांति पूछताछ (समवेदना, बधाई आदि) 2. हड्डी—महावी० २।१६ 3. मांस 4. छाज,—ल्या 1. साध्वी स्त्री 2. छोटी नदी, नहर, सरिता—कुल्याम्भोभिः पवनचपलैः शाखिनो धौतमूलाः– श० १।१५,– कुल्येवोद्यानपादपान्--रघु० १२।३ ७।४९ 3. परिखा, खाई 4. आठ द्रोण के बराबर अनाज की तोल ।

कुवम् [कु+वा+क] 1. फूल 2. कमल ।

कुवर=दे० तुवर ।

कुवलम् [कु+वल्+अच्] 1. कुमुद 2. मोती 3. पानी ।

कुवलयम् [कोः पृथिव्याः वलयमिव—उप० स०] 1. नीला कुमुद—कुवलयदलस्निग्धैरङ्गैर्ददौ नयनोत्सवम्—उत्तर० ३।२२ 2. कुमुद 3. पृथ्वी (पुं० भी) ।

कुवलयिनी [कुवलय+इनि+ङीप्] 1. नीली कुमुदिनी का पौधा 2. कमलों का समूह 3. कमलस्थली 4. कमल का पौधा ।

कुवाद (वि०) [कु+वद्+अण्] 1. मान घटाने वाला, साख कम करने वाला, निन्दक 2. नीच, दुरात्मा, अधम ।

कुविकः (ब० व०) एक देश का नाम ।

कुवि (पि) न्दः [कु+विद्+श, मुम्, कुप्+किन्दच्] 1. बुनकर—कुविन्दस्त्वं तावत्पटयसि गुणग्राममभितः —काव्य० ७ 2. जुलाहा जाति का नाम ।

कुवेणी [कु+वेण्+इन्+ङीप्] 1. मछलियाँ रखने की टोकरी [कुत्सिता वेणी] 2. बुरी तरह बंधी हुई सिर की चोटी ।

कुवेलम् [कुवेषु जलजपुष्पेषु ई शोभां लाति—कुव+ई +ला+क] कमल ।

कुशः [कु+शी+ड] 1. एक प्रकार का घास (दर्भ) जो पवित्र माना जाता है और बहुत से धर्मानुष्ठानों में जिसका होना आवश्यक समझा जाता है,—पवित्रार्थे इमे कुशाः—श्राद्धमन्त्र—कुशपूतं प्रवयास्तु विष्टरम्—रघु० ८।१८, १।४९, ९५ 2. राम के बड़े पुत्र का नाम (वह राम के जुड़वाँ पुत्रों में से एक था, जब रामने सीता को निष्ठुरतापूर्वक जंगल में छोड़ दिया था, उसके बाद शीघ्र ही जुड़वाँ पुत्रों का जन्म हुआ जिनमें कुश बड़ा था क्योंकि उसने संसार को पहले देखा; कुश और लव दोनों भाइयों का पालन पोषण वाल्मीकि ने किया, उन्हें आदिकवि के महाकाव्य रामायण का पाठ करना सिखाया गया। राम ने कुश को कुशावती का राजा बना दिया और वह अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय तक वहाँ रहा। परन्तु अयोध्या की पुरानी राजधानी की अधिष्ठात्री-देवी ने उसे स्वप्न में दर्शन दिए और कहा कि उसे इस प्रकार देवी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए, तब कुश अयोध्या को लौट आया—दे० रघु १६।३-४२),— शम् पानी जैसा कि 'कुशेशय' में। सम०—अग्रम् कुशघास के पत्ते का तेज किनारा, इसीलिए समास में यह शब्द प्रायः 'तीक्ष्ण' 'तेज' और 'तीव्र' अर्थ प्रकट करता है जैसाकि °बुद्धि (वि०) तीव्रबुद्धि, तेजबुद्धि वाला, तीक्ष्णबुद्धि; —(अपि) कुशाग्रबुद्धे कुशली गुरुस्ते—रघु० ५।४, – अग्रीय (वि०) तीव्र, तेज,–अङ्गुरीयम् कुशघास की बनी अंगूठी जो धर्मानुष्ठान के अवसर पर पहनी जाती है,— आसनम् कुशा का बना हुआ आसन या चटाई, —स्थलम् उत्तर भारत में एक स्थान का नाम – वेणी० १ ।

कुशल (वि०) [कुशान् लातीति—कुश+ला+क] 1. सही, उचित, मंगल शुभ—शि० १६।४१, भग० १८।१० 2. प्रसन्न, समृद्ध 3. योग्य, दक्ष, चतुर, प्रवीण, अभिज्ञ (अधि० के साथ या समास में)—दण्डनीत्यां च कुशलम्· याज्ञ० १।३१३, २।१८१, मनु० ७।१९० रघु० ३।१२,—लम् 1. कल्याण, प्रसन्न तथा समृद्ध अवस्था, प्रसन्नता,—पप्रच्छ कुशलं राज्ये राज्याश्रममुनिं मुनिः—रघु० १।५८, अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वाम्—मेघ० १०१ अपि कुशलं भवतः 'आप अच्छी तरह से हैं ?' 2. गुण 3. चतुराई, योग्यता। सम० — काम (वि०) प्रसन्नता का इच्छुक,— प्रश्नः किसी से कुशलमंगल पूछना (मित्रों की भाँति),—बुद्धि (वि०) बुद्धिमान्, समझदार, तीव्रबुद्धि, तीक्ष्णबुद्धि ।

कुशलिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुशल+इनि] प्रसन्न, राजो खुशी, समृद्ध—अथ भगवाँल्लोकानुग्रहाय कुशली काश्यपः—श० ५, रघु० ५।४, मेघ० ११२ ।

कुशा [कुश+टाप्] 1. रस्सी 2. लगाम ।

कुशावती [कुश+मतुप्, मस्य वः, दीर्घः] इस नाम की एक नगरी, राम के पुत्र कुश की राजधानी, दे० 'कुश'।

कुशिक (वि०) [कुश+ठन्] भैंगी आँख वाला,—कः 1. विश्वामित्र के दादा का नाम, (कुछ दूसरे वर्णनों के अनुसार—विश्वामित्र के पिता का नाम) 2. फाली (हल की) 3. तेल की गाद ।

कुशी [कुश+ङीप्] हल की फाली ।

कुशीलवः [कुत्सितं शीलमस्य—कुशील+व] 1. भाट, गवैया—मनु० ८।६५, १०२ 2. (नाटक का) पात्र, नर्तक तत्सर्वे कुशीलवाः सङ्गीतप्रयोगेण मत्समीहितसंपादनाय प्रवर्तताम्—मा० १, तत्किमिति नारम्भयसि कुशीलवैः सह सङ्गीतकम्—वेणी० १ 3. समाचार फैलाने वाला 4. वाल्मीकि का विशेषण ।

कुशुम्भः [कु+शुम्भ्+अच्] संन्यासी का जलपात्र, कमण्डलु ।

कुशूलः [कुस्+ऊलच्, पृषो० सस्य शत्वम्] 1. अन्नागार (खत्ती), कोठी, भंडार--को धन्यो बहुभिः पुत्रैः कुशलापूरणाढकैः—हि० प्र० २० 2. भूसी से बनाई हुई आग ।

कुशेशयम् [कुशे+शी+अच्, अलुक् स०] कुमुद, कमल —भूयात्कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः(पन्थाः)—श० ४।१०, रघु० ६।१८,—यः सारस पक्षी ।

कुष् (क्र्या० पर०—कुष्णाति, कुषित) 1. फाड़ना, निचोड़ना, खींचना, निकालना—शिवाः कुष्णन्ति मांसानि — भट्टि० १८।१२, १७।१०, ७।९५ 2. जांचना, परीक्षा लेना 3. चमकना, निस्—निचोड़ना, फाड़ना, निकालना—उपान्तयोर्निष्कुषितं विहङ्गैः—रघु० ७।५०, भट्टि० ९।३०, ५।४२, इसी प्रकार—कार्कैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितम्—गंगाष्टक ।

कुषाकुः [कुष्+काकु] 1. सूर्य 2. अग्नि 3. लंगूर, बंदर ।

कुष्ठः,-ष्ठम् [कुष्+क्थन] कोढ़ (कोढ़ १८ प्रकार का होता है)—गलत्कुष्ठाभिभूताय च—भर्तृ० ३।९० । सम०—अरिः 1. गंधक 2. कुछ पौधों के नाम ।

कुष्ठित (वि०) [कुष्ठ+इतच्] कोढ़ से पीड़ित, कोढ़-ग्रस्त ।

कुष्ठिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [कुष्ठ+इनि] कोढ़ी ।

कुष्माण्डः [कु ईषत् उष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य—ब० स० शक० पररूपम्] एक प्रकार की लौकी, तूमड़ी, कुम्हड़ा ।

कुस् (दिवा० पर०—कुस्यति, कुसित) 1. आलिंगन करना 2. घेरना ।

कुसितः [कुस्+क्त] 1. आबाद देश 2. जो सूद से जीविका चलाता है, दे० 'कुशीद' नी० ।

कुसी (सि) दः [कुस्+ईद] (इसे 'कुशीद' या 'कुषीद' भी लिखते हैं। साहूकार, सूदखोर—दम्, 1. वह कर्जा या वस्तु जो ब्याज सहित लौटायी जाय 2. उधार देना, सूदखोरी, सूदखोरी का व्यवसाय —कुसीदाद् दारिद्र्यं परकरगतग्रन्थिशमनात्—पंच० १।११, मनु० १।९०, ८।४१०, याज्ञ० १।११९ । सम०—पथः सूदखोरी, सूदखोर (पठान) का ब्याज, ५ प्रतिशत से अधिक ब्याज—वृद्धिः (स्त्री०) धन पर मिलने वाला ब्याज,—कुसीदवृद्धिर्द्वैगुण्यं नात्येति सकृदाहृता—मनु० ८।१५१ ।

कुसीदा [कुसीद+टाप्] सूदखोर स्त्री ।

कुसीदायी [कुसीद+ङीप्, ऐ आदेशः] सूदखोर की पत्नी ।

कुसीदिकः—**कुसीदिन्** (पुं०) [कुसीद+ष्ठन्, इनि वा] सूदखोर ।

कुसुमम् [कुष्+उम] 1. फूल,—उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्,—श० ७।३० 2. ऋतु-स्राव 3. फल । सम० —अञ्जनम् पीतल की भस्म जो अंजन की भांति प्रयुक्त होती है,—अञ्जलिः मुट्ठी भर फूल,—अधिपः, —अधिराज् (पुं०) चम्पक वृक्ष (इसके फूल पीले रंग के सुगंधयुक्त होते हैं),—अवचायः फूलों का चुनना —अन्यत्र यूयं कुसुमावचायं कुरुध्वमत्रास्मि करोमि सख्यः—काव्य० ३,—अवतंसकम् फूलों का गजरा, —अस्त्रः,—आयुधः,—इषुः,—बाणः,—शरः 1. पुष्पमय बाण 2. कामदेव,—अभिनवः कुसुमेषुव्यापारः —मा० १ यहाँ 'कुसुमेषु व्यापारः' भी पढ़ा जा सकता है)—तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय—भर्तृ० १।१, ऋतु० ६।३३, चौर० २०, २३, रघु० ७।६१, शि० ८।७०, ३।१२ कुसुमशरबाणभावेन—गीत० १०,—आकरः 1. उद्यान 2. फूलों का गुच्छा 3. बसंत ऋतु—ऋतूनां कुसुमाकरः—भग० १०।३५, इसी प्रकार भामि० १।४८, —आत्मकम् केसर, जाफरान,—आसवम् 1. शहद 2. एक प्रकार की मादक मदिरा (फूलों से तैयार की गई),—उज्ज्वल(वि०)फूलों से चमकीला,—कार्मुकः, —चापः,—धन्वन् (पुं०) कामदेव के विशेषण—कुसुमचापमतेजयदंशुभिः—रघु० ९।३९, ऋतु० ६।२७, —चित (वि०) पुष्पों का अम्बार हो गया है जहाँ —पुरम् पाटलीपुत्र (पटना) का नाम—कुसुमपुराभियोगं प्रत्यनुदासीनो राक्षसः—मुद्रा० २,—लता खिली हुई लता,—शयनम् फूलों की शय्या—विक्रम० ३।१०, —स्तवकः फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता—कुसुमस्तवकस्येव द्वे गती स्तो मनस्विनाम्—भर्तृ० २।३३ ।

कुसुमवती [कुसुम+मतुप्+ङीप्, मस्य वः] ऋतुमती या रजस्वला स्त्री ।

कुसुमित (वि०) [कुसुम+इतच्] फूलों से युक्त, पुष्पों से सुसज्जित ।

कुसुमालः [कुसुमवत् लोभनीयानि द्रव्याणि आलाति—इति कुसुम+आ+ला+क] चोर ।

कुसुम्भः,-भम् [कुस्+उम्भ] 1. कुसुम्भ,—कुसुम्भारुणं चारु चेलं वसाना—जग०, रघु० ६।६ 2. केसर 3. संन्यासी का जलपात्र, कमण्डलु,—भम् सोना,—भः बाह्य स्नेह (कुसुम्भी रंग से तुलना की गई है) ।

कुसूलः [कुस्+ऊलच्] 1. अन्नागार (खत्ती), भण्डार, गृह (अनाज आदि के लिए) ।

कुसृतिः (स्त्री०) [कुत्सिता सृतिः] जालसाजी, ठगी, धोखादेही ।

कुस्तुभः [कु+स्तुंभ्+क] 1. विष्णु 2. समुद्र ।

कुहः [कुह्+णिच्+अच्] कुबेर, धनपति ।

कुहकः [कुह्+क्वुन्] छली, ठग, चालाक (ऐन्द्रजालिक), —कम्,—का चालाकी, धोखा। सम०—कार (वि०) कपटी, छलिया,—चकित (वि०) दाँवपेंच से डरा हुआ, शक करने वाला, सावधान, सजग—हि० ४।१०२,—स्वनः,—स्वरः मुर्गा ।

कुहनः [कु+हन्+अच्] 1. मूसा 2. साँप—**नम्** 1. छोटा मिट्टी का बर्तन 2. शीशे का बर्तन ।

कुहना, कुहनिका [कुह्+यु, कुहन+क+टाप्, इत्वम्] स्वार्थ की पूर्ति के लिए धार्मिक कड़ी साधनाओं का अनुष्ठान, दंभ ।

कुहरम् [कुह्+क—कुहं राति, रा+क] 1. गुफा, गढ़ा —जैसा कि 'नाभिकुहर' या आस्य° में 2. कान 3. गला 4. सामीप्य 5. मैथुन ।

कुहरितम् [कुहर+इतच्] 1. ध्वनि 2. कोयल की कुकू 3. मैथुन के समय सी, सी का शब्द ।

कुहुः, कुहूः (स्त्री०) [कुह्+कु, कुहु+ऊङ्] 1. नया चंद्र-दिवस अर्थात् चान्द्रमास का अन्तिम दिन—(अमावस्या) जब कि चन्द्रमा अदृश्य होता है - करगतैव गता यदियं कुहूः—नै० ४।५७ 2. इस दिन की अधिष्ठात्री देवी—मनु० ३।८६ 3. कोयल की कूक - पिकेन रोषारुणचक्षुषा मुहुः कुहूरुतं हूयत चन्द्रवैरिणी—नै० १।१००, उन्मीलति कुहूः कुहूरिति कलोत्ताला: पिकानां गिरः—गीत० १ । सम०—**कण्ठः,—मुखः,—रवः,—शब्दः** कोयल ।

कू (भ्वा०—तुदा० आ०—कवते, कुवते) (क्र्या० उभ० —कु—कूनाति, कु - कूनीते) 1. ध्वनि करना, कल-रव करना 2. कष्टावस्था में क्रन्दन करना—खगाश्चुकु-विरे॒ऽशुभम्—भट्टि० १४।२०, १।२०, १४।५, १५।२६, १६।२९ ।

कूः (स्त्री०) [कू+क्विप्] पिशाचिनी, चुड़ैल ।

कूचः [कु+चट्] स्त्री का स्तन (विशेष कर जवान या अविवाहिता स्त्री का) दे० 'कुच' ।

कूचिका, कूची [कूच+कन्+टाप्, इत्वम्, कूच+ङीप्] 1. बालों का बना छोटा ब्रुश, कूंची 2. नाली ।

कूज् (भ्वा० पर०—कूजति, कूजित) अस्पष्ट ध्वनि करना, गूंजना, कूजना, कूकना - कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्—रामा०, पुंस्कोकिलो यन्मधुरं चुकूज —कु० ३।३२, ऋतु० ६ । २२, रघु० २।१२, नै० १।१२७ नि , परि , वि , कूजना, कूक की अस्पष्ट ध्वनि करना ।

कूजः, कूजनम्, कूजितम् [कूज्+अच्, कूज्+ल्युट्, कूज्+क्त] 1. कूजना, कूक की ध्वनि करना 2. पहियों की घरघराहट ।

कूट (वि०) [कूट+अच्] 1. मिथ्या, जैसा कि 'कूटाः स्युः पूर्वसाक्षिणः' में याज्ञ० १।८० 2. अचल, स्थिर, **टः,—टम्** 1. जालसाजी, भ्रम, धोखा 2. दाँव, जाल-साजी से भरी हुई योजना 3. जटिल प्रश्न, पेचीदा या उलझनदार स्थल जैसा कि कूटश्लोक और कूटा-न्योक्ति 4. मिथ्यात्व, असत्यता (प्रायः समास में विशेषण के बल के साथ प्रयोग) °**वचनम्**, झूठे या धोखे में डालने वाले शब्द. °**तुला**, °**मानम्** आदि 5. पहाड़ का शिखर या चोटी—वप्रक्रियामृक्षवतस्तटानि ... तत्कूटानुद्धर्तैर्धातुरेणुभिः—रघु० ४।७१, मेघ० ११३ 6. उभार या उत्तुंगता 7. अपने उभारों समेत माथे की हड्डी, सिर का शिखा 8. सींग 9. सिरा, किनारा—याज्ञ० ३।९६ 10. प्रधान, मुख्य 11. राशि, ढेर, समूह; अभ्रकूटम् बादलों का समूह, इसी प्रकार अन्नकूटम् —अनाज का ढेर 12. हथौड़ा, घन 13. हल की फाली, कुशी 14. हरिणों को फसाने का जाल 15. गुप्ती, जैसे ऊनी म्यान में बर्छी, या हाथ की यष्टिका में कृपाण 16. जलकलश, **टः** 1. घर, आवास 2. अगस्त्य की उपाधि । सम०—**अक्षः** झूठा या कपट से भरा पासा (सीसा या पारा भरा हुआ जिससे फेंकने पर वह पासा बल पर ही चित हो) —कूटाक्षोपधिदेविनः—याज्ञ० २।२०२,—**अगारम्** छत पर बनी कोठरी, —**अर्थः** अर्थों की सन्दिग्धता °भाषिता कहानी, उपन्यास, —**उपायः** जालसाजी से भरी योजना, कूटचाल, कूटनीति —**कारः** धोखेबाज, झूठा गवाह,—**कृत्** (वि०) ठगनेवाला, धोखा देने वाला 2. जाली दस्तावेज बनानेवाला —याज्ञ० २।७० 3. घूस देने वाला (पुं०) 1. कायस्थ 2. शिव का विशेषण,—**कार्षापणः** झूठा कार्षापण,—**खड्गः** गुप्ती, **छद्मन्** (पुं०) ठग,—**तुला** पासंग वाली तराजू, —**धर्म** (वि०) जहाँ झूठ (मिथ्यात्व) कर्तव्य कर्म समझा जाय (ऐसा स्थान, घर, और देश आदि), —**पाकलः** पित्तदोषयुक्त ज्वर जिससे हाथी ग्रस्त होता है, हस्तिवातज्वर—अचिरेण वैकृतविवर्तदारुणः कलभं कठोर इव कूटपाकलः (अभिहन्ति)—मा० १।३९, (कभी कभी इसी शब्द को 'कूटपालक' भी लिख देते हैं)—**पालकः** कुम्हार, कुम्हार का आवा,—**पाशः, —बन्धः** जाल, फंदा,—रघु० १३।३९,—**मानम्** झूठी माप या तोल,—**मोहनः** स्कन्द का विशेषण,—**यन्त्रम्** हरिण एवं पक्षियों को फसाने का जाल या फंदा,—**युद्धम्** छल और धोखे की लड़ाई, अधर्मयुद्ध रघु० १७।६९, —**शाल्मलिः** (पुं० स्त्री०) 1. सेमल वृक्ष की एक जाति, 2. तेज काटों से युक्त वृक्ष (एक उपकरण—गदा—जिससे यमराज पापियों को दण्ड देता है)—दे० रघु० १२। ९५ और इस पर मल्लि० की टीका,—**शासनम्** जाली आज्ञापत्र या फरमान,—**साक्षिन्** (पुं०) झूठा गवाह, —**स्थ** (वि०) शिखर पर खड़ा हुआ, सर्वोच्च पद पर अधिष्ठित (वंशावलीद्योतक तालिका में प्रधान पद पर अवस्थित),—**स्थः** परमात्मा (अचल, अपरिवर्तनीय, तथा शाश्वत) भग० ६।८, १२।३,—**स्वर्णम्** खोटा सोना ।

कूटकम् [कूट+कन्] 1. जालसाजी, धोखादेही, चालाकी 2. उत्सेध, उत्तुंगता 3. कुशी, हल की फाली । सम० —**आख्यानम्** गढ़ी हुई कहानी ।

कूटशः (अव्य०) [कूट+शस्] ढेरों या समूहों में ।

कूड्यम्=कुड्य ।

कूण् (चुरा० उभ०—कूणयति—ते, कूणित) 1. बोलना, बातचीत करना 2. सिकोड़ना, बंद करना (इस अर्थ में आ० माना जाता है) ।

कूणिका [कूण्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. किसी पशु का सींग 2. वीणा की खूंटी ।

कूणित (वि०) [कूण्+क्त] बन्द, मुंदा हुआ ।

कूद्दालः [कु+दल्+अण्, पृषो०] पहाड़ी आबनूस ।

कूपः [कुवन्ति मण्डूका अस्मिन्—कु+एक् दीर्घश्च] 1. कूआँ—कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जलम्—भर्तृ० २।४९, इसी प्रकार—नितरां नीचोऽस्मीति त्वं खेदं कूप मा कदापि कृथाः, अत्यन्तसरसहृदयो यतः परेषां गुणग्रहीतासि—भामि० १।९ 2. छिद्र, रन्ध्र, गढ़ा, गर्त जैसा कि 'जघनकूप' में 3. चमड़े की बनी तेल रखने की कुप्पी 4. मस्तूल —क्षोणीनौकूपदण्डः—दश० १ । सम०—अङ्कः,—अङ्गः रोमांच,—कच्छपः, —मण्डूकः—की (शा०) कुएँ का कछुवा या मेढक, (आलं०) अनुभवशून्य मनुष्य, जो सांसारिक अनुभव नहीं रखता, सीमित जानकारी रखने वाला मनुष्य जो केवल पास पड़ोस को ही जानता है, (प्रायः 'तिरस्कारद्योतक' शब्द),—यन्त्रम् रहट, कुएँ से पानी निकालने का यन्त्र—°यन्त्रघटिका, °यन्त्रघटी रहट में पानी निकालने के लिए लगी डोलचियाँ । °यन्त्रघटिका न्याय=दे० 'न्याय' के नीचे ।

कूपकः [कूप+कन्] 1. कुआँ (अस्थायी या कच्चा) 2. छिद्र, रंध्र, गर्त 3. कूल्हों के नीचे का गड्ढा 4. खूंटा जिसके सहारे किश्ती का लंगर बाँध दिया जाता है 5. मस्तूल 6. चिता 7. चिता के नीचे का छिद्र 8. चमड़े की बनी तेल-कुप्पी 9. नदी के बीच की चट्टान या वृक्ष ।

कूपा (वा) रः [कुत्सितः पारः तरणम् अस्मिन्—ब० स०] समुद्र, सागर ।

कूपी [कूप+ङीप्] 1. छोटा कुआँ, कुइया 2. पलिघ, बोतल 3. नाभि ।

कूब (व) र (वि०) (स्त्री०—री) [कु+व (ब) रच्] 1. सुन्दर, रुचिकर 2. कुबड़ा,—रः,—रम् गाड़ी की बल्ली या स्थूण-भुजा जिसमें जूआ बाँधा जाता है, —री 1. कम्बल या किसी दूसरे कपड़े के परदे से ढकी हुई गाड़ी 2. गाड़ी की बल्ली जिससे जूआ बाँधा जाय—वेणी० ४ ।

कूरः,-रम् [वे+क्विप्=ऊः, की भूमौ उवं वयनं लाति —ला+कः, लरयोरभेदः] भोजन, भात—इतश्च कूरच्युततैलमिश्रं पिण्डं हस्ती प्रतिग्राह्यते मात्रपुरुषैः —मृच्छ० ४ ।

कूर्चः,-र्चम् [कुर्=चट् नि० दीर्घः] 1. गुच्छा, गठरी 2. मुट्ठीभर कुश घास 3. मोरपंख 4. दाढ़ी—आगतमनध्यायकारणं सविशेषभूतमद्य जीर्णकूर्चानाम्—उत्तर० ४, या पूरयतिव्यमनेन चित्रफलकं लंबकूर्चानां तापसानां कदम्बैः—श० ६ 5. चुटकी 6. नाक का ऊपरी भाग, दोनों भौवों के बीच का भाग 7. कूँची, ब्रुश 8. धोखा, जालसाजी 9. शेखी बघारना, डींग मारना 10. दम्भ, —र्चः 1. सिर 2. भण्डार । सम०—शीर्षः—शेखरः नारियल का पेड़ ।

कूर्चिका [कूर्चक+टाप्+इत्वम्] 1. चित्रकारी करने की कूँची, ब्रुश या पैंसिल 2. चाबी 3. कली, फूल 4. जमाया हुआ दूध 5. सुई ।

कूर्द् (भ्वा० उभ०—कूर्दति-ते, कूर्दित) 1. छलांग लगाना, कूदना 2. खेलना, बालकेलि करना—वव्रश्चुराजुघूर्णुश्च स्वेमुदचुकूर्दिरे तथा—भट्टि० १४।७७, ७९, १५।४५, उद्—, कूदना, उछलना ।

कूर्दनम् [कूर्द्+ल्युट्] 1. उछलना 2. खेलना, क्रीडा करना, -नी 1. चैत्र की पूर्णिमा को कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला पर्व 2. चैत्रमास की पूर्णिमा ।

कूर्पः [कुर्+पा+क, दीर्घः] दोनों भौवों के बीच का भाग ।

कूर्परः [कुर्+क्विप्, कुर्—पृ+अच्, दीर्घः नि०] 1. कोहनी—शि० २०।१९ 2. घुटना ।

कूर्मः [कौ जले ऊर्मिः वेगोऽस्य पृषो० तारा०] 1. कछुवा —गूहेत्कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः—मनु० ७। १०५, भग० २।५८ 2. विष्णु का दूसरा (कूर्मावतार) अवतार । सम०—अवतारः विष्णु का कूर्मावतार —तु० गीत० १—क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे, केशव धृतकच्छपरूप, जय जगदीश हरे । —पृष्ठम्,—पृष्ठकम् 1. कछुवे की कमर या पीठ 2. तश्तरी का ढकना,—राजः द्वितीय अवतार के समय कछुवे के रूप में विष्णु ।

कूलम् [कूल्+अच्] 1. किनारा, तट—राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलयः—गीत० १, नदीवोभयकूलभाक्—रघु० १२।३५, ६८ 2. ढलान, उतार 3. छोर, कोर, किनारी, सन्निकटता—कुलायकूलेषु विलुठ्य तेषु ते—नै० १।१४१ 4. तालाब 5. सेना का पिछला भाग 6. ढेर, टीला । सम०—चर (वि०) नदी के किनारे चरने वाला, या विचरने (घूमने) वाला, —भूः (स्त्री०) तटस्थित भूखंड,—हण्डकः,—हुण्डकः भँवर ।

कूलङ्कष (वि०) [कूल+कष्+खच्, मुम्] तट को काटने वाला, या अन्दर ही अन्दर जड़ खोखली करने वाला—कूलङ्कषेव प्रसन्नमम्भस्तटतरुं च—श० ५।२१, —षः नदी की धारा, या प्रवाह,—षा नदी ।

कूलम्धय (वि०) [कूल+धे+खश्, मुम्] चूमता हुआ अर्थात् नदी के तट को सीमा बनाने वाला।

कूलमुद्रुज (वि०) [कूल+उद्+रुज्+खश्, मुम्] किनारों को तोड़ने वाला (जैसे नदियाँ, हाथी)—रघु० ४।२२।

कूलमुद्वह (वि०) [कूल+उद्+वह्+खश्, मुम्] किनारे को फाड़ डालने तथा बहा कर ले जाने वाला—मा० ५।१९।

कूष्माण्डः [कु ईषत् ऊष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य] पेठा, कुम्हड़ा, तूमड़ी।

कूहा [कु ईषत् उह्यतेऽत्र, कु+उह्+क] कुहरा, धुंद।

कृ i (स्वादि० उभ०—कृणोति, कृणुते) प्रहार करना, घायल करना, मार डालना ii (तना० उभ०—करोति, कुरुते, कृत) 1. करना—तात किं करवाण्यहम् 2. बनाना—गणिकामवरोधमकरोत्—दश०, नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक् रघु० ३।४५, युवराजः कृतः आदि 3. निर्माण करना, गड़ना, तैयार करना कुम्भकारो घटं करोति, कटं करोति आदि 4. बनाना, रचना करना—गुरुं कुरु, सभां कुरु मदर्थे भोः 5. पैदा करना, निमित्तभूत होना, उत्पन्न करना—रतिमुभयप्रार्थना कुरुते—श० २।१ 6. बनाना, क्रमबद्ध करना,—अञ्जलिं करोति कपोतहस्तकं कृत्वा 7. लिखना, रचना करना—चकार सुमनोहरं शास्त्रम्—पञ्च० १ 8. सम्पन्न करना, व्यस्त होना पूजां करोति 9. कहना, वर्णन करना,—इति बहुविधाः कथाः कुर्वन् आदि 10. पालन करना, कार्यान्वित करना, आज्ञा मानना,—एवं क्रियते युष्मदादेशः—मा० १, या करिष्यामि वचस्तव या शासनं मे कुरुष्व आदि 11. प्रकाशित करना, पूरा करना, कार्य में परिणत करना—सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्—भर्तृ० २।२३ 12. फेंकना, निकालना, उत्सर्ग करना, छोड़ना मूत्रं कृ=मूत्रोत्सर्गं करना, पेशाब करना, इसी प्रकार पुरीषं कृ टट्टी फिरना 13. धारण करना, पहनना, ग्रहण करना—स्त्रीरूपं कृत्वा, नानारूपाणि कुर्वाणः याज्ञ० ३।१६२ 14. मुँह से निकलना, उच्चारण करना—मानुषीं गिरं कृत्वा, कलहं कृत्वा आदि 15. रखना, पहनना (अधि० के साथ)—कण्ठे हारमकरोत्—का० २१२, पाणिमुरसि कृत्वा आदि 16. सौंपना (कोई कर्तव्य), नियत करना अध्यक्षान्विविधान्कुर्यात्तत्र तत्र विपश्चितः मनु० ७।८१ 17. पकाना (भोजन) जैसा कि 'कृतान्नं' में 18. सोचना, आदर करना, खयाल करना दृष्टिस्तृणीकृतजगत्त्रयसत्त्वसारा—उत्तर० ६।१९ 19. ग्रहण करना (हाथ में)—कुरु करे गुरुमेकमयोघनम् नै० ४।५९ 20. ध्वनि करना—यथा खात्कृत्य, फूत्कृत्य भुङ्क्ते, इसी प्रकार वषट् कृ, स्वाहा कृ आदि 21. गुजारना (समय) बिताना—वर्षाणि दश चक्रुः—बिताये, क्षणं कुरु—जरा ठहरिए 22. की ओर मुड़ना, ध्यान मोड़ना, दृढ़ निश्चय करना (अधि० या सम्प्र० के साथ)—नाधर्मे कुरुते मनः—मनु० १२।११८, नगरगमनाय मतिं न करोति—श० २ 23. दूसरे के लिए कोई काम करना (चाहे लाभ के लिए हो या हानि पहुँचाने के लिए);—यदनेन कृतं मयि, असौ किं मे करिष्यति आदि 24. उपयोग करना, काम में लगाना, उपयोग में लाना—किं तया क्रियते धेन्वा—पञ्च० १ 25. विभक्त करना, टुकड़े टुकड़े करना ('धा' पर समाप्त होने वाले क्रिया विशेषणों के साथ) द्विधा कृ=दो टुकड़े करना, शतधा कृ, सहस्रधा कृ आदि 26. अधीन बनाना, ('सात्' पर समाप्त होने वाले क्रिया विशेषणों के साथ) पूर्ण रूप से किसी विशेष अवस्था को प्राप्त कराना आत्मसात्कृ, अधीन करना अपने में लीन करना—रघु० ८।२, भस्मसात्कृ राख बना देना, यह धातु बहुधा संज्ञा, विशेषण और अव्ययों के साथ उनको क्रिया बनाने के लिए कुछ कुछ अंग्रेजी के प्रत्यय 'en' या 'fy' की भांति प्रयुक्त होता है और अर्थ होता है "किसी व्यक्ति या वस्तु को वह बना देना जो वह पहले नहीं है' उदा० कृष्णीकृ उस वस्तु को जो पहले से काली नहीं है काली करना अर्थात् Blacken, इसी प्रकार श्वेतीकृ—सफेद करना (whiten), घनीकृत ठोस बना देना (Solidify); विरलीकृ दूर दूर कहीं कहीं करना (Rarefy), आदि। कभी कभी इस प्रकार की रूप रचना दूसरे अर्थों में भी होती है—उदा० क्रोडीकृ—छाती से लगाना, आलिङ्गन करना, भस्मीकृ—राख करदेना, प्रवणीकृ—रुचि पैदा करना, झुकना, तृणीकृ—तिनके की भांति तुच्छ एवं हीन समझना, मंदीकृ—शिथिल करना, चाल धीमी करना, इसी प्रकार शूलाकृ—नोकदार लोहे की सलाखों के सिरे पर रख कर भूनना, सुखाकृ—प्रसन्न करना, समयाकृ समय बिताना आदि। विशे०—यह धातु उभयपदी है, परन्तु निम्नलिखित अर्थों में आत्मनेपदी ही रहती है:—(क) क्षति पहुँचाना (ख) निन्दा करना, कलंकित करना (ग) काम देना और (घ) बलात्कार करना, हिंसात्मक कार्य करना (ङ) तैयारी करना, दशा बदलना, मोड़ना (च) सस्वर पाठ करना (छ) काम में लगाना, प्रयोग में लाना—दे० पा० १। ३। ३२, विशे० कृ धातु का संस्कृत साहित्य में बहुत प्रयोग मिलता है, इसके अर्थ भी नाना प्रकार से अदलते बदलते रहते हैं या सम्बद्ध संज्ञा के अनुसार प्रायः अनन्त अर्थ हो जाते हैं—उदा० पदं कृ,—कदम रखना—आश्रमे पदं करिष्यसि—श० ४।१९, क्रमेण कृतं

मम वपुपि नवयौवनेन पदम्—का० १४१, मनसाकृ—सोचना, मध्यस्थता करना, मनसि कृ—सोचना —दृष्ट्वा मनस्येवमकरोत् का० १३६, दृढ़ निश्चय करना संकल्प करना,—सख्यं, मैत्रीं कृ मित्रता करना, अस्त्राणि कृ—शस्त्रास्त्रों के प्रयोग का अभ्यास करना, दंड कृ—दंड देना, हृदये कृ—ध्यान देना, कालं कृ—मरना, मतिं, बुद्धि कृ—सोचना, इरादा करना, अभिप्राय होना —उदकं कृ—पितरों को जल का तर्पण करना, चिरं कृ—देर करना, बर्बुरं कृ—वीणा बजाना, नखानि कृ—नाखून साफ करना, कन्यां कृ—सतीत्वभ्रष्ट करना, कौमार्य भंग करना, विना कृ—अलग करना, छोड़ा जाना जैसा कि 'मदनेन विनाकृतिः रतिः' कु० ४।२१ में, मध्य कृ—बीच में रखना, संकेत करना—मध्येकृत्य स्थितं क्रथकैशिकान्—मालवि० ५।२, वशे कृ ·जीतना, बस में करना, दमन करना, चमत्कृ · आश्चर्य पैदा करना, प्रदर्शन करना, सत्कृ - सम्मान करना, सत्कार करना, तिर्यक् कृ—एक ओर रख देना,—प्रेर० (सारयति—ते) करवाना, सम्पन्न करवाना, बनवाना, कार्यान्वित करवाना —आज्ञां कारय रक्षोभिः—भट्टि० ८।८४, भृत्यं भृत्येन वा कटं कारयति—सिद्धा०—, इच्छा० (चिकीर्षति—ते) करने की इच्छा करना, अङ्गी—1. स्वीकार करना, अपनाना—लवङ्गी कुरङ्गी दृगङ्गीकरोतु—जग०, दक्षिणामाशामङ्गीकृत्य—का० १२१ 2. मान लेना, स्वीकृति देना, अपनाना मान लेना 3. करने की प्रतिज्ञा करना, जिम्मेवारी लेना—किं त्वङ्गीकृतमुत्सृजन्कृपणवच्छ्लाघ्यो जनो लज्जते—मुद्रा० २।१८ 4. दमन करना, अपना बनाना, अनुग्रह करना—अमरु ५२, अति—बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना, अधि०, 1. अधिकारी होना, हकदार बनना, अधिकृत बनना, किसी कर्तव्य के लिए पात्रीकरण,—नैवाध्यकारिष्महि वेदवृत्ते—भट्टि० २।३४, कि० ४।२५ 2. लक्ष्य बनाना, उल्लेख करना, ('विषय पर' 'के विषय में' 'के लिए' 'संकेत करके' 'उल्लेख करते हुए' अर्थों के लिए 'अधिकृत्य' शब्द का प्रयोग होता है—ग्रीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम्—श० १, शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि—श० २, रघु० ११।६२) 3. धारण करना—अधिचक्रे नयं हरिः—भट्टि० ८।२० 4. अभिभूत करना, दबा लेना, श्रेष्ठ बनना 5. रोकना, रुकना, हाथ खींचना। अनु—, सूरत शकल में मिलना, अनुगमन करना, विशेषतः नकल करना (कर्म व संब० के साथ)—शैलाधिपस्यानुचकार लक्ष्मीम्—भट्टि० २।८, मनु० २।१९९, श्यामतया हरेरिवानुकुर्वंतीम्—का० १०, अनुकरोति भगवतो नारायणस्य—६, अप— 1. खींचकर दूर करना, हटाना, दूर खींचकर अनादर करना, योऽपचक्रे वनात्सीताम्—भट्टि० ८।२० 2. प्रहार करना, क्षति पहुंचाना, बुरा करना, हानि पहुँचाना, हानि या क्षति पहुंचाना (संब० के साथ) न किंचिन्मया तस्यापकर्तुं शक्यम्—पंच० १, अपा 1. दूर करना, त्याग देना, हटाना, मिटाना—तन्नैशं तिमिरमपाकरोति चन्द्रः श० ६।२९, न पुत्रवात्सल्यमपाकरिष्यति—कु० ५।१४ 2. फेंक देना, अस्वीकार करना, एक ओर रख देना, छोड़ देना - शिवा भुजच्छदमपाचकार—रघु० ७।५०, अभ्यन्तरी ·· 1. दीक्षित करना 2. मित्र बनाना (अभ्यन्तर के नी० दे०) अलम्—, विभूषित करना, सजाना, शोभा बढ़ाना—उभावलञ्चक्रतुरञ्चिताभ्यां तपोवनावृत्तिपथं गताभ्याम्—रघु० ११।१८, कतमो वंशोऽलङ्कृतो जन्मना · श० १, आ—, (प्रेर०) '1. पुकारना, बुलाना, निमंत्रित करना, ·· आकारयैनमत्र 2. निकट लाना, आविस् -- प्रकट करना, दर्शनीय बनना, जाहिर करना, प्रदर्शन करना ('आविस्' के नी० दे०) उप ,(वर्त०—उपकरोति) 1. (क) मित्र बनाना, सेवा करना, सहायता करना, अनुग्रह करना, उपकृत करना (प्रायः संबं०, कभी-कभी अधि० के साथ)—सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम्—भट्टि० ८।१८, आत्मनश्चोपकर्तुम्—मेघ० १०१, शि० २०।७४, मनु० ८।३९४ (ख) 1. हाजरी में खड़े रहना, सेवा करना 2. (वर्त०—उपस्करोति) (क) विभूषित करना, शोभा बढ़ाना, सजाना (ख) प्रयत्न करना (संब० के साथ)—भट्टि० ८।१९ ११९ (ग) तैयार करना, विस्तार से कार्य करना, पूरा करना, निर्मल करना,—उपा-- 1. सौंपना, देना 2. प्रारंभिक संस्कार सम्पन्न करना --मनु० ४।९५—दे० उपाकर्मन् 3. उठा लाना, लाना 4. आरंभ करना, उरी—, उररी—, उवरी—, ऊरी—, या ऊररी—स्वीकार करना, दे० अंगीकृ० ऊपर,—रघु० १५।७०—दे० उरी भी, तिरस्—1. अपशब्द कहना, बुरा भला कहना, अनादर करना, घृणा करना 2. पीछे छोड़ना, आगे बढ़ना, जीतना, दे० 'तिरस्' के नीचे०, त्वम्—तू, कोई (तिरस्कार सूचक) दक्षिणी—, या प्रदक्षिणी—, किसी वस्तु के चारों ओर घूमना (अपना दक्षिण पार्श्व उसकी ओर करके), प्रदक्षिणीकुरुष्व सद्योहुताग्नीन्—श० ४, प्रदक्षिणीकृत्य हुतं हुताशमनन्तरंभर्तुररुन्धती च, रघु० २।७१, दुस्—, बुरे ढंग से करना, धिक्—, झिड़कना, बुरा भला कहना, अनादर करना—दे० धिक् के नी०, नमस्—, नमस्कार करना, पूजा करना—मुनित्रयं नमस्कृत्य—सिद्धा०—दे० नमस् के नी०, नि—, क्षति पहुँचाना, बुरा करना, निस् — 1. हटाना, हाँक कर दूर कर देना—मनु० ११।५३ 2. तोड़ देना, निकम्मा कर देना—भट्टि० १५।५४, निरा— 1. निकाल देना, परे कर देना, निकाल बाहर करना—भट्टि०

६।१००, रघु० १४।५७ 2. निराकरण करना (मत आदि का) 3. छोड़ना, त्यागना 4. पूर्ण रूप से नष्ट कर देना, ध्वंस करना 5. बुरा भला कहना, नीच समझना, तुच्छ समझना, न्यक्—, अपमान करना, अनादर करना, परा—, (पर०) अस्वीकार करना, अवहेलना करना, निरादर करना, खयाल नहीं करना —तां हनुमान् पराकुर्वन्नगमत् पुष्पकम् प्रति —भट्टि० ८।१०७, परि—(परिकरोति) 1. घेरना 2. (परिष्करोति) विभूषित करना, सजाना—रथो हेमपरिष्कृतः —महा०, (आलं०) निर्मल करना, चमकाना, शुद्ध करना (शब्दों का), पुरस्—, सम्मुख रखना—राजा शकुन्तलां पुरस्कृत्य वक्तव्यः—श० ४, हते जरति गाङ्गेये पुरस्कृत्य शिखण्डिनम्—वेणी० २।१८—दे० पुरस् के नीचे, प्र— 1. करना, सम्पन्न करना आरंभ करना (अधिकतर उसी अर्थ में प्रयुक्त होता है जिसमें 'कृ')—जानन्नपि नरो दैवात्प्रकरोति विगर्हितम्—पंच० ४।३५, भट्टि० २।३६, ऋतु० १।६ मनु० ८।५४, ६०, ८।२३९, अमरु १३ 2. बलात्कार करना, अत्याचार करना, अपमान करना,—भट्टि० ८।१९ 3. सन्मान करना, पूजा करना, प्रति— 1. बदला देना, वापिस देना, लौटाना—पूर्वं कृतार्थो मित्राणां नार्थं प्रतिकरोति यः—रामा० 2. उपचार करना,—व्याधिमिच्छामि ते ज्ञातुं प्रतिकुर्यां हि तत्र वै—महा०, 3. वापिस देना, ज्यों का त्यों कर देना, पुनः स्थापित करना—मनु० ९।२८५ 4. प्रतिशोध करना—रघु० १२।९४, प्रमाणी— 1. भरोसा करना, विश्वास करना 2. प्रमाण पुरुष मानना, आज्ञा मानना—शासनं तरुभिरपि प्रमाणीकृतम्—श० ६ 3. आँख गड़ाना, वितरण करना, बर्ताव करना या व्यवहार करना —दैवेन प्रभुणा स्वयं जगति यद्यस्य प्रमाणीकृतम् —भर्तृ० २।१२१, प्रादुस्—, प्रकट करना, प्रदर्शन करना, दिखलाना, जाहिर करना—दे० प्रादुस् के नी०, प्रत्युप— 1. प्रतिफल देना, (आभार) प्रत्यर्पण करना, वि—, बदलना, परिवर्तन करना, प्रभावित करना—विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः—कु० १।५९, रघु० १३।४२ 2. आकृति बिगाड़ना, विरूप करना—विकृताकृतिः—मनु० ९।५२ 3. उत्पन्न करना, पैदा करना, सम्पन्न करना—मनु० १।७५, नास्य विघ्नं विकुर्वन्ति दानवाः—महा० 4. विघ्न डालना, हानि पहुँचाना, क्षति पहुँचाना (आ०) —हीनान्यनुपकर्तॄणि प्रवृद्धानि विकुर्वते रघु० १७। ५८ 5. उच्चारण करना—विकुर्वाणः स्वरानद्य —भट्टि० ८।२० 6. (पत्नी की भाँति) विश्वासघातक होना, विनि—, प्रहार करना, क्षति पहुँचाना, विप्र— 1. सताना, कष्ट देना, तंग करना, हानि पहुँचाना —किं सत्त्वानि विप्रकरोषि—श० ७, कु० २।१ 2. बुरा करना, दुर्व्यवहार करना—श० ४, १७ 3. प्रभावित करना, परिवर्तन लाना,—कमपरमवशं न विप्रकुर्युः—कु० ६।९५, व्या— 1. प्रकट करना, साफ करना—नामरूपे व्याकरवाणि—छा० 2. प्रतिपादन करना, व्याख्या करना 3. कहना, वर्णन करना —तन्मे सर्वं भगवान् व्याकरोतु—महा०, सम्—, (संकुरुते) (क) करना (पाप, अपराध)—ये पक्षापरपक्षदोषसहिताः पापानि संकुर्वते—मृच्छ० ९।४ (ख) निर्माण करना, तैयार करना (ग) करना संपन्न करना 2. (संस्कुरुते) (क) अलंकृत करना, शोभा बढ़ाना—ककुभं समस्कुरुत माधवनीम्—शि० ९।२५ (ख) निर्मल करना, चमकना—वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते—भर्तृ० २।१९, शि० १४।५० (ग) वेदमंत्रों के उच्चारण से अभिमंत्रित करना—मनु० ५।३६, (घ) वेदविहित संस्कारों से (किसीपुरुष को) पवित्र करना, शुद्ध करने वाले शास्त्रोक्त विधियों का अनुष्ठान करना,—संचस्कारोभयप्रीत्या मैथिलेयौ यथाविधि रघु० १५।३१, याज्ञ० २।१२४, साची—, एक ओर मुड़ना, परोक्ष रूप से मुड़ना—साचीकृता चारुतरेण तस्थौ—कु० ३।६८, रघु० ६।१४।

कृकः [कृ+कक्] गला।

कृकणः (रः) [कृ+कण्+अच्, कृ+कृ+ट] एक प्रकार का तीतर।

कृक (कृ) लासः [कृक+लस्+अण्] छिपकली, गिरगिट।

कृकवाकुः [कृक+वच्+ञ्‌ण्, क् आदेशः] 1. मुर्गा 2. मोर 3. छिपकिली सम०—ध्वजः कार्तिकेय का विशेषण।

कृकाटिका [कृक+अट्+अण्=कृकाट+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. ग्रीवा का सीधा उठा हुआ भाग 2. गर्दन का पिछला भाग।

कृच्छ्र (वि०) [कृती+रक्, छ आदेशः] 1. कष्ट देने वाला, पीडाकर—मनु० ६।७८ 2. बुरा, विपद्ग्रस्त, अनिष्टकर 3. दुष्ट, पापी 4. संकटग्रस्त, पीडित, —च्छ्रः,—च्छ्रम्, 1. कठिनाई, कष्ट, कठोरता, विपद्, संकट, भय—कृच्छ्रं महत्तीर्णः—रघु० १४।६, १३।७७ 2. शारीरिक तप, तपस्या, प्रायश्चित्त मनु० ४।२२२, ५।२१, ११।१०५—च्छ्रम्, कृच्छ्रेण, कृच्छ्रात् बड़ी कठिनाई के साथ, दुःख पूर्वक, बड़े कष्ट के साथ—लब्धं कृच्छ्रेण रक्ष्यते—हि० १।१८५, । सम०—प्राण (वि०) 1. जिसका जीवन खतरे में है 2. कष्टपूर्वक सांस लेने वाला 3. कठिनाई से जीवनयापन करने वाला,—साध्य (वि०) 1. कठिनाई से ठीक हो सके, (रोगी या रोग) 2. कष्टसाध्य।

कृत् (तुदा० पर०—कृन्तति, कृत्त) 1· काटना, काट कर फेंक देना, विभक्त करना, फाड़ना, धज्जियाँ उड़ाना, टुकड़े २ करना, नष्ट करना—प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्—उत्तर० ३।३१, ३५ भट्टि० ९।४२ १५।९७ १६।१५, मनु० ८।१२, **अव**—,काट फेंकना, विभक्त करना, फाड़ कर टुकड़े २ करना, **उद्**—, 1. काटना या काट फेंकना, फाड़ना—रघु० १२।४९, मनु० ११।१०५ 2. खण्ड खण्ड करना, टुकड़े काटना —उत्कृत्योत्कृत्य कृत्तिम्—मा० ५।१६ **वि**– 1. काटना, फाड़ना, टुकड़े २ करना—विश्वासाद्भयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति—पंच० २।३९, निकृन्तन्निव मानसम् —भट्टि० ७।११ भल्लनिकृत्तकण्ठैः—रघु० ७।५८।
ii (रुधा० पर०—कृणत्ति, कृत्त) 1. कातना, 2. घेरना।

कृत् (वि०) [कृ+क्विप्] (प्रायः समास के अन्त में) निष्पादक, कर्ता, निर्माता, अनुष्ठाता, उत्पादक, रचयिता आदि पाप°, पुण्य°, प्रतिमा° आदि, (पुं०) 1. प्रत्ययों का समूह जिनको धातु के साथ जोड़ने से (संज्ञा, विशेषण आदि) बनते हैं 2. इस प्रकार बना हुआ शब्द।

कृत (वि०) [कृ+क्त] किया हुआ, अनुष्ठित, निर्मित, क्रियान्वित, निष्पन्न, उत्पादित आदि (भू० क० कृ० —कृ–तना० उभ०)—**तम्** 1. कार्य, कृत्य, कर्म—मनु० ७।१९७ 2. सेवा, लाभ 3. फल, परिणाम 4. लक्ष्य, उद्देश्य 5. पासे का वह पहलू जिस पर चार बिन्दु अंकित हैं 6. संसार के चार युगों में पहला युग जो मनुष्यों के १७२८००० वर्षों के बराबर है—दे० मनु० १।७९, और इस पर कुल्लूक की टीका, परन्तु महाभारत के अनुसार यह युग मनुष्यों के ४८०० वर्षों से अधिक वर्षों का है, चार की संख्या। सम०—**अकृत** (वि०) किया न किया अर्थात् कुछ भाग किया गया, पूरा नहीं किया गया,—**अङ्क** (वि०) 1. चिह्नित, दागी —मनु० ८।२८१, 2. संख्यांकित, (**कः**) पासे का वह भाग जिस पर चार बिन्दु अंकित हों,—**अञ्जलि** (वि०) विनम्रता के कारण दोनों हाथ जोड़े हुए—भग० ११।१४, मनु० ४।१५४, **अनुकर** (वि०) किये हुए कार्य का अनुकरण करने वाला, अनुसेवी,—**अनुसारः** प्रथा परिपाटी, —**अन्त** (वि०) समाप्त करने वाला, अवसायी, (**तः**) 1. मृत्यु का देवता यम—द्वितीयं कृतान्तमिवाटन्तं व्याधमपश्यत्—हि० १ 2. भाग्य, प्रारब्ध —क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः मेघ० १०५ 3. प्रदर्शित उपसंहार, रूढ़ि, प्रमाणित सिद्धान्त 4. पापकर्म, अशुभ कर्म 5. शनि ग्रह का विशेषण 6. शनिवार, °जनकः सूर्य, —**अन्नम्** 1. पकाया हुआ भोजन,—कृतान्नमुदकं स्त्रियः—मनु० ४।२१९ ११।३ 2. पचा हुआ भोजन 3. मल,—**अपराध** (वि०) अपराधी दोषी, मुजरिम,—**अभय** (वि०) भय या खतरे से सुरक्षित,—**अभिषेक** (वि०) राज्याभिषिक्त, यथा विधि पद पर प्रतिष्ठित किया हुआ,—**अभ्यास** (वि०) अभ्यस्त,—**अर्थ** (वि०) 1. जिसने अपना उद्देश्य सिद्ध कर लिया है, सफल 2. सन्तुष्ट, प्रसन्न, परितृप्त,—कृतः कृतार्थोऽस्मि निर्वाहितांहसा—शि० १।२९, रघु० ८।३, कि० ४।१९ 3. चतुर, (**कृतार्थीकृ**) 1. सफल बनाना 2. भरपाई होना—कान्तं प्रत्युपचारतश्चतुरया कोपः कृतार्थीकृतः—अमरु १५,—**अवधान** (वि०) होशियार, सावधान,—**अवधि** (वि०) 1. निश्चित, नियत 2. हदबन्दी किया हुआ, सीमित,—**अवस्थ** (वि०) 1. बुलाया हुआ, प्रस्तुत कराया हुआ 2. निश्चित, निर्धारित, —**अस्त्र** (वि०) 1. हथियारबन्द 2. शस्त्र या अस्त्र विज्ञान में प्रकाशित—रघु० १७।६२,—**आगम** (वि०) प्रगत, प्रवीण (पुं०) परमात्मा,—**आगस्** (वि०) दोषी, अपराधी, मुजरिम, पापी,—**आत्मन्** (वि०) 1. संयमी, स्वस्थचित्त, स्थिरात्मा 2. पवित्र मन वाला,—**आयास** (वि०) परिश्रम करने वाला, सहन करने वाला, —**आह्वान** (वि०) ललकारा हुआ,—**उत्साह** (वि०) परिश्रमी, प्रयत्नशील, उद्यमी,—**उद्वाह** (वि०) 1. विवाहित 2. हाथ ऊपर उठा कर तपस्या करने वाला, —**उपकार** (वि०) 1. अनुगृहीत, मित्रवत् आचरित, सहायता प्राप्त—कु० ३।७३ 2. मित्रसदृश,—**उपभोग** (वि०) बरता हुआ, उपभुक्त,—**कर्मन्** (वि०) 1. जिसने अपना काम कर लिया है—रघु० ९।३ 2. दक्ष चतुर (पुं०) 1. परमात्मा 2. संन्यासी,—**काम** (वि०) जिसकी इच्छाएँ पूर्ण हो गई हैं,—**काल** (वि०) 1. समय की दृष्टि से जो स्थिर है, निश्चित 2. जिसने कुछ काल तक प्रतीक्षा की है (**लः**) नियत समय याज्ञ० २।१८,—**कृत्य** (वि) कृतार्थ,—भग० १५।२० 2. सन्तुष्ट परितृप्त—शा० ३।१९ 3. जिसने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है,—**क्रयः** खरीदार,—**क्षण** (वि०) 1. निश्चित समय की आतुरतापूर्वक प्रतीक्षा करने वाला,—वयं सर्वे सोत्सुकाः कृतक्षणास्तिष्ठामः —पञ्च० १ 2. जिसे कोई अवसर उपलब्ध हो गया है,—**घ्न** (वि०) 1. अकृतज्ञ, मनु० ४।२१४, ८।८९ 2. जो पहले किये हुए उपकारों को नहीं मानता है, —**चूडः** 1. जिस बालक का मुण्डनसंस्कार हो गया है —मनु० ५।५८, ६७,—**ज्ञ** (वि०) 1. उपकार मानने वाला, आभारी मनु० ७।२०९, २१०, याज्ञ० १।३०८ 2. शुद्धाचारी (**ज्ञः**) कुत्ता,—**तीर्थ** (वि०) 1. जिसने तीर्थों के दर्शन किए हैं 2. जो (अध्यापनवृत्ति के) अध्यापक से अध्ययन करता हो 3. जिसे तरकीबें खूब सूझती हों 4. पथ प्रदर्शक,—**दासः** किसी निश्चित समय के लिए रक्खा हुआ वैतनिक सेवक, वैतनिक

सेवक,—धी (वि०) 1. दूरदर्शी, लिहाज रखने वाला (दूरदर्शी) 2. विद्वान् शिक्षित, बुद्धिमान्—मुद्रा० ५।२०,—निर्णेजनः पश्चात्तापी,—निश्चय (वि०) कृतसंकल्प, दृढ़प्रतिज्ञ,—पुंख (वि०) धनुर्विद्या में निपुण,—पूर्व (वि०) पहले किया हुआ,—प्रतिकृतम्, आक्रमण और प्रत्याक्रमण, धावा बोलना और प्रतिरोध करना—रघु० १२।९४,—प्रतिज्ञ (वि०) 1. जिसने किसी से कोई करार किया हुआ है 2. जिसने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर लिया है,—बुद्धि (वि०) विद्वान्, शिक्षित, बुद्धिमान्—मनु० १।९७, ७।३०,—मुख (वि०) विद्वान्, बुद्धिमान्,—लक्षण (वि०) 1. मुद्रांकित, चिह्नित 2. दागी—मनु० ९।२३९ 3. श्रेष्ठ, सुशील परिभाषित, विवेचित,—वर्मन् (पुं०) कौरवपक्ष का एक योद्धा जो कृप और अश्वत्थामा के साथ महाभारत के युद्ध में जीवित रहा, बाद में वह सात्यकि के हाथों मारा गया,—विद्य (वि०) विद्वान्, शिक्षित—शूरोऽसि कृतविद्योऽसि—पञ्च० ४।४३, सुवर्णपुष्पितां पृथ्वीं विचिन्वन्ति त्रयो जनाः, शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्—पञ्च० १।४५,—वेतन (वि०) वैतनिक, तनखादार (नौकर आदि)—याज्ञ० २।१६४,—वेदिन् (वि०) आभारी दे० कृतज्ञ,—वेश (वि०) सुवेशित, विभूषित—गतवति हृतवेशे केशवे कुञ्जशय्याम्—गीत० ११,—शोभ (वि०) 1. शानदार 2. सुन्दर 3. पटु, दक्ष,—शौच (वि०) पवित्र किया हुआ,—श्रमः,—परिश्रमः अध्येता, जिसने अध्ययन कर लिया है—कृतपरिश्रमोऽस्मि ज्योतिःशास्त्रे—मुद्रा० १, (मैंने अपना समय ज्योतिःशास्त्र के अध्ययन में लगाया है),—संकल्प (वि०) कृतनिश्चय, दृढ़संकल्प,—संकेत (वि०) (समय आदि का) नियत करने वाला—नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदु वेणुम्—गीत० ५,—संज्ञ (वि०) 1. पुनः चेतना प्राप्त, होश में आया हुआ 2. उद्बोधित,—संनाह (वि०) कवचधारी,—सापत्निका वह स्त्री जिस के पति ने दूसरा विवाह कर लिया है, एक विवाहित स्त्री जिसकी सपत्नी भी विद्यमान हो,—हस्त,—हस्तक (वि०) 1. दक्ष, चतुर, कुशल, पटु 2. धनुर्विद्या में कुशल,—हस्तता 1. कौशल, दक्षता 2. धनुर्विद्या या शस्त्रविद्या में कुशल—कौरव्ये कृतहस्तता पुनरियं देवे यथा सारिणी—वेणी० ६।१२, महावी० ६।४१।

कृतक (वि०) [कृत+कन्] 1. किया हुआ, निर्मित, सज्जित (विप० नैसर्गिक)—यद्यत्कृतं तत्तदनित्यम्—न्यायसूत्र 2. कृत्रिम, बनावटी ढंग से किया हुआ,—अकृतकविधिसर्वाङ्गीणमाकल्पजातं—रघु० १८।५२ 3. झूठा, व्यपदिष्ट या बहाना किया हुआ, मिथ्या, दिखावटी, कल्पित—कृतककलहं कृत्वा—मुद्रा० ३, कि० ८।४६ 4. दत्तक (पुत्र) (बहुधा समास के अन्त में भी)—यस्योपांते कृतकतनयः कान्तया वर्धितो मे (बाल मन्दारवृक्षः)—मेघ० ७५, सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते (जहाति)—श० ४।१३।

कृतम् (अव्य०) [कृत्+कम् बा०] पर्याप्त और अधिक नहीं, बस करो अथवा मत करो (करण० के साथ) अथवा कृतं सन्देहेन—श० १, अथवा—गिरा कृतम्—रघु० ११।४१, कृतमश्वेन—उत्तर० ४।

कृतिः (स्त्री०) [कृ+क्तिन्] 1. करनी, उत्पादन, निर्माण, अनुष्ठान 2. कार्य, कृत्य, कर्म 3. रचना, काम, संरचना—(तौ) स्वकृतिं गापयामास कविप्रथमपद्धतिम्—रघु० १५।३३, ६४,६९, नै० २२।१५५ 4. जादू, इन्द्रजाल 5. क्षति पहुँचाना, मार डालना 6. बीस की संख्या। सम०—करः रावण का विशेषण।

कृतिन् (वि०) [कृत-इनि] कृतकार्य, कृतार्थ, संतुष्ट, परितृप्त, प्रसन्न, सफल—यस्य वीर्येण कृतिनो वयं च भुवनानि च—उत्तर० १।३२, न खल्वनिर्जित्य रघुं कृती भवान्—रघु० ३।५१, १२।६४ 2. (अतः) सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मतवाला, भाग्यवान्—श० १।२४, श० ७।१९ 3. चतुर, सक्षम, योग्य, विशेषज्ञ, कुशल, बुद्धिमान्, विद्वान्;—तं क्षुरप्रशकलीकृतं कृती—रघु० ११।२९, कु० २।१०, कि० २।९ 4. अच्छा, गुणी, पवित्र, पावन—तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष निर्मलविवेकदीपकः—भर्तृ० १।५६ 5. अनुवर्ती, आज्ञाकारी, आदेशानुसार करने वाला।

कृते, कृतेन (अव्य०) [संब० के साथ या समास में) के लिए, के निमित्त, के कारण—अमीषां प्राणानां.... कृते भर्तृ० ३।३६, काव्यं यशसेऽर्थकृते—काव्य० १, भग० १।३५, याज्ञ० १।२१६, श० ६।

कृत्तिः (स्त्री०) [कृत्+क्तिन्] 1. चमड़ा, खाल 2. (विशेषतः) मृगचर्म जिसपर (धर्मशिक्षा का) विद्यार्थी बैठता है 3. (लिखने के लिए) भोजपत्र 4. भोजवृक्ष 5. कृत्तिका नक्षत्र, कृत्तिका मंडल। सम०—वासः—वासस् (पुं०) शिव का विशेषण—स कृत्तिवासास्तपसे यतात्मा—कु० १।५४, मालवि० १।१।

कृत्तिका (ब० व०) [कृत्+तिकन्, कित्] 1. २७ नक्षत्रों में से तीसरा कृत्तिका नक्षत्र (६ तारों का पुंज) 2. छः तारे जो युद्ध के देवता कार्तिकेय की परिचारिका का कार्य करने वाली अप्सराओं के रूप में वर्णित हैं। सम०—तनयः,—पुत्रः,—सुतः कार्तिकेय का विशेषण,—भवः चाँद।

कृत्नु (वि०) [कृ+क्त्नु] 1. भली भाँति करने वाला, करने के योग्य शक्तिशाली 2. चतुर, कुशल,—त्नुः कारीगर, कलाकार।

कृत्य (वि०) [कृ+क्यप्, तुक्] 1. जो किया जाना चाहिए

सही, उचित, उपयुक्त 2. युक्तियुक्त, व्यवहार्य 3. जो राजभक्ति से पथभ्रष्ट किया जा सके, विश्वासघाती —राजत० ५।२४७,—त्यम् 1. जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य, कार्य—मनु० २।२३७ ७।६७ 2. कार्य, व्यवसाय, करनी, कार्यभार—बन्धुकृत्यम् मेघ० ११४, अन्योन्यकृत्यैः—श० ७।३४ 3. प्रयोजन, उद्देश्य, लक्ष्य —कूजद्भिरापादितवंशकृत्यम्—रघु० २।१२, कु० ४। १५ 4. मंशा, कारण,—त्यः कर्मवाच्य के कृदन्त के संभावनार्थक प्रत्ययों का समूह—नामतः—तव्य, अनीय य और एलिम,—त्या 1. कार्य, करनी 2. जादू 3. एक देवी जिसकी यज्ञादि के द्वारा पूजा इसलिए की जाती है कि विनाशकारी और जादू टोनों के कार्यों में सिद्धि प्राप्त हो।

कृत्रिम (वि०) [कृत्या निर्मितम् —कृ+क्ति+मप्] 1. बनावटी, काल्पनिक, जो स्वतः स्फूर्त या मनमाना न हो, अर्जित °मित्रम्, °शत्रुः आदि, रघु० १३।७५, १४।३७ 2. गोद लिया हुआ (बच्चा)—दे० नी०,—मः, °पुत्रः नकली या गोद लिया हुआ पुत्र, हिन्दूधर्म में माने हुए १२ पुत्रों में से एक, गोद लिया हुआ ऐसा वयस्क पुत्र जिसके पिता की स्वीकृति गोद लेते समय न ली गई हो, तु० कृत्रिमः स्यात्स्वयं दत्तः—याज्ञ० २।१३१, तु० मनु० ९।१६९ से भी,—मम् 1. एक प्रकार का नमक 2. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। सम०—धूपः,—धूपकः, एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, धूप,—पुत्रः दे० कृत्रिमः, —पुत्रकः गुड्डा, पुत्तलिका—कु० १।२९,—भूमिः (स्त्री) बनाया हुआ फर्श,—वनम् वाटिका, उद्यान।

कृत्वस् (अव्य०) एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के साथ 'तह' और 'गुणा' अर्थ को प्रकट करने के लिए जोड़ा जाता है—उदा० अष्टकृत्वः—आठगुणा, आठ तह का, इसी प्रकार दश°, पंच° आदि।

कृत्सम् [कृत्+स, कित्] 1. जल 2. समूह,—त्सः पाप।

कृत्स्न (वि०) [कृत्+क्स्न] सारे, सम्पूर्ण, समस्त —एकः कृत्स्नां नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति—श० २।१५, भग० ३।२९, मनु० १।१०५, ५।४२।

कृन्तत्रम् [कृत्+क्त्रन्, नुमागमः] हल।

कृन्तनम् [कृत्+ल्युट्] काटना, काट कर फेंक देना, विभक्त करना, फाड़ कर टुकड़े २ करना।

कृपः [कृप्+अच्] अश्वत्थामा का मामा (कृप और कृपी दोनों भाई बहन शरद्वत् ऋषि की सन्तान थे, इनकी माता जानपदी नाम की अप्सरा थी। कृप का पालन पोषण शन्तनु ने किया था। कृप धनुर्विद्या में बड़ा निपुण था, महाभारत के युद्ध में वह कौरव पक्ष की ओर से लड़ा और अन्त में मारा गया। पाण्डवों ने उसे शरण दी। वह सात चिरंजीवियों में से एक है)

कृपण (वि०) [कृप्—क्युन् न स्यणत्वम्] 1. गरीब, दयनीय, अभागा, असहाय—राजन्नपत्यं रामस्ते पाल्याश्च कृपणाः प्रजाः—उत्तर० ४।२५ 2. विवेकशून्य, किसी कार्य को करने या विवेचन करने के अयोग्य अथवा अनिच्छुक, —कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु—मेघ० ५, इसी प्रकार —जराजीर्णैश्वर्यग्रसनगहनाक्षेपकृपणः भर्तृ० ३।१७ 3. नीच, अधम, दुष्ट—भग० २।४९ मुद्रा० २। १८, भर्तृ० २।४९ 4. सूम, कंजूस,—णम् दुर्दशा,—णः सूम,—कृपणेन समो दाता भुवि कोऽपि न विद्यते, अनश्नन्नेव वित्तानि यः परेभ्यः प्रयच्छति—व्यास। सम० —धीः,—बुद्धिः छोटे दिल का, नीच मन का,—वत्सल (वि०) दीनदयालु।

कृपा [कृप्+भिदा० अङ्+टाप्, संप्र०,] रहम, दयालुता, करुणा—चक्रवाकयोः पुरो वियुक्ते मिथुने कृपावती —कु० ५।२६, श० ४।१९, सकृपम् कृपा करके।

कृपाणः [कृपां नुदति—नुद्+ड संज्ञायां णत्वम्—तारा०] 1. तलवार,—स पातु वः कंसरिपोः कृपाणः—विक्रम० १।१, कृपणस्य कृपाणस्य च केवलमाकारतो भेदः —सुभा० 2. चाकू।

कृपाणिका [कृपाण+कन्+टाप्, इत्वम्] बर्छी, छुरी।

कृपाणी [कृपाण+ङीष्] 1. कैंची 2. बर्छी।

कृपालु (वि०) [कृपां लाति—कृपा+ला आदाने मि० डु] दयालु, करुणापूर्ण, सदय।

कृपी [कृप+ङीष्] कृप की बहन तथा द्रो की पत्नी,। सम० —पतिः द्रोण का विशेषण,—सुतः अश्वत्थामा का विशेषण।

कृपीटम् [कृप्+कीटन्] 1. तलझाड़ियाँ, जंगल की लकड़ी 2. वन, जलाने की लकड़ी 3. पानी 4. पेट। सम० —पालः 1. पतवार 2. समुद्र 3. वायु, हवा। सम० —योनि अग्नि।

कृमि (वि०) [क्रम्+इन्, अत इत्वम् संप्र०] 1. कीड़ों से भरा हुआ, कीटयुक्त—कृमिकुलचितम्—भर्तृ० २।९ 2. कीड़े (रोग) 3. गधा 4. मकड़ी 5. लाख (रंग)। सम० —कोशः,—कोषः, रेशम का कोया, °उत्थम् रेशमी कपड़ा,—जम्,—जग्धम् अगर की लकड़ी,—जा लाख कीड़ों द्वारा उत्पादित लाल रंग,—जलजः,—वारिरुहः घोंघा, सीपी में रहने वाला कीड़ा,—पर्वतः,—शैलः बांबी,—फलः गूलर का पेड़,—शङ्खः शंख के भीतर रहने वाली मछली,—शुक्तिः (स्त्री०) 1. दोहरी पीठ वाला घोंघा 2. सीपी में रहने वाला कीड़ा 3. घोंघा।

कृमिण, कृमिल (वि०) [कृमि+न, ल वा, णत्वम्] कीड़ों से भरा हुआ, कीटयुक्त।

कृमिला [कृमि+ला+क+टाप्] बहुत सन्तान पैदा करने वाली स्त्री।

कृश् (दिवा० पर०—कृश्यति, कृश) 1. दुर्बल या क्षीण होना 2. (चन्द्रमा की भांति) उत्तरोत्तर ह्रास होना (प्रेर०) दुर्बल करना।

कृश (वि०) (मध्य० क्रशीयस्, उत्त० क्रशिष्ठ) [कृश्+क्त, नि०] 1. दुवला पतला, दुर्बल, शक्तिहीन, क्षीण —कृशतनुः कृशोदरी आदि 2. छोटा, थोड़ा, सूक्ष्म (आकार या परिमाण में)—सुहृदपि न याच्यः कृशधनः —भर्तृ० २।२८ 3. दरिद्र, नगण्य—मनु० ७।२०८। सम०—**अक्षः** मकड़ी,—**अङ्ग** (वि०) दुवला, पतला, (—**गी**) 1. तन्वंगी 2. प्रियंगु लता,—**उदर** (वि०) पतली कमर वाला—विक्रम० ५।१६।

कृशला [कृश+ला+क+टाप्] (सिर के) वाल।

कृशानुः [कृश्+आनुक्] आग—गुरोः कृशानुप्रतिमाद्विभेषि—रघु० २।४९, ७।२४, १०।७४, कु० १।५१ भर्तृ० २।१०७। सम०—**रेतस्** (पुं०) शिव की उपाधि।

कृशाश्विन् (पुं०) [कृशाश्व+इनि] नाटक का पात्र।

कृष् i (तुदा० उभ०—कृषति—ते, कृष्ट) हल चलाना, खूड बनाना।
ii (भ्वा० पर०—कर्षति, कृष्ट) 1. खींचना, घसीटना, चीरना, खींच देना, फाड़ना—प्रसह्य सिंहः किल तां चकर्ष—रघु० २।२७, विक्रम० १।१९ 2. किसी की ओर खींचना, आकृष्ट करना—भट्टि० १५।४७, भग० १५।७ 3. (सेना आदि का) नेतृत्व या संचालन करना —स सेनां महतीं कर्षन्—रघु० १४।३२ 4. झुकाना (धनुष आदि का)—नात्यायतकृष्टशार्ङ्गः—रघु० ५।५० 5. स्वामी होना, दमन करना, परास्त करना, अभिभूत करना—वलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति—मनु० २।२१५, नक्रः स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति —पंच० ३।४६ 6. हल चलाना, खेती करना—अनुलोमकृष्टं क्षेत्रं प्रतिलोमं कर्षति—सिद्धा० 7. प्राप्त करना, हासिल करना—कुलसंख्यां च गच्छन्ति कर्षन्ति च महद्यशः—महा० 8. किसी से ले लेना, किसी को वंचित करना (द्विकर्म०) अप—,पीछे खींचना, खींच ले जाना, घसीट कर दूर करना, लंबा करना, निचोड़ना—दन्ताग्रभिन्नमपकृष्य निरीक्षते च—ऋतु० ४।१४, रघु० १६।५५ 2. हटाना—उत्तर० १।८ 3. कम करना, घटाना, अव—,खींचना, खींच लेना, आ—,खींचना, समीप पहुँचना, धकेलना, खींच लेना, निचोड़ना (आलं०)—केशेष्वाकृष्य चुम्वति—हि० १।१०९, श० १।३३ दूरमगुना सारङ्गेण वयमाकृष्टाः —श० १, अमरु २।७२, कु० २।५९, रघु० १।२३ 2. (धनुष आदि का) झुकाना—श० ३।५, शि० ९।४० 3. निचोड़ना, उधार लेना—हि० प्र० ९४, 4. छीनना, वलपूर्वक ग्रहण करना—भट्टि० १६।३० 5. किसी दूसरे नियम या वाक्य से शब्द ला देना, उद्—, 1. ऊपर खींचना, उखाड़ना—अङ्गदकोटिलग्नं प्रालम्वमुत्कृष्य—रघु० ६।१४, शि० १३।६० 2. बढ़ाना, वृद्धि करना नि—,डुवोना, कम करना, घटाना निस्—, 1. वाहर खींचना 2. खींचतान कर निकालना, वलपूर्वक निकालना, छीनना या जवरदस्ती लेना —निष्कृष्टुमर्थं चकमे कुवेरात्—रघु० ५।२६, परि— —,खींचना, निकालना, घसीटना, प्र—, 1. खींच लेना, खींचना, आकृष्ट करना 2. (सेना का) नेतृत्व करना 3. (धनुष का) झुकाना 4. वढ़ाना, वि—, 1. खींचना 2. (धनुष का) झुकाना—शरासनं तेषु विकृष्यतामिदम् श० ६।२८, विप्र—,हटाना, संनि—,निकट लाना।

कृषकः [कृष्+क्वन्] 1. हलवाहा, हाली,किसान 2. फाली 3. वैल।

कृषाणः, कृषिकः [कृष्+आनक्, किकन् वा] हलवाहा, किसान।

कृषिः (स्त्री०) [कृष्+इक्] 1. हल चलाना 2. खेती, काश्तकारी—चीयते वालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः—मुद्रा० ३, कृषिः क्लिष्टाऽवृष्ट्या—पंच० १।१११, मनु० १।९०, ३।६४, १०।७९, भग० १८।४४। सम० —**कर्मन्** (नपुं०) खेती का काम,—**जीविन्** (वि०) खेती से निर्वाह करनेवाला किसान,—**फलम्** खेती से होने वाली उपज, या लाभ—मेघ० १६,—**सेवा** खेती करना, किसानी।

कृषीवलः [कृषि+वलच्, दीर्घः] जो खेती से अपनी जीविकार्जन करे, किसान,—कृषि चापि कृषीवलः—याज्ञ० १।२७६, मनु० ९।३८।

कृष्करः [कृष+कृ=टक् पृषो०] शिव की उपाधि।

कृष्ट (वि०) [कृष्+क्त] 1. खींचा हुआ, उखाड़ा हुआ, घसीटा हुआ, आकृष्ट 2. हल चलाया हुआ।

कृष्टिः [कृष्+क्तिन्] विद्वान् पुरुष—(स्त्री) 1. खींचना, आकर्षण 2. हल चलाना, भूमि जोतना।

कृष्ण (वि०) [कृष्+नक्] 1. काला, श्याम, गहरा नीला 2. दुष्ट, अनिष्टकर,—**ष्णः** 1. काला रंग 2. काला हरिण 3. कौआ 4. कोयल 5. चान्द्रमास का कृष्णपक्ष, 6. कलियुग 7. आठवाँ अवतारवारी विष्णु (भारतीय पुराणशास्त्र के अनुसार कृष्ण अत्यंत प्रसिद्ध नायक है, देवताओं में सर्वप्रिय है! वसुदेव और देवकी का पुत्र होने के कारण कृष्ण कंस का भान्जा है, पर व्यवहारतः वह नन्द और यशोदा का पुत्र है, उन्होंने ही इसका पालन-पोषण किया और वहीं कृष्ण ने अपना वचपन विताया। जब उसने कंस द्वारा उसकी हत्या के लिए भेजे गये पूतना और बक आदि क्रूर राक्षसों को मार गिराया तथा शूर-वीरता के अनेक आश्चर्यजनक कर्तव्य किये तो क्रमशः उसका दिव्य लक्षण प्रकट होने लगा। युवावस्था के उसके मुख्य साथी थे गोकुल के ग्वालों की वधुएँ तथा गोपियाँ जिनमें राधा उनको विशेष

प्रिय थी (तु० जयदेव के गी० की)। कृष्ण ने कंस, नरक, केशि, अरिष्ट तथा अन्य अनेक राक्षसों को मार गिराया। यह अर्जुन का घनिष्ठ मित्र था, महाभारत के युद्ध में उसने अर्जुन का रथ हाँका, पांडवों के हितार्थ दी गई कृष्ण की सहायता ही कौरवों के नाश का मुख्य कारण थी। संकट के कई अवसर आये, परन्तु कृष्ण की सहायता और उनकी कल्पनाप्रवण मति ने पांडवों को कोई आँच न आने दी। यादवों का प्रभासक्षेत्र में सर्वनाश हो जाने के पश्चात् वह जरस नामक शिकारी के बाण का, मृग के धोखे में, शिकार हो गये। कहते हैं कृष्ण के १६००० स्त्रियाँ थीं, परन्तु रुक्मिणी, सत्यभामा (राधा भी) उनकी विशेष प्रिय थी। कहते हैं उसका रंग साँवला या बादल की भांति काला था—तु० बर्हिरिव मलिनतरं तव कृष्ण मनोऽपि भविष्यति नूनम्—गीत० ८, उसका पुत्र प्रद्युम्न था)। 8. महाभारत का विख्यात प्रणेता व्यास 9. अर्जुन 10. अगर की लकड़ी,—ष्णम् 1. कालिमा, कालापन 2. लोहा 3. अंजन 4. काली पुतली 5. काली मिर्च 6. सीसा। सम०—अगुरु (नपुं०) एक प्रकार के चंदन की लकड़ी,—अचलः रैवतक पर्वत का विशेषण,—अजिनम् काले हरिण का चर्म,—अयस् (नपुं०)—अयसम्,—आमिषम् लोहा, कच्चा या काला लोहा,—अध्वन्,—अचिस् (पुं०) आग,—अष्टमी भाद्रपद कृष्णपक्ष का आठवाँ दिन, यही कृष्ण का जन्म दिन है, इसे गोकुलाष्टमी भी कहते हैं, —आवासः अश्वत्थ वृक्ष,—उदरः एक प्रकार का साँप,—कन्दम् लाल कमल,—कर्मन्(वि०)काली करतूत वाला, मुजरिम, दुष्ट, दुश्चरित्र, दोषी,—काकः पहाड़ी कौआ,—कायः भैंसा,—काष्ठम् एक प्रकार की चंदन की लकड़ी, काला अगर,—कोहलः जुआरी,—गतिः आग, —आयोघने कृष्णगतिं सहायम्—रघु० ६।४२,—ग्रीवः शिव का नाम,—तारः काले हरिणों की एक जाति,—देहः मधुमक्खी,—धनम् बुरे तरीकों से कमाया हुआ धन, पाप की कमाई,—द्वैपायनः व्यास का नाम,—तमहमरागमकृष्णं कृष्णद्वैपायनं वन्दे—वेणी० १।३,—पक्षः चांद्रमास का अंधेरा पक्ष,—मृगः काला हरिण—शृङ्गे कृष्णमृगस्य वामनयनं कण्डूयमानां मृगीम्—श० ६।१६,—मुखः,—वक्त्रः, —वदनः काले मुंह का बन्दर,—यजुर्वेदः तैत्तिरीय या कृष्ण यजुर्वेद,—लोहः चुम्बक पत्थर,—वर्णः 1. कालारंग 2. राहु 3. शूद्र,—वर्त्मन् (पुं०) 1. आग,—रघु० ११। ४२, मनु० २।९४ 2. राहु का नाम 3. नीच पुरुष, दुराचारी, लुच्चा,—वेणा नदी का नाम,—शकुनिः कौवा, शारः,—सारः चितकबरा कालामृग—कृष्णसारे ददच्चक्षुः त्वयि चाधिज्यकार्मुके—श० १।६,—शृङ्गः भैंसा,—सखः, —सारथिः अर्जुन का विशेषण।

कृष्णकम् [कृष्ण+कन्] काले मृग का चमड़ा।

कृष्णलः [कृष्ण+ला+क] घुंघची का पौधा, गुंजा-पौधा, —लम् घुंघची, चहुंटली।

कृष्णा [कृष्ण+टाप्] 1. द्रौपदी का नाम, पांडवों की पत्नी—कि० १।२६ 2. दक्षिण भारत की एक नदी जो मसुलीपट्टम् में समुद्र में गिरती है।

कृष्णिका [कृष्ण+ठन्+टाप्] काली सरसों।

कृष्णिमन् (पुं०) [कृष्ण+इमनिच्] कालिमा, कालापन।

कृष्णी [कृष्ण+ङीष्] अँधेरी रात।

कॄ i (तुदा० पर०—किरति, कीर्ण) 1. बखेरना, इधर-उधर फेंकना, उडेलना, डालना, तितर-बितर करना —समरशिरसि चञ्चत्पञ्चचूडश्चमूनामुपरि शरतुषारं कोऽप्ययं वीरपोतः, किरति—उत्तर० ५।२, ६।१, दिशि दिशि किरति सजलकणजालम्—गीत० ४, श० १।७, अमरु ११ 2. छितराना, ढंकना, भरना—भट्टि० ३।५, १७।४२। अप—, 1. बखेरना, इधर-उधर डालना, —अपकिरति कुसुमम्—सिद्धा० 2. पैरों से खुरचना (भोजन या आवास आदि के लिए), पूरा हर्ष, (चौपायों और पक्षियों में) (इस अर्थ में क्रिया का रूप अपस्किरते बनता है)—अपस्किरते वृषो हृष्टः, कुक्कुटो भक्षार्थी श्वा आश्रयार्थी च—सिद्धा०, अपा—, उतार फेंकना, अस्वीकार करना, निराकरण करना, अव—, बखेरना, फेंकना —अवाकिरन्वाललताः प्रसूनैः —रघु० २।१०, आ—, 1. चारों ओर फैलाना 2. खोदना, उद्—, 1. ऊपर को बखेरना, ऊपर को फेंकना—रघु० १।४२ 2. खोदना, खोदकर खोखला करना 3. उत्कीर्ण करना, खुदाई करना, मूर्ति बनाना —उत्कीर्णा इव वासयष्टिषु निशानिद्रालसा बर्हिणः —विक्रम० ३।२, रघु० ४।५९, उप—, (उपस्किरति) काटना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, परि—, 1. घेरना—परिकीर्णा परिवादिनी मुनेः—रघु० ८। ३५ 2. सौंपना, देना, बाँटना—महीं महेच्छः परिकीर्य सूनौ—रघु० १८।३३, प्र— 1. बखेरना, फेंकना उडेलना—प्रकीर्णः पुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलिरयम् —वेणी० १।२ 2. (बीज आदि) बोना,—प्रति—, (प्रतिस्किरति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, फाड़ना —उरोविदारं प्रतिचस्करे नखैः—शि० १।४७, वि—, बखेरना, इधर-उधर फेंकना, छितराना, फैलाना —कु० ३।६१, कि० २।५९, भट्टि० १३।१४, २५, विनि—, फकना, छोड़ना, उतार फेंकना—कु० ४।६, सम्—, मिलाना, सम्मिश्रण करना, एक स्थान पर गड्डमड्ड करना, समुद्— छेदना, सूराख करना, बींधना—रघु० १।४।

ii (क्र्या० उभ०—कृणाति, कृणीते) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मार डालना।

कॄत् (चुरा० उभ०—कीर्तयति-ते, कीर्तित) 1. उल्लेख

करना, दोहराना, उच्चारण करना—नाम्नि कीर्तित एव–रघु० १।८७, मनु० ७।१६७, २।१२४ 2. कहना, सस्वर पाठ करना, घोषणा करना, समाचार देना —मनु० ३।३६, ९।४२ 3. नाम लेना, पुकार करना 4. स्तुति करना, यशोगान करना, स्मरणार्थ उत्सव मनाना—अपप्रथत् गुणान् भ्रातुरचिकीर्तच्च विक्रमं –भट्टि० १५।७२, पंच० १।४ ।

क्लृप् (भ्वा० आ०—कल्पते, क्लृप्त) 1. योग्य होना, यथेष्ट होना, फलना, प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, पैदा करना, ढुलकना (संप्र० के साथ)–कल्पसे रक्षणाय–श० ५।५, पश्चात्पुत्रैरपहृतभरः कल्पते विश्रमाय—विक्रम० ३।१, विभावरी यद्यरुणाय कल्पते कु० ५।४४, ६।२९, ५।७९, मेघ० ५५, रघु० ५।१३, ८।४०, श० ६।२३, भट्टि० २२।२१ 2. सुप्रबद्ध तथा विनियमित होना, सफल होना 3. होना, घटित होना, घटना—कल्पिष्यते हरेः प्रीतिः—भट्टि० १६।१२, ९।४४, ४५ 4. तैयार होना, सज्जित होना—चक्लृपे चाश्वकुञ्जरम्–भट्टि० १४।८९ 5. अनुकूल होना, किसी के काम आना, अनुसेवन करना 6. भाग लेना, (प्रेर०) 1. तैयार करना, क्रम से रखना, संवारना 2. निश्चित करना, स्थिर करना 3. बाँटना 4. सामान जुटाना, उपस्कृत करना 5. विचार करना, अव—, फलना, झुकना, सम्पन्न करना (संप्र० के साथ) आ—,(प्रेर०) अलंकृत करना, सजाना, उप—, 1. फलना, परिणाम निकालना, (संप्र० के साथ) मनु० ३।२०२ 2. तैयार होना, तत्पर होना—मनु० ३।२०८, ८।३३३, परि—, (प्रेर०) 1. फैसला करना, निर्धारण करना, निश्चित करना 2. तैयार करना, तैयार होना 3. गुणयुक्त करना—श० २।९ प्र—, होना, घटित होना 2. सफल होना (प्रेर०) 1. आविष्कार करना, उपाय निकालना, (योजनाएँ) बनाना 2. तैयार होना, तैयार करना, वि—, संदेह करना, संदिग्ध होना (प्रेर०) संदेह करना, सम्—, (प्रेर०) 1. दृढ़ निश्चय करना, दृढ़ संकल्प करना, निश्चित करना 2. इरादा करना, प्रस्ताव रखना, समुप—, तैयार होना ।

क्लृप्त (भू० क० कृ०) [क्लृप्+क्त] 1. तैयार किया हुआ, किया हुआ, तैयार हुआ, सुसज्जित—क्लृप्तविवाहवेषा —रघु० ६।१० विवाहवेष में सुभूषित 2. काटा हुआ, छीला हुआ—क्लृप्तकेशनखश्मश्रु—मनु० ४।३५ 3. उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ 4. स्थिर किया हुआ, निश्चित 5. सोचा हुआ, आविष्कृत । सम०—कीला अधिकार पत्र, दस्तावेज,—धूपः लोबान ।

क्लृप्तिः (स्त्री०) [क्लृप्+क्तिन्] 1. निष्पत्ति, सफलता 2. आविष्कार, बनावट 3. क्रमबद्ध करना ।

क्लृप्तिक (वि०) [क्लृप्त+ठन्] खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ ।

केकयः (ब० व०) एक देश और उसके निवासी—मगध-कोसलकेकयशासिनां दुहितरः—रघु० ९।१७ ।

केकर (वि०) (स्त्री०—री) [के मूर्ध्नि नेत्रतारां कर्तुं शील-मस्य—कृ+अच् अलुक्—तारा०] भेंगी आंख वाला, —रम् भेंगी आंख; तु० आकेकर । सम०—अक्ष (वि०) वक्रदृष्टि, भेंगी आंख वाला ।

केका [के+कै+ड+टाप्, अलुक् स०] मोर की बोली —केकाभिर्नीलकण्ठस्तिरयति वचनं ताण्डवादुच्छिखण्डः —मा० ९।३०, षड्जसंवादिनीः केकाः—रघु० १।३९, ७।६९, १३।२७, १६।६४, मेघ० २२, भर्तृ० १।३५ ।

केकावलः, केकिकः, केकिन् (पुं०) [केका+वलच्, केका +ठन्, केका+इनि] मोर—इतः केकिक्रीडाकलकल-रवः पक्ष्मलदृशां—भर्तृ० १।३७ ।

केणिका [के मूर्ध्नि कुत्सितः अणकः+टाप्] तम्बू ।

केतः [कित्+घञ्] 1. घर, आवास 2. रहना, बस्ती 3. झंडा 4. इच्छा शक्ति, इरादा, चाह ।

केतकः [कित्+ण्वुल्] एक पौधा—प्रतिभान्त्यद्य वनानि केतकानाम्–घट० १५ 2. झण्डा,—कम् केवड़े का फूल —केतकैः सूचिभिन्नैः—मेघ० २४, २३, रघु० ६।१७, १३।१६,—की एक पौधा–केवड़ा (=केतक)–हसित-मिव विधत्ते सूचिभिः केतकीनाम्—ऋतु० २।२३ 2. केतकी का फूल—ऋतु० २, २०, २४ ।

केतनम् [कित्+ल्युट्] 1. घर, आवास—अकलितमहिमानः केतनं मङ्गलानां—मा० २।९, मम मरणमेव वरमति वितथकेतना—गीत० ७ 2. निमंत्रण, बुलावा 3. स्थान, जगह 4. पताका, झंडा—भग्नं भीमेन मरुता भवतो रथकेतनम्—वेणी० २।२३, शि० १४।२८, रघु० ९।३९ 5. चिह्न, प्रतीक जैसाकि मकरकेतन 6. अनिवार्य कर्म (धार्मिक भी)–निवापाञ्जलिदानेन केतनैः श्राद्धकर्मभिः, तस्योपकारे शक्तस्त्वं किं जीवन् किमुतान्यथा—वेणी० ३।१६ ।

केतित (वि०) [केत+इतच्] 1. बुलाया गया, आमंत्रित 2. आबाद, बसा हुआ ।

केतुः [चाय्+तु, की आदेशः] 1. पताका, झंडा—चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य—श० १।३४ 2. मुख्य, प्रधान, नेता, प्रमुख, विशिष्ट व्यक्ति (बहुधा समास के अन्त में)—मनुष्यवाचा मनुवंशकेतुम्—रघु० २।३३, कुलस्य केतुः स्फीतस्य (राघवः)—रामा० 3. पुच्छलतारा, धूमकेतु—मनु० १।३८ 4. चिह्न, अंक 5. उज्ज्वलता, स्वच्छता 6. प्रकाश की किरण 7. सौर-मंडल का नवा ग्रह जो पुराणों के अनुसार सैंहिकेय राक्षस का कबंध है तथा जिसका सिर राहु है—क्रूर-ग्रहः सकेतुश्चन्द्रमसं पूर्णमण्डलमिदानीम्–मुद्रा० १।६ ।

सम०—ग्रहः अवरोही शिरोबिन्दु (जहाँ ग्रहमार्ग व रविमार्ग एक दूसरे को काटते हैं),—भः बादल,—यष्टिः (स्त्री०) ध्वज का दंड—रघु० १२।१०३,—रत्नम् नीलम, वैदूर्य,—वसनम् ध्वजा, पताका।

केदारः [के शिरसि दारोऽस्य—ब० स०] 1. पानी भरा हुआ खेत, चरागाह 2. थांवला, आलवाल 3. पहाड़ 4. केदार नामक पहाड़ जो हिमालय का एक भाग है 5. शिव का नाम। सम०—खण्डम् मिट्टी का बना एक छोटा सा बांध जो पानी को रोके,—नाथः शिव का विशेष रूप।

केनारः [के मूर्ध्नि नारः—अलु० स०] 1. सिर 2. खोपड़ी 3. गाल 4. जोड़।

केनिपातः [के जले निपात्यतेऽसौ—के+नि+पत्+णिच्+अच्] पतवार, डांड, चप्पू।

केन्द्रम् (नपुं०) 1. वृत्त का मध्य बिंदु 2. वृत्त का प्रमाण 3. जन्मकुंडली में लग्न से पहला, चौथा, सातवाँ और दसवां स्थान।

केयूरः,—रम् [के बाहौ शिरसि वा याति, या+ऊर किच्च, अलु० स०, तारा०] टाड, बिजायठ, बाजूबंध—केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः—भर्तृ० २।१९, रघु० ६।६८, कु० ७।६९,—रः एक रतिबंध।

केरलः (ब० व०) दक्षिण भारत का एक देश (वर्तमान मलाबार) और उसके निवासी—मा० ६।१९, रघु० ४।५४,—ली (स्त्री०) 1. केरल देश की स्त्री 2. ज्योतिर्विज्ञान।

केल् (भ्वा० पर०—केलति, केलित) 1. हिलाना 2. खेलना, खिलाड़ी होना, क्रीडा परायण या केलिप्रिय होना।

केलकः [केल्+ण्वुल्] नर्तक, कलाबाजी करने वाला नट।

केलासः [केला विलासः सीदत्यस्मिन्—केला+सद्+डः] स्फटिक।

केलिः (पुं०—स्त्री०) [केल्+इन्] 1. खेल, क्रीडा 2. आमोद-प्रमोद, मनोविनोद—केलिचलन्मणिकुण्डल आदि—गीत० १, हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे—त०, राधामाधवयोर्जयंति यमुनाकूले रहः केलयः—त०, अमरु ७, मनु० ८।३५७, ऋतु० ४।१७ 3. परिहास, मखौल, हंसीदिल्लगी,—लिः (स्त्रि०) पृथ्वी 1. सम०—कला क्रीड़ा प्रिय कला विलासिता, शृंगारप्रिय संबोधन 2. सरस्वती की वीणा,—किलः नाटक में नायक का विश्वस्त सहचर (एक प्रकार का विदूषक),—किलावती रति, कामदेव की पत्नी,—कीर्णः ऊँट,—कुंचिका पत्नी की छोटी बहन,—कुपित (वि०) खेल में रुष्ट—वेणी० १।२—कोषः नाटक का पात्र, नर्तक, नचैया, —गृहम्,—निकेतनम्—मन्दिरम्—सदनम् आमोदभवन, निजी कमरा, अमरु ८,—नागरः कामासक्त,—पर (वि०) क्रीडापर, विलासी, आमोदप्रिय,—मुखः परिहास, क्रीडा, मनोरंजन,—वृक्षः कदंब-वृक्ष की जाति,—शयनम् विलासशय्या, सुखशय्या, कोच —केलिशयनमनुयातम् गीत० ११,—शुषिः (स्त्री०) पृथ्वी,—सचिवः आमोदप्रिय सखा, विश्रब्ध मित्र।

केलिकः [केलि+कन्] अशोक वृक्ष।

केली [केलि+ङीष्] 1. खेल, क्रीड़ा 2. आमोद-क्रीडा। सम० —पिकः मनोविनोदार्थं रक्खी हुई कोयल,—वनी प्रमोद-वाटिका, केलिकानन, क्रीडोद्यान,—शुकः मनोरंजनार्थ पाला हुआ तोता।

केवल (वि०) [केव् सेवने वृषा°कल] 1. विशिष्ट, एकान्तिक, असाधारण 2. अकेला, मात्र, एकल, एकमात्र, इक्का-दुक्का—सहितस्य न केवलां श्रियं प्रतिपेदे सकलान् गुणानपि—रघु० ८।५, न केवलानां पयसां प्रसूतिमवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम् २।६३, १५।१, कु० २।३४ 3. पूर्ण, समस्त, परम, पूरा 4. नग्न, अनावृत (भूमि० आदि) कु० ५।१२ 5. खालिस, सरल, अमिश्रित, विमल—कातर्यं केवला नीतिः—रघु० १७।४७, —लम् (अव्य०) केवल, सिर्फ, एकमात्र, पूर्ण रूप से, नितान्त, सर्वथा—केवलमिदमेव पृच्छामि-का० १५५, न केवलम्—अपि न सिर्फ····बल्कि, वसु तस्य विभोर्न केवलं गुणवत्तापि परप्रयोजना—रघु० ८।३१, तु० ३।१९, २०।३१। सम०—आत्मन् (वि०) परम एकता ही जिसका सार है कु० २।४,—नैयायिकः सिर्फ़ तार्किक (जो ज्ञान की किसी और शाखा में प्रवीण न हो), इसी प्रकार °वैयाकरण।

केवलतः (अव्य०) [केवल+तसिल्] केवल, निरा, सर्वथा, निपट, सिर्फ।

केवलिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [केवल—इनि] 1. अकेला एकमात्र 2. आत्मा की एकता के परम सिद्धान्त का पक्षपाती।

केशः [क्लिश्यते क्लिश्नाति वा—क्लिश्+अन्, लोलोपश्च] 1. बाल—विकीर्णकेशासु परेतभूमिषु—कु० ५।६८ 2. सिर के बाल—केशेषु गृहीत्वा—या—केशग्राहं युध्यन्ते —सिद्धा०, मुक्तकेशा—मनु० ७।९१, केशव्यपरोपणा-दिव—रघु० ३।५६, २।८ 3. घोड़े या शेर की अयाल 4. प्रकाश की किरण 5. वरुण का विशेषण 6. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। सम०—अन्तः 1. बाल का सिरा 2. नीचे लटकते हुए लम्बे बाल, बालों का गुच्छा 3. मुण्डन संस्कार—मनु० २।६५,—उच्चयः अधिक या सुन्दर बाल,—कर्मन् (नपुं०) (सिर के) बालों को संभालना,—कलापः बालों का ढेर,—कीटः जूँ,—गर्भः बालों की मींढी,—गृहीत (वि०) बालों से पकड़ा हुआ, —ग्रहः—ग्रहणम् बालों को पकड़ना, बालों से पकड़ना केशग्रहः खल तदा द्रुपदात्मजायाः—वेणी० ३।११,२९, मेघ० ५०, इसी प्रकार—यत्र रतेषु केशग्रहः—का० ८

—घ्नम् दूषित गंजापन,—च्छिद् (पुं०) नाई, हज्जाम, —जाहः बालों की जड़,—पक्षः,—पाशः,—हस्तः बहुत अधिक अथवा संवारे हुए बाल—तं केशपाशं प्रसमीक्ष्य कुर्युर्वालप्रियत्वं शिथिलं चमर्यः—कु० १।४८,७।५७, तु० कचपक्ष कचहस्त आदि—बन्ध जूड़ा,—भूः—भूमिः सिर या शरीर का अन्य भाग जहाँ बाल उगते हैं —प्रसाधनी,—मार्जकम्,—मार्जनम् कंघी, —रचना बालों को संवारना,—वेशः कबरी-बन्धन।

केशटः [केश+अट्+अच्, शक° पररूपम्] 1. बकरा 2. विष्णु का नाम 3. खटमल 4. भाई।

केशव (वि०) [केशाः प्रशस्ताः सन्त्यस्य, केश+व] बहुत या सुन्दर बालों वाला,—वः विष्णु का विशेषण—केशव जय जगदीश हरे—गीत० १, केशवं पतितं दृष्ट्वा पाण्डवा हर्षनिर्भराः—सुभा०। सम०—आयुधः आम का वृक्ष (—धम्) विष्णु का शस्त्र,—आलयः,—आवासः अश्वत्थ वृक्ष।

केशाकेशि (अव्य०) [केशेषु केशेषु गृहीत्वा प्रवृत्तं युद्धम् —पूर्वपदस्य आकारः इत्वम् च] एक दूसरे के बाल खींच कर, नोच कर की जाने वाली लड़ाई—झोंटा-झोंटी—केशाकेश्यभवद्युद्धं रक्षसां वानरैः सह—महा०, याज्ञ० २।२८३।

केशिक (वि०) (स्त्री०—की) [केश+ठन्] सुन्दर या अलंकृत बालों वाला।

केशिन् (पुं०) [केश+इनि] 1. सिंह 2. एक राक्षस जिसको कृष्ण ने मार गिराया था 3. एक और राक्षस जो देव सेना को उठा कर ले गया और बाद में इन्द्र द्वारा मारा गया था 4. कृष्ण का विशेषण 5. सुन्दर बालों वाला। सम०—निषूदनः,—मथनः कृष्ण के विशेषण —भग० १८।१।

केशिनी [केशिन्+ङीप्] सुन्दर जूड़े वाली स्त्री 2. विश्रवा की पत्नी, रावण और कुम्भकर्ण की माता।

केस (श) रः,—रम् [के+सृ (श्रृ)+अच्, अलुक् स०] 1. (सिंह आदि की) अयाल—न हन्त्यदूरेऽपि गजान्मृगेश्वरो विलोलजिह्वश्चलिताग्रकेसरः—ऋतु० १।१४, श० ७।१४ 2. फूल का रेशा या तन्तु—नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्धरूढैः—मेघ० २१, श० ६।१७, मालवि० २।११, रघु० ४।६७ शि० ९।४७ 3. बकुल का पेड़ 4. (आम आदि का) रेशा या सूत्र,—रम् बकुल वृक्ष का फूल—रघु० ९।३६। सम०—अचलः मेरु पहाड़ का विशेषण,—वरम् केसर, जाफ़रान।

केस (श) रिन् (पुं०) [केसर+इनि] 1. सिंह—अनुहुंकुरुते घनध्वनिं न हि गोमायुरुतानि केसरी—शि० १६। २५ धनुर्धरः केसरिणं ददर्श—रघु० २।२९, श० ७।३ 2. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अपने वर्ग का प्रमुख (समास के अन्त में—तु० कुंजर, सिंह आदि) 3. घोड़ा 4. नींबू या गलगल का पेड़ 5. पुन्नाग वृक्ष 6. हनुमान् के पिता का नाम। सम०—सुतः हनुमान् का विशेषण।

कै (भ्वा० पर०—कायति) शब्द करना, ध्वनि करना।

कैंशुकम् [किंशुक+अण्] किंशुक वृक्ष का फूल।

कैकयः [केकय+अण्] केकय देश का राजा, दे० 'केकय'।

कैकसः [कीकस+अण्] राक्षस, पिशाच।

कैकेयः [केकयानां राजा—अण्] केकय देश का राजा या राजकुमार,—यी केकय देश के राजा की बेटी, राजा दशरथ की सबसे छोटी पत्नी, भरत की माता (जब राम को राजगद्दी मिलने वाली थी, तो कैकेयी को कौशल्या से कम प्रसन्नता न थी, परन्तु उसकी दासी मन्थरा बड़ी दुष्ट थो, उसे राम से पुराना द्वेष था; इस समय बदला लेने का अच्छा अवसर समझकर मन्थरा ने कैकेयी का मन इतना अधिक पलट दिया कि वह मन्थरा के सुझाव के अनुसार राजा दशरथ से वे दो वरदान माँगने के लिए उद्यत हो गई जो उन्होंने पहले कभी देने की प्रतिज्ञा की थी। एक वर से उसने अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी तथा दूसरे वर से राम के लिए १४ वर्ष का निर्वासन माँगा। रोषान्ध दशरथ ने कैकेयी को उसके दूषित प्रस्तावों के लिए बहुत बुरा भला कहा परन्तु अन्ततः उन्हें उसकी हठ के आगे झुकना पड़ा। इस दुष्कृत्य के कारण कैकेयी का नाम बदनाम हो गया)।

कैटभः [कीट+भा+ड+अण्] राक्षस का नाम जिसे विष्णु ने मार गिराया (वह बड़ा बलवान् राक्षस था, कहा जाता है कि वह और मधु दोनों राक्षस विष्णु के कान से निकले जब कि वे सोये हुए थे, परन्तु जब राक्षस ब्रह्मा को खाने के लिए दौड़ा तो विष्णु ने उसको मार गिराया)। सम०—अरिः, —जित् (पुं०)—रिपुः—हन् विष्णु के विशेषण।

कैतकम् [केतकी+अण्] केवड़े का फूल।

कैतवम् [कितव+अण्] 1. जूए में लगाया गया दाँव 2. जूआ खेलना 3. झूठ, धोखा, जालसाजी, चालबाजी, चालाकी—हृदये वससीति मत्प्रियं यदवोचस्तदवैमि कैतवम्—कु० ४।९,—वः 1. छली, चालबाज 2. जुआरी 3. धतूरे का पौधा। सम०—प्रयोगः चालाकी, दाँव, —वादः झूठ, चालबाजी।

कैदारः [केदार+अण्] चावल, अनाज,—रम् खेतों का समूह, 'कैदार्य' भी इसी अर्थ में।

कैमुतिकः [किमुत+ठक्] (न्याय) 'और कितना अधिक' न्याय, एक प्रकार का तर्क (किमुत 'और कितना अधिक' से व्युत्पन्न)।

कैरवः [के जले रौति—केरवः हंसः तस्य प्रियं—केरव+अण्] 1. जुआरी, धोखा देने वाला, चालबाज 2. शत्रु, —वम् श्वेत कुमुद जो चन्द्रोदय के समय खिलता है

—चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम्—भर्तृ० २।७३। सम०—बन्धुः चन्द्रमा का विशेषण।

कैरविन् (पुं०) [कैरव+इनि] चन्द्रमा।

कैरविणी [कैरविन्+ङीप्] 1. श्वेत फूल वाला कुमुद का पौधा 2. वह सरोवर जिसमें श्वेत कमल खिले हों 3. श्वेत कमलों का समूह।

कैरवी [कैरव+ङीष्] चाँदनी, ज्योत्स्ना।

कैलासः [के जले लासो दीप्तिरस्य—केलास+अण्] पहाड़ का नाम, हिमालय की एक चोटी, शिव और कुबेर का निवास स्थान—मेघ० ११, ५८ रघु० २।३५। सम० —नाथः 1. शिव का विशेषण 2. कुबेर का विशेषण —कैलासनाथं तरसा जिगीषुः—रघु० ५।२८, कैलासनाथमुपसृत्य निवर्तमाना—विक्रम० १।२।

कैवर्तः [के जले वर्तते—वृत्+अच्, केवर्तः ततः स्वार्थे अण् तारा०] मछवा—मनोभूः कैवर्तः क्षिपति परितस्त्वां प्रति मुहुः (तनूजाली जालम्)—शा० ३।१६, मनु० ८।२६०, (इसके जन्म के विषय में दे० मनु० १०।३४)।

कैवल्यम् [केवल+ष्यञ्] 1. पूर्ण पृथकता, अकेलापन, एकान्तिकता 2. व्यक्तित्व 3. प्रकृति से आत्मा का पार्थक्य, परमात्मा के साथ आत्मा की तद्रूपता 4. मुक्ति, मोक्ष।

कैशिक (वि०) (स्त्री०—की) [केश+ठक्] बालों के समान, बालों की भांति सुन्दर,—कः शृंगार रस, विलासिता,—कम् बालों का गुच्छा,—की नाट्य शैली का एक प्रकार (अधिक शुद्ध 'कौशिकी' शब्द है)।

कैशोरम् [किशोर+अञ्] किशोरावस्था, बाल्यकाल, कौमार आयु (पन्द्रह वर्ष से नीचे की)—कैशोरमापंचदशात्।

कैश्यम् [केश+ष्यञ्] सारे बाल, बालों का गुच्छा।

कोकः [कुक् आदाने अच्—तारा०] 1. भेड़िया—वनयूथपरिभ्रष्टा मृगी कोकैरिवार्दिता—रामा० 2. गुलाबी रंग का हंस (चक्रवाक),—कोकानां करुणस्वरेण सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना—गीत ५ 3. कोयल 4. मेंढक 5. विष्णु का नाम। सम०—देवः 1. कबूतर, 2. सूर्य का विशेषण।

कोकनदम् [कोकान् चक्रवाकान् नदति नादयति नद्+अच्] लाल कमल—किंचित्कोकनदच्छदस्य सदृशे नेत्रे स्वयं रज्यतः—उत्तर० ५।३६, नीलनलिनाभमपि तन्वि तव लोचनं धारयति कोकनदरूपम्—गीत० १०, शि० ४।४६।

कोकाहः [कोक+आ+हन्+ड] सफेद घोड़ा।

कोकिलः [कुक्+इलच्] 1. कोयल—पुंस्कोकिलो यन्मधुरं चुकूज—कु० ३।३२, ४।१६, रघु० १२।३९ 2. जलती हुई लकड़ी। सम०—आवासः,—उत्सवः आम का वृक्ष।

कोङ्कः, कोङ्कणः (ब०व०) एक देश का नाम, सह्याद्रि और समुद्र का मध्यवर्ती भूखंड।

कोङ्कणा [कोङ्कण+टाप्] रेणुका, जमदग्नि की पत्नी। सम०—सुतः परशुराम का विशेषण।

कोजागरः [को जागर्ति इति लक्ष्म्या उक्तिरत्र काले पृषो० तारा०] आश्विन मास की पूर्णिमा की रात में मनाया जानेवाला आमोदपूर्ण उत्सव।

कोटः [कुट्+घञ्] 1. किला 2. झोंपड़ा, छप्पर 3. कुटिलता 4. दाढ़ी।

कोटरः—रम् [कोटं कौटिल्यं राति रा+क ता०] वृक्ष की खोखर—नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः —श० १।१४, कोटरमकालवृष्ट्या प्रबलपुरोवातया गमिते—मालवि० ४।२ ऋतु० १।२६।

कोटरी, कोटवी [कोट+री(वी)+क्विप्] 1. नंगी स्त्री 2. दुर्गादेवी का विशेषण (नग्न रूप में वर्णन)।

कोटिः,—टी (स्त्री) [कुट+इञ्, कोटि+ङीप्] 1. धनुष का मुड़ा हुआ सिरा—भूमिनिहितैककोटिकार्मुकम्—रघु० ११।८१ उत्तर० ४।२९ 2. चरमसीमा का किनारा, नोक या धार—सहचरीं दन्तस्य कोट्या लिखन्—मा० ९।३२, अङ्गदकोटिलग्नम् रघु० ६।१४, ७।४६, ८।३६ 3. शस्त्र की धार या नोक 4. उच्चतम विन्दु, आधिक्य पराकोटि, पराकाष्ठा, परमोत्कर्ष—परां कोटिमानन्दस्याध्यगच्छन्—का० ३६९, इसी प्रकार कोपकोटिमापन्ना—पंच० ४, अत्यंत कुपित 5. चन्द्रमा की कलाएँ —कु० २।२६ 6. एक करोड़ की संख्या—रघु० ५।२१, १२।८२, मनु० ६।६३ 7. (गणित) ९० कोटि के चाप की सम्पूरक रेखा 8. समकोण त्रिभुज की एक भुजा (गणित) 9. श्रेणी, विभाग, राज्य—मनुष्य ०, प्राणि ० आदि 10. विवादास्पद प्रश्न का एक पहलू, विकल्प। सम०—ईश्वरः करोड़पति,—जित् (पुं०) कालिदास का विशेषण,—ज्या (गणित) समकोण त्रिभुज में एक कोण की कोज्या,—द्वयम् दो विकल्प,—पात्रम् पतवार,—पालः दुर्ग रक्षक,—वेधिन् (वि०) (शा०) नियत विन्दु पर प्रहार करने वाला, (आलं०) अत्यन्त कठिन कार्यों को सम्पन्न करने वाला।

कोटिक (वि०) [कोटि+कै+क] किसी वस्तु का उच्चतम सिरा।

कोटिरः [कोटिं राति रा+क ता०] सन्यासियों द्वारा मस्तक पर बनी सींग के रूप की बालों की चोटी 2. नेवला 3. इन्द्र का विशेषण।

कोटि (टी) शः [कोटि(टी)+शो+क] मैड़ा, पटेला।

कोटिशः (अव्य०) [कोटि+शस्] करोड़ों, असंख्य।

कोटीरः [कोटिमीरयति ईर्+अण्] 1. मुकुट, ताज 2. शिखा 3. सन्यासियों द्वारा मस्तक पर बाँधी गई बालों की चोटी जो सींग जैसी दिखाई देती है, जटा

—कोटीरबन्धनधनुर्गुणयोगपट्टव्यापारपारगमम् भज भूतभर्तुः—नै० ११।१८।

कोट्टः [कुट्ट्+घञ्, नि० गुणः] दुर्ग, किला।

कोटवी [कोट्टं वाति वा+क, गौरा० ङीप् तारा०] 1. नग्न स्त्री जिसके बाल बिखरे हुए हों 2. दुर्गादेवी 3. बाण की माता का नाम।

कोट्टारः [कुट्ट+आरक् पृषो०] 1. किलेबन्दी वाला नगर, दुर्ग 2. तालावकी सीढ़ियां 3. कुआं, तालाव 4. लम्पट, दुराचारी।

कोणः [कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा तारा०] 1. किनारा, कोना—भयेन कोणे क्वचन स्थितस्य—विक्रमांक० १।९९, (युक्तमेतन्न तु पुनः कोणं नयनपद्मयोः—भामि० २। १७३ 2. वृत्त का अन्तर्वर्ती विन्दु 3. वीणा की कमानी, सारंगी बजाने का गज 4. तलवार या शस्त्र की तेज धार 5. लकड़ी, लाठी, गदा 6. ढोल बजाने की लकड़ी 7. मंगल ग्रह 8. शनिग्रह। सम०—आघातः ढोल, ढपड़े बजाना (विविध वाद्ययंत्रों की मिश्रित ध्वनि)—कोणाघातेषु गर्जत्प्रलयघटघटान्योन्यसंघट्टचण्डः—वेणी० १।२२, (भरत द्वारा दी गई परिभाषा—ढक्काशतसहस्राणि भेरीशतशतानि च, एकदा यत्र हन्यन्ते कोणाघातः स उच्यते),—कुणः खटमल।

कोणपः दे० कौणप।

कोणाकोणि (अव्य०) एक कोण से दूसरे कोण तक, एक किनारे से दूसरे किनारे तक, तिरछे, आड़े।

कोदण्डः,-डम् [कु+विच्=कोः शब्दायमानो दण्डो यस्य ब०सं०] धनुष,—रे कन्दर्प करं कदर्थयसि किं कोदण्डटङ्कारवैः—भर्तृ० ३।१००, कोदण्डपाणिनिनदत्प्रतिरोधकानाम्—मालवि० ५।१०,—डः भौं।

कोद्रवः [कु+विच्=को, द्रु+अक्=द्रव, कर्म० स०] कोदों का अनाज जिसे गरीब लोग खाते हैं—छित्वा कर्पूरखण्डान् वृतिमिह कुरुते कोद्रवाणां समन्तात्—भर्तृ० २।१००।

कोपः [कुप्+घञ्] 1. क्रोध, गुस्सा, रोष—कोपं न गच्छति नितान्तवलोऽपि नागः—पंच० १।१२३, न त्वया कोपः कार्यः—क्रोध मत करो 2. (आयुर्वेद) शारीरिक त्रिदोष विकार-अर्थात् पित्तकोप, वातकोप, कफकोप। सम०—आकुल—आविष्ट (वि०) क्रुद्ध, प्रकुपित,—क्रमः 1. क्रोधी या रुष्ट पुरुष 2. क्रोध का मार्ग,—पदम्, 1. क्रोध का कारण 2. बनावटी क्रोध,—वशः क्रोध की वश्यता,—वेगः क्रोध की प्रचण्डता, तीक्ष्णता।

कोपन (वि०) [कुप्+ल्युट्] 1. रोषशील, चिड़चिड़ा, क्रोधी 2. क्रोध पैदा करने वाला 3. प्रकोपी, शरीर के त्रिदोषों में प्रबल विकार उत्पन्न करने वाला,—ना रोषशील या क्रोधी स्त्री—कयासि कामिन् सुरतापराधात् पादानतः कोपनयावधूतः—कु० ३।८, अमरु ६५।

कोपिन् (वि०) [कोप+इनि] 1. क्रोधी, चिड़चिड़ा —सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी—गीत० १० 2. क्रोध उत्पन्न करने वाला 3. चिड़चिड़ा, शरीर में त्रिदोष विकारों को उत्पन्न करने वाला।

कोमल (वि०) [कु+कलच्, मुट् च नि० गुणः] 1. सुकुमार, मृदु, नाजुक (आलं० से भी)—बन्धुरकोमलाङ्गुलि (करम्)—श० ६।१२, कोमलविटपानुकारिणौ बाहू—१।२१, संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् —भर्तृ० २।६६ 2. (क) मृदु, मन्द—कोमलं गीतम् (ख) रुचिकर, सुहावना, मधुर—रे रे कोकिल कोमलैः कलरवैः किं त्वं वृथा जल्पसि—भर्तृ० ३।१० 3. मनोहर, सुन्दर।

कोमलकम् [कोमल+कन्] 1. कमलडंडी के रेशे।

कोयष्टिः, कोयष्टिकः [कं जलं यष्टिरिवास्य ब० स० पृषो० अकारस्य उकारः—कोयष्टि+कन्] टिटिहिरी, कुररी—काश्मर्याः कृतमालमुद्गतदलं कोयष्टिकष्टीकृते—मा० ९।७, मनु० ५।१३, याज्ञ० १।१७३।

कोरकः-कम् [कुर्+वुन्] 1. कली, अनखिला फूल, —संनद्धं यदपि स्थितं कुरवकं तत्कोरकावस्थया—श० ६।३ 2. (आलं०) कली के समान कोई वस्तु—अर्थात् अधखिला फूल, अविकसित फूल,—राधायाः स्तनकोरकोपरि चलन्नेत्रो हरिः पातु वः—गीत० १२ 3. कमलडंडी के रेशे 4. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य।

कोरदूषः=कोद्रवः।

कोरित (वि०) [कोर+इतच्] 1. कलीयुक्त, अङ्कुरित 2. पिसा हुआ, चूरा किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

कोलः [कुल्+अच्] 1. सूअर, वराह—शि०. १४।४३ 2. लट्ठों का बना बेड़ा, नाव 3. स्त्री की छाती 4. नितंब प्रदेश, कूल्हा, गोद 5. आलिङ्गन 6. शनिग्रह 7. बहिष्कृत, पतित जाति का व्यक्ति 8. जंगली —लम् 1. एक तोले का भार 2. काली मिर्च 3. एक प्रकार का बेर। सम०—अञ्चः कलिंग देश का नाम —पुच्छः बगला।

कोलम्बकः [कुल्+अम्बच्+कन्] वीणा का ढांचा।

कोला,-लिः,-ली (स्त्री०) [कुल्+ण+टाप्, कुल्+इन्, कुल्+अच्+ङीप् वा] दे० बदरी।

कोलाहलः,-लम् [कोल+आ+हल्+अच्] एक साथ बहुत से लोगों के बोलने का शब्द, हंगामा।

कोविद (वि०) [कु+विच्, तं वेत्ति—विद्+क] अनुभवी, विद्वान्, कुशल, बुद्धिमान्, प्रवीण (संब० या अधि० के साथ, परन्तु बहुधा समास में)—गुणदोषकोविदः—शि० १४।५३, ६९ प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्—मेघ० ३०, मनु० ७।२६।

—चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम्—भर्तृ० २।७३।
सम०—बन्धुः चन्द्रमा का विशेषण।

कैरविन् (पुं०) [कैरव+इनि] चन्द्रमा।

कैरविणी [कैरविन्+ङीप्] 1. श्वेत फूल वाला कुमुद का पौधा 2. वह सरोवर जिसमें श्वेत कमल खिले हों 3. श्वेत कमलों का समूह।

कैरवी [कैरव+ङीष्] चाँदनी, ज्योत्स्ना।

कैलासः [के जले लासो दीप्तिरस्य—केलास+अण्] पहाड़ का नाम, हिमालय की एक चोटी, शिव और कुबेर का निवास स्थान—मेघ० ११, ५८ रघु० २।३५। सम० —नाथः 1. शिव का विशेषण 2. कुबेर का विशेषण —कैलासनाथं तरसा जिगीषुः—रघु० ५।२८, कैलासनाथमुपसत्य निवर्तमाना—विक्रम० १।२।

कैवर्तः [के जले वर्तते—वृत्+अच्, केवर्तः ततः स्वार्थे अण् तारा०] मछवा—मनोभूः कैवर्तः क्षिपति परितस्त्वां प्रति मुहुः (तनूजाली जालम्)—शा० ३।१६, मनु० ८।२६०, (इसके जन्म के विषय में दे० मनु० १०।३४)।

कैवल्यम् [केवल+ष्यञ्] 1. पूर्ण पृथक्ता, अकेलापन, एकान्तिकता 2. व्यक्तित्व 3. प्रकृति से आत्मा का पार्थक्य, परमात्मा के साथ आत्मा की तद्रूपता 4. मुक्ति, मोक्ष।

कैशिक (वि०) (स्त्री०—की) [केश+ठक्] बालों के समान, बालों की भांति सुन्दर,—कः शृंगार रस, विलासिता,—कम् बालों का गुच्छा,—की नाट्य शैली का एक प्रकार (अधिक शुद्ध 'कौशिकी' शब्द है)।

कैशोरम् [किशोर+अञ्] किशोरावस्था, बाल्यकाल, कौमार आयु (पन्द्रह वर्ष से नीचे की)—कैशोरमापंचदशात्।

कैश्यम् [केश+ष्यञ्] सारे बाल, बालों का गुच्छा।

कोकः [कुक् आदाने अच्—तारा०] 1. भेड़िया—वनयूथपरिभ्रष्टा मृगी कोकैरिवार्दिता—रामा० 2. गुलाबी रंग का हंस (चक्रवाक),—कोकानां करुणस्वरेण सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना—गीत ५ 3. कोयल 4. मेंढक 5. विष्णु का नाम। सम०—देवः 1. कबूतर, 2. सूर्य का विशेषण।

कोकनदम् [कोकान् चक्रवाकान् नदति नादयति नद्+अच्] लाल कमल—किंचित्कोकनदच्छदस्य सदृशे नेत्रे स्वयं रज्यतः—उत्तर० ५।३६, नीलनलिनाभमपि तन्वि तव लोचनं धारयति कोकनदरूपम्—गीत० १०, शि० ४।४६।

कोकाहः [कोक+आ+हन्+ड] सफेद घोड़ा।

कोकिलः [कुक्+इलच्] 1. कोयल—पुंस्कोकिलो यन्मधुरं चुकूज—कु० ३।३२, ४।१६, रघु० १२।३९ 2. जलती हुई लकड़ी। सम०—आवासः,—उत्सवः आम का वृक्ष।

कोङ्कः, कोङ्कणः (ब०व०) एक देश का नाम, सह्याद्रि और समुद्र का मध्यवर्ती भूखंड।

कोङ्कणा [कोङ्कण+टाप्] रेणुका, जमदग्नि की पत्नी। सम०—सुतः परशुराम का विशेषण।

कोजागरः [को जागर्ति इति लक्ष्म्या उक्तिरत्र काले पृषो० तारा०] आश्विन मास की पूर्णिमा की रात में मनाया जानेवाला आमोदपूर्ण उत्सव।

कोटः [कुट्+घञ्] 1. किला 2. झोंपड़ा, छप्पर 3. कुटिलता 4. दाढ़ी।

कोटरः—रम् [कोटं कौटिल्यं राति रा+क ता०] वृक्ष की खोखर—नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः —श० १।१४, कोटरमकालवृष्ट्या प्रबलपुरोवातया गमिते—मालवि० ४।२ ऋतु० १।२६।

कोटरी, कोटवी [कोट+री(वी)+क्विप्] 1. नंगी स्त्री 2. दुर्गादेवी का विशेषण (नग्न रूप में वर्णन)।

कोटिः,—टी (स्त्री) [कुट+इञ्, कोटि+ङीप्] 1. धनुष का मुड़ा हुआ सिरा—भूमिनिहितैककोटिकार्मुकम्—रघु० ११।८१ उत्तर० ४।२९ 2. चरमसीमा का किनारा, नोक या धार—सहचरीं दन्तस्य कोट्या लिखन्—मा० ९।३२, अङ्गदकोटिलग्नम् रघु० ६।१४, ७।४६, ८।३६ 3. शस्त्र की धार या नोक 4. उच्चतम विन्दु, आधिक्य पराकोटि, पराकाष्ठा, परमोत्कर्ष—परां कोटिमानन्दस्याध्यगच्छन्—का० ३६९, इसी प्रकार कोपकोटिमापन्ना—पंच० ४, अत्यंत कुपित 5. चन्द्रमा की कलाएँ —कु० २।२६ 6. एक करोड़ की संख्या—रघु० ५।२१, १२।८२, मनु० ६।६३ 7. (गणित) ९० कोटि के चाप की सम्पूरक रेखा 8. समकोण त्रिभुज की एक भुजा (गणित) 9. श्रेणी, विभाग, राज्य—मनुष्य ०, प्राणि ० आदि 10. विवादास्पद प्रश्न का एक पहलू, विकल्प। सम०—ईश्वरः करोड़पति,—जित् (पुं०) कालिदास का विशेषण,—ज्या (गणित) समकोण त्रिभुज में एक कोण की कोज्या,—द्वयम् दो विकल्प,—पात्रम् पतवार,—पालः दुर्ग रक्षक,—वेधिन् (वि०) (शा०) नियत विन्दु पर प्रहार करने वाला, (आलं०) अत्यन्त कठिन कार्यों को सम्पन्न करने वाला।

कोटिक (वि०) [कोटि+कै+क] किसी वस्तु का उच्चतम सिरा।

कोटिरः [कोटिं राति रा+क ता०] सन्यासियों द्वारा मस्तक पर बनी सींग के रूप की बालों की चोटी 2. नेवला 3. इन्द्र का विशेषण।

कोटि (टी) शः [कोटि(टी)+शो+क] मैड़ा, पटेला।

कोटिशः (अव्य०) [कोटि+शस्] करोड़ों, असंख्य।

कोटीरः [कोटिमीरयति ईर्+अण्] 1. मुकुट, ताज 2. शिखा 3. सन्यासियों द्वारा मस्तक पर बाँधी गई बालों की चोटी जो सींग जैसी दिखाई देती है, जटा

—कोटीरबन्धनधनुर्गुणयोगपट्टव्यापारपारगममुं भज भूतभर्तुः—नै० ११।१८।

कोट्टः [कुट्ट्+घञ्, नि० गुणः] दुर्ग, किला।

कोटवी [कोट्टं वाति वा+क, गौरा० ङीप् तारा०] 1. नग्न स्त्री जिसके बाल बिखरे हुए हों 2. दुर्गादेवी 3. बाण की माता का नाम।

कोट्टारः [कुट्ट+आरक् पृषो०] 1. किलेबन्दी वाला नगर, दुर्ग 2. तालाबकी सीढ़ियां 3. कुआँ, तालाब 4. लम्पट, दुराचारी।

कोणः [कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा तारा०] 1. किनारा, कोना—भयेन कोणे क्वचन स्थितस्य—विक्रमांक० १।९९, (युक्तमेतन्न तु पुनः कोणं नयनपद्मयोः—भामि० २।१७३ 2. वृत्त का अन्तर्वर्ती विन्दु 3. वीणा की कमानी, सारंगी बजाने का गज 4. तलवार या शस्त्र की तेज धार 5. लकड़ी, लाठी, गदा 6. ढोल बजाने की लकड़ी 7. मंगल ग्रह 8. शनिग्रह। सम०—**आघातः** ढोल, ढपड़े बजाना (विविध वाद्ययंत्रों की मिश्रित ध्वनि)—कोणाघातेषु गर्जत्प्रलयघटघटान्योन्यसंघट्टचण्डः—वेणी० १।२२, (भरत द्वारा दी गई परिभाषा—ढक्काशतसहस्राणि भेरीशतशतानि च, एकदा यत्र हन्यन्ते कोणाघातः स उच्यते),—**कुणः** खटमल।

कोणपः दे० कौणप।

कोणाकोणि (अव्य०) एक कोण से दूसरे कोण तक, एक किनारे से दूसरे किनारे तक, तिरछे, आड़े।

कोदण्डः,-डम् [कु+विच्=कोः शब्दायमानो दण्डो यस्य ब०सं०] धनुष,—रे कन्दर्प करं कदर्थयसि किं कोदण्डटङ्कारवैः—भर्तृ० ३।१००, कोदण्डपाणिनिनदत्प्रतिरोधकानाम्—मालवि० ५।१०,—**डः** भौं।

कोद्रवः [कु+विच्=को, द्रु+अक्=द्रव, कर्म० स०] कोदों का अनाज जिसे गरीब लोग खाते हैं—छित्वा कर्पूरखण्डान् वृतिमिह कुरुते कोद्रवाणां समन्तात्—भर्तृ० २।१००।

कोपः [कुप्+घञ्] 1. क्रोध, गुस्सा, रोष—कोपं न गच्छति नितान्तबलोऽपि नागः—पंच० १।१२३, न त्वया कोपः कार्यः—क्रोध मत करो 2. (आयुर्वेद) शारीरिक त्रिदोष विकार-अर्थात् पित्तकोप, वातकोप, कफकोप। सम०—**आकुल-आविष्ट** (वि०) क्रुद्ध, प्रकुपित,—**क्रमः** 1. क्रोधी या रुष्ट पुरुष 2. क्रोध का मार्ग,—**पदम्**, 1. क्रोध का कारण 2. बनावटी क्रोध,—**वशः** क्रोध की वश्यता,—**वेगः** क्रोध की प्रचण्डता, तीक्ष्णता।

कोपन (वि०) [कुप्+ल्युट्] 1. रोषशील, चिड़चिड़ा, क्रोधी 2. क्रोध पैदा करने वाला 3. प्रकोपी, शरीर के त्रिदोषों में प्रबल विकार उत्पन्न करने वाला,—**ना** रोषशील या क्रोधी स्त्री—क्वयासि कामिन् सुरतापराधात् पादानतः कोपनयावधूतः—कु० ३।८, अमरु ६५।

कोपिन् (वि०) [कोप+इनि] 1. क्रोधी, चिड़चिड़ा —सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी—गीत० १० 2. क्रोध उत्पन्न करने वाला 3. चिड़चिड़ा, शरीर में त्रिदोष विकारों को उत्पन्न करने वाला।

कोमल (वि०) [कु+कलच्, मुट् च नि० गुणः] 1. सुकुमार, मृदु, नाजुक (आलं० से भी)—बन्धुरकोमलाङ्गुलि (करम्)—श० ६।१२, कोमलविटपानुकारिणौ बाहू—१।२१, संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् —भर्तृ० २।६६ 2. (क) मृदु, मन्द—कोमलं गीतम् (ख) रुचिकर, सुहावना, मधुर—रे रे कोकिल कोमलैः कलरवैः किं त्वं वृथा जल्पसि—भर्तृ० ३।१० 3. मनोहर, सुन्दर।

कोमलकम् [कोमल+कन्] 1. कमलडंडी के रेशे।

कोयष्टिः, कोयष्टिकः [कं जलं यष्टिरिवास्य ब० स० पृषो० अकारस्य उकारः—कोयष्टि+कन्] टिटिहिरी, कुररी—काश्मर्याः कृतमालमुद्गतदलं कोयष्टिकष्टीकृते—मा० ९।७, मनु० ५।१३, याज्ञ० १।१७३।

कोरकः-कम् [कुर+वुन्] 1. कली, अनखिला फूल, —संनद्धं यदपि स्थितं कुरबकं तत्कोरकावस्थया—श० ६।३ 2. (आलं०) कली के समान कोई वस्तु—अर्थात् अधखिला फूल, अविकसित फूल,—राधायाः स्तनकोरकोपरि चलन्नेत्रो हरिः पातु वः—गीत० १२ 3. कमलडंडी के रेशे 4. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य।

कोरदूषः=कोद्रवः।

कोरित (वि०) [कोर+इतच्] 1. कलीयुक्त, अङ्कुरित 2. पिसा हुआ, चूरा किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

कोलः [कुल्+अच्] 1. सूअर, वराह—शि०. १४।४३ 2. लट्ठों का बना बेड़ा, नाव 3. स्त्री की छाती 4. नितंब प्रदेश, कूल्हा, गोद 5. आलिङ्गन 6. शनिग्रह 7. बहिष्कृत, पतित जाति का व्यक्ति 8. जंगली —**लम्** 1. एक तोले का भार 2. काली मिर्च 3. एक प्रकार का बेर। सम०—**अञ्चः** कलिंग देश का नाम —**पुच्छः** बगला।

कोलम्बकः [कुल्+अम्बच्+कन्] वीणा का ढांचा।

कोला,-लिः,-ली (स्त्री०) [कुल्+ण+टाप्, कुल्+इन्, कुल्+अच्+ङीप् वा] दे० बदरी।

कोलाहलः,-लम् [कोल+आ+हल्+अच्] एक साथ बहुत से लोगों के बोलने का शब्द, हंगामा।

कोविद (वि०) [कु+विच्, तं वेत्ति—विद्+क] अनुभवी, विद्वान्, कुशल, बुद्धिमान्, प्रवीण (संब० या अधि० के साथ, परन्तु बहुधा समास में)—गुणदोषकोविदः—शि० १४।५३, ६९ प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्—मेघ० ३०, मनु० ७।२६।

कोविदारः,-रम् [कु+वि+दॄ+अण्] एक वृक्ष का नाम, कचनार—चित्तं विदारयति कस्य न कोविदारः —ऋतु० ३।६।

कोशः(ष)-शम् [कुश् (ष्)+घञ्, अच् वा] 1. तरल पदार्थों को रखने का वर्तन, बाल्टी 2. डोल, कटोरा 3. पात्र 4. संदूक, डोली, दराज, ट्रंक 5. म्यान, आवरण 6. पेटी, ढकना, ढक्कन 7. भाण्डार, ढेर—मनु० १।९९ 8. भाण्डारगृह 9. खजाना, रुपया पैसा रखने का स्थान —मनु० ८।४१९ 10. निधि, रुपया, दौलत—निःशेष-विश्राणितकोषजातम्—रघु० ५।१ (आलं०) कोशस्तपसः—का० ४५ 11. सोना, चांदी 12. शब्दकोश, शब्दार्थ संग्रह, शब्दावली 13. अनखिला फूल, कली —सुजातयोः पंकजकोशयोः श्रियम्—रघु० ३।८, १३।२९, इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार—सुभा० 14. किसी फल की गिरी 15. फली 16. जायफल, कठोरत्वचा 17. रेशम का कोया—या० ३।१४७ 18. झिल्ली, गर्भाशय 19. अण्डा 20. अण्डकोष, फोते 21. शिश्न 22. गेंद, गोला 23. (वेदांत० में) पांच कोष जो सब मिलकर शरीर रचना करते हैं—जिसमें आत्मा निवास करती है, अन्नमय, प्राणमय आदि 24. (विधि में) एक प्रकार की अपराधियों की अग्नि परीक्षा—तु० याज्ञ० २।११४। सम०—**अधिपतिः,-अध्यक्षः** 1. खजानची, वेतनाध्यक्ष (तु० आधुनिक वित्तमंत्री) 2. कुबेर, —**अगारः** खज़ाना, भाण्डारगृह,—**कारः** 1. म्यान बनाने वाला 2. शब्दकोश का निर्माता 3. कोये के रूप में रेशम का कीड़ा 4. कोशशायी,—**कारकः** रेशम का कीड़ा,—**कृत्** (पुं०) एक प्रकार का ईख,—**गृहम्** खजाना, भाण्डागार—रघु० ५।२९,—**चञ्चुः** सारस, —**नायकः**—**पालः** खजानची, कोशाध्यक्ष,—**पेटकः,-कम्** धन रखने का संदूक, तिजौरी—**वासिन्** (पुं०) सीपी में रहने वाला कीड़ा, कोशशायी,—**वृद्धिः** 1. धन की वृद्धि 2. फोतों का बढ़ जाना,—**शायिका** म्यान में रक्खा हुआ चाकू, बन्द किया हुआ चाकू,—**स्थ** (वि०) पेटी में बन्द, म्यान में बंद (**स्थः**) कोशकीट, कोशशायी,—**हीन** (वि०) धनहीन, निर्धन।

कोशलिकम् [कुशल+ठन्] रिश्वत, घूस (अधिक शुद्ध रूप =कौशलिक)।

कोशातकिन् (पुं०) [कोश+अत्+ण्वुल्=कोशातक+इनि] 1. वाणिज्य, व्यापार 2. व्यापारी, सौदागर 3. बड़वानल।

कोशि (षि) न् (पुं०) [कोश(ष)+इनि) आम का वृक्ष।

कोष्ठः [कुष्+थन्] 1. हृदय, फेफड़ा आदि शरीर के भीतरी अंग या आशय 2. पेट, उदर 3. आभ्यन्तर कक्ष 4. अन्नभाण्डार, अन्न का कोठा,—**ष्ठम्** 1. चहारदीवारी 2. किसी फल का कड़ा छिलका। सम०—**अगारम्** भाण्डार, भाण्डारघर—पर्याप्तभरितकोष्ठागारं मांसशोणितैर्मे गृहं भविष्यति—वेणी० ३, मनु० ९।२८०, —**अग्निः** पाचन शक्ति, आमाशय का रस—,**पालः** 1. कोषाध्यक्ष, भंडारी 2. चौकीदार, पहरेदार 3. सिपाही (आधुनिक नगरपालिकाधिकारी से मिलता-जुलता), —**शुद्धिः** मलोत्सर्ग।

कोष्ठकः [कोष्ठ+कन्] 1. अन्नभांडार 2. चहारदीवारी, —**कम्** ईंट चूने से बनाया गया पशुओं के पानी पीने का स्थान (बोलचाल की भाषा में 'खेल' कहते हैं)।

कोष्ण (वि०) [ईषदुष्णः—कोः कादेशः] 1. थोड़ा गरम, गुनगुना—रघु० १।८४,—**ष्णम्** गरमी।

कोस (श) लः (ब० व०) एक देश और उसके निवासियों का नाम—पितुरनन्तरमुत्तरकोसलान्—रघु० ९।९, ३।५, ६।७१, मगधकोसलकेकयशासिनां दुहितरः—९।१७।

कोस (श) ला अयोध्या नगर।

कोहलः [कौ हलति स्पर्धते—अच् पृषो° तारा०] 1. एक प्रकार का वाद्ययन्त्र 2. एक प्रकार की मदिरा।

कौक्कुटिकः [कुक्कुट+ठक्] 1. मुर्गे पालने वाला, या मुर्गों का व्यवसाय करने वाला 2. वह साधु जो चलते समय अपना ध्यान नीचे जमीन पर रखता है जिससे कि कोई कीड़ा आदि पैरों के नीचे न दब जाय 3. (अतः) दंभी।

कौक्ष (वि०) (स्त्री०—**क्षी**) [कुक्षि+अण्] 1. कोख से बंधा हुआ, या कोख पर होने वाला 2. पेट से सम्बन्ध रखने वाला।

कौक्षेय (वि०) (स्त्री०—**यी**) [कुक्षि+ढञ्] 1. पेट में होने वाला 2. म्यान में स्थित—असिं कौक्षेयमुद्यम्य चकारापनसं मुखम्—भट्टि० ४।३१।

कौक्षेयकः [कुक्षौ बद्धोऽसिः—ढकञ्] तलवार, खड्ग—वामपार्श्वावलम्बिना कौक्षेयकेन—का० ८, विक्रमाङ्क० १।९०।

कौङ्कः, कौङ्कणः (ब० व०) [कुङ्क+अण्, कोङ्कण+अण्] एक देश तथा उसके निवासी शासकों का नाम (दे० कोंकण)।

कौट (वि०) (स्त्री०—**टी**) [कूट+अञ्] 1. अपने निजी घर में रहने वाला, (अतः) स्वतन्त्र, मुक्त 2. पालतू, घरेलू, घर में पला हुआ 3. जालसाज, बेईमान 4. जाल में फँसा हुआ,—**टः** 1. जालसाजी, बेईमानी 2. झूठी गवाही देने वाला। सम०—**जः** कुटज वृक्ष—,**तक्षः** (विप० ग्रामतक्षः) स्वतन्त्र बढ़ई जो अपनी इच्छानुसार अपना कार्य करता है, गांव का कार्य नहीं,—**साक्षिन्** (पुं०) झूठा गवाह,—**साक्ष्यं** झूठी गवाही।

कौटकिकः, कौटिकः [कूट+कन्, कूटक+ठञ्, कूट+ठक्] 1. बहेलिया, जिसका व्यवसाय पक्षियों को पकड़ पिंजरे

में बन्द कर बेचना है 2. पंक्षियों के मांस का विक्रेता, कसाई, शिकारचोर।

कौटलिकः [कुटिलिकया हरति मृगान् अङ्गारान् वा—कुटिलिका+अण्] 1. शिकारी 2. लुहार।

कौटिल्यम् [कुटिल+ष्यञ्] 1. कुटिलपना (श० तथा आलं०) 2. दुष्टता 3. बेईमानी, जालसाजी,—ल्यः 'चाणक्य नीति' नामक नीतिशास्त्र का प्रख्यात प्रणेता चाणक्य, चन्द्रगुप्त का मित्र और मन्त्रकार, मुद्राराक्षस नाटक का एक महत्त्वपूर्ण पात्र—कौटिल्यः कुटिलमतिः स एष येन क्रोधाग्नौ प्रसभमदाहि नन्दवंशः—मुद्रा० १।७. स्पृशति मां भृत्यभावेन कौटिल्यशिष्यः—मुद्रा० ७।

कौटुम्ब (वि०) (स्त्री०—बी) [कुटुम्बं तद्भरणं भोजनमस्य—कुटुम्ब+अण्] किसी परिवार या गृहस्थ के लिए आवश्यक,—बम् पारिवारिक सम्बन्ध।

कौटुम्बिक (वि०) (स्त्री—की) [कुटुम्बे तद्भरणे प्रसृतः—कुटुम्ब+ठक्] परिवार को बनाने वाला,—कः किसी परिवार का पिता या स्वामी।

कौणपः [कुणप+अण्] पिशाच, राक्षस। सम०—दन्तः भीष्म का विशेषण।

कौतुकम् [कुतुक+अण्] 1. इच्छा, कुतूहल, कामना 2. उत्सुकता, आवेग, आतुरता 3. आश्चर्यजनक वस्तु 4. वैवाहिक कंगना–रघु० ८।१ 5. विवाह से पूर्व वैवाहिक कंगना बाँधने की प्रथा 6. पर्व, उत्सव 7. विशेषकर विवाह आदि शुभ उत्सव—कु० ७।२५ 8. खुशी, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता—भर्तृ० ३।१४० 9. खेल, मनोविनोद 10. गीत, नृत्य, तमाशा 11. हँसी, मजाक 12. बधाई, अभिवादन। सम०—आगारः,—रम्—गृहम् आमोद-भवन—कौतुकागारमागात्—कु० ७।९४,—क्रिया—मङ्गलम् 1. महान् उत्सव 2. विशेषतः विवाह-संस्कार—रघु० ११।५३,—तोरणः–णम् उत्सव के अवसरों पर बनाये गये मंगलसूचक विजय द्वार।

कौतूहलम् (ल्यम्) [कुतूहल+अण्, ष्यञ् वा] 1. इच्छा, जिज्ञासा, रुचि–विषयव्यावृत्तकौतूहलः—विक्रम० १।९, श० १ 2. उत्सुकता, उत्कण्ठा 3. कुतूहलवर्धक, आश्चर्यजनक।

कौन्तिकः [कुन्तः प्रहरणमस्य—ठञ्] भाला चलाने वाला, नेजाबरदार।

कौन्तेयः [कुन्त्याः अपत्यं ढक्] कुन्ती का पुत्र, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का विशेषण।

कौप (वि०) (स्त्री०—पी) [कूप+अण्] कुएँ से सम्बन्ध रखने वाला या कुएँ से आता हुआ (जल आदि)।

कौपीनम् [कूप+खञ्] 1. योनि, उपस्थ 2. गुप्ताङ्ग, गुह्येन्द्रिय 3. लंगोटी—कौपीनं शतखण्डजर्जरतरं कन्था पुनस्तादृशी–भर्तृ० ३।१०१ 4. चिथड़ा 5. पाप, अनुचित कर्म।

कौब्ज्यम् [कुब्ज+ष्यञ्] 1. टेढ़ापन, कुटिलता 2. कुबड़ापन।

कौमार (वि०) (स्त्री०—री) [कुमार+अण्] 1. तरुण, युवा, कन्या, कुँवारी (स्त्री और पुरुष दोनों) कौमारः पतिः, कौमारी भार्या 2. मृदु, कोमल,—रम् 1. बचपन (पाँच वर्ष तक की अवस्था) कुँआरीपना (१६ वर्ष की आयु तक) कुमारीपन—पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने—मनु० ९।३, देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा—भग० २।१३। सम०—भृत्यम् बच्चों का पालनपोषण व चिकित्सा,—हर (वि०) विवाह करने वाला, कन्या को पत्नी रूप में ग्रहण करने वाला, यः कौमारहरः स एव हि वरः–काव्य १।

कौमारकम् [कौमार+कन्] बचपन, तारुण्य, किशोरावस्था—कौमारकेऽपि गिरिवद्गुरुतां दधानः—उत्तर० ६।१९।

कौमारिकः [कुमारी+ठक्] वह पिता जिसकी सन्तान लड़कियाँ ही हों।

कौमारिकेयः [कुमारिका+ढक्] अविवाहिता स्त्री का पुत्र।

कौमुदः [कुमुद+अण्] कार्तिक का महीना।

कौमुदी [कौमुद+ङीप्] 1. चाँदनी—शशिना सह याति कौमुदी—कु० ४।३३, शशिनमुपगतेयं कौमुदी मेघमुक्तम्—रघु० ६।८५, (शब्द की व्युत्पत्ति—कौ मोदन्ते जना यस्यां तेनासौ कौमुदी मता) 2. चाँदनी का काम देने वाली कोई चीज अर्थात् प्रसन्नता देने वाली तथा ठण्डक पहुँचाने वाली—त्वमस्य लोकस्य च नेत्रकौमुदी कु० ५।७१, या कौमुदी नयनयोर्भवतः सुजन्मा—मा० १।३४, तु०—चंद्रिका 3. कार्तिक मास की पूर्णिमा 4. अनाश्विन मास की पूर्णिमा 5. उत्सव 6. विशेषतः वह उत्सव जब घरों में, मन्दिरों में सर्वत्र दीपावली होती है 7. (पुस्तकों के नामों के अन्त में) व्याख्या, स्पष्टीकरण, प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालने वाली—उदा० तर्ककौमुदी, सांख्यतत्त्वकौमुदी, सिद्धान्तकौमुदी आदि। सम०—पतिः चन्द्रमा–,वृक्षः दीवट।

कौमोदकी, कौमोदी [कोः पृथिव्याः मोदकः=कुमोदक+अण्+ङीप् कुं पृथिवीं मोदयति=कुमोद+अण्+ङीप्] विष्णु की गदा।

कौरव (वि०) (स्त्री० वी) [कुरु+अण्] कुरुओं से संबंध रखने वाला—क्षेत्रं क्षत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद्भजेथाः—मेघ० ४८,—वः 1. कुरु की सन्तान–मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपात्—वेणी० १।१५ 2. कुरुओं का राजा।

कौरव्यः [कुरु+ण्य] 1. कुरु की सन्तान—कौरव्यवंशदावेऽस्मिन् क एष शलभायते—वेणी० १।१९, २५, कौरव्ये कृतहस्तता पुनरियं देवे यथा सीरिणि—६।१२ 2. कुरुओं का शासक।

कौर्प्यः [ग्रीक भाषा का शब्द] वृश्चिक राशि।

कौल (वि०) (स्त्री०—ली) [कुल+अण्] 1. परिवार से संबंध रखने वाली, पैतृक, आनुवंशिक 2. अच्छे घराने का, सुजात,—लः वाममार्गी सिद्धांतों के अनुसार 'शक्ति' की पूजा करने वाला,—लम् वाममार्गी शाक्तों के सिद्धान्त और व्यवहार।

कौलकेयः [कुल+ढक्, कुक्] व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र, हरामी, वर्णसंकर।

कौलटिनेयः [कुलटा+ढक्, इनङादेशः] 1. सती भिखारिणी का पुत्र 2. वर्णसंकर।

कौलिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुल+ठक्] 1. किसी वंश से संबंध रखने वाला 2. कुल में प्रचलित, पैतृक, वंशपरंपरागत,—कः 1. जुलाहा—कौलिको विष्णुरूपेण राजकन्यां निषेवते—पंच० १।२०२ 2. विधर्मी 3. वाममार्गी, शाक्त सिद्धान्तों का अनुयायी।

कौलीन (वि०) [कुल+खञ्] खदानी, कुलीन,—नः 1. भिखारिणी स्त्री का पुत्र 2. वाममार्गी शाक्त सिद्धांतों का अनुयायी,—नम् लोकापवाद, कुत्सा—मालविकागतं किमपि कौलीनं श्रूयते—मालवि० ३, तदेव कौलीनमिव प्रतिभाति—विक्रम० २, मेघ० ११२, कौलीनमात्माश्रयमाचचक्षे—रघु० १४।३६, ८४ 2. अनुचित कर्म, दुराचरण—ख्याते तस्मिन् वितमसि कुले जन्म कौलीनमेतत्—वेणी० २।१० 3. पशुओं की लड़ाई 4. मुर्गों की लड़ाई 5. संग्राम, युद्ध 6. उच्च कुल में जन्म 7. गुप्तांग, योनि।

कौलीन्यम् [कुलीन+ष्यञ्] 1. कुलीनता 2. वंश की कुत्सा।

कौलूतः [कुलूत+अण्] कुलूतों का राजा—कौलूतश्चित्रवर्मा—मुद्रा० १।२०।

कौलेयकः [कुल+ढकञ्] कुत्ता, शिकारी कुत्ता।

कौल्य (वि०) [कुल+ष्यञ्] उच्च कुल में उत्पन्न, खान्दानी।

कौबे (बे) र (वि०) (स्त्री०—री) [कुबे (वे) र+अण्] कुबेर से संबंध रखने वाला, कुबेर के पास से आने वाला—यानं सस्मार कौबेरम्—रघु० १५।४५,—री उत्तरदिशा;—ततः प्रतस्थे कौबेरीं भास्वानिव रघुर्दिशम्—रघु० ४।६६।

कौश (वि०) (स्त्री०—शी) [कुश=अण्] 1. रेशमी 2. कुश घास का बना हुआ।

कौशलम् (ल्यम्) [कुशल+अण्, ष्यञ् वा]. 1. कुशलक्षेम, प्रसन्नता, समृद्धि 2. कुशलता, दक्षता, चतुराई—किमकौशलादुतप्रयोजनापेक्षितया—मुद्रा० ३, हावहारि हसितं वचनानां कौशलं दृशि विकारविशेषाः—शि० १०।१३।

कौशलिकम् [कुशल+ठक्] घूस, रिश्वत।

कौशलिका, कौशली [कौशलिक+टाप्, कुशल+अण्+ङीप्] 1. उपहार, चढ़ावा 2. कुशल प्रश्न पूछना, अभिवादन।

कौशलेयः [कौशल्या+ढक्, यलोपः] राम का विशेषण, कौशल्या का पुत्र।

कौशल्या [कोशलदेशे भवा—छय] दशरथ की ज्येष्ठ पत्नी तथा राम की माता।

कौशल्यायनिः [कौशल्या+फिञ्] कौशल्या का पुत्र राम, भट्टि० ७।९०।

कौशाम्बी [कुशाम्ब+अण्+ङीप्] गंगा के किनारे स्थित एक प्राचीन नगर (जिसे कुश के पुत्र कुशांब ने बसाया था—यह नगर ही वत्स देश की राजधानी थी)।

कौशिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुशिक+अण्] 1. डब्बे में बन्द, म्यान में रक्खा हुआ 2. रेशमी,—कः 1. विश्वामित्र का विशेषण 2. उल्लू—उत्तर० २।२९ 3. कोशकार 4. गूदा 5. गुग्गुल 6. नेवला 7. सपेरा 8. शृंगार रस 9. जो गुप्तधन को जानता है 10. इन्द्र का विशेषण,—का प्याला, पानपात्र,—की 1. बिहार प्रदेश में बहने वाली एक नदी का नाम 2. दुर्गादेवी का नाम 3. चार प्रकार की नाट्यशैलियों में एक—सुकुमारार्थसंदर्भा कौशिकी तासु कथ्यते—दे०, सा० द०, ४११, तथा आगे पीछे। सम०—अरातिः,—अरिः कौवा,—फलः नारियल का वृक्ष,—प्रियः राम का विशेषण।

कौशे (षे) यम् [कोशस्य विकारः—ढञ्] 1. रेशम—पंच० १।९४ 2. रेशमी कपड़ा—मनु० ५।१२० 3. रेशम का बना स्त्री का पेटी कोट—निर्नाभि कौशेयमुपात्तबाणमभ्यङ्गनेपथ्यमलञ्चकार—कु० ७।९, विद्युद्गुण कौशेयः—मृच्छ० ५।३, ऋतु० ५।९।

कौसीद्यम् [कुसीद+ष्यञ्] 1. ब्याज लेने का व्यवसाय 2. आलस्य, अकर्मण्यता।

कौसृतिकः [कुसृति+ठक्] 1. ठग, बदमाश 2. बाजीगर।

कौस्तुभः [कुस्तुभो जलधिस्तत्र भवः—अण्] एक विख्यात रत्न जो समुद्रमन्थन के फलस्वरूप १३ अन्य रत्नों के साथ समुद्र से प्राप्त हुआ तथा जिसको विष्णु ने अपने वक्षस्थल पर धारण किया हुआ है—सकौस्तुभं ह्लेपयतीव कृष्णम्—रघु० ६।४९, १०।१०। सम०—लक्षणः—वक्षस् (पुं०)—हृदयः विष्णु के विशेषण।

क्नूय् [भ्वा० आ०—क्नूयते) 1. चूं चूं शब्द करना 2. डूबना 3. गीला होना।

क्रकचः [क्र इति कचति शब्दायते—क्र+कच्+अच्] आरा। सम०—छदः केतक वृक्ष,—पत्रः सागौन वृक्ष,—पाद् (पुं०)—पादः छिपकली।

क्रकरः [क्र इति शब्दं कर्तुं शीलमस्य—क्र+कृ+अच्] 1. एक प्रकार का तीतर 2. आरा 3. निर्धन व्यक्ति 4. रोग।

क्रतुः [कृ+कतु] 1. यज्ञ—क्रतोरशेषेण फलेन युज्यताम्—रघु० ३।६५, शतं क्रतूनामपविघ्नमाप सः—३।३८,

मालवि० १।४, मनु० ७।७९ 2. विष्णु का विशेषण 3. दस प्रजापतियों में एक—मालवि० १।३५ 4. प्रज्ञा, बुद्धि 5. शक्ति, योग्यता। सम०—उत्तमः राजसूय यज्ञ,—द्रुह,—द्विष् (पुं०) राक्षस, पिशाच,—ध्वंसिन् (पुं०) शिव का विशेषण (शिव ने ही दक्ष के यज्ञ को नष्ट किया था),—पतिः यज्ञ का अनुष्ठाता,—पशुः यज्ञीय घोड़ा,—पुरुषः विष्णु का विशेषण,—भुज् (पुं०) देवता, देव,—राज् (पुं०) 1. यज्ञों का स्वामी—यथाश्वमेधः क्रतुराट्—मनु० ९।२६० 2. राजसूय यज्ञ।

क्रथ् (भ्वा० पर०—क्रथति, क्रथित) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मार डालना।

क्रथकैशिकः (ब० व०) एक देश का नाम—अथेश्वरेण क्रथकैशिकानाम्—रघु० ५।३९ मनु० ५।२।

क्रथनम् [क्रथ्+ल्युट्] वध, हत्या।

क्रथनकः [क्रथन+कन्] ऊँट।

क्रन्द् (भ्वा० पर०—क्रन्दति, क्रन्दित) 1. चिल्लाना, रोना, आंसू बहाना—किं क्रन्दसि दुराक्रन्द स्वपक्षक्षयकारक—पंच० ४।२९, क्रंदत्यतः करुणमप्सरसां गणोऽयम्—विक्रम० १।२, चक्रन्द विग्ना कुररीव भूयः—रघु० १४।६८, १५।४२, भट्टि० ३।२८, ५।५ 2. पुकारना, दया की पुकार करना (कर्म० के साथ) क्रन्दत्यविरतं सोऽथ भ्रातृमातृसुतानथ—मार्क० (चुरा० पर० या प्रेर०) 1. लगातार चिल्लाना 2. रुलाना। आ—, चिल्लाना, चीखना, चरमराना, चीत्कार करना—तृणाग्रलग्नैस्तुहिनैः पतद्भिराक्रन्दतीवोषसि शीतकालः—ऋतु० ४।७, भट्टि० १५।५० 2. पुकार करना (प्रेर०)—एह्येहीति शिखण्डिनां पटुतरैः केकाभिराक्रन्दितः—मृच्छ० ५।२३।

क्रन्दनम्, क्रन्दितम् [क्रन्द्+ल्युट्, क्त वा] 1. आर्तनाद, रोना, विलाप करना—हा ताततेति क्रन्दितमाकर्ण्य विषण्णः—रघु० ९।७५ 2. पारस्परिक ललकार, चुनौती।

क्रम् (भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—क्रामति—क्रमते, क्राम्यति, क्रान्त) 1. चलना, पदार्पण करना, जाना—क्रामत्यनुदिते सूर्ये वाली व्यपगतक्रमः—रामा०, गम्यमानं न तेनासीदगतं क्रामता पुरः—भट्टि० ८।२,२५ 2. चले जाना, पहुँचना (कर्म० के साथ)—देवा इमान् लोकानक्रमन्त—शत० 3. जाना, पार करना, पार जाना—सुखं योजनपञ्चाशत्क्रमेयम्—रामा० 4. कूदना, छलांग मारना—क्रमं बबन्ध क्रमितुं सकोपः (हरिः)—भट्टि० २।९, ५।५१, 5. ऊपर जाना, चढ़ना 6. अधिकार में रखना, वश में करना, अधिकार में लेना, भरना—क्रान्ता यथा चेतसि विस्मयेन—रघु० १४।१७ 7. आगे बढ़ना, आगे निकल जाना—स्थितः सर्वोन्नतेनोर्वीं क्रान्त्वा मेरुरिवात्मना—रघु० १।१४ 8. उत्तरदायित्व लेना, संप्रयास करना, योग्य या सक्षम होना, शक्ति दिखलाना (संप्र० या तुमुन्नन्त के साथ)—व्याकरणाध्ययनाय क्रमते—सिद्धा०, धर्माय क्रमते साधुः—वोप० व्युत्पत्तिरावर्जितकोविदापि न रञ्जनाय क्रमते जडानाम्—विक्रमांक० १।१६, हत्वा रक्षांसि लवितुमक्रमीन्मारुतिः पुनः, अशोकवनिकामेव—भट्टि० ९।२८ 9. बढ़ना या विकसित होना, पूरा क्षेत्र मिलना, स्वस्थ होना (अधि० के साथ)—कृत्येषु क्रमन्ते—दश० १७०, क्रमन्तेऽस्मिञ्शास्त्राणि—या—ऋक्षु क्रमते बुद्धिः—सिद्धा०, क्रममाणोऽरिसंसदि—भट्टि० ८।२२ 10. पूरा करना, निष्पन्न करना 11. मैथुन करना, (पा० १।३।३८ क्रम्—आ० में 'सातत्य' 'विघ्नों का अभाव' 'शक्ति या प्रयोग' 'विकास, बृद्धि' तथा 'जीतना, पार पहुँचना' आदि अर्थ को प्रकट करती है) अति—, 1. पार करना, पार जाना—सप्तकक्षान्तराण्यतिक्रम्य—का० ९२ 2. परे जाना, लांघना—मेघ० ५७, ४० 3. बढ़ जाना, आगे निकल जाना—मनु० ८।१५१ 4. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, आगे कदम रखना—अतिक्रम्य सदाचारम्—का० १६० 5. अवहेलना करना, पृथक् करना, उपेक्षा करना—प्रथितयशसां प्रबन्धानतिक्रम्य—मालवि० १, किं वा परिजनमतिक्रम्य भवान्सन्दिष्टः—मालवि० ४, या कथं ज्येष्ठानतिक्रम्य यवीयान् राज्यमर्हति—महा० 6. गुजरना, (समय का) बीतना—अतिक्रान्ते दशाहे—मनु० ५।७६, यथा यथा यौवनमतिचक्राम—का०५९, अधि—, चढ़ना, अध्या—, अधिकार करना, भरना, ग्रहण करना—अध्याक्रान्ता वसतिरमुनाप्याश्रमे सर्वभोग्ये—श० २।१४ अनु—, 1. अनुगमन करना 2. आरम्भ करना 3. अन्तर्वस्तु देना, अन्वा—, एक के पश्चात् दूसरे के दर्शन करना, अप—, छोड़ जाना, चले जाना, अभि—, 1. जाना, पहुँचना, प्रविष्ट होना—अभिचक्राम काकुत्स्थः शरभङ्गाश्रमं प्रति—रामा० 2. घूमना, भ्रमण करना 3. आक्रमण करना अव—, वापिस हटना आ—, 1. पहुँचना, की ओर जाना 2. आक्रमण करना, दमन करना, जीतना, परास्त करना—पक्षिशावकानाक्रम्य—हि० १, पौरस्त्यानेवमाक्रामन्—रघु० ४।३४, भर्तृ० १।७० 3. भरना, प्रविष्ट होना, अधिकार में करना—खं केशवोऽपर इवाक्रमितुं प्रवृत्तः—मृच्छ० ५।२।९।१२ 4. आरम्भ करना, शुरू करना 5. उन्नत होना, उदय होना (आ०) यावत्प्रतापनिधिराक्रमते न भानुः—रघु० ५।७१ 6. चढ़ना, सवारी करना, अधिकार में करना, उद्—, 1. ऊपर होना, परे जाना, उपर जाना—ऊर्ध्वं प्राणाह्युत्क्रामन्ति—मनु० २।१२० 2. अवहेलना करना, उपेक्षा करना—आर्षं प्रमाणमुत्क्रम्य धर्मं न प्रतिपालयन्—महा०, धर्ममुत्क्रम्य 3. परे कदम रखना—रघु० १५।३३, उप—, 1. की ओर जाना, पहुँचना 2. धावा बोलना, आक्रमण करना 3. बर्ताव करना, उपचार करना, (वैद्य

की भांति) चिकित्सा करना, स्वस्थ करना, 4. प्रेम करना, प्रेम से जीत लेना—सर्वैरुपायैरुपक्रम्य सीताम् —रामा० 5. अनुष्ठान करना, प्रस्थान करना 6. (आ) आरम्भ करना, शुरू करना—प्रसभं वक्तुमुपक्रमेत कः —कि० २।२८, रघु० १७।३३, निस्—, 1. चले जाना, चल देना, बिदा होना 2. निकलना, प्रकाशित होना —भट्टि० ७।७१, परा—, (आ०) 1. साहस प्रदर्शित करना, शक्ति या शूरवीरता दिखाना, बहादुरी के साथ करना—बकवच्चिन्तयेदर्थान् सिंहवच्च पराक्रमेत् —मनु० ७।१०६, भट्टि ८।२२,९३ 2. वापिस मुड़ना 3. चढ़ाई करना, आक्रमण करना, परि—, 1. इधर उधर घूमना, चक्कर लगाना—परिक्रम्यावलोक्य च (नाटकों में) 2. पकड़ लेना, प्र—(आ०) 1. आरम्भ करना, शुरू करना—प्रचक्रमे च प्रतिवक्तुमुत्तरम्—रघु० ३।४७, २।१५, कु० ३।२ 2. कुचलना, ऊपर पैर रख कर चलना—भट्टि० १५।२३ 3. जाना, प्रस्थान करना, प्रति—, वापिस आना वि—(आ०) 1. में से चलना, विष्णुस्त्रेधा विचक्रमे—तीन पग रक्खे—भट्टि० ८।२४ 2. छापा मारना, पराजित करना, जीतना 3. फाड़ना, खोलना (पर०), व्यति—, 1. उल्लंघन करना 2. समय बिताना, व्युद्—दे० उत्—, सम्—, 1. आना या एकत्र होना 2. पार जाना, पार करना, में से जाना 3. पहुँचना, जाना 4. पार चले जाना, स्थानान्तरित होना 5. दाखिल होना, प्रविष्ट होना—कालो ह्ययं संक्रमितुं द्वितीयं सर्वोपकारक्षममाश्रमं ते—रघु० ५।१०, समा—, 1. अधिकार करना, कब्जे में लेना, भरना—सममेव समाक्रान्तं द्वयं द्विरदगामिना, तेन सिंहासनं पित्र्यमखिलं चारिमंडलम्—रघु० ४।४ 2. छापा मारना, जीतना, दमन करना

क्रमः [क्रम्+घञ्] 1. कदम, पग —त्रिविक्रमः, सागरः—प्लवगेंद्रेण क्रमेणैकेन लम्बितः—महा० 2. पैर 3. गति, प्रगमन, मार्ग, **क्रमात्**—**क्रमेण** दौरान में, क्रमशः, **कालक्रमेण** उत्तरोत्तर, समय पाकर, **भाग्यक्रमः**, भाग्य का उलट जाना—रघु० ३।७, ३०, ३२ 4. प्रदर्शन, आरंभ —इत्थमत्र विततक्रमे क्रतौ—शि० १४।५३ 5. नियमित मार्ग, क्रम, श्रेणी, उत्तराधिकारिता, निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रमः—श० ७।३० मनु० ७।२४, ९।८५ २।१७३, ३।६९ 6. प्रणाली, रीति—नेत्रक्रमेणोपरुरोध सूर्यम्—रघु० ७।३९ 7. ग्रसना, पकड़—क्रमगता पशोः कन्यका—मा० ३।१६ 8. (दूसरे जन्तु पर आक्रमण करने से पूर्व की जानवर की) स्थिति 9. तैयारी, तत्परता भट्टि० २।९ 10. व्यवसाय, साहसिक कार्य 11. कर्म या कार्य, कार्यविधि—कोऽप्येष कान्तः क्रमः—अमरु ४३।३३ 12. वेदमंत्रों को सस्वर उच्चारण करने की विशेष रीति—क्रमपाठ 13. शक्ति, सामर्थ्यं,—**मम्** गारा। सम०—**अनुसारः**,—**अन्वयः**, नियमित क्रम, समुचित व्यवस्था,—**आगत**,—**आयात** (वि०) वंशपरम्पराप्राप्त, आनुवंशिक,—**ज्या** ग्रह की लंबरेखा, क्षय,—**भंगः** अनियमितता।

क्रमक (वि०) [क्रम्+वुन्] क्रमबद्ध, प्रणाली के अनुसार, —**कः** वह विद्यार्थी जो किसी नियमित पाठ्यक्रम का अध्ययन करता है।

क्रमणः [क्रम+ल्युट्] 1. पैर 2. घोड़ा,—**णम्** 1. कदम 2. पग रखना 3. आगे बढ़ना 4. उल्लंघन

क्रमतः (अव्य०) [क्रम्+तसिल्] क्रमशः, उत्तरोत्तर।

क्रमशः (अव्य०) [क्रम+शस्] 1. ठीक क्रम में, नियमित रूप से उत्तरोत्तर, क्रमानुसार 2. क्रम से, मात्रा के अनुसार—रघु० १२।५७, मनु० १।६८, ३।१२।

क्रमिक (वि०) [क्रम+ठन्] 1. उत्तरोत्तर, सिलसिलेवार 2. वंशपरंपरागत, पैतृक, आनुवंशिक।

क्रमुः, क्रमुकः [क्रम्+उ, कन् च] सुपारी का पेड़—आस्वादितार्द्रक्रमुकः समुद्रात्—शि० ३।८१, विक्रमांक० १८।९८।

क्रमेलः, क्रमेलकः [क्रम्+एल्+अच्, कन् च] ऊँट —निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव—विक्रमांक० १।२९, शि० १२।१८, नै० ६।१०४।

क्रयः [क्री+अच्] खरीदना, मोल लेना। सम०—**आरोहः** मंडी, मेला,—**क्रीत** (वि०) मोल लिया हुआ,—**लेख्यम्** —बैनामा, विक्रयनामा, दानपत्र (गृहं क्षेत्रादिकं क्रीत्वा तुल्यमूल्याक्षरान्वितम्, पत्रं कारयते यत्तु क्रयलेख्यं तदुच्यते—बृहस्पति),—**विक्रयौ** (द्वि० व०) व्यापार, व्यवसाय, खरीद-फरोख्त—मनु० ८।५ ७।१२७,—**विक्रयिकः** व्यापारी सौदागर।

क्रयणम् [क्री+ल्युट्] खरीदना, मोल लेना।

क्रयिकः [क्रय+ठन्] 1. व्यापारी, सौदागर 2. क्रेता, मोल लेने वाला।

क्रय्य (वि०) [क्री+यत्, नि०] मंडी में विक्रय के लिए रक्खी हुई वस्तु, बिकाऊ (विप० 'क्रय,' जिसका अर्थ है 'मोल लिये जाने के उपयुक्त'।

क्रव्यम् [क्लव्+यत्, रस्य लः] कच्चा मांस, मुरदार (शव या लाश)—स्थपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति—मा० ५।१६। सम०—**अद्**,—**अद**,—**भुज्** (वि०) कच्चा मांस खाने वाला, मनु० ५।१३१, (पुं०) 1. शेर, चीता आदि मांसभक्षी जन्तु,—उत्तर० १।४९ 2. राक्षस, पिशाच—रघु० १५।१६।

क्रशिमन् (पुं०) [कृश+इमनिच्] पतलापन, कृशता, दुबलापतलापन।

क्राकचिकः [क्रकच+ठक्] आराकश।

क्रान्त (वि०)[क्रम्+क्त] गया हुआ, आरपार गया हुआ

(भू० क० कृ०),—तः 1. घोड़ा 2. पैर, पग। सम० —दर्शिन् (वि०) सर्वज्ञ।

क्रान्तिः (स्त्री०) [क्रम्+क्तिन्] 1. गति, प्रगमन 2. कदम, पग 3. आगे बढ़ने वाला 4. आक्रमण करने वाला, अभिभूत करने वाला 5. नक्षत्र की कोणीय दूरी 6. क्रांतिवलय, सूर्य का भ्रमण मार्ग। सम० —कक्षः,—मण्डलम्,—वृत्तम्, सूर्य का भ्रमण मार्ग, —पातः वह बिंदु जहाँ क्रांतिवलय विषुवत् रेखा से मिलता है,—वलयः 1. सूर्य का भ्रमण मार्ग 2. उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र, उष्ण कटिबंध।

क्राय (यि) कः [क्री+ण्वुल्—क्रय+ठक्] 1. क्रेता, खरीददार 2. व्यापारी, सौदागर।

क्रिमिः [क्रम्+इन्, इत्वम्] 1. कीड़ा 2. कीट—दे० कृमि। सम०—जम् अगर की लकड़ी,—शैलः बांबी।

क्रिया [कृ+श, रिङ् आदेशः, इयङ्] 1. करना, कार्यान्विति, कार्य-सम्पादन, निष्पादन करना, उपचार°, धर्म°—प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव —मेघ० ११४ 2. कर्म, कृत्य, व्यवसाय, जिम्मेदारी —प्रणयिक्रिया—विक्रम० ४।१५, मनु० २।४ 3. चेष्टा, शारीरिक चेष्टा, श्रम 4. अध्यापन, शिक्षण—क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति—रघु० ३।२९ 5. (नृत्य गायन आदि), किसी कला पर आधिपत्य, ज्ञान —शिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था—मालवि० १।१६ 6. आचरण (विप० शास्त्र-सिद्धान्त) 7. साहित्यिक रचना—शृणुत मनोभिरवहितैः क्रियामिमां कालिदासस्य—विक्रम० १।२. कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमानः—मालवि० १ 8. शुद्धि-संस्कार, धार्मिक संस्कार 9. प्रायश्चित्तस्वरूप संस्कार, प्रायश्चित्त 10. (क) श्राद्ध (ख) और्ध्वदेहिक संस्कार 11. पूजन 12. औषधोपचार, चिकित्सा-प्रयोग, इलाज—शीतक्रिया—मालवि० ४, शीतल उपचार 13. (व्या० में) क्रिया के द्वारा अभिहित कर्म 14. चेष्टा या कर्म 15. विशेषतः वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित सात द्रव्यों में से एक—दे० कर्मन् 16. (विधि में) साक्ष्यादिक मानवसाधनों से तथा अन्य परीक्षाओं द्वारा अभियोग की छानबीन करना 17. प्रमाण-भार। सम०—अन्वित (वि०) शास्त्रोक्त सत्कर्मों को करने वाला,—अपवर्गः 1. किसी कार्य की संपूर्ति या इतिश्री, कार्यसम्पादन—क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात् कृताः—कि० १।४४ 2. कर्मकाण्ड से मुक्ति, छुटकारा,—अभ्युपगमः विशेष प्रकार का करार या प्रतिज्ञा-पत्र,—क्रियाभ्युपगमात्त्वेतत् बीजार्थं यत्प्रदीयते —मनु० ९।५३,—अवसन्न (वि०) गवाहों के बयान के कारण मुकदमा हार जाने वाला व्यक्ति,—इन्द्रियम् दे० 'कर्मेन्द्रिय',—कलापः 1. हिन्दु-धर्मशास्त्र द्वारा विहित समस्त कार्य 2. किसी व्यवसाय के समस्त विवरण,—कारः 1. अभिकर्ता, कार्यकर्ता 2. शिक्षारंभ करने वाला, नौसिखिया, नवच्छात्र 3. इकरारनामा, प्रतिज्ञापत्र,—द्वेषिन् (पुं०) (पाँच प्रकार के साक्षियों में से एक) वह साक्षी जिसका साक्ष्य पक्षपातपूर्ण हो, —निर्देशः गवाही, साक्ष्य,—पटु (वि०) कार्यदक्ष, —पथः औषधोपचार की रीति,—पदम् क्रियावाचक शब्द,—पर (वि०) अपने कर्त्तव्य-पालन में परिश्रमशील,—पादः अभियोक्ता या वादी के द्वारा अपने दावे की पुष्टि में दिए गये प्रमाण, दस्तावेज तथा गवाहियाँ आदि जो कानूनी अभियोग का तीसरा अंग है,—योगः 1. क्रिया के साथ संबंध 2. तरकीब और साधनों का प्रयोग,—लोपः आवश्यक धार्मिक अनुष्ठानों का परित्याग, क्रियालोपात् वृषलत्वं गताः—मनु० १०।४३, —वशः आवश्यकता, क्रियाओं का अवश्यंभावी प्रभाव, —वाचक, वाचिन् (वि०) कर्म को प्रकट करने वाला, क्रिया से बना संज्ञा शब्द,—वादिन् (पुं०) वादी, अभियोक्ता,—विधिः कार्य करने का नियम, किसी धर्मकृत्य को सम्पन्न करने की रीति—मनु० ९।२२०,—विशेषणम् 1. क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाला शब्द 2. विधेय विशेषण,—संक्रान्तिः (स्त्री०) दूसरों को ज्ञान देना, अध्यापन—मालवि० १।१९,—समभिहारः किसी कार्य की आवृत्ति।

क्रियावत् (वि०) [क्रिया+मतुप्] कर्म में व्यस्त, किसी कार्य के व्यवहार को जानने वाला—यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्—हि० १।१६७।

क्री (क्र्या० उभ०—क्रीणाति, क्रीणीते, क्रीत) 1. खरीदना मोल लेना,—महता पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया —श० ३।१, क्रीणीष्व मज्जीवितमेव पण्यमन्यन्न चेदस्ति तदस्तु पुण्यम्—नै० ३।८७ ८८, पंच० १।१३ मनु० ९।१७४ 2. विनिमय, अदलाबदली—कच्चित्सहस्रैर्मूर्खाणामेकं क्रीणासि पण्डितम्—महा०, आ—, खरीदना, निस्—, कुछ देकर पिंड छुड़ाना, दाम देकर फिर से खरीद लेना, निस्तार करना, परि—, (आ०) 1. मोल लेना—संभोगाय परिक्रीतः कर्तास्मि तव नाप्रियम्—भट्टि० ८।७२ 2. किराये पर लेना, कुछ समय के लिए मोल लेना (निर्धारित मूल्य में करण० तथा सम्प्र० के साथ)—शतेन शताय वा परिक्रीतः—सिद्धा० 3. वापिस करना, बदला देना, चुकाना—कृतेनोपकृतं वायोः परिक्रीणानमुत्थितम्—भट्टि० ८।८, वि—, 1. बेचना (इस अर्थ में आ०)—गवां शतसहस्रेण विक्रीणीषे सुतं यदि—रामा०, विक्रीणीत तिलान् शुद्धान् —मनु० १०।९०, ८।१९७, २२२, श० १।१२ 2. विनिमय, अदलाबदली—नाकस्माच्छाण्डिलीमाता विक्रीणाति तिलैस्तिलान्—पंच० २।६५।

क्रीड् (भ्वा० पर०—क्रीडति, क्रीडित) 1. खेलना, मनोरंजन करना—वानराः क्रीडितुमारब्धाः—पंच० १, एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः—मृच्छ० १०।५९ 2. जूआ खेलना, पासों से खेलना—बहुविधं द्यूतं क्रीडतः—मृच्छ० २, नाक्षैः क्रीडेत्कदाचिद्धि—मनु० ४।७४, याज्ञ० ११।३८ 3. हँसी दिल्लगी करना, मजाक करना, खिल्ली उड़ाना—सद्वृत्तस्तनमण्डलस्तव कथं प्राणैर्मम क्रीडति—गीत० ३, क्रीडिष्यामि तावदेनया—विक्रम० ३, एवमाशाग्रहग्रस्तैः क्रीडन्ति धनिनोऽर्थिभिः—हि० २।१२३, पंच० १।१८७, मृच्छ० ३, अनु—(आ०) खेलना, किलोल करना, जी बहलाना—साध्वनुक्रीडमानानि पश्य वृन्दानि पक्षिणाम्—भट्टि० ८।१०, आ—, परि—, सम्—, (आ०) खेलना, कौतुक करना—संक्रीडन्ते मणिभिर्यत्र कन्याः—मेघ० ७०, परन्तु सम् पूर्वक क्रीड (पर०) 'कोलाहल करने' के अर्थ को प्रकट करता है—संक्रीडन्ति शकटानि—महा० 'गाड़ियां चूं-चूं करती हैं'।

क्रीडः [क्रीड्+घञ्] 1. किलोल, मनबहलाव, खेल, आमोद 2. हंसी दिल्लगी, मज़ाक।

क्रीडनम् [क्रीड्+ल्युट्] 1. खेलना, किलोल करना 2. खेलने की चीज़, खिलौना।

क्रीडनकः,-कम्, क्रीडनीयम्,-यकम् [क्रीडन+कन्, क्रीड+अनीयर्, क्रीडनीय+कन्] खेलने की चीज़, खिलौना।

क्रीडा [क्रीड्+अ+टाप्] 1. किलोल, जी बहलाना, खेलना, आमोद—तोयक्रीडानिरतयुवतिस्नानतिक्तैर्मरुद्भिः—मेघ० ३३।६१ 2. हंसी, दिल्लगी। सम०—**गृहम्** आमोद भवन, —**शैलः** आमोद—निवास का काम देने वाला एक बनावटी पहाड़, आमोदगिरि,—क्रीडाशैलः कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीयः—मेघ० ७७, —**नारी** वेश्या,—**कोपः** झूठमूठ का क्रोध—अमरु १२,—**मयूरः** मनोरंजन के लिए पाला गया मोर—रघु० १६।१४,—**रत्नम्** कामकेलि, मैथुन।

क्रीत (वि०) [क्री+क्त] मोल लिया हुआ—दे० क्री०, —**तः** हिन्दुधर्मशास्त्र में प्रतिपादित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, अपने नैसर्गिक माता पिता से मोल लिया हुआ पुत्र—क्रीतश्च ताभ्यां विक्रीतः—याज्ञ० २।१३१, मनु० १७४। सम०—**अनुशयः** किसी वस्तु को मोल लेकर पछताना, क्रिये का निराकरण करना, खरीदी हुई वस्तु को वापिस करना (कुछ बातों में धर्मशास्त्रों से अनुमोदित)।

क्रुञ्च् (पुं०) **क्रुञ्चः** [क्रुञ्च्+क्विन् अच् वा] जलकुक्कुटी, बगला।

क्रुध् (दिवा० पर०—क्रुध्यति, क्रुद्ध) गुस्से होना (क्रोध के पात्र में सम्प्र०)हरये क्रुध्यति, कभी कभी 'उपरि' 'प्रति' आदि शब्दों के भी साथ—ममोपरि स क्रुद्धः, न मां प्रति क्रुद्धो गुरुः, प्रति—, बदल में कुपित होना—क्रुध्यन्तं न प्रतिक्रुध्येत्—मनु० ६।४८, सम्—, कुपित होना—संक्रुध्यसि मृषा किं त्वं दिदृक्षुं मां मृगेक्षणे—भट्टि० ८।७६।

क्रुध् (स्त्री०) [क्रुध्+क्विप्] क्रोध, कोप।

क्रुश् (भ्वा० पर०—क्रोशति, क्रुष्ट) 1. चिल्लाना, रोना, विलाप करना, शोक मनाना—क्रोशन्त्यस्तं कपिस्त्रियः—भट्टि० ६।१२४ 2. चीखना, किलकिलाना, कूका देना, चीत्कार करना, पुकारना—अतीव चुक्रोश जीवनाशं ननाश च—भट्टि० १४।३१, अनु—, दया करना, करुणा करना, अभि—, विलाप करना, आ—, 1. चिल्लाना, जोर से पुकारना—अये गौरीनाथ त्रिपुरहर शम्भो त्रिनयन प्रसीदेत्याक्रोशन्—भर्तृ० ३।१२३ 2. खरीखोटी सुनाना, गालियाँ देना—शतं ब्राह्मणमाक्रुश्य क्षत्रियो दण्डमर्हति—मनु० ८।२६७, भट्टि० ५।३९, परि—, विलाप करना, प्रत्या—, गाली के उत्तर में गाली देना, वि—, 1. चीखना, चिल्लाना—आक्रोश विक्रोश लपाधिचण्डम्—मृच्छ० १।४१, भट्टि० १४।४२, १६।३२ 2. उच्चारण करना (कर्म० के साथ) 3. पुकारना (कर्म० के साथ) 4. गूंजना, व्या—विलाप करना, शोक मनाना।

क्रुष्ट (वि०) [क्रुश्+क्त] 1. चिल्लाया हुआ 2. पुकारा हुआ,—**ष्टम्** चिल्लाना, चीखना, रोना।

क्रूर(वि०)[कृत्+रक् धातोः क्रू] 1. निर्दय, निष्ठुर, कठोरहृदय, निष्करुण—तस्याभिषेकसम्भारं कल्पितं क्रूरनिश्चया—रघु० १२।४, मेघ० १०५, मनु० १०।९ 2. कठोर, कड़ा 3. दारुण, भयंकर, भीषण 4. नाशकारी, अनिष्टकर 5. घायल, चोट लगा हुआ 6. खूनी 7. कच्चा 8. मजबूत 9. गरम, तेज, अरुचिकर—मनु० २।३३,—**रः** बाज, बगला,—**रम्** 1. घाव 2. हत्या, क्रूरता 3. भीषण कृत्य। सम०—**आकृति** (वि०) डरावनी सूरत वाला (तिः) रावण का विशेषण,—**आचार**(वि०)क्रूर और बर्बर आचरण करने वाला,—**आशय**(वि०) 1. भयानक जीवजन्तुओं से भरा हुआ (जैसे कि कोई नदी) 2. क्रूर स्वभाव का,—**कर्मन्** (नपुं०) 1. रक्तरंजित करतूत 2. कठोर श्रम,—**कृत्** (वि०) भीषण, क्रूर, निर्मम,—**कोष्ठ** (वि०) कड़े कोठे वाला जिस पर मृदु विरेचन का असर न हो,—**गन्धः** गन्धक,—**दृश्** (वि०) 1. बुरी दृष्टि वाला, कुदृष्टि डालने वाला 2. खल, दुष्ट,—**राविन्** (पुं०) पहाड़ी कौवा,—**लोचनः** शनिग्रह का विशेषण।

क्रेतृ (पुं)[क्री+तृच्] क्रेता, खरीददार,—याज्ञ० २।१६८।

क्रौञ्चः [क्रुञ्च्+अच्, बा० गुणः] एक पहाड़ का नाम, दे० 'क्रौञ्च'।

क्रोडः [क्रुड्+घञ्] 1. सूअर 2. वृक्ष की खोडर, गढ़ा —हा हा हन्त तथापि जन्मविटपिक्रोडे मनो धावति—उद्भट 3. सीना, वक्षः स्थल, छाती, क्रोडीकृ छाती से लगाना —भर्तृ० २।३५ 4. किसी वस्तु का मध्यभाग—विक्रमांक० ११।७५—दे० 'क्रोड' (नपुं०) 5. शनिग्रह का विशेषण,—**डम्**—**डा** 1. छाती, सीना, कन्धों के बीच का भाग 2. किसी वस्तु का मध्यवर्ती भाग, गढ़ा, कोटर। सम०—**अङ्कः**,—**अङ्घ्रिः**,—**पादः** कछुवा,—**पत्रम्** 1. प्रान्तवर्ती लेख 2. पत्र का पश्चलेख 3. सम्पूरक 4. वसीयतनामे का परवर्ती उत्तराधिकार-पत्र।

क्रोडीकरणम् [क्रोड+च्वि+कृ+ल्युट्] आलिंगन करना, छाती से लगाना।

क्रोडीमुखः [क्रोडयाः मुखमिव मुखमस्याः—ब० स०] गेंडा।

क्रोधः [क्रुध्+घञ्] 1. कोप, गुस्सा—कामात्क्रोधोऽभिजायते—भग० २।६२, इसी प्रकार क्रोधान्धः, क्रोधानलः 2. (सा० शा० में) क्रोध एक प्रकार की भावना है जिससे रौद्ररस का उदय होता है। सम०—**उज्झित** (वि०) क्रोध से मुक्त, शान्त, स्वस्थ,—**मूर्छित** (वि०) क्रोध से अभिभूत या क्रोधोन्मत्त।

क्रोधन (वि०) [क्रुध्+ल्युट्] गुस्से से भरा हुआ, क्रोधाविष्ट, क्रुद्ध, चिड़चिड़ा—यद्रामेण कृतं तदेव कुरुते द्रौणायनिः क्रोधनः—वेणी० ३।३१,—**नम्** क्रुद्ध होना, कोप।

क्रोधालु (वि०) [क्रुध्+आलुच्] क्रोधाविष्ट, चिड़चिड़ा, गुस्सैल।

क्रोशः [क्रुश्+घञ्] 1. चिल्लाना, चीख, चीत्कार, कूका देना, कोलाहल 2. चौथाई योजन, एक कोस—क्रोशार्धं प्रकृतिपुरःसरेण गत्वा—रघु० १३।७९, समुद्रात्पुरी क्रोशो—या—क्रोशयोः। सम०—**तालः**,—**ध्वनिः** एक बड़ा ढोल।

क्रोशन (वि०) [क्रुश्+ल्युट्] चिल्लाने वाला,—**नम्** चीख चिल्लाहट।

क्रोष्टु (पुं०) (स्त्री०—**ष्ट्री**) [क्रुश्+तुन्] गीदड़ (इस शब्द की रूप रचना में यह शब्द सर्वनाम स्थान में अनिवार्यतः क्रोष्टृ बन जाता है, तथा अन्यत्र क्रोष्टु, एवं 'स्वरादि' में द्वि० तथा षष्ठी ब० व० को छोड़कर सर्वत्र विकल्प से)।

क्रौञ्चः [क्रुञ्च्+अण्] जलकुक्कुटी, कुररी, बगला—मनोहरक्रौंचनिनादितानि सीमान्तराण्युत्सुकयन्ति चेतः—ऋतु० ४।८, मनु० १२।६४ 2. एक पर्वत का नाम (कहते हैं कि यह पहाड़ हिमालय का पोता है, तथा कार्तिकेय एवं परशुराम ने इसे बींध दिया है)—हंसद्वारं भृगुपतियशोवर्त्म यत्क्रौंचरन्ध्रम् मेघ० ५७। सम०—**अदनम्** कमलडंडी के रेशे,—**अरातिः**,—**अरिः**,—**रिपुः** 1. कार्तिकेय का विशेषण 2. परशुराम का विशेषण —**दारणः**,—**सूदनः** 1. कार्तिकेय और 2. परशुराम के विशेषण।

क्रौर्यम् [क्रूर+ष्यञ्] क्रूरता, कठोरहृदयता।

क्लन्द् (भ्वा० पर०—क्लन्दति, क्लन्दित) 1. पुकारना, चिल्लाना 2. रोना, विलाप करना, (भ्वा० आ० —क्लन्दते या क्लदते) घबड़ा जाना।

क्लम् (भ्वा०—दिवा०, पर०—क्लामति, क्लाम्यति, क्लान्त) थक जाना, थक कर चूर होना, अवसन्न होना—न चक्लाम न विव्यथे—भट्टि० ५।१०२, १४।१०१, वि—, थक जाना।

क्लमः, क्लमथः [क्लम्+घञ्, अथच् वा] थकावट, क्लान्ति अवसाद—विनोदितदिनक्लमाः कृतरुचश्च जाम्बूनदैः —शि० ४।६६, मनु० ७।१५१, श० ३।२१।

क्लान्त (वि०) [क्लम्+क्त] 1. थका हुआ, थक कर चूर हुआ,—तमातपक्लान्तम्—रघु० २।१३, मेघ० १८, ३६, विक्रम० २।२२ 2. मुर्झाया हुआ, म्लान—क्लान्तो मन्मथलेख एष नलिनीपत्रे नखैरर्पितः—श० ३।२६, रघु० १०।४८ 3. दुबला-पतला।

क्लान्ति (स्त्री०) [क्लम्+क्तिन्] थकावट। सम०—**छिद्** (वि०) थकावट दूर करने वाला, बलदायक।

क्लिद् (दिवा० पर०—क्लिद्यति, क्लिन्न) गीला होना, आर्द्र होना, तर होना—प्रेर० तर करना, गीला करना —न चैनं क्लेदयन्त्यापः—भग० २।२३, भट्टि० १८। ११।

क्लिन्न (वि०) [क्लिद्+क्त] गीला, तर। सम०—**अक्ष** (वि०) चौंधियाई आँखों वाला।

क्लिश् i (दिवा० आ०—(कुछ के मत में) पर०, क्लिश्यते क्लिष्ट, क्लिशित) 1. दुःखी होना, पीड़ित होना, कष्ट उठाना—अप्युपदेशग्रहणे नातिक्लिशते वः शिष्याः —मालवि० १, त्रयः परार्थे क्लिश्यन्ति साक्षिणः प्रतिभूः कुलम्—मनु० ८।१६९ 2. दुःख देना, सताना, ii (क्र्या० पर०—क्लिश्नाति, क्लिष्ट, क्लिशित) दुःख देना, पीड़ित करना, सताना, कष्ट देना,— क्लिश्नाति लब्धपरिपालनवृत्तिरेव—श० ५।६, एवमाराध्यमानोऽपि क्लिश्नाति भुवनत्रयम्—कु० २।४०, रघु० ११।५८।

क्लिशित, क्लिष्ट (वि०) [क्लिश्+क्त] 1. दुःखी, पीड़ित, संकट ग्रस्त 2. कष्टग्रस्त, सताया हुआ 3. मुर्झाया हुआ 4. असंगत, विरोधी—उदा० माता मे वन्ध्या 5. परिष्कृत, कृत्रिम (रचना आदि) 6. लज्जित।

क्लिष्टिः (स्त्री०) [क्लिश्+क्तिन्] 1. कष्ट वेदना, दुःख, पीडा 2. सेवा।

क्लीब (ब) (वि०) [क्लीब् (व्)+क] 1. हिजड़ा नपुंसक, बधिया किया हुआ—मनु० ३।१५०, ४।२०५, याज्ञ० १।२२३ 2. पुरुषार्थहीन, भीरु, दुर्बल, दुर्बलमना

—रघु० ८।८४, क्लीवान् पालयिता—मृच्छ० ९।५ 3. कायर 4. नीच अधम 5. सुस्त 6. नपुंसक लिंग का, —बः,—बम् (—वः,—वम्) 1. नामर्द, हिजड़ा,—न मूत्रं फेनिलं यस्य विष्ठा चाप्सु निमज्जति, मेढ्रं चोन्माद-शुक्राभ्यां हीनं क्लीवः स उच्यते—दायभाग में उद्धृत कात्यायन 2. नपुंसक लिंग।

क्लेदः [क्लिद्+घञ्] गीलापन, आर्द्रता, तरी, नमी —श० १।२९, रघु० ७।२१ 2. बहने वाला, घाव से निकलने वाला मवाद 3. दुःख, कष्ट—रघु० १५।३२, (=उपद्रव, मल्लि०)।

क्लेशः [क्लिश्+घञ्] पीड़ा, वेदना, कष्ट, दुःख तकलीफ—किमात्मा क्लेशस्य पदमुपनीतः—श० १, क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते—कु० ५।८६, भग० १२।५ 2. गुस्सा, क्रोध 3. सांसारिक कामकाज। सम०—क्षम (वि०) कष्ट सहने में समर्थ।

क्लैब्यं (व्यम्) [क्लीब (व)+ष्यञ्] 1. नामर्दी (शा०) —वरं क्लैब्यं पुंसां न च परकलत्राभिगमनम्—पंच० १ 2. पुरुषार्थहीनता, भीरुता, कायरता—क्लैब्यं मास्म गमः पार्थ—भग० २।३ 3. अनुपयुक्तता, नामर्दी, शक्तिहीनता—रघु० १२।८६।

क्लोमम् [क्लु+मनिन्] फेफड़े।

क्व (अव्य०) [किम्+अत्, कु आदेशः] 1. किधर, कहाँ —क्व तेऽन्योन्यं यत्नाः क्व च नु गहनाः कौतुकरसाः —उत्तर० ६।३३, क्व—क्व (जब किसी समान वाक्य खंड में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ है—'भारी अंतर' 'असंगति'—क्व रुजा हृदयप्रमाथिनी क्व च ते विश्वसनीयमायुधम्—मालवि० ३।२, क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः—रघु० १।२, कि० १।६, श० २।१८ 2. कभी कभी 'क्व' का प्रयोग 'किम्' शब्द के अधि० का होता है—क्व प्रदेशे—अर्थात् कस्मिन् प्रदेशे (क)—अपि 1. कहीं, किसी जगह 2. कभीकभी (ख),—चित् 1. कुछ स्थानों पर—प्रस्निग्धाः क्वचिदिङ्गुदीफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः—श० १।१४, ऋतु० १।२, रघु० १।४१ 2. कुछ बातों में—क्वचिद् गोचरः क्वचिन्न गोचरोऽर्थः, क्वचित्—क्वचित् (क) एक जगह—दूसरी जगह, यहाँ-वहाँ—क्वचिद्वीणावाद्यं क्वचिदपि च हा हेति रुदितम्—भर्तृ० ३।१२५ १४, (ख) कभी-कभी (समय सूचक) क्वचित्यथा संचरते सुराणाम्, क्वचित् घनानां पतितां क्वचिच्च—रघु० १३।१९।

क्वण् (भ्वा० पर०—क्वणति, क्वणित) 1. अस्पष्ट शब्द करना, झनझन शब्द, टनटन शब्द—इति घोषयतीव डिण्डिमः करिणो हस्तिपकाहतः क्वणन्—हि० २।८६, क्वणन्मणिनुपुरौ—अमरु २८, ऋतु० ३।२६, मेघ० ३६ 2. भिनभिनाना, (भौरों का) गुंजन, अस्पष्ट गायन —कु० १।५४, उत्तर० ३।२४, भट्टि० ६।८४।

क्वणः, क्वणनम्, क्वणितं, क्वाणः [क्वण्+अप्, ल्युट् क्तं, घञ् वा] 1. सामान्य शब्द 2. किसी भी वाद्ययंत्र की ध्वनि।

क्वत्य (वि०) [क्व+त्यप्] किस स्थान से संबंध रखने वाला, कहाँ पर होने वाला।

क्वथ् (भ्वा० पर०—क्वथति, क्वथित) 1. उबालना, काढ़ा बनाना 2. पचाना।

क्वथः [क्वाथ्+अच्, घञ् वा] काढ़ा, लगातार मंदी आँच में तैयार किया गया घोल।

क्वाचित्क (वि०) [स्त्री०—त्की] अकस्मात् घटित, विरल, असाधारण,—इति क्वाचित्कः पाठः।

क्षः [क्षि+ड] 1. नाश 2. अन्तर्धान, हानि 3. बिजली 4. खेत 5. किसान 6. विष्णु का नरसिंहावतार 7. राक्षस।

क्षण् (न्) (तना० उभ०—क्षणोति, क्षणुते, क्षुत्त) 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना—इमां हृदि व्यायतपातमक्षणोत्—कु० ५।५४ 2. तोड़ना, टुकड़े २ करना—(धनुः) त्वं किलानमित पूर्वं मक्षणोः—रघु० ११।७२, उप—, परि-वि—उसी अर्थ में प्रयोग जो 'क्षण्' का मूल अर्थ है।

क्षणः,—णम् [क्षण्+अच्] 1. लमहा, निमेष, एक सैकंड से ४।५ भाग के बराबर समय की माप,—क्षणमात्रमृषिस्तस्थौ सुप्तमीन इव ह्रदः—रघु० १।७३, २।६०, मेघ० २६,—क्षणमवतिष्ठस्व—कुछ देर ठहरो 2. अवकाश—अहमपि लब्धक्षणः स्वगेहं गच्छामि—मालवि० १, गृहीतः क्षणः—श० २, मेरा अवकाश आपके सुपुर्द है अर्थात् आपका कार्य कर देने का मैं आपको वचन देता हूं 3. उपयुक्त क्षण या अवसर—रहो नास्ति क्षणो नास्ति नास्ति प्रार्थयिता नरः—पंच० १।१३८ मेघ० ६२, अधिगतक्षणः—दश० १४७ 4. उत्सव, हर्ष, खुशी 5. आश्रय, दासता 6. केन्द्र, मध्यभाग। सम०—अन्तरे (अव्य०) दूसरे क्षण, कुछ देर के पश्चात्,—क्षेपः क्षणिक विलंब,—दः ज्योतिषी (—दम्) पानी (—दा) 1. रात—क्षणादथैष क्षणदापतिप्रभः—नै० १।६७, रघु० ८।७४, १६।४५, शि० ३।५३ 2. हल्दी °करः—पतिः चाँद, शि० ९।७०, °चरः रात में घूमने वाला, राक्षस, —सानुप्लवः प्रभुरपि क्षणदाचराणाम्—रघु० १३।७५, °आन्ध्यम् रात्रि में अन्धापन, रतौंधी,—द्युतिः (स्त्री०) —प्रकाशा,—प्रभा बिजली,—निश्वासः शिशुक,—भङ्गुर (वि०) क्षणस्थायी, चंचल, नश्वर—हि० ४।१३० - मात्रम् (अव्य०) क्षणभर के लिए,—रामिन् (पुं०) कबूतर—विध्वंसिन् (वि०) क्षणभर में नष्ट होने वाला (पुं०) नास्तिक दार्शनिकों का सम्प्रदाय जो यह मानता है कि प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ प्रतिक्षण नष्ट होकर नया बनता रहता है।

क्षणतुः [क्षण्+अतु] घाव, फोड़ा।

क्षणनम्] क्षण्+ल्युट्] क्षति पहुँचाना, मार डालना, घायल करना।

क्षणिक (वि०) [क्षण+ठन्] क्षणस्थायी, अचिरस्थायी —स्वप्नेषु क्षणिकसमागमोत्सवैश्च—रघु० ८।९२, एकस्य क्षणिका प्रीतिः—हि० १।६६,—**का** बिजली।

क्षणिन् (वि०) (स्त्री०—**नी**) [क्षण+इनि] 1. अवकाश रखने वाला 2. क्षणस्थायी,—**नी** बिजली।

क्षत (वि०) [क्षण्+क्त] घायल, चोट लगा हुआ, क्षतिग्रस्त, काटा हुआ, फाड़ा हुआ, चीरा हुआ, तोड़ा हुआ, —दे० क्षण्—रक्तप्रसाधितभुवः क्षतविग्रहाश्च—वेणी० १।७, रघु० १।२८, २।५६, ३।५३,—**तम्** 1. खरोंच 2. घाव, चोट, क्षति—क्षते क्षारमिवासह्यं जातं तस्यैव दर्शनम्—उत्तर० ४।७, क्षारं क्षते प्रक्षिपन्—मृच्छ० ५।१८ 3. भय, विनाश, खतरा—क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः—रघु० २।५३। सम०—**अरि** (वि०) विजयी,—**उदरम्** पेचिश,—**कासः** आघात से उत्पन्न खांसी,—**जम्** 1. रुधिर—स छिन्नमूलः क्षतजेन रेणुः—रघु० ७।४३, वेणी० २।२७ 2. पीप, मवाद,—**योनिः** (स्त्री०) भ्रष्ट स्त्री, वह स्त्री जिसका कौमार्य भंग हो चुका हो,—**विक्षत** (वि०) विक्षतांग, जिसका शरीर बहुत जगह से कट गया हो, तथा घावों से भरा हो,—**वृत्तिः** (स्त्री०) दरिद्रता, जीविका के साधनों से वंचित,—**व्रतः** वह विद्यार्थी जिसने अपनी धार्मिक प्रतिज्ञा या व्रत भंग कर दिया हो।

क्षतिः (स्त्री०) [क्षण्+क्तिन्] 1. चोट, घाव 2. नाश, काट, फाड़—विस्रब्धं क्रियतां वराहततिभिः मुस्ताक्षतिः पल्वले—श० २।६ 3. (आलं०) बर्बादी, हानि, नुकसान—सुखं संजायते तेभ्यः सर्वेभ्योऽपीति का क्षतिः—सा० द० १७ 4. ह्रास, क्षय, न्यूनता—प्रतापक्षतिशीतलाः—कु० २।२४, हि० १।११४।

क्षत्तृ (पुं०) [क्षद्+तृच्] 1. जो काटने और रूपरेखा खोदने का काम करता है—(मूर्तिकार या संगतराश) 2. परिचारक, द्वारपाल 3. कोचवान, सारथि 4. शूद्रपिता तथा क्षत्रिय माता से उत्पन्न संतान—तु० मनु० १०।९ 5. दासी का पुत्र (उदा० विदुर) 6. ब्रह्मा, 7. मछली।

क्षत्रः, त्रम् [क्षण्+क्विप्=क्षत्, ततः त्रायते—त्रै+क] 1. अधिराज्य, शक्ति, प्रभुता, सामर्थ्य 2. क्षत्रिय जाति का पुरुष—क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः—रघु० २।५३, ११।६९, ७१—असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा—श० १।२१, मनु० ९।३२२। सम०—**अन्तकः** परशुराम का विशेषण,—**धर्मः** 1. बहादुरी, सैनिक शूरवीरता 2. क्षत्रिय के कर्तव्य,—**पः** राज्यपाल, उपशासक,—**बन्धुः** 1. क्षत्रिय जाति का पुरुष—मनु० २।३८ 2. क्षत्रिय मात्र, अपक्षत्रिय, घृणित या निकम्मा क्षत्रिय, तु० ब्रह्मबंधु।

क्षत्रियः [क्षत्रे राष्ट्रे साधु तस्यापत्यं जातौ वा घः तारा०] दूसरे वर्ण या सैनिक जाति का पुरुष—ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णाः द्विजातयः—मनु० १०।४। सम० —**हणः** परशुराम का विशेषण।

क्षत्रियका, क्षत्रिया, क्षत्रियिका [क्षत्रिया+कन्+टाप्, ह्रस्वः—क्षत्रिय+टाप्—क्षत्रिया+कन्+टाप् इत्वम् वा] क्षत्रिय जाति की स्त्री।

क्षत्रियाणी [क्षत्रिय+ङीष्, आनुक्] 1. क्षत्रिय जाति की स्त्री 2. क्षत्रिय की पत्नी।

क्षत्रियी [क्षत्रिय+ङीष्] क्षत्रिय की पत्नी।

क्षंतृ (वि०) (स्त्री०—**त्री**) [क्षम्+तृच्] प्रशान्त, सहिष्णु, विनम्र।

क्षप् (भ्वा०—क्षपति—ते, क्षपित) उपवास करना, संयमी होना—मनु० ५।६९, (प्रेर० या चुरा० उभ०—क्षपयति—ते, क्षपित) 1. फेंकना, भेजना, डालना 2. चूक जाना।

क्षपणः [क्षप्+ल्युट्] बौद्धभिक्षु,—**णम्** 1. अपवित्रता, अशौच 2. नाश करना, दबाना, निकाल देना।

क्षपणकः [क्षपण+कन्] बौद्ध या जैनसाधु—नग्नक्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति—चाण० ११०, कथं प्रथममेव क्षपणकः—मुद्रा० ४।

क्षपणी [क्षप्+ल्युट्+ङीप्] 1. चप्पू 2. जाल।

क्षपण्युः [क्षप्+अन्यु, णत्वम्] अपराध।

क्षपा [क्षप्+अच्+टाप्] 1. रात—विगमयत्युन्निद्र एव क्षपाः—श० ६।४, रघु० २।२०, मेघ० ११० 2. हल्दी। सम०—**अटः** 1. रात में घूमने वाला 2. राक्षस, पिशाच—ततः क्षपाटैः पृथुपिंगलाक्षैः—भट्टि० २।३०, —**करः**,—**नाथः** 1. चन्द्रमा 2. कपूर—**घनः** काला बादल,—**चरः** राक्षस, पिशाच।

क्षम् (भ्वा०, आ०—क्षमते, क्षाम्यति, क्षान्त या क्षमित) 1. अनुमति देना, इजाज़त देना, चलने देना—अतो नृपाश्चक्षमिरे समेताः स्त्रीरत्नलाभं न तदात्मजस्य —रघु० ७।३४, १२।४६ 2. क्षमा करना, माफ कर देना (अपराध आदि)—क्षान्तं न क्षमया भर्तृ० ३।१३, क्षमस्व परमेश्वर, निघ्नस्य मे भर्तृनिदेशरौक्ष्यं देवि क्षमस्वेति बभूव नम्रः—रघु० १४।५८ 3. धैर्यवान् होना, चुप होना, प्रतीक्षा करना—रघु० १५।४५ 4. सहन करना, गम खा जाना, भुगतना—अपि क्षमन्तेऽस्मदुपजापं प्रकृतयः—मुद्रा० २, नाज्ञाभङ्गकरान् राजा क्षमेत स्वसुतानपि—हि० २।१०७ 5. विरोध करना, रोकना 6. सक्षम या योग्य होना—ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः—शि० १।३८, ९।६५।

क्षम (वि०) [क्षम्+अच्] 1. धैर्यवान् 2. सहनशील, विनम्र 3. पर्याप्त सक्षम, योग्य (समास में या संबं०,

अधि० अथवा तुमुन्नंत के साथ)—मलिनो हि यथादर्शो रूपालोकस्य न क्षमः—याज्ञ० ३।४१, सा हि रक्षण-विधौ तयोः क्षमा—रघु० ११।५, हृदयं न त्ववलंबितुं क्षमाः—रघु० ८।५९—गमनक्षम, निर्मूलनक्षम आदि 4. समुपयुक्त, योग्य, उचित, उपयुक्त—तन्नो यदुक्त-मशिवं न हि तत्क्षमं ते—उत्तर० १।१४, आत्मकर्म क्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः—रघु० १।१३, श० ५।२६ 5. योग्य, समर्थ, अनुरूप—उपभोगक्षमे देशे —विक्रम० २, तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति—श० १।१८ 6. सहने योग्य, सह्य 7. अनुकूल, मित्रवत् ।

क्षमा [क्षम्+अङ+टाप्] 1. धैर्य, सहिष्णुता, माफी —क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणम्—हि० २, रघु० १।२२, १८।९, तेजः क्षमा वा नैकान्तं कालज्ञस्य महीपतेः—शि० २।८३ 2. पृथ्वी 3. दुर्गा का विशेषण । सम०—जः मंगलग्रह,—भुज्—भुजः राजा ।

क्षमितृ (वि०) (स्त्री०—त्री), क्षमिन् (वि०) (स्त्री० —नी) [क्षम्+तृच्, क्षम्+घिनुण्, स्त्रियाँ ङीप् च,] धैर्यवान्, सहनशील, क्षमा करने के स्वभाव वाला—कामं क्षाम्यतु यः क्षमी—शि० २।४३, याज्ञ० २।२००, १।१३३ ।

क्षयः [क्षि+अच्] 1. घर, निवास, आवास—यातनाश्च यमक्षये—मनु० ६।६१, निर्जगाम पुनस्तस्मात्क्षयान्ना-रायणस्य ह—महा०, 2. हानि, ह्रास, छीजन, घटाव, पतन, न्यूनता—आयुःक्षयः—रघु० ३।६९, धनक्षये वर्धति जाठराग्निः—पंच० २।१७८ इसी प्रकार चन्द्रक्षय, क्षयपक्ष आदि 3. विनाश, अंत, समाप्ति—निशाक्षये याति ह्रियेव पाण्डुताम्—ऋतु० १।९, अमरु ६० 4 आर्थिक क्षति—मनु० ८।४०१ 5. (मूल्य आदि का) गिरना 6. हटाना 7. प्रलय 8. तपेदिक 9. रोग 10. निर्गुणता, (बीजगणित में) ऋण । सम०—कर (क्षयंकर भी) (वि०) नाश या तबाही करने वाला, बर्बादी करने वाला,—कालः 1. प्रलयकाल 2. अवनति का समय,—कासः तपेदिक की खांसी,—पक्षः कृष्णपक्ष, अँधेरापक्ष,—युक्तिः (स्त्री०),—योगः नाश करने का अवसर,—रोगः तपेदिक, राजयक्ष्मा,—वायुः प्रलयकाल की हवा,—संपद् (स्त्री०) सर्वनाश, बर्बादी ।

क्षयथुः [क्षि+अथुच्] तपेदिक के रोगी की खांसी, तपेदिक ।

क्षयिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [क्षय+इनि] 1. ह्रास-मान, मुर्झाने वाला—आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण —भर्तृ० २।६०, ह्रासोन्मुख, क्षीयमाण—न चाभूत्ताविव क्षयी—रघु० १७।७१, मनु० ९।३१४ 2. क्षयरोगग्रस्त 3. नश्वर, भंगुर—(पुं०) चन्द्रमा ।

क्षयिष्णु (वि०) [क्षि+इष्णुच्] 1. बरबाद करने वाला, नाश कारी 2. नश्वर, भंगुर ।

क्षर् (भ्वा० पर०—क्षरति, क्षरित) (इसका प्रयोग अकर्मक तथा सकर्मक दोनों प्रकार से होता है) 1. बहना, सरकना 2. भेज देना, नदी की भाँति बहना, उडेलना, निकालना—रघु० १३।७४, भट्टि० ९।८ 3. बूंद-बूंद करके गिरना, टपकना, रिसना 4. नष्ट होना, घटना, मिटना 5. व्यर्थ होना, प्रभाव न होना—यशोऽनृतेन क्षरति तपः क्षरति विस्मयात्—मनु० ४।२३७ 6. खिसकना, वञ्चित होना (अपा० के साथ) (प्रेर० —क्षारयति) आरोप लगाना, बदनाम करना (प्रायः 'आ' उपसर्ग के साथ), वि—, पिघलना, घुल जाना ।

क्षर (वि०) [क्षर्+अच्] 1. पिघलने वाला 2. जंगम 3. नश्वर—क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते —भग० १५।१६,—रः बादल,—रम् 1. पानी 2. शरीर ।

क्षरणम् [क्षर्+ल्युट्] 1. बहने, टपकने, बूंद-बूंद गिरने और रिसने की क्रिया 2. पसीना आ जाना—अङ्गु-लिक्षरणसन्नवर्तिकः—रघु० १९।१८ ।

क्षरिन् (पुं०) [क्षर+इनि] बरसात का मौसम ।

क्षल् (चुरा० उभ०—क्षालयति—ते, क्षालित) 1. धोना, धो देना, पवित्र करना, साफ करना—ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः —शि० १।३८, हि० ४।६० 2. मिटा देना—(अयशः) तेषामनुग्रहेणाद्य राजन् प्रक्षालयात्मनः—महा०,, वि—, धोकर साफ करना—रघु०— ५।४४ ।

क्षवः क्षवथुः [क्षु+अप्, अथुच् वा] 1. छींक 2. खांसी ।

क्षात्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [क्षत्र+अण्] सैनिक जाति से संबंध रखने वाला—क्षात्रो धर्मः श्रित इव तनुं ब्रह्मघोषस्य गुप्त्यै—उत्तर० ६।९, रघु० १।१३, —त्रम् 1. क्षत्रिय जाति 2. क्षत्रिय के गुण—गीता इस प्रकार बतलाती है 'शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्, दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभाव-जम्—भग० १८।४३ ।

क्षान्त (भू० क० कृ०) [क्षम्+क्त] 1. धैर्यवान्, सहन-शील, सहिष्णु 2. क्षमा किया गया,—ता पृथ्वी ।

क्षान्तिः (स्त्री०) [क्षम्+क्तिन्] 1. धैर्य, सहनशीलता, क्षमा—क्षांतिश्चेद्वचनेन किम्—भर्तृ० २।२१, भग० १८।४२ ।

क्षान्तु (वि०) [क्षम्+तुन्, वृद्धि] धैर्यवान्, सहनशील, —तुः पिता ।

क्षाम (वि०) [क्षै+क्त] 1. दग्ध, झुलसा हुआ 2. क्षीण, पतला, परिक्षीण, कृश, दुबला-पतला क्षामक्षाम कपोलमाननम्—श० ३।१०, मध्ये क्षामा—मेघ० ८२, क्षामच्छायं भवनमधुना मद्वियोगेन नूनम्—८०, ८९ 3. क्षुद्र, तुच्छ, अल्प 4. दुर्बल, निःशक्त ।

क्षार (वि०) [क्षर्+ण वा०] संक्षरणशील, क्षारक या

दाहक, तिक्त, चरपरा, कटु, खारी,—रः 1. रस, अर्क 2. शीरा, राब 3. कोई क्षारीय या खट्टा पदार्थ—क्षते क्षारमिवासह्यं जातं तस्यैव दर्शनम्—उत्तर० ४।७, क्षारं क्षते प्रक्षिपन्—मृच्छ० ५।१८, (क्षारं क्षते क्षिप्—एक लोकोक्ति बन गया है—इसका अर्थ है 'पीडा को जो पहले से ही असह्य है और बढ़ा देना' 'बुरे को और अधिक बुरा कर देना' 'जले पर नमक छिड़कना' 4. शीशा 5. बदमाश, ठग,—रम् 1. काला नमक 2. पानी। सम०—**अच्छम्** समुद्री नमक, —**अञ्जनम्** सज्जी का लेप,—**अम्बु** खारी रस या खारा पानी,—**उदः**,—**उदकः**,—**उदधिः**,—**समुद्रः** खारा समुद्र,—**त्रयं**,—**त्रितयम्**, सज्जी, शोरा, सुहागा,—**नदी** नरक में खारे पानी की नदी,—**भूमिः** (स्त्री०), —**मृत्तिका** रिहाली भूमि—किमाश्चर्यं क्षारभूमौ प्राणदा यमदूतिका—उद्भट,—**मेलकः** खारा पदार्थ,—**रसः** खारा रस।

क्षारकः [क्षार+कन्] 1. खार, रेह 2. रस, अर्क 3. पिंजरा, पक्षियों के रहने की टोकरी या जाल 4. धोबी 5. मंजरी, कलिका।

क्षारणम्,–णा [क्षर्+णिच्+ल्युट्, युच् वा] दोषारोपण, विशेषकर व्यभिचार का।

क्षारिका [क्षर्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] भूख।

क्षारित (वि०) 1. खारे पानी में से टपकाया हुआ 2. जिस पर (व्यभिचार) का मिथ्या अपवाद लगाया गया हो।

क्षालनम् [क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1. धोना, (पानी से धोकर) साफ करना 2. छिड़कना।

क्षालित (वि०) [क्षल+णिच्+क्त] 1. धोया हुआ, साफ़ किया हुआ, पवित्र किया हुआ 2. पोंछा हुआ, प्रतिदत्त (बदला चुकाया हुआ)—उत्तर० १।२८।

क्षि i (भ्वा० पर०—क्षयति, क्षित या क्षीण) 1. मुर्झाना, छीजना 2. राज्य करना, शासन करना, स्वामी होना।
ii (भ्वा०, स्वा०, क्र्या०—पर०—क्षयति, क्षिणोति, क्षिणाति) 1. नष्ट करना ग्रस्त कर लेना, बर्बाद करना, भ्रष्ट करना—न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति—रघु० २।४० 2. न्यून करना, बर्बाद करना—रघु० १९।४८ 3. मार डालना, क्षति पहुँचाना—(कर्मवाच्य—क्षीयते) 1. बर्बाद होना, घटना, नष्ट होना, न्यून होना (आलं० भी)—प्रतिक्षणमयं कायः क्षीयमाणो न लक्ष्यते—हि० ४।६६, प्रत्यासन्नविपत्तिमूढमनसां प्रायो मतिः क्षीयते—पंच० २।४, अमरु ९३, भर्तृ० २।१९, (प्रेर०—क्षययति या क्षपयति) 1. नष्ट करना, दूर हटा देना, समाप्त कर देना—ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः—श० ७।३५, रघु० ८।४७, मेघ० ५३ 2. समय बिताना, अप—, घटना, क्षीण होना, न्यून होना, परि—, प्र—, सम्—, 1. कम होना, क्षीण होना 2. कृश होना, दुबला-पतला होना।

क्षितिः (स्त्री०) [क्षि+क्तिन्] 1. पृथ्वी 2. निवास, आवास, घर 3. हानि, विनाश 4. प्रलय। सम०—**ईशः**, —**ईश्वरः** राजा—रघु० १।५, ३।३, ११।१,—**कणः** धूल,—**कम्पः** भूचाल,—**क्षित्** (पुं०) राजा, राजकुमार, —**जः** 1. वृक्ष 2. गंडोआ, केंचुआ 3. मंगल ग्रह 4. विष्णु के द्वारा मारा गया नरक नाम का राक्षस (—**जम्**) जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए प्रतीत होते हैं, (—**जा**) सीता का विशेषण,—**तलम्** पृथ्वी की सतह,—**देवः** ब्राह्मण,—**धरः** पहाड़ कु० ७।९४ —**नाथः**,—**पः**,—**पतिः**,—**पालः**,—**भुज्** (पुं०) —**रक्षिन्** (पुं०) राजा, प्रभु—रघु० २।५१, ५।७६, ६।८६, ७।३, ९।७५,—**पुत्रः** मंगल ग्रह,—**प्रतिष्ठ**(वि०) पृथ्वी पर रहने वाला,—**भृत्** (पुं०) 1. पहाड़—सर्वक्षितिभृतां नाथ—विक्रम० ४।२७ (यहाँ इस शब्द का अर्थ 'राजा' भी है) कि० ५।२०, ऋतु० ६।२६ 2. राजा,—**मण्डलम्** भूमंडल,—**रन्ध्रम्** खाई, खोडर, **रुह्** (पुं०) वृक्ष,—**वर्धनः** (पुं०) शव०, मुर्दा शरीर, —**वृत्तिः** (स्त्री०)पृथ्वी की गति, धैर्ययुक्तव्यवहार, **व्युदासः** गुफा, बिल।

क्षिद्रः [क्षिद्+रक्] 1. रोग 2. सूर्य 3. सींग।

क्षिप् (तुदा० उभ०– अभि, प्रति या अति पूर्व होने पर पर०—, दिवा० पर० क्षिपति—ते, क्षिप्यति, क्षिप्त) 1. फेंकना, डालना, भेजना, प्रेषित करना, विसर्जन, जाने देना (अधि० या कभी कभी संप्र० के साथ)—मरुद्भ्य इति तु द्वारि क्षिपेदप्स्वद्भ्य इत्यपि—मनु० ३।८८, शिलां वा क्षेप्स्यते मयि—महा०, का० १२, ९५, प्रतिपूर्वक भी, भर्तृ० ३।६७ 2. रखना, पहनना, लगाना—स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया—श० ७।२४, याज्ञ० १।२३०, भग० १६।१९ 3. आरोपित करना, लगाना (कलंक आदि)—भृत्ये दोषान् क्षिपति—हि० २ 4. फेंक देना, डाल देना, उतार देना, मुक्त होना—किं कूर्मस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष यत्—मुद्रा० २।१८ 5. दूर करना, नष्ट करना—मा० १।१७ 6. अस्वीकार करना, घृणा करना 7. अपमान करना, भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना, धमकाना—मनु० ८।३१२, २७०, श० ३।१०, **अधि**—, 1. निन्दा करना, कलंक लगाना 2. नाराज करना, अपवाद करना 3. आगे बढ़ जाना, **अव**—, 1. उतार फेंकना, छोड़ना, त्यागना 2. तिरस्कार करना, भर्त्सना करना, **आ**—, 1. फेंकना, डाल देना, प्रहार करना 2. सिकोड़ना 3. वापिस लेना, छीनना, खींचना, ले लेना—अग्रपादमाक्षिप्य—रघु० ७।७,

भर्तृ० १।४३, मेघ० ६८ 4. संकेत करना, इशारा करना 5. परिस्थितियों से अनुमान लगाना—जात्या व्यक्तिराक्षिप्यते 6. (तर्क के रूप में) आक्षेप करना 7. अवहेलना करना, उपेक्षा करना 8. तिरस्कार करना, उद्—, उछालना—ऋतु० १।२२, उप—, 1. डालना, फेंकना—वपुषि वधाय तत्र तव शस्त्रमुपक्षिपतः—मा० ५।३१ 2. संकेत करना, इशारा करना निष्कर्ष निकालना—छन्नं कार्यमुपक्षिपन्ति—मृच्छ० ३।३ 3. आरम्भ करना, शुरू करना 4. अपमान करना, डाँटना-फटकारना, नि—, 1. नीचे रखना, स्थापित करना, धर देना—याज्ञ० १।१०३, अमरु ८० 2. सौंपना, देख रेख में सुपुर्द करना,—मनु० ६। ३, ३।१७९, १८० 3. शिविर में रखना 4. फेंक देना अस्वीकार करना 5. प्रदान करना, परि—, 1. घेरना, गङ्गास्रोतःपरिक्षिप्तम्—कु० ६।३८ 2. आलिंगन करना, पर्या—, बांधना, (बालों को) एकत्र करना —(केशान्तं) पर्याक्षिपत् काचिदुदारबन्धम्—कु० ७।१४, प्र—, 1. रखना, डालना—नामेध्यं प्रक्षिपेदग्नौ —मनु० ४।५३, क्षारं क्षते प्रक्षिपन्—मृच्छ० ५।१८ 2. बीच में डालना, अन्तर्हित करना—इति सूत्रे कैश्चित्प्रक्षिप्तं—कैयट, वि—, 1. फेंकना, डालना 2. मन मोड़ना 3. ध्यान हटाना, सम्—, 1. संचय करना, ढेर लगाना—आतपात्ययसंक्षिप्तनीवारासु निषादिभिः —रघु० १।५२, भट्टि० ५।८६ 2. पीछे हटना, नष्ट करना 3. छोटा करना, कमी करना, संक्षिप्त करना संक्षिप्येत क्षण इव कथं दीर्घयामा त्रियामा—मेघ० १०८, मनु० ७।३४।

क्षेपणम् [क्षिप्+क्युन् बा०] 1. भेजना, फेंकना, डालना 2. झिड़कना, दुर्वचन कहना।

क्षिपणिः,—णी (स्त्री०) [क्षिप्+अनि, क्षिपणि+ङीप्] 1. चप्पू 2. जाल 3. हथियार,—णिः प्रहार।

क्षिपण्युः [क्षिप्+कन्युच्] 1. शरीर 2. वसंत ऋतु।

क्षिपा [क्षिप्+अङ+टाप्] 1. भेजना, फेंकना, डालना 2. रात्रि।

क्षिप्त (भू० क० कृ०) [क्षिप्+क्त] 1. फेंका हुआ, बिखेरा हुआ, उछाला हुआ, डाला हुआ 2. त्यागा हुआ 3. अवज्ञात, उपेक्षित, अनादृत 4. स्थापित 5. ध्यान हटाया हुआ, पागल (दे० क्षिप्),—प्तम् गोली लगने से बना घाव। सम०—कुक्कुरः पागल कुत्ता,—चित्त (वि०) उचाट मन, विमना,—देह (वि०) प्रसृतशरीर, लेटा हुआ।

क्षिप्तिः (स्त्री०) [क्षिप्+क्तिन्] 1. फेंकना, भेज देना 2. (पहेलियाँ आदि के) कूट अर्थ को प्रकट करना।

क्षिप्र (वि०) [क्षिप्+रक्] (म० अ०—क्षेपीयस्, उ० अ० क्षेपिष्ठ) सजीव, आशुगामी,—प्रम् (अव्य०) जल्दी, फुर्ती से, तुरन्त—विनाशं व्रजति क्षिप्रमामपात्रमिवाम्भसि —मनु० ३।१७९, शा० ३।६, भट्टि० २।४४। सम० —कारिन् (वि०) आशुकारी, अविलम्बी।

क्षिया [क्षि+अङ+टाप्] 1. हानि, विनाश, बर्बादी, ह्रास 2. अनौचित्य, सर्वसम्मत आचार का उल्लंघन—उदा० स्वयमहरथेन याति उपाध्यायं पदातिं गमयति—सिद्धा०।

क्षीजनम् [क्षीज्+ल्युट्] पोले नरकुलों में से निकली हुई सरसराहट की ध्वनि।

क्षीण (वि०) [क्षि+क्त, दीर्घः] 1. पतला, कृश, क्षयप्राप्त, निर्बल, घटा हुआ, थका हुआ या समाप्त, खर्च कर डाला हुआ—भार्यां क्षीणेषु वित्तेषु (जानीयात्)—हि० १।७२, इसी प्रकार क्षीणः शशी, क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति 2. सुकुमार, नाजुक 3. थोड़ा अल्प 4. निर्धन, संकटग्रस्त 5. शक्तिहीन, दुर्बल। सम० —चन्द्रः घटता हुआ अर्थात् कृष्णपक्ष का चन्द्रमा —धन (वि०) जिसके पास पैसा न रहा हो, निर्धन —पाप (वि०) जो अपने पाप कर्मों का फल भुगत कर निष्पाप हो गया हो,—पुण्य (वि०) जो अपने सब पुण्य कर्मों का फल भोग चुका हो, तथा अगले जन्म के लिए जिसे और पुण्य कार्य करने चाहिएँ,—मध्य (वि०) जिसकी कमर पतली हो,—वासिन् (वि०) खंडहर में रहने वाला,—विक्रान्त (वि०) साहसहीन, पौरुषहीन—वृत्ति (वि०) जीविका के साधनों से वञ्चित, बेरोजगार।

क्षीब, क्षीव दे० क्षीव्, क्षीव।

क्षीरः—रम् [घस्यते अद्यते घस्+ईरन्, उपधालोपः, घस्य ककारः षत्वं च] 1. दूध,—हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः—श० ६।२७ 2. वृक्षों का दूधिया रस—ये तत्क्षीरस्रुतिसुरभयो दक्षिणेन प्रवृत्ताः—मेघ० १०७, कु० १।९ 3. जल। सम०—अब्धः शिशु, दूधपीता बच्चा,—ब्धिः दुग्धसागर °जः 1. चन्द्रमा 2. मोती, °जम् समुद्री नमक, °जा—तनया लक्ष्मी का विशेषण,—आह्वः सनोवर का वृक्ष,—उदः दुग्धसागर —क्षीरोदवेलेव सफेनपुञ्जा—कु० ७।२६, °तनयः चन्द्रमा, °तनया, °सुता लक्ष्मी का विशेषण,—उदधि क्षीरोद,—ऊर्मिः दुग्धसागर की लहर— रघु० ४।२७, —ओदनः दूध में उबाले हुए चावल,—कण्ठः दूधपीता बच्चा (कण्ठ में दूध रखने वाला)—त्वया तत्क्षीरकण्ठेन प्राप्तमारण्यकं व्रतम्—महावी० ४।५२, ५।११, —जम् जमा हुआ दूध,—द्रुमः अश्वत्थवृक्ष,—धात्री दूध पिलाने वाली नौकरानी, धाय,—धिः,—निधिः दुग्धसागर—इन्दुः क्षीरनिधाविव—रघु० १।१२,—धेनुः (स्त्री०) दूध देने वाली गाय,—नीरम् 1. पानी और दूध 2. दूध जैसा पानी 3. गाढ़ालिंगन,—पः बच्चा

—**वारिः**,—**वारिधिः**, दुग्ध सागर,—**विकृतिः** जमा हुआ दूध,—**वृक्षः** 1. बड़, गूलर, पीपल और मधूक नाम के वृक्ष 2. अंजीर,—**शरः** मलाई, दूध की मलाई,—**समुद्रः** दुग्धसागर,—**सारः** मक्खन,—**हिंडीरः** दूध के झाग या फेन ।

क्षीरिका [क्षीर+ठन्+टाप्] दूध से बना भोज्य पदार्थ ।

क्षीरिन् (वि०) [क्षीर+इनि] दूधिया दुधार दूध देने वाला ।

क्षीव् (भ्वा०—दिवा०, पर०—क्षीवति, क्षीव्यति) 1. मतवाला होना, मदोन्मत्त होना, नशे में होना 2. थूकना, मुंह से निकालना ।

क्षीव (वि०) [क्षीव्+क्त नि०] उत्तेजित, मतवाला, मदोन्मत्त—ध्रुवं जये यस्य जयामृतेन क्षीवः क्षमाभर्तुरभूत्कृपाणः—विक्रमांक० १।९६, क्षीवो दुःशासनासृजा—वेणी० ५।२७ ।

क्षु (अदा० पर०—क्षौति, क्षुत) 1. छींकना—अवयाति सरोषया निरस्ते कृतकं कामिनि चुक्षुवे मृगाक्ष्या—शि० ९।८३, चौर० १०, भट्टि० १४।७५ 2. खांसना ।

क्षुण्ण (भू० क० कृ०) [क्षुद्+क्त] 1. कूटा हुआ, कुचला हुआ—रघु० ११।१७ 2. (आलं०) अभ्यस्त, अनुगत—क्षुद्रजनक्षुण्ण एष मार्गः—का० १४६ 3. पीसा हुआ—दे० क्षुद्र । सम०—**मनस्** (वि०) पश्चात्तापी, पछताने वाला ।

क्षुत् (स्त्री०), **क्षुतम्**,—**ता** [क्षु+क्विप्, तुगागमः; क्षु+क्त, क्षुत+टाप्] छींकने वाली, छींक ।

क्षुद् (रुधा०, उभ०—क्षुणत्ति, क्षुन्ते, क्षुण्ण) 1. कुचलना, घिसना, (पैरों से) कुचल डालना, रगड़ना, पीस देना—क्षुण्णपि सर्पान् पाताले—भट्टि० ६।३६, ते तं व्याशिषताक्षौत्सुः पादैर्दन्तैस्तथाच्छिदन्—१५।४३, १६।६६ 2. उत्तेजित करना, क्षुब्ध होना (आ०), **प्र**—, कुचलना, खरोंचना, पीसना—मित्रघ्नस्य प्रचुक्षोद गदयोगं विभीषणः—भट्टि० १४।३३ ।

क्षुद्र (वि) [क्षुद्+रक्] (म० अ०—क्षोदीयस्, उ० अ०—क्षोदिष्ट) 1. सूक्ष्म, अल्प, छोटा सा, तुच्छ, हलका 2. कमीना, नीच, दुष्ट, अधम—क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने—कु० १।१२ 3. दुष्ट 4. क्रूर 5. गरीब, दरिद्र 6. कृपण, कंजूस—मेघ० १७,—**द्रा** 1. मधुमक्खी 2. झगड़ालू स्त्री 3. अपाहज या विकलांग स्त्री 4. वेश्या—उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठितभवनाः—का० १०७ । सम०—**अञ्जनम्** कुछ रोगों में आंखों में लगाया जाने वाला अंजन या लेप,—**अन्त्रः** हृदय के भीतर का छोटा सा रंध्र,—**कम्बुः** छोटा शंख,—**कुष्ठम्** एक प्रकार का हल्का कोढ़,—**घण्टिका** 1. घुंघरु 2. घुंघरु वाली करधनी,—**चन्दनम्** लाल चंदन की लकड़ी,—**जन्तुः** कोई भी छोटा जीव,—**दंशिका** डांस, गो मक्खी,—**बुद्धि** (वि०) ओछे मन का, कमीना,—**रसः** शहद,—**रोगः** मामूली बीमारी (सुश्रुत में ४४ रोगों का उल्लेख है),—**शंखः** छोटा शंख या घोंघा (सीपी),—**सुवर्णम्** हल्का या खोटा सोना अर्थात् पीतल ।

क्षुद्रल (वि०) [क्षुद्र+लच्] सूक्ष्म, हल्का (विशेष कर रोगों व जंतुओं के लिए प्रयुक्त) ।

क्षुध् (दिवा० पर०—क्षुध्यति, क्षुधित) भूखा होना, भूख लगना=भट्टि० ५।६६, ६।४४, ९।३९ ।

क्षुध् (स्त्री०) **क्षुधा** [क्षुध्+क्विप्, क्षुध्+टाप्] भूख,—सीदति क्षुधा—मनु० ७।१३४, ४।१८७ । सम०—**आर्त**,—**आविष्ट** क्षुधापीडित,—**क्षाम** (वि०) भूखा होने से दुर्बल—भट्टि० २।२९,—**पिपासित** (वि०) भूखा प्यासा,—**निवृत्तिः** (स्त्री०) भूख शान्त होना ।

क्षुधालु (वि०) [क्षुध्+आलुच्] भूखा

क्षुधित (वि०) [क्षुध्+क्त] भूखा

क्षुपः [क्षुप्+क] छोटी जड़ों के वृक्ष, झाड़, झाड़ी ।

क्षुभ् (भ्वा० आ०, दिवा०, क्र्या० पर०—क्षोभते, क्षुभ्यति, क्षुभ्नाति, क्षुभित, क्षुब्ध) 1. हिलाना, कंपित करना, क्षुब्ध करना, आंदोलित करना,—महाह्रद इव क्षुभ्यन्—भट्टि० ९।११८, रघु० ४।२१, शि० ८।२४ 2. अस्थिर होना 3. लड़खड़ाना (आलं० भी), **प्र**—**वि**,—**सम्** कांपना, क्षुब्ध होना, आंदोलित होना ।

क्षुभित (वि०) [क्षुभ्+क्त] 1. हिलाया हुआ, आंदोलित आदि०—महाप्रलयमारुतक्षुभितपुष्करावर्तक—वेणी० ३।२ 2. डरा हुआ 3. क्रुद्ध ।

क्षुब्धः (वि०) [क्षुभ्+क्त] 1. आन्दोलित, चंचल, अस्थिर 2. डांवाडोल 3. डरा हुआ,—**ब्धः** मन्थन करने का डण्डा—शोभैव मन्दरक्षुब्धक्षुभिताम्भोधिवर्णना—शि० २।१०७ 2. रति क्रिया का विशेष आसन, रतिबन्ध ।

क्षुमा [क्षु+मक्] अलसी,एक प्रकार का सन ।

क्षुर् (तुदा० पर०—क्षुरति, क्षुरित) 1. काटना, खुरचना 2. रेखाएँ खींचना, हल से खेत में खूड बनाना ।

क्षुरः [क्षुर्+क] 1. उस्तरा -रघु० ७।४६, मनु० ९। २९२ 2. उस्तरे जैसी नोक जो तीर में लगाई जाय 3. गाय या घोड़े का सुम 4. बाण । सम०—**कर्मन्** (नपुं०)—**क्रिया** हजामत बनाना,—**चतुष्टयम्** हजामत करने की आवश्यक चार चीजें,—**धानम्**,—**भाण्डम्** उस्तरे का खोल,—**धार** (वि०) उस्तरे जैसा तेज,—**प्रः** बाण जिसकी नोक घोड़े की नाल जैसी हो—तं क्षुरप्रशकलीकृतं कृती—रघु० ११।२९, ९।६२ 2. खुर्पी, घास खोदने का खुर्पा,—**मर्दिन्**,—**मुण्डिन्** (पुं०) नाई ।

क्षुरिका, क्षुरी [क्षुर+ङीष्,+कन्+टाप् ह्रस्वः, क्षुर+ङीष्] 1. चाकू, छुरी 2. छोटा उस्तरा ।

क्षुरिणी [क्षुर+इनि+ङीष्] नाई की पत्नी ।

क्षुरिन् (पुं०) [क्षुर+इनि] नाई।

क्षुल्ल (वि०) [क्षुदं लाति गृह्णाति—क्षुद्+ला+क] छोटा, स्वल्प। सम०—तातः पिता का छोटा भाई —तु० खुल्ल।

क्षुल्लक (वि०) [क्षुल्ल+कन्] 1. स्वल्प, सूक्ष्म 2. नीच, दुष्ट 3. नगण्य 4. निर्धन 5. दुष्ट, द्वेषयुक्त 6. बच्चा।

क्षेत्रम् [क्षि+ष्ट्रन्] 1. खेत, मैदान, भूमि—चीयते वालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः—मुद्रा० १।३ 2. भूसंपत्ति भूमि 3. स्थान, आवास, भूखण्ड, गोदाम—कपटशतमयं क्षेत्रमप्रत्ययानाम्—पंच० १।१९१, भर्तृ० १।७७, मेघ० १६ 4. पुण्यस्थान, तीर्थस्थान—क्षेत्रं क्षत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद्भजेथाः—मेघ० ४६, भग० १।१, 5. बाड़ा 6. उर्वरा भूमि 7. जन्मस्थान 8. पत्नी—अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णक्षेत्रसंभवा स्यात्—श० १, मनु० ३।१८५ 9. कायक्षेत्र शरीर (आत्मा का कर्म क्षेत्र)—योगिनो यं विचिन्वन्ति क्षेत्राभ्यन्तरवर्तिनम् —कु० ६।७७, भग० १३।१,२,३ 10. मन 11. घर, नगर 12. सपाट आकृति जैसे कि त्रिभुज 13. रेखाचित्र।' सम०—अधिदेवता किसी पुण्य भूस्थल की अधिष्ठात्री देवता,—आजीवः,—करः, कृपक, खेतिहर, —गणितम् ज्यामिति, रेखागणित,—गत (वि०) ज्यामितीय °उपपत्तिः (स्त्री०) ज्यामितीय प्रमाण, —ज (वि०) 1. खेत में उत्पन्न 2. शरीर से उत्पन्न (जः) हिन्दूधर्मशास्त्र के अनुसार १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, 'अपने पति के निमित्त संतानोत्पत्ति करने के लिए विधिवत् नियत किए गए किसी संबन्धी द्वारा उसकी पत्नी में उत्पादित संतान—मनु० ९।१६७, १८० याज्ञ० १।६८, ६९, २।१२८,—जात (वि०) दूसरे पुरुष की पत्नी में उत्पादित संतान,—ज्ञ (वि०) 1. स्थानीयता को जानने वाला 2. चतुर, दक्ष (ज्ञः) 1. आत्मा—तु० भग० १३।१-३, मनु० १२।१२ 2. परमात्मा 3. व्यभिचारी 4. किसान,—पतिः भूस्वामी भूमिधर,—पदम् देवता के लिए पवित्र स्थान,—पालः 1. खेत का रखवाला 2. क्षेत्र की रक्षा करने वाला देवता 3. शिव का विशेषण,—फलम् (गणित में) आकृति की लम्बाई चौड़ाई का गुणनफल,—भक्तिः (स्त्री०) खेत का बँटवारा,—भूमिः (स्त्री०) भूमि जिसमें खेती की जाय,—राशिः ज्यामितीय आकृतियों द्वारा प्रकट किया गया परिमाण,—विद् (वि०) =क्षेत्रज्ञ (पुं०) 1. किसान 2. ऋषि, जिसे आध्यात्मिक ज्ञान हो—कु० ३।५० 3. आत्मा,—स्थ (वि०) पुण्य भूमि में रहने वाला।

क्षेत्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [क्षेत्र+ठन्] खेत से सम्बन्ध रखने वाला,—कः 1. एक किसान—मनु० ८।२४१, ९।५३ 2. पति—मनु० ९।१४५।

क्षेत्रिन् (पुं०) [क्षेत्र+इनि] कृषक, काश्तकार, खतिहर —याज्ञ० २।१६१ 2. नाममात्र का पति—श० ५ 3. आत्मा 4. परमात्मा भग० १३।३३।

क्षेत्रिय (वि०) [क्षेत्र+घ] 1. खेत से संबंध रखने वाला 2. असाध्य रोग, जिसका उपचार देहान्तर प्राप्ति पर ही हो अथवा इस जीवन में जिसका उपचार न हो सके—दण्डोऽयं क्षेत्रियो येन मय्यपातीति साऽब्रवीत्-भट्टि० ४।३२,—यम् 1. आंगिक रोग 2. चरागाह, गोचरभूमि,—यः व्यभिचारी, परदाररत।

क्षेपः [क्षिप्+घञ्] 1. फेंकना, उछालना, डालना, इधर उधर हिलाना (अंगों की) गति—कन्दक्षेपानुगम —मेघ० ४७, भ्रूक्षेपमात्रानुमतप्रवेशाम्—कु० ३।६० 2. फेंकना, डालना 3. भेजना, प्रषित करना 4. आघात 5. उल्लंघन 6. समय बिताना, कालक्षेप 7. विलम्ब, देरी 8. अपमान, दुर्वचन—क्षेपं करोति चेद्दंड्यः —याज्ञ० २।२०४, किंक्षेपे 9. अनादर, घृणा 10 घमंड, अहंकार 11. फूलों का गुच्छा, कुसुमस्तवक।

क्षेपक (वि०) [क्षिप्+ण्वुल्] 1. फेंकने वाला, भेजने वाला 2. मिलाया हुआ, बीच में घुसाया हुआ 3. गालियों से युक्त, अनादरपूर्ण,—कः बनावटी या बीच में मिलाया हुआ।

क्षेपणम् [क्षिप्+ल्युट्] 1. फेंकना, डालना, भेजना, निदेश आदि देना 2. (समय) बिताना 3. भूलना 4. गाली देना 5. गोफन,—णिः,—णी (स्त्री०) 1. चप्पू 2. मछली फंसाने का जाल 3. गोफन या ऐसा उपकरण जिसमें रखकर कंकड़ फेंके जायें।

क्षेम (त्रि०) [क्षि+मन्] 1. प्रसन्नता सुख और आराम देने वाला, शुभ, उदार, राजीखुशी—धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत्—भग० १।४५ 2. समृद्ध, आराम में, सुखी 3. सुरक्षित, प्रसन्न,—मः,—मम् 1. शान्ति, प्रसन्नता, आराम, कल्याण, कुशलता—वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासते—कि० १।१७, वैश्यं क्षेमं समागम्य (पृच्छेत्)—मनु० २।१२७, अधुना सर्वजलचराणां क्षेमं भविष्यति—पंच० १।२ 2. सुरक्षा, बचाव,—क्षेमेण व्रज बान्धवान्—मृच्छ० ७।७, सकुशल—पंच० १।१४६ 3. संरक्षण करने वाला, प्ररक्षा करने वाला—रघु० १५।६ 4. अवाप्त को सुरक्षित रखना—तु० योगक्षेम 5. मुक्ति, शाश्वत आनन्द,—मः एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। सम० —कर ('क्षेमंकर' भी) (वि०) मंगलप्रद शान्ति और सुरक्षा करने वाला।

क्षेमिन् (वि०) (णी) [क्षेम+इनि] सुरक्षित, आक्रमण से रक्षित, प्रसन्न।

क्षै (भ्वा० पर० क्षायति, क्षाम) क्षीण होना, नष्ट होना, कृश होना, ह्रास होना, मुर्झाना।

क्षैण्यम् [क्षीण+ष्यञ्] 1. विनाश 2. दुबलापन, सुकुमारता।

क्षैत्रम् [क्षेत्र+अण्] 1. खेतों का समूह 2. खेत।

क्षैरेय (वि०) (स्त्री०—यी) [क्षीर+ढञ्] दूधिया, दूध जैसा।

क्षोड: [क्षोड्+घञ्] हाथी बांधने का खंभा।

क्षोणि:,क्षोणी (स्त्री) [क्षै+डोनि, क्षोणि+ङीप्] 1. पृथ्वी 2. एक (गणित में)।

क्षोत्तृ (पुं०) [क्षुद्+तृच्] मूसली, बट्टा।

क्षोद: [क्षुद्+घञ्] 1. चूरा करना, पीसना 2. सिल (जिस पर रखकर कोई चीज पीसी जाती है) 2. धूल, कण कोई छोटा या सूक्ष्मकण—उत्तर० ३।२। सम०—(वि०) जो जांच पड़ताल या अनुसन्धान में ठहर सके।

क्षोदिमन् (पुं०) [क्षोद+इमनिच्] सूक्ष्मता।

क्षोभ: [क्षुभ्+घञ्] 1. डोलना, हिलना, लोटपोट होना —मेघ० २८, ९५, इसी प्रकार काननक्षोभ: 2. हुचकोले खाना—रघु० १।५८, विक्रम० ३।११ 3. (क) आन्दोलन, डाँवाडोल होना, उत्तेजना, संवेग—स्वयंवर क्षोभकृतामभाव:—रघु० ७।३, अयेन्द्रियक्षोभमयुग्मनेत्र: पुनर्वशित्वाद्बलवन्निगृह्य—कु० ३।६९, (ख) उकसाहट, चिढ़—प्राय: स्वमहिमानं क्षोभात्प्रतिपद्यते जन्तु: —श० ६।३१

क्षोभणम् [क्षुभ्+णिच्+ल्युट्] क्षुब्ध करना, व्याकुल करना—ण: कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

क्षोम:,-मम् [क्षु+मन्] घर की छत पर बना कमरा, चौबारा।

क्षौणि:,-णी (स्त्री०) दे० क्षोणि। सम०—प्राचीर: समुद्र, —भुज् (पुं०) राजा,—भृत् (पुं०) पहाड़।

क्षौद्र: [क्षुद्र+अण्] चम्पक वृक्ष,—द्रम् 1. हल्कापन 2. कमीनापन, ओछापन 3. शहद—सक्षौद्रपटलैरिव —रघु० ४।६३ 4. जल 5. धूलकण। सम०—जम् मोम।

क्षौद्रेयम् [क्षौद्र+ढञ्] मोम।

क्षौम:,-मम् [क्षु+मन्+अण्] 1. रेशमी कपड़ा, ऊनी कपड़ा—क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम् —श० ४।५—क्षौमान्तरितमेखले (अङ्के) रघु० १०।८ 2. चौबारा 3. मकान का पिछला भाग,—मम् 1. अस्तर 2. अलसी,—मी सन।

क्षौरम् [क्षुर+अण्] हजामत।

क्षौरिक: [क्षौर+ठन्] नाई।

क्ष्णु (अदा० पर०—क्ष्णौति, क्ष्णुत) पैना करना, तेज करना। सम्–,(आ०) तेज करना (आलं० भी) भट्टि० ८।४०।

क्ष्मा [क्षम+अच् उपधालोप:] 1. पृथ्वी, (पुत्रं) क्ष्मां लम्भयित्वा क्षमयोपपन्नम्—रघु० १८।९, किं शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष यत् मुद्रा० २।१८ 2. (गणित में) एक की संख्या। सम०—ज: मंगलग्रह, —प:,—पति:,—भुज् (पुं०) राजा,—कविक्ष्मापति: —गीत० १, देशानामुपरि क्ष्मापा:—पंच० १।१५५, —भृत् (पुं०) राजा या पहाड़।

क्ष्माय् (भ्वा० आ०—क्ष्मायते, क्ष्मायित) हिलाना, कांपना —चक्ष्माये च मही—भट्टि० १४।२१, १७।२३।

क्ष्विड् (भ्वा० उभ०—क्ष्वेडति—ते, क्ष्वेट्ट या क्ष्वेडित) भिनभिनाना, दहाड़ना, चहचहाना, गुर्राना, बुदबुदाना, अस्पष्ट ध्वनि करना—मनु० ४।६४।

क्ष्विड् (भ्वा० आ०) क्ष्विद् (दिवा० पर०—क्ष्विद्यति, क्ष्वेदित, क्ष्विण्ण), 1. गीला होना, चिपचिपा होना 2. (वृक्ष का दूध या) रस निकलना, रस छोड़ना, मवाद बहना, पसीजना, प्र—,बुदबुदाना, भिनभिनाना —भट्टि० ७।१०३।

क्ष्वेड: [क्ष्विड्+घञ्, अच् वा] 1. शब्द, शोर, कोलाहल 2. विष, जहर—गुणदोषौ बुधो गृह्णन्निन्दुक्ष्वेडाविवेश्वर:, शिरसा श्लाघते पूर्वं परं कण्ठे नियच्छति—सुभा० 3. आर्द्र या तर करना 4. त्याग,—डा 1. शेर की दहाड़ 2. युद्ध के लिए ललकार, रणगुहार 3. बाँस।

क्ष्वेडितम् [क्ष्विड+क्त] सिंह गर्जना।

क्ष्वेला [क्ष्वेल्+अ+टाप्] खेल, हंसी, मजाक।

ख

ख: [खर्व्+ड] सूर्य,—खम् 1. आकाश—खं केशवोऽपर इवाक्रमितुं प्रवृत्त:—मृच्छ० ५।२, यावद्गिर: खे मरुतां चरन्ति—कु० ३।७२, मेघ० ९,2. स्वर्ग, 3. ज्ञानेन्द्रिय 4. एक नगर 5. खेत 6. शून्य 7. एक बिन्दु, अनुस्वार 8. गह्वर, द्वारक, विवर, रन्ध्र—मनु० ९।४३ 9. शरीर के द्वारक (जो गिनती में ९ हैं अर्थात् मुंह, दो कान, दो आँखें, दो नाथुनें, गुदा तथा जननेन्द्रिय)—खानि चैव स्पृशेदद्भि:—मनु० २।६०, ५३, ४।१४४, याज्ञ० १।२० तु० कु० ३।५० 10. घाव 11. प्रसन्नता, आनन्द 12. अभ्रक 13. कर्म 14. ज्ञान 15. ब्रह्म। सम०

—अटः (खेऽटः) 1. ग्रह, 2. राहु, आरोही शिरोबिन्दु —आपगा गंगा का विशेषण,—उल्कः 1. धूमकेतु 2. ग्रह, —उल्मुकः मंगल ग्रह,—कामिनी दुर्गा, —कुन्तलः शिव, —गः 1. पक्षी—अधुनीत खगः स नैकधा तनुम्—नै० २।२, मनु० १२।६३ 2. वायु, हवा—तमांसीव यथा सूर्यो वृक्षानग्निर्घनान्खगः—महा० 3. सूर्य 4. ग्रह —उदा० आपोक्लिमे यदि खगाः स किलेन्दुवारः—तारा० 5. टिड्डा, 6. देवता 7. बाण, °अधिपः गरुड का विशेषण °अंतकः बाज, श्येन, °अभिरामः शिव का विशेषण, °आसनः 1. उदयाचल 2. विष्णु का विशेषण, °इन्द्रः, °ईश्वरः °पतिः गरुड के विशेषण, °वती (स्त्री०) पृथ्वी, °स्थानम् 1. वृक्ष की खोडर 2. पक्षी का घोंसला, —गंगा आकाश-गंगा,—गतिः (स्त्री०) हवा में उड़ान, —गमः पक्षी,—(खे) गमनः एक प्रकार का जलकुक्कुट, —गोलः आकाशमंडल, °विद्या ज्योतिष विद्या,—चमसः चाँद,—चरः (खेचर भी) 1. पक्षी 2. बादल 3. सूर्य 4. हवा 5. राक्षस (—री अर्थात् खेचरी) 1. उड़ने वाली अप्सरा 2. दुर्गा की उपाधि,—जलम् 'आकाशीय जल' ओस, वर्षा, कोहरा आदि,—ज्योतिस् (पुं०) जुगनू,—तमालः 1. बादल 2. धूआँ,—द्योतः 1. जुगनू —खद्योतालो विलसि ानिभां विद्युदुन्मेषदृष्टिम्—मेघ० ८१ 2. सूर्य,—द्योतनः सूर्य,—धूपः अग्निबाण—मुमुचुः खधूपान्—भट्टि० ३।५,—परागः अंधकार,—पुष्पम् आकाश का फूल, असम्भवता को प्रकट करने की आलं० अभिव्यक्ति—इस प्रकार की ४ असंभावनाएं इस श्लोक में बतलाई गई हैं: मृगतृष्णाम्भसि स्नातः शशशृंग-धनुर्धरः, एष बन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः—सुभा०, —भम् ग्रह,—भ्रान्तिः श्येन,—मणिः 'आकाश की मणि' सूर्य,—मीलनम् निद्रालुता, थकावट,—मूर्तिः शिव का विशेषण,—वारि (नपुं०) वर्षा का पानी ओस आदि, —बाष्पः बर्फ, पाला,—शय (खेशय भी) (वि०) आकाश में विश्राम करने वाला या रहने वाला,—शरीरम् आकाशीय शरीर,—श्वासः हवा, वायु,—समुत्थ, —संभव (वि०) आकाश में उत्पन्न—सिंधुः चाँद, —स्तनी पृथ्वी,—स्फटिकम् सूर्यकान्त या चन्द्रकान्त मणि—हर (वि०) जिस (राशि) का हर शून्य हो।

खक्खट (वि०) [खक्ख् अटन्] कठोर, ठोस,—टः खड़िया।

खङ्कुरः [ख+कृ+खच्, मुम्] अलक, बालों की लट।

खच् (भ्वा०+क्र्या० पर०—खचति-खच्नाति, खचित) 1. आगे आना, प्रकट होना 2. पुनर्जन्म होना 3. पवित्र करना, (चुरा० उभ०—खचयति, खचित) जकड़ना, बांधना, जड़ना,—उद्—,मिलाना, गडमड करना, जड़ना —रघु० ८।५३, १३।५४, मुद्रा० ४।१२।

खचित (वि०) [खच्+क्त] 1. जकड़ा हुआ, संयुक्त, भरा हुआ, अन्तर्मिश्रित,—शकुन्तनीडखचितं बिभ्रज्जटा-मण्डलम्—श० ७।११ 2. निश्चित, सम्मिश्रित 3. जड़ा हुआ, जटित, भरा हुआ (समासगत) °मणि, °रत्न।

खज् [भ्वा० पर०—खजति, खजित] मंथन करना, बिलोना, आंदोलित करना।

खजः,—जकः [खज्+अच्, कन् च] मथानी, रई का डंडा।

खजपम् [खज्+कपन्] घी।

खजाकः [खज्+आक] पक्षी।

खजाजिका [खज्+अ+टाप्=खजा, अज्+घञ्, खजायै आजो यस्याः ब० स०, खजाज+ङीप्+कन् +टाप्, ह्रस्वः] कड़छी, चम्मच।

खंज् (भ्वा० पर०—खञ्जति) लँगड़ाना, ठहर-ठहर कर चलना—खञ्जन् प्रभञ्जनजनः पथिकः पिपासुः—नै० ११।१०७।

खंज (वि०) [खञ्ज्+अच्] लँगड़ा, विकलांग, पंगु —पादेन खञ्जः—सिद्धा०, मनु० ८।२४२, भर्तृ० १। ६४। सम०—खेटः,—खेलः खंजनपक्षी।

खञ्जनः [खञ्ज्+ल्युट्] खंजन पक्षी—स्फुटकमलोदर खेलितखञ्जनयुगमिव शरदि तड़ागम्—गीत० ११, नेत्रे खञ्जनगञ्जने—सा० द०, एको हि खञ्जनवरो नलिनी-दलस्थः—शृंगार० ४,७—नम् लंगड़ा कर जाने वाला, सम०—रतम् सन्यासियों का गुप्त मैथुन।

खञ्जना, खञ्जनिका [खञ्जन+टाप्, खञ्जन+ठन्+टाप्] खञ्जन पक्षियों की जाति।

खञ्जरीटः,—टकः, खञ्जलेखः [खञ्ज+ऋ+कीटन्, कन् च, खञ्ज+लिख्+घञ्] खंजन पक्षी—भामि० २।७८, चौर० ८, मनु० ५।१४, याज्ञ० १।१७४ अमरु, ९९।

खटः [खट्+अच्] 1. कफ 2. अन्धा कूआँ 3. कुल्हाड़ी 4. हल 5. घास सम० कटाहकः पीकदान,—खादकः 1. गीदड़ 2. कौवा 3. जानवर 4. शीशे का बर्तन।

खटकः [खट्+वुन्] 1. सगाई—विवाह तय करने का व्यवसाय करने वाला—तु० घटकः 2. अधमुन्दा हाथ।

खटकामुखम् बाण चलाते समय हाथ की विशेष अवस्थिति।

खटिका [खट्+अच्+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. खड़िया 2. कान का बाहरी विवर।

खट (ड)क्किका—पार्श्वद्वार, खिड़की।

खटिनी, खटी [खट+इनि+ङीप्, खट्+अक्+ङीष्] खड़िया।

खट्टन (वि०) [खट्ट+ल्युट्] ठिंगना,—नः ठिंगना आदमी।

खट्टा [खट्ट्+अच्+टाप्] 1. खाट 2. एक प्रकार का घास।

खट्टिः (पुं०, स्त्री०) [खट्ट+इन्] अर्थी।

खट्टिकः [खट्ट+अच्+ठन्] 1. कसाई 2. शिकारी, बहेलिया।

खट्टेरक (वि०) [खट्ट+एरक] ठिंगना।

खट्वा [खट्+क्वन्+टाप्] 1. खाट, सोफा, खटोला 2. झूला, पालना। सम०—**अंग** सोटा या लकड़ी जिसके सिरे पर खोपड़ी जड़ी हो (यह शिव जी का हथियार समझा जाता है तथा संन्यासी और योगी इसे धारण करते हैं)—मा० ५।४, २३ 2. दिलीप, °धर, °भृत् (पुं०) शिव की उपाधियाँ,—**अङ्गिन्** (पुं०) शिव का विशेषण,—**आप्लुत**,—**आरूढ** (वि०) 1. नीच, दुष्ट 2. परित्यक्त, बदमाश 3. मूर्ख, बेवकूफ़।

खट्वाका, खट्विका [खट्वा+कन्+टाप्, इत्वम् वा] खटोला, छोटी खाट।

खड् दे० खंड।

खडः [खड्+अच्] तोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना।

खडिका, खडी [खड्+अच्+ङीप्, कन्, ह्रस्व, खड+ङीष्] खड़ियाँ।

खड्गः [खड्+गन्] 1. तलवार—न हि खड्गो विजानाति कर्मकारं स्वकारणम्—उद्भट, खड्गं परामृश्य आदि 2. गैंडे के सींग 3. गैंडा—रघु० ९।६२, मनु० ३।२७२, ५।१८,—**ड्गम्** लोहा। सम०—**आघातः** तलवार का घाव,—**आधारः** म्यान, कोश,—**आमिषम्** भैंस का मांस,—**आह्वः** गैंडा,—**कोशः** म्यान,—**धरः** खड्गधारी योद्धा,—**धेनुः**,—**धेनुका** 1. छोटी तलवार 2. गैंडे की मादा,—**पत्रम्** तलवार की धार,—**पाणि** (वि०) हाथ में तलवार लिये हुए,—**पात्रम्** भैंस के सींगों का बना पात्र,—**पिधानम्**,—**पिधानकम्** म्यान,—**पुत्रिका** चाकू, छोटी तलवार,—**प्रहारः** तलवार का आघात,—**फलम्** तलवार का फलक (मूठ को छोड़ कर शेष तलवार)।

खड्गवत् (वि०) [खड्+मतुप्] तलवार से सुसज्जित।

खड्गिकः [खड्ग+ठन्] 1. खड्गधारी योद्धा 2. कसाई।

खड्गिन् (वि०) (स्त्री०—**नी**) [खड्ग+इनि] तलवार से सुसज्जित (पुं०) गैंडा।

खड्गीकम् [खड्ग+ईक वा०] दरांती।

खण्ड् (चुरा० पर०—खण्डयति, खण्डित) 1. तोड़ना, काटना टुकड़े २ करना, कुचलना—भट्टि० १५।५४ 2. पूरी तरह हराना, नष्ट करना, मिटाना—रजनीचरनाथेन खण्डिते तिमिरे निशि—हि० ३।१११ 3. निराश करना भग्नाश करना, (प्रणय में) हताश करना—स्त्रीभिः कस्य न खण्डितं भुवि मनः—पंच० १।१४६ 4. विघ्न डालना 5. धोखा देना।

खण्डः,—**डम्** [खण्ड्+घञ्] 1. दरार, खाई, विच्छेद, कटाव, अस्थिभंग 2. टुकड़ा, भाग, खंड, अंश—दिवः कान्तिमत्खंडमेकं—मेघ० ३० काष्ठ° मांस° आदि 3. ग्रंथ का अनुभाग, अध्याय 4. समुच्चय, संघात, समूह—तरुखण्डस्य—का० २३,—**डः** 1. चीनी, खाँड 2. रत्न का एक दोष,—**डम्** 1. एक प्रकार का नमक 2. एक प्रकार का ईख, गन्ना। सम०—**अभ्रम्** 1. बिखड़े हुए बादल 2. कामकेलि में दाँतों का चिह्न,—**आलिः** (स्त्री०) 1. तेल की एक नाप 2. सरोवर या झील 3. वह स्त्री जिसका पति व्यभिचारी हो,—**कथा** छोटी कहानी,—**काव्यम्** मेघदूत जैसा छोटा काव्य—परिभाषा:—खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च—सा० द० ५६४,—**जः** एक प्रकार की खाँड,—**धारा** कैंची,—**परशुः** शिव का विशेषण—महेश्वरं लीलाजनितजगतः खण्डपरशोः—गंगा० १, येनानेन जगत्सु खण्डपरशुर्देवो हरः ख्याप्यते—महावी० २।३३ 2. जमदग्नि का पुत्र, परशुराम का विशेषण,—**पर्शुः** 1. शिव 2. परशुराम 3. राहु 4. टूटे दाँत वाला हाथी,—**पालः** हलवाई,—**प्रलयः** विश्व का आंशिक प्रलय जिसमें स्वर्ग से नीचे के सब लोकों का नाश हो जाता है,—**मण्डलम्** वृत्त का अंश,—**मोदकः** खांड के लड्डू,—**लवणम्** एक प्रकार का नमक,—**विकारः** चीनी,—**शर्करा** मिसरी,—**शीला** असती, व्यभिचारिणी स्त्री।

खण्डकः,—**कम्** [खण्ड+कन्] टुकड़ा, भाग, अंश,—**कः** 1. चीनी, खांड 2. जिसके नाखून न हों।

खण्डन (वि०) [खण्ड्+ल्युट्] 1. तोड़ने वाला, काटने वाला, टुकड़े २ करने वाला 2. नष्ट करने वाला, मारने वाला—स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनम्—गीत० १०, भवज्वरखण्डनम्—१२,—**नम्** 1. तोड़ना काटना 2. काट लेना, क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना—अधरोष्ठखण्डनम्—पंच० १, घटय भुजबन्धनं जनय रदखण्डनं—गीत० १०, चौर० १३ 3. हताश करना, (प्रणय में) निराश करना 4. विघ्न डालना रसखण्डनवर्जितम्—रघु० ९।३६ 5. ठगना, धोखा देना 6. (तर्क का) निराकरण करना—नै० ६।१३० 7. विद्रोह, विरोध 8. बर्खास्तगी।

खण्डलः,—**लम्** [खण्ड+लच् नि०] टुकड़ा।

खण्डशः (अव्य०) [खण्ड+शस्] 1. अंशों में, टुकड़ों में, °कृ काट कर टुकड़े २ करना 2. थोड़ा २ करके, टुकड़ा २ कर के, टुकड़े २ कर के।

खण्डित (भू० क० कृ०) [खण्ड्+क्त] 1. काटा हुआ, तोड़ कर टुकड़े २ किया हुआ 2. नष्ट किया हुआ, ध्वंस किया हुआ 3. (तर्क का) निराकरण किया हुआ 4. विद्रोह किया हुआ 5. निराश किया हुआ, धोखा दिया हुआ, परित्यक्त—खण्डितयुवतिविलापम्—गीत० ८,—**ता** वह स्त्री जिसका पति अपनी पत्नी के प्रति अविश्वास का अपराधी रहा हो, और इसलिए उसकी पत्नी उससे क्रुद्ध हो, संस्कृत साहित्य में वर्णित १० प्रकार की नायिकाओं में से एक—रघु० ५।६७, मेघ० ३९, परिभाषा इस प्रकार की है:—पार्श्वमेति प्रियो

यस्या अन्यसंभोगचिह्नितः, सा खण्डितेति कथिता धीरैं-रीर्ष्याकषायिता--सा० द० ११४। सम०—**विग्रह** (वि०) अंगहीन, विकलांग,—**वृत्त** (वि०) आचार-हीन, दुश्चरित्र ।

खण्डिनी (खण्ड्+इनि+ङीप्) पृथ्वी ।

खदिका: (ब० व०) खील, लाजा, तला हुआ या भुना हुआ अनाज ।

खदिरः [खद्+किरच्] 1. खैर का पेड़,—याज्ञ० १।३०२ 2. इन्द्र का विशेषण 3. चांद ।

खन् (भ्वा० उभ०—खनति-ते, खात, कर्म० खन्यते-खायते) खोदना, खनना, खोखला करना—खनन्नाखुबिलं सिंहः —पंच० ३।१७, मनु० २।२१८ भट्टि० ६।१७, **अभि**—, खोदना, **उद**—, खुदाई करना, जड़ निकालना उन्मूलन करना, उखाड़ना (आलं० भी)—वङ्गानुत्खाय तरसा —रघु० ४।३६, ३३, १४।७३, मेघ० ५२, भट्टि० १२।५, १५।५५, मा० ९।३४, **नि**—, 1. खनना, खोदना 2. दफनाना, गाड़ना—ऊनद्विवर्षं निखनेत् —याज्ञ० ३।१, वसुधायां निचखनतुः—रघु० १२।३०, भट्टि० ४।३, १६।२२ 3. (स्तंभ के रूप में) उठाना —निचखान जयस्तम्भान्—रघु० ४।३६ 4. जमाना, स्थिर करना, घुसेड़ना—निचखान शरं भुजे—रघु० ३।५५, १२।९०, भट्टि० ३।८, हि० ४।७२, **परि**—, (खाई आदि) खोदना ।

खनकः [खन्+ण्वुल्] 1. खनिक 2. सेंध लगाने वाला 3. चूहा 4. कान ।

खननम् [खन्+ल्युट्] 1. खोदना, खोखला करना, पोला करना 2. गाड़ना ।

खनिः,—**नी** (स्त्री०) [खन्+इ, स्त्रियां ङीप्] 1. खान —रघु० १७।६६, १८।२२, मुद्रा० ७।३१ 2. गुफा ।

खनित्रम् [खन्+इत्र] कुदाल, खुर्पा, गैंती ।

खपुरः [खं पिपर्ति उच्चतया—ख+पृ+क] सुपारी का पेड़ ।

खर (वि०) [खं मुखबिलमतिशयेन अस्ति अस्य—ख+र अथवा खमिन्द्रियं राति—ख+रा+क] (विप० —मृदु०, श्लक्ष्ण, द्रव) 1. कठोर, खुर्दरा, ठोस 2. अमृदु, तेज, सख्त—रघु० ८।९, स्मरः खरः खलः कांतः—काव्या० १।५९ 3. तीखा, चरपरा 4. घना, सघन 5. पीडाकर, हानिकर, कर्कश 6. तेज धार वाला —देहि खरनयनशरघातम्—गीत० 7. गरम—खरांशु —आदि 8. क्रूर, निष्ठुर, —**रः** 1. गधा—मनु० २। २०१, ४।११५, १२०, ८।३७०, याज्ञ० २।१६० 2. खच्चर 3. बगला 4. कौवा 5. एक राक्षस का नाम जो रावण का सौतेला भाई था और जो राम के द्वारा मारा गया था—रघु० १२।४२ । सम०—**अंशुः**, —**करः**,—**रश्मिः** सूर्य,—**कुटी** 1. गधों का अस्तबल 2. नाई की दुकान,—**कोणः**,—**क्वाणः** चकोर, तीतर, —**कोमलः** ज्येष्ठ मास,—**गृहम्**,—**गेहम्** गधों का अस्तबल,—**णस्**—**णस** (वि०) नुकीली नाक वाला, —**दण्डम्** कमल,—**ध्वंसिन्** (पु०) खरहन्ता राम का विशेषण,—**नादः** गधे का रेंकना,—**नलः** कमल,—**पात्रम्** लोहे का बर्तन,—**पालः** लकड़ी का बर्तन,—**प्रियः** कबूतर,—**यानम्** गधों से खींची जाने वाली गाड़ी, —**शब्दः** 1. गधे का रेंकना 2. समुद्री बाज,—**शाला** गधों का अस्तबल,—**स्वरा** जंगली चमेली ।

खरिका [खर+कन्+टाप्, इत्वम्] पिसी हुई कस्तूरी ।

खरिन्धम,—**य** (वि०) [खरी+ध्मा (धमादेशः) पक्षे धे +खश्, मुम्] गधी का दूध पीने वाला ।

खरी [खर+ङीप्] गधी । सम०—**जङ्घः** शिव का विशेषण,—**वृषः** गधा ।

खरु (त्रि०) [खन्+कु, रश्चान्तादेशः] 1. श्वेत 2. मूर्ख, मूढ 3. क्रूर 4. निषिद्ध वस्तुओं का इच्छुक,—**रुः** 1. घोड़ा 2. दाँत 3. घमंड 4. कामदेव 5. शिव,—**रुः** (स्त्री०) लड़की जो अपना पति स्वयं चुने ।

खर्ज् (भ्वा० पर०—खर्जति, खर्जित) 1. पीडा देना, बेचैन करना 2. कड़कड़ शब्द करना ।

खर्जनम् [खर्ज्+ल्युट्] खरोचना ।

खर्जिका [खर्ज्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. उपदंश रोग 2. गजक ।

खर्जुः (स्त्री०) [खर्ज्+उन्] 1. खरोंच 2. खजूर का वृक्ष 3. धतूरे का पेड़ ।

खर्जूरन् [खर्ज्+उरच्] चाँदी ।

खर्जूः (स्त्री०) [खर्ज+ऊ] खाज, खुजली ।

खर्जूरः [खर्ज्+ऊर] 1. खजूर का पेड़ 2. विच्छू,—**रम्** चाँदी 2. हरताल,—**री** खजूर का पेड़—रघु० ४।५७ ।

खर्परः [—कर्पर पृषो० कस्य खः] 1. चोर 2. बदमाश, ठग 3. भिखारी का कटोरा 4. खोपड़ी 5. मिट्टी का फूटा हुआ बर्तन ठीकरा 6. छाता ।

खर्परिका, **खर्परी** [खर्पर+अच्+ङीप्,+कन्+टाप्, ह्रस्व, खर्पर+ङीप्] एक प्रकार का सुर्मा ।

खर्व् (**र्ब्**) (भ्वा० पर०—खर्वति खर्वित) 1. जाना, फिरना, चलना 2. घमंड करना ।

खर्व—(**र्ब**) (वि०) [खर्व् (र्ब्)+अच्] 1. विकलांग, अपाहज, अपूर्ण (अंगहीन) 2. ठिंगना, ओछा, कद में छोटा,—**र्वः**,—**र्वम्** दस अरब की संख्या । सम० —**शाख** (वि०) ठिंगना, ओछा, छोटा ।

खर्वटः,—**टम्** [खर्व्+अटन्] 1. नगर जिसमें पैंठ भरती हो, मंडी 2. पहाड़ की तराई का गाँव ।

खल् (भ्वा० पर०—खलति, खलित) 1. चलना-फिरना, हिलना-जुलना 2. एकत्र करना, संग्रह करना ।

खलः,—**लम्** [खल्+अच्] 1. खलिहान—मनु० ११।१७, ११४

याज्ञ० २।२८२ 2. पृथ्वी, भूमि 3. स्थान, जगह 4. धूल का ढेर 5. तलछट, गाद, तेल आदि के नीचे जमा हुआ मैल,—लः दुष्ट या शरारती आदमी—सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः, मन्त्रौषधिवशः सर्पः, खलः केन निवार्यते—चाण० २६, विषधरतोऽप्यतिविषमः खल इति न मृषा वदन्ति विद्वांसः, यदयं नकुलद्वेषी सकुलद्वेषी पुनः पिशुनः—वासव० [खलीकृ 1. कुचलना 2. घायल करना या क्षति पहुँचाना 3. दुर्व्यवहार करना, घृणा करना—परोक्षे खलीकृतोऽयं द्यूतकारः—मृच्छ०२] सम०—उक्तिः (स्त्री०) दुर्वचन दुर्भाषण,—धान्यम् खलिहान,—पूः (पुं० स्त्री०) झाड़ देने वाला, साफ करने वाला,—मूर्तिः पारा,—संसर्गः दुष्टों की संगति।

खलकः [ख+ला+क+कन्] घड़ा।

खलति (वि०) [स्खलन्तिकेशा अस्मात्—स्खल्+अतच् नि० साधुः] गंजे सिर वाला, गंजा—युवखलतिः।

खलतिकः [खलति+कै+क] पहाड़।

खलिः,—ली (स्त्री०) [खल्+इन्] तेल की तलछट, खली—स्थाल्यां वैदूर्यमय्यां पचति तिलखलीमिन्धनैश्चन्दनाद्यैः—भर्तृ० २।१००।

खलि (ली) नः,—नम् [खे अश्वमुखछिद्रे लीनम्—पृषो० वा ह्रस्वः] लगाम का दहाना, लगाम की रास।

खलिनी [खल्+इनि+ङीप्] खलिहानों का समूह।

खलींकारः,—कृतिः (स्त्री०) [खल+च्वि+कृ+घन्, क्तिन् वा] 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2. दुर्व्यवहार—शा० ११२५ 3. अनिष्ट, उत्पात।

खलु (अव्य०) [खल्+उन् बा०] यह अव्यय निम्नांकित अर्थों को प्रकट करता है—1. निस्सन्देह, निश्चय ही, अवश्य, सचमुच—मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति—श० ४।१४, अनुत्सेकः खलु विक्रमालङ्कारः—विक्रम० १, न खल्वनिर्जित्य रघुं कृती भवान्—रघु० ३।५१ 2. अनुरोध, अनुनय-विनय प्रार्थना—न खलु न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्—श० १।१०, न खलु न खलु मुग्धे साहसं कार्यमेतत्—नागा० ३ 3. पूछताछ—न खलु तामभिक्रुद्धो गुरुः—विक्रम० ३, (=किमभिक्रुद्धो गुरुः) न खलु विदितास्ते तत्र नियसन्तश्चाणक्यहतकेन—मुद्रा० २, न खलूग्ररुषा पिनाकिना गमितः सोऽपि सुहृद्गतां गतिम्—कु० ४।२४ 4. प्रतिषेध (क्रियात्मक संज्ञाओं के साथ)—निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्त्वा खलु वाचिकम्—शि० २।७० 5. तर्क—न विदीर्ये कठिना खलु स्त्रियः—कु० ४।५, (गण० कार इसे विषाद के निदर्शन के रूप में उद्धृत करता है)—विधिना जन एष वञ्चितस्त्वदधीनं खलु देहिनां सुखम्—४।१० 6. कभी कभी 'खलु' पूरक की भाँति भर्ती कर दिया जाता है 7. कभी कभी वाक्यालंकार की तरह प्रयुक्त होता है।

खलुच् (पुं०) [खम् इन्द्रियं लुञ्चति हन्ति इति—ख+लुञ्च्+क्विप्] अन्धकार।

खलूरिका परेड का मैदान जहाँ सैनिक लोग कवायद करें।

खल्या [खल+यत्—टाप्] खलिहानों का समूह।

खल्लः [खल्+क्विप्, तं लाति—खल्+ला+क] 1. खरल—जिसमें डाल कर औषधियाँ पीसी जायँ, चक्की 2. गढ़ा 3. चमड़ा 4. चातक पक्षी 5. मशक।

खल्लिका [खल्ल+कन्+टाप्, इत्वम्] कढ़ाई।

खल्लि (ली) ट (वि०) [खल्ल+इन्+टल्+ड, खल्लि+ङीष्+टल्+ड] गंजे सिर वाला।

खल्वाट (वि०) [खल्+वाट उप० स०] गंजा, गंजे सिर वाला—खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः सन्तापितो मस्तके—भर्तृ० २।९०, विक्रमांक० १८।९९।

खशः (ब० व०) भारत के उत्तर में स्थित एक पहाड़ी प्रदेश तथा उसके अधिवासी—मनु० १०।४४।

खशरः (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासियों का नाम।

खष्पः [खन्+प नि० नस्य षः] 1. क्रोध 2. हिंसा, निष्ठुरता।

खसः [खानि इन्द्रियाणि स्यति निश्चलीकरोति—ख+सो+क] 1. खाज, खुजली 2. एक देश का नाम दे० 'खश'।

खसूचिः (पुं०, स्त्री०) [ख+सूच्+इ] 1. अपमानसूचक अभिव्यक्ति (समास के अन्त में)—वैयाकरण खसूचिः—जो व्याकरण अच्छी तरह न जानता हो या भूल गया हो।

खस्खसः [खस प्रकारे द्वित्वम्, पृषो० अकारलोपः] पोस्त। सम०—रसः अफ़ीम।

खाजिकः [खाज+ठन्] तला हुआ या भुना हुआ अनाज।

खात् (त्) (अव्य०) गला साफ करते समय होने वाली ध्वनि, खात्कृ खखारना।

खाटः,—टा,—टिका,—टी (स्त्री०) [ख+अट्+घञ् स्त्रियां टाप्—खाट+कन्+टाप्, इत्वम्, खाट+ङीप्] अर्थी, टिक्टी जिस पर मुर्दे को रख कर चिता तक ले जाते हैं।

खाण्डव [खण्ड+अण्+वा+क] खांड, मिश्री,—वम् कुरुक्षेत्र प्रदेश में विद्यमान इन्द्र का प्रिय वन जिसे अर्जुन और कृष्ण की सहायता से अग्नि ने जला दिया था। सम०—प्रस्थः एक नगर का नाम।

खाण्डविकः, खाण्डिकः [खाण्डव+ठन्, खण्ड+ठन्] हलवाई।

खात (वि०) [खन्+क्त] 1. खुदा हुआ, खोखला किया हुआ 2. फाड़ा हुआ, चीरा हुआ,—तम् 1. खुदाई 2. सूराख़ 3. खाई, परिखा 4. आयताकार तालाब। सम०—भूः (स्त्री०) खाई, परिखा।

खातकः [खात+कन्] 1. खोदने वाला 2. कर्जदार,—**कम्** खाई, परिखा।

खाता [खात+टाप्] बनाया हुआ तालाब।

खातिः (स्त्री०) [खन्+क्तिन्] खुदाई, खोखला करना।

खात्रम् [खन्+ष्ट्रन्, कित्] 1. कुदाली 2. आयताकार तालाब 3. धागा 4. वन, जंगल 5. विस्मयोत्पादक भय।

खाद् (भ्वा० पर०— खादति, खादित) खाना निगल लेना, खिलाना, शिकार करना, काट लेना—प्राक्पादयोः पतति खादति पृष्ठमांसम्—हि० १।८१, खादन्मांसं न दुष्यति—मनु० ५।३२, ५३, भट्टि० ६।६, १।७८, १४।८७, १०१, १५।३५।

खादक (वि०) (स्त्री०— **दिका**) [खाद+ण्वुल्] खाने वाला उपभोग करने वाला,—**कः** कर्जदार।

खादनः [खाद्+ल्युट्] दांत,—**नम्** 1. खाना, चबाना 2. भोजन।

खादिर (वि०) (स्त्री०—**री**) [खादिर+अञ्] खैर वृक्ष का, या खैर वृक्ष की लकड़ी का बना हुआ—खादिरं यूपं कुर्वीत—मनु० २।४५।

खादुक (वि०) (स्त्री०—**की**) [खाद्+उन्+कन्] उत्पाती, हानिकर द्वेषपूर्ण।

खाद्यम् [खाद्+ण्यत्] भोजन, भोज्य पदार्थ।

खानम् [खन्+ल्युट्] 1. खुदाई 2. क्षति। सम०—**उदकः** नारियल का पेड़।

खानक (वि०) (स्त्री०—**निका**) [खन्+ण्वुल्] खोदने वाला, खनिक।

खानिः (स्त्री०) [खनिरेव पृषो० वृद्धिः] खान।

खानिकः—**कम्** [खान+ठञ्] दीवार में किया हुआ छेद, दरार, तरेड़।

खानिलः [खान+इलच् वा०] घर में सेंध लगाने वाला।

खारः,—**रिः**, (स्त्री०—**री**) [खम् आकाशम् आधिक्येन ऋच्छति—ख+ऋ+अण्, ख+आ+रा+क+ङीष् वा ह्रस्वः] १६ द्रोण के बराबर अनाज का माप।

खारिंपच (वि०) [खारिम्+पच्+खश्] एक खारी-भर अनाज पकाने वाला।

खार्वा (स्त्री०) त्रेतायुग, दूसरा युग।

खिङ्कुरः (स्त्री०—**री**) [खिम् इति शब्दं किरति—खिम्+कृ+क पृषो०] 1. लोमड़ी 2. खाट या चारपाई का पाया।

खिद् i (भ्वा०, तुदा० पर०—खिन्दति, खिन्न) प्रहार करना, खींचना, कष्ट देना ii (दिवा० रुधा०, आ०—खिद्यते, खिन्ते, खिन्न) 1. पीडित होना, कष्ट सहना, कष्टग्रस्त होना, क्लान्त होना, थकान अनुभव करना, अवसाद या श्रान्ति अनुभव करना—श० ५।७, किं नाम मयि खिद्यते गुरुः—वेणी० १, स पुरुषो यः खिद्यते नेन्द्रियैः—हि० २।१४१, पराभूत—शा० ३।७, भट्टि० १४।१०८, १७।१० 2. डरना, त्रस्त करना, (प्रेर०)। **परि—** पीडित होना, कष्ट सहना, दुःखी या क्लांत होना।

खिदिरः [खिद्+किरच्] 1. संन्यासी, 2. दरिद्र 3. चन्द्रमा।

खिन्न (भू० क० कृ०) [खिद्+क्त] 1. अवसाद प्राप्त, कष्ट ग्रस्त, उदास, दुःखी, पीडित—गुरुः खेदं खिन्ने मयि भजति नाद्यापि कुरुषु—वेणी० १।११, अनङ्गबाण-व्रणखिन्नमानसः—गीत० ३ 2. क्लान्त, थका हुआ, श्रान्त—खिन्नः खिन्नः शिखरिषु पदं न्यस्य गन्तासि यत्र—मेघ० १३, ३८, तयोपचाराञ्जलिखिन्नहस्तया—रघु० ३।११, चौर० ३।२०, शि० ९।११।

खिलः,—**लम्** [खिल्+क] 1. ऊसर भूमि या परती जमीन का टुकड़ा, मरुभूमि, वृक्षहीन भूमि 2. अतिरिक्त सूक्त जो किसी मूलसंग्रह में जोड़ा गया हो—मनु० ३।२३२ 3. सम्पूरक 4. संग्रहग्रंथ या संकलित ग्रंथ 5. खोखलापन, शून्यता ('खिल' का प्रयोग भू या कृ के साथ भी होता है—**खिलीभू** अगम्य होना, बन्द होना, अनभ्यस्त रहना—खिलीभूते विमानानां तदापातभयात्पथि—कु० २।४५, **खिलीकृ** (क) रोकना, बाधा डालना, अगम्य बनाना, रोकना—रघु० ११।१४, ८७ (ख) परती छोड़ना, उजाड़ना, पूर्णतः नष्ट कर देना—विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा—शि० २।३४।

खुङ्गाहः [खुम् इत्यव्यक्तशब्दं कृत्वा गाहते—खुम्+गाह+अच्] काला टट्टू या घोड़ा।

खुरः [खुर+क] 1. सुम—रघु० १।८५, २।२, मनु० ४।६७ 2. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य 3. उस्तरा 4. खाट का पाया। सम०—**आघातः**,—**क्षेपः** लात मारना,—**णस्**,—**णस** (वि०) चिपटी नाक वाला,—**पदवी** घोड़े के पदचिह्न,—**प्रः** अर्धगोलाकार नोक का बाण—दे० क्षुरप्र।

खुरली [खुरैः सह लाति पौनः पुन्येन यत्र—खुर+ला+क+ङीष्] (शस्त्र तथा धनुष आदि का) सैनिक अभ्यास—अस्त्रप्रयोगखुरलीकलहे गणानाम्—महावी० २।३४, दूरोत्पतनखुरलीकेलिजनितान्—५।५।

खुरालकः [खुर इव अलति पर्याप्नोति—खुर+अल्+ण्वुल्] लोहे का बाण।

खुरालिकः [खुराणाम् आलिभिः कायति प्रकाशते—खुरालि+कै+क] 1 उस्तरा रखने का घर 2. लोहे का तीर 3. तकिया।

खुल्ल (वि०) [=क्षुल्ल, पृषो०] छोटा, ओछा, अधम, नीच—दे० क्षुद्र। सम०—**तातः** चाचा।

खेचर दे० 'खचर'।

खेटः [खे अटति—अट्+अच्, खिच्+अच् वा] 1. गाँव, छोटा नगर, पुरवा 2. कफ 3. बलराम की गदा 4. घोड़ा (दि० समासान्त 'खेट' सदोषता तथा ह्रास

को प्रकट करता है जो 'अभागा' या 'कंबख्त' आदि शब्दों से पुकारा जा सकता है, **नगरखेटम्** अभागा नगर) 'खेट्ट' के लिए देखें ख के नीचे।

खेटितालः,—लः [खिट्+इन्=खेटि, खेटिः तानोऽस्य, तालोऽस्य वा] वैतालिक, स्तुतिपाठक जो गृहस्वामी को गा बजा कर जगाता है।

खेटिन् (पुं०) [खिट्+णिनि] दुराचारी, दुश्चरित्र।

खेदः [खिद्+घञ्] 1. अवसाद, आलस्य, उदासी 2. थकान, श्रान्ति—अलसलुलितमुग्धान्यध्वसंजातखेदात्—उत्तर० १।२४, अध्वखेद नयेथाः—मेघ० ३२, रघु० १८।४५ 3. पीडा, यन्त्रणा—अमरु ३ 4. दुःख, शोक—गुरुः खेदं खिन्न मयि भजति नाद्यापि कुरुषु—वेणी० १।११, अमरु ५३।

खेयम् [खन्+क्यप्, इकारादेशः] खाई, परिखा, —यः पुल।

खेल् (भ्वा० पर०—खेलति, खेलित) 1. हिलाना, इधर-उधर आना जाना 2. कांपना 3. खेलना।

खेल (वि०) [खेल्+अच्] खिलाड़ी, रसिया, क्रीडापूर्ण—रघु० ४।२२, विक्रम० ४।१६, ४३।

खेलनम् [खेल्+ल्युट्] 1. हिलाना 2. खेल, मनोरंजन 3. तमाशा।

खेला [खेल्+अ+टाप्] क्रीडा, खेल।

खेलिः (स्त्री०) [खे आकाशे अलति पर्याप्नोति, खे+अल्+इन्] 1. क्रीडा, खेल 2. तीर।

खोटिः (स्त्री०) [खोट्+इन्] चालाक और चतुर स्त्री।

खोड (वि०) [खोड्+अच्] विकलांग, लंगड़ा, पंगु।

खोर (ल) (वि०) [खोर् (ल्)+अच्] पंगु, लंगड़ा।

खोलकः [खोल+कन्] 1. पुरवा 2. बांबी 3. सुपारी का छिलका 4. डेगची।

खोलिः [खोल्+इन्] तरकस।

ख्या (अदा० पर०—(आर्धधातुक लकारों में आ० भी)—ख्याति, ख्यात) कहना, घोषणा करना, समाचार देना (संप्र० के साथ)—कर्म०—ख्यायते 1. कहलाना—भट्टि० ६।९७ 2. प्रसिद्ध या परिचित होना,—प्रेर०—ख्यापयति—ते 1. ज्ञात कराना, प्रकथन करना—मनु० ७।२०१ 2. कहना, घोषणा करना, वर्णन करना—भर्तृ० २।५९, मनु० ११।९९ 3. स्तुति करना, प्रख्यात करना, प्रशंसा करना। अभि—,(कर्म०) ज्ञात होना, प्रेर० घोषणा करना, प्रकथन करना, आ—1. कहना, घोषणा करना, समाचार देना (प्रायः संप्र० के साथ),—ते रामाय वधोपायमाचख्युर्विबुधद्विषः—रघु० १५।५, ४१, ७१, ९३; १२।४२, ९१; भग० ११।३१, १८।६३, (कभी कभी संबं० के साथ—आख्याहि भद्रे प्रियदर्शनस्य) पंच० ४।१५ 2. घोषणा करना, व्यक्त करना 3. पुकारना, नाम लेना—रघु० १०।५१, मनु० ४।६ परि—,सुपरिचित, होना, परिसम्—,गिनती करना, प्र—,सुपरिचित होना, प्रत्या—, 1. मुकर जाना 2. इंकार करना, मना करना, अस्वीकार करना 3. मना करना, प्रतिषेध करना 4. वर्जित करना 5. पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना—मालवि० ३।५, वि— सुपरिचित या प्रसिद्ध होना, व्या—, 1. कहना, समाचार देना, घोषणा करना—भट्टि० १४।११३ 2. व्याख्या करना, वर्णन करना—रावणस्यापि ते जन्म व्याख्यास्यामि—महा० 3. नाम लेना, पुकारना—विद्वद्वृन्दैर्वीणावाणी व्याख्याता सा विद्युन्माला—श्रुत० १५, सम्—,गिनना, गणना करना, हिसाब लगाना, जोड़ना—तावन्त्येव च तत्त्वानि साङ्ख्यैः सङ्ख्यायन्ते—शारी०।

ख्यात (भू० क० कृ०) [ख्या+क्त] 1. ज्ञात—रघु० १८।६ 2. नाम लिया गया, पुकारा गया 3. कहा गया 4. विश्रुत, प्रसिद्ध, बदनाम। सम०—**गर्हण** (वि०) कुख्यात, दुष्ट, बदनाम।

ख्यातिः [ख्या+क्तिन्] विश्रुति, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा—मनु० १२।३६, पंच० १।३७१ 2. नाम, शीर्षक, अभिधान 3. वर्णन 4. प्रशंसा 5. (दर्शन० में) ज्ञान, उपयुक्त पद द्वारा वस्तुओं का विवेचन करने की शक्ति—शि० ४।५५।

ख्यापनम् [ख्या+णिच्+ल्युट्] 1. घोषणा करना, (रहस्य का) उद्घाटन करना 2. अपराध स्वीकार करना, मान लेना, सार्वजनिक घोषणा करना—मनु० ११।२२७ 3. विख्यात करना, प्रसिद्ध करना।

ग

ग (वि०) [गै+क] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त) जो जाता है, जाने वाला, गतिमान् होने वाला, ठहरने वाला, शेष रहने वाला, मैथुन करने वाला, —गः 1. गन्धर्व 2. गणेश का विशेषण 3. दीर्घ मात्रा ('गुरु' शब्द का संक्षिप्त रूप, छन्दः शास्त्र में),—गम् गायन।

गगनम्—नम् [गच्छन्त्यस्मिन्—गम्+ल्युट्, ग आदेशः] (कुछ लोग 'गगण' को अशुद्ध समझते हैं जैसा कि एक

लेखक का कथन है—फाल्गुने गगने फेने णत्वमिच्छन्ति बर्बरा) 1. आकाश, अन्तरिक्ष—अवोचदेनं गगनस्पृशा रघुः स्वरेण—रघु० ३।४३, गगनमिव नष्टतारम् —पंच० ५।१६, सोऽयं चन्द्रः पतति गगणात्—श० ४, अने० पा०, शि० ९।२७ 2. (गण० में) शून्य 3. स्वर्ग। सम०—**अग्रम्** उच्चतम आकाश,—**अङ्गना** स्वर्गीय परी, अप्सरा,—**अध्वगः** 1. सूर्य 2. ग्रह 3. स्वर्गीय प्राणी,—**अम्बु** (नपुं०) वर्षा का पानी,—**उल्मुकः** मंगलग्रह,—**कुसुमम्**,—**पुष्पम्** आकाश का फूल अर्थात् अवास्तविक वस्तु, असंभावना, दे० 'खपुष्प',—**गतिः** 1. देवता 2. स्वर्गीय प्राणी—मेघ० ४६ 3. ग्रह,—**चर** ('गगनेचर' भी) (वि०) आकाश में घूमने वाला (—रः) 1. पक्षी 2. ग्रह 3. स्वर्गीय आत्मा,—**ध्वजः** 1. सूर्य 2. बादल,—**सद्** (वि०) अन्तरिक्ष में रहने वाला (पुं०) स्वर्गीय जीव—शि० ४।५३,—**सिन्धु** (स्त्री०) गंगा की उपाधि,—**स्थ**,—**स्थित** (वि०) आकाश में विद्यमान,—**स्पर्शनः** 1. वायु, हवा 2. आठ मरुतों में से एक।

गङ्गा [गम्+गन्+टाप्] 1. गंगा नदी, भारत की पवित्रतम नदी,—अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा—भर्तृ० ३।१०, रघु० २।२६, १३।५७, (इसका उल्लेख ऋग्वेद० १०।७५।५ में दूसरी नदियों के साथ २ मिलता है) (इसके अतिरिक्त और दूसरी नदियों के लिए भी जो भारत में पावन समझी जाती हैं, यह शब्द कभी २ प्रयुक्त किया जाता है) 2. गंगा देवी के रूप में मूर्त गंगा (हिमवान् पर्वत की ज्येष्ठ पुत्री गंगा है, कहते हैं ब्रह्मा के किसी शाप के कारण गंगा को इस धरती पर आना पड़ा जहाँ वह शंतनु राजा की पत्नी बनी; गंगा के आठ पुत्र हुए, जिनमें भीष्म सब से छोटा था, भीष्म अपने आजीवन ब्रह्मचर्य तथा शौर्य के कारण विख्यात हो गया था। दूसरे मतानुसार वह भगीरथ की आराधना पर इस पृथ्वी पर आई, दे० 'भगीरथ' और 'जह्नु' और तु० भर्तृ० ३।१०) सम०—**अम्बु**,—**अम्भस्** (नपुं०) 1. गंगाजल 2. वर्षा का विशुद्ध जल (जैसा कि आश्विन मास में बरसता है),—**अवतारः** 1. गंगा का इस पृथ्वी पर पदार्पण—भगीरथ इव दृष्टगङ्गावतारः—का० ३२, (यहाँ इस शब्द का अर्थ—स्नान के लिए गंगा में उतरना भी है) 2. पुण्य स्थान का नाम,—**उद्भेदः** गंगा का उद्गम स्थान,—**क्षेत्रम्** गंगा तथा उसके दोनों किनारों का दो २ कोस तक का प्रदेश,—**चिल्ली** एक जलपक्षी,—**जः** 1. भीष्म 2. कार्तिकेय,—**दत्तः** भीष्म का विशेषण,—**द्वारम्** समतल भूमि का वह स्थान जहाँ गंगा प्रविष्ट होती है ('हरिद्वार' भी उसी स्थान को कहते हैं),—**धरः** 1. शिव का विशेषण 2. समुद्र, °**पुरम्** एक नगर का नाम,—**पुत्रः** 1. भीष्म 2. कार्तिकेय 3. एक संकर जाति जिसका व्यवसाय मुर्दे ढोना है 4. गंगा के घाट पर बैठने वाला पंडा जो तीर्थयात्रियों का पथप्रदर्शन करता है,—**भृत्** (पुं०) 1. शिव 2. समुद्र,—**मध्यम्** गंगा का तल भाग,—**यात्रा** 1. गंगा नदी पर जाना 2. रोगी को गंगातट पर इसलिए ले जाना कि वहीं उसकी मृत्यु हो,—**सागरः** वह स्थान जहाँ गंगा समुद्र से मिलती है,—**सुतः** 1. भीष्म का विशेषण 2. कार्तिकेय का विशेषण,—**ह्रदः** एक तीर्थ स्थान का नाम।

गङ्गाका, **गङ्गका**, **गङ्गिका** [गङ्गा+कन्+टाप्, ह्रस्वो वा, पक्षे इत्वम् अपि] गंगा।

गङ्गोलः एक रत्न जिसे गोमेद भी कहते हैं।

गच्छः [गम्+श] 1. वृक्ष 2. (गण० में) प्रक्रम का समय (अर्थात् राशियों की संख्या)।

गज् (भ्वा० पर०—गजति गजित) 1. चिंघाड़ना, दहाड़ना—जगजुर्गजाः—भट्टि० १४।५ 2. मदिरा पीकर मस्त होना, व्याकुल होना, मदोन्मत्त होना।

गजः [गज्+अच्] 1. हाथी—कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ—कि० १।३६ 2. आठ की संख्या 3. लम्बाई की माप, गज (परिभाषा-साधारणनरांगुल्या त्रिंशदंगुलको गजः) 4. एक राक्षस जिसे शिव ने मारा था। सम०—**अग्रणी** (पुं०) 1. सर्वश्रेष्ठ हाथी 2. इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण,—**अधिपतिः** हाथियों का स्वामी, उत्तम हाथी, **अध्यक्षः** हाथियों का अधीक्षक,—**अपसदः** दुष्ट या बदमाश हाथी, सामान्य या नीच नसल का हाथी,—**अशनः** अश्वत्थ वृक्ष (—**नम्**) कमल की जड़,—**अरिः** 1. सिंह 2. शिव जिसने गज नामक राक्षस को मारा था,—**आजीवः** हाथियों से जो अपनी जीविकोपार्जन करता है, महावत,—**आननः**,—**आस्यः** गणेश का विशेषण,—**आयुर्वेदः** हाथियों की चिकित्सा का विज्ञान,—**आरोहः** महावत,—**आह्वम्**—**आह्वयम्** हस्तिनापुर,—**इन्द्रः** 1. उत्तम हाथी, गजराज—किं रुष्टासि गजेन्द्रमन्दगमने—शृंङ्गार० ७ 2. इन्द्र का हाथी ऐरावत, °**कर्णः** शिव का विशेषण,—**कन्दः** खाने के योग्य एक बड़ी जड़,—**कूर्माशिन्** (पुं०) गरुड़,—**गतिः** (स्त्री०) 1. हाथी जैसी मंद चाल, हाथी की सी चाल वाली स्त्री,—**गामिनी** हाथी की सी मन्द तथा गौरवभरी चालवाली स्त्री,—**दघ्न**,—**द्वयस** (वि०) हाथी जैसा ऊँचा,—**दन्तः** 1. हाथी का दांत 2. गणेश का विशेषण 3. हाथीदांत 4. खूंटी या ब्रैकेट जो दीवार में लगा हो, °**मय** (वि०) हाथीदांत से बना हुआ,—**दानम्** 1. हाथी के गण्डस्थल से बहने वाला मद 2. हाथी का दान,—**नासा** हाथी का गंडस्थल,—**पतिः** 1. हाथियों का स्वामी 2. विशालकाय हाथी—शि० ६।५५ 3. सर्वश्रेष्ठ हाथी,—**पुङ्गवः**

एक विशालकाय श्रेष्ठ हाथी—गजपुङ्गवस्तु, धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुंक्ते—भर्तृ० २।३१,—पुरम् हस्तिनापुर,—बन्धनी,—बन्धिनी, हाथियों का अस्तबल, —भक्षक: अश्वत्थ वृक्ष,—मण्डनम् हाथी को सजाने का आभूषण, विशेषकर हाथी के मस्तक की रंगीन रेखाएँ,—मण्डलिका,—मण्डली हाथियों की मंडली, —माचल: सिंह,—मुक्ता,—मौक्तिकम् मोती जो हाथी के मस्तक से निकला हुआ माना जाता है, —मुख:,—वक्त्र:,—वदन: गणेश का विशेषण, —मोटन: सिंह,—यूथम् हाथियो का झुंड—रघु० ९। ७१,—योधिन् (वि०) हाथी पर बैठकर युद्ध करने वाला,—राज: उत्तम या श्रेष्ठ हाथी,—व्रज: हाथियों का दल,—शिक्षा हस्तिविज्ञान,—साह्वयम् हस्तिनापुर, —स्नानम् (शा०) हाथी का स्नान करना, (आलं०) हाथी के स्नान के समान और निष्फल प्रयत्न (हाथी स्नान करके अपने ऊपर धूल डाल लेता है) तु० —अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया—हि० १।१८।

गजता [गज+तल्] हाथियों का समूह।

गजवत् (वि०) [गज+मतुप्] हाथियों को रखने वाला —रघु० ६।९।

गञ्ज् (भ्वा० पर०—गञ्जति) विशेष ढंग से ध्वनि करना, शब्द करना।

गञ्ज: [गंज्+घञ्] 1. खान 2. खजाना 3. गोशाला 4. मंडी, अनाज की मण्डी 5. अनादर, तिरस्कार,—जा 1. झोंपड़ी, पर्णशाला 2. मधुशाला 3. मदिरापात्र।

गञ्जन (वि०) [गञ्ज्+ल्युट्] क्षुद्र समझना, लज्जित करना आगे बढ़ जाना, सर्वश्रेष्ठ होना—स्थलकमलगञ्जनं मम हृदयरञ्जनं (चरणद्वयम्) गीत० १०, अलिकुलगञ्जनमञ्जनकम्—१२—नेत्रे खञ्जनगञ्जने —सा० द० 2. पराजित करना, जीतना—कालियविषधरगञ्जन—गीत० १।

गञ्जिका [गञ्जा+कन्+टाप्, इत्वम्] मधुशाला, मदिरालय।

गड् (भ्वा० पर०—गडति, गडित) 1. खींचना, निकालना 2. (तरल पदार्थ की भाँति) बहना।

गड: [गड्+अच्] 1. पर्दा 2. बाड़ 3. खाई, परिखा 4. रुकावट 5. एक प्रकार की सुनहरी मछली। सम० —उत्थम्,—देशजम्,—लवणम् पहाड़ी नमक, विशेषत: वह जो गड प्रदेश में पाया जाता है।

गडयन्त:, गडयित्नु: [गड्+णिच्+झच्, इत्नुच् वा] बादल।

गडि: [गड्+इन्] 1. बछड़ा 2. मट्ठा बैल—गुणानामेव दौरात्म्याद्धुरि धुर्यो नियुज्यते, असंजातकिणस्कन्ध: सुखं स्वपिति गौर्गडि:—काव्य० १०।

गडु (वि०) [गड्+उन्] बेडौल, कुबड़ा,—डु: 1. पीठ पर कूबड़ 2. नेजा 3. जलपात्र 4. केंचुवा 5. गलगण्ड निरर्थक वस्तु—दे० अन्तर्गडु।

गडुक: [गडु+कै+क] 1. जलपात्र 2. अँगूठी।

गडुर,—ल (वि०) [गडु+ल बा० र] कुबड़ा, बेडौल, मुड़ा हुआ।

गडेर: [गड्+एरक्] बादल।

गडोल: [गड्+ओलच्] 1. मुंहभर 2. कच्ची खांड।

गड्डुर:,—ल: [गड्+डर, डल वा] भेड़।

गड्डरिका [गड्डरं मेषमनुधावति+ठन्] 1. भेड़ों की पंक्ति 2. अविच्छिन्न पंक्ति, नदी, धारा, °प्रवाह: 'भेड़िया-धसान' इसका तात्पर्य है, भेड़ों के रेवड़ की भांति अंधानुसरण करना—तु० इति गड्डरिकाप्रवाहेणैषां भेद:—काव्य० ८।

गड्डुक: [गडुक पृषो०] सोने का बर्तन।

गण् (चुरा० उभ०—गणयति—ते, गणित) 1. गिनना, गिनती करना, गणना करना—लीलाकमलपत्राणि गणयामास पार्वती—कु० ६।८४, नामाक्षरं गणय गच्छसि यावदन्तम्—श० ६।११ 2. हिसाब लगाना, संगणना या संख्या करना 3. जोड़ना, संपूर्ण जोड़ लगाना 4. अन्दाज लगाना, मूल्य निर्धारण करना (करण० के साथ)—न तं तृणेनापि गणयामि 5. श्रेणी में रखना, कोटि में गिनना—अगण्यतामरेषु—दश० १५४ 6. हिसाब में लगाना, विचारना—वाणीं काणभुजीमजीगणत्—मल्लि० 7. ध्यान देना, विचार करना, सोचना—त्वया विना सुखमेतावदजस्य गण्यताम्—रघु० ८।६९, ५। २०, ११।७५, जातस्तु गण्यते सोऽत्र य: स्फुरत्यन्वयाधिकम्—पंच० १।२७, किसलयतल्पं गणयति विहितहुताशविकल्पम्—गीत० ४ 8. लगाना, आरोपण करना, मत्थे मढ़ना (अधि० के साथ) जाड्यं ह्रीमति गण्यते—भर्तृ० २।५४ 9. ध्यान देना, खयाल करना, मन लगाना—प्रणयमगणयित्वा यन्ममापद्गतस्य विक्रम० ४।१३ 10. (निषेधात्मक अव्यय के साथ) उपेक्षा करना, ध्यान न देना—न महान्तमपि क्लेशमजीगणत्—का० ६४, मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दु:खं न च सुखम्—भर्तृ० २।८१, ९, श० १।१०, भट्टि० २।५३, १५।४५, हि० २।१४२, अधि—, 1. प्रशंसा करना 2. गणना करना, गिनना, अव—, अवहेलना करना, परि—, 1. गणना करना, गिनना 2. विचार करना, ध्यान देना, सोचना—अपरिगणयन् —मेघ० ५, प्र—, हिसाब लगाना, वि—, 1. गणना करना, याज्ञ० ३।१०४ 2. खयाल करना, विचार करना—मेघ० १०९, रघु० १।८७ 3. अवहेलना करना—ध्यान न देना 4. विचार विमर्श करना, चिंतन करना—पंच० ३।४३।

गणः [गण्+अच्] 1. रेवड़, झुंड, समूह, दल, संग्रह —गुणिगणगणनारम्भे, भगणः—आदि 2. माला, श्रेणी 3. अनुयायी या अनुचर वर्ग 4. विशेषतः अर्धदेवों का गण जो शिव के सेवक माने जाते हैं और गणेश के अधीक्षण में रहते हैं, इस गण का कोई अर्धदेव—गणानां त्वा गणपति हवामहे कविं कवीनाम्—आदि—गणा नमेरुप्रसवावतंसाः—कु० १।५५, ७।४०, ७१, मेघ० ३३, ५५, कि० ५।१३ 5. समान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बना मनुष्यों का समाज या सभा 6. सम्प्रदाय (दर्शन या धर्म में) 7. २७ रथ, २७ हाथी, ८१ घोड़े और १३५ पदाति सैनिकों की छोटी टोली ('अक्षौहिणी' का उपप्रभाग) 8. (गण०) अङ्क 9. पाद, चरण (छन्दः शास्त्र में) 10. (व्या० में) धातुओं या शब्दों का समूह जो एक ही नियम के अधीन हो—तथा उस श्रेणी के पहले शब्द पर जिसका नाम रक्खा गया हो -उदा० भ्वादिगण अर्थात् 'भू' से आरम्भ होने वाली धातुओं की श्रेणी 11. गणेश का विशेषण। सम० —**अग्रणी** (पुं०) गणेश,—**अचल**. कैलास पहाड़ जिस पर शिव के गण रहते है,—**अधिपः**—**अधिपतिः** 1. शिव—शि० ९।२७ 2. गणेश 3. सैन्य दल का मुखिया सेनापति; शिष्यों के समूह का मुखिया, गुरु; मनुष्यों या जानवरों की टोली का मुखिया, यूथपति,—**अन्नम्** सहभोजशाला, भोज्यपदार्थ जो बहुत से समान व्यक्तियों के लिए बनाया जाय—मनु० ४।२०९, २१९, —**अभ्यन्तर** (वि०) दल या टोली का एक व्यक्ति (रः) किसी धार्मिक संस्था का सदस्य या नेता—मनु० ३।१५४,—**ईशः** शिव का पुत्र गणपति (दे० नी० गणपतिः), °**जननी**: पार्वती का विशेषण, °**भूषणम्** सिन्दूर, —**ईशानः**,—**ईश्वरः** 1. गणेश का विशेषण 2. शिव का विशेषण,—**उत्साहः** गैंडा,—**कारः** 1. वर्गीकरण करने वाला 2. भीमसेन का विशेषण,—**कृत्वस्** (अव्य०) सब कालों में, कई बार,—**गतिः** एक विशेष ऊँची संख्या, —**चक्रकम्** गुणीगण का सहभोज, ज्योनार,—**छन्दस्** (नपुं०) पादों द्वारा मापा गया तथा विनियमित छन्द, —**तिथ** (वि०) दल या टोली बनाने वाला,—**दीक्षा** 1. बहुतों की एक साथ दीक्षा, सामूहिक दीक्षा 2. बहुत से व्यक्तियों का एक साथ दीक्षा-संस्कार,—**देवताः** (ब० व०) उन देवताओं का समूह जो प्रायः टोली या श्रेणियों में प्रकट होते हैं—अमर० परिभाषा देता है—आदित्यविश्ववसवस्तुषिता भास्वरानिलाः, महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः।—**द्रव्यम्** सार्वजनिक संपत्ति, पंचायती माल,—**धरः** 1. किसी वर्ग या समूह का मुखिया 2. विद्यालय का अध्यापक,—**नाथः**, —**नायकः** 1. शिव की उपाधि 2. गणेश का विशेषण, —**नायिका** दुर्गा की उपाधि,—**पः**,—**पतिः** 1. शिव 2. गणेश (गणेश, शिव और पार्वती का पुत्र है, एक आख्यायिका के अनुसार वह केवल पार्वती का ही पुत्र है क्योंकि उसका जन्म पार्वती के शरीर के मैल से हुआ। यह बुद्धिमत्ता का देवता और बाधाओं को हटाने वाला है, और इसीलिए प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य के आरम्भ होने पर उसकी पूजा होती है तथा आवाहन किया जाता है उसका चित्रण प्रायः बैठी हुई अवस्था में किया जाता है, उसकी तोंद निकली हुई है, चार हाथ हैं, चूहे पर सवार है तथा सिर हाथी का है, इसके सिर में दांत केवल एक है, दूसरा दांत—शिव जी के अन्तःपुर में प्रविष्ट होते हुए परशुराम को रोकने के लिए युद्ध करते समय टूट गया (इसी लिए गणेश को एकदन्त या एकदशन भी कहते हैं; उसका हाथी का सिर है'—इस बात पर प्रकाश डालने वाली अनेक कहानियाँ है। कहते हैं कि गणेश ने व्यास से सुनकर महाभारत लिखा, व्यास ने ब्रह्मा से लिपिकार के रूप में गणेश की सेवाएँ प्राप्त कर ली थी),—**पर्वत** दे० गणाचल,—**पीठकम्** छाती, वक्षस्थल,—**पुंगवः** किसी वर्ग या जाति का मुखिया (ब० व०),—**पूर्वः** किसी जाति या वर्ग का नेता,—**भर्तृ** (पुं०) 1. शिव का विशेषण—गणभर्तुरुक्षा—कि० ५।४२ 2. गणेश का विशेषण 3. किसी वर्ग का नेता,—**भोजनम्** सहभोज, मिलकर भोजन करना,—**यज्ञः** सामूहिक संस्कार, —**राज्यम्** दक्षिण का एक साम्राज्य,—**रात्रम्** रातों का समूह,—**वृत्तम्** दे० गणछन्दस्,—**हासः**,—**हासकः** सुगन्ध द्रव्य की एक जाति।

गणक (वि०) (स्त्री०—णिका) [गण्+ण्वुल्] बहुत धन देकर खरीदा हुआ,—**कः** 1. अङ्कगणित का ज्ञाता 2. ज्योतिषी—रे पान्थ पुस्तकधर क्षणमत्र तिष्ठ वैद्योऽसि किं गणकशास्त्रविशारदोऽसि, केनौषधेन मम पश्यति भर्तुरम्बा किं वागमिष्यति पतिः सुचिरप्रवासी —सुभा०,—**की** ज्योतिषी की पत्नी।

गणनम् [गण्+णिच+ल्युट्] 1. गिनना, हिसाब लगाना 2. जोड़ना, गणना करना 3. विचार करना, खयाल करना, ध्यान रखना 4. विश्वास करना, चिन्तन करना।

गणना [गण्+णिच्+युच्] हिसाब लगाना, विचार करना खयाल करना, गिनती करना—का वा गणना सचेतनेषु अपगतचेतनान्यपि संघट्टयितुमलं (मदनः)—का० १५७, (हमें क्या आवश्यकता है :·····तु० कथा) मेघ० १०, ८७, रघु० ११।६४, शि० १६।५९, अमरु ६४। सम०—**गतिः** (स्त्री०)=गणपति,—**पतिः** अङ्कगणित को जानने वाला,—**महामात्रः** वित्तमंत्री।

गणशस् (अव्य०) [गण+शस्] दलों में, खेड़ों में, श्रेणी के क्रम से।

गणिः (स्त्री०) [गण्+इन्] गिनना ।

गणिका [गण+ठञ्+टाप्] 1. रण्डी, वेश्या —गुणानुरक्ता गणिका च यस्य वसन्तशोभेव वसन्तसेना —मृच्छ० १।६, गणिका नाम पादुकान्तरप्रविष्टेव लेष्टुका दुःखेन पुनर्निराक्रियते—मृच्छ० ५, निरकाशयद्रविमपेतवसुं वियदालयादपरदिग्गणिका –शि० ९।१० 2. हथिनी 3. एक प्रकार का फूल ।

गणित (वि०) [गण्+क्त] 1. गिना हुआ, संख्यात, हिसाब लगाया हुआ 2. खयाल किया हुआ, देखभाल किया हुआ–दे० गण्;–**तम्** 1. गिनना, हिसाब लगाना 2. गणना विज्ञान, गणित (इसमें अंकगणित [पाटीगणित या व्यक्तगणित] बीजगणित और रेखागणित सम्मिलित हैं)–गणितमथ कलां वैशिकीं हस्तिशिक्षां ज्ञात्वा —मृच्छ० १।४ 3. श्रेणी का जोड़ 4. जोड़ ।

गणितिन् (पुं०) [गणित+इनि] 1. जिसने हिसाब लगाया है 2. गणितज्ञ ।

गणिन (वि०) (स्त्री०–नी) [गण+इनि] (किन्हीं वस्तुओं की) टोली या खंड को रखने वाला, **श्वगणिन्**, कुत्तों के झुंड को रखने वाला,—रघु० ९।५३, (पुं०) अध्यापक (शिष्यों की श्रेणी को रखने वाला)।

गणेय (वि०) [गण्+एय] गिनती किये जाने के योग्य, जो गिना जा सके ।

गणेरु [गण्+एरु] कर्णिकार वृक्ष (स्त्री०) 1. रंडी 2. हथिनी ।

गणेरुका [गणेरु+कै+क] 1. कुटनी, दूती 2. सेविका ।

गण्डः [गण्ड्+अच्] 1. गाल, कनपटी समेत मुख का समस्त पार्श्व–गण्डाभोगे पुलकपटलं–मा० २।५, तदीयमार्द्रारुणगण्डलेखम्—कु० ७।८२, मेघ० २६, ९२, अमरु ८१, ऋतु० ४।६, ६।१०, श० ६।१७, शि० १२।५४ 2. हाथी की कनपटी—मा० १।१ 3. बुलबुला 4. फोड़ा, रसौली, सूजन, फुंसी–अयमपरो गण्डस्योपरि विस्फोटः–मुद्रा० ५, तदा गण्डस्योपरि पिटिका संवृत्ता—श० २ 5. गंडमाला या गर्दन के अन्य फोड़ा फुंसी 6. जोड़, गांठ 7. चिह्न, धब्बा 8. गैंडा 9. मूत्राशय 10. नायक, योद्धा 11. घोड़े के साज का एक भाग, आभूषण के रूप में घोड़े के जीन पर लगा हुआ बटन । सम०—**अङ्गः** गैंडा, –**उपधानम्** तकिया —मृदुगण्डोपधानानि शयनानि सुखानि च—सुश्रु०, —**कुसुमम्** हाथी की कनपटी से झरने वाला मद,—**कूपः** पहाड़ की चोटी पर बना कुआं,—**ग्रामः** बड़ा गाँव, **देशः** –**प्रदेशः** गाल,—**फलकम्** चौड़ा गाल—धृतमुग्धगण्डफलकैर्बिबभुर्विकसद्भिरास्यकमलैः प्रमदाः—शि० ९।४७,–**भित्तिः** (स्त्री०) 1. हाथी के गंडस्थल का छिद्र जिससे मद झरता है 2. 'भित्ति की भांति गाल' अर्थात् चौड़े, श्रेष्ठ और प्रशस्त गाल—निर्धौतदानामलगण्डभित्तिः (गजः) रघु० ५।४३, (यहाँ मल्लिनाथ कहता है—प्रशस्तौ गंडौ गंडभित्ती) १२।१०२, —**मालः**—**माला** कंठमाला रोग (जिसमें गर्दन की गिल्टियों में सूजन हो जाती है),—**मूर्ख** (वि०) अत्यन्त मूर्ख, बिल्कुल मूढ,—**शिला** बड़ी चट्टान, —**शैलः** 1. भूचाल या आंधी से नीचे गिराई गई विशाल चट्टान—कि० ७।३७ 2. मस्तक,—**साह्वया** नदी का नाम, (इसे 'गंडकी' भी कहते हैं),—**स्थलम्**, —**स्थली** 1. गाल—गण्डस्थलेषु मदवारिषु—पंच० १।१२३, शृङ्गार० ७, गण्डस्थलीः प्रोषितपत्रलेखाः —रघु० ६।७२ अमरु ७७ 2. हाथी की कनपटियाँ ।

गण्डकः [गण्ड+कन्] 1. गैंडा 2. रुकावट, बाधा 3. जोड़, गांठ 4. चिह्न, धब्बा 5. फोड़ा, रसौली, फुंसी 6. वियोजन, वियोग 7. चार कौड़ी के मूल्य का सिक्का । सम०—**वती** दे० गंडकी ।

गण्डका [गंडक+टाप्] लौंदा, पिण्ड या डली ।

गण्डकी [गण्डक+ङीप्] 1. एक नदी का नाम जो गंगा में मिल जाती है 2. मादा गैंडा । सम०—**पुत्रः**, —**शिला** शालिग्राम (पत्थर का) ।

गण्डलिन् (पुं०) [गण्डल+इनि] शिव ।

गण्डिः [गण्ड+इनि] वृक्ष का तना, जड़ से लेकर उस स्थान तक जहां से शाखाएँ आरम्भ होती हैं ।

गण्डिका [गण्डक+टाप्, इत्वम्] 1. एक प्रकार का कंकड़ 2. एक प्रकार का पेय ।

गण्डीरः [गण्ड्+ईरन्] नायक, शूरवीर ।

गण्डुः (पुं०, स्त्री०) [गण्ड्+उ—ऊङ्] 1. तकिया 2. जोड़, गाँठ ।

गण्डू (स्त्री०) 1. जोड़, गाँठ 2. हड्डी 3. तकिया 4. तेल । सम०—**पदः** एक प्रकार का कीड़ा, केंचुआ, °**भवम्** सीसा,—**पदी** छोटा केंचुआ ।

गण्डूषः—**षा** [गण्ड्+ऊषन्] (पानी का) मुहभर, मुट्ठी पर—गजाय गण्डूषजलं करेणुः (ददौ)—कु० ३।३७, उत्तर० ३।१६, मा० ९।३४, गण्डूषजलमात्रेण शफरीफर्फरायते—उद्भट 2. हाथी के सूंड़ की नोक ।

गण्डोलः [गंड्+ओलच्] 1. कच्ची खांड़ 2. मुंहभर ।

गत (भू० क० कृ) [गम्+क्त] 1. गया हुआ, व्यतीत, सदा के लिए गया हुआ—मुद्रा० १।२५ 2. गुजरा हुआ, बीता हुआ, पिछला–गतायां रात्रौ 3. मृत, मुर्दा, दिवंगत–कु० ४।३० 4. गया हुआ, पहुँचा हुआ, पहुँचने वाला 5. अन्तर्गत, अन्तःस्थित, बैठा हुआ विश्राम करता हुआ, सम्मिलित (बहुधा समासों में—प्रासादप्रान्तगतः—पंच० १, बैठा हुआ; सदोगतः—रघु० ३।६६, सभा में बैठा हुआ; इसी प्रकार आढ्य° सर्वगतः सर्वत्र विद्यमान 6. फँसा हुआ, घटाया गया आपद्गत 7. संकेत करते हुए, संबंध रखते हुए, के

विषय में, की बाबत, विषयक, संबद्ध (बहुधा समास में)—राजा शकुन्तलागतमेव चिन्तयति—श० ५, भर्तृगतया चिन्तया—श० ४, वयमपि भवत्यौ सखीगतं किमपि पृच्छामः—श० १, इसी प्रकार 'पुत्रगतः स्नेहः' आदि,—**तम्**। गति, जाना- -गतमुपरि घनानां वारिगर्भोदराणाम्—श० ७।७, शि० १।२ 2. चाल, चलने की रीति—कु० १।३४, विक्रम० ४।१६ 3. घटना 4. यदि समास में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त हो तो इसका 'मुक्त' 'विरहित' 'वंचित' और 'विना' शब्दों में अनुवाद करते हैं। सम०—**अक्ष** (वि०) दृष्टिहीन, अन्धा,—**अध्वन्** (वि०) 1. जिसने अपनी यात्रा समाप्त कर ली है 2. अभिज्ञ, परिचित, (स्त्री०) चतुर्दशी से युक्त अमावस्या,—**अनुगतम्** पूर्वोदाहरण या प्रथा का अनुयायी होना,—**अनुगतिक** (वि०) दूसरों की नकल करने वाला, अन्धानुयायी —गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः—पंच० १।३४२, लोग भेड़ा चाल चलने वाले वा केवल अंधानुकरण करने वाले होते हैं—मुद्रा० ६।५, —**अन्त** (वि०) जिसका अन्त समय आ गया है,—**अर्थ** (वि०) 1. निर्धन 2. अर्थ हीन (क्योंकि अर्थ का विधान पहले ही किया जा चुका है),—**असु**,—**जीवित**,—**प्राण** (वि०) समाप्त, मृत—भग० २।११,—**आगतम्** 1. जाना आना, बार २ मिलना—भर्तृ० ३।७, भग० ९।२१, मुद्रा० ४।१ 2. (ज्योतिष में) तारों का अनियमित मार्ग,—**आधि** (वि०) चिन्ताओं से मुक्त, प्रसन्न,—**आयुस्** (वि०) जीर्ण, निर्बल, अतिवृद्ध, —**आर्तवा** जो ऋतुमती होने की आयु को पार कर चुकी हो, बुढ़िया,—**उत्साह** वि० उत्साहहीन, उदास, —**ओजस्** (वि०) शक्ति या सामर्थ्य से विरहित, —**कल्मष** (वि०) पाप या जुर्म से मुक्त, पवित्रीकृत, —**क्लम** (वि०) पुनः तरोताजा,—**चेतन** (वि०) बेहोश, मूर्छित, चेतनाहीन,—**दिनम्** (अव्य०) बीता हुआ कल,—**प्रत्यागत** (वि०) जाकर वापिस आया हुआ मनु० ७।१४६,—**प्रभ** (वि०) दीप्तिरहित, धुंधला, मलिन, मद्धम या म्लान,—**प्राण** (वि०) जीवरहित, मृत,—**प्राय** (वि०) लगभग गया हुआ, तकरीबन बीता हुआ—गतप्राया रजनी,—**भर्तृका** 1. विधवा स्त्री 2. (विरल प्रयोग) वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो (=प्रोषितभर्तृका),—**लक्ष्मीक** (वि०) 1. कान्ति हीन, दीप्ति से रहित, म्लान 2. धन से वञ्चित निर्धनीकृत, घाटे की यन्त्रणा से पीडित,—**वयस्क** (वि०) बहुत आयु का, वृद्ध, बूढ़ा,—**वर्षः**,—**र्षम्** बीता हुआ वर्ष,—**वैर** (वि०) मेल मिलाप से रहने वाला, पुनर्मिलित,—**व्यथ** (वि०) पीड़ा से मुक्त, —**शैशव** (वि०) जिसका बचपन बीत गया है,—**सत्त्व** (वि०) 1. मृत, ध्वस्त, जीवनरहित 2. ओछा, —**सन्नकः** हाथी जिसका मद न झरता हो,—**स्पृह** (वि०) सांसारिक विषयवासनाओं से उदासीन।

गतिः (स्त्री०) [गम्+क्तिन्] 1. गति, गमन, जाना, चाल—गतिर्विगलिता—पंच० ४।७८, अभिन्नगतयः —श० १।१४, (न) भिदन्ति मन्दां गतिमश्वमुख्यः —कु० १।११, उनकी धीमी चाल को मत सुधारो, इसी प्रकार—गगनगतिः—पंच० १, लघुगतिः—मेघ० १६, १०, ४६, उत्तर० ६।२३ 2. पहुँच, प्रवेश—मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः—रघु० १।४ 3. कार्यक्षेत्र, गुंजायश—अस्त्रगतिः—कु० ३।१९, मनोरथानामगतिर्न विद्यते—कु० ५।६४, नास्त्यगतिर्मनोरथानाम्—विक्रम० २ 4. मोड़, चर्या—दैवगतिर्हि चित्रा 5. जाना, पहुँचना, प्राप्त करना—वैकुण्ठीया गतिः—पंच० १, स्वर्ग प्राप्ति 6. भाग्य, फल—भर्तुर्गतिर्गन्तव्या—दश० १०३ 7. अवस्था, दशा—दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य—भर्तृ० २।४३, पंच० १।१०६ 8. प्रस्थापना, संस्थान, स्थिति, अवस्थिति —परार्ध्यगतेः पितुः—रघु० ८।२७ कुसुमस्तवकस्येव द्वे गती स्तो मनस्विनां—भर्तृ० २।१०४ पंच० १।४१, ४२० 9. साधन, तरकीब, प्रणाली, दूसरा उपाय —अनुपेक्षणे द्वयी गतिः—मुद्रा० ३, का गतिः—क्या हो सकता है ? कुछ नहीं हो सकता (प्रायः नाटकों में प्रयुक्त होता है) पंच० १।३१९, अन्या गतिर्नास्ति —का० १५८ 10. आश्रय, रक्षास्थल, शरण, शरणागार, अवलंब—विद्यमाना गतिर्येषाम्—पंच० १।३२०, ३२२, आसयत् सलिले पृथ्वीं यः स मे श्रीहरिर्गतिः —सिद्धा० 11. स्रोत, उद्गम, प्राप्तिस्थान—भग० २।४३, मनु० १।१० 12. मार्ग, पथ 13. प्रयाण, प्रयात्रा (जलूस) 14. घटना, फल, परिणाम 15. घटनाक्रम, भाग्य, किस्मत 16. नक्षत्र पथ 17. ग्रह की अपने ही कक्ष में दैनिक गति 18. रिसने वाला घाव, नासूर 19. ज्ञान, बुद्धिमत्ता 20. पुनर्जन्म; आवागमन—मनु० ६।७३ 21. जीवन की अवस्थाएँ (शैशव, यौवन, वार्धक्य आदि) 22. (व्या० में) उपसर्ग तथा क्रियाविशेषणात्मक अव्यय (अलं, तिरस् आदि) जब कि यह किसी क्रिया या कृदन्तक से पूर्व लगाये जायं। सम० —**अनुसारः** दूसरे के मार्ग का अनुगमन करने वाला, —**भङ्गः** ठहरना,—**हीन** (वि०) अशरण, निस्सहाय, परित्यक्त।

गत्वर (वि०) (स्त्री०—री) [गम्+क्वरप्, अनुनासिक लोपः, तुक्] 1. गतिशील, चर, जंगम 2. अस्थायी, विनश्वर—गत्वरैरसुभिः—कि० २।१९, गत्वर्यो यौवनश्रियः—११।१२।

गद् (भ्वा० पर०—गदति, गदित) 1. स्पष्ट कहना, कथन

करना, बोलना, वर्णन करना—जगादाग्रे गदाग्रजम् —शि० २।६९, बहु जगाद पुरस्तात्तस्य मत्ता किलाहम् —११।३९, शुद्धान्तरक्ष्या जगदे कुमारी—रघु० ६।४५ 2. गणना करना, नि—, घोषणा करना, बोलना, कहना—रघु० २।३३ ।

गदः [गद्+अच्] 1. बोलना, भाषण 2. वाक्य 3. रोग, बीमारी—असाध्यः कुरुते कोपं प्राप्ते काले गदो यथा —शि० २।८४, जनपदे न गदः पदमादधौ—रघु० ९।४, १७।८१ 4. गर्जन, गड़गड़ाहट, **दम्** एक प्रकार का विष । सम०—**अगदौ** (द्वि० व०) दो अश्विनी कुमार, देवताओं के वैद्य,—**अग्रणीः** सब रोगों का राजा अर्थात् तपेदिक,—**अम्बरः** बादल, **अरातिः** औषधि, दवा ।

गदयित्नु (वि०) [गद्+णिच्+इत्नुच्] 1. मुखर, वाचाल, बातूनी 2. कामुक, विषयी,—**त्नुः** कामदेव ।

गदा [गद्+अच्+टाप्] 1. क्रीडायष्टि या गदा, मुद्गर —संचूर्णयामि गदया न सुयोधनोरू—वेणी० १।१५ । सम०—**अग्रजः** कृष्ण—शि० २।८४,—**अग्रपाणि**(वि०) दाहिने हाथ में गदा लिए हुए,—**धरः** विष्णु की उपाधि, —**भृत्** (वि०) गदाधारी, गदा से युद्ध करने वाला (पुं०) विष्णु की उपाधि,—**युद्धम्** गदा से लड़ा जाने वाला युद्ध,—**हस्त** (वि०) गदा से सुसज्जित ।

गदिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गदा+इनि] 1. गदाधारी—भग० ११।१७ 2. रोगग्रस्त, रुग्ण (पुं०) विष्णु की उपाधि ।

गद्गद (वि०) [गद् इत्यव्यक्तं वदति—गद्+गद्+अच्] हकलाने वाला, हकला कर बोलने वाला—तत्किं रोदिषि गद्गदेन वचसा—अमरु ५३, गद्गदगलस्त्र्युट्यद्विलीनाक्षरं को देहीति वदेत्—भर्तृ० ३।८, सानन्दगद्गदपदं हरिरित्युवाच—गीत० १०,—**दम्** (अव्य०) अटक-अटक कर बोलने या हकलाने का स्वर—विललाप स वाष्पगद्गदम्—रघु० ८।४३,—**दः**,—**दम्** हकलान, अस्पष्ट या उलट-पुलट भाषण । सम० —**ध्वनिः** हर्ष या शोक सूचक मन्द अस्पष्ट ध्वनि —**वाच्** (स्त्री०) सुबकी आदि से अन्तर्हित, अस्पष्ट या उलट-पुलट वाणी,—**स्वर** (वि०) हकलाने वाले स्वर से उच्चारण करने वाला (**रः**) 1. अस्पष्ट तथा हकलाने का उच्चारण 2. भैंसा ।

गद्य (सं० कृ०) [गद्+यत्] बोले जाने या उच्चारण किए जाने के योग्य—गद्यमेतत्त्वया मम—भट्टि० ६।४७, —**द्यम्** नसर, गद्य रचना, छन्दविरहितरचना, तीन प्रकार (गद्य, पद्य, चम्पू) की रचनाओं में से एक —दे० काव्या० १।११ ।

गद्याण (न,—ल) कः ४१ घुंघचियों के समान भार, ४१ रत्तियों का वजन ।

गन्तृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [गम्+तृच्] 1. जो जाता है, घूमता है 2. किसी स्त्री से मैथुन करने वाला ।

गन्त्री [गम्+ष्ट्रन्+ङीप्] बैलगाड़ी । सम०—**रथः** बैलगाड़ी ।

गन्ध् (चुरा० आ०—गन्धयते) 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2. पूछना, मांगना 3. चलना-फिरना, जाना ।

गन्धः [गन्ध्+अच्] 1. बू, वास्य—गन्धमाघ्राय चोर्व्याः —मेघ० २१, अपघ्नन्तो दुरितं हव्यगन्धैः—श० ४।७, रघु० १२।२७, (ब० स० के उत्तरपद के रूप में प्रयुक्त होने पर यह शब्द बदलकर 'गन्धि' हो जाता है यदि इससे पूर्व उद्, पूति, सु या सुरभि में से कुछ जोड़ दिया गया है, या समास तुलनार्थक है अथवा 'गन्ध' का अर्थ 'जरा सा', 'थोड़ा सा' है–उदा० —सुगन्धि, सुरभिगन्धि, कमलगन्धि मुखम् 2. वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित २४ गुणों में से एक गुण, वहाँ यह पृथ्वी का गुणात्मक लक्षण है, पृथ्वी को 'गन्धवती' कहा गया है—तर्क० सं० 3. वस्तु की केवल गन्धमात्र, जरा सा, बहुत ही थोड़े परिणाम में—घृतगन्धि भोजनम्—सिद्धा० 4. सुगन्ध, कोई सुगन्धित सामग्री—एषा मया सेविता गन्धयुक्तिः—मृच्छ० ८, याज्ञ० १।२३१ 5. गन्धक 6. पिसा हुआ चन्दन चूरा 7. संयोग, सम्बन्ध, पड़ौस 8. घमण्ड, अहङ्कार—जैसा कि 'आत्तगन्ध' में,—**धम्** 1. गन्ध, बू 2. काली अगरलकड़ी । सम०—**अधिकम्** एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,—**अपकर्षणम्** गन्ध दूर करना,—**अम्बु** (नपुं०) सुवासित जल,—**अम्ला** जंगली नींबू का वृक्ष,—**अश्मन्** (पुं०) गन्धक,—**अष्टकम्** आठ सुगन्ध द्रव्यों का मिश्रण जो देवताओं पर चढ़ाया जाय, देवताओं की प्रकृति के अनुसार यह भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है, —**आखुः** छछुन्दर,—**आजीवः** सुगन्धों का विक्रेता, —**आढ्य** (वि०) गन्धसमृद्ध, बहुत सुगन्धित—स्रजश्चोत्तमगन्धाढ्याः—महा०, (**ढ्यः**) नारंगी का पेड़ (**ढ्यम्**) चन्दन की लकड़ी,—**इन्द्रियम्** नाक, घ्राणेन्द्रिय, —**इभः**,—**गजः**, —**द्विपः**,—**हस्तिन्** (पुं०) 'सुवास—हाथी' सर्वोत्तम हाथी—शमयति गजानन्यान्गन्धद्विपः कलभोऽपि सन्—विक्रम० ५।१८, रघु० ६।७, १७।७०, कि० १७।१७,—**उत्तमा** मदिरा, शराब,—**उदम्** सुगन्धित जल,—**उपजीविन्** (पुं०) गन्धद्रव्यों से आजीविका कमाने वाला, गन्धी,—**ओतुः** (गन्धोतुः या गधौतुः गन्धविलाव,—**कारिका** 1. सुगन्ध द्रव्य बनाने वाली सेविका, शिल्पकार स्त्री जो दूसरे के घर उसके नियन्त्रण में रहती है,—**कालिका**—**काली** (स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती,—**काष्ठम्** अगर की लकड़ी —**कुटी** एक प्रकार का गंधद्रव्य,—**केलिका**,—**चेलिका** कस्तूरी,—**गुण** (वि०) गंधगुण वाला, गंधयुक्त,—**घ्राणम्**

गंध का सूंघना,—जलम् सुवासित, सुगंधित जल,—ज्ञा नासिका,—तूर्यम् बिगुल तथा दुंदुभि आदि रणवाद्य —तैलम् खुशबूदार तेल, सुगन्धित द्रव्यों से तैयार किया गया तेल,—दारु (नपुं०) अगर की लकड़ी,—द्रव्यम् सुगन्धित द्रव्य,—धूलिः (स्त्री०) कस्तूरी,—नकुलः छछुन्दर,—नालिका,—नाली नासिका,—निलया एक प्रकार की चमेली,—पः एक पितृवर्ग,—पलाशिका हल्दी, —पलाशी आमा हल्दी की जाति,—पाषाणः गन्धक, —पिशाचिका धूने का धूआं, (अपनी गंध से पिशाचों को आकृष्ट करने के कारण तथा कालेरंग का होने के कारण सम्भवतः इसका यह नाम पड़ा है),—पुष्पः 1. बेंत का पौधा 2. केवड़े का पौधा, (ष्पम्) खुशबूदार फूल —पुष्पा नील का पौधा, —पूतना भूतनी, प्रेतनी, —फली 1. प्रियंगुलता 2. चम्पककली,—बंधुः आम का वृक्ष,—मातृ (स्त्री०) पृथ्वी,—मादनः 1. भौंरा 2. गन्धक (—नः,—नम्) मेरु पहाड़ के पूर्व में स्थित एक पहाड़ जिसमें चंदन के अनेक जंगल हैं,—मादनी मदिरा, शराब,—मादिनी लाख,—मार्जारः गन्धविलाव, —मुखा,—मूषिकः,—मूषी (स्त्री०) छछुन्दर,—मृगः 1. गन्धविलाव 2. कस्तूरीमृग,—मैथुनः साँड,—मोदनः गन्धक,—मोहिनी चम्पक की कली,—युक्तिः (स्त्री०) सुगन्धद्रव्यों के तैयार करने की कला,—राजः एक प्रकार की चमेली (जम्) 1. एक प्रकार का गंधद्रव्य 2. चंदन की लकड़ी,—लता प्रियंगुलता,—लोलुपा मधु मक्खी,—वहः वायु—रात्रिन्दिवं गन्धवहः प्रयाति—श० ५।४, दिग्दक्षिणा गन्धवहं मुखेन—कु० ३।२५,—वहा नासिका,—वाहकः 1. वायु 2. कस्तूरीमृग,—वाही नासिका,—विह्वलः गेहूँ,—वृक्षः साल का पेड़,—व्याकुलम् कंकोल का पेड़,—शुण्डिनी छछुंदर,—शेखरः कस्तूरी,—सारः चन्दन,—सोमम् सफेद कुमुदिनी, —हारिका गंधकारिका, स्वामिनी के पीछे-पीछे सुगंध लेकर चलने वाली सेविका ।

गन्धकः [गन्ध+कन्] गंधक ।

गन्धनम् [गन्ध्+ल्युट्] 1. अध्यवसाय, अविराम प्रयत्न 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना 3. प्रकाशन 4. सूचना, संसूचन, संकेत ।

गन्धवती [गध+मतुप्+ङीप, मस्य वत्वम्] 1. पृथ्वी, 2. शराब 3. व्यास की माता सत्यवती 4. चमेली का एक भेद ।

गन्धर्वः [गन्ध+अर्व्+अच्] स्वर्गीय गायक, अर्ध देवों का वर्ग जो देवताओं के गवैये तथा संगीतज्ञ माने जाते हैं, कहते हैं कि वह कन्याओं के स्वर को मधुर बना देते हैं—सोमं शौचं ददावासां गंधर्वश्च शुभां गिरम् याज्ञ० १।७१ 2. गवैया 3. घोड़ा 4. कस्तूरीमृग 5. मृत्यु के बाद तथा पुनर्जन्म से पूर्व की आत्मा 6. कोयल । सम०—नगरम्,—पुरम् गंधर्वों का नगर, आकाश में एक काल्पनिक नगर, संभवतः मरीचिका आदि किसी नैसर्गिक घटना का परिणाम, —राजः चित्ररथ, गंधर्वों का स्वामी,—विद्या संगीत कला, —विवाहः मनु० ३।२७ में वर्णित आठ प्रकार के विवाहों में से एक, इस प्रकार का विवाह युवक और युवती की पारस्परिक रुचि और पूर्णतः प्रेम का परिणाम है, इसमें न किसी प्रकार की रीतिरस्म की आवश्यकता है और न किसी सगे संबंधियों की अनुमति की, कालिदास के कथनानुसार यह है:— कथमप्यवान्धवकृता स्नेहप्रवृत्तिः—श० ४।१६,—वेदः चार उपवेदों में से एक, जिसमें संगीत कला का विवेचन है,—हस्तः,—हस्तकः एरंड का पौधा ।

गन्धारः (ब० व०) [गध+ऋ—अण] एक देश और उसके शासकों का नाम ।

गन्धाली (स्त्री०) 1. भिड़ 2. सतत सुगंध । सम०—गर्भः छोटी इलायची ।

गन्धालु (वि०) [गन्ध+आलुच्] सुगंधित, सुवासित, खुशबूदार ।

गन्धिक (वि०) [गन्ध+ठन्] (केवल समास के अन्त में प्रयोग) 1. गंधवाला जैसा कि 'उत्पलगन्धिक' 2. लेश मात्र रखने वाला—भ्रातृगन्धिकः (नाममात्र का भाई), —कः 1. सुगंधों का विक्रेता 2. गंधक ।

गभस्ति (पुं०, स्त्री०) [गम्यते ज्ञायते—गम्+ड=गः विषयः तं बिभस्ति, भस्+क्तिच्] प्रकाश की किरण, सूर्यकिरण या चन्द्रकिरण,—स्तिः (पुं०) सूर्य (स्त्री०) अग्नि की पत्नी स्वाहा का विशेषण । सम०—करः —पाणिः,—हस्तः सूर्य ।

गभस्तिमत् (पुं०) [गभस्ति+मतुप्] सूर्य—घनव्यपायेन गभस्तिमानिव—रघु० ३।३७, (नपुं०) पाताल के सात प्रभागों में से एक ।

गभीर (वि०) [गच्छति जलमत्र; गम्+ईरन्, नि० भुगागमः]=[गम्भीर] 1. गहरा उत्तालास्त इमे गभीरपयसः पुण्याः सरित्सङ्गमाः—उत्तर० २।३०, भामि० २।१०५ 2. गहरी आवाज वाला (ढोल की भाँति) 3. घना, सटा हुआ, (जंगल की भाँति) दुर्गम 4. अगाध, मेधावी 5. संगीन, संजीदा, महत्त्वपूर्ण, उद्यत 6. गुप्त, रहस्यपूर्ण 7. गहन, दुर्बोध, दुर्ग्राह्य । सम०—आत्मन् परमात्मा,—वेध (वि०) अत्यन्त भेदक या अन्तः प्रवेशी ।

गभीरिका [गभीर+कन्+टाप्, इत्वम्] गहरी आवाज वाला बड़ा ढोल ।

गभोलिकः [?] छोटा गावदुम तकिया ।

गम् (भ्वा० पर०—गच्छति, गत—प्रेर० गमयति, सन्नन्त —जिगमिषति, जिगांसते—आ०) जाना, चलना-

फिरना—गच्छतु आर्या पुनर्दर्शनाय—विक्रम० ५, —गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः—श० १।३४, क्वाधुना गम्यते—अब आप कहाँ जा रहे हैं? 2. बिदा होना, चले जाना, दूर जाना, खाना होना, प्रस्थान करना—उत्क्षिप्यैनां ज्योतिरेकं जगाम—श० ५।३० 3. जाना, पहुँचना, सहारा लेना, आ जाना, समीप आना—यदगम्योऽपि गम्यते—पंच० १।७, एनो गच्छति कर्तारम्—मनु० ८।१९, पाप पापी पर मंडलाता है—४।१९, इसी प्रकार—धरणिं मूर्ध्ना गम्—आदि 4. गुजरना, बीतना, (समय का) व्यतीत होना—काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्—हि० १।१, गच्छता कालेन—अनन्तः 5. अवस्था या दशा को प्राप्त होना, होना, अनुभव करना, भुगतना, भोगना (प्रायः तान्त और त्वान्त संज्ञाओं के साथ अथवा कर्म० की संज्ञा के साथ जुड़ता है) —गमिष्याम्युपहास्यतां—रघु० १।३, पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम—कु० १।२६, उमा नामवाली हुई, इसी प्रकार—तृप्तिं गच्छति-तृप्त हो जाता है, विषादं गतः—उदास हो गया, कोपं न गच्छति—क्रुद्ध नहीं होता है; आनृण्यं गतः—ऋण से मुक्त हो गया 6. सहवास करना, मैथुन करना—गुरोः सुतां ··· यो गच्छति पुमान्—पंच० २।१०७, याज्ञ० १।८०, प्रेर०—1. भिजवाना, पहुँचाना, (दशा को) प्राप्त होना 2. उपयोग करना, (समय की भांति) बिताना 3. स्पष्ट करना, व्याख्या करना, विवरण देना 4. अर्थ बतलाना, संकेत करना, विचार व्यक्त करना—द्वौ नञौ प्रकृतार्थं गमयतः—'दो नकार एक सकारात्मक अर्थ को प्रकट करते हैं' अति—, दूर जाना, बीत जाना, अधि—, 1. अभिग्रहण करना, अवाप्त करना, ले लेना—अधिगच्छति महिमानं चन्द्रोऽपि निशापरिगृहीतः—मालवि० १।१३, खनन्वार्यधिगच्छति—मनु० २।२१८, ७।३३ भग० २।६४, रघु० २।६६, ५।३४ 2. निष्पन्न करना, सुरक्षित करना, पूरा करना—अर्थं सप्रतिबंधं प्रभुरधिगन्तुं सहायवानेव—मालवि० १।९ 3. समीप जाना, की ओर जाना, पहुँचना, पैठ रखना—गुणालयोऽप्यसन्मन्त्री नृपतिर्नाधिगम्यते—पंच० १।३८४ 4. जानना, सीखना, अध्ययन करना, समझना,—तेभ्योऽधिगन्तुं निगमान्त विद्याम्—उत्तर० २।३, कि० २।४१, मनु० ७।३९, याज्ञ० १।९९ 5. विवाह करना, (पति के रूप में) ग्रहण करना—मनु० ९।९१; अध्या—, प्राप्त करना, होना, घटित होना; अनु—, 1. मिलना-जुलना, पीछे चलना, साथ चलना—ओदकान्तात् स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः—श० ४, मार्गं मनुष्येश्वरधर्मपत्नी श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्—रघु० २।२, ६, कि० ५।२, मनु० १२।११५, पंच० १।७३ 2. नकल करना, समरूप होना, उत्तर देना—आस्फालितं यत्प्रमदाकराग्रैर्मृदङ्गधीरध्वनिमन्वगच्छत्—रघु० १६।१३, कि० ४।३६, अन्तर—, बीच में जाना, सम्मिलित होना, अन्तर्हित होना, दे० अन्तर्गत, अप—, 1. दूर चले जाना, जुदा हो जाना, (समय आदि की भांति) बीत जाना—पंच० ३।८ 2. ओझल होना, अन्तर्धान होना, से चले जाना; अभि—, निकट जाना, समीप होना, दर्शन करना—एनमभिजग्मुर्महर्षयः—रघु० १५।५९, कि० १०।२१, —मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः—मनु० १।१ 2. मिलना, (अकस्मात् या संयोग से) घटित होना 3. सहवास करना, मैथुन करना—याज्ञ० २।२०५, अभ्या—, 1. समीप आना, पहुँचना, निकट आना—सर्वत्राभ्यागतो गुरुः—हि० १।१०८ 2. प्राप्त करना, हासिल करना, अभ्युद्—, 1. उठना, ऊपर जाना 2. की ओर जाना, मिलने के लिए आगे बढ़ना, अभ्युप—, सहमत होना, स्वीकार करना, जिम्मेवारी लेना, मानना, मंजूर करना, अपनाना, अव—, 1. जानना, सीखना, विचारना, समझना, विश्वास करना—परस्तादवगम्यत एव—श० १, कथं शान्तमित्यभिहिते श्रान्त इत्यवगच्छति मूर्खः—मृच्छ० १, भग० १०।४१, रघु० ८।८८, भट्टि० ५।८१ 2. विचार करना, मानना, समझना (प्रेर०) वहन करना, प्रकट करना, संकेत करना, जाहिर करना, कहना—भट्टि० १०।६२, आ—, 1. आना, पहुँचना 2. आ जाना, प्राप्त करना, (विशेष दशा को) पहुँच जाना (प्रेर०) 1. ले जाना, लाना, वहन करना—आगमितापि विदूरम्—गीत० १२ 2. सीखना, अध्ययन करना—रघु० १०।७१, 3. प्रतीक्षा करना (आ०), उद्—, उठना, ऊपर जाना—असह्यवातोद्गतरेणुमण्डला—ऋतु० १।१० अने० पा० 2. अंकुर फूटना, दिखाई देना विक्रम० ४।२३ 3. उदय होना, निकलना, पैदा होना, जन्म लेना—इत्युद्गताः पौरवधूमुखेभ्यः शृण्वन् कथाः—रघु० ७।१६, अमरु ९१ 4. प्रसिद्ध या विख्यात होना—रघु० १८।२०, उप—, 1. जाना, निकट जाना, प्राप्त करना, पहुँचना—रघु० ६।८५ 2. पैठना, अन्दर घुसना शि० ९।३९ 3. अनुभव करना, भुगतना —तपो घोरमुपागमत्—रामा० 4. अवस्था को प्राप्त होना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना—प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ—शि० ९।६, तानप्रदायित्वमिवोपगन्तुम्—कु० १।८ 5. मान लेना, स्वीकृति देना, सहमत होना 6. संभोग के लिए स्त्री के निकट जाना—सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहो यत्रोपगच्छति—मनु० ३।३४, ४।४०, उपा—, 1. आ जाना, पहुँचना (स्थान पर या व्यक्ति के पास) 2. पहुँच जाना, अवस्था को चले जाना, प्राप्त करना—तृप्तिमुपागतः, पञ्चत्वमुपागतः आदि 3. लेना, प्राप्त करना—याज्ञ० ३।१४३, नि—, 1. पहुँच

जाना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना, हासिल करना —यत्र दुःखान्तं च निगच्छति—भग० १८।३६, ९।३१ 2. ज्ञान प्राप्त करना, सीखना, **निस्(निर्)**—, 1. बाहर जाना, जुदा होना–प्रकाशं निर्गतः–श० ४, हुतवहपरिखेदादाशु निर्गत्य कक्षात्—ऋतु० १।२७, मनु० ९।८३, श० ६।३, अमरु ६१ 2. हटाना, जैसा कि—'निर्गतविशङ्कः' में 3. (किसी रोग से चिकित्सा द्वारा) मुक्त होना **परा**–, 1. वापिस आना,—तदयं परागत एवास्मि —उत्तर० ५ 2. घेरना, लपेटना, व्याप्त करना—स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्—शि० ६।२, **परि**—, 1. जाना, चक्कर लगाना,—तं हयं तत्र परिगम्य—रामा०, यथा हि मेरुः सूर्येण नित्यशः परिगम्यते—महा० 2. घेरना, शि० ९।२६, भट्टि० १०।१, सेनापरिगत–आदि 3. सर्वत्र फैलना, सब दिशाओं में व्याप्त होना 4. प्राप्त करना —वृषलताम्—आदि 5. जानना, समझना, सीखना—रघु० ७।७१ 6. मरना, (इस संसार से) चले जाना —वयं येभ्यो जाताश्चिरपरिगता एव खलु ते—भर्तृ० ३।३८ 7. प्रभावित करना, ग्रस्त करना, जैसा कि —क्षुधया परिगतः—में, **पर्या**—, 1. निकट जाना, की ओर जाना 2. पूरा करना, समाप्त करना 3. जीतना, अभिभूत करना, **प्रति**—, 1. वापिस जाना 2. बढ़ना, की ओर जाना **प्रत्या**—, वापिस आना, लौट आना **प्रत्युद्**—, (सत्कार करने के लिए) आगे जाना, बढ़ना या मिलना —प्रत्युज्जगामातिथिमातिथेयः—रघु० ५।२, प्रत्युद्गच्छति मूर्छति स्थिरतमः पुञ्जे निकुञ्जे प्रियः —गीत० ११, भामि० ३।३, **वि**—, (समय आदि का) 1. बीत जाना,–सन्ध्ययापि सपदि व्यगमि–शि० ९।१७ 2. ओझल होना, अन्तर्धान होना—सलज्जाया लज्जापि व्यपगमदिव दूरं मृगदृशः—गीत० ११, भग० ११।१, मनु० ३।२, ५९, (प्रेर०) व्यतीत करना, बिताना —विगमयत्युन्निद्र एव क्षपाः—श० ६।५, **विनिस्**—, 1. बाहर जाना 2. अन्तर्धान होना, ओझल होना **विप्र** अलग होना **सम्**—,(आ० में प्रयुक्त) 1. मिल जाना, इकट्ठे चलना, मिलना, मुकाबला करना—अक्षधूर्तैः समगंसि—दश०, एते भगवत्यौ कलिन्दकन्यामन्दाकिन्यौ संगच्छेते–अनर्घ० ७ 2. सहवास करना, संभोग करना —भार्या च परसंगता—पंच० १।२०८, मनु० ८।३७८, (प्रेर०) इकट्ठा करना, मिलाना या एकत्र करना —रघु० ७।१७, **समधि**—, 1. निकट पहुंचना 2. अध्ययन करना 3. प्राप्त करना, अभिग्रहण करना - यत्ते समधिगच्छन्ति यस्यैते तस्य तद्धनम्—मनु० ८।४१६, **समव**—, पूरी तरह से जान लेना, **समुपा**—, 1. पास पहुंचना 2. आ पड़ना ।

गम (वि०) [गम्+अप्] (समास के अन्त में) जाने वाला, हिलने-जुलने वाला, पास जाने वाला, पहुँचाने वाला, प्राप्त करने वाला, हासिल करने वाला आदि खगम, तुरोगम, हृदयंगम आदि,—**मः** 1. जाना, हिलना-जुलना 2. प्रयाण करना—अश्वस्यैकाहगमः 3. आक्रमणकारी का कूच करना 4. सड़क 5. अविचारिता, विचारशून्यता 6. ऊपरीपन, अटकलपच्चू निरीक्षण 7. स्त्री-संभोग, सहवास—गुर्वङ्गनागमः—मनु० ११।५५, याज्ञ० ३।२९३ 8. पासे आदि का खेल। सम०—**आगमः** आना-जाना ।

गमक (वि०) (स्त्री०—**मिका**) [गम्+ण्वुल्] 1. संकेतक, सुझाव देने वाला, प्रणाम, अनुक्रमणी—तदेव गमकं पाण्डित्यवैदग्ध्ययोः—मा० १।७ 2. विश्वासोत्पादक ।

गमनम् [गम्+ल्युट्] 1. जाना, गति, चाल—श्रोणीभारादलसगमना—मेघ० ८२, इसी प्रकार—गजेन्द्रगमने—शृंगार० ७ 2. जाना, गति (वैशेषिक इसे पाँच कर्मों में से एक कर्म समझते हैं) 3. निकट पहुँचना, पहुँचना 4. अभियान 5. अनुभव करना, भुगतना 6. प्राप्त करना, पहुँचना 7. सहवास ।

गमिन् (वि०) [गम+इनि] जाने के विचार वाला —जैसा कि 'ग्रामंगमी' (पुं०) यात्री ।

गमनीय, गम्य (सं० कृ०) [गम्+अनीयर्, यत् वा] 1. सुगम,—उपागम्य विकारस्य गमनीयास्मि संवृत्ता—श० १ 2. सुबोध, आसानी से समझ में आने योग्य 3. अभिप्रेत, निहित, अर्थयुक्त 4. उपयुक्त, वाञ्छित, योग्य—याज्ञ० १।६४ 5. सहवास के योग्य,—दुर्जनगम्या नार्यः—पंच० १।२७८, अभिकामां स्त्रियं यश्च गम्यां रहसि याचितः, नोपैति- महा० 6. (औषधि आदि से) उपचार योग्य–न गम्यो मन्त्राणाम्—भर्तृ० १।८९ ।

गम्भारिका, गम्भारी [गम्+विच्=गम्, तं गमं=निम्नगतिं बिभर्ति—गम्+भृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, गम्+भृ+अण् ङीप्] एक वृक्ष का नाम ।

गम्भीर (वि०) [=गभीर]—रघु० १।३६, मेघ० ६४, ६६,—**रः** 1. कमल 2. जंबीर, नींबू। सम०—**वेदिन्** (वि०) (हाथी की भांति) दुर्दान्त, अड़ियल ।

गम्भीरा, गम्भीरिका [गम्भीर+टाप्, गम्भीर+कन्+टाप्, इत्वम्] एक नदी का नाम—गम्भीरायाः पयसि —मेघ० ४० ।

गयः 1. गया प्रदेश तथा उसके आस पास रहने वाले लोग 2. एक राक्षस का नाम,—**या** बिहार में एक नगर जो एक तीर्थ स्थान है ।

गर (वि०) (स्त्री०—**री**) [गीर्यते—गॄ+अच्] निगलने वाला,—**रः** 1. पेय, शरबत 2. बीमारी, रोग 3. निगलना ('गरा' का भी यही अर्थ है,—**रः**,—**रम्** 1. जहर 2. विषनाशक औषधि,—**रम्** छिड़कना, तर

करना । सम०—**अधिका** 1. लाक्षा नामक कीड़ा 2. इस कीड़े से प्राप्त लाल रंग,—**घ्नी** एक प्रकार की मछली,—**द** (वि०) विष देने वाला, ज़हर देने वाला (—**दम्**) विष,—**व्रतः** मोर ।

गरणम् [गॄ+ल्युट्] 1. निगलने की क्रिया 2. छिड़कना 3. विष ।

गरभः [गॄ+अभच्] भ्रूण, गर्भस्थ बच्चा, दे० गर्भ ।

गरलः,—लम् [गिरति जीवनम्—गॄ+अलच् तारा०] विष, जहर,—कुवलयदलश्रेणी कण्ठे न सा गरलद्युतिः—गीत० ३, गरलमिव कलयति मलयसमीरम्—४, स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनम्—१० 2. साँप का विष,—**लम्** घास का गट्ठड़ । सम०—**अरिः** पन्ना, मरकतमणि ।

गरित (वि०) [गर+इतच्] विषयुक्त, जिसे ज़हर दिया गया हो ।

गरिमन् (पुं०) [गुरु+इमनिच्, गरादेशः] 1. बोझ, भारीपन,—शि० ९।४९ 2. महत्त्व, बड़प्पन, महिमा—पंच० १।३० 3. उत्तमता, श्रेष्ठता 4. आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिसके द्वारा अपने आपको इच्छानुसार भारी या हल्का कर सकता है—दे० 'सिद्धि' ।

गरिष्ठ (वि०) [गुरु+इष्ठन् गरादेशः] 1. सबसे भारी 2. अत्यन्त महत्त्वपूर्ण (गुरु शब्द की उत्तमावस्था)

गरीयस् (वि०) [गुरु+ईयसुन्, गरादेशः] अधिक भारी, अपेक्षाकृत वजनदार, अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण ('गुरु' की मध्यमावस्था)—मतिरेव बलाद्गरीयसी—हि० २।८६, वृद्धस्य तरुणी भार्या प्राणेभ्योऽपि गरीयसी—हि० १। ११२, शि० २।२४, ३७ ।

गरुडः [गरुद्भ्यां डयते—डी+ड पृषो० तलोपः—गॄ+उडच्] 1. पक्षियों का राजा (यह 'विनता' नाम की पत्नी से उत्पन्न कश्यप का पुत्र है, यह पक्षियों का राजा, साँपों का नैसर्गिक शत्रु और अरुण का बड़ा भाई है; एक बार इसकी माता और उसकी सौत कद्रु में 'उच्चैः श्रवा' के रंग के विषय में झगड़ा हुआ, विनता हार गई और शर्त के अनुसार उसे कद्रु की दासी बनना पड़ा । गरुड, माता की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए स्वर्ग में इन्द्र के पास गया, वहाँ से साँपों के लिए अमृत का घड़ा लाने में गरुड़ को उसके साथ जूझना पड़ा, अन्त में वह अमृत प्राप्त करने में सफल हुआ, फलतः विनता को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई । परन्तु इन्द्र अमृत का घड़ा सांपों के पास से ले गया 1. गरुड को विष्णु की सवारी चित्रित किया गया है । इसका चेहरा श्वेत, नाक तोते जैसी पर लाल और शरीर सुनहरी है) 2. गरुड की शक्ल का बना भवन 3. विशेष सैनिक व्यूह रचना । सम०—**अग्रजः** सूर्य के सारथि अरुण का विशेषण,—**अङ्कः** विष्णु का विशेषण,—**अङ्कितम्—अश्मन्** (पुं०)—**उत्तीर्णम्** पन्ना,—**ध्वजः** विष्णु की उपाधि,—**व्यूहः** एक प्रकार की विशेष सैनिक व्यवस्था दे० (3.) ऊपर ।

गरुत् (पुं०) [गॄ (गॄ)+उति] 1. पक्षी के पर, बाज़ू 2. खाना, निगलना । सम०—**योधिन्** (पुं०) बटेर ।

गरुत्मत् (वि०) [गरुत्+मतुप्] पक्षी—गरुत्मदाशीविषभीमदर्शनैः—रघु० ३।५७, (पुं०) 1. गरुड 2. पक्षी ।

गरुलः [=गरुडः, डस्य लः] गरुड़, पक्षियों का राजा ।

गर्गः [गॄ+ग] 1. एक प्राचीन ऋषि, ब्रह्मा का एक पुत्र 2. साँड़ 3. केचुवा (ब० व०) गर्ग की संतान । सम०—**स्रोतः** (नपुं०) एक तीर्थ ।

गर्गरः [गर्ग इति शब्दं राति—गर्ग+रा+क] 1. भँवर, जलावर्त 2. एक प्रकार का वाद्ययंत्र 3. एक प्रकार की मछली 4. मथानी, दही बिलोने का मटका,—**री** मथानी, पानी की गागर ।

गर्गाटः [गर्ग इति शब्देन अटति—गर्ग+अट्+अच्] एक प्रकार की मछली ।

गर्ज् (भ्वा० पर०—चुरा० उभ०—गर्जति, गर्जयति—ते, गर्जित) 1. दहाड़ना, गुर्राना—गर्जन् हरिः साम्भसि शैलकुञ्जे—भट्टि० २।९, १५।२१, रणे न गर्जन्ति वृथा हि शूराः—रामा०, हृष्टो गर्जति चातिदर्पितबलो दुर्योधनो वा शिखी—मृच्छ० ५।६ 2. एक गहरी और गड़गड़ाती हुई गर्जना करना—यदि गर्जति वारिधरो गर्जतु तन्नाम निष्ठुराः पुरुषाः—मृच्छ० ५।३२, (और इस अंक के दूसरे कई श्लोकों में) गर्जति शरदि न वर्षति वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः—उद्भट, **अनु—**, बदले में गड़गड़ाना, गूंजना—कु० ६।४०, **प्रति—**, 1. चिंघाड़ना, दहाड़ना (आलं०) 2. मुकाबला करना विरोध करना—अयोहृदयः प्रतिगर्जताम्—रघु० ९।९ ।

गर्जः [गर्ज्+घञ्] 1. हाथियों की चिंघाड 2. बादलों की गरज या गड़गड़ाहट ।

गर्जनम् [गर्ज्+ल्युट्] 1. दहाड़ना, चिंघाड़ना, गुर्राना, गड़गड़ाना 2. (अतः) आवाज, कोलाहल 3. आवेश, क्रोध 4. संग्राम, युद्ध 5. झिड़की ।

गर्जा, गर्जिः [गर्ज—टाप्, गर्ज्+इन] बादलों की गड़गड़ाहट, गरज ।

गर्जित (वि०) [गर्ज्+क्त] गर्जा हुआ, चिंघाड़ा हुआ,—**तम्** बादलों की गरज, या गड़गड़ाहट,—**तः** चिंघाडता हुआ, जिसके मस्तक से मद झरता है ।

गर्तः,—र्तम् [गॄ+तन्] कोटर, छिद्र, गुफा—ससत्त्वेषु गर्तेषु—मनु० ४।४७, २०३, (इस अर्थ में 'गर्ता' भी),—**र्तः** 1. कटिखात 2. एक प्रकार का रोग 3. एक देश का नाम, त्रिगर्त का एक भाग । सम०—**आश्रयः** चूहे की भाँति बिल में रहने वाला जानवर ।

गर्तिका [गर्तः अस्त्यस्याः—गर्त+ठन्,] जुलाहे का कारखाना, खड्डी, (क्योंकि जुलाहा अपनी खड्डी पर बैठते समय पैर भूमि के नीचे गढे में रखता है) ।

गर्द् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—गर्दति, गर्दयति,-ते) शब्द करना, दहाड़ना ।

गर्दभः (स्त्री०—भी) [गर्द्+अभच्] 1. गधा—न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति—मृच्छ० ४।१७, प्राप्ते तु षोडशे वर्षे गर्दभी ह्यप्सरायते—सुभा०, गधे की तीन बड़ी विशेषताएँ हैं:—अविश्रांतं वहेद्भारं शीतोष्णं च न विंदति, ससंतोषस्तथा नित्यं त्रीणि शिक्षेत गर्दभात् —चाण० ७० 2. गंध, बू,—भम् सफेद कुमुदिनी । सम०—**अण्डः,—डकः** 1. एक वृक्षविशेष 2. वृक्ष, —**आह्वयम्** सफेद कमल,—**गदः** चर्मरोगविशेष ।

गर्धः [गृध्+घञ्, अच् वा] 1. इच्छा, उत्कंठा 2. लालच ।

गर्धन, गर्धित (वि०) [गृध्+ल्युट्, क्त वा] लोभी, लालची ।

गर्धिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गर्ध+इनि] 1. इच्छुक, लालची, लोभी—नवान्नामिषगर्धिनः—मनु० ४।२८ 2. उत्सुकतापूर्वक किसी कार्य का पीछा करने वाली ।

गर्भः [गृ+भन्] 1. गर्भाशय, पेट —गर्भेषु वसतिः—पंच० १, पुनर्गर्भे च संभवम्—मनु० ६।६३ 2. भ्रूण, गर्भस्थ बच्चा, गर्भाधान—नरपतिकुलभूत्यै गर्भमाधत्त राज्ञी—रघु० २।७५, गर्भोऽभवद्राजपत्न्याः —कु० १।१९ 3. गर्भाधान काल-गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनयनम्—मनु० २।३६ 4. (गर्भस्थ) बच्चा श० ६ 5. बच्चा, अण्डशावक 6. किसी वस्तु का अभ्यन्तर, मध्य या भीतरीभाग (इस अर्थ में समस्त पद)—हिमगर्भैर्मयूखैः—श० ३।३, अग्निगर्भां शमीमिव —४।१, रघु० ३।९, ५।१७, ९।५५, शि० ९।६२, मा० ३।१२, मुद्रा० १।१२ 7. आकाश-प्रसूति अर्थात् सूर्य किरणों द्वारा आठ मासतक शोषित और आकाश में संचित वाष्पराशि जो बरसात में फिर इस धरती पर बरसती है, तु० मनु० ९।३०५ 8. भीतरी कमरा, प्रसूतिकागृह, जच्चा खाना 9. अभ्यन्तरीण प्रकोष्ठ 10 छिद्र 11. अग्नि 12. आहार 13. कटहल का कटीला छिलका 14. नदी का पाट, विशेषतः भाद्रपद चतुर्दशी को गंगा का जब कि वर्षाऋतु अपने यौवन पर होती है तथा दरिया उमड़ कर चलते हैं। सम०—**अङ्कः** (गर्भेऽङ्कः भी) अंक के बीच में विष्कंभक जैसा कि उत्तर रामचरित के सातवें अंक में कुश और लव के जन्म का दृश्य, या बालरामायण में सीतास्वयंवर, सा० द० परिभाषा देता है—अङ्कोदरप्रविष्टो यो रङ्गद्वारामुखादिमान् अङ्कोऽपरः स गर्भाङ्कः सबीजः फलवानपि । २७९,—**अवक्रान्तिः** (स्त्री०) आत्मा का गर्भ में प्रविष्ट होना,—**आगारम्** 1. बच्चेदानी 2. भीतरी कमरा, निजी कमरा, अन्तः पुर 3. प्रसूतिकागृह 4. मन्दिर का पूजाकक्ष, जहाँ देवता की मूर्ति स्थापित रहती है, —**आधानम्** 1. गर्भ रहना, गर्भधारण— गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः (बलाकाः)—मेघ० ९ 2. एक संस्कार, ऋतु-स्नान के पश्चात् एक शुद्धि संस्कार (यह संस्कार ही धार्मिक पक्ष में विवाह की पूर्णता को वैध ठहराता है) याज्ञ० १।११,—**आशयः** योनि, बच्चेदानी,—**आस्रावः** गर्भ का कच्चा गिरना, गर्भपात, —**ईश्वरः** जन्म से ही धनी, जन्मजात धनी, पैदाइशी राजा या रईस,—**उत्पत्तिः** भ्रूण की रचना,—**उपघातः** कच्चे गर्भ का गिर जाना,—**उपघातिनी** वह गाय या स्त्री जिसे बिना ऋतु के गर्भ का स्राव हो जाय,—**कर** (वि०) गर्भ धारण करने वाला,—**कालः** ऋतु काल, गर्भधारण का समय,—**कोशः,—षः** गर्भाशय, बच्चेदानी, —**क्लेशः** गर्भधारण करने का कष्ट, प्रसव की पीड़ा, —**क्षयः** गर्भ की कच्ची अवस्था में गिर जाना,—**गृहम्, —भवनम्,—वेश्मन्** (नपुं०) 1. घर के भीतर का कमरा, घर का मध्यभाग 2. प्रसूतिकागृह 3. मन्दिर का वह कक्ष जिसमें देवता की प्रतिमा स्थापित हो —निर्गत्य गर्भभवनात्—मा० १,—**ग्रहणम्** गर्भधारण, गर्भ होना,—**घातिन्** (वि०) गर्भपात कराने वाला, —**चलनम्**, गर्भस्पन्दन, गर्भाशय में बच्चे का हिलना-डोलना,—**च्युतिः** (स्त्री०) 1. जन्म, प्रसूति 2. गर्भस्राव, —**दासः,—सी** जन्म से ही गुलाम (तिरस्कार सूचक शब्द),—**द्रुह** (वि०) (कर्तृ० ए० व० ध्रुक्) गर्भपात करने वाला,—**धरा** गर्भवती,—**धारणं—धारणा** गर्भस्थिति, गर्भ में सन्तान को रखना,—**ध्वंसः** गर्भपात, —**पाकिन्** (पुं०) साठ दिन में पकने वाला धान, साठी चावल,—**पातः** चौथे महिने के बाद गर्भ का गिर जाना,—**पोषणम्,—भर्मन्** (नपुं०) गर्भस्थ बालक का पालन-पोषण—अनुष्ठिते भिषग्भिराप्तैरथ गर्भभर्मणि —रघु० ३।४२—**मण्डपः** शयनागार, प्रसूतिकागृह, —**मासः** वह महीना जिस में गर्भ रहे,—**मोचनम्** प्रसव, बच्चे का जन्म,—**योषा** गर्भवती स्त्री (आलं०) चढ़ी हुई गंगा जब कि उसका पानी किनारों से बाहर बहता हो,—**रक्षणम्** गर्भस्थ बालक की रक्षा करना,—**रूपः, —रूपकः** बच्चा, शिशु, तरुण,—**लक्षणम्** गर्भ हो जाने का चिह्न,—**लम्भनम्** गर्भ की रक्षा और उसके विकास के लिए किया जाने वाला एक संस्कार,—**वसतिः** (स्त्री०)—**वासः** 1. गर्भाशय—मनु० १२।७८ 2. गर्भाशय में रहना,—**विच्युतिः** (स्त्री०) गर्भाधान के आरम्भ ही में गर्भस्राव हो जाना,—**वेदना** प्रसवपीडा, —**व्याकरणम्** गर्भ की उत्पत्ति और वृद्धि,—**शङ्कुः** एक प्रकार का औजार जिससे मरे हुए बच्चे को पेट से निकाला जाता है,—**शय्या** गर्भाशय,—**संभवः—संभूतिः**

(स्त्री०) गर्भवती होना,—स्थ (वि०) 1. गर्भाशय में विद्यमान 2. अभ्यन्तर, आन्तरिक,—स्रावः गर्भ गिर जाना, गर्भ का कच्ची अवस्था में वह जाना—वरं गर्भस्रावः—पंच० १, याज्ञ० ३।२०, मनु० ५।६६।

गर्भकः [गर्भ+कन्] बालों के बीच धारण की हुई पुष्पमाला,—कम् दो रातों और उनके बीच के दिन का समय।

गर्भण्डः [गर्भस्य अण्ड इव ष० त०] नाभि का बढ़ जाना।

गर्भवती [गर्भ+मतुप्+ङीप्, वत्वम्] गर्भिणी स्त्री।

गर्भिणी [गर्भ+इनि+ङीप्] गर्भवती स्त्री (चाहे मनुष्य की हो या पशु की)—गोगर्भिणीप्रियनवोलपमालभारिसेव्योपकण्ठविपिनावलयो भवन्ति—मा० ९।२, याज्ञ० १।१०५, मनु० ३।११४। सम०—अवेक्षणम् दाईपना, गर्भवती स्त्री और नवजात बच्चे की सेवा और परिचर्या,—दोहदम् गर्भवती स्त्री की प्रवल इच्छाएँ या रुचि,—व्याकरणम्,—व्याकृतिः (स्त्री०) (आयुर्वेद शास्त्र का एक विशेष अङ्ग] गर्भ के विकास का विज्ञान।

गर्भित (वि०) [गर्भ+इतच्] गर्भयुक्त, भरा हुआ।

गर्भेतृप्त (वि०) [अलुक् स० त०] 1. बालक की भाँति गर्भ में ही संतुष्ट 2. आहार और सन्तान के विषय में संतुष्ट 3. आलसी।

गर्मुत् (स्त्री०) [गृ—उति, मुट्] 1. एक प्रकार का घास 2. एक प्रकार का नरकुल 3. सोना।

गर्व (भ्वा० पर०—गर्वति, गर्वित) घमंडी या अहंकारी होना, (केवल भू० क० कृ० के रूप में प्रयुक्त, जो कि विशेषण ही समझा जाता है और गर्व से बना है) कोऽर्थान्प्राप्य न गर्वितः—पंच० १।१४६।

गर्वः [गर्व+घञ्] 1. घमंड, अहंकार—मा कुरु धनजनयौवनगर्वं हरति निमेषात्कालः सर्वम्—मोह० ४, मुधेदानीं यौवनगर्वं वहसि—मालवि० ४ 2. अलं० शास्त्र म ३३ व्यभिचारिभावों में से एक—रूपधनविद्यादिप्रयुक्तात्मोत्कर्षज्ञानाधीनपरावहेलनं गर्वः—रस०, या सा० द० के अनुसार—गर्वो मदः प्रभावश्रीविद्यासत्कुलतादिजः, अवज्ञासविलासाङ्गदर्शनाविनयादिकृत्।

गर्वाटः [गर्व+अट्+अच्] चौकीदार, द्वारपाल।

गर्ह् (भ्वा०, चुरा० आ० (कभी कभी पर० भी)—गर्हते, गर्हयते, गर्हित 1. कलंक लगाना, निन्दा करना, झिड़की देना—विषमां हि दशां प्राप्य दैवं गर्हयते नरः—हि० ४।३, मनु० ४।१९९ 2. दोषी ठहराना, आरोप लगाना 3. खेद प्रकट करना, वि—, कलंकित करना, निन्दा करना, झिड़की देना—तं विगर्हन्ति साधवः—मनु० ९।६८, ३।४६, ११।५२।

गर्हणम्,—णा [गर्ह्+ल्युट्, गर्ह्+युच्+टाप्] निन्दा, कलंक, झिड़की, दुर्वचन।

गर्हा [गर्ह्+अ+टाप्] दुर्वचन, निन्दा।

गर्ह्य (वि०) [गर्ह्+ण्यत्] निन्दनीय, निन्दा के योग्य, कलंक दिये जाने के योग्य—गर्ह्यं कुर्यादुभे कुले—मनु० ५।१४९। सम०—वादिन् (वि०) अपशब्द कहने वाला, दुर्वचन बोलने वाला।

गल् (भ्वा० पर०—गलति, गलित) 1. टपकाना, चुआना, पसीजना,—चूना—जलमिव गलत्युपदिष्टम्—का० १०३, अच्छकपोलमूलगलितैः (अश्रुभिः)—अमरु० २६।९१, भामि० २।२१, रघु० १९।२२ 2. टपकना, या गिरना—शरदमच्छगलद्वसनोपमा—शि० ६।४२, ९।७५, प्रतोदा जगलुः—भट्टि० १४।९९, १७।८७, गलद्धम्मिल्ल—गीत० २, रघु० ७।१०, मेघ० ४४ 3. ओझल होना, अन्तर्धान होना, गुज़र जाना, हट जाना—शैशवेन सह गलति गुरुजनस्नेहः—का० २८९, विद्यां प्रमादगलितामिव चिन्तयामि—चौर०, भर्तृ० २।४४, भट्टि० ५।४३, रघु० ३।७० 4. खाना, निगलना (गॄ से संबद्ध)—प्रेर० या चुरा० उभ० (भू० क० कृ०—गलित)—1. उड़ेलना 2. निथारना, निचोड़ना 3. बहना (आ०), निस्—, टपकना, रिसना, चूना—रघु० ५।१७, पर्या—, टपकाना, भट्टि० २।४, वि—, 1. टपकाना—विक्रम० ४।१० 2. टपकना, चूना 3. ओझल होना, अन्तर्धान होना।

गलः [गल्+अच्] 1. कंठ, गर्दन—न गरलं गले कस्तूरीयं—तु० अजागलस्तनः—भर्तृ० १।६८, अमरु ८८ 2. साल वृक्ष की लाख 3. एक प्रकार का वाद्ययन्त्र। सम०—अङ्कुरः गले का एक विशेष रोग (सूजन),—उद्भवः घोड़े की गर्दन के बाल, अयाल,—ओघः गले की रसौली,—कम्बलः गाय बैल की गर्दन का नीचे लटकने वाला चमड़ा, झालर,—गण्डः गंडमाला, गले का एक रोग जिसमें गांठ सी निकल आती है,—ग्रहः,—ग्रहणम् 1. गला पकड़ना, गला घोटना, श्वासावरोध करना 2. एक प्रकार का रोग 3. मास में कृष्णपक्ष के कुछ दिन—अर्थात् चौथ, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी और तीन इससे आगे के,—चर्मन् (नपुं०) अन्ननाली, गला,—द्वारम् मुँह,—मेखला हार,—वार्त (वि०) 1. गले की क्रिया में निपुण, खूब खाने और हजम करने वाला, तन्दुरुस्त, स्वस्थ—दृश्यन्ते चैव तीर्थेषु गलवार्तास्तपस्विनः—पच० ३, अने० पा० 2. पिछलग्गू, चाटुकार,—व्रतः मोर,—शुण्डिका उपजिह्वा,—शुण्डी गर्दन की ग्रन्थियों की सूजन,—स्तनी ('गलेस्तनी' भी) बकरी,—हस्तः 1. गले से पकड़ना. गला घोटना, अर्धचन्द्र या गरदनिया 2. अर्धचन्द्राकार बाण, तु० अर्धचन्द्र,—हस्तित (वि०) गले से पकड़ा हुआ, गर्दनिया देकर निकाला हुआ, गला घोटा हुआ।

गलकः [गल्+वुन्] 1. कण्ठ, गर्दन 2. एक प्रकार की मछली।

गलनम् [गल्+ल्युट्] 1. रिसना, चूना, टपकना 2. चूना, पिघल जाना ।

गलन्तिका, गलन्ती [गल्—शतृ+ङीष्, नुम्,+कन्+टाप् इत्वम्,—गल्+शतृ+ङीष्, नुम्] 1. छोटा घड़ा 2. छोटा घड़ा जिसकी पेंदी में छेद करके देव मूर्ति पर टांग देते हैं, जिससे कि उस छेद से बराबर जल टपकता रहता है ।

गलिः [गडि, डस्य लः, गल्+इन वा] हृष्ट पुष्ट परन्तु मट्ठा बैल । दे० गडि ।

गलित (भू० क० कृ०) [गल्+क्त] 1. टपका हुआ, नीचे गिरा हुआ 2. पिघला हुआ 3. रिसा हुआ, बहता हुआ 4. नष्ट, ओझल, वञ्चित 5. बंधन-रहित, ढीला 6. खाली हुआ, चू चू कर जो खाली हो गया हो 7. छाना हुआ 8. क्षीण, निर्बल किया हुआ । सम० —**कुष्ठम्** बढ़ा हुआ या असाध्य कोढ़ जब कि हाथ पैर की अंगुलियाँ भी गल कर गिर जाती है,—**दन्त** (वि०) दन्तहीन,—**नयन** जिसकी आँखों में देखने की शक्ति न रहे, अंधा ।

गलितकः [गलित इव कायति—कै+क] एक प्रकार का नृत्य ।

गलेगण्डः [अलुक् स० त०] एक पक्षी जिसके गले से मांस की थैली सी लटकती रहती है ।

गल्भ् (भ्वा० आ०—गल्भते, गल्भित) साहसी या विश्वस्त होना, प्र—, साहसी या आत्म विश्वासी होना—या कथंचन सखीवचनेन प्रागभिप्रियतमं प्रजगल्भे-- शि० १०।१८, न मौक्तिकच्छिद्रकरी शलाका प्रगल्भते कर्मणि टङ्किकायाः—विक्रमांक १।१६, टांकी का काम करने में सक्षम या साहसी नहीं हो सकता ।

गल्भ (वि०) [गल्भ्+अच्] साहसी आत्मविश्वासी, जीवट का ।

गल्या [गलानां कण्ठानां समूहः—गल्+यत्+टाप्] कण्ठों का समूह ।

गल्लः [गल्+ल] गाल, विशेषकर मुख के दोनों किनारों का पार्श्ववर्ती गाल (अलं० शास्त्री इस शब्द को 'ग्राम्य' अर्थात् गंवारू मानते हैं—तु०, काव्य० ७ में दिए गए उदाहरण का—ताम्बूलभृतगल्लोऽयं भल्लं जल्पति मानुषः, परन्तु तु० भवभूति के प्रयोग की —पातालप्रतिमल्लगल्लविवरप्रक्षिप्तसप्तार्णवम्—मा० ५।२२ । सम०—**चातुरी** गाल के नीचे रखा जाने वाला छोटा गोल तकिया ।

गल्लकः [गल्+क्विप्,=गल्, तं लाति ला+क, ततः स्वार्थे कन्] 1. शराब का गिलास 2. पुखराज, नीलमणि, दे० नी० 'गल्वर्क' ।

गल्लर्कः मदिरा पीने का प्याला ।

गल्वर्कः [गलुर्मणिभेदः तस्य अर्को दीप्तिरिव—ब० स०] 1. स्फटिक 2. वैदूर्यमणि 3. कटोरा, शराब पीने का गिलास ।

गल्ह् (भ्वा०—आ०—गल्हते, गल्हित) कलंक लगाना, निन्दा करना ।

गव [कुछ समासों, विशेष कर स्वरों से आरंभ होने वाले शब्दों के आरम्भ में 'गो' शब्द का स्थानापन्न पर्याय] सम०—**अक्षः** रोशनदान, झरोखा—विलोलनेत्रभ्रमरैर्गवाक्षाः सहस्रपत्राभरणा बभूवुः—रघु० ७।११, कुवलयितगवाक्षां लोचनैरङ्गनानां—७।९३, कु० ७।५८, मेघ० ९८, °जालम्—जाली, झिलमिली,—**अक्षित** (वि०) खिड़कियों वाला,—**अग्रम्** गौवों का झुंड (गोऽग्रम्, गोअग्रम् या गवाग्रम् लिखा जाता है), —**अदनम्** चरागाह, गोचरभूमि,—**अदनी** 1. चरागाह 2. खोर, नांद जिसमें पशुओं के खाने के लिए घास रक्खा जाता है,—**अधिका** लाख,—**अर्ह** (वि०) गाय के मूल्य का,—**अविकम्** गाय और भेड़ें,—**अशनः** 1. मोची 2. जाति से बहिष्कृत,—**अश्वम्** बैल और घोड़े, —**आकृति** (वि०) गाय की शक्ल वाला,—**आह्निकम्** प्रतिदिन गाय को चारा देने की नाप,—**इन्द्रः** 1. गौओं का स्वामी 2. बढ़िया बैल,—**ईशः**,—**ईश्वरः** गौओं का स्वामी,—**उद्वः** सर्वोत्तम गाय या बैल ।

गवयः [गो+अय्+अच्] बैल की जाति—गोसदृशो गवयः-तर्क०-दृष्टः कथंचिद्गवयैर्विविग्नैः-कु० १।५६, ऋतु० १।२३ ।

गवालूकः [गवाय शब्दाय अलति—गव+अल्+ऊकञ्] =गवय ।

गविनी [गो+इनि+ङीप्] गौओं का झुंड या लहंडा ।

गवेडुः,—**धुः**,—**धुका** [?] पशुओं को खिलाने का चारा, घास ।

गवेरुकम् गेरू ।

गवेष् (भ्वा० आ०—चुरा० पर०—गवेषते, गवेषयति, गवेषित) 1. ढूंढना, खोजना, तलाश करना, पूछ ताछ करना—तस्मादेष यतः प्राप्तस्तत्रैवान्यो गवेष्यताम —कथा० ५५, १७६ 2. प्रयत्न करना, उत्कट इच्छा करना, प्रबल उद्योग करना—गवेषमाणं महिषीकुलं जलम्—ऋतु० १।२१ ।

गवेष (वि०) [गवेष्+अच्] खोजने वाला,—**षः** खोज, पूछताछ ।

गवेषणम्,—णा [गवेष्+ल्युट्, युच्+टाप् वा] किसी वस्तु की खोज, या तलाश ।

गवेषित (वि०) [गवेष्+क्त] खोजा हुआ, ढूंढा हुआ, तलाश किया हुआ ।

गव्य (वि०) [गो+यत्] 1. गौ आदि पशुओं से युक्त 2. गौओं से प्राप्त दूध, दही आदि 3. पशुओं के लिए उपयुक्त,—**व्यम्** 1. गौओं की हेड़, मवेशी 2. गोचर-

भूमि 3. गाय का दूध 4. धनुष की डोरी 5. रंगीन बनाने की सामग्री, पीला रंग,—व्या 1. गौओं की हेड़ 2. दो कोस के बराबर दूरी 3. धनुष की डोरी 4. रंग देने की सामग्री, पीला रंग ।

गव्यूतम्,–तिः (स्त्री०) [गोः यूतिः पृषो०] 1. एक कोस या दो मील की दूरी की माप 2. दो कोस के बराबर दूरी का माप ।

गह् (चुरा० उभ०—गहयति–ते) 1. (जंगल की भांति) सघन या सांद्र होना 2. गहराई तक पहुँचना ।

गहन (वि०) [गह्+ल्युट्] 1. गहरा, सघन, सांद्र 2. अभेद्य, अप्रवेश्य, अलंघ्य, दुर्गम 3. दुर्बोध, अव्याख्येय, रहस्यपूर्ण—सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः—पंच० १।२८५, भर्तृ० २।५८, गहना कर्मणो गतिः—भग० ४।१७, शा० १।८ 4. कठोर, कठिन पीडाकर, कष्टकर—गहनः संसारः—शा० ३।१५ 5. गहरा किया हुआ, तीव्र किया हुआ—मा० १।३०, —नम् 1. गह्वर, गहराई 2. जंगल, झाड़ी या झुरमुट, घोर या अप्रवेश्य जंगल—यदनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितम्—गीत० ७, भामि० १।२५ 3. छिपने का स्थान 4. गुफा 5. पीडा, दुःख ।

गह्वर (वि०) (स्त्री०–रा,–री) [गह्+वरच्] गहरा, दुस्तर,—रम् 1. रसातल, अथाह खाई 2. झाड़ी या झुरमुट, जंगल 3. गुफा, कन्दरा—गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश—रघु० २।२६, ४६, ऋतु० १।२१ 4. दुर्गम स्थान 5. छिपने की जगह 6. पहेली 7. पाखंड 8. रोना, चिल्लाना,—रः लतामण्डप, निकुंज,—री 1. गुफा, कंदरा, खोह ।

गा [गै+डा] गाना, श्लोक ।

गाङ्ग (वि०) (स्त्री०—गी) [गङ्गा+अण्] गंगा में या गंगा पर होने वाला 2. गंगा से प्राप्त या गंगा से आया हुआ—गाङ्गमम्बु सितमम्बु यामुनं कज्जलाभमुभयत्र मज्जतः—काव्य० १०, कु० ५।३७,—गः 1. भीष्म का विशेषण 2. कार्तिकेय की उपाधि,—गम् 1. विशेष प्रकार का वर्षा का जल (जो स्वर्गीय गंगा से आने वाला माना जाता है) 2. सोना ।

गाङ्गटः,–टेयः [गाङ्ग+अट्—अच्, शक० पररूप, पृषो०] झींगा मछली, या जलवृश्चिक ।

गाङ्गायनि [गङ्गा+फिञ्] भीष्म या कार्तिकेय का नाम ।

गाङ्गेय (वि०) (स्त्री०—यी) [गङ्गा+ढक्] गंगा पर या गंगा में होने वाला,—यः भीष्म या कार्तिकेय का नाम,—यम् सोना ।

गाजरम् [गाजं मदं राति, गाज+रा+क] गाजर ।

गाञ्जिकायः—बत्तख ।

गाढ (भू० क० कृ०) [गाह्+क्त] 1. डुबकी लगाया हुआ, गोता लगाया हुआ, स्नान किया हुआ, गहरा घुसा हुआ 2. बार २ डुबकी लगाया हुआ, आश्रित, सघन या घना बसा हुआ—तपस्विगाढां तमसां प्राप नदीं तुरंगमेण—रघु० ९।७२ 3. अत्यंत दबाया हुआ, कस कर खींचा हुआ, पक्का, मुंदा हुआ, कसा हुआ—गाढाङ्गदैर्बाहुभिः—रघु० १६।६०,—गाढालिङ्गन—अमरु ३६, घुट कर छाती से लगाना—चौर० ६ 4. सघन, सांद्र 5. गहरा, दुस्तर 6. बलवान्, प्रचण्ड, अत्यधिक, तीव्र—गाढोत्कण्ठाललितलुलितैरङ्गकैस्ताम्यतीति—मा० १।१५, मेघ० ८३, प्राप्तगाढप्रकम्पाम्—शृंगार० १२, अमरु ७२, गाढतप्तेन तप्तम्—मेघ० १०२,—ढम् (अव्य०) ध्यानपूर्वक, जोर से, अत्यधिकता के साथ, भरपूर, प्रचण्डता से, बलपूर्वक । सम०—मुष्टि (वि०) बन्द मुट्ठी वाला, लोलुप, कंजूस, (ष्टिः) तलवार ।

गाणपत (वि०) (स्त्री०—ती) [गणपति+अण्] 1. किसी दल के नेता से संबंध रखने वाला 2. गणेश से संबंध रखने वाला ।

गाणपत्यः [गणपति+यक्] गणेश की पूजा करने वाला,—त्यम् 1. गणेश की पूजा 2. किसी दल का नेतृत्व, चौधरात, नेतृत्व ।

गाणिक्यम् [गणिकानां समूहः—यञ्] रंडियों का समूह ।

गाणेशः [गणेश+अण्] गणेश की पूजा करने वाला ।

गाण्डि (डी) वः,—वम् [गाण्डिरस्त्यस्य संज्ञायां—व पूर्वपददीर्घो विकल्पेन] अर्जुन का बाण (यह बाण सोम ने वरुण को दिया; वरुण ने अग्नि को और अग्नि ने अर्जुन को, जबकि खांडव वन को जलाने में उसने अग्नि की सहायता की) गाण्डिवं स्रंसते हस्तात्—भग० १।२९ 2. धनुष । सम०—धन्वन् (पुं०) अर्जुन का विशेषण—मेघ० ४८ ।

गाण्डीविन् (पुं०) [गाण्डीव+इनि] अर्जुन का विशेषण, तृतीय पांडव राजकुमार—वेणी० ४ ।

गातागतिक (वि०) (स्त्री०—की) [गतागत+ठक्] जाने आने के कारण उत्पन्न ।

गातानुगतिक (वि०) (स्त्री०—की) [गतानुगत+ठक्] अंधानुकरण से अथवा पुरानी लकीर का फकीर बनने से उत्पन्न ।

गातुः [गै+तुन्] 1. गीत 2. गाने वाला 3. गंधर्व 4. कोयल 5. भौंरा ।

गातृ (पुं०) (स्त्री०—त्री) 1. गवैया 2. गंधर्व ।

गात्रम् [गै+त्रन्, गातुरिदं वा, अण्] 1. शरीर,—अपचितमपि गात्रं व्यायतत्वादलक्ष्यं—श० २।४, तपति तनुगात्रि मदनः—३।१७ 2. शरीर का अंग या अवयव—गुरुपरितापानि न ते गात्राण्युपचारमर्हन्ति श० ३।१८, मनु० ३।२०९, ५।१०९ 3. हाथी के अगले पैर का ऊपरी भाग । सम०—अनुलेपनी

उबटन,—आवरजम् ढाल,—उत्सादनम् सुगंधित पदार्थों से शरीर को साफ करना,—कर्षण (वि०) शरीर को कृश या दुर्बल बनाने वाला·—मार्जनी तौलिया,—यष्टि: दुबला पतला शरीर—रघु० ६।८१,—रुहम् रोंगटे, बाल,—लता दुबला-पतला और सुकुमार शरीर, इकहरा बदन,—संकोचिन् (पुं०) झाऊ चूहा, साही (उछलते या छलांग लगाते समय यह अपने शरीर को सिकोड़ लेता है—इसीलिए यह नाम पड़ा),—संप्लव: छोटा पक्षी, गोताखोर।

गाथ: [गै+थन्] गीत, भजन।

गाथक:,—थिक: [गै+थकन्, गाथ+ठन्] 1. संगीतवेत्ता, गवैया 2. पुराणों अथवा धार्मिक काव्यों का लय के साथ गायन करने वाला।

गाथा [गाथ+टाप्] 1. छन्द 2. धार्मिक श्लोक या छन्द जो वेदों से संबंध न रखता हो 3. श्लोक, गीत 4. एक प्राकृत बोली। सम०—कार: प्राकृत काव्यकार।

गाथिका [गाथा+कन्+टाप्, इत्वम्] गीत, श्लोक —याज्ञ० ११४५।

गाध् (भ्वा० आ०—गाधते, गाधित) 1. खड़ा होना, ठहरना, रहना 2. कूद करना, गोता लगाना, डुबकी लगाना—गाधितासे नभो भूय: —भट्टि० २२।२, ८।१ 3. खोजना, तलाश करना, पूछ-ताछ करना 4. संकलित करना, गूथना या धागे में पिरोना।

गाध (वि०) [गाध्+घञ्] तरणीय, जो बहुत ठहरा न हो, उथला—सरित: कुर्वती गाधा: पथश्चाश्यानकर्दमान्—रघु० ४।२४, तु० अगाध,—धम् 1. उथली या छिछली जगह, घाट 2. स्थान, जगह 3. लालसा, अतितृष्णा 4. पेंदी।

गाधि:,—गाधिन् (पुं०) [गाध्+इन्, गाध+इनि] विश्वामित्र के पिता का नाम (वह इन्द्र का अवतार तथा राजा कौशाम्ब के पुत्र के रूप में उत्पन्न माना जाता है)। —ज:,—नन्दन:—पुत्र: विश्वामित्र का विशेषण, —नगरम्—पुरम् कान्यकुब्ज (वर्तमान कन्नौज) का विशेषण।

गाधेय: [गाधि+ढक्] विश्वामित्र की उपाधि।

गानम् [गै+ल्युट्] गाना, भजन, गीत।

गान्त्री [गन्त्री+अण्+ङीप्] बैलगाड़ी।

गान्दिनी [गो+दा+णिनि, पृषो०] 1. गंगा का विशेषण 2. काशी की एक राजकुमारी, स्वफल्क की पत्नी तथा अक्रूर की माता। सम०—सुत: 1. भीष्म 2. कार्तिकेय तथा 3. अक्रूर का विशेषण।

गान्धर्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [गन्धर्वस्येदम्—अण्] गंधर्वों से संबंध रखनेवाला,—र्व: 1. गायक, दिव्य गवैया 2. आठ प्रकार के विवाहों में से एक—गान्धर्व: समयान्मिथ:—याज्ञ० १।६१, (व्याख्या के लिए दे० 'गंधर्वविवाह') 3. सामवेद का उपवेद जो संगीत से संबंध रखता है 4. घोड़ा,—र्वम् गंधर्वों की कला अर्थात् गाना-बजाना,—कापि वेला चारुदत्तस्य गान्धर्वं श्रोतुं गतस्य—मृच्छ० ३। सम०—चित्त (वि०) जिसके मन पर गंधर्व ने अधिकार कर लिया है,—शाला संगीतभवन, गायनालय।

गान्धर्विक: (वि) क: [गांधर्व+कन्, गन्धर्व+ठक्] गवैया।

गान्धार: [गन्ध+अण्=गान्ध+ऋ+अण्] भारतीय सरगम के सात प्रधान स्वरों में तीसरा (संगीत के संकेतों में बहुधा 'ग' से प्रकट किया जाता है) 2. सिंदूर 3. भारत और पर्शिया के बीच का देश, वर्तमान कंधार 4. उस देश का नागरिक या शासक।

गान्धारि: [गान्ध+ऋ+इन्] शकुनि का विशेषण, दुर्योधन का मामा।

गान्धारी [गान्धारस्यापत्यम्—इञ्] गांधार के राजा सुबल की पुत्री तथा धृतराष्ट्र की पत्नी (गांधारी के १००. पुत्र—एक दुर्योधन तथा ९९ उसके भाई—हुए। उसके पति धृतराष्ट्र अंधे थे इसलिए वह सदैव अपनी आँखों पर पट्टी बांधे रखती थी (संभवत: अपने आप को अपने पति की स्थिति में लाने के लिए), जब कौरव सबके सब मर गये तो गांधारी और धृतराष्ट्र अपने भतीजे युधिष्ठिर के साथ रहे)।

गान्धारेय: [गान्धार्या अपत्यम्—ढक्] दुर्योधन का विशेषण।

गान्धिक: [गन्ध+ठक्] 1. सुगंधित द्रव्यों (इतर तेल फुलेल आदि) का विक्रेता, गंधी 2. लिपिकार, करणिक, —कम् सुगंधित द्रव्य (इतर तेल फुलेल आदि) —पण्यानां गान्धिकं पण्यं किमन्यै: काञ्चनादिकै:—पंच० १।१३।

गामिन् (वि०) [गम्+णिनि] (केवल समास के अंत में प्रयुक्त) 1. जाने वाला, घूमने वाला, सैर करने वाला —वैदिशगामी—मालवि० ५; मृगेन्द्रगामी—रघु० २।३०, शेर की चाल चलने वाला—कुञ्ज°—पंच० २।५, अलस° अमरु ५१ 2. सवारी करने वाला —द्विरद°—रघु० ४।४ 3. जाने वाला, पहुँचनेवाला, लागू करने वाला, संबंध रखने वाला—ननु सखीगामी दोष:—श० ४, द्वितीयगामी न हि शब्द एष न: —रघु० ३।४९ 4. नेतृत्व करने वाला, पहुँचने वाला, घटने वाला—चित्रकूटगामी मार्ग:, कर्तृगामि क्रियाफलम् 5. संयुक्त—सदृशभर्तृगामिनी—मालवि० ५ 6. देनेवाला, सौंपने वाला—श० ६, याज्ञ० २।१४५।

गाम्भीर्यम् [गम्भीर+ष्यञ्] 1. गहराई, थाह (जल या ध्वनि आदि की) 2. गहराई, अगाधता (अर्थ या चरित्र आदि की)—समुद्र इव गाम्भीर्ये—रामा०, कि० १।५५, रघु० ३।३२।

गाय: [गै+घञ्] गाना, भजन, गीत—याज्ञ० ३।११२।

गायकः [गै + ण्वुल्] गवैया, संगीतवेत्ता—न नटा न विटा न गायकाः—भर्तृ० ३।२७।

गायत्रः,-त्रम् [गायत्री + अण्] गीत, सूक्त।

गायत्री [गायन्तं त्रायते—गायत् + त्रा + क + ङीप्] 1. २४ मात्राओं का एक वैदिक छंद—गायत्री छन्दसामहम् —भग० १०।३५ 2. संध्या (प्रातः और सायम्) के समय प्रत्येक ब्राह्मण के द्वारा बोला जाने वाला गुरु-मंत्र; इसके जप से बहुत से पापों का प्रायश्चित होता है, वह मंत्र यह हैः—तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्—ऋक्० ३।६२।१०, —त्रम् गायत्री छंद में रचित तथा सस्वर उच्चरित सूक्त।

गायत्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [गायत्र + इनि] वेद सूक्तों का गायक, विशेष कर सामवेद के मंत्रों का गायन करने वाला।

गायनः (स्त्री०—नी) [गै + ल्युट्] गवैया—तथैव तत्पौरुष-गायनीकृता—नै० १।१०३, भर्तृ० ३।२७, अने० पा०, —नम् 1. गाना, गीत 2. गायन विद्या से अपनी आजी-विका चलाने वाला।

गारुड (वि०) (स्त्री०—डी) [गरुडस्येदम्—अण्] 1. गरुड की शक्ल का बना हुआ 2. गरुड से प्राप्त या गरुड से संबंध रखने वाला,—डः,—डम् 1. पन्ना —रघु० १३। १३ 2. साँपों के विष को उतारने का मंत्र—संगृहीत-गारुडेन—का० ५१ 3. गरुड द्वारा अधिष्ठित अस्त्र 4. सोना।

गारुडिकः [गारुड + ठक्] जादू मंत्र करने वाला, ऐन्द्र-जालिक, जहरमोरा या विषनाशक ओषधियों का विक्रेता।

गारुत्मत (वि०) (स्त्री०—ती) [गरुत्मान् अस्त्यस्य—अण्] 1. गरुड की आकृति का बना हुआ 2. (अस्त्र की भांति)—गरुडाधिष्ठित— रघु० १६।७७,—तम् पन्ना।

गार्दभ (वि०) (स्त्री०—भी) [गर्दभस्येदम्—अण्] गधे से प्राप्त या गधे से संबद्ध, गर्दभसंबंधी।

गार्ध्यम् [गर्ध + ष्यञ्] लालच,—शि० ३।७३।

गार्ध्र (वि०) (स्त्री०—र्ध्री) [गृध्रस्यायम्—अण्] गिद्ध से उत्पन्न,—र्ध्रः 1. लालच (प्रायः 'गार्ध्य' का अर्थ) 2. बाण। सम०—पक्षः,—वासस् (पुं०) गिद्ध के परों से युक्त बाण।

गार्भ (वि०) (स्त्री०—र्भी) ⎫ [गर्भे साधु—अण् ठक् वा]
गार्भिक (स्त्री०—की) (वि०) ⎭ 1. गर्भाशयसंबंधी, भ्रूणवि-षयक 2. गर्भावस्थासंबंधी—मनु० २।२७।

गार्भिणम्—ण्यम् [गर्भिणीनां समूहः भिक्षा° अण्] गर्भवती स्त्रियों का समूह।

गार्हपतम् [गृहपतेरिदम्—अण्] गृहपति का पद व प्रतिष्ठा।

गार्हपत्यः [गृहपतिना नित्यं संयुक्तः, संज्ञायां ञ्य] 1. गृहपति के द्वारा स्थायी रूप से रक्खी जाने वाली तीन यज्ञा-ग्नियों में से एक, यह अग्नि पिता से प्राप्त की जाती है तथा सन्तान को सौंप दी जाती है, इसी से यज्ञ में अग्न्याधान किया जाता है, तु० मनु० २।२३१ 2. वह स्थान जहाँ यह अग्नि रक्खी जाती है,—त्यम् एक परिवार का प्रशासन, गृहपति का पद और प्रतिष्ठा।

गार्हमेध (वि०) (स्त्री०—धी) [गृहमेधस्येदम्—अण्] गृह-पति के लिए योग्य या समुचित,—धः पाँच यज्ञ जिनका अनुष्ठान गृहपति को नित्य करना होता है।

गार्हस्थ्यम् [गृहस्थ + ष्यञ्] 1. गृहस्थ पुरुष के जीवन की अवस्था या क्रम, घरेलू काम काज, गृहस्थी 2. गृहपति के द्वारा नित्य अनुष्ठेय पंचयज्ञ।

गालनम् [गल् + णिच् + ल्युट्] 1. (तरल पदार्थ का) छन कर रिसना 2. प्रचंड ताप से गल जाना, गलना, पिघलना।

गालवः [गल् + घञ्, तं वाति—वा + क] 1. लोध्र वृक्ष 2. एक प्रकार का आबनूस 3. एक ऋषि, विश्वा-मित्र का शिष्य (हरिवंश पुराण में उसे विश्वामित्र का पुत्र बतलाया गया है)।

गालिः [गल + इन्] अपशब्द, दुर्वचन, गाली—ददतु ददतु गालीर्गालिमन्तो भवन्तो वयमपि तदभावाद्गालिदाने-ऽसमर्थाः—भर्तृ० ३।१३३।

गालित (वि०) [गल् + णिच + क्त] 1. छाना हुआ 2. (अर्क की भांति) खींचा हुआ 3. पिघलाया हुआ, ताप से लगाया हुआ।

गालोड्यम् [गलोड्य + अण्] कमल का बीज।

गावल्गणिः [गवल्गण + इञ्] संजय का विशेषण, गव-ल्गण का पुत्र।

गाह् (भ्वा० आ०—गाहते, गाढ या गाहित) डुबकी लगाना, गोता लगाना, स्नान करना, (पानी जैसे पदार्थ में) डुबोना—गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृङ्गैर्मुहुस्ताडितम्—श० २।६, गाहितासेऽय पुण्यस्य गङ्गामूर्तिमिव द्रुताम्—भट्टि० २२।११, १४।६७ (आलं० भी); मनस्तु मे संशयमेव गाहते—कु० ५।४६, संशयों में डुबा हुआ या संशयालु 2. गहराई में घुसना, बैठना, घूमना-फिरना—कदाचित्काननं जगाहे—का० ५८, ऊनं न सत्त्वेष्वधिको बबाधे तस्मिन्वनं गोप्तरि गाह-माने—रघु० २।१४, मेघ० ४८, हि० १।१७१, कि० १३।२४ 3. आलोडित करना, क्षुब्ध करना, हिचकोले देना, बिलोना 4. लीन होना (अधि० के साथ) 5. अपने आपको छिपाना 6. नष्ट करना,—अव—, ('अ' को प्रायः लुप्त करके) 1. डुबकी लगाना, स्नान करना, गोता लगाना—तमोपह्नत्रीं तमसां वगाह्य—रघु० १४।७६, स्वप्नेऽवगाहतेऽत्यर्थं जलम्—याज्ञ० १।२७२ 2. घुसना, पैठना, पूरी तरह व्याप्त होना—पूर्वापरौ

तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदंडः—कु० १।१, ७।४०, **उप—**, घुसना, प्रविष्ट होना, **वि—**, 1. गोता लगाना, डुबकी लगाना, स्नान करना—(दीर्घिकाः) स व्यगांहत विगाढमन्मथः—रघु० १९।९ 2. प्रविष्ट होना, पैठना, व्याप्त होना (आलं० भी) —विषमोऽपि विगाह्यते नयः कृततीर्थः पयसामिवाशयः —कि० २।३, रघु० १३।१ 3 आन्दोलित करना, विक्षुब्ध करना—विगाह्यमानां सरयूं च नौभिः—रघु० १४।३०, **सम्—**, घुसना, अन्दर जाना, पैठना—समगाहिष्ट चाम्बरम्—भट्टि० १५।६९।

गाहः [गाह् + घञ्] 1. डुबकी लगाना, गोता लगाना, स्नान करना 2. गहराई, आभ्यन्तर प्रदेश।

गाहनम् [गाह् + ल्युट्] डुबकी लगाना, गोता लगाना, स्नान करना—आदि।

गाहित (वि०) [गाह् + क्त] 1. स्नान किया हुआ, गोता लगाया 2. पैदा हुआ, घुसा हुआ—दे० गाह्।

गिन्दुकः [=गेन्दुकः पृषो०] 1. गेंद 2. एक वृक्ष का नाम दे 'गेंदुक'।

गिर् (स्त्री०) [गृ + क्विप्] (कर्तृ०, ए० व०—गीः, करण० द्वि० व०—गीर्भ्याम् आदि) 1. भाषण, शब्द, भाषा—वचस्यवसिते तस्मिन् ससर्ज गिरमात्मभूः—कु० २।५३, भवतीनां सूनृतयैव गिरा कृतमातिथ्यम्—श० १, प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः—कि० १।२५, शि० २।१५ याज्ञ० १।७१ 2. सरस्वती का आवाहन, स्तुति, गीत 3. विद्या और वाणी की देवी सरस्वती। सम० **—देवी** (गीर्देवी) वाणी की देवी सरस्वती, **—पतिः** (गीः पतिः, गीष्पतिः, गीर्पतिः) 1. देवताओं के गुरु बृहस्पति 2. विद्वान् पुरुष, **—रथः** (गीरथः) बृहस्पति, **—वा (बा) ण** (गीर्वाणः) देव, देवता—परिमलो गीर्वाणचेतोहरः—भामि० १।६३, ८४।

गिरा [गिर् + क्विप् + टाप्] वाणी, बोलना, भाषा, आवाज।

गिरि (वि०) [गॄ + इ किच्च] श्रद्धेय, आदरणीय, पूजनीय, —रिः 1. पहाड़, पर्वत, उत्पाटन—पश्याधः खनने मूढ गिरयो न पतन्ति किम्—शृंगार०—१९, ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरयः—श० ६ 2. विशाल चट्टान 3. आँख का रोग 4. संन्यासियों की सम्मानसूचक उपाधि—उदा० आनन्दगिरि 5. (गण० में) आठ की संख्या 6. गेंद (जिससे बच्चे खेलते हैं), —रिः (स्त्री०) 1. निगलना 2. चूहा, मूसा (इस अर्थ में 'गिरी' भी लिखा जाता है)। सम०**—इन्द्रः** 1. ऊँचा पहाड़ 2. शिव का विशेषण 3. हिमालय पहाड़, **—ईशः** 1. हिमालय पर्वत का विशेषण 2. शिव का विशेषण—सुतां गिरीशप्रतिसक्तमानसाम्—कु० ५।३, **—कच्छपः** पहाड़ी कछुवा, **—कण्टकः** इन्द्र का वज्र, **—कदम्बः**, **—बकः**, कदंब वृक्ष की जाति **—कन्दरः** गुफा कन्दरा, **—कर्णिका** पृथ्वी, **—काणः** एक आँख से अन्धा या एक आँख वाला व्यक्ति, **—काननम्** पहाड़ी निकुंज, **—कूटम्** पहाड़ की चोटी, **—गंगा** एक नदी का नाम, **—गुडः** गेंद, **—गुहा** पहाड़ की गुफा, **—चर** (वि०) पहाड़ पर घूमने वाला—गिरिचर इव नागः प्राणसारं बिभर्ति—श० ३।४ (**—रः**) चोर, **—ज** (वि०) पहाड पर उत्पन्न (**जम्**) 1. अबरक 2. गेरू 3. गुग्गुल 4. शिलाजीत 5. लोहा (**—जा**) 1. (हिमालय की पुत्री) पार्वती 2. पहाड़ी केला 3. मल्लिका लता 4. गंगा का विशेषण, **—°तनयः**, **—नन्दनः**—**सुतः** 1. कार्तिकेय का विशेषण 2. गणेश का विशेषण, **°पतिः** शिव का विशेषण, **°मलम्** अबरक, **—जालम्** पर्वतमाला, **—ज्वरः** इन्द्र का वज्र, **—दुर्गम्** पहाड़ी किला, पहाड़ पर विद्यमान दुर्ग—नृदुर्गं गिरिदुर्गं वा समाश्रित्य वसेत्पुरम्—मनु० ७।७०, ७१, **—द्वारम्** पहाड़ी मार्ग, **—धातुः** गेरू **—ध्वजम्** इन्द्र का वज्र, **—नगरम्** दक्षिणापथ में विद्यमान एक जिला, **—नदी** (**नदी**) पहाड़ी नदी, छोटा चश्मा या नदी, **—णद्ध** (**नद्ध**) (वि०) पहाड़ों से घिरा हुआ, **—नन्दिनी** 1. पार्वती 2. गंगानदी 3. दरिया (पहाड़ से निकलकर बहने वाला)—कलिन्दगिरिनन्दिनीतटसुरद्रुमालम्बिनी—भामि० ४।३, **—णितम्बः** (**नितम्बः**) पहाड़ का ढलान, **—पीलुः** एक फलदार वृक्ष, फालसा, **—पुष्पकम्** शिलाजीत, **—पृष्ठः** पहाड़ की चोटी, **—प्रपातः** पहाड़ का ढलान, **—प्रस्थः** पहाड़ की समतल भूमि, **—प्रिया** सुरा, गाय, **—भिद्** (पुं०) इन्द्र का विशेषण, **—भू** (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न (**भूः**—स्त्री) 1. गंगा का विशेषण 2. पार्वती का विशेषण, **—मल्लिका** कुटज वृक्ष, **—मानः** हाथी. एक विशालकाय हाथी, **—मृद्**, **—मृद्भवम्** गेरू **—राज** (पुं०) 1. ऊँचा पहाड़ 2. हिमालय का विशेषण, **—राजः** हिमालय पहाड़, **—व्रजम्** मगध में विद्यमान् (राजगृह) एक नगर का नाम, **—शालः** एक प्रकार का पक्षी, **—शृङ्गः** गणेश का विशेषण, **—(गम्)** पहाड़ की चोटी, **—षद्** (**सद्**) (पुं०) शिव का विशेषण, **—सानु** (नपुं०) पठार, अधित्यका, **—सारः** 1. लोहा 2. टीन 3. मलय पहाड़ का विशेषण **—सुतः** मैनाक पहाड़, **—सुता** पार्वती का विशेषण, **—स्रवा** पहाड़ी नदी।

गिरिकः, **गिरियकः**, **गिरियाकः** [गिरि + कै + क, गिरि + या + क + कन्, गिरि + या + क्विप् + कन्] गेंद।

गिरिका [गिरि + कन् + टाप्] छोटा चूहा।

गिरिशः [गिरौ कैलासपर्वते शेते—गिरि + शी + ड वा] शिव का विशेषण—प्रत्याहतास्त्रो गिरिशप्रभावात् —रघु० २।४१, गिरिशमुपचचार प्रत्यहं सा सुकेशी —कु० १।६०, ३७।

गिल् (तुदा० पर—गिलति, गिलित) निगलना (वस्तुतः यह कोई स्वतंत्र धातु नहीं, बल्कि 'गृ' से सम्बद्ध है) ।

गिल (वि०) [गिल्+क] जो निगलता है, उदरस्थ कर लेता है—उदा० तिमिङ्गिलगिलोऽप्यस्ति तद्गिलोऽप्यस्ति राघवः—दे० तिमिङ्गिल,—**लः** नींबू का वृक्ष । सम० —**गिलः**—**ग्राहः** मगरमच्छ, घड़ियाल ।

गिलनम्, गिलिः (स्त्री०) [गिल्+ल्युट्, गिल+इन्] निगलना, खा लेना ।

गिलायुः गले के भीतर एक कड़ी गांठ या रसौली ।

गिलि (रि) त (वि०) [गिल्+क्त] खाया हुआ, निगला हुआ ।

गि (गे) ष्णुः [गै+इष्णुच् आद्गुणः] 1. गवैया 2. विशेषकर वह ब्राह्मण जो सामवेद के मन्त्रों का गायन करने में चतुर हो, सामगायक ।

गीत (भू० क० कृ०) [गै+क्त] 1. गाया हुआ, अलापा हुआ (शा०)—आर्य साधु गीतम्—श० १, चारणद्वन्द्वगीतः शब्दः—श० २।१४ 2. घोषणा किया हुआ, बतलाया हुआ, कहा हुआ—गीतश्चायमर्थोऽङ्गिरसा—मा० २, ('गै' के नीचे भी दे०),—**तम्** गाना, भजन, —तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः—श० १।५, गीतमुत्सादकारि मृगाणाम्—का० ३२ । सम० —**अयनम्** गाने का साधन या उपकरण अर्थात् वीणा बंसरी आदि,—**क्रमः** गीत का गानक्रम,—**ज्ञ** (वि०) गानकला में प्रवीण,—**प्रिय** (वि०) गाने बजाने का शौक़ीन (**यः**) शिव का विशेषण,—**मोदिन्** (पुं०) किन्नर,—**शास्त्रम्** संगीत विद्या ।

गीतकम् [गीत+कन्] स्तोत्र, भजन ।

गीता [गै+क्त+टाप्] (बहुधा गुरु-शिष्य संवाद के रूप में) संस्कृत पद्य में लिखे गये कुछ धार्मिकग्रंथ जो विशेष रूप से धार्मिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हैं—उदा० शिवगीता, रामगीता, भगवद्गीता आदि, परन्तु यह नाम केवल अन्तिम ग्रन्थ (भगवद्गीता) तक ही सीमित प्रतीत होता है—गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः, या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता—श्रीधर स्वामी द्वारा उद्धृत ।

गीतिः (स्त्री०) [गै+क्तिन्] 1. गीत, गाना—अहो रागपरिवाहिणी गीतिः श० ५, श्रुताप्सरोगीतिरपि क्षणेऽस्मिन् हरः प्रसंख्यानपरो बभूव—कु० ३।४० 2. एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट ।

गीतिका [गीति+कन्+टाप्] 1. छोटा गीत 2. गाना ।

गीतिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गीत+इनि] जो गाकर सस्वर पाठ करता है—गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः—शिक्षा ३२ ।

गीर्ण (वि०) [गृ+क्त] 1. निगला हुआ, खाया हुआ 2. वर्णन किया गया, स्तुति किया गया (दे० गृ) ।

गीर्णिः (स्त्री०) [गृ+क्तिन्] 1. प्रशंसा 2. यश 3. खा लेना, निगल जाना ।

गु (तुदा० पर०—गुवति, गून) विष्ठा उत्सर्ग करना, मलोत्सर्ग करना, पाखाना करना ।

गुग्गुलुः,—लुः [गुज्+क्विप्=गुक् रोगः ततो गुडति रक्षति—गुक्+गुड्+कु (कु) डस्य लकारः] एक प्रकार का सुगंधित गोंद, राल, गुग्गल ।

गुच्छः [गु+क्विप्=गुत् तं श्यति—गुत्+शो+क] 1. बंडल, गुच्छा 2. फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, (वृक्षों का) झुंड—अक्ष्णोर्निक्षिपदञ्जनं श्रवणयोस्तापिञ्छगुच्छावलिम्—गीत० ११, मनु० १।४८ शि० ६।५० 3. मयूरपंख 4. मोतियों का हार 5. बत्तीस लड़ियों का मुक्ता हार (कुछ के मतानुसार ७० लड़ियां) सम०—**अर्धः** चौबीस लड़ियों का मोतियों का हार (**र्धः, र्धम्**) आधा गुच्छा,—**कणिशः** एक प्रकार का अनाज,—**पत्रः** ताड़ का पेड़,—**फलः** 1. अंगूर की बेल 2 केले का वृक्ष ।

गुच्छकः [गुच्छ+कन्] दे० 'गुच्छ' ।

गुज् (भ्वा० पर०—गोजति, बहुधा भ्वा० पर० गुञ्ज्—गुञ्जति, गुञ्जित या गुजित) गुं गुं शब्द करना, गुंजार करना, गूंजना, भनभनाना,—न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्ज यः कलम्—भट्टि० २।१९, ६।१४३, १४।२, उत्तर० २।२९—अयि दलदरविन्द स्यन्दमानं मरन्दं तव किमपि लिहन्तो मञ्जु गुञ्जन्तु भृङ्गाः—भामि० १।५ ।

गुजः [गुज्+क] 1. भिनभिनाना, गूंजना 2. कुसुमस्तवक, फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता—तु० गुच्छ । सम० —**कृत्** भौंरा ।

गुञ्जनम् [गुञ्ज्+ल्युट्] मन्द-मन्द शब्द करना, भिनभिनाना, गूंजना ।

गुञ्जा [गुञ्ज्+अच्—टाप्] गुंजा नाम की एक छोटी झाड़ी जिसके लाल बेर जैसे फल लगते हैं, घुंघची—अन्तर्विषमया ह्येता बहिश्चैव मनोरमाः, गुञ्जाफलसमाकारा योषितः केन निर्मिताः—पंच० १।१९९, किं जातु गुञ्जाफलभूषणानां सुवर्णकारेण वनेचराणाम्—विक्रमांक० १।२५ 2. इस झाड़ी का फल, गुंजा जो १$\frac{5}{16}$ ग्रेन के बराबर वजन की होती है, या कृत्रिम रूप से जिसका तोल २$\frac{3}{16}$ ग्रेन की माप का समझा जाता है 3. गुंजार मंद-मंद गुंजन का शब्द 4. ढपड़ा, ताशा,—भट्टि० १४।२ 5. मधुशाला 6. चिंतन, मनन ।

गुञ्जिका [गुञ्जा+कन्+टाप्, इत्वम्] घुंघची ।

गुञ्जितम् [गुञ्ज्+क्त] भनभनाना, गुनगुनाना—स्वच्छन्दं दलदरविन्द ते मरन्दं विन्दन्तो विदधतु गुञ्जितं मिलिन्दाः—भामि० १।१५, न गुञ्जितं तन्न जहार यन्मनः—भट्टि० २।१९ ।

गुटिका [गु+टिक्=गुटि+कन्+टाप्] 1. गोली 2. गोल

कंकड़, कोई छोटा गोला या पिंड—लोष्टगुटिकाः क्षिपति—मृच्छ० ५ 3. रेशम के कीड़े का कोया 4. मोती—निर्धौत हारगुटिकाविशदं हिमाम्भः—रघु० ५।७०। सम०—अञ्जनम् एक प्रकार का सुर्मा।

गुटी [गुटि+ङीप्] दे० 'गुटिका'।

गुडः [गुड्+क] 1. शीरा, राब, ईख के रस से तैयार किया हुआ गुड—गुडधानाः—सिद्धा०, गुडौदनः—याज्ञ० १।३०३, गुडद्वितीयां हरीतकीं भक्षयेत्—सुश्रु० 2. भेली, पिण्ड 3. खेलने की गेंद 4. मुंहभर, ग्रास 5. हाथी का जिरहबख्तर, कवच। सम०—उदकम् गुड का शरबत,—उद्भवा शक्कर,—ओदनम् गुड डाल कर उबाले हुए मीठे चावल,—तृणम्,—दारुः,—रु (नपुं०) गन्ना ईख,—धेनुः (स्त्री०) दूध देने वाली गाय, जो प्रतीक रूप से गुड की बना कर ब्राह्मणों को उपहार में दी जाय,—पिष्टम् गुड के लड्डू,—फलः पीलू का पेड़,—शर्करा खांड,—शृङ्गम्—गुड-द्रावणी कलश,—हरीतकी गुड में रक्खी हुई हर्र, मुरब्बे की हर्र।

गुडकः [गुड+कन्] 1. पिण्ड, भेली 2. ग्रास 3. गुड से तैयार की हुई औषधि।

गुडलम् [गुड+ला+क] गुड़ से तैयार की हुई शराब।

गुडा [गुड+टाप्] 1. कपास का पौधा 2. बटी, गोली।

गुडाका [गुडयति संकोचयति देहेन्द्रियादीनि इति गुडः तमाकति प्रकाशयति गुड+आ+कै+क+टाप्] 1. तन्द्रा 2. निद्रा। सम०—ईशः 1. अर्जुन का विशेषण,—मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद् द्रष्टुमर्हसि—भग० ११।७, (गीता में और कई स्थानों पर) 2. शिव का विशेषण।

गुडगुडायनम् [गुडगुड इत्येवमयनं यस्य—ब० स०] खांसी आदि के कारण कण्ठ से गुडगुड की आवाज निकलना।

गुडेरः [गड्+एरक्] 1. पिण्ड, भेली 2. कौर, टुकड़ा।

गुण् (चुरा० उभ०—गुणयति-ते, गुणित) 1. गुणा करना 2. उपदेश देना 3. निमंत्रित करना।

गुणः [गुण्+अच्] 1. धर्म, स्वभाव (बुरा या अच्छा) दुर्गुण, सुगुण 2. (क) अच्छी विशेषता, विशिष्टता उत्कर्ष, श्रेष्ठता—कतमे ते गुणाः—या० १, रघु० १।९, २२, साधुत्वे तस्य को गुणः—पंच० ४।१०८, (ख) गौरव 3. उपयोग, लाभ, भलाई (करण० के साथ) मुद्रा० १।१५ 4. प्रभाव, परिणाम. फल, शुभ परिणाम 5. धागा, डोरी, रस्सी, डोर—मेखलागुणैः—कु०४।८, ५।१०, यतः परेषां गुणग्रहीतासि—भामि० १।९ (यहाँ 'गुण' का अर्थ विशिष्टता भी है) 6. धनुष की डोरी—गुणकृत्ये धनुषो नियोजिता—कु० ४।१५, २९, कनकपिङ्गतडिद्गुणसंयुतम्—रघु० ९।५४ 7. वाद्ययंत्र के तार शि० ४।५७ 8. स्नायु 9. खूबी, विशेषण, धर्म—मनु० ९।२२ 10. विशेषता, सब पदार्थों का धर्म या लक्षण, वैशेषिक के सात पदार्थों में से एक (गुणों की संख्या २४ है) 11. प्रकृति का अवयव या उपादान, समस्त रचित वस्तुओं से संबद्ध तीन गुणों में से कोई एक (यह हैं—सत्त्व, रजस् और तमस्)—गुणत्रयविभागाय—कु० २।४, भग० १४।५, रघु० ३।२७ 12. वत्ती, सूत का धागा 13. इन्द्रियजन्य विषय (यह पाँच हैं—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द) 14. आवृत्ति, गुणा (संख्याओं के बाद समास के अन्त में लगकर प्रायः 'तह' या 'गुणा या बार' को प्रकट करता है)—आहारो द्विगुणः स्त्रीणां बुद्धिस्तासां चतुर्गुणा, षड्गुणो व्यवसायश्च कामश्चाष्टगुणः स्मृतः—चाण० ७८, इसी प्रकार त्रिगुण,—शतगुणी भवति—सौगुना हो जाता है 15. गौण तत्त्व, आश्रित अंश (विप० मुख्य) 16. आधिक्य, बहुतायत, बहुलता 17. विशेषण, वाक्य में अन्याश्रित शब्द 18. इ, उ, ऋ तथा लृ के स्थान में ए, ओ, अर और अल्, अथवा अ, ए, ओ, अर् और अल् स्वर का आदेश 19. (अलं० शा० में) रस का अन्तर्निहितगुण, मम्मट के अनुसार—ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः, उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः—काव्य० ८, (अलं० शा० के प्रणेता वामन, पंडित जगन्नाथ, दण्डी तथा अन्य विद्वान् गुणो को शब्द और अर्थ दोनों का धर्म समझते हैं तथा प्रत्येक के दस दस प्रकार बतलाते हैं। परन्तु मम्मट केवल तीन गुण मानता है और दूसरों के विचारों की समालोचना करने के पश्चात् कहता हैः—माधुर्यौजः प्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश—काव्य० ८) 20. (व्या० और मी० में) शब्द समूह का अर्थ, धर्म या गुण माना जाता है, उदा० वैयाकरण शब्दार्थ के चार प्रकार मानते हैंः—जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य, इन अर्थों को समझाने के लिए क्रमशः प्रत्येक का गौः, शुक्लः, चलः और डित्थः—उदाहरण देते हैं 21. (राजनीतिशास्त्र में) कार्य करने का समुचित प्रक्रम, सही रीति (विदेशराजनीति विषयक छः रीतियाँ राजाओं के द्वारा व्यवहार्य बतलाई गई हैं—1. संधि, शान्ति, सुलह 2. विग्रह, युद्ध 3. यान, चढ़ाई करना 4. स्थान या आसन अर्थात् पड़ाव 5. संश्रय अर्थात् शरणस्थल ढूंढना 6. द्वैध या द्वैधीभाव संधिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः अमर०, दे० याज्ञ० १।३४६ मनु० ७।१६०, शि० २।२६, रघु० ८।२१ 22. तीन गुणों से व्युत्पन्न तीन की संख्या 23. (ज्या० में) सम्पर्क जीवा 24. ज्ञानेन्द्रिय 25. निचले दर्जे का विशिष्ट भोजन—मनु० ३।२२४, २३३ 26. रसोइया 27. भीम का विशेषण 28. परित्याग, उत्सर्ग। सम०—अतीत (वि०) सब प्रकार के गुणों से मुक्त, गुणों

से परे,--अधिष्ठानकम् वक्षस्थल का वह प्रदेश जहाँ पेटी बाँधी जाती है, अनुरागः दूसरों के सद्गुणों की सराहना करना--कि० १।११, --अनुरोधः अच्छे गुणों की अनुरूपता या उपयुक्तता,—अन्वित (वि०) अच्छे गुणों से युक्त, श्रेष्ठ, मूल्यवान, अच्छा, सर्वोत्तम,- -अपवादः गुणों का तिरस्कार, गुणों का अपकर्षण, गुण-निन्दा,—आकरः 'गुणों की खान' सर्वगुणसंपन्न,--आढ्य (वि०) गुणों से समृद्ध,—आत्मन् (वि०) गुणी—आधारः गुणों का पात्र, सद्गुणी, गुणवान् व्यक्ति,--आश्रय (वि०) गुणी श्रेष्ठ,--उत्कर्षः गुण की श्रेष्ठता, उत्तम गुणों का स्वामित्व,--उत्कीर्तनम् गुणों का कीर्तन, स्तुति, प्रशस्ति,--उत्कृष्ट (वि०) गुणों में श्रेष्ठ,--कर्मन् (नपुं०) 1. अनावश्यक या गौण कार्य 2. (व्या० में) गौण या कार्य का व्यवधानसहित (अर्थात् अप्रत्यक्ष) कर्म, उदा०—नेताऽश्वस्य स्रुघ्नं स्रुघ्नस्य वा, में स्रुघ्नं गुणकर्म है,—कार (वि०) अच्छे गुणों का उत्पादक, लाभदायक, हितकर (रः) 1. वह रसोइया जो अतिरिक्त विशिष्ट भोजन तैयार करता है 2. भीम का विशेषण,—गानम् गुणों का गान करना, स्तुति, प्रशंसा, —गृध्नु (वि०) 1. अच्छे गुणों का इच्छुक 2. अच्छे गुणों वाला,—गृह्य (वि०) गुणों की सराहना करने वाला, गुणों से संलग्न, गुणों का प्रशंसक--ननु वक्तृविशेषनिःस्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः—कि० २।५, ग्रहीतृ,—ग्राहक,—ग्राहिन् (वि०) दूसरों के) गुणों का प्रशंसक–रत्न० १।६, भामि० १।९,—ग्रामः गुणों का समूह--गुरुतरगुणग्रामाम्भोजस्फुटोज्ज्वलचन्द्रिका —भर्तृ० ३।११६, गणयति गुणग्रामम्—गीत० २, भामि० १।१०३,—ज्ञ (वि०) गुणों की सराहना जानने वाला, प्रशंसक,—भगवति कमलालये भृशमगुणज्ञासि —मुद्रा० २, गुणागुणज्ञेषु गुणा भवन्ति—हि० प्र० ४७,—त्रयम्,—त्रितयम् प्रकृति के तीन घटक धर्म अर्थात् सत्त्व, रजस् और तमस्,--धर्मः कुछ गुणों पर आधिपत्य करने में आनुषंगिक गुण या धर्म,– निधिः गुणों का भण्डार,--प्रकर्षः गुणों की श्रेष्ठता, बड़ा गुण, --लक्षणम् आन्तरिक गुण का सांकेतिक चिह्न,--लयनिका,– लयनी तंबू,—वचनम्,–वाचकः विशेषण, गुण बतलाने वाला शब्द, संज्ञा शब्द जो विशेषण की भाँति प्रयुक्त हो जैसे 'श्वेतोऽश्वः' में 'श्वेत' शब्द,— विवेचना दूसरों के गुणों की सराहना करने में विवेकबुद्धि, —वृक्षः,—वृक्षकः एक मस्तूल या स्तंभ जिससे नौका या जहाज बांधा जाय,—वृत्तिः गौण या अप्रधान संबंध (विप० मुख्यवृत्ति),—वैशेष्यम् गुण की प्रमुखता, —शब्दः विशेषण, – संख्यानम् तीन अनिवार्य गुणों की संगणना, सांख्यदर्शन (योगदर्शन सहित),—संगः 1. गुणों का साहचर्य 2. सांसारिक विषयवासनाओं में आसक्ति,— सम्पद् (स्त्री०) गुणों की श्रेष्ठता या समृद्धि, बड़ा गुण, पूर्णता,—सागरः 1. गुणों का समुद्र, एक बहुत गुणी पुरुष 2. ब्रह्मा का विशेषण ।

गुणकः [गुण्+ण्वुल्] 1. हिसाब करने वाला, या हिसाब लगाने वाला 2. (गणित में) वह अंक जिससे गुणा किया जाय ।

गुणनम् [गुण्+ल्युट्] 1. गुणा करना 2. संगणना 3. गुणों का वर्णन करना, गुणों को बतलाना या गिनना—इह रसभणने कृतहरिगुणने मधुरिपुपदसेवके--गीत० ७, --नी पुस्तकों की परीक्षा करना, अध्ययन करना, विभिन्न पाठों के मूल्य को निर्धारण करने के लिए पाण्डुलिपियों का मिलान करना ।

गुणनिका [गुण्+युच्+कन्, इत्वम्] 1. अध्ययन, बार-बार पढ़ना, आवृत्ति – विशेषविदुषः शास्त्रं यत्तवोद्ग्राह्यते परः, हेतुः परिचयस्थैर्ये वक्तुर्गुणनिकैव सा—शि० २।७५, (आम्रेडितम्-- मल्लि०) 2. नाच, नाचने का व्यवसाय या नृत्यकला 3. नाटक की प्रस्तावना 4. माला, हार—दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका, --आन० ३ 5. शून्य, अंकगणित में विशेष चिह्न जो शून्यता को प्रकट करता है ।

गुणनीय (वि०) [गुण्+अनीयर्] 1. वह राशि जिसे गुणा किया जाय 2. जिसको गिना जाय 3. जिसे उपदेश दिया जाय,--यः अध्ययन, अभ्यास ।

गुणवत् (वि०) [गुण+मतुप्] गुणों से युक्त, गुणी, श्रेष्ठ ।

गुणिका [गुण्+इन्+कन्+टाप्] रसौली, गिल्टी, सूजन ।

गुणित (भू० क० कृ०) [गुण्+क्त] 1. गुणा किया हुआ 2. एक स्थान पर ढेर लगाया हुआ, संगृहीत 3. गिना हुआ ।

गुणिन् (वि०) [गुण+इनि] 1. गुणों से युक्त, गुणवाला. गुणी—गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः—मनु० ८।७३, याज्ञ० २।७८ 2. भला, शुभ—गुणिन्यहनि—दश० ६१ 3. किसी के गुणों से परिचित 4. गुणों को धारण करने वाला (कर्म) 5. (अप्रधान) अंशों वाला, मुख्य (विप० गुण)—गुणगुणिनोरेव संबन्धः ।

गुणीभूत (वि०) [अगुणो गुणीभूतः—गुण+च्वि+भू+क्त] 1. मूल महत्त्वपूर्ण अर्थ से वञ्चित 2. गौण या अप्रधान बनाया हुआ 3. विशेषणों से आवेष्टित । सम०—व्यङ्ग्यम् (अलं० शा० में) काव्य के तीन भेदों में से दूसरा—मध्यम— जिसमें अभिधेय अर्थ की अपेक्षा व्यंजना द्वारा अभिव्यक्त अर्थ अधिक आकर्षक नहीं होता है, सा० द० परिभाषा देता है:—अपरं तु गुणीभूतव्यङ्ग्यं वाच्यादनुत्तमे व्यङ्ग्ये, २६५, काव्य का यह भेद इसके आगे आठ भागों में विभक्त किया गया है—दे० सा० द० २६६, काव्य० ५ ।

गुण्ठ् (चुरा० उभ०—गुण्ठयति-ते, गुण्ठित) 1. परिवृत्त करना, घेरना, लपेटना, परिवेष्टित करना 2. छिपाना, ढक लेना, अव—, ढकना, परदा डालना, छिपाना, अवगुण्ठित करना ।

गुण्ठनम् [गुण्ठ्+ल्युट्] 1. छिपाना, ढकना, गोपन 2. मलना —यथा भस्मगुण्ठनम् ।

गुण्ठित (वि०) [गुण्ठ्+क्त] 1. घिरा हुआ, ढका हुआ 2. चूर्ण किया हुआ, पीसा हुआ, चूरा किया हुआ ।

गुण्ड् (चुरा० उभ०—गुण्डयति, गुण्डित) 1. ढकना, छिपना पीसना, चूरा करना ।

गुण्डकः [गुण्ड्+अच्+कन्] 1. धूल, चूर्ण 2. तेल का बर्तन 3. मन्द मधुर स्वर ।

गुण्डिकः [गुण्ड+ठन्] आटा, भोजन, चूर्ण ।

गुण्डित (वि०) [गुण्ड्+क्त] 1. चूर्ण किया हुआ, पिसा हुआ 2. धूल से ढका हुआ ।

गुण्य (वि०) [गुण्+यत्] 1. गुणों से युक्त 2. गिने जाने के योग्य 3. वर्णन किये जाने के योग्य, प्रशस्य 4. गुणा करने के योग्य, वह राशि जिसे गुणा किया जाय ।

गुत्सः=गुच्छः ।

गुत्सकः [गुध्+स+कन्] 1. गट्ठर, गुच्छ 2. गुलदस्ता 3. चँवर 4. पुस्तक का अनुभाग या अध्याय ।

गुद् (भ्वा० आ०—गोदते, गुदित) क्रीड़ा करना, खेलना ।

गुदम् [गुद्+क] गुदा—याज्ञ० ९३।९ मनु० ५।१३६, ८।२८२ । सम०—**अङ्कुरः** बवासीर,—**आवर्तः** कोष्ठबद्धता,—**उद्भवः** बवासीर,—**ओष्ठः** गुदा का मुख, —**कीलः,**—**कीलकः** बवासीर,—**ग्रहः** कब्ज, मलावरोध —**पाकः** गुदा की सूजन, (मलद्वार का पक जाना), —**भ्रंशः** कांच निकलना,—**वर्त्मन्** (नपुं०) गुदा, मलद्वार,—**स्तम्भः** कब्ज ।

गुध् i (दिवा० पर०—गुध्यति, गुधित) लपेटना, ढकना, आवेष्टित करना, ढांपना, ii (क्र्या० पर०—गृध्नाति) क्रुद्ध होना; iii (भ्वा० आ०—गोधते) क्रीड़ा करना, खेलना ।

गुन्दलः [गुन् इति शब्देन दल्यतेऽसौ—गुन्+दल्+णिच् +अच् एक छोटे आयताकार ढोल का शब्द ।

गुन्द्रा (द्रा) लः [पुं०] चातक पक्षी ।

गुप् i (भ्वा० पर०—गोपायति, गोपायित या गुप्त) 1. रक्षा करना, बचाना, आत्मरक्षा करना, रखवाली करना—गोपायन्ति कुलस्त्रिय आत्मानम्—महा०, जुगोपात्मानमत्रस्तः—रघु० १।२१, जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्—२।३ भट्टि० १७।८० 2. छिपाना, ढकना —किं वक्षश्चरणानतिव्यतिकरव्याजेन गोपायते—अमरु २२, दे 'गुप्त' । ii (भ्वा० आ०—जुगुप्सते—गुप् का सन्नन्त रूप) 1. तुच्छ समझना, कतराना, घिन करना, अरुचि करना, निन्दा करना (अपा० के साथ, कभी कभी कर्म० के साथ भी) पापाज्जुगुप्से—सिद्धा०, किं त्वं मामजुगुप्सिष्ठाः—भट्टि० १५।१९, याज्ञ० ३।२९६ 2. छिपाना, ढकना (इस अर्थ में—गोपते) iii (दिवा० पर०—गुप्यति) घबराना, विह्वल हो जाना, iv (चुरा० उभ०—गोपायति—ते) 1. चमकना 2. बोलना 3. छिपाना (कविरहस्य से उद्धृत निम्नांकित श्लोक धातु के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालता है—गोपायति क्षितिमिमां चतुरब्धिसीमां, पापाज्जुगुप्सत उदारमतिः सदैव, वित्तं न गोपयति यस्तु वणीयकेभ्यो धीरो न गुप्यति महत्यपि कार्यजाते ।

गुपिलः [गुप्+इलच्] 1. राजा 2. रक्षक ।

गुप्त (भू० क० कृ०) [गुप्+क्त] 1. प्ररक्षित, संधृत, रक्षित—रघु० १०।६० 2. छिपाया हुआ, ढका हुआ, रहस्यमय—मनु० २।१६०, ७।७६ ८।३७४ 3. अदृश्य, आँख से ओझल 4. संयुक्त,—**प्तः** वैश्यों के नाम के साथ जुड़ने वाली वर्ण सूचक उपाधि—चन्द्रगुप्तः, समुद्रगुप्तः आदि (ब्राह्मणों के नामों के साथ प्रायः 'देवः' या 'शर्मन्' क्षत्रियों के नामों के साथ 'वर्मन्' या 'त्रातृ', वैश्यों के नामों के साथ 'गुप्त', 'भूति' अथवा 'दत्त' और शूद्रों के नामों के साथ 'दास' जोड़ा जाता है—तु०, शर्मा देवश्च विप्रस्य, वर्मा त्राता च भूभुजः, भूतिर्दत्तश्च वैश्यस्य दासः शूद्रस्य कारयेत्),—**प्तम्** (अव्य०) गुप्त रूप से, निजी तौर पर, अपने ढंग पर —**प्ता** काव्यग्रंथों में वर्णित मुख्य स्त्रीपात्रों में से एक, परकीया नायिका, सुरति छिपाने वाली नायिका—वृत्तसुरतगोपना वर्तिष्यमाणसुरतगोपना और वर्तमानसुरतगोपना दे० रसमं०—२४ । सम०—**कथा** गुप्त या गोपनीय समाचार, रहस्य,—**गतिः** गुप्तचर, जासूस, —**चर** जासूस, छिप कर घूमने वाला (रः) 1. बलराम का विशेषण 2. गुप्तचर, जासूस,—**दानम्** छिपा कर दिया जाने वाला दान, गुप्त उपहार,—**वेशः** बदला हुआ भेस ।

गुप्तकः [गुप्त+कन्] संधारक, प्ररक्षक ।

गुप्तिः (स्त्री०) [गुप्+क्तिन्] 1. संधारण, प्ररक्षा, —सर्वस्यास्य तु सर्गस्य गुप्त्यर्थम्—मनु० १।८७, ९४, ९९, याज्ञ० १।१९८ 2. छिपाना, लुकाना 3. ढकना, म्यान में रखना—असिधारासु कोषगुप्तिः—का० ११ 4. बिल, कन्दरा, कुण्ड, भूगर्भगृह 5. भूमि में बिल खोदना 6. प्ररक्षा का उपाय, दुर्ग, दुर्गप्राचीर 7. कारागार, जेल—सरभस इव गुप्तिस्फोटमर्कः करोमि—शि० ११।६० 8. नाव का निचला तल 9. रोक, थाम ।

गुफ्, गुम्फ् (तुदा० पर०—गुफति, गुम्फति, गुफित) गुंथना, गुंफन करना, बांधना, लपेटना—भट्टि० ७।१०५ 2. (आलं०) लिखना, रचना करना ।

गु (गुं) फित (भू० क० कृ०) [गु (गुम्) फ्+क्त] इकट्ठा गुंथा हुआ, बांधा हुआ, बुना हुआ।

गुम्फः [गुम्फ्+घञ्] 1. बांधना, गूंथना,—गुम्फो वाणीनाम्—बालरा० १।१ 2. एक स्थान पर रखना, रचना, करना, क्रम पूर्वक रखना 3. कंकण 4. गलमुच्छ, मूंछ।

गुम्फना [गुम्फ्+युच्+टाप्] 1. एक जगह गूंथना, नत्थी करना 2. क्रम पूर्वक रखना, रचना करना 3. सुसामंजस्य (शब्द और अर्थ का), अच्छी रचना—वाक्ये शब्दार्थयोः सम्यग्रचना गुम्फना मता।

गुर् i (तुदा० आ०—गुरते, गूर्त, गूर्ण) प्रयत्न करना, चेष्टा करना, ii (दिवा० आ०—भू० क० कृ०—गूर्ण) 1. चोट पहुंचाना, मार डालना, क्षति पहुंचाना 2. जाना।

गुरणम् [गुर्+ल्युट्] प्रयत्न, धैर्य।

गुरु (वि०—रु, र्वी) [गॄ+कु, उत्वम्] (म० अ०—गरीयस्, उ० अ० गरिष्ठ) 1. भारी, बोझल (विप० लघु०) (आल० से भी)—तेन धूर्जगतो गुर्वी सचिवेषु विचिक्षिपे—रघु० १।३४, ३।३५, १२।१०२, ऋतु० १।७ 2. प्रशस्त, बड़ा, लम्बा, विस्तृत 3. लंबा (काल मात्रा या लंबाई में) आरम्भगुर्वी—भर्तृ० २।६०, गुरुषु दिवसेष्वेव गच्छत्सु—मेघ० ८३ 4. महत्त्वपूर्ण, आवश्यक, बड़ा—विभवगुरुभिः कृत्यैः—श० ४।१८, स्वार्थात्सतां गुरुतरा प्रणयिक्रियैव—विक्रम० ४।१५ 5. दुःसाध्य, असह्य—कान्ताविरहगुरुणा शापेन—मेघ० १ 6. बड़ा, अत्यधिक, प्रचंड, तीव्र—गुरुः प्रहर्षः प्रबभूव नात्मनि—रघु० ३।१७, गुर्वपि विरहदुःखम्—श० ४।१५, भग० ६।२२ 7. श्रद्धेय, आदरणीय 8. भारी, दुष्पाच्य 9. अभीष्ट, प्रिय 10. अहंकारी, घमंडी, दर्पोक्ति 11. (छन्दःशास्त्र में) दीर्घमात्रा, (या तो स्वयं दीर्घ, अथवा संयुक्त व्यंजन से पूर्व होने के कारण दीर्घ) उदा० 'ईड' में ई, तथा 'तस्कर' में त, (यह छं० में प्रायः 'ग' लिखा जाता है—मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः—आदि),—रुः पिता—न केवलं तद्गुरुरेकपार्थिवः क्षितावभूदेकधनुर्धरोऽपि सः—रघु० ३।३१, ४८, ४।१, ८।२९ 2. कोई भी श्रद्धेय या आदरणीय पुरुष, वृद्ध पुरुष या संबंधी, बुजुर्ग (ब० व०) शुश्रूषस्व गुरून्—श० ४।१४, भग० २।५, भामि० २।७, १८, १९, ४९, आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया—रघु० १४।४६ 3. अध्यापक, शिक्षक—गुरुशिष्यौ 4. विशेषतया धार्मिकगुरु, आध्यात्मिक गुरु—तौ गुरुर्गुरुपत्नी च प्रीत्या प्रतिननन्दतुः—रघु० १।५७, (पारिभाषिक रूप से गुरु वह है जो गायत्री मंत्र का उपदेश करे और शिष्य को वेदाध्यापन करे—स गुरुर्यः क्रियाः कृत्वा वेदमस्मै प्रयच्छति—याज्ञ० १।३४) 5. स्वामी, प्रधान, अधीक्षक, शासक—वर्णाश्रमाणां गुरवे स वर्णी—रघु० ५।१९, वर्ण और आश्रमों का प्रधान—गुरुर्नृपाणां गुरवे निवेद्य—२।६८ 6. बृहस्पति, देवगुरु—गुरुं नेत्रसहस्रेण चोदयामास वासवः—कु० २।२९ 7. बृहस्पति नक्षत्र—गुरुकाव्यानुगां बिभ्रच्चान्द्रीमभिनभः श्रियम्—शि० २।२ 8. नये सिद्धान्त का व्याख्याता 9. पुष्य नक्षत्र 10. कौरव और पांडवों के गुरु 11. मीमांसकों के एक संप्रदाय का नेता प्रभाकर (उसके नाम पर 'प्राभाकर' या 'प्रभाकरीय' कहलाता है),—अर्थः—शिष्य को शिक्षा देने के उपलक्ष्य में गुरुदक्षिणा—गुर्वर्थमाहर्तुमहं यतिष्ये—रघु० ५।७,—उत्तम (वि०) अत्यंत सम्माननीय (—मः) परमात्मा,—कारः पूजा, उपासना,—क्रमः उपदेश, परम्पराप्राप्त शिक्षा,—जनः श्रद्धेय पुरुष, वृद्धसंबंधी बुजुर्ग—नापेक्षितो गुरुजनः—का० १५८, भामि० २।७,—तल्पः 1. अध्यापक की शय्या (भार्या) 2. अध्यापक की शय्या का उल्लंघन अर्थात् गुरुपत्नी के साथ अनुचित संबंध,—तल्पग,—तल्पिन् गुरु-पत्नी के अनुचित संबंध रखने वाला (हिन्दूधर्म शास्त्र के अनुसार ऐसा व्यक्ति महापातकियों में गिना जाता है—अतिपातकी, तु०, मनु० ११।१०३) 2. जो अपनी सौतेली माता के साथ व्यभिचार करता है,—दक्षिणा आध्यात्मिक गुरु को दी जाने वाली दक्षिणा—रघु० ५।१,—दैवतः पुष्य नक्षत्र,—पाक (वि०) पचने में कठिन,—भम् 1. पुष्यनक्षत्र 2. धनुष,—मर्दलः एक प्रकार की ढोलक या मृदंग,—रत्नम् पुखराज,—लाघवम् सापेक्षिक महत्त्व या मूल्य,—वर्तिन्,—वासिन् (पुं०) गुरु के घर रह कर पढ़ने वाला ब्रह्मचारी,—वासरः बृहस्पति वार,—वृत्तिः (स्त्री०) ब्रह्मचारी का अपने गुरु के प्रति आचरण।

गुरुक (वि०) (स्त्री०—की) [गुरु+कन्] 1. जरा भारी 2. (छन्द० में) दीर्घ।

गु (गू) र्जरः [गुरु+जॄ+णिच्+अण्—पृषो०] 1. गुजरात का प्रदेश या जिला—तेषां मार्गे परिचयवशादर्जितं गुर्जराणां यः संतापं शिथिलमकरोत् सोमनाथं विलोक्य—विक्रमांक० १८।९७।

गुर्विणी, गुर्वी [गुरु+इनि+ङीप्, गुरु+ङीष्] गर्भवती स्त्री—उदा० गुर्विणीं नानुगच्छन्ति न स्पृशन्ति रजस्वलाम्।

गुलः [=गुड, डस्य लः] गुड़ तु० गुड।

गुलुच्छः,—गुलुञ्छः [=गुच्छ पृषो० गुड्+क्विप्, डस्य लः, गुल्+उञ्छ्+अण्] गुच्छ, झुंड दे० गुच्छ।

गुल्फः [गल्+फक् अकारस्य उकारः] टखना—आगुल्फकीर्णापणमार्गपुष्पं कु० ७।५५, गुल्फावलंबिना—का० १०।

गुल्मः,–ल्मम् [गुड्+मक्, डस्य लः—तारा०] 1. वृक्षों का झुंड, झुरमुट, वन, झाड़ी—मनु० १।४८, ७।१९२, १२।५८, याज्ञ० २।२२९ 2. सिपाहियों का दल, सैन्य-दल जिसमें ४५ पदाति, २७ अश्वारोही, ९ रथारोही और ९ गजारोही होते हैं 3. दुर्ग 4. तिल्ली 5. तिल्ली का बढ़ जाना 6. गाँव की पुलिस चौकी 7. घाट।

गुल्मिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गुल्म+इनि] झुरमुट या झाड़वृन्द में उगनेवाला, बढ़ी हुई तिल्ली वाला, तिल्ली के रोग से ग्रस्त।

गुल्मी [गुल्म+अच्+ङीप्] तंबू।

गु (गू) वाकः [गु+आक] सुपारी का पेड़।

गुह् (भ्वा० उभ०—गूहति-ते) ढकना, छिपाना, परदा डालना, गुप्त रखना—गुह्यं च गूहति गुणान् प्रकटीकरोति—भर्तृ० २।७२, गूहेत्कूर्म इवाङ्गानि—मनु० ७।१०५, रघु० १४।४९, भट्टि० १६।४९, **उप**—, आलिंगन करना, तरङ्गहस्तैरुपगूहतीव—रघु० १३।६३, १८।४७, भट्टि० १४।५२, शि० ९।३८, **नि**—, छिपाना, गुप्त रखना।

गुहः [गुह्+क] 1. कार्तिकेय का विशेषण—गुह इवाप्रतिहतशक्तिः—का० ८, कु० ५।१४ 2. घोड़ा 3. निषाद या चांडाल का नाम जो शृंगवेर का राजा तथा भगवान् राम का मित्र था।

गुहा [गुह्+टाप्] 1. गुफा, कंदरा, छिपने का स्थान, —गुहानिबद्धप्रतिशब्ददीर्घम्—रघु० २।२८, ५१, धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्—महा० 2. छिपाना, ढकना 3. गढ़ा, बिल 4. हृदय। सम०—**आहित** (वि०) हृदय में रक्खा हुआ, —**चरम्** ब्रह्म,—**मुख** (वि०) गुफा जैसे मुंह का, चौड़े मुंह का खुले मुंह का,—**शयः** 1. चूहा 2. शेर 3. परमात्मा।

गुहिनम् [गुह्+इनन्] वन, जंगल।

गुहेरः [गुह्+एरक्] 1. अभिभावक, प्ररक्षक 2. लुहार।

गुह्य (सं० कृ०) [गुह्+क्यप्] 1. छिपाने के योग्य, गोपनीय, गुप्त रखने के योग्य, निजी—गुह्यं च गूहति—भर्तृ० २।७२ 2. गुप्त, एकान्तवासी, विरक्त (सेवानिवृत्त) 3. रहस्यपूर्ण—भग० १८।६३,—**ह्यः** 1. पाखंड 2. कछुवा,—**ह्यम्** 1. भेद, रहस्य—मौनं चैवास्मि गुह्यानाम्—भग० १०।३८, ९।२, मनु० १२।११७ 2. गुप्त इन्द्रिय, पुरुष या स्त्री की जननेन्द्रिय। सम०—**गुरुः** शिव का विशेषण,—**दीपकः** जुगनू,—**निष्यन्दः** मूत्र,—**भाषितम्** 1. गुप्तवार्ता 2. भेद, रहस्य की बात,—**मयः** कार्तिकेय का विशेषण।

गुह्यकः [गुह्यं गोपनीयं कं सुखं येषाम्—ब० स०] यक्ष जैसी एक अर्धदेवों की श्रेणी जो कुबेर के सेवक तथा उसके कोष के संरक्षक हैं—गुह्यकस्तं ययाचे—मेघ० ५, मनु० १२।४७।

गूः (स्त्री०) [गम्+कू टिलोपः] 1. कूड़ा करकट 2. मल, विष्ठा।

गूढ (भू० क० कृ०) [गुह्+क्त] 1. छिपा हुआ, गुप्त, गुप्त रक्खा हुआ 2. ढका हुआ। सम०—**अङ्गः** कछुवा, —**अङ्घ्रिः** सांप—**आत्मन्** (समास होकर 'गूढोत्मन्' बनता है, सिद्धा० ने इस प्रकार समाधान किया है—भवेद् वर्णागमाद् हंसः सिंहो वर्णविपर्ययात्, गूढोत्मा वर्णविकृतेर्वर्णलोपात्पृषोदरः), परमात्मा,—**उत्पन्नः**—**जः** हिन्दूधर्म शास्त्रों में वर्णित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, यह उस स्त्री का गुप्त पुत्र है जिसका पति परदेश गया हुआ है, तथा वास्तविक पिता अज्ञात है—गृहे प्रच्छन्न उत्पन्नो गूढजस्तु सुतः स्मृतः—याज्ञ० २।१२९, १७०,—**नीडः** खंजनपक्षी,—**पथः** 1. गुप्तमार्ग 2 पगडंडी 3. मन, बुद्धि,—**पाद्**,—**पादः** सांप,—**पुरुषः** जासूस, गुप्तचर, भेदिया,—**पुष्पकः** बकुलवृक्ष,—**मार्गः** भूगर्भ मार्ग,—**मैथुनः** कौवा,—**वर्चस्** (पुं०) मेंढक,—**साक्षिन्** (पुं०) गुप्त गवाह, ऐसा साक्षी जिसने प्रतिवादी की बातों को चुपचाप सुना हो।

गूथः,–थम् [गू+थक्] मल, विष्ठा।

गून (वि०) [गू+क्त] उत्सृष्ट मल।

गूरणम्—दे० 'गुरण'।

गूषणा ? मोर के पंख में बनी हुई आंख की आकृति।

गृ (भ्वा० पर०—गरति) छिड़कना, तर करना गीला करना।

गृज्, गृञ्ज् (भ्वा० पर०—गर्जति, गृञ्जति) शब्द करना, दहाड़ना, गुर्राना आदि।

गृञ्जनः [गृञ्ज्+ल्युट्] 1. गाजर 2. शलजम 3. गांजा (गांजे की पत्तियों को चबाना जिससे कि मादकता पैदा हो),—**नम्** विषैले तीर से मारे हुए पशु का मांस।

गृष्टि (ष्टी) बः [?] गीदड़ों की एक जाति।

गृध् (दिवा० पर० गृध्यति, गृद्ध) ललचाना, इच्छा करना, लोभवश प्रयत्नशील होना, लालायित होना, अभिलाषी होना।

गृधु (वि०) [गृध्+कु] कामातुर, लम्पट,—**धुः** कामदेव।

गृध्नु (वि०) [गृध्+क्नु] 1. लोभी, लालची—अगृध्नुराददे सोऽर्थम्—रघु० १।२१ 2. उत्सुक, इच्छुक।

गृध्यम्,–ध्या [गृध्+क्यप्] इच्छा, लोभ।

गृध्र (वि०) [गृध्+क्र] 1. लोभी लालची—**ध्रः**,—**ध्रम्** गिद्ध,—मार्जारस्य हि दोषेण हतो गृद्धो जरद्गवः—हि० १।५९, रघु० १२।५०, ५९। सम०—**कूटः** राजगृह के निकट विद्यमान एक पहाड़,—**पतिः**,—**राजः** गिद्धों का राजा, जटायु—अस्यैवासीन्महति शिखरे गृध्रराजस्य वासः—उत्तर० २।२५,—**वाज**,—**वाजित** (वि०) गिद्ध के परों से युक्त (बाण आदि)।

गृष्टिः (स्त्री०) [गृह्णाति सकृत् गर्भम्—ग्रह्+क्तिच्

पृषो० तारा०] 1. एक बार ब्याई हुई गौ, पहलौठी गाय (सकृत्प्रसूता गौः)—आपीनभारोद्वहनप्रयत्नादगृष्टिः —रघु० २।१८, स्त्री तावत्संस्कृतं पठन्ती दत्तनवनस्या इव गृष्टिः सूसूशब्दं करोति—मृच्छ० ३ 2. (दूसरे पशुओं के नामों के साथ जुड़कर) किसी भी पशु का (मादा) बच्चा, वासितागृष्टिः : हथिनी का (मादा) बच्चा।

गृहम् [ग्रह्+क] 1. घर, निवास, आवास भवन—न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते—पंच० ४।८१, पश्य वानर मूर्खेण सुगृही निर्गृहीकृता०—पंच० १।३९० 2. पत्नी (उपर्युक्त उद्धरण कई बार निदर्शन के रूप में प्रयुक्त होता है) 3. गृहस्थ-जीवन 4. मेषादि राशि 5. नाम या अभिधान,—हाः (पुं०, ब० व०) 1. घर निवास —इमे नो गृहाः—मुद्रा० १, स्फटिकोपलविग्रहा गृहाः, शशभृद्वित्तनिरङ्कभित्तयः—नै० २।७६, तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम् मेघ० ७५ 2. पत्नी 3. घर के निवासी, कुटुंब। सम०—**अक्षः** झरोखा, मोखा, गोल या आयताकार खिड़की,—**अधिपः**—**ईशः**, —**ईश्वरः** 1. गृहस्थ 2. किसी राशि का स्वामी, —**अयनिकः** गृहस्थ,—**अर्थः** घरेलू मामला, घरेलू बातें —गृहार्थोऽग्निपरिष्क्रिया—मनु० २।६७,—**अम्लम्** एक प्रकार की कांजी,—**अवग्रहणी** देहली,—**अश्मन्** (पुं०) सिल, (एक आयताकार पत्थर जिस पर मसाले पीसे जाते हैं) -**आरामः** गृहवाटिका, —**आश्रमः** गृहस्थों का आश्रम, ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की दूसरी अवस्था—दे० आश्रम,—**उत्पातः** कोई घरेलू बाधा,—**उपकरणम्** घरेलू बरतन, गृहस्थ के उपयोग की सामग्री,—**कच्छपः**=गृहाश्मन् दे०, —**कपोतः**,—**तकः** पालतू कबूतर,—**करणम्** 1. घरेलू मामला 2. घर की इमारत—**कर्मन्** (न०) गृहस्थ के लिए विहित कर्म, °**दासः** चाकर, घरेलू नौकर शम्भुस्वयंभुहरयो हरिणेक्षणानां येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः—भर्तृ० १।१,—**कलहः** घरेलू झगड़ा भाई भाई की लड़ाई,—**कारकः** घर बनाने वाला, राज, याज्ञ० ३।१४६,—**कुक्कुटः** पालतू मुर्गा,—**कार्यम्** घर का कामकाज—मनु० ५।१५०,—**चूल्ली** साथ लगे हुए दो कमरों का घर जिनमें से एक का मुख पूर्व और दूसरे का पश्चिम की ओर हो,—**छिद्रम्** 1. घर की गुप्त बातें या कमजोरियाँ 2. कौटुम्बिक अनबन, —**जः**,—**जातः** घर में ही पैदा हुआ नौकर,—**जालिका** धोखा, कपटवेष,—**ज्ञानिन्** ('गृहेज्ञानिन्' भी) 'घर में ही तीसमारखाँ', अनुभवशून्य, जड, मूर्ख,—**तटी** घर के सामने बना चबूतरा,—**दासः** घरेलू सेवक, —**देवता** घर की अधिष्ठात्री देवता, (ब० व०) कुल देवताओं का समूह,—**देहली** घरकी दहलीज—यासां बलिः सपदि मद्गृहदेहलीनाम्—मृच्छ० १।९,—**नम-नम्** हवा,—**नाशनः** जंगली कबूतर,—**नीडः** चिड़िया, गोरैया,—**पतिः** 1. गृहस्थ, ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात् विवाहित जीवन बिताने वाला घर का मालिक 2. यजमान 3. गृहस्थ के उपयुक्त कर्म अर्थात् आतिथ्य आदि,—**पालः** 1. घर का संरक्षक 2. घर का कुत्ता, —**पोतकः** घर की जगह, वह भूभाग जिस पर घर की इमारत बनी हुई है और जो घर को घेरती है, —**प्रवेशः** नये घर में विधिपूर्वक प्रवेश करना,—**बभ्रुः** पालतू नेवला,—**बलिः** वैश्वदेव यज्ञ में दी जाने वाली आहुति, अवशिष्ट अन्न सब जीवजन्तुओं को वितरण करना, मनु० ३।२६५, °**भुज्** (पुं०) 1. कौवा 2. चिड़िया—नीडारम्भैर्गृहबलिभुजामाकुलग्रामचैत्याः —मेघ०२३, °**देवता** घर का देवता जिसे आहुति दी जाती है,—**भङ्गः** 1. घर से निर्वासित व्यक्ति, प्रवासी 2. घर का नाश करना 3. घर में सेंध लगाना 4. असफलता किसी दुकान या घर की बर्बादी या नाश,—**भूमिः** (स्त्री०) वास्तु स्थान, वह जमीन जिस पर कोई मकान बना हो,—**भेदिन्** (वि०) 1. घर के कामों में ताक झांक करने वाला 2. घर में कलह कराने वाला, -**मणिः** दीपक,—**माचिका** चमगीदड़,—**मृगः** कुत्ता,—**मेधः** 1. गृहस्थ 2. पंचयज्ञ,—**मेधिन्** (पुं०) गृहस्थ—गृहैर्दारैर्मेधन्ते संगच्छन्ते—मल्लि०) प्रजायै गृहमेधिनाम्—रघु० १।७, दे० 'गृहपति',—**यन्त्रम्** उत्सव आदि के अवसर पर झंडा फहराने का डंडा या कोई और उपकरण—गृहयन्त्रपताकाश्रीरपौरादरनिर्मिता-कु० ६।४१,—**वाटिका**—**वाटी** घर से मिली हुई बगीची, —**वित्तः** घर का स्वामी,—**शुकः** पालतू तोता, आमोद के लिए पाला हुआ तोता—अमरु १३,—**संवेशकः** व्यावसायिक भवननिर्माता, स्थपति,—**स्थः** गृही, दूसरे आश्रम में प्रवेश करके रहने वाला संकटा ह्याहिताग्नीनां प्रत्यवायैर्गृहस्थता—उत्तर० १।९, दे० 'गृहपति' और मनु० ३।३८, ६।९०, °**आश्रमः** गृहस्थ का जीवन दे० गृहाश्रम, °**धर्मः** गृहस्थ के कर्तव्य।

गृहयाय्यः [गृह्+णिच्+आय्य] 1. गृहस्थ, घरबार वाला (तारा० के अनुसार 'शब्दकल्पद्रुम' में दिया गया 'गृहयाप्य' रूप शुद्ध नहीं है)।

गृहयालु (वि०) [गृह्+णिच्+आलु] पकड़ने वाला, ग्रहण करने वाला।

गृहिणी [गृह+इनि+ङीष्] गृहस्वामिनी, पत्नी, गृहपत्नी, (घर का कार्यभार संभालने वाली स्त्री)—न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते, गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते—पंच० ४।८१। सम०—**पदम्** गृहस्वामिनी का पद या प्रतिष्ठा—यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः—श० ४।१७, स्थिता गृहिणीपदे १८।

गृहिन् (वि०) [गृह+इनि] घर का स्वामी, गृहस्थ, घरबारी—पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः—श० ४।५, उत्तर० २।२२, शा० २।२४।

गृहीत (भू० क० कृ०) [ग्रह्+क्त] 1. लिया हुआ, पकड़ा हुआ—केशेषु गृहीतः 2. स्वीकृत 3. प्राप्त, अवाप्त 4. परिहित, पहना हुआ 5. लुटा हुआ 6. अधिगत; ज्ञात—दे० 'ग्रह्'। सम० गर्भा गर्भवती स्त्री, —दिश् (वि०) 1. भागा हुआ, भगोड़ा, तितरबितर हुआ 2. तिरोभूत, लापता।

गृहीतिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गृहीत+इनि] जिसने कोई बात समझ ली है (अधि० के साथ)—गृहीती षट्स्वङ्गेषु—दश० १२०।

गृह्य (वि०) [ग्रह्+क्यप्] 1. आकृष्ट या प्रसन्न होने के योग्य जैसा कि 'गुणगृह्यः' 2. घरेलू 3. जो अपना स्वामी न हो, परतन्त्र 4. पालतू, घर में सधाया हुआ 5. बाहर स्थित—ग्रामगृह्या सेना—(गाँव के बाहर स्थित सेना),—ह्यः 1. घर में रहने वाला 2. पालतू जानवर,—ह्यम् गुदा। सम०—अग्निः अग्निहोत्र की आग जिसको स्थापित रखना प्रत्येक ब्राह्मण का विहित कर्म है।

गृह्या [गृह्य+टाप्] नगर के निकट बसा हुआ गाँव।

गॄ i (क्र्या० पर०—गृणाति, गूर्ण) 1. शब्द करना, पुकारना, आवाहन करना 2. घोषणा करना, बोलना, उच्चारण करना, प्रकथन करना—रघु० १०।१३ 3. बयान करना, प्रचारित करना 4. प्रशंसा करना, स्तुति करना—केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति—भग० ११।२१, भट्टि० ८।७७, अनु—प्रोत्साहित करना, भट्टि० ८।७७, ii (तुदा० पर०—गिरति या गिलति) 1. निगलना, हड़प करना, खा जाना 2. निकालना, उंडेलना, थूक देना, मुंह से फेंकना, अव—,(आ०) खाना, निगलना—तथावगिरमाणश्च पिशाचैर्मांसशोणितम्—भट्टि० ८।३०, उद्—1. फेंकना, थूक देना, वमन करना—उद्गिरतो यद् गरलं फणिनः पुष्णासि परिमलोद्गारैः—भामि० १।११, शि० १४।१ 2. उत्सर्जन करना, निकाल बाहर करना, उगल देना—कु० १।३३, रघु० १४।५३ वेणी० ५।१४, पंच० ५।६७, नि—,निगलना, खा जाना—भामि० १।३८, सम्—1. निगलना 2. प्रतिज्ञा करना, व्रत करना, (आ०), समुद्—, 1. बाहर फेंक देना, निकाल देना 2. जोर से चिल्लाना, iii (चुरा० आ०—गारयते) 1. बतलाना, वर्णन करना 2. अध्यापन करना।

गेंदु (दु) कः [गच्छतीति गः इन्दुरिव, गेदु+कन्, गेंडुक पृषो०] खेलने के लिए गेंद, ('गेंडूक' भी)।

गेय (वि०) [गै+यत्] 1. गायक, गाने वाला—गेयो माणवकः साम्नाम्—पा० ३।४।६८, सिद्धा० 2. गाये जाने के योग्य,—यम् 1. गीत, गायन गाने की कला—गेये केन विनीतौ वाम्—रघु० १५।६९, मेघ० ८६, अनन्ता वाङ्मयस्याहो गेयस्येव विचित्रता—शि० २।७२।

गेष् (भ्वा० आ०—गेषते, गेष्ण) ढूंढना, खोजना, तलाश करना—तु० 'गवेष'।

गेहम् [गो गणेशो गंधर्वो वा ईहः ईप्सितो यत्र तारा०] घर, आवास—सा नारी विधवा जाता गेहे रोदिति तत्पतिः—(सुभा०, वि०—इस शब्द का अधि० का रूप अलुक् त० स० बनाने के लिए कई शब्दों के साथ प्रयोग होता है, उदा० **गेहेक्ष्वेडिन्** (वि०) 'घर पर तीसमारखां' अर्थात् कायर, भीरु, **गेहेदाहिन्** (वि०) 'घर पर ही तेज' अर्थात् कायर, **गेहेनर्दिन्** (वि०) 'घर पर ही ललकारने वाला' अर्थात् कायर' घूरे का मुर्गा या डरपोक', **गेहेमेहिन्** (वि०) 'घर में ही मूतने वाला' अर्थात् आलसी, **गेहेव्याडः** डींग मारनेवाला, आत्मश्लाघी, शेखीखोर, **गेहेशूरः** 'अपने मोहल्ले में कुत्ता भी शेर होता है' चहारदीवारी के सूरमा, कालीन के शेर, डींग मारनेवाला कायर।

गेहिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [गेह+इनि]=गृहिन्।

गेहिनी [गेहिन्+ङीप्] पत्नी, घर की स्वामिनी—धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिरं गेहिनी—शा० ४।९, मद्गेहिन्याः प्रिय इति सखे चेतसा कातरेण—मेघ० ७७।

गै (भ्वा० पर०—गायति, गीत) 1. गाना, गीत गाना—अहो साधु रेभिलेन गीतम्—मृच्छ० ३, ग्रीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम्—श० १, मनु० ४।६४, ९।४२ 2. गाने के स्वर में बोलना या पाठ करना 3. वर्णन करना, घोषणा करना, कहना—(छन्दोमयी भाषा में) गीतश्चायमर्थोङ्गिरसा—मा० २ 4. गाने के स्वर में वर्णन करना, बयान करना या प्रख्यात करना—चारणद्वन्द्वगीतः—श० २।१४, प्रभवस्तस्य गीयते—कु० २।५, अनु—, गाने में अनुकरण करना—अनुगायति काचिदुदञ्चितपञ्चमरागम्—गीत० १, कि० ३।६०, अव—, निन्दा करना, कलंकित करना, उद्—, ऊँचे स्वर में गाना, उच्च स्वर में गायन—उद्गास्यतामिच्छति किन्नराणाम्—कु० १।८, गेयमुद्गातुकामा—मेघ० ८६, उद्गीयमानं वनदेवताभिः—रघु० २।१२, उप—, गाना, निकट गाना—शिष्यप्रशिष्यैरुपगीयमानमवेहि तन्मण्डनमिश्रधाम—उद्भट, कि० १८।४७, परि—, गाना, बयान करना, वर्णन करना, वि—, 1. बदनाम करना, झिड़कना, कलंकित करना—विगीयसे मन्मथदेहदाहिना—नै० १।७९ 2. विषम स्वर (बेमेल स्वर) में गाना।

गैर (वि०) (स्त्री०—री) [गिरि+अण्] पहाड़ से आया हुआ, पहाड़ी, पहाड़ पर उत्पन्न।

गैरिक (वि०) (स्त्री०—की) [गिरि+ठञ्] पहाड़ पर उत्पन्न,—**कः—कम्** गेरु,—**कम्** सोना ।

गैरेयम् [गिरि+ढक्] शिलाजीत ।

गो (पुं०, स्त्री०) कर्तृ० गौः [गच्छत्यनेन, गम् करणे डो तारा०] 1. मवेशी, गाय (ब० व०) 2. गौ से उपलब्ध वस्तु—दूध, मांस चमड़ा आदि 3. तारे 4. आकाश 5. इन्द्र का वज्र 6. प्रकाश की किरण 7. हीरा 8. स्वर्ग 9. बाण, (स्त्री०) 1. गाय—जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्—रघु० २।३, क्षीरिण्यः सन्तु गावः—मृच्छ० १०।६० 2. पृथ्वी—दुदोह गां स यज्ञाय—रघु० १।२६, गामात्तसारां रघुरप्यवेक्ष्य—५।२६, ११।३६, भग० १५।१३, मेघ० ३० 3. वाणी, शब्द—रघोरुदारामपि गां निशम्य—रघु० ५।१२, २।५९, कि० ४।२० 4. वाणी की देवता—सरस्वती 5. माता 6. दिशा 7. जल (ब० व०) 8. आँख (पुं०) 1. सांड, बैल—असञ्जातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गडिः—काव्य० १०, मनु० ४।७२, तु० जरद्गव 2. शरीर के बाल, रोंगटे 3. इन्द्रिय 4. वृषराशि 5. सूर्य 6. (गणित में) नौ की संख्या 7. चन्द्रमा 8. घोड़ा । सम०—**कण्टकः,—कम्** बैलों द्वारा खूंदा हुआ फलतः जाने के अयोग्य स्थान या सड़क 2. गाय के खुर 3. गाय के खुर की नोक,—**कर्णः** 1. गाय का कान 2. खच्चर 3. सांप 4. बालिश्त (अंगूठे के सिरे से कन्नो की अंगुली तक की दूरी) 5. दक्षिण में स्थित एक तीर्थस्थान का नाम, शिव का प्रियस्थान—श्रितगोकर्णनिकेतमीश्वरम्—रघु० ८।३३ 6. एक प्रकार का बाण, **किराटा,—किराटिका** मैना पक्षी,—**किलः—कीलः** 1. हल 2. मूसल,—**कुलम्** 1. गौओं का लहंडा—वृष्टिव्याकुलगोकुलावनरसादुद्धृत्य गोवर्धनम्—गीत० ४, गोकुलस्य तृषार्तस्य—महा० 2. गौशाला 3. 'गोकुल' एक गांव (जहाँ कृष्ण का पालन पोषण हुआ),—**कुलिक** (वि०) 1. दलदल में फंसी गाय का उद्धार करने में सहायता न देने वाला 2. भेंगा, वक्रदृष्टि,—**कृतम्** गाय का गोबर, **क्षीरम्** गाय का दूध,—**क्षा** नाखून,—**गृष्टिः** सकृत्प्रसूता गाय, पहलौठी,—**गोयुगम्** बैलों की जोड़ी,—**गोष्ठम्** गोशाला, पशुशाला,—**ग्रन्थिः** 1. कंडे, सूखा गोबर 2. गौशाला,—**ग्रहः** पशुओं को पकड़ना,—**ग्रासः** प्रायश्चित्त के रूप में गाय को घास का कौर देना या भोजन का वह भाग जो गाय को देने के लिए अलग कर दिया जाय,—**घृतम्** 1. बारिश का पानी 2. गाय का घी,—**चन्दनम्** एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी,—**चर** (वि०) 1. चारागाह 2. बार-बार जाने वाला, आश्रय लेने वाला, बारंबार मंडराने वाला—पितृसद्मगोचरः कु० ५।७७ 3. क्षेत्र, शक्ति या परास के अन्तर्गत—अवाङ्मनसगोचरम्—रघु० १०।१५, इसी प्रकार बुद्धि°, दृष्टि°, श्रवण° आदि 4. पृथ्वी पर घूमने वाला (रः) 1. पशुओं का क्षेत्र, चरागाह—उपारताः पश्चिमरात्रिगोचरात्—कि० ४।१० 2. मंडल, विभाग, प्रांत, क्षेत्र 3. इन्द्रियों का परास, इन्द्रियों का विषय—श्रवणगोचरे तिष्ठ (जहाँ तक कानों से सुना जा सके—वहीं ठहरो) नयन गोचरं या दिखाई देना 4. क्षेत्र, परास, पहुँच—हर्तुं याति न गोचरम्—भर्तृ० २।१६ 5. (आलं०) पकड़, दबाव, शक्ति, प्रभाव, नियन्त्रण—कः कालस्य न गोचरान्तरगतः—पंच० १।१४६, अपि नाम मनागवतीर्णोऽसि रतिरमणबाणगोचरम्—मा० १ 6. क्षितिज,—**चर्मन्** (नपुं०) 1. गोचर्म 2. विशेष माप (सतह नापने का)—वशिष्ठ के अनुसार परिभाषा—दशहस्तेन वंशेन दशवंशान् समंततः, पंच चाभ्यधिकान् दद्यादेतद्गोचर्म चोच्यते : °वसनः शिव का विशेषण,—**चारकः** ग्वाला, चरवाहा,—**जरः** बूढ़ा बैल या सांड,—**जलम्** गोमूत्र,—**जागरिकम्** मांगलिकता, आनन्द,—**तल्लजः** श्रेष्ठ बैल या सांड,—**तीर्थम्** गोशाला,—**त्रम्** 1. गोशाला 2. पशुशाला 3. परिवार, वंश, कुल परम्परा—गोत्रेण माठरोऽस्मि—सिद्धा०, इसी प्रकार कौशिकगोत्राः, वसिष्ठगोत्राः—आदि—मनु० ३।१०९, ९।१४१ 4. नाम, अभिधान—जगाद गोत्रस्खलिते च का न तम्—नै० १।३०, देखो °स्खलित नी०, मद्गोत्राङ्कं विरचितपदं गेयमुद्गातुकामा—मेघ० ८६ 5 समुच्चय 6. वृद्धि 7. वन 8. खेत 9. सड़क 10. संपत्ति, दौलत 11. छतरी, छाता 12. भविष्य का ज्ञान 13. जाति, श्रेणी, वर्ग, (—त्रः) पहाड़, °कीला पृथ्वी, °ज (वि) समान कुल में उत्पन्न, एक ही जाति का, संबंधी—याज्ञ० २।१३५, °पटः वंश विवरण, वंशतालिका, वंशवृक्ष, वंशावली, °भिद् (पुं) इन्द्र का विशेषण—हृदि क्षतो गोत्रभिदप्यमर्षणः—रघु० ३।५३, ६।७३, कु० २।५२, °स्खलनम् °स्खलितम् नाम लेकर पुकारना, गलत नाम से पुकारना—स्मरसि स्मर मेखलागुणैरुत गोत्रस्खलितेषु बन्धनम्—कु० ४।८, (—त्रा) 1. गौओं का समूह 2. पृथ्वी,—**दन्तम्** हरताल,—**दा** गोदावरी नामक नदी,—**दानम्** 1. बाल काटने की दक्षिणा—तथास्य गोदानविधेरनन्तरम्—रघु० ३।३३ 2. केशान्त संस्कार (दे० मल्लि० की व्याख्या) कृतगोदानमंगलाः—उत्तर० १ (रामा० में भिन्न प्रकार की व्याख्या है),—**दारणम्** 1. हल 2. फावड़ा, खुर्पा,—**दावरी** दक्षिण देश की एक नदी का नाम,—**दुह्** (पुं)—**दुहः** ग्वाला,—**दोहः** 1. गौ का दूध निकालना 2. गाय का दूध 3. गौओं को दोहने का समय,—**दोहनम्** 1. गौओं को दोहने का समय 2. गौओं को दोहना,—**दोहनी** वह बर्तन जिसमें दूध दुहा जाय,—**द्रवः**

गोमूत्र,—धनम् गौओं का समूह, मवेशी,—धरः पहाड़ —धुमः,—धूमः 1. गेहूँ 2. संतरा,—धूलिः पृथ्वी की धूल, संध्या का समय (संध्या समय ही गौएँ जंगलों से घर लौटती हैं, उनके चलने से धूल के बादल एकत्र हो जाते हैं, इसी लिए इस काल का नाम 'गोधूलि' पड़ा),—धेनुः दूध देने वाली गाय जिसके नीचे बछड़ा हो,—ध्रः पहाड़,—नन्दी मादा सारस (पक्षी),—नर्दः 1. सारस पक्षी 2. एक देश का नाम,—नर्दीयः महाभाष्य के कर्ता पतंजलि मुनि,—नसः,—नासः 1. एक प्रकार का सांप 2. एक प्रकार का रत्न,—नाथः 1. साँड़ 2. भूमिधर 3. ग्वाला 4. गौओं का स्वामी, —नायः ग्वाला,—निष्यन्दः गोमूत्र,—पः ग्वाला (एक वर्णसंकर जाति)—गोपवेशस्य विष्णोः—मेघ० १५ 2. गौशाला का प्रधान 3. गाँव का अधीक्षक 4. राजा 5. प्ररक्षक, अभिभावक, (पी) 1. ग्वाले की पत्नी —गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली—गीत० ५, °अध्यक्षः, °इन्द्रः °ईशः ग्वालों का मुखिया, कृष्ण का विशेषण, °दलः सुपारी का पेड़ °वधूः (स्त्री०) ग्वाले की पत्नी °वधूटी गोपी, ग्वाले की तरुण पत्नी—गोपवधूटीदुकूलचौराय—भापा० १,—पतिः 1. गौओं का स्वामी 2. साँड़ 3. नेता, मुखिया 4. सूर्य 5. इन्द्र 6. कृष्ण का नाम 7. शिव का नाम 8. वरुण का नाम 9. राजा,—पशुः यज्ञीय गाय,—पानसी छप्पर को संभालने के लिए उसके नीचे लगी टेढ़ी बल्ली, बलभी,—पालः 1. ग्वाला 2. राजा 3. कृष्ण का विशेषण °धानी गोशाला, गौघर,—पालकः 1. ग्वाला 2. शिव का विशेषण,—पालिका,—पाली ग्वाले की पत्नी, गोपी,—पीतः खंजन पक्षी का एक प्रकार,—पुच्छम् गाय की पूँछ (च्छः) 1. एक प्रकार का बन्दर 2. दो, चार या चौंतीस लड़ीं का एक हार,—पुटिकम् शिव के बैल (नादिया) का सिर,—पुत्रः जवान बछड़ा,—पुरम् 1. नगरद्वार 2. मुख्य दरवाजा—कि० ५।५ 3. मन्दिर का सजा हुआ तोरणद्वार,—पुरीषम् गाय का गोबर,—प्रकाण्डम् बढ़िया गाय का साँड़,—प्रचारः गोचरभूमि, पशुओं का चरागाह—याज्ञ० २।१६६, —प्रवेशः गौओं का जंगल से लौटने का समय, सायंकाल या संध्या समय,—भृत् (पुं०) पहाड़,—मक्षिक (वि०) डांस, कुत्तामाखी,—मंडलम् 1. भूगोल 2. गौओं का समूह,—मतम्—दे० गव्यूति,—मतल्लिका सीधी गाय, श्रेष्ठ गौ,—मथः ग्वाला,—मांसम् गौ का मांस,—मायुः 1. एक प्रकार का मेंढक 2. गीदड़—अनुहुंकुरुते घनध्वनिं न हि गोमायुरुतानि केसरी शि० १६।२५ 3. गाय का पित्तदोष 4. एक गन्धर्व का नाम,—मुखः,—मुखम् एक प्रकार का वाद्ययन्त्र —भग० १।१३ (—खः) 1. मगरमच्छ, घड़ियाल 2. एक तरह की (चोर के द्वारा लगाई गई) सध,—(खम्) टेढ़ामेढ़ा बना हुआ मकान, (—खम्, —खी) जपमाला रखने की छायाशंकु के आकार की थैली जिसमें हाथ डाल कर माला के दानों को गिनते रहते हैं,—मूढ (वि०) बैल की भांति बुद्धू,—मूत्रम् गाय का मूत्र,—मृगः नीलगाय, गवय, एक प्रकार का बैल,—मेदः 'गोमेद' नाम का एक रत्न (यह रत्न हिमालय पहाड़ और सिन्धु नदी से प्राप्य है तथा श्वेत, पीला, लाल और गहरे नीले रंग का होता है),—यानम् बैलगाड़ी,—रक्षः 1. ग्वाला 2. गोपाल 3. सन्तरा,—रङ्कुः 1. मुर्गाबी 2. बन्दी 3. नग्नपुरुष, दिगंबर साधु,—रसः 1. गाय का दूध 2. दही 3. छाछ, °जम् मट्ठा—,राजः बढ़िया साँड़,—रुतम् दो कोस के बराबर दूरी का माप,—राटिका,—राटी मैना पक्षी,—रोचना एक सुगन्धित पदार्थ जिसकी उत्पत्ति गोमूत्र, गोपित्त से मानी जाती है अथवा जो गाय के सिर से उपलब्ध होता है,—लवणम् नमक की मात्रा जो गाय को दी जाती है—लांगु (गू) लः लंगूर, एक तरह का बन्दर—मा० ९।३०,—लोभी वेश्या,—वत्सः बछड़ा, °आदिन् (पुं०) भेड़िया,—वर्धनः मथुरा के निकट वृन्दावन प्रदेश में स्थित एक विख्यात पहाड़, °धरः, °धारिन् (पु०) कृष्ण का विशेषण,—वशा बांझ गाय,—वाटम्,—वासः गोशाला,—विदः 1. गोपालक, गोशाला का अध्यक्ष 2. कृष्ण 3. बृहस्पति, —विष् (स्त्री०),—विष्ठा गोबर,—विसर्गः भोर, तड़के (जब गौएं जंगल में चरने के लिए खोली जाती हैं),—वीर्यम् दूध का मूल्य,—वृन्दम् गौओं का लहंड़ा, —वृन्दारक बढ़िया साँड़ या गाय,—वृषः बढ़िया साँड़, °ध्वजः शिव का विशेषण,—व्रजः 1. गोशाला 2. गौओं का समूह, गोचर भूमि,—शकृत् (नपुं०) गोबर, —शालम्,—ला गौओं को रखने का स्थान,—षड्गवम् गौओं की तीन जोड़ी,—ष्ठः गौओं का स्थान, गोठ, —संख्यः ग्वाला,—सदृक्षः नीलगाय, गवय की एक जाति,—सर्गः भोर, तड़के (वह समय जब गौएँ प्रातःकाल चरने के लिए खोल दी जाती हैं),—सूत्रिका गाय बाँधने की रस्सी,—स्तनः 1. गाय का ऐन, औड़ी 2. फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता आदि 3. चार लड़ की मोतियों की माला,—स्तना,—नी अंगूरों का गुच्छा,—स्थानम् गोशाला,—स्वामिन् (पुं०) गौओं का स्वामी 2. धार्मिक साधु 3. संज्ञाओं के साथ लगाने वाली सम्मानसूचक पदवी (उदा० वोपदेव गोस्वामिन्),—हत्या गोवध,—हनम् (हन्नम्) गोबर,—हित (वि०) गौओं की रक्षा करने वाला।

गोडुम्बः [?] तरबूज।

गोणी [गुण्+घञ्+ङीप्] 1. गूण, बोरा 2. 'द्रोण' के बराबर माप 3. चीथड़े, फटेपुराने कपड़े।

गोण्डः [गोः अण्ड इव] 1. मांसल नाभि 2. निम्न जाति का पुरुष, पहाड़ी, नर्मदा तथा कृष्णा नदी के मध्यवर्ती विंध्य प्रदेश के पूर्वी भाग का निवासी।

गोतमः [गोभिः ध्वस्तं तमो यस्य ब० स० पृषो०] अङ्गिराकुल से संबन्ध रखने वाला एक ऋषि, शतानन्द का पिता तथा अहल्या का पति।

गोतमी [गोतम+ङीप्] गोतम की पत्नी अहल्या। सम०—**पुत्रः** शतानन्द का विशेषण।

गोधा [गुध्यते, वेष्टयते बाहुरनया—गुध+घञ्+टाप्] 1. धनुष के चिल्ले की चोट से बचने के लिए बाएँ हाथ में बांधी जाने वाली चमड़े की पट्टी 2. घड़ियाल, मगरमच्छ 3. स्नायु, तांत।

गोधिः (पुं०) [गौर्नेत्रं धीयतेऽस्मिन् आधारे इन्] 1. मस्तक 2. गंगा में रहने वाला घड़ियाल।

गोधिका [गुध्नाति—गुध्+ण्वुल्+टाप्] एक प्रकार की छिपकिली, गोह।

गोपः (स्त्री०—पी) [गुप्+अच्; घञ् वा] 1. रक्षक, रक्षा करने वाला—शालिगोप्यो जगुर्यशः—रघु० ४।२० 2. छिपाना, गुप्त रखना 3. दुर्वचन, गाली 4. हड़बड़ी, क्षोभ 5. प्रकाश, प्रभा, दीप्ति।

गोपायनम् [गुप्+आय्+ल्युट्] प्ररक्षण, संरक्षण, बचाव।

गोपायित (वि०) [गुप+आय्+क्त] प्ररक्षित, बचाया हुआ।

गोप्तृ (स्त्री०—स्त्री) [गुप्+तृच्] 1. प्ररक्षक, संधारक, अभिभावक—तस्मिन्वनं गोप्तरि गाहमाने—रघु० २।१४, १।५५, मालवि० ५।२० भग० ११।११ 2. छिपाने वाला, गुप्त रखने वाला—(पुं०) विष्णु का विशेषण।

गोमत् (वि०) [गो+मतुप्] 1. गौओं से संपन्न,—ती एक नदी का नाम।

गोमयः—यम् [गो+मयट्] गोबर, **छत्रम्**—**प्रियम्** कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी, खुंभी।

गोमिन् (पुं०) [गो+मिनि] 1. मवेशियों का स्वामी 2. गीदड़ 3. पूजा करने वाला 4. बुद्धदेव का सेवक।

गोरणम् [गुर्+ल्युट्] स्फूर्ति, अध्यवसाय, धैर्य।

गोर्दम् [गुर्+ददन्, नि०] ('गोद' भी) मस्तिष्क, दिमाग़।

गोलः [गुड्+अच् डस्य लः] 1. पिण्ड, भूगोल 2. दिव्य लोक, अंतरिक्ष, 3. आकाश मंडल 4. विधवा का जारज पुत्र, तु० कुंड 5. एक राशि पर कई ग्रहों का समागम,—ला 1. काठ की गेंद (इससे लड़के खेलते हैं) 2. गोल, पानी भरने का बड़ा घड़ा 3. लाल संखिया, मैनसिल 4. मसी, स्याही 5. सखी, सहेली 6. दुर्गा देवी 7. गोदावरी नदी।

गोलकः [गुड्+ण्वुल्, डस्य लः] 1. पिंड, भूगोल 2. बच्चों के खेलने के लिए काठ की गेंद 3. पानी का मटका 4. विधवा का जारज पुत्र 5. पाँच या पाँच से अधिक ग्रहों का सम्मिलन 6. गुड़ की पिंडियाँ 7. खुशबूदार गोंद।

'गोष्ठ् (भ्वा० आ०—गोष्ठते) एकत्र होना, इकट्ठें होना, ढेर लगना।

गोष्ठः,—ष्ठम् [गोष्ठ+अच्] (प्रायः 'गोष्ठम्') 1. व्रज, गोशाला, गो-घर 2. ग्वालों का स्थान,—**ष्ठः** सभा या समाज °**श्वः** व्रज का कुत्ता जो हरेक को भौंकता है, (आलं०) वह आलसी पुरुष जो अपने पड़ौसियों की निंदा करता है, **गोष्ठेपण्डितः** 'व्रज में निपुण' शेखीखोरा, मिथ्या डींग हांकने वाला।

गोष्ठि,—ष्ठी (स्त्री०) [गोष्ठ्+इन्, गोष्ठ+ङीप्] 1. सभा, सम्मेलन 2. जनसमुदाय, समाज 3. संलाप, बातचीत, प्रवचन—गोष्ठी सत्कविभिः समम्—भर्तृ० १।२८—मा० १०।२५, तेनैव सह सर्वदा गोष्ठीमनुभवति—पंच० २ 4. समुदाय, जमाव 5. पारिवारिक संबंध, रिश्तेदार, (विशेषतः वह जिससे संबंध बनाये रखने की आवश्यकता है) 6. एक प्रकार का एकांकी नाटक, °**पतिः** सभा का प्रधान, सभापति।

गोष्पदम् [गोः पदम्, ष० त०—गो+पद+अच्, नि० सुट् षत्वं च] 1. गाय का पैर 2. धरती पर बना गाय के पैर का चिह्न 3. पैर के चिह्न में समा जाने वाले जल की मात्रा, अर्थात् बहुत ही छोटा गड्ढा 4. गाय के खुर-चिह्न में समाने के योग्य मात्रा 5. वह स्थान जहाँ गौओं का आना-जाना बहुतायत से हो।

गोह्य (वि०) [गुह्+ण्यत्] गोपनीय, छिपाने के योग्य।

गौञ्जिकः [गुञ्जा+ठक्] सुनार।

गौडः (पुं) एक देश का नाम—स्कंदपुराण इसकी स्थिति इस प्रकार बतलाता है—वङ्गदेशं समारम्य भुवनेशान्तगः शिवे, गौडदेशः समाख्यातः सर्वविद्याविशारदः। 2. ब्राह्मणों का एक भेद,—**डाः** (ब० व०) गौड देश के निवासी,—**डी** 1. गुड़ से बनाई हुई शराब—गौडी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा—मनु० ११।९५ 2. एक रागिनी 3. (अलं० शा० में) रीति, वृत्ति या काव्य रचना की एक शैली—सा० द० चार रीतियों का वर्णन करता है; काव्य० में केवल तीन का ही उल्लेख है, वहाँ 'परुषा' का ही दूसरा नाम 'गौडी' है—ओजः प्रकाशकैस्तैः (वर्णैः) तु परुषा (अर्थात् गौडी) काव्य० ७, ओजःप्रकाशकैर्वर्णैर्बन्ध आडम्बरः पुनः, समासबहुला गौडी—सा० द० ६२७।

गौडिकः [गुड+ठक्] ईख, गन्ना।

गौण (वि०) (स्त्री०—णी) [गुण+अण्] 1. मातहत, द्वितीय कोटि का, अनावश्यक 2. (व्या० में) अप्रत्यक्ष

या व्यवधान-सहित (विप० मुख्य या प्रधान)--गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम्—सिद्धा० 3. आलंकारिक, रूपक, अप्रधान अर्थ में प्रयुक्त (शब्द या अर्थ आदि) 4. प्रधान और अप्रधान अर्थ की समानता पर स्थापित जैसा कि 'गौणी लक्षणा' में 5. गुणा की गणना से संबद्ध 6. विशेषण।

गौण्यम् [गुण+ष्यञ्] मातहती निचली या घटिया अवस्थिति।

गौतमः [गोतम+अण्] 1. भारद्वाज ऋषि का नाम 2. गोतम का पुत्र, शतानन्द 3. द्रोण का साला, कृपाचार्य 4. बुद्ध 5. न्यायशास्त्र का प्रणेता। सम०—संभवा गोदावरी नदी।

गौतमी [गौतम+ङीप्] 1. द्रोण की पत्नी, कृपी 2. गोदावरी का विशेषण 3. बुद्ध की शिक्षा 4. गौतम द्वारा प्रणीत न्यायशास्त्र 5. हल्दी 6. गोरोचन।

गौधूमीनम् [गोधूम+खञ्] गेहूँ का खेत।

गौनर्दः [गोनर्द+अण्] महाभाष्य के प्रणेता पतंजलि मुनि का विशेषण।

गौपिकः [गोपिका+अण्] गोपी या ग्वाले की स्त्री का पुत्र।

गौप्तेयः [गुप्ता+ढक्] वैश्य स्त्री का पुत्र।

गौर (वि०) (स्त्री०—रा,-री) [गु+र, नि०] श्वेत —कैलासगौरं वृषमारुरुक्षोः—रघु० २।३५, द्विरदद-शनच्छेदगौरस्य तस्य—मेघ० ५९, ५२, ऋतु० १।६ 2. पीला सा, पीत—रक्त-गोरोचनाक्षेपनितान्तगौरम् —कु० ७।१७, रघु० ६।६५, गौराङ्गि गर्वं न कदापि कुर्याः—रस० 3. लालरंग का 4. चमकता हुआ, उज्ज्वल 5. विशुद्ध, स्वच्छ, सुन्दर,—रः 1. सफेद रंग 2. पीला रंग 3. लाल रंग 4. सफेद सरसों 5. चन्द्रमा 6. एक प्रकार का भैंसा 7. एक प्रकार का हरिण,—रम् 1. पद्मकेसर 2. जाफरान 3. सोना। सम०—आस्यः एक प्रकार का काला बंदर जिसका मुंह सफेद हो, —सर्षपः सफेद सरसों।

गौरक्ष्यम् [गोरक्षा+ष्यञ्] ग्वाले का कार्य, गोपालन।

गौरवम् [गुरु+अण्] 1. बोझ, भार (शा०)—सुरेन्द्रमात्राश्रितगर्भगौरवात्—रघु० ३।११ 2. महत्त्व, ऊँचा मूल्य या मूल्यांकन—स्वविक्रमे गौरवमादधानम्—रघु० —१४।१८, १८।३९, कार्यगौरवेण—मुद्रा० ५, गुरुता या महत्त्व 3. सम्मान, आदर, विचार—तथापि यन्मय्यपि ते गुरुरित्यस्ति गौरवम्—शि० २।७१, प्रयोजनापेक्षितया प्रभूणां प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु—कु० ३।१, अमरु १९ 4. सम्मान, मर्यादा, श्रद्धा—कोऽर्थी गतो गौरवम्—पंच० १।१४६, मनु० २।१४५ 5. दुष्करता 6. (छं० में) दीर्घता (जैसे की अक्षर की) 7. (अर्थ, दिक की) गहराई—यच्चार्यंतो गौरवम्—मा० १।७। सम०—आसनम् सम्मान का पद,—ईरित (वि०) प्रशस्त, यशस्वी, विख्यात।

गौरवित (वि०) [गौरव+इतच्] अत्यंत सम्मानित, गौरव युक्त।

गौरिका [गौरी+कन्+टाप्, इत्वम्] कुमारी कन्या, अविवाहिता लड़की।

गौरिलः [गौर+इलच्] 1. सफेद सरसों 2. इस्पात या लोहे का चूरा।

गौरी [गौर ङीप्] 1. पार्वती—जैसा कि 'गौरीनाथ' में 2. आठवर्ष की आयु की कन्या—अष्टवर्षा भवेद्गौरी 3. वह लड़की जो अभी रजस्वला नहीं हुई, कुमारी कन्या 4. गोरे या पीले रंग की स्त्री 5. पृथ्वी 6. हल्दी 7. गोरोचन 8. वरुण की पत्नी 9. मल्लिका लता 10. तुलसी का पौधा 11. मजीठ का पौधा। सम० —कान्तः,—नाथः शिव का विशेषण,—गुरुः हिमालय पहाड़ —गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश—रघु० २।२६, कि० ५।२१, —जः कार्तिकेय (जम्) अभरक,—पट्टः योनिरूपी अर्घा जिसमें शिवलिंग (की मूर्ति) स्थापित किया जाता है, —पुत्रः कार्तिकेय,—ललितम् हरताल,—सुतः 1. कार्तिकेय 2. गणेश 3. ऐसी स्त्री का पुत्र जिसका विवाह आठ वर्ष की अवस्था में हुआ था।

गौरुतल्पिकः [गुरुतल्प+ठक्] गुरुपत्नी से साथ व्यभिचार करने वाला।

गौलक्षणिकः [गोलक्षण+ठक्] जो गाय के शुभ या अशुभ चिह्नों को पहचानता है।

गौल्मिकः [गुल्म+ठक्] किसी सेना की टोली का एक सिपाही।

गौशतिक (वि०) (स्त्री०—की) [गोशत+ठञ्] सौ गौओं का स्वामी।

ग्मा [गम्+मा, डित्, डित्वात् अमो लोपः] पृथ्वी।

ग्रथ्, ग्रन्थ् (भ्वा० आ०—ग्रथते, ग्रन्थते) 1. टेढ़ा होना 2. दुष्ट होना 3. झुकना।

ग्रथनम् [ग्रन्थ्+ल्युट् नलोपः] 1. जमाना, गाढ़ा करना, जाम हो जाना 2. एक जगह नत्थी करना 3. रचना करना, लिखना (इस अर्थ में—'ग्रथना' शब्द भी है)।

ग्रन्थः [ग्रन्थ्+नङ] झुंड, गुच्छा, लच्छा।

ग्रथित (भू० क० कृ०) [ग्रन्थ+क्त, नलोपः] 1. एक जगह नत्थी किया हुआ या बांधा हुआ 2. रचित—वर्णैः कतिपयैरेव ग्रथितस्य स्वरैरिव—शि० २।७२ 3. क्रमबद्ध, श्रेणीबद्ध 4. गाढ़ा किया हुआ 5. गांठवाला।

ग्रन्थ (भ्वा०, क्र्या० पर०; चुरा० उभ०, भ्वा० आ० —ग्रन्थति, ग्रथ्नाति; ग्रथयति—ते, ग्रथति, ग्रथते) 1. गूंथना, बांधना, नत्थी करना—भट्टि० ७।१०५ स्रजो ग्रथयते 2. क्रम से रखना, श्रेणीबद्ध करना, नियमित सिलसिले में जोड़ना 3. बटना, बटा चढ़ाना

4. लिखना, रचना करना—ग्रथ्नामि काव्यशशिनं विततार्थरश्मिम्—काव्य० १० 5. बनाना, निर्माण करना, पैदा करना—ग्रथ्नन्ति बाष्पबिन्दुनिकरं पक्ष्मपङ्क्तयः—का० ६०, भट्टि० १७।६९, उद्—, बांधना, नत्थी करना, मुद्रा० १।४, अन्तर्जटित करना—लताप्रतानोद्ग्रथितैः स केशैः—रघु० २।८ 2. खोलना, ढीला करना।

ग्रन्थः [ग्रन्थ्+घञ्] 1. बांधना, गूंथना (आलं० से भी) 2. कृति, प्रबन्ध, रचना, साहित्यिक कृति, पुस्तक—ग्रन्थारम्भे, ग्रन्थकृत्, ग्रन्थसमाप्ति आदि 3. दौलत, सम्पत्ति 4. ३२ मात्राओं का श्लोक, अनुष्टुप् छंद। सम०—**कारः,—कृत्** (पुं०) लेखक, रचयिता—ग्रन्थारंभे समुचितेष्टदेवतां ग्रन्थकृत्परामृशति—काव्य० १, —**कुटी,—कुटी** 1. पुस्तकालय 2. कलामन्दिर, —**विस्तरः,—विस्तारः** ग्रन्थ का कई भागों में विभाजन, विस्तारमयी शैली,—**सन्धिः** किसी पुस्तक का अनुभाग या अध्याय (संस्कृत में 'अनुभाग' आदि के पर्याय 'अध्याय' शब्द के अन्तर्गत देखें)।

ग्रन्थनम्—ना [ग्रन्थ्+ल्युट्] दे० 'ग्रथन'।

ग्रन्थिः [ग्रन्थ्+इन्] 1. गाँठ, गुच्छा, उभार—स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशावित्युपमितौ—भर्तृ० ३।२०, इसी प्रकार 'मेदोग्रन्थिः' 2. रस्सी का बंधन या गाँठ, वस्त्र की गाँठ—इदमुपहितसूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्धदेशे श० १।१८, मृच्छ० १।१, मनु० २।४३, भर्तृ० १।५७ 3. रुपया-पैसा रखने के लिए कपड़े के अंचल में गाँठ, अतएव बटुवा, धन, सम्पत्ति—कुसीदाद्दारिद्र्यं परकरगतग्रन्थिशमनात्—पंच० १।११ 4. नरकुल की गाँठ, गन्ने आदि की पोरों की गाँठ या जोड़ 5. शरीर के अवयवों का जोड़ 6. टेढ़ापन, तोड़ना-मरोड़ना, मिथ्यात्व, सचाई में उलट फेर 7. शरीर की वाहिकाओं में सूजन, कठोरता। सम०—**छेदकः,—भेदः—मोचकः** गिरहकट जेबकतरा—अङ्गुलीग्रन्थिभेदस्य छेदयेत् प्रथमे ग्रहे—मनु० ९।२७७, याज्ञ० २।२७४,—**पर्णः, पर्णम्** 1. एक सुगन्धयुक्त वृक्ष—विक्रमांक० १।१७ 2. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,—**बन्धनम्** 1. विवाह के अवसर पर दूल्हे और दुलहिन का गठजोड़ा करना 2. बन्धन, —**हरः** मन्त्री।

ग्रन्थिकः [ग्रन्थि+कै+क] 1. ज्योतिषी, दैवज्ञ 2. राजा विराट के यहाँ अज्ञातवास के अवसर पर नकुल का नाम।

ग्रन्थित—दे० ग्रथित।

ग्रन्थिन् (पुं०) [ग्रन्थ+इनि] 1. जो बहुत सी पुस्तकें पढ़ता हो, किताबी—अज्ञेभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठाः ग्रन्थिभ्यो धारिणो वराः-मनु० १२।१०३ 2. विद्वान्, पण्डित।

ग्रन्थिल (वि०) [ग्रन्थिर्विद्यतेऽस्य—लच्] गाँठवाला, जटिल।

ग्रस् i (भ्वा० आ०—ग्रसते, ग्रस्त) 1. निगलना, भसकना, खा जाना, समाप्त कर देना—स इमां पृथिवीं कृत्स्नां संक्षिप्य ग्रसते पुनः—महा०, भग० ११।३० 2. पकड़ना 3. ग्रहण लगना—द्वावेव ग्रसते दिनेश्वरनिशाप्राणेश्वरौ भास्वरौ—भर्तृ० २।३४, हिमांशुमाशु ग्रसते तन्म्रदिम्नः स्फुटं फलम्—शि० २।४९ 4. शब्दों को मिला-जुला कर अस्पष्ट लिखना 5. नष्ट करना, **सम्**—नष्ट करना भट्टि० १२।४; ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—ग्रसति, ग्रासयति—ते) खाना निगलना।

ग्रसनम् [ग्रस्+ल्युट्] 1. निगलना, खा लेना 2. पकड़ना सूर्य या चन्द्रमा का खण्डग्रास।

ग्रस्त (भू० क० कृ०) [ग्रस्+क्त] 1. खाया हुआ, निगला हुआ 2. पकड़ा हुआ पीड़ित, ग्रस्त, अधिकृत,—ग्रह°, विपद्° आदि 3. ग्रहण-ग्रस्त,—**स्तम्** अर्धोच्चारित शब्द या वाक्य। सम०—**अस्तम्** ग्रहणग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा का अस्त होना,—**उदयः** ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा का उगना।

ग्रह् (क्र्या० उभ० (वेद में 'ग्रभ्')—गृह्णाति, गृहीत; प्रे० ग्राहयति, सन्नन्त—जिघृक्षति) 1. पकड़ना, लेना, ग्रहण करना, पकड़ लेना, थामना, लपक लेना, कस कर पकड़ना—तयोर्जगृहतुः पादान् राजा राज्ञी च मागधी—रघु० १।५७—आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते—मृच्छ० १।५०, तं कण्ठे जग्राह—का० ३६३ पाणिं गृहीत्वा, चरणं गृहीत्वा 2. प्राप्त करना, लेना, स्वीकार करना, बलपूर्वक वसूल करना—प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्—रघु० १।१८, मनु० ७।१२४, ९।१६२ 3. हिरासत में लेना गिरफ्तार करना बन्दी बनाना—बन्दिग्राहं गृहीत्वा—विक्रम० १, यांस्तत्र चारान् गृह्णीयात्—मनु० ८।३४ 4. गिरफ़्तार करना, रोकना, पकड़ना—भग० ६।३५ 5. मोह लेना, आकृष्ट करना—महाराजगृहीतहृदयया मया—विक्रम० ४, हृदये गृह्यते नारी—मृच्छ० १।५०, माधुर्यमीष्टे हरिणान् ग्रहीतुम्—रघु० १८।१३ 6. जीत लेना उकसाना, अपनी ओर करने के लिए फुसलाना—लुब्धमर्थेन गृह्णीयात्—चाण० ३३ 7. प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, तृप्त करना, अनुकूल करना—प्रहीतुमार्यान् परिचर्यया मुहुर्महानुभावा हि नितान्तमर्थिनः—शि० १।१७, ३३ 8. ग्रस्त करना, पकड़ना, चिपटना (भूत प्रेतादिक का) जैसे कि 'पिशाचगृहीत' या 'वेतालगृहीत' में 9. धारण करना, लेना—द्युतिमग्रहीत् ग्रहगणः—शि० ९।२३, भट्टि० १९।२९ 10. सीखना, जानना, पहचानना, समझना—कि० १०।८ 11. ध्यान देना, विचार करना, विश्वास करना, मान लेना—मयापि मृत्पिण्डबुद्धिना तथैव गृहीतम्—श० ६, परिहासविजल्पितं सखे परमार्थेन न

गृह्यतां वचः—श० २।१८ एवं जनो गृह्णाति —मालवि० १, मुद्रा० ३ 12. (इन्द्रियों द्वारा) समझ लेना, या प्रत्यक्ष करना—ज्यानिनादमथ गृह्णती तयोः —रघु० ११।१५ 13. पारंगत होना, मस्तिष्क से पकड़ना, समझ लेना,—रघु० १८।४६ 14. अनुमान लगाना, अटकल लगाना, अन्दाज करना—नेत्रवक्त्रविकारैश्च गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः—मनु० ८।२६ 15. उच्चारण करना, उल्लेख करना, (नाम आदि का) यदि मयान्यस्य नामापि न गृहीतम् —का० ३०५, न तु नामापि गृह्णीयात् पत्यौ प्रेते परस्य तु —मनु० ५।१५७ 16. मोल लेना, खरीदना - कियता मूल्येनैतत्पुस्तकं गृहीतम्—पंच० २, याज्ञ० २।१६९, मनु० ८।२०१ 17. किसी को वंचित करना, छीन लेना, लूट लेना, बलपूर्वक ले लेना, भट्टि० ९।९, १५।६३ 18. पहनना, धारण करना (वस्त्रादिक) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि —भग० २।२२ 19. गर्भ धारण करना 20. (उपवास) रखना 21. ग्रहण लगना 22. उत्तरदायित्व लेना [इस धातु के अर्थ उस संज्ञा के अनुसार विभिन्न प्रकार से परिवर्तित हो जाते हैं, जिससे इसे जोड़ा जाय] प्रेर० 1. ग्रहण करवाना, पकड़वाना, स्वीकार करवाना 2. विवाह में उपहार देना 3. सिखाना, परिचित करवाना, अनु—, अनुग्रह करना, आभार मानना, कृपा प्रदर्शित करना—अनुगृहीतोऽहमनया मघवतः संभावनया—श० ७, अनुगृहीताः स्मः 'अनेक धन्यवाद' 'हम बड़े आभारी हैं', अनुसम्—विनम्र नमस्कार करना, अप—, दूर करना, फाड़ना, अभि—बलपूर्वक पकड़ना, अव—, 1. विरोध करना, मुक़ाबला करना 2. दण्ड देना 3. हस्तगत करना, पराभूत करना, आ—, आग्रह करना, उद्—, 1. उठाना, ऊपर करना, सीधा खड़ा करना—उद्गृहीतालकान्ताः—मेघ० ८, भट्टि० १५।५२ 2. जमा करना, निकालना, उप—, 1. जुटाना 2. पकड़ लेना, अधिकार में ले लेना—मनु० ७।१८४ 3. स्वीकार करना, मंजूरी देना 4. सहायता करना, अनुग्रह करना, नि—, 1. थाम लेना, जांचपड़ताल करना 2. दमन करना, रोकना, दबाना, नियंत्रण करना—भग० २।६८ 3. ठहराना, बाधा डालना—निगृहीतो बलाद् द्वारि—महा० 4. दण्ड देना, सज़ा देना—मनु० ८।३१०, ९।३०८ 5. पकड़ना, लेना, हाथ डालना—तमार्यगृह्यं निगृहीतधेनुः—रघु० २।३३ 6. (आंख आदि) बंद करना, मूंदना—माथुरोऽक्षिणी निगृह्य—मृच्छ० २, परि—, 1. कौली भरना, आलिंगन करना 2. घेरना 3. हस्तगत करना, पकड़ना 4. लेना, धारण करना 5. स्वीकार करना 6. सहायता करना, संरक्षण देना, प्र—, 1. लेना, पकड़ना 2. दमन करना, रोकना 3. फैलाना, विस्तार करना, प्रति—, 1. थामना, पकड़ना, सहायता देना—वर्षधरप्रतिगृहीतमेनम्—मालवि० ४, मनु० ३।४८ 2. लेना, स्वीकार करना, प्राप्त करना—ददाति प्रतिगृह्णाति—पंच० २, अमोघाः प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमाशिषः—रघु० १।४४, २।२२ 3. उपहार स्वरूप लेना या स्वीकार करना 4. शत्रुवत् व्यवहार करना, विरोध करना, मुक़ाबला करना, रोकना—प्रतिजग्राह काकुत्स्थस्तमस्त्रैर्गजसाधनः—रघु० ४।४०, १२।४७ 5. पाणिग्रहण करना—मनु० ९।७२ 6. आज्ञा मानना, समनुरूप होना, ध्यान से सुनना 7. आश्रय लेना, अवलंबित होना, वि—, 1. थामना या पकड़ना 2. कलह करना, लड़ना, विवाद करना, विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः - शि० १।५१, भट्टि० ६।८६, १७।२३, सम्—, 1. संग्रह करना, एकत्र करना, संचय करना, जोड़ना—संगृह्य धनम्, पाशान् 2. सानुग्रह प्राप्त करना 3. दमन करना, रोकना, (घोड़ों को) लगाम देना 4. (धनुष आदि की) डोरी खोलना; ii (भ्वा० पर०-चुरा० उभ० —ग्रहति, ग्राहयति—ते) लेना, प्राप्त करना आदि।

ग्रहः [ग्रह्+अच्] 1. पकड़ना, ग्रहण करना, अधिकार जमाना, अभिग्रहण—रुरुधुः कचग्रहैः—रघु० १९।३१ 2. पकड़, ग्रहण, प्रभाव—कर्कटकग्रहात्—पंच० १।२६० 3. लेना, प्राप्त करना, स्वीकार करना, प्राप्ति 4. चुराना, लूटना—अङ्गुलीग्रन्थिभेदस्य छेदयेत्प्रथमे ग्रहे —मनु० ९।२७७ इसी प्रकार 'गोग्रह' 5. लूट का माल, बटमारी 6. ग्रहण लगना दे० ग्रहण 7. ग्रह (यह गिनती में नौ हैं—सूर्यश्चन्द्रो मंगलश्च बुधश्चापि बृहस्पतिः, शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति ग्रहा नव।) —नक्षत्रताराग्रहसङ्कुलापि (रात्रिः) रघु० ६।२२, ३।१३, १२।२८, गुरुणा स्तनभारेण मुखचन्द्रेण भास्वता, शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव सा—भर्तृ० १।१७ 8. उल्लेख, उच्चारण, दुहराना (नाम आदि का) नामजातिग्रहं त्वेषामभिद्रोहेण कुर्वतः—मनु० ८।२७१, अमरु ८३ 9. मगरमच्छ, घड़ियाल 10. पिशाचशिशु, भूतना 11. अनिष्टकर राक्षसों का एक विशेष वर्ग जो बच्चों से चिपट कर उन्हें ऐंठन मरोड़ या कुमेड़ों से ग्रस्त कर देता है 12. (विचारों व धारणाओं का) ग्रहण, प्रत्यक्षीकरण 13. समझने का अंग या उपकरण 14. दृढ़ग्राहिता, धैर्य, अध्यवसाय 15. प्रयोजन, आकलन 16. अनुग्रह, संरक्षण। सम० —अधीन (वि०) ग्रहों के प्रभाव पर निर्भर, —अवमर्दनः राहु का विशेषण, (नम्) ग्रहों की टक्कर, —अधीशः सूर्य, —आधारः—आश्रयः ध्रुव नक्षत्र (नक्षत्रों का स्थिर केन्द्र), —आमयः 1. मिर्गी 2. भूता-

वेश,—आलुञ्चनम् अपने शिकार पर झपटना, और उसे फाड़ डालना श्येनो ग्रहालुञ्चने—मृच्छ० ३।२० —ईशः सूर्य,—कल्लोलः राहु का विशेषण,—गतिः ग्रहों की चाल चिन्तकः ज्योतिषी,—दशा जन्मराशि की दृष्टि से ग्रहों की स्थिति, वह समय जब कि उनका शुभाशुभ फल होता है,—देवता ग्रह विशेष का अधिष्ठातृ देवता,—नायकः 1. सूर्य 2. शनि का विशेषण,—नेमिः चन्द्रमा,—पतिः 1. सूर्य 2. चन्द्रमा, —पीडनम्—पीडा 1. ग्रहजनित पीडा, बाधा 2. ग्रहण लगना—शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनम्—भर्तृ० २।९१, —मण्डलम्,—ली ग्रहों का वृत्त,—युतिः (स्त्री०) एक ही राशि पर ग्रहों का संयोग,—युद्धम् ग्रहों का परस्पर विरोध या संघर्ष,—राजः 1. सूर्य 2. चन्द्रमा 3. बृहस्पति,—वर्षः ग्रहों की चाल के अनुसार माना जाने वाला वर्ष,—विप्रः ज्योतिषी,—शान्तिः (स्त्री०) यज्ञ, जप, पूजनादि के द्वारा ग्रहदोष की निवृत्ति का उपाय किया जाना, ग्रहों को प्रसन्न करना,—संगमम् कई ग्रहों का इकट्ठा हो जाना।

ग्रहणम् [ग्रह्+ल्युट्] 1. पकड़ना, फांसना, अभिग्रहण श्वा मृगग्रहणेऽशुचिः—मनु० ५।१३० 2. प्राप्त करना, स्वीकार करना, ले लेना आचारधूमग्रहणात्—रघु० ७।१७ 3. उल्लेख करना, उच्चारण करना—नामग्रहणम् 4. पहनना, धारण करना—सोत्तरच्छदमध्यास्त नेपथ्यग्रहणाय सः—रघु० १७।२१ 5. ग्रहण लगना—याज्ञ० १।२१८ 6. अवबोधन, समझ, ज्ञान—न परेषां ग्रहणस्य गोचराम्—नै० २।९५ 7. अधिगम, अवाप्ति, मन से समझ लेना, पारंगत होना—लिपेर्यथावद्ग्रहणेन वाङ्मयं नदीमुखेनेव समुद्रमाविशत्—रघु० ३।२८ 8. शब्द पकड़ना, प्रतिध्वनि—आद्रिग्रहणगुरुभिर्गर्जितैर्नर्तयेथाः—मेघ० ४४ 9. हाथ 10 इन्द्रिय।

ग्रहणिः,—णी (स्त्री०) [ग्रह्+अनि, ग्रहणि+ङीप्] अतिसार, पेचिश।

ग्रहिल (वि०) [ग्रह+इलच्] 1. लेनेवाला, स्वीकार करने वाला 2. न दबने वाला, अटल, कठोर—न निशाखिलयापि वापिका प्रससाद ग्रहिलेव मानिनी—नै० २।७७।

ग्रहीतृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [ग्रह्+तृच्, इटो दीर्घः] 1. प्राप्तकर्ता, जैसा कि 'गुणग्रहीतृ' में 2. प्रत्यक्षज्ञाता, निरीक्षक 3. कर्जदार।

ग्रामः [ग्रस्+मन्, आदन्तादेशः] 1. गाँव, पुरवा—पत्तने विद्यमानेऽपि ग्रामे रत्नपरीक्षा—मालवि० १, त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्, ग्रामं जनपदस्यार्थे स्वात्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्—हि० १।१४९, रघु० १।४४, मेघ० ३० 2. वंश, जाति 3. समुच्चय, संग्रह (किन्हीं वस्तुओं का)—उदा० गुणग्राम, इन्द्रियग्राम भग० ८।१९, ९।८ 4. सरगम, (संगीत में) स्वरग्राम या सुरक्रम। सम०—अधिकृतः,—अध्यक्षः —ईशः,—ईश्वरः ग्राम का अधीक्षक, मुखिया या प्रधान,—अन्तः गाँव की सीमा, गाँव की समीपवर्ती जगह—मनु० ४।११६, ११।७९,—अन्तरम् दूसरा गाँव, —अन्तिकम् गाँव का पड़ोस,—आचारः गाँव के रस्म-रिवाज,—आधानम् शिकार,—उपाध्यायः गाँव का पुरोहित,—कण्टकः 1. 'गाँव के लिए कांटा' जो गाँव को कष्ट देने वाला हो 2. चुगलखोर, कुक्कुटः पालतू मुर्गा, कुमारः 1. ग्राम का सुन्दर बालक 2. देहाती लड़का,—कूटः 1. गाँव का श्रेष्ठ पुरुष 2. शूद्र,—गृह्य (वि०) गाँव के बाहर होने वाला,—गोदुहः गाँव का ग्वाला,—घातः गाँव को लूटना,—घोषिन् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—चर्या स्त्री संभोग,—चैत्यः गाँव का पवित्र 'गूलर' का वृक्ष—मेघ० २३,—जालम् गाँवों का समूह, ग्राममंडल,—णीः 1. गाँव या जाति का नेता या मुखिया 2. नेता, प्रधान 3. नाई 4. विषयासक्त पुरुष (स्त्री०) 1. वारांगना, वेश्या 2. नील का पौधा,—तक्षः गाँव का बढ़ई,—देवता गाँव का अभिरक्षक देवता,—धर्मः स्त्री-संभोग,—प्रेष्यः किसी गाँव या जाति का दूत या सेवक,—मद्गुरिका झगड़ा, फसाद, हंगामा, हल्लागुल्ला,—मुखः बाजार, मंडी, —मृगः कुत्ता,—याजकः,—याजिन् (पुं०) 1. ग्रामपुरोहित, वह पुरोहित जो सभी जातियों के धार्मिक संस्कार कराता है, फलतः पतित ब्राह्मण समझा जाता है 2. पुजारी,—लुण्ठनम् गाँव को लूटना,—वासः ('ग्रामे वासः' भी) गाँव में रहना,—षण्डः नपुंसक क्लीव, —संघः ग्राम-निगम,—सिंहः कुत्ता,—स्थ (वि०) 1. गाँव में रहने वाला, ग्रामीण 2. गाँव का सहवासी, एक ही गाँव का रहनेवाला साथी,—हासकः बहनोई, जीजा।

ग्रामटिका [?] गाँवड़ी, अभागा गाँव, दरिद्र गाँव—कतिपयग्रामटिकापर्यटनदुर्विदग्ध—प्रस० १।

ग्रामिक (वि०) (स्त्री०—की) [ग्राम+ठञ्] 1 देहाती, गंवार 2. अक्खड़,—कः गाँव का चौधरी या मुखिया मनु० ७।११६, ११८।

ग्रामीणः [ग्राम+खञ्] 1. ग्रामवासी, गाँव का रहने वाला—ग्रामीणवध्वस्तमलक्षिता जनैश्चिरं वृतीनामुपरि व्यलोकयन्—शि० १२।३७ अमरु ११ 2. कुत्ता 3. कौवा 4. सूअर।

ग्रामेय (वि०) (स्त्री०—यी) [ग्राम+ढक्] गाँव में उत्पन्न, गंवार,—यी रंडी, वेश्या।

ग्राम्य (वि०) [ग्राम+यत्] 1. गाँव से संबंध रखने वाला, गाँव में रहने का अभ्यस्त—मनु० ६।३, ७।१२० 2. गाँव में रहने वाला, देहाती, गंवार—अल्पव्ययेन सुन्दरि, ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति—छं० १।३ 3. घरेलू,

पालतू (पशु आदि), 4. आवर्धित (विप० 'वन्य') 5. नीच अशिष्ट (शब्द की तरह) केवल ओछे व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त—चुम्बनं देहि मे भार्ये कामचाण्डालतृप्तये—रस० या कटिस्ते हरते मनः—सा० द० ५७४, यह ग्राम्य उक्तियों के उदाहरण हैं 6. अभद्र, अश्लील, —म्यः पालतू सूअर,—म्यम् 1. गंवारु भाषण 2. देहात में तैयार किया हुआ भोजन 3. मैथुन। सम०—अश्वः गधा,—कर्मन् ग्रामीण का व्यवसाय,—कुङ्कुमम्, कुसुंभ, —धर्मः 1. ग्रामीण का कर्तव्य 2. स्त्रीसंभोग, मैथुन, —पशुः पालतू जानवर,—बुद्धि (वि०) उजड्ड, मजाकिया, अनाड़ी,—वल्लभा वेश्या, रंडी,—सुखम् स्त्रीसंभोग, मैथुन।

ग्रावन् (पुं०) [ग्रस्=ड=ग्रः, ग्र+आ+वन्+विच्] 1. पत्थर, चट्टान—किं हि नामैतदम्बुनि मज्जन्त्यलाबूनि ग्रावाणः संप्लवन्त इति—महावी० १, अपि ग्रावा रोदिति अपि दलति वज्रस्य हृदयम्—उत्तर० १।२८ शि० ४।२३ 2. पहाड़ 3. बादल।

ग्रासः [ग्रस्+घञ्] 1. कौर, कौर के बराबर कोई वस्तु मनु० ३।१३३, ६।२८. याज्ञ० ३।५५ 2. भोजन, पोषण 3. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहणग्रस्त भाग। सम०—आच्छादनम् -भोजन वस्त्र अर्थात् अनिवार्य जीवन साधन,—शल्यम् गले में अटकने वाला (मछली का कांटा) आदि कोई पदार्थ।

ग्राह (वि०) (स्त्री०—ही) [ग्रह्+घञ्] पकड़ने वाला, मुट्ठी से जकड़ने वाला, लेने वाला, थामने वाला, प्राप्त करने वाला,—हः 1. पकड़ना, जकड़ना 2. घड़ियाल, मगरमच्छ—रागग्राहवती—भर्तृ० ३।४५ 3. बन्दी 4. स्वीकरण 5. समझना, ज्ञान 6. हठ, दृढाग्रह 7. निर्धारण, दृढ़ निश्चय—भग० १७।१९ 8. रोग।

ग्राहक (वि०) (स्त्री०—हिका) [ग्रह्+ण्वुल्] प्राप्त करने वाला, लेने वाला,—कः 1. बाज, श्येन 2. विषचिकित्सक 3. क्रेता, खरीदार 4. पुलिस अधिकारी।

ग्रीवा [गिरत्यनया—गॄ+वनिप्, नि०] गर्दन, गर्दन का पिछला भाग—ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः—श० १।७। सम०—घण्टा घोड़े के गले में लटकता हुआ घंटा।

ग्रीवालिका—दे० ग्रीवा।

ग्रीविन् (पुं०) [ग्रीवा+इनि] ऊँट।

ग्रीष्म (वि०) [ग्रसते रसान्—ग्रस्+मनिन्] गरम, उष्ण, —ष्मः 1. गर्मी का मौसम, गरम ऋतु [ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने)—ग्रीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम् श० १ रघु० १६।५४, भामि० १।३५ 2. गर्मी, उष्णता। सम०—कालीन (वि०) गर्मी के मौसम से संबंध रखने वाला,—उद्भवा,—जा,—भवा नवमल्लिका लता, नेवारी।

ग्रैव (स्त्री—वी), **ग्रैवेय** (स्त्री०—यी) (वि०) [ग्रीवा+अण, ढञ् वा] गर्दन पर होने वाला या गर्दनसंबंधी,—वम्, —यम् 1. गले का पट्टा, या हार 2. हाथी की गर्दन में पहनी जाने वाली जंजीर—नाम्रसत् करिणां ग्रैवं त्रिपदीछेदिनामपि—रघु० ४।४८, ७५।

ग्रैवेयकम् [ग्रीवा+ढकञ्] 1. गले का आभूषण—उदा० अस्माकं सखि वाससी न रुचिरे ग्रैवेयकं नोज्ज्वलम्—सा० द० ३ 2. हाथी के गले में पहने जानेवाली जंजीर।

ग्रैष्मक (वि०) (स्त्री०—ष्मिका) [ग्रीष्म+वुञ्] 1. गरमी के मौसम में बोया हुआ 2. गरमी के ऋतु में दिया जाने वाला (ऋण आदि)।

ग्लपनम् [ग्लै+णिच्+ल्युट्, पुक्, ह्रस्व] 1. मुर्झाना, सूख जाना 2. थकावट।

ग्लस् (भ्वा० आ०—ग्लसते, ग्लस्त) खाना, निगलना।

ग्लह् (भ्वा० उभ०, चुरा० आ०—ग्लहति—ते, ग्लाहयति—ते) 1. जूआ खेलना, जूए में जीतना 2. लेना, प्राप्त करना।

ग्लहः [ग्लह्+अप्] 1. पासे से खेलने वाला 2. दाव, बाजी लगाना, शर्त लगाना 3. पासा 4. जूआ खेलना 5. बिसात।

ग्लान (भू० क० कृ०) [ग्लै+क्त] 1. क्लान्त, श्रान्त, थका हुआ, ग्लान, अवसन्न 2. रोगी, बीमार।

ग्लानिः (स्त्री०) [ग्लै+नि] 1. अवसाद, क्लान्ति, थकावट—मनश्च ग्लानिमृच्छति—मनु० ११।५३, अङ्गग्लानि सुरतजनितां—मेघ० ७०, ३१, श० ४।४ 2. ह्रास क्षय—आत्मोदयः परग्लानिर्द्वयं नीतिरितीयती—शि० २।३०, यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत—भग० ४।७ 3. दुर्बलता, निर्बलता 4. बीमारी।

ग्लास्नु (वि०) [ग्लै+स्नु] क्लान्त, श्रान्त।

ग्लुच् (भ्वा० पर०—ग्लोचति, ग्लुक्त) 1. जाना, चलना-फिरना 2. चुराना, लूटना 3. छीन लेना, वञ्चित करना—बहूनामग्लुचत् प्राणान् अग्लोचीज्ज्वरणे यशः—भट्टि० १५।३०।

ग्लै (भ्वा० पर०—ग्लायति, ग्लान) 1. विरक्ति या अरुचि अनुभव करना, काम करने को जी न करना, (तुमुन्नन्त के साथ) 2. क्लान्त या श्रान्त होना, थका हुआ या अवसन्न अनुभव करना 3. साहस छोड़ना, हतोत्साह होना—उदास होना—भट्टि० १९।१७, ६।१२ 4. क्षीण होना, मूर्छित होना—प्रेर० ग्ल—ग्ला—पयति 1. सुखा देना, शुष्क कर देना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2. थका देना।

ग्लौ (पुं०) [ग्लै+डौ] 1. चन्द्रमा 2. कपूर।

घ

घ (वि०) [हन्+टक्, टिलोपः, घत्वं च] (यह केवल समास में उत्तर पद के रूप में प्रयुक्त होता है) प्रहार करने वाला, मारने वाला, नाश करने वाला—जैसा कि पाणिघ और राजघ आदि में,—**घः** 1. घण्टी 2. खड़खड़ाना, गरगराहट, टिनटिनाना।

घट् i (भ्वा० आ०—घटते, घटित) व्यस्त होना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, जानबूझ कर किसी काम में लगना (तुमुन्नंत, अधि० या संप्र० के साथ)—दयितां त्रातुमलं घटस्व—भट्टि० १०।४०, अंगदेन समं योद्धुमघटिष्ट १५।१७, १२।२६, १६।२३, २०।२४, २२।३१ 2. होना घटित होना, सम्भव होना—प्राणैस्तपोभिरथवाऽभिमतं मदीयैः कृत्यं घटेत सुहृदो यदि तत्कृतं स्यात्—मा० १।९, क्या यह सम्भव है, कस्यापरस्योडुमयैः प्रसूनैः वादित्रसृष्टिर्घटते भटस्य—नै० २२।२२ 3. आना, पहुँचना। प्रेर०—घटयति 1. एकत्र करना, मिलाना, एक जगह करना—इत्थं नारीर्घटयितुमलं कामिभिः—शि० ९।८७, अनेन भैमीं घटयिष्यतस्तथा—नै० १।४६, कृथा संधि भीमो विघटयति यूयं घटयत—वेणी० १।१०, भट्टि० ११।११ 2. निकट लाना या रखना, सम्पर्क में लाना, धारण करना—घटयति घनं कण्ठाश्लेषे रसान्न पयोधरौ—रत्न० ३।९, घटय जघने कांचीम्—गीत० १२ 3. निष्पन्न करना, प्रकाशित करना, कार्यान्वित करना—तटस्थः स्वानर्थान् घटयति च मौनं च भजते—मा० १।१४, (अभिमतम्) आनीय झटिति घटयति—रत्न० १।६ 4. रूप देना, गढ़ना, आकार देना, निर्माण करना, बनाना—एवमभिधाय वैनतेयम् अघटयत्—पंच १, कान्ते कथं घटितवानुपलेन चेतः शृंगार० ३, घटय भुजबन्धनम्—गीत० १० 5. प्रणोदित करना, उकसाना स्नेहौघो घटयति मां तथापि वक्तुम्—भट्टि० १०।७३ 6. मलना, स्पर्श करना, प्र—, 1. व्यस्त होना, काम में लगना—भट्टि० २१।१७ 2. आरम्भ करना, शुरू करना—भट्टि० १४।७७ वि—1. वियुक्त होना, अलग होना 2. बिगड़ना, बर्बाद होना, रुक जाना, ठहर जाना, बन्द कर देना—प्रेर० अलग २ करना, तोड़ना, सम्—मिलाना, ii (चुरा० उभ०—घाटयति, घाटित) 1. चोट मारना, क्षति पहुँचाना, मार डालना 2. मिलाना, जोड़ना, इकट्ठा करना, संग्रह करना, उद्—, खोलना, तोड़ कर खोलना कपाटमुद्घाटयति—मृच्छ० ३, निरयनगरद्वारमुद्घाटयन्ती—भर्तृ० १।६३।

घटः [घट्+अच्] 1. मिट्टी का मटका, घड़ा, मर्तबान, पानी देने का पात्र—कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जलम्—भर्तृ० २।४९ 2. कुम्भ राशि 3. हाथी का मस्तक 4. कुम्भक प्राणायाम 5. २० द्रोण के बराबर तोल 6. स्तम्भ का एक अंश। सम०—**आटोपः** रथ या कुर्सी आदि को पूरा ढकने का कपड़ा,—**उद्भवः**,—**जः**, —**योनिः**—**सम्भवः** अगस्त्य मुनि के विशेषण —**ऊधस्** (स्त्री०) गाय जिसकी औड़ी दूध से भरी हो—गाः कोटिशः स्पर्शयता घटोघ्नीः—रघु० २।४९, —**कर्परः** 1. कवि का नाम 2. ठीकरा, बर्तन का टुकड़ा—जीयेय येन कविना यमकैः परेण तस्मै वहेयमुदकं घटकर्परेण—घट० २२,—**कारः**,—**कृत्** (पुं०) कुम्हार,—**ग्रहः** पानी भरने वाला,—**दासी** कुटनी तु० कुम्भदासी,—**पर्यसनम्** पतित व्यक्ति का अन्त्येष्टि संस्कार करना (जो अपने इस जीवन में अपनी जाति में फिर सम्मिलित होना न चाहता हो),—**भेदनकम्** बर्तन बनाने का एक उपकरण, —**राजः** पक्की मिट्टी का जलपात्र,—**स्थापनम्** दुर्गा के रूप में जल-कलश की स्थापना।

घटक (वि०) [घट्+णिच्+ण्वुल्] 1. प्रयास करने वाला प्रयत्नशील—एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये—भर्तृ० २।७४ 2. प्रकाशित करने वाला, निष्पन्न करने वाला 3. सारभूत अंश बनाने वाला, अवयव, उपादान, —**कः** 1. वह वृक्ष जिसके फूल दिखाई न देकर फल ही लगे 2. सगाई, विवाह तै कराने वाला, एक अभिकर्ता जो वंशावली मिला कर विवाह-सम्बन्ध तै कराये 3. वंशावली का जानने वाला।

घटनम्—**ना** [घट्+ल्युट्] 1. प्रयास, प्रयत्न 2. होना, घटित होना 3. निष्पन्नता, प्रकाशन, कार्यान्वयन जैसा कि 'अघटितघटना' में 4. मिलाना, एकता, एक स्थान पर मिलाना, जोड़—तप्तेन तप्तमयसा घटनाय योग्यम्—विक्रम० २।१६, देहद्वयार्धघटनारचितम्—का० २३९ 5. बनाना, रूप देना, आकार देना।

घटा [घट्+अङ्+टाप्] 1. चेष्टा, प्रयत्न, प्रयास 2. संख्या, टोली, जमाव प्रलयघनघटा—का० १११, कौशिकघटा—उत्तर० २।२९, ५।६, मातंगघटा—शि० १।६४ 3. सैनिक कार्य के लिए एकत्र हुई हाथियों की टोली 4. सभा।

घटिकः [घट+ठन्] घड़नई के सहारे नदी पार करने वाला, —**कम्** नितम्ब, चूतड़।

घटिका [घटी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. एक छोटा घड़ा, करवा, छोटा मिट्टी का बर्तन—नार्यः श्मशानघटिका इव वर्जनीयाः—पंच० १।१९२, एष क्रीडति कूपयन्त्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः—मृच्छ० १०।५९ 2. २४ मिनट का समय, एक घड़ी 3. एक जल घट जिससे दिन की घड़ियाँ गिनी जाती थीं 4. टखने के ऊपर का तथा पिण्डली से नीचे का पतला भाग।

घटिन् (पुं०) [घट+इनि] कुंभ राशि।

घटिन्धम (वि०) [घटी+ध्मा+खश्+मुम्, धमादेशः] बर्तन में फूंक मारने वाला,—मः कुम्हार।

घटिन्धय (वि०) [घटी+धेट्+खश्, मुम्, ह्रस्वः] जो घड़ा भर (पानी) पीता है।

घटी [घट+ङीप्] 1. छोटा घड़ा 2. २४ मिनट के बराबर समय की नाप 3. छोटा जल-घड़ा जिससे दिन की घड़ियाँ गिनने का कार्य लिया जाय। सम०—**कारः** कुम्हार,—**ग्रह,—ग्राह** (वि०) दे० 'घटग्रह',—**यन्त्रम्** 1. पानी ऊपर उठाने वाली रहट की घड़िया, कुएँ पर पड़ा हुआ रस्सी-डोल—दे० अरघट्ट 2. दिन का समय जानने का एक साधन।

घटोत्कचः [?] हिडिंबा नाम की राक्षसी से उत्पन्न भीम का एक पुत्र (यह बहुत बलवान् पुरुष था, कौरव और पाण्डवों के युद्ध में यह बहुत वीरतापूर्वक पाण्डवों की ओर से लड़ा परन्तु इन्द्र से प्राप्त शक्ति द्वारा कर्ण के हाथों मारा गया—तु० मुद्रा० २।१५)।

घट्ट (भ्वा० आ०—घट्टते—बहुधा चुरा० उभ०—घट्टयति—ते, घट्टित) 1. हिलाना, हरकत देना—जैसे 'वायुघट्टिता लताः' में 2. स्पर्श करना, मलना, हाथों से मलना—विटजननखघट्टितेव वीणा—मृच्छ० १।२४, भट्टि० १४।२ 3. चिकनाना, सहलाना 4. ईर्ष्या-द्वेष की भावना से बोलना 5. बाधा पहुँचाना, **अव—**, खोलना, **परि—**, प्रहार करना—शि० ९।६४, **वि—**, 1. हड़ताल कर देना, तितर-बितर करना, बखेरना, उड़ा देना—शि० १।६४, भर्तृ० ३।५४ 2. मलना, घिसना, रगड़ना—कारण्डवाननविघट्टितवीचिमालाः ऋतु० ३।८, ४।९, कु० १।९, कि० ८।४५, शि० ८।२४, १३।४१, **सम्—**1. थपथपाना 2. इकट्ठा करना, मिलाना 3. एकत्र करना, संचय करना 4. रगड़ना, घिसना, दबाना—रघु० ६।७३।

घट्टः [घट्ट्+घञ्] 1. घाट—नदी के तट से पानी तक बनी सीढ़ियाँ 2. हिलना-जुलना, आन्दोलन 3. चुंगी घर। सम०—**कुटी** चुंगी घर, °प्रभातन्याय न्याय के नी० दे०,—**जीविन्** (पुं०) घाट से प्राप्त महसूल से अपना निर्वाह करने वाला 2. वर्णसंकर (वैश्यायां रजकाज्जातः)।

घट्टना [घट्ट्+युच्+टाप्] 1. हिलाना, डुलाना, हरकत देना, आन्दोलन करना 2. रगड़ना 3. जीविका वृत्ति, अभ्यास, व्यवसाय, पेशा।

घण्टः [घण्ट्+अच्] एक प्रकार का व्यंजन, चटनी।

घण्टा [घण्ट्+अट्+टाप्] 1. घंटी, 2. लोहे का या कांसे का गोल पट्ट जिसे समय की सूचना के लिए मुंगरी से पीट कर बजाते हैं। सम०—**अगारम्** घण्टा घर,—**कलकः,—कम्** घण्टियों से युक्त प्लेट, **ताडः** घंटा बजाने वाला,—**नादः** घण्टे की आवाज,—**पथः** गांव की मुख्य सड़क, राजमार्ग, मुख्य मार्ग (दशधन्वन्तरो राजमार्गो घण्टापथः स्मृतः कौटि०),—**शब्दः** 1. कांसा 2. घंटे की आवाज।

घण्टिका [घण्टा+ङीप्+कन्, ह्रस्वः] छोटी घंटियाँ, घूंघरू।

घण्टुः [घण्ट्+उण्] 1. हाथी की छाती पर बंधी एक पट्टी जिसमें घूंघरू लगे होते हैं 2. ताप, प्रकाश।

घण्डः [घण् इति शब्दं कुर्वन् डीयते—घण्+डी+ड] मधुमक्खी।

घन (वि०) [हन् मूर्तौ अप् घनादेशश्च—तारा०] 1. संहत, दृढ़, कठोर, ठोस—संजातश्च घनाघनः—मा० ९।३९, नासा घनास्थिका—याज्ञ० ३।३९, रघु० ११।१८ 2. सघन, घनिष्ठ, घिनका—घनविरलभावः—उत्तर० २।२७, रघु० ८।८१, अमरु ५७ 3. गठा हुआ, पूर्ण, पूर्णविकसित (जैसे कि कुच)—घटयति सुघने कुचयुगगगने मृगमदरुचिरुषिते—गीत० ७, अगुरुचतुष्कं भवति गुरू द्वौ घनकुचयुग्मे शशिवदनाऽसौ—श्रुत० ८, भर्तृ० १।८, अमरु २८ 4. (शब्द की भांति) गम्भीर—मा० २।१२ 5. निरन्तर, स्थायी 6. अभेद्य 7. बड़ा, अत्यधिक, प्रचंड 8. पूर्ण 9. शुभ, भाग्यशाली,—**नः** बादल—घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः—श० ७।३०, घनरुचिरकलापो निःसपत्नोऽस्य जातः-विक्रम० ४।१० 2. लोहे का मुद्गर, गदा 3. शरीर 4. (गणित में) संख्याद्योतक घन (किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणा करने से उपलब्ध गुणनफल) 5. विस्तार, प्रसार 6. संग्रह, समुच्चय, परिमाण, राशि, जमाव या समवाय 7. अभरक,—**नम्** 1. झांझ, घण्टी, घण्टा 2. लोहा 3. टीन 4. चमड़ी, त्वचा, वल्कल। सम०—**अत्ययः,—अन्तः** बादलों का लोप, वर्षाऋतु के पश्चात् आने वाली ऋतु, शरद्,—**अम्बु** (नपुं०) वर्षा,—**आकरः** वर्षा ऋतु,—**आगमः** बादलों का आगमन, वर्षाऋतु—घनागमः कामिजनप्रियः प्रिये—ऋतु० २।१,—**आमयः** छुहारे का वृक्ष,—**आश्रयः** पर्यावरण, अन्तरिक्ष,—**उपलः** ओले,—**ओघः** बादलों का एकत्र होना, —**कफः** ओले,—**कालः** वर्षाऋतु,—**गर्जितम्** 1. मेघध्वनि, बादलों की गड़गड़ाहट या गरज, बिजली की कड़क 2. गंभीर और ऊँची दहाड़ या गरज,—**गोलकः** चांदी सोने की मिलावट,—**जम्बालः** गाढ़ी दलदल,—**तालः** एक प्रकार का पक्षी, चातक, सारंग,—**तोलः** चातक पक्षी,—**नाभिः** धूआँ (यह बादलों का मुख्य अवयव समझा जाता है—मेघ० ५),—**नीहारः** गाढ़ा कोहरा, सघन तुषार,—**पदवी** 'बादलों का मार्ग' अन्तरिक्ष, आकाश—कार्मार्द्धुर्षनपदवीमनेकसंख्यैः—कि० ५।३४,—**पाषण्डः** मोर,—**फलम्** (ज्या० में) किसी वस्तु की लंबाई-चौड़ाई और मोटाई का गुणनफल

अथवा ठोसपन,—**मूलम्** (गणित में) घन-राशि का मूल अंक,—**रसः** 1. गाढ़ा रस 2. अर्क गाढ़ा 3. कपूर 4. जल,—**वर्गः** घन का वर्ग, (गणित में) छठा बात,—**वर्त्मन्** (नपुं०) आकाश—घनवर्त्म सहस्रधेव कुर्वन्—कि० ५।१७,—**वल्लिका,—वल्ली** बिजली,—**वासः** एक प्रकार का कद्दू, कुम्हड़ा,—**वाहनः** 1. शिव 2. इन्द्र,—**श्याम** (वि०) 'बादल की भांति काला' गहरा काला, पक्का रंग, (—**मः**) 1. राम और कृष्ण का विशेषण, —**समयः** वर्षाऋतु,—**सारः** 1. कपूर—घनसारनीहारहार—दश० १, (श्वेत पदार्थों में उल्लेख) 2. पारा 3. जल,—**स्वनः** मेघगर्जन,—**हस्तसंख्या** (गणित में) खुदाई की मिट्टी आदि नापने की माप (एक हाथ लंबा, एक हाथ मोटा या चौड़ा और एक हाथ ऊँचा ढेर)।

घनाघनः [हन्+अच्, हन्तेर्घत्वम् दित्वमभ्यासस्य आक् च] 1. इन्द्र 2. चिड़चिड़ा, या मदमस्त हाथी 3. पानी से भरा हुआ या बरसाने वाला बादल।

घरट्टः [घरं सेकम् अट्टति अतिक्रामति—घर+अट्ट्+अण्, शक० पररूपम्] खरांस, घराट, चक्की।

घर्घर (वि०) [घर्घ+रा+क] 1. अस्पष्ट, घर्घराट करने वाला, गरगर शब्द करने वाला—घर्घररवा पारस्मशानं सरित्—मा० ५।१९ 2. कलकल ध्वनि करने वाला, (बादलों की भांति) गड़गड़ शब्द करने वाला,—**रः** 1. अस्पष्ट कलकल ध्वनि, मन्द बड़बड़ या गरगर की ध्वनि 2. कोलाहल, शोर 3. दरवाजा, द्वार 4. हंसी, अट्टहास 5. उल्लू 6. तुषाग्नि।

घर्घरा,—री [घर्घर+टाप्, ङीप् वा] 1. घुंघरू जो आभूषण की भांति काम आवें 2. घुंघरुओं को गर्गर ध्वनि 3. गंगा 4. एक प्रकार की वीणा।

घर्घरिका [घर्घर+ठन्+टाप्] 1. आभूषण की भांति प्रयुक्त होने वाले घुंघरू 2. एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

घर्घरितम् [घर्घर+इतच्] सूअर के घुरघुराने का शब्द।

घर्मः [घरति अङ्गात्-घृ+मक् नि० गुणः] 1. ताप, गर्मी—हि० १।९७ 2. गर्मी की ऋतु, निदाघ—निःश्वासहार्यांशुकमाजगाम घर्मः प्रियावेशमिवोपदेष्टुम्—रघु० १६।४३ 3. स्वेद, पसीना—शि० १।५८ 4. कड़ाह, उबालने का पात्र। सम०—**अंशुः** सूर्य—श० ५।१४,—**अन्तः** वर्षाऋतु अम्बु,—**अम्भस्** (नपुं०) स्वेद, पसीना, श० १।३०, मा० १।३७,—**चर्चिका** घाम, पित्त, घमौरी, (दबे हुए पसीने और गर्मी से शरीर पर पैदा होने वाले छोटे-छोटे दाने),—**दीधितिः** सूर्य—रघु० ११।६४,—**द्युतिः**—सूर्य—कि० ५।४१,—**पयस्** (नपुं०) स्वेद, पसीना—शि० ९।३५।

घर्षः, घर्षणम् [घृष्+घञ्, ल्युट् वा] 1. रगड़, घिसर 2. पीसना, चूरा करना।

घस् (भ्वा० अदा०—पर०—घसति, घस्ति, घस्त) खाना, निगलना, (यह अधूरी धातु है—'अद्' धातु के कुछ लकारों में ही इसके रूप बनते हैं)।

घस्मर (वि०) [घस्+क्मरच्] 1. खाऊ, पेटू—दावानलो घस्मरः—भामि० १।३४ 2. निगल जाने वाला, हड़प करने वाला—द्रुपदसुतचमूघस्मरो द्रौणिरस्मि—वेणी० ५।३६।

घस्त्र (वि०) [घस्+रक्] पीड़ाकर, क्षतिकर,—**स्त्रः** 1. दिन—घस्रो गमिष्यति भविष्यति सुप्रदोषम्—सुभा० 2. सूर्य—महावी० ६।८,—**स्त्रम्** केसर, जाफरान।

घाटः,—टा [घट्+अच्, स्त्रियां टाप्] गर्दन का पिछला भाग।

घाण्टिकः [घंटा+ठक्] 1. घंटी बजाने वाला 2. भाट या चारण 3. धतूरे का पौधा।

घातः [हन्+णिच्+घञ्] 1. प्रहार, आघात, खरोंच, चोट ज्याघात—श० ३।१३, नयनशरघात—गीत० १०, इसी प्रकार पार्ष्णिघात, शिरोघात आदि 2. मार डालना, चोट पहुँचाना, संहार करना, वध करना—वियोगो मुग्धाक्ष्याः स खलु रिपुघातावधिरभूत्—उत्तर० ३।४४, पशुघातः—गीत० १, याज्ञ० २।१५९, ३।२५२ 3. बाण 4. गुणनफल। सम०—**चन्द्रः** अशुभ राशि पर स्थित चन्द्रमा,—**तिथिः** अशुभ चान्द्र दिन,—**नक्षत्रम्** अशुभ नक्षत्र,—**वारः** अशुभ दिन,—**स्थानम्** बूचड़खाना, वधस्थान।

घातक (वि०) [हन्+ण्वुल्] मारनेवाला, संहार करने वाला, हत्यारा, संहारक, क़ातिल, वध करने वाला।

घातन (वि०) [हन्+णिच्+ल्युट्] हत्यारा, क़ातिल,—**नम्** 1. प्रहार करना, मार डालना, हत्या करना, वध करना, (यज्ञ में) पशु बलि देना।

घातिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [हन्+णिच्+णिनि] 1. प्रहार करने वाला, मारने वाला 2. (पक्षियों को) पकड़ने वाला या मारने वाला 3. विनाशकारी। सम०—**पक्षिन्,—विहगः** बाज़, श्येन।

घातुक (वि०) (स्त्री०—की) [हन्+णिच्+उकञ्] 1. मारने वाला, संहारकारी, अनिष्टकर, चोट पहुँचाने वाला 2. क्रूर, नृशंस, हिंस्र।

घात्य (वि०) [हन्+णिच्+ण्यत्] मारे जाने के योग्य, वह व्यक्ति जिसे मार देना चाहिए।

घारः [घृ+घञ्] छिड़कना, तर करना।

घार्तिकः [घृतेन निर्वृत्तः—ठञ्] घी में तले हुए पूड़े (विशेषतः जिनमें छिद्र होते हैं) (इन्हीं को देखकर पंचतंत्र में मूर्ख पंडितों ने कहा था—छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति)।

घासः [घस्+घञ्] 1. आहार 2. गोचरभूमि या चरागाह का घास—घासाभावात्'-पंच० ५, घासमुष्टि परगवे

दद्यात् संवत्सरं तु यः—महा०। सम०—कुन्दम्, —स्थानम् चरागाह।

घु (भ्वा० आ०—घवते, घुत) शब्द करना, हल्ला मचाना।

घुः [घु+क्विप्] कबूतर की गुटर गूं।

घुट् i (तुदा० पर० घुटति, घुटित) 1. फिर प्रहार करना, बदला लेने के लिए प्रहार करना, मुक़ाबला करना 2. विरोध करना, ii (भ्वा० आ०—घोटते) 1. वापिस आना, लौटना 2. वस्तु विनिमय करना, अदला-बदली करना।

घुटः, घुटिः,—टी, (स्त्री०) घुटिकः,—का [घुट्+अच्, इन् वा, घुटि+ङीष्, कन् स्त्रियां टाप् वा] टखना।

घुण् i (भ्वा० आ०, तुदा० पर०—घोणते, घुणति, घुणित) लुढ़कना, चक्कर खाना, लड़खड़ाना, अटेरना, ii (भ्वा० आ०) लेना, प्राप्त करना।

घुणः [घुण+क] लकड़ी में पाया जाने वाला विशेष प्रकार का कीड़ा। सम०—अक्षरम्,—लिपिः (स्त्री०) लकड़ी या पुस्तक के पत्रों में कीड़ों के द्वारा बनाई हुई रेखाएँ जो कुछ-कुछ अक्षरों जैसी प्रतीत होती हैं। °न्याय दे० 'न्याय' के अन्तर्गत।

घुण्टः, घुण्टकः, घुण्टिका [घुण्ट्+क, घुण्ट+कन्, घुण्टक+टाप् इत्वम्] टखना।

घुण्डः [घुण्+ड, नि०] भौंरा।

घुर् (तुदा० पर०—घुरति, घुरित) 1. शब्द करना, कोलाहल करना, खुर्राटे भरना, फुफकारना, (सूअर कुत्ते आदि का) घुरघुराना—कः कः कुत्र न घुर्घुरायितघुरीघोरो घुरेच्छूकरः—का० ७ 2. डरावना बनना, भयंकर होना 3. दुःख में चिल्लाना।

घुरी [घुर्+कि+ङीप्] नाथना, (विशेषकर सूअर की थूथन)—घुर्घुरायितघुरीघोरो घुरेच्छूकरः - काव्य० ७।

घुर्घुरीः [घुर् इत्यव्यक्तं घुरति—घुर्+घुर्+क्] 1. चौलर, चिल्लड़ (एक प्रकार का कीड़ा) 2. खुर्राटे भरना, गुर्राना, सूअर आदि जानवर के गले से निकलने वाली आवाज़।

घुर्घुर [घुर्घुर+अच्+ङीष्] सूअर की आवाज़।

घुलघुलारवः ['घुलघुल' इत्यव्यक्तमारौति—घुलघुल+आ+रु+अच्] एक प्रकार का कबूतर।

घुष् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—घोषति घोषयति -ते, घुषित, घुष्ट, घोषित) 1. शब्द करना, कोलाहल करना 2. ऊँचे स्वर से चिल्लाना, सार्वजनिक रूप से घोषणा करना—स स पापादृते तासां दुष्यन्त इति घुष्यताम् —श० ६।२२, घोषयतु मन्मथनिदेशम्—गीत० १०, इति घोषयतीव डिंडिमः करिणोहस्तिपकाहतः क्वणन् —हि० २।८६, रघु० ९।१०, आ—, उच्च स्वर से ोना, सार्वजनिक रूप से घोषणा करना—भट्टि० ३।२। उद्—; उच्च स्वर से घोषणा करना, सार्वजनिक रूप से घोषणा करना, ii (भ्वा०—आ०—घुषते) सुन्दर या उज्ज्वल होना।

घुसृणम् [घुष्+ऋणक्, पृषो०] केसर, ज़ाफ़रान—यत्र स्त्रीणां मसृणघुसृणालेपनोष्णा कुचश्रीः—विक्रम० १८।३१।

घूकः [घू इत्यव्यक्तं कायति—घू+कै+क] उल्लू। सम० —अरिः कौवा।

घूर्ण् (भ्वा० आ० —तुदा० पर०—घूर्णते, घूर्णति, घूर्णित) इधर-उधर लुढ़कना, इधर-उधर घूमना, चक्कर काटना, मुड़ना, हिलाना, लिपटना, लड़खड़ाना —योधितामतिमदेन जुघूर्णविभ्रमातिशयपुंषि वपूंषि —शि० १०।३२, भयात्केचिदघूर्णिषुः—भट्टि० १५।३२, ११८, शि० ११।१८ अद्यापि तां सुरतजागरघूर्णमानां—चौर० ५, प्रेर०—घूर्णति—ते हिलाना, अटेरना या लपेटना—नयनान्यरुणानि घूर्णयन्—कु० ४।१२, शि० २।१६, भर्तृ० १।८९, (आ, तथा वि उपसर्ग के लग जाने पर भी धातु का वही अर्थ रहता है)।

घूर्ण (वि०) [घूर्ण+अच्] हिलाने वाला, इधर-उधर चलने-फिरने वाला। सम०—वायुः बवण्डर।

घूर्णनम्,—ना [घूर्ण+ल्युट्]—हिलाना-डुलाना, लपेटना, चक्कर खाना, मुड़ना, घूमना—मौलिघूर्णनचलत् —गीत० ९, घूर्णनामात्रपतनभ्रमणादर्शनादिकृत्—सा० द०।

घृ i (भ्वा० पर० -घरति, घृत) छिड़कना। ii (चुरा० उभ०—घारयति—ते, घारित) छिड़काव करना, गीला करना, तर करना, अभि—, छिड़कना, आ—, छिड़काव करना।

घृण् (तना० पर०—घृणोति, घृण्ण) चमकना, जलना।

घृणा [घृ+नक्+टाप्] दया, तरस, सुकुमारता—तां विलोक्य वनितावधे घृणां पत्रिणा सह मुमोच राघवः —रघु० ११।१७, ९।८१, कि० १।११३ 2. ऊब, अरुचि, घिन—तत्याज तोषं परपुष्टघुष्टे घृणां च वीणाक्वणिते वितेने—नै० ३।६०, १।२०, रघु० ११।६५ 3. झिड़की, निन्दा।

घृणालु (वि०) [घृणा+आलुच्] सकरुण, दयापूर्ण, मृदु-हृदय।

घृणिः [घृ+नि, नि०] 1. गर्मी, धूप 2. प्रकाश की किरण 3. सूर्य 4. लहर (नपुं०) जल। सम०—निधिः सूर्य।

घृतम् [घृ+क्त] 1. घी, ताया हुआ मक्खन—(सर्पिर्विलीनमाज्यं स्यात् घनीभूतं घृतं भवेत्—सा०) 2. मक्खन 3. जल। सम०—अक्तः—अचिः (पुं०) दहकती हुई आग,—आहुतिः (स्त्री०) घी की आहुति,—आह्वः

सरल नामक वृक्षविशेष,—उदः 'घी का समुद्र' सात समुद्रों में से एक,—ओदनः घी से युक्त उबले हुए चावल,—कुल्या घी की नदी,—दीधितिः अग्नि,—धारा घी की अविच्छिन्न धार, पूरः,—वरः एक प्रकार की मिठाई,—लेखनी घी का चम्मच।

घृताची [घृत+अञ्चु+क्विप्+ङीप्] 1. रात 2. सरस्वती 3. एक अप्सरा (इन्द्र के स्वर्ग की मुख्य अप्सराएँ निम्नांकित हैं—घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा, सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः)। सम०—गर्भसंभवा बड़ी इलायची।

घृष् (भ्वा० पर०—घर्षति, घृष्ट) 1. रगड़ना, घिसना—अद्यापि तत्कनककुण्डलघृष्टमास्यम्—चौर० ११, पंच० १।१४४ 2. कूंची करना, परिष्कृत करना (मांजना), चमकाना 3. कुचलना, पीसना, चूरा करना—द्रौपद्या ननु मत्स्यराजभवने घृष्टं न किं चन्दनम्—पंच० ३।१७५ 4. होड़ करना, प्रतिद्वन्द्वी होना (जैसा कि 'संघृष्' में) उद्—, खुरचना,—चूडामणिभिरुद्घृष्टपादपीठम् महीक्षिताम्—रघु० १७।२८, सम्—प्रतिद्वन्द्विता करना, होड़ाहोड़ी करना, प्रतिस्पर्धा करना—स प्रयोगनिपुणैः प्रयोक्तृभिः संजघर्ष सह मित्रसंनिधौ—रघु० १९।३६ 2. रगड़ना, खुरचना।

घृष्टिः [घृष्+क्तिच्] सूअर (स्त्री०) 1. पीसना, चूरा करना, खुरचना 2. होड़ाहोड़ी, प्रतिद्वन्द्विता, प्रतियोगिता।

घोटः, घोटकः [घुट्+अच्, ण्वुल् वा] घोड़ा। सम०—अरिः भैंसा।

घोटी, घोटिका [घोट+ङीष्, घुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] घोड़ी, सामान्य अश्व—आटोकसेऽङ्क करिघोटि पदातिजुषि वाटिभुवि क्षितिभुजाम्—अस्व० ५।

घोण (न) सः [=गोनसः, पृषो०] एक प्रकार रेंगने वाला जन्तु।

घोणा [घुण्+अच्+टाप्] 1. नाक, घोणोन्नतं मुखम्—मृच्छ० ९।१६ 2. घोड़े की नथुना, (सूअर की) थूथन—घुर्घुरायमाणघोरघोणेन—का० ७८।

घोणिन् (पुं०) [घोणा+इनि] सूअर।

घोण्टा [घुण्+ट+टाप्] उन्नाव का वृक्ष।

घोर (वि०) [घुर्+अच्] 1. भयंकर, डरावना, भीषण, भयानक,—शिवाघोरस्वनां पश्चाद्बुबुधे विकृतेति ताम्—रघु० १२।३९, तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव—महा०, घोरं लोके विततमयशः—उत्तर० ७।६, मनु० १।५० १२।५४ 2. हिंस्र, प्रचण्ड,—रः शिव,—रा रात,—रम् 1. संत्रास, भीषणता, 2. विष। सम०—आकृति,—दर्शन (वि०) देखने में डरावना, भयंकर विकराल,—घुष्यम् कांसा,—रासनः,—रासिन्,—वाशनः,—वाशिन् (पुं०) गीदड़,—रूपः शिव का विशेषण।

घोलः,—लम् [घुर्+घञ्, रस्य लः] मट्ठा, घुला हुआ दही जिसमें पानी न हो (तत्तु स्नेहमजलं मथितं घोलमुच्यते—सुश्रु०)

घोषः [घुष्+घञ्] 1. कोलाहल, हल्ला, हंगामा—स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्—भग० १।१९, इसी प्रकार रथ°, तुर्य°, शंख° आदि 2. बादलों की गरज—स्निग्धगम्भीरघोषम्—मेघ० ६४ 3. घोषणा 4. अफवाह, जनश्रुति 5. ग्वाला—हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान्—रघु० १।४५ 6. झोपड़ी, ग्वालों की बस्ती—गङ्गायां घोषः—काव्य० २, घोषादानीय—मृच्छ० ७ 7. (व्या० में) घोषव्यंजनों के उच्चारण में प्रयुक्त घोषध्वनि 8 कायस्थ,—षम् कांसा।

घोषणम्,—णा [घुष्+ल्युट्] प्रख्यापन, प्रकथन, उच्चस्वर से बोलना, सार्वजनिक एलान—व्याघातो जयघोषणादिषु बलादस्मद्बलानां कृतः—मुद्रा० ३।२६, रघु० १२।७२।

घोषयित्नुः [घुष्+णिच्+इत्नुच्] 1. ढिंढोरची, भाट, हरकारा 2. ब्राह्मण 3. कोयल।

घ्न (वि०) (स्त्री०—घ्नी) [केवल समास के अन्त में प्रयोज्य] [हन्+क, स्त्रियां ङीप्] वध करने वाला विनाशक, दूर करने वाला, चिकित्सक—ब्राह्मणघ्नः, बालघ्नः, वातघ्नः, पित्तघ्नः, वञ्चित करने वाला, दूर करने वाला, पुण्यघ्न, धर्मघ्न आदि।

घ्रा (भ्वा० पर० जिघ्रति, घ्रात—घ्राण) 1. सूंघना, पता लगाना, सूंघ का प्रत्यक्ष ज्ञान करना—स्पृशन्नपि गजो हन्ति जिघ्रन्नपि भुजङ्गमः—हि० ३।१४, भामि० १।९९, चुंबन करना—प्रेर०—(घ्रापयति) सुंघवाना—भट्टि० १५।१०९, (अव, आ, उप, वि, सम् आदि उपसर्ग लगने पर भी इस धातु के अर्थों में विशेष अन्तर नहीं आता—गन्धमाघ्राय चोर्व्याः—मेघ० २१, आमोदमुपजिघ्रन्तौ—रघु० १।४३, दे० भट्टि० २।१० १४।१२, रघु० ३।३, १३।७०, मनु० ४।२०९ भी)।

घ्राण (भू० क० कृ०) [घ्रा+क्त] सूंघा,—णम् सूंघने की क्रिया,—घ्राणेन सूकरो हन्ति—मनु० ३।२४१ 2. गंध, बू 3. नाक—बुद्धीन्द्रियाणि चक्षुःश्रोत्रघ्राणरसनात्वगाख्यानि—सां० का० २६, ऋतु० ६।२७, मनु० ५।१३५। सम०—इन्द्रियम् सूंघने की इन्द्रिय, नाक—नासाप्रवर्ति घ्राणम्—तर्क सं०,—चक्षुस् (वि०) 'जो आंखों का काम नाक से लेता है'—अर्थात् अंधा (जो सूंघ कर अपने मार्ग का ज्ञान प्राप्त करता है),—तर्पण (वि०) नाक को सुहावना, या सुखकर खुशबूदार, सुगन्धयुक्त (—णम्) खुशबू, सुगन्ध।

घ्रातिः (स्त्री०) [घ्रा+क्तिन्] सूंघने की क्रिया—घ्रातिरघ्रेयमद्ययोः—मनु० ११।६८ 2. नाक।

चः [चण् (चि)+ड] 1. चन्द्रमा 2. कछुआ 3. चोर (अव्य०) निम्नांकित अर्थों को बतलाने वाला अव्यय —1. संयोजन (और, भी, तथा, इसके अतिरिक्त) —शब्द या उक्तियों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त किया जाता है; (इस अर्थ में यह उस प्रत्येक शब्द या उक्ति के साथ प्रयुक्त होता है जिसे मिलाता है या इस प्रकार मिले हुए अन्तिम शब्द या उक्ति के पश्चात् रक्खा जाता है, परन्तु यह वाक्य के आरम्भ में कभी प्रयुक्त नहीं किया जाता है) - मनो निष्ठाशून्यं भ्रमति च किमप्यालिखति च—मा० १।३१, तौ गुरुर्गुरुपत्नी च —रघु० १।५७, मनु० १।६४, ३।५, कुलेन कान्त्या वयसा नवेन गुणैश्च तैस्तैर्विनयप्रधानैः—रघु० ६।७९, मनु० १।१०५, ३।११६ 2. वियोजन (परन्तु, तथापि, तो भी)—शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः —श० १।१६ 3. निश्चय, निर्धारण (निस्सन्देह, निश्चय ही, ठीक, बिलकुल, सर्वथा)— अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोः—गण०, ते तु यावंत एवाजौ तावांश्च ददृशे स तैः- रघु० १२।४५ 4. शर्त (यदि =चेत्) जीवितुं चेच्छसे (=इच्छसे चेत्) मूढ हेतुं मे गदतः शृणु—महा०, लोभश्चास्ति (अस्ति चेत्) गुणेन किम्—भर्तृ० २।४५, अने० पा० 5. यह प्रायः पादपूर्ति के लिए भी प्रयुक्त होता है—भीमः पार्थस्तथैव च —गण० (कोशकार उपर्युक्त अर्थों के साथ 'च' के निम्नांकित अर्थ और बतलाते हैं जो कि संयोजन या समुच्चय के सामान्य अर्थों के अन्तर्गत हैं:–1. अन्वाचय —अर्थात् मुख्य तथ्य को किसी गौण तथ्य से मिलाना —भो भिक्षामट गां चानय, दे०. अन्वाचय 2. समाहार अर्थात् समुच्चयार्थक संबंध– यथा पाणी च पादौ च पाणिपादम् - 3. इतरेतरयोग—अर्थात् पारस्परिक संयोग—यथा प्लक्षश्च न्यग्रोधश्च प्लक्षन्यग्रोधौ 4. समुच्चय—अर्थात् सब मिलाकर यथा पचति च पठति च); दो उक्तियों के साथ च की बार२ आवृत्ति होती है 1. 'एक ओर—दूसरी ओर' 'यद्यपि—तथापि' अर्थ -विरोध को प्रकट करने के लिए—न सुलभा सकलेन्दुमुखी न सा किमपि चेदमनङ्ग विचेष्टितम् —विक्रम० २।९, ४।३, रघु० १६।७ या 2. दो बातों का एक साथ होना—या अव्यवहित घटना को प्रकट करने के लिए (ज्योंही—त्योंही)– ते च प्रापुरुदन्वन्तं बुबुधे चादिपूरुषः—रघु० १०।६, ३।४०, कु० ३।५८, ६६, श० ६।७, मा० ९।२९ ।

चक् (भ्वा० उभ०—चकति—ते, चकित) 1. तृप्त होना, सन्तुष्ट होना 2. प्रतिरोध करना, मुक़ाबला करना ।

चकास् (अदा० पर० (विरलतः—आ०) चकास्ति—स्ते, चकासित) 1. चमकना, उज्ज्वल होना -गण्डश्चण्डि चकास्ति नीलनलिनश्रीमोचनं लोचनम्—गीत० १०, चकासतं चारुचमूरुचर्मणा—शि० १।८, भट्टि० ३।१७ 2. (आलं०) प्रसन्न होना, समृद्ध होना—वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासते—कि० १।१७, प्रेर० चमकाना, प्रकाशित करना—शि० ३।६, चि० चमकना, उज्ज्वल होना ।

चकित (वि०) [चक्+क्त] (डर के कारण) 1. थरथराता हुआ, कांपता हुआ, भय°, साध्वस°—मेघ० २७ 2. डराया हुआ, प्रकम्पित, भौचक्का—व्याधानुसारचकिता हरिणीव यासि—मृच्छ० १।१७ अमरु ४६, मेघ० १३ 3. भयभीत, भीरु, सशंक—चकितविलोकितसकल दिशा०—गीत० २, पौलस्त्यचकितेश्वराः (दिशः) —रघु० १०।७३, -तम् (अव्य०) भय से, भौचक्का होकर, संत्रस्त होकर, विस्मय के साथ—चकितमुपैति तथापि पार्श्वमस्य—मोलवि० १।११, सभयचकितम् —गीत० ५, श० ४।४ ।

चकोरः [चक्+ओरन्] पक्षीविशेष, तीतर की जाति का पक्षी (कहते हैं कि चन्द्रमा की किरणें ही इसका आहार है)—ज्योत्स्नापानमदालसेन वपुषा मत्ताश्चकोरांगनाः—विद्धशा०, १।११, इतश्चकोराक्षि विलोकयेति —रघु० ६।५९, ७।२५, स्फुरदधरसीधवे तव वदनचन्द्रमा रोचयति लोचनचकोरम्—गीत० १० ।

चक्रम् [क्रियते अनेन, कृ घञर्थे क नि० द्वित्वम्—तारा०] —गाड़ी का पहिया—चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च—हि० १।१७३ 2. कुम्हार का चाक 3. एक तीक्ष्ण गोल अस्त्र, चक्र (विष्णु का) 4. तेल पेरने का कोल्हू 5. वृत्त, मण्डल—कलापचक्रेषु निवेशिताननम् —ऋतु० २।१४ 6. दल, समुच्चय, संग्रह—शि० २०।१६ 7. राज्य, एकाधिपत्य 8. प्रांत, जिला, ग्राम-समूह 9. वर्तुलाकार सैनिक व्यूह 10. देह के भीतर के 'षट्चक्र', मूलाधार आदि 11. कालचक्र, वर्ष समूह 12. क्षितिज 13. सेना, समूह 14. ग्रन्थ का अध्याय या अनुभाग 15. भँवर 16. नदी का मोड़,—क्रः 1. हंस, चकवा 2. समूह, दल, वर्ग । सम०—अङ्गः 1. टेढ़ी गर्दन वाला हंस 2. गाड़ी 3. चकवा, —अटः 1. बाजीगर, सपेरा 2. दुष्ट, धूर्त, ठग 3. स्वर्णमुद्रा, दीनार,—आकारे,—आकृति (वि०) वर्तुलाकार, गोल,—आयुधः विष्णु का विशेषण, —आवर्तः भँवर वाली या चक्करदार गति,—आह्वः, —आह्वयः चकवा—चक्राह्वं ग्रामकुक्कुटम्—मनु० ५। १२,—ईश्वरः 1. 'चक्रस्वामी' विष्णु का नाम 2. जिले का सर्वोच्च अधिकारी, उपजीविन् (पुं०) तेली, —कारकम् 1. नाखून, 2. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,—गण्डुः गावदुम तकिया,—गतिः (स्त्री०) चक्रा-

कार गति, गोलाई में घूमना,—गुच्छः अशोक वृक्ष, —ग्रहणम्,—णी (स्त्री०) दुर्गप्राचीर, परकोटा, खाई,—चर (वि०) वृत्त में घूमने वाला,— चूडामणिः मुकुट में लगी गोलमणि,— जीवकः,—जीविन् (पुं०) कुम्हार,—तीर्थम् —एक पुण्य स्थान का नाम,—दंष्ट्रः सूअर,—धरः 1. विष्णु का विशेषण—चक्रधरप्रभावः —रघु० १६।५५ 2. प्रभु, प्रान्त का राज्य पाल या शासक 3. गाँव का कलाबाज या बाजीगर,—धारा पहिए का घेरा—नाभिः पहिए की नाहः— नामन् (पुं०) 1. चकवा 2. लोहे की माक्षिक धातु,—नायकः 1. दल का नेता 2. एक प्रकार का सुगंध-द्रव्य,— नेमिः पहिए की परिधि या घेरा – नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण —मेघ० १०९,—पाणि विष्णु का विशेषण,—पादः,— पादकः 1. गाड़ी 2. हाथी, —पालः 1. राज्यपाल 2. सेना के एक प्रभाग का अधिकारी 3. क्षितिज,—बन्धुः,– बान्धवः सूर्य,— बालः—डः, —वालः—लम्,— डम् 1. वृत्त, मंडल 2. संग्रह, वर्ग, समुच्चय, राशि—कैरवचक्रवालम् —भर्तृ० २।७४ 3. क्षितिज, (लः) 1. पुराणों में वर्णित एक पर्वत-शृंखला जो भूमंडल को दीवार की भाँति घेरे हुए तथा प्रकाश व अंधकार की सीमा समझी जाती है 2. चकवा,— भृत् (पुं०) 1. चक्रधारी 2. विष्णु का नाम,—भेदिनी रात, भ्रमः,–भ्रमिः (स्त्री०) खराद सान —आरोप्य चक्रभ्रमिमुष्णतेजास्त्वष्ट्रेव यत्नोल्लिखितो विभाति रघु० ६।३२,—मण्डलिन् (पुं०) साँप की एक जाति,—मुखः सूअर, यानम् पहिये से चलने वाला वाहन,—रदः सूअर,—वर्तिन् (पुं०) 1 सम्राट्, चक्रवर्ती राजा, संसार का प्रभु, समुद्र तक फैले राज्य का स्वामी (आसमुद्रक्षितीश—अमर०) पुत्रमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि— श० १।१२, तव तन्वि कुचावेतौ नियतं चक्रवर्तिनौ, आसमुद्रक्षितीशोऽपि भवान् यत्र करप्रदः—उद्भट; (जहाँ 'चक्रवर्तिन्' शब्द में श्लेष है, वहाँ दूसरा अर्थ है 'आकार प्रकार में चकवे से मिलता जुलता' 'गोल'),—वाकः (स्त्री० —की) चकवा—दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्—मेघ० ८३,—वाटः 1. सीमा, हद 2. दीवट 3. कार्य में प्रवृत्त होना,— वातः बवंडर, तूफान-आँधी, —वृद्धिः ब्याज पर ब्याज, चक्रवृद्धि ब्याज— मनु० ८।१५३, १५६,—व्यूहः सैन्यदल की मंडलाकार स्थापना, —संज्ञम् रांग, (ज्ञः) चकवा,—साह्वयः चकवा,—हस्तः विष्णु का विशेषण।

चक्रक (वि०) [चक्रमिव कायति—कै+क] पहिये के आकार का, मंडलाकार,—कः (तर्क०) मंडल में तर्क करना।

चक्रवत् (वि०) [चक्र+मतुप्; मस्य वः] 1. पहियों वाला 2. मंडलाकार, (पुं०) 1. तेली 2. प्रभु, सम्राट् 3. विष्णु का नाम।

चक्राकी, चक्राङ्की [ब० स०] हंसिनी।

चक्रिका [चक्र+ठन्– टाप् 1. ढेर, दल 2. दुरभिसंधि 3. घुटना।

चक्रिन् (पुं०) [चक्र+इनि] 1. विष्णु का विशेषण—शि० १३।२२ 2. कुम्हार 3. तेली 4. सम्राट्, चक्रवर्ती राजा, निरंकुश शासक 5. राज्यपाल 6. गधा 7. चकवा 8. संसूचक, मुखबिर 9. साँप 10 कौवा 11 एक प्रकार का कलाबाज या बाजीगर।

चक्रिय (वि०) [चक्र+घ] गाड़ी में बैठ कर जाने वाला, यात्रा करने वाला।

चक्रीवत् (पुं०) [चक्र+मतुप्, मस्य वः, नि० चक्रस्य चक्रीभावः] गधा—शि० ५।८।

चक्ष् (अदा० आ०—चष्टे) [आर्धधातुक लकारों में अनियमित] 1. देखना, पर्यवेक्षणा करना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2. बोलना, कहना, बतलाना (संप्र० के साथ), आ—, बोलना, घोषणा करना, वर्णन करना, बयान करना, बतलाना, पढ़ाना, समाचार देना (संप्र० के साथ)—रघु० ५।१९, १२।५५, मनु० ४।५९, ८०, इत्याख्यानविद आचक्षते—मा० २।२, कहना, संबोधित करना—भामि० १।६३ 3. नाम लेना, पुकारना, परि—, 1. घोषणा करना, वर्णन करना 2. गिनना 3. उल्लेख करना 4. नाम लेना, पुकारना—वेदप्रदानादाचार्यं पितरं परिचक्षते - मनु० २।१७१, भग० १७।१३, १७, प्र —, 1. कहना, बोलना, नियम बनाना —स्वजनाश्रु किलातिसंततं दहति प्रतमिति प्रचक्षते—रघु० ८।८६ 2. नाम लेना, पुकारना—योऽस्यात्मनः कारयिता तं क्षेत्रज्ञं प्रचक्षते मनु० १२।१२, २।१७, ३।२८, १०।१४, प्रत्या—त्याग देना, छोड़ देना, पीछे हटा देना, व्या—, व्याख्या करना, टीका टिप्पण करना।

चक्षस् (पुं०) [चक्ष्+असि] 1. अध्यापक, धर्म-विज्ञान का शिक्षक, दीक्षागुरु, आध्यात्मिक गुरु 2. बृहस्पति का विशेषण।

चक्षुष्य (वि०) [चक्षुषे हितः स्यात् - चक्षुस्+यत्] 1. मनोहर, प्रियदर्शन, सुहावना, सुन्दर 2. आँखों के लिए हितकर,—ष्या प्रियदर्शन या सुन्दरी स्त्री।

चक्षुस् (नपुं०) [चक्ष्+उसि] 1. आँख, दृश्यं तमसि न पश्यति दीपेन विना सचक्षुरपि—मालवि० १।९, कृष्णसारे ददच्चक्षुः श० १।६, तु० घ्राणचक्षुस्, ज्ञानचक्षुस्, नयचक्षुस्, चारचक्षुस् आदि शब्दों की 2. दृष्टि, दर्शन, नजर, देखने की शक्ति—चक्षुरायुश्चैव प्रहीयते— मनु० ४।४१, ४२। सम०—गोचर (वि०) दृश्य, दृष्टिगोचर, दृष्टि-परास के अन्तर्गत होने वाला,

—दानम् प्राण प्रतिष्ठा के समय मूर्ति की आँखों में रंग भरना,—पथः दृष्टि-परास, क्षितिज,—मलम् आँखों की ढीड़, मल,—रागः (चक्षूरागः) 1. आँखों में लाली 2. 'आँख का प्रेम' आँख लड़ाने से उत्पन्न प्रेम या अनुराग—पुरुचक्षूरागस्तदनु मनसोऽनन्यपरता—मा० ६।१५, चक्षूरागः कोकिलेषु न परकलत्रेषु —का० ४१ (यहाँ इस शब्द का अर्थ 'आँख लड़ जाना' भी है), —रोगः (चक्षूरोगः) आँख की बीमारी,—विषयः 1. दृष्टि-परास, निगाह, उपस्थिति, दृश्यता—चक्षुर्विषयातिक्रांतेषु कपोतेषु—हि० १, मनु० २।१९८ 2. दृष्टि का विषय, कोई भी दृश्य पदार्थ 3. क्षितिज,—श्रवस् (पुं०) साँप, कि० १६।४२, नै० १।२८।

चक्षुष्मत् (वि०) [चक्षुस्+मतुप्] 1. देखने वाला, आँखों वाला, देखने की शक्ति वाला,—तदा चक्षुष्मतां प्रीतिरासीत्समरसा द्वयोः—रघु० ४।१८ °तां ४।१३, 2. अच्छी दृष्टि रखने वाला।

चङ्कुणः,—रः [चंङ्क्+उनन्, उरच् वा]1. वृक्ष 2. गाड़ी 3. वाहन (नपुं० भी)।

चङ्क्रमणम् [क्रम्+यङ्+ल्युट्, यङो लुक् तारा०] 1. इधर उधर घूमना, आना-जाना, सैर करना-·विषं चङ्क्रमणं रात्री—चाण०९७,चक्रे स चक्रनिभचङ्क्रमणच्छलेन —नै० ११।४४, 2. शनैः २ या टेढा-मेढा जाना।

चञ्च्(भ्वा०पर०चञ्चति, चंञ्चित) 1. चलायमान करना, लहराना, हिलाना—समरशिरसि चञ्चत्पञ्चचूडश्चमूनां —उत्तर०५।१२, मा०५।२३, चञ्चच्चञ्चू—नागा०४, चंचत्पराग—गीत० १ 2. विलपति हसति विषीदति रोदिति चञ्चति मुञ्चति तापम्—गीत० ४।

चञ्चः [चञ्च्+अच्] 1. टोकरी 2. पाँच अंगुलियों से मापा जाने वाला मापदण्ड, पंचांगुल मान।

चञ्चरिन् (पुं०) [चर्+यङ्, णिनि, यङोलुक्] भौंरा, —करी बरीभरीति चेद् दिशं सरीसरीति काम्, स्थिरी चरीकरीति चेन्न चञ्चरीतिचञ्चरी—उद्भट।

चञ्चरीकः [चर्+इकन्, नि० द्वित्वम्] भौंरा,—चुलुकयति मदीयां चेतनां चञ्चरीकः—रस०, कुंन्द लतायाविमुक्तमकरन्द रसाया अपि चञ्चरीकः, प्रणयप्ररूढप्रेमभरभञ्जनकातरभावभीतः—विद्धशा० १।४, विक्रमांक० १।२, भामि० १।४८।

चञ्चल (वि०) [चंच्+अलच्, चञ्चं गतिं लाति ला+क वा तारा०] 1. चलायमान, हिलता हुआ, कंपमान, थरथराता हुआ—श्रुत्वैव भीतहरिणीशिशुचञ्चलाक्षीं —चौर० २७, चञ्चलकुण्डल—गीत० ७, अमरु ७९ 2. (आलं०) चलचित्त, चपल, अस्थिर—भोगा मेघवितानमध्यविलसत्सौदामिनीचञ्चलाः—भर्तृ० ३५४, कि०२।१९, मनश्चञ्चलमस्थिरम्—भग०६।२६,—लः 1. वायु 2. प्रेमी 3. स्वेच्छाचारी,—ला 1. बिजली, 2. धनकी अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी।

चञ्चा [चञ्च्+अच्+टाप्] 1. बेत से बनी कोई वस्तु 2. पुआल का बना पुतला, गुड्डा, गुड़िया।

चञ्चु [चंञ्च्+उन्] 1. प्रसिद्ध, विख्यात, विदित 2. चतुर (जैसे कि अक्षर चञ्चु)दे०चुञ्चु,—चुः हरिण,—चुः, —चू (स्त्री०) चोंच, चूंच सम०—पुटः,—टम् पक्षी की बन्द चोंच—चञ्चूपुटं चपलयन्ति चकोरपोताः —रस०, भामि० २।१९, अमोचि चञ्चूपुटमौनमुद्रा विहायसा तेन विहस्य भूयः—नै० ३।१९, व्यलिखच्चञ्चुपूटेन पक्षती—२।२, ४, अमरु १३,—प्रहारः चोंच से ठूंग मारना,—भृत्, —मत् (पुं०) पक्षी,—सूचिः बय्या, सौचिक पक्षी।

चञ्चुर (वि०) [चञ्च्+उरच्] चतुर, विशेषज्ञ।

चट् i (भ्वा० पर०—चटति, चटित) टूटना, गिरना, अलग होना, ii (चुरा० उभ०—चाटयति—ते) 1. मार डालना, क्षति पहुँचाना 2. बींधना, तोड़ना, उद्—, 1. भयभीत करना, त्रासना, डराना 2. उखेड़ना, हटाना, नाश करना, नै० ३।७ 3. मार डालना, क्षति पहुँचाना।

चटकः [चट्+क्वुन्] चिड़िया, गौरैया।

चटका, चटिका, [चटक+टाप् इदादेशश्च] चिड़िया।

चटुः,—टु (नपुं०) [चट्+कु] कृपा तथा चापलूसी से पूर्ण शब्द, दे० चाटु,—टुः पेट।

चटुल (वि०) [चटु+लच्] 1. कम्पमान, थरथराता हुआ, अस्थिर, घुमक्कड़, दोलायमान —आयस्तमक्षत जनश्चटुलाग्रपादम्—शि० ५।१६ त्रासातिमात्रचटुलैः स्मरतः सुनेत्रैः—रघु० ९।५८, चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि —मेघ० ४० 2. चंचल, चपल (जैसा कि प्रेम)—किं लब्धं चटुल त्वयेह नयता सौभाग्यमेतां दशाम्—अमरु १४, चटुलप्रेम्णा दयितेन —७१, 3. बढ़िया, सुन्दर, रुचिकर—इति चटुलचाटुपटु चारुमुरवैरिणो राधिकामधि वचनजातम्—गीत० १०,—ला बिजली।

चटुलोल, चटूल्लोल (वि०) [कर्म० स०, नि० साधुः] 1. कंपनशील 2. प्रिय, सुन्दर 3. मधुरभाषी।

चण (वि०) [चण्+अच्](समास के अन्त में)विख्यात, प्रसिद्ध, कुशल, कीर्तिकर अक्षरचणः,—णः चना।

चणकः [चण्+क्वुन्] चना —उत्पतितोऽपि हि चणकः शक्तः किं भ्राष्ट्रकं भङ्क्तुम्—पंच० १।१३२।

चण्ड (वि०) [चंड्+अच्] 1. (क) हिंस्र, प्रचण्ड, उग्र, आवेशयुक्त, क्रोधी, रुष्ट—अथकथेनोरपराधचण्डात् गुरोः कृशानुप्रतिमाद् बिभेषि—रघु० २।४९, मालवि० ३।२०, दे०नी०चण्डी 2. उष्ण, गरम जैसा कि 'चण्डांशु' में 3. सक्रिय, फुर्तीला 4. तीखा, तीक्ष्ण,—डम् 1. उष्णता गर्मी 2. आवेश, क्रोध। सम०—अंशुः,—दीधितिः

—भानुः सूर्य—ईश्वरः शिव का एकरूप,—मुंडा दुर्गा का ही एक रूप (=चामुंडा),—मृगः जंगली जानवर —विक्रम (वि०) तीक्ष्ण शक्ति का, अपनी शक्ति में भीषण।

चण्डा,—डी (स्त्री०) 1. दुर्गा का विशेषण 2. आवेशयुक्त, या क्रोधी स्त्री—चण्डी चण्डं हन्तुमभ्युद्यता माम्—मालवि०३।२१,चंण्डी मामवधूय पादपतितं जातानुतापेव सा—विक्रम०४।२८, रघु०१२।५, मेघ० १०५। सम० —ईश्वरः,—पतिः शिव का विशेषण—पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य—मेघ० ३३।

चण्डातः [चण्ड+अत्+अण्] सुगंधयुक्त करवीर।

चण्डातकः,—कम् [चण्ड+अत्+ण्वुल्] लहंगा, साया।

चण्डाल (वि०) [चण्ड्+आलच्] दुष्कर्मा, क्रूर कर्मा, तु० कर्मचांडाल,—लः 1. अत्यंत नीच और घृणित वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति शूद्र पिता व ब्राह्मण माता से हुई मानी जाती है 2. इस जाति का पुरुष, जातिबहिष्कृत—चण्डालः किमयं द्विजातिरथवा—भर्तृ० ३।५६, मनु० ५।१३१, १०।१२, १६, ११।१७५। सम०—वल्लकी चंडाल की वीणा, एक सामान्य या देहाती वीणा।

चण्डालिका [चण्डाल+ठन्+टाप्] चण्डाल की वीणा।

चण्डिका [चण्डी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] दुर्गा देवी।

चण्डिमन् (पुं०) [चण्ड+इमनिच्] 1. आवेश, उग्रता, तीक्ष्णता, क्रोध, 2. गर्मी, ताप।

चण्डिलः [चंड्+इलच्] नाई।

चतुर् (सं० वि०) [चत्+उरन्] (नित्य बहुवचनांत, पुं० चत्वारः, स्त्री० चतस्रः, नपुं० चत्वारि) चार —चत्वारो वयमृत्विजः—वेणी० १।२२, चतस्रोऽवस्था बाल्यं कौमारं यौवनं वार्धकं चेति, चत्वारि श्रृङ्गा त्रयोऽस्य पादाः आदि—शेषान् मासान् गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा—मेघ० ११०, समास में चतुर् का र् विसर्ग बन जाता है और विसर्ग कई स्थानों पर स् या ष् में परिणत हो जाता है अथवा अपरिवर्तित रहता है। सम०—अंशः चतुर्थ भाग,—अङ्ग (वि०) चार सदस्यीय, चार दल युक्त,(—गम्) 1. हाथी, रथ, घोड़े और पदाति इन चार अंगों से सुसज्जित सेना—एको हि खंजनवरो नलिनीदलस्थो दृष्टः करोति चतुरङ्गबलाधिपत्यम्—श्रृंगार० ४, चतुरङ्गबलो राजा जगतीं वशमानयेत्, अहं पञ्चाङ्गबलवानाकाशं वशमानये—सुभा० 2. एक प्रकार की शतरंज,—अन्त (वि०) चारों ओर सीमायुक्त—भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी—श० ४।१९,—अन्ता पृथ्वी,—अशीत (वि०) चौरासिवां, —अशीति (वि० स्त्री०ः) चौरासी,—अश्र,—अस्र (वि०) (अश्रि,—स्रि के स्थान पर) 1. चार किनारों वाला, चतुष्कोण—रघु० ६।१० 2. सममित, नियमित या सुन्दर, सुडौल—बभूव तस्याश्चतुरस्रशोभि वपुः —कु० १।३२, (श्रः,—स्रः) वर्गाकार,—अहम् चार दिन का समय—आननः ब्रह्मा का विशेषण—इतरतातापशतानि यथेच्छया वितर तानि सहे चतुरानन—उद्भट, —आश्रमं ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चार अवस्थाएँ,—उत्तर (वि०) चार बढ़ा कर,—कर्ण (चतुष्कर्ण) (वि०) केवल दो व्यक्तियों द्वारा ही सुना गया,—कोण (चतुष्कोण) (वि०) वर्ग, चार कोनों वाला, (णः) वर्ग, चतुर्भुज, चार पार्श्व वाली आकृति —गतिः 1. परमात्मा 2. कछुवा,—गुण (वि०) चारगुणा, चौहरा, चौलड़ा,—चत्वारिंशत् (चतुश्चत्वारिंशत्) (वि०) चवालीस, °रिंश चवालिसवां,—णवत (चतुर्णवत) (वि०) चौरानवेवां या चौरानवे जोड़ कर—चतुर्णवतं शतम्—एक सौ चौरानवे,—दंतः इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण,—दश (वि०) चौदहवां —दशन् (वि०) चौदह, °रत्नानि (ब० व०) समुद्र मंथन के परिणामस्वरूप समुद्र से प्राप्त १४ रत्न (इनके नाम निम्नांकित मंगलाष्टक में गिनाये गये हैं:—लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा गावः कामदुघाः सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवाङ्गनाः, अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शङ्खोऽमृतं चाम्बुधे रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्युः सदा मङ्गलम्, °विद्याः (ब० व०) चौदह विद्याएँ (वे यह हैं:—षडंगमिश्रिता वेदा धर्मशास्त्रं पुराणकम्, मीमांसा तर्कमपि च एता विद्याश्चतुर्दश),—दशी चांद्रपक्ष का चौदहवां दिन,—दिशन् सामूहिक रूप से चारों दिशाएँ,—दिशम् (अव्य०) चारों दिशाओं में, सब दिशाओं में,—दोलः,—लम् राजकीय पालकी,—द्वारम् 1. चारों दिशाओं में चार द्वारों वाला मकान 2. सामूहिक रूप से चारों द्वार, —नवति (वि०-स्त्री०) चौरानवे,—पञ्च (वि०) (चतुः पंच या चतुष्पंच) चार या पांच,—पञ्चाशत् (स्त्री०) (चतुःपञ्चाशत्, चतुष्पञ्चाशत्) चव्वन, —पथः (चतुः पथः, चतुष्पथः) (थम्—थी) वह स्थान जहाँ चार सड़कें मिलें, चौराहा,—मनु० ४।३९ ९।२६४, (थः) ब्राह्मण,—पद (वि०) (चतुष्पदः) 1. चार पैरों वाला 2. चार अंगों वाला (दः) चौपाया (दी) चार चरण का श्लोक—पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा—छं० १,—पाठी (चतुष्पाठी) ब्राह्मणों का विद्यालय जिसमें चारों वेदो का पठन-पाठन होता हो। —पाणिः (चतुष्पाणिः) विष्णु का विशेषण,—पाद्—द (चतुष्पाद्-द) (वि०) 1, चौपाया 2. पाँच सदस्यीय या पाँच भागों वाला, (पुं०) 1. चौपाया 2. (विधि में) न्यायांग की एक कार्यविधि (अभियोगों की जाँच पड़ताल) जिसमें चार प्रकार की प्रक्रियाएँ हों अर्थात् तर्क, पक्षसमर्थन

प्रत्युक्ति, निर्णय,—बाहुः विष्णु की उपाधि (हु-नपुं०) वर्ग,—भद्रम् चारों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष) की समष्टि,—भागः चौथाभाग चौथाई,—भुज् (वि०) 1. चतुष्कोण 2. चार भुजाओं वाला—भग० ११।४६, (पुं०) विष्णु की उपाधि—रघु० १६।३, (नपुं०) वर्ग,—मासम् चातुर्मास्य, चौमासा (आषाढ सुदी एकादशी से कातिक सुदी दशमी तक),—मुख (वि०) चार मुंह वाला (खः) ब्रह्मा का विशेषण त्वत्तः सर्वं चतुर्मुखात्—रघु० १०।२२, (खम्) 1. चार मुंह—कु० २।१७ 2. चार द्वार वाला मकान, —युगम् चार युगों की समष्टि,—रात्रम् (चतूरात्रम्) चार रात्रियों का समूह,—वक्त्रः ब्रह्मा का विशेषण, —वर्गः मानव जीवन के चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ काम और मोक्ष) का समूह—रघु० १०।२२;—वर्णः हिन्दुओं की चार श्रेणियाँ या जातियाँ अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र—चतुर्वर्णमयो लोकः—रघु० १०।२२,—वर्षिका चार वर्ष की आयु की गाय,—विंश (वि०) 1. चौबीस 2. चौबीस जोड़कर जैसे कि चतुर्विंशशतम्—(१२४),—विंशति (वि० या स्त्री०) चौबीस,—विंशतिक (वि०) २४ से युक्त,—विद्य (वि०) जिसने चारों वेदों का अध्ययन किया है —विध (वि०) चार प्रकार का, चौतही,—वेद (वि०) चारों वेदों से परिचित (दः) परमात्मा, —व्यूहः विष्णु का नाम (हम्) आयुर्वेदविज्ञान —शालम् (चतुः शालम्, चतुश्शालम्, चतुः शाली, चतुश्शाली) चार मकानों का वर्ग, चारों ओर चार भवनों से घिरा हुआ चतुष्कोण,—षष्टि (वि० या स्त्री०) चौंसठ कला (ब० व०) चौंसठ कलाएँ, —सप्तति (वि० या स्त्री०) चौहत्तर,—हायन,—ण (वि०) चार वर्ष की आयु का (इस शब्द का स्त्रीलिङ्गरूप आकारान्त है यदि निर्जीव पदार्थों का ही उल्लेख है; और यदि सजीव जन्तुओं से अभिप्राय है तो यह सब 'ईकारान्त' बन जाता है),—होत्रकम् चारों ऋत्विजों (पुरोहितों) का समूह।

चतुर (वि०) [चत्+उरच्] 1. होशियार, कुशल, मेधावी, तीक्ष्णबुद्धि—सर्वात्मना इतिकथाचतुरेव दूती —मुद्रा० ३।९ अमरु १५।४४, मृगया जहार चतुरेव कामिनी—रघु० ९।६९, १८।१५ 2. फुर्तीला, द्रुतगामी या तेज 3. मनोज्ञ, सुन्दर, प्रिय, रुचिकर—न पुनरेति गतं चतुरं वयः—रघु० ९।४७, कु० १।४७, ३।५, ५।४९,—रम् 1. होशियारी, मेधाविता 2. हस्तिशाला।

चतुर्थ (वि०) (स्त्री०—र्थी) [चतुर्णां पूरणः डट् थुक् च] चौथा,—र्थम् चौथाई, चौथा भाग। सम० —आश्रमः ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चौथी अवस्था संन्यास,—भाज् (वि०) अपनी प्रजा से आय का चतुर्थांश ग्रहण करने वाला, राजा, (अर्थ संकट के अवसर पर ही चतुर्थांश लेना विहित हैं अन्यथा प्रचलित केवल छठा भाग है)।

चतुर्थक (वि०) [चतुर्थ+कन्] चौथा,—कः चौथैया ज्वर (जो हर चार दिन के बाद आता है) चौथिया।

चतुर्थी [चतुर्थ+ङीप्] 1. चांद्र पक्ष का चौथा दिन 2. (व्या० में) संप्रदान कारक। सम०—कर्मन् (नपुं०) विवाह के चौथे दिन किया जाने वाला संस्कार।

चतुर्धा—(अव्य०) [चतुर्+धा] चार प्रकार से, चारगुणा।

चतुष्क (वि०) [चतुरवयवं चत्वारोऽवयवा यस्य वा कन्] 1. चार से युक्त 2, चार बढ़ा कर—द्विकं त्रिकं चतुष्कं च पञ्चकं च शतं समम्—मनु०८।१४२ (अर्थात् १०२, १०३, १०४, या १०५ या दो से पाँच प्रतिशत का ब्याज),—कम् 1. चार का समूह 2. चौराहा 3. चौकोर आंगन 4. चार स्तंभों पर अवस्थित भवन, कमरा या सुकक्ष—कु०५।६९, ७।९,—ष्की 1. एक चौकोर बड़ा तालाब 2. मच्छरदानी, मसहरी।

चतुष्टय (वि०) (स्त्री०—यी) [चत्वारोऽवयवा विधाअस्य तयप्] चारगुणा, चार से युक्त—पुराणस्य कवेस्तस्य चतुर्मुखसमीरिता, प्रवृत्तिरासीच्छब्दानां चरितार्था चतुष्टयी। कु० २।१७,—यम् चार का समूह —एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्—हि०प्र०११, कु० ७।६२, मासचतुष्टयस्य भोजनम्—हि० १ 2. वर्ग।

चत्वरम् [चत्+ष्वरच्] 1. चौकोर जगह या आंगन 2. चौराहा (जहाँ कई सड़कें मिलें)—स खलु श्रेष्ठिचत्वरे निवसति—मृच्छ० २ 3. यज्ञ के लिए तैयार की गई समतल भूमि।

चत्वारिंशत् (स्त्री०) [चत्वारो दशतः परिमाणमस्य—ब० स०, नि०] चालीस।

चत्वालः [चत्+वालञ्] 1. यज्ञाग्नि रखने के लिए या आहुति देने के लिए भूमि खोद कर बनाया गया हवनकुंड 2. कुशघास 3. गर्भाशय।

चद् (भ्वा० उभ०—चदति—ते) कहना, प्रार्थना करना।

चदिरः [चद्+किरच्, नि०] 1. चन्द्रमा 2. कपूर 3. हाथी 4. सांप।

चन (अव्य०) नहीं, न केवल, भी नहीं (अकेला कभी प्रयुक्त नहीं होता, बल्कि सर्वनाम 'किम्' तथा इससे व्युत्पन्न शब्दों (कद्, कथम्, क्व, कदा, कुतः आदि) के साथ प्रयुक्त होकर अनिश्चयात्मक अर्थ को व्यक्त करता है—दे० 'किम्' के नी०) [कई विद्वान् 'चन' को पृथक् शब्द न मान कर केवल (च) और (न) का संयोग मानते हैं]।

चन्द (भ्वा० पर०—वन्दति, चन्दित) 1. चमकना, प्रसन्न होना, खुश होना ।

चन्द: [चन्द्+णिच्+अच्] 1. चन्द्रमा, कपूर ।

चन्दन:,—नम् [चन्द्+णिच्+ल्युट्] चंदन (चंदन का वृक्ष, इसकी लकड़ी या इससे तैयार किया गया कोई स्निग्ध पदार्थ—सुगंध और शीतलता की दृष्टि से अत्युत्तम समझा जाता है) । अनलायागुरुचन्दनैधसे —रघु० ८।७१ मणिप्रकाराः सरसं च चंदनं शुचौ प्रिये यान्ति जनस्य सेव्यताम्—ऋतु० १।२, एवं च भाषते लोकश्चन्दनं किल शीतलम्, पुत्रगात्रस्य संस्पर्शश्चन्दनादतिरिच्यते—पंच० ५।२०, विना मलयमन्यत्र चंदनं न प्ररोहति—१।४१ । सम०—अचलः—अद्रिः—गिरिः, मलय पर्वत, —उदकम् चन्दन का पानी,—पुष्पम् लौंग, —सारः अत्यंत श्रेष्ठ चंदन की लकड़ी ।

चन्दिरः [चन्द्+किरच्] 1. हाथी 2. चन्द्रमा —अपि च मानसमम्बुनिधिर्यशो विमलशारदचन्दिरचंद्रिका —भामि० १।११३, मुकुन्दमुखचन्दिरे चिरमिदं चकोरायताम्—४।१ ।

चन्द्रः [चन्द्+णिच्+रक्] 1. चन्द्रमा, यथा अह्लादनाच्चन्द्रः—रघु० ४।१२, हृतचन्द्रा तमसेव कौमुदी —८।३७, न हि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चांडालवेश्मनि —हि० १।६१, मुखं° वदन° आदि; पर्याप्तचन्द्रेव शरत्त्रियामा—कु० ७।२६ (पौराणिकवृत्त के लिए दे० सोम) 2. चन्द्र ग्रह 3. कपूर—विलेपनस्याधिकचन्द्रभागताविभावनाच्चापललाप पाण्डुताम्—नै० १।५१ 4. मयूर पंखों में 'आँख' का चिह्न 5. जल 6. सोना (जब 'चन्द्र' शब्द समास के अन्त में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है—श्रेष्ठ, प्रमुख, श्रीमान् यथा पुरुषचन्द्रः, "मनुष्यों में चन्द्रमा" अर्थात् एक श्रेष्ठ या महानुभाव व्यक्ति),—द्रा 1. इलायची 2. खुला कमरा (जिस पर केवल छत ही हो) । सम०—अंशुः चन्द्रमा की किरण,—अर्धः आधा चन्द्रमा, °चूडामणिः, °मौलिः °शेखरः शिव के विशेषण,—आतपः 1. चाँदनी 2. चंदोआ 3. प्रशस्त कक्ष (जिसकी केवल छत ही हो),—आत्मजः, —औरसः—जः—जातः,—तनयः—नन्दनः,—पुत्रः बुध ग्रह,—आनन (वि०) चन्द्रमा जैसे मुख वाला (नः) कार्तिकेय का विशेषण,—आपीडः शिव का विशेषण, —आभासः 'झूठा चंद्रमा' वास्तविक चन्द्रमा से मिलती जुलती आकाश में दिखाई देने वाली आकृति,—आह्वयः कपूर,—इष्टा कमल का पौधा, कमलों का समूह, रात को कुमुदिनी का खिलना,—उदयः चन्द्रमा का उगना, —उपलः चन्द्रकांतमणि,—कान्तः चंद्रकांतमणि (चन्द्रमा के प्रभाव से कहते हैं इस मणि से रस झरता है) —द्रवति च हिमरश्मावुद्गते चन्द्रकान्तः—उत्तर० ६।१२, शि० ४।५८, अमरु ५७, भर्तृ० १।२१, मा० १।२४ (तः,—तम्) रात को खिलने वाला श्वेत कुमुद (तम्) चन्दन की लकड़ी—कला चन्द्रमा की रेखा —राहोश्चन्द्रकलामिवाननचरीं दैवात्समासाद्य मे—मा० ५।२८,—कान्ता 1. रात 2. चांदनी,—कान्तिः चांदनी (नपुं०) चाँदी,—क्षयः चांद्रमास का अंतिम दिन (अमावस्या) या नूतनचन्द्रदिवस जब कि चन्द्रमा दिखाई नहीं देता,—गृहम् कर्कराशि, राशिचक्र में चौथी राशि, —गोलः चन्द्रलोक, चन्द्रमंडल,—गोलिका चाँदनी, —ग्रहणम् चन्द्रमा का राहुग्रस्त होना,—चञ्चला छोटी मछली,—चूडः—चूडमणिः—मौलिः,—शेखरः शिव के विशेषण—रहस्युपालभ्यत चन्द्रशेखरः—कु० ५।५८, ८६, रघु० ६।३४,—दाराः (पुं०, ब० व०) 'चन्द्रमा की पत्नियाँ' २७ नक्षत्र (पुराणों की दृष्टि से यह दक्ष की पुत्रियाँ थी और चन्द्रमा को ब्याही गई थीं), —द्युतिः चन्दन की लकड़ी (स्त्री०) चांदनी,—नामन् (पुं०) कपूर,—पादः चन्द्रकिरण—मेघ० ७०, मा० ३।१२,—प्रभा चन्द्रमा का प्रकाश,—बाला 1. बड़ी इलायची 2. चांदनी,—बिंदुः अनुस्वार (०) का चिह्न —भस्मन् (नपुं०) कपूर,—भागा दक्षिणभारत की एक नदी,—भासः तलवार दे० चंद्रहास,—भूतिः (नपुं०) चाँदी,—मणिः चन्द्रकांत मणि,—रेखा,—लेखा चन्द्रमा की कला,—रेणुः साहित्यचोर,—लोकः चंद्रसंसार —लोहकम्,—लौहम्,—लौहकम् चाँदी,—वंशः राजाओं का चन्द्रवंश, भारत के राजवंशों में दूसरी बड़ी पंक्ति, —वदन (वि०) चन्द्रमा जैसे मुख वाला,—व्रतम् एक प्रकार की प्रतिज्ञा या तपस्या=चांद्रायण,—शाला 1. चौबारा (घर में सबसे ऊपर की मंजिल का कमरा) —रघु० १३।४० 2. चाँदनी,—शालिका चौबारा, —शिला चंद्रकांतमणि—भट्टि० ११।१५,—संज्ञः कपूर,—संभवः बुध (वा) छोटी इलायची,—सालोक्यम् चांद्र स्वर्ग की प्राप्ति,—हन् (नपुं०) राहु का विशेषण,—हासः 1. चमकीली तलवार 2. रावण की तलवार—हे पाणयः किमिति वाञ्छथ चन्द्रहासम् —बालरा० १।५६, ६१ 3. केरल का एक राजा, सुधार्मिक का पुत्र (यह मूलनक्षत्र में पैदा हुआ था, और इसके बायें पैर में छः अंगुलियाँ थी, इसी कारण इसका पिता शत्रुओं द्वारा मारा गया और यह अनाथ और दरिद्र हो गया । बहुत प्रयत्न करने के पश्चात् उसका राज्य उसे फिर मिल गया । जिस समय अश्वमेघ के घोड़े के साथ घुमते हुए कृष्ण और अर्जुन दक्षिण में आये तो इसने उनसे मित्रता कर ली) ।

चन्द्रकः [चन्द्र+कन्] 1. चाँद 2. मोर के पंखों में आँख का चिह्न 3. नाखून 4. चन्द्रमा के आकार का वृत्त (पानी में तेल की बूंद गिरने से बन जाता है) ।

चन्द्रकिन् (पुं०) [चन्द्रक+इनि] मोर,—शि० ३।४९ ।

चन्द्रमस् (पुं०) [चन्द्र+मि+असुन्, मादेशः] चाँद,—नक्षत्रताराग्रहसंकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः—रघु० ६।२२।

चन्द्रिका [चन्द्र+ठन्+टाप्] 1. चाँदनी, ज्योत्स्ना—इतः स्तुतिः का खलु चन्द्रिकाया यदब्धिमप्युत्तरलीकरोति —नै० ३।११६, रघु० १९।३९, कामुकैः कुम्भीलकैश्च परिहर्तव्या चन्द्रिका—मालवि० ४ 2. (समास के अन्त में) विशदीकरण, प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालना। अलंकारचंद्रिका, काव्यचंद्रिका—तु०—कौमुदी 3. जगमगाहट 4. बड़ी इलायची 5. चन्द्रभागा नामक नदी 6. मल्लिका लता। सम०—**अम्बुजम्** चन्द्रोदय होने पर खिलने वाला कुमुद,—**द्रावः** चन्द्रकांतमणि, —**पायिन्** (पुं०) चकोर पक्षी।

चन्द्रिलः [चन्द्र+इलच्] 1. शिव का विशेषण।

चप् i (भ्वा० पर०—चपति) सांत्वना देना, ढाढस देना। ii (चुरा० उभ०—चपयति—ते) पीसना, चूरा करना, मांडना।

चपटः=चपेटः

चपल (वि०) [चुप्+कल, उपधोकारस्याकारः] 1. हिलनेडुलने वाला, कंपमान, थरथराने वाला—कुल्याम्भोभिः पवनचपलैः शाखिनो धौतमूलाः—श० १।१५, चपलायताक्षी—चौर० ८ 2. अस्थिर, चंचल, चलचित्त, दोलायमान—शा० २।११, चपलमति आदि 3. भंगुर, अनित्य, क्षणिक—नलिनीदलगतजलमतितरलं तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्—मोह० ५ 4. फ़ुर्तीला, चंचल, चुस्त—(गतम्) शैशवाच्चपलमप्यशोभते—का० ११।८ 5. विचारशून्य, अविवेकी—तु० चापल,—**लः** 1. मछली 2. पारा 3. चातक पक्षी 4. क्षय 5. सुगंध द्रव्य।

चपला [चपल+टाप्] 1. बिजली—कुरवककुसुमं चपलासुषमं रतिपतिमृगकानने—गीत० ७ 2. व्यभिचारिणी स्त्री 3. मदिरा 4. धन की देवी लक्ष्मी 5. जिह्वा। सम०—**जनः** चंचल तथा अस्थिरमन स्त्री। शि० ९।१६।

चपेटः [चप्+इट्+अच्] 1. थप्पड़ 2. चाटा।

चपेटा, चपेटिका [चपेट्+टाप्, चपेट+कन्+टाप्, इत्वम्] चाँटा—खण्डकोपाध्यायः शिष्याय चपेटिकां ददाति —महा०।

चम् (भ्वा० पर०—चमति, चान्त) 1. पीना, आचमन करना, चढ़ा जाना,—चचाम मधु माध्वीकम्—भट्टि० १४।९४ 2. खाना, आ—,(आ—चामति) 1. आचमन करना, एक सांस में पी जाना, चाटना—नाचेमे हिममपि वारि वारणेन—कि० ७।३४, भामि० ४।३८, उत्तर० ४।१ 2. चाट लेना, पी जाना, सोख लेना —आचामति स्वेदलवान्मुखे ते—रघु० १३।२०, ९।६८।

चमत्करणम्, चमत्कारः, चमत्कृतिः (स्त्री०) 1. विस्मय, आश्चर्य 2. खेल, तमाशा 3. काव्य सौन्दर्य (जिससे काव्यरस की अनुभूति होती है)—चेतश्चमत्कृतिपदं कवितेव रम्या—भामि० ३।१, तदपेक्षया वाच्यस्यैव चमत्कारित्वात्—काव्य० १।

चमरः [चम्+अरच्] एक प्रकार का हरिण,—**रः,—रम्** चौरी (प्रायः चमर मृग की पूँछ से बनी),—**री**, चमर की मादा—यस्यार्थयुक्तं गिरिराजशब्दं कुर्वन्ति बालव्यजनैश्चमर्यः कु० १।१, ४८, शि० ४।६०, मेघ० ५३। सम०—**पुच्छम्** चमर की पूंछ जो पंखे का काम देती है, (—**च्छः**) गिलहरी।

चमरिकः [चमर+ठन्] कोविदार वृक्ष, कचनार का पेड़।

चमसः,—सम् [चमत्यस्मिन् चम+असच् तारा०] सोमपान करने का लकड़ी का चमचे के आकार का यज्ञ पात्र, —याज्ञ० १।१८३, ('चमसी भी)।

चमूः (स्त्री०) [चम्+ऊ] सेना—पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्—भग० १।३, वासवीनां चमूनाम् —मेघ० ४३, गजवती जवतीव्रहया चमूः—रघु० ९।१० 2. सेना का एक भाग जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार तथा ३६४५ पदाति हों। सम०—**चरः** सैनिक, योद्धा,—**नाथः, पः,—पतिः** सेनापति, कमांडर, सेना नायक—रघु० १३।७४, —**हरः** शिव की उपाधि।

चमूरुः [चम्+ऊर, उत्वम्] एक प्रकार का हरिण—चकासतं चारुचमूरुचर्मणा—शि० १।८।

चम्प् (चुरा० उभ०—चम्पयति—ते) जाना, चलनाफिरना।

चम्पकः [चम्प+ण्वुल] 1. चम्पा नामक पौधा जिसके पीले, सुगंधयुक्त फूल लगते हैं 2. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य, —**कम्** इस वृक्ष का फूल—अद्यापि तां कनकचम्पकदामगौरीम्—चौर० १। 1. सम०—**माला** चम्पाकली, स्त्रियों का एक आभूषण जो गले में पहना जाता है 2. चम्पा के फूलों की माला 3. एक प्रकार का छंद, दे० परिशिष्ट,—**रम्भा** केले की एक जाति।

चम्पकालुः [चम्पकेन पनसावयवविशेषेण अलति, चम्पक+अल्+उण्] कटहल का पेड़।

चम्पकावती, चंपा, चंपावती [चम्पक+मतुप्+ङीप्, वत्वं दीर्घश्च, चम्प्+अच्+टाप्, चम्पा+मतुप्+ङीप् वत्वं] गंगा के किनारे एक प्राचीन नगर, अंगदेश की राजधानी, वर्तमान भागलपुर।

चम्पालुः=चम्पकालुः।

चम्पूः (स्त्री०) [चम्प्+ऊ] एक प्रकार का काव्य जो गद्य और पद्य दोनों रचनाओं से युक्त होता है तथा जिसमें एक ही विषय की चर्चा होती है—गद्यपद्यमयं

काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते—सा० द० ५६९, उदा० भोजचंपू, नलचंपू और भारतचंपू आदि ।

चय् (भ्वा० आ०—चयते) किसी जगह जाना, हिलना-जुलना ।

चयः [चि+अच्] 1. संघात, संग्रह, समुच्चय, ढेर, राशि —चयस्त्विषामित्यवधारितं पुरा—शि० १।३, मृदां चयः—उत्तर० २।९, मिट्टी का ढेर, कचानां चयः —भर्तृ० १।५, वालों का मींढीं (गुच्छा), इसी प्रकार चमरीचयः—शि० ४।६० कुसुमचय तुषारचय आदि 2. किसी भवन की नींव की मिट्टी का टीला 3. किले की खाई की मिट्टी का टीला 4. दुर्गप्राचीर 5. किले का द्वार 6. तिपाई, चौकी 7. भवनों का समूह, विशाल भवन 8. लकड़ियों का चट्टा ।

चयनम् [चि+ल्युट्] 1. चुनना, बीनना (फूल आदि का) 2. ढेर लगाना, चट्टा लगाना ।

चर् (भ्वा० पर०—चरति, चरित) 1. चलना, घूमना, इधर-उधर जाना, चक्कर काटना, भ्रमण करना—नष्टाशङ्का हरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति—श० १।१५, (यहाँ 'चर्' का अर्थ 'घास चरना' भी है)—इन्द्रियाणां हि चरताम्—भग० २।६७, कथयश्चेहरातस्य रामस्येव मनोरथाः—रघ० १२।५९, मनु० २।२३, ६।६८, ८।२३६, ९।३०६, १०।५५ 2. अभ्यास करना, अनुष्ठान करना, पर्यवेक्षण करना—चरतः किल दुश्चरं तपः—रघु० ८।७९, याज्ञ० १।६०, मनु० ३।३०, 3. करना, व्यवहार करना, आचरण करना (प्रायः 'अधि०' के साथ)—चरन्तीनां च कामतः—मनु० ५।९० ९।२८७, आत्मवत्सर्वभूतेषु यश्चरेत्—महा०, तस्यां त्वं साधु नाचरः—रघु० १।७६, (यहाँ पर धातु 'आचर' भी हो सकती है) 4. घास चरना—मुचिरं हि चरन् शस्यं—हि० ३।९ 5. खाना, उपभोग करना 6. काम में लगना, व्यस्त होना 7. जीना, चलते रहना, किसी न किसी अवस्था में विद्यमान रहना । प्रेर०—चारयति 1. चलाना, हिलाना-जुलाना 2. भेजना, निदेश देना, हिलाना 3. दूर करना 4. अनुष्ठान करना, अभ्यास कराना 5. संभोग कराना,—अति 1. अतिक्रमण करना उल्लंघन करना, अवज्ञा करना 2. अत्याचार करना, अनु—, अनुकरण करना, अन्वा—नकल करना, पीछे चलना, अप—, 1. अतिक्रमण करना, अत्याचार करना 2. अवज्ञा करना, अभि—, 1. अपराध करना, उल्लंघन करना 2. (पति के रूप में) विश्वास खो देना, धोखा देना—मनु० ५।१६२, ९।१०२ 3. जादू करना, मंत्र फूंकना —तथैवाभिचरन्नपि—याज० १।२९५, ३।२८९, आ—, 1. कर्म करना, अभ्यास करना, करना, अनुष्ठान करना—तपस्विकन्यास्वविनयमाचरति —श० १।२५, त्वं च तस्येष्टमाचरेः—विक्रम० ५।२०, रघु० १।८९, मनु० ५।१५६, न चाप्याचरितः पूर्वैरयं धर्मः —महा० 2. बर्ताव करना, व्यवहार करना, आचरण करना—पुत्रमिवाचरेत् शिष्यम्—सिद्धा०, पुत्रं मित्रवदाचरेत् - चाण० ११ 3. घूमना, इधर-उधर फिरना 4. आश्रय लेना, अनुसरण करना—रघु० ४।४४, उद्—, 1. ऊपर जाना, उठना, निकलना, आगे बढ़ना—शि० १७।५२, 2. उठना, प्रकट होना, (शब्द) निकलना —उच्चचार निनदोऽम्भसि तस्याः—रघु० ९।७३, १५।४६, १६।८७, कोलाहलध्वनिरुदचरत्—का० २७ 3. बोलना, उच्चारण करना—शब्द उच्चरित एव मामगात्—रघु० ११।७३ 4. मलोत्सर्ग करना, पुरीपोत्सर्ग करना—तिरस्कृत्योच्चरेत्काष्ठलोष्ठपत्रतृणादिना—मनु० ४।४९ 5. (आ० में प्रयोग) (क) उत्क्रमण करना, विचलित होना—भट्टि० ८।३१, (ख) उठना, चढ़ना—नै० ५।४८, प्रेर० बुलवाना, उच्चारण करवाना, उप—, 1. सेवा करना, हाजरी देना, सेवा में प्रस्तुत रहना—गिरिशमुपचचार प्रत्यहं सा सुकेशी—कु० १।६०, सममुपचर भद्रे सुप्रियं चाप्रियं च—मृच्छ० १।३१, रघु० ५।६२, मनु० ३।१९३ 2. (रोगी की) सेवा करना, चिकित्सा करना, परिचर्या करना 3. व्यवहार करना 4. निकट जाना, दुस्—, ठगना, धोखा देना, परि—1. जाना, इधर उधर घूमना 2. सेवा-शुश्रूषा करना, सेवा करना या सेवा में उपस्थित रहना—मनु० २।२४३, भर्तृ० ३।४० 3. देखभाल करना, परिचर्या करना, सेवा करना, प्र—1. इधर उधर चलना, ऐंठ कर चलना 2. फैलना, प्रचलित होना, वर्तमान होना 3. (प्रथा का) प्रचलन होना 4. कार्य आरंभ करना, मार्ग अपनाना, कार्य करने लगना—मनु० ९।२८४, (प्रेर०) इधर उधर फिराना, वि—1. इधर उधर घूमना, भ्रमण करना,—रघु० २।८, मेघ० ११५ 2. करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना 3. कर्म करना, बर्ताव करना, व्यवहार करना, (प्रेर०) 1. सोचना, विचारना, मनन करना 2. चर्चा करना, वादविवाद करना—रघु० १४।४६ 3. हिसाब लगाना, अनुमान लगाना, हिसाब में गिनना, विचार करना—परेषामात्मनश्चैव यो विचार्य बलाबलम्—पंच० ३, सुविचार्य यत्कृतम्—हि० १।२२, व्यभि—1. पथभ्रष्ट होना, विचलित होना 2. उल्लंघन करना, विश्वास घात करना 3. कपटपूर्ण व्यवहार करना, सम्—(आ० जब कि करण० के साथ प्रयोग हो) 1. चलना, घूमना, जाना, गुजरना, इधर उधर फिरना —यानैः समचरन्तान्ये—भट्टि० ८।३२, क्वचित्पथा संचरते सुराणाम्—रघु० १३।१९, नै० ६।५७, संचरतां घनानां—कु० १।६ 2. अभ्यास करना, अनुष्ठान करना 3. दे देना, हस्तांतरित होना । (प्रेर०) 1. इधर

उधर भेजना, नेतृत्व करना, संचालन करना,—श० ५।५ 2. फैलाना, इधर उधर घुमाना 3. पहुँचाना, समाचार देना, दे देना, सौंप देना 4. चरने के लिए मुड़ना।

चर (वि०) (स्त्री०—री) [चर्+अच्] 1. हिलने-जुलने वाला, जाने वाला, चलने वाला (समास के अन्त में) 2. कांपता हुआ, हिलता हुआ 3. जंगम दे० 'चराचर' —मनु० ३।२०१, भग० १३।१५ 4. सजीव—मनु० ५।२९, ७।१५ 5. (प्रत्यय की भांति प्रयुक्त) पूर्वकालीन, भूतपूर्व आढ्यचर=जो पहले धनवान् था, इसी प्रकार देवदत्तचर, अध्यापकचर (भूतपूर्व अध्यापक),—**रः** 1. दूत 2. खंजन पक्षी 3. जूआ खेलना 4. कौड़ी 5. मंगलग्रह 6. मंगलवार। सम०—**अचर** (वि०) जंगम और स्थावर—चराचराणां भूतानां कुक्षिराधारतां गतः—कु० ६।६७, २।५, भग० ११।४३, (**रम्**) 1. सृष्टि की समस्त रचना, संसार—मनु० १।५७, ६३, ३।७५, भग० ११।७, ९।१० 2. आकाश, अन्तरिक्ष,—**द्रव्यम्** जंगम वस्तु,—**मूर्तिः** वह मूर्ति जिसका जलूस या सवारी निकाली जाय।

चरकः [चर+कन्] 1. दूत 2. रमता साधु, अवधूत।

चरटः [चर्+अटच्] खंजन पक्षी।

चरणः, —**णम्** [चर्+ल्युट्] 1. पैर—शिरसि चरण एष न्यस्यते वारयैनम्—वेणी० ३।३८, जात्या काममवध्योऽसि चरणं त्विदमुद्धृतम्— ३९ 2. सहारा, स्तंभ, थूणी 3. वृक्ष की जड़ 4. श्लोक की एक पंक्ति या पाद 5. चौथाई 6. वेद की शाखा या सम्प्रदाय 7. वंश, —**णम्** 1. हिलना-जुलना, भ्रमण करना, घूमना 2. अनुष्ठान, अभ्यास—मनु० ६।७५ 3. जीवनचर्या, चालचलन, (नैतिक) व्यवहार 4. निष्पन्नता 5. खाना, उपभोग करना। सम०—**अमृतम्**,—**उदकम्** वह पानी जिसमें किसी श्रद्धेय ब्राह्मण या आध्यात्मिक उपदेष्टा के पैर धोये जा चुके हैं,—**अरविंदम्**,—**कमलम्**, —**पद्मम्** कमल जैसे पैर,—**आयुधः** मुर्गा,—**आस्कन्दनम्** पैरों के नीचे रौंदना, कुचलना, पद दलित करना —**ग्रन्थि** (पुं०)—**पर्वन्** (नपुं०) टखना,—**न्यासः** पग, कदम, —**पः** वृक्ष,—**पतनम्** (दूसरे के चरणों में) गिरना, साष्टांग प्रणाम करना—अमरु १७,—**पतित** (वि०) चरणों में दण्डवत् प्रणाम करना—मेघ० १०५, —**शुश्रूषा**, —**सेवा** 1. दण्डप्रणाम 2. सेवा, भक्ति।

चरम (वि०) [चर्+अमच्] 1. अन्तिम, अन्त्य, आखरी —चरमा क्रिया 'अन्त्येष्टिक्रिया या अन्त्येष्टि संस्कार' 2. पश्चवर्ती, बाद का—पृष्ठं तु चरमं तनोः—अमर० 3. (आयु की दृष्टि से) बूढ़ा 4. बिल्कुल बाहर का 5. पश्चिमी, पच्छमी 6. सबसे नीच, सबसे कम,—**मम्** (अव्य०) आखिरकार, अन्त में। सम०—**अचलः** —**अद्रिः**,—**क्ष्माभृत्** (पुं०) पश्चिमी पर्वत (सूर्य और चन्द्रमा इसके पीछे ही अस्त हो जाने वाले माने जाते हैं),—**अवस्था** अन्तिम दशा (बुढ़ापा),—**कालः** मृत्यु की घड़ी।

चरिः [चर्+इन्] जीव, जन्तु।

चरित (भू० क० कृ०) [चर्+क्त] 1. घूमा हुआ या फिरा हुआ, गया हुआ 2. अनुष्ठित, अभ्यस्त 3. अवाप्त 4. ज्ञात 5. प्रस्तुत,—**तम्** 1. जाना, हिलना-जुलना, मार्ग, कर्म करना, करना, अभ्यास, व्यवहार, कृत्य, कर्म —उदारचरितानां—हि० १।७०, सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति -१।८१ 3. जीवनी, आत्मजीवनी, साहसकथाएँ, इतिहास, कहानी—उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयुज्यते—उत्तर० १।२, इसी प्रकार 'दशकुमारचरितम्' आदि। सम०—**अर्थ** (वि०) 1. जिसने अपना अभीष्ट ध्येय पूरा कर लिया है, सफल—रामरावणयोर्युद्धं चरितार्थमिवाभवत्—रघु० १२।८७, १०।३६, २।१७, कि० १३।६२ 2. संतुष्ट, तृप्त 3. कार्यान्वित, संपन्न।

चरित्रम् [चर्+इत्र] 1. व्यवहार, आदत, चालचलन, अभ्यास, कृत्य, कर्म 2. अनुष्ठान, पर्यवेक्षण 3. इतिहास, जीवनचरित, आत्मकथा, वृत्तांत, साहसकथा 4. प्रकृति, स्वभाव 5. कर्तव्य, अनुमोदित नियमों का पालन —मनु० २।२०, ९।७।

चरिष्णु (वि०) [चर+इष्णुच्] जंगम, सक्रिय, इधर उधर घूमने वाला।

चरुः [चर्+उन्] उबले चावल, आदि से, देवताओं तथा पितरों की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गई आहुति—रघु० १०।५२, ५४, ५६। सम०—**स्थाली** देवताओं तथा पितरों की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए चावलों को उबालने का बर्तन।

चर्च् i (चुरा० उभ०—चर्चयति—ते, चर्चित) पढ़ना, ध्यान पूर्वक पढ़ना, अनुशीलन करना, अध्ययन करना। ii (तुदा० पर०—चर्चति, चर्चित) 1. गाली देना, धिक्कारना, निन्दा करना, बुराभला कहना, चर्चा करना, विचार करना।

चर्चनम् [चर्च्+ल्युट्] 1. अध्ययन, आवृत्ति, बारबार 2. शरीर में उबटन लगाना।

चर्चरिका, चर्चरी [चर्चरी+कन्+टाप्, ह्रस्वः, चर्च्+अरन्+ङीप्] 1. एक प्रकार का गान 2. (संगी० में) तालियाँ बजाना 3. विद्वानों का सस्वर पाठ 4. आमोद प्रमोद, हर्षध्वनि 5. उत्सव 6. खुशामद 7. घुंघराले बाल।

चर्चा, चर्चिका [चर्च्+अङ्+टाप्, चर्चा+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. आवृत्ति, स्वर पाठ, अध्ययन, बारबार पढ़ना 2. बहस, पूछ-ताछ, अनुसंधान 3. विचार विमर्श

4. शरीर में उबटन का लेप करना—अङ्गचर्चामरचयम् --का० १५७, श्रीखण्डचर्चाविषम्—गीत० ९।

चर्चिक्यम् [चर्चिका+यत्] 1. शरीर में लेप (मालिश) करना 2. उबटन।

चर्चित (भू० क० कृ०) [चर्च्+क्त] 1. मालिश किया हुआ, लेप किया हुआ, सुगंधित, सुवासित आदि —चन्दनचर्चितनीलकलेवरपीतवसनवनमाली —गीत० १, ऋतु० २।२१ 2. चर्चा किया गया, विचार किया गया, खोज किया गया।

चर्पटः [चृप्+अटन्] चपेड़, थप्पड़ तु० 'चपेट'।

चर्पटी [चर्पट+ङीष्] चपाती, बिस्कुट।

चर्भटः [चर्+क्विप्, भट्+अच्, ततः कर्म० स०] एक प्रकार की ककड़ी।

चर्भटी [चर्भट+ङीष्] 1. हर्ष का कोलाहल 2. ककड़ी।

चर्मम् [चर्मन्+अच्, टिलोपः] ढाल।

चर्मण्वती [चर्मन्+मतुप्+ङीप्, मस्य वः] गंगा में जाकर मिलने वाली एक नदी, वर्तमान चम्बल नदी।

चर्मन् (नपुं०) [चर्+मनिन्] 1. (शरीर की) त्वचा 2. चमड़ा, खाल—मनु० २।४१, १७४ 3. त्वगिन्द्रिय 4. ढाल—शि० १८।२१। सम०—**अम्भस्** (नपुं०) लसीका,—**अवकर्तनम्** चमड़े का काम करना, —**अवकर्तिन्,—अवकर्तृ** (पुं) मोची,—**कारः,— कारिन्** (पुं०) मोची, चमड़ा कमाने या रंगने वाला,—**कीलः,** —**कीलम्** मस्सा, अधिमांस,—**चित्रकम्** सफ़ेद कोढ़, —**जम्** 1. बाल 2. रुधिर,—**तरङ्गः** झुर्री,—**दण्डः,** —**नालिका** हण्टर,—**द्रुमः,—वृक्षः** भूर्ज नाम का पेड़, —**पट्टिका** चमड़े का चौरस टुकड़ा जिस पर पासे डाल कर खेला जाय, —**पत्रा** चमगादड़, छोटा घरों में पाया जाने वाला चमगादड़,—**पादुका** चमड़े का जूता,—**प्रभेदिका** मोची की रांपी,—**प्रसेवकः,—प्रसेविका** धौंकनी, —**बन्धः** चमड़े का फ़ीता,—**मुण्डा** दुर्गा का विशेषण, —**यष्टिः** (स्त्री०) हंटर,—**वसनः** 'चर्मावृत्त' शिव, —**वाद्यम्** ढोल, तबला,—**संभवा** बड़ी इलायची,—**सारः** लसिका, रक्तोदक।

चर्ममय (वि०) [चर्मन+मयट्] चमड़े का, चमड़े का बना हुआ।

चर्मरुः,—चर्मारः [चर्मन्+रा+कु, चर्मन+ऋ+अण्] मोची, चमार, चमड़ा रंगने वाला।

चर्मिक (वि०) [चर्मन्+ठन्] ढाल से सुसज्जित।

चर्मिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [चर्मन्+इनि, टिलोपः] 1. ढाल से सुसज्जित 2. चमड़े का, (पुं०) 1. ढालधारी सैनिक 2. केला 3. भूर्ज वृक्ष।

चर्या [चर्+यत्+टाप्] 1. इधर-उधर जाना, हिलना-जुलना, इधर-उधर सैर करना 2. मार्ग, चाल (जैसा कि 'राहुचर्या' में) 3. व्यवहार, चालचलन, आचरण-विधि 4. अभ्यास, अनुष्ठान, पालन—मनु० १।१११, व्रतचर्या, तपश्चर्या 5. सब प्रकार के रीति-रिवाज व संस्कारों का नियमित अनुष्ठान 6. खाना 7. प्रथा, रिवाज—मनु० ६।३२।

चर्व् (भ्वा० पर०—चुरा० उभ०—चर्वति, चर्वयति—ते, चर्वित) 1. चबाना, कुतरना, खाना, कोंपल चरना, काटना—लाङ्गूलं गाढतरं चर्वितुमारब्धवान्—पंच ४, यस्यैतच्च न कुक्कुरैरहरहर्जंङ्घान्तरं चर्व्यते—मृच्छ० २।११ 2. चूस लेना 3. स्वाद लेना, चखना।

चर्वणम्,—णा [चर्व्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] 1. चबाना, खाना 2. आचमन करना 3. (आलं०) चखना, स्वाद लेना, आनन्द लेना—प्रमाणं चर्वणैवात्र स्वाभिन्ने विदुषां मतम्--सा० द० ५७, (टी० चर्वणा आस्वादनं तच्च स्वादः काव्यार्थसंभेदादात्मानन्दसमुद्भव इत्युक्त-प्रकारम्), इसी प्रकार 'निष्पत्त्या चर्वणस्यास्य निष्पत्तिरुपचारतः' ५८।

चर्वा [चर्व+अङ] तमाचा, थप्पड़ का प्रहार (चर्वन् (पुं०) भी)।

चर्वित (भू० क० कृ०) [चर्व्+क्त] 1. चबाया गया, काटा हुआ, खाया हुआ 2. चखा गया। सम० —**चर्वणम्** (शा०) चबाये हुए को चबाना, (आलं०) पुनरुक्ति, निरर्थक आवृत्ति, —**पात्रम्** पीकदान।

चल् i (भ्वा० पर०—चलति, (विरल प्रयोग—चलते) चलित) 1. हिलाना, कांपना, धड़कना, थरथराना, स्पंदित होना,—छिन्नाश्चेलुः क्षणं भुजाः—भट्टि० १४।४०, सपक्षोद्रिरिवाचालीत्—१५।२४, ६।८४ 2. (क) जाना, चलते रहना, सैर करना, स्पंदित होना, हिलना-जुलना (एक स्थान से) —पदात्पदमपि चलितुं न शक्नोति—पंच० ४, चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान्—चाण० ३२, चचाल बाला स्तनभिन्नवल्कला —कु० ५।८४, मृच्छ० १।५६। (ख) (अपने मार्ग पर) आगे बढ़ना, बिदा होना, कूच करना, चल देना —चेलुश्चीरपरिग्रहाः—कु० ६।९३ 3. ग्रस्त होना, सबाध होना, घबड़ाया हुआ या अव्यवस्थितचित्त होना, क्षुब्ध होना, व्याकुल होना – मुनेरपि यतस्तस्य दर्शनाच्चलते मनः—पंच० १।४०, लोभेन बुद्धिश्चलति—हि० १।१४० 4. विचलित होना या भटकना (अपा० के साथ) —चलति नयान्न जिगीषतां हि चेतः—कि० १०।२९, अलग होना, छोड़ देना—मनु० ७।१५, याज्ञ० १।३६०, (प्रेर०)—च (चा) लयति, च (चा) लित 1. हिलाना-जुलाना डुलाना, हरकत देना 2. दूर करना हटाना, निकाल देना 3. दूर ले जाना 4. आनन्द लेना पालना-पोसना (केवल—चालयति), उद्—1. चल देना, प्रस्थान करना,—स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयाताम्—रघु० २।६, उच्चचाल बलभित्सखो वशी

—११।५१, नगरायोदचलम्—दश० 2. चले जाना, चल देना, (किसी के स्थान को) छोड़ चलना—स्थानादनुच्चलन्नपि—श० १।२९, पुष्पोच्चलितषट्पदम् —रघु० १२।२७, प्र—, 1. हिलाना, जाना, काँपना —भर्तृ० २१४ 2. जाना, सैर करना, चलते जाना, प्रस्थान करना, कूच करना 3. ग्रस्त होना, बाधायुक्त या क्षुब्ध होना 4. भटकना, बिचलित होना, वि—, 1. हिलना-जुलना, चलना पतति पतत्रे विचलति पत्रे शङ्कितभवदुपयानम्—गीत० ५ 2. जाना, आगे बढ़ना, चल देना 3. क्षुब्ध होना, बाधायुक्त होना, (समुद्र की भाँति) रूखा होना—व्यचालीदम्भसां पतिः —भट्टि० १५।७० 4. विचलित होना, भटकना —याज्ञ० १।३५८, ii (तुदा० पर०—चलति चलित) खेलना, क्रीडा करना, केलि करना।

चल (वि०) [चल्+अच्] 1. (क) हिलने-जुलने वाला काँपने वाला, डोलने वाला, थरथराने वाला, (आँख आदि को) घुमाने वाला—चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि —श० १।२४, चलकाकपक्षकैरमात्यपुत्रैः—रघु० ३। २८, लहराने वाले—भर्तृ० १।६, (ख) जंगम (विप० स्थिर)—चञ्चलचले लक्ष्ये—श० २।५ 2. अस्थिर, चंचल, परिवर्तनशील, शिथिल, डाँवाडोल—दयितास्वनवस्थितं नृणां न खलु प्रेम चलं सुहृज्जने—कु० ४।२८, प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु—३।१ 3. अस्थायी, अनित्य, नश्वर—चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चलं जीवितयौवनं 4. अव्यवस्थित,—लः 1. कंपकंपी, वेपथु, क्षोभ 2. वायु 3. पारा—ला 1. धन की देवी लक्ष्मी 2. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य। सम०—अति चलायमान (=अतिचल);—चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चलः —भर्तृ० ३।१२८, लक्ष्मीमिव चलाचलाम्—कि० ११।३० (चलाचला=चंचला—मल्लि०) नै० १।६०, (लः) कौवा,—आतङ्कः गठिया वाय, वात रोग, —आत्मन् (वि०) चलचित्त, चंचलमना,—इन्द्रिय (वि०) 1. भावुक 2. विषयी,—इषुः वह धनुर्धर जिसका तीर लक्ष्यच्युत हो इधर उधर गिर जाता है, अयोग्य धनुर्धर,—कर्णः पृथ्वी से ग्रह तक की वास्तविक दूरी,—चञ्चुः चकोर पक्षी,—दलः,—पत्रः अश्वत्थ वृक्ष।

चलन (वि०) [चल्+ल्युट्] गतिशील, थरथराने वाला, कंपमान, डाँवाडोल,—नः 1. पैर 2. हरिण,—नम् 1. काँपना हिलना, डाँवाडोल होना—चलनात्मकं कर्म —तर्क सं०, हस्त°, जानु° आदि—तरल दृगञ्चलचलनमनोहरवदनजनितरतिरागम्—गीत० ११ 2. घूमना, भरमना,—नी 1. सामान्य स्त्रियों के पहनने के लिए लहँगा, पेटीकोट 2. हाथी को बाँधने की रस्सी।

चलनकम् [चलन+कन्] एक छोटा लहँगा या पेट्टीकोट जिसे नीच जाति की स्त्रियाँ पहनती हैं।

चलिः [चल्+इन्] आवरण, चादर।

चलित (भू० क० कृ०) [चल्+क्त] 1. हिला हुआ, चला हुआ, आन्दोलित, क्षुब्ध 2. गया हुआ, विसर्जित —एवमुक्त्वा स चलितः 3. अवाप्त 4. ज्ञात, अधिगत (दे० चल्),—तम् 1. हिलाना, स्पंदित करना 2. जाना, चलना 3. एक प्रकार का नृत्य—चलितं नाम नाट्यमन्तरेण—मालवि० १।

चलुः [चल्+उन्] (पानी का) एक घूँट, चुल्लूभर।

चलुकः [चलु+कन्] 1. चुल्लूभर (पानी) 2. अंजलिभर या एक घूँट (पानी) तु० 'चुलुक'।

चष् i (भ्वा० उभ०—चषति—ते) खाना; ii (भ्वा० पर०—चपति) मार डालना, क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना।

चषकः,—कम् [चष्+क्वुन्] सुरापात्र, प्याला, मदिरा पीने का गिलास च्युतैः शिरस्त्रैश्चषकोत्तरेव—रघु० ७।४९, मुखं लालाक्लिन्नं पिबति चषकं सासवमिव- शा० १।२९, कि० ९।५६, ५७,—कम् 1. एक प्रकार की मदिरा 2. मधु, शहद।

चषतिः [चष्+अति] 1. खाना 2. मार डालना 3. ह्रास, निर्बलता, क्षय।

चषालः [चष्+आलच्] 1. यज्ञ के खंभे में लगी लकड़ी की फिरकी 2. छत्ता।

चह् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—चहति, चहयति—ते) 1. दुष्ट होना 2. ठगना, धोखा देना 3. अहंकार करना, घमंडी बनाना।

चाकचक्यम् [चक्+अच्, द्वित्वम्, चकचकः—तस्य भावः —ष्यञ्] जगमगाना, प्रभा, चमक-दमक।

चाक्र (वि०) (स्त्री०—क्री) [चक्र+अण्] 1. चक्र से किया जाने वाला (युद्ध) 2. मंडलाकार 3. चक्र या पहिए से संबंध रखने वाला।

चाक्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [चक्र+ठक्] दे० ऊ० चाक्र,—कः 1. कुम्हार 2. तेली—याज्ञ० १।१६५, (तैलिक—मिता०, दूसरों के मत में शाकटिक=गाड़ीवान) 3. कोचवान, चालक।

चाक्रिणः [चक्रिन्+अण्] कुम्हार या तेली का पुत्र।

चाक्षुष (वि० स्त्री०—षी) [चक्षुस्+अण्] 1. दृष्टि पर निर्भर, दृष्टि से उत्पन्न, 2. आँख से संबंध रखने वाला, आँख का विषय, दार्ष्टिक 3. दृश्य, जो दिखाई दे, —षम् दृष्टि पर निर्भर ज्ञान। सम०—ज्ञानम् आँखों देखी गवाही, या प्रमाण।

चाङ्गः [चि+ड=चम् अङ्गम् यस्य ब० स०] 1. अम्ललोणिका शाक 2. दांतों की सफ़ेदी या सौंदर्य।

चाञ्चल्यम् [चञ्चल+ष्यञ्] 1. अस्थिरता, द्रुतगति,

विलोलता, (आंख आदि का) कम्पन, फरकना—भामि० २।६० 2. चंचलता 3. नश्वरता।

चाटः [चट्+अच्] बदमाश, ठग (जो पहले उसमें पूरा विश्वास जमा लेता है जिसे वह ठगना चाहता है) —याज्ञ० १।३३६—(चाटाः=प्रतारका विश्वास्य ये परधनमपहरन्ति—यित०)।

चाटुः-टु (नपुं०) [चट्+उण्] 1. मधुर तथा प्रिय वचन, मीठी बात, चापलूसी, ठकुरसुहाती (विशेषकर किसी प्रेमी के द्वारा अपनी प्रेमिका के प्रति)—प्रियः प्रियायाः प्रकरोति चाटुम्—ऋतु० ६।१४, विरचितचाटुवचनरचनं चरणरचितप्रणिपातम्—गीत० ११, अमरु ८३, पंच० १, शा० ८।१४, चौर० २० (गीतगोविंद के दसवें सर्ग का अधिकांश भाग इसी प्रकार की चाटुकारिता से भरा हुआ है) 2. स्पष्ट भाषण। सम०—**उक्तिः** (स्त्री०) खुशामद और झूठी प्रशंसा के वचन, —**उल्लोल,**—**कार** (वि०) प्रिय तथा मधुर बोलने वाला, चापलूस—शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः—मेघ० ३१,—**पटु** (वि०) झूठी प्रशंसा करने में कुशल, पूरा चापलूस,—**बटुः** मसखरा, भांड,—**लोल** (वि०) सुंदरतापूर्वक हिलने वाला,—**शतम्** सैकड़ों अनुरोध, बार-बार की जाने वाली खुशामद—पटुचाटुशतैरनुकूलम्—गीत० २, गजपुङ्गवस्तु धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुङ्क्ते—भर्तृ० २।३१।

चाणक्यः [चणक+यञ्] नागर राजनीति के प्रख्यात प्रणेता विष्णुगुप्त, 'कौटिल्य' भी इन्हीं का नाम है—दे० कौटिल्य।

चाणूरः (पुं०) कंस का सेवक जो प्रसिद्ध मल्लयोद्धा था, जिस समय अक्रूर कृष्ण को मथुरा ले गया तो इस दुर्दांत योद्धा को कृष्ण से लड़ने के लिए भेजा गया। मल्लयुद्ध में कृष्ण ने इसे पछाड़ दिया और पृथ्वी पर रौंद डाला तथा इसके सिर को चूर्ण कर दिया।

चाण्डालः (स्त्री०—ली) [चण्डाल+अण्] पतित, अधम —दे० चंडाल,—चाण्डालः किमयं द्विजातिरथवा—भर्तृ० ३।५६ मनु० ३।२३९, ४।२९, याज्ञ० १।९३।

चाण्डालिका=चंडालिका।

चातकः (स्त्री०—की) [चत्+ण्वुल्] चातक, पपीहा, (कवि समय के अनुसार यह केवल वर्षाऋतु में ही रहता है)—सूक्ष्मा एव पतन्ति चातकमुखे द्वित्राः पयोबिन्दवः—भर्तृ० २।१२१, दे० २।५१ और रघु० ५।१७। सम०—**आनन्दनः** 1. वर्षाऋतु 2. बादल।

चातनम् [चत्+णिच्+ल्युट्] 1. हटाना 2. क्षति पहुँचाना।

चातुर (वि०) (स्त्री०—री) 1. चार की संख्या से संबद्ध 2. होशियार, योग्य, बुद्धिमान् 3. मधुरभाषी, चापलूस 4. दृष्टिविषयक, प्रत्यक्षज्ञानात्मक—**रम्** चार पहियों की गाड़ी,—**री** कुशलता, दक्षता, योग्यता तद्भूटचातुरीतुरी—नै० १।१२।

चातुरक्षम् [चतुरक्ष+अण्] चौपड़ या चार पासों के खेल में चार का दाँव,—**क्षः** छोटा गोल तकिया।

चातुरर्थिकः [चतुर्षु अर्थेषु विहितः—ठक्] (व्या० में) एक ऐसा प्रत्यय जो चार भिन्न-भिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए शब्द में जोड़ा जाता है।

चातुराश्रमिक (वि०) (स्त्री०—की), **चातुराश्रमिन्** (वि०) (स्त्री०—णी) ब्राह्मण की धार्मिक-जीवनचर्या के चार कालों में से किसी एक में रहने वाला। दे० 'आश्रम'।

चातुराश्रम्यम् [चतुराश्रम+ष्यञ्] ब्राह्मण की धार्मिक-जीवनचर्या के चार काल। दे० 'आश्रम'।

चातुरिक, चातुर्थक, चातुर्थिक (वि०) (स्त्री०—की) [चातुर+ठक्, चतुर्थ+अण्, ठक् वा] 1. चौथे या, हर चौथे दिन होने वाला,—**कः** चौथैया बुखार, जूड़ीताप।

चातुरर्थाह्निक (वि०) (स्त्री०—की) [चतुर्थाह्न+ठक्] चौथे दिन होने वाला।

चातुर्दशम् [चतुर्दश्यां दृश्यते इति] राक्षस-सिद्धा०।

चातुर्दशिकः [चतुर्दशी+ठक्] जो चांद्रपक्ष की चतुर्दशी के दिन भी पढ़ता है (यह 'अनध्याय' का दिन है)।

चातुर्मासक (वि०) (स्त्री०—सिका) [चतुर्षु मासेषु भवः —अण्+कन्, चतुर्मास+ठक्+टाप्, ह्रस्वश्च] जो चातुर्मास्य यज्ञ का अनुष्ठान करता है।

चातुर्मास्यम् [चतुर्मास्+ण्य] हर चार महीने के पश्चात् अनुष्ठेय यज्ञ अर्थात् कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ के आरंभ में।

चातुर्यम् [चतुर+ष्यञ्] 1. कुशलता, होशियारी, दक्षता, बुद्धिमत्ता 2. लावण्य, रमणीयता, सौन्दर्य—भ्रूचातुर्यम्—भर्तृ० १।३।

चातुर्वर्ण्यम् [चतुर्वर्ण+ष्यञ्] 1. हिन्दुजाति के मूल चार वर्णों की समष्टि—एवं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः—मनु० १०।६३, ऋक् ६।१३ 2. इन चार वर्णों का धर्म या कर्तव्य।

चातुर्विध्यम् [चतुर्विध+ष्यञ्] चार प्रकार (सामूहिक रूप से), चार प्रकार का प्रभाग।

चात्वालः [चत्+वालच=चत्वाल+अण्] 1. भूमि में खोद कर बनाया हुआ हवनकुण्ड 2. कुशा, दर्भ।

चान्दनिक (वि०) (स्त्री०—की) [चन्दन+ठक्] 1. चन्दन से बनाया हुआ, या उत्पन्न 2. चन्दनरस से सुगन्धित।

चान्द्र (वि०) (स्त्री०—द्री) [चन्द्र+अण्] चन्द्रमा से संबंध रखने वाला, चन्द्रसंबंधी—गुरुकाव्यानुगां बिभ्रच्चान्द्रीमभिनभः श्रियम्—शि० २।२,—**द्रः** 1. चांद्रमास

2. शुक्लपक्ष 3. चन्द्रकांतमणि,—द्रम् 1. चांद्रायण नामक व्रत 2. ताजा अदरक 3. मृगशीर्ष नक्षत्र,—द्री चांदनी। सम०—भागा चन्द्रभागा नाम नदी,—मासः चन्द्रमा की तिथियों के अनुसार गिना जाने वाला महीना,—व्रतिकः चांद्रायण व्रत रखने वाला।

चन्द्रकम् [चान्द्र+कै+क] सूखा अदरक, सोंठ।

चान्द्रमस (वि०) (स्त्री—सी) [चन्द्रमस्+अण्] चन्द्रमा से संबंध रखने वाला, चाँद-संबंधी—लब्धोदया चान्द्रमसीव लेखा-कु० १।२५, चन्द्रं गता पद्मगुणान्न भुंक्ते पद्माश्रिता चान्द्रमसीमभिख्याम्-१।४३, रघु० २।३९, भग० ८।२५,—सम् मृगशिरा नक्षत्रपुंज।

चान्द्रमसायनः,—निः [चन्द्रमसोऽपत्यम्—फिञ्] बुधग्रह।

चान्द्रायणम् [चन्द्रस्यायनमिवायनमत्र, पूर्वपदात् संज्ञायां णत्वं, संज्ञायां दीर्घः, स्वार्थे अण् वा—तारा०] एक धार्मिक व्रत या प्रायश्चित्तात्मक तपश्चर्या जो चन्द्रमा की वृद्धि व क्षय से विनियमित है। इस व्रत में दैनिक आहार (जो १५ ग्रास या कौर का होता है) पूर्णिमा से प्रतिदिन एक२ ग्रास घटता रहता है यहाँ तक कि अमावस्या के दिन नितांत निराहार व्रत रक्खा जाता है, उसके पश्चात् फिर शुक्लपक्ष में एक कौर से आरंभ करके पूर्णिमा तक बढ़ाकर फिर १५ ग्रास तक लाया जाता है) तु० याज्ञ० ३।३२४, मनु० ११।२१७।

चान्द्रायणिक (वि०) (स्त्री०—की) [चान्द्रायण+ठञ्] चान्द्रायण व्रत का पालन करने वाला।

चापम् (चप+अण्) 1. धनुष,—ताते चापद्वितीये वहति रणधुरां को भयस्यावकाशः—वेणी० ३।५, इसी प्रकार 'चापपाणिः' 2. हाथ में धनुष लिये हुए 3. इन्द्र धनुष 4. (ज्यामिति) वृत्त की तोरणाकार रेखा 5. धनु: राशि।

चापलम्,—ल्यम् [चपल+अण्, ष्यञ् वा] 1. द्रुतगति, स्फूर्ति 2. चंचलता, अस्थिरता, संक्रमणशीलता—कि० २।४१ 3. विचारशून्य या आवेशपूर्ण आचरण, उतावलापन, उद्दण्ड कृत्य—धिक् चापलम्—उत्तर ४, तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः, रघु० १।९, स्वचित्तवृत्तिरिव चापलेभ्यो निवारणीया—का० १०१ 4. (घोड़े आदि का) अड़ियलपन—पुनः पुनः सूतनिषिद्धचापलम्—रघु० ३।४२।

चामरः,—रम् [चमर्याः विकारः तत्पुच्छनिर्मितत्वात् चमरी+अण्] (कमी२—रा,—री) चौरी, चंवर या चमरी की पूँछ, (यह मोरछल या पंखे की भांति प्रयुक्त की जाती है, और एक राजकीय चिह्न समझा जाता है—कभी-कभी यह केतुपट की भांति घोड़े के सिर पर फहराया जाता है)—व्याधूयन्ते निचुलतरुभिः मञ्जरीचामराणि—विक्रम० ४।४, अदेयमासीत् त्रयमेव भूपतेः शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे—रघु० ३।१६, कु० ७।४२, हि० २।२९, मेघ० ३५, चित्रन्यस्तमिवाचलं हयशिरस्यायामवच्चामरम्—विक्रम० १।४, श० १।८। सम०—ग्राहः,—ग्राहिन् (पुं०) चंवर डुलाने वाला, चंवर वरदार,—ग्राहिणी चंवर डुलाने वाली राजा की सेविका—पृष्ठे लीलावलयरणितं चामरग्राहिणीनां—भर्तृ० ३।६१,—पुष्पः,—पुष्पकः 1. सुपारी का पेड़ 2. केतकी का पौधा 3. आम का वृक्ष।

चामरिन् (पुं०) [चामर+इनि] घोड़ा।

चामीकरम् [चमीकर+अण्] 1. सोना—तप्तचामीकराङ्गदः—विक्रम० १।१४, रघु० ७।५, शि० ४।२४, कु० ७।२४ 2. धतूरे का पौधा। सम०—प्रख्य (वि०) सोने की तरह का।

चामुण्डा [चम्+ला+क, पृषो० साधुः] दुर्गा का रौद्ररूप—मा० ५।२५।

चाम्पिला [चम्प्+अङ+टाप्=चम्पा+अण्+इलच्] चंपा नाम की नदी (संभवतः वर्तमान् 'चंबल' नदी)।

चाम्पेयः [चम्पा+ढक्] 1. चम्पक वृक्ष 2. नागकेसर का पेड़,—यम् 1. तन्तु, विशेषकर कमल फूल का 2. सोना 3. धतूरे का पौधा (अंतिम दो अर्थों में पुं० भी)।

चाय् (भ्वा० उभ० चायति—ते) 1. निरीक्षण करना, अच्छा बुरा पहचानना, देख लेना—शि० १२।५१ 2. पूजा करना।

चारः [चर्+घञ्] 1. जाना, घूमना, चाल, भ्रमण—मण्डलचारशीघ्रः—विक्रम० ५।२, क्रीडाशैले यदि च विचरेत् पादचारेण गौरी—मेघ० ६०, पैदल चलना 2. गति, मार्ग, प्रगति—मंगलचार, शनिचार आदि 3. भेदिया, चर, गुप्तचर, दूत—मनु० ७।१८४, ९।२६१, दे० चारचक्षुस् नी० 4. अनुष्ठान करना, अभ्यास करना 5. बंदी 6. बंधन, बेड़ी,—रम् कृत्रिम विष। सम०—अन्तरितः भेदिया,—ईक्षणः—चक्षुस् (पुं) 'गुप्तचरों को आँख के स्थान में प्रयुक्त करने वाला' राजा (या राजनीतिज्ञ) जो गुप्तचर या भेदिया रखता है और उन्हीं के माध्यम से देखता है, चारचक्षुर्महीपतिः—मनु० ९।२५६, तु० कामन्दकः—गावः पश्यन्ति गन्धेन, वेदैः पश्यन्ति च द्विजाः, चारैः पश्यन्ति राजानः चक्षुर्भ्यामितरे जनाः। रामा० भी—यस्मात्पश्यन्ति दूरस्थाः सर्वानर्थान्नराधिपाः, चारेण तस्मादुच्यन्ते राजानश्चारचक्षुषः।—चणः,—चञ्चु (वि०) ललित चाल वाला, सजीला।—पथः चौराहा,—भटः वीर योद्धा,—वायुः ग्रीष्मकालीन मृदु मन्द पवन, वसन्त वायु।

चारकः [चर्+णिच्+ण्वुल्] 1. भेदिया 2. ग्वाला 3. नेता चालक 4. साथी 5. अश्वारोही, सवार 6. कारागार—निगडितचरणा चारके निरोद्धव्या—दश० ३२।

चारणः [चर्+णिच्+ल्युट्] 1. भ्रमणशील, तीर्थयात्री

2. घूमने-फिरने वाला नट या गवैया, नर्तक, भांड, भाट—मनु० १२।१४ 3. स्वर्गीय गवैया, गंधर्व—श० २।१४ 4. वेद या अन्य धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करने वाला 5. भेदिया ।

चारिका [चर्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] सेविका, दासी ।

चारितार्थ्यम् [चरितार्थ+ष्यञ्] उद्देश्यसिद्धि, सफलता ।

चारित्रम्,—त्र्यम् [चरित्र+अण्, ष्यञ् वा] 1. शील, व्यवहार, काम करने की रीति 2. नेकनामी, सच्चरित्रता, ख्याति, सचाई, ईमानदारी, अच्छा चालचलन—अनृतं नाभिभास्यामि चरित्रभ्रंशकारणम्—मृच्छ० ३।२५, २६, चारित्र्यविहीन—आढ्योऽपि च दुर्गतो भवति—१।४३ 3. सतीत्व, (स्त्रियों का) सदाचरण 4. स्वभाव, तबीयत 5. विशिष्ट आचार या अभ्यास 6. कुलक्रमागत आचार । सम०—**कवच** (वि०) सतीत्व रूपी कवच में सुरक्षित ।

चारु (वि०) (स्त्री० रु,—र्वी) [चरति चित्ते—चर्+उण्] 1. रुचिकर, सत्कृत, प्रिय, प्रतिष्ठित, अभीष्ट (संप्र० या अधि० के साथ)—वरुणाय या वरुणे चारुः 2. सुखद, रमणीय, सुन्दर, कान्त, मनोहर—प्रिये चारुशीले मुञ्च मयि मानमनिदानम्—गीत० १०, सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते—ऋतु० ६।२, चकासतं चारुचमूरुचर्मणा—शि० १।८, ४।४९,—**रुः** वृहस्पति का विशेषण,—**रु** (नपुं०) केसर, जाफरान । सम०—**अङ्गी** सुन्दर अंगों वाली स्त्री०—**घोण** (वि०) सुन्दर नाक वाला पुरुष,—**दर्शन** (वि०) प्रियदर्शन, लावण्यमय,—**धारा** शची, इन्द्राणी, इन्द्र की पत्नी,—**नेत्र,—लोचन** (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (त्रः, नः) हरिण,—**फला**, अंगूरों की बेल, अंगूर,—**लोचना** सुन्दर आँखों वाली,—**वक्त्र** (वि०) सुन्दर मुख वाला,—**वर्धना** स्त्री,—**व्रता** एक मास तक उपवास करने वाली स्त्री,—**शिला** 1. जवाहर, रत्न 2. पत्थर की सुन्दर शिला,—**शील** (वि०) कान्त-स्वभाव या चरित्र,—**हासिन्** (वि०) मधुर मुस्कान वाला ।

चार्चिक्यम् [चर्चिका+ष्यञ्] 1. शरीर को सुगंधित करना, चन्दन आदि लगाना 2. उबटन ।

चार्म (वि०) (स्त्री०—र्मी) [चर्मन्+अण्, टिलोपः] 1. चमड़े का बना हुआ 2. (गाड़ी आदि) चमड़े से ढका हुआ 3. ढाल धारी, ढाल से युक्त ।

चार्मण (वि०) (स्त्री०—णी) [चर्मन्+अण्, स्त्रियां ङीप् च] चमड़े या खाल से ढका हुआ,—**णम्** खालों या ढालों का ढेर ।

चार्मिक (वि०) (स्त्री०—की) [चर्मन्+ठक्] चमड़े का बना हुआ—मनु० ८।२८९ ।

चार्मिणम् [चर्मिन्+अण्] ढालधारी मनुष्यों का समूह ।

चार्वाकः [चारुः लोकसमतो वाको वाक्यं यस्य—ब० स०] कुतर्की दार्शनिक जो बृहस्पति का शिष्य बताया जाता है और जिसने भौतिकवाद एवं नास्तिकता के स्थूल रूप का प्रवर्तन किया (चार्वाकमत के सिद्धांतों के साराश के लिए दे० सर्व० १) 2. महाभारत में वर्णित एक राक्षस जो दुर्योधन का मित्र और पांडवों का शत्रु था [जब युधिष्ठिर अपनी विजयपताका के साथ हस्तिनापुर में प्रविष्ट हुआ तो उस राक्षस ने एक ब्राह्मण रूप धारण कर लिया तथा उसने युधिष्ठिर, एवं एकत्रित ब्राह्मणों को बुरा-भला कहा । परन्तु शीघ्र ही उसका पता लग गया, और क्रोध में भर कर असली ब्राह्मणों ने उसका वहीं काम तमाम कर दिया । उस राक्षस ने महाभारत युद्ध की समाप्ति पर भी युधिष्ठिर को यह कहकर ठगने का प्रयत्न किया था कि भीम को तो दुर्योधन ने मार डाला—दे० वेणी० ६] ।

चार्वी [चारु+ङीप्] 1. सुन्दर स्त्री 2. चांदनी 3. बुद्धि, प्रज्ञा 4. प्रभा, कान्ति, दीप्ति 5. कुबेर की पत्नी ।

चालः [चल्+ण] 1. घर का छप्पर या छत, 2. नीलकंठ पक्षी 3. हिलना-डुलना, चलना-फिरना 4. जंगम होना ।

चालकः [चल्+ण्वुल्] दुर्दान्त हाथी ।

चालनम् [चल्+णिच्+ल्युट्] 1. चलाना-फिराना, हिलाना डुलाना, (पूंछ की भांति) हिलाना 2. छनवाना, छानना, छलनी,—**नी** छलनी, झरना ।

चाषः, —सः [चष्+णिच्+अच्, पृषो० सत्वम्] नीलकंठ पक्षी—मा० ६।५ याज्ञ० १।१७५ ।

चि (स्वा० उभ०—चिनोति, चिनुते, चित; प्रेर०—चाययति, चापयति; चययति, चपयति भी, सन्नन्त—चिचीषति, चिकीषति) 1. चुनना, बीनना, इकट्ठा करना (द्विकर्मक धातु होने के कारण दो कर्मों के साथ अन्वय परन्तु लौकिकसाहित्य में इसका प्रयोग विरल)—वृक्षं पुष्पाणि चिन्वती 2. ढेर लगाना, टाल लगा देना, अंबार लगा देना—पर्वतानिव ते भूमावचैषुर्वानरोत्तमान्—भट्टि० १५।७६ 3. जड़ना, खचित करना, मढ़ना, भरना—दे० चित—कर्म वा०, फल उत्पन्न होना, उगना, बढ़ना, फलना-फूलना, समृद्ध होना—सिच्यते चीयते चैव लता पुष्पफलप्रदा—पंच० १।२२, फल लगता है;—चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृपिः—मुद्रा० १।३, राजहंस तव सैव शुभ्रता चीयते न च न चापचीयते—काव्य० १०, अप—कम होना, विहीन होना, वञ्चित होना, (मुख्यतः कर्मवा० में—1. घटना, क्षीण होना, कम होना—राजहंस तव सैव शुभ्रता चीयते न च न चापचीयते—काव्य० १० 2. शरीर में घटना, क्षीण होना, आ—, 1. एकत्र करना, ढेर लगाना 2. भरना, ढकना, मढ़ना—भट्टि० १७।६९, १४।४६, ४७, उद्—, एकत्र करना, बीनना—भट्टि० ३।३७, उप—, जोड़ना, बढ़ाना—उपचिन्वन्प्रभां तन्वीं

प्रत्याह परमेश्वरः—कु० ६।२५ (कर्मवा०) उगना, बढ़ना—अघोऽघः पश्यतः कस्य महिमा नोपचीयते —हि० २।२ भट्टि० ६।३३ शि० ४।१०, नि—, ढकना भरना, फैलाना, बिखेरना (मुख्यतः क्तांत प्रयोग) –निचितं खमुपेत्य नीरदैः—घट० १, शकुन्तनीडनिचितं विभ्रज्जटामण्डलम्—श० ७।११, भट्टि० १०।४२, निस्—, निर्धारण करना, संकल्प करना, निश्चय करना परि—, 1. अभ्यास करना 2. प्राप्त करना, लेना (कर्मवा०) बढ़ना—रघु० ३।२४ प्र—, 1. इकट्ठा करना, चुनना 2. जोड़ना 3. बढ़ाना, विकसित करना —प्राचीयमानावयवा रराज सा—रघु० ३।७, वि—, 1. एकत्र करना, चुनना 2. खोजना, ढूँढ़ना—विचितश्चैष समन्तात् श्मशानवाटः—मा० ५, विनिस्—, निर्धारण करना, संकल्प करना, निश्चय करना–विनिश्चेतुं शक्यो न सुखमिति वा दुःखमिति वा—उत्तर० १।३५, सम्—, 1. एकत्र करना, संग्रह करना, संचय करना—रक्षायोगादयमपि तपः प्रत्यहं संचिनोति—श० २।१४, रघु० १९।२, मनु० ६।१५ 2. क्रमबद्ध करना, व्यवस्थित करना, ठीक से रखना—भट्टि० ३।३५, समुद्—, संग्रह करना, जोड़ना ।

चिकित्सकः [कित्+सन्+ण्वुल्] वैद्य, हकीम, डाक्टर —उचितवेलातिक्रमे चिकित्सका दोषमुदाहरन्ति—मालवि० २, भर्तृ० १।८७, याज्ञ० १।१६२ ।

चिकित्सा [कित्+सन्+अ+टाप्] औषध सेवन करना, औषधोपचार, इलाज करना, स्वस्थ करना ।

चिकिलः [चि+इलच्, कुक्] कीचड़, महापंक, कर्दम, दलदल ।

चिकीर्षा [कृ+सन्+अ+टाप्, द्वित्वम्] (कोई काम) करने की इच्छा, कामना, अभिलाषा, इच्छा ।

चिकीर्षित (वि०) [कृ+सन+क्त, द्वित्वम्] अभिलषित, इच्छित, साभिप्राय,—तम् अभिकल्प, आशय, अभिप्राय ।

चिकीर्षु (वि०) [कृ+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] कुछ करने की इच्छा वाला, इच्छुक,—भग० १।२३, ३।२५ ।

चिकुर (वि०) [चि इत्यव्यक्त शब्दं करोति—चि+कुर्+क] 1. हिलने-जुलने वाला, कम्पमान, चंचल, अस्थिर 2. अविचार पूर्ण, आवेशयुक्त—,रः 1. सिर के बाल - मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानदं······कुसुमानि —गीत० १२, इसी प्रकार—घनचररुचिरे रचयति चिकुरे तरलिततरुणानने—७ 2. पहाड़ 3. रेंगने वाला, साँप सम०—उच्चयः,—कलापः,—निकरः, —पक्षः,—पाशः,—भारः—हस्तः बालों का गुच्छा या ढेर—यस्यांश्चोरश्चिकुरनिकरः कर्णपूरो मयूरः —प्रस० १।२२ ।

चिकूरः [चिकुर नि० दीर्घः] बाल ।

चिक्कः [चिक् इति अव्यक्त शब्देन कायति शब्दायते—चिक्+कै+क] छछुंदर ।

चिक्कण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [चिक्क्, क्विप् चिक् तं कणति—कण शब्दे+अच् तारा०] 1. चिकना, चमकदार 2. फिसलनी 3. स्निग्ध 4. मसृण, चर्बीला—लघु परित्रायतामेनां भवान् मा कस्यापि तपस्विन इंगुदीतैलचिक्कणशीर्षस्य हस्ते पतिष्यति —श० २,—णः सुपारी का पेड़,—णम् चिक्कणवृक्ष का फल, सुपारी ।

चिक्कणा,—णी 1. सुपारी का पेड़ 2. सुपारी ।

चिक्कसः [चिक्क्+असच्] जौ का आटा ।

चिक्का=चिक्कणा ।

चिक्किरः [चिक्क्+इरच्, ब्रा०] चूहा, मूसा ।

चिक्लिदम् [क्लिद्+यङ्+अच्, धातोर्द्वित्वं यङो लुक् च] तरी, तरवट, ताजगी ।

चिचिण्डः [?] एक प्रकार का कद्दू ।

चिच्छिलाः [पुं० ब० व०] एक देश तथा उसके निवासी ।

चिञ्चा [चिम्+चि+ड+टाप्] 1. इमली का पेड़, या उसका फल 2. घुंघची का पौधा ।

चिट् (भ्वा० पर०—चुरा० उभ०—चेटति, चेटयति—ते) भेजना, बाहर भेजना (जैसे कि किसी सेवक को भेजा जाता है) ।

चित् (भ्वा० पर०, चुरा० आ०—चेतति, चेतयते, चेतित) 1. प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, देखना, नजर डालना, दृष्टिगोचर करना—नेपूनचेतत्त्रस्यन्तम्—भट्टि० १७।१६, चिचेत रामस्तत्कृच्छ्रम्—१४।६२ १५।३८, २।२९ 2. जानना, समझना, चौकस होना, सतर्क होना—परैरध्यारुह्यमाणमात्मानं न चेतयते—दश० १५४ चैतन्य प्राप्त करना 4. प्रकट होना, चमकना ।

चित् (स्त्री०) [चित्+क्विप्] 1. विचार, प्रत्यक्ष ज्ञान 2. प्रज्ञा, बुद्धि, समझ—भर्तृ० २।१, ३।१ 3. हृदय, मन 4. आत्मा, जीव, जीवन में सजीवता-सिद्धांत 5. ब्रह्म । सम०—आत्मन् (पुं०) 1. चिंतनसिद्धांत या शक्ति 2. केवल प्रज्ञा, परमात्मा,—आत्मकम् चैतन्य,—आभासः जीव (जो सांसारिक वासनाओं में लिप्त है),—उल्लासः जीवों के हृदय का हर्ष,—घनः परमात्मा या ब्रह्म,—प्रवृत्तिः (स्त्री०) विचारविमर्श, चिंतन,—शक्तिः (स्त्री०) मानसिक शक्ति, बौद्धिक धारिता,—स्वरूपम् परमात्मा, (अव्य०) 1. 'किम्' और 'किम्' से व्युत्पन्न अन्य शब्दों के साथ जुड़नेवाला अव्यय (जैसे कि—कद्, कथम्, क्व, कदा, कुत्र, कुतः आदि) जिससे कि अर्थों में अनिश्चयात्मकता आती है—यथा कुत्रचित्=कहीं, केचित्=कोई 2. 'चित्' ध्वनि ।

चित (भू० क० कृ०) [चि+क्त] 1. संग्रह किया हुआ,

ढेर लगाया हुआ, अंबार लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ 2. जमा किया हुआ, संचित 3. प्राप्त, गृहीत 4. ढका हुआ—कृमिकुलचितम्—भर्तृ० २।११ 5. जमाया हुआ, जड़ा हुआ,—तम् भवन ।

चिता [चित्+टाप्] मुर्दे को जलाने के लिए चुनकर रक्खी हुई लकड़ियों का ढेर, चितिका—कुरु संप्रति तावदाशु में प्रणिपाताञ्जलियाचितश्चिताम्—कु० ४।३५, चिताभस्मन्—कु० ५।६९ । सम०—**अग्निः** शव को जलाने वाली आग,—**चूडकम्** चिता ।

चितिः (स्त्री०) [चि+क्तिन्] 1. संग्रह करना, इकट्ठा करना 2. ढेर, समुच्चय, पुंज 3. अम्बार, टाल, चट्टा 4. चिता 5. चौकोर आयताकार स्थान 6. समझ ।

चितिका [चिता+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. टाल, चट्टा 2. चिता 3. करधनी ।

चित्त (वि०) [चित्+क्त] 1. देखा हुआ, प्रत्यक्षज्ञात 2. सोचा हुआ, विचारविमर्श किया हुआ, मनन किया हुआ 3. संकल्प किया हुआ 4. अभिप्रेत, अभिलषित, इच्छित,—**त्तम्** 1. देखना, ध्यान देना 2. विचार, चिन्तन, अवधान, इच्छा, अभिप्राय, उद्देश्य—मच्चित्तः सततं भव—भग० १८।५७, अनेकचित्तविभ्रान्त १६।१६ 3. मन—यदासौ दुर्वारः प्रसरति मदश्चित्तकरिणः—शा० १।२२, इसी प्रकार 'चलचित्त' आदि समस्त शब्द 4. हृदय (बुद्धि का स्थान माना जाता है) 5. तर्क, बुद्धि, तर्कनाशक्ति । सम०—**अनुवर्तिन्** (वि०) मन के अनुकूल कार्य करने वाला, अनुरंजनकारी,—**अपहारक,**—**अपहारिन्** (वि०) मनोहर, आकर्षक, मोहक,—**आभोगः** भावनाओं के प्रति मन की आसक्ति, किसी एक वस्तु में अनन्य अनुराग, **आसङ्गः** आसक्ति अनुराग, **उद्रेकः** घमंड, गर्व, —**ऐक्यम्** सहमति, मतैक्य,—**उन्नतिः,**—**समुन्नतिः** (स्त्री०) 1. महानुभावता 2. घमंड, दर्प,—**धारिन्** (वि०) दूसरे की इच्छा के अनुसार काम करने वाला,—**जः**—**जन्मन्** (पुं०),—**भूः**—**योनिः** 1. प्रेम, आवेश 2. प्रेम का देवता काम देव—चित्तयोनिरभवत्पुनर्नवः—रघु० १९। ४६, सोऽयं प्रसिद्धविभवः खलु चित्तजन्मा—मा० १।२०, —**ज्ञ** (वि०) दूसरे के मन की बात जानने वाला,—**नाशः** बेहोशी,—**निर्वृतिः** (स्त्री०) संतोष, प्रसन्नता, प्रशम (वि०) स्वस्थ, शान्त, (—मः) मन की शान्ति, **प्रसन्नता** हर्ष, खुशी,—**भेदः** 1. विचारभेद 2. असंगति, अस्थिरता, —**मोहः** मनोमुग्धता,—**विक्षेपः** मन का उचाटपन—**विप्लवः**—**विभ्रमः** चित्तभ्रंश, बुद्धिभ्रंश, उन्मत्तता पागलपन,—**विश्लेषः** मैत्री-भंग,—**वृत्तिः** (स्त्री०) 1 मन की अवस्था या स्वभाव, रुचि, भावना—एवमात्माभिप्रायसंभावितेष्टजनचित्तवृत्तिः प्रार्थयिता विडम्ब्यते—श० २ 2. आन्तरिक अभिप्राय, संवेग 3. (योग—द० में) मन की आन्तरिक क्रिया, मानसिक दृष्टि—योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः—योग०—**वेदना** कष्ट, चिन्ता—**वैकल्यम्** मन की व्यग्रता, परेशानी—**हारिन्** (वि०) मनोहर, आकर्षक रुचिकर ।

चित्तवत् (वि०) [चित्त+मतुप्, मस्य वः] 1. तर्कसंगत, तर्कयुक्त 2. सकरुण, सदय ।

चित्यम् [चि+क्यप्] शव-दाह करने का स्थान,—**त्या** 1. चिता 2. काष्ठचयन, (वेदी का) निर्माण ।

चित्र (वि०) [चित्र्+अच्, चि+ष्ट्रन् वा] 1. उज्ज्वल, स्पष्ट 2. चितकबरा, धब्बेदार, शबलीकृत 3. दिलचस्प, रुचिकर मा०—१।४ 4. विविध, विभिन्न प्रकार का, भांति २ का—पंच० १।१३६, मनु० ९।२४८, याज्ञ० १।२८८ 5. आश्चर्यजनक, अद्भुत, अजीब,—**त्रः** 1. रंग-बिरंगा वर्ण रंग 2. अशोक वृक्ष,—**त्रम्** 1. तसवीर, चित्रकारी, आलेखन—चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा—श० २।९, पुनरपि चित्रीकृता कांता—श० ६।२०, १३,२१ आदि 2. चमकीला आभूषण 3. असाधारण छवि, आश्चर्य 4. सांप्रदायिक तिलक 5. आकाश, गगन 6. धब्बा 7. सफेद कोढ़, फुलबहरी 8. (सा० शा० में) काव्य के तीन भेदों में अन्तिम काव्यभेद (यह 'शब्दचित्र' और 'अर्थवाच्यचित्र' दो प्रकार का है, काव्यसौन्दर्य मुख्यरूप से अलंकारों के प्रयोग पर निर्भर करता है, जो शब्दों की ध्वनि और अर्थ पर आश्रित हैं, मम्मट परिभाषा देता है—शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्—काव्य० १) 'शब्दचित्र' का उदाहरण रसगंगाधर से उद्धृत किया जाता है—मित्रात्रिपुत्रनेत्राय त्रयीशात्रवशत्रवे, गोत्रारिगोत्रजेत्राय गोत्रात्रे ते नमो नमः ।—**त्रम्** (अव्य०) अहा ! कैसा विस्मय है ! क्या अद्भुत बात है—चित्रं बधिरो नाम व्याकरणमध्येष्यते—सिद्धा० । सम०—**अक्षी,**—**नेत्रा,** —**लोचना** एक पक्षिविशेष, मैना,—**अङ्ग** (वि०) धारीदार, चित्तीदार, शरीरधारी (गम्) सिंदूर,—**अन्नम्** रंगदार मसालों से प्रसाधित चावल—याज्ञ० १।३०४, —**अपूपः** एक प्रकार का पूड़ा,—**अर्पित** (वि०) तस्वीर में उतारा हुआ, चित्रित, °**आरम्भः** (वि०) चित्रित —रघु० २।३१, कु० ३।४२—**आकृतिः** (स्त्री०) चित्रित प्रतिकृति, आलोकचित्र,—**आयसम्** इस्पात —**आरम्भः** चित्रित दृश्य, चित्र की रूपरेखा—विक्रम० १।४,—**उक्तिः** (स्त्री०) 1. रुचिकर या वाक्चातुर्य से पूर्ण प्रवचन—जयन्ति ते पञ्चमनादमित्रचित्रोक्तिसंदर्भविभूषणेषु—विक्रम० १।१० 2. आकाशवाणी 3. अद्भुतकहानी,—**ओदनः** हल्दी से रंगा पीला भात —**कण्ठः** कबूतर,—**कथालापः** रोचक तथा मनोरंजक कहानियाँ सुनाना,—**कम्बलः** 1. छींट की बनी हाथी की झूल 2. रंग बिरंगा कालीन,—**करः** 1. चित्रकार

2. नाटक का पात्र या अभिनेता,—कर्मन् (नपुं०) 1. असाधारण कार्य 2. विभूषित करना, सजाना 3. तस्वीर 4. जादू, (पुं०) 1. आश्चर्यजनक करतब करने वाला जादूगर 2. चित्रकार, °विद् (पुं०) 1. चित्रकार 2. जादूगर,—कायः साधारण शेर 2. चीता,—कारः 1. चित्रकारी करने वाला 2. एक वर्णसंकर जाति (स्थपतेरपि गान्धिक्यां चित्रकारो व्यजायत—पराशर०),—कूटः एक पहाड़ का नाम, इलाहाबाद के निकट एक जिले का नाम - रघु० १२।१५, १३।४७ उत्तर० १,—कृत् (पुं०) चित्रकार, –क्रिया चित्रकारी,—ग,—गत (वि०) चित्रित किया हुआ, – गन्धम् हरताल,—गुप्तः यमराज के कार्यालय में मनुष्यों के गुण तथा अवगुणों को लिखने वाला—मुद्रा० १।२०,—गृहम् चित्रित घर,—जल्पः अटकलपच्चू और असंबद्ध बात, विभिन्न विषयों पर बातचीत,—त्वचू (पुं०) भूर्ज वृक्ष,—दण्डकः कपास का पौधा,—न्यस्त (वि०) चित्रित, तस्वीर में उतारा हुआ कु० २।२४,—पक्षः चकोरसदृश तीतर,—पटः,—ट्टः 1. आलेख, तस्वीर 2. रंगीन या चारखानेदार कपड़ा,—पद, (वि०) 1. भिन्न २ भागों में विभक्त 2. ललित पदावली से युक्त,—पावा मैना, सारिका,—पिच्छकः मोर,—पंखः एक प्रकार का बाण,—पृष्ठः चिड़िया,—फलकम् चित्र-पटल, चित्र रखने का तख्ता,—बर्हः मोर,—भानुः 1. आग 2. सूर्य (चित्र भानुर्विभातीति दिने रवौ रात्रौ वह्नौ—काव्य० २, अंजन विधि का निदर्शन दिया गया है) 3. भैरव 4. मदार का पौधा,—मण्डलः एक प्रकार का साँप,—मृगः चित्तीदार हरिण,—मेखलः मोर,—योधिन् (पुं०) अर्जुन का विशेषण,—रथः 1. सूर्य 2. गंधर्वों के एक राजा का नाम, मुनि नामक पत्नी से कश्यप के १६ पुत्र हुए चित्ररथ उनमें से एक है—अत्र मुनेस्तनयश्चित्रसेनादीनां पञ्चदशानां भ्रातृणामधिको गुणैः षोडशश्चित्ररथो नाम समुत्पन्नः—काव्य० १३६, विक्रम० १,—लेख (वि०) सुन्दर रूपरेखा वाला, अत्यन्त मंडलाकार—रुचिरस्तव कलावती रुचिरचित्रलेखे भ्रुवौ—गीत० १०, (खा) बाणासुर की पुत्री, उषा की एक सहेली (जब उषा ने अपना स्वप्न अपनी सहेली चित्रलेखा को सुनाया, तो उसने यह सुझाव दिया कि इस चित्र को आस-पास के राज्यों में घुमाया जाय, इस प्रकार जब उषा ने अनिरुद्ध को पहचान लिया तो चित्रलेखा ने अपने जादू के द्वारा अनिरुद्ध को उषा के महल में बुलवा दिया),—लेखकः चित्रकार,—लेखनिका चित्रकार की तूलिका, कूंची,—विचित्र (वि०) 1. रंगबिरंगा, चितकबरा 2. बेलबूटेदार,—विद्या चित्रकला—शाला चित्रकार का कार्यालय,—शिखण्डिन् (पुं०) सात ऋषियों °(मरीचि, अंगिरस्, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, और वसिष्ठ) का विशेषण, °जः बृहस्पति का विशेषण —संस्थ (वि०) चित्रित,—हस्तः युद्ध के अवसर पर हाथों की विशेष अवस्थिति ।

चित्रकः [चित्र+कन्] 1. चित्रकार 2. सामान्य शेर 3. छोटा शिकारी चीता 4. एक वृक्ष का नाम,—कम् मस्तक पर साम्प्रदायिक तिलक ।

चित्रल (वि०) [चित्र्+कल] चितकबरा, चित्तीदार,—लः रंगबिरंगा रंग ।

चित्रा [चित्र्+अच्+टाप्] चांद्र मास का चौदहवाँ नक्षत्र, हिमनिर्मुक्तयोर्योगे चित्राचंद्रमसोरिव—रघु० १।४६ । सम०—अटीरः, ·ईशः चांद ।

चित्रिकः [चैत्र+क पृषो० साधुः] चैत्र का महीना ।

चित्रिणी [चित्र्+णिनि, चित्र अस्त्यर्थे इनि वा] भांति २ के बुद्धिवैभव और श्रेष्ठताओं से युक्त स्त्री, रतिशास्त्र में वर्णित चार प्रकार (पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी और हस्तिनी या करिणी) की स्त्रियों में एक। रतिमंजरी में 'चित्रिणी' की परिभाषा इस प्रकार दी गई है :—भवति रतिरसज्ञा नातिखर्वा न दीर्घा तिलकुसुमसुनासा स्निग्धनीलोत्पलाक्षी—घन कठिनकुचाढ्या सुंदरी बद्धशीला, सकलगुणविचित्रा चित्रिणी चित्रवक्त्रा ॥ ३ ॥

चित्रित (वि०) [चित्र्+क्त] 1. रंगबिरंगा, चित्तीदार 2. चित्रकारी से युक्त ।

चित्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [चि+इनि] 1. आश्चर्यकारी 2 रंगबिरंगा ।

चित्रीयते (ना० धा०—आ०—- 1. आश्चर्य पैदा करना, आश्चर्यजनक होना—एवमुत्तरोत्तरभावश्चित्रीयते जीवलोकः—महावी० ५, भट्टि० १७।६४, १८।२३ 2. आश्चर्य करना ।

चिन्त् (चुरा० उभ०— चिन्तयति—ते, चिन्तित) 1. सोचना, विचारना, विमर्श करना, चिन्तन करना—तच्छ्रुत्वा पिङ्गलकश्चिन्तयामास—पंच० 1. चिन्तय तावत्केनापदेशेन पुनराश्रमपदं गच्छामः—श० 2. सोचना, विचार करना, मन में लाना—तस्मादेतत् (वित्तं) न चिन्तयेत् - हि० १, तस्मादस्य वधं राजा मनसापि न चिन्तयेत् मनु० ८।३८१, ४।२५८, पंच० १।१३५, चौर० १ 3. ध्यान करना, देखभाल करना, देखरेख रखना —रघु० १।६४ 4. प्रत्यास्मरण करना, याद करना, 5. मालूम करना, उपाय करना, खोज करना, सोच कर उपाय निकालना···कोऽप्युपायश्चिन्त्यताम्—हि० १ 6. ख़याल रखना, सम्मान करना 7. तोलना, विशेषता बनाना 8. चर्चा करना, निरूपण करना, प्रतिपादन करना, अनु—, बार बार चिन्तन करना, पिछला याद करना, मन में तोलना – श० २।९, भग० ८।८, परि - , 1. सोचना, विचारना, कूतना – स्वमेव

तावत्परिचिन्तय स्वयं कदाचिदेते यदि योगमर्हतः—कु० ५।६७, भग० १०।१७ 2. चिन्तन करना, याद करना, ध्यान में लाना 3. तरकीब निकालना, मालूम करना, वि—, 1. सोचना, विचारना 2. चिन्तन करना, आकलन करना, ध्यानमग्न होना—श० ४।१ 3. विचारकोटि में रखना, ध्यान रखना, ख़याल करना —अस्मान्साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः —श० ४।१६ 4. इरादा करना, स्थिर करना, निश्चय करना—5. उपाय ढूंढना, मालूम करना, खोज निकालना, सम्—, 1. सोचना, विचारना, विमर्श करना, चिन्तनरत होना—याज्ञ० १।३५९, चौर० ३२ 2. (मन में) तोलना, विशेषता बताना।

चिन्तनम्,—ना [चिन्त्+ल्युट्] 1. सोचना, विचारना, चिन्तनरत होना—मनसाऽनिष्टचिन्तनम् मनु० १२।५ 2. आतुर चिन्तन।

चिन्ता [चिन्त्+णिच्+अङ्+टाप्] 1. चिन्तन, विचार 2. दुःखद या शोकपूर्ण विचार, परवाह, फ़िकर —चिन्ताजडं दर्शनम्—श० ४।५, इसी प्रकार 'वीत-चिन्तः' १२ 3. विचारविमर्श, विचारण 4. (अलं० शा० में) चिन्ता—३३ संचारी भावों में से एक —ध्यानं चिन्ता हितानाप्तेः शून्यता श्वासतापकृत् —सा० द० २०१। सम०—आकुल (वि०) चिन्ता-मग्न, व्याकुल, आतुर,—कर्मन् (नपुं०) चिन्ता करना —पर (वि०) चिन्तनशील, चिन्तातुर, —मणिः काल्पनिक रत्न—(यह जिसके पास होता है, कहते हैं, उसकी सब कामनाएँ पूर्ण कर देता है) दार्शनिकों की मणि—काचमूल्येन विक्रीतो हन्त चिन्तामणिर्मया —शा० १।१२, तदेकलुब्धे हृदि मेऽस्ति लब्धुं चिन्ता न चिन्तामणिमप्यनर्घ्यम्—नै० ३।८१, १।१४५,—वेश्मन्, (नपुं०) परिषद् भवन, मंत्रणागृह।

चिन्तिडी [=तिन्तिडी, पृषो० तस्य चत्वम्] इमली का पेड़।

चिन्तित (वि०) [चिन्त्+क्त] 1. सोचा हुआ, विमृष्ट 2. उपेत, विचार किया हुआ।

चिन्तितिः (स्त्री०) **चिन्तिया** [चिन्त्+क्तिन्, घ वा] सोच, विमर्श, विचार।

चिन्त्य (सं० कृ०) [चिन्त्+यत्] 1. सोचने-विचारने के योग्य 2. खोजने के योग्य, मालूम किये जाने या उपाय ढूंढ लिये जाने के योग्य 3. विचारसापेक्ष, संदिग्ध, प्रष्टव्य—यच्च क्वचिदस्फुटालंकारत्वे उदाहृतम् (यः कौमारहरः.....) एतच्चिन्त्यम्—सा० द० १।

चिन्मय (वि०) [चित्+मयट्] विशुद्ध बौद्धिकता से युक्त, आत्मिक (जैसे कि परमात्मा),—यम् 1. विशुद्ध ज्ञान-मय 2. परमात्मा।

चिपट (वि०) [नि नता नासिका विद्यतेऽस्य नि+पटच्, चि आदेशः] चपटी नाक वाला,—टः चिउड़ा, चपटा किया हुआ चावल या अनाज, चौले।

चिपिटः [नि+पिटच् चि आदेशः] दे० चिपट। सम० —ग्रीव (वि०) छोटी गर्दन वाला,—नास,—नासिक (वि०) चपटी नाक वाला।

चिपिटकः, चिपुटः [चिपिट+कन्,=चिपिट पृषो० साधुः] चिउड़ा, चौले।

चिबु (बु) कम् [चिव् (ब)+उ+कन्, पृषो० ह्रस्वः] ठोडी, चिबुकं सुदृशः स्पृशामि यावत्—भामि० २।३४ याज्ञ० ३।९८।

चिमिः [चि+मिक् बा०] तोता।

चिर (वि०) [चि+रक्] दीर्घ, दीर्घकाल तक रहने वाला, दीर्घकाल से चला आया, पुराना—चिरविरह, चिर-काल, चिरमित्रम्—आदि,—रम् दीर्घकाल (विशे० 'चिर' शब्द का अप्रधान कारकों में एक वचन क्रिया विशेषण की भाँति प्रयुक्त होता है और निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है :—'दीर्घकाल' 'दीर्घकाल तक' 'दीर्घकाल के पश्चात्' 'दीर्घकाल से' 'आखिर कार' 'अन्त में' आदि—न चिरं पर्वते वसेत्—मनु० ४।६०, ततः प्रजानां चिरमात्मना धृताम्—रघु० ३।३५, ६२, अमरु ७९, कियच्चिरेणार्यपुत्रः प्रतिपत्तिं दास्यति—श० ६, रघु० ५।६४, प्रीतास्मि ते सौम्य चिराय जीव —रघु० १४।५९, कु० ५।४७, अमरु ३, चिरात्सुत-स्पर्शरसज्ञतां ययौ—रघु० ३।२६, ११।६३, १२।६७, चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः—श० ५।१५, चिरे कुर्यात्—शत०। सम०—आयुस् (वि०) दीर्घ आयु वाला (पुं०) देवता, —आरोधः विलम्बित घेरा, नाके-बन्दी,—उत्थ (वि०) दीर्घ काल तक रहने वाला, कार, —कारिक, —कारिन्—क्रिय (वि०) मन्थर, विलम्बी, ढीला, दोर्घसूत्री, कालः दीर्घकाल,—कालिक, —कालीन (वि०) दीर्घकाल से चला आता हुआ, पुराना, दीर्घकाल से चालू, (रोग के विषय में) जीर्ण या दीर्घकालानुबन्धी,—जात (वि०) बहुत समय पहले उत्पन्न, पुराना,—जीविन् (वि०) दीर्घजीवी (पुं०) उन सात चिरजीवियों का विशेषण जो 'अमर' समझे जाते हैं (अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः, कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः)—पाकिन् (वि०) देर से पकने वाला,—पुष्पः बकुल वृक्ष,—मित्रम् पुराना मित्र,—मेहिन् (पुं०) गधा,—रात्रम् बहुत रातें, दीर्घ-काल, °उचित (वि०) जो दीर्घकाल तक रह चुका हो, —विप्रोषित (वि०) दीर्घकाल से निर्वासित, प्रवासी, —सूता,—सूतिका वह गाय जो कई बछड़े दे चुकी हो सेवकः पुराना नौकर,—स्थ,—स्थायिन्,—स्थित (वि०) टिकाऊ, देर तक चलने वाला, चालू रहने वाला, पायेदार।

चिरञ्जीव (वि०) [चिरम्+जीव्+अच्] दीर्घायु या लम्बी उम्र वाला,—**वः** काम का विशेषण।

चिरण्टी, चिरिण्टी [चिरे अटति पितृगृहात् भर्तृगेहम्—अट्+अच्, पृषो० तारा०] 1. विवाहित या अविवाहित लड़की जो सयानी होने पर भी अपने पिता के घर ही रहे 2. तरुणी, जवान स्त्री।

चिरन्त्न (वि०) (स्त्री०—न्ती) [चिरे भवः - चिर+त्न] चिरकालीन, पुराना, प्राचीन।

चिरन्तन (वि०) (स्त्री० –नी) [चिरंम्+टयुल्, तुट्, च] चिरागत, पुराना, प्राचीन,—स्वहस्तदत्ते मुनिमासनं मुनिश्चिरन्तनस्तावदभिन्यवीविशत् – -शि० १।१५, चिरन्तनः सुहृद्—आदि।

चिरायति (ना० धा० पर० (चिरायते भी)) विलम्ब करना, ढील देना—कथं चिरयति पाञ्चाली–वेणी० १, किं चिरायितं भवता, संकेतके चिरयति प्रवरो विनोदः —मृच्छ० ३।३।

चिरिः [चिनोति मनुष्यवत् वाक्यानि --चि+रिक्] तोता।

चिरु [चि+रुक्] कन्धे का जोड़।

चिर्भटी [चिर+भट्+अच्+ङीष्, पृषो०] एक प्रकार की ककड़ी।

चिल् (तुदा० पर०—चिलति) कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना।

चिलमी (मि) **लिका** [चिल्+मी (मि) ल्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. एक प्रकार का हार 2. जुगनू 3. बिजली।

चिल्ल् (भ्वा० पर०—चिल्लति, चिल्लित) 1. ढीला होना, शिथिल होना पिलपिला होना 2. आराम से काम करना, क्रीडासक्त होना।

चिल्लः,—ल्ला [चिल्ल्+अच्, स्त्रियां टाप्] चील। सम० —**आभः** गठकतरा, जेबकतरा।

चिल्लिका,चिल्ली [चिल्ल्+इन्+कन्+टाप्, चिल्लि+ङीष्] झींगुर—तु० भिल्लिका।

चिविः [चीव्+इन् पृषो०] ठोडी।

चिह्नम् [चिह्न्+अच्] 1. निशान, धब्बा, छाप, प्रतीक, कुलचिह्न, बिल्ला, लक्षण—ग्रामेषु यूपचिह्नेषु - रघु० १।४४, ३।५५, संनिपातस्य चिह्नानि—पंच० १।१७७ 2. संकेत, इंगित—प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि - रघु० २।२२, –प्रहर्षचिह्न --२।६८ 3. राशिचिह्न 4. लक्ष्य दिशा। सम० --**कारिन्** (वि) 1. चिह्न लगाने वाला, दाग लगाने वाला 2. प्रहार करने वाला, घायल करने वाला, हत्या करने वाला 3. डरावना, विकराल।

चिह्नित(व०) [चिह्न्+क्त], 1. निशान लगा हुआ, संकेतित, मुद्रांकित, किसी पद का बिल्ला लगाये हुए—याज्ञ० २।८६, १।३१८, दिवा चरेयुः कार्यार्थं चिह्निता राजशासनैः—मनु० १०।५५, २।१७० 2. दागी 3. ज्ञात, अभिहित।

चीत्कारः [चीत्+कृ+घञ्] अनुकरणमूलक शब्द, कुछ जानवरों की क्रन्दन विशेषकर गधे की रेंक या हाथी की चिंघाड़,—स विषीदति चीत्काराद्गर्दभस्ताडितो यथा —हि० २।३१, वैनायक्यश्चिरं वो वदनविधुतयः पान्तु चीत्कारवत्यः मा० १।१।

चीनः [चि+नक्, दीर्घः] 1. एक देश का नाम, वर्तमान चीनदेश 2. हरिण का एक प्रकार 3. एक प्रकार का कपड़ा · **नाः** (पुं० ब० व०) चीन देश के निवासी या शासक,—**नम्** 1. झंडा 2. आँखों के किनारों पर बाँधने के लिए पट्टी 3. सीसा। सम०—**अंशुकम्,—वासस्** (नपुं०) चीन का कपड़ा, रेशम, रेशमी कपड़ा —चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य–श० १।३४, कु० ७।३, अमरु ७५,—**कर्पूरः** एक प्रकार का कपूर, - **जम्** इस्पात,— **पिष्टम्** 1. सिन्दूर 2. सीसा, — **वङ्गम्** सीसा।

चीनाकः [चीन+अक्+अण्] एक प्रकार का कपूर।

चीरम् [चि+क्रन् दीर्घश्च] 1. चिथड़ा, फटा पुराना कपड़ा, धज्जी, · मनु० ६।६ 2. वल्कल 3. वस्त्र या पोशाक 4. चार लड़ियों का मोतियों का हार 5. चौड़ी धारी, रेखा, लकीर 6. रेखाएँ बनाकर लिखना 7. सीसा। सम० **परिग्रह,—वासस्** (वि०) 1. वल्कलधारी कु० ६।९२, मनु० ११।१०१ 2. चिथड़े या फटे पुराने कपड़े पहने हुए।

चीरिः (स्त्री०) [चि+क्रि, दीर्घ०] 1. आँखों को ढकने का पर्दा 2. झींगुर 3. नीचे पहनने वाले कपड़े की झालर या गोट।

चीरि(रु)का [चीरि+कै+क+टाप्] [=चीरिका पृषो० साधुः] झीङ्गुर।

चीर्ण (वि) [चर्+नक्, पृषो० अत ईत्वम्] 1. किया हुआ, अनुष्ठित, पालित 2. अधीत, दोहराया हुआ 3. विदीर्ण किया हुआ, विभाजित, 1. सम० – **पर्णः** खजूर का पेड़।

चीलिका [ची+ला+क+टाप् इत्वम्] झिंगुर।

चीव्(भ्वा० उभ०--चीवति-ते) 1. पहनना, ओढ़ना 2. लेना ग्रहण करना 3. पकड़ना।

चीवरम् [चि+ष्वरच् नि० दीर्घः, चीव्+अरच् वा] 1. पोशाक, फटा-पुराना, चिथड़ा - प्रेतचीवरवसा स्वनोग्रया - रघु० ११।१६ 2. भिक्षुक का परिधान, विशेषकर बौद्ध भिक्षु के वस्त्र, चीवराणि परिधत्ते— सिद्धा०, चीरचीवरपरिच्छदां—मा० १, प्रक्षालित मेतन्मया चीवरखण्डम्—मृच्छ० ८।

चीवरिन् (पुं०) [चीवर+इनि] 1. बौद्ध या जैन भिक्षुक 2. भिक्षुक।

चुक्कारः [चुक्क्+अच्=चुक्क+आ+रा+क] सिंह की गर्जन या दहाड़।

चुक्रः [चक्+रक्, अत उत्वं च] 1. एक प्रकार की अमलवेत या अम्ललोणिका 2. खटास, —क्रम् खटास, अम्लता। सम० --फलम् इमली का फल, —वास्तूकम् खटमिट्ठा चोका, अम्ललोणिका।

चुक्रा [चुक्र+टाप्] इमली का पेड़।

चुक्रिमन् (पुं०) [चुक्र+इमनिच्] खटास, खट्टापन।

चुचुकः,—कम्, चुचूकम् [चुचु इति अव्यक्तशब्दं कायति —कै+क, पृषो० दीर्घ] चूची का बिटकना या घुंडी।

चुञ्चु (वि०) [कुछ समासों के अन्त में प्रयुक्त] प्रख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत, कुशल—अक्षर°, चार° आदि।

चुण्टा, –डा [चुंट् (ड्)+अच्+टाप्] छोटा कुआं या जलाशय।

चुत् (भ्वा० पर०—चोतति] चूना, टपकना, दे० च्युत्।

चुतः [चुत्+क] गुदा।

चुद् (चुरा० उभ०—चोदयति –ते, चोदित) 1. भेजना, निदेश देना, आगे फेकना, प्रेरित करना, हांकना, धकेलना—चोदयाश्वान्—श० १ 2. प्रणोदित करना स्फूर्ति देना, ठेलना, सजीव बनाना, उकसाना—रघु० ४।२४, मार्गप्रदर्शन करना, फुसलाना—रघु० १०।६७ 3. शीघ्रता करना, त्वरित करना 4. प्रश्न करना, पूछना 5. साग्रह निवेदन करना 6, प्रस्तुत करना, तर्क या आक्षेप के रूप में सामने लाना, परि — 1. धकेलना, निदेश देना, भेजना 2. उकसाना, प्रोत्साहित करना, प्र–, 1. ठेलना, प्रणोदित करना, स्फूर्ति देना उकसाना—चापलाय प्रचोदितः–रघु० १।९. 2. हांकना, हांकना, स्फूर्ति देना, धकेलना 3. निदेश देना सम्—, 1. निदेश देना, उकसाना, ठेलना 2. फेंकना, आगे बढ़ाना।

चुन्दी (चुन्द्+अच् नि० ङीप्) दूती, कुटनी।

चुप् (भ्वा० पर० —चोपति) शनैः शनैः चलना, दबे पाँव चलना, चुपचाप खिसकना।

चुबुकः [=चिबुक, पृषो०] ठोडी।

चुम्ब् (भ्वा०--चुरा० उभ० —चुम्बति–ते, चुम्बयति—ते, चुम्बित) 1. चुंबन करना, (आलं० से भी) श्लिष्यति चुम्बति जलधरकल्पं हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम्—गीत० ६, प्रियामुखं किंपुरुषश्चुचुम्बे–कु० ३।३८ अमरु १६, हि० ४।१३२ 2. सुकुमारता पूर्वक स्पर्श करना, छूते हुए चलना–उत्तर० ४।१५, परि—,चूमना —ऋतु० ६।१७, अमरु ७७।

चुम्बः,—बा [चुम्ब्+अक्, घञ् वा, स्त्रियां टाप्] चुंबन, चूमना।

चुम्बकः [चुम्ब्+ण्वुल्] 1. चूमने वाला 2. कामी, कामासक्त, कामुक 3. बदमाश, ठग 4. जिसने चूम लिया, जिसने अनेक विषयों को छू लिया, पल्लवग्राही विद्वान् 5. चुंबक पत्थर (चकमक)।

चुम्बनम् [चुम्ब्+ल्युट्] चूमना, चुंबन—चुम्बनं देहि मे भार्ये कामचांडालतृप्तये—रस०।

चुर् (चुरा० उभ०—चोरयति—ते, चोरित) 1.–लूटना, चुराना—मनु० ८।३३३ विक्रम० ३।१७ 2. (आलं०) वहन करना, रखना, अधिकार में करना, लेना, धारण करना–अचूचुरच्चन्द्रमसोऽभिरामताम्—शि० १।१६।

चुरा [चुर्+अ+टाप्] चोरी।

चुरिः—री (स्त्री०) [चुर्+कि, चुरि+ङीष्] छोटा कुआं।

चुलुकः [चुल्+उकञ्] 1. गहरा कीचड़ 2. एक घूंट या हथेली भर पानी, चुल्लू,—ममौ स भद्रं चुलुके समुद्रः —नै० ८।४५, ज्ञात्वा विषातुश्चलुकात् प्रसूतिम्–विक्रमाङ्क० १।३७ 3. छोटा बर्तन।

चुलुकिन् (पुं०) [चुलुक+इनि] सूँस, उलूपी।

चुलुम्प् (भ्वा० पर०—चुलुम्पयति) 1. झूलना, डोलना, इधर उधर हिलना दोलायमान होना, उद्—1. झोटे लेना 2. आन्दोलित होना—अम्बोधेर्नालिकेलीरसमिव चुलकैरुच्चुलुम्पन्त्यपो ये—महावी० ५।८।

चुलुम्पः [चुलुम्प्+घञ्] बच्चों को लाड प्यार करना।

चुलुम्पा [चुलुम्प+टाप्] बकरी।

चल्ल् (भ्वा० पर०—चुल्लति) खेलना, क्रीडा करना, प्रेमोन्माद में प्रीतिसूचक संकेत करना।

चुल्लिः [चुल्ल्+इन्] चूल्हा।

चुल्ली [चुल्लि+ङीष्] 1. चूल्हा 2. चिता।

चूचुकम्, चूचूकम् [चूष्+उकञ्, षकारस्य चकारः, चूचुक पृषो०] चूची का बिटकना या घुण्डी—शि० ७।१९।

चूडकः [चूडा+कन्, ह्रस्वः] कूआं।

चूडा [चूल्+अङ्, लस्य डः, दीर्घ० नि०] 1. बालों की चोटी चुटिया (मुण्डन संस्कार के अवसर पर रक्खी हुई शिखा) रघु० १८।५१ 2. मुण्डन संस्कार 3. मुर्गे की या मोर की कलग़ी 4. ताज, मुकुट, उष्णीष 5. सिर 6. शिखर, चोटी 7. चौबारा, अटारी 8. कुआं 9. (कलाई में पहना जाने वाला) आभूषण। सम० —करणम्,—कर्मन् (नपुं०) मुण्डन संस्कार—मनु० २।३५,—पाशः बालों का गुच्छा, केश समूह—चूडापाशे नवकुरबकम्—मेघ० ६५—मणिः,—रत्नम् 1. सिर पर धारण किया जाने वाला आभूषण, चूडामणि, शीर्षफूल (आलं० से भी) 2. बढ़िया श्रेष्ठ (प्रायः समास के अन्त में)।

चूडार,—ल (वि०) [चुडा+ऋ+अण्, चूडा+लच्] 1. सिर पर चुटिया रखने वाला, शिखायुक्त 2. कलगीदार।

चूतः [चूष्+क्त पृषो०] 2. आम का पेड़,—ईषद्बद्धरजः कणाग्रकपिशा चूते नवा मञ्जरी–विक्रम० २।७, चूताङ्कुरास्वादकषायकण्ठः–कु० ३।३२ 2. कामदेव

के पांच बाणों में से एक, दे० पंचवाण,—तम् गुदा, मलद्वार।

चूर्ण (चुरा० उभ० – चूर्णयति–ते, चूर्णित) चूरा२ करना, कुचलना, पीस देना 2. चकनाचूर करना, कुचल देना, —सम्,—रगड़ देना, कुचल देना—संचूर्णयामि गदया न सुयोधनोरु– वेणी० १।१५।

चूर्णः,—र्णम् [चूर्ण+अच्] 1. चूरा 2. आटा 3. धूल 4. सुगन्धित चूरा, पिसा हुआ चन्दन, कपूर आदि —भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः—मेघ० ६८ र्णः 1. खड़िया 2. चूना। सम०—कारः चूना फूंकने वाला,—कुन्तलः घूंघर, घुंघराले बाल, अलकें—समं केरलकान्तानां चूर्णकुन्तलवल्लिभिः—विक्रमाङ्क० ४।२, —खण्डम् कङ्कड़, बजरी,—पारदः शिंगरफ, सिन्दूर, —योगः गन्ध द्रव्यों का चूर्ण।

चूर्णकः [चूर्ण+कन्] भून कर पीसा हुआ अनाज, सत्तू —कम् 1. सुगन्धित चूरा 2. गद्य रचना की एक शैली जो कर्णकटु शब्दों से रहित तथा अल्प समास वाली हो—अकठोराक्षरं स्वल्पसमासं चूर्णकं विदुः—छं० ६।

चूर्णनम् [चूर्ण+ल्युट्] कुचलना, पीसना।

चूर्णिः,—र्णी (स्त्री०) [चूर्ण+इन्, चूर्णि+ङीष्] 1. पीसा हुआ, चूरा 2. सौ कौड़ियों का समूह।

चूर्णिका [चूर्ण+ठन्+टाप्] 1. भुना हुआ और पिसा हुआ अनाज, सत्तू 2. सरल गद्यरचना की एक शैली।

चूर्णित (वि०) [चूर्ण्+क्त] 1. पीसा हुआ, चूरा किया हुआ 2. कुचला हुआ, रगड़ा हुआ, चूर-चूर किया हुआ, टुकड़े २ किया हुआ—कु० ५।२४।

चूलः [चुल्+क पृषो० दीर्घ] बाल, केश,—ला 1. ऊपर का कक्ष 2. शिखर 3. धूमकेतु की शिखा।

चूलिका [चुल्+ण्वुल् पृषो० दीर्घः] 1. मुर्गे की कलगी 2. हाथी की कनपटी 3. (नाटकों में) नेपथ्य में पात्रों द्वारा किसी घटना का संकेत—अन्तर्जवनिकासंस्थैः सूचनार्थस्य चूलिका—सा० द० ३१०, उदा० महावीरचरित के चौथे अंक के आरंभ में।

चूष् (भ्वा० पर०—चूषति, चूषित) पीना, चूसना, चूस लेना।

चूषा [चूष्+क+टाप्] 1. (हाथी का) चमड़े का तंग 2. चूसना 3. मेखला।

चूष्यम् [चूष्+ण्यत्] चूसे जाने वाले भोज्य पदार्थ।

चृत् i (तुदा० पर०—चृतति) 1. चोट पहुँचाना, मार डालना 2. बांधना, एक जगह जोड़ना, ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—चर्तति, चर्तयति—ते) जलाना, प्रज्वलित करना।

चेकितानः [कित्+यङ्+शानच्, यङो लुक्, धातोर्द्वित्वम्] 1. शिव का विशेषण 2. यदुवंशीराजा जो पांडवों की ओर से महाभारत के युद्ध में लड़ा।

चेटः,—डः [चिट्+अच्, वा टस्य डः] 1. नौकर 2. विट, उपपति।

चेटि (डि) का, **चेटिः** (टी) (डी)—[चिट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वं, पक्षे ङ्न्वम्, ङीष्, ड्त्वम् वा] सेविका, दासी।

चेतन (वि०) (स्त्रि०—नी) [चित्+ल्युट्] 1. सजीव, जीवित, जीवधारी, सचेत, संवेदनशील—चेतनाचेतनेषु —मेघ० ५, सजीव और निर्जीव 2. दृश्यमान,—नः 1. सचेत प्राणी, मनुष्य 2. आत्मा, मन 3. परमात्मा, —ना 1. ज्ञान, संज्ञा, प्रतिबोध—चुलुकयति मदीयां चेतनां चञ्चरीकः—रस०, रघु० १२।१४, चेतनां प्रतिपद्यते—संज्ञा फिर प्राप्त कर लेता है 2. समझ, प्रज्ञा —पश्चिमाद्यामिनीयामात्प्रसादमिव चेतना—रघु० १७।१ 3. जीवन, प्राण, सजीवता—भग० १३।६ 4. बुद्धिमत्ता, विचारविमर्श।

चेतस् (नपुं०) [चित्+असुन्] 1. चेतना, ज्ञान 2. चिंतनशील आत्मा, तर्कना शक्ति 3. मन, हृदय, आत्मा —चेतः प्रसादयति—भर्तृ० २।२१, गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः—श० १।३४। सम०—जन्मन्,—भवः,—भूः (पुं०) 1. प्रेम, आवेश 2. कामदेव, —विकारः मन की विकृति, संवेग, क्षोभ।

चेतोमत् (वि०) [चेतस्+मतुप्] जिन्दा, जीवित।

चेद् (अव्य०) यदि, बशर्ते कि, यद्यपि (वाक्य के आरंभ में कभी भी प्रयोग नहीं होता)—अयि रोषमुरीकरोपि नोचेत्किमपि त्वां प्रतिवारिद्ये वदामः—भामि० १।४४, —कु० ४।९, इतिचेद्—न, 'यदि ऐसा कहा गया ……(हम उत्तर देते हैं) तो ऐसा नहीं (विवादास्पद विषयों में बहुधा प्रयोग होता है)—सन्निधानमात्रेण राजप्रभृतीनां दृष्टं कर्तृत्वमिति चेन्न—शत०, अथ चेद्-परन्तु यदि।

चेदिः (पुं० ब० व०) एक देश का नाम—तदीशितारं चेदीनां भवांस्तमवमंस्त मा–शि० २।९५, ६३। सम० —पतिः,—भूभृत् (पुं०),—राज् (पुं०)—राजः शिशुपाल, दमघोष का पुत्र, चेदिदेश का राजा–शि० २।९६, दे० 'शिशुपाल'।

चेय (वि०) [चि+यत्] 1. ढेर लगाने के योग्य 2. एकत्र करने योग्य, संग्रह किये जाने के योग्य।

चेल् (भ्वा० पर०–चेलति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. हिलना, क्षुब्ध होना, कांपना।

चेलम् [चिल्+घञ्] 1. वस्त्र, पोशाक–कुसुम्भारुणं चारु चेलं वसाना—जग० 2. (समास के अन्त में) बुरा, दुष्ट, कमीना—भार्याचेलम्=बुरी पत्नी। सम० —प्रक्षालकः धोबी।

चेलिका [चेल+कन्+टाप्, इत्वम्] चोली, अंगिया।

चेष्ट् (भ्वा० आ०—चेष्टते, चेष्टित) 1. हिलना-जुलना,

हिलना-डुलना, सक्रिय होना, जीवन के चिह्न दिखलाना —यदा स देवो जागर्ति तदेदं चेष्टते जगत्—मनु० १।५२ 2. प्रयत्न करना, कोशिश करना, प्रयास करना, संघर्ष करना 3. अनुष्ठान करना, (कुछ कार्य) करना 4. व्यवहार करना—वि—, 1. हिलना-डुलना, चलना-फिरना, गतिशील होना, इधर-उधर फिरना 2. कार्य करना, व्यवहार करना।

चेष्टकः [चेष्ट्+ण्वुल्] संभोग का आसन विशेष, रतिबंध।

चेष्टनम् [चेष्ट्+ल्युट्] 1. गति 2. प्रयत्न, प्रयास।

चेष्टा [चेष्ट्+अङ्+टाप्] 1. चाल, गति—किमस्माकं स्वामिचेष्टानिरूपणेन—हि० ३ 2. संकेत, कर्म—चेष्टया भाषणेन च नेत्रवक्त्रविकारैश्च लक्ष्यतेऽन्तर्गतं मनः—मनु० ८।२६ 3. प्रयत्न, प्रयास 4. व्यवहार। सम०—नाशः सृष्टि का नाश, प्रलय,—निरूपणम् किसी व्यक्ति की गतिविधि पर आँख रखना।

चेष्टित (भू० क० कृ०) [चेष्ट्+क्त] हिला, चला, हिला-डुला,—तम् 1. चाल, अंगभंगिमा, कर्म 2. क्रिया, कर्म, व्यवहार—कपोलपाटलादेशि बभूव रघुचेष्टितम् —रघु० ४।६८, तत्तत्कामस्य चेष्टितम्—मनु० २।४, काम करना।

चैतन्यम् [चेतन+ष्यञ्] 1. जीव, जीवन, प्रज्ञा, प्राण, संवेदन 2. (वेदान्त द० में) परमात्मा जो सभी प्रकार की संवेदनाओं का स्रोत और सब प्राणियों का मूल-तत्त्व समझा जाता है।

चैत्तिक (वि०) [चित्त+ठक्] मानसिक, बौद्धिक।

चैत्यः,—त्यम् [चित्य+अण्] 1. सीमा चिह्न बनानेवाला पत्थरों का ढेर 2. स्मारक, समाधि-प्रस्तर 3. यज्ञ मण्डप 4. धार्मिक पूजा का स्थान, वेदी, वह स्थान जहाँ देवमूर्ति प्रस्थापित रहती है 5. देवालय 6. बौद्ध और जैन मन्दिर 7. गूलर का वृक्ष, या सड़क के किनारे उगने वाला गूलर का पेड़—मेघ० २३ (रथ्यावृक्ष—मल्लि०)। सम०—तरुः,—द्रुमः,—वृक्षः किसी पवित्र स्थान पर उगा हुआ उदुम्बर अर्थात् गूलर का पेड़, —पालः देवालय का संरक्षक,—मुखः साधु-संन्यासी का जलपात्र या कमण्डलु।

चैत्रः [चित्रा+अण्] एक चान्द्र मास का नाम जिसमें कि चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र-पुंज में स्थित रहता है, (यह महीना मार्च और अप्रैल के अंग्रेजी महीनों में आता है) 2. बौद्ध भिक्षु,—त्रम् मन्दिर, मृतक की समाधि। सम०—आवलिः (स्त्री०) चैत्र की पूर्णिमा, सखः कामदेव का विशेषण।

चैत्ररथम्,—थ्यम् [चित्ररथ+अण्, ष्यञ् वा] कुबेर के उद्यान का नाम—एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्य-रम्यानपरो विदर्भान्—रघु० ५।६०,५०।

चैत्रिः, चैत्रिकः, चैत्रिन् (पुं०) [चैत्री विद्यतेऽस्मिन्—चैत्री +इञ्, चित्रा+ठक्, इनि वा] चैत्रमास, चैत का महीना।

चैत्री [चित्रा+अण्+ङीप्] चैत्र मास की पूर्णिमा।

चैद्यः [चेदि+ष्यञ्] शिशुपाल,—अभिचैद्यं प्रतिष्ठासुः शि० २।१।

चैलम् [चेल्+अण्] कपड़े का टुकड़ा, वस्त्र। सम० —धावः धोबी।

चोक्ष (वि०) [चक्ष्+घञ्, पृषो० साधुः] 1. पवित्र, स्वच्छ 2. ईमानदार 3. होशियार, दक्ष, कुशल 4. सुखकर, रुचिकर, प्रसन्नता देने वाला।

चोचम् [कोचति आवृणोति—कुच्+अच् पृषो०] 1. वल्कल, छाल 2. चमड़ा, खाल 3. नारियल।

चोटी—[चुट्+अण्+ङीप्] छोटा लहंगा, साया पेटी-कोट।

चोडः [चोडति संवृणोति शरीरम्—चुड्+अच्+ङीप्] चोली अंगिया।

चोदना [चुद्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. भेजना, निर्देश देना, फेंकना 2. स्फूर्ति देना, आगे हांकना 3. प्रोत्साहन देना, उकसाना, उत्साह बढ़ाना, उत्तेजना प्रदान करना 4. उपदेश, पुनीत आदेश, वेदविहित विधि। सम०—गुडः खेलने के लिय गेंद।

चोदित (भू० क० कृ०) [चुद्+णिच्+क्त] 1. भेजा, निर्दिष्ट 2. स्फूर्ति दिया गया, हांका गया 3. उकसाया गया, प्रोत्साहित किया गया, उत्तेजित किया गया 4. तर्क के रूप म सामने प्रस्तुत किया गया।

चोद्यम् [चुद्+ण्यत्] 1. आक्षेप करना, प्रश्न पूछना 2. आक्षेप 3. आश्चर्य।

चो(चौ)रः [चुर्+णिच्+अच्, चुरा+ण] चोर, लुटेरा —सकलं चोर गतं त्वया गृहीतम्—विक्रम० ४।१६, इन्दीवरदलप्रभाचोरं चक्षुः—भर्तृ० ३।६७।

चो (चौ) रिका [चोर+ठन्+टाप्] चोरी, लूट।

चोरित (वि०) [चुर्+णिच्+क्त] चुराया गया, लूटा गया।

चोरितकम् [चोरित+कन्] 1. चोरी, चौर्य, स्तेय 2. चुराई हुई वस्तु।

चोलः (पुं०, ब० व०) [चुल्+घञ्] दक्षिण भारत में एक देश का नाम, वर्तमान तंजौर, —लः,—ली, अंगिया चोली।

चोलकः [चोल+कै+क] 1. वक्षस्त्राण 2. छाल या वल्कल 3. चोली।

चोलकिन् (पुं०) [चोलक+इनि] 1. वक्षस्त्राण से सुसज्जित सैनिक 2. संतरे का पेड़ 3. कलाई।

चोल(लो)ण्डुकः [चोलस्य अ (उ) ण्डुक इव, ब० स०, शक० पर०] साफा, पगड़ी, किरीट, मुकुट।

चोषः [चुष्+घञ्] 1. चूसना, (आयु० में) सूजन।

चोष्यम्=चूष्यम् ।

चौड(ल) (वि०) (स्त्री—डी (ली)) [चूडा+अण् —डलयोरभेदः] 1. शिखायुक्त, कलगीदार 2. मुण्डन सम्बन्धी—**डम्**,—**लम्** मुण्डन संस्कार ।

चौर्यम् [चोत+ष्यञ्] 1. चोरी, लूट 2. रहस्य, छिपाव सम०—**रतम्** छिपे छिपे स्त्री संभोग,—**वृत्तिः** (स्त्री०) लूटने की आदत ।

च्यवनम् [च्यु+ल्युट्] 1. चलना-फिरना, गति 2. वञ्चित होना, हानि, वञ्चना 3. मरना, नष्ट होना 4. बहना टपकना ।

च्यु (भ्वा० आ०—च्यवते, च्युत) 1. गिरना, नीचे गिर पड़ना, फिसलना, डूबना (आलं० भी)—श० २।८ 2. बाहर निकलना, बहना, बूंद २ करके टपकना, धार निकालना–स्वतश्च्युतं वह्निमिवाद्भिरम्बुदः–रघु० ३।५८, भट्टि० ९।७४ 3. विचलित होना, भटकना, अलग हो जाना, (कर्तव्य आदि) छोड़ देना (अपा० के साथ), अस्माद्धर्मान्न च्यवेत्–मनु० ७।९८, १२। ७१,७२ 4. खो देना, वञ्चित होना—अच्योष्ट सत्त्वा न्नृपतिः—भट्टि० ३।२०, ७।९२ 5. अदृश्य होना, ओझल होना, नष्ट होना, गायब होना—रघु०८।६५, मनु० १२।९६ 6. घटना, कम होना; परि—, 1. चले जाना, उड़ जाना, बच जाना 2. प्रगमन करना 3. भटकना, अलग हो जाना, छोड़ देना 4. खोना, वञ्चित होना 5. गिर पड़ना, नीचे गिरना, प्र,—अलग हो जाना, नीचे गिर पड़ना आदि (लगभग वह सब अर्थ जो परि पूर्वक 'च्यु' के होते हैं) ।

च्युत् (भ्वा० पर०—च्योतति 1. बूंद २ गिर कर बहना, रिसना, चूना, झरना—इदं शोणितमभ्यग्रं संप्रहारेऽच्युतत्तयोः—भट्टि० ६।२८ 2. गिरपड़ना, नीचे गिरना, फिसलना—इदं कवचमच्योतीत्—भट्टि० ६।२९ 3. गिराना, बहाना ।

च्युत (भू० क० कृ०) [च्यु+क्त, च्युत्+क वा] 1. नीचे गिरा हुआ खिसका हुआ, गिरा हुआ 2. दूर किया गया, बाहर निकाला गया 3. विचलित, भूला हुआ 4. खोया गया । सम०—**अधिकार** (वि०) पदच्युत किया गया,—**आत्मन्** (वि०) दूषित आत्मा वाला, दुष्टात्मा—कु० ५।८१ ।

च्युतिः (स्त्री०) [च्यु+क्तिन्] 1. अधः पतन, अवपतन 2. विचलन 3. बूंद २ गिरना, रिसना 4. खोना, वञ्चित होना—धैर्यच्युतिं कुर्याम्—३।१० 5. अदृश्य होना, नष्ट होना 6. योनिच्छद, 7. गुदा ।

च्यूतः [=च्युतः पृषो० उकारस्य दीर्घः] आम का वृक्ष ।

छ

छः [छो+ड, क वा], अंश, खंड ।

छगः (स्त्री०—गी) [छ यज्ञादौ छेदनं गच्छति—छ+गम् +ड] बकरा ।

छगलः (स्त्री० ली) [छो+कल, गुक, ह्रस्वः] बकरा, **लम्**—नीला कपड़ा ।

छगलकः [छगल+कन्] बकरा ।

छटा [छो+अटन्+टाप्] 1. ढेर, पुंज, राशि, संघात —सटाच्छटा भिन्नघनेन—शि० १।४७ 2. प्रकाश किरण-समूह, कान्ति, दीप्ति, प्रकाश—शि० ८।३८ 3. अविच्छिन्न रेखा, लकीर–छातेतराम्बुच्छटा–काव्य०। सम०—**आभा** बिजली,—**फलः** सुपारी का वृक्ष ।

छत्र: [छादयति अनेन इति—छद्+णिच्+ष्ट्रन्, ह्रस्वः] कुकुरमुत्ता, खुंभी,—**त्रम्** छाता, छतरी—अदेयमासीत् त्रयमेव भूपतेः शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे—रघु० ३।१६ मनु० ७।९६। सम०—**धरः**,—**धारः** छत्र पकड़ कर चलने वाला,—**धारणम्** 1. छाता लेकर चलना, या छाता रखना—मनु० २।१७८ 2. राजकीय अधिकार के रूप में छत्र धारण करना,—**पतिः** 1.राजा जिसके ऊपर राज्य की मर्यादा के चिह्नस्वरूप छत्र किया जाय, प्रभुसत्ताप्राप्त सम्राट् 2. जंबुद्वीप के प्राचीन राजा का नाम,—**भङ्गः** 1. राजकीय छत्र का विनाश, राज्य का नाश, राजगद्दी से उतारा जाना, सिंहासनच्युति 2. पराश्रयता 3. रज़ामन्दी 4. परित्यक्त अवस्था, वैधव्य ।

छत्रकः [छत्र+कै+क] शिव की पूजा के लिए मन्दिर, —**कम्** कुकुरमुत्ता, खुम्भी ।

छत्रा, छत्राकः [छद्+ष्ट्रन्+टाप्, छत्रा+कन्] कुकुरमुत्ता, खुम्भी—मनु० ५।१९—याज्ञ० १।१७६ ।

छत्रिकः [छत्र+ठन्] छाता लेकर चलने वाला ।

छत्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [छत्र+इनि] छाता रखने वाला या लेकर चलने वाला—(पुं०) नाई ।

छत्वरः [छद्+ष्वरच्] 1. घर 2. कुञ्ज, पर्णशाला ।

छद् (भ्वा०—चुरा० उभ०—छदति—ते, छादयति-ते, छन्न, छादित) 1. ढकना, ऊपर से ढांप देना, पर्दा करना

—हैमैश्छन्ना—मेघ० ७६, चक्षुः खेदात्सलिलगुरुभिः पक्ष्मभिश्छादयन्तीम्—मेघ० ९०; छन्नोपान्तः.... काननाम्रैः—१८ 2. (चादर की भांति) बिछाना, ढापना 3. छिपाना, ढक लेना, ग्रहण लगना (आलं०), गुप्त रखना—ज्ञानपूर्वं कृतं कर्म छादयंन्ते ह्यसाधवः —महा०, छन्नं दोषमुदाहरन्ती—मृच्छ० ९।४,—अव, छिपाना, ढकना, ढापना, आ—, 1. ढापना—नाच्छादयति कौपीनम्—पंच० ३।९७ 2. छिपाना, ढकना—भानोराच्छादयत्प्रभाम्—महा० 3. वस्त्र धारण करना, कपड़े पहनना—मनु० ३।२७, वस्त्रमाच्छादयति, उद्—उघाड़ना, कपड़े उतारना, उप —, 1. आच्छादित करना 2. छिपाना, ढकना, परि— 1. ढांपना, पहनना—दर्भैस्तं परिच्छाद्य—पंच० २, द्वीपिचर्मपरिच्छन्नः (गर्दभः) हि० ३।९ 2. छिपाना, ढांपना, प्र—, 1. ढांपना, लपेटना, पर्दा डालना, अवगुंठित करना—(वनं) प्राच्छादयदमेयात्मा नीहारेणेव चन्द्रमाः—महा० 2. छिपाना, ढकना, भेस बदलना—प्रच्छादय स्वान् गुणान्—भर्तृ० २।७७ प्रदानं प्रच्छन्नम् २।६४, मनु० ४।१९८, १०।४०, चौर० ४ 3. कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना 4. रुकावट डालना, रोड़ा अटकाना, प्रति—, 1. छिपाना, ढकना 2. ढांपना, लपेटना सम्—,1. छिपाना 2. अवगुंठित करना, लपेटना ।

छदः, छदनम् [छद्+अच्, ल्युट् वा] 1. आवरण, चादर, अल्पच्छद, उत्तरच्छद आदि 2. स्कन्ध, पक्ष—छदहेम कषन्निवालसत्—नै० २।६९ 3. पत्र, पर्ण 4. म्यान, खोल, गिलाफ, पेटी, बक्स ।

छदिः (स्त्री०) छदिस् (नपुं०) [छद्+कि, इस् वा] 1. गाड़ी की छत 2. घर की छत या छप्पर ।

छद्मन् (नपुं०) [छद्+मनिन्] 1. धोखा देने वाले वस्त्र, कपटवेश 2. दलील, बहाना, ब्याज—ब्रह्मछद्मा सामर्थ्यसारः—महावी० २।२५, पलितछद्मना जरा—रघु० १२।२, शि० २।२१ 3. जालसाजी, बेईमानी, चालाकी—छद्मना परिददामि मृत्यवे—उत्तर० १।४५, मनु० ४।१९९, ९।७२ । सम०—तापसः बना हुआ तपस्वी, पाखंडी,—रूपेण (अव्य०) अज्ञात रूप से, भेस बदल कर,—वेशिन् (पुं०) खिलाड़ी, ठग, भेस बदले हुए ।

छद्मिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [छद्मन्+इनि] 1. जालसाज, धोखेबाज 2. भेस बदलते हुए (समास के अन्त में) उदा०—ब्राह्मण छद्मिन्=ब्राह्मण का रूप धारण किये हुए ।

छन्द् (चुरा० उभ०—छंदयति—ते, छंदित) 1. प्रसन्न करना, तुष्ट करना 2. फुसलाना, बहकाना 3. ढांपना 4. प्रसन्न होना, उप—1. चापलूसी करना, फुसलाना, आमन्त्रित करना—त्वयोपछन्दित उदकेन—श० ५, पानी पीने के लिए फुसलाया गया 2. प्रार्थना करना, निवेदन करना 3. अनुनय करना 4. कुछ देना ।

छन्दः [छन्द्+घञ्] 1. कामना, इच्छा, कल्पना, चाह, अभिलाषा,—विज्ञायतां देवि यस्ते छन्द इति—विक्रम० ३, जैसा आप चाहें 2. स्वतन्त्र इच्छा, अपनी छांट, मन की मौज, कामचार, स्वतन्त्र या इच्छानुकूल आचरण—षष्ठे काले त्वमपि दिवसस्यात्मनश्छन्दवर्ती —विक्रम० २।१, गीत० १, याज्ञ० २।१९५, स्वछन्दम् अपनी स्वतन्त्र इच्छा के अनुसार, निरपेक्ष रूप से 3. (अतः) वश्यता, नियन्त्रण 4. मतलब, इरादा आशय 5. जहर ।

छन्दस् (नपुं०) [छन्द्+असुन्] 1. कामना, चाह, कल्पना, इच्छा, मरजी—(गृह्णीयात्) मूर्खं छन्दोऽनुवृत्तेन याथातथ्येन पण्डितम्—चाण० ३३ 2. स्वतन्त्र इच्छा, स्वेच्छाचरण 3. मतलब, इरादा 4. जालसाजी, चालाकी, धोखा 5. वेद, वैदिक सूक्तों का पावन पाठ—स च कुलपतिराद्यश्छन्दसां यः प्रयोक्ता—उत्तर० ३।४८, बहुलं छन्दसि—पाणिनि के द्वारा बहुधा प्रयुक्त, प्रणवश्छन्दसामिव—रघु० १।११, याज्ञ० १।१४३, मनु० ४।९५ 6. वृत्त, छन्द—ऋक् छन्दसा आशास्ते—श० ४, गायत्री छन्दसामहम्—भग० १०।३५, १३।१४ 7. छन्दों का ज्ञान, छन्दः शास्त्र (छः वेदाङ्गों में से छन्दः शास्त्र भी एक वेदाङ्ग माना जाता है—अन्य वेदाङ्ग हैं:—शिक्षा, व्याकरण, कल्प, निरुक्त और ज्योतिष) । सम० —कृतम् वेद का पद्यात्मक भाग या कोई दूसरी पावन रचना—यथोदितेन विधिना नित्यं छन्दस्कृतं पठेत् —मनु० ४।१००,—गः (छन्दोगः) 1. श्लोकों का सस्वर पाठ करने वाला 2. सामगायक या सामगान का विद्यार्थी—मनु० ३।१४५, (छन्दोगः सामवेदाध्यायी) —भङ्गः छन्दः शास्त्र के नियमों का उल्लंघन,—विचितिः (स्त्री०) 'छन्दः परीक्षा' छन्दः शास्त्र का एक ग्रन्थ —कभी कभी इसे दण्डिरचित माना जाता है—छन्दोविचित्यां सकलस्तत्प्रपञ्चो निदर्शितः—काव्या० १।१२।

छन्न (वि०) [छद्+क्त] 1. ढका हुआ 2. छिपा हुआ, गुप्त, रहस्य आदि, दे० 'छद्' ।

छमण्डः [छम्+अण्डन्] अनाथ, मातृपितृहीन, जिसका कोई सम्बन्धी न हो ।

छर्द् (चुरा० उभ०—छर्दयति, छर्दित) वमन करना, कै करना ।

छर्दः, छर्दनं **छर्दिः** (स्त्री०), **छर्दिका** **छर्दिस्** (स्त्री०) [छर्द्+घञ्, ल्युट्, इन्, छर्दि+कन्+टाप्, छर्द्+इति वा] वमन, कै करना, अस्वस्थता ।

छलः,—**लम्** [छल्+अच्] 1. जालसाजी, चालाकी, धोखा, दगाबाजी—विषहे शठपलायनच्छलानि—रघु० १९।३१, छलमत्र न गृह्यते—मृच्छ० ९।१८, याज्ञ० १।६१,

मनु० ८।४९, १८७, अमरु १६, शि० १३।११ 2. बदमाशी, धूर्तता 3. दलील, बहाना, व्याज, बाह्यरूप, (इस अर्थ में बहुधा 'उत्प्रेक्षा' बतलाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है), परिखावलयच्छलेन या न परेषां ग्रहणस्य गोचरा—नै० २।९५, प्रत्यर्प्य पूजामुपदाच्छलेन—रघु० ७।३०, ५४, १६।२८, भट्टि० १।१, अमरु १५, मा० ९।१ 4. इरादा 5. दुष्टता 6. हेत्वाभास 7. योजना, उपाय, तरकीब।

छलनं,—ना [छल्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] धोखा देना, ठगना, बुद्धि में दूसरे को पराजित करना।

छलयति (ना० धा० पर०) अपनी चतुराई से बुद्धि में दूसरे को पराजित करना, धोखा देना, ठगना—बलिं छलयते गीत० १, शैवाललोलांश्छलयन्ति मीनान् —रघु० १६। ६१, भग० १० ।३६, अमरु ४१।

छलिकम् [छल+ठन्] एक प्रकार का नाटक या नृत्य—छलिकं दुष्प्रयोज्यमुदाहरन्ति—मालवि० २।

छलिन् (पुं०) [छल+इनि] ठग, उचक्का, शठ।

छल्लि,—ल्ली (स्त्री) [छद्+क्विप्, तां लाति—ला+क गौरा° ङीष्] 1. वल्कल, छाल 2. फैलने वाली लता 3. सन्तान, प्रजा, सन्तति, औलाद।

छविः (स्त्री०) [छ्यति असारं छिनत्ति तमो वा—छो+विकिच्च वा ङीप्] 1. आभा, चेहरे की सुर्खी, चेहरे का रंगरूप—हिमकरोदयपाण्डुमुखच्छविः—रघु० ९।३८, छविः पाण्डुरा—श० ३।१०, मेघ० ३३ 2. सामान्य रंगरूप 3. सौन्दर्य, आभा, कान्ति—छविकरं मुखचूर्णमृतुश्रियः—रघु० ९।४५ 4. प्रकाश, दीप्ति 5. त्वचा, खाल।

छाग (वि०) (स्त्री० —गी) [छो+गन्] बकरे या बकरी से सम्बन्ध रखने वाला—याज्ञ० १।२५८,—गः (स्त्री० गी) 1. बकरा बकरी, ब्राह्मणश्छागतो यथा (वंचितः) —हि० ४।५३, मनु० ३।२६९ 2. मेष राशि,—गम् बकरी का दूध। सम०—भोजन (पुं०) भेड़िया,—मुखः कार्तिकेय का विशेषण,—रथः,—वाहनः आग की देवता अग्नि की उपाधि।

छागणः [छगण+अण्] सूखे कण्डों की आग।

छागल (वि०) (स्त्री० - ली) [छगल+अण्] बकरी से प्राप्त होने वाला या उससे सम्बद्ध,—लः बकरा।

छात (वि०) [छो+क्त] 1. काटा गया, विभक्त 2. निर्बल दुबलापतला, कृश।

छात्रः [छत्रं गुरोर्वैगुण्यावरणं शीलमस्य —सिद्धा० छत्र+ण] विद्यार्थी, शिष्य,—त्रम् एक प्रकार का मधु। सम० —गण्डः काव्य का अन्यमनस्क विद्यार्थी जिसे श्लोकों का केवल आरम्भिक पद याद हो, —दर्शनम् एक दिन रक्खे हुए दूध से निकाला हुआ मक्खन,—व्यंसकः मन्दबुद्धि या धूर्त विद्यार्थी।

छादम् [छद्+णिच्+घञ्] छप्पर, छत।

छादनम् [छद्+णिच्+ल्युट्] 1. आवरण, पर्दा (आलं० भी) विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः—भर्तृ० २।७ 2. छिपाना 3. पत्र 4. परिधान।

छादित (वि०) दे० छन्न।

छाद्मिकः [छद्मन्+ठक्] धूर्त, कपटी - मनु० ४।१९५।

छान्दस (वि०) (स्त्री०—सी) [छन्दस्+अण्] 1. वैदिक, वेदों के लिए विशेष शब्द जैसा कि "छान्दसः प्रयोगः" 2. वेदाध्यायी, वेदज्ञ 3. पद्यमय, छन्दोबद्ध,—सः वेदज्ञाता ब्राह्मण।

छाया [छो+य+टाप्] 1. छाँह, छाँव (त० समास के अन्त में 'छाय' हो जाता है जब कि छाँह की सघनता का बोध अपेक्षित हो—उदा० इक्षुच्छायनिषादिन्यः—रघु० ४।२०, इसी प्रकार ७।४, ५०, मुद्रा० ४।२१,) छायामधः सानुगतां निषेव्य—कु० १।५, ६।४६, अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं शमयति परितापं छायया संश्रितानां—श० ५।७, रघु० १।७५, २।६, ३।७०, मेघ० ६७ 2. प्रतिबिम्बित मूर्ति, अक्स—छाया न मूर्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा —श० ७।३२ 3. समरूपता, समानता 4. असत्य कल्पना, दृष्टिभ्रम 5. रंगों का समामिश्रण 6. दीप्ति, प्रकाश—छायामण्डललक्ष्येण —रघु० ४।५, रत्नच्छायाव्यतिकरः—मेघ० १५।३६ 7. रंग—मा०६।५ 8. चेहरे की रंगत, स्वाभाविक रंगरूप,—केवलं लावण्यमयी छाया त्वां न मुञ्चति—श० ३, मेघैरन्तरितः प्रिये तव मुखच्छायानुकारी शशी—सा० द० 9. सौन्दर्य—क्षामच्छायं भवनम्—मेघ० ८०।१०४ 10. रक्षा 11. पंक्ति, रेखा 12. अन्धकार 13. रिश्वत 14. दुर्गा 15. सूर्य की पत्नी (यह सूर्य की पत्नी संज्ञा की प्रकृति—या छाया ही थी, फलतः जिस समय संज्ञा अपने पति को बिना बताये अपने पिता के घर चलीग ई तो छाया से सूर्य के तीन सन्तान हुई—दो पुत्र—सावर्णि और शनि, एक कन्या—तपनी)। सम०—अङ्कः चन्द्रमा,—करः छाता लेकर चलने वाला,—ग्रहः शीशा, दर्पण,—तनयः,—सुतः सूर्यपुत्र शनि,—तरुः वह वृक्ष जिसकी छाया घनी हो, छायादार पेड़—मेघ० १—द्वितीय (वि०) वह जिसका साथ एक मात्र छाया हो, अकेला,—पथः पर्यावरण —रघु० १३।२,—भृत् (पुं०) चन्द्रमा,—मानः चन्द्रमा, —नम् छाया का मापना,—मित्रम् छतरी,—मृगधरः चन्द्रमा,—यन्त्रम् छाया द्वारा काल का ज्ञान कराने वाला यन्त्र, धूपघड़ी।

छायामय (वि०) [छाया+मयट्] प्रतिबिम्बित, छायादार।

छिः (स्त्री) [छो+कि बा०] गाली, अपशब्द।

छिक्का [छिक्+कै+क टाप्] छींकना, छींक।

छित (वि०) दे 'छात'।

छित्तिः (स्त्री०) [छिद्+क्तिन्] काटना, टुकड़े-टुकड़े करना।

छित्वर (वि०) (स्त्री०—री) [छिद्+ष्वरप् पृषो० दस्य तः] 1. काटना, काट देना, चीरना, कटाई करना, फाड़ना, छेदना, टुकड़े २ करना, विदीर्ण करना, खण्ड-खण्ड करना, विभक्त करना—नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि-भग० २।२३, रघु० १२।८०, मनु० ४।६१, ७० याज्ञ० २।३०२ 2. बाधा डालना, विघ्न डालना 3. हटाना, दूर करना, नष्ट करना, शान्त करना, मारना—तृष्णां छिन्धि—भर्तृ० २।७७, एतन्मे संशयं छिन्धि मतिर्मे संप्रमुह्यति—महा०, राघवो रथमप्राप्तां तामाशां च सुरद्विषाम्, अर्धचन्द्रमुखैर्बाणैश्चिच्छेद कदलीमुखम्-रघु० १२।९६, कु० ७।१६, **अव,**—काट डालना, टुकड़े २ कर देना, अलग २ करना, विभक्त करना 2. भेद बताना, विवेचन करना 3. सुधारना, परिभाषा देना, सीमित करना (इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग न्याय में बहुमत से होता है), दे० अवच्छिन्न **आ,**— 1. काट डालना, फाड़ना, टुकड़े २ करना 2. छीनना, खसोटना, ले लेना कु० २।४६, मा० ५।२८ 3. काट डालना, अलग कर देना—मनु० ४।२१९ 4. हटाना, खींचकर दूर करना 5. खींचना, खींचकर दूर करना, उद्धृत करना, निकालना 6. अवहेलना करना, ध्यान न देना, **उद्**—,1. काट डालना, नष्ट करना, उन्मूलन करना, उखाड़ देना--नोच्छिद्यादात्मनो मूलं परेषां चातितृष्णया—महा०, किं वा रिपूंस्तव गुरुः स्वयमुच्छिनत्ति—रघु० ५।७१, २।२३, पंच० १।४७ 2. हस्तक्षेप करना, विघ्न डालना, रोकना—अर्थेन तु विहीनस्य पुरुषस्याल्पमेधसः, उच्छिद्यन्ते क्रियाः सर्वाः ग्रीष्मे कुसरितो यथा—पंच० २।८४, मनु० ३।१०१ **परि**— 1. फाड़ना, काट डालना, टुकड़े-टुकड़े करना 2. घायल करना, अंग-भंग करना 3. अलग करना, विभक्त करना, जुदा करना—शतेन परिच्छिद्य—सिद्धा० 4. सही-सही निश्चित करना, सीमा बनाना, परिभाषा करना, निश्चय करना, भेद बताना, विवेचन करना, —मध्यस्था भगवती नौ गुणदोषतः परिच्छेत्तुमर्हति —मालवि० १, (न) यशः परिच्छेत्तुमियत्तयालम्—रघु० ६।७७, १७।५९, कु० २।५८ **प्र**---, 1. काट डालना, टुकड़े २ करना 2. ले जाना, वापिस लेना **वि**—, 1. काट डालना, तोड़ना, फ़ोड़ना, विभक्त करना—यदर्धे विच्छिन्नं भवति कृतसन्धानमिव तत्—श० १।९, रघु० १६।२०, भर्तृ० १।९६ 2. बाधा डालना, तोड़ देना, समाप्त करना, खतम करना, नष्ट करना, (कुल का दीपक) बुझा देना—विच्छिद्यमानेऽपि कुले परस्य—भट्टि० ३।५२, अमरु ७४, **सम्,**--1. काटना, काट डालना, विभक्त करना 2. दूर करना, साफ कर देना, निवारण करना, हटाना (संदेह आदि)।

छिद् (वि०) [छिद्+क्विप्] (समास के अन्त में) काटने वाला, विभक्त करने वाला, नष्ट करने वाला, हटाने वाला, खण्ड-खण्ड करने वाला—श्रमच्छिदामाश्रमपादपानाम्—रघु० ५।६ पङ्क्तिच्छिदः फलस्य—मालवि० २।८।

छिदकम् [छिद्+क्वुन्] 1 इन्द्र का वज्र, 2. हीरा।

छिदा [छिद्+अङ्+टाप्] काटना, विभाजन।

छिदिः (स्त्री०) [छिद्+इन्] 1. कुल्हाड़ा 2. इन्द्र का वज्र।

छिदिरः [छिद्+किरच्] 1. कुल्हाड़ा 2. शब्द 3. अग्नि 4. रस्सा, डोरी।

छिदुर (वि०) [छिद्+कुरच्] 1. काटने वाला, विभक्त करने वाला 2. आसानी से टूटने वाला 3. टूटा हुआ, अव्यवस्थित, अस्तव्यस्त—संलक्ष्यते न च्छिदुरोऽपि हारः—रघु० १६।६२ 4. शत्रु 5. धूर्त, बदमाश, शठ।

छिद्र (वि०) [छिद्+रक्, छिद्र+अच् वा] छिदा हुआ, छिद्रों से युक्त,—**द्रम्** 1. छिद्र, दरार, फांट, कटाव, रन्ध्र, गर्त, विवर, दरज—नवच्छिद्राणि तान्येव प्राणस्यायतनानि तु—याज्ञ० ३।९९, मनु० ८।२३९ अयं पटश्छिद्रशतैरलङ्कृतः—मृच्छ० २।९, इसी प्रकार काष्ठ° घूमि० 2. दोष, त्रुटि, दूषण—त्वं हि सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यसि, आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यसि—महा० 3. भेद्य या क्षीण अंश, दुर्बल पक्ष, दोष, न्यूनता—नास्य छिद्रं परो विद्याद्विद्याच्छिद्रं परस्य तु, गूहेत् कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः—मनु० ७।१०५, १०२, छिद्रं निरूप्य सहसा प्रविशत्यशङ्कः—हि० १।८१ (यहां 'छिद्र' का अर्थ 'सूराख' भी है), पञ्च० ३।३९ **सम०—अनुजीविन्,—अनुसन्धानिन्,--अनुसारिन्,—अन्वेषिन्** (वि०) 1. दोष या त्रुटियाँ ढूंढने वाला 2. दूसरों की दूषित बातों को खोजने वाला, दूसरों में दोष निकालने वाला, छिद्रान्वेषी—सर्पाणां दुर्जनानां च परच्छिद्रानुजीविनां—पञ्च० १,—**अन्तरः** बेत, नरकुल, सरकण्डा,--**आत्मन्** (वि०) जो अपनी त्रुटियाँ दूसरों पर प्रकट कर देता है, -**कर्ण** (वि०) जिसने कान बिंधवा लिये हैं, -**दर्शन** (वि०) 1. दोषों का प्रदर्शन करने वाला 2. दोषदर्शी।

छिद्रित (वि०) [छिद्र+इतच्] 1. छिद्रों से युक्त 2. बिंधा हुआ, छिदा हुआ।

छिन्न (भू० क० कृ०) [छिद्+क्त] 1. कटा हुआ, विभक्त किया हुआ, विदीर्ण, कटा हुआ, खण्डित, फाड़ा हुआ, टूटा हुआ 2. नष्ट हुआ, दूर किया हुआ---दे० छिद्र, —**न्ना** वाराङ्गना, वेश्या। **सम०—केश** (वि०) जिसके बाल काट लिये गये हैं, जिसका क्षौर या मुण्डन हो

चुका है,—द्रुमः खण्डित वृक्ष,—द्वैध (वि०) जिसका सन्देह मिट गया है,—नासिक (वि०) जिसकी नाक कट गई है,—भिन्न (वि०) जो पूरी तरह काट दिया गया है, जिसका अंग भंग हो गया है, क्षतविक्षत, काटा हुआ,—मस्त,—मस्तक (वि०) कटे हुए सिर वाला,—मूल (वि०) जिसे जड़ से क़ाट दिया गया है—रघु० ७।४३,—श्वासः एक प्रकार का दमा,—संशय (वि०) जिसके सन्देह दूर हो गये हैं, सन्देहमुक्त, पुष्ट।

छुछुन्दरः (स्त्री०— री) [छुछुम् इत्यव्यक्तशब्दो दीर्यते निर्गच्छति अस्मात् छुछुम्+दृ+अप्] छुछुन्दर नाम का जन्तु, गन्धाखु—याज्ञ० ३।२१३, मनु० १२।६५।

छुप् (तुदा० पर०—छुपति) स्पर्श करना, छूना।

छुपः [छुप्+क] 1. स्पर्श 2. झाड़ी, झंखाड़ 3. संघर्ष, युद्ध।

छुर् i (भ्वा० पर०—छोरति, छुरित) 1. काटना, विभक्त करना 2. उत्कीर्ण करना, ii (तुदा० पर०—छुरति, छुरित) 1. ढांपना, सानना, लीपना, जड़ना, पोतना, अवगुंठित करना 2. मिलाना,—वि—,सानना, लीपना, ढकना, पोतना—मनःशिलाविच्छुरिता निषेदुः कु० १।५५, चौर० ११, विक्रम० ४।४५।

छुरणम् [छुर्+ल्युट्] सानना, लीपना—ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला रात्रिकापालिकीयम्—काव्य० १०।

छुरा [छुर्+क+टाप्] चूना।

छुरिका [छुर्+क्वुन्+टाप्, इत्वम्] चाकू, छूरी।

छुरित (भू० क० कृ०) [छुर्+क्त] 1. खचित, जडित 2. ऊपर फैलाया हुआ, पोता हुआ, आच्छादित किया हुआ—अनेकधातुच्छुरिताश्मराशेः—शि० ३।४, ७, इन्दुकिरणच्छुरितमुखीम्—काव्य० १० 3. समामिश्रित, अन्तर्मिश्रित—परस्परेण छुरितामलच्छवी—शि० १।२२।

छुरी, छूरिका, छूरी [छुर्+ङीप्, छूरी+कन्+टाप्, ह्रस्वः, छुरी पृषो० दीर्घः] चाकू, छुरी।

छृद् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—छर्दति, छर्दयति- ते) जलाना ii (रुधा० उभ० छृणत्ति, छृन्त) 1. खेलना 2. चमकना 3. वमन करना।

छेक (वि०) [छो+डेकन् बा० तारा०] 1. पालतू, घरेलू (जैसे कि हिंस्रजन्तु) 2. नागरिक, शहरी 3. बुद्धिमान्, नागर। सम०—अनुप्रासः अनुप्रास के पांच भेदों में से एक, 'एक बार वर्णावृत्ति' जो कि व्यंजन समूहों में अनेक प्रकार से तथा एक ही बार घटने वाली समानता है—उदा०—आदाय बकुलगन्धानन्धीकुर्वन्पदे पदे भ्रमरान्, अयमेति मन्दमन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः—सा० द० ६३४,—अपह्नुतिः (स्त्री०) अपह्नुति अलंकार का एक भेद चन्द्रालोक सोदाहरण निरूपण करता है—छेकापह्नुतिरन्यस्य शङ्कातस्तस्य निह्नवे, प्रजल्पन्मत्पदे लग्नः कान्तः किं न हि नूपुरः—५।२७,—उक्तिः (स्त्री०) वक्रोक्ति, व्यंग्यात्मक वक्रोक्ति, द्व्यर्थक मुहाविरा।

छेदः [छिद्+घञ्] 1. काटना, गिराना, तोड़ डालना, खण्ड-खण्ड करना—अभिज्ञाश्छेदपातानां क्रियन्ते नन्दनद्रुमाः—कु० २।४१, छेदो दंशस्य दाहो वा—मालवि० ४।४, रघु० १४।१, मनु० ८।२७०, ३७०, याज्ञ० २।२२३ २४० 2. निराकरण करना, हटाना, छिन्न-भिन्न करना, साफ करना, जैसा कि 'संशयच्छेद' में 3. नाश, बाधा—निद्राच्छेदाभिताम्रा—मुद्रा० ३।२१ 4. विराम, अवसान, समाप्ति, लोप होना जैसा कि 'धर्मच्छेद' में 5. टुकड़ा, ग्रास, कटौती, खण्ड, अनुभाग—बिसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः—मेघ० ११, ५९, अभिनवकरिदन्तच्छेदपाण्डुः कपोलः—मा० १।२२, कु० १।४ श० ३।७, रघु० १२।१००, 6. (गणित में) भाजक, हर (भिन्नराशि का)।

छेदनम् [छिद्+ल्युट्] 1. काटना, फाड़ना, काट डालना, टुकड़े २ करना, खण्ड-खण्ड विभक्त करना—मनु० ८।२८०, २९२, ३२२ 2. अनुभाग, अंश, टुकड़ा, भाग 3. नाश, हटाना।

छेदिः [छिद्+इन्] बढ़ई।

छेमण्ड [छम्+अण्डन्, एत्वम्] मातृपितृहीन, अनाथ।

छेलकः [छो+डेलक] बकरा।

छैदिकः [छेद+ठक्] बेत।

छो (दिवा० पर०—छ्यति, छात या छित—प्रेर० छापयति) काटना, काट कर टुकड़े टुकड़े करना, कटाई करना, लवनी करना,—भट्टि० १४।१०१, १५।४०।

छोटिका [छुट्+ण्वुल+टाप्, इत्वम्] चुटकी।

छोरणम् [छुर्+ल्युट्] त्याग करना, छोड़ देना।

ज

ज (वि०) [जि—जन्—जु+ड] (समास के अन्त में) से या में उत्पन्न, पैदा हुआ, वंशज, अवतीर्ण, उद्भूत, आदि—अत्रिनेत्रज, कुलज, जलज, क्षत्रियज, अण्डज, उद्भिज आदि,—जः 1. पिता 2. उत्पत्ति, जन्म 3. विष 4. भूतना, प्रेत या पिशाच 5. विजेता 6. कान्ति, प्रभा 7. विष्णु।

जकुटः (पुं०) 1. मलय पर्वत 2. कुत्ता।

जक्ष् (अदा० पर०—जक्षिति, जक्षित या जग्ध) खाना, खा लेना, नष्ट करना, उपभोग करना—भट्टि० ४।३९, १३।२८, १५।४६, १८।१९।

जक्षणम्, जक्षिः [जक्ष्+ल्युट्, इन् वा] खाना, उपभोग करना।

जगत् (वि०) (स्त्री०—ती) [गम्+क्विप् नि० द्वित्वं तुगागमः] हिलने-जुलने वाला, जङ्गम—सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च-ऋक् १।११५। १, इदं विश्वं जगत्सर्वमजगच्चापि यद्भवेत्-महा०,(पुं०), वायु, हवा (नपुं०) संसार—जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ—रघु० १।१। सम०—अम्बा,—अम्बिका दुर्गा,—आत्मन् (पुं०) परमात्मा,—आदिजः शिव का विशेषण,—आधारः 1. समय 2. वायु, हवा,—आयुः,—आयुस् (पुं०) हवा,—ईशः,—पतिः विश्व का स्वामी, परमदेव,—उद्धारः संसार की मुक्ति,—कर्तृ,—धातृ (पुं०) सृष्टि का बनाने वाला,—चक्षुस् (पुं०) सूर्य,—नाथः विश्व का स्वामी,—निवासः 1. परमात्मा 2. विष्णु का विशेषण—जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि—शि० १।१ 3. सांसारिक अस्तित्व,—प्राणः,—बलः हवा,—योनिः 1. परमपुरुष 2. विष्णु का विशेषण 3. शिव की उपाधि 4. ब्रह्मा का विशेषण (निः—स्त्री०) पृथ्वी,—वहा पृथ्वी,—साक्षिन् (पुं०) 1. परमात्मा 2. सूर्य।

जगती [गम्+अति नि० साधुः] पृथ्वी, (समीहते) नयेनजेतुं जगतीं सुयोधनः—कि० १।७, समतीत्य भाति जगती जगती—५।२० 2. लोग, मनुष्य 3. गाय 4. छन्दो भेद (दे० परिशिष्ट)। सम०—अधीश्वरः, ईश्वरः राजा—नै० २।१,—रुह् (पुं०) वृक्ष।

जगनुः (त्नुः)=1. अग्नि 2. क्रीड़ा 3. जन्तु।

जगरः [जागर्ति युद्धेऽनेन—जागृ+अच् पृषो० तारा०] कवच।

जगल (वि०) [जन्+ड=जः जातः सन् गलति गल्+अच्] बदमाश, चालाक, धूर्त,—लम् 1. गोबर 2. कवच 3. एक प्रकार की मदिरा (पुं०) (अन्तिम दो अर्थों में भी)।

जग्ध (वि०) [अद्+क्त जग्धादेशः] खाया हुआ।

जग्धिः (स्त्री०) [अद्+क्तिन् जग्धादेशः] 1. खाना 2. भोजन।

जग्मिः [गम्+कि, द्वित्वम्] हवा।

जघनम् [हन्+अच्, द्वित्वम्] 1. पुट्ठा, कूल्हा, चूतड़,—घटय जघने काञ्चीमञ्च स्रजा कबरीभरम्—गीत० १२ 2. स्त्रियों का पेड़ू 3. सेना का पिछला भाग, सेना का सुरक्षित भाग। सम०—कूपकौ (द्वि० व०) किसी सुन्दरी के कूल्हे के ऊपर के गड्ढे,—चपला व्यभिचारिणी स्त्री, कामुका—पत्युर्विदेशगमने परमसुखं जघनचपलायाः—पञ्च० १।१७३।

जघन्य (वि०) [जघने भवः यत्] 1. सबसे पिछला, अन्तिम—भग० १४।१८ मनु० ८।२७० 2. सबसे बुरा अत्यन्त दुष्ट, कमीना, अधम, निंद्य 3. नीच कुल में उत्पन्न,—न्यः शूद्र। सम०—जः 1. छोटा भाई 2. शूद्र।

जघ्निः [हन्+किन्, द्वित्वम्] (आक्रमणकारी) शस्त्र, हथियार।

जघ्नु (वि०) [हन्+कु, द्वित्वम्] प्रहार करने वाला, वध करने वाला।

जङ्गम (वि०) [गम्+यङ्+अच्, धातोर्द्वित्वं यङो लुक् च] हिलने-जुलने वाला, जीवित, चर—चिताग्निरिव जङ्गमः—रघु० १५।१६, शोकाग्निरिव जङ्गमः—महावी० ५।२०, मनु० १।४९,—मम् चर या हिलने-डुलने वाला पदार्थ—रघु० २।४४। सम०—इतर (वि०) अचर, स्थावर,—कुटी छाता, छतरी।

जङ्गलम् [गल्+यङ्+अच् पृषो०] 1. मरुस्थल, सुनसान जगह, ऊसर भूमि 2. झुरमुट, वन 3. एकान्त निर्जन स्थान।

जङ्गालः [=जङ्गल, पृषो० साधुः] मेढ़, बाँध, सीमा चिह्न।

जङ्गुलम् [गम्+यङ्+डुल, धातोर्द्वित्वं यङो लुक् च] विष, जहर।

जङ्घा [जङ्घन्यते कुटिलं गच्छति—हन्+यङ्+अच्, यङो लुक् पृषो०] जांघ, टखने से लेकर घुटने तक का भाग, पिण्डली। सम०—आरः,—कारिकः धावक, हरकारा, दूत, सन्देशहर,—त्राणम् टांगों के लिए कवच।

जङ्घाल (वि०) [जङ्घा+लच्] शीघ्रधावक, प्रजवी,—लः 1. हरकारा 2. हरिण, बारहसिंघा।

जङ्घिल (वि०) [जङ्घा+इलच्] प्रधावक, प्रजवी, फुर्तीला।

जज्, जञ्ज् (भ्वा० पर०—जजति, जञ्जति) लड़ना, युद्ध करना।

जट् (भ्वा० पर०—जटति) जुड़ जाना, (बालों का) बल खाकर जटाजूट होना।

जटा [जट्+अच्+टाप्] 1. बटे हुए बाल, आपस में बल खाकर चिपके हुए बाल—अंसव्यापि शकुन्तनीडनिचितं बिभ्रज्जटामण्डलम्—श० ७।११, जटाश्च बिभृयान्नित्यम्—मनु० ६।६, मा० १।२ 2. तन्तुमय जड़ 3. सामान्य जड़ 4. शाखा 5. शतावरी का पौधा। सम०—चीरः,—टङ्कः,—टीरः,—धरः शिव के विशेषण,—जूटः 1. जटाओं के रूप में बटे हुए बालों का समूह 2. शिव की जटाएँ—जटाजूटग्रन्थौ यदसि विनिबद्धा पुरभिदा—गंगा० १४,—ज्वालः दीप, लैंप,—धर (वि०) जटाधारी।

जटायुः [जटं संहतमायुः यस्य ब० स०] श्येनी और अरुण,

का पुत्र, अर्ध दिव्य पक्षी [यह दशरथ का घनिष्ठ मित्र था, जब रावण सीता का अपहरण करके ले जा रहा था तो जटायु ने सीता का रुदन और करुण-क्रन्दन सुना, फलतः वह बेधड़क हो रावण से भिड़ गया, घमासान युद्ध हुआ, परन्तु वह सीता को रावण के पञ्जे से न छुड़ा सका और स्वयं घायल हो प्राणान्तक पीड़ा से तड़पता रहा। अन्त में सीता की खोज करते हुए राम उसके पास से निकले तो उस दयालु जटायु ने राम को यह बतला कर कि सीता को रावण उठा कर ले गया है, अन्तिम श्वास लिया। राम और लक्ष्मण ने उसका विधिपूर्वक अन्त्येष्टि संस्कार किया]।

जटाल (वि०) [जटा+लच्] 1. जटाजूटधारी 2. (चिपके हुए बालों की भांति) एक स्थान पर इकट्ठे किये हुए —भामि० १।३६,—**लः** गूलर का पेड़।

जटिः (टी) (स्त्री०) [जट्+इन्, जटि+ङीष्] 1. गूलर का पेड़ 2. उलझ पुलझ कर चिपके हुए 3. संघात, समुच्चय।

जटिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [जटा+इनि] जटाधारी, (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. प्लक्ष का वृक्ष, पाकड़ का पेड़।

जटिल (वि०) [जटा+इलच्] 1. (संन्यासियों की भांति) जटाधारी,—विवेश कश्चिज्जटिलस्तपोवनम्—कु० ५।३०, (यहाँ 'जटिल' शब्द 'संज्ञा' भी है और इसका अर्थ है 'संन्यासी') 2. पेचीदा, अव्यवस्थित, अन्तर्मिश्रित, गडमड किया हुआ—विजानन्तोऽप्येते वयमिह विपज्जालजटिलान्, न मुञ्चामः कामानहह गहनो मोहमहिमा—भर्तृ० ३।२१ 3. सघन, अभेद्य,—**लः** 1. सिंह 2. बकरा।

जठर (वि०)[जायते जन्तुर्गर्भो वास्मिन् - जन्+अर ठान्त देशः—तारा०] कठोर. सख्त, दृढ़,—**रः**,—**रम्** पेट, उदर—जठरं को न बिभर्ति केवलम्—पंच० १।२२ 2. गर्भाशय 3. किसी वस्तु का भीतरी भाग। सम० —**अग्निः** पेट में स्थित अग्नि जो आहार को पचाने का काम करती है, आमाशय की गिल्टियों से निकलने वाला रस, —**आमयः** जलोदर रोग,—**ज्वाला**, —**व्यथा** उदर-ज्वाला, भूख का कष्ट, शूल —**यंत्रणा**, —**यातना** गर्भवास का कष्ट।

जड (वि०) [जलति घनीभवति जल्+अच्, लस्य डः] 1. शीतल, जमा हुआ या ठंडा, शीत या ठिठुरा देने वाला 2. मन्द, लूला-लंगड़ा, गतिहीन, जडीकृत —चिन्ताजडं दर्शनम् - श० ४।५, परामृशन् हर्षजडेन पाणिना—रघु० ३।६८, २।४२ 3. निश्चेतन, चेतनारहित, विवेकशून्य, मन्दबुद्धि—जडानंधान् पंङ्गून् ···त्रातुम्—गंगा० १५, इसी प्रकार जडधी, जडमति —याज्ञ० २।२५, मनु० २।११० 4. मन्दीकृत, उदासीन या चेतनाशून्य किया हुआ, गुणविवेचनशून्य अरसिक —वेदाभ्यासजडः कथं नु विषयव्यावृत्तकौतुहलः —विक्रम० १।९ 5. हड़बड़ा देने वाला, जड बना देने वाला, संज्ञाशून्य करने वाला 6. गूंगा 7. वेद (दायभाग) पढ़ने के अयोग्य,—**डम्** 1. पानी 2. सीसा। सम० —**क्रिय** (वि०) मन्थर, दीर्घसूत्री।

जडता,-त्वम् [जड+तल्+टाप्, जड+त्व वा] 1. मन्दता, कार्य में अरुचि, आलस्य 2. अज्ञान, बुद्धूपन 3. (अल० शा० में) ३३ संचारी भावों में एक—मन्दता, सा० द० १७५।

जडिमन् (पुं०) [जड+इमनिच्] 1. ठण्डक 2. जडता 3. मन्दता, उदासीनता 4. मूर्छा, संज्ञाहीनता।

जतु (नपुं०) [जायते वृक्षादिभ्यः जन्+उ त आदेशः] लाख। सम०—**अश्मकम्** शिलाजीत,—**पुत्रकः** शतरंज का मोहरा,—**रसः** लाख, महावर।

जतुकम् [जतु+कन्] लाख, महावर।

जतुका [जतुक+टाप्] 1. लाख 2. चमगादड़।

जतुकी, जतूका [जतुक+ङीष्, जतुका नि० दीर्घः] चमगादड़।

जत्रु (नपुं०) [जन्+रु तोऽन्तादेशः] ग्रीवास्थि, हंसुली।

जन् (दिवा० आ०—जायते, जात—क० वा० जन्यते या जायते) पैदा होना, उत्पन्न होना (अपा० के साथ), अजनि ते वै पुत्रः—ऐत०, मनु० १।९, ३।३९, ४१, प्राणाद्वायुरजायत—ऋग्० १०।९०।१२, मनु० १०।८, ३।७६, १।७५ 2. उठना, फूटना (पौधे की भांति) उगना 3. होना, बन जाना, आ पड़ना, घटित होना, घटना—अनिष्टादिष्टलाभेऽपि न गतिर्जायते शुभा —हि० १।६, रक्तनेत्रोऽजनि क्षणात्—भट्टि० ६।३२, याज्ञ० ३।२२६, मनु० १।९९, प्रेर० जनयति जन्म देना, पैदा करना, उत्पन्न करना—**अनु**—1. बाद में पैदा होना—पुत्रिकायां कृतायां तु यदि पुत्रोऽनुजायते—मनु० ९।१३४ 2. समरूप पैदा होना—असौ कुमारस्त-मजोऽनुजातः—रघु० ६।७८ (तस्माज्जातः—मल्लि०), **अभि**—, 1. पैदा होना, उत्पन्न होना, उदय होना, फूटना—कामात्क्रोधोऽभिजायते—भग० २।६२० हि० १।२०५ 2. होना, घटित होना 3. परिणत होना 4. उच्चकुल में जन्म होना 5. उत्पन्न होना—भग० १६।३, **उप**—, 1. पैदा होना, उत्पन्न होना, निकलना, उगना—ऊष्मणश्चोपजायते—मनु० १।४५, सङ्गस्तेषूपजायते—भग० २।६२, १४।११ 2. फिर जन्म लेना, याज्ञ० ३।२५६, भग० १४।२, 3. होना, घटित होना। **प्र**—, **वि**—, **सम्**—, 1. उगना, निकलना, फूटना 2. पैदा होना, उत्पन्न होना।

जनः [जन्+अच्] 1. जीवजन्तु, जीवित प्राणी, मनुष्य

2. व्यक्ति, पुरुष (चाहे मनुष्य हो या स्त्री)—क्व वयं क्व परोक्षमन्मथो मृगशावैः सममेधितो जनः · श० २।१८, तत्तस्य किमपि द्रव्यं यो हि यस्य प्रियो जनः —उत्तर० २।१९, इसी प्रकार 'सखीजनः' सहेली, 'दासजनः' सेवक, 'अबलाजनः' आदि (इस अर्थ में 'जनः' या 'अयंजनः' का प्रयोग बहुधा वक्ता के द्वारा स्त्री या पुरुष दोनों के लिए एकवचन या बहुवचन में किया जाता है और उत्तम पुरुष भी प्रथम पुरुष के रूप में प्रयुक्त होता है) —अयं जनः प्रष्टुमनास्तपोधने —कु० ५।४० (मनुष्य); भगवन्परवानयं जनः प्रतिकूलाचरितं क्षमस्व मे—रघु० ८।८१ (स्त्री), पश्यानङ्ग शरातुरं जनमिमं त्रातापि नो रक्षसि—नागा० १।१ (स्त्री, ब० व०) 2. सामूहिक रूप में मनुष्य, लोग, संसार (ए० व० या ब० व० में)—एवं जनो गृह्णाति —मालवि० १, सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते—श० ५।१७ 3. वंश, राष्ट्र, कबीला 4. 'महः' लोक से परे का संसार, देवत्व को प्राप्त मनुष्यों का स्वर्ग। सम०—अतिग (वि०) असाधारण, असामान्य, अतिमानव,—अधिपः,—अधिनाथः राजा,—अन्तः 1. वह स्थान जहाँ मनुष्य नहीं रहते, वह स्थान जो बसा हुआ नहीं है 2. प्रदेश 3. यम का विशेषण,—अन्तिकम् गुप्त संवाद, कान में कहना या एक ओर होकर कहना (अव्य०) एक ओर को (नाटकों में)—सा० द० रंगमंच के निदेश की परिभाषा इस प्रकार बतलाता है :—त्रिपताकाकरेणान्यानपवार्यांतराकथाम्, अन्योन्यामंत्रणं यत् स्याज्जनान्ते तज्जनान्तिकम्, ४२५,—अर्दनः विष्णु या कृष्ण का विशेषण,—अशनः भेड़िया,—आकीर्ण (वि०) लोगों से ठसाठस भरा हुआ, जनसंकुल,—आचारः लोकाचार, लोकरीति,—आश्रमः धर्मशाला, सराय, पथिकाश्रम, —आश्रयः मण्डप, शामियाना,—इन्द्रः,—ईशः,—ईश्वरः राजा,—इष्ट (वि०) लोकप्रिय (ष्टः) एक प्रकार की चमेली,—उदाहरणम् यश, कीर्ति,—ओघः जनसंमर्द, भीड़, जमघट,—कारिन् (पुं०) अलक्तक,—चक्षुस् (नपुं०) 'लोकलोचन' सूर्य,—त्रा छाता, छतरी,—देवः राजा,—पदः 1. जनसमुदाय, वंश, राष्ट्र—याज्ञ० १।३६० 2. राजधानी, साम्राज्य, बसा हुआ देश —जनपदे न गदः पदमादधौ—रघु० ९।४, दाक्षिणात्ये जनपदे—पंच० १, मेघ० ४८ 3. देश (विप० पुर, नगर)—जनपदवधूलोचनैः पीयमानः—मेघ० १६ 4. जनसाधारण, प्रजा (विप० प्रभु) 5. मनुष्यजाति, —पदिन् (पुं०) किसी जनसमुदाय या देश का राजा, —प्रवादः 1. अफ़वाह, किंवदन्ती, जनश्रुति 2. लोकापवाद, बदनामी,—प्रिय (वि०) 1. लोक हितेच्छु 2. सर्वप्रिय,—मर्यादा सर्वसम्मत प्रथा,—रञ्जनम् लोगों को सुख देना, लोकप्रियता का प्रसाद प्राप्त करना, —रवः 1. किंवदन्ती 2. बदनामी, लोकापवाद,—लोकः ऊपर के सात लोकों में से पाँचवाँ, महर्लोक के ऊपर स्थित लोक,—वादः ('जनेवादः' भी) 1. समाचार, जनश्रुति 2. लोकापवाद,—व्यवहार लोकप्रिय चलन, —श्रुत (वि०) विख्यात, प्रसिद्ध,—श्रुतिः (स्त्री०) किंवदन्ती, जनरव,—संबाध वि० घना बसा हुआ, —स्थानम् दण्डक वन के एक भाग का नाम—रघु० १२।४२, १३।२२, उत्तर० १।२८, २।१७।

जनक (वि०) (स्त्री०—निका) [जन्+णिच्+ण्वुल्] जन्म देने वाला, पैदा करने वाला, कारण बनने वाला या उत्पन्न करने वाला; क्लेशजनक, दुःखजनक आदि, —कः 1. पिता, जन्म देने वाला 2. विदेह या मिथिला के प्रसिद्ध राजा, सीता का धर्मपिता। वह अपने प्रभूत ज्ञान, अच्छे कार्य और पवित्रता के कारण प्रसिद्ध था। राम के द्वारा सीता का परित्याग किये जाने पर उन्होंने वैराग्य ले लिया, सुख और दुःख के प्रति उदासीन हो गये और अपना समय दार्शनिक चर्चा में बिताया। याज्ञवल्क्य मुनि जनक के पुरोहित और परामर्श दाता थे। सम०—आत्मजा,—तनया, —नन्दिनी,—सुता जनक की पुत्री सीता के विशेषण।

जनङ्गमः [जनेभ्यो गच्छति बहिः, जन+गम्+खच्, शुभागमः] चाण्डाल।

जनता [जनानां समूहः—तल्] 1. जन्म 2. लोगों का समूह, मनुष्य जाति, समुदाय—पश्यति स्म जनता दिनात्यये पार्वणौ शशि दिवाकराविव—रघु० ११।८२, १५।६७, शि० ९।१४।

जनन (वि०) [जन्+ल्युट्] पैदा करने वाला, उत्पन्न करने वाला आदि,—नम् 1. जन्म, पैदा होना,— यावज्जननम् तावन्मरणम् —मोह० १३ 2. पैदा करना, उत्पादन करना, सृजन करना—शोभाजननात्—कु० १।४२ 3. साक्षात्कार, प्रत्यक्षीकरण, उदय 4. जीवन, अस्तित्व—यदैव पूर्वे जनने शरीरं सा दक्षरोषात्सुदती ससर्ज—कु० १।५३, श० ५।२, गोत्र, कुल, वंशपरंपरा।

जननिः (स्त्री०) [जन्+अनि] 1. माता 2. जन्म।

जननी [जन्+णिच्+अनि+ङीप्] 1. माता 2. दया, दयालुता, करुणा 3. चमगादड़ 4. लाख।

जनमेजयः [जनान् एजयति इति जन्+एज्+णिच्+खश, मुमागमः] हस्तिनापुर का एक प्रसिद्ध राजा, परीक्षित का पुत्र और अर्जुन का पोता (जनमेजय का पिता साँप के काटे जाने से मरा, इसलिए जनमेजय ने उस क्षति का प्रतिशोध करने के लिए संसार से सर्पजाति का समूल विनाश करने के लिए दृढ़ संकल्प किया। तदनुसार एक सर्पयज्ञ का आरंभ किया गया जिसमें तक्षक को छोड़ कर और सब सर्प जला दिये गये।

आस्तिक ऋषि के बीच में पड़ने से तक्षक के प्राण बचे और सर्पयज्ञ बन्द कर दिया गया। इस यज्ञ के कारण ही वैशम्पायन ने राजा को महाभारत की कथा सुनाई, राजा ने भी ब्रह्महत्या के पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए उस कथा को ध्यानपूर्वक सुना)।

जनयितृ (वि०) (स्त्री—त्री) [जन्+णिच्+तृच्] पैदा करने वाला, जन्म देने वाला, सृष्टिकर्ता—(पुं०) पिता।

जनयित्री [जनयितृ+ङीप्] माता।

जनस् (नपुं०) [जन्+णिच्+असुन्] दे० जन ३।

जनिः, जनिका, जनी (स्त्री०) [जन्+इन्, जनि+कन्+टाप्, जनि+ङीष्] 1. जन्म, सृजन, उत्पादन 2. स्त्री 3. माता 4. पत्नी 5. स्नुषा, पुत्रवधू।

जनित (वि०) [जन्+णिच्+क्त] 1. जिसे जन्म दिया गया है 2. पैदा किया हुआ, सृजन किया हुआ, उत्पन्न किया हुआ।

जनितृ (पुं०) [जन्+णिच्+तृच्] पिता।

जनित्री [जनितृ+ङीप्] माता।

जनु (नू) (स्त्री०) [जन्+उ, जनु+ऊङ्] जन्म, उत्पत्ति।

जनुस् (नपुं०) [जन्+उसि] 1. जन्म—धिग्वारिधीनां जनुः—भामि० १।१६ 2. सृष्टि, उत्पादन 3. जीवन, अस्तित्व—जनुः सर्वश्लाघ्यं जयति ललितोत्तंस भवतः —भामि० २।५५। सम०—**जनुषान्धः** जन्म से अन्धा, जन्मान्ध।

जन्तुः [जन्+तुन्] 1. जानवर, जीवित प्राणी, मनुष्य —श० ५।२, मनु० ३।७१ 2. आत्मा, व्यक्ति 3. निम्न जाति का जानवर। सम०—**कम्बुः** 1. घोंघे की सीपी 2. घोंघ,—**फलः** गूलर का वृक्ष।

जन्तुका [जन्तु+कै+क+टाप्] लाख।

जन्तुमती [जन्तु+मतुप्+ङीप्] पृथ्वी।

जन्मम् [जन्+मन्] उत्पत्ति।

जन्मन् [जन्+मनिन्] 1. जन्म—तां जन्मने शैलवधूं प्रपेदे—कु० १।२१ 2. मूल, उद्गम, उत्पत्ति, सृष्टि —आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः—हि० प्र० ४४, कु० ५।६० (समास के अन्त में) से उत्पन्न या उदय—सरलस्कन्धसंघट्टजन्मा दवाग्निः—मेघ० ५३ 3. जीवन, अस्तित्व—पूर्वेष्वपि हि जन्मसु —मनु० ९।१००, ५।३८, भग० ४।५ 4. जन्म-स्थान. 5. उत्पत्ति। सम०—**अधिपः** 1. शिव का विशेषण 2. (ज्योतिष में) जन्म लग्न का स्वामी,—**अन्तरम्** दूसरा जन्म,—**अन्तरीय** (वि०) दूसरे जन्म से सम्बद्ध या किसी दूसरे जन्म में किया हुआ,—**अन्ध** (वि०) जन्म से ही अन्धा,—**अष्टमी** भाद्रपद कृष्णपक्ष की अष्टमी, श्रीकृष्ण का जन्म दिन,—**कीलः** विष्णु का विशेषण, —**कुण्डली** जन्म-पत्रिका में बनाया गया चक्र जिसमें जन्म के समय की ग्रहों की स्थिति दर्शायी गई हो, —**कृत्** (पुं०) पिता,—**क्षेत्रम्** जन्म स्थान,—**तिथिः** (पुं०, स्त्री०) —**दिनम्**,—**दिवसः** जन्मदिन,—**दः** (वि०) पिता,—**नक्षत्रम्**,—**भम्** जन्म के समय का नक्षत्र, —**नामन्** (नपुं०) जन्म से बारहवें दिन रक्खा गया नाम,—**पत्रम्**,—**पत्रिका** वह पत्र या पत्रिका जिसमें जन्म लेने वाले बालक के जन्म काल के नक्षत्र या ग्रह आदि बतलाये गये हों,—**प्रतिष्ठा** 1. जन्म स्थान 2. माता—श० ६,—**भाज्** (पुं०) जानवर, जीवित प्राणी —मोदन्तां जन्मभाजः सततं—मृच्छ० १०।६०, —**भाषा** मातृभाषा—यत्र स्त्रीणामपि किमपरं जन्मभाषावदेव प्रत्यावासं विलसति वचः संस्कृतं प्राकृतं च—विक्रम० १८।६,—**भूमिः** (स्त्री०) जन्म स्थान, स्वदेश,—**योगः** जन्मपत्र,—**रोगिन्** (वि०) जन्म का रोगी, जिसे जन्मसे ही रोग लगा हो,—**लग्नम्** वह लग्न जो जन्म के समय हो,—**वर्त्मन्** (नपुं०) योनि,—**शोधनम्** जन्म से प्राप्त कर्तव्यों का परिपालन,—**साफल्यम्** जीवन के उद्देश्यों की सिद्धि,—**स्थानम्** 1. जन्मभूमि, स्वदेश, वह घर जहां जन्म लिया है 2. गर्भाशय।

जन्मिन् (पुं०)[जन्मन्+इनि] जानवर, जीवधारी प्राणी।

जन्य (वि०) [जन्+ण्यत्, जन्+णिच्+यत् वा] 1. जन्म लेने वाला, पैदा होने वाला 2. जात, उत्पन्न, 3. (समास के अन्त में) से उत्पन्न, जनित 4. किसी वंश या कुल से संबद्ध 5. गंवारू, सामान्य 6. राष्ट्रीय,—**न्यः** 1. पिता 2. मित्र, दूल्हे का सम्बन्धी या सेवक 3. साधारण जन 4. जनश्रुति, किंवदन्ती,—**न्यम्** 1. जन्म, उत्पत्ति, सृष्टि 2. जात, सृष्ट, उत्पादित वस्तु, (विप० जनक)—जन्यानां जनकः कालः—भाषा० ४५; जनकस्य स्वभावो हि जन्ये तिष्ठति निश्चितम्—शब्द०, 3. शरीर 4. जन्म के समय होने वाला अपशकुन 5. बाजार, मण्डी, मेला 6. संग्राम, युद्ध—तत्र जन्यं रघोर्घोरं पार्वतीयैर्गणैरभूत्—रघु० ४।७७ 7. निन्दा, अपशब्द,—**न्या** 1. माता की सहेली 2. वधू का सम्बन्धी वधू की सेविका—याहीति जन्यामवदत्कुमारी—रघु० ६।३० 3. सुख, आनन्द 4. स्नेह।

जन्युः [जन्+युच् वा० न अनादेशः] 1. जन्म 2. जानवर जीवधारी, प्राणी 3. आग 4. सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा।

जप् (भ्वा० पर०—जपति, जपित या जप्त) 1. मन्द स्वर में उच्चारण करना, मन ही मन में बार २ कहना, गुनगुनाना—जपन्नपि तवैवालापमन्त्रावलिम्—गीत० ५, हरिरिति हरिरिति जपति सकामम्—४, नै० ११।२६ 2. मन्त्रों का गुनगुनाना, मन ही मन प्रार्थना करना —मनु० ११।१९४, २५१, २५९, उप—, कान में कहना कानाफूसी करके अपने अनुकूल कर लेना, विद्रोह के लिए भड़काना या उकसाना—उपजप्यानुपजपेत्—मनु० ७।१९७।

जपः [जप्+अच्] 1. मन ही मन प्रार्थना करना, धीमे स्वर से किसी मन्त्र को बार २ दुहराना 2. वेदपाठ करना, देवताओं के नाम बार २ दुहराना—मनु० ३।७४, याज्ञ० १।२२ 3. मन्द स्वर से उच्चरित प्रार्थना। सम०—**परायणः** (वि०) प्रार्थना मन्त्रों को धीमे स्वर में उच्चारण करने में व्यस्त,—**माला** जप करने की माला।

जप्यः,—प्यम् [जप्+यत्] 1. मन्द स्वर से या मन ही मन में बोली जाने वाली प्रार्थना 2. जपने योग्य प्रार्थना 3. जपी हुई प्रार्थना।

जभ्, जम्भ् i (भ्वा० पर०—जभति, जम्भति) संभोग करना, तु० यभ् ii (भ्वा० आ०—जभते, जंभते) जम्हाई लेना, उबासी लेना।

जम् (भ्वा० पर० जमति) खाना।

जमदग्निः (पुं०) भृगुवंश में उत्पन्न एक ब्राह्मण, परशुराम का पिता, (जमदग्नि, सत्यवती और ऋचीक का पुत्र था, वह बड़ा ही पुण्यात्मा ऋषि था, कहते हैं कि उसने वेदों का पूर्ण स्वाध्याय किया था, उसकी पत्नी रेणुका थी जिससे पाँच पुत्र हुए। एक दिन रेणुका स्नान करने के लिए नदी पर गई तो वहाँ उसने किसी गंधर्व-दम्पती (कुछ के मतानुसार वह चित्ररथ और उसकी पत्नी थे) को जल में क्रीडा करते देखा। उस मनोहर दृश्य को देखकर उसके मन में ईर्ष्या जागी और वह उन दूषित विचारों से कलुषित हो गई, नदी में स्नान करने पर भी वह पवित्र न हो सकी जब वह वापिस घर आई तो क्रोध के अवतार जमदग्नि ने उसे सतीत्व की कान्ति से हीन देखकर बड़ा धमकाया और अपने पुत्रों को उसका सिर काट देने की आज्ञा दी। परन्तु पहले चारों पुत्रों ने ऐसा क्रूर दुष्कृत्य करने में आनाकानी की। परशुराम उनका सबसे छोटा पुत्र था। उसने तुरंत पिता की आज्ञा का पालन किया फलतः एक कुल्हाड़े से अपनी माता का सिर काट डाला। इससे जमदग्नि का क्रोध शांत हो गया और उसने परशुराम से वरदान मांगने के लिए कहा। दयालु परशुराम ने अपनी माता को पुनर्जीवित करने की प्रार्थना की जो तुरंत ही स्वीकार की गई)।

जमनम् जेमनम्।

जम्पती (पुं० द्वि० व०) [जाया च पतिश्च] पति और पत्नी—तु० दम्पती और जायापती।

जम्बालः [जम्भ्+घञ्, नि० भस्य बः=जम्ब+आ+ला+क] 1. गारा कीचड़ 2. काई, सेवार 3. केवड़े का पौधा।

जम्बालिनी [जम्बाल+इनि+ङीप्] एक नदी।

जम्बीरः [जम्भ्+ईरन्, ब आदेशः] चकोतरे का (नींबू की जाति का) पेड़,—**रम्** चकोतरा।

जम्बु,—बू (स्त्री०) [जम्+कु पृषो० बुकागमः, जम्बु+ऊङ्] जामुन का पेड़, जामुन (सम०—**खण्डः**,—**द्वीपः** मेरु पहाड़ के चारों ओर फैले हुए सात द्वीपों में से एक।

जम्बु (बू) कः (स्त्री०—**की**) [जम्बु (बू)+कै+क] 1. गीदड़ 2. नीच मनुष्य।

जम्बूलः [जम्बुं (बूं) तन्नाम फलं लाति ला+क] एक प्रकार का वृक्ष, केकड़ा,—**लम्** दूल्हे के मित्रों एवं दुल्हन की सखियों द्वारा किया गया परिहास या परिहासात्मक अभिनन्दन।

जम्भः [जम्भ्+घञ्] 1. जबाड़ा (प्रायः ब० व०) 2. दांत 3. खाना 4. कुतर-कुतर कर टुकड़े करना 5. खण्ड, अंश 6. तरकस 7. ठोडी 8. जम्हाई, उबासी 9. एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था 10. चकोतरे का पेड़। सम०—**अरातिः**,—**द्विष्**,—**भेदिन्**—**रिपुः** इन्द्र का विशेषण,—**अरिः** 1. आग 2. इन्द्र का वज्र 3. इन्द्र।

जम्भका, जम्भा, जम्भिका [जम्भ+कन्+टाप्, जम्भ्+णिच्+अ+टाप्, जम्भा+कन्+टाप्, इत्वम्] जमुहाई, उबासी।

जम्भ (भी) रः [जम्भं भक्षणरुचिं राति ददाति—जम्भ+रा+क, जम्भ्+ईरन्] नींबू या चकोतरे का पेड़।

जयः [जि+अच्] 1. जीत, विजयोत्सव, विजय, सफलता, जीतना (युद्ध में खेल में या मुकदमे में) 2. संयम दमन, जीतना—जैसा कि 'इन्द्रियजय' में 3. सूर्य का नाम 4. इन्द्र का पुत्र जयन्त 5. पाण्डव राजकुमार युधिष्ठिर 6. विष्णु का सेवक 7. अर्जुन का विशेषण,—**या** 1. दुर्गा 2. दुर्गा का सेवक 3. एक प्रकार का झण्डा। सम०—**आवह** (वि०) विजय दिलान वाला,—**उद्धुर** (वि०) विजयोल्लास मनाने वाला,—**कोलाहलः** 1. जयघोष 2. पासों से खेलना,—**घोषः**,—**घोषणम्**,—**णा** विजय का ढिंढोरा,—**ढक्का** जीत का डंका, एक प्रकार का ढोल जिसे विजय की सूचना देने के लिए बजाया जाता है,—**पत्रम्** विजय का अभिलेख,—**पालः** 1. राजा 2. ब्रह्मा का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण,—**पुत्रकः** एक प्रकार का पासा,—**मङ्गलः** 1. राजकीय हाथी 2. ज्वरनाशक उपचार,—**वाहिनी** शची (इन्द्राणी) का विशेषण,—**शब्दः** 1. जयध्वनि 2. चारणों द्वारा उच्चरित जयजयकार,—**स्तम्भः** विजय मनाने के लिए बनाया गया स्तम्भ, विजयसूचक स्तम्भ—निचखान जयस्तम्भान् गङ्गास्रोतोऽन्तरेषु सः—रघु० ४।३६, ६९,

जयद्रथः [जयत् रथो यस्य—ब० स०] सिन्धु प्रदेश का राजा, दुर्योधन का बहनोई, (क्योंकि धृतराष्ट्र की पुत्री दुश्शला जयद्रथ को ब्याही थी) [एक बार जयद्रथ शिकार के लिए गया—वहाँ जङ्गल में उसे द्रौपदी दिखाई दी। उसने द्रौपदी से अपने लिए और अपने

साथियों के लिए भोजन माँगा। अपनी जादू की थाली से द्रौपदी ने उनको पर्याप्त मात्रा में प्रातराश परोस दिया। उसके इस कार्य से तथा उसके सौन्दर्य से वह इतना अधिक मुग्ध हुआ कि उसने द्रौपदी को अपने साथ भाग चलने के लिए कहा। उसने क्रोध के साथ उसकी बात को अस्वीकार कर दिया परन्तु वह उसे बलपूर्वक उठा कर ले जाने में सफल हो गया —क्योंकि द्रौपदी के पति उस समय बाहर शिकार के लिए गये हुए थे। जब वह वापस आये तो उन्होंने उस अपहर्ता का पीछा किया, उसे पकड़ कर द्रौपदी को मुक्त कराया—तथा बहुत तिरस्कृत हो जाने पर उसे भी छोड़ दिया। उसने अभिमन्यु को मारने के उपाय ढूँढ़ने में बड़ा भाग लिया। अन्त में वह अर्जुन के द्वारा महाभारत की लड़ाई में मारा गया]।

जयनम् [जि+ल्युट्] 1. जीतना, दमन करना 2. हाथी और घोड़ों आदि का कवच। सम०—**युज्** (वि०) 1. जीनपोश से सुसज्जित 2. विजयी।

जयन्तः [जि+झच्, अन्तादेशः] 1. इन्द्र के पुत्र का नाम, --पौलोमीसम्भवेनैव जयन्तेन पुरन्दरः—विक्रम० ५।१४, श० ७।२, रघु० ३।२३ ६।७८ 2. शिव का नाम 3. चन्द्रमा,—**न्ती** 1. झण्डा या पताका 2. इन्द्र की पुत्री 3. दुर्गा। सम०—**पत्रम्** (विधि में) न्यायाधीश द्वारा दी गई लिखित व्यवस्था (दोनों दलों में से किसी एक के पक्ष में) 2. अश्वमेध यज्ञ के लिए छोड़े हुए घोड़े के मस्तक पर लगा नामपट्ट।

जयिन् (वि०) [जेतुं शीलमस्य—जि+इनि] 1. विजेता, पराजेता--विरूपाक्षस्य जयिनीस्ताः स्तुवे वामलोचनाः —विद्धशा० 2. सफल (मुकदमा) जीतने वाला —याज्ञ० २।७९ 3. मनोहर, आकर्षक हृदय को दमन करने वाला—जगति जयिनस्ते ते भावा नवेन्दुकलादयः —मा० १।३६, (पुं०) विजेता, जयशील—पौरस्त्या-नेवमाक्रामंस्तांस्ताञ्जनपदाञ्जयी—रघु० ४।३४।

जय्य (वि०) [जि+यत्] जीतने के योग्य, प्रहार्य, जो जीता जा सके (विप० जेय)।

जरठ (वि०) [जॄ+अठच्] 1. कठोर, ठोस 2. पुराना, अधिक आयु का—अयमतिजरठाः प्रकामगुर्वीः परिणत-दिक्करिकास्तटीर्बिर्भात—शि० ४।२९ (यहाँ 'जरठ' का अर्थ 'कठोर' भी है) 3. क्षीण, जीर्ण, निर्बल 4. पूर्णविकसित, पक्का, परिपक्व, जरठकमल—शि० ११।१४ 5. कठोर हृदय, क्रूर, --**ठः** पाण्डु, पाँचों पाण्डवों के पिता।

जरण (वि०) [जॄ+ल्युट्] बूढ़ा, क्षीण, निर्बल।

जरत् (वि०) [जॄ+शतृ] 1. बूढ़ा अधिक आयु का 2. निर्बल जीर्ण। सम०—**कारुः** एक ऋषि जिसने वासुकि सर्प की बहन से विवाह किया था [एक दिन वह अपना सिर अपनी पत्नी की गोद में रक्खे सो रहे थे, सूर्य डूबने को था। पत्नी ने यह देख कर कि संध्याकालीन प्रार्थना का समय बीता जा रहा है, आहिस्ता से जगा दिया। परन्तु नींद में बाधा पहुँचने के कारण जरत्कारु को क्रोध आ गया और वह अपनी पत्नी को छोड़ कर सदा के लिए वहाँ से चल दिया। जाते समय वह अपनी पत्नी को बता गया कि तुम गर्भवती हो और तुम्हारा पुत्र ही तुम्हें सम्भालने वाला होगा —साथ ही साथ वह सर्प वंश के क्षय को बचावेगा। यह पुत्र ही 'आस्तीक' था],—**गवः** बूढ़ा बैल—दारिद्रयस्य परा मूर्ति यंन्मानद्रविणाल्पता, जरद्गवधनः शर्वस्तथापि परमेश्वरः—पंच० २।१५९।

जरती [जॄ+शत्+ङीप्] एक बूढ़ी नारी।

जरन्तः [जॄ+झच्, अन्तादेशः] 1. बूढ़ा आदमी 2. भैंसा।

जरा [जॄ+अङ+टाप्]('जरा' शब्द के स्थान पर कर्म० द्वि० ब० के आगे अजादि विभक्ति परे होने पर विकल्प से 'जरस्' आदेश हो जाता है) 1. बुढ़ापा—कैकेयी-शङ्कयेवाह पलितच्छद्मना जरा—रघु० १२।२, तस्य धर्मरतेरासीद् वृद्धत्वं जरया (जरसा) विना—१।२३ 2. क्षीणता, निर्बलता, बुढ़ापे के कारण दुर्बलता 3. पाचनशक्ति 4. एक राक्षसी का नाम—दे० 'जरासंध' नी०। सम०—**अवस्था** क्षीणता,—**जीर्ण** (वि) वयोवृद्ध, निर्बलीकृत, दुर्बल—भर्तृ० ३।१७,—**सन्धः** एक प्रसिद्ध राजा और योद्धा, बृहद्रथ का पुत्र (एक पौराणिक कथा के अनुसार यह अलग-अलग दो टुकड़ों के रूप में पैदा हुआ, 'जरा' नामक राक्षसी ने इन दोनों टुकड़ों को जोड़ दिया—इसीलिए यह 'जरासन्ध' के नाम से प्रख्यात हुआ। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् यह मगध और चेदि देश का राजा बना। जब इसने सुना कि कृष्ण ने मेरे जामाता कंस को मार डाला तो इसने बड़ी भारी सेना लेकर १८ बार मथुरा को घेरा—परन्तु हर बार मुँहकी खानी पड़ी। जब युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया तो अर्जुन, कृष्ण और भीम ब्राह्मण का रूप धारण करके केवल अपने शत्रु को मार कर बन्दी राजाओं को कैद से छुड़ाने के लिए जरासन्ध की राजधानी में गये परन्तु जरासन्ध ने बन्दी राजाओं को छोड़ने से इंकार किया, तब भीम ने उसे द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारा। जरासन्ध बाहर निकल कर आया —दोनों में घोर युद्ध हुआ—पर अन्त में जरासन्ध भीम के हाथों मारा गया]।

जरायणिः [जराया अपत्यम्—फिञ्] जरासन्ध का नाम।

जरायु (नपुं०) [जरामेति—इ+ञुण्] 1. साँप की केंचुली 2. भ्रूण की ऊपरी झिल्ली 3. योनि, गर्भाशय।

समº—ज (विº) गर्भाशय से उत्पन्न, पिण्डज—मनुº १।४३, कुº ३।४२ पर मल्लिº ।

जरित (विº) [जरा+इतच्] 1. बूढ़ा, वयोवृद्ध 2. क्षीण, निर्बल ।

जरिन् (विº) (स्त्रीº—णी) [जरा+इनि] बूढ़ा, वयोवृद्ध ।

जरूथम् [जॄ+ऊथन्] मांस ।

जर्जर (विº) [जर्ज+अर] 1. बूढ़ा, निर्बल, क्षीण 2. जीर्ण, फटा पुराना, टूटा-फूटा, तोड़कर टुकड़े २ किया हुआ, खण्ड-खण्ड किया हुआ, छोटे २ टुकड़ों में विभक्त —जराजर्जरितविषाणकोटयो मृगाः—काº २१, गात्रं जराजर्जरितं विहाय—महावीº ७।१८, विसर्पन् धाराभिर्लुठति धरणीं जर्जरकणः—उत्तरº १।२९, शिº ४।२३ 3. घायल, क्षतविक्षत 4. झोझरा, खोखला (जैसे कि टूटे घड़े की आवाज),—रम् इन्द्र का झण्डा ।

जर्जरित (विº) [जर्जर+णिच्+क्त] 1. बूढ़ा, क्षीण, निर्बल 2. घिसा-पिसा, झीर-झीर, फटा-पुराना, चिथड़े चिथड़े हुआ 3. पूरी तरह पराभूत, अयोग्य—स्मरशरजर्जरितापि सा प्रभाते—गीतº ८ ।

जर्जरीक (विº) [जर्जर्+ईक निº साधुः] 1. बुढ़ा, क्षीण 2. जीर्ण-शीर्ण- छेदों से भरा हुआ, सछिद्र ।

जर्तुः [जन्+तु, र आदेशः] 1, योनि, 2. हाथी ।

जल (विº) [जल्+अक्] स्फूर्तिहीन, ठण्डा, शीतल, जड । —लम् पानी—तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति—पञ्चº १।३२२ 2. एक सुगन्धित औषधि का पौधा, खस 3. शीतलता 4. पूर्वाषाढ़ नक्षत्र । समº—**अञ्चलम्** 1. झरना 2. निर्झर 3. काई,—**अञ्जलिः** 1. चुल्लू भर पानी 2. मृतक के पितरों को जल तर्पण—कुपुत्रमासाद्य कुतो जलाञ्जलिः—चाणº ९५, मानस्यापि जलाञ्जलिः सरभसं लोके न दत्तो यथा—अमरु ९७ (यहाँ जलाञ्जलिं दा' का अर्थ है—छोड़ देना, त्यागना),—**अटनः** सारस,—**अटनी** जोक,—**अण्टकः** घड़ियाल, मगरमच्छ, **अत्ययः** शरद्, पतझड़,—**अधिदैवतः**—**तम्** वरुण का विशेषण, (**तम्**) पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र पुञ्ज,—**अधिप** वरुण का विशेषण,—**अम्बिका** कूआँ,—**अर्कः** जल में पड़ने वाला सूर्य का प्रतिबिम्ब,—**अर्णवः** 1. वर्षा ऋतु 2. मीठे पानी का समुद्र,—**अर्थिन्** (विº) प्यासा,—**अवतारः** नदी के किनारे नाव पर उतरने का घाट,—**अष्ठीला** बड़ा चौकोर तालाब,—**असुका** जोक,—**आकरः** झरना, फौवारा, कूआँ,—**आकाङ्क्षः**,—**काङ्क्षः**,—**काङ्क्षिन्** (पुंº) हाथी,—**आखुः** ऊदबिलाव,—**आत्मिका** जोक,—**आधारः** तालाब, झील या सरोवर, जलाशय,—**आयुका** जोक,—**आर्द्र** (विº) गीला (**र्द्रम्**) गीले कपड़े (**र्द्रा**) पानी से तर पङ्खा,—**आलोका** जोक,—**आवर्तः** भँवर, जलगुल्म,—**आशयः** 1. तालाब, सरोवर, जलाशय 2.मछली 3. समुद्र,—**आश्रयः** 1. तालाब, जलाशय,—**आह्वयम्** कमल,—**इन्द्रः** 1. वरुण का विशेषण 2. समुद्र,—**इन्धनः** वाडवाग्नि,—**इभः** जलहस्ती, -**ईशः**,—**ईश्वरः** 1. वरुण का विशेषण 2. समुद्र,—**उच्छ्वासः** नाली, परीवाह 2. छलक कर बहना,—**उदरम्** जलोदर नाम का रोग जिसमें पेट की त्वचा के नीचे पानी इकट्ठा हो जाता है,—**उद्भव** (विº) जलचर,—**उरगा**,—**ओकस्** (पुंº)—**ओकसः** जोक,—**कण्टकः** मगरमच्छ,—**कपिः** सूंस,—**कपोतः** जलकबूतर,—**करङ्कः** 1. एक खाल 2. नारियल 3. बादल 4. तरङ्ग, कमल,—**कल्कः** कीचड़,—**काकः** जलकौआ,—**कान्तः** हवा,—**कान्तारः** वरुण का विशेषण,—**किराटः** मगरमच्छ, घड़ियाल,—**कुक्कुटः** जलमुर्ग, मुर्गाबी,—**कुन्तलः**,—**कोशः** काई, सेवारज,—**कूपी** 1. झरना, कूआं 2. तालाब, 3. भंवर,—**कूर्मः** सूंस,—**केलिः** (पुंº)—**क्रीडा** (स्त्रीº) जल में विहार करना, एक दूसरे पर पानी उछालना,—**क्रिया** मृतकों का पितरों को जल-तर्पण देना,—**गुल्मः** 1. कछुवा 2. चौकोर तालाब 3. भंवर,—**चर** (विº) ('जलेचर' भी) जल में रहने वाले जीव-जन्तु °आजीवः °जीवः मछवा,—**चारिन्** 1. जलजन्तु 2. मछली,—**ज** विº जल में उत्पन्न या पैदा, (**जः**) 1. जलजन्तु 2. मछली 3. काई 4. चन्द्रमा (**जः**,—**जम्**) 1. खोल 2. शङ्ख —अधरोष्ठे निवेश्य दध्मौ जलजं कुमारः—रघुº ७।६३, ११।६०, (**जम्**) कमल, °आजीवः मछवा, °आसनः ब्रह्मा का विशेषण—वाचस्पतिरुवाचेदं प्राञ्जलिर्जलजासनम्—कुº २।३०,—**जन्तुः** 1. मछली 2. कोई जल का जन्तु,—**जन्तुका** जोक,**जन्मन्** कमल,—**जिह्वः** मगरमच्छ,—**जीविन्** (पुंº) मछवाहा ।—**तरङ्गः** 1. लहर 2. एक वाद्य विशेष—जिसमें जल से भरा हुआ कटोरा (छड़ी के आघात से) सम स्वर पैदा करता है ।—**ताडनम्** (शाº) पानी पीटना (आलंº) व्यर्थ काम,—**त्रा** छाता,—**त्रासः** जलातङ्क रोग, पागल कुत्ते के काटने से हड़कायापन,—**दः** 1. बादल—जायन्ते विरलालोके जलदा इव सज्जनाः—पञ्च १।२९ 2. कपूर, °अशनः साल का वृक्ष, °आगमः वर्षाऋतु, °कालः वर्षाऋतु, °क्षयः शरद्, पतझड़,—**दर्दुरः** एक प्रकार का वाद्य यन्त्र,—**देवता** जलदेवी, जलपरी,—**द्रोणी** डोलची,—**धरः** 1. बादल 2. समुद्र,—**धारा** पानी की धार,—**धिः** 1. समुद्र 2. दसनील 3. चार की संख्या, °गा नदी, °जः चाँद, °जा लक्ष्मी, धन की देवी °रशना पृथ्वी,—**नकुलः** ऊदबिलाव,—**नरः** जलपुरुष (इसके शरीर का निचला आधा भाग मछली के आकार का होता है),—**निधिः** 1. समुद्र 2. चार की संख्या,—**निर्गमः** 1. नाली, पानी का निकास 2. जलप्रपात, झरने के

पानी का नदी में गिरना,—**नीलिः** काई, सेवार,—**पटलम्** बादल,—**पतिः** 1. समुद्र 2. वरुण का विशेषण,—**पथः** जलयात्रा—रघु० १७।८१, -**पारावतः** जलकपोत,—**पित्तम्** आग,- **पुष्पम्** पानी में होने वाला फूल, कमल आदि,—**पूरः** 1. जल की बाढ़ 2. पानी की नदी,—**पृष्ठजा** काई, सेवार,—**प्रवानम्** मृतक पितरों को जल तर्पण,—**प्रलयः** जल के द्वारा विनाश,—**प्रान्तः** नदी का किनारा,—**प्रायम्** जलबहुलप्रदेश—जलप्रायमनूपं स्यात्—अमर०,—**प्रियः** 1. चातक पक्षी 2. मछली,—**प्लवः** ऊदविलाव,—**प्लावनम्** जलप्रलय, बाढ़,—**बषुः** मछली,—**बालकः**,—,**वालकः** बिंध्य पहाड़ - **बालिका** बिजली,—**बिडालः** ऊदविलाव,—**बिम्बः**,—**बिम्बम्** बुलबुला,—**बिल्वः** 1. एक (चौकोर) तालाब, सरोवर 2. कछुवा 3. केंकड़ी,—**भू** (वि०) जल में उत्पन्न,—**भूः** (पुं०) 1. बादल 2. पानी जमा करके रखने का स्थान 3. एक प्रकार का कपूर,—**मक्षिका** पानी में रहने वाला एक कीड़ा,—**मण्डूकम्**—एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, जल दर्दुर,—**मार्गः** नाली, जलप्रणाली,—**मुच्** (पुं०) बादल—मेघ० ६९ 2. एक प्रकार का कपूर,—**मूर्तिः** शिव का विशेषण,—**मूर्तिका** ओला,—**यन्त्रम्** 1. पानी निकालने का यन्त्र—रहट 2. फव्वारा °**गृहम्**, °**निकेतनम्**, °**मन्दिरम्** जल के मध्य बना भवन (ग्रीष्म भवन) या मकान जिसके आस पास फुहारे हों—क्वचिद्विचित्रं जलयन्त्रमन्दिरम्—ऋतु० १।२,—**यात्रा** जल मार्ग से नाव आदि के द्वारा यात्रा,—**यानम्** पानी की सवारी—जहाज,—**रङ्कुः** जलकुक्कुट,—**रण्डः**,—**रुण्डः** 1. भंवर 2. पानी की बूंद, बूंदाबांदी, जलकण 3. सांप,—**रसः** समुद्री या सांभर नमक,—**राशिः** समुद्र,—**रुहः**,—**हम्** कमल,—**रूपः** मगरमच्छ,—**लता** लहर, झाल —**वायसः** कौड़िल्ला पक्षी,—**वासः** जल में बसना,—**वाहः** बादल,—**वाहनी** पानी की मोरी,—**विषुवत्** शारदीय विषुवत् (२२ या २३ सितम्बर)—**वृश्चिकः** झींगा मछली,—**व्यालः** पनियल सांप,—**शयः**,—**शयनः**,—**शायिन्** (पुं०) विष्णु का विशेषण,—**शूकम्** काई, सेवार,—**शूकरः** मगरमच्छ,—**शोषः** सोखा, अनावृष्टि —**सर्पिणी** जोक,—**सूचिः** (स्त्री०) 1. गंगाई सूंस 2. एक प्रकार की मछली 3. कौवा 4. जोक,—**स्थानम्**,—**स्थायः** तालाब, सरोवर, जलाशय,—**हम्** छोटा जलमन्दिर (ग्रीष्म भवन) जो पानी के मध्य बना हो या जिसमें फौव्वारे लगे हों। —**हस्तिन्** (पुं०) जलहाथी,—**हारिणी** नाली,—**हासः** 1. झाग 2. समुद्रफेन (मसीक्षेपी नामक जलचर का भीतरी कवच)।

जलङ्गमः [जल+गम्+खच्, मुमागमः] चाण्डाल।

जलमसिः [जलेन मस्यति परिणमति—जल+मस्+इन्] 1. बादल 2. एक प्रकार का कपूर।

जलाका, जलालुका, जलिका, जलुका, जलूका [जले आकायति प्रकाशते—जल+आ+कै+क+टाप्, जले अलति गच्छति—जल+अल्+उक+टाप्, जल+ठन् टाप्, जलम् ओको यस्य पृषो०] जोंक।

जलेजम्, जलेजातम् [जले+जन्+ड, क्त वा सप्तम्या अलुक्] कमल।

जलेशयः [जले+शी+अच्, सप्तम्या अलुक्] 1. मछली 2. विष्णु का नाम।

जल्प् (भ्वा० पर० जल्पति, जल्पित) बोलना, बातें करना, संलाप करना—अविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण—उत्तर० १।२१, एकेन जल्पन्त्यनल्पाक्षरम्—पंच० १।११६, भर्तृ० १।८२ 2. गुनगुनाना, अस्पष्ट उच्चारण करना 3. प्रलाप करना, किच-किच करना, बालकलरव करना, कलकलध्वनि करना, **अभि**—, बोलना, बातें करना, **प्र**—, 1. बोलना, कहना, बातें करना—कु० १।४५, 2. पुकारना—**सम्**—, बोलना, संलाप करना।

जल्पः [जल्प्+घञ्] 1. वक्तृता, भाषण 2. प्रवचन, बातचीत 3. बालकलरव, प्रलाप, गप-शप 4. वादविवाद, वाग्युद्ध।

जल्प (पा) क (वि०) (स्त्री—**ल्पिका**) [जल्प्+ण्वुल्, षाकन् वा,] वातूनी, गप्पी।

जव (वि०) [जु+अप्] फुर्तीला, चुस्त,—**वः** (क) वेग, फुर्ती, तेजी, द्रुतता—जवो हि सप्तेः परमं विभूषणम् —भर्तृ० ३।१२१, श० १।८, (ख) त्वरा, क्षिप्रता —जवेन पीठादुदतिष्ठदच्युतः—शि० १।१२ 2. वेग। सम०—**अधिकः** वेगवान् घोड़ा, द्रुतगामी घोड़ा,—**अनिलः** तेज हवा, आंधी।

जवन (वि०) (स्त्री०—**नी**) [जु+ल्युट्] तेज, फुर्तीला, वेगवान् रघु० ९।५६,—**नः** द्रुतगामी घोड़ा, तेज घोड़ा,—**नम्** चाल, द्रुतगति, वेग।

जवनिका, जवनी [जूयते आच्छाद्यते अनया—जु+ल्युट् +ङीप्=जवनी+कन्+टाप्, ह्रस्वः=जवनिका] 1. कनात 2. चिक, पर्दा—नरः संसारान्ते विशति यमधानीजवनिकाम्—भर्तृ० ३।११२।

जवसः [जु+असच्] पशुओं के चरने योग्य घास।

जवा [जव+टाप्] अड़हुल, जपा।

जष् (भ्वा० उभ०—जषति—ते) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मारना।

जस् i (दिवा० पर०—जस्यति) स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, ii (भ्वा० चुरा० पर०—जसति, जासयति) 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुंचाना, प्रहार करना 2. अवज्ञा करना, अपमान करना, **उद्**—, मारना—निजौजसोज्जासयितुं जगद्द्रुहाम्—शि० १।३७, भट्टि० ८। १२०।

जहकः [हा+कन्, द्वित्वम्] 1. समय 2. बालक 3. सांप की केचुली।

जहत् (वि०) (स्त्री० —ती) [हा+शतृ] छोड़ने वाला, त्यागने वाला। सम०—लक्षणा,—स्वार्था लक्षणा का एक प्रकार (इसे 'लक्षणलक्षणा' भी कहते हैं) जिसमें शब्द अपने मुख्यार्थ को छोड़ देता है परन्तु एक ऐसे अर्थ में प्रयुक्त होता है जो किसी न किसी प्रकार उस मुख्यार्थ से सम्बद्ध है, उदा० 'गंगायां घोषः' (गंगा में घर) में 'गंगा' शब्द अपने मुख्यार्थ को छोड़ कर 'गंगातट' को प्रकट करता है—तु० 'अजहत्स्वार्था' की भी।

जहानकः [हा+शानच्+कन्] महाप्रलय।

जहुः [हा+उण्, द्वित्वम्] पशु का बच्चा।

जह्नुः [हा+नु, द्वित्वमाकारलोपश्च] सुहोत्र का पुत्र, एक प्राचीन राजा जिसने गंगा को अपनी पुत्री के रूप में गोद लिया था। (जब गंगानदी भगीरथ की तपस्या के द्वारा स्वर्ग से इस धरा पर लाई गई तो मैदान में आकर उसने राजा जह्नु की यज्ञभूमि को पानी में डुबो दिया। जह्नु ने क्रुद्ध हो कर गंगा को पी डाला। देवता, ऋषि और विशेष कर भगीरथ ने उनके क्रोध को शान्त किया। जह्नु ने प्रसन्न होकर गंगा को अपने कानों के द्वारा बाहर निकालने की स्वीकृति दी। इसलिए गंगा जह्नु की पुत्री समझी गई और उसे जाह्नवी, जह्नुकन्या, जह्नुतनया, जह्नुनन्दिनी या जह्नुसुता आदि नामों से पुकारा गया—तु० रघु० ६।८५, ८।९५)।

जागरः [जागृ+घञ्, गुण] जागरण, जागना, जागते रहना,—रात्रिजागरपरो दिवाशयः—रघु० ९।३४ 2. जाग्रत अवस्था की मनः सृष्टि 3. कवच, जिरह-बख्तर।

जागरणम् [जागृ+ल्युट्] 1. जागना, प्रबुद्ध रहना 2. खबरदारी, सतर्कता।

जागरा [जागृ+अ+टाप्] दे० जागरण।

जागरित (वि०) [जागृ+क्त] जागा हुआ,—तम् जागना।

जागरितृ (वि) (स्त्री०—त्री) **जागरूक** (वि०) [जागृ +तृच, स्त्रियां ङीप् च, जागृ+ऊक्] 1. जागरणशील, जागता हुआ, निद्राशून्य—स्वपतो जागरूकस्य याथार्थ्यं वेद कस्तव—रघु० १०।३४ 2. खबरदार, सतर्क—वर्णाश्रमाक्षणजागरूकः—रघु० १४।८५, शि० २०।३६।

जागर्तिः, जागर्या, जाग्रिया [जागृ+क्तिन्, जागृ+श+यक्+टाप्, गुण, जागृ+श्, रिङादेशः] जागरण, जागते रहना।

जागुडम् [जगुड+अण्] केसर, जाफ़रान।

जागृ (अदा० पर०—जागर्ति, जागरित) जागते रहना, खबरदार या सावधान रहना (आलं० भी)—सोऽपसर्पैर्जजागार यथाकालं स्वपन्नपि—रघु० १७।५१, गुरौ षाड्गुण्यचिन्तायामार्ये चार्ये च जाग्रति—मुद्रा० ७।१३, रात को बैठ रहना—या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी—भग० २।६९ 2. निद्रा से जगाया जाना, जागते रहना, आगे का देखना, दूरदर्शी होना।

जाघनी [जघन+अण्+ङीप्] 1. पूंछ 2. जंघा।

जाङ्गल (वि०) (स्त्री०—ली) [जङ्गल+अण्] 1. देहाती, चित्रोपम 2. जङ्गली 3. बर्बर, असभ्य 4. बंजर, ऊसर—लः चकोर, तीतर,—लम् 1. मांस 2. हरिण का मांस।

जाङ्गुलम् [जङ्गुल+अण्] ज़हर, विष।

जाङ्गुलिः, जाङ्गुलिकः [जङ्गुल+इञ्, ठक् वा] साँप के काटे का चिकित्सक, विषवैद्य।

जाङ्घिकः [जङ्घा+ठञ्] 1. हरकारा, दूत 2. ऊँट।

जाजिन् (पुं०) [जज्+णिनि] योद्धा, लड़ने वाला—जजौजोजाजिजिज्जाजी—शि० १९।३।

जाठर (वि०) (स्त्री०—री) [जठर+अण्] पेट से संबंध रखने वाला या पेट में होने वाला, उदरवर्ती, औदर,—रः पाचनशक्ति, जाठर रस।

जाड्यम् [जड+ष्यञ्] 1. ठंडक, शीतलता 2. अनासक्ति, आलस्य, निष्क्रियता 3. बुद्धि की मन्दता, बेवक़ूफ़ी, जडता—तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य—भर्तृ० २।१५, जाड्यं धियो हरति—२।२३, जाड्यं ह्रीमति गण्यते—५४ 4. जिह्वा की नीरसता।

जात (भू० क० कृ०) [जन्+क्त] 1. अस्तित्व में लाया गया, जन्म दिया गया, पैदा किया गया 2. उगा हुआ, निकला हुआ 3. उद्भूत, उत्पन्न 4. अनुभूत, ग्रस्त (प्रायः समास में) दे० 'जन्',—तः पुत्र, बेटा (नाटकों में प्रायः 'स्नेह या प्रेम द्योतक' के अर्थ में प्रयुक्त—अयि जात कथयितव्यं कथय—उत्तर० ४, 'प्यारे बच्चे' 'मेरे लाल, दुलारे'),—तम् 1. जन्तु, जीवधारी, प्राणी 2. उत्पादन, उद्गम 3. भेद, प्रकार, श्रेणी, जाति 4. श्रेणी बनाने वाली वस्तुओं का समूह—निःशेषविश्राणितकोशजातम्—रघु० ५।१, संपत्ति का समूह अर्थात् हर प्रकार की सम्पत्ति, इसी प्रकार कर्मजातम्—(सब कर्मों का समूह)—सुख° वह सब कुछ जो 'सुख में सम्मिलित है 5. बालक, बच्चा। सम०—अपत्या माता,—अमर्ष (वि०) नाराज़, क्रुद्ध,—अश्रु (वि०) आँसू बहाने वाला,—इष्टिः (स्त्री०) जातकर्मसंस्कार,—उक्षः थोड़ी आयु का बैल,—कर्मन् बच्चे के जन्मते ही अनुष्ठेय संस्कार—रघु० ३।१८।—कलाप (वि०) (मोर की भाँति) पूंछ वाला,—काम (वि०) आसक्त,—पक्ष (वि०) जिसके डैने या पंख निकल आये हों, अजातपक्ष, अनुदितपक्ष,—पाश (वि०)

बन्धन युक्त, बेड़ी पड़ा हुआ,– **प्रत्यय** (वि०) जिसके मन में विश्वास उत्पन्न हो गया हो,—**मन्मथ** (वि०) प्रेम में आसक्त,—**मात्र** (वि०) तुरंत का उत्पन्न, सद्योजात,—**रूप** (वि०) सुन्दर, उज्ज्वल, (पम्) सोना —अप्याकरसमुत्पन्ना मणिजातिरसंस्कृता, जातरूपेण कल्याणि न हि संयोगमर्हति—मालवि० ५।१८, नै० १।१२९,—**वेदः** (पुं०) अग्नि का विशेषण—कु० २।४६, शि० २।५१, रघु० १२।१०४, १५।७२।

जातक (वि०) [जात+कन्] जन्मा हुआ, उत्पन्न,—**कः** 1. नवजात शिशु 2. भिक्षु,—**कम्** 1. जातकर्म संस्कार 2. जन्म विषयक फलित ज्योतिष की गणना 3. एक जैसी वस्तुओं का संग्रह।

जातिः (स्त्री०) [जन्+क्तिन्] 1. जन्म, उत्पत्ति—मनु० २।१४८ 2. जन्म के अनुसार अस्तित्व का रूप 3. गोत्र, परिवार, वंश 4. जाति, कबीला या वर्ग (जनसमुदाय)—अरे मूढ जात्या चेदवध्योऽहम्, एषा सा जातिः परित्यक्ता—वेणी० ३, (हिन्दुओं की प्राथमिक जातियाँ केवल चार—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—हैं) 5. श्रेणी, वर्ग, प्रकार, नस्ल—पशुजाति, पुष्पजाति आदि 6. किसी एक वर्ग के विशेष गुण जो उसे और दूसरे वर्गों से पृथक् करें, किसी एक नस्ल के लक्षण जो मूल तत्त्वों को बतलाएँ जैसे कि गाय और घोड़ों का 'गोत्व' 'अश्वत्व'—दे० गुण क्रिया और द्रव्य—शि० २।४७, तु० काव्य २ 7. अंगीठी 8. जायफल 9. चमेली का फूल या पौधा—पुष्पाणां प्रकरः स्मितेन रचितो नो कुन्दजात्यादिभिः—अमरु १०, (इन दो अर्थों में 'जाती' ऐसा भी लिखा जाता है) 10. (न्या० में) व्यर्थ उत्तर 11. (संगीत में) भारतीय स्वरग्राम के सात स्वर 12. छन्दों की एक श्रेणी—दे० परिशिष्ट। सम०—**अन्ध** (वि०) जन्मान्ध —भर्तृ० १।९०,—**कोशः**,—**षः**,—**षम्**, जायफल,—**कोशी**,—**षी** जावित्री,—**धर्मः** 1. किसी जाति के कर्तव्य, आचार 2. किसी जाति की सामान्य सम्पत्ति,—**ध्वंसः** जाति या उसके विशेषाधिकारों की हानि,—**पत्री** जावित्री, जायफल का ऊपरी छिल्का,—**ब्राह्मणः** केवल जन्म से ब्राह्मण, गुण कर्म, तप और स्वाध्याय से हीन, अज्ञानी ब्राह्मण (तपः श्रुतं च योनिश्च त्रय ब्राह्मण्यकारणम्, तपःश्रुताभ्यां यो हीनो जातिब्राह्मण एव सः—शब्दार्थचिन्तामणि, —**भ्रंशः** जातिच्युति —मनु० ९।६७,—**भ्रष्ट** (वि०) जातिच्युत, जाति-बहिष्कृत,—**मात्रम्** 1. 'केवल जन्म' केवल जन्म के कारण जीवन में प्राप्त पद 2. केवल जाति (तत्सम्बन्धी कर्तव्यों के पालन का अभाव)—मनु० ८।२०, १२।११४,—**लक्षणम्** जातिसूचक भेद, जाति-सूचक विशेषताएँ,—**वाचक** (वि०) नस्ल को बतलाने वाला (शब्द)—गौरश्वः पुरुषो हस्ती,—**वैरम्** जातिगत द्वेष, स्वाभाविक शत्रुता,—**वैरिन्** (पुं०) स्वाभाविक शत्रु,—**शब्दः** नस्ल या जाति बतलाने वाला नाम, जातिबोधक शब्द, जातिवाचक संज्ञा—गौः, अश्वः, पुरुषः, हस्ती आदि,—**संकरः** दो जातियों का मिश्रण, दोगलापन,—**सम्पन्न** (वि०) अच्छे घराने का, कुलीन,—**सारम्** जायफल,—**स्मर** (वि०) जिसे अपने पूर्व जन्म का वृत्तान्त याद हो—जातिस्मरो मुनिरस्मि जात्या का० ३५५,—**स्वभावः** जातिगत स्वभाव या लक्षण, **हीन** (वि०) नीच जाति का, जाति-बहिष्कृत।

जातिमत् (वि०) [जाति+मतुप्] उत्तम कुल में उत्पन्न, ऊँचे घराने में जन्मा।

जातु (अव्य०) [जन्+क्तुन् पृषो० साधुः] निम्नांकित अर्थों को प्रकट करने वाला अव्यय—1. कभी, सर्वथा, किसी समय, संभवतः—किं तेन जातु जातेन मातुर्यौवनहारिणा पंच० १।२६, न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति—मनु० २।९४, कु० ५।५५ 2. कदाचित्, कभी—रघु० १९।७ 3. एकबार, एक समय, किसी, दिन 4. विधिलिङ् में प्रयुक्त होने पर इसका अर्थ हो जाता है "अनुमति न देना, सहन न कर सकना"—जातु तत्र भवान्वृषलं याजयेन्नावकल्पयामि (न मर्षयामि) सिद्धा० 5. लट् लकार में प्रयुक्त होकर यह 'निन्दा (गर्हा)' प्रकट करता है—जातु तत्र भवान् वृषलं याजयति—तदेव।

जातुधानः [जातु गर्हितं धानं सन्निधानं यस्य ब० स०] राक्षस, पिशाच।

जातुष (वि०) (स्त्री०—**षी**) [जतु+अण्, षुक्] 1. लाख से बना हुआ, या लाख से ढका हुआ 2. चिपचिपा, चिपकने वाला।

जात्य (वि०) [जाति+यत्] 1. एक ही परिवार का, सम्बन्धी 2. उत्तम, उत्तमकुलोद्भव, सत्कुलोत्पन्न, —जात्यस्तेनाभिजातेन शूरः शौर्यवता कुशः—रघु० १७।४ 3. मनोहर, सुन्दर, सुखद।

जानकी [जनक+अण्+ङीप्] जनक की पुत्री सीता, राम की भार्या।

जानपदः [जनपद+अण्] 1. देहाती, गंवार, ग्रामीण, किसान (विप० पौर) 2. देश 3. विषय,—**दा** सर्वप्रिय उक्ति।

जानि (बहुव्रीहि समास में 'जाया शब्द' के स्थान में आदेश)

जानु (नपुं०) [जन्+ञुण्] घुटना—जानुभ्यामवनिं गत्वा, पृथ्वीपर घुटनों के बल चल कर या घुटने टेक कर। सम०—**दघ्न** (वि०) घुटनों तक ऊँचा, घुटनों तक गहरा,—**फलकम्**,—**मण्डलम्** घुटने की पाली,—**सन्धिः** घुटने का जोड़।

जापः [जप्+घञ्] 1. प्रार्थना जपना, कान में कहना, गुनगुनाना 2. जप की हुई प्रार्थना या मन्त्र ।
जाबालः [जबाल+अण्] रेवड़, बकरों का समूह ।
जामदग्न्यः [जमदग्नि+यञ्] परशुराम, जमदग्नि का पुत्र ।
जामा [जम्+अण् वा० स्त्रीत्वम्] 1. पुत्री 2. स्नुषा, पुत्रवधू ।
जामातृ (पुं०) [जायां माति मिनोति मिमीते वा नि०] 1. दामाद–जामातृयज्ञेन वयं निरुद्धाः—उत्तर० १।११, जामाता दशमो ग्रहः -सुभा० 2. स्वामी, मालिक 3. सूरजमुखी फूल ।
जामिः (स्त्री०) [जम्+इन् नि० वृद्धिः] 1. बहन, पुत्री 3. पुत्रवधू 4. नजदीकी संबंधिनी (सन्निहित-सपिंड स्त्री—कुल्लूक) मनु० ३।५७, ५८ 5. गुणवती सती साध्वी स्त्री ।
जामित्रम् [=जायामित्रम्] जन्मकुंडली में लग्न से सातवां घर,—तिथौ च जामित्रगुणान्वितायाम्—कु० ७।१, (जामित्रं लग्नात्सप्तमं स्थानम्—मल्लि०) वि०—कुछ लोग इस शब्द को 'जाया' से व्युत्पन्न मानते हैं क्योंकि फलित ज्योतिष में 'जामित्र' का चिह्न पत्नी के भावी सौभाग्य का सूचक [जायामित्रम्] है परन्तु इस शब्द का स्पष्ट सम्बन्ध ग्रीक शब्द (Diametron) से है ।
जामेयः [जाम्या भगिन्या अपत्यम्—ढञ्] भानजा, बहन का पुत्र ।
जाम्बवम् [जम्ब्वाः फलम् अण् तस्य वा० न लुप्–तारा०] 1. सोना 2. जम्बुवृक्ष का फल, जामन ।
जाम्बवत् (पुं०) [जाम्ब+मतुप्] रीछों का राजा जिसने लंका पर आक्रमण के समय राम की सहायता की । यह अपनी चिकित्सासंबन्धी कुशलता के लिए भी प्रसिद्ध था (यह जांबवान् संभवतः कृष्ण के समय तक जीवित रहा, क्योंकि उस समय स्यमन्तक मणि के लिए कृष्ण और जाम्बवान् में युद्ध हुआ । इस स्यमन्तक मणि को जांबवान् ने सत्राजित् के भाई प्रसेन से प्राप्त किया था । युद्ध में कृष्ण ने जांबवान् को पछाड़ दिया । परास्त होकर जांबवान् ने स्यमन्तक मणि के साथ अपनी पुत्री जांबवती को भी कृष्ण के अर्पण कर दिया)
जाम्बीरम् (लम्) [जंबीर+अण्, पक्षे रलयोरभेदः] चकोतरा ।
जाम्बूनदम् [जम्बूनद+अण्] 1. सोना—रघु० १८।४४ 2. एक सोने का आभूषण—कृतरुचश्च जाम्बूनदैः—शि० ४।६६ 3. धतूरे का पौधा ।
जाया [जन्+यक्+टाप्, आत्व] पत्नी, (शब्द की व्युत्पत्ति मनु० ९।८ के अनुसार—पतिर्भार्यां संप्रविश्य गर्भो भूत्वेह जायते, जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः—दे० रघु० २।१ पर मल्लि०) बहुव्रीहि के उत्तर पद में 'जाया' का बदलकर 'जानि' हो जाता है यथा 'सीताजानिः' सीता जिसकी पत्नी है, इसी प्रकार युवजानिः, वामाधंजानिः । सम०—अनुजीविन् (पुं०)—आजीवः 1. अभिनेता, नट 2. वेश्या का पति 3. मोहताज, दरिद्र,—पती (द्वि० व०) पति और पत्नी (इसके दूसरे रूप हैं— दंपती, जंपती)
जायिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [जि+णिनि] जीतने वाला, दमन करने वाला (पुं०) (संगीत में) ध्रुपद जाति की एक ताल ।
जायुः [जि+उण्] 1. औषधि 2. वैद्य ।
जारः [जीर्यति अनेन स्त्रियाः सतीत्वम् जॄ+घञ्, जरयतीति जारः—निरु०] उपपति, प्रेमी, आशिक—रथकारः स्वकां भार्यां सजारां शिरसावहत्—पंच० ४।५४। सम०—जः,—जन्मन्,—जातः दोगला, हरामी,—भरा व्यभिचारिणी स्त्री ।
जारिणी [जार+इनि+ङीप्] व्यभिचारिणी स्त्री ।
जालम् [जल्+ण] 1. फंदा, पाश 2. जाला, मकड़ी का जाला 3. कवच, तार की जालियों का बना शिरस्त्राण 4. अक्षिकारंध्र, गवाक्ष, झिलमिली, खिड़की—जालान्तरप्रेषितदृष्टिरन्या—रघु० ७।९, धूपैर्जालविनिःसृतैर्वलभयः संदिग्धपारावताः—विक्रम० ३।२, कु० ७।६० 5. संग्रह, संघात, राशि, ढेर—चिंतासन्ततितन्तुजालनिबिडस्यूतेव—मा० ५।१०, कु० ७।८९, शि० ४।४६, अमरु ५८ 6. जादू 7. भ्रम, धोखा 8. अनखिला फूल । सम०—अक्षः झरोखा, खिड़की,—कर्मन् (नपुं०) मछली पकड़ने का धंधा, मछली पकड़ना,—कारकः 1. जाल निर्माता 2. मकड़ी,—गोणिका एक प्रकार की मंथानी,—पाद्—पादः कलहंस,—प्रायः कवच, जिरहबख्तर ।
जालकम् [जालमिव कायति+कै+क] 1. फन्दा 2. समुच्चय, संग्रह—बद्धं कर्णशिरीषरोधि वदने घर्माम्भसां जालकम्—श० १।३०, रघु० ९।६८. 3. गवाक्ष, खिड़की 4. कली, अनखिला फूल—अभिनवैर्जालकैर्मालतीनाम्—मेघ० ९८, इसी प्रकार—यूथिकाजालकानि—२६ 5. (बालों में पहना जाने वाला) एक प्रकार का आभूषण - तिलकजालकजालकमौक्तिकैः—रघु० ९।४४ (आभरणविशेषः) 6. घोंसला 7. भ्रम, धोखा । सम०—मालिन् (वि०) अवगुण्ठित ।
जालकिन् (पुं०) [जालक+इनि] बादल ।
जालकिनी [जालकिन्+ङीप्] भेड़ ।
जालिकः [जाल+ठन्] 1. मछवाहा 2. बहेलिया, चिड़ीमार 3. मकड़ी 4. प्रान्त का राज्यपाल या मुख्य-शासक 5. बदमाश, ठग,—का 1. जाली 2. जञ्जीरों का बना

कवच 3. मकड़ी 4. जोंक 5. विधवा 6. लोहा 7. घूंघट, मुख पर डालने का ऊनी कपड़ा।

जालिनी [जाल+इनि+ङीप्] चित्रों से सुभूषित कमरा।

जाल्म (वि०) (स्त्री०—ल्मी) [जल्+णिक् बा० म] 1. क्रूर, निष्ठुर, कठोर 2. उतावला, अविवेकी,—ल्मः (स्त्री—ल्मी) 1. बदमाश, शठ, लुच्चा, पाजी, कुकर्मी —अपि ज्ञायते कतमेन दिग्भागेन गतः स जाल्म इति —विक्रम० १ 2. निर्धन आदमी, नीच, अधम।

जाल्मक (वि०) (स्त्री०—ल्मिका) [जाल्म+कन्] घृणित, नीच, कमीना, तिरस्करणीय।

जावन्यम् [जवन+ष्यञ्] 1. चाल, तेजी 2. शीघ्रता, त्वरा।

जाहम् एक प्रत्यय जो शरीर के अङ्गों के अभिधायक संज्ञा शब्दों के अन्त में 'मूल' को प्रकट करने के लिए जोड़ा जाता है—कर्णजाहम्—कान की जड़, इसी प्रकार अक्षि° ओष्ठ° आदि।

जाह्नवी [जह्नु+अण्+ङीप्] गङ्गा नदी का विशेषण।

जि (भ्वा० पर० (परा और वि पूर्व आने पर—आ०) जयति, जित) 1. जीतना, हराना, विजय प्राप्त करना, दमन करना—जयति तुलामधिरूढो भास्वानपि जलदपटलानि—पञ्च० १।३३०, भट्टि० १५।७६, १६।२ 2. मात कर देना, आगे बढ़ जाना—गर्जितानन्तरां वृष्टि सौभाग्येन जिगाय सा—कु० २।५३, रघु० ३।३४ घट० २२, शि० १।१९ 3. जीतना (दिग्विजय करना या जूए में जीतना), दिग्विजय करके हस्तगत करना —प्रागजीयत घृणा ततो मही—रघु० ११।६५, (यहाँ 'जि' का अर्थ विजय प्राप्त करना भी है)—मनु० ७।९६ 4. दमन करना, दबाना, नियन्त्रण रखना (कामावेग आदि पर) विजय प्राप्त करना 5. विजयी होना, प्रमुख या सर्वोत्तम बनना (प्रायः नान्दी श्लोकों या अभिवादन आदि में प्रयुक्त)—जयतु जयतु महाराजः (नाटकों में), स जयति परिणद्धः शक्तिभिः शक्तिनाथः —मा० ५।१, जितमुडुपतिना नमः सुरेभ्यः—रत्न० १।४, भर्तृ० २।२ गीत० १।१, प्रेर० जापयति, जितवाना, विजय दिलाना, सन्नन्त—जिगीषति जीतने की, हस्तगत करने की, आगे बढ़ जाने की, रीस करने की, होड़ लगाने की इच्छा करना; अधि—,जीतना, हराना, पछाड़ना—भर्तृ० १९।२, निस्—1. जीतना, हराना —रघु० ३।५१, भट्टि० २।५२, ७।९४ याज्ञ० ३।२९२ 2. जीत लेना, दिग्विजय द्वारा हस्तगत करना—मनु० ८।१५४, परा—(आ०) 1. हराना, जीतना, विजय प्राप्त करना, दमन करना—यं पराजयसे मृधा—याज्ञ० २।७५, भट्टि० ८।९ 2. खोना, वञ्चित होना 3. जीत लिया जाना या वशीभूत किया जाना, (कुछ) असह्य लगना—अध्ययनात्पराजयते—सिद्धा०, अध्ययन करना कठिन या असह्य लगता है—भट्टि० ८।७१, वि—(आ०) 1. जीतना 2. हराना, वशीभूत करना, दमन करना —व्यजेष्ट षड्वर्गम्—भट्टि० १।२, प्रायस्त्वन्मुखसेवया विजयते विश्वं स पुष्पायुधः—गीत० १०, भट्टि० २।३९ १५।३९ 3. मात कर देना, आगे बढ़ जाना—चक्षुर्भेचकमम्बुजं विजयते—विद्धशा० १।३३ 4. जीत लेना, दिग्विजय करके हस्तगत करना—भुजविजितविमान—रघु० १२।१०४, १।५९, शा० २।१३ 5. विजयी होना, श्रेष्ठ या सर्वोत्तम होना—विजयतां देवः—श० ५,

जिः [जि+डि] पिशाच।

जिगत्नुः [गम्+त्नु, सन्वद्भावत्वात् द्वित्वम्] प्राण, जीवन।

जिगीषा [जि+सन्+अ+टाप्] 1. जीतने की, दमन करने की, या वशीभूत करने की इच्छा—यानं सस्मार कौबेरं वैवस्वतजिगीषया—रघु० १५।४५ 2. स्पर्धा प्रतिद्वंद्विता 3. प्रमुखता 4. चेष्टा, व्यवसाय, जीवनचर्या।

जिगीषु (वि०) [जि+सन्+उ] जीतने का इच्छुक।

जिघत्सा [अद्+सन्+अ, घसादेशः 1. खाने की इच्छा, बुभुक्षा 2. हाथपाँव मारना 3. प्रबल उद्योग करना।

जिघत्सु (वि०) [अद्+सन्+उ घसादेशः [बुभुक्षु, भूखा।

जिघांसा [हन्+सन्+अ+टाप्] मार डालने की इच्छा —रघु० १५।१९।

जिघांसु [हन्+सन्+उ] मार डालने का इच्छुक, घातक, —सुः शत्रु, वैरी।

जिघृक्षा [ग्रह्+सन्+अ+टाप्] ग्रहण करने की या लेने की इच्छा।

जिघ्र (वि०) [घ्रा+श जिघ्रादेशः] 1. सूंघने वाला 2. अटकलबाज, अनुमान लगाने वाला, निरीक्षण करने वाला—उदा० मनोजिघ्रः सपत्नीजनः—सा० द०।

जिज्ञासा [ज्ञा+सन्+अ+टाप्] जानने की इच्छा, कुतूहल, कौतुक या ज्ञानेप्सा।

जिज्ञासु (वि०) [ज्ञा+सन्+उ] 1. जानने का इच्छुक, ज्ञानेप्सु, प्रश्नशील—भग० ६।४४ 2. मुमुक्षु।

जित् (वि०) [जि+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) जीतने वाला, परास्त करने वाला, विजय प्राप्त करने वाला—तारकजित्, कंसजित्, सहस्रजित् आदि।

जित (भू० क० कृ०) [जि+क्त] जीता हुआ, अभिभूत, दमन किया हुआ, (शत्रु या आवेग आदि) संयत, 2. हस्तगत, हासिल, (दिग्विजय द्वारा) प्राप्त 3. मात दिया हुआ, आगे बढ़ा हुआ 4. वशीभूत, दासीकृत या प्रभावित—कामजित श्रीजित आदि। सम—अक्षर (वि०) भलीभांति या तुरन्त पढ़ने वाला,—अमित्र (वि०) जिसने अपने शत्रुओं को जीत लिया है, जेता विजयी,—अरि (वि०) जिसने अपने शत्रुओं पर विजय

प्राप्त कर ली है (रि:) बुद्ध का विशेषण,—आत्मन् (वि०) जितेन्द्रिय, आवेशशून्य,—आहव (वि०) विजयी,—इन्द्रिय (वि०) जिसने अपनी वासना पर विजय प्राप्त कर ली है या जिसने अपनी ज्ञानेन्द्रियों—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द—को वश में कर लिया है—श्रुत्वा स्पृष्ट्वाऽथ दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः, न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः —मनु० २।९८,—काशिन् (वि०) विजयी दिखाई देने वाला, विजय का अहंकार करने वाला, अपनी विजय की शान दिखाने वाला—चाणक्योऽपि जितकाशितया—मुद्रा० २, जितकाशी राजसेवकः—तदेव —कोप,—क्रोध (वि०) स्थिरता, शान्तचित्तता, अनुत्तेजनीयता,—नेमिः पीपल के वृक्ष की लाठी,—श्रमः —परिश्रम करने का अभ्यस्त, कठोर,—स्वर्गः जिसने स्वर्ग प्राप्त कर लिया है।

जितिः (स्त्री०) [जि+क्तिन्] विजय, दिग्विजय।

जितुमः, जित्तमः [जित्+तमप्, जित्तम=जितुम पृषो० साधुः] मिथुन राशि, राशिचक्र में तीसरी राशि ('ग्रीक' शब्द)।

जित्वर (वि०) (स्त्री०—री) [जि+क्वरप्] विजयी, जीतने वाला, विजेता—शास्त्राण्युपायंसत जित्वराणि —भट्टि० १।१६, कदलीकृतभूपालो भ्रातृभिर्जित्वरैर्दिशाम्—शि० २।९।

जिन (वि०) [जि+नक्] 1. विजयी, विजेता 2. अतिवृद्ध, —नः 1. किसी वर्ग का प्रमुख, बौद्ध या जैनसाधु, जैनी अर्हत् या तीर्थंकर 3. विष्णु का विशेषण। सम० —इन्द्रः,—ईश्वरः 1. प्रमुख बौद्ध सन्त 2. जैन तीर्थंकर, —सद्मन् (नपुं०) जैनमन्दिर या विहार।

जिवाजिवः [=जीवञ्जीव, पृषो० साधुः] चकोर पक्षी।

जिष्णु (वि०) [जि+गुस्नु] 1. विजयी, विजेता,—रघु० ४।८५, १०।१८ 2. विजय लाभ करने वाला, लाभ उठाने वाला 3. (समास के अन्त में) जीतने वाला, आगे बढ़ जाने वाला—अलिनीजिष्णुः कचानां चयः —भट्टि० १।६, शि० १३।२१,—ष्णुः 1. सूर्य 2. इन्द्र 3. विष्णु 4. अर्जुन।

जिह्म (वि०) [जहाति सरलमार्गं, हा+मन् सन्वत् आलोपश्च] 1. ढलवां, कुटिल, तिरछा 2. टेढ़ा, बांका, वक्रदृष्टि—ऋतु० १।१२ 3. घुमावदार, वक्र, टेढ़ा-मेढ़ा 4. नैतिकता की दृष्टि से कुटिल, धोखेबाज, बेईमान, दुष्ट, अनीतिपूर्ण—धृतहेतिरप्यधृतजिह्ममतिः—कि० ६।२४ सुहृदर्थमीहितमजिह्मधियाम्—शि० ९।६२ 5. धुंधला, निष्प्रभ, फीका—विविसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मम्—कि० १।४६ 6. मन्थर, आलसी —ह्मम्—बेईमानी, झूठा व्यवहार। सम०—अक्ष (वि०) भैंगा, ऐंचाताना,—गः सांप,—गति (वि०) टेढ़ामेढ़ा चलने वाला, तिर्यग्गति से चलने वाला ऋतु० १।१३,—मेहनः मेंढक,—योधिन् (वि०) अधर्मी योद्धा,—शल्यः खैर का वृक्ष।

जिह्वः [ह्वे+ड द्वित्वादि] जीभ।

जिह्वल (वि०) [जिह्व+ला+क] जिभला, चटोरा।

जिह्वा [लिहन्ति अनया—लिह्+वन् नि०] 1. जीभ 2. आग की जीभ अर्थात् लौ। सम०—आस्वादः चाटना, लपलपाना,—उल्लेखनी,—उल्लेखनिका, —निर्लेखनम् जीभ खुरचने वाला,—पः 1. कुत्ता 2. बिल्ली 3 व्याघ्र 4. चीता 5. रीछ,—मूलम् जिह्वा की जड़,—मूलीय (वि०) क् और ख् से पूर्व विसर्ग की ध्वनि, तथा कण्ठ्य व्यञ्जनों की ध्वनि का द्योतक शब्द (व्या० में),—रदः पक्षी,—लिह् (पुं०) कुत्ता, —लौल्यम् लालच,—शल्यः खैर का पेड़।

जीन (वि०) [ज्या+क्त] बूढ़ा, वयोवृद्ध, क्षीण,—नः चमड़े का थैला—जीनकार्मुकबस्ताबीन् पृथगदद्याद्विशुद्धये —मनु० ११।१३९।

जीमूतः [जयति नभः, जीयते अनिलेन जीवनस्योदकस्य मूतं बन्धो यत्र, जीवनं जलं मूतं बद्धम् अनेन, जीवनं मुञ्चतीति वा पृषो० तारा०] 1. बादल—जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिं—मेघ० ४ 2. इन्द्र का विशेषण। सम०—कूटः एक पहाड़,—वाहनः 1. इन्द्र 2. नागानन्द नाटक में नायक, विद्याधरों का राजा (कथा सरित्सागर में भी उल्लेख [जीमूतवाहन, जीमूतकेतु का पुत्र था, अपनी दानशीलता तथा धर्मार्थवृत्ति के कारण प्रख्यात था। जब उसके बन्धुबान्धवों ने ही उसके पिता की राजधानी पर आक्रमण किया तो उसने अपने पिता जी को कहा कि इस राज्य को अपने आक्रमणकारी बन्धुबान्धवों के लिए छोड़ दो तथा स्वयं मलयपर्वत पर रह कर अपना पवित्र जीवन बिताओ। एक दिन कहा जाता है कि जीमूतवाहन ने उस सांप का स्थान ग्रहण किया जो कि अपने समझौते के अनुसार गरुड़ को उसके दैनिक भोजन के रूप में प्रस्तुत किया जाना था। अन्त में अपने उदार तथा हृदयस्पर्शी व्यवहार के द्वारा जीमूत वाहन ने गरुड़ को इस बात के लिए अभिप्रेरित किया कि वह सांपों को खाने की आदत छोड़ दे। नाटक में इस कहानी को बड़े ही कारुण्यपूर्ण ढंग से कहा गया है],—वाहिन् (पुं०) धूआं।

जीरः [ज्या+रक्, सम्प्रसारणं दीर्घश्च] 1. तलवार 2. जीरा।

जीरकः, जीरणः [जीर+कन्, पृषो० कस्य णः] जीरा।

जीर्ण (वि०) [जॄ+क्त] 1. पुराना, प्राचीन 2. घिसा-पिसा, शीर्ण, बरबाद, ध्वस्त, फटा-पुराना (वस्त्रादिक) —वासांसि जीर्णानि यथा विहाय—भग० २।२२,

3. पचा हुआ,—सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः—हि० १।२२,—र्णः 1. बूढ़ा आदमी 2. वृक्ष,—र्णम् 1. गुग्गुल 2. बुढ़ापा, क्षीणता। सम०—उद्धारः पुराने को नया बनाना, मरम्मत, विशेषकर किसी मन्दिर धर्मार्थ संस्था या धार्मिक, स्थान की,—उद्यानम् उजड़ा हुआ तथा उपेक्षित बाग़,—ज्वरः पुराना बुखार, अधिक दिनों से रहने वाला मन्द ज्वर,—पर्णः कदम्ब वृक्ष,—वाटिका उजड़ी हुई बग़ीची,—वज्रम् वैक्रान्तमणि।

जीर्णकः (वि०) [जीर्ण+कन्] करीब-करीब सूखा या मुरझाया हुआ।

जीर्णिः (स्त्री०) [जॄ+क्तिन्] 1. बुढ़ापा, क्षीणता, कृशता, दुर्बलता 2. पाचन-शक्ति।

जीव् (भ्वा० पर०—जीवति, जीवित) 1. जीना, जीवित रहना —यस्मिञ्जीवन्ति जीवंति बहवः सोऽत्र जीवति—पंच० १।२३, स जीवन् यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति —शि० २।४५, मनु० २।२३५ 2. पुनर्जीवित करना, जीवित होना 3. (किसी वृत्ति के सहारे) रहना, निर्वाह करना, आजीविका करना (करण० के साथ)—सत्यानृतं तु वाणिज्यं तेन चैवापि जीव्यते—मनु० ४।६, विपणेन च जीवन्तः ३।१५२, १६२, ११।२६, कभी कभी सजातीय कर्म के साथ इसी अर्थ में प्रयुक्त—अजिह्मामशठां शुद्धां जीवेद् ब्राह्मणजीविकाम्—मनु० ४।११ 4. (आलं०) आश्रित रहना, जीवित रहने के लिए किसी पर निर्भर करना (अधि० के साथ)—चौराः प्रमत्ते जीवन्ति व्याधितेषु चिकित्सकाः, प्रमदाः कामयानेषु यजमानेषु याचकाः, राजा विवदमानेषु नित्यं मूर्खेषु पण्डिताः महा०, प्रेर०—1. फिर जान डालना, 2. पालन पोषण करना, (भोजन द्वारा) पालना, शिक्षित करना, सिखाना पढ़ाना, अति—, 1. जीवित रह जाना 2. जीवन प्रणाली में दूसरों से आगे बढ़ जाना (अधिक शान से रहना)—अत्यजीवदमरालकेश्वरी—रघु० १९।१५, अनु—1. लटकना, सहारे निर्भर रहना, जीवित रहना, सेवा करना,—स तु तस्याः पाणिग्राहकमनुजीविष्यति—दश० १२२ 2. बिना ईर्ष्या के देखना—यां तां श्रियमसूयामः पुरा दृष्ट्वा युधिष्ठिरे, अद्य तामनुजीवामः महा० 3. किसी के लिए जीवित रहना 4. जीवनचर्या में दूसरों के पीछे चलना —रघु० १९।१५, अने० पा० (अन्वजीवत् या अत्यजीवत्) 5. जीवित रहना, बचा रहना, उद्,—पुनर्जीवित करना, फिर जीवित होना—उदजीवत् सुमित्राभूः —भट्टि० १७।९५, उप—, 1. किसी आधार पर जीवित रहना, निर्वाह करना, आजीविका करना—कां वृत्तिमुपजीवत्यार्यः, संवाहकवृत्तिमुपजीवामि—मृच्छ० २, यथास्तमुपजीवेयुर्यथैव पितरं तथा—मनु० ९।१०५, याज्ञ० २।३०१ 2. सेवा करना, आश्रित रहना—शि० ९।३२।

जीव (वि०) [जीव्+क] जीवित, विद्यमान,—वः 1. जीवन का सिद्धांत, श्वास, प्राण, आत्मा—गतजीव, जीवत्याग, जीवाशा आदि 2. वैयक्तिक या व्यक्तिगत रूप से मानव शरीर में रहने वाला आत्मा जो कि इस शरीर को जीवन, गति तथा संवेदना देता है ('जीवात्मन्' कहलाता है, विप० 'परमात्मन्' शब्द है) याज्ञ० ३।१३१, मनु० १२।२२, २३ 3. जीवन, अस्तित्व 4. जानवर, जीवधारी प्राणी 5. आजीविका, व्यवसाय 6. कर्ण का नाम, 7. एक मरुत् का नाम 8. 'पुष्य' नक्षत्रपुंज। सम०—अन्तकः 1. चिड़ीमार, बहेलिया 2. कातिल, हत्यारा,—आदानम् (पुं०) मानव शरीर में रहने वाला आत्मा (विप० परमात्मन्)—आदानम् स्वस्थ रुधिर निकालना, (आयु० में) रुधिर निकलना, —आधानम् जीवन का प्ररक्षण—आधारः हृदय—इंधनम् दहकती हुई लकड़ी, जलता हुआ काठ,—उत्सर्गः प्राणोत्सर्ग करना, ऐच्छिक मृत्यु, आत्महत्या,—ऊर्णा जीवित पशु की ऊन—गृहम्, —मन्दिरम् आत्मा का वासगृह, शरीर,—ग्राहः जीवित पकड़ा हुआ कैदी,—जीवः (जीवञ्जीवः भी) चकोर पक्षी,—दः 1. वैद्य 2. शत्रु, —दशा नश्वर अस्तित्व,—धनम् 'जीवित दौलत' जीवधारी प्राणियों के रूप में संपत्ति, पशुधन,—धानी पृथ्वी, —पतिः (स्त्री०)—पत्नी वह स्त्री जिसका पति जीवित हैं,—पुत्रा,—वत्सा वह स्त्री जिसका पुत्र जीवित हैं,—मातृका सात माताएं या देवियाँ जो प्राणियों का पालन पोषण करने वाली मानी जाती हैं (कुमारी धन दानन्दा विमला मंगला बला पद्मा चेति च विख्याताः सप्तैता जीवमातृकाः)—रक्तम् स्त्री का रज, आर्तव, —लोकः जीवधारी प्राणियों का संसार, मर्त्यलोक, प्राणिजगत्—त्वत्प्रयाण शान्तालोकः सर्वतो जीवलोकः—मा० ९।३७, जीवलोकतिलकः प्रलीयते—२१, इसी प्रकार—स्वप्नेन्द्रजालसदृशः खलु जीवलोकः—शा० २।२, भग० ११।७ उत्तर० ४।१७, 2. जीवधारी प्राणी, मनुष्य—दिवस इवाभ्रश्यामस्तपात्यये जीवलोकस्य—श० ३।१२, आलोकमर्कादिव जीवलोकः—रघु० ५।५५, —वृत्तिः (स्त्री०) पशुपालन, गायभैंस आदि पालन का रोजगार,—शेष (वि०) जिसकी केवल जान बची हो, जो सब कुछ छोड़ कर केवल जान लेकर भाग आया हो,—संक्रमणम् जीव का एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में जाना,—साधनम् धान्य, अनाज,—साफल्यम् जीवनधारण करने के मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति,—सूः जीवधारी प्राणियों की माता, वह स्त्री जिसके बच्चे जीवित हों,—स्थानम् 1. जोड़, अस्थिसंधि 2. मर्म, हृदय।

जीवकः [जीव्+णिच्+ण्वुल्] 1. जीवधारी प्राणी

2. सेवक 3. बौद्धभिक्षु, भिक्षा के सहारे ही जीवित रहने वाला भिखारी 4. सूदखोर 5. सपेरा 6. वृक्ष ।

जीवत् (वि०) (स्त्री०—न्ती) [जीव्+शतृ] जीवित, सजीव । सम०—तोका वह स्त्री जिसके बच्चे जिन्दा हो,—पतिः (स्त्री०)—पत्नी (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित है,—मुक्त (वि०) जीवन्मुक्त, जिसने परमात्मा के सत्यज्ञान से पवित्र होकर भावी जीवन से मुक्ति पा ली है, सांसारिक बंधनों से मुक्त,—मुक्तिः (स्त्री०) इसी जीवन में परममोक्ष की प्राप्ति,—मृत (वि०) जीता हुआ ही मृतक, जो जीता हुआ ही मुर्दे के समान बेकार है, (पागल आदमी या भ्रष्टचरित्र व्यक्ति) ।

जीवथः [जीव्+अथ] 1. जीवन, अस्तित्व 2. कछुवा 3. मोर 4. बादल ।

जीवन (वि०) (स्त्री०—नी) [जीव्+ल्युट्] जीवनप्रद, जीवनदाता, प्राणप्रद,—नः 1. जीवित आधारी 2. वायु 3. पुत्र,—नम् जिन्दा रहना, अस्तित्व (आलं०) त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनम्—गीत० १० 2. जीवन का सिद्धांत, संजीवनीशक्ति—भग० ७।९ 3. जल - बीजानां प्रभव नमोऽस्तु जीवनाय—कि० १८।३९, या जीवनं-जीवनं हन्ति प्राणान् हन्ति समीरणः—उद्भट 4. आजीविका, वृत्ति, अस्तित्व के साधन (आलं० से भी) मनु० ११।७६, हि० ३।३३ 5. पिछले दिन के रक्खे दूध से बनाया गया मक्खन 6. मज्जा । सम०—अन्तः मृत्यु,—आघातम् विष,—आवासः 1. जल में रहना, वरुण का विशेषण, जल की अधिष्ठात्री देवता 2. शरीर,—उपायः आजीविका,—औषधम् 1. अमृत 2. संजीवनी औषध ।

जीवनकम् [जीवन+कन्] आहार, भोजन ।

जीवनीयम् [जीव्+अनीयर्] 1. जल, 2. ताजा दूध ।

जीवन्तः [जीव्+झच्] 1. जीवन, अस्तित्व 2. दवाई, औषधि ।

जीवन्तिकः [=जीवान्तकः, पृषो०] बहेलिया, चिड़ीमार ।

जीवा [जीव्+अच्+टाप्] 1. जल 2. पृथ्वी 3. धनुष की डोरी—मुहुर्जीवाघोषैर्बधिरयति—महावी० ६।३० 4. चाप के दो सिरों को मिलाने वाली रेखा 5. जीवन के साधन 6. धातु से बने आभूषणों की झंकार 7. एक पौधा, वच ।

जीवातु (पुं०, नपुं) [जीवत्यनेन—जीव्+आतु] 1. भोजन, आहार 2. प्राण, अस्तित्व 3. पुनर्जीवन, फिर जीवित करना—रे हस्त दक्षिण मृतस्य शिशोर्द्विजस्य जीवातवे विसृज शूद्रमुनौ कृपाणम्—उत्तर० २।१०, पुनर्जीवन दाता औषधि ।

जीविका [जीव्+अकन्, अत इत्वम्] जीने का साधन, रोजगार ।

जीवित (वि०) [जीव्+क्त] 1. जीता हुआ, विद्यमान, सजीव—रघु० १२।७५ 2. पुनः जीवनप्राप्त 3. जीवन युक्त, अनुप्राणित 4. (काल) जिसमें रहा जा चुका है,—तम् 1. जीवन, अस्तित्व—त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्—उत्तर० ३।२६, कन्येयं कुलजीवितम् कु० ६।६३, मेघ० ८३, नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत जीवितम्—मनु० ६।४५, ७।१११ 2. जीवन की अवधि 3. आजीविका 4. जीवधारी प्राणी । सम०—अन्तकः शिव का विशेषण,—आशा जीने की उम्मीद, जीवन से प्रेम,—ईशः 1 प्रेमी, पति 2 यम का विशेषण—जीवितेशवसतिं जगाम सा—रघु० ११।२०. (यहाँ शब्द प्रथम अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है) 3. सूर्य 4. चन्द्रमा,—कालः जीवन की अवधि,—ज्ञा धमनी,—व्ययः प्राणों का त्याग,—संशयः जीवन की जोखिम, प्राणसंकट, जीवन को खतरा—स आतुरो जीवितसंशये वर्तते—वह बुरी तरह से रुग्ण है, उसके प्राण संकट में हैं—भामि० २।२० ।

जीविन् (वि०) (स्त्री०—नी) [जीव+इनि] (सामान्यतः समास के अन्त में) 1. जिन्दा, सजीव, विद्यमान—रघु० १।६३ 2. किसी के सहारे जिन्दा रहने वाला—शस्त्रजीविन्, आयुधजीविन्—(पुं०) जीवधारी प्राणी ।

जीव्या [जीव्+यत्+टाप्] आजीविका के साधन ।

जुगुप्सनम्, जुगुप्सा [गुप्+सन्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1. निन्दा, झिड़की 2. नापसन्दगी, अभिरुचि, घृणा, बीभत्सा 3. (अलं० शा०) बीभत्स रस का स्थायीभाव परिभाषा इस प्रकार है :—दोषेक्षणादिभिर्गर्हा जुगुप्सा विषयोद्भवा—सा० द० २०७ ।

जुष् i (तुदा० आ०—जुषते, जुष्ट) 1. प्रसन्न होना, संतुष्ट होना 2. अनुकूल होना, मङ्गलप्रद होना 3. पसन्द करना, अत्यन्त चाहना, प्रसन्नता या खुशी मनाना, सुखोपभोग करना—सत्त्वं जुषाणस्य भवाय देहिनाम्—भाग० 4. भक्त होना, अनुरक्त होना, अभ्यास करना, भुगतना, भोगना—पौलस्त्योऽजुषत शुचं विपन्नबन्धुः—भट्टि० १७।११२ 5. प्रायः जाना, दर्शन करना, बसना—जुषन्ते पर्वतश्रेष्ठमृषयः पर्वसन्धिषु महा० 6. प्रविष्ट होना, बिठाना, आश्रय लेना—रयं च जुजुषे शुभम्—भट्टि० १४।९५ 7. चुनना ।
ii (भ्वा० पर०—चुरा० उभ०—जोषति, जोषयति—ते) 1. तर्क करना, चिन्तन करना 2. जाँचपड़ताल करना, परीक्षा करना 3. चोट पहुँचाना 4. संतुष्ट होना ।

जुष् (वि०) [जुष्+क्विप्] (समास के अन्त में) पसन्द करने वाला, उपभोग करने वाला, आनन्द लेने वाला—भर्तृ० ३।१०३ 2. दर्शन करने वाला, निकट जाने वाला, पहुँचने वाला, लेने वाला, धारण करने वाला

आश्रय लेने वाला आदि—परलोकजुषाम्—रघु० ८।८५, रजोजुषे जन्मनि—का० १।

जुष्ट (भू० क० कृ०) [जुष्+क्त] 1. प्रसन्न, संतुष्ट 2. अभ्यस्त, आश्रित, देखा हुआ, भुगता हुआ—भग० २।२ 3. सज्जित, सम्पन्न, युक्त।

जूहः (स्त्री०) [हु+क्विप् नि० हित्वं दीर्घश्च तारा०] अग्नि में घी की आहुति देने के लिए काठ का बना अर्धचन्द्राकार चम्मच, स्रुवा।

जुहोतिः [जु+श्तिप्] 'जुहोति' क्रिया से सम्पन्न होने वाले यज्ञानुष्ठानों का परिभाषिक नाम, इससे भिन्न अनुष्ठानों के लिए दूसरा नाम 'यजति' है—क्षरन्ति सर्वा वैदिक्यो जुहोतियजतिक्रियाः—मनु० २।८४ (दे० मेधातिथि तथा दूसरे भाष्यकार, सर्वज्ञ नारायण—जुहोति यज्ञानुष्ठानों को 'उपविष्ट होम' तथा यजति—यज्ञानुष्ठानों को 'तिष्ठद्धोम' का नाम देते हैं—दे० आश्वलायन—१।२।५ भी)।

जूः (स्त्री०) [जू+क्विप्] 1. चाल 2. पर्यावरण 3. राक्षसी 4. सरस्वती का विशेषण।

जूकः [ग्रीक शब्द] तुला राशि।

जूटः [जुट्+अच्, नि० ऊत्वम्] चिपटे हुए तथा मींढी बनाये हुए केशों का समूह—भूतेशस्य भुजङ्गवल्लिवलयस्रङ्नद्धजूटा जटाः—मा० १।२।

जूटकम् [जूट+कन्] बट कर मींढी बनाये हुए बाल, जटा।

जूतिः स्त्री० [जू+क्तिन्] चाल, वेग।

जूर् (दिवा० आ०—जूर्यते, जूर्ण) 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मारना 2. क्रुद्ध होना (संप्र० के साथ)—भर्त्रे नखेभ्यश्च चिरं जुजूरे—भट्टि० ११।८ 3. पुराना होना।

जूर्तिः (स्त्री०) [ज्वर्+क्तिन्, ऊठ्] बुखार, जूड़ी।

जृ (भ्वा० पर० जरति) 1. नम्र बनाना, नीचा दिखाना 2 आगे बढ़ जाना।

जृभ, जृम्भ् (भ्वा० आ०—जृभते, जृम्भते, जृम्भित, जृब्ध) 1. उबासी लेना, जमुहाई लेना—मनु० ४।४३ 2. खोलना, विस्तार करना, खिलना (फूल आदि का)—परयुवतिमुखाभं पङ्कजं जृम्भतेऽद्य—ऋतु० ३।२२ 3. बढ़ाना, फैलाना, सर्वत्र प्रसार करना—जृंभतां जृम्भतामप्रतिहतप्रसरं क्रोधज्योतिः—वेणी० १, तृष्णे जृम्भसि (पर० अनियमित)—भर्तृ० ३।५ भोगः कोऽपि स एक एव परमो नित्योदितो जृम्भते—३।८० 4. प्रकट होना, उदय होना, अपनी शान दिखाना, दर्शनीय होना व्यक्त होना—संकल्पयोनेरभिमानभूतमात्मानमाधाय मधुर्जजृम्भे—कु० ३।२४ 5. आराम में होना 6. (धनुष की भाँति) पीछे मुड़ना, पल्टा खाना - प्रेर० जमुहाई दिलाना, प्रसार करवाना, **उद्**—, प्रकट होना, उदय होना, फूटना—नै० २।१०५, **वि**—, जमुहाई लेना, उबासी लेना, मुँह खोलना—व्यजृम्भिषत चापरे—भट्टि० १५।१०८ विजृम्भितमिवान्तरिक्षेण—मृच्छ० ५ 2 खुलना, खिलना (फूल आदि का) 3. सर्वत्र फैल जाना, व्याप्त करना, भर देना—मुखश्रवा मंगलतूर्यनिस्वनाः···न केवलं सद्मनि मागधीपतेः पथि व्यजृम्भन्त दिवौकसामपि—रघु० ३।१९, १२।७२, रजोन्धकारस्य विजृम्भितस्य ७।४२ 4. उदय होना प्रकट होना, **समुद्**—, प्रयत्न करना, हाथपाँव मारना, कोशिश करना—व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते—भर्तृ० २।६।

जृम्भः,—भम्, जृम्भणम्, जृम्भा, जृम्भिका [जृम्भ्+घञ्, ल्युट् वा, जृम्भ्+अ+टाप्, जृम्भा+कन्, इत्वम्] 1. जमुहाई लेना, उबासी लेना 2. खुलना खिलना, विस्तृत होना—कलिकाश्रयी जृम्भा प्रभवति—का० २५७, जृम्भारम्भप्रविततदलोपान्तजालप्रविष्टैः—वेणी० २।७, मालती शिरसि जृम्भणोन्मुखी—भर्तृ० १।२५ 3. अंगड़ाई लेना—(अंगानि) मुहुर्मुहुर्जृम्भणतत्पराणि—ऋतु० ६।१०।

जॄ (भ्वा० दिवा० क्रया० पर० चुरा० उभ० जरति, जीर्यति, जृणाति, जारयति—ते, जीर्ण जारित) 1. बूढ़ा होना, जर्जर होना, सूखना, मुरझाना—जीर्यन्ते जीर्यतः केशा दन्ता जीर्यन्ति जीर्यतः, जीर्यतश्चक्षुषी श्रोत्रे तृष्णैका तरुणायते—पंच० ५।८३, भट्टि० ९।४१ 2. नष्ट होना, खा-पी जाना (आलं०) अजारीदिव च प्रज्ञा बलं शोकात्तथाऽजरत्—भट्टि० ६।३०—जेरुराशा दशास्यस्य—१४।११२ 3. घुल जाना, पच जाना—जीर्णमन्नं प्रशंसीयात्—चाण० ७९ उदरे चाजरन्नन्ये—भट्टि० १५।५०।

जेतृ (पुं०) [जि+तृच्] 1. जीतने वाला, विजेता 2. विष्णु का विशेषण।

जेन्ताकः (पुं०) गरम कमरा जिसमें बैठने पर शरीर से पसीना बहे, शुष्क उष्ण स्नान।

जेमनम् [जिम्+ल्युट्] 1. खाना 2. भोजन।

जैत्र (वि०) (स्त्री०) [जेतृ+अण्, स्त्रियां ङीप् च] 1. विजयी, सफल, विजय प्राप्त कराने वाला—इदमिह मदनस्य जैत्रमस्त्रं विफलगुणातिशयं भविष्यतीति—मा० २।५ धनुर्जैत्रं रघुर्दधौ—रघु० ४।६६, १६।७२ 2. बढ़िया,—त्रः 1. विजयी, विजेता 2. पारा,—त्रम् 1. विजय, जीत 2. बढ़ियापन।

जैनः [जिन+अण्] जैन सिद्धान्तों का अनुयायी, जैन मत को मानने वाला।

जैमिनिः (पुं०) प्रख्यात ऋषि और दार्शनिक जिन्होंने दर्शन संप्रदाय में 'पूर्वमीमांसा' का प्रणयन किया—मीमांसाकृतमुन्ममाथ सहसा हस्ती मुनिं जैमिनिम्—पंच० २।३३।

जैवातृक (वि०) (स्त्री०—की) [जीव्+णिच्+आतृकन्] 1. दीर्घजीवी, जिसके लिए दीर्घायु की इच्छा की जाय—जैवातृक ननु श्रूयते पतिरस्याः—दश० २, दुबला-पतला, कृशकाय,—कः 1. चन्द्रमा—राजानं जनयाम्बभूव सहसा जैवातृक त्वां तु यः—भामि० २।७८ 2. कपूर 3. पुत्र 4. दवाई, औषधि 5. किसान।

जैवेयः [जीवस्य गुरोः अपत्यम् जीव+ढक्] बृहस्पति के पुत्र कच की उपाधि।

जैह्म्यम् [जिह्म+ष्यञ्] टेढ़ापन, धोखा, झूठा व्यवहार।

जोङ्गटः [जुंगति अरोचकत्वं परित्यजति अनेन—जुङ्ग+अटन् नि० गुणः] गर्भवती स्त्री की प्रबल रुचि, दोहद।

जोटिङ्गः [जुट्+इन्, जोटि+गम्+ड, रिक्तत्वात् मुम्] शिव की उपाधि।

जोषः [जुष्+घञ्] 1. सन्तोष, सुखोपभोग, प्रसन्नता, आनन्द 2. चुप्पी,—षम् (अव्य०) 1. इच्छानुसार, आराम से 2. चुपचाप—किमिति जोषमास्यते—श० ५, भामि० २।१७।

जोषा, जोषित् (स्त्री०) [जुष्यते उपभुज्यते—जुष्+घञ्+टाप्, जुष्+इति] स्त्री, नारी—तु० योषा, योषित्।

जोषिका [जुष्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. नई कलियों का समूह 2. स्त्री, नारी।

ज्ञ (वि०) [ज्ञा+क] (समास के अन्त में) 1. जानने वाला, परिचित कार्यज्ञ, निमित्तज्ञ, शास्त्रज्ञ, सर्वज्ञ 2. बुद्धिमान्—जैसा कि 'ज्ञंमन्य' में (अपने आपको बुद्धिमान् समझता हुआ),—ज्ञः 1. बुद्धिमान् और विद्वान् पुरुष 2. चैतन्य विशिष्ट आत्मा 3. बुध नक्षत्र 4. मंगल नक्षत्र 5. ब्रह्मा का विशेषण।

ज्ञपित, ज्ञप्त (वि०) [ज्ञा+णिच्+क्त,] जताया गया, संसूचित, स्पष्ट किया गया, सिखाया गया।

ज्ञप्तिः (स्त्री०) [ज्ञा+णिच्+क्तिन्] 1. समझ, 2. बुद्धि 3. घोषणा।

ज्ञा (क्र्या० उभ० जानाति, जानीते, ज्ञात) 1. जानना (सब अर्थों में) सीखना, परिचित होना—मा ज्ञासीस्त्वं सुखी रामो यदकार्षीत् स रक्षसाम्—भट्टि० १५।१९, 2. जानना, जानकार होना, परिचित या विज्ञ होना जाने तपसो वीर्यम्—श० ३।१, जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोक आचरेत्—मनु० २।११०, १२३, ७।१४८ 3. मालूम करना, निश्चय करना, खोज करना—ज्ञायतां कः कः कार्यार्थीति—मृच्छ० ९ 4. समझना, जानना, अवबोध करना, महसूस करना, अनुभव करना—जैसा कि दुःखज्ञ, सुखज्ञ आदि में 5. परीक्षण करना, जांच करना, वास्तविक चरित्र जानना—आत्सु मित्रं जानीयात्—हि० १।७२, चाण० २१ 6. पहचानना—न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन्—मेघ० ६३ 7. लिहाज करना, खयाल करना, मान करना—जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः—मेघ० ६ 8. काम करना, व्यस्त करना (संब० के साथ) सर्पिषो जानीते—सिद्धा०—वह घी से अपने आपको यज्ञ में व्यस्त करता है (सर्पिषा-सर्पिषः)—प्रेर०—(ज्ञापयति, ज्ञपयति) 1. घोषणा करना, सूचित करना, जतलाना, ज्ञात करना, अधिसूचित करना 2. निवेदन करना, कहना (आ०)—सन्नन्त—जिज्ञासते, जानने की इच्छा करना, खोजना, निश्चय करना—रघु० २।२६, भट्टि० ८।३३, ४।९१, अनु—,अनुमति देना, इजाजत देना, स्वीकृति देना, 'हाँ' करना सहमत होना, स्वीकार कर लेना—अनुजानीहि मां गमनाय—उत्तर० ३ 2. सगाई करना, विवाह में वचनबद्ध होना, वचन देना (विवाह में)—मां जातमात्रां धनमित्रनाम्नेऽन्वजानाद्भार्यां मे पिता—दश० ५० 3. क्षमा करना, माफ करना 4. प्रार्थना करना 5. अपनाना अप—, छिपाना, गुप्त रखना, इनकार करना, मुकरना (आ०) शतमपजानीते—सिद्धा०, आत्मानमपजानानः शशमात्रोऽनयद्दिनम्—भट्टि० ८।२६, अभि० 1. पहचानना—नाभ्यजानान्नलं नृपम्—महा० 2. जानना, समझना, परिचित होना, जानकार होना—भग० ४।१४, ७।१३, १८, ५५ 3. ध्यान रखना, खयाल रखना, मानना 4. मान लेना, स्वीकार कर लेना, अव—, तुच्छ समझना, घृणा करना, तिरस्कार करना, अपेक्षा करना—अवजानासि मां यस्मात्—रघु० १।१७, भट्टि० ३।८, भव० ९।११, आ—,जानना, समझना, खोजना, निश्चय करना (प्रेर०) आज्ञा देना, आदेश देना, निदेश देना 2. विश्वास दिलाना 3. विसर्जित करना, जाने के लिए छुट्टी देना, परि—, जानकार होना, जानना, परिचित होना—वृषभोऽयमिति परिज्ञाय—पंच० १, मनु० ८।१२६ 2. खोजना, निश्चय करना—सम्यक् परिज्ञाय—पंच० १ 3. पहिचानना—तपस्विभिः कैश्चित् परिज्ञातोऽस्मि—श० २, प्रति—(आ०) 1. प्रतिज्ञा करना—हरचापारोपणेन कन्यादानं प्रतिजानीते—प्रस० ४, भट्टि० ८।२६, ६४, मनु० ९।९९ 2. पुष्ट करना, 3. बताना, अभिपुष्टि करना, दावा करना, वि—, 1. जानना, जानकार होना भर्तृ० ३।२१ 2. सीखना, समझना, जान लेना 3. निश्चय करना मालूम करना 4. लिहाज करना, मान लेना, खयाल करना (प्रेर०) 1. निवेदन करना, प्रार्थना करना (विप० -आज्ञापयति)—आर्यपुत्र अस्ति मे विज्ञाप्यम्—(रामः) ननु आज्ञापय—उत्तर० १, रघु० ५।२० 2. समाचार देना, सूचना देना 3. कहना, बतलाना, सम्—,(आ०) जानना, समझना, जानकार होना 2. पहचानना 3. मेलजोल से रहना, परस्पर सहमत

होना (कर्म० या करण० के साथ)—पित्रा पितरं वा संजानीते—सिद्धा० 4. रखवाली करना, खबरदार रहना—भट्टि० ८।२७ 5. राजी होना, सहमत होना 6. (पर०) याद करना, सोचना—मातुः मातरं वा संजानासि—सिद्धा० (प्रेर०) सूचना देना।

ज्ञात (वि०) [ज्ञा+क्त] जाना हुआ, निश्चय किया हुआ, समझा हुआ, सीखा हुआ, समवधारित—दे० 'ज्ञा' ऊपर। सम०—**सिद्धान्तः** पूर्णरूप से शास्त्रों में निष्णात।

ज्ञातिः [ज्ञा+क्तिन्] 1. पैतृक संबंध, पिता, भाई आदि, एक ही गोत्र के व्यक्ति (समष्टि रूप से) 2. बन्धु, बांधव 3. पिता। सम०—**भावः** संबंध, रिश्तेदारी, —**भेदः** संबंधियों में फूट,—**विद्** (वि०) जो निकटस्थ व्यक्तियों से संबंध जोड़ता है।

ज्ञातेयम्[ज्ञाति+ढक्] संबंध, रिश्तेदारी।

ज्ञातृ (पुं०) [ज्ञा+तृच्] 1. बुद्धिमान् पुरुष 2. परिचित व्यक्ति 3. जमानत, प्रतिभू।

ज्ञानम् [ज्ञा+ल्युट्] 1. जानना, समझना, परिचित होना, प्रवीणता—सांख्यस्य योगस्य च ज्ञानम्—मा० ११७ 2. विद्या, शिक्षण—बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति—मनु० ५।१०९, ज्ञाने मौनं क्षमा शत्रौ—रघु० १।२२ 3. चेतना, संज्ञान, जानकारी—ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि—मनु० ८।२८८, जाने अनजाने, जानबूझकर, अनजाने में 4. परम ज्ञान, विशेषकर उस धर्म और दर्शन की ऊँची सचाइयों पर मनन से उत्पन्न ज्ञान जो मनुष्य को अपनी प्रकृति या वास्तविकता को जानना, तथा आत्मसाक्षात्कार या परमात्मा से मिलन की बात सिखलाता है (विप० कर्म) तु० ज्ञानयोग और कर्मयोग भग० ३।३ 5. बुद्धि ज्ञान और प्रज्ञा की इन्द्रिय। सम०—**अनुत्पादः** अज्ञान, मूर्खता,—**आत्मन्** (वि०) सर्वविद्, बुद्धिमान्,—**इन्द्रियम्** प्रत्यक्षीकरण की इन्द्रिय (यह पाँच हैं—त्वचा, रसना, चक्षु, कर्ण, और घ्राण, 'बुद्धीन्द्रिय' शब्द को देखो 'इन्द्रिय' के नीचे),—**काण्डम्** वेद का आंतरिक या रहस्यवाद विषयक भाग जिसमें वास्तविक आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान का उल्लेख है, इसके विपरीत संस्कारों का ज्ञान (कर्मकांड) भी वेद में निहित है,—**कृत** (वि०) जानबूझ कर या इरादतन किया हुआ,—**गम्य** (वि०) समझ के द्वारा जानने योग्य,—**चक्षुस्** (नपुं०) बुद्धि की आँख, मन की आँख, बौद्धिक स्वप्न (विप० चर्म चक्षुस्)—सर्वं तु समवेक्ष्येदं निखिलं ज्ञानचक्षुषा—मनु० २।८, ४।२४, (पुं०) बुद्धिमान् और विद्वान् पुरुष,—**तत्त्वम्** वास्तविक ज्ञान, ब्रह्मज्ञान,—**तपस्** (नपुं०) सत्यज्ञान की प्राप्ति रूप तपस्या,—**दः** गुरु,—**दा** सरस्वती का विशेषण, —**दुर्बल** (वि०) जिसमें ज्ञान की कमी है,—**निश्चयः,** निश्चिति, निश्चयीकरण,—**निष्ठ** (वि०) सच्चे आत्मज्ञान को प्राप्त करने पर तुला हुआ,—**यज्ञः** आत्मज्ञानी, दार्शनिक—**योगः** सच्चा आत्मज्ञान प्राप्त करने या परमात्मानुभूति प्राप्त करने का मुख्यसाधन, —**चिन्तन**, विचारणा,—**शास्त्रम्** भविष्य कथन का शास्त्र,—**साधनम्** 1. सच्चा आत्म ज्ञान प्राप्त करने का साधन 2. प्रत्यक्ष ज्ञान की इन्द्रिय।

ज्ञानतः (अव्य०) [ज्ञान+तसिल्] ज्ञान पूर्वक, जानबूझकर, इरादतन।

ज्ञानमय (वि०) [ज्ञान+मयट्] 1. ज्ञानयुक्त, चिन्मय —इतरो दहने स्वकर्मणां ववृते ज्ञानमयेन वह्निना —रघु० ८।२० 2. ज्ञान से भरा हुआ,—**यः** 1. परमात्मा 2. शिव की उपाधि।

ज्ञानिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [ज्ञान+इनि] 1. प्रतिभाशाली, बुद्धिमान् (पुं०) 1. ज्योतिषी, भविष्यवक्ता 2. ऋषि, आत्मज्ञानी।

ज्ञापक(वि०) [ज्ञा+णिच्+ण्वुल्] जतलाने वाला, सिखाने वाला, सूचना देने वाला, संकेतक,—**कः** 1. अध्यापक 2. समादेशक, स्वामी,—**कम्** (दर्शन० में) सार्थक उक्ति, व्यंजनात्मक नियम, (यहाँ उन शब्दों से अभिप्राय हैं जो अपने शाब्दिक अर्थ की अपेक्षा भी नियमों के संबंध में कुछ अधिक व्यक्त करते हैं)।

ज्ञापनम् [ज्ञा+णिच्+ल्युट्] जतलाना, सूचना देना, सिखलाना, घोषणा करना, संकेत देना।

ज्ञापित (वि०) [ज्ञा+णिच्+क्त] जतलाया गया, सूचित किया गया, घोषित किया गया, प्रकाशित।

ज्ञीप्सा [ज्ञा+सन्+अ+टाप्] जानने की इच्छा।

ज्या [ज्या+अङ्+टाप्] 1. धनुष की डोरी—विश्रामं लभतामिदं च शिथिलज्याबन्धमस्मद्धनुः—श० २।६, रघु० ३।५९, ११।१५, १२।१०४ 2. चाप के सिरों को मिलाने वाली सीधी रेखा 3. पृथ्वी 4. माता।

ज्यानिः (स्त्री०) [ज्या+नि] 1. बुढापा, क्षय 2. छोड़ना, त्यागना 3. दरिया, नदी।

ज्यायस् (स्त्री०—सी) [अयमनयोरतिशयेन प्रशस्यः वृद्धो वा +ईयसुन्, ज्यादेशः] 1. आयु में बड़ा, अधिकतर वयस्क—प्रसवक्रमेण स किल ज्यायान्—उत्तर० ६ 2. दो में बढ़िया श्रेष्ठतर, योग्यतर—मनु० ४।८, ३।१३७, भग० ३।१, ८ 3. महत्तर, बृहत्तर 4. (विधि में) जो अवयस्क न हो अर्थात् वयस्क या अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी।

ज्येष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन वृद्धः प्रशस्यो वा+इष्ठन्, ज्यादेशः] 1. आयु में सब से बड़ा, जेठा 2. श्रेष्ठतम, सर्वोत्तम 3. प्रमुख, प्रथम, मुख्य, उच्चतम,—**ष्ठः** 1. बड़ा भाई, रघु० १२।१९, ३५ 2. चान्द्रमास (ज्येष्ठ का महीना),—**ष्ठा** 1. सबसे बड़ी बहन 2. १८

वाँ नक्षत्र पुंज (तीन तारों वाला) 3. बिचली अंगुली 4. छोटी छिपकली 5. गंगा नदी का विशेषण। सम०—अंशः 1. सबसे बड़े भाई का भाग 2. सबसे बड़े भाई का पैतृक संपत्ति में वह भाग जो सबसे बड़ा होने के कारण उसे मिले 3. सर्वोत्तमभाग,—अम्बु (नपुं०) 1. अनाज का धोवन 2. मांड (चावलों का),—आश्रमः 1. ब्राह्मण अथवा गृहस्थ के धार्मिक जीवन में उच्चतम या सर्वोत्तम आश्रम 2. गृहस्थ,—तातः पिता का बड़ा भाई, ताऊ, —वर्णः सर्वोच्च जाति, ब्राह्मण जाति, —वृत्तिः बड़ों का कर्तव्य,—श्वश्रूः (स्त्री०) बड़ी साली।

ज्यैष्ठः [ज्येष्ठा+अण्] वह चांद्रमास जिसमें पूर्ण चन्द्रमा ज्येष्ठा नक्षत्रपुंज में स्थित होता है, जेठ का महीना (मई-जून),—ष्ठी 1. ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा 2. छिपकली।

ज्यो (भ्वा० आ०—ज्यवते) 1. परामर्श देना, नसीहत देना 2. (व्रत आदि) धार्मिक कर्तव्य का पालन करना।

ज्योतिर्मय (वि०) [ज्योतिस्+मयट्] तारों से युक्त, ज्योति से भरा हुआ, द्युतिमय—रघु० १५।५९, कु० ६।३।

ज्योतिष (वि०) (स्त्री०—षी) [ज्योतिस्+अच्] 1. गणित या फलित ज्योतिष,—षः 1. गणक, दैवज्ञ 2. छः वेदाङ्गों में से एक (गणित ज्योतिष पर एक ग्रन्थ)। सम०—विद्या गणित अथवा फलित ज्योतिर्विज्ञान।

ज्योतिषी, ज्योतिष्कः [ज्योतिस्+ङीप्, ज्योतिः इव कायति —कै+क] ग्रह, तारा नक्षत्र।

ज्योतिष्मत् (वि०) [ज्योतिस्+मतुप्] 1. आलोकमय, तेजस्वी देदीप्यमान, ज्योतिर्मय—नक्षत्रताराग्रहसंकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः—रघु० ६।२२ 2. स्वर्गीय —(पुं०) सूर्य,—ती 1. रात्रि (तारों से प्रकाशमान) 2. (दर्शन० में) मन की सात्त्विक अवस्था अर्थात् शान्त अवस्था।

ज्योतिस् (नपुं०) [द्योतते द्युत्यते वा—द्युत्+इसुन् दस्य जादेशः] प्रकाश, प्रभा, चमक, दीप्ति—ज्योतिरेकं जगाम—श० ५।३०, रघु० २।७५, मेघ० ५ 2. ब्रह्म-ज्योति, वह ज्योति जो ब्रह्म का रूप है—भग० ५।२४, १३।१७ 3. बिजली 4. स्वर्गीय पिण्ड, ज्योति (ग्रह, नक्षत्र आदि)—ज्योतिर्भिरुद्यद्भिरिव त्रियामा—कु० ७।२१, भग० १०।२१, हि० १।२१ 5. देखने की शक्ति 6. आकाशीय संसार—(पुं०) 1. सूर्य 2. अग्नि। सम०—इङ्गः,—इङ्गणः जुगनू, —कणः अग्नि की चिनगारी,—गणः समष्टिरूप से खगोलीय पिण्ड,—चक्रम् राशिचक्र,—ज्ञः गणक, दैवज्ञ,—मण्डलम् तारकीय मण्डल,—रथः (ज्योतीरथः) ध्रुव तारा,—विद् (पुं०) गणक या दैवज्ञ,—विद्या,—शास्त्रम् (ज्योतिश्शास्त्रम्) गणितज्योतिष या नक्षत्रविद्या, फलितज्योतिष।

ज्योत्स्ना [ज्योतिरस्ति अस्याम्—ज्योतिस्+न, उपधालोपः] 1. चन्द्रमा का प्रकाश—स्फुरत्स्फारज्योत्स्नाधवलिततले क्वापि पुलिने—भर्तृ० ३।४२, ज्योत्स्नावतो निर्विशति प्रदोषान्—रघु० ६।३४ 2. प्रकाश। सम० —ईशः चाँद, —प्रियः चकोर पक्षी,—वृक्षः दीवट दीपाधार।

ज्योत्स्नी [ज्योत्स्ना अस्ति अस्य—ज्योत्स्ना+अण्+ङीप्] चाँदनी रात।

ज्यौः [ग्रीक शब्द] बृहस्पति नक्षत्र।

ज्यौतिषिकः [ज्योतिष+ठक्] खगोलवेत्ता, गणक, दैवज्ञ या ज्योतिषी।

ज्यौत्स्नः [ज्योत्स्ना+अण्] शुक्ल पक्ष।

ज्वर् (भ्वा० प० ज्वरति, जूर्ण) बुखार या आवेश से गर्म, होना, ज्वरग्रस्त होना 2. रुग्ण होना।

ज्वरः [ज्वर्+घञ्] 1. बुखार, ताप, (आयु० में) बुखार की गर्मी—स्वेद्यमानज्वरं प्राज्ञः कोऽम्भसा परिषिञ्चति —शि० २।५४ (आलं० भी) दर्पज्वरः, मदनज्वरः, मदज्वरः आदि 2. आत्मा का बुखार, मानसिक पीड़ा, कष्ट, दुःख, रंज, शोक—व्येतु ते मनसो ज्वरः—रामा०, मनसस्तदुपस्थिते ज्वरे—रघु० ८।८४, भग० ३।३०। सम०—अग्निः बुखार का वेग या तेज़ी,—अङ्कुशः ज्वरप्रशामक, बुखार कम करने वाला,—प्रतीकारः, बुखार का इलाज, ज्वर प्रशामक औषधि।

ज्वरित, ज्वरिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [ज्वर+इतच्, इनि वा] ज्वराक्रान्त, ज्वरग्रस्त।

ज्वल् (भ्वा० पर०—ज्वलति, ज्वलित) 1. तेज़ी से जलना, दहकना, दीप्त होना, चमकना,—ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निः—श० ६।३० कु० ५।३० 2. जल जाना, जल कर भस्म हो जाना, (आग से) कष्टग्रस्त होना —अमृतमधुरमृदुतरवचनेन ज्वलति न सा मलयजपवनेन—गीत० ७ 3. उत्सुक होना, —जज्वाल लोकस्थितये स राजा—भर्तृ० १।४, प्रेर० ज्वलयति-ते, ज्वालयति-ते 1. आग लगाना, आग जलाना 2. देदीप्यमान करना, रोशनी करना, प्रकाश करना—ककुभां मुखानि सहसोज्ज्वलयन्—शि० ९।४२, त्वदधरचुम्बनलम्बितकज्जलमुज्ज्वलय प्रियलोचने—गीत० १२, प्र—, तेज़ी से जलना, जाज्वल्यमान होना—रणाङ्गानि प्रजज्वलुः—भट्टि० १४।९८, (प्रेर०)—1. जलाना, आग सुलगाना 2. चमकाना, रोशनी करना।

ज्वलन (वि०) [ज्वल्+ल्युट्] 1. दहकता हुआ, चमकता हुआ 2. ज्वलनार्ह, दहनशील,—नः 1. आग—तदनु ज्वलनं मदर्पितं त्वरयेर्दक्षिणवातवीजनैः—कु० ४।३६, ३२, भग० ११।२९ 2. तीन की संख्या,—नम् जलना, दहकना, चमकना। सम० अश्मन् (पुं०) सूर्यकान्त मणि।

ज्वलित (वि०) [ज्वल्+क्त] 1. दग्ध, जला हुआ, प्रकाशित 2. प्रदीप्त, प्रज्वलित।

ज्वालः [ज्वल्+ण] 1. प्रकाश, दीप्ति 2. मशाल।

ज्वाला [ज्वाल+टाप्] 1. अग्निशिखा, लौ, लपट—रघु० १५।१६ भर्तृ० ३।९५। सम०—जिह्वः,—ध्वजः आग—मुखी लावा निकलने का स्थान,—वक्त्रः शिव का विशेषण।

ज्वालिन् (पुं०) ज्वल्+णिनि] शिव का विशेषण।

झ

झः [झट्+ड] 1. समय का बिताना 2. झन झन, खनखन या इसी प्रकार की कोई और ध्वनि 3. झंझावात 4. बृहस्पति।

झगझगायति (ना० धा० पर०) चमक उठना, दमकना, जगमगाना, चमचमाना।

झग (गि) ति (अव्य०) [=झटिति] जल्दी से, तुरन्त—साप्यप्सरा झगित्यासीत्तद्रूपाकृष्टलोचना—महा०।

झङ्कारः, झङ्कृतम् [झमिति अव्यक्तशब्दस्य कारः—कृ+घञ्, कृ+क्त वा] झनझनाहट, भिनभिनाना—(अयं) दिगन्तानातेने मधुपकुलझङ्कारभरितान्—भामि० १।३३, ४।२९, भर्तृ० ३।९, अमरु ४८, पंच० ५।५३।

झङ्कारिणी [झङ्कार+इनि+ङीप्] गङ्गा नदी।

झङ्कृतिः [झम्+कृ+क्तिन्] खनखनाहट या झनझनाहट, (धातु के बने आभूषणों की ध्वनि जैसी ध्वनि)।

झञ्झनम् [झञ्झ्+ल्युट्] 1. आभूषणों की झनझन या खनखन 2. खड़खड़ाहट या टनटन की ध्वनि।

झञ्झा [झमिति अव्यक्तशब्दं कृत्वा झटिति वेगेन वहति—झम्+झट्+ड+टाप्] 1. हवा के चलने या वर्षा के होने का शब्द 2. हवा और पानी, तूफान, आँधी 3. खनखन की ध्वनि, झनझन। सम०—अनिलः,—मरुत्,—वातः वर्षा के साथ आँधी, तूफ़ान, प्रभंजक, अन्धड़—झञ्झावातः सवृष्टिकः—अमर० हिमम्बुझञ्झानिलविह्वलस्य (पद्मस्य)—भामि० २।६९, अमरु ४८ मा० ९।१७।

झटिति (अव्य०) [झट्+क्विप्, इ+क्तिन्] जल्दी से तुरन्त—मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति भ्रंश्यद्दृशोऽदृश्यताम्—भर्तृ० ३।९६, ७०।

झणझणम्,—णा [झणत्+डाच्, द्वित्वं, पूर्वपदटिलोपः] झनझनाहट।

झणझणायित (वि०) [झणझण+क्यङ्+क्त] टनटन, झनझन, टनटन करना—उत्तर० ५।५।

झण(न)त्कारः [झण(न)त्+कृ+घञ्] झनझन, टनटन, (धातु से बने आभूषण आदि का) झनझनाना, खनखनाना,—झणत्कारक्रूरक्वणितगुणगुञ्जद्गुरुधनुर्धृतप्रेमा बाहुः—उत्तर० ५।२६, उद्वेजयति दरिद्रं परमुद्रागणनझणत्कारः—उद्भट।

झम्पः, झम्पा [झम्+पत्+ड, स्त्रियां टाप् च] उछल, कूद, छलांग—महावी० ५।६२।

झम्पाकः, झम्पारुः, झम्पिन् (पुं०) [झम्पेन अकतिगच्छति—झंम्प+अक्+अण्, झम्प+आ+रा+डु, झम्पा+इनि वा] बन्दर, लङ्गूर।

झरः, झरा, झरी [झॄ+अच्, स्त्रियां टाप्, ङीष् च] प्रपातिका, झरना, निर्झर, नदी—प्रत्यग्रक्षतजझरीनिवृत्तपाद्यः—महावी० ६।१४, भामि० ४।३७।

झर्झरः [झर्झ्+अरन्] 1. एक प्रकार का ढोल 2. कलियुग 3. बेंत की छड़ी 4. झांझ, मजीरा,—रा वेश्या वारांगना।

झर्झरिन् (पुं०) [झर्झर+इनि] शिव का विशेषण।

झलज्झला [झलज्झल इत्यव्यक्तः शब्दः अस्त्यत्र—अच्+टाप्] बूंदों के गिरने का शब्द, झड़ी, हाथी के कान की फड़फड़ाहट।

झला [=झरा पृषो०] 1. लड़की, पुत्री 2. धूप, चिलचिलाती धूप, चमक।

झल्लः [झर्झ्+क्विप्, तं लाति—ला+क] 1. मल्लयोद्धा 2. एक नीच जाति—मनु० १०।२२, १२।४५,—ल्ली ढोलकी।

झल्लकम्,—की [झल्ल+कन्, स्त्रियां ङीष् च] झाँझ, मजीरा।

झल्लकण्ठः [ब० स०] कबूतर।

झल्लरी [झर्झ्+अरन्+ङीष् पृषो०] झाँझ, मजीरा।

झल्लिका [झल्ली+कै+क, पृषो०] 1. उबटन आदि के लगाने से शरीर से छूटा हुआ मैल 2. प्रकाश, चमक, दमक।

झषः [झष्+अच्] 1. मछली—झषाणां मकरश्चास्मि—भग० १०।३१, तु० नी० दिये गये 'झषकेतन' आदि शब्दों से 2. बड़ी मछली, मगरमच्छ 3. मीन राशि 4. गर्मी, ताप,—षम् मरुस्थल, सुनसान जङ्गल। सम०—अङ्कः,—केतनः,—केतुः,—ध्वजः कामदेव—स्त्रीमुद्रां झषकेतनस्य—पंच० ४।३४,—अशनः सूंस,—उदरी व्यास की माता सत्यवती का विशेषण।

झाङ्कृतम् [झङ्कृत+अण्] 1. झांझन, पायजेब 2. (जल के गिरने की) आवाज़, छपछप का शब्द—स्थाने स्थाने मुखरककुभो झाङ्कृतैर्निर्झराणाम्—उत्तर० २।१४।

झाटः [झट्+घञ्] 1. पर्णशाला, लतामण्डप 2. कान्तार, वृक्षों का झुरमुट।

झिंटिः—टी (स्त्री०) [झिम्+रट्+अच्+ङीप् पृषो०] एक प्रकार की झाड़ी।

झिरिका [झिरि+कै+क+टाप्] झींगुर।

झिल्लिः (स्त्री०) [झिरिति अव्यक्त शब्दं लिशति—झिर् +लिश्+डि] 1. झींगुर 2. एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

झिल्लिका [झिल्लि+कन्+टाप्] 1. झींगुर 2. धूप का प्रकाश, चमक, दीप्ति।

झिल्ली (स्त्री०) [झिल्लि+ङीप्] 1. झींगुर 2. दीये की बत्ती 3. प्रकाश, चमक। सम०—कण्ठः पालतू कबूतर।

झीरुका (स्त्री०) झींगुर।

झुण्डः [लुण्ट्+अच्, पृषो०] 1. वृक्ष, बिना तने का पेड़ 2. झाड़ी, झाड़-झंखाड़।

झोडः (पुं०) सुपारी का पेड़।

ट

टङ्क् (चुरा० उभ०—टङ्कयति—ते, टङ्कित) 1. बांधना, कसना, जकड़ना 2. ढकना, उद्—1. छीलना, खुरचना 2. छिद्र करना, सूराख करना।

टङ्कः,—कम् [टङ्क+घञ्, अच वा] 1. कुल्हाड़ी, कुठार, टांकी (पत्थर काटने या गढ़ने के छेनी) —टङ्कैर्मनःशिलगुहेव विदार्यमाणा—मृच्छ० १।२०, रघु० १२।८० 2. तलवार 3. म्यान 4. कुल्हाड़ी की धार के आकार की चोटी, पहाड़ी की ढाल या झुकाव—भट्टि० १।८ 5. क्रोध 6. घमंड 7. पैर,—का पैर, लात।

टङ्ककः [टङ्क+कन्] चाँदी का सिक्का। सम०—पतिः टकसाल का अध्यक्ष,—शाला टकसाल।

टङ्कणम् (नम्) [टङ्क+ल्युट्] सोहागा,—णः (नः) 1. घोड़े की एक जाति 2. एक देश विशेष के निवासी। सम०—क्षारः सोहागा।

टङ्कारः [टम्+कृ+अण्] 1. धनुष की डोर खींचने से होने वाली ध्वनि 2. गुर्राना, चिल्लाना, चीत्कार, चीख।

टङ्कारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [टङ्कार+इनि] टंकार करने वाला, फूत्कार या सीत्कार करने वाला; झंकार करने वाला—टङ्कारिचापमनु लङ्काशरक्षतजपङ्कावरूषितशरम्—अस्व० १।

टङ्किका [टङ्क+कन्+टाप्, इत्वम्] टांकी, कुल्हाड़ी—विक्रमांक० १।१५।

टंगः,—गम् [=टङ्कः पृषो०] कुदाल, खुर्पा, कुल्हाड़ी।

टङ्गणः,—णम् [=टङ्कण पृषो०] सोहागा।

टङ्गा [टङ्ग+टाप्] टांग, लात, पैर।

टहरी [टहेति शब्दं राति—रा+क+ङीप्] 1. एक प्रकार का वाद्ययंत्र 2. परिहास, ठट्ठा।

टाङ्कारः [टङ्कार+अण्] झंकार, टङ्कार।

टिक् (भ्वा०—आ०—टेकते) जाना, चलना-फिरना।

टिटि(ट्टि)भः (स्त्री०—भी) [टिटि(ट्टि)इत्यव्यक्तशब्दं भणति—टिटि(ट्टि)+भण्+ड] टिटिहिरी पक्षी,—उत्क्षिप्य टिट्टिभः पादावास्ते भङ्गभयाद्दिवः—पंच० १।३१४, मनु० ५।११, याज्ञ० १।१७२, ('टिट्टिभक' भी)।

टिप्पणी(नी) [टिप्+क्विप्, टिपा पन्यते स्तूयते—टिप्+पन्+अच्+ङीप् पृषो० पात्वं वा] भाष्य, टीका। (कभी कभी 'भाष्य' पर लिखी गई 'व्याख्या' के लिए भी—उदा० महाभाष्य पर कैयट की व्याख्या या टीका या कैयट के भाष्य पर नागोजी भट्ट की टीका या भाष्य)।

टीक् (भ्वा० आ०—टीकते) चलना-फिरना, जाना, सहारा, देना—करमर्याः कृतमालमुद्गतदलं कोयष्टिकष्टीकते मा० ९।७,—आ—, जाना, चलना-फिरना, इधर-उधर घूमना—आटीकसेऽङ्ग करिघोटीपदातिजुषि वाटीभुवि क्षितिभुजाम्—अस्व० ५।

टीका [टीक्यते गम्यते, ग्रन्थार्थोऽनया—टीक्+क+टाप्] व्याख्या, भाष्य—काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे गृहे टीका तथाप्येष तथैव दुर्गमः।

टुण्टुक (वि०) [टुण्टु इति अव्यक्तशब्दं कायति—टुटु+कै+क] 1. छोटा, थोड़ा 2. दुष्ट, क्रूर, नृशंस 3. कठोर।

ठ

ठः (पुं०) (धातु के बने बर्तन के सीढ़ियों में से गिरते हुए ध्वनि जैसी) अनुकरणात्मक ध्वनि—रामाभिषेके मदविह्वलायाः कक्षाच्च्युतो हेमघटस्तरुण्याः, सोपानमार्गे प्रकरोति शब्दं ठठं ठठंठं ठठठं ठठंठः—सुभा०।

ठक्कुरः (पुं०) 1. मूर्ति, देवमूर्ति 2. पूज्य व्यक्ति के नाम के साथ लगने वाली सम्मानसूचक उपाधि—उदा० गोविन्द ठक्कुर (काव्य प्रदीप के रचयिता)।

ठालिनी (स्त्री०) तगड़ी, करधनी।

डमः [ड+मा+क] एक घृणित और मिश्रित जाति, डोम।

डमरः [मृ+अच्=मरम्, डेन त्रासेन मरं पलायनम्, तृ० त०] 1. झगड़ा, फ़साद, दंगा 2. भावभंगिमा और ललकारों से शत्रु को भयभीत करना,—रम् डर के कारण भाग जाना, भगदड़।

डमरुः [डमित्यव्यक्तशब्दम् ऋच्छति—डम्+ऋ+कु] एक प्रकार का बाजा, डुगडुगी (इस वाद्ययन्त्र को प्रायः कापालिक साधु बजाया करते हैं) |कभी कभी नपुं० भी माना जाता है]।

डम्ब् (चुरा० उभ०—डम्बयति-ते) 1. फेंकना, भेजना 2. आदेश देना 3. देखना, वि—, अनुकरण करना, नक़लकरना, तुलना करना।—(तं) ऋतुविडम्बयामास न पुनः प्राप तच्छ्रियम्—रघु० ४।१७। वपुःप्रकर्षेण विडम्बितेश्वरः—३।१२, १३।२९, १६।११, कि० ५।४६ १२।३८, शि० १।६, १२।५ 2. हँसी उड़ाना, अवहास करना, खिल्ली उड़ाना—सम्मोहयन्ति, मदयन्ति, विडम्बयन्ति निर्मत्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति—भर्तृ० १।२२, यथा न विडम्ब्यसे जनैः—का० १०९ 3. ठगना, धोखा देना—एवमात्माभिप्रायसम्भावितेष्टजनचित्तवृत्तिः प्रार्थयिता विडम्ब्यते—श० २ 4. कष्ट देना, पीड़ा देना।

डम्बर (वि०) [डम्ब्+अरन्] प्रसिद्ध, विख्यात,—रः 1. समवाय, संग्रह, ढेर—मा० ९।१६ 2. दिखावा, टिमटाम 3. सादृश्य, समानता, आभास 4. घमण्ड, अहंकार।

डम्भ् (चुरा० उभ०—डम्भयति-ते) इकट्ठा करना।

डयनम् [डी+ल्युट्] 1. उड़ान 2. डोली, पालकी।

डविस्थः (पुं०) काठ का बारहसिंहा।

डाकिनी [डाय भयदानाम अकति व्रजति—ड+अक्+इनि+ङीप्] पिशाचिनी, भूतनी।

डाङ्कृतिः (स्त्री०) [डाम्+कृ+क्तिन्] घण्टी के बजने की ध्वनि, डिङ्ग-डाङ्ग आदि।

डामर (वि०) [डमर+अण्] 1. डरावना, भयावह, भयानक—पर्याप्तं मयि रमणीयडामरत्वं संघत्ते गगनतलप्रयाणवेगः—मा० ५।३ 2. दंगा करने वाला, हुड़दङ्गी 3. सूरत शक्ल में मिलता-जुलता, अनुरूप (अर्थात्, मनोहर, सुन्दर)—रतिगलिते ललिते कुसुमानि शिखण्डकडामरे (चिकुरे)—गीत० १२,—रः 1. होहल्ला, हंगामा, दंगा, फ़साद 2. उत्सव के अवसर पर चहल-पहल, लड़ाई झगड़े के अवसर पर खलबली, हलचल।

डालिमः [=दाडिमः, पृषो०] अनार।

डाहलः (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासी—कीर्तिः समाश्लिष्यति डाहलोर्वीम् विक्रमांक० १।१०३।

डिङ्गरः (पुं०) 1. सेवक 2. बदमाश, ठग, धूर्त 3. पतित या नीच आदमी।

डिण्डिमः [डिंडीति शब्दं माति—डिण्डि+मा+क] एक प्रकार का छोटा ढोल (आलं० भी) इति घोषयतीव डिण्डिमः—हि० २।८६ मुखरयस्व यशो नवडिण्डिमम्—नै० ४।५३, अमरु २८, चण्डि रणितरसनारवडिण्डिममभिसर सरसमलज्जं—गीत० ११, आर्यबालचरितप्रस्तावनाडिण्डिमः—महावी० १।५४।

डिण्डी (डि) रः [डिण्डि+र पक्षे दीर्घः] 1. मसीक्षेपी का भीतरी कवच; जो समुद्रफेन की भाँति काम में लाया जाता है 2. झाग—उद्दण्डातेन डिण्डीरे पिण्डपङ्क्तिरदृश्यत - विक्रमांक—४।६४, २।४।

डिमः [डिम्+क] दस प्रकार के नाटकों मे से एक—मायेन्द्रजालसंग्रामक्रोधाद् भ्रान्तादिचेष्टितः, उपरागश्च भूयिष्ठो डिमः ख्यातोऽतिवृत्तकः सा० द० ५१७।

डिम्बः [डिब्+घञ्] 1. दंगा, फ़साद 2. कोलाहल, भय के कारण चीत्कार 3. छोटा बच्चा या छोटा जानवर 4. अंडा 5. गोला, गेंद, पिण्ड! सम—आहवः,—युद्धम् मामूली लड़ाई, (बिना शस्त्र प्रयोग के) झड़प, खटपट, मुठभेड़, झूठमूठ की लड़ाई—मनु० ५।९५।

डिम्बिका [डिम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. कामुकी स्त्री, 2. बुलबुला।

डिम्भः [डिम्भ्+अच्] 1. छोटा बच्चा 2. कोई छोटा जानवर जैसे शेर का बच्चा;—जृम्भस्व रे डिम्भ दन्तांस्ते गणयिष्यामि—श० ७ 3. मूर्ख, बुद्धू।

डिम्भकः (स्त्री०—म्भिका) [डिम्भ्+ण्वुल्, स्त्रियां टाप् इत्वं च] 1. एक छोटा बच्चा 2. जानवर का छोटा बच्चा।

डी (भ्वा० दिवा० आ०—डयते, डीयते, डीन) 1. उड़ना, हवा में से गुज़रना 2. जाना, उद्—, हवा में उड़ना, ऊपर उड़ना—सर्वैरुड्डीयताम्—हि० १ (हंसैः) उदडीयत वैकृतात्करग्रहजादस्य विकस्वरस्वरैः—नै० २।५, प्र—, उपर उड़ना—हंसैः प्रडीनैरिव—मृच्छ० ५।५, प्रोद्—, ऊपर उड़ जाना—प्रोड्डीयेव बलाकया सरमसं सोत्कण्ठमालिङ्गितः—२३।

डीन (भू० क० कृ०) [डी+क्त] उड़ा हुआ,—नम् पक्षी की उड़ान, पक्षियों की उड़ान १०१ प्रकार की बताई गई हैं, किसी भी विशेष उड़ान को प्रकट करने के लिए 'डीन' से पूर्व उपयुक्त उपसर्ग लगा दिया जाता है—उदा० अवडीनम्, उड्डीनम्, प्रडीनम्, अभिडीनम्, विडीनम्, परिडीनम्, पराडीनम् आदि।

डुण्डुभः [डुण्डु+भा+क] साँपों का एक प्रकार जिनमें ज़हर नहीं होता—(निर्विषाः डुण्डुभाः स्मृताः)।

डुलिः (स्त्री०) [=ढुलिः पृषो०] एक छोटी कछवी।

डोमः (पुं०) अत्यन्त नीच जाति का पुरुष।

ढ

ढक्का [ढक् इति शब्देन कायति—ढक्+कै+क+टाप्] बड़ा ढोल—न ते हुडुक्केन न सोपि ढक्कया न मर्दलैः सापि न तेऽपि ढक्कया—नै० १५।१७।
ढामरा (स्त्री०) हंसनी।
ढालम् [नपुं०] म्यान।
ढालिन् (पुं०) [ढाल+इनि] ढालधारी योद्धा।
ढुण्ढिः [ढुण्ढ्+इन्] गणेश का विशेषण।
ढोलः (पुं०) बड़ा ढोल, मृदङ्ग, ढपली।
ढौक् (भ्वा० आ०—ढौकते, ढौकित) जाना, पहुँचाना—यान्तं वने रात्रिचरी डुढौके—भट्टि० २।२३, १४।७१, १५।७९—प्रेर०—ढौकयति—ते 1. निकट लाना, पहुँचाना—तन्मान्सं चैव गोमायोस्तैः क्षणादाशु ढौकितम्—महा०, भट्टि० १७।१०३ 2. उपस्थित करना, प्रस्तुत करना।
ढौकनम् [ढौक्+ल्युट्] 1. भेंट 2. उपहार, रिश्वत।

ण

[संस्कृत में 'ण' से आरम्भ होने वाला कोई शब्द नहीं, 'ण' से आरम्भ होने वाले बहुत से धातु हैं वस्तुतः वे सब 'न' से आरम्भ होते हैं, धातुकोश में उन्हें 'ण' से केवल इसलिए आरम्भ किया गया है जिससे कि यह प्रकट हो जाय कि यहाँ 'न' प्र, परि तथा अन्तर् आदि उपसर्ग पूर्व होने पर 'ण' में परिवर्तित हो जाय]।

त

तकिल (वि०) [तक्+इलच्] जालसाज, चालाक, धूर्त।
तक्रम् [तक्+रक्] छाछ, मट्ठा। सम०—**अटः** रई का डंडा,—**सारम्** ताज़ा मक्खन।
तक्ष् (भ्वा० स्वा० पर०—तक्षति, तक्ष्णोति, तष्ट) चीरना, काटना, छीलना, छेनी से काटना, टुकड़े-टुकड़े करना, खण्डशः करना—आत्मानं तक्षति ह्येष वनं परशुना यथा—महा०, निवाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्घनः—अमर० 2. गढ़ना, बनाना, निर्माण करना (लकड़ी में से) 3. बनाना, रचना करना 4. घायल करना, चोट पहुँचाना 5. आविष्कार करना, मन में बनाना,—निस्,—टुकड़े-टुकड़े करना, सम्,—छीलना, छेनी से काटना, चीरना 2. घायल करना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना—निस्त्रिंशाभ्यां सुतीक्ष्णाभ्यामन्योन्यं संततक्षतुः—महा०, वराह० ४२।२९।
तक्षकः [तक्ष्+ण्वुल्] 1. बढ़ई, लकड़ी का काम करने वाला (जाति से अथवा लकड़ी का धंधा करने के कारण) 2. सूत्रधार 3. देवताओं का वास्तुकार, विश्वकर्मा 4. पाताल के मुख्य नागों अर्थात् सर्पों में से एक, कश्यप और कद्रु का पुत्र (आस्तीक ऋषि के बीच में पड़ने से जनमेजय के सर्पयज्ञ में जलजाने से बचा हुआ, इसी सर्पयज्ञ में अनेक सर्प जल कर भस्म हो गये थे)
तक्षणम् [तक्ष्+ल्युट्] छीलना, काटना दारवाणां च तक्षणम्—मनु० ५।११५, याज्ञ० १।१८५।
तक्षन् (पुं०) [तक्ष्+कनिन्] 1. बढ़ई, लकड़ी काटने वाला (जाति से अथवा लकड़ी का काम करने के कारण) अतक्षा तक्षा—काव्य०, जो जाति से तक्षा नहीं है, वह तक्षा कहलाता है जब कि वह तक्षा की भांति तक्षा के काम को करने लगता है, बढ़ई—शि० १२।२५ 2. देवताओं का शिल्पी—विश्वकर्मा।
तगरः [तस्य क्रोडस्य गरः, ष० त.] एक प्रकार का पौधा।
तङ्क् (भ्वा० पर०—तङ्कति, तङ्कित) 1. सहन करना, बर्दाश्त करना 2. हँसना 3. कष्टग्रस्त रहना।
तङ्कः [तङ्क्+घञ् अच् वा] 1. कष्टमय जीवन, आपद्ग्रस्त जीवन 2. किसी प्रिय वस्तु के वियोग से उत्पन्न शोक 3. भय, डर 4. संगतराश की छेनी।
तङ्कनम् [तङ्क्+ल्युट्] कष्टमय जीवन, आपद्ग्रस्त जिंदगी।
तङ्ग् (भ्वा० पर०—तङ्गति, तङ्गित) 1. जाना, चलना-फिरना 2. हिलाना-जुलाना, कष्ट देना 3. लड़खड़ाना।
तञ्च् (रुधा० पर०—तनक्ति, तञ्चित) सिकोड़ना, सिकुड़ना—तनच्मि व्योम विस्तृतम्—भट्टि० ६।३८।
तटः [तट्+अच्] 1. ढाला, उतार, कगार 2. आकाश या क्षितिज,—टः,—टा,—टी,—टम् 1. किनारा, कूल,

उतार, ढाल -शीलं शैलतटात्पततु --भर्तृ० --२।३९, प्रोत्तुंगचिन्तातटी ३।४५, सिन्धोस्तटादोघ इव प्रवृद्धः --कु० ३।६, उच्चारणातक्षिगणास्तटीस्तम्--शि० ४।१८ 2. शरीर के अवयव (जिनमें स्वभावतः कुछ ढाल है) --पद्मपयोधरतटीपरिरम्भलग्न --गीत० १, नो लुप्तं सखि चन्दनं स्तनतटे--शृंगार० ७, इसी प्रकार जघनतट, कटितट, श्रोणीतट, कुचतट, कण्ठतट, ललाटतट आदि,--टम् खेत । सम० --आघातः सींगों की टक्कर से मिट्टी उखाड़ना, तट या ढलान पर सिर से टक्कर मारना--अभ्यस्यन्ति तटाघातं निर्जितैरावता गजाः--कु० २।५०,--स्थ (वि०) (शा०) किनारे पर विद्यमान, कूलस्थित 2. (आलं०) अलग खड़ा हुआ, अलग-अलग, उदासीन, पराया, निष्क्रिय--तटस्थः स्वानर्थान् घटयति मौनं च भजते --मा० १।१४, तटस्थं नैराश्यात्--उत्तर० ३।१३, मया तटस्थस्त्वमुपद्रुतोसि--नै० ३।५५, (यहाँ 'तटस्थ' का अर्थ 'कूलस्थित' भी है) ।

तटाकः,--कम् [तट्+आकन्] तालाब (जो कमल तथा अन्य जलीय पौधों के लिए पर्याप्त गहरा हो) दे० 'तडाग'।

तटिनी [तटमस्त्यस्या इनि ङीप्] नदी--कदा वाराणस्यामम-रतटिनीरोधसि वसन्--भर्तृ० ३।१२३, भामि० १।२३ ।

तड् (चुरा० उभ०--ताडयति--ते, ताडित) 1. पीटना, मारना, टकराना --गाहन्तां महिषाः निपानसलिलं शृङ्गैर्मुहुस्ताडितम्--श० २।५, (नौः) ताडिता मारुतैर्यथा--रामा०, रघु० ३।६१, कु० ५।२४, भर्तृ० १।५० 2. पीटना, मारना, दण्डस्वरूप पीटना, आघात पहुँचाना--लालयेत्पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत् --चाण० ११।१२, न ताडयेत्तृणेनापि--मनु० ४।१६९, पादेन यस्ताडयते--अमरु ५२ 3. प्रहार करना, (ढोल आदि का) पीटना ताडयमानासु भेरीषु--महा०, अताडयन् मृदङ्गांश्च--भट्टि० १७।७ वेणी० १।२२ 4. बजाना, (वीणा के तारों का) आहनन करना --श्रोतुर्वितन्त्रीरिव ताडयमाना--कु० १।४५ 5. चमकना 6. बोलना ।

तडगः दे० तडाग ।

तडागः [तड्+आग] तालाब, गहरा जोहड़, जलाशय --स्फुटकमलोदरखेलितखञ्जनयुगमिव शरदि तडागम् --गीत० ११, मनु० ४।२०३, याज्ञ० २।२३७ ।

तडाघातः दे० 'तटाघात' (उच्चैः करिकराक्षेपे तडाघातं विदुर्बुधाः शब्द) ।

तडित् (स्त्री०) [ताडयति अभ्रम्--तड्+इति] बिजली, घनं घनान्ते तडितां गुणैरिव--शि० १।७, मेघ० ७६, रघु० ६।६५ । सम०--गर्भः बादल,--लता बिजली की कौंध जिसमें लहरें हों, -रेखा बिजली की रेखा ।

तडित्वत् (वि०) [तडित्+मतुप्, वत्वम्] बिजली वाला --अवरोहति शैलाग्रं तडित्वानिव तोयदः--विक्रम० १।१४, कि० ५।४, (पुं०) बादल · शि० १।१२ ।

तडिन्मय (वि०) [तडित्+मयट्] बिजली से युक्त--कु० ५।२५ ।

तण्ड् (भ्वा० आ० --तण्डते, तण्डित) प्रहार करना ।

तण्डकः [तण्ड्+ण्वुल्] खञ्जन पक्षी ।

तण्डुलः [तण्ड्+उलच्] कूटने, छड़ने और पिछोड़ने के पश्चात् प्राप्त अन्न (विशेषतः चावल) [शस्य, धान्य, तण्डुल और अन्न यह चार प्रकार एक दूसरे से भिन्न हैं--शस्यं क्षेत्रगतं प्रोक्तं सतुपं धान्यमुच्यते, निस्तुषः तण्डुलः प्रोक्तः स्विन्नमन्नमुदाहृतम्]

तत (भू० क० कृ०) [तन्+क्त] फैलाया हुआ, विस्तारित घेरा हुआ-(दे० तन्)-स तमीं तमोभिरभिगम्य तताम् --शि० ९।२३, ६।५०, कि० ५।११,--तम् तारों वाला बाजा ।

ततस् (ततः) [अव्य०--तद्+तसिल्] 1. (उस स्थान या व्यक्ति) से, वहाँ से,--न च निम्नादिव हृदयं निवर्तते मे ततो हृदयम्--श० ३।१, मा० २।१०, मनु० ६।७, १२।८५ 2. वहाँ, उधर 3. तब, तो, उसके बाद--ततः कतिपयदिवसापगमे--का० ११०, अमरु ६६, कि० १।२७, मनु० २।९३, ७।५९ 4. इसलिए, फलतः, इसी कारण 5. तब, उस अवस्था में, तो ('यदि' का सह सम्बन्धी) यदि गृहीतमिदं ततः किम्--का० १२०, अमोच्यमश्वं यदि मन्यसे प्रभो ततः समाप्ते--रघु० ३।६५ 6. उससे परे उससे आगे, और आगे, इसके अतिरिक्त --ततः परतो निर्मानुषमरण्यम्--का० १२१ 7. उससे, उसकी अपेक्षा, उसके अतिरिक्त--यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः--भग० ६।२२, २।३६ 8. कई बार 'तत्' शब्द के सम्प्र० के रूप की भाँति प्रयुक्त होता है--यथा तस्मात्, तस्याः, ततोऽन्यत्रापि दृश्यते--सिद्धा० । यतः ततः (क) जहाँ-वहाँ --यतः कृष्णस्ततः सर्वे यतः कृष्णस्ततो जयः--महा०, मनु० ७।१८८ (ख) क्योंकि--इसलिए यतो यतः --ततस्ततः जहाँ कहीं--वहीं-- यतो यतः षट्चरणोऽभिवर्तते ततस्ततः प्रेरितवामलोचना--श० १।२३, ततः किम् तो फिर क्या, इससे क्या लाभ, क्या काम--प्राप्ताः श्रियः सकलकामदुघास्ततः किम्--भर्तृ० ३।७३, ७४, शा० ४।२, ततस्ततः (क) यहाँ-वहाँ, इधर-उधर--ततो दिव्यानि माल्यानि प्रादुरासंस्ततस्ततः--महा० (ख) 'फिर क्या' 'इसके आगे' 'अच्छा तो फिर' (नाटकों में प्रयुक्त) ततः प्रभृति तब से लेकर ('यतः प्रभृति' का सह सम्बन्धी)--तृष्णा ततः प्रभृति मे त्रिगुणत्वमेति --अमरु ६८, मनु० ९।६८ ।

ततस्त्य (वि०) [ततस्+त्यप्] वहाँ से आने वाला, वहाँ से चलने वाला--कि० १।२७ ।

तति (सर्व० वि०) (नित्य बहुवचनांत, कर्तृ० कर्म० तति) [तत्+डति] इतने अधिक, उदा०—तति पुरुषाः सन्ति —आदि,—**तिः** (स्त्री०—तन्+क्तिन्] 1. श्रेणी, पंक्ति, रेखा—विस्रब्धं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले—श० २।५, बलाहकततीः शि० ४।५४, १।५ 2. गण, दल, समूह 3. यज्ञकृत्य।

तत्त्वम् [तन्+क्विप्, तुक्, पृषो० तत्+त्व] (कभी कभी 'तत्वम्' भी लिखा जाता है) 1. वास्तविक स्थिति या दशा 2. तथ्य,—वयं तत्त्वान्वेषान्मधुकर हतास्त्वं खलु कृती —श० १।२४ 3. यथार्थ या मूल प्रकृति—संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्—भग० १८।१, ३।२८, मनु० १।३, ३।९६, ५।४२ 4. मानव आत्मा की वास्तविक प्रकृति या विश्वव्यापी परमात्मा के समनुरूप विराट् सृष्टि या भौतिक संसार 5. प्रथम या यथार्थ सिद्धांत 6. मूलतत्त्व या प्रकृति 7. मन 8. सूर्य 9. वाद्य का भेद विशेष, विलंबित 10. एक प्रकार का नृत्य। सम०—**अभियोगः** असन्दिग्ध दोषारोप या घोषणा, —**अर्थः** सचाई, वास्तविकता, यथार्थता, वास्तविक प्रकृति,—**ज्ञ**,—**विद्** (वि०) दार्शनिक, ब्रह्मज्ञान का वेत्ता,—**न्यासः** विष्णु की तंत्रोक्त पूजा में विहित एक अंगन्यास (इसमें शरीर के विभिन्न अंगों पर गुह्य अक्षर या अन्य चिन्ह बनाने के साथ कुछ प्रार्थनाएँ बोली जाती हैं)

तत्त्वतः (अव्य०) [तत्त्व+तस्] वस्तुतः, सचमुच, ठीक ठीक—तत्त्वत एनामुपलप्स्ये—श० १, मनु० ७।१०।

तत्र (अव्य०) [तत्+त्रल्] 1. उस स्थान पर, वहाँ, सामने, उस ओर 2. उस अवसर पर, उन परिस्थितियों में, तब, उस अवस्था में 3. उसके लिए, इसमें —निरीतयः यन्मदीयाः प्रजास्तत्र हेतुस्त्वद् ब्रह्मवर्चसम्- रघु० १।६३ 4. प्रायः 'तद्' के अधि० के रूप के अर्थ में प्रयुक्त—मनु० २।११२, ३।६०, ४।१८६, याज्ञ० १।२६३, **तत्रापि** 'तब भी' 'तो भी' (यद्यपि का सहसंबंधी) **तत्र तत्र** 'बहुत से स्थानों पर या विभिन्न विषयों में' 'यहाँ-वहाँ' 'प्रत्येक स्थान पर' - अध्यक्षान्विविधान्कुर्यात् तत्र तत्र विपश्चितः—मनु० ७।८१। सम०—**भवत्** (वि०) (स्त्री०—**ती**) श्रीमान्, महोदय, श्रद्धेय, आदरणीय, महानुभाव, (सम्मानपूर्ण उपाधि जो नाटकों में उन व्यक्तियों को दी जाती हैं जो वक्ता के समीप उपस्थित न हों)—पूज्ये तत्रभवानत्रभवांश्च भगवानपि; आदिष्टोऽस्मि तत्रभवता काश्यपेन—श० ४, तत्रभवान् काश्यपः श० १, आदि,—**स्थ** (वि०) उस स्थान पर खड़ा हुआ या वर्तमान, उस स्थान से संबद्ध।

तत्रत्य (वि०) [तत्र+त्यप्] वहाँ उत्पन्न या जन्मा हुआ, उस स्थान से संबद्ध।

तथा (अव्य०) [तद् प्रकारे थाल् विभक्तित्वात्] 1. वैसे, इस प्रकार, उस रीति से—तथा मां वञ्चयित्वा—श० ५, सूतस्तथा करोति—विक्रम० १ 2. और भी, इस प्रकार भी, भी—अनागत विधाता च प्रत्युत्पन्नमतिस्तथा—पंच० १।३१५, रघु० ३।२१ 3. सच, ठीक इसी प्रकार, सचमुच वैसा ही—यदात्थ राजन्यकुमार तत्तथा—रघु० ३।४८, मनु० १।४२ 4. (अनुरोध के रूप में) ऐसा निश्चित जैसा कि ('यथा' को पहले रख कर) दे० यथा ('यथा' के सहसंबंधी के रूप में 'तथा' के कुछ अर्थों के लिए 'यथा' के नी० दे०) **तथापि** (प्रायः 'यद्यपि' का सहसंबंधी) 'तो भी' 'तब भी' 'फिर भी' 'तिस पर भी'—प्रथितं दुष्यन्तस्य चरितं तथापीदं न लक्षये—श० ५, वरं महत्याम्रियते पिपासया तथापि नान्यस्य करोत्युपासनाम्—चात० २।६, वपुःप्रकर्षादजयद्गुरुं रघुस्तथापि नीचैर्विनयाददृश्यत—रघु० ३।३४, ६२, **तथेति** 'सहमति', 'प्रतिज्ञा' को प्रकट करता है,—तथेति शेषामिव भर्तुराज्ञामादाय मूर्ध्ना मदनः प्रतस्थे—कु० ३।२२, रघु० १।९२, ३।६७, तथेति निष्क्रान्तः (नाटकों में) **तथैव** 'उसी प्रकार' 'ठीक उसी भाँति' **तथैव च** 'उसी ढंग से' **तथाच** 'और इसी प्रकार', 'इसी ढंग से', 'इसी प्रकार कहा गया है कि' **तथाहि** 'इसी लिए' 'उदाहरणार्थ', इसी कारण (यह कहा गया है कि)—तं वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना, तथाहि सर्वे तस्यासन् परार्थैकफला गुणाः—रघु० १।२९, श० १।३१। सम०—**कृत** (वि०) इस प्रकार किया गया,—**गत** (वि०) 1. ऐसी स्थिति या दशा में होने वाला—तथागतायां परिहासपूर्वम्—रघु० ६।८२ 2. इस गुण का, (**तः**) 1. बुद्ध —काले मितं वाक्यमुदर्कपथ्यं तथागतस्येव जनः सुचेताः —शि० २०।८१ 2. जिन,—**गुण** (वि०) 1. ऐसे गुणों से युक्त या संपन्न 2. ऐसी अवस्था को प्राप्त, ऐसी अवस्था में—तथाभूतां दृष्ट्वा नृपसदसि पाञ्चालतनयाम्—वेणी० १।११,—**राजः** बुद्ध का विशेषण,—**रूप**, —**रूपिन्** (वि०) इस आकार प्रकार का, इस प्रकार दिखाई देने वाला,—**विध** (वि०) इस प्रकार का, ऐसे गुणों का, इस स्वभाव का—तथाविधस्तावदशेषमस्तु सः—कु० ५।८२, रघु० ३।४,—**विधम्** (अव्य०) 1. इस प्रकार, इस रीति से 2. इसी भाँति, समान रूप से।

तथात्वम् [तथा+त्व] 1. ऐसी अवस्था, एसा होना 2. वस्तु स्थिति या मूल बात, सचाई।

तथ्य (वि०) [तथा+यत्] यथार्थ, वास्तविक, असली —प्रियमपि तथ्यमाह प्रियंवदा—श० १,—**थ्यम्** सचाई, वास्तविकता,—सा तथ्यमेवाभिहिता भवेन—कु० ३।६३, मनु० ८।२७४।

तद् (सर्व० वि०) [कर्तृ० ए० व०—सः (पुं०), सा (स्त्री०), तत् (नपुं०)] 1. वह, अविद्यमान वस्तु का उल्लेख (तदिति परोक्षे विजानीयात्) 2. वह (प्रायः 'यद्' का सहसम्बन्धी)—यस्य बुद्धिर्बलं तस्य—पंच० १ 3. वह अर्थात् प्रख्यात—सा रम्या नगरी महान्स नृपतिः सामन्तचक्रं च तत्—भर्तृ० ३।३७, कु० ५।७१ 4. वह (किसी देखे हुए या अनुभूतार्थ का उल्लेख) उत्कम्पनी भयपरिस्खलितांशुकान्ता ते लोचने प्रतिदिशं विधुरे क्षिपन्ती—काव्य० ७, भामि० २।५ 5. वही, समरूप, वह, बिल्कुल वही, (प्रायः 'एव' के साथ) —तानीन्द्रियाणि सकलानि तदेव नाम—भर्तृ० २।४०; कभी कभी 'तद्' के रूप उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष के सर्वनामों के साथ प्रयुक्त होते हैं, साथ ही बल देने के लिए निर्देशक तथा सम्बन्धबोधक सर्वनामों के साथ भी (इसका अनुवाद प्रायः 'इसलिए' 'तो' करते हैं)—सोहमिज्याविशुद्धात्मा—रघु० १।६८, (मैं वही व्यक्ति, अतः मैं, मैं अमुक व्यक्ति), स त्वं निवर्तस्व विहाय लज्जाम् २।४०, 'अतः तुम्हें वापिस आ जाना चाहिए'; जब 'तद्' की आवृत्ति की जाय तो इसका अर्थ होता है "कई" 'भिन्न २"—तेषु तेषु स्थानेषु—का० ३६९, भग० ७।२०, मा० १।३६, —तेन—तद् का करण० रूप, क्रिया विशेषण केवल के साथ 'इसलिए' 'इस कारण' 'इस विषय में' 'इसी कारण' अर्थों को प्रकट करता है,—तैन हि यदि ऐसा है तो फिर (अव्य०) 1. वहाँ, उधर 2. तब, उस अवस्था में, उस समय 3. इसी कारण, इसीलिए, फलस्वरूप—तदेहि विमर्दक्षमां भूमिमवतरावः—उत्तर० ५, मेघ० ७।११०, रघु० ३।४६ 4. तब ('यदि' का सहसम्बन्धी) तथापि —यदि महत्कुतूहलं तत्कथयामि—का० १३६, भग० १।४५। सम०—अनन्तरम् (अव्य०) उसके पश्चात् तुरन्त, तो फिर,—अनु (अव्य०) उसके पश्चात्, बाद में—सन्देशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम्—मेघ० १३, रघु० १६।८७, मा० ९।२६,—अन्त (वि०) उसी में नष्ट होने वाला, इस प्रकार समाप्त होने वाला—अर्थ,—अर्थीय (वि०) 1. उसके निमित्त अभिप्रेत 2. उस अर्थ से युक्त,—अर्ह (वि०) उस योग्यता से युक्त,—अवधि (अव्य०) 1. वहाँ तक, उस समय तक, तब तक - तदवधि कुशली पुराणशास्त्रस्मृति शतचारुविचारजो विवेकः—भामि० २।१४ 2. उस समय से लेकर, तब से—श्वासो दीर्घस्तदवधि मुखे पाण्डिमा—भामि० २।६९,—एकचित्त (वि०) उस पर ही मन को स्थिर करने वाला,—कालः विद्यमान क्षण, वर्तमान समय, °धी (वि०) समाहित, प्रत्युत्पन्नमति, —कालम् (अव्य०) अविलम्ब, तुरन्त,—क्षणः 1. इस क्षण, फ़िलहाल 2. विद्यमान या वर्तमान समय—रघु० १।५१,—क्षणम्,—क्षणात् (अव्य०) तुरन्त, प्रत्यक्षतः, फ़ौरन—रघु० ३।१४, शि० ९।५, याज्ञ० २।१४, अमरु ८३,—क्रिया (वि०) बिना मजदूरी के काम करने वाला,—गत (वि०) उस ओर गया हुआ या निर्देशित, तुला हुआ, उसका भक्त, तत्सम्बन्धी,—गुणः एक अलंकार(अलं०)—स्वमुत्सृज्य गुणं योगादत्युज्ज्वल-गुणस्य यत्, वस्तु तद्गुणतामेति भण्यते स तु तद्गुणः —काव्य० १०, दे० चन्द्रा० ५।१४१,—ज (वि०) व्यवधानशून्य, तात्कालिक,—ज्ञः जानने वाला, प्रतिभाशाली, बुद्धिमान्, दार्शनिक,—तृतीय (वि०) उसी कार्य को तीसरी बार करने वाला,—धन (वि०) कंजूस, दरिद्र,—पर (वि०) 1. उसका अनुसरण करने वाला, पश्चवर्ती, घटिया 2. उसी को सर्वोत्तम पदार्थ मानने वाला, बिल्कुल तुला हुआ, नितान्त संलग्न, उत्सुकतापूर्वक व्यस्त (प्रायः समास में प्रयोग) —सम्राट् समाराधनतत्परोऽभूत्—रघु० २।५, १।६६, मेघ० १०, याज्ञ० १।८३, मनु० ३।२६२,—परायण (वि०) पूर्णतः संलग्न या आसक्त,—पुरुषः 1. मूल पुरुष, परमात्मा 2. एक समास का नाम जिसमें प्रथम पद प्रधान होता है, या जिसका उत्तरपद पूर्वपद द्वारा परिभाषित या विशिष्ट कर दिया जाता है, शब्द की मूल भावना भी स्थिर रहती है—यथा, तत्पुरुषः, तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः—उद्भट,—पूर्व (वि०) पहली बार घटने वाला, या होने वाला, —अकारि तत्पूर्वनिबद्धया तया—कु० ५।१०, ७।३०, रघु० २।४२, १४।३८ 2. पूर्व का, पहला,—प्रथम (वि०) पहली बार ही उस कार्य को करने वाला, —बलः एक प्रकार का बाण,—भावः उसके अनुरूप, —मात्रम् 1. केवल वह, सिर्फ़ मामूली, अत्यन्त तुच्छ मात्रा युक्त 2. (दर्शन०) सूक्ष्म तथा मूलतत्त्व (उदा० शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गन्ध),—वाचक (वि०) उसी को संकेतित या प्रकट करने वाला,—विद् (वि०) 1. उसको जानने वाला 2. सचाई को जानने वाला, —विध (वि०) उस प्रकार का,—रघु० २।२२, कु० ५।७३, मनु० २।११२,—हित (वि०) उसके लिए अच्छा, (तः) एक प्रत्यय जो प्रातिपदिक शब्दों के आगे व्युत्पन्न शब्द बनाने के लिए लगाया जाता है।

तदा (अव्य०) [तस्मिन् काले तद्+दा] 1. तब, उस समय 2. फिर, उस मामले में ('यदा' का सहसंबंधी) भग० २।५२, ५३, मेघ० १।५२, ५४-५६, यदा यदा —तदा तदा 'जब कभी' तदा प्रभृति तब से, उस समय से लेकर—कु० १।५३। सम०—मुख (वि०) आरब्ध, उपक्रांत या शुरू किया हुआ, (खम्) आरम्भ।

तदात्वम् [तदा+त्व] मौजूदा समय, वर्तमान काल।

तदानीम् (अव्य०) [तद्+दानीम्] तब, उस समय।

तदानीन्तन (वि०) [तदानीम्+टयुल्, तुट्] उस समय से संबंध रखने वाला, उस समय का समकालीन,—एषो- ऽस्मि कार्यवशादायोध्यिकस्तदानीन्तनश्च संवृत्तः— उत्तर० १ ।

तदीय (वि०) [तद्+छ] उससे संबंध रखने वाला, उसका, उसकी, उनके, उनकी—रघु० १।८१, २।२८, ३।८, २५ ।

तद्वत् (वि०) [तद्+मतुप्] उससे युक्त, उसको रखने वाला, जैसा कि 'तद्वानपोहः' में—काव्य० २, (अव्य०) 1. उसके समान, उस रीति से 2. समान रूप से, समान रीति से, इसलिए साथ ही ।

तन् i (तना० उभ०—तनोति, तनुते, तत—क० वा० —तन्यते, तायते, सन्नन्त—तितंसति, तितांसति, तितनि- षति) 1. फैलाना, विस्तार करना, लंबा करना, तानना —बाह्वोः सकरयोस्ततयोः—अमर० 2. फैलाना, बिछाना, पसारना –भट्टि० २।३०, १०।३२, १५।९१ 3. ढकना, भरना—स तमीं तमोभिरभिगम्य तताम् —शि० ९।२३, कि० ५।११ 4. उत्पन्न करना, पैदा करना, रूप देना, देना, भेंट देना, प्रदान करना, त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानिधिरपि तनुते तनुदाहम् —गीत० ४, पितुर्मुदं तेन ततान सोऽर्भकः—रघु० ३।२५, ७।७, यो दुर्जनं वशयितुं तनुते मनीषां—भामि० १।९५, १० 5. अनुष्ठान करना, पूरा करना, संपन्न करना—(यज्ञादिक)—इति क्षितीशो नवतिं नवाधिकां महाक्रतूनां महनीयशासनः, समारुरुक्षुर्दिवमायुषः क्षये ततान सोपान परंपरामिव—रघु० ३।६९, मनु० ४।२०५ 6. रचना, करना, (ग्रन्थादिक) लिखना, यथा—नाम्नां मालां तनोम्यहं, या—तनुते टीकाम् 7. फैलाना, झुकाना (धनुष आदि का) 8. कातना, बुनना 9. प्रचार करना, प्रचारित होना 10 चालू रहना, टिका रहना। सम०—**अव**—,1. ढकना, फैलाना 2. उतरना **आ**—,विस्तृत करना, बिछाना, ढकना, ऊपर फैलाना—कि० १६।१५ 2. फैलाना, पसारना 3. उत्पन्न करना, पैदा करना, सृजन करना, बनाना —कि० ६।१८ 4. (धनुष या धनुष की डोरी) तानना —मौर्वी धनुषि चातता—रघु० १।१९, ११।४५, **उद्**—,फैलाना **प्र**—,1. फैलाना, पसारना—ख्यातस्त्वं विभवैर्यशांसि कवयो दिक्षु प्रतन्वन्ति नः—भर्तृ० ३।२४ 2. ढकना 3. उत्पन्न करना, पैदा करना, सृजन करना दिखावा करना, प्रदर्शन करना, प्रस्तुत करना—तदूरी- कृत्य कृतिभिर्वाचस्पत्यं प्रतायते—शि० २।३० 5. अनु- ष्ठान करना (यज्ञादिक का), **वि**—,1. फैलाना, बिछाना —स्फुरितविततजिह्वः—मृच्छ० ९।१२ 2. ढकना, भरना—प्रस्वेदबिन्दुविततं वदनं प्रियायाः चौर० ९, यो वितत्य स्थितः खम्—मेघ० ५८ 3. रूप देना, बनाना श्रेणीबन्धाद्वितन्वद्भिरस्तम्भां तोरणस्रजम्—रघु० १।४१ 4. (धनुष का) तानना—धनुर्वितत्य किरतोः शरान् —उत्तर० ६।१, भट्टि० ३।४७ 5. उत्पन्न करना, पैदा करना, सृजन करना, देना, प्रदान करना 6. (ग्रंथ का) रचना या लिखना—विराटपर्वप्रद्योती भावदीपो वितन्यते 7. करना, अनुष्ठान करना (यज्ञादिक या किसी संस्कार का) कु० २।४६ 8. दिखावा करना, प्रस्तुत करना, **सम्**—,चालू करना, ii (भ्वा० पर० —चुरा० उभ०—तनति, तानयति—ते) 1. भरोसा करना, विश्वास करना, विश्वास रखना 2. सहायता करना, हाथ बँटाना, मदद करना 3. पीडित करना, रोगग्रस्त करना 4. हानिशून्य होना ।

तनयः [तनोति विस्तारयति कुलम्—तन्+कयन्] 1. पुत्र 2. सन्तान—लड़का या पुत्री; गिरि°, कलिंग° आदि ।

तनिमन् (पुं०) [तनु+इमनिच्] पतलापन, सुकुमारता, सूक्ष्मता ।

तनु (वि०) (स्त्री० —नु, न्वी) [तन्+उ] 1. पतला, दुबला, कृश 2. सुकुमार, नाजुक, मृदु (अङ्गादिक, सौन्दर्य के चिह्नस्वरूप—रघु० ६।३२, तु० तन्वङ्गी 3. बढ़िया, कोमल (वस्त्रादिक) ऋतु० १।७ 4. छोटा, थोड़ा, नन्हा, कम, कुछ, सीमित—तनुवाग्विभवोऽपि सन्—रघु० १।९, ३।२, तनुत्यागो बहुग्रहः—हि० २।९१, थोड़ा देने वाला 5. तुच्छ, महत्त्वहीन, छोटा —अमरु २७ 6. (नदी की भांति) उथला हुआ, (स्त्री०) 1. शरीर, व्यक्ति 2. (बाहरी) रूप, प्रकटी- करण—प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टा- भिरीशः—श० १।१, मालवि० १।१, मेघ० १९ 3. प्रकृति, किसी वस्तु का रूप और चरित्र 4. खाल । सम०—**अङ्ग** (वि०) सुकुमार अङ्ग वाला, कोमलांगी (—गी) कोमलाङ्गिनी स्त्री,—**कूपः** रोमकूप,—**छदः** कवच, रघु० ९।५१, १२।८६,—**जः** पुत्र,—**जा** पुत्री,—**त्यज** (वि०) 1. अपने जीवन को जोखिम में डालने वाला 2. अपने व्यक्तित्व को छोड़ने वाला, मरने वाला, —**त्याग** (वि०) थोड़ा व्यय करने वाला, बचा देने वाला, दरिद्र,—**त्रम्**,—**त्राणम्** कवच,—**भवः** पुत्र (वा) पुत्री—**भस्त्रा**—नाक—**भृत्** (पुं०) शरीरधारी जीव, जीवधारी जन्तु, विशेष कर मनुष्य—कल्पं स्थितं तनु- भृतां तनुभिस्ततः किम्—भर्तृ० ३।७३,—**मध्य**(वि०) पतली कमर, कमर वाला,—**रसः** पसीना,—**रुह्**,—**रुहम्** शरीर का बाल,—**वारम्** कवच,—**व्रणः** फुन्सी,—**सञ्चा- रिणी** छोटी स्त्री, या दस वर्ष का लड़का,—**सरः**, पसीना,—**ह्रदः** गुदा, मलद्वार ।

तनुल (वि०) [तन्+डलच्] फैलाया हुआ, विस्तारित ।

तनुस् (नपुं०) [तन्+उसि] शरीर ।

तनू (स्त्री०) [तन्+ऊ] शरीर । सम०—**उद्भवः**,—**जः** पुत्र,—**उद्भवा**—**जा** पुत्री,—**नपम्** घी,—**नपात्** (पुं०)

आग—तनूनपाद्धूमवितानमाधिजैः—शि० १।६२, अधः-कृतस्यापि तनूनपातो नाधः शिखा याति कदाचिदेव —हि० २।६७,—सहम् 1. शर पर उगे हुए बाल (पुं० भी) 2. पक्षी के पंख, बाजू (हः) पुत्र ।

तन्तिः (स्त्री०) [तन्+क्तिच्] 1. रस्सी, डोर, सूत्र 2. पंक्ति, श्रेणी । सम०—पालः 1. गोरक्षक 2. विराट के घर रहते समय का सहदेव का नाम ।

तन्तुः [तन्+तुन्] 1. धागा, रस्सी, तार, डोर, सूत्र—चिन्ता सन्ततितन्तु—मा० ५।१०, मेघ० ७० 2. मकड़ी का जाला--रघु० १६।२० 3. रेशा—बिसतन्तुगुणस्य कारितम्—कु० ४।२९ 4. सन्तान, बच्चा, सन्तति 5. मगरमच्छ 6. परमात्मा । सम०—काष्ठम् जुलाहों का एक औजार जिससे ताना साफ़ किया जाता है —कीटः रेशम का कीड़ा,—नागः बड़ा मगरमच्छ, —निर्यासः ताड का वृक्ष,— नाभः मकड़ी,–भः 1. सरसों 2. बछड़ा,—वाद्यम् ऐसा बाजा जिसमें तार कसे हुए हों,—वानम् बुनना,—वापः 1. जुलाहा 2. करघा 3. बुनाई,—निग्रहा केले का वृक्ष,—शाला जुलाहे का कारखाना,— सन्तत (वि०) बुना हुआ, सिला हुआ, —सारः सुपारी का पेड़ ।

तन्तुकः [तन्तु+कन्] सरसों के दाने ।

तन्तुनः,–णः [तन्+तुनन्, पक्षे नि० णत्वम्] घड़ियाल ।

तन्तुरम्,–लम् [तन्तु+र, लच् वा] मृणाल, कमल की नाल ।

तन्त्र् (चुरा० उभ०—तन्त्रयति–ते, तन्त्रित) 1. हकूमत करना, नियन्त्रण रखना, प्रशासन करना—प्रजाः प्रजाः स्वा इव तन्त्रयित्वा—श० ५।५ 2. (आ०) पालन-पोषण करना, निर्वाह करना ।

तन्त्रम् [तन्त्र्+अच्] 1. करघा 2. धागा 3. ताना 4. वंशज 5. अविच्छिन्न वंश परम्परा 6. कर्मकाण्ड पद्धति, रूप-रेखा, संस्कार—कर्मणां युगपद्भावस्तन्त्रम्—कात्या० 7. मुख्य विषय 8. मुख्य सिद्धान्त, नियम, वाद, शास्त्र –जितमनसिजतन्त्रविचारम्–गीत० २ 9. पराधीनता, पराश्रयता—जैसा कि 'स्वतन्त्र' 'परतन्त्र'; दैवतन्त्रं दुःखम्—दश० ५ 10. वैज्ञानिक कृति 11. अध्याय, अनुभाग (किसी ग्रन्थादिक के)—तन्त्रैः पञ्चभिरेतच्च-कार शास्त्रम्—पंच० १ 12. तन्त्र-संहिता (जिसमें देवताओं की पूजा के लिए अथवा अतिमानव शक्ति प्राप्त करने के लिए जादू-टोना या मन्त्रतन्त्र का वर्णन है) 13. एक से अधिक कार्यों का कारण 14. जादू-टोना 15. मुख्योपचार, गण्डा, ताबीज़ 16. दवाई, औषधि 17. क़सम, शपथ 18. वेशभूषा, 19. कार्य करने की सही रीति 20. राजकीय परिजन, अनुचर-वर्ग, भृत्यवर्ग 21. राज्य, देश, प्रभुता 22. सरकार, हकूमत, प्रशासन—लोकतन्त्राधिकारः–श० ५ 23. सेना 24. ढेर, जमाव 25. घर 26. सजावट 27. दौलत 28. प्रसन्नता । सम०—काष्ठम्=तन्तुकाष्ठ - वापः, —वापम् 1. बुनाई 2. करघा,—वापः 1. मकड़ी 2. जुलाहा ।

तन्त्रकः [तन्त्र+कन्] नई वेशभूषा (कोरा कपड़ा) ।

तन्त्रणम् [तन्त्र्+ल्युट्] शान्ति बनाये रखना, अनुशासन, व्यवस्था, प्रशासन रखना ।

तन्त्रिः, –न्त्री (स्त्री०) [तन्त्र्+इ, तन्त्रि+ङीप्] 1. डोरी, रस्सी—मनु० ४।३८ 2. धनुष की डोरी 3. वीणा का तार—तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथंचित् —मेघ० ८६ 4. स्नायु तांत 5. पूंछ ।

तन्द्रा [तन्द्+घञ्+टाप्] 1. आलस्य, थकावट, थकान, क्लांति 2. ऊंघ, शैथिल्य—तन्द्रालस्यविवर्जनम्—याज्ञ० ३।१५८, महावी० ७।४२, हि० १।३४ ।

तन्द्रालु (वि०) [तन्द्रा+ आलुच्] 1. थका हुआ, परि-श्रांत 2. निद्रालु, आलसी ।

तन्द्रिः,—न्द्री (स्त्री०) [तंन्द्+क्रिन्, तन्द्रि+ङीष्] निद्रा-लुता, ऊंघ ।

तन्मय (वि०) (स्त्री०—यी) [तत्+मयट्] 1. उसका बना हुआ 2. तल्लीन—मा० १।४१, श० ६।२१ 3. तद्रूप, तदेकरूप ।

तन्वी [तनु+ङीष्] सुकुमार या कोमलांगी स्त्री —इयम-धिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी—श० १।२०, तव तन्वि कुचावेतौ नियतं चक्रवर्तिनौ—उद्भट ।

तप् (भ्वा० पर० (आ० विरल) तपति, तप्त) (अक० प्रयोग) (क) चमकना, (आग या सूर्य की भांति) प्रज्वलित होना—तमस्तपति घर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति —श० ५।१४, रघु० ५।१३, उत्तर० ६।१४, भग० ९।१९ (ख) गर्म होना, उष्ण होना, गर्मी फैलना (ग) पीडा सहन करना—तपति न सा किसलयशय-नेन—गीत० ७ (घ) शरीर को कृश करना, तपस्या करना—अगणिततनूतापं तप्त्वा तपांसि भगीरथः —उत्तर० १।२३ 2. (सक० प्रयोग) (क) गर्म करना, उष्ण करना, तपाना—भट्टि० ९।२ भग० ११।१९ (ख) जलाना, दग्ध करना, जला कर समाप्त कर देना —तपति तनुगात्रि मदनस्त्वामनिशं मां पुनर्दहत्येव—श० ३।१७, अङ्गैरनङ्गतप्तैः—३।७, (ग) चोट पहुँचाना, नुकसान पहुँचाना, खराब करना—यास्यन्सुतस्तप्यति मां समन्युं—भट्टि० १।२३, मनु० ७।६ (घ) पीडा देना, दुःख देना—कर्मवा०—तप्यते, (कुछ लोग इसे दिवा० की धातु मानते हैं) 1. गर्म किया जाना, पीडा सहन करना 2. घोर तपस्या करना, (प्रायः 'तपस्' के साथ)—प्रेर०—तापयति—ते, तापित, 1. गर्म करना, तापना; गगनं तापितपायितासिलक्ष्मी—शि० २०।७५, न हि तापयितुं शक्यं सागराम्भस्तृणोल्कया—हि० १।८६,

2. यंत्रणा देना, पीडित करना, सताना—भृशं तापितः कन्दर्पेण—गीत० ११, भट्टि० ८।१३, अनु,—1. पश्चात्ताप करना, अफसोस करना, खिन्न होना 2. पछताना उद्,—1. तापना, गर्म करना, झुलसाना, (सोना आदि) पिघलाना (जिस समय अक० के रूप में 'चमकना' अर्थ प्रकट करने के लिए यह धातु प्रयुक्त की जाती है, या जब इसका कर्म स्वयं शरीर का ही कोई अंग होता है, तो उस समय 'आत्मनेपद' में प्रयुक्त होती है)—उत्तपति सुवर्णं सुवर्णकारः—महा०, परन्तु उत्तपमान आतपः—भट्टि० ८।१, शि० २०।४०, उत्तपते पाणी—महा० 2. खा पी जाना, यन्त्रणा देना, पीडित करना, तपाना—शि० ९।६७, उप—,1. गर्म करना, तपाना 2. पीडित करना, दुःख देना—शि० ९।६५, निस्,—1. गर्म करना 2. पवित्र करना 3. परिष्कार करना, परि—,1. गर्म करना, जलाना, नष्ट करना 2. प्रज्वलित करना, आग लगाना पश्चात्,—पछताना, खेद प्रकट करना, वि—,1. चमकना ('उद्पूर्वक' की भांति आत्म०)—रविर्वितपतेऽत्यर्थं—भर्तृ० ८।१४ 2. तपाना, गर्म करना, सम्—,1. गर्म करना, तपाना —सन्तप्तचामीकर—भट्टि० ३।३, सन्तप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते—भर्तृ० २।६७ 2. दुःखी होना, पीड़ा सहन करना, खिन्न होना—संतप्तानां त्वमसि शरणम्—मेघ० ७, 'दुःखियों का'—दिवापि मयि निष्क्रान्ते संतप्येते गुरू मम—महा०, भर्तृ० २। ८७ 3. पछताना।

तप (वि०) [तप्+अच्] 1. जलाने वाला, तपाने वाला तपा कर समाप्त करने वाला 2. पीड़ाकर, कष्टकर, दुःखद—पः 1. गर्मी, आग, आंच 2 सूर्य 3. ग्रीष्म ऋतु—शि० १।६६ 4. तपस्या, धार्मिक कड़ी साधना। सम०—**अत्ययः**,—**अन्तः** ग्रीष्म ऋतु का अन्त और वर्षा ऋतु का आरम्भ—रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि युज्यते नदी—कु० ४।४४, ५।२३।

तपती [तप्+शतृ+ङीप्] ताप्ती नदी।

तपनः [तप्+ल्युट्] 1. सूर्य—प्रतापात्तपनो यथा—रघु० ४।१२, ललाटन्तपस्तपति तपनः—उत्तर० ६, मा० १ 2. ग्रीष्मऋतु 3. सूर्यकान्तमणि 4. एक नरक का नाम 5. शिव का विशेषण 6. मदार का पौधा। सम०—**आत्मजः**,—**तनयः** यम, कर्ण और सुग्रीव का विशेषण,—**आत्मजा**,—**तनया**, यमुना और गोदावरी का विशेषण,—**इष्टम्** तांबा,—**उपलः**—**मणिः** सूर्यकान्त मणि,—**छदः** सूर्यमुखी फूल।

तपनी [तपन+ङीप्] गोदावरी नदी या ताप्ती नदी।

तपनीयम् [तप्+अनीयर्] सोना, विशेषतः वह जो आग में तपाया जा चुका है—तपनीयाशोकः—मालवि० ३, तपनीयोपानद्युगलमार्यः प्रसादीकरोतु—महावी० ४, असंस्पृशन्तौ तपनीयपीठम्—रघु० १८।४१।

तपस् (नपुं०) [तप्+असुन्] 1. ताप, गर्मी, आग 2. पीडा कष्ट 3. तपश्चर्या, धार्मिक, कड़ी साधना, आत्मनियन्त्रण—तपः क्लिेदं तदवाप्तिसाधनम्—कु० ५।६४ 4. आत्मदमन, और आत्मोत्सर्ग के अभ्यास से सम्बद्ध ध्यान 5. नैतिक गुण, खूबी 6. किसी विशेष वर्ण का विशेष कर्तव्यपालन 7. सात लोकों में से एक लोक अर्थात् 'जन-लोक' के ऊपर का लोक (—पुं०) माघ का महीना—तपसि मन्दगभस्तिरभीषुमान्—शि० ६।६३, (पुं०, नपुं०) 1. शिशिर ऋतु 2. हेमन्त 3. ग्रीष्म ऋतु। सम०—**अनुभावः** धार्मिक तपश्चर्या का प्रभाव,—**अवटः** ब्रह्मावर्त देश,—**क्लेशः** धार्मिक कड़ी साधना का कष्ट,—**चरणम्**,—**चर्या** कठोर साधना,—**तक्षः** इन्द्र का विशेषण,—**धनः** 'साधना का धनी' तपस्वी, भक्त—रम्यास्तपोधनानां क्रियाः—श० १।१३, शमप्रधानेषु तपोधनेषु—२।६, ४।१, शि० १।२३, रघु० १४।१९ मनु० ११।२४२,—**निधिः** धर्मप्राण व्यक्ति, संन्यासी—रघु० १।५६,—**प्रभावः**,—**बलम्** कड़ी साधनाओं के फलस्वरूप प्राप्त शक्ति, तप द्वारा प्राप्त सामर्थ्य या अमोघता,—**राशिः** संन्यासी,—**लोकः** जनलोक के ऊपर का लोक,—**वनम्** तपोभूमि, पवित्र वन जहां संन्यासी कठोर साधना में लिप्त हो—कृतं त्वयोपवनं तपोवनमिति प्रेक्षे—श० १, रघु० १।९०, २।१८, ३।८,—**वृद्ध** (वि०) जो बहुत तप कर चुका हो,—**विशेषः** भक्ति की श्रेष्ठता, धर्म सम्बन्धी अत्यन्त कठोर साधना,—**स्थली** 1. धार्मिक कठोर साधना की भूमि 2. बनारस।

तपसः [तप्+असच्] 1. सूर्य 2. चन्द्रमा 3. पक्षी।

तपस्यः [तपस्+यत्] 1. फाल्गुन का महीना 2. अर्जुन का विशेषण,—**स्या** धार्मिक कड़ी साधना, तपश्चरण।

तपस्यति (ना० धा० पर०) तपस्या करना—सुरासुरगुरुः सोऽत्र सपत्नीकस्तपस्यति—श० ७।९, १२, रघु० १३।४१, १५।४९, भट्टि० १८।२१।

तपस्विन् (वि०) [तपस्+विनि] 1. तपस्वी, भक्तिनिष्ठ 2. ग़रीब, दयनीय, असहाय, दीन—सा तपस्विनी निर्वृता भवतु—श० ४, मा० ३, नै० १।१३५, (पुं०) संन्यासी—तपस्विसामान्यमवेक्षणीया—रघु० १४।६७। सम०—**पत्रम्** सूर्यमुखी फूल।

तप्त (भू० क० कृ०) [तप्+क्त] 1. गर्म किया हुआ, जला हुआ 2. रक्तोष्ण, गरम 3. पिघला हुआ, गला हुआ 4. दुःखी, पीड़ित, कष्टग्रस्त 5. (तप का) किया गया अनुष्ठान। सम०—**काञ्चनम्** आग में तपाया हुआ सोना,—**कृच्छ्रम्** एक प्रकार की कठोरसाधना,—**रूपकम्** साफ़ की हुई चाँदी।

तम् (दिवा० पर०—ताम्यति, तान्त) 1. दम घुटना, रुद्ध-श्वास होना 2. परिश्रांत होना, थक जाना—ललित-शिरीषपुष्पहननैरपि ताम्यति यत्—मा० ५।३१ 3. (मन या शरीर से) दुःखी होना, बेचैन या पीडित होना, पीड़ा देना, बर्बाद करना—प्रविशति मुहुः कुञ्जं गुञ्जन्मुहुर्बहु ताम्यति—गीत० ५, गाढोत्कण्ठा ललित-लुलितैरङ्गकैस्ताम्यतीति—मा० १।१५, ९।३३, अमरु ७, उद्—, उतावला होना—हृदय किमेवमुत्ताम्यसि श० १।

तमम् [तम्+घ] 1. अन्धकार 2. पैर की नोक,—मः 1. राहु का विशेषण 2. तमाल वृक्ष।

तमस् (नपुं०) [तम्+असुन्] अन्धकार—किं वाऽभविष्य-दरुणस्तमसां विभेत्ता तं चेत्सहस्रकिरणो धुरि नाक-रिष्यत्—श० ७।४, विक्रम० १।७, मेघ० ३७ 2. नरक का अन्धकार—मनु० ४।२४२ 3. मानसिक अन्धेरा, भ्रम, भ्रांति—मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना मम च मुक्तमिदं तमसा मनः—श० ६।६ 4. (सां० द० में) अन्धकार या अज्ञान, प्रकृति के संघटक ३ गुणों में से एक (दूसरे दो हैं—सत्त्व, रजस्)—कु० ६।६१, मनु० १२।२४ 5. रंज, शोक 6. पाप (पुं० नपुं०) राहु का विशेषण। सम०—अपह (वि०) अज्ञान या अन्धकार को दूर करने वाला, ज्ञान देने वाला, प्रकाशित करने वाला—कि० ५।२२, (हः) 1. सूर्य 2. चन्द्रमा 3. आग,—काण्डः,—ण्डम् घोर अन्धकार—गुणः दे० 'तमस्' ऊपर(४),—घ्नः 1 सूर्य 2. चाँद 3. आग 4. विष्णु 5. शिव 6. ज्ञान 7. बुद्धदेव—ज्योतिस् (पुं०) जुगनू,—ततिः व्यापक अन्धकार,—नुद् (पुं०) 1. उज्ज्वल शरीर 2. सूर्य 3. चाँद 4. आग 5. लैम्प, प्रकाश,—नुदः 1. सूर्य 2. चन्द्रमा—भिद्,—मणिः जुगनू,—विकारः रोग, बीमारी—हन्,—हर (वि०) अन्धकार को दूर करने वाला (पुं०) 1. सूर्य 2. चन्द्रमा।

तमसः [तन्+असच्] 1. अंधकार 2. कूआँ।

तमस्विनी, तमा [तमस्+विनि+ङीप्, तम+टाप्] रात।

तमालः [तम्+कालन्] 1. एक वृक्ष का नाम (इसकी छाल काली होती है)—तरुणतमालनीलबहलोन्नमद-म्बुधराः—मा० ९।१९, रघु० १३।१५, ४९, गीत० ११ 2. मस्तक पर चन्दन का सांप्रदायिक तिलक (चिह्न) 3. तलवार, खड्ग। सम०—पत्रम् 1. मस्तक पर सांप्रदायिक चिह्न 2. तमाल का पत्ता।

तमिः,—मी (स्त्री) [तम्+इन्, तमि+ङीप्] 1. रात—विशेषकर, काली अंधियारी रात—स तमीं तमोभि-रभिगम्य तताम्—शि० ९।२३ 2. मूर्छा, बेहोशी 3. हल्दी।

तमिस्र (वि०) [तमिस्रा+अच्] काला,—स्रम् 1. अंध-कार,—एतत्तमालदलनीलतमं तमिस्रम्—गीत० ११, करचरणोरसि मणिगणभूषणकिरणविभिन्नतमिस्रम्—२, कि० ५।२ 2. मानसिक अंधकार (अज्ञान) भ्रम 3. क्रोध, कोप। सम०—पक्षः कृष्णपक्ष (चांद्र-मास का) रघु० ६।३४।

तमिस्रा [तमिस्र+टाप्] 1. (अंधियारी) रात—सूर्ये तप-त्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा—रघु० ५।१३, शि० ६।४३ 2. व्यापक अंधकार।

तमोमयः [तमस्+मयट्] राहु।

तम्पा, तम्पिका [तम्पति गच्छति—तम्प्+अच्+टाप्, तम्प्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] गाय, गौ।

तय् (भ्वा० आ०—तयते) 1. जाना, हिलना-जुलना—अभ्यु-वास रथं तेये पुरात्—भट्टि० १४।७५, १०८ 2. रख-वाली करना, रक्षा करना।

तरः [तॄ+अप्] 1. पार जाना, पार करना, मार्ग—भट्टि० ७।५५ 2. भाड़ा—दीर्घाध्वनि यथादेशं यथाकालं तरो भवेत्—मनु० ८।४०६ 3. सड़क 4. घाटवाली नाव। सम०—पण्यम् नाव का भाड़ा,—स्थानम् घाट, वह स्थान जहाँ नाव आकर ठहरती है।

तरक्षः, तरक्षुः [तरं बलं मार्गं वा क्षिणोति—तर+क्षि+डु, पक्षे पृषो० उलोपः] बिज्जू, लकड़बग्घा।

तरङ्गः [तॄ+अङ्गच्] 1. लहर—उत्तर० ३।४७, भर्तृ० १।८१, रघु० १३।६३, श० ३।७ 2. किसी ग्रन्थ का अध्याय या अनुभाग (जैसे कथासरित्सागर का) 3. कूद, छलांग, सरपट चौकड़ी, (घोड़े आदि की) छलांग लगाने की क्रिया 4. कपड़ा, वस्त्र।

तरङ्गिणी [तरङ्ग+इनि+ङीप्] नदी।

तरङ्गित (वि०) [तरङ्ग+इतच्] 1. लहराता हुआ, लहरों के साथ उछलने वाला 2. छलकता हुआ 3. थरथराता हुआ,—तम् कंपायमान—अपाङ्गतरङ्गितानि बाणाः—गीत० ३।

तरणः [तॄ+ल्युट्] 1. नाव, बेड़ा 2. स्वर्ग,—णम् 1. पार करना 2. जीतना, पराजित करना 3. चप्पू, डांड।

तरणिः [तॄ+अनि] 1. सूर्य 2. प्रकाश-किरण,—णिः,—णी (स्त्री०) बेड़ा, घड़नई, नाव। सम०—रत्नम् लाल।

तरण्डः,—ण्डम् [तॄ+अण्डच्] 1. सामान्य नाव 2. घड़नई (जो उलटे हुए कद्दू या घड़ों को बांसों से बांध कर बनाई जाती है) 3. चप्पू या डांड। सम०—पादा एक प्रकार की नाव।

तरण्डी, तरदः, तरन्ती (स्त्री०) [तरण्ड+ङीष्, तॄ+अदि, तरन्त+ङीष्] नाव, बेड़ा, घड़नई।

तरन्तः [तॄ+झच्] 1. समुद्र 2. प्रचण्ड बौछार 3. मेंढक 4. राक्षस।

तरल (वि०) [तॄ+अलच्] 1. कंपमान, लहराता हुआ, हिलता हुआ, थरथराता हुआ—तारापतिस्तरलविद्यु-

दिवाभ्रवृन्दम्—रघु० १३।७६ घन इव तरलबलाके—गीत० ५, शि० १०।४०, श० १।२६ 2. चंचल, अस्थिर, चपल—वैरायितारस्तरलाः स्वयं मत्सरिणः परे—शि० २।११५, अमर २७ 3. शानदार, चमकदार, चटकीला 4. द्रवरूप 5. कामुक, स्वेच्छाचारी, —लः 1. हार की मध्यवर्ती मणि—मुक्तामयोऽप्यतरलमध्यः—वासव० ३५, हारांस्तारांस्तरलगुटिकान् (मल्लिनाथ के मतानुसार यह मेघदूत का प्रक्षेपक है) 2. हार 3. समतल सतह 4. तली, गहराई 5. हीरा 6. लोहा, —ला मांड ।

तरलयति (ना० धा० पर०) कंपन उत्पन्न करना, लहराना, इधर-उधर हिलना-जुलना—अमरु ८७ ।

तरलायते (ना० धा० आ०) कांपना, हिलना, इधर-उधर चलना-फिरना ।

तरलायितः [तरल+क्यच्+क्त] बड़ी लहर, कल्लोल ।

तरलित (वि०) [तरल+इतच्] हिलता हुआ, थरथराता हुआ, आंदोलित होता हुआ—°तुङ्गतरङ्ग—गीत० ११, °हारा ७ ।

तरवारिः [तरं समागत विपक्षबलं वारयति—तर+वृ+णिच्+इन्] तलवार ।

तरस् (नपुं०) [तृ+असुन्] 1. चाल, वेग 2. वीर्य, शक्ति, ऊर्जा—कैलाशनाथं तरसा जिगीषुः—रघु०५।२८, ११।७७, शि० ९।७२ 3. तट, पार करने का स्थान 4. घड़नई, बेड़ा ।

तरसम् [तृ+असच्] आमिष, मांस ।

तरसानः [तृ+आनच् , सुट्] नाव ।

तरस्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) 1. तेज, फुर्तीला 2. मजबूत, शक्तिशाली, साहसी, ताक़तवर—रघु० ९।२३, ११।८९, १६।७७, (पुं०) हलकारा, आशुगामी दूत 2. शूरवीर 3. हवा, वायु 4. गरुड का विशेषण ।

तराधुः, तरालुः [तराय तरणाय अन्धुरिव, तराय अलति प्राप्नोति तर+अल्+उण्] एक बड़ी चपटी तली की नाव ।

तरिः,—री (स्त्री०) [तरति अनया+तृ+इ, तरि+ङीष्] 1. नाव—जीर्णा तरिः सरिदतीवगभीरनीरा—उद्भट, शि० ३।७६ 2. कपड़े रखने का सन्दूक 3. कपड़े का छोर या मगजी (किनारा) 1. सम०—रथः चप्पू, डाड ।

तरिकः, तरिकिन् (पुं०) [तर+ठन्, तरिक+इनि] मल्लाह ।

तरिका, तरिणी, तरित्रम्, तरित्री, [तरिक+टाप्, तर+इनि+ङीप्, तृ+ष्ट्रन् तरित्र+ङीप्] नाव किश्ती ।

तरीषः [तृ+ईषण्] 1. बेड़ा, नाव 2. समुद्र 3. सक्षम व्यक्ति 4. स्वर्ग 5. कार्य, धन्धा, व्यवसाय, पेशा ।

तरुः [तृ+उन्] वृक्ष—नवसंरोहणशिथिलस्तरुरिव सुकरः समुद्धर्तुम्—मालवि० १।८ । सम०—खण्डः,—डम्, —षण्डः,—डम् वृक्षों का झुण्ड या समूह,—जीवनम् वृक्ष की जड़,—तलम् वृक्ष के तने के पास का स्थान, वृक्ष की जड़,—नखः कांटा,—मृगः बन्दर,—रागः 1. कली या फूल 2. कोमल अंकुर अंखुवा,—राजः ताल का पेड़,—रुहा पेड़ पर ही उत्पन्न होने वाला पौधा,—विलासिनी नव मल्लिका लता,—शायिन् (पुं०) पक्षी ।

तरुण (वि०) [तृ+उनन्] 1. चढ़ती जवानी वाला, जवान पुरुष युवक 2. (क) बच्चा, नवजात, सुकुमार, कोमल —भर्तृ० ३।४९ (ख) नवोदित, (सूर्य की भांति) जो आकाश में ऊंचा न हो, कु० ३।५४ 3. नूतन, ताज़ा—तरुणं दधि—चाण० ६४, तरुणं सर्षपशाकं नवौदनं पिच्छिलानि च दधीनि, अल्पव्ययेन सुन्दरि ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति । छं० १ 4. ज़िन्दादिल, विशद,—णः युवा पुरुष, जवान—पञ्च ०१।११, भामि० २।६२,—णी युवती या जवान स्त्री—वृद्धस्य तरुणी विषम्—चाण० ९८ । सम०—ज्वरः एक सप्ताह रहने वाला बुखार,—दधि (नपुं०) पाँच दिन का जमाया हुआ दूध,—पीतिका मैनसिल ।

तरुश (वि०) [तरु+श] वृक्षों से भरा हुआ ।

तर्क् (चुरा० उभ०—तर्कयति—ते, तर्कित) 1. कल्पना करना, अटकल करना, शंका करना, विश्वास करना, अन्दाज लगाना, अनुमान करना—त्वं तावत्कतमां तर्कयसि—श० ६, मेघ० ९६ 2. तर्क करना, विचारना, विमर्श करना 3. खयाल करना, मान लेना (द्विकर्मक) 4. सोचना, इरादा कराना, अभिप्राय रखना, विचार में रहना—(पातुं) त्वं चेदच्छस्फटिकविशदं तर्कयेस्तिर्यगम्भः—मेघ० ५३ 5. निश्चय करना, 6. चमकना 7. बोलना, प्र—,1. तर्क करना, विचारविमर्श करना 2. सोचना, विश्वास करना, खयाल करना,कल्पना करना—भट्टि० २।९, वि०—,1. अटकल करना, अन्दाज करना 2. सोचना, कल्पना, विश्वास करना 3. विचार विमर्श करना, तर्क करना ।

तर्कः [तर्क्+अच्] 1. कल्पना, अन्दाज, अटकल—प्रसभस्ते तर्कः, विक्रम० २ 2. तर्कना, अटकलबाज़ी, चर्चा, दुरूह तर्कना—कुतः पुनरस्मिन्नवधारिते आगमार्थे तर्कनिमित्तस्याक्षेपस्यावकाशः, इदानीं तर्कनिमित्त आक्षेपः परिह्रियते—शारी०, तर्कोऽप्रतिष्ठः स्मृतयो विभिन्नाः —महा०, मनु० १२।१०६ 3. सन्देह 4. न्याय, तर्कशास्त्र —यत्काव्यं मधुवर्षि धर्षितपरास्तर्केषु यस्योक्तयः—नै० २२।१५५, तर्कशास्त्रम्, तर्क दीपिका 5. (न्याय० में) उपहासास्पद होना, वह परिणाम जो पूर्व कथित तथ्यों

(पक्ष) के विपरीत हो 6. कामना, इच्छा 7. कारण, प्रयोजन । सम०—विद्या न्यायशास्त्र ।

तर्ककः [तर्क्+ण्वुल्] 1. वादी, पूछताछ करने वाला, प्रार्थी 2. तर्कशास्त्री ।

तर्कुः (पुं० स्त्री०) [कृत्+उ नि०] तकवा, लोहे की तकली जिस पर सूत लिपटता जाता है—तर्कुः कर्तनसाधनम् । सम०—पिण्डः —पीठीः चींचली (तकुवे के किनारे पर लिपटा हुआ सूत का गोला ।

तर्क्षुः [=तरक्षुः पृषो०] लकड़बग्घा, बिज्जू ।

तर्क्ष्यः [तृक्ष्+ण्यत्] यवक्षार, जवाखार; शोरा ।

तर्ज् (भ्वा० पर०, चुरा० आ० प्रायः पर० भी)—तर्जति, तर्जयति—ते, तर्जित) 1. धमकाना, घुड़कना, डराना —सखीमङ्गुल्या तर्जयति—श० १, अहितानलिनोद्धूतैस्तर्जयन्निव केतुभिः—रघु० ४।२८, ११।७८, १२।४१, भट्टि० १४।८० 2. झिड़कना, बुरा-भला कहना, निन्दा करना, कलंक लगाना—भट्टि० ६।३, ८।१०१, १७।१०३ 3. खिल्ली उड़ाना, अपहास करना ।

तर्जनम्,—ना [तर्ज्+ल्युट्] 1. धमकाना, डराना 2. निन्दा करना—रघु० १९।१७, कु० ६।४५ ।

तर्जनी [तर्जन+ङीप्] अंगूठे के पास वाली अंगुली ।

तर्णः, तर्णकः [तृण्+अच्, तर्ण+कन्] बछड़ा—शि० १२।४१ ।

तर्णिः [तृ+नि] 1. बेड़ा 2. सूर्य ।

तर्द् (भ्वा० पर० तर्दति) 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2. मार डालना, काट डालना—भट्टि० १४।१०८, 'तृद्' भी दे० ।

तर्पणम् [तृप्+ल्युट्] 1. प्रसन्न करना, तृप्त करना 2. तृप्ति प्रसन्नता 3. (प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले) पाँच यज्ञों में से एक, पितृयज्ञ (दिवंगत पूर्वजों के पितरों के निमित्त जल-तर्पण) 4. समिधा, (यज्ञीय अग्नि के लिए इंधन) । सम०—इच्छुः भीष्म का विशेषण ।

तर्मन् (नपुं०) [तृ+मनिन्] यज्ञीय स्तंभ का शिखर ।

तर्षः [तृष्+घञ्] 1. प्यास 2. कामना, इच्छा 3. समुद्र 4. नाव 5. सूर्य ।

तर्षणम् [तृष्+ल्युट्] प्यास, पिपासा ।

तर्षित, तर्षुल (वि०) [तर्ष+इतच्, तृष्+उलच्] 1. प्यासा 2. अभिलाषी, इच्छुक ।

तर्हि (अव्य०) [तद्+र्हिल्] 1. उस समय, तब 2. उस विषय में, यदा—तर्हि 'जब—तब' यदि—तर्हि 'अगर—तो' कथं—तर्हि 'तो फिर किस प्रकार' ।

तलः,—लम् [तल्+अच्] 1. सतह—भुवस्तलमिव व्योम कुर्वन् व्योमेव भूतलम्—रघु० ४।२९, (कभी कभी अर्थों में बहुत परिवर्तन न कर, समास के अन्त में प्रयोग)—महीतलम् भूमि की सतह अर्थात् पृथ्वी —शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा—श० ७।३२, नभस्तलम् 2. हाथ की हथेली—रघु० ६।१८ 3. पैर का तला 4. बाहु 5. थप्पड़ 6. नीचपन, पद का घटियापन 7. निम्न भाग, नीचे का भाग, आधार, पैर, पेंदी—रेवारोधसि वेतसीतरुतले चेतः समुत्कण्ठते —काव्य० १ 8. (अतः) वृक्ष या किसी दूसरी वस्तु की नीचे की भूमि, किसी भी वस्तु से प्राप्त शरण —फणी मयूरस्य तले निषीदति—ऋतु० १।१३ 9. छिद्र, गढ़ा,—लः 1. तलवार की मूठ 2. तालवृक्ष,—लम् 1. तालाब 2. जङ्गल, वन 3. कारण, मूल, प्रयोजन 4. बायीं बाहु पर पहना जाने वाला चमड़े का फीता (इसी अर्थ में 'तला' भी) । सम०—अङ्गुलिः (स्त्री०) पैर की उंगली,—अतलम् सात अधोलोकों में चौथा, —ईक्षणः सूअर,—उदा नदी,—घातः थप्पड़,—तालः एक प्रकार का वाद्ययन्त्र,—त्रम्,—त्राणम्,—धारणम् धनुर्धर का चमड़े का दस्ताना,—प्रहारः थप्पड़,—सारकम् अधोबन्धन, तङ्ग ।

तलकम् [तल+कन्] बड़ा तालाब ।

तलतः (अव्य०) [तल+तसिल्] पेंदी से ।

तलाची [तल्+अच्+क्विप्+ङीप्] चटाई ।

तलिका [तल्+ठन्] तंग, अधोबन्धन ।

तलितम् [तल्+क्त] तला हुआ मांस ।

तलिन (वि०) [तल्+इनन्] 1. पतला, दुर्बल, कृश 2. थोड़ा कम 3. स्पष्ट, स्वच्छ 4. निम्न भाग में या निचली जगह पर स्थित 5. पृथक्,—नम् बिस्तरा, गद्दीदार लम्बी चौकी ।

तलिमम् [तल+इमन्] 1. फ़र्श लगी हुई भूमि, खड़ंजा 2. बिस्तरा, खटिया, सोफ़ा 3. चंदोवा 4. बड़ी तलवार या चाकू ।

तलुनः [तल्+उनन्] हवा ।

तल्कम् [तल्+कन्] जङ्गल ।

तल्पः,—ल्पम् [तल्+पक्] 1. गद्देदार लम्बी चौकी, बिस्तरा, सोफ़ा—सपदि विगतनिद्रस्तल्पमुज्झांचकार —रघु० ५।७५, 'बिस्तरा छोड़ा' उठा 2. (आलं०) पत्नी (जैसा कि 'गुरुतल्पगः' में) 3. गाड़ी में बैठने का स्थान 4. ऊपर की मञ्जिल, बुर्ज, कंगूरा, अटारी ।

तल्पकः [तल्प+कन्] (नौकर आदि) जिसका कार्य बिस्तरे बिछाने या तैयार करने का है ।

तल्लजः [तत्+लज्+अच्] 1. श्रेष्ठता, सर्वोत्तमता, प्रसन्नता 2. (समास के अन्त में) श्रेष्ठ (इस अर्थ में यह शब्द सदैव पुं० होता है । समास के पूर्व पद का चाहे कोई लिंग हो),—गोतल्लजः श्रेष्ठ गाय, इसी प्रकार 'कुमारी तल्लजः' श्रेष्ठ कन्या ।

तल्लिका [तस्मिन् लीयते—तत्+ली+ड+कन्, इत्वम्] ताली, कुंजी ।

तल्ली [तत् लसति—तत्+लस्+ड+ङीष्] तरुणी, जवान स्त्री ।

तष्ट (वि०) [तक्ष्+क्त] 1. चीरा हुआ, काटा हुआ, तराशा हुआ, खण्ड-खण्ड किया हुआ 2. गढ़ा हुआ, दे० 'तक्ष्' ।

तष्टृ (पुं०) [तक्ष्+तृच्] 1. बढ़ई 2. विश्वकर्मा ।

तस्करः [तद्+कृ+अच्, सुट्, दलोपः] 1. चोर, लुटेरा—मा सञ्चर मनःपान्थ तत्रास्ते स्मरतस्करः—भर्तृ० १।८६, मनु० ४।१३५, ८।६७ 2. (समास के अन्त में), जघन्य, घृणित,—री कामुक स्त्री ।

तस्थु (वि०) [स्था+कु, द्वित्वम्] स्थावर, अचर, स्थिर ।

ताक्षण्यः, ताक्षणः [तक्षन्+ण्य, तक्षन्+अण्] बढ़ई का पुत्र ।

ताच्छीलिकः [तच्छील+ठञ्] विशेष प्रवृत्ति, आदत या रुचि को प्रकट करने वाला प्रत्यय ।

ताटङ्कः [ताड्यते, पृषो०डस्य टः, ताट् अङ्क ब० स०] कान का आभूषण, बड़ी बाली ।

ताटस्थ्यम् [तटस्थ+ष्यञ्] 1. सामीप्य 2. उदासीनता, अनवधानता, पक्षपातशून्यता—दे० 'तटस्थ' ।

ताडः [तड्+घञ्] 1. प्रहार, ठोकर, घूंसा या थप्पड़ 2. कोलाहल 3. पूला, गट्ठर 4. पहाड़ ।

ताडका [तड्+णिच्+ण्वुल्+टाप्] एक राक्षसी, सुकेतु की पुत्री, सुन्द की पत्नी और मारीच की माता [अगस्त्य की समाधि भंग करने के कारण वह राक्षसी बना दी गई । जब उसने विश्वामित्र के यज्ञ में विघ्न डाला तो राम के द्वारा वह मारी गई । राम पहले तो स्त्री के लिए धनुष तानने के विरुद्ध थे, परन्तु ऋषि ने उनकी शंकाओं को दूर कर दिया था] दे० रघु० ११।१४-२० ।

ताडकेयः [ताडका+ढक्] ताडका के पुत्र मारीच राक्षस का विशेषण ।

ताडङ्कः, ताडपत्रम् [तालम् अङ्क्यते लक्ष्यते—अङ्क्+घञ्, लस्य डत्वम्, शक० पररूपम्—तालस्य पत्रमिव —ष० त० लस्य डः] दे० 'ताटङ्क' ।

ताडनम् [तड्+णिच्+ल्युट्] मारना-पीटना, हण्टर लगाना, बेत लगाना,—लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः —चाण० १२, अवतंसोत्पलताडनानि वा—कु० ४।८, श्रृङ्गार० ९,—नी हण्टर ।

तडिः,—डी (स्त्री०) [तड्+णिच्+इन्, ताडि+ङीष्] 1. एक प्रकार का ताड, 2. एक प्रकार का आभूषण ।

ताड्यमान (वि०) [तड्+णिच्+शानच्] पीटा जाता हुआ, प्रहार किया जाता हुआ,—नः (ढोल आदि) वाद्ययन्त्र (जो किसी यष्टिका से बजाया जाय) ।

ताण्डवः,—वम् [तण्डु+अण्] 1. नाच, नृत्य—मदताण्डवोत्सवान्ते—उत्तर० ३।१८ 2. विशेष कर शिव का उन्माद-नृत्य या प्रचण्ड नाच—त्र्यम्बकानन्दि वस्ताण्डवं देवि भूयादभीष्ट्यै च हृष्ट्यै च नः—मा० ५।१३, ११ 3. नृत्यकला 4. एक प्रकार का घास । सम०—प्रियः शिव जी ।

तातः [तनोति विस्तारयति गोत्रादिकम्—तन्+क्त, दीर्घ] 1. पिता,—मृष्यन्तु लवस्य बालिशतां तातपादाः—उत्तर० ६, हा तातेति क्रन्दितमाकर्ण्य विषण्णः—रघु० ९।७५ 2. स्नेह दया या प्रेम को प्रकट करने वाला शब्द (प्रायः अपने से आयु में छोटों के प्रति, विद्यार्थियों के प्रति या बच्चों के प्रति प्रयुक्त),—तात चन्द्रापीड—का०, रक्षसा भक्षितस्तात तव तातो वनान्तरे—महा० 3. सम्मान द्योतक शब्द (जो अपने से बड़े और श्रद्धेय व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है)—हेपिता हि बहवो नरेश्वरास्तेन तात धनुषा धनुर्भृतः—रघु० ११।४० तस्मान्मुच्ये यथा तात संविधातुं तथार्हसि—१।७२। सम०—गु (वि०) पिता के अनुकूल,—(गुः) ताऊ ।

ततनः [तात+नृत्+ड] खंजन पक्षी ।

तातलः [ताप+ला+क पृषो० पस्य तः] 1. एक रोग 2. लोहे का डण्डा, या सलाख 3. पकाना, परिपक्व करना 4. गर्मी ।

तातिः [ताय्+क्तिच्] सन्तान,—तिः (स्त्री०) सातत्य, उत्तराधिकार—जैसा कि 'अरिष्टताति या शिवताति' में ।

तात्कालिक (वि०) (स्त्री०—की) [तत्काल+ठञ्] 1. उसी समय में होने वाला 2. अव्यवहित ।

तात्पर्यम् [तत्पर+ष्यञ्] 1. आशय, अर्थ, अभिप्राय —अत्रेदं तात्पर्यम्—आदि 2. प्रस्तुत योजना का आशय—काव्य० २ 3. उद्देश्य, अभिप्रेत पदार्थ, किसी पदार्थ का उल्लेख प्रयोजन इरादा (अधि० के साथ) —इह यथार्थकथने तात्पर्यम्—पा० २।३।४३, भाष्य 4. वक्ता का आशय (वाक्य में विशेष शब्दों के प्रयोगार्थ)—वक्तुरिच्छा तु तात्पर्यं परिकीर्तितम्—भाषा० ८४, तात्पर्यानुपपत्तितः—८२ ।

तात्त्विक (वि०) [तत्त्व+ठक्] यथार्थ, वास्तविक, परमावश्यक—किं चासीदमृतस्य भेदविगमः साचिस्मिते तात्त्विकः—भामि० २।८१, तात्त्विकः संबंधः—आदि ।

तादात्म्यम् [तदात्मन्+ष्यञ्] प्रकृति की अभिन्नता, समरूपता, एकता—नयनयोस्तादात्म्यमम्भोरुहाम्—भामि० २।८१, भगवत्यात्मनस्तादात्म्यम्—आदि ।

तादृक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) तादृश्, तादृश (वि०) (स्त्री०—शी) वैसा, उस जैसा, उसकी भांति—तादृग्गुणा—मनु० ९।२२, ३२, अमरु० ४६, यादृशस्तादृशः —कोई, जो कोई, सामान्य मनुष्य—उपदेशो न दातव्यो यादृशे तादृशे जने—पंच० १।३९० ।

तानः [तन्+घञ्] 1. धागा, रेशा 2. (संगीत० में)

विलम्बित स्वर प्रधान टेक—यथा तानं विना रागः —भामि० १।११९, तानप्रदायित्वमिवोपगन्तुं—कु० १।८,—नम् 1. विस्तार, प्रसार 2. ज्ञानेन्द्रियों का विषय।

तानवम् [तनु+अण्] पतलापन, छोटापन—हास्यप्रभा तानवमाससाद—विक्रमांक० ११।०६।

तानूरः [तन्+ऊरण] भँवर, जलावर्त।

तान्त (वि०) [तम्+क्त] 1. थका हुआ, निढाल, क्लान्त 2. परेशान, कष्टग्रस्त 3. म्लान, मुर्झाया हुआ—दे० 'तम्'।

तान्तवम् [तन्तु+अण्] 1. कातना, बुनना 2. जाला 3. बुना हुआ कपड़ा।

तान्त्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [तन्त्र+ठक्] किसी शास्त्र या सिद्धान्त में सुविज्ञ 2. तन्त्रों से सम्बद्ध 3. तन्त्रों से प्राप्त शिक्षा,—कः तन्त्र सिद्धान्तों का अनुयायी।

तापः [तप्+घञ्] 1. गर्मी, चमक-दमक—अर्कमयूखतापः —श० ४।१०, मा० २।१३, मनु० १२।७६, कु० ७। ८४ 2. सताना, पीड़ित करना, कष्ट, सन्ताप, वेदना —इतरतापशतानि तवेच्छया वितरितानि सहे चतुराननं—उद्भट, समस्तापः कामं मनसिजनिदाघप्रसरयोः—श० ३।८, भर्तृ० १।१६ 3. खेद, दुःख। सम० —त्रयम् तीन प्रकार के संताप जो मनुष्य को इस संसार में सहन करने पड़ते हैं—अर्थात् आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक,—हर (वि०) शीतलता देने वाला, गर्मी दूर करने वाला।

तापनः [तप्+णिच्+ल्युट्] 1. सूर्य 2. ग्रीष्म ऋतु 3. सूर्यकान्तमणि, कामदेव के बाणों में से एक,—नम् 1. जलाना 2. कष्ट देना 3. ठोकना-पीटना।

तापस (वि०) (स्त्री०—सी) 1. सन्यासी से सम्बद्ध, कड़ी साधना से सम्बन्ध रखने वाला 2. भक्त,—सः (स्त्री० —सी) वानप्रस्थ, भक्त, संन्यासी। सम०—इष्टा अंगूर,—तरुः,—द्रुमः हिंगोट का वृक्ष, इंगुदी।

तापस्यम् [तापस+ष्यञ्] तपस्या।

तापिच्छः [तापिनं छादयति—तापिन्+छद्+ड पृषो०] तमाल का वृक्ष या फूल (नपुं०)—प्रफुल्लतापिच्छनिभैरभीषुभिः—शि० १।२२, व्योम्नस्तापिच्छगुच्छावलिभिरिव तमोवल्लरीभिर्व्रियंते—मा० ५।६, (इसी अर्थ में 'तापिंज' शब्द भी प्रयुक्त होता है)।

तापी [तप्+णिच्+अच्+ङीष्] 1. ताप्ती नदी जो सूरत के निकट समुद्र में गिर जाती है 2. यमुना नदी।

तामः [तम्+घञ्] 1. भय का विषय 2. दोष, कमी, 3. चिन्ता, दुःख 4. इच्छा।

तामरम् [ताम+ए+क] 1. पानी 2. घी।

तामरसम् [तामरे जले सस्ति—सस्+ड] 1. लाल कमल —पंच० १।९४, रघु० ६।३७, ९।१२, ३७, अमरु ७०,८८ 2. सोना, तांबा,—सी कमलों वाला सरोवर।

तामस (वि०) (स्त्री०—सी) [तमोऽस्त्यस्य अण्] 1. काला, अन्धकारग्रस्त, अन्धकार सम्बन्धी, अन्धेरा 2. प्रकृति के तीन गुणों में से एक)—भग० ७।१२, १७।२, मालवि० १।१, मनु० १२।३३-४ 3. अज्ञानी 4. दुर्व्यसनी,—सः 1. दुष्ट, दाहक, दुर्जन 2. सांप 3. उल्लू, —सम् अन्धेरा,—सी 1. रात, कालीरात 2. नींद 3. दुर्गा का विशेषण।

तामसिक (वि०) (स्त्री०-की) [तमस्+ठञ्] 1. काला, अन्धकारयुक्त 2. तम से सम्बन्ध रखने वाला, तम से उत्पन्न या तमोमय।

तामिस्रः [तमिस्रा+अण्] नरक का एक प्रभाग।

ताम्बूलम् [तम्+उलच्, बुक्, दीर्घः] 1. सुपारी 2. पान (जिसमें कत्था चूना लगाकर सुपारी के साथ लोग भोजन के पश्चात् चबाते हैं)—ताम्बूलभृतगल्लोऽयं भल्लं जल्पति मानुषः—काव्य० ७, रागो न स्खलितस्तवाधरपुटे ताम्बूलसंवर्धितः—शृंगार० ७,। सम० —करङ्कः,—पेटिका पानदान,—दः—,धरः—वाहकः पान-दान लेकर अमीरों के पीछे चलने वाला नौकर, —वल्ली पान की बेल रघु० ६।६४।

ताम्बूलिकः [ताम्बूल+ठन्] तमोली, पान बेचने वाला।

ताम्बूली [ताम्बू+ङीप्] पान की बेल—ताम्बूलीनां दलैस्तत्र रचिता पानभूमयः—रघु० ४।४२।

ताम्र (वि०) [तम्+रक्, दीर्घः] तांबे के रङ्ग का, लाल —उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च,—म्रम् तांबा,। सम० अक्षः 1. कौवा 2. कोयल,—अर्धः कांसा,—अश्मन् (पुं०) पद्मरागमणि,—उपजीविन् (पुं०) कसेरा, तांबे की चीज़ बनाकर जीवन-निर्वाह करने वाला,—ओष्ठः (ताम्रोष्ठ या ताम्रौष्ठ) लाल होंठ—कु० १।४४,—कारः कसेरा, तांबे का कार्य करने वाला,—कृमिः इन्द्रवधूटी, एक प्रकार का लाल कीड़ा,—चूडः मुर्गा,—त्रपुजम् पीतल,—द्रुः लाल चन्दन की लकड़ी,—पट्टः,—पत्रम् ताम्रपट्टिका जिस पर प्रायः भूदान के दाता तथा ग्रहीता के नाम खुदे रहते थे —याज्ञ० १।३१९,—पर्णी मलय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम, (कहते हैं कि यह नदी मोतियों के कारण प्रसिद्ध है), रघु० ४।५२,—पल्लवः अशोकवृक्ष,—लिप्तः एक देश का नाम (प्ताः—ब० व०) इस देश की प्रजा या शासक,—वृक्षः चन्दन के वृक्षों का एक भेद।

ताम्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [ताम्र+ठक्] तांबे का बना हुआ ताम्रमय,—कः कसेरा, तांबे का कार्य करने वाला।

ताय् (भ्वा० आ०—तायते, तायितम्) 1. किसी समान

रेखा में प्रगति करना, फैलाना, विस्तार करना 2. रक्षा करना, संरक्षण में रखना,—वि —फैलाना, रचना करना —भट्टि० १६।१०५।

तार (वि०) [तृ+णिच्+अच्] 1. (स्वरादिक) ऊँचा 2. (शब्दादिक) उत्ताल, कर्कश —मा० ५।२० 3. चमकीला, उज्ज्वल, स्पष्ट —हारांस्तारांस्तरलगुटिकाम् (मल्लि० इसको मेघदूत का प्रक्षेपक मानते हैं), उरसि निहितस्तारो हारः—अमरु २८ 4. अच्छा, श्रेष्ठ, सुरस, —रः 1. नदी का किनारा 2. मोती की चमक 3. सुन्दर और बड़ा मोती—हारममलतरतारमुरसिदधतम्—गीत० ११ 4. उच्चस्वर,—रः—रम् 1. तारा या ग्रह 2. कपूर,—रम्। चाँदी 2. आँख की पुतली (पुं० भी माना जाता है)। सम०—**अभ्रः** कपूर,—**अरिः** लोहभस्म,—**पतनम्** तार का गिराना या उल्कापतन, —**पुष्पः** कुन्द या चमेली की बेल,—**वायुः** सायँ सायँ करती हुई या सनसनाती हुई हवा,—**शुद्धिकरम्**—सीसा, —**स्वर** (वि०) ऊँचे स्वर का या उत्ताल ध्वनि का, —**हारः** 1. सुन्दर मोतियों की माला 2. एक चमकीला हार।

तारक (वि०) (स्त्री० —रिका) [तृ+णिच्+ण्वुल्] 1. आगे ले जाने वाला 2. रक्षा करने वाला, बचाकर रखने वाला, बचाने वाला,—**कः** 1. चालक, खिवैया, कर्णधार 2. छुड़ाने वाला, बचाने वाला 3. एक राक्षस जिसे कार्तिकेय ने मार गिराया था (यह वज्रांग और वरांगी का पुत्र था, पारियात्र पहाड़ पर तपस्या करके इसने ब्रह्मदेव को प्रसन्न किया और वरदान मांगा कि मुझे संसार में, ७ दिन के बच्चे को छोड़ कर, और कोई न मार सके। इस वरदान की बदौलत वह देवताओं को सताने लगा। दुःखी होकर देवता ब्रह्मा के पास गये और इस राक्षस को मारने के लिए उनकी सहायता मांगी (दे० कु० २) ब्रह्मा ने उन देवताओं को उत्तर दिया कि केवल शिव का पुत्र ही उन्हें परास्त कर सकता है, उसके पश्चात् कार्तिकेय का जन्म हुआ, और उसने अपने जन्म से सातवें दिन उस राक्षस का काम तमाम कर दिया)।—**कः**, —**कम्** घड़नई, बेड़ा,—**कम्** 1. आँख की पुतली 2. आँख। सम०—**अरिः**—**जित्** (पुं०) कार्तिकेय का विशेषण।

तारका [तारक+टाप्] 1. तारा 2. उल्का, धूमकेतु 3. आँख की पुतली—संदधे दृशमुदग्रतारकाम्—रघु० ११। ६९, चौर० ५, भर्तृ० १।११।

तारकिणी [तारक+इनि+ङीप्] तारों भरी रात, वह रात जिसमें तारे खिले हुए हों।

तारकित (वि०) [तारक+इतच्] तारों वाला, सितारों भरा, ताराजटित।

तारणः [तृ+णिच्+ल्युट्] नाव, घड़नई,—**णम्** 1. पार उतारना 2. बचाना, छुड़ाना, मुक्त करना।

तारणिः,—**णी** (स्त्री०) [तृ+णिच्+अनि, तारणि+ङीप्] घड़नई, बेड़ा।

तारतम्यम् [तरतम+ष्यञ्] 1. क्रमांकन, अनुपात, सापेक्ष महत्त्व, तुलनात्मक मूल्य 2. अन्तर, भेद—निर्धनं निधनमेतयोर्द्वयोस्तारतम्यविधिमुक्तचेतसां, बोधनाय विधिना विनिर्मिता रेफ एव जयवैजयन्तिका—उद्भट।

तारलः [तरल+अण्] कामुक, लम्पट, विषयी।

तारा [तार+टाप्] 1. तारा या ग्रह—हंसश्रेणीषु तारासु —रघु० ४।१९, भर्तृ० १।१५ 2. स्थिर तारा—रघु० ६।२२ 3. आँख की पुतली, आँख का डेला—कान्तामन्तः प्रमोदादभिसरति मदभ्रान्ततारश्चकोरः—मा० ९।३०, विस्मयस्मेरतारैः—१।२८, कु० ३।४७ 4. मोती 5. (क) वानरराज वाली की पत्नी, अंगद की माता, इसने अपने पति को राम और सुग्रीव के साथ युद्ध न करने के लिए बहुत समझाया। राम द्वारा वाली के मारे जाने पर इसने सुग्रीव से विवाह कर लिया (ख) देवगुरु बृहस्पति की पत्नी, एक बार चन्द्रमा इसको उठा कर ले गया और याचना करने पर भी वापिस नहीं किया। घोर युद्ध हुआ, अन्त में ब्रह्मा ने सोम को इस बात के लिए विवश कर दिया कि तारा बृहस्पति को वापिस दे दी जाय। तारा से बुध नामक एक पुत्र का जन्म हुआ। यह बुध ही चन्द्रवंशी राजाओं का पूर्वज कहलाया (ग) राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी तथा रोहितास की माता—इसीको तारामती भी कहते हैं)। सम०—**अधिपः**,—**आपीडः**, —**पतिः** चाँद—रघु० १३।७६, कु० ७।४८, भर्तृ० १।७१, —**पथः** पर्यावरण, वातावरण,—**प्रमाणम्**—नक्षत्रमान नक्षत्रकाल,—**भूषा** रात,—**मण्डलम्** 1. तारालोक, राशिचक्र 2. आँख की पुतली,—**मृगः** मृगशिरा नाम का नक्षत्र।

तारिकम् [तार+ठन्] किराया, भाड़ा।

तारुण्यम् [तरुण+ष्यञ्] 1. युवावस्था, जवानी 2. ताज़गी (आलं०)।

तारेयः [तारा+ढक्] 1. बुधग्रह 2. वालि के पुत्र अंगद का विशेषण।

तार्किकः [तर्क+ठक्] 1. नैयायिक, तार्किक 2. दार्शनिक।

तार्क्ष्यः [तृक्ष+अण्=तार्क्ष+ष्यञ्] 1. गरुड़ का विशेषण —त्रस्तेन तार्क्ष्यात् किल कालियेन—रघु० ६।४९ 2. गरुड़ का बड़ा भाई अरुण 3. गाड़ी 4. घोड़ा 5. साँप 6. पक्षी। सम०—**ध्वजः** विष्णु का विशेषण,—**नायकः** गरुड़ का विशेषण।

तार्तीय (वि०) [तृतीय+अण्] तीसरा।

तार्तीयीक (वि०) [तृतीय+ईकक्] 1. तीसरा—तार्तीयी-

कतया मितोऽयमगमत्तस्य प्रबन्धे—नै० ३।१३६, तार्तीयीकं पुरारेस्तदवतु मदनप्लोषणं लोचनं वः—मा० १, अने० पा० ।

तालः [तल+अण्] 1. ताड का वृक्ष—भर्तृ० २।९०, रघु० १५।२३ 2. ताड का बना हुआ झण्डा 3. तालियाँ बजाना 4. फटफटाना 5. हाथी के कानों का फड़फड़ाना 6. (संगी० में) टेक देना, नियत मात्राओं पर ताली बजाना—करकिसलतालैर्मुग्धया नर्त्यमानम्—उत्तर० ३।१९, मेघ० ७९ 7. कांसे का बना एक वाद्ययन्त्र—रघु० ९।७१ 8. हथेली 9. ताला, कुण्डी 10. तलवार की मूठ,—**लम्** 1. ताड वृक्ष का फल 2. हरताल। सम०—**अङ्कः** 1. बलराम 2. ताड का पत्ता जो लिखने के काम आता है 3. पुस्तक 4. आरा,—**अवचरः** नाचने वाला, नट,—**केतुः** भीष्म का विशेषण,—**क्षीरकम्**,—**गर्भः** ताड का निःस्रवण,—**ध्वजः**—**भृत्** (पुं०) बलराम का विशेषण,—**पत्रम्** 1. ताड का पत्ता जिस पर लिखा जाता है 2. कान का आभूषण विशेष, **बद्ध**—, **शुद्ध** (वि०) तालों के द्वारा मापा गया, लयात्मक, संगीत में मात्राकाल से विनियमित,—**मर्दलः** एक प्रकार का वाद्ययन्त्र, झांझ करताल,—**यन्त्रम्** जर्राह का एक उपकरण,—**रेचनकः** नर्तक, अभिनेता,—**लक्षणः** बलराम का विशेषण,—**वनम्** वृक्षों का समूह,—**वृन्तम्** पंखा—श० ३।२१, कु० २।३५ ।

तालकम् [ताल+कन्] 1. हरताल 2. कुण्डी, चटखनी। सम०—**आभ** (वि०) हरा, (—**भः**) हरा रंग।

तालङ्कः [=ताडंकः] कान का आभूषण विशेष।

तालव्य (वि०) [तालु+यत्] तालु से सम्बन्ध रखनेवाला, तालु स्थानीय। सम०—**वर्णः** तालु स्थानीय अक्षर, अर्थात् इ, ई, च् छ् ज् झ् ञ् और य् तथा श्,—**स्वरः** तालु स्थानीय स्वर—अर्थात् इ ई।

तालिकः [तल+ठक्] 1. खुली हथेली 2. ताली बजाना—यथैकेन न हस्तेन तालिका संप्रपद्यते—पंच० २।१२८, उच्चाटनीयः करतालिकानां दानादिदानीं भवतीभिरेषः—नै० ३।७।

तालितम् [तड्+णिच्+क्त, डस्य+लत्वम्] 1. रंगदार कपड़ा 2. रस्सी, डोरी।

ताली [तल्+णिच्+अच्+ङीप्] 1. पहाड़ी ताड़ का पेड़, ताड़ का वृक्ष 2. ताड़ी 3. सुगंध युक्त मिट्टी 4. एक प्रकार की कुंजी। सम०—**वनम्** ताड़ के वृक्षों का समूह—रघु० ४।३४, ६।५७।

तालु (नपुं०) [तरन्त्यनेन वर्णाः—तृ+उण्, रस्य लः] ऊपर के दांतों और कौवे के बीच का गड्ढा,—तृषा महत्या परिशुष्कतालवः—ऋतु० १।११। सम०—**जिह्वः** मगरमच्छ,—**स्थान** (वि०) तालु स्थानीय—(**नम्**) तालु।

तालुरः [तल्+णिच्+ऊर] जलावर्त, भंवर।

तालूषकम् [तल्+णिच्+ऊषक] तालु।

तावक (वि०) (स्त्री०—**की**) तावकीन (वि०) [युष्मद्+अण्, तवक आदेशः—तवक+खञ्] तेरा, तेरी—तपः क्व वत्से क्व च तावकं वपुः—कु० ५।४, कि० ३।१२, भामि० १।३६, ९६।

तावत् (वि०) ('यावत्' का सह संबंधी) [तत्+डावतु] 1. इतना, उतना, इतने—ते तु यावन्त एवाजौ तावांश्च ददृशे स तैः—रघु० १२।४५, हि० ४।७२, कु० २।३३ 2. इतना विशाल, इतना बड़ा, इतना विस्तृत—यावती संभवेद् वृत्तिस्तावतीं दातुमर्हसि—मनु० ८।१५५, ९।२४९, भग० २।४६ 3. उतना समस्त, सारा, यावद्दत्तं तावद्भुक्तम्—गण०, (अव्य०) 1. पहले (बिना और कुछ काम किये)—आर्ये इतस्तावदागम्यताम्—श० १, आह्लादयस्व तावच्चन्द्रकरश्चन्द्रकान्तमिव—विक्रम० ५।११, मेघ० १३ 2. किसी की ओर से, इसी बीच में—सखे स्थिरप्रतिबन्धो भव, अहं तावत् स्वामिनश्चित्तवृत्तिमनुवर्तिष्ये—श० २, रघु० ७।३२ 3. अभी—गच्छ तावत् 4. निस्सन्देह (किसी उक्ति पर बल देने के लिए)—त्वमेव तावत्प्रथमो राजद्रोही—मुद्रा० १, तुम स्वयम्,—त्वमेव तावत्परिचितय स्वयम्—कु० ५।६७ 5. सचमुच, वस्तुतः (स्वीकृतिसूचक)—दृढस्तावद्बन्धः—हि० १ 6. के विषय में, के संबंध में—विग्रहस्तावदुपस्थितः—हि० ३, एवं कृते तव तावत्क्लेशं विना प्राणयात्रा भविष्यति—पंच० १ 7. पूर्णरूप से—तावत्प्रकीर्णाभिनवोपचाराम्—रघु० ७।४, (तावत्प्रकीर्ण=साकल्येन प्रसारित—मल्लि० 8. आश्चर्य (ओह! कितना आश्चर्य है।) ('यावत्' के सहसंबंधी के रूप में 'तावत्' के अर्थ देखो—'यावत्' के नीचे) सम०—**कृत्वः** (अव्य०) इतनी बार,—**मात्रम्** केवल इतना,—**वर्ष** (वि०) इतने वर्ष पुराना।

तावतिक (वि०) **तावत्क** (वि०) [तावत्+क, इट्] इतने से मोल लिया हुआ, इतने मूल्य का, इतनी कीमत का।

तावुरिः [पुं० ग्रीक शब्द] वृष राशि।

तिक्त (वि०) [तिज्+क्त] 1. कड़वा, तीखा (छः रसों में से एक) मेघ० २० 2. सुगंधित—मेघ० ३३,—**क्तः** 1. कड़वा स्वाद, ('कटु' के नीचे दे०) 2. कुटज वृक्ष 3. तीखापन 4. सुगंध। सम०—**गन्धा** सरसों,—**धातुः** पित्त,—**फलः**,—**मरिचः** कतक का पौधा,—**सारः** खैर का वृक्ष।

तिग्म (वि०) [तिज्+मक् जस्य गः] 1. पैना, नुकीला (शस्त्रों की भांति) 2. प्रचंड 3. गरम, दाहक 4. तीखा, चरपरा 5. उत्तेजक, जोशीला,—**ग्मम्** 1. गर्मी 2. तीखापन। सम०—**अंशुः** 1. सूर्य—तिग्मांशुरस्तंगतः—गीत० ५ 2. आग 3. शिव,—**करः**,—**दीधितिः**,—**रश्मिः** सूर्य।

तिज् i (भ्वा० आ० (तिज् का नितांत—इच्छार्थक) तितिक्षते, तितिक्षित) 1. सहन करना, वहन करना, साथ निर्वाह करना, साहस के साथ भुगतना—तितिक्षमाणस्य परेण निन्दाम्—मालवि० १।१७, तांस्तितिक्षस्व भारत—भग० २।१४, महावी० २।१२, कि० १३।६८, मनु० ६।४७, ii (चुरा० उभ० या प्रेर०—तेजयति—ते, तेजित) 1. पैना करना, पनाना—कुसुमचापमतेजयदंशुभिः—रघु० ९।३९ 2. उकसाना, उत्तेजित करना, भड़काना।

तितउः [तन्+डउं, द्वित्वम्, इत्वम्] चलनी (नपुं०) छाता।

तितिक्षा [तिज्+सन्+अ+टाप्, द्वित्वम्] सहनशक्ति, सहिष्णुता, त्याग, क्षमा।

तितिक्षु (वि०) [तिज्+सन्+उ, द्वित्वम्] सहिष्णु, सहन करने वाला, सहनशील।

तितिभः [तितीतिशब्देन भणति तिति+भण्+ड] 1. जुगनू 2. एक प्रकार का कीडा, इन्द्रवधूटी, वीरबहोटी।

तितिरः, तित्तिरः [तिति इति शब्दं राति ददाति रा+क] चकोर, तीतर।

तित्तिरिः [तित्तीति शब्दं रौति—रु बा० डि तारा०] 1. तीतर 2. एक ऋषि जो कृष्णयजुर्वेद का प्रथम अध्यापक था।

तिथः [तिज्+थक्, जलोपः] 1. अग्नि 2. प्रेम 3. समय 4. वर्षा ऋतु या शरद।

तिथिः (पुं० या स्त्री०) [अत्+इथिन्, पृषो० वा ङीप्] 1. चान्द्र दिवस,—तिथिरेव तावन्न शुध्यति—मुद्रा० ५, कु० ६।९३, ७।१ 2. १५ की संख्या। सम०—**क्षयः** 1. अमावस्या 2. वह तिथि जो आरम्भ होकर सूर्योदय से पूर्व ही या दो सूर्योदयों के बीच में ही समाप्त हो जाती है,—**पत्री** पञ्चाङ्ग,—**प्रणीः** चाँद,—**वृद्धिः** वह दिन जिसमें तिथि दो सूर्योदयों के अन्दर पूरी होती है।

तिनिशः (पुं०) एक वृक्ष विशेष—दात्यूहैस्तिनिशस्य कोटरवति स्कन्धे निलीय स्थितम्—मा० ९।७।

तिन्तिडः,—डी, तिन्तिडिका, तिन्तिडिकः [=तिन्तिडी पृषो०, तिन्तिडी+कन्+टाप्, ह्रस्वः, तिम्+ईकन् नि०] इमली का वृक्ष।

तिन्दुः, तिन्दुकः-तिन्दुलः [तिम्+कु० नि०, तिन्दु+कन्, पक्षे कस्य लः] तेन्दू का पेड़।

तिम् (भ्वा० पर०—तेमति, तिमित) आर्द्र करना, गीला करना, तर करना।

तिमिः [तिम्+इन्] 1 समुद्र 2. एक बड़ी विशालकाय मछली, ह्वेल मछली—रघु० १३।१०। सम०—**कोषः** समुद्र,—**ध्वजः** एक राक्षस जिसे इन्द्र ने दशरथ की सहायता से मारा था (इसी युद्ध में कैकेयी ने मूर्छित दशरथ के प्राणों की रक्षा की, और उनसे दो वर प्राप्त किये; इन्हीं वरों से कैकेयी ने बाद में राम को १४ वर्ष का वनवास दिलाया।

तिमिङ्गिलः [तिमि+गिल्+खश्, मुम्] एक प्रकार की मछली जो 'तिमि' मछली को निगल जाती है—भामि० १।५५, °अशनः, °गिलः एक ऐसी बड़ी मछली जो तिमिङ्गिल कोभी निगल जाती है—तिमिङ्गिलगिलोऽप्यस्ति तद्गिलोऽप्यस्ति राघवः।

तिमित (वि०)[तिम्+क्त] 1. गतिहीन, स्थिर, निश्चल 2. आर्द्र, गीला, तर।

तिमिर (वि०) [तिम+किरच्] अन्धकारमय,—विन्यस्यन्तीं दृशौवि तिमिरे पथि—गीत० ५, बभूवुस्तिमिरा दिशः—महा०,—**रः**—**रम्** अन्धकार—तन्नेशं तिमिरमपाकरोति चन्द्रः—श० ६।१९, कु० ४।११, शि० ४।५७ 2. अन्धापन 3. जंग, मुर्चा। सम०—**अरिः**,—**नुद्** (पुं०)—**रिपुः** सूर्य।

तिरश्ची [तिर्यक् जातिः स्त्रियां ङीप्] जानवर, पशु या पक्षी (स्त्री०)।

तिरश्चीन (वि०) [तिर्यक्+ख] 1. टेढ़ा, पार्श्वस्थ, तिरछा—गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः—शि० १।२,—यथा तिरश्चीनमलातशल्यम्—उत्तर० ३।३५ 2. अनियमित।

तिरस् (अव्य०) [तरति दृष्टिपथं—तृ+असुन्] बांकेपन से, टेढ़ेपन से, तिरछेपन से;—स तिर्यङ् यस्तिरोऽञ्चति—अमर० 2. के बिना, के अतिरिक्त 3. चुपचाप, प्रच्छन्न रूप से, बिना दिखाई दिये (श्रेण्य साहित्य में 'तिरस्' शब्द का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं मिलता—यह मुख्यतः प्रयुक्त होता है (क) 'कृ' के साथ—ढकना, घृणा करना, आगे बढ़ जाना—(रघु० ३।८,१६।२०, मनु० ४।४९, अमरु ८१, भट्टि० ९।६२, हि० ३।८) (ख) 'धा' के साथ—ढकना, छिपाना, अभिभूत करना, अन्तर्धान होना (रघु० १०।४८, ११।९१) और (ग) 'भू' के साथ—अन्तर्धान होना (रघु० १६।२०, भट्टि० ६।७१, १४।४४)। सम०—**करिणी**—**कारिणी** 1. परदा, घूंघट—तिरस्करिण्यो जलदा भवन्ति—कु० १।१४, मालवि० २।१ 2. कनात, कपड़े का पर्दा,—**कारः**—**क्रिया** 1. छिपाना, अन्तर्धान करना, घृणा,—**कृत** (वि०) 1. जिसकी अवहेलना की गई हो, अपमानित, निरादृत 2. गर्हित 3. गुप्त, ढका हुआ,—**धानम्** 1. अन्तर्धान होना, दूर हटाना—अय खलु तिरोधानमधियाम्—गङ्गा० १८ 2. आच्छादन, अवगुण्ठन, म्यान,—**भावः** ओझल होना,—**हित** (वि०) 1. ओझल हुआ, अंतर्हित 2. ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त।

तिरयति (ना० धा० पर०) 1. छिपाना, गुप्त रखना

2. बाधा डालना, रोकना, रुकावट डालना, दृष्टि से ओझल करना—तिरयति करणानां ग्राहकत्वं प्रमोहः—मा० १।४० बारम्बारं तिरयति दृशोरुद्गमं बाष्पपूरः—३५ 3. जोतना।

तिर्यक् (अव्य०) [तिरस्+अञ्च्+क्विप्, तिरसः तिरि आदेशः, अञ्चेर्नलोपः] टेढ़ेपन से, तिरछेपन से, तिरछा या टेढ़ी दिशा में—विलोकयति तिर्यक्—काव्य० १०, मेघ० ५१, कु० ५।७४।

तिर्यंच् (वि०) (स्त्री०—तिरश्ची, विरलतः—तिर्यंची) [तिरस्+अञ्च्+क्विप्, तिरसः तिरि आदेशः, अञ्चेर्नलोपः] 1. टेढ़ा, आड़ा, अनुप्रस्थ, तिरछा 2. मुड़ा हुआ, वक्र—(पुं० नपुं०) जानवर (जो मनुष्य की भांति सीधा न चल कर, टेढ़ा चलता है) निम्न जाति का या बुद्धिहीन जानवर—वन्धाय दिव्ये न तिरश्चि कश्चित् पाशादिरासादितपौरुषः स्यात्—नै० ३।२०, कु० १।४८। सम०—**अन्तरम्** आरपार मापा हुआ मध्यवर्ती स्थान, चौड़ाई,—**अयनम्** सूर्य द्वारा वार्षिक परिक्रमण,—**ईक्ष** (वि०) तिरछा देखने वाला, —**जातिः** (स्त्री०) पशु-पक्षी की जाति (विप० मनुष्य जाति),—**प्रमाणम्** चौड़ाई,—**प्रेक्षणम्** तिरछी आंख करके देखना,—**योनिः** (स्त्री०) पशु-पक्षी की सृष्टि या वंश—तिर्यग्योनौ च जायते—मनु० ४।२००,—**स्रोतस्** (पुं०) जानवरों की दुनियां, पशु सृष्टि।

तिलः [तिल्+क] 1. तिल का पौधा—नासाभ्येति तिलप्रसूनपदवीम्—गीत० १० 2. तिल के पौधे का बीज —नाकस्माच्छाण्डिलीमाता विक्रीणाति तिलैस्तिलान्, लुंचितानितरैर्येन कार्यमत्र भविष्यति। पञ्च० २।५५. 3. मस्सा, धब्बा 4. छोटा कण, इतना बड़ा जितना कि तिल—। सम०—**अम्बु**,—**उदकम्** तिल और जल (दोनों को मिला कर मृतकों का तर्पण किया जाता है) श० ३, मनु० ३।२२३,—**उत्तमा** एक अप्सरा का नाम,—**ओदनः**,—**नम्** तिल और दूध मिश्रित भात, —**कल्कः** तिल को पीस कर बनाई गई पीठी, °**जः** तिलों की खली,—**कालकः** मस्सा, तिल के बराबर शरीर पर होने वाला काला दाग़—**किट्टम्**,—**खलिः** (स्त्री०)—**खली**,—**चूर्णम्** तेल के निकालने के पश्चात् बची हुई तिलों की खल—**तण्डुलकम्** आलिङ्गन (जिस प्रकार तिल चावल मिलते हैं, इसी प्रकार आलिङ्गन में दो शरीर मिलते हैं),—**तैलम्** तिलों का तेल,—**पर्णः** तारपीन,(—**र्णम्**) चन्दन की लकड़ी,—**पर्णी** 1. चन्दन का पेड़ 2. धूप देना 3. तारपीन,—**रसः** तिलों का तेल,—**स्नेहः** तिलों का तेल,—**होमः** वह होम जिसमें तिलों की आहुति दी जाय।

तिलकः[तिल+कन्]1. सुन्दर फूलों का एक वृक्ष;—आक्रान्ता तिलकक्रियापि तिलकैर्लीनद्विरेफाञ्जनैः—मालवि० ३।५, न खलु शोभयति स्म वनस्थलीं न तिलकस्तिलकः प्रमदामिव—रघु० ९।४१ 2. शरीर पर पड़ी चित्ती या खाल पर हुआ कोई नैसर्गिक चिह्न,—**कः**,—**कम्** 1. चन्दन की लकड़ी या उबटन आदि से किया गया चिह्न—मुखे मधुश्रीस्तिलकं प्रकाश्य—कु० ३।३० कस्तूरिकातिलकमालि विधाय सायं—भामि० २।४, १।१२१ 2. किसी वस्तु का अलङ्कार ('पूज्य' 'प्रमुख' 'श्रेष्ठ' अर्थ में समास के अन्त में प्रयुक्त),—**का** एक प्रकार का हार,—**कम्** 1. मूत्राशय 2. फेफड़े 3. एक प्रकार का नमक। सम० **आश्रयः** मस्तक।

तिलन्तुदः [तिल+तुद+खश्, मुम्] तेली।

तिलशः (अव्य०) [तिल+शस्] तिल तिल करके, कण कण करके, अत्यन्त अल्प परिमाण में।

तिलित्सः (पुं०) एक बड़ा सांप।

तिल्वः [तिल्+वन्] लोघ का पेड़।

तिष्ठद्गु (अव्य०) [तिष्ठन्त्यो गावो यस्मिन् काले, तिष्ठत्+गो नि०] गौओं के दोहने का समय (अर्थात् सायंकाल का समय डेढ़ घण्टा बीतने पर)—अतिष्ठद्गु जपन् सन्ध्याम् भट्टि० ४।१४, (तिष्ठद्गु=रात्रेः प्रथमनाडिका)।

तिष्यः [तुष्+क्यप् नि०] 1. २७ नक्षत्रों में आठवां नक्षत्र, इसे 'पुष्य' भी कहते हैं 2. पौष मास (चान्द्र),—**ष्यम्** कलियुग।

तीक् (भ्वा० आ०—तीकते) जाना, हिलना-जुलना, तु० 'टीक्'।

तीक्ष्ण (वि०) [तिज्+क्स्न, दीर्घः] 1. पैना (सभी अर्थों में), तीखा, शि० २।१०९ 2. गरम, उष्ण (किरणों की भांति) ऋतु० १।१८ 3. उत्तेजक, जोशीला 4. कठोर, प्रबल, मजबूत (उपाय आदि), 5. रूखा, चिड़चिड़ा 6. कठोर, कटु, कड़ा, सख्त,—मनु० ७।१४० 7. अनिष्टकर, अहितकर, अशुभ 8. उत्सुक 9. बुद्धिमान, चतुर 10. उत्साही, उत्कट, ऊर्जस्वी 11. भक्त, आत्मत्याग करने वाला,—**क्ष्णः** 1. जवाखार 2. लम्बी मिर्च 3. काली मिर्च 4. काली सरसों या राई,—**क्ष्णम्** 1. लोहा 2. इस्पात 3. गर्मी, तीखापन 4. युद्ध, लड़ाई 5. विष 6. मृत्यु 7. शस्त्र 8. समुद्री नमक 9. क्षिप्रता। सम०—**अंशुः** 1. सूर्य 2. आग,—**आयसम्** इस्पात, —**उपायः** प्रबल साधन, मजबूत तरकीब,—**कन्दः** प्याज, —**कर्मन्** (वि०) उद्यमी, उत्साही ऊर्जस्वी,—**दंष्ट्रः** व्याघ्र,—**धारः** तलवार,—**पुष्पम्** लौंग,—**पुष्पा** 1. लौंग का पौधा 2. केवड़े का पौधा,—**बुद्धि** (वि०) तीव्रबुद्धि, तेज, चतुर, घाघ, कुशाग्रबुद्धि,—**रश्मिः** सूर्य, —**रसः** 1. जवाखार 2. जहर का पानी, जहर—शस्त्रप्रयुक्तानां तीक्ष्णरसदायिनाम्—मुद्रा० १।२,—**लौहम्** इस्पात,—**शूकः** जौ।

तीम् (दिवा० पर० तीम्यति) गोला होना, तर होना।

तीरम् [तीर्+अच्] 1. तट, किनारा—नदीतीर, सागर-तीर आदि 2. उपान्त, कगर, कोर या धार,—रः 1. एक प्रकार का बाज 2. सीसा 3. टीन।

तीरित (वि०) [तीर्+क्त] सुलझाया हुआ, समंजित, साक्ष्य के अनुसार निर्णीत,—तम् किसी बात का सोच विचार।

तीर्ण (वि०) [तॄ+क्त] 1. पार किया हुआ, पार पहुँचा हुआ 2. फैलाया हुआ, प्रसारित 3. पीछे छोड़ाहुआ, आगे बढ़ा हुआ।

तीर्थम् [तॄ+थक्] 1. मार्ग, सड़क, रास्ता, घाट 2. नदी में उतरने का स्थान, घाट (नदी के किनारे बनी हुई सीढ़ियाँ)—विषमोऽपि विगाह्यते नयः कृततीर्थः पयसामिवाशयः—कि० २।३, (यहाँ 'तीर्थ' का अर्थ 'उपचार या साधन' भी है)—तीर्थं सर्वविद्यावताराणाम्—का० ४४ 3. जलस्थान 4. पवित्रस्थान तीर्थयात्रा का उपयुक्त स्थान, मन्दिर आदि जो किसी पुण्यकार्य के लिए अर्पित कर दिया गया हो (विशेष कर वह जो किसी पावननदी के किनारे स्थित हो)—शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्—भर्तृ० २।५५ रघु० १।८५ 5. मार्ग, माध्यम, साधन—तदनेन तीर्थेन घटेत—आदि—मा० १ 6. उपचार, तरकीब 7. पुण्यात्मा, योग्यव्यक्ति, श्रद्धा का पात्र, उपयुक्त आदाता—क्व पुनस्तादृशस्य तीर्थस्य साधोः संभवः उत्तर० १, मनु० ३।१०३ 8. धर्मोपदेष्टा, अध्यापक—मया तीर्थादभिनयविद्या शिक्षिता—मालवि० १ 9. स्रोत, मूल 10. यज्ञ 11. मन्त्री 12. उपदेश, शिक्षा 13. उपयुक्त स्थान या क्षण 14. उपयुक्त या यथापूर्व रीति 15. हाथ के कुछ भाग जो देवताओं और पितरों के लिए पवित्र होते हैं 16. दर्शनशास्त्र के विशिष्ट सिद्धान्त वादी 17. स्त्रियोचित लज्जा 18. स्त्रीरज 19. ब्राह्मण 20. अग्नि,—र्थः सम्मान सूचक प्रत्यय जो सन्तों और संन्यासियों के नामों के साथ जोड़ा जाय—उदा० आनन्दतीर्थ आदि। सम० —उदकम् पवित्र जल—तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः—उत्तर० १।१३,—करः 1. जैन अर्हत्, धर्मशास्त्रोपदेष्टा, जैन सन्त (इस अर्थ में 'तीर्थंकर' भी) 2. संन्यासी 3. अभिनव दार्शनिक सिद्धान्त या धर्मशास्त्र का प्रवर्तक 4. विष्णु,—काकः,—ध्वांक्षः, —वायसः तीर्थ का कौवा अर्थात् लोलुप तीर्थोपजीवी —भूत (वि०) पावन, पवित्र,—यात्रा किसी पवित्र स्थान के दर्शनार्थ जाना, पावनस्थानों की यात्रा, —राजः प्रयाग, इलाहाबाद,—राजिः—जी (स्त्री०) बनारस का विशेषण,—वाकः सिर के बाल,—विधिः (क्षौर आदि) संस्कार जो किसी तीर्थ स्थान पर किये जायें,—सेविन् (वि०) तीर्थ में वास करने वाला (पुं०) सारस।

तीर्थिकः [तीर्थ+ठन्] तीर्थ यात्री, वह संन्यासी ब्राह्मण जो तीर्थों के दर्शनार्थ निकला हो, पण्डा।

तीवरः [तॄ+ष्वरच्] 1. समुद्र 2. शिकारी 3. राजपुत्री की किसी क्षत्रिय (वर्णसंकर) के संयोग से उत्पन्न वर्णसंकर सन्तान।

तीव्र (वि०) [तीव्+रक्] 1. कठोर, गहन, पैना, तेज, प्रचण्ड, कड़वा, तीखा, उग्र—विलङ्घिताधोरणतीव्रयत्नाः—रघु० ५।४८, घोर या प्रचण्ड प्रयत्न—उत्तर० ३। ३५ 2. गरम, उष्ण 3. चमकीला 4. व्यापक 5. अनन्त, असीम 6. भयानक डरावना,—व्रम् 1. गरमी, तीखापन 2. किनारा 3. लोहा, इस्पात 4. टीन, रांगा,—व्रम् (अव्य०) प्रचण्ड रूप से, तेजी से, अत्यन्त। सम० —आनन्दः शिव का विशेषण,—गति (वि०) शीघ्रगामी, फुर्तीला—पौरुषम् 1. साहसपूर्ण शौर्य 2. शूरवीरता,—संवेग (वि०) 1. दृढ़-आवेगयुक्त, दृढ़निश्चयी 2. अत्युग्र, अत्यन्त तेज।

तु (अव्य०) [तुद्+डु] (वाक्य के आरम्भ में नितान्त प्रयोगाभाव, प्रायः प्रथम शब्द के पश्चात् प्रयोग) 1. विरोध सूचक अव्यय—अर्थ—'परन्तु' 'इसके विपरीत' 'दूसरी ओर' 'तो भी'—स सर्वेषां सुखानामन्तं ययौ, एकं तु सुतमुखदर्शनसुखं न लेभे—का० ५९, विपर्यये तु पितुरस्याः समीपनयनमवस्थितमेव—श० ५, (इस अर्थ में 'तु' बहुधा 'किं' और 'परं' के साथ जोड़ दिया जाता है और 'किन्तु' तथा 'परन्तु' तु के विपरीत वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होते हैं) 2. और अब, तो, और—एकदा तु प्रतिहारी समुपसृत्याब्रवीत् —का० ८, राजा तु तामार्यां श्रुत्वाऽब्रवीत्—१२ 3. के सम्बन्ध में, के विषय में, की बाबत—प्रवर्त्यतां ब्राह्मणानुद्दिश्य पाकः, चन्द्रोपरागं प्रति तु केनापि विप्रलब्धासि—मुद्रा० १ 4. कभी कभी इससे 'भेद' या 'श्रेष्ठ गुण' का पता लगाता है—मृष्टं पयो मृष्टतरं तु दुग्धम्—गण० 5. कभी कभी यह 'बलात्मक' अव्यय के रूप में प्रयुक्त होता है—भीमस्तु पाण्डवानां रौद्रः, गण० 6. कभी कभी केवल यह पद पूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है—निरर्थकं तुहीत्यादि पूरणैकप्रयोजनम् —चन्द्रा० २।६।

तुक्खारः, तुखारः, तुषारः (पुं०) विन्ध्याचल पर रहने वाली एक जाति के लोग—तु० विक्रमांक० १८।९३।

तुङ्ग (वि०) [तुञ्ज्+घञ्, कुत्वम्] 1. ऊँचा, उन्नत, लम्बा, उत्तुंग, प्रमुख—जलनिधिमिव विधुमण्डलदर्शनतरलिततुङ्गतरङ्गम्—गीत० ११, तुङ्गं नगोत्संगमिवारुरोह—रघु० ६।३ ४।७०, शि० २।४८, मेघ० १२।६४ 2. दीर्घ 3. गुम्बजदार 4. मुख्य, प्रधान 5. उग्र, जोशीला,—गः 1. ऊँचाई, उन्नतता 2. पहाड़ 3. चोटी, शिखर 4. बुधग्रह 5. गैंडा 6. नारियल का पेड़। सम०

—**बीजः** पारा,—**भद्रः** दुर्दान्त हाथी, मदमत्त हाथी, —**भद्रा** एक नदी जो कृष्णा नदी में गिरती है,—**वेणा** एक नदी का नाम,—**शेखरः** पहाड़।

तुङ्गी [तुङ्ग+ङीप्] 1. रात 2. हल्दी। सम०—**ईशः** 1. चन्द्रमा 2. सूर्य 3. शिव की उपाधि 4. कृष्ण की एक उपाधि,—**पतिः** चन्द्रमा।

तुच्छ (वि०)[तुद्+क्विप्=तुद्+छो+क]1. खाली, शून्य, असार, मन्द 2. अल्प, क्षुद्र, नगण्य 3. परित्यक्त, सम्परित्यक्त 4. नीच, कमीना, नगण्य, तिरस्करणीय, निकम्मा 5. गरीब, दीन दुःखी,—**च्छम्** तुष, भूसी। सम० —**द्रुः** एरण्ड का वृक्ष,—**धान्यः**,—**धान्यकः** भूसी, बूर।

तुञ्जः [तुञ्ज्+अच्] इन्द्र का वज्र।

तुटुमः [तुट्+उम] मूसा, चूहा।

तुण् (तुदा० पर०—तुणति) 1. टेढ़ा करना, मोड़ना, झुकाना 2. चालबाज़ी करना, ठगना, धोखा देना।

तुण्डम् [तुण्ड+अच्] 1. मुँह, चेहरा, चोंच (सूअर की) —यूथनतुण्डैराताम्रकुटिलैः (शुकाः)—काव्या० २।९ 2. हाथी की सूंड 3. उपकरण की नोक।

तुण्डिः [तुण्ड्+इन्] 1. चेहरा, मुंह 2. चोंच,—**ण्डिः** (स्त्री०) नाभि, सूण्डी।

तुण्डिन् (पुं०) [तुण्ड+इनि] शिव के बैल का नाम।

तुण्डिभ (वि०) [तुण्ड्+भ] दे० 'तुन्दिभ'।

तुण्डिल (वि०) [तुण्ड्+भ सिध्मा० लच् वा] 1. बातूनी, वाचाल 2. उभरी हुई नाभि वाला 3. गप्पी—तु० 'तुन्दिल'।

तुत्थः [तुद्+थक्] 1. आग 2. पत्थर,—**त्थम्** एक प्रकार का नीला थोथा या तूतिया जो सुर्मे की भाँति आँख में डाला जाय,—**त्था** 1 छोटी इलायची 2. नील का पौधा। सम०—**अञ्जनम्** तूतिया या कासीस,जो आँखों में दवा की भाँति लगाया जाय।

तुद् (तुदा० पर०—तुदति, तुन्न) 1. प्रहार करना, घायल करना, आघात करना—तुतोद गदया चारिम्—भट्टि० १४।८१, १५।३७, शि० २०।७७ 2. चुभोना, अंकुश चुभोना 3. खरोंचना, चोट पहुँचाना 4. पीड़ा देना, तंग करना, सताना, कष्ट देना—सुतीक्ष्णधारापतनोग्रसायकैस्तुदन्ति चेतः प्रसभं प्रवासिनाम्—ऋतु० २।४, ६।२८, **आ—**, प्रहार करना, ताड़ना देना, मनु० ४। ६८, **प्र—**, मारना, चोट पहुँचाना, घायल करना (प्रेर०) प्रेरित करना, आगे ढकेलना (आलं०), ज़ोर डालना, बार २ आग्रह करना (किसी काम को करने के लिए)—प्रविश गृहमिति प्रतोद्यमाना न चलति भाग्यकृतां दशामवेक्ष्य—मृच्छ० १।५६।

तुन्दम् [तुन्द्+दन् पृषो०] पेट, तोंद। सम०—**कूपिका**, —**कूपी** नाभि का गर्त,—**परिमार्ज**,—**परिमृज्**—**मृज** (वि०) सुस्त, आलसी।

तुन्दवत् (वि०) [तुन्द+मतुप्, मस्य वत्वम्] तोंदवाला मोटा।

तुन्दिक, तुन्दिन्, तुन्दिभ, तुन्दिल (वि०) [तुन्द+ठन्, तुद+इनि, तुन्दि+भ, तुन्द+इलच्] 1. मोटे पेट वाला 2. जिसकी तोंद बढ़ गई है 3. भरा हुआ, लदा हुआ —मकरन्दतुन्दिलानामरविन्दानामयं महामान्यः—भामि० १।६।

तुन्न (वि०) [तुद्+क्त] 1. प्रहृत, चोट किया हुआ, घायल 2. सताया हुआ। सम०—**वायः** दर्ज़ी।

तुभ् (दिवा०, क्र्या० पर०—तुभ्यति, तुभ्नाति) चोट मारना, क्षति पहुँचाना, प्रहार करना—भट्टि० १७। ७९, ९०।

तुमुल (वि०) [तु+मुलक्] 1. जहाँ पर शोरगुल मच रहा हो, कोलाहलमय भग० १।१३, १९ 2. भीषण, क्रोधी —रघु० ३।५७ 3. उत्तेजित 4. उद्विग्न, घबड़ाया हुआ, व्याकुल, अव्यवस्थित—रघु० ५।४९,(पुं० नपुं०) 1. होहल्ला, हंगामा 2. अव्यवस्थित द्वन्द्व युद्ध, रणसंकुल।

तुम्बः [तुम्ब्+अच्] एक प्रकार की लौकी!

तुम्बरः [तुम्ब+रा+क] एक गंधर्व का नाम, दे० तुम्बरु —**रम्** एक प्रकार का वाद्य यंत्र तान पूरा!

तुम्बा [तुम्ब+टाप्] 1. एक प्रकार की लम्बी लौकी 2. दुधार गाय।

तुम्बि,—बी (स्त्री०) [तुम्ब्+इन्, तुम्बि+ङीप्] एक प्रकार की लौकी कड़वी तूम्बी,—न हि तुम्बीफलविकलो वीणादण्डः प्रयाति महिमानम्—भामि० १।८०।

तुम्ब (बु) रुः [तुम्ब्+उरु] एक गंधर्व का नाम।

तुरङ्गः [तुरेण वेगेन गच्छति—तुर+गम्+ड] 1. घोड़ा —तुरगखुरहतस्तथा हि रेणुः—श० १।३१, रघु० १।४२, ३।५१ 2. मन, विचार,—**गी** घोड़ी। सम० —**आरोहः** घुड़सवार,—**उपचारकः** साइस,—**प्रियः**, —**यम्**, जौ,—**ब्रह्मचर्यम्** बलात्-कृत या अनिवार्य ब्रह्मचर्य, स्त्रीसंग के अभाव में विवश हो ब्रह्मचर्य-जीवन बिताना।

तुरगिन् (पुं) [तुरग+इनि] घुड़सावार।

तुरङ्गः [तुर+गम्+खच् मुम् वा डिच्च] घोड़ा—भानुः सकृद्युक्ततुरङ्ग एव—श० ५।५, रघु० ३।३८, १३।३, —**गम्** मन, विचार,—**गी** घोड़ी। सम०—**अरिः** भैंसा, —**द्विषणी** भैंस,—**प्रियः**,—**यम्** जौ,—**मेधः** अश्वमेध यज्ञ—रघु० १३।६१,—**यायिन्**,—**सादिन्** (पुं०) घवस्रः,—**वदनः** किन्नर,—**शाला**,—**स्थानम्** अस्तबल, अश्वशाला,—**स्कन्धः** घोड़ों का दल।

तुरङ्गमः [तुर+गम्+खच्, मुम्] घोड़ा, रघु० ३।६३, ९।७२।

तुरायणम् [तुर+फक्] 1. अनासक्ति 2. एक प्रकार का यज्ञ।

तुरासाह् (पुं०) [तुर + सह् + णिच् + क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—तुराषाट्-ड्) इन्द्र, कु० २।१, रघु० १५।४० ।

तुरी [तुर्+इन्+ङीप्] 1. एक रेशेदार उपकरण जिससे जुलाहे बाने के धागों को साफ़ करके अलग अलग करते हैं 2. नली, जुलाहे की नाल—तन्तूटचातुरीतुरी—नै० १।१२ 3. चित्रकार की कूची ।

तुरीय (वि०) [चतुर्+छ, आद्यलोपः] चौथा,—यम् चौथाई, चौथा भाग, चौथा (वेदा० द० में) 2. आत्मा की चतुर्थ अवस्था जिसमें वह ब्रह्म अर्थात् परमात्मा के साथ तदाकार हो जाती है । सम०—वर्णः चौथे वर्ण का मनुष्य, शूद्र ।

तुरुष्काः [ब० व०] तुर्क लोग ।

तुर्य (वि०) [चतुर्+यत्, आद्यलोपः] चौथा, नै० ४।१२३, —र्यम् 1. एक चौथाई, चौथा भाग 2. (वेदा० द० में) आत्मा की चौथी अवस्था जिसमें आत्मा ब्रह्म के साथ तदाकार हो जाती है ।

तुल् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ—तोलति, तोलयति—ते, (तुलयति-ते 'भी जिसे कुछ लोग 'तुला' की नामधातु मानते हैं) 1. तोलना, मापना 2. मन में तोलना, विचार करना, सोचना 3. उठाना, ऊपर करना—कैलासे तुलिते—महावी० ५।३७, पौलस्त्यतुलितस्याद्रेरादधान इव ह्रियम्—रघु० ४।८०, १२।८९, शि० १५।३० 4. सम्भालना, पकड़ना, सहारा देना—पृथिवीतले तुलितभूभृदुच्चयसे—शि० १५।३०, ६१ 5. तुलना करना, उपमा देना (करण० के साथ)—मुखं श्लेष्मागारं तदपि च शशाङ्केन तुलितम्—भर्तृ० ३।२०, शि० ८।१२ 6. तुल्य होना, समकक्ष होना (कर्म० के साथ) प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः—मेघ० ६४ 7. हल्का करना, गर्हण करना, तिरस्कार करना—अन्तःसारं घन तुलयितुं नानिलः शक्ष्यति त्वाम्—मेघ० २०, (यहाँ 'तु' का अर्थ है 'सम्भालना या बहा ले जाना') शि० १५।३० 8. सन्देह करना, अविश्वास पूर्वक परीक्षण करना—कः श्रद्धास्यति भूतार्थं सर्वो मां तुलयिष्यति—मृच्छ० ३।२४, ५।४३ (यहाँ कुछ संस्करणों में 'तूलयिष्यति' भी पाठ है) 9. जांच करना, परीक्षण करना, दुर्दशा करना—हा अवस्थे ! तुलयसि—मृच्छ० १, (तूलयसि),—उद्,—सम्भालना, सहारा देना, थामे रहना ।

तुलनम् [तुल्+ल्युट्] 1. तोलना 2. उठाना 3. तुलना करना उपमा देना आदि,—ना 1. तुलना 2. तोलना 3. उठाना उन्नयन 4. निर्धारण करना, आंकना, प्राक्कलन करना 5. परीक्षा करना ।

तुलसी [तुलां सादृश्यं स्यति नाशयति—तुला+सो+क+ङीष्] एक पवित्र पौधा जिसकी हिन्दू विशेषकर विष्णु के उपासक पूजा करते हैं । सम०—पत्रम् (शा०) तुलसी का पत्ता, (आलं०) बहुत तुच्छ उपहार,—विवाहः कार्तिक शुक्ला द्वादशी को, बालकृष्ण की प्रतिमा के साथ तुलसी का विवाह ।

तुला [तोल्यतेऽनया—तुल्+अङ+टाप्] तराजू, तराजू की डंडी ।

तुल्या घृ 1. तराजू में रखना, तोलना 2. माप तोल 3. तोलना 4. मिलाना—तुलना, समानता, समकक्षता, समता (संब०, करण० या समास में प्रयोग)—किं धूर्जटेरिव तुलामुपयाति संख्ये—वेणी० ३।८, तुलां यदारोहति दन्तवाससा—कु० ५।५४, रघु० ८।१५, सद्यः परस्पर—तुलामधिरोहतां द्वे—रघु० ५।६८, १९।८, ५० 5. तुला राशि, सातवीं राशि—जयति तुलामधिरूढो भास्वानपि जलदपटलानि—पंच० १।३३० 6. घर की छत पर लगा ढालू शहतीर 7. सोना चांदी तोलने का १०० पल बट्टा । सम०—कूटः कम तोलना,—कोटिः,—टी नूपुर (पैरों में पहनने का स्त्रियों का आभूषण)—लीलाचलत्स्त्रीचरणारुणोत्पलस्खलत्तुलाकोटिनिनादकोमलः—शि० १२।४४,—कोशः—षः तोल द्वारा कठिन परीक्षा,—दानम् शरीर के बराबर तोल कर सोने या चाँदी का किसी ब्राह्मण के लिए दान,—घटः तराजू का पलड़ा,—धरः 1. व्यापारी, व्यवसायी, सौदागर 2. राशिचक्र में तुलाराशि,—धारः व्यापारी, व्यवसायी, सौदागर,—परीक्षा तुला द्वारा तोलने की कठिन परीक्षा, —पुरुषः सोना, जवाहरात तथा अन्य मूल्यवान् वस्तुऐं जो एक मनुष्य के भार के बराबर हों (तथा दान में किसी ब्राह्मण के लिए दी जायें) तु० तुलादान,—प्रग्रहः, —प्रग्राहः तराजू की डंडी या डोरी,—मानम्,—यष्टिः तराजू की डंडी,—बीजम् घुंघची, गुंजा,—सूत्रम् तराजू की डोरी ।

तुलित (भू० क० कृ०) [तुल+क्त] 1. तोला हुआ, प्रतितुलित 2. तुलना किया हुआ, उपमित, बराबर किया हुआ—भर्तृ० ३।३६, दे० 'तुल्' ।

तुल्य (वि०) [तुलया संमितं यत्] 1. समान प्रकार या श्रेणी का, संतुलित, समान, सदृश, अनुरूप (संबं० या करण० के साथ अथवा समास में) मनु० ४।८६, याज्ञ० २।७७, रघु० २।३५, १२।८०, १८।३८ 2. योग्य 3. समरूप, वही 4. समदर्शी । सम०—दर्शन समदर्शी, सबको समदृष्टि से देखने वाला,—पानम् मिलकर मद्यपान करना, सहपान,—योगिता (अलं० शा० में) एक अलंकार, एक ही विशेषण रखने वाले कई पदार्थों का एकत्र संयोग, पदार्थ चाहे प्रसंगानुकूल हो अथवा असंबद्ध—नियतानां सकृद्धर्मः सा पुनस्तुल्ययोगिता—काव्य० १०, तु० चन्द्रा० ५।४१,—रूप (वि०) अनुरूप, समरूप, समान, सदृश ।

तुबर (वि०) [तु+ष्वरच्] 1. कषाय, कसैला 2. बिना दाढ़ी का (तूवर भी)।

तुष् (दिवा० पर०—तुष्यति, तुष्ट), प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, परितृप्त होना, खुश होना (प्रायः करण० के साथ)—रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवाः—भर्तृ० २।८० मनु० ३।२०७, भग० २।५५, भट्टि० २।१३, १५।८, रघु० ३।६२, प्रेर०—तोषयति ते, प्रसन्न करना, परितुष्ट करना, सन्तुष्ट करन, **परि—**,परितृप्त होना, प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना—वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या—भर्तृ० ३।५०, अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या २।२, **सम्** ,प्रसन्न होना, परितृप्त होना सन्तुष्ट होना—सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च मनु० ३।६०, भर्तृ० ३।५, भग० ३।१७।

तुषः [तुष्+क] अनाज की भूसी,—अजानतार्थं तत्सर्वं (अध्ययनम्) तुषाणां कण्डनं यथा - मनु० ४।७८। सम० - **अग्निः**—**अनलः** अनाज की भूसी या बूर की आग,—**अम्बु** (नपुं०),—**उदकम्** चावल या जौ की कांजी,—**ग्रहः**,—**सारः** आग।

तुषार (वि०)[तुष्+आरक्] ठण्डा, शीतल, तुषाराच्छन्न (पाले के कारण शीतल), ओस से युक्त—शि० ९।७, अपां हि तृप्ताय न वारिधारा स्वादुः सुगन्धिः स्वदते तुषारा - नै० ३।९३, **रः** 1. कोहरा, पाला 2. बर्फ, हिम—कु० १।६, ऋतु० ४।१ 3. ओस—रघु० १४।८४ श० ५।१९ 4. धुन्द, क्षीणवर्षा, फुहार, ठण्डे पानी की बौछार,—पृक्तस्तुषारैर्गिरिनिर्झराणाम्—रघु० २।१३, ९।६८ 5. एक प्रकार का कपूर। सम०—**अद्रिः**,—**गिरिः**,—**पर्वतः** हिमालय पहाड़—तुषाराद्रिवातः—मेघ० १०७, **कणः** ओस के कण, हिमकण, कुहरा पाला,—**कालः** सरदी का मौसम,—**किरणः**, **रश्मिः** चन्द्रमा,—अमरु ४९, शि० ९।२७,—**गौर** (वि०) 1. हिम की भांति श्वेत 2. हिम के कारण श्वेत,—**रः** कपूर।

तुषिताः (ब० व०)[तुष्+कितच्] उपदेवताओं का समूह जो गिनती में १२ या ३६ कहे जाते हैं।

तुष्ट (भू० क० कृ०) [तुष्+क्त] 1. प्रसन्न, तुष्ट, खुश, परितृप्त, परितुष्ट 2. जो कुछ अपने पास है उसी से सन्तुष्ट, तथा अन्य के प्रति उदासीन।

तुष्टिः (स्त्री०) [तुष्+क्तिन्] 1. सन्तोष, परितृप्ति, प्रसन्नता, परितोष 2. (सां० द० में) मौन स्वीकृति, प्राप्त वस्तु से अधिक की लालसा न होना।

तुष्टुः [तुष्+तुक्] कर्णमणि कानों में पहनने की मणि

तुस=तुष।

तुहिन (वि०) [तुह्+इनन्, ह्रस्वश्च] ठण्डा, शीतल,—**नम्** 1. हिम, बर्फ़ 2. ओस, कुहरा - तृणाग्रलग्नैस्तुहिनैः पतद्भिः—ऋतु० ४।७, ३।१५ 3. चाँदनी 4. कपूर। सम०—**अंशुः**,—**करः**,—**किरणः**,—**द्युतिः**,—**रश्मिः** 1. चन्द्रमा,=शि० ९।३० 2 कपूर, **अचलः**—**अद्रिः**,—**शैलः** हिमालय पहाड़,—रघु० ८।५४,—**कणः** ओस की बूंद—अमरु ५४,—**शर्करा** बर्फ़।

तूण् i (चुरा० उभ०—तूणयति—ते) सिकोड़ना, ii (चुरा० आ०—तूणयते) भरना, भर देना।

तूणः [तूण्+घञ्] तरकस—मिलितशिलीमुखपाटलिपटलकृतस्मरतूणविलासे—गीत० १, रघु० ७।५७। सम०—**धारः** धनुर्धर।

तूणी, तूणीर [तूण+ङीष्, तूण्+ईरन्] तरकस—रघु० ९।५६।

तूवरः [तु+क्विप्, तु+वृ पृषो०] 1. बिना दाढ़ी का मनुष्य 2. बिना सींग का बैल 3. कषाय, कसैला 4. हिजड़ा।

तूर् (दिवा० आ०—तूर्यते, तूर्ण)1. जल्दी से जाना, शीघ्रता करना 2. चोट पहुँचाना, मारना।

तूरम् [तूर्+घञ्] एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।

तूर्ण (वि०) [त्वर्+क्त, ऊठ्, तस्य नत्वम्] फुर्तीला, तेज़, शीघ्रकारी 2. द्रुतगामी, बेड़ा,—**र्णः** फुर्ती, शीघ्रता,—**र्णम्** (अव्य०) फुर्ती से, जल्दी से—चूर्णमानीयतां तूर्णं पूर्णचन्द्रनिभानने—सुभाष०।

तूर्यः,—र्यम् [तूर्यते ताड्यते तूर्+यत्] एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, तुरही—मनु० ७।२२५, कु० ७।१०। सम० —**ओघः** उपकरणों का समूह।

तूलः,—लम् [तूल्+क] रूई,—**लम्** 1. पर्यावरण, आकाश, वायु 2. घास का गुच्छा 3. शहतूत का पेड़,—**ला** 1. कपास का पेड़ 2. लैम्प की बत्ती,—**ली** 1. रूई 2. दीवे की बत्ती 3. जुलाहे का ब्रुश या कूची 4. चित्रकार की कूची या तूलिक 5. नील का पौधा। सम०—**कार्मुकम्**—**धनुस्** धुनकी, अर्थात् रूई पीनने की धनुही,—**पिचुः** रूई,—**शर्करा** बिनौला रूई के पौधे का बीज।

तूलकम् [तूल+कन्] रूई।

तूलिः (स्त्री०) [तूल्+इन्] चितेरे की कूची।

तूलिका [तूलि+कन्+टाप] चित्रकार की कूची, लेखनी,—उन्मीलितं तूलिकयेव चित्रम्—कु० १।३१ 2. रूई की बत्ती (दीपक के लिए अथवा उबटन आदि लगाने के लिए) 3. रूई भरा गद्दा 4. बर्मा, छेद करने की सलाख।

तूष्णीक (वि०) [तूष्णीम्+क, मलोपः] चुप रहने वाला, मौनी, स्वल्पभाषी।

तूष्णीम् (अव्य०)[तूष्+नीम् बा०] नीरवता में चुपचाप, चुपके से, बिना बोले या बिना किसी शोरगुल के—किं भवांस्तूष्णीमास्ते—विक्रम० २, न योत्स्य इति गोविन्द मुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह—भग० २।९। सम०—**भावः** नीरवता, निस्तब्धता,—**शीलः** खामोश, स्वल्पभाषी या मौनी।

तूस्तम् [तूस्+तन्, दीर्घः] 1. जटा 2. धूल 3. पाप 4. कण, सूक्ष्म ज़र्रा ।

तृंह् (तुदा० पर०—तृंहति) मारना, चोट पहुँचाना—दे० तृह् ।

तृणम् [तृह्+क्न, हलोपश्च] 1. घास—किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी—भर्तृ० २।२९ 2. घास की पत्ती, सरकण्डा, तिनका 3. तिनकों की बनी कोई चीज़ (जैसे बैठने की चटाई), तुच्छता के प्रतीक रूप में प्रयुक्त—तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि—भर्तृ० २।१७, दे० 'तृणीकृ' भी । सम०—**अग्निः** 1. भुस या तिनकों की आग—मनु० ३।१६८ 2. जल्दी बुझ जाने वाली आग,—**अञ्जनः** गिरगिट,—**अटवी** ऐसा जङ्गल जिसमें घास की बहुतायत हो,—**आवर्तः** हवा का बवण्डर, भभूला, **असृज्** (नपुं०),—**कुङ्कुमम्**,—**गौरम्** एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,—**इन्द्रः** ताड का वृक्ष,—**उल्का** तिनकों की मशाल, फूँस की आग की लौ,—**ओकस्** (नपुं०) फूँस की झोपड़ी,—**काण्डः**,—**डम्** घास का ढेर,—**कुटी**—**कुटीरकम्** घास फूँस की कुटिया—**केतुः** ताड का वृक्ष,—**गोधा** एक प्रकार की गिरगिट, गोह,—**ग्राहिन्** (पुं०) नीलम, नीलकान्त मणि,—**चरः** गोमेद, एक प्रकार का रत्न,—**जलायुका**,—**जलूका** तितली का लार्वा,—**द्रुमः** 1. ताड का वृक्ष, खजुर 2. नारियल का पेड़ 3. सुपारी का पेड़ 4. केतकी का पौधा 5. छुहारे का वृक्ष,—**धान्यम्** जङ्गली अनाज जो बिना बोये उगे,—**ध्वजः** 1. ताड का वृक्ष 2. बांस,—**पीडम्** दस्त-ब-दस्त लड़ाई,—**पूली** चटाई, सरकण्डो का बना मूढ़ा—**प्राय** (वि०) तिनके के मूल्य का, निकम्मा, नगण्य,—**बिन्दुः** एक ऋषि का नाम—रघु० ८।७९,—**मणिः** एक प्रकार का रत्न (अम्बर, राल),—**मत्कुणः** जमानत या ज़ामिन प्रतिभू (सम्भवतः 'ऋणमत्कुण' का अशुद्ध पाठ),—**राजः** 1. नारियल का पेड़ 2. बांस 3. ईख, गन्ना 4. ताड़ का पेड़—**वृक्षः** 1. ताड का पेड़, खजूर का वृक्ष 2. छुहारे का वृक्ष 3. नारियल का पेड़ 4. सुपारी का पेड़,—**शीतम्** एक प्रकार का सुगन्धित घास,—**सारा** केले का पेड़,—**सिंहः** कुल्हाड़ा,—**हर्म्यः** घास फूंस का बना घर ।

तृण्या [तृण+य+टाप्] घास का ढेर ।

तृतीय (वि०) [त्रि+तीय, संप्र०] तीसरा,—**यम्** तीसरा भाग । सम०—**प्रकृतिः** (पुं०, स्त्री०) हीजड़ा ।

तृतीयक (वि०) [तृतीय+कन्] प्रति तीसरे दिन होने वाला, (बुखार) तैया ।

तृतीया [तृतीय+टाप्] 1. चांद्र पक्ष का तीसरा दिन, तीज 2. (व्या० में) करण कारक या उसके विभक्ति-चिह्न । सम०—**कृत** (वि०) (खेत आदि) तीन बार जोता गया,—**तत्पुरुषः** करणकारक का समास,—**प्रकृतिः** (पुं० स्त्री०) हीजड़ा ।

तृतीयिन् (वि०) [तृतीय+इनि] तीसरे अंश का अधिकारी (दाय का) ।

तृद् (म्वा० पर०, रुधा० उभ० तर्दति, तृणत्ति, तृन्त्ते, तृण्ण) 1. फाड़ना, खण्डशः करना, चीरना 2. मार डालना, नष्ट करना, संहार करना—भट्टि० ६।३८, १४।३३, १०८, १५।३६, ४४ 3. मुक्त करना 4. अवज्ञा करना ।

तृप् i (दिवा०, स्वा०, तुदा० पर० तृप्यति, तृप्नोति, तृपति, तृप्त) 1. संतुष्ट होना, प्रसन्न होना, परितुष्ट होना—अद्य तर्प्स्यन्ति मांसादाः—भट्टि० १६।२९, प्राशीन्न चातृपत् क्रूरः—१५।२९, (प्रायः करण० के साथ, परन्तु कभी-कभी संबं०या अधि० के साथ भी)—को न तृप्यति वित्तेन—हि० २।१७४, तृप्तस्तत्पिशितेन—भर्तृ० २।३४, नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां नापगानां महोदधिः, नातङ्क सर्वभूतानां न पुंसां वामलोचनाः—पंच० १।१३७, तस्मिन्हि ततृपुर्देवास्तते यज्ञे—महा० 2. प्रसन्न करना, परितृप्त करना,—प्रेर० परितृप्त करना, प्रसन्न करना—इच्छा० तितृप्सति, तितर्पिषति, ii (म्वा० पर० चुरा० उभ०—तर्पति, तर्पयति—ते) 1. जलाना, प्रज्वलित करना 2. (आ०) सन्तुष्ट होना ।

तृप्त (वि०) [तृप्+क्त] संतृप्त, संतुष्ट, परितुष्ट ।

तृप्तिः (स्त्री०) [तृप्+क्तिन्] संतोष, परितोष, रघु० २।३९, ७३, ३।३ मनु० ३।२७१, भग० १०।१८ 2. अतितृप्ति, ऊब 3. प्रसन्नता, परितुष्टि ।

तृष् (दिवा० पर० तृष्यति, तृषित) 1. प्यासा होना,—भट्टि० ७।१०६, १४।३०, १५।५१ 2. कामना करना, लालायित होना, उत्सुक या उत्कंठित होना ।

तृष् (स्त्री०) [तृष्+क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—तृट्-ड्) 1. प्यास—तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि—भर्तृ० ३।९२, ऋतु० १।११ 2. लालसा, उत्सुकता ।

तृषा—दे० तृष् । सम०—**आर्त** (वि०) प्यास से आकुल, प्यासा,—**हम्** पानी ।

तृषित (भू० क० कृ०) [तृष्+क्त] 1. प्यासा—घट० ९, ऋतु० १।१८ 2. लालची, प्यासा, लाभ का इच्छुक ।

तृष्णज् (वि०) [तृष्+नजिङ्] लोभी, लालची, प्यासा ।

तृष्णा [तृष्+न+टाप् किच्च] 1. प्यास (शा० और. आलं०)—तृष्णा छिनत्त्यात्मनः हि० १।१७१, ऋतु० १।१५ 2. इच्छा, लालसा, लालच, लोभ, लिप्सा—तृष्णां छिन्धि भर्तृ० २।७७, ३।५, रघु० ८।२ । सम०—**क्षयः** इच्छा का नाश, मन की शान्ति, संतोष ।

तृष्णालु (वि०) [तृष्णा+आलु] बहुत प्यासा ।

तृह् (रुधा० पर०, चुरा० उभ० —तृणेढि, तर्हयति—ते, तृढ, इच्छा० तितृक्षति, तितृंहिषति) क्षति पहुँचाना, आघात पहुँचाना, मार डालना, प्रहार करना—नृ तृणेह्मीति लोकोऽयं वित्ते मां निष्पराक्रमम्—भट्टि० ६।३९ (तानि) तृणेढु रामः सह लक्ष्मणेन १।१९ ।

तॄ (भ्वा० पर०—तरति, तीर्ण) 1. पार पहुँच जाना, पार करना—केनोडुपेन परलोकनदीं तरिष्ये—मृच्छ० ८।२३, स तीर्त्वा कपिशाम्—रघु० ४।३८.मनु० ४।७७ 2. पार पहुँचाना, (मार्ग) तय करना, कु० ७।४८ मेघ० १८ 3. बहना, तैरना—शिला तरिष्यत्युदके न पर्णम्—भट्टि० १२।७७ 4. पूर्ण करना, जीत लेना, पार करना, विजयी हो जाना धीरा—हि तरन्त्यापदम्—का० १७५, कृच्छ्रम् महत्तीर्णः—रघु० १४।६, भग० १८।५८, मनु० ११।३४ 5. किनारे तक जाना, पारंगत होना—रघु० ३।३० 6. पूरा करना, सम्पन्न करना (प्रतिज्ञा का) पालन करना—दैवात्तीर्णप्रतिज्ञः—मुद्रा० ४।१२ 7. बचाया जाना, बच निकलना,—गावो वर्षभयात्तीर्णा वयं तीर्णा महाभयात्—हरि०, कर्मवा०—तीर्यते, पार किया जाना, (प्रेर० तारयति—ते 1. ले जाना, आगे बढ़ाना 2. पहुँचाना 3. बचाना, उद्धार करना, मुक्त करना; इच्छा० —तितीर्षति, तितरिषति, तितरीषति) पार करने की इच्छा करना—दोर्म्यां तितीर्षति तरङ्गवतीभुगजङ्गम् —काव्य० १०, **अति**—1. पार पहुँचना, जीत लेना, विजयी होना—भग० १३।२५, हि० ४, **अव**—1. उतरना, अवतरित होना—रथादवततार च—रघु० १।५४, १३।६८, मेघ० ५० 2. बहना, में गिरना—सागरं वर्जयित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति—श० ३ 3. प्रविष्ट होना; घुसना, आना—मालवि० १।२२, शि० ९।३२ 4. पूर्ण करना, दमन करना, पार करना 5. (किसी देवता का) मनुष्य के रूप में इस धरती पर अवतार लेना—तु० अवतार, प्रेर०—लाना, जाकर लाना, लगाना—रघु० १।३४, **उद्**— 1. (पानी में से) बाहर निकलना, (जहाज से) उतरना, निकलना—रघु० २।१७, शि० ८।६३ 2. पार जाना, पार पहुँचना उदतारिषुरम्भोधिम्—भट्टि० १५।३३, १०, रघु० १२।७१, १६।३३, मेघ० ४७ 3. दमन करना, जीतना, पार करना—व्यसनमहार्णवादुत्तीर्णम्—मृच्छ० १०।४९ इसी प्रकार—रोगोत्तीर्ण, **निस्**—, 1. पार पहुँचना —भर्तृ० ३।४ 2. पूरा करना, सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 3. पार करना, पूरा करना, जीतना—रघु० ३।७ 4. पूरा करना, अन्त तक जाना—रघु० १४।२१, **प्र**—पार पहुँचना, प्रेर० ठगना, धोखा देना—मां तथा प्रतार्य—श० ५, किंत्वेवं कविभिः प्रतारितमनास्तत्त्वं विजानन्नपि—भर्तृ० १।७८, **वि**—1. पार जाना, पार करना, परे जाना—रघु० ६।७७ 2. देना, स्वीकृत करना, प्रदान करना, अभिदान करना, अर्पित करना, कृपा करना, अनुग्रह करना—भगवान्मारीचस्ते दर्शनं वितरति—श० ७, वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे—उत्तर० २।४, निवासहेतोरुटजं वितेरुः —रघु० १४।८१, मा० १।३ 3. पैदा करना, उत्पादन करना—ज्योत्स्नाशङ्कामिह वितरति हंसश्रेणी—कि० ५।३१, गीत० १ 4. ले जाना, **व्यति**—,पार करना, पूरा करना, जीत लेना, **सम्**—,1. पार करना 2. तैरना, बहना 3. पूरा करना, जीत लेना, अन्त तक जाना ।

तेजनम् [तिज्+ल्युट्] 1. बाँस 2. पैना करना, तेज़ करना 3. जलाना 4. प्रदीप्त करना 5. चमकाना 6. सरकंडा, नरकुल 7. बाण की नोक, शस्त्र की धार ।

तेजलः [तिज्+णिच्+कलच्] एक प्रकार का तीतर ।

तेजस् (नपुं०) [तिज्+असुन्] 1. तेज़ी 2. (चाकू की) पैनी धार 3. अग्नि शिखा की चोटी, आग की लपट की नोक 4. गर्मी, चमक, दीप्ति 5. प्रभा, प्रकाश, ज्योति, कांति—रघु० ४।१, भग० ७।९, १०।३० 6. गर्मी या प्रकाश, सृष्टि के पाँच मूलतत्त्वों में से एक—अग्नि (अन्य चार ये हैं—पृथिवी, अप्, वायु और आकाश) 7. शरीर की कांति, सौंदर्य—रघु० ३।१५ 8. तेजस्विता—श० २।१४, उत्तर० ६।१४ 9. ताक़त, शक्ति, सामर्थ्य, साहस, बल, शौर्य, तेज—तेजस्तेजसि शाम्यतु—उत्तर० ५ 10. तेजस्वी—तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते—रघु० ११।१ 11. आत्मबल, ओज या ऊर्जा 12. चरित्रबल, ओजस्विता 13. तेजोयुक्त कान्ति, महिमा, प्रतिष्ठा, प्रभुता, गौरव—तेजोविशेषानुमितां (राजलक्ष्मीं) दधानः—रघु० २।७ 14. वीर्य, बीज, शुक्र—स्याद्रक्षणीयं यदि मे न तेजः—रघु० १४।६५, रघु० २।७५, दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः —श० ४।१ 15. वस्तु की मूल-प्रकृति 16. अर्क, सत 17. आत्मिकशक्ति, नैतिक शक्ति, जादू की शक्ति 18. आग 19. मज्जा 20. पित्त 21. घोड़े का वेग 22. ताज़ा मक्खन 23. सोना । सम०—**कर** (वि०) 1. कान्तिवर्धक 2. वीर्यवर्धक, शक्तिप्रद—**भङ्गः** 1. अपमान, प्रतिष्ठा का नाश 2. अवसाद, हतोत्साहता,—**मण्डलम्** प्रकाश का परिवेश,—**मूर्तिः** सूर्य,—**रूपः** परमात्मा ब्रह्म ।

तेजस्वत् तेजोवत् (व०) [तेजस्+मतुप्, मस्य वः] 1. उज्ज्वल, चमकीला, शानदार 2. तेज़, तीखा 3. वीर, शौर्यशाली 4. ऊर्जस्वी ।

तेजस्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) [तेजस्+विनि] 1. चमकदार, उज्ज्वल 2. शक्तिशाली, शौर्यसम्पन्न, बलवान्—कि० १६।१६ 3. गौरवशाली, महानुभाव 4. प्रसिद्ध, विख्यात 5. प्रचंड 6. अभिमानी 7. विधिसम्मत ।

तेजित (वि०) [तिज्+णिच्+क्त] 1. पनाया हुआ, तेज किया हुआ 2. उत्तेजित, उद्दीप्त, प्रणोदित ।

तेजोमय (व०) [तेजस्+मयट्] 1. यशस्वी 2. उज्ज्वल, चमकदार प्रकाशमान—भग० ११।४७ ।

तेमः [तिम्+घञ्] गीला या तर होना, आर्द्रता ।

तेमनम् [तिम्+ल्युट्] 1. गीला करना, तर करना 2. आर्द्रता 3. चटनी, मिर्च मसाला (जो भोजन को रुचिकर बनाये) ।

तेवनम् [तेव्+ल्युट्] 1. खेल, मनोरंजन, आमोद-प्रमोद 2. विहारभूमि, क्रीडास्थल ।

तैजस (वि०) (स्त्री०—सी) [तेजस्+अण्] 1. उज्ज्वल, शानदार, प्रकाशमान 2. प्रकाशयुक्त—तैजसस्य धनुषः प्रवृत्तये—रघु० ११।४३ 3. धातुमय 4. जोशीला 5. ओजस्वी, ऊर्जस्वी 6. शक्तिशाली, प्रबल,—सम् घी । सम०—आवर्तनी कुठाली ।

तैतिक्ष (व्या०) (स्त्री०—क्षी) [तितिक्षा+ण] सहनशील, सहिष्णु ।

तैतिरः [तैत्तिर पृषो०] तीतर ।

तैतिलः (पुं०) 1. गैंडा 2. देवता ।

तैत्तिरः [तित्तिर+अण्] 1. तीतर 2. गैंडा,—रम् तीतरों का समूह ।

तैत्तिरीय (पुं० ब० व०) [तित्तिरिणा प्रोक्तम् अधीयते—तित्तिरि+छ] यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के अनुयायी,—यः यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा (कृष्ण यजुर्वेद) ।

तैमिरः [तिमिर+अण्] आँखों का एक रोग—धुंधलापन ।

तैर्थिक (वि०) [तीर्थ+ठञ्] पवित्र, पावन,—कः 1. एक संन्यासी 2. किसी नवीन धार्मिक या दार्शनिक सिद्धांत का प्रतिपादन करने वाला,—कम् पवित्र जल (जैसा कि किसी पुण्यतीर्थ से लाया हुआ हो) ।

तैलम् [तिलस्य तत्सदृशस्य वा विकारः अण्] 1. तेल—लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्—भर्तृ० २।५, याज्ञ० १।२८३, रघु० ८।३८ 2. धूप । सम०—अटी भिर्र, बरैया,—अभ्यङ्गः शरीर में तेल की मालिश करना—कल्कजः खली,—पर्णिका,—पर्णी 1. चन्दन 2. धूप 3. तारपीन,—पिञ्जः सफ़ेद तिल,—पिपीलिका छोटी लाल रंग की चिऊँटी,—फलः हिंगोट का वृक्ष,—भाविनी चमेली,—माली दीवे की बत्ती,—यन्त्रम् तेली का कोल्हू,—स्फटिकः एक प्रकार की मणि ।

तैलङ्गः एक देश का नाम, वर्तमान कर्नाटक प्रदेश,—गाः (ब० व०) इस देश के लोग ।

तैलिकः, तैलिन् (पुं०) [तैल+ठन्, तैल+इनि] तेली, तेल पेरने वाला ।

तैलिनी [तैलिन्+ङीप्] दीवे की बत्ती ।

तैलीनम् [तिलानां भवनं क्षेत्रम्—खञ्] तिलों का खेत ।

तैषः [तिष्येण नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी—तिष्य+अण्+ङीप्=तैषी, सा अस्ति अस्मिन् मासे—तैषी+अण्] पौष का महीना ।

तोकम् [तु+क] सन्तान, बच्चा ।

तोककः [तोक+कन्] चातक पक्षी ।

तोडनम् [तुड्+ल्युट्] 1. टुकड़े २ करना, खण्डशः करना 2. फाड़ना 3. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना ।

तोत्त्रम् [तुद्+ष्ट्रन्] पशुओं को या हाथी को हाँकने का अंकुश ।

तोदः [तुद्+घञ्] पीडा, वेदना, संताप ।

तोदनम् [तुद्+ल्युट्] 1. पीडा, वेदना 2. अंकुश 3. चेहरा, मुँह ।

तोमरः,—रम् [तुम्पति हिनस्ति—तुम्प्+अर्, नि०] 1. लोहे का डण्डा 2. भाला, नेजा । सम०—धरः अग्निदेव ।

तोयम् [तु+विच्, तवे पूर्त्यै याति—या+क नि० साधुः] पानी—श० ७।१२ । सम०—अधिवासिनी पाटला वृक्ष,—आधारः, आशयः सरोवर, कूआँ, जलाशय तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखाङ्किताः—श० १।१४,—आलयः समुद्र, सागर,—ईशः वरुण का विशेषण (—शम्) पूर्वाषाढ़ नक्षत्रपुञ्ज,—उत्सर्गः जलोन्मोचन, वर्षा—मेघ० ३७,—कर्मन् (नपुं०) 1. अङ्गमार्जन 2. दिवंगत पितरों को जलतर्पण,—कृच्छ्रः,—च्छ्रम्, एक प्रकार की तपश्चर्या जिसमें कुछ निश्चित समय तक जल पीकर ही रहना पड़ता है,—क्रीडा जलविहार —मेघ० ३३,—गर्भः नारियल,—चरः एक जलजन्तु,—डिम्बः,—भः ओला,—दः बादल—रघु० ६।६५, विक्रम० १।१४, °अत्ययः शरद् ऋतु,—धरः बादल —धिः,—निधिः समुद्र,—नीवी पृथ्वी,—प्रसादनम् कतकफल, निर्मली,—मलम् समुद्रफेन,—मुच् (पुं०) बादल,—यन्त्रम् 1. जल-घड़ी 2. फ़ौवारा,—राज्,—राशिः समुद्र,—वेला जल का किनारा, समुद्रतट,—व्यतिकरः (नदियों का) संगम—रघु० ८।९५,—शुक्तिका सीपी,—सर्पिका,—सूचकः मेंढक ।

तोरणः,—णम् [तुर्+युच् आधारे ल्युट् वा तारा०] 1. महराबदार बनाया हुआ द्वार, सिंह द्वार 2. बहिर्द्वार, प्रवेशद्वार—गणोनृपाणामथ तोरणाद् बहिः—शि० १२।१, दूराल्लक्ष्यं सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन—मेघ० ७५ 3. अस्थायी रूप से बनाया हुआ शोभाद्वार—कु० ७।३, रघु० १।४१, ७।४, ११।५ 4. स्नानागार के निकट का चबूतरा,—णम् गर्दन, कण्ठ ।

तोलः,—लम् [तुल्+घञ्] 1. तोल या भार जो तराजू में तोल लिया गया हो 2. सोने चाँदी का एक तोला या १२ माशे का भार ।

तोषः [तुष्+घञ्] सन्तोष, परितोष, प्रसन्नता, खुशी ।

तोषणम् [तुष+ल्युट्] 1. सन्तोष, परितोष 2. सन्तोषप्रद परितृप्ति ।

तोवलम् [तोप + लू + ड] मूसल, सोंटा।
तौक्षिकः (ग्रीक शब्द) तुला राशि।
तौतिकः (पुं०) वह सीपी जिसमें से मोती निकलती है, —कम् मोती।
तौर्यम् [तूर्य + अण्] तुरही का शब्द। सम० —त्रिकम् नृत्य, गान और वाद्य की समेकता, तेहरी स्वरसंगति —तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः—मनु० ७।४७, उत्तर० ४।
तौलम् [तुला + अण्] तराजू।
तौलिकः, -तौलिकिकः [तुलि + ठक्, तुलिका + ठक्] चित्रकार।
त्यक्त (भू० क० कृ०) [त्यज् + क्त] 1. छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, परित्यक्त, उन्मुक्त 2. उत्सृष्ट, जिसने आत्मसमर्पण कर दिया है 3. कतराया हुआ, टाला हुआ —दे० त्यज्। सम० —अग्निः वह ब्राह्मण जिसने अग्निहोत्र करना छोड़ दिया है, —जीवित, —प्राण (वि०) प्राण देने के लिए तैयार, कोई भी जोखिम उठाने को तैयार —मदर्थे त्यक्तजीविताः —भग० १।९, —लज्ज (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म।
त्यज् (भ्वा० पर० त्यजति, त्यक्त) 1. छोड़ना (सब अर्थों में) त्यागना, उत्सर्ग करना, चले जाना —वर्त्म भानोस्त्यजाशु—मेघ० ३९; मनु० ६।७७, ९।१७७, श० ५।२६ 2. जाने देना, बरखास्त करना, सेवामुक्त करना,—भट्टि० ६।१२२ 3. छोड़ देना, त्यागना, उत्सर्ग करना, आत्मसमर्पण करना—भर्तृ० ३।१६, मनु० २।९५, ६।३३, भग० ६।२४, १६।२१ 4. कतराना, टालना 5. छुटकारा पाना, मुक्त करना—भग० १।३ 6. अवहेलना करना, उपेक्षा करना त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च—भग० १।३३ 7. उद्धृत करना 8. वितरण करना, प्रदान कर देना, कृतं (संचयं) आश्वयुजे त्यजेत् —याज्ञ० ३।४७, मनु० ६।१५, प्रेर०—छुड़वाना, इच्छा०—तित्यक्षति छोड़ने की इच्छा करना, परि—1. छोड़ना, उत्सर्ग करना, त्याग करना 2. पद त्याग करना, छोड़ देना, रद्द कर देना, तिलाञ्जलि देना—प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति —मुद्रा० २।१७ 3. उद्धृत करना—तृणमप्यपरित्यज्य सतृणम्, सम्—1. त्यागना, जायामदोषामुत सन्त्यजामि —रघु० १४।३४ 2. टालना, कतराना —भर्तृ० १।८१ 3. छोड़ देना, तिलांजलि देना—मनु० ४।१८१ 4. उद्धृत करना—उदा०—संत्यज्य विक्रमादित्यं धैर्यमन्यत्र दुर्लभम्—राजत० ३।३४३।
त्यागः [त्यज् + घञ्] 1. छोड़ना, परित्याग, छोड़ देना, छोड़ कर चले जाना, वियोग —न माता न पिता न स्त्री न पुत्रस्त्यागमर्हति—मनु० ८।३१९, ९।७८ 2. छोड़ देना, पदत्याग कर देना, तिलांजलि देना —मनु० ११।११२, भग० १२।४१ 3. उपहार, दान, धर्मार्थ दान, —करे श्लाघ्यस्त्यागः —भर्तृ० २।६५, हि० १।१५४, त्यागाय सम्भृतार्थानाम्—रघु० १।१७ 4. मुक्तहस्तता, उदारता—रघु० १।२२ 5. स्राव, मलोत्सर्ग। सम०—युत, —शील (वि०) मुक्त हस्त, उदार, दानशील।
त्यागिन् (वि०) [त्यज् + घिनुण्] 1. छोड़ने वाला, परित्याग करने वाला, छोड़ देने वाला 2. प्रदाता, दाता 3. शौर्यशाली, शूरवीर 4. वह जो धार्मिक अनुष्ठानों के फलस्वरूप किसी पारितोषिक या पुरस्कार की अपेक्षा नहीं करता है—यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते—भग० १८।११।
त्रप् (भ्वा० आ०—त्रपते, त्रपित) शर्माना, लजाना, झंझट में फँस जाना—त्रपन्ते तीर्थानि त्वरितमिह यस्योद्धृतिविधौ गङ्गा० २८, अप—, मुड़ना, शर्म के कारण कार्यनिवृत्त होना—तस्माद्बलैरपत्रेपे —भट्टि० १४।८४, येनापत्रपते साधुरसाधुस्तेन तुष्यति— महा०।
त्रपा [त्रप् + अङ् + टाप्] 1. शर्म, लाज —मन्दत्रपाभर —गीत० १२ 2. हया, शर्म (अच्छे और बुरे अर्थ में) 3. कामुक या व्यभिचारिणी स्त्री 4. प्रसिद्धि, ख्याति। सम० निरस्त, —हीन (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म, —रण्डा वेश्या।
त्रपिष्ठ (वि०) [अयम् एषाम् अतिशयेन तृप्रः — तृप्र + इष्ठन्, तृप्रशब्दस्य त्रपादेशः] अत्यन्त सन्तुष्ट।
त्रपीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [तृप्र + ईयसुन्, तृप्रशब्दस्य त्रपादेशः] अपेक्षाकृत अधिक सन्तुष्ट।
त्रपु (नपुं०) [अग्निं दृष्ट्वा त्रपते लज्जते इव— त्रप् + उन् तारा०] टीन, रांगा—यदि मणिस्त्रपुणि प्रतिबध्यते— पंच० १।७५।
त्रपुलम्, —षम्, त्रपुस् (नपुं०), —सम् [त्रप् + उल, त्रप् + उष, त्रप् + उस्, त्रप् + उस] टीन, रांगा।
त्रप्स्यम् (नपुं०) मट्ठा, घोला हुआ दही।
त्रय (वि०) (स्त्री—यी) [त्रि + अयच्] तेहरा, तिगुना, तीन भागों में विभक्त, तीन प्रकार का—त्रयी वै विद्या ऋचो यजूंषि सामानि—शत०, मनु० १।२३, —यम् तिगड्डा, तीन का समूह— अदेयमासीत् त्रयमेव भूपतेः शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे—रघु० ३।१६, लोकत्रयम्— भग० ११।२०, ४३, मनु० २।७६।
त्रयस् ('त्रिशब्द' पुं०, कर्तृ० ब० व०, समास में प्रयोग, अथवा संख्यावाचक शब्दों के साथ) तीन। सम० —चत्वारिंश (वि०) तेंतालीसवां, —चत्वारिंशत् (वि० या स्त्री०) तेंतालीस, —त्रिंश (वि०) तेंतीसवां—त्रिंशत् (वि० या स्त्री०) तेंतीस, —दश (वि०) 1. तेरहवां 2. तेरह जोड़ कर —'त्रयोदशं शतम्' एक सौ तेरह, —दशन् (वि०, ब० व०) तेरह, —दशन (वि०)

तेरहवाँ,—दशी चान्द्र पक्ष की तेरहवीं तिथि,—नवतिः (स्त्री०) तिरानवे,—पञ्चाशत् (स्त्री०) तरेपन,—विंश (वि०) 1. तेइसवाँ 2. तेईस से युक्त,—विंशतिः (स्त्री०) तेईस, —षष्टिः (स्त्री०) तरेसठ,—सप्ततिः (स्त्री०) तिहत्तर।

त्रयी [त्रय+ङीप्] 1. तीनों वेदों की समष्टि (ऋग्यजुःसामानि)—त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः—का० १, तौ त्रयीवर्जमितरा विद्याः परिपाठितौ—उत्तर० २, मनु० ४।१२५ 2. तिगड्डा, त्रिक, त्रिसमूह—व्यद्योतिष्ट सभावेद्यामसौ नरशिखित्रयी—शि० २।३ 3. गृहिणी या विवाहिता नारी जिसका पति तथा बालबच्चे जीवित हों 4. बुद्धि, समझ। सम०—तनुः 1. सूर्य का विशेषण, इसी प्रकार 'त्रयीमयः' 2. शिव का एक विशेषण,—धर्मः तीनों वेदों में वर्णित धर्म—भग० ९।२१,—मुखः ब्राह्मण।

त्रस् i (भ्वा०, दिवा० पर०—त्रसति, त्रस्यति, त्रस्त) 1. थर्राना, काँपना, हिलना, भय के कारण विचलित होना 2. डरना, भयभीत होना, डर जाना (अपा० के साथ, कभी-कभी सम्बं० या करण० के साथ)—प्रमदवनात् त्रस्यति—का० २५५, कपेरत्रासिषुर्नादात्—भट्टि० ९।११, ५।७५, १४।४८, १५।५८, शि० ८।२४, कि० ८।७, प्रेर०—डराना, भयभीत करना,—वि०—, भयभीत या त्रस्त होना—वित्रस्तमुग्धहरिणीसदृशैः कटाक्षैः—भर्तृ० १।९, सम्—, डरना, भयभीत होना, त्रस्त होना—भट्टि० १४।३९।

ii (चुरा० उभ०—त्रासयति—ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. थामना 3. लेना, पकड़ना 4. विरोध करना, रोकना।

त्रस (वि०) [त्रस्+क] चर, जंगम,—सः हृदय,—सम् 1. वन जंगल 2. जानवर। सम०—रेणुः अणु, धूल का कण या अणु जो सूर्यकिरण में हिलता हुआ दिखाई देता है—तु० जालान्तरगते भानौ सूक्ष्मं यद्दृश्यते रजः, प्रथमं तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचक्षते—मनु० ८।१३२, याज्ञ० १।३६१।

त्रसरः [त्रस्+अरन् बा०] ढरकी (जुलाहों का एक उपकरण जिसमें धागों की नली रख कर बुनते हैं)।

त्रसुर, त्रस्नु (वि०) [त्रस्+उरच्, त्रस्+क्नु] भीरु, काँपने वाला, डरपोक—अत्रस्नुभिर्युक्तधुरं तुरङ्गैः—रघु० १४।४७, सीतां सौमित्रिणा त्यक्तां सध्रीचीं त्रस्नुमेकिकाम्—भट्टि० ६।७।

त्रस्त (भू० क० कृ०) [त्रस्+क्त] 1. भयभीत, डरा हुआ, आतंकित—त्रस्तैकहायनकुरङ्गविलोलदृष्टिः—मा० ४।८ 2. डरपोक, भीरु 3 फुर्तीला, चंचल।

त्राण (भू० क० कृ) [त्रै+क्त तस्य नत्वम्] रक्षा किया गया, अभिरक्षित, प्ररक्षित, बचाया गया,—णम् 1. रक्षा, प्रतिरक्षा, प्ररक्षा—आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि—श० १।११ रघु० १५।३ 2. शरण, सहारा, आश्रय—भट्टि० ३।५०।

त्रात (भू० क० कृ) [त्रै+क्त] 1. सुरक्षित, बचाया गया, रक्षा किया गया।

त्रापुष (वि०) (स्त्री०—षी) [त्रपुष+अण्] राँगे का बना हुआ।

त्रास (वि०) [त्रस्+घञ्] 1. चर, चलनशील 2. डराने वाला,—सः डर, भय, आतंक—अन्तः कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः—रत्ना० २।३, रघु० २।३८, ९।५८ 2. चौकन्ना करने वाला, भयभीत करने वाला 3. मणिगत दोष।

त्रासन (वि०) [त्रस्+णिच्+ल्युट्] खौफ़नाक, डरावना, भयङ्कर,—नम् डराने की क्रिया, डराना।

त्रासित (वि०) [त्रस्+णिच्+क्त] डराया हुआ, आतंकित भयभीत।

त्रि (सं० वि०—केवल ब० व०, कर्तृ० पुं० त्रयः, स्त्री० तिस्रः, नपुं० त्रीणि) तीन—त एव हि त्रयो लोकास्त एव त्रय आश्रमाः—मनु० २।२२९, प्रियतमाभिरसौ तिसृभिर्बभौ—रघु० ९।१८, त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती—मनु० ९।९०। सम०—अंशः 1. तिहाई भाग 2. तीसरा अंश,—अक्षः—अक्षकः शिव का एक विशेषण,—अक्षरः 1. ईश्वर द्योतक अक्षर 'ओम्' जो तीन अक्षरों से मिल कर बना है—दे० 'अ' में 2. जोड़ी मिलाने वाला, घटक (यह शब्द तीन वर्णों से मिल कर बना है),—अङ्कटम्,—अङ्गटम् 1. वह तीन रस्सियाँ जिनके सहारे बहँगी के दोनों पलड़े दोनों किनारों पर लटकते रहते हैं 2. एक प्रकार का अंजन, सुर्मा,—अञ्जलम्,—लिम् तीन अंजलि (मिला कर),—अधिष्ठानः आत्मा,—अध्वगा,—मार्गगा,—वर्त्मगा गंगा नदी (तीनों लोकों में बहने वाली) के विशेषण,—अम्बकः ('त्रियम्बक' भी, यद्यपि लौकिक साहित्य में प्रयोग विरल है) तीन आंखों वाला, शिव, त्रियम्बकं संयमिनं ददर्श—कु० ३।४४, जडीकृतस्त्र्यम्बकवीक्षणेन—रघु० २।४२, ३।४९, °सखः कुबेर का विशेषण,—अम्बका पार्वती का विशेषण,—अब्द (वि०) तीन वर्ष पुराना (—ब्दम्) तीन वर्ष,—अशीत (वि०) तिरासिवाँ,—अशीतिः (स्त्री०) तिरासी,—अष्टन् (वि०) चौबीस,—अश्र—अस्र त्रिकोण, त्रिभुजाकार (—स्रम्) तिकोन, त्रिभुज,—अहः तीन दिन का काल,—अहित (वि०) 1. तीन दिन में उत्पादित या अनुष्ठित 2. हर तीसरे दिन घटने वाला—(यथा बुखार) तेया,—ऋचम् ('तृचम्' भी) तीन ऋचाओं की समष्टि—मनु० ८।१०६,—ककुद् (पुं०) 1. त्रिकूट पहाड़ 2. विष्णु या कृष्ण,—कर्मन् (नपुं०) ब्राह्मण के तीन मुख्य कर्तव्य

अर्थात् यज्ञ करना, वेद का अध्ययन करना, तथा दान देना (—पुं०) जो इन तीन कर्मों को सम्पन्न करने में व्यस्त हो, ब्राह्मण,—**कायः** बुद्ध का नाम,—**कालम्** तीन काल अर्थात् भूत, वर्तमान और भविष्यत् या तीन समय - प्रातः, मध्याह्न तथा सायम् 2. क्रिया के तीन काल (भूत, वर्तमान और भविष्यत्) °**ज्ञ**, °**दर्शिन्** (वि०) सर्वज्ञ,—**कूटः** सीलोन का एक पहाड़ जिस पर रावण की राजधानी लंका स्थित थी—शि० २।५, —**कूर्चकम्** तीन फलों का चाकू,—**कोण** (वि०) त्रिभुजाकार, त्रिकोण बनाने वाला (—णः) 1. तीन कोन वाली आकृति 2. योनि,—**खट्वम्**,—**खट्वी** तीन खाटों का समूह,—**गणः** सांसारिक जीवन के तीन पदार्थों की समष्टि अर्थात् धर्म, अर्थ और काम,—न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्—कि० १।११, दे० नी० 'त्रिवर्ग',—**गत** (वि०) 1. तिगुना 2. तीन दिन में सम्पन्न,—**गर्ताः** (ब० व०) 1. भारत के उत्तरपश्चिम में एक देश, इसका नाम 'जलंधर' भी है 2. इस देश के निवासी या शासक,—**गर्ता** कामासक्त स्त्री, स्वैरिणी, —**गुण** (वि०) 1. तीन डोरों से युक्त तगड़ी—व्रताय मौंजीं त्रिगुणां बभार यां—कु० ५।१० 2. तीन बार आवृत्ति किया हुआ, तीन बार, त्रिविध, तेहरा, तिगुना —सप्त व्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य (दिनानि)—रघु० ३।२५ 3. सत्त्व, रजस् तथा तमस् नाम के तीन गुणों से युक्त, (—णम्) (सां० द० में) प्रधान (णा) (वेदा० द० में) 1. माया 2. दुर्गा का विशेषण —**चक्षुस्** (पुं०) शिव का एक विशेषण,—**चतुर** (वि०) (ब० व०) तीन या चार—गत्वा जवात् त्रिचतुराणि पदानि सीता - बालरा० ६।३४,—**चत्वारिंश** (वि०) तेतालीसवाँ,—**चत्वारिंशत्** (स्त्री०) तेतालीस,—**जगत्** (नपुं०)—**जगती** तीन लोक 1. स्वर्गलोक, अन्तरिक्षलोक तथा भूलोक या (२) स्वर्गलोक, भूलोक, पाताललोक,—**जटः** शिव का एक विशेषण, —**जटा** एक राक्षसी, जिसको रावण ने अशोकवाटिका में सीता की देखरेख के लिए नियत किया था, जब सीता वहाँ बन्दी के रूप में रक्खी गई। उस समय त्रिजटा ने स्वयं सीता के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया, तथा अपनी दूसरी सहचरियों को भी प्रेरित किया कि वह भी ऐसा ही करें,—**जीवा**,—**ज्या** तीन चिह्नों की त्रिज्या, या ९० कोटि, अर्धव्यास,—**णता**, धनुष,—**णव**,—**णवन्** (वि० ब० व०) ३×९, नौ का तिगुना अर्थात् सत्ताइस, - **तक्षम्**,—**तक्षी** तीन बढ़इयों का समूह,—**दण्डम्** 1. (संसार से विरक्त) संन्यासी के तीन डंडों को बांधकर एक किया हुआ 2. तिगुना संयम —अर्थात् मन, वाणी और कर्म का, (—डः) एक धर्मनिष्ठ संन्यासी की अवस्था—**दण्डिन्** (पुं०) धर्मनिष्ठ साधु या संन्यासी जिसने सांसारिक विषय वासनाओं का त्याग कर दिया है, और जो अपने दहिने हाथ में तीन-दंड (एक जगह मिला कर बंधे हुए) रखता है 2 जिसने अपने मन, वाणी और शरीर को वश में कर लिया है—तु० वाग्दण्डोऽथ मनोदण्डः कायदण्डस्तथैव च,यस्यैते निहिता बुद्धौ त्रिदण्डीति स उच्यते— मनु० १२।१०,—**दशाः** (ब० व०) 1. तीस 2. तेंतीस देवता, (—शः) देवता, अमर—कु० ३।१, °**अंकुशः** °**आयुधम्** इन्द्र का वज्र—रघु० ९।५४, °**अधिपः**, °**ईश्वरः** °**पतिः** इन्द्र के विशेषण, °**अध्यक्षः** विष्णु का एक विशेषण, °**अरिः** राक्षस, °**आचार्यः** बृहस्पति का विशेषण, °**आलयः**, °**आवासः** 1. स्वर्ग 2. मेरु पर्वत, °**आहारः** देवताओं का भोजन,°**गुरुः** बृहस्पति का विशेषण, °**गोपः** एक प्रकार का कीड़ा, वीरबहूटी (इन्द्रगोप)—श्रद्दधे त्रिदशगोपमात्रके दाहशक्तिमिव कृष्णवर्त्मनि —रघु० ११।४२, °**मंजरी** तुलसी का पौधा, °**वधू**, °**वनिता** अप्सरा या स्वर्ग की देवी—कैलासस्य त्रिदशवनितादर्पणस्यातिथिः स्याः—मेघ० ५८, **वर्त्मन्** आकाश,—**दिनम्** तीन दिनों की समष्टि,—**दिवम्** 1. स्वर्ग, त्रिमार्गयेव त्रिदिवस्य मार्गः—कु० १।२८, श० ७।३ 2. आकाश, पर्यावरण 3. प्रसन्नता, °**अधीशः** °**ईशः** 1. इन्द्र का विशेषण 2. देवता, °**उद्भवा** गंगा, °**ओकस्** (पुं०) देवता—**दृश** (पुं०) शिव का एक विशेषण—**दोषम्** शरीर में होने वाले तीनों दोष अर्थात् वात, पित्त और कफ,—**धारा** गंगा,—**णयनः** (**नयनः**)—**नेत्रः**—**लोचनः** शिव के विशेषण—रघु० ३।६६, कु० ३।६६, ५।७२,—**नवत** (वि०) तिरानवेवाँ, —**नवतिः** (स्त्री०) तिरानवे,—**पञ्च** (वि०) तीनगुना पांच अर्थात् पन्द्रह,—**पञ्चाश** (वि०) तरेपनवाँ, —**पञ्चाशत्** (स्त्री०) तरेपन,—**पटुः** काच,—**पताकः** 1. हाथ जिसकी तीन अंगुलियाँ फैली हुई हों 2. त्रिपुंड तिलक लगा हुआ मस्तक,—**पत्रकम्** ढाक,—**पथम्** तिराहा, अर्थात् द्युलोक, अन्तरिक्ष तथा भूलोक, या आकाश, भूलोक तथा पाताल 2. वह स्थान जहाँ तीन सड़कें मिलती हों, °**गा** गंगा का विशेषण—धृतसत्पथस्त्रिपथगामभित स तमारुरोह पुरुहूतसुतः—कि० ६।१, अमरु ९९,—**पदम्**, - **पदिका** तीन पैर वाला,—**पदी** 1. हाथी का तंग—नासत्करिणां ग्रैवं त्रिपदीच्छेदिनामपि—रघु० ४।४८ 2. गायत्री छन्द 3. तिपाई 4. गोधापदी नाम का पौधा,—**पर्णः** ढाक का पेड़ —**पाद** (वि०) 1. तीन पैरों वाला 2. तीन खण्डों से युक्त, तीन चौथाई,—रघु० १५।९६ 3. त्रिनाम (पुं०) वामनावतार भगवान् विष्णु का विशेषण,—**पुट** (वि०) त्रिभुजाकार (—टः) 1. बाण 2. हथेली 3. एक हाथ परिमाण 4. तट या किनारा,—**पुटकः** त्रिकोण, त्रिभुज,

—मुद्रा दुर्गा का विशेषण,—पुष्पम्,—पुण्ड्रकम् चन्दन, राख या गोबर से बनाई हुई तीन रेखाएँ,—पुरं 1. तीन नगरों का समूह 2. द्युलोक, अन्तरिक्ष और भूलोक में मय राक्षस द्वारा बनाये गये सोने, चाँदी और लोहे के ३ नगर (देवताओं की प्रार्थना पर यह तीनों नगर—उनमें रहने वाले राक्षसों समेत शिव जी द्वारा जला दिये गये)—कु० ७।४८, अमरु २, मेघ० ५६ भर्तृ० २।१२३, (रः) इन नगरों का अधिपति राक्षस °अन्तकः °अरिः, °घ्नः, °दहनः °द्विष्, (पुं०) °हरः शिव के विशेषण—भर्तृ० २।१२३, रघु० १७।१४, °दाहः तीन नगरों का जलाया जाना—कि० ५।१४, (—री) जबलपुर के निकट एक नगर जो पहले चेदिदेश के राजाओं की राजधानी था 2. एक देश का नाम,—पौरुष (वि०) तीन पीढ़ियों से सम्बन्ध रखने वाला, या तीन पीढ़ियों तक जलने वाला,—प्रस्रुतः वह हाथी जिससे मद का स्राव हो रहा हो,—फला तीन फलों (हरड़, बहेड़ा और आँवला) का संघात,—बलिः,—बली,—वलिः,—वली स्त्री की नाभि के ऊपर पड़ने वाले तीन बल (जो सौन्दर्य का चिह्न समझे जाते हैं)—क्षामोदरोपरिलसत्त्रिवलीलतानाम्—भर्तृ० १।९३, ८१, तु० कु० १।३९,—भद्रम् स्त्रीसहवास, मैथुन, स्त्रीसम्भोग,—भुजम् त्रिकोण,—भुवनम् तीन लोक—पुण्यं या यास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य—मेघ० ३३, भर्तृ० १।९९,—भूमः तिमंजिला महल,—मार्गा गंगा—कु० १।२८,—मुकुटः त्रिकूट पहाड़,—मुखः बुद्ध का एक विशेषण, —मूर्तिः हिन्दुओं के त्रिदेव—ब्रह्मा, विष्णु और महेश का संयुक्त रूप—कु० २।४,—यष्टिः तीन लड़ों का हार,—यामा रात्रि (तीन पहर वाली—आरम्भ और अन्त का आधा आधा पहर इससे पृथक् है)—संक्षिप्येत क्षण इव कथं दीर्घयामा त्रियामा—मेघ० १०८, कु० ७।२१, २६, रघु० ९।७०, विक्रम० ३।२२,—योनिः तीन कारणों (क्रोध, लोभ, और मोह) से होने वाला अभियोग,—रात्रम् तीन रातों (तथा दिनों) का समय,—रेखः शंख,—लिंग (वि०) तीनों लिंगों में प्रयुक्त अर्थात् विशेष, (गः) एक देश जिसे तैलंग कहते हैं, (गी) तीनों लिंगों की समष्टि,—लोकम् तीनों संसार, °ईशः सूर्य °नाथः तीनों लोकों का स्वामी, इन्द्र का विशेषण रघु० ३।४५ 2. शिव का विशेषण—कु० ५।७७ (—की) तीनों लोकों की समष्टि, विश्व—सत्यामेव त्रिलोकी सरिति हरशिरश्चुम्बिनी विच्छटायाम्—भर्तृ० ३।९५, शा० ४।२२,—वर्गः 1. सांसारिक जीवन के तीन पदार्थ—अर्थात् धर्म, अर्थ और काम—कु० ५।३८ 2. तीन स्थितियाँ हानि, स्थिरता और वृद्धि—क्षय स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम्—अमर०,—वर्णकम् पहले तीन वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) का समाहार,—वारम् (अव्य०) तीन वार, तीन मर्तबा,—विक्रमः वामनावतार विष्णु,—विद्यः तीनों वेदों में व्युत्पन्न ब्राह्मण—विध (वि०) तीन प्रकार का, तेहरा,—विष्टपम्,—पिष्टपम् इन्द्रलोक, स्वर्ग,—त्रिविष्टपस्येव पतिं जयन्तः—रघु० ६।७८, °सद् (पुं०) देवता—वेणिः,—णी (स्त्री) प्रयाग के निकट त्रिवेणी संगम जहाँ गंगा यमुना और सरस्वती मिलती हैं,—वेदः तीनों वेदों में निष्णात ब्राह्मण,—शङ्कुः अयोध्या का विख्यात सूर्य वंशी राजा, हरिश्चन्द्र का पिता (त्रिशंकु बुद्धिमान् धर्मात्मा और न्याय-परायण राजा था, परन्तु उसमें यह एक बड़ा दोष था कि वह अपने व्यक्तित्व को बहुत प्रेम करता था। उसने इसी शरीर से स्वर्ग जाने की इच्छा से यज्ञ करना चाहा, फलतः उसने अपने कुलगुरु वशिष्ठ से यज्ञ कराने की प्रार्थना की, परन्तु जब उन्होंने इस प्रार्थना को स्वीकार न किया तो उसने उनके १०० पुत्रों से प्रार्थना की, परन्तु उन्होंने भी इसके प्रस्ताव को बेहूदा बता कर ठुकरा दिया। त्रिशंकु ने उन सबको कायर और नपुंसक कहा, और इसके बदले उन्होंने उसे 'चाण्डाल बनने' का शाप दे दिया। जब त्रिशंकु की ऐसी दुर्दशा हुई तो विश्वामित्र ने जिसका परिवार एक दुर्भिक्ष के समय त्रिशंकु का आभारग्रस्त हो गया था—उसका यज्ञ सम्पन्न कराना स्वीकार कर लिया। उसने यज्ञ में देवताओं का आवाहन किया—जब देवता यज्ञ में न आये तो विश्वामित्र ने क्रुद्ध हो अपनी शक्ति से त्रिशंकु को इसी शरीर से ऊपर स्वर्ग में भेजा। त्रिशंकु ऊपर ही ऊपर उड़ता चला गया और आकाशमण्डल से जा टकराया। वहाँ इन्द्र तथा दूसरे देवताओं ने उसे सिर के बल धकेल दिया। तो भी तेजस्वी विश्वामित्र ने नीचे आते हुए त्रिशंकु को बीच ही में 'त्रिशंकु वहीं ठहरो' कह कर रोक दिया। फलतः भाग्यहीन राजा सिर के बल वहीं दक्षिणगोलार्ध में नक्षत्रपुंज के रूप में अटक गया। इसीलिए यह लोकोक्ति ('त्रिशङ्कुरिवान्तरा तिष्ठ' श० २ प्रसिद्ध हो गई) 2. चातक पक्षी 3. बिल्ली 4. टिड्डा 5. जुगणू, °जः हरिश्चन्द्र का विशेषण, °याजिन् (पुं०) विश्वामित्र का विशेषण,—शत (वि०) तीन सौ (तम्) 1. एक सौ तीन 2. तीन सौ, —शिखम् 1. त्रिशूल 2. (त्रिशाख) किरीट या मुकुट,—शिरस् (पुं०) एक राक्षस जिसको राम ने मारा था,—शूलम् तिरसूल, °अंकः °धारिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—शूलिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—शृङ्गः त्रिकूट नाम का पहाड़,- षष्टिः (स्त्री०) तरेसठ,—सन्ध्यम्,—सन्ध्यी दिन के तीन काल अर्थात् प्रातः, मध्याह्न और सायम्,—सन्ध्यम् (अव्य०) तीनों

संख्याओं के समय,—सप्तत वि०) तिहत्तरवाँ,—सप्ततिः तिहत्तर,—सप्तन्-सप्त (वि० व० व०) तीन बार सात अर्थात् २१—साम्यम् तीनों (गुणों) का साम्य,—स्थली तीन पवित्र स्थान—अर्थात् काशी, प्रयाग और गया, —स्रोतस् (स्त्री०) गंगा का विशेषण—त्रिस्रोतसं वहति यो गगनप्रतिष्ठाम्-स० ७।६, रघु० १०।६३, कु० ७।१६ —सीत्य,—हल्य (वि०) (खेत आदि) तीन बार जोता हुआ,—हायण (वि०) तीन वर्ष का।

त्रिंश (वि०) (स्त्री०—शी) [त्रिंशत्+डट्] 1. तीसवाँ 2. तीस से जुड़ा हुआ, उदा० त्रिंशं शतं—'एक सौ तीस' 3. तीस से युक्त।

त्रिंशक (वि०) [त्रिंश+कन्] 1. तीस से युक्त 2. तीस के मूल्य का या तीस में खरीदा हुआ।

त्रिंशत् (स्त्री०) [त्रयोदशतः परिमाणमस्य नि०] तीस, —पत्रम् सूर्योदय के साथ खिलने वाला कमल।

त्रिंशकम् [त्रिंशत्+कन्] तीस की समष्टि, तीस का समाहार।

त्रिक (वि०) [त्रयाणां संघः—कन्] 1. तिगुना, तेहरा 2. तिगड्डा बनाने वाला 3 तीन प्रतिशत,—कम् 1. तिगड्डा 2. तिराहा 3. रीढ़ की हड्डी का निचला भाग, कूल्हे के पास का भाग—त्रिके स्थूलता—पंच० १।१९०, कश्चिद्विवृत्तत्रिकभिन्नहारः रघु० ६।१६ 4, कन्धे की हड्डियों के बीच का भाग 5. तीन मसाले—(त्रिफला, त्रिकटु, त्रिमद),—का रस्सी के आने जाने के लिए कुएँ पर लगाई हुई लकड़ी की गिर्री।

त्रितय (वि०) (स्त्री०—यी) [त्रयोऽवयवा अस्य—त्रि+तयप्] तीन भागों वाला, तिगुना, तीन तह का,—यम् तिगड्डा, तीन का समूह—श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम्—श० ७।२९, रघु० ८।७८, याज्ञ० ३।२६६।

त्रिधा (अव्य०) [त्रि+धाच्] तीन प्रकार से या तीन भागों में, कु० ७।४४, भग० १८।१९।

त्रिस् (अव्य०) [त्रि+सुच्] तीसरी बार, तीन बार।

त्रुट् (दिवा० तुदा० पर० त्रुटयति, त्रुटति, त्रुटित) फाड़ना, तोड़ना, टुकड़े २ करना, तड़कना, फिसल जाना (आलंभी०)—गद्गदगलत्त्र्युटयद्विलीनाक्षरम्-भर्तृ० ३।८, १।९६, अयं ते बाष्पौघस्त्रुटित इव मुक्तामणिसरः—उत्तर० १।२९।

त्रुटिः,—टी (स्त्री०) [त्रुट्+इन् कित्, त्रुटि+ङीष्] 1. काटना, तोड़ना, फाड़ना 2. छोटा हिस्सा, अणु 3. समय का अत्यन्त सूक्ष्म अन्तर, १/४ क्षण या २ लव 4. सन्देह, अनिश्चितता 5. हानि, नाश 6. छोटी इलायची (पौधा)।

त्रेता [त्रीन् भदान् एति प्राप्नोति—पृषो० साधुः] 1. तिकड़ी त्रिक 2. तीन यज्ञाग्नियों का समाहार—मनु० २।२३१, रघु० १३।३७ 3. पासे को विशेष ढंग से फेंकना, तीन का दाँव फेंकना—त्रेताहृतसर्वस्वः मृच्छ० २।८ 4. हिन्दुओं के चार युगों में दूसरा—दे० 'युग'।

त्रेधा (अव्य०) [त्रि+एधाच्] तिगुनेपन से, तीन प्रकार से, तीन भागों में—तदेकं सत्त्रेधाख्यायते शत०, (नमः) तुभ्यं त्रेधा स्थितात्मने—रघु० १०।१६।

त्रै (भ्वा० आ० त्रायते, त्रात या त्राण) रक्षा करना, प्ररक्षित रखना, बचाना, प्रतिरक्षा करना (प्रायः अपा० के साथ) क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः—रघु० २।५३, भग० २।४०, मनु० ९।१३८, भट्टि० ५।५४, १५।१२०, परि—, बचाना, परित्रायस्व परित्रायस्व (नाटकों में)।

त्रैकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [त्रिकाल+ठञ्] तीन कालों से (भूत, वर्तमान और भविष्यत्) सम्बद्ध।

त्रैकाल्यम् [त्रिकाल+ष्यञ्] तीन काल अर्थात्—भूत, वर्तमान तथा भविष्यत्।

त्रैगुणिक (वि०) [त्रिगुण+ठक्] तिगुना, तेहरा।

त्रैगुण्यम् [त्रिगुण+ष्यञ्] 1. तिगुनापन, तीन धागों या गुणों का एकत्र होने का भाव 2. तीन गुणों का समाहार 3. तीन गुणों (सत्त्व, रजस्, तमस्) की समष्टि —त्रैगुण्योद्भवमत्र लोकचरितं नानारसं दृश्यते—मालवि० १।४।

त्रैपुरः [त्रिपुर+अण्] 1. त्रिपुर नाम का देश 2. उस देश का निवासी या शासक।

त्रैमातुरः [त्रिमातृ+अण्, उत्वम्] लक्ष्मण का विशेषण।

त्रैमासिक (वि०) (स्त्री०—की) [त्रिमास+ठञ्] 1. तीन मास पुराना 2. तीन महीने तक ठहरने वाला, या हर तीन महीने में आने वाला 3. तिमाही।

त्रैराशिकम् [त्रिराशि+ठञ्] (गणित) तीन ज्ञात राशियों के द्वारा चौथी अज्ञात राशि निकालने की रीति।

त्रैलोक्यम् [त्रिलोकी+ष्यञ्] तीन लोकों का समाहार —रघु० १०।५३।

त्रैवर्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [त्रिवर्ण+ठञ्] पहले तीन वर्णों से संबंध रखने वाला।

त्रैविक्रम (वि०) [त्रिविक्रम+अण्] त्रिविक्रम या विष्णु से सम्बन्ध रखने वाला।—रघु० ७।३५।

त्रैविद्यम् [त्रिविद्या+अण्] 1. तीनों वेद 2. तीनों वेदों का अध्ययन 3. तीन शास्त्र—द्यः तीनों वेदों में निष्णात ब्राह्मण—भग० ९।२०।

त्रैविष्टपः, त्रैविष्टपेयः [त्रिविष्टप+अण्, ढक् वा] देवता।

त्रैशङ्कवः [त्रिशङ्कु+अण्] त्रिशंकु के पुत्र हरिश्चन्द्र का विशेषण।

त्रोटकम् [त्रुट्+णिच्+ण्वुल्] नाटक का एक भेद—सप्ताष्टनवपञ्चाङ्कं दिव्यमानुषसंश्रयम्, त्रोटकं नाम तत्प्राहुः

प्रत्येकं सविदूपकम्—सा० द० ५४०, उदा० कालिदास का विक्रमोर्वशी।

त्रोटिः (स्त्री०) [त्रुट्+इ] चोंच, चंचु। सम०—हस्तः पक्षी।

त्रोत्रम् [त्रै+उत्र] पशुओं को हांकने की छड़ी।

त्वक्ष् (भ्वा० पर० त्वक्षति, त्वष्ट) कतरना, वक्कल उतारना, छीलना।

त्वङ्कारः [त्वम्+कृ+अण्] निरादर सूचक 'तू' शब्द से संबोधन करना।

त्वङ्ग् (भ्वा० पर० त्वङ्गति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. कूदना, सरपट दौड़ना 3. कांपना।

त्वच् (स्त्री०) [त्वच्+क्विप्] 1. खाल (मनुष्य, सांप आदि की) 2. (गौ, हरिण आदि का) चमड़ा—रघु० ३।३१ 3. छाल, वल्कल—कु० १।७, रघु० २।३७, १७।१२ 4. ढकना, आवरण 5. स्पर्शज्ञान। सम०—अङ्कुरः रोमांच होना,—इन्द्रियम् स्पर्शेन्द्रिय,—कण्डुरः फोड़ा,—गन्धः सन्तरा,—छेदः चमड़ी में घाव, खरोंच, रगड़,—जम् 1. रुधिर 2. बाल (शरीर पर के),—तरङ्गकः झुर्री,—त्रम् कवच, त्वक्त्रं चाचकचे वरम्—भट्टि० १४।९४,—दोषः चर्मरोग, कोढ़,—पारुष्यम् चमड़ी का रूखापन,—पुष्पः रोमांच,—सारः (त्वचि सारः) बांस, त्वक्साररन्ध्रपरिपूरणलब्धगीतिः—शि० ४।६१,—सुगंध संतरा।

त्वचा [त्वच्+टाप्] दे० त्वच्।

त्वदीय (वि०) [युष्मद्+छ, त्वत् आदेशः] तेरा, तुम्हारा—रघु० ३।५०।

त्वद् [युष्मदः त्वद् आदेशः समासे] (मध्यम पुरुष का रूप जो कि बहुधा समास में प्रथम पद के रूप में पाया जाता है—उदा० त्वदधीन, त्वत्सादृश्यम्—आदि।

त्वद्विध (वि०) [तव इव विधा प्रकारो यस्य] तेरी तरह, तुम्हारी भांति।

त्वर् (भ्वा० आ० त्वरते, त्वरित) शीघ्रता करना, जल्दी करना, वेग से चलना, फुर्ती से कार्य करना—भवान्सुहृदर्थे त्वरताम्—मालवि० २, नानुनेतुमबलाः स तत्वरे—रघु० १९।३८,—प्रेर० त्वरयति—जल्दी कराना, शीघ्रता कराना, आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना।

त्वरा, त्वरिः (स्त्री०) [त्वर्+अङ्+टाप्, त्वर्+इन्] शीघ्रता, क्षिप्रता, वेग—औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया—रत्ना० १।२।

त्वरित (वि०) [त्वर्+क्त] शीघ्रगामी, फुर्तीला, वेगवान्,—तम् शीघ्रता करना, जल्दी करना (अव्य०) जल्दी से, तेजी से, वेग से, शीघ्रता से।

त्वष्टृ (पुं०) [त्वक्ष्+तृच्] 1. बढ़ई, निर्माता, कारीगर 2. देवताओं का शिल्पी विश्वकर्मा [पौराणिक कथा के अनुसार त्वष्टृ अग्निदेवता माना जाता है, उसके त्रिशिरा नाम का पुत्र तथा संज्ञा नाम की पुत्री थी। संज्ञा का विवाह सूर्य के साथ हो गया—परन्तु संज्ञा अपने पति के दारुण तेज को सहन न कर सकी, फलतः त्वष्टा ने सूर्य को खैराद पर रख कर उसके प्रभा-मंडल को सावधानी से काट-छांट कर परिष्कृत कर दिया (तु० रघु० ६।३२—आरोप्य चक्रभ्रमिमुष्णतेजास्त्वष्ट्रेव यत्नोल्लिखितो विभाति—उस बची हुई कतरन से विष्णु का चक्र तथा शिव जी का त्रिशूल एवं देवताओं के अन्य शस्त्र बनाये गये)।

त्वादृश्, त्वादृश (स्त्री०—शी) [त्वमिव दृश्यते—युष्मद्+दृश्+क्विन्, कञ् वा, स्त्रियां ङीप्] तुझ सरीखा, तेरी तरह का—मेघ० ६९।

त्विष् (भ्वा० उभ० त्वेषति—ते) चमकना, जगमगाना, दमकना, दहकना।

त्विष् (स्त्री०) [त्विष्+क्विप्] 1. प्रकाश, प्रभा, दीप्ति, चमक-दमक चयस्त्विषामित्यवधारितं पुरा—शि० १।३, ९।१३, रघु० ४।७५ रत्ना० १।१८ 2. सौन्दर्य 3. अधिकार, भार 4. अभिलाष, इच्छा 5. प्रथा, प्रचलन 6. हिंसा 7. वक्तृता। सम०—ईशः (त्विषां पतिः) सूर्य।

त्विषिः [त्विष्+इन्] प्रकाश की किरण।

त्सरुः [त्सर्+उ] 1. रेंगने वाला जानवर 2. तलवार या किसी अन्य हथियार की मूठ—सुप्रग्रहविमलकलधौतत्सरुणा खड्गेन—वेणी० ३, त्सरुप्रदेशादपवर्जिताङ्गः—कि० १७।५८, रघु० १८।४८।

थ

थः [थुड्+ड] पहाड़,—थम् 1. रक्षा, प्ररक्षा 2. त्रास, भय 3. मांगलिकता।

थुड् (तुदा० पर०—थुडति) 1. ढकना, पर्दा डालना 2. छिपाना गुप्त रखना।

थुडनम् [थुड्+ल्युट्] ढकना, लपेटना।

थुत्कारः [थुत्+कृ+अण्] 'थुत्' ध्वनि जो थूकने की क्रिया करते समय होती है।

थुर्व् (भ्वा० पर० थुर्वति) चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना।

थूत्कारः, थूत्कृतम् [थूत्+कृ+अण्, क्त वा] 'थूत्' की ध्वनि जो थूकने की क्रिया करते समय होती है।

थैथै (अव्य०) किसी संगीत-वाद्य-यंत्र की अनुकरणात्मक ध्वनि।

द

द (वि०) [दै—दो या दा+क] (प्रायः समासान्त प्रयोग) देने वाला, स्वीकार करने वाला, उत्पादन करने वाला, पैदा करने वाला, काट कर फेंकने वाला, नष्ट करने वाला, दूर करने वाला—यथा धनद, अम्बद, गरद, तोयद, अनलद आदि,—दः 1. उपहार, दान 2. पहाड़, —दम् पत्नी,—दा 1. गर्मी 2. पश्चात्ताप।

दंश् (भ्वा० पर०—दशति, दष्ट—इच्छा० दिदङ्क्षति) काटना, डंक मारना—भट्टि० १५।४, १६।१९, मृणालिका अदशत्—का० ३२, खा लिया, कुतर लिया, उप —, चटनी, अचार आदि खाना—मूलकेनोपदश्य भुङ्क्ते—सिद्धा०, सम् —,1. काटना, डंक मारना—संदष्टाधरपल्लवा—अमरु ३२ 2. चिपटना, संलग्न रहना, या चिपके रहना—उरसा संदष्टसर्पत्वचा—श० ७।११, ३।१८, संदष्टवस्त्रेष्वबलानितम्बेषु—रघु० १६।६५, ४८।

दंशः [दंश्+घञ्] 1. काटना, डंक मारना—मुग्धे विधेहि मयि निर्दयदन्तदंशम्—गीत० १० 2. साँप का डंक 3. काटना, काटा हुआ स्थान—छेदो दंशस्य दाहो वा —मालवि० ४।४ 4. काटना, फाड़ना 5. डांस, एक प्रकार की बड़ी मक्खी—रघु० २।५, मनु० १।४०, याज्ञ० ३।२१५ 6. त्रुटि, दोष, कमी (मणि आदि की) 7. दाँत 8. तीखापन 9. कवच 10. जोड़, अंग। सम० —भीरुः भैंसा।

दंशकः [दंश्+ण्वुल्] 1. कुत्ता 2. बड़ी मक्खी 3. मक्खी।

दंशनम् [दंश्+ल्युट्] 1. काटने या डंक मारने की क्रिया —उदा० दष्टाश्च दंशनैः कान्तं दासीकुर्वन्ति योषितः —सा० द० 2. कवच, जिरहवस्तर—शि० १७।२१।

दंशित (वि०) [दंश्+क्त] 1. काटा हुआ 2. धृतकवच, कवच से सुसज्जित।

दंशिन् (पुं०) [दंश्+णिनि] दे० 'दंशक'।

दंशी [दंश+ङीप्] छोटा डांस या वनमाखी।

दंष्ट्रा [दंश्+ष्ट्रन्+टाप्] बड़ा दाँत, हाथी का दाँत, विषैला दांत, प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात् —भर्तृ० २।४, रघु० २।४६, दंष्ट्राभंगं मृगाणामधिपतय इव व्यक्तमानावलेपा, नाज्ञाभङ्गं सहन्ते नृवर नृपतयस्त्वादृशाः सार्वभौमाः—मुद्रा० ३।२२। सम० —अस्त्रः,—आयुधः जंगली सूअर,—कराल (वि०) भयंकर दाँतों वाला,—विषः एक प्रकार का साँप।

दंष्ट्राल (वि०) [दंष्ट्रा+ल] बड़े बड़े दाँतों वाला।

दंष्ट्रिन् (पुं०) [दंष्ट्रा+इनि] 1. जंगली सूअर 2. साँप 3. लकड़बग्घा।

दक्ष (वि०) [दक्ष्+अच्] योग्य, सक्षम, विशेषज्ञ, चतुर, कुशल,—नाट्ये च दक्षा वयम्—रत्ना० १।६, मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे—कु० १।२, रघु० १२।११ 2. उचित उपयुक्त 3. तैयार, खबरदार, सावधान, उद्यत—याज्ञ० १।७६ 4. खरा ईमानदार,—क्षः 1. विख्यात प्रजापति का नाम [दक्ष प्रजापति ब्रह्मा के उन दस पुत्रों में से एक था जो उसके दाहिने अंगूठे से पैदा हुआ था। मानव समाज के पितृपरक कुलों का वह प्रधान था, कहते हैं उसके बहुत सी कन्याएँ थीं, जिनमें से २७ तो नक्षत्रों के रूप में चन्द्रमा की पत्नी थीं और १३ कश्यप की पत्नियाँ थीं। एक बार दक्ष ने एक महायज्ञ का आयोजन किया, परन्तु उसमें उसने न अपनी पुत्री सती को आमन्त्रण दिया और न अपने जामाता शिव को बुलाया। फिर भी सती यज्ञ में गई, परन्तु वहाँ अपमानित होने के कारण वह जलती आग में कूद कर भस्म हो गई। जब शिव ने यह सुना तो वह बड़े उत्तेजित होकर उसके यज्ञ में गये, और यज्ञ का पूर्णतः विनाश कर दिया। कहते हैं, कि फिर भी शिव ने दक्ष (जिसने मृग का रूप धारण कर लिया था) का पीछा किया और उसका सिर काट डाला। बाद में शिव ने उसे पुनः जिला दिया। तब से लेकर दक्ष देवताओं की प्रभुता स्वीकार करने लगा। दूसरे मतानुसार जब शिव बहुत उत्तेजित हुए तो उन्होंने अपनी जटा में से एक बाल तोड़ा और बलपूर्वक उसे ज़मीन पर पटक दिया, वहाँ से तुरन्त एक राक्षस निकला और शिव के आदेश की प्रतीक्षा करने लगा। उसे दक्ष के यज्ञ में जाकर उसके यज्ञ को नष्ट करने को कहा गया—तब वह बलवान् राक्षस कुछ गणों को (उपदेवों को) साथ लेकर यज्ञ में गया और वहाँ उपस्थित देवों तथा पुरोहितों का काम तमाम कर दिया। एक और मतानुसार दक्ष का सिर स्वयं शिव ने काटा था] 2. मुर्गा 3. आग 4. शिव का बैल 5. बहुत सी प्रेमिकाओं में आसक्त प्रेमी 6. शिव का विशेषण 7. मानसिक शक्ति, योग्यता, धारिता। सम० —अध्वरध्वंसकः—क्रतुध्वंसिन् (पुं०) शिव के विशेषण,—कन्या,—जा,—तनया 1. दुर्गा का विशेषण 2. अश्विनी आदि नक्षत्र,—सुतः देवता।

दक्षाय्यः [दक्ष्+आय्य] 1. गिद्ध 2. गरुड़ का विशेषण।

दक्षिण (वि०) [दक्ष्+इनन्] 1. योग्य, कुशल, निपुण, सक्षम, चतुर 2. दायाँ, दाहिना (विप० बायाँ) 3. दक्षिण पार्श्व में स्थित 4. दक्षिण, दक्षिणी जैसा कि दक्षिणवायु, दक्षिणदिक् में 5. दक्षिण में स्थित 6. निष्कपट, खरा, ईमानदार, निष्पक्ष 7. सुहावना सुखकर, रुचिकर 8. शिष्ट, नागर 9. आज्ञानुवर्ती, वशवर्ती 10. पराश्रित,—णः 1. दायाँ हाथ या बाजू 2. शिष्ट व्यक्ति, ऐसा प्रेमी (नायक) जिसका मन अन्य नायिका द्वारा हर लिया गया है परन्तु फिर भी

वह केवल एक ही प्रेयसी में अनुरक्त है 3. शिव या विष्णु का विशेषण। सम०-- अग्निः दक्षिण की ओर स्थापित अग्नि, इसको 'अन्वाहार्यपचन' भी कहते हैं,--अग्र (वि०) दक्षिण की ओर संकेत करता हुआ,—अचलः दक्षिणी पहाड़ अर्थात् मलयपर्वत,—अभिमुख (वि०) दक्षिण की ओर मुँह किये हुए, दक्षिणोन्मुख,—अयनम् भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर सूर्य की प्रगति, वह आधावर्ष जब कि सूर्य उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता है, शरद् की दक्षिणी अयन सीमा,—अर्धः 1. दायाँ हाथ 2. दाहिना या दक्षिणी पार्श्व,—आचार (वि०) 1. ईमानदार, आचरणशील 2. पावन अनुष्ठान के अनुसार शक्ति का उपासक, -आशा दक्षिण दिशा, °पतिः यम का विशेषण, -इतर (वि०) 1. बायाँ (हाथ या पैर) कु० ४।१९ 2. उत्तरी (-रा) उत्तर दिशा,—उत्तर (वि०) दक्षिण उत्तर की ओर मुड़ा हुआ, °वृत्तम् मध्याह्न रेखा,---पश्चात् (अव्य०) दक्षिण पश्चिम की ओर,—पश्चिम (वि०) दक्षिण पश्चिमी, (-मा) दक्षिण पश्चिम दिशा,—पूर्व,—प्राच् (वि०) दक्षिण पूर्वी,—पूर्वा,—प्राची दक्षिण पूर्व दिशा,—समुद्रः दक्षिणी सागर,—स्थः सारथि।

दक्षिणतः (अव्य०) [दक्षिण+तसिल्] 1. दाईं ओर से या दक्षिण दिशा से 2. दाईं ओर को 3. दक्षिण दिशा की ओर (सम्बं० के साथ)।

दक्षिणा (अव्य०) [दक्षिण+आच्] 1. दाईं ओर, दक्षिण की ओर 2. दक्षिण दिशा में (अपा० के साथ) [दक्षिण+टाप्]—णा 1. (यज्ञादिक धार्मिक कृत्यों की पूर्णाहुति पर) ब्राह्मणों को उपहार 2. दक्षिणा (जो प्रजापति की पुत्री तथा मूर्तरूप यज्ञ की पत्नी समझी जाती है—पत्नी सुदक्षिणेत्यासीदध्वरस्येव दक्षिणा—रघु० १। ३१ 3. भेंट, उपहार, दान, शुल्क, पारिश्रमिक—प्राणदक्षिणा, गुरुदक्षिणा आदि 4. अच्छी दुधार गाय, बहु प्रसवी गाय 5. दक्षिण दिशा 6. दक्षिण देश अर्थात् दक्षिणभारत। सम०—अर्ह (वि०) उपहार प्राप्त करने के योग्य या अधिकारी,—आवर्त (वि०) 1. दाईं ओर मुड़ा हुआ 2. दक्षिण की ओर मुड़ा हुआ,—कालः दक्षिणा प्राप्त करने का समय,—पथः भारत का दक्षिणी प्रदेश --अस्ति दक्षिणापथे विदर्भेषु पद्मपुरं नाम नगरम्—मा० १,—प्रवण (वि०) दक्षिणोन्मुख।

दक्षिणाहि (अव्य०) [दक्षिण+आहि] 1. दूर दाईं ओर 2. दूर दक्षिण में, के दक्षिण की ओर (अपा० के साथ) दक्षिणाहि ग्रामात्---सिद्धा०।

दक्षिणीय, दक्षिण्य (वि०) [दक्षिणामर्हति—दक्षिणा—छ, यत् वा] यज्ञीय उपहार को ग्रहण करने के योग्य या अधिकारी जैसा कि ब्राह्मण।

दक्षिणेन (अव्य०) [दक्षिण+एनप्] की दाईं ओर (कर्म० या सम्बं० के साथ)—दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालाप इव श्रूयते—श० १, दक्षिणेन ग्रामस्य।

दग्ध (भू० क० कृ०) [दह्+क्त] 1. जला हुआ, आग में भस्म हुआ 2. (आलं०) शोकसंतप्त, सताया हुआ, दुःखी 3. दुर्भिक्षग्रस्त 4. अशुभ 5. शुष्क, नीरस, स्वादहीन 6. दुर्वृत्त, अभिशप्त, दुष्ट ('दुर्वचन' सूचक शब्द, समास का प्रथम पद) नाद्यापि मे दग्धदेहः पतति --उत्तर० ४, अस्य दग्धोदरस्यार्थे कः कुर्यात्पातकं महत्—हि० १।६८, इसी प्रकार 'दग्धजठरस्यार्थे' भर्तृ० ३।८।

दग्धिका [दग्ध+कन्+टाप्, इत्वम्] मुर्मुरे, भुने हुए चावल।

दघ्न (वि०) (स्त्री०—घ्नी) ऊँचाई, गहराई या पहुँच की भावना को प्रकट करने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ लगने वाला प्रत्यय—उरुदघ्नेन पयसोत्तीर्य—का० ३१०, कीलालव्यतिकरगुल्फदघ्नपङ्कः (मार्गः)—मा० ३।१७, ५।१४, याज्ञ० २।१०८।

दण्ड् (चुरा० उभ० दण्डयति—ते, दण्डित) सजा देना, जुर्माना करना, मरम्मत करना, (१६ द्विकर्मक धातुओं में से एक धातु)—तान् सहस्रं च दडण्येत्—मनु० ९।२३४, ८।१२३, याज्ञ० २।२६९, स्थित्यै दण्डयतो दण्ड्यान्—रघु० १।२५।

दण्डः—डम् [दण्ड्+अच्] 1. यष्टिका, डंडा, छड़ी, गदा, मुद्गर, सोटा—पततु शिरस्यकाण्ड यमदण्ड इवैष भुजः—मा० ५।३१, काष्ठदण्डः 2. राजचिह्न, राजसत्ता का प्रतीकरूप दण्ड--आत्तदण्ड—श० ५।८ 3. उपनयन संस्कार के समय द्विज को दिया गया डण्डा—तु० मनु० २।४५-४७ 4. संन्यासी का डण्डा 5. हाथी की सूंड़ 6. (कमल आदि का) डंठल या वृन्त (छतरी आदि की) मूठ—ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः—दश० १ (आरंभिक श्लोक); राज्यं स्वहस्तधृतदंडमिवातपत्रम्—श० ५।६, कु० ७।८९, इसी प्रकार 'कमल दंड, आदि 7. पतवार, डांड 8. रई का डंडा 9. जुर्माना—मनु० ८।३४१, ९।२२९, याज्ञ० २।२३७ 10. ताडन, शारीरिक दण्ड, सामान्य दण्ड—यथापराधदण्डानाम्—रघु० १।६, एवं राजापथ्यकारिषु तीक्ष्णदण्डो राजा—मुद्रा० १, दण्डं दण्ड्येषु पातयेत्—मनु० ८।१२६, कृतदण्डः स्वयं राज्ञा लेभे शूद्रः सतां गतिम्—रघु० १५।५३ 11. कैद 12. आक्रमण, हमला, हिंसा, दण्ड—वर्णित चार उपायों में से अन्तिम—दे० 'उपाय' मनु० ७।१०९, शि० २।५४ 13. सेना—तस्य दण्डवतो दण्डः स्वदेहान्न व्यशिष्यत—रघु० १७।६२, मनु० ७।६५, ९।२९४, कि० २।१२ 14. सैन्यव्यवस्था का एक रूप, व्यूह 15. वशीकरण, नियंत्रण, प्रतिबन्ध—वाग्दण्डोऽथ मनोदण्डः कायदण्डस्तथैव च, यस्यैते निहिता बुद्धौ त्रिदण्डीति स

उच्यते—मनु० १२।१० 16. चार हाथ के परिमाण का नाप 17. लिंग 18. धमंड 19. शरीर 20. यम का विशेषण 21. विष्णु का नाम 22. शिव का नाम 23. सूर्य का सेवक 24. घोड़ा (अन्तिम पाँच अर्थों में 'पुंल्लिग' है) । सम०—अजिनम् 1. (भक्ति के बाह्य-सूचक) डण्डा और मृगछाला 2. (आलं०) पाखण्ड, छल, —अधिपः मुख्य दण्डाधिकरण,—अनीकम् सेना की एक टुकड़ी,—तव हृतवतो दण्डानीकैर्विदर्भपतेः श्रियम्—मालवि० ५।२,—अपूपन्यायः 'न्याय' के अन्तर्गत दे०,—अर्ह (वि०) दण्ड दिये जाने के योग्य, दण्ड का भागी,—अलसिका हैजा,—आज्ञा दण्डित करने के लिए न्यायाधीश का वाक्य,—आहतम् मट्ठा, छाछ, —कर्मन् (नपुं०) दण्ड देना, ताडना करना, —काकः पहाड़ी कौवा, —काष्ठं लकड़ी का डण्डा या सोटा, —ग्रहणम् संन्यासी का दण्ड ग्रहण करना, तीर्थयात्री का डण्डा लेना, साधु हो जाना, —छदनम् बरतन रखने का कमरा,—ढक्का एक प्रकार का ढोल,—दासः ऋण-परिशोध न करने के कारण बना हुआ सेवक,—देव-कुलम् न्यायालय, —धर,—धार (वि०) 1. डण्डा रखने वाला, दण्डधारी 2. दण्ड देने वाला, ताडना करने वाला—उत्तर० २।१०, (—रः) 1. राजा —श्रमनुदं मनुदण्डधरान्वयम्—रघु० ९।३ 2. यम 3. न्यायाधीश, सर्वोच्च दण्डाधिकरण,—नायकः 1. न्यायाधीश, पुलिस का मुख्य अधिकारी, दण्डाधिकरण 2. सेना का मुखिया, सेनापति, —नीतिः (स्त्री०) 1. न्याय प्रशासन, न्याय-करण 2. नागरिक तथा सैनिक प्रशासन,—पद्धति, राज्यशासनविधि, राज्यतंत्र —रघु० १८।४६,—नेतृ (पुं०) राजा,—पः राजा —पांशुलः दरबान, द्वारपाल, —पाणिः यम का विशेषण,—पातः 1. डण्डे का गिरना 2. दण्ड देना, —पातनम् दण्ड देना, ताडना करना —पारुष्यम् 1. संप्रहार, प्रघात 2. कठोर तथा दारुण दण्ड देना—पालः,—पालकः 1. मुख्य दण्डाधिकरण 2. द्वारपाल, डयोढ़ीवान,—पोणः मूठदार चलनी, —प्रणामः 1. शरीर को बिना झुकाये नमस्कार करना (डण्डे की भांति सीधे खड़े रह कर) 2. भूमि पर लेट कर प्रणाम करना,—बालधिः हाथी,—भङ्गः दण्डाज्ञा पर अमल न करना,—भृत् (पुं०) 1. कुम्हार 2. यम का विशेषण,—माण (न) वः 1. दण्डधारी 2. दण्डधारी संन्यासी, —मार्गः राजमार्ग, मुख्यमार्ग,—यात्रा 1. बरात का जलूस 2. युद्ध के लिए कूच, दिग्विजय के लिए प्रस्थान,—यामः 1. यम का विशेषण 2. अगस्त्य मुनि की उपाधि 3. दिन,—वादिन्,—वासिन् द्वारपाल सन्तरी, पहरेदार,—वाहिन् (पुं०) पुलिस अधिकारी, —विधिः 1. दण्ड देने का नियम 2. दण्डविधान, —विष्कम्भः मथानी की रस्सी बांधने का खंभा,—व्यूहः एक प्रकार की व्यूह-रचना जिसमें सैनिक पास २ कतारों में खड़े किये जाते हैं,—शास्त्रम् दण्ड निर्णय का शास्त्र, दण्डविधान, —हस्तः 1. द्वारपाल, पहरेदार, संतरी 2. यम का विशेषण ।

दण्डकः [दण्ड+कन्] 1. छड़ी, डण्डा आदि 2. पङ्क्ति, कतार 3. एक छंद—दे० परिशिष्ट, —कः,—का, —कम् दक्षिण में एक विख्यात प्रदेश जो नर्मदा और गोदावरी के बीच में स्थित है (यह एक बड़ा प्रदेश है, कहते हैं राम के समय यहाँ जङ्गल था) —प्राप्तानि दुःखान्यपि दण्डकेष्वपि—रघु० १४।२५, किं नाम दण्डकेयम् —उत्तर० २, क्वायोध्यायाः पुनरुपगमो दण्डकायां वने वः—उत्तर० २।१३-१५ ।

दण्डनम् [दण्ड्+ल्युट्] दण्ड देना, ताड़ना करना, जुर्माना करना ।

दण्डादण्डि (अव्य०) [दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम् · इच्, द्वित्वं, पूर्वपददीर्घः] लाठियों की लड़ाई, वह मारपीट जिसमें दोनों ओर से लाठी चलती हों, डण्डों की सोटों की लड़ाई ।

दण्डारः [दण्ड+ऋ+अण्] 1. गाड़ी 2. कुम्हार का चाक 3. बेड़ा, नाव 4. मदमस्त हाथी ।

दण्डिकः [दण्ड+ठन्] दण्डधारी, छड़ीबरदार ।

दण्डिका [दण्डिक+टाप्] 1. लकड़ी 2. पङ्क्ति, क़तार, श्रेणी 3. मोतियों की लड़ी, हार 4. रस्सी ।

दण्डिन् (पुं०) [दण्ड+इनि] 1. चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण, संन्यासी 2. द्वारपाल, ड्योढ़ीवान 3. डाँड़ चलाने वाला 4. जैन संन्यासी 5. यम का विशेषण 6. राजा 7. दशकुमार चरित और काव्यादर्श का रचयिता, दण्डी कवि—जाते जगति वाल्मीके कविरित्यभिधाऽभवत्, कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि—उद्भट ।

दत् (पुं०) [सर्वनाम स्थान को छोड़ कर सर्वत्र 'दन्त' के स्थान में 'दत्' आदेश विकल्प से] दाँत । सम० —छदः (दच्छदः) होंठ, ओष्ठ ।

दत्त (भू० क० कृ०) [दा+क्त] 1. दिया हुआ, प्रदत्त, प्रस्तुत किया हुआ 2. सौंपा हुआ, वितरित, समर्पित 3. रक्खा हुआ, फैलाया हुआ—दे० 'दा', —त्तः 1. हिन्दू धर्मशास्त्र में वर्णित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक ('दत्त्रिम' भी कहते हैं)—माता पिता वा दद्यातां यमद्भिः पुत्रमापदि, सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्त्रिमः सुतः 1. मनु० ९।१६८ 2. वैश्यों के नामों के साथ लगने वाली उपाधि तु० 'गुप्त' के अन्तर्गत उद्धरण से 3. अत्रि और अनसूया का पुत्र—दे० 'दत्तात्रेय' नी०, —त्तम् उपहार, दान । सम०—अनपकर्मन्—अप्रदानिकम् दी हुई वस्तु को न देना, या दान की हुई वस्तु को वापिस लेना, हिन्दू धर्मशास्त्र में वर्णित १८ स्वाधि-

कारों में से एक,—अवधान (वि०) सावधान,—आत्रेयः एक ऋषि, अत्रि और अनसूया का पुत्र, जो ब्रह्मा विष्णु और महेश का अवतार माना जाता है,—आदर (वि०) 1. आदर प्रदर्शित करने वाला, सम्मानपूर्ण 2. सन्मान प्राप्त,—शुल्का दुलहिन जिसको दहेज दिया गया है 1,—हस्त (वि०) जिसने दूसरे की सहायता के लिए हाथ बढ़ाया है, हाथ का सहारा पाये हुए —शम्भुना दत्तहस्ता—मेघ० ६०, शम्भु की भुजा पर टेक लगाये हुए—स कामरूपेश्वरदत्तहस्तः—रघु० ७।१७, (आलं०) साहाय्यवान्, समर्थित, साहाय्यित, सहायता-प्राप्त—दैवेनेत्थं दत्तहस्तावलम्बे—रत्ना० १।८, वात्या खेदं कृशाङ्ग्याः सुचिरमवयवैर्दत्तहस्ता करोति —वेणी० २।२१।

दत्तकः [दत्त+कन्] गोद लिया हुआ पुत्र—याज्ञ० २। १३०, दे० 'दत्त' ऊपर।

दद् (भ्वा० आ० ददते) देना, प्रदान करना।

दद (वि०) [दा०+श] देने वाला, प्रदान करने वाला।

ददनम् [दद्+ल्युट्] उपहार, दान।

दध् (भ्वा० आ० दधते) 1. पकड़ना 2. धारण करना, पास रखना 3. उपहार देना।

दधि (नपुं०) [दध्+इन्] 1. जमा हुआ दूध, दही,—क्षीरं दधिभावेन परिणमते—शारी० दध्योदनः आदि 2. तारपीन 3. वस्त्र। सम०—अन्नम्,—ओदनम् दही मिला हुआ भात,—'उत्तरम्,—उत्तरकम्,—गम्—दही की मलाई, तोड़,—उदः,—उदकः जमे हुए दूध का सागर, —कूचिका जमे हुए और उबले हुए दूध का मिश्रण, —चारः रई,—जम् ताजा मक्खन,—फलः कैथ,—मण्डः, —वारि (नपुं०) दही का तोड़,—मन्थनम् दही का मथना,—शोणः बन्दर,—सक्तु (पुं० ब० व०) दही मिला हुआ सत्तू,—सारः,—स्नेहः ताजा मक्खन,—स्वेदः अधरिड़का दही।

दधित्थः [दधि+स्था+क पृषो०] कैथ, कपित्थ।

दधीचः (पुं०) एक विख्यात ऋषि, जिसने अपने शरीर की हड्डियाँ देवताओं को दे दी थीं और स्वयं मरने के लिए उद्यत हो गया था। इन हड्डियों से देवताओं के शिल्पी ने एक वज्र बनाया और इन्द्र ने इसी वज्र के द्वारा वृत्र तथा अन्यान्य राक्षसों को परास्त किया। सम०—अस्थि (नपुं०) 1. इन्द्र का वज्र 2. हीरा।

दनुः (स्त्री०) दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही गई थी। यही दानवों की माता थी। सम०—जः,—पुत्रः, —संभवः,—सूनुः, एक राक्षस, °अरिः,—°द्विष् (पुं०) देवता।

दन्तः [दम्+तन्] 1. दांत, हाथी का दांत. विषदंत (सांप या अन्य विषैले जन्तुओं का), वदसि यदि किंचिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमतिघोरम् —गीत० १०, सर्पदंत, वराह° आदि 2. हाथी का दांत, गजदंत °पांचालिका—मा० १.०५ 3. बाण की नोक 4. पर्वत की चोटी 5. लताकुंज, पर्णशाला। सम० —अग्रम् दांत की नोक,—अन्तरं दांतों के बीच का स्थान, —उद्भेदः दांतों का निकलना,—उलूखलिकः—खलिन् (पुं०) जो अपने दांतों को ऊखल की भांति प्रयुक्त करते हैं, (खाने वाले धान्य को अपने दांतों के बीच में रखकर पीसने वाले), एक प्रकार के साधु संन्यासी, तु० मनु० ६।१७,—कर्षणः नींबू का वृक्ष,—कारः हाथीदांत का काम करने वाला कलाकार,—काष्ठम् दतौन—क्रूरः लड़ाई,—घातिन् (वि०) दाँतों को क्षति पहुँचाने वाला, दाँतों को खराब करने वाला,—घर्षः दाँतों का किचकिचाना, दाँत पीसना, चालः दाँतों का ढीलापन, —छदः होठ,—वारंवारमुदारशीत्कृतकृतो दन्तच्छदान् पीडयन्—भर्तृ० १।४३, ऋतु० ४।१२,—जात (वि०) (वह बच्चा) जिसके दाँत निकल आये हों, दाँत निकलने का समय,—जाहम् दाँत की जड़,—धावनम् 1. दाँतों को धोना, साफ करना 2. दतौन (—नः) खैर का वृक्ष, मौलसिरी का पेड़, पत्रम् एक प्रकार का कर्णाभूषण—रघु० ६।१७, कु० ७।२३, (प्रायः कादम्बरी में प्रयुक्त),—पत्रकम् 1. कान का आभूषण 2. कुन्द फूल,—पत्रिका 1. कान का आभूषण —शि० १।६० 2. कुन्द,—पवनम् 1. दतौन 2. दाँतों का धोना साफ करना,—पातः दाँतों का गिरना,—पाली 1. दाँत की नोक 2. मसूड़ा,—पुष्पम् 1. कुन्द फूल 2. कतक फल, निर्मली,—प्रक्षालनम् दाँतों का धोना,—भागः हाथी के सिर का अगला भाग (जहाँ दांत बाहर निकले होते हैं),—मलम् दाँतों का मैल,—मांसं,—मूलम् —वल्कम् मसूड़ा,—मूलीयाः (ब० व०) दन्त्य वर्ण अर्थात् लृ त् थ् द् ध् न् ल् और स्,—रोगः दाँत की पीड़ा,—वस्त्रम्—वासः (नपुं०) होठ—तुलां यदारोहति दन्तवाससा—कु० ५।३४, शि० १०।८६,—बीजः, —बीजः,—बीजकः,—बीजकः अनार का पेड़,—वीणा 1. एक प्रकार का बाजा, सारंगी 2. दाँत कटकटाना —दन्तवीणां वादयन्—पंच० १,—वैदर्भः बाह्यक्षति के द्वारा दाँतों का टूटना,—व्यसनम् दाँत का टूटना —शठ (वि०) खट्टा, चरपरा (—ठः) नींबू का पेड़, —शर्करा दाँतों के ऊपर मैल की पपड़ी, शाणः दाँतों पर लगाने का दन्तमंजन, दन्तशोधन मिस्सी,—शूल,—लम् दाँत की पीड़ा,—शोधनिः (स्त्री०) दाँत कुरेलनी, —शोफः मसूड़ों की सूजन,—संघर्षः दाँतों का रगड़ना, —हर्षः दाँतों में (ठंडा पानी) लगना,—हर्षकः नींबू का पेड़।

दन्तकः [दन्त+कन्] 1. चोटी, शिखर 2. खूंटी, पलहण्डी।

दन्तादन्ति (अव्य०) [दन्तैश्च दन्तैश्च प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्

समासान्तः इच्, पूर्वपददीर्घः] ऐसी लड़ाई जिसमें एक दूसरे को दाँतों से काटा जाय।

दन्तावलः, दन्तिन् (पुं०) [अतिशायितौ दन्तौ यस्य—दन्त+वलच्, दीर्घः, दन्त+इनि] हाथी,—भामि० १।६०, तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः—हि० १।३५, रघु० १।७१, कु० १६।१२।

दन्तुर (वि०) [दन्त+उरच्] बड़े २ या आग निकले हुए दाँतों वाला—शूकरे निहते चैव दन्तुरो जायते नरः—तारा०, शि० ६।५४ 2. दाँतेदार, दन्तुरित, दरारदार, दंदानेदार, उन्नतावनत, विषम (आलं०) अखर्वगर्वस्मितदन्तुरेण—विक्रमांक० १।५० 3. उर्मिल 4. उठना (बालों का) खड़ा होना। सम०—छदः नींबू का पेड़।

दन्तुरित (वि०) [दन्तुर+इतच्] बड़े या आगे निकले हुए दाँतों वाला 2. दांतेदार, उन्नतावनत, खड़े रोंगटों वाला—केतकिदन्तुरिताशे—गीत० १, पुलकभर° ११, का० २८६।

दन्त्य (वि०) [दन्त+यत्] दाँतों से सम्बद्ध,—त्यः (अर्थात् वर्णः) दन्तस्थानीय वर्ण, दे० 'दन्तमूलीय' ऊपर।

दन्दशः (पुं०) दाँत।

दन्दशूक (वि०) [दंश्+यङ+ऊक] 1. काटने वाला, विषैला 2. उत्पाती,—कः 1. साँप, सर्प 2. रेंगने वाला जन्तु 3. राक्षस—इषुमति रघुसिंहे दन्दशूकाञ्जिघांसौ—भट्टि० १।२६।

दभ्, दम्भ् i (भ्वा० स्वा० पर० दभति, दभ्नोति दब्ध—इच्छा० धिप्सति, धीप्सति, दिदम्भिषति) 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2. धोखा देना, ठगना 3. जाना, ii (चुरा० उभ० दम्भयति—ते) ठेलना, उकसाना, ढकेलना।

दभ्र (वि०) [दम्भ्+रक्] थोड़ा, स्वल्प,—अदभ्रदर्भामधिशय्य स स्थलीम्—कि० १।३८, दे० अदभ्र,—भ्रः समुद्र,—भ्रम् (अव्य०) थोड़ा, जरा, किसी अंश तक।

दम् (दिवा० पर०—दाम्यति, दमित, दान्त—प्रेर० दमयति) 1. पाला जाना 2. शान्त होना—मनु० ४।३५, ६।८, ७।१४१ 3. पालना, वश में करना, जीतना, रोकना—यमो दाम्यति राक्षसान्—भट्टि० १८।२०, दमित्वाप्यरिसंघातान्—९।४२, १९, १५।३७ 4. शान्त करना।

दमः [दम्+घञ्] 1. पालना, दमन करना (वश में करना) 2. आत्मनियन्त्रण, अपनी उग्र भावनाओं को वश में करना, आत्मसंयम—भग० १०।४,—(निग्रहो बाह्यवृत्तीनां दम इत्यभिधीयते) 3. बुराई की ओर से मन को हटाना, बुरी वृत्तियों का दमन करना (कुत्सितात्कर्मणो विप्र यच्च चित्तनिवारणं, स कीर्तितो दमः) 4. मन की दृढ़ता 5. दण्ड, जुर्माना—मनु० ९।२८४, २९०, याज्ञ० २।४ 6. दलदल, कीचड़।

दमथः,—थुः [दम्+अथच्, अथुच् वा] 1. अपनी उग्र वृत्तियों को रोकना, या वश में करना आत्मनियन्त्रण 2. दण्ड।

दमन (वि०) (स्त्री०—नी) [दम्+ल्युट्] 1. पालने वाला, दबाने वाला, वश में करने वाला, जीतने वाला हराने वाला—जामदग्न्यस्य दमने नैव निर्वक्तुमर्हसि—उत्तर० ५।३२, भर्तृ० ३।८९ इसी प्रकार 'सर्वंदमन' 'अरिदमन' 2. शान्त, निरावेश,—नम् 1. पालना, वश में करना, दबाना, नियन्त्रित करना 2. दण्ड देना, ताड़ना करना—दुर्दान्तानां दमनविधयः क्षत्रियेष्वायतन्ते—महावी० ३।३४ 3. आत्मसंयम।

दमयन्ती [दमयति नाशयति अमङ्गलादिकम्—दम्+णिच्+शतृ+ङीप्] विदर्भ के राजा भीम की पुत्री (इसका नाम 'दमयन्ती' इस लिए पड़ा था—कि इसने अपने अनुपम सौन्दर्य से सभी सुन्दर महिलाओं का दर्प चूर चूर कर दिया था—नै० २।१८ - भुवनत्रयसुभ्रुवामसौ दमयन्ती कमनीयतामदम्, उदियाय यतस्तनुश्रिया दमयन्तीति ततोऽभिधां दधौ। एक स्वर्णहंस ने पहले दमयन्ती के सामने नल के गुण और सौन्दर्य की प्रशंसा की फिर उसी के द्वारा दमयन्ती ने अपने प्रेम का समाचार उसको भिजवाया। उसके पश्चात् स्वयम्वर में दमयन्ती ने नल को उन बहुत से प्रतियोगियों में से, जिनमें कि इन्द्र, अग्नि, यम और वरुण यह चारों देव भी स्वयं उपस्थित थे, पति के रूप में चुन लिया और फिर दोनों प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्यजीवन बिताने लगे। परन्तु उनका यह सुखमय जीवन अधिक देर तक नहीं रहना था। नल के सौभाग्य से ईर्ष्या करने वाला कलि, नल के शरीर में प्रविष्ट हो गया और उसने नल को अपने भाई पुष्कर के साथ जूआ खेलने के लिए उकसाया। खेल की गर्मी में ही मूढ़ राजा ने अपना सबकुछ दाँव पर लगा दिया और स्वयं तथा पत्नी को छोड़ सब कुछ हार गया। फलतः नल और दमयन्ती को केवल एक वस्त्र पहने राजधानी से निकाल दिया गया। दमयन्ती को बहुत से कष्ट उठाने पड़े। परन्तु उसकी पति-भक्ति में कोई अन्तर न आया। एक दिन जब दमयन्ती पड़ी सो रही थी, हताश होकर नल उसे छोड़ कर चल दिया। तब दमयन्ती को विवश होकर अपने पिता के घर जाना पड़ा। कुछ समय के पश्चात् वह फिर अपने पति से मिली और फिर शेष जीवन उन्होंने निर्बाधसुख में बिताया—दे० 'नल' और 'ऋतुपर्ण')।

दमयितृ (वि०) [दम्+णिच्+तृच्] 1. पालने वाला, दमन करने वाला 2. दण्ड देने वाला, ताड़ना करने वाला 3. विष्णु का विशेषण।

दमित (वि०) [दम्+क्त] 1. पाला हुआ, शान्त, शान्त

किया हुआ 2. विजित, दमन किया हुआ, वशीभूत, परास्त ।

दमु (मू) नस् (पुं०) [दम्+उनस्, पक्षे दीर्घः] आग ।

दम्पती [जाया च पतिश्च द्व० स० —जायाशब्दस्य दमादेशः द्विवचन] पति और पत्नी, रघु० १।३५, २।७०, मनु० ३।११६ ।

दम्भः [दम्भ्+अच्] 1. धोखा, जालसाजी, दांवपेच 2. धार्मिक, पाखण्ड—भग० १६।४ 3. अहङ्कार, घमण्ड, आत्मश्लाघा 4. पाप, दुष्टता 5. इन्द्र का वज्र ।

दम्भनम् [दम्भ्+ल्युट्] ठगना, धोखा देना, छल ।

दम्भिन् (पुं०) [दम्भ्+णिनि] पाखण्डी, धूर्त—याज्ञ० १।१३०, भग० १३।७ ।

दम्भोलिः [दम्भ्+असुन्=दम्भस्, तस्मिन् प्रेरणे अलति पर्याप्नोति—अल्+इन्] इन्द्रका वज्र ।

दम्य (वि०) [दम्+यत्] 1. पालने के योग्य, सधाये जाने के लायक़ 2. दण्ड दिये जाने योग्य,—म्यः 1. नया बछड़ा (जिसे प्रशिक्षण तथा अनुभव की अपेक्षा है) —नार्हति तातः पुङ्गवधारितायां धुरि दम्यं नियोजयितुम् — विक्रम० ५, गुर्वी धुरं यो भुवनस्य पित्रा धुर्येण दम्यः सदृशं बिभर्ति—रघु० ६।७८, मुद्रा० ३।३ 2. वह बछड़ा जिसे अभी सधाना है ।

दय् (भ्वा० आ०—दयते,दयित) दया आना, करुणा का भाव होना, तरस खाना, सहानुभूति प्रदर्शित करना (संबं० के साथ)—रामस्य दयमानोऽसावध्येति तव-लक्ष्मणः—भट्टि० ८।११९, तेषां दयसे न कस्मात् —१।३३, १५।६३ 2. प्यार करना, अच्छा लगना, रुचिकर होना —दयमानाः प्रमदाः—श० १।३, भट्टि० १०।९ 3. रक्षा करना —नगजा न गजा दयिता दयिताः —भट्टि० १०।९ 4. जाना, हिलना-जुलना 5. स्वीकार करना, देना, वितरण करना, नियत करना 6. चोट पहुँचाना ।

दया [दय्+अङ्+टाप्] तरस, सुकुमारता, करुणा, अनुकम्पा, सहानुभुति—निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु दयां कुर्वंति साधवः—हि० १।६०, रघु० २।११, इसी प्रकार 'भूतदया' । सम०—कूटः,कूर्चः बुद्ध के विशेषण, —वीरः (अलं० शा०) वीरतापूर्ण करुणा की भावना, करुणा के फलस्वरूप उदय होने वाला वीररस—उदा० जीमूतवाहन (नागानन्द में) गरुड से कहता है— शिरामुखैः स्यन्दत एव रक्तमद्यापि देहे मम मांसमस्ति, तृप्ति न पश्यामि तवापि तावत् कि भक्षणात्त्वं विरतो गरुत्मन्, तु० 'दयावीर' के अन्तर्गत रस० में ।

दयालु (वि०) [दय्+आलुच्] कृपालु, सुकुमार, सदय, करुणापूर्ण—यशःशरीरे भव मे दयालुः—रघु० २।५७, ३।५२ ।

दयित (भू० क० कृ०) [दय्+क्त] प्रिय, चाहा हुआ, इष्ट—भट्टि० १०।९,—तः पति, प्रेमी, प्रिय व्यक्ति —विक्रम० ३।५, भामि० २।१८२,—ता पत्नी, प्रेयसी —दयिताजीवितालम्बनार्थी—मेघ० ४, रघु० ३।३, भामि० २।१८२, कि० ६।१३, दयिताजितः जोरू का गुलाम, पत्नीभक्त पति ।

दर (वि०) [दॄ+अप्] फाड़ने वाला, चीरने वाला (प्रायः समासान्त में),—रः,—रम् 1. गुफा, कन्दरा, छिद्र 2. शङ्ख,—रः 1. भय, त्रास, डर,—सा दरं पूतना निन्ये ह्रीयमाना रसादरम्—शि० १९।२३, न जात-हार्देन विद्विषादरः कि० १।३३,—रम् (अव्य०) थोड़ा, ज़रा (समास में)—दरमीलन्नयना निरीक्षिते —भामि० २।१८२, ७, दरविगलितमल्लीवल्लिचञ्च-त्पराग—आदि०—गीत० १, इसी प्रकार—दरदलित —विकसित—उत्तर० ४, मा० ३ । सम०—तिमिरम् भय का अन्धकार, हरति दरतिमिरमतिघोरम्—गीत० १० ।

दरणम् [दॄ+ल्युट्] तोड़ना, टुकड़े २ करना ।

दरणिः (पुं० स्त्री०) दरणी [दॄ+अनि, दरणि+ङीष्] 1. भंवर 2. धारा 3. हिलोर ।

दरद् (स्त्री०) [दॄ+अदि] 1. हृदय 2. त्रास, भय 3. पहाड़ 4. चट्टान, किनारा, टीला ।

दरदाः (पुं० ब० व०) [दर+दै+क] कश्मीर की सीमा को छूता हुआ एक देश,—दः भय, त्रास,—दम् सिंगरफ़ ।

दरिः—री (स्त्री०) [दॄ+इन्, दरि+ङीष्] गुफा, कन्दरा, घाटी, दरीगृह—कु० १।१०, एका भार्या सुन्दरी वा दरी वा - भर्तृ० ३।१२० ।

दरिद्रा (अदा० पर०—दरिद्राति, दरिद्रितः—प्रेर० दरिद्र-यति, इच्छा दिदरिद्रासति, दिदरिद्रिषति) 1. निर्धन होना, ग़रीब होना,—अधोऽधः पश्यतः कस्य महिमा नोपचीयते, उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति—हि० २।२, भट्टि० १८।३१ 2. कष्टग्रस्त होना,—युक्तं ममैव किं वक्तुं दरिद्राति यथा हरिः—भट्टि० ५।८६ 3. दुबला पतला होना,—दरिद्रति वियद्द्रुमे कुसुम-कान्तयस्तारकाः—विक्रमांक० ११।७४ ।

दरिद्र (वि०) [दरिद्रा+क] निर्धन, गरीब, अभावग्रस्त, दुर्दशाग्रस्त—स तु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला, मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः—भर्तृ० २।५०, —ता ग़रीबी—शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिन्निष्प्रतापा दरिद्रता—मृच्छ० ३।२४ ।

दरोदरः [दरो भयं तज्जनकमुदरं यस्य] 1. जुआरी 2. जूए पर लगा दाँव,—रम् 1. जूआ खेलना 2. पाँसा, अक्ष, दे० 'दुरोदर' ।

दर्दरः [दॄ+यङ्+अच्] 1. पहाड़ 2. कुछ टूटा हुआ मर्त-वान ।

दर्दरीकः [दृ+यङ्+ईकन्] 1. मेंढक 2. बादल 3. एक प्रकार का वाद्ययन्त्र,—**कम्** एक वाद्ययन्त्र ।

दर्दुरः [दृ+यङ्+उरच्] 1. मेंढक—पङ्कक्लिन्नमुखाः पिबन्ति सलिलं धाराहताः दर्दुराः—मृच्छ० ५।१४ 2. बादल 3. बन्सरी जैसा एक वाद्ययन्त्र 4. पहाड़ 5. दक्षिण में स्थित एक पहाड़ का नाम ('मलय' सम्मिलित)—स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ—रघु० ४।५१ ।

दर्दुः (**द्रूः**) (स्त्री०) [दरिद्रा+उ नि० साधुः] दाद, एक प्रकार का चर्मरोग ।

दर्पः [दृप्+घञ्, अच् वा] 1. घमण्ड, अहङ्कार, धृष्टता, अभिमान—मनु० ८।२१३, भग० १६।४' 2. उतावलापन 3. गर्व, दम्भ 4. रोष, विक्षोभ 5. गर्मी 6. कस्तूरी । सम०—**आध्मात** (वि०) अभिमान से फूला हुआ, —**छिद्,—हर** (वि०) घमण्ड तोड़ने वाला, नीचा दिखाने वाला ।

दर्पकः [दृप्+णिच्+ण्वुल्] प्रेम के देवता, कामदेव ।

दर्पणः [दृप्+णिच्+ल्युट्] मुँह देखने का शीशा, आयना —लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति—छं० १०९, कु० ७।२६, रघु० १०।१०, १६।३७,—**णम्** 1. आँख 2. जलना, प्रज्वलित करना ।

दर्पित, दर्पिन् (वि०) (स्त्री०—**णी**) [दृप्+क्त, दृप्+णिनि] घमण्डी, अहंकारी, अभिमानी ।

दर्भः [दृ+भ] एक प्रकार का पवित्र (कुशा) घास जो यज्ञानुष्ठानों के अवसर पर प्रयुक्त किया जाता है —श० १।७, रघु० १९।३१, मनु० २।४३, ३।२०८, ४।३६ । सम०—**अङ्कुरः** कुश घास का नुकीला पत्ता —श० २।१२,—**अनूपः** दर्भ घास से परिपूर्ण दलदली भूमि,—**आह्वयः** मूंज घास ।

दर्भटम् [दृभ्+अटन्] निजी कमरा, आराम करने का एकान्त कमरा ।

दर्वः [दृ+व] 1. एक उत्पातकारी अनिष्टकर जन्तु 2. राक्षस, पिशाच 3. चमचा ।

दर्वटः [दर्व+अट्+अच् शक० पररूपम्] 1. गाँव का पहरेदार, पुलिस अधिकारी 2. द्वारपाल ।

दर्वरीकः [दृ+ईकन्, नि० साधुः] 1. इन्द्र का विशेषण 2. एक प्रकार का वाद्य यन्त्र 3. हवा, वायु ।

दर्विका [दर्वि+कन्+टाप्] कड़छी, चमचा ।

दर्वी (वि०) (स्त्री०) [दृ+विन्, वा ङीष्] 1. कड़छी, चम्मच 2. साँप का फैलाया हुआ फण—शि० २०।४२ । सम—**करः** साँप, सर्प ।

दर्शः [दृश्+घञ्] 1. दृष्टि, दृश्य, दर्शन (प्रायः समास में) दुर्दर्शः, प्रियदर्शः 2. अमावस्या 3. पाक्षिक यज्ञ, अमावस्या के दिन होने वाला यज्ञीय कृत्य । सम० —**पः** देवता,—**यामिनी** अमावस्या की रात्रि,—**विपद्** (पुं०) चाँद

दर्शक (वि०) [दृश्+ण्वुल्] 1. देखने वाला, अनुष्ठान करने वाला 2. दिखलाने वाला, बतलाने वाला—कु० ६।५२,—**कः** 1. प्रदर्शन करने वाला 2. द्वारपाल, पहरेदार 3. कुशल व्यक्ति, किसी कला में प्रवीण व्यक्ति ।

दर्शनम् [दृश्+ल्युट्] देखना, दर्शन करना, निरीक्षण करना रघु० ३।४, 2. जानना, समझना, प्रत्यक्ष जानना, परिदर्शन करना—रघु० ८।७२ 3. दृष्टि, दर्शन —चिन्ताजडं दर्शनम्—श० ४।५ 4. आँख 5. निरीक्षण, परीक्षा 6. दिखलाना, प्रदर्शन करना, प्रदर्शनी 7. दिखलाई देना 8. भेंट करना, दर्शन करना, दर्शन —देवदर्शनम् 9. (अतः) किसी के सम्मुख जाना, श्रोता—मारीचस्ते दर्शनं वितरति श० ७—राजदर्शनं मे कारय–आदि 10. रंग, पहलू, दर्शन—भग० ११।१०, रघु० ३।५७ 11. दर्शन देना (न्यायालय में) उपस्थित होना—मनु० ८।१५८, १६०, 12. स्वप्न, ख्वाब 13. विवेक, समझ, बुद्धि 14. निर्णय, अवबोध 15. धार्मिक ज्ञान 16. शास्त्र में व्याख्यात कोई नियम या सिद्धान्त 17. दर्शनशास्त्र—जैसा कि 'सर्वदर्शनसंग्रह' में 18. दर्पण 19. गुण, व्यवहार की खूबी 20. यज्ञ । सम०—**ईप्सु** (वि०) दर्शन करने का अभिलाषी,—**पथ** दृष्टि या दर्शन का परास, क्षितिज,—**प्रतिभूः** उपस्थित होने के लिए जमानत या जामिन ।

दर्शनीय (वि०) [दृश्+अनीयर्] 1. देखन के योग्य, निरीक्षण के योग्य, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करने के योग्य 2. देखने के लिये उचित, सुहावना, मनोहर, सुन्दर 3. न्यायालय में उपस्थित होने के योग्य ।

दर्शयितृ (पुं०) [दृश्+णिच्+तृच्] 1. दौवारिक, प्रवेशक, द्वारपाल 2. मार्ग प्रदर्शक ।

दर्शित (वि०) [दृश्+णिच्+क्त] 1. दिखाया गया, प्रदर्शित, प्रकटीकृत, प्रदर्शित की गई 2. देखा गया, समझ लिया गया 3. व्याख्यात, सिद्ध 4. प्रतीयमान ।

दल् (भ्वा० पर०—दलति, दलित) 1. फट पड़ना, टुकड़े होना, फट जाना, तरेड़ आजाना—दलति हृदयं गाढोद्वेगं द्विधा न तु भिद्यते—उत्तर० ३।३१, अपि ग्रावा रोदिति अपि दलति वज्रस्य हृदयम्–१।२८, मा० ९।१२, २०, दलति न सा हृदि विरहभरेण—गीत० ७, अमरु ३८ 2. प्रसार करना, विकसित होना, (पुष्प की भाँति) खिलना—दलन्नवनीलोत्पल—उत्तर० १, स्वच्छंदं दलदरविन्द ते मरन्दं विन्दन्तो विदधतु गुञ्जितं मिलिन्दाः —भामि० १।१५, शि० ६।२३, कि० १०।३९,—प्रेर० **द (दा) लयति** 1. फोड़ना, फाड़ना 2. काटना, बांटना, टुकड़े २ करना,—**उद्,**—(प्रेर०) फाड़ डालना, (वि) 1. तोड़ना, खण्ड-खण्ड करना, तरेड़ आ जाना—त्वदिषुभिर्व्यदलिष्यदसावपि— नै० ४।८८ 2. खोदना ।

दलः,—लम् [दल्+अच्] 1. टुकड़ा, अंश, भाग, खण्ड

—शि० ४।४४ 2. उपाधि 3. दो आधों में से एक जैसे दाल, आधा भाग 4. म्यान, कोष 5. छोटा अंकुर या कोंपल, फूल की पंखड़ी, पत्ता—रघु० ४।४२, श० ३।२१, २२ 6. शस्त्र का फलक 7. पुंज, राशि, ढेर 8. सेना की टुकड़ी, सैनिकों की टोली। सम०—आढकः 1. झाग 2. मसीक्षेपी मत्स्य का भीतरी कवच 3. खाई, परिखा 4. बवंडर, आंधी 5. गेरु,—कोषः कुन्दलता,—निर्मोकः भोजपत्र का वृक्ष,—पुष्पा केवड़े का पौधा,—सूचिः,—ची (स्त्री०) कांटा,—स्नसा पत्ते का रेशा या नस।

दलनम् [दल्+ल्युट्] फट पड़ना, तोड़ना, काटना, बांटना, कुचलना, पीसना, टुकड़े २ करना —मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शराः—भर्तृ० १।५९।

दलनी (स्त्री०) **दलिः** (पुं०) [दलन+ङीप्, दल्+इन्] मिट्टी का ढेला, मिट्टी का लौंदा।

दलपः [दल्+कपन्] 1. शस्त्र 2. सोना 3. शास्त्र।

दलशः (अव्य०) [दल्+शस्] टुकड़े-टुकड़े करके, खण्ड खण्ड करके।

दलित (भू० क० कृ०) [दल्+क्त] 1. टूटा हुआ, चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, फटा हुआ, टुकड़े २ हुआ 2. खुला हुआ, फैलाया हुआ।

दलभः [दल्+भ] 1. पहिया 2. जालसाज़ी, बेईमानी 3. पाप।

दवः [दु+अच्] 1. वन, जंगल 2. जंगल की आग, दावाग्नि—वितर वारिद वारि दवातुरे—सुभा० 3. आग, गर्मी 4. बुखार, पीड़ा। सम०—अग्निः,—दहनः जंगल की आग, दावाग्नि—यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य, यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य—काव्य० ९, भामि० १।३६, मेघ० ५३, शशाम वृष्टचापि विना दवाग्निः—रघु० २।१४।

दवथुः [दु+अथुच्] 1. आग, गर्मी 2. पीडा, चिन्ता, दुःख 3. आँख की सूजन।

दविष्ठ (वि०) [दूर+इष्ठन्, दवादेशः] 1. अत्यंत दूर का, के, की।

दवीयस् (वि०) [दूर+ईयसुन्, दवादेशः] 1. अपेक्षाकृत दूर का 2. कहीं परे, कहीं दूर,—विद्यावतां सकलमेव गिरां दवीयः—भामि० १।६९।

दशक (वि०) [दशन्+कन्] दस से युक्त, दशगुना,—कामजो दशको गणः—मनु० ७।४७,—कम् दश का समाहार।

दशत्, दशतिः (स्त्री०) [दशन्+अति] दस का समाहार, दशक।

दशन् (सं० वि० ब० व०) [दंश्+कनिन्] दस,—स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्—ऋग् १०।९०, १। सम०—अङ्गुल (वि०) दस अङ्गुल लम्बा,—अर्ध (वि०) पाँच (र्धः) बुद्ध का विशेषण,—अवताराः (पुं०, ब० व०) विष्णु के दस अवतार, दे० 'अवतार' के अन्तर्गत,—अश्वः चन्द्रमा,—आननः,—आस्यः रावण के विशेषण—रघु० १०।७५,—आमयः रुद्र का विशेषण,—ईशः दस ग्रामों का अधीक्षक,—एकादशिक (वि०) जो दस रुपये देकर ग्यारह लेता है, अर्थात् जो १० प्रतिशत पर उधार देता है,—कण्ठः,—कन्धरः रावण के विशेषण—सप्तलोकैकवीरस्य दशकण्ठकुलद्विपः—उत्तर० ४।२७, °अरिः, °जित् (पुं०) °रिपुः राम के विशेषण—रघु० ८।२९,—गुण (वि०) दस गुना, दस गुणा बड़ा,—ग्रामिन् (पुं०)—पः दस ग्रामों का अधीक्षक,—ग्रीवः=दशकण्ठः,—पारमिताधरः 'दस सिद्धियों का स्वामी' बुद्ध का विशेषण,—पुरः एक प्राचीन नगर का नाम, राजा रन्तिदेव की राजधानी—मेघ० ४७,—बलः,—भूमिगः बुद्ध के विशेषण,—मालिकाः (ब० व०) 1. एक देश का नाम 2. इस देश के निवासी या शासक,—मास्य (वि०) 1. दस महीने का 2. गर्भ में दस मास (जन्म से पूर्व का बच्चा),—मुखः रावण का विशेषण, °रिपुः राम का विशेषण—रघु० १४।८७,—रथः अयोध्या का एक प्रसिद्ध राजा, अज का पुत्र, राम और उनके तीन भाइयों का पिता, (दशरथ के तीन पत्नियाँ थीं, कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी, परन्तु कई वर्षों तक उनके कोई सन्तान न हुई। वशिष्ठ ने दशरथ को पुत्रेष्टि यज्ञ करने के लिए कहा, ऋष्यश्रृङ्ग की सहायता से वह यज्ञ संपन्न हुआ। इस यज्ञके पूरा होने पर कौशल्या से राम का, सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न का तथा कैकेयी से भरत का जन्म हुआ। दशरथ को अपने सभी पुत्र बड़े प्यारे थे परन्तु राम तो उनका 'प्राण' था। इसके पश्चात् जब कैकेयी ने मन्थरा के द्वारा उकसाये जाने पर अपने दो पूर्व प्रतिज्ञात वर मांगे तो दशरथ ने उसके गर्हित प्रस्तावों से उसका मन हटाने के लिए कैकेयी को धमकाया, जब वह न मानी तो खुशामद, अनुनय विनय के द्वारा उसे समझाने का प्रयत्न किया। परन्तु कैकेयी बराबर निर्दय बनी रही। फलतः बेचारे राजा को अपने पुत्र राम को निर्वासित करने के लिए बाध्य होना पड़ा। और उसके पश्चात् उन्होंने इसी दुःख में अपने प्राण त्याग दिये),—रश्मिशतः सूर्य—रघु० ८।२९,—रात्रम् दस रातों (बीच के दिनों समेत) का समय (त्रः) दस दिन तक चलने वाला एक विशेष यज्ञ,—रूपभृत् (पुं०) विष्णु का विशेषण,—वक्त्रः,—वदनः दे० 'दशमुख,—वाजिन् (पुं०) चन्द्रमा,—वार्षिक (वि०) हर दश वर्ष के पश्चात् होने वाला या दश वर्ष तक टिकने वाला।—विध (वि०) दस प्रकार का,—शतम् 1. एक हजार

2. एक सौ दस, °रश्मिः सूर्य,—शती एक हजार,—साहस्रम् दस हजार,—हरा 1. गङ्गा का विशेषण 2. गङ्गा के सम्मान के उपलक्ष्य में ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को मनाया जाने वाला पर्व 3. दुर्गा के सम्मान में आश्विन शुक्ल दशमी को मनाया जाने वाला पर्व (विजया दशमी)।

दशतय (वि०) (स्त्री०-यी) [दशन्+तयप्] दस भागों से युक्त, दस गुना।

दशधा (अव्य०) [दशन्+धा] 1. दस प्रकार से 2. दस भागों में।

दशनः,—नम् [दंश्+ल्युट नि० नलोपः] 1. दाँत,—मुहुर्मुहुर्दशनविखण्डितोष्ठ्या— शि० १७।२, शिखरिदशना —मेघ० ९०, भग० १०।२७ 2. काटना,—नः पहाड़ की चोटी,—नम् कवच। सम०—अंशु दांतों की चमक —कु० ६।२५, —अङ्कः दांत से काटने का चिह्न काटना,—उच्छिष्टः 1. होठ 2. चुम्बन 3. आह,—छदः, —वासस् (नपुं०) 1. होठ 2. चुम्बन,—पदम् बुड़का भरना, दांत का चिह्न— दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदम्—गीत० ८,— बीजः अनार का पेड़।

दशम (वि०) (स्त्री०मी) [दशन्+डट्—मट्] दशवाँ।

दशमिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [दशमी+इनि] बहुत पुराना।

दशमी (स्त्री०) 1. चान्द्र मास के पक्ष का दसवाँ दिन 2. मानव जीवन की दशवीं दशाब्दी 3. शताब्दी के अन्तिम दस वर्ष। सम०—स्थ, (दशमीं गत) (वि०) ९० वर्ष से अधिक आयु।

दष्ट (वि०) [दंश+क्त] काटा गया, डङ्क मारा गया आदि।

दशा [दंश्+अङ् नि० टाप्] वस्त्र के छोर पर रहने वाले धागे, कपड़े पर लगी झालर, मगजी,—रक्तांशुकं पवनलोलदशं वहन्तः मृच्छ० १।२०, छिन्ना इवाम्बरपटस्य दशाः पतन्ति- ५।४ 2. दीवे की बत्ती —भर्तृ० ३।१२९, कु० ४।३० 3. आयु, या जीवन की अवस्था—दे० नी० 'दशांत' 4. जीवन की एक अवस्था या काल—जैसा कि बाल्य, यौवन आदि—रघु० ५।४० 5. काल 6. स्थिति, अवस्था, परिस्थिति—नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण—मेघ० १०९, विषमां हि दशां प्राप्य दैवं गर्हयते नरः—हि० ४।३ 7. मन की स्थिति या अवस्था 8. कर्मों का फल —भाग्य 9. ग्रहों की स्थिति (जन्म के समय) 10. मन. समझ। सम०—अन्तः 1. बत्ती का छोर 2. जीवन का अन्त—निर्विष्टविषयस्नेहः स दशान्तमुपेयिवान्—रघु० १२।१ (यहाँ शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है), —इन्धनः लैंप, दीपक,—कर्षः 1. वस्त्र का किनारा 2. लैंप, दीपक,—पाकः—विपाकः 1. भाग्य की परिपक्वावस्था—भाग्य के अनुसार फल प्राप्ति 2. जीवन की परिवर्तित दशा।

दशार्णाः (ब० व०) [दश० ऋणानि दुर्गभूमयो वा यत्र ब० स०] 1. एक देश का नाम—संपत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः—मेघ० २३ 2. इस देश के निवासी।

दशिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [दशन्+इनि] दश रखने वाला—(पुं०) दश ग्रामों का अधीक्षक।

दशेर (वि०) [दंश्+एरक्] काटनेव ला, उपद्रवी, अनिष्टकर, पीडाकर—रः शरारती या विषैला जंतु।

दशे (से) रकः [दशेर+कन्] ऊँट का बच्चा।

दस्युः [दस्+युच्] 1. दुष्कर्मियों या राक्षसों का समूह, जो कि देवताओं के विद्रोही तथा मानव जाति के शत्रु थे और इन्द्र के द्वारा मारे गये (इस अर्थ में प्रायः वैदिक) 2. जातिबहिष्कृत, अपने कर्तव्यकर्मों से च्युत हो जाने के कारण जाति से बहिष्कृत—तु० मनु० ५।१३१, १०।४५ 3. चोर, लुटेरा, उचक्का—पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन—श० ५।२०, रघु० ९।५३, मनु० ७।१४३ 4. दुष्ट, उत्पातशील—मा० ५।२८ 5. आततायी, उद्धत, अत्याचारी।

दस्र (वि०) [दस्यति पांसून् दस्+रक्] बर्बर, भीषण, विनाशकारी,—स्रौ (पुं० द्वि० व०) दोनों अश्विनीकुमार, देवों के वैद्य,—स्रः 1. गधा 2. अश्विनी नक्षत्र। सम०—सूः (स्त्री०) सूर्य की पत्नी और अश्विनीकुमारों की माता संज्ञा।

दह् (भ्वा० पर० दहति, दग्ध—इच्छा० दिधक्षति) जलाना, झुलसाना (आलं० से भी)—दग्धुं विश्वं दहनकिरणैर्नोदिता द्वादशार्काः—वेणी० ३।६, ५।२०, सपदि मदनानलो दहति मम मानसं देहि मुखकमलमधुपानम् —गीत० १०, श० ३।१७ 2. उड़ा देना, पूर्ण रूप से नष्ट कर देना 3. पीडा देना, सताना, कष्ट देना, दुःखी करना—इदमात्मकृतमप्रतिहतं चापलं दहति—श० ५, तत्सविषमिव शल्यं दहति माम्—६।८, एतत्तु माँ दहति यद्गृहमस्मदीयं क्षीणार्थमित्यतिथयः परिवर्जयन्ति —मृच्छ० १।१२, रघु० ८।८६ 4. (आयु० में) गर्म लोहे या कास्टिक तेजाब से जला देना, निस्,— 1. जलाना, जलाकर समाप्त कर देना 2. सताना, दुःख देना, पीडित करना, परि—,जलाना, झुलसाना —दिशि दिशि परिदग्धा भूमयः पावकेन—ऋतु० १।२४ भग० १।३०, प्र—1. जलाना 2. पूरी तरह से जला देना 3. पीडा देना, सताना 4. कष्ट देना, खिझाना, सम्—,जलाना—अभिजनः संदह्यतां वह्निना—भर्तृ० २।३९।

दहन (वि०) (स्त्री०—नी) [दह्+ल्युट्] 1. जलाना,

आग में जलाकर समाप्त कर देना —भर्तृ० १।७१ 2. विनाशकारी, क्षतिकर,—नः 1. आग 2. कबूतर 3. 'तीन' की संख्या 4. बुरा आदमी 5. 'भल्लातक' का पौधा, —नम् 1. जलाना, आग में जलाकर समाप्त कर देना (आलं० से भी)—रघु० ८।२० 2. गर्म लोहे या कास्टिक तेजाब से जला देना। सम०—अरातिः पानी,—उपलः सूर्यकांतमणि,—उल्का, जलती हुई लकड़ी, —केतनः धूआँ,—प्रिया अग्नि की पत्नी स्वाहा, —सारथिः हवा।

दहर (वि०) [दह्+अर] 1. रंचमात्र, सूक्ष्म, बारीक, लघु 2. छोटा,—रः 1. बच्चा, शिशु 2. जानवर का बच्चा 3. छोटा भाई 4. हृदयरन्ध्र, हृदय 5. चूहा, मूसा।

दह्रः [दह्+रक्] 1. आग 2. दावाग्नि, जंगल की आग।

दा i (भ्वा० पर०—यच्छति, दत्त) देना, स्वीकार करना, **प्रति**—विनिमय करना—तिलेभ्यः प्रतियच्छति मापान् —सिद्धा०, ii (अदा० पर० दाति) काटना,—ददाति द्रविणं भूरि दाति दारिद्र्यमर्थिनाम् कवि०, iii (जुहो० उभ०—ददाति, दत्ते, दत्त—परन्तु 'आ' पूर्व होने पर 'आत्त', उप पूर्व होने पर उपात्त, नि पूर्व होने पर निदत्त या नीत्त तथा प्र पूर्व होने पर प्रदत्त या प्रत्त) 1. देना, स्वीकार करना, प्रदान करना, प्रस्तुत करना, सौंपना, समर्पित करना, भेंट देना (प्रायः कर्म० के साथ वस्तु के पक्ष में, व्यक्ति के पक्ष में संप्र०, कभी संब० अथवा अधि० भी) अवकाशं किलोदन्वान्- रामायाभ्यर्थितो ददौ—रघु० ४।५८, सेचनघटैः वालपादपेभ्यः पयो दातुमित एवाभिवर्तते —श० १, मनु० ३।३१, ९।२७१, कथमस्य स्तनं दास्ये—हरि० 2. (ऋण, जुर्माना आदि) देना 3. सौंपना, दे देना 4. लौटाना, वापिस करना 5. छोड़ देना, त्यागना, उत्सर्ग करना,—प्राणान् दा प्राण दे देना, इसी प्रकार—आत्मानं दा प्राण त्याग देना 6. रखना रख देना, लगाना, जमाना—कर्णे करं ददाति —आदि 7. विवाह में देना—यस्मै दद्यात् पिता त्वेनाम् —मनु० ५।१५१, याज्ञ० २।१४६, ३।२४ 8. अनुमति देना, अनुज्ञा देना (प्रायः 'तुमुन्नन्त' के साथ)—वाप्पम्नु न ददात्येनां द्रष्टुं चित्रगतामपि—श० ६।२१, (इस धातु के अर्थ उस संज्ञा के अनुसार जिससे जोड़ी जाय नाना प्रकार से अदलबदल किये जा सकते हैं या फैलाये जा सकते हैं, उदा०, **अग्नि** (**पावकं**) दा आग लगाना, **अर्गलं** दा कुंडी लगाना, चटखनी लगाना, **अवकाश** दा स्थान देना, जगह देना दे० 'अवकाश', **आज्ञां** (**निदेशं**) दा आज्ञा देना, आदेश देना, **आतपे** दा धूप में रहना, **आत्मानं खेदाय** दा, अपने आपको कष्ट में फंसाना, **आशिषं** दा आशीर्वाद देना, **कर्णं** दा कान देना, ध्यान से सुनना, **चक्षुः** (**दृष्टिं**) दा नजर डालना, देखना, **तालं** दा तालियाँ बजाना, **दर्शनं** दा अपने आपको दिखलाना, दूसरों की बात सुनना, **निगडं** दा हथकड़ी डालना, शृंखला में बाँधना, **प्रतिवचः** (**वचनं**)—या—**प्रत्युत्तरं** दा उत्तर देना, **मनो** दा किसी बात में मन लगाना, **मार्गं** दा रास्ता देना, जाने की अनुमति देना, रास्ते से अलग हो जाना, **वरं** दा वर देना, **वाचं** दा भाषण देना, **वृत्तिं** दा घेरना, वाड़ लगाना, **शब्दं** दा शोर मचाना, **शापं** दा शाप देना, **शोकं** दा, रंज पैदा करना, **श्राद्धं** दा श्राद्ध का अनुष्ठान करना, **संकेतं** दा नियुक्ति करना, **संग्रामं** दा लड़ना, आदि। प्रेर०—दापयति—ते दिलवाना, स्वीकार करवाना आदि—इच्छा० दित्सति—ते, देने की इच्छा करना, **आ**—(आ०) लेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, सहारा लेना—व्यवहारासनमाददे युवा—रघु० ८।१८, १०।४०, ३।४६, प्रदक्षिणार्चिर्हविरग्निराददे—३।४१, १।४५ 2. शब्दोच्चारण करना—कि० १।३, शि० २।१३ 3. पकड़ना, थामना—कु० ७।९४ 4. उगाहना वसूल करना (कर आदि)—अगृध्नुराददे सोऽर्थान् —रघु० १।२१, मनु० ८।३४१ 5. ले जाना, लेना, वहन करना—तोयमादाय गच्छेः—मेघ० २०, ४६, कुशानादाय—श० ३ 6. प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, समझना—घ्राणेन रूपमादत्स्व रसानादत्स्व चक्षुषा आदि—महा० 7 बन्दी बनाना, क़ैद करना—**उपा**(**आ**) 1. ग्रहण करना, स्वीकार करना 2. अवाप्त करना, प्राप्त करना—उपात्तविद्यो गुरुदक्षिणार्थी—रघु० ५।१, भूर्या पितामहोपात्ता—याज्ञ० २।१२१ 3. लेना, धारण करना, ले जाना 4. अनुभव करना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना 5. पकड़ना, आक्रमण करना, **परि**—,सौंपना, समर्पण करना, दे देना—छद्मना परिददामि मृत्यवे —उत्तर० १।४५, मनु० ९।३२७, **प्र**—,स्वीकार करना, देना, प्रस्तुत करना—स्त्रं प्रागहं प्रादिगि नामराय किं नाम तस्मै मनसा नराय—नै० ६।९५, मनु० ३।९९, १०८, २७३, याज्ञ० २।९० 2. शिक्षा देना, सिखाना, भर्तृ० १।१५, **प्रति**—,अदलाबदली करना, विनिमय करना 2. लौटाना, वापिस देना—चौर० ५३ 3. बदला देना, क्षतिपूर्ति करना, **व्या**—,(पर० आ०) खोलना, तोड़ कर खोलना—न व्याददात्याननमत्रमृत्युः—कि० १६।१६, नदी कूलं व्याददाति; या—व्याददते पिपीलिकाः पतङ्गस्य मुखम्—महा०, **संप्र**— 1. देना, स्वीकार करना, प्रदान करना,—तं तेऽहं संप्रदास्यामि 2. परम्परा से प्राप्त होना—दे० संप्रदाय 3. दानपत्र लिखना, उत्तराधिकार में सौंपना।

दाक्षायणी [दक्ष+फिञ्+ङीप्] 1. २७ नक्षत्रों में (जो

कि पुराणानुसार दक्ष की पुत्रियाँ मानी जाती हैं) से कोई सा एक नक्ष 2. दिति, कश्यप की पत्नी, देवताओं की माता 3. पार्वती 4. रेवती नक्षत्र 5. कद्रु, या विनता 6. दन्ती का पौधा। सम०—पतिः 1. शिव का एक विशेषण 2. चन्द्रमा,—पुत्रः देवता।

दाक्षाय्यः [दक्ष्+अय्य+अण्] गिद्ध।

दाक्षिण (वि०) (स्त्री—णी) [दक्षिणा+अण्] 1. यज्ञीय दक्षिणा से सम्बद्ध अथवा उपहार से सम्बद्ध 2. दक्षिण दिशा से सम्बन्ध रखने वाला,—णम् यज्ञीय दक्षिणाओं का समूह या संचय।

दाक्षिणात्य (वि०) [दक्षिणा+त्यक्] दक्षिण से सम्बन्ध रखने वाला या दक्षिण में रहने वाला, दक्षिणी—अस्ति दाक्षिणात्ये जनपदे महिलारोप्यं नाम नगरम्—पंच० १,—त्यः 1. दक्षिण देश का निवासी,—आरम्भशूराः खलु दाक्षिणात्याः 2. नारियल।

दाक्षिणिक (वि०) (स्त्री०—की) [दक्षि+ठक्] यज्ञीय दाक्षिणा सम्बन्धी।

दाक्षिण्यम् [दक्षिण+ष्यञ्] 1. (क) नम्रता, शिष्टता, सुजनता—तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा—रघु० १।३१ (ख) कृपालुता—विक्रम० १।२, भर्तृ० २।२३ मा० १।८ 2. किसी प्रेमी का (अपनी प्रेमिका के प्रति) बनावटी तथा अतिशालीन शिष्टाचार—श० ६।५ 3. दक्षिण से आने की या सम्बन्ध रखने की स्थिति—स्नेहदाक्षिण्ययोर्योगात् कामीव प्रतिभाति मे —विक्रम० २।४, (यहाँ इस शब्द के दोनों ही अर्थ हैं—प्रथम तथा द्वितीय) 4. तालमेल, सामंजस्य, सहमति 5. नैपुण्य, चतुराई।

दाक्षी [दक्ष+इञ्+ङीप्] 1. दक्ष की पुत्री 2. पाणिनि की माता। सम०—पुत्रः पाणिनि।

दाक्षेयः [दाक्षी+ढक्] पाणिनि का मातृपक्षीय नाम।

दाक्ष्यम् [दक्ष+ष्यञ्] 1. चतुराई, कुशलता, उपयुक्तता, दक्षता, योग्यता—भग० १८।४३ 2. सचाई, अखण्डता, ईमानदारी।

दाघः [दह्+घञ्, कुत्वम्] जलाना, जलन।

दाडकः [दल्+णिच्+ण्वुल्, लस्य डः] दाँत, हाथी का दाँत।

दाडि (लि) मः,—मा [दल्+घञ्+इमम्, डलयोरभेदः] अनार का पेड़—पाकारुणस्फुटदाडिमकान्ति वक्त्रम् —मा० ९।३१, अमरु १३ 2. छोटी इलायची,—मम् अनार का फल। सम०—प्रियः,—भक्षणः तोता।

दाडिम्बः [दा+डिम्ब बा०] अनार का पेड़।

दाढा [दा+क्विप्=दा+ढौक्+ड+टाप्] 1. बड़ा दाँत, दाढ़ 2. समुच्चय 3. कामना, इच्छा।

दाढिका [दाढ+कन्+टाप्, इत्वम्] दाढ़ी,—मनु० ८।२८३, (कुल्लू० श्मश्रू)।

दाण्डाजिनिक (वि०) (स्त्री०—की) [दण्डाजिन+ठञ्] (धर्म भक्ति के बाह्य चिह्न) डण्डा और मृगछाला। लिए हुए,—कः ठग, पाखण्डी, धूर्त।

दाण्डिकः [दण्ड+ठञ्] ताड़ना देने वाला, दण्ड देने वाला।

दात (वि०) [दा+क्त] 1. बाँटा हुआ, काटा हुआ 2. धोया हुआ, पवित्रीकृत 3. काटी हुई (फ़सल)।

दातिः (स्त्री०) [दा+क्तिन्] 1. देना 2. काटना, नष्ट करना 3. वितरण।

दातृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [दा+तृच्] 1. देने वाला' स्वीकार करने वाला, 2. उदार (पुं०—ता) 1. दाता —कु० ६।१ 2. दानी—भामि० १।६६ 3. महाजन, उधार देने वाला 4. अध्यापक।

दात्यूहः [दाति+ऊह्+अण्] जलकुक्कुट—दात्यूहैरित-निशस्य कोटरवति स्कन्धे निलीय स्थितम्—मा० ९।७ 2. चातक पक्षी 3. बादल 4. जल-कौवा 'दात्यौह' भी लिखा जाता है)।

दात्रम् [दा+ष्ट्रन्] काटने का एक उपकरण, एक प्रकार की दाँती या चाकू।

दादः [दद्+घञ्] उपहार, दान। सम०—दः दानी।

दान् (भ्वा० उभ०—दानति—ते) काटना, बाँटना—इच्छा० दीदांसति—ते, सीधा करना (यहाँ सन्नन्त केवल रूप की दृष्टि से है अर्थ की दृष्टि से नहीं)।

दानम् [दा+ल्युट्] 1. देना, स्वीकार करना, अध्यापन 2. सौंपना, समर्पण करना 3. उपहार, दान, पुरस्कार —मनु० २।१५८, भग० १७।२०, याज्ञ० ३।२७४ 4. उदारता, धर्मार्थ, धर्मार्थ पुरस्कार, दानशीलता —रघु० १।६९, भर्तृ० ९।४३ 5, मदमत्त हाथी के मस्तक से चूने वाला रस, मद,—सदानतोयेन विषाणि नागः—शि० ४।६३, कि० ५।९, विक्रम० ४।२५, पंच० २।७५, (यहाँ शब्द का चतुर्थ अर्थ भी घटता है) रघु० २।७, ४।४५, ५।४३ 6. रिश्वत, घूस, अपने शत्रु के ऊपर विजय प्राप्त करने के चार उपायों में से एक, दे० 'उपाय' 7. काटना, बांटना 8. पवित्रीकरण, स्वच्छ करना 9. रक्षा 10. आसन, अङ्गस्थिति। सम०—कुल्या हाथी की पुटपुड़ी से बहने वाले मद जल का प्रवाह, —धर्मः दान देने का धर्म, दानरूपी धर्म,—पतिः 1. अत्यन्त उदार पुरुष 2. अक्रूर, कृष्ण का एक मित्र, —पत्रम् दान-लेख,—पात्रम् दान लेने के योग्य व्यक्ति, ब्राह्मण,—प्रातिभाव्यम् ऋण परिशोध करने की जमानत,—भिन्न (वि०) रिश्वत देकर फोड़ा हुआ,—वीरः 1. बहुत दानी व्यक्ति 2. दान शीलता के फलस्वरूप वीररस, वीरतापूर्ण दान शीलता का रस, उदा० परशुराम जिसने सात द्वीपों वाली इस पृथ्वी को दान कर दिया—सु० रस० में दी गई ('दानवीर' के अन्तर्गत) उक्ति—कियदिदमधिकं मे यद् द्विजायार्थयित्रे कवचम-

रमणीयं कुण्डलं चार्पयामि, अकरुणमवकृत्य द्राक्कृपाणेन निर्यद् बहलरुधिरधारं मौलिमावेदयामि, —शील, —शर,—शौण्ड (वि०) अत्यन्त उदार या दानशील।

दानकम् [दान+कन्] तुच्छ दान।

दानवः [दनोः अपत्यम्—दनु+अण्] राक्षस, पिशाच —त्रिदिवमुद्धतदानवकण्टकम्—श० ७।३। सम० —अरिः 1 देवता 2. विष्णु का विशेषण,—गुरुः शुक्र का विशेषण।

दानवेयः [दनु+ऊङ्+ढक्]=दानवः।

दान्त (भू० क० कृ०) [दम्+क्त] 1. पालतू, वश में किया हुआ, दमन किया हुआ, नियन्त्रित, लगाम द्वारा रोका हुआ, दे० दम् 2. पालतू, मृदु 3. त्यक्त 4. उदार, —तः 1. पालतू बैल 2. दानी 3. दमन का वृक्ष।

दान्तिः (स्त्री०) [दम्+क्तिन्] आत्म संयम, वश में करना, आत्मनियन्त्रण।

दान्तिक (त्रि०) [दन्त+ठञ्] हाथी दांत का बना हुआ।

दापित (वि०) [दा+णिच्+क्त] 1. दिलाया गया 2. जो देने के लिए बाध्य किया गया हो, जिस पर अर्थ दण्ड लगाया गया हो 3. जिसका निर्णय किया गया हो 4. अधिन्यस्त, प्रदत्त।

दामन् (नपुं०) [दो+मनिन्] 1. डोरी, धागा, फ़ीता, रस्सी, 2. फूलों का गजरा, हार—आद्ये बद्धा विरहदिवसे या शिखा दाम हित्वा—मेघ० ९२, कनकचम्पकदामगौरीं—चौर० १, शि० ४।५० 2. लकीर, धारी (जैसे बिजली की)—विद्युद्दाम्ना हेमराजीव विन्ध्यम् —मालवि० ३।२०, मेघ० २७ 4. बड़ी पट्टी। सम० —अञ्चलम्,—अञ्जनम् घोड़े की पिछाड़ी बांधने की रस्सी— शि० ५।६१,—उदरः कृष्ण का विशेषण।

दामनी [दामन्+अण्+ङीप्] वह रस्सी जिसके सहारे पशुओं के पैर बाँध दिये जाते हैं।

दामिनी [दामन्+इनि+ङीप्] बिजली।

दाम्पत्यम् [दम्पती+यक्] विवाह, स्त्री पुरुष का पतिपत्नी सम्बन्ध।

दाम्भिक (वि०) (स्त्री०—की) [दम्भ+ठक्] 1. धोखेबाज, पाखण्डी 2. घमण्डी, अभिमानी 3. आडम्बर प्रिय, ढोंगी।

दायः [दा+घञ्] 1. उपहार, पुरस्कार, दान—रहसि रमते प्रीत्या दायं ददात्यनुवर्तते—मा० ३।२, प्रीतिदायः मा० ४, मालवि० ८।१९९ 2. वैवाहिक उपहार (जो वर या वधू को दिया जाय 3. भाग, अंश, उत्तराधिकार, पैतृक संपत्ति,—अनपत्यस्य पुत्रस्य माता दायमवाप्नुयात्—मनु० ९।२१७, ७७, २०३, १६४ 4. भाग, हिस्सा 5. सौंपना, समर्पण करना 6. बांटना, वितरण करना 7. हानि, विनाश 8. दैवदुर्विपाक 9. स्थान, जगह। सम०—अपवर्तनम् उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति को ज़ब्त करना—मनु० ९।७९,—अर्ह (वि०) पैतृकसम्पति को पाने का दावेदार—आदः 1. जो पैतृक सम्पत्ति के एक भाग का अधिकारी हो, उत्तराधिकारी —पुमान् दायादोऽदायादा स्त्री—निरु०, याज्ञ० २।११८, मनु० ८।१६० 2. पुत्र 3. बन्धु, बान्धव, निकट या दूर का सम्बन्धी 4. दावेदार या दावेदार होने का बहाना करने वाला— गवां गोषु वा दायादः—सिद्धा०—आदा, —आदी 1. उत्तराधिकारिणी 2. पुत्री,—आद्यम् 1. उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति 2. उत्तराधिकारी बनने की स्थिति,—कालः पैतृक सम्पत्ति को बांटने का समय,—बन्धुः 1. पैतृक सम्पत्ति का भागीदार 2. भाई, —भागः उत्तराधिकारियों में सम्पत्ति की बाँट (सम्पत्ति का विभाजन)।

दायक (वि०) (स्त्री०—यिका) [दा+ण्वुल् , युक्] देने वाला, स्वीकार करने वाला (समास के अन्त में प्रयुक्त) उत्तर°, पिण्ड° आदि।

दारः [दृ+घञ्] 1. दरार, रिक्ति, फटन, छिद्र 2. जुता हुआ खेत,—राः (ब० व०) पत्नी,—एते वयममी दाराः कन्येयं कुलजीवितम्—कु० ६।६३, दशरथदारानधिष्ठाय वशिष्ठः प्राप्तः—उत्तर० ४, पंच० १।१००, मनु० १।११२, २।२१७, श० ४।१६, ५।२९। सम०— —अधीन (वि०) भार्या पर आश्रित,—उपसंग्रहः, —ग्रहः,—परिग्रहः,—ग्रहणम् विवाह,—नवे दारपरिग्रहे —उत्तर० १।१९,—कर्मन् (नपुं०)—क्रिया विवाह —रघु० ५।४०।

दारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [दृ+णिच्+ण्वुल्] तोड़ने वाला, फाड़ने वाला, टुकड़े २ करने वाला—दारिका हृदयदारिका पितुः,—कः 1. लड़का, पुत्र 2. बच्चा, शिशु 3. जानवर का बच्चा 4. गाँव।

दारणम् [दृ+णिच्+ल्युट्] टुकड़े २ करना, फाड़ना, चीरना, खोलना, दो कर देना।

दारदः [दरद्+अण्] 1. पारा 2. समुद्र,—दः,—दम् सिन्दूर।

दारिका [दारक+टाप्, इत्वम्] 1. पुत्री 2. वेश्या।

दारित (वि०) [दृ+णिच्+क्त] फाड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ, खण्ड २ किया हुआ, चीरा हुआ।

दारिद्र्यम् [दरिद्र+ष्यञ्] ग़रीबी, निर्धनता—दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी—सुभा०।

दारी [दृ+णिच्+इन्+ङीष्] 1. दरार 2. एक प्रकार का रोग।

दारु (वि०) [दीर्यते दृ+उण्] फाड़ने वाला, चीरने वाला, — : 1. उदार या दानशील व्यक्ति 2. कलाकार,—रु (नपुं०) (पुं० भी) 1. लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा, शहतीर 2. गुटका 3. उत्तोलन दण्ड 4. चटखनी

5. देवदारु वृक्ष 6. कच्चा लोहा 7. पीतल। सम० —अण्डः मोर, —आघाटः खुटबढ़ई, —गर्भा काठ की पुतली, —जः एक प्रकार का ढोल, —पात्रम् कठरा, काठ का बर्तन, —पुत्रिका, —पुत्री लकड़ी की गुड़िया, —मुख्याह्वया, —मुख्याह्वा छिपकिली, —यन्त्रम् 1. कठपुतली 2. लकड़ी का यन्त्र, —वधूः लकड़ी की गुड़िया, —सारः चन्दन, —हस्तकः लकड़ी का चम्मच।

दारुकः [दारु+कन्] 1. देवदारु का पेड़ 2. कृष्ण के सारथि का नाम—उत्कन्धरं दारुक इत्युवाच—शि० ४।१८, —का 1. कठपुतली 2. लकड़ी की मूर्ति।

दारुण (वि०) [दृ+णिच्+उनन्] 1. कड़ा, सख्त—उत्तर० ३।३४ 2. कठोर, क्रूर, निर्दय, निष्ठुर,—मय्येव विस्मरणदारुणचित्तवृत्तौ —श० ५।२३, पशुमारणकर्मदारुणः—६।१, मनु० ८।२७० 3. भीषण, भयानक, भयंकर—श० ६।२९ 4. घोर, प्रचण्ड, उग्र, तीव्र, अत्यन्त पीड़ाकर (शोक, पीडा आदि),—हृदयकुसुमशोषी दारुणो दीर्घशोकः—उत्तर० ५ 5. बहुत तेज, कर्कश (शब्द आदि) 6. नृशंस, रोमाञ्चकारी,—णः भयानक रस, —णम् उग्रता, निर्दयता, बीभत्सता आदि।

दार्ढ्यम् [दृढ़+ष्यञ्] 1. कड़ापन, सख्ती, दृढ़ता 2. पुष्टि, समर्थन।

दार्दुरः, —रम् [दर्दुर+ण] 1. दक्षिणावर्ती (दाईं ओर खुलने वाला) शंख 2. जल।

दार्भ (वि०) (स्त्री०—र्भी) [दर्भ+अण्] कुश घास का बना हुआ—दार्भं मुञ्चत्युटजपटलं वीतनिद्रो मयूरः—श० ४, (अने० पा०)।

दार्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [दारु+अण्] काठ का बना हुआ।

दार्वटम् [पर्शियन शब्द—दारु+अट्+क] मन्त्रणागृह, न्यायालय।

दार्शनिकः [दर्शन+ठञ्] दर्शन शास्त्रों से परिचित।

दार्षद (वि०) (स्त्री०—दी) [दृषद्+अण्] 1. पत्थर का बना हुआ, खनिज 2. सिल पर पिसा हुआ (सत्तू आदि)।

दार्ष्टान्त (वि०) (स्त्री०—ती) [दृष्टान्त+अण्] दृष्टान्त देकर समझाया गया या व्याख्या किया गया, सचित्र वर्णन का विषय अर्थात् उपमेय—स्वापस्य दार्ष्टान्तिकत्वेन विवक्षितं—शंकर।

दाल्मिः [दालयति असुरान्—दल्+णिच्+मि] इन्द्र।

दावः [दुनाति—दु+ण]=दव। सम०—अग्निः, —अनलः —दहनः, जङ्गल की आग, दावाग्नि—आनन्दमृगदावाग्निः शीलशाखिमदद्विपः, ज्ञानदीपमहावायुरयं खलसमागमः—भामि० १।१९०, ३४।

दाशः [दशति हिनस्ति मत्स्यान्—दंश्+ट, नस्य आत्वम्] मछुवा, मनु० ८।४०८, ४०९, १०।३४। सम०—ग्रामः मछुवों का गाँव, —नन्दिनी व्यास की माता सत्यवती का विशेषण।

दाशरथः, —**दाशरथिः** [दशरथ+अण्, इञ् वा]—दशरथ का पुत्र, —रघु० १०।४४ 2. राम और उसके तीनों भाई, विशेषकर राम—रघु० १२।४५।

दाशार्हाः (ब० व०) [दशार्ह+अण्] दशार्ह के वंशज, यादव—शि० २।६४।

दाशेरः [दाशी+ढक्] 1. मछुवे का बेटा 2. मछुवा 3. ऊँट।

दाशेरकः [दाशेर+कन्] मालव देश, —काः (ब० व०) मालव देश के निवासी या शासक, दे० 'दाशेर' भी।

दासः [दास्+अच्] 1. गुलाम, सेवक—गृहकर्मदाशाः —भर्तृ० १।१, गृह°, कर्म°, आदि 2. मछुवा 3. शूद्र, चौथे वर्ण का पुरुष, तु० 'गुप्त'। सम०—अनुदासः —गुलाम का सेवक (अत्यंत विनम्र सेवक) (कभी कभी वक्ता के द्वारा यह शब्द 'विनम्रता' का सूचक समझा जाता है), —जनः सेवक या गुलाम—कमपराधलवं मयि पश्यसि त्यजसि मानिनि दासजनं यतः—विक्रम० ४।२९ (-भीड़भाड़ या सामान्य जनसमूह के लिए 'दास्यकुलम्' समस्तशब्द प्रयुक्त किया जाता है)

दासी [दास+ङीप्] 1. सेविका, नौकरानी 2. मछुवे की पत्नी 3. शूद्र की पत्नी 4. वेश्या। सम०—पुत्रः, —सुतः सेविका या गुलाम स्त्री का पुत्र, —सभम् दासियों का समूह, (जिस समय 'संबं०' ए० व० 'दास्याः' शब्द समास में प्रयुक्त होता है तो उसका शाब्दिक अर्थ नष्ट हो जाता है, उदा० दास्याः पुत्रः, —सुतः छिनाल का बेटा, (हराम का बच्चा—एक प्रकार का अपशब्द)—दास्याः पुत्रैः शकुनिलुब्धकैः—श० २; परन्तु 'दास्याः सदृः.' सेविका के समान।

दासेरः, —**रकः** [दासी+ढक्, दासेर+कन्] 1. दासी या सेविका का पुत्र 2. शूद्र 3. मछुवा 4. ऊँट—शि० १२।३२, ५।६६, (इस अर्थ में 'दासेय' शब्द भी है)।

दास्यम् [दास+ष्यञ्] दासता, गुलामी, सेवा, अधीनता —पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम् —श० ५।२७, मनु० ८।४१०।

दाहः [दह्+घञ्] 1. जलन, दावाग्नि,—दाहशक्तिमिव कृष्णवर्त्मनि —रघु० ११।४२, छेदो दंशस्य दाहो वा —मालवि० ४।४, कि० ५।१२ 2. (आकाश की भांति) दहकती हुई लाली 3. जलन की उत्तेजना 4. ताप, संताप। सम०—अगुरु (नपुं०)—काष्ठम् एक प्रकार का सुगन्ध, अगर, —आत्मक (वि०) जल उठने वाला, —ज्वरः जलन वाला बुखार, —सरः, —सरस् (नपुं०), —स्थलम् मुर्दों के जलाने का स्थान, श्मशानभूमि, —हर (वि०) गर्मी को दूर हटाने वाला (—रम्) उशीर पौधा, खस।

दाहक (वि०) (स्त्री०—हिका) [दह्+ण्वुल्] 1. जलाने वाला, सुलगाने वाला 2. आग लगाने वाला, दहनशील 3. दागने वाला,—कः आग ।

दाहनम् [दह्+ल्युट्] 1. जलाना, भस्म करना 2. दागना ।

दाह्यम् [दह्+ण्यत्] 1. जलाने के योग्य 2. जल उठने के योग्य ।

दिक्कः [दिक्+कै+क] बीस वर्ष का जवान हाथी, करभ ।

दिग्ध (वि०) [दिह्+क्त] 1. सना हुआ, लिपा हुआ, पोता हुआ—हस्तावसृग्दिग्धौ—मनु० ३।१३२, रघु० १६।१५, दिग्धोऽमृतेन च विषेण च पक्ष्मलाक्ष्या गाढं निखात इव मे हृदये कटाक्षः—मा० १।२९ 2. मिट्टी में सना हुआ, कलुषित 3. विषाक्त—कु० ४।२५, —ग्धः 1. तेल, क्रीम 2. चिकना पदार्थ, उबटन आदि 3. आग 4. जहर में बुझा तीर 5. कहानी (वास्तविक हो या काल्पनिक)

दिण्डि, दिण्डिरः [=तिण्डि,=हिंडिर पृषो० साधुः] एक प्रकार का वाद्ययंत्र ।

दित (वि०) [दो+क्त, इत्वम्] कटा हुआ, चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, विभक्त ।

दितिः (स्त्री०) [दो+क्तिन्] 1. काटना, टुकड़े २ करना, विभक्त करना 2. उदारता 3. दक्ष की एक कन्या, कश्यप की पत्नी, राक्षसों और दैत्यों की माता । सम०—जः,—तनयः पिशाच, राक्षस ।

दित्यः [दिति+यत्] राक्षस ।

दित्सा [दातुमिच्छा—दा+सन्+अ+टाप्] देने की इच्छा —भामि० १।१२५ ।

दिदृक्षा [द्रष्टुमिच्छा—दृश्+सन्+अ+टाप्] देखने की इच्छा—एकस्थसौंदर्यदिदृक्षयेव—कु० १।४९ ।

दिधिषुः [दिधं धैर्यं स्यति—सो+कु=दिधिषुमात्मनः इच्छति—दिधिषु+क्यच्+क्विप्] पुनर्विवाहित स्त्री का दूसरा पति (स्त्री०), अक्षतयोनि विधवा जिसका दूसरा विवाह हुआ हो ।

दिधि (धी) षूः (स्त्री०) [दिधि+सो+कू पृषो० साधुः] 1. दूसरी बार ब्याही हुई स्त्री 2. अविवाहित बड़ी बहन जिसकी छोटी बहन का विवाह हो गया हो— ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यायामुह्यतेऽनुजा, सा चाग्रे दिधिषूर्ज्ञेया पूर्वा च दिधिषूः स्मृता । सम०—पतिः वह पुरुष जिसने अपने भाई की विधवा से मैथुन किया हो (केवल वासना की तृप्ति के लिए न कि पवित्र कर्तव्य की दृष्टि से)—भ्रातुर्मृतस्य भार्यायां योऽनुरज्येत कामतः, धर्मेणापि नियुक्तायां स ज्ञेयो दिधिषूपतिः—मनु० ३।१७३।

दिधीर्षा [धृ+सन्+अ+टाप्] जीवित रखने की इच्छा, सहारा देने की इच्छा—दिक्कुञ्जराः कुरुत तत् त्रितय दिधीर्षां—बालरा० १।४८ ।

दिनम् [द्युति तमः, दो (दी)+नक्, ह्रस्वः] 1. दिन (विप० रात्रि)—दिनान्ते निहितं तेजः सवित्रेव हुताशनः—रघु० ४।१, यामिनयन्ति दिनानि च सुखदुःख-वशीकृते मनसि—काव्य० १०, दिनान्ते निलयाय गन्तुम्—२।१५ 2. दिन (रात्रि समेत, २४ घण्टे का समय) —दिने दिने सा परिवर्धमाना—कु० १।२५, सप्त व्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य दिनानि—रघु २।२५ । सम०—अण्डम्—अन्धकार,—अत्ययः-अन्तः,—अवसानम् सायंकाल, सूर्यास्त का समय—रघु० २।१५, ४५,—अधीशः—सूर्यः —अर्धः मध्याह्न, दोपहर,—आगमः,—आदिः,—आरम्भः, प्रभात, प्रातःकाल,—ईशः, —ईश्वरः—सूर्य—आत्मजः 1. शनि का विशेषण 2. कर्ण का विशेषण 3. सुग्रीव का विशेषण,—करः—कर्तृ,—कृत् (पुं०) सूरज—तुल्योद्योगस्तव दिनकृतश्चाधिकारो मतो नः—विक्रम० २।१, दिनकरकुलचन्द्र चन्द्रकेतो—उत्तर० ६।८, रघु० ९।२३, —केशरः,—वः अंधेरा,—क्षयः सायंकाल,—चर्या दैनिक व्यस्तता, प्रतिदिन का कार्यकलाप,—ज्योतिस् (नपुं०) धूपः,—दुःखितः चक्रवाक पक्षी,—पः,—पतिः,—बन्धुः, —मणिः,—मयूखः,—रत्नम् सूर्य,—मुखम् प्रातःकाल—रघु० ९।२५,—मूर्धन् (पुं०) प्राची दिशा का पर्वत (उदयाचल) जिसके पीछे से सूर्य उदित होता हुआ माना जाता है,—यौवनम् मध्याह्न, दोपहर (दिन की जवानी) ।

दिनिका [दिन+ठन्+टाप्] दिन की मजदूरी ।

दिरिपकः (पुं०) खेलने की गेंद ।

दिलीपः (पुं०) एक सूर्यवंशी राजा, अंशुमान् का पुत्र, भगीरथ का पिता (परन्तु कालिदास के अनुसार रघु का पिता), [कालिदास ने दिलीप को एक आदर्श राजा बताया है, उसकी पत्नी का नाम सुदक्षिणा था, जो सब प्रकार से अपने पति के अनुरूप थी । उनके कोई सन्तान न थी । फलतः वे अपने कुलगुरु वसिष्ठ के पास गये, गुरु ने उनको नंदिनी नाम की कामधेनु की सेवा करने के लिए कहा—उन्होंने २१ दिन तक गाय की सेवा की और २२वें दिन गौ ने उनपर कृपा की । फलतः उनके यहाँ एक यशस्वी बालक का जन्म हुआ जिसने बड़े होकर समस्त विश्व पर विजय प्राप्त की और फिर वही रघुवंश का प्रवर्तक बना] ।

दिव् i (दिवा० पर०—दीव्यति, द्यूत या द्यून—इच्छा० दुद्यूषति, दिदेविषति) 1. चमकना, उज्ज्वल होना 2. फेंकना, (अस्त्र की भांति) क्षपण करना—भट्टि० १७।८७, ५।८१ 3. जूआ खेलना, पांसे से खेलना ('पांसे' में कर्म० या करण०)—अक्षैरक्षान्वा दीव्यति —सिद्धा०, वेणी० १।१३ 4. खेलना, क्रीडा करना 5. हँसी दिल्लगी करना, चुटकियों में उड़ा देना, खेल करना, मजाक करना (कर्म० के साथ) 6. दाँव पर

रखना, शर्त लगाना 7. बेचना, व्यापार करना (सम्बन्ध० के साथ)—अदेवीद्बंधुभोगानाम्—भट्टि० ८।१२२, (उपसर्ग पूर्व होने पर कर्म० या सम्बन्ध० के साथ,—शतं शतस्य वा परिदीव्यति—सिद्धा०) 8. उड़ाना, अपव्यय करना 9. प्रशंसा करना 10. प्रसन्न होना, हर्ष मनाना 11. पागल होना, पीकर मस्त होना 12. नींद आना 13. कामना करना, ii (स्वा० पर०, चुरा० उभ० देवति, देवयति-ते) विलाप कराना, पीडा दिलाना, प्रकुपित कराना, सताना, iii (चुरा० आ०—देवयते) पीडा सहन करना, विलाप करना, आर्तनाद करना, परि,—विलाप करना, क्रन्दन करना, पीडा सहन करना। भट्टि० ४।३४।

दिव् (स्त्री०) [दीव्यन्त्यत्र दिव्+बा आधारे डि विताराः०] (कर्तृ० ए० व०—द्यौः) 1. स्वर्ग,—रघु० ३।४, १२, मेघ० ३० 2. आकाश 3. दिन 4. प्रकाश, उजाला—विशे० वह समस्त शब्द जिनका पूर्वपद दिव् है, अधिकांश अनियमित हैं—उदा० दिवस्पतिः इन्द्र का विशेषण,—अनतिक्रमणीया दिवस्पतेराज्ञा—श० ६, —दिवस्पृथिव्यौ स्वर्ग और पृथिवी,—दिविजः,—दिविष्ठः, —दिविस्थ,—दिविस(ष)द् (पुं०) दिवोकस् (पुं०) दिवौकस्,—सः स्वर्ग का रहने वाला, देवता—श० ७, रघु० ३।१९, ४७, दिविषद्वृन्दैः—गीत० ७।

दिवम् (नपुं०) [दिव्+क] 1. स्वर्ग 2. आकाश 3. दिन 4. वन, जङ्गल, अरण्य।

दिवसः,—सम् [दीव्यतेऽत्र दिव्+असच् किच्च] दिन—दिवस इवाभ्रश्यामस्तपात्यये जीवलोकस्य—श० ३।१२। सम० —**ईश्वरः,—करः** सूर्य, ऋतु० ३।२२,—**मुखम्** प्रातःकाल, प्रभात,—**विगमः** सायंकाल, सूर्यास्त—मेघ० ९९।

दिवा (अव्य०) [दिव्+का] दिन में, दिन के समय, दिवाभू—दिन निकलना। सम०—**अटनः** कौवा,—**अन्धः** उल्लू,—**अन्धकी,—अन्धिका** छछुन्दर,—**करः** 1. सूर्य कु० १।१२, ४।४८ 2. कौवा 3. सूरजमुखी फूल, —**कीर्तिः** 1. चाण्डाल, नीच जाति का पुरुष 2. नाई 3. उल्लू,—**निशम्** (अव्य०) दिन रात,—**प्रदीपः** दिन का दीपक या लैम्प, अप्रसिद्ध पुरुष,—**भीतः,—भीतिः** 1. उल्लू—दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम्—कु० १।१२ 2. चोर, सेंध लगानेवाला, —**मध्यम्** मध्याह्न,—**रात्रम्** (अव्य०) दिनरात,—**वसुः** सूर्य,—**शय** (वि०) दिन में सोने वाला—रघु० १९।३४, **स्वप्नः,—स्वापः** दिन के समय सोना।

दिवातन (वि०) (स्त्री०—नी) [दिवाभवः—टयु, तुट् च] दिन का या दिन से सम्बन्ध रखने वाला—कु० ४।४६, भट्टि० ५।६५।

दिविः [दिव्+इन्] चाष पक्षी, नीलकण्ठ ('दिवः' भी)।

दिव्य (वि०) [दिव्+यत्] 1. दैवी, स्वर्गीय, आकाशीय 2. अतिप्राकृतिक, अलौकिक—परदोषेक्षणदिव्यचक्षुषः —शि० १६।२९, भग० ११।८ 3. उज्ज्वल, शानदार 4. मनोहर, सुन्दर,—**व्यः** 1. अलौकिक या स्वर्गीय प्राणी—दिव्यानामपि कृतविस्मयां पुरस्तात्—शि० ८।६४ 2. जौ 3. यम का विशेषण 4. दार्शनिक,—**व्यम्** 1. दैवी प्रकृति, दिव्यता 2. आकाश 3. दैवी परीक्षा (यह दस प्रकार की गिनाई गई है), तु० याज्ञ० २।२२, ९५ 4. शपथ, सत्योक्ति 5. लौंग 6. एक प्रकार का चन्दन। सम०—**अंशुः** सूर्य,—**अङ्गना**—नारी, —**स्त्री** स्वर्गीय अप्सरा, दिव्य कन्या, अप्सरा,—**अदिव्य** (वि०) कुछ लौकिक तथा कुछ अलौकिक (जैसा कि अर्जुन),—**उदकम्** वर्षा का जल,—**कारिन्** (वि०) 1. शपथ उठाने वाला 2. अग्नि परीक्षा देने वाला, —**गायनः** गन्धर्व,—**चक्षुस्** (वि०) 1. अलौकिक दृष्टि रखने वाला, दिव्य आँखों से युक्त—रघु० ३।४५ 2. अन्धा (पुं०) बन्दर (नपुं०) ऋषीय आँख, अलौकिक दृष्टि, मानव आँखों द्वारा अदृष्ट पदार्थों को देखने की शक्ति,—**ज्ञानम्** अलौकिक जानकारी,—**दृश्** (पुं०) ज्योतिषी,—**प्रश्नः** दिव्यलोकान्तर्गत तत्त्वों की पूछताछ, भावी घटना क्रम की पूछ ताछ, शकुन विचार, —**मानुषः** उपदेवता,—**रत्नम्** काल्पनिक रत्न जो स्वामी की सब इच्छाओं को पूरा करने वाला कहा जाता है, दार्शनिकों की मणि—तु० चिन्तामणि,—**रथः** स्वर्गीय रथ जो आकाश में चलता है,—**रसः** पारा,—**वस्त्र** (वि०) दिव्य वस्त्रों को धारण करने वाला (**स्त्रः**) 1. धूप 2. सूरजमुखी का फूल,—**सरित्** (स्त्री०) आकाशगङ्गा,—**सारः** साल का वृक्ष।

दिश् (तुदा० उभ०—दिशति—ते, दिष्ट; प्रेर० देशयति—ते, इच्छा० दिदिक्षति—ते) 1. संकेत करना, दिखलाना, प्रदर्शन करना, (साक्षी के रूप में) प्रस्तुत करना —साक्षिणः सन्ति मेत्युक्त्वा दिशेत्युक्तो दिशेन्न यः —मनु० ८।५७, ५३ 2. अधिन्यस्त करना; नियत करना—इष्टां गतिं तस्य सुरा दिशन्ति—महा० 3. देना, स्वीकार करना, प्रदान करना, अर्पण करना, सौंपना —बाणमत्र भवते निजं दिशन्—कि० १३।६८, रघु० ५।३०, ११।२, १६।७२ 4. (कर के रूप में) देना 5. स्वीकृति देना—रघु० ११।४९ 6. निदेश देना, आदेश देना, हुक्म देना 7. अनुज्ञा देना, इजाजत देना —स्मर्तुं दिशन्ति न दिवः सुरसुन्दरीभ्यः—कि०५।२८, अति—, 1 अधिन्यस्त करना, सौंपना 2. प्रयोग का विस्तार करना, सादृश्य के आधार पर घटाना—इति ये प्रत्यया उक्तास्तेऽनातिदिश्यन्ते—सिद्धा०, या प्रधानमल्लनिबर्हणन्यायेनातिदिशति—शारी०, अप—, 1. संकेत करना, इशारा करना, दिखलाना 2. प्रकथन करना,

प्रस्तुत करना, कहना, घोषणा करना, बतलाना, चेतावनी देना —मनु० ८।५४ 3. ढोंग रचना, बहाना करना—मित्रकृत्यमपदिश्य—रघु० १९।३१, ३२, ५४, शिरः शूलस्पर्शनमपदिशन्—दश० ५०, सिरदर्द के बहाने की युक्ति देते हुए 4. उल्लेख करना, निर्देश करना—रहसि भर्त्रा मद्गोत्रापदिष्टा—दश० १०२, आ–, 1. करना, दिखलाना 2. आदेश देना, आज्ञा देना, निर्देश देना—पुनरप्यादिश तावदुत्थितः—कु० ४।१६, आदिक्षदस्याभिगमं वनाय—भट्टि० ३।९, ७।२८, रघु० १।५४, २।६५, मनु० ११।१९३ 3. उद्दिष्ट करना, अलग करना, अधिन्यस्त करना —भट्टि० ३।३ 4. अध्यापन करना, उपदेश देना, शिक्षा देना, अङ्कित करना, निश्चित करना—रघु० १२।६८ 5. विशिष्ट करना, 6. आगे होने वाली बात बताना, उद्–, 1. संकेत करना ज्ञापन करना, द्योतित करना, उल्लेख करना—प्रथमोद्दिष्टमासनम्—कु० ६।३५, यथोद्दिष्टव्यापारा—श० ३, अनेडमूक उद्दिष्टः शठे —मेदि० 2. उल्लेख करना, निर्देश करना, संकेत करना —स्मरमुद्दिश्य—कु० ४।३८ 3. अभिप्राय रखना, उद्देश्य रखना, निर्देश करना, अधिन्यस्त करना, अर्पित करना—फलमुद्दिश्य—भग० १७।२१, उद्दिष्टामुपनिहितां भजस्व पूजाम्—मा० ५।२५, वध्यशिलामुद्दिश्य प्रस्थितः —पंच० १ 4. सिखाना, उपदेश देना —सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम्—भर्तृ० २।२८, उप–, 1. अध्यापन करना, उपदेश देना, सिखाना—सुखमुपदिश्यते परस्य—का० १५६, मालवि० १।५, रघु० १६।४३, भग० ४।३४ 2. संकेत करना, इशारा करना, उल्लेख करना—गुणशेषामुपदिश्य—रघु० ८।७३ 3. कथन करना, बतलाना, घोषणा करना—किं कुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्—मृच्छ० ९।७ 4. निर्दिष्ट करना, अङ्कित करना, स्वीकृति देना, निश्चित करना—न द्वितीयश्च साध्वीनां क्वचिद्भर्तोपदिश्यते—मनु० ५।१६२, २।१९० 5. नाम लेना, पुकारना, निस्–, 1. संकेत करना, इशारा करना, दिखलाना—एकैकं निर्दिशन् —श० ७, अङ्गुल्या निर्दिशति—आदि 2. अधिन्यस्त कर देना, दे देना—निर्दिष्टां कुलपतिना स पर्णशालामध्यास्य —रघु० १।९५ 3. सुझाना, निर्देश करना, संकेत करना 4. भविष्यवाणी करना 5. उपदेश देना 6. बतलाना, समाचार देना, प्र–, 1. संकेत करना, इशारा करना, दिखाना, निर्देश करना—तस्याधिकारपुरुषैः प्रणतैः प्रदिष्टाम्—रघु० ५।६३, २।३९ 2. बतलाना, कथन करना—भग० ८।२८, भट्टि० ४।५ 3. देना, स्वीकार करना, उपहार देना, प्रदान करना—विश्रयोः पथि मुनिप्रदिष्टयोः—रघु० ११।९, ७।३५, निःशब्दोऽपि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः —मेघ० ११४, मनु० ८।२६५, प्रत्या–, (क) अस्वीकार करना, दूर फेंकना, कतराना—प्रत्यादिष्टविशेषमण्डनविधिः—श० ६।५, (ख) पीछे ढकेलना,—रघु० ६।२५ 2. पछाड़ देना; प्रत्याख्यान करना (व्यक्ति का)—कामं प्रत्यादिष्टां स्मरामि न परिग्रहं मुनेस्तनयाम् —श० ५।३१ 3. दुरूह बनाना, निस्तेज करना, परास्त करना, पृष्ठभूमि में फेंक देना—रघु० १।६१, १०।६८ 4. विपरीत आज्ञा देना, वापिस बुलाना, व्यप–, 1. नाम लेना, पुकारना,—व्यपदिश्यते जगति विक्रमीत्यतः—शि० १५।२८ 2. मिथ्या नाम लेना, मिथ्या पुकारना—मित्रं च मां व्यपदिशस्यपरं च यासि —मृच्छ० ४।९ 3. बोलना, गर्व से कहना—जन्मेन्दोर्विमले कुले व्यपदिशसि—वेणी० ६।७ 4. बहाना करना, ढोंग रचना—महावी० २।११, सम्–, 1. देना, स्वीकृति देना, अधिन्यस्त करना, सौंपना—भट्टि० ६।१४१, याज्ञ० २।२३२ 2. आज्ञा देना, निर्देश देना, शिक्षा देना, उपदेश देना, सन्देश भेजना—किंनु खलु दुष्यन्तस्य युक्तरूपमस्माभिः सन्देष्टव्यम्—श० ४, शि० ९।५६, ६१ 3. सन्देश के रूप में भेजना, सन्देश सौंपना—अथ विश्वात्मने गौरी सन्दिदेश मिथः सखीम्—कु० ६।१।

दिश् (स्त्री०) [दिशति ददात्यवकाशम् दिश्+क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—दिक्,–ग्) 1. दिशा, दिग्बिन्दु, चार दिशाएँ, परिधि का बिन्दु, आकाश का चौथाई —दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः—रघु० ३।१४, दिशि दिशि किरति सजलकणजालम्—गीत० ४ 2. (क) वस्तु का केवल निर्देश, इंगित, (सामान्य रूप रेखा का) संकेत, इतिदिक् (भाष्यकारों द्वारा बहुल प्रयोग, (ख) (अतः) रीति, रूप, प्रणाली—मुनेः पाठोक्तदिशा —सा० द०, दिगियं सूत्रकृता प्रदर्शिता, दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमा दिशः—अमर० 3. प्रदेश, अन्तराल, स्थान 4. विदेश या दूरस्थ प्रदेश 5. दृष्टिकोण, विषय को सोचने की रीति 6. उपदेश, आदेश 7. 'दस' की संख्या 8. पक्ष, दल 9. काटने का चिह्न (विशे० समास में स्वरादि, सघोष तथा ऊष्म व्यंजनादि शब्दों से पूर्व 'दिग्' तथा अघोष व्यंजनादि शब्दों से पूर्व 'दिक्' हो जाता है उदा० दिगम्बर, दिग्गज, दिक्पथ, दिक्करिन् आदि)। सम०—अन्तः दिशाओं का किनारा या क्षितिज, दूर का अंतर, दूरस्थ स्थान —भामि० १।२, रघु० ३।४, ५।६७, १६।८७ नानादिगन्तागता राजानः आदि,—अन्तरम् 1. दूसरी दिशा 2. मध्यवर्ती स्थान, अन्तरिक्ष, अन्तराल 3. दूरवर्ती दिशा, अन्य प्रदेश, विदेश,—अम्बर (वि०) दिशाएं ही जिसका वस्त्र हों, बिल्कुल नग्न, विवस्त्र—दिगम्बरत्वेन निवेदितं वसु—कु० ५।७२, (—रः) 1. नग्न भिक्षु (जैन या बौद्ध संप्रदाय का) 2. साधु, संन्यासी

3. शिव का विशेषण 4. अंधेरा,—**ईशः**,—**ईश्वरः** दिशा का अधिष्ठात्री देवता—कु० ५।५३, दे० 'अष्टदिक्पाल,—**करः** 1. युवा, जवान आदमी 2. शिव का विशेषण,—**कारिका**—**करी**, जवान लड़की या स्त्री,—**करिन्**,—**गजः**,—**दन्तिन्**—**वारणः** (पुं०) वह हाथी जो पृथ्वी को संभालने के लिए किसी दिशा में स्थित कहा जाता है (यह आठों दिशाओं में स्थित होने के कारण अष्ट दिग्गज कहलाते हैं)—दिग्दन्तिशेषाः ककुभश्चकार—विक्रम० ७।१,—**ग्रहणम्** पृथ्वी की दिशाओं का अवलोकन—**चक्रम्** 1. क्षितिज 2. समस्त विश्व,—**जयः**,—**विजयः** दिग्विजय, सब दिशाओं में भिन्न २ देशों को जीतना, विश्व का विजय करना स दिग्विजयमव्याजवीरः स्मर इवाकरोत्—विक्रमांक० ४।१,—**दर्शनम्** केवल दिशाएँ दिखाना, केवल सामान्य रूप, रेखा की ओर संकेत करना,—**नागः** 1. पृथ्वी की दिशा का हाथी, दे० दिग्गज 2. कालिदास का समसामयिक एक कवि (यह बात मेघ० १४ में मल्लि० की व्याख्या पर जो बड़ी संदिग्ध है, आधारित है),—**मण्डलम्** =दिक्चक्रम्,—**मात्रम्** केवल दिशा या संकेत,—**मुखम्** आकाश की कोई सी दिशा या भाग—हरति मे हरिवाहनदिङ्मुखम्—विक्रम० ३।६, अमरु ५,—**मोहः** मार्ग या दिशा भूल जाना,—**वस्त्र** (वि०) बिल्कुल नंगा, विवस्त्र, (**स्त्रः**) 1. दिगम्बर संप्रदाय का जैन या बौद्ध भिक्षु 2. शिव का विशेषण,—**विभावित** (वि०) विश्रुत, विख्यात या सब दिशाओं में प्रसिद्ध ।

दिशा [दिश्+अङ्+टाप्] पृथ्वी का चौथाई, ओर, तरफ, प्रदेश । सम०—**गजः**,—**पालः**, दे० दिग्गज, दिक्पाल ।

दिश्य (वि०) [दिशि भवः—दिश्+यत्] पृथ्वी की किसी दिशा से सम्बन्ध रखने वाला, या किसी दिशा में स्थित ।

दिष्ट (वि०) [दिश्+क्त] 1. दिखलाया हुआ, संकेतित, निर्देश किया हुआ, इशारे से बताया हुआ 2. वर्णित, उल्लिखित 3. स्थिर, निश्चित 4. निदेशित, आदेश दिया हुआ,—**ष्टम्** 1. अधिन्यास, नियतीकरण 2. भाग्य, नियति, सौभाग्य या दुर्भाग्य—भो दिष्टम्—श० २ 3. आदेश, निदेश 4. उद्देश्य, ध्येय । सम०—**अन्तः** नियत किये हुए समय की समाप्ति, मृत्यु—दिष्टान्तमाप्स्यति भवानपि पुत्रशोकात्—रघु० ९।७९ ।

दिष्टिः (स्त्री०) [दिश्+क्तिन्] 1. अधिन्यास, नियतीकरण 2. निदेश, आज्ञा, शिक्षा, नियम, उपदेश 3. भाग्य, किस्मत, नियति 4. अच्छी किस्मत, प्रसन्नता, शुभ कार्य (जैसा कि पुत्रजन्म)—दिष्टिवृद्धिमिव शुश्राव—का० ५५, दिष्टिवृद्धिसम्भ्रमो महानभूत्—का० ७३ ।

दिष्ट्या (अव्य०) [दिष्टि का करण० ए० व०] भाग्य से, सौभाग्य से, ईश्वर का धन्यवाद, मैं कितना प्रसन्न हूँ, कितना सौभाग्यशाली, शाबाश (हर्ष या बधाई का उद्गार)—दिष्ट्या प्रतिहतं दुर्जातम्—मा० ४, दिष्ट्या सोयं महाबाहुरञ्जनानन्दवर्धनः—उत्तर० १।३७, वेणी० २।१२, **दिष्ट्या वृध्** बधाई देना,—दिष्ट्या धर्मपत्नी समागमेन पुत्रमुखदर्शनेन चायुष्मान्वर्धते—श० ७ ।

दिह् (अदा० उभ०—देग्धि, दिग्धे, दिग्ध—इच्छा० दिधिक्षति) 1. लीपना, सानना, पोतना, बिछाना—भट्टि० ३।२१, ७।५४ 2. मैला करना, भ्रष्ट करना, अपवित्र करना—रघु० १६।१५, **सम्**—, 1. सन्देह करना, अनिश्चित रहना—याज्ञ० २।१६, संदिग्धो विजयो युधि—पंच० ३।१२ 2. भूल करना, हतबुद्धि होना (कर्मवा०)—पान्तु त्वामकठोरकेतकशिखासंदिग्धमुग्धेन्दवः (जटाः)—मा० १।२, या—धूपैर्जालविनिःसृतैर्वलभयः संदिग्धपारावताः—विक्रम० ३।२, कु० ६।४० 3. आक्षेप आरम्भ करना ।

दी (दिवा० आ०—दीयते, दीन) नष्ट होना, मरना ।

दीक्ष् (भ्वा० आ०—दीक्षते, दीक्षित) 1. किसी धर्मसंस्कार के अनुष्ठान के लिए अपने आपको तैयार करना, दे० नी० 'दीक्षित' 2. अपने आपको समर्पित करना 3. शिष्य बनाना 4. उपनयन संस्कार करना 5. यज्ञ करना 6. आत्म संयम करना ।

दीक्षकः [दीक्ष्+ण्वुल्] आध्यात्मिक मार्ग-दर्शक ।

दीक्षणम् [दीक्ष्+ल्युट्] दीक्षा देना, धर्मार्पण ।

दीक्षा [दीक्ष्+अ+टाप्] 1. किसी धर्म-संस्कार के लिए समर्पण, पवित्रीकरण—रघु० ३।४४, ६५ 2. यज्ञ से पूर्व किया जाने वाला प्रारम्भिक संस्कार 3. धर्मसंस्कार—विवाह दीक्षा—रघु० ३।३३, कु० ७।१, ८।२४ 4. यज्ञोपवीत संस्कार करना, किसी विशेष उद्देश्य के लिए अपने आपको समर्पण करना । सम०—**अन्तः** पूर्वकृत यज्ञादि कर्म की त्रुटियों की शान्ति के लिए किया जाने वाला पूरक-यज्ञ ।

दीक्षित (भू० क० कृ०) [दीक्ष्+क्त] संस्कारित, (किसी धर्म-संस्कार के अनुष्ठान के लिए) दीक्षा-प्राप्त—एते विवाहदीक्षिता यूयं—उत्तर० १, अपन्नाभयग्नेष दीक्षिताः खलु पौरवाः—श० २।१६, रघु० ८।७५, ११।२४, वेणी० १।२५ 2. यज्ञ के लिए तैयार 3. व्रत लेकर (किसी पुण्य कार्य के लिए) तैयार—रघु० ११।६७ 4. अभिषिक्त—रघु० ४।५, —**तः** 1. दीक्षाकार्य में व्यस्त पुरोहित 2. शिष्य 3. वह पुरुष जिसने या जिसके पूर्व-पुरुषों ने ज्योतिष्टोम जैसे बृहद् यज्ञों का अनुष्ठान किया हो ।

दीदिविः [दिव्+क्विन्, द्वित्वं, दीर्घश्च]1. उबले हुए चावल 2. स्वर्ग ।

दीधितिः (स्त्री०) [दीधी+क्तिन्, इट्, ईकारलोपश्च] 1. प्रकाश की किरण —रघु० ३।२२, १७।४८, नै० २।६९ 2. आभा, उजाला 3. शारीरिक कान्ति, स्फूर्ति —भर्तृ० २।२९।

दीधितिमत् (वि०) [दीधिति+मतुप्] उज्ज्वल (पुं०) सूर्य—कु० २।२, ७।७०।

दीधी (अदा० आ० दीधीते) 1. चमकना 2. दिखाई देना, प्रतीत होना।

दीन (वि०) [दी+क्त, तस्य नः] 1. ग़रीब, दरिद्र 2. दुःखी नष्ट-भ्रष्ट, कष्टग्रस्त, दयनीय, अभागा 3. खिन्न, उदास, विषण्ण, शोकग्रस्त—सा विरहे तव दीना —गीत० ४ 4. भीरु, डरा हुआ 5. क्षुद्र, शोचनीय —भर्तृ० २।५१, —नः ग़रीब आदमी, दुःखी या विपद्-ग्रस्त—दीनानां कल्पवृक्षः—मृच्छ० १।४८, विनानि दीनोद्धरणोचितस्य—रघु० २।२५। सम०—दयालु, —**वत्सल** (वि०) दीन-दुखियों के प्रति कृपालु—**बन्धुः** दीन-दुखियों का मित्र।

दीनारः [दी+आरक्, नुट्] 1. एक सोने का विशेष सिक्का, —जितश्चासौ मया षोडशसहस्राणि दीनाराणाम्—दश० 2. सिक्का 3. सोने का आभूषण।

दीप् (दिवा० आ०—दीप्यते, दीप्त—वारम्०—देदीप्यते) 1. चमकना, जगमगाना (आलं० भी)—सर्वैरुस्रैः समग्रैस्त्वमिव नृपगुणैर्दीप्यते सप्तसप्तिः—मालवि० २।१३, तरुणीस्तन इव दीप्यते मणिहारावलि रामणीयकम् —नै० २।४४, भट्टि० २।२, रघु० १४।६४, हि० प्र० ४६ 2. जलना, प्रकाशित होना—यथा यथा चेयं चपला दीप्यते—का० १०५ 3. दहकना, प्रज्वलित होना, बढ़ना—(आलं० भी) रघु० ५।४७, भट्टि० १४।८८, शि० २०।७१ 4. क्रोध से आगबबूला होना—कि० ३।५५ 5. प्रख्यात होना—प्रेर० दीपयति—ते, आग सुलगाना—प्रज्वलित करना, रोशनी करना, प्रकाश करना, वृन्दावनान्तरमदीपयदंशुजालैः (इन्दुः)—गीत० ७, उद्—, प्रेर० 1. आग सुलगाना, 2. उद्बोधित करना, उत्तेजित करना, उद्दीपित करना, प्र—, सम्—, चमकना, जगमगाना।

दीपः [दीप्+णिच्+अच्], लैंप, दीवा, प्रकाश—नृपदीपो घनस्नेहं प्रजाभ्यः संहरन्नपि, अन्तरस्थैर्गुणैः शुभ्रैर्लक्ष्यते नैव केनचित्—पंच० १।२२१, न हि दीपौ परस्परस्योपकुरुतः—शारी०, इसी प्रकार 'ज्ञानदीप'। सम० —**अन्विता** 1. अमावस्या 2.=दीपावली, —**आराधनम्** दीप थाल में रख कर देवमूर्ति की आरती उतारना, —**आलिः**, —**ली**, —**आवली**—**उत्सवः** 1. दीपपंक्ति, रात के समय रोशनी करना 2. विशेषरूप से दिवाली का उत्सव जो कार्तिक की अमावस्या में मनाया जाता है,—**कलिका** दीपक की लौ, —**किट्टम्** दीपक का फूल, दीये का गुल—**कूपी**,—**खरी** दीवे की बत्ती—**ध्वजः** काजल,—**पादपः**,—**वृक्षः** दीपाधार, दीवट,—**पुष्पः** चम्पा का वृक्ष—**भाजनम्** दीपक, रघु० १९।५१, —**माला** प्रकाश करना, रोशनी करना,—**शत्रुः** पतंग, —**शिखा** दीपक की लौ,—**शृङ्खला** दीवों की पंक्ति, रोशनी।

दीपक (वि०) (स्त्री०—पिका) [दीप्+णिच्+ण्वुल्] 1. आग सुलगाने वाला, प्रज्वलित करने वाला 2. रोशनी करने वाला, उज्ज्वल बनाने वाला 3. सचित्र बनाने वाला, सुन्दर बनाने वाला, विख्यात करने वाला 4. उत्तेजक, प्रखर करने वाला—शि० २।५५ 5. पौष्टिक, पाचन शक्ति को उद्दीप्त करने वाला, पाचनशील,—**कः** 1. प्रदीप—तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष निर्मल विवेकदीपकः—भर्तृ० १।५६ 2. बाज 3. कामदेव का विशेषण ('दीप्यक' भी),—**कम्** 1. ज़ाफ़रान, केसर 2. (अलं० शा०) एक अलंकार जिसमें समान विशेषण रखने वाले दो या दो से अधिक पदार्थ 'प्रकृत और अप्रकृत) एक जगह मिला दिये जायँ, या जिसमें कुछ विशेषण (प्रकृत और अप्रकृत) एक ही कर्म के विधेय बना दिये जायँ,—सकृद्वृत्तिस्तु धर्मस्य प्रकृताप्रकृतात्मनां, सैव क्रियासु बह्वीषु कारकस्येतिदीपकम्: —काव्य० १०, तु० चन्द्रा०—वदन्ति वर्ण्यावर्ण्यानां धर्मैक्यं दीपकं बुधाः, मदेन भाति कलभः प्रतापेन महीपतिः—५।४५।

दीपन (वि०) [दीप्+णिच्+ल्युट्] 1. आग सुलगाने वाला, प्रकाश करने वाला 2. पुष्टिकारक, पाचनशक्ति को उद्दीप्त करने वाला 3. उत्तेजक, उद्दीपक 4. केसर, ज़ाफ़रान।

दीपिका [दीप्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. प्रकाश, मशाल—रघु० ४।४५, ९।७० 2. (समास के अन्त में) सचित्र वर्णन करने वाला, स्पष्टकर्ता; तर्कदीपिका।

दीपित (वि०) [दीप्+णिच्+क्त] 1. जिसको आग लगा दी गई हो 2. प्रज्वलित 3. रोशनीवाला, प्रकाशमय 4. प्रव्यक्त, प्रकाशित।

दीप्त (भू० क० कृ०) [दीप्+क्त] 1. जलाया हुआ, प्रज्वलित, सुलगाया हुआ 2. दहकता हुआ, गरम, प्रकाश उगलने वाला, चकाचौंध करने वाला 3. प्रकाशमय 4. उत्तेजित, उद्दीपित,—**प्तः** 1. सिंह 2. नींबू का पेड़,—**सम्** सोना। सम०—**अंशुः** सूर्य, —**अक्षः** बिल्ली, —**अग्नि** (वि०) (आग की भाँति) सुलगाया हुआ (—**ग्निः**) 1. धधकती हुई आग 2. अगस्त्य का नाम, —**अङ्गः** मोर,—**आत्मन्** (वि०) जोशीले स्वभाव का, —**उपलः** सूर्यकान्तमणि,—**किरणः** सूर्य,—**कीर्तिः** कार्तिकेय का विशेषण,—**जिह्वा** लोमड़ी (आलंकारिक

रूप से झगड़ालू और दुष्टस्वभाव वाली स्त्री के लिए प्रयुक्त होता है),—तपस् (वि०) उज्ज्वल धर्मनिष्ठा से युक्त, उत्कट भक्ति वाला,—पिङ्गलः सिंह,—रसः केंचुवा,—लोचनः बिल्ली,—लोहम् पीतल, कांसा।

दीप्तिः (स्त्री०) [दीप्+क्तिन्] 1. उजाला, चमक, प्रभा, आभा 2. सौंदर्य की उज्ज्वलता, अत्यन्त मनोरमता (दीप्ति और कान्ति के अन्तर के लिए दे० कान्ति) 3. लाख 4. पीतल।

दीप्र (वि०) [दीप्+र] चमकीला, जगमगाता हुआ चमकदार,—प्रः आग।

दीर्घ (वि०) [दृ+घञ्] (म० अ०—द्राघीयस्, उ० अ०—द्राघिष्ठ) 1. (समय और स्थान की दृष्टि से) लम्बा, दूर तक पहुँचने वाला,—दीर्घाक्षं शरदिन्दुकान्तिवदनम्—मालवि० २।३, दीर्घान् कटाक्षान्—मेघ० ३५, दीर्घापांग आदि 2. लम्बी अवधि का टिकाऊ, उबा देने वाला—दीर्घयामा त्रियामा—मेघ० १०८, विक्रम० ३।४, श० ३।१५ 3. (आह की भाँति) गहरा—अमरु ११, दीर्घमुष्णं च निःश्वस्य 4. (स्वर की भाँति) लम्बा, जैसा कि 'काम' में 'आ' 5. उत्तुंग, ऊँचा, उन्नत,—र्घम् (अव्य०) 1. चिर, चिरकाल तक 2. अत्यन्त 3. अधिक,—र्घः 1. ऊँट, 2. दीर्घस्वर। सम०—अध्वगः दूत, हरकारा,—अहन् (पुं०) ग्रीष्म,—आकार (वि०) बड़े आकार का,—आयु—आयुस् (वि०) दीर्घजीवी, लम्बी आयु वाला,—आयुधः 1. भाला 2. कोई लम्बा हथियार 3. सूअर,—आस्यः हाथी,—कण्ठः,—कण्ठकः,—कन्धरः सारस,—काय (वि०) (क़द में) लम्बा,—केशः रीछ,—गतिः,—ग्रीवः,—घाटिकः,—जङ्घः, ऊँट,—जिह्वः साँप, सर्प,—तपस् (पुं०) अहल्या के पति गौतम का विशेषण—रघु० ११।३४,—तपः,—दण्डः,—द्रुः ताड़ वृक्ष,—तुण्डी छछुन्दर,—दर्शिन् (वि०) विवेकी, समझदार, दूरदर्शी, दूर तक की बात सोचने वाला—पंच० ३।१६८ 2. मेधावी, बुद्धिमान्, (पुं०) 1. रीछ 2. उल्लू,—नाद (वि०) लगातार देर तक शोर मचाने वाला, (—दः) 1. कुत्ता 2. मुर्गा 3. शंख,—निद्रा 1. लम्बी नींद 2. चिरशयन, मृत्यु—रघु० १२।११,—पत्रः ताड़ का वृक्ष,—पादः बगुला,—पादपः 1. नारियल का पेड़ 2. सुपाड़ी का पेड़ 3. ताड़ का वृक्ष,—पृष्ठः साँप,—बाला एक प्रकार का हरिण, चमरी, (इसकी पूँछ से चौरी बनती है),—मारुतः हाथी,—रतः कुत्ता,—रवः सूअर,—रसनः साँप,—रोमन् (पुं०) भालू,—वक्त्रः हाथी,—सक्थ (वि०) लम्बी जंघाओं वाला,—सत्रम् चिरकाल तक चलने वाला सोमयज्ञ (त्रः) सोमयाजी—रघु० १।८०,—सूत्र,—सूत्रिन् (वि०) शनैः २ कार्य करने वाला, मन्थर, प्रत्येक कार्य को देर में करने वाला, टालने वाला, देर लगाने वाला—दीर्घसूत्री विनश्यति—पंच० ४।

दीर्घिका [दीर्घ+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. एक लम्बा सरोवर, जलाशय—मालवि० २।१३, रघु० १६।१३ 2. कूआँ या बावड़ी।

दीर्ण (वि०) [दृ+क्त] 1. चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ 2. डरा हुआ, भयभीत।

दु (स्वा० पर०—दुनोति, दूत, या दून) 1. जलाना, आग में भस्म करना—भट्टि० १४।८५ 2. सताना, कष्ट देना, दुःख देना—उद्भासीनि जलेजानि दुन्वन्त्यदयितं जनम्—भट्टि० ६।७४, ५।९८, १७।९९, (मुखं) तव विश्रान्तकथं दुनोति माम्—रघु० ८।५५ 3. पीड़ा देना, शोक पैदा करना—वर्णप्रकर्षे सति कर्णिकारं दुनोति निर्गन्धतया स्म चेतः—कु० ३।२८ 4. (अक०) कष्टग्रस्त होना, पीड़ित होना—देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि—गीत० ३,—कर्मवा० (या दिवा० आ०) कष्टग्रस्त होना, पीड़ित होना—नायातः सखि निर्दयो यदि शठस्त्वं दूति किं दूयसे—गीत० ७, कु० ५।१२, ४८, रघु० १।७०, १०।२१।

दुःख (वि०) [दुष्टानि खानि यस्मिन्, दुष्टं खनति—खन्+ड, दुःख्+अच् वा तारा०] पीड़ाकर, अरुचिकर, दुःखमय—सिंहानां निनदाः दुःखाः श्रोतुं दुःखमतो वनम्—रामा० 2. कठिन, बेचैन—खम् 1. खेद, रंज, विषाद, दुःख, पीड़ा, वेदना—सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते—मृच्छ० १।१०—यदेवोपनतं दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम्—विक्रम० ३।२१, इसी प्रकार 'दुःखसुख' 'समदुःखसुख' 2. कष्ट, कठिनाई—शृंगार० १२, ('बड़ी कठिनाई से' 'मुश्किल से' 'कष्ट से' अर्थ को प्रकट करने के लिए 'दुःखम्' तथा 'दुःखेन' शब्द क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं—श० ७।१३, भग० १२।५, रघु० १९।४९, हि० १।१५८)। सम०—अतीत (वि०) दुःखों से मुक्त,—अन्तः मोक्ष,—कर (वि०) पीड़ाकर, कष्टदायक,—ग्रामः 'दुःखों का दृश्य' सांसारिक अस्तित्व, संसार,—छिन्न (वि०) 1. सख्त, कठोर 2. पीड़ित, दुःखी,—प्राय,—बहुल (वि०) कष्ट और दुःखों से पूर्ण,—भाज् (वि०) दुःखी, अप्रसन्न,—लोकः सांसारिक जीवन, सतत यातना का दृश्य, संसार,—शील (वि०) जो दूसरों को प्रसन्न न कर सके, बुरे स्वभाव का, चिड़चिड़ा—रघु० ३।६।

दुःखित,—दुःखिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [दुःख+इतच्, इनि वा] दुःखी, कष्टग्रस्त, पीड़ित 2. बेचारा, विषण्ण, दयनीय।

दुकूलम् [दु+ऊलच्, कुक्] बुना हुआ रेशम, रेशमीवस्त्र, अत्यन्त महीन वस्त्र—श्यामलमृदुलकलेवरमण्डनमधि-

गतगोरदुकूलम्—गीत० ११, कु० ५।६७, ७८, भट्टि० ३।३४, १०।१, रघु० १७।२५।

दुग्ध (वि०) [दुह्+क्त] 1. दुहा हुआ 2. जिसका दूध दुह लिया गया है, चूस लिया गया है या निकाल लिया गया है—दे० 'दुह्',—**ग्धम्** 1. दूध, 2. पौधों का दूधिया रस। सम०—**अग्रम्**—**तालीयम्** दूध का फेन, मलाई,—**पाचनम्** वह वर्तन जिसमें दूध डाल कर औटाया जाय,—**पोष्य** (वि०) अपनी माँ के दूध पर रहने वाला बच्चा, दूध पीता (बच्चा) स्तनपायी,—**समुद्रः** दूध का सागर, सात समुद्रों में से एक।

दुघ (वि०) [दुह्+क] (प्रायः समास के अन्त में) 1. दूध देने वाला 2. सौंपने वाला, देने वाला, जैसा कि 'कामदुघा' में।

दुघा [दुघ+टाप्] दूध देने वाली गाय, दुधार गौ।

दुण्डुक (वि०) [दुंण्डुभ इव कायति दुंडुभ+कै+क, पृषो० भलोपः] बेईमान, दुष्ट हृदय वाला, जालसाज़।

दुण्डुभः=डुंडुभ।

दुद्रुमः [दुंर् दुष्टो द्रुम्मः—पृषो० रलोपः] हरा प्याज़।

दुन्दमः (पुं०) [दुन्द इत्यव्यक्तं भणति शब्दायते—दुन्द् +भण्+ड] एक प्रकार का ढोल, दे० दुंन्दुभि।

दुन्दुः (पु०) 1. एक प्रकार का ढोल 2. कृष्ण के पिता वसुदेव का नाम।

दुन्दुभः [दुन्दु+भण्+ड] 1. एक प्रकार का बड़ा ढोल, तासा 2. एक प्रकार का पनियल साँप।

दुन्दुभिः (पुं०, स्त्री०) [दुन्दु इत्यव्यक्तशब्देन भाति—भा +कि] एक प्रकार का बड़ा ढोल, नगाड़ा—विजय-दुन्दुभितां ययुर्णवाः—रघु० ९।११, (पुं०) 1. विष्णु की उपाधि 2. कृष्ण का विशेषण 3. एक प्रकार का विष 4. एक राक्षस जिसे वालि ने मारा था, (जब सुग्रीव ने इस राक्षस का अस्थिपंजर भगवान् राम को यह बतलाने के लिए कि वालि कितना बलवान् था, दिखलाया तो राम ने इसे मामूली सी ठोकर मारी और वह अस्थिपंजर मीलों दूर जाकर पड़ा)।

दुर् (अव्य०) [दु+रुक्] ('दुस्' के स्थान में प्रयुक्त किया जाने वाला उपसर्ग जो 'बुराई' 'कठिनाई' का अर्थ प्रकट करने के लिए स्वरादि तथा घोषवर्णादि से आरम्भ होने वाले शब्दों से पूर्व लगाया जाता है, दुस्-पूर्वक समासों के लिए दे० 'दुस्')। सम०—**अक्ष** (वि०) 1. दुर्बल आँख वाला 2. खोटी दृष्टि वाला (—**क्षः**) कपट का पासा,—**अतिक्रम** (वि०) 1. दुर्जय, दुस्तर, अजेय—स्वजातिर्दुरतिक्रमा—पंच० १ 2. दुर्लंघ्य 3. अनिवार्य,—**अत्यय** (वि०) 1. जो कठिनाई से जीता जा सके,—रघु० ११।८८ 2. दुर्लभ, अगाध—**अदृष्टम्** दुर्भाग्य, विपत्ति—**अधिग,**—**अधिगम** (वि०) 1. दुष्प्राप्य, जिसे प्राप्त करना कठिन हो, पंच० १।३३० 2. दुस्तर 3. दुर्ज्ञेय, जिसे अध्ययन करना बहुत कठिन हो—कि० ५।१८,—**अधिष्ठित** (वि०) बुरी तरह से संपन्न, प्रवद्ध या क्रियान्वित किया गया—**अध्यय** (वि०) 1. दुर्लभ 2. दुर्बोध,—**अध्यवसायः**, मूर्खतापूर्ण व्यवसाय,—**अध्वः** कुमार्ग,—**अन्त** (वि०) 1. जिसके किनारे पर पहुँचना कठिन हो, अनन्त, अन्तहीन—संकर्षणाय सूक्ष्माय दुरन्तायान्तकाय च—भाग० 2. परिणाम में दुःखदायी, विषण्ण—अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता—कि० १।२३, नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते (वसन्ते)—गीत० १,—**अन्वय** (वि०) 1. दुर्गम 2. जिसका पालन करना, या अनुसरण करना कठिन हो 3. दुष्प्राप्य, दुर्बोध (**यः**) अशुद्ध निष्कर्ष, दिये हुए तथ्यों का गलत अनुमान,—**अभिमानिन्** (वि०) मिथ्या अहंकार करने वाला, झूठा घमंडी,—**अवगम** (वि०) दुर्बोध,—**अवग्रह** (वि०) जिसे रोकना या काबू में रखना कठिन हो, जिसका नियंत्रण कष्ट-साध्य हो,—**अवस्थ** (वि०) दुर्दशाग्रस्त, बुरी दशा म पड़ा हुआ,—**अवस्था** दुर्दशा, दयनीय स्थिति,—**आकृति** (वि०) कुरूप, बदसूरत,—**आक्रम** (वि०) 1. अजेय, जो जीता न जा सके 2. दुर्गम,—**आक्रमणम्** 1. अनुचित हमला 2. कठिन पहुँच,—**आगमः** अनुपयुक्त या अवैध अधिग्रहण,—**आग्रहः** मूर्खतापूर्ण हठ, जिद, अनुचित आग्रह,—**आचर** (वि०) कष्टसाध्य,—**आचार** (वि०) 1. बुरे चालचलन का, कदाचारी 2. कुत्सित आचरण वाला, दुर्वृत्त, दुश्चरित्र—भग० ९।३०,(**रः**) दूषित आचरण, कदाचार, दुश्चरित्रता,—**आत्मन्** (पुं०) दुर्जन, लुच्चा, लफंगा,—**आधर्ष** (वि०) 1. जिस पर आक्रमण करना कठिन है 2. जिसका लेशमात्र भी पराभव न हो सके 3. उद्धत,—**आनम** (वि०) जिसे झुकाना बहुत कठिन हो,—रघु० ११।३८,—**आप** (वि०) दुर्लभ—श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्—श० ३।१४, रघु० १।७२ ६।६२,—**आराध्य** (वि०) जिसे प्रसन्न करना बहुत कठिन हो, जिसको जीत लेना कष्टसाध्य हो,—**आरोह** (वि०) जिस पर चढ़ना कठिन हो, (—**हः**) 1. नारियल का पेड़ 2. ताड़ का पेड़ 3. छुहारे का पेड़—**आलापः** 1. दुर्वचन, गाली 2. बुरी बातचीत, अपशब्दयुक्त भाषा—**आलोक** (वि०) 1. जो कठिनाई से देखा जा सके 2. जिसकी ओर देखने आँखें झंप जायं, चकाचौंध करने वाला प्रकाश—दुरालोकः स समरे निदाघाम्बररत्नवत्—काव्य० १०, (—**कः**) चकाचौंध पैदा करने वाली चमक,—**आवार** (वि०) 1. जिसे ढकना कठिन हो 2. जिसे रोकना, बन्द करना, या ठहराना कठिन हो,—**आशय** (वि०) दुर्मनस्क, कुत्सित विचारों वाला व्यक्ति, जिसकी नीयत खराब हो, नीच हृदय का,

—आशा 1. बुरी इच्छा 2. ऐसी आशा करना जो पूरी न हो सके,—आसद (वि०) 1. जिसके पास पहुँचना कठिन हो, दुर्गम, दुर्धर्ष, दुर्जय रघु० ३।६६, ८।४, महावी० २।५, ४।१५ 2. दुर्लभ, दुष्प्राप्य 3. अद्वितीय, अनुपम, -इत (वि०) 1. कठिन 2. पापी (तम्) 1. कुमार्ग, बुराई, पाप—दरिद्राणां दैन्यं दुरितमथ दुर्वासनहृदां द्रुतं दूरीकुर्वन्—गंगा० २, रघु० ८।२, अमरु २, महावी० ३।४३ 2. कठिनाई, भय 3. संकट,—इष्टम् दुर्वचन, गाली 2. दूसरे व्यक्ति को क्षति पहुँचाने के लिए किया जाने वाला जादूटोना या यज्ञानुष्ठान,—ईशः बुरा स्वामी, किंप्रभु,—ईषणा,—एषणा अभिशाप, दुर्वचन,—उक्तम्,—उक्तिः दुर्वचन, झिड़की, गाली, बुरा-भला कहना,—उत्तर (वि०) जिसका उत्तर न दिया जा सके,—उदाहर (वि०) जिसका उच्चारण किया जाना कठिन हो—मनुज्झितार्थसम्बन्धः प्रबन्धो दुरुदाहरः—शि० २।७३,—उद्वह (वि०) बोझिल, असह्य, —ऊह (वि०) बहुत माथा पच्ची करने पर भी जल्द समझ में न आने वाला, कठिन,—ग (वि०) 1. जहाँ पहुँचना कठिन हो, अगम्य, दुर्गम 2. अप्राप्य 3. दुर्बोध (—गः,—गम्) कठिन या तंग रास्ता, (जंगल में से, नदी या पहाड़ में से) संकीर्ण घाटी, भीड़ा दर्रा 2. गढ़, किला, कोट 3. ऊबड़-खाबड़ जमीन 4. कठिनाई, विपत्ति, संकट, दुःख, भय—निस्तारयति दुर्गाच्च—मनु० ३।९८, ११।४३, भग० १८।५८, °अध्यक्षः, °पतिः, °पालः किले का समादेष्टा या प्रशासक, °कर्मन् (नपुं०) किलाबन्दी, °मार्गः घाटी का मार्ग, गहरी घाटी °लंघनम् कठिनाइयों को पार करना (—नः) ऊँट, °संचरः 1. (घाटी के ऊपर से, पुल पर से, या किले का) कठिन मार्ग,—गा शिव की पत्नी पार्वती की उपाधि,—गत (वि०) 1. दुर्भाग्यग्रस्त, दुर्दशाग्रस्त —भट्टि० १८।१० 2. दरिद्र, गरीब 3. दुःखी, कष्टग्रस्त,—गतिः (स्त्री०) 1. दुर्भाग्य, गरीबी, कमी, कष्ट, दरिद्रता—भग० ६।४० 2. कठिन स्थिति या मार्ग 3. नरक,—गन्ध (वि०) बुरी गन्ध वाला (—धः) 1. बुरी गन्ध, सड़ांद 2. दुर्गंधयुक्त पदार्थ 3. प्याज 4. आम का वृक्ष,—गन्धि,—गन्धिन् (वि०) जिसमें से बुरी गन्ध आवे—गम (वि०) 1. जिसमें से जाया न जा सके, जहाँ पहुँचना कठिन हो, अप्रवेश्य—कामिनीकायकांतारे कुचपर्वतदुर्गमे—भर्तृ० १।८६, शि० १२।४९ 2. अप्राप्य, दुष्प्राप्य 3. दुर्बोध,—गाढ,—गाध,—गाह्य जिसका अवगाहन करना या अनुसंधान करना कठिन हो, अनवगाह्य,—ग्रह (वि०) 1. कष्टसाध्य 2. जिसको जीतना या वश में करना कठिन हो—रघु० १७।५२ 3. दुर्बोध (—हः) मरोड़, ऐंठन,—घट (वि०) 1. कठिन 2. असम्भव,—घोषः 1. कर्कश-ध्वनि 2. रीछ,—जन (वि०) 1. दुष्ट, बुरा, खल 2. बदनाम, द्वेषपूर्ण उपद्रवी, (—नः) बुरा या दुष्ट आदमी, द्वेष रखने वाला या उपद्रव करने वाला व्यक्ति, दुर्वृत्त—दुर्जनः प्रियवादी च नैतद्विश्वासकारणम्—चाण० २४, २५, शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः,—कु० २।४०,—जय (वि०) अजेय, जिसको जीता न जा सके,—जर (वि०) 1. चिरयुवा 2. (भोजनादि) जो कठिनाई से पचे, अपचनशील 3. जिसका उपभोग करना कठिन हो,—जात (वि०) 1. दुःखी, अभागा 2. बुरे स्वभाव का बुरा, दुष्ट 3. मिथ्या, अवास्तविक, (—तम्) दुर्भाग्य, संकट, कठिनाई, रघु० १३।७२,—जातिः (वि०) 1. बुरे स्वभाव का, दुर्जन, दुष्ट—अमरु ९६ 2. जाति से बहिष्कृत (स्त्री०—तिः) 1. दुर्भाग्य, दुर्दशा,—ज्ञान, —ज्ञेय (वि०) जो कठिनाई से जाना जा सके, दुर्बोध, —णयः,—नयः 1. दुराचरण 2. अनौचित्य 3. अन्याय —णामन्,—नामन् (वि०) बदनाम,—दम,—दमन, —दम्य (वि०) जिसे दबाना या वश में करना कठिन हो, जो सीधा न किया जा सके, प्रबल,—दर्श (वि०) 1. जो कठिनाई से दिखाई दे 2. चकाचौंध करने वाला—भग० ११।५२,—दान्त (वि०) 1. जिसको वश में करना कठिन हो, जो पालतू न हो सके, जो सीधा न किया जा सके—शि० १२।२२ 2. उच्छृंखल, घमण्डी,—धृष्ट, दुर्दान्तानां दमनविधयः क्षत्रियेष्वायतंते —महावी० ३।३४, (—तः) 1. बछड़ा 2. झगड़ा, कलह,—दिनम् 1. बुरा दिन 2. मेघाच्छन्न दिन, आँधी, तूफ़ान का मौसम, वृष्टिकाल,—उन्नमत्यकालदुर्दिनम् —मृच्छ० ५—कु० ६।४३, महावी० ४।५७ 3. बौछार —रघु० ४।४१, ८२, ५।४७, उत्तर० ५।५ 4. घोर अन्धकार,—दृष्ट (वि०) जिस पर ग़लत तरीके से विचार किया गया हो, जिसका फ़ैसला ठीक न हुआ हो,—दैवम् बुरी किस्मत, दुर्भाग्य,—द्यूतम् बेईमानी का खेल,—द्रुमः प्याज,—धर (वि०) 1. जिसका मुक़ाबला न किया जा सके, जो रोका न जा सके 2. दुस्सह, —दुर्धरेण मदनेन साद्यते—घट० ११, मनु० ७।२८, (—रः) पारा—धर्ष (वि०) 1. अनुल्लङ्घनीय, अनतिक्रम्य 2. अगम्य—हि० प्र० ५ 3. भयंकर, डरावना 4. उद्धत,—धी (वि०) मूर्ख बेवकूफ़,—नामनः बवासीर,—निग्रह (वि०) जिसको दबाया न जा सके, जिस पर शासन न किया जा सके, जिसका प्रतिरोध न किया जा सके, उच्छृंखल—मनो दुर्निग्रहं चलम् —भग० ६।३५,—निमित (वि०) असावधानी से ज़मीन पर रक्खा हुआ—पदे दुर्निमिते गलन्ती—रघु० ७।१०,—निमित्तम् 1. अपशकुन,—रघु० १४।५० 2. बुरा बहाना,—निवार,—निवार्य (वि०) जिसको

हटाना या दूर करना कठिन हो, जिसका मुकाबला करना कठिन हो, अजेय,—नीतम् कदाचरण, दुर्नीति, दुर्व्यवहार,—नीतिः (स्त्री०) बुरा प्रशासन—भामि० ४।३६,—बल (वि०) 1. कमजोर, बलहीन 2. क्षीणकाय, शक्तिहीन—उत्तर० १।२४ 3. स्वल्प, थोड़ा, कम—रघु० ५।१२,—बाल (वि०) गंजे सिर वाला, —बुद्धि (वि०) 1. बेवकूफ़, मूर्ख, बुद्धू 2. कुमार्गी, दुष्ट मन का, दुष्ट—भग० १।२३,—बोध (वि०) जो शीघ्र समझ में न आये, जिसकी तह तक न पहुँचा जाय, दुर्ग्राह्य—निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः—कि० १।६,—भग (वि०) भाग्यहीन अभागा,—भगा 1. वह पत्नी जिसे उसका पति न चाहता हो 2. बुरे स्वभाव की स्त्री, कलहप्रिय स्त्री,—भर (वि०) जिसे निभाना कठिन हो, बोझा, भार,—भाग्य (वि०) भाग्यहीन, अभागा (—ग्यम्) बुरी क़िस्मत,—भक्षम् 1. खाद्य सामग्री की कमी, अभाव, अकाल—यज्ञ० २।१४७, मनु० ८।२२, हि० १।७३ 2. कमी,—भृत्यः बुरा सेवक,—भ्रातृ (पुं०) बुरा भाई,—मति (वि०) 1. मूर्ख, दुर्बुद्धि, बेवकूफ़, अज्ञानी, 2. दुष्ट, खोटे हृदय का—मनु० ११।३०, —मद (वि०) शराबखोर, खूंखार या हिंस्र, मदोन्मत्त, दीवाना,—मनस् (वि०) खिन्नमनस्क, हतोत्साह, दुःखी उदास,—मनुष्यः दुर्जन, दुष्ट पुरुष,—मन्त्रः,—मन्त्रितम् बुरी नसीहत, बुरा परामर्श,—मरणम् बुरी मौत, अप्राकृतिक मृत्यु,—मर्याद (वि०) निर्लज्ज, अशिष्ट, —मल्लिका,—मल्ली एक प्रकार का उपरूपक, सुखान्त प्रहसन—सा० द० ५५३,—मित्रः 1. बुरा दोस्त 2. शत्रु,—मुख (वि०) बुरे चेहरे वाला, विकराल, बदसूरत—भर्तृ० १।९० 2. कटुभाषी, अश्लीलभाषी बदज़बान—भर्तृ० २।६९,—मूल्य (वि०) बहुत अधिक मूल्य का महँगा,—मेधस् (वि०) मूर्ख, बेवकूफ़, मन्दबुद्धि, बुद्धू (पुं०) मूढमति, मन्दबुद्धि मनुष्य, बुद्धू —ग्रन्थानधीत्य व्याकर्तुमिति दुर्मेधसोऽप्यलम्—शि० २।२६,—योध—योधन (वि०) अजेय, जो जीता न जा सके, (—नः) धृतराष्ट्र और गान्धारी का ज्येष्ठ पुत्र (दुर्योधन बचपन से ही अपने चचेरे भाई, पाण्डवों से घृणा करता था, विशेष कर भीम से। इसलिए पाण्डवों का विनाश करने के लिए उसने यथाशक्ति प्रयत्न किये। जब उसके पिता धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को युवराज बनाने का प्रस्ताव रक्खा, तो दुर्योधन को अच्छा न लगा, क्योंकि धृतराष्ट्र ही उस समय राजा थे, इसलिए दुर्योधन ने अपने अन्धे पिता को इस बात पर राज़ी कर लिया कि पाण्डवों का निर्वासन कर दिया जाय। वारणावत उनका भावी निवासस्थल चुना गया—और उनके रहने के लिए एक विशाल महल बनवाने के बहाने दुर्योधन ने लाख, बेर्जा आदि दहनशील सामग्री से एक भवन इस आशा से बनवाया कि पाण्डव सब उसमें जल कर मर जायँगे। परन्तु पाण्डवों को दुर्योधन की इस चाल का पता लग गया था, अतः वह सुरक्षित उस भवन से निकल भागे। फिर पाण्डव इन्द्रप्रस्थ में रहने लगे—यहाँ रहते हुए उन्होंने बड़े ठाट बाट के साथ एक राजसूय यज्ञ का आयोजन किया। इस घटना ने दुर्योधन की ईर्ष्या और क्रोधाग्नि को और भी अधिक भड़का दिया—क्योंकि दुर्योधन का पाण्डवों को वारणावत में जला कर मारने का षड्यन्त्र पहले ही निष्फल हो चुका था। फलतः दुर्योधन ने अपने पिता को उकसाया कि पांडवों को हस्तिनापुर में आकर जूआ खेलने के लिए निमन्त्रण दिया जाय क्योंकि युधिष्ठिर विशेष रूप से जूए का शौक़ीन था। इस जूए के खेल में दुर्योधन को अपने मामा शकुनि की सहायता प्राप्त थी। युधिष्ठिर ने जो कुछ भी दाँव पर लगाया—वही हार गया, यहाँ तक कि इस हार से अन्धे होकर उसने अपने आप को, अपने भाइयों को और अन्त में द्रौपदी को भी दाँव पर लगा दिया। और इस प्रकार जूए में सब कुछ हार जाने पर, शर्त के अनुसार युधिष्ठिर को १२ वर्ष का बनवास तथा एक वर्ष का अज्ञातवास बिताने के लिए अपनी पत्नी तथा भाइयों सहित जंगल की ओर जाना पड़ा। परन्तु यह दीर्घकाल भी समाप्त हो गया। बनवास से आकर पाण्डव और कौरवों ने 'भारती' नाम के महायुद्ध की तैयारी की। यह युद्ध १८ दिन रहा और सारे कौरव अपने अधिकांश बन्धुबान्धवों सहित इसी युद्ध में मारे गये। युद्ध के अन्तिम दिन भीम का दुर्योधन से द्वन्द्व युद्ध हुआ और भीम ने अपनी गदा से दुर्योधन की जंघा तोड़ कर उसे मौत के घाट पहुँचाया),—योनि (वि०) नीच जाति में उत्पन्न, अधम कुल का,—लक्ष्य (वि०) जो कठिनाई से देखा जा सके, जो दिखाई न दे,—लभ (वि०) 1. जिसका प्राप्त करना कठिन हो, दुष्प्राप्य, दुस्साध्य—रघु० १।६७, १७।७०, कु० ४।४०, ५।४६,६१ 2. जिसका ढूंढना कठिन हो, जिसका मिलना दुष्कर हो, विरल —शुद्धान्तदुर्लभम्—श० १।१६ 3. सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, प्रमुख 4. प्रिय, प्यारा 5. मूल्यवान्—ललित (वि०) लाड प्यार से बिगड़ा हुआ, अत्यधिक लाड प्यार में पला हुआ, जिसे प्रसन्न करना कठिन है,—हा मवङ्कदुर्ललित—वेणी०—४, विक्रम० २।८, मा० ९ 2. (अतः) स्वेच्छाचारी, नटखट, अशिष्ट, उच्छृंखल —स्पृहयामि खलु दुर्ललितायास्मै—श० ७, (—तम्) स्वेच्छाचारिता, अक्खड़पन,—लेख्यम् जाली दस्तावेज, —वच (वि०) 1. जिसका वर्णन करना कठिन हो,

अवर्णनीय 2. वह बात जिसका बतलाना उचित न हो 3. अनुचित बोलने वाला, गाली देने वाला, (—चम्) गाली, फटकार, दुर्वचन,—**वचस्**(नपुं०) गाली, झिड़क, —**वर्ण** (वि०) बुरे रंग का, (—र्णम्) चाँदी,—**वसतिः** (स्त्री०) पीड़ाजनक निवासस्थान—रघु० ८।९४,—**वह** (वि०) भारी, जिसे ढोना कठिन हो—उत्तर० २।१०, कु० १।१०,—**वाच्य** (वि०) 1. जिसका कहना या उच्चारण करना कठिन हो 2. कुभाषी, बदज़बान 3. कठोर, क्रूर, (**च्यम्**) 1. झिड़की, दुर्वचन 2. बदनामी, लोकापवाद,—**वादः** अपवाद, अपयश, कुख्याति, —**वार,—वारण** (वि०) जिसका मुक़ाबला न किया जा सके, असह्य—रघु० १४।८७, कु०२।२१,—**वासना** 1. ओछी कामना, बुरी इच्छा—भामि० १।८६ 2. कपोलकल्पना,—**वासस्** (वि०) 1. बुरा वस्त्र धारण किये हुए 2. नंगा (पुं०) 3. एक बड़ा क्रोधी ऋषि, अत्रि और अनसूया का पुत्र इसे प्रसन्न करना अत्यन्त कठिन था, बहुत से स्त्री पुरुषों को उसने अपमान तथा मुसीबत सहन करने के लिए शाप दिया। जमदग्नि के क्रोध की भाँति, इसका क्रोध भी प्रायः एक लोकोक्ति बन गया,—**विगाह—विगाह्य** (वि०) जिसमें प्रवेश करना कठिन, हो, जिसका अवगाहन मुश्किल हो, अगाध,—**विचिन्त्य** (वि०) अचिन्तनीय, अतर्क्य,—**विदग्ध** अकुशल, नौसिखुवा, बेवक़ूफ़, मन्दबुद्धि, मूर्ख 2. बिल्कुल अनाड़ी 3. थोड़े से ज्ञान से ही फूला हुआ, गर्वित, झूठा घमण्ड करने वाला—वृथाशास्त्रग्रहणदुर्विदग्ध—वेणी० ३, ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रंजयति—भर्तृ० २।३,—**विध** (वि०) 1. कमीना, अधम, नीच 2. दुष्ट, दुश्चरित्र 3. गरीब, दरिद्र —विधाते रुचिगर्वदुर्विधे—नै० २।३३ 4. मन्दबुद्धि, मूर्ख, बेवक़ूफ़,—**विनयः** औद्धत्य, उद्दण्डता,—**विनीत** (वि०) 1. (क) बुरी तरह से शिक्षित, अशिष्ट, असभ्य, दुष्ट—शासितरि दुर्विनीतानाम्—श० १।२५, (ख) अक्खड़, नटखट, उपद्रवी 2. हठीला, दुराग्रही —**विपाकः** 1. दुष्परिणाम, बुरा नतीजा—उत्तर० १।४०, महावी० ६।७ 2. पूर्व जन्म के या इस जन्म के किये हुए कर्मों का बुरा परिणाम,—**विलसितम्** स्वेच्छाचार, अक्खड़पन, नटखटपना,—**वृत्त** (वि०) 1. दुश्चरित्र, दुष्ट, असभ्य 2. बदमास, (**त्तम्**) दुराचरण, अशिष्ट व्यवहार,—**वृष्टिः** (स्त्री०) थोड़ी बारिश, अनावृष्टि,—**व्यवहारः** गलत निर्णय (विधि में) —**व्रत** (वि०) नियमों का पालन न करने वाला, जो आज्ञाकारी न हो,—**हुतम्** वह यज्ञ जो बुरी रीति से किया गया है,—**हृद्** (वि०) दुष्ट हृदय का, तुच्छ विचारों वाला, शत्रु (पुं०) वैरी,—**हृदय** (वि०) दुरात्मा, दिल का खोटा, दुष्ट।

दुरोदरः [दुष्टमासमन्तात् उदरं यस्य ब० स०] 1. जूआरी, द्यूतकार 2. पासा, जूआ 3. बाज़ी, दाँव,—रम् जूआ खेलना, पासे से खेलना—दुरोदरच्छद्मजितां समीहते नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः—कि० १।७, रघु० ९।७।

दुल् (चुरा० उभ०—दोलयति—ते, दोलित) झूलना इधर-उधर हिलना-जुलना, इधर उधर घुमाना, झुलाना —कटिं चेद्दोलयेदाशु—रति०, दोलयन् द्वाविवाक्षौ—भर्तृ० ३।३९ 2. हिलाकर ऊपर को करना, ऊपर फेंकना —दोलयति धूलिं वायुः—शब्द०।

दुलिः (स्त्री०) [दुल्+कि] छोटा कछुवा, या कछुवी।

दुष् (दिवा० पर०—दुष्यति, दुष्ट) 1. बुरा या भ्रष्ट हो जाना, दूषित होना, घाटा उठाना 2. मलिन होना, असती होना (स्त्री का), कलंकित होना, अपवित्र होना, विगड़ना, पंच० १।६६, मनु० ७।२४, ९।३१८, १०।१०२ 3. पाप करना, गलती करना, गलती होना, 4. असती होना, अभक्त या श्रद्धाहीन होना—प्रेर० —दूषयति (परन्तु—दूषयति—दोषयति यदि अर्थ है 'दूषित करना, भ्रष्ट करना) 1. भ्रष्ट करना, बिगाड़ना, नष्ट कराना, क्षतिग्रस्त करना, विनष्ट करना, दूषित करना, धब्बा लगाना, कलंकित करना, विषाक्त करना, अपवित्र करना—(शा० तथा आलं० से)—न भीतो मरणादस्मि केवलं दूषितं यशः—मृच्छ० १०।२७, पुरा दूषयति स्थलीम्—रघु० १२।३०, ८।६८, १०।४७, १२।४, मनु० ५।१, १०४, ७।१९५, याज्ञ० १।१८९, अमरु ७०—न त्वेनं दूषयिष्यामि शस्त्रग्रहमहाव्रतम्—महावी० ३।२८,—दूषित नहीं करूँगा, उल्लंघन नहीं करूँगा, तोड़ूंगा नहीं आदि 2. चरित्र भ्रष्ट करना, उत्साह भंग करना 3. उल्लंघन करना, अवज्ञा करना—मनु० ८।३६४, ३६८ 4. निराकरण करना, हटा देना, रद्द कर देना 5. दोष लगाना, निन्दा करना, दोष निकालना, किसी के विषय में बुरा कहना दोषारोपण करना—दूषितः सर्वलोकेषु निषादत्वं गमिष्यति—रामा०, याज्ञ० १।६६ 6. मिलावट करना 7. मिथ्या या बनावटी करना 8. निराकरण करना, खण्डन करना, **प्र**—, 1. भ्रष्ट होना, बिगड़ना, विषाक्त होना—याज्ञ० ३।१९ 2. पाप करना, गलती करना, श्रद्धाहीन या असती (अभक्त) होना—भग० १।४०, मनु० ९।७४,(प्रेर०)1. बिगाड़ना, भ्रष्ट करना, गदला करना, धब्बे लगाना 2. दोष लगाना, निन्दा करना, दोष निकालना **सम्**—दूषित या कलंकित होना —(प्रेर०) 1. दूषित करना भ्रष्ट करना, गदला करना, धब्बे लगाना 2. उल्लंघन करना 3. दोषारोपण करना, निन्दा करना, दोष निकालना।

दुष्ट (भू० क० कृ०) [दुष्+क्त] 1. विगड़ा हुआ, खराब हुआ, क्षतिग्रस्त, बर्बाद 2. दूषित, धब्बे लगा हुआ,

उल्लंघन किया हुआ, कलुषित 3. मलिन, भ्रष्ट 4. पापासक्त, बदमाश—दुष्टवृषः 5. दोषी, अपराधी 6. नीच, अधम 7. दोषयुक्त, सदोष—जैसा कि तर्क० में हेतु 8. पीड़ाकर, निकम्मा। सम०—आत्मन्, —आशय (वि०) खोटे मन वाला, दुष्ट हृदय वाला, —गजः बदमाश हाथी,—चेतस्,—धी,—बुद्धि (वि०) खोटे मन का, दुर्भावनापूर्ण, दुःशील,—वृषः मज़बूत परन्तु अड़ियल बैल, (जो गाड़ी न खींचे) बदमाश बैल।

दुष्टिः (स्त्री०) [दुष्+क्तिन्] भ्रष्टाचार, खोट।

दुष्टु (अव्य०) [दुर्+स्था+कि] 1. खराब, बुरा 2. अनुचित रूप से, अशुद्ध रूप से, गलती से।

दुष्यन्तः (पुं०) चन्द्रवंश में उत्पन्न एक राजा, पुरु की सन्तान, शकुन्तला का पति, भरत का पिता (जंगल में शिकार खेलता हुआ, एक बार दुष्यन्त, हरिण का पीछा करता हुआ कण्व के आश्रम की ओर निकल गया। वहाँ कण्व की गोद ली हुई पुत्री शकुन्तला ने उसका स्वागत-सत्कार किया। शकुन्तला के अलौकिक सौन्दर्य से राजा दुष्यन्त उस पर मोहित हो गया—उसने उसको अपनी रानी बनाने के लिए राज़ी कर लिया और फलतः गान्धर्व विवाह कर लिया। कुछ समय शकुन्तला के साथ बिता कर राजा अपनी राजधानी को लौटा। कुछ महीनों के पश्चात् शकुन्तला ने एक पुत्र को जन्म दिया। कण्व ने यह उचित समझा कि शकुन्तला को उसके पति के घर भेज दिया जाय। जब शकुन्तला दुष्यन्त के पास गई और उसके सामने खड़ी हुई तो दुष्यन्त ने—लोकनिन्दा के डर से—कहा कि विवाह करने की बात तो दूर रही मैंने तो तुम्हें कभी देखा तक नहीं, परन्तु उसी समय उसे स्वर्गीय वाणी ने बतलाया कि शकुन्तला उसकी वैध पत्नी है। फलतः उसने शकुन्तला को पुत्र समेत स्वीकार कर उसे अपनी पटरानी बनाया। वह राजा रानी वृद्धावस्था तक सुखपूर्वक रहे, और फिर अपने पुत्र भरत को राज्य देकर जंगल की ओर चल दिये। दुष्यन्त और शकुन्तला का उपर्युक्त वर्णन महाभारत में दिया हुआ है, कालिदास द्वारा वर्णित कहानी कई महत्त्वपूर्ण बातों में इससे भिन्न है—दे० 'शकुन्तला')।

दुस् [दु+सुक्] 'बुरा, खराब, दुष्ट, घटिया, कठिन या मुश्किल आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए संज्ञा शब्दों से पूर्व (कभी २ धातुओं के पूर्व भी) लगाया जाने वाला उपसर्ग। (विशे० स्वर और व्यंजनों से पूर्व दुस् का स् बदल कर र् हो जाता है, ऊष्म वर्णों के पूर्व विसर्ग, च् और छ् से पूर्व श् तथा क् और प् से पूर्व ष् हो जाता है)। सम०—कर (वि०) 1. दुष्ट, बुरी तरह से करने वाला 2. करने में कठिन, कठोर या मुश्किल—वक्तुं सुकरं कर्तुं दुष्करम्—करने की अपेक्षा कहना आसान है,—अमरु ४१, मृच्छ० ३।१, मनु० ७।५५, (—रम्) 1. कठिन या पीड़ाकर कार्य, कठिनाई 2. पर्यावरण, अन्तरिक्ष,—कर्मन् (पुं०) कोई भी बुरा काम, पाप, जुर्म,—कालः 1. बुरा समय —मुद्रा० ७।५ 2. प्रलयकाल 3. शिव का विशेषण, —कुलम् बुरा या नीच घराना—(आददीत) स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि—मनु० २।२३८,—कुलीन (वि०) नीच जाति में उत्पन्न,—कृत् (पुं०) दुष्टपुरुष,—कृतम्,—कृतिः (स्त्री०) पाप, दुष्कृत्य—उभे सुकृतदुष्कृते—भग० २। ५०,—क्रम (वि०) क्रमहीन, अस्तव्यस्त, अव्यवस्थित, —चर (वि०) 1. जिसका पूरा करना कठिन हो, मुश्किल —रघु० ८।७९, कु० ७।६५ 2. अगम्य, दुर्गम 3. बुरा करने वाला, दुर्व्यवहार करने वाला, (—रः) 1. रीछ 2. द्विकोपीय शंख या सीपी, °चारिन् (वि०) कठोर तपस्या करने वाला,—चरित (वि०) दुष्ट, दुराचरण करने वाला, परित्यक्त (तम्) दुराचरण, बुरा चालचलन,—चिकित्स्य (वि०) जिसका इलाज करना कठिन हो, असाध्य,—च्यवनः इन्द्र का विशेषण,—च्यावः शिव का विशेषण,—तर (वि०) (दुष्टर या दुस्तर) 1. जिसका पार करना कठिन हो—रघु० १।२, मनु० ४।२४२, पंच० १।१११ 2. जिसका दमन करना कठिन हो, अपराजेय, अजेय,—तर्कः मिथ्या तर्कना० —पच (दुष्पच) (वि०) जिसका हज़म होना कठिन हो,—पतनम् 1. बुरी तरह से गिरना 2. दुर्वचन, अपशब्द,—परिग्रह (वि०) जिसका पकड़ना, ग्रहण करना या लेना कठिन हो, (—हः) बुरी पत्नी,—पूर (वि०) जिसका पूरा करना, या जिसको सन्तुष्ट करना कठिन हो,—प्रकाश (वि०) अप्रसिद्ध, अन्धकारमय, धूमिल, —प्रकृति (वि०) बुरे स्वभाव का, नीच प्रकृति का, —प्रजस् (वि०) बुरी सन्तान वाला,—प्रज्ञ (दुष्प्रज्ञ) (वि०) कमज़ोर मन का, दुर्बुद्धि,—प्रधर्ष,—प्रधृष्य (वि०) जिस पर प्रहार न किया जा सके, दे० 'दुर्धर्ष' —रघु० २।२७,—प्रवादः बदनामी, कलंक, अपकीर्ति, —प्रवृत्तिः (स्त्री०) बुरा समाचार, कुख्याति—रघु० १२।५१,—प्रसह (दुष्प्रसह) (वि०) 1. जिसका प्रतिरोध न किया जा सके, भयानक 2. असह्य—मालवि० ५।१०,—प्राप,—प्रापण (वि०) अप्राप्य, दुष्प्राप्य —रघु० १।४८, भग० ६।३६,—शकुनम् बुरा सगुन, अपशकुन,—शला धृतराष्ट्र की इकलौती पुत्री जो जयद्रथ को ब्याही गई थी,—शासन (वि०) जिसका प्रबन्ध करना या शासन करना कठिन हो, अविनेय, (नः) धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक (यह बहादुर योद्धा था, परन्तु दुष्ट और दुर्दान्त। जब युधिष्ठिर द्रौपदी को दाँव पर लगा कर हार गया तो दुःशासन

उसकी चोटी पकड़ कर उसे भरी सभा में खींच लाया, वहाँ उसने उसे विवस्त्र करना चाहा, परन्तु दीन दुःखियों के सहायक श्रीकृष्ण ने उसका चीर बढ़ा कर उसकी लज्जा की रक्षा की। दुःशासन के इस जघन्य कृत्य से भीम इतना उत्तेजित हो गया कि उसने भरी सभा में प्रतिज्ञा की 'कि मैं तब तक सुख की नींद न सोऊँगा जब तक इस दुष्ट दुःशासन का खून न पी लूं। महाभारत युद्ध के १६ वें दिन भीम का दुःशासन से सामना हुआ। भीम ने एक ही पछाड़ में दुःशासन का काम तमाम कर दिया—और उसका खून पीकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की),—शील (दुश्शील) (वि०) गुण्डा, दुराचारी, बदमाश,—सम (दुःसम या दुस्सम) (वि०) 1. असम, असमान, असदृश 2. प्रतिकूल, दुर्भाग्यपूर्ण 3. अनिष्टकर, अनुचित, बुरा,—समम् (अव्य०) बुरी तरह से, दुष्टतापूर्वक,—सत्वम् दुष्ट प्राणी,—सन्धान,—सन्धेय (वि०) जिनका मिलना या जिनमें सुलह कराना कठिन हो,—सह (दुस्सह) (वि०) असह्य, अप्रतिरोध्य, असमर्थनीय,—साक्षिन् (पुं०) झूठा गवाह,—साध,—साध्य (वि०) 1. जिसका पूरा होना कठिन हो 2. जिसका इलाज करना कठिन हो 3. जिसपर विजय न प्राप्त की जा सके,—स्थ,—स्थित (वि०) ['दुस्थ' या 'दुस्थित' भी लिखा जाता है] 1. दुर्दशाग्रस्त, ग़रीब, दयनीय 2. पीड़ित, विषण्ण, दुःखी 3. अस्वस्थ, रुग्ण 4. अस्थिर, अशान्त 5. मूर्ख, बुद्धिहीन, अज्ञानी, (अव्य०—स्थम्) बुरी तरह से, अधूरे ढंग से, अपूर्ण रूप से,—स्थितिः (स्त्री०) 1. दुर्दशा, विषण्णता, दयनीयता 2. अस्थिरता,—स्पृष्टम् (दुस्पृष्टम्) 1. ईषत्स्पर्श या सम्पर्क 2. जिह्वा का ईषत् स्पर्श या प्रयत्न जिससे य्, र्, ल् तथा व् की ध्वनि निकलती है,—स्मर (वि०) जिसका याद रखना कठिन या पीड़ा कर हो—उत्तर० ६।३४,—स्वप्नः बुरा स्वप्न।

दुह् (अदा० उभ०—दोग्धि, दुग्धे, दुग्ध) दोहना, निचोड़ना, उद्धृत करना (द्विक० के साथ)—भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम्—कु० १।२, यः पयो दोग्धि पाषाणं स रामाद्भूतिमाप्नुयात्—भट्टि० ८।८२, पयो घटोध्नीरपि गां दुहन्ति—१२।७३, रघु० ५।३३ 2. किसी वस्तु में से कोई दूसरी चीज निकालना,—(द्विक० के साथ)—प्राणान्दुहन्निवात्मानं शोकं चित्तमवारुधत्—भट्टि० ८।९ 3. छान कर निकाल लेना, लाभ उठाना—दुदोह गां स यज्ञाय शस्याय मघवा दिवम्—रघु० १।२६ 4. (अपेक्षित पदार्थ) प्रदान करना—कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीम्—उत्तर० ५।३१ 5. उपभोग करना—प्रेर० दोहयति—दुहाना, इच्छा०—दुधुक्षति, दुहने की इच्छा करना—राजन्। दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनाम्—भर्तृ० २।५६।

दुहितृ (स्त्री०) [दुह्+तृच्] बेटी, पुत्री। सम०—पतिः 'दुहितुः पतिः' भी) जामाता, दामाद।

दू (दिवा० आ० दूयते, दून) 1. कष्टग्रस्त होना, पीड़ित होना, खिन्न होना—न दूये सात्वतीसूनुर्यन्मह्यमपराध्यति—शि० २।११, कथमथ वंचयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनं—गीत० ८, कष्टग्रस्त, दुःखी—दे० 'दु' (कर्मवा०) 2. पीडा देना।

दूतः, दूतकः [दु+क्त, दीर्घश्च, दूत+कन्] सन्देशहर, संदेशवाहक, राजदूत—चाण० १०६। सम०—मुख (वि०) राजदूत के द्वारा बात करने वाला।

दूतिका, दूतीः [दू+ति+कन्+टाप्, दूति+ङीष्] 1. संदेशवाहिका रहस्य की (गुप्त) बातें जानने वाली 2. प्रेमी और प्रेमिका से बातचीत कराने वाली, कुटनी (विशे० दूती का 'ती' कभी कभी ह्रस्व हो जाता है —दे० रघु० १८।५३, १९।१८, कु० ४।१६, और इसके ऊपर मल्लि०)।

दूत्यम् [दूतस्य भावः—दूत (ती)+यत्] 1. किसी दूत का नियुक्त करना 2. दूतालय 3. संदेश।

दून (वि०) [दू+क्त, नत्वम्] पीडित, कष्टग्रस्त,—आदि, दे० 'दु' और 'दू' के नीचे।

दूर (वि०) [दुःखेन ईयते—दुर्+इण्+रक्, धातोः लोपः] (म० अ० दवीयस्, उ० अ० दविष्ठ) दूरस्थ, दूरवर्ती, फ़ासले पर, दूरस्थित, विप्रकृष्ट—कि दूरं व्यवसायिनाम्—चाण० ७३, न योजनशतं दूरं वाह्यमानस्य तृष्णया—हि० १।१४६, ४९,—रम् दूरी, फासला ('दूर' शब्द के अप्रधान कारक के कुछ रूप निम्नलिखित रूप से क्रिया विशेषण की भांति प्रयुक्त होते हैं–(क) दूरम् 1. फ़ासले पर, विप्रकृष्ट, दूरी पर (अपा० या संबं० के साथ)—ग्रामात् वा ग्रामस्य दूरं—सिद्धा० 2. ऊपर ऊँचाई पर 3. नीचे गहराई में 4. अत्यंत, अत्यधिक, बहुत ज्यादह—नेत्रे दूरमनञ्जने —सा० द० 5. पूर्णरूप से, पूरीतरह से,—निमग्नां दूरमम्मसि—कथा० १०।२९, दूरमुद्धूततापाः—मेघ० ५५, (ख) दूरेण 1. दूर, दूरवर्ती स्थान से, दूर से,—खलः कापट्यदोषेण दूरेणैव विसृज्यते—भामि० १।७८ 2. कहीं अधिक, अत्यधिक ऊँचाई पर—दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय—भग० २।४९, रघु० १०।३० अने० पा० (ग) दूरात् 1. फासले से, दूरी से,—प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम्, दूरादागतः—दूर से आया हुआ (यह समस्त पद समझा जाता है)—नदीयमश्रितो ……… दूरात्परित्यज्यताम्—भर्तृ० १।८१, रघु० १।६१ 2. सूक्ष्म दृष्टि से 3. सुदूर पूर्व काल से (घ) दूरे, दूर, फ़ासले पर, दूरवर्ती स्थान पर—न मे दूरे किंचित्क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्—श० १।९, भोः श्रेष्ठिन् शिरसि भयमतिदूरे· तत्प्रतीकारः—मुद्रा०

१, भर्तृ० ३।८८, दूरीकृ—1. फ़ासले पर हटा देना, हटाना' दूर करना;—आश्रमे दूरीकृतश्रमे—दश० ५, भामि० १।१२२ 2. वंचित करना अलग करना —मृच्छ० ९।४ 3. रोकना, परे करना 4. आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ जाना, दूर रखना—श० १।१७, इसी प्रकार दूरीभू—दूर रहना, परे रहना, अलग रहना, फ़ासले पर रहना—दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम् । सम०—अन्तरित (वि०) लम्बी दूरी होने से वियुक्त,—आपातः दूर से निशाना लगाना —आप्लाव (वि०) दूर तक कूदने वाला, लम्बी छलांग लगाने वाला,—आरूढ (वि०) 1. ऊँचाई पर चढ़ा हुआ, दूर तक आगे बढ़ा हुआ 2. गहरा, उत्कट —दूरारूढ़ः खलु प्रणयोऽसहनः—विक्रम०४,—ईरितेक्षण (वि०) भैंगी दृष्टि वाला,—गत (वि०) दूर हटा हुआ, दूरस्थ, दूर गया हुआ, आगे तक बढ़ा हुआ, गहराई तक गया. हुआ—दूरगतमन्मथाऽक्षमेयं कालहरणस्य—श० ३,—ग्रहणम् दूरस्थित पदार्थों को भी देखने की दिव्य शक्ति,—दर्शनः 1. गिद्ध 2. विद्वान् पुरुष, पण्डित,—दर्शिन् (वि०) दूर की देखने वाला, अग्रदृष्टि, बुद्धिमान् (—पुं०) 1. गिद्ध 2. विद्वान् पुरुष 3. द्रष्टा, पैग़म्बर ऋषि,—दृष्टिः दूर तक देखने की शक्ति 2. बुद्धिमत्ता, अग्रदृष्टि,—पातः 1. दूर तक गिरना 2. दूर की उड़ान 3. बहुत ऊँचाई से गिरना, —पात्र (वि०) विस्तृत पाट वाला (नद आदि) —पार (वि०) 1. बहुत चौड़ा (दरिया) 2. जो कठिनाई से पार किया जा सके,—बन्धु (वि०) पत्नी तथा अन्य भाई बन्धुओं से निर्वासित—मेघ० ६, —भाज् (वि०) दूरवर्ती, फ़ासले पर विद्यमान,—वर्तिन् (वि०) दूरी पर विद्यमान, दूर हटाया हुआ, दूरस्थ, फ़ासले पर,—वस्त्रक (वि०) नंगा, —विलम्बिन् (वि०) नीचे दूर तक लटकने वाला,—वेधिन् (वि०) दूर से ही बींधने वाला,—संस्थ (वि०) दूरी पर विद्यमान फ़ासले पर, दूरवर्ती—कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे—मेघ० ३ ।

दूरतः (अव्य०) [दूर+तस्] 1. दूर से, फ़ासले से—तद्राज्यं दूरतस्त्यजेत्—पंच० ५।६९, वहति च परीतापं दोषं विमुञ्चति दूरतः—गीत० २ 2. दूर, फ़ासले पर —पंच० १।९ ।

दूरेत्य (वि०) [दूरे भवः—दूर+एत्य] दूरी पर मौजूद, दूर से आया हुआ ।

दूर्यम् [दूरे उत्सार्यम्—दूर्+यत्] विष्ठा, मैला ।

दूर्वा [दुर्व्+अ+टाप्, दीर्घः] भूमि पर फैलने वाली एक घास, दूब (यह घास देव पूजा के लिए पवित्र समझी जाती है) । सम०—अङ्कुर दूब के कोमल पत्ते —विक्रम ३।१२ ।

दूलिका, दूली [दूली+कन्+टाप्, ह्रस्वः, दूर+अच्+ङीष्, रस्य लः] नील का पौधा ।

दूष (वि०) [दूष्+णिच्+अच्] (समासान्त में प्रयुक्त) दूषित करने वाला, अपवित्र करने वाला—उदा० 'पंक्तिदूष' ।

दूषक (वि०)(स्त्री०–षिका) [दूष्+णिच्+ण्वुल्] 1. भ्रष्टाचार करने वाला, अपवित्र करने वाला, विषाक्त करने वाला, दूषित करने वाला, बिगाड़ने वाला 2. उल्लंघन करन वाला, अवज्ञा करने वाला, गुमराह करने वाला 3. अपराध करने वाला, अतिक्रमण करने वाला, अपराधी 4. आकृति बिगाड़ने वाला 5. पापी, दुष्कृत, —कः कुपथ पर चलाने वाला, भ्रष्ट करने वाला, बदनाम या दुष्ट पुरुष ।

दूषणम् [दूष्+ल्युट्] 1. बिगाड़ना, भ्रष्ट करना, विषाक्त करना, बर्बाद करना, अपवित्र करना आदि 2. उल्लंघन करना, तोड़ना (समझौता आदि) 3. पथभ्रष्ट करना, बलात्कार करना, सतीत्व नष्ट करना 4. गाली देना, निन्दा करना, कलंकित करना—रघु० १२।४६ 5. बदनामी, अप्रतिष्ठा 6. विपरीत आलोचना, आक्षेप 7. निराकरण 8. दोष, अपराध, त्रुटि, पाप, जुर्म —नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् —भर्तृ० २।९३, हा हा धिक् परगृहवासदूषणं—उत्तर० १।४०, मनु० ३।२१३, हि० १।९८, १।५५, ३।१८०, —णः एक राक्षस, रावण की सेना का एक नायक जिसे भगवान् राम ने मार गिराया था । सम०—अरिः राम का विशेषण,—आवह (वि०) कलंक में किसी को फँसाने वाला ।

दूषिः,—षी (स्त्री०) [दूष्+णिच्+इन्, दूषि+ङीष्] ढीढ, आँख का कीचड़ ।

दूषिका [दूषि+कन्+टाप्] 1. लेखनी, चित्रकार की कूँची 2. एक प्रकार का चावल 3. ढीढ, आँखों का कीचड़ ।

दूषित (वि०) [दूष्+णिच्—क्त] 1. भ्रष्ट, दूषित, विकृत 2. चोटिल, क्षतिग्रस्त 3. अपहत, हतोत्साहित 4. कलंकित, बदनाम 5. मिथ्यादोषारोपित, बदनाम, निन्दित।

दूष्य (वि०) [दूष्+णिच्+यत्] 1. भ्रष्ट होने के योग्य 2. गर्हणीय, दण्डनीय, दूषनीय —ष्यम् 1. मवाद, राद 2. विष 3. कपास 4. पोशाक, वस्त्र 5. तम्बू—शि० १२।६५,—ष्या हाथी का चमड़े का तंग ।

दृ (तुदा० आ०—द्रियते, दृत,—इच्छा० दिदरिषते) (इसका स्वतन्त्र प्रयोग विरल है—प्रायः आ उपसर्ग लग कर प्रयुक्त होता है) आदर करना, सम्मान करना, पूजा करना, प्रतिष्ठा करना—द्वितीयाद्रियते सदा —हि० प्र० ७, मुद्रा० ७।३, भट्टि० ६।५५ 2. रखवाली करना, मन लगाना (प्रायः—'न' के साथ) 3. अपने आप के अच्छी तरह लगाना, संलग्न करना,

ध्यान रखना—भूरि श्रुतं शाश्वतमाद्रियन्ते—मा० १। ५ 4. इच्छा करना।

दृंह् i (भ्वा० पर० –दृंहति, दृंहित) 1. पुष्ट करना, 2. समर्थन करना।

ii (भ्वा० आ०) 1. दृढ़ होना 2. विकसित होना या बढ़ना।

दृंहित (भू० क० कृ०) [दृंह्+क्त] 1. पुष्ट किया गया, समर्थित, 2. विकसित, वर्धित।

दृकम् [दृ+कक्] छिद्र, सूराख।

दृढ (वि०) [दृह्+क्त] 1. स्थिर, दृढ़, मजबूत, अचल, अथक—भग० १५।३, हि० ३।६५, रघु० १३।७८ 2. ठोस, पिण्डाकार 3. संपुष्ट, स्थापित 4. स्थिर, धैर्यशाली—भग० ७।२८ 5. दृढ़ता पूर्वक बाँधा हुआ, कस कर बन्द किया हुआ 6. सुसंहत 7. कसा हुआ, घनिष्ठ, सघन 8. मजबूत, गहन, बड़ा, अत्यधिक, ताक़तवर, कठोर, शक्तिशाली—तस्याः करिष्यामि दृढानुतापम् कु० ३।८, रघु० ११।४६ 9. कड़ा 10. (धनुष की भांति) झुकाने या तानने में कठिन 11. टिकाऊ 12. विश्वासपात्र 13. निश्चित, अचूक, —ढम् 1. लोहा 2. गढ़, क़िला 3. अधिकता, बहुतायत, ऊँचा दर्जा,—ढम् (अव्य०) 1. दृढतापूर्वक, कस कर 2. अत्यधिक, अत्यन्त, तेज़ी से 3. पूरी तरह से। सम० —अङ्ग (वि०) मज़बूत अंगों वाला, हृष्टपुष्ट (गम्) हीरा—इषुधि (वि०) मजबूत तरकस रखने वाला, —काण्डः—ग्रन्थिः बाँस, —ग्राहिन् (वि०) मजबूती से पकड़ने वाला अर्थात् हाथ धोकर काम के पीछे पड़ने वाला, —दंशकः मगरमच्छ, —द्वार (वि०) बिल्कुल सुरक्षित दरवाजों वाला, —धनः बुद्ध का विशेषण, —धन्वन्,—धन्विन् (पुं०) अच्छा धनुर्धारी, —निश्चय (वि०) 1. दृढ़ संकल्प वाला, अडिग, अटल 2. पुष्ट, —नीरः,—फलः नारियल का पेड़,—प्रतिज्ञ (वि०) प्रण का पक्का, बात का धनी, सहमति पर निश्चल, —प्ररोहः गूलर का पेड़,—प्रहारिन् (वि०) 1. कड़ा प्रहार करने वाला 2. कस कर मारने वाला, अचूक लक्ष्यवेध करने वाला,—भक्ति (वि०) निष्ठावान्, श्रद्धालु,—मति (वि०) कृतसंकल्प, स्थिरबुद्धि, अडिग, —मुष्टि (वि०) बन्दमुट्ठी वाला, कृपण, कंजूस, (ष्टिः) तलवार,—मूलः नारियल का पेड़,—लोमन् (पुं०) जंगली सूअर, —वैरिन् (पुं०) निर्दय शत्रु, निष्करुण दुश्मन, —व्रत (वि०) 1. धर्म साधना में अटल 2. अडिग भक्त 3. धैर्यवान्, आग्रही,—सन्धि (वि०) 1. कस कर जुड़ा हुआ, सघनता पूर्वक मिला हुआ 2. सघन, संहत 3. सटा हुआ, —सौहृद (वि०) अटल मित्रता वाला।

दृतिः (पुं० स्त्री०) [दृ+ति, ह्रस्वः] मशक,—मनु० २। ९९, याज्ञ० ३।२६८ 2. मछली 3. खाल, चमड़ा 4. धौंकनी। सम०—हरिः कुत्ता।

दृन्फूः (स्त्री०) [दृम्फ्+कू नि०] साँप, वज्र।

दृन्भूः [दृम्फ्+कू नि०] 1. इन्द्र का वज्र 2. सूर्य 3. राजा यम, मृत्यु का देवता, अन्तक।

दृप् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—दर्पति, दर्पयति—ते) प्रकाशित करना, प्रज्वलित करना, सुलगाना।

ii (दिवा० पर०—दृप्यति, दृप्त) 1. घमण्ड करना, अहंकार करना, ढीठ होना,—स किल नात्मना दृप्यति —उत्तर०, दृप्यद्दानवदूयमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदाम् —गीत० ९ 2. अत्यन्त प्रसन्न होना, 3. असभ्य या दुर्दान्त होना।

दृप्त (वि०) [दृप्+क्त] 1. घमण्डी, अहंकारी 2. मदोन्मत्त असभ्य, पागल।

दृप्र (वि०) [दृप्+रक्] घमण्डी, अहंकारी, बलवान् शक्तिशाली।

दृश् (भ्वा० पर०—पश्यति, दृष्ट) 1. देखना, नजर डालना अवलोकन करना, समीक्षा करना, निहारना, दृष्टिगोचर करना—द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्—मेघ० १।१०, १९, रघु० ३।४२ 2. निरीक्षण करना, सम्मान करना, विचार करना—आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः- चाण० ५ 3. दर्शन करना, प्रतीक्षा करना, दर्शनार्थ जाना—प्रत्युद्ययौ मुनिं द्रष्टुं ब्रह्माणमिव वासवः —रामा० 4. मन से दृष्टिगोचर करना, सीखना, जानना, समझना—मनु० १।११०, १२।२३ 5. निरीक्षण करना, खोज करना 6. ढूँढना, अनुसन्धान करना, परीक्षा करना, निश्चय करना—याज्ञ० १।३२७, २। ३०५ 7. अन्तर्ज्ञान की दिव्य दृष्टि से देखना—ऋषिर्दर्शनात्स्तोमान् ददर्श—नि० 8. विवश होकर देखते रहना—कर्मवा० दृश्यते 1. दिखलाई देना, दृष्टिगोचर होना, दर्शनीय होना, प्रकट होना—तव तच्चारु वपुर्न दृश्यते—कु० ४।११ ३, रघु० ३।४०, भट्टि० ३।१९, मेघ० ११२ 2. प्रतीत होना, दृश्यमान होना, दिखाई देना, मालूम होना—रघु० ३।३४ 3. मिलना, दिखाई देना, घटित होना (पुस्तक आदि में)—द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते—सिद्धा०—इति प्रयोगो भाष्ये दृश्यते 4. ख़याल किया जाना, माना जाना,—सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया—श० ४।१६, प्रेर०—दर्शयति—ते 1. किसी को (कर्म०, संप्र० या संबं०) कोई चीज़ (कर्म०) देखने के लिए प्रेरित करना, दिखलाना, संकेत करना—दर्शय तं चौरसिंहम् —पंच० १, दर्शयति भक्तान् हरिम्—सिद्धा० प्रत्यभिज्ञानरत्नं च रामायादर्शयत्कृती—रघु० १२।६४, १। ४७, १३।२४, मनु० ४।५७ 2. सिद्ध करना, करके दिखलाना,—भट्टि० १५।१२ 3. दिखलाना, प्रदर्शन

करना, दर्शनीय बनना—तदेव मे दर्शय देव रूपम् —भग० ११।४५ 4. (न्यायालय आदि में) प्रस्तुत करना—मनु० ८।१५८ 5. (साक्षी के रूप में) उपस्थित करना—अत्र श्रुतिं दर्शयति 6. (आ०) अपने आप को दिखलाना, प्रकट होना, अपनी कोई वस्तु दिखलाना—भवो भक्तान् दर्शयते—सिद्धा० (अर्थात् स्वयमेव), स्वां गृहेऽपि वनितां कथमास्यं ह्रीनिमोलि खलु दर्शयिताहे—नै० ५।७१, स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम्—कि० १।१०, इच्छा०—दिदृक्षते—देखने की इच्छा करना, अनु—भावदृश्य के रूप में देखना—प्रेर० 1. दिखलाना, प्रदर्शन करना 2. स्पष्ट करना, व्याख्या करना, आ—, प्रेर० दिखलाना, संकेत करना—उत्कलादर्शितपथः कलिंगाभिमुखो ययौ—रघु० ४।३८,उद्—, प्रत्याशा करना, मुँह ताकना, आगे का देखना, मनोगत भाव देखना—उत्पश्यतः सिंहनिपातमुग्रम्—रघु० २।६०, उत्पश्यामि द्रुतमपि सखे मत्प्रियार्थं यियासोः कालक्षेपं ककुभसुरभौ पर्वते पर्वते ते—मेघ० २२, उप—, देखना, अवलोकन करना—प्रेर० सामने रखना, समाचार देना, परिचित करना—राज्ञः पुरो मामुपदर्श्य—हि० ३, नयविद्भिर्नवे राज्ञि सदसच्चोपदर्शितम्—रघु० ४। १०, नि—, प्रेर० 1. दिखलाना, संकेत करना—रघु० ६।३१ 2. सिद्ध करना, करके दिखलाना 3. विचार करना, बातचीत करना, चर्चा करना (जैसे पुस्तकादिक में) 4. अध्यापन करना 5 उदाहरण देकर समझाना दे० निदर्शना, प्र—, प्रेर० 1. दिखलाना, संकेत करना खोज लेना, प्रदर्शित करना 2. सिद्ध करना, करके दिखलाना, **सम्**—, 1. देखना, अवलोकन करना—भट्टि० १६।९ 2. भलीभाँति देखना, समीक्षा करना—प्रेर० दिखलाना, प्रदर्शित करना, खोज निकालना—आत्मानं मृतवत्संदर्श्य —हि० १, भट्टि० ४।३३, मालवि० ४।९।

दृश् (वि०) [दृश्+क्विप्] (समासान्त में) 1. देखने वाला, अधीक्षण करने वाला, सर्वेक्षण करने वाला, समीक्षा करने वाला 2. विवेचन करने वाला, जानने वाला 3. (के समान) दिखलाई देने वाला, प्रतीत होने वाला (स्त्री०) 1. देखना, समीक्षा, दृष्टिगोचर करना, 2. आँख, दृष्टि—संदधे दृशमुदग्रतारकाम्—रघु० ११। ६९ 3. ज्ञान 4. 'दो' की संख्या 5. ग्रहदशा। सम० —**अध्यक्षः** सूर्य,—**कर्णः** साँप,—**क्षयः** दृष्टि की क्षीणता या हानि, धुंधला दिखाई देना,—**गोचरः** दृष्टि-परास, —**जलम्** आँसू,—**क्षेपः** ज्या पराकोटि की दूरी की लम्बरेखा,—**पथः** दृष्टिपरास,—**पातः** दृष्टि, झलक, —**प्रिया** सौन्दर्य, प्रभा,—**भक्तिः** (स्त्री०) प्रेमदृष्टि, अनुरागभरी चितवन,—**लम्बनम्** ऊर्ध्वाधर दिग्भेद, —**विषः** साँप,—**श्रुतिः** सर्प, साँप।

दृशद् (स्त्री०) [दृषद्, पृषो०] पत्थर, दे० दृषद्।

दृशा [दृश्+टाप्] आँख। सम०—**आकांक्ष्यम्**—कमल, —**उपमम्** श्वेत कमल।

दृशानः [दृश्+आनच्] 1. आध्यात्मिक गुरु 2. ब्राह्मण 3. लोकपाल,—**नम्** प्रकाश, उजाला।

दृशिः,—शी (स्त्री०) [दृश्+इन्, दृशि+ङीष्] 1. आँख शास्त्र।

दृश्य (सं० कृ०) 1. देखे जाने योग्य, दर्शनीय 2. देखने के 3. सुन्दर, दृष्टिसुखद, प्रिय—रघु० ६।३१, कु० ७।६४, —**श्यम्** दिखाई देन वाला पदार्थ—मालवि० १।९।

दृश्वन् (वि०) [दृश्+क्वनिप्] (समासान्त में) 1. देखने वाला, दृष्टिगोचर करने वाला 2. (आलं०) परिचित, जानकार जैसा कि 'श्रुतिपारदृश्वा—रघु० ५।२४ तथा विद्यानां पारदृश्वनः—१।२३ में।

दृषद् (स्त्री०) [दॄ+अदि, षुक्, ह्रस्वश्च] 1. चट्टान, बड़ा पत्थर—मेघ० ५५, रघु० ४।७४, भर्तृ० १।३८ 2. चक्की का पत्थर, शिला (जिस पर मसाला आदि पीसा जाय)।—**उपलः** मसाला आदि पीसने के लिए सिल—(**दृषद्विमावकः** चक्कियों से लिया जाने वाला कर)।

दृषद्वत् (वि०) [दृषद्+व्रत्] पथरीला, चट्टान से बना हुआ,—**ती** एक नदी का नाम जो आर्यावर्त की पूर्वी सीमा बनाती है तथा सरस्वती नदी में मिलती है। तु० मनु० २।१७।

दृष्ट (भू० क० कृ०) [दृश्+क्त] 1. देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ, दृष्टिगोचर किया हुआ, पर्यवेक्षित निहारा हुआ 2. दर्शनीय, पर्यवेक्षणीय 3. माना गया, खयाल किया गया 4. घटित होने वाला, मिला हुआ 5. प्रकट होने वाला व्यक्त 6. जाना हुआ, मालूम किया हुआ 7. निर्धारित, निर्णीत, निश्चित 8. वैध 9. नियत किया गया—दे० दृश्,—**ष्टम्** डाकुओं से डर। सम०—**अन्तः,—तम्** 1. उदाहरण, निदर्शन, दृष्टांत-कथा—पूर्णश्चन्द्रोदयाकांक्षी दृष्टान्तोऽत्र महार्णवः —शि० २।३१ 2. (अलं० शा० में) एक अलंकार जिसमें कोई उक्ति उदाहरण देकर समझाई जाय (उपमा और प्रतिवस्तूपमा से भिन्न—दे० काव्य० १०, और रस०) 3. शास्त्र या विज्ञान 4. मृत्यु (तु० दृष्टांत),—**अर्थ** (वि०) 1. जिसका अर्थ बिल्कुल स्पष्ट तथा व्यक्त हो 2. व्यावहारिक,—**कष्ट,—दुःख** जिसने मुसीबत झेली हों, कष्ट सहन करने का अभ्यस्त हो गया हो,—**कूटम्** पहेली, गूढ़ प्रश्न,—**दोष** (वि०) 1. जिसमें दोष देखा गया हो, जिसे अपराधी समझा गया हो 2. दुर्व्यसनी 3. जिसका भंडाफोड़ हो गया हो, जिसका पता लगा लिया गया हो,—**प्रत्यय** (वि०) 1. विश्वास रखने वाला 2. विश्वस्त,—**रजस्** (स्त्री०)

वह कन्या जो रजस्वला हो गई हो,—**व्यतिकर** (वि०) 1. जिसने कष्ट और मुसीबतें झेली हों 2. जो आने वाले अनिष्ट को पहले ही से भांप लेता है।

दृष्टिः (स्त्री०) [दृश्+क्तिन्] 1. देखना, समीक्षण 2. मन की आँख से देखना 3. जानना, ज्ञान 4. आँख, देखने की शक्ति, नजर—केनेदानीं दृष्टं विलोभयामि —विक्रम० २, चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि—श० १।२४, —दृष्टिस्तृणीकृतजगत्त्रयसत्त्वसारा—उत्तर० ६।१९ रघु० २।८, श० ४।२, देव दृष्टिप्रसादं कुरु—हि० १ 5. नजर, चितवन 6. विचार, भाव —क्षुद्रदृष्टिरेषा —का० १७३, एतां दृष्टिमवष्टभ्य—भग० १६।९ 7. विचार, आदर 8. बुद्धि, बुद्धिमत्ता, ज्ञान। सम० —**कृत,—कृतम्** स्थलपद्म, कुमुद,—**क्षेपः** निगाह डालना, अवलोकन करना,—**गुणः** तीर का निशाना, चाँदमारी, लक्ष्य,—**गोचर** (वि०) दृष्टि-परास के अन्तर्गत, जो दिखाई दे, दृश्य,—**पथः**—दृष्टि-पास,—**पातः** 1. निहारना, निगाह डालना—मार्गे मृगप्रेक्षिणि दृष्टिपातं कुरुष्व —रघु० १३।१८, भर्तृ० १।११, ९४, ३।६६, 2. देखने की क्रिया, आँख का कार्य—रजःकर्णविघ्नितदृष्टिपाताः —कु० ३।३१, (मल्लि० 'पात' का अर्थ 'प्रभा' दर्शाते हैं जो हमारी समझ में अनावश्यक है),—**पूत** (वि०) दृष्टिमात्र से पवित्र किया हुआ अर्थात् देख लिया कि किसी प्रकार की अशुद्धि नहीं है,—दृष्टिपूतं न्यसेत्पादम् —मनु० ६।४५,—**बन्धुः** जुगनू,—**विक्षेपः** कनखियों से देखना, कटाक्ष, तिरछी नजर,—**विद्या** नेत्र-विज्ञान, —**विभ्रमः** अनुराग भरी दृष्टि, हाव-भाव से युक्त नजर,—**विषः** साँप।

दृह्, दृंह् (भ्वा० पर०—दर्हति, दृंहति) 1. स्थिर या दृढ़ होना 2. विकसित होना, बढ़ना 3. समृद्ध होना 4. कसना।

दॄ (दिवा० क्र्या० पर०—दीर्यति, दृणाति, दीर्ण) 1. फट जाना, टूट जाना, टुकड़े २ होना 2. फाड़ना, चीरना, विभक्त करना, विदीर्ण करना, खण्ड २ करना, टुकड़े २ करना। कर्मवा०—दीर्यते 1. फटना, टूटना, खण्ड २ होना,—कथमेवं प्रलपतां वः सहस्रधा न दीर्णमनया जिह्वया—वेणी० ३ 2. अलग करना, प्रेर०—द—दा—रयति—ते 1. टुकड़े २ करना, चीर डालना, खोदकर विभक्त करना 2. तितर-वितर करना, बखरना, वि, टुकड़े २ करना, फाड़ डालना, विभक्त करना, काट कर टुकड़े २ करना—ऐन्द्रिः किल नखैस्तस्या विददार स्तनौ द्विजः—रघु० १२।२२, न विदीर्ये कठिनाः खलु स्त्रियः—कु० ४।५, रघु० १४।३३ 2. फाड़ना (आलं०)—चित्तं विदारयति कस्य न कोविदारः—ऋतु० ३।६, भग० १।१९, (अव, आ तथा प्र आदि उपसर्ग लगने पर धातु का अर्थ नहीं बदलता है)।

दे (भ्वा० आ० दयते, दात—इच्छा० दित्सते) रक्षा करना, पालना, पोसना।

देदीप्यमान (वि०) [दीप्+यङ+शानच्] अत्यंत चमकने वाला, ज्योतिष्मान्, जगमगाता हुआ।

देय (वि०) [दा+यत्] 1. दिये जाने के लिए, उपहृत किये जाने के लिए—रघु० ३।१६ 2. दिये जाने के योग्य, भेंट के लिए उपयुक्त 3. वस्तु जो वापिस करने के लिए है, विभावितैकदेशेन देयं महदभियुज्यते—विक्रमांक० ४।१७, मनु० ८।१३९, १८५।

देव् (भ्वा० आ०—देवते) 1. क्रीडा करना, खेलना, जूआ खेलना 2. विलाप करना 3. चमकना, **परि—**, विलाप करना, शोक मनाना।

देव (वि०) (स्त्री०—**वी**) [दिव्+अच्] दिव्य, स्वर्गीय —भग० ९।११, मनु० १२।११७,—**वः** 1. देव, देवता —एको देवः केशवो वा शिवो वा—भर्तृ० ३।१२० 2. वर्षा का देवता, इन्द्र का विशेषण—यथा 'द्वादश वर्षाणि देवो न ववर्ष' में 3. दिव्य पुरुष, ब्राह्मण 4. राजा, शासक, जैसाकि 'मनुष्यदेव' में 5. ब्राह्मणों के नामों के साथ लगने वाली उपाधि—जैसा कि 'गोविन्द देव, पुरुषोत्तमदेव' में 6. (नाटकों में) राजा को संबोधित करने के लिए सम्मान सूचक उपाधि —ततश्च देव—वेणी० ४, यथाज्ञापयति देवः आदि 7. (समासान्त में) अपने देवता के रूप में—यथा मातृ°, पितृ°। सम०—**अंशः** भगवान् का अंशावतार —**अगारः,—रम्** मन्दिर,—**अंगना** स्वर्गीय देवी, अप्सरा, —**अतिदेवः,—अधिदेवः** 1. उच्चतम देवता 2. शिव का विशेषण,—**अधिपः** इन्द्र का विशेषण,—**अंधस्** (नपुं०) —**अन्नम्** 1. देवताओं का आहार, दिव्य भोजन, अमृत 2. वह भोजन जो पहले भगवान् की मूर्ति के आगे प्रस्तुत किया गया है—दे० मनु० ५।७ तथा इस पर कुल्लू० भाष्य,—**अभीष्ट** (वि०) 1. देवताओं को प्रिय 2. देवता पर चढ़ाया हुआ, (—**ष्टा**) तांबूली, पान-सुपारी,—**अरण्यम्** बाग—रघु० १०।८०,—**अरिः** राक्षस,—**अर्चनम्,—ना** देवपूजा,—**अवसथः** मन्दिर, —**अश्वः** उच्चैःश्रवा का विशेषण, इन्द्र का घोड़ा, —**आक्रीडः** देवोद्यान, नन्दन वन,—**आजीवः,—आजीविन्** (पुं०) 1. भगवान् की मूर्ति का सेवक 2. एक नीचकोटि का ब्राह्मण जो मूर्ति की सेवा द्वारा, तथा मूर्ति पर आये हुए चढ़ावे से अपना जीवन-निर्वाह करता है,—**आत्मन्** (पुं०) गूलर का वृक्ष,—**आयतनम्** मन्दिर—मनु० ४।४६,—**आयुधम्** 1. दिव्य हथियार 2. इन्द्रधनुष,—**आलयः** 1. स्वर्ग 2. मन्दिर,—**आवासः** 1. स्वर्ग 2. अश्वत्थवृक्ष 3. मन्दिर 4. सुमेरु पहाड़, —**आहारः** अमृत, पीयूष,—**इज्** (वि०) (कर्तृ० ए० व० देवेट्—ड) देवताओं की पूजा करने वाला,—**इज्यः**

देवगुरु बृहस्पति का विशेषण,—**इन्द्रः**,—**ईशः** 1. इन्द्र का विशेषण 2. शिव का विशेषण,—**उद्यानम्** 1. दिव्य बाग 2. नन्दन वन 3. मन्दिर का निकटवर्ती बाग, —**ऋषिः** (देवर्षिः) 1. सन्त जिसने देवत्व प्राप्त कर लिया है, दिव्य ऋषि, यथा, अत्रि, भृगु, पुलस्त्य, अंगिरस आदि—एवं वादिनि देवर्षौ—कु० ६।८४ (अर्थात् अंगिरस्) 2. नारद का विशेषण—भग० १०।१३, २६, —**ओकस्** (नपुं०) सुमेरु पर्वत,—**कन्या** स्वर्गीय देवी, अप्सरा,—**कर्मन्** (नपुं०) —**कार्यम्** 1. धार्मिक कृत्य या संस्कार 2. देवों की पूजा,—**काष्ठम्** देवदारु का वृक्ष,—**कुण्डम्** प्राकृतिक झरना,—**कुलम्** 1. मन्दिर 2. देवों का समूह,—**कुल्या** स्वर्गीय गंगा,—**कुसुमम्** लौंग, —**खातम्**,—**खातकम्** 1. पर्वतों में बनी एक प्राकृतिक गुफा 2. एक प्राकृतिक तालाब या जलाशय—मनु० ४।२०३ 3. मन्दिर का निकटवर्ती तालाब, °**बिलम्** एक गुफ़ा, कन्दरा,—**गणः** देवों की एक श्रेणी,—**गणिका** अप्सरा,—**गर्जनम्** बादल की गड़गड़ाहट,—**गायनः** स्वर्गीय गायक, गन्धर्व,—**गिरिः** एक पहाड़ का नाम—मेघ० ४२,—**गुरुः** 1. (देवों के पिता) कश्यप का विशेषण 2. (देवों के गुरु) बृहस्पति का विशेषण,—**गृही** सरस्वती या उसके किनारे पर स्थित स्थान का विशेषण, —**गृहम्** 1. मन्दिर 2. राज-प्रासाद,—**चर्या** देवों की पूजा या सेवा,—**चिकित्सकौ** (द्वि० व०) देवों के वैद्य अश्विनीकुमार,—**छन्दः** १०० लड़ की मोतियों की माला,—**तरुः** 1. गूलर का वृक्ष 2. स्वर्गीय वृक्षों (मंदार, पारिजात, संतान कल्प और हरिचंदन) में से एक, —**ताडः** 1. आग 2. राहु का विशेषण,—**दत्तः** 1. अर्जुन के शंख का नाम—भग० १।१५ 2. कोई व्यक्ति (अनिश्चित रूप से किसी भी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त) देवदत्तः पचति, पीनो देवदत्तः दिवा न भुंक्ते—आदि, —**दारु** (पुं०, नपुं०) देवदारु की जाति का पेड़—कु० १।५४, रघु० २।३६,—**दासः** मन्दिर का सेवक (—**सी**) 1. मन्दिर या देवों की सेविका 2. वेश्या (जिसे मन्दिर में नाचने के लिए लगाया गया हो),—**दीपः** आँख, —**दूतः** दिव्य संदेशवाहक, देवदूत,—**दुंदुभिः** 1. दिव्य ढोल 2. लाल फूलों वाला तुलसी का पौधा,—**देवः** 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. शिव—कु० १।५२ 3. विष्णु, —**द्रोणी** देवमूर्ति का जलूस,—**धर्मः** धार्मिक कर्तव्य या पद,—**नदी** 1. गंगा 2. कोई भी पावन नदी—मनु० २।१७,—**नन्दिन्** (पुं०) इन्द्र के द्वारपाल का नाम, —**नागरी** एक लिपि का नाम जिसमें प्रायः संस्कृत भाषा लिखी जाती है,—**निकायः** देवावास, स्वर्ग, —**निन्दकः** देवताओं की निन्दा करने वाला, नास्तिक, —**निर्मित** (वि०) देवता द्वारा रचित, प्राकृतिक, —**पतिः** इन्द्र का विशेषण,—**पथः** 1. स्वर्गीय मार्ग आकाश, अन्तरिक्ष 2. छायापथ,—**पशुः** देवता के नाम पर स्वच्छंद छोड़ा हुआ पशु,—**पुर**,—**पुरी** (स्त्री०) अमरावती का विशेषण, इन्द्र की नगरी,—**पूज्यः** बृहस्पति का विशेषण,—**प्रतिकृतिः** (स्त्री०)—**प्रतिमा** देवमूर्ति, देवता की प्रतिमा,—**प्रश्नः** ग्रहादिसंबंधी जिज्ञासा, भविष्य सम्बन्धी प्रश्न, भविष्य की बातें बतलाना, —**प्रियः** देवों को प्रिय, शिव का विशेषण (**देवानांप्रियः**) एक अनियमित समास, इसका अर्थ है 1. बकरा 2. मूढ, (पशु की भांति जड—जैसाकि 'तेऽप्यतात्पर्यज्ञा देवानांप्रियाः' काव्य०),—**बलिः** देवताओं को दी जाने वाली आहुति,—**ब्रह्मन्** (पुं०) नारद का विशेषण,—**ब्राह्मणः** 1. वह ब्राह्मण जो अपना निर्वाह मन्दिर से प्राप्त आय से कर लेता है, 2. आदरणीय ब्राह्मण,—**भवनम्** 1. स्वर्ग 2. मन्दिर 3. गूलर का वृक्ष,—**भूमिः** (स्त्री०) स्वर्ग,—**भूतिः** (स्त्री०) गंगा का विशेषण,—**भूयम्** देवत्व, दिव्यप्रकृति,—**भृत्** (पुं०) 1. विष्णु का विशेषण 2. इन्द्र का विशेषण,—**मणिः** 1. विष्णु की मणि, कौस्तुभ 2. सूर्य,—**मातृक** (वि०) वृष्टि के देवता तथा बादल ही जिसकी प्रतिपालिका माता हो, जिसे केवल वर्षा का जल ही लभ्य हो, जो सिंचाई को छोड़कर केवल वर्षा के जल पर ही निर्भर हो, (वह देश) जो और प्रकार की जलव्यवस्था से वंचित हो—देशो नद्यम्बुवृष्टयम्बुसंपन्नव्रीहिपालितः, स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम्—अमर०, तु०—वितन्वति क्षेममदेवमातृकाः (अर्थात् नदीमातृकाः) चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासते —कि० १।१७,—**मानकः** विष्णु की मणि जिसे कौस्तुभ कहते हैं,—**मुनिः** दिव्य ऋषि,—**यजनम्** यज्ञभूमि, यज्ञस्थली—देवयजनसंभवे सीते—उत्तर० ४,—**यजिः** (वि०) देवताओं के आहुति देने वाला,—**यज्ञः** वह हवन जिसमें वरिष्ठ देवताओं के निमित्त अग्नि में आहुति दी जाती हैं, (गृहस्थों के पाँच नैत्यिक यज्ञों में से एक—मनु० ३।८१, ८५—दे० पंचयज्ञ),—**यात्रा** किसी देवप्रतिमा का जलूस, या सवारी निकालने का उत्सव,—**यानम्**, —**रथः** दिव्यरथ—,**युगम्** चार युगों में से एक, कृतयुग, सतयुग,—**योनिः** अतिमानव प्राणी, उपदेव 2. दिव्य उत्पत्ति वाला,—**योषा** अप्सरा—**रहस्यम्** दैवी रज या रहस्य—**राज्**,—**राजः** इन्द्र का विशेषण,—**लता** नवमल्लिका लता, नेवारी—**लिङ्गम्** देवता की मूर्ति या प्रतिमा,—**लोकः** स्वर्गलोक, दिव्य-लोक मनु० ४।१८२, —**वक्त्रम्** आग का विशेषण,—**वर्त्मन्** (नपुं०) आकाश, —**वर्धकिः**,—**शिल्पिन्** (पुं०) विश्वकर्मा, देवताओं का शिल्पी—**वाणी** दिव्य वाणी, आकाशवाणी,—**वाहनः** अग्नि का विशेषण,—**व्रतम्** धार्मिक अनुष्ठान, धार्मिक व्रत (**तः**) 1. भीष्म का विशेषण 2. कार्तिकेय का विशेषण,—**शत्रुः** राक्षस,—**शुनी** देवों की कुतिया सरमा

का विशेषण,—**शेषम्** देवनिमित्त किये गये यज्ञ का बचा हुआ अंश,—**श्रुतः** 1. विष्णु का विशेषण 2. नारद का विशेषण 3. पावन शास्त्र 4. देव,—**सभा** 1. देवताओं की सभा, सुवर्मा 2. जूए का घर,—**सभ्यः** 1. जुआरी 2. जूएघरों में प्रायः जाने वाला 3. देवसेवक,—**सायुज्यम्** किसी देवता से मिलकर एक हो जाना, देवसंयोजन, देवत्वप्राप्ति, —**सेना** 1. देवों की सेना 2. स्कन्द की पत्नी,—स्कन्देन साक्षादिव देवसेनाम्—रघु० ७।१ (मल्लि०—देवसेना=स्कन्दपत्नी—संभवतः यहाँ देवों की सेना का ही मूर्त्त रूप में वर्णन है) °पतिः कार्तिकेय का विशेषण,—**स्वम्** देवों की संपत्ति, (धर्मकार्यों के निमित्त) देवार्पित संपत्ति—यद्धनं यज्ञशीलानां देवस्वंत द्विदुर्बुंधाः—मनु० ११।२०, २६,—**हविस्** (नपुं०) बलिपशु।

देवकी [देवक+ङीप्] देवककी एक पुत्री, वसुदेव की पत्नी, कृष्ण की माता। सम०—**नन्दनः**—**पुत्रः**—**मातृ** (पुं०) —**सूनुः** श्रीकृष्ण के विशेषण।

देवटः [दिव्+अटन्] कारीगर, दस्तकार।

देवता [देव+तल्+टाप्] 1. दिव्य प्रतिष्ठा या शक्ति, देवत्व 2. देव, सुर—कु० १।१ 3. देव की प्रतिमा 4. मूर्ति 5. ज्ञान इन्द्रिय। सम०—**अगारः**,—**रम्**, —**आगारः**,—**रम्**, —**गृहम्** मन्दिर,—**अधिपः** इन्द्र का विशेषण,—**अभ्यर्चनम्** देव पूजन,—**आयतनम्**,—**आलयः**, —**वेश्मन्** (नपुं०) मन्दिर देवालय,—**प्रतिमा** देवमूर्ति प्रतिमा—**स्नानम्** देवमूर्ति का स्नान।

देवद्र्यंच् (वि०) [देवम् अंचति पूजयति—देव+अंच्+क्विन् अद्रि आदेशः] देवोपासक।

देवन् (पुं०) [दिव्+अनि] पति का छोटा भाई, देवर।

देवनः [दिव्+ल्युट्] पासा,—**नम्** 1. सौन्दर्य, दीप्ति, कान्ति 2. जूआ खेलना, पासे का खेल 3. खेल, क्रीडा, विनोद 4. प्रमोद-स्थल, प्रमोद-वाटिका 5. कमल 6. स्पर्धा, आगे बढ़ जाने की इच्छा 7. मामला, व्यवसाय 8. प्रशंसा, —**ना** जूआ खेलना, पासे का खेल।

देवयानी (स्त्री०) असुरगुरु शुक्राचार्य की पुत्री [एक बार देवयानी अपने पिता के शिष्य कच पर मोहित हो गई परन्तु कच ने उसके प्रेम को ठुकरा दिया! देवयानी ने उसे शाप दे दिया, बदले में कच ने भी देवयानी को शाप दिया कि वह एक क्षत्रिय की पत्नी बनेगी। दे० 'कच'। एक बार देवयानी दैत्यों के राजा वृषपर्वा की पुत्री अपनी सखी शर्मिष्ठा के साथ स्नान करने गई, अपने वस्त्र उतार कर तट पर रख दिया। हवा से उनके वस्त्र बदल गये, जब उन्होंने बदले हुए वस्त्र पहने तो दोनों आपस में झगड़ने लगीं, यहाँ तक कि क्रोध में आकर शर्मिष्ठा ने देवयानी के मुँह पर तमाचा मारा और उसे एक कूएँ में फेंक दिया! सौभाग्य से ययाति ने उसे कुएँ से निकाल कर उसके प्राणों की रक्षा की। उसके पश्चात् देवयानी के पिता की स्वीकृति से ययाति का देवयानी के साथ विवाह हो गया, और शर्मिष्ठा को देवयानी के प्रति अपने दुर्व्यवहार के कारण उसकी दासी बनना पड़ा। देवयानी ने ययाति के साथ कई वर्ष सुखपूर्वक विताये, यदु और तुर्वसु नामक उसके दो पुत्र हुए। उसके पश्चात् ययाति शर्मिष्ठा पर आसक्त हो गया। इस बात से दुःखी होकर देवयानी ने अपने पति को छोड़ दिया तथा अपने पिता के घर चली आई। शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री के कहने पर ययाति को बुढ़ापे की अशक्तता का शाप दिया। दे० 'ययाति')।

देवरः, **देवृ** (पुं०) [दिव्+अर, दिव्+ऋ] पति का भाई (चाहे छोटा हो या बड़ा)—मनु० ३।५५, ९।५९, याज्ञ० १।६८।

देवलः [देव+ला+क] देवमूर्ति का सेवक, एक नीच कोटि का ब्राह्मण जिसका अपना निर्वाह देव–प्रतिमा पर प्राप्त चढ़ावे के ऊपर निर्भर है।

देवसात् (अव्य०) [देव+साति] देवताओं की प्रकृति के समान, °भू बदल कर देवता बनना।

देविक (वि०) (स्त्री० की), देविल (वि०) [देव+ठन्, दिव्+इलच्] 1. दिव्य, देवगुणों से युक्त 2. देव से प्राप्त।

देवी [दिव्+अच्+ङीप्] 1. देवता, देवी 2. दुर्गा 3. सरस्वती 4. रानी—विशेषतः राज्याभिषिक्त रानी, (अग्रमहिषी—जिसने राज्याभिषेक के अवसर पर पति के साथ सब राज–संस्कारों में पत्नी के नाते भाग लिया हो)—प्रेष्यभावेन नामेयं देवी शब्दक्षमा सती, स्नानीयवस्त्रक्रियया पत्रोर्णं वोपयुज्यते—मालवि० ५।१२ देवीभावं गमिता परिवारपदं कथं भजत्येषा—काव्य० १० 5. सम्मानसूचक उपाधि जो सर्वश्रेष्ठ महिलाओं के साथ प्रयुक्त होती है।

देशः [दिश्+अच्] 1. स्थान, जगह—देशः कोनु जलावसेकशिथिलः—मृच्छ० ३।१२ इसी प्रकार 'स्कन्धदेशे' —श० १।१९, द्वारदेश, कण्ठदेश आदि 2. प्रदेश, मुल्क, प्रान्त—यं देशं श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम्—हि० १।१७१ 3. विभाग, भाग, पक्ष, अंश (किसी 'पूर्ण' के) जैसा कि एक देश, एकदेशीय 4. संस्था, अध्यादेश। सम०—**अतिथिः** (पुं०) विदेशी, —**अन्तरम्** दूसरा देश, विदेशी भाग—मनु० ५।७८, —**अन्तरिन्** (पुं०) विदेशी,—**आचारः**, —**धर्मः** स्थानीय कानून या प्रथा, किसी देश के रीति-रिवाज—मनु० १।११८,—**कालज्ञ** (वि०) उपयुक्त स्थान और समय को जानने वाला—ज,—**जात** (वि०) 1. स्वदेशीय, स्वदेशोत्पन्न 2. ठीक देश में उत्पन्न 3. असली, खरा,

निर्मलवंशोद्भव,—भाषा किसी देश की बोली,—रूपम् औचित्य, उपयुक्तता व्यवहारः स्थानीय, प्रचलन, देशविदेश की प्रथा।

देशकः [दिश्+ण्वुल्] 1. शासक, राज्यपाल 2. शिक्षक, गुरु 3. पथ-प्रदर्शक।

देशना [दिश्+णिच्+युच्+टाप्] निर्देशन, अनुदेश।

देशिक (वि०) [देश+ठन्] स्थानीय, किसी विशेष स्थान से सम्बन्ध रखने वाला, देशी —कः 1. आध्यात्मिक गुरुः 2. यात्री 3. पथ-दर्शक 4. स्थानों से परिचित।

देशिनी [दिश्+णिनि+ङीप्] तर्जनी, अंगूठे के पास वाली अंगुली।

देशी [देश+ङीप्] किसी देशविशेष की बोली, प्राकृत का एक भेद—दे० काव्या० १।३३।

देशीय (वि०) [देश+छ] 1. किसी प्रान्त से सम्बन्ध रखने वाला, प्रान्तीय 2. स्वदेशीय, स्थानीय 3. किसी देश का निवासी (समासान्त में) जैसा कि मगधदेशीय, तद्देशीय, वंगदेशीय आदि में 4. अदूर, लगभग, सीमान्तवर्ती (शब्दों के अन्त में प्रत्यय की भाँति प्रयुक्त) —अष्टादशवर्षदेशीयां कन्यां ददर्श—का० १३१, लगभग १८ वर्ष की लड़की (जिसकी आयुसीमा १८ हो) —रघु० १८।३१, इसी प्रकार 'परदेशीय' आदि।

देश्य (वि०) [दिश्+ण्यत्] 1. जिसकी ओर संकेत करना हो, या जिसे प्रमाणित करना हो 2. स्थानीय, प्रान्तीय 3. देशी, स्वदेशी 4. असली, खरा, निर्मल वंशोद्भव 5. अदूर, लगभग—दे० ऊपर 'देशीय',—श्यः 1. चश्मदीद गवाह,—अभियोक्ता दिशेद्देश्यम्—मनु० ८।५२, ५३, किसी देशविशेष का निवासी,—श्यम् प्रश्नोक्ति, तर्कोक्ति, पूर्वपक्ष।

देहः—हम् [दिह्+घञ्] शरीर,—देहं दहन्ति दहना इव गन्धवाहाः—भामि० १।१०४, दे० नी० समस्त शब्द। सम०—**अन्तरम्** अन्य (दूसरे का) शरीर, °**प्राप्तिः** (स्त्री०) दूसरा जन्म लेना,—**आत्मवादः** भौतिकता, चार्वाकों के सिद्धान्त,—**आवरणम्** कवच, पोशाक,—**ईश्वरः** आत्मा, जीव,—**उद्भव,—उद्भूत** (वि०) शरीरज, सहज, जन्मजात—**कर्तृ** (पुं०) 1. सूर्य 2. परमात्मा 3. पिता,—**कोषः** 1. शरीर का आवरण 2. पर, बाजू 3. त्वचा, चमड़ा,—**क्षयः** 1. शरीर का ह्रास 2. रोग, बीमारी,—**गत** (वि०) शरीर में प्राप्त, मूर्तरूप,—**जः** पुत्र,—**जा** पुत्री,—**त्यागः** 1. मृत्यु 2. इच्छामृत्यु, शरीर को छोड़ना,—तीर्थे तोयव्यतिकरभवे जह्नुकन्यासरय्वोर्देहत्यागात्—रघु० ८।९५,—**दः** पारा,—**दीपः** आँख,—**धर्मः** शरीर के अंगों की क्रिया,—**दाहकम्** हड्डी,—**धारणम्**, जीना, जीवन,—**धिः** बाजू, कक्ष,—**धृष्** (पुं०) वायु, हवा,—**बद्ध** (वि०) मूर्त्त, सशरीर—रघु० ११।३५,—**भाज्** (पुं०) शरीरधारी, जीवधारी, विशेषतः मनुष्य,—**भुज्** (पुं०) 1. जीव, आत्मा 2. सूर्य,—**भृत्** (पुं०) जीवधारी, मनुष्य—धिगिमां देहभृतामसारताम्—रघु० ८।५१, भग० ८।४, १४।१४ 2. शिव का विशेषण 3. जीवन, जीवनशक्ति,—**यात्रा** 1. मरण, मृत्यु 2. पोषक पदार्थ, आहार,—**लक्षणम्** मस्सा, त्वचा के ऊपर काला तिल,—**वायुः** पाँच जीवनवायु में से एक, प्राणवायु,—**सारः** मज्जा,—**स्वभावः** शरीर का स्वभाव या गुण।

देहंभर (वि०) [देह+भृ+खच्, मुम्] पेटू, उदरंभरि।

देहवत् [देह+मतुप्] शरीरधारी, (पुं०) 1. मनुष्य 2. जीव।

देहला [देह+ला+क] मदिरा, शराब।

देहलिः,—ली (स्त्री०) [देह+ला+कि, देहलि+ङीप्] दरवाजे की चौखट में नीचे वाली लकड़ी जिसे लांघ कर घर में घुसते निकलते हैं,—विन्यस्यन्ती भुवि गणनया देहलीदत्तपुष्पैः—मेघ० ८७, मृच्छ० १।९। सम०—**दीपः** देहलीपर रक्खा हुआ दीपक, °**न्याय**, दे० न्याय के अन्तर्गत।

देहिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [देह+इनि] शरीरधारी, शरीरी (पुं०) 1. जीवधारी प्राणी—विशेषतः मनुष्य —त्वदधीनं खलु देहिनां सुखम्—कु० ४।१०, शि० २।४६ भग० २।१३, १७।२, मनु० १।३० ५।४१ 2. आत्मा, जीव (शरीर में प्रतिष्ठापित)—तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही —भग० २।२२, १३, ५।१४,—नी पृथ्वी।

दै (भ्वा०—पर० दायति, दात) 1. पवित्र करना, शुद्ध करना 2. पवित्र होना, 3. रक्षा करना, अव—, 1. धवल करना, उज्ज्वल करना 2. पवित्र करना।

दैतेयः [दिति+ढक्] दिति का पुत्र, राक्षस, दैत्य,। सम०—**इज्यः,—गुरुः,—पुरोधस्** (पुं०)—**पूज्यः** असुरों के गुरु शुक्राचार्य के विशेषण,—**निषूदनः** विष्णु का विशेषण,—**मातृ** (स्त्री०) दिति दैत्यों की माता,—**मेदजा** पृथ्वी।

दैत्यः [दिति+ण्य] दे० 'दैतेय'। सम०—**अरिः** 1. देवता 2. विष्णु का विशेषण,—**देवः** 1. विष्णु का विशेषण 2. वायु,—**पतिः** हिरण्यकशिपु का विशेषण।

दैत्या [दैत्य+टाप्] 1. औषधि 2. मदिरा।

दैन (स्त्री—नी), **दैनंदिन** (स्त्री०—नी), **दैनिक** (स्त्री०—की) (वि०) [दिन+अण्, दिनं दिनं भवः दिनंदिन+अण्, दिन+ठञ्] आह्निक, प्रति दिन का,—भामि० १।१०३।

दैन्यम्,—न्यम् [दीन+अण्, ष्यञ् वा] 1. गरीबी, दरिद्रावस्था, दयनीय अवस्था, दुर्दशा—दरिद्राणां दैन्यम्—गंगा० २, इन्दोर्दैन्यं त्वदनुसरणक्लिष्टकान्ते बिभर्ति—मेघ० ७४ 2. कष्ट, खेद, विषाद, शोक, उत्साहहीनता 3. दुर्बलता 4. कमीनापन।

दैनिकी [दैनिक+ङीप्] प्रतिदिन की मजदूरी, दिनभर की उजरत, ध्याड़ी।

दैर्घम्,—र्घ्यम् [दीर्घ+अण्, ष्यञ् वा] लम्बाई, लम्बापन।

दैव (वि०) (स्त्री—वी) [देव+अण्] देवों से सम्बन्ध रखने वाला, दिव्य, स्वर्गीय—संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः—काव्या० १।३३, रघु० १।६० याज्ञ० २।२३५, भग० ४।२५, ९।१३, १६।३, मनु० ३।७५ 2. राजकीय,—वः (अर्थात् विवाहः) आठ प्रकार के विवाहों में से एक, (इसमें कन्या यज्ञ कराने वाले ऋत्विज् को ही दे दी जाती है)—यज्ञस्य ऋत्विजे दैवः—याज्ञ० १।५९, (विवाह के आठ प्रकारों के लिए दे० 'उद्वाह' या मनु० ३।२१),—वम् 1. भाग्य, नियति, भवितव्यता, क़िस्मत—दैवमविद्वांसः प्रमाणयति —मुद्रा० ३, विना पुरुषकारेण दैवमत्र न सिध्यति—'भगवान् उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता आप करते हैं,—दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या—पंच० १।३६१, दैवात् 1. संयोग से, भाग्यवश, अकस्मात् 2. देव, देवता 3. धार्मिक संस्कार, देवों को आहुति। सम०—अत्ययः दैवी उत्पात, आकस्मिक अनर्थ,—अधीन,—आयत्त (वि०) भाग्य पर निर्भर,—दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्,—वेणी० ३।३३,—अहोरात्रः देवताओं का एक दिन अर्थात् मनुष्यों का एक वर्ष,—उपहत (वि०) दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा —मुद्रा० ६।८,—कर्मन् (नपुं०) देवताओं को आहुति देना,—कोविद,—चिन्तकः,—ज्ञः ज्योतिषी, भविष्यवक्ता, याज्ञ० १।३१३, काम० ९।२५,—गतिः (स्त्री०) भाग्य का फेर,—मुक्ताजालं चिरपरिचितं त्याजितो दैवगत्या—मेघ० ९६,—तन्त्र (वि०) भाग्य पर आश्रित,—दीपः आँख,—दुर्विपाकः भाग्य की निष्ठुरता भाग्य का बुरा फेर या प्रतिकूलता—उत्तर० १।४०,—दोषः भाग्य की कठोरता,—पर (वि०) 1. भाग्य पर भरोसा करने वाला, भाग्यवादी 2. भाग्य में लिखा हुआ, प्रारब्ध—प्रश्नः भविष्यकथन, ज्योतिष,—युगम् 'देवों का एक युग' (१२००० दैववर्षों का एक युग माना जाता है, इस विषय में दे० मनु० १।७१ पर कुल्लू०),—योगः संयोग, इत्तिफ़ाक भाग्य, मौका —दैवयोगेन दैवयोगात् भाग्य से, अकस्मात्,—लेखकः भविष्यवक्ता, ज्योतिषी,—वशः,—शम् नियति का बल, भाग्य की अधीनता,—वाणी 1. आकाशवाणी 2. संस्कृत भाषा—तु० काव्या० १।३३ ऊपर उद्धृत,—हीन (वि०) भाग्यहीन, क़िस्मत का मारा, अभागा।

दैवकः [दैव+कन्] देवता।

दैवत (वि०) (स्त्री०—ती) [देवता+अण्] दिव्य,—तम् देव, देवता, दिव्यता—मृदं गां दैवतं विप्रं घृतं मधु चतुष्पदं, प्रदक्षिणानि कुर्वीत—मनु० ४।३९, १।५३, अमरु ३ 2. देवों का समूह, देवताओं का पूरा समूह 3. देवमूर्ति (यह शब्द पुं० भी बतलाया जाता है परन्तु विरल प्रयोग है, मम्मट इस बात को शब्द का 'अप्रयुक्तत्व' दोष बतलाते हैं—दे० 'अप्रयुक्त')।

दैवतस् (अव्य०) [दैव+तस्] संयोगवश, किस्मत से, भाग्य से।

दैवत्य (वि०) [देवता+ष्यञ्] किसी देवता को संबोधित, या मान्य—याज्ञ० १।९९, मनु० २।१८९, ४।१२४।

दैवलः,—लकः [देव+ला+क, देवल+अण्, दैवल+कन्] प्रेतपूजक, किसी दुष्ट आत्मा (भूत प्रेतादिक) का उपासक।

दैवारिपः [देवारीन् असुरान् पाति आश्रयदानेन दैवारिपः समुद्रः, तत्र भवः—देवारिप अण्] शंख।

दैवासुरम् [देवासुरस्य वैरम्—अण्] देवताओं और राक्षसों के मध्य रहने वाली स्वाभाविक शत्रुता।

दैविक (वि०) (स्त्री०—की) [देव+ठक्] देवताओं से सम्बन्ध रखने वाला, दिव्य, मनु० १।६५, ८।१०९,—कम् अवश्यंभावी घटना।

दैविन् (पुं०) [दैव+इनि] ज्योतिषी।

दैव्य (वि०) (स्त्री०—व्या,—व्यी) [देव+यञ्] दिव्य,—व्यम् किस्मत, भाग्य 2. दिव्य शक्ति।

दैशिक (वि०) (स्त्री०—की) [देश+ठञ्] 1. स्थानीय, प्रांतीय 2. राष्ट्रीय, समस्त देश से सम्बन्ध रखने वाला 3. स्थान सम्बन्धी 4. किसी स्थान से परिचित 5. अध्यापन करने वाला संकेतक, निदेशक, दिखलाने वाला, कः 1. अध्यापक, गुरु 2. पथ दर्शक।

दैष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [दिष्ट+ठक्] भाग्य में लिखा हुआ, प्रारब्ध,—कः भाग्यवादी।

दैहिक (वि०) (स्त्री०—की) [देह+ठक्] शारीरिक, देहसम्बन्धी।

दैह्य (वि०) [देहे भवः—ष्यञ्] शारीरिक,—ह्यः आत्मा (शरीरगत)।

दो (दिवा० पर०—द्यति, दित—प्रेर० दापयति, इच्छा० दित्सति) 1. काटना, बांटना 2. फसल काटना, अनाज काटना, अव—,काट डालना—यदन्यास्मिन्यज्ञे स्रुच्यवद्यति—शत०।

दोग्धृ (पुं०) दुह्+तृच्] 1. ग्वाल, दूध दोहने वाला, दुधिया—मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे—कु० १।२ 2. बछड़ा 3. चारण या भाट (वह भाड़े का कवि जो पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कविता की रचना करता है) 4. जो स्वार्थवश कोई कार्य करता है (अपने आप को लाभ पहुंचाने के लिए)।

दोग्ध्री [दोग्धृ+ङीप्] 1. दुधारु गाय 2. दूध पिलाने वाली गाय।

दोधः [दुह्+अच्, नि०] बछड़ा।
दोरः [=डोर, नि० डस्य दः] रस्सी, रज्जु।
दोलः [दुल्+घञ्] 1. झूलना, डोलना, (घड़ी के लंगर की भांति इधर-उधर) हिलना 2. हिंडोला, डोली 3. फाल्गुनपूर्णिमा के दिन होने वाला उत्सव जब कि बालकृष्ण की मूर्तियों को हिंडोले में झुलाया जाता है।
दोला, दोलिका [दोल+टाप्, दोल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. डोली, पालकी 2. हिंडोला, पालना (आलं० भी) —आसीत्स दोलाचलचित्तवृत्तिः—रघु० १४।३४, ९।४६, १९।४४, संदेहदोलामारोप्यते—का० २०७, २४६ 3. झूलना, घट-बढ़ होना 4. संदेह अनिश्चितता। सम०—**अधिरूढ,—आरूढ** (वि०) (शा०) झूले पर सवार (आलं०) अनिश्चित, अस्थिर, चंचल—**युद्धम्** सफलता की अनिश्चितता, वह युद्ध जिसमें हार-जीत का कुछ निश्चय न हो।
दोलायते (ना० धा० आ०) 1. झूलना, इधर-उधर डोलना, इधर-उधर हिलना, घटबढ़ होना, आगे-पीछे होना (आलं० भी) 2. चंचल या बेचैन होना।
दोषः [दुष्+घञ्] (क) त्रुटि, धब्बा, निन्दा, कमी, लांछन, लचर दलील—पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्—भर्तृ० २।९३, नात्र कुलपतिर्दोषं ग्रहीष्यति—श० ३, कुलपति इस बात को दोष नहीं मानेंगे —सा पुनरुक्तदोषा—रघु० १४।९ (ख) भूल (अशुद्धि, गलती 2. जुर्म, पाप, कसूर अपराध—जायामदोषामुत संत्यजामि—रघु० १४।३४, मनु० ८।२४५, याज्ञ० ३।७९ 3. अनिष्टकारी गुण, बुराई, क्षतिकारक प्रकृति या गुण—जैसा कि 'आहार दोष' में 4. हानि, अनिष्ट, भय, क्षति—बहुदोषा हि शर्वरी—मृच्छ० १।५८, को दोषः—(इसमें क्या हानि है) 5. बुरा फल, अनिष्टकारी फल, बाधक प्रभाव,—तत्किमयमातपदोषः स्यात्—श० ३, अदाता वंशदोषेण कर्मदोषाद् दरिद्रता—चाण० ४८, मनु० १०।१४ 6. विकृत व्याधि, रोग 7. शरीर के तीनों दोषों का कुपित होना, त्रिदोषकोप 8. (न्या० में) परिभाषा का दोष (अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असंभव) 9. (अलं० में) रचना का एक दोष (पददोष, पदांशदोष, वाक्यदोष, रसदोष, और अर्थदोष जिनका वर्णन काव्यप्रकाश के सातवें उल्लास में किया गया है) 10. बछड़ा 11. निराकरण। सम०—**आरोपः** दोष लगाना, इलजाम लगाना,—**एकदृश्** (वि०) दोष ढूंढने वाला, दोषदर्शी छिद्रान्वेषी,—**कर,—कृत्** (वि०) बुराई करने वाला, अनिष्टकर,—**ग्रस्त** (वि०) 1. सिद्धदोष, अपराधी 2. दोषपूर्ण, त्रुटिपूर्ण,—**ग्राहिन्** (वि०) 1. विद्वेषी, दुर्भावनापूर्ण 2. छिद्रान्वेषी,—**ज्ञ** (वि०) दोषों का ज्ञाता (ज्ञः) 1. बुद्धिमान या विद्वान् पुरुष—रघु० १।९३ 2. वैद्य,—**त्रयम्** शरीर के तीन दोष (अर्थात् वात, पित्त और कफ),—**दृष्टि** (वि०) दोषदर्शी,—**प्रसङ्गः** कलंक लगाना, बदनामी, निन्दा,—**भाज्** (वि०) दोषी, अपराधी, सदोष।
दोषणम् [दुष्+णिच्+ल्युट्] इलजाम लगाना, दोष मढ़ना।
दोषन् (पुं०, नपुं०) (इस शब्द के सर्वनामस्थान (पहले पांच वचन, में रूप नहीं होते) भुजा, बाजू।
दोषल (वि०) [दोष+लच] दोषी, सदोष, भ्रष्ट।
दोषस् (स्त्री०) [दुष्+असुन्] रात (नपुं०) अंधेरा।
दोषा (अव्य०) [दुष्यते अन्धकारेण—दुष्+घञ्+टाप्] रात को,—दोषाऽपि नूनमहिमांशुरसौ किलेति—शि० ४।४६, ६२, (स्त्री०) 1. भुजा 2. रात्रि का अंधेरा, रात—घर्मकालदिवस इव क्षपितदोषः—का० ३७, (यहाँ शब्द का अर्थ 'दोष या पाप' भी है)। सम०—**आस्यः,—तिलकः** दीपक, लैम्प,—**करः** चांद।
दोषातन (वि०) (स्त्री०—नी) [दोषा+ट्यु, तुट्] रात को होने वाला, रात्रि विषयक—रघु० १३।७६।
दोषिक (वि०) (स्त्री०—की) [दोष+ठन्] दोषी, बुरा, सदोष,—**कः** रुग्णता, रोग।
दोषिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [दुष्+णिनि] 1. अपवित्र, दूषित, कलुषित 2. अपराधी, सदोष, मुजरिम, दुष्ट, बुरा।
दोस् (पुं०, नपुं०) [दम्यते अनेन दम्+डोसि] (कर्म० द्वि० व० के पश्चात् इस शब्द को विकल्प से 'दोषन्' आदेश हो जाता है) 1. अग्रभुजा, भुजा—तमुपाद्रवदुद्यम्य दक्षिणं दोर्निशाचरः—रघु० १५।२३, हेमपात्रगतं दोर्म्यामादधानं पयश्चरुम्—१०।५१, कु० ३।७६ 2. चाप का वह भाग जो त्रिज्या का निर्माण करता है। सम०—**गडु** (वि०) (दोर्गडु) टेढ़ी भुजाओं वाला,—**ग्रह**(दोर्ग्रह) (वि०) सबल, शक्तिशाली, (**हः**) भुजा में रहने वाली पीड़ा,—**ज्या** (दोर्ज्या) आधार की लंबरेखा.—**दण्डः** (दोर्दण्डः) डंडे जैसी भुजा, मजबूत भुजा—महावी० ७।८, भामि० १।१२८,—**मूलम्** (दोर्मूलम्) कांख, बगल,—**युद्धम्** (दोर्युद्धम्) द्वन्द्वयुद्ध, कुश्ती—महावी० ५।३७,—**शालिन्** (वि०) (दोःशालिन्) प्रबल भुजाओं वाला, रणोत्सुक, वीर,—वेणी० ३।३२,—**शिखरम्** (दोःशिखरम्) कंधा,—**सहस्रभृत्** (दोःसहस्रभृत्) (पुं०) 1. बाणासुर का विशेषण 2. सहस्रार्जुन का विशेषण,—**स्थः** (दोस्थः) 1. सेवक 2. सेवा 3. खिलाड़ी 4. खेल, क्रीडा।
दोहः [दुह्+घञ्] 1. दोहना—आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन—सिद्धा०, कु० १।२, रघु० २।२२, १७।१९ 2. दूध 3. दूध की बाल्टी। सम०—**अपनयः,—अम्** दूध।

दोहदः, --दम् [दोहमाकर्ष ददाति—दा+क] गर्भवती स्त्री की प्रबल रुचि - प्रजावती दोहदशंसिनी ते—रघु० १४।४५, उपेत्य का दोहददुःखशीलतां यदेव वव्रे तदपश्यदाहृतम्—३।६, ७. 2. गर्भावस्था 3. कली आने के समय पौधों की इच्छा (उदाहरणतः अशोक चाहता है कि तरुणियाँ उसे ठोकर मारें, बकुल चाहता है कि उसके ऊपर मदिरा के कुल्ले किये जायँ) —मञ्जीरुहा दोहदसेकशक्तेराकालिकं कोरकमुद्गिरन्ति— नै० ३।२१, रघु० ८।६२, मेघ० ७८, दे० प्रियंगु 4. उत्कट अभिलाष–प्रवर्तितमहासमरदोहदाः नरपतयः —वेणी० ४ 5. सामान्यतः कामना, इच्छा। सम० —**लक्षणम्** 1. भ्रूण, गर्भ (दौर्हृदलक्षण) 2. जीवन की एक अवस्था से दूसरी में प्रवेश।

दोहदवती [दोहद+मतुप्+ङीप्, वत्वम्] गर्भवती स्त्री जिसे किसी वस्तु की इच्छा हो।

दोहन (वि०) [दुह्+ल्युट्] 1. दोहने वाला 2. अभीष्ट पदार्थों को देनेवाला, —**नम्** 1. दोहना 2. दूध की बाल्टी,—**नी** दूध की बाल्टी।

दोहलः [दोह+ला+क] दे० दोहद, वृथा वहसि दोहलम् (अने० पा०) ललितकामिसाधारणम्—मालवि० ३।१६।

दोहली [दोहल+ङीप्] अशोकवृक्ष।

दोह्य (वि०) [दुह्+ण्यत्] दुहने योग्य, दुहे जाने योग्य,—**ह्यम्** दूध।

दौः शील्यम् [दुःशील+ष्यञ्] बुरा स्वभाव, दुष्टता, दुर्भावना।

दौः साधिकः [दुःसाध+ठक्] 1. द्वारपाल, ड्योढ़ीवान 2. गाँव का अधीक्षक।

दौक (गू) लः [दुकूल+अण्] रेशमी आवरण से ढका हुआ रथ, —**लम्** बढ़िया रेशमी वस्त्र।

दौत्यम् [दूत+ष्यञ्] संदेश, दूत का कार्य।

दौरात्म्यम् [दुरात्मन्+ष्यञ्] 1. दुष्टता, दुष्ट स्वभाव, दुर्भावना रघु० १५।७२ 2. दुर्जनता—गुणानामेव दौरात्म्याद् धुरि धुर्यो नियुज्यते—काव्य० १०।

दौर्गत्यम् [दुर्गत+ष्यञ्] 1. गरीबी, कमी, अभाव— पंच० २।९२ 2. दरिद्रता, दुःख।

दौर्गन्ध्यम् [दुर्गन्ध+ष्यञ्] बुरी या अरुचिकर गंध।

दौर्जन्यम् [दुर्जन+ष्यञ्] दुष्टता, दुर्भावना।

दौर्जीवित्यम् [दुर्जीवित+ष्यञ्] कष्टमय जीवन, विपद्-ग्रस्त जीवन।

दौर्बल्यम् [दुर्बल+ष्यञ्] नपुंसकता, दुर्बलता, कमजोरी, निर्बलता—मनु० ८।१७१, भग० २।३।

दौर्भागिनेयः [दुर्भगा+ढक्, इनङ्] अभागी स्त्री (जिसे उसका पति न चाहे) का पुत्र।

दौर्भाग्यम् [दुर्भग+ष्यञ् उभयपदवृद्धिः] दुर्भाग्य, बदकिस्मती,—याज्ञ० १।२८३।

दौर्भ्रात्रम् [दुर्भ्रातृ+अण्] भाइयों का आपसी कलह।

दौर्मनस्यम् [दुर्मनस्+ष्यञ्] 1. बुरा स्वभाव, 2. मानसिक पीड़ा, कष्ट, खेद, विषाद 3. निराशा।

दौर्मन्त्र्यम् [दुर्मन्त्र+ष्यञ्] अनिष्टकारी उपदेश, बुरी सलाह—दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति—भर्तृ० २।४२।

दौर्वचस्यम् [दुर्वचस्+ष्यञ्] दुर्वचन, अपभाषण।

दौर्हृदम्, दौहृदम् [दुर्हृद्+अण्] 1. मन की दुरवस्था, शत्रुता (इस अर्थ में 'दौर्हृद' भी) 2. गर्भावस्था —सुदक्षिणा दौर्हृदलक्षणं दधौ—रघु० ३।१ 3. गर्भवती की प्रबल लालसा 4. इच्छा।

दौर्हृदयम् [दुर्हृदय+अण्] मन की दुरवस्था, शत्रुता।

दौल्मिः [दुलम+इञ्] इन्द्र का विशेषण।

दौवारिकः (स्त्री०—की) [द्वार+ठक्, औ आगम] द्वारपाल, पहरेदार—रघु० ६।५९।

दौश्चर्यम् [दुश्चर+ष्यञ्] 1. दुराचरण, दुष्टता, दुष्कृत्य।

दौष्कुल (वि०) (स्त्री०—ली), **दौष्कुलेय** (वि०) (स्त्री० —यी) [दुष्कुलं अस्य ब० स०, स्वार्थे अण्, दुष्टं कुलम् प्रा० स०—दुष्कुल+ढक्] नीच कुल में उत्पन्न, नीच घराने में उत्पन्न।

दौष्ठवम् [दुः+स्था+कु=दुष्ठु तस्य भावः—अण्] बुराई, दुष्टता।

दौष्यं (ष्म) न्तिः [दुष्य (ष्म) न्त+इञ्] दुष्यंत का पुत्र—दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य—श० ४।२०।

दौहित्रः [दुहितृ+अञ्] दोहता, पुत्री का पुत्र—मनु० ३।१४८ ९।१३१,—**त्रम्** तिल।

दौहित्रायणः [दौहित्र+फक्] दोहते का पुत्र।

दौहित्री [दौहित्र+ङीप्] दोहती, पुत्री की पुत्री।

दौहृदिनी [दौहृद्+इनि+ङीप्] गर्भवती स्त्री।

द्यु (अदा० पर०—द्यौति) अग्रसर होना, मुकाबला करना हमला करना, आक्रमण करना—भट्टि० ६।११८, १४।१०४।

द्यु (नपुं०) [दिव्+उन्, कित्] 1. दिन 2. आकाश 3. उजाला 4. स्वर्ग (—पुं०) आग (पद अर्थात् व्यंजनादि विभक्तियों के आने पर 'दिव्' (स्त्री०) के स्थान में 'द्यु' आदेश होता है, या समासों में द्यु का प्रयोग होता है)। सम०—**गः** पक्षी, —**चरः** 1. ग्रह, 2. पक्षी, —**जयः** स्वर्ग प्राप्त करना, —**धुनिः** (स्त्री०), —**नदी** स्वर्गंगा, —**निवासः** देवता,— सुरं शोकाग्निनाऽगात् द्युनिवासभूयम्—भट्टि० २।२१, —**पतिः** 1. सूर्य 2. इन्द्र का विशेषण,—**मणिः** सूर्य, —**लोकः** स्वर्ग, —**षद्**, —**सद्** (पुं०) 1. सुर, देवता,—शि० १।४३ 2. ग्रह,—**सरित्** (स्त्री०) गंगा।

द्युकः [द्यु+कन्] उल्लू। सम०—**अरिः** कौवा।

द्युत् (भ्वा० आ०—द्योतते, द्युतित या द्योतित—इच्छा० दिद्युतिषते, दिद्योतिषते) चमकना, उजला होना, जगमगाना—दिद्युते च यथा रविः -भट्टि० १४।१०४, ६।२६, ७।१०७, ८।८९, प्रेर० द्योतयति 1. प्रकाश करना, देदीप्यमान करना—भट्टि० ८।४६ कु० ६।४ 2. स्पष्ट करना, व्याख्या करना, समझाना 3. अभिव्यक्त करना, अर्थ प्रकट करना, अभि—, प्रेर०—प्रकाश करना—रघु० ६।३४, उद्—, प्रकाश करना, दीपक जलाना, सजाना, सुभूषित करना—रघु० १०। ८०, वि—,चमकना, उज्ज्वल होना—व्यद्योतिष्ट सभावेद्यामसौ नरशिखित्रयी—शि० २।३, १।२०।

द्युतिः (स्त्री०) [द्युत्+इन्] 1. दीप्ति, उजाला, कान्ति, सौन्दर्य—काचः कांञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम्—हि० प्र० ४१, मा० २।१०, रघु० ३।६४ 2. प्रकाश, प्रकाश की किरण—भर्तृ० १।६१ 3. महिमा, गौरव मनु० १।८७।

द्युतित (वि०) [द्युत्+क्त] प्रकाशित, चमकदार, उजाला।

द्युम्नम् [द्यु+म्ना+क] 1. आभा, यश, कान्ति 2. बल, सामर्थ्य, शक्ति 3. वैभव, सम्पत्ति 4. प्रोत्साहन।

द्युवन् (पुं०) [द्यु+कनिन्] सूर्य।

द्यूतः,—तम् [दिव्+क्त, ऊठ्] 1. खेलना, जुआ खेलना, पासे से खेलना—द्यूतं हि नाम पुरुषस्यासिंहासनं राज्यम्—मृच्छ० २, द्रव्यं लब्धं द्यूतेनैव, दारा मित्रं द्यूतेनैव, दत्तं भुक्तं द्यूतेनैव, सर्वं नष्टं द्यूतेनैव—२।७, अप्राणिभिर्यत्क्रियते तल्लोके द्यूतमुच्यते—मनु० ९। २२३ 2. जीता हुआ पुरस्कार। सम०—**अधिकारिन्** (पुं०) द्यूतगृह का स्वामी, जूआ खिलाने वाला,—**करः** —**कृत्** जूआ खेलने वाला, जुआरी—अयं द्यूतकरः सभिकेन खलीक्रियते—मृच्छ० २,—**कारः,—कारकः** 1. जूआघर का रखने वाला 2. जुआरी,—**क्रीड़ा** पासों से खेलना, जूआ खेलना,—**पूर्णिमा,—पौर्णिमा** आश्विन मास की पूर्णिमा, (इस समय जन साधारण लक्ष्मी देवी के सम्मान में खेलों का उत्सव मनाते हैं),—**बीजम्** कौड़ी (खेलने के काम आने वाली),—**वृत्तिः** 1. पेशेवर जुआरी 2. जूआघर का रखवाला,—**सभा,—समाजः** 1. जूआखाना 2. जूआरियों का समूह।

द्यै (भ्वा० पर० द्यायति) 1. घृणा करना, तिरस्कार युक्त व्यवहार करना 2. विरूप करना।

द्यो (स्त्री०) [कर्तृ० ए० व० द्यौः] [द्युत्+डो] स्वर्ग, वैकुण्ठ, आकाश—द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च—पंच० १।१८२, श० २।१४, (द्वन्द्व समास में 'द्यो' को बदल कर 'द्यावा' हो जाता है—उदा० द्यावापृथिव्यौ, द्यावा भूमी (—द्युलोक और भूलोक)। सम०—**भूमिः** पक्षी, —**सद्** (द्योषद्) देवता।

द्योतः [द्युत्+घञ्] 1. प्रकाश, ज्योति, उजाला जैसा कि 'खद्योत' में 2. धूप 3. गर्मी।

द्योतक (वि०) [द्युत्+ण्वुल्] 1. चमकने वाला 2. प्रकाशमय 3. व्याख्या करने वाला, व्यक्त करने वाला, बतलाने वाला।

द्योतिस् (नपुं०) [द्युत्+इसुन्] 1. प्रकाश, उजाला, चमक 2. तारा। सम०—**इङ्गणः** (द्योतिरिङ्गणः) जुगनू।

द्रङ्क्षणम् [द्राङ्क्षन्ति अनेन—द्राङ्क्ष्—ल्युट् पृषो० ह्रस्वः] भार का माप या बट्टा, एक तोला।

द्रढयति (ना० धा० पर०) 1. दृढ़ करना, जकड़ना, कसना (शा०) यथा—जटाजूट ग्रन्थि द्रढयति 2. समर्थन करना, पुष्ट करना, अनुमोदन करना—निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धि द्रढयति—उत्तर० २।२७, विशुद्धेरुत्कर्षस्त्वयि तु मम भक्ति द्रढयति—४।११।

द्रढिमन् (पुं०) [दृढ+इमनिच्] 1. कसाव, दृढ़ता—बधान द्रागेव द्रढिमरमणीयं परिकरम्—गंगा० ४७ 2. पुष्टि, समर्थन—उक्तस्यार्थस्य द्रढिम्ने—शंकर 3. प्रकथन, पुष्टीकरण 4. गुरुता।

द्रप्सम् ('द्रप्स्यम्') [दृप्यन्ति अनेन दृप्+स, र् आदेशः] जमे हुए दूध का घोल, पतला दही।

द्रम् (भ्वा० पर० --द्रमति) इधर-उधर जाना, दौड़ना, इधर उधर भागना—भट्टि० १४।७०।

द्रम्मम् [ग्रीक शब्द से व्युत्पन्न] 'द्रम' नाम एक प्रकार का सिक्का।

द्रव (वि०) [द्रु+अप्] 1. (घोड़े की भांति) दौड़ने वाला 2. चूने वाला, रिसने वाला, गीला, टपकने वाला —आक्षिप्य काचिद् द्रवरागमेव (पादम्)—रघु० ७।७ 3. बहने वाला, पनीला 4. तरल (विप० कठिन) —कु० २।११ 5. पिघला हुआ, तरल बनाया हुआ, —**वः** 1. जाना, इधर-उधर घूमना, गमन 2. गिरना, टपकना, रिसना, निःस्रवण 3. भगदड़, प्रत्यावर्तन 4. खेल, विनोद, क्रीडा 5. तरलता, द्रवीकरण 6. तरल पदार्थ, प्रवाही 7. रस, सत 8. काढ़ा 9. चाल, वेग (**द्रवीकृ**—पिघलाना, तरल करना. **द्रवीभू**—पिघलना, पसीजना जैसे दया से—द्रवीभवति मे मनः, महावी० ७।३४, द्रवीभूतं प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्क्षण इव—उत्तर० ३।१३, द्रवीभूतं मन्ये पतति जलरूपेण गगनम्—मृच्छ० ५।२५,)। सम०—**आधारः** 1. छोटा वर्तन या पात्र 2. चुल्लू,—**जः** राब,—**द्रव्यम** तरल पदार्थ,—**रसा** 1. लाख 2. गोंद।

द्रवन्ती [द्रु+शतृ+ङीप्] नदी, दरिया।

द्रविडः (पुं०) 1. दक्षिण के घाट पर स्थित एक देश—अस्ति द्रविडेषु काञ्ची नाम नगरी—दश० १३० 2. उस देश का निवासी —जरद्द्रविडधार्मिकस्येच्छया निसृष्टः— का० २२९ 3. एक नीच जाति—तु० मनु० १०।२२।

द्रविणम् [द्रु+इनन्] 1. दौलतमन्दी, धन, संपत्ति, द्रव्य —वेणी० ३।२०, भामि० ४।२९ 2. सोना—रघु० ४।७० 3. सामर्थ्य, शक्ति 4. वीरता, विक्रम 5. बात, सामग्री सामान । सम०—अधिपतिः,—ईश्वरः कुबेर का विशेषण ।

द्रव्यम् [द्रु+यत्] 1. वस्तु, सामग्री, पदार्थ, सामान 2. अवयव, उपादान 3. सामग्री 4. उपयुक्त पात्र (शिक्षादि ग्रहण करने के लिए)—मुद्रा० ७।१४, दे० 'अद्रव्य' भी 5. मूल तत्त्व, गुणों का आधार, वैशेषिकों के सात प्रवर्गों में से एक (द्रव्य नौ हैं —पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि) 6. स्वायत्तीकृत कोई पदार्थ, दौलत, सामग्री, संपत्ति, धन—तत्तस्य किमपि द्रव्यं यो हि यस्य प्रियो जनः—उत्तर० २।१९ 7. औषधि, दवाई 8. लज्जा, शालीनता 9. कांसा 10. मदिरा 11. शर्त, दाँव । सम०—अर्जनम्,—वृद्धिः,—सिद्धिः (स्त्री०) धन की अवाप्ति,—ओघः सम्पन्नता, धन की बहुतायत,—परिग्रहः संपत्ति या धन का संचय,—प्रकृतिः (स्त्री०) माया का स्वभाव,—संस्कारः यज्ञ के पदार्थों का शुद्धीकरण,—वाचकम् संज्ञा, सत्तासूचक ।

द्रव्यवत् (वि०) [द्रव्य+मतुप्] 1. धनी दौलतमंद 2. सामग्री में अन्तर्निहित ।

द्रष्टव्य (सं० कृ०, वि०) 1. देखे जाने के योग्य, जो दिखलाई दे सके 2. प्रत्यक्षज्ञानयोग्य 3. देखने, अनुसंधान करने या परीक्षा करने के योग्य 4. प्रिय, दर्शनीय, सुन्दर—त्वया द्रष्टव्यानां परं दृष्टम्—श० २, भर्तृ० १।८ ।

द्रष्टृ (पुं०) [दृश्+तृच्] 1. दर्शक, मानसिक रूप से देखने वाला, जैसाकि 'ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः' में 2. न्यायाधीश ।

द्रहः [=ह्रद पृषो० साधुः] गहरी झील ।

द्रा (अदा० दिवा०—द्राति, द्रायति) 1. सोना 2. दौड़ना, शीघ्रता करना 3. उड़ना, भाग जाना, नि—, नींद आना, सोना, सो जाना —अथावलंब्य क्षणमेकपादिकां तदा निदद्रावुपपल्वलं खगः—नै० १।२१, नायं ते समयो रहस्यमधुना निद्राति नाथः—भर्तृ० ३।९७, भामि० १।४१, भट्टि० १०।७४, शा० ४।१९, वि०—, पलायन करना, भाग जाना, उड़ना ।

द्राक् (अव्य०) [द्रा+कु] जल्दी से, तुरन्त, उसी समय तत्काल । सम०—भृतकम् कुएँ से अभी २ निकाला हुआ जल ।

द्राक्षा [द्राङ्क्ष्+अ+टाप्, नि० नलोपः] अंगूर, दाख (अंगूर की बेल या फल) द्राक्षे द्रक्ष्यंति के त्वाम्—गीत० १२, रघु० ४।६५, भामि० १।१४, ४।३९ । सम०—रसः अंगूर का रस, मदिरा ।

द्राघयति (ना० धा० पर०) 1. लम्बा करना, फैलाना, विस्तार करना 2. बढ़ाना, गाढ़ा करना—द्राघयंति हि मे शोकं स्मर्यमाणा गुणास्तव—भट्टि० १८।३३ 3. ठहरना, देर करना ।

द्राघिमन् (पुं०) [दीर्घ+इमनिच्, द्राघ् आदेशः] 1. लम्बाई 2. अक्षांश रेखा का दर्जा ।

द्राघिष्ठ (वि०) [अतिशयेन दीर्घः—दीर्घ+इष्ठन्, द्राघ् आदेशः] 1. सबसे अधिक लम्बा 2. अत्यन्त लम्बा, ('दीर्घ' की उ० अ०) ।

द्राघीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [दीर्घ+ईयसुन्, द्राघ् आदेशः] अपेक्षाकृत लम्बा, बहुत लम्बा ('दीर्घ' का म० अ०) ।

द्राण (वि०) [द्रा+क्त, नत्वं, णत्वम्] 1. उड़ा हुआ, भागा हुआ, 2. सोता हुआ, निद्रालु,—णम् 1. दौड़ जाना, भगदड़, प्रत्यावर्तन 2. निद्रा ।

द्रापः [द्रा+णिच्+अच्, पुक्] 1. कीचड़, दलदल 2. स्वर्ग, आकाश 3. मूर्ख, जड 4. शिव का विशेषण, छोटा शंख ।

द्रामिलः [द्रमिल+अण्] चाणक्य ।

द्रावः [द्रु+घञ्] 1. भगदड़, प्रत्यावर्तन 2. चाल, 3. दौड़ना, बढ़ाव 4. गर्मी 5. तरलीकरण, पिघलना ।

द्रावकः [द्रु+ण्वुल्] 1. पिघलाने वाला पदार्थ 2. अयस्कान्त मणि चुम्बक 3. चन्द्रकांत मणि 4. चोर 5. बुद्धिमान् पुरुष, परिहास चतुर, ठिठोलिया, विदूषक 6. लम्पट, व्यभिचारी,—कम् मोम ।

द्रावणम् [द्रु+णिच्+ल्युट्] 1. भाग जाना 2. पिघलना, गलना 3. अर्क निकालना 4. रीठा ।

द्राविडः [द्रविड+अण्] 1. द्रविड देश निवासी, द्रविड का 2. पंच द्रविड (द्राविड, कर्णाट, गुर्जर, महाराष्ट्र, और तैलंग) ब्राह्मणों में एक,—डाः (ब० व०) द्रविड देश तथा उसके निवासी,—डी इलायची ।

द्राविडकः [द्राविड+कन्] आमाहल्दी,—कम् काला नमक ।

द्रु i (भ्वा० पर० द्रवति, द्रुत, इच्छा० दुद्रूषति) 1 दौड़ना, बहना, भाग जाना, प्रत्यावर्तन करना (प्रायः कर्म० के साथ)—यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखं द्रवन्ति—भग० ११।२८, रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति ३६, द्रुतं द्रवत कौरवाः—महा० 2. धावा बोलना, हमला करना, सत्वर आक्रमण करना—भट्टि० ९।५९ 3. तरल होना, घुलना, पिघलना, रिसना (आलं० भी)—द्रवति च हिमरश्मावुद्गते चंद्रकान्तः—मा० १।२८, द्रवति हृदयमेतत्—वेणी० ५।२१, शि० ९।९, भट्टि० २।१२ 4. जाना, हिलना-डुलना । प्रेर० द्रावयति—ते 1. भगा देना, उल्टे पाँव भगा देना 2. पिघलना, गलना,—अनु—,

1. पीछे भागना, अनुसरण करना, साथ जाना—रघु० ३।३८, १२।६७, १६।२५, शि० १।५२ 2. पीछा करना, पैरवी करना, अभि—, 1. हमला करना, धावा बोलना, (शत्रु के सामने) जाना—गजा इवान्योन्यमभिद्रवन्तः—मृच्छ० ५।२१ 2. आ पड़ना 3. ऊपर से चले जाना, उप—, 1. हमला करना, आक्रमण करना—रघु० १५।२३ 2. की ओर भागना, प्र—, भाग जाना, प्रत्यावर्तन, दौड़ जाना (कर्म० या अपा० के साथ)—रणात्प्रद्रवन्ति बलानि —वेणी० ४, भट्टि० १५।७९, प्रति—, भागना, उड़ना, चले जाना—भट्टि० ६।१७, वि—, भागना, भाग जाना, प्रत्यावर्तन, प्रेर०—भगा देना, विदका देना, तितर बितर कर देना—भामि० १।५२ मा० ३।

ii (स्वा० पर० द्रुणोति) 1. क्षति पहुँचाना, अनिष्ट करना—तं द्रुद्रावाद्रिणा कपिः—भट्टि० १४।८१, ८५ 2. जाना 3. पछताना।

द्रु (पुं० नपुं०) [द्रु+डु] 1. लकड़ी 2. लकड़ी का बना उपकरण (पुं०) 1. वृक्ष—मनु० ७।१३१ 2. शाखा। सम०—किलिमं देवदारु वृक्ष,— घणः 1. मोगरी, गदा या थापी 2. बढ़ई की हथौड़ी जैसा लोहे का उपकरण 3. कुठार, कुल्हाड़ी 4. ब्रह्मा का विशेषण, -घ्नी कुल्हाड़ी, —नखः कांटा, — नस (णस) (वि०) बड़ी नाक वाला, —न(ण)हः म्यान, —सल्लकः एक वृक्ष—पियाल।

द्रुणः [द्रुण्+क] 1. बिच्छू 2. मधुमक्खी 3. बदमाश —णम् 1. धनुष 2. तलवार। सम०—हः असिकोप, म्यान।

द्रुणा [द्रुण+टाप्] धनुष की डोरी।

द्रुणिः, —णी (स्त्री०) [द्रुण्+इन्, द्रुणि+ङीष्] 1. एक छोटा कछुवा या कछुवी 2. डोल 3. कानखजूरा।

द्रुत (भू० क० कृ०) [द्रु+क्त] 1. आशुगामी, फुर्तीला, द्रुतगामी 2. बहा हुआ, भागा हुआ, पलायित 3. पिघला हुआ, तरल, घुला हुआ, दे० 'द्रु', —तः 1. बिच्छू 2. वृक्ष 3. बिल्ली, —तम् (प्रत्य०) जल्दी से, फुर्ती से, वेग से, तुरन्त। सम०—पद (वि०) आशुगामी,—विलम्बितम् एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट।

द्रुतिः (स्त्री०) [द्रु+क्तिन्] 1. पिघलना, घुलना, 2. चले जाना, भाग जाना।

द्रुपदः (पुं०) पांचाल देश के एक राजा का नाम (द्रुपद के पिता का नाम पृषत था, द्रुपद और द्रोण दोनों ने द्रोण के पिता भरद्वाज से धनुर्विद्या सीखी। जब द्रुपद को राजगद्दी मिल गई तो एक बार आर्थिक कठिनाइयों में ग्रस्त होने के कारण द्रोण अपनी छात्रावस्था की मित्रता के आधार पर द्रुपद के पास गया, परन्तु उसने घमंड के कारण द्रोण का अपमान किया। इस कारण द्रोण ने उसे अपने शिष्यों (पाण्डव) द्वारा पकड़वा कर बन्दी बनाया—फिर उसका आधा राज्य उसे वापस कर दिया। परन्तु यह हार द्रुपद के मन में सदैव करकती रही, और एक ऐसा पुत्र पाने की इच्छा से जो उस हार का बदला ले सके, उसने एक यज्ञ किया। उस यज्ञाग्नि से धृष्टद्युम्न नामक पुत्र तथा द्रौपदी नाम की पुत्री ने जन्म लिया। बाद में इसी पुत्र ने धोखे से द्रोण का सिर काट लिया, दे० 'द्रोण' भी)।

द्रुमः [द्रुः शाखाऽस्त्यस्य—मः] 1. वृक्ष,—यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे—उत्तर० ३।८ 2. पारिजात वृक्ष। सम०—अरिः हाथी,—आमयः लाख, गोंद, —आश्रयः छिपकली,—ईश्वरः 1. ताड़ का वृक्ष 2. चन्द्रमा 3. परिजात वृक्ष,—उत्पलः कर्णिकार वृक्ष, —नखः,—नरः कांटा,—व्याधिः लाख, गोंद,—श्रेष्ठः ताड़ का वृक्ष,—षण्डम् वृक्षोद्यान, पेड़ों का समह।

द्रुमिणी [द्रुम+इनि+ङीप्] वृक्षों का समूह।

द्रुवयः [द्रु+वय] माप, मान।

द्रुह् (दिवा० पर०—द्रुह्यति, द्रुग्ध) 1. ईर्ष्या द्वेष करना, क्षति या द्वेष पहुँचाने की चेष्टा करना, द्वेषपूर्वक बदला लेने की इच्छा से षड्यन्त्र रचना (सम्प्र०)—यान्वेति मां द्रुह्यति मह्यमेव सात्रेत्युपालम्भि तयालिवर्गः—नै० ३।७, भट्टि० ४।३९, अभि—, क्षति पहुँचाना, हमला करने का प्रयत्न करना, षड्यन्त्र रचना (कर्म० के साथ)—मच्छरीरमभिद्रोग्धुं यतते—मुद्रा० १।

द्रुह् (वि०) [द्रुह्+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयोग) (कर्तृ० ए० व०—ध्रुक्—ग्, ध्रुट्—ड) क्षति पहुँचाने वाला, चोट पहुँचाने वाला, षड्यन्त्र कारी, शत्रुवत् व्यवहार करने वाली—शि० २।३५, मनु० ४।९०, (स्त्री०)—क्षति, हानि।

द्रुहः [द्रुह्+क] 1. पुत्र 2. सरोवर, झील।

द्रुहणः, द्रुहिणः [द्रुं संसारगति हन्ति—द्रु+हन्+अच्, द्रुह्यति दुष्टेभ्यः, द्रुह्+इनन्, णत्वम्] ब्रह्मा या शिव का नाम।

द्रूः [द्रु+क्विप्, दीर्घः] सोना।

द्रूघणः [=द्रुघणः, पृषो० साधुः] हथौड़ा, लोहे का हथौड़ा, दे० 'द्रुघण'।

द्रूणः [=द्रुण, पृषो० साधु०] बिच्छू।

द्रोणः [द्रुण+अच्, या द्रु+न] 1. चार सौ बाँस लम्बी झील, या सरोवर 2. बादल (विशेष प्रकार का बादल) जल से भरा बादल (जिसमें से वर्षा इस प्रकार निकले जैसे डोल में से पानी)—कोऽयमेवंविधे काले कालपाशस्थिते मयि, अनावृष्टिहते शस्ये द्रोणमेघ इवोदितः,

मृच्छ० १०।२६ 3. पहाड़ी कौवा, मुरदारखोर कौवा 4. बिच्छू० 5. वृक्ष 6. सफेद फूलों वाला वृक्ष 7. कौरव पाण्डवों का गुरु (द्रोण भरद्वाज ऋषि का पुत्र था, इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि घृताची नामक अप्सरा को देखते ही जब उनका वीर्यपात हुआ तो उन्होंने उसको एक द्रोण में सुरक्षित रक्खा। जन्म से ब्राह्मण होने पर भी द्रोण ने परशुराम से शस्त्रास्त्र विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। बाद में धनुर्विद्या और शस्त्र चालन द्रोण ने कौरव पाण्डवों को सिखलाया। जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ तो वह कौरव पक्ष की ओर से लड़ा, और जब भीष्म घायल होकर 'शरशय्या पर' लेट गये तो कौरवसेना की बागडोर द्रोण ने संभाली तथा चार दिन तक युद्ध करके पाण्डव पक्ष के हजारों योद्धाओं को मौत के घाट उतारा। युद्ध के पन्द्रहवें दिन रात को भी संग्राम होता रहा और फिर सोलहवें दिन प्रातःकाल कृष्ण के सुझाव पर भीम ने द्रोण को सुना कर कहा कि अश्वत्थामा मारा गया (तथ्य यह था कि अश्वत्थामा नाम का हाथी युद्ध में काम आया था) इस पर विश्वास न कर इस तथ्य की यथार्थता जानने के लिए उसने सत्यवादी युधिष्ठिर से पूछा। युधिष्ठिर ने भी, कृष्ण के परामर्शानुसार, बात को छलपूर्वक टाल दिया। उन्होंने 'अश्वत्थामा' शब्द को ऊँचे स्वर से उच्चारण किया तथा 'गज' शब्द को धीमे स्वर से—दे० वेणी० ३।९, अपने एकमात्र पुत्र की मृत्यु का समाचार सच समझ कर अत्यन्त शोकग्रस्त हो बूढ़ा पिता मूर्छित हो गया। उसी समय धृष्टद्युम्न ने (जिसने द्रोण को मारने की प्रतिज्ञा की थी) उस अवसर से लाभ उठाकर द्रोण का सिर काट डाला।—णः,—णम् एक विशेष तोल का बट्टा, या तो एक आढक या चार आढक, अथवा खारी का १/१६ भाग, या ३२ अथवा ६४ सेर,—णम् 1. काष्ठ पात्र, प्याला, कठौती 2. लकड़ी की कूण्ड या खोर। सम०—आचार्यः दे० ऊ० द्रोण,—काकः पहाड़ी कौवा,—क्षीरा,—घा,—दुग्धा,—दुघा एक द्रोण दूध देने वाली गाय,—मुखम् ४०० गाँव की राजधानी, मुख्य नगर।

द्रोणिः,—णी (स्त्री०) [द्रु+नि, द्रोणि+ङीप्] 1. लकड़ी का बना एक अण्डाकार पात्र जिसमें पानी रखते हैं, अथवा पानी जिससे बाहर निकालते हैं, डोल, चिलमची कुप्पी 2. जलाधार 3. काठ की खोर 4. दो शूर्प या १२८ सेर के बराबर धारिता की माप 5. दो पहाड़ों के बीच की घाटीद्, बृह—द्रोणीशैलकान्तारप्रदेशमधितिष्ठतो माधवस्यान्तिके प्रयामि—मा० ९, हिमवद् द्रोणी। सम०—दलः केतक का पौधा।

द्रोहः [द्रुह्+घञ्] 1. किसी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचना, आघात या आक्रमण करने की चेष्टा, क्षति, उपद्रव, ईर्ष्या—अद्रोहशपथं कृत्वा—पंच० २।३५, भग० १।३७, मनु० २।१६१ ७।४८, ९।१७ 2. धोखा, विश्वासघात 3. अन्याय, दोष 4. विद्रोह। सम०—अटः 1. पाखंडी, धूर्त, छद्मवेषी 2. शिकारी 3. झूठा मनुष्य,—चिन्तनम् ईर्ष्यायुक्त विचार, अपकार चिन्ता, हानि पहुँचाने का इरादा,—बुद्धि (वि०) उपद्रव करने पर उतारू या दूषित व्यवहार पर तुला हुआ (स्त्री०—द्धिः) दुष्ट प्रयोजन, दुराशय।

द्रौणायनः,—निः,—द्रौणिः [द्रोण+फक्, फिञ् वा, द्रोण+इञ्] अश्वत्थामा का विशेषण—यद्रामेण कृतं तदेव कुरुते द्रौणायनिः क्रोधनः—वेणी० ३।३१।

द्रौपदी [द्रुपद+अण्+ङीप्] पांचालराज द्रुपद की पुत्री का नाम (स्वयम्वर में अर्जुन ने इसे प्राप्त किया। जब उन्होंने घर आकर अपनी माता कुन्ती को कहा कि आज हमने बड़ी अच्छी वस्तु प्राप्त की है। तब माता ने कहा कि सब आपस में बाँट लो। क्योंकि कुन्ती के मुख से निकली बात कभी झूठी नहीं हो सकती अतः वह पाँचों भाइयों की पत्नी बनी। जब युधिष्ठिर जूए में अपने राज्य को हार गया, द्रौपदी को हार गया, यहाँ तक कि अपने आप को भी हार गया तो दुःशासन ने और दुर्योधन की पत्नी ने उसका बड़ा अपमान किया। परन्तु इस प्रकार के अपमान को द्रौपदी ने असाधारण सहिष्णुता के साथ सहन किया। और जब कभी, कई अवसरों पर उसको तथा उसके पतियों की परीक्षा ली गई तो उसने उनके मान की रक्षा की (जैसा कि उस समय जब दुर्वासा ऋषि ने अपने साठ हज़ार शिष्यों के लिए रात को भोजन माँगा)। अन्त में एक दिन उसकी सहिष्णुता समाप्त हो गई और उसने अपने पतियों को बड़े ताने के साथ उसी लहजे में कहा जिसमें कि वह अपने शत्रुओं से प्राप्त क्षति और अपमान का कड़वा घूँट पी रहे थे—दे० कि० १।२९-४६,—इसी के फलस्वरूप पाण्डवों ने युद्ध करने का दृढ़ संकल्प किया। यह उन पाँच सती स्त्रियों में से हैं जो प्रातः स्मरणीय समझी जाती हैं—दे० अहल्या)।

द्रौपदेयः [द्रौपदी+ढक्] द्रौपदी का पुत्र—भग० १।६।१८।

द्वन्द्वः [द्वौ द्वौ सहाभिव्यक्ती—द्वि शब्दस्य द्वित्वम्, पूर्वपदस्य अम्भावः, उत्तरपदस्य नपुंसकत्वम्, नि०] घड़ियाल जिस पर प्रहार करके घंटों की सूचना दी जाती है, —द्वम् 1. जोड़ा, जन्तु युगल, (मनुष्ययुगल भी) 2. स्त्री-पुरुष, नर-मादा—द्वन्द्वानि भावं क्रियया विवव्रुः—कु० ३।३५, मेघ० ४६, न चेदिदं द्वन्द्वमयोजयिष्यत्—कु० ७।६६, रघु० १।४०, श० २।१४, ७।२७ 3. दो वस्तुओं का जोड़ा, दो विरोधी अवस्थाओं या गुणों का

जोड़ा, (जैसे कि सुख-दुःख, शीत और उष्ण)—द्वन्द्वैरयोजयच्चेमाः सुखदुःखादिभिः प्रजाः—मनु० १।२६, ६।८१, सर्वर्तुनिर्वृतिकरे निवसन्नुपैति न द्वन्द्वदुःखमिह किंचिदकिंचनोऽपि—शि० ४।६४ 4. झगड़ा, लड़ाई, कलह, टाण्टा, युद्ध 5. कुश्ती 6. संदेह, अनिश्चिति 7. किला, गढ़ 8. रहस्य,—द्वः (व्या० में) समास के चार मुख्य भेदों में से एक जिसमें दो या दो से अधिक शब्द एक साथ जोड़ दिय जाते हैं, जो कि असमस्त होने की अवस्था में एक ही विभक्ति के रूप 'और' (समुच्चय बोधक अव्य०) अव्यय से जोड़े जाते—चार्थे द्वन्द्वम्—पा० २।२।२९, द्वन्द्वः सामासिकस्य च—भग० १०।३३। सम०—चर,—चारिन् (वि०) जोड़े के रूप में रहने वाले - (पुं०) चकवा—दयिता द्वन्द्वचरं पतत्त्रिणम्—रघु० ८।५५, १६।६३,—भावः वैपरीत्य, अनबन,—भिन्नम् स्त्री और पुरुष (नर या मादा) का वियोग,—भूत (वि०) 1. एक जोड़ा बनाते हुए 2. संदिग्ध, अनिश्चित,—युद्धम् मल्लयुद्ध, अकेलों (दो) की लड़ाई।

द्वन्द्वशः (अव्य०) [द्वन्द्व+शस्] दो दो करके जोड़े में।

द्वय (वि०) (स्त्री०—यी) [द्वि+अयट्] दोहरा, दुगुना, दो प्रकार का, दो तरह का—अनुपेक्षणे द्वयी गतिः—मुद्रा० ३, भर्तृ० २।१०४, अने० पा०, कभी कभी ब० व० में भी प्रयुक्त, दे० शि० ३।५७,—यम् 1. जोड़ी, युगल, युग्म (प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त) —द्वितयेन द्वयमेव संगतं—रघु० ८।६, १।१९, ३।८, ४।४ 2. दो प्रकार की प्रकृति, द्वैधता 3. मिथ्यात्व,—यी जोड़ी, युगल। सम०—अतिग (वि०) जिसका मन रजस् और तमस्' इन दो गुणों के प्रभाव से मुक्त हो गया है, सन्त, महात्मा,—आत्मक द्वैधप्रकृति से युक्त, —वादिन्, द्विजिह्व, कपटी।

द्वयस (वि०) (स्त्री०—सी) 'जहां तक हो सके' 'इतना ऊँचा जितना कि' 'इतना गहरा जितना कि' 'पहुंचने वाला' अर्थ का बतलाने वाला प्रत्यय जो संज्ञा शब्दों के साथ लग—गुल्फद्वयसे मदपयसि—का० ११४, नारीनितंबद्वयसं बभूव (अभः) रघु० १६।४६, शि० ६।५५।

द्वापरः, —रम् [द्वाभ्यां सत्यत्रेतायुगाभ्यां परः पृषो०—तारा०] 1. विश्व का तृतीय युग—मनु० ९।३०१ 2. पासे का वह पार्श्व जिस पर 'दो' की संख्या अंकित है 3. संदेह, शशोपंज, अनिश्चितता।

द्वामुष्यायण (वि०) [अदस्+फक्=आमुष्यायणः ष० त०] दे० 'द्व्यामुष्यायण'।

द्वार् (स्त्री०) [द्वृ+णिच्+विच्] 1. दरवाजा, फाटक —याज्ञ० ३।१२, मनु० ३।३८ 2. उपाय, तरकीब, द्वारा 'के उपाय से' की मार्फत। सम० —स्थः,—स्थितः (द्वाःस्थः, द्वास्थः, द्वाःस्थितः, द्वास्थितः) द्वारपाल, ड्योढ़ीवान्।

द्वारम् [द्वृ+णिच्+अच्] 1. दरवाजा, तोरण, प्रवेशद्वार, फाटक 2. मार्ग, प्रवेश, घुसना, मुंह,—अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्—रघु० १।४, ११।१८ 3. शरीर के द्वार या छिद्र (ये गिनती में नौ हैं - दे० खम्) कु० ३।५०, भग० ८।१२, मनु० ६।४८ 4. मार्ग, माध्यम, साधन या उपाय द्वारेण 'में से' 'के साधन से'। सम०—अधिपः ड्योढ़ीवान्, द्वारपाल,—कण्टकः दरवाजे की कुंडी,—कपाटः,—टम् दरवाजे का पत्ता या दिला, —गोपः—नायकः,—पः,—पालः,—पालकः, द्वारपाल, ड्योढ़ीवान्, पहरेदार,—दारुः सागवान की लकड़ी, —पट्टः 1. दरवाजे का दिला 2. दरवाज का पर्दा, —पिंडी दरवाजे की देहली,—पिधानः दरवाजे की कुंडी —बलिभुज् (पुं०) 1. कौवा 2. चिड़िया,—बाहुः दरवाजे की बाजू, द्वार का पाखा,—यन्त्रम् ताल, कुंडी —स्थः द्वारपाल।

द्वार (रि) का [द्वार+कै+क] गुजरात के पश्चिमी किनारे पर स्थित कृष्ण की राजधानी ('द्वारका' के के वर्णन के लिए दे० शि० ३।३३-६०)। सम०—ईशः कृष्ण का विशेषण।

द्वारवती, द्वारावती=द्वारका।

द्वारिकः द्वारिन् (पुं०) ड्योढ़ीवान्, द्वारपाल।

द्वि (संख्या० वि०) (कर्तृ० द्वि० व०—पुं० द्वौ, स्त्री०, नपुं०—द्वे) दो, दोनों—सद्यः परस्परतुलामधिरोहतां द्वे—रघु० ५।६८, (विशे० दशन् विंशति और त्रिंशत् से पूर्व द्वि को 'द्वा' हो जाता है, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि, सप्तति और नवति से पूर्व द्वि को द्वा होता है परन्तु विकल्प से, और अशीति से द्वि में कोई परिवर्तन नहीं होता)।सम०—अक्ष (वि०) दो आँखों वाला, —अक्षर (वि०) द्व्यक्षरी, दो अक्षरों से संबद्ध,—अङ्गुल (वि०) दो अंगुल लम्बा, (—लम्) दो अंगुल की लम्बाई,—अणुकम् दो अणुओं का संघात, —अर्थ (वि०) 1. दो अर्थ रखने वाला 2. संदिग्ध, अस्पष्ट या द्व्यर्थक 3. दो बातों का ध्यान रखने वाला, —अशीत (वि०) बयासीवाँ, —अशीतिः (स्त्री०) बयासी, —अष्टम् तांबा, —अहः दो दिन का समय,—आत्मक (वि०) 1. दो प्रकार के स्वभाव वाला 2. दो होने वाला, —आमुष्यायणः दो पिताओं का पुत्र, गोद लिया हुआ बेटा, जो अपन मूल पिता की सम्पत्ति का भी साथ ही साथ उत्तराधिकारी हो। —ऋचम् (द्वृचम्, द्व्यृचम्) ऋचाओं का संग्रह, —कः, —ककारः 1. कौवा (क्योंकि 'काक' शब्द में दो 'क' होते हैं) 2. चकवा (क्योंकि कोक शब्द में भी दो 'क' हैं), —ककुद् (पुं०) ऊँट,

—गु (वि०) दो गौओं से विनिमय किया हुआ, (गुः) तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमें पूर्वपद संख्यावाचक होता है—द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहम्—उद्भट, —गुण (वि०) दुगुना, दोहरा, (द्विगुणीकृ—दो बार हल चलाना, दुगुना करना, बढ़ाना), —गुणित (वि०) 1. दुगुना किया हुआ, —कि० ५।४६ 2. दो तह किया हुआ 3. लपेटा हुआ 4. दुगुना बढ़ाया हुआ, —चरण (वि०) दो टाँगों वाला, दो पैरों वाला —द्विचरणपशूनां क्षितिभुजाम्—शा० ४।१५, —चत्वारिंश (वि०) [द्वि-चत्वारिंशद्वा:] बयालीसवाँ, —चत्वारिंशत् (स्त्री०) (द्वि-द्वाचत्वारिंशत्) बयालीस, —जः दुजन्मा, 1. हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) कोई एक, दे० याज्ञ० १।३९ 2. ब्राह्मण (जिसपर पवित्रीकारक कृत्य या संस्कारों का अनुष्ठान किया जा चुका है)—जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते 3. अंडज जंतु जैसे कि पक्षी, साँप, मछली आदि—स तमानंदमविंदत द्विजः—नै० २।१, श० ५।२१, रघु० १२।२२, मुद्रा० १।११, मनु० २।१७ 4. दांत—कीर्णं द्विजानां गणैः—भर्तृ० १।१३ (यहाँ 'द्विज' शब्द का अर्थ ब्राह्मण भी है) °अग्रचः ब्राह्मण, °अयनी यज्ञोपवीत जिसे हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्ण धारण करते हैं, °आलयः द्विज का घर °इन्द्रः, °ईशः 1. चन्द्रमा शि० १२।३ 2. गरुड का विशेषण 3. कपूर, °दासः शूद्र, °पतिः, °राजः 1. चन्द्रमा का विशेषण—रघु० ५।२३ 2. गरुड, 3. कपूर, °प्रपा 1. आलवाल, थांवला 2. चुबच्चा (जहाँ पशु पक्षी पानी पीयें, °बन्धुः, °ब्रुवः 1. जो ब्राह्मण बनने का बहाना करता है 2. जो जन्म से ब्राह्मण हो, कर्म से न हो, तु० ब्रह्मबन्धुः, °लिङ्गिन् (पुं०) 1. क्षत्रिय 2. झूठा ब्राह्मण, ब्राह्मण वेशधारी, °वाहनः विष्णु की उपाधि (गरुडारोही), °सेवक शूद्र, —जन्मन्, —जातिः (पुं०) 1. हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का - मनु० २।२४ 2. ब्राह्मण—कि० १।३९, कु० ५।४० 3. पक्षी पंछी 4. दाँत,—जातीय (वि०) हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का, —जिह्वः 1. साँप—शि० १।६३, रघु० ११।६४, १४।४१, भामि० १।२० 2. संसूचक, मिथ्यानिन्दक, चुगलखोर 3. कपटी पुरुष,—त्र (वि०) (ब० व०) दो तीन—रघु० ५।२५, भर्तृ० २।१२१, —त्रिंश (द्वात्रिंश) 1. बत्तीसवाँ 2. बत्तीस से युक्त, —त्रिंशत् (द्वात्रिंशत्) बत्तीस, °लक्षण ३२ शुभलक्षणों से युक्त, —दण्डि (अव्य०)। डंडे से डंडा,—दत् (वि०) दो दाँत रखने वाला, —दश (वि०) (ब० व०) बीस, —दश (वि०) (द्वादश) 1. बीसवाँ, मनु० २।३६ 2. बारह से युक्त, —दशन् (द्वादशन्) (वि०, ब० व०) बारह, °अंशुः 1. बृहस्पति ग्रह तथा 2. देवों के गुरु बृहस्पति का विशेषण, °अक्षः °करः °लोचनः कार्तिकेय का विशेषण, °अंगुलः १२ अंगुल का माप, °अह 1. बारह दिन का समय—मनु० ५।८३, ११।६८ 2. १२ दिन तक चलने वाला या १२ दिन में पूर्ण होने वाला यज्ञ, °आत्मन् (पुं०) सूर्य, °आदित्याः (ब० व०) बारह सूर्य दे० आदित्य, °आयुस् (पुं०) कुत्ता, °सहस्र (वि०) १२००० से युक्त, -दशी (द्वादशी) चांद्र मास के पक्ष की १२वीं तिथि, —दैवतम् विशाखानाम नक्षत्र, —देहः गणेश का विशेषण, —धातुः गणेश का विशेषण, —नग्नकः वह मनुष्य जिसकी सुन्नत हो चुकी हो,—नवत (द्वि-द्वानवतः) बानवेवाँ, —नवतिः (द्वि-द्वानवतिः) बानवे, —पः हाथी, °आस्यः गणेश का विशेषण, —पक्षः 1. पंछी 2. महीना,—पञ्चाश (द्वि-द्वापञ्चाश) (वि०) बावनवाँ, —पञ्चाशत् (द्वि-द्वापञ्चाशत्) (स्त्री०) बावन, —पथम् दो मार्ग, —पदः, दुपाया, मनुष्य, —पदिका, —पदी 1. दुपाया मनुष्य 2. पक्षी, देवता, —पाद्यः, —पाद्यम् दुहरा जुर्माना, —पायिन् (पुं०) हाथी,—बिंदुः विसर्गः (:), —भुजः कोण, —भूम (वि०) (महल की भांति) दो मंजिला, —मातृ, —मातृजः 1. गणेश तथा 2. जरासंध का विशेषण, —मात्रः दीर्घ स्वर (दो मात्राओं वाला), —मार्गी पगडंडी, —मुखा जोंक, —रः 1. भौंरा—तु० द्विरेफ 2. बर्बर, —रदः हाथी—रघु० ४।४, मेघ० ५९, °अन्तकः, °अरातिः, °अशनः सिंह, —रसनः साँप, —रात्रम् दो रातें, —रूप (वि०) 1. दो रूपों का, 2. दो रंग का, द्विदलीय, —रेतस् (पुं०) खच्चर, —रेफः भौंरा ('भ्रमर' इसमें दो 'र' हैं) कु० १।२७, ३।२७, ३६, —वचनम् (व्या० में) द्विवचन, —वज्रकः १६ कोणों का खोखा या पार्श्वों का घर, —वाहिका बहंगी, —विंश (द्वाविंश) (वि०) बाइसवाँ, —विंशतिः (द्वाविंशतिः) (स्त्री०) बाईस, —विध (वि०) दो प्रकार का, दो तरह का, मनु० ७।१६२, —वेशरा खड़खड़ा, खच्चरों से खींची जाने वाली हल्की गाड़ी, —शतम् 1. दो सौ 2. एक सौ दो, —शत्य (वि०) दो सौ में खरीदा हुआ या दो सौ के मूल्य का, —शफ (वि०) दो फटे खुर वाला (फः) कोई भी फटे दो खुर वाला जानवर, —शीर्षः अग्नि का विशेषण, —षष् (वि०) (ब० व०) दो बार छः, बारह, —षष्ट (द्विषष्ट, द्वाषष्ट) बासठवाँ, षष्टिः (स्त्री०) (द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः) बासठ, —सप्तत (द्वि-द्वासप्तत) (वि०) बहत्तरवाँ,—सप्ततिः (स्त्री०) (द्वि+द्वासप्ततिः) बहत्तर, —सप्ताहः

पक्ष, पखवाड़ा, —सहस्र, साहस्र (वि०) २००० से युक्त (—स्रम्) दो हजार, —सीत्य, —हल्य (वि०) दोनों ओर से हल चला हुआ अर्थात् पहले लम्बाई की ओर से और फिर चौड़ाई की ओर से, —सुवर्ण (वि०) दो सोने की मोहरों से खरीदा हुआ या दो स्वर्ण मुद्राओं के मूल्य का, —हन् (पुं०) हाथी, —हायन, —वर्ष (वि०) दो वर्ष की आयु का, —हीन (वि०) नपुंसक लिंग, —हृदया गर्भवती स्त्री —होतृ (पुं०) अग्नि का विशेषण।

द्विक (वि०) [द्वाभ्यां कायति —द्वि+कै+क] 1. दोहरा, जोड़ी बनाने वाला, दो से युक्त 2. दूसरा 3. दोबारा होने वाला 4. दो अधिक बढ़ा हुआ, दो प्रतिशत —द्विकं शतं वृद्धिः—मनु० ८।१४१—२।

द्वितय (वि०) (स्त्री० —यी) [द्वौ अवयवौ यस्य—द्वि+तयप्] दो से युक्त, दो में विभक्त, दुगुना, दोहरा (कई बार ब० व० में प्रयुक्त) —द्रुमसानुमतां किमन्तरं यदि वायौ द्वितयेऽपि ते चलाः —रघु० ८।९०, —यम् जोड़ी, युगल—रघु० ८।६,

द्वितीय (वि०) [द्वयोः पूरणम्—द्वि+तीय] दूसरा —त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयम्—उत्तर० ३।२६, मेघ० ८३, रघु० ३।४९, —यः 1. परिवार में दूसरा, पुत्र 2. साथी, साझीदार, मित्र, (प्रायः समास के अन्त में) प्रयतपरिग्रहद्वितीयः—रघु० १।९५, इसी प्रकार छाया°, दुःख°, —या चान्द्रमास के पक्ष की दोयज, पत्नी, साथी, साझीदार। सम० —आश्रमः ब्राह्मण या गृहस्थ के जीवन की दूसरी अवस्था अर्थात् गार्हस्थ्य।

द्वितीयक (वि०) [द्वितीय+कन्] दूसरा।

द्वितीयाकृत (वि०) [द्वितीय+डाच्+कृ+क्त] (खेत आदि) जिसमें दो बार हल चलाया जा चुका हो।

द्वितीयिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [द्वितीय+इनि] दूसरे स्थान पर अधिकार किये हुए।

द्विध (वि०) [द्विधा+क] दो भागों में विभक्त, दो टुकड़ों में कटा हुआ।

द्विधा (अव्य०) [द्वि+धाच्]। दो भागों में—द्विधाभिन्ना शिखण्डिभिः—रघु० १।३९, मनु० १।१२,३२, द्विधेव हृदयं तस्य दुःखितस्याभवत्तदा—महा० 2. दो प्रकार से। सम० —करणम् दो भागों में विभाजन, टुकड़े-टुकड़े करना, —गतिः 1. उभयचर जन्तु, जल-स्थल-चर 2. केंकड़ा 3. मगरमच्छ।

द्विशस् (अव्य०) [द्वि+शस्] दो दो करके, दो के हिसाब से, जोड़े में।

द्विष् (अदा० उभ०—द्वेष्टि, द्विष्टे, द्विष्ट) घृणा करना, पसंद न करना, विरोधी होना—न द्वेक्षि यज्जनमतस्त्वमजातशत्रुः—वेणी० ३।१५, भग० २।५७, १८।१०, भट्टि० १७।६१, १८।९, रम्यं द्वेष्टि—श० ६।५, (प्र, वि, सम् आदि उपसर्ग लगने पर इस धातु के अर्थों में कोई परिवर्तन नहीं होता)।

द्विष् (वि०) [द्विष्+क्विप्] विरोधी, घृणा करने वाला, शत्रुवत्—(पुं०) शत्रु,—रन्ध्रान्वेषणदक्षाणां द्विषामामिषतां ययौ—रघु० १२।११, ३।४५, पंच० १।७०।

द्विष [द्विष्+क] शत्रु (द्विषन्तप) वि० शत्रु को संतप्त करने वाला, परिशोध लेने वाला)।

द्विषत् (पुं०) [द्विष्+शतृ] शत्रु (कर्म० या संबं० के साथ)—ततः परं दुष्प्रसहं द्विषद्भिः—रघु० ६।३१, शि० २।१, भट्टि० ५।९७।

द्विष्ट (वि०) [द्विष्+क्त]। विरोधी 2. घृणित, अप्रिय,—ष्टम् तांबा।

द्विस् (अव्य०) [द्वि+सुच्] दो बार—द्विरिव प्रतिशब्देन व्याजहार हिमालयः—कु० ६।६४, मनु० २।६०। सम०—आगमनम् (द्विरागमनम्) गौना, मुकलावा, दुल्हन का अपने पति के घर दूसरी बार आना, —आपः (द्विराप) हाथी,—उक्त (द्विरुक्त) (वि०) 1. आवृत्ति, पुनरुक्ति 2. अतिरेक, अनुपयोग,—ऊढा (द्विरूढा) पुनर्विवाहित स्त्री,—भावः,—वचनम् द्विरावृत्ति।

द्वीपः,—पम् [द्विर्गता द्वयोर्दिशोर्वा गता आपो यत्र द्वि+अप्, अप ईप्] 1. टापू 2. शरणस्थान, आश्रयगृह उत्पादन स्थान 3. भूलोक का एक भाग (भिन्न २ मतानुसार इन भागों की संख्या भी भिन्न २ है, चार, सात, नौ या तेरह, कमल की पंखड़ियों की भांति सब के सब मेरु के चारों ओर स्थित हैं, इनमें से प्रत्येक को समुद्र एक दूसरे से वियुक्त करता है। नैं० १।५ में अठारह द्वीपों का वर्णन है, परन्तु सात की संख्या सामान्य प्रतीत होती है—तु० रघु० १।६५, और श० ७।३३, केन्द्रीय भाग जम्बूद्वीप का है जिसमें भारतवर्ष विद्यमान है)। सम०—कर्पूरः चीन से प्राप्त कपूर।

द्वीपवत् (वि०) [द्वीप+मतुप्] टापुओं से भरा हुआ, —(पुं०) समुद्र,—ती पृथ्वी।

द्वीपिन् (पुं०) [द्वीप+इनि] 1. शेर—चर्मणि द्वीपिनं हन्ति—सिद्धा० 2. चीता, व्याघ्र। सम०—नखः,—खम् 1. शेर की पूंछ 2. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य।

द्वेधा (अव्य०) [द्वि+धा], दो भागों में, दो तरह से, दो बार।

द्वेषः [द्विष्+घञ्] 1. घृणा, अरुचि, बीभत्सा, अनिच्छा, जुगुप्सा—श० ५।१८, भग० ३।३४, ७।२७, इसी प्रकार अन्नद्वेषः, भक्तद्वेषः 2. शत्रुता, विरोध, ईर्ष्या —मनु० ८।२२५।

द्वेषण (वि०) [द्विष्+ल्युट्] घृणा करने वाला, नापसन्द

करने वाला,—णः शत्रु,—णम् घृणा, जुगुप्सा, शत्रुता, अरुचि।

द्वेषिन्, द्वेष्टृ (वि) [द्वेष+इनि, द्विष्+तृच्] घृणा करने वाला, (पुं०) शत्रु।

द्वेष्य (सं० कृ०) [द्विष्+ण्यत्] 1. घृणा के योग्य 2. घिनौना, घृणित, अरुचिकर—रघु० १।२८,—ष्यः शत्रु भग० ६।९, ९।२९, मनु० ९।३०७।

द्वैगुणिकः [द्विगुण+ठक्] सूदखोर जो शत-प्रतिशत ब्याज लेता है।

द्वैगुण्यम् [द्विगुण+ष्यञ्] 1. दुगुनी राशि मूल्य या माप 2. द्वित्व, द्वैतावस्था 3. तीन गुणों (अर्थात् सत्त्व, रजस् और तमस्) में से दो पर अधिकार रखना।

द्वैतम् [द्विधा इतम् द्वितम्, तस्य भावः स्वार्थे अण्] 1. द्वित्व 2. द्वैतवाद (दर्श०) दो विशद नियमों का प्रकथन, जैसे कि जीव और प्रकृति, ब्रह्म और विश्व, आत्मा और परमात्मा एक दूसरे से भिन्न हैं—तु० 'अद्वैत'—किं शास्त्रं श्रवणेन यस्य गलति द्वैतान्धकारोत्करः—भामि० १।८६ 3. एक जंगल का नाम। सम०—वनम् एक जंगल का नाम—कि० १।१, —वादिन् (पुं०) वह दार्शनिक जो द्वैतसिद्धान्त को मानता है।

द्वैतिन् (पुं०) [द्वैत+इनि] द्वैतवादी दार्शनिक।

द्वैतीयीक (वि०) (स्त्री०—की) [द्वितीय+ईकक्] दूसरा—द्वैतीयीकतया मितोऽयमगमत्तस्य प्रबन्धे महाकाव्ये चारुणि नैषधीयचरिते सर्गो निसर्गोज्ज्वलः—नै० २।११०, तु० तार्तीयीक।

द्वैध (वि०) (स्त्री०—धी) [द्वि+धमुञ्] दोहरा, दुगुना (द्वैधीभू—दो भागों में विभक्त होना, खण्ड २ होना, द्विविधा में पड़ना, मन में अनिश्चित होना), —धम् 1. द्वैतावस्था, दोहरी प्रकृति या अवस्था 2. दो भागों में वियुक्ति 3. दुगुने साधन, गौण आरक्षण 4. विविधता, भिन्नता, संघर्ष, विवाद, विभेद —श्रुतिद्वैधं तु यत्र स्यात् तत्र धर्मावुभौ स्मृतौ—मनु० २।१४, ९।३२, याज्ञ० २।७८ 5. संदेह, अनिश्चितता —भग० ५।२५, वेणी० ६।४४ 6. दो प्रकार का व्यवहार, दुरंगीनीति, विदेशनीति के छः प्रकारों में से एक, दे० नी० द्वैधीभाव और गुण।

द्वैधीभावः [द्वैध+च्वि+भू+घञ्] 1. द्वैतता, दो प्रकार की अवस्था या प्रकृति 2. दो खण्ड, विभिन्नता, द्विधाभाव 3. संदेह, अनिश्चितता, डाँवाडोल होना निलम्बन,—धृतद्वैधीभावकातरं मे मनः—श० १ 4. दुविधा 5. विदेश नीति के छः गुणों में से एक (कुछ के मतानुसार इसका अर्थ है—दो तरह का व्यवहार, दुरंगापन, बाहर से शत्रु के साथ मित्र जैसे संबंध रखना—बलिनोर्द्विषतोर्मध्ये वाचात्मानं समर्पयन्, द्वैधीभावेन तिष्ठेत्तु काकाक्षिवदलक्षितः; दूसरों के मतानुसार शत्रु की सेना में फूट डालना और अपने से बलवान् शत्रु का छोटी२ टुकड़ियों में मुकाबला करना तथा आक्रमण द्वारा उसे दुःखी करना—द्वैधीभावः स्वबलस्य द्विधा करणम्—याज्ञ० १।३४७ पर मिता०, तु० मनु० ७।१७३, व १६० से।

द्वैध्यम् [द्विधा+ष्यञ्] 1. दुरंगी चाल 2. विविधता, विभिन्नता।

द्वैप (वि०) (स्त्री०—पी) [द्वीप+अण्] 1. टापू से संबंध या टापू पर रहने वाला 2. शेर से संबंध रखने वाला, शेर की खाल का बना हुआ या व्याघ्र की खाल से ढका हुआ,—पः शेर की खाल से ढकी हुई गाड़ी।

द्वैपक्षम् [द्विपक्ष+अण्] दो दल, दो टोलियाँ।

द्वैपायनः [द्वीपायन+अण्] टापू में उत्पन्न, वेदव्यास।

द्वैप्य (वि०) (स्त्री०—प्या,—प्यी) [द्वीप+यञ्] टापू निवासी या टापू से संबन्ध—शि० ३।७६।

द्वैमातुर (वि०) [द्विमातृ+अण्] दो माताओं वाला, अर्थात् जन्मदात्री माता तथा सौतेली माता,—रः 1. गणेश का नाम 2. जरासंध का नाम—हते हिडिंबरिपुणा राज्ञि द्वैमातुरे युधि—शि० २।६०।

द्वैमातृक (वि०) (स्त्री०—की) [द्विमातृक+अण्] (वह देश) जहाँ वर्षा तथा नदी दोनों का जल खेती के काम आता हो (तु० 'देवमातृक')।

द्वैरथम् [द्विरथ+अण्] 1. दो रथारोहियों का एकाकी युद्ध 2. एकल युद्ध,—थः शत्रु।

द्वैराज्यम् [द्विराज्य+ष्यञ्] दो राजाओं में बँटा हुआ उपनिवेश।

द्वैवार्षिक (वि०) [द्विवर्ष+ठक्] प्रति दूसरे वर्ष होने वाला।

द्वैविध्यम् [द्विविध+ष्यञ्] 1. द्वैतता, दुरंगी प्रकृति, 2. विभिन्नता, विविधता, भिन्नता।

ध

ध (वि०) [धा+ड] (समास के अन्त में), रखने वाला, संभालने वाला,--**धः** 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. कुबेर 3. भलाई, नेकी, आचार, गुण,—**धम्** धन दौलत, संपत्ति।

धक् क्रोधोद्गार—उत्तर० ४।२४।

धक्क् (चुरा० उभ०--धक्कयति–ते) ध्वस्त करना, नष्ट करना।

धटः [ध+अट्+अच्, शक० पररूपम्] 1. तराजू, तराजू के पलड़े 2. तराजू द्वारा कठोर परीक्षा 3. तुला राशि।

धटकः [घट+कै+क] ४२ गुंजा या रत्तियों के समान एक प्रकार का तोल विशेष।

धटिका, धटी [धटी+कन्+टाप्, ह्रस्वः; धन्+अच्+ङीष्, नि० नस्य टः] 1. पुराना कपड़ा या चिथड़ा 2. लंगोटी

धटिन् (पुं०) [धट+इनि] 1. शिव का विशेषण 2. तुला राशि,—**नी**=धटी।

धण् (भ्वा० पर०-धणति) शब्द करना।

धत्तूरः, धत्तूरकः,–का [धयति धातून् धे+उरच् पृषो०, धत्तूर+कन्, स्त्रियां टाप् च] धतूरे का पौधा।

धन् (भ्वा० पर०–धनति) शब्द करना।

धनम् [धन्+अच्] 1. संपत्ति, दौलत, धन, निधि, रुपया (सोना, आदि चल संपत्ति)—धनं तावदसुलभम्—हि० १, (आलं० भी) जैसा कि तपोधन, विद्याधन आदि में 2. (क) मूल्यवान् संपत्ति, कोई प्रियतम या स्निग्धतम पदार्थ, प्रियतम निधि—कष्टं जनः कुलधनैरनुरञ्जनीयः—उत्तर० १।१४, गुरोरपीदं धनमाहिताग्नेः—रघु० २।४४, मानधनम्, अभिमान० आदि (ख) मूल्यवान् वस्तु- मनु० ८।२०१, २०२ 3. पूंजी (विप० वृद्धि या ब्याज) 4. लूट का माल अपहृत वस्तु, ऊपरी आय 5. मल्लयुद्ध में विजेता को प्राप्त होने वाला पुरस्कार, खेल में जीता हुआ पारितोषिक 6. पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिता, प्रतिद्वन्द्विता 7. धनिष्ठा नक्षत्र 8. फालतू अवशिष्ट 9. (गणि० में) जोड़ की राशि (विप० ऋण)। सम०—**अधिकारः** संपत्ति में अधिकार, उत्तराधिकार में संपत्ति पाने का हक़,—**अधिकारिन्**,—**अधिकृतः** 1. कोषाध्यक्ष 2. उत्तराधिकारी—**अधिगोप्तृ**,—**अधिपः**—**अधिपतिः**,—**अध्यक्षः** 1. कुबेर का विशेषण—कि ०५।१६ 2. कोषाध्यक्ष,--**अपहारः** 1. अर्थदंड 2. लूट खसोट का माल,--**अर्चित** (वि०) धन के उपहारों से सम्मानित, मूल्यवान् उपहारों से संतुष्ट किया गया,--मानधना वनार्चिताः—कि० १।१९ 2. मालदार, धनाढ्य,--**अर्थिन्** (वि०) धनेच्छुक, लालची, कंजूस,-**आढ्य** (वि०) मालदार, धनी, दौलत मंद,—**आधारः** ख़ज़ाना,—**ईशः, ईश्वरः** 1. कोषाध्यक्ष 2. कुबेर का विशेषण,—**उष्मन्** (पुं०) धन की गर्मी—तु० अर्थोष्मन्,—**एषिन्** (पुं०) साहूकार जो अपना रुपया माँगे,—**केलिः** कुबेर का विशेषण,--**क्षयः** धन की हानि, धनक्षये वर्धति जाठराग्निः—पंच० २।१७८,--**गर्ब**,—**गर्वित** (वि०) रुपये का घमंडी, **जातम्**—सब प्रकार की मूल्यवान् संपत्ति, समस्त द्रव्य,—**दः** 1. उदार या दानशील व्यक्ति 2. कुबेर का विशेषण—रघु० ९।२५, १७।८० 3. अग्नि का नाम, °**अनुजः** रावण का विशेषण—रघु० १२।५२, ८८,—**दंडः** अर्थदंड, जुर्माना,—**दायिन्** (पुं०) आग,—**पतिः** कुबेर का विशेषण—तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम्—मेघ० ७५,७,—**पालः** 1. कोषाध्यक्ष 2. कुबेर का विशेषण,—**पिशाचिका, पिशाची** धन का राक्षस, धन की तृष्णा, लालच, लोलुपता,--**प्रयोगः** सूद खोरी,—**मद** (वि) धन का घमंडी,—**मूलम्** मूलधन, पूंजी,—**लोभः** तृष्णा, लिप्सा,—**व्ययः** 1. ख़र्च 2. अपव्यय,—**स्थानम्** ख़ज़ाना, **हरः** 1. उत्तराधिकारी 2. चोर 3. एक प्रकार का सुगंधद्रव्य।

धनकः, धनाया [धनस्यं कामः—धन+कन्,] तृष्णा, लालच, लालसा!

धनञ्जयः [धन+जि+खच्, मुम्] 1. अर्जुन का नाम (नाम की व्युत्पत्ति—सर्वाञ्जनपदान् जित्वा वित्तमादाय केवलम्. मध्ये धनस्य तिष्ठामि तेनाहुर्मां धनञ्जयम्—महा० 2. अग्नि का विशेषण।

धनवत् (वि०) [धन+मतुप्] धनी, दौलतमंद।

धनिकः [धनमादेयत्वेनास्ति अस्य—ठन्] 1. धनवान् या दौलतमंद पुरुष 2. महाजन, साहूकार—दापयेद्धनिकस्यार्थम्—मनु० ८।५१, याज्ञ० २।५५, 3. पति 4. ईमानदार व्यापारी 5. 'प्रियंगु' वृक्ष।

धनिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [धन+इनि] धनी, मालदार, दौलतमंद (पुं०) 1. दौलतमंद 2. साहूकार—याज्ञ० २।१८,४१, मनु० ८।६१।

धनिष्ठ (वि०) [धन+इष्ठन्, धनिन् की उ० अ०] अत्यंत धनी,—**ष्ठा** तेइसवाँ नक्षत्र, (इसमें चार नक्षत्रों का पुंज है)।

धनी धनीका [धनमस्ति अस्याः—धन्+अच्+ङीष्] तरुणी, जवान स्त्री।

धनुः [धन्--उ] धनुष, (संभवतः 'धनुस्' का ही रूप)

धनुस् (वि०) [धन्+उसि] 1. धनुष से सुसज्जित (नपुं०)।

धनुष,—धनुष्यमोघं समधत्त वाणम्—कु० ३।६६, इसी प्रकार इन्द्रधनुः आदि (बहुव्रीहि समास के अन्त में 'धनुस्' के स्थान में 'धन्वन्' आदेश हो जाता है—रघु० ३।८) 2. चार हाथ के बराबर लंबाई की माप —याज्ञ० २।१६७, मनु० ८।२३७ 3. वृत्त की चाप 4. धन राशि 5. मरुस्थल तु० धन्वन्। सम०—कर (वि०—धनुष्कर) धनुष से सुसज्जित (रः) धनुष बनाने वाला,—काण्डम् (धनु, कांडम्) धनुष और वाण—खण्डम् (धनुः खंडम्) धनुष का भाग–मेघ० १५, —गुणः (धनुर्गुणः) धनुष की डोरी,—ग्रहः (धनुर्ग्रह) धनुर्धारी,—ज्या (धनुर्ज्या) धनुष की डोरी —अनवरतधनुर्ज्यास्फालनक्रूरपूर्वम्—श० २।४,—द्रुमः (धनुर्द्रुमः) बाँस —धरः,—भृत् (पुं०) (धनुर्धरः आदि) धनुर्धारी—रघु० २।११,२९, ३।३१,३८,३९, ९।११,१२।९७,१६।७७,—पाणि (वि०) (धनुष्पाणि) धनुष से सुसज्जित, हाथ में धनुष लिये हुए,—मार्गः (धनुर्मार्गः) धनुष की भांति टेढ़ी रेखा, वक्र,—विद्या (धनुर्विद्या) धनुर्विज्ञान,—वृक्षः, (धनुर्वृक्षः) 1. बाँस, 2. अश्वत्थ का वृक्ष,—वेदः (धनुर्वेदः) चार उपवेदों में से एक—धनुर्वेद, धनुर्विज्ञान।

धनू (स्त्री०) [धन्+ऊ] धनुष, कमान।

धन्य (वि०) [धन्+यत्] 1. धन प्रदान करने वाला, —मनु० ३।१०६,४।१९ 2. दौलतमंद, धनी, मालदार 3. सौभाग्यशाली, भाग्यवान् महाभाग, ऐश्वर्यशाली—धन्यं जीवनमस्य मार्गसरसः–भामि० १।१६, धन्या केयं स्थिता ते शिरसि—मुद्रा० १।१ 4. श्रेष्ठ, उत्तम, गुणवान्,—न्यः भाग्यवान् या सौभाग्यशाली, क़िस्मत वाला व्यक्ति—धन्यास्तदङ्गरजसा मलिनीभवति—श० ७।१७, भर्तृ० १।४१, धन्यः कोऽपि न विक्रियां कलयते प्राप्ते नवे यौवने–१।७२ 2. काफ़िर, नास्तिक 3. जादू,—न्या 1. धात्री 2. धनिया,—न्यम् दौलत, कोष। सम०—वादः 1. साधुवाद देने के लिए बोला जाने वाला शब्द, साधुवाद 2. प्रशंसा, स्तुति, वाहवाह।

धन्यंमन्य (वि०) [धन्य+मन्+खश्, मुम्] अपने आपको भाग्यशाली मानने वाला।

धन्याकम् [धन्य+आकन्, नि०] 1. धनिये का पौधा 2. धनिया।

धन्वम् [धन्+वन्] धनुष (श्रेण्य साहित्य में विरल प्रयोग)। सम०—धिः धनुष रखने की पेटी।

धन्वन् (पुं०, नपुं०) [धन्व्+कनिन्] 1. सूखी ज़मीन, मरुभूमि, परत की भूमि—एवं धन्वनि चंपकस्य सकले संहारहेतावपि–भामि० १।३१ 2. समुद्रतट, कड़ी भूमि। सम०—दुर्गम् गढ़ (जो चारों ओर फैली मरुभूमि के कारण अगम्य हो)—मनु० ७।७०।

धन्वन्तरम् (नपुं०) चार हाथ के बराबर दूरी की माप, तु० 'दंड'।

धन्वन्तरि [धनुः चिकित्साशास्त्रं तस्यान्तमृच्छति–धनु+अन्त+ऋ+इ] देवताओं के वैद्य का नाम, (कहते हैं कि धन्वंतरि, समुद्रमंथन के फलस्वरूप, अमृत हाथ में लिए हुए समुद्र से निकले थे तु० चतुर्दशरत्न।

धन्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) [धन्वं चापोऽस्त्यस्य इनि] धनुष से सुसज्जित, (पुं०) 1. धनुर्धारी के मम धन्विनोऽन्ये—कु० ३।१०, उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले—श० २।५ 2. अर्जुन 3. शिव और 4. विष्णु का विशेषण 5. धनु राशि।

धन्विनः [धन्व्+इनन्] सूअर।

धम (वि०) (स्त्री०—मा,—मी) [धम्+अच्] (प्रायः समास के अन्त में) 1. धौंकने वाला—अग्निन्धम, नाडिन्धम 2. पिघलाने वाला, गलाने वाला,—मः 1. चन्द्रमा 2. कृष्ण की उपाधि 3. मृत्यु के देवता यम, और 4. ब्रह्मा का विशेषण।

धमकः [धम्+ण्वुल्] लुहार।

धमधमा (स्त्री०) अनुकरणमूलक शब्द जो धौंकनी या बिगुल की ध्वनि को व्यक्त करता है।

धमन (वि०) [धम्+ल्युट्] 1. धौंकने वाला 2. क्रूर, —नः एक प्रकार का नरकुल।

धमनिः,—नी [धम्+अनि, धमनि+ङीप्] 1. नरकुल, नै 2. शरीर की नाड़ी, शिरा 3. गला, गर्दन।

धमिः [धम्+इ] फूंक मारना।

धम्मलः, धम्मिलः, धम्मिल्लः [धम्+विच्, मिल्+क्, पृ०] स्त्री के सिर का मींढीदार अलंकृत जूड़ा जिसमें मोती और फूल लगे हों—आकुलाकुलगलद्धम्मिल्ल—गीत० उरसि निपतितानां स्रस्तधम्मिल्लकानाम् (वधूनाम्) भर्तृ० १।४९, शृंगार० १।

धय (वि०) [धे+श] (प्रायः समास के अन्त में) पीने वाला चूसने वाला जैसा कि 'स्तनंधय' में।

धर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [धृ+अच्] (प्रायः समास के अन्त में) पकड़ने वाला, ले जाने वाला, संभालने वाला, पहनने वाला, रखने वाला, कब्जे में करने वाला, संपन्न, प्ररक्षा करने वाला, निरीक्षण करने वाला जैसा कि अक्षधर, अंशुधर, गदाधर, गंगाधर, महीधर, असृग्धर, दिग्वांबरधर आदि,—रः 1. पहाड़ —उत्कन्धरं द्रष्टुमवेक्ष्य शौरिमु- त्कन्धरं दारुक इत्युवाच –शि० ४।१८ 2. रूई का ढेर 3. ओछा, छिछोरा 4. कच्छपराज अर्थात् कूर्मा- वतार भगवान् विष्णु 5. एक वस्तु का नाम।

धरण (वि०) (स्त्री०—णी) [धृ+ल्युट्] रखने वाला, प्ररक्षण करने वाला, संभालने वाला आदि,—णः 1. टीला (जो पुल का काम दे रहा हो), पर्वतपार्श्व

2. संसार 3. सूर्य 4. स्त्री की छाती 5. चावल, अनाज हिमालय (पहाड़ों का राजा),—णम् 1. सहारा देना, निर्वाह कराना, संभालना—सारंधरित्री धरणक्षमं च—कु० १।१७, धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे—गीत० १ 2. कब्जे में करना, लाना, उपलब्ध करना 3. थूनी, टेक, सहारा 4. सुरक्षा 5. दस पल के वजन का बट्टा।

धरणिः,—णी (स्त्री) [धृ+अनि, धरणि+ङीप्] पृथ्वी—लुठति धरणिशयने बहु विलपति तव नाम—गीत० ५ 2. भूमि, मिट्टी 3. छत का शहतीर 4. नाड़ी, शिरा। सम०—**ईश्वरः** 1. राजा 2. विष्णु का या 3. शिव का विशेषण,—**कीलकः** पहाड़,—**जः**, —**पुत्रः**—**सुतः** 1. मंगल के विशेषण 2. 'नरक' राक्षस के विशेषण,—**जा**, -**पुत्री**—**सुता** जनक की पुत्री सीता (पृथ्वी से उत्पन्न होने के कारण) का विशेषण —**धरः** 1. शेष या 2. विष्णु का विशेषण 3. पहाड़ 4. कछवा 5. राजा 6. हाथी (जो, कहते हैं, कि पृथ्वी को संभाले हुए हैं),—**धृत्** (पुं०) 1. पहाड़ 2. विष्णु या 3. शेष का विशेषण।

धरा [धृ+अच्+टाप्] 1. पृथ्वी—धरा धारापातैर्मणिमयशरीरैरभिद्यत इव—मृच्छ० ५।२२ 2. शिरा 3. गूदा 4. गर्भाशय या योनि। सम०—**अधिपः** —राजा,—**अमरः**,—**देवः**—**सुरः** ब्राह्मण,—**आत्मजः**, —**पुत्रः**—**सूनुः** 1. मंगल ग्रह के विशेषण 2. नरक राक्षस के विशेषण,—**आत्मजा** सीता का विशेषण, —**उद्धारः** पृथ्वी का छुटकारा,—**धरः** 1. पहाड़ 2. विष्णु या कृष्ण का विशेषण 3. शेष का विशेषण,—**पति** 1. राजा 2. विष्णु का विशेषण,—**भुज्** (पुं०) राजा, —**भृत्** (पुं०) पहाड़।

धरित्री [धृ+इत्र+ङीष्] 1. पृथ्वी, श० २।१४, रघु० १४।५४ कु० १।२, १७ 2. भूमि, मिट्टी।

धरिमन् (पुं०) [धृ+इमनिच्] तराजू, तराजू के पलड़े।

धर्त्तूरः [=धुस्तुर पृषो० साधुः] धतूरे का पौधा।

धर्त्रम् [धृ+त्र] 1. घर 2. थूनी, टेक 3. यज्ञ, 4. सद्गुण, भलाई, नैतिक गुण।

धर्मः [ध्रियते लोकोऽनेन, धरति लोकं वा धृ+मन्] 1. कर्तव्य, जाति, सम्प्रदाय आदि के प्रचलित आचार का पालन 2. कानून, प्रचलन, दस्तूर, प्रथा, अध्यादेश, अनुविधि 3. धार्मिक या नैतिक गुण, भलाई, नेकी, अच्छे काम (मानव अस्तित्व के चार पुरुषार्थों में से एक) कु० ५।३८, दे० 'त्रिवर्ग' भी, एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः—हि० १।६५ 4. कर्तव्य शास्त्र विहित आचरण क्रम,—षष्ठांशवृत्तेऽपि धर्म एषः श० ५।४, मनु० १।११४ 5. अधिकार, न्याय, औचित्य या न्यायसाम्य, निष्पक्षता, 6. पवित्रता, औचित्य, शालीनता 7. नैतिकता, नीतिशास्त्र, 8. प्रकृति, स्वभाव, चरित्र—मा० १।६, प्राणि°, जीव° 9. मूल गुण, विशेषता, लाक्षणिक गुण (विशिष्ट) विशेषता—वदन्ति वर्ण्यावर्ण्यानां धर्मैक्यं दीपकं बुधाः—चन्द्रा० ५।४५ 10. रीति, समरूपता, समानता 11. यज्ञ 12. सत्संग, भद्रपुरुषों की संगति 13. भक्ति, धार्मिक भावमग्नता 14. रीति प्रणाली 15. उपनिषद् 16. ज्येष्ठ पांडव युधिष्ठिर 17. मृत्यु का देवता यम। सम०—**अङ्गः**, —**गा** सारस,—**अधर्मौ** (पुं० द्वि० व०) सत्य और असत्य, कर्तव्य और अकर्तव्य, °**विद्** (पुं०) मीमांसक जो कर्म के सही या गलत मार्ग को जानता है, —**अधिकरणम्** 1. विधि का प्रशासन 2. न्यायालय, —**अधिकरणिन्** (पुं०) न्यायाधीश, दण्डनायक, —**अधिकारः** 1. धार्मिक कृत्यों का अधीक्षण—श० १ 2. न्याय-प्रशासन 3 न्यायाधीश का पद, —**अधिष्ठानम्** न्यायालय, —**अध्यक्षः** 1. न्यायाधीश 2. विष्णु का विशेषण, —**अनुष्ठानम्** धर्म के अनुसार आचरण, अच्छा आचरण, नैतिक चालचलन, —**अपेत** (वि०) जो धर्म विरुद्ध हो, दुराचारी, अनीतिकर, अधार्मिक (तम्) दुर्व्यसन, अनैतिकता, अन्याय, —**अरण्यम्** तपोवन, वन जिसमें संन्यासी रहते हों—धर्मारण्यं प्रविशति गजः—श० १।३३. —**अलीक** (वि०) झूठे चरित्र वाला —**आगमः** धर्मशास्त्र, विधि-ग्रन्थ, —**आचार्यः** 1. धर्मशिक्षक 2. धर्मशास्त्र या कानून का अध्यापक, —**आत्मजः** युधिष्ठिर का विशेषण, —**आत्मन्** (वि०) न्यायशील, भला, पुण्यात्मा, सद्गुणी, —**आसनम्** न्याय का सिंहासन, न्याय की गद्दी, न्यायाधिकरण—न संभावितमद्य धर्मासनमध्यासितुम्—श० ६, धर्मासनाद्विशति वासगृहं नरेन्द्रः—उत्तर० १।७, —**इन्द्रः** युधिष्ठिर का विशेषण, —**ईशः** यम का विशेषण —**उत्तर** (वि०) अतिधार्मिक, जो न्याय धर्म का प्रधान पक्षपाती हो, निष्पक्ष और न्यायपरायण—धर्मोत्तरं मध्यममाश्रयन्ते—रघु० १३।७, —**उपदेशः** 1. धर्म या कर्तव्य की शिक्षा, धार्मिक या नैतिक शिक्षण 2. धर्मशास्त्र,—**कर्मन्** (नपुं०) · **कार्यम्**, क्रिया, कर्तव्य कर्म, नीति का आचरण, धर्मपालन, धार्मिककृत्य या संस्कार 2. सदाचरण,—**कथादरिद्रः** कलियुग, —**कायः** बुद्ध का विशेषण, —**कीलः** अनुदान, राजकीय लेख या शासन, —**केतुः** बुद्ध का विशेषण,—**कोशः** —**षः** धर्मसंहिता, धर्मशास्त्र—धर्मकोषस्य गुप्तये—मनु० १।९९ —**क्षेत्रम्** 1. भारतवर्ष (धर्म की भूमि) 2. दिल्ली के निकट का मैदान, कुरुक्षेत्र (यहां ही कौरव पांडवों का महायुद्ध हुआ था)—धर्मक्षेत्रे कुरु-

क्षेत्रे समवेता युयुत्सवः---भग० १।१, —घटः वैशाख के महीने में ब्राह्मण को प्रतिदिन दिये जाने वाले सुगन्धित जल का घड़ा, —चक्रभृत् (पुं०) बौद्ध या जैन, —चरणम्, —चर्या कानून का पालन, धार्मिक कर्तव्यों का सम्पादन--कु० ७।८३, – चारिन् (वि०) भद्रव्यवहार करने वाला, कानून का पालन करने वाला, सद्गुणी, नेक—रघु० ३।४५, (पुं०) संन्यासी --चारिणी 1. पत्नी 2. पतिव्रता सती साध्वी पत्नी, —चिंतनम्, —चिंता भलाई या सद्गुणों का अध्ययन, नैतिक कर्तव्यों का विचार, नीति-विमर्श, —जः 1. धर्म से उत्पन्न, वैध, पुत्र, असली बेटा—तु० मनु० ९।१०७ 2. युधिष्ठिर का नाम, —जन्मन् (पुं०) युधिष्ठिर का नाम, —जिज्ञासा धर्म सम्बन्धी पूछताछ, सदाचरण विषयक पृच्छा—अथातोधर्मजिज्ञासा —जै०,—जीवन (वि०) जो अपने वर्ण के नियमानुसार निर्दिष्ट कर्तव्यों का पालन करता है, (नः) वह ब्राह्मण जो दूसरों के धर्मानुष्ठान में साहाय्य प्रदान कर अपनी जीविका चलाता है, —ज्ञ (वि०) सही बात को जानने वाला, नागरिक तथा धार्मिक कानूनों का जानकार—मनु० ७।१४१, ८।१७९, १०।१२७ 2. न्यायशील, नेक, पुण्यात्मा,—त्यागः अपने धर्म का त्याग करने वाला, धर्मच्युत,—दाराः (पुं०, ब० व०) वैध पत्नी—स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसां—मा० ६।१८, – द्रोहिन् (पुं०) राक्षस,—धातुः बुद्ध का विशेषण, —ध्वजः, --ध्वजिन् (पुं०) धर्म के नाम पर पाखंड रचने वाला, छद्मवेशी, —नन्दनः युधिष्ठिर का विशेषण—नाथः कानूनी अभिभावक, वैध स्वामी,—नाभः विष्णु का विशेषण,—निवेशः धार्मिक भक्ति,—निष्पत्तिः (स्त्री०) कर्तव्य का पालन, नीति-पालन, धार्मिक अनुष्ठान,—पत्नी वैधपत्नी, धर्मपत्नी—रघु० २।२,२०,७२,८।७, याज्ञ० २।१२८, —पथः भलाई का मार्ग, चाल चलन का सन्मार्ग, —पर (वि०) धर्मपरायण, पुण्यात्मा, नेक, भला, —पाठकः नागरिक या धार्मिक कानूनों का अध्यापक, —पालः कानून का रक्षक (आलं० से इसे 'दंड' कहते हैं), दण्ड, सजा, तलवार,—पीडा क़ानून का उल्लंघन करना, क़ानून के प्रति अपराध,—पुत्रः 1. धर्मसम्मत पुत्र, (जो कर्तव्य ज्ञान की दृष्टि से उत्पन्न किया या माना गया हो केवल कामवासना का परिणाम न हो) 2. युधिष्ठिर का विशेषण, प्रवक्तृ (पुं०) 1. धर्म का व्याख्याता, क़ानूनी सलाहकार, 2. धार्मिक शिक्षक, धर्म-प्रचारक, —प्रवचनम् 1. कर्तव्य-विज्ञान—उत्तर० ५।२३ 2. धर्म की व्याख्या करना, (नः) बुद्ध का विशेषण,—वा (बा) णिजिकः 1. जो अपने सद्गुणों से व्यापारी की भांति लाभ उठाने का प्रयत्न करता है 2. लाभदायक व्यवसाय को करने वाले व्यापारी की भांति जो पुरस्कार पाने की इच्छा से धार्मिक कृत्यों का सम्पादन करता है,—भगिनी 1. वैधभगिनी 2. धर्मगुरु की पुत्री 3. धर्मबहन, अनुरूप धार्मिक कर्तव्यों का पालन करते हुए जिसको बहन मान लिया जाता है,—भागिनी साध्वी पत्नी, —भाणकः व्याख्यानदाता जो महाभारत तथा भागवत आदि ग्रन्थों की व्याख्या सार्वजनिक रूप से अपने श्रोताओं के सामने रखता है,– भ्रातृ (पुं०) 1. धर्म-शिक्षा का सहपाठी, धर्म का भाई 2. वह व्यक्ति जिसको अनुरूप धार्मिक कर्तव्यों का पालन करते हुए, भाई मान लिया जाता है,—महामात्रः धर्ममंत्री, धार्मिक मामलों का मंत्री,—मूलम् नागरिक या धार्मिक क़ानूनों की नींव, वेद,—युगम् सतयुग, कृतयुग,—यूपः विष्णु का विशेषण,—रति (वि०) भलाई और न्याय में प्रसन्नता प्राप्त करने वाला, नेक, पुण्यात्मा, न्याय-शील—रघु० १।२३,—राज् (पुं०) यम का विशेषण, —राजः 1. यम 2. जिन 3. युधिष्ठिर, और 4. राजा का विशेषण,—रोधिन् (वि०) 1. क़ानून के विरुद्ध, अवैध, अन्याय्य 2. अनैतिक,—लक्षणम् 1. धर्म का मूल चिह्न 2. वेद, (णा) मीमांसा दर्शन,—लोपः 1. धर्माभाव, अनैतिकता, कर्तव्य का उल्लंघन—रघु० १।७६,—वत्सल (वि०) कर्तव्यशील, धर्मात्मा,—वर्तिन् (वि०) न्याय परायण, नेक, —वासरः पूर्णिमा का दिन,—वाहनः 1. शिव का विशेषण 2. भैंसा (यम की सवारी),—विद् (वि०) (नागरिक तथा धर्म विषयक) कर्तव्य का ज्ञाता, —विधिः वैध उपदेश, या व्यादेश,—विप्लवः कर्तव्य का उल्लंघन, अनैतिकता,—वीरः (अलं० शा० में) भलाई या पवित्रता के कारण उत्पन्न वीर रस, शौर्यसहित पवित्रता का रस, रस० में निम्नांकित उदाहरण दिया गया है :—सपदि विलयमेतु राज-लक्ष्मीरुपरि पतन्त्वथवा कृपाणधाराः, अपहरतुतरां शिरः कृतान्तो मम तु मतिर्न मनागपैतु धर्मात्।

—वृद्ध (वि०) सद्गुण व पवित्रता की दृष्टि से आगे बढ़ा हुआ (बूढ़ा)—कु० ५।१६,—वैतंसिकः वह जो अपने आपको उदार प्रकट करने की आशा में, अवैधरूप से कमाये हुए धन को दान कर देता है, —शाला 1. न्यायालय, न्यायाधिकरण 2. धर्मार्थ-संस्था, शासनम्,—शास्त्रम् धर्मसंहिता न्यायशास्त्र हि० १।१७, याज्ञ० १।५,—शील (वि०) न्यायशील, पुण्यात्मा, सदाचारी या सद्गुणी,—संहिता धर्मशास्त्र (विशेष रूप से मनु, याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों द्वारा प्रणीत स्मृतियाँ),—सङ्गः 1. सद्गुण या न्याय से अनुराग या आसक्ति 2. पाखंड,—सभा न्यायालय,

—सहायः धार्मिक कर्तव्यों के पालन करने में सहायक, साथी या साझीदार।

धर्मतः (अव्य०) [धर्म+तसिल्] 1. धर्म के अनुसार, नियमानुकूल, सही तरीके से, धर्म पूर्वक, न्याय के अनुरूप 2. भलाई से, नेकी के साथ 3. भलाई या नेकी के उद्देश्य से।

धर्मयु (वि०) [धर्म+यु] 1. सद्गुणसंपन्न, न्यायशील, पुण्यात्मा, नेक।

धर्मिन् (वि०) [धर्म+इनि] 1. सद्गुणों से युक्त, न्यायशील, पुण्यात्मा 2. अपने कर्तव्य को जानने वाला 3. कानून का पालन करने वाला 4. (समास के अंत में) किसी वस्तु के गुणों से युक्त, प्रकृति का, विशिष्ट गुणों से युक्त,—षट्सुताः द्विजधर्मिणः—मनु० १०। १४, कल्पवृक्षफलधर्मि कांक्षितम्—रघु० ११।५०, (पुं०) विष्णु का विशेषण।

धर्मीपुत्रः (पुं०) अभिनेता, नाटक का पात्र, खिलाड़ी।

धर्म्य (वि०) [धर्म+यत्] 1. धर्मसम्मत, कर्तव्यसंगत कानूनी रूप से सही, वैध—मनु० ३।२२, २५, २६ 2. धर्मयुक्त (कार्य)—कु० ६।१३ 3. न्यायोचित, भला, उपयुक्त धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते —भग० २।३१, ९।२, याज्ञ० ३।४४ 4. वैध, यथारीति 5. विशेष गुणों से युक्त—यथा 'तद्धर्म्यम्'।

धर्षः [धृष्+घञ्] 1. धृष्टता, अविनय अहंकार, ढिठाई 2. घमंड, अभिमान 3. अधीरता 4. संयम 5. बलात्कार, (स्त्री का) सतीत्व हरण 6. क्षति, बुराई, अवज्ञा 7. हीजड़ा। सम०—कारिणी बलात्कार द्वारा जिसका सतीत्वहरण हो चुका हो।

धर्षक (वि०) [धृष्+ण्वुल्] 1. हमला करने वाला, आक्रमणकारी, प्रहार करने वाला 2. बलात्कार करने वाला, सतीत्वहरण करनेवाला 3. अधीर,—कः 1. सतीत्वहर्ता, व्यभिचारी, बलात्कारी 2. अभिनेता, नर्तक।

धर्षणम्,-णा [धृष्+ल्युट्] 1. धृष्टता, अविनय 2. अवज्ञा, मानहानि 3. आक्रमण, अत्याचार, सतीत्वहरण, बलात्कार नारी° 4. स्त्रीसंभोग 5. तिरस्कार, निरादर 6. दुर्वचन।

धर्षणिः,-णी [धृष्+अनि, धर्षणि+ङीष्] असती, स्वैरिणी, कुलटा स्त्री।

धर्षित (वि०) [धृष्+क्त] 1. जिसका चरित्र भ्रष्ट किया गया है, अत्याचार पीडित, जिसके साथ बलात्कार हो चुका है 2. विजित, पराभूत, परास्त—नै० २२।१५५ 3. जिसके साथ दुर्व्यवहार किया गया है, जिसे गाली दी गई है, तिरस्कृत,—तम् 1. औद्धत्य, घमंड 2. सहवास, मैथुन,—ता कुलटा, असती स्त्री।

धर्षिन् (वि०) [धृष्+णिनि] 1. घमंडी, उद्धत, उद्दंड 2. आक्रमण करने वाला, सतीत्वहरण करने वाला, बलात्कार करने वाला 3. तिरस्कार करने वाला, दुर्व्यवहार करने वाला 4. बेधड़क, दिलेर 5. स्त्री सहवास करने वाला,—णी कुलटा, या असती नारी।

धवः [धु+अप्] 1. हिल-जुल, कम्पन 2. मनुष्य 3. पति-यथा 'विधवा' में 4. मालिक, स्वामी 5. बदमाश, ठग 6. एक प्रकार का वृक्ष 'धौ'।

धवलः [धवं कम्पं लाति—ला+क तारा०] 1. श्वेत, —धवलातपत्रम् धवलं गृहम् 2. सुन्दर 3. स्वच्छ, विशुद्ध,—लः 1. श्वेत रंग 2. अत्युत्तम बैल 3. चीन, कपूर 4. 'धव' नाम का वृक्ष,—लम् सफ़ेद काग़ज़ —ला सफ़ेद गाय, धौली गाय। सम०—उत्पलम् श्वेत कुमुद (चन्द्रोदय होने पर इस का खिलना प्रसिद्ध है)—गिरिः हिमालय पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी,—गृहम् चूने से पुता घर, महल,—पक्षः 1. हंस 2. चान्द्रमास का शुक्लपक्ष, मृत्तिका चाक-मिट्टी।

धवलित (वि०) [धवल+इतच्] सफ़ेद किया हुआ, श्वेत बना हुआ।

धवलिमन् (नपुं०) [धवल+इमनिच्] 1. सफ़ेदी, सफ़ेद रंग 2. पांडुता पीलापन—इयं भूतिर्नाङ्गे प्रियविरहजन्मा धवलिमा—सुभा०।

धवित्रम् [धू+इत्र] मृगचर्म से बना पंखा।

धा (जुहो० उभ० दधाति, धत्ते, हित, कर्मवा० धीयते, प्रेर० धापयति-ते, इच्छा० धित्सति—ते) 1. रखना, धरना, जड़ना, लिटा देना, भर्ती करना, तह जमाना —विज्ञातदोषेषु दधाति दण्डम्—महा०, निःशंकं धीयते (अने० पा० 'दीयते' के स्थान पर) लोकैः पश्य भस्मचये पदम्—हि० २।१७३ 2. जमाना, (मन और विचारों को) लगाना, (संप्र० या अधि० के साथ) —धत्ते चक्षुर्मुकुलिनि रणत्कोकिले बालचूते—मा० ३।१२, दधुः कुमारानुगमे मनांसि—भट्टि० ३।११, २।७: मनु० १२।२३ 3. प्रदान करना, अनुदान देना देना, अर्पित करना, उपहार देना, (संप्र० संब० या अधि० के साथ) धुर्यां लक्ष्मीमथ मयि भृशं धेहि देव प्रसीद—मा० १।३, यद्यस्य सोऽदधात्सर्गे तत्तस्य स्वयमाविशत्—मनु० १।२९ 4. पकड़ना, रखना—तानपि दधासि मातः—भामि० १।६८, श० ४।१ 5. पकड़ना हस्तगत करना—भट्टि० १।२६, ४।२६, कि० १३।५४ 6. पहनना, धारणा करना, वहन करना—गुरूणि वासांसि विहाय तूर्णं तनूनि...धत्ते जनः काममदालसाङ्ग—ऋतु० ६।१३, १६, धत्ते भरं कुसुमपत्रफलावलीनाम्—भामि० १।९४, दधतो मङ्गलक्षौमे—रघु० १२।८, ९।४०, भट्टि० १८।५४ 7. धारण करना, लेना, रखना, दिखलाना, प्रदर्शन करना, कब्जे में करना (प्रायः आ०)—काचः काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम्—हि० प्र० ४१, शिरसि मसीपटल

दधाति दीपः—भामि० १।७४, रघु० २।७, अमरु २३।६७, मेघ० ३६, भर्तृ० ३।४६, रघु० ३।१, भट्टि० २।१,४।१६–१८, शि० ९।३,१०।८६, कि० ५।५ 8. संभालना, निबाहना, थामे रखना,—गामधास्यत्कथं नागो मृणालमृदुभिः फणैः—कु० ६।६८ 9. सहारा देना, स्थापित रखना—संपद्विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयं—रघु० १।२६ 10. पैदा करना, रचना करना, उत्पादन करना, उत्पन्न करना, बनाना—मुग्धा कुड्मलिताननेन दधती वायुं स्थिता तस्य सा—अमरु ७० 11. सहना, भोगना, ग्रस्त होना—शि० ९।२, ३२,६६ 12. सम्पन्न करना, ['दा' की भांति इस धातु के अर्थ भी दूसरे शब्दों के साथ जुड़ने से विविध प्रकार के हो जाते हैं, उदा० मनःधाः, मतिधा, धियं धा, मन को लगाना, विचारों को लगाना दृढ़ संकल्प करना, पदं धा पग रखना, प्रविष्ट होना, कर्णे करं धा, कान पर हाथ रखना] **अतिसम्**—ठगना, धोखा देना—भगवन् कुसुमायुध त्वया चन्द्रमसा च विश्वसनीयाभ्यामतिसंधीयते कामिजनसार्थः—श० ३, विक्रम० २, **अन्तर**—, 1. मन में रखना, मानना, ग्रहण रखना—तथा विश्वम्भरे देवि मामंतर्धातुमर्हसि—रघु० १५।८१, 2. अपने आपको छिपाना, गुप्त रखना, ओझल होना (संप्र० के साथ) —भट्टि० ५।३२, ८।७१, 3. ढकना, छिपाना, दृष्टि से ओझल करना, लपेटना, टांकना (आलं० भी) पितुरन्तर्दधे कीर्तिं शीलवृत्तसमाधिभिः—महा० **अनुसम्**—, 1. ढूंढना, पूछताछ करना, अन्वेषण करना, जांचपड़ताल करना 2. सचेत होना, अपने आपको शांत करना 3. उल्लेख करना, संकेत करना, लक्ष्य बनाना 4. योजना बनाना, क्रमबद्ध करना, क्रम में रखना, **अपि**—(कभी कभी 'अपि' का 'अ' लुप्त हो जाता है) । (क) बन्द करना, भेजना—ध्वनति मधुपसमूहे श्रवणमपिदधाति—गीत० ५, इसी प्रकार—कर्णौ नयने-पिदधाति (ख) ढकना, छिपाना, गुप्त रखना, —प्रायो मूर्खः परिभवविधौ नाभिमानं पिधत्ते —शृंगार० १७, प्रभावपिहिता—विक्रम० ४।२, शि० ९।७६, भट्टि० ७।६९ 2. रोकना, बाधा डालना, प्रतिबंध लगाना —भुजङ्गपिहितद्वारं पातालमधितिष्ठति—रघु० १।८० **अभि**—, (क) कहना, बोलना, बताना—कु० ३।६३, मनु० १।४२, भट्टि० ७।७८, भग० १८।६८, (ख) 1. संकेत करना, व्यक्त करना, मुख्यतः बतलाना प्रस्तुत करना—साक्षात्संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः काव्य० 2. तन्नाम येनाभिदधाति सत्त्वम् 2. अभिधान होना, पुकारना, **अभिसम्**—, 1. किसी पर फेंकना, निशाना लगाना, (तीर आदि का) लक्ष्य बनाना 2. ध्यान में रखना, (मन में) निशाना बनाना, सोचना—ऋष्यमूकमभिसंधाय—महावी० ५, अभिसंधाय तु फलम्—भग० १७।१२, २५, विक्रम० ४।२८ 3. धोखा देना, ठगना—जनं विद्वानेकः सकलमभिसंधाय—मा० १।१४ 4. अपने पक्ष में कर लेना, मित्र बना लेना, दूसरों का मित्र बन जाना तान्सर्वानभिसंदध्यात् सामादिभिरुपक्रमैः —मनु० ७।१५९ (वशीकुर्यात्) 5. प्रतिज्ञा करना, प्रकथन करना 6. जोड़ना, **अभ्या**—नीचे रखना, नीचे फेंकना, **अव**—सावधान होना, ध्यान देना, कान देना —इतोऽवधत्तां देवराजः—महावी० ६, **आ**, (प्रायः 'आ०' में) 1. रखना, धरना, ठहरना—जनपदे न गद पदमादधौ—रघु० ९।४, भग० ५।४० श० ४।३ 2. प्रयोग करना, जमाना, किसी की ओर संकेत करना—प्रतिपात्रमाधीयतां यत्नः—श० १, मय्येव मन आधत्स्व—भग० १२।८, आधीयतां धैर्ये धर्मे च धीः —का० ६३, 3. लेना, आधिकार में करना, वहन रखना—गर्भमाधत्त राज्ञी—रघु० २।७५, (गर्भ वहन किया) आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मी—कि० ५।३९, (लेती है या धारण करती है) कु० ७।२६, 4. बोझा उठाना, थामना, सहारा देना—शेषः सदैवाहितभूमिभारः—श० ५।४ 5. पैदा करना, उत्पादन करना, सर्जन करना, उत्तेजित करना (भय या आश्चर्य) छायाश्चरन्ति बहुधा भयमादधानाः—श० ३।२७, कि० ४।१२ 6. देना, समर्पित करना—रघु० १।८५ 7. नियुक्त करना, स्थिर करना तमेव चाधाय विवाहसाक्ष्ये—रघु० ७।२० 8. संस्कृत करना—कु० १।४७ 9. अनुष्ठान करना, (व्रत आदिका) पालन करना,—**आविस्**, भेद खोलना, प्रकट करना (श्रेण्यसाहित्य में बहुत प्रयोग नहीं) **उप**—, 1. रखना, उठाना, नीचे रखना, अन्दर रखना—अधिजानु बाहुमुपधाय—शि० ९।५४, हृदि चैनामुपधातुमर्हसि —रघु० ८।७७, (हृदयस्थित करने के लिए) उपहितं शिशिरागमश्रिया मुकुलजालमशोभत किंशुके—रघु० ९।३१, कु० १।४४ 2. निकट रखना,—(घोड़े आदि को) जोतना, महावी० ४।५६ 3. पैदा करना, निर्माण करना, उत्पादन करना मृच्छ० १।५३ 4. ऊपर डालना, सौंपना, संभालना, देख रेख में करना —तदुपहितकुटुम्बः,—रघु० ७।७१, 5. तकिये के स्थान में प्रयुक्त करना—वामभुजमुपधाय—दश० १११ 6. काम में लगाना, अभ्यर्थना करना, प्रदान करना —क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति—रघु० ३।२९ 7. ढकना, छिपाना 8. देना, जताना, समाचार देना, **उपा**,—1. निकट रखना, ऊपर रखना 2. पहनना 3. पैदा करना, सर्जन करना, उत्पादन करना —भर्तृ० ३।८५, **तिरस्**—, 1. छिपाना, गुप्त रखना,

2. (आ०) लुप्त होना, ओझल होना—अभिवृष्य-मरुत्सस्यं कृष्णमेघस्तिरोदधे—रघु० १०।४८, ११।९१, तिरस् के नी० भी देखिये नि०, 1. रखना, धरना, जड़ देना—शिरसि निदधानोऽञ्जलिपुटम् —भर्तृ० ३।१२१, रघु० ३।५०, ६२, १२।५२ शि० १।१३ 2. भरोसा करना, सौंपना, देख-रेख में रखना—निदधे विजयाशंसां चापे सीतां च लक्ष्मणे—रघु० १२।४४, १४।३६ 3. देना, समर्पित करना, जमा कर देना—दिनान्ते निहितं तेजः सवित्रेव हुताशनः—रघु० ४।१ 4. दबा देना, शान्त करना, रोक देना—सलिलै निहितं रजः क्षितौ—घट० १ 5. दफन करना, (भूमि के अन्दर) गाड़ देना, छिपाना—मनु० ५।६८, परि—, 1. (वस्त्रादिक) पहनना, धारण करना—त्वचं स मेध्यां परिधाय रौरवीं—रघु० ३।३१ 2. अहाता बना लेना, घेरा डाल लेना 3, किसी की ओर संकेत करना, पुरस् —सिर पर रखना या धारण करना—तुरासाहं पुरोधाय धाम स्वायंभुवं ययुः—कु० २।१, रघु० १२।४३ 2. कुलपुरोहित बनाना, प्रणि,—रखना, नीचे धरना या लिटा देना, साष्टांग प्रणत होना—प्रणिहितशिरसं वा कान्तमार्द्रापराधम्—मालवि० ३।१२, तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायम् —भग० ११।४४ 2. जड़ना, अन्दर रखना, अन्दर लिटाना, पेटी में बन्द करना—यदि मणिस्त्रपुणि प्रणिधीयते—पंच० १।७५, अने० पा० 3. प्रयोग करना, स्थिर करना, किसी की ओर संकेत करना—भर्तृप्रणिहितेक्षणाम्—रघु० १५।८४, भट्टि० ६।१४२ 4. फैलाना, विस्तार करना—मामाकाशप्रणिहितभुजं निर्दयाश्लेपहेतोः मेघ० १०६, नीवीं प्रति प्रणिहिते तु करे प्रियेण सख्यः शपामि यदि किंचिदपि स्मरामि—काव्य० ४ 5. (चर के रूप में) बाहर भेजना, प्रतिवि —, 1. प्रतीकार करना, संशोधन करना, मरम्मत करना, बदला लेना, उपाय करना, विरुद्ध पग उठाना—अर्थवाद एषः, दोषं तु मे कंचित्कथय येन स प्रतिविधीयेत—उत्तर० १, क्षिप्रमेव कस्मान्नप्रतिविहितमार्येण मुद्रा० ३ 2. व्यवस्था करना, क्रम से रखना, सजाना 3. प्रेषित करना, भेजना, प्रवि—, 1. बाँटना 2. करना, बनाना, वि —, 1. करना, बनाना, घटित करना, प्रभावित करना, सम्पन्न करना, अनुष्ठान करना, पैदा करना, उत्पादन करना, उत्पन्न करना यथाक्रमं पुंसवनादिकाः क्रिया धृतेश्च धीरः सदृशीर्व्यधत्त सः—रघु० ३।१०—तन्नो देवा विधेयासुः—भट्टि० १९।२, विधेयासुर्देवाः परमरमणीयां परिणतिम्—मा० ६।७, प्रायः शुभं च विदधात्यशुभं च जन्तोः सर्वङ्कषा भगवती भवितव्यतैव १।२३, ये द्वे कालं विधत्तः— श० १।१, पैदा करना, उत्पादन करना, समय का विनियमित करना —तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् - भग० ७।२१, रघु० २।३८, ३।६६, (यह अर्थ 'विधा' के साथ जुड़ने वाले शब्द के अनुसार और भी अधिक अदल-बदल किए जा सकते हैं, तु० 'कृ') 2. निर्धारित करना, विधान बनाना, निर्दिष्ट करना, नियत करना, स्थिर करना, आदेश देना, आज्ञा देना—प्राङ्नाभिवर्धनात्पुंसो जातकर्म विधीयते- मनु० २।२९, ३।१९, याज्ञ० १।७२, शूद्रस्य तु सवर्णैव नान्या भार्या विधीयते—९।१५७, ३।११८ 3. रूप बनाना, शक्ल देना, सर्जन करना, निर्माण करना—तं वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना—रघु० १।२९, अङ्गानि चम्पकदलैः स विधाय नूनं कान्ते कथं घटितवानुपलेन चेतः —शृंगार० ३ 4. नियुक्त करना, प्रतिनियुक्त करना (मन्त्री आदि को) 5. पहनना, धारण करना—पंच० १।२९ 6. स्थिर करना, (मन आदि को) लगाना —भग० २।४४, भर्तृ० ३।५४ 7. क्रमबद्ध करना, व्यवस्थित करना 8. तैयार करना, तत्पर करना, व्यव—, 1. बीच में रखना, बीच में डालना, हस्तक्षेप करना प्रेक्ष्य स्थितां सहचरीं व्यवधाय देहम्—रघु० ९।५७ 2. छिपाना, ढकना, पर्दा डालना—शापव्यवहितस्मृतः—श० ५,—श्रद्—, भरोसा करना, विश्वास रखना (कर्म० के साथ)—कः श्रद्धास्यति भूतार्थम्—मृच्छ० ३।२४, श्रद्दधे त्रिदशगोपमात्रके दाहशक्तिमति कृष्णवर्त्मनि—रघु० ११।४२, सम्—, 1.मिलाना, एकत्र लाना, संयुक्त करना, मिला देना,—यानि उदकेन संधीयते तानि भक्षणीयानि— कुल्लूक० 2. बर्ताव करना, मित्रता करना, संधि करना—शत्रुणा न हि संदध्यात्सुश्लिष्टेनापि संधिना— हि० १।८८, चाण० १९, काम० ९।४१ 3. स्थिर करना, संकेत करना—संदधे दृशमुदग्रतारकाम्—रघु० ११।६९ 4. (किसी अस्त्र या तीर आदि को) धनुष पर ठीक-ठीक बैठाना, या ठीक से जमाना—धनुष्यमोघं समधत्त बाणम्—कु० ३।६६, रघु० ३।५३, १२।९७ 5. उत्पादन करना, पैदा करना—पर्याप्तं मयि रमणीयचमरत्वं संधत्ते गगनतलप्रयाणवेगः—मा० ५।३, संधत्ते भृशमरतिं हि सद्वियोगः—कि० ५।५१ 6. मुकाबला करना, मुकाबले में सामने आना, शतमेकोऽपि संधत्ते प्राकारस्थो धनुर्धरः—पंच० १।२२९ 7. सुधारना, मरम्मत करना, स्वस्थ करना 8 कष्ट देना 9. ग्रहण करना, सहारा देना, बागडोर संभालना 10. अनुदान देना, संनि—, 1.रखना, एकत्र रखना,—मनु०२।१८६ 2. निकट रखना—श० ३।१९, 3. स्थिर करना, निर्दिष्ट करना—रघु० १३।१४४ 4. निकट जाना पहुँचना—प्रेर० निकट लाना, एकत्र संग्रह करना, समा—, 1. एकत्र रखना या धरना, मिलाना, संयुक्त

करना 2. रखना, धरना, स्थापित करना, लागू करना —पदं मूर्ध्नि समाधत्ते केसरी मत्तदन्तिनः पंच० १।३२७ 3. जमाना, अभिषेक करना, राजगद्दी पर बिठाना—रघु० १७।८ 4. समाश्वस्त होना, (मन को) शान्त करना—मनः समाधाय निवृत्तशोकः —रामा०, न शशाक समाधातुं मनो मदनवेपितम् —भाग० 5. सकेन्द्रित करना, (आँख या मन आदि को) एकाग्र करना,—भग० १२।९, भर्तृ० ३।४८ 6. संतुष्ट करना, (शंका का) समाधान करना, आक्षेप का उत्तर देना—इति समाधत्ते (टीकाओं में) 7. मरम्मत करना, सुधारना, ठीक करना, हटा देना —न ते शक्याः समाधातुम् हि० ३।३७, उत्पन्नामापदं यस्तु समाधत्ते स बुद्धिमान्—४।७ 8. विचार करना – भट्टि० १२।६ 9. सौंपना, अर्पण करना, हस्तान्तरित करना 10. पैदा करना, कार्यान्वित करना, सम्पन्न करना (निम्नांकित श्लोक में सोपसर्ग धा धातु के प्रयोगों का चित्रण किया गया है अधित कापि मुखे सलिलं सखी प्यधित कापि सरोजदलैः स्तनौ, व्यधित कापि हृदि व्यजनानिलं न्यधित कापि सुतनोः स्तनौ नै० ४।१११, इससे भी अच्छा निम्नांकित जगन्नाथ का श्लोक—निधानं धर्माणां किमपि च विधानं नवमुदां प्रधानं तीर्थानाममलपरिधानं त्रिजगतः, समाधानं बुद्धेरथ खलु तिरोधानमधियां श्रियामाधानं नः परिहरतु तापं तव वपुः—गंगा० १८)।

धाकः [धा+क—उणा०—तस्य नेत्वम्] 1. बैल 2. आधार, आशय 3. आहार, भात 4. स्थूणा, खंभा, स्तंभ।

धाटी [धट्+घञ्+ङीप्] धावा, आक्रमण।

धाणकः [धा+आणक] एक सोने का सिक्का (दीनार का अंश)

धातुः [धा+तुन्] संघटक या मूल भाग, अवयव 2. मूल तत्त्व, मुख्य या तत्त्व मूलक सामग्री—अर्थात् पृथिवी, आप्, तेजस्, वायु और आकाश, 3. रस, मुख्य द्रव्य या रस, शरीर का अनिवार्य उपादान (यह गिनती में सात माने जाते हैं—रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः—कई बार केश, त्वच् और स्नायु को मिला कर दस मान लिये जाते हैं) 4. शरीर के स्थितिविधायक तत्त्व (अर्थात् वात, पित्त, कफ—त्रिदोष) 5. खनिज पदार्थ, धातु, कच्ची धातु—न्यस्ताक्षरा धातुरसेन यत्र,—कु० १।७, त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलायां—मेघ० १०५,—रघु० ४।७१, कु० ६।५१ 6. क्रिया का मूल, भूवादयो धातवः –पा० १।३।१, पश्चादध्ययनार्थस्य धातोरधिरिवाभवत्—रघु० १५।९ 7. आत्मा, 8. परमात्मा 9. ज्ञानेन्द्रिय 10. पांच महाभूतों का गुण—अर्थात् रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द 11. हड्डी। सम०—**उपलः** खड़िया, चाक्,—**काशीश,-म्**—**कासीसम्**—**कसीस, कुशल**—(वि०) धातु के कार्यों में दक्ष—**क्रिया** धातुकार्मिकी, धातुकर्म, खानिश्री, धातुविज्ञान—**क्षयः** शरीर के तत्त्वों का नाश, क्षयरोग,—**जम्** शिलाजीत, शैलज तेल,—**द्रावकः** सुहागा,—**पः** खाद्य, पौष्टिक रस, शरीर के सात मूल उपादानों में मुख्य उपादान —**पाठः** पाणिनि का व्याकरण पद्धति के अनुसार बनी धातुओं की सूकी (पाणिनि के सूत्रों के परिशिष्ट के रूप में धातु पाठ, पाणिनि निर्मित एक आवश्यक सूची है),—**भृत्** (पुं०) पहाड़,—**मलम्** 1. शरीरस्थ धातुओं के मल के अपवित्र रूपांतर 2. सीसा,—**माक्षिकम्** 1. एक उपधातु. सोनामक्खी 2. खनिज पदार्थ, —**मारिन्** (पुं०) गंधक,—**राजकः** वीर्य,—**वल्लभम्** सुहागा,—**वादः** खनिज विज्ञान, धातुविज्ञान,—**वादिन्** (पुं०) खनिज विज्ञाता—**वैरिन्** (पुं०) गंधक,—**शेखरम्** कासीस, गंधक का तेजाब,—**शोधनम्**,—**संभवम्** सीसा,—**साम्यम्** अच्छा स्वास्थ्य (त्रिदोष-समता)!

धातुमत् (वि०) [धातु+मतुप्] धातुओं से भरा हुआ, धातु संपन्न। सम०—**ता** धातुओं का बाहुल्य,—कु० १।४।

धातृ (पुं०) [धा+तृच्] 1. निर्माता, रचयिता, उत्पादक, प्रणेता 2. धारण करने वाला, संधारक, सहारा देने वाला 3. सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा का विशेषण —मन्ये दुर्जनचित्तवृत्तिहरणे धातापि भग्नोद्यमः—हि० २।१६५, रघु० १३।६, शि० १।१३, कु० ७।४४ कि० १२।३३ 4. विष्णु का विशेषण 5. आत्मा 6. ब्रह्मा की प्रथम सृष्टि होने के कारण सप्तर्षियों के नाम, तु० कु० ६।९ 7. विवाहित स्त्री का प्रेमी व्यभिचारी!

धात्रम् [धा+ष्ट्रन्] बर्तन, पात्र,।

धात्री [धात्र+ङीप्] 1. दाई, धाय, उपमाता उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः—रघु० ३।२५—कु० ७।२५ 2. माता—याज्ञ० ३।८२, 3. पृथ्वी 4. आँवले का वृक्ष। सम०—**पुत्रः** धाय का पुत्र, धर्म भाई 2. अभिनेता, —**फलम्** आँवला।

धात्रेयिका, धात्रेयी [धात्रेयी+कन्+टाप्, ह्रस्वः, धात्री ढक्—ङीप्] धात्रीपुत्री—धात्रेयिकायाश्चतुरं वचश्च —मा० १।३२, कथितमेव नो मालतीधात्रेय्या लवङ्गिकया—मा० १ 2. धाय, दूध पिलाने वाली धाय।

धानम्,—नी [धा–ल्युट्, धान+ङीप्] आधार, पात्र, गद्दी, स्थान, जैसा कि मसीधानी, राजधानी, यमधानी।

धानाः (स्त्री० ब० व०) [धान+टाप्] भुने हुए जौ या चावल, खील 2. सत्तू 3. अनाज, अन्न 4. कली, अंकुर।

धानुर्दण्डिकः, धानुष्कः [धनुर्दण्ड+ठक्, धनुष्+टक्+क] तीरंदाज, (धनुष के द्वारा अपनी जीविका कमाने) वाला धनुर्धर—निमित्तादपराद्धेषोर्धानुष्कस्येव वल्गितम्—शि० २।२७।

धानुष्यः [धनुष्+ष्यञ्] बाँस।

धाधा (स्त्री०) इलायची।

धान्यम् [धान+यत्] 1. अनाज, अन्न, चावल 2. धनिया (सस्य और धान्य, तथा तंडुल और अन्न की भिन्नता के लिए दे० तण्डुल)। सम०—**अम्लम्** मांड़ से तैयार की हुई कांजी,—**अर्थः** चावल या अनाज के रूप में धन,—**अस्थि** (नपुं०) तूस या भूसी, बूर या चोकर,—**उत्तमः** बढ़िया अन्न अर्थात् चावल,—**कल्कम्** 1. छिल्का (अन्न का), धान्यत्वचा 2. भूसी, चोकर, पुआल,—**कोशः,—कोष्ठकम्** अनाज की खत्ती,—**क्षेत्रम्** अनाज का खेत,—**चमसः** चौला, चिड़वा,—**त्वच्** (स्त्री०) अनाज का छिल्का,—**मायः** अनाज का व्यापारी,—**राजः** जौ,—**वर्धनम्** व्याज के लिए अनाज उधार देना, अनाज की सूदखोरी,—**बीजम्** (**वीजम्**) धनिया,—**वीरः** उड़द (माष) की दाल,—**शीर्षकम्** अनाज की बाल,—**शूकम्** अनाज का सिर्टा, टूंड,—**सारः** कूट पीट कर निकाला हुआ अन्न।

धान्या, धान्याकम् [धान्य+टाप्, स्वार्थे कन् च] धनिया।

धान्वन् (वि०) (स्त्री०—नी) [धन्वन्+अण्] मरुभूमि का, मरुस्थल में विद्यमान।

धामकः [=धानक पृषो०] एक माशे की तोल।

धामन् (नपुं०) [धा+मनिन्] 1. आवास—स्थान, गृह, निवासस्थान, घर—तुरासाहं पुरोधाय धाम स्वायंभुवं ययुः कु० २।१, पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य—मेघ० ३३, भग० ८।२१, भर्तृ० १।३३ 2. जगह, स्थान, आश्रय—श्रियोधाम 3. घर के निवासी, परिवार के सदस्य 4. प्रकाश किरण, सहस्रधामन्—मुद्रा० ३।१७, हिमधामन्—शि० ९।५३ 5. प्रकाश, कान्ति, दीप्ति—मुद्रा० ३।१७, कि० २।२०, ५४, ५९, १०।६, अमरु ८६, रघु० ६।६, १८। २२, 6. राजयोग्य कांति, यश, प्रतिष्ठा—रघु० ११। ८५ 7. शक्ति, सामर्थ्य, प्रताप—कि० २।४७ 8. जन्म 9. शरीर 10. टोली, दल 11. अवस्था, दशा। सम०—**केशिन्**,—**निधिः** सूर्य।

धामनिका, धामनी [धमनी+कन्+टाप् ह्रस्वः, धमनी+अण्+ङीप्] दे० धमनी।

धार (वि०) [धृ+णिच्+अच्] 1. संभालने वाला, थामने वाला, सहारा देने वाला, 2. नदी की भांति प्रवाहित होने वाला, टपकने वाला, बहने वाला,—**रः** 1. विष्णु का विशेषण 2. वर्षा की आकस्मिक तथा तीक्ष्ण बौछार, तेजी से उड़ा ले जाने वाली झड़ी 3. हिम, ओला 4. गहरी जगह 5. ऋण 6. हद, सीमा।

धारकः [धृ=ण्वुल्] 1. किसी प्रकार का बर्तन (बक्स ट्रंक आदि), जलपात्र 2. कर्जदार।

धारण (वि०) (स्त्री० -**णी**) [धृ=णिच्+ल्युट्] संभालने वाला, थामने वाला, ले जाने वाला, संधारण करने वाला, निबाहने वाला, रक्षा करने वाला, रखने वाला, धारण करने वाला,—**णम्** 1. संभालने, थामने, सहारा देने, संधारण करने या सुरक्षित रखने की क्रिया 2. कब्जे में करना, संपत्ति 3. पालन करना, दृढ़ता पूर्वक पकड़ना, 4. याद रखना—ग्रहणधारणपटुर्बालकः 5. (किसी का) कर्जदार होना,—**णी** 1. पंक्ति या रेखा 2. शिरा, नलाकार वाहिका।

धारणकः [धारण+कन्] कर्जदार।

धारणा [धारण+टाप्] 1. संभालने, थामने, सहारा देने या सुरक्षित रखने की क्रिया 2. मन में धारण करने की शक्ति, अच्छी धारणात्मकस्मरण शक्ति—धीर्धारणावती मेधा—अमर 3. स्मरण शक्ति 4. मन को शांत रखना, श्वास को थामे रखना, मन की दृढ़ भावमग्नता—परिचेतुमुपांशु धारणा—रघु० ८।१८, मनु० ६।७२, याज्ञ० ३।२०१, (धारणेत्युच्यते चेयं धार्यते यन्मनस्तया) 5. धैर्य, दृढ़ता, स्थिरता 6. निश्चित विधि या निषेध, निश्चित नियम, उपसंहार, इति धर्मस्य धारणा—मनु० ८।१८४, ४।३८, ९।१२४ 7. समझ, बुद्धि 8. न्याय्यता, औचित्य, शालीनता 9. आस्था, विश्वास। सम०—**योगः** गहरी भक्ति, मनोयोग,—**शक्तिः** (स्त्री०) धारणात्मक स्मरण शक्ति।

धारयित्री [धृ+णिच्+तृच+ङीप्] पृथ्वी।

धारा [धार+टाप्] 1. पानी की सरिता या धार, गिरते हुए जल की रेखा, सरिता, धार—भर्तृ० २।९३, मेघ० ५५, रघु० १६।६६, आबद्धधारमश्रु प्रावर्तत—दश० ७४ 2. बौछार, वर्षा की तेज घड़ी 3. अनवरत रेखा—भामि० २:२० 4. घड़े का छिद्र 5. घोड़े का कदम—धाराः प्रसाधयितुमव्यतिकीर्णरूपाः—शि० ५।६० 6. हाशिया, किनारा, किसी वस्तु की किनारी या सीमा—ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति—श० १।१८ 7. तलवार, कुल्हाड़ा या किसी काटने वाले उपकरण का तेज किनारा या धार—राजितः परशुधारया मम—रघु० ११।७८, ६।४२, १०।८६, ४१, भर्तृ० २।२८ 8. किसी पहाड़ या चट्टान का किनारा 9. पहिया या पहिये का परिणाह या परिधि—रघु० १३।२५ 10. उद्यान की दीवार, बाड़, छाड़बंदी 11. सेना की अग्रिम पंक्ति 12. उच्चतम बिन्दु, सर्वोपरिता 13. समुच्चय

14. यश, 15. रात 16. हल्दी 17. समानता, 18. कान का अग्रभाग। सम०--अग्रम् बाण का चौड़ा फलका,--अङ्कुरः 1. वर्षा की बूंद 2. ओला 3. (शत्रु का मुकाबला करने के लिए) सेना के आगे २ बढ़ते जाना,--अंगः तलवार,--अटः 1. चातक पक्षी 2. घोड़ा 3. बादल 4. मदमाता हाथी,--अधिरूढ (वि०) उच्चतम स्वर तक उठाया हुआ--अवनिः (स्त्री०) हवा, --अश्रु (नपुं०) अश्रु प्रवाह--अमरु १०--आसारः भारी वर्षा, मूसलाधार वर्षा--धारासारैर्महती वृष्टिर्बभूव--हि० ३, विक्रम० ४।१, --उष्ण (वि०) (गौ के स्तन से निकला हुआ) गरम (दूध), गृहम् स्नानागार जिसमें फौवारा लगा हो, घर जिसमें फौवारे से सुसज्जित स्नानागार हो--रघु० १६।४९, रत्न० १।१३, --धरः 1. बादल 2. तलवार,--निपातः,--पातः 1. बारिश का होना, बौछार का टपटप गिरना मेघ० ४८ 2. जल की धारा सरिता,--यन्त्रम् फौवारा, झरना (पानी का) अमरु ५९, रत्न० १।१२,--वर्षः,-र्षम्-संपातः लगातार घोर मूसलाधार वृष्टि--रघु० ४।८२,--वाहिन् (वि०) अनवरत, लगातार--उत्तर० ४।२,--विषः टेढ़ी तलवार।

धारिणी [धृ+णिनि+ङीप्] पृथ्वी!

धारिन् (वि०) (स्त्री०-णी) [धृ+णिनि] 1. ले जाने वाला, वहन करने वाला, निबाहने वाला, सुरक्षित रखने वाला, रखने वाला, संभालने वाला, सहारा देने वाला--पादाम्भोरुहधारि--गीत० १२, कर आदि 2. स्मृति में रखने वाला, धारणात्मक स्मरण शक्ति रखने वाला, अज्ञेभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठाः ग्रन्थिभ्यो धारिणो वराः मनु० १२।१०३।

धार्तराष्ट्रः [धृतराष्ट्र+अण्] 1. धृतराष्ट्र का पुत्र 2. एक प्रकार का हंस जिसके पैर और चोंच काली होती है--निष्पतन्ति धार्तराष्ट्राः कालवशान्मेदिनीपृष्ठे--वेणी० १।६, (यहाँ शब्द उपर्युक्त दोनों अर्थों में प्रयुक्त है)!

धार्मिक (वि०) (स्त्री०-की) [धर्म+ठक्] 1. नेक, पुण्यात्मा, न्यायशील, सद्गुणसंपन्न 2. सत्याश्रित, न्याय्य, न्यायोचित 3. धर्म से युक्त!

धार्मिणम् [धर्मिन्+अण्] सद्गुणियों का समाज।

धार्ष्टर्यम् [धृष्ट+ष्यञ्] अहंकार, अविनय, औद्धत्य, ढिठाई, अक्खड़पन!

धाव् (भ्वा०पर०--धावति, धावित) 1. दौड़ना, आगे बढ़ना--अद्यापि धावति मनः--चौर० ३६, धावन्त्यमी मृगजवाक्षमयेव रथ्याः--श० १।८, गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः १।३४, 2. किसी की ओर दौड़ना, किसी के मुकाबले में आगे बढ़ना, आक्रमण करना, मुकाबला करना--भट्टि० १६।६७ 3. बहना, नदी की भांति प्रवाहित होना--धावत्यभसि तैलवत्--सुश्रु० 4. दौड़ना, उड़ जाना ii (भ्वा० उभ०--धावति-ते, धौत, धावित) 1. धोना, साफ करना, मांजना, निर्मल करना, रगड़ना--दधावाद्भिस्ततश्चक्षुः सुग्रीवस्य विभीषणः, विदांचकार धौताक्षः स रिपुं खे ननर्द च--भट्टि० १४।५० श० ६।२५, शि० १७।८ 2. उज्ज्वल करना, चमकाना 3. किसी व्यक्ति से टकराना (आ०) निस्, धो डालना--निर्धौते सति हरिचन्दने जलौघैः--शि० ३।५१, निर्धौतदाना मलगंडभित्तिः रघु० ५।४३, ७०।

धावकः [धाव्+ण्वुल्] 1. धोबी, 2. एक कवि (कहा जाता है कि इसने श्रीहर्ष राजा के लिए रत्नावली की रचना की थी--श्रीहर्षदेर्धावकादीनामिव यशः--काव्य० १, अने० पा०--प्रथितयशसां धावकसौमिल्लकविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य--मालवि० १, अने० पा०।

धावनम् [धाव्+ल्युट्] 1. दौड़ना, सरपट भागना 2. बहना, 3. आक्रमण करना 4. मांजना, पवित्र करना, रगड़ना, बहा देना 5. किसी चीज से रगड़ना।

धावल्यम् [धवल+ष्यञ्] 1. सफेदी 2. पांडुरता।

धि i (तुदा० पर०--धियति) संभालना, रखना, अधिकार में करना, सम्--, सुलह करना--तु० संधा० ii (या धिन्व् स्वा० पर० धिनोति) प्रसन्न करना, खुश करना, संतुष्ट करना--पश्यन्ती चात्मरूपं तदपि विलुलितस्रग्धरेयं धिनोति--गीत० १२, धिनोति नास्माञ्जलजेन पूजा त्वयान्वहं तन्वि वितन्यमाना--नै० ८।९७, उत्तर० ५।२७, कि० १।२२।

धिः (समास के अन्त में प्रयुक्त) आधार, भंडार, आशय आदि--उदधि, इषुधि, वारिधि, जलधि आदि।

धिक् (अव्य) [धा+डिकन्] निन्दा, बुराई, विषाद की भावना को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय--(धिक्कार, फटे मुंह, शर्म, दुःख, तरस --कर्म० साथ)--धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां-च, भर्तृ० २।२, धिगिमां देहभृतामसारताम्--रघु० ८।५०. धिक्तान् धिक्तान् धिगेतान् कथयति सततं कीर्तनस्थो मृदङ्गः, धिक् सानुजं कुरुपतिं धिगजातशत्रुं--वेणी० ३।११, कभी-कभी कर्तृ० संबो० और संबं० के साथ--धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः पंच० १, धिङ्मूर्ख, धिगस्तु हृदयस्यास्य (धिक्कृ तिरस्कार करना) अवज्ञा करना, रद्द करना, बुरा भला कहना)। सम० --कारः--क्रिया झिड़कना, फटकारना, तिरस्कार करना, अवज्ञा करना,--दण्डः डांटफटकार बताना, निंदा--मनु० ८।१२९,--पारुष्यम् अपशब्द, डांट फटकार, भर्त्सना।

धिप्सु (वि०) [दम्भ्+सन्+उ] धोखा देने का इच्छुक, धोखा देने वाला—भट्टि० ९।३३ ।

धिन्व् दे० धि० ii

धिषणः [धृष्+क्यु, धिष् आदेशः] देवों के गुरु बृहस्पति का नाम,—**णम्** निवासस्थान, आवास, घर, —**णा** 1. भाषण, 2. स्तुति, सूक्त 3. बुद्धि, समझ महावी० ६।७ 4. पृथ्वी 5. प्याला, कटोरा ।

धिष्ण्यः [धृष्+ण्य नि० ऋकारस्य इकारः] 1. यज्ञाग्नि के लिए स्थान, हवनकुण्ड, अग्नीवेदि परितः कृतधिष्ण्या—श० ४।७ 2. असुरों के गुरु शुक्राचार्य का नाम 3. शुक्र ग्रह 4. शक्ति, सामर्थ्य,—**ष्ण्यम्** 1. आसन, आवास, स्थान, जगह, घर—न भौमान्येव धिष्ण्यानि हित्वा ज्योतिर्मयान्यपि—रघु० १५।२९, 2 केतु, उल्का 3. अग्नि 4. तारा, नक्षत्र ।

धीः (स्त्री०) [ध्यै+क्विप्, संप्रसारण] 1. (क) बुद्धि, समझ—धियः समग्रैः स गुणैरुदारधीः—रघु० ३।३० —कु० कुधी, सुधी आदि (ख) मन, दुष्टधी दुष्ट बुद्धि वाला—भग० २।५४, रघु० ३।३० 2. विचार कल्पना, उत्प्रेक्षा, प्रत्यय—न धिया पथि वर्तसे—कु० ६।२२ 3. विचार, आशय, प्रयोजन, नैसर्गिक प्रवृत्ति, कि० १।३७ 4. भक्ति, प्रार्थना 5. यज्ञ । सम० —**इन्द्रियम्** प्रत्यक्षज्ञान का अंग (ज्ञानेन्द्रिय), मनः कर्णस्तथा नेत्रं रसना च त्वचा सह, नासिका चेति षट्तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते, —**गुणाः** (ब० व०) बौद्धिक गुण, (शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा, ऊहापोहार्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः—कामन्दक),—**पतिः** (धियां पतिः) देवों के गुरु बृहस्पति —**मन्त्रिन्** (पु०),—**सचिवः** 1. सलाहकार मंत्री (विप० कर्मसचिव—कार्यान्वयीमंत्री) 2. बुद्धिमान् और दूरदर्शी सलाहकार,—**शक्तिः** (स्त्री०) बौद्धिक शक्ति,—**सखः** सलाहकार, परामर्शदाता, मंत्री ।

धीत (वि०) [धे+क्त] 1. चूसा गया, पीया गया, दे० 'धे' ।

धीतिः (स्त्री०) [धे+क्तिन्] 1. पीना, चूसना, 2. प्यास ।

धीमत् (वि०) [धी+मतुप्] बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली, विद्वान् (पुं०) बृहस्पति का विशेषण ।

धीर (वि०) [धी+रा+क] 1. बहादुर, उद्धत साहसी —धीरोद्धता गतिः—उत्तर० ६।१९ 2. स्थिर, सुदृढ़, अटल, टिकाऊ, चलाऊ, स्थायी—रघु० २।६ 3. दृढ़मनस्क, धैर्यवान्, स्वस्थचित्त, अडिग, दृढ़ निश्चय वाला,—धीरा र तरन्त्यापदं—का० १७५, विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः—कु० १।५२ 4. स्वस्थचित्त, शान्त, सावधान 5. सौम्य, स्थिरबुद्धि, प्रशान्त, गम्भीर—रघु० १८।४ 6. मजबूत, बलवान 7. बुद्धिमान्, दूरदर्शी, प्रतिभाशाली, समझदार, विद्वान् चतुर—धृतेश्च धीरः सदृशीर्व्यधत्त सः—रघु० ३।१०, ५।३८, १६।७४, उत्तर० ५।३१ 8. गहरा, गंभीर, ऊँचा स्वर, खोखलास्वर स्वरेण धीरेण निवर्तयन्निव—रघु० ३।४३, ५२, उत्तर० ६।१७ 9. आचरणशील, आचारवान् 10. (वायु आदि) मन्द, मृदु, सुहावना, सुखकर—धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली—गीत० ५ 11. सुस्त, आलसी 12. साहसी 13. हेकड़,—**रः** 1. समुद्र 2. राजा बलि का विशेषण,—**रम्** केसर, ज़ाफ़रान,—**रम्** (अव्य०) साहसपूर्वक, दृढ़ता के साथ, अडिग होकर धीरज के साथ—भर्तृ० २।३१, अमरु ११। सम०—**उदात्तः** अच्छे विचारों का शूरवीर व्यक्ति (काव्य नाटक में) नायक,—अविकत्थनः क्षमावानतिगम्भीरो महासत्त्वः, स्थेयान्निगूढमानो धीरोदात्तो दृढव्रतः कथितः—सा० द० ६६,—**उद्धतः** शूरवीर परन्तु अभिमानी (काव्यनाटक में) नायक—मायापरः प्रचण्डश्चपलोऽहंकारदर्पभूयिष्ठः, आत्मश्लाघानिरतो धीरैर्धीरोद्धतः कथितः —सा० द० ६७,—**चेतस्** (वि०) दृढ़, अडिग, दृढ़ मन वाला, साहसी,—**प्रशान्तः** (काव्य नाटक में) नायक जो शूरवीर और शान्त व्यक्ति हो—सामान्यगुणैर्भूयान् द्विजातिको धीरप्रशान्तः स्यात्—सा० द० ६९,—**ललितः** (काव्य नाटक में) नायक जो दृढ़ और शूरवीर होने के साथ-साथ क्रीडाप्रिय और असावधान हो—निश्चिंतो मृदुरनिशं कलापरो धीरललितः स्यात् सा० द० ६८,—**स्कन्धः** भैंसा ।

धीरता [धीर+तल्+टाप्] । धैर्य, साहस, मनोबल —विपत्तौ च महांल्लोके धीरतामनुगच्छति—हि० ३।१४४ 2. ईर्ष्या का दमन 3. गंभीरता, शान्तचित्तता —प्रत्यादेशान्न खलु भवतो धीरतां कल्पयामि—मेघ० १४४, (दूसरे अर्थों के लिए दे० 'धैर्य') ।

धीरा [धीर+टाप्] काव्य नाटक में वर्णित नायिका जो अपने पति या प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई भी, उसकी उपस्थिति में अपनी बाह्य भावमुद्रा से अपना रोष प्रकट नहीं होने देती—रसमंजरी की उक्तिः—व्यङ्ग्यकोप प्रकाशिका धीरा—दे० सा० द० १०२–५, भी। सम०—**अधीरा** काव्य नाटक में वर्णित नायिका जो अपने पति या प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई अपने रोष को अभिव्यक्त भी कर देती है, और अपनी ईर्ष्या को छिपा भी लेती है—व्यङ्ग्याव्यङ्ग्यकोप प्रकाशिका धीरा-धीरा—रसमंजरी ।

धीलटिः,—**टी** (स्त्री०) [धी+लट्+इन्, धीलटि+ङीप्] पुत्री, बेटी ।

धीवरः [दधाति मत्स्यान्—धा+ष्वरच्] मछुवा—मृगमीनसज्जनानां तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनां, लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति—भर्तृ० २।६१,

१।८५,—रम् लोहा,—री 1. मछुवे की स्त्री 2. मछलियां रखने की टोकरी।

धु (स्वा० उभ०—धुनोति, धुनुते, धुत) दे० 'धू'।

धुक्ष् (भ्वा० आ० धुक्षते, धुक्षित) 1. सुलगना 2. जीना 3. कष्ट भोगना—प्रेर० धुक्षयति—सुलगाना, प्रज्वलित करना, सम्—सुलगाना, उत्तेजित होना (आलं० भी) संदुधुक्षे तयोः कोपः—भट्टि० १४।१०९, प्रेर० सुलगाना, प्रज्वलित करना, उत्तेजित करना —निर्वाणभूयिष्ठमथास्य वीर्यं संधुक्षयन्तीव वपुर्गुणेन —कु० ३।५२।

धुत (वि०) [धु+क्त] 1. हिला हुआ,—रघु० ११।१६ 2. छोड़ा हुआ, परित्यक्त।

धुनिः,—नी (स्त्री०) [धु+नि, धुनि+ङीप्] नदी, दरिया—पुराणां संहृतुं सुरधुनि कपर्दोऽधिरुरुहे—गंगा० २२। सम०—नाथः समुद्र।

धुर् [धुर्व्+क्विप्] (कर्तृ० ए० व०—धूः) 1. (शा०) जूआ, न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति—मृच्छ० ४।१७, अत्रस्नुभिर्युक्तधुरं तुरङ्गैः—रघु० १४।४७, 2. जूए का वह भाग जो कंधों पर रक्खा रहता है, 3. पहिए की नाभि को धुरी के साथ स्थिर करने के लिए धुरी के दोनों किनारों पर लगी कील 4. गाड़ी का बम 5. बोझा, भार (आलं० भी) उत्तरदायित्व, कर्तव्य, कार्य—तेन धूर्जगतो गुर्वी सचिवेषु निचिक्षिपे—रघु० १।३४, २।७४, ३।३५, ६६, कु० ६।३० आप्तैरत्यनवाप्तपौरुषफलैः कार्यस्यधूरुज्झिता—मुद्रा० ६।५, ४।६, कि० ३।५०, १४।६ 6. प्रमुखतम या उच्चतम स्थान, हरावल, अग्रभाग, शिखर, सिर अपांसुलानां धुरि कीर्तनीया—रघु० २।२, धुरि स्थिता त्वं पतिदेवतानाम्, १४।७४, अविघ्नमस्तु ते स्थेयाः पितेव धुरि पुत्रिणाम्—१।९१, धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव—मालवि० १।१६, ५।१६, (धुरि कृ सिरे पर रखना या आगे रखना—श० ७।४)। सम०—गत (धूर्गत) (वि०) 1. रथ के बम पर खड़ा हुआ 2. सिर पर खड़ा हुआ मुख्य, प्रधान, प्रमुख,—जटिः शिव का विशेषण, —धर (धूर्धर, 'धुरंधर' भी) (वि०) 1. जूआ सँभालने वाला 2. जोते जाने के योग्य 3. अच्छे गुणों से युक्त या महत्त्वपूर्ण कर्तव्यों से लदा हुआ 4. मुख्य, प्रधान, अग्रगण्य प्रमुख,—कुलधुरंधरो भव—विक्रम० ५, (रः), 1. बोझा ढोने वाला जानवर 2. जिसके ऊपर किसी कार्य का भार हो 3. मुख्य, प्रधान, अग्रणी,—वह (धुर्वह) (वि०) भार वहन करने वाला 2. काम का प्रबंधक, (हः) बोझा ढोने वाला पशु, इसी प्रकार 'धूर्वोढ़'।

धुरा (स्त्री०) बोझा, भार—रणधुरा—वेणी० ३।५।

धुरीण, धुरीय (वि०) [धुरं वहति, अर्हति वा, धुर्+ख, छ वा] 1. बोझा ढोने या सँभालने के योग्य 2. जोते जाने के योग्य 3. महत्त्वपूर्ण कार्यों में नियुक्त (णः, —यः) 1. बोझा ढोने वाला पशु 2. आवश्यक कार्यों में नियुक्त 3. मुख्य, प्रधान, अग्रणी।

धुर्य (वि०) [धुर्+यत्] 1. बोझा सँभालने के योग्य 2. महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपे जाने के योग्य 3. चोटी पर स्थित, मुख्य, प्रमुख,—र्यः 1. बोझा ढोने का पशु 2. घोड़ा या बैल जो गाड़ी में जुता हुआ हो—नाविनीतैर्व्रजेत् धुर्यैः—मनु० ४।६७, येनेदं ध्रियते विश्वं धुर्यैर्यानमिवाध्वनि—कु० ६।७६, धुर्यान् विश्रामयेति —रघु० १।५४, ६।७८, १७।१२, 3. (उत्तरदायित्व के) भार को संभालने वाला—रघु० ५।६६, 4. मुख्य अग्रणी, प्रधान—न हि सति कुलधुर्ये सूर्यवंश्या गृहाय —रघु० ७।७१ 5. मंत्री, महत्त्वपूर्ण कार्यों पर नियुक्त व्यक्ति।

धुस्तु (स्तू) रः [धु+उर्, स्तुट्] धतूरे का पौधा।

धू (तुदा० पर०, भ्वा०, स्वा०, क्र्या०, चुरा०+उभ० धुवति; धवति—ते; धूनोति, धूनुते; धुनाति, धुनीते धूनयति—ते) 1. हिलाना, क्षुब्ध करना, कंपाना —धुन्वन्ति पक्षपवनैर्न नभो बलाकाः—ऋतु० ३।१२, धुन्वन् कल्पद्रुमकिसलयानि—मेघ० ६२, कु० ७।४९, रघु० ४।६७, भट्टि० ५।१०१, ९।७, १०।२२ 2. उतार देना, हटाना, फेंक देना—स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया—श० ७।२४ 3. फूंक मार कर उड़ा देना, नष्ट करना 4. सुलगाना, उत्तेजित करना (आगे को) पंखा करना—वायुना धूयमानो हि वनं दहति पावकः—महा०, पवनधूतः अग्निः- ऋतु० १।२६ 5. अशिष्ट व्यवहार करना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना—मा नधावीररिं रणे—भट्टि० ९।५०, १५।६१ 6. अपने ऊपर से उतार फेंकना, अपने आपको मुक्त करना—(सेवकाः) आरोहन्ति शनैः पश्चाद्धुन्वन्तमपि पार्थिवम्—पंच० १।३६, (कवि रहस्य के निम्नलिखित श्लोक में इस धातु के विभिन्न गणों के रूप में दिए गये हैं:—धूनोति चम्पकवनानि धुनोत्यशोकं चूतं धुनाति धुवति स्फुटितातिमुक्तम्, वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून् यत्कानने धवति चन्दनमंजरीश्च)। अव—. हिलाना, इधर-उधर करना, कम्पाना, लहराना, —रेणुः पवनावधूतः—रघु० ७।४३, लीलावधूतैश्चामरैः—मेघ० ३५, कि० ६।३, शि० १३।३६ 2. उतार फेंकना, हटाना, पराभूत करना,—राजसत्त्वमवधूय मातृकम्—रघु० ११।९०, सुरवधूरवधूतभयाः शरैः—९।१९, ३।६१, कि० १।४२ 3. अवहेलना करना, अस्वीकृति करना, उपेक्षा करना, तिरस्कारयुक्त व्यवहार करना—चण्डी मामवधूय पादपतितं —विक्रम० ४।३८, पादानतः कोपनयाऽवधूतः—कु०

३।८, विक्रम० ३।५, उद्—हिला डालना, उठाना, ऊपर को उछालना, लहराना—कर्णोद्धूतानि चामराणि—का० ११७, रघु० ३।८५, ९।५०, उद्धुनीयात सत्केतून्—भट्टि० १९।८, कि० ५।३९, मारुतभरोद्धूतोऽपिधूलिव्रजः—धन० 2. उतार फेंकना, हटाना, दूर करना, नष्ट करना (आलं० भी)—उद्धूतपापाः—मेघ० ५५, शि० १।८ 3. बाधा पहुँचाना, उत्तेजित करना, भड़काना, निस्—, 1. उतार फेंकना, हटाना, दूर करना, निकाल देना, नष्ट करना—निर्धूतोऽधरशोणिमा—गीत० १२, ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः—भग० ५।१६, रघु० १२।५७ 2. उपेक्षा करना, तिरस्कारयुक्त व्यवहार करना, अवज्ञा करना 3. त्याग देना, छोड़ देना, फेंक देना, वि—, 1. हिलाना, इधर-उधर करना, कंपाना, मृदुपवनविधूतान्—ऋतु० ६।२९, ३।१० दीर्घां वेणीं विधुन्वाना—महा० 2. उतार देना, नष्ट करना, निकाल देना, दूर भगा देना कर्पेविधवितुं द्युतिम्—भट्टि० ९।२८, रघु० ९।७२, अन० पा० उपेक्षा करना, घृणा करना, तिरस्कारयुक्त व्यवहार करना रघु० ११।४० 4. छोड़ना, छोड़ देना, त्याग देना · नै० १।३५ ।

धूः (स्त्री०) [धू+क्विप्] हिलना, कांपना, क्षुब्ध होना ।

धूत (भू० क० कृ०) [धू+क्त] 1. हिला हुआ 2. उतार फेंका हुआ, हटाया हुआ 3. भड़काया हुआ 4. परित्यक्त, उजड़ा हुआ 5. फटकारा हुआ 6. परीक्षित 7. अवज्ञात, तिरस्कारपूर्वक व्यवहार किया गया 8. अनुमानित । सम०—**कल्मष**,—**पाप** (वि०) जिसने अपने पाप उतार फेंके हैं, पापमुक्त ।

धूतिः (स्त्री०) [धू+क्तिन्] 1. हिलाना, इधर—उधर करना 2. भड़काना ।

धून (भू० क० कृ०) [धू+क्त, तस्य नः] हिला हुआ, क्षुब्ध ।

धूनिः (स्त्री०) हिलाना, क्षुब्ध करना ।

धूप् i (भ्वा० पर० धूपायति, धूपायित) गरम करना, गरम होना, ii (चुरा० उभ० धूपयति-ते) 1. धूनी देना, सुवासित करना, धुपाना, सुगंधित करना 2. चमकना 3. बोलना ।

धूपः [धूप्+अच्] 1. धूप, लोबान, गन्धद्रव्य, कोई सुगंधयुत पदार्थ 2. (गोंद बिरोजा आदि सुगंधित पदार्थों से उठने वाली वाष्प, सुगंधित बाष्प या धुआँ—धूपोष्मणा त्याजितमार्द्रभावम्—कु० ७।१४, मेघ० ३३, विक्रम० ३।२, रघु० १६।५० 3. सुगंधित चूर्ण । सम०—**अगुरु** (नपुं०) एक प्रकार की गुग्गुल जो धुपाने के काम आती है,—**अङ्गः** 1. तारपीन 2. सरल वृक्ष,—**अर्हम्** गुग्गुल,—**पात्रम्** धूपदान अगरदान, धूप जलाने का पात्र,—**वासः** गंधद्रव्य के धुएँ से वासना, धुपाना,—**वृक्षः** एक पेड़ जिससे गुग्गुल निकलता है, सरल वृक्ष ।

धूमः [धू+मक्] 1. धुआँ, बाष्प—धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः—मेघ० ५ 2. धुंध, कोहरा 3. उल्का, केतु 4. बादल 5. (नस्य, छींक लाने वाला) धूआँ 6. डकार, उद्गार । सम०—**आभ** (वि०) धुएँ जैसा प्रतीत होने वाला, धुमैले रंगका,—**आवलिः** धुएँ का बादल या धूममाला,—**उत्थम्** नौसादर,—**उद्गारः** 1. धुआँ या बाष्प उठना,—**ऊर्णा** यम की पत्नी का नाम, °**पतिः** यम का विशेषण,—**केतनः**,—**केतुः** 1. आग,—कोपस्य नंदकुलकाननधूमकेतोः—मुद्रा० १।१०, रघु० ११।८१ 2. उल्का, पुच्छल तारा, गिरता हुआ तारा—धूमकेतुमिव किमपि करालम्—गीत० १, धूमकेतुरिवोत्थितः—कु० २।३२ 3. केतु,—**जः** बादल,—**ध्वजः** अग्नि,—**पानम्** धुआँ या बाष्प पीना,—**महिषी** कोहरा, धुंध,—**योनिः** बादल तु० मेघ० ५ ।

धूमल (वि०) [धूम+ला+क] धुमैला, भूरा-लाल, मटमैला ।

धूमायति-ते (ना० धा० पर०) धूएँ से भर देना, बाष्प से ढक देना, अँधेरा करना—धूमायिता दश दिशो दलितारविन्दाः—भामि० १।१०४, मृच्छ० ५।५७ ।

धूमिका [धूम+ठन्+टा] बाष्प, कोहरा, धुंध ।

धूमित (वि०) [धूम+इतच्] धूएँ से ढका हुआ, अंधकारयुक्त—कु० ४।३० ।

धूम्या [धूम+यत्+टाप्] धुएँ का बादल, प्रगाढ़ धुआँ ।

धूम्र (वि०) [धूम+रा+क] 1. धुमैला, धुएँ वाला, भूरा भर्तृ० ३।५५, रघु० १५।१६ 2. गहरा लाल 3. काला, अंधकारावृत 4. मटमैला,—**म्रः** 1. काले और लाल रंग का मिश्रण 2. लोबान,—**म्रम्** पाप, दुर्व्यसन, दुष्टता । सम०—**अटः** एक प्रकार की शिकारी चिड़ियाँ,—**रुच्** (वि०) मटमैले रंग का,—**लोचनः** कबूतर,—**लोहित** (वि०) गहरा लाल, गाढ़ा मटमैला, (**तः**) शिव का विशेषण,—**शूकः** ऊँट ।

धूम्रकः [धूम्र+कै+क] ऊँट !

धूर्त (वि०) [धूर्व(धूर्)+क्त] 1. चालाक, शठ, बदमाश, मक्कार, जालसाज, 2. उपद्रवी, क्षति पहुँचाने वाला,—**र्तः** 1. ठग, बदमाश, उचक्का, 2. जुआरी 3. प्रेमी, रसिया, विनोदप्रिय धूर्त—तत्ते धूर्त हृदि स्थिता प्रियतमा काचिन्ममेवापरा—पंच० ४।६, धूर्तोऽपरां चुंबति—अमरु १६, इसी प्रकार—धूर्तानामभिसारसत्वरहृदाम्—गीत० ११ 4. धतूरा । सम०—**कृत्** (वि०) मक्कार, बेइमान, (पुं०) धतूरे का पौधा,—**जन्तुः** मनुष्य,—**रचना** धूर्त विद्या, बदमाशी ।

धूर्तकः [धूर्त+कन्] 1. गीदड़ 2. बदमाश ।

धूर्वी [धुर+अज्+क्विप्, अज् इत्यस्य वी आदेशः] गाड़ी का बम, या अगला भाग !

धूलकम् [धू+लक+बा०] विष, ज़हर !

धूलिः,–ली (पुं०, स्त्री०) [धू+लि बा०, धूलि+ङीष्] 1. धूल, अनीत्वापङ्क्तां धूलिमुदकं नावतिष्ठते—शि० २।३४ 2. चूर्ण । सम०—**कुट्टिमम्,—केदारः** 1. टीला, प्राचीर 2. जोता हुआ खेत, **ध्वजः** वायु, **—पटलः** धूल का ढेर,—**पुष्पिका,—पुष्पी** केतकी का पौधा !

धूलिका [धूलि+कन्+टाप्] कोहरा, धुंध !

धूसर (वि०) [धू+सर, किच्च न षत्वम्] धूल के रंग का, भूरा सा, धुमैला—सफेद रंग का, मटमैला—शशी दिवसधूसरः—भग० २।५६, कु० ४।४, ४६, रघु० ५।४२, १६।१७, शि० १७।४१,—रः 1. भूरारंग 2. गधा 3. ऊँट 4. कबूतर 5. तेली !

धृ i (तुदा० आ०—कइयों के मतानुसार धृ का कर्मवा० रूप—ध्रियते, धृत) 1. होना, विद्यमान होना, रहना रहते रहना, जीवित रहना—आर्यपुत्र ध्रिये एषा ध्रिये—उत्तर० ३, ध्रियते यावदेकोऽपि रिपुस्तावत्कुतः सुखम्—शि० २।३५, १५।८९ 2. स्थापित या सुरक्षित रहना, रहना, चलते रहना—सुरतश्रमसंभृतो मुखे ध्रियते स्वेदलवोद्गमोऽपिते—रघु० ८।५१, कु० ४।१८ 3. संकल्प करना, ii (भ्वा० चुरा० उभ० धरति-ते, धारयति-ते, धृत, धारित) 1. थामना, संभालना, ले जाना—भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्—भर्तृ० २।४, वैणवीं धारयेद्यष्टिम् सोदकं च कमण्डलुम्—मनु० ४।३६, भट्टि० १७।५४, विक्रम० ४।३६ 2. थामना, संभालना, स्थापित रखना, सहारा देना, जीवित रखना—धृतमंदर—गीत० १, यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयते समम्—मनु० ९।३११, पंच० १।११६, प्रातः कुन्दप्रसवशिथिलं जीवितं धारयेथाः—मेघ० ११३, चिरमात्मना धृताम्—रघु० ३।३५ 3. अपने अधिकार में थामे रखना, अधिकार में करना, पास रखना, रखना—या संस्कृता धार्यते—भर्तृ० २।१९ 4. धारण करना, (रूप, छद्मवेश), लेना—केशव धृतशूकररूप—गीत० १, धारयति कोकनदरूपम्—१०, 5. पहनना, धारण करना, (वस्त्रालंकारादिक) उपयोग में लाना, श्रितकमलाकुचमण्डल धृत कुण्डल ए—गीत० १ 6. रोकना, दमन करना, नियंत्रण करना, ठहराना, स्थगित करना 7. जमाना, संकेत करना (संप्र० या अधि० के साथ)—ब्राह्मण्ये धृतमानसः, मनो दध्रे राजसूयाय आदि 8. भुगतना, भोगना 9. किसी व्यक्ति के लिए कोई वस्तु निर्धारित करना, नियत करना, निर्दिष्ट करना 10. किसी का ऋणी होना (संप्र०, संबं० विरल०),—वृक्षसेचने द्वे धारयसि मे, श० १, तस्मै तस्य वा धनं धारयति आदि 11. थामना, रखना 12. पालन करना, अभ्यास करना 13. हवाला देना, उद्धृत करना (इस धातु के अर्थ उन संज्ञा शब्दों के अनुसार, जिनसे यह जुड़े, विविध प्रकार के हो जाते हैं—उदा० **मनसा धृ** मन में धारण करना, याद रखना, **शिरसा धृ, मूर्ध्नि धृ** सिर पर रखना, अत्यंत आदर करना, **अंतरे धृ** धरोहर रखना, जमानत के रूप में जमा करना, **समये धृ** सहमत करना, **दण्डं धृ** दण्ड देना, सज़ा देना, बल का उपयोग करना, **जीवितं, प्राणान् शरीरं, गात्रं देहम् धृ** जीवित रहना, आत्मा को स्थापित रखना, प्राणों का सुरक्षित रखना, **व्रतं धृ** व्रत का पालन करना, **तुलया धृ** तराजू म रखना, तोलना, **मनः, मतिम्, चित्तम्, बुद्धिम् धृ** किसी वस्तु में मन लगाना, मन जमाना, सोचना, दृढ़ संकल्प करना **गर्भं धृ**, गर्भवती होना, **धारणां धृ** (एकाग्रता संयम का) पालन करना, 1. **अव,**—1. स्थिर करना, निर्धारित करना, निश्चित करना, शि० १।३ 2. जानना, निश्चय करना, समझना, सही सही जानना, न विश्वमूर्तेरवधार्यते वपुः—कु० ५।७८, रघु० १३।५, **उद्,**—1. ऊपर उठाना, उन्नत करना 2. बचाना, परित्राण करना 3. बाहर निकालना, उद्धृत करना 4. उन्मूलन करना, उखाड़ना, (उद् पूर्वक धृ के वही हैं रूप जो उद् पूर्वक हृ के हैं) **निस्**—, निर्धारण करना, निश्चित करना, नियत करना, —निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्त्वा खलु वाचिकम्—शि० २।७०, ९।२०, **वि**—,1. धर पकड़ना, पकड़ लेना, ग्रहण करना, धारण कर लेना—अंशुक पल्लवेन विधृतः, अमरु ७९, ५५ 2. पहनना, धारण करना, उपयोग में लाना—रघु० १२।४० 3. स्थापित रखना, वहन करना, सहारा देना, थामलेना, पंच० १।८२, भर्तृ० ३।२३ 4. टकटकी लगाना, निदेश देना, **सम्**—, 1. थामना, संभालना, ले जाना 2. थाम लेना, सहारा देना—अरैः संधार्यते नाभिः—पंच० १।८१ 3. दबाना, नियंत्रण में रखना, रोकना 4. मन में रखना, याद रखना, **समुद्**—,1. जड़ से उखाड़ लेना, उन्मूलन करना दे० उद् पूर्वक 'हृ' 2. बचाना, परित्राण करना, **संप्र**,—1. जानना, निर्धारण करना, निश्चय करना शि० २।६० 2. विचार विमर्श करना, चिन्तन करना, सोचना, विचार करना—मनु० १०।७३, एवं संप्रधार्य पंच० १ ।

धृत (भू० क० कृ०) [धृ+क्त] 1. थामा गया, ले जाया गया, वहन किया गया, सहारा दिया गया 2. अधिकृत किया गया 3. रक्खा गया, संधारित, धारण किया गया 4. पकड़ा गया, आत्मसात् किया गया,

संभाला गया, पहना गया, उपयोग में लाया गया 6. रख दिया गया, जमा किया गया 7. अभ्यास किया गया, पालन किया गया 8. तोला गया 9. (कर्तृवा०) धारण किया हुआ, संभाला हुआ 10. तुला हुआ दे० ऊपर 'धृ'। सम०—आत्मन् (वि०) पक्के मन वाला, स्थिर, शान्त,स्वस्थचित्त—दंड (वि०) 1. दण्ड देने वाला 2. वह जिसको दण्ड दिया जाता है—पट (वि०) कपड़े से ढका हुआ—राजन् (वि०) (देश आदि) अच्छे राजा द्वारा शासित,—राष्ट्रः विचित्र वीर्य की विधवा पत्नी से उत्पन्न व्यास का ज्येष्ठपुत्र (ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण धृतराष्ट्र राज्य का अधिकारी था, परन्तु जन्मांध होने के कारण उसने प्रभुसत्ता पांडु को सौंप दी। जिस समय पाण्डु वानप्रस्थ लेकर जंगल की ओर गया, तो राज्य की बागडोर फिर धृतराष्ट्र ने स्वयं संभाल ली, और अपने ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन को युवराज बनाया। जब युद्ध में भीम ने दुर्योधन का काम तमाम कर दिया तो धृतराष्ट्र को बदला लेने की इच्छा हुई, फलतः उसने युधिष्ठिर और भीम को आलिंगन करना चाहा। श्रीकृष्ण उसकी इस बात को तुरन्त ताड़ गये, उन्हें विश्वास हो गया कि धृतराष्ट्र ने भीम को अपना शिकार समझ लिया है। इस लिए श्रीकृष्ण ने लोहे की एक भीम की मूर्ति बनवाई। जिस समय धृतराष्ट्र भीम का आलिंगन करने के लिए आगे बढ़ा तो श्रीकृष्ण ने भीम की लौहमूर्ति आगे करवा दी जिसको कि बदला लेने के प्रबल इच्छुक धृतराष्ट्र ने इस प्रकार इतना बल लगा कर दबाया कि वह लौह मूर्ति टुकड़े २ हो गई। इस प्रकार असफल प्रयत्न हो धृतराष्ट्र अपनी पत्नी गांधारी समेत हिमालय पर्वत की ओर चला गया जहाँ कुछ वर्षों के पश्चात् वह स्वर्ग सिधार गया), —वर्मन् (वि०) कवच पहने हुए, कवचित।

धृतिः (स्त्री०) [धृ+क्तिन्] 1. लेना, पकड़ना, हस्तगत करना 2. रखना, अधिकृत करना 3. स्थापित रखना, सहारा देना 4. दृढ़ता, स्थिरता, स्थैर्य 5. धैर्य, स्फूर्ति, दृढ़संकल्प, साहस, आत्म-संयम—भज धृतिं त्यज भीतिमहेतुकाम्—नै० ४।१०४, कि० ६।११, रघु० ८।६६ 6. सन्तोष, तृप्ति, सुख, प्रसन्नता, खुशी, हर्ष धृतेश्च धीरः सदृशीर्व्यधत्त सः—रघु० ३।१०, १६। ८२, चक्षुर्बध्नाति न धृतिम्—विक्रम० २।८, शि० ७।१० १४ 7. साहित्यशास्त्र में वर्णित ३३ व्यभिचारीभावों में 'सन्तोष' की गिनती की गई है—ज्ञानाभीष्टागमाद्यैस्तु संपूर्णस्पृहताधृतिः, सौहित्यवचनोल्लास सहास प्रतिभादिकृत्—सा० द० १९८, १६८ 8. यज्ञ।

धृतिमत् (वि०) [धृति+मतुप्] 1. पक्का, स्थिर, दृढ़, अडिग 2. संतुष्ट, प्रसन्न, प्रहृष्ट, तृप्त—रघु० १३।७७।

धृत्वन् (पुं०) [धृ+क्वनिप्] 1. विष्णु का विशेषण, 2. ब्रह्मा की उपाधि 3. सद्गुण, नैतिकता 4. आकाश 5. समुद्र 6. चतुर व्यक्ति।

धृष् 1. (भ्वा० पर० घर्षति, धर्षित) 1. एकत्र होना, संहत होना, चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, ii (भ्वा० पर० चुरा० उभ० घर्षति, घर्षयति-ते)। नाराज करना, चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना 2. अपमानित करना, मर्यादा से हीन व्यवहार करना 3. धावा बोलना, जीतना, पराभूत करना, विजय प्राप्त करना, नष्ट करना 4. आक्रमण करने का साहस करना, ललकारना, चुनौती देना 5. (किसी स्त्री के साथ) बलात्कार करना, सतीत्व हरण करना, iii (स्वा० पर० धृष्णोति, धृष्ट) 1. दिलेर या साहसी होना 2. विश्वस्त होना 3. घमंडी होना, उद्धत होना, 4. ढीठ होना, उतावला होना 5. साहस करना, निडर होना (तुमुन्नंत के साथ) 6. ललकारना, चुनौती देना—भट्टि० १४।१०२ 7. (चुरा० आ०—धर्षयते) हमला करना, आक्रमण करना, बलात्कार करना।

धृष्ट (वि०) [धृष्+क्त] 1. दिलेर, साहसी, विश्वस्त, 2. ढीठ, अक्खड़, निर्लज्ज, उच्छृंखल, अविनीत —धृष्टः पार्श्वे वसति—हि० २।२६ 3. प्रगल्भ, दुःसाहसी 4. दुश्चरित्र, लुच्चा,—ष्टः विश्वासघातक पति या प्रेमी—कृतागा अपि निःशङ्कस्तर्जितोऽपि न लज्जितः, दृष्टदोषोऽपि मिथ्यावाक् कथितो धृष्टनायकः। सा० द० ७२। सम०—द्युम्नः द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई (धृष्टद्युम्न और उसका पिता द्रुपद दोनों महाभारत के युद्ध में पांडवों की ओर से लड़े। धृष्टद्युम्न ने कई दिन तक पांडवों की सेना के मुख्य सेनापतित्व का पद संभाला। जब द्रोण ने घोर संघर्ष के पश्चात् द्रुपद को मार डाला, तो धृष्टद्युम्न ने प्रतिज्ञा की कि मैं अपने पिता की मृत्यु का बदला लूंगा। आखिर युद्ध के सोलहवें दिन प्रातः काल धृष्टद्युम्न को अपनी प्रतिज्ञा पूरा करने का अवसर मिला जब कि उसने अन्यायपूर्वक द्रोण का सिर काट डाला, दे० द्रोण। उसके पश्चात् एक दिन वह पाण्डवशिविर में सो रहा था कि अचानक अश्वत्थामा ने आ दबाया और मौत के घाट उतार दिया गया)।

धृष्णज् (वि०) [धृष्+नजिङ्] 1. साहसी, विश्वस्त 2. ढीठ, निर्लज्ज।

धृष्णिः [धृष्+नि] प्रकाश की किरण।

धृष्णु (वि०) [धृष्+क्नु] 1. दिलेर, विश्वस्त, साहसी, बहादुर, बलशाली (अच्छे अर्थ में) 2. निर्लज्ज, ढीठ।

धे (भ्वा० पर० धयति, धीत—प्रेर० धापयति, इच्छा० धित्सति) 1. चूसना, पीना, घूंट भरना, निगल जाना (आलं० भी) अधाद्वसामवासोच्च रुविरं वनवासिनाम् --भट्टि० १५।२९, ६।१८, मनु० ४।५९, याज्ञ० १।१४० 2. चूमना—धन्यो धयत्याननम्—गीत० १२ 3. चूस लेना, खींच लेना, ले लेना।

धेनः [धे+नन्] 1. समुद्र 2. नद,

धेनुः (स्त्री०) [धयति सुतान्, धीयते वत्सैर्वा—धे+नु इच्च तारा०] गाय, दुधार गाय --धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः--उत्तर० ५।३१ 2. किसी जाति की स्त्री (इस अर्थ में किसी भी पुरुषवाचक नाम के आगे लग कर उसे स्त्रीवाचक शब्द बना देता है यथा खड्गधेनुः, वडवधेनुः आदि 3, पृथ्वी (कई बार समास के अन्त में लग कर इससे अल्पार्थवाची शब्द बनता है, जैसे असिधेनुः, खड्गधेनुः)।

धेनुक [धेनु+कन्] एक राक्षस का नाम जिसको बलराम ने मार गिराया था। सम०--**सूदनः** बलराम का विशेषण।

धेनुका [धेनुक+टाप्] 1. हथिनी 2. दूध देने वाली गाय।

धेनुष्या [धेनु+यत्, सुक्] वह गाय जिसका दूध बंधक रूप में सुरक्षित हो।

धैनुकम् [धेनु+ठक्] 1. गौओं का समूह 2. रतिबंध।

धैर्यम् [धीर+ष्यञ्] दृढ़ता, टिकाऊपन, सामर्थ्य, ठोसपन, स्थिरता, स्थायिता, धीरज, साहस—धैर्यमवष्टभ्य —पंच० १, विपदि धैर्यम्—भर्तृ० २।६३, इसी प्रकार 'धैर्यवृत्ति' शि० ९।५९ 2. शान्ति, स्वस्थता 3. गुरुत्वाकर्षण शक्ति, सहिष्णुता 4. अनम्यता 5. हिम्मत, दिलेरी मेघ० ४०।

धैवतः [धीमत्+अण् पृषो० मस्य वत्वम्] भारतीय सरगम स्वरग्राम के सात स्वरों में छठा स्वर।

धैवत्यम् [धीवत्+ष्यञ्] चतुराई।

धोडः=डुंडुभ।

धोर् (भ्वा० पर० धोरति) 1. जल्दी जाना, अच्छे क़दम रखना, दौड़ना, दुल्की चलना 2. कुशल होना।

धोरणम् [धोर्+ल्युट्]। (घोड़ा, हाथी आदि) वाहन, सवारी 2. जल्दी जाना 3. घोड़े की दुल्की चाल।

धोरणिः,-णी (स्त्री०) [धोर्+अनि, धोरणि+ङीप्] 1, अनवच्छिन्न श्रेणी या नैरन्तर्य—यैर्माकन्दवने मनोज्ञपवने सद्यः स्खलन्माधुरीधाराधोरणिधौतधामनि धराधीशत्वमालम्ब्यते, तेषां नित्यविनोदिनां सुकृतिनां माध्वीकपानां पुनः कालः किं न करोति केतकि यतस्त्वं चापि केलिस्थलो—उद्भट, परम्परा।

धोरितम् [धोर्+क्त] 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना, 2. गमन, गति 3. घोड़े की दुल्की चाल।

धौत (भू० क० कृ०) [धाव्+क्त] 1. धोया हुआ, बहाया गया, साफ किया गया, पवित्र किया गया, प्रक्षालन किया गया—कुल्याम्भोभिः पवनचपलैः शाखिनो धौतमूलाः—श० १।१५, शिक्षा० ५८, कु० १।६,६।५७, रघु० १६।४९,१९।१० 2. चमकाया हुआ, उजला किया हुआ 3. उजला, सफ़ेद, चमकदार, चमकीला, चमचमाता हुआ,—हरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या—मेघ० ७।४४, विकसद्दन्तांशुधौताधरम्—गीत० १२, -**तम्** चाँदी, सम०—**कटः** मोटे कपड़े का थैला, --**कोषजम्**,—**कौषेयम्** धुली हुई रेशम, —**शिलम्** स्फटिक।

धौमः [धूम्र+अण्] 1. भूरापन 2. (विशेष रूप से तैयार किया गया) मकान बनाने के लिए स्थान।

धौरितकम् [धोरित+अण्+कन्] घोड़े की दुल्की चाल।

धौरेय (वि०) (स्मी०—यी) [धुरं वहति ढक्] बोझा ले जाने के योग्य,—**यः** 1. बोझा ढोने का पशु 2. घोड़ा।

धौर्तकम्, धौर्तिकम्, धौर्त्यम् [धूर्तस्य भावः कर्म वा—धूर्त+वुञ्, ठञ्, ष्यञ् वा] जालसाजी, बेईमानी, बदमाशी।

ध्मा (भ्वा० पर० धमति, ध्मात, प्रेर० ध्मापयति) 1. फूंक मारना. श्वास बाहर निकालना, निःश्वसन 2. (हवा के उपकरण की भांति) धौंकना, फूंक मार कर बजाना—शंखं दध्मौ प्रतापवान् भग० १।१२,१८, रघु० ७।६३, 'भट्टि० ३।३४,१७।७ 3. आग को फूंकना, फूंक मारकर आग को उद्दीप्त करना, चिंगारियाँ उठाना—को धमेच्छांतं च पावकम्--महा० 4. फूंक द्वारा निर्माण करना 5. फेंकना, फूँक से उड़ाना, फेंक देना, आ—, 1. हवा भरना, फुलाना 2. फूंक मारना या हवा से भरना, (शंख आदि को), उप—, फूंक मारकर तेज करना, पंखा करना—नाग्निं मुखेनोपधमेत्--मनु० ४।५३ निस्--, फूंक मारकर बाहर निकालना, प्र—, (शंख आदि) बजाना—शङ्खौ प्रदध्मतुः--भग० १।१४, वि--, बखेरना तितर वितर करना, नष्ट करना।

ध्माकारः [ध्मा+कृ+अण्] लुहार, लोहकार।

ध्मांक्षः अन० पा०=ध्वांक्षः।

ध्मात (भू० क० कृ०) [ध्मा+क्त] 1. (वायुवाद्ययंत्र की भांति) बजाया हुआ, पंखा किया हुआ, भड़काया हुआ 2. हवा भरा हुआ, फूला हुआ, फुलाया हुआ।

ध्यात (वि०) [ध्यै+क्त] सोचा हुआ, विचार किया हुआ, दे० 'ध्यै'।

ध्यानम् [ध्यै+ल्युट्] 1. मनन, विमर्श, विचार, चिन्तन ज्ञानाद् ध्यानं विशिष्यते--भग० १२।१२, मनु० १। १२, ६।७२ 2. विशेष रूप से सूक्ष्मचिंतन, धार्मिक मनन—तदैव ध्यानादवगतोऽस्मि—श० ७, रघु० १।

७३ 3. दिव्य अन्तर्ज्ञान या अन्तर्विवेक 4. किसी देवता की व्यक्तिगत उपाधियों का मानसिक चिन्तन—इति ध्यानम् । सम०—गम्य (वि०) केवल मनन द्वारा प्राप्य,—तत्पर,—निष्ठ पर (वि०) विचारों में खोया हुआ, मनन में लीन, चिन्तनशील,—स्थ (वि०) मनन में लीन, विचारों में खोया हुआ ।

ध्यानिक (वि०) [ध्यान+ठक्] सूक्ष्म मनन और पवित्र चिंतन के द्वारा अनुसंहित या प्राप्त ।

ध्याम (वि०) [ध्यै+मक्] अस्वच्छ, मैला, काला, मलिन —भट्टि० ८।७१,—मम् एक प्रकार का घास ।

ध्यामन् (पुं०) [ध्यै+मनिन्] माप, प्रकाश (नपुं०) मनन ('ध्यामन्' कम शुद्ध) ।

ध्यै (भ्वा० पर० ध्यायति, ध्यात, इच्छा० दिध्यासति, कर्मवा० ध्यायते) सोचना, मनन करना, विचार करना, चिंतन करना, विचार विमर्श करना, कल्पना करना, याद करना—ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते—भग० २।६३, न ध्यातं पदमीश्वरस्य—भर्तृ० ३।११, पितॄन् ध्यायन्—मनु० ३।२२४, ध्यायन्ति चान्यं धिया—पंच० १।१३६, मेघ० ३, मनु० ५।४७, ९।२१, अनु—, 1. सोचना, ध्यान लगाना 2. याद करना 3. मंगलकामना करना, आशीर्वाद देना, अनुग्रह करना, रघु० १४।६०,१७।३६, अप—, बुरा सोचना, मन से शाप देना, अभि—, 1. कामना करना, इच्छा करना, लालच करना—याज्ञ० ३।१३४ 2. सोचना अव—, अवहेलना करना, निस् - सोचना, मनन करना, वि—, 1. सोचना, मनन करना, याद करला—भट्टि० १४।६५ 2. गहन मनन करना, टकटकी लगाकर देखना—अंगुलीयकं निध्यायन्ती—मालवि० १, शि० ८।६९,१२।४, कि० १०।४६ ।

ध्राडिः [ध्राड्+इन्] फूल चुनना ।

ध्रुव (वि०) [ध्रु+क] (क) स्थिर, दृढ़, अचल, स्थावर, स्थायी, अटल, अपरिवर्तनीय—इति ध्रुवेच्छामनुशासती सुताम्—कु० ५।५, (ख) शाश्वत, सदैव रहने वाला, नित्य—ध्रुवेण भर्त्रा—कु० ७।८५, मनु० ७।२०८ 2. स्थिर (ज्योतिष में) 3. निश्चित, अचूक, अनिवार्य—जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च—भग० २।२७ यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते—चाण० ६३ 4. मेधावी, धारणशील—जैसा कि 'ध्रुवा स्मृति' में 5. मजबूत, स्थिर, (दिन की भांति) निश्चित,—वः 1. ध्रुव तारा, रघु० १७।३५, १८।३४, कु० ७।८५ 2. किसी बड़े वृत्त के दोनों सिरे 3. नाक्षत्र राशिचक्र के आरंभ से ग्रह की दूरी, ध्रुवीय देशांतर रेखा 4. बटवृक्ष 5. स्थाणु, खूंटा 6. (कटे हुए वृक्ष का) तना 7. गीत का आरंभिक पाद, टेक (समवेत गान की भांति दोहराया गया दे० गीत०) 8. समय, काल, युग 9. ब्रह्मा का विशेषण, 10. विष्णु और 11. शिव की उपाधि 12. उत्तानपाद के पुत्र और मनु के पौत्र का नाम [ध्रुव उत्तर दिशा में स्थित एक तारा है, परन्तु पुराणों में उत्तानपाद के पुत्र के रूप में इसका वर्णन उपलब्ध है। सामान्य मर्त्य का ध्रुव तारे के उच्च पद को प्राप्त करने का वर्णन इस प्रकार है—उत्तानपाद के सुरुचि और सुनीति नाम की दो पत्नियां थीं, सुरुचि के पुत्र का नाम उत्तम था, तथा ध्रुव का जन्म सुनीति से हुआ था। एक दिन ध्रुव ने अपने बड़े भाई उत्तम की भांति पिता की गोद में बैठना चाहा, परन्तु उसे राजा और सुरुचि दोनों ने दुत्कार दिया । 1. ध्रुव सुबकता हुआ अपनी माता सुनीति के पास गया, उसने बच्चे को सांत्वना दी और समझाया, कि संपति और सम्मान कठोर परिश्रम के बिना नहीं मिलते। इन वचनों को सुन कर ध्रुव ने अपने पिता के घर को छोड़ कर जंगल की राह ली। यद्यपि वह अभी बच्चाही था, तो भी उसने घोर तपस्या की जिसके फलस्वरूप विष्णु ने उसको ध्रुव तारे का पद प्रदान किया),—वम् 1. आकाश, अन्तरिक्ष 2. स्वर्ग,—वा 1. (लकड़ी का बना) यज्ञ का श्रुवा 2. साध्वी स्त्री,—वम् (अव्य०) अवश्य, निश्चित रूप से, यकीनन—रघु० ८।४९, श० १।१८। सम०—अक्षरः विष्णु की उपाधि,—आवर्तः सिर पर रक्खे मुकुट का वह स्थान जहां से बाल चमकते हैं,—तारकम्,—तारा ध्रुव तारा ।

ध्रुवकः [ध्रुव+कन्] 1. गीत का आरम्भिक पद (जो समवेत गान की भांति दोहराया जाय, टेक 2. तना, भृत 3. स्थूणा ।

ध्रौव्यम् [ध्रुव+ष्यञ्] 1. स्थिरता, दृढ़ता, स्थावरता 2. अवधि 3. निश्चय ।

ध्वस् (भ्वा० आ० ध्वंसते, ध्वस्त) 1. नीचे गिरना, गिर कर टुकड़े २ होना, चूर २ हो जाना—भट्टि० १५।९३, १४।५५ 2. गिरना, डूबना, हताश होना—मा० ९।४४ 3. नष्ट होना, बर्बाद होना 4. ग्रस्त होना—मुद्रा० ३।८, प्रेर०—नष्ट करना, प्र—, नष्ट होना, मिट जाना, वि—, 1. गिरकर टुकड़े २ होना 2. तितरवितर हो जाना, बिखर जाना 3. नष्ट होना, मिट जाना बर्बाद होना ।

ध्वंसः, ध्वंसनम् [ध्वंस्+घञ्, ल्युट् वा] 1. नीचे गिर जाना, डूबना, गिर कर टुकड़े २ हो जाना 2. हानि, नाश, बर्बादी,—सी सूर्य की किरण में धूलिकण ।

ध्वंसिः [ध्वंस्+इन्] मुहूर्त का शतांश ।

ध्वजः [ध्वज्+अच्] 1. ध्वज, झण्डा, पताका, वैजयन्ती, रघु० ७।४०, १७।३२, पंच० १।२६ 2. पूज्य या

प्रमुख व्यक्ति, झंडा या भूषण (समास के अन्त में) जैसा कि 'कुलध्वजः' (कुल का भूषण या पूज्य व्यक्ति) में 3. वह बांस जिसमें झण्डा लहराता है, 4. चिह्न, निशान, लक्षण, प्रतीक—वृषभ°, मकर° आदि 5. देवता की उपाधि 6. पथिकाश्रम का चिह्न 7. व्यवसाय का चिह्न—व्यवसाय लक्षण 8. जननेन्द्रिय (किसी जानवर की, चाहे नर हो या मादा) 9. कलाल 10. किसी वस्तु से पूर्व की ओर स्थित घर 11. घमंड 12. पाखंड, (ध्वजीकृ झंडा लहराना, आलं० वहाने के रूप में प्रयुक्त करना)। सम० —अंशुकम्—पटः,—पटम् झंडा—रघु० १२।८५, —आहृत (वि०) युद्धभूमि में पकड़े हुए,—गृहम् वह कमरा जहाँ झंडे रक्खे जाते हैं,—द्रुमः ताड का वृक्ष, —प्रहरणः वायु, हवा,—यन्त्रम् झंडा खडा करने की कूटयुक्ति,—यष्टिः (स्त्री०) झंडे का डंडा या वांस मनु० ९।२८५।

ध्वजवत् (वि०) [ध्वज+मतुप्+मस्य वः] 1. झंडों से सजा हुआ 2. चिह्न से युक्त 3. अपराधी के लक्षण से युक्त, दागी,—(पुं०) 1. झंडा-वाहक 2. मद्य विक्रेता, कलाल।

ध्वजिन (वि०) (स्त्री०—नी) [ध्वज+इनि] 1. झण्डा-बरदार, झण्डा ले जाने वाला 2. चिह्नधारी 3. सुरा-पात्र के चिह्न वाला—मनु० ११।९३, (पुं०) 1. पताका वाहक 2. कलाल, मद्य विक्रेता—याज्ञ० १।१४१ 3. गाड़ी, शकट, रथ 4. पहाड़ 5. साँप 6. मोर 7. घोड़ा 8. ब्राह्मण,—नी सेना—रघु० ७।४०, शि० १२।६६, कि० १३।९।

ध्वजीकरणम् [ध्वज+च्वि+कृ+ल्युट्] 1. झंडोत्तोलन, झंडे को फहराना 2. दावा स्थापित करना, किसी बात को हेतु बनाने वाला।

ध्वन् (भ्वा० पर०—ध्वनति, ध्वनित) शब्द करना, ध्वनि पैदा करना, गुनगुनाना, भिनभिनाना, गूंजना, प्रति-ध्वनि करना, गरजना, दहाड़ना—विभिद्यमाना इव दध्वनुर्दिशः—कि० १४।४६, अयं धीरं घोरं ध्वनति नवनीलो जलधरः—भामि० १।६०, कपिर्दध्वान मेघ-वत्—भट्टि० ९।५, १४।३, ध्वनति मधुपसमूहे श्रवण-मपिदधाति—गीत० ५, प्रेर०—ध्वनयति, शब्द करवाना, (घंटी की भांति) बजवाना, परन्तु 'ध्वानयति' अस्पष्ट उच्चारण करवाना।

ध्वनः [ध्वन्+अप्] 1. शब्द, स्वर 2. भिनभिनाना, गुनगुनाना।

ध्वननम् [ध्वन्+ल्युट्] 1. ध्वनि निकालना 2. संकेत करना, सुझाव देना, या (अर्थ) लगाना 3. (सा० शा० में) व्यंजना शक्ति, शब्द या वाक्य की वह शक्ति जिसके कारण वह मुख्यार्थ से भिन्न किसी और ही अर्थ को प्रकट करे, सुझाव-शक्ति—तु० 'अंजन' भी।

ध्वनिः [ध्वन्+इ] 1. शब्द, प्रतिध्वनि, कोलाहल या शोर—मृदङ्गधीर ध्वनिमन्वगच्छत्—रघु० १६।१३, २।७२, उत्तर१ ६।१७ 2. लय, तान, स्वर शि० ६।४८ 3. वाद्ययंत्र की ध्वनि—रघु० ९।७१ 4. बादल गरज या गड़गड़ाहट 5. केवल रिक्तध्वनि 6. शब्द 7. (सा० शा० में) काव्य के तीन मुख्य भेदों में से सर्वोत्तम काव्य जिसमें कि संदर्भ का ध्वन्यर्थ, अभिहित अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कारक हो, या जहाँ मुख्यार्थ, ध्वन्यर्थ के अधीन हो—इदमुत्तममतिशयिनि व्यंग्ये वाच्याद्ध्वनिर्बुधैः कथितः—काव्य० १, (रस-गंगाधर में ध्वनि के पाँच भेद बताये गये हैं, दे० 'ध्वनि' के नीचे)। सम०—ग्रहः 1. कान 2. श्रवण, या श्रुति 3. श्रवणेन्द्रिय,—नाला 1. एक प्रकार का बिगुल 2. बांसुरी 3. मुरली, वंशी,—विकारः भय या शोक के कारण वाणी का विकार, दे० काकु।

ध्वनित (भू० क० कृ०) [ध्वन्+क्त] 1. निनादित 2. निहित, ध्वनित, संकेतित,—तम् 1. शब्द 2. बादल की गरज या गड़गड़ाहट—कि० ५।१२।

ध्वस्तिः (स्त्री०) [ध्वंस्+क्तिन्] नाश, बर्बादी।

ध्वांक्षः [ध्वंक्ष्+अच्]1. कौआ—(कभी-कभी 'तिरस्कार' प्रकट करने के लिए समास के अन्त में प्रयुक्त किया जाता है—उदा० टीर्थध्वांक्षः) 2. भिक्षुक 3. ढीठ व्यक्ति 4. मुर्गाबी, सारस। सम०—अरातिः उल्लू, —पुष्टः कोयल।

ध्वानः [ध्वन्+घञ्] 1. शब्द 2. गुनगुनाना, भिन-भिनाना, बुड़बुड़ाना।

ध्वान्तम् [ध्वन्+क्त] अंधकार—ध्वान्तं नीलनिचोलचारु सुदृशां प्रत्यङ्गमालिङ्गति—गीत० ११, नै० १९।४२, शि० ४।६२। सम०—उन्मेषः,—वित्तः जुगनू,—शात्रवः 1. सूर्य 2. चाँद 3. आग 4. श्वेतवर्ण।

ध्वृ (भ्वा० पर०—ध्वरति) 1. झुकाना 2. हत्या करना।

न

न (वि०) [नह्, (नश्) +ड] 1. पतला, फाल्तू 2. खाली, रिक्त 3. वही, समरूप 4. अविभक्त,—**नः** 1. मोती, 2. गणेश का नाम, 3. दौलत, सम्पन्नता 4. मंडल, 5. युद्ध—(अव्य०) (क) निषेधात्मक अव्यय, 'नहीं' 'न तो' 'न' का समानार्थक, लोट् लकार में प्रतिषेधात्मक न होकर, आज्ञा, प्रार्थना या कामना के लिए प्रयुक्त, (ख) विधिलिङ की क्रिया के साथ प्रयुक्त किये जाने पर कई बार इसका अर्थ होता है —'ऐसा न हो कि' इस डर से कि कहीं ऐसा न हो' —क्षत्रियैर्धार्यते शस्त्रं नार्तशब्दो भवेदिति—रामा० (ग) तर्कपूर्ण लेखों में 'न' शब्द 'इतिचेत्' के पश्चात् रक्खा जाता है और इसका अर्थ होता है 'ऐसा नहीं' (घ) जब भिन्न-भिन्न वाक्यों मे या एक ही वाक्य के क्रमबद्ध वाक्यखण्डों में निषेधक की पुनरावृत्ति करनी होती है तो केवल 'न' की आवृत्ति की जा सकती है, अथवा उत, च, अपि, चापि और वा आदि अव्ययों के साथ 'न' को रक्खा जा सकता है—नाधोयीताश्वमारूढो न वृक्षं न च हस्तिनम्, न नावं न खरं नोष्ट्रं नेरिणस्थो न यानगः। मनु० ४।१२०, प्रविशन्त न मां कश्चिदपश्यन्नाप्यवारयत्—महा०, मनु० २।१९५, ३।८, ९, ४।१५, श० ६।१७, कई बार 'न' द्वितीय तथा अन्य वाक्यखंडों में न रक्खा जाकर केवल च, वा, अपि वा से स्थानापत्ति करता है—संपदि यस्य न हर्षो विपदि विषादो रणे च धीरत्वम्—हि० १।३३, (ङ) किसी उक्ति पर बल देने के लिए बहुधा 'न' को एक और 'न' के साथ अथवा किसी अन्य निषेधात्मक अव्यय के साथ जोड़ दिया जाता है—प्रत्युवाच तमृषिर्न तत्त्वतस्त्वां न वेद्मि पुरुषं पुरातनम्—रघु० ११।८५, न च न परिचितो न चाप्यगम्यः—मालवि० १।११, न पुनरलंकारश्रियं न पुष्यति—श० १, नादंडयो नाम राज्ञोऽस्ति—मनु० ८।३३५, मेघ० ६३, १०६, नासी, न काम्यो न च वेद सम्यग् द्रष्टुं न सा—रघु० ६।३०, शि० १।५५, विक्रम० २।१०, (च) कुछ शब्दों में नञ् तत्पुरुष के आरम्भ में 'न' को ऐसा का ऐसा हो रख लिया जाता है—यथा नाक, नासत्य, नकुल, आदि—पा० ६।३।७५, (छ) 'न' को बहुधा दूसरे अव्ययों के साथ भी जोड़ दिया जाता है नच, नवा, नैव, ननु, नचेत्, नखलु आदि। सम०—**असत्यौ** (पुं० द्वि० व०) अश्विनी कुमार, देवों के वैद्ययुगल,—**एक** (वि०) 'एक नहीं' अर्थात् एक से अधिक, कुछ, कई, °**आत्मन्** (वि०) विविध भांति का विभिन्न प्रकृति का, °**चर** (वि०) 'न रहने वाला' यूथचारी, संघातवासी, समाज में रहने वाला, सामाजिक °**भेद**, °**रूप** (वि०) विविध प्रकार का, नाना प्रकार के रूपों का °**शस्** (अव्य०) बार २, बहुधा,—**किंचन** (वि०) अत्यंत गरीब, भिखारी के समान।

नकुटम् [कुट्+क, न शब्देन समासः] नाक, नासिका।

नकुलः [नास्ति कुलं यस्य, नञो न लोपः प्रकृतिभावात्] नेवला, आखेटी नकुल—यदयं नकुलद्वेषी सकुलद्वेषी पुनः पिशुनः—वास० 2. चौथा पाण्डव राजकुमार —अहं तस्य अतिशयितदिव्यरूपिणो नकुलस्य दर्शनेनोत्सुका जाता—वेणी० २, (यहाँ नकुल का प्रथम अर्थ है, परन्तु दुर्योधन ने दूसरा अर्थ ग्रहण किया)।

नक्तम् [नञ्+क्त] 1. रात 2. केवल रात्रि के समय खाना, एक प्रकार का धार्मिक व्रत या तपश्चर्या। सम०—**अन्ध** (वि०) रात्र्यंध, जिसे रात में दिखाई नहीं देता,—**चर्या** रात को घूमना,—**चारिन्** (पुं०) 1. उल्लू 2. बिलाव 3. चोर 4. राक्षस, पिशाच, भूत प्रेत,—**भोजनम्** रात का भोजन, ब्यालू,—**मालः** एक वृक्ष का नाम—रघु० ५।४२,—**मुखा** संध्या, सायंकाल,—**व्रतम्** 1. दिन भर व्रत रखना तथा रात को भोजन करना 2. कोई भी साधना या धार्मिक व्रत जो रात में किया जाय।

नक्तम् (अव्य०) रात के समय, रात को—गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तम्—मेघ० ३७, मनु० ६।१९। सम०—**चरः** रात को घूमने वाला प्राणी 2. चोर,—**चारिन्** (पुं०)=नक्तचारिन्,—**दिनम्** रात दिन,—**दिनम्**—**दिवम्** (अव्य०) रात और दिन।

नक्तकः [नक्त+कै+क] गंदा, मैला फटा पुराना कपड़ा

नक्रः [न क्रामतीति न+क्रम्+ड, नञो न लोपः] घड़ियाल, मगरमच्छ, नक्रः स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति—पंच० ३।४६ रघु० ७।३०, १६।५५,—**क्रम्** 1. दरवाजे की चौखट की ऊपर की लकड़ी 2. नाक, —**क्रा** 1. नाक, 2. मक्खियों या भिडों का छत्ता।

नक्षत्रम् [नक्ष्+अत्रन्] 1. तारा 2. तारक पुंज, चन्द्रपथ में तारावली, नक्षत्र—नक्षत्रताराग्रहसंकुलापि—रघु० ६।२२। सम०—**ईशः**,—**ईश्वरः**,—**नाथः**,—**पः**, —**पतिः**—**राजः** चन्द्रमा,—रघु० ६।६६,—**चक्रम्** 1. स्थिर तारा-मंडल 2. नक्षत्रों का समूह,—**दर्शः** ज्योतिर्विद्, ज्योतिषी,—**नेमिः** 1. चन्द्रमा 2. ध्रुवतारा 3. विष्णु की उपाधि (मिः—स्त्री०) अन्तिम नक्षत्र, रेवती,—**पथः** आकाश जिसमें तारे खिले हों,—**पाठकः** ज्योतिषी,—**माला** 1. तारापुंज 2. २७ मोतियों की माला 3. चन्द्रपथ में तारामंडल 4. हाथियों के कण्ठ का आभूषण—अनङ्गवारण शिरोनक्षत्रमालायमानेन मेखलादाम्ना का० ११,—**योगः** चन्द्रमा का नक्षत्रों से मिलन,—**वर्त्मन्** (पुं०) आकाश,—**विद्या** गणित,

ज्योतिष--वृष्टिः (स्त्री०) टूटने वाले तारे,--सूचकः अयोग्य ज्योतिषी--तिथ्युत्पत्तिं न जानन्ति ग्रहाणां नैव साधनम्, परवाक्येन वर्तंते ते वै नक्षत्रसूचकाः। या--अविदित्वैव यः शास्त्रं दैवज्ञत्वं प्रपद्यते, स पंक्ति-दूषकः पापो ज्ञेयो नक्षत्रसूचकः, वराह० २।१७, १८।

नक्षत्रिन् (पुं०) [नक्षत्र+इनि] 1. चन्द्रमा 2. विष्णु का विशेषण।

नखः, नखम् [नह्+ख, हकारस्यलोपः] हाथ या पैर की अंगुली का नाखून, पंजा, नखर--नखानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन्मृगपतिः--भामि० १।२, ३१, १२। १२ 2. बीस की संख्या,--खः भाग, अंश। सम० --अङ्कः खरोंच, नखचिह्न--भामि० २।३२,--आघातः खरोंच, नख द्वारा किया गया घाव--मा० ५।२३, --आयुधः 1. व्याघ्र 2. सिंह 3. मुर्गा,--आशिन् (पुं०) उल्लू,--कुट्टः नाई,--आह्मम् नाखून की जड़ --वारणः बाज, श्येन (णम्) नहरनी, नाखून काटने की कैंची--निकृन्तनम्,--रजनी नाखून काटने की कैंची, नहरना,--पदम्,--व्रणः नखचिह्न, खरोंच, नख-पदसुखान् प्राप्य वर्षाग्रबिन्दून्--मेघ० ३५,--मुचः धनुष --लेखा 1. नखचिह्न, 2. नाखून रंगना,--विष्किरः (अपने पंजों से फाड़ने वाला) शिकारी पक्षी,--शङ्खः छोटा शंख।

नखम्पच (वि०) [नख+पच्+खश्, मुम्] नाखून झुलसाने वाला, शि० ९।८५।

नखरः,-रम् [नख+रा+क] अंगुली का नाखून, पंजा, नख। सम० आयुधः 1. व्याघ्र 2. सिंह 3. मुर्गा --आह्वः करवीर।

नखानखि (अव्य०) [नखैश्च नखैश्च प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्, ब० स०] परस्पर नखाघात द्वारा होने वाला युद्ध, नाखूनों की लड़ाई।

नाखिन् (वि०) [नख+इनि] 1. बड़े 2. नाखूनों वाला, तेज पंजों वाला 2. कंटीला, काँटेदार (पुं०) व्याघ्र या शेर जैसा नखधारी जन्तु।

नगः [न गच्छति--न+गम्+ड] 1. पहाड़--कु० १। १७, ७२ शि० ६।७९ 2. वृक्ष 3. पौधा 4. सूर्य 5. साँप 6. सात की संख्या। सम०--अटनः बंदर --अधिपः,--अधिराजः,--इन्द्रः 1. (पहाड़ों का स्वामी) हिमालय पर्वत 2. सुमेरु पर्वत,--अरिः इन्द्र का विशेषण,--उच्छ्रायः पहा की ऊँचाई,--ओकस् (पुं०) 1. पक्षी 2. कौवा 3. सिंह 4. शरभ नाम का काल्पनिक पक्षी,--ज (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न, पहाड़ी --भट्टि० १०।१९, (जः) हाथी,--जा,--नन्दिनी पार्वती का विशेषण,--पतिः 1. हिमालय पहाड़ 2. (वनस्पतियों का स्वामी) चन्द्रमा,--भिद् (पुं०) 1. कुल्हाड़ा 2. इन्द्र का विशेषण,--मूर्धन् (पुं०) पहाड़ की चोटी --रन्ध्रकरः कार्तिकेय का विशेषण--रघु० ९।१२।

नगरम् [नग इव प्रासादाः सन्त्यत्र बा० र] कस्बा, शहर (विप० ग्राम)--नगरगमनाय मतिं न करोति--श० २। सम०--अधिकृतः,--अधिपः,--अध्यक्षः नगर का मुख्य दण्डनायक, मुख्य आरक्षाधिकारी 2. नगर पाल, नगर का अधीक्षक,--उपान्तः उपनगर, नगर के आसपास की आबादी,--ओकस् (पुं०) नागरिक, --काकः 'शहरुआ'कौवा' एक तिरस्कारयुक्त उक्ति --घातः हाथी,--जनः 1. नगर के लोग, नागर 2. नागरिक,--प्रदक्षिण जलूस में मूर्ति को नगर के चारों ओर घुमाना,--प्रान्तः उपनगर,--मार्गः प्रधान सड़क, राजपथ,--रक्षा नगर का अधीक्षण या शासन, --स्थः नगरवासी, नागरिक।

नगरी [नगर+ङीप्]=नगर,। सम०--काकः सारस, --बकः कौवा।

नग्न (वि०) [नज्+क्त, तस्य नः] नंगा, विवस्त्र, वस्त्र-हीन--न नग्नः स्नानमाचरेत्--मनु० ४।४५, नग्न-क्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति--चाण० ११० 2. बिना जोता हुआ, बिना बसा, सुनसान--ग्नः 1. नंगा भिक्षु 2. क्षपणक 3. पाखंडी 4. सेना के साथ रहने वाला भाट, घूमता हुआ भाट--ग्ना 1. नंगी० निर्लज्ज, (या स्वेच्छाचारिणी) स्त्री 2. रजस्वला होने के पूर्व की आयु वाली लड़की, दस बारह वर्ष को आयु से कम की (अर्थात् जो इधर उधर नंगी आ जा सके)। सम० अटः,--अटकः 1. जो इधर उधर नंगा घूम सके 2. विशेष रूप से (दिगंबर संप्रदाय का) जैन या बौद्ध भिक्षु।

नग्नक (वि०) (स्त्री-ग्निका) [नग्न+कन्] नंगा, विवस्त्र,--कः 1. नंगा भिक्षु 2. दिगंबर सम्प्रदाय का) जैन या बौद्ध भिक्षु 3. भाट।

नग्नका, नग्निका [नग्नक+टाप्, पक्षे इत्वम्] 1. नंगी, निर्लज्ज, (या स्वेच्छाचारिणी) स्त्री 2. रजोधर्म होने से पूर्व की अवस्था की लड़की।

नग्नंकरणम् [टानग्नः नग्नः क्रियते-- नग्न+च्वि+कृ +ख्युन्, मुम्] नंगा करना।

नग्नं भविष्णु,-भावुक (वि०) [नग्न+भू=इष्णुच्, उकञ्] नंगा होने वाला।

नंगः [न नति गच्छति न+गम्+ड] प्रेमी, जार।

नचिकेतस् (पुं०) अग्नि का विशेषण।

नचिर (वि०) [न चिरम्, न शब्देन समासः] दे० अचिर, भग० ५।६, १२।७।

नञ् (अव्य०) निषेधात्मक अव्यय 'न' के लिए पारि-भाषिक शब्द।

नट i (भ्वा० पर० नटति-- 'चोट पहुंचाने' के अर्थ में

'प्र' के पश्चात् 'न' को 'ण' हो जाता है) 1. नाचना, यदि मनसा नटनीयम्—गीत० ४ 2. अभिनय करना 3. (धोखे से चालाकी से) क्षति पहुँचाना, प्रेर०—नाटयति-ते 1. अभिनय करना, हाव भाव व्यक्त करना, (नाटकों में) नाटक के रूप में वर्णन करना, शरसंधानं नाटयति—श० १ 2. अनुकरण करना, नकल करना—स्फटिककटकभूमिर्नाटयत्येष शैलः... अधिगतधवलिम्नः शूलपाणेरभिख्याम्—श० ४।६५, (विशे० 'नचाना' अर्थ को प्रकट करने के लिए 'नट्' धातु का 'नटयति' रूप बनता है—भर्तृ० ३।१२६), ii (चुरा० उभ० नाटयति-ते 1. गिर पड़ना, गिरना 2. चमकना 3. क्षति पहुँचाना।

नटः [नट्+अच्] 1. नाचने वाला—न नटा न विटा न गायकाः—भर्तृ० ३।२७ 2. अभिनेता—कुर्वन्नयं प्रहसनस्य नटः कृतोऽसि—भर्तृ० ३।१२६, ११२, 3. पतित क्षत्रिय का पुत्र 4. अशोक वृक्ष 5. एक प्रकार का नर कुल। सम०—अंतिका लज्जा, ह्री,—ईश्वरः शिव का विशेषण—चर्या नाटक के पात्र का अभिनय,—भूषणः,—मंडनम् हरताल—रंगः नाटय रंगमंच,—वरः 'प्रधान नट' सूत्रधार—संज्ञकम् हरताल (कः) अभिनेता, नट।

नटनम् [नट+ल्युट्] 1. नाचना, नाच 2. अभिनय करना, हावभाव प्रकट करना, नाटकीय चित्रण।

नटी [नट+ङीप्] 1. अभिनेत्री 2. मुख्य नटी (सूत्रधार की पत्नी) 3. वेश्या, रंडी। सम०—सुतः नर्तकी का पुत्र।

नटया [नट्+य+टाप्] अभिनेताओं की मंडली!

नडः,—डम् [नल्+अच्, लस्य डत्वम्] नरकुल का एक भेद। सम०—अगारम्,—आगारम् नरकुलों का बना झोंपड़ा—प्राय (वि०) जहाँ नरकुल बहुत होते हों—वनम् नरकुलों का जंगल—संहतिः (स्त्री०) नरकुलों का संग्रह।

नडश (वि०) (स्त्री०-शी) [नड+श] सरकंडों से ढका हुआ।

नडिनी [नड+इनि+ङीष्] 1 सरकंडों का ढेर 1. सरकंडों का बना हुआ मूढ़ा या शय्या, वह नदी जहाँ सरकंडों के पौधे बहुतायत से हों।

नडिल, (वि०), **नड्वत्** (वि०) (स्त्री०-ती) [नड+इलच्, ड्वतुप् वा] सरकंडे जहाँ पर बहुतायत से हों, या जो सरकंडों से ढका हुआ हो, सरकंडों से युक्त स्थान।

नड्या [नड+य+टाप्] सरकंडों का ढेर।

नड्वल (वि०) [नड+ड्वलच्] सरकंडों से व्याप्त—लम् सरकंडों का ढेर या शय्या, यो नड्वलानीव गजः परेषां बलान्यमृद्नान्नलिनाभवक्त्रः—रघु० १८।५।

नत (भू०क०कृ०) [नम्+क्त] झुका हुआ, प्रणत, झुकने वाला, रुझान वाला 2. डूबा हुआ, अवसन्न 3. कुटिल, टेढ़ा—तम् याम्योत्तर रेखा (मध्यं दिन रेखा) से किसी ग्रह की दूरी। सम०—अंशः शिरोबिंदु की दूरी—अंग (वि०) 1. झुके हुए शरीर वाला 2. झुकने वाला 3. प्रणत (गी) 1. झुके हुए अंगों वाली स्त्री 2. स्त्री—नासिक (वि०) चपटी नाक वाला,—भ्रूः टेढ़ी भौहों वाली स्त्री।

नतिः (स्त्री०) [नम्+क्तिन्] 1. झुकाव, झुकना, प्रणमन 2. वक्रता, कुटिलता 3. अभिवादन करने के लिए शरीर का झुकाना, प्रणति, शालीनता 4. (ज्यो० में) भोगांश में स्थानभ्रंश।

नद् (भ्वा० पर० नदति, नदित) 1. शब्द करना, कलकल ध्वनि करना, (बादल की भांति) गरजना—वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगंधः—मेघ० ९, नदत्याकाशगंगायाः स्रोतस्युद्दामदिग्गजे—रघु० १।७८, शि० ५।६१, भट्टि० २।४ 2. बोलना, चिल्लाना, पुकारना, दहाड़ना (प्रायः शब्द, स्वन नाद कर्म के साथ) ननाद बलवन्नादं, शब्दं घोरतरं नदन्ति—महा० 3. थरथराता—प्रेर० नादयति-ते 1. कोलाहल से भर देना, कोलाहलमय करना 2. शब्द करवाना, उद्—दहाड़ना, जोर से पुकारना, (बैल की भांति) रांभना, कु० १।५६, नि—, शब्द करना, चिल्लाना—रघु० ५।७५, मालवि० ५।१०, भट्टि० ६।११७, प्र (प्रणदति) ध्वनि करना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना —क्रव्यादाः प्राणदन् घोराः महा० शिवाः प्रणदंति आदि प्रति—, गूंजना, प्रतिध्वनि करना, प्रेर०—कोलाहल से भरना, गुंजायमान करना - शा० २।२६, ऋतु० ३।१४, वि—, ध्वनि करना, गूंजना—भग० १।१२, प्रेर०—क्रंदन करवाना या गीत गवाना—अंबुदैः शिखिगणो विनाद्यते—घट० १०।

नदः [नद्+अच्] 1. दरिया, बड़ी नदी (जैसी कि सिंधु) शि० ६६, (यहाँ मल्लि० की टिप्पण—प्राक्स्रोतसो नद्यः प्रत्यक्स्रोतसो नदा नर्मदां विनेत्याहुः) 2. नदी, प्रवहणी, नाला—कि० ५।२७ 3. समुद्र। सम०—राजः समुद्र।

नदथुः [नद्+अथुच्] 1. शोर, दहाड़ 2. बैल की दहाड़।

नदी (नद+ङीप्) दरिया, प्रवहणी, सरिता—रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि युज्यते नदी—कु० ४।४४। सम०—ईनः-ईशः,—कान्तः समुद्र,—कुलप्रियः एक प्रकार का नरकुल—ज (वि०) जलोत्पन्न (जः) भीष्म का विशेषण (जम्) कमल—तरस्थानम् उतरने का स्थान, घाट—दोहः भाड़ा, उतराई, किराया, —धरः शिव का विशेषण, पतिः 1. समुद्र 2. वरुण का विशेषण,—पूरः उमड़ा हुआ दरिया,—भवम्

नदीलवण,—**मातृक** (वि०) (देश आदि) जहां नदी के पानी से सिंचाई होती हो, सिंचित, नदी या नहर द्वारा सिंचाई पर जो निर्भर करता हो, नै० ३।३८, तु० देवमातृक,—**रयः** नदी की धार,—**वंकः** नदी का मोड़,—**ष्ण** (वि०) (स्त) 1. नदी में स्नान करने वाला 2. नदियों के भयानक स्थानों, उनकी गहराइयों और प्रवाहों को जानने वाला—ततः समाज्ञापयदाशु सर्वानानायिनस्तद्विचये नदीष्णान् रघु० १६।७५, अतः 3. अनुभवी, चतुर,—**सर्जः** अर्जुन वृक्ष ।

नद्ध (भू० क० कृ०) [नह्+क्त] 1. बंधा हुआ, बाँधा हुआ, जकड़ा हुआ, चारों ओर से बद्ध, धारण किया हुआ 2. ढका हुआ, जड़ा हुआ, अन्तर्ग्रथित 3. संयुक्त, संयोजित दे० 'नह्',—**द्धम्** गांठ, बंधन, बंध, गिरह ।

नद्ध्री [नह्+ष्ट्रन्+ङीप्] चमड़े का फीता ।

ननंदृ, ननांदृ (स्त्री०) [ननन्दति सेवयापि न तुष्यति न+नन्द्+ऋन्] पति की वहन, ननान्दुः पत्या च देव्याः संदिष्टमृष्यशृंगेण—उत्तर० १। सम०—**ननांदृपतिः** (ननांदुःपतिः) ननदोई, पति की बहन का पति ।

ननु (अव्य०) (मूल रूप से न और नु का संयुक्त रूप, जिसे आज कल पृथक् शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है) यह अव्यय निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है—1. पूछताछ. प्रश्न, ननु समाप्तकृत्यो गौतमः—मालवि० ४ 2. निश्चय ही, अवश्य, निस्संदेह, क्या यह असन्दिग्ध नहीं (प्रश्न सूचक बल के साथ) यदाऽमेधाविनी शिष्योपदेशं मलिनयति तदाचार्यस्य दोषो ननु—मालवि० १ 3. निस्सन्देह, बेशक, अवश्य—उपपन्नं ननु शिवं सप्तस्वंगेषु—रघु० १।६०, त्रिलोकनाथेन सदा मखद्विपस्त्वया नियम्या ननु दिव्यचक्षुषा—३।४५ 4. संबोधन सूचक अव्यय ('अो' 'अहो') ननु मानव—दश०, ननु मूर्खाः पठितमेव युष्माभिस्तत्कांडे—उत्तर० ४ 5. 'कृपा करके' 'अनुग्रह करके' अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रतिषेधात्मक कथन के रूप में प्रयुक्त होता है—ननु मां प्रापय पत्युरन्तिकम्—कु० ४।३२ 6. कभी-कभी संशोधनशब्द के रूप में प्रयुक्त होता है—ननु पदे परिवृत्य भण—मृच्छ० ५, ननु भवानग्रतो मे वर्तते—श० २, ननु विचिनोतु भवान्—विक्रम० २ 7. तर्कानुबद्ध चर्चा के समय आक्षेप करने या विरोधी प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त होता है (इसके पश्चात् प्रायः 'उच्यते' आता है) नन्वचेतनान्येव वृश्चिकादिशरीराणि अचेतनानां च गोमयादीनां कार्याणीति उच्यते—शारी० ।

नन्द् (भ्वा० पर० नंदति, नंदित) प्रसन्न होना, हर्षित होना, खुश होना सन्तुष्ट होना, (किसी बात पर) हर्ष प्रकट करना—ननंदतुस्तत्सदृशेन तत्समौ—रघु० ३।२३, ११, २।२२, ४।३, भट्टि० १५।२८, प्रेर०—नंदयति—ते—प्रसन्न करना, खुश करना, हर्षित करना, आनन्दित करना—अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा—श० ४।२, भट्टि० २।१६, रघु० ९।५२ **अभि**—1. हर्ष प्रकट करना, प्रसन्न होना, संतुष्ट होना—आत्मविडंबनामभिनंदति—का० १०८, नाभिनंदति न द्वेष्टि—भग० २।५७ 2. बधाई देना, जय जयकार करना, स्वागत करना, नमस्कार करना—तापसीभिरभिनंद्यमाना तिष्ठति—श० ४, तमभ्यनंदत्प्रथमं प्रबोधितः रघु० ३।६८, २।७४, ७।६९, ११।३०, १६।६४ 3. प्रशंसा करना, तारीफ करना, श्लाघा करना, अच्छा समझना—नाम यस्याभिनंदंति द्विषोऽपि स पुमान्—कि० ११।७३, श० ३।२४, रघु० १२।३५, न ते वचोऽभिनंदामि—श० २ 4. कामना करना, चाहना, पसन्द करना, अपेक्षा करना (प्रायः 'न' के साथ) नाभिनंदति केलिकलाः—मा० ३, नाभिनंदेत मरणं नाभिनंदेत जीवितम्—मनु० ६।४५, हि० ४।४, आ—,प्रसन्न होना, खुश होना—आनंदितास्त्वां दृष्ट्वा भट्टि० २२।१४, प्रेर०—प्रसन्न करना, खुश करना—उत्तर० ३।१४, याज्ञ० १।३५६, **प्रति**—, 1. आशीर्वाद देना—रघु० १।५७, मनु० ७।१४६, कु० ७।८७ 2. स्वागत करना, बधाई देना, जयजयकार करना, हर्ष पूर्वक सत्कार करना—प्रतिनंद्य स तां पूजाम्—महा०, मनु० २।५४ ।

नन्दः [नन्द्+अच्] 1. आनन्द, सुख, हर्ष 2. (११ इंच लम्बी) एक प्रकार की बांसुरी 3. मेंढक 4. विष्णु 5. एक ग्वाले का नाम जो यशोदा का पति तथा कृष्ण का पालकपिता (जिसकी देख रेख में कृष्ण को रक्खा गया था जब कि कंस उसे मारना चाहता था) 6. नंद वंश का प्रतिष्ठाता (यह वही नंदवंश था जिसके नौ भाई पाटलिपुत्र में राज्य करते थे तथा जिन्हें चन्द्रगुप्त के मंत्री चाणक्य की नीति के द्वारा यमलोक भेज दिया गया था)—समुत्खाता नंदा नव हृदयरोगा इव भुवः—मुद्रा० १।१३, अगृहीते राक्षसे किमुत्खातं नन्दवंशस्य—मुद्रा० १।३, २७, २८ । सम०—**आत्मजः**, —**नंदनः** कृष्ण का विशेषण—**पालः** वरुण का विशेषण।

नन्दक (वि०) [नन्द्+णिच्+ण्वुल्] 1. हर्षित करने वाला, आनन्दित करने वाला, प्रसन्न करने वाला 2. खुश होने वाला, हर्ष मनाने वाला 3. परिवार को प्रसन्न करने वाला —**कः** 1. मेंढक 2. कृष्ण की तलवार 3. तलवार 4. आनन्द ।

नन्दकिन् (पुं०) [नन्दक+इनि] विष्णु का विशेषण ।

नन्दथुः [नन्द्+अथुच्] आनन्द, प्रसन्नता, खुशी ।

नन्दन (वि०) [नन्द्+णिच्+ल्युट्] 1. खुश करने वाला, सुहावना, प्रसन्न करने वाला—**नः** 1. पुत्र—याज्ञ० १।२७४, रघु० ३।४१ 2. मेंढक 3. विष्णु

का विशेषण 4. शिव—नम् इन्द्र का उद्यान, आनन्द-धाम—अभिज्ञाश्छेदपातानां क्रियंते नन्दनद्रुमाः—कु० २।४१, रघु० ८।९५ 2. हर्ष मनाने वाला, प्रसन्न होने वाला, 3. हर्ष, सम०—जम् पीले चंदन की लकड़ी, हरिचंदन।

नंदतः, नंदयन्तः [नंद्+झच्, अन्त आदेशः, नन्द्+णिच्+झच् (अन्त)] पुत्र, बेटा।

नन्दा [नन्द+टाप्] 1. खुशी, हर्ष, आनन्द 2. सम्पन्नता, धनाढ्यता, समृद्धि 3. छोटा मिट्टी का जल-पात्र 4. ननद, पति की बहन 5. प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी, चांद्रमास की तीन तिथियाँ, (यह शुभ तिथियाँ समझी जाती हैं)।

नन्दिः (पुं०, स्त्री०) [नन्द+इन्] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी—कौशल्यानन्दिवर्धनः· दिः (पुं०) 1. विष्णु का विशेषण 2. शिव 3. शिव का अनुचर 4. जूआ खेलना, क्रीडा (इस अर्थ में नपुं० भी)। सम०—ईशः, —ईश्वरः 1. शिव का विशेषण 2. शिव का प्रधान अनुचर—ग्रामः वह गाँव जहाँ राम के वनवासकाल में भरत रहा—रघु० १२।१८,—घोषः अर्जुन का रथ—वर्धनः 1. शिव का विशेषण 2. मित्र 3. चांद्र पक्ष का अन्त अर्थात् अमावस्या या पूर्णिमा।

नन्दिकः [नन्दि+कन्] 1. हर्ष, प्रसन्नता 2. छोटा जल-पात्र 3. शिव का अनुचर। सम०—ईशः,—ईश्वरः 1. शिव का एक मुख्य अनुचर 2. शिव।

नन्दिन् (वि०) [नन्द्+णिनि, नन्द्+णिच्+णिनि वा] 1. आनन्दित, हृष्ट, प्रसन्न, खुश 2. आनन्दित करने वाला, प्रसन्न करने वाला—(पुं०) 1. पुत्र, 2. नाटक में नान्दीपाठ या आशीर्वचन कहने वाला व्यक्ति 3. शिव का मुख्य अनुचर, द्वारपाल, या वह बैल जिस पर शिव सवारी करता है—लतागृहद्वारगतोऽथ नंदी—कु० ३।४३, मा० १।१,· नी 1. पुत्री उत्तर० १।९ 2. ननद, पति की बहन 3. काल्पनि गाय, कामधेनु—(जो सब इच्छाओं को पूरा करती है तथा जिस का स्वामी कुलगुरु वसिष्ठ हैं)—अनिंद्या नन्दिनी नाम धेनुराववृते वनात्—रघु० १।८२, २।६९ 4. गंगा का विशेषण 5. पवित्र काली तुलसी।

नपात् (पुं०) [पाती इति—पा+शतृ, ततो नञा समासे प्रकृतिभावः] (प्रायः वेद में प्रयुक्त) पोता, यथा तनूनपात्।

नपुंस् (पुं०) नपुंसः [नञा समासे प्रकृतिभावः] जो पुरुष न हो, हिजड़ा।

नपुंसकः,—कम् [न पुमान् न स्त्री, नि० स्त्रीपुंसयोः पुंसक आदेशः] 1. उभयलिंगी (न स्त्री न पुरुष) 2. नामर्द, हिजड़ा 3. भीरु, डरपोक,—कम् 1. नपुंसक लिंग का शब्द 2. नपुंसक लिंग।

नप्तृ (पुं०) [न पतन्ति पितरो येन—न+पत्+तृच् नि०] पोता नाती, (लड़के का पुत्र या लड़की का पुत्र)।

नभः [नभ्+अच्] श्रावण मास,—भम् आकाश, अन्तरिक्ष।

नभस् (नपुं०) [नह्यते मेघैः सह—नह्+असुन्, भश्चान्तादेशः] 1. आकाश, अन्तरिक्ष—रघु० ५।२९, भग० १।१९, ऋतु० १।११ 2. बादल 3. कोहरा, वाष्प 4. पानी 5. जीवन की अवधि, आयु (पुं०) 1. वर्षा ऋतु 2. नासिका, घ्राण 3. (जुलाई—अगस्त के अनुरूप, इस अर्थ में नपुं० भी) श्रावण मास—प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालंबनार्थी—मेघ० ४, रघु० १२।२९, १७।४१, १८।५ 4. पीकदान। सम० अंबुपः चातक पक्षी,—कांतिन् (पुं०) सिंह—गजः बादल,—चक्षुस् (पुं०) सूर्य, चमसः 1. चन्द्रमा 2. जादू—चर (वि०) गगन विहारी—कु० ५।२३, (—रः) 1. देवता, उपदेवता रघु० १८।६ 2. पक्षी—दुहः बादल, दृष्टि (वि०) 1. अंधा 2. आकाश की ओर देखने वाला,—द्वीपः,—धूमः बादल,—नदी आकाश गंगा—प्राणः हवा,—मणिः सूर्य,—मंडलम् आसमान, अन्तरिक्ष, नेदं नभोमंडलमंबुराशिः—सा० द० १०, द्वीपः चन्द्रमा,—रजस् (पुं०) अंधकार,—रेणुः (स्त्री०) कोहरा, धुंध,—लयः धूआँ,—लिह् (वि०) आकाश को चाटने वाला, उन्नत, बहुत ऊँचा तु० अभ्रंलिह,—सद् (पुं०) देवता—शि० १।११,—सरित् (स्त्री०) 1. छायापथ 2. आकाशगंगा—स्थली आकाश,—स्पृश् (वि०) गगनचुंबी, उन्नत।

नभसः [नभ्+असच्] 1. आकाश 2. वर्षा ऋतु 3. समुद्र।

नभसंगमः [नभस+गम्+खच्+मुम्] पक्षी।

नभस्यः [नभस्+यत्] (अगस्त—सितंबर के अनुरूप) भाद्रपद का महीना—रघु० ९।५४, १२।२९, १७।४१।

नभस्वत् (वि०) [नभस्+मतुप्, मस्य वः] वाष्पयुक्त, धुंधवाला, मेघाच्छन्न,—(पुं०) हवा, वायु नै० १।९७, रघु० ४।८, १०।७३, शि० १।१०।

नभाकः [नभ्+आक] 1. अंधकार 2. राहु का विशेषण

नभ्राज् (पुं०) [भ्राज्+क्विप्, नञा समासे प्रकृतिभावः] काला बादल, काली घटा।

नम् (भ्वा० पर०—कभी कभी आ०—नमति—ते, नत, प्रेर० नमयति—ते, परन्तु उपसर्ग पूर्व होने पर केवल 'नमयति', इच्छा० निनंसति) 1. झुकना, नमस्कार करना, अभिवादन करना (सम्मान सूचक लक्षण) (कर्म० या संप्र० के साथ) इयं नमति वः सर्वान् त्रिलोचनवधूरिति—कु० ६।८९, भग० ११।१७,

भट्टि० ९।५१, १०।३१, १२।३९, शि० ४।५७, अधीन होना, पराभव स्वीकार करना, झुक जाना —अशक्तः संधिमान् नमेत्—काम० ८।५५ 3. झुकना, दबाना, नीचा होना—अनंसीद्भूर्भरेणास्य —भट्टि० १५।२५ नेमुः सर्वदिमा—का० ५५, उन्नवति नमति वर्षति · · · · मेघः—मृच्छ० ५।२६ 4. ठहरना, झुकाव होना 5. झुका हुआ होना, वक्र होना 6. ध्वनि निकालना। अभ्युद्—, उठाना, उन्नत होना अव—, 1. झुकना, नम्र होना, नीचे को ढलना —शि० ९।७४ 2. झुकाना, लटकाना—त्वय्यादातुं जलमवनते—मेघ० ४५, उद्—, 1. (क) उदय होना, प्रकट होना, उगना—उन्नम्योन्नम्य लीयंते दरिद्राणां मनोरथाः—पंच० २।९१, (ख) 1. लटकना, समीप होना—उन्नमत्यकालदुर्दिनम्—मृच्छ० ५ 2. उदय होना, चढ़ना, ऊपर उठना (आलं० भी) उन्नमति नमति वर्षति गर्जति मेघः—मृच्छ० ५।२६, नम्रत्वेनोन्नमंतः—भर्तृ० २।६९, ३।२४, शि० ९।७९ 3. उठाना, उन्नति करना—कि० १६।३५, प्रेर० ऊपर उठाना, सीधा खड़ा करना—उप—, आना आ जाना, पहुँचना 2. होना, भाग्य में होना, घटित होना, सामने आना (संप्र० के साथ या अकेला) कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा—मेघ० १०९, मत्संभोगः कथमुपनयेत् स्वप्नजोऽपि—मेघ० ९१, यदेवोपनतं दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम्—विक्रम० ३।२१, भर्तृ० २।१२१, मेघ० १०, रघु० १०।३९ 3. उपस्थित करना, देना, प्रस्तुत करना—परलोकोपनतं जलांजलिम्—रघु० ८।६८, परि—, 1. नीचे को ढलना, झुकना (जैसे कि कोई हाथी अपने दांतों से प्रहार करने के लिए) वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श—मेघ० २, विष्के नागः पर्यणंसीत् स्व एव —शि० १८।२७ 2. झुकना, नमस्कार करना, झुकाव होना—लज्जापरिणतैः (वदनकमलैः)—भट्टि० १।४, 3. परिवर्तित होना, रूपांतरित होना, रूप धारण करना (करण० के साथ) लताभावेन परिणतमस्या रूपम्—विक्रम० ४।२८, क्षीरं जलं वा स्वयमेव दधिहिमभावेन परिणमते —शारी०, मेघ० ४५ 4. विकसित या परिपक्व होना, पकना, परिणतप्रज्ञस्य वाणीम् —उत्तर० ७।२०, मेघ० १८, कि० ५।३७, मालवि० ३।८, ऋतु० १।२६ 5. (आयु में) बढ़ना, बड़ा होना, बूढ़ा होना, क्षीण होना, परिणत शरच्चन्द्रिकासु क्षपासु—मेघ० ११०, इसी प्रकार 'जरापरिणत' आदि 6. डूबना, (सूर्य आदि का) पश्चिम में छिपना अनेन समयेन परिणतो दिवसः—का० ४७ 7. पच जाना, ग्रस्तं परिणमेच्च यत्—महा०, प्र· (प्रणमति) नमस्कार करना, अभिवादन करना, विनम्र प्रणति करना (कर्म० या संप्र० के साथ) न प्रणमंति देवताभ्यः —का० १०८, तां प्रणनाम—का० २१९, भग० ११।४४, रघु० २।२१, (साष्टांगं प्रणम् आठ अंगों से झुक कर प्रणाम करना —दे० 'साष्टांग', दण्डवत् प्रणम् डंड की भांति पूर्ण रूप से भूमि पर लेट कर नमस्कार करना, सब अंगों से भूमि को स्पर्श करते हुए तु० दंडप्रणाम), वि—, 1. अपने आपको झुकाना, नम्र करना, विनीत होना—विनमंति चास्य तरवः प्रचये —कि० ६।३४. भर्तृ० १।६७, भट्टि० ७।५२, दे० 'विनत' विपरि—1. बदलना 2. बदल कर खराब होना सम्—1. झुकना नीचे को होना, झुकाव होना —संनतांगी कु० १।३४, भट्टि० २।३१, पर्वसु संनता —विक्रम० ४।२६ 2. नम्र होना, विनीत होना —संनमतामरीणाम्—रघु० १८।३४।

नमत (वि०) [नम्+अतच्] झुका हुआ, विनीत, कुटिल, वक्र—तः 1. अभिनेता 2. धुआं 3. स्वामी, प्रभु 4. बादल।

नमनम् [नम्+ल्युट्] 1. विनीत होना, झुकना, नम्र होना 2. दबना 3. विनति, नमस्कार, अभिवादन।

नमस् (अव्य०) [नम्+असुन्] प्रामति, अभिवादन, प्रणाम, पूजा (यह शब्द स्वयं सदैव संप्र० के साथ प्रयुक्त होता है, तस्मै वदान्यगुरवे तरवे नमोऽस्तु —भामि० १।९४, नमस्त्रिमूर्तये तुभ्यम् कु० २।४, परन्तु 'कृ' के योग में कर्म० के साथ—मुनित्रयं नमस्कृत्य—सिद्धा०, परन्तु कभी-कभी संप्र० के साथ भी—नमस्कुर्मो नृसिंहाय—सिद्धा०, यह शब्द संज्ञा शब्द का अर्थ रखता परन्तु समझा जाता है अव्य०)। सम०—कारः,—कृतिः (स्त्री०)—कारणम् प्रणति, सादर प्रणाम, सादर अभिवादन ('नमस्' शब्द के उच्चारण के साथ),—कृत (वि०) 1. जिसे प्रणति दी गई हैं, जिसको प्रणाम किया गया है 2. सम्मानित, अर्चित, पूजित,—गुरुः आध्यात्मिक गुरु,—वाकम् (अव्य०) 'नमस्' शब्द का उच्चारण करना, अर्थात् विनम्र अभिवादन करना—इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे—उत्तर० १।१।

नमस (वि०) [नम्+असच्] अनुकूल, सानुग्रह व्यवस्थित।

नमसित, नमस्यित (वि०) [नमस्+क्यच्, नमस्य+क्त, विकल्पेन यलोपः] जिसे नमस्कार किया गया हो, सम्मानित, जिसे प्रणाम किया गया है।

नमस्यति (ना० धा० पर०) नमस्कार करना, श्रद्धांजलि अर्पित करना, पूजा करना—भर्तृ० २।९४।

नमस्य (वि०) [नमस्+यत्] 1. अभिवादन प्राप्त करने का अधिकारी, सम्मानित, आदरणीय, वन्दनीय 2. आदरयुक्त, विनीत,—स्या पूजा, अर्चना, श्रद्धा, भक्ति।

नमुचिः [न+मुच्+इन्] 1. एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मार गिराया था। वनमुचे नमुचेररये शिरः—रघु० ९।२२, (जब इन्द्र ने असुरों पर विजय प्राप्त की तो नमुचि नामक एक असुर ने इन्द्र का डटकर मुकाबला किया और अन्त में इन्द्र को बन्दी बना लिया। उस दैत्य ने इन्द्र से कहा कि यदि तुम यह प्रतिज्ञा करो कि 'न मैं तुम्हें दिन में मारूँगा न रात को, न पानी में न सूखे में' तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। इन्द्र ने प्रतिज्ञा की और फलतः उसे छोड़ दिया गया। फिर इन्द्र ने संध्या समय पानी के झाग के साथ (जो न पानी था न सूखापन नमुचि का सिर काट डाला। दूसरे एक कथन के अनुसार नमुचि इन्द्र का मित्र था उसने एक बार इन्द्र की शक्ति को पी लिया और उसे निर्बल एवं अशक्त बना दिया, फिर अश्विनीकुमारों (सरस्वती ने भी) ने इन्द्र को वज्र दिया जिससे उसने नमुचि का सिर काट डाला) 2. कामदेव।

नमेरुः [नम्+एरु] एक वृक्ष का नाम, रुद्राक्ष या सुरपुन्नाग गणा नमेरुप्रसवावतंसाः—कु० १।५५, ३।४३, रघु० ४।७४।

नम्र (वि०) [नम्+र]। विनीत, प्रणतिशील, झुका हुआ, विनत, नीचे लटकने वाला भवंति नम्रास्तरवः फलागमैः—श० ५।१२, स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां—मेघ० ८२, पंच० १।१०६, रत्न० १।१९ 2. प्रणतिशील, सादर अभिवादनशील,—अभूच्च नम्रः प्रणिपात शिक्षया—रघु० ३।२५, इत्युच्यते ताभिरुमा स्म नम्रा—कु० ७।२८ 3. सुशील, विनयी, विनयशील, श्रद्धालु —मेघ० ५५ 4. कुटिल, वक्र 5. पूजा करने वाला 6. भक्त, उपासक।

नय् (भ्वा० आ०—नयते) 1. जाना 2. रक्षा करना।

नयः [नी+अच्] 1. निर्देशन, मार्गदर्श, प्रबन्धन 2. व्यवहार, नित्यचर्या, आचरण, दिनचर्या—जैसा कि दुर्नय में 3. दूरदर्शिता, अग्रदृष्टि 4. नीति, शासन विषयक बुद्धिमत्ता, राजनीतिज्ञता, नागरिक प्रशासन राज्य की नीति—नयप्रचारं व्यवहार दुष्टताम्—मृच्छ० १।७, नयगुणोपचितामिव भूपतेः सदुपकार फलां श्रियमर्थिनः—रघु० ९।२७ 5. नैतिकता, न्याय, न्यायपरता, न्याय्यता—चलति नयान्न जिगीषतां हि चेतः—कि० १०।२९, २।३, ६।३८, १६।४२ 6. रूपरेखा, ढांचा, योजना—मुद्रा० ६।११,७।९ 7. सिद्धांत वाक्य, नियम 8. क्रम, प्रणाली, रीति 9. पद्धति, वाद, सम्मति 10. दार्शनिक पद्धति -वैशेषिके नये—भाषा०, १०५। सम०—कोविद, ज्ञ (वि०) नीति कुशल, दूरदर्शी —**चक्षुस्** (वि०) शास्त्रीय अग्रदृष्टि रखने वाला, बुद्धिमान्, दूरदर्शी —रघु० १।५५ —नेतृ (पुं०) राज नीतिशास्त्र पारंगत—**विद्** (पुं०) —**विशारदः** राजनयिक, राजनीतिज्ञ—**शास्त्रम्** 1. राजनीतिशास्त्र, 2. राजनीति का या राजनीतिक अर्थशास्त्र का कोई ग्रन्थ 3. नीतिशास्त्र—**शालिन्** (वि०) न्यायपूर्ण, न्यायपरायण कि० ५।२४।

नयनम् [नी+ल्युट्] 1. मार्ग दर्शन, निर्देशन, संचालन, प्रबन्धन 2. लेना, निकट लाना, खींचना 3. हकूमत करना, शासन करना 4. प्रापण 5. आँख। सम० —**अभिराम** (वि०) आँखों को प्रसन्न करने वाला, प्रियदर्शन (—**मः**) चाँद,—**उत्सवः** 1. दीपक, लैंप 2. आँख की प्रसन्नता 3. कोई प्रिय वस्तु—**उपांतः** आँख का कोना—कु० ४।२३,—**गोचर** (वि०) दृश्यमान, दृष्टि-परास के अन्तर्गत,—**छदः** पलक,—**पथः** दृष्टि-परास—**पुटम्** अक्षिगोलक,—**विषयः** 1. कोई दृश्यमान पदार्थ 2. क्षितिज,—**सलिलम्** आँसू मेघ० ३९।

नरः [नृ+अच्] 1. मनुष्य, पुमान् पुरुष—संयोजयति विद्येव नीचगापि नरं सरित्, समुद्रमिव दुर्धर्षं नृपं भाग्यमतः परम्—हि० प्र० ५, मनु० १।९६, २।२१३ 2. शतरंज का मोहरा 3. धूपघड़ी की कील, शंकु 4. परमात्मा, नित्यपुरुष 5. दोनों हाथों को दोनों ओर सीधा फैलाकर, हाथ के एक सिरे से दूसरे हाथ के सिरे तक की लम्बाई 6. एक प्राचीन ऋषि का नाम 7. अर्जुन का नाम—दे० नी० नरनारायण। सम०—**अधिपः**, —**अधिपतिः**, —**ईशः**, —**ईश्वरः** —**देवः**,—**पतिः**—**पालः** राजा, भग० १०।२७, मनु० ७।१३, रघु० २।२५, ३।४२, ७।६२, मेघ० ३७, याज्ञ० १।३१०, —**अंतकः** मृत्यु,—**अयनः** विष्णु का विशेषण,—**अंशः** राक्षस, पिशाच,—**इन्द्रः** 1. राजा—रघु० २।१८, ३।३३, ६।८०, मनु० ९।२५३ 2. वैद्य, विषनाशक औषधियों का विक्रेता, विषनाशक—तेपु-कश्चिन्नरेन्द्राभिमानी तां निर्वर्ण्य—दश० ५१, सुनिग्रहा नरेन्द्रेण फणीन्द्रा इव शत्रवः—शि० २।८८, (यहाँ शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है),—**उत्तमः** विष्णु का विशेषण, —**ऋषभः** 'मनुष्यों में श्रेष्ठ' राजकुमार, राजा,—**कपालः** मनुष्य की खोपड़ी,—**कीलकः** आध्यात्मिक गुरु की हत्या करने वाला,—**केशरिन्** (पुं०) विष्णु का चौथा अवतार, तु० 'नृसिंह' की नी०, —**द्विष्** (पुं०) राक्षस, पिशाच—भट्टि० १५।९४, —**नारायणः** कृष्ण का नाम, (द्वि० व०—**णौ**) मूलरूप से दोनों एक ही माने जाते थे, परन्तु पुराणों और महाकाव्यों में दो स्वतंत्र माने जाने लगे—नर को अर्जुन का समरूप तथा कृष्ण को नारायण का रूप (कुछ स्थानों पर इन्हें 'देवौ' 'पूर्वदेवौ' 'ऋषी' या 'ऋषिसत्तमौ' कहते हैं, कहा जाता है कि यह दोनों हिमालय पर्वत कड़ी साधना और तपस्या किया

करते थे, इनकी इस तपस्या से इन्द्र भयभीत हुआ, फलतः उसने इनकी तपस्या में विघ्न डालने के लिए कई देव कन्याओं को भेजा। परन्तु नारायण ने अपनी जंघा पर रक्खे एक फूल से सौंदर्य में इनसे बढ़ चढ़कर 'उर्वशी' नाम की एक अप्सरा को उत्पन्न करके इन स्वर्गदेवियों को लज्जित कर दिया, तु० स्थाने खलु नारायणमृषिं विलोभयंत्यस्तदूरूसंभवामिमां दृष्ट्वा व्रीडिताः सर्वा अप्सरस इति—विक्रम० १), —पशुः पशु जैसा मनुष्य, मानव रूप में पशु—पुंगवः मनुष्यों में श्रेष्ठ, उत्तमपुरुष,—मानिका,—मानिनी, —मालिनी मनुष्य जैसी स्त्री जिसके दाढ़ी हो, मर्दानी औरत,—मेधः नरयज्ञ,—यंत्रम् धूपघड़ी,—यानम् —रथः—वाहनम् मनुष्य द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी—लोकः 1. मनुष्यों का संसार, पृथ्वी, पार्थिव संसार 2. मानवता,—वाहनः कुबेर का विशेषण—रघु० ९।११,—वीरः पराक्रमी मनुष्य शूरवीर,—व्याघ्रः —शार्दूलः प्रमुख पुरुष,—शृंगम् 'मनुष्य का सींग, असंभावना; शेर के मुँह, बकरे के धड़ और सांप की पूंछ वाला बकरा अर्थात् बन्ध्यापुत्र, सत्ताहीनता, —संसर्गः मानव-समाज,—सिंहः,—हरिः 'नरसिंह' विष्णु का चौथा अवतार, तु० तवकरकमलवरे नखमद्भुतशृंगं दलितहिरण्यकशिपुतनुभृंगम्, केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे—गीत० १,—स्कंधः मनुष्यों की टोली।

नरकः,—कम् [नृणाति क्लेशं प्रापयति—नृ+वुन्] दोज़ख, घृणा प्रदेश, (प्लूटो के राज्य के अनुरूप स्थान, नरक गिनतियों में २१ माने जाते हैं जहाँ पापियों को विविध प्रकार की यातनायें दी जाती हैं), —कः एक राक्षस का नाम, प्राग्ज्योतिष का राजा (एक वृत्त के अनुसार नरक एक बार अदिति के कर्णाभूषण उठाकर भाग गया, तब देवताओं की प्रार्थना सुनकर कृष्ण ने उसको एक ही पछाड़ में मार गिराया और वह आभूषण प्राप्त किया। एक दूसरे वृत्त के अनुसार नरक ने हाथी का रूप धारण किया और वह विश्वकर्मा की पुत्री को उठा कर ले गया तथा उसके साथ बलात्कार किया। उसने गंधर्वों, देवों, और मनुष्यों की लड़कियों तथा अप्सराओं को उठाया और इस प्रकार सोलह हजार से अधिक युवतियों को अपने अन्तःपुर में रक्खा। कृष्ण ने जब नरक को मार दिया तो यह सब युवतियाँ कृष्ण के अन्तःपुर में हस्तान्तरित कर दी गई। यह राक्षस भूमि से उत्पन्न होने के कारण भौम कहलाता है)। सम०—अंतकः, —अरिः,—जित् (पुं०) कृष्ण के विशेषण,—आमयः 1. मृत्यु के पश्चात् आत्मा 2. भूत, प्रेत—कुंडम् नरक का गढ़ा जहाँ दुष्टों को नाना प्रकार की यातनायें दी जाती हैं—इस प्रकार के ८६ स्थान गिनाये गये हैं), —स्था वैतरणी नदी।

नरंगम्, नरांगः [नृ+अंगच्, नर+अंग्+अण्] पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्ग।

नरंधिः [नराः धीयन्तेऽस्मिन्—नर+धा+कि, पृषो० मुम्] सांसारिक जीवन या अस्तित्व।

नरी [नर+ङीप्] नारी, स्त्री—भामि० ३।१६।

नरकुटकम्] नरस्य कुटकमिव, पृषो०] नाक, नासिका।

नर्तः [नृत्+अच्] नाचना, नाच।

नर्तकः [नृत्+ण्वुल्] 1. नाचने वाला, नृत्यशिक्षक 2. अभिनेता, नट, मूकनाटक का पात्र 3. भाट, चारण 4. हाथी 5. राजा 6. मोर,—की 1. नाचने वाली स्त्री, नटी, अभिनेत्री—रंगस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा नृत्यात्—सां० का० ५९, कि० १०।४१, रघु० १९।१४, १९ 2. हथिनी 3. मोरनी।

नर्तनः [नृत्+ल्युट्] नाचने वाला,—नम् हावभाव प्रदर्शित करना, नाचना, नाच। सम०—गृहम्,—शाला नाचघर,—प्रियः शिव का विशेषण।

नर्तित (वि०) [नृत्+णिच्+क्त] नाचा हुआ, नचाया हुआ।

नर्द् (भ्वा० पर० —नर्दति, नर्दित) गरजना, दहाड़ना, शब्द करना —अनर्दिषुः कपिव्याघ्राः—भट्टि० १५।३५, १४।४०, १५।२८, १७।४० 2. जाना, गतिशील होना।

नर्द (वि०) [नर्द्+अच्] गरज, दहाड़।

नर्दनम् [नर्द्+ल्युट्] 1. गरजना, दहाड़ना 2. प्रशंसा का प्रचार करना, ऊँचे स्वर में कीर्तिगान करना।

नर्दितः [नर्द्+क्त] एक प्रकार का पासा, पासे का हाथ —नर्दितदर्शितमार्गःकटेन विनिपातितो यामि—मृच्छ० २।८,—तम् आवाज, दहाड़, गरज।

नर्मटः [नर्मन्+अटन्, पृषो०] 1. ठीकरा, वर्तन का टुकड़ा 2. सूर्य।

नर्मठः [नर्मन्+अठन्] 1. भांड़ 2. लम्पट, दुश्चरित्र, स्वेच्छाचारी 3. क्रीडा, मनोरंजन, विनोद 4. मैथुन, संभोग 5. ठोडी 6. चूचक।

नर्मन् (नपुं०) [नृ+मनिन्] 1. क्रीडा, विनोद, विलास आमोद, प्रमोद, कामकेलि, केलिविहार—जितकमले विमले परिकर्मय नर्मजनकमलकं मुखे—गीत० १२ (कौतुकजनक); रघु० १९।२८ 2. परिहास, हँसी दिल्लगी, ठट्ठा, रसिकोक्ति—नर्मप्रायाभिः कथाभिः का० ७०, परिहासपूर्ण, सरस। सम०—कीलः पति,—गर्भ (वि०) रसिक, ठिठोलिया, विनोदी (र्भः) गुप्तप्रेमी—द (वि०) आह्लादकारी, आनन्ददायक (—दः) विदूषक (—नर्मसचिव),—दा विन्ध्यपर्वत से निकलने वाली एक नदी जो खंबात की खाड़ी

में जाकर गिरती है; —द्युति (वि०) हर्षोत्फुल्ल, हंसमुख, प्रसन्नवदन (स्त्री०—तिः) परिहास का मजा लेना—सचिवः,—सुहृद् (पुं०) विदूषक, राजा या किसी रईस का मनोविनोद करने वाला साथी—इदं त्वैदंपर्यं यदुत नृपतेर्नर्मसचिवः सुतादानान्मित्रं भवतु—मा० २।७, तां याचते नरपतेर्नर्मसुहृन्नन्दनो नृपमुखेन—१।११, शि० १।५९ ।

नर्मरा: [नर्मन्+र+टाप्] 1. घाटी, कंदरा 2. धौंकनी 3. बूढ़ी स्त्री जिसे अब रजोधर्म न होता हो 4. सरला नाम का पौधा ।

नलः [नल्+अच्] 1. एक प्रकार का नरकुल 2. निषधदेश का एक विख्यात राजा, 'नैषध चरित' काव्य का नायक । (नल अत्यन्त उदार और सद्गुण संपन्न राजा था । देवताओं का विरोध सहकर भी दमयंती इसे अपना पति चुना था, फिर वे कुछ वर्षों तक सानन्द रहते रहे 1. परन्तु दमयंती को प्राप्त करने में निराश होकर कलि ने नल पर जुल्म ढाये, वह नल के शरीर में प्रविष्ट हो गया) इस प्रकार कलिग्रस्त हो नल ने अपने भाई पुष्कर के साथ जूआ खेला, उसमें सब कुछ हार जाने पर उसे सपत्नीक राजधानी से निर्वासित कर दिया गया । एक दिन जब कि वह जंगल में मारा २ थिर रहा था, हताश होकर अपनी स्त्री को अर्ध नग्नावस्था में छोड़ कर चल दिया । उसके पश्चात् कर्कोटक सांप के काटने से उसका शरीर विकृत हो गया । इस प्रकार विकृत शरीर हो वह अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहाँ गया और वहाँ वह बाहुक नाम से नौकर हो गया और उसके घोड़ों के साहस का काम करने लगा । उसके पश्चात् राजा ऋतुपर्ण की सहायता से उसने अपनी पत्नी दमयंती को फिर से प्राप्त किया और वे आनन्द पूर्वक रहने लगे—दे० 'ऋतुपर्ण' और 'दमयंती') 3. एक प्रमुख वानर जो विश्वकर्मा का पुत्र था तथा जिसने नलसेतु नामक एक पत्थरों का पुल बनाया, जिसके ऊपर से होकर राम ने अपने सैन्यदल समेत लंका में प्रवेश किया,—लम् कमल । सम० —कीलः घुटना—कूब (व) रः कुबेर के एक पुत्र का नाम—दम् एक सुगंधित जड़, खस, उशीर—कि० १२।५०, नै० ४।११६,—पट्टिका नरकुलों की बनी हुई एक प्रकार की चटाई, - मीनः जल वृश्चिक, झींगा मछली ।

नलकम् [नल+कै+क] 1. शरीर की कोई भी लंबी हड्डी—महावी० १।३५ 2. कुहनी की हड्डी ।

नलकिनी [नलक+इनि+ङीप्] 1. घुटने की कपाली 2. टांग ।

नलिनः [नल्+इनच्] सारस—नम् 1. कमल, कुमुद 2. जल 3. नील का पौधा, नलिनेशयः विष्णु का विशेषण ।

नलिनी [नल+इनि+ङीप्] 1. कमल का पौधा—न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति—मृच्छ० ४।१७, नलिनीदलगतजलमतितरलम्—मोह० ५, कु० ४।६ 2. कमलों का समूह 3. कमलों से भरा हुआ सरोवर । सम०—खंडम्,—षंडम् कमलपुंज,—रुहः ब्रह्मा का विशेषण, (—हम्) कमलडंडी, कमल का रेशा ।

नल्वः [नल्+व] दूरी मापने का नाप जो ४०० हाथ लम्बा हो ।

नव (वि०) [नु+अप्] 1. नया, ताजा, थोड़ी आयु का, नवीन —चित्तयोनिरभवत्पुनर्नवः—रघु० १९।४६, क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते—कु० ५।८६, पत्तर० १।१९ रघु० १।८३, २।४७, ३।५०, ११, शि० १।४, ३।३१, कि० ९।४३ 2. आधुनिक,—वः कौवा—वम् (अव्य०) आजकल में, हाल में, अभी अभी, बहुत दिन हुए । 1. सम०—अन्नम् नये चावल या नया अनाज, —अंबु (नपुं०) ताजा पानी,—अहः पक्ष का पहला दिन—इतर (वि०) पुनाना—रघु० ७।२२,—उद्धृतम् ताजा मक्खन,—ऊढा,—पाणिग्रहणा, अभी की विवाहित स्त्री, दुलहिन—हि० १।२१०, भर्तृ० १।४, रघु० ८।७, —कारिका,—कालिका,—फलिका 1. नवविवाहित स्त्री 2. नूतन रजस्वला स्त्री,—छात्रः नया विद्यार्थी, नौसिखिया, नवशिष्य—नी (स्त्री०)—नीतम् ताजा मक्खन—अहो नवनीतकल्पहृदय आर्यपुत्रः—मालवि० ३,—नीतकम् 1. परिष्कृत मक्खन 2. ताजा मक्खन,—पाठकः नया अध्यापक,—मल्लिका —मालिका चमेली का एक भेद,—यज्ञः नये अन्न या नये फलों से आहुति देना,—यौवनम् नई जवानी, यौवन का नया विकास,—रजस् (स्त्री०) लड़की जिसे हाल ही में रजोदर्शन हुआ हो,—वधूः,—वरिका नवविवाहिता लड़की,—वल्लभम् एक प्रकार का चन्दन,—वस्त्रम् नया कपड़ा,—शशिभृत् (पुं०) शिव का विशेषण—मेघ० ४३,—सूतिः (स्त्री०),—सूतिका 1. नई सूई हुई या दुधार गाय 2. जच्चा स्त्री ।

नवकम् [नवन्+कन् नलोपः] नौ वस्तुओं का समूह, नौ का गुच्छा ।

नवत (वि०) (स्त्री—ती) [नवति+डट्] नब्वेवां—तः 1. छींट की बनी हाथी की झूल 2. ऊनी कपड़ा, कंबल 3. चादर, आवरण ।

नवतिः (स्त्री०) [नि०] 1. नब्वे नवनवतिशतद्रव्यकोटीश्वरास्ते—मुद्रा० ३।२७, रघु० ३।६९ ।

नवतिका [नवति+कन्+टाप्] 1. नब्वे 2. चित्रकार की कूंची (कहा जाता है कि इस कूंची में नब्वे बाल होते हैं) ।

नवन् (सं० वि०) [नु+कनिन् बा० गुणः] (नित्यबहु०) नौ—नवति नवाधिकां—रघु० ३।६९, दे० नीचे दिए गये समस्त शब्द (आरंभ में प्रयुक्त होनेपर 'नवन्' के 'न्' का लोप हो जाता है)। सम०—**अशीतिः** (स्त्री०) नवासी,—**अर्चिस्** (पुं०), **दीधितिः** मंगल-ग्रह,—**कृत्वस्** (अव्य०) नौ गुणा,—**ग्रहाः** (पुं०,ब०व०) नौ ग्रह, दे० 'ग्रह' के अन्तर्गत,—**चत्वारिंश** (वि०) उनचासवाँ,—**चत्वारिंशत्** (स्त्री०) उनचास,—**छिद्रम्**,—**द्वारम्** शरीर (नौ दरवाजो वाला, दे० 'ख'),—**त्रिंश** (वि०) उंतालीसवां,—**त्रिंशत्** (स्त्री०) उंतालीस—**दश** (वि०) उन्नीसवाँ,—**दशन्** (ब०व०) उन्नीस,—**नवतिः** (स्त्री०) निन्यानवे,—**निधिः** (पुं०, ब०व०) कुबेर के नौ खजाने—अर्थात्—महापद्मश्च पद्मश्च शंखो मकरकच्छपौ, मुकुंदकुंदनीलश्च खर्वश्च निधयोनव,—**पंचाश** (वि०) उनसठवाँ—**पंचाशत्** (स्त्री०) उनसठ,—**रत्नम्** 1. नौ अमूल्य रत्न—अर्थात्—मुक्ता माणिक्यवैदूर्यगोमेदान् वज्रविद्रुमौ, पद्मरागं मरकतं नीलं चेति यथाक्रमम् 2. राजा विक्रमादित्य के दरबार के नौ कवि, कविरत्नं-धन्वंतरिक्षपणकामरसिंहशंकु बेतालभट्ट घटकर्परकालिदासाः ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य,—**रसाः** (पुं०, ब०व०) काव्य के नौ रस, दे० 'अष्टरस' और 'रस',—**रात्रम्** 1. नौ दिन का समय 2. आश्विन मास के प्रथम नौ दिन जो दुर्गा पूजा के दिन मान जाते हैं,—**विंश** (वि०) उंतीसवाँ,—**विंशतिः** (स्त्री०) उंतीस,—**विध** (वि०) नौ तरह का, नौ प्रकार का,—**शतम्** 1. एक सौ नौ 2. नौ सो,—**षष्टिः** (स्त्री०) उनहत्तर,—**सप्ततिः** उनासी।

नवधा (अव्य०) [नव+धा] नौ प्रकार से, नौगुणा।

नवम (वि०) (स्त्री०—मी) [नवन्+डट्, डट्स्थाने मट्] नवां—**मी** चान्द्रमास के पक्ष का नवाँ दिन।

नवशः (अव्य०) [नवन्+शस्] नौ नौ करके।

नवीन, नव्य (वि०) [नव+ख, यत् वा] 1. नया, ताजा, हाल का 2. आधुनिक।

नश् (दिवा० पर०—नश्यति, नष्ट, प्रेर०—नाशयति —इच्छा० निनंक्षति, निनशिषति) 1. खोया जाना, अन्तर्धान होना, लुप्त होना, अदृश्य होना—ध्रुवाणि तस्य नश्यंति—हि० १, तथा सीमा न नश्यति—मनु० ८।२४७, याज्ञ० २।५८, —क्षणनष्टदृष्टतिमिरम् मृच्छ० ५।१४ 2. नष्ट होना, ध्वस्त होना, मरना, बर्बाद होना—जीवनाशं ननाश च—भट्टि० १४।३१, मनु० ८।१६ ७।४०, मुद्रा० ७।८ 3. भाग जाना, उड़ जाना, बच निकलना नश्यंति वृन्दानि ददर्श कपींद्रः —भट्टि० १०।१२, नंशुश्चित्राः निशाचराः—१४।११२, रत्न० २।३ 4. भग्नाश होना, असफल होना—प्रेर० 1. अन्तर्धान करना 2. नष्ट करना, हटा देना, मिटा देना, भगा देना, उड़ा देना, प्र—, (प्रणश्यति) वि—, ध्वस्त होना, मरना—भट्टि० ३।१४, भग० ८।२०।

नश् (स्त्री०) नशः, नशनम् [नश्+क्विप्, क, ल्युट् वा] नाश, ध्वंस हानि, अन्तर्धान।

नश्वर (वि०) (स्त्री०—री) [नश्+क्वरप्] 1. नष्ट होने वाला, क्षणस्थायी, क्षणभंगुर, अनित्य, अस्थायी —निखिलं जगदेव नश्वरम्—रस० 2. विनाशकारी, उत्पातकारी।

नष्ट (भू० क० कृ०) [नश्+क्त] 1. खोया हुआ, अन्तर्हित, लुप्त, अदृश्य 2. मृत, ध्वस्त, उच्छिन्न 3. भ्रष्ट, क्षीण 4. भागा हुआ 5. वंचित, मुक्त (समास में)। सम०—**अर्थ** (वि०) निर्धनीकृत (जिसका धन नष्ट हो गया हो),—**आतंकम्** (अव्य०) निश्चितता के साथ, निर्भय होकर—नष्टातंकं हरिणशिशवो मंदमंदं चरन्ति—श० १।१३, अने० पा०,—**आत्मन्** (वि०) ज्ञान से वंचित, बेहोश,—**आप्तिसूत्रम्** लूट का माल, लूट-खसोट,—**आशंक** (वि०) निडर, सुरक्षित, भयरहित,—**इंदुकला** पूर्णिमा का दिन,—**इन्द्रिय** (वि०) इन्द्रियरहित,—**चेतन**,—**चेष्ट**,—**संज्ञ** (वि०) जिसकी चेतना जाती रही है, अचेतन, बेहोश, मूर्छित, —**चेष्टता** विश्वविनाश।

नस् (स्त्री०) [नस्+क्विप्] (दूसरी विभक्ति के द्वि० व० के पश्चात् 'नासिका' के स्थान में होने वाला आदेश) नाक, नासिका। सम०—**क्षुद्र** (वि०) छोटी नाक वाला।

नस्तस् (अव्य०) [नस्+तसिल्] नाक से—याज्ञ० ३।१२७।

नसा [नस्+टाप्] नाक, नासिका।

नस्तः [नस्+क्त] नाक,—**स्तम्** नस्य, सूंघनी—**स्ता** नाक के नथुने में किया गया छिद्र। सम०—**ऊतः** नकेल द्वारा चलाया गया बल।

नस्तित (वि०) [नस्त+इतच्] नाथा हुआ (नाक में रस्सी डालकर)।

नस्य (वि०) [नासिक+यत् नसादेशः] अनुनासिक, —**स्यम्** 1. नाक का बाल 2. सुंघनी,—**स्या** 1. नाक 2. पशु के नाक में से निकली हुई रस्सी, नकेल —शि० १२।१०।

नह् (दिवा० उभ०—नह्यति—ते, नद्ध, इच्छा० निनत्सति —ते) बांधना, बंधनयुक्त करना, ऊपर से चारो ओर से या एक जगह बांधना, कमर कसना—शैलेयनद्धानि शिलातलानि—कु० १।५६, रघु० ४।५७, १६।४१ 2. पहनना, वस्त्र धारण करना, सुसज्जित करना (आ०), प्रेर०—पहनना, अप—खोलना अपि

—(कभी-कभी बदलकर केवल 'पि' रह जाता है) 1. बांधना, कमर कसना, बंधन में डालना—अतिपिनद्धेन वल्कलेन—श० १, मंदारमाला हरिणा पिनद्धा—श० ७।२ 2. पहनना, कपड़े धारण करना—भट्टि० ३।४७ 3. ढकना, (लिफाफे में) बंद करना—श० १।१९, उद् बांधना, जकड़ना, गूंथना—रघु० १७।३०, १८।५०, परि—घेरना, अन्तर्जटित करना, परिवृत्त करना—सजगति परिणद्धः शक्तिभिः शक्तिनाथः —मा० ५।१, रघु० ६।६४, मालवि० ५।१०, ऋतु० ६।२५, सम्—1. कसना, बांधना, जकड़ना 2. वस्त्र पहनना, धारण करना, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना, संवारना, लिबास पहनना—समनात्सीत्ततः सैन्यम् —भट्टि० १५।१११—२, १४।७, १७।४ 4. (किसी कार्य के लिए) अपने आपको तैयार करना, (आ० इस अर्थ में) युद्धाय संह्यते महा०, छेत्तुं वज्रमणीञ् शिरीषकुसुमप्रांतेन संनह्यते—भर्तृ० २।६, दे० 'सनद्ध' भी ।

नहि (अव्य०) निश्चय ही नहीं, निश्चित रूप से नहीं, किसी भी अवस्था में नहीं, बिल्कुल नहीं—आनंसा न हि नः प्रेते जीवेम दशमूर्धनि —भट्टि० १९।५ ।

नहुषः [नह्+उषच्] एक चन्द्रवंशी राजा, ययाति का पिता, पुरुरवा का पोता और आयुस् का पुत्र, यह बहुत बुद्धिमान्, और बलवान राजा था । जब इन्द्र ने वृत्र को मार दिया, और उस ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त करने के लिए वह एक सरोवर में जा छिपा, तो उस समय नहुष राजा को इन्द्र के आसन पर बिठाया गया । वहाँ रहते हुए नहुष इंद्राणी के प्रेम को जीतने के विचार से सप्तर्षियों को पालकी में जोत कर उसके भवन की ओर चला । मार्ग में उसने सप्तर्षियों को 'सर्प' 'सर्प' (तेज़ चलो, तेज़ चलो) कह कर फुर्ती से चलने के लिए कहा । उस समय अगस्त्य मुनि ने नहुष को साँप बन जाने का शाप दिया । वह आकाश से इस पृथ्वी पर गिरा और तब तक इसी दुरवस्था में पड़ा रहा जब तक कि युधिष्ठिर ने आकर उद्धार न किया हो) ।

ना [नह्+डा] नहीं, न (=न) ।

नाकः [न कम् अकम् दुःखम्, तत् नास्ति अत्र इति नि० प्रकृतिभावः] 1. स्वर्ग—आनाकरथवर्त्मनाम्—रघु० १।५, १५।९६ 2. आकाश मंडल, ऊर्ध्वतर गगन, अन्तरिक्ष । सम०—**चरः** 1. देव 2. उपदेव—**नाथः**, —**नायकः** इन्द्र का विशेषण,—**वनिता** अप्सरा—**सद्** (पुं०) देव,—भट्टि० १।४ ।

नाकिन् (पुं०) [नाक+इनि] देवता, सुर—शि० १।४५ ।

नाकुः [नम्+उ नाक् आदेशः] 1. वल्मीक 2. पहाड़ ।

नाक्षत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [नक्षत्र+अण्] तारा-सम्बन्धी, नक्षत्रविषयक,—**त्रम्** २७ नक्षत्रों में से चन्द्रमा की गति के आधार पर गिना गया महीना, ६० घड़ी वाले तीस दिनों का एक मास—नाडीषष्ट्या तु नाक्षत्र-महोरात्रं प्रकीर्तितम्—सूर्य० ।

नाक्षत्रिकः [नक्षत्र+ठञ्] २७ दिनों का महीना (जिसमें प्रत्येक दिन—चन्द्रमा की नक्षत्रान्तर्गति पर आधारित है) ।

नागः [नाग+अण्] 1. सांप, विशेष कर काला साँप 2. एक काल्पनिक नागदैत्य जिसका मुख मनुष्य जैसा और पूंछ साँप जैसी होती है तथा जो पाताल में रहता है—भग० १०।२९, रघु० १५।८३ 3. हाथी—मेघ० ११, ३६, शि० ४।६३ विक्रम० ४।२५ 4. मगर-मच्छ 5. क्रूर, अत्याचारी व्यक्ति 6. (समास के अन्त में), गण्यमान्य और पूज्य व्यक्ति—उदा० पुरुषनाग 7. बादल 8. खूंटी (दीवार में गड़ी हुई) 9. नागकेसर, नागरमोथा 10. शरीरस्थ पाँच प्राणों में वह वायु जो डकार के द्वारा बाहर निकलती है 11. सात की संख्या—**गम्** 1. रांग 2. सीसा । सम० —**अंगना** 1. हथिनी 2. हाथी की सूंड,—**अंजना** हथिनी, —**अधिपः** शेष का विशेषण, **अंतकः**,—**अरातिः**, —**अरिः** 1. गरुड का विशेषण 2. मोर 3. सिंह, —**अशनः** 1. मोर—पंच० १।१५९ 2. गरुड का विशेषण,—**आननः** गणेश का विशेषण,—**आह्वः** हस्तिनापुर, —**इन्द्रः** 1. भव्य या श्रेष्ठ हाथी—कु० १।३६ 2. इन्द्र का हाथी ऐरावत 3. शेष का विशेषण,—**ईशः** 1. शेष की उपाधि 2. परिभाषेन्दुशेखर तथा कई अन्य पुस्तकों का प्रणेता 3 पतंजलि,—**उदरम्** 1. लोहे का तवा (जो सैनिक छाती के बांधते हैं), वक्षस्त्राण 2. गर्भावस्था का एक रोग विशेष, गर्भोपद्रवभेद,—**केसरः** सुगंधित फूलों का एक वृक्ष,—**गर्भम्** सिन्दूर,—**चूडः** शिव की उपाधि,—**जम्** 1. सिंदूर 2. रांग,—**जिह्विका** मैनसिल, —**जीवनम्** रांगा—**दंतः**,—**दंतकः** 1. हाथी दांत 2. दीवार में लगी खूंटी या दीवारगीरी,—**दंती** 1. एक प्रकार का सूरजमुखी फूल 2. वेश्या,—**नक्षत्रम्**,—**नायकम्** आश्लेषा नक्षत्र, (—**कः**) सांपों का स्वामी,—**नासा** हाथी की सूंड,—**निर्यूहः** दीवार में लगी खूंटी या दीवारगीरी,—**पंचमी** श्रावणशुक्ला पंचमी को मनाया जाने वाला उत्सव,—**पदः** एक प्रकार का रतिबंध, —**पाशः** 1. युद्ध में शत्रुओं को फंसाने के लिए प्रयुक्त एक प्रकार का जादू का जाल 2. वरुण का शस्त्र या जाल,—**पुष्पः** 1. चम्पक का पौधा 2. पुन्नाग वृक्ष, —**बंधकः** हाथी पकड़ने वाला,—**बंधुः** गूलर का पेड़, पीपल का पेड़,—**बलः** भीम की उपाधि—**भूषणः** शिव की उपाधि—**मंडलिकः** 1. सपेरा 2. सांप पकड़ने वाला,—**मल्लः** ऐरावत का विशेषण,—**यष्टिः** (स्त्री०)

—**यष्टिका** 1. नये खुदे तालाब में पानी की गहराई नापने के लिए अंशांकित बांस विशेष 2. धरती में छेद करने का बर्मा,—**रक्तम्**, रेणुः सिंदूर,—रंगः संतरा — **राजः** शेष की उपाधि,—**लता**,—**वल्लरी**, —**वल्ली** नागकेसर, पान की बेल,—**लोकः** सांपों की दुनिया, सांपों का कुल, भूलोक के नीचे अवस्थित पाताल लोक, —**वारिकः** 1. राजकील हाथी 2. महावत 3. मोर 4. गरुड की उपाधि 5. हाथियों का यूथपति 6. किसी समाज का प्रधान व्यक्ति,—**संभवम्**,—**संभूतम्** सिन्दूर ,—**साह्वयम्** हस्तिनापुर।

नागर (वि०) (स्त्री०— री) [नगर+अण्] 1. नगर में उत्पन्न, नगर में पला 2. नगर से संबंध रखने वाला, नगरीय 3. नगर में बोला जाने वाला 4. नम्र, शिष्ट 5. चतुर, चालाक 6. बुरा, दुष्ट, दुर्व्यसनी (जिसने नगर की बुराइयाँ ग्रहण करली हैं),—रः 1. नागरिक —मेघ० २५, शा० ४।१९ 2. देवर, पति का भाई 3. व्याख्यान 4. नारंगी 5. थकावट, कठिनाई, श्रम 6. मुकरना, जानकारी का खण्डन,—री 1. लिपि, वर्णमाला जिसमें प्रायः संस्कृत लिखी जाती है—तु० देवनागरी 2. चालाक और बुद्धिमती स्त्री—हन्ता-भीरीः स्मरतु स कथं संवृतो नागरीभिः— उ० दू० १६ 3. स्नुही नाम का पौधा।

नागरक, नागरिक (वि०) नगरेभवः वुञ्, नगर+ठक्] 1. नगर में पला नगर में उत्पन्न 2. नम्र, शिष्ट, शालीन—नागरिकवृत्त्या संज्ञापयैनाम्—श० ५ 3. चतुर, बुद्धिमान्, चालाक,—**कः** 1. नागरिक 2. नम्र या शिष्ट व्यक्ति, वीर बहादुर, वह प्रेमी जो अपनी पहली प्रेमिका को अतिशय प्रेम प्रदर्शित करता है, परन्तु किसी अन्य से अपनी प्रणय प्रार्थना करता है 3. जो नगर के दुर्व्यसनों में फँस गया है 4. चोर 5. कलाकार 6. पुलिस का मुख्य अधिकारी— विक्रम० ५, श० ६।

नागरीटः, नागवी [नागरी+इट्+क, नाग इव व्येटति नाग+वि+इट्+क] 1. लम्पट, दुश्चरित्र 2. जार 3. संबंध भिड़ाने वाला।

नागरुकः [नाग+रु+क] संतरा, नारंगी।

नागर्यम् [नागर+ष्यञ्] बुद्धिमत्ता, चतुराई।

नाचिकेतः [नाचिकेता+अण्] अग्नि।

नाटः [नट्+घञ्] 1. नाचना, अभिनय करना 2. कर्णाटक प्रदेश।

नाटकम् [नट्+ण्वुल्] 1. स्वांग, रूपक 2. रूपक के दस मुख्य भेदों में से पहला, परिभाषा आदि के लिए दे० सा० द० २७७,—**कः** अभिनेता, नाचने वाला।

नाटकीय (वि०) [नाटक+छ] नाटकसंबंधी, नाटक-विषयक—पूर्वरंगः प्रसंगाय नाटकीयस्य वस्तुनः — शि० २।८।

नाटारः [नटचा अपत्यम् आरक्] अभिनेत्री का पुत्र।

नाटिका [नाट+कन्+काप्, इत्वम्] एक छोटा या लघु प्रहसन, एक रूपक, उदा० रत्नावली, प्रियदर्शिका, या विद्धशालभंजिका; सा० द० परिभाषित करता है —नाटिका क्लृप्तवृत्ता स्यात् स्त्रीप्राया चतुरङ्किका, प्रख्यातो धीरललितस्तत्र स्यान्नायको नृपः; स्यादन्तः पुरसंबंधा संगीतव्यापृताऽथवा; कन्यानुरागा कन्याऽत्र नायिका नृपवंशजा; संप्रवर्तेत नेताऽस्यां देव्यास्त्रासेन शङ्कितः, देवी पुनर्भवेज्जेष्ठा प्रगल्भा नृपवंशजा; पदे पदे मानवती तद्वशः संगमो द्वयोः, वृत्तिः स्यात्कौशिकी स्वल्पविमर्शाः संधयः पुनः ५३९।

नाटितकम् [नट्+णिच्+क्त+कन्] अनुकृति, किसी की चेष्टादि का अनुकरण, संकेत, हावभाव प्रदर्शन —भीतिनाटितकेन—श० ५।

नाटेयः,-रः [नटी+ढक्,ढ्रक् वा] किसी अभिनेत्री या नर्तकी का पुत्र।

नाट्यम् [नट+ष्यञ्] 1. नाचना 2. अनुकरणात्मक चित्रण, स्वांग, हावभाव प्रदर्शन, अभिनय करना— नाट्ये च दक्षा वयम्—रत्न० १।६, नूनं नाट्ये भवति च चिरं नोर्वशीगर्वशीला—विक्रमांक० १८।२९ 3. नृत्यकला, अभिनय कला, नाट्यकला नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्—मालवि० १।४,—**ट्यः** अभिनेता। सम०—**आचार्यः** नृत्यकला का गुरु,—**उक्तिः** (स्त्री०) नाटकीय वाक्यविन्यास, —**धर्मिका**,—**धर्मी** अभिनयसंबंधी नियमावली—**प्रियः** शिव की उपाधि,—**शाला** 1. नाचघर 2. नाटक खेलने का घर या स्थान,—**शास्त्रम्** 1. नाट्य विज्ञान नृत्य, गीत तथा अभिनय संबंधी विद्या 2. नाट्यशास्त्र पर लिखा गया ग्रन्थ।

नाडिः-डी (स्त्री०) [नड+णिच्+इन्, नाडि+ङीप्] 1. किसी पौधे का पोला डंठल 2. कमल की खोखली डंडी 3. (धमनी या शिरा की भांति) नलियों के आकार का शरीर का अंग—षडधिकदशनाडीचक्रम व्यवस्थितात्मा—मा० ५।१,२ 4. बाँसुरी, मुरली 5. नासूर वाला घाव, नासूर, नाडीव्रण 6. हाथ या पैर की नब्ज 7. चौबीस मिनट के समय के बराबर माप, घड़ी 8. आधे मुहूर्त का कालमान 9. ऐन्द्रजालिक जाल। सम०—**चरणः** एक पक्षी,—**चीरम्** एक छोटा नरकुल, —**जंघः** कौवा,—**परीक्षा** नब्ज देखना,—**मंडलम्** आकाशीय विषुवत् रेखा,—**यंत्रम्** नली के आकार का एक उपकरण,—**व्रणः** नासूर, पूयव्रण, रिसने वाला फोड़ा।

नाडिका [नाडि+कन्+टाप्] 1. नली के आकार का अंग 2. २४ मिनट का समय, घड़ी—नाडिका विच्छेद पटहः—मा० ७, का० १३,७०।

नाडि (डी) धम (वि०) [नाडीं धमति—नाडी+ध्मा+खश्, धमादेशः, ह्रस्वः, मुम् च, प्रक्षे ह्रस्वाभावः] (भय आदि) नलिकाकार अंगों को गति देने वाला, नाडिंधमेन श्वासेन—का० ३५३,—मः सुनार ।

नाणकम् [न आणकम्, इति] सिक्का, मोहर लगी हुई कोई वस्तु, एषा नाणकमोषिका मकशिका—मृच्छ० १।२३, याज्ञ० २।२४० ।

नातिचर (वि०) [न अतिचरः] जो बहुत लंबी अवधि का न हो, जो दीर्घकालीन न हो ।

नातिदूर (वि०) [न अतिदूरः] जो बहुत दूर न हो, अधिक दूरी पर न स्थित हो ।

नातिवादः [न अतिवादः] दुर्वचन तथा अपशब्दों का परिहार करना ।

नाथ् (भ्वा० पर० नाथति—कभी-कभी आ० भी) 1. निवेदन करना, प्रार्थना करना, किसी बात की याचना करना (संप्र० अथवा द्विकर्म० के साथ), मोक्षाय नाथते मुनिः—वोप०, नाथसे किमु पतिं न भूभृतः—कि० १३।५९, संतुष्टमिष्टानि तमिष्टदेवं नाथंति के नाम न लोकनाथम्—नै० ३।२५ 2. शक्ति रखना, स्वामी होना, छा जाना 3. तंग करना, कष्ट देना 4. आशीर्वाद देना, मंगल कामना करना, शुभाशीष देना (केवल इस अर्थ में आ०), नाथितशर्मे—महावी० १।११, (मम्मट निम्नांकित पंक्ति में बतलाता है कि यहाँ 'नाथते' स्थान पर 'नाथति' होना चाहिए, क्योंकि यहाँ अर्थ केवल 'निवेदन या प्रार्थना करना' है—दीनं त्वामनुनाथते कुचयुगं पत्रावृतं मा कृथाः), सर्पिषो नाथते—सिद्धा० ।

नाथः [नाथ्+अच्] 1. प्रभु, स्वामी, रक्षक, नेन—नाथे कुतस्त्वय्यशुभं प्रजानाम्—रघु० ५।१३, ३।४५, त्रिलोक°, कैलास° आदि 2. पति 3. भारवाही बैल की नाक में डाला हुआ रस्सा । सम०—हरिः पशु ।

नाथवत् (वि०) [नाथ+मतुप्, वत्वम्] 1. सनाथ, जिसका कोई स्वामी या रक्षक हो—नाथवंतस्त्वया लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे उत्तर० १।४३ 2. पराश्रयी, पराधीन ।

नादः [नद्+घञ्] 1. ऊँची दहाड़, चिल्लाहट, चीख, गरजना, दहाड़ना—सिंहनादः, घन° आदि 2. ध्वनि—मा० ५।२० 3. (योगशास्त्र में) अनुनासिक ध्वनि जिसे हम चन्द्रबिन्दु (ँ) के द्वारा प्रकट करते हैं ।

नादिन् (वि०) [नद्+णिनि] ध्वनि या शब्द करने वाला, अनुनादी—अंबुदवृंदनादी रथः—रघु० ३।५९, १९।५ 2. रांभने वाला, गरजने वाला—खर°, सिंह° आदि ।

नादेय (वि०) (स्त्री—यी) [नदी+ढक्] नदी में उत्पन्न, जलीय, समुद्रीय,—यम् सेंधानमक ।

नाना (अव्य०) [न+नाञ्] 1. अनेक स्थानों पर, विभिन्न रीति से, विविध प्रकार से, तरह तरह से 2. स्पष्ट रूप से, अलग, पृथक् रूप से, 3. विना (कर्म० करण० या अपा के साथ) नाना नारीं निष्फला लोक यात्रा—वोप०, (विश्वं) न नाना शंभुना रामात् वर्षेणाधोक्षजो वरः—तदेव 4. (समास के आरंभ में विशेषण के रूप में प्रयोग) विविध प्रकार का, तरह तरह का, नाना प्रकार का, विभिन्न, विविध—नाना फलैः फलति कल्पलतेव भूमिः—भर्तृ० २।४६, भग० १।९, मनु० ९।१४८ । सम०—अत्यय (वि०) विभिन्न प्रकार का, बहुपक्षी—अर्थ (वि०) 1. विविध उद्देश्य या लक्ष्यों वाला 2. विविध अर्थों वाला, (शब्द के रूप में) अनेकार्थक—कारम् (अव्य०) विविध प्रकार से करके,—रस (वि०) विविध रुचि से युक्त—मालवि० १।४,—रूप (वि०) विभिन्न रूपों वाला, विविध प्रकार का, बहुरूपी, नाना प्रकार का,—वर्ण (वि०) भिन्न २ रंगों का,—विध (वि०) विविध प्रकार का, तरह तरह का, बहुविध,—विधम् (अव्य०) विविध रीति से ।

नानांद्रः [ननांद्+अण्] ननद का पुत्र ।

नांत (वि०) [न० ब०] अन्तरहित, अनन्त ।

नांतरीयक (वि०) [न अन्तराविनाभवः—अन्तरा+छ, +कन्] जो अलग न किया जा सके, अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ ।

नांत्रम् [नम्+ष्ट्रन्] प्रशंसा, स्तुति ।

नांदिकरः, नांदिन् (पुं०) [नान्दी करोति—कृ+ट, ह्रस्वः, नन्द्+णिनि] नांदी पाठ करने वाला, (नाटक के आरम्भ में मांगलिक वचन बोलने वाला) ।

नांदी [नन्दन्ति देवा अत्र नन्द्+घञ्, पृषो० वृद्धि, ङीप्] 1. हर्ष, संतोष, खुशी—2. समृद्धि 3. धर्मानुष्ठान के आरम्भ में देवस्तुति 4. विशेषकर, नाटक के आरम्भ में मंगलाचरण के रूप में आशीर्वादात्मक श्लोक या श्लोकों का पाठ, स्वस्त्ययन—आशीर्वचनसंयुक्ता नित्यं यस्मात्प्रयुज्यते, देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नांदीति संज्ञिता या—देवद्विजनृपादीनामाशीर्वचनपूर्विका, नंदंति देवता यस्यां तस्मान्नान्दीति कीर्तिता । सम०—कर: दे० 'नांदिन्'—निनादः हर्षनाद—महावी० २।४,—पटः कुएँ का ढक्कन—मुख (वि०) (दिवंगत पूर्वज या पितर) जिनके लिए नांदीमुख श्राद्ध किया जाय (—खम्) °श्राद्धम् पितरों की पुण्यस्मृति में किया जाने वाला श्राद्ध, विवाह आदि शुभ उत्सवों से पूर्व की जाने वाली आरंभिक स्तुति (खः) कुएँ का ढक्कन,—वादिन् (पुं०) 1. नाटक में मंगलाचरण के रूप में नान्दी पाठ करने वाला 2. ढोल बजाने वाला,—श्राद्धम् दे० ऊपर 'नांदीमुखम्'।

नापित: [न आप्नोति सरलताम्—न+आप्+तन्, इट्] नाई, हजामत बनाने वाला—पंच० ५।१। सम० —शाला नाई की दुकान, क्षौरगृह, वह स्थान जहाँ हजामत होती हो।

नापित्यम् [नापित+ष्यञ्] नाई का व्यवसाय।

नाभि: (पुं०, स्त्री०) [नह्+इञ्, भश्चान्तदेश:] सूंडी —गंगावर्तसनाभिर्नाभि:—दश० २, निम्ननाभि:—मेघ० ८३, रघु० ६।५२, मेघ० २८ 2. नाभि के समान गर्त —(पुं०) 1. पहिए की नाह पंच० १।८१ 2. केन्द्र, किरणविन्दु, मुख्य विंदु 3. मुख्य, अग्रणी, प्रधान —कृत्स्यनाभिर्नृपमंडलस्य—रघु० १८।२० 4. निकट की रिश्तेदारी, बिरादरी, (जाति आदि) का समुदाय जैसा कि 'सनाभि' में 5. सर्वोपरि प्रभु—रघु० ९।१६ 6. निकटसंबंधी 7. क्षत्रिय 8. जन्मभूमि,—भि: (स्त्री०) कस्तूरी (अर्थात् मृगनाभि) (विशे० बहु० समास के अन्त में प्रयुक्त 'नाभि' शब्द बदल कर 'नाभ' बन जाता है) जैसा कि 'पद्मनाभ:' में)। सम०—आवर्त: नाभि का गर्त,—ज:—जन्मन् (पुं०)—भू: ब्रह्मा के विशेषण,—नाडी,—नालन् 1. नाभिरज्जु, जन्मरज्जु, नाल 2. नाभि का विदारण।

नाभिल (वि०) [नाभिरस्त्यस्य—लच्] नाभि से संबद्ध, या नाभि से आने वाला।

नाभीलम् [नाभि+गीप्+ला+क] 1. नाभि का गर्त 2. पीडा, 3. विदीर्ण नाभि।

नाभ्य (वि०) [नाभि+यत्] नाभि से संबंध रखने वाला, नाभि से आने वाला, नाभि में रहने वाला, नाल से जुड़ा हुआ,—भ्य: शिव का विशेषण।

नाम (अव्य०) [नम्+णिच्+ड] निम्नांकित अर्थों में प्रयुक्त होने वाला अव्यय—1. नामधारी, नामक, नाम से—हिमालयो नाम नगाधिराज:—कु० १, तन्न्दिनीं सुवृत्तां नाम—दश० ७ 2. निस्सन्देह, निश्चय ही, सचमुच, वास्तव में, यथार्थ में, अवश्य, वस्तुत:—मया नाम जितम्—वेणी० २।१७, विनीतवेषेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम—श० १, आश्वासितस्य मम नाम —विक्रम० ५।१६, जब कि मैं जरा आश्वस्त हुआ 3. संभवत:, कदाचित्—प्राय: 'मा' के साथ - अये पदशब्द इव मा नाम रक्षिण:—मृच्छ० ३, कदाचित् (परन्तु मुझे आशा नहीं) रखवालों का—मा नाम अकार्यं कुर्यात्—मृच्छ० ४ 4. संभावना—तवैव नामास्त्रगति: - कु० ३।१९, त्वया नाम मुनि विमान्य: —श० ५।१९, क्या यह संभव है (निंदात्मक ढंग से), इसका प्रयोग 'अपि' के साथ बहुधा निम्नांकित अर्थ में होता है—'मेरी इच्छा है' 'क्या ही अच्छा हो' 'क्या यह संभव है कि' आदि, दे० 'अपि' के अन्तर्गत 5. झूठमुठ का कार्य, बहाना (अलीक), कार्तांतिको नाम भूत्वा—दश० १३०, इसी प्रकार 'भीतो नामावप्लुत्य' १०४, मानों भयभीत होकर—परिश्रमं नाम विनीय च क्षणम्—कु० ५।३२ 6. (लोट् लकार के साथ) माना कि, यद्यपि, हो सकता है, अच्छा—तद्भवतु नाम शोकावेगाय—का० ३०८ करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्तत:—हि० २।१४, यद्यपि वह स्वयं प्रयत्न कर सकता है, इसी प्रकार—मा० १०१७, श० ५।८ 7. आश्चर्य—अंधो नाम पर्वतमारोहति—गण० 8. रोष या निंदा—ममापि नाम दशाननस्य परै: परिभव:—गण०, (यह वाक्य निंदासूचक भी हो सकता है), किं नाम विस्फुरं शस्त्राणि—उत्तर० ४, ममापि नाम सत्त्वैरभिभूयते गृहा:—श० ६; नाम शब्द प्राय: प्रश्न वाचक सर्वनाम तथा उससे व्युत्पन्न 'कथम्' 'कदा' आदि अन्य शब्दों के साथ प्रयुक्त होकर निम्नलिखित अर्थ प्रकट करता है—'संभवत:' 'निस्सन्देह', 'मैं जानना चाहूँगा'—अयि कथं नामैतत्—उत्तर० ६, को नाम राज्ञां प्रिय:—पंच० १।१४६, को नाम पाकाभिमुखस्य जंतुर्द्वाराणि दैवस्य पिधातुमीष्टे—उत्तर० ७।४।

नामन् (नपुं०) [म्नायते अभ्यस्यते नम्यते अभिधीयते अर्थोऽनेन वा म्ना+मनिन् नि० साधु:] 1. नाम, अभिधान, वैयक्तिक नाम (विप० गोत्रम्) किं नु नामैतदस्या:—मुद्रा० १, नाम ग्रह् संबोधित करना या नाम लेकर बुलाना, नामग्राहमरोदीत्सा भट्टि० ५।५, नाम कृ या धा, नाम्ना या नामत: कृ नाम रखना, पुकारना, नाम लेकर बुलाना—चकार नाम्ना रघुमात्मसंभवम् रघु० ३।२१, ५।३६, तौ कुशलवौ चकार किल नामत:—१५।२२ चंद्रापीड इति नाम चक्रे—का० ७४, मातरं नामत: पृच्छेयम् श० ७ 2. केवल नाम—संतप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते— भर्तृ० २।६७, 'नाम भी नहीं' अर्थात् 'कोई चिन्ह दिखाई नहीं देता है' आदि 3. (व्या० में) संज्ञा, नाम (विप० आख्यात) तन्नाम येनाभिदधाति सत्त्वं—या—सत्त्वप्रधानानि नामानि—निरु० 4. शब्द, नाम, समानार्थक शब्द—इति वृक्ष नामानि 5. सामग्री (विप० गुण)। सम०—अंक (वि०) नाम से चिह्नित—रघु० १२।१०३,—अनुशासनम्,—अभिधानम् 1. किसी के नाम की घोषणा करना 2. शब्द संग्रह, शब्दकोष,—अपराध: (किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को) नाम लेकर गाली देना, नाम लेकर बुलाना अर्थात् तिरस्कार करना,—आवली किसी देवता की) नाम-सूची,—करणम्,—कर्मन् (नपुं०) 1. नाम रखना, जन्म होने के पश्चात् बालक का नामकरण करना 2. नाम मात्र का अनुबंध,—ग्रह: नामोल्लेख करना, नाम लेकर संबोधित

करना, नामोच्चारण, नाम याद करना--पुण्यानि नामग्रहणान्यपि महामुनीनाम्—४३, मनु० ८।२७१, रघु० ७।४१,—त्यागः नाम छोड़ना,—स्वनामत्यागं करोमि पंच० १, 'मैं अपना नाम छोड़ दूंगा',—धातुः नाम क्रिया, नाम धातु (जैसे पार्थायते, वृषस्यति आदि),—धारक,—धातिन् (वि०) नाम मात्र रखने वाला, नाम मात्र का, नाममात्र—पंच० २।८४,—धेयम् नाम, अभिधान,—वनज्योत्स्नेति कृतनामधेया श० १, किं नामधेया सा—मालवि० ४, रघु० १।४५, १०।६७, ११।८, मनु० २।३०,—निर्देशः नाम से संकेत—मात्र (वि०) केवल नामधारी, नाममात्र का, नाम के लिए, पंच० १।७७, २।८६,—माला,—संग्रहः नामों की सूची, (संज्ञाओं की) शब्दावली,—मुद्रा मोहर लगाने की अंगूठी, नामांकित अँगूठी—उभे नाममुद्राक्षराण्यनुवाच्य परस्परमवलोकयतः—श० १,—लिंगम् संज्ञाओं का लिंग अनुशासनम् संज्ञा शब्दों के लिंगों की नियमावली,—वर्जित (वि०) 1. नाम रहित 2. मूर्ख, बेवकूफ,—वाचक (वि०) नाम बतलाने वाला (कम्) व्यक्ति वाचक संज्ञा—शेष (वि०) जिसका केवल नाम ही बाकी रह गया हो, जिसका नाम ही जीवित हो, स्वर्गीय—उत्तर० २।१६।

नामिः [नम्+इञ्] विष्णु की उपाधि।

नामित (वि०) [नम्+णिच्+क्त] झुका हुआ, विनम्र, विनीत।

नाम्य (वि०) [नम्+णिच्+क्त] लचकदार, लचीला, लचकीला।

नायः [नी+घञ्] 1. नेता, मार्ग दर्शक 2. मार्ग दिखलाने वाला, निर्देशक 3. नीति 4. उपाय, तरकीब।

नायकः [नी+ण्वुल्] 1. मार्गदर्शक, अग्रणी, संवाहक 2. मुख्य, स्वामी, प्रधान, प्रभु 3. गण्यमान्य या प्रधान पुरुष, पूज्य व्यक्ति—सेनानायकः आदि 4. सेनानायक, सेनापति 5. (अलं० शा० में) नाटक या काव्य का नायक, (सा० द० के अनुसार नायक चार प्रकार के हैं—धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित और धीरप्रशान्त, इन चारों के कुछ अवान्तरभेद होने के कारण नायक के भेद संख्या में ४० होते हैं, सा० द० ६४।७५, रागमंजरी केवल तीन भेदों का (पति, उपपति और वैशिक ९५।११० उल्लेख करती है) 6. हार के बीच का मुख्य मणि 7. निदर्शन या मुख्य उदाहरण—दर्शते स्त्रीषु नायकाः। सम०—अधिपः राजा, प्रभु।

नायिका [नायक+टाप्, इत्वम्] 1. स्वामिनी 2. पत्नी 3. किसी काव्य या नाटक की नायिका (सा० द० के अनुसार नायिका के तीन भेद हैं--स्वा या स्वीया, अन्या या परकीया तथा साधारण स्त्री आगे वर्गीकरण के लिए दे० सा० द० ९७—११२, और रसमं० ३—९४, तु० 'अन्यस्त्री' भी)

नारः [नर+अण्] जल (स्त्री० भी—तु० मनु० १। १०)—रम् मनुष्यों की भीड़ या सम्मर्द। सम० जीवनम् सोना।

नारक (वि०) (स्त्री०—की) [नरक+अण्] नारकीय, नरकसंबंधी, दोजखी,—कः 1. नारकीय प्रदेश, दोजख नरकवासी।

नारकिक, नारकिन्, नारकीय (वि०) [नरक+ठक्, इनि, छ वा] 1. नरक का, दोज़खी 2. नरक या दोजख में रहने वाला।

नारंगः [नृ+अंगच्, वृद्धि] 1. संतरे का पेड़ 2. लुच्चा, लम्पट 3. जीवित प्राणी 4. युगल,—गम्,—गकम् 1. संतरे, सद्योमुंडित मत्तहूणचिबुकप्रस्पर्धिनारंगकम् 2. गाजर।

नारदः [नरस्य धर्मो नारं, तत् ददाति—दा+क] प्रसिद्ध देवर्षि का का नाम, दिव्य ऋषि, सन्त महात्मा जिसने देवत्व प्राप्त किया [देवर्षि नारद ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में से एक हैं जो उसकी जंघा से उत्पन्न हुए, यह वेदों के संदेशवाहक के रूप में चित्रित किया गया है जो मनुष्यों को देवों का संदेश देते तथा मनुष्यों का संदेश देवों तक पहुंचाते थे। यह देवता और मनुष्यों में कलह के बीज बोने के कारण 'कलिप्रिय' कहलाते थे, कहा जाता है कि 'वीणा' का आविष्कार इन्होंने ही किया था, यह एक आचारसंहिता के भी प्रणेता हैं जिसका नाम इन्हीं के नाम पर 'नारद-स्मृति' है]।

नारसिंह (वि०) [नरसिंह+अण्] नरसिंह से संबंध रखने वाला,—हः विष्णु का विशेषण।

नाराचः [नरान् आचमति—आ+चम्+ड स्वार्थे अण्, नारम् आचामति वा तारा०] 1. लोहे का बाण, तत्र नाराचदुर्दिने—रघु० ४।४१ 2. बाण—कनकनाराचपरंपराभिरिव—का० ५७ 3. जल हाथी।

नाराचिका, नाराची नाराच+हन्+टाप्, नाराच+अच्+ङीष्] सुनार की तराजू, (कसौटी रूपी तराजू)।

नारायणः [नारा अयनं यस्य ब० स०] 1. विष्णु की उपाधि (मनु० १।१० में इसकी व्युत्पत्ति यह दी है आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः, ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः 2. एक प्राचीन ऋषि का नाम जो 'नर' के साथी थे तथा जिन्होंने अपनी जंघा से उर्वशी को पैदा किया—तु० उरुद्भवा नरसखस्य मुनेः सुरस्त्री—विक्रम० १।२, दे० 'नरनारायणं 'नर' के अन्तर्गत—णी 1. धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण 2. दुर्गा का विशेषण।

नारीकेरः,—लः [किल्+घञ्=केलः, नार्याः केलः —ष० त०, पृषों० ह्रस्वः, अथवा नल्+इण् लस्य रः=नारि, केन जलेन इलति—इल्+क कर्म० स०] नारियल—नारिकेलसमाकारा दृश्यंते हि सुहृज्जनाः—हि० १।९४ (यह शब्द इस प्रकार (नारिकेलि—ली, नारिकेर—ल, नाडि (डी) केर, नालिकेर, नालिकेलि—ली) भी लिखा जाता है ।

नारी [नृ—नर वा जातौ ङीष् नि०] 1. स्त्री,—अर्थतः पुरुषो नारी या नारी सार्थतः पुमान्—मृच्छ० ३।२७। सम०—**तरंगकः** 1. जार, उपपति 2. लम्पट,—**दूषणम्** स्त्री का दुर्व्यसन (वे हैं—पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽटनम्, स्वप्नोऽन्यगृहवासश्च नारीणां दूषणानि षट्—मनु० ९।१३,—**प्रसंगः** कामासक्ति, लम्पटता, —**रत्नम्** स्त्रीरत्न, श्रेष्ठ स्त्री ।

नार्यंगः [नारीणामङ्गमिव शोभनमंगं यस्य] संतरे का पेड़ ।

नाल (वि०) [नलस्येवम्—अण्] नरकुल का बना हुआ —**लम्** 1. पोला डंठल, विशेष कर कमल की डंडी; विकचकमलैः स्निग्धवैडूर्यनालैः—मेघ० ७६, रघु० ६।१३, कु० ७।८९, (पुं० भी इस अर्थ में) 2. शरीर की नलिकाकार वाहिनी, धमनी 3. हरताल 4. मूठ, दस्का—**लः** नहर, नाली ।

नालंबी (स्त्री०) शिव की वीणा ।

नाला [नल्+ण+टाप्] पोला डंठल, विशेषकर कमल नाल ।

नालिः,—ली (स्त्री०) [नल्+णिच्+इन्, नालि+ङीष्] । शरीर की नलिकाकार वाहिनी, धमनी 2. पोलाडंठल, विशेषकर कमलनाल, 3. २४ घंटे का समय, घड़ी 4. हाथी के कानों को बींधने का उपकरण 5. नहर, नाभी 6. कमलफूल ।

नालिकः [नलमेव नालमस्त्यस्य ठन्] भैंसा—**का** 1. कमल की डंडी 2. नली 3. हाथी का कान बींधने का उपकरण,—**कम्** 1. कमल का फूल 2. एक प्रकार का फूंक से बजने वाला वाद्ययंत्र, बांसुरी ।

नालिकेर, नालिकेलि —ली दे० नारिकेर आदि ।

नालीकः [नाल्यां कायति—कै+क तारा०] 1. बाण 2. भाला, नेज़ा 3. कमल 4. कमल की रेशेदार डंडी 5. कमल के फूलों का रेशेदार डंठल ।

नालीकिनी [नालीक+इनि+ङीप्] 1. कमल फूलों का गुच्छा, समूह 2. कमलों का सरोवर ।

नाविकः [नावा तरति—ठन्] जहाज़ का कर्णधार, चालक —अख्यातिरिति ते कृष्ण मग्ना नौर्नाविके त्वयि, नाविकपुरुषे न विश्वासः—महा० 2. पोतवाहक, मल्लाह 3. नौयात्री ।

नाविन् (पुं०) [नौ+इनि] केवल, मल्लाह ।

नाव्य (वि०) [नावा तार्यं नौ+यत्] 1. जहाँ किश्ती या जहाज से जाया जा सके, (नदी आदि) जिसमें जहाज़ चलाया जा सके—नाव्याः सुप्रतरा नदीः—रघु० ४।३१, नाव्यं पयः केचिदतारिषुर्भुजैः—शि० १२।७६ 2. प्रशंसा के योग्य—**व्यम्** नयापन, नूतनता ।

नाशः [नश्+घञ्] 1. ओझल होना—गता नाशं तारा उपकृतमसाधाविव जने—मृच्छ० ५।२५ 2. भग्नाशा, ध्वंस, बर्बादी, हानि—भग० २।४० रघु० ८।८८, १२।६७, इसी प्रकार वित्त° बुद्धि° 3. मृत्यु 4. मुसीबत, संकट 5. परिहार, परित्याग 6. भगदड़, पलायन ।

नाशक (वि०) [नश्+णिच्+ण्वुल्] विध्वंसक, नाश करने वाला ।

नाशन (वि०) (स्त्री०—नी) [नश्+णिच्+ल्युट्] नष्ट करने वाला, नाश कराने वाला, हटाने वाला (समास में)—**नम्** 1. विध्वंस, बर्बादी 2. दूर हटाना, दूर कर देना, बाहर निकाल देना 4. नष्ट होना, मृत्यु ।

नाशिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [नश्+णिनि] 1. विध्वंसक, नाश करने वाला, हटाने वाला 2. नष्ट करने वाला, नष्ट होने योग्य—भग० २।१८ मनु० ८।१८५ ।

नाष्टिकः [नष्ट+ठञ्] खोई हुई वस्तु का स्वामी ।

नासा [नास्+अ+टाप्] 1. नाक—स्फुरदधरनासापुटतया —उत्तर० १।२९, भग० ५।२६ 2. हाथी की सूंड 3. दरवाज़े की चौखट की ऊपर की लकड़ी । सम०—**अग्रम्** नाक का अग्रभाग, मा० १।१,—**छिद्रम्**,—**रन्ध्रम्**,—**विवरम्** नथुनां,—**दारु** (नपुं०) दरवाज़े की चौखट की ऊपर वाली लकड़ी,—**परिस्रावः** नाक का बहना, सर्दी लगना,—**पुटः**,—**पुटम्** नथुना,—**वंशः** नाक की हड्डी,—**स्रावः** सर्दी से नाक का बहना ।

नासिकंधय (वि०) [नासिका+धे+खश्, मुम्, ह्रस्वश्च] नाक के द्वारा पीने वाला ।

नासिका [नास्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] नाक, दे० 'नासा' । सम०—**मलः** नाक से निकलने वाला श्लेष्मा ।

नासिक्य (वि०) [नासिका+ष्यञ्] 1. अनुनासिक 2. नाक में होने वाला,—**क्यः** अनुनासिक ध्वनि,—**क्यम्** नाक ।

नासीरम् [नासाय ईर्ते—ईर्+क तारा०] सेना के सामने आगे बढ़ना या लड़ना—**रः** 1. (सेना का) अग्रभाग —नासीरचरयोर्भटयोः महावी० ६, नै० १।६८ 2. सेना की पंक्ति के आगे चलने वाला योद्धा ।

नास्ति (अव्य०) [न+अस्ति] 'यह नहीं है' अनस्तित्व, जैसा कि 'नास्तिक्षीरा' में । सम०—**वादः** 'सर्वोपरि शासक या परमात्मा का अनस्तित्व' सिद्धांत, नास्तिकता, अनास्था—बौद्धैणेव सर्वदा नास्तिवादशरेण —का० ४९ ।

नास्तिक (वि०) [नास्ति परलोकः तत्साक्षीश्वरो वा इति मतिरस्य—ठन्] या—**कः** अनीश्वरवादी, अविश्वासी, जो वेदों की प्रामाणिकता, पुनर्जन्म और परमात्मा या विश्व के विधाता के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता है—शि० १६।७ मनु० २।११, ३।२२।

नास्तिक्यम् [नास्तिक+ष्यञ्] नास्तिकता, अनास्था, पाखंडधर्म।

नास्तिकः (पुं०) आम का वृक्ष।

नास्यम् [नासा+यत्] नाक की रस्सी, चालू बैल की नकेल।

नाहः [नह+घञ्] 1. बंधन, निग्रह 2. फंदा, जाल 3. मलावरोध, कोष्ठबद्धता।

नाहुषः,—षिः [नहुषस्यापत्यम्—नहुष+अण, इञ् वा] ययाति राजा की उपाधि।

नि (अव्य०) [नी+डि] (प्रायः संज्ञा या क्रिया के पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होता है, क्रिया विशेष या संबंधबोधक अव्यय के रूप में विरल प्रयोग), गण० के अनुसार, इस शब्द के निम्नांकित अर्थ है—1. निचान, नीचे की ओर गति—निपत् निषद् 2. समूह, या संग्रह, निकर, निकाय 3. तीव्रता—निकाम, निगृहीत 4. हुक्म, आदेश, निदेश 5. सातत्य, स्थायित्व —निविशते 6. कुशलतानिपुण 7. नियन्त्रण, निग्रह, निबंध 8. सम्मिलन (में, अन्तर्गत) निपीतमुदकम् 9. सान्निध्य, सामीप्य—निकट 10. अपमान, बुराई, हानि—निकृति, निकार 11. दिखलावा, निदर्शन 12. विश्राम, निवृत्ति 13. आश्रय, शरण 14. सन्देह 15. निश्चय 16. पुष्टीकरण 17. (दुर्गादास के अनुसार) फेंकना, देना आदि।

निःक्षेपः [निर्+क्षिप्+घञ्] 1. फेंकना, भेज देना 2. व्यय करना।

निःश्रयणी, निःश्रेणिः (स्त्री०) [निःनिश्चितं श्रीयते आश्रीयते अनया निर्+श्रि+ल्युट्+ङीप्, निश्चिता श्रेणिः सोपानपंक्तिः यत्र ब० स०] सीढ़ी, जीना—रघु० १५।१००।

निःश्वासः, निश्श्वासः [निर्+श्वस्+घञ्] 1. साँस बाहर निकालना, बहिःश्वसन 2. आह भरना, लम्बा साँस लेना, श्वास छोड़ना।

निःसरणम् [निर्+सृ+ल्युट्] 1. बाहर जाना, बहिर्गमन 2. निकास, द्वार, दरवाजा 3. महाप्रयाण, मृत्यु 4. उपाय, तरकीब, उपचार 5. मोक्ष।

निःसह (वि०) [निर्+सह्+खल्] सहन करने या रोकने के अयोग्य, असह्य 2. निःशक्त, बलहीन, हतोत्साह, म्लान, श्रान्त, अयि विरम निःसहासि जाता—मा० २, इसी प्रकार मा० २, ७, उत्तर० ३ 3. असहनीय, जो सहा न जा सके, अनिवार्य।

निःसारणम् [निर्+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. निष्कासन, निकाल बाहर करना 2. घर से निकलने का मार्ग, द्वार, दरवाजा।

निःस्रवः [निर्+स्रु+अप्] शेष, बचत, फालतू।

निःस्रावः [निर्+स्रु] 1. व्यय, खर्च करना, अर्थव्यय 2. चावलों का मांड।

निकट (वि०) [नि समीपे कटति नि+कट्+अच्] नजदीकी, समीपस्थ, अदूरस्थ, आसन्न,—**टः,—टम्** समीप्य ('नजदीक' 'पास' 'समीप' अर्थों को क्रिया विशेषण के रूप में प्रकट करने के लिए 'निकटे' प्रयुक्त होता है—वहति निकटे कालस्रोतः समस्तभया वहम्—शा० ३।२)

निकरः [नि+कृ+अच्, अप् वा] 1. ढेर, चट्टा 2. झुण्ड, समुच्चय, संग्रह—पपात स्वेदांबुप्रसर इव हर्षाश्रुनिकरः —गीत० ११, शि० ४।५८, ऋतु० ६।१८ 3. गठरी 4. रस, सार, सत 5. उपयुक्त उपहार, दक्षिण 6. निधि, खजाना।

निकर्तनम् [नि+कृत्+ल्युट्] काट डालना।

निकर्षणम् [नि+कृष्+ल्युट्] विश्राम या विहार के लिए खुला स्थान, नगर में या नगर के निकट खेल का मैदान 2. दालान 3. पड़ोस 4. जमीन का टुकड़ा जो अभी जोता न गया हो।

निकषः [नि+कष्+घ, अच् वा] 1. कसौटी, निकष-प्रस्तर, निकषे हेमरेखेव—रघु० १७।४६, महावी० १।४ 2. (आलं०) कसौटी का काम देने वाली कोई वस्तु, परीक्षण—नन्वेष दर्पनिकषस्तव चन्द्रकेतुः—उत्तर० ५।१०, आदर्शः शिक्षितानां सुचरितनिकषः—मृच्छ० १।४८, दश० १, का० ४४ 3. कसौटी पर बनी सोने की रेखा—कनकनिकषरुचिशुचिवसनेन श्वसिति न सा हरिजनहसनेन—गीत० ७, कनकनिकषस्निग्धा विद्युत्प्रिया न ममोर्वशी—विक्रम० ४।१, ५।१९। सम० —**उपलः,—ग्रावन्** (पुं०),—**पाषाणः** कसौटी निकषप्रस्तर—तत्प्रेमहेमनिकषोपलतां तनोति—गीत० ११, तत्त्वनिकषग्रावा तु तेषां विपद्—हि० १।२१०, २।८०।

निकषा [नि+कष्+अच्+टाप्] 1. रावण आदि राक्षसों की माता, (अव्य०) 2. निकट, अदूर, समीप, पास (कर्म० के साथ—निकषा सौधभित्तिम्—दश०, विलंघ्य लंकां निकषा हनिष्यति—शि० १।६८। सम० —**आत्मजः** राक्षस।

निकाम (वि०) [नि+कम्+घञ्] 1. पुष्कल, विपुल, बहुल—निकामजलां स्रोतोवहां—श० ६।१६, 2. इच्छुक—**मः,—मम्** कामना, चाह,—**मम्** (अव्य०) 1. यथेच्छ, इच्छा के अनुसार 2. आत्मसंतोषार्थ, मनभर कर, रात्री निकामं शयितव्यमपि नास्ति—श० २, 'मैं रात्रि को भी आराम से नहीं सो पाता' 3. अत्यंत, अत्यधिक—निकामं क्षामांगी—मा० २।३, (इसके

अन्तिम 'म्' का लोप करके, इसे समास के प्रथमखण्ड के रूप में भी वहुधा प्रयुक्त किया जाता है निकाम-निरंकुशः—गीत० ७, कु० ५।२३, शि० ४।५४ ।

निकायः [नि+चि+घञ्, कुत्वम्] 1. ढेर, संघटन, श्रेणी, समुच्चय, झुण्ड, समूह, महावी० १।५० 2. सत्संग या विद्वत्सभा, विद्यालय धार्मिक परिषद् 3. घर, आवास, निवास-स्थल-कशीनिकायः आदि 4. शरीर 5. उद्देश्य, चांदमारी, निशाना 6. परमात्मा ।

निकाय्यः [नि+चि+ण्यत्, नि०] निवास, आवास, घर—न प्रणाय्यो जनः कच्चिन्निकाय्यं तेऽधितिष्ठति—भट्टि० ६।६६ ।

निकारः [नि+कृ+घञ्] 1. अनाज फटकना 2. ऊपर उठाना 3. वध, हत्या 4. अनादर, तावेदारी 5. अवज्ञा, क्षति, अनिष्ट, अपराध; तीर्णो निकारार्णवः—वेणी० ६।४३, ४४।६ 6. गाली, बुरा भला कहना, अवमान 7. दुष्टता, द्वेष 8. विरोध, वचन विरोध ।

निकारणम् [नि+कृ+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या ।

निकाशः,—सः [नि+काश् (स्)+घञ्] 1. दर्शन, दृष्टि 2. क्षितिज 3. सामीप्य, पड़ौस 4. समानता, समरूपता (समास के अन्त में) रा० ५।१३ ।

निकाषः [नि+कष्+घञ्] खुरचना, रगड़ना—कि० ७।६ ।

निकुंचनः [नि+कुंच्+ल्युट् [एक तोल जो १।४ कुदव के बरावर है (आठ तोले के बरावर तोल) ।

निकुंजः,—जम् [नि+कु+जन्+ड, पृषो०] लतामण्डप, लतागृह, कुंज पर्णशाला -यमुनातीरवानीरनिकुंजे मंदमास्थितम्—गीत० ४।२,११, ऋतु० १।२३ ।

निकुम्भः [नि+कुम्भ्+अच्] 1. शिव के एक अनुचर का नाम—रघु० २।३५ 2. सुन्द और उपसुन्द के पिता का नाम ।

निकुरं (रुं) वम् [नि+कुर्+अम्वच्, उम्बच् वा] झुंड, संग्रह, पुंज, समुच्चय—लतानिकुरुंबम्—गीत० ११, किरण° आन० २०, चिकुर° ४३ ।

निकुलीनिका [नि+कुलीन+कन्+टाप्, इत्वम्] अपने कुल की विशेष कला, खांदानी हुनर, जो जन्म से मनुष्य को उत्तराधिकार में प्राप्त होती है, किसी घराने की परंपरागत विशेष कला या दस्तकारी ।

निकृत (भू० क० कृ०) [नि+कृ+क्त] 1. विजित, निरुत्साहित, दीन 2. तिरस्कृत, क्षुब्ध—उत्तर० ६।१४ 3. प्रवंचित, धोखा खाया हुआ 4. हटाया हुआ 5. कष्टग्रस्त, क्षतिग्रस्त 6. दुष्ट, वेईमान 7. अधम, नीच, कमीना ।

निकृतिः (वि०) [नि+कृ+क्तिन् अधम, वेईमान, दुष्ट (स्त्री०—तिः) 1. अधमपना, दुष्टता 2. वेईमानी, जालसाजी, धोखा—अनिकृतिनिपुणं ते चेष्टितं मानशौण्ड—वेणी० ५।२१, कि० १।४५ 3. तिरस्कार, अपराध, अपमान—मुद्रा० ४।११ 4. गाली, झिड़की 5. अस्वीकृति, निराकरण 6. ग़रीबी, दरिद्रता । सम०—प्रज्ञ (वि०) दुष्ट, दुर्मना ।

निकृंतन (वि०)—नी) [नि+कृत्+ल्युट्] काट डालना, नष्ट करना, विरहिनिकृंतनं कृतमुखाकृतिकेतकिदंतुरिताशे (वसंते)—गीत० ११—नम् काटना, काट डालना, नष्ट करना 2. काटने का उपकरण, एकेन नखकृंतनेन सर्वं कार्ष्णायसं विज्ञातं स्यात्—शारी० ।

निकृष्ट (वि०) [नि+कृष्+क्त] 1. नीच, अधम, कमीना 2. जातिबहिष्कृत, घृणित 3. गंवारू, देहाती ।

निकेतः [निकेतति निवसति अस्मिन्—नि+कित्+घञ्] घर, आवास, भवन, आलय—श्रितगोकर्णनिकेतमीश्वरम्—रघु० ८।३३, १४।५८, भग० १२।१९, कु० ५।२५, मनु० ६।२३, शि० ५।२६ ।

निकेतनः [नि+कित्+ल्युट्] प्याज—नम् भवन, घर, आलय, सिजानां मंजुमंजीरं प्रविवेश निकेतनम्—गीत० ११, मनु० ६।२६,११।१२८, कि० १।१६ ।

निकोचनम् [नि+कुच्+ल्युट्] सिकुड़न, सिमटन ।

निक्वणः, निक्वाणः [नि+क्वण्+अप, घञ् वा] 1. संगीतस्वर 2. ध्वनि, स्वर ।

निक्षा [निक्ष्+अ+टाप्] जूं का अंडा, लीख ('लिक्षा' का अशुद्ध रूप) ।

निक्षिप्त (भू० क० कृ०) [नि+क्षिप्+क्त] 1. फेंका हुआ, डाला हुआ, रक्खा हुआ 2. जमा किया हुआ, न्यस्त, धरोहर के रूप में रक्खा हुआ 3. भेजा हुआ, पहुँचाया हुआ 4. अस्वीकृत, परित्यक्त ।

निक्षेप [नि+क्षिप्+घञ्] 1. फेंकना, डालना (कर्म० के साथ), अलं मान्यानां व्याख्यानेषु कटाक्षनिक्षेपेण—सा० द० २ 2. धरोहर, न्यास, अमानत—पंच० १।१४, मनु० ८।४ 3. किसी के भरोसे पर या क्षतिपूर्ति के निमित्त, विना मोहर लगाये रक्खी हुई जमा, खुली धरोहर—समक्षं तु निक्षेपणं निक्षेपः—याज्ञ० २।६६ पर मिता० 4. भेजना 5. फेंक देना, परित्याग करना 6. मिटाना, सुखाना ।

निक्षेपणम् [नि+क्षिप्+ल्युट्] 1. डालना, पैरों के नीचे रखना कु० १।३३ 2. किसी वस्तु को रखने का उपाय ।

निखननम् [नि+खन्+ल्युट्] खोदना, गाड़ना—जैसा कि स्थूणानिखननन्याय ।

निखर्व (वि०) [नितरां खर्वः प्रा० स०] ठिंगना—र्वम् दस हज़ार करोड़ ।

निखात (भू० क० कृ०) [नि+खन्+क्त] 1. खोदा हुआ, खोदकर निकाला हुआ 2. जमाया हुआ, (खूंटे

की भांति) खोदकर गाड़ा हुआ, अन्दर गड़ाया हुआ— शल्यं निखातमुदहारयतामुरस्तः रघु० ९।७८ अष्टादशद्वीपनिखातयूपः —६।३८, गाढं निखात इव मे हृदये कटाक्षः—मा० १।२९ 3. गाड़ा हुआ, दफनाया हुआ।

निखिल (वि०) [निवृत्तं खिलं शेषो यस्मात् ब० स०] संपूर्ण, पूरा, समस्त, सब—प्रत्यक्षं ते निखिलमचिराद् भ्रात रुक्तं मया यत् —मेघ० ९४।

निगड (वि०) [नि+गल्+अच् लस्य डः] बेड़ी से बंधा हुआ, शृंखलित, वृद्धस्य निगडस्य च—मनु० ४।२१०, —डः, —डम् 1. हाथी के पैरों के लिए लोहे की जंजीर, बद्धापराणि परितो निगडान्यलावीत्—शि० ५।४८, भामि० ४।२० 2. हथकड़ी, बेड़ी।

निगडित (वि०) [निगड+इतच्] हथकड़ी से बंधा हुआ, बेड़ी से जकड़ा हुआ, शृंखलित, बांधा हुआ।

निगणः [निगरण, पृषो० साधुः] यज्ञाग्नि का धूआँ !

निगदः, निगादः नि+गद्+अप्, घञ् वा] 1. सस्वर पाठ, स्तुति पाठ 2. ऊँचे स्वर से बोली गई प्रार्थना 3. भाषण, प्रवचन 4. अर्थ सीखना —यदधीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते—निरु० 5. उल्लेख, उल्लेखीकरण — इति निगदेनैव व्याख्यातम् !

निगदितम् [नि+गद्+क्त] प्रवचन, भाषण !

निगमः [नि+गम्+घञ्] वेद, वेद का मूल पाठ—साढ्वै साढ्वा साढेति निगमे पा० ६।३।११३, ७।२।६४ वैदिक उद्धरण, वेद का वाक्य तथापि च निगमो भवति (निरुक्त में बहुधा प्रयुक्त) 3. सहायक ग्रंथ, उपवेद, वेद भाष्य, मनु० ४।१९ तथा उसका कुल्लू० भाष्य 4. वेद का विधि वाक्य, ऋषियों के वचन 5. (शब्द का मूल स्रोत) धातु 6. निश्चय, विश्वास 7. तर्क 8. व्यवसाय, व्यापार 9. मंडी, मेला 10. चलते फिरते सौदागरों की मण्डली 11. मार्ग, मण्डी का मार्ग 12. नगर।

निगमनम् [नि+गम्+ल्युट्] 1. वेद का उद्धरण, या उद्धृत शब्द 2. (तर्क० में) अनुमान—प्रक्रिया में उपसंहार, (पंचावयवी भारतीय अनुमान—प्रक्रिया में पाँचवां अवयव), घटाना।

निगरः, निगारः [नि+गृ+अप्, घञ् वा] निगलना, डकारना।

निगरणम् [नि+गृ+ल्युट्] 1. निगलना, डकारना 2. (आलं०) ग्रहण कर लेना, पूर्ण रूप से लय कर देना—णः 1. गला 2. यज्ञाग्नि का धूआँ।

निग (गा) लः [=निगरं, निगार, रलयोरभेदः] 1. निगलना, डकारना 2. घोड़े का गला या गर्दन वत् (पुं०) घोड़ा।

निगीर्ण (भू०क०कृ०) [नि+गृ+क्त] 1. निगला हुआ, डकारा हुआ 2. पूर्ण रूप से निगला हुआ, या लय किया हुआ, छिपा हुआ, गुप्त, अतएव आपूरणीय — उपमानेनांतर्निगीर्णस्योपमेयस्य यदध्यवसानं सैका— काव्य० १०।

निगूढ (वि०) [नि+गुह्+क्त] 1. छिपाया हुआ, गुप्त —शि० १३।४०, 1. रहस्य, निजी—ढम् (अव्य०) चुपचाप, निजी ढंग से।

निगूहनम् [नि+गुह्+ल्युट्] दुराना, छिपाना !

निग्रंथनम् [नि+ग्रंथ्+ल्युट्] वध, हत्या !

निग्रहः [नि+ग्रह्+अप्] 1. रोक रखना, नियंत्रित करना, दमन करना, वश में करना —जैसा कि 'इन्द्रियनिग्रह' में—मनु० ६।९२, याज्ञ० १।२२२ भर्तृ० १।६६, भग० ६।३४ 2. दबाना, रोकना, कुचलना - मनु० ६।७१ 3. दौड़ कर पकड़ लेना, अधिकार में कर लेना, गिरफ्तार करना —त्वन्निग्रहे तु वरगात्रि न मे प्रयत्नः—मृच्छ० १।२२, शि० २।८८ 4. क़ैद करना, कारागार में डालना 5. पराजय, पछाड़ देना, परास्त करना 6. हटा देना, नष्ट करना, दूर करना—रघु० ९।२५, १५।६, कु० ५।५३ 7. रोगों की रोकथाम, चिकित्सा 8. दण्ड, सज़ा (विप० अनुग्रह) निग्रहानुग्रहस्य कर्ता—पंच० १, निग्रहोऽप्ययमनुग्रहीकृतः—रघु० ११।९०, ५५, १२। ५२, ६३ 9. डांट, फटकार, गर्हा 10. अरुचि, नापसंदगी, जुगुप्सा 11. (न्या० में) तर्कगत दोष, त्रुटि, अनुमान-प्रक्रिया में भूल (जिसके कारण हेतुवादी परास्त हो जाता है) तु० मुद्रा० ५।१० 12. मूठ 13. सीमा, हद।

निग्रहण (वि०) [नि+ग्रह्+ल्युट्] पीछे कर देने वाला, दबाने वाला—णम् 1. दमन करना, दबाना 2. पक- ड़ना, क़ैद करना 3. सज़ा, दण्ड 4. पराजय।

निग्राहः [नि+ग्रह्+घञ्] 1. दण्ड 2. कोसना—जैसा कि 'निग्राहस्ते भूयात्' (भगवान्, तुम्हें शापग्रस्त करे) भट्टि० ७।४३ में।

निघ (वि०) [नि+हन्, नि०] जितना चौड़ा उतना ही लम्बा,—घः 1. गेंद 2. पाप।

निघंटुः [नि+घण्ट्+कु] 1. शब्दावली 2. विशेष रूप से वैदिक शब्दावली जिसकी व्याख्या यास्क ने अपने निरुक्त में की है।

निघर्षः निघर्षणम् [नि+घृष्+घञ्, ल्युट् वा] रगड़ना घर्षण करना, कि० २।५१।

निघसः [नि+अद्+अप्, घसादेशः] 1. खाना, भोजन करना 2. भोजन।

निघातः [नि+हन्+घञ्] 1. अभिघात, प्रहार—रघु० ११।७८ 2. स्वर का दमन करना या अभाव।

निघातिः (स्त्री०) [नि+हन्+इञ्, कुत्वम्] लोहे की गदा ।

निघुष्टकम् [नि+घुष्+क्त] ध्वनि, शब्द ।

निघ्न (वि०) [नि+हन्+क] 1. आश्रित, अनुसेवी, आज्ञाकारी (नौकर की भांति), तथापि निघ्नं नृप तावकीनैः प्रह्वीकृतं मे हृदयं गुणौघैः—कि० ३।१३, निघ्नस्य मे भर्तृनिदेशरौक्ष्यं देवि क्षमस्वेति बभूवः नम्रः—रघु० १४।५८ 2. शिक्ष्य, विधेय 3. पराश्रित (अर्थात् विशेष्य के लिंगादि का अनुसरण करने वाला—इति विशेष्यनिघ्नवर्गः 4. (संख्या वाचक शब्द के पश्चात्) गुणित ।

निचयः [नि+चि+अच्] 1. संग्रह, ढेर, समुच्चय —कि० ४।३७ 2. अवयों का संघातजिसने पूर्णता आजाय—जैसा 'शरीरनिचय' में 3. निश्चितता ।

निचायः [नि+चि+घञ्] ढेर ।

निचिकिः दे० नैचिकी ।

निचित (भू० क० कृ०) [नि+चि+क्त] 1. ढका हुआ, आच्छादित, फैला हुआ, निचितं खमुपेत्य नीरदैः —घट० १ शि० १७।१४ 2. भरा हुआ, पूरित 3. उठाया हुआ ।

निचुलः [नि+चुल्+क] 1. एक प्रकार का नरकुल 2. एक कवि, कालिदास का मित्र—स्थानादस्मात् सरसनिचुलादुत्पतोदङमुखः खम्—मेघ० १४, (यहाँ मल्लि०—निचुलो नाम महाकविः कालिदासस्य सहाध्यायः, परन्तु यह व्याख्या बड़ी संदिग्ध है) 3. ऊपर से शरीर ढकने का कपड़ा, चादर, तु० निचोल ।

निचुलकम् [निचुल+कन्] वक्षत्राण, चोली, अंगिया ।

निचोलः [नि+चुल्+घञ्] 1. अवगुण्ठन, घूंघट, पर्दा ध्वांतं नीलनीचोलचारु—गीत० ११, शीलय नीलनिचोलम्—५ 2. बिस्तरे की चादर 3. डोली का आवरण ।

निचोलकः [निचोल+कै+क] 1. बनियान, चोली 2. सिपाही की जाकट जो उरस्त्राण का काम दे ।

निच्छबिः [प्रा० ब०] एक प्रदेश जिसे आज कल तिरहुत कहते हैं ।

निच्छिविः (पुं०) एक व्रात्य जाति, पतित जाति (व्रात्य क्षत्रिय की सन्तान) दे० मनु० १०।२२ ।

निज् (जुहो० उभ०—नेनेक्ति, नेनिक्ते, प्रणेनेक्ति, निक्त) धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना—सस्नुः पयः पपुरनेनिजुरंबराणि—शि० ५।२८ 2. अपने आपको धोना, निर्मल करना, स्वच्छ होना (आ०) 3. पोषण करना, अव—, प्रक्षालन करना, पानी छिड़कना, निस्—, धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना —रघु० १७।२२, याज्ञ० १।१९१, मनु० ५।१२७ ।

निज (वि०) [नि+जन्+ड] 1. अन्तर्जात, स्वदेशजात, सहज, अन्तर्भव, जन्मजात 2. अपना, स्वकीय, आत्मीय अपने दल का या अपने देश का—निजं वपुः पुनरनयन्निजां रुचिम्—शि० १७।४, रघु० ३।१५, १८, मनु० २।५० 3. विशिष्ट 4. निरन्तर रहने वाला, चिरस्थायी ।

निज् (अदा० आ०—निक्ते) धोना, प्र—, धोना प्रणिक्ते ।

निटलम् ('निटिल' भी लिखा जाता है) [नि+टल्+अच्] मस्तक, निटिलतटचुंबित—दश० ४, १५ । सम०—**अक्षः** शिव का नाम ।

निडीनम् [नीचैः डीनं पतनमस्ति] पक्षियों का नीचे की ओर उड़ना, या झपट्टा मारना, दे० 'डीन' ।

नितंबः [निभृतं तम्यते कामुकैः, तमु कांक्षायाम्] 1. चूतड़, (स्त्री का) पिछला उभरा हुआ भाग, श्रोणि प्रदेश, कूल्हा,—यातं यच्च नितंबयोर्गुरुतया मंदं विलासादिव—श० २।१, रघु० ४।५२, ६।१७, मेघ० ४१, भर्तृ० १।५, मालवि० २।७ 2. (पर्वत का) ढलान, पर्वतश्रेणी, पार्श्व या पहलू—सनाकवनितं नितंबरुचिरं (गिरम्) कि० ५।२७, सेव्या नितंबाः किमु भूधराणां किं वा स्मरस्मेरविलासिनीनाम् भर्तृ० १।१९, विक्रम० ४।२६, भट्टि० २।८, ७।५८ 3. खड़ी चट्टान 4. नदी का ढलवां किनारा 5. कंधा । सम०—**बिंबम्** गोलाकार कूल्हा, ऋतु० १।४ ।

नितंबवत् (वि०) [नितंब+मतुप्] सुन्दर कूल्हों वाला —ती स्त्री चारु चुचुंव नितंबवती दयितम्—गीत० १, विक्रम० ४।२६ ।

नितंबिन् (वि०) [तितंब+इनि] सुन्दर कूल्हों वाला, सुडौल चूतड़ वाला (बहुधा 'जघन' के लिए प्रयुक्त) तु० मालवि० २।३, कि० ८।१६, रघु० १९।२६, 2. अच्छे पार्श्वांगों वाला (पहाड़ आदि)—नी 1. बड़े और सुन्दर कूल्हों वाली स्त्री—कि० ८।३, शि० ७।६८, कु० ३।७ 2. स्त्री ।

नितराम् (अव्य०) [नि+तरप्+अमु] 1. पूर्णरूप से, सर्वथा, पूरी तरह से—प्राणांस्त्यजामि कितरां तदवाप्तिहेतोः—चौर० ४१, भर्तृ० १।९६ 2. अत्यंत, अत्यधिक, बहुत ज्यादह—तुदंति चेतो नितरां प्रवासिनां—ऋतु० २।४, अमरु १०, शोषितसरसि निदाघे नितरामेवोद्धतः सिंधुः—पंच० १।१०४, नितरां नीचोऽस्मीति—भामि० १।९ 3. निरंतर, सदा, लगातार 4. सर्वथा 5. निश्चय ही ।

नितलम् [नितरां तलम् अधोभागः यस्मिन्] पाताल के सात प्रभागों में से एक, दे० पाताल ।

नितांत (वि०) [नि+तम्+क्त+,दीर्घः] असाधारण, अत्यधिक, बहुत अधिक, तीव्र—नितांतकठिनं रुजं मम न वेद सा मानसीम्—विक्रम० २।२,—**तम्** (अव्य०)

अत्यधिक, बहुत ज्यादह, अत्यंत, अतिशय ।

नित्य (वि०) [नियमेन नियतं वा भवं-नि+त्यप्] 1. निरंतर रहने वाला, चिरस्थायी, लगातार, देर तक टिकने वाला, शाश्वत, निर्बाध—यदि नित्यमनित्येन लभ्येत—हि० १।४८, नित्यज्योत्स्नाः प्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः—मेघ० (लल्लि० इसे प्रक्षिप्त मानता है) मनु० २।२०६ 2. अटल, नियमित, निश्चित, अनैच्छिक, नियमित रूप से नियत (विप० काम्य) 3. आवश्यक, अवश्यकरणीय, अपरिहार्य 4. सामान्य, प्रचलित (विप० नैमित्तिक) ६. (समास के अन्त में) निरंतर निवास करने वाला, लगातार किसी काम में लगा हुआ या व्यस्त, जाह्नवीतीर°, अरण्य°, आदान°, ध्यान° आदि,—त्यः समुद्र,—त्यम् (अव्य०) प्रतिदिन, लगातार, सदा, हमेशा, निरन्तर सदैव । सम०—**अनध्यायः**—ऐसा अवसर जब वेद पठन-पाठने सर्वथा त्याग दिया जाय, मनु० ४।१०७,—**अनित्य** (वि०) शाश्वत तथा नश्वर,—**ऋतु** (वि०) ऋतु के आने प्र नियमित रूप से होने वाला,—**कर्मन्** (नपुं०), —**कृत्यम्**,—**क्रिया** प्रतिदिन किया जाने वाला आवश्यक कार्य, लगातार किया जाने वाला कर्तव्य, जैसे कि दैनिक पंचयज्ञ,—**गतिः** वायु, हवा,—**दानम्** प्रतिदिन दान देने का कर्म,—**नियमः** अटल सिद्धांत,—**नैमित्तिकम्** किसी निमित्त विशेष से नियमित रूप से होने वाला या किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निरन्तर किया जाने वाला अनुष्ठान (उदा० पर्वश्राद्धं), —**प्रलयः** सुषुप्ति,—**मुक्तः** परमात्मा,—**यौवना** (सदा युवती बनी रहने वाली) द्रौपदी का विशेषण, - **शंकित** (वि०) सदैव चौकन्ना, सदैव सशंक,—**समासः** अनिवार्य समास, ऐसा समास जिसके अर्थों को पृथक् २ शब्दों द्वारा अभिव्यक्त न किया जा सके—उदा० जमदग्नि, जयद्रथ आदि, इवेन नित्यसमासः आदि ।

नित्यता,—**त्वम्** [नित्य+तल्+टाप्,त्व वा] 1. स्थिरता, अनवरतता, नैरन्तर्य, शाश्वतता, निरन्तरता 2. आवश्यकता ।

नित्यदा (अव्य०) [नित्य+दाच्] लगातार, हमेशा, प्रतिदिन, सदैव ।

नित्यशस् (अव्य०) [नित्य+शस्] लगातार, हमेशा, सदैव— भग० ८।१४, मनु० २।९६,४।१५० ।

निद्रु: [निदात् विषात् द्राति पलायते—निद+द्रा+कु] मनुष्य ।

निदर्शक (वि०) [नि+दृश्+ण्वुल्] 1. देखने वाला 2. अन्दर देखने वाला, प्रत्यक्ष करने वाला 3. संकेत करने वाला, प्रकथन करने वाला, इंगित करने वाला ।

निदर्शनम् [नि+दृश्+ल्युट्] 1. दृश्य, अन्तर्दृष्टि, अन्तरीक्षण, नजर, दर्शनशक्ति 2. इशारा करना, बतलाना 3. प्रमाण, साक्ष्य—बलिना सह योद्धव्यमिति नास्ति निदर्शनम्—पंच०३ ।२३ 4. दृष्टान्त, उदाहरण, मिसाल—ननु प्रभुरेव निदर्शनम्—श० २, निदर्शनमसाराणां लघुर्बहुतृणं नरः—शि० २।५०, रघु० ८।४५ 5. अग्रसूचक 6. चिह्न, शकुन 7. योजना, पद्धति 8. विधि, वेदविहित प्रमाण, निषेध,—**ना** अलंकार शास्त्र में एक अलंकार—निदर्शना, अभवन्वस्तुसंबंध उपमापरिकल्पकः—काव्य० १०, उदा० रघु० १।२ ।

निदाघः [नितरां दह्यते अत्र—नि+दह्+घञ्] 1. ताप, गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु, गर्मी का मौसम (ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने) निदाघमिहिरज्वालाशतैः—भामि० १।१६, निदाघकालः समुपागतः प्रिये—ऋतु० १।१, पंच० १।१०५, कु० ७।८४ 3. स्वेद, पसीना । सम० —**करः** सूर्य,—**कालः** गरमी की ऋतु ।

निदानम् [निश्चयं दीयतेऽनेन—नि+दा+ल्युट्] 1. पट्टी, तस्मा, रस्सी, डोरी 2. बछड़े को बांधने का रस्सा 3. प्राथमिक कारण, प्रथम या आवश्यक कारण—निदानमिक्ष्वाकुकुलस्य संततेः—रघु० ३।१, अयथा बलमारंभो निदानं क्षयसंपदः—शि० २।९४ 4. सामान्य कारण—मुंच मयि मानमनिदानम्—गीत० ५ 5. (आयु० में) रोग का कारण जानना, रोगविज्ञान 6. किसी रोग का निरूपण 7. अन्त, समाप्ति 8. पवित्रता, निर्मलता, शुद्धता ।

निदिग्ध (भू० क० कृ०) [नि+दिह्+क्त] 1. लेप किया हुआ, चुपड़ा हुआ 2. बढ़ाया हुआ, संचित—**ग्धा** छोटी इलायची ।

निदिध्यासः, निदिध्यासनम् [नि+ध्यै+सन्+घञ्, ल्युट् वा] बारंबार ध्यान में लाना, निरंतर चिन्तन ।

निदेशः [नि+दिश्+घञ्] 1. आज्ञा, हुक्म, हिदायत, अनुदेश—वाक्येनेयं स्थापिता स्वे निदेशे—मालवि० ३।१४, स्थितं निदेशे पृथगादि देश—रघु० १४।१४ 2. भाषण, वर्णन, समालाप 3. सामीप्य, पड़ौस 4. पात्र, वर्तन ।

निदेशिन् (वि०) [निदेश+इनि] संकेत करने वाला, —**नी** 1. दिशा, पृथ्वी का एक बिन्दु 2. प्रदेश ।

निद्रा [निन्द्+रक्+टाप्, नलोपः] 1. सुप्तावस्था, नींद —प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसाः—श० १।३ 2. शिथिलता 3. आँखे मुंदना, कली की अवस्था 1. सम० —**भंगः** जागरण, नींद टूट जाना,—**वृक्षः** अंधकार —**संजननम्** श्लेष्मा, कफात्मक वृत्ति ।

निद्राण (वि०) [नि+द्रा+क्त, तस्य नः, ततो णत्वम्] सोता हुआ, शयान, ।

निद्रालु (वि०) [नि+द्रा+आलुच्] शयान, निद्रित, —**लुः** विष्णु की उपाधि ।

निद्रित (वि०) [निद्रा+इतच्] सोया हुआ, सुप्त ।

निधन (वि०) [निवृत्तं धनं यस्मात्—ब० स०] गरीब, दरिद्र —अहो निधनता सर्वापदामास्पदम्—मृच्छ० १।१४,—नः,—नम् 1. ध्वंस, सर्वनाश, मरण, हानि —स्वधर्मे निधनं श्रेयः—भग० ३।३५, म्लेच्छनिवह निधने कलयसि करवालम्—गीत० १, कल्पांतेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमंतर्धनम्—भर्तृ० २।१६ 2. उपसंहार, अन्त, परिसमाप्ति,—नम् परिवार, वंश।

निधानम् [नि+धा+ल्युट्] 1. नीचे रखना, निर्धारित करना, जमा करना 2. संभाल कर रखना, सुरक्षित रखना 3. गोदाम, आधार, आशय—निधानं धर्माणाम् —गंगा० १८ 4. खजाना—निधानगर्भामिव सागरांबराम्—रघु० ३।९, भग० ९।१८, विद्येव लोकस्य परं निधानम् 5. कोष, भंडार, संपत्ति, दौलत।

निधिः [नि+धा+कि] 1. घर, आधार, आशय—जल°, तोय°, तपोनिधि आदि 2. भंडारगृह, कोषागार 3. खजाना, भंडार, संचय (कुबेर के नौ खजानों के के लिए दे० 'नवनिधि') 2. समुद्र 5. विष्णु का विशेषण 6. सद्गुणसंपन्न व्यक्ति। सम०—ईशः, —नाथः कुबेर का विशेषण।

निधुवनम् [नितरां धुवनं हस्तपादादि चालनमत्र] 1. क्षोभ, कम्पन 2. संभोग, मैथुन—अतिशयमधुरिपुनिधुवनशीलम्—गीत० 3. शि० ११।१८, चौर० ४, ९, २५ 3. आनन्द, उपभोग, केलि।

निध्यानम् [नि+ध्यै+ल्युट्] दर्शन, अवलोकन, दृष्टि।

निध्वानः [नि+ध्वन्+घञ्] ध्वनि, शब्द।

निनंक्षु (वि०) [नष्टुमिच्छुः—नश्+सन्+उ] 1. मरने की इच्छा वाला 2. भाग जाने या बच निकलने का इच्छुक—भट्टि० ४।३३।

निन (ना) **दः** [नि+नद्+अप्, घञ् वा] 1. ध्वनि, शोर-उच्चार निनदोऽमसि तस्याः—रघु० ९।७३, ११।१५, ऋतु० १, १५ 2. (मक्खियों का) भिनभिनाना, गुंजन करना।

निनयनम् [नि+नी+ल्युट्] 1. अनुष्ठान 2. किसी कार्य को पूर्ण करना, सम्पन्न करना ३. उडेलना।

निंद् (भ्वा० पर० निंदति, निंदित, प्रणिंदति) दोष देना, निंदा करना, छिद्रान्वेषण करना, बुरा भला कहना, डांटना, फटकारना, धिक्कारना—निनिंद रूपं हृदयेन पार्वती—कु० ५।१, सा निंदंती स्वानि भाग्यानि बाला—श० ५।३०, भग० २।३६, मनु० ३।४२।

निंदक (वि०) [निंद्+ण्वुल्] कलंक लगाने वाला, निंदा करने वाला, गाली देने वाला, बदनाम करने वाला।

निंदनम्, निंदा [निंद्+ल्युट्, निंद+अ+टाप् वा] 1. कलंक, दोषारोप, डांट, फटकार, गाली, बुरा-भला कहना, बदनामी-व्याजस्तुतिर्मुखे निंदा—काव्य० १०, पर°, वेद° 2. क्षति, दुष्टता। सम०—स्तुतिः (स्त्री०) 1. व्याजस्तुति, स्तुति के रूप में निन्दा 2. प्रच्छन्नस्तुति।

निंदित (भू० क० कृ०) [निंद+क्त] कलंकित, दोषारोपित, गाली दिया हुआ, बदनाम किया हुआ।

निंदुः (स्त्री०) [निन्दु+उ] मरा बच्चा पैदा करने वाली स्त्री, मृतवत्सा।

निंद्य (वि०) [निंद+ण्यत्] 1. कलंक के योग्य, दोषारोपण के लायक, निर्भर्त्स्य, गर्हित, जघन्य 2. वर्जित, प्रतिषिद्ध।

निपः,—**पम्** [नियतं पिबति अनेन—नि+पा+क] जल का घड़ा—पः कदम्ब का पेड़।

निप (पा) **ठः** [नि+पठ्+अप्, घञ् वा] पढ़ना, सस्वर पाठ करना अध्ययन करना।

निपतनम् [नि+पत्+ल्युट्] 1. नीचे गिरना, नीचे उतरना, उतरना 2. नीचे की ओर उड़ना।

निपत्या [निपतंति अस्याम्—नि+पत्+क्यप्+टाप्] 1. फिसलन वाली भूमि 2. रणक्षेत्र।

निपाकः [नि+पच्+घञ्] परिपक्व करना, पकाना।

निपातः [नि+पत्+घञ्] 1. नीचे गिरना, नीचे आना, नीचे उतरना — पयोधरोत्सेधनिपातचूर्णिताः—कु० ५।२४, ऋतु० ५।४ 2. आक्रमण करना, टूट पड़ना, झपटना, कूदना—रघु० २।६० 3. फेंकना, फेंक कर मारना, दागना—कु० ३।१५ 4. उतार, प्रपात, निशितनिपाताः शराः—श० १।१० 5. मरण, मृत्यु—मनु० ६।३१ 6. आकस्मिक घटना 7. अनियमित रूप, अनियमितता, अनियमित या अपवाद मानना, एते निपाताः, निपातोऽयम्—आदि 8. अव्यय, वह शब्द जिसके और रूप न बनें—पा० १।४।५६।

निपातनम् [नि+पत्+णिच्+ल्युट्] 1. नीचे फेंक देना, पछाड़ देना, मारना—मनु० ११।२०८, 2. परास्त करना, बर्बाद करना, वध करना 3. मर्म स्पर्श करना 4. अनियमित या अपवाद मानना 5. शब्द का अनियमित रूप, अनियमितता, अपवाद।

निपानम् [नि+पा+ल्युट्] 1. पीना 2. जलाशय, जोहड़, पोखर, गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृंगैर्मुहुस्ताडितम्—श० २।६, हि० १।१७२, रघु० ९।५३ 3. चौबच्चा, कूएँ के समीप पानी का हौज जिसमें पशुओं के पीने का पानी भरा हो 4. कूआँ 5. दूध की बाल्टी।

निपीडनम् [नि+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1. निचोड़ना, दबाना, भींचना—शि० १।७४, १३।११ 2. चोट पहुँचाना, घायल करना,—ना अत्याचार करना, घायल करना, क्षति पहुँचाना।

निपुण (वि०) [नि+पुण्+क] 1. चतुर, चालाक, बुद्धिमान्, कुशल वयस्य निसर्गनिपुणाः स्त्रियः—

मालवि० ३ 2. प्रवीण, कुशल, जानकार, परिचित (अधि० या करण० के साथ) वाचि निपुणः, वाचा निपुणः 3. अनुभवशील 4. कृपालु, मित्रसदृश 5. सूक्ष्म, बढ़िया, कोमल 6. सम्पूर्ण, पूरा, सही—णम् (अव्य०), निपुणेन, 1. कौशल से, चतुराई से 2. पूरी तरह से, पूर्णरूप से, सर्वथा 3. ठीक, सावधानी से, यथार्थतः, सूक्ष्मरूप से—निपुणमन्विष्यन्नुपलब्धवान्—दश० ५९ 4. मृदुता के साथ।

निबद्ध (भू० क० कृ०) [नि+बंध्+क्त] 1. बाँधा हुआ, कसा हुआ, हथकड़ी पहनाया हुआ, रोका हुआ, बंद किया हुआ 2. जुड़ा हुआ, संबद्ध 3. निर्मित 4. खचित, जड़ा हुआ 5. गवाह के रूप में बुलाया हुआ।

निबंधः [नि+बंध्+घञ्] 1. बांधना, कसना, जकड़ना 2. आसक्ति संलग्नता—भग० १६।५ 3. रचना करना, लिखना 4. साहित्यिक रचना या कृति,—प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबंधविन्यासवैदग्ध्यनिधिर्निबंधं चक्रे—वास० 5. संग्रह-ग्रन्थ 6. नियंत्रण, अवरोध, बंधन 7. मूत्रावरोध 8. बंध, हथकड़ी 9. संपत्ति का अनुदान, पशु, रुपया आदि सहायता के रूप में देना—भूर्या पितामहोपात्ता निबंधो द्रव्यमेव वा—याज्ञ० २।१२१, स्थिर संपत्ति 10. बुनियाद, मूल 11. हेतु, कारण।

निबंधनम् [नि+बंध्+ल्युट्] 1. एक जगह जकड़ना, मिलाकर बांधना 2. संरचना करना, निर्माण करना 3. नियंत्रण करना, रोकना, क़ैद करना 4. बंध, हथकड़ी 5. गांठ, बंध, सहारा, टेक—आशानिबंधनं जाता जीवलोकस्य—उत्तर० ३, यस्त्वमिव मामकीनस्य मनसो द्वितीयं निबंधनम्—मा० ३ 6. पराश्रयता, संबंध—पंच० १।७९, अन्योन्याश्रित 7. कारण, मूल, हेतु प्रयोजन, आधार, बुनियाद—वाक्प्रतिष्ठानिबंधनानि देहिनां व्यवहारतंत्राणि—मा० ४, आधारित आदि, प्रत्याशा°३; अनिबंधन=निष्कारण, आकस्मिक—उत्तर० ५।७ 8. आगार, गद्दी, आधार—मा० २।६ 9. रचना करना, क्रमबद्ध करना—कु० ७।९० 10. साहित्यिक रचना या कृति, पुस्तक 11. (भूमि का) अनुदान, नियोजन या हस्तांतरण-प्रलेख—सद्वृत्तिः, सन्निबंधना—शि० २।११२, (यहाँ 'निबंधन' का अर्थ 'पुस्तक' भी है) 12. वीणा की खूंटी 13. (व्या० में) कारक प्रकरण 14. भाष्य।

निबंधनी [निबंधन+ङीप्] बंध, हथकड़ी, डोरी या रस्सी।

निब (व) **हंण** (वि०) [नि+व (ब) हं+ल्युट्] नष्ट करने वाला, विनाशक, (समास में) शत्रु—कि० २।४३, महावी० ३।३७,—णम् वध, ध्वंस, विनाश, हत्या—नै० १।१३१।

निबिड (वि०) [नि+विड्+क] सघन, तिनका, दे० 'निविड'।

निभ (व०) [न+भा+क] (केवल समास के अन्त में) सदृश, समान, अनुरूप—उद्बुद्धमुग्धकनकाब्जनिभं वहंति—मा० १।४० इसी प्रकार 'चन्द्रनिभानना' आदि,—भः,—भम् 1. दर्शन, प्रकाश, प्रकटीकरण 2. बहाना, छद्मवेश, व्याज 3. चाल, जालसाज़ी।

निभालनम् [नि+भल+णिच्+ल्युट्] देखना, दृष्टि, प्रत्यक्षीकरण।

निभूत (वि०) [नि+भू+क्त] 1. अत्यन्त भीत 2. गया हुआ, बीता हुआ।

निभृत (वि०) [नि+भृ+क्त] 1. रक्खा हुआ, जमा किया हुआ, नीचा किया हुआ 2. भरा हुआ, आपूरित—चित या निभृतः—भाग० 3. छिपाया हुआ, गुप्त, दृष्टि से ओझल, अनीक्षित, अनवलोकित—निभृतो भूत्वा—पंच० १, नभसा निभृतेंदुना—रघु० ८।१५, चन्द्रमा के अन्तर्हित होने पर, जब चाँद अस्त होने को था—शि० ६।३० 4. गुप्त, प्रच्छन्न, शि० १३।४२ 5. (क) चुप, शान्त—निभृतद्विरेफं (काननं) कु० ३।४२, ६।२, (ख) स्थिर, नियत, अचल, गतिहीन श० १।८ 6. मृदु, सौम्य—अनिभृता वायवः—कि० १३।६६ जो कोमल न हो, प्रचंड, दृढ़—मा० २।१२ 7. विनीत, नम्र—अनिभृतकरेषु प्रियेषु—मेघ० ६८, प्रणामनिभृता कुलवधूरियं—मुद्रा० १ 8. दृढ़, अटल 9. एकाकी, अकेला—निभृतनिकुंजगृहं गतया—गीत० २ 10. बंद, (दरवाज़ा) मुंदा हुआ,—तम् (अव्य०) 1, गुप्त रूप से, प्रच्छन्न रूप से, निजी तौर पर, बिना किसी के देखे—श० ३, शि० ३।७४, मनु० ९।२६३ 2. चुपचाप, शान्ति से—कि० १३४।

निमग्न (भू० क० कृ०) [नि+मस्ज्+क्त] 1. डूबा हुआ, डुबोया हुआ, बोरा हुआ, आप्लावित, जलमग्न हुआ (आलं० भी) निमग्नस्य पयोराशौ, चितानिमग्न आदि 2. नीचे गया हुआ, (सूर्य की भांति) अस्त 3. अभिप्लुत, आच्छादित 4. अवसन्न, अप्रमुख।

निमज्जथुः [नि+मस्ज्+अथुच्] 1. डुबकी लगाना, गोता लगाना 2. बिस्तरे में डुबना, शयन करना, सो जाना—तल्पे कांतांतरैः सार्धं मन्येऽहं धिङ् निमज्जथुम्—भट्टि० ५।२०।

निमज्जनम् [नि+मस्ज्+ल्युट्] स्नान करना, डुबकी लगाना, गोता लगाना, डूबना (शा० और आलं०) दृङ् निमज्जनमुपैति सुधायाम्—नै० ५।९४, एवं संसारगहने उन्मज्जननिमज्जने—महा०।

निमन्त्रणम् [नि+मंत्र्+ल्युट्] 1. न्यौता 2. आमन्त्रण, बुलावा 3. आह्वान, तलबी।

निमयः [नि+मि+अच] वस्तु-विनिमय. अदला-बदली।

निमानम् [नि+मा+ल्युट्] 1. माप 2. मूल्य (निमानम् =मूल्यम्-सिद्धा०)।

निमिः (पुं०) 1. आँख का झपकना, निमेष 2. ईक्ष्वाकु की एक संतान, मिथिला में राज्य करने वाले राजाओं के कुल का पूर्वज।

निमित्तम् [नि+मिद्+क्त] 1. कारण, प्रयोजन, आधार हेतु—निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रमः—श० ७।३० 2. कर्णात्मक या कौशलदर्शी करण (विप० उपादान) 3. प्रतीयमान कारण, ब्याज, निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्—भग० ११।३३, निमित्तमात्रेण पांडवक्रोधेन भवितव्यम्—वेणी० १ 4. चिह्न, संकेत, निशानी 5. ठूंठ, लक्ष्य, निशाना—निमित्तादपराद्धेषोर्धानुष्कस्येव वल्गितम्—शि० २।२७ 6. भविष्यसूचक (शुभाशुभ) शकुन,—निमित्तं सूचयित्वा, श० १, निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव—भग० १।३०, रघु० १।९६, मनु० ६।५०, याज्ञ० १।२०३, ३।१७१, ('निमित्त' शब्द समास के अन्त में 'कारण या उत्पत्ति' अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है—किंनिमित्तोऽयमातंकः—श० ३, निमित्तम्, निमित्तेन, निमित्तात् के कारण, क्योंकि, इस कारण कि'। सम० —अर्थः (व्या० में) अकर्तृक क्रिया की अवस्था, तुमुन्नंत प्रयोग,—आवृत्तिः (स्त्री०) किसी विशेष कारण पर आश्रय,—कारणम्,—हेतुः करणात्मक या कौशलदर्शी कारण,—कृत् (पुं०) कौवा,—धर्मः 1. प्रायश्चित्त 2. सामयिक संस्कार,—विद् (वि०) अच्छे और शकुनों का ज्ञाता—(पुं०) ज्योतिषी।

निमिषः [नि+मिष्+क] 1. आँख झपकना, आँख बन्द करना, पलक झपकाना 2. पलकमात्र समय, पलभर 3. फूलों का बन्द होना 4. आँख की पलक का शब्द होना 5. विष्णु। सम०—अंतरम् क्षण भर का अन्तराल।

निमीलनम् [नि+मील्+ल्युट्] 1. पलकें बन्द करना, झपकना,—नयननिमीलनखिन्नया यया ते—गीत० ४, अमरु ३३ 2. मरणसमय आँखें मुंदना, मृत्यु 3. (ज्यो० में) पूर्णग्रास।

निमिला, निमीलिका [नि+मील्+अ+टाप्, निमिल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. आँखें बन्द करना 2. आँख झपकाना, पलक मारना, किसी की ओर आँख मिचकाना 3. जालसाज़ी, बहाना, चालाकी।

निमूलम् (अव्य०) [निकृष्टं मूलम्, प्रा० स०] नीचे जड़ तक—निमूलकाषं कर्षति।

निमेषः [नि+मिष्+घञ्] आँख का झपकना, क्षण, दे० 'निमिष—'हरति निमेषात् कालः सर्वम्—मोह० ४, अनिमेषेण चक्षुषा—टकटकी लगाकर, एकटक दृष्टि से—रघु० २।१९, ३।४३, ६१। सम०—कृत् (स्त्री०) बिजली—रुच् (पुं०) जुगनू।

निम्नः (वि०) [नि+म्ना+क] गहरा (शा० और आलं०) चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः—मेघ० ८२, ऋतु० ५।१२, शि० १०।५७ 2. नीच, अवसन्न,—म्नम् 1. गहराई, नीची भूमि, निम्न देश (कः) पश्यच निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत्—कु० ५।५, न च निम्नादिव सलिलं निवर्तते मे ततो हृदयम्—श० ३।२, याज्ञ० २।१५१, ऋतु० २।१३ 2. ढलान, ढाल 3. व्यवधान, भूरन्ध्र, 4. अवसाद, निचला भाग—जलनिविडितवस्त्रव्यक्त निम्नोन्नताभिः—मा० ४।१०। सम०—उन्नत (वि०) ऊँचा नीचा, अवनत उन्नत, ऊबड़खाबड़,—गतम् निम्नस्थान,—गा नदी, पहाड़ी नदी—रघु० ८।८।

निंबः [निम्ब्+अच्] नीम का पेड़, आम्रं छित्त्वा कुठारेण निंबं परिचरेत्तु यः, यश्चैनं पयसा सिंचेन्नैवास्य मधुरो भवेत्—रामा०।

निम्लोचः [नि+म्लुच्+अच्] सूर्यास्त।

नियत (भू०क०कृ०) [नि+यम्+क्त] 1. दमन किया हुआ, नियंत्रित 2. अभिभूत, नियंत्रण में किया हुआ, स्वस्थ, स्वशासित 3. संयमी, मिताहारी 4. सावधान 5. जमा हुआ, स्थायी, अनवरत, स्थिर 6. अवश्यंभावी, निश्चित, अचूक 7. अनिवार्य 8. ध्रुव, निश्चित 9. विचारणीय विषय (प्रसंगानुकूल हों चाहे असंबद्ध) दे० 'तुल्ययोगिता',—तम् (अव्य०) 1. हमेशा, लगातार 2. निश्चयात्मक रूप से, अवश्य, अनिवार्यतः, निश्चय ही।

नियति (स्त्री०) [नि+यम्+क्तिन्] 1. नियंत्रण, प्रतिबन्ध 2. भाग्य प्रारब्ध, भवितव्यता, किस्मत (बुरी हो या अच्छी हो) नियतिबलान्नु—दश०, नियतेर्नियोगात्—शि० ४।३४, कि० २।१२, ४।२१ 3. धार्मिक कर्तव्य 4. आत्म नियंत्रण, आत्म संयम।

नियंतृ (पुं०) [नि+यम्+तृच्] 1. सारथि, चालक शि० १२।२४ 2. राज्यपाल, शासक, स्वामी, विनियंता—रघु० १।१७, १५।५१ 3. दण्ड देने वाला, सजा देने वाला।

नियंत्रणम्,—णा [नि+यंत्र्+ल्युट्; स्त्रियां टाप् च] 1. रोक, आरक्षण, प्रतिबंध—अनियंत्रणानुयोगो दाम तपस्विजनः—श० १ 2. प्रतिबंध लगाना, सीमित करना (किसी विशेष अर्थ में) अनेकार्थस्य शब्दस्यैकार्थनियंत्रणं सा० द० २ 3. निर्देशन, शासन 4. परिभाषा बताना।

नियंत्रित (भू०क०कृ०) [नि+यंत्र्+क्त] 1. दमन किया हुआ, रोका हुआ 2. प्रतिबद्ध, सीमित (किसी विशेष अर्थ में, शब्द के रूप में)।

नियमः [नि+यम्+अप] 1. नियंत्रण, रोक 2. सधाना, वशीभूत करना 3. सीमित करना, रोक लगाना

4. निग्रह, निरोध—मनु० ८।१२२ 5. सीमाबंधन, हदबंदी 6. नियम या विधि कानून, प्रचलन—नाय मेकान्ततो नियमः—शारी० 7. नियमितता—रत्न० १।२० 8. निश्चितता, निश्चय 9. संविदा, प्रतिज्ञा, व्रत, वादा 10. आवश्यकता, अनिवार्यता, 11. कोई ऐच्छिक या स्वेच्छा से गृहीत धार्मिक अनुष्ठान (बाह्य अवस्थाओं पर निर्भर)—रघु० १।९४, (दे० मल्लि०, शि० १३।३३ तथा कि० ५।४२ पर) 12. कोई छोटा अनुष्ठान या छोटा व्रत, विहित कर्तव्य जो यम की भांति अनिवार्य न हो—शौच-मिज्या तपो दानं स्वाध्यायोपस्थनिग्रहः व्रतमौनोपवासं च स्नानं च नियमा दश—अत्रि 13. तपस्या, भक्ति, धार्मिक साधना—नियम विघ्नकारिणी श० १, रघु० १५।७४ 14. (सीमा० में) इस प्रकार का नियम या विधि जिसमें उस बात का विधान किया जाता है, जो, यदि यह नियम न होता तो ऐच्छिक होती—विधिरत्यंतमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति 15. (योग० में) मन का निग्रह, योग में समाधि के आठ मुख्य अंगों में दूसरा 16. (अलं० में) कविसमय, जैसा कि वसंत ऋतु में कोयल का वर्णन, वर्षा ऋतु में मोरों का वर्णन, नियमेन—नियम पूर्वक, अनिवार्यतः। सम०—निष्ठा विहित संस्कारों का दृढ़ता पूर्वक पालन,—पत्रम् लिखित संविदा पत्र,—स्थितिः (स्त्री०) धार्मिक कर्तव्यों का दृढ़तापूर्वक पालन, साधना।

नियमनम् [नि+यम्+ल्युट्] 1. अवरोध करना, शासन में रखना, नियन्त्रण करना, दमन करना—नियमना-दसतां च नराधिपः—रघु० ९।६ 2. प्रतिबन्ध, सीमा-निर्बंधन 3. दीनता, 4. विधि, स्थिर नियम।

नियमवती [नियम+मतुप्+ङीप्] स्त्री जिसे मासिक धर्म नियमित रूप से होता हो।

नियमित (भू०क०कृ०) [नि+यम्+णिच्+क्त] 1. अवरुद्ध, दमन किया नियन्त्रित 2. शासित, निर्देशित 3. विनियमित, विहित, निर्धारित 4. स्थिर, संवेदित प्रतिज्ञात।

नियामः [नि+यम्+घञ्] 1. नियंत्रण 2. धार्मिक व्रत

नियामक (वि०) (स्त्री—मिका) [नि+यम्+णिच्+ण्वुल्] 1. नियंत्रण करने वाला, अवरुद्ध करने वाला 2. दमन करने वाला, पछाड़ने वाला 3. सीमित करने वाला, प्रतिबंधन लगाने वाला, ध्यानपूर्वक परि-भाषा बनाने वाला 4. निर्देश करने वाला, शासन करने वाला,—कः 1. स्वामी, शासक 2. सारथि 3. केवट, मल्लाह 4. कर्णधार, विमानचालक।

नियुक्त (भू०क०कृ०) [नि+युज्+क्त] 1. निदे-शित, आज्ञप्त, अनुदिष्ट, आदिष्ट 2. अधिकृत, निर्धारित 3. विवादास्पद विषय को उठाने के लिए अनुज्ञात 4. संलग्न 5. उपबद्ध 6. निर्णीत।

नियुक्तिः (स्त्री०) [नि+युज्+क्तिन्] 1. निषेधाज्ञा, आदेश, हुक्म 2. नियोजन, आयोग, पद, कार्यभार।

नियुतम् [नि+यु+क्त] 1. दस लाख 2. सौ हजार 3. दस हजार करोड़ या १०० अयुत।

नियुद्धम् [नि+युध्+क्त] पैदल युद्ध करना, घमासान युद्ध, व्यक्तिगत लड़ाई।

नियोगः [नि+युज्+घञ्] 1. किसी काम में लगाना, उपयोग, प्रयोग 2. निषेधाज्ञा, आदेश, हुक्म, निदेश, आयोग, कार्यभार, निर्धारित कर्तव्य, किसी की देख रेख में आयुक्त कार्य—यः सावज्ञो माधव श्रीनियोगे—मालवि० ५।८, मनोनियोगक्रिययोत्सुकं मे—रघु० ५।११ अथवा नियोगः खल्वीदृशो मंदभाग्यस्य—उत्तर० १, आज्ञापयतु को नियोगोऽनुष्ठीयतामिति श० १, त्वमपि स्वनियोगमशून्यं कुरु (अपना काम करो—अपने निर्धारित कार्य में लगो) (नौकरों को दूर हट जाने के लिए कहने की एक शिष्ट रीति जिसका प्रायः नाटकों में अधिक प्रचलन है) 3. किसी के साथ संलग्न करना 4. आवश्यकता, अनिवार्यता तत्सिधेवे नियोगेन स विकल्पपराङ्मुखः—रघु० १९।४९ 5. प्रयत्न, चेष्टा 6, निश्चितता, निश्चयन 7. प्राचीन काल की एक प्रथा जिसके अनुसार निस्स-न्तान विधवा को अपने देवर या और किसी निकट संबंधी के द्वारा संतान पैदा कराने की अनुमति है, इस प्रकार पैदा होने वाला पुत्र 'क्षेत्रज' कहलाता है, तु० मनु० ९।५९—देवराद्वा सपिंडाद्वा स्त्रिया सम्यङ्नियु-क्तया, प्रजेप्सिताधिगंतव्या संतानस्य परिक्षये—दे० ६०, ६५ भी। (व्यास ने इसी रीति से विचित्रवीर्य की विधवाओं से पांडु और धृतराष्ट्र को पैदा किया)।

नियोगिन् (पुं०) [नियोग+इनि] अधिकारी, आश्रित, मंत्री, कार्यनिर्वाहक।

नियोग्यः [नि+युज्+ण्यत्] प्रभु, स्वामी।

नियोजनम् [नि+युज्+ल्युट्] 1. जकड़ना, संलग्न करना 2. आदेश देना, विधान करना 3. उकसाना, प्रेरित करना 4. नियत करना।

नियोज्यः [नि+युज्+यत्] किसी कर्तव्य का कार्यभार संभालने वाला, कार्यनिर्वाहक, अधिकारी, सेवक, नौकर—सिध्यंति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः—श० ७।४।

नियोद्धृ (पुं०) [नि+युध्+तृच्] 1. योद्धा, पहल-वान 2. मुर्गा।

निर् (अव्य०) [नॄ+क्विप्, इत्वम्] ('से मुक्त' 'विना' 'से रहित' 'से दूर' 'से बाहर' आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए सघोष व्यंजनों और स्वरों से पूर्व 'निस्'

का स्थानापन्न; संज्ञा से पूर्व 'अ' या 'अन्' लगा कर भी इस अर्थ को प्रायः व्यक्त किया जा सकता है, दे० नी० दिए गये समस्त शब्द, दे० 'निस्' और तु० 'अ' से)। सम०—अंश (वि०) 1. पूर्ण, समस्त 2. पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्ति में भाग लेने का अनधिकारी—अक्षः (ज्यो० में) भोगांश से मुक्त स्थान—अग्नि (वि०) जिसने अग्निहोत्र करना त्याग दिया हो—अंकुश (वि०) 'जिस पर किसी प्रकार का दवाव न हो;, कोई रोक टोक न हो, नियंत्रण से मुक्त, उद्दंड, स्वतंत्र, स्वेच्छाचारी, उच्छ्खल—निरंछूंकुश इव द्विपः—भाग०, कामो निकामनिरंकुशः—गीत० ७, निरंकुशाः कवयः सिद्धा०, भर्तृ० ३।१०६, महावी० ३।३९,—अंग (वि०) 1. अंगहीन 2. साधनहीन, अजिन (वि०) त्वचारहित,—अंजन (वि०) 1. 'विना आंजक का' 2. निष्कलंक, निर्दोष 3. मिथ्यात्व से रहित 4. सीधा-सादा, जिसमें बनावट न हो (नः) शिव का विशेषण (ना) पूर्णिमा,—अतिशय (वि०) जिससे बढ़चढ़ कर दूसरा न हो, अद्वितीय,—अत्यय (वि०) 1. निर्भय, निरापद, सुरक्षित—रघु०१७।५३ 2. निरपराध, निष्कलंक, निर्दोष, निःस्पृह—कि० ११।१२, १३।६१; पूर्णतः सफल,—अध्व (वि०) जो रास्ता भूल गया हो, —अनुक्रोश (वि०) निर्मम, निर्दय कठोरहृदय, (शः) निर्दयता, निष्ठुरता—अनुग (वि०) जिसका कोई अनुयायी न हो,—अनुनासिक (वि०) अनुनासिक से भिन्न, जिसके उच्चारण में नाक का योग न हो, —अनुरोध (वि०) 1. अननुकूल, अमैत्रीपूर्ण 2. निष्करुण, सद्भावशून्य—मा १०—अंतर (वि०) 1. सदा बना रहने वाला, लगातार होने वाला, अव्यवहित, अविच्छिन्न—निरंतराधिपटलैः—भामि० १।१६, निरंतरास्वंतरवातवृष्टिषु—कु० ५।२५ 2. व्यवधानरहित, निरंतराल, सटा हुआ—मूढे निरंतरपयोधरया मयैव मृच्छ० ५।१५, हृदयं निरंतरबृहत्कठिनस्तनमंडलावरणमप्यभिदन्—शि० ९।६६ 3. अखंड, सघन—शि० १६।७६ 4. मोटा, स्थूल 5. विश्वसनीय, (मित्र की भांति) ईमानदार, सच्चा 6. सदा आंखों के सामने रहने वाला 7. अभिन्न, समान, समरूप (अव्य०—रम्) 1. निर्बाध, लगातार, सतत, अनवरत 2. बिना किसी मध्यवर्ती अन्तराल के 3. पक्की तरह से, कसकर, दृढ़तापूर्वक—(परिष्वजस्व) कान्तैरिदं मम निरंतरमंगमंगैः—वेणी० ३।२७, परिष्वजेते शयने निरंतरम्—ऋतु० २।११ 4. तुरन्त, °अभ्यासः अनवरत अध्ययन, सपरिश्रम अभ्यास,—अन्तराल (वि०) जिसके बीच में स्थान न हो, सटा हुआ 2. तंग, भीड़ा, —अन्वय (वि०) 1. निस्संतान, संतानरहित 2. असंबद्ध, संबंधरहित (वाक्य में शब्द की भांति) 3. अप्रासंगिक 4. असंगत, संगतिरहित, अव्यवस्थित 5. अदृश्य, आंख ओझल—मनु० ८।३३२ 6. बिना नौकर-चाकरों के, अनुचरवर्ग जिसके साथ न हो—दे० 'अन्वय',—अपत्रप (वि०) 1. निर्लज्ज, ढीठ 2. साहसी, —अपराध (वि०) निर्दोष, निरीह, दोषरहित, कलंकरहित (-धः) भोलापन,—अपाय (वि०) 1. दुष्टता से रहित 2. क्षयरहित, अनश्वर 3. अमोघ, अचूक, —अपेक्ष (वि०) 1. जो किसी दूसरे पर निर्भर न हो, स्वतंत्र, किसी और की अपेक्षा न रखने वाला (अधि० के साथ) न्यायनिर्णीतसारत्वान्निरपेक्षमिवागमे—कि० ११।३९ 2. अवहेलना करने वाला ध्यान न देने वाला 3. तृष्णा से मुक्त, निर्भय—हि० १।८३ 4. लापरवाह, असावधान, उदासीन 5. सांसारिक विषयवासनाओं से विरक्त—मनु० ६।४१ 6 निःस्पृह, दूसरे से किसी पुरस्कार की इच्छा न रखने वाला —भामि० १।५ 7. निष्प्रयोजन, (क्षा) उदासीनता, अवहेलना,—अभिभव (वि०) जो दीनता या तिरस्कार का पात्र न हो,—अभिमान (वि०) 1. जो अहंमन्यता से मुक्त हो, घमंड या अहंकार रहित 2. स्वाभिमानशून्य,—अभिलाष (वि०) जिसे किसी वस्तु की चाह न हो, उदासीन - स्वसुखनिरभिलाषः खिद्यसे लोकहेतोः—श० ५।५,—अभ्र (वि०) मेघरहित, —अमर्ष (वि०) 1. क्रोधशून्य, धैर्यवान् 2. निरीह, —अम्बु (वि०) 1. जल से परहेज करने वाला 2. निर्जल, जलरहित,—अर्गल (वि०) अर्गलारहित, प्रतिबंधरहित, निर्बाध, अनियंत्रित, निर्विघ्न, पूर्णतः मुक्त—मालवी० ५ (अव्य०—लम्) मुक्त रूप से, —अर्थ (वि१) 1. निर्धन, गरीब, दरिद्र 2. अर्थहीन, (शब्द या वाक्य) निरर्थक 3. अनर्थक 4. व्यर्थ, बेकार, निष्प्रयोजन—अर्थक (वि०) 1. बेकार व्यर्थ, अलाभकर 2. अर्थहीन, अनर्थक, जिसका कोई तर्कयुक्त अर्थ न हो (-कम्) पूरक - निरर्थकं तु हीत्यादि पूरणैकप्रयोजनम्—चन्द्रा० २।६,—अवकाश (वि०) 1. मुक्त स्थान से रहित 2. जिसके पास फुर्सत का समय न हो,—अवग्रह (वि०) 1. नियंत्रण से मुक्त, अनियंत्रित, अनवरुद्ध, नियंत्रणरहित, दुर्निवार 2. मुक्त, स्वतंत्र 3. स्वेच्छाचारी, दुराग्रही,—अवद्य (वि०) निष्कलंक, निर्दोष, अकलंकनीय, जिसमें कोई आपत्ति न हो सके—हृद्यनिरवद्यरूपो भूपो बभूव—दश० १, —अवधि (वि०) जिसका कोई अन्त न हो, असीम —उत्तर० ३।४४,—अवयव (वि०) 1. खंडरहित 2. अविभाज्य 3. अंगरहित,—अवलंब (वि०) 1. असहाय, निराश्रय—श० ६ 2. जो सहारा न दे —अवशेष (वि०) पूर्ण, पूरा, समस्त,—अवशेषेण (अव्य०) पूरी तरह से, सर्वथा, पूर्णरूप से, बिल्कुल

—अशन (वि०) भोजन से परहेज करने वाला (नम्) उपवास,—अस्त्र (वि०) जिसके पास हथियार न हो, निहत्था,—अस्थि (वि०) विना हड्डी का,—अहंकार, —अहंकृति (वि०) घमंडरहित, अभिमानशून्य, विनीत नम्र,—अहम् (वि०) अहंमन्यता से मुक्त,—आकांक्ष (वि०) 1. जिसे किसी वस्तु की इच्छा न हो, इच्छा से मुक्त 2. (वाक्य या शब्द के अर्थ आदि को) पूरा करने के लिए जिसे किसी की अपेक्षा न हो,—आकार (वि०) 1. आकृतिशून्य, आकाररहित, विना रूप का 2. कुरूप, विरूप 3. छद्मवेषी 4. विनम्र, कुशील (रः) 1. परमात्मा, सर्वशक्तिमान् 2. शिव की उपाधि 3. विष्णु का विशेषण,—आकुल (वि०) 1. जो घबराया न हो, अनुद्विग्न, जो हृतबुद्धि न हुआ हो 2. स्थिर, शांत 3. स्वच्छ, निर्मल,—आकृति—(वि०) 1. आकाररहित, रूपरहित 2. विरूप (तिः) 1. वह ब्रह्मचारी जिसने विधिपूर्वक वेदाध्ययन न किया हो 2. विशेषकर वह ब्राह्मण जिसने अपने वर्ण के लिए निर्धारित वेदाध्ययन के कर्तव्य को पूरा न किया हो,—आक्रोश (वि०) जिस पर दोषारोपण न किया गया हो, जिसका तिरस्कार न हुआ हो,—आगस् (वि०) निर्दोष, निरीह, निष्पाप —रघु० ८।४८,—आचार (वि०) आचारहीन, धर्मभ्रष्ट,—आडंबर वि०) विना ढोल का, ढोंगरहित, —आतंक (वि०) 1. भय से मुक्त—रघु० १।६३, 2. नीरोग, सुखद, स्वस्थ,—आतप (वि०) जिसमें धूप या गर्मी न हो, छायादार, (पा) रात,—आदर (वि०) अपमानजनक,—आधार (वि०) 1. आधाररहित 2. निराश्रय, आश्रयहीन (आलं० भी) निराधारो हा रोदिमि कथय केषामिह पुरः—गंगा० ४।३९. —आधि (वि०) निर्भय, चिन्तामुक्त,—आपद् (वि०) आपत्तिरहित, संकटमुक्त,—आबाध (वि०) असन्तापित, उत्पीडनरहित, बाधारहित, बाधामुक्त, 2. निर्बाध 3. जो बाधक न हो, जो पीड़ा न पहुंचाता हो 4. (विधि में) (मुकदमा या अभियोग का कारण आदि) मूर्खतापूर्वक प्रबाधी—उदा० अस्मद्गृहप्रदीपप्रकाशेनायं स्वगृहे व्यवहरति-मिता०, —आमय (वि०) 1. रोगमुक्त, स्वस्थ, नीरोग, भला-चंगा 2. निष्कलंक, विशुद्ध 3. निष्कपट 4. दोषों से मुक्त, निर्दोष 5. भरा हुआ, संपूर्ण 6. अमोघ (यः,-यम्) नीरोगता, स्वास्थ्य, कल्याण, मंगल, आनन्द (यः) 1. जंगली बकरी 2. सूअर, —आमिष (वि०) 1. विना मांस का, मांस न खाने वाला 2. वासनारहित, लालच से मुक्त 3. पारिश्रमिक आदि न पाने वाला,—आय (वि०) जिससे कोई आमदनी या राजस्व प्राप्त न हो, लाभरहित, —आयास (वि०) जिसमें परिश्रम न लगे, सुकर, आसान,—आयुध (वि०) जिसके पास हथियार न हो, निरस्त्र, निहत्था,—आलंब (वि०) जिसे कोई सहारा न हो, (आलं० भी) महावी० ४।५३ 2. जो दूसरे पर आश्रित न हो, स्वतंत्र 3. जो अपना आश्रय आप ही हो, असहाय, अकेला—निरालंबो लंबोदरजननि कं यामि शरणम्—जग०,—आलोप (वि०) 1. इधर उधर न देखने वाला 2. दृष्टिहीन 3. प्रकाशरहित, अंधकारयुक्त मा० ५।३०,—आश (वि०) आशाशून्य, निराश, नाउम्मीद—मनो बभूवेंदुमती-निराशम्—रघु० ६।२,—आशंक (वि०) निर्भय, —आशिष् (वि०) 1. आशीर्वाद या वरदान से वञ्चित 2. निरिच्छ, इच्छारहित, निराश, उदासीन —जगच्छरण्यस्य निराशिषः सतः—कु० ५।७६, —आश्रय (वि०) 1. आश्रयहीन, जिसे कोई सहारा न हो, आश्रयरहित 2. मित्रहीन, दरिद्र, अकेला, शरणहित — निराश्रयाधुना वत्सलता,—आस्वाद (वि०) स्वादरहित, फीका, बेमजा,—आहार (वि०) जिसे भोजन न मिले, उपवास करने वाला, भोजन से परहेज करने वाला (—रः) उपवास करना,—इच्छ (वि०) विना इच्छा के, चाहरहित, उदासीन,—इन्द्रिय (वि०) 1. जिसका कोई अंग नष्ट हो गया हो या काम न दे 2. विकलांग, अपांग 3. दुर्बल, अशक्त, कमजोर 4. ज्ञान के साधन से हीन, जिसकी कोई इन्द्रिय बेकाम हो गई हो—मनु० ९।१८,—इंधन (वि०) इंधनरहित,—ईति ऋतुओं के संकट (अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि) से मुक्त—रघु० १।६३, दे० इति,—ईश्वर (वि०) ईश्वर को न मानने वाला नास्तिक,—ईषम् हल का फाल,—ईह (वि०) 1. तृष्णा से रहित, उदासीन,—रघ० १०।२१ 2. उद्यमहीन,—उच्छ्वास (वि०) 1. जो श्वास न लेता हो, श्वासरहित (—उः) श्वास-क्रिया का अभाव,—उत्तर (वि०) 1. उत्तर रहित, विना उत्तर के 2. जो कुछ उत्तर न दे सके, चुप 3. जिससे बड़ा कोई और न हो,—उत्सव (वि०) विना उत्सव का—विरतं गेयमृतुर्निरुत्सवः—रघु० ८।६६,—उत्साह (वि०) जिसमें उत्साह न हो, उत्साह रहित, स्फूर्ति शून्य (हः) उत्साह का अभाव, आलस्य—उत्सुक (वि०) 1. उदासीन 2. शान्त, चुपचाप,—उदक (वि०) जलरहित,—उद्यम,—उद्योग (वि०) निश्चेष्ट, निकम्मा, आलसी, सुस्त,—उद्वेग (वि०) उत्तेजना रहित, जिसमें घबराहट न हो, गम्भीर, शांत,—उपक्रम (वि०) जिसका आरम्भ न हुआ हो,—उपद्रव (वि०) 1. संकट या कष्ट से मुक्त, जिसमें या जहाँ कोई भय या उत्पात न हो, भाग्यशाली, सुखद, निर्बाध,

संताप-विपक्षियों के आक्रमण से सुरक्षित 2. राष्ट्रीय दुःखों या अत्याचारों से मुक्त 3. जो किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाये 4. सुरक्षित, शांतिमय, —**उपधि** (वि०) निष्कपट, ईमानदार—उत्तर० २।२,—**उपपत्ति** (वि०) अनुपयुक्त, —**उपपद** (वि०) 1. जिसकी कोई उपाधि या पद न हो—मुद्रा० ३. 2. गौण शब्द से असंबद्ध, **उपप्लव** (वि०) बाधारहित, जहाँ कोई रुकावट या संकट न हो, जहाँ किसी प्रकार की हानि न हो—निरुपप्लानि नः कर्माणि संवृत्तानि—श० ३, **उपम** (वि०) अनुपम, बेजोड़, अतुलनीय,—**उपसर्ग** (वि०) जहाँ उत्पात न होते हों, उपद्रव से रहित, **उपाख्य** (वि०) 1. अवास्तविक, मिथ्या, (बंध्यापुत्र की भांति) जिसका कोई अस्तित्व न हो 2. अभौतिक 3. नीरूप,—**उपाय** (वि०) उपायरहित, असहाय,—**उपेक्ष** (वि०) 1. जालसाज़ी या चालाकी से मुक्त 2. जिसकी उपेक्षा न की गई हो,—**उष्मन्** (वि०) तापशून्य, शीतल,—**गंध** (वि०) गंधशून्य, गंधरहित, जिसमें गंध न हो, बिना गंध के —निर्गंधा इव किंशुकाः, °**पुष्टिः** (स्त्रि०) सेमर का पेड़,—**गर्व** (वि०) अभिमानरहित,—**गवाक्ष** (वि०) जहाँ कोई खिड़की न हो,—**गुण** (वि०) 1. (धनुष की भांति) बिना डोरी का 2. संपत्तिशून्य 3. गुणरहित, बुरा, निकम्मा—निर्गुणः शोभते नैव विपुलाडंबरोऽपि ना—भामि० १।११५ 4. जिसका कोई विशेषण न हो 5. जिसकी कोई उपाधि न हो (**णः**), परमात्मा,—**गृह** (वि०) जिसका कोई घर न हो, घररहित—सुगृही निर्गृही कृता—पंच० १।३९०, —**गौरव** (वि०) 1. जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो, प्रतिष्ठारहित,—**ग्रंथ** (वि०) 1. बंधनमुक्त, बाधारहित 2. ग़रीब, संपत्तिरहित, भिखारी 3. अकेला, असहाय (**थः**) 1. जड, मूर्ख 2. जुआरी 3. सन्त महात्मा जो सब प्रकार की सांसारिक विषय वासनाओं को त्याग कर नग्न होकर विचरता है, और विरक्त संन्यासी की भांति रहता है,—**ग्रंथक** (वि०) 1. निपुण, विशेषज्ञ 2. असहाय, अकेला 3. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 4. निष्फल (**कः**) धार्मिक साधु, क्षपणक 2. दिगंबर साधु 3. जुआरी,—**ग्रंथिकः** नंगा रहने वाला साधु, दिगंवर संप्रदाय का जैन-साधु, क्षपणक,—**घटम्** 1. वह बाजार जहाँ दुकानदारों से किसी प्रकार का कर न लिया जाता हो 2. बड़ा बाजार जहाँ बहुत भीड़ भड़क्का हो,—**घृण** (वि०) 1. क्रूर, निष्ठुर, निर्दय 2. निर्लज्ज, बेहाया,—**जन** (वि०) जहाँ कोई न रहता हो, जो आबाद न हो, जहाँ कोई आता-जाता न हो, एकान्त, सुनसान (**नम्**) मरुभूमि, एकांत सुनसान जगह,—**जर** (वि०) 1. जो कभी बढ़ा न हो, सदा युवा रहने वाला 2. अनश्वर, जिसकी कभी मृत्यु न हो, (**रः**) देवता, सुर (कर्तृ० ब० व०—निर्जराः—निर्जरसः) (**रम्**) अमृत, सुधा,—**जल** (वि०) 1. जलरहित, मरुभूमि, जलशून्य 2. जिसमें पानी न मिला हो (**लः**) ऊसर, बंजर, वीरान उजाड़,—**जिह्वः** मेंढक, —**जीव** (वि०) 1. प्राणरहित 2. मृतक, **ज्वर** (वि०) जिसे बुखार न हो, स्वस्थ,—**दंडः** शूद्र,—**दय** (वि०) 1 निर्दय, क्रूर, निर्मम, बेरहम, करुणारहित 2. उग्र 3. घनिष्ठ दृढ़, मजबूत, अत्यधिक, प्रचंड—मुग्धे विदेहि मयि निर्दयदंतदंशम्—गीत० १०, निर्दयरतिश्रमालसाः—रघु० १९।३२, निर्दयाश्लेषहेतोः—मेघ० १०६, —**दयम्** (अव्य०) 1. निष्ठुरता के साथ, क्रूरतापूर्वक 2. प्रचंडता के साथ, कठोरतापूर्वक—रघु० ११।८४, —**दश** (वि०) दस से अधिक दिनों का,—**दशन** (वि०) बिना दांतों का, **दुःख** (वि०) 1. पीड़ा से मुक्त, पीडारहित 2. जो पीडा न दे, **दोष** (वि०) 1. निरपराध, दोषरहित—न निर्दोषं न निर्गुणम् 2. अपराधशून्य, निरीह,—**द्रव्य** (वि०) संपत्तिरहित, ग़रीब,—**द्रोह** (वि०) जो शत्रु न हो, मित्रवत्, कृपापूर्ण, जो द्वेषपूर्ण न हो,—**द्वन्द्व** (वि०) जो सुख-दुःख के द्वंद्वों से रहित हो, हर्ष और विषाद से परे हो,—निर्द्वंद्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् —भग० १।४५ 2. जो औरों पर आश्रित न हो, स्वतंत्र 3. ईर्ष्या द्वेष से मुक्त हो 4. जो दो से परे हो 5. जिसमें मुक़ाबला न हो, जिसमें किसी प्रकार का झगड़ा न हो 6. जो दो सिद्धांतों को न मानता हो,—**धन** (वि०) संपत्तिहीन, ग़रीब, दरिद्र—शशिनस्तुल्यवंशोऽपि निर्धनः परिभूयते—चाण० ८२, (**नः**) बूढ़ा बैल,—**धर्म** (वि०) धर्महीन, अधर्मी,—**धूम** (वि०) जहाँ धूआँ न हो—**नर** (वि०) मनुष्यों द्वारा परित्यक्त, उजाड़,—**नाथ** (वि०) जिसका कोई अभिभावक या स्वामी न हो,—**निद्र** (वि०) जिसे नींद न आई हो, जागरूक,—**निमित्त** (वि०) अकारण बिना कारण का,—**निमेष** (वि०) बिना पलक झपकाये टकटकी लगाने वाला,—**बंधु** (वि०) बंधुरहित, मित्रहीन,—**बल** (वि०) शक्तिरहित, कमज़ोर, बलहीन,—**बाध** (वि०) 1. बाधारहित 2. जहाँ प्रायः आना-जाना न हो, एकांत, निर्जन 3. निरुपद्रव,—**बुद्धि** (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, बेवकूफ़,—**बुष**,—**बुस** (वि०) जिसकी भसी न निकाली गई हो, जिसमें से बूर निकाल दिया गया है,—**भय** (वि०) 1. निडर, निश्शंक 2. भय से मुक्त, सुरक्षित, निरापद्—मनु० ९।२५५,—**भर** (वि०) अत्यधिक, तीव्र, उग्र, बहुत मजबूत—वपाभर निर्भर स्मरशर—गीत० १२,

अमरु ४२ 2. उत्सुक 3. दृढ़, प्रगाढ़ (आलिंगन आदि)—कुचकुंभनिर्भरपरीरंभामृतं वांछति—गीत० ५, परिरध्य निर्भरम् -गीत० १ 4. गाढ़, गहरा (नींद आदि) 5, (समास के अन्त में) भरा हुआ, आनन्द०, गर्व० आदि (रम्) अधिकता (अव्य०—रम्) 1. अत्यधिक, अत्यंत, बहुत 2. खूब, चैन से—, **भाग्य** (वि०) भाग्यहीन, दुर्भाग्यपूर्ण **भृति** (वि०) बेगार में काम करने वाला,—**मक्षिक** (वि०) 'मक्खियों से मुक्त' निर्बाध, निर्जन, एकांत (अव्य० —गम्) बिना मक्खियों के अर्थात् एकान्त, निर्जन—कृतं भवतेदानीं निर्मक्षिकम्—श० २।६,—**मत्सर** (वि०) ईर्ष्यारहित, ईर्ष्या न करने वाला,—**मत्स्य** (वि०) जहाँ मछलियाँ न हों,—**मद** (वि०) 1. जो नशे में न हो, संजीदा, गंभीर, शान्त 2. अभिमानरहित, विनीत 3. (हाथी की भाँति) मदजल से रहित,—**मनुज**,—**मनुष्य** (वि०) मनुष्यों से रहित, गैर-आबाद, मनुष्यों द्वारा परित्यक्त,—**मन्यु** (वि०) बाह्य संसार के सब प्रकार के संबंधों से मुक्त, जिसने सब सांसारिक बंधनों को तिलांजलि दे दी है, संसारमिव निर्ममः (ततार) रघु० १२।६०, भग० २।७१, ३।३०, 2. उदासीन (अधि० के साथ)—निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मधुरां मधुराकृतिः—रघु० १५।२८, प्राप्तेष्वर्थेषु निर्ममाः—महा०,—**मर्याद** (वि०) 1. सीमारहित, अपरिमित 2. औचित्य की सीमा का उल्लंघन करने वाला, अनियंत्रित, उद्दंड, पापमय, अपराधी—मनुजपशुभिर्निर्मर्यादैर्भवद्भिरुदायुधैः—वेणी० ३।२२,—**मल** (वि०) 1. मैल और गन्दगी से मुक्त 2. स्वच्छ, शुद्ध, अकलुष, निष्कलंकित (आलं० भी) धौतान्तिर्मलतो जनिः—भामि० १।६३ 3. निष्पाप, सद्गुणसंपन्न, मनु० ८।३१८ (लम्) 1. कहानी 2. देवता के चढ़ावे का अवशेष, **उपलः** स्फटिक, **मशक** (वि०) मच्छरों से मुक्त,—**मांस** (वि०) मांसरहित—**मानुष** (वि०) जो बसा हुआ न हो, निर्जन,—**मार्ग** (वि०) मार्ग रहित, पथशून्य,—**मुटः** 1. सूर्य 2. बदमाश (**टम्**) वह बाजार या मेला जहाँ कर या चुंगी न लगे,—**मूल** 1. (वृक्ष आदि) बिना जड़ का 2. निराधार, आधारहीन (वक्तव्य या दोषारोप आदि) 3. उन्मूलित,—**मेघ** (वि०) निरभ्र, बादलों से रहित, —**मेध** (वि०) जिसे समझ न हो, निर्बुद्धि, जड़, मूर्ख, मन्दबुद्धि,—**मोह** (वि०) माया या छल से मुक्त,—**यत्न** (वि०) निश्चेष्ट, उद्यमहीन—**यंत्रण** (वि०) 1. जहाँ कोई नियंत्रण न हो, निर्बाध, नियंत्रणरहित, प्रतिबन्धशून्य, 2. उद्दंड, स्वेच्छाचारी, स्वतन्त्र (**णम्**) प्रतिबन्धशून्यता, स्वतन्त्रता,—**यशस्क** (वि०) जिसकी कीर्ति न हो, अकीर्तिकर, लज्जाजनक **यूथ** (वि०) जो अपने दल से बिछुड़ गया हो, (हाथी की भांति) यूथभ्रष्ट,—**रक्त** (नीरक्त) (वि०) बिना रंग का, फीका, **रज**, **रजस्क** (वि०) (नीरज, नीरजस्क) 1. धूल से मुक्त, 2. रागशून्य अन्धकार शून्य, **रजस्** (वि०) (नीरजस्) दे० 'नीरज' (स्त्री०) रजस्वला न होने वाली स्त्री, **तमसा** राग या अन्धकार का अभाव, **रंध्र** (वि०) (नीरंध्र) 1. जिसमें छिद्र न हों, अत्यन्त सटा हुआ, संसक्त, साथ लगा हुआ—उत्तर० २।३ 2. निबिड़, सघन 3. मोटा, स्थूल,—**रव** (वि०) (नीरव) शब्दरहित, ध्वनिशून्य—रघु० ८।५८,—**रस** (वि०) (निरस) 1. स्वादरहित, बेमजा, रसहीन 2. (अलं०) फीका, काव्य सौन्दर्य से विहीन—नीरसानां पद्यानाम् —सा० द० १ 3. सूखा, रूखा, शुष्क—शृंगार० ९ 4. व्यर्थ, बेकार, निष्फल, अलब्धफलनीरसान् मम विधाय तस्मिन् जने—विक्रम० २।११ 5. अरुचिकर, 6. क्रूर निष्ठुर (**सः**) अनार,—**रसन** (वि०) (नीरसन) बिना मेखला या कटिसूत्र के (रसना)—कि० ५।११,—**रुच्** (वि०) (नीरुच्) कान्तिहीन, म्लान, धूमिल,—**रुज्**,—**रुज** (वि०) (नीरुज्, नीरुज) रोग से मुक्त, स्वस्थ, अरोगी—नीरुजस्य किमौषधैः—हि० १, —**रूप** (वि०) (नीरूप) रूपरहित, निराकार—**रोग** (वि०) (नीरोग) रोग या बीमारी से मुक्त, स्वस्थ, अरोगी,—**लक्षण** (वि०) 1. अशुभ चिह्नों से युक्त, अमंगलकारी (मनहूस) सूरतशक्लवाला 2. जिसको प्रसिद्धि न हो 3. अनावश्यक, निरर्थक 4. बेदाग, —**लज्ज** (वि०) बेशर्म, बेहया, ढीठ,—**लिंग** (वि०) जिसमें कोई परिचायक चिह्न न हो,—**लेप** (वि०) 1. जो लिपा हुआ न हो, जिस पर मालिश न की गई हो—मनु० ५।११२ 2. निष्कलंक, निष्पाप, —**लोभ** (वि) लालच से मुक्त, लोभरहित, —**लोमन्** (वि०) जिसके बाल न हों, बालों से शून्य,—**वंश** (वि०) जिसका वंश उच्छिन्न हो गया हो, निःसन्तान,—**वण**,—**वन** (वि०) 1. वन से बाहर 2. वन से रहित, नंगा, खुला हुआ,—**वसु** (वि०) धनहीन, गरीब,—**वात** (वि०) वायु से सुरक्षित या मुक्त, शान्त, चुपचाप,—रघु० १५।६६, (**तः**) वायु के प्रकोप से मुक्त स्थान,—**वानर** (वि०) बंदरों से मुक्त, —**वायस** (वि०) कौओं से सुरक्षित,—**विकल्प**,—**विकल्पक**, (वि०) 1. विकल्प से रहित 2. जिसमें दृढ़ संकल्प या निश्चय का अभाव हो 3. पारस्परिक संबंध से विहीन 4. प्रतिबन्धयुक्त 5. कर्ता, कर्म या ज्ञाता तथा ज्ञेय के विवेक से रहित एक प्रकार का प्रत्यक्ष ज्ञान जिसमें किसी विषय का केवल इसी रूप में ज्ञान होता है कि यह कुछ है; जिस प्रकार कि समाधि की

अवस्था में केवल एक ही अभिन्न तत्त्व (ब्रह्म) पर एकमात्र ध्यान केन्द्रित होता है, और ज्ञाता, ज्ञेय, तथा ज्ञान के विभेद का बोध नहीं रहता यहाँ तक कि आत्मचेतना का भी भास नहीं होता—निर्विकल्पकः ज्ञातृज्ञानादिविकल्पभेदलयापेक्षः, नोचेत् चेतः प्रविश सहसा निर्विकल्पे समाधौ—भर्तृ० ३।६१, वेणी० १।२३, (अव्य०—ल्पम्) बिना किसी संकोच या हिचक के, —**विकार** (वि०) 1. अपरिवर्तित, अपरिवर्त्य, निश्चल 2. विकार रहित—मालवि० ५।१४ 3. उदासीन स्वर्थहीन—ऋतु० २।२८,—**विकास** (वि०) जो खिला न हो, अविकसित,—**विघ्न** (वि०) बिना किसी प्रकार के हस्तक्षेप के, जिसमें कोई बाधा न हो, विघ्न-बाधाओं से मुक्त (घ्नम्) विघ्नों का अभाव,—**विचार** (वि०) अविमर्शी, विचार शून्य, अविवेकी—रे रे स्वैरिणि निर्विचारकविते मास्मत्प्रकाशीभव—चन्द्रा० १ 2, (अव्य—रम्) बिना विचारे, निस्संकोच,—**विचिकित्स** (वि०) सन्देह या शंका से मुक्त,—**विचेष्ट** (वि०) गतिहीन, संज्ञाहीन,—**वितर्क** (वि०) जिस पर तर्क या सोच विचार न किया जा सके,—**विनोद** (वि०) आमोद प्रमोद से रहित, मनोरंजनशून्य–मेघ० ८६,—**विघ्या** विन्ध्य पहाड़ियों में बहने वाली एक नदी—मेघ० २८,—**विमर्श** (वि०) विचारशून्य, अविवेकी, सोचविचार न करने वाला,—**विवर** (वि०) 1. बिना किसी विवर या मुंह के 2. जिसमें कोई छिद्र या अन्तराल न हो, सटा हुआ, शि० ९।४५,—**विवाद** (वि०) 1. विवाद रहित 2. जिसमें कोई झगड़ा न हो, कोई विरोध न हो, विश्वसम्मत,—**विवेक** (वि०) ना समझ, विवेकशून्य, अदूरदर्शी, मूर्ख,–**विशंक** (वि०) निडर, निश्शंक, विश्वस्त—मनु० ७।१७६, पंच० १।८५,—**विशेष** (वि०) कोई अन्तर न मानने वाला, बिना भेद-भाव के, किसी प्रकार का भेदभाव न रखने वाला—निर्विशेषा वयं त्वयि—महा०, निर्विशेषो विशेषः—भर्तृ० ३।५०, 'भेद-भावका अभाव ही अन्तर' 2. जहाँ भिन्नता का अभाव हो, समान, तुल्य (प्रायः समास में) अभिन्न—प्रवातनीलोत्पलनिर्विशेषम्—कु० १।४६, स प्रतिपत्तिर्निर्विशेषप्रतिपत्तिरासीत्—रघु० १४।२२ 3. अभेदकारी, गड्ड-मड्ड (षः) अन्तर का अभाव (**निर्विशेषम्** और **निर्विशेषेण** शब्द 'बिना किसी भेद-भाव के', 'समान रूप से' 'बिना किसी अन्तर के' अर्थो को प्रकट करने के लिए क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं, स्वगृहनिर्विशेषमत्र स्थीयताम् —हि० १, रघु० ५।६),—**विशेषण** (वि०) बिना किसी विशेषण के,—**विष** (वि०) (सांप आदि) जिसमें ज़हर न हो—निर्विषा डुंडुभाः स्मृताः—**विषय** (वि०) 1. अपनी जन्मभूमि या निवास स्थान से निर्वासित किया हुआ—मनो निर्विषयार्थकामया–कु० ५।३८, रघु० ९।२८ 2. जिसे कार्य-क्षेत्र का अभाव हो—किंच एवं काव्यं प्रविरलविषयं निर्विषयं वा स्यात् —सा० द० १ 3. (मन की भांति) विषय-वासनाओं में अनासक्त—**षाण** (वि०) बिना सींगो का—**विहार** (वि०) जिसके लिए आनन्द का अभाव हो,—**बीज** (**बीज**) (वि०) 1. बिना बीज का 2. नपुंसक 3. निष्कारण,—**वीर** (वि०) वीर विहीन—निर्वीरमुर्वीतलम्—प्रस० १।३१ 2. कायर—**वीरा** वह स्त्री जिसका पति व पुत्र मर गये हों—**वीर्य** (वि०) शक्तिहीन, निर्बल, पुरुषार्थहीन, नपुंसक—निर्वीर्यं गुरुशापभाषितवशात् किं मे तवेवायुधम्—वेणी० ३।३४,—**वृक्ष** (वि०) जहाँ पेड़ न हों,—**वृष** (वि०) जहाँ अच्छे बैल न हों,—**वेग** (वि०) निश्चेष्ट, गतिहीन, शान्त, वेगरहित,—**वेतन** (वि०) अवैतनिक, बिना वेतन का,—**वेष्टनम्** जुलाहे की नरी, ढरकी, —**वैर** (वि०) वैरभाव से रहित, स्नेही शान्तिप्रिय (**रम्**) शत्रुता का अभाव,—**व्यंजन** (वि०) सीधा सादा, खरा 2. बिना मसाले का (अव्य०—**नं**) सीधा-सादे ढंग से, बेलाग, ईमानदारी से,—**व्यथ** (वि०) 1. पीडा से मुक्त 2. शान्त, स्वस्थ,—**व्यपेक्ष** (वि०) उदासीन, निरपेक्ष रघु० १३।२५, १४।३९,—**व्यलीक** (वि०) जो किसी प्रकार की चोट न पहुंचाये 2. पीडारहित 3. प्रसन्न, मन से कार्य करने वाला 4. निष्कपट, सच्चा, पाखंडहीन,—**व्याघ्र** (वि०) जहाँ चीतों का उत्पात न हो,—**व्याज** (वि०) 1. स्पष्ट का, खरा, ईमानदार, सरल 2. पाखंडरहित—भर्तृ० २।८२, (अव्य०—**जम्**) सरलता से, ईमानदारी से, स्पष्ट रूप से, अमरु ७९,—**व्यापार** (वि०) जिसे कोई काम न हो, बेकार, रघु० १५।५६,—**व्रण** (वि०) 1. जिसे चोट न लगी हो, व्रणरहित 2. जिसमें दरार न पड़ी हो,—**व्रत** (वि०) जो अपनी की हुई प्रतिज्ञा का पालन न करे,–**हिमम्** जाड़े की समाप्ति, हिमशून्य, —**हेति** (वि०) निरस्त्र, जिसके पास कोई हथियार न हो,—**हेतु** (वि०) निष्कारण, बिना किसी तर्क, या कारण के,—**ह्रीक** (वि०) 1. निर्लज्ज, बेहया, ढीठ 2. साहसी, निर्भीक।

निरत (वि०) [नि+रम्+क्त] 1. किसी कार्य में लगा हुआ या रुचि रखने वाला 2. भक्त अनुरक्त, संलग्न, आसक्त—वनवासनिरतः—का० १५७ 3. प्रसन्न, खुश 4. विश्रान्त, विरत।

निरतिः (स्त्री०) [नि+रम्+क्तिन्] दृढ़ आसक्ति, अनुरक्ति, भक्ति।

निरयः [निर्+इ+अच्] नरक—निरयनगरद्वारमुद्घाटयंती—भर्तृ० १।६३, मनु० ६।६१।

निरवहानि (लि) का [निर्+अव+हन् (ल)+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] बाड़ा, चाहारदीवारी ।

निरस (वि०) [निवृत्तो रसो यस्मात् प्रा० ब०] स्वाद-रहित, फीका, सूखा—**सः** 1. रस की कमी, फीकापन, स्वादहीनता 2. रसहीनता, सूखापन 3. उत्कण्ठा का अभाव, भावना की कमी ।

निरसन (वि०) (स्त्री०—नी०) [निर्+अस्+ल्युट्] निकालने वाला, हटाने वाला, दूर भगाने वाला, —शि० ६।४७ 2. उद्वमन या कै करने वाला—**नम्** 1. निकालना, प्रक्षेपण, निष्कासन, हटाना 2. मुकरना, वचन-विरोध, अस्वीकृति, इंकार 3. कै करना, थूक देना 4. रोकना, दबाना 5. विनाश, वध, उन्मूलन ।

निरस्त (भू० क० कृ०) [निर्+अस्+क्त] 1. दूर डाला हुआ, दूर फेंका हुआ, प्रत्याख्यात, हांका हुआ, निष्कासित, निर्वासित—कौलीनभीतेन गृहान्निरस्ता —रघु० १४।८४ 2. दूर भगाया गया, नष्ट किया गया, अह्नाय तावदरुणेन तमो निरस्तम्—रघु० ५।७१ ३. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 4. दूर हटाया गया, वंचित, शून्य—निरस्तपादपे देशे एरंडोऽपिद्रुमायते —हि० १।६९ 5. (बाण आदि) चलाया हुआ 6. निराकृत 7. उगला हुआ, थूका हुआ 8. शीघ्रतापूर्वक उच्चरित 9. फाड़ा हुआ, विनष्ट 10. दबाया हुआ, रोका हुआ 11. (करार, प्रतिज्ञा आदि) तोड़ा हुआ, —**स्तम्** 1. अस्वीकृति, इंकार 2. छोड़ देना, द्रुतोच्चारण । सम०—**भेद** (वि०) सब प्रकार के भेद-भाव हटाये हुए, वही, समरूप,—**राग** (वि०) जिसने समस्त सांसारिक अनुरागों का त्याग कर दिया है ।

निराकः [निर्+अक्+घञ्] 1. पकाना 2. स्वेद, पसीना 3. दुष्कर्मों का निस्तार ('निपाक' भी) ।

निराकरणम् [निर्+आ+कृ+ल्युट्] 1. प्रत्याख्यान करना, निकाल बाहर करना, रद्द कर देना—निराकरणविक्लवा—श० ६, 2. निर्वासन 3. अवबाधा, विरोध, प्रतिरोध, अस्वीकृति 4. खण्डन, उत्तर 5. तिरस्कार 6. यज्ञ के मुख्य कर्तव्यों की उपेक्षा 7. विस्मृति ।

निराकरिष्णु (वि०) [निर्+आ+कृ+इष्णुच्] 1. प्रत्याख्यान करने वाला, बाहर निकालने वाला, निकाल बाहर करने वाला—रघु०१४।५७ 2. विघ्न डालने वाला, बाधक 3. ठुकराने वाला, तिरस्कर्ता 4. किसी को किसी वस्तु से वंचित करने की चेष्टा करने वाला ।

निराकुल (वि०) [निर्+आ+कुल्+क] 1. भरा हुआ, व्याप्त, ढका हुआ अलिकुलसंकुलकुसुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे—गीत० १ 2. दुःखी—दे० 'निर्' के अन्तर्गत भी ।

निराकृतिः (स्त्री०) निराक्रिया [निर्+आ+कृ+क्तिन्, निर्+आ+कृ+श+टाप्] 1. प्रत्याख्यान, निष्कासन, अस्वीकरण 2. इंकार 3. अवबाधा, विघ्न, रुकावट, हस्तक्षेप विरोध, प्रतिरोध ।

निराग (वि०) [निवृत्तः रागो यस्मात् प्रा० ब०] उत्कण्ठा-रहित, जिसमें जोश न रहे ।

निरादिष्ट (वि०) [निर्+आ+दिश्+क्त] जो ऋण वापिस कर दिया गया हो ।

निरामालुः [मि+रम्+आलु] कैथ का वृक्ष ।

निरासः [निर्+अस्+घञ्] 1. प्रक्षेपण, निर्वासन, बाहर फैंक देना, हटाना 2. उगलना 3. निराकरण 4. विरोध ।

निरिंगिणी,—नी [निः निभृतं जनमिङ्गति प्राप्नोति—निर्+इंग्+इनि+ङीप्] परदा, घूंघट ।

निरीक्षणम्, निरीक्षा [निर्+ईक्ष्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1. दृष्टि 2. देखना, ध्यान देना, नजर डालना, अवलोकन करना 3. ढूंढना, खोजना 4. विचार, खयाल,—**निरीक्षया** की बाबत, के विषय 5. आशा, प्रत्याशा 6. ग्रहदशा ।

निरीशं, षम् [निर्+ईश्+(ष्)+क] हल का फाल ।

निरुक्त (वि०) [निर्+वच्+क्त] 1. अभिहित, उच्चरित, अभिव्यक्त, परिभाषित 2. उच्चस्वर से बोला हुआ, स्पष्ट,—**क्तम्** 1. व्याख्या, निर्वचन, व्युत्पत्ति-सहित व्याख्या 2. छः वेदांगों में एक जिसमें अप्रचलित शब्दों की व्याख्या की गई है, विशेषकर वैदिक शब्दों की—नाम च धातु जमाह निरुक्ते—नि० 3. यास्क द्वारा निघण्टु पर किया गया भाष्य ।

निरुक्तिः (स्त्री०) [निर्+वच्+क्तिन्] 1. व्युत्पत्ति, शब्दों की व्युत्पत्तिसहित व्याख्या 2. (अलं० शा० में) एक काव्यालंकार जिसमें शब्द की व्युत्पत्ति की मनमानी व्याख्या की जाय, परिभाषा इस प्रकार है—निरुक्तिर्योगतो नाम्नामन्यार्थत्वप्रकल्पनम्, ईदृशैश्चरितैर्जाने सत्यं दोषाकरो भवान्—चन्द्रा० ५।१६८, (दोषाकरः=दोषाणामाकरः) ।

निरुत्सुक (वि०) [निर्+उद्+सू+क्विप्+कन्,ह्रस्वः] 1. अत्यंत आतुर, 2. उत्सुकतारहित, उदासीन ।

निरुद्ध (भू० क० कृ०) [नि+रुध्+क्त] 1. अवबाधित, प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध, नियन्त्रित, दमन किया गया—उत्तर० १।२७ 2. संसीमित, बंदीकृत । सम०—**कंठ** (वि०) जिसका सांस रुक गया हो, दम घुट गया हो,—**गुदः** मलद्वार का अवरोध ।

निरूढ (वि०) [नि+रुह्+क्त] परंपरागत, प्रचलित, रूढ़ (शब्द का अर्थ विप० यौगिक अर्थात् व्युत्पत्त्यर्थ) यौनं काचिदथवाऽस्ति निरूढा सैव सा चलति यत्र हि चित्तम्—नै० ५।५७ 2. अविवाहित,—**ढः**

1. अन्तर्निधान, न्यास (जैसा कि "लाल" में 'लालिमा')। सम०—लक्षणा शब्द का वह गौण प्रयोग जो वक्ता के विशेष आशय या विवक्षा पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसके स्वीकृत या लोकरूढ़ प्रचलन पर आधारित है।

निरूढिः (स्त्री०) [नि+रुह्+क्तिन्] 1. प्रसिद्धि, ख्याति 2. जानकारी, परिचय, प्रवीणता—नृपविद्यासु निरूढिमागता—कि० २।६ 2. संपुष्टि।

निरूपणम्,—णा [नि+रूप्+णिच्+ल्युट्; स्त्रियां टाप् च] 1. रूप, आकृति 2. दृष्टि, दर्शन 3. ढूंढना, खोजना 4. निश्चयन, अन्वेषण, निर्धारण 5. परिभाषा।

निरूपित (भू० क० कृ०) [नि+रूप्+णिच्+क्त] 1. देखा गया, खोजा गया, चिह्नित, अवलोकित 2. नियत, चुना हुआ, निर्वाचित 3. विवेचन किया गया, विचार किया गया 4. निश्चय किया गया, निर्धारित।

निरूहः [नि+रुह्+घञ्] 1. वस्तिकर्म का एक प्रकार 2. तर्क, युक्ति 3. निश्चितता, निश्चय 4. वाक्य जिसमें न्यूनपद न हो, संपूर्ण वाक्य।

निर्ऋतिः [निर्+ऋ+क्तिन्] 1. क्षय, नाश, विघटन 2. संकट, अनिष्ट, विपदा, विपत्ति—सा हि लोकस्य निर्ऋतिः—उत्तर० ५।३० 3. अभिशाप, आक्रोश 4. मृत्यु, मूर्तिमान् विनाश, मृत्यु या विनाश की देवी, दक्षिण-पश्चिम कोण की अधिष्ठात्री देवी—मनु० ११।११९।

निरोधः, निरोधनम् [नि+रुध्+घञ्, ल्युट् वा] 1. क़ैद करना, रोधागार में रखना, हवालात में रखना—मनु० ८।३१०,३७५ 2. घेरना, ढक देना—अमरु ८७ 3. प्रतिबंध, रोक, दमन, नियंत्रण—योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः—योग०, कु० ३।४८ 4. रुकावट, अवबाधा, विरोध 5. चोट पहुँचाना, दण्ड देना, क्षति पहुँचाना 6. ध्वंस, विनाश 7. अरुचि, नापसंदगी 8. निराशा, भग्नाशा।

निर्गः [निर्+गम्+ड] देश, प्रदेश, स्थान।

निर्गंधनम् [निर्+गंध्+ल्युट्] वध, हत्या।

निर्गमः [निर्+गम्+अप्] 1. बाहर जाना, चले जाना—रघु० ११।३ 2. विदायगी, ओझल होना—रघु० १९।४६ 3. द्वार, मार्ग, निकास—कथमप्यवाप्तनिर्गमः प्रययौ—का० १५९ 4. निष्क्रमण, बाहर जाने का द्वार।

निर्गमनम् [निर्+गम्+ल्युट्] बाहर निकलना या चले जाना।

निर्गूढः [निर्+गुह्+क्त] वृक्ष का कोटर।

निर्ग्रंथनम् [निर्+ग्रन्थ्+ल्युट्] वध, हत्या।

निर्घंटः, टम् [निर्+घण्ट्+घञ्] 1. शब्दावली, शब्द संग्रह 2. सूचीपत्र।

निर्घर्षणम् [निर्+घृष्+ल्युट्] रगड़, टक्कर।

निर्घातः [निर्+हन्+घञ्] 1. विनाश 2. ववंडर, हवा का प्रचंड झोंका, आँधी 3. हवा की सनसनाहट, आकाश में हवा के झोंकों के टकराने का शब्द निर्घातोग्रैः कुंजलीनाञ्जिघांसुर्ज्यानिर्घोषैः क्षोभयामास सिंहान्—रघु० ९।६४, मनु० १।३८, ४।१०५, ७, याज्ञ० १।१४५, (वायुना निहतो वायुर्गगनाच्च पतत्यधः, प्रचंडघोरनिर्घोषो निर्घात इति कथ्यते) 4. भूकंप 5. वज्रपात—अहह दारुणो दैवनिर्घातः—उत्तर० २।

निर्घातनम् [निर्+हन्+णिच्+ल्युट्] बलपूर्वक बाहर निकालना, प्रकाशित करना।

निर्घोषः [निर्+घुष्+घञ्] 1. ध्वनि—वेणी० ४, रघु० १।३६ 2 निनाद, खड़खड़ाहट, ठनक—ज्यानिर्घोषैः क्षोभयामास सिंहान्—रघु० ९।६४, भारतीनिर्घोषः—उत्तर० ३।

निर्जयः, निर्जितिः (स्त्री०) [निर्+जि+अच्, क्तिन् वा] पूरी विजय, वशीकरण, परास्त करना।

निर्झरः,—रम् [निर्+झृ+अप्] झरना, जल प्रपात, घनघोरवृष्टि, वारिप्रवाह, पहाड़ी झरना—शीतं निर्झरवारिपानम्—नागा० ४, रघु० २।१३, श० २।१७, २१, ४।६,—रः 1. भूसी जलाना 2. हाथी 8. सूर्य का घोड़ा।

निर्झरिन् (पुं०) निर्झर+इनि] पहाड़।

निर्झरिणी, निर्झरी [निर्झरिन्+ङीप्, निर्झर+ङीप्] नदी, पहाड़ी झरना—स्खलनमुखरभूरिस्रोतसो निर्झरिण्यः—उत्तर० २।२०।

निर्णय [निर्+नी+अच्] 1. दूरीकरण, हटाना 2. पूर्ण निश्चय, फ़ैसला, प्रकथन, निर्धारण स्थिरीकरण—संदेहनिर्णयो जातः—दा० १।२७, मनु० ८।३०१, ४०९, ९।२५०, याज्ञ० २।१० हृदयं निर्णयमेव धावति—कि० २।२९ 3. घटना, अटकल, उपसंहार, (तर्क० में) प्रदर्शन 4. विचारविमर्श, गवेषणा, विचारण 5. किसी विचारपति द्वारा किसी विवाद के विषय में स्थिर किया गया मत, व्यवस्था, फैसला—सर्वज्ञस्याप्येकाकिनो निर्णयाभ्युपगमो दोषाय—मालवि० १। सम०—पादः निर्णय की आज्ञप्ति, फरमान, व्यवस्था (विधि में)।

निर्णायक (वि०) [निर्+नी+ण्वुल्] निर्णय देने वाला, अन्तिम फ़ैसला करने वाला।

निर्णायनम् [निर्+नी+ल्युट्] 1. निश्चय करना 2. हाथी के कान का बाहरी कोण।

निर्णिक्त (भू० क० कृ०) [निर्+निज्+क्त] धुला हुआ, शुद्ध किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ रघु० १७।२२।

निर्णिक्तिः (स्त्री०) [निर्+निज्+क्तिन्] 1. धुलाई 2. प्रायश्चित्त, परिशोधन महावी० ४।२५ ।

निर्णेकः [निर्+निज्+घञ्] 1. धुलाई, सफाई 2. संक्षालन 3. परिशोधन, प्रायश्चित्त ।

निर्णेजकः [निर्+निज्+ण्वुल्] धोबी ।

निर्णेजनम् [निर्+निज्+ल्युट्] 1. संक्षालन 3. प्रायश्चित्त, परिशोधन (किसी अपराध के लिए) ।

निर्णोदः [निर्+निद्+घञ्] दूर करना, निर्वासन ।

निर्दट,—ड (वि०) [=निर्दय पृषो० साधुः] 1. निष्करुण, नृशंस, निर्मम 2. दूसरों की त्रुटियों पर हर्ष मनाने वाला 3. ईर्ष्यालु 4. गालीगलौज करने वाला, पिशुन 5. व्यर्थ, अनावश्यक 6. प्रचंड 7. पागल, उन्मत्त ।

निर्दरः,—रिः [निर्+दृ+अप्, इन्+वा] कन्दरा गुफा ।

निर्दलनम् [निर्+दल्+ल्युट्] टुकड़े २ करना, तोड़ना, नष्ट करना ।

निर्दहनम् [निर्+दह्+ल्यु] जलाना, दग्ध करना ।

निर्दातृ (पुं०) [निर्+दा (दो)+तृच्] 1. निराने वाला 2. दाता 3. किसान, खेती काटने वाला ।

निर्दारित (वि०) [निर्+दृ+णिच्+क्त] 1. फाड़ा हुआ, विदीर्ण 2. खोला हुआ, काट कर खोला हुआ —शि० १८।२८ ।

निर्दिग्ध (भू० क० कृ०) [निर्+दिह्+क्त] 1. लेप किया हुआ, मालिश की हुई 2. सुपोषित, स्थूलकाय, हृष्ट पुष्ट ।

निर्दिष्ट (भू० क० कृ०) [निर्+दिश्+क्त] 1. इशारे से बताया हुआ, दिखाया हुआ, संकेतित 2. विशिष्ट, विशिष्टीकृत 3. वर्णित 4. अधिन्यस्त, नियत 5. दृढ़तापूर्वक कहा हुआ, प्रकथित 6. निश्चय किया हुआ निर्धारित 7. आदिष्ट ।

निर्देशः [निर्+दिश्+घञ्] 1. इशारा करना, दिखलाना, संकेत करना 2. आदेश, हुक्म, निदेश —रघु० १२।१७ 3. उपदेश, अनुदेश 4. बतलाना, कहना, घोषणा करना 5. विशेषता करना, विशिष्टीकरण, विशिष्टता, विशिष्टोल्लेख—अयुक्तोयं निर्देशः—महा०, भग० १७।३३ 6. निश्चय 7. पड़ौस, सामीप्य ।

निर्धारः, निर्धारणम् [निर्+धृ+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. बहुतों में से एक को विशिष्ट करना, या पृथक् करना—यतश्च निर्धारणम्—पा० २।३।४१, विक्रम० ३।९२ 2. निश्चय करना, फैसला करना, निर्णय करना 3. निश्चितता, निश्चय ।

निर्धारित (भू० क० कृ०) [निर्+धृ+णिच्+क्त] निर्धारण किया गया, निश्चय किया गया, स्थिर किया गया, निश्चित किया गया, दे० 'निस्' पूर्वक धृ ।

निर्धूत (भू० क० कृ०) [निर्+धू+क्त] 1. हिलाया गया, हटाया गया रघु० १२।५७ 2. परित्यक्त, अस्वीकृत 3. वंचित, रहित 4. टाला गया ५. निराकृत 6. नष्ट किया गया, (दे० 'निस्' पूर्वक 'धू') ।

निर्धौत (भू० क० कृ०) [निर्+धाव्+क्त] 1. धो दिया गया, रघु० ५।४३ 2. चमकाया गया, उज्ज्वल ।

निर्बंधः [निर्+बंध्+घञ्] 1. आग्रह, हठ, ज़िद, दुराग्रह —निर्बंधसंजातरुषा (गुरुणा)—रघु० ५।२१, कु० ५।६६ 2. दृढ़ाग्रह, भारी मांग, अत्यावश्यकता [निर्बंधपृष्टः स जगाद—रघु० १४।३२, अत एव खलु निर्बंधः—श० ३ 3. ढिठाई 4. दोषारोपण 5. कलह, झगड़ा ।

निर्बर्हणं—दे० निबर्हण ।

निर्भट (वि०) [निर्+भट्+अच्] कठोर, दृढ़ ।

निर्भर्त्सनम्,—ना [निर्+भर्त्स्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. धमकी, घुड़की,—शि० ६।६२ 2. गाली, झिड़की, बुरा-भला कहना, दोषारोपण 3. दुर्भावना 4. लाल रंग, लाख ।

निर्भेदः [निर्+भिद्+घञ्] 1. फट जाना, विभक्त करना, टुकड़े २ करना 2. फटन, दरार 3. स्पष्ट उल्लेख या घोषणा—मालवि० ४ 4. नदी का तल 5. किसी बात का निर्धारण ।

निर्मथः, निर्मथन, निर्मंथः, निर्मंथन [निर्+मथ्+घञ्, ल्युट् वा, निर+मंथ्+घञ्, ल्युट् वा] रगड़ना, मथना, हिलाना 2. दो अरणियों (लकड़ी के टुकड़ों) को आग पैदा करने के लिए आपस में रगड़ना, अरणि ।

निर्मंथ्य (वि०) [निर्+मंथ+ण्यत्] 1. हिलाये जाने या मथे जाने के योग्य 2. (आग की भांति) रगड़ से पैदा करने के योग्य—थ्यम् अरणि (वह लकड़ी जिसे रगड़ कर आग पैदा की जाती है) ।

निर्माणम् [निर्+मा+ल्युट्] 1. मापना, नाप—यतश्चाध्वकालनिर्माणम्—पा० २।३।२८ वार्ति० 2. माप, फैलाव, विस्तार अयमप्राप्तनिर्माणः (बालः)—रामा० 'पूर्ण विकास को अभी प्राप्त नहीं हुआ' 3. उत्पादन, रचना, निर्मिति, ईदृशो निर्माणभागः परिणतः—उत्तर० ४ 4. सृष्टि, रचित वस्तु रूप—निर्माणमेवहि तदादरलालनीयम्—मा० ९।४९ 5. रूप, बनावट, आकृति —शरीरनिर्माणसदृशा नन्वस्यानुभावः—महावी० १ 6. रचना, कृति) भवन—णा उपयुक्तता, औचित्य, सुरीति ।

निर्माल्यम् [निर्+मल्+ण्यत्] 1. शुद्धता, स्वच्छता, निष्कलंकता 2. किसी देवता के चढ़ावे का अवशेष, फूल आदि—निर्माल्योज्झितपुष्पदामनिकरे का षट्पदानां रतिः—शृंगार० १० 3. देवता पर समर्पित

करने के पश्चात् मुर्झाये हुए फूल—निर्माल्यैरथ ननृतेऽवधीरितानाम्—शि० ८।६० 4. अवशेष ।

निर्मितिः (स्त्री०) [निर्+मा+क्तिन्] उत्पादन, सृजन, निर्माण, कलात्मक वस्तु की रचना—नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति ।

निर्मुक्त (भू० क० कृ०) [निर्+मुच्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, मुक्त किया हुआ, स्वतंत्र किया हुआ—रघु० १।४६ 2. सांसारिक अनुरागों से मुक्त 3. वियुक्त, अलग किया हुआ,—क्तः सांप जिसने हाल ही में अपनी केंचुली छोड़ी हो ।

निर्मूलनम् [निर्+मूल्+णिच्+ल्युट्] उच्छेदन, जड़ से उखाड़ फेंकना, उन्मूलन (आलं० भी) कर्मनिर्मूलनक्षमः—भर्तृ० ३।७२ ।

निर्मृष्ट (भू० क० कृ०) [निर्+मृज्+क्त] पोंछा गया, धोया गया, रगड़ा गया—निर्मृष्टरागोऽधरः—सा० द० १ ।

निर्मोकः [निर्+मुच्+घञ्] 1. मुक्त करना, स्वतंत्र करना 2. खाल, चमड़ी, विशेष रूप से केंचुली—रघु० १६।१७, शि० २०।४७ 3. कवच, जिरहबख्त 4. आकाश, अन्तरिक्ष ।

निर्मोक्षः [निर्+मोक्ष+घञ्] मुक्ति, छुटकारा—रघु० १०।२ ।

निर्मोचनम् [निर्+मुच्+ल्युट्] मुक्ति, छुटकारा ।

निर्याणम् [निर्+या+ल्युट्] 1. निष्क्रमण, बाहर जाना, प्रस्थान करना, विदायगी 2. अन्तर्धान, ओझल 3. मरण, मृत्यु 4. चिन्तन मुक्ति, परमानंद 5. हाथी की आंख का बाहरी किनारा—वारणं निर्याणभागेऽभिघ्नन्—दश० ९७, निर्याणनिर्यदसृजं चलितं निषादी—शि० ५।४१ 6. पशुओं के पैर बांधने की रस्सी, पैकड़ा—निर्याणहस्तस्य पुरो दुधुक्षतः—शि० १२।४१ ।

निर्यातनम् [निर्+यत्+णिच्+ल्युट्] 1. वापिस करना, लौटाना, अर्पण करना, (धरोहर) प्रत्यर्पण करना 2. ऋणपरिशोध 3. उपहार, दान 4. प्रतिहिंसा, बदला (जैसा कि 'वैर निर्यातन') 5. वध, हत्या ।

निर्यातिः (स्त्री०) [निर्+या+क्तिन्] 1. निकलना, प्रस्थान 2. इस जीवन से विदा लेना, मरण, मृत्यु ।

निर्यामः [निर्+यम्+णिच्+घञ्] मल्लाह, कर्णधार या चालक, नाविक, नाव खेने वाला ।

निर्यासः ,—सम् [निर्+यस्+घञ्] वृक्षों या पौधों का निःश्रवण, गोंद, रस, राल—शालनिर्यासगंधिभिः—रघु० १।३८, मनु० ५।६ 2. अर्क, सार, काढ़ा 3. कोई गाढ़ा तरल पदार्थ ।

निर्यूहः [निर्+उहं+क; पृषो० साधुः] 1. कंगूरा, मीनार, बुर्ज या कलश (जो स्तम्भ या दरवाजों पर बनाया जाता है) वितर्दिनिर्यूहविटंकनीडः—शि० ३। ५५, (यहां मल्लिनाथ इसका अर्थ लिखते हैं —"मत्त वारणाख्यः उपाश्रयः" और वैजयन्ती का उद्धरण देते हैं, संभवतः इसका नाम इसके हाथी के रूप की समामता के कारण पड़ा है) चारुतोरणनिर्यूहा—रामा० 2. शिरोभूषण, चूड़ामणि, मुकुट 3. दीवार में लगी खूंटी 4. दरवाजा, फाटक 5. सत्त्व, काढ़ा ।

निर्लुञ्चनम् [निर्+लुञ्च्+ल्युट्] उखाड़ना, फाड़ना, छीलना ।

निर्लुंठनम् [निर्+लुण्ठ्+ल्युट्] 1. लूटना, लूटखसोट 2. फाड़ डालना ।

निर्लेखनम् [निर्+लिख्+ल्युट्] 1. खुरचना, खरोंचना, नोचना 2. खुरचनी, रांपी ।

निर्लयनी [निर्+ली+ल्युट्, पृषो० साधुः] सांप की केंचुली ।

निर्वचनम् [निर्+वच्+ल्युट्] 1. उक्ति, उच्चारण 2. लोकप्रसिद्ध उक्ति. लोकोक्ति 3. व्युत्पत्तिसहित, व्युत्पत्ति 4. शब्दावली, शब्दसूची ।

निर्वपणम् [निर्+वप्+ल्युट्] 1. उडेल देना, भेंट करना 2. विशेष रूप से पितरों को पिंडदान, तर्पण—मनु० ३।२४८, २६० 3. उपहार प्रदान करना 4. पुरस्कार, दान ।

निर्वर्णनम् [निर्+वर्ण्+ल्युट्] 1. नजर डालना, देखना दृष्टि 2. चिह्न लगाना, ध्यान पूर्वक अवलोकन करना ।

निर्वर्तक (वि०) (स्त्री०—टिका) [निर्+वृत्+णिच्+ण्वुल्] पूरा करने वाला, निष्पन्न करने वाला, समाप्त करने वाला, कार्यान्वित करने वाला, सम्पन्न करने वाला ।

निर्वर्तनम् [निर्+वृत्+णिच्+ल्युट्] निष्पत्ति, पूर्ति, कार्यान्वित ।

निर्वहणम् [निर्+वह्+ल्युट्] 1. अन्त, पूर्ति—शि० १४।६३ 2. निर्वाह करना, अन्त तक निवाहना, जीवित रखना—मानस्य निर्वहणम्—अमरू 3. ध्वंस, सर्वनाश 4. (नाटकों में) उपक्रांति, वह अन्तिम अवस्था जब कि महान् परिवर्तन का अन्तिम क्षण हो, नाटक या उपन्यास आदि का उपसंहार—तत्कि निमित्तं कुरु—विकृतनाटकस्येव अन्यन्मुखेऽन्यनिर्वहणे—मुद्रा० ६ ।

निर्वाण (भू० क० कृ०) [निर्+वा+क्त] 1. फूंक मार कर बुझाया हुआ, (आग या दीपक की भांति) बुझाया गया—निर्वाण-वैरदहनाः प्रशमादरीणाम्—वेणी० १।७, कु० २।२३ 2. खोया हुआ, लुप्त 3. मृत, मरा हुआ 4. जीवन से मुक्त 5. (सूर्य की भांति) अस्त 6. शान्त, चुपचाप 7. डूबा हुआ, —णम् 1. बुझाना—१।१३१, शनैर्निर्वाणमाप्नोति निरिन्धन इवानलः—महा० 2. दृष्टि से ओझल होना, लोप

होना 3. विघटन, मृत्यु 4. माया या प्रकृति से मुक्ति पाकर परमात्मा से मिलन, शाश्वत आनन्द—निर्वाणमपि मन्येऽहमन्तरायं जयश्रियः—कि० ११।६९, रघु० १२।१ 5. (बौद्ध-विषयक) सांसारिक जीवन से व्यक्ति का पूर्ण निर्वाण, बौद्धों की मोक्षप्राप्ति 6. पूर्ण और शाश्वत शान्ति, सदा के लिए विश्राम—कि० १८।३९ 7. पूर्ण संतोष या आनन्द, ब्रह्मानन्द, परमानन्द—अये लब्धं नेत्रनिर्वाणम्—श० ३, मालवि० ३।१, शि० ४।२३, विक्रम० ३।२१ 8. विश्राम, विराम 9. शून्यता 10. सम्मिलन, साहचर्य, संगम 11. हस्तिस्नानं—दे० 'अनिर्वाण' रघु० १।७१ में 12. विज्ञान में शिक्षण। सम० —भूयिष्ठ (वि०) प्रायः आंखों से ओझल या लुप्त —निर्वाणभूयिष्ठमथास्य वीर्यं संधुक्षयंतीव वपुर्गुणेन—कु० ३।५२,—मस्तकः मुक्ति, मोक्ष।

निर्वादः [निर्+वद्+घञ्] 1. दोषा रोपण, दुर्वचन 2. बदनामी, लोकापवाद, परिवाद—रघु० १४।३४ 3. शास्त्रार्थ का निर्णय 4. वाद का अभाव।

निर्वापः [निर्+वप्+घञ्] दे० 'निर्वपणम्'।

निर्वापणम् [निर्+वप्+णिच्+ल्युट्] 1. चढ़ावा, आहुति, पिंडदान या श्राद्ध 2. भेंट, दान 3. बुझाना, गुल करना 4. उडेलना, बखेरना, (बीज का) बोना 5. पुरस्करण, प्रदान 6. निराकरण, उपशमन, शान्ति—कर्तव्यानि दुःखितैर्दुःखनिर्वापणानि—उत्तर० ३ 7. विनाश 8. वध, हत्या 9. ठण्डा करना, विश्रांति करना—शरीरनिर्वापणाय—श० ३ 10. प्रशीतल और ठंडा उपचार।

निर्वासः, निर्वासनम् [निर्+वस्+घञ्, निर्+वस्+णिच्+ल्युट्] 1. निकालना, निर्वासित करना, देश-निकाला देना 2. वध, हत्या।

निर्वाहः [निर्+वह्+घञ्] 1. निबाहना, निष्पन्न करना, संपन्न करना 2. सम्पूर्ति, अन्त 3. अन्ततक निबाहना, सहारा देना, दृढ़तापूर्वक डटे रहना, धैर्य—निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम्—मुद्रा० २।१८ 4. जीवित रहना 5. पर्याप्ति, यथेष्ट व्यवस्था, अक्षमता 6. वर्णन करना, बयान करना।

निर्वाहणम् [निर्+वह्+णिच्+ल्युट्] दे० 'निर्वहण'।

निर्विण्ण (भू० क० कृ०) [निर्+विद्+क्त] 1. निर्वेदयुक्त, खिन्न, मृच्छ० १।१४ 2. भय या शोक से अभिभूत 3. शोक से कृश 4. दुरुक्त, पतित 5. किसी वस्तु से घृणा—मत्स्याशनस्य निर्विण्णः—पंच० १ 6. क्षीण, मुर्झाया हुआ 7. विनम्र, विनीत।

निर्विष्ट (भू० क० कृ०) [निर्+विश्+क्त] 1. उपभुक्त, अवाप्त, अनुभूत 2. पूर्णतः उपभुक्त—रघु० १२।१, 3. पारिश्रमिक के रूप में प्राप्त—निर्विष्टं वैश्यशूद्रयोः—गौ० 4. विवाहित 5. व्यस्त।

निर्वृत (भू० क० कृ०) [निर्+वृ+क्त] 1. संतृप्त, संतुष्ट, प्रसन्न, निवृतौ स्वः—श० २।४ 2. निश्चित, बेफ़िकर, आराम में 3. विश्रान्त, समाप्त।

निर्वृतिः (स्त्री०) [निर्+वृ+क्तिन्] 1. संतृप्ति, प्रसन्नता, सुख, आनन्द, व्रजति निर्वृतिमेकपदे मनः—विक्रम० २।९, रघु० ९।३८, १२।६५, श० ७।१९ शि० ४।६४, १०।२८, कि० ३।८ 2. शान्ति, विश्राम, विश्रान्ति 3. मुक्ति, निर्वाण—द्वार निर्वृतिसद्मनो विजयते कृष्णेतिवर्णद्वयम्—भामि० ४।१४ 4. संपूर्ति, निष्पत्ति 5. स्वतंत्रता 6. अन्तर्धान होना, मृत्यु, विनाश।

निर्वृत्त (भू० क० कृ०) [निर्+वृत्+क्त] निष्पन्न, अवाप्त, सम्पन्न।

निर्वृत्तिः (स्त्री०) [निर्+वृत्+क्तिन्] निष्पन्नता, पूर्णता, सम्पन्नता—मनु० १२।१।

निर्वेदः [निर्+विद्+घञ्] 1. घृणा, जुगुप्सा 2. अतितृप्ति, छक जाना 3. विषाद, निराश, अवसाद—परिभवान्निर्वेदमापद्यते—मृच्छ० १।१४ 4. दीनता 5. शोक 6. विरक्ति—भग० २।५२, (एक प्रकार की भावना जिससे शान्तरस का उदय होता है—काव्य०—निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शांतोऽपि नवमो रसः 7. स्वावमान, दीनता (तैंतीस संचारिभावों में से एक), तु० रस० में दी गई परिभाषा से, :निम्नांकित दृष्टांत दिया गया है—यदि लक्ष्मण सा मृगेक्षणा न मदीक्षासरणिं समेष्यति, अमुना जडजीवितेन में जगता वा विफलेन किं फलम्।

निर्वेशः [निर्+विश्+घञ्] 1. लाभ, प्राप्ति 2. मजदूरी, भाड़ा, नौकरी 3. भोजन, उपभोग, सेवन 4. भुगतान की अदायगी 5. प्रायश्चित्त, परिशोधन 6. विवाह 7. मूर्छित होना, बेहोश होना 8. छिद्र, रंध्र।

निर्व्यूढ (भू० क० कृ०) [निर्+वि+वह्+क्त] 1. पूरा किया गया, समाप्त किया गया 2. उद्गतया उदित, वर्धित, विकसित-मुहूर्तनिर्व्यूढविस्मय—मा० ७, निर्व्यूढसौहृदभरेति—६।१७, (उपचित—जगद्धर) 3. प्रतिसमर्थित, पूर्णतः प्रदर्शित, सत्यप्रमाणित, श्रद्धापूर्वक या अन्त तक पालन किया गया—हा तात जटायो निर्व्यूढस्तेऽपत्यस्नेहः—उत्तर० 3. निर्व्यूढः संभावनाभारो बुद्धरक्षितया—मा० ८, निर्व्यूढं तातस्य कापालिकत्वम्—मा० ४।९, १०, महावी० ७।८ 4. परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

निर्व्यूढिः (स्त्री०) [निर्+वि+वह+क्तिन्] 1. अन्त, पूर्ति 2. शिखर, उच्चतम बिंदु।

निर्व्यूहः [निर्+वि+वह्+घञ्] दे० 'निर्यूह' 1. कंगूरा 2. शिरस्त्राण, कलगी 3. दरवाजा, फाटक 4. दीवार में लगी खूँटी या ब्रैकेट 5. काढ़ा।

निर्हरणम् [निर्+हृ+ल्युट्] 1. शव का दाहसंस्कार के लिए ले जाना, शव को चिता पर रखना 2. ले जाना, बाहर निकालना, निचोड़ना, हटाना 3. जड़ से उखाड़ना, उन्मूलन करना।

निर्ह्रादः [निर्+ह्रद्+घञ्] मलोत्सर्ग, मलत्याग।

निर्हारः [निर्+हृ+घञ्) 1. ले जाना, दूर करना, हटाना 2. बाहर खींचना, उखाड़ना 3. जड़ से उखाड़ना, विनाश 4. मृतक शरीर को दाह संस्कार के लिए ले जाना 5. निजी धन संचय, निजी जमा —मनु० ९।१९९ 6. मलत्याग, (वि० आहार)।

निर्हारिन् (वि०) [निर्+हृ+णिनि]। पालन करने वाला 2. व्याप्त, (गंधादिक) विस्तारशील 3. गंधयुक्त।

निर्हृतिः (स्त्री०) [निर्+हृ+क्तिन्] मार्ग से हटाना, दूर करना।

निर्ह्लादः [निर्+ह्रद्+घञ्] ध्वनि,—रघु० १।०१।

निलयः [नि+ली+अच्] 1. छिपने का स्थान, (जानवरों का) भट या मांद, (पक्षियों का) घोंसला—शि० ९।४ 2. आवास, निवास, घर, गृह (प्रायः समास के अन्त में) रहने वाला, वास करने वाला 3. अस्त होना, छिपना—दिनांते निलयाय गंतुम्-रघु० २।१५, (यहाँ यह शब्द 'प्रथम अर्थ' को भी प्रकट करता है।

निलयनम् [नि+ली+ल्युट्] 1. किसी स्थान पर बसना, उतरना 2. शरणगृह, घर, गृह, आवास।

निलिंपः [नि+लिप्+श, नुम्] 1. देवता - निलिंपैर्मुक्तानपि च निरयान्तर्निपतितान्—गंगा० १५ 2. मरुतों का दल। सम०—निर्झरी स्वर्गीय गंगा।

निलिंपा, निलिंपिका [निलिम्प+टाप्, कन्+टाप्, इत्वं च] गाय।

निलीन (भू० क० कृ०) [नि+ली+क्त] 1. पिघला हुआ या गला हुआ 2. बन्द या लिपटा हुआ, गुप्त 3. अन्तर्ग्रस्त, घिरा हुआ, परिवलयित 4. ध्वस्त, नष्ट 5. परिवर्तित, रूपान्तरित (दे० नि पूर्वक ली)।

निवचने (अव्य०) [प्रा० स०] न बोलना, बोलना बन्द करके, जिह्वा को रोक कर ('कृ' के साथ प्रयुक्त होने पर 'गति' के रूप में या उपसर्ग के रूप में अथवा स्वतंत्र शब्द समझा जाता है—उदा० निवचनेकृत्य, निवचने कृत्वा—पा० १।४।७६)।

निवपनम् [नि+वप्+ल्युट्] 1. बिखेरना, उडेलना, नीचे फेंकना 2. बोना 3. पितरों के नाम पर चढ़ावा, मृतपूर्वजों को लक्ष्य करके दी गई आहुति—को नः कुले निवपनानि नियच्छतीति—श० ६।२४।

निवरा [नि+वृ+अप्+टाप्] अक्षतयोनि, अविवाहित कन्या।

निवर्तक (वि०) [नि+वृत्+ण्वुल्] 1. वापिस देने वाला, आने वाला या पीछे मुड़ने वाला 2. ठहरने वाला, पकड़ने वाला 3. उन्मूलक, निष्कासित करने वाला, मिटाने वाला 4. वापिस लाने वाला।

निवर्तन (वि०) [नि+वृत्+ल्युट्] 1. लौटाने वाला 2. पीछे मुड़ने वाला, ठहरने वाला—नम् वापिस होना, मुड़ना, या वापिस आना, लौटना—इह हि पततां नास्त्यालंबो न चापि निवर्तनम्—शा० ३।२ 2. न घटने वाला, बन्द होने वाला 3. रुकने वाला, परहेज करने वाला (अपा० के साथ) 4. काम से हाथ खींचना, निष्क्रियता (विप० प्रवर्तन)—काम० १।२८ 5. वापिस लाना—अमरु ८४ 6. पश्चात्ताप करना, सुधार करने की इच्छा 7. बीस बांस लम्बी भूमि।

निवसतिः (स्त्री०) [नि+वस्+अतिच्] घर, आवास, आवासस्थान, वासगृह, निवासस्थान।

निवसथः [नि+वस्+अथच्] गाँव, ग्राम।

निवसनम् [नि+वस्+ल्युट्] 1. गृह, आवास, निवासस्थान 2. परिधान, वस्त्र, अन्तर्वस्त्र—शि० १०।६०, रघु० १९।४१।

निवहः—भर्तृ० ३।३७, इसी प्रकार घन° दैत्य° कपोत° आदि 2. सात पवनों में से एक पवन का नाम।

निवात (वि०) [निवृत्तः वातो यस्मिन् ब० स०] 1. से सुरक्षित, जहाँ वायु न हो, शान्त—रघु० १९।४२ 2. जिसे चोट न लगी हो, क्षति न पहुँची हो, बाधा रहित 3. सुरक्षित, अभय 4. सुसज्जित, दृढ़ कवच धारण किए हुए,—तः 1. शरणगृह, निवासस्थान, आश्रयागार 2. अकाट्य कवच,—तम् 1. वायु से सुरक्षित स्थान—निवातनिष्कंपमिव प्रदीपम्—कु० ३।४८, कि० १४।३७, रघु० १३।५२, ३।१७, भग० ६।१९ 2. वायु का अभाव, शान्त, निस्तब्धता—रघु० १२।३६ 3. निष्कंटक स्थान 4. दृढ़ कवच।

निवापः [नि+वप्+घञ्] 1. बीज, अनाज, बीज के रक्खे हुए दाने 2. मृतक पूर्वजों के पितरों को या दूसरे बन्धुओं को भेंट, जलतर्पण (श्राद्ध के अवसर पर) एको निवापसलिलं पिबसीत्य युक्तम्—मा० ९।४०, निवापदत्तिभिः—रघु० ८।८६, निवापांजलयः पितृणाम्—५।८, १५।९१, मुद्रा० ४।५ 3. भेंट या उपहार।

निवारः, निवारणम् [नि+वृ+णिच्+अच्, ल्युट् वा] 1. दूर रखना, रोकना, हटाना—देशनिवारणैश्च —रघु० ०।५ 2. प्रतिषेध, बाधा।

निवासः [नि+वस्+घञ्] 1. रहना, बसना, निवास

करना 2. घर, आवास, वासगृह, विश्राम-स्थान —निवासश्चिताया:—मृच्छ० १।१५, शि० ४।६३, ५।२१, भग० ९।१८, मृच्छ० ३।२३ 3. रात बिताना 4. पोशाक, वस्त्र ।

निवासनम् [नि+वस्+णिच्+ल्युट्] 1. निवासस्थान 2. पड़ाव, डेरा 3. समय बिताना ।

निवासिन् (वि०) [नि+वस्+णिनि] 1. निवास करने वाला, रहने वाला 2. पहनने वाला, वस्त्रों से ढका हुआ—कु० ७।२६, (पुं०) निवासी, आवासी ।

निवि (बि) ड (वि०) [नि+विड्+क] 1. निरन्तराल, सघन, सटा हुआ 2. दृढ़, कसा हुआ, पक्का, निविडो मुष्टि:—रघु० ९।५८, १९।४४ 3. मोटा, अप्रवेश्य, घना, अभेद्य—रघु० ११।१९ 4. स्थूल, मोटा 5. महाकाय, विशाल 6. ठेढ़ी नाक वाला ।

निर्विशेष (वि०) [निवृत्तो विशेषो कस्मात् ब० स०] —अभिन्न, समान,—षः अन्तर का अभाव ।

निविष्ट (भू० क० कृ०) [नि+विश्+क्त] 1. स्थित, ऊपर बैठा हुआ 3. पड़ाव डाला हुआ—रघु० १०।६८ 3. स्थिर, तुला हुआ 4. संकेन्द्रित, दमन किया हुआ, नियंत्रित—कु० ५।३१ 5. दीक्षित 6. व्यवस्थित ।

निवीतम् [नि+व्ये+क्त, सम्प्रसारणम्] 1. यज्ञोपवीत पहनना (माला की भाँति गले में धारण करना) निवीतं मनुष्याणां प्राचोनावीतं पितृणामुपवीतं देवानाम् —जै० न्या० 2. धारण किया हुआ जनेऊ,—तः,—तम् परदा, अवगुंठन, आवरण' दुपट्टा ।

निवृत (भू० क० कृ०) [नि+वृ+क्त] घिरा हुआ, लपेटा हुआ,—तः,—तम्—अवगुंठन, परदा, आवरण ।

निवृतिः (स्त्री०) [नि+वृ+क्तिन्] आवरण, घेरा ।

निवृत्त (भू० क० कृ०) [नि+वृत्+क्त] 1. लौटा हुआ, वापिस आया हुआ 2. गया हुआ, विदा हुआ 3. रुका हुआ, परहेजगार, ठहरा हुआ, विरत 4. सांसारिक कार्यों से परहेज करने वाला, इस संसार से विरक्त, शान्त 5. असदाचरण के लिए पश्चात्ताप 6. समाप्त पूरा, समस्त, दे० नि पूर्वक वृत्,—त्तम् लौटना । सम०—आत्मन् (पुं०) 1. ऋषि २. विष्णु की उपाधि,—कारण (वि०) बिना किसी अन्य कारण या प्रयोजन के (—णः) धर्मात्मा मनुष्य, सांसारिक इच्छाओं से अप्रभावित,—मांस (वि०) जो माँस खाने से परहेज करता है, निवृत्तमांसस्तु जनकः —उत्तर० ४,—राग (वि०) जितेन्द्रिय—वृत्ति (वि०) किसी व्यवसाय से उपरत होनेवाला,—हृदय (वि०) हृदय में पछताने वाला ।

निवृत्तिः (स्त्री०) [नि+वृत्+क्तिन्] 1. लौटना, वापिस आना, लौट आना शि० १४।६४, रघु० ४।८७ 2. अन्तर्धान, विराम, उपरति स्थगन—शापनिवृत्तौ —श० ७, रघु० ८।८२ 3. काम से दूर रहना, निष्क्रियता (विप० प्रवृत्ति) 4. परहेज करना, अरुचि —प्राणाघातन्निवृत्तिः—भर्तृ० ३।३३ 5. छोड़ना, रुकना 6. वैराग्य, सांसारिक कार्यों से उपराम, शान्ति, संसार से वियुक्ति 7. विश्राम, आराम 8. आनन्द, कैवल्य 9. मुकरना, अस्वीकार करना 10. उन्मुलन, प्रतिरोध ।

निवेदनम् [नि+विद्+ल्युट्] 1. बतलाना, कहना, प्रकथन करना समाचार, उद्घोषणा 2. अर्पण करना, सौंपना 3. समर्पण 4. प्रतिनिधान 5. चढ़ावा या आहुति ।

निवेद्यम् [नि+विद्+ण्यत्] किसी देवमूर्ति को भोग लगाना—तु० 'नैवेद्य' ।

निवेशः [नि+विश्+घञ्] 1. प्रवेश, दाखला 2. पड़ाव डालना, ठहरना 3. ठहरने का स्थान, शिविर, खेमा सेनानिवेशं तुमुलं चकार—रघु० ५।४९,७।२, शि० १७।४०, कि० ७।२७ 4. घर, आवास, निवास कि० ४।१९ 5. विस्तार, (छाती को) सुडौलपना—कि० ४।८ 6. जमा करना, अर्पण करना 7. विवाह करना, विवाह, जीवन में स्थिर होना 8. छाप, नकल 9. सैन्यव्यवस्था 10. आभूषण, सजावट ।

निवेशनम् [नि+विश्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रवेश, दाखला 2. ठहरना, पड़ाव डालना 3. विवाह करना, विवाह 4. लेखबद्ध करना, शिला-लेखन 5. आवास, निवास, घर, आवास-स्थान 6. शिविर 7. कस्बा या नगर 8. घोंसला ।

निवेष्टः [नि+वेष्ट+घञ्] आवरण, लिफाफा ।

निवेष्टनम् [नि+वेष्ट+ल्युट्] ढकना, लिफाफे में बन्द करना ।

निश् (स्त्री०) (यह शब्द, कारक की दूसरी विभक्ति के द्वि० व० के पश्चात् सारी विभक्तियों में 'निशा' शब्द के स्थान में विकल्प में आदेश हो जाता है, पहले पांच वचनों में इसका कोई रूप नहीं होता) 1. रात 2. हल्दी ।

निशमनम् [नि+शम्+णिच्+ल्युट्] 1. देखना, अवलोकन करना 2. दर्शन, दृष्टि 3. सुनना 4. जानकार होना ।

निश (शा) रणम् [नि+शॄ+(णिच्)+ल्युट्] वध, हत्या ।

निशा [नितरां श्यति तनूकरोति व्यापारान्—शो+क तारा०] 1. रात—या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी—भग० २।६९ 2. हल्दी । सम०- **अटः**, —**अदनः** 1. उल्लू 2. राक्षस, भूत, पिशाच,—**अति**-

क्रमः,—कप्ययः,—अन्तः,—अवसानम्, 1. रात बिताना 2. पौ फटना—अदः— निशाद,—अंध (वि०) जिसे रतौंधा आता हो, रात का अंधा,—अधीशः, —ईशः,—नाथः,— पतिः,—मणिः,—रत्नम् चन्द्रमा, चाँद—अर्धकालः रात का पूर्वा भाग,—आख्या, —आह्वा हल्दी,—आदिः सांध्यकालीन प्रकाशः, —उत्सर्गः रात्रि का अवसान, पौ फटना—करः 1. चाँद—कु० ४।१३ 2. मुर्गा 3. कपूर,—गृहम् शयनागार,—चर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) रात में घूमने फिरने वाला, रात को चुपचाप पीछा करने वाला (—रः) 1. राक्षस, पिशाच, भूत, प्रेत—रघु० १२।६९ 2. शिव का विशेषण 3. गीदड़, 4. उल्लू 5. साँप 6. चक्रवाक 7. चौर °पतिः 1. शिव और 2. रावण का विशेषण (री) 1. राक्षसी 2. रात को निश्चित किये हुए समय पर अपने प्रेमी से मिलने के लिए जाने वाली स्त्री—रामगन्मथशरेण ताडिता दुःसहेन हृदये निशाचरी—रघु० ११।२० (यहां पर यह शब्द 'प्रथम अर्थ' के लिए भी प्रयुक्त है) 3. वेश्या, —चर्मन् (पुं०) अंधकार,—जलम् ओस, कोहरा, —दर्शिन् (पुं०) उल्लू, —निशम् (अव्य०) पर रात, सदैव—पुष्पम्, सफेद कमलिनी (रात को खिलने वाली) 2. पाला, ओस,—मुखम् रात्रि का आरम्भ, —मृगः गीदड़—वनः क्षण,—विहारः पिशाच, राक्षस —प्रचक्रतू रामनिशाविहारी—भट्टि० २।३६,—वेदिन् (पुं०) मुर्गा,—हसः श्वेत कमल, कुमुद (रात को खिलने वाला)।

निशात (भू० क० कृ०) [नि+शो+क्त] 1. पहनाया हुआ, शान पर चढ़ा कर तेज किया हुआ, तेज—कि० १४।३० 2. चमकाया गया, झलकाया हुआ उज्ज्वल।

निशानम् [नि+शो+ल्युट्] पहनाना, शान पर चढ़ाकर तेज करना।

निशांत (भू० क० कृ०) [नि+शम्+क्त] शांतियुक्त, शांत, चुपचाप, सहनशील,—तम् घर, आवास, निवास —रघु० १६।४०।

निशामः [नि+शम्+घञ्] निरीक्षण करना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, दर्शन करना।

निशामनम् [नि+शम्+णिच्+ल्युट्] 1. दर्शन करना, अवलोकन करना 2. दृष्टि 3. सुनना 4. बार २ निरीक्षण करना 5. छाया, प्रतिबिंब।

निशित (वि०) [नि+शो+क्त] पैना किया हुआ, शान पर तेज किया हुआ—निशितनिपाताः शराः— श० १।१० 2. उद्दीपित,—तम् लोहा।

निशीथः [निशेरते जना अस्मिन्—निशी अधारे यक —तारा०] 1. आधीरात —निशीथदीपाः सहसा हतत्विषः—रघु० ३।१५, मेघ० ८८ 2. सोने का समय, रात—शुचौ निशीथेऽनुभवंति कामिनः—ऋतु० १।३, अमरु० ११।

निशीथिनी, निशीथ्या [निशीथ+इनि+ङीप्, निशीथ +यत्+टाप्] रात।

निशुंभः [नि+शुम्भ्+घञ्] 1. वध, हत्या—मा० ५।२२ 2. तोड़ना, (धनुष आदि का) झुकाना —महावी० २।३३ 3. एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गा ने मार दिया था। सम०—मथनी,—मर्दनी दुर्गा का विशेषण।

निशुंभनम् [नि+शुभ्+ल्युट्] वध करना, हत्या करना।

निश्चयः [निस्+चि+अप्] 1. जांचपड़ताल, खोज, पूछंताछ 2. स्थिर मत, दृढ़ विश्वास, पक्का भरोसा 3. निर्धारण, दृढ़ संकल्प, दृढ़ता—एष मे स्थिरो निश्चयः—मुद्रा० १ 4. निश्चिति, स्पष्टता, असंदिग्ध, परिणाम 5. पक्का इरादा, योजना, प्रयोजन, उद्देश्य—कैकेयी क्रूरनिश्चया—रघु० १२।४, कु० ५।५।

निश्चल (वि०) [निस्+चल्+अच्] 1. अचर, स्थिर, अटल, अडिग 2. अपरिवर्त्य, अपरिवर्तनीय—भग० २।५३,—ला पृथ्वी। सम०—अंग (वि०) दृढ़ शरीरवाला, मजबूत (गः) 1. सारस की एक जाति 2. चट्टान, पहाड़।

निश्चायक (वि०) [निस्+चि+ण्वुल्] निर्धारक, निर्णयात्मक, अन्तिम या निश्चयात्मक।

निश्चारकम् [निस्+चर्+ण्वुल्] 1. मलोत्सर्ग करना 2. हवा, वायु 3. हठ, स्वेच्छाचारिता।

निश्चित (भू० क० कृ०) [निस्+चि+क्त] निश्चित किया हुआ, निर्धारित किया हुआ, फैसला किया, तय किया हुआ, समापन किया हुआ (कर्तृवा० में भी प्रयुक्त) अरावणमरामं वा जगदद्येति निश्चितः—रघु० १२।८३, —तम् निश्चय, निर्णय,—तम् (अव्य०) निःसन्देह, निश्चित रूप से, अवश्यमेव।

निश्चितिः (स्त्री०) [निस्+चि+क्तिन्] 1. निश्चय करना, निर्णय करना 2. निर्धारण, दृढ़ संकल्प।

निश्रमः [नि+श्रम्+घञ्] किसी कार्य पर किया गया परिश्रम, अध्यवसाय, अनवरत परिश्रम।

निश्रयणी, निश्रेणि, निश्रेणी [नि+श्रि+ल्युट्+ङीप्, नि+श्रि+नि, ङीप् वा] सीढ़ी, जीना, तु० 'निःश्रयणी'।

निश्वासः [नि+श्वस्+घञ्] साँस खींचना, साँस लेना, आह भरना—तु० 'निःश्वास'।

निषंगः [नि+सञ्ज्+घञ्] 1. आसक्ति, संलग्नता 2. सम्मिलन, साहचर्य 3. तरकस—शि० १०।३४, कि० १७।३६, रघु० २।३०, ३।३४।

निषंगथिः [नि+सञ्ज्+घथिन्] 1. आलिंगन 2. धनुर्धर 3. सारथि 4. रथ, गाड़ी।

निषंगिन् (अव्य०) [निषङ्ग+इनि] 1. आसक्त, संलग्न —शि० १२।२६ 2. तरकसधारी—पुं० 1. धानुष्क, धनुर्धर 2. तरकस 3. खड्गधारी।

निषण्ण (भू० क० कृ०) [नि+सद्+क्त] 1. बैठा हुआ, आसीन, विश्रान्त, आश्रित,—रघु० ९।७६, १३।७५ 2. सहारा दिया हुआ 3. गया हुआ 4. खिन्न, कष्टग्रस्त, नतमुख—तु० 'विषण्ण'।

निषण्णकम् [निषण्ण+कन्] आसन।

निषद्या [नि+सद्+क्यप्+टाप्] 1. खटोला, पीला 2. व्यापारी का कार्यालय, दुकान 3. मंडी, हाट —शि० १८।१५।

निषद्वरः [नि+सद्+ष्वरच्] 1. गारा, दलदल 2. कामदेव,—री रात।

निषधः (ब० व०) [नि+सद्+अच्, पृषो०] नल द्वारा शासित एक देश तथा उसके निवासियों का नाम,—धः 1. निषध देश का शासक 2. पहाड़ का नाम।

निषादः [नि+सद्+घञ्] 1. भारत की एक जंगली आदिम जाति, जैसे शिकारी, मछुवे आदि, पहाड़ी —मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः —रामा० रघु० १४।५२, ७० 2. पतित जाति का मनुष्य, चाण्डाल, एक वर्णसंकर जाति 3. विशेषकर शूद्रा स्त्री से ब्राह्मण का पुत्र—मनु० १०।८ 4. (संगीत में) हिन्दूसरगम का पहला (यदि उपयुक्तता के अधिक निकट हो तो—अन्तिम या सप्तम) स्वर—गीतकलाविन्यासमिव निषादानुगतम्—का० २१, (यहाँ यह प्रथम भी रखती है)।

निषादित [नि+सद्+णिच्+क्त] 1. बैठाया हुआ 2. कष्टग्रस्त, दुखी।

निषादिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [निषाद+इनि] बैठने वाला या लटने वाला, विश्राम करने वाला, आराम करने वाला—रघु० १।५२, ४।२, (पुं०) महावत,—शि० ५।४१।

निषिद्ध (वि०) [नि+सिध्+क्त] 1. मना किया हुआ, प्रतिषिद्ध, दूर हटाया हुआ, रोका हुआ—दे० नि पूर्वक सिध्।

निषिक्त (भू० क० कृ०) [नि+सिच्+क्त] 1. छिड़का हुआ 2. भरा हुआ, टपकाया हुआ, उँडेला हुआ, व्याप्त किया हुआ।

निषिद्धिः [नि+सिध्+क्तिन्] 1. प्रतिषेध, दूर रखना, दूर हटाना 2. प्रतिरक्षा।

निषूदनम् [नि+सूद्+णिच्+ल्युट्] वध करना, हत्या करना—नः वधिक जैसा कि 'बलवृत्रनिषूदन' में।

निषेकः [नि+सिच्+घञ्] 1. छिड़कना, तर करना —मुखसलिलनिषेकः—ऋतु० १।२८ 2. बूंद २ टपकना, रिसना, झरना, तैलनिषेकबिंदुना—रघु० ८।३८, टपकते हुए तेल की एक बूंद 3. स्राव, प्रस्राव 4. वीर्यपात, वीर्यसिंचन, गर्भवती करना, बीज—कु० २।१६, रघु० १४।६० 5. सिंचाई, 6. प्रक्षालन के लिए जल 7. वीर्य की अपवित्रता 8. मैला पानी।

निषेधः [नि+सिध्+घञ्] 1. प्रतिषेध, दूर रखना, दूर हटाना, रोकना, प्रतिरोध 2. प्रत्याख्यान, मुकरना 3. नकारात्मक अव्यय—द्वौ निषेधौ प्रकृतार्थं गमयतः 4. प्रतिषेधक नियम (विप० विधि) 5. नियम से व्यतिक्रम करना, अपवाद।

निषेवक [नि+सेव्+ण्वुल्] 1. अभ्यास करने वाला, अनुगमन करने वाला, भक्त, अनुरक्त 2. बार २ आने वाला, बसने वाला, आश्रयग्रहण करने वाला 3. उपभोग करने वाला।

निषेवणम्, निषेवा [नि+सेव्+ल्युट्, अ+टाप् वा] 1. सेवा करना, नौकरी, हाज़री में खड़े रहना 2. पूजा, आराधना 3. अभ्यास, अनुष्ठान 4. आसक्ति, लगाव 5. रहना, बसना, उपभोग करना, उपयोग में लाना 6. परिचय, उपयोग।

निष्क् (चुरा० आ०—निष्कयते) तोलना, मापना।

निष्कः,—कम् [निष्क्+अच्] 1. स्वर्णमुद्रा (भिन्न-भिन्न मूल्य की, परन्तु सामान्यरूप १६ माशे या एक कर्ष के तोल के सोने के बराबर) 2. १०८ से १५० कर्ष के तोल का सोना 3. छाती या कण्ठ में पहनने का स्वर्णभूषण 4. सोना,—ष्कः चांडाल।

निष्कर्षः [निस्+कृष्+घञ्] 1. बाहर निकालना, निचोड़ना 2. सत्, सारभूत अर्थ, तत्त्व—इति निष्कर्षः (भाष्यकारों द्वारा बहुधा प्रयुक्त)—मनु० ५।१२५, भामा० १३८ 3. मापना 4. निश्चय, जाँचपड़ताल।

निष्कर्षणम् [निस्+कृष्+ल्युट्] 1. बाहर निकालना, निचोड़ना, खींचना—रघु० १२।९७, 2. घटाना।

निष्कालनम् [निस्+कल्+णिच्+ल्युट्] (गाय भैंसों को) हांक कर दूर करना 2. वध, हत्या।

निष्कासः (सः) [निस्+काश् (स्)+घञ्] 1. बाहर निकलना, निर्गम, निकास 2. प्रासाद आदि का द्वारमण्डप 3. प्रभात 4. अन्तर्धान।

निष्कासित (भू० क० कृ०) [निस्+कस्+णिच्+क्त] 1. निर्वासित, बाहर निकाला हुआ, हांक कर बाहर किया हुआ 2. बाहर गया हुआ, बाहर निकाला हुआ, 3. रक्खा हुआ, जमा किया हुआ 4. ठहराया हुआ, नियत किया हुआ, 5. खोला हुआ, खिला हुआ, फैलाया हुआ 6. बुराभला कहा हुआ, झिड़का हुआ।

निष्कासिनी [निस्+कस्+णिनि+ङीप्] वह दासी जो अपने स्वामी के नियंत्रण में न हो।

निष्कुटः [निस्+कुट्+क] 1. घर से लगा हुआ प्रमद-

वन, क्रीडोद्यान 2. खेत 3. स्त्रियों का रनवास, राजा का अन्तःपुर 4. दरवाज़ा 5. वक्ष की कोटर ।

निष्कुटिः,–टी (स्त्री०) [निस्+कुट्+इन्, स्त्रियाँ ङीप्] बड़ी इलायची ।

निष्कुषित (भू० क० कृ०) [निस्+कुष्+क्त] 1. फाड़ा हुआ, बलात् वाहर खींचा हुआ, विदीर्ण—रघु० ७।५० 2. निकाला हुआ, निर्वासित—दे० निस् पूर्वक 'कुष्' ।

निष्कुहः [निस्+कुह्+अच्] वृक्ष की कोटर—तु० 'निष्कुट' ।

निष्कृत (भू० क० कृ०) [निस्+कृ+क्त] 1. ले जाया गया, हटाया गया 2. जिसने प्रायश्चित्त कर लिया है, दोषमुक्त, क्षमा किया गया,—तम् प्रायश्चित्त या परिशोधन ।

निष्कृतिः (स्त्री०) [निश्+कृ+क्तिन्] 1. प्रायश्चित्त, परिशोधन पंच० ३।१५७ 2. निस्तार, प्रतिदान, ऋणशोधन, कर्तव्यसम्पादने-न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्ष शतैरपि—मनु० २।२२७, ३।१९, ८।१०५, ९।१९, ११।२७ 3. हटाना 4. आरोग्यलाभ, चिकित्सा, प्रतीकार 5. टालना, वचना 6. अपेक्षा करना 7. बुरा चालचलन, बदमाशी ।

निष्कृष्ट (भू० क० कृ०) [निस्+कृष्+क्त] 1. उखाड़ा हुआ, खींच कर बाहर निकाला हुआ, उद्धृत 2. संक्षिप्तावृत्ति ।

निष्कोषः, निष्कोषणम् [निस्+कुष्+क्त ल्युट् वा] 1. फाड़ना, खींचकर वाहर निकालना, उखाड़ना, उन्मूलन करना 2. भूसी निकालना, छिल्का उतारना ।

निष्कोषणकम् [निष्कोषण+कन्] दांत खुरचनी—पंच० १।७१ ।

निष्क्रमः [निस्+क्रम्+घञ्] 1. बाहर जाना, निकलना 2. विदा होना, निर्गमन करना 3. एक संस्कार (चौथे मास में शिशु को) पहली बार खुली हवा में निकालना, चतुर्थे मासि निष्क्रमः—याज्ञ० १।१२, तु० 'उपनिष्क्रमण' से भी 4. पतित होना, जाति भ्रष्टता, जाति-हीनता 5. बौद्धिक शक्ति ।

निष्क्रमणम् [निस्+क्रम्+ल्युट्] 1. आगे या बाहर जाना 2. एक संस्कार (इसमें नवजात वालक को चौथे मास में पहली बार खुली हवा में निकाला जाता है) चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात्—मनु० २।३४ ।

निष्क्रमणिका [निष्क्रमण+कन्+टाप्, इत्वम्] दे० निष्क्रम (३) ।

निष्क्रयः [निस्+क्री+अच्] निस्तार, छुटकारा, बन्दी का उद्धार-मूल्य—ददौ दत्तं समुद्रेण पीतेनेवात्मनिष्क्रयम्—रघु० १५।५५, २।५५, ५।२२, मुद्रा० ६।२० 2. पुरस्कार 3. भाड़ा, मजदूरी 4. अदायगी, चुनौती—शि० १।५० 5. अदला-बदली, विनिमय ।

निष्क्रयणम् [निस्+क्री+ल्युट्] निस्तार, छुटकारा, बन्दी का उद्धार-मूल्य ।

निष्क्वाथः [निस्+क्वथ्+घञ्] 1. काढ़ा 2. रसा, शोरवा ।

निष्टपनम् [निस्+तप्+ल्युट्] जलन, ।

निष्टानकः [निस्+तानकः] घनध्वनि, कलकल ध्वनि, मरमरध्वनि ।

निष्ठ (वि०) [नितरां तिष्ठति—नि+स्था+क] (प्रायः समास के अंत में) 1. अन्दर रहने वाला, स्थित—वन्निष्ठे फेने 2. निर्भर, आश्रित, संकेत करने वाला या संबंध रखने वाला—तमोनिष्ठाः—मनु० १२।९५ 3. भक्त, अनुरक्त, अभ्यास करने वाला, इरादा—सत्यनिष्ठ 4. कुशल 5. आस्था रखने वाला—धर्मनिष्ठ,—ष्ठा 1. अवस्था, दशा 2. स्थैर्य, दृढ़ता, स्थिरता—नभो निष्ठा-शून्यं भ्रमति च किमप्यालिखति च—मा० १।३१ 3. भक्ति, श्रद्धा, घनिष्ठ अनुराग 4. विश्वास, दृढ़ भक्ति, आस्था—शास्त्रेषु निष्ठा—मा० ३।११, भग० ३।३ 5. श्रेष्ठता, कुशलता, प्रवीणता, पूर्णता 6. उपसंहार, अन्त, अवसान—अत्यारूढिर्भवति महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा—श० ४ 7. उत्क्रान्ति या नाटक का अन्त 8. निष्पत्ति, संपूर्ति—मनु० ८।२२७ 9. चरम विन्दु 10. मृत्यु, विनाश, प्रलय 11. स्थिर या निश्चित ज्ञान, निश्चिति 12. भिक्षा मांगना 13. भोगना, कष्ट उठाना, दुःख, चिन्ता 14. (व्या०) क्त, क्तवतु (त और तवत्) के लिए पारिभाषिक शब्द ।

निष्ठानम् [नि+स्था+ल्युट्] चटनी, मसाला ।

निष्ठी (ष्ठे) वः,—वम्, निष्ठी (ष्ठे) वनम् निष्ठीवितम् [नि+ष्ठिव्+घञ्, दीर्घः, दीर्घाभावे गुणः; ल्युट् वा, दीर्घः पक्षे गुणः; क्त, दीर्घश्च] थूक देना, थूकना—भर्तृ० १।९२ ।

निष्ठुर (वि०) [नि+स्था+उरच्] 1. कठोर, कर्कश, उजड्ड, रूखा 2. कड़ा, तेज, (हवा के झोंके की भांति) तीक्ष्ण—शि० ५।४९ 3. क्रूर, कठोर, पाषाणहृदय (पुरुषों के विषय में) व्यवसायः प्रतिपत्तिनिष्ठुरः रघु० ८।६५, ३।६२ 4. उद्धत ।

निष्ठ्यूत (भू० क० कृ०) [नि+ष्ठिव्+क्त, ऊठ्] हुआ, चूआ हुआ, फेंका हुआ—निष्ठ्यूतश्चरणोपयोगसुलभो लाक्षारसः केनचित्—श० ४।५, रघु० २।७५, शि० ३।१० ।

निष्ठ्यूतिः (स्त्री०) [नि+ष्ठिव्+क्तिन्, ऊठ्] थूक, खकार ।

निष्ण, निष्णात (वि०) [नि+स्ना+क, क्त वा] चतुर, कुशल, विज्ञ, दक्ष, सुपरिचित, विशेषज्ञ—निष्णातोऽपि च वेदांते साधुत्वं नैति दुर्जनः—भामि० १।८७,

भाट्टि० २।२६, शि० ८।६३, मनु० २।६६, ६।३० 2. प्रकाशित, सम्पन्न, निष्पन्न—मा० १०।२४ (निःशंकं विहितः—जगद्धर 3. बढ़िया, पूर्ण ।

निष्पक्व (वि०) [निस्+पच्+क्त] 1. काढ़ा बनाया हुआ, जल में भिगोया हुआ 2. भली प्रकार पकाया हुआ ।

निष्पतनम् [निस्+पत्+ल्युट्] 1. झपट कर निकलना, शीघ्रता से बाहर जाना ।

निष्पत्तिः (स्त्री०) [निस्+पद्+क्तिन्] 1. जन्म, उत्पादन—शस्यनिष्पत्तिः 2. परिपक्वावस्था, परिपाक—कु० २।३७ 3. पूर्णता, समापन 4. संपूर्ति, संपन्नता, समाप्ति ।

निष्पन्न (भू० क० कृ०) [निस्+पद्+क्त] 1. जन्मा हुआ, उदित, उद्गत, पैदा हुआ 2. कार्यान्वित हुआ, पूरा हुआ, संपन्न 3. तत्पर ।

निष्पवनम् [निस्+पू+ल्युट्] फटकना ।

निष्पादनम् [निस्+पद्+णिच्+ल्युट्] 1. कार्यान्वयन, निष्पत्ति 2. उपसंहरण 3. उत्पादन, पैदा करना ।

निष्पावः [निस्+पू+घञ्] 1. फटकना, अनाज साफ करना 2. छाज से उत्पन्न होने वाली वायु 3. हवा ।

निष्पीडित (भू० क० कृ०) [निस्+पीड्+णिच्+क्त] निचोड़ा हुआ, भींचा हुआ,—निष्पीडितेंदुकरकंदलजो नु सेकः—उत्तर० ३।११ ।

निष्पेषः, निष्पेशणम् [निस्+पिष्+घञ्, ल्युट् वा] 1. मिलाकर रगड़ना, पीसना, चूर-चूर करना, कुचलना—भुजांतरनिष्पेषः—वेणी० ३ 2. खोटना या कूटना, आघात करना, रगड़ देना—रघु० ४।७७, महावी० १।३४, का० ५६ ।

निष्प्रवाणम्–णि (नपुं०) [निस्+प्र+वे+ल्युट्, निर्गता प्रवाणी तन्तुवाप शलाका अस्मात् अस्य वा नि० साधुः] नया कोरा कपड़ा, °युगलम्—दश० ।

निस् (अव्य०) [निस्+क्विप्] 1. उपसर्ग के रूप में यह धातुओं के पूर्व लग कर वियोग (से दूर, के बाहर), निश्चिति, पूर्णता, उपभोग, पार करना, अतिक्रमण आदि अर्थों को बतलाता है, उदाहरण दे० पीछे 'निर्' के अन्तर्गत 2. संज्ञा शब्दों के पूर्व उपसर्ग के रूप म प्रयुक्त, होकर बहुत से नाम और विशेषण बनाता है तथा निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) 'में से' 'से दूर' जैसा कि 'निर्वन्, निष्कौशाम्बि' या (ख) अधिक प्रचलित 'नहीं' 'के बिना' 'से शून्य' (अभावात्मकता पर बल देने वाला), निःशेष—बिना शेष के, निष्फल, निर्जल आदि (विशे० समासों में निस् का स् स्वरों के, अथवा वर्ग के तीसरे, चौथे या पांचवें वर्ण, या य र ल व ह् में से कोई वर्ण, परे होने पर, बदल कर र हो जाता है, दे० निर्, ऊष्म वर्णों के परे होने पर विसर्ग, च् छ् से पूर्व श् तथा क् और प् से पूर्व ष् हो जाता है, दे० दुस्) । सम०— **कंटक** (निष्कंटक) (वि०) 1. बिना कांटों का 2. कांटों से या शत्रुओं से युक्त, भय तथा उत्पातों से मुक्त,—**कंद** (निष्कंद) (वि०) भक्ष्य मूलों के बिना,—**कपट** (निष्कपट) (वि०) निश्छल, शुद्ध हृदय,—**कंप** (निष्कंप) (वि०) गतिहीन, स्थिर, अचर—निष्कंपचामरशिखा—श० १।८, कु० ३।४८,—**करुण** (निष्करुण (वि०) निर्दय, निर्मम, क्रूर,—**कल** (निष्कल) (वि०) 1. अखंड, अविभक्त, समस्त 2. प्राप्तक्षय, क्षीण, न्यून 3. पुंस्त्वहीन, ऊसर 4. विकलांग–(**लः**) 1. आधार 2. योनि, भग 3. ब्रह्मा (—**ला,–ली**) एक बूढ़ी स्त्री जिसके बच्चे होने बन्द हो गये हों, या जिसे अब रजोधर्म न होता हो,—**कलंक** (निष्कलंक) (वि०) निर्दोष, कलंक से रहित,—**कषाय** (निष्कषाय) (वि०) मैल तथा दुर्वासनाओं से मुक्त,—**काम** (निष्काम) (वि०) 1. कामना या अभिलाषरहित, निरिच्छ, निस्वार्थ, स्वार्थरहित 2. संसार की सब प्रकार की इच्छाओं से मुक्त (अव्य०—**मम्**) 1. बिना इच्छा के 2. अनिच्छा पूर्वक,—**कारण** (निष्कारण) (वि०) 1. बिना कारण के, अनावश्यक 2. निस्स्वार्थ, निष्प्रयोजन—निष्कारणो बंधुः 3. निराधार, हेतुरहित (अव्य० **णम्**) बिना किसी कारण या हेतु के, कारण के अभाव में, अनावश्यक रूप से,—**कालकः** (निष्कालकः) पश्चात्ताप में रत (अपराधी) जिसके बाल, रोएँ सब मूंड कर घी लगाया गया हो,—**कालिक** (निष्कालिक) (वि०) 1. जिसकी जीवनचर्या समाप्त हो गई, जिसके दिन इने गिने हों 2. जिसे कोई जीत न सके, अजेय,—**किंचन** (निष्किंचन) (वि०) जिसके पास एक पैसा भी न हो, धनहीन, दरिद्र,—**कुल** (निष्कुल) (वि०) जिसका कोई बन्धुबान्धव न रहा हो, संसार में अकेला रह गया हो (निष्कुलं कृ पूर्ण रूप से संबंध विच्छेद करना, निर्मूल कर देना; **निष्कुला कृ** 1. किसी के परिवार को तहस-नहस कर देना 2. छिल्का उतारना, भूसी अलग करना—निष्कुलाकरोति दाडिमम्—सिद्धा०),—**कुलीन** (निष्कुलीन) (वि०) नीच कुल का,—**कूट** (निष्कूट) (वि०) छलरहित, ईमानदार, निर्दोष,—**कृप** (निष्कृप) (वि०) निर्मम, निर्दय, क्रूर,—**कैवल्य** (निष्कैवल्य) (वि०) 1. केवल, विशुद्ध, निरपेक्ष 2. मोक्ष से वञ्चित, मोक्षहीन,—**कौशांबि** (निष्कौशांबि) (वि०) जो कौशांबि से बाहर चला गया है,—**क्रिय** (निष्क्रिय) (वि०) 1. क्रियाहीन 2. जो धार्मिक संस्कारों का अनुष्ठान न करता हो,—**क्षत्र** (निःक्षत्र),—**क्षत्रिय** (निःक्षत्रिय) (वि०) सैन्यजाति

से रहित,—क्षेपः (निःक्षेपः) =निक्षेप,—चक्रम् (निश्चक्रम्) (अव्य०) पूर्ण रूप से,—चक्षुस् (निश्चक्षुस्) (वि०) अन्धा, बिना आँखों का,—चत्वारिंश (निश्चत्वारिंश) (वि०) जिसने चालीस पार लिये हों,—चितं (निश्चितं) (वि०) 1. चिन्ताओं से मुक्त, असंबद्ध, सुरक्षित 2. विचारहीन, चिंतन शून्य,—चेतन (निश्चेतन) चेतनारहित,—चेतस् (नश्चेतस्) (वि०) जो अपने ठीक होश में न हो,—चेष्ट (निश्चेष्ट) (वि०) गतिहीन, निःशक्त,—चेष्टाकरण (निश्चेष्टाकरण) (वि०) किसी को गति से वञ्चित करना, गतिहीनता का उत्पादक (कामदेव के एक बाण का विशेषण),—छंदस् (निश्छंदस्) (वि०) जो वेदों का अध्ययन न करता हो,—छिद्र (निश्छिद्र) (वि०) 1. जिसमें सूराख न हो 2. निर्दोष 3. निर्बाध, क्षतिरहित,—तंतु (वि०) जिसके कोई सन्तान न हो, निस्सन्तान,—तन्द्र (वि०) जो आलसी न हो, फुर्तीला, स्वस्थ,—तमस्क,—तिमिर (वि०) अंधकार मुक्त, प्रकाशमान् 2. पाप और नैतिक मलिनताओं से मुक्त,—तर्क्य (वि०) कल्पनातीत, अचिन्तनीय,—तल (वि०) 1. गोल, वर्तुलाकार—मुक्ताकलापस्य च निस्तलस्य—कु० १।४२ 2. हिलने वाला, कांपने वाला, डोलने वाला 3. तलीरहित,—तुष (वि०) 1. भूसी से वियुक्त 2. विशुद्ध, स्वच्छ सरलीकृत,° क्षीरः गेहूँ,° रत्नम् स्फटिक,—तेजस् वि०) निरग्नि, ताप या शक्ति रहित, निःशक्त, पुंस्त्वहीन 2. उत्साहित, मन्द 3. गूढ़,—त्रप (वि०) ढीठ, निर्लज्ज,—त्रिंश (वि०) 1. तीस से अधिक —निस्त्रिंशानि वर्षाणि चैत्रस्य—पा० ४।४।७३, सिद्धा० 2. निर्मम, निर्दय, क्रूर—अमरु ५ (—शः) तलवार°भृत् (पुं०) कृपाणधारी,—त्रैगुण्य (वि०) तीन गुणों सत्त्व, रजस् तथा तमस्) से शून्य,—पंक (निष्पंक) (वि०) कीचड़ से मुक्त, स्वच्छ, शुद्ध,—पताक (निष्पताक) (वि०) बिना किसी झंडे के,—पतिसुता (निष्पतिसुता) वह स्त्री जिसके न कोई पुत्र हो, न पति,—पत्र (निष्पत्र) (वि०) 1. जिसमें कोई पत्ता न हो 2. जिसके पंख न हों, बिना पंखों का (निष्पत्रा कृ बाण से इस प्रकार बींधना जिससे कि पंख विद्ध जन्तु के आर पार निकल जाय, अत्यन्त पीड़ा पहुँचाना (आलं०) निष्पत्राकरोति (मृगं व्याधः) (सपुंखस्य शरस्य अपरपार्श्वे निर्गमनान्निष्पत्र करोति—सिद्धा०), एकश्च मृगः सपत्राकृतोऽन्यश्च निष्पत्राकृतोऽपतत्—दश० १६५, इसी प्रकार—यांती गुरुजनैः साकं स्मयमानाननांबुजा, तिर्यग्ग्रीवं यदद्राक्षीत्तन्निष्पत्राकरोज्जगत्—भामि० २।१३२,—पद (निष्पद) (वि०) बिना पैरों का (दम्) एक गाड़ी जो बिना पैरों या बिना पहियों के चले,—परिकर (निष्परिग्रह) (वि०) बिना तैयारी के,—परिग्रह (निष्परिग्रह) जिसके पास किसी प्रकार की संपत्ति न हो,—मुद्रा० 2. (हः) वह संन्यासी जिसने न तो विवाह किया हो, न जिसका कोई आश्रित हो और न जिसके पास कुछ सामान हो,—परिच्छद (निष्परिच्छद) (वि०) जिसका कोई अनुचर या पिछलगुआ न हो,—परीक्ष (निष्परीक्ष) (वि०) जो यथार्थ या सही सही परख न करे,—परीहार (निष्परीहार) (वि०) जो सावधानी न रक्खे,—पर्यंत (निष्पर्यंत),—पार (निष्पार) (वि०) सीमा रहित, असीमित०,—पाप (निष्पाप) (वि०) पापरहित, निर्दोष, पवित्र,—पुत्र (निष्पुत्र) (वि०) पुत्र रहित, निस्सन्तान,—पुरुष (निष्पुरुष) (वि०) 1. निर्जन, बिना किसी असामी के, उजाड़ 2. पुंसन्तान हीन 3. जो पुंलिंग न हो, स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग ((षः) 1. हीजड़ा 2. कायर,—पुलाक (निष्पुलाक) बिना पुराली का, बिना भूसी का,—पौरुष (निष्पौरुष) (वि०) पौरुषहीन,—प्रकंप (निष्प्रकंप) (वि०) स्थिर, अचर, गतिहीन,—प्रकारक (निष्प्रकारक) (वि०) जातिभेदरहित, वैशिष्ट्यरहित, पूर्ण —निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पम्—तर्क०,—प्रकाश (निष्प्रचार) (वि०) पारदर्शक, अस्पष्ट, अंधकारमय,—प्रचार (निष्प्रचार) (वि०) 1. न हिलने डुलने वाला 2. एक ही स्थान पर स्थिर रहने वाला 2. संकेन्द्रित, जमाया हुआ, स्थिर किया हुआ,—प्रति (ती) कार (निष्प्रति) (ती) कार),—प्रतिक्रिय (निष्प्रतिक्रिय) (वि०) 1. जिसकी चिकित्सा न हो सके, जिसका कोई प्रतिकार न हो सके—सर्वथा निष्प्रतिकारेयमापदुपस्थिता—का० १५१ 2. निर्बाध, बाधारहित (अव्य०रम्) बिना किसी विघ्न के,—प्रतिघ (निष्प्रघ) (वि०) विघ्नरहित, निर्बाध, बाधाशून्य—रघु० ८।७१,—प्रतिद्वन्द्व (निष्प्रतिद्वन्द्व) (वि०) 1. शत्रुरहित, निर्विरोध 2. बेजोड़, अप्रतिम, अनुपम,—प्रतिभ (निष्प्रतिभ) (वि०) 1. कान्तिशून्य 2. प्रज्ञाहीन जो प्रत्युत्पन्नमति न हो, मन्द बुद्धि, जड़ 3. उदासीन,—प्रतिभान (निष्प्रतिभान) (वि०) कायर, भीरु,—प्रतीप (निष्प्रतीप) (वि०) 1. सीधा सामने देखने वाला, पीछे मुड़कर न देखने वाला 2. (दृष्टि) असंबद्ध,—प्रत्यूह (निष्प्रत्यूह) (वि०) निर्विघ्न, अबाध,—प्रपंच (निष्प्रपंच) 1. विस्तारहीन 2. छल कपट से रहित, ईमानदार,—प्रभ (निःप्रभ या निष्प्रभ) (वि०) 1. कान्तिविहीत, विवर्ण दिखाई देने वाला—रघु० ११।८१ 2. शक्तिरहित 3. निस्तेज, द्युतिहीन, अन्धकारमय,—प्रमाणक (निष्प्रमाणक)

(वि०) विना अधिकार का,—प्रयोजन (निष्प्रयोजन) (वि०) 1. निरुद्देश्य, जो किसी प्रयोजन से प्रभावित न हो 2. निष्कारण, निराधार 3. व्यर्थ 4. अनुपयोगी, अनावश्यक (अव्य०—नम्) बिना कारण या हेतु के, बिना किसी मतलब के–मुद्रा० ३,—प्राण (निष्प्राण) (वि०) प्राणहीन, निर्जीव, मृतक,—फल (निष्फल) (वि०) 1. जिसका कोई फल न निकले, फलहीन, (आलं० भी) असफल—निष्फलारंभयत्नाः—मेघ० ५४ 2. अनुपयोगी, विना लाभ का, निरर्थक–कु० ४।१३ 3. बाझ, ऊसर 4. (शब्द) निरर्थक 5. बिना बीज का, निर्वीर्य (—ला,ली) स्त्री जिसके सन्तान होना बन्द हो गया हो,—फेन (निष्फेन) (वि०) बिना झागों का,—शब्द (निःशब्द) (वि०) जो शब्दों में व्यक्त न किया गया हो, शब्दरहित—निः शब्दं रोदितुमारेभे—का० १४३,—शलाक (निः शलाक) (वि०) अकेला, एकांतसेवी, निवृत्त—(कम्) निर्जन स्थान, एकान्तस्थान—अरण्ये निःशलाके वा मंत्रयेदविभावितः—मनु० ७।१४७,—शेष (निः शेष) (वि०) बिना कुछ शेष रहे, पूर्ण, समस्त, पूरा,—निः शेषविश्राणितकोशजातम् – रघु० ५।१,—शोध्य (निःशोध्य) (वि०) धोया हुआ, स्वच्छ,—संशय (निःसंशय) (वि०) 1. असन्दिग्ध, निश्चित 2. सन्देहरहित, आशंकारहित, संदेहशून्य—रघु० १५।७९ (अव्य०—यम्) निस्सन्देह, असन्दिग्ध रूप से, निश्चित रूप से, अवश्य,—संग (निःसंग) (वि०) 1. अनासक्त, भक्तिरहित, अनपेक्ष, उदासीन—यन्निःसंगस्त्वं फलस्यानतेभ्यः—कि० १८।२४ 2. सांसारिक आसक्तियों से मुक्त 3. निर्लिप्त, वियुक्त, अनुरागशून्य 4. अबाध (अव्य—गम्) निस्स्वार्थ भाव से—संज्ञ (निःसंज्ञ) (वि०) बेहोश,—सत्त्व (निःसत्त्व) (वि०) 1. सत्त्वरहित, दुर्बल, पुंस्त्वहीन 2. नीच, नगण्य, अधम 3. सत्ताहीन, असार 4. जीवित प्राणियों से वंचित (—त्वम्) 1. शक्ति या ऊर्जा का अभाव 2. सत्ताहीनता 3. नगण्यता,—संतति (निस्संतति), संतान (निस्सन्तान) (वि०) जिसके कोई सन्तान न हो, सन्ततिरहित,—संदिग्ध (निस्सन्दिग्ध),—संदेह (निस्सन्देह) (वि०) दे० निःसंशय,—सन्धि (निस्संधि, निःसंन्धि) (वि०) जिसमें दिखाई देने वाली कोई गांठ न हो, संहत, सघन, सटा हुआ,—सपत्न (निः सपत्न) (वि०) 1. जिसका कोई शत्रु न हो—घनरुचिरकलापो निःसपत्नोऽद्य जातः—विक्रम० ४।१० 2. जिसका कोई और दावेदार न हो, जो सर्वथा एक ही का हो 3. अजातशत्रु,—समम् (निस्समम्) (अव्य०) 1. बिना ऋतु के, अनुचित समय पर 2. दुष्टता के साथ,—संपात (निःसंपात) (वि०) जहाँ मार्ग उपलब्ध न हो, जहाँ मार्ग अवरुद्ध हो (—तः) आधीरात का अँधेरा, गुप अँधेरा, घना अंधकार,—संबाध (निःसंबाध) (वि०) जो संकीर्ण न हो, प्रशस्त, विस्तृत,—संसार (निःसंसार) (वि०) 1. नीरस, सारहीन, बिना गूदे का 2. निकम्मा, असार,—सीम (निःसीम),—सीमन् (निःसीमन्) (वि०) अपरिमेय, सीमारहित—अहह महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः—भर्तृ० २।३५, निःसीमशर्मप्रदम्—३।९७,—स्नेह (निःस्नेह) (वि०) जो चिकना न हो, बिना चिकनाई का, शुष्क 2. स्नेहरहित, भावनाशून्य, कृपाहीन, उदासीन 3. जिससे कोई प्यार न करता हो, जिसकी कोई देखभाल न करता हो—पंच० १।८२,—स्पंद (निःस्पंद या निस्स्पंद) (वि०) गतिहीन, स्थिर—रघु० ६।४०,—स्पृह (निःस्पृह) (वि०) 1. कामनाशून्य 2. लापरवाह, उदासीन—ननु वक्तृविशेषनिःस्पृहा—कि० २।५, रघु० ८।१० 3. सन्तुष्ट, डाह न करने वाला 4. सांसारिक बन्धनों से मुक्त—स्व (निःस्व) (वि०) निर्धन, दरिद्र—निःस्वो वष्टि शतम्—शा० २।६,—स्वादु (निःस्वादु) (वि०) स्वादरहित, बिना स्वाद का, बदमजा।

निसंपात दे० निःसंपात।

निसर्गः [नि+सृज्+घञ्] 1. प्रदान करना, अनुदान देना, उपहार देना, पुरस्कार देना—मनु० ८।१४३ 2. अनुदान 3. मलोत्सर्ग, शून्यीकरण, मलत्याग 4. त्याग, तिलांजलि देना 5. सृष्टि—निसर्गदुर्बोधम्—कि० १।६, १८।३१, रघु० ३।३५, कु० ४।१६,—निसर्गतः, निसर्गेण प्रकृति से, स्वभावत. 7. अदला-बदली, विनिमय। सम०—ज,—सिद्ध (वि०) सहज, अन्तर्जात, स्वाभाविक,—भिन्न (वि०) स्वभावतः और प्रकार का—निसर्गभिन्नास्पदमेकसंस्थम्—रघु० ६।२९,—विनीत (वि०) 1. स्वभावतः विवेकी 2. स्वभावतः विनम्र।

निसारः [नि+सृ+घञ्] समुच्चय, समूह।

निसूदन (वि०) [नि+सूद्+ल्युट्] मारने वाला, नष्ट करने वाला,—नम् वध, हत्या।

निसृष्ट (भू० क० कृ०) [नि+सृज्+क्त] 1. सौंपा गया, दिया गया, अर्पित 2. छोड़ा गया, त्यक्त 3. विसर्जित 4. अनुज्ञात, अनुमत 5. केन्द्रवर्ती, मध्यस्थ। सम०—अर्थ (वि०) जिसे किसी कार्य का प्रबन्ध सौंपा गया हो 2. दूत, अभिकर्ता—दे० सा० द० ८६, ८७, 'दूती वह स्त्री जो नायक और नायिका के प्रेम को जान कर स्वयं उनको मिलाती है—तन्निपुणं निसृष्टार्थदूतीकल्पः सूचयितव्यः—मा० १ (यहाँ जगद्धर 'निसृष्टार्थदूती' शब्द की व्याख्या इस प्रकार करता है

—नायिकाया नायकस्य वा मनोरथं ज्ञात्वा स्वमत्या कार्यं साधयति वा) ।

निस्तरणम् [निस्+तृ+ल्युट्] 1. बाहर जाना, बाहर आना 2. पार करना 3. बचाना, मुक्ति, छुटकारा 4. तरकीब, उपाय, योजना ।

निस्तर्हणम् [निस्+तृह+ल्युट्] वध, हत्या ।

निस्तारः [निस्+तृ+घञ्] 1. पार करना—संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी—भट्टि० १।६९ 2. छुटकारा पाना, छुट्टी, बचाव, उद्धार 3. मोक्ष 4. ऋणपरिशोधन, चुकौती, अदायगी—वेतनस्य निस्तारः कृतः—हि० ३ 5. उपाय, तरकीब ।

निस्तीर्ण (भू० क० कृ०) [निस्+तृ+क्त] 1. उद्धार किया हुआ, मुक्त किया हुआ, बचाया हुआ 2. पार किया हुआ (आलं०) वेणी० ६।३६ ।

निस्तोदः [निस्+तुद्+घञ्) चुभना, डंक मारना ।

निस्पंदः [नि+स्पन्द्+घञ्] कंपकपी, धड़कन, गति ।

निस्यं (ष्यं) दः [नि+स्यन्द्+घञ् षत्वं विकल्पेन] 1. आगे, या नीचे की ओर बहना, चूना, टपकना, बूंद २ करके गिरना, क्षरना, रिसना—वल्कलशिखा निस्यंदरेखांकिताः—श० १।१४ 2. क्षरण, स्राव, रसीलापदार्थ, रस—उत्तर० २।२४, मा० ९।६ 3. प्रवाह, स्रोत, पानी की धार—हिमाद्रिनिस्यंद इवावतीर्णः—रघु० १४।३,४१, १६।७०, मदनिस्यंदरेखयोः —१०।५८, मेघ० ४२ ।

निस्यंदिन (वि०) [नि+स्यन्द्+णिनि] टपकने वाला, बहने वाला, रिसने वाला ।

निस्रवः, निस्रावः [नि+सु+अप्, घञ् वा] 1. सरिता, धारा 2. चावलों का मांड़ ।

निस्वनः, निस्वानः [नि+स्वन्+अप्, घञ् वा] शब्द, आवाज, रघु० ३।१९, ऋतु० १।८, कि० ५।६ ।

निहत (भू० क० कृ०) [नि+हन्+क्त] 1. पटकी दिया हुआ, आघात किया हुआ; वध किया हुआ, मारा हुआ 2. प्रहार किया हुआ, चोट जमाया हुआ 3. अनुरक्त, भक्त ।

निहननम् [नि+हन्+ल्युट्] वध, हत्या ।

निहवः [नि+ह्वे+अप्, संप्रसारण] आवाहन, बुलावा ।

निहारः [नि+हृ+घञ्] दे० 'नीहार' ।

निहिंसनम् [नि+हिंस्+ल्युट्] वध, हत्या ।

निहित (भू० क० कृ०) [नि+धा+क्त] 1. रक्खा हुआ, धरा हुआ, टिकाया हुआ, स्थापित, जमा किया हुआ 2. सौंपा हुआ, समर्पित 3. प्रदत्त, प्रयुक्त 4. अन्तर्हित, अंदर रक्खा हुआ 5. कोषबद्ध किया हुआ 6. संभाला हुआ 7. (धूल आदि). पड़ी हुई 8. गंभीर स्वर में उच्चरित ।

निहीन (वि०) [नितरां हीनः प्रा० स०] अधम, नीच, —नः नीच आदमी, अधम कुल में उत्पन्न ।

निह्नवः [नि+ह्नु+अप्] 1. मुकर जाना, जानकारी का छिपाना—कार्यः स्वमतिनिह्नवः—मा० १।१२, चन्द्रा० ५।२७ 2. गोपनीयता, छिपाव—याज्ञ० २।११२६७ 3. रहस्य 4. अविश्वास, सन्देह, शंका 5. दुष्टता 6. परिशोधन, प्रायश्चित्त 7. बहाना ।

निह्नुतिः (स्त्री०) [नि+ह्नु+क्तिन्] 1. मुकरना, जानकारी का छिपाव, अमरू ८ 2. पाखंड, संवरण, मनोगुप्ति 3. गोपनीयता, छिपाना, गुप्त रखना ।

नी (भ्वा० उभ० नयति-ते, नीत) [द्विकर्मक धातु, उदाहरण नी० दे०] 1. ले जाना नेतृत्व करना, लाना, पहुँचाना, लेना, संचालन करना—अजां ग्रामं नयति —सिद्धा०, नय मां नवेन वसतिं पयोमुचा—विक्रम० ४।४३ 2. निर्देश करना, निदेश देना, शासन करना —मालवि० १।२ 3. दूर ले जाना, बहा ले जाना— सीता लंकां नीता सुरारिणा—भट्टि० ६।४९, रघु० १२।१०३, मनु० ६।८८ 4. उठा ले जाना—श्रा० ३। ५ 5. किसी के लिए ले जाना (आ०) 6. व्यय करना, (समय) बिताना—येनामन्दमरन्दे दलदरविन्दे दिनान्यनायिषत—भामि० १।१०, नीत्वा मासान् कतिचित् —मेघ० २, संविष्टः कुशशयने निशां निनाय—रघु० १।९५ 7. किसी अवस्था तक कृश करना—तमपि तरलतामनयदनंगः—का० १४३, नीतस्त्वया पंचताम् रत्न० ३।३, रघु० ८।१९ (इस अर्थ में यह धातु नामों के साथ उसी प्रकार प्रयुक्त होती है जिस प्रकार कृ —उदा० 1. अस्तं नी छिपाना 2. दंडम् नी दण्ड देना, सजा देना 3. दासत्वं नी दास बनाना 4. दुःखं नी संकटग्रस्त करना 5. परितोषं नी तृप्त करना, प्रसन्न करना 6. पुनरुक्ततां नी फालतू करना 7. भस्मतां नी 8. भस्मसात् नी जलाकर राख करना 9. वशं नी अधीन करना, जीत लेना 10. विक्रयं नी 11. विनाशं नी नष्ट करना 12. शूद्रतां नी शूद्र बनाना 13. साक्ष्यं नी गवाही मानना 8. निश्चय करना, गवेषणा करना, पूछताछ करना, निर्णय करना, फैसला करना—छलं निरस्य भूतेन व्यवहारान्नयेन्नृपः —याज्ञ० २।१९, एवं शास्त्रेषु भिन्नेषु बहुधा नीयते क्रिया—महा० 9. पता लगाना, लीक के सहारे पीछा करना, खोज निकालना—एतैर्लिंगैर्नयेत् सीमां—मनु० ८।२५२, २५६, यथा नयत्यसृक्पातैर्मृगस्य मृगयुः पदम् —८।४४, याज्ञ० २।१५१ 10. विवाह करना 11. बहिष्कृत करना 12. (आ०) शिक्षा देना, अनुदेश देना—शास्त्रे नयते—सिद्धा, प्रेर०—नाययति—ते, मार्गदर्शन करना, पहुंचवाना (करण० के साथ) तेन मां सरस्तीरमनाययत्—का० ३८, इच्छा० निनीषति

—ते, ले जाने की कामना करना, अनु—मानना, अपने पक्ष का बना लेना, प्रवृत्त करना, फुसलाना, प्रार्थना करना, राजी करना, बहलाना, (क्रोधादिक) शान्त करना, प्रसन्न करना, लुभाना—स चानुनीतः प्रणतेन पश्चात्—रघु० ५।५४, विग्रहाच्चं शयने पराङ्मुखीर्नानुनेतुमबलाः स तत्वरे—१९।३८, कि० १३। ६७, भट्टि० ५।४६, ६।१३७ 2. स्नेह करना—भर्तृ० २।७७ 3. साधना, अनुशासन में रखना, अप—,1. दूर ले जाना, दूर बहा ले जाना, निवृत्त करना—मनु० ३।२४२ 2. (क) हटाना, नष्ट करना, ले जाना—श० ६।२६, शत्रूनपनेष्यामि—भट्टि० १६।३०, (ख) लूटता, चुराना, लूटमार करना, छीनना, ले लेना—रघु० १३।२४ 2. उद्धृत, निचोड़ करना—शल्यं हृदयादपनीतमिव—विक्रम० ५, दूर करना, (वस्त्रादिक) उतारना, खींचकर उतारना—चरणान्निगड़मपनय—मृच्छ० ६, अपनयंतु भवत्यो मृगयावेषम्—श० २, रघु० ४।६४, अभि—, 1. निकट लाना, संचालन करना, नेतृत्व करना, ले जाना—कि० ८।३२ मुद्रा० १।६,१५ 2. अभिनय करना, नाटकीय रूप से प्रतिनिधान या प्रदर्शन करना, हाव-भाव (बहुधा रंगभूमि के निदेशों में प्रयुक्त) प्रदर्शित करना—श्रुतिमभिनीय—श० ३, कुसुमावचयनमभिनयंत्यौ सख्यौ—श० ४, मुद्रा० १।२, ३।३१ 3. उद्धृत करना, घटाना, अभिवि—,अध्यापन करना, शिक्षा देना, सधाना, आ—, 1. लाना, जाकर लाना—भुवनं मत्याश्वमानीयते—श० ७।८, मनु० ८।२१० 2. प्रकाशित करना, पैदा करना, उत्पादन करना—आनिनाय भुवः कंपं रघु० १५,२४ 3. किसी अवस्था में पहुंचाना आनीयतां नम्रताम्—रत्न० १।१ 4. निकट ले जाना, पहुंचाना उद्—,1. आगे बढ़ाना, पालनपोषण करना 2. उठाना, उन्नत करता, सीधा खड़ा करना (आ) दंडमुन्नयते—सिद्धा० 3. एक ओर ले जाना, एकान्तमुन्नीय—महा० 4. अनुमान लगाना, निश्चय करना, अटकल लगाना, अन्दाज लगाना उत्तर० १।२९, ३।२२, उप—,1. निकट लाना, जाकर लाना विधिनैवोपनीतस्त्वम्—मृच्छ० ७।६, मनु० ३।२२५, मालवि० २।५, कु० ७।७२ 2. उठाना, उन्नत करना, ले जाना शि० ९।७२ 3. प्रस्तुत करना, उपस्थित करना—रघु० २।५९, कु० ३।६९ 4. प्रकाशित करना, पैदा करना, उत्पादन करना—उपनयन्नर्थान्—पंच० ३।१८०, उपनयन्नंगैरनंगोत्सवम्—गीत० १ 5. किसी अवस्था में लाना, अवस्थाविशेष तक पहुंचाना—पुरोपनीतं नृप रामणीयकम्—कि० १।३९ 6. यज्ञोपवीत धारण कराना (आ०) माणवकमुपनयते—सिद्धा०, भट्टि० १।१५, रघु० ३। २९, मनु० २।४९ 7. भाड़े पर रखना, भाड़े के नौकर रखना—कर्मकरानुपनयते—सिद्धा०, उपा—, अवस्था विशेष में लाना, घटाना, नि—, 1. निकट ले जाना, समीप पहुँचाना—याज्ञ० ३।२९५ 2. झुकना, विनत होना,—वक्त्रं निनीय—3. उडेलना 4. घटित करना, निष्पन्न करना, निस्—, 1. ले उड़ना, 2. निश्चय करना, तय करना, फ़ैसला करना, संकल्प करना, दृढ़ करना—कथमप्युपायमात्मनैव निर्णीय दश०, कि० ११।३९, परि—, 1. (अग्नि की) प्रदक्षिणा करना—तौ दंपती त्रिः परिणीय वह्निं (पुरोधाः)—कु० ७।८०—अग्नि पर्यणयं च यत्—रामा० 2. विवाह करना, ब्याहना—परिणेष्यति पार्वतीं यदा तपसा तत्प्रवणीकृतो हरः—कु० ४।४२ 2. निश्चय करना, खोज करना—मनु० ७।१२२, प्र—, 1. (सेना आदि का) नेतृत्व करना—वानरेन्द्रेण प्रणीतेन (बलेन) रामा० 2. प्रस्तुत करना, देना, उपस्थित करना—अर्घ्यं प्रणीय जनकात्मजा—भट्टि० ५।७६ 3. चेताना, (आग) सुलगाना, पंच० ३।१ 4. वेदमंत्रों के पाठ से अभिमंत्रित करना, पूजना, अर्चना करना—त्रिधा-प्रणीतो ज्वलनः—हरि० 5. (दण्ड आदि) देना—मनु० ७।२०, ८।२३८ 6. निर्धारित करना, शिक्षा-प्रदान करना, प्रख्यायन करना, प्रतिष्ठापित करना, विहित करना—स एव धर्मो मनुना प्रणीतः—रघु० १४।६७, भवत्प्रणीतयाचारमामनंति हि साधवः—कु० ६।३१ 7. लिखना, रचना करना—प्रणीतः न तु प्रकाशितः—उत्तर० ४, उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयुज्यते उत्तर० १।३ 8. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, अनुष्ठान करना, प्रकाशित करना—नै० ११५,१९, भर्तृ० ३।८२ 9. (अवस्था विशेष तक) पहुँचाना निम्न अवस्था में ले जाना, प्रति—,वापिस ले जाना, वि—, 1. हटाना, ले जाना, नष्ट करना (आ०, उस स्थान को छोड़कर जहाँ कर्म के स्थान में 'शरीर का कोई भाग' हो) पटुपटहध्वनिर्भिर्विनीतनिद्रः—रघु० ९।७१, ५।७५, १३।३५,४६, १५।४८, कु० १।९, विनयंते स्म तद्योधा मधुभिर्विजयश्रमम्—रघु० ४।६५,६७ 2. अध्यापन करना, शिक्षण देना, शिक्षा देना, प्रशिक्षित करना—विनिन्युरेनं गुरवो गुरुप्रियम्—रघु० ३।२९,१५।६९,१८।५१, याज्ञ० १।३११ 3. पालना, वशीभूत करना, प्रशासित करना, नियंत्रित करना—वन्यान् विनेष्यन्निव दुष्टसत्त्वान्—रघु० २।८, १४।७५, कि० २।४१ 4. प्रसन्न करना, (क्रोध आदि) शान्त करना (आ०) 5. व्यतीत हो जाना, (समय का) बिताना—कथमपि यामिनीं विनीय—गीत० ८ 6. पार ले जाना, सम्पन्न करना, पूरा करना 7. व्यय करना, प्रयुक्त करना, उपयोग में (आ०) लाना,

शतं विनयते—सिद्धा० 8. देना, प्रस्तुत करना, प्रदान करना, (श्रद्धांजलि) अर्पित करना (आ०), करं विनयते—सिद्धा० 9. नेतृत्व करना, संचालन करना—कु० ७।९, सम्—, 1. एकत्र करना 2. हुकूमत करना, प्रशासन करना, पथप्रदर्शन करना 3. वापिस प्राप्त, लौटाना 4. निकट लाना, समा—, 1. मिलाना, एकता में आबद्ध करना, एकत्र करना—रघु० २।६४, श० ५।१५ 2. जा कर लाना लाना—रघु० १२।७८।

नी (पुं०) [नी+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) नेता, पथप्रदर्शक, जैसा कि ग्रामणी, सेनानी और अग्रणी में।

नीका (स्त्री०) कुल्या, गूल, खेत की सिंचाई के लिए बनी नहर।

नीकारः दे० 'निकार'।

नीकाश (वि०) [नि+काश्+अच्, दीर्घः] दे० 'निकाश'—शि० ५।३५।

नीच (वि०) [निकृष्टतमीं शोभां चिनोति—चि+ड, तारा०] 1. नीच, छोटा, स्वल्प, थोड़ा, बौना 2. निम्नस्थित, निकृष्ट—भग० ६।११, मनु० २।१९८, याज्ञ० १।१३१ 3. नीची, गहरी (आवाज) 4. नीच, कमीना, अधम, दुष्ट, अत्यंत खोटा—प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः—भर्तृ० २।२७, नीचस्य गोचरगतैं सुखमास्यते कैः—५९, भामि० १।४८ 5. निकम्मा, निरर्थक,—चा श्रेष्ठगाय। सम०—गा नदी,—भोज्यम् प्याज,—योनिन् (वि०) नीच कुलोत्पन्न, नीच घराने में जन्मा हुआ, इसी प्रकार 'नीचजाति',—वज्रः,—वज्रम्, वैक्रान्तमणि।

नीच (चि) का [नीच+कन्+टाप्, पक्षे इत्वं वा] बढ़िया या श्रेष्ठ गाय, ('नीचिकी' भी)।

नीचकिन् (पुं०) [नीचक+इनि] 1. किसी वस्तु का शिखर 2. बैल का सिर 3. अच्छी गाय का स्वामी।

नीचकैः (अव्य०) [नीचैस् इत्यस्य टः प्रागकच्] (प्रायः विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त) 1. नीचा, नीचे, अधः, के नीचे, तले, नीचे की ओर (विप० उपरि)—नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण—मेघ० १०९ 2. नीचे झुककर, विनम्र हो कर, विनयपूर्वक—रघु० ५।६२ 3. आहिस्ता २, कोमलता से—नीचैर्वास्यति—मेघ० ४२ 4. मन्द स्वर में—धीमी आवाज से—नीचैः शंस हृदिस्थितो ननु स मे प्राणेश्वरः श्रोष्यति—अमरु ६७, नीचैरनुदात्तः—पा० १।२।३०, 5. छोटा, गुटका, बौना—तथापि नीचैर्विनयाददृश्यत—रघु० ३।२४, (पुं०) पहाड़ का नाम—नीचैराख्यं गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतोः—मेघ० २६। सम०—गतिः (स्त्री०) शिथिलगति,—मुख (वि०) नीचे को मुँह किये हुए।

नीडः,—डम् [नितरां मिलन्ति खगा अत्र—नि+इल्+क, लस्य डः तारा०] 1. पक्षी का घोसला—श० ७।११ 2. बिस्तरा, गद्दा 3. माँद, भट 4. रथ का भीतरी भाग 5. स्थान, आवास, विश्रामस्थल। सम०—उद्भवः,—जः पक्षी।

नीडकः [नीड+कन्] 1. पक्षी 2. घोंसला।

नीत (भू० क० कृ०) [नी+क्त] 1. ले जाया गया, संचालित, नेतृत्व किया गया 2. लब्ध, प्राप्त 3. निम्न अवस्था को पहुंचाया हुआ 4. व्यतीत, बिताया गया 5. भली भांति व्यवहृत, सही—दे० 'नी',—तम् 1. धन 2. धान्य, अनाज।

नीतिः (स्त्री०) [नी+क्तिन्] 1. निर्देशन, दिग्दर्शन, प्रबंध 2. आचरण, चालचलन, व्यवहार, कार्यक्रम 3. औचित्य, शालीनता 4. नीतिकौशल, नीतिज्ञता, बुद्धिमत्ता, व्यवहारकुशलता—आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः—नै० ५।१०३, रघु० १२।६९, कु० १।२२ 5. योजना, उपाय, कूटयुक्ति—मा० ६।३ 6. राजनय, राजनीति विज्ञान, राजनीतिज्ञता, राजनीतिक बुद्धिमत्ता—आत्मोदयः परग्लानिर्द्वयं नीतिरितीयती—शि० २।३०, भग० १०।३८ 7. आचारशास्त्र, आचार, नीतिशास्त्र, आचारदर्शन 8. अवाप्ति, अधिग्रहण 9. देना, प्रदान करना, प्रस्तुत करना 10. संबंध, सहारा। सम०—कुशल,—ज्ञ,—निष्ण,—विद् (दि०) 1. राजनीतिविशारद, राजनीतिज्ञ, नीतिज्ञ 2. दूरदर्शी, बुद्धिमान्,—घोषः—बृहस्पति की गाड़ी,—दोषः आचार, नीतिविषयक भूल,—बीजम् षड्यंत्र का स्रोत,—निर्वापणं कृतम्—पंच० १,—विषयः नैतिकता या दूरदर्शी व्यापार का क्षेत्र,—व्यतिक्रमः 1. नीतिशास्त्र या राजनीति-विज्ञान के नियमों का उलंघन 2. चालचलन की त्रुटि, नीतिविषयक भूल,—शास्त्रम् नीतिशास्त्र या राजनय, नैतिकता।

नीध्रम् (व्रत) [नितरां ध्रियते धृ मूलवि क दीर्घः—तारा०] 1. छत का किनारा 2. जंगल 3. पहिए की परिधि या घेरा 3. चन्द्रमा 5. रेवती नक्षत्र।

नीपः [नी+प बा० गुणाभावः] 1. पहाड़ की तलहटी 2. कदंब वृक्ष (बरसात में फ़ूल देने वाला) नीपः प्रदीपायते—मृच्छ० ५।१४, सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्—मेघ० ६५, ६ 3. अशोक जाति का वृक्ष 4. राजाओं का एक कुल—रघु० ६।४६,—पम् कदंब वृक्ष का फ़ूल—मेघ० २१, रघु० १९।३७।

नीरम् [नी+रक्] 1. पानी—नीरान्निर्मलतो जनिः भामि० १।६३ 2. रस, आसव। सम०—जम् 1. कमल 2. मोती,—दः बादल—धीरध्वनिभिरलं ते नीरद मे मासिको गर्भः—भामि० १।६१, शि० ४।५२,—धिः,—निधिः, समुद्र,—रुहम् कमल।

नीराजनम्,—ना [निर्+राज्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] 1.

शस्त्रास्त्रों को चमकाना, एक प्रकार का सैनिक व धार्मिक पर्व जिसको राजा या सेनापति आश्विन मास में संग्राम क्षेत्र में जाने से पूर्व मनाते थे (अर्थात् राजा के पुरोहित, मंत्री, तथा सेना के अधिकारी अपने विविध शस्त्रास्त्रों सहित वेद मंत्रों द्वारा) ४।४५, १७।१२, नै० ४।१४४ 2. अर्चना के रूप में देवमूर्ति के सामने प्रज्वलित दीपक घुमाना।

नील (वि०) (स्त्री०—ला (वस्त्रादिक)—ली (जीव जन्तु आदि) [नील्+अच्] 1. नीला, गहरा नीला—नीलस्निग्धः श्रयति शिखरं नूतनस्तोयवाहः—उत्तर० १।३३ 2. नील से रंगा हुआ,—लः 1. गहरा नीला या काला रंग 2. नीलमणि 3. गूलर का पेड़, बड़ का पेड़ 4. राम की सेना में एक वानर मुख्य 5. नीलगिरि, पर्वत की एक मुख्य शृंखला,—लम् 1. काला नमक 2. नीला थोथा या तूतिया 3. सुरमा 4. विष। सम०—अंगः सारस पक्षी,—अंजनम् सुरमा,—अंजना,—अंजना,—अंजसा विजली,—अब्जम्—अंबुजम्,—अम्बुजन्मन् (नपुं०),—उत्पलम् नील कमल,—अभ्रः काला बादल,—अंबर (वि०) गहरे नीले वस्त्रों से सुसज्जित (—रः) 1. राक्षस, पिशाच 2. शनि ग्रह 3. बलराम का विशेषण,—अरुणः प्रभातकाल, पौ फ़टना,—अश्मन् (पुं०) नीलमणि—कंठः 1. मोर,—मा० ९।३०, मेघ० ७९ 2. शिव का विशेषण 3. एक प्रकार का जलकुक्कुट 4. नीलकंठ पक्षी 5. खंजन पक्षी 6. चिड़िया 7. मधुमक्खी,—केशी नील का पौधा,—ग्रीवः शिव का विशेषण,—छदः 1. छुहारे का पेड़ 2. गरुड़ का विशेषण,—तरुः नारियल का वृक्ष,—तालः तमाल का वृक्ष,—पंकः,—कम् अंधेरा,—पटलम् 1. काला आवरण, काली तह 2. अंधे आदमी की आँख का जाला—पंच० ५,—पिच्छः बाज पक्षी,—पुष्पिका 1. नील का पौधा 2. अलसी—भः 1. चाँद 2. बादल 3. मधुमक्खी,—मणिरत्नम् नीलम नीलकान्तमणि—नेपथ्योचितनीलरत्नम्—गीत० ५, भामि० २।४२,—मौलिकः जुगनू,—मृत्तिका 1. लौहमाक्षिक 2. काली मिट्टी,—राजिः (स्त्री०) अंधकार की रेखा, घुप अंधेरा, घोर अंधकार—निशाशशांकक्षतनीलराजयः—ऋतु० १।२,—लोहितः शिव का विशेषण, श० ७।३७ कु० २।५७।

नीलकम् [नील+कन्] 1. काला नमक 2. नीला इस्पात 3. तूतिया,—कः काले रंग का घोड़ा।

नीलं (लां) गुः [नि+लङ्ग्+कु, पूर्वदीर्घः] एक प्रकार का कीड़ा।

नीला दे० नीलं।

नीलिका [नील०+क+टाप्, इत्वम्] नील का पौधा ('नीलिनी' भी।

नीलिमन् (पुं०) [नील+इमनिच्] नीलारंग, कालापन, नीलापन।

नीली [नील+अच्+ङीष्] 1. नील का पौधा—तत्र नीलीरस परिपूर्णं महाभांडमासीत्—पंच० १, एको ग्रहस्तु मीनानां नीलीमद्यपयोर्यथा—पंच० १।२६० 2. नीलमक्खियों की एक जाति 3. एक प्रकार का रोग। सम०—राग (वि०) अनुराग में दृढ़ (गः) 1. नील के रंग की भांति अपरिवर्तनीय स्नेह, दृढ़ानुरक्ति 2. पक्का मित्र,—संधानम् नील का खमीर भांडम् नील का वर्तन।

नीवरः [नी+ष्वरच्] 1. व्यवसाय, व्यापार 2. व्यावसायिक 3. धर्मभिक्षु, सन्यासी 4. कीचड़,—रम् जल।

नीवाकः [नि+वच्+घञ्, कुत्वं, दीर्घः] 1. कमी के समय अनाज की बढ़ी माँग 2. दुर्भिक्ष, अकाल।

नीवारः [नि+वृ+घञ्, दीर्घ] जंगली चावल जो बिना जोते बोये उत्पन्न हो—नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः—श० १।१४, रघु० १।५०,५।९,१५।

नीविः,—वी (स्त्री०) [निव्ययति निवीयते वा नि+व्ये+इन्, नीवि+ङीष्] कमर में लपेटी हुई धोती, धोती के दोनों किनारों की गांठ जो सामने पेट पर बांधी जाय, धोती की गाँठ, नाड़ा, कमरबन्द—प्रस्थानभिन्नां न बबन्धनीविम्—रघु० ७।९, नीवीबंधोच्छ्वसनम्—मा० २।५, कु० १।३८, नीविं प्रति प्रणिहिते तु करे प्रियेण—काव्य० ४, मेघ० ६८, शि० १०।६४ 2. पूंजी, मूलधन 3. दाँव, बाजी, शर्त।

नीवृत् (पुं०) [नि+वृ+क्विप्, पूर्वदीर्घः] कोई भी आबाद देश, राज्य, राजधानी।

नीव्र दे० नीध्र।

नीशारः [नि+शॄ+घञ्, पूर्वदीर्घः] 1. गरम कपड़ा, कंबल 2. मसहरी, मच्छरदानी 3. कनात।

नीहारः [नि+हृ+घञ्, पूर्वदीर्घः] 1, कुहरा, धुंध—रघु० ७।६०, याज्ञ० ३।१५०, मनु० ४।११३ 2. पाला, भारी ओस 3. मलमूत्र त्याग।

नु (अव्य०) [नुद्+डु] प्रश्नवाचकता का द्योतक तथा 'सन्देह' एवं 'अनिश्चयात्मकता' प्रकट करने वाला अव्य०—स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु—श०, अस्तशैलगहनं नु विवस्वानाविवेश जलधिं नु महीं नु—कि० ९।७, ५।१, ८।५३, ९।१५, ५४, १३।४, कु० १।४७, शि० १०।१४, श० २।८ २. 'संभावना' और 'अवश्य' के अर्थों को बतलाने के लिए इसे प्रश्नवाचक सर्वनाम तथा उससे व्युत्पन्न शब्दों से साथ जोड़ दिया जाता है—किं न्वेतत्स्यात्किमन्यदितोऽथवा मा० ११।१७, कथं नु गुणवद्विंदेयं कलत्रम्—दश०, दे० किन्नु भी।

नु (अदा० पर० नौति, प्रणौति, नुत—प्रेर० नावयति, इच्छा० नुनूषति) । प्रशंसा करना, स्तुति करना, श्लाघा करना–सरस्वती तन्मिथुनं नुनाव—कु० ७।९०, भट्टि० १४।११२, दे० नु० ।

नुतिः (स्त्री०) [नु+क्तिन्] 1. प्रशंसा, संस्तुति, प्रशस्ति परगुणनुतिभिः (अने० पा०) स्वान् गुणान् ख्यापयंतः भर्तृ० २।६९ 2. पूजा, समादर ।

नुद् (तुद० उत्तम० नुदति—ते, नुत्त या नुन्न, प्रणुदति) 1. धकेलना, धक्का देना, हांकना, ठेलना, प्रोत्साहित करना—मंदं मंदं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम् —मेघ० ९ २. प्रोत्साहित करना, उकसाना, आगे बढ़ाना—शि० ११।२६ ३. हटाना, भगा देना, फेंक देना, मिटाना—अदस्त्वया नुन्नम नुत्तमं तमः —शि० १।२७, केयूरबंधोच्छ्वसितैर्नुनोद—रघु० ६।६८, ८।४०, १६।८५, कि० ३।३३, ५।२८ 4. फेंकना, डालना, भेजना—प्रेर० 1. हटाना, दूर करना 2. प्रोत्साहित करना, उकसाना, ढकेलना, ठेलना, आगे बढ़ाना,—अप्—,भगाना, हटाना—भट्टि० १०।१३, उप्—धकेलना, आगे चलाना—शि० ४।६१, निस्—1. अस्वीकार करना, इंकार करना—धाना मत्स्यान्पयो मांसं शाकं चव न निर्णुदेत्—मनु० ४।२५० 2. हटाना, मिटाना, प्र—,मिटाना, दूर करना, हटाना—शि० ९।७१, वि—,1. आघात करना, बींधना 2. (वीणा आदि) वाद्ययंत्र बजाना—प्रेर० 1. हटाना, दूर करना, मिटाना, फेंक देना—तापं विनोदय दृष्टिभिः—गीत० १०, शि० ४।६६ 2. आगे बढ़ना, (काल) बिताना 3. मोड़ना, बहलाना, मनोरंजन करना—लतासु दृष्टिं विनोदयामि—श० ६, रघु० १४।७७ 4. दिल बहलाना—रघु० ५।६७, सम्—,1. एकत्र करना, संग्रह करना 2. प्राप्त करना, मिलना ।

नूतन, नूत्न (वि०) [नव+तनप् (त्नप्) नू आदेशः] । 1. नया—नूतनो राजा समाज्ञापयति—उत्तर० १, रघु० ८।१५ 2. ताजा, बच्चा 3. भेंट, उपहार 4. तात्कालिक 5. हाल का, आधुनिक 6. कुतूहल पूर्ण, अजीब ।

नूनम् (अव्य०) [नु+ऊन्+अम्] असंदिग्ध रूप से, विश्वस्त रूप से, निश्चय ही, अवश्य, निस्सन्देह —अद्यापि नूनं हरकोपवह्निस्त्वयि ज्वलत्यौर्व इवां बुराशौ श० ३।३, मेघ० ९।१८ ४६, भर्तृ० १।१०, कु० १।१२, ५।७५, रघु० १।२९, 2. अत्यधिक संभावना के साथ, पूरी संभावना है कि—उत्तर० ४।२३ ।

नूपुरः—रम् [नू+क्विप्=नु+पुर्+क] पाजेब, पैरों का आभूषण—नहि चूडामणिः पादे नूपुरं मूर्ध्नि धार्यते —हि० २।७१ ।

नृ (पुं०) [नी+ऋन् डिच्च] (कर्तृ० ए० व०—ना, संबंध०, ब० व०, नृणां या नृणाम्) 1. मनुष्य, एक व्यक्ति—स्त्री हो, चाहे पुरुष, मनु० ३।८१, ४।६१, ७।६१, १०।३३ 2. मनुष्यजाति 3. शतरंज का मोहरा 4. सूरजघड़ी की कील 5. पुंल्लिंग शब्द —संधिर्ना विग्रहो यानम्—अमर० । सम०—अस्थिमालिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—कपालम् मनुष्य की खोपड़ी,—केसरिन् (पुं) 'नर-शेर,' नृसिंहावतार में विष्णुभगवान्—तु० 'नरसिंह',—जलम् मनुष्य का मूत्र,—देवः एक राजा,—धर्मन् (पुं०) कुबेर का विशेषण,—पः मनुष्यों का राजा, राजा, प्रभु °अध्वरः राजसूय यज्ञ जिसे सम्राट् सम्पन्न करता है और जिसमें सभी पदों का कार्य सहायक राजाओं द्वारा किया जाता है,—°आत्मजः राज कुमार, युवराज,—°आभीरम्,—°मानम् राजभोज में होने वाला संगीत, —°आमयः तपेदिक, क्षय,—°आसनम् राजगद्दी, सिंहासन, राज्य की कुर्सी,—°गृहम् राजमहल,—°नीतिः (स्त्री०) राजनय, राजा की नीति, राजनीति —वेश्यांगनेव नृपनीतिरनेकरूपा—भर्तृ० २।४७—°प्रियः आम का पेड़, °लक्ष्मन् (नपुं०),—°लिंगम् राजचिह्न राजत्व का लक्षण, राजकीय अधिकार चिह्न, विशेष कर श्वेत छत्र,—°शासनम् राजविज्ञप्ति, °सभम् °सभा राजाओं की सभा,—पतिः,—पालः राजा,—पशुः मनुष्य की शक्ल का जानवर, हिंसक पशु, नृशंस, —मिथुनम् मिथुन राशि,—मेधः नरमेध यज्ञ,—यज्ञः 'मनुष्यों के लिए किया जाने वाला यज्ञ', आतिथ्य, अतिथियों का सत्कार (दैनिक 'पंच यज्ञों' में से एक यज्ञ—दे० पंचयज्ञ),—लोकः मरण-धर्मा लोगों का संसार, मर्त्यलोक,—वराहः 'सूअर' के अवतार में विष्णु भगवान्,—वाहन कुबेर का विशेषण,—वेष्टनः शिव का नाम,—शृंगम् 'मनुष्य का सींग' अर्थात् असंभावना,—सिंहः 1. 'सिंह जैसा मनुष्य', शेरेनर, प्रमुख मनुष्य, पूज्य व्यक्ति 2. विष्णु भगवान्, का चौथा अवतार, 'नृसिंहावतार', तु०नरसिंह 3. एक प्रकार का रतिबंध,—सेनम्,—सेना मनुष्यों की फ़ौज,—सोमः वैभव-शाली मनुष्य, बड़ा आदमी—रघु० ५।५९ ।

नृगः (पुं०) वैवस्वत मनु का पुत्र, जो एक ब्राह्मण के शापवश छिपकली बना ।

नृत् (दिवा० पर० नृत्यति, प्रणृत्यति, नृत्त) नाचना, इधर उधर हिलना—नृत्यति युवतिजनेन समं सखि— गीत० १, लोलोर्मौ पयसि महोत्पलं ननर्त—शि० ८।२३, भट्टि ३।४३ 2. रंगमंच पर अभिनय करना 3. हाव भाव दिखाना, नाटक करना, प्रेर०—नर्तयति-ते 1. नचवाना—त्वमाशे मोघाशे किमपरमतो नर्तयसि माम्—भर्तृ० ३।६, तालैः शिंजावलयसुभगैं

नंतितः कांतया ने—मेघ० ७९, उत्तर० ३।१९ 2. हिलजुल पैदा करना,—आ –, (प्रेर०) 1. नाच कराना 2. नचवाना, फुर्ती के साथ हिलाना—मरुद्भिरानर्तितनक्तमाले—रघु० ५।४२, अमरु ३२, ऋतु० ३।१०, उप—, 1. नाचना 2. किसी दूसरे के आगे नाचना—उपानृत्यंत देवेशम् , प्र–, नाचना, प्रति—, नाच की नकल करके हंसी उड़ाना।

नृतिः (स्त्री०) [नृत्+इन्] नाचना, नाच।

नृतम्, नृत्यम् [नृत+क्त, क्यप् वा] नाचना, अभिनय करना, नाच, मूक अभिनय, हावभाव—नृत्तादस्याः स्थितमतितरां कांतम्—मालवि० २।७, नृत्यं मयूरा विजहुः—रघु०१४।६९, मेघ० ३२,३६, रघु० ३।१९। सम०—**प्रियः** शिव का विशेषण,—**शाला** नाचघर, —**स्थानम्** रंगमञ्च, नाचने का कमरा।

नृपः, नृपतिः, नृपालः [नरान् पाति रक्षति—नृ+पा+क, नृणां पतिः, ष० त०, नृ+पाल्+दे० 'नृ' के नीचे। णिच्+अण्]

नृशंस (वि०) [नृ+शस्+अण्] दुष्ट, द्वेषपूर्ण, क्रूर, उपद्रवी, कमीना,—मृच्छ० ३।२५, मनु० ३।४१, याज्ञ० १।६४।

नेजकः [निज्+ण्वुल्] धोबी।

नेजनम् [निज्+ल्युट्] धोना, साफ करना, मांजना।

नेतृ (पुं०) [नी+तृच्] 1. जो नेतृत्व या पथप्रदर्शन करे, अग्रेसर, संचालक, प्रबंधक, (हाथियों तथा और जानवरों का] पथप्रदर्शक,—रघु० ४।७५, १४।२२, १६।२०, मेघ० ६९, नेताश्वस्य स्रुघ्नं स्रुघ्नस्य वा—सिद्धा०, मुद्रा० ७।१४ 2. निदेशक, गुरु—भर्तृ० २।८८ 3. मुख्य, स्वामी, प्रधान 4. (दण्ड आदि) देने वाला —मनु० ७।२५ 5. मालिक 6. नाटक का नायक।

नेत्रम् [नयति नीयते वा अनेन—वी+ष्ट्रन्] 1. नेतृत्व करना, संचालन 2. आँख—प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुंबिनः—कु० ६।८५, २।२९, ३०, ७।१३ 3. रई के डंडे की रस्सी 4. बुनी हुई रेशम, महीन रेशमी वस्त्र—नेत्रक्रमेणोपरुरोध सूर्यम्—रघु० ७।३९, (यहाँ कुछ भाष्यकार 'नेत्र' शब्द का सामान्य अर्थ 'आँख' ही मानते हैं) 5. वृक्ष की जड़ 6. वस्तिक्रिया की नली 7. गाड़ी, वाहन 8. दो की संख्या 9. नेता, अगुआ 10. नक्षत्र पुंज, तारा (इन दो अर्थों में पुंलिंग)। सम०—**अंजनम्** आँखों के लिए सुरमा—शृंगार० ७, —**अंतः** आँख का बाहरी किनारा, —**अंबु**,—**अम्भस्** (नपुं०) आँसू,—**आमयः** आंख का रोग, नेत्र-प्रदाह,—**उत्सवः** सुखद तथा सुन्दर पदार्थ, —**उपमम्** बादाम,—**कनीनिका** आँख की पुतली,—**कोषः** 1. अक्षिगोलक 2. फूल की कली,—**गोचर** (वि०) दृष्टि-परास के भीतर, प्रत्यक्षज्ञेय, दृश्य,—**छदः** पलक, —**जम्**,—**जलम्**,—**वारि** आँसू,—**पर्यन्तः** आँख का बाहरी किनारा,—**पिंडः** 1. अक्षिगोलक 2. बिल्ली, —**मलम्** ढीढ, आँख का मेल,—**योनिः**, 1. इन्द्र का विशेषण (जिसके शरीर पर, गौतम द्वारा दिये गये शाप के फलस्वरूप, स्त्री-योनि से मिलते जुलते हजार चिह्न हों) 2. चन्द्रमा,—**रंजनम्** अंजन, सुरमा,—**रोमन्** (नपुं०) आँख की बरौनी,—**वस्त्रम्** आँख का पर्दा, पलक,—**स्तंभः** आँखों का पथरा जाना।

नेत्रिकम् [नेत्र+ठन्] 1. नली 2. चम्मच।

नेत्री [नेत्र+ङीष्] 1. नदी 2. धमनी 3. स्त्री नेता 4. लक्ष्मी का विशेषण।

नेदिष्ठ (अयम् एषाम् अतिशयेन अन्तिकः—+इष्ठन्, अन्तिकस्य नेदादेशः] निकटतम, दूसरा, अत्यंत निकट ('अंतिक' की उत्तमावस्था)।

नेदीयस् (वि०) (स्त्री०-सी) [अनयोः अतिशयेन अन्तिकः+ईयसुन् अन्तिकस्य नेदादेशः] निकटतर, अधिक पास (अंतिक की मध्यमावस्था)—नेदीयसी भूत्वा—मा० १, निकट आकर, पहुँचकर।

नेपः [नी+स, गुणः] कुल-पुरोहित।

नेपथ्यम् [नी+विच्, नेः नेता तस्य पथ्यम्] 1. सजावट, आभूषण 2. परिधान, पोशाक, वेशभूषा, वस्त्र—उदार नेपथ्यभृत्—रघु० ६।६, राजेन्द्रनेपथ्यविधानशोभा—१४।९, उज्ज्वलनेपथ्यविरचना—मा० १, कु० ७।७, विक्रम० ५ 3. विशेषकर नाटक के पात्र की वेशभूषा—विरलेनेपथ्ययोः पात्रयोः प्रवेशोऽस्तु—मालवि० १ 4. परिधान कक्ष (जहाँ नाटक के पात्र अपनी वेशभूषा धारण करते हैं, यह सदैव परदे के पीछे होता) रंगमंच पृष्ठ, नेपथ्ये परदे के पीछे। सम०—**विधानम्** परिधान-कक्ष की व्यवस्था—श० १।

नेपालः (पुं०) भारत के उत्तर में स्थित एक देश का नाम **लाः**—(ब० व०) इस देश के निवासी,—**लम्** तांबा, —**ली** जंगली छुहारे का वृक्ष या इसका फल। सम० —**जा**,—**जाता** मैनसिल।

नेपालिका [नेपाल+ङीष्+कन्=टाप्, ह्रस्वः] मैनसिल।

नेम (वि०) (कर्तृ० ब० व०—नेमे—नेमाः) [नी+मन्] आधा,—**मः** 1. भाग 2. समय, काल, ऋतु 3. हद, सीमा 4. घेरा, बाड़ा 5. दीवार की नींव 6. जालसाजी, धोखा 7. सायंकाल 8. विवर, खाई 9. जड़।

नेमिः,—मी (स्त्री०) [नी+मि, नेमि+ङीष्] 1. परिधि, पहिये का घेरा, उपोढ़शब्दा न रथांगनेमयः—श० ७।१०, चक्रनेमिक्रमेण—मेघ० १०९, रघु० १।१७, ३९ 2. किनारा, घेरा 3. हस्तघर्घरी, गरारी 4. वृत्त, परिधि—उदधिनेमि—रघु० ९।१० 5. वज्र 6. पृथ्वी, —**मिः** तिनिश का वृक्ष।

नेष्टृ (पुं०) [नेष्+तृच्] सोमयाग के प्रधान ऋत्विजों (जिनकी संख्या १६ होती है) में से एक।

नैष्टुः [निश्+तुन्] मिट्टी का लौंदा।

नैः श्रेयस् (वि०) (स्त्री०–सी), नैःश्रेयसिक (वि०) (स्त्री०–की) [निःश्रेयस+अण्, ठक् वा] मोक्ष या आनन्द की ओर ले जाने वाला।

नैःस्वम्, नैःस्व्यम् [निःस्व+अण्, ष्यञ् वा] धनहीनता, गरीबी, दरिद्रता।

नैक (वि०) [न+एक] जो अकेला न हो (प्रायः समास में प्रयुक्त) °आत्मन् (पुं०) °रूपः °श्रृंगः परमपुरुष परमात्मा के विशेषण।

नैकटिक (वि०) (स्त्री०–की) [निकट+ठक्] पार्श्ववर्ती, निकट का, सटा हुआ,—कः संन्यासी या भिक्षु—भट्टि० ५।१२।

नैकट्यम् [निकट+ष्यञ्] सामीप्य, पड़ौस।

नैकषेयः [निकषा+ढक्] राक्षस (निकषा की सन्तान)।

नैकृतिक (वि०) (स्त्री०–की) [निकृत्या परापकारेण जीवति—निकृति+ठक्] 1. बेईमान, झूठा, क्रूर—मनु० ४।१९६ 2. नीच, दुष्ट, दुरात्मा 3. दुःशील, रूखे मिजाज़ का।

नैगम (वि०) (स्त्री०–मी) [निगम+अण्] वेद से संबद्ध, वेद में पाया जाने वाला, दे० °कांडम्,—मः 1. वेद का व्याख्याता—इति नैगमाः 2. उपनिषद् 3. उपाय, तरकीब 4. विवेकपूर्ण आचरण 5. नागरिक, 6. व्यापारी, सौदागर—धाराहारोपनयनपरा नैगमाः सानुमंतः —विक्रम० ४।४।

नैघंटुकम् [निघंटु+ठक्] वैदिक शब्दों का संग्रहग्रंथ (पांच अध्यायों में) जिसकी व्याख्या यास्कने अपने निरुक्त में की है।

नैचिकम् [नीचा+ठक्] बैल का सिर।

नैचिकी [निचिः+गोकर्णशिरोदेशः, ततः स्वार्थे कन्–निचिकः+अण्+ङीप्] बढ़िया गाय।

नैतलम् [नितल+अण्] पाताल, नरक। सम०—**सद्मन्** (पुं०) यम,—महावी० ५।१८।

नैत्यम् [नित्य+अण्] नित्यता, शाश्वतता।

नैत्यक (वि०) (स्त्री० की), नैत्यिक (वि०) (स्त्री०–की) [नित्य+कन्, नित्य+ठक्] 1. नियमित रूप से घटने वाला, बार २ दोहराया गया 2. नियमित रूप से अनुष्ठेय (विशेष अवसरों पर नहीं) 3. अपरिहार्य, अनवरत, अवश्यकरणीय।

नैदाघः [निदाघ+अण्] ग्रीष्म ऋतु।

नैदानः [निदान+अण्] शब्दव्युत्पत्तिशास्त्र का वेत्ता।

नैदानिकः [निदान+ठक्] निदानशास्त्र का ज्ञाता, व्याधिकोविद।

नैदेशिकः [निदेश+ठक्] आदेशों और निदेशों का पालन करने वाला, सेवक।

नैपातिक (वि०) (स्त्री०–की) [निपात+ठक्] अकस्मात् या दैवयोग से होने वाला उल्लेख।

नैपुण्यम् [निपुण+अण्, ष्यञ् वा] 1. दक्षता, कौशल, चतुराई, प्रवीणता—नैपुणोन्नेयमस्ति—उत्तर० ६।२६, शि० १६।३० 3. कोई कार्य जिसमें कौशल की आवश्यकता हो, सूक्ष्म बात 4. समग्रता, पूर्णता—मनु० १०।८५।

नैभृत्यम् [निभृत+ष्यञ्] 1. लज्जाशीलता, विनम्रता 2. गोपनीयता—नैभृत्यमवलंबितम्—मालवि० ५।

नैमन्त्रणकम् [निमंत्रण+अण्+कन्] भोज, दावत।

नैयमः [निमय+अण्] व्यापारी, सौदागर।

नैमित्तिक (वि०) (स्त्री०–की) [निमित्त+ठक्] 1. किसी विशेष कारण के फलस्वरूप उत्पन्न, संबद्ध या निर्भर 2. असाधारण, कभी कभी होने वाला, सांयोगिक, किसी विशेष निमित्त से किया गया (विप०–नित्य),—कः ज्योतिषी, भविष्यवक्ता,—कम् 1. कार्य (विप० –कारण) निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रमः—श० ७।३० 2. किसी विशेष अवसर पर होने वाला संस्कार, आवर्ती पर्व।

नैमिष (वि०) (स्त्री०–षी) [निमिष+अण्] निमिषमात्र या क्षणभर रहने वाला, क्षणिक, अस्थायी—षम् पवित्र वनस्थली जहाँ कुछ ऋषि मुनि रहते थे जिनको कि सौति ने महाभारत सुनाया था—रघु० १९।७. (नाम करण इस प्रकार हुआ—यतस्तु निमिषेणेदं निहतं दानवं बलम्, अरण्येऽस्मिन् ततस्तेन नैमिषारण्यसंज्ञितम्)।

नैमेयः [नि+मि+यत्+अण्] विनिमय, अदलाबदली।

नैयग्रोधम् [न्यग्रोध+अण्] बड़ या बरगद का फल, बरगद का पेड़।

नैयत्यम् [नियत+ष्यञ्] नियंत्रण, आत्मसंयम।

नैयमिक (वि०) (स्त्री०–की) [नियम+ठक्] नियम या विधि के अनुरूपी, नियमित,—कम् नियमितता।

नैयायिक [न्याय+ठक्] तार्किक, न्यायदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी।

नैरंतर्य [निरंतर+ष्यञ्] 1. निर्बाधता, निरंतर होने का भाव, अविच्छिन्नता 2. सान्निध्य, संसक्ति।

नैरपेक्ष्यम् [निरपेक्ष+ष्यञ्] अवहेलना, निरपेक्षता, उदासीनता।

नैरयिकः [निरय+ठक्] नरकवासी, नरक भोगने वाला।

नैरर्थ्यम् [निरर्थ+ष्यञ्] निरर्थकता, बेहूदगी, बकवास।

नैराश्यम् [निराश+ष्यञ्] 1. आशा का अभाव, नाउम्मीदी, निराशा—तटस्थं नैराश्यात्—उत्तर० ३।१३ 2. कामना या प्रत्याशा का अभाव—येनाशाः पृष्ठतः कृत्वा नैराश्यमवलंबितम्—हि० १, १४४, भामि० ४।

नैरुक्तः [निरुक्त+अण्] जो शब्दों की व्युत्पत्ति जानता है, शब्दव्युत्पत्तिशास्त्रविद् ।

नैरुज्यम् [निरुज+ष्यञ्] स्वास्थ्य, आरोग्य ।

नैर्ऋतः [निर्ऋति+अण्] एक राक्षस—भयमप्रलयोद्वेगादाचख्युर्नैर्ऋतोदधेः—रघु० १०।३६, ११।२१, १२।४३, १४।४, १५।२० ।

नैर्ऋती [नैर्ऋत+ङीप्] 1. दुर्गा का विशेषण 2. दक्षिण पश्चिमी दिशा ।

नैर्गुण्यम् [निर्गुण+ष्यञ्] गुणों या धर्मों का अभाव, 2. श्रेष्ठता की कमी, अच्छे गुणों का अभाव—नैर्गुण्यमेव साधीयो धिगस्तु गुणगौरवम्—भामि० १।८८ ।

नैर्घृण्यम् [निर्घृण+ष्यञ्] निर्ममता, क्रूरता—वैषम्यनैर्घृण्ये न सापेक्षत्वात् तथा हि दर्शयति—ब्रह्म० २।१।३४ ।

नैर्मल्यम् [निर्मल+ष्यञ्] स्वच्छता, शुद्धता, निष्कलङ्कता ।

नैर्लज्ज्यम् [निर्लज्ज+ष्यञ्] निर्लज्जता, बेहयाई, ढीठपना ।

नैल्यम् [नील+ष्यञ्] नीलापन, गहरा नीला रंग ।

नैवि (वि) ड्यम् [निवि (वि) ड+ष्यञ्] संशक्तता, सटा हुआ होने का भाव, घनापन, सघनता ।

नैवेद्यम् [निवेद+ष्यञ्] किसी देवता या देवमुर्ति को भेंट देने के लिए भोज्य पदार्थ ।

नैश (वि०) (स्त्री०—शी) नैशिक (वि०) (स्त्री०—की) [निशा+अण्, ठञ् वा] रात से संबंध रखने वाला, रात्रिविषयक, रात को होने वाला—तन्नैशं तिमिरमपाकरोति चन्द्रः—श० ६।२९, नैशस्यार्चिर्हुतभुज इवच्छिन्नभूयिष्ठधूमा—विक्रम० १।८, कि० ५।२ 2. रात को मनाया जाने वाला ।

नैश्चल्यम् [निश्चल+ष्यञ्] स्थिरता, अचलता, दृढ़ता ।

नैश्चित्यम् [निश्चित+ष्यञ्] 1. निर्धारण, निश्चिति 2. निश्चित समय पर होने वाला संस्कार ।

नैषधः [निषध+अण्] 1. निषध देश का राजा 2. विशेषतः, राजा नल का विशेषण 3. निषध देश का वासी, या जो निषध देश में उत्पन्न हुआ है ।

नैष्कर्म्यम् [निष्कर्म+ष्यञ्] 1. अकर्मण्यता, क्रियाहीनता 2. कर्म और उनके फलों से मुक्ति—भग० ३।४, १८।४९ 3. वह मुक्ति जो कर्म न कर केवल भाव, ध्यान आदि से प्राप्त की जाय (विप० कर्म मार्ग द्वारा प्राप्त मुक्ति) ।

नैष्किक (वि०) (स्त्री—की) [निष्क+ठक्] निष्क देकर मोल लिया हुआ, या निष्क से बना हुआ—**कः** टकसाल का अध्यक्ष ।

नैष्ठिक (वि०) (स्त्री०—की) [निष्ठा+ठक्] 1. अन्तिम, आखीर का, उपसंहारक—विदधे विधिमस्य नैष्ठिकम्—रघु० ८।२५ 2. निर्णीत, निश्चायक, निर्णायक (उत्तर आदि) 3. स्थिर, दृढ़, संलग्न 4. उच्चतम, पूरा 5. पूर्ण रूप से जानकार, या विज्ञ 6. निरन्तर त्यागमय शुद्ध पवित्र जीवन विताने की प्रतिज्ञा करने वाला,—**कः** वह शाश्वत छात्र जो आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए निर्धारित काल के पश्चात् भी सदैव गुरु की सेवा में रहे, और जिसने आजन्म ब्रह्मचारी तथा जितेन्द्रिय रहने की प्रतिज्ञा कर ली है—कु० ५।६२, तु० याज्ञ० १।४९ ।

नैष्ठुर्यम् [निष्ठुर+ष्यञ्] क्रूरता, कर्कशता, कठोरता ।

नैष्ठ्यम् [निष्ठ+ष्यञ्] स्थायित्व, दृढ़ता ।

नैसर्गिक (वि०) (स्त्री० की) [निसर्ग+ठक्] स्वाभाविक, अन्तर्जात, सहज, अन्तर्हित—नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न मुसलैरवताडनानि—मा० ९।४९, रघु० ५।३७, ६।४६ ।

नैस्त्रिंशिकः [निस्त्रिंश+ठक्] कृपाणधारी, तलवार रखने वाला ।

नो (अव्य०) [न+उ] नहीं, न, मत (प्रायः 'न' की भांति प्रयुक्त) भग० १७।२८, पंच० ५।२४, अमरु ५,७,१०,६२ ।

नोचेत् (अव्य०) [नो+चेत्+द्व० स०] अन्यथा, वरना ।

नोदनम् [नुद्+ल्युट्] 1. ठेलना, हांकना, आगे बढ़ाना 2. हटाना, दूर करना, मिटाना ।

नोधा (अव्य०) [नो+धा] नौ प्रकार, नौ गुणा ।

नौः (स्त्री०) [नुद्यते अनया—नुद्+डौ] जहाज, नौका, पोत महता पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया—शा० ३।१ 2. एक नक्षत्रपुंज का नाम । सम०—**आरोहः** (नावारोहः) 1. जहाज का यात्री 2. मल्लाह—**कर्णधारः**, नाविक, पोतचालक,—**कर्मन्** (नपुं०) मल्लाह की वृत्ति—मनु० १०।३४,—**चरः**,—**जीविकः** मल्लाह माँझी—रघु० १७।८१,—**तार्य** (वि०) जिसमें नाव चल सके, जो नाव से पार किया जा सके,—**दंडः** डांड, चप्पू,—**यानम्** पोत-कौशल, नौकायन,—**यायिन्** (वि०) नाव या जहाज से जाने वाला, नौयात्री—मनु० ८।४०९,—**वाहः** कर्णधार, कर्णी, पोतवाहक, केवट,—**व्यसनम्** पोतभंग, नौका का टूट जाना—नौव्यसने विपन्नः—श० ६,—**साधनम्** जहाजी बेड़ा, नौसमूह, पोतावली—वंगानुत्खाय तरसा नेता नौसाधनोद्यतान्—रघु० ४।३६ ।

नौका [नौ+कन्+टाप्] एक छोटी नाव, किश्ती—क्षणमिह सज्जनसंगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका—मोह०६ । सम०—**दंडः** चप्पू, पतवार ।

न्यक् (अव्य०) [नि+अंच्+क्विन्] क्रियाविशेषण, घृणा अपमान एवं दीनता को द्योतन करने के लिए 'कृ' और 'भू' से पूर्व लगने वाला उपसर्ग । सम०—**करणम्**

—कारः 1. दीनता, अवमानना 2. अनादर, घृणा, अपमान—न्यक्कारो हृदि वज्रकील इव मे तीव्रं परिस्पंदते—महावी० ५।२२, ३।४०, गंगा० ३२,—भावः 1. दीनता, अवमानना 2. घटिया करने वाला, मातहती, अधीनता,—भावित (वि०) 1. दीन, अधः—पतित, अपमानित 2. आगे बढ़ा हुआ, श्रेष्ठता को प्राप्त, अप्रधानीकृत—न्यग्भावितवाच्यव्यंग्यव्यंजन क्षमस्य शब्दार्थयुगलस्य—काव्य० १।

न्यक्ष (वि०) [नियते निकृते वा अक्षिणी यस्य—ब० स०, षच् प्रत्ययः] नीच, अधम, दुष्ट, कमीना,—क्षः 1. भैंस 2. परशुराम का विशेषण,—क्षम् सूराख, छिद्र।

न्यग्रोधः [न्यक् रुणद्धि—न्यक्+रुध्+अच्] 1. बरगद का पेड़ 2. पुरस, लंबाई का एक नाप जिसकी लंबाई उतनी होती है जितनी कि दोनों हाथों को फैलाने से होवे। सम०—परिमंडला श्रेष्ठ स्त्री (श्रेष्ठ स्त्री की परिभाषा यह है—स्तनौ सुकठिनौ यस्या नितंबे च विशालता, मध्ये क्षीणा भवेद्या सा न्यग्रोधपरिमंडला (शब्द०), दूर्वाकांडमिव श्यामा न्यग्रोधपरिमंडला—भट्टि० ४।१८।

न्यंकुः [नि+अञ्च्+डु] एक प्रकार का बारहसिंगा—रघु० १३।१५।

न्यञ्च् (वि०) (स्त्री०—नीची) [नि+अञ्च्+क्विन्] नीचे की ओर मुड़ा या झुका हुआ, या नीचे की ओर जाता हुआ 2. मुंह के बल लेटा हुआ 3. नीच, घृणा के योग्य, अधम, कमीना, दुष्ट—शि० १५।२१, (यहाँ इसका अर्थ 'निम्न' या 'नीचे की ओर' भी है) 4. मन्थर, आलसी 5. पूर्ण, समस्त।

न्यंचनम् [नि+अञ्च्+ल्युट्] 1. वक्र 2. छिपने का स्थान 3. कोटर।

न्ययः [नि+इ+अच्] 1. हानि, नाश 2. बरबादी, क्षय।

न्यसनम् [नि+अस्+ल्युट्] 1. जमा करना, लेटना 2. सौंपना, छोड़ना।

न्यस्त (भू० क० कृ०) [नि+अस्+क्त] 1. डाला हुआ, फेंका हुआ, लिटाया हुआ, जमा किया हुआ 2. अन्दर रक्खा हुआ, अन्तर्हित, प्रयुक्त—न्यस्ताक्षराः—कु० १।७ 3. वर्णित, चित्रित—चित्रन्यस्त 4. सुपुर्द किया हुआ, सौंपा हुआ, स्थानान्तरित—विक्रम० ५।१७, रत्न० १।१० 5. रहना, टिकना 6. छोड़ा हुआ, एक ओर डाला हुआ, उत्सृष्ट। सम—दंड (वि०) दंड जोड़ने वाला,—देह (वि०) मरा हुआ, मृत,—शस्त्र (वि०) 1. जिसने हथियार डाल दिये हों—आचार्यस्य त्रिभुवनगुरोर्न्यस्तशस्त्रस्य शोकात्—वेणी० ३।१८ 2, निरस्त्र, अरक्षित 3. जो हानि कारक न हो।

न्याक्यम् [नि+अक्+ण्यत्] तले हुए चावल, मुर्मुरे।

न्यादः [नि+अद्+ण] खाना, खिलाना।

न्यायः [नियन्ति अनेन—नि+इ+घञ्] 1. प्रणाली, तरीका, रीति, नियम, पद्धति, योजना—अधार्मिकं त्रिभिर्न्यायैर्निगृह्णीयात् प्रयत्नतः—मनु० ८।३१० 2. उपयुक्तता, औचित्य, सुरीति—कि० ११।३० 3. कानून, न्याय या इंसाफ़, नैतिक विशालता, न्याय्यता, सचाई, ईमानदारी—यांति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यंचोऽपि सहायताम्—अनर्घ० १।४ 4. क़ानूनी मुक़दमा, क़ानूनी कार्रवाई 5. क़ानून के अनुसार दण्ड, निर्णय 6. राजनीति, अच्छा शासन 7. समानता, सादृश्य 8. लोकरूढ़ नीतिवाक्य, उपयुक्त दृष्टांत, निदर्शना जैसे कि 'दंडापूप न्याय' 'काकतालीय न्याय' 'घुणाक्षर न्याय' आदि दे० नी० 9. वैदिक स्वर—न्यायैस्त्रिभिरुदीरणम्—कु० २।१२ (मल्लि० 'न्याय' शब्द का अर्थ 'स्वर' करते हैं, परन्तु हमारी सम्मति में यहाँ 'पद्धति' 'रीति' है जो कि तीन 'पद्धतियों' अर्थात् ऋक्, यजुस् और सामन् में प्रकट किया गया है) भर्तृ० ३।५५ 10. (व्या० में) विश्वव्यापी नियम 11 गौतम ऋषि प्रणीत न्यायशास्त्र 12 तर्क शास्त्र, न्यायदर्शन 13. अनुमान की पूरी प्रक्रिया (जिसमें पाँचों अंग अर्थात् प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन सम्मिलित हैं)। सम०—पथः मीमांसा दर्शन,—वर्तिन् (वि०) आचरणशील, न्यायानुसार आचरण करने वाला,—वादिन् (वि०) न्याय्य और धर्मानुमोदित बात कहनेवाला,—शास्त्रम् तर्क विज्ञान, तर्कशास्त्र,—सारिणी उचित तथा उपयुक्त व्यवहार,—सूत्रम् गौतम प्रणीत न्यायदर्शन के सूत्र।

विशे० कुछ सिद्धान्त-वाक्य या लोकरूढ़ नीतिवाक्यों को पाठकों के उपयोग के लिए संग्रह करके नीचे अकरादिक्रम से रख दिया गया है।

1. **अंधचटकन्यायः** [अन्धे के हाथ बटेर लगना] अर्थ में 'घुणाक्षर न्याय' के समान।
2. **अंधपरंपरान्यायः** [अंधानुकरण—जब लोग बिना विचारे दूसरों का अन्धानुकरण करते हैं और यह नहीं कि इस प्रकार का अनुकरण उन्हें अन्धकार में फँसा देगा]।
3. **अरुंधती दर्शनन्यायः** [अरुन्धती तारादर्शन का सिद्धांत, ज्ञात से अज्ञात का पता लगाना; शंकराचार्य की निम्नांकित व्याख्या से इसका प्रयोग स्पष्ट हो जायगा—अरुंधतीं दिदर्शयिषुस्तत्समीपस्थां स्थूलां तारामसुख्यां प्रथममरुंधतीति ग्राहयित्वा तां प्रत्याख्याय पश्चादरुंधतीमेव ग्राहयति।
4. **अशोकवनिकान्यायः** [अशोकवृक्षों के उद्यान का न्याय] रावण ने सीता को अशोकवाटिका में रक्खा था, परन्तु उसने और स्थानों को छोड़ कर इसी वाटिका में क्यों रक्खा, इसका कोई विशेष कारण नहीं बताया

जा सकता। सारांश यह हुआ कि जब मनुष्य के पास किसी कार्य को सम्पन्न करने के अनेक साधन प्राप्त हों, तो यह उसकी अपनी इच्छा है कि वह चाहे किसी साधन को अपना ले। ऐसी अवस्था में किसी भी साधन को अपनाने का कोई विशेष कारण नहीं दिया जा सकता।

5. **अश्मलोष्टन्यायः** [पत्थर और मिट्टी के लौंदे का न्याय] मिट्टी का ढला रूई की अपेक्षा कठोर है परन्तु वही कठोरता मदुता में बदल जाती है जब हम उसकी तुलना पत्थर से करते हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति बड़ा महत्त्वपूर्ण समझा जाता है जब उसकी तुलना उसकी अपेक्षा निचले दर्जे के व्यक्तियों से की जाती है, परन्तु यदि उसकी अपेक्षा श्रेष्ठतर व्यक्तियों से तुलना की जाय तो वही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नगण्य बन जाता है। 'पाषाणेष्टकन्याय' भी इसी प्रकार प्रयुक्त किया जाता है।

6. **कदंबकोरक (गोलक)न्यायः** [कदंब वृक्ष का कलि का न्याय] कदंब वृक्ष की कलियाँ साथ ही खिल जाती है, अतः जहाँ उदय के साथ ही कार्य भी होने लगे, वहाँ इस न्याय का उपयोग करते हैं।

7. **काक तालीय न्यायः** [कौवे और ताड़ के फल का न्याय] एक कौवा एक वृक्ष की शाखा पर जाकर बैठा ही था कि अचानक ऊपर से एक फल गिरा और कौवे के प्राण पखेरु उड़ गये—अतः जब कभी कोई घटना शुभ हो या अशुभ अप्रत्याशित रूप से अकस्मात् घटती है, तब इसका उपयोग होता है—तु० चन्द्रा०—यत्तया मेलनं तत्र लाभो मे यश्च सुभ्रुवः, तदेतत्काकतालीयमवितर्कितसंभवभ्। कुवलयानन्द में भी—पतत् तालफलं यथा काकेनोपभुक्तमेवं रहोदर्शनेक्षुभितहृदया तन्वी मया भुक्ता। दे० 'काकतालीय' भी।

8. **काकदंतगवेषणन्यायः** [कौवे के दाँत ढूँढना] यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति व्यर्थ, अलाभकारी या असंभव कार्य करता है।

9. **काकाक्षिगोलन्यायः** [कौवे की आंख गोलक का न्याय] एकदृष्टि, एकाक्ष आदि शब्दों से यह कल्पना की जाती है कि कौवे की आँख तो एक ही होती है, परन्तु वह आवश्यकता के अनुसार उसे एक गोलक से दूसरे गोलक में ले जा सकता है। इसका उपयोग उस समय होता है जब वाक्य में किसी शब्द या पदोच्चय का जो केवल एक ही बार प्रयुक्त हुआ है, आवश्यकता होने पर दूसरे स्थान पर भी अध्याहार कर लें—अर्थात् =द्वीपोऽस्त्रियातरीपः इत्यत्र अस्त्रियामित्यस्य काकाक्षिगोलकन्यायेन अंतरीपशब्देनाप्यन्वयः।

10. **कूपयंत्रघटिका न्यायः** [रहटटिंडर न्याय] इसका उपयोग सांसारिक अस्तित्व की विभिन्न अवस्थाओं को प्रकट करने के लिए किया जाता है—जैसे रहट के चलते समय कुछ टिंडर तो पानी से भरे हुए ऊपर को जाते हैं, कुछ खाली हो रहे हैं, और कुछ बिल्कुल खाली होकर नीचे को जा रहे हैं—कांश्चित्तुच्छयति प्रपूरयति वा कांश्चिन्नयत्युन्नतिं कांश्चित्पातविधौ करोति च पुनः कांश्चिन्नयत्याकुलान्, अन्योन्यप्रतिपक्षसंहतिमिमां लोकस्थितिं बोधयन्नेष क्रीडति कूपयंत्रघटिकान्यायप्रसक्तो विधिः। मृच्छ० १०।५९।

11. **घट्टकुटीप्रभातन्यायः** [चुंगी घर के निकट पौफटी का न्याय] कहते हैं एक गाड़ीवान चुंगी देना नहीं चाहता था, अतः वह ऊबड़-खाबड़ रास्ते से रात को ही चल दिया, परन्तु दुर्भाग्यवश रात भर इधर-उधर घूमता रहा, जब पौफटी तो देखता क्या है कि वह ठीक चुंगीघर के पास ही खड़ा है, विवश हो उसे चुंगी देनी पड़ी इसलिए जब कोई किसी कार्य को जानबूझ कर टालना चाहता है, परन्तु में उसी को करने के लिए विवश होना पड़ता है तो उस समय इस न्याय का प्रयोग होता है—दे० श्रीधर—तदिदं घट्टकुटीप्रभातन्याय मनुवदति।

12. **घुणाक्षर न्यायः** [लकड़ी में घुणकीटों द्वारा निर्मित अक्षर का न्याय] किसी लकड़ी में घुन लग जाने से अथवा किसी पुस्तक में दीमक लग जाने से कुछ अक्षरों की आकृति से मिलते-जुलते चिह्न अपने आप बन जाते हैं, अतः जब कोई कार्य अनायास व अकस्मात् हो जाता है तब इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

13. **दण्डापूपन्यायः** [डंडे और पूड़े का न्याय] जब डंडा और पूड़ा एक ही स्थान पर रक्खे गये—और एक व्यक्ति ने कहा कि डंडे को तो चूहे घसीट कर ले गये और खा लिया, तो दूसरा व्यक्ति स्वभावतः यह समझ लेता है कि पूड़ा तो खा ही लिया गया होगा—क्योंकि वह उसके पास ही रक्खा था। इसलिए जब कोई वस्तु दूसरी के साथ विशेष रूप से अत्यंत संबद्ध होती है और एक वस्तु के संबंध में हम कुछ कहते हैं तो वही बात दूसरी के साथ भी अपने आप लागू हो जाती है, तु०—मूषिकेण दंडो भक्षितः इत्यनेन तत्सहचरितमपूपभक्षणमर्थादायातं भवतीति नियतसमानन्यायादर्थांतरमापततीत्येष न्यायो दंडापूपिका—सा० द० १०।

14. **देहलीदीपन्यायः** [देहली पर स्थापित दीपक का न्याय] जब दीपक को देहली पर रख दिया जाता है तो इसका प्रकाश देहली के दोनों ओर होता है अतः यह न्याय उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब एक ही वस्तु दो स्थानों पर काम आवे।

15. **नृपनापितपुत्रन्यायः** [राजा और नाई के पुत्र का न्याय] कहते हैं कि एक नाई किसी राजा के यहाँ नौकर था, एक बार राजा ने उसे कहा कि मेरे राज्य में जो लड़का सब से सुन्दर हो उसे लाओ। नाई बहुत दिनों तक इधर उधर भटकता रहा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक न मिला जैसा राजा चाहता था। अन्त में थककर और निराश होकर वह घर लौट आया—तब उसे अपना काला-कलूटा लड़का ही अत्यंत सुन्दर लगा। वह उसी को लेकर राजा के पास गया पहले तो उस काले कलूटे बालक को देख कर राजा को बड़ा क्रोध आया परन्तु यह विचार कर कि मानव मात्र अपनी वस्तु को ही सर्वोत्तम समझता है, उसे छोड़ दिया—तु० सर्वः कांतमात्मीयं पश्यति—हिन्दी—अपनी छाछ को कौन खट्टा बताता है।

16. **पंकप्रक्षालनन्यायः** [कीचड़ धोकर उतारने का न्याय] कीचड़ लगने पर उसे धो डालने की अपेक्षा यह अधिक अच्छा है कि मनुष्य कीचड़ लगने ही न देवे। इसी प्रकार भयग्रस्त स्थिति में फँस कर उससे निकलने का प्रयत्न करने की अपेक्षा यह ज्यादह अच्छा है कि उस भयग्रस्त स्थिति में क़दम ही न रक्खे—तु०—'प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरम्'—'सौ दवा से एक परहेज़ अच्छा'।

17. **पिष्टपेषणन्यायः** [पिसे को पीसना] यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई किये हुए कार्य को ही दुबारा करने लगता है, क्योंकि पिसे को पीसना फ़ालतू और व्यर्थ कार्य है—तु० कृतस्य करणं वृथा।

18. **बीजांकुरन्यायः** [बीज और अङ्कुर का न्याय] कार्य कारण जहाँ अन्योन्याश्रित होते हैं वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है (बीज से अङ्कुर निकला, और फिर समय पाकर अंकुर से ही बीज की उत्पत्ति हुई) अतः न बीज के बिना अङ्कुर हो सकता है और न अंकुर के बिना बीज।

19. **लोहचुम्बकन्यायः** [लोहे और चुंबक का आकर्षण न्याय] यह प्रकृति सिद्ध बात है कि लोहा चुंबक की ओर आकृष्ट होता है, इसी प्रकार प्राकृतिक घनिष्ट संबंध या निसर्गवृत्ति की बदौलत सभी वस्तुएँ एक दूसरे की ओर आकृष्ट होती हैं।

20. **वह्निधूमन्यायः** [धूएँ से अग्नि का अनुमान] धूएँ और अग्नि की अवश्यंभावी सहवर्तिता नैसर्गिक है, अतः (जहाँ धूआँ होगा वहाँ आग अवश्य होगी)। यह न्याय उसी समय प्रयुक्त होता है जहाँ दो पदार्थ कारण-कार्य या दो व्यक्तियों का अनिवार्य संबंध बताया जाय।

21. **वृद्धकुमारीवाक्यं (वर)न्यायः** [बूढ़ी कुमारी को वरदान न्याय] इस प्रकार का वरदान मांगना जिसमें वह सभी बातें आ जाय जो एक व्यक्ति चाहता है। महाभाष्य में कथा आती है कि एक बुढ़िया कुमारी को इन्द्र ने कहा कि एक ही वाक्य में जो वरदान चाहो मांगो, तब बुढ़िया बोली—पुत्रा मे बहुक्षीर-घृतमोदनं कांचनपात्र्यां भुंजीरन् (अर्थात् मेरे पुत्र सोने की थाली में घी दूध युक्त भात खायें)। इस एक ही वरदान में बुढ़िया ने पति, पुत्र, धन-धान्य, पशु, सोना, चाँदी सब कुछ माँग लिया। अतः जहाँ एक की प्राप्ति से सब कुछ प्राप्त हो वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है।

22. **शाखाचंद्रन्यायः** [शाखा पर वर्तमान चन्द्रमा का न्याय] जब किसी को चन्द्रमा का दर्शन कराते हैं तो चन्द्रमा के दूर स्थित होने पर भी हम यही कहते हैं 'देखो सामने वृक्ष की शाखा के ऊपर चाँद दिखाई देता है'। अतः यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई वस्तु चाहे दूर ही हो, निकटवर्ती किसी पदार्थ से संसक्त होती है।

23. **सिंहावलोकनन्यायः** [सिंह का पीछे मुड़ कर देखना] यह उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति आगे चलने के साथ २ अपने पूर्वकृतकार्य पर भी दृष्टि डालता रहता है—जिस प्रकार सिंह शिकार की तलाश में आगे भी बढ़ता जाता है परन्तु साथ ही पीछे मुड़कर भी देखता रहता है।

24. **सूचीकटाहन्यायः** [सूई और कड़ाही का न्याय] यह उस समय प्रयुक्त किया जाता है, जब दो बातें—एक कठिन और एक अपेक्षाकृत आसान—करने को हों, तो उस समय आसान कार्य को पहले किया जाता है, जैसे कि जब किसी व्यक्ति को सुई और कड़ाही दो वस्तुएँ बनानी हैं तो वह सुई को पहले बनावेगा—क्योंकि कड़ाही की अपेक्षा सुई का बनाना आसान या अल्पश्रमसाध्य है।

25. **स्थूणानिखननन्यायः** [गढ़ा खोदकर उसमें थूणी जमाना] जब किसी मनुष्य को कोई थूणी अपने घर में लगानी होती है तो मिट्टी कंकड़ आदि बार बार डाल कर और कूटकर वह उस थूणी को दृढ़ बनाता है, इसी प्रकार वादी भी अपने अभियोग की पुष्टि में नाना प्रकार के तर्क, और दृष्टान्त उपस्थित करके अपनी बात का और भी अधिक समर्थन करता ह।

26. **स्वामिभृत्यन्यायः** [स्वामी और सेवक का न्याय] इसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब पालक और पाल्य, पोषक और पोष्य के संबन्ध को बतलाना होता है या ऐसे ही किन्हीं दो पदार्थों का संबंध बतलाया जाता है।

न्याय्य (वि०) [न्याय+यत्] 1. ठीक, उचित, सही, न्यायसंगत, उपयुक्त, योग्य—न्याय्यात्पथः प्रविचलंति

पदं न धीराः—भर्तृ० २।८३, भग० १८।१५, मनु० २।१५२, ९।२०२, रघु० २।५५, कि० १४।७, कु० ६।८७ 2. सामान्य, प्रचलित ।

न्यासः [नि+अस्+घञ्] 1. रखना, स्थापित करना, आरोपण करना—तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसुं—रघु० २।२, कु० ६।५०, चरणन्यास, अंगन्यास आदि 2. अतः कोई भी छाप, चिह्न, मोहर, ठप्पा, अतिशस्त्रनखन्यासः—रघु० १२।७३, 'जहाँ नखचिह्न, शस्त्र-चिह्नों से भी बढ़ गये, दंतन्यासः 3. जमा करना 4. धरोहर, अमानत प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा—श० ४।२१, रघु० १२।८, याज्ञ० २।६७ 5. सौंपना, बचन-बद्ध होना, सिपुर्द करना, हवाले करना 6. चित्रित करना, लिख रखना 7. छोड़ना, उत्सर्ग करना, त्यागना, तिलांजलि देना—शस्त्र°, भग० १८।२ 8. सम्मुख रखना, घटाना 9. खोद कर निकालना, (पंजे आदि से) पकड़ना 10. शरीर के भिन्न भिन्न अंगों में भिन्न भिन्न देवताओं का ध्यान जो सामान्य रूप से मंत्र पाठ के साथ २ तदनुरूप हावभाव सहित सम्पन्न किया जाता है। सम०—अपह्नवः किसी धरोहर का प्रत्याख्यान करना,—धारिन् (पुं०) धरोहर रखने वाला, रहन रखने वाला ।

न्यासिन् (पुं०) [न्यास+इनि] जिसने अपने समस्त सांसारिक बंधनों को काट डाला है, संन्यासी ।

न्युं (न्यूं) ख (वि०)] नि+उङ्ख्+घञ्] 1. मनोहर, सुन्दर, प्रिय 2. उचित, ठीक ।

न्युब्ज (वि०) [नि+उब्ज+अच्] 1. नीचे की ओर झुका हुआ, या मुड़ा हुआ, मुँह के बल लेटा हुआ—ऊर्ध्वार्पित न्युब्जकटाहकल्पे (व्योम्नि)—नै० २२।३२ 2. झुका हुआ, टेढ़ा 3. उन्नतोदर 4. कुबड़ा,—ब्जः बड़ या बरगद का पेड़ । सम०—खड्गः खांडा, वक्र खड्ग ।

न्यून (वि०) [नि+ऊन्+अच्] 1. कम किया हुआ, घटाया हुआ, छोटा किया हुआ 2. सदोष, घटिया, हीन, अभावग्रस्त, रहित या विहीन—जैसा कि अर्थ-न्यून में 3. कम (विप० अधिक)—याज्ञ० २।११६ 4. सदोष (किसी अंग से) पाद° 5. नीच, दुष्ट, दुर्वृत्त, निंद्य,—नम् (अव्य०) कम, कम मात्रा में । सम०—अंग (वि०) अपांग, विकलांग,—अधिक (वि०) कम या ज्यादह, असमान,—धी निर्बुद्धि, अज्ञानी, मूर्ख ।

न्यूनयति (ना० धा० पर०) घटना, कम करना ।

प

प (वि०) [पा+क] (समास के अन्त में प्रयुक्त] 1. पीने वाला, जैसा कि 'द्विप' 'अनेकप' में 2. चौकसी करने वाला, रक्षा करने वाला, हकूमत करने वाला जैसा कि 'गोप' 'नृप' और 'क्षितिप' में—पः 1. वायु हवा 2. पत्ता 3. अंडा ।

पक्कणः [पचति श्वादिनिकृष्टमांसमिति—पच्+क्विप् =पक्=शबरः तस्य कणः कोलाहलशब्दो यत्र] 1. चांडाल का घर बर्बर या जंगली आदमी का घर ।

पक्तिः (स्त्री०) [पच्+क्तिन्] 1. पकाना 2. पचना, हाज़मा या पाचन शक्ति 3. पक जाना, परिपक्व होना, परिपक्वावस्था विकास 4. प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा । सम०—शूलम् अजीर्ण के कारण पेट में होने वाला दर्द, उदर पीड़ा ।

पक्तृ (वि०) [पच्+तृच्] 1. रसोइया पाचक 2. पकाने वाला 3. उद्दीपक, पचाने वाला—(पुं०) जठराग्नि ।

पक्त्रम् [पच्+ष्ट्रन्] 1. यज्ञाग्नि को स्थापित रखने वाले गृहस्थ की दशा 2. इस प्रकार स्थापित यज्ञाग्नि ।

पक्त्रिम (वि०) [पच्+क्त्रि+मप्] 1. पक्का, पका हुआ 2. परिपक्व, 3. पकाया हुआ ।

पक्व (वि०) [पच्+क्त, तस्य वः] 1. पकाया हुआ, भूना हुआ, उबाला हुआ—जैसा कि 'पक्वान्न' में 2. पचा हुआ 3. सेका हुआ, गरम किया हुआ, तपाया हुआ (विप० आम) पक्वेष्टकानामाकर्षम्—मृच्छ० ३ 4. परिपक्व, पक्का, पक्वबिम्बाधरोष्ठी—मेघ० ८२ 5. सुविकसित, सुपूरित, परिपक्व जैसा कि 'पक्वधी' में 6. अनुभवशील, बुद्धिमान् 7. (फोड़े की भांति) पका हुआ जिसमें पीप पड़ने वाली हो 8. सफेद (बाल) 9. नष्ट, क्षीयमाण विनाश के अन्त पर, अपनी मृत्यु का स्वागत करने के लिए पक्का । सम०—अतिसारः पुरानी पेचिश,—अन्नम् मसाला आदि डालकर बनाया गया भोजन,—आशयः पेट, उदर,—इष्टका पकी हुई ईंट,—इष्टकचितम् पक्की ईंटों से निर्मित भवन,—कृत् (वि०) 1. पकाने वाला, 2. परिपक्व होने वाला,—रसः शराब, मदिरा—वारि (नपुं०) कांजी का पानी ।

पक्वशः (पुं०) एक बर्बर जाति का नाम, चाण्डाल ।

पक्ष् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ, पक्षति, पक्षयति-ते) 1. लेना, ग्रहण करना 2. स्वीकार करना 3. पक्ष लेना, तरफदारी करना ।

पक्षः [पक्ष्+अच्] बाजू, भुजा, अद्यापि पक्षावपि नोद्भि-

येते—का० ३४७, इसी प्रकार 'उद्भिन्नपक्षः' निकल आये हैं पंख जिसके, पक्षयुक्त, पक्षच्छेदोद्यतं शक्रम् —रघु० ४।१०, ३।४० 2. बाण के दोनों ओर लगे पंख 3. किसी मनुष्य या जन्तु का पार्श्व, कंधा—स्तंबेरमा उभयपक्षविनीतनिद्राः—रघु० ५।७२ 4. किसी भी वस्तु का पार्श्व, बगल 5. सेना का एक कक्ष या पार्श्व 6. किसी वस्तु का अर्धभाग 7. चान्द्र मास का अर्धभाग, पखवारा (१५ दिनों का) (इस प्रकार के दो पक्ष होते हैं—शुक्लपक्ष—जिन दिनों चन्द्रमा निकला रहता है, कृष्ण या तमिस्रपक्ष—अंधियारा पाख) तमिस्रपक्षेऽपि सह प्रियाभिर्ज्योत्स्ना वतो निर्विशति प्रदोषात्—रघु० ६।३४, मनु० १।६६, याज्ञ० ३।५०, सीमा वृद्धि समायाति शुक्लपक्ष इवोडुराट्—पंच० १।९२ 8. दल, गुट, पहलू—प्रमुदितवरपक्षं—रघु० ६।८६, शि० २।११७, भग० १४।२५, रघु० ६।५३,१८ 9. किसी एक दल से संबद्ध, अनुयायी, साझीदार—शत्रुपक्षोभवान्—हि० १ 10. श्रेणी, समुदाय, समूह, अनुयायियों की संख्या—शत्रु°, मित्र° 11. किसी तर्क का एक पहलू, विकल्प, दो में से कोई सा एक पक्ष,—पक्षे दूसरा पहलू, इसके विपरीत ·पूर्वं एवाभवत्पक्षस्तस्मिन्नाभवदुत्तरः—रघु० ४।१०, १४।३४, तु० पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष 12. एक सामान्य विचार जैसा कि 'पक्षांतरे' में 13. चर्चा का विषय, प्रस्ताव 14. अनुमान-प्रक्रिया का विषय (वह वस्तु जिसमें साध्य की स्थिति ·संदिग्ध हो) संदिग्धसाध्यवान् पक्षः—तर्क०, दधतः शुद्धिभृतो गृहीतपक्षाः —शि० २०।११ (यहां इसका अर्थ 'पंखयुक्त' भी है) 15. दो की संख्या की प्रतीकात्मक उक्ति 16. पक्षी 17. अवस्था, दशा 18. शरीर 19. शरीर का अंग 20. राजा का हाथी 21. सेना 22. दीवार 23. विरोध 24. प्रतिवचन, उत्तर 25. राशि,समुच्चय (समासमें 'बाल'का अर्थ देने वाले शब्दों के साथ), केशपक्षः, तु० हस्त। सम० —अंतः कोई से भी पक्ष का पन्द्रहवां दिन अर्थात् अमावस्या या पूर्णिमा का दिन—अंतरम् 1. दूसरा पार्श्व 2. किसी तर्क का दूसरा पहलू 3. और विचार या कल्पना,—आघातः 1.शरीर के एक अंग का मारा जाना, अधलकवा—आभासः 1. भ्रामक तर्क 2. मिथ्या परिवाद या फ़रियाद,—आहारः पखवारे में केवल एक बार भोजन करना,—ग्रहणम् किसी भी पक्ष का हो जाना,—चरः 1. यूथभ्रष्ट हाथी 2. चन्द्रमा, —छिद् (पुं०) इन्द्र का विशेषण (पहाड़ के पंखों या भुजाओं को काटने वाला), कु० १।२०,—जः चाँद —द्वयम् 1. किसी विवाद के दोनों पहलू 2. दो पखवारे अर्थात् एक मास,—द्वारम् चोरदरवाज़ा, निजी द्वार,—धर (वि०) 1. पंखधारी 2. एक का पक्ष लेने वाला, किसी एक की तरफ़दारी करने वाला (रः) 1. पक्षी 2. चन्द्रमा 3. हिमायती 4. यूथभ्रष्ट हाथी,—नाडी पक्षों का मोटा पर जिसे कलमकी भांति प्रयुक्त करते हैं,—पातः 1. किसी एक की तरफ़दारी करना 2. (किसी वस्तु के लिए) स्नेह, प्रेम, चाह, रुचि—भवंति भव्येषु हि पक्षपाताः—कि० ३।१२, वेणी० ३।१०, उत्तर० ५।१७, रिपुपक्षे बद्धःपक्षपातः —मुद्रा० १।३ 3. किसी दल विशेष की ओर अनुराग, हिमायत, तरफ़दारी—पक्षपातमत्र देवी मन्यते —मालवि० १, सत्यं जना वच्मि न पक्षपातात् —भर्तृ० १।४७ 4. पंखों का गिरना, पक्षमोचन 5. हिमायती—पातिन् (वि०) 1. पक्षपात करने वाला, किसी एक दल का अनुयायी, (किसी एक विशिष्ट बात का) तरफ़दार—पक्षपातिनो देवा अपि पांडवानाम् वेणी० ३ 2. सहानुभूति करने वाला—वेणी० ३ 3. अनुयायी, हिमायती, मित्र—यः सुरपक्षपाती —विक्रम० १, (नै० २।५२ में 'पक्षपातिता' शब्द का अर्थ है 'पंखों की गति' भी),—पालिः चोर दरवाजा, —बिंदुः कंक पक्षी,—भागः 1. पार्श्व, बगल 2. विशेषतः हाथी का पार्श्व,—भुक्तिः उतनी दूरी जितनी सूर्य एक पखवारे में तय करता है,—मूलम् पंख की जड़,—वादः 1. एकतरफ़ा बयान 2. एक पक्ष की उक्ति, मताभिव्यक्ति,—वाहनः पक्षी,—हतः (वि०) जिसका एक पार्श्व लकवे से बेकाम हो गया हो,—हरः पक्षी,—होम 1. पन्द्रह दिन तक होने वाला यज्ञ 2. पाक्षिक यज्ञ।

पक्षकः [पक्ष+कन्] 1. चोर दरवाज़ा 2. पक्ष, पार्श्व 3. साथी, हिमायती (समास के अन्त में प्रयुक्त)।

पक्षता [पक्ष+तल्+टाप्] 1. मित्रता, हिमायत 2. दल- विशेष का अनुगमन 3. किसी एक पक्ष का होना।

पक्षतिः (स्त्री०) [पक्षस्य मूलम्-पक्ष+ति] 1. पंख की जड़ अलिखच्चञ्चुपुटेन पक्षती—नै० २।२,—खड्गच्छिन्न जटायुपक्षतिः—उत्तर० ३।४३, शि० ११।२६ 2. शुक्लपक्ष की प्रतिपदा।

पक्षालुः [पक्ष+आलुच्] पंछी।

पक्षिणी [पक्ष+इनि+ङीप्] 1. मादा पक्षी 2. दो दिनों के बीच की रात (द्वावह्नावेक रात्रिश्च पक्षिणीत्यभिधीयते) 3. पूर्णिमा।

पक्षिन् (वि०) (स्त्री—णी) [पक्ष+इनि] 1 पंखयुक्त 2. बाजूवाला 3. तरफ़दार, दल विशेष का अनुयायी —[पुं०) 1. पक्षी 2. तीर 3. शिव का विशेषण। सम०—इन्द्रः,—प्रवरः,—राज् (पुं०)—राजः,—सिंहः —स्वामिन् (पुं०) गरुड का विशेषण,—कीटः छोटी चिड़िया,—शाला 1. घोंसला 2. चिड़ियाघर।

पक्ष्मन् (नपुं०) [पक्ष्+मनिन्] 1. बरौनी—सलिलगुरुभिः पक्ष्मभिः—मेघ० ९०।४७, रघु० २।१९, ११।३६, 2. फूल की पंखड़ी 3. धागे का सिरा, पतला धागा 4. बाजू।

पक्ष्मल (वि०) [पक्ष्मन्+लच्] 1. दृढ़, लम्बी और सुन्दर बरौनी वाला—पक्ष्मलाक्ष्याः—श० ३।२५ 2. बालों वाला, लोमश, रोएंदार—मृदितपक्ष्मलरल्लकांगः—शि० ४।६१।

पक्ष्य (वि०) [पक्ष+यत्] 1. पखवारे में होने वाला, पाक्षिक 2. तरफदार 3. पक्षपाती,—क्ष्यः हिमायती, अनुयायी मित्र, सखा—ननु वज्रिण एव वीर्यमेतद्विजयंते द्विषतो यदस्य पक्ष्याः—विक्रम० १।१६।

पंकः,—कम् [पंच् विस्तारे कर्मणि करणे वा घञ्, कुत्वम्] गारा, लसदार मिट्टी, दलदल - अनीत्वा पंकतां धूलिमुदकं नावतिष्ठते—शि० २।३४, कि० २।६, रघु० १६।३० 2. अतः मोटी राशि, स्थूल ढेर—कृष्णागुरुपंक—का० ३० 3. दलदल, कीचड़, धंसन 4. पाप। सम०—कीरः टिटिहिरी,—क्रीडः सूअर,—ग्राहः, मगरमच्छ, घड़ियाल,—छिद् (पुं०) रीठे का वृक्ष (कतक, जिसके फल से गदले पानी को स्वच्छ किया जाता है)—मालवि० २।८,—जम् कमल, °जः, °जन्मन् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, °नाभः विष्णु का विशेषण—रघु० १८।२०,—जन्मन् (नपुं०) कमल (पुं०) सारस पक्षी,—मंडूकः द्विकोष शंख,—रुह् (नपुं०),—रुहम् कमल,—वासः केंकड़ा।

पंकजिनी [पंकज+इनि] 1. कमल का पौधा—कि० १०।३३ 2. कमलों का समूह 3. कमलों से भरा हुआ स्थान 4. कुमुद डंडी।

पंकणः [पृषो० सा०] चांडाल की झोंपड़ी, दे० 'पक्कण'।

पंकारः [पङ्क+ऋ+अण्] 1. सिवार 2. बाँध, मेंड़ 3. जीना, सीढ़ी, पौड़ियाँ।

पंकिल (वि०) [पंक+इलच्] गारे से भरा हुआ, गदला, मैला, मलिन—शि० १७।८।

पंकेज [पंके जायते—पंके+जन्+ड] कमल।

पंकेरुह् (नपुं०), हम् [पंके+रुह्+क्विप्, क वा] कमल,—हः शारस पक्षी।

पंकेशय (वि०) [पंके+शी+अच्] दलदल में रहने वाला।

पंक्तिः (स्त्री०)[पंच्+क्तिन्] 1. लाइन, कतार, श्रेणी, सिलसिला—दृश्येत चारुपदपंक्तिरलक्तकांका—विक्रम० ४।६, पक्ष्म पंक्ति—रघु० २।१९, अलिपंक्तिः—कु० ४।१५, रघु० ६।५ 2. समूह, संग्रह, रेवड़, दल 3. (एक ही जाति के) लोगों की लाइन जो खाने पर बैठी हो, एक ही जाति के सहभोजियों का समुदाय - तु० पंक्तिपावन 4. जीवित पीढ़ी 5. पृथ्वी 6. यश, प्रसिद्धि 7. पाँच का संग्रह, पाँच की संख्या 8. दस की संख्या जैसा कि 'पंक्तिरथ' और 'पंक्तिग्रीव' में है। सम०—ग्रीवः रावण का विशेषण,—चरः समुद्री उकाब, कुरर पक्षी,—दूषः,—दूषकः, जिसके साथ बैठकर भोजन करने में दूषण लगे, ऐसा समाज को दूषित करने वाला व्यक्ति,—पावनः आदरणीय या सम्मानित व्यक्ति, एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण जो विद्वान् होने के साथ २ अपनी उपस्थिति से भोज की पंक्ति को पवित्र कर देता है,—पंक्तिपावनाः पंचाग्नयः—मा० १,—यहाँ जगद्धर कहता है—पंक्तिपावनाः पंक्तौ भोजनादिगोष्ठ्यां पावनाः, अग्निभोजिनः पवित्रावा; यद्वा, यजुषां पारगो यस्तु साम्नां यश्चापि पारगः, अथर्वशिरसोऽध्येता ब्राह्मणः पंक्ति पावनः। या—अग्र्याः सर्वेषु वेदेषु सर्व प्रवचनेषु च, यावदेते प्रपश्यंति पंक्त्यां तावत्पुनंति च। ततो हि पावनात्पंक्त्या उच्यंते पंक्तिपावनाः। मनु इस शब्द की व्याख्या इस प्रकार करते हैं:—अपांक्तयोपहताः पंक्तिः पाव्यते यैर्द्विजोत्तमैः, तान्निबोधत कार्त्स्न्येन द्विजाग्र्यान् पंक्तिपावनान्। मनु० ३।१८४—दे० ३।१८३, १८६ भी,—रथः दशरथ का नाम—रघु० ९।७४।

पंगु (वि०) (स्त्री०—गू—ग्वी) [खञ्ज्+कु, खस्य पत्वे जस्य गादेशः, नुम्] लंगड़ा, लड़खड़ाता, विकलांग—गुः 1. लंगड़ा, आदमी,—मूकं करोति वाचलं पंगुं लंघयते गिरिम् 2. शनि का विशेषण।—सम० ग्राहः 1. मगरमच्छ 2. दसवीं राशि, मकरराशि।

पंगुल (वि०) [पङ्गु+लच्] लङ्गड़ा, विकलांग।

पच् i (भ्वा० उभ० पचति-ते, पक्व) 1. पकाना, भूनना, भोजन बनाना (यह धातु द्विकर्मक बतलाई जाती है—उदा० तण्डुलानोदनं पचति परन्तु इस प्रकार का प्रयोग लौकिक संस्कृत में विरल है), यः पचत्यात्मकारणात् मनु० ३।११८, शूले मत्स्यानिवापक्ष्यन् दुर्बलान् बलवत्तराः—०।२०, भर्तृ० १।८५ 2. पकाना, (ईंट आदि) पकाना, दे० पक्व 3. (भोजन आदिक) पचाना—पचाम्यन्नं चतुर्विधम्—भग० १५।१४ 4. पकना, परिपक्व होना 5. पूर्णता को पहुंचाना, (समझ आदि का) विकास करना 6. (धातु आदि का) गलाना 7. (अपने लिए) पकाना (आ०)—कर्मवा०-पच्यते, 1. पकाया जाना 2. पक्का होना, परिपक्व या विकसि होना, पकना (आलं०) फल देना, पूर्णता को प्राप्त करना—रघु० ११।५०,—पाचयति-ते पकवाना, पक्का कराना, विकसित कराना, पूर्णता को पहुँचाना—सन्नंत पिपक्षति—पकाने की इच्छा करना—परि—, पकना, परिपक्व होना, विकसित होना, वि— 1. परिपक्व होना, विकसित होना पकना, फल देना —रघु० १७।५३ 2. पचाना 3. भलीभांति पकाना।

ii (भ्वा० आ०—पचते) स्पष्ट करना, विशद करना।

पचतः [पच्+अत] 1. अग्नि 2. सूर्य 3. इन्द्र का नाम।

पचन (वि०) [पच्+ल्युट्] पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना—**नः** अग्नि—**नम्** 1. पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना 2. पकाने के उपकरण, वर्तन, इन्धन आदि।

पचपचः [प्रकारे पच इत्यस्य द्वित्वम्] शिव जी की उपाधी।

पचा [पच्+अङ्+टाप्] पकाने की क्रिया।

पचिः [पच्+इन्] अग्नि।

पचेलिम (वि०) [पच्+एलिमच्] 1. शीघ्र ही पकने वाला 2. परिपक्व होने के योग्य 3. स्वतः या नैसर्गिक रूप से पकने वाला - ददर्श मालूरफलं पचेलिमम्—नै० १।९४,—**मः** 1. अग्नि 2. सूर्य।

पचेलुकः [पच्+एलुक] रसोइया।

पञ्चटिका (स्त्री०) एक छोटी घंटी।

पंचक (वि०) [पंच+कन्] 1. पाँच से युक्त 2. पाँच से संबद्ध 3. पाँच से निर्मित 4. पांच से खरीदा हुआ 5. पाँच प्रतिशत लेने वाला,—**कः**,—**कम्** पाँच वस्तुओं का संग्रह, 'अम्लपंचक'।

पंचत् (स्त्री०) पंच, पंचसमुदाय, पंचायत।

पंचता,—त्वम् [पंचन्+तल्+टाप्, त्व वा] 1. पाँचगुना स्थिति 2. पाँच का संग्रह 3. पाँच तत्त्वों की समष्टि —अतः **पंच—तां—त्वं—गम्—या** उन पाँच तत्त्वों में घुलमिल जाना जिनसे शरीर बना है, मरना, नष्ट होना, **पंचतां—त्वं नी** मार डालना, नष्ट करना—पंचभिर्निर्मिते देहे पंचत्वं च पुनर्गते, स्वां स्वां योनिमनुप्राप्ते तत्र का परिदेवना। रत्न० ३।३।

पंचथुः [पञ्चन्+अथुच्] 1. समय 2. कोयल।

पंचधा (अव्य०) [पंचन्+धा] 1. पाँच भागों में 2. पाँच प्रकार से।

पंचन् (सं० वि०) [पंच्+कनिन्] (सदैव बहुवचनांत, कर्तृ० कर्म०—पंच) पाँच (समास में पूर्वपद होने के स्थिति म पंचन् के 'न्' का लोप हो जाता है)। सम० **अंशः** पाँचवाँ भाग, पाँचवाँ—**अग्निः** 1. पाँच यज्ञाग्नियों का समूह (अर्थात्—अन्वाहार्य पचन या दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य और आवसथ्य) 2. पंचाग्नियों को स्थापित रखने वाला गृहस्थ—पंचाग्नयो धृतव्रताः—मा० १, मनु० ३।१८५—**अंग** (वि०) पाँच - सदस्यीय, पाँच अंगों वाला, जैसा कि पंचागः प्रणामः (अर्थात् बाहुभ्यां चैव जानुभ्यां शिरसा वक्षसा दृशा), कृतपंचांगविनिर्णयो नयः—कि० २।१२, (दे० मल्लि० और कादंबक) (**गः**) 1. कछुवा 2. एक प्रकार का घोड़ा जिसके शरीर के विभिन्न भागों पर पाँच चिह्न हों (**गी**) लगाम का दहाना, मुखरी (**गम्**) 1. पाँच भागों का संग्रह या समष्टि 2. भक्ति के पाँच प्रकार 3. पंचांग, तिथिपत्र, जंत्री—तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च, चतुरंगबलो राजा जगतीं वशमानयेत्, अहं पंचांग बलवानाकाशं वशमानये—सुभा० °**गुप्तः** एक प्रकार का समुद्री कछुवा °**शुद्धिः** (स्त्री०) तिथि, वार, नभत्र, योग, और करण (ज्योतिष्), इन पाँच आवश्यक अंगों की अनुकूल स्थिति,—**अंगुल** (वि०) (स्त्री० —**ला,—ली**) पाँच अंगुल की माप,—**अ (आ) जम्** बकरी से प्राप्त होने वाले पाँच पदार्थ, - **अप्सरम्** (नपुं०) मंडकर्णी ऋषि द्वारा निर्मित कहा जाने वाला सरोवर—तु० १३।३८,—**अमृतम्** देवपूजा के लिए पाँच मिष्ट पदार्थों का संग्रह (दुग्धं च शर्करा चैव घृतं दधि तथा मधु),—**अचिस्** (पुं०) बुधग्रह, —**अवयव** (वि०) पाँच अंगों वाला (जैसे कि अनुमान प्रक्रिया—इसके प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन, यह पाँच अंग हैं),—**अवस्थः** शव, (क्योंकि यह पाँचों तत्त्वों में घुल मिल जाता है) तु० 'पंचत्व' से,—**अविकम्** भेड़ से प्राप्त पाँच प्रकार के पदार्थ —**अशीतिः** (स्त्री०) पचासी,—**अहः** पाँच दिन का समय,—**आतप** (वि०) पंचाग्नियों (चारों ओर चार अग्नि, तथा ऊपर सूर्य) से तपस्या करने वाला—तु० रघु० १३।४१,—**आननः,—आस्यः,—मुख—वक्त्रः** 1. शिव का विशेषण 2. सिंह (क्योंकि इस मुख प्रायः खूब खुला होता है, चार पंजे भी मुख जैसा काम करते हैं—पंचम् आननं यस्य) (अत्यधिक विद्वत्ता तथा प्रतिष्ठा को प्रकट के लिए प्रायः विद्वानों के नामों के अन्त में लगाया जाता है—न्याय°, तर्क° आदि—उदा० जगन्नाथ तर्कपंचानन),—**इंद्रियम्** पाँच अंगों की समष्टि (ज्ञानेन्द्रिय या कर्मेंद्रिय—दे० इन्द्रियम्),—**इषुः—बाणः—शरः** कामदेव का विशेषण (क्योंकि इसके पाँच बाण हैं—अरविंदमशोकं च चूतं च नवमल्लिका, नीलोत्पलं च पंचैते पंचबाणस्य सायकाः),—**उष्मन्** (पुं०, ब० व०) शरीर में रहने वाली पांच अग्नियाँ,—**कर्मन्** (नपुं०—आयु० में) पाँच प्रकार की चिकित्साएँ अर्थात् 1. वमन—'उल्टी कराने वाली औषधियाँ देना' 2. रेचन—शौच लाने वाली औषधियों का सेवन 3. नस्य—छींक लाने वाली औषधियाँ—नसवार—देना 4. अनुवासन —तैलयुक्त बस्तिकर्म 5. निरूह—बिना तेल का वस्तिकर्म,—**कृत्वस्** (अव्य०) पाँच बार,—**कोणम्** पाँच कोण की आकृति,—**कोलम्** पाँच मसालों (पीपल, पिप्परामूल, चई, चित्रकमूल और सोंठ) का चूर्ण, —**कोषाः** (पुं०, ब० व०) पाँच प्रकार का परिधान 1. अन्नमय कोष या स्थूल शरीर 2. प्राणमय कोष 3. मनोमय कोष 4. विज्ञानमय कोष (२, ३, व ४ से

मिल कर लिंग शरीर बनता है 5. आनन्दमय कोष —अर्थात् मोक्ष) जिनसे आत्मा लिप्त समझा जाता है,—**कोशी** पाँच कोस की दूरी,—**खट्वम्**—**खट्वी** पाँच खाटों का समूह,—**गवम्** पांच गौवों का समूह, —**गव्यम्** गौ से प्राप्त होने वाले पांच पदार्थों (अर्थात् दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर—क्षीरं दधि तथा चाज्यं मूत्रं गोमयमेव च) का समूह,—**गु** (वि०) पाँच गौओं के बदले खरीदा हुआ,—**गुण** (वि०) पाँच गुणा,—**गुप्तः** 1. कछुवा 2. दर्शनशास्त्र में वर्णित भौतिकवाद की पद्धति, चार्वाकों का सिद्धांत, —**चत्वारिंश** (वि०) पैंतालीसवाँ,—**चत्वारिंशत्** पैंतालीस,—**जनः** 1. मनुष्य, मनुष्य जाति 2. एक राक्षस जिसने शंखशुक्ति का रूप धारण कर लिया था तथा जिसको श्रीकृष्ण ने मार गिराया था 3. आत्मा 4. प्राणियों की पाँच श्रेणियाँ अर्थात् देवता, मनुष्य, गंधर्व, नाग, और पितर 5. हिन्दुओं की चार मुख्य जातियाँ (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा पाँचवें निषाद या असभ्य लोग (इन दो अर्थों में ब० व०) [पूरे विवरण के लिए दे० ब्रह्म० १।४।११-१३ पर शारीरभाष्य],—**जनीन** (वि०) पंचजनों का भक्त (**वः**) अभिनेता, बहुरूपिया, विदूषक,—**ज्ञानः** 1. बुद्ध का विशेषण क्योंकि वह पाँच प्रकार के ज्ञान से युक्त है 2. पाशुपत सिद्धांतों से परिचित मनुष्य, —**तक्षम्**,—**क्षी** पाँच रथकारों का समूह...**तत्त्वम्** 1. पाँच तत्त्वों की समष्टि अर्थात्—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश 2. (तंत्रों में) तांत्रिकों के पाँच तत्त्व जो पंचमकार —अर्थात् मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन—भी कहलाते हैं,—**तपस्** (पुं०) एक संन्यासी जो ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की प्रखर किरणों के नीचे चारों ओर आग जला कर बैठा हुआ तपस्या करता है—तु०—हविर्भुजामेधवतां चतुर्णां मध्य ललाटंतपसप्तसप्तिः—रघु० १३।४१, कु० ५।२३, मनु० ६।२३, और शि० २।५१ भी,—**तय** (वि०) पाँच गुणा (—**यः**) पंचायत,—**त्रिंश** (वि०) पैंतीसवाँ,—**त्रिंशत्**,—**त्रिंशतिः** (स्त्री०) पैंतीस,—**दश** (वि०) 1. पन्द्रहवाँ 2. जिसमें पन्द्रह बढ़े हुए हैं —यथा पंचदशंशतम्—एक सौ पन्द्रह—**दशन्** (वि०, ब० व० पन्द्रह, °**अहः** पन्द्रह दिन की अवधि—**दशिन्** (वि०) पन्द्रह से युक्त या निर्मित,—**दशी** पूर्णिमा, —**दीर्घम्** शरीर के पाँच लंबे अंग—बाहू नेत्रद्वयं कुक्षिर्द्वेतु नासे तथैव च, स्तनयोरंतरं चैव पंचदीर्घं प्रचक्षते,—**नखः** 1. पाँच पंजों से युक्त कोई जानवर —पंच पंचनखा भक्ष्या ये प्रोक्ताः कृतजैर्द्विजैः—भट्टि० ६।१३१, मनु० ५।१७, १८, याज्ञ० १।१७७ 2. हाथी 3. कछुवा 4. सिंह या व्याघ्र,—**नदः** 'पाँच नदियों का देश, वर्तमान पंजाब' (पांच नदियों के नाम—शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा और वितस्ता या क्रमशः सतलुज, ब्यास, रावी, चेनाब, और झेलम) (—**दाः**—ब० व०) इस देश के निवासी—पंजाबी,—**नवतिः** (स्त्री०) पिचानवें,—**नीराजनम्** देवमूर्ति के सामने पाँच पदार्थों को हिलाना और फिर उसके सामने लंबा लेट जाना (पांच पदार्थों के नाम – दीपक, कमल, वस्त्र, आम और पान का पत्ता),

पंचास (वि०) पचपनवाँ, - **पंचाशत्** पंचपन,—**पदी** पाँच कदम पंच० २।११५,—**पात्रम्** 1. पांच पात्रों का समूह 2. एक श्राद्ध जिसमें पाँच पात्रों में रखकर भेंट दी जाती है,—**प्राणाः** (प्र० ब० व०) पांच जीवन प्रदवायु – प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान,

प्रासादः विशिष्ट आकार का मन्दिर (जिसमें चार कंगूरे और एक मीनार या शिखर हो),—**बाणः** —**वाणः**,—**शरः** कामदेव के विशेषण- दे० 'पंचेषु', —**भुज** (वि०) पांच भुजाओं का (**जः**) पंचभुज या पंचकोना—तु० पंचकोण,—**भूतम्** पाँच मूलतत्व —पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—**मकारम्** वाममार्गी तन्त्राचार के पाँच मूलतत्व जिनके नाम का प्रथम अक्षर 'म' है (मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन) दे० 'पंचतत्त्व' (2),—**महापातकम्** पांच बड़े पाप - दे० महापातक,—**महायज्ञः** (पुं०, ब० व०) पाँच दैनिक यज्ञ जो एक ब्राह्मण के लिए अनुष्ठेय हैं —दे० महायज्ञ,—**यामः** दिन,—**रत्नम्** पाँच रत्नों का संग्रह, (वे कई प्रकार से गिने जाते हैं—(१) नीलकं वज्रकं चेति पद्मरागश्च मौक्तिकम्, प्रवालं चेति विज्ञेयं पंचरत्नं मनीषिभिः, (२) सुवर्णं रजतं मुक्ता राजावर्तं प्रवालकम्, रत्नपंचकमारूयातम्, (३) कनकं हीरकं नीलं पद्मरागश्च मौक्तिकम्, पंचरत्नमिदं प्रोक्तमृषिभिः पूर्वदर्शिभिः,—**रात्रम्** पाँच रात्रियों का समय,—**राशिकम्** (गणि० में) गणित की एक क्रिया जिससे चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवीं राशि निकाली जाती है,—**लक्षणम्** एक पुराण (क्योंकि इसमें पाँच महत्वपूर्ण विषयों का उल्लेख है—सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च, वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम्, दे० 'पुराण' भी,—**लवणम्** नमक के पाँच प्रकार—अर्थात् काचक, सैन्धव, सामुद्र, बिड और सौवर्चल,—**वटी** 1. अंजीर की जाति के पाँच वृक्ष—अर्थात् पीपल, बेल, बड़, हरड़ और अशोक 2. दण्डकारण्य का एक भाग जहाँ से गोदावरी निकलती है और जहाँ राम ने सीता समेत बहुत दिन बिताये थे, वह स्थान नासिक से दो मील की दूरी पर है —उत्तर० २।२८, रघु० १३।३१,—**वर्षदेशीय** (वि०) लगभग पाँच वर्ष की आयु का,—**वर्षीय** (वि०) पाँच

वर्ष का,—वल्कलम् पांच प्रकार के वृक्षों (अर्थात् बड़, गूलर, पीपल, प्लक्ष और वेतस) की छाल,—विंश (वि०) पच्चीसवां,—विंशतिः (स्त्री०) पच्चीस, —विंशतिका पच्चीस का संग्रह जैसा कि 'वेतालपंच-विंशतिका' में,—विध (वि०) पांच गुणा या पांच प्रकार का,—शत (वि०) 1. जिसका जोड़ पांच सौ हो 2. पांच सौ (—तम्) 1. एक सौ पांच 2. पांच सौ, —शाखः 1. हाथ 2. हाथी,—शिखः सिंह—ष (वि०) (ब० व०) पांच छः, सन्त्यन्येऽपि बृहस्पतिप्रभृतयः संभाविताः पञ्चषाः—भर्तृ० २।३४,—षष्ट (वि०) पैंसठवां,—षष्टिः (स्त्री०) पैंसठ,—सप्तत पचहत्तरवां, —सप्ततिः (स्त्री०) पचहत्तर,—सूनाः (स्त्री०) घर में रहने वाली पांच वस्तुएं जिनके द्वारा छोटे २ जीवों की हिंसा हो जाया करती हैं—वे ये हैं—पंच-सूना गृहस्थस्व चुल्लीपेषण्युपस्करः कंडनी चोदकुंभश्च —मनु० ३।६८ (चूल्हा, चक्की या सिलबट्टा, झाडू, ओखली और पानी का घड़ा),—हायन (वि०) पांच वर्ष की आयु का।

पंचनी [पंचन्+ल्युट्+ङीप्] शतरंज जैसे खेल की कपड़े की बनी हुई बिसात।

पंचम (वि०) (स्त्री०—मी) [पंचन्+मट्] 1. पांचवां 2. पांचवां भाग बनानेवाला 3. दक्ष, चतुर 4. सुन्दर, उज्ज्वल,—मः 1. भारतीय स्वरग्राम का पांचवां (बाद के समय में सातवां) स्वर, कथित कोकिलरव (कोकिलो रौति पंचमम्—नारद) शरीर के पांच अंगों से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम 'पंचम' है—वायुः समुद्गतो नाभेरुरोहृत्कंठमूर्धसु, विचरन् पंचमस्थानप्राप्त्या पंचम उच्यते 2. संगीत स्वर या राग का नाम —व्यर्थयति वृथा मौनं तन्वि प्रपंचय पंचनम्—गीत० १०, इसी प्रकार उदंचित पंचम रागम्—गीत० १, मम् 1. पांचवां 2. मैथुन, तान्त्रिकों का पांचवां मकार, —मी 1. चान्द्रमास के पक्ष की पांचवीं तिथि 2. (व्या० में) अपादान कारक, द्रौपदी का विशेषण 4. शतरंज की कपड़े की बिसात। सम०—आस्यः कोयल।

पंचालाः (पुं०, ब० व०) [पंच्+कालन्] एक देश तथा उसके निवासियों का नाम,—लः पंचालों का राजा।

पंचालिका [पंचाय प्रपंचाय अलति—अल्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] गुड़िया, पुतली—तु० 'पांचालिका'।

पंचाली [पंचाल+ङीष्] 1. गुड़िया, पुतली 2. एक प्रकार का राग 3. शतरंज आदि खेल की कपड़े की बनी बिसात।

पंचाश (वि०) (स्त्री० शी) [पंचाशत्+डट्] पचासवां।

पंचाशत्, पंचाशतिः (स्त्री०) पचास।

पंचाशिका [पंचाश+क+टाप् इत्वम्] पचास श्लोकों का संग्रह—अर्थात् 'चौर पंचाशिका'।

पंजरम् [पंज्+अरन्] पिंजरा, चिड़ियाघर—पंजरशुकः, भुजपंजरः—रः,—रम् 1. पसलियां 2. कंकाल, ठठरी रः 1. शरीर 2. कलियुग। सम०—आखेटः मछलियां पकड़ने का जाल या टोकरी,—शुकः पिंजरे का तोता, पिंजड़े में बंद तोता। विक्रम० २।२३।

पंजिः,—जी (स्त्री०) [पंज्+इन्, पंजि+ङीष्] 1. रूई का गल्हा जिससे धागा काता जाय, पूनी 2. अभिलेख, पत्रिका, बही पंजिका 3. तिथि-पत्र, जंत्री, पत्रा या पंचांग। सम०—कारः,—कारकः लेखक, लिपिकार।

पट् i (भ्वा० पर०—पटति) जाना, हिलना-जुलना—प्रेर० या चुरा० उभ०—पाटयति—ते 1. टुकड़े करना, विदीर्ण करना, फाड़ना, फाड़ कर अलग २ करना, फाड़ कर खोलना, विभक्त करना—'कंचिन्मध्यात्पाटयामास, दंती—शि० १८।५१, दत्त्वर्णं पाटयेल्लेखम् —याज्ञ० २।९४ मृच्छ० ९ 2. तोड़ना, तोड़ कर खोलना—अन्यासु भित्तिषु मया निशि पाटितासु —मृच्छ० ३।१४ 3. छेदना, चुभोना, घुसेड़ना—दर्भपाटिततलेन पाणिना—रघु० ११।३१ 4. दूर करना, हटाना 5. तोड़ डालना उद्—, 1. फाड़ डालना, निकाल लेना—दंतैर्नोत्पाटयेन्नखान्—मनु० ४।६९, कीलमुत्पाटयितुमारभे—पंच० १ 2. जड़ से उखाड़ना, उन्मूलन करना—कु० २।४३, रघु० १५।४९ 3. उद्धृत करना वि—,1. फाड़ डालना (केतकबर्हं) विपाटयामास युवा नखाग्रैः—रघु० ६।१७ 2. खींचना, बाहर निकालना, उद्धृत करना।

ii (चुरा० उभ०—पटयति—ते) 1. गूंथना, बुनना —कुविदस्त्वं तावत्पटयसि गुणग्राममभितः—काव्य० ७ 2. वस्त्र पहनाना, लपेटना 2. घेरना, घेरा बनाना।

पटः,—टम् [पट् वेष्टने करणे घञर्थे कः] 1. वस्त्र, पहनावा, कपड़ा, चिथड़ा—अयं पटः सूत्रदरिद्रतां गतो ह्ययं पटश्छिद्रशतैरलंकृतः—मृच्छ० २।९, मेघाः स्रवंति बलदेवपट प्रकाशाः—५।४५ 2. महीन कपड़ा 3. घूंघट, परदा 4. कपड़े का टुकड़ा जिस पर चित्र बनाये जायं—टम् छप्पर, छत। सम०—उटजम् तंबू,—कारः 1. जुलाहा 2. चित्रकार,—कुटी (स्त्री०), —मंडपः,—वापः,—वेश्मन् (नपुं०) तंबू—शि० १२।६३,—वासः 1. तंबू 2. पेटीकोट 3. सुगंधित चूर्ण —रत्न० १,—वासकः सुगंधित चूर्ण।

पटकः [पट+कै+क] 1. शिविर, पड़ाव 2. रूई का कपड़ा

पटच्चरः [पटत् इति अव्यक्तशब्द चरति—पटत्+चर्+अच्] चोर, तु० पाटच्चर,—रम् चिथड़ा, फटे पुराना कपड़ा।

पटत्कः [पटत्+कै+क] चोर।

पटपटा (अव्य०) अनुकरण मूलक ध्वनि।

पटलम् [पट्+कलच्] 1. छत, छप्पर—विनमितपटलांतं

दृश्यते जीर्णकुडयम्—मुद्रा० ३।१५ 2. ढकना, आवरण, अवगुण्ठन, लेपन—शिरसि मसीपटलं दधाति दीपः—भामि० १।७४ 3. आँखों का जाला 4. ढेर, समुच्चय, राशि, परिमाण रथांगपाणेः पटलेन रोचिषाम्—शि० १।२१, जलदपटलानि पंच० १।३६१, क्षौद्रपटलैः—रघु० ४।६३, मुक्तापटलम्—१३।१७ तारकपटलम्—गीत० ७ 5. टोकरी 6. अनुचरवर्ग, नौकर चाकर,—लः,—ली 1. वृक्ष 2. डंठल,—लः,—लम् पुस्तक का अध्याय। सम०—प्रातः छत का किनारा।

पटहः [पटेन हन्यते—पट+हन्+ड] 1. धौंसा, नगाड़ा, ढोल, तबला, कुर्वन् संध्याबलिपटहतां शूलिनः श्लाघनीयाम्—मेघ० ३४, पटुपटहध्वनिभिर्विनीतनिद्रः—रघु० ९।७१ 2. आरम्भ, उपक्रम 3. घायल करना, मारना। सम०—घोषकः ढिंढोरची (जो ढोल पीटता जाता है और घोषणा करता जाता है) डोंडी पीटने वाला,—भ्रमणम् लोगों को एकत्र करने के लिए ढोल पीटते हुए इधर उधर घूमना।

पटालुका [पट+अल्+उक+टाप्] जोक।

पटिः,—टी (स्त्री) [पट्+इन्, पटि+ङीष्] 1. रंगशाला का पर्दा 2. कपड़ा 3. मोटा कपड़ा, कैनवस 4. कनात। सम०—क्षेपः (रंगशाला) के पर्दे को एक ओर गिराना, यह एक प्रकार का रंगमच का निर्देशन है जो किसी पात्र के शीघ्रता पूर्वक रंगमच पर आने को प्रकट करता है, तु० 'अपटी क्षेप'।

पटिमन् (पुं०) [पटु+इमनिच्] 1. दक्षता, चतुराई 2. निपुणता 3. तीक्ष्णता 4. नैपुण्य 5. प्रचंडता, तीव्रता आदि।

पटीरः [पट्+ईरन्] 1. खेलने की गेंद चंदन की लकड़ी 3. कामदेव—रम् 1. कत्था 2. चलनी 3. पेट 4. खेत 5. बादल 6. ऊँचाई। सम० —जन्मन् (पुं०) चन्दन का पेड़—वहति विषधरान् पटीरजन्मा—भामि० १।७४।

पटु (वि०) (स्त्री० —टु, टी म० अ०—रटीयस्, उ० अ०—पटिष्ठ) [पट्+णिच्+उ, पटादेशः] 1. चतुर, कुशल, दक्ष, प्रवीण' (प्रायः अधि० के साथ) वाचि पटुः 2. तीक्ष्ण, तीखा, चरपरा 3. प्रखर, काइयाँ 4. प्रचंड, मजबूत, तीव्र, गहन—अयमपि पटुर्धारासारो न बाणपरंपरा—विक्रम० ४।१, उत्तर० ४।३ 5. कर्कश, सुश्राव्य, तेजध्वनियुक्त—किमिदं पटुपटहशंखमिश्रो नांदीनादः—मुद्रा० ६, पटुपटहध्वनिभिर्विनीतनिद्रः—रघु० ९।७१, ७३ 6. प्रवण, स्वस्थ—शि० १५।४३ 7. कठोर, क्रूर, पाषाणहृदय 8. मक्कार, धूर्त, चालाक, शठ 9. नीरोग, स्वस्थ 10. सक्रिय, व्यस्त 11. वाक्पटु; वाग्मी 12. खिला हुआ, फुलाया हुआ—टुः,—टु (नपुं०) कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी—टु (नपुं०) नमक। सम०—कल्प,—देशीय (वि०) खासा चतुर, तीक्ष्णबुद्धि।

पटोलः [पट्+ओलच्] परमल, ककड़ी की जाति का,—लम् एक प्रकार का कपड़ा।

पटोलकः [पटोल+कै+क] शुक्ति, घोंघा।

पट्टः—ट्टम् [पट्+क्त, इडभावः] 1. शिला, तख्ती (लिखने के लिए) पट्टिका—शिलापट्टमधिशयाना—शि० ३, इसी प्रकार भालपट्ट आदि 2. राजकीय अनुदान, राजाज्ञा—याज्ञ० १।३१७ 3. किरीट, मुकुट—रघु० १८।४४ 4. धज्जी— निर्मोकपट्टाः फणिभिर्विमुक्ताः—रघु० १६।१७ 5. रेशम—पट्टोपधानम् का० १७, भर्तृ० ३।७४, इसी प्रकार 'पट्टांशुक' 6. महीन या रंगीन कपड़ा, वस्त्र 7. ओढ़ने का वस्त्र—भट्टि० १०।६० 8. शिरोवेष्टन, पगड़ी, रंगीन रेशमी साफा—रत्न० १।४ 9. सिंहासन 10. कुर्सी, तिपाई 11. ढाल 12. चक्की का पाट 13. चौराहा 14. नगर, कस्बा 15. पट्टी, तनी या बंधनी। सम०—अर्हा पटरानी—उपाध्यायः राजाज्ञा तथा अन्य प्रलेखों या दस्तवेजों के लिखने वाला,—जम् एक प्रकार का कपड़ा—देवी,—महिषी,—राज्ञी पटरानी,—वस्त्र,—वासस् (वि०) रेशमी या रंगीन वस्त्रों से सुसज्जित।

पट्टनम्,—नी [पट्+तनप्, पट्टन+ङीप्] नगर।

पट्टिका [पट्टी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. तख्ती, फलक जैसा कि 'हलपट्टिका' में 2. प्रलेख या दस्तावेज 3. धज्जी कपड़े का टुकड़ा—वल्कलैकदेशाद्विपाटय पट्टिकाम्—का० १४९ 4. रेशमी कपड़े का टुकड़ा 5. बन्धनी या तनी, पट्टी। सम०—वायकः रेशम की बुनावट।

पट्टि (ट्टी) शः (सः) [पट्ट+टिश (स) च्, पक्षे पट्टी+शो (सो)+क] एक तेज धार की बर्छी, कणपप्रासपट्टिश आदि दश० (पट्टिशो लोहदंडो यस्तीक्ष्णधारः क्षुरोपमः—वैजयंती)

पट्टोलिका [पट्ट+उल्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] एक प्रकार का बंध या पट्टा (भूमिकरग्रहणव्यवस्थापकः पत्रभेदः—तारा०)।

पठ् (भ्वा० पर०—पठति, पठित) 1. जोर से पढ़ना या दोहराना, सस्वर पाठ करना, पूर्वाभ्यास करना—यः पठेच्छृणुयादपि 2. पाठ करना, अध्ययन करना, अनुशीलन करना—इत्येतन्मानवं शास्त्रं भृगुप्रोक्तं पठन् द्विजः— मनु० १२।१२६, ४।९८३ 3. (देवता का) आवाहन करना 4. हवाला देना, उद्धृत करना, (किसी पुस्तक का) उल्लेख करना—एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं पुराणे यदि पठयते—महा० 5. घोषणा करना, अभिव्यक्त करना—भार्या च परमो ह्यर्थः पुरुषस्येह पठयते महा० 6. (अपा० के साथ)......से पढ़ना, प्रेर०—

पाठयति-ते 1. जोर से पढ़वाना 2. अध्यापन करना, शिक्षा देना—सन्नत—पिपठिषति—पाठ करने की इच्छा करना,—परि—,उल्लेख करना, घोषणा करना (प्रेर०) शिक्षा देना—तौ सर्व विद्याः परिपाठितौ—उत्तर० २, सम्—, पढ़ना, सीखना—मनु० ४।९८।

पठकः [पठ्+ण्वुल्] पढ़ने वाला।

पठनम् [पठ्+ल्युट्] 1. पढ़ना, पाठ करना 2. उल्लेख करना 3. अध्ययन करना, अनुशीलन करना।

पठिः (स्त्री०) [पठ्+इन्] पढ़ना, अध्ययन करना, अनुशीलन करना।

पण् i (भ्वा० आ०—पणते, पणित) 1. व्यापार करना, लेन-देन करना, खरीदना, मोल लेना—नै० ३।९१ 2. सौदा करना, वाणिज्य करना 3. शर्त लगाना या दाँव पर लगाना (शर्त की वस्तु में प्रायः संबं०, परन्तु कभी कर्म० भी)—प्राणानाभपणिष्टासौ—भट्टि० ८।१२१, पणस्व कृष्णां पांचालीम् महा० 4. जोखिम उठाना, ii (भ्वा० आ०, चुरा० उभ०—पणते, पणायति-ते) 1. प्रशंसा करना 2. सम्मान करना, वि—, बेचना, अदल बदल करना आभीरदेशे किल चन्द्रकांतं त्रिभिर्वराटैर्विपणंति गोपाः—सुभा०।

पणः [पण्+अप्] 1. पासों से या दाँव लगा कर खेलना 2. जूआ, जो दाँव या शर्त लगा कर खेला जाय—याज्ञ० २।१८, दमयंत्याः पणः साधुर्वर्तताम्—महा० 3. दाँव पर लगाई हुई वस्तु 4. शर्त, संविदा, समझौता—संधिं करोतु भवतां नृपतिः पणेन—वेणी० १।१५, ठहराव, सुलह हि० ४।११८, ११२ 5: मजदूरी, भाड़ा 6. पारितोषिक 7. रकम जो या तो शिक्कों में हो या कौड़ियों में 8. ८० कौड़ी के मूल्य का सिक्का—अशीतिभिर्वराटकैः पण इत्यभिधीयते 8. मूल्य 10. धन दौलत, संपत्ति 11. विक्रयवस्तु 12. व्यापार, लेनदेन 13. दुकान 14. विक्रेता, बेचने वाला 15. शराब खींचने वाला 16. मकान। सम०—**अंगना—स्त्री** वेश्या, रंडी,—**ग्रंथिः** मंडी, मेला या पैंठ,—**बंधः** 1. संधि या सुलह करना—पणबंधमुखान् गुणानजः षडुपायुंक्त समीक्ष्य तत्फलम्—रघु० ८।२१, १०।८६ 2. समझौता, ठहराव (यदि भवानिदं कुर्यात्तर्हीदमहं भवते दास्यामीति समयकरणं पणबंधः—मनोरमा)।

पणनम् [पण्+ल्युट्] 1. अदल-बदल करना, खरीदना 2. शर्त लगाना 3. बिक्री।

पणवः [पणं स्तुतिं वाति—पण+वा+क] एक प्रकार का वाद्ययंत्र—भग० १।१३, शि० १३।५।

पणाया [पण्+आय+अप्+टाप्] 1. लेनदेन, व्यवसाय, व्यापार 2. मंडी 3. वाणिज्य से प्राप्त होने वाला लाभ 4. जूआ खेलना 5. प्रशंसा।

पणिः (स्त्री०) [पण्+इन्] बाजार (पुं०) 1. कंजूस, लोभी 2. अपावन मनुष्य या पापी।

पणित (भू० क० कृ०) [पण्+क्त] 1. (व्यापार में) किया गया लेन-देन 2. शर्त पर रक्खा हुआ, दे० 'पण्'।

पंड् i (भ्वा० आ०—पंडते, पंडित) जाना, हिलना-जुलना; ii (चुरा० उभ०—पंडयति-ते) संग्रह करना, चट्टा लगाना, ढेर लगाना।

पंडः [पंड्+अच्, ड वा] हिजड़ा, नपुंसक।

पंडा [पंड+टाप्] 1. बुद्धिमत्ता, समझ 2. ज्ञान, विज्ञान।

पंडावत् (पुं०) [पंडा+मतुप्] बुद्धिमान्, विद्वान्।

पंडित (वि०) [पंडा+इतच्] 1. विद्वान्, बुद्धिमान्—स्वस्थे को वा न पंडितः 2. सूक्ष्मबुद्धि, चतुर 3. दक्ष, प्रवीण, कुशल (प्रायः अधि० के साथ या समास में)—मधुरालापनिसर्गपंडिताम् कु० ४।१६, इसी प्रकार 'रतिपंडित'—४।१८, 'नयपंडित' आदि,—**तः** 1. शास्त्रज्ञ, विद्वान् 2. गंधद्रव्य। सम०—**जातीय** (वि०) कुछ चतुर,—**मानिक,—मानिन्, पंडितंमन्य** (वि०) अपने आप को विद्वान् समझने वाला, घमंडी आदमी, अपने आपको शास्त्रज्ञ या पंडित मानने वाला।

पंडितिमन् (पुं०) [पंडित+इमनिच्] ज्ञान, विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता।

पण्य (वि०) [पण्+यत्] 1. बिकाऊ, विक्रयार्थ 2. लेन-देन के योग्य—**ण्यः** 1. बर्तन, वस्तु, विक्रेयवस्तु पुराबभासे विपणिस्थपण्या रघु० १६।४१, पण्यानां गांधिकं पण्यम्—पंच० १।१३, मनु० ५।१२९, याज्ञ० २।२४५, मालवि० १।१६ 2. वाणिज्य, व्यवसाय 3. मूल्य—महता पुण्य पण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया शा० ३।१। सम०—**अंगना,—योषित्** (स्त्री०), —**विलासिनी,—स्त्री** (स्त्री०) वेश्या, रंडी—पण्यस्त्रीषु विवेककल्पलतिकाशस्त्रीषु रज्येतकः—भर्तृ० १।९०, मेघ० २५, **अजिरम्** मंडी,—**आजीवः** व्यापारी, —**आजीवकम्** मंडी, पैंठ या मेला,—**पतिः** बड़ा व्यापारी—**भूमिः** (स्त्री०) मालगोदाम, **वीथिका**, —**वीथी,—शाला** 1. मंडी, 2. विक्रयणी, दुकान।

पत् (भ्वा० पर० पतति, पतित) 1. गिरना, गिर पड़ना, नीचे आना, उतरना—अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः पपात विद्याधरहस्तमुक्ता—रघु० २।६०, वृष्टिर्भवने चास्य पेतुषी—१०।७७, (रेणुः) पतति परिणतारुण प्रकाशः शलभसमूह इवाश्रमद्रुमेषु—श० १।३१, मेघ० १०५, भट्टि० ७।९, २२।६ 2. उड़ना, वायु में आना जाना, उड़ान भरना हंतुं कलहकारोऽसौ शब्दकारः पपात खम्—भट्टि० ५।१०० दे० नी० 'पतत्' 3. छिपाना, डूबना (क्षितिज के नीचे) सोऽयं चन्द्रः पतति गगनादल्पशेषैर्मयूखैः—श० ४, अने० पा०

पतत्पतंगप्रतिमस्तपोनिधिः—शि० १।१२ 4. अपने आप को डालना, नीचे फेंकना—मयि ते पादपतिते किंकरत्वमुपागते—पंच० ४।७, इसी प्रकार 'चरणपतितम्' मेघ० १०५ 5. (नैतिक दृष्टि से) गिरना, जाति से पतित होना, प्रतिष्ठा का नष्ट होना, भ्रष्ट होना—परधर्मेण जीवन् हि सद्यः पतति जातितः मनु० १०।९७, ३।१६, ५।१९, ९।२००, याज्ञ० १।३८ 6. (स्वर्ग से) नीचे आना—पतंति पितरो ह्येषां लुप्तपिंडोदकक्रियाः—भग० १।४१ 7. घटना, आपद्ग्रस्त या संकटापन्न होना—प्रायः कंदुकपातेनोत्पतत्यार्यः पतन्नपि—भर्तृ० २।१२३ 8. नरक में जाना, नारकीय यातना सहन करना—मनु० ११।३७, भग० १६।१६ 9. पड़ना, घटित होना, हो जाना, संपन्न होना—लक्ष्मीर्यत्र पतंति तत्र विवृतद्वारा इव व्यापदः—सुभा० 10. निर्दिष्ट होना, उतरना या पड़ना (अधि० के साथ)—प्रसादसौम्यानि सतां सुहृज्जने पतंति चक्षूंषि न दारुणाः शराः—श० ६।२८ 11. भाग्य में होना 12. ग्रस्त होना, फँसना—प्रेर०—(पातयति—ते—पतयति विरल प्रयोग) 1. नीचे गिराना, उतारना, डुबोना—निपतंती पतिमप्यपातयत्—रघु० ८।३८, ९।६१, ११।७६ 2. गिरने देना, नीचे को फेंकना, गिराना, (वृक्ष आदि का) गिराना 3. बर्बाद करना, परास्त करना 4. (आँसू) गिराना 5. फेंकना, (दृष्टि) डालना, सन्नन्त—पिपतिषति-पित्सति, गिरने की इच्छा करना—अनु—, 1. उड़ना 2. पीछे दौड़ना, अनुसरण करना, पीछे लगे रहना, पीछा करना—मुहुरनुपतति स्यंदने दत्तदृष्टिः—श० १।७, मा० ९।८, शि० ११।४०, अभि—, 1. निकट उड़ना, नजदीक जाना, पास पहुँचना, अधिरोढुमस्तगिरिमभ्यपतत्—शि० ९।१, कि० १२।३६ 2. आक्रमण करना, धावा बोलना, टूट पड़ना—रघु० ७।३७ 3. उड़ कर पकड़ लेना 4. वापिस आना, लौट पड़ना पीछे हटना, अभ्युद्—, टूट पड़ना, आक्रमण करना, आ—, 1. टूट पड़ना, आक्रमण करना, धावा बोलना—रघु० १२।४४, ५।५० 2. उड़ना, पिल पड़ना, झपटना 3. निकट जाना 4. होना, घटित होना, आ पड़ना—कथमिदमापतितम्—उत्तर० २, अहो न शोभनमापतितम्—पंच० २ 5. सूझना, (मन में) आना, इति हृदये नापतितं—का० २८८, उद्—, उछलना कूदना—मंक्षूदपाति परितः पटलैरलीनाम्—शि० ५।३७, (प्रायः कर्म० या संप्र० के साथ) उत्पतोदङ्मुखः खम्—मेघ० १४, भट्टि० ५।३०, स्वर्गायोत्पतिता भवेत्—विक्रम० ४।२, कु० ६।३६ 2. सूझना, विचार में आना—रघु० १३।११ 3. (गेंद की भांति) उछल कर आना—भर्तृ० २।८५ 4. उदय होना, जन्म लेना, फूटना, उत्पन्न होना—निष्पेषोत्पतितानल—रघु० ४।७७, रसात्तस्माद्वरस्त्रिय उत्पेतुः—रामा०, नि—, 1. नीचे गिरना या आना, अवरोहण करना, उतरना, डूबना—निपतंती पतिमप्यपातयत्—रघु० ८।३८, भट्टि० १५।२७ 2. फेंका जाना, निर्दिष्ट होना—रघु० ६।११ 3. (पैरों में) डालना, साष्टांग लेटना—देवास्तदंते हरमूढभार्यं किरीटबद्धांजलयो निपत्य—कु० ७।९२, भर्तृ० २।३१ 4. गिरना, उतरना, मिल जाना—रघु० १०।२६ 5. टूट पड़ना, आक्रमण करना, पिलप ड़ना—सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु—भर्तृ० २।३८ 6. होना, घटित होना, आ पड़ना, भाग्य में होना—सकृदंशो नियतति मनु० ९।४७ 7. रक्खा जाना, स्थान पर अधिकार करना—अभ्यर्हितं पूर्वं निपतति—प्रेर०—1. नीचे गिराना, फेंकना, पटक देना 2. मार डालना, नष्ट करना, बर्बाद करना निस्—निकलना, फूट पड़ना, फल निकलना, निकल पड़ना—अरविवरेभ्यश्चातकैर्निष्पतद्भिः—श० ७।७, एषा विदूरीभवतः समुद्रात्सकानना निष्पततीव भूमिः—रघु० १३।१८, मनु० ८।५५, याज्ञ० २।१६, कु० ३।७१, मेघ० ६९, परा—, 1. पहुँचना, निकट आना, पास जाना 2. वापिस आना, परि , इधर उधर उड़ना, चक्कर काटना, छा जाना—विद्युत्क्षेपान् पिपासुः परिपतति शिखी भ्रांतिमद्वारियंत्रम्—मालवि० २।१३, अमरु ४८ 2. झपट्टा मारना, आक्रमण करना, टूट पड़ना (युद्ध में) 3. सब दिशाओं में दौड़ना—(हयाः) परिपेतुर्दिशो दश—महा० 4. चले जाना, गिर पड़ना—शि० ११।४१, प्र—, 1. नीचे आना, नीचे गिरना, उतरना 2. गिरकर अलग या दूर हो जाना 3. उड़ना, इधर उधर झपटना, प्रणि—, प्रणाम करना, अभिवादन करना (कर्म० या संप्र० के साथ) प्रणिपत्य सुरास्तस्मै—रघु० १०।१५, वागीशं वाग्भिरर्थ्याभिः प्रणिपत्योपतस्थिरे—कु० २।३, प्रोद—ऊपर उड़ना, उड़ान भरना, विनि—, उड़ना, गिरना, उतरना—ऋतु० ४।१८ (प्रेर०) गिराना, बर्बाद करना, नष्ट करना—मृच्छ० २।८, सम्—, 1. मिल कर उड़ना, एकत्र होना 2. इधर उधर जाना या घूमना 3. आक्रमण करना, टूट पड़ना, धावा बोलना 4. होना, घटित होना, (प्रेर०)—1. निकट लाना 2. संग्रह करना, एकत्र करना मिलाना,—रघु० १४।३६, १५।७५।

पतः [पत्+अच्] 1. उड़ना, उड़ान 2. जाना, गिरना, उतरना, । सम०—गः पक्षी, मनु० ७।२३।

पतंगः [पतन् उत्प्लवन् गच्छति—गम्+ड, नि०] 1. पक्षी—नृपः पतंगं समधत्त पाणिना—नै० १।१२४, भामि० १।१७ 2. सूर्य विकसति हि पतंगस्योदये पुंडरीकम्—उत्तर० ६।१२, मा० १।१२ शि० १।१२, रघु० २।

१५ 3. शलभ, टिड्डी-दल, टिड्डा—पतंगवद्वह्निमुखं विविक्षुः—कु० ३।६४,४।२०, पंच ३।१२६ 4. मधुमक्खी,—गम् 1. पारा 2. एक प्रकार की चंदन की लकड़ी।

पतंगमः [पत+गम्+खच्, मुम्] 1. पक्षी 2. शलभ।

पतंगिका [पतंग+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. छोटी चिड़िया 2. एक छोटी मधुमक्खी।

पतंगिन् (पुं०) [पतंग+इनि] पक्षी।

पतंचिका [पतं शत्रुं चिक्कयति पीडयति—पृषो०] धनुष की डोरी।

पतंजलिः (पुं०) पाणिनि के सूत्रों पर लिखे गये—महाभाष्य के प्रसिद्ध निर्माता, दार्शनिक, योगदर्शन के प्रवर्तक।

पतत् (वि०) (स्त्री०—न्ती) [पत्+शतृ] उड़ने वाला, अवरोहण करने वाला, उतरने वाला, नीचे आने वाला (पुं०) पक्षी—परमः पुमानिव पतिः पतताम्—कि० ६।१, क्वचित्पथा संचरते सुराणां क्वचिद्घनानां पततां क्वचिच्च—रघु० १३।१९, शि० ९।१५। सम०—**ग्रहः** 1. प्रारक्षित सेना 2. थूकने का बर्तन, पीकदान—तमेकमाणिक्यमयं महोन्नतं पतद्ग्रहं ग्राहितवान्नलेन सः—नै० १६।२७,—**भीरुः** बाज, श्येन।

पतत्रम् [पत्—करणे अत्रन्] 1. बाजू, डैना 2. पर, पंख 3. सवारी।

पतत्रिः [पत्+अत्रिन्] पक्षी।

पतत्रिन् (पुं०) [पतत्र+इनि] 1. पक्षी,—दयिताद्वन्द्वचरं पतत्रिणं (पुनरेति) रघु० ८।५६,९।२७,११।११, १२।४८, कु० ५।४ 2. बाण 3. घोड़ा। सम० —**केतनः** विष्णु का विशेषण।

पतनम् [पत्+ल्युट्] 1. उड़ने या नीचे आने की क्रिया, उतरना, अवरोहण करना, अपने आपको नीचे पटकना 2. (सूर्यादिका) अस्त होना 3. नरक में जाना 4. धर्मभ्रंश 5. मर्यादा या प्रतिष्ठा से गिरना 6. अवपात, ह्रास, नाश, विपत्ति (विप० उदय या उच्छ्राय)—ग्रहाधीना नरेन्द्राणामुच्छ्रायाः पतनानि च—याज्ञ० १।३०७ 7. मृत्यु 8. नीचे लटकना, (छाती का) ढरकना 9. गर्भस्राव होना।

पतनीय (वि०) [पत्+अनीयर्] गिराने वाला, जातिभ्रष्ट करने वाला,—यम् पतित करने वाला पाप या जुर्म—याज्ञ० ३।४०, २९८।

पतमः, पतसः [पत्+अम, असच् वा] 1. चाँद 2. पक्षी 3. टिड्डा।

पतयालु (वि०) [पत्+णिच्+आलुच्] पतनोन्मुख, पतनशील।

पताका [पत्यते ज्ञायते कस्यचिद्भेदोऽनया—पत्+आक+टाप्] झण्डा, ध्वज (आलं० से भी) यं काममंजरी कामयते स हरतु सुभगपताकाम्—दश० ४७, (सर्वोपरि सौन्दर्य या सौभाग्य का आनंद लेने दो उसे) 2. ध्वजदण्ड 3. संकेत, लक्षण, चिह्न, प्रतीक 4. उपाख्यान या नाटकों में आई हुई प्रासंगिक कथा, दे० नी०—'पताकास्थानक' 5. मांगलिकता, सौभाग्य। सम०—**अंशुकम्**—झंडा—**स्थानकम्** (नाट्य० में) प्रासंगिक कथा की सूचना जब कि अप्रत्याशित रूप से, किसी परिस्थितिवश उसी लक्षण वाली कोई दूसरी आकस्मिक अविचारित वस्तु प्रदर्शित की जाती है (यत्रार्थे चिंतितेऽन्यस्मिंस्तल्लिंगोऽन्यः प्रयुज्यते, आगन्तुकेन भावेन पताकास्थानकं तु तत्, सा० द० २९९ (इसके अन्य प्रकारों की जानकारी के लिए दे० ३००–३०४ तक)।

पताकिक (वि०) [पताका+ठन्] झंडा उड़ाने वाला, ध्वजदडधारी।

पताकिन् (वि०) [पताका+इनि] झंडा ले जाने वाला, पताकाओं से अलंकृत (पुं०) 1. झंडाधारी, झंडावरदार 2. ध्वजा,—नी सेना (न प्रसेहे) रथवर्त्मरजोऽप्यस्य कुत एव पताकिनीम्—रघु० ४।८२, कि० १४।२७।

पतिः [पाति रक्षति—पा+डति] 1. स्वामी, प्रभु जैसा कि 'गृहपति' में 2. मालिक, अधिपति, स्वामी—क्षेत्रपति 3. राज्यपाल, शासक, प्रधानता करने वाला, औषधीपतिः, वनस्पतिः कुलपतिः आदि 4. भर्ता—प्रमदाः पतिवर्त्मगा इति प्रतिपन्नं हि विचेतनैरपि—कु०४।३३। सम—**घातिनी,**—**घ्नी** वह स्त्री जो अपने पति का वध कर देती है,—**देवता,**—**देवा** वह स्त्री जो अपने पति को देवता समझती है, पतिव्रता, सती स्त्री—कः पतिदेवतामन्यः परिमार्ष्टुमुत्सहेत—श० ६, तमलभंत पतिं पतिदेवताः शिखरिणामिव सागरमापगाः—रघु० ९।१७, धुरि स्थिता त्वं पतिदेवतानाम्—१४।७४,—**धर्मः** अपने पति के प्रति (पत्नी का) कर्तव्य,—**प्राणा** सती स्त्री—**लोकः** वह लोक जहाँ मृत्यु हो जाने के पश्चात् पति पहुंचता है,—**व्रता** भक्त, श्रद्धालु,. निष्ठावती स्त्री; सती स्त्री °त्वम् पति के प्रति निष्ठा, स्वामिभक्ति,—**सेवा** पति के प्रति भक्ति।

पतिंवरा [पति+वृ+खच्, मुम्] अपना वर चुनने के लिए तत्पर स्त्री—रघु० ६।१०, ६७।

पतित (भू० क० कृ०) [पत्+क्त] 1. गिरा हुआ, अवरूढ, उतरा हुआ 2. नीचे गिरा हुआ 3. (नैतिक दृष्टि से) पतित, भ्रष्ट, दुश्चरित्र 4. स्वधर्मभ्रष्ट 5. अपमानित, जातिबहिष्कृत 6. युद्ध में हारा हुआ, पराजित, परास्त 7. ग्रस्त, फंसा हुआ जैसा कि 'अवंशपतित' में।

पतेरः [पत्+एरक्] 1. पक्षी 2. छिद्र या विवर।

पत्तनम् [पतंति गच्छंति जना यस्मिन्, पत्+तनन्] कस्बा, नगर (विप० ग्राम)—पत्तने विद्यमानेऽपि ग्रामे रत्न परीक्षा–मालवि० १।

पत्तिः [पद्+ति] 1. पैदल, पैदल सैनिक—रघु० ७।३७ 2. पैदल चलने वाला यात्री 3. वीर—(स्त्री०) 1. सेना का छोटे से छोटा दस्ता जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घुड़सवार और पाँच पैदल सैनिक हों 2. जाने वाला, चलने वाला। सम०—**कायः** पैदल सेना,—**गणकः** सेना का अधिकारी जिसका काम पैदल सेना की गिनती करता है,—**संहतिः** (स्त्री०) पैदल सिपाहियों की टुकड़ी, पैदल सेना।

पत्तिन् (पुं०) [पद्भ्यां तेलति, पाद+तिल्+डिन्, पदादेशः] पैदल सिपाही।

पत्नी [पति+ङीप्, नुक्] सहधर्मिणी, भार्या। सम० —**आटः** रनिवास, अंतपुर,—**सन्नहनम्** धर्मपत्नी का कटिसूत्र या करधनी।

पत्रम् [पत्+ष्ट्रन्] 1. (वृक्ष का) पत्ता–धत्ते भरं कुसुमपत्रफलावलीनाम्—भामि० १।९४ 2. फूल की पत्ती, कमल का पत्ता—नीलोत्पलपत्रधारया—श० १।१७ 3. पत्ता जिसके ऊपर लिखा जाय, कागज, लिखा हुआ पत्र—पत्रमारोप्य दीयताम्—श० ६, 'पत्र पर लिख कर' विक्रम० २।१४ 4. पत्र, दस्तावेज 5. किसी धातु का पतला पत्रा, स्वर्ण-पत्र 6. पक्षी का बाजू, पंख, पर 7. बाण का पंख—रघु० २।३१ 8. सामान्य सवारी (रथ, घोड़ा, ऊँट आदि)—दिशः पंपात पत्रेण वेगनिष्कंपकेतुना–रघु० १५।४८ नै० ३।१६ 9. शरीर पर (विशेष कर मुख पर) चन्दन आदि सुगंधित द्रव्य का लेप करना—रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयोः—गीत० १२, रघु० १३।५५ 10. तलवार या चाकू का फल 11. चाकू, छुरी। सम०—**अंगम्** 1. भूर्ज वृक्ष 2. लाल चंदन—**अंगुलिः** शरीर (गर्दन, मस्तक आदि) पर अंगुलियों से केसर मिश्रित चंदन या अन्य किसी सुगंधित पदार्थ से चित्रण करना,—**अंजनम्** मसी,—**आवलिः** (स्त्री०) 1. गेरु 2. पत्तों का कतार 3. शरीर पर सजावट की दृष्टि से चंदनादि से रेखाचित्रण करना,—**आवली** 1. पत्तों की पंक्ति 2=°आवली (3),—**आहारः** पत्ते खाकर निर्वाह करना,—**ऊर्णम्** बुनने वाली रेशम, रेशमी वस्त्र–स्नानीयवस्त्रक्रियया पत्रोर्णं वोपयुज्यते—मालवि० ५।१२,—**काहला** परों की फटफटाहट, पत्तों की खड़खड़ाहट,—**वारकः** आरा,—**नाडिका** पत्ते के रेशे,—**परशुः** रेती,—**पालः** लंबी छुरी, बड़ा चाकू (ली) 1. बाण का पंखवाला भाग 2. कैंची,—**पाश्या** मस्तक का सोने का आभूषण, टीका,—**पुटम्** पत्तों से बना पात्र, दोना —रघु० २।६५,—**बा** (बा) लः चप्पू—**भंगः**,—**भंगिः**,—**गी** (स्त्री०) शरीर को अलंकृत करने के लिए चंदन, केसर, महंदी या किसी अन्य सुगंधित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना—कस्तूरीवरपत्रभंगनिकरो मृष्टो न गंडस्थले—शृंगार० ७ (कादंबरी में बहुलता से प्रयुक्त)—**यौवनम्** नया पत्ता या कोंपल,—**रथः** पक्षी-व्यर्थीकृतं पत्ररथेन तेन—नै० ३।६, °**इन्द्रः** गरुड़ का नाम, °**इन्द्रकेतुः** विष्णु का नाम–रघु० १८।३०,—**रे** (**ले**) **खा**, —**वल्लरी**,—**वल्लिः**,—**वल्ली** (वि०) दे० ऊ० 'पत्र भंग'—रघु० ६।७२, १६।६७, ऋतु० ९।१७, शि० ८। ५६, ५९—**वाज** (वि०) (बाण आदि) पंखों से युक्त, —**वाहः** 1. पक्षी शि० १८।७३ 2. बाण 3. डाकिया, चिट्ठीरसां,—**विशेषकः** चित्रकारी की रेखाएँ—दे० 'पत्रभंग'—कु० ३।३३, रघु० ३।५५, ९।२९,—**वेष्टः** एक प्रकार का कानों का आभूषण,—**शाकः** शाकभाजी जिसमें मुख्यरूप से पत्ते हों,—**श्रेष्ठः** बेल का पेड़, —**सूचिः** (स्त्री०) कांटा,—**हिमम्** जाड़े की ऋतु जब पाला या बर्फ पड़े।

पत्रकम् [पत्र+कन्] 1. पत्ता 2. सौन्दर्य बढ़ाने की दृष्टि से शरीर पर बनाई गई रेखाएँ या चित्रकारी।

पत्रणा [पत्र+णिच्+युच्+टाप्] 1. सौन्दर्यवृद्धि के लिए शरीर पर बनाई गई रेखाएँ और चित्रकारी 2. बाण में पंख लगाना।

पत्रिका [पत्री+कन+टाप्, ह्रस्वः] 1. लिखने के लिए कागज 2. चिट्ठी, लेख, प्रलेख।

पत्रिन् (वि०) (स्त्री०–णी) [पत्रम् अस्त्यर्थे इनि] 1. पंखों से युक्त, परों वाला—मयूर°—रघु० ३।५६ 2. जिसमें पत्ते या पृष्ठ हो (पुं०) 1. बाण—तां विलोक्य वनितावधे घृणां पत्रिणा सह मुमोच राघवः—रघु० ११।१७, ३।५३, ९।६१ 2. पक्षी—रघु० १२।२९ 3. बाज 4. पहाड़ 5. रथ 6. वृक्ष। सम०—**वाहः** पक्षी।

पत्सलः [पत्+सरन्, रस्य लः] रास्ता, मार्ग।

पथः [पथ्+क (घञर्थे)] रास्ता, मार्ग, प्रसार, (समास के अन्त में) किनारा। सम०—**कल्पना** जादू के खेल,—**दर्शकः** मार्ग बतलाने वाला।

पथिकः [पथिन्+ष्कन्] 1. यात्री, मुसाफिर, बटोही —पथिकवनिताः मेघ० ८, अमरू ९३ 2. पथप्रदर्शक। सम०—**संततिः**,—**संहतिः** (स्त्री०,—**सार्थः** यात्रियों का समूह, काफला।

पथिन् (पुं०) [पथ् आधारे इनि] (कर्तृ० पंथाः, पंथानौ, पंथानः, कर्म० ब० व०–पथः, करण० ब० व०–पथिभिः आदि, समास के अन्त में यह शब्द बदल कर 'पथ' हो जाता है—तोयाधारपथाः, दृष्टिपथः, नष्टपथः, सत्पथः, प्रतिपथम् आदि) 1. मार्ग, रास्ता,

पथ श्रेयसामेव पंथाः—भर्तृ० २।२६, वक्रः पंथाः—मेघ० २७ 2. यात्रा, राहगीरी या पर्यटन—जैसा कि 'शिवास्त्रे संतु पंथानः' में (मैं आपकी सुखद यात्रा की कामना करता हूं, भगवान् आपकी यात्रा सफल करें) 3. परास, पहुंच जैसा कि—कर्णपथ, श्रुति°, और दर्शन° में 4. कार्यपद्धति, आचरण को रेखा, व्यवहारक्रमः—पथः शुचेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसामाददते न पद्धतिम्—रघु० ३।४६ 5. संप्रदाय, सिद्धांत 6. नरक का प्रभाग। सम०—देयम् सार्वजनिक मार्गों पर लगाया गया राजकर,—द्रुमः खेर का पेड़, —प्रज्ञ (वि०) मार्गों का जानकार—वाहक (वि०) क्रूर (कः) 1. शिकारी, चिड़ीमार 2. बोझा ढोने वाला, कुली।

पथिलः [पथ्+इलच्] यात्री, राहगीर, वटोही।

पथ्य (वि०) [पथिन्+यत्+इनो लोपः] 1. स्वास्थ्यप्रद, स्वास्थ्यवर्धक, कल्याणकारी, उपयोगी (औषधि, आहार, सम्मति आदि) अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः—रामा०, याज्ञ० ३।६५, पथ्यमन्नम् 2. योग्य उचित, उपयुक्त,—थ्यम् 1. स्वास्थ्यवर्धक या पौष्टिक आहार जैसा कि 'पथ्याशी स्वामी वर्तते' में 2. कल्याण, कुशलक्षेम—उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता—शि० २।१०। सम०—अपथ्यम् उन पदार्थों का समूह जो किसी रोग में स्वास्थ्यवर्धक या हानिकर समझे जाते हैं।

पद i (चुरा० आ० पदयते) जाना, हिलना—जुलना।
ii (दिवा० आ० पद्यते, पन्न—प्रेर०—पादयति-ते, इच्छा० पित्सते) 1. जाना, चलना-फिरना 2. पास जाना, पहुंचना (कर्म० के साथ) 3. हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना—ज्योतिषामाधिपत्यं च प्रभावं चाप्यपद्यत—महा० 4. पालन करना, अनुसरण करना—स्वधर्मं पद्यमानास्ते—महा० अनु—,1. पीछे चलना, अनुगमन करना, सेवा करना 2. स्नेहशील होना, अनुरक्त होना 3. प्रविष्ट होना, अन्दर जाना 4. अपनाना 5. मालूम करना, देखना, निरीक्षण करना, समझना, अभि,—पास जाना, नजदीक होना, पहुंचना—रावणावरजा तत्र राघवं मदनातुरा, अभिपेदे निदाघार्ता व्यालीव मलयद्रुमम्—रघु० १२।३२, १९।११ 2. संमिलित होना—शि० ३।२५ 4. अवलोकन करना, विचार करना, ख्याल करना, समझना—क्षणमभ्यपद्यत जनैर्न मृगा गगनं गणाधिपतिमूर्तिरिति—शि० ९।२७ 4. सहायता करना, मदद करना, मयाभिपन्नं तम्—महा० 5. पकड़ना, परास्त करना, आक्रमणकरना, दबोच लेना, अधिकार में कर लेना, ग्रस्त करना—सर्वतश्चाभिपन्नैषा धार्तराष्ट्री महाचमूः, चंडवाताभिपन्नानामुदधीनामिव स्वनः—महा०, दे० 'अभिपन्न' 6. लेना, धारण करना—मनु० १।३ 7. स्वीकार करना, प्राप्त करना, अभ्युप—, 1. दया करना, सान्त्वना देना, आराम पहुँचाना, तरस खाना, अनुग्रह करना (कष्ट से) मुक्त करना—कु० ४।२५, ५।६१ 2. सहायता मांगना, दीनता प्रकट करना 3. सहमत होना, स्वीकृति देना आ—, 1. निकट जाना, की ओर चलना, पहुँचना—भट्टि० १५।८९ 2. प्रविष्ट होना, (किसी स्थान या स्थिति को) चले जाना या प्राप्त करना—निर्वेदमापद्यते—मृच्छ० १।१४, (ऊब जाता है) आपेदिरेऽम्बरपथं परितः पतंगाः—भामि० १।१७, इसी प्रकार 'क्षीरं दधिभावमापद्यते—शारी० 3. कष्ट फँसना, दुर्भाग्यग्रस्त होना—अर्थधर्मौ परित्यज्य यः काममनुवर्तते, एवमापद्य तेक्षिप्रं राजा दशरथो यथा—रामा० 4. होना, घटित होना—भट्टि० ६।३१, प्रेर०—1. प्रकाशित करना, सामने लाना, कार्यान्वित करना, निष्पन्न करना—रघु० २।१२ 2. निकालना, जन्म देना, पैदा करना—लघिमानमापादयति—का० १०५ 3. घटाना, कष्टग्रस्त करना, ले जाना—रघु० ५।५ 4. बदलना 5. नियंत्रण में लाना, उद्—, 1. जन्म लेना, पैदा होना, उदय होना, उत्पन्न होना, उगना—उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा—मा० १।६, मनु० १।७७ 2. होना, घटित होना—प्रेर०—1. पैदा करना, सर्जन करना, जन्म देना, उत्पन्न करना, कार्यान्वित करना, प्रकाशित करना—वस्त्राण्युत्पादयति—पंच० २ 2. सामने लाना, उप—, 1.पहुँचना, निकट जाना, पास जाना, पधारना—यमुनातटमुपपेदे पंच० १ 2. हासिल होना,प्राप्त होना, हिस्सेमें आना—भग० ६।३६, १३।१८ 3. होना, घटित होना, आ पड़ना, पैदा हो जाना—देवि एवमुपपद्यते—मालवि० १, उपपन्ना हि दारेपु प्रभुता सर्वतोमुखी—श० ५।२६—रघु० १।६० 4. संभव होना, संभाव्य होना—नेश्वरो जगतः कारणमुपपद्यते—शारी० कु० ६।६१, ३।१२ 5. उपयुक्त होना, योग्य होना, पर्याप्त होना, अनुरूप समुचित—(अधि० के साथ) मा क्लैब्यं गच्छ कौन्तेय नैतत्त्वय्युपपद्यते—भग० २।३, १८।७ 6. आक्रमण करना, प्रेर०—1. किसी स्थिति में लाना, पहुँचाना, प्राप्त कराना—विश्वासमुपपादयति 2. नेतृत्व करना, ले जाना 3. तैयार होना—रथमुपपादयति—वेणी० २ 4. किसी को कोई वस्तु प्रदान करना, प्रस्तुत करना, उपहार देना—रघु० १४।१८, १५।१८, १६।३२, याज्ञ० १।३१५ 5. प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, उपार्जन करना, कार्यान्वित करना, काम में लाना, अनुष्ठान करना—यावत्तु मानुषके शक्यमुपपादयितुम्—का० ६२, देवकार्यमुपपादयिष्यतः—रघु० ११।९१, १७।५५ 6. न्याय्य ठहराना, तर्क देना, प्रदर्शित करना, प्रमा-

णित करना 7. संपन्न करना, युक्त करना, **निस्**—, 1. निकलना, उगना 2. पैदा होना, प्रकाशित होना, उदय होना, कार्यान्वित होना,—निष्पद्यंते च सस्यानि—मनु० ९।२४७, प्रेर०—पैदा करना, प्रकाशित करना, जन्म देना, कार्यान्वित करना, तैयार करना—त्वं नित्यमेकमेव पटं निष्पादयसि—पंच०, **प्र**—, 1. (क) की ओर जाना, पहुँचना, आश्रय लेना, चले जाना, पहुँच जाना—तां जन्मने शैलवधूं प्रपेदे—कु० १।२१, (क्षितीशं) कौत्सः प्रपेदे वरतंतुशिष्यः—रघु० ५।१, भट्टि० ४।१, कि० ११९, ११।६, रघु० ८।११ (ख) आश्रय ग्रहण करना—शरणार्थमन्यां कथं प्रपत्स्ये त्वयि दीप्यमाने—रघु० १४।६४ 2. किसी विशिष्ट अवस्था को जाना, पहुँचना या किसी विशिष्ट दशा में होना—रेणुः प्रपेदे पथि पंकभावम्—रघु० १६।३०, मुहूर्तं कर्णोत्पलतां प्रपेदे—कु० ७।८१, इदृशीमवस्थां प्रपन्नोऽस्मि—श० ५, ऋषिनिकरैरिति संशयः प्रपेदे—भामि० ४।३३, अमरु २७ 3. प्राप्त करना, खोज लेना, हस्तगत करना, प्राप्त करना, हासिल करना, सहकार न प्रपेदे मधुपेन भवत्समं जगति—भामि० १।२१, रघु० ५।५१ 4. व्यवहार करना, वर्ताव करना,—किं प्रपद्यते वैदर्भः—मालवि० १, (वह करने के लिए क्या सुझाव प्रस्तुत करता है), पश्यामो मयि किं प्रपद्यते—अमरु २० 5. प्रविष्ट करना, अनुमति देना, सहमत होना, स्वीकार करना—याज्ञ० २।४०, 6. निकट खिसकना, आना, (समय आदि का) पहुँचना 7. चले चलना, प्रगति करना 8. प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, **प्रति**—, 1. कदम रखना, जाना, पहुँचना, सहारा लेना (किसी व्यक्ति का) आश्रय लेना—उमामुखं तु प्रतिपद्य लोला द्विसंश्रयां प्रीतिमवाप लक्ष्मीः—कु० १।४३ 2. ग्रहण करना, कदम रखना, लेना, अनुसरण करना, (मार्ग आदि) इतः पन्थानं प्रतिपद्यस्व—श० ४, प्रतिपत्स्ये पदवीमहं तव—कु० ४।१० 3. पधारना, पहुँचना, प्राप्त करना—शि० ६।१६ 4. हासिल करना, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, भाग लेना, हिस्सा लेना—स हि तस्य न केवलां श्रियं प्रतिपेदे सकलान् गुणानपि—रघु० ८।५, १३, ४।१, ४४, ११।३४, १२।७, १९।५५, भग० १४।१४, शि० १०।६३ 5. स्वीकार करना, मान लेना,—शि० १५।२२, १६।२४, 6. वसूल करना, फिर प्राप्त करना, पुनः उपलब्ध करना, ग्रहण करना—श० ६।३१, कु० ४।१६, ७।९२ 7. मान लेना, स्वीकार करना—न मासे प्रतिपत्तासे मां चेन्मर्तासि मैथिलि—भट्टि० ८।७५, श० ५।२२, प्रमदाः पतिवर्त्मगा इति प्रतिपन्नं हि विचेतनैरपि—कु० ४।३३ 8. थामना, ग्रहण करना, पकड़ना—सुमंत्रप्रतिपन्नरश्मिभिः—रघु० १४।४७ 9. विचार करना, खयाल करना, सोचना, अवलोकन करना—तद्धनुर्ग्रहणमेव राघवः प्रत्यपद्यत समर्थमुत्तरम्—रघु० ११।७९ 10. अपने जिम्मे लेना, करने की प्रतिज्ञा करना, हाथ में लेना—निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम्—मुद्रा० २।१८, कार्यं त्वया नः प्रतिपन्नकल्पम्—कु० ३।१४, रघु० १०।४० 11. हामी भरना, सहमत होना स्वीकृति देना—तथेति प्रतिपन्नाय—रघु० १५।९३ 12. करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना, पालन करना—आचारं प्रतिपद्यस्व—श० ४, विक्रम० २, "औपचारिक आचार (अभिवादन आदि) का पालन करो", शासनमर्हतां प्रतिपद्यध्वम् मुद्रा० ४।१८, आज्ञा पालन करो 13. व्यवहार करना, बर्ताव करना, किसी का कोई कार्य करना (संब० या अधि के साथ), स कालयवनश्चापि किं कृष्णे प्रत्यपद्यत—हरि०, स भवान् मातृपितृवदस्मासु प्रतिपद्यताम्—महा०, कथमहं प्रतिपत्स्ये—श० ५, न युक्तं भवताम्मासु प्रतिपत्तुमसांप्रतम—महा० 14. (उत्तर) देना, (प्रत्युत्तर) देना—कथं प्रतिवचनमपि न प्रपद्यसे—मुद्रा० ६ 15. प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, जानकार होना 16. जानना, समझना, परिचित होना, सीखना, मालूम करना 17. घूमना, भ्रमण करना 18. होना, घटित होना, (प्रेर०)—1. देना, प्रस्तुत करना, प्रदान करना, अभिदान करना, समर्पित करना—अर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम्—भर्तृ० २।१८, मनु० ११।४, गुणवते कन्या प्रतिपादनीया—श० ४ 2. सिद्ध करना, प्रमाणित करना, प्रमाण देकर पक्का करना उक्तमेवार्थमुदाहरणेन प्रतिपादयति 3. व्याख्या करना, स्पष्ट करना 4. लाना या वापिस मोड़ना, (किसी स्थान पर) ले जाना 5. खयाल करना, विचार करना 6. उपस्थिति की घोषणा करना, पुनः प्रस्तुत करना 7. उपार्जन करना 8. कार्यान्वित करना, निष्पन्न करना, **वि**—, बुरी तरह विफल होना, असफल होना, (व्यवसाय आदि), का विफल होना 2. दुर्भाग्यग्रस्त या दुर्दशाग्रत होना—स बंधुर्यो विपन्नानामापदुद्धरणक्षमः—हि० १।३१ 3. विकलांग होना, अशक्त होना 4. मरना, नष्ट होना—नाथवंतस्त्वया लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे—उत्तर० १।४४, मृच्छ० १।३८, **व्या**—, 1. (पृथ्वी पर) उतरना, नीचे आना 2. मरना, नष्ट होना—दे० व्यापन्न—(प्रेर०)—मारना, कतल करना,—**सम्**—1. (तैयार माल) बाहर निकालना, सफलता प्राप्त करना, समृद्ध होना, सम्पन्न होना, पूरा होना,—संपत्स्यते वः कामोऽयं कालः कश्चित्प्रतीक्ष्यताम्—कु० २।५४, रघु० १४।७६, मनु० ३।२५४, ६।६९ 2. पूरा होना, (संख्या आदि) जुड़ कर होना

श्याहताः पंच पंचदश संपद्यंते 3. बन जाना, होना संपत्स्यंते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः—मेघ० ११, २३, संपेदे श्रमसलिलोद्‌गमो विभूषाम्—कि० ७।५ 4. उदय होना, जन्म लेना, पैदा होना 5. एक जगह पड़ना, एकत्र होना 6. सुसज्जित होना, संपन्न होना, स्वामी होना—अशोक यदि सद्य एव कुसुमैर्न संपत्स्यसे—मालवि० ३।१६, दे० 'संपन्न' 7. (किसी ओर) प्रवृत्त होना, करवाना, पैदा करना (संप्र० के साथ)—साधोः शिक्षा गुणाय संपद्यते नासाधोः—पंच० १, मुद्रा० ३।३२ 8. प्राप्त करना, उपलब्ध करना, अधिग्रहण करना, हासिल करना 9. संलग्न होना, लीन होना (अधि० के साथ)—(प्रेर०)—1. करवाना, होना, पैदा करना, सम्पन्न करना, पूरा करना, कार्यान्वित करना—इति स्वसुर्भोजकुलप्रदीप संपाद्य पाणिग्रहणं स राजा—रघु० ७।२९ 2. उपार्जन करना, प्राप्त करना, सज्जित करना, तैयार करना अधिग्रहण करना, हासिल करना 4. सज्जित करना, संपन्न करना युक्त करना 5. बदलना, रूपान्तरित करना, 6. करार या वादा करना, **संप्रति**—,1. की ओर जाना, पहुँचना 2. विचार करना, खयाल करना—कु० ५।३९, **सम्** 1. घटित होना, होना घटना होना 2. हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना।

पद् (पुं०) [पद्+क्विप्] (इस शब्द का पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व०, के पश्चात् विकल्प से यह पद के स्थान में आदेश हो जाता है) 1. पैर 2. चरण, चौथाई भाग (किसी कविता या श्लोक का)। सम०—**काशिन्** (पुं०) पैदल चलने वाला, —**हतिः, ती** (स्त्री०) (पद्धतिः;—ती) रास्ता, पथ, मार्ग, बटिया (आलं० भी) इयं हि रघु सिंहानां वीरचारित्रपद्धतिः—उत्तर० ५।२२, रघु० ४।४६, ६।५५, ११।८७, कविप्रथम पद्धतिम्—१५।३३, 'कवियों को दिखाया गया पहला मार्ग' 2. रेखा, पंक्ति, शृंखला 3. उपनाम, वंशनाम, उपाधि या विशेषण, व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों के समास में प्रयुक्त होने वाला शब्द जो जाति या व्यवसाय का बोधक हो—उदा० गुप्त, दास, दत्त आदि 4. विवाहादि विधि को सूचित करने वाली पुस्तक,—**हिमम्** (पद्धिमम्) पैरों का ठंडापन।

पदम् [पद्+अच्] 1. पैर (इस अर्थ में पुं० भी होता है) **पदेन** पैदल—शिखरिषु पदं न्यस्य—मेघ० १३, अयथे पदमर्पयंति हि—रघु० ९।७४, 'कुमार्ग पर कदम रक्खा' ३।५०, १२।५२, पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते—३।६२, 'गुणों के द्वारा सर्वत्र कदम रक्खा जाता है—अर्थात् गुणों की ही कद्र होती है, जनपदे न गदः पदमादधौ—९।४ 'देश में किसी भी रोग ने कदम नहीं रक्खा' यदवधि न पदं दधाति चित्ते—भामि० २।१४, **पदं कृ** (क) कदम रखना (श०)—शांते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्—श० ४।२५, (ख) प्रवृत्त होना, अधिकार करना, कब्जा करना, (आलं०) कृतं वपुषि नवयौवनेन पदम्—का० १३७, कृतं हि मे कुतूहलेन प्रश्नावकाशया हृदि पदम्—१३३, इसी प्रकार कु० ५।२१, पंच० २४०, कृत्वा पदं नो गले—मुद्रा० ३।२६, 'हमारे विरुद्ध' (श०—अपना कदम हमारी गर्दन पर रखकर), **मूर्ध्नि पदं कृ** किसी के सिर पर चढ़ना, दीन बनाना—पंच० १।३२७, आकृति विशेषेष्वादरः पदं करोति—मालवि० १, सुन्दर रूप ध्यान आकृष्ट करता है (आदर प्राप्त करता है)—जने सखीपदं कारिता—श० ४, (मित्रता या विश्वास का) बर्ताव कराया गया, धर्मेण शर्वे पार्वती प्रति पदं कारिते—कु० ६।१४ 2. कदम, पग, डग—तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा श० २।१२, **पदे पदे** हर कदम पर—अक्षमालामदत्त्वा पदात्पदमपि न गंतव्यम्—या—चलितव्यम् "एक कदम भी मत चलो" पितुः पदं मध्यममुत्पतंती—विक्रम० १।१९, 'विष्णु का बिचला कदम' अर्थात् अन्तरिक्ष (पौराणिक मतानुसार पृथ्वी, अन्तरिक्ष और पाताल यह तीनों लोक ही वामनावतार (पंचम अवतार) विष्णु के तीन कदम माने जाते हैं) इसी प्रकार—अथात्मनः शब्दगुणं गुणज्ञः पदं विमानेन विगाहमानः—रघु० १३।१ 3. पदचिह्न, पद—छाप, पदांक—पदपंक्तिः—श० ३।८, या पदावली—पगछाप, पदमनुविधेयं च महतां—भर्तृ० २।२८, 'महाजनों के पदचिह्नों पर ही चलना चाहिए' 4. चिह्न, अंक, छाप, निशान—रतिवलयपदांके चापमासज्य कंठे—कु० २।६४, मेघ० ३५, ९६, मालवि० ३ 5. स्थान, अवस्था, स्थिति—अधोऽधः पदम्—भर्तृ० २।१०, आत्मा परिश्रमस्य पदमुपनीतः—श० १, 'कष्ट की अवस्था तक पहुँचाया'—तदलब्धपदं हृदिशोकघने—रघु० ८।९१, 'हृदय में स्थान न पाया' (अर्थात् हृदय पर छाप न छोड़ी),—अपदे शंकितोऽस्मि—मालवि० १, 'मेरे सन्देह स्थान से बाहर थे' अर्थात् निराधार—कृशकुटुंबेषु लोभः पदमधत्त—दश० १६२, कु० ६।७२, ३।४, रघु० २।५०, ९।८२, कृतपदं स्तनयुगलम्—उत्तर० ६।३५, 'स्तनयुगल विकासोन्मुख था' 6. मर्यादा, दर्जा, पद, स्थिति या अवस्था—भगवत्या प्राश्निकपदमध्यासितव्यम्—मालवि० १, यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयः—श० ४।१८, 'पदवी को प्राप्त करती हैं" सचिव°, राज° आदि 7. कारण, विषय, अवसर, वस्तु, मामला या बात—व्यवहारपदं हितत्—याज्ञ० २।५, झगड़े की बात या अवसर, कानूनी दृष्टि से स्वामित्व अधिकार, अदालती कार्रवाई—सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाण-

मन्तःकरणप्रवृत्तयः—श० १।२२, वांछितफलप्राप्तेः पदम्—रत्न० १।६ 8. आवास, पदार्थ, आशय—पदं दृशः स्याः कथमीश मादृशाम्—शि० १।३७, १४।२२, अगरीयान्न पदं नृपश्रियः—कि० २।१४, अविवेकः परमापदां पदम्—२।३०, के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारंभयत्नाः—मेघ० ५४, हि० ४।६९ 9. श्लोक का एक चरण, एकं लाइन—विरचितपदं (गेयम्) मेघ० ८६, १३३—मालवि० ५।२, श० ३।१६ 10. विभक्तिचिह्न से युक्त पूरा शब्द—सुप्तिङन्तं पदम् पा० १।४।१४, वर्णाः पदं प्रयोगार्हानन्वितैकार्थबोधकाः —सा० द० ९, रघु० ८।७७ 11. कर्तृ०, ए० व० को छोड़ कर शेष सभी व्यंजनादि विभक्तिचिह्नों का सांकेतिक नाम 12. वैदिक शब्दों को सन्धिविच्छेद करके पृथक् २ रखना, वैदिक मन्त्रों का पद-पाठ निर्धारित करना 13. बहाना—शि० ७।१४ 14. वर्गमूल 15. (वाक्य का) प्रभाग या खंड 16. लम्बाई की माप 17. प्ररक्षा, संघारण या प्ररक्षण 18. शतरंज की बिसात पर बना वर्गाकार घर,—**दः** प्रकाश की किरण। सम०—**अंकः**,—**चिह्नम्** पदछाप,—**अंगुष्ठः** पैर का अँगूठा,—**अनुगः** अनुगामी, सहचर,—**अनुशासनम्** शब्द विज्ञान, व्याकरण,—**अंतः** शब्द का अन्त,—**अन्तरम्** दूसरा पग, एक पग का अन्तराल—पदांतरे स्थित्वा—श० १,—**अब्जम्**,—**अंभोजम्**,—**अरविंदं**,—**कमलम्**, —**पंकजम्**,—**पद्मम्** चरणकमल, कमल जैसे पग, —**अर्थः** 1. शब्द का अर्थ 2. वस्तु या पदार्थ 3. शीर्षक या विषय (नैयायिक इसके आगे १६ उपशीर्षक गिनाते हैं) 4. अभिधेय, वह वस्तु जिसका कुछ नाम रक्खा जा सके, प्रवर्ग, वैशे० के अनुसार इन प्रवर्गों या पदार्थों की संख्या सात, सांख्यों के अनुसार २५, (या पतंजलि के अनुयायिओं के अनुसार २७) और वेदान्तियों के अनुसार केवल दो ही हैं,—**आघातः** 'पैर का प्रहार' या ठोकर,—**आजिः** पैदलसिपाही, —**आवली** शब्दों का समूह, शब्दों या पंक्तियों का अविच्छिन्न क्रम (काव्यस्य शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली—काव्या० १।१०, मधुरकोमलकांतपदावलीं शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम्—गीत० १, —**आसनम्** पादपीठ, पैर रखने की चौकी,—**क्रमः** चलना, क़दम रखना,—**गः** पैदल सिपाही,—**च्युतः** (वि०) पद से हटाया गया, गद्दी से उतारा हुआ —**छेदः**,—**विच्छेदः**,—**विग्रहः** शब्दों को अलग २ करना, पदच्छेद करना, वाक्य का संघटकों में पृथक्करण,—**न्यासः** 1. क़दम रखना, डग भरना, पग रखना 2. पदचिह्न 3. पैरों की एक मुद्रा विशेष 4. गोखरु का पौधा,—**पंक्तिः** (स्त्री०) 1. पदचिह्नों की क़तार—श० ३।९, विक्रम० ४।६ 2. शब्दों का क्रम—कि० १०।३० 3. ईंट, पवित्र इष्टका,—**पाठः** वैदिक मंत्रों का एक विशेषक्रम जिसमें मंत्र का प्रत्येक शब्द उच्चारणविकारों से निरपेक्ष होकर अपने मूलरूप में ही लिखा जाता है और इसी मूलरूप में उच्चारण किया जाता है (विप० संहितापाठ),—**पातः**, —**विक्षेपः** क़दम, (घोड़े का भी) क़दम,—**भंजनम्** शब्दों का विग्रह, निरुक्ति,—**भंजिका** एक टीका जिसमें किसी संदर्भ के शब्द, पृथक् २ किये जाते हैं तथा समासों का विग्रह कर दिया जाता है,—**माला** जादू का गुर,—**वृत्तिः** (स्त्री०) दो शब्दों के बीच अंतर या विराम।

पदकम् [पद+कन्] क़दम, स्थिति, पदवी—दे० 'पद' —**कः** कण्ठ का एक आभूषण 2. पद पाठ का ज्ञाता।

पदविः,–वी (स्त्री०) [पद्+अवि वा ङीष्] 1. रास्ता, मार्ग, पथ, बटिया (आलं०) पवन पदवी—मेघ० ८, अनुयाहि साधुपदवीम्—भर्तृ० २।७७, 'भले आदमियों के पदचिह्नों पर चलो'—श० ४।१३, रघु० ३।५०,७।७,८,११, १५।९९, भर्तृ० ३।४६, वेणी० ६।२७, इसी प्रकार 'यौवनपदवीमारूढः'—पंच० १, 'वयस्कता प्राप्त की' (अर्थात् पूरा मनुष्य बन गया) 2. अवस्था, स्थिति, दर्जा, मर्यादा, पदवी, पद 3. जगह, स्थान।

पदातः, पदातिः [पद्भ्यामतति—अत्+अच्, इन् वा] 1. पदल सिपाही—रघु० ७।३७ 2. पैदल यात्री (पैदल चलने वाला) उत्तर० ५।१२।

पदातिन् (वि०) [पदात+इनि] 1. (सेना) जिसमें पैदल सिपाही हों 2. पैदल चलने वाला (पुं०) पैदल सिपाही।

पदिक (वि०) [पादेन चरति—पाद+ष्ठन्, पादस्य पदादेशः] पैदल चलने वाला— (पुं०) पैदल आदमी।

पद्मम् [पद्+मन्] 1. कमल (इस अर्थ में पुं० भी) पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ताफलश्रियम्—2. कमल जैसा आभूषण, 3. कमल का रूप या आकृति 4. कमल की जड़ 5. हाथी सूंड और चेहरे पर रंगीन निशान 6. कमल के आकार खड़ी की हुई सेना 7. विशेषरूप से बड़ी संख्या, (१००००००००००००००) 8. सीसा,—**द्मः** 1. एक प्रकार का मंदिर 2. हाथी 3. साँप की एक जाती 4. राम का विशेषण 5. कुबेर के नौ खजानों में से एक—दे० नवनिधि 6. एक प्रकार का रतिबंध, मैथुन,—**द्मा** सौभाग्य की देवी लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी (तं) पद्मा पद्मातपत्रेण भेजे साम्राज्यदीक्षितम्—रघु० ५। सम०—**अक्ष** (वि०) कमल जैसी सुन्दर आँखों वाला (—**क्षः**) विष्णु या सूर्य का विशेषण, (—**क्षम्**) कमल गट्टा,—**आकरः** 1. एक विशाल सरोवर जिसमें कमल खिले हों

2. पोखर, पल्वल 3. कमलों का समूह—भर्तृ० २।७३, —आलयः जगत्स्रष्टा ब्रह्मा का विशेषण, (—या) लक्ष्मी का विशेषण,—आसनम् 1. कमल पीठ—कु० ७।८६, 2. एक प्रकार का योगासन—ऊरूमूले वामपादं पुनस्तु दक्षिणं पदं, वामोरौ स्थापयित्वा तु पद्मासनमिति स्मृतम्, (नः) जगत्स्रष्टा ब्रह्माका विशेषण,—आह्वम् लौंग,—उद्भवः ब्रह्मा का विशेषण—करः,—हस्त विष्णु का विशेषण (रा,— स्ता) लक्ष्मी का नाम,—कर्णिका पद्म का बीजकोश,—कलिका कमल का अनखिला फूल, कली, —केशरः—कम् कमलफूल का रेशा—कोशः,—कोषः 1. कमल का संपुट 2. संपुटित कमल के आकार की उँगलियों की एक मुद्रा,—खंडम्,—षण्डम् कमलों का समूह,—गंध,—गंधि (वि०) कमल की गंधवाला या कमल की सी गंधवाला,—गर्भः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. सूर्य का विशेषण, —गुणा—गृहा धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण, —जः,—जातः,—भवः,—भूः—योनिः,—संभवः कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण,—तंतुः कमल का रेशेदार डंठल—नाभः,—भि विष्णु का विशेषण—नालम् कमल का डंठल,—पाणिः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण,—पुष्पः कर्णिकार का पौधा, —बंधः एक प्रकार की कृत्रिम रचना जिससें शब्दो को कमल-फूल के रूप में व्यवस्थित किया हो—दे० काव्य० ९,—बंधुः 1. सूर्य 2. मधुमक्खी,—रागः,—गम् लाल, माणिक्य, रघु० १३।५३, १७।२३, कु० ३।५३,—रेखा हथेली में (कमल फूल के आकार की) रेखायें जो अत्यन्त धनवान् होने का लक्षण हैं,—लांछन 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. कुबेर का विशेषण 3. सूर्य और 4. राजा का विशेषण (ना) 1. धन की देवी लक्ष्मी का विशेषण 2. या विद्या की देवी सरस्वती का विशेषण—वासा लक्ष्मी का विशेषण।

पद्मकम् [पद्म+कन्] 1. कमलफूल के आकार की व्यूह-रचना में स्थित सेना 2. हाथी की सूंड और चेहरे पर रंगीन स्थान 3. बैठने की विशेष मुद्रा।

पद्मकिन् (पुं०) [पद्मक+इनि] 1. हाथी 2. भोजपत्र का वृक्ष।

पद्मावती [पद्म+मतुप्, वत्वम्, दीर्घश्च] 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. एक नदी का नाम—मा० ९।१।

पद्मिन् (वि०) [पद्म+इनि] 1. कमल रखने वाला 2. चितकबरा (पुं०) हाथी—नी 1. कमल का पौधा —सुरगज इव बिभ्रत् पद्मिनीं दंतलग्नाम्—कु० ३। ७६, रघु० १६।८८, मेघ० ३३, मालवि० २।१३ 2. कमलफूलों का समूह 3. सरोवर या झील जिसमें कमल लगे हुए हों 4. कमल का रेशेदार डंठल 5. हथिनी 6. रतिशास्त्र के लेखकों ने स्त्रियों के चार भेद किये हैं उसमें प्रथम प्रकार की स्त्री, इनका लक्षण रतिमंजरी में इस प्रकार दिया है—भवति कमलनेत्रा नासिकाक्षुद्ररंध्रा अविरलकुचयुग्मा चारुकेशी कृशांगी मृदुवचनसुशीला गीतवाद्यानुरक्ता सकलतनुसुवेशा पद्मिनी पद्मगंधा।

पद्मेशयः [पद्मे शेते—शी+अच्, अलु० स०] विष्णु का विशेषण।

पद्य (वि०) [पद्+यत्] 1. पद या पंक्तियों वाला 2. चरण या पद को मापने वाला,—द्यः 1. शूद्र 2. शब्द का एक भाग,—द्या पगडंडी, पथ, वटिया, —द्यम् (चार चरणों से युक्त) श्लोक, कविता —मदीयपद्यरत्नानां मंजूषैषा मया कृता—भामि० ४।४५, पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा —छं० २ 2. प्रशंसा, स्तुति।

पद्र [पद्यतेऽस्मिन् पद्+रक्] गाँव।

पद्वः [पद्+वन्] 1. भूलोक, मर्त्य लोक 2. रथ 3. मार्ग।

पन् (भ्वा० उभ०—पनायति—ते, पनायित या पनित) प्रशंसा करना, स्तुति करना—तु० 'पण'।

पनसः [पनाय्यते स्तूयतेऽनेन देवः—पन्+असच्] 1. कटहल का वृक्ष 2. काँटा,—सम् कटहल का फल।

पंथक (वि०) [पथि जातः—पथिन्+कन्, पन्थादेशः] मार्ग में उत्पन्न।

पन्न (भू० क० कृ०) [पद्+क्त] 1. गिरा हुआ, डूबा हुआ, नीचे गया हुआ, अवतरित 2. बीता हुआ—दे० पद्। सम०—गः साँप, सर्प—विपकृतः पन्नगः फणां कुरुते—श० ६।३० (—गम्) सीसा, °अरिः, °अशनः, °नाशनः गरुड के विशेषण।

पपिः [पातिलोकम्—पिबति वा, पा+कि, द्वित्वम्] चन्द्रमा।

पपीः [पा+ई, द्वित्वं किच्च] 1. चन्द्रमा 2. सूर्य।

पपु (वि०) [पा+कु, द्वित्वम्] पालन-पोषण करने वाला, रक्षा करने वाला,—पुः (स्त्री०) धात्री माता, प्रतिपालिका।

पंपा [पाति रक्षति, महर्ष्यादीन्—पा० द्वित्वम् मुडागमश्च, नि०] दंडकारण्य का एक सरोवर—इदं च पंपाभिधानं सरः—उत्तर० १, रघु० १३।३०, भट्टि० ३।७३ 2. भारत के दक्षिण में एक नदी का नाम।

पयस् (नपुं०) [पय्+असुन्, पा+असुन्, इकारादेशच] 1. पानी 2. दूध पयः पानं भुजगानां केवलं विषवर्धनम् —हि० ३।४, रघु० २।३६, ६३, १४।७८, (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) 3. वीर्य (हश् वर्णों से पूर्व पयस् को बदल कर 'पयो' हो जाता है)। सम०—गलः, —ड: 1. ओला 2. टापू,—घनम् ओला,—चयः जलाशय या सरोवर,—जन्मन् (पुं०) बादल—दः बादल —मेघ० ७, रघु० १४।३७,—सुहृद् (पुं०) मोर

—धरः 1. बादल 2. स्त्री की छाती—पद्मपयोधरतटी—गीत० १, विपांडुभिर्म्लानतया पयोधरैः—कि० ४।२४, (यहाँ शब्द का अर्थ 'बादल' भी है)—रघु० १४।२२ 3. ऐन औडी—रघु० २।३ 4. नारियल का पेड़ 5. रीढ़ की हड्डी,—धस् (पुं०) 1. समुद्र 2. तालाब, सरोवर, जलाशय,—धिः,—निधः समुद्र, ऋतु० २।७, नै० ४।५०,—मुच् (पुं०) बादल–रघु० ३।३, ६।५,—वाहः बादल,—रघु० १।३६, ।

पयस्य (वि०) [पयसो विकारः पयसः इदं वा–पयस्+यत्] 1. दूध से युक्त, दूध से बना हुआ 2. पानी से युक्त,—स्यः बिल्ली,—स्या दही ।

पयस्वल (वि०) [पयस्+वलच्] दूध से भरा हुआ, यथेष्ट दूध देने वाला,—लः बकरी ।

पयस्विन् (वि०) [पयस्+विनि] दूधिया, जल से युक्त,—नी 1. दूध देने वाली गाय—रघु० २।२१,५४,६५ 2. नदी 3. बकरी 4. रात ।

पयोधिकम् [पयोधि+कै+क] समुद्रझाग ।

पयोष्णी (स्त्री०) विन्ध्यपर्वत से निकलने वाली एक नदी (कुछ विद्वान् इसे वर्तमान 'ताप्ती' मानते हैं, परन्तु 'ताप्ती' की एक सहायक नदी 'पूर्णा' है जिसकी 'पयोष्णी' के साथ अभिन्नता अधिक संभव प्रतीत होती है) ।

पर (वि०) [पृ०+अप्, कर्तरि अच् वा] (जब सापेक्ष स्थिति बतलाई जाती है इस शब्द के रूप विकल्प से कर्तृ० संबो० अपा०, और अधि० में सर्वनाम की भांति होते हैं) 1. दूसरा, भिन्न, अन्य—दे० 'पर' पुं० भी 2. दूरस्थित, हटाया हुआ, दूर का 3. परे, आगे, के दूसरी ओर—म्लेच्छदेशस्ततः परः—मनु० २।२३, ७।१५८ 4. बाद का, पीछे का, आगे का (प्रायः अपा० के साथ) बाल्यात्परामिव दशां मदनोऽध्युवास—रघु० ५।६३, कु० १।३१ 5. उच्चतर, श्रेष्ठ, सिकतात्वादपि परां प्रपेदे परमाणुताम्—रघु० १५।२२, इन्द्रियाणि पराण्याहु—रिन्द्रियेभ्यः परं मनः, मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः—भग० ३।४३, 6. उच्चतम, महत्तम, पूज्यतम, प्रमुख, मुख्य, सर्वोत्तम, प्रधान—न त्वया द्रष्टव्यानां परं दृष्टम्—श० २, कि० ५।२८ 7. (समास में) आगे का वर्ण या ध्वनि रखने वाला, पीछे का 8. विदेशी, अपरिचित, अजनबी 9. विरोधी, शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल 10. अधिक, अतिरिक्त, बचा हुआ—जैसा कि परं शतम्—एक सौ से अधिक 11. अन्तिम, आखीर का 12. (समास के अन्त में) किसी वस्तु को उच्चतम पदार्थ समझने वाला, लीन, तुला हुआ, अनन्यभक्त, पूर्णतः व्यस्त—परिचर्यापरः—रघु० १।९१, इसी प्रकार 'ध्यानपर' शोकपर, दैवपर, चितापर आदि—रः 1. दूसरा, व्यक्ति, अपरिचित, विदेशी (इस अर्थ में बहुधा ब० व०) यतः परेषां गुणग्रहीतासि—भामि० १।९, शि० २०।७४, दे० 'एक' 'अन्य' भी 2. शत्रु, दुश्मन, रिपु उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता—शि० २।१०, पंच० २।१५८, रघु० ३।२१,—रम् उच्चतम स्वर या बिन्दु, चरम बिन्दु 2. परमात्मा 3. मोक्ष विशे०—कर्म०, करण०, और अधि० के एक वचन के 'पर' शब्द के रूप क्रिया विशेषण की भांति प्रयुक्त किये जाते हैं—अर्थात् (क) परम् 1. परे, अधिक, में से (अपा०), वर्त्मनः परम्– रघु० १।१७, 2. के पश्चात् (अपा०) अस्मात् परं—श० ४।१६, ततः परम् 3. उस पर, उसके बाद 4. परंतु, लोभी 5. अन्यथा 6. ऊँची मात्रा में, अधिकता के साथ, अत्यधिक, पूरी तरह से, सर्वथा— परं दुःखितोऽस्मि—आदि 7. अत्यंत (ख) परेण 1. आगे, परे, अपेक्षाकृत अधिक—किंवा मृत्योः परेण विधास्यति—मा० २।२ 2. इसके पश्चात्—मयि तु कृतनिधाने किं विदध्याः परेण—महावी० २।४९ 3. के बाद (अपा० के साथ) स्तम्य त्यागात्परेण— उत्तर० २।७, (ग) परे 1. बाद में, उसके पश्चात्—अथ ते दशाहतः परे—रघु० ८।७३ 2. भविष्य में। सम०—अंगम् शरीर का पिछला,—अंगदः शिव का विशेषण,–अदनः अरब या फारिया के देशों में पाया जाने वाला घोड़ा,—अधीन (वि०) पराधीन, पराश्रित, परवश, मनु० १०।५४,५३,—अंताः (पुं०, ब० व०) एक राष्ट्र का नाम,—अंतकः शिव का विशेषण—अन्न (वि०) दूसरे के भोजन पर निर्वाह करने वाला (न्नम्) दूसरे का भोजन °परिपुष्टता दूसरों के भोजन से पालन-पोषण याज्ञ० ३।२४१ °भोजिन् (वि०) दूसरों के भोजन पर निर्वाह करने वाला हि० १।१३९,—अपर (वि०) 1. दूर और निकट, दूर और समीप 2. पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती 3. पहले और बाद में, पहले और पीछे 4. ऊंचा और नीचा, सबसे उत्तम और सबसे खराब (–रम्) (तर्क० में) महत्तम और लघूत्तम संख्याओं के बीच की वस्तु, जाति (जो श्रेणी और व्यक्ति दोनों के मध्य विद्यमान हो),—अमृतम् वृष्टि,— अयण (अयन) (वि०) 1. अनुरक्त, भक्त, संसक्त 2. आश्रित, वशीभूत 3. तुला हुआ, अनन्यभक्त, सर्वथा लीन (समास के अन्त में)—प्रभुर्धनपरायणः—भर्तृ० २।५६, इसी प्रकार—शोक° कु० ४।१, अग्निहोत्रं आदि (–णम्) प्रधान या चरम उद्देश्य, मुख्य ध्येय, सर्वोत्तम या अन्तिम सहारा,—अर्थ (वि०) दूसरा ही उद्देश्य या अर्थ रखने वाला, 2. दूसरे के लिए अभिप्रेत, अन्य के लिए किया हुआ (–र्थः) 1. सर्वोच्च हित या

लाभ 2. किसी दूसरे का हित (विप० स्वार्थ)—स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमनेकः सतामग्रणीः—सुभा०, रघु० १।२९ 3. मुख्य अर्थ 4. सर्वोच्च उद्देश्य (अर्थात् मैथुन) (—र्थम्,—र्थे) (अव्य०) दूसरे के लिए,—**अर्धम्** 1. दूसरा भाग (विप० पूर्वार्ध) उत्तरार्ध—दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्—भर्तृ० २।६० 2. विशेष रूप से बड़ी संख्या अर्थात् १००,०००,०००,०००,०००,०००, एकत्वादि परार्धपर्यंता संख्या—तर्क०,—**अर्ध्य** (वि०) दूसरे किनारे पर होने वाला 2. संख्या में अत्यंत दूर का—हेमंतां वसन्तात्परार्ध्यः—शत० 3. अत्यंत श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, परम श्रेष्ठ, अत्यंत मूल्यवान्, सर्वोच्च, परम—रघु० ३।२७, ८।२७, १०।३४, १६।३९ शि० ८।४५ 4. अत्यंत कीमती—शि० ४।११ 5. अत्यंत सुन्दर, प्रियतम, मनोज्ञतम—रघु० ६।४, शि० ३।५८, (**—र्ध्यम्**) 1. अधिकतम 2. अनन्त या असीम संख्या, —**अवर** (वि०) 1. दूर और निकट 2. सवेरी और अवेरी 3. पहले का और बाद का या आगामी 4. उच्चतर और निम्नतर 5. परंपराप्राप्त—मनु० ११।०५ 6. सर्वसम्मिलित,—**अहः** दूसरे दिन,—**अह्णः** तीसरा पहर, दिन का उत्तरार्ध भाग,—**आचित** (वि०) दूसरे द्वारा पाला-पोसा हुआ (—तः) दास,—**आत्मन्** (पुं०) परमात्मा,—**आयत्त** (वि०) दूसरे के अधीन, पराश्रित, पराधीन—परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्तु पुरुषः—मुद्रा० ३।४,—**आयुस्** (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण,—**आविद्धः** 1. कुबेर का विशेषण 2. विष्णु की उपाधि,—**आश्रयः**—**आसंगः** परावलंबन दूसरे की अधीनता,—**आस्कंदिन्** (पुं०) चोर, लुटेरा, —**इतर** (वि०) 1. शत्रुता से भिन्न अर्थात् मैत्रीपूर्ण, कृपालु 2. अपना, निजी—कि० १।१४,—**ईशः** ब्रह्मा का विशेषण,—**उत्कर्षः** दूसरे की समृद्धि,—**उपकारः** दूसरों की भलाई करना जनहित पिता, उदारता, धर्मार्थ—परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्,—**उपजापः** शत्रुओं में फूट डालना,—**उपरुद्धः** (वि०) शत्रु के द्वारा घेरा हुआ,—**ऊढा** दूसरे की पत्नी,—**एधित** (वि०) दूसरे द्वारा पालित-पोषित (तः) 1. सेवक 2. कोयल,—**कलत्रम्** दूसरे की पत्नी,—**अभिगमनम्** व्यभिचार—हि० १।१३५,—**कार्यम्** दूसरे का व्यवसाय या काम,—**क्षेत्रम्** 1. दूसरे का शरीर 2. दूसरे का क्षेत्र—मनु० ९।४९ 3. दूसरे की पत्नी—मनु० ३।१७५,—**गामिन्** (वि०) 1. दूसरे के साथ रहने वाला 2. दूसरे से संबंध रखने वाला, 3. दूसरे के लिए लाभदायक,—**ग्रंथिः** (अंगुली आदि का) जोड़, गांठ,—**चक्रम्** 1. शत्रु की सेना, 2. शत्रु के द्वारा आक्रमण ६ ईतियों में से एक,—**छंदः** दूसरे की इच्छा, —**अनुवर्तनम्** दूसरे की इच्छा का अनुगमन करना, —**छिद्रम्** दूसरे की कमजोरी, दूसरे की त्रुटि—**जात** (वि०) 1. दूसरे से उत्पन्न 2. जीविका के लिए दूसरे पर आश्रित (तः) सेवक,—**जित** (वि०) दूसरे से जीता हुआ (तः) कोयल,—**तंत्र** (वि०) दूसरे पर आश्रित, पराधीन, अनुसेवी,—**दाराः** (पुं०, ब० व०) दूसरे की पत्नी,—**दारिन्** (पुं०) व्यभिचारी, परस्त्रीगामी,—**दुःखम्** दूसरे का कष्ट या दुःख—विरलः परदुःखदुःखितो जनः, महदपि परदुःखं शीतलं सम्यगाहुः—विक्रम० ४।१३,—**देशः** विदेशः,—**देशिन्** (पुं०) विदेशी,—**द्रोहिन्**—**द्वेषिध्** (वि०) दूसरों से घृणा करने वाला, विरोधी, शत्रुतापूर्ण,—**धनम्** दूसरे की संपत्ति,—**धर्मः** 1. दूसरे का धर्म—स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः—भग० ३।३५ 2. दूसरे का कर्तव्य या कार्य 3. दूसरी जाति का कर्तव्य—मनु० १०।९७,—**निपातः** समास में शब्द की अनियमित पश्चवर्तिता अर्थात् भूतपूर्वः यहाँ अर्थ है 'पूर्वं भूतः' इसी प्रकार राजदंतः, अग्न्याहितः आदि,—**पक्षः** शत्रु का दल या पक्ष,—**पदम्** 1. उच्चतम स्थिति, प्रमुखता 2. मोक्ष,—**पिंडः** दूसरे का भोजन, दूसरों से दिया गया भोजन **अद्** (वि०) वह जो दूसरों का भोजन करे या जो दूसरे के खर्च पर जीवन निर्वाह करे (पुं०) सेवक, **रत** (वि०) दूसरे के भोजन पर पलने वाला,—**पुरुषः** 1. दूसरा मनुष्य, अपरिचित 2. परमात्मा, विष्णु 3. दूसरी स्त्री का पति,—**पुष्ट** (वि०) दूसरे के द्वारा पाला पोसा हुआ (—**ष्टः**) कोयल °**महोत्सवः** आम का वृक्ष,—**पुष्टा** 1. कोयल 2. वेश्या, रंडी,—**पूर्वा** वह स्त्री जिसका दूसरा पति हो,—**प्रेष्यः** सेवक, घरेलू नौकर,—**ब्रह्मन्** (नपुं०) परमात्मा,—**भागः** 1. दूसरे का हिस्सा, 2. श्रेष्ठ गुण 3. सौभाग्य, समृद्धि 4. (क) सर्वोत्तमता, श्रेष्ठता, सर्वोपरिता—दुरधिगमः परभागो यावत्पुरुषेण पौरुषं न कृतम्—पंच० १।३३०, ५।३४, (ख) अधिकता, बाहुल्य, ऊँचाई—स्थलकमलगंजनं मम हृदयरंजनं जनितरतिरंगपरभागम्—गीत० १०, आभाति लब्धपरभागतयाधरोष्ठे—रघु० ५।७९, कु० ७।१७, कि० ५।३०, ८।४२, शि० ७।३३, ८।५१, १०।८६,—**भाषा** विदेशी भाषा,—**भुक्त** (वि०) दूसरे के द्वारा भोगा हुआ,—**भृत्** (पुं०) कौवा (क्योंकि यह दूसरे का—अर्थात् कोयल का पालन-पोषण करता है),—**भृतः**—**ता** कोयल (क्योंकि यह दूसरे के द्वारा अर्थात् कौवे से पाली पोसी जाती है) तु० श० ५।२२, कु० ६।२, रघु० ९।४३ श० ४।९, —**मृत्युः** कौवा,—**रमणः** विवाहित स्त्री का यार या जार—पच० १।१८०,—**लोकः** दूसरा (आगामी) दुनिया—कु० ४।१०—कु० ४।१० °**विधिः** अन्त्येष्टि

संस्कार,—वश —वश्य (वि०) दूसरे के अधीन, पराश्रित, —वाच्यम् दोष या त्रुटि,—वाणि: 1. न्यायकर्ता 2. वर्ष 3. कार्तिकेय के मोर का नाम,—वादः 1. अफवाह, जनश्रुति 2. आपत्ति, विवाद—वादिन् (पुं०) झगड़ालू विवादी,—व्रतः धृतराष्ट्र का विशेषण, —श्वस् (अव्य०) परसों (आगामी),—संज्ञकः आत्मा —स्वर्ण (वि०) (व्या० में) अग्रवर्ती वर्ण का सजातीय,—सेवा दूसरे की सेवा,—स्त्री दूसरे की पत्नी, —स्वम् दूसरे की संपत्ति—रघु० १।२७, मनु० ७।१२३ °हरणम् दूसरे की संपत्ति हर लेना, —हन् (वि०) शत्रुओं को मारने वाला,—हितम् दूसरे का भला।

परकीय (वि०) [परस्य इदम्—पर+छ, कुक्] 1. दूसरे से संबंध रखने वाला—अर्थो हि कन्या परकीय एव —श० ४।२१, मनु० ४।२०१,—या दूसरे की पत्नी, जो अपनी न हो, नायिकाओं के तीन मुख्य प्रकारों में से एक—दे० 'अन्यस्त्री' और सा० द० १०८।

परंजः (पुं०) 1. तेल कोल्हू 2. तलवार का फल।

परंजनः, परंजयः [परस्याः पश्चिमस्याः दिशोजनः स्वामी नि०, पर+जि+अच्, मुम्] वरुण का विशेषण।

परतः (अव्य०) [पर+तस्] 1. दूसरे से—भामि० १।१२० 2. शत्रु से रघु० ३।४८ 3. आगे, अपेक्षाकृत अधिक, परे, बाद, ऊपर (प्रायः अपा० के साथ) —बुद्धेः परतस्तु सः—भग० ३।४२ 4. अन्यथा 5. भिन्न प्रकार से।

परत्र (अव्य०) [पर+त्र] 1. दूसरे लोक में, भावी जन्म में—परत्रेह च शर्मणे—रघु० १।६९, कु० ४।३७, मनु० ३।२७५, ५।१६६ ८।१२७, उत्तर भाग में, आगे या बाद में 3. आने वाले समय में, भविष्य में। सम० —भीरुः परलोक के भय से विस्मित हो, धर्मात्मा पुरुष।

परंतप (वि०) [परान् शत्रून् तापयति —पर+तप्+णिच् +खच्, ह्रस्वः, मुम् च] दूसरों को सताने वाला, अपने शत्रुओं का दमन करने वाला—भग० ४।२, रघु० १५।७,—पः शूरवीर, विजेता।

परम (वि०) [परं परत्वं माति-क ता०] 1. दूरतम, अन्तिम 2. उच्चतम, सर्वोत्तम, अत्यंत श्रेष्ठ, महत्तम —प्राप्नोति परमां गतिम्—मनु० ४।१४, ७।१, २।१३ 3. मुख्य, प्रधान, प्राथमिक, सर्वोपरि—मनु० ८।३०२, ९।३१९ 4. अत्यधिक, अन्तिम 5. यथेष्ट, पर्याप्त,—मम् सर्वोच्च या उच्चतम मुख्य या प्रमुख भाग (समास के अन्त में), प्रधानतया युक्त, पूर्णतः मंडन —कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः —भग० १६।११, मनु० ६।९६, —मम् (अव्य०) 1. स्वीकृतिबोधक, अंगीकार या सहमति बोधक, अव्यय (अच्छा, बहुत अच्छा, हाँ, ऐसा ही)—ततः परम मित्युक्ता प्रतस्थे मुनिमंडलम्—कु० ६।३५ 2. अत्यधिक, अत्यन्त परमक्रुद्धः आदि०। सम०—अंगना श्रेष्ठस्त्री—अणुः अत्यणु, अत्यल्पमात्रा का अणु—रघु० १५।२२, परगुण परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम्—भर्तृ० २।७८, पृथ्वी नित्या परमाणुरूपा—तर्क० (परमाणु की परिभाषा—जालांतरगते रश्मौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः, तस्य त्रिंशत्तमो भागः परमाणुः स उच्यते।) —अद्वैतम् 1. परमात्मा 2. विशुद्ध एकेश्वरवाद, —अन्नम् खीर, दूध में पके हुए चावल,—अर्थः 1. सर्वोच्च या नितांत अलौकिक सत्य, वास्तविक आत्मज्ञान, ब्रह्म या परमात्मासंबंधी ज्ञान—रघु० ८।२२, महावी० ७।२ 2. सचाई, वास्तविकता, आन्तरिकता —परिहासविजल्पितं सखे परमार्थेन न गृह्यतां वचः—श० २।१८, (प्रायः समास में प्रयुक्त होकर 'सत्य' 'वास्तविक' अर्थ प्रकट करता है) °मत्स्याः—रघु० ७।४०, महावी० ४।३० 3. कोई श्रेष्ठ या महत्त्वपूर्ण पदार्थ 4. सर्वोत्तम अर्थ, —अर्थतः (अव्य०) सचमुच, वस्तुतः, यथार्थतः, सत्यतः—विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञात्वाऽनारंभः प्रतीकारस्य—श० ४, उवाच चैनं परमार्थतो हरं न वेत्सि नूनं यत एवमात्थ माम्—कु० ५।७५, पंच० १।१३६,—अहः श्रेष्ठ दिन,—आत्मन् (पुं०) सर्वोपरि आत्मा या ब्रह्म,—आपद (स्त्री०) अत्यंत भारी संकट या दुर्भाग्य,—ईशः विष्णु का विशेषण, 2. इन्द्र की उपाधि 3. शिवका विशेषण 4. सर्वशक्तिमान् परमात्मा का विशेषण,—ऋषिः उच्चकोटिका ऋषि, —ऐश्वर्यम् सर्वशक्तिमत्ता, सर्वोपरिता,—गतिः (स्त्री०) मोक्ष, निर्वाण,—गवः श्रेष्ठजाति का बैल या गाय, —पदम् 1. सर्वोत्तम स्थिति, उच्चतम दर्जा 2. मोक्ष, —पुरुषः,—पूरुषः परमात्मा, —प्रख्य (वि०) प्रसिद्ध विख्यात,—ब्रह्मन् (नपुं०) परमात्मा,—हंसः उच्चतम कोटि का संन्यासी, वह जिसने भावात्मक समाधि के द्वारा अपनी इन्द्रियों का दमन करके उनको वश में कर लिया है—तु० कुटीचक।

परमेष्ठः [परम+इष्ठन्] ब्रह्मा का विशेषण।

परमेष्ठिन (पुं०) [परमेष्ठ+इनि] 1. ब्रह्मा की 2. शिव की 3. विष्णु की 4. गरुड़ की 5. और अग्नि की उपाधि 6. कोई भी आध्यात्मिक गुरु।

परंपर (वि०) [परंपिपर्ति पृ+अच्, अलु० स०] 1. एक के बाद दूसरा 2. पूर्वानुपर, उत्तरोत्तर,—रः प्रपौत्र, —रा 1, अविच्छिन्न, शृंखला, नियमित सिलसिला, आनुपूर्व्य, महतीयं खल्वनर्थपरंपरा—का० १०३, कर्णपरंपरया 'एक कान से दूसरे कान में' सुन सुना कर, परंपरया आगम् 'नियमित परम्परा के क्रम से

प्राप्त होना' 2. (नियमित वस्तुओं की) पंक्ति, क़तार, संग्रह समूह–तोयांतर्भास्कारालीव रेजे मुनि परंपरा—कु० ६।४९, रघु० ६।५, ३५,४०, १२।५०, 3. प्रणाली, क्रम, सुव्यवस्था 4. वंश, कुटुंब, कुल 5. क्षति, चोट, मार डालना।

परंपराक (वि०) [परंपरया कायेत प्रकाशते—कै+क] यज्ञ में पशु का वध करना।

परंपरीण (वि०) [परंपर+ख] उत्तराधिकार में प्राप्त, आनुवंशिक–लक्ष्मीं परंपरीणां स्वं पुत्रपौत्रीणतां नय–भट्टि० ५।१५ 2. परंपराप्राप्त।

परवत् (वि०) [पर+मतुप् मस्य वः] 1. पराधीन, दूसरे के वश में, आज्ञापालन के लिए तत्पर—सा बाला परवतीति में विदितम्—श० ३।२, भगवन्परवानयं जनः—रघु० ८।८१, २।२६, (प्रायः करण० या अधि० के साथ) भ्राता यदित्थं परवानसि त्वं—रघु० १४।५९ 2. शक्ति से वंचित, निःशक्त परवानिव शरीरोपतापेन—मा० ३ 3. पूर्णरूप से (दूसरे के) अधीन जो स्वयं अपना स्वामी न हो, विजित, पराभूत—विस्मयेन परवानस्मि—उत्तर० ५, आनंदेन परवानस्मि—उत्तर० ३, साध्वसेन—मा० ६।

परवत्ता [परवत्+तल्+टाप्] दूसरे की अधीनता, पराधीनता, विक्रम० ५।१७।

परशः [स्पृशति इति पृषो०] पारसमणि जिसके स्पर्श से, कहा जाता है कि लोहा आदि दूसरी धातुएं सोना बन जाती हैं, संभवतः ५० दार्शनिकों का पारस-पत्थर है।

परशुः [परं शृणति—शृ+कु डिच्च] कुल्हाड़ा, कुल्हाड़ी, कुठार फरसा—तर्जितः परशुधारया मम—रघु० ११। ७८ 2. शस्त्र, हथियार 3. वज्र। सम०—धरः 1. परशुराम का विशेषण 2. गणेश की उपाधि 3. कुठारधारी सैनिक,—रामः 'कुठारधारी राम' एक विख्यात ब्राह्मणयोद्धा जो जमदग्नि का पुत्र और विष्णु का छठा अवतार था (इसने अपनी बाल्यावस्था में ही अपने पिता की आज्ञा से जब कि उसके भाइयों में से कोई भी तैयार न हुआ, अपनी माता रेणुका का सिर काट डाला—दे० जमदग्नि। इसके पश्चात् एक बार राजा कार्तवीर्य, जमदग्नि के आश्रम में आये और उसकी गौ को खोलकर ले गये। परन्तु घर आने पर जिस समय परशुराम को पता लगा तो वह कार्तवीर्य से लड़ा और उसे यमलोक पहुँचा दिया। जब कार्तवीर्य के पुत्रों ने सुना तो वह बड़े क्रुद्ध हुए—फलतः वे आश्रम में आये और जमदग्नि को अकेला पाकर उसे मार डाला। जब परशुराम—जो कि इस घटना के समय आश्रम में नहीं था, वापिस आया, तो अपने पिता के वध का समाचार सुन अत्यंत क्षुब्ध हुआ, उसी समय उसने समस्त क्षत्रिय जाति का उन्मूलन करने की भीषण प्रतिज्ञा की। वह अपनी इस प्रतिज्ञा को पूरा करने में सफल हुआ, करते हैं कि उसने इस पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रिय जाति से मुक्त किया। वह क्षत्रिय जाति का नाशकर्ता बाद में दशरथ के पुत्र राम के द्वारा जब कि वह केवल सोलह ही वर्ष के थे (दे० रघु० ११। ६८,९१) परास्त किया गया। कहते हैं कि कार्तिकेय की शक्ति से ईर्ष्या होने के कारण उसने क्रौंच पर्वत को भी एक बार तीरों से बींध दिया—तु० मेघ० ५७; सात चिरजीवियों में इनकी भी गिनती है, विश्वास किया जाता है कि परशुराम अब भी महेन्द्र-पर्वत पर बैठ तपस्या कर रहे हैं—तु० गीत० १, क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्, केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे॥

परश्वधः (स्व) धः [पर+श्वि+ड=परश्वः, तंदधाति—धा+क; नि० शस्य सत्वम्] कुल्हाड़ी, कुठार, फरसा—श०, शितां रामपरश्वधः संभावयत्युत्पलपत्रसाराम्—रघु० ६।४२।

परस् (अव्य०) [पर+असि] (श्रेण्य संस्कृत में इसका स्वतंत्र प्रयोग विरल है) 1. परे, आगे, और भी 2. इसके दूसरी ओर 3. दूर, दूरी पर 4. अपवाद रूप से। सम०—कृष्ण (वि०) अत्यन्त काला,—पुरुषः (वि०) मनुष्य से लंबा या ऊँचा—शत (वि०) सौ से अधिक—कि० १३।२६. शि० १२।५०,—श्वस् (अव्य) आगामी परसों,— सहस्र (वि०) एक हजार से अधिक—परः सहस्राः शरदस्तपांसि तप्त्वा—उत्तर० १।१५, परः सहस्रैः पिशाचैः—महावी० ५।१७।

परस्तात् (अव्य०) [पर+अस्ताति] 1. परे, के दूसरी ओर, और आगे (संब० के साथ)—आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्—भग० ८।९ 2. इसके पश्चात्, बाद बाद में 3. अपेक्षाकृत ऊँचा।

परस्पर (वि०) [परः परः इति विग्रहे समासवद्भावे पूर्वपदस्य सुः] आपस में—परस्परां विस्मयवन्ति लक्ष्मीमालोकयांचक्रुरिवादरेण—भट्टि० २।५, (सर्व० वि०) अन्योन्य, एक दूसरा (केवल ए० व०, में प्रयुक्त—प्रायः समास में) परस्परस्योपरि पर्यचीयत—रघु० ३।२४, ७।३५, अविज्ञातपरस्परैः अपसर्पैः—१७।५१, परस्पराक्षिसादृश्यम—१।४०, ३।२४, विशे० 'एक दूसरे के विरुद्ध' 'आपस में' 'एक दूसरे से' 'एक दूसरे के द्वारा' 'इतरेतर के रूप में' 'आपस में' आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए इस शब्द के कर्म० करण० और अपा० के एक वचन के रूप क्रियाविशेषण की भाँति प्रयुक्त होते हैं—दे० भग० ३।११, १०।९, रघु० ४।७९, ६।४६, ७।१७, ५१, १२।१४।

परस्मैपदम्, परस्मैभाषा [परस्मै परार्थं पदं भाषा वा] दूसरे के लिए प्रयुक्त वाच्य, क्रिया के दो रूपों में से (परस्मै तथा आत्मने) एक जिसमें कि संस्कृत की धातुओं के रूप चलते हैं।

परा (अव्य०) [पृ+अच्+टाप्] 'दूर' 'पीछे' 'उल्टे क्रम से' 'एक ओर' 'की ओर' अर्थों को प्रकट करने के लिए धातु या संज्ञा से पूर्व लगने वाला उपसर्ग। गण० के अनुसार 'परा' के अर्थ निम्नलिखित हैं —1. मार डालना, आघात करना आदि (पराहत) 2. जाना (परागत) 3. देखना, सामना करना (परावृष्ट) 4. पराक्रम (पराक्रान्त) 5. की ओर निदेश, (परावृत्त) 6. आधिक्य (पराजित) 7. पराधीनता (पराधीन) 8. उद्धार, मुक्ति (पराकृत) 9. प्रतीपक्रम पीछे की ओर (पराङ्मुख) 10. एक ओर रख देना, अवहेलना करना।

पराकरणम् [परा+कृ+ल्युट्] एक ओर रख देने की क्रिया अस्वीकार करना, अवहेलना करना, तिरस्कृत करना।

पराक्रमः [परा+क्रम्+घञ्] 1. शूरवीरता, बहादुरी, साहस, शौर्य पराक्रमः परिभवे—शि० २।४४ 2. विरोधी अभियान करना, आक्रमण करना 3. प्रयत्न, कोशिश, उद्योग 4. विष्णु का नाम।

परागः [परा+गम्+ड] 1. पुष्पराज,—स्फुटपरागपरागतपंकजम्—शि० ६।२, अमरु ५४ 2. धूलि—रघु० ४।३० 3. स्नान के पश्चात् सेवन किया जाने वाला सुगंधित चूर्ण 4. चन्दन 5. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 6. यश, प्रसिद्धि 7. स्वाधीनता।

परांगवः [परांगं प्रचुरशरीरं वाति प्राप्नोति—वा+क] समुद्र।

परा(रां)च् (वि०) (स्त्री० ची) [परा+अंच्+क्विन्] 1. परे या दूसरी ओर स्थित, ये चामुष्मात्परांचो लोकाः छां० 2. मुंह मोड़ कर (पराङ्मुख) शि० १८।१८ 3. जो अनुकूल न हो, प्रतिकूल—दैवे पराचि भामि० १।१०५ या—दैवे पराग्वदनशालिनि हंत जाते—३।, 4. दूरस्थ 5. बाहरकी ओर निदेशित। सम०—मुख (वि०) (पराङ्मुखीर्नानुनेतुमबलाः सतत्वरे—रघु० १९।३८, अमरु ९० मनु० २।१९५, १०।११९ 2. (क) विमुख, उलट—मातुर्न केवलं स्वस्याः श्रियोऽप्यासीत् पराङ्मुखः—रघु० १२।१३, (ख) उदासीन, कतराने वाला, टालने वाला —प्रवृत्तिपराङ्मुखो भावः—विक्रम० ४।७, श० ५।२८ 3. प्रतिकूल, अनुकूल—तनुरपि न ते दोषोऽस्माकं विधिस्तु पराङ्मुखः—अमरु २७ 4. उपेक्षा करने वाला—मर्त्येष्वास्थापराङ्मुखः—रघु० १०।४३।

पराचीन (वि०) [पराच्+खं] विरुद्ध दिशा में मुड़ा हुआ, विमुख 2. पराङ्मुख, अरुचि रखने वाला 3. परवाह न करने वाला, उपेक्षा करने वाला 4. बाद में होने वाला, उत्तरकालभव 5. दूसरी ओर स्थित, परे होने वाला।

पराजयः [परा+जि+अच्] 1. परास्त करना, विजय, जीतना अधीनीकरण, हार—रघु० ११।१९, मनु० ७।१९, 2. परास्त होना, सहन करने के योग्य न होना (अपा० के साथ) अध्ययनात्पराजयः 3. हारना, हार, असफलता (मुकदमे आदि में) अन्यथावादिनो (साक्षिणः) यस्य ध्रुवस्तस्य पराजयः—याज्ञ० २।७९ 4. पदच्युति, वंचना 5. परित्याग।

पराजित (भू० क० कृ०) [परा+जि+क्त] जीता हुआ, वश में किया हुआ, हराया हुआ 2. कानून द्वारा दण्डित, (मुकदमे में) हारा हुआ, पछाड़ा हुआ।

परान (ण) सा [परा+अन् (ण्)+अस+टाप्] औषधीय चिकित्सा, वैद्य, हकीम या डाक्टर द्वारा इलाज, वैद्य का व्यवसाय।

पराभवः [परा+भू+अप्] 1. (क) हार, असफलता, पराजय—पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्—कि० १।४१ (ख) मानभंग, मानमर्दन, प्रतिष्ठाभंग—कुबेरस्य मनः शल्यं शंसतीव पराभवम्—कु० २।२२, तद पदपल्लववैरिपराभवमिदमनु भवतु सुवेशम्—गीत० १२ 2. घृणा, अवहेलना, तिरस्कार 3. विनाश 4. लोप, वियोग (कभी-कभी 'पराभाव' भी लिखा जाता है)।

पराभूतिः (स्त्री०) [परा+भू+क्तिन्] दे० 'पराभव'।

परामर्शः [परा+मृश्+घञ्] 1. पकड़ लेना, खींचना — जैसा कि 'केशपरामर्श' में 2. झुकाना या (धनुष) का तानना 3. हिंसा, आक्रमण, हमला—याज्ञसेन्याः परामर्शः—महा० 4. बाधा विघ्न—तपः परामर्शविवृद्धमन्योः—कु० ३।७१ 5. ध्यान करना, प्रत्यास्मरण 6. विचार, विमर्श, चिन्तन 7. निर्णय 8. (तर्क० में) घटाना, निश्चय करना कि अपना पक्ष या विषय सहेतुक है—व्याप्तिविशिष्ट पक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः—तर्क० या—व्याप्तस्य पक्षधर्मत्वधीः परामर्श उच्यते —भाषा० ६६।

परामृष्ट (भू० क० कृ०) [परा+मृश्+क्त] 1. छूआ गया, हाथ लगाया गया, दबोचा गया, पकड़ा गया 2. रूखा व्यवहार किया गया, दुर्व्यवहार किया गया 3. तोला गया, विचार किया गया, कूता गया 4. सहन किया गया 5. संबद्ध 6. (रोग से) ग्रस्त—दे० परा पूर्वक 'मृश्'।

परारि (अव्य०) [पूर्वतरे वत्सरे इत्यर्थे परभावः आदि च संवत्सरे] पूर्वतर वर्ष में, विगतवर्ष में, परियार साल।

परायण दे० 'पर' (पर+अयन) के नीचे।

परावर्तः, परावृत्तिः [परा+वृत्+घञ्, क्तिन् वा] 1. पीछे मुड़ना, वापसी, प्रत्यावर्तन 2. अदल-बदल, विनिमय 3. पुनः प्राप्ति 4. (कानुन में) दण्ड या संजा की उलट-पलट ।

पराशरः [परान् आशृणाति--शृ+अच्] एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जो व्यास के पिता तथा एक स्मृतिकार थे ।

परासम् [परा+अस्+घञ्] रांगा, टीन ।

परासनम् [परा+अस्+ल्युट्] बध, हत्या ।

परासु (वि०) [परागताः असवो यस्य प्रा० ब० स०] निर्जीव, मृतक, प्राक् परासुद्विजात्मजः--रघु० १५। ५६, ९।७८ ।

परास्त (भू० क० कृ०) [परा+अस्+क्त] 1. फेंका हुआ, डाला हुआ 2. निष्कासित, निकाला हुआ 3. अस्वीकृत 4. निराकृत, त्यक्त 5. हराया हुआ ।

पराहत (भू० क० कृ०) [परा+हन्+क्त] 1. पटका हुआ, पछाड़ा हुआ 2. पीछे हटाया हुआ, पीछे ढकेला हुआ, -तम् प्रहार, आघात ।

परि (अव्य०) [पृ+इन्] (कभी-कभी बदलकर 'परी' भी हो जाता है, जैसे कि 'परिवाह' या 'परीवाह', परिहास या परीहास' में) यह उपसर्ग के रूप में धातु या संज्ञाओं से पूर्व लगकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है 1.--(क) चारों ओर, इधर उधर, इर्दगिर्द (ख) बहुत, अत्यन्त 2. पृथक्करणीय अव्यय (संबं० बोध०) के रूप में निम्नांकित अर्थ है (क) की ओर की दिशा में, की तरफ, के सामने (कर्म० के साथ) वृक्षं परि विद्योतते विद्युत् (ख) क्रमशः, अलग २ करके (कर्म० के साथ) वृक्षं वृक्षं परि सिंचति, 'वह एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष को सींचता है' (ग) हिस्से में, भाग्य में (कर्म० के साथ) यदत्र मां परि स्यात् 'जो मेरे भाग्य में बदा हो', लक्ष्मीर्हरिं परि--सिद्धा० (घ) से, में से (ङ) सिवाय, (अपा० के साथ) परि त्रिगर्तेभ्यो वृष्टो देवः - या--पर्यनंतात् त्रयस्तापाः--वोप० (च) बीत जाने के बाद (छ) फलस्वरूप 3. क्रिया विशेषण उपसर्ग के रूप में संज्ञाओं से पूर्व लग कर, जब कि क्रिया से सीधा संबंध न हो, 'बहुत' अति' अत्यधिक' अत्यन्त' आदि अर्थ प्रकट करता है जैसा कि पर्यश्रु (आंसू ढरकना) में. इसी प्रकार परिचतुर्दशन्. परिदौर्बल्य 4. अव्ययीभाव समासों से पूर्व 'परि' का निम्नांकित अर्थ होता है (क) बिना. सिवाय के बाहर, इसको छोड़ कर जैसा कि परित्रिगर्तं वृष्टो देवः--पा० १।१।१२, ६।२।३३, पा० २।१।१० के अनुसार 'परि' अक्ष, शलाका या संख्या वाचक शब्द के पश्चात् अव्ययीभाव समास के अन्त में प्रयुक्त होता है यदि पासा उलट जाने के कारण या दुर्भाग्यदश हार या पराजय हो जाय (द्यूतव्यवहारे पराजये एवायं समासः)--उदा० अक्षपरि. शलाकापरि, एकपरि--तु० अक्षपरि (ख) इर्द गिर्द, चारों ओर, घिरा हुआ जैसा कि 'पर्यग्नि' में (ज्वालाओं के बीच में) 5. कर्मधारय समास के अन्त में 'परि' का अर्थ है 'श्रान्त', क्लात' ''ऊबा हुआ' जैसा कि 'पर्यध्ययन=परिग्लानोऽध्ययनाय में ।

परिकथा [प्रा० स०] आख्यानप्रिय व्यक्ति के इतिवृत्त तथा उसके साहसिक कार्यों को बतलाने वाली रचना, काल्पनिक कथा ।

परिकंपः [प्रा० स०] 1. भारी त्रास 2. प्रचंड कंपकंपी, या थरथराहट महावी० २।२७ ।

परिकरः [प्रा० स०] 1. परिजन, अनुचर वर्ग, नौकर-चाकर, अनुयायिवर्ग 2. समुच्चय, संग्रह, समूह--रत्न० ३।५ 3. आरंभ, उपक्रम भर्तृ० ११६ 4. परिधि, कटिबंध, कटिवस्त्र--अहिपरिकरभाजः--शि० ४।६५, परिकरं बंध (कृ) कमर कसना, तैयार होना, किसी कार्य के लिए अपने आपको सज्जित करना--त्वन्नस्वेगं परिकरं--का० १७०, कृतपरिकरस्य भवादृशस्य त्रैलोक्यमपि न क्षमं परिपंथीभवितुम्--वेणी०३, गंगा० ४७, अमरु० ९२ 5. सोफा 6. (सा० शा० में०) एक अलंकार जिसके सार्थक विशेषणों का उपयोग होता है--विशेषणैर्यत्साकूतैरुक्तिः परिकरस्तु स. काव्य० १०, उदा० सुधांशुकलितोत्तंसस्तापं हरतु वः शिवः--चन्द्रा० ५।५९ 7. (नाट्य० में नाटक की वस्तु कथा में आने वाली घटनाओं का परोक्षसूचन, 'बीज' का मूलतत्त्व, दे० सा० द० ३४० 8. निर्णय ।

परिकर्तृ (पुं०) [प्रा० स०] वह पुरोहित जो बड़े भाई के अविवाहित रहते हुए छोटे भाई का विवाह संस्कार करता है--परिकर्ता याजकः--हारीत, तु० परिवेतृ ।

परिकर्मन् (पुं०) [परि+कृ+मनिन्] सेवक--नपुं० --शरीर को चित्रित या सुगंधित करना, वैयक्तिक सजावट, अलंकृत करना, प्रसाधन--कृताचार परिकर्माणम्--श० २ 2. पैरों में महावर लगाना--कु० ४।१९ 3. सज्जा, तैयारी 4. पूजा, अर्चना 5. (योग० में) शुद्ध करना, पवित्रीकरण मन को शुद्ध करने के साधन--शि० ४।५५, (इसके ऊपर दे० मल्लि०) 6. गणित की प्रक्रिया (इसके आठ भेद हैं) ।

परिकर्षः,--**कर्षणम्** [परि+कृष्+घञ्, ल्युट् वा] खींच कर बाहर निकालना, उखाड़ना ।

परिकल्कनम् [परि+कल्+क+ल्युट्] धोखा, ठगी, छल-कपट ।

परिकल्पनम्--**ना** [परि+कृप्+ल्युट्] 1. निर्णय करना, स्थिर करना, फैसला करना, निर्धारण करना 2. उपाय निकालना, आविष्कार करना, रूप देना, क्रम-

बद्ध करना—मुद्रा० ७।१५ 3. जुटाना, सम्पन्न करना 4. वितरण करना ।

परिकांक्षितः [परि+कांक्ष्+क्त] धर्म परायण साधु या सन्यासी, भक्त ।

परिकीर्ण (भू० क० कृ०) [परि△कॄ+क्त] 1. फैलाया हुआ, प्रसृत, इधर उधर बखेरा हुआ 2. घिरा हुआ, भीड़भिड़क्का से युक्त, भरा हुआ—शि० १६।१०, रघु० ८।४५ ।

परिकूटम् [प्रा० स०] अवरोध, आड़, नगर के फाटक के सामने की खाई ।

परिकोपः [परि+कुप्+घञ्] असह्य क्रोध, भीषणता ।

परिक्रमः [परि+क्रम्+घञ्] 1. इधर उधर भ्रमण करना, इतस्ततः घूमना—कि० १०।२ 2. भ्रमण, घूमना, टहलना 3. प्रदक्षिणा करना 4. इच्छानुसार टहलना 5. सिलसिला, क्रम 6. यथाक्रमा, उत्तरोत्तर 7. घुसना । सम०—सहः बकरी ।

परिक्रयः,—क्रमणम् [परि+क्री+घञ्, ल्युट् वा] 1. मजदूरी, भाड़ा 2. मजदूरी पर काम में लगाना 3. मोल लेना, खरीद डालना 4. विनिमय, अदल-बदल 5. रुपया देकर की गई संधि—तु० हि० ४।१२२ ।

परिक्रिया [परितः क्रिया प्रा० स०] 1. वाड़ लगाना, चारों ओर खाई खोदना 2. घेरना 3. (नाट्य० में) =परिकर (७) ।

परिक्लांत (भू० क० कृ०) [परि+क्लम्+क्त] थका हुआ, परिश्रांत, उकताया हुआ ।

परिक्लेदः [परि+क्लिद्+घञ्]गीलापन, नमी, आर्द्रता ।

परिक्लेशः [परि+क्लिश्+घञ्] कठिनाई, थकावट, कष्ट ।

परिक्षयः [परि+क्षि+अच्] 1. ह्रास, वर्बादी, विनाश, परिक्षयोऽपि अधिकतरं रमणीयः—मृच्छ० १, किरण—द्ध० ४।४६ 2. अन्तर्धान होना, समाप्त होना 3. वर्बादी, नाश, असफलता—कि० १६।५७, मनु० ९।५९ ।

परिक्षाम [परि+क्षै+क्त, मकारा देशः] कृश, क्षीण, दुर्बल ।

परिक्षालनम् [परि+क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1. धोना, मांजना 2. धोने के लिए पानी ।

परिक्षिप्त (भू०क०कृ०) [परि+क्षिप्+क्त] 1. बखेरा हुआ, प्रसृत 2. परिवेष्टित, घेरा हुआ—वेतसपरिक्षिप्ते मंडपे—श० ३, कु० ६।३८ 3. खाई से घेरा हुआ 4. ऊपर से फैलाया हुआ, ऊपर डाला हुआ 5. छोड़ा हुआ, परित्यक्त ।

परिक्षीण (भू०क०कृ०) [परि+क्षि+क्त] 1. अन्तर्हित, लुप्त, 2. बर्बाद हुआ, ह्रासित 3. कृश, घिसा हुआ, थका हुआ 4. दरिद्र किया हुआ, सर्वथा बर्बाद किया हुआ—भर्तृ० २।४५ 5. खोया हुआ, नाश किया हुआ 6. कम किया हुआ, घटाया हुआ 7. (कानून में) दिवालिया ।

परिक्षीव (वि०)[परि+क्षीव्+क्त, तस्य लोपः] बिल्कुल नशे में चूर ।

परिक्षेपः [परि+क्षिप्+घञ्] 1. इधर उधर घूमना, टहलना 2. बखेरना, फैलाना 3. घेरना, परिवेष्टन, चारों ओर बहना 4. घेरे की सीमा, हद जिससे कोई चीज घेरी जाय—रघु० १२।६६ ।

परिखा [परितः खन्यते—खन्+ड+टाप्] प्रतिकूप, खाई, नगर या किले के चारों ओर बनी नाली या खात—रघु० १।३०, १२।६६ ।

परिखातम् [परि+खन्+क्त] 1. प्रतिकूप, खाई 2. लीक, खूड 3. चारों ओर से खोदना ।

परिखेदः [परितः खेदः प्रा० स०] थकावट, परिश्रान्ति, थकान—कु० १।६०, ऋतु० १।२७ ।

परिख्यातिः (स्त्री०) [परि+ख्या+क्तिन्] यश, प्रसिद्धि ।

परिगणनम्,—ना [परि+गण्+ल्युट्] पूर्ण गिनती, सही वर्णन या हिसाब—श्रेणीभूताः परिगणनया निर्दिशंतो बलाकाः—मेघ० (मल्लि० इसको क्षेपक समझते हैं)।

परिगत (भू०क०कृ०) [परि+गम्+क्त] 1. घेरा हुआ, आवेष्टित, अहाता बनाया हुआ 2. प्रसृत, चारों ओर फैलाया हुआ 3. ज्ञात, समझा हुआ—रघु० ७।७१, परिगत परिगंतव्य एव भवान्—वेणी० ३, महावी० ३।४७ 4. भरा हुआ, ढका हुआ, सम्पन्न (प्रायः समास में) शि० ९।२६ 5. हासिल, प्राप्त—भर्तृ० ३।५२ 6. याद किया हुआ ।

परिगलित (भू०क०कृ०) [परि+गल्+क्त] 1. डूबा हुआ 2. उथला हुआ 3. लुप्त 4. पिघला हुआ 5. बहता हुआ ।

परिगर्हणम् [परि+गर्ह्+ल्युट्] भारी कलङ्क ।

परिगूढ (भू०क०कृ०) [परि+गुह्+क्त] 1. बिल्कुल गुप्त 2. अबोध्य, जो समझने में अत्यंत कठिन हो ।

परिगृहीत (भू०क०कृ०) [परि+ग्रह्+क्त] 1. अपनाया हुआ, पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ 2. आलिंगन किया हुआ, घेरा हुआ 3. स्वीकार किया हुआ, लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ 4. हामी भरा हुआ, स्वीकृत किया हुआ, माना हुआ 5. संरक्षण दिया हुआ, अनुग्रह किया हुआ 6. अनुसरण किया हुआ, आज्ञा माना हुआ 7. विरोध किया हुआ—दे० परिपूर्वक 'ग्रह्' ।

परिगृह्या [परि+ग्रह्+क्यप्+टाप्] विवाहिता स्त्री ।

परिग्रहः [परि+ग्रह्+घञ्] 1. पकड़ना, थामना, लेना, ग्रहण करना, आसनरज्जु परिग्रहे—रघु० ९।४६, शंका परिग्रहः—मुद्रा० १, शंका करना 2. घेरना,

बन्द करना, चारों ओर से घेरा डालना, बाड़ बनाना 3. पहनना, (वेषभूषा की भांति) लपेटना—मौलिपरिग्रहः—रघु० १८।३८ 4. धारण करना, लेना—मानपरिग्रहः—अमरु ९२, विवाहकर्मीं—उत्तर० ४ 5. प्राप्त करना, लेना, स्वीकार करना, अंगीगार करना—भौमो मुनेः स्थानपरिग्रहोऽयम्—रघु० १३। ३६, अर्घ्यपरिग्रहांते—७०, १२।१६, कु० ६।५३, विद्यापरिग्रहाय—मा० १, इसी प्रकार—आसनपरिग्रहं करोतु देवः—उत्तर० ३, 'आसन-ग्रहण कीजिए महाराजाधिराज' 6. वैभव, संपत्ति, सामान—त्यक्तसर्वपरिग्रहः—भग० ४।२१, रघु० १५।५५, विक्रम० ४।२६ 7. आवाह, विवाह—नवे दारपरिग्रहे—उत्तर० १।१९—मा० ५।२७, श० १।२२ 8. पत्नी, रानी—प्रयतपरिग्रहद्वितीयः—रघु० १।९५, ९२, ९।१४, ११।३३, १२।८, श० ५।२७, ३०, परिग्रहबहुत्वेऽपि—श० ३।२१ 9. अपने रक्षण में लेना, अनुग्रह करना—उत्तर० ७।११, मालवि० १।१३ 10 अनुचर, अनुसेवी, नौकर-चाकर, परिजन, सेवक समूह 11. गृहस्थ, परिवार, परिवार के सदस्य 12. राजा का अन्तःपुर, रनिवास 13. जड़, मूल 14. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 15. शपथ 12. सेना का पिछला भाग 17. विष्णु का नाम 18. संक्षेप, उपसंहार।

परिग्रहीतृ (पुं०) [परि+ग्रह्+तृच्] पति—श० ४।२२।

परिक्लान (भू० क० कृ०) [परि+ग्लै+क्त] 1. शिथिल, थका हुआ 2. विमुख, पराङ्मुख।

परिघः [परि+हन्+अप्, घादेशः] 1. लोहे की छड़ या लकड़ी का मूसल जो द्वार को बंद रखने के लिए प्रयुक्त की जाय, अर्गला—एकः कृत्स्नां नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति—श० २।१५, रघु० १६।८४, शि० ३२, मालवि० ५।२ 2. (अतः) रोक, अवरोध, विघ्न, बाधा—भार्गवस्य सुकृतोऽपि सोऽभवत्स्वर्गमार्गपरिघो दुरत्ययः—रघु० ११।८८ 3. लोहे की स्याम लगी हुई लाठी, मुद्गर जिसमें लोहे की स्याम जड़ दी गई हो—रघु० १२।७३ 4. लोहे की गदा 5. जलपात्र, घड़ा 6. शीशे की झारी 7. घर 8. मारना, नष्ट करना 9. प्रहार करना—आघात या थप्पड़।

परिघट्टनम् [परि+घट्ट्+ल्युट्] घोटना, कड़छी चलाना।

परिघातः,—घातनम् [परि+हन्+णिच् घञ्, नस्य तः, ल्युट् वा] 1. मारना, प्रहार करना, हटाना, छुटकारा पाना 2. मुद्गर, मोटे सिरे की छड़ी।

परिघोषः [परि+घुष्+घञ्] 1. कोलाहल 2. अनुचित भाषण 3. गर्जन।

परिचतुर्दशन् (वि०) [प्रा० स०] पूरे चौदह।

परिचयः [परि+चि+अप्] 1. ढेर लगाना, एकत्र करना 2. जान पहचान, परिचिति, घनिष्ठता, सरकारी संरक्षण—पुरुषपरिचयेन—मृच्छ० १।५६, अतिपरिचयादवज्ञा 'अतिपरिचय से होता है, अरुचि अनादर भाय' परिचयं चललक्ष्यनिपातेन—रघु० ९।४९, सकलकलापरिचयः—का० ७६ 3. जांच, अध्ययन, अभ्यास, मुहुर्मुहु—आवृत्ति, हेतुपरिचयस्थैर्ये वक्तुर्गुणनिकैव सा—शि० २।७५, ११।५, वर्णपरिचयं करोति—श० ५ 4. ज्ञान—महावीर ५।१० 5. पहचान, —नैष० ९।

परिचरः [परि+चर्+अच्] 1. सेवक, अनुचर, टहलुआ 2. शरीर रक्षक 3. रक्षक, पहरेदार 4. श्रद्धांजलि, सेवा।

परिचरणः [परि+चर्+ल्युट्] सेवक, टहलुवा, सहायक, —णम् 1. सेवा, टहल 2. इधर उधर जाना।

परिचर्या [परि+चर्+क्यप्+टाप्] 1. सेवा, टहल—रघु० १।९१, भग० १८।४४ 2. अर्चना, पूजा—शि० १।१७।

परिचाय्यः [परि+चि+ण्यत्] यज्ञाग्नि (कुण्ड में स्थापित)।

परिचारः [परि+चर्+घञ्] 1. सेवा, टहल 2. सेवक 3. टहलने का स्थान।

परिचारकः, परिचारिकः [परि+चर्+ण्वुल्, परिचार+ठन्] सेवक, टहलुवा।

परिचित (भू० क० कृ०) [परि+चि+क्त] 1. ढेर लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ 2. जानकार, घनिष्ठ, जान पहचान का 3. सीखा गया, अभ्यस्त।

परिचितिः (स्त्री०) [परि+चि+क्तिन्] जान पहचान, परिचय, घनिष्टता।

परिच्छद् (स्त्री०) [परि+छद्+क्विप्] 1. परिजन, अनुचरवर्ग 2. साज-सामान।

परिच्छदः [परि+छद्+णिच्+घ] 1. आवरण, चादर, पोशाक 2. वस्त्र, वेशभूषा—शाखावसक्तकमनीयपरिच्छदानाम्—कि० ७।४० 3. नौकरचाकर, परिजन, टहलुए, आश्रितमंडली—रघु० ९।७० 4. साज-सामान, (छत्र, चामर आदि) ऊपरी सामान—सेना परिच्छदस्तस्य—रघु० १।१७ 5. सामान, असबाब, व्यक्तिगत सामान, निजी चीजें व सामान (बर्तनभांडे, तथा अन्य उपकरण आदि) विवास्यो वा भवेद्राष्ट्रात्स्वद्रव्यः सपरिच्छदः—मनु० ९।२४१, ७।४०, ८।४०५, ९।७८, ११।७६ 6. यात्रा का आवश्यक सामान।

परिच्छंदः [परि+छन्द्+क] नौकर-चाकर, परिजन।

परिच्छन्न (भू० क० कृ०) [परि+छद्+क्त] 1. वेष्टित, ढका हुआ, वस्त्राच्छादित, जिसने वस्त्र पहने हुए हों 2. ऊपर फैलाया हुआ, या बिछाया हुआ 3. घिरा हुआ (परिजनों से) 4. छिपा हुआ।

परिच्छित्तिः (स्त्री०) [परि+छिद्+क्तिन्] 1. यथार्थ परिभाषा, सीमित करना 2. विभाजन, अलग अलग करना।

परिच्छिन्न (भू० क० कृ०) [परि+छिद्+क्त] 1. काटा हुआ, विभक्त 2. यथार्थ परिभाषा से युक्त, निर्धारित, निश्चयीकृत, कु० २।५८ 3. सीमित, सीमाबद्ध, परिसीमित —दे० परिपूर्वक 'छिद्'।

परिच्छेदः [परि+छिद्+घञ्] 1. काटना, वियुक्त करना, विभक्त करना, (उचित और अनुचित में) विवेचन 2. यथार्थ परिभाषा, फैसला, यथार्थ निर्धारण, निश्चय करना—परिच्छेदव्यक्तिर्भवति न पुरस्थेऽपि विषये—मा० १।३१, परिच्छेदातीतः सकलवचनानामविषयः—१।३०, सब प्रकार की परिभाषा और निर्धारण से श्रेष्ठतर होना —इत्यारूढबहुप्रतर्कमपरिच्छेदाकुलं मे मनः—श० ५।९ 3. विवेक, निर्णय, सूक्ष्मदृष्टि—परिच्छेदो हि पांडित्यं यदापन्ना विपत्तयः, अपरिच्छेदकर्तॄणां विपदः स्युः पदे पदे—हि० १।१४८, किं पांडित्यं परिच्छेदः—१।४७ 4. सीमा, हद, सीमा स्थिर करना, हदबन्दी—अलमलं परिच्छेदेन मालवि० २ 5. अनुभाग या पुस्तक का कांड ('अनुभाग' के अन्य नामों के लिए दे० 'अध्याय' के अन्तर्गत)।

परिच्छेद्य (वि०) [परि+छिद्+ण्यत्] 1. यथार्थरूप से परिभाषा के योग्य, परिभाषणीय, मनु० ४।९, रघु० १०।२८ 2 तोलने या अनुमान लगाने के योग्य।

परिजनः [प्रा० स०] 1. सदा साथ रहने वाले नौकर-चाकर, अनुयायिवर्ग, अनुचरवर्ग—परिजनो राजानमभितः स्थितः—मालवि० १ 2 अरदली लोग, सेवकसमूह, सेविकाओं का समूह, बांदियाँ, दासियाँ—रघु० १९।२३ 3. सेवक, दास।

परिजल्पितम् [परि+जल्प्+क्त] (नौकर या सेवक का) गुप्त संकेत जिससे अपनी कुशलता श्रेष्ठता तथा स्वामी की क्रूरता एवं शठता तथा और दूसरे इसी प्रकार के दोष प्रकट हों; उज्ज्वलनीलमणि इस प्रकार परिभाषा बताते हैं—प्रभोर्निर्दयताशाठ्यचापलाद्युपपादनात्, स्वविचक्षणताव्यक्तिर्भंग्या स्यात्परिजल्पितम्। (विल्सन के अनुसार अपने प्रिय से उपेक्षित किसी रमणी के द्वारा प्रयुक्त गुप्त झिड़कियाँ ही 'परिजल्पित' हैं)।

परिज्ञप्तिः [परि+ज्ञप्+क्तिन्] 1. संलाप, संवाद 2. पहचान।

परिज्ञानम् [परि+ज्ञा+ल्युट्] पूरा ज्ञान, पूरी जानकारी।

परिडीनम् [परि+डी+क्त] पक्षियों का गोल बना कर उड़ना या पक्षियों के गोल की उड़ान—दे० डीन।

परिणत (भू० क० कृ०) [परि+नम्+क्त] 1. झुका हुआ, विनत, ढलता हुआ—मेघ० २ 2. (आयु में) वृद्ध, ढलता हुआ—परिणते वयसि—का० ३५,६२, ६३ 3. पक्का, परिपक्व, पका हुआ, पूर्णविकसित—शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतप्रज्ञस्य वाणीमिमाम् उत्तर० ७।२१, मेघ० २३—परिणतमकरंदमार्मिकास्ते—भामि० १।८, शि० ११।४९ 4. पूर्णरूप से बढ़ा हुआ, प्रौढ़, पूर्णविकसित - परिणतशरच्चंद्रकिरणैः—भर्तृ० ३।४९, मेघ० १०० 5. (भोजन आदि) पचा हुआ 6. रूपान्तरित या परिवर्तित (करण० के साथ) विक्रम० ४।२८ 7. समाप्त, पर्यवसित, अवसायी, अनेन समयेन परिणतो दिवसः—का० ४७ 8. (सूर्य आदि) अस्त,—तः अपने दांत से प्रहार करने के लिए झुका हुआ या पार्श्वाघात देने वाला हाथी (तिर्यग्दंतप्रहारश्च गजः परिणतो मतः—हला०) शि० २।२९, कि० ६।७।

परिणतिः (स्त्री०) [परि+नम्+क्तिन्] 1. झुकना, ढलना, नत होना 2. पक्कापन, परिपक्वता, विकास—महावी० २।१४ 3. परिवर्तन, रूपान्तरण, कायापलट 4. पूर्णता 5. नतीजा, परिणाम, फल—परिणतिरवधार्या यत्नतः पंडितेन—भर्तृ० २।९४, १।२०,३।१७, महावी० ६।२८ 6. अन्त, उपसंहार समाप्ति, अवसान—परिणतिरमणीयाः प्रीतयस्त्वद्विधानां मा० ६।७,१६, शि० ११।१ 7. जीवन की अन्तिम झांकी, बुढ़ापा—सेवाकारा परिणतिरभूत—विक्रम० ३।१, अभवद्गतः परिणतिं शिथिलः परिमंदसूर्यनयनो दिवसः —शि० ९।३, (यहाँ प० का अर्थ है 'अन्त या उपसंहार' भी) 8. (भोजन का) पचना।

परिणद्ध (भू० क० कृ०) [परि+नह्+क्त] 1. बँधा हुआ, लिपटा हुआ 2. विस्तृत, विशाल—परिणद्धकंधरः—रघु० ३।३४।

परिणयः,–णयनम् [परि+नी+अप्, ल्युट् वा] विवाह—नवपरिणया वधूः शयने—काव्य० १०।

परिणहनम् [परि+नह्+ल्युट्] कमर कसना, कमर पर कपड़ा लपेटना।

परि (री) णामः [परि+नम्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. बदलना, परिवर्तन, रूपान्तरण 2. पाचन—अन्नं न सम्यक् परिणाममेति—सुश्रुत, भुक्तस्य परिणामहेतुरौदर्यम्—तर्क० 3. नतीजा, निष्पत्ति, फल, प्रभाव—अप्रियस्यापि पथ्यस्य परिणामः सुखावहः—हि० २।१३५, मृच्छ० ३।१, परिणामसुखे गरीयसि वचसि औषधे—कि० २।४, भग० १८।३७, ३८ 4. पकना, परिपक्वता, पूर्णविकास—उपैतिशस्यं परिणामरम्यताम्—कि० ४।२२, फलभरपरिणामश्यामजंबू···उत्तर० २।२०, मा० ९।२४ 5. अन्त, समाप्ति, उपसंहार, अवसान, ह्रास—दिवसाः परिणामरमणीयाः

—श० १।३, वयः परिणामपांडुरशिरसं—का० १०, परिमाणमुपैति दिवसः—का० २५४, 'दिन समाप्त होने वाला है' 6. बुढ़ापा—परिणामे हि दिलीपवंशजाः—रघु० ८।११ 7. (समय का) बीतना 8. (अलं० शा० में) रूपक से मिलता जुलता एक अलंकार जिसमें उपमेय के गुण उपमान में परिवर्तित कर दिये जाते हैं (चन्द्रालोक में दी गई परिभाषा और उदाहरण—परिणामः क्रियार्थश्चेद्विषयी विषयात्मना, प्रसन्नेन दृगब्जेन वीक्षते मदिरेक्षणा—५।१८, दे० रसगंगाधर में 'परिणाम' के नीचे)। सम० —दर्शिन् (वि०) बुद्धिमान्, दूरदर्शी, दृष्टि (वि०) बुद्धिमान् (—ष्टिः—स्त्री०) बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, —पथ्य (वि०) जिसका फल स्वास्थ्यप्रद हो, शूलम् पीडायुक्त अजीर्ण या मन्दाग्नि, उदरपीडा, पीड़ा के साथ उदरवायु, बायगोले का दर्द।

परि (री) णायः [परि+नी+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. शतरंज की गोट का चलाना 2. (शतरंज की) चाल।

परिणायकः [परि+नी+ण्वुल्] 1. नेता 2. पति —शि० ९।७३।

परि (री) णाहः [परि+नह+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. परिधि, वृत्त, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, अर्ज—स्तनयुगपरिणाहाच्छादिना वल्कलेन—श० १।१९, स्तनपरिणाह विलासवैजयंती—मा० ३।१५, विशाल वक्षःस्थल,—ककुदे वृषस्य कृतबाहुमकृश परिणाह शालिनी—कि० १२।२०, मृच्छ० ३।९, रत्न० २।१३, महावी० ७।२४ 2. वृत्त की परिधि।

परिणाहवत् (वि०) [परिणाह+मतुप्, मस्य वत्वम्] विशाल, बड़ा, विस्तृत।

परिणाहिन् (वि०) [परिणाह+इनि] विशाल, बड़ा —कु० १।२६।

परिणिंसक (वि०) परि+निंस्+ण्वुल्] स्वाद चखने वाला, खाने वाला-पलानां परिणिंसकः—भट्टि० ९।१०६ 2. चुम्बन।

परिणिष्ठा [परि+निष्ठा प्रा० स०] पूरा कौशल।

परिणीत (भू० क० कृ०) [परि+नी+क्त] विवाहित —ता विवाहित स्त्री'

परिणेतृ (पुं०) [परि+नी+तृच्] पति—श० ५।१७, रघु० १।२५, १४।२६, कु० ७।३१।

परितर्पणम् [परि+तृप्+ल्युट्] तृप्त करना, सन्तुष्ट करना।

परितस् (अव्य०) [परि+तस्] (संज्ञा के साथ प्रायः कर्म० में, कभी-कभी स्वतंत्र रूप से प्रयोग) 1. इर्दगिर्द, सब ओर, घुमा फिराकर, सब दिशाओं में, सर्वत्र, चारों ओर—रक्षांसि वेदिं परितो निरास्यत्—भट्टि० १।१२, शि० ५।२६, ९।३६, कि० ११।४, गाहितमखिलं गहनं परितो दृष्टाश्च विटपिनः सर्वे भामि० १।२१, २९ 2. की ओर, की दिशा में आपेदिरेऽम्बरपथं परितः पतंगाः भामि० १।१७, रघु० ९।६६।

परितापः [परि+तप्+घञ्] 1. अत्यंत या झुलसा देने वाली गर्मी—(पादपः) शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्—श० ५।७ गुरुपरितापानि गात्राणि —३।१८, ऋतु० १।२२ 2. पीड़ा, वेदना, व्यथा, शोक—प्रसक्ते निर्वाणे हृदयपरितापं वहसि किम् —मालवि० ३।१ 3. विलाप, मातम, शोक—विरचितविविधविलापं सा परितापं चकारोच्चैः—गीत० ७ 4. कांपना, भय।

परितुष्ट (भू० क० कृ०) [परि+तुष्+क्त] 1. पूर्ण रूप से संतुष्ट—वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या—भर्तृ० ३।५०, इसी प्रकार—मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः—भर्तृ० ३।५० 2. प्रसन्न, खुश।

परितुष्टिः (स्त्री०) [परि+तुष्+क्तिन्] 1. संतृप्ति, पूर्ण संतोष 2. खुशी, हर्ष।

परितोषः [परि+तुष्+घञ्] 1. सन्तोष, इच्छा का अभाव (विप० लोभ) स्व इह परितोषो नि.र्विशेषो विशेषः भर्तृ० ३।५० 2. पूर्ण संतोष, तृप्ति—आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्—श० १।२ 3. प्रसन्नता, खुशी, हर्ष, पसन्दगी (अधि० के साथ) कु० ६।५९, रघु० ११।९२, गुणिनि परितोषः।

परितोषण (वि०) [परि+तुष्+णिच्+ल्युट्] संतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला,—णम् संतुष्ट करना।

परित्यक्त (भू० क० कृ०) [परि+त्यज्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, उत्सृष्ट, सर्वथा त्यागा हुआ 2. वञ्चित, रहित (करण० के साथ) 3. (तीर आदि) छोड़ा हुआ 4. अभावग्रस्त।

परित्यागः [परि+त्यज्+घञ्] 1. छोड़ना, उत्सर्ग करना, सर्वथा त्यागना, छोड़कर भाग जाना, (पत्नी आदि का) सम्बन्ध विच्छेद - अपरित्यागमयाचदात्मनः —रघु० १२, कृतसीतापरित्यागः—१५।१ 2. छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना, विरक्त होना, गद्दी छोड़ देना, —स्वनाम परित्यागं करोमि पंच० १, "मैं अपना नाम छोड दूंगा"—मनु० २।२५ 3. अवहेलना, भूलचूक—मोहात्तस्य (कर्मणः) परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः—भग० १८।७ 4. वदान्यता, उदारता 5. हानि, कंगाली।

परित्राणम् [परि+त्रै+ल्युट्] संधारण, संरक्षण, बचाना प्रतिरक्षा, मुक्ति, छुटकारा—परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्—भग० ४।८, रामापरित्राण विहस्तयोधं सेनानिवेशं तुमुलं चकार—रघु० ५।४९।

परित्रासः [परि+त्रस्+घञ्] त्रास, भय, डर ।

परिदंशित (वि०) [परि+दंश्+क्त] कवच से ढका हुआ, आपादमस्तक शस्त्रों से सुसज्जित (पूर्णतया जिरहबख्तर से युक्त) ।

परिदानम् [परि+दा+ल्युट्] 1. विनिमय, अदला-बदली 2. भक्ति 3. धरोहर का वापिस मिलना ।

परिदायिन् (पुं०) [परि+दा+णिनि] वह पिता जो अपनी पुत्री का विवाह ऐसे पुरुष से करता है जिसका बड़ा भाई अभी तक अविवाहित है—तु० 'परिवेत्तृ' ।

परि (री) दाहः [परि+दह्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. जलन 2. व्यथा, पीडा, दुःख, शोक ।

परिदेवः [परि+दिव्+घञ्] शोक मनाना, मातम, विलाप ।

परिदेवनम्,—ना, परिदेवितम् [परि+दिव्+ल्युट्, परि+दिव्+क्त] 1. विलाप, विलखना, रोना-धोना—अथ तैः परिदेविताक्षरैः—कु० ४।२५, रघु० १४।८३, भग० २।२८, तत्र का परिदेवना—याज्ञ० ३।९, हि० ४।६१ 2. पश्चात्ताप, खेद ।

परिदेवन (वि०) [परि+दिव्+ल्युट्] शोकसंतप्त, खेदजनक, दुःखी ।

परिद्रष्टृ (पुं०) [परि+दृश्+तृच्] तमाशबीन, दर्शक ।

परिधर्षणम् [परि+धृष्+ल्युट्] 1. हमला, आक्रमण, बलात्कार 2. अपमान, निरादर, तिरस्कार 3. दुर्व्यवहार, रूखा व्यवहार ।

परि (री) धानम् [परि+धा+ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना 2. पोशाक, अधोवस्त्र, कपड़े—आत्तचित्रपरिधानविभूषाः—कि० ९।१, शि० १।५१, ६१, ४।६१ ।

परिधानीयम् [परि+धा+अनीयर्] अधोवस्त्र, नाभि से नीचे का पहरावा ।

परिधायः [परि+धा+घञ्] 1. नौकर-चाकर, अनुचर टहलुए 2. आधार, आशय 3. नितंब, चूतड़ ।

परिधिः [परि+धा+कि] 1. दीवार, मेंड़, बाड़, घेरा 2. सूर्य या चन्द्रमा का परिवेश—परिधेर्मुक्त इवोष्णदीधितिः—रघु० ८।३०, शशिपरिधिरिवोच्चैर्मंडलस्तेन तेने—नै० २।१०८ 3. प्रकाशमंडल 4. क्षितिज 5. परिधि या वृत्त 6. वृत्त की परिधि 7. पहिये का घेरा 8. ('पलाश' आदि पवित्र वृक्ष की) समिधा या लकड़ी जो यज्ञकुण्ड के चारों ओर रक्खी रहती हैं—सप्तास्यासन् परिधयः त्रिः सप्तः समिधः कृताः—ऋक् १०।९०।१५ । सम०—**पतिखेचरः** शिव का विशेषण —**स्थः** 1. चौकीदार 2. किसी राजा या सेनापति का सहायक अधिकारी) ।

परिधूपित (वि०) [परि+धूप्+क्त] धूप द्वारा सुवासित या सुगंधित किया हुआ ।

परिधूसर (वि०) [परितः सर्वतो भावेन धूसरः—प्रा० स०] बिल्कुल भूरा—वसने परिधूसरे वसाना—श० ७।२१, रघु० ११।६० ।

परिधेयम् [परि+धा+यत्] अधोवस्त्र, नीचे पहनने का कपड़ा ।

परिध्वंसः [परि+ध्वंस्+घञ्] 1. दुःख, विनाश, बरबादी, कष्ट 2. असफलता, विध्वंस, संहार 4. जातिच्युति ।

परिध्वंसिन् (वि०) [परि+ध्वंस्+णिनि] 1. गिर कर अलग होने वाला 2. बर्बाद होने वाला, नष्ट हो जाने वाला—हि० २।१३४ ।

परिनिर्वाण (वि०) [प्रा० स०] बिल्कुल बुझा हुआ, —**णम्** (व्यक्ति की) अन्तिम विलुप्ति, परिमृति ।

परिनिर्वृत्तिः (स्त्री०) [परि+निर्+वृत्+क्तिन्] आत्मा की शरीर से पूर्णमुक्ति, पुनर्जन्म से छुटकारा, पूर्ण मोक्ष ।

परिनिष्ठा [प्रा० स०] 1. (किसी वस्तु का) पूरा ज्ञान या परिचय, 2. पूर्ण निष्पत्ति 3. चरम सीमा ।

परिनिष्ठित (भू० क० कृ०)] परि+नि+स्था+क्त] 1. पूर्ण कुशल 2. सुनिश्चित—अपरिनिष्ठितस्योपदेशस्यान्याय्यं प्रकाशनम्—मालवि० १ ।

परिपक्व (भू० क० कृ०) [परि+पच्+क्त] 1. पूरी तरह पका हुआ, 2. भलीभाँति सेका हुआ, 3. बिल्कुल पक्का, प्रौढ़, सिद्ध, पूर्णता को प्राप्त (आलं० भी) —प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः—ऋतु० ४।१, इसी प्रकार—परिपक्वबुद्धिः 4. सुसंवर्धित, समझदार, काइयाँ 5. पूरी तरह पचा हुआ 6. मुर्झाने वाला, मृत्यु के निकट ।

परिपणं (नम्) [परि+पण्+घ प्रा०स०] पूंजी, मूलधन, बारदाना ।

परिपणनम् [परि+पण्+ल्युट्] वादा करना, प्रतिज्ञा करना ।

परिपणित (भू०क०कृ०) [परि+पण्+क्त] वादा किया हुआ, वचन दिया हुआ, प्रतिज्ञा की हुई—शि० ७।९ ।

परिपंथकः परि+पन्थ्+ण्वुल्] शत्रु, विरोधी, दुश्मन ।

परिपंथिन् (वि०) [परि+पंथ्+णिनि] रास्ता रोकने वाला, रोड़ा अटकाने वाला, विरोध करने वाला, विघ्न डालने वाला (पाणिनि के मतानुसार केवल वेद में मान्य, परन्तु तु० नीचे दिए हुए उद्धरणों से)—अर्थपरिपंथी महानरातिः—मुद्रा० ५, नाभविष्यमहं तत्र यदि तत्परिपंथिनी—मा० ९।५०, इसी प्रकार भामि० १।६२, भग० ३।३४, मनु० ७।१०८, ११० (पुं०) रिपु, शत्रु, प्रतिद्वन्दी, दुश्मन 2. लुटेरा, चोर डाकू ।

परि (री) पाकः [परि+पच्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य

दीर्घः] 1. पूरी तरह से प..‍ा जाना या संवारा जाना 2. पचना, जैसा कि 'अन्नपरिपाक' में 3. पक जाना, परिपक्वन, विकास, पूर्णता - शि० ४।४८, कु० ६।१० 4. फल, नतीजा, परिणाम - प्रपन्नानां मूर्तः सुकृतपरिपाको जनिमताम् – लहावी० ७।३१, भर्तृ० ३:१३२, ३।१३५ 5. चतुराई, दूरदर्शिता, कुशलता।

परिपाटल (वि०) [प्रा०स०] पीला लाल—रघु० १९। १०, शिशु १३।४२।

परिपाटिः,—टी (स्त्री०) [परि भागेन पाटिः पाटनं गतिः यस्या —प्रा०ब०स०. परिपाटि+ङीष्] 1. प्रणाली, रीति, प्रक्रम –पाटीर तव पटीयान्कः परिपाटीमिमामुरीकर्तुम्—भामि० १।१२, कदंबानां वाटी रसिक परिपाटीं स्फुटयति—हंस० २४ 2. व्यवस्था, क्रम, उत्तराधिकार।

परिपाठः [प्रा०स०] परिगणना, पूर्ण निर्देशन, पूरा विवरण।

परिपार्श्व (वि०) [अत्या०स०] निकट, पार्श्व में, पास, नजदीक ही।

परिपालनम् [परि+पल्+णिच्+ल्युट्] 1. भली-भांति पालना, रक्षा करना, संधारण करना, संभाले रखना, जीवित रखना—क्लिश्नातिलब्धपरिपालनवृत्तिरेव—श० ५।६ 2. भरण पोषण, संवर्धन जातस्य परिपालनम्—मनु० ९।२७।

परिपिष्टकम् [परि+पिष्+क्त+कन्] सीसा।

परिपीडनम् [परि+पीड्+ल्युट्] 1. निचोड़ना, भींचना 3. क्षति पहुँचाना, चोट लगाना, नुकसान पहुँचाना।

परिपुटनम् [परि+पुट्+ल्युट्] 1. हटाकर अलग करना 2. बल्कल या छाल उतारना।

परिपूजनम्, परिपूजा [परि+पूज्+ल्युट्, प्रा०स०] सम्मान करना, पूजा करना, अर्चना करना।

परिपूत (भू०क०कृ०) [परि+पू+क्त] 1. विशुद्ध किया गया, विशुद्ध- उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनांतरैः उत्तर० १।१३, शि० ७।६ 2. पूरी तरह फटका हुआ, पिछोड़ा हुआ, भूसी से पृथक् किया हुआ।

परिपूरणम् [परि+पूर्+ल्युट्] 1. भरना—शि० ४।६१ 2. पूर्णता को पहुँचाना, पूरा करना।

परिपूर्ण (भू०क०कृ०) [परि+पूर्+क्त] 1. पूरी तरह भरा हुआ, –इंदुः पूरा चाँद, समस्त, सारा, भली भाँति भरा हुआ 2. स्वसंतुष्ट, संतृप्त।

परिपूर्तिः (स्त्री०) [परि+पूर्+क्तिन्] पूर्णता, पर्याप्तता।

परिपृच्छा [परि+प्रच्छ्—अङ+टाप्] पूछ-ताछ, प्रश्न।

परिपेलव (वि०) [प्रा०स०] अति कोमल, सूक्ष्म, अत्यन्त मृदु।

परिपोटः,—पोटकः [परि+पुट्+घञ्, परिपोट+कन्] (आयु० में) एक प्रकार कर्ण रोग (जिसमें कान की खाल गलने लगती है)।

परिपोषणम् [परि+पुष्+ल्युट्] 1. खिलाना-पिलाना, भरण-पोषण 2. आगे बढ़ाना, उन्नति करना।

परिप्रश्नः [प्रा०स०] पूछताछ, प्रश्नवाचकता, सवाल, तरकतमौ जाति परिप्रश्ने—पा० २।१।६३, ३।३।११० तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया—भग० ४।३४।

परिप्राप्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] अधिग्रहण, उपलब्धि।

परिप्रेष्यः [प्रा०स०] सेवक।

परिप्लव (वि०) [परि+प्लु+अच्] 1. बहता हुआ 2. थरथराता हुआ, कांपता हुआ, डोलता हुआ, हिलोरे लेता हुआ, कम्पायमान 3. अस्थिर, चंचल—शि० १४।६८,—वः 1. जलप्लावन 2. जल में डुबोना, गीला करना 3. किश्ती, नाव 4. उत्पीड़न, अत्याचार।

परिप्लुत (भू०क०कृ०) [परि+प्लु+क्त] 1. बाढ़ग्रस्त, जलप्लावित 2. घबड़ाया हुआ, व्याकुल जैसा कि शोक में 3. आर्द्रीकृत, क्लिन्न, स्नात,—तम् उछल छलांग,—ता शराब।

परिप्लुष्ट (भू०क०कृ०) [परि+प्लुष्+क्त] जला हुआ, झुलसा हुआ, भनभनाया हुआ।

परिब (व) र्हः [परि+ब (व) र्ह्+घञ्] अनुचर, नौकर-चाकर, टहलुए इयं प्रचुरपरिबर्हया भवत्या संवर्ध्यताम्- दश० १०८ 2. उपस्कर, घर के अन्दर का सामान—परिवर्हवंति वेश्मानि—रघु० १४।१५, "उपयुक्त सामान से सुसज्जित कमरे" 3. राज चिह्न 3. संपत्ति, धनदौलत।

परिब (व) र्हणम् [परि+ब (व) र्ह्+ल्युट्] 1. अनुचर, नौकर-चाकर 2. बनाव-शृंगार, ठाट-छांट 3. वृद्धि 4. पूजा।

परिबाधा [प्रा० स०] 1. कष्ट, पीड़ा, संतापन 2. थकावट, उग्र व्यथा।

परिबृं (वृं) हणम् [परि+बृं (वृं) ह्+ल्युट्] 1. समृद्धि, कल्याण 2. परिशिष्ट, सम्पूरक।

परिबृं (वृं) हित (भू० क० कृ०) 1. बढ़ा हुआ, आवर्धित 2. फलाफूला, समृद्ध हुआ 3. से युक्त, संपन्न,—तम् हाथी की चिंघाड़।

परिभंगः [प्रा० स०] छिन्नभिन्न होना टूट कर टुकड़े २ होना।

परिभर्त्सनम् [परि+भर्त्स्+ल्युट्] धमकाना, घुड़कना।

परि (री) भवः [परि+भू+अप्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. अपमान, क्षति पहुँचाना, प्रतिष्ठा भंग, तिरस्कार, निरादर, मानहानि पराक्रमः परिभवे वैयात्यं सुरतेष्विव (भूषणम्)—शि० २।४४, रघु० १०।३७, वेणी० १।२५, महावी० १।४०, ३।१७ 2. हार, पराजय। सम०—आस्पदम्,—पदम् 1. घृणा का पात्र, हि० ३।५१ 2. अपमान, अपमानपूर्ण स्थिति,—विधिः

प्रतिष्ठाभंग—प्रायो मूर्खः परिभवविधौ नाभिमानं तनोति—शृंगार १६।

परिभविन् (वि०) (स्त्री०—नी) [परि+भू+इनि 1. मानहर, तुच्छ, अनादर या घृणायुक्त व्यवहार करने वाला 2. अपमानग्रस्त, तिरस्कार, पीडित।

परिभावः [परि+भू+घञ्] दे० 'परिभव'।

परिभाविन् (वि०) (स्त्री०—नी [परि+भू+णिनि] 1. मानमर्दन करने वाला, घृणा करने वाला, तिरस्कारयुक्त व्यवहार करने वाला—श० ४ 2. लज्जित करने वाला, आगे बढ़ जाने वाला, श्रेष्ठ होने वाला 3. तुच्छ समझने वाला, उपेक्षा करने वाला वैद्ययत्न परिभाविनं गदम् रघु० १९।५३, 'औषधोपचार की उपेक्षा करने वाला'।

परिभाषण [परि+भाष्+ल्युट्] 1. वार्तालाप, प्रवचन, बातचीत करना, गपशप लगाना, गप्पें हांकना 2. निन्दाभिव्यक्ति, धिक्कारना, झिड़की, अपशब्द 3. नियम, विधि।

परिभाषा [परि+भाष्+अ+टाप्] 1. व्याख्यान, प्रवचन 2. निन्दा, झिड़की, कलङ्क, गाली 3. पारिभाषिक शब्दावली, पारिभाषिक पदावली, (किसी ग्रंथ में प्रयुक्त) तकनीकी शब्दावली—इति परिभाषा प्रकरणम् सिद्धा०, इको गुणवृद्धीत्यादिका परिभाषा महा० 4. (अतः) कोई सामान्य नियम, विधि या परिभाषा जो सर्वत्र घट सके (अनियमनिवारको न्याय विशेषः), परितः प्रमिताक्षरापि सर्वं विषयं प्राप्तवती गता प्रतिष्ठाम्, न खलु प्रतिहन्यते कदाचित् परिभाषेव गरीयसी यदाज्ञा—शि० १६।८० 5. किसी भी पुस्तक में प्रयुक्त संकेत या सक्षेपकों की सूची 6. (व्या० में) पाणिनि के अन्य सूत्रों में मिला हुआ व्याख्यानात्मक सूत्र जो उन सूत्रों के प्रयोग की रीति बतलाता है।

परिभुक्त (भू० क० कृ०) [परि+भुज्+क्त] 1. खाया हुआ, प्रयोग में लाया हुआ 2. उपभुक्त 3. अधिकृत।

परिभुग्न (वि०) [परि+भुज्+क्त] विनत, वक्रीकृत, झुका हुआ।

परिभूतिः (स्त्री०) [परि+भू+क्तिन्] तिरस्कार, अपमान, अनादर, अवमानना—मुद्रा० ४।११।

परिभूषणः [परि+भूष्+ल्युट्] किसी भूमि का समस्त राजस्व छोड़ कर जो संधि की गई हो।

परिभोगः [परि+भुज्+घञ्] 1. उपभोग—रघु० ४।४५ 2. विशेष कर मैथुन,—रघु० ११।५२, १९। २१, २८।३० 3. दूसरे के सामान का अवैध प्रयोग।

परिभ्रंशः [परि+भ्रंश्+घञ्] 1. बच निकलना 2. गिरना।

परिभ्रमः [परि+भ्रम्+घञ्] 1 घूमना, इधर उधर टहलना 2. घुमा-फिरा कर बात कहना, वाग्जाल, वक्रोक्ति 3. भूल, भ्रम।

परिभ्रमणम् [परि+भ्रम्+ल्युट्] 1. घूमना, इधर उधर टहलना, पर्यटन 2. चारों ओर घूमना, चक्कर काटना, परिधि।

परिभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [परि+भ्रंश्+क्त] 1. गिरा हुआ, स्खलित 2. बच कर निकला हुआ 3. फेंका हुआ, अधःपतित 4. वञ्चित, शून्य (अपा० या करण० के साथ) 5. अवहेलना करने वाला।

परिमंडल (वि०) [प्रा० ब० स०] गोलाकार, गोल, वर्तुलाकार,—लम् पिंड, गोलक 2. गेंद 3. वृत्त।

परिमंथर (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त मंद, शि० ९।७८।

परिमंद (वि०) [प्रा० स०] 1. अत्यंत मंद, धुंधला, बिल्कुल फीका परिमंद सूर्यनयनो दिवसः—शि० ९।३ 2. अत्यंत मंद 3. बहुत थका हुआ—शि० ९।३२ 4. बहुत थोड़ा—शि० ९।२७।

परिमरः [परि+मृ+अप्] विनाश—चिरात् क्षत्रस्यास्तु प्रलय इव घोरः परिमरः—महावी० ३।४१।

परिमर्दः, परिमर्दनम् [परि+मृद्+घञ्, ल्युट् वा] 1. रगड़ना, पीसना 2 कुचलना, पैरों के नीचे रौंदना 3 विनाश 4. कष्ट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 5. आलिंगन, परिरंभण।

परिमर्षः [परि+मृष्+घञ्] 1. ईर्ष्या, अरुचि 2. क्रोध।

परिमलः [परि+मल्+अच] 1. सुगंध, सुवास, सौरभ, महक—परिमलो गीर्वाणचेतो हरः भामि० १।६३, ६६,७०,७१, मेघ० २५ 2. सुगंधयुक्त पदार्थों का पीसना 3. सुगंधद्रव्य 4. सहवास—श्रयपरिमलजामवाप्यलक्ष्मीम्—कि० १०।१ 5. विद्वत्सभा 6. कलंक, धब्बा।

परिमलित (वि०) [परि+मल्+क्त] 1. सुगंधित 2. कलुषित, सौन्दर्य भ्रष्ट।

परि(री)माणम् [परि+मा+ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्यदीर्घः] 1. मापना, (शक्ति या ताक़त की) माप—सद्यः परात्मपरिमाण विवेकमूढः—मुद्रा० १।१०, कु० २।८, मनु० ८।१२२ 2. तोल, सख्या, मूल्य—याज्ञ० २।१६२, १।३१९।

परिमार्गः, परिमार्गणम् [परि+मार्ग्+घञ्, ल्युट् वा] 1. ढूंढना, खोज करना, तलाश करना, पता लगाना, पदचिह्न देखते हुए खोज निकालना 2. स्पर्श, सम्पर्क —शि० ७।७५ 3. साफ़ करना, पोंछना।

परिमार्जनम् [परि+मृज्+णिच्+ल्युट्] 1. मांजना, साफ़ करना, झाड़-पोंछ करना 2. घी और शहद से बनी मिठाई।

परिमित (भू० क० कृ०) [परि+मा+क्त] 1. मध्यम,

मितव्ययी 2. सीमित 3. मापा हुआ, नपातुला 4. विनियमित, समंजित। सम०—आभरण (वि०) थोड़े आभूषण धारण करने वाला, मध्यमरूप से अलंकृत,—आयुस् (वि०) अल्पायु, थोड़ी उम्र जीने वाला,—आहार,—भोजन (वि०) परहेज़गार, मिताहारी, कमभोजन करने वाला,—कथ (वि०) थोड़ा बोलने वाला, मितभाषी, नपे तुले शब्द बोलने वाला—मेघ० ८३।

परिमितिः (स्त्री०) [परि+मा+क्तिन्] 1. माप, परिमाण 2. सीमाबंधन।

परिमिलनम् [परि+मिल्+ल्युट्] 1. स्पर्श, संपर्क, रत्न० २।१२ 2. सम्मिश्रण, मेल।

परिमुखम् (अव्य०) [अव्य० सं०] मुंह के सामने, (किसी के) इर्द गिर्द, चारों ओर।

परिमुग्ध (वि०) [परि+मुह्+क्त] 1. भोला भाला, प्रिय, सरल, मनोहर 2. आकर्षक परन्तु मूर्ख।

परिमृदित (भू० क० कृ०) [परि+मृद्+क्त] 1. पैरों तले रौंदा हुआ, कुचला हुआ, पददलित, दुर्व्यवहारग्रस्त—परिमृदितमृणालीम्लानमंगम्—मा० १।२२, उत्तर० १।२४ 2. आलिंगित, परिरंभण किया हुआ 3. मसला हुआ, पीसा हुआ।

परिमृष्ट (भू० क० कृ०) [परि+मृज्+क्त] 1. धोया हुआ, मांजा हुआ, शुद्ध किया हुआ 2. मसला हुआ, स्पर्श किया हुआ, थपथपाया हुआ—वेणी० ३ 3. आलिंगन 4. फैला हुआ, व्याप्त, भरा हुआ—कि० ६।२३।

परिमेय (वि०) [परि+मा+यत्] 1. थोड़े, सीमित—परिमेयपुरः—सरौ—रघु० १।३७ 2. जो मापा जा सके, गिना जा सके 3. सान्त, जिसकी सीमा हो, समापिका।

परिमोक्षः [परि+मोक्ष्+घञ्] 1. हटाया, मुक्त करना—प्रायो विषाणपरिमोक्षलघूत्तमांगान् खड्गांश्चकार नृपतिर्निशितैः क्षुरप्रैः—रघु० ९।६२, सींगों को हटाना—अर्थात् सींग तोड़ डालना 2. मुक्त करना, स्वतंत्र करना, छुटकारा 3. खाली करना, मलत्याग 4. बच निकलना 5. मोक्ष, निर्वाण।

परिमोक्षणम् [परि+मोक्ष्+ल्युट्] 1. मुक्ति, छुटकारा 2. खोल देना।

परिमोषः [परि+मुष्+घञ्] चुराना, लूटाना, चोरी।

परिमोषिन् (पुं०) [परि+मुष्+णिनि] चोर, लुटेरा।

परिमोहनम् [प्रा० स०] 1. बहकाना, प्रलोभन देना, फुसलाना, मंत्रमुग्ध करना 2. व्यामोहित करना, प्रेम में अन्धा करना।

परिम्लान (भू० क० कृ०) [परि+म्ला+क्त] 1. मुर्झाया हुआ, मूर्छित, कुम्हलाया हुआ, कु० २।२ 2. श्रान्त, शिथिल 3. क्षीण, निस्तेज, हतप्रभ 4. मलिन, कलंकित।

परिरक्षकः [परि+रक्ष्+ण्वुल्] रक्षा करनेवाला, अभिभावक।

परिरक्षणम्, परिरक्षा [परि+रक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् च] 1. रक्षा, संधारण, देखभाल करना—मनु० ९।५४, ७।२ 2. ध्यान रखना, बनाये रखना, पालनपोषण—न समर्थपरिरक्षणं क्षमं ते—कि० १।४५, 3. छुटकारा, बचाव।

परिरथ्या [प्रा० स०] गली, सड़क।

परि(री)रंभः, परिरंभणम् [परि+रभ्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्यदीर्घः, परि+रभ्+ल्युट्] आलिंगन करना, अंक में भर लेना द्रुतपरिरंभनिपीडनक्षमत्वम्—शि० १।७४, १०।५२, उत्तर० १।२४,२७, किं पुरेव ससंभ्रमं परिरंभणं न ददासि—गीत० ३।

परिराटिन् (वि०) [परि+रट्+घिनुण्] जोर से चिल्लाने वाला, चीखने वाला, रट लगाने वाला।

परिलघु (वि०) [प्रा० स०] 1. बहुत हल्का (शा०), (कपड़ा आदि) 2. बहुत हल्का या जल्दी पचने वाला—क्षीणः क्षीणः परिलघु पयः स्रोतसां चोपभुज्य—मेघ० १३ 3. बहुत छोटा—उत्तर० ४।२१।

परिलुप्त (भू० क० कृ०) [परि+लुप्+क्त] 1. अन्तर्बाधित, सबाध, घटाया हुआ 2. नष्ट, लुप्त।

परिलेखः [परि+लिख्+घञ्] 1. रूपरेखा, आलेखन, चित्रण, खाका 2. चित्र।

परिलोपः [परि+लुप्+घञ्] 1. क्षतिः 2. उपेक्षा, भूलचूक।

परिवत्सरः [प्रा० स०] वर्ष, एक समूचा वर्ष, वर्ष का आवर्तन—देव्या शून्यस्य जगतो द्वादशः परिवत्सरः—उत्तर० ३।३३।

परिवर्जनम् [परि+वृज्+ल्युट्] 1. छोड़ना, त्यागना, तजना 2. छोड़ देना, तिलांजलि देना 3. वध, हत्या।

परि (री) वर्तः [परि+वृत्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. परिक्रमण, (ग्रह आदि का) घूमना 2. कालचक्र, कालक्रम, कालगति—युगशतपरिवर्तान्—श० ७।३४ 3. युग का अन्त शि० १७।१२ 4. आवृत्ति, पुनरावर्तन 5. परिवर्तन, अदल-बदल—तदीदृशो जीवलोकस्य परिवर्तः—उत्तर० ३, 'जीवन की परिवर्तित अवस्था' 'परिस्थितियों में अदल-बदल', इसी प्रकार—जीवलोकपरिवर्तमनुभवामि—मा० ७, स्वर परिवर्तः मृच्छ० १ 6. प्रत्यावर्तन, पलायन, अपक्रमण 7. वर्ष 8. पुनर्जन्म, आवागमन 9. विनिमय, अदलाबदली—शि० ५।३९ 10. पुनरागमन, वापसी 11. आवास 12. किसी पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद 13. कूर्मावतार, विष्णु का दूसरा अवतार।

परिवर्तक (वि०) [परि+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1. घुमाने वाला, चक्कर देने वाला 2. बदला चुकाने वाला, वापिस करने वाला।

परिवर्तनम् [परि+वृत्+ल्युट्] 1. इधर उधर घूमना, इधर उधर मुड़ना (बिस्तर आदि पर) करवटें बदलना —कु० ५।१२, रघु० ९।१३, शि० ४।४७ 2. इधर उधर मुंह फिराना, चक्कर काटना, चकराना 3. क्रान्तिकाल, चक्र का अन्त 4. बदलना—वेषपरिवर्तनं विधाय—पंच० ३ 5. अदला-बदली, विनिमय 6. पलटना, उलटना।

परिवर्तिका [परि+वृत्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] (आयु०) लिंग की अग्रत्वचा का सिकुड़ जाना।

परिवर्तिन् (वि०) [परि+वृत्+णिनि] 1. इधर उधर मुड़ने वाला, घूमने वाला 2. सदा-प्रत्यावर्ती, वार २ आने वाला,—परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते —पंच० १।२७ 3. बदलने वाला 4. निकट रहने वाला, इधर उधर घूमने वाला 5. प्रत्यावर्ती, पलायन शील 6. विनिमयशील 7. क्षतिपूर्ति करने वाला, बदला देने वाला।

परिवर्धनम् [परि+वृध्+ल्युट्] 1. बढ़ना, विस्तृत होना 2. संवर्धन, पालन-पोषण करना 3. बड़ा होना, वृद्धि।

परिवसथः [परितो वसन्ति अत्र—परि+वस्+अथ] गाँव।

परिवहः [परि+वह्+अच्] वायु के सात मार्गों में एक —छठा मार्ग, इसी मार्ग से सप्तर्षि घूमते हैं तथा आकाश गंगा बहती है,—सप्तर्षिचक्रं स्वर्गंगां षष्ठः परिवहस्तथा—वायु के दूसरे मार्गों के लिए दे० 'वायु' के नीचे, तु०—कालिदास द्वारा दिये गये परिवह के वर्णन—त्रिस्त्रोतसं वहति यो गगनप्रतिष्ठां ज्योतींषि वर्तयति च प्रविभक्तरश्मिः, तस्य द्वितीय हरिविक्रमनिस्तमस्कं वायोरिमं परिवहस्य वदंति मार्गम्—श० ७।६।

परि (री) वादः [परि+वद्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] कलंक, निन्दा, बदनामी, गाली—अयमेव मयि प्रथमं परिवादरतः—मालवि० १, याज्ञ० १।१३३ 2. लोकापवाद, कलंक, दूषण, अपकीर्ति—मा भूत्परीवादनवावतारः—रघु० ५।२४, १४।८६, महावी० ५।२८ 3. दोषी ठहराना, दोषारोपण करना—मृच्छ० ३।३० 4. सारंगी बजाने का उपकरण।

परिवादकः [परि+वद्+णिच्+ण्वुल्] 1. वादी, अभियोक्ता, दोषारोपक 2. सारंगी बजाने वाला।

परिवादिन् (वि०) [परि+वद्+णिनि] खरीखोटी सुनाने वाला, निन्दा करने वाला, गाली देने वाला, बुरा-भला कहने वाला 2. दोषारोपण करने वाला 3. चीखने वाला, चिल्लाने वाला 4. निन्दित, कलंकित—(पुं) दोषारोपण करने वाला, वादी, अभियोक्ता,—नी सात तारों की वीणा, शि० ६।९, रघु० ८।३५।

परि (री) वापः [परि+वप्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. मुंडन या हजामत करना, मूंडना या बाल काटना 2. बोना 3. जलाशय, पल्वल, पोखर, जोहड़ 4. सामान (घरका) 5. नौकर-चाकर, अनुचर वर्ग।

परिवापित (वि०) [परि+वप्+णिच्+क्त] मुंडा हुआ जिसके बाल कटे हुए हों या जिसने हजामत करा ली हो।

परि (री) वारः [परिव्रियते अनेन परि+वृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. नौकर-चाकर, अनुचरवर्ग, टहलुए, अनुयायी—(यानं) अध्यास्य कन्या परिवार शोभि—रघु० ६।१०, १२।१६, ग्रहगणपरिवारो राजमार्गं प्रदीपः—मृच्छ० १।५७ 2. ढक्कन, चादर 3. म्यान, कोष।

परिवारणम् [परि+वृ+णिच्+ल्युट्] 1. ढक्कन, लिफ़ाफ़ा 2. नौकर चाकर, अनुचर 3. दूर हटाना।

परिवारित (भू० क०कृ०) [परि+वृ+णिच्+क्त] 1. परिवेष्टित, लपेटा हुआ, घेरा हुआ 2. व्याप्त, फैलाया हुआ - शि० ३।३४ कि० ५।४२,—तम् ब्रह्मा का धनुष।

परिवासः [परि+वस्+घञ्] आवास स्थान, ठहरना, टिकना, प्रवास, बसेरा।

परि (री) वाहः [परि+वह्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः]। (तालाब का)।

परिवाहिन् (वि०) [परि+वह्+णिनि] छलकता हुआ, जैसा कि—आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा—श० ४।

परिविण्णः (न्नः), परिवित्तः, परिवित्तिः [परि+विद्+क्त, पक्षे नत्वणत्वयोरभावः, परि+विद्+क्तिच्] अविवाहित बड़ा भाई जिसके छोटे भाई का विवाह हो गया हो दे० मनु० ३।१७१, 'परिवेत्तृ' भी।

परिविद्धः [परि+व्यध्+क्त] कुबेर का विशेषण।

परिविन्दकः, परिविन्दत् (पुं०) [परि+विद्+ण्वुल्, शतृ वा] विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो।

परिविहारः [परितो विहारः प्रा०स०] इधर उधर सैर करना, घूमना, टहलना।

परिविह्वल (वि०) [प्रा०स०] अत्यन्त व्याकुल, क्षुब्ध या घबड़ाया हुआ।

परिवृढः [परि+वृंह्+क्त] स्वामी, प्रभु, मालिक, प्रधान, मुख्य (विशेषण की भांति भी प्रयुक्त) किं भुवः परिवृढा न विवोढुं तत्रतामुपनता विवदंते—नै० ५।५२, कु० १२।५८, महावी० ६।२५, ३१,४८।

परिवृत (भू०क०कृ०) [परि+वृ+क्त] 1. घिरा हुआ, परिवेष्टित, सेवित 2. प्रच्छन्न, गुप्त 3. व्याप्त, फैला हुआ 4. ज्ञात।

परिवृत्त (भू०क०कृ०) [परि+वृत्+क्त] 1. घुमा हुआ, मोड़ा हुआ अर्धमुखी -विक्रम० १।१७ 2. प्रत्यावर्तित पीछे मुड़ा हुआ 3. अदला-बदली किया हुआ, विनिमय किया हुआ 4. समाप्त किया हुआ, अन्त किया हुआ, --त्तम् आलिंगन।

परिवृत्तिः (स्त्री०) [परि+वृत्+क्तिन्] 1. क्रांति— शि० १०।९१ 2. वापसी, लौटना 3. विनिमय, अदला-बदली 4. अन्त, समाप्ति 5. घेरा 6. किसी स्थान पर टिकना, बसना 7. (अलं० शा०) एक अलंकार जिसमें किसी समान, कम या बड़ी वस्तु से विनिमय हो —परिवृत्तिर्विनिमयो योऽर्थानां स्यात्समासमैः—काव्य० १०—उदा०—दत्त्वा कटाक्षमेणाक्षी जग्राह हृदयं मम, मया तु हृदयं दत्त्वा गृहीतो मदन ज्वरः। सा० द० ७३४ 8. अर्थ को बिना बदले एक शब्द के स्थान में दूसरा शब्द रखना, जैसा कि -शब्दपरिवृत्तिसहत्वम् काव्य० १० उदा० 'वृषध्वज' में 'ध्वज' के स्थान में लांछन या वाहन लगाया जा सकता है।

परिवृद्धिः (स्त्री०) [प्रा०स०] संवर्धन, बढ़ती, उन्नति।

परिवेत्तृ (पुं०) **परिवेदकः** [प्रा०स०] विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो --रघु० १२।१६, ज्येष्ठे अनिर्विष्टे कनीयान् निर्विशन् परिवेत्ता भवति, परिविण्णो ज्येष्ठः, परिवेदनीया कन्या, परिदायी दाता, परिकर्ता याजकः, सर्वे ते पतिताः--हारीत।

परिवेदनम् [परि+विद्+ल्युट्] 1. बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह 2. विवाह 3. पूरा या सही ज्ञान 4. उपलब्धि, अधिग्रहण 5. अग्न्याधान,— ११।६० 6. सर्वव्याप्ति, विश्वव्यापी या विश्वसत्ता, --ना 1. समझदारी, बुद्धिमानी 2. बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता।

परिवेदनीया, परिवेदिनी [परि+विद्+अनीयर्+टाप परि+विद्+णिनि+ङीप्] उस छोटे भाई की पत्नी जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो।

परि (री) वेशः (षः) [परि+विश् (ष्)+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. भोजन के समय सेवा करना, भोजन बांटना, भोजन परोसना 2. वृत्त, चक्र,(दीप्ति) मंडल --रघु० ५।७४, ६।१३, शि० ५।५२, १७।९ 3. (विशेषतः) सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल लक्ष्यते स्म तदनन्तरं रविर्बद्धभीम परिवेषमंडलः - रघु० ११।५९ 4. वृत्त की परिधि 5. सूर्यबिंब, चन्द्रबिंब 6. कोई वस्तु जो घेरती है या रक्षा करती है।

परिवेषकः [परि+विष्+ण्वुल्] भोजन परोसने वाला।

परिवेषणम् [परि+विष्+ल्युट्] 1. भोजन परोसना, (सेवा के लिए) प्रस्तुत रहना, भोजन वितरण करना 2.लपेटना, घेरना 3. सूर्यमंडल, चन्द्रमंडल 4. परिधि।

परिवेष्टनम् [परि+वेष्ट्+ल्युट्] 1. घेरना, लपेटना 2. परिधि 3. ढक्कन, आवरण।

परिवेष्टृ (पुं०) [परि+वेष्ट्+तृच्] भोजन के समय सेवा करने वाला, भोजन परोसने वाला--मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे—ऐत०।

परिव्ययः [प्रा० स०] 1. लागत, मूल्य 2. मिर्चमसाला।

परिव्याधः [परि+व्यध्+ण] नरकुल या सरकंडे की एक जाति।

परिव्रज्या [परि+व्रज्+क्यप्+टाप्] 1. चहलकदमी करना, जगह जगह घूमते फिरना 2. संन्यासी होकर साधु महात्माओं का जीवन बिताना 3. सांसारिक मोहमाया का त्याग, वैराग्य में अनुराग, धार्मिक साधना।

परिव्राज् (पुं०) **परिव्राजः, जकः** [परित्यज्य सर्वान् विषयभोगान् व्रजति परि+व्रज्+क्विप्, घञ्, ण्वुल् वा] भ्रमणशील साधु, अवधूत, तपस्वी, संन्यासी (चौथे आश्रम में) जिसने सांसारिक मायामोह का त्याग कर दिया हो।

परिशाश्वत (वि०) (स्त्री० ती) [प्रा० स०] सदा के लिए उसी रूप में बना रहने वाला।

परिशिष्ट (वि०) [परि+शिष्+क्त] छोड़ा हुआ, बचा हुआ, ष्टम् सम्पूरक, अतिरिक्त जैसा कि 'गृह्य परिशिष्ट'।

परिशीलनम् [परि+शील्+ल्युट्] 1. स्पर्श, सम्पर्क (शा०)—ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे --गीत० १, इसी प्रकार -वदनकमलपरिशीलनमिलित ····११ 2. अनवरत सम्पर्क, आपसीमेलजोल, पत्र व्यवहार 3. अध्ययन, (किसी वस्तु में) आसक्ति, स्थिर या निश्चित वृत्ति -काव्यार्थ० सा० द०।

परिशुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. पूर्ण शुद्धि, अग्नि° उत्तर० ४ 2. दोष-शुद्धि, रिहाई

परिशुष्क (भू० क० कृ०) [परि+शुष्+क्त] 1. पूरी तरह सूखा हुआ, सुखाया हुआ, तपाया हुआ, - तृपा महत्या परिशुष्कतालवः ऋतु० १।११ 2. मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ, (गालों की भांति) चिपका हुआ,- ष्कम् एक प्रकार का तला हुआ मांस।

परिशून्य (वि०) [प्रा० स०] बिलकुल खाली, रघु० ८।६६ 2. सर्वथा स्वतन्त्र, नितान्त शून्य - १९।६।

परिशृतः [परि+श्रु+क्त] तीक्ष्ण मदिरा।

परि (री) शेषः [परि+शिष्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. बचा हुआ, बाकी 2. परिशिष्ट 3. समाप्ति, उपसंहार, संपूर्ति।

परिशोधः, परिशोधनम् [परि+शुध्, घञ्, ल्युट्] 1. शुद्ध करना मांजना 2. छुटकारा, भारावतरण, (ऋण आदि का) भुगतान।

परिशोषः [परि+शुष्+घञ्] बिल्कुल सूख जाना, पूरी तरह भुन जाना।

परिश्रमः [परि+श्रम्+घञ्] 1. थकान, थक कर चूर २ होना, कष्ट, पीड़ा—आत्मा परिश्रमस्य पदमुपनीतः श० १, रघु० १।५८, ११।१२ 2. चेष्टा, उद्योग, गहन अध्ययन, लगातार व्यस्त रहना आर्ये कृतपरिश्रमोऽस्मि चतुःषष्टयंगे ज्योतिःशास्त्रे—मुद्रा० १।

परिश्रयः [परि+श्रि+अच्] 1. सम्मिलन, सभा 2. शरण, आश्रय।

परिश्रान्तिः (स्त्री०) [परि+श्रम्+क्तिन्] 1. थकान, ऊब, कष्ट, थक कर चूर चूर होना 2. उद्योग, चेष्टा।

परिश्लेषः [परि+श्लिष्+घञ्] आलिंगन।

परिषद् (स्त्री०) [परितः सीदन्ति अस्याम् परि+सद्+क्विप्] 1. सभा, सम्मिलन, मन्त्रणासभा, श्रोतृगण अभिरूपभूयिष्ठा परिषदियम्—श० १ 2. धर्मसभा, मीमांसासभा।

परिषदः, परिषद्यः [परितः सीदति—परि+सद+अच्, यत्] किसी सभा का सदस्य या मेंबर।

परिषेकः, परिषेचनम् [परि+सिच्+घञ्, ल्युट्] पानी छिड़कना या उडेलना, गीला या तर करना।

परिष्कण्ण (न्न) (वि०) [परि+स्कन्द्+क्त, णत्वं वा] दूसरे से पालित, —ण्णः पोष्यपुत्र, जिसे किसी अपरिचित न पाला पोसा हो।

परिष्कं (स्कम्) द (वि०) [परि+स्कन्द्+घञ्] दूसरे के द्वारा पाला गया, —दः 1. पोष्य पुत्र 2. भृत्य, सेवक।

परिष्कारः [परि+कृ+अप्, सुट्, षत्वम्] सजावट, अलंकृत करना।

परिष्कारः [परि+कृ+घञ्, सुट् षत्वम्] 1. सजावट, आभूषण, अलंकरण 2. पाचनक्रिया, खाना पकाना 3. दीक्षा, आरंभिक संस्कारों द्वारा पवित्रीकरण 4. (घर का) सामान ('परिस्कार' भी इस अर्थ में)।

परिष्कृत (भू० क० कृ०) [परि+कृ+क्त, सुट्, षत्वम्] 1. अलंकृत, सजाया हुआ—कि० ७।४० 2. पकाया गया, प्रसाधित किया गया 3. आरंभिक संस्कारों द्वारा अभिमन्त्रित (दे० परि पूर्वक 'कृ') ('परिस्कृत' भी इस अर्थ में)।

परिष्क्रिया [परि+कृ+श+टाप्, सुट्] अलंकरण सजावट, शृंगार।

परिष्टो (स्तो) मः [परि+स्तु+मन्, षत्वं वा] 1. हाथी की रंगीन झूल 2. आच्छादन, आवरण।

परिष्पं (स्पं) दः [परि+स्पंद्+घञ्, षत्वं वा] 1. नौकर-चाकर, अनुचर 2. (फूलों से) केश शृंगार 3. शृंगार, सजावट 4. धड़कन, थरथराहट, धकधक, स्पंदन 5. खाद्यसामग्री, संवर्धन 6. कुचलना।

परिष्वक्त (भू० क० कृ०) [परि+स्वंज्+क्त] परिरब्ध आलिंगित या आलिंगनबद्ध।

परिष्वंगः [परि+स्वंज्+घञ्] 1. आलिंगन—कि० १८।१९, हि० ३।६७ 2. स्पर्श, सम्पर्क, मेल-मिलाप —भर्तृ० ३।१७।

परिसंवत्सर (वि०) [ऊर्ध्वं संवत्सरात्—अव्य० स०] पूरा एक वर्ष का,—रः पूरा वर्ष, परिसंवत्सरात् पूरे एक वर्ष से ऊपर,—मनु० ३।११९।

परिसंख्या [परि+सम्+ख्या+अङ+टाप्] 1. गिनती संगणना 2. योगफल, जोड़, पूर्ण संख्या—गिरिस्थ विद्यापरिसंख्यया मे—रघु० ५।२१ 3. (मीमांसा० में) अपाकरण, विशेष विवरण, स्पष्ट रूप से बताई गई ऐसी सीमा जिससे कि विहित वस्तुओं से भिन्न सभी वस्तुओं का निषेध हो जाय; परिसंख्या-विधि (जो पहली बार विधान किया जाय) तथा नियम (विविध विकल्पों में से किसी विशेष विकल्प का चुनाव) का विपरीतार्थक शब्द; विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति, तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ परिसंख्येति गीयते। उदा० 'पंच पंचनखा भक्ष्याः' मीमांसको द्वारा बहुधा उद्धृत), मनु० ३।४५ पर कुल्लू०—अयं नियमविधिर्न तु परिसंख्या 4. (अलं० में) विशेष उल्लेख या एकान्तिक विशेष विवरण, अर्थात् जहाँ जाँच करके या बिना किसी पूछताछ के किसी बात की पुष्टि की जाय जिससे कि किसी अन्य वैसे ही वस्तु का अभिहित या अध्याहृत खंडन हो (श्लेष पर आधारित होने की स्थिति में यह अलंकार विशेष प्रभावोत्पादक होता है) यस्मिश्च महीं शासति चित्रकर्मसु वर्णसंकराश्चापेषु गुणच्छेदाः आदि या—यस्य नूपुरेषु मुखरता विवाहेषु करग्रहणं तुरंगेषु कशाभिघातः—का०, अन्य उदाहरणों के लिए देखो—सा० द० ७३५।

परिसंख्यात (भू० क० कृ०) 1. गिना हुआ, हिसाब लगाया हुआ 2. एकान्तिकरूप से विशिष्ट या निर्दिष्ट।

परिसंख्यानम् [परि+संख्या+ल्युट्] 1. गिनती, जोड़, पूर्णसंख्या 2. एकान्तिक विशेष निर्देश 3. सही अनुमान, ठीक अंदाजा।

परिसंचरः [परि+सम्+चर्+अच्] विश्वप्रलय का समय।

परिसमापन, परिसमाप्तिः (स्त्री०) [परि+सम्+आप्+ल्युट्, क्तिन्] समाप्त करना, पूरा करना।

परिसमूहनम् [परि+सम्+ऊह्+ल्युट्] 1. एकत्र करना, ढेर लगाना 2. (अग्नेः समन्तात् मार्जनम्) यज्ञाग्नि के चारों ओर (विशेष रीति से) जल छिड़कना।

परिसरः [परि+सृ+घ] 1. तट, किनारा, सामीप्य,

आसपास, पड़ौस, पर्यावरण (किसी नदी, पहाड़ या नगर का)—गोदावरीपरिसरस्य गिरेस्तटानि—उत्तर० ३।८, परिसरविषयेषु लीढमुक्ताः—कि० ५।३८, 2. स्थिति, स्थान 3. चौड़ाई, अर्ज 4. मृत्यु 5. नियम, विधि।

परिसरणम् [परि+सृ+ल्युट्] इधर-उधर दौड़ना।

परिसर्पः [परि+सृप्+घञ्] 1. इधर-उधर घूमना, 2. खोज में निकलना, पीछा करना, अनुसरण करना 3. घेरना, मण्डलाकार करना।

परिसर्पणम् [परि+सृप्+ल्युट्] 1. चलना, रेंगना 2. इधर-उधर दौड़ना, उड़ना, भागना—पतंगपतेः परिसर्पणे च तुल्यः—मृच्छ० ३।२१।

परि (री) सर्या, परि (री) सारः [परि+सृ+श+यक् +टाप् घञ् वा पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] इधर उधर घूमना फिरना, प्रदक्षिणा, फेरी।

परिस्तरणम् [परि+स्तृ+ल्युट्] 1. बिछाना, फैलाना, इधर उधर बखेरना 2. आवरण, ढक्कन।

परिस्फुट (वि०) [प्रा० स०] 1. सर्वथा समतल, व्यक्त, स्पष्टगोचर 2. पूर्णविकसित, फूला हुआ, बढ़ा हुआ।

परिस्फुरणम् [परि+स्फुर्+ल्युट्] 1. कंपकंपी, थरथरी 2. कली का खिलना।

परिस्यंदः [परि+स्यन्द्+घञ्] 1. रसना, बूंद २ टपकना, चूना 2. बहाव, धारा 3. अनुचरवर्ग—दे० 'परिष्यंद'।

परिस्रवः [परि+स्रु+अप्] 1. बहना, बहाव 2. नीचे सरकना 3. नदी, निर्झर।

परिस्रावः [परि+स्रु+णिच्+अच्] निकास, निस्राव।

परिस्रुत् (स्त्री०)[परि+स्रु+क्विप्+तुक्,] 1.एक प्रकार की नशीली शराब 2. रिसना, टपकना, बहना।

परिस्रुता [परिस्रुत+टाप्] 1.एक प्रकार की मादक शराव 2. रिसना, टपकना, बहना।

परिहत (वि०) [परि+हन्+क्त] ढीला किया हुआ।

परिहरणम् [परि+हृ+ल्युट्] 1. छोड़ना, तजना, तिलांजलि देना 2. टालना, कतराना 3. निराकरण करना 4. पकड़ना, ले जाना।

परि (री) हारः [परि+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. छोड़ना, तजना, तिलांजलि देना, त्याग देना 2. हटाना, दूर करना जैसा कि 'विरोधपरिहार' में 4. निराकरण करना, निवारण करना 5. उल्लेख न करना, भूल, चूक 6. आरक्षण, गुप्त रखना 7. गाँव या नगर के चारों ओर सामान्य भूखण्ड—धनुः शतं परीहारो ग्रामस्य स्यात्समंततः—मनु० ८।२३७ 8. विशेष अनुदान, छूट, विशेषाधिकार, शुल्क से माफ़ी या छुटकारा मनु० ७।२०१ 9. तिरस्कार, अनादर 10. आपत्ति।

परिहाणिः (निः) (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. घटी, कमी, नुक़सान 2. मुर्झाना, क्षीण होना—रघु० १९।५०।

परिहार्य (वि०) [परि+हृ+घञ्] कतराये जाने के योग्य, टाले जाने के योग्य, जिससे बचा जाय, जिसे ले जाया जाय या दूर किया जा—र्यः कंकण।

परि(री)हासः [परि+हस्+घञ्] 1. मखौल, मज़ाक, हँसी, ठट्ठा—त्वराप्रस्तावोऽयं न खलु परिहासस्य विषयः—मा० ६।१४, परिहासपूर्वम्—मखौल में, हँसी दिल्लगी में—रघु० ६।८२—परिहासविजल्पितम्—श० २।१८, मखौल में कहा हुआ—परीहासाश्चित्राः सततमभवन् येन भवतः, वेणी० ३।१४, कु० ७।१९, रघु० ९।८, शि० १०।१२ 2. हँसी उड़ाना, उपहास करना। सम०—वेदिन् (पुं०) विदूषक, हंसोकड़ा, रसिक व्यक्ति।

परिहृत (भू० क० कृ०) [परि+हृ० क्त] 1. कतराया हुआ टाला हुआ 2. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 3. निराकृत, अपास्त (आरोप या आपत्ति आदि) 4. लिया हुआ, पकड़ा हुआ—दे० परिपूर्वक 'हृ'।

परीक्षकः [परि+ईक्ष्+ण्वुल्] परीक्षा लेने वाला, जाँच करने वाला, न्याय करने वाला।

परीक्षणम् [परि+ईक्ष्+ल्युट्] जाँच पड़ताल करना, परखना, इम्तहान लेना—मनु० ११११७।

परीक्षा [परि+ईक्ष्+अ+टाप्] 1. इम्तहान, जाँच, परख—पत्तने विद्यमानेऽपि ग्रामे रत्नपरीक्षा—मालवि० १, मनु० ९।१९ 2 (विधि में) जाँच-पड़ताल के विविध प्रकार।

परीक्षित् (पुं०) [परि+क्षि+क्विप्, तुक्, उपसर्गस्य दीर्घः] अर्जुन का पौत्र, अभिमन्यु का पुत्र, युधिष्ठिर के पश्चात् यही हस्तिनापुर की गद्दी पर बैठा; साँप द्वारा काटे जाने पर इसकी मृत्यु हुई। कहते हैं, इसी के राज्य से कलियुग का आरंभ हुआ।

परीक्षित (भू० क० कृ०) [परि+ईक्ष्+क्त] परखा किया, जाँच पड़ताल की गई—परीक्षितं काव्यसुवर्णमेतत्—विक्रम० १।२४।

परीत (भू० क० कृ०) [परि+इ+क्त] 1. घिरा हुआ, पर्यावृत 2. समाप्त हुआ, बीता हुआ 3. विगत, व्यतीत 4. पकड़ा हुआ, अधिकार में किया हुआ, भरा हुआ—कोपपरीतमानसम्—कि० २।२५, मुद्रा० ३।३०।

परीताप, परीपाक, परीवार, परीवाह, परीहास आदि—दे० 'परिताप' आदि।

परीप्सा [परि+आप्+सन्+अ+टाप्] 1. प्राप्त करने की इच्छा 2. जल्दी, शीघ्रता।

परीरम् [पृ+ईरन्] एक फल।

परीरणम् [परि+ईर्+ल्युट्] 1. कछुवा 2. छड़ी 3. पोशाक, वेशभूषा।

परीष्टिः (स्त्री०) [परि+इष्+क्तिन्] 1. अनुसंधान, पूछताछ, गवेषणा 2. सेवा, परिचर्या 3. आदर, पूजा, श्रद्धांजलि।

परुः [पृ+उ] 1. जोड़, गाँठ 2. अवयव, अंग 3. समुद्र 4. स्वर्ग, वैकुण्ठ, 5. पहाड़।

परुत् (अव्य०) [पूर्वस्मिन् वत्सरे-इति पूर्वस्य परभावः उत् च] गत वर्ष, पिछला साल।

परुद्वारः [ब० स०] घोड़ा।

परुष (वि०) [पृ+उषन्] 1. कठोर, रूखा, सख्त, कड़ा (विप० मृदु या श्लक्ष्ण) परुषं चर्म, परुषा माला-आदि 2. (शब्द आदि) कटु, अपभाषित, निष्ठुर, निष्करुण, क्रूर, निर्मम, (वाक्) —अपरुषा परुषाक्षर-मीरिता—रघु० ९।८, पंच० १।५०, (व्यक्ति भी) गीत० ९, याज्ञ० १।३०९ 3. (शब्द) कर्णकटु, अरुचिकर—तेन वज्रपरुषस्वनं धनुः रघु० ११।४६, मेघ० 4. रूखा, स्थूल, खुरदरा, (बाल) मैला-कुचैला शुद्धस्नानात्परुषमलकं—मेघ० १९ 5. तीक्ष्ण, प्रचण्ड, मजबूत, उत्सुक, (वायु आदि) वेधक—परुषपवनवेगोत्क्षिप्तसंशुष्कपर्णः—ऋतु० १।२२, २।२८ 6. ठोस, गाढ़ा 7. मलिन, मैला, —षम् कठोर या दुर्वचनयुक्त भाषण, अपभाषण। सम०—इतर (वि०) जो रूखा न हो, कोमल, मृदु—रघु० ५।६८,—उक्तिः—वचनम् अपभाषित।

परुस् (नपुं०) [पृ+उस्] 1. सन्धि, ग्रन्थि, जोड़, गाँठ 2. अवयव, शरीर का अंग।

परेत (भू० क० कृ०) [परा+इ+त] दिवंगत, मृत्युप्राप्त, मृत—तः प्रेत, भूत। सम०—भर्तृ, —राज् (पुं०) मृत्यु का देवता, यमराज शि० १।५७,—भूमिः (स्त्री०),—वासः कब्रिस्तान कु० ६८।

परेद्यवि, परेद्युः (अव्य०) [परस्मिन् अहनि, नि० साधु०] दूसरे दिन, और दिन।

परेष्टुः (स्त्री०), परेष्टुका [परा+इष्+तु, परेष्टु+कन्+टाप्] वह गाय जो कई बार ब्या चुकी हो।

परोक्ष (वि०) [अक्ष्णः परम्—अ० स०] 1. दृष्टिपरास से परे, या बाहर, जो दिखाई न दे, अगोचर 2. अनुपस्थित—स्थाने वृता भूपतिभिः परोक्षैः—रघु० ७।१३ 3. गुप्त, अज्ञात, अपरिचित परोक्षमन्मथो जनः—श० २।१८, 'काम के प्रभाव से अपरिचित' —हि० प्र० १०,—क्षः सन्यासी,—क्षम् 1. अनुपस्थिति अगोचरता 2. (व्या० में) भूतकाल (जो वक्ता ने न देखा हो) परोक्षे लिट्—पा० ३।२।११५, 'परोक्ष' के कर्म०, तथा अधि० के ए० व०—(अर्थात् परोक्षम्, परोक्षे) 'अनुपस्थिति में' 'दृष्टि से परे' 'पीठ पीछे' अर्थ को प्रकट करने के लिए क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं (संब० के बिना, या साथ)—परोक्षे खलीकर्तुं शक्यते न ममाग्रतः—मालवि० २, परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्—चाण० १८, नोदाहरेदस्य नाम परोक्षमपि केवलम्—मनु० २।१९९। सम०—भोगः स्वामी की अनुपस्थिति में किसी वस्तु का उपभोग,—वृत्ति (वि०) आँखों से दूर रहने वाला (त्तिः—स्त्री०) अदृष्ट और अज्ञात जीवन।

परोष्टिः, परोष्णी [पर+उष्+क्तिन् परः शत्रुः उष्णो यस्याः ब० स०] तेलचट्टा (झींगुर के आकार काले रंग का एक कीड़ा)।

पर्जन्यः [पृष्+शन्य, नि० षकारस्य जकारः] 1. बरसने वाला मेघ, गरजने वाला बादल, बादल या मेघ—प्रवृद्ध इव पर्जन्यः सारंगैरभिनंदितः—रघु० १७।१५, यंतु नदयो वर्षंतु पर्जन्याः—तै० सं०, मृच्छ० १०।६० 2. वारिश, अन्नाद्भवंति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः भग० ३।१४ 3. वृष्टि का देवता अर्थात् इन्द्र।

पर्ण् (चुरा० उभ०—पर्णयति-ते) हराभरा करना—वसंतः पर्णयति चम्पकम्।

पर्णम् [पर्ण्+अच्] 1. पंख, बाजू जैसा कि 'सुपर्ण' में 2. बाण का पंख 3. पत्ता 4. पान का पत्ता,—र्णः ढाक का पेड़। सम०—अशनम् पत्ते खाकर जीना (नः) बादल,—असिः काली तुलसी,—आहार (वि०) पत्ते खाकर निर्वाह करने वाला,—उटजम् पत्तों की कुटिया, साधुओं की झोपड़ी, आश्रम,—कारः पनवाड़ी, तमोली, पान बेचने वाला,—कुटिका,—कुटी पत्तों की बनी कुटिया,—कृच्छ्रः प्रायश्चित्त संबंधी साधना जिसमें प्रायश्चित्तकार को पाँच दिन तक पत्ते और कुशाओं का काढ़ा पीकर रहना पड़ता है, दे० याज्ञ० ३।३१७, इसके ऊपर मिताक्षरा भी,—खंडः फूलपत्तों के बिना वृक्ष (—डम्) पत्तों का ढेर,—चीरपटः शिव का विशेषण,—चोरकः एक प्रकार का सुगंध द्रव्य,—नरः पत्तों से बनाया गया पुतला जो अप्राप्त शव की जगह रखकर जलाया जाता है,—भेदिनी प्रियंगुलता, —भोजनः बकरी,—मुच् (पुं०) जाड़े की मौसम, शिशिर ऋतु,—मृगः वृक्षों की शाखाओं पर रहने वाला जंगली जानवर,—रुह् (पुं०) वसंत ऋतु,—लता पान की बेल—,वीटिका पान का बीड़ा,—शय्या पत्तों की सेज,—शाला पत्तों की बनी कुटिया, साधुओं का—आश्रमनिर्दिष्टां कुलपतिना स पर्णशालामध्यास्य—रघु० १।९५, १२।४०।

पर्णल (वि०) [पर्ण+लच्] पत्तों से भरा हुआ, पत्तों वाला—भट्टि० ६।१४३।

पर्णसिः [पृ+असि, पुक्] 1. पानी के मध्य खड़ा भवन, ग्रीष्म भवन 2. कमल 3. शाक सब्जी 4. सजावट, प्रसाधन, शृंगार।

पर्णिन् (पुं०) [पर्ण+इनि] वृक्ष।

पर्णिल (वि०) [पर्ण+इलच्] दे० 'पर्णल'।
पर्द् (भ्वा० आ०-पर्दते) पाद मारना, अपानवायु छोड़ना।
पर्दः [पर्द्+अच्] 1. केश समूह, घना बाल 2. पाद, अपान वायु।
पर्पः [पृ+प] 1. नया उगा घास 2. पंगु-पीठ, पंगुगाड़ी —येन पीठेन पंगवश्चरंति स पर्पः—पा० ४।४।१० पर सिद्धा० 3. घर।
पर्परीकः [पृ+ईकन्] 1. सूर्य 2. आग 3. जलाशय, तालाब।
पर्यक् (अव्य०) [परि+अंच्+क्विप्] चारों ओर, सब दिशाओं में।
पर्यंकः [परिगतः अङ्कम्-अत्या० स०] 1. खाट, पलंग, सोफा 2. अरूमाली 3. समाधि-अवस्था में योगी के बैठने की विशेष अंगस्थिति—योगासन 4. वीरासन —वसिष्ठ द्वारा दी गई परिभाषा—एकं पादमथैकस्मिन् विन्यस्योरौ तु संस्थितम्, इतरस्मिंस्तथैवोरुं वीरासनमुदाहृतम्। पर्यंकग्रंथिबंध आदि—मृच्छ० १।१। सम०—बंधः जांघ के सहारे बैठने की स्थिति जिसे 'पर्यंक' कहते हैं, पर्यंकबंधस्थिरपूर्वकायम् —कु० ३।४५,५९,—भोगिन् (पुं०) एक प्रकार का सांप।
पर्यटनम्, पर्यटितम् [परि+अट्+ल्युट्, क्त वा] घूमना, इधर उधर भ्रमण करना, यात्रा करना।
पर्यनुयोगः [परि+अनु+युज्+घञ्] किसी उक्ति का खंडन करने के उद्देश्य से पूछताछ (दूषणार्थं जिज्ञासा —हला०) एतेनास्यापि पर्यनुयोगस्यानवकाशः—दाय०।
पर्यंत (वि०) [प्रा० स०] से सीमा बद्ध, तक फैला हुआ —समुद्रपर्यंता पृथिवी—समुद्र की सीमा से आबद्ध पृथ्वी,—तः 1. आवर्त, परिधि 2. गोट, किनारा, मगजी, चरमसीमा, हद—उटजपर्यंतचारिणी—श० ४, पर्यन्तवनम्—रघु० १३।३८ ऋतु० ३।३ 3. पार्श्व, कक्ष—रत्न० २।३, रघु० १८।४३ 4. अन्त, उपसंहार, समाप्ति—पंच० ११।२५। सम०—देशः—भूः, —भूमिः मिला हुआ या जुड़ा हुआ प्रदेश,—पर्वतः संलग्न पहाड़।
पर्यंतिका [प्रा० स०] अच्छे गुणों की हानि, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन।
पर्ययः [परि+इ+अच्] क्रान्ति, पतन, निःश्वास—कालपर्ययान्—याज्ञ० ३।२१७, मनु० १।३०, ११।२७ 2. (समय की) बर्बादी, या खोना 3. परिवर्तन, अदल-बदल 4. उलट-पुलट, अव्यवस्था, अनियमितता 5. शास्त्रीय मर्यादा का अतिक्रमण, कर्तव्य की अवहेलना 6. विरोध।
पर्ययणम् [परि+अय्+ल्युट्] 1. चारों ओर घूमना, प्रदक्षिणा 2. घोड़े की जीन।
पर्यवदात (वि०) [प्रा० स०] पूरी तरह शुद्ध और पवित्र।
पर्यवरोधः [प्रा० स०] बाधा, विघ्न।
पर्यवसानम् [प्रा० स०] 1. अन्त, समाप्ति, उपसंहार 2. निर्धारण, निश्चयन।
पर्यवसित (भू० क० कृ०) [परि+अव+सो+क्त] 1. समाप्त किया गया, अन्त तक किया हुआ, पूरा किया हुआ 2. नष्ट, लुप्त 3. निर्धारित।
पर्यवस्था, पर्यवस्थानम् [परि+अव+स्था+अङ्+टाप्, ल्युट् वा] 1. विरोध, मुकाबला, बाधा 2. वैपरीत्य।
पर्यश्रु (वि०) [प्रा० ब० स०] आँसुओं से भरा हुआ, अश्रुपरिप्लावित, आँसू बहाने वाला, अश्रुयुक्त—पर्यश्रुणी मंगलभंगभीरुर्न लोचने मीलयितुं विषेहे—कि० ३।३६, पर्यश्रुरस्वजत मूर्धनि चोपजघ्रौ—रघु० १३।७०।
पर्यसनम् [परि+अस्+ल्युट्] 1. फेंकना, इधर-उधर डालना 2. भेजना, धकेलना 3. भेज देना, 4. स्थगित करना।
पर्यस्त (भू० क० कृ०) [परि+अस्+क्त] 1. इधर उधर फेंका गया, बखेरा गया —पर्यस्तो धनंजयस्योपरि शिलीमुखासारः वेणी० ४, शि० १०।११ 2. घेरा हुआ, मण्डलाकृतः 3. उलटाया गया, उथला हुआ 4. पदच्युत, एक ओर रक्खा हुआ 5. प्रहार किया हुआ, चोट पहुंचाया हुआ, मारा हुआ।
पर्यस्तिः (स्त्री०) पर्यस्तिका [परि+अस्+क्तिन्, पर्यस्ति+कन्+टाप्] वीरासन, पलंग।
पर्याकुल (वि०) [प्रा० स०] 1. मैला, गंदा (पानी आदि) 2. अव्यवस्थित, उद्विग्न, भयभीत—श० १ 3. क्रमहीन, अव्यवस्थित, उथल-पुथल—श० १।३० 4. उत्तेजित, क्षुब्ध, घबराया हुआ—पर्याकुलोऽस्मि —श० ६, ऋतु० ६।२२ 5. भरा हुआ, पूरा—स्नेह°, क्रोध° आदि।
पर्याणम् [परि+या+ल्युट्, पृषो०] जीन, काठी—दत्तपर्याणम्—का० १२६, जीन कसा हुआ।
पर्याप्त (भू० क० कृ०) [परि+आप्+क्त] 1. प्राप्त किया हुआ, हासिल किया हुआ, उपलब्ध 2. समाप्त किया हुआ, पूरा किया हुआ 3. भरा हुआ, पूर्ण, समस्त, सारा, समग्र—पर्याप्त चन्द्रेव शरत्त्रियामा —कु० ७।२६, रघु० ६।४४ 4. योग्य, सक्षम, यथेष्ट रघु० १०।५५ 5. काफी, यथोचित—रघु० १५।१८, १७।१७ मनु० ११।७,—प्तम् (अव्य०) 1. स्वेच्छापूर्वक, तत्परता के साथ 2. ससन्तोष, काफी, यथेष्ट रूप से—पर्याप्तमाचामति उत्तर० ४।१, यथेच्छ पी लेता है 3. पूरी तरह से, योग्यतापूर्वक, सक्षमता के साथ।

पर्याप्तिः (स्त्री०) [परि+आप्+क्तिन्] 1. प्राप्त करना, अधिग्रहण 2. अन्त, उपसंहार, समाप्ति 3. काफी, पूर्णता, यथेष्टता 4. तृप्ति, संतोष 5. साधारण, प्रहार को रोकना 6. उपयुक्तता, सक्षमता ।

पर्यायः [परि+इ+घञ्] 1. चक्कर लगाना, क्रान्ति 2. (समय की) समाप्ति, व्यतीत होना, बीतना 3. नियमित परावर्तन, या आवृत्ति 4. बारी, उत्तराधिकार, उचित या नियमित क्रम -पर्याय सेवामुत्सृज्य —कु० २।३६, मनु० ४।८७, मुद्रा० ३।२७ 5. प्रणाली, व्यवस्था 6. तरीका, रीति, प्रक्रिया की प्रणाली 7. समानार्थक, पर्यायवाची पर्यायो निधनस्यायं निधनत्वं शरीरिणाम्—पंच० २।९९, पर्वतस्य पर्याया इमे—आदि 8. सृष्टि, निर्माण, तैयारी, रचना 9. धर्म, गुण 10. (अलं० में) एक अलंकार—दे० काव्य० १०, चन्द्रा० ५।१०८, १०९, सा० द० ७२३ (विशे० **पर्यायेण** क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ बताता है 1. बारी बारी से, उत्तरोत्तर, नंबरवार, नियमित क्रम से 2. यथावसर, कभी कभी —पर्यायेण हि दृश्यंते स्वप्नाः कामं शुभाशुभाः—वेणी० २।१३ । सम०—**उक्तम्** एक अलंकार, घुमाफिरा कर कहना, वक्रोक्ति या वाक्प्रपंच से कहने की रीति, जब बात को घुमा फिरा कर या वाग्जाल के साथ कहा जाय- उदा० दे० चन्द्रा० ५।६६, या सा० द० ७०३,—**च्युत** (वि०) गुप्त रूप से उखाड़ा हुआ, जिसका स्थान छलपूर्वक ले लिया गया है,—**वचनम्** —**शब्दः** समानार्थक,—**शयनम्** बारी २ सोना और चौकसी रखना ।

पर्याली (अव्य०) [परि+आ+अल्+ई] हानि या क्षति को (हिंसन) अभिव्यक्त करने वाला अव्यय जो प्रायः कृ, भू था अस् से पूर्व लगाया जाता है यथा पर्यालीकृत्य=हिंसित्वा ।

पर्यालोचनम्,—**ना** [परि+आ+लोच्+ल्युट्] 1. सावधानता, समीक्षा, विचार, परिपक्व विमर्श 2. जानना, पहचानना ।

पर्यावर्तः, पर्यावर्तनम् [परि+आ+वृत्+घञ्, ल्युट् वा] वापिस आना, प्रत्यागमन ।

पर्याविल (वि०) [प्रा० स०] बड़ा गदला, मैला, मिट्टी में भरा हुआ —रघु० ७।४० ।

पर्यासः [परि+अस्+घञ्] 1. अन्त, उपसंहार, समाप्ति 2. परावर्तन, क्रान्ति 3. उलटा क्रम या स्थिति ।

पर्याहारः [परि+आ+हृ+घञ्] 1. बोझा ढोने के लिए कंधों पर रक्खा गया जूआ 2. ले जाना 3. बोझा, भार 4. घड़ा 5. अनाज को भंडार में रखना ।

पर्युक्षणम् [परि+उक्ष्+ल्युट्] बिना किसी मन्त्रोच्चारण के चारों ओर चुपचाप जल के छींटे देना ।

पर्युत्थानम् [परि+उद्+स्था+ल्युट्] खड़ा होना ।

पर्युत्सुक (वि०) [प्रा०स०] 1. शोक पूर्ण, खेद युक्त, खिन्न, दुःखद स्वम् शोक, रघु० ५।६७ 2. अत्यन्त इच्छुक, आतुर, सोत्सुक, प्रबल इच्छा रखने वाला—स्मर पर्युत्सुक एष माधवः—कु० ४।२८, विक्रम० २।१६ ।

पर्युदंचनम् [परि+उद्+अञ्च्+ल्युट्] 1. ऋण, उधार 2. उधार लेना, उठाना, उद्धार करना ।

पर्युदस्त (भू० क० कृ०) [परि+उद्+अस्+क्त] 1. बहिष्कृत किया हुआ, निकाला हुआ 2. रोका गया (नियमित) आपत्ति उठाई गई ।

पर्युदासः [परि+उद्+अस्+घञ्] अपवाद, निषेध सूचक नियम या विधि ।

पर्युपस्थानम् [परि+उप+स्था+ल्युट्] सेवा, टहल, उपस्थिति ।

पर्युपासनम् [परि+उप+आस्+ल्युट्] 1. पूजा, सम्मान, सेवा 2. मित्रता, शिष्टता 3. पास पास बैठाना ।

पर्युप्तिः (स्त्री०) [परि+वप्+क्तिन्] बोना, बीजना ।

पर्युषणम् [परि+उष्+ल्युट्] पूजा, अर्चा, सेवा ।

पर्युषित (वि०) [परि+वस्+क्त] बासी, जो ताजा न हो तु० 'अपर्युषित' 2. फीका 3. मूर्ख 4. घमंडी ।

पर्येषणम्,—**णा** [परि+इष्+ल्युट्] 1. तर्क द्वारा गवेषणा 2. खोज, सामान्य पूछ-ताछ 3. श्रद्धांजलि, पूजा ।

पर्येष्टिः (स्त्री०) [परि+इष्+क्तिन्] खोज, पूछताछ ।

पर्वकम् [पर्वणा ग्रन्थिना कायति—पर्वन्+कै+क] घुटने का जोड़ ।

पर्वणी [पर्व्+ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] 1. पूर्णिमा, या शुक्ल-प्रतिपदा 2. उत्सव 3. (आयु० में) आँख की संधि का विशेष रोग ।

पर्वतः [पर्व्+अचच्] 1. पहाड़, गिरि—परगुणपरमाणुन्पर्वतीकृत्य नित्यम्—भर्तृ० २।७८, न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति 2. चट्टान 3. कृत्रिम पहाड़ या ढेर 4. 'सात' की संख्या 5. वृक्ष । सम०—**अरिः** इन्द्र का विशेषण,—**आत्मजः** मैनाक पर्वत का विशेषण, —**आत्मजा** पार्वती का विशेषण,—**आधारा** पृथ्वी, —**आशयः** बादल,—**आश्रयः** शरभ नामक काल्पनिक जंतु,—**काकः** पहाड़ी कौवा,—**जा** नदी,—**पतिः** हिमालय पहाड़ का विशेषण,—**मोचा** पहाड़ी केला,—**राज्** (पुं०),—**राजः** 1. विशाल पहाड़, 2. पर्वतों का स्वामी हिमालय,—**स्थ** (वि०) पहाड़ी, पर्वत पर स्थित ।

पर्वन् (नपुं०) [पृ+वनिप्] 1. गांठ, जोड़ (बहुव्रीहि समास के अन्त में कभी कभी बदल कर 'पर्व' हो जाता है जैसा कि 'कर्कशांगुलिपर्वया—रघु० १२।४१' में 2. अवयव, अंग 3. अंश' भाग, खण्ड 4. पुस्तक,

अध्याय (जैसा कि महाभारत में 5. जीने की सीढ़ी —रघु० १६।४६ 6. अवधि, निश्चित समय 7. विशेषकर, चन्द्रमा के चार परिवर्तन अर्थात् दोनों पक्ष की अष्टमी पूर्णिमा तथा अमावस्या 8. चन्द्रमा के परिवर्तन काल के अवसर पर. अनुष्ठित यज्ञ 9. पूर्णिमा या अमावस्या,—अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमंडला विभावरी कथय कथं भविष्यति —मालवि० ४।१५, रघु० ७।३३ मनु० ४।१५०, भर्तृ० २।३४ 10. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 11. उत्सर्व, त्योहार, हर्ष का अवसर 12. सामान्य अवसर। सम०—कालः 1. चन्द्रमा का आर्वतिक परिवर्तन 2. वह काल जब चन्द्रमा पर्वसन्धि में से गुजरता है (मिलते या निकलते समय), —कारिन् (पुं०) वह ब्राह्मण जो अमावस्या आदि के आर्वतिक अनुष्ठान या संस्कारों को अपने लाभ के कारण सामान्य दिनों में करता है, —गामिन् (पुं०) पर्व आदि शास्त्र निषिद्ध अवसरों पर भी अपनी पत्नी से मैथुन करने वाला व्यक्ति,- धिः चन्द्रमा,—योनिः बेत, नरकुल,—रुह् (पुं०) अनार का वृक्ष,—संधिः पूर्णिमा या अमावस्या तथा प्रतिपदा के मध्य का समय, अर्थात् पूर्णिमा या अमावस्या की समाप्ति पर प्रतिपदा आरम्भ।

पर्शुः [परं शत्रुं शृणाति—पर+शृ+कु स च डित् वा स्पृशति शत्रून्—स्पृश्+शुन्, पृ आदेशः] 1. कुठार, कुल्हाड़ी—तु० 'परशु' 2. शस्त्र, हथियार। सम०—पाणिः 1. गणेश का विशेषण 2. परशुराम का विशेषण।

पर्शुका [पर्शु=कन्+टाप्+] पसली।

पश्वधः [=परश्व+धा+क, पृषो०] दे० 'परश्वध'।

पर्षद् (स्त्री०) [पृष्+अदि] 1. सभा, सम्मिलन, सम्मर्द 2. विशेषकर धर्मसभा—याज्ञ० १.९।

पलः [पल्+अच्] पुआल, भूसी,– लम् 1. मांस, आमिष 2. कर्ष का तोल 3. तरल पदार्थों को मापने का मान 4. समय मापने का मान। सम०—अग्निः पित्त, —अंगः कछुवा,—अदः,—अशनः पिशाच, राक्षस, —क्षारः रुधिर,—गंडः पलस्तर करने वाला, राज —प्रियः 1. राक्षस 2. पहाड़ी कौवा,—भा मध्याह्न की विषुवीय छाया—अर्थात् मध्याह्न के समय धूपघड़ी के कील की तत्कालीन छाया।

पलंकट (वि०)[पलं मांस कटति—पल्+कट्+खच्, मुम्] भीरु, बुजदिल।

पलंकरः [पलं मांसं करोति—पलम्+कृ+अच्, द्वितीया या अलुक्] पित्त।

पलंकषः [पलं कषति—पलम्+कष्+अच्, द्वितीयाया अलुक्] 1. राक्षस, पिशाच, दानव,- लम् 1. मांस 2. कीचड़, दलदल 3. पिसे हुए तिल व चीनी मिलाकर बनाई गई मिठाई, गजक। सम०—ज्वरः पित्त, —प्रियः 1. पहाड़ी कौवा 2. राक्षस।

पलवः [पल+वा+क] मछलियाँ पकड़ने का जाल या टोकरी।

पलांडु (पुं०, नपुं०) [पलस्य मांसस्य अंडमिव—पल+अंड्+कु] प्याज़—मनु० ५।५, याज्ञ० १।१७६।

पलापः [पलं मासम् आप्यते बाहुल्येन अत्र—पल+आप्+घञ्] 1. हाथी की पुटपुड़ी 2. पगहा, रस्सी।

पलायनम् [परा+अय्+ल्युट् रस्य लः] भागना, लौटना उड़ान, बच निकलना—भग० १८।४३, रघु० १९।३१

पलायित (भू० क० कृ०) [परा+अय्+क्त] भागा हुआ, लौटा हुआ, दौड़ा हुआ, बच निकला हुआ।

पलालः—लम् [पल+कालन्] पुआल, भूसी—नै० ८।२। सम०—दोहदः आम का वृक्ष।

पलालिः [पल+अल्+इन्] माँस का ढेर।

पलाशः [पल+अश्+अण्] एक वृक्ष, ढाक का पेड़—किंशुकनवपलाशपलाशवनम् पुरः—शि० ६।२,—शम् 1. इस वृक्ष का फूल—बालेंदुवक्राण्यविकाशभावाद्बभुः पलाशान्यतिलोहितानि - कु० ३।२९ 2. पत्ता, पंखड़ी —चलत्पलाशांतरगोचरास्तरोः—शि० १।२१, ६।२ 3. हरा रंग।

पलाशिन् (पुं०) [पलाश+इन्] ढाक का पेड़।

पलिक्नी [पलित+अच्, तस्य कन, ङीप्] 1.बूढ़ी स्त्री जिसके बाल सफेद हो गये हों 2. पहली बार ही ब्याई हुई गौ, बालगर्भिणी।

पलिघः [परि+हन्+अप्, घादेशः, रस्य लः] 1. शीशे का बर्तन, घड़ा 2. फसील, परकोटा 3. लोहे की गदा —तु० परिघ 4. गोशाला, गोगृह।

पलित (वि०) [पल्+क्त] भूरा, धवल, सफेद बालों वाला, वृद्ध, बूढ़ा, तातस्य मे पलितमौलिनिरस्तकाशे (शिरसि)—वेणी० ३।१९—तम् 1. सफेद बाल या बालों की सफेदी जो बुढ़ापे के कारण हुई हो—कैकेयीशंकयेवाह पलितच्छद्मना जरा रघु० १२।२, मनु० ६।२ 2. अधिक या अलंकृत केश।

पलितंकरण (वि०) [अपलितं पलितं क्रियतेऽनेन पलित+कृ+ख्युन्, मुम्] सफेद करने वाला।

पलितंभविष्णु (वि०) [अपलितः पलितो भवति—पलित+भू+खिष्णुच्, मुम्] सफेद होने वाला।

पल्यंकः [परितः अंक्यतेऽत्र, परि+अंक्+घञ्, रस्य लः] पलंग, खाट— दे० पर्यंक।

पल्ययनम् [परि+अय्+ल्युट्, रस्यलः] 1. जीन, काठी 2. रास, लगाम।

पल्लः [पल्ल्+अच्] अनाज का बड़ा भंडार, खत्ती।

पल्लवः—वम् [पल्+क्विप्=पल्, लू+अप्=लव, पल् चासौ लवश्च कर्म० स०] 1. अंकुर, कोंपल, टहनी

—करपल्लवः, लतेव संनद्धमनोज्ञपल्लवा—रघु० १।७ 2. कली, मंजरी 3. विस्तार, फलाव, अभिस्तृति 4. लालरंग, महावर, अलक्त 5. सामर्थ्य, शक्ति 6. घास की पत्ती 7. कंकण, बाज़ूबंद 8. प्रेम, केलि 9. चञ्चलता,—वः स्वेच्छाचारी। सम०—अंकुरः, —आधारः शाखा,—अस्त्रः कामदेव का विशेषण, —द्रुः अशोक वृक्ष।

पल्लवकः [पल्लव+कै+क] 1. स्वेच्छाचारी 2. लौंडा, गांडू 3. रंडी का प्रेमी 4. अशोक वृक्ष 5. एक प्रकार की मछली 6. अंकुर।

पल्लविकः [पल्लवः शृंगारो रसः अस्ति अस्य—पल्लव+ठन्] 1. स्वेच्छाचारी, रसिया 2. लौंडा, बांका, छैल।

पल्लवित (वि०) [पल्लव+इतच्] 1. अंकुरित होने वाला, नई २ कोंपलों से युक्त 2. फैला हुआ, विस्तृत —अलं पल्लवितेन 'बस रहने दो और अधिक विस्तार' 3. लाख से लाल रंग हुआ—तः लाखका रंग।

पल्लविन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पल्लव+इनि] 1. नई २ कोंपलों से युक्त, नये किसलयों वाला—कु० ३।५४, —(पुं०) वृक्ष।

पल्लिः,—पल्ली (स्त्री०) [पल्ल्+इन्, पल्लि+ङीष्] 1. छोटा गांव, 2. झोंपड़ी 3. घर, पड़ाव 4. एक नगर या क़स्बा (नगरों के नामों के अन्त में प्रयुक्त जैसे कि त्रिशिरपल्लि) 5. छिपकली।

पल्लिका [पल्लि+कन्+टाप्] 1. छोटा गाँव, पड़ाव 2. छिपकली।

पल्वलम् [पल्+ववच्] छोटा तालाब, छप्पड़, जोहड़, तडाग (अल्पं सरः) स पल्वलजलेऽधुना कथं वर्तताम्—भामि० १।३, रघु० २।१७,३।३,। सम० —आवासः कछुवा—पंकः छप्पड़ का गारा, कीचड़।

पवः [पू+अप्] 1. वायु 2. पवित्रीकरण 3. अनाज फटकना—वम् गोबर।

पवनः [पू+ल्युट्] हवा, वायु सर्पाः पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते—सुभा०, पवनपदवी, पवनसुतः आदि—नम् 1. पवित्रीकरण 2. फटकना 3. चलनी, झरना 4. पानी 5. कुम्हार का आवा (पुं० भी)—नी झाड़। सम०—अशनः—भुज् (पुं०) साँप,—आत्मजः 1. हनुमान का विशेषण 2. भीम का विशेषण 3. आग,—आशः साँप, सर्प,—नाशः 1. गरुड़ का विशेषण 2. मोर, —तनयः,—सुतः 1. हनुमान् का 2. भीम का विशेषण, —व्याधिः 1. कृष्ण के सलाहकार और मित्र उद्धव का विशेषण 2. गठिया।

पवमानः [पू+शानच्, मुक्] 1. हवा, वायु—पवमानः पृथिवीरुहानिव—रघु० ८।९ 2. एक प्रकार की यज्ञाग्नि जिसे गार्हपत्य कहते हैं।

पवाका [पू+आप्, नि० साधुः] बवंडर, आँधी, झंझावात।

पविः [पू+इ] इन्द्र का वज्र।

पवित (वि०) [पू+क्त] पवित्र किया हुआ, छाना हुआ—तम् काली मिर्च।

पवित्र (वि०) [पू+इत्र] 1. पुनीत, पावन, निष्पाप, पवित्रीकृत (व्यक्ति या वस्तुएँ)—त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः—मनु० ३।२३६, पवित्रो नरः, पवित्रं स्थानम् आदि 2. शुद्ध, छना हुआ 3. यज्ञादि के अनुष्ठानों द्वारा पवित्र किया गया 4. पवित्र करना, पाप धोना,—त्रम् 1. छानने या शुद्ध करने का उपकरण, चलनी, झरना 2. कुश की दो पत्तियाँ जो यज्ञ में घी को पवित्र करने तथा छींटे देने के काम आती हैं 3. कुशा की बनी अंगूठी जो कई धार्मिक अवसरों पर चौथी अँगुली में पहनी जाती है 4. जनेऊ जो हिन्दुजाति के प्रथम तीन वर्ण पहनते हैं 5. ताँबा 6. वृष्टि 7. जल 8. रगड़ना, मांजना 9. अर्घ्य देने का पात्र 10. घी 11. शहद, मधु। सम०—आरोपणम्, —आरोहणम् यज्ञोपवीत धारण करने का संस्कार, उपनयन संस्कार,—पाणि (वि०) दर्भघास को हाथ से थामने वाला,—धान्यम् जौ।

पवित्रकम् [पवित्र+कै+क] सन या सुतली का बना जाल या रस्सा।

पशव्य (वि०) [पशु+यत्] 1. मवेशियों (गाय भैंसों आदि) के लिए उचित या उपयुक्त—याज्ञ० १।३२१ 2. पशुओं से या रेवड़ या लहंड़े से संबंध रखने वाला 3. पशुओं का स्वामी 4. पशुतापूर्ण।

पशुः [सर्वमविशेषेण पश्यति—दृश्+कु, पशादेशः] 1. मवेशी, (एक या समष्टि)—मनु० ३२७, ३३१ 2. जानवर 3. बलिपशु जैसे कि बकरा 4. नृशंस, जंगली, तिरस्कार प्रकट करने के लिए नर' वाचक शब्दों के साथ जोड़ा जाता है—पुरुषपशोश्चपशोश्च को विशेषः—हि० १, तु० नृपशु, नरपशु 5. एक उपदेवता, शिव का एक अनुचर। सम०—अवदानम् पशुबलि —क्रिया 1. बलियज्ञ की प्रक्रिया 2. स्त्रीप्रसंग,—गायत्री वह मन्त्र जो कि बलिके पशु के कान में बोला जाता है, यह प्रसिद्ध गायत्रीमंत्र हास्यमय अनुकृति है—पशुपाशाय विग्रहे शिरश्छेदाय (विश्वकर्मणे) धीमहि, तन्नो जीवः प्रचोदयात्,—घातः यज्ञ के लिए पशुओं का वध,—चर्या सहवास, स्त्री प्रसंग,—धर्मः 1. पशुओं की प्रकृति या लक्षण 2. पशुओं की चिकित्सा 3. स्वच्छन्द मैथुन—मनु० ९।६६ 4. विधवाविवाह, —नाथः शिव का विशेषण,—पः ग्वाला—पतिः 1. शिव का विशेषण मेघ० ३६, ५६, कु० ६।९५ 2. ग्वाला, पशुओं का स्वामी 3. 'पाशुपत' नामक दार्शनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाला दर्शन शास्त्र

—दे० सर्व,—पालः—पालकः ग्वाला, पशुओं का पालन करने वाला,—पालनम्,—रक्षणम् पशुओं को पालना, रखना,—पाशकः एक प्रकार का रतिबन्ध या मैथुन प्रकार,—प्रेरणम् पशुओं को हांकना,—मारम् (अव्य०) पशुवध की रीति के अनुसार—इष्टिपशुमारं मारितः श० ६,—यज्ञः,—यागः,—द्रव्यम् पशु यज्ञ,—रज्जुः (स्त्री०) पशुओं को सँभालने के लिए रस्सी,—राजः सिंह, केसरी।

पश्चात् (अव्य०) [अपर+अति, पश्चभावः] 1. पीछे से, पिछली ओर से —पश्चाद्वृद्धपुरुषमादाय—श० ६, पश्चादुच्चैर्भवति हरिणः स्वांगमायच्छमानः—श० ४, (पाठान्तर) 2. पीछे, पीछे की ओर, पीछे की तरफ (विप० पुरः) गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः—श० १।३३, ३।७ 3. (समय और स्थान की दृष्टि से) बाद में, तब, इसके बाद, उसके अन्तर —लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्—भर्तृ० २।६०, तस्य पश्चात्—उसके बाद—रघु० ४।३०, १२।७, १७।३९, १६।२९, मेघ० ३६, ४४ 4. आखिरकार, अन्त में, अन्ततोगत्वा 5. पश्चिम से 6. पश्चिम की ओर, पश्चिम दिशा की तरफ। सम०—कृत (वि०) पीछे छोड़ा हुआ, आगे बढ़ा हुआ, पृष्ठभूमि में फेंका हुआ—पश्चात्कृताः स्निग्धजनाशिषोऽपि—कु० ७।२८, रघु० १७।१८,—तापः पछताना, ग्लानि, पछतावा °पं कृ पछताना।

पश्चार्धः [अपरश्चासौ अर्धः, कु० स०, अपरस्य पश्चभावः] (शरीर का) पिछला भाग, या पार्श्व—पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम्—श० १।७ 2. (समय और देश की दृष्टि से) अन्तिम —पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य का० २५, रघु० १९।१, ५६, - पश्चिमाद्यामिनीयामात् प्रसादमिवचेतना—रघु १७।१, स्मरतः पश्चिमामाज्ञां १७।८, पत पश्चिमयोः पितुः पादयोः—मुद्रा० ७ 3. पश्चिमी, पश्चिमी ढंग का—मनु० २।२२, ५।९२ (**पश्चिमेन**) क्रियाविशेषण के रूप में "पश्चिम में" 'बाद में' 'पीछे' अर्थों को प्रकट करने लिए, कर्म० या संबंध के साथ प्रयुक्त, इसी प्रकार—पश्चिम में। सम०—**अर्धः** 1. उत्तरार्ध 2. रात का पिछला पहर 3. रात्रि का पिछला भाग उपारताः पश्चिमरात्रगोचरात्—कि० ४।१०, (पाठान्तर)।

पश्चिमा [पश्चिम+टाप्] पश्चिम दिशा। सम० —उत्तरा उत्तरपश्चिम।

पश्यत् (वि०) (स्त्री०—न्ती) [दृश्+शतृ, पश्यादेशः] देखने वाला, प्रत्यक्ष ज्ञान करने वाला, अवलोकन करने वाला, दृष्टिपात करने वाला, निरीक्षण करने वाला आदि।

पश्यतोहरः [पश्यन्तं जनम् अनादृत्य हरति-हृ+अच्, ष० तं० अलुक् समासः] चोर, लुटेरा, डाकू (वह व्यक्ति जो दूसरों की आंखों के सामने ही या स्वामी के देखते रहने पर भी चोरी कर लेता है, जैसे सुनार)।

पश्यंती [दृश्+शतृ, पश्यादेशः, नुम्] 1. वेश्या, रंडी 2. विशेष—प्रकार की ध्वनि।

पस्त्यम् [अपस्त्यायन्ति संगीभूय तिष्ठति यत्र—अप+स्त्यै+क नि० अंकारलोपः] घर, निवास, आवास पस्त्यं प्रयातुमथ तं प्रभुरापपृच्छे कीर्ति० ९।७४।

पस्पशः (पुं०) पतंजलिप्रणीत महाभाष्य के प्रथम अध्याय का प्रथम आह्निक—शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा—शि० २।११२, (यहाँ 'अपस्पश' का अर्थ है 'विना गुप्त चरों के') 2. प्रस्तावना, उपाद्धोत।

पह्लः (ह्ल) वाः, पह्लिकः (पुं० ब० व०) एक जाति का नाम, संभवतः पर्शिया देशवासी!

पा i (भ्वा० पर० पिबति, पति, कर्मवा० पीयते) 1. पीना, एक सांस में चढ़ा जाना पिब स्तन्यं पोत —भामि० १।६०, दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः—वेणी० १।१५, रघु० ३।५४, कु० ३।३६, भट्टि० १४।९२, १५।६ 2. चूमना पिबत्यसौ पाययते च सिंधूः—रघु० १३।९, श० १।२४ 3. चिंतन करना (आंख और कान से पीना), उत्सव मनाना, ध्यान पूर्वक सुनना—निवातपद्मस्तिमितेन चक्षुषा नृपस्य कांतं पिबतः सुताननम् रघु० ३।१७, २।१९,७३, ११।३६, १३।३०, मेघ० १६, कु० ७।६४ 5. अवशोषण करना, पो जाना (बाणैः) आयुर्देहातिगैः पीतं रुधिरं तु पतत्रिभिः—रघु० १२।४८, प्रेर०—पाययति —ते, 1. पिलाना, पीने के लिए देना,—रघु० १३।९ भट्टि० ८।४१, ६२ 2. सींचना,—इच्छा० पिपासति, पीने की इच्छा करना—हलाहलं खलु पिपासति कौतुकेन—भामि० १।९५ अनु —, बाद में पीना, अनुसरण करना—अनुपास्यसि वाष्पदूषितं परलोकनतं जलांजलिम—रघु० ८।६८, आ—, 1. पीना—रघु० १४। २२ 2. पी जाना, अवशोपण करना, चूस लेना —आपीतसूर्यं नमः—मृच्छ० ५।२० उपेति सविता ह्यस्तं रसमापीय पार्थिवम्—महा०, 3. (आंख, कान से) पीने का उत्सव मनाना,—ता राघवं दृष्टिभिरापिबंत्यः रघु० ७।१२, नि—, 1. पीना, चूमना—अत एव निपीयतेऽधरः पंच० १।१८९, दंतच्छदं प्रियतमेन निपीतसारम्—मनु० ४।१३ 2. (आंख या कान से) पीना, सौन्दर्यावलोकन करना, परि—,आत्मसात् करना—उपनिषदः परिपीताः भामि० २।४०, ii (अदा० पर०—पाति, पात) 1. रक्षा करना, देखभाल करना, चौकसी रखना, बचाना, संधारण करना —(प्रायः अपा० के साथ) पर्याप्तोऽसि प्रजाः पातुम्

—रघु० १०।२५, पांतु त्वां""भूतेशस्य भुजंगवल्लिवलयस्रङ्नद्ध—जूटाजटाः—मा० १।२, जीवन् पुरः शश्वदुपप्लवेभ्यः प्रजाः प्रजानाथ पितेव पासि—रघु० २।४८ 2. हुकूमत करना, शासन करना—पांतु पृथ्वीम्'''भूपाः—मृच्छ० १०।६०, प्रेर० पालयति—ते 1. रक्षा करना, देखभाल करना, चौकसी रखना, संधारण करना—कथं दुष्टः स्वयं धर्मे प्रजास्त्वं पालयिष्यसि—भट्टि० ६।१३२, मनु० ९।१०८ रघु० ९।२ 2. हुकूमत करना, शासन करना—तां पुरीं पालयामास—रामा० 3. पालन करना, स्थिर रखना, अनुपालन करना, पूरा करना (प्रतिज्ञा, व्रत आदि), पालितसंगराय—रघु० १३।६५ 4. पालन पोषण करना, संवर्धन करना, स्थापित रखना 5. प्रतीक्षा करना—अत्रोपविश्य मुहूर्तमार्यः पालयतु कृष्णागमनम्—वेणी० 1. अनु—1. बचाना, संधारण करना, देखभाल करना, रक्षा करना मनु० ८।२७, **परि**—, 1. बचाना, संधारण करना, देखभाल करना, रक्षा करना—याज्ञ० १।३३४ मनु० ९।२५१ 2. हुकूमत करना, शासन करना,—मा० १०।२५ 3. पालन-पोषण करना, संवर्धन करना, सहारा देना 4. स्थिर रखना, पालन करना, जमे रहना, धैर्य रखना—अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयंति—चौर० ५० 5. प्रतीक्षा करना, इंतजार करना—अथ मदनवधूरुपप्लवांतं व्यसनकृशा परिपालयांबभूव—कु० ४।४६, **प्रति**—, 1. बचाना, संधारण करना 2. प्रतीक्षा करना, इंतजार करना, 3. अमल करना, आज्ञा मानना।

पा (वि०) (समास के अन्त में) [पा+विच्] 1. पीने वाला, चढ़ा जाने वाला—जैसा कि सोमपाः, अग्रेपाः में 2. बचाने वाला, देखभाल करने वाला, स्थिर रखने वाला—गोपा।

पांस (श) न (वि०) (स्त्री०—ना,—नी) [प्रायः समास के अन्त में) [पंस् (श्)+ल्युट्, पृषो० दीर्घः] कलंकित करने वाला, अपमानित करने वाला, दूषित करने वाला—पौलस्त्यकुलपांसन महावी० ५ 2. विपाक्त करने वाला, भ्रष्ट करने वाला 3. दुष्ट, तिरस्करणीय 4. बदनाम, कुख्यात।

पांस (श) व (वि०) [पांसु (शु)+अण्] धूल से भरा हुआ।

पांसुः (शुः) [पंस् (श्)+कु, दीर्घः] 1. धूल, गर्द, चूरा (जीर्ण होकर गिरने वाला)—रघु० २।२, ऋतु० १।१३, याज्ञ० १।१५० 2. धूलकण 3. गोबर, खाद 4. एक प्रकार का कपूर। सम०—**कासीसम्** कसीस, —**कुली** प्रशस्त पथ, राजमार्ग,—**कूलम्** 1. धूल का ढेर 2. ऐसा कानूनी दस्तावेज जो किसी व्यक्ति विशेष के नाम न हो, निरुपपदशासन,—**कृत** (वि०) धूल से भरा हुआ,—**क्षारम्**,—**जम्** एक प्रकार का नमक,—**चत्वरम्** ओला,—**चंदनः** शिव का विशेषण, —**चामरः** 1. धूल का ढेर 2. तंबू 3. दूब से ढका नदीतट 4. प्रशंसा,—**जालिकः** विष्णु का विशेषण, —**पटलम्** धूल की परत या तह,—**मर्दनः** पेड़ की जड़ों के पास चारों ओर से खोद कर पानी सींचने का स्थान, आलवाल, थांवला।

पांसु (शु) **रः** [पांसु (शु)+रा+क] 1. डांस, गोमक्खी 2. विकलांग, लुंजा जो गाड़ी में बैठकर इधर उधर घूमे।

पांसु (शु) **लः** (वि०) [पांसु (शु)+लच्] 1. धूल से भरा हुआ धूलिधूसरित—मा० २।४ 2. अपवित्र, दूषित, कलुषित, कलंकित—दारत्यागी भवाम्याहो परस्त्रीस्पर्शपांसुलः श० ५।२८ 3. दूषित करने वाला, कलंकित करने वाला, अपमानित करने वाला—जैसा कि 'कुलपांसुल' में,—**लः** 1.दुश्चरित्र, स्वेच्छाचारी, लम्पट 2. शिव का विशेषण,—**ला** 1. रजस्वला स्त्री 2. असती या व्यभिचारिणी स्त्री, अ° सती स्त्री—रघु० २।२ 3. पृथ्वी।

पाकः [पच्+घञ्] 1. पकाना, प्रसाधन, सेकना, उबालना 2. (ईंट आदि) आंच लगाना, सेकना—मनु० ५।१२२, याज्ञ० १।१८७ 3. (भोजन का) पचना 4. पका होना औपघ्यः फलपाकांताः—मनु० १।४६ फलमभिमुखपाकं राजजंबूद्रुमस्य—विक्रम० ४।१३, मा० ९।३१ 5. परिपक्वता, पूर्ण विकास धी°, मति० 6. सम्पूर्ति, निष्पन्नता, पूरा करना—युयोज पाकाभिमुखैर्भृत्यान् विज्ञापना फलैः—रघु० १७।४० 7. नतीजा परिणाम, फल, परिफलन, (आलं० भी) आर्शीभिरंधयामासुः पुरः पाकाभिरंबिकाम्—कु० ६।९० पाकाभिमुखस्य दैवस्य—उत्तर०७।४, १४ कृत कार्यों के फलों का विकास 9. अनाज, अन्न—नीवारपाकादि—रघु० ५।१९ (पच्यते इति पाकः धान्यम्) 10. पकने की क्रिया, (फोड़े आदि का) पकना, पीप पड़ना 11. बुढ़ापे के कारण बालों का सफेद हो जाना 12. गार्हपत्याग्नि 13. उल्लू 14. बच्चा, शिशु 19. एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था। सम०—आगारः, रम्—आगारः,—रम् शाला,—**स्थानम्** रसोई, **अतीसारः** पुरानी पेचिश,—**अभिमुख** (वि०) 1. पकने के लिए तैयार, विकासोन्मुख 2. कृपापरायण,—**जम्** 1. काला नमक 2. उदरवायु,—**पात्रम्** पकाने का बर्तन,—पुटी कुम्हार का आवा,—**यज्ञः** गृह्ययज्ञ, (इसके भेदों के लिए दे० मनु० २।१४३ पर उल्लू०) **शुक्ला** खड़िया—**शासनः** इन्द्र का विशेषण —कु० २।६३, **शासनिः** 1. इन्द्र के पुत्र जयन्त का विशेषण 2. वालि तथा 3. अर्जुन का विशेषण।

पाकलः [पाक+ला+क] 1. आग 2. हवा 3. हाथी का ज्वर —तु० कूटपाकल।

पाकिम (वि०) [पाकेन निर्वृत्तम्—पाक+इमप्] 1. पका हुआ, प्रसाधित 2. (प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से) पका हुआ 3. नमक आदि) उबाल कर प्राप्त किया हुआ।

पाकुः, पाकुकः [पच्+उण्, क आदेशः] रसोइया।

पाक्य (वि०) [पच्+ण्यत्, क आदेशः] पकाने के योग्य प्रसाधित होने के लायक, परिपक्व होन के योग्य, —**क्यः** जवाखार शोरा।

पाक्ष (वि०) (स्त्री०-क्षी) [पक्ष+अण्] 1. (कृष्ण या शुक्ल) पक्ष से संबंध रखने वाला, पाक्षिक 2. किसी दल या पार्टी से संबद्ध।

पाक्षिक (वि०) (स्त्री०—की) [पक्ष+ठक्] 1. पक्ष से संबद्ध, अर्धमासिक 2. पक्षी से संबद्ध 3. किसी दल या पार्टी का पक्ष लेने वाला 4. तर्क विषयक 5. ऐच्छिक, वैकल्पिक, अनुमत परन्तु विशेष रूप से निर्धारित न हो—नियमः पाक्षिके सति,—कः बहेलिया, चिड़ीमार।

पाखंडः [पातीति—पा+क्विप्, पाः त्रयीधर्मः, तं खण्डयति - पा+खण्ड्+अच्] विधर्मी, नास्तिक —पाखंडचंडालयोः, पापारंभकयोर्मृगीव वृकयोर्भीरुगंता गोचरम् —मा० ५।२४, दुरात्मन् पाखंड चंडाल—मा० ५।

पागल (वि०) [पारक्षणम्, तस्मात् गलति विच्युतो भवति —पा+गल्+अच्] विक्षिप्त, जिसका दिमाग खराब हो।

पांक्तेय, पांक्त्य (वि०) [पंक्ति+ढक्, यत् वा] 1. भोजन पंक्ति में एक साथ बैठने के योग्य 2. साहचर्य के उपयुक्त।

पाचक (वि०) [पच्+ण्वुल्] 1. पकाना, सेकना 2. पचाने वाला, पौष्टिक —कः 1. रसोइया 2. आग, कम् पित्त। सम० ·स्त्री महाराजिन, रसोई बनाने वाली स्त्री।

पाचन (वि०) (स्त्री०—नी) [पच्+णिच्+ल्युट्] 1. पकाने वाला 2. पकने वाला 3. पचाने वाला, हाजिम, —नः 1. आग 2. खटास, अम्लता, नम् 1. पकाने की क्रिया 2. पकने की क्रिया 3. घुलनशील, भोजन पचाने वाली औषधि 4. घाव भरना 5. तपस्या, प्रायश्चित्त।

पाचलः [पच्+णिच्+कलन्] 1. रसोइया 2. आग 3. हवा, ·लम् पकाना, परिपक्व करना।

पाचा [पच्+णिच्+अङ+टाप्] पकाना।

पांचकपाल (वि०) (स्त्री०—ली) [पंचकपाल+अण्] पाँच कपालों में भर कर दी गई आहुति से संबंध रखने वाला।

पांचजन्यः [पंचजन+ञ्य] कृष्ण के शंख का नाम—(दधानो) निध्वानमश्रूयत पांचजन्यः— शि ३।२१, भग० १।१५। सम०—**धरः** कृष्ण का विशेषण।

पांचदश (वि०) (स्त्री०—शी) [पंचदशी+अण्] मास की पन्द्रहवीं तिथि से संबंध रखने वाला।

पांचदश्यम् [पंचदशन्+ष्यञ्] पन्द्रह का समुच्चय।

पांचनद (वि०) [पंचनद+अण्] पंचनद या पंजाब में प्रचलित।

पांचभौतिक (वि०) (स्त्री—की) [पंचभूत+ठक्, द्विपदवृद्धि] पाँच तत्त्वों के समूह से बना हुआ, या पांच तत्त्वों वाला, पांच भौतिकी सृष्टिः— महावी० ६, याज्ञ० ३।१७५।

पांचवर्षिक (वि०) [पंचवर्ष+ठञ्] पाँच वर्ष का।

पाचशब्दिकम् [पंचशब्द+ठक्] 1. पाँच प्रकार का संगीत 2. गायन संबंधी वाद्ययंत्र।

पांचाल (वि०) (स्त्री०—ली) [पंचाल+अण्] पंचाल से संबद्ध या पंचालों के शासक, —लः 1. पंचालों का देश 2. पंचालों का राजकुमार, - लाः (पुं०पुं०) पंचाल देश के लोग।

पांचालिका [पांचाली+कप्+टाप्, ह्रस्वः] गुड़िया, पुतली-स्तन्य त्यागात्प्रभृति सुमुखी दंत पांचालिकेव क्रीडायोगं तदनु विनयं प्रापिता वर्धिता च —मा० १०।५।

पांचाली [पांचाल+अण्+ङीप्] 1. पंचाल देश की राज कुमारी या स्त्री 2. पांडवों की पत्नी, द्रौपदी 3. गुड़िया, पुतली 4. (अलं०) रचना की चार शैलियों में से एक सा० द० द्वारा दी गई परिभाषा—वर्णैः शेषैः (अर्थात् माधुर्यव्यंजकौजः प्रकाशकाभ्यां भिन्नैः) पुनर्द्वयोः, समस्त पंचषपदो बंधः पांचालिको मतः ६२८।

पाट् (अव्य०) [पट्+णिच्+क्विप्] एक अव्यय जो बुलाने के लिए—अर्थात् संबोधन के रूप में प्रयुक्त हो जाता है।

पाटकः [पट्+णिच्+ण्वुल्] 1. विदारक, विभाजक 2. गाँव का एक भाग 3. गाँव का आधा हिस्सा 4. एक प्रकार का संगीत-उपकरण 5. तट, किनारा 6. घाट की चौड़ियाँ 7. मूलधन या पूंजी की हानि 8. वित्ता या बालिश्त 9. पासे फेंकना।

पाटच्चरः [पाटयन् छिन्दन् चरति चर+अच्, पृषो०] चोर, लुटेरा, पाड़ लगाने वाला, कुसुमरसपाटच्चरः —श० ६, पद्मिनीपरिमलालिपाटच्चरैः— भामि० २।७५।

पाटनम् [पट्+णिच्+ल्युट्] विदीर्ण करना, तोड़ना, फाड़ना, नष्ट करना।

पाटल (वि०) [पट्+णिच्+कलच्] पीतरक्त वर्ण, गुलाबी रंग, अग्रे स्त्री नखपाटलमं कुरबकम्—विक्रम०

२।७, पाटलपाणिजां कितमुरः—गीत० १२, —लः पीतरक्त, प्याजी या गुलाबी रंग —कपोलपाटलादेशि बभूव रघुचेष्टितम् —रघु० ४।६८ 2. पादर का फूल पाटल संसर्ग सुरभिवनवाताः—श० १।३, —लम् 1. पाटल वृक्ष का फूल —रघु० १६।५९, १९।४६ 2. एक प्रकार का चावल जो बरसात में तैयार होता है 3. केसर, जाफरान । सम० —उपलः लाल, —द्रुमः पादर वृक्ष ।

पाटला [पाटल+अच्+टाप्] 1. लाल लोध्र 2. पादर का वृक्ष तथा उसका फूल 3. दुर्गा का विशेषण ।

पाटलिः (स्त्री०) [पाटल+इनि] पादर का फूल । सम० —पुत्रम् एक प्राचीन नगर, मगध की राजधानी, जो शोण और गंगा के संगम पर स्थित है, जिसे कुछ लोग वर्तमान 'पटना' मानते हैं, इसको 'पुष्पपुर' या 'कुसुमपुर' भी कहते हैं- दे० मुद्रा० २।३, ४।१६, रघु० ६।२४ ।

पाटलिकः [पाटलि+कन्] छात्र, विद्यार्थी ।

पाटलिमन् (पुं०) [पाटल+इमनिच्] पीतरक्त वर्ण ।

पाटल्या [पाटल+यत्+टाप्] पाटल के फूलों का गुच्छा ।

पाटवम् [पटु+अण्] 1. तीक्ष्णता, पैनापन 2. चतुराई, कौशल, दक्षता, प्रवीणता—पाटवं संस्कृतोक्तिषु —हि० १, कि० ९।५४ 3. ऊर्जा 4. फुर्ती, उतावलापना ।

पाटविक (वि०) (स्त्री०—की) [पाटव+ठन्] 1. चतुर, तीक्ष्ण, कुशल 2. धूर्त, चालबाज, मक्कार ।

पाटित (भू० क० कृ०) [पट्+णिच्+क्त] 1. फाड़ा हुआ, चीरा हुआ, टुकड़े २ किया हुआ, तोड़ा हुआ 2. विद्ध, छिद्रित —रघु० ११।३१ ।

पाटी [पट्+णिच्+इन्+ङीप्] अंकगणित । सम० गणितम् अंकगणित ।

पाटीरः [पटीर+अण्] 1. चन्दन —पाटीर तव पटीयान् कः परिपाटीमिमामुरीकर्तुम् —भामि० १।१२ 2. खेत 3. रांगा 4. बादल 5. चलनी ।

पाठः [पठ्+घञ्] 1. प्रपठन, सस्वर पाठ, आवृत्ति करना 2. पढ़ना, वाचन, अध्ययन 3. वेदाध्ययन, वेदपाठ, ब्रह्मयज्ञ, ब्राह्मणों के द्वारा पांच दैनिक यज्ञों में से एक 4. पुस्तक का मूलपाठ, स्वाध्याय, पाठभेद—अत्र गंधवद्गंधमादनः इति आगंतुकः पाठः, प्राचीनपाठस्तु सुगंधिर्गंधमादनः इति पुल्लिंगांतः —मल्लि० कु० ६।७ पर । सम० —अन्तरम् दूसरा पाठ, पाठभेद, —छेदः विराम, यति, —दोषः दूषित पाठ, पाठ की अशुद्धियाँ, —निश्चयः किसी संदर्भ का पाठ निर्धारित करना, —मंजरी, —शालिनी मैना, सारिका, —शाला विद्यालय, महाविद्यालय, विद्यामंदिर।

पाठकः [पठ्+णिच्+ण्वुल्] 1. अध्यापक, प्राध्यापक, गुरु 2. पुराण या अन्य धार्मिक ग्रन्थों का सार्वजनिक पाठ करने वाला 3. आध्यात्मिक गुरु 4. छात्र, विद्यार्थी, विद्वान् ।

पाठनम् [पठ्+णिच्+ल्युट्] अध्यापन, व्याख्यान देना ।

पाठित (भू० क० कृ०) [पठ्+णिच्+क्त] पढ़ाया हुआ, शिक्षा दिया हुआ ।

पाठिन् (वि०) [पठ्+णिनि, पाठ+इनि वा] 1. जिसने किसी विषय का अध्ययन किया हो 2. जानकार, परिचित ।

पाठीनः [पठ्+ईनण्] 1. पुराना या अन्य धार्मिक ग्रंथों की कथा करने वाला 2. एक प्रकार की मछली —विवृत्त पाठीन पराहतं पयः कि० ४।५ ।

पाणः [पण्+घञ्] 1. व्यापार, व्यवसाय 2. व्यापारी 3. खेल 4. खेल पर लगा या गया दाँव 5. करार, 6. प्रशंसा 7. हाथ ।

पाणिः [पण्+इण्] हाथ—दानेन पाणिर्न तु कंकणेन (विभाति)—भर्तृ० २।७१,—णिः (स्त्री०) मंडी (**पाणौ कृ** हाथ में थामना, विवाह करना,—**पाणीकरणम्** विवाह) । सम० —**गृहीती**, हाथ से ग्रहण की गई, ब्याही गई, पत्नी,—**ग्रहः**,—**ग्रहणम्** विवाह करना, शादी, रघु० ७।२९, ८।७, कु० ७।४,—**ग्रहीतृ** (पुं०) —**ग्राहः** दूल्हा, पति— ध्यायत्यनिष्टं यत्किंचित् पाणिग्राहस्य चेतसा—मनु० ९।२१, बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने—५।१४८,—**घः** 1. ढोल बजाने वाला 2. कारीगर, शिल्पकार,—**घातः** हाथ का प्रहार, घूँसा,—**जः** नाखून—तस्याः पाटलपाणिजाङ्कितमुरः—गीत० १२,—**तलम्** हथेली,—**धर्मः** विवाह की विधि,—**पीडनम्** विवाह,—पाणिपीडनमहं दमयन्त्याः कामयेमहि महीमिहिकांशो— नै० ५।९९ —पाणिपीडनविधेरनन्तरम् कु० ८।१, **प्रणयिनी** पत्नी —**बंधः** 'हाथों का मिलना' विवाह, —**भुज्** (पुं०) बड़ का वृक्ष, गूलर का वृक्ष,—**मुक्तम्** हाथ के फेंक कर मारा जाने वाला आयुध, अस्त्र, —**रुह्** (पुं०), —**रुहः** अंगुली का नाखून, —**वादः** 1. तालियाँ बजाना 2. ढोल बजाना, —**सर्ग्या** रस्सी ।

पाणिनिः (पुं०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण का नाम, यह अन्तःस्फूर्त मुनि समझे जाते हैं, कहते हैं कि व्याकरण का ज्ञान इन्होंने शिव से प्राप्त किया था । 'अष्टाध्यायी' नाम का व्याकरण इन्होंने ही रचा ।

पाणिनीय (वि०) [पाणिनि+छ] पाणिनि से संबंध रखने वाला, या उसके द्वारा बनाया गया —शि० १९।७५, —**यः** पाणिनि का अनुयायी —अकृतव्यूहाः पाणिनीयाः, —**यम्** पाणिनि द्वारा प्रणीत व्याकरण ।

पाणिधम–य (वि०) [पाणि+ध्मा (धे)+खश्, मुम्,] हाथ से धौंकने वाला, हाथ से फूंकने वाला, हाथ से पीने वाला ।

पांडर (वि०) [पाण्डर+अच्] 1. धवल, पीतधवल, सफ़ेद 2. गेरु 3. चमेली का फूल।

पांडव [पाण्डोः अपत्यम् पाण्डु+अण्] पाण्डु का पुत्र या सन्तान, पांडु के पाँचों पुत्रों में से कोई सा एक—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव—हंसाः संप्रति पांडवा इव वनादज्ञातचर्यां गताः—मृच्छ० ५।६। सम०—**आभीलः** कृष्ण का नाम,—**श्रेष्ठः** युधिष्ठिर का नाम।

पांडवीय (वि०) [पांडव+छ] पांडवों से संबंध रखने वाला।

पांडवेय=पांडव।

पांडित्यम्[पंडित+ष्यञ्] 1. विद्वत्ता, गहन अधिगम—विद्या तदेव गमकं पाण्डित्यवैदग्ध्ययोः—मा० १।७ 2. चतुराई कुशलता, दक्षता, तीक्ष्णता नखानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन् मृगपतिः —भामि० १।२।

पांडु (वि०) [पण्ड्+कु, नि० दीर्घः] पीत-धवल, सफ़ेद सा, पीला पीताभश्विकलकरणः पांडुच्छायः शुचा परिदुर्बलः—उत्तर० ३।२२,—**डुः** 1. पीत-धवल, या पीताभ श्वेत रंग 2. पीलिया, यरकान 3. सफ़ेद हाथी 4. पांडवों के पिता का नाम [विचित्रवीर्य की विधवा अंबिका से व्यास के द्वारा पांडु का जन्म हुआ था। पांडु रंग का पैदा होने के कारण उसका नाम पांडु पड़ा, क्योंकि व्यास के साथ सहवास के अवसर पर उसकी माता पांडु रंग की हो गई थी—(यस्मात्पांडुत्वमापन्ना विरूपं प्रेक्ष्य मामिह, तस्मादेव सुतस्ते वै पाण्डुरेव भविष्यति—महा०,)—किसी शाप के कारण पाण्डु को स्वयं सन्तानोत्पत्ति करने से रोक दिया गया था। इसीलिए उसने कुन्ती को दुर्वासाऋषि से प्राप्त मंत्र का उपयोग करके सन्तान प्राप्त करने की अनुमति दे दी थी, फलतः कुन्ती ने युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को जन्म दिया, इसी मंत्र के उपयोग से माद्री ने नकुल और सहदेव को जन्म दिया। एक दिन पाण्डु अपने शाप को भूलकर जिसके कारण वह सावधान था, उसने माद्री का आलिंगन करने का दुस्साहस किया, परन्तु वह उसके भुजपाश में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया]। सम०—**आमयः** पीलिया यरकान, —**कंबलः** 1. सफ़ेद कंबल 2. गरम चादर 3. राजकीय हाथी की झूल—**पुत्रः** पांडु का पुत्र, पाँचों में से कोई एक, —**मृत्तिका**, सफ़ेद या पीली मिट्टी,—**रागः** सफ़ेदी, पीलापन,—**लेखः** खड़िया से बनाई रूपरेखा, भूमि या किसी फलक पर खड़िया से बनाई गई कोई रूपरेखा—पाण्डुलेखेन फलके भूमौ वा प्रथमं लिखेत्, न्यूनाधिकं तु संशोध्य पश्चात्पत्रे निवेशयेत्—व्यास०,—**शर्मिला** द्रौपदी का विशेषण—**सोपाकः** एक वर्ण संकर जाति—चांडालात्पांडुसोपाकस्त्वक्सारव्यवहारवान्—मनु० १०।३७।

पांडुर (वि०) [पाण्डुवर्णोऽस्यास्ति पांडु+र] सफेद सा, पीत-धवल, पीताभ-श्वेत, पीला—छविः पांडुरा—श० ३।१०, रघु० १४।२६, कु० ३।३३,—**रम्** श्वेत कुष्ठ। सम० **इक्षुः** एक प्रकार की ईख, गौण्डा।

पांडुरिमन् (पुं०) [पांडुर+इमनिच्] पीलापन, सफ़ेदी या पीला रंग।

पांड्याः (पुं०, ब० व०) [पांडु देशः, अभिजनोऽस्य राजा वा—पाण्डु+ड्यन] एक देश का नाम, देश के निवासियों का नाम—तस्यामेव रघोः पांड्याः प्रतापं न विषेहिरे—रघु० ४।४९,—**ड्यः** उस देश का राजा—रघु० ६।६०।

पात (वि०) [पा+क्त] रक्षित, देखभाल किया गया, संधारित—**तः** [पत्+घञ्] 1. उड़ना, उड़ान 2. उतरना, अवतरण करना, उतार 3. नीचे गिरना, पतन, पराजय (आलं० भी) द्रुम०, गृह०, चरणपातः पैरों में गिरना—रघु० ११।९२, **पातोत्पातौ** उदय और अस्त 4. नाश, विघटन, बर्बादी—कु० ३।४४ 5. आघात प्रहार—जैसा कि 'खड्गपात' में 6. बहना, छूटना, निकलना—असृक्पातैः—मनु० ८।४४ 7. डालना फेंकना, निशाना बनाना—दृष्टि० रघु० १३।१८, 8. आक्रमण, हमला 9. घटना, होना, घटित होना 10. दोष, त्रुटि 11. राहु का विशेषण।

पातकः, —**कम्** [पत्+णिच्+ण्वुल्] पाप, जुर्म (हिन्दुधर्मशास्त्र में पाँच महापातक गिनाये गये हैं—ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः, महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैस्सह—मनु० ११।५४।

पातङ्गिः [पतङ्ग+इञ्] 1. शनि 2. यम 3. कर्ण और सुग्रीव का विशेषण।

पातंजल (वि०) (स्त्री०—ली) [पतंजलि+अण्] पतंजलि द्वारा रचित,—पातंजले महाभाष्ये कृतभूरि परिश्रमः—परिभाषेन्दुशेखर,—**लम्** पतंजलि द्वारा प्रणीत योगदर्शन, (ऐसा विश्वास किया जाता है कि महाभाष्यकार पतंजलि ही योगदर्शन के प्रणेता थे, परंतु यह विचार संदेह से परे नहीं है)।

पातनम् [पत्+णिच्+ल्युट्] 1. गिरने का कारण बनना, गिराना, नीचे लाना या फेंक देना, पछाड़ देना, नीचे पटक देना 2. फेंकना, डालना 3. हीन करना, नीचा दिखाना। (विशे०—उन संज्ञा शब्दों के अनुसार जिनके साथ 'पातन' शब्द प्रयुक्त होता है, 'पातन' के भिन्न२ अर्थ हैं—उदा० दंडस्य पातनम्—'डंडा गिराना' दण्ड देना, गर्भस्य पातनम्—गर्भ का गिराना, गर्भपात कराना)।

पातालम् [पतत्यस्मिन्नधर्मेण पत्+आलञ्] 1. पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोकों में से अन्तिम लोक—नागलोक,

वह सात लोक ये हैं—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल 2. निम्नप्रदेश, या नीचे का लोक—रघु० १५।८४, १।८० 3. गढ़ा, छिद्र 4. वडवानल। सम०—गंगा नीचे के लोक में बहने वाली गंगा,—ओकस् (पुं०)—निलयः, निवासः—वासिन् (पुं०) 1. राक्षस 2. नाग या सर्पदैत्य।

पातिकः [पात+ठन्] गंगा में रहने वाला सूंस, शिशुमार।

पातित (भू० क० कृ०) [पत्+णिच्+क्त] 1. डाला गया, फेंका गया नीचे गिराया गया, पटक दिया गया 2. परास्त किया गया, नीचा दिखाया गया 3. नीचा किया गया।

पातित्यम् [पतित+ष्यञ्] पद या जाति का पतन, पदच्युति, जातिभ्रंशता।

पातिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पत्+णिनि] 1. जाने वाला, अवतरण करनेवाला, उतरने वाला 2. पतनशील, डूबनेवाला 3. पड़ने वाला 4. गिरने वाला, फेंकने वाला 5. उड़ेलने वाला, छोड़ने वाला, निकालने वाला।

पातिली [पातिः संपातिः पक्षियूथं लीयतेऽत्र—पाति+ली+ड+ङीष्] 1. जाल, फंदा 2. छोटा मिट्टी का बर्तन, हांडी।

पातुक (वि०) (स्त्री०—की) [पत्+उकञ्] 1. पतनशील, 2. गिरने की आदत वाला,—कः पहाड़ का ढलान, चट्टान 2. शिशुमार, सूंस।

पात्रम् [पाति रक्षति, पिबन्ति अनेन वा—पा+ष्ट्रन्] 1. पीने का बर्तन, प्याला, गिलास 2. कोई भी बर्तन—पात्रे निधायार्घ्यम्—रघु० ५।२, १२ 3. किसी वस्तु का आधार, प्राप्तकर्ता—पंच० २।९७ 4. जलाशय 5. योग्य व्यक्ति, दान पाने के योग्य, दानपात्र—वित्तस्य पात्रे व्ययः—भर्तृ० २।८२, भग० १७।२२, याज्ञ० १।२०१, रघु० ११।८६ 6. अभिनेता, नाटक का पात्र—तत्प्रतिपात्रमाधीयतां यत्नः—श० १, उच्यतां पात्रवर्गः—विक्रम० १, नाटक का पात्र 7. राजा का मंत्री 8. नहर या नदी का पाट 9. योग्यता, औचित्य 10. आदेश, हुक्म। सम०—उपकरणम् घटिया प्रकार की सजावट—पालः 1. चप्पू, डांड 2. तराजू की डंडी—संस्कारः 1. बर्तनों को मांज धोकर साफ करना 2. नदी का प्रवाह।

पात्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [पात्र+ठन्] 1. किसी बर्तन की नाप, आढक 2. योग्य, यथोचित, समुचित,—कम् बर्तन, प्याला, तश्तरी।

पात्रिय, पात्र्य (वि०) [पात्रमर्हति—पात्र+घ, यत् वा] भोजन में भाग लेने के योग्य।

पात्रीयम् [पात्र+छ] यज्ञीय पात्र स्रुवा आदि।

पात्रीरः,—रम् [पात्र्यै राति—पात्री+रा+क] आहुति।

पात्रे बहुलः, पात्रेसमितः [पात्रे भोजनसमये एव बहुलः संगतो वा न तु कार्ये—अलुक् समास] 1. केवल भोजन का साथी, परान्नभोजी 2. धोखेबाज, कपटी पाखंडी।

पाथः [पीयतेऽद्भः, पा+थ] 1. अग्नि 2. सूर्य—थम् जल।

पाथस् (नपुं०) [पा+असुन्, थुक् च] 1. जल, गंगा० २६ 2. हवा, वायु 3. आहार। सम०—जम् 1. कमल 2. शंख,—दः,—धरः बादल,—धिः,—निधिः,—पतिः समुद्र, नै० १३।२०।

पाथेयम् [पथिन्+ढञ्] भोज्य सामग्री जिसे यात्री राह में खाने के लिए साथ ले जाता है, मार्गव्यय जग्राह पाथेयमिवेन्द्रसूनुः—कि० ३।३७, बिसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः—मेघ० ११, विक्रम० ४।१५ 2. कन्याराशि।

पादः [पद्+घञ्] 1. पैर (चाहे मनुष्य का हो या किसी जानवर का) तयोर्जगृहतुः पादान्—रघु० १।५७, पादयोर्निपत्य, पादपतितः समास के अन्त में 'पाद' को बदल कर 'पाद्' हो जाता है, यदि इससे पूर्व 'सु' हो या संख्यावाचक शब्द, उदा० सुपाद्, द्विपाद् त्रिपाद् आदि; जिस समय पूर्वपद तुलना-मान के रूप में प्रयुक्त किया जाय, उस समय भी 'पाद्' हो जाता है यदि पूर्वपद 'हस्ति' से भिन्न हो—दे० पा० ५।४।१३८-४०, उदा० व्याघ्रपाद्; अतिशय आदर तथा सम्मान व्यक्त करने के लिए, कर्तृ० का बहुवचनान्त रूप व्यक्तियों की उपाधियों या नामों के साथ जोड़ दिया जाता है मृष्यंतु लवस्य बालिशतां तातपादाः—उत्तर० ६, १।२९ देवपादानां नास्माभिः प्रयोजनम्—पंच० १, इसी प्रकार—एवमाराध्यपादा आज्ञापयंति—प्रबो० १, एवं—कुमारिपादाः आदि 2. प्रकाश की किरण—बालस्यापि रवेः पादाः पतंत्युपरि भूभृताम्—पंच० १।३२८, शि० ९।३४, रघु० १६।५३, (यहां शब्द का अर्थ 'पैर' भी है) 3. पैर या पावा (जड़ पदार्थों का, खाट आदि का) 4. वृक्ष की जड़ या पैर जैसा कि 'पादप' में 5. गिरिपाद, तलहटी (पादाः प्रत्यंतपर्वताः) मेघ० १९, श० ६।१६ 6. चौथाई, चौथाभाग, जैसा कि 'सपादो रूपकः' में (सवा रुपया)—मनु० ८।२४१, याज्ञ० २।१७४ 7. श्लोक का एक चरण, पंक्ति 8. किसी पुस्तक के अध्याय का चौथा भाग जैसा कि ब्रह्मसूत्र का या पाणिनि की अष्टाध्यायी का 9. भाग 10. स्तंभ, खंभा। सम०—अग्रम् पैर का आगे का भाग—रत्न० १।१,—अंकः पदचिह्न,—अंगदम्,—दी पैर का आभूषण, नूपुर, पायल,—अंगुष्ठः पैर का अंगूठा,—अंतः पैरों का अन्तिम भाग,—अंतरम् एक पग के बीच का अन्तराल, एक पग की दूरी

(अव्य०—रे) 1. एक पद की दूरी के बाद 2. निकट, सटा हुआ,—अम्बु (नपुं०) छाछ जिसम एक चौथाई पानी हो,—अंभस् (नपुं०) जल जिसमें श्रद्धेय व्यक्तियों के चरण धोये हों,—अरविंदम्,—कमलम्,—पंकजम्,—पद्मम् कमल जैसा पैर, कमलचरण,—अलिंदी किश्ती, नाव,—अवसेचनम् 1. चरण धोना 2. पैर धोने के लिए पानी,—आघातः ठोकर,—आनत (वि०) भूशायी, पैरों में पड़ा हुआ—कु० ३।८,—आवर्तः कुएँ से जल निकालने के लिए पैरों से चलाया जाने वाला यंत्र, रहट,—आसनम् पैर रखने का पीढ़ा,—आस्फालनम् पैरों से रौंदना, कुचलना, रुक २ कर आगे बढने की चेष्टा,—आहत (वि०) ठोकर खाया हुआ, ठुकराया हुआ,—उदकम्—जलम् 1. पैर धोने के लिए पानी 2. वह पानी जिसमें पुण्यात्मा, तथा सम्मानित व्यक्तियों ने पैर धोये हैं और इसीलिए जो पवित्र समझा जाता है,—उदरः साँप,—कटकः,—कम्,—कीलिका नूपुर, पायल, क्षेपः कदम, पग—ग्रन्थिः टखना,—ग्रहणम् (आदरयुक्त अभिवादन के रूप में) पैर पकड़ना, कु० ७।२७,—चतुरः,—चत्वरः 1. मिथ्यानिन्दक 2. बकरा 3. रेतीला तट 4. ओला,—चारः पैदल चलना, टहलना—यदि च विचरेत् पादचारेण गौरी—मेघ० ६०, 'यदि गौरी पैदल चले' रघु० ११।१०,—चारिन् (वि०) पैदल चलने वाला, पैदल योद्धा, (पुं०) 1. फेरी वाला 2. पैदल सैनिक,—जः शूद्र,—जाहम् पपोटा, टखने की हड्डी,—तलम् पैर का तलवा,—त्रः,—त्रा,—त्राणम् जूता, बूट,—पः वृक्ष—निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते—हि० १।६९, अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णम्—श० ५।५, खंडः,—डम् बाग, वृक्षों का झुरमुट,—पालिका नूपुर, पाजेब,—पाशः पैकड़ा, पशुओं के पैरों को बाँधने की रस्सी (शी) 1. हथकड़ी 2. चटाई 3. लता—पीठः,—ठम् पैर रखने का पीढ़ा,—रघु० १७।२८, कु० ३।११,—पूरणम् 1. पंक्ति पूरी करना 2. पादपूरक—तु पादपूरणे भेदे समुच्चयेऽवधारणे—विश्व०,—प्रक्षालनम् पैर धोना,—प्रतिष्ठानम् पैर रखने का पीढ़ा,—प्रहारः ठोकर,—बंधनम् बेड़ी,—मुद्रा पदचिह्न,—मूलम् 1. पपोटा 2. पैर का तलवा 3. एडी 4. पहाड़ की तलहटी 5. किसी से बात करने की विनम्र रीति—देवपादमूलमागताहम्—का० ८,—रसस् (नपुं०) पैरों की धूल,—रज्जुः (स्त्री०) हाथी के पैर बाँधने की चमड़े की रस्सी,—रथी जूता, बूट,—रोहः,—रोहणः बड़ का पेड़,—वंदनम् चरण-वंदना, चरणों में प्रणाम,—विरजस् (नपुं०) जूता, बूटा (पुं०) देवता,—शाखा पैर की अंगुली,—शैलः गिरिपाद, पहाड़ की तलहटी में विद्यमान पहाड़ी,—शोथः पैर की सूजन,—शौचम् पैर धोकर साफ करना, पैर धोना,—सेवनम्,—सेवा 1. पैर छूकर सम्मान प्रदर्शित करना 2. सेवा,—स्फोटः 'बवाई फटना' विपदिका, सरदी से पैर फटना,—हत (वि०) ठुकराया हुआ।

पादविकः [पदवी+ठक्] यात्री, पथिक।

पादात् (पुं०) [पादाभ्यामतति-पाद+अत+क्विप्] पैदल सिपाही, प्यादा।

पादातः [पदातीनां समूहः—पदाति+अण्] पैदल-सिपाही—शि० १८।४,—तम् पैदल-सेना।

पादातिः, पादाविकः [पाद+अत्+इन्, पादेन अवः रक्षणम्—पादाव+ठक्] पैदल सिपाही।

पादिक (वि०) (स्त्री०—की) [पाद+ठक्] चतुर्थांश, चौथा भाग—पादिकं शतम्—२५ प्रतिशत।

पादिन् (वि०) [पाद+इनि] 1. सपाद, पैरों वाला 2. श्लोक की भांति चार चरणों से युक्त 4. चौथे भाग को लेने वाला, या चतुर्थांश का अधिकारी।

पादिनः (पुं०) चौथा भाग, चतुर्थांश।

पादुकः (वि०) (स्त्री०—का—की) [पद्+उकञ्] पैदल चलने वाला,—का खड़ाऊँ, जूता—व्रज भरत गृहीत्वा पादुके त्वं मदीये—भट्टि० ३।५६,—रघु० १२।१७। सम०—कारः मोची, जूता बनाने वाला।

पादू (स्त्री०) [पद्+ऊ, णित्] जूता,—कृत् (पुं०) जूता बनाने वाला।

पाद्य (वि०) [पाद+यत्] पैरों से संबंध रखने वाला,—द्यम् पैर धोने के लिए जल—पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

पानम् [पा+ल्युट्] 1. पीना, चढ़ा जाना, (ओष्ठ का) चुम्बन, पयःपानं देहि मुखकमलमधुपानम्—गीत० १० 2. सुरापान करना—मनु० ७।५०, ९।१३, १२।४५ 3. पान के योग्य, पेय पदार्थ—मनु० ३।२२७ 4. पान-पात्र 5. तेज करना, पैनाना 6. बचाना, रक्षा,—नः शराब खींचने वाला, कलवार। सम०—अगारः—आगारः,—रम् मदिरालय,—अत्ययः अत्यधिक पीना,—गोष्ठिका,—गोष्ठी 1. शराबियों की मंडली 2. शराब की दुकान, मदिरालय,—प (त्रि०) सुरापान करने वाला,—पात्रम्—भाजनम्,—भाण्डम् पान-पात्र, प्याला,—भूः,—भूमिः—भूमी (स्त्री०) शराब पीने का स्थान—रघु० ७।४९, १९।११,—मण्डलम् शराबियों की मंडली,—रत (वि०) सुरापान की लतवाला,—वणिज् (पुं०) शराब-विक्रेता,—विभ्रमः नशा,—शौंड पियक्कड़, अत्यधिक पीने वाला।

पानकम् [पान+कन्] पानीय, पेय, घूंट।

पानिकः [पान+ठक्] शराब-विक्रेता, कलाल।

पानिलम् [पान+इलच्] पान-पात्र, प्याला।

पानीयम् [पा+अनीयर्] 1. जल 2. पेय, घूंट, पानीय-पीने के योग्य शर्बत आदि। सम०—**नकुलः** ऊद-बिलाव,—**वर्णिका** रेत, बालू,—**शाला**,—**शालिका** प्याऊ, जहाँ यात्रियों को पानी पिलाया जाय—तु० प्रपा।

पान्थः [पन्थानं नित्यं गच्छति —पथिन्+अण्, पंथादेशः] यात्री, बटोही रे पान्थ विह्वलमना न मनागपि स्याः —भामि० १।३७।

पाप (वि०) [पाति रक्षति आत्मानम् अस्मात् पा+प] 1. अनिष्टकर, पापमय, दुष्ट, दुर्वृत्त पापं कर्म च यत् परैरपि कृतं तत्तस्य संभाव्यते - मृच्छ० १।३६, भग० ६।९ 2. उपद्रवकारी, विनाशक, अभिशप्त पापेन मृत्युना गृहीतोऽस्मि मालवि० ४ 3. नीच, अधम, पतित मनु० ३।५२, ४।१७१ 4. अशुभ, प्रद्वेषी, अनिष्ट सूचक (पाप ग्रह आदि)—**पम्** बुराई, बुरी अवस्था, दुर्भाग्य—पापं पापाः कथयथ कथं शौर्यराशेः पितुर्मे— वेणी० ३।५, शांतम् पापम् —'पाप से बचाये भगवान्' (प्रायः नाटकों में प्रयुक्त) 2. बुराई, जुर्म, दुर्व्यसन, दोष—अपापानां कुले जाते मयि पापं न विद्यते—मृच्छ० ९।३७, मनु० ११।२३१, ४।१८१, रघु० १२।१९,—**पः** पाजी, पापी, दुष्ट, दुराचारी। सम०—**अधम** (वि०) अत्यंत दुष्ट, अधम, —**अपनुत्तिः** (स्त्री०) प्रायश्चित्त,—**अहः** दुर्भाग्यपूर्ण दिवस,—**आचार** (वि०) पापमय आचरण वाला, पापपूर्ण जीवन बिताने वाला, दुर्व्यसनी, दुष्ट, —**आत्मन्** दुष्टमना, पापपूर्ण, दुष्ट—(पुं) पापी, —**आशय**,—**चेतस्** (वि०) दुष्ट इरादे वाला, दुष्ट-हृदय,—**कर**,—**कारिन्**,—**कृत्** (वि०) पापपूर्ण, पापी, अधम,—**क्षयः** पाप का दूर करना, पाप का नाश, —**ग्रहः** दुष्ट ग्रह, प्रद्वेषी (जैसे मंगल, शनि, राहु या केतु),—**घ्न** (वि०) पाप को दूर करने वाला, प्रायश्चित्त कारी,—**चर्यः** 1. पापी, 2. राक्षस,—**दृष्टि** (वि०) बुरी निगाह वाला, खोटी आँख वाला,—**धी** (वि०) दुष्ट हृदय, दुर्बुद्धि,—**नापितः** चालाक या दुष्ट नाई,—**नाशन** (वि०) पापनाशक या प्रायश्चितकारी, —**पतिः** जार, उपपति,—**पुरुषः** दुष्ट प्रकृति वाला मनुष्य,—**फल** (वि०) अनिष्टकर, अशुभ,—**बुद्धि** —**भाव**—**मति** (वि०) दुष्टहृदय, दुष्ट, दुश्चरित्र, —**भाज्** (वि०) पापपूर्ण, पापी—कु० ५।८३,—**मुक्त** (वि०) पाप से छूटा हुआ, पवित्र,—**मोचनम्**, —**विनाशनम्** पाप का नाश,—**योनि** (वि०) नीच जाति में उत्पन्न (स्त्री—**निः**) नीच कुल में जन्म, —**रोगः** 1. कोई बुरा रोग 2. शीतला, चेचक,—**शील** (वि०) दुष्ट कार्यों में प्रवृत्त होने वाला, दुष्टप्रकृति, दुष्टहृदय,—**संकल्प** (वि०) दुष्टहृदय, दुरात्मा (ल्पः) दुष्ट विचार।

पापर्द्धिः [पापानामृद्धिर्यत्र—ब० स०] शिकार, आखेट।

पापल (वि०) [पाप+ला+क] पाप कमाने वाला, पाप कर।

पापिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पाप+इनि] पापपूर्ण, दुष्ट, बुरा—(पुं०) पाप करने वाला।

पापिष्ठ (वि०) [अतिशयेन पापी—पाप+इष्ठन्] अत्यंत पापपूर्ण, अधम, दुष्टतम ('पाप' की अतिशयावस्था)।

पापीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [पाप+ईयसुन्, अयमनयो रतिशयेन पापी, तुलना-अवस्था] अपेक्षाकृत पापी, अपेक्षाकृत दुष्ट या अनिष्टकर।

पाप्मन् (पुं०) [पा+मनिन्, पुगागमः] पाप, जुर्म, दुष्टता, अपराध—मया गृहीतनामानः स्पृश्यंत इव पाप्मना-उत्तर० १।४८-७।२०, मा० ५।२६, मनु० ६।८५।

पामन् (पुं०) [पा+मनिन्] एक प्रकार का चर्मरोग, खुजली। सम०—**घ्नः** गंधक।

पामन (वि०) [पामन्+न, नलोपः] खुजली रोग से ग्रस्त।

पामर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [पामन्+र] 1. खुजली रोग से ग्रस्त, सकण्डू, खुजली वाला अनिष्टकर, दुष्ट 3. नीच, गंवारु, अधम 4. मूर्ख, जड़ 5. निर्धन, असहाय—उ० दू० ५,—**रः** मूढ, जड़बुद्धि —वल्गंति चेत्पामराः—भामि० १।६२ 2. दुष्ट या नीच पुरुष 3. अत्यंत नीच कर्म में प्रवृत्त व्यक्ति।

पामा [पामन्+ङीप्निषेधः, नलोपः, दीर्घः] दे० ऊपर 'पामन्'। सम०—**अरिः** गंधक।

पायना [पा+णिच्+युच्+टाप्] 1. पीलाना 2. सींचना, तर करना 3. तेज़ करना, पैनाना।

पायस (वि०) (स्त्री०—सी) [पयस+अण्] दूध या पानी से बना हुआ—**सः**,—**सम** 1. खीर, दूध में उबले हुए चावल -मनु० ३।२७१, ५।७, याज्ञ० १।१७३, 2. तारपीन,—**सम्** दूध।

पायिकः (पुं) पैदल सिपाही।

पायुः [पा+उण्, युक्] गुदा, मलद्वार—पायूपस्थम् मनु० २।९०, ९१, याज्ञ० ३।९२।

पाय्यम् [मा+ण्यत्, नि० पत्वम्, युगागमः] 1. जल 2. पेय पदार्थ 3. प्ररक्षण 4. परिमाण।

पारः-रम् [परं तीरं परमेव अण्, पृ+घञ् वा] 1. या नदी का परला—सामने वाला दूसरा किनारा —पारं दुःखोदधेर्गन्तुं तर यावन्त भिद्यते—शा० ३।१, विरहजलधेः पारमासादयिष्ये—पदा० १३, हि० १। २०४ 2. किसी भी वस्तु का विरोधी पक्ष—कु० २।५८ 3. किसी वस्तु का अन्तिम किनारा, अन्तिम सीमा—वेणी० ३।३५ 4. किसी वस्तु का अधिकतम परिमाण, समष्टि—स पूर्वजन्मांतरदृष्टपाराः स्मरन्निव —रघु० १८।५०, (**पारं गम्**,—**इ**,—**या** 1. पार जाना, ऊपर चढ़ना 2. निष्पन्न करना, पूरा करना,

जैसा कि 'प्रतिज्ञायाः पारं गतः', पूर्ण रूप से आत्मसात् करना, प्रवीण होना—सकलशास्त्र पारंगतः,—रः पारा (पार 'दूसरी ओर' 'परे' कई बार समास में प्रयुक्त होता है—उदा० पारेगंगम्, पारेसमुद्रम्—गंगा के पार या समुद्र के पार)। सम०—अपारम्—अवारम् दोनों तट, पास का और दूर का (रः) समुद्र, सागर—शोकपारावारमुत्तर्तुमशक्नुवती—दश० ४, भामि० ४।११.—अयणम् 1. पार जाना 2. पूरा पढ़ना, अनुशीलन, आद्योपान्त अध्ययन 3. समग्रता, सम्पूर्णता, या किसी वस्तु की समष्टि जैसा कि 'ब्रह्मपारायण या मंत्रपारायण' में,—अयणी 1. सरस्वती देवी 2. चिन्तन, मनन 3. कृत्य, कर्म 4. प्रकाश,—काम (वि०) दूसरे किनारे तक जाने का इच्छुक,—ग (वि०) 1. पार जाने वाला, नाव से पार उतरने वाला 2. जो पार पहुंच चुका है, जिसने किसी ग्रंथ का पूरा अध्ययन कर लिया है, पूर्णपरिचित, पूरा ज्ञाता (संब० के साथ, या समास में)—मनु० २।१४८, याज्ञ० १।१११ 3. प्रकाण्ड विद्वान्,—गत, गामिन् (वि०) जो तट के दूसरी ओर पहुंच गया है,—दर्शक (वि०) 1. सामने के तट को दिखलाने वाला 2. जिसके आर पार दिखाई दे,—दृश्वन् (वि०) 1. दूरदर्शी, बुद्धिमान्, समझदार 2. जिसने किसी वस्तु का दूसरा किनारा देख लिया है, जिसने किसी बात को पूर्ण रूप से जान लिया है—श्रुतिपारदृश्वा रघु० ५।२४।

पारक (वि०) (स्त्री०—की) [पृ+ण्वुल्] 1. पार करने की योग्यता रखने वाला 2. आगे ले जाने वाला, बचाने वाला, सींचने वाला 3. प्रसन्न करने वाला, संतुष्ट करने वाला।

पारक्य (वि०) [परस्मै लोकाय हितम्—पर+ष्यञ्, कुक्] 1. पराया, दूसरे का 2. दूसरों के लिए उद्दिष्ट 3. विरोधी, शत्रुतापूर्ण,—क्यम् परलोक साधन, पवित्र आचरण।

पारग्रामिक (वि०) (स्त्री० की) [परग्राम+ठक्] पराया, विरोधी, शत्रुतापूर्ण।

पारज् (पुं०) [पार्+णिच्+अजि] सोना, स्वर्ण।

पारजायिकः [परजायां गच्छति—परजाया+ठक्] व्यभिचारी पुरुष।

पारटीटः,—नः (पुं०) पत्थर, चट्टान।

पारण (वि०) [पृ+ल्युट्] 1. पार ले जाने वाला, उबारने वाला 2. बचाने वाला, उद्धार करने वाला,—णः 1. बादल 2. संतोष,—णम् 1. निष्पन्न करना, पूरा करना 2. पाठ करना, बांचना 3. व्रत (उपवास) के पश्चात् भोजन करना, व्रत खोलना कारय चक्षुपी पारणम् विद्ध० १, २।३९, ५५, ७०, भोजन करना—कु० ५।२२, (अभ्यवहारकर्म—मल्लि०)।

पारतः [पारं तनोति—पार+तन्+ड] पारा।

पारतंत्र्यम् [परतंत्र+ष्यञ्] पराश्रयता, अधीनता, अनुसेवा।

पारत्रिक (वि०) (स्त्री० की) [परत्र+ठक्] 1. परलोक संबन्धी 2. भावी जीवन के लिए उपयोगी।

पारत्र्यम् [परत्र+ष्यञ्] भावी जीवन में प्राप्य फल, परलोक फल मनु० २।२३६।

पारदः [पारं ददाति पार+दा+क] पारा—निदर्शनं पारदोऽत्र रसः भामि० १।८२।

पारदारिकः [परदार+ठक्] व्यभिचारी, परदारगामी—याज्ञ० २।२९५।

परदार्यम् [परदार+ष्यञ्] व्यभिचार, परदारगमन—मनु० ११।५९, याज्ञ० ३।२३५।

पारदेशिक (वि०) (स्त्री० की) [परदेश+ठक्] विदेशी, बाहर के देश का, कः 1. विदेश का रहने वाला 2. यात्री।

पारदेश्य (वि०) (स्त्री० श्यी) [परदेश+ष्यञ्] 1. विदेश से संबंध रखने वाला, विदेशी, श्यः 1. अन्य देश का रहने वाला 2. यात्री।

पारभृतम् [इसका शुद्ध रूप संभवतः 'प्राभृत' है] उपहार, भेंट।

पारमहंस्यम् [परमहंस+ष्यञ्] सर्वोत्कृष्ट सन्यासवृत्ति, मनन। सम० परि (अव्य०) इस प्रकार के सन्यासी से सम्बन्ध रखने वाला।

पारमार्थिक (वि०) (स्त्री०—की) [परमार्थ+ठक्] 1. 'परमार्थ' अर्थात् सर्वोपरि सत्य अथवा अध्यात्म ज्ञान से संबन्ध रखने वाला 2. वास्तविक, आवश्यक, यथार्थ में विद्यमान सत्ता त्रिविधा पारमार्थिकी, व्यावहारिकी प्रातीतिकी च वेदान्त 3. सत्य का ध्यान रखने वाला, सत्यप्रय न लोकः पारमार्थिकः पंच० १।३१२ 3. सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम।

पारमिक (वि०) (स्त्री०—की) [परम+ठक्] सर्वोपरि, सर्वोत्तम, मुख्य, प्रधान।

पारमित (वि०) [पारमितः प्राप्तः—अलुक् स०] 1. दूसरे तट या किनारे पर गया हुआ 2. पार पहुँचा हुआ, आर-पार गया गया हुआ 3. परमोत्कृष्ट।

पारमेष्ठ्यम् [परमेष्ठिन्+ष्यञ्] 1. सर्वोपरिता, उच्चतम पद 2. राजचिह्न।

पारंपरीण (वि०) (स्त्री—णी) [परंपरा+खञ्] परंपरा प्राप्त, आनुवंशिक, वंशक्रमागत।

पारंपरीय (वि०) [परम्परा+छ] परम्पराप्राप्त, आनुवंशिक।

पारंपर्यम् [परम्परा+ष्यञ्] 1. आनुवंशिक क्रम, अविच्छिन्न क्रम 2. परम्परा से प्राप्त शिक्षा, परम्परा 3. अन्तर्वर्तिता, मध्यस्थता। सम०—उपदेशः परंपरा

प्राप्त शिक्षा, परम्परा (इस परम्परा को पौराणिक लोग 'प्रमाण' मानते हैं)।

पारयिष्णु (वि०) [पार्+णिच्+इष्णुच्] 1. सुहावना, तृप्तिकारक 2. किसी कार्य को पूरा करने के योग्य, पार जाने के लिए समर्थ।

पारलौकिक (वि०) (स्त्री०–की) [परलोकाय हितम् पर लोक+ठक् द्विपदवृद्धिः] परलोक से संबंध रखने वाला या परलोकोपयोगी,—धर्म एको मनुष्याणां सहायः पारमार्थिकः—महा०, नै ५।९२।

पारवतः [=पारापत (पार+आ+पत्+अच्)] कबूतर।

पारवश्यम् [परवेश+ष्यञ्] परावलंबन, पराश्रयता, अधीनता।

पारशव (वि०) (स्त्री०–वी) [परशु+अण्] 1. लोहे का बना हुआ 2. कुठार से संबंध रखने वाला,—वः 1. लोहा 2. शूद्र स्त्री में उत्पन्न ब्राह्मण का पुत्र - यं ब्राह्मणस्तु शूद्रायां कामादुत्पादयेत्सुतम्, स पार यन्नेव शवस्तस्मात्पारशवः स्मृतः—मनु० ९।१७८ या परं शवात् ब्राह्मणस्यैष पुत्रः शूद्रापुत्रं पारशवं तमाहुः—महा० 3. दोगला, हरामी।

पारश्वधः, पारश्वधिकः [परश्वधः प्रहरणमस्य—अण्, परश्वध+ठक्] फरसा धारण करने वाला, कुठार धारी।

पारस (वि०) (स्त्री०–सी) [पारस्यदेशे भवः अण् बा० यलोपः] पारसी फारस देश का रहने वाला।

पारसिकः 1. फारस देश 2. फारस देश का, पारसीक।

पारसी (स्त्री०) फारसी भाषा।

पारसीकः [पृषो० साधुः] 1. फारस देश 2. फारस देश का घोड़ा,—काः (पुं०, साधुः) फारस देश के रहने वाले—पारसीकांस्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना—रघु० ४।६।

पारस्त्रैणेयः [परस्त्री+ढक्, इनङ्, उभय पदवृद्धिः] दोगला, हरामी ('परस्त्री' से उत्पन्न)।

पारहंस्य (वि०) [परहंस+ष्यञ्] उस सन्यासी से संबंध रखने वाला जिसने सब इन्द्रियों का दमन कर लिया है।

पारा [पार+अच्+टाप्] एक नदी का नाम—तदुत्तिष्ठ पारासिंधुसंभेदमवगाह्य नगरीमेव प्रविशावः—मा० ४।९।१।

पारापतः [पार+आ+पत्+अच्] कबूतर।

पारायणिकः [पारायण+ठञ्] 1. व्याख्यानदाता, पुराण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करने वाला 2. शिष्य, विद्यार्थी।

पारारुकः [पार+ऋ+उकञ्] पत्थर, चट्टान।

पारावतः [=पारापतः, पृषो० पस्य वः] 1. कबूतर, फाख्ता, नेंडुकी-पारावतः खरशिलाकणमात्रभोजी कामी भवत्यनुदिनं वद कोऽत्रहेतुः—भर्तृ० ३।१५४, मेघ० ३८ 2. बन्दर 3. पहाड़। सम०—अंघ्रिः,—पिच्छः एक प्रकार का कबूतर।

पारावारीण (वि०) [पारावार+ख] 1. दोनों छोर तक जाने वाला 2. पूर्ण रूप से जानकार।

पाराशरः, पाराशर्यः [पराशर+अण्, यञ् वा] पराशर के पुत्र व्यास का विशेषण।

पाराशरिः [पराशर+इञ्] 1. शुकदेव का विशेषण 2. व्यास का नाम।

पाराशरिन् (पुं०) [पाराशर+इनि] 1. साधु, सन्यासी 2. विशेषकर वह जो व्यास के शारीर सूत्रों के अध्येता हों।

पारिकांक्षिन् (पुं०) [पारयति संसारात् पारि ब्रह्मज्ञानम् तत्कांक्षति—पारि+कांक्ष्+णिनि] ध्यानमग्न या चिन्ताशील सन्त, सन्यासी जो भावात्मक समाधि का भक्त हो।

पारिक्षितः [परिक्षित्+अण्] जनमेजय का कुल सूचक नाम, अर्जुन का प्रपौत्र और परीक्षित् का पुत्र।

पारिखेय (वि०) (स्त्री०–यी) [परिखा+ढ] चारों ओर परिखा या खाई से घिरा हुआ।

पारिजातः, पारिजातकः [पारमस्य अस्ति इतिपारी समुद्रः तस्माज्जातः—पारिजात+कन्] 1. स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक (कहते हैं कि समुद्र मंथन से 'पारिजात' की उपलब्धि हुई, जिसे इन्द्र ने अपने नन्दन-कानन में लगाया, कृष्ण ने इन्द्र से छीन कर इसे अपनी प्रिया सत्यभामा के बाग में लगाया)—कल्पद्रुमाणामिव पारिजातः—रघु० ६।६, १०।११, १७।७, 2. मूंगे का पेड़ 3. सुगन्ध।

पारिणाय्य (वि०) (स्त्री०–य्यी) [परिणय+ष्यञ्] 1. विवाह से संबन्ध रखने वाला 2. विवाह के अवसर पर प्राप्त किया हुआ,—य्यम् 1. विवाह के अवसर पर स्त्री को मिली हुई सम्पत्ति—मातुः पारिणाय्यं स्त्रियो विभजेरन्—वसिष्ठ 2. विवाह व्यवस्था।

पारितथ्या [परितथ्य+ष्यञ्] बालों को बांधने के लिए मोतियों की लड़ी।

पारितोषिक (वि०) (स्त्री०–की) [परितोष+ठञ्] सुखकर, तृप्तिकर, सान्त्वनाप्रद,—कम् उपहार, पुरस्कार—गृह्यतां पारितोषिकमिदमङ्गुलीयकम्—मृच्छ० ५।

पारिध्वजिकः [परितः ध्वजा—परिध्वजा+ठक्] झंडा बरदार, झंडा ले चलने वाला।

पारिन्द्रः [=पारीन्द्रः, पृषो० ह्रस्वः] सिंह, केसरी।

पारिपंथिकः [परिपंथ+ठक्] लुटेरा, डाकू।

पारिपाट्यम् [परिपाटी+ष्यञ्] 1. ढंग, प्रणाली, रीति (परिपाटी) 2. नियमितता।

पारिपार्श्वम् [पारिपार्श्व+अण्] अनुचरवर्ग, सेवक, अनुयायी ।

पारिपार्श्वकः, पारिपार्श्विकः [पारिपार्श्व+कन्, परिपार्श्व+ठक्] 1. सेवक, टहलुआ 2. नाटक में सूत्रधार का सहायक, नान्दीपाठ के अवसर एक अन्तर्वादी --प्रविश्य पारिपार्श्वकः, तत्किमिति पारिपार्श्विक नारंभयसि कुशीलवैः सह संगीतम्—वेणी० १ ।

पारिपार्श्विका [पारिपार्श्विका+टाप्] दासी, सेविका, निजी नौकरानी ।

पारिप्लव (वि०) [परिप्लव+अण्] 1. इधर उधर घूमने वाला, डांवाडोल, चंचल, अस्थिर, कम्पायमान —ननंद पारिप्लवनेत्रया नृपः—रघु० ३।११ 2. तैरना, बहना रघु० १३।३०, १६।६१ 3. क्षुब्ध, उद्विग्न, परेशान, घबराया हुआ—उत्तर० ४।२२,—वः नाव, वम् बेचैनी, विकलता ।

पारिप्लाव्यः [परिपप्लव+ष्यञ्] हंस व्यम् 1. परेशानी, बेचैनी, क्षोभ 2. कंपकंपी, थरथराहट ।

पारिबर्हः [परिबर्ह+अण्] वैवाहिक उपहार ।

पारिभद्रः [परिभद्र+अण्] 1. मूंगे का वृक्ष 2. देवदारू वृक्ष 3. सरल वृक्ष 4. नीम का पेड़ ।

पारिभाव्यम् [परिभू+ष्यञ्] जमानत, प्रतिभूति, जमानत के रूप में रक्खी गई वस्तु ।

पारिभाषिक (वि०) (स्त्री०—की) [परिभाषा+ठक्] 1. चालू, सामान्य प्रचलित 2. (शब्द आदि) तकनीकी, किसी विशेषार्थ का संकेतक ।

पारिमांडल्यम् [परिमंडल+ष्यञ्] अणु, सूर्य की किरण में विद्यमान रजकण भाषा० १५ ।

पारिमुखिक (वि०) (स्त्री०—की) [परिमुख+ठक्] मुंह के सामने का, निकटवर्ती, पास का ।

पारिमुख्यम् [परिमुख+ष्यञ्] उपस्थिति, समीप होना ।

पारिया (पा) त्रः (पुं०) सात मुख्य पर्वत शृंखलाओं में से एक रघु० १८।१६, दे० 'कुलाचल' ।

पारिया (पा) त्रिकः [पारियात्र+ठक्] 1. पारियात्र पहाड़ का निवासी 2. पारियात्र पहाड़ ।

पारियानिकः [परियान+ठक्] यात्रा पर जाने के लिए गाड़ी ।

पारिरक्षकः [परिरक्षति आत्मान—परि+रक्ष्+ण्वुल् +अण्] साधु, सन्यासी ।

पारिवित्त्यम्, पारिवेत्र्यम् [परिवित्त+ष्यञ्, परिवेतृ +ष्यञ्] छोटे भाई का विवाह हो जाने पर भी बड़े भाई का अविवाहित रहना ।

पारिव्राजकम् पारिव्राज्यम् [परिव्राजक+अण्, परिव्राज् +ष्यञ्] साधु सन्यासी का भ्रमणशील जीवन, सन्यास ।

पारिशीलः [परिशील+अण्] रोटी, पूड़ा, मालपुआ (दे० अपूप) ।

पारिशेष्यम् [परिशेष+ष्यञ्] बचा हुआ, शेष, बाकी ।

पारिषद (वि०) (स्त्री०—दी) [परिषद्+अण्] सभा या परिषद् से संबन्ध रखने वाला,—दः 1. सभा में उपस्थित व्यक्ति, सभा का सदस्य, परामर्शक 2. राजा का सहचर,—दाः (पुं०, ब० व०) देव का अनुचरवर्ग ।

पारिषद्यः [परिषद्+ण्यत्] सभा में विद्यमान व्यक्ति, दर्शक ।

पारिहारिकी [परिहार+ठक्+ङीप्] एक प्रकार की बुझौवल, पहेली ।

पारिहार्यः [परि+हृ+ण्यत्+अण्] कड़ा, कंगण, —र्यम् लेना, ग्रहण करना ।

पारिहास्यम् [परिहास+ष्यञ्] हंसी-दिल्लगी, ठठोली, हंसी-मजाक ।

पारी [पॄ+णिच्+घञ्+ङीप्] 1. हाथी के पैरों को बांधने का रस्सा 2. जल का परिमाण 3. पानपात्र, सुराही, प्याला 4. दूध की बाल्टी—शि० १२।४० ।

पारीक्षितः=पारिक्षित ।

पारीण (वि०) [पार+ख] 1. दूसरी पार रहने या जाने वाला 2. (समास के अन्त में) सुविज्ञ, सुपरिचित—त्रिवर्गपारीणमसौ भवन्तमध्यासयन्नासनमेकमिन्द्रः—भट्टि० २।४६ ।

पारीणह्यम् [परिणह+ष्यञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] घर का सामान, या बर्तन आदि ।

पारीन्द्रः [पारि पशुः तस्येन्द्रः] 1. सिंह, 2. अजगर, बड़ा सांप ।

पारीरणः [पार्यां जलपूरे रण यस्य] 1. कछुवा 2. छड़ी, लाठी ।

पारुः [पिवति रसान्—पा+रु] 1. सूर्य 2. अग्नि ।

पारुष्यम् [परुष+ष्यञ्] 1. खुरदरापन, ऊबड़खाबड़पन, कड़ापन 2. कठोरता, क्रूरता, (स्वभाव की) निर्दयता 3. अपभाषा, गाली देना, बुराभला कहना, अश्लील भाषा, अपमान—भग० १६।४, याज्ञ० २।१२,७२ 4. (वाणी से या कर्म से) हिंसा—मनु० ८।६,७२, ७।४८,५१ 5. इन्द्र का उद्यान 6. अगर,—ष्यः बृहस्पति का विशेषण ।

पारोवर्यम् [परोवर+ष्यञ्] परंपरा ।

पार्घटम् [पादे घटते इति अच्, पृषो० साधुः] धूल, राख ।

पार्जन्य (वि०) [पर्जन्य+अण्] वृष्टि से संबंध रखने वाला ।

पार्ण (वि०) (स्त्री०—र्णी) [पर्ण+अण्] 1. पत्तों से संबंध रखने वाला या पत्तों का बना हुआ 2. पत्तों से उठाया हुआ (जैसे कि कर) ।

पार्थः [पृथा+अण्] 1. युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का मातृकुलसूचक नाम, परन्तु अर्जुन का विशेषरूप से —भग० १।२५, और दूसरे अनेक स्थल 2. राजा। सम० -सारथिः कृष्ण का विशेषण।

पार्थक्यम् [पृथक्+ष्यञ्] पृथकता, अलहदगी, अलग २ होने का भाव, अकेलापन, अनेकता।

पार्थवम् [पृथु+अण्] विशालता, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई।

पार्थिव (वि०) (स्त्री०—वी) [पृथिवी+अण्] 1. मिट्टी का बना हुआ, पृथ्वी संबंधी, भूमिसंबंधी, धरती से संबंध रखने वाला—यतोरजः पार्थिवमुज्जिहीते—रघु० १३।६४ 2. धरती पर शासन करने वाला 3. राजसी, राजकीय,—वः 1. पृथ्वी पर रहने वाला 2. राजा, प्रभु—रघु० ८।१ 3. मिट्टी का बर्तन। सम० —नन्दनः—सुतः राजकुमार, राजपुत्र,—कन्या—नन्दिनी, —सुता राजा की पुत्री, राजकुमारी।

पार्थिवी [पार्थिव+ङीप्] 1. सीता का विशेषण, धरती की पुत्री—पार्थिवीमुद्वहद्रघूद्वहः—रघु० ११।४५ 2. लक्ष्मी का विशेषण।

पार्द्रः (पुं०) 1. मुट्ठी भर चावल 2. क्षयरोग, तपेदिक।

पार्यंतिक (वि०) (स्त्री०—की) [पर्यन्त+ठक्] अन्तिम, आखरी, निर्णायक।

पार्वण (वि०) (स्त्री०—णी) [पर्वन्+अण्] 1. पर्व-संबंधी, रघु० ११।८२ 2. वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ता (जैसे कि चन्द्रमा का),—णम् पर्व के अवसर पर (अमावस्या के दिन) सभी पितरों के निमित्त आहुति देने का सामान्य संस्कार।

पार्वत (वि०) (स्त्री०—ती) [पर्वत+अण्] 1. पहाड़ पर होने या रहने वाला 2. पहाड़ पर उगने वाला, पहाड़ से प्राप्त होने वाला 3. पहाड़ी।

पार्वतिकम् [पर्वत+ठञ्] पहाड़ों का समुच्चय, पर्वत-शृंखला।

पार्वती [पार्वत+ङीप्] 1. दुर्गा का नाम, हिमालय की पुत्री के रूप में उत्पन्न (अपने पहले जन्म में वह सती थी—तु० कु० १।२१) तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना बंधुप्रियां बंधुजनो जुहाव—कु० १।२६ 2. ग्वालिन 3. द्रौपदी का विशेषण 4. पहाड़ी नदी 5. एक प्रकार की सुगंधयुक्त मिट्टी। सम० नन्दनः 1. कार्तिकेय की उपाधि 2. गणेश का विशेषण।

पार्वतीय (वि०) (स्त्री०—यी) [पर्वत+छ] पहाड़ में रहने वाला,—यः 1. पहाड़ी 2. एक विशेष पहाड़ी जाति का नाम (ब० व०) तत्र जन्यं रघोर्घोरं पार्वतीयैर्गणैरभूत्—रघु० ४।७७।

पार्वतेय (वि०) (स्त्री०—यी) [पर्वती+ढक्] पहाड़ पर उत्पन्न,—यम् अंजन, सुरमा।

पार्शवः [पर्शु+अण्] कुठार से सुसज्जित योद्धा।

पार्श्वः,—र्श्वम् [पर्शूनां समूहः] 1. कांख से नीचे का शरीर का भाग, स्थान जहाँ पसलियाँ हैं—शयने सन्निपण्णैकपार्श्वाम्—मेघ० ८९ 2. पांसू, कोख, (सजीव और निर्जीव पदार्थों का) पार्श्वांग—पिठर क्वथदति-मात्रं निजपार्श्वानिव दहतितराम्—पंच० १।३२४ 3. आस-पास,—र्श्वः जिनका विशेषण,—र्श्वम् 1. पसलियों का समूह 2. जालसाज़ी से भरी हुई तरकीब, असम्मानजनक उपाय (पार्श्वम् क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ है—'के निकट' 'के पास में' 'की ओर'—श० ७।८, इसी प्रकार पार्श्वात् 'की ओर से' 'से दूर' पार्श्वे 'निकट' 'नज़दीक' 'पास में' न मे दूरे किंचित्क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्—श० १।९, भर्तृ० २।३७)। सम० —अनुचरः टहलुआ, सेवक—रघु० २।९,—अस्थि (नपुं०) पसली,—आयात (वि०) जो बहुत निकट आ गया है,—आसन्न (वि०) पास ही विद्यमान, —उदरप्रियः केकड़ा,—गः टहलुआ, सेवक—रघु० ११।४३,—गत (वि०) पार्श्ववर्ती, पास ही स्थित, सेवा करने वाला 2. शरणागत,—चरः सेवक, टहलुआ —रघु० ९।७२, १४।२९,—दः टहलुआ, सेवक,—देशः (शरीर की) कोख, पांसू,—परिवर्तनम् 1. बिस्तर पर करवट बदलना 2. भाद्रपदशुक्ल ११ में होने वाला पर्व (आज के दिन समझा जाता है कि विष्णु करवट बदलते हैं), भागः कोख, पांसू,—वर्तिन् (वि०) 1. पास होने वाला, उपस्थित, सेवा में खड़ा हुआ 2. साथ ही लगा हुआ,—शय (वि०) पास ही सोने वाला, बगल में सोने वाला,—शूलः—लम् कोख में मीठा दर्द, सूत्रकः एक प्रकार का आभूषण—स्थ (वि०) पार्श्ववर्ती, नजदीकी, निकटवर्ती, समीपस्थ (स्थः) 1. सहचर 2. सूत्रधार का सहायक—तु० पारिपार्श्वक।

पार्श्वकः (स्त्री०—की) [पार्श्व+कन्] ठग, प्रवंचक, चोर।

पार्श्वतः (अव्य०) [पार्श्व+तस्] निकट, नजदीक, समीप पास रघु० १९।३१।

पार्श्विक (वि०) (स्त्री०—की) [पार्श्व+ठञ्] पांसू से संबंध रखने वाला,—कः 1. पक्ष लेने वाला आदमी, साझीदार 2. साथी, सहचर 3. जादूगर।

पार्षत (वि०) (स्त्री०—ती) [पृषत+अण्] चितकबरे हरिण से संबंध रखने वाला—मनु० ३।२६९, याज्ञ० १।२५७,—तः राजा द्रुपद और उसके पुत्र धृष्टद्युम्न का पितृकुलसूचक नाम।

पार्षती [पार्षत+ङीप्] 1. द्रौपदी का विशेषण 2. दुर्गा की उपाधि।

पार्षद् (स्त्री०) [परिषद्, पृषो०] सभा।

पार्षदः [पार्षद महंति अण्] 1. साथी, सहचर 2. टहलुआ अनुचरवर्ग 3. सभा में उपस्थित, दर्शक, सभासद् ।

पार्षद्यः [पर्षद्+ण्य] सभासद्, सदस्य ।

पार्ष्णिः (पुं०, स्त्री०) [पृष्+नि, नि० वृद्धिः] 1. एड़ी —उद्वेजयत्वंगुलि पार्ष्णिभागान्—कु० १।११, पार्ष्णि प्रहार—का० ११९ 2. सेना को पिछाड़ी 3. पिछाड़ी, पिछला भाग—शुद्धपार्ष्णिरयान्वितः रघु० ४।२६, 'जिसकी पिछाड़ी शत्रुरहित हो गई है' 4. ठोकर (स्त्री०) 1. व्यभिचारिणी स्त्री 2. कुन्ती का विशेषण । सम०—**ग्रहः** अनुयायी,—**ग्रहणम्** शत्रु की पीठ पर आक्रमण करना,—**ग्राहः** पृष्ठवर्ती शत्रु 2. पृष्ठवर्ती सेना का सेनापति 3. मित्रराजा जो किसी राजा की सहायता करे—मनु० ७।२०७,—**घातः** ठोकर—कि० १७।५०,—**त्रम्** पृष्ठरक्षक, पीछे रहने वाली सेना की टुकड़ी, प्रारक्षित,—**वाहः** बाह्यवर्ती घोड़ा ।

पालः [पाल्+अच्] 1. प्ररक्षक, अभिभावक, संरक्षक —यथा गोपाल, वृष्णिपाल आदि 2. ग्वाला—विवादः स्वामिपालयोः—मनु० ८।५, २२९, २४० 3. राजा 4. पीकदान । सम०—**घ्नः** कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी ।

पालकः [पाल्+ण्वुल्] 1. अभिभावक, प्ररक्षक 2. राजकुमार, राजा, शासक, प्रभु 3. साईस, घोड़े का रखवाला 4. घोड़ा 5. चित्रक वृक्ष 6. पालक पिता ।

पालकाप्यः (पुं०) 1. एक ऋषि करेणु का पुत्र, (इन्होंने ही सर्वप्रथम हस्तिविज्ञान की शिक्षा दी) 2. हस्तिविज्ञान ।

पालंकः [पाल्+क्विप्=पाल्+अंक्+घञ्] 1. पालक का साग 2. बाजपक्षी,—**की** एक गंधद्रव्य ।

पालंक्यः,—क्या [पालंक+ष्यञ्, स्त्रियां टाप् च] एक सुगंध द्रव्य ।

पालन (वि०) [पाल्+ल्युट्] रक्षा करने वाला, संरक्षण देने वाला, कि० १।९,—**नम्** 1. प्ररक्षण, संरक्षण, पालना, पोसना, लालन-पालन करना—लब्ध° रघु० १९।३, इसी प्रकार प्रजा° क्षिति° आदि 2. बनाये रखना, अनुपालन करना, (व्रत, प्रतिज्ञा, आदि को) पूरा करना 3. ताजी ब्याई हुई गौ का दूध, खीस ।

पालयितृ (पुं०) [पाल्+णिच्+तृच्] प्ररक्षक, संरक्षक, परवरिश करने वाला—रघु० २।६९।

पालाश (वि०) (स्त्री०—शी) [पलाश+अण्] 1. ढाक का, ढाक से उत्पन्न 2. ढाक की लकड़ी का बना हुआ, मनु० २।४५ 3. हरा,—**शः** हरा रंग । सम०—**खंडः,—षण्डः** मगध देश का विशेषण ।

पालि,—ली (स्त्री०) [पाल्+इन्] कान का सिरा

पालिः,—ली [स्त्री०] [पाल्+इन्] 1. कान का सिरा —श्रवणपालिः—गीत० ३ 2. किनारा, गोट, मगजी —भर्तृ० ३।५५ 3. तेज सिरा, धार या नोक —भामि० २।३ 4. हद, सीमा 5. श्रेणी, पंक्ति, —विपुल पुलकपाली—गीत० ६, शि० ३।५१ 6. धब्बा, चिह्न 7. बांध, पुल 8. गोद, अंक 9. आयताकार तालाब 10. अध्ययनकाल में गुरु द्वारा छात्र का भरण-पोषण 11. जूं 12. प्रशंसा, स्तुति 13. वह स्त्री जिसके दाढ़ी-मूंछे हों ।

पालिका [पालि+कन्+टाप्] 1. कान का सिरा 2. तलवार या किसी छुरी आदि काटने वाले उपकरण की तेज धार 3. पनीर या मक्खन आदि काटने की छुरी ।

पालित (भू० क० कृ०) [पाल्+क्त] 1.प्ररक्षित, संरक्षित, आरक्षित 2. पालन किया हुआ, पूरा किया हुआ ।

पालित्यम् [पलित+ष्यञ्] वृद्धावस्था के कारण बालों की सफ़ेदी, धवलता ।

पाल्वल (वि०) (स्त्री—ली) [पल्वल+अण्] पोखर में उत्पन्न, तलैया से प्राप्त ।

पावकः [पू+ण्वुल्] 1. आग—पावकस्य महिमा स गण्यते कक्षवज्ज्वलति सागरेऽपि यः—रघु० ११।७५, ३।९, १६।८७ 2. अग्नि देवता 3. बिजली की आग 4. चित्रक वृक्ष 5. तीन की संख्या । सम०—**आत्मजः** कार्तिकेय का विशेषण 2. सुदर्शन नामक ऋषि ।

पावकिः [पावक+इञ्] कार्तिकेय का विशेषण ।

पावन (वि०) (स्त्री०—नी) [पू+णिच्+ल्युट्] 1 निर्मल करने वाला, पाप से मुक्त करने वाला, शुद्ध करने वाला, पवित्र बनाने वाला—पादास्तामभितो निषण्णहरिणा गौरीगुरोः पावनाः—श० ६।१७, रघु० १५।१०१ १९।५३, भग० १८।५, मनु० २।२६, याज्ञ० ३।३०७ 2. पवित्र, पुनीत, विशुद्ध, परिष्कृत—कु० ५।१७,—**नः** 1. आग 2. गंध द्रव्य 3. सिद्ध 4. व्यास कवि,—1. **नम्** पवित्री करण, विशुद्धीकरण—पदनखनीरजनितजनपावन—गीत० १ 2. तप 3. जल 4. गोबर 5. संप्रदायसूचक तिलक । सम०—**ध्वनिः** शंखनाद ।

पावनी [पावन+ङीप्] 1. पवित्र तुलसी 2. गाय 3. गंगा नदी ।

पावमानी [पवमानम् अधिकृत्य प्रवृत्तम्-पवमान+अण् +ङीप्] विशिष्ट वैदिक ऋचाओं का विशेषण ।

पावरः (पुं.) पासे का वह पहलू जिस पर 'दो' की संख्या अंकित हो, पासे को विशेष ढंग से फेंकना,—पावरपतनाच्च शोषित शरीरः—मृच्छ० २।८ ।

पाशः [पश्यते बध्यतेऽनेन, पश् करणे घञ्] 1. डोरी, शृंखला, बेड़ी फंदा—पादाकृष्टव्रततिवलयासंगसंजातपाशः श० १।३२, बाहुपाशेन व्यापादिता मृच्छ० ९, रघु० ६।८४ 2. जाल, खटकेदार पिंजड़ा, या फंदा 3. बन्धन जो (वरुण के द्वारा) शस्त्र की भांति प्रयुक्त होता है—कु० २।२१ 4. पाँसा—रघु०

६।१८ पर मल्लि० 5. किसी बुनी हुई वस्तु की किनारी 6. (समास के अन्त में) 'पाश' का अर्थ होता है—(क) तिरस्कार, अवमान—यथा 'छात्रपाश' (निकम्मा विद्यार्थी) में, वैयाकरण०, भिषक्० आदि (ख) सौन्दर्य, सराहना—यथा—सैवोष्ठमुद्रा स च कर्णपाशः—उत्तर० ६।२७, (ग) बहुतायत, ढेर, राशि ('केश' अर्थ द्योतक शब्द के पश्चात) केशपाश (केशकलाप)। सम०—अंतः कपड़े का पृष्ठभाग, —क्रीडा जूआ खेलना, पांसे के साथ खेलना,—धरः, —पाणिः वरुण का विशेषण,—बद्ध (वि०) पिंजड़े में फंसा हुआ, जाल में पकड़ा हुआ, फंदे में पड़ा हुआ, —बंधः बंधन, जाल, फांसी की डोरी,—बंधकः बहेलिया, पक्षी पकड़ने वाला, बंधनम् जाल,—भृत् (पुं०) वरुण का विशेषण—रघु० २।९,—रज्जुः (स्त्री०) बेड़ीः रस्सी,—हस्तः 'हाथ में जाल पकड़े हुए' वरुण का विशेषण।

पाशकः [पाशयति पीडयति—पश्+णिच्+ण्वुल्] अक्ष, पाँसा। सम०—पीठम् जूआ खेलने की चौकी।

पाशनम् [पश्+णिच्+ल्युट्] 1. बंधन, फंदा, जाल, गुलेल या गोफिया 2. डोरी, चाबुक या सोटे में लगी चमड़े की डोरी या तस्मा 3. जाल में फंसाना, पिंजरे में बन्द करना।

पाशव (वि०) (स्त्री०—वी) [पशु+अण्] जानवरों से प्राप्त, या संबंध रखने वाला,—वम् रेवड़, लहंडा। सम०—पालनम् पशुचरण या चरागाह, गोचरभूमि.

पाशित (वि) [पश्+णिच्+क्त] बद्ध, जाल में फंसा, बेड़ियों से जकड़ा हुआ।

पाशिन् (पुं०) [पाश+इनि] 1. वरुण का विशेषण 2. यम का विशेषण 3. हिरणों को पकड़ने वाला, बहेलिया, जाल में फंसाने वाला।

पाशुपत (वि०) (स्त्री०—ती) [पशुपति+अण्] 1. पशुपति से प्राप्त, या पशुपति से सम्बद्ध अथवा पशुपति के लिए पावन, —तः 1. शिव का अनुयायी और पूजक 2. पशुपति के सिद्धान्तों का पालन करने वाला, —तम् पाशुपत सिद्धांत (दे० सर्व०)। सम०—अस्त्रम् पशुपति या शिव द्वारा अधिष्ठित एक अस्त्र का नाम (जिसे अर्जुन ने शिव से प्राप्त किया था)।

पाशुपाल्यम् [पशुपाल+ष्यञ्] पशुओं का पालना, ग्वाले की वृत्ति या धंधा।

पाश्चात्य (वि०) [पश्चात्+त्यक्] 1. पिछला 2. पश्चिमी - रघु० ४।६२ 3. पश्चवर्ती, बाद का 4. बाद में होने वाला,—त्यम् पिछला भाग।

पाश्या [पाश+य+टाप्] 1. जाल 2. रस्सियों या पीड़ियों का समूह।

पाषंडः [पा त्रयीधर्मः तं षंडयति-पा+षंड्+अच्]=पाखंड —मनु० ५।९०, ९।२८५।

पाषंडकः, पाषंडिन् (पुं०) [पाषंड+कन्, पा+षड्+णिनि] नास्तिक, धर्मभ्रष्ट, धर्म के नाम पर झूठा आडंबर रचने वाला धूर्त व्यक्ति,—याज्ञ० १।१३०, २।६०।

पाषाणः [पिनष्टि पिष् संचूर्णने आनच् पृषो० तारा०] पत्थर, —णी बाट का काम देने वाला छोटा पत्थर। सम०—दारकः, दारणः टांकी, संधिः चट्टान के अन्दर गुफा या दरार, हृदय (वि०) पत्थर की भांति कठोरहृदय, क्रूर, निष्ठुर।

पि (तुदा० पर० पियति) जाना, हिलना-जुलना।

पिकः [अपि कायति शब्दायते—अपि+कै+क, अकारलोपः] कोयल—कुसुमशरासनशासनवंदिनि पिकनिकरे भज भावम्—गीत० ११ या—उन्मीलंति कुहूः कुहूरिति कलोत्तालाः पिकानां गिरः—गीत० १। सम० आनन्दः,—बांधवः बसन्तऋतु,—बंधुः,—रागः, वल्लभः आम का पेड़।

पिक्कः [पिक इत्यव्यक्तसब्देन कायति—पिक+कै+क] 1. २० वर्ष की आयु का हाथी 2. हाथी का बच्चा।

पिंग (वि०) [पिञ्ज् वर्णो अच् कुत्वम्] लालिमा लिये भूरा रंग, खाकी, पीला-लाल रंग,—अन्तर्निविष्टामलपिंगतारम् (विलोचनम्) कु० ७।३३,—गः 1. खाकी या भूरा रंग 2. भैंसा 3. चूहा,—गा 1. हल्दी 2. केसर 3. एक प्रकार का पीला रोगन 4. चंडिका की उपाधि। सम०—अक्ष (वि०) ललाई लिये भूरे रंग की आँखों वाला, लाल आँखों वाला (क्ष) 1. लंगूर 2. शिव का विशेषण,—ईक्षणः शिव की उपाधि, —ईशः अग्नि का विशेषण,—कपिशा तेल चट्टा, —चक्षुस् (पुं०) केकड़ा,—जटः शिव का विशेषण, —सारः हरताल,—स्फटिकः 'पीला बिल्लौर', गोमेद रत्न।

पिंगल (वि०) [पिङ्ग०—सिध्मा० लच्, पिंगलाति ला+क व तारा०] ललाई लिये भूरे रंग का, पीताभ, भूरा, खाकी—रघु० १२।७१, मनु० ३।८—लः 1. खाकी रंग 2. अग्नि 3. बंदर 4. एक प्रकार का नेवला 5. छोटा उल्लू 6. एक प्रकार का साँप 7. सूर्य के एक अनुचर का नाम 8. कुबेर के एक कोष का नाम 9. एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम, संस्कृत के छन्दः शास्त्र का प्रणेता, उसकी कृति का नाम—पिंगलच्छंदः शास्त्र है,—छन्दोज्ञाननिधिं जघान मकरो, वेलातटे पिंगलम्—पंच० २।३३,—लम् 1. पीतल 2. पीले रंग की हरताल,—ला 1. एक प्रकार का उल्लू 2. शीशम का वृक्ष 3. एक प्रकार की धातु 4. शरीर की विशेष वाहिका 4. दक्षिण देश की हथिनी 5. एक

गणिका जो अपनी पवित्रता तथा पावन जीवन के कारण प्रसिद्ध है (भागवत में उल्लेख है कि किस प्रकार उस गणिका ने तथा अजामिल ने इस लोक के बंधनों से मुक्ति पाई)। सम०—अक्षः शिव का विशेषण।

पिंगलिका [पिंगल+ठन्+टाप्] 1. एक प्रकार का सारस 2. एक प्रकार का उल्लू।

पिंगाशः [पिंग+अश्+अण्] 1. गाँव का मुखिया या मालिक 2. एक प्रकार की मछली,—शम् प्राकृत स्वर्ण,—शी नील का पौधा।

पिचण्डः,—डम्, पिचिण्डः,—डम् [अपि+चण्ड्+घञ्, अकालोपः, पृषो०] पेट, उदर।

पिचण्डकः [पिचण्ड+कन्] पेटू, औदरिक।

पिचिंडिका [पिचिण्ड+ठन्+टाप्] पिंडली, टांग की पिंडली।

पिचिंडिल (वि०) [पिचिंड+इलच्] मोटे पेट वाला, स्थूलकाय।

पिचुः पच्+उ पृषो० तारा०] 1. रूई 2. एक प्रकार का वाट, (दो तोले के बराबर) कर्ष 3. एक प्रकार का कोढ़। सम०—तलम् रूई,—मंदः,—मर्दः नीम का पेड़—शि० ५।६६।

पिचुलः [पिचु+ला+क] 1. रूई 2. एक प्रकार का जलकाक या समुद्री कौवा।

पिच्चट (वि०) [पिच्च्+अटन्] दबाकर चपटा किया हुआ,—टः आँखों की सूजन, नेत्र-प्रदाह,—टम् 1. राँगा, जस्ता 2. सीसा।

पिच्चा [पिच्च्+अच्+टाप्] १६ मोतियों की एक लड़ जिसका वजन एक धरण (मोतियों की विशेष तोल) हो।

पिच्छम् [पिच्छ्+अच्] 1. पूँछ का पर (जैसे मोर का) 2. मोर की पूँछ—शि० ४।५० 3. बाण के पंख 4. बाजू 5. कलगी, शिखा,—च्छः पूंछ,—च्छा 1. म्यान, गिलाफ, कोष 2. चावल का मांड 3. पंक्ति, श्रेणी 4. ढेर, समुच्चय 5. रेशमीकपास के पौधे का गोंद या रस 6. केला 7. कवच 8. टांग की पिंडली 9. साँप की विषमय लार 10. सुपारी। सम०—बाणः बाज, श्येन।

पिच्छल (वि०) [पिच्छ+लच्] 1. चिपचिपा, चिकना, फिसलनवाला, लसलसा—तरुणं सर्षपशाकं नवौदनम् पिच्छिलानि च दधीनि—छन्द० १ 2. पूँछवाला—लः, ला,—लम्, 1. चावलों का मांड, भुक्तमंड 2. चावल की कांजी से युक्त चटनी 3. मलाई समेत दही। सम० त्वच् (पुं०) संतरे का पेड़ या छिलका।

पिंज् i (अदा० आ०—पिंक्ते) 1. हल्के रंग की, पुट देना, रंगना 2. स्पर्श करना 3. सजाना ii (चुरा० उभ० पिंजयति—ते) 1. देना 2. लेना 3. चमकना 4. शक्तिशाली होना 5. रहना, बसना 6. चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, मार डालना।

पिंजः [पिंज्+घञ्, अच् वा] 1. चन्द्रमा 2. कपूर 3. हत्या, वध 4. ढेर,—जम् सामर्थ्य, शक्ति,—जा 1. क्षति, चोट 2 हल्दी 3. कपास।

पिंजटः [पिंज्+अटन्] दीद, आँख की कीच।

पिंजनम् [पिंज्+ल्युट्] धुनकी, रूई धुनने का धनुषाकार उपकरण।

पिंजर (वि०) [पिंज्+अरच्] ललाई लिये पीले रंग का खाकी, सुनहरी रंग का,—शिखा प्रदीपस्य सुवर्णपिंजरा—मृच्छ० ३।१७, रघु० १८।४०,—रः ललाई लिये पीला या खाकी भूरा रंग 2. पीला रंग—रम् 1. सोना 2. हरताल 3. अस्थिपंजर 4. पिंजड़ा।

पिंजरकम् [पिंजर+कन्] हरताल।

पिंजरित (वि०) [पिंजर+इतच्] पीले रंग का, हल्के भूरे रंग का।

पिंजल (वि०) [पिंज्+कलच्] 1. शोकसंतप्त, भयभीत, व्याकुल, विस्मित 2. (सेना आदि) आतंकित,—लम् 1. हरताल 2. कुश की पत्ती।

पिंजालम् [पिंज्+आलच्] सोना, सुवर्ण।

पिंजिका [पिंज+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] पूनी, रूई का गोल गल्हा जिससे कातने पर सूत निकलता है।

पिंजूषः [पिंज्+ऊषण्] कान का मैल।

पिंजेटः [=पिंजट, पृषो०] आँखों की कीच, दीद।

पिंजोला [पिंज्+ओल+टाप्] पत्तों की खड़खड़ाहट, पत्तों का खड़-खड़ शब्द करना।

पिटः [पिट्+क] सन्दूक, टोकरी—टम् 1. घर, कुटीर 2. छप्पर, छत।

पिटकः,—कम् [पिट+कन्] 1. सन्दूक, टोकरी 2. खत्ती 3. फुंसी फफोला, छोटा फोड़ा, नासूर (इस अर्थ में 'पिटका' तथा 'पिटिका' भी)—ततः गंडस्योपरि पिटका संवृत्ता—श० २ 4. इन्द्र के झंडे पर एक प्रकार का आभूषण।

पिटक्या [पिटक+य+टाप्] सन्दूकों का ढेर।

पिटाकः [पिट्+काक वा०] पिटारी, सन्दूक।

पिट्टकम् [=किट्टक, पृषो० कस्य पः] दाँतों का जमा हुआ मैल।

पिठरः,—रम् [पिठ्+करन्] बर्तन, तसला, बटलोई ('पिठरी' भी इसी अर्थ में)—पिठरं क्वथदतिमात्रं निजपार्श्वानेव दहतितराम्—पंच० १।३२४, जठरपिठरी दुष्पूरेयं करोति विडंबनाम्—भर्तृ० ३।११६,—रम् रई का डंडा।

पिठरकः,—कम् [पिठर+कन्] बर्तन, तसला। सम० —कपाल,—लम् ठीकरा, खपड़ी, खप्पर।

पिडकः,—का [पीड्+ण्वुल्, नि० साधुः] छोटा फोड़ा, फुंसी; फफोला ।

पिंड् (भ्वा० आ०, चुरा० उभ०—पिंडते, पिंडयति-ते, पिंडित) 1. इकट्ठा करके पिंडी या गोला बनाना 2. जोड़ना, मिलाना 3. ढेर लगाना, इकट्ठा करना ।

पिंड (वि०) (स्त्री०—डी) [पिण्ड्+अच्] 1. ठोस, घन 2. मिला हुआ, सघन, सटा हुआ, -डः,—डम् 1. पिंडी, गोला, गोलक (अयः पिंडः, नेत्र पिंड आदि) 2. लौंदा, ढेला (मिट्टी का) 3. कौर, ग्रास, मुंहभर कवल —रघु० २।५९ 4. श्राद्ध में पितरों को दिया जाने वाला चावलों का पिंड रघु० १।६६, १।२६, मनु० ३।२१६, ९।१३२, १३६, १४०, याज्ञ० १।१५९ 5. भोजन सफलीकृतभर्तृपिंडः भालवि० ५,'नमकहलाल' 6. जीविका, वृत्ति, निर्वाह 7. दान पिंडपातवेला मा० २ 8. मांस, आमिष 9. गर्भधारण की आरंभिक अवस्था का गर्भ 10. शरीर, शारीरिक ढांचा—एकांतविध्वंसिपु मद्विधानां पिंडेष्वनास्था खलु भौतिकेषु—रघु २।५७ 11. ढेर, संग्रह, समुच्चय 12. टांग की पिंडली—मा० ५।१६ 13. हाथी का कुंभस्थल 14. मकान के आगे का निकाला हुआ छज्जा 15. धूप, या गंध द्रव्य 16. (अंक ग० में) जोड़, कुलयोग 17. (ज्या० में) घनत्व, —डम् 1. शक्ति, सामर्थ्य, ताक़त 2. लोहा 3. ताजा मक्खन 4. सेना (पिंड कृ गोले बनाना, निष्पीडित करना, ढेर लगाना, पिंडीभू गोले या लौंदे बनाना) । सम०—अन्वाहार्य पितरों को पिंड दान के पश्चात् खाने के योग्य—मनु० ३।१२३,—अन्वाहार्यकम् पितरों के उद्देश्य से दिया हुआ भोजन,—अभ्रम् ओला, —अयसम् इस्पात,—अलक्तकः महावर, लाल रंग, —अशनः,—आशः,—आशकः,—आशिन् (पुं०) भिक्षुक,—उदकक्रिया मृतव्यक्तियों के निमित्त पिण्डदान तथा जलदान,—श्राद्ध और तर्पण,—उद्धरणम् पिंडदान में भाग लेना,—गोसः रसगंध, लोबान की तरह का सुगंधित गोंद,—तैलम्,—तैलकः गंधद्रव्य विशेष, लोबान,—द (वि०) 1. जो भोजन देता है, जीवन निर्वाह के लिए आहार देने वाला—श्वा पिंडदस्य कुरुते गजपुंगवस्तु धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुंक्ते भर्तृ० २।३१ 2. मृत पितरों को पिण्ड देने का अधिकारी—याज्ञ० २।१३२ (दः) पिंडदान करने वाला निकटतम संबंधी पुरुष 2. स्वामी, अभिरक्षक, —दानम् 1. अन्त्येष्टि क्रिया के समय पिंड देना 2. अमावस्या की संध्या के समय पितरों को पिंडदान देना,—निर्वपणम् पितरों को पिंडदान देना,—पातः भिक्षा देना, मा० १,—पातिकः भिक्षा से जीविका चलाने वाला,—पादः—पाद्यः हाथी,—पुष्पः 1. अशोक वृक्ष 2. चीन का गुलाब 3. अनार (ष्पम्) 1. अशोक वृक्ष पर फूल आना, मंजरी 2 चीनी गुलाब का फूल 3. कमल फूल,—भाज् (वि०) पिंड प्राप्त करने का अधिकारी (पुं०, ब० व०) स्वर्गीय मृत पुरुष या पितर—श० ६।२५,—भृतिः (स्त्री०) जीविका, जीवन निर्वाह का साधन, —मूलम्,—मूलकम् गाजर, —यज्ञः श्राद्ध करके पितरों को पिंडदान देना—याज्ञ० ३।१६,—लेपः पिंड का वह अंश जो हाथ में चिपका रह जाता है (यह अंश प्रपितामह से ठीक पूर्ववर्ती तीन पितरों को दिया जाता है),—लोपः (संतान न होने के कारण) पिंडदान का अभाव, —संबंधः जीवित तथा मृत व्यक्ति के बीच का संबंध जिससे कि पिंडदाता की पिंडभोक्ता के प्रति पात्रता का निर्धारण किया जाय ।

पिंडकः—कम् [पिण्ड+कै+क] 1. लौंदा, गोला, गोलक 2. गूमड़ा या सूजन 3. भोजन का ग्रास 4. टांग की पिंडली 5. गंधद्रव्य, लोबान 6. गाजर—कः बैताल, पिशाच ।

पिंडनम् [पिंड्+ल्युट्] गोले या पिण्ड बनाना ।

पिंडलः [पिंड्+कलच्] 1. पुल, बाँध 2. टीला, ऊर्ध्वभूमि या शैलशिला ।

पिंडसः [पिंड+सन्+ड] भिक्षुक, भिक्षा पर जीवन यापन करने वाला साधु ।

पिंडातः [पिंड+अत्+अच्] लोबान, गंधद्रव्य ।

पिंडारः [पिंड+ऋ+अण्] 1. साधु, भिक्षुक 2. ग्वाला 3. भैंसों को चराने वाला 4. विकंकत वृक्ष 5. निन्दा की अभिव्यक्ति ।

पिंडिः—डी (स्त्री०) [पिंड्+इन्, पिंडि+ङीष्] 1. पिन्नी, गोला 2. पहिये की नाभि 3. टांग की पिडली 5. लौकी, घीया 6. घर 7. ताड़ की जाति का वृक्ष । सम०—पुष्पः अशोक, वृक्ष,—लेपः एक प्रकार का लेप या उबटन,—शूरः 'गेहेशूरः' पेटू, डींग हाकने वाला, कायर, आत्मश्लाघी, भीरु, मेहरा—तु० गेहेनर्दिन् आदि ।

पिंडिका [पिण्ड+ण्वुल्, इत्वम्] 1. धूम, गोलाकार सूजन 2. टांग की पिंडली—दे० ऊ० 'पिंडि' ।

पिंडित (वि०) [पिण्ड्+क्त] 1. दबा २ कर बनाया गया गोला या पिण्डा 2. पिंडाकार बनाया हुआ, लौंदे जैसा 3. ढेर किया हुआ, बटौड़ा 4. मिश्रित 5. जोड़ा हुआ, गुणा किया हुआ 6. गिना हुआ, संख्यात ।

पिंडिन् (वि०) [पिंड+इनि] 1. पिंड प्राप्त करने वाला (पितर) (पुं०) भिखारी 2. पितरों को पिण्डदान देने वाला ।

पिंडिलः [पिण्ड+इलच्] 1. पुल, बाँध 2. ज्योतिषी, गणक ।

पिंडीर (वि०) [पिण्ड+ईर्+णिच्] फीका, रसहीन, नीरस, सूखा, —रः 1. अनार का वृक्ष 2. मसीक्षेपी का भीतरी कवच 3. समुद्रफेन—दे० 'डिंडीर'।

पिंडोलिः (स्त्री०) [पिण्ड्+ओलि] खाते समय मुंह से गिरा कण, जूठन, उच्छिष्ट।

पिण्याकः कम् [पिप्+आक, नि० साधुः] 1. खल (तिल या सरसों की) 2. गन्ध द्रव्य, लोबान 3. केशर 4. हींग।

पितामहः (स्त्री०—ही) [पितृ+डामहच्] 1. दादा, बाबा 2. ब्रह्मा का विशेषण।

पितृ (पुं०) [पाति रक्षति—पा+तृच्] पिता,—तेनास लोकः पितृमान् विनेत्रा—रघु० १४।२३, १।२४, ११।६७,—रौ (द्वि०व०) पिता-माता, माता-पिता—जगतः पितरौ वंदे पार्वतीपरमेश्वरौ—रघु० १।१, याज्ञ० २।११७,—रः (ब०व०) 1. पूर्वपुरुष, पूर्वज, पिता,—श० ६।२४ 2. पितृकुल के पितर, पितृवर्ग—मनु० २।१५१ 3. पितर—रघु० २।१६, ४।२०, भग० १०।२९, मनु० ३।८१, १९२। सम०—**अर्जित** (वि०) पितः द्वारा कमाई हुई पैतृक (संपत्ति), —**कर्मन्** (नं०), **कार्यम्**,—**कृत्यम्**,—**क्रिया** मृत पूर्व पुरुषों को के निमित्त किया जाने वाला याग या श्राद्धकर्म,—**काननम्** कब्रिस्तान, रघु० ११।१६,—**कुल्या** मलय पर्वत से निकलने वाली नदी,—**गणः** 1. पूर्वपुरुषाओं के समस्त वर्ग 2. पितर, वंश प्रवर्तक जो प्रजापति के पुत्र थे—दे० मनु० ३-१९४-५,—**गृहम्** 1. पिता का घर 2. कब्रिस्तान, जहाँ दफन किये जायें,—**घातकः**, —**घातिन्** (पुं०) पिता की हत्या करने वाला,—**तर्पणम्** 1. पितरों को दी जाने वाली आहुति या जलदान 2. (मार्जन के अवसर पर) पितर तथा अन्य दिवंगत पूर्वजों के निमित्त दायें हाथ से जल छोड़ना—मनु० २।१७६ 3. तिल,—**तिथिः** (स्त्री०) अमावस्या,—**तीर्थम्** गया तीर्थ जहाँ जाकर पितरों के निमित्त श्राद्ध करना विशेष रूप से फलदायक विहित है 2. अंगूठे और तर्जनी के मध्य का भाग (इसके द्वारा तर्पण आदि करना पवित्र माना जाता है),—**दानम्** पितरों के निमित्त किया जाने वाला दान, **दायः** पिता से प्राप्त संपत्ति,—**दिनम्** अमावस्या,—**देव** (वि०) 1. पिता की पूजा करने वाला 2. पितरों की पूजा से संबद्ध (वाः) अग्निष्वात्त आदि दिव्य पितर,—**दैवत** (वि०) पितरों द्वारा अधिष्ठित (तम्) दसवाँ (मघा) नक्षत्र,—**द्रव्यम्** पिता से प्राप्त सम्पत्ति, याज्ञ० २।११८,—**पक्षः** 1. पितृकुल, पैतृक संबंध 2. पितृकुल के संबंधी 3. पितृ पक्ष आश्विन मास का कृष्ण पक्ष जिसमें पितृकृत्य करना प्रशस्त माना गया है,—**पतिः** यम का विशेषण,—**पदम्** पितरों का लोक,—**पितृ** (पुं०) दादा, बाबा, पितामह,—**पुत्रौ** (द्वि० व०—**पितापुत्रौ**) पिता और पुत्र, (**पितुः पुत्रः** प्रसिद्ध और लोक विश्रुत पिता का पुत्र,—**पूजनम्** पितरों की पूजा,—**पैतामह** (वि०) (स्त्री० ही) पूर्व पुरुषाओं से प्राप्त, पैतृक, आनुवंशिक (ब०व०—हाः) पूर्व पुरुष,—**प्रसूः** (स्त्री०) 1. दादी 2. सांध्यकालीन झुटपुटा,—**प्राप्त** (वि०) 1. पिता से प्राप्त 2. पितृकुल क्रमागत से प्राप्त,—**बंधु** पितृकुल के नातेदार (नपुं०—बंधु) पिता के संबंध से रिश्तेदारी,—**भक्त** (वि०) पिता का कर्तव्य परायण भक्त,—**भक्तिः** (स्त्री०) पिता के प्रति कर्तव्य, **भोजनम्** पितरों को दिया गया भोजन,—**भ्रातृ** (पुं०) पिता का भाई, चाचा या ताऊ, —**मंदिरम्** 1.पितृगृह 2. कब्रिस्तान,—**मेधः** पितरों के निमित्त किया जाने वाला, यज्ञ, श्राद्ध,—**यज्ञः** 1. मृत पूर्व पुरुषाओं को प्रतिदिन तर्पण या जलदान, ब्राह्मण द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पंच यज्ञों में से एक पितृ यज्ञस्तु तर्पणम् मनु० ३।७०, १२२, २८३,—**राज्** (पुं०),—**राजः**,—**राजन्** (पुं०) यम का विशेषण —**रूपः** शिव का विशेषण, **लोकः** पितरों का लोक—**वंशः** पिता का कुल, —**वनम्** श्मशान, कब्रितान (**पितृवनेचरः** 1. राक्षस, पिशाच, शिव का विशेषण),—**वसतिः** (स्त्री०), —**सद्मन्** (नपुं०) श्मशान, कब्रिस्तान —कु० ५।७७, —**व्रतः** श्राद्ध, पितृकर्म,—**श्राद्धम्** पिता या मृत पूर्व पुरुषों के निमित्त किया जाने वाला श्राद्ध, **स्वसृ** (स्त्री०) (पितृष्वसृ,) पितुः स्वसृ—भी) भुवा, फूफी—मनु० २।१३१, **ष्वस्रीयः** फुफेरा भाई,—**संनिभ** (वि०) पितृतुल्य, पितृवत्, —**सूः** 1. पितामह, दादा, बाबा 2. सांध्यकालीन झुटपुटा—**स्थानः**,—**स्थानीयः** अभिभावक (जो पिता के स्थान में है),—**हत्या** पिता का वध,—**हन्** (पुं०) पिता की हत्या करने वाला।

पितृक (वि०) [पितुः आगतम्—पितृ+कन्] 1. पैतृक, कुलक्रमागत, आनुवंशिक 2. और्ध्वदैहिक।

पितृव्यः [पितृ+व्यत्] 1. पिता का भाई, चाचा 2. कोई भी वयोवृद्ध पुरुष-नातेदार—मनु० २।१३०।

पित्तम् [अपि+दो+क्त अपेः अकारलोपः] पित्तदोष, शरीर में स्थित तीन दोषों में एक (शेष दो हैं वात और कफ) पित्तं यदि शर्करया शाम्यति कोऽर्थः पटोलेन—पंच० १।३७८। सम०—**अतीसारः** पित्त के प्रकोप से उत्पन्न दस्तों का रोग,—**उपहतः** (वि०) पित्त से ग्रस्त—पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शंखमपि पीतम्—काव्य० १०,—**कोषः** पित्ताशय,—**क्षोभः** पित्तदोष की अधिकता, पित्तप्रकोप,—**ज्वरः** पित्त के प्रकोप से होने वाला ज्वर या बुखार,—**प्रकृति** (वि०)

जिसके शरीर में पित्त की प्रधानता हो, या जो क्रोधी स्वभाव का हो, —प्रकोपः पित्त का आधिक्य या पित्त का कुपित हो जाना, —रक्तम् रक्तपित्त नामक रोग, —वायुः पित्त के प्रकोप से पेट में वायु का पैदा होना, अफारा, —विदग्ध (वि०) पित्त के प्रकोप से आक्रांत, —शमन, —हर (वि०) पित्त के प्रकोप को शान्त करने वाला ।

पित्तल (वि०) [पित्त+ला+क] पित्त बहुल, जिसमें पित्त की अधिकता हो, —लम् 1. पीतल 2. भोजपत्र का वृक्ष विशेष ।

पित्र्य (वि०) [पितुः इदम्—पितृ+यत्, रीङ आदेशः] 1. पैतृक, बपौती का, पुश्तैनी 2. (क) मृत पितरों से संबंध रखने वाला—मनु० ३।५९ (ख) और्ध्वदैहिक-क्रियासंबंधी, —त्र्यः 1. ज्येष्ठ भाई 2. माघमास, —त्र्या 1. मघा नक्षत्रपुंज 2. पूर्णिमा और अमावस्या का दिन, —त्र्यम् 1. मघा नाम का नक्षत्र 2. अंगूठे और तर्जनी के बीच का हथेली का भाग (पितरों के लिए पूज्य) ।

पित्सत् (पुं०) [पत्+सन्, इस् अभ्यासलोपः, पित्स+शतृ] पक्षी ।

पित्सलः [पत्+सल्, इत्] मार्ग, पथ ।

पिधानम् [अपि+धा+ल्युट्, अपेः अकारलोपः] 1. ढकना, छिपाना 2. म्यान 3. चादर, चोगा 4. ढक्कन, चोटी ।

पिधायक (वि०) [अपि+धा+ण्वुल्, अपेः अकारलोपः] ढकने वाला, छिपाने वाला, प्रच्छन्न रखने वाला ।

पिनद्ध (भू० क० कृ०) [अपि+नह्+क्त, अपेः अकारलोपः] 1. जकड़ा हुआ, बंधा हुआ या धारण किया हुआ 2. सुसज्जित 3. छिपाया हुआ, प्रच्छन्न 4. चुभाया हुआ, छिदा हुआ 5. लपेटा हुआ, ढका हुआ, आवेष्टित ।

पिनाकः,—कम् [पा रक्षणे आकान् नुट् धातोरात इत्वम्] 1. शिव का धनुष 2. त्रिशूल 3. सामान्य धनुष 4. लाठी या छड़ी 5. धूल की बौछार । सम०—गोप्तृ, —धृक्, —धृत्, —पाणिः (पुं०) शिव की उपाधियाँ —कु० ३।१० ।

पिनाकिन् (पुं०) [पिनाक+इनि] शिव का विशेषण —कु० ५।७७, श० १।६ ।

पिपतिषत् (पुं०) [पत्+सन्+शतृ] पक्षी ।

पिपतिषु (वि०) [पत्+सन्+उ] गिरने की इच्छा वाला, पतनशील, —षुः पक्षी ।

पिपासा [पा+सन्+अ+टाप्] प्यास ।

पिपासित, पिपासिन्, पिपासु (वि०) [पा+सन्+क्त, पिपासा+इनि, पा+सन+उ] प्यासा ।

पिपीलः, पिपीली [अपि+पील्+अच्, अपेः अकारलोपः, पिपील+ङीप्] चींटा, चींटी ।

पिपीलकः [पिपील+कन्] मकौड़ा ।

पिपीलिकः [अपि+पील्+इकन्, अपेः अकारलोपः] चींटा, —कम् एक प्रकार का सोना (चींटों द्वारा एकत्र किया हुआ माना जाना जाता है) ।

पिपीलिका [पिपीलक+टाप्, इत्वम्] चींटी । सम० —परिसर्पणम् चींटियों का इधर उधर दौड़ना ।

पिप्पलः [पा+अलच्, पृषो०] 1. पीपल का पेड़—याज्ञ० १।३०२ 2. चूचुक 3. जाकेट या कोट की आस्तीन, —लम् 1. बरबंटा 2. पीपल का बरबंटा 3. सम्भोग 4. जल ।

पिप्पलिः,—ली (स्त्री०) [पृ+अचल्+ङीप् पृषो० पक्षे ह्रस्वाभावः] पिपरामूल, पीपल नाम की औषध ।

पिप्पिका (स्त्री०) दाँतों पर जमी हुई मैल की पपड़ी ।

पिप्लुः [अपि+प्लु+डु अपेः अकारलोपः] निशान, तिल, मस्सा, चित्ती ।

पियालः [पीय्+कालन्, ह्रस्वः] एक वृक्षविशेष (चिरौंजी) —कु० ३।३१, —लम् इस वृक्ष (चिरौंजी) का फल ।

पिल् (चुरा० उभ०—पेलयति-ते) 1. फेंकना, डालना 2. भेजना, चलता करना 3. उत्तेजित करना, उकसाना ।

पिलुः (पुं०) दे० 'पीलुः' ।

पिल्ल (वि०) [क्लिन्ने चक्षुषी यस्य, क्लिन्न+अच्, पिल्लादेशः] चौंधियाई आँखों वाला, —ल्लम् चुंधियाने वाली आँख ।

पिल्लका [पिल्ल+कै+क+टाप्] हथिनी ।

पिश् (तुदा० उभ० पिंशति-ते) 1. रूप देना, बनाना, निर्माण करना 2. संघटित होना 3. प्रकाश करना, उजाला करना ।

पिशंग (वि०) [पिश्+अंगच् किच्च] ललाई लिये भूरे रंग का, लाल सा खाकी रंग का—मध्ये समुद्रं ककुभः पिशङ्गीः शि० ३।३३, १।६, कि० ४।३६, —गः खाकी रंग ।

पिशंगकः [पिशंग+कन्] विष्णु अथवा उसके अनुचर का विशेषण ।

पिशाचः [पिशितमाचमति—आ+चम्, बा० ड पृषो०] भूत, बैताल, शैतान, प्रेत, दुष्ट प्राणी नन्वाशितः पिशाचोऽपि भोजनेन— विक्रम० २, मनु० १।३७, १२।४४ । सम०—आलयः वह स्थान जहाँ फास्फोरस के कारण अंधेरे में प्रकाश होता हो, —द्रुः एक प्रकार का वृक्ष (सिहोर), —बाधा, —संचारः पिशाच द्वारा आविष्ट होना, —भाषा 'शैतानों की भाषा' पैशाची प्राकृत जिसका प्रयोग नाटकों में मिलता है, संस्कृत का अपभ्रंश, —सभम् 1. शैतानों की सभा 2. भूतों का घर, प्रेतावास ।

पिशाचकिन् (पुं०) [पिशाच+इनि, कुक्] धन के स्वामी कुबेर का विशेषण ।

पिशाचिका [पिशाच+ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. पिशाचिनी, भूतनी, स्त्री पिशाच 2. (समास के अन्त में) किसी पदार्थ के लिए शैतानी या पैशाचिकी आसक्ति—किमनया आयुधपिशाचिकया—महावी० ३, युद्ध के लिए घोर अनुरक्ति, **पिशाची** भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है,—तस्य खल्वियं यावज्जीवमायुधपिशाची न हृदयादपक्रामति—बालरा० ४ या—कियच्चिरमियमतिनाटयिष्यति भवंतमायुधपिशाची-अनर्घ० ४।

पिशितम् [पिश्+क्त] मांस कुत्रापि नापि खलु हा पिशितस्य लेशः -भामि० १।१०५, रघु० ७।५०। सम० **अशनः**,—**आशः**,—**आशिन्**,—**भुज्** (पुं०) 1. मांसभक्षी, पिशाच, बैताल—(छायाः) संध्यापयोदकपिशाः पिशिताशनानां चरंति—श० ३।२७ 2. मनुष्यभक्षी, नरभक्षी।

पिशुन (वि०) [पिश्+उनच्, किच्च] (क) संकेत करने वाला, बतलाने वाला, प्रकट करने वाला, प्रदर्शन करने वाला. परिचायक—शत्रूणामनिशं विनाशपिशुनः शि० १।७५, तुल्यानुरागपिशुनम् विक्रम० २।१४. रघु० १।५३, अमरू ९७ (ख) स्मरणीय, स्मारक, क्षेत्रं क्षत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद्भजेथाः मेघ० ४८ 2. मिथ्यानिन्दक, चुगलखोर, चुगली खाने वाला—पिशुनजनं खलु बिभ्रति क्षितीन्द्राः भामि० १।७४ 3. दुष्ट, क्रूर, प्रद्वेषी 4. अधम, कमीना, तिरस्करणीय 5. मूर्ख, मन्दबुद्धि,—**नः** 1. मिथ्या निन्दा करने वाला, चुगलखोर, ढिंढोरवा, अधम, भेदिया, द्रोही, कलंकित करने वाला हि० १।१३५, पंच० १।३०४, मनु० ३।१६१ 2. रूई 3. नारद का विशेषण 4. कौवा। सम० -**वचनम्**,—**वाच्यम्** चुगली, गुणनिन्दा, बदनामी।

पिष् (रुधा० पर०—पिनष्टि, पिष्ट) 1. कूटना, पीसना, चूरा करना, कुचलना—अथवा भवतः प्रवर्तना न कथं पिष्टमियं पिनष्टि नः नै० २।६१, १३।१९, मापपेषं पिपेष महावी० ६।४५, भट्टि० ६।३७, १२।४८ भामि० १।१२ 2. चोट पहुंचाना, क्षति पहुँचाना, नष्ट करना, मार डालना (संप्र० के साथ) क्रमेण पेष्टुं भुवनद्विषामसि शि० १।४०, उद् ,कुचलना, पीस डालना, निस्—,कूटना, चूर्ण करना, कण कण करना, (तं) निष्पिपेक्ष क्षितौ क्षिप्रं पूर्णकुंभमिवांभसि —महा०, शिलानिष्पिष्टमुद्गरः रघु० १२।७३ 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, खरोंच मारना भट्टि० ६।१२०।

पिष्ट (भू० क० कृ०) [पिष्+क्त] पिसा हुआ, चूर्ण किया हुआ, कुचला हुआ—भामि० १।१२,७३ 2. रगड़ा हुआ, भींचा हुआ, (हाथ) मिलाया हुआ,—**ष्टम्** पिसी हुई कोई चीज़, पिसा हुआ मसाला 2. आटा, बेसन —पिष्टं पिनष्टि 'पिसे हुए को पीसता है' अर्थात् व्यर्थ काम करता है, या बिना किसी लाभ के दोहराता है 3. सीसा। सम० **उदकम्** आटे में मिला हुआ जल, **पचनम्** आटा भूनने के लिए कड़ाही, पतीली आदि, **पशुः** आटे का बना या हुआ किसी पशु का पुतला **पिण्डः** आटे की बाटी या पेड़ी **पूरः** दे० 'घृतपूर', **पेयः**, **पेषणम्** पिसे को पीसना, व्यर्थ काम करना, बिना किसी लाभ के दोहराना °न्यायः दे० 'न्याय' के अन्तर्गत, **मेहः** एक प्रकार का मधुमेह, **वर्तिः** एक प्रकार का लड्डू जो घी, दाल या चावल से बनाया जाता है,—**सौरभम्** (घिसा हुआ) चन्दन।

पिष्टकः,—**कम्** [पिष्ट+कन्] 1. बाटी जो किसी अनाज के आटे से बनाई गई हो 2. सिकी हुई बाटी, रोटी, पूरी,—**कम्** तिलकुट, तिल के लड्डू।

पिष्टपः,—**पम्** [विशन्ति अत्र सुकृतिनः—विश्+कप् नि०] विश्व का एक भाग—तु० 'विष्टप'।

पिष्टातः [पिष्ट+अत्+अण्] सुगंधयुक्त या खुशबूदार चूर्ण।

पिष्टिक [पिष्ट+ठन्] चावलों के आटे की बनी टिकिया।

पिस् i (भ्वा० पर० पेसति) जाना, चलना ii (चुरा० उभ०—पेसयति—ते) 1. जाना 2. मजबूत बनना 3. रहना 4. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 5. देना या लेना।

पिहित (भू० क० कृ०) [अपि+धा+क्त, अपेः आकारलोपः] 1. बन्द, अवरुद्ध, रुका हुआ, जकड़ा हुआ —दे० अपि पूर्वक धा 2. ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त —दे० अभिहित 3 भरा हुआ, ढका हुआ।

पी (दिवा० आ० पीयते) पीना—तव वदनभवामृतं निपीय मृच्छ० १०।१३, नै० १।१।

पीचम् (नपुं०) ठोडी।

पीठम् [पेठन्ति उपविशन्ति अत्र—पि+घञ्, वा० दीर्घः पीयते अत्र पी+ठक्] 1. आसन (तिपाई, चौकी, कुर्सी पलंग आदि) जवेन पीठादुदतिष्ठदच्युतः—शि० १।१२, रघु० ४।८४, ६।१५ 2. ब्रह्मचारी के बैठन के लिए कुशासन 3. देवासन, वेदी 4. पादपीठ, आधार 5. बैठने की विशेष मुद्रा। सम० —**केलिः** विश्वासपात्र पुरुष परोपजीवी,—**गर्भः** मूर्ति के आधार में वह गड्ढा जिसमें वह जमाई जाती है, **नायिका** वह चौदह वर्ष की कन्या जो दुर्गा-पूजा के अवसर पर दुर्गा मान कर पूजी जाती है,—**भूः** आधार, नींव, भूगृह, तहखाना,—**मर्दः** 1. सहचर, परोपजीवी, जो नाटक में बड़े२ कार्यों में नायक की सहायता करता है जैसे कि नायिका की प्राप्ति में, इसी प्रकार 'पीठ-

मर्दिका' वह स्त्री है जो नायिका के प्रेमी नायक को प्राप्त कराने में उसकी सहायता करती है 2. नृत्य शिक्षक जो वेश्याओं को नृत्यकला की शिक्षा देता है, —सर्प (वि०) लंगड़ा, विकलांग ।

पीठिका [पीठ+ङीष्+क+टाप्, ह्रस्वः] 1. आसन (चौकी, तिपाई) 2. पीढ़ा, आधार 3. पुस्तक का अनुभाग या प्रभाग जैसा कि दशकुमार चरित की पूर्व पीठिका और उत्तरपीठिका ।

पीड् (चुरा० उभ०—पीडयति—ते, पीडित) पीड़ित करना, सताना, नुकसान पहुँचाना, घायल करना, क्षति पहुँचाना, तंग करना, छेड़ना, परेशान करना नीलं चापीपिडच्छरैः भट्टि० १५।८२, मनु० ४।६७, २३८, ७।२९ 2. विरोध करना, सामना करना 3. (नगर आदि को) घेरना दबाना, भींचना, निचोड़ना, चुटकी काटना कंठे पीडयन् मृच्छ० ८, लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन् भर्तृ० २।५, दशनपीडिताधरा -रघु० १९।३५ 5. दबाना, नष्ट करना —मनु० १।५१ 6. अवहेलना करना 7. किसी अशुभ वस्तु से ढकना 8. ग्रहण-ग्रस्त होना, अभि, —अव, दबाना, निचोड़ना, पीड़ित करना, आ —, दबाना, भार से झुका देना पयोधरभारेणापीडितः -गीत० १२, उद् —, मसलना, घिसना, रगड़ना -अन्योन्यमुत्पीडयदुत्पलाक्ष्याः स्तनद्वयं पांडु तथा प्रवृद्धम् —कु० १।४०, शि० ३।६६ 2. पिचकाना, ऊपर को फेंकना, धकेलना, पेलना —रघु० ५।४६, १६।६६, उप —, 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, दुःखी करना, तंग करना, परेशान करना —स्तनोपपीडं परिरब्धुकामा—कि० ३।५४, शि० १०।४७ 2. अत्याचार करना, बरबाद करना मनु० ८।६७, ७।१९५, नि , 1. तंग करना, पीडित करना, परेशान करना, दंड देना, कष्ट देना -मनु० ७।२३ 2. निचोड़ना, दबाना, कस कर पकड़ना, हथिया लेना, थामना—गुरोः सदारस्य निपीड्य पादौ -रघु० २।३५, ५।६५, निस् —, निचोड़ना—दे० निष्पीडित, परि—, 1. पीडा देना, कष्ट देना, परेशान करना 2. दबाना, भींचना प्र—, अत्यधिक पीडित करना, यातना देना, सताना 2. दबाना, भींचना, सम्—, भींचना, चुटकी काटना कंठे जीर्णलताप्रतानवलयेनात्यर्थसंपीडितः श० ७।११, चौर० ३ ।

पीडकः [पीड्+ण्वुल्] अत्याचारी ।

पीडनम् [पीड्+ल्युट्] 1. पीडित करना, कष्ट देना, अत्याचार करना, पीड़ा पहुंचाना -मनु० ९।२९९ 2. भींचना, दबाना —दोर्वल्लिबंध-निबिडस्तन पीडनानि -गीत० १०, दंतौष्ठपीडन नगरतरक्तगिरिकाम् चौर० ४८ 3. दबाने का उपकरण 4. लेना, थामना, पकड़ना जैसा कि 'करपीडन' और 'पाणिपीडन' में 5. बर्बाद करना, उजाड़ना 6. अनाज गाहना 7. ग्रहण —जैसा कि 'ग्रहपीडन' में 8. ध्वनि निरोध, स्वरोच्चारण का एक दोष ।

पीडा [पीड्+अङ्+टाप्] 1. दर्द, कष्ट, भोगना, सताना, परेशानी, वेदना—आश्रमपीडा —रघु० १।३७, बाधा, ७१, मदन°, दारिद्र्य° आदि 2. क्षति पहुँचाना, हानि पहुँचाना, नुकसान पहुँचाना भग० १७।१९, मनु० ७।१६९ 3. उजाड़ना, बर्बाद करना 4. उल्लंघन, अतिक्रमण 5. प्रतिबंध 6. दया, करुणा 7. ग्रहण 8. सुमिरनी, शिरोमाल्य 9. सरलवृक्ष । सम० कर (वि०) कष्टकर, पीड़ामय ।

पीडित (भू० क० कृ०) [पीड्+क्त] 1. पीड़ा से युक्त, तंग किया हुआ, सताया हुआ, अत्याचारग्रस्त, नोचा गया 2. निचोड़ा हुआ, दबाया हुआ 3. विवाहित, पाणिगृहीत 4. अतिक्रान्त, तोड़ा हुआ 5. उजाड़ा हुआ, बर्बाद किया हुआ 6. ग्रहणग्रस्त 7. बाँधा हुआ, बंधनग्रस्त, तम् 1. दर्द करना, क्षति पहुँचाना, तंग करना 2. मैथुन का विशेष प्रकार, रतिबंध,— तम् (अव्य०) मजबूती से, सटा कर, दृढ़ता पूर्वक ।

पीत (वि०) [पा+क्त] 1. पीया हुआ, चढ़ाया हुआ 2. परिव्याप्त, सिक्त, भरा हुआ, संतृप्त 3. पीला —विद्युत्प्रभारचित-पीतपटोत्तरीयः —मृच्छ० ५।२, —तः 1. पीला रंग 2. पुखराज 3. कुसुम्भ,—तम् 1. सोना 2. हरताल । सम० अब्धिः अगस्त्य का विशेषण,—अंबरः विष्णु का विशेषण —इति निगदितः प्रीतः पीतांबरोऽपि तथाकरोत्—गीत० १२ 2. अभिनेता 3. पीले वस्त्र पहने हुए साधु सन्यासी, अरुण (वि०) पीताभरक्त, पीलेपन से युक्त लाल,—अश्मन् (पुं०) पुखराज, —कदली केले का एक भेद, सुनहरी केला,—कंदम् गाजर, —कावेरम् 1. केसर 2. पीतल —काष्ठम् पीला चंदन,—गंधम् पीला चंदन, —चंदनम् 1. एक प्रकार का चंदन 2. केसर 3. हल्दी, —चम्पकः दीपक, —तुंडः कारंडव पक्षी, —दारु (नपुं०) एक प्रकार का चीड का पेड़, या सरल वृक्ष,—दुग्धा दुधारु गाय,—द्रुः सरल वृक्ष, —पादा एक प्रकार का पक्षी, मैना, —मणिः पुखराज, —माक्षिकम् एक प्रकार का खनिज द्रव्य, सोनामाखी,—मूलकम् गाजर,—रक्त (वि०) पीलेपन से युक्त लाल रंग का, संतरे के रंग का (क्तम्) एक प्रकार का पीले रंग का रत्न, पुखराज, —रागः 1 पीला रंग 2. मोम 3 पद्मकेसर, —बालुका हल्दी, —वासस् (पुं०) कृष्ण का विशेषण, —सारः 1 पुखराज 2 चन्दन का वृक्ष (रम्) पीली चंदन की लकड़ी, —सारि (नपुं) अंजन, सुर्मा —स्कंधः सूअर, —स्फटिकः पुखराज,—हरित (वि०) पीलापन लिये हुए हरा ।

पीतकम् [पीत+कन्] 1. हरताल 2. पीतल 3. केसर 4. शहद 5. अगर की लकड़ी 6. चंदन की लकड़ी ।

पीतनः [पीत करोति इति—पीत+णिच्+ल्युट् वा पीतं नयति इति पीत+नी+ड] गूलर की जाति का वृक्ष —नम् 1. हरताल 2. केसर ।

पीतल (वि०) [पीत+ला+क] पीले रंग का,—लः पीला रंग,—लम् पीतल ।

पीतिः [पा+क्तिच्] घोड़ा—(स्त्री०) 1. घूंट, पीना 2. मदिरालय 3. हाथी की सूंड ।

पीतिका [पीत+ठन्+टाप्, इत्वम्] 1. केसर 2. हल्दी 3. पीली चमेली, या सोनजुही ।

पीतुः [पा+क्तुन्[1. सूर्य 2. अग्नि 3. हाथियों के झुंड का मुख्य हाथी, यूथपति ।

पीथः [पा+थक्] 1. सूर्य 2. काल 3. अग्नि 4. पेय 5. जल ।

पीथिः [=पीति, पृषो० तस्य थः] घोड़ा ।

पीन (वि०) [प्याय+क्त, संप्रसारणे दीर्घः] 1. स्थूल, मांसल, हृष्टपुष्ट 2. भरापूरा, विशाल, मोटा—जैसा कि 'पीनस्तनी' में 3. पूर्ण, गोलमटोल 4. प्रभूत, अधिक । सम०—**ऊधस्** स्त्री (पीनोध्नी) भरे पूरे ऐन (औड़ी) वाली गाय,—**वक्षस्** (वि०) विशाल-वक्षःस्थल वाला, भरी पूरी छाती वाला ।

पीनसः [पीनं स्थूलमपि जनं स्यति नाशयति—पीन+सो+क] 1. नाक पर दुष्प्रभाव डालने वाला जुकाम 2. खांसी, जुकाम ।

पीयुः [पा+कु नि० युक्, ईत्वम्] 1. कौवा 2. सूर्य 3. अग्नि 4. उल्लू 5. काल 6. सोना ।

पीयूषः,—षम् [पीय्+ऊषन्] । सुधा, अमृत मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः—भर्तृ० २।६८, इमां पीयूषलहरीम् गंगा० ५३ 2. दूध 3. ब्याने के बाद पहले सात दिन का गाय का दूध । सम० **महस्** (पुं०), **रुचिः** 1 चन्द्रमा 2. कपूर,—**वर्षः** 1.अमृतवर्षा 2. चन्द्रमा 3. कपूर ।

पीलकः [पील्+ण्वुल्] मकौड़ा ।

पीलुः [पील्+उ] 1. वाण 2. अणु 3. कीड़ा 4. हाथी 5. ताड का तना 6. फूल 7. ताड के वृक्षों का समूह 8. 'पीलु' नाम का एक वृक्ष ।

पीलुकः [पील्+कन्] चींटा ।

पीव् (भ्वा० पर० पीवति) मोटा-ताजा या हृष्ट पुष्ट होना ।

पीवन् (वि०) (स्त्री०—पीवरी) [प्यै+क्वनिप्, संप्र० दीर्घः] 1. भरा पूरा, स्थूल, मोटा 2. हृष्ट पुष्ट, बलवान् (पुं०) पवन ।

पीवर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [प्यै+ष्वरच्, सं प्र० दीर्घः] 1. स्थूल, विशाल, हृष्टपुष्ट, मांसल, मोटा-ताजा—रघु० ३।८, ५।६५ १९।३२ 2. फूला हुआ मोटा, —रः कछुवा, —री 1. तरुणी 2. गाय ।

पीवा [पीयते—पी+व+टाप्] जल ।

पुंस् (चुरा० उभ०—पुंसयति—ते) । कुचलना, पीसना 2. पीडा देना, कष्ट देना, दण्ड देना ।

पुंस् (पुं०) [पा+डुमसुन्] (कर्तृ०—पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः, करण द्वि० व०—पुम्भ्याम्, संबो० ए० व० पुमन्) 1. पुरुष 2. नर पुंसि विश्वमिति कुत्र कुमारी—नै० ५।११० 2. इंसान, मानव—यस्यार्थाः स पुमाँल्लोके हि० १ 3. मनुष्य, मनुष्य जाति, क़ौम, राष्ट्र—वंद्यैः पुंसां रघुपतिपदैः—मेघ० १२ 4. टहलुआ, सेवक 5. पुंल्लिग शब्द 6. पुंल्लिग—पुंसि वा हरिचन्दनम्—अमर० 7. आत्मा । सम०—**अनुज** (वि०) (पुंसानुज) [पुंसा अनुजः, समासे तृतीयायाः अलुक्] वह जिसका बड़ा भाई भी हो,—**अनुजा** (पुमनुजा) लड़का होने के बाद जन्म लेने वाली लड़की अर्थात् बड़े भाई वाली लड़की, **अपत्यम्** (पुमपत्यम्) लड़का, **अर्थः** (प्रमर्थः) 1. पुरुष या मनुष्य का उद्देश्य 2. मानव-जीवन के चार ध्येयों में से कोई सा एक, अर्थात् धर्म, अर्थ, काम या मोक्ष, दे० पुरुषार्थ,—**आख्या** (प्रमाख्या) नर की संज्ञा, **आचारः** (पुमाचारः) पुरुष का आचार, चालचलन, —**कटिः** (स्त्री०) पुरुष की कमर,—**कामा** (पुंस्काम) पति की कामना करने वाली स्त्री,—**कोकिलः** (पुंस्कोकिलः) नर-कोयल कु० ३।३२,—**खेटः** (पुंखेटः) नर-ग्रह,—**गवः** (पुंगवः) 1. बैल, सांड 2. (समास के अन्त में) मुख्य, सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम, पूज्य या किसी भी श्रेणी का प्रमुख व्यक्ति—वाल्मीकिर्मुनिपुंगवः —राम०, इसी प्रकार 'गजपुंगवः भर्तृ० २।३१, नर पुंगवः—आदि,—**केतुः** शिव का विशेषण—कु० ७।७७, —**चली** (पुंश्चलीयः) रंडी का बेटा,—**चिह्नम्** (पुंश्चिह्नम्) शिश्न, पुरुष की जननेन्द्रिय,—**जन्मन्** (पुंजन्मन्) (नपुं) लड़के का पैदा होना, नर-सन्तान का जन्म लेना, **योगः** वह नक्षत्रपुंज जिसमें कि लड़कों या नरसन्तान का जन्म होता है, **दासः** (पुंदासः) पुरुष-दास,—**ध्वजः** (पुंध्वजः) 1. प्राणिमात्र में किसी भी जाति का नर 2. चूहा,—**नक्षत्रम्** (पुंनक्षत्रम्) नर जाति का नक्षत्र,—**नागः** (पुंनागः) 1. पुरुषों में हाथी, पूज्य या आदरणीय पुरुष 2. सफ़ेद हाथी 3. सफ़ेद कमल 4. जायफल 5. नाग केशर नाम का वृक्ष रघु० ६।५७,—**नाटः,—डः** (पुंनाटः—डः) इस नाम का वृक्ष, —**नामधेयः** (पुंनामधेयः) नर, पुरुषवाची,—**नामन्** (पुंनामन) (वि०) पुंल्लिग नामधारी, (पुं) पुंनाग नामक वृक्ष,—**पुत्रः** नर-सन्तान, लड़का,—**प्रजननम्** पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्ग,—**भूमन्** (पुंभूमन्) (पुं)

वह शब्द जो केवल पुंल्लिग बहुवचनांत ही होता है —दाराः पुंभूम्नि चाक्षताः—अमर०, —योगः (पुंयोग) पुरुष के साथ सहवास या संबंध 2. किसी पुरुष या पति का संकेत—पुंयोगे क्षत्रिणी,—रत्नम् (पुंरत्नम्) श्रेष्ठ राशिः (पुंराशिः नर-राशि, —रूपम् (पुंरुपम्) नर का रूप,—लिंग (पुंल्लिग) (वि०) पुरुषवाचक (शब्द), पुरुष वाचक (गम्) 1. पुरुष वाचक चिह्न 2. वीर्य, पौरुष 3. पुरुष की जननेन्द्रिय, —वत्सः (पुंवत्सः) बछड़ा,—वृषः (पुंवृषः) छछूंदर,—वेष (पुंवेष) (वि०) पुरुष की वेश भूषा में, मर्दानी पोशाक पहने हुए,—सवन (पुंसवन) (वि०) पुत्रोत्पत्ति करने वाला (नम्) सर्व प्रथम परिष्कारात्मक या शुद्धीकरण संबंधी संस्कार, स्त्री के गर्भाधान के प्रथम चिह्न प्रकट होने पर पुत्रोत्पत्ति के उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता है—रघु० ३।१० 2. भ्रूण, गर्भ 3. दूध ।

पुंस्त्वम् [पुंस्+त्व]1. पुरुष का लक्षण, वीर्य, पुरुषत्व, मर्दानगी—यत्नात् पुंस्त्वे परीक्षितः—याज्ञ० १।५५, 2. शुक्र, वीर्य 3. पुंलिंग ।

पुंवत् (अव्य०) [पुंस्+वति] 1. पुरुष की भांति—रघु० ६।२० 2. पुंलिंग में ।

पुक्कश (वि०) (स्त्री—शी), **पुक्कस** (वि०) (स्त्री०—सी) [पुक् कुत्सितं कशति गच्छति—पुक्+कश्(स्)+अच्] अधम, नीच, शः, सः एक पतित वर्णसंकर जाति, शूद्र स्त्री में उत्पन्न निषाद की सन्तान —जातो निषादाच्छूद्रायां जात्या भवति पुक्कसः—मनु० १०।१८,—शी,—सी 1. कली नील का पौधा 3. पुक्कस जाति की स्त्री ।

पुंखः,—खम् [पुमांसं खनति—पुम्+खन्+ड] 1. बाण का पंख वाला भाग—रघु० २।३१, ३।६४, ९।६१ 2. बाज, श्येन ।

पुंखितः (वि०) [पुंख+इतच्] पंखों से युक्त (यथा—बाण) ।

पुंगः,—गम् [=पुञ्ज, पृषो०] ढेर, संग्रह, समुच्चय ।

पुंगलः [पुंग+ला+क] आत्मा ।

पुच्छः,—च्छम् [पुच्छ्+अच्] 1. पूंछ—पश्चात्पुच्छं वहति विपुलं—उत्तर० ४।२७ 2. बालों वाली पूंछ 3. मोर की पूंछ 4 पिछला भाग 5. किसी वस्तु का किनारा । सम०—अग्रम्, —मूलम् पूंछ का सिरा,—कंटकः बिच्छू, —जाहम् पूंछ की जड़ ।

पुच्छटिः,—टी (स्त्री०) [पुच्छ्+अट्+इन्, पुच्छटि+ङीप्] अंगुलियां चटकाना ।

पुच्छिन् (पुं०) [पुच्छ+इनि] मुर्गा ।

पुंजः [पुम्+जि+ड] ढेर, समुच्चय, मात्रा, राशि, संग्रह—क्षीरोदवेलेव सफेनपुंजा—कु० ७।२६, प्रत्युद्गच्छति मूर्छति स्थिरतमः पुंजे निकुंजे प्रियः—गीत० ११ ।

पुंजि (स्त्री०) [पिञ्ज्+इन्, पृषो०] ढेर, मात्रा, राशि ।

पुंजिकः [पुंजि+कन्] ओला ।

पुंजित (वि०) [पुंज+इतच्] 1. ढेरी, संगृहीत, एक जगह लगाया हुआ ढेर 2. मिलाकर भींचा हुआ, दबाया हुआ ।

पुट् i (तुदा० पर०—पुटति) 1. आलिंगन करना, लिपटना 2. अन्तर्जटित करना, बटना, गूथना ii (चुरा० उभ० पुटयति—ते) 1. मिलना 2. बांधना, जकड़ना 3. पोटयति—ते (क) पीसना, चूर्ण करना (ख) बोलना (ग) चमकना iii (भ्वा० पर० पोटति) 1. पीसना 2. मलना ।

पुटः,—टम् [पुट्+क]1. तह 2. खोखली जगह, विवर, खोखलापन—भिन्नपल्लवपुटो वनानिलः—रघु० ९।६८, ११।२३, १७।१२, मालवि० ३।९, अंजलिपुट, कर्णपुट आदि 3. दोना, पत्तों की तह करके बनाया गया, पुस्तड़ा—दुग्ध्वा पयः पत्रपुटे मदीयम्—रघु० २।६५, मनु० ६।२८ 4. कोई उथला पात्र 5. फली, छीमी 6. म्यान, ढकना, आच्छादन 7. पलक ('पुटी' भी इन्हीं अर्थों में) 8. घोड़े का सुम,—टः रत्नपेटी,—टम् जायफल । सम०—उटजम् सफेद छतरी, —उदकः नारियल,—ग्रीवः 1. बर्तन, कलसा, घड़ा 2. तांबे का पात्र,—पाकः औषधियां तैयार करने की विशेष पद्धति, (इसमें औषधियों को पत्तों में लपेट कर ऊपर से मुल्तानि पोत देते हैं और फिर आग में भूना जाता है— अनिर्भिन्नो गभीरत्वादंतर्गूढघनव्यथः, पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः—उत्तर० ३।१,—भेदः 1. पुर, नगर 2. एक प्रकार का वाद्ययंत्र, आतोद्य 3. जलावर्त या भंवर,—भेदनम् कस्बा या नगर—शि० १३।२६ ।

पुटकम् [पुट+कन्] 1. तह 2. उथला या कम गहरा प्याला 3. दोना या पुस्तड़ा 4. कमल 5. जायफल ।

पुटकिनी [पुटक+इनि+ङीप्] 1. कमल 2. कमल समूह ।

पुटिका [पुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] इलायची ।

पुटित (वि०) [पुट्+क्त] 1. रगड़ा हुआ, पीसा हुआ 2. सिकुड़ा हुआ 3. टाँका लगाया हुआ, सीया हुआ 4. खण्डित ।

पुटी [पुट+ङीप्] दे० 'पुट' ।

पुड् (तुदा० पर०) 1. छोड़ना, त्याग देना, तिलांजलि दे देना 2. पदच्युत करना 3. निकालना, विदा करना, खोजना ।

पुंड् (भ्वा०पर०—पुंडति) पीसना, चूरा करना, चूर्ण बना देना या पीस डालना ।

पुंडः [पुण्ड्+घञ्] चिह्न, निशान ।

पुंडरीकम् [पुंड्+ईकन् नि०] 1. श्वेतकमल,—उत्तर० ६।२७, मा० ९।७४ 2. सफ़ेद छाता,—कः 1. सफ़ेद

रंग 2. दक्षिणपूर्व या आग्नेयी दिशा का अधिष्ठातृ-दिक्पाल रघु० १८।८ 3. व्याघ्र 4. एक प्रकार का साँप 5. एक प्रकार का चावल 6. एक प्रकार का कोढ़ 7. हाथी का बुखार 8. एक प्रकार का आम का वृक्ष 9. घड़ा, जलपात्र 10. आग 11. मस्तक पर सम्प्रदाय द्योतक तिलक। सम०—अक्षः विष्णु का विशेषण रघु० १८।८,—प्लवः एक तरह का पक्षी, मुखी एक तरह की जोंक।

पुंड्रः [पुंड्+रक्] 1. एक प्रकार का गन्ना (लाल रंग का) पौंडा 2. कमल 3. श्वेत कमल 4. (मस्तक पर) सम्प्रदायद्योतक तिलक (चन्दनादिक का) 5. कीड़ा —ड्राः (ब० व०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम। सम० केलिः हाथी।

पुंड्रकः [पुंड्+कन्] 1. एक प्रकार का ईख (लाल रंग का) पौंडा 2. संप्रदाय द्योतक तिलक।

पुण्य (वि०) [पू०+यण्, णुक्, ह्रस्वः] 1. पवित्र, पुनीत, शुचि जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु आश्रमेषु मेघ० १, पुण्यं धाम चण्डीश्वरस्य ३३, रघु० ३।४१, श० २।१४, मनु० २।६८ 2. अच्छा, भला, गुणी, सच्चा, न्याय 3. शुभ, कल्याणकारी, भाग्यशाली, अनुकूल (दिन आदि)—मनु० २।३०,२६ 4. रुचिकर, सुहावना, प्रिय, सुन्दर प्रकृत्या पुण्यलक्ष्मीकाः—महावी० १।१६,२४, उत्तर० ४।१९, इसी प्रकार 'पुण्यदर्शन' 5. मधुर, गंधयुक्त (जैसे सुगंध, परिमल) 6 औपचारिक, उत्सव या संस्कार संबंधी, —ण्यम् 1. सद्गुण, धार्मिक या नैतिक गुण अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते—हि० १।८३, महता पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया—श० ३।१, रघु० १।६९, नै० ३।८७ 2. सद्गुणसंपन्न कृत्य, प्रशस्य कार्य 3 पवित्रता, पवित्रीकरण 4. पशुओं को पानी पिलाने के लिए कूंड,—ण्या पवित्र तुलसी। सम० —अहम् मंगलमय या शुभ दिवस पुण्याहं भवंतो ब्रुवंतु, अस्तु पुण्याहम्—पुण्याहं व्रज मंगलं सुदिवसं प्रातः प्रयातस्य ते -अमरु ६१, °वाचनम् बहुत से धार्मिक संस्कारों के आरंभ में तीन बार उच्चारण करना 'यह शुभदिवस है',—उदयः सौभाग्य का प्रभात,—उद्यान (वि०) सुन्दर उद्यान रखने वाला, कर्तृ (पुं०) स्तुत्य या गुणवान् पुरुष,—कर्मन् (वि०) स्तुत्य कार्यों के करने वाला, खरा, ईमानदार (नपुं०) स्तुत्य कार्य, —कालः शुभ समय, कीर्ति (वि०) अच्छे नाम वाला, यशस्वी, विख्यात—भट्टि० १।५,—कृत् (वि०) सद्गुणसंपन्न, प्रशंसनीय, स्तुत्य,—कृत्या धर्मकार्य, ऐसा काम जिसके करने से पुण्य हो, —क्षेत्रम् 1. पवित्रस्थान, तीर्थस्थान 2. 'पुण्यभूमि' अर्थात् आर्यावर्त, —गंध (वि०) मधुर गंध से युक्त,—गृहम् 1. वह स्थान जहाँ अन्न आदि खैरात बाँटी जाय, 2. देवालय, —जनः 1. सद्गुणी 2. राक्षस, पिशाच 3. यक्ष रघु० १३।६०, -ईश्वरः कुबेर का विशेषण—अनुययौ यमपुण्यजनेश्वरौ—रघु० ९।६,—जित (वि०) पुण्य-द्वारा प्राप्त किया हुआ, तीर्थम् तीर्थयात्रा का शुभ-स्थान, दर्शन (वि०) सुन्दर (नः) नीलकंठपक्षी (नम्) पवित्रस्थान, मन्दिर आदि का दर्शन,—पुरुष धर्मात्मा या पुण्यात्मा, प्रतापः अच्छे गुणों या नैतिक कार्यों का प्रभाव, फलम् सत्कर्मों का पुरस्कार, (लः) वह उद्यान जहाँ पुण्यरूपी फलों की प्राप्ति होती है, भाज् (वि०) सौभाग्यशाली, धर्मात्मा, अच्छे गुणों वाला पुण्यभाजः खल्वमी मुनयः का० ४३,—भूः, भूमिः (स्त्री०) पुण्यभूमि अर्थात् आर्यावर्त, —रात्रः शुभरात्रि, लोकः स्वर्ग, वैकुण्ठ,—शकुनम् शुभशकुन (नः) शुभशकुनसूचक पक्षी,—शील (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, सत्कर्मों में रुचि रखने वाला धर्मपरायण, ईमानदार,—श्लोक (वि०) सुविख्यात, जिसका नामोच्चारण ही शुभ समझा जाय, उत्तम यशवाला, पावनचरित्र वाला (कः) (निषध देश के राजा) नल का विशेषण, युधिष्ठिर और जनार्दन का विशेषण—पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः, पुण्यश्लोका च वैदेही, पुण्यश्लोको जनार्दनः। —(का) सीता और द्रौपदी का विशेषण,—स्थानम् पुण्यभूमि, पवित्रस्थान, तीर्थस्थान।

पुण्यवत् (वि०) [पुण्य+मतुप्, मस्य वः] 1. सत्कर्म करने वाला, सद्गुणी 2. भाग्यशाली, मंगलमय, अच्छी किस्मत वाला 3. सुखी, भाग्यवान्।

पुत् (नपुं०) [पू+डुति —पृषो०] नरक का एक विशेष प्रभाग जहाँ पुत्रहीन व्यक्ति डाले जाते हैं, दे० 'पुत्र' नीचे। सम०—नामन् (वि०) 'पुत्' नाम वाला।

पुत्तलः,—ली [पुत्+घञ्=पुत्तं गमनं लाति—पुत्त+ला+क, स्त्रियां ङीप्] 1. प्रतिमा, मूर्ति, बुत, पुतली 2. गुड़िया कठपुतली। सम०—दहनम्,—विधिः विदेश में जिसका प्राणान्त हुआ हो अथवा अप्राप्त शव के बदले उसका पुतला बना कर जलाना।

पुत्तलकः, पुत्तलिका [पुत्तल+कन्, पुत्तली+कन्+टाप्, ह्रस्वः] गुड़िया, मूर्ति आदि।

पुत्तिका [पुत्त+ठन्+टाप्] 1. एक प्रकार की मधुमक्खी. 2. दीमक।

पुत्रः [पुत्+त्रै+क] बेटा (इस शब्द की व्युत्पत्ति—पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात् त्रायते पितरं सुतः, तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयंभुवा—मनु० ९।१३८, इस लिए इस शब्द का शुद्ध रूप 'पुत्त्रः' है) 2. बच्चा, किसी जानवर का बच्चा 3. प्रिय वत्स (छोटे बच्चों को प्यार से संबोधित करने का शब्द) 4. (समास के

अन्त में) कोई भी छोटी वस्तु—यथा असिपुत्रः, शिलापुत्र आदि, **त्रौ** (द्वि० व०) पुत्र और पुत्री (पुत्रीकृ पुत्र के रूप में गोद लेना—रघु० २।३६)। सम० **अन्नादः** 1. जो पुत्र की कमाई पर निर्वाह करता है; या जिसके निर्वाह की व्यवस्था पुत्र द्वारा की जाय 2. एक विशेष प्रकार का साधु—दे० कुटीचक, —**अर्थिन्** (वि०) पुत्र चाहने वाला,—**इष्टिः**, **इष्टिका** (स्त्री०) पुत्र लाभ की इच्छा से किया जाने वाला यज्ञ विशेष, **काम** (वि०) पुत्र की कामना करने वाला, **कार्यम्** पुत्र संबंधी संस्कारादि, **कृतकः** जो पुत्र की भांति माना गया हो, गोद लिया हुआ पुत्र—श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते श० ४।१३,—**जात** (वि०) जिसे पुत्र उत्पन्न हुआ हो,—**दारम्** पुत्र और पत्नी, —**धर्मः** पुत्र का पिता के प्रति अपेक्षित कर्तव्य —**पौत्रम्**,—**त्राः** बेटे और पोते,—**पौत्रीण** (वि०) पुत्र से पौत्र को प्राप्त होने वाला, आनुवंशिक—भट्टि० ५।१५,—**प्रतिनिधिः** पुत्र के स्थान पर अपनाया हुआ, (उदा०—दत्तक पुत्र),—**लाभः** पुत्र की प्राप्ति,—**वधूः** (स्त्री०) पुत्र की पत्नी, स्नुषा,—**सखः** बच्चों से प्रेम करने वाला, बच्चों का प्रेमी, **हीन** (वि०) जिसके पुत्र न हो, निस्सन्तान।

पुत्रकः [पुत्र+कन्] 1. छोटा पुत्र, बालक, बच्चा, तात, वत्स (वात्सल्य को प्रकट करने वाला शब्द) 2. गुड़िया, कठपुतली कु० १।२९ 3. धूर्त, ठग 4. टिड्डी, टिड्डा 5. शरभ या परवाना, पतंग, 6. बाल।

पुत्रका, पुत्रिका, पुत्री [पुत्रक्+टाप्, पुत्री+कन्+टाप्, ह्रस्वः, पुत्र+ङीप्] 1. बेटी 2. गुड़िया, पुतली 3. (समास के अन्त में) कोई भी छोटी वस्तु—यथा असिपुत्रिका खड्ग पुत्रिका आदि। सम० **पुत्रः**,—**सुतः** 1. बेटी का बेटा, दौहित्र, नाना के द्वारा पुत्र के स्थान पर माना हुआ मनु० ९।१२७ 2. बेटी जो पुत्रवत् मानी जाती है, तथा पिता के घर रहती है (पुत्रिकैव पुत्रः अथवा पुत्रिकैव सुतः पुत्रिका सुतः साऽप्यौरससम एव याज्ञ० २।१२८ पर मिता०) 3. पौत्र,—**प्रसूः** वह माता जिसके कन्याएं ही हों, पुत्र न हों,—**भर्तृ** (पुं०) बेटी का पति जामाता, दामाद। **पुत्रिन्** (वि०) (स्त्री० णी) [पुत्र+इनि] बेटे वाला, बेटों वाला—रघु० १।९१, विक्रम० ५।१८, (पुत्र) पुत्र का पिता।

पुत्रिय, पुत्रीय, पुत्र्य (वि०) [पुत्र+घ, छ, यत् वा] पुत्रसंबंधी, पुत्रविषयक।

पुत्रीया [पुत्र+क्यच्+अ+टाप्] पुत्र प्राप्ति की इच्छा।

पुद्गल (वि०) [पुत् कुत्सितं गलो यस्मात् ब० स०] सुन्दर, प्रिय, मनोहर, —**लः** परमाणु—पुद्गलाः परमाणवः—श्रीधर 2. शरीर, भूतद्रव्य 3. आत्मा 4. शिव का विशेषण।

पुनर् (अव्य०) [पन्+अर्+उत्वम्] 1. फिर, एक बार फिर, नये सिरे से—न पुनरेवं प्रवर्तितव्यम्—श० ६, किमप्ययं वटुः पुनर्विवक्षुः स्फुरितोत्तराधरः—कु० ५।८२, इसी प्रकार पुनर्भू फिर पत्नी बनना 2. वापिस, विपरीत दिशा में (अधिकतर क्रियाओं के साथ), —पुनर्दा वापिस देना, लौटाना, पुनर्या—इ—गम् आदि वापिस जाना, लौटना आदि 3. इसके विपरीत, उलटे, परन्तु, तोभी, तथापि इतना होते हुए भी (विरोध सूचक बल के साथ)—प्रसाद इव मूर्तस्ते स्पर्शः स्नेहार्द्रशीतलः, अद्याप्यानन्दयति मां त्वं पुनः क्वासि नंदिनि उत्तर० ३।१४, मम पुनः सर्वमेव तन्नास्ति —उत्तर० ३ **पुनः पुनः** 'फिर—फिर' 'बार बार' 'बहुधा'—पुनः पुनः सूतनिषिद्धचापलं—रघु० ३।४२, **किं पुनः** कितना अधिक, कितना कम—दे० किम् के नीचे, **पुनरपि** फिर, एक बार और, इसके विपरीत। सम०—**अर्थिता** बार बार की हुई प्रार्थना, —**आगत** (वि०) फिर आया हुआ, लौटा हुआ, —भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः—सर्व०, **आधानम्**, **आधेयम्** अभिमंत्रित अग्नि का पुनः स्थापन, **आवर्तः** 1. वापसी 2. बार २ जन्म होना, **आवर्तिन्** (वि०) फिर से संसार में जन्म लेने वाला, **आवृत्** (स्त्री०), **आवृत्तिः** (स्त्री०) 1. दोहराना 2. फिर से संसार में आना, बार बार जन्म लेना याज्ञ० ३।१९४ 3. दोहराना, (पुस्तक आदि का) दूसरा संस्करण, **उक्त** (वि०) 1. फिर कहा हुआ, दोहराया गया, दुबारा कहा गया 2. फालतू, अनावश्यक—शशंस वाचा पुनरुक्तयेव रघु० २।६८, शि० ९।६४, (**क्तम्**) **पुनरुक्तता** 1. दोहराना 2. बाहुल्य, आधिक्य, निरर्थकता, द्विरुक्ति या पुनरुक्ति उत्तर० ५।१५, भर्तृ० ३।७८, **जन्मन्** (पुं०) द्विजन्मा, ब्राह्मण, **पुनरुक्तवदाभासः** प्रतीयमान पुनरुक्ति, पुनरुक्ति का आभास होना, एक अलंकार—उदा० भुजंगकुंडलीव्यक्तशशिशुभ्रांशुशीतगुः, जगन्त्यपि सदा पायादव्याच्चेतोहरः शिवः। सा० द० ६३२, (यहाँ पुनरुक्ति की प्रतीति तुरन्त दूर हो जाती है जब कि संदर्भ का सही अर्थ समझ लिया जाता है, तु० काव्य० ९ में 'पुनरुक्तवदाभास' के नीचे), **उक्तिः** (स्त्री०) 1 दोहराना 2 बाहुल्य, निरर्थकता, द्विरुक्ति, **उत्थानम्** फिर उठना, पुनर्जीवित करना, **उत्पत्तिः** (स्त्री०) 1 पुनरुत्पादन 2 फिर जन्म होना, देहान्तरागमन, **उपगमः** वापसी क्वायोध्यायाः पुनरुपगमो दंडकायां वने वः उत्तर० २।१३, **ऊपोढा**, **ऊढा** दुबारा ब्याही हुई स्त्री,

—गमनम् वापसी, फिर जाना,—जन्मन् (नपुं०) बार २ जन्म होना, देहान्तरागमन, —जात (वि०) फिर उत्पन्न हुआ, —णवः,—नवः 'बार २ उगना', नाखून, —दारक्रिया पुनर्विवाह करना (पुरुष का), दूसरी पत्नी लाना, प्रत्युपकारः किसी के उपकार का बदला चुकाना, बार २ जन्म होना, देहान्तरागमन —ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः श० ७।३५, कु० ३।५ 2. नाखून, —भावः नया जन्म, पुनर्जन्म, —भूः 1. विधवा जिसका पुनर्विवाह हो गया हो 2. पुनर्जन्म, —यात्रा 1. फिर जाना 2. बार २ प्रगति करना (जलूस निकलना), —वचनम् फिर कहना, —वसुः (प्रायः द्वि० व०) 1. सातवाँ नक्षत्र (दो या तीन तारों का पुंज) गां गताविव दिवः पुनर्वसू—रघु० ११।३६ 2. विष्णु और 3. शिव का विशेषण, —विवाह फिर विवाह होना, —संस्कारः (पुनः संस्कारः) किसी संस्कार या शुद्धिकारक कृत्य का दोहराना, —संगमः, —संधानम् (पुनः संधानम्) फिर से मिलना,—संभवः (पुनः—संभवः) (संसार में) फिर जन्म लेना, देहान्तरागमन।

पुप्फुलः [=पुप्फुसः, पृषो० सस्य लत्वम्] उदरवायु, अफारा।

पुप्फुसः [पुप्फुस्+अच्] 1. फेफड़ा 2. कमल का बीज कोष।

पुर् (स्त्री०) (कर्तृ०, ए० व०—पूः, करण०, द्वि० व० —पूर्भ्याम्) [पृ+क्विप्] 1. नगर, शहर जिसके चारों ओर सुरक्षादीवार हो —पूरभ्यभिव्यक्तमुखप्रसादा —रघु० १६।२३ 2. दुर्ग, किला, गढ़ 3. दीवार, दुर्गप्राचीर 4 शरीर 5 बुद्धि। सम०—द्वार् (स्त्री०), —द्वारम् नगर का फाटक।

पुरम् [पृ+क] 1. नगर, शहर (बड़े २ विशाल भवनों से युक्त, चारों ओर परिखा से घिरा हुआ, तथा विस्तार में जो एक कोस से कम न हो)—पुरे तावंतमेवास्य तनोति रविरातपम्—कु० २।३, रघु० १।५९ 2. किला, दुर्ग, गढ़ 3. घर, निवास, आवास 4. शरीर 5. अन्तःपुर, रनिवास 6. पाटलिपुत्र 7. पुष्पकोश, पत्तों की बनी फूलकटोरी 8. चमड़ा 10. गुग्गुल। सम०—अट्टः नगरभित्ति पर बना कंगूरा या मीनार, —अधिपः, —अध्यक्षः नगरपाल, —अरातिः,—अरिः, —असुहृद् (पुं०),—रिपुः शिव के विशेषण—पुरारातिभ्रान्त्या कुसुमशर किं मां प्रहरसि—सुभा०, दे० त्रिपुर, —उत्सवः नगर में मनाया जाने वाला उत्सव, —उद्यानम् नगरोद्यान, उपवन, —ओकस् (पुं०) नगर में रहने वाला, —कोट्टम् नगररक्षक दुर्ग—ग (वि०) 1. नगर को जाने वाला 2. अनुकूल, —जित्—द्विष्, —भिद् (पुं०) शिव के विशेषण, —ज्योतिस् (पुं०) 1. अग्नि का विशेषण 2. अग्निलोक, —तटी छोटी पेंठ, छोटा गाँव जहाँ पेंठ लगती हो, —तोरणम् नगर का बाहरी फाटक, —द्वारम् नगर का फाटक, —निवेशः नगर की नींव डालना, —पालः नगरशासक, दुर्ग का सेनापति, —मथनः शिव का विशेषण, —मार्गः नगर की गली, कु० ४।११, रघु० ११।३, —रक्षः, —रक्षकः, —रक्षिन् (पुं०) कांस्टेबल, सिपाही, पुलिस-अधिकारी, —रोधः दुर्ग का घेरा, —वासिन् (पुं०) नागरिक, नगर का रहने वाला, —शासनः 1. विष्णु का विशेषण 2. शिव की उपाधि।

पुरटम् [पुर्+अटन्] सोना, स्वर्ण।

पुरणः [पृ+क्यु, उत्वम्, रपरः] समुद्र, महासागर।

पुरतः (अव्य०) [पुर+तस्] सामने, आगे (विप० पश्चात्), पश्यामि तामित इतः पुरतश्च पश्चात्—मा० १।४०, की उपस्थिति में—यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनम् वचः—भर्तृ० २।५१ 2. बाद में—इयं च तेऽन्या पुरतो विडंबना—कु० ५।७०, अमरु ४३।

पुरंदरः [पुरं दारयति—इति दृ+णिच्+खच्, मुम्] 1. इन्द्र—रघु० २।७४ 2. शिव का विशेषण 3. अग्नि की उपाधि 4. चोर, सेंध लगाने वाला, —रा गंगा का विशेषण।

पुरंध्रिः, —ध्री (स्त्री०) [पुरं गेहस्थजनं धारयति धृ+खच् +ङीप्, पृषो० वा ह्रस्वः—तारा०] 1. प्रौढ़ विवाहिता स्त्री, मातृका, विवाहिता स्त्री—पुरंध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं हि भवति—उत्तर० ४।१२, मुद्रा० २। ७, कु० ६।३२, ७।२ 2. वह स्त्री जिसका पति व बच्चे जीवित हों।

पुरला [पुर+ला+क+टाप्] दुर्गा का विशेषण।

पुरस् (अव्य०) [पूर्व+असि, पुर् आदेशः] 1. सामने, आगे, उपस्थिति में, आँखों के सामने (स्वतंत्र रूप से या संबंध के साथ) अमुं पुरः पश्यसि देवदारुम्—रघु० २।३६, तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः—मेघ० ३, कु० ४।३, अमरु ४३, प्रायः कृ, गम् धा और भू धातुओं के साथ प्रयोग (दे० धातु०) 2. पूर्व में, पूर्व से 3. पूर्व की ओर। सम०—करणम्,—कारः 1. सामने या आगे रखना 2. अधिमान 3. ससम्मान बर्ताव, आदर-प्रदर्शन, अनुरोध 4. पूजा 5. सहचारिता, हाजरी देना 6. तैयारी 7. व्यवस्थापन 8. पूर्ण करना 9. आक्रमण करना 10. दोषारोपण करना, —कृत (वि०) 1. सामने रक्खा हुआ—रघु० २।८० 2. सम्मानित, आदर से बर्ताव किया गया, पूज्य 3. छांटा गया, माना गया, अनुगमन किया—पुरस्कृतमध्यमक्रमः—रघु० ८।९ 4. आराधित, पूजित 5. सेवा में प्रस्तुत, संलग्न, संयुक्त 6. तैयार, तत्पर 7. अभिमंत्रित 8. दोषारोपित, कलंकित 9. पूरा

किया हुआ 10. प्रत्याशित,—क्रिया 1. आदर प्रदर्शित करना, सम्मानित वर्ताव, 2. आरम्भिक या दीक्षासंबंधी कृत्य,—ग,—गम (पुरोग,—गम) (वि०) 1. मुख्य, अग्रणी, सर्व प्रथम, प्रमुख, प्रायः संज्ञा के बल सहित —स किंवदन्तीं वदतां पुरोगः रघु० १४।३, ६।५५, कु० ७।४० 2. समास में प्रयुक्त) अधिष्ठित—इन्द्रपुरोगमा देवाः 'इन्द्र के नेतृत्व में देवता',—गतिः (स्त्री०) 1. पूर्ववर्तिता, (तिः) कुत्ता,—गंतृ,—गामिन् (वि०) 1. पहले या आगे जाने वाला 2. मुख्य, नृतृत्व करने वाला, नेता (पुं०) कुत्ता,—चरणम् 1, आरंभिक या दीक्षा विषयक कृत्य 2. तैयारी, दीक्षा 3. किसी देवता के नाम का जप तथा हवन में आहुति,—छदः चूचुक,—जन्मन् (पुरोजन्मन्) (वि०) पहले पैदा हुआ,—डाश् (पुं०),—डाशः (पुरोडाश्,—डाशः) चावलों को पीस कर बनाई गई तथा कपाल में रख कर प्रस्तुत की गई यज्ञ की आहुति—मनु० ७।२१,—धस् (पुरोधस्) (पुं०) कुलपुरोहित, विशेषकर किसी राजा का,—धानम् (पुरोधानम्) 1. सामने रखना, पुरोहित द्वारा कराया गया उपचार,—धिका (पुरोधिका) (और अब अन्य स्त्रियों की अपेक्षा) मनचहेती पत्नी,—पाक (वि०) पूरा होने के निकट, पूरा होने वाला—कु० ६।९०,—प्रहर्तृ (पुं०) पहली पंक्ति में जाकर लड़ने वाला सैनिक—रघु० १३।७२,—फल (वि०) जिसका फल निकट ही हो, (निकट भविष्य में) फल देने वाला—रघु० २।२२,—भाग (पुरोभाग) (वि०) 1. बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी 2. छिद्रान्वेषण करने वाला 3. स्पृहाशील, ईर्ष्यालु प्रायः समानविद्या परस्परयशः पुरोभागाः—मालवि० १।२० (यहाँ 'पुरोभाग' शब्द का अर्थ 'ईर्ष्या' भी है) (—गः) 1. आगे का भाग, अगला भाग, गाड़ी 2. बलात् प्रवेश, अनधिकार प्रवेश 3. डाह, स्पर्धा,—भागिन् (वि०) आगे रहने वाला, स्वेच्छावान्, नटखट—श० ५ 2. बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी—विक्रम० ३।३, छिद्रान्वेषी,—मारुतः, वातः (पुरोमारुतः, वातः) आगे की हवा, सामने चलने वाली हवा—मालवि० ४।३, रघु० १८।३८,—सर (वि०) अग्रेसर, (—रः) आगे चलने वाला, अग्रदूत श० ४।२ 2. अनुचर, टहलुआ, सेवक—परिमेय पुरःसरौ रघु० १।३७ 3. नेता, जो नेतृत्व करे, सर्वप्रथम, प्रमुख कु० ६।४९ 4. (समास के अन्त में) अनुचरों सहित, परिचरों सहित, के साथ—मानपुरःसरम्, प्रमाणपुरःसरम्, वृकपुरःसराः—आदि —स्थायिन् (वि०) सामने खड़े रहने वाला,—हित (वि०) 1. सामने रक्खा हुआ 2. नियुक्त, दूत, आयुक्त (—तः) 1. कार्यभार संभालने वाला, अभिकर्ता, दूत 2. कुलपुरोहित, जो कुल में होने वाले सभी कर्मकाण्ड या संस्कारों का संचालन करता है।

पुरस्तात् (अव्य०) [पूर्व+अस्ताति, पुर् आदेशः] 1. आगे, सामने (प्रायः संबं० या अपा० के साथ)—रघु० २।४४, कु० ७।३०, मेघ० १५, या स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त—अभ्युन्नता पुरस्तात्—श० ३।८ 2. सिर पर, सर्व प्रथम—मालवि० १।१ 3. पहले स्थान पर, आरंभ में 4. पहले, पूर्वतः 5. पूर्व की ओर, पूर्व में, या पूर्व की तरफ 6. बाद में, आगे, अन्त में।

पुरा (अव्य०) [पुर्+का] 1. पूर्व काल में, पहले, प्राचीन काल में—पुरा शक्रमुपस्थाय—रघु० १।७५, पुरा सरसि मानसे यस्य यातं वयः—भामि० १।३, मनु० १।११९, ५।३२ 2. पहले अब तक, इस समय तक 3. पहले पहले, सबसे पहले 4. थोड़े समय में, शीघ्र, अचिरात् थोड़ी देर में (इस अर्थ में प्रायः वर्तमान काल के साथ, जहाँ कि भविष्यत् काल का अर्थ प्रकट हो)—पुरा सप्तद्वीपां जयति वसुधामप्रतिरथः—श० ७।३३, पुरा दूषयति स्थलीम्—रघु० १२।३०, आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा—मेघ ८५, नै० १।१८, शि० १५।५६, कि० १०।५०, ११।३६। सम०—उपनीत (वि०) जिस पर पहले अधिकार किया हुआ था, जो पहले आधिपत्य में था,—कथा पुराना उपाख्यान,—कल्पः 1. पूर्व सृष्टि 2. अतीत की कहानी 3. पहला युग—द्यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्टं वैरकरं महत्—मनु० २।२२७,—कृत (वि०) पहले किया हुआ,—योनि (वि०) प्राचीन मूल (उत्पत्ति),—वसुः भीष्म का विशेषण,—विद् (वि०) अतीत से परिचित, पूर्व काल की घटनाओं का ज्ञाता, पहले जमाने या पूर्व घटित बातों का जानकार—वदन्त्यपर्णेति च तां पुराविदः—कु० ५।२८, ६।९, रघु० ११।१०,—वृत्त (वि०) प्राचीन काल में होने वाला या उससे संबद्ध 2. पुराना, प्राचीन °कथा पुराना उपाख्यान (—त्तम्) 1. इतिहास 2. पुरानी या काल्पनिक घटना—पुरावृत्तोद्गारैरपि च कथिता कार्यपदवी—मा० २।१३।

पुरा [पुर+टाप्] 1. गंगा का विशेषण 2. एक प्रकार का गंधद्रव्य 3. पूर्व दिशा 4. किला।

पुराण (स्त्री०—णा,—णी) [पुरा नवम्—निरु०] 1. पुराना, प्राचीन, पूर्वकाल संबंधी—पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्—मालवि० १।२, पुराणपत्रापगमादनंतरम्—रघु० ३।७ 2. वयोवृद्ध, पुरातन—अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः—भग० २।२० 3. क्षीण, घिसाघिसाया,—णम् 1. अतीत घटना, या वृत्तान्त 2. अतीत की कहानी, उपाख्यान, प्राचीन या पौराणिक इतिहास 3. कुछ विख्यात

धार्मिक पुस्तकें जो गिनती में १८ हैं तथा व्यास द्वारा प्रणीत मानी जाती है, यह पुस्तकें ही हिन्दु-पुराण कथा शास्त्र का भंडार हैं, पुराणों में पाँच विषयों का वर्णन है और इसी लिए 'पुराण' को 'पंचलक्षण' भी कहते हैं—'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च, वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम्। पुराण के अठारह नामों के लिए दे० अष्टादशन् के नीचे,—णः ८० कौड़ियों के बराबर मूल्य का एक सिक्का। सम० —अन्तः यम का विशेषण,—उक्त (वि०) पुराणों में निर्दिष्ट या विहित,—गः 1. ब्राह्मण का विशेषण 2. पुराण पाठक, पुराण की कथा करने वाला,—पुरुषः विष्णु का विशेषण।

पुरातन (वि०) (स्त्री०—नी) [पुरा+ट्यु, तुट्] 1. पुराना, प्राचीन, शि० १२।६०, भग० ८।३ 2. वयोवृद्ध, प्राक्कालीन,—रघु० ११।८५, कु० ६।९ 3. घिसाघिसाया, क्षीण,—नः विष्णु का विशेषण।

पुरिः (स्त्री०) [पृ+इ] 1. नगर, शहर 2 नदी।

पुरिशय (वि०) [पुरि+शी+अच्] शरीर में विश्राम करने वाला।

पुरी [पुरि+ङीष्] 1. शहर, नगर—शशासैकपुरीमिव—रघु० १।३० 2. गढ़ 3. शरीर। सम० मोहः धतूरे का पौधा।

पुरीतत् (पुं०, नपुं) [पुरीं देहं तनोति—तन्+क्विप्] 1. हृदय के पास की एक विशेष अंतड़ी 2. अंतड़ियाँ —('पुरितत्' भी, परन्तु यह रूप अशुद्ध प्रतीत होता है)।

पुरीषम् [पृ+ईषन्, किच्च] मल, विष्ठा, गूथ (गोबर), मनु० ३।२५०, ५।१२३, ६।७६, ४।५६ 2. कूड़ा-कर्कट, गंदगी। सम०—उत्सर्गः मलत्याग, -निग्रहणम् कोष्ठबद्धता।

पुरीषणः [पुरी+इष्+ल्युट्] मल, विष्ठा,—णम् मलोत्सर्ग करना, मलत्याग करना।

पुरीषमः [पुरीषं मिमीते—पुरीष+मा+क] उड़द, माष।

पुरु (वि०) (स्त्री० रु,—र्वी) [पृ पालनपोषणयोः—कु] अति, प्रचुर, अधिक, बहुत से (लौकिकसाहित्य में 'पुरु' शब्द प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के आरम्भ में प्रयुक्त होता है),—रुः 1. फूलों का पराग 2. स्वर्ग, देवलोक 3. एक राजकुमार का नाम, चन्द्रवंशी राजाओं में छठा राजा (यह शर्मिष्ठा और ययाति का सब से छोटा पुत्र था। जब ययाति ने अपने पाँचों पुत्रों से पूछा कि क्या कोई उनमें से ऐसा है जो मेरे बुढ़ापे और दुर्बलता के बदले मुझे अपना यौवन व सौंदर्य दे दे, तो वह केवल पुरु ही था जिसने विनिमय स्वीकार किया, एक हजार वर्ष के पश्चात् ययाति ने पुरु का यौवन और सौंदर्य उसे लौटा दिया तथा उसे अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। कौरव और पांडवों का पूर्व पुरुष पुरु ही था)। सम०—जित् (पुं०) 1. विष्णु का विशेषण 2. राजा कुन्तीभोज या उसके भाई का नाम,—दम् सोना, स्वर्ण,—दंशकः हंस,—लंपट (वि०) बहुत विषयी, या कामातुर,—ह, —हु बहुत, बहुत से,—हूत (वि०) बहुतों से आवाहन किया गया (तः) इन्द्र का विशेषण—रघु० ४।३, १६।५, कु० ७।४५, मनु० ११।२२, °द्विष् (पुं०) इन्द्रजित् का विशेषण।

पुरुषः [पुरि देहे शेते—शी+ड पृषो० तारा०, पुर्+कुषन्] 1. नर, मनुष्य, मर्द—अर्थतः पुरुषो नारी या नारी सार्थतः पुमान्—मृच्छ० ३।२७, मनु० १।३२, ७।१७, ९।२, रघु० २।४१ 2. मनुष्य, मनुष्य जाति 3. किसी पीढ़ी का प्रतिनिधि या सदस्य 4. अधिकारी, कार्यकर्ता, अभिकर्ता, अनुचर, सेवक 5. मनुष्य की ऊँचाई या माप, दोनों हाथ फैला कर लम्बाई की माप)—द्वौ पुरुषौ प्रमाणमस्याः सा द्विपुरुषा-षी° परिखा—सिद्धा० 6. आत्मा—द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च—भग० १५।१५ आदि० 7. परमात्मा, ईश्वर (विश्व की आत्मा) शि० १।३३, रघु० १३।६ 8. पुरुष (व्या० में) प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष (सिद्धा० में यही क्रम है) 9. आँख की पुतली 10. (सांख्य० में), आत्मा (विप० प्रकृति) सांख्यमतानुसार यह न उत्पन्न होता है, न उत्पादक है, यह निष्क्रिय है, तथा प्रकृति का दर्शक है—तु० कु० २।१३, 'सांख्य' शब्द की भी,—षम् मेरु पर्वत का विशेषण। सम०—अंगम् पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग, अदः नरभक्षक, मनुष्य का मांस खाने वाला, पिशाच, अधमः अत्यंत नीच पुरुष, बहुत ही जघन्य और घृणित व्यक्ति, अधिकारः 1. पुरुष का पद या कर्तव्य 2. मनुष्य का मूल्यांकन या प्राक्कलन—कि० ३।५१,—अन्तरम् दूसरा मनुष्य,—अर्थः 1. मानव-जीवन के चार मुख्य पदार्थों (अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) में से एक 2. मानवप्रयत्न या चेष्टा, पुरुषकार, हि० प्र० ३५, अस्थिमालिन् (पुं०) शिव का विशेषण, आद्यः विष्णु का विशेषण, आयुषम्, आयुस्, मानव-जीवन की अवधि अकृपणमतिः कामं जीव्याज्जनः पुरुषायुषम्—विक्रम ६।४४, पुरुषायुषजीविन्यो निरातंका निरीतयः—रघु० १।६३, आशिन् (पुं०) नरभक्षी, राक्षस, पिशाच, इन्द्रः राजा,—उत्तमः 1. श्रेष्ठ पुरुष 2. परमात्मा, विष्णु या कृष्ण का विशेषण—यस्मात् क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः, अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः—भग० १५।१८,—कारः 1. मानवप्रयत्न, मनुष्यचेष्टा, मर्दाना काम, मर्दानगी,

पराक्रम (विप० दैव)—एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति हि० प्र० ३२, दैवे पुरुषकारे च कर्मसिद्धिर्व्यवस्थिता—याज्ञ० १।३४९, तु० 'भगवान उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं' —पंच० ५।३०, कि० ५।५२ 2. पौरुष, वीर्य, —कुणपः,—पम् मानवशव—केसरिन् (पुं०) 'नरसिंह' विष्णु का चौथा अवतार—पुरुषकेसरिणश्च पुरा नखैः—श० ७।३,—ज्ञानम् मानवजाति का ज्ञान —दघ्न,—द्वयस (वि०) मनुष्य की ऊँचाई के बराबर लंबा द्विष् (पुं०) विष्णु का शत्रु, —नाथः 1. चमूपति, सेनापति 2. राजा, —पशुः नरपशु, क्रूर-व्यक्ति—तु० नरपशु,—पुंगवः, —पुंडरीकः श्रेष्ठपुरुष, प्रमुख व्यक्ति,—बहुमानः मनुष्यजाति की प्रतिष्ठा —भर्तृ० ३।९,—मेधः नरमेध, पुरुषयज्ञ,—वरः विष्णु का विशेषण,—वाहः 1. गरुड़ का विशेषण 2. 2. कुबेर की उपाधि,—व्याघ्रः, शार्दूलः, सिंहः 1. 'मनुष्यों में शेर' पूज्य या प्रमुख व्यक्ति 2. शूरवीर, बहादुर आदमी,—समवायः मनुष्यों का समूह, —सूक्तम् ऋग्वेद के दसवें मण्डल का ९०वाँ सूक्त (यह बहुत ही पावन माना जाता है)।

पुरुषकः,–कम् [पुरुष+कन्] मनुष्य की भांति दो पैरों पर खड़ा होने वाला, घोड़े का पालना—श्रीवृक्षकी पुरुषकोन्नमिताग्रकायः—शि० ५।५६।

पुरुषता,–त्वम् [पुरुष+तल्+टाप्, त्व वा] 1. पुरुषत्व, मर्दानगी, पराक्रम 2. वीर्य।

पुरुषायित (वि०) [पुरुष+क्यङ+क्त] मनुष्य की भांति आचरण करने वाला,—तम् 1. मनुष्य का अभिनय करना, मनुष्यपात्र का अभिनय, संचालन 2. एक प्रकार का स्त्रीमैथुन जिसमें स्त्री पुरुषवत् आचरण करती है—आकृतिमवलोक्य कयापि वितर्कितं पुरुषायितं अखिलतालेखनेन वैदग्ध्यादभिव्यक्तिमुपनीतम्—काव्य १०।

पुरूरवस् (पुं०) [पुरु प्रचुरं यथास्यात्तथा रौति—पुरु+रु+असि नि० साधुः] बुध और इला का पुत्र, चन्द्रवंशी राजकुल का प्रवर्तक, (मित्र और वरुण के शाप के कारण इस पृथ्वी पर उतरती हुई उर्वशी को पुरूरवा ने देखा और उस पर आसक्त हो गया। उर्वशी भी उस राजा को देख कर उस के लोकविश्रुत सौन्दर्य तथा सचाई, भक्ति, उदारता आदि गुणों के कारण उस पर मुग्ध हो गई, फलतः उसकी पत्नी बन गई। बहुत दिनों तक वह सुख पूर्वक रहे, एक पुत्र को जन्म देने के पश्चात् उर्वशी फिर स्वर्ग चली गई। राजा ने उसके वियोग के शोक में बड़ा विलाप किया। उर्वशी प्रसन्न हो दोबारा उसके पास आकर फिर रहने लगी और एक पुत्र को जन्म देकर फिर स्वर्ग चली गई। इस प्रकार उर्वशी ने क्रमशः पांच पुत्रों को जन्म दिया। परन्तु पुरूरवा उसे अपनी जीवन-संगिनी बनाना चाहता था अतः उसने गंधर्वों के निर्देशानुसार यज्ञ का अनुष्ठान किया जिसके फलस्वरूप उसका मनोरथ पूरा हुआ। विक्रमोर्वशीय में दी गई कहानी कई अंशों में भिन्न प्रकार से बताई गई है इसी प्रकार ऋग्वेद के आधार पर शतपथ ब्राह्मण में दिया गया वृत्तान्त भी भिन्न प्रकार का है, जहाँ कि यह बतलाया गया है कि उर्वशी ने दो शर्तों पर पुरूरवा के साथ रहना स्वीकार किया। पहली शर्त यह कि उसके दो मेंढे जिनको वह पुत्रवत् प्यार करती है, उसके पलंग के पास ही बंधेंगे तथा उससे कभी दूर नहीं ले जाये जायंगे; और दूसरे यह कि वह उर्वशी को कभी भी नंगा दिखाई न दे। उसके पश्चात् एक बार गंधर्व मेंढों को उठा कर ले गये, अतः उर्वशी भी अन्तर्धान हो गई)।

पुरोटिः [पुरस्+अट्+इन्] 1. नदी का प्रवाह 2. पत्तों की सरसराहट या मर्मरध्वनि, पत्र शब्द।

पुरोडास, पुरोधस् आदि—दे० 'पुरस्' के अन्तर्गत।

पुर्व् (भ्वा० पर०—पुर्वति) 1. भरना 2. बसना, रहना 3. निमंत्रित करना (अन्तिम दो अर्थों में चुरा० पर० मानी जाती है)।

पुल (वि०) [पुल्+क] महान्, विशाल, व्यापक विस्तृत, —लः रोमाञ्च होना।

पुलकः [पुल+कन्] 1. शरीर के बालों का सीधा खड़ा होना, (भय या हर्ष से) सिहरन, रोमांच—चारु चुचुंब नितंबवती दयितं पुलकैरनुकूले—गीत० १, मृगमद तिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे—७, अमरु ५७,७७ 2. एक प्रकार का पत्थर या रत्न 3. रत्न में दोष 4. एक प्रकार का खनिज पदार्थ 5. अन्नपिंड जिससे हाथी पलते हैं 6. हरताल 7. शराब पीने का गिलास 8. एक प्रकार की सरसों, राई। सम०—अंगः वरुण का जाल,—आलयः कुबेर का विशेषण, उद्गमः शरीर के रोंगटों का खड़ा होना, रोमांच होना।

पुलकित (वि०) [पुलक+इतच्] जिसके रोंगटे खड़े हो गये हैं, रोमांचित, गद्गद, आनन्दित, हर्षोत्फुल्ल।

पुलकिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पुलक+इनि] रोमांचित, जिसके शरीर के रोंगटे खड़े हो गये हैं,—पुं० कलम्ब वृक्ष का एक प्रकार।

पुलस्तिः, पुलस्त्यः [पुल्+क्विप्=पुल्+अस्+ति, पुलस्ति+यत्] एक ऋषि का नाम, ब्रह्मा का एक मानस पुत्र मनु० १।३५।

पुला [पुल+टाप्] मृदु तालु, गले का कौव्वा, तालु जिह्वा।

पुलाकः,—कम् [पुल्+आक् नि०] 1. थोथा या मुरझाया हुआ अन्न, कदन्न 2. भात का पिंड 3. संक्षेप, संग्रह 4. संक्षिप्तता, संहृति 5. चावलों का मांड 6. क्षिप्रता, द्रुतता, त्वरा।

पुलाकिन् (पुं०) [पुलाक+इनि] वृक्ष।

पुलायितम् [=पलायित, पृषो०] घोड़े की सरपट चाल।

पुलिनः,—नम् [पुल्+इनन् किच्च] 1. रेतीला किनारा, रेतीला समुद्रतट—रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारि-रधुना—गीत० ७, रघु० १४।५२, कभी-कभी ब० व० में प्रयुक्त—कालिंद्याः पुलिनेषु केलिकुपितामुत्सृज्य रासे रसम्—वेणी० १।२ 2. नदी का प्रवाह हट जाने से तट पर बना छोटा टापू, लघुद्वीप 3. नदीतट।

पुलिनवती [पुलिन+मतुप्, वत्वम्, ङीप्] नदी।

पुलिन्दः [पुल्+किंदच्, कन्] 1. (प्रायः ब० व० में) एक असभ्य जाति का नाम 2. इस जाति का एक मनुष्य, बर्बर, अशिष्ट, जंगली, पहाड़ी—रघु० १६। १९,३२।

पुलिरिकः (पुं०) साँप।

पुलोमन् (पुं०) एक राक्षस का नाम, इन्द्र का श्वसुर। सम०—अरिः,—जित्,—भिद्,—द्विष् (पुं०) इन्द्र के विशेषण,—जा,—पुत्री शची, पुलोमा की पुत्री तथा इन्द्र की पत्नी।

पुष् (भ्वा०, दिवा० क्रया०—पर०—पोषति, पुष्यति, पुष्णाति), 1. पोषण करना, (छाती से लगाकर) दूध पिलाना, पालना, पोसना, शिक्षित करना—तेनाद्य वत्समिव लोकममुं पुषाण—भर्तृ० २।४६, भग० १५। १३, भट्टि० ३।१३, १७।३२ 2. सहारा देना, भरण पोषण करना, परवरिश करना 3. बढ़ने देना, खिलना, विकसित होना, राहत मिलना—पुपोष लावण्यमयान् विशेषान्—कु० १।२५, रघु० ३।३२, न तिरोधीयते स्थायी तैरसौ पुष्यते परम्—सा० द० ३ 4. बढ़ाना वृद्धि करना, आगे बढ़ाना, वर्धन (मूल्यादि)—पंचानामपि भूतानामुत्कर्षं पुपुषुर्गुणाः—रघु० ४।११,९।५ 5. प्राप्त करना, अधिकार में करना, रखना उपभोग करना भर्तृ० ३।३४ 6. बतलाना, दिखलाना, धारण करना, प्रदर्शन करना—वपुरभिनवमस्याः पुष्यति स्वां न शोभां—श० १।१९, कु० ७।१८,७८, रघु० ६।५८,१८।३२, न हीश्वरव्याहृतयः कदाचित्पुष्णंति-लोके विपरीतमर्थम्—कु० ३।६३, मेघ० ८० 7. बढ़ना, पुष्ट होना, फलना-फूलना, समृद्ध होना 8. प्रशंसा करना, स्तुति करना,—प्रेर० या चुरा० उभ० पोषयति—ते 1. पालन-पोषण करना, परवरिश करना. भरणपोषण करना आदि 2. बढ़ाना, उन्नति करना।

पुष्करम् [पुष्कं पुष्टिं राति—रा+क] 1.नीला कमल 2. हाथी की जिह्वा की नोक—शि० ५।३० 3. ढोल का चमड़ा अर्थात् वह स्थान जहाँ उस पर चोट मारी जाती है—पुष्करेष्वाहतेषु—मेघ० ६६, रघु० १७।११ 4. तलवार का फल 5. तलवार का म्यान 6. बाण 7. वायु, आकाश, अन्तरिक्ष 8. पिंजड़ा 9. जल 10. मादकता 11. नृत्यकला 12. युद्ध, संग्राम 13. एकता 14. अजमेर के निकट एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान,—रः 1. सरोवर, तालाब 2. एक प्रकार का ढोल, धौंसा, ताशा 4. सूर्य 5. अनावृष्टि या दुर्भिक्ष पैदा करने वाले बादलों का समूह—मेघ० ६, कु० २।५० 6. शिव का विशेषण,—रः,—रम् शिव के सात विशाल प्रभागों म से एक। सम०—अक्षः विष्णु का विशेषण,—आह्वः,—आह्वः सारस—तीर्थः स्नान करने का एक प्रसिद्ध स्थान दे० ऊ० पुष्कर,—पत्रम् कमल का पत्ता,—प्रियः मोमः,—बीजम् कमलगट्टा,—व्याघ्रः घड़ियाल,—शिखा कमल की जड़,—स्थपतिः शिव का विशेषण,—स्रज् (स्त्री०) कमलों की माला।

पुष्करिणी [पुष्करिन्+ङीप्] 1. हथिनी 2. कमलसरोवर 3. सरोवर, जलाशय 4. कमल का पौधा।

पुष्करिन् (वि०) (स्त्री०)—णी) [पुष्कर+इनि] कमलों से भरी स्थली, (पुं०) हाथी।

पुष्कल (वि०) [पुष्+कलच्, किच्च, पुष्कसिध्मा० लच् वा—तारा०] 1. बहुत, काफ़ी, प्रचुर—भक्षितेनापि भवता नाहारो मम पुष्कलः—हि० १।८४, मनु० ३।२७७ 2. पूरा, समस्त भग० ११।२१ 3. समृद्ध, उज्ज्वल, शानदार 4. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, प्रमुख 5. निकट-वर्ती 6. निर्घोषमय, गूँजने वाला, प्रतिध्वनि करने वाला,—लः 1. एक प्रकार का ढोल 2. मेरु पर्वत का विशेषण,—लम् 1. ६४ मुट्ठियों के बराबर एक विशेष तोल या माप 2. चार ग्रास की भिक्षा।

पुष्कलकः [पुष्कल+कन्] 1. कस्तूरी-मृग—सीम्नि पुष्कलको हतः—सिद्धा० 2. कुंडी, चटखनी, फन्नी।

पुष्ट (भू० क० कृ०) [पुष्+क्त] 1. पाला-पोसा, खिलाया-पिलाया, परवरिश किया गया, शिक्षित किया गया 2. फलता-फूलता हुआ, बढ़ता हुआ, बलवान्, हृष्टपुष्ट 3. टहल किया गया, देखभाल किया हुआ 4. समृद्ध, पूरी तरह सम्पन्न 5. पूर्ण, पूरा 6. पूरीध्वनि वाला, ऊँची आवाज़ वाला 7. प्रमुख।

पुष्टिः (स्त्री०) [पुष्+क्तिन्]। पालन-पोषण कला, पालना परवरिश, करना, 2. पालन पोषण, संवर्धन, वृद्धि, प्रगति—यत्पिषतामपि नृणां पिष्टोऽपि तनोषि परिमलैः पुष्टिम्—भामि० १।१२ 3. पराक्रम शालिता, स्थूलता—अन्धस्य दृष्टिरिव पुष्टिरिवातुरस्य—मृच्छ० १।४९, 4. धन-दौलत, सम्पत्ति, सुख का साधन,—रघु० १८।१२ 5. समृद्धि, सम्पन्नता 6.

विकल्प, पूर्णता। सम० —कर (वि०) पौष्टिक, पुष्टि कारक, —कर्मन् (नपुं) सांसारिक संपन्नता प्राप्त करने के लिए किया जाने वाला धार्मिक अनुष्ठान, —द (वि०) संवर्धनकारी, समृद्धिकर, —वर्धन (वि०) कल्याणकारी, समृद्धि कारक (नः) मुर्गा।

पुष्प् (दिवा० पर० पुष्प्यति) खुलना, धौंकना या फूंकना, विस्तार करना, खिलना -पुष्प्यत्पुष्करवासितस्य पयसः —उत्तर० ३।१६।

पुष्पम् [पुष्प्+अच्] । फूल, कुसुम 2. रजः स्राव, रजोधर्म -यथा 'पुष्पवती' में 3. पुखराज 4. आंखों का रोग विशेष, श्वेतक 5. कुबेर का रथ दे० 'पुष्पक' 6. शौर्य, (प्रेमकी भाषा में) नम्रता 7. विस्तार होना, खिलना, प्रफुल्ल होना (इस अर्थ में पुं० भी)। सम० अंजनम् पीतल की भस्म जो अंजन की भांति प्रयुक्त होती है, —अंजलिः फूलों की अंजलि, —अभिषेक =°स्नान, —अंबुजम् पुष्प रस या मकरन्द, अवचयः फूलों का चुनना, फूल एकत्र करना, अस्त्रः कामदेव का विशेषण, —आकार (वि०) फूलों से समृद्ध, —मासो नु पुष्पाकरः—विक्रम० १।९, आगमः बसन्त ऋतु, —आजीवः माली, मालाकार, आपीडः फूलों का गजरा, —आयुधः, —इषुः कामदेव, - आसवम् मधु, —आसारः फूलों की बौछार —मनु० ४३, —उद्गमः फूलों का निकलना, —उद्यानम् पुष्प वाटिका, उपजीविन् (पुं०) माली, बागवान, मालाकार, —कालः 1. फूलों का समय, बसन्त ऋतु 2. मासिक रजोधर्म का समय, —कासीसम् एक प्रकार का कसीस, —कीटः भौंरा, -केतनः का मदेव, —केतुः कामदेव (नपुं) 1. पुष्परस, मकरंद 2. पुष्पांजन, —गृहम् फूलों का घर, पुष्प संचारक, —घातकः बाँस, —चयः 1. फूल चुनना 2. फूलों का संग्रह, —चापः कामदेव, —चामरः एक प्रकार की बेंत, —जम् फूलों का रस, —दः वृक्ष, —दंतः 1. शिव के एक गण का नाम 2. महिम्नस्तोत्र के रचयिता का नाम वायव्य कोण में अधिष्ठित दिग्गज, —दामन (नपुं०) फूलमाला, —द्रवः 1. फूलों का रस मकरंद 2. फूलों का आसव, —द्रुमः पुष्पप्रधान वृक्ष, —धः व्रात्य ब्राह्मण की सन्तान—तु० मनु० १०।२१, —धनुस्, —धन्वन् (पुं०) कामदेव—शि० ९।४१, कु० २।६४, —धारणः विष्णु का विशेषण, —ध्वजः कामदेव, —निक्षः भौंरा, —निर्यासः, —निर्यासकः पुष्परस, मकरंद, फूलों का रस, —नेत्रम् फूलनली, - पत्रिन् (पुं) कामदेव, —पथः योनि —पुरम् पाटलिपुत्र—रघु० ६।२४, -प्रचयः, —प्रचायः फूल तोड़ना, फूल चुनना, —प्रचायिका फूलों का चुनना, —प्रस्तारः पुष्पशय्या, फूलों का विछौना, —बलिः फूलों की भेंट या चढ़ावा, —बाणः, —वाणः कामदेव, —भवः पुष्परस, मकरंद, —मंजरिका नीला कमल, —माला फूलमाला, — मासः 1. चैत्र का महीना 2. वसंत ऋतु, —रजस् (नपुं) पराग, —रथः हवा खोरी के काम आनेवाला रथ (जो युद्ध के लिए न हो, —रसः फूलों का रस, मकरंद, —आह्वयम् मधु—रागः, —राजः पुखराज, —रेणुः पराग—वायुर्विघूनयति चम्पकपुष्परेणून्—कवि०, रघु० १।३८, —रोचनः नागकेसर का वृक्ष, —लावः फूल चुनने वाला, (वी) फूल चुनने वाली, मालिन—मेघ० २६, —लिक्षः, लिह (पुं) भौंरा, —वटुकः रसिया, बांका, छैल-छबीला, - वर्षः, —वर्षणम् फूलों की बौछार —रघु० १२।१०२, —वाटिका, —वाटी फुलवाड़ी, —वृक्षः पुष्पप्रधान वृक्ष —रघु० १२।१४, —वेणी चोटी में लगाया हुआ फूलों का गजरा, फूलों की माला, —शकटी आकाशवाणी, —शय्या, फूलों की सेज, फूलों का विछौना, —शरः, —शरासनः, —सायकः कामदेव, —समयः बसन्त, —सारः, —स्वेदः फूलों का रस, मकरद, - हासा रजस्वला स्त्री, —हीना गतार्तवा स्त्री, जिसकी बच्चे पैदा करने कों आयु बीत चुकी हो।

पुष्पकम् [पुष्प+कन्] 1. फूल 2. पीतल की भस्म 3. लोहे का प्याला 4. कुबेर का रथ (जिसे कुबेर से रावण ने छीन लिया था, तथा जो फिर राम ने ले लिया था)—रघु० १२।४०, १६।४६ 5. कंकण 6. एक प्रकार का पुष्पांजन 7. आंखों का एक विशेष रोग।

पुष्पंधयः [पुष्प+धे+खश्, मुम्] भौंरा।

पुष्पलकः [पुष्प+लक्+अच्] स्थाणु, खूंटा, फन्नी, कील।

पुष्पवत् (वि०) [पुष्प+मतुप्, वत्वम्] 1. प्रफुल्ल, फूलों से युक्त 2. फूलों से जड़ा हुआ (पुं०—द्वि० व०) सूर्य और चन्द्रमा, —ती रजस्वला स्त्री—पुष्पवत्यपि पवित्रा—का० २०।

पुष्पा [पुष्प्+अच्+टाप्] चम्पा नाम की नगरी।

पुष्पिका [पुष्प्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. दांतों पर जमी हुई मैल 2. लिंगच्छद में जमी मैल 3. अध्याय के अन्तिम शब्द जिनमें वर्णित विषय की सूचना दी जाती है—इति श्री महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वनपर्वणि ············अमुकोऽध्यायः।

पुष्पिणी [पुष्पिन्+ङीप्] रजस्वला स्त्री।

पुष्पित (वि०) [पुष्प्+क्त] 1. फूलों से युक्त, विकसित फूलों से भरा हुआ, खिला हुआ—चिरविरहेण विलोक्य पुष्पिताग्राम्—गीत० ४, यहाँ 'पुष्पिताग्रा' एक छंद का भी नाम है 2. फूलों से अलंकृत, (भाषण) भड़कीला 3. फूलों से लदा हुआ, फूलों से सम्पन्न —यथा —सुवर्णपुष्पिता पृथ्वी -पंच० १।४५ 4. पूर्ण विकसित, पूरी तरह खिला हुआ, ता रजस्वला स्त्री।

पुष्पिन् (वि०) [पुष्प+इनि] 1. फूल धारण करने वाला, प्रफुल्ल 2. फूलों से भरा हुआ, फूलों से समृद्ध।

पुष्यः [पुष्+क्यप्] 1. कलियुग 2. पौष का महीना 3. आठवाँ नक्षत्र (तीन तारों का पुंज), इसे 'तिष्य' नाम से भी पुकारा जाता है। सम०—**रथः**=पुष्य रथ।

पुष्यलकः [पुष्य+लक्+अच्] दे० 'पुष्पलक'।

पुस्तम् [पुस्त्+घञ्] 1. पलस्तर करना, लेप करना, रेखाचित्र बनाना 2. मिट्टी का शिल्पकार्य, मिट्टी के खिलौना बनाना 3. मिट्टी, काष्ठ या किसी धातु की बनी कोई वस्तु 4. पुस्तक, हाथ से लिखी पुस्तक। सम०—**कर्मन्** (नपुं०) लीपना-पोतना, चित्रकारी करना।

पुस्तक,-कम्, पुस्ती [पुस्त+कन्, ङीप् वा] पोथी, हाथ की लिखी पुस्तक।

पू (भ्वा० दिवा०,-आ०, क्या० उभ०—पवते, पुनाति, पुनीते पूत, प्रेर०—पावयति—इच्छा० पुपूषति, पिपविषते) 1. पवित्र करना, छानना, शुद्ध करना (शा० और आलं०) अवश्यपाव्यं पवसे—भट्टि० ६।६४, ३।१८,—पुण्याश्रमदर्शनेन तावदात्मानं पुनीमहे—श० १, मनु० ११।१०५, २।६२, याज्ञ० १।५८, रघु० १।५३ भग० १०।३१ 2. निथारना 3. भूसी साफ करना, फटकना 4. प्रायश्चित्त करना, परिमार्जन करना 5. पहचानना, विवेक करना 6. सोचना, उपाय ढूंढना, आविष्कार करना।

पूगः [पू+गन्, कित्] 1. समुच्चय, ढेर, संग्रह, मात्रा —शि० ९।६४ 2. समाज, निगम, संघ—याज्ञ० २।३०, मनु० ३।१५१ 3. सुपारी, पूगी —रघु० ४।४४ ६।६३, १३।१७ 4. प्रकृति, गुण, स्वभाव,—**गम्** सुपारी। सम०—**पात्रम्** 1. थूकने का बर्तन, पीकदान 2. पान-दान,—**पीटम्**,—**पीडम्** थूकने का बर्तन,—**फलम्** सुपारी,—**वैरम्** अनेक लोगों से शत्रुता।

पूज् (चुरा० उभ०—पूजयति—ते, पूजित) 1. आराधना करना, पूजा करना, अर्चना करना, सम्मान करना, सादर स्वागत करना—यदपूपुजस्त्वमिह पार्थ मुरजितम-पूजितं सताम्—शि० १५।१४, मनु० ४।३१, भट्टि० २।२६, याज्ञ० २।१४ 2. उपहार देना, भेंट चढ़ाना, —मनु० ७।२०३, **सम्**—1. पूजना, अर्चना करना, सम्मान करना 2. उपहार देना, (दक्षिणादि से) सम्मानित करना।

पूजक (वि०) (स्त्री०—जिका) [पूज्+ण्वुल्] सम्मान करने वाला, आराधक, पूजा करने वाला, आदर करने वाला—आदि।

पूजनम् [पूज्+ल्युट्] पूजना, सम्मान करना, आराधना करना—भग० १७।१४।

पूजा [पूज्+अ+टाप्] पूजा, सम्मान, आराधना, आदर, श्रद्धांजलि—रघु० १।७९। सम०—**अर्ह** (वि०) श्रद्धेय, आदरणीय, पूज्य, श्रद्धास्पद।

पूजित (भू० क० कृ०) [पूज्+क्त] 1. सम्मानित, आदृत 2. आराधित, प्रतिष्ठित 3. स्वीकृत 4. संपन्न 5. अनुशंसित, सिफारिश किया हुआ।

पूजिल (वि०) [पूज्+इलच्] श्रद्धेय, आदरणीय,—**लः** देव।

पूज्य (वि०) [पूज्+ण्यत्] आदर का अधिकारी, सम्मान के योग्य, आदरणीय, श्रद्धेय,—**ज्यः** 1. श्वसुर।

पूण् (चुरा० उभ० पूणयति—ते) एक जगह ढेर लगाना, संचय करना, राशि लगाना।

पूत् (अव्य०) फूंक मारने की अनुकृति का सूचक शब्द।

पूत (भू० क० कृ०) [पू+क्त] 1. शुद्ध किया हुआ, छाना हुआ, धोया हुआ (आलं० भी)—दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्, सत्यपूतां वदेद्वाचं मनः पूतं समाचरेत्—मनु० ६।४६ 2. पिछोड़ा हुआ, फटका हुआ 3. प्रायश्चित्त किया हुआ 4. योजनाकृत, आविष्कृत 5. सड़ने वाला, गला-सड़ा, दुर्गंधमय, बदबूदार,—**तः** 1. शंख 2. सफेद कुश घास,—**तम्** सचाई। सम०—**आत्मन्** (वि०) पवित्र मन वाला (पुं०) विष्णु का विशेषण,—**क्रतायी** इन्द्र की पत्नी शची,—**क्रतुः** इन्द्र का विशेषण—भट्टि० ८।२९,—**तृणम्** सफेद कुश घास,—**द्रुः** पलाश वृक्ष,—**धान्यम्** तिल—**पाप**,—**पाप्मन्** निष्पाप, पाप से रहित,—**फलः** कटहल का वृक्ष।

पूतना [पू+णिच्+युच्+टाप्] एक राक्षसी जो कृष्ण को जब वह अबोध बालक था, मारने का प्रयत्न करती हुई, स्वयं उनके द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुई 2. राक्षसी —मा पूतनात्वमुपगाः शिवतातिरेधि—मा० ९।४९। सम०—**अरिः**, **सूदनः**, **हन्** (पुं०) कृष्ण के विशेषण।

पूति (वि०) [पूय्+क्तिच्] बदबूदार, सड़ा हुआ, दुर्गंध-युक्त, दुर्गंध देनेवाला—भग० १७।१०,—**तिः** (स्त्री०) 1. पवित्रीकरण 2. दुर्गंध, सड़ांद 3. बदबू—नपुं० 1. गंदा पानी 2. पीप, मवाद। सम०—**अंडः** कस्तूरी मृग,—**काष्ठम्** देव दारु वृक्ष,—**काष्ठकः** सरल वृक्ष,—**गंध** (वि०) बदबूदार, दुर्गंधयुक्त, दुर्गंध देने वाला, सड़ा हुआ (—**धः**) 1. सड़ांद, दुर्गंध, बदबू 2. गंधक (**धम्**) 1. जस्ता, रांगा 2. गंधक,—**गंधि** (वि०) बदबूदार, दुर्गंध देनेवाला,—**नासिक** (वि०) दुर्गंधमय नाक वाला,—**वक्त्र** (वि०) जिसके मुँह से बदबू आती हो,—**व्रणम्** दूषित फोड़ा (जिसमें से पीप निकले)।

पूतिक (वि०) [पूति+कै+क] सड़ा हुआ, बदबूदार, सड़ागला,—**कम्** लीद, मल, विष्ठा।

पूतिका [पूतिक+टाप्] एक प्रकार की जड़ी। सम०—**मुखः** दो कोष वाला शंख।

पून (वि०) [पू+क्त तस्य नः] नष्ट किया गया।

पूपः [पू+क्विप्, पा+क] पूआ, दे 'अपूप' ।

पूपला, - ली, पूपालिका, पूपाली, पूपिका [पूप+ला+क+टाप्, ङीप् वा; पूपाय अलति—पूप+अल्+अच्+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्वः, पूप+अल्+पच्, ङीष् पूप्+ठन्+टाप्] एक प्रकार का मीठा पुआ, मालपुआ ।

पूयः,—यम् [पूय्+अच्] पीप, फोड़ या घाव से निकलने वाला मवाद, पीप आना, मवाद निकलना—मनु० ३।१८०, ४।२२०, १२।७२ । सम०—**रक्तः** नाक का एक रोग विशेष (इसमें पीप से युक्त रक्त, या मवाद नाक से बहता है) (**क्तम्**) 1. कचलोहू, मवाद 2. नथनों से मवाद का बहना ।

पूयनम् [पूय्+ल्युट्]=दे० 'पूय' ।

पूर् i (दिवा० आ—पूर्यते, पूर्ण) 1. भरना, पूर्ण करना 2. प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना ii (चुरा० उभ०—पूरयति—ते, पूरितः—पृ० का प्रेर० रूप) 1. भरना—को न याति वशं लोके मुखे पिंडेन पूरितः भर्तृ० २।११८, शि० ९।६४ 2. हवा से भर जाना, (शंख आदि में) फूंक मारना 3. ढकना, घेरना भट्टि० ७।३० 4. पूरा करना, संतुष्ट करना—पूर यतु कुतूहलं वत्सः—उत्तर० ४, इसी प्रकार आशां, मनोरथं आदि 5. तीव्र करना, (ध्वनि आदि) सबल करना 6. गुंजायमान करना 7. बोझ लादना, समृद्ध करना, आ—, 1. भरना, पूर्ण करना, पूरा करना, ऊपर तक भरना (आलं० भी)—रघु० १६।६५, भग० ११।३०, भट्टि० ६।११८ 2. हवा से भरना, (शंख आदि) बजाना -कर्मवाच्य में प्रयुक्त 3. अन्तर्ग्रथित करना, पिरोना ऋतु० ३।१८,—परि, भरना, पूरी तरह से भर लेना, प्र—, 1. भरना, उपहारों से भरना, समृद्ध करना मृच्छ० ९।५९, (यहाँ यह दोनों अर्थ देता है), सम्—, पूरा करना, भरना ।

पूरः [पूर+क] 1. भरना, पूरा करना 2. संतोष देना, प्रसन्न करना, तृप्त करना 3. उडेलना, पूर्ति करना—अतैलपूराः सुरतप्रदीपाः—कु० १।१० 4. नदी का चढ़ना, समुद्र में पानी का बढ़ना, बाढ़—रघु० ३।१७ 5. धारा या नदी का रूप होना, बाढ़ आना - अंबु° बाष्प° शोणित° आदि 6. जलखण्ड, सरोवर, तालाब 7. घाव का साफ़ होना या भरना 8. एक प्रकार की रोटी या पूरी,—रम् एक प्रकार का गंधद्रव्य,—**उत्पीडः** बाढ़ या जलाधिक्य ।

पूरक (वि०) [पूर्+ण्वुल्] 1. भरने वाला, पूरा करने वाला 2. संतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला,—**कः** 1. नींबू का पौधा 2. श्राद्ध की समाप्ति पर पितरों को दिया जाने वाला पिंड 3. (अंकगणित में) गुणक ।

पूरण (वि०) (स्त्री०—णी) [पूर्+ल्युट्] 1. भरना, पूरा करना 2. क्रम सूचक (अंकों के साथ प्रयुक्त)—जैसे द्वितीय, तृतीय आदि—न पूरणी तं समुपैति संख्या—कि० ३।५१ 3. संतुष्ट करने वाला—**णः** 1. पुल, बांध, सेतु 2. समुद्र,—**णम्** 1. भरना 2. ऊपर तक भरना, पूरा करना—रघु० ९।७३ 3. फूलना, सूजना 4. पूरा करना, सम्पन्न करना 5. एक प्रकार की पूरी या रोटी 6. मृतक कार्य में प्रयुक्त रोटी 7. वृष्टि, बरसना 8. ऐंठन, मरोड़ 9. (गणि० में) गुणा । सम०—**प्रत्ययः** क्रम सूचक संख्या बनाने वाला प्रत्यय ।

पूरिका [पूर+ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] पूरी, कचौरी।

पूरित (भू० क० कृ०) [पूर्+क्त] 1. भरा हुआ, पूरा 2. बिछाया हुआ, आच्छादित 3. गुणा किया हुआ ।

पूरुषः [पुर्+कुषन्, नि० दीर्घः]=दे० 'पुरुष'—भामि० १।७५ ।

पूर्ण (भू० क० कृ०) [पूर्+क्त, नि०] 1. भरा हुआ, आपूरित, पूरा किया हुआ, अश्रु° शोक° आदि 2. संपूर्ण, अखंड, समग्र, समूचा रघु० ३।३८ 3. पूरा किया हुआ, सम्पन्न 4. समाप्त, पूरा 5. अतीत, बीता हुआ 6. संतुष्ट, तृप्त 7. घोष पूर्ण, गुंजायमान, 8. बलवान्, शक्तिशाली 9. स्वार्थी, स्वलीन । सम०—**अंकः** पूर्ण संख्या,—**अभिलाष** (वि०) संतुष्ट, तृप्त,—**आनकम्** 1. ढोल 2. ढोल की आवाज 3. बर्तन 4. चंद्रकिरण 5. दे० पूर्ण पात्र (कभी कभी 'पूर्णालक' भी पढ़ा जाता है,—**इन्दुः** पूरा चांद,—**उपमा** पूरी या समूची उपमा अर्थात् जिसमें उपमान "उपमेय' 'साधारणधर्म' और 'उपमाप्रतिपादक शब्द' यह चारों अपेक्षित बातें अभिव्यक्त की गई हों (विप० लुप्तोपमा)—उदा० अंभोरुहमिवाताम्रं मुग्धे करतलं तव—दे० काव्य० १०, 'उपमा' के अन्तर्गत भी,—**ककुद्** (वि०) पूरे कोहान से युक्त,—**काम** (वि०) जिसकी इच्छाएं पूरी हो गई हैं, संतुष्ट, तृप्त,—**कुंभः** 1. पूरा कलश 2. पानी से भरा घड़ा 3. युद्ध करने की विशेष रीति 4. (दीवार में) कलश के आकार का गर्त—तदत्र पक्वेष्टके पूर्णकुंभ एव शोभते—मृच्छ० ३,—**पात्रम्** 1. जल से भरी गागर 2. कलशपूर, गागर भर 3. २५६ मुट्ठी भर (अनाज का) तोल 4. (वस्त्रालंकार आदि) मूल्यवान् वस्तुओं से भरा हुआ (संदूक, टोकरी आदि) बर्तन जो बंधुबांधवों द्वारा किसी उत्सवादि के अवसर पर उपहार के रूप में बांटा जाय, अतः इसका सामान्य अर्थ है वह उपहार जो किसी सुखद समाचार के लाने वाले व्यक्ति को दिया जाता है—कदा मे तनयजन्ममहोत्सवानंदनिर्भरो हरिष्यति पूर्णपात्रं परिजनः—का० ६२, ७०, ७३, १६५, सखीजनेनापह्रियमाणपूर्णपात्राम् २९९,

तत्कामं प्रभवति पूर्णपात्रवृत्त्या स्वीकर्तुं मम हृदयं च जीवितं च - मा० ४।१, (पूर्णपात्र की परिभाषा —हर्षादुत्सवकाले यदलंकारांशुकादिकम्, आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्रं स्यात्पूर्णकं च तत्। या—वर्धापकं यदानंदादलंकारादिकं पुनः, आकृष्य गृह्यते पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत्—हारावली, बो (बी) जः नींबू, —मासी पूर्णिमा, पूनो।

पूर्णकः [पूर्ण+कन्] 1. एक प्रकार का वृक्ष 2. रसोइया 3. नीलकंठ।

पूर्णिमा, पूर्णिमासी [पृ+निङ्=पूर्णि, मा+क+टाप्, पूर्णि+मास+ङीप्] वह दिन जब चन्द्रमा पूर्ण हो जाता है, पूनो —नै० २।७६।

पूर्त (वि०) [पूर्+क्त नि०] 1. पूर्ण, पूरा 2. छिपाया हुआ, ढका हुआ 3. पालन-पोषण किया गया, रक्षा किया गया, **तम्** 1. पूर्ति 2. पोषण, पालन 3. पुरस्कार, पात्रता 4. पावन, उदारता का कृत्य—परिभाषा—वापीकूपतडागादिदेवतायतनानि च अन्नप्रदानमारामः पूर्तमित्यभिधीयते - मनु० ४।२२६, (विप० इष्ट) अत्रि द्वारा इसकी परिभाषा - अग्निहोत्रं तपः सत्यं वेदानां चैव पालनम्, आतिथ्यं वैश्वदेवश्च इष्टमित्यभिधीयते) - तु० 'इष्टापूर्त'।

पूर्तिः (स्त्री०) [पूर्+क्तिन्] 1. भरना 2. पूरा करना, पूर्णता, सम्पन्नता 3. तृप्ति, संतुष्टि।

पूर्व (वि०) [पूर्व+अच्] (जब काल और दिशा की दृष्टि से सापेक्ष स्थिति प्रकट की जाती है तो इस शब्द के रूप सर्वनाम की भांति होते हैं, परन्तु वह भी कर्तृ० ब० व०, तथा अपादान० व अधिकरण० एक, व० में विकल्प से) 1. सामने होने वाला, प्रथम, प्रमुख 2. पूर्वी, पूर्व दिशा में स्थित, के पूर्व में ग्रामात्पर्वतः पूर्वः 3. पहले का, से पहला 4. पुराना, प्राचीन —पूर्वसूरिभिः - रघु० १।४ 5. पूर्वोक्त, विगत, पिछला, पहला, पूर्वगामी (विप० उत्तर), इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त यथा 'श्रुतपूर्व' 6. उपर्युक्त, पूर्वोक्त 7. (समास के अन्त में) पूर्ववर्ती, से युक्त, अनुसेवित संबंधमाभाषणपूर्वमाहुः—रघु० २।५८, पुण्यः शब्दो मुनिरिति मुहुः केवलं राजपूर्वः श० २।१४, तान् स्मितपूर्वमाह कु० ७।४७ ५।३१, दशपूर्वरथं यमाख्यया दशकंठारिगुरुं विदुर्बुधाः रघु० ८।२९ इसी प्रकार 'मतिपूर्व' मनु० ११।१४७ 'इरादतन' 'जानबूझकर' १२।३२,—अबोधपूर्वम् अनजाने श० ५।३, **र्वः** पूर्वज, पूर्व पुरखा, बाप दादा पूर्वैः किलायं परिवर्धितो नः रघु० १३।३, पयः पूर्वैः सनिश्वासैः कवोष्णमुपभुज्यते १।६७, ५।१४, **र्वम्** अगला भाग, **र्वम्** (अव्य०) 1. से पहले (अपा० के साथ) मासात्पूर्वम् 2. विगत काल में, पहले, प्रारंभ में, पूर्वतः, पहले ही तं पूर्वमभिवादयेत् —मनु० २।११७, ३।९४, ८।२०५, रघु० १२। ३५, **पूर्वेण**—से पूर्व में (संबं० या कर्म० के साथ) **अद्य पूर्वम्** 'अब तक' 'इससे पहले' **पूर्वः—ततः—पश्चात्** —**उपरि** पहले तब, पहले बाद में, विगत काल में —**पूर्वम्** अधुना या—**अद्य** पहले आज। सम० —**अचलः,—अद्रिः** उदयाचल (पूर्व दिशा का पहाड़ जिसके पीछे से सूर्य और चन्द्रमा का उदय होता है), —**अंतः** पूर्ववर्ती शब्द की समाप्ति, **अपर** (वि०) 1. पूर्वी और पश्चिमी पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य —कु० १।१ 2. पहला और अन्तिम 3. पहले का और बाद का, पूर्ववर्ती और परवर्ती 4. किसी दूसरे से युक्त, (**रम्**) 1. जो पहले और बाद में हो 2. संबंध 3. प्रमाण और प्रमेय °**विरोधः** असंगति, असबद्धता, **अभिमुख** (वि०) (वि०) पूर्व दिशा की ओर मुख किए हुए, या मुड़े हुए,—**अम्बुधिः** पूर्वी समुद्र,—**अर्जित** (वि०) पूर्वकर्मों द्वारा प्राप्त (**तम्**) पैतृक संपत्ति **र्धः, र्धम्** 1. पहला आधा भाग —दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् - भर्तृ० २।६०, समाप्तं पूर्वार्धम् - आदि 2. (शरीर का) ऊपर का भाग - श० ३, रघु० १६। ६, 3. श्लोकार्ध का प्रथम भाग, **अह्णः** मध्याह्न से पूर्व, दोपहर से पूर्व—मनु० ४।९६, ७।८७ (पूर्वाह्णतन, पूर्वाह्णतेन (वि०) मध्याह्न से पूर्वकाल संबंधी), —**आवेदकः** वादी, मुद्दई, **आषाढ़ा** बीसवाँ नक्षत्र, (२० नक्षत्रों का पुंज), **इतर** (वि०) पश्चिमी, —**उक्त, उदित** (वि०) पहले कहा हुआ, उपर्युक्त, —**उत्तर** (वि०) उत्तरपूर्वी (द्वि० व०—**रे**) पूर्ववर्ती पहले का और बाद का, - **कर्मन्** (नपुं०) 1. पहला काम या कार्य 2. प्रथम कार्य, पहले किया जाने वाला कार्य 3. पूर्व जन्म में किया गया कार्य,—**कल्पः** विगत काल, **कायः** 2. जानवरों के शरीर का अगला भाग पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम् श० १।७ 2. मनुष्यों के शरीर का ऊपरी भाग —स्पृशन् करेणानतपूर्वकायम् रघु० ५।३२, पर्यंकबंधस्थिर पूर्वकायम् कु० ३।४५,—**कालः** विगत काल, प्राचीन समय, **कालिक, कालीन** (वि०) प्राचीन, **काष्ठा** पूर्व, पूर्व दिशा, **कृतम्** पूर्वजन्म में किया हुआ कार्य, **कोटिः** (स्त्री०) वाक्प्रतियोगिता की आरंभिक उक्ति, विवादविषय, पूर्वपक्ष,—**गंगा** नर्मदा नदी,—**चोदित** (वि०) उपर्युक्त, ऊपर बताया हुआ 2. पहले से कहा हुआ, या पूर्व प्रस्तुत (आक्षेप आदि) **ज** (वि०) 1. जिसकी उत्पत्ति पहले हुई हो, पहले जन्मा हुआ 2. प्राचीन, पुराना 3. पूर्वी (**जः**) 1. बड़ा भाई शि० १६।४४, रघु० १५।३६

2. बड़ी पत्नी का लड़का 3. पूर्वपुरुष, बापदादा, —**जन्मन्** (नपुं०) पहला जन्म, (पुं०) बड़ा भाई —रघु० १४।४४, १५।९५,—**जा** बड़ी बहन, —**जातिः** (स्त्री०) पूर्वजन्म,—**ज्ञानम्** पूर्वजन्म का ज्ञान, —**दक्षिण** (वि०) दक्षिणपूर्वी (णा) दक्षिण पूर्व दिशा, —**दिक्पतिः** पूर्व दिशा का अधिपति इन्द्र,—**दिनम्** दिन का पूर्वभाग, दोपहर से पूर्व का समय,—**दिश्** (स्त्री०) पूर्व दिशा, —**दिष्टम्** भाग्य में लिखा, —**देवः** 1.प्राचीन देवता 2. राक्षस या असुर 3. प्रजनक, पिता,—**देशः** पूर्वी प्रदेश, भारत का पूर्वी भाग,—**निपातः** समास में शब्द की अनियमित प्राथमिकता —तु० परनिपात, —**पक्षः** 1. अगला हिस्सा या पार्श्व 2. कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का प्रथमपक्ष) 3. विवाद का पूर्वपक्ष, प्रथमदर्शनाधारित तर्क या प्रश्न का दृष्टिकोण 3. किसी तर्क का प्रथम आक्षेप 4. वादी की प्रतिज्ञा 5. अभियोग, नालिश, —**पदम्** किसी समास या वाक्य का प्रथम पद, —**पर्वतः** उदयाचल जिसके पीछे सूर्य का उदय होना माना जाता है —**पांचालक** (वि०) पूर्वी पंचालों से संबंध रखने वाला —**पाणिनीयाः** (पुं०, ब० व०) पूर्व देश के रहनेवाले पाणिनि के शिष्य, **पितामहः** बापदादा, पूर्वज,—**पुरुषः** 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. पिता, पितामह या प्रपितामह में से कोई एक 3. पूर्वपुरखा,—**पूर्व** (वि०) प्रत्येक पूर्ववर्ती —**फाल्गुनी** ग्यारहवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं °**भवः** बृहस्पति ग्रह का विशेषण, —**भागः** अगला हिस्सा, —**भाद्रपदा** पच्चीसवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं,—**भुक्तिः** (स्त्री०) पहले से किया हुआ अधिकार, —**भूत** (वि०) पूर्ववर्ती, पहले का, —**मीमांसा** प्रथम मीमांसा, वेद के अंतर्गत कर्मकाण्डविषयक पृच्छा (विप० उत्तरमीमांसा या वेदान्त—दे० मीमांसा,—**रंगः** नाटक का उपक्रम या आरंभ, आमुख या प्रस्तावना, —पूर्वरंगं विधायैव सूत्रधारो निवर्तते —सा० द० २८३, पूर्वरंगः प्रसंगाय नाटकीयस्य वस्तुनः —शि० २।८ (दे० इस पर मल्लि०), **रागः** आरंभिक प्रेम, दो व्यक्तियों के मिलन से पूर्व (श्रवण दर्शन आदि के कारण) उनमें उत्पन्न होनेवाला प्रेम, **रात्रः** 1. रात का पहला भाग, —**रूपम्** 1. होने वाले परिवर्तन का संकेत 2. रोग होने का लक्षण 3. दो सहवर्ती स्वर या व्यंजनों में से पहला जो स्थिर रहे, **वयस्** (वि०) बच्चा—**वर्तिन्** (वि०) पहले से विद्यमान, पहले का, पहले होने वाला, —**वादः** बादी द्वारा प्रस्तुत अभियोग, मुद्दई द्वारा की गई नालिश, **वादिन्** (पुं०) अभियोक्ता या मुद्दई, **वृत्तम्** 1. पहली घटना,—रघु० ११।१० 2. पहला आचरण, **शारद** (वि०) शरद् ऋतु के पूर्वार्ध से संबंध रखने वाला, —**शैलः** दे० पूर्वपवत,—**सक्थम्** जंघा का ऊपरी भाग,—**संध्या** प्रभातकाल, पौ फटना,—शि० ११।४०,—**सर** (वि०) अग्रेसर, —**सागरः** पूर्वी समुद्र —रघु० ४।३२, —**साहसः** पहला या सबसे भारी अर्थदण्ड, —**स्थितिः** (स्त्री०) पहली या प्रथम अवस्था।

पूर्वक (वि०) [पूर्व+कन्] (समास के अन्त में) 1. पूर्ववर्ती, अनुसेवित—अनामयप्रश्नपूर्वकमाह—श० ५ 2. पूर्ववर्ती, पिछला,—**कः** पूर्वज, बापदादा।

पूर्वंगम (वि०) [पूर्व+गम्+खच्] पहले जाने वाला, पूर्ववर्ती।

पूर्वतः (अव्य०) [पूर्व+तस्] 1. पूर्व में, पूर्व की ओर, —रघु० ३।४२ 2. पहले, सामने।

पूर्वत्र (अव्य०) [पूर्व+त्रल्] पूर्ववर्ती भाग में, पहली जगह।

पूर्ववत् (अव्य०) [पूर्व+वति] पहले की भांति।

पूर्विन् (वि०) (स्त्री०—णी) **पूर्वीण** (वि०) [पूर्व+इनि, पूर्व+ख] 1. प्राचीन 2. पैतृक।

पूर्वेद्युः (अव्य०) [पूर्वस्मिन् अहनि—पूर्व+एद्युस् नि० साधु] 1. पहले दिन 2. गत दिवस, बीते हुए कल —मनु० ३।१८७ 3. दिन के प्रथम भाग में, पौ फटने पर 4. भोर में, सबेरे।

पूल् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—पूलति, पूलयति-ते) ढेर लगाना, संचय करना, एकत्र करना।

पूलः, पूलकः [पूल्+अच्, ण्वुल् वा] गठरी, पुली।

पूलाकः=पुलाक—दे०।

पूलिका [=पूरिका, रस्य लः] एक प्रकार की रोटी, पूरी।

पूषः, पूषकः [पूष्+क, पूष्+कन्] शहतूत का वृक्ष।

पूषन् (पुं०) (कर्तृ०—पूषा,—षणौ, —षणः) [पूष्+कनिन्] सूर्य,—सदा पांथः पूषा गगनपरिमाणं कलयति —भर्तृ० २।११४, इन्धनौघधगप्यग्निस्त्विषा नात्येति पूषणम्—शि० २।३। सम०—**असुहृद्** (पुं०) शिव का विशेषण,—**आत्मजः** 1. बादल 2. इन्द्र का विशेषण, —**भासा** इन्द्र का नगर (अमरावती)।

पृ i (तुदा० आ०—प्रियते, पृत)—व्यस्त होना, सक्रिय होना (बहुधा 'व्या' उपसर्ग के साथ) —कार्ये व्याप्रियते —दे० व्यापृत —प्रेर० (पारयति—ते) 1. काम कराना, काम पर लगाना, सौंपना, नियत करना (बहुधा अधि० के साथ) व्यापारितः शूलभृता विधाय सिंहत्वमंकागतसत्त्ववृत्ति—रघु० २।३८ 2. रखना, जड़ देना, निश्चित करना, निदेश देना, डालना—व्यापारयामास करं किरीटे—रघु० ६।१९ उमामुखे ···व्यापारयामास विलोचनानि—कु० ३।६७, व्यापारितं शिरसि शस्त्रमशस्त्रपाणेः—वेणी० ३।१९, रघु० १३।२५।

ii (जुहो० पर०—पिपर्ति, पूर्ण) 1. आगे ले जाना 2.

से मुक्त करना, प्रकाशित करना 3. भरना 4. रक्षा करना, जीवित रखना, जीवित रहना 5. उन्नति करना, प्रगति करना।

iii (क्र्या० पर० पृणाति) रक्षा करना।

iv (चुरा० उभ०—पारयति-ते, कभी-कभी 'पार्' स्वतंत्र धातु मानी जाती है) 1. पार ले जाना, नाव से पार उतारना 2. किसी वस्तु के दूसरे पार्श्व पर पहुंचना, निष्पन्न करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न करना, (व्रत का) पूरा करना 3. योग्य या समर्थ होना —अधिकं न हि पारयामि वक्तुम् —भामि० २।५९, श० ४ 4. सौंपना, बचाना, उद्धार करना, निस्तार करना।

v (स्वा० पर०—पृणोति) 1. प्रसन्न करना, खुश करना, तृप्त करना 2. प्रसन्न होना, खुश होना।

पृक्त (भू० क० कृ०) [पृच्+क्त] 1. मिश्रित, संपृक्त —रघु० २।१२ 2. स्पृष्ट, संपर्क में लाया गया, स्पर्श करने वाला, संयुक्त,—**क्तम्** संपत्ति, दौलत।

पृक्तिः (स्त्री०) [पृच्+क्तिन्] स्पर्श, संपर्क, संयोग।

पृक्थम् [पृच्+थन्] संपत्ति, धन-दौलत, वैभव।

पृच् i (अदा० आ० पृक्ते, पृक्ण) संपर्क में आना।

ii (रुधा० पर० पृणक्ति, पृक्त) संपर्क में लाना, सम्मिलित होना, मिल जाना—एवं वदन् दाशरथिरपृणग्धनुषा शरम्—भट्टि० ६।३९ 2. मिश्रण करना, मिलाना 3. संपर्क में होना, स्पर्श करना 4. संतुष्ट करना, भरना, संतृप्त करना 5. बढ़ाना, वृद्धि करना, **सम्**—,मिश्रण करना, घोलना, मिलना, मिलाना-वागर्थाविव संपृक्तौ—रघु० १।१, भट्टि० १७।१०६, दे० संपृक्त iii (स्वा० पर०, चुरा० उभ० पर्चति, पर्चयति-ते) 1. स्पर्श करना, संपर्क में आना 2. रोकना, विरोध करना।

पृच्छकः [प्रच्छ्+ण्वुल्] पूछताछ करने वाला, गवेषणा करने वाला—पृच्छकेन सदा भाव्यं पुरुषेण विजानता —पंच० ५।९३, याज्ञ० २।२६८।

पृच्छनम् [प्रच्छ्+ल्युट्] पूछना, पूछ-ताछ करना।

पृच्छा [प्रच्छ्+अङ+टाप्] 1. प्रश्न करना, पूछना, पूछताछ करना 2. भविष्य विषयक पूछ-ताछ।

पृज् (अदा० आ०—पृंक्ते) संपर्क में आना, स्पर्श करना।

पृत् (स्त्री०) [पृ+क्विप्, तुक्] सेना—(पहले पाँच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, द्वि० वि०, द्वि० ब० के पश्चात् 'पृतना' के स्थान में विकल्प से 'पृत्' आदेश हो जाता है।

पृतना [पृ+तनन्+टाप्] 1. सेना 2. सेना का एक प्रभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल होते हैं 3. युद्ध, संग्राम, मुठभेड़। सम०—**साहः** इन्द्र का विशेषण।

पृथ् (चुरा० उभ०—पर्थयति-ते) 1. विस्तार करना 2. फेंकना, डालना 3. भेजना, निदेश देना।

पृथक् (अव्य०) [प्रथ्+अज्, कित्, संप्रसारण] 1. अलग-अलग, जुदा-जुदा, एक एक करके —शंखान्दध्मुः पृथक् पृथक्—भग० १।१८, मनु० ६।२६, ७।५७ 2. भिन्न, अलग, भिन्नतापूर्वक भट्टि० ५।४, १३।४, रचिता पृथगर्थता गिराम् —कि० २।२७ 3. जुदा, एक ओर, एकाकी—विक्रम० ४।२० 4. छोड़ कर, सिवाय, अपवाद के साथ, बिना (कर्म० करण० या अपा० के साथ) पृथग्रामेण, रामात्, रामं वा—सिद्धा०, भट्टि० ९।१०९ (**पृथक् कृ**—अलग २ करना, बाँटना, जुदा-जुदा करना, विश्लेषण करना)। सम० —**आत्मता** 1. अलग-अलग होना, पृथक्ता 2. भेद, भिन्नता 3. विवेक, निर्णय,—**आत्मन्** (वि०) भिन्न, अलग —**आत्मिका** व्यक्तिगत सत्ता, वैयक्तिकता —**करणम्**,-**क्रिया** 1. अलग-अलग करना, भेद करना 2. विश्लेषण करना, —**कुल** (वि०) भिन्न कुल से संबंध रखने वाला,—**क्षेत्राः** (पुं० ब० व०) एक पिता की विभिन्न पत्नियों से सन्तान, या भिन्न-भिन्न जातियों की पत्नियों से सन्तान, —**चर** (वि०) एकाकी जाने वाला, अलग जाने वाला,—**जनः** नीच पुरुष, ज्ञान-रहित, गँवार आदमी, प्राकृत जन, नीच लोग— न पृथग्जनवच्छुचो वशं वशिनामुत्तम गंतुमर्हसि—रघु० ८।९०, कि० १४।२४ 2. मूर्ख, बुद्धू, अज्ञानी—शि० १६।३९ 3. दुष्ट आदमी, पापी,—**भावः** पृथक्ता, वैयक्तिकता (इसी प्रकार 'पृथक्त्वम्'),—**रूप** (वि०) भिन्न-भिन्न रूपों या प्रकारों का,—**विध** (वि०) भिन्न-भिन्न प्रकार का, नाना प्रकार विविध,—**शय्या** अलग सोना,—**स्थितिः** (स्त्री०) अलग सत्ता।

पृथवी [प्रथ्+षवन्, संप्रसारण] दे० पृथिवी।

पृथा (स्त्री०) पाण्डु की दो पत्नियों में से एक, कुन्ती का नाम। सम०—**जः**,-**तनयः**,-**सुतः**,-**सूनुः** पहले तीन पांडवों का विशेषण परन्तु प्रायः 'अर्जुन' के लिए व्यवहृत —अश्वत्थामा हत इति पृथासूनुना स्पष्टमुक्ता —वेणी० ३।९, अभितस्तं पृथासूनुः स्नेहेन परितस्तरे —कि० ११।८, —**पतिः** पाँडु का विशेषण।

पृथिका [प्रथ्+क+क+टाप् सम्प्रसारणम्, इत्वम्] कनखजूरा।

पृथिवी [प्रथ्+षिवन्, संप्रसारणम्] पृथ्वी (कई 'पृथिवी' भी लिखा जाता है)। सम० —**इन्द्रः**,-**ईशः**,-**क्षित्** (पुं०),—**पालः**,-**पालकः**,-**भुज्** (पुं०)—**भुजः**,**शक्रः**, राजा,—**तलम्** धरातल,— **पतिः** 1. राजा 2. मृत्यु का देवता यम,— **मंडलः**,-**लम्** भूमंडल,—**रुहः** वृक्ष—पवमानः पृथिवीरुहानिव रघु० ८।९,—**लोकः** मर्त्यलोक भूलोक।

पृथु (वि०) (स्त्री०-थु,-थ्वी) तुल० प्रथीयस्--उत्त० अ० प्रथिष्ठ) [प्रथ्+कु, संप्रसारणम्] 1. चौड़ा, विस्तृत, प्रशस्त, फैलावदार—पृथुनितंब--दे० नीचे, सिंधोः पृथुमपि तनुम्—मेघ० ४६ 2. यथेष्ट, बहुल, पर्याप्त—विक्रम० ४।२५ 3. विस्तीर्ण, बड़ा—दृशः पृथुतरीकृताः— रत्न० २।१५, शि० १२।४८, रघु० ११।२५ 4. विवरणयुक्त, अतिविस्तृत 5. बहुसंख्यक 6. चुस्त, फुर्तीला, चतुर 7. महत्त्वपूर्ण,---थुः 1. अग्नि का नाम 2. एक राजा का नाम (पृथु अंग के पुत्र वेन का बेटा था। वही पहला राजा कहलाता है जिससे कि इस भूमि का नाम पृथ्वी पड़ा। विष्णु पुराण में वर्णन मिलता है कि वेन स्वभाव से दुष्ट था, जब उसने यज्ञ व पूजा का निषेध किया तो पुण्यात्मा ऋषियों ने उसे पीट कर मार डाला, उसके पश्चात् राजा के न होने पर देश में लूट मार होने लगी, अराजकता फैल गई, फलतः मुनियों ने पुत्रोत्पत्ति की इच्छा से मृत राजा की दाईं भुजा को मसला, तब उससे अग्नि के समान तेजस्वी पृथु निकला। उसे तुरन्त राजा घोषित कर दिया गया। उसकी प्रजा दुर्भिक्षग्रस्त थी—अतः उसने राजा से भोज्य फलों को दिलाने की प्रार्थना की जो कि पृथ्वी ने देना बन्द कर दिया था। क्रुद्ध होकर पृथु ने अपना धनुष उठाया और पृथ्वी को अपनी प्रजा के लिए आवश्यक पदार्थ पैदा करने के लिए बाध्य किया। पृथ्वी ने गाय का रूप धारण कर लिया और राजा के आगे-आगे भागने लगी---राजा भी उसका पीछा करता रहा। अन्त में पृथ्वी ने आत्मसमर्पण कर दिया और राजा से अपने प्राण बचाने की प्रार्थना की, साथ ही यह प्रतिज्ञा की कि आवश्यक फल शाकादिक प्रजा को मिल सकेंगे यदि उसे एक बछड़ा दे दिया जाय जिसके द्वारा वह दूध देने के योग्य हो सके। तब पृथु ने स्वायंभुव मनु को बछड़ा बनाया, पृथ्वी को दुहा और दूध अपने हाथों में लिया जहाँ से सब प्रकार के अन्न, शाकभाजियाँ और फलफूल प्रजा के पालन-पोषण के लिए उत्पन्न हुए। इसके पश्चात् पृथु के उदाहरण का बाद में नाना प्रकार से अनुकरण किया गया। देव, मनुष्य, ऋषि, पहाड़, नाग और असुर आदि ने अपने में से ही उपयुक्त दोग्धा तथा बछड़े को ढूंढा और इस पृथ्वी का अपनी इच्छानुसार दोहन किया तु० कु० १।२.),—थुः (स्त्री०) अफीम। सम०---उदर (वि०) मोटे पेट वाला हृष्ट-पुष्ट (रः) मेंढा, -जघन,---नितंब (वि०) मोटे और विस्तार युक्त कूल्हों से युक्त - पृथुनितंब नितम्बवती तव –विक्रम० ४।२६,---पत्रः,-त्रम् लाल लहसुन —प्रथ,-यशस् (वि०) दूर-दूर तक प्रसिद्ध, व्यापक यशस्वी,—रोमन् (पुं०) मछली, °युग्मः मीन राशि, —श्री (वि०) अत्यन्त समृद्ध,—श्रोणी (वि०) बड़े भारी कूल्हों वाला,—संपद (वि०) धनवान्, दौलत मंद,—स्कंधः सूअर।

पृथुकः, –कम् [पृथु+कै+क] चौले, चिवड़े---कः बच्चा निन्युर्जनन्यः पृथुकान् पथिभ्यः—शि० ३।३१,—का लड़की।

पृथुल (वि०) [पृथु+लच्, ला+क वा] चौड़ा, प्रशस्त, विस्तृत—श्रोणिषु प्रियकरः पृथुलासु स्पर्शमाप सकलेन तलेन--शि० १०।६५।

पृथ्वी [पृथु+ङीष्] 1. पृथिवी, धरा 2. पाँच मूल तत्त्वों में से एक, पृथ्वी 3. बड़ी इलायची 4. एक छंद (दे० परिशिष्ट १)। सम०—ईशः,—पतिः, -पालः, भुज् (पुं०) राजा, प्रभु,—खातम् गुफा,—गर्भः गणेश का विशेषण,—गृहम् गुफा, कृत्रिम खोह,—जः 1. वृक्ष 2. मंगल ग्रह।

पृथ्वीका [पृथ्वी+कन्+टाप्] 1. बड़ी इलायची 2. छोटी इलायची।

पृदाकुः [पर्द्+काकु, संप्रसारणम्, प्रकारलोपः] 1. बिच्छू 2. व्याघ्र 3. सांप, छोटा विषैला सांप 4. वृक्ष 5. हाथी 6. चीता।

पृश्नि (श्नि) (स्पृश्+नि नि० पृषो० सलोपः] 1. छोटा, छोटे कद का बौना 2. सुकुमार, दुबला-पतला 3. विविध प्रकार का, चित्तीदार,---श्निः 1. प्रकाश की किरण 2. पृथ्वी 3. तारा समूह से युक्त आकाश 4. कृष्ण की माता देवकी। सम०---गर्भः - धरः, भद्रः कृष्ण के विशेषण,---शृंगः 1. कृष्ण का विशेषण 2. गणेश का विशेषण।

पृश्नि (श्नि) का, **पृश्नी** (श्नी) [पृश्नी जले कायति-शोभते—पृश्नि+कै+क+टाप्, पृश्नि+ङीप्] जल में पैदा होने वाला एक पौधा, जलकुंभी।

पृषत् (नपुं०) [पृष्+अति] 1. जल या किसी और तरल पदार्थ की बूंद (कुछ लोगों के मतानुसार केवल ब०व० में प्रयुक्त)। सम०--अंशः, अश्वः 1. वायु, हवा 2. शिव का विशेषण,—आज्यम् दही में मिला हुआ घी,—पतिः (पृषतां पतिः) वायु - वल्कः वायु का घोड़ा।

पृषतः [पृष्+अतच्] 1. चित्तीदार हरिण 2. पानी की बूंद—पृषतैरपां शमयतां च रजः कि० ६।२७, रघु० ३।३, ४।२७, ६।५१ 3. धब्बा, निशान—। सम०—अश्वः हवा, वायु।

पृषत्कः [पृषत्+कन्] बाण—तद्गुपोढैश्च नभश्चरैः पृषत्कैः—कि० १३।२३, शि० २०।१८, -उद्भट २।१ धनुर्भृतां हस्तवतां पृषत्का रघु० ७।४५।

पृषंतिः [पृष्+झिच्] पानी की बूंद—पय पर्णनिः

स्पृष्टा वांति वाताः शनैः शनैः—अमरकोश पर भरत ।

पृषभाषा=पृषभासा ।

पृषाकरा [पृष्+क्विप्, पृषे सेचनाय आकीर्यते—पृष्+आ+कृ+अप्+टाप्] छोटा पत्थर (जो बाट की भांति प्रयुक्त किया जाय) ।

पृषातकम् [पृषत्+आ+तक्+अच्] दही और घी का संमिश्रण ।

पृषोदरः [पृषत् उदरं यस्य, पृषो० तलोपः] (यह शब्द पृषत् और उदर से मिल कर बना है, पृषत् के त् का अनियमित कारक के रूप में लोप हो गया । इस प्रकार यह शब्द अनियमित समासों की एक पूरी श्रेणी है—पृषोदरादित्वात् साधुः, दे० 'गण' पा० ४।३।१०९ ।

पृष्ट (भू०क०कृ०) [प्रच्छ्+क्त] 1. पूछा हुआ, पता लगाया हुआ, प्रश्न किया हुआ, सवाल किया हुआ, 2. छिड़का हुआ । सम०—**आयनः** 1. धान्य विशेष, अनाज 2. हाथी ।

पृष्टिः (स्त्री०) प्रच्छ्+क्तिन्] पूछ-ताछ, प्रश्न वाचकता ।

पृष्ठम् [पृष् स्पृश् वा थक्, नि० साधुः] 1. पीठ, पिछला हिस्सा, पिछाड़ी 2. जानवर की पीठ —अश्वपृष्ठमारूढः—आदि 3. सतह या ऊपर का पार्श्व —रघु० ४।३१,१२।६७, कु० ७।५१, इसी प्रकार अवनिपृष्ठचारिणीम्—उत्तर० ३ 4. (किसी पत्र या दस्तावेज़ की) पीठ या दूसरी तरफ़—याज्ञ० २।९३ 5. घर की चपटी छत 6. पुस्तक का पृष्ठ । सम० —**अस्थि** (नपुं०) रीढ़ की हड्डी, —**गोपः**,—**रक्षः** जो किसी लड़ते हुए योद्धा की पीठ की रक्षा करे,—**ग्रंथि** (वि०) ककुद्मान्, कूबड़ युक्त,—**चक्षुस्** (पुं०) केकड़ा,—**तल्पनम्** हाथी की पीठ की बाहरी मांसपेशियाँ, —**दृष्टिः** 1. केकड़ा 2. रीछ,—**फलम्** किसी आकृति का फालतू भाग,—**भागः** पीठ, —**मांसम्** 1. पीठ का मांस 2. पीठ पर की गूमड़ी °अद °अदन (वि०) चुग़लखोर, बदनाम करने वाला, कलंकित करने वाला (—दम्, —दनम्) चुग़ली, पृष्ठमांसादनं तद्यत् परोक्षे दोषकीर्तनम्—हेमचन्द्र—तु० प्राक्पादयोः पतति खादति पृष्ठमांसम्—हि० १।८१, **यानम्** सवारी,—**वंशः** रीढ़ की हड्डी—**वास्तु** (नपुं०) मकान की ऊपर की मंज़िल, **वाह्** (पुं०),—**वाह्यः** लद्दू बैल,—**शय** (वि०) पीठके बल सोने वाला, —**शृंगः** जंगली बकरी, —**शृंगिन्** (पुं०) 1. मेंढा 2. भैंसा 3. हिजड़ा 4. भीम का विशेषण ।

पृष्ठकम् [पृष्ठ+कन्] पीठ ।

पृष्ठतस् (अव्य०) [पृष्ठ+तसिल्] 1. पीछे, पीठ पीछे, पीछे से —गच्छतः पृष्ठतोऽन्वियात्—मनु० ४।१५४, ८।३००, भग० ११।४० 2. पीठ की ओर, पीछे की ओर—गच्छ पृष्ठतः 3. पीठ पर 4. पीठ पीछे चुपचाप, प्रच्छन्न रूप से (**पृष्ठतः कृ**) 1. पीठ पर रखना, पीछे छोड़ना 2. उपेक्षा करना, तिलांजलि देना, छोड़ देना 3. विरक्त होना, हाथ खींचना, त्याग देना, तिलांजलि देना, **पृष्ठतो गम्**—अनुसरण करना, **पृष्ठतो भू**—1. पीछे खड़े होना 2. उपेक्षित होना ।

पृष्ठ्य (वि०) [पृष्ठ+यत्] पीठ से संबंध रखने वाला, —**ष्ठ्यः** लद्दू घोड़ा ।

पृष्णिः (स्त्री०) [=पृश्नि पृषो०] एडी ।

पृ (जुहो०, क्या० – पर० पिपर्ति, पृणाति, पूर्ण – कर्म० पूर्यते, प्रेर० पूरयति—ते, इच्छा० पिपरि (री) षति, पुपूर्षति) 1. भरना, भर देना, पूरा करना 2. पूरा करना, (आशा आदि) पूरी करना, तृप्त करना 3. हवा भरना, (शंख, बंसरी आदि) बजाना 4. संतुष्ट करना, थकावट दूर करना, प्रसन्न करना —पितॄनपारीत्—भट्टि० १।२ 5. पालना, परवरिश करना, पुष्ट करना, पालनपोषण करना, पालन करना ।

पेचकः [पच्+वुन्, इत्वम्] 1. उल्लू 2. हाथी की पूंछ की जड़ 3. पलंग, शय्या 4. बादल 5. जूं ।

पेचकिन् (पुं०) **पेचिलः** [पेचक+इनि, पच्+इलच्, इत्वम्] हाथी ।

पेंजूषः (पुं०) कान का मैल, घुघ, दे० पिंजूष ।

पेटः,—टम् [पिट्+अच्] 1. थैला, टोकरी 2. पेटी, संदूक़, —**टः** खुला हाथ जिसकी अंगुलियाँ फैलाई हुई हों ।

पेटकः,—कम् [पेट+कन्] 1. टोकरी, संदूक़, थैला 2. समुच्चय, गठरी ।

पेटाकः [=पेटक, पृषो०] थैला, टोकरी, संदूक़ ।

पेटिका, पेटी [पिट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, पेट+ङीष्] छोटा थैला, टोकरी ।

पेडा [=पेट, पृषो०] बड़ा थैला ।

पेय (वि०) [पा+ण्यत्] 1. पीने के योग्य, चढ़ा जाने के लायक 2. स्वादिष्ट,—**यम्** पानीय, मद्य या शर्बत आदि,—**या** भात का मांड, चावलों की लपसी ।

पेयुः (पुं०) 1. समुद्र 2. अग्नि 3. सूर्य ।

पेयूषः,—षम् [पीय्+ऊषन्, वा० गुणः] 1. अमृत 2. उस गाय का दूध जिसे ब्याये अभी एक सप्ताह से अधिक नहीं हुआ—सप्तरात्रप्रसूतायाः क्षीरं पेयूषमुच्यते—हारावली, मनु० ५।६ 3. ताज़ा घी ।

पेरा (स्त्री०) एक प्रकार का वाद्ययंत्र—भट्टि० १७।७ ।

पेल् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—पेलति, पेलयति—ते) 1. जाना, चलना—फिरना 2. हिलना, काँपना ।

पेलम्, पेलकः] पेल्+अच्, पेल+कन्] अण्डकोष ।

पेलव (वि०) [पेल+वा+क] 1. सुकुमार, सुकोमल, मृदु, मुलायम,—धनुषः पेलवपुष्प पत्रिणः कु० ४।२९, ५।४,७।६५ 2. दुर्बल, पतला, क्षीण—श० ३।२२ ।

पेलिः, पेलिन् (पुं०) [पेल्+इन्, पेल+इनि] घोड़ा।

पेश (प, स) ल (वि०) [पिश् (ष्, स्)+अलच्] 1. मृदु, मुलायम, सुकुमार—रघु० ९।४०,११।४५, मेघ० ९३ 2. दुबला-पतला, क्षीण (कमर आदि) —रघु० १३।३४ 3. मनोहर, सुन्दर, लावण्ययुक्त अच्छा—भामि० २।२ 4. विशेषज्ञ, चतुर, कुशल —भर्तृ० ३।५६ 5. चालाक, छली।

पेशिः,—शी [पिश्+इन्, पेशि+ङीप्] 1. मांस का पिंड 2. मांस राशि 3. अंडा 4. पुट्ठा – याज्ञ० ३।१०० 5. गर्भाधान के पश्चात् शीघ्र बाद का कच्चा गर्भ-पिण्ड 6. खिलने के लिए तैयार कली 7. इन्द्र का वज्र (पुल्लिंग भी) 8. एक प्रकार का वाद्ययंत्र। सम०—**कोशः (षः)** पक्षी का अंडा।

पेषः [पिष्+घञ्] पीसना, चूरा करना, कुचलना—शि० ११।४५।

पेषणम् [पिष्+ल्युट्] 1. चूर्ण बनाना, पीसना 2. खलिहान का वह स्थान जहाँ अनाज की बालों पर दायें चलाई जाती हैं 3. सिल और लोढी, पीसने का कोई भी उपकरण।

पेषणिः (स्त्री०) पेषणी, पेषाकः [पिष्+अनि, पेषणि+ङीष्, पिष्+आ–कन्] चक्की, सिल, खरल।

पेस्वर (वि०) [पेस्+वरच्] 1. जाने वाला, घूमने वाला 2. नाशकारी।

पै (भ्वा० पर० पायति) सूखना, मुरझाना।

पैंगिः [पिंग+इञ्] यास्क का पैतृकनाम।

पैंजूषः [पिंजूष+अण्] कान।

पैठर (वि०) (स्त्री०—री) [पिठर+अण्] किसी पात्र में उबाला हुआ।

पैठीनसिः (पुं०) एक प्राचीन ऋषि जो एक धर्मशास्त्र का प्रणेता है।

पैंडिक्यम्, पैंडिन्यम् [पिंड+ठन्+ष्यञ्, पिण्ड+इन्+ष्यञ्] भिक्षा पर जीवन निर्वाह करना, भिक्षावृत्ति।

पैतामह (वि०) (स्त्री०—ही) [पितामह+अण्] 1. दादा या पितामह से संबंध रखने वाला 2. उत्तराधिकार में पितामह से प्राप्त 3. ब्रह्मा से गृहीत, ब्रह्मा से अधिष्ठित, या ब्रह्मा से सम्बन्ध रखने वाला – रघु० १५। ६०,—**हाः** (ब० व०) पूर्वपुरखा, बाप दादा।

पैतामहिक (वि०) (स्त्री०—की) [पितामह+ठक्] पितामह से संबन्ध रखने वाला।

पैतृक (वि०) (स्त्री०—की) [पितृ+ठञ्] 1. पिता से सम्बन्ध रखने वाला 2. पिता से प्राप्त या आगत, पुरखाओं से संबध, पिता की परंपरा से प्राप्त—रघु० ८।६,१८।४०, मनु० ९।१०४, याज्ञ० २।४७ 3. पितरों के लिए पुनीत,—**कम्** मृत पुरखाओं या पितरों के सम्मान में अनुष्ठित श्राद्ध।

पैतृमत्यः [पितृमती+ण्य] 1. अविवाहिता स्त्री का पुत्र 2. किसी प्रसिद्ध पुरुष का पुत्र (पितृमतः पुत्रः)।

पैतृष्वसेयः, पैतृष्वस्रीयः [पितृष्वसृ+ढक्, छण् वा] फूफी या बुवा का बेटा।

पैत्त (वि०) (स्त्री०—त्ती), **पैत्तिक** (वि०) (स्त्री०—की) [पित्त+अण्, ठञ् वा] पित्तीय, पित्तसंबंधी।

पैत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [पितृ+अण्] 1. पिता या पुरखाओं से संवन्ध रखने वाला, पैतृक, पुश्तैनी 2. पितरों के लिए पुनीत,—**त्रम्** तर्जनी और अंगूठे का मध्यवर्ती हाथ का भाग (इस अर्थ में 'पैत्र्यम्' भी)।

पैलव (वि०) (स्त्री०—वी) [पीलु+अण्] पीलु वृक्ष की लकड़ी से बना हुआ—मनु० २।४५।

पैशल्यम् [पेशल+ष्यञ्] मृदुता, सुशीलता, सुकुमारता।

पैशाच (वि०) (स्त्री०—ची) [पिशाच+अण्] राक्षसी, नारकीय,—**चः** हिन्दु-धर्मशास्त्र में वर्णित आठ प्रकार के विवाहों में से आठवाँ या निम्नतम श्रेणी का विवाह (इसमें किसी सोई हुई प्रमत्त या पागल कन्या का, उसकी स्वीकृति के बिना उसका कौमारहरण किया जाता है—सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहो यत्रोपगच्छति स पापिष्ठो विवाहानां पैशाचश्चाष्टमोऽधमः—मनु० ३।३४, याज्ञ० १।६१ 2. एक प्रकार का राक्षस या पिशाच,—**ची** किसी धार्मिक संस्कार के अवसर पर तैयार किया गया नैवेद्य 2. रात 3. एक प्रकार की अंडबंड भाषा जो रंगमंच पर पिशाचों द्वारा बोली जाय, प्राकृत भाषा का एक निम्नतम रूप।

पैशाचिक (वि०) (स्त्री०—की) [पिशाच+ठक्] नारकीय, राक्षसी।

पैशुनम्, न्यम् [पिशुनस्य भावः कर्म वा, पिशुन+ष्यञ् वा] 1. चुगली, बदनामी, इधर की उधर लगाना, कलंक—मनु० ७।४८, ११।५५, भग० १६।२ 2. बदमाशी, ठगी 3. दुष्टता, दुर्भावना।

पैष्ट (वि०) (स्त्री०—ष्टी) [पिष्ट+अण्] आटे का या पीठी का बना हुआ।

पैष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [पिष्ट+ठञ्] आटे या पीठी का बना हुआ—**कम्** 1. कचौड़ियों का ढेर 2. अनाज से खींची हुई मदिरा।

पैष्टी [पैष्ट+ङीप्] अनाज को सड़ाकर उससे तैयार की हुई मदिरा—तु० गौडी।

पोगंड (वि०) [पौः शुद्धो गंड एकदेशो यस्य—तारा०] 1. बच्चा, अवयस्क, अपूर्ण विकसित 2. कम या विकृत अंग वाला 3. विकृत, विरूप,—**डः** बालक जिसकी आयु ५ से सोलह वर्ष के भीतर की हो, तु० 'अपोगंड'।

पोटः [पुट+घञ्] घर की नींव। सम०—**दलः** 1. एक प्रकार का नरकुल 2. कास 3. एक प्रकार की मछली।

पोटक [पुट्+ण्वुल्] नौकर।

पोटा [पुट्+अच्+टाप्] 1. मरदानी स्त्री, पुरुषों की भाँति दाढ़ी वाली स्त्री 2. हिजड़ा, उभयलिंगी 3. नौकरानी।

पोटी [पोट+ङीप्] स्थूलकाय मगरमच्छ।

पोट्टलिका, पोट्टली [पोट्टली+कन्+टाप्, ह्रस्व, पोट+ली+ड ङीप्, पृषो०] पोटली, पुलिंदा, गठरी।

पोतः [पू+तन्] 1. किसी भी जानवर का बच्चा, पशुशावक, बछेड़ा, अश्वशावक आदि—पिव स्तन्यं पोत —भामि० १।६०, मृगपोतः, करिपोतः आदि, वीरपोतः नया योद्धा—उत्तर० ५।३ 2. दस वरस का हाथी 3. जहाज, बेड़ा, किश्ती पोतो दुस्तरवारिराशितरणे —हि० २।१६५, मनु० ७।३२ 4. वस्त्र, कपड़ा 5. पौधे का अंकुर 6. घर बनाने की जगह। सम० —**आच्छादनम्** तंबू,—**आधानम्** छोटी-छोटी मछलियों का झुण्ड,—**धारिन्** (पुं०) जहाज का स्वामी,—**भंगः** जहाज का टूट जाना,—**रक्षः** किश्ती या नाव का चप्पू या डांड—**वणिज्** (पुं०) व्यापारी जो समुद्र से आ जाकर व्यापार करे,—**वाहः**—खिवैया, नाविक।

पोतकः [पोत+कन्] 1. पशुशावक 2. छोटा पौधा 3. घर बनाने के निमित्त भूखण्ड।

पोतासः [पोत+अस्+अच्] एक प्रकार का कपूर।

पोतृ (पुं०) [पू+तृन्] यज्ञ में कार्य कराने वाले सोलह ऋत्विजों में से एक (ब्रह्मा नामक ऋत्विज का सहायक)।

पोत्या [पोत+य+टाप्] नौकाओं का बेड़ा।

पोत्रम् [पू+ष्ट्रन्] 1. सूअर की थूथन 2. नौका, जहाज 3. हल का फलका 4. बज्र 5. वस्त्र 6. पोतृ का पद। सम०—**आयुधः** सूअर, वराह।

पोत्रिन् (पुं०) [पोत्र+इनि] सूअर, वराह।

पोलः [पुल्+ण] 1. ढेर 2. राशि, विस्तार।

पोलिका, पोली [पोली+कन्+टाप्, ह्रस्वः, पोल+ङीप्] एक प्रकार की पूरी (गेहूँ की बनी हुई)।

पोलिंदः [पोतस्य अलिन्द इव—पृषो०] जहाज का मस्तूल।

पोषः [पुष्+घञ्] 1. पोषण, संपालन, संधारण 2. पुष्टि, वृद्धि, संवर्धन, प्रगति 3. समृद्धि, प्राचुर्य, बाहुल्य।

पोषणम् [पुष्+णिच्+ल्युट्] पोसना, (छाती का) दूध पिलाना, पालना, संधारण करना।

पोषयित्नुः [पुष्+णिच्+इत्नुच्] कोयल।

पोषितृ (वि०) [पुष्+णिच्+तृच्] दूध पिला कर पालने वाला, पालन-पोषण करने वाला—(पुं०) परवरिश करने वाला, दूध पिलाने वाला।

पोषिन्, पोष्टृ (वि०) [पुष्+णिनि, तृच् च] दूध पिलाने वाला, पालन-पोषण करने वाला—(पुं०) पालक, पोषक, रक्षक।

पोष्य (वि०) [पुष्+ण्यत्] 1. खिलाये जाने के योग्य, पालन-पोषण किये जाने योग्य, संपालनीय 2. सुपालित, फलता-फूलता, समृद्ध। सम०—**पुत्रः**,—**सुतः** गोद लिया हुआ पुत्र,—**वर्गः** ऐसे संबंधियों का समूह जो पालन पोषण तथा रक्षा किये जाने के योग्य हो।

पौंश्चलीय (वि०) (स्त्री०—यी) [पुंश्चली+छण्] वेश्याओं से संबंध रखने वाला।

पौंश्चल्यम् [पुंश्चली+ष्यञ्] वेश्यापन, कुलटापन —मनु० ९।१५।

पौंसवनम् [पुंसवन+अण्] दे० 'पुंसवन'।

पौंस्न (वि०) (स्त्री०—स्नी) [पुंस्+स्नञ्] 1. पुरुषोचित—भट्टि० ५।९१ 2. मर्दाना, पौरुषेय,—**स्नम्** मर्दानगी, पौरुष।

पौगंड (वि०) (स्त्री०—डी [पोडंग+अण्] बालोचित, —**डम्** बचपन, बाल्यावस्था (५ से १६ वर्ष तक की आयु)।

पौंड्रः [पुंड्र+अण्] 1. एक देश का नाम 2. उस देश का राजा, या निवासी 3. एक प्रकार का गन्ना 4. संप्रदायबोधक तिलक 5. भीम के शंख का नाम—पौंड्रं दध्मौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः—भग० १।१५।

पौंड्रकः [पुंड्र+कन्] 1. गन्ने (ईख) का एक भेद 2. (रस पका कर गुड़ बनाने वालों की) वर्णसंकर जाति —तु० मनु० १०।४४।

पौंड्रिकः [पुंड्र+ठक्] एक प्रकार का गन्ना (ईख) पौंडा।

पौतवम् [=यौतव पृषो०] एक तोल।

पौत्तिकम् [पूतिक अण्] (पीले रंग का) एक प्रकार का शहद।

पौत्र (वि०) (स्त्री० त्री) [पुत्रस्यापत्यम्—अण्] पुत्र से प्राप्त या संबद्ध,—**त्रः** पोता, पुत्र का बेटा,—**त्री** पोती, पुत्र की बेटी।

पौत्रिकेयः [पुत्रिका+ढक्] लड़की का पुत्र जो अपने नाना का वंश चलाये।

पौनः पुनिक (वि०) (स्त्री०—की) [पुनः पुनः+ठञ्, टिलोपः] बार २ दोहराया गया, बार २ होने वाला।

पौनः पुन्यम् [पुनः पुनः+ष्यञ्] बार बार आवृत्ति, लगातार दोहराया जाना।

पौनरुक्तम्, पौनरुक्त्यम् [पुनरुक्त+अण्, ष्यञ् च] —आवृत्ति,—अतिप्रियोऽसीति पौनरुक्त्यम्—का० २१७, रघु० १२।४० 2. आधिक्य, अनावश्यकता, निरर्थकता—अभिव्यक्तायां चंद्रिकायां किं दीपिकापौनरुक्त्येन—विक्रम० ३।

पौनर्भव (वि०) [पुनर्भू+अञ्] 1. जिसने दूसरे पति

से विवाह कर लिया है ऐसी विधवा से संबंध रखने वाला 2. दोहराया हुआ,—वः 1. पुनर्विवाहिता विधवा का पुत्र, प्राचीन हिन्दु-धर्मशास्त्र में स्वीकृत बारह पुत्रों में से एक—याज्ञ० २।१३०, मनु० ३।१५५ 2. स्त्री का दूसरा पति —मनु० ९।१७६ ।

पौर (वि०) (स्त्री०—री) [पुर+अण्] किसी नगर या शहर से संबंध रखने वाला—रः शहरी, नागरिक (विप० जानपद) कु० ६।४१ मेघ० २७, रघु० २।१०,७४, १२।३, १६।९ । सम० —अंगना—योषित् (स्त्री०),—स्त्री नगर में रहने वाली स्त्री,—जानपद (वि०) शहर या नगर से संबंध रखने वाला (ब. व. —दाः) नागरिक और ग्रामीण, शहरी और देहाती —कथं दुर्जनाः पौर जानपदाः—उत्तर० १,—वृद्धः प्रमुख नागरिक, उपनगरपाल ।

पौरकम् [पौर+कै+क] 1. घर के निकट बगीचा 2. नगर के निकट उद्यान ।

पौरंदर (वि०) (स्त्री०—री) [पुरंदर+अण्] इन्द्र से प्राप्त, इन्द्र संबंधी, इन्द्र के लिए पुनीत, —रम् ज्येष्ठा नक्षत्र ।

पौरव (वि०) (स्त्री०—वी) [पुरु+अण्] पुरु के वंश में उत्पन्न,—वः पुरु की सन्तान, पुरुवंशी—श० ५, 2. भारत के उत्तर में स्थित एक देश तथा उसके नागरिक 3. उस प्रदेश का निवासी या राजा ।

पौरवीय (वि०) (स्त्री०—यी) [पौरव+छ] पौरवों का भक्त ।

पौरस्त्य (वि०) [पुरस्+त्यक्] 1. पूर्वी—पौरस्त्यो वा सुखयति मरुत् साधुसंवाहनाभिः—मा० ९।२५, पौरस्त्यझंझामरुत —९।१७, रघु० ४।३४ 2. प्रमुख 2. पहला, प्रथम, पूर्ववर्ती ।

पौराण (वि०) (स्त्री०—णी) [पुराण+अण्] 1. भूत काल का, प्राचीन, अतीत काल का 2. प्राक्कालीन 3. पुराणों से संबंध रखने वाला या उनसे प्राप्त ।

***पौराणिक** (वि०) (स्त्री०—की) [पुराण+ठक्] 1. भूत काल का, प्राचीन 2. पुराणों से संबद्ध या उनसे प्राप्त 3. अतीत काल के उपाख्यानों का ज्ञाता,—कः पुराणों का सुविज्ञ ब्राह्मण, पुराणों का पाठक (जनसाधारण में बैठ कर) 2. पुराणविद्, पौराणिक कथा जानने वाला व्यक्ति ।

पौरुष (वि०) (स्त्री—षी) [पुरुष+अण्] । पुरुष संबंधी, मानवी 2. मर्दाना, पुरुषोचित,—षः एक मनुष्य के द्वारा ढोये जाने योग्य बोझा, —षी स्त्री —षम् 1. मानवी कृत्य, मनुष्य का काम, चेष्टा, प्रयत्न —धिग्धिग्वृथा पौरुषम् भर्तृ० २।८८, दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या—पंच० १ 2. शौर्य, विक्रम, वीरता, मर्दानगी, साहस—पौरुषभूषणः—रघु० १५।२८, ८।२८ 3. पुरुषत्व—भग० ७।८ 4. वीर्य, शुक्र 5. पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग 6. मनुष्य की पूरी ऊँचाई, खुली हुई अंगुलियों समेत अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर जितनी ऊँचाई तक मनुष्य पहुँचे 7. धूपघड़ी ।

पौरुषेय (वि०) (स्त्री०—यी) [पुरुष+ढञ्] 1. मनुष्य से प्राप्त, मनुष्य कृत, मनुष्य द्वारा स्थापित या प्रवर्तित यथा—अपौरुषेया वै वेदाः 2. मर्दाना, पुरुषोचित 3. आध्यात्मिक,—यः 1. मनुष्यवध 2. मनुष्यों की भीड़ 3. रोजनदारी पर काम करने वाला श्रमिक, कमेरा 4. मानवी काम, मनुष्य का कार्य ।

पौरुष्यम् [पुरुष+ष्यञ्] मर्दानगी, साहस, शौर्य ।

पौरोगवः [पुरोऽग्रेगौः नेत्रं यस्य पुरोगु+अण्] राज भवन का अधीक्षक, विशेषतः राजा की रसोई का ।

पौरोभाग्यम् [पुरोभागिन्+ष्यञ्, अन्य लोपः, वृद्धिः] 1. छिद्रान्वेषण, दोषदर्शन—प्रियोपभोग चिह्नेषु पौरोभाग्यमिवाचरन्—रघु० १२।२२ 2. दुर्भावना, ईर्ष्या, डाह ।

पौरोहित्यम् [पुरोहित+ष्यञ्] कुलपुरोहित का पद, पुरोहिताई ।

पौर्णमास (वि०) (स्त्री०—सी) [पूर्णमासी+अण्] पूर्णिमा से संबंध रखने वाला,—सः अग्निहोत्री द्वारा पूर्णिमा के दिन अनुष्ठित संस्कार ।

पौर्णमासी, पौर्णमी [पौर्णमास+ङीप्, पूर्ण+मा+क +अण्+ङीप्] पूर्णिमा, पूर्णमासी ।

पौर्णमास्यम् [पौर्णमासी+यत् वा०] पूर्णिमा के दिन किया जाने वाला यज्ञ ।

पौर्णिमा [पूर्णिमा+अण्+टाप्] पूर्णमासी का दिन ।

पौर्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्त+ठक्] पुण्यप्रद धर्मार्थ-कार्यों से संबंध रखने वाला —मनु० ३।१७८, ४।२२७।

पौर्व (वि०) (स्त्री०—र्वी) [पूर्व+अण्] 1. भूतकाल संबंधी 2. पूर्व दिशा से संबंध रखने वाला, पूर्वी ।

पौर्वदे (दै) हिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्वदेह+ठक्] पूर्वजन्म संबंधी, पहले जन्म में किया हुआ, पूर्वजन्म-कृत—भग० ६।४३, याज्ञ० १।३४८ ।

पौर्वपदिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्वपद+ठञ्] समास के प्रथम पद से संबंध रखने वाला ।

पौर्वापर्यम् [पूर्वापर+ष्यञ्] 1. पहले का और बाद का संबंध, पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती का संबंध 2. उचित क्रम, अनुक्रम, सातत्य ।

पौर्वाह्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्वाह्ण+ठञ्] दोपहर के पूर्वकाल से संबंध रखने वाला, मध्याह्न पूर्व संबंधी ।

पौर्विक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर्व+ठञ्] 1. पहला, पूर्वकालीन, पहले का 2. पैतृक 3. पुराना, प्राचीन ।

पौलस्त्यः [पुलस्तेः अपत्यम्—पुलस्ति+यञ्] रावण का

विशेषण—पौलस्त्यः कथमन्यदारहरणे दोषं न विज्ञातवान्—पंच० २१४, रघु० ४।८०, १०।५, १२।७२ 2. कुबेर का विशेषण 3. विभीषण का विशेषण 4. चन्द्रमा।

पौलिः (पुं०, स्त्री०) पौली (स्त्री०) [पुल्+ण, पोलेन निर्वृत्तः—पोल+इञ्, पौलि+ङीप्] एक प्रकार की पूरी।

पौलोमी [पुलोमन्+अण्, अनो लोपः, पौलोम+ङीप्] शची, पुलोमा की पुत्री, इन्द्र की पत्नी—आशीरन्या न ते युक्ता पौलोम्या सदृशी भव—श० ७।२८। सम०—संभवः जयन्त का विशेषण।

पौषः [पौषी+अण्] एक चांद्रमास का नाम जिसमें चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता है (दिसम्बर-जनवरी में आने वाला मास),—षी पौष मास में आने वाली पूर्णिमा, रघु० १८।३५।

पौष्कर,—रक, (स्त्री०—री,—की) पुष्कर+अण्, पौष्कर +कन्] नील कमल से संबंध रखने वाला।

पौष्करिणी [पुष्कराणां समूहः—पौष्कर+इनि+ङीप्] कमलों से भरा हुआ सरोवर, सरोवर।

पौष्कलः [पुष्कल+अण्] अनाज का एक भेद।

पौष्कल्यम् [पुष्कल+ष्यञ्] 1. परिपक्वता, पूर्ण विकास, पूरी वृद्धि 2. बाहुल्य।

पौष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [पुष्टि+ठञ्] 1. वृद्धि करने वाला, कल्याण कारक 2. पोषण करने वाला, पोषक, पुष्टिकारक, बलवर्धक।

पौष्णम् [पूषादेवता अस्य—पूषन्+अण्, उपधालोपः] रेवती नक्षत्र।

पौष्प (वि०) (स्त्री०—ष्पी) [पुष्प+अण्] फूल संबंधी या फूलों से प्राप्त, पुष्पमय, पुष्पित,—ष्पी 1. पाटलिपुत्र नगर, पटना 2. (फूलों से तैयार की गई एक प्रकार की) शराब।

प्याट् (अव्य०) [प्याय्+डाटि (बा०)] हो, अहो आदि अव्यय जो बुलाने या पुकारने के लिए व्यवहृत होते हैं।

प्याय् (भ्वा०आ०—प्यायते, प्यान या पीन) फूलना, मोटा होना, बढ़ना—दे० नीचे 'प्यै'।

प्यायनम् [प्याय्+ल्युट्] वर्धन, वृद्धि।

प्यायित (वि०) [प्याय्+क्त] 1. वर्धित, वृद्धि को प्राप्त 2. जो मोटा हो गया हो 3. विश्रान्त, सशक्त किया हुआ।

प्यै (भ्वा० आ०—प्यायते, पीन) 1. बढ़ना, वृद्धि को प्राप्त होना, मोटा होना—भट्टि० ६।३३ 2. पुष्कल होना, समृद्ध —प्रेर० प्याययति-ते 1. बढ़ाना 2. बड़ा करना, मोटा बनाना सुखी करना—मनु० ९।३१४ 2. तृप्त करना, इच्छानुसार संतुष्ट करना।

प्र (अव्य०) [प्रथ्+ड] 1. धातुओं के पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर इसका अर्थ है—'आगे' 'आगे का' 'सामने' 'आगे की ओर' 'पहले' 'दूर' यथा प्रगम्, प्रस्था, प्रचुर, प्रया आदि 2. विशेषणों के पूर्व लग कर इसका अर्थ है—'बहुत' 'बहुत अधिक' 'अत्यंत' आदि—प्रकृष्ट, प्रमत्त आदि, दे० आगे 3. संज्ञाओं (चाहे धातुओं से बने हो) के पूर्व लग कर गण० के अनुसार इसके निम्नांकित अर्थ होते हैं—(क) आरंभ, उपक्रम यथा प्रयाणम्, प्रस्थानम् प्राह्ण (ख) लम्बाई यथा प्रवालमूषिक (ग) शक्ति यथा प्रभु (घ) तीव्रता, आधिक्य यथा प्रवाद, प्रकर्ष, प्रच्छाय, प्रगुण (ङ) स्रोत या मूल यथा प्रभव, प्रपौत्र (च) पूर्ति, पूर्णता, तृप्ति यथा प्रभुक्तमन्नम् (छ) अभाव, वियोग, अनस्तित्व यथा प्रोषिता, प्रपर्ण वृक्षः (ज) अतिरिक्त यथा प्रज्ञु (झ) श्रेष्ठता यथा प्राचार्यः (ञ) पवित्रता यथा प्रसन्नं जलम् (ट) अभिलाषा यथा प्रार्थना (ठ) विराम यथा प्रशम (ड) सम्मान आदर यथा प्रांजलिः (जो सादर हाथ जोड़ता है) (ढ) प्रमुखता यथा प्रणस, प्रवाल।

प्रकट (वि०) [प्र+कट्+अच्] 1. स्पष्ट, साफ, जाहिर, प्रतीयमान, प्रत्यक्ष 2. बेपरदा, खुला हुआ 3. दृश्यमान, —टम् (अव्य०) साफ तौर से, प्रत्यक्षतः, सार्वजनिक रूप से, स्पष्ट रूप से (प्रकटी कृ व्यक्त करना, खोलना, प्रदर्शन करना, प्रकटी भू व्यक्त होना, जाहिर होना)। सम०—प्रीतिवर्धः शिव का विशेषण।

प्रकटनम् [प्र+कट्+ल्युट्] व्यक्त होने की क्रिया, खोलना, उघाड़ देना।

प्रकटित (भू० क० कृ०) [प्रकट्+क्त] 1. व्यक्त, प्रदर्शित, अनावृत 2. सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित 3. जाहिर।

प्रकंपः [प्र+कम्प्+घञ्] कांपना, हिलना, थरथराना, प्रचंड थरथरी या (भूकम्प के) धक्के—बाला चाहं मनसिजवशात् प्राप्तगाढप्रकंपा—सुभा०, सशिरप्रकंपम्—शि० १३।४२।

प्रकम्पन (वि०) [प्र+कम्प्+ल्युट्] हिलाने वाला,—नः 1. हवा, प्रचंड वायु, आंधी का झोंका—प्रकम्पनेनानुचकम्पिरे सुराः—शि० १।६१, १४।४३ 2. नरक का नाम,—नम् अत्यधिक या प्रचंड कंपकंपी, जोरदार थरथरी।

प्रकरः [प्र+कृ (कॄ)+अप्] ढेर, समुच्चय, मात्रा, संग्रह —मुक्ताफलप्रकरभांजि गुहागृहाणि—शि० ५।१२, बाष्पप्रकर कलुषां दृष्टिम्—श० ६।८, रघु० ९।५६, कु० ५।६८ 2. गुलदस्ता, पुष्पचय 3. मदद, सहायता, मित्रता 4. रिवाज, प्रचलन 5. आदर 6. सतीत्वहरण, अपहरण,—रम् अगर की लकड़ी।

प्रकरणम् [प्र+कृ+ल्युट्] 1. निरूपण करना, व्याख्या

करना, विचारविमर्श करना 2. विषय, प्रसंग, विभाग, (चित्रण का) विषय—कतमत्प्रकरणमाश्रित्य—श० १ 3. अनुभाग, पाठ, परिच्छेद आदि किसी कृति का छोटा प्रभाग 4. मौका, अवसर 5. मामला, बात 6. प्रस्तावना, आमुख 7. नाटक का एक भेद जिसकी कथावस्तु कृत्रिम हो —जैसा कि मृच्छकटिक, मालती-माधव, पुष्पभूषित आदि। सा० द० कार द्वारा दी गई परिभाषा—भवेत्प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्, शृंगारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्, सापायधर्मकामार्थ परो धीरप्रशांतकः ५११।

प्रकरणिका, प्रकरणी [प्रकरणी+कन्+टाप्, ह्रस्वः, प्रकरण+ङीप्] एक नाटक जो प्रकरण के लक्षणों से ही युक्त हो। सा० द० कार उस परिभाषा इस प्रकार करता है—नाटिकैव प्रकरणिका सार्थवाहा- दिनायिका, समानवंशजा नेतुर्भवेद्यत्र च नायिका ५५४।

प्रकरिका [प्रकरी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] एक प्रकार का विष्कंभ या उपकथा जो नाटक में आगे वाली घटना को बतलाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय।

प्रकरी [प्रकर+ङीष्] एक प्रकार का विष्कंभ या उपकथा जो नाटक में आगे आने वाली घटना को बतलाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय 2. नटों की पोशाक 3. रंगस्थली 4. चौराहा 5. एक प्रकार का गीत।

प्रकर्षः [प्र+कृष्+घञ्] 1. श्रेष्ठता, प्रमुखता, सर्वोपरिता —वपुः प्रकर्षादजयद्गुरुं रघुः—रघु० ३।३४, वर्ण प्रकर्षे सति—कु० ३।२८ 2. तीव्रता, प्रबलता, आधिक्य—प्रकर्षगतेन शोकसंतानेन—उत्तर० ३ 3. सामर्थ्य, शक्ति 4. निरपेक्षता 5. लम्बाई, विस्तार **प्र कर्षेण प्रकर्षात्** क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'अत्यंत' 'अधिकता के साथ' या 'उत्कृष्टता के साथ' अर्थ प्रकट करते हैं)।

प्रकर्षणम् [प्र+कृष्+ल्युट्] 1. खींचने की क्रिया, आकर्षण 2. हल चलाना 3. अवधि, लंबाई, विस्तार 4. श्रेष्ठता, सर्वोपरिता 5. ध्यान हटाना।

प्रकला [प्रा० स०] अत्यन्त सूक्ष्म अंश।

प्रकल्पना [प्र+क्लृप्+णिच्+युच्+टाप्] स्थिर करना, निश्चयन, नियत करना—मनु० ८।२११।

प्रकल्पित (भू० क० कृ०) [प्र+क्लृप्+णिच्+क्त] 1. बनाया हुआ, कृत, निर्मित 2. निश्चत किया हुआ, नियत किया हुआ,—ता एक प्रकार की पहेली।

प्रकांडः,—डम् [प्रकृष्टः कांडः—प्रा० स०] 1. वृक्ष का तना जड़ से शाखाओं तक—शि० ९।४५ 2. शाखा, किसलय 3. (समास के अंत में) कोई भी श्रेष्ठ या प्रमुख प्रकार का पदार्थ—ऊरुप्रकांडद्वितयेन तस्याः —नै० ७।९ 3. क्षत्र प्रकांडः—महावी० ४।३५ ५।४८ 4. भुजा का ऊपरी भाग।

प्रकांडकः [प्रकाण्ड+कन्] दे० 'प्रकाण्ड'।

प्रकांडरः [प्रकाण्ड+रा+क] वृक्ष, पेड़।

प्रकाम (वि०) [प्रा० स०] 1. शृंगारप्रिय 2. अत्यन्त, अति, मनभर कर, सानन्द—प्रकाम विस्तर—रघु० २।११, प्रकामालोकनीयताम् कु० २।२४,—**मः** इच्छा, आनन्द, संतोष—**मम्** (अव्य०) 1. अत्यधिक, अत्यंत —जातो ममायं विशदः प्रकामम् (अन्तरात्मा), श० ४।२१, रघु० ६।४४, मृच्छ० ५।२५ 2. पर्याप्तरूप से, मन भर कर, इच्छानुकूल 3. स्वेच्छापूर्वक, मन से। सम०—**भुज्** (वि०) अघा कर खाने वाला, मन भर कर खाने वाला—रघु० १।६६।

प्रकारः [प्र+कृ+घञ्] 1. ढंग, रीति, तरीका, शैली —कः प्रकारः किमेतत्—मा० ५।२० 2. किस्म, जिन्स, भेद, जाति (प्रायः समास में प्रयुक्त) **बहुप्रकार** विविध प्रकार का, त्रिप्रकार, नाना° आदि 3. समरूपता 4. विशेषता, विशिष्ट गुण।

प्रकाश (वि०) [प्र+काश्+अच्] 1. चमकीला, चमकने वाला, उज्ज्वल—प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोक इवाचलः—रघु० १।६८, ५।२ 2. साफ़, स्पष्ट, प्रत्यक्ष—शि० १२।५६, भग० ७।२५ 3. विशद, प्रांजल—कि० १४।४ 4. विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध, माना हुआ—रघु० ३।४८ 5. खुला, सार्वजनिक 6. वृक्षादि काट कर साफ़ किया हुआ स्थान, खुली जगह—रघु० ४।३१ 7. खिला हुआ, विस्तरित 8. (समास के अन्त में) (के) समान दिखाई देने वाला, सदृश, मिलता-जुलता,—**शः** 1. दीप्ति, कान्ति, आभा, उज्ज्वलता 2. (आलं०) प्रकाशन, स्पष्टीकरण, व्याख्या करना (प्रायः पुस्तकों के नामों के अन्त में) काव्य प्रकाश, भाव प्रकाश, तर्क प्रकाश आदि 3. धूप 4. प्रदर्शन, स्पष्टीकरण - शि० ९।५ 5. कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्ध, यश 6. विस्तार, प्रसार 7. खुली जगह, खुली हवा - प्रकाशं निर्गतोऽवलोकयामि—श० ४ 8. सुनहरी शीशा 9. (पुस्तक का) अध्याय, परिच्छेद या अनुभाग —**शम्** (अव्य०) 1. खुले रूप से, सार्वजनिक रूप से —प्रतिभूर्दापितो यत्तु प्रकाशं धनिनो धनम्—याज्ञ० २।५६, मनु० ८।१९३ ९।२२८ 2. ऊँचे स्वर से, प्रकट होकर, (रंगमंच के अनुदेश के रूप में नाटकों में प्रयुक्त—विप० आत्मगतम्)। सम०—**आत्मक** (वि०) चमकीला, उजला,—**आत्मन्** (वि०) उज्ज्वल, चमकदार (पुं०) शिव का विशेषण 2. सूर्य—**इतर** (वि०) जो दिखाई न दे, अदृश्य,—**क्रयः** खुल्लमखुल्ला ख़रीदना,—**नारी** वारांगना. रंडी, वेश्या—अलं चतुःशाल मिमं प्रवेश्य प्रकाशनारीधृत एष यस्मात्—मृच्छ० ३।७।

प्रकाशक (वि०) (स्त्री०—शिका) [प्र+काश्+णिच्

ण्वुल्] 1. प्रकट करने वाला, खोजने वाला, उघाड़ने वाला, सूचित करने वाला, बतलाने वाला, प्रदर्शित करने वाला 2. अभिव्यक्त करने वाला, संकेत करने वाला 3. व्याख्या करने वाला 4. उजला, चमकीला, उज्ज्वल 5. माना हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात,—कः 1. सूर्य 2. खोजी 3. प्रकाशित करने वाला। सम०—ज्ञातृ (पुं०) मुर्गा।

प्रकाशन (वि०) [प्र+काश्+णिच्+ल्युट्] रोशनी करने वाला, विख्यात करने वाला,—नम् 1. जतलाना, प्रकट करना, प्रकाश में लाना, उघाड़ना 2. प्रदर्शन, स्पष्टीकरण 3. रोशनी करना, चमकाना, उजला करना, —नः विष्णु।

प्रकाशित (भू०क०कृ०) [प्र+काश्+णिच्+क्त] 1. प्रकट किया गया, स्पष्ट किया गया, प्रदर्शित, प्रकटीकृत 2. छापा गया—प्रणीतो न तु प्रकाशितः—उत्तर० ४ 3. रोशन किया गया, चमकाया गया, ज्योतिर्मान किया गया 4. जो दिखलाई दे, दृश्य, स्पष्ट, प्रकट।

प्रकाशिन् (वि०) [प्रकाश+इनि] साफ़, उजला, चमकदार आदि।

प्रकिरणम् [प्र+कृ+ल्युट्] इधर उधर बिखेरना, छितराना।

प्रकीर्ण (भू० क० कृ०) [प्र+कृ+क्त] 1. इधर उधर बिखरा हुआ, छितराया हुआ, खिडाया हुआ, तितर वितर किया हुआ—प्रकीर्णः पुष्पाणां हरिचरणयोरंजलरियम् वेणी० १।१ 2. फैलाया हुआ, प्रकाशित, उद्घोषित 3. लहराया हुआ—लहराता हुआ—शि० १२।१७ 4. विपर्यस्त, शिथिल, अस्तव्यस्त 5. अव्यवस्थित, असंबद्ध—बह्वपि स्वेच्छया कामं प्रकीर्णमभिधीयते—शि० २।६३ 6. क्षुब्ध, उत्तेजित 7. विविध, मिश्रित—जैसा कि भट्टिकाव्य का प्रकीर्णकांड,—र्णम् 1. नाना-संग्रह, फुटकर संग्रह 2. फुटकर नियमों के संग्रह का एक अध्याय।

प्रकीर्णक (वि०) [प्रकीर्ण+कन्] इधर उधर बिखरे हुए, छितरे हुए,—कः,—कम् चंवर, मोरछल शि० १२।१७,—कः घोड़ा,—कम् 1. नाना संग्रह, फुटकर वस्तुओं का संग्रह 2. विविध विषयों का अध्याय।

प्रकीर्तनम् [प्र+कृ+ल्युट्] 1. उद्घोषण, घोषणा 2. प्रशंसा करना, स्तुति करना, श्लाघा करना।

प्रकीर्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. प्रसिद्धि, प्रशंसा 2. यश, ख्याति 3. घोषणा।

प्रकुंचः [प्र+कुञ्च्+घञ्] धारिता का विशेष माप।

प्रकुपित (भू० क० कृ०) [प्र+कुप्+क्त] 1. अतिक्रुद्ध, कोपाविष्ट, रुष्ट 2. उत्तेजित।

प्रकुलम् [प्र+कुल्+क] सुन्दर शरीर, सुडौल काया।

प्रकूष्मांडी [प्रा० ब०—ङीप्] दुर्गा का विशेषण।

प्रकृत (भू० क० कृ०) [प्र+कृ+क्त] 1. निष्पन्न, पूरा किया हुआ 2. आरंभ किया हुआ, शुरु किया हुआ 3. नियुक्त किया हुआ, जिसे कार्य भार सँभाला जा चुका 4. असली, वास्तविक 5. चर्चा का विषय, विचारणीय विषय, प्रस्तुत विषय (अलंकारग्रंथों में 'उपमेय' के लिए बहुधा प्रयुक्त) संभावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्—काव्य० १० 6. महत्त्वपूर्ण, मनोरंजक,—तम् मूलविषय, प्रस्तुत विषय, यातु किमनेन प्रकृतमेव अनुसरामः। सम०—अर्थ (वि०) मूल अर्थ को रखने वाला (—र्थः) मूल अर्थ।

प्रकृतिः (स्त्री०) [प्र+कृ+क्तिन्] 1. किसी वस्तु की नैसर्गिक स्थिति, माया, जड़जगत्, स्वाभाविक रूप (विप० विकृति जो या तो परिवर्तन है या कार्य) प्रकृत्या यद्वक्रम्—श० १।९, उष्णत्वमग्न्यातपसंप्रयोगात् शैत्यं हि यत्सा प्रकृतिर्जलस्य—रघु० ५।५४, मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः—रघु० ८।८७, अपेहि रे अत्रभवान् प्रकृतिमापन्नः—श० २, (उन्होंने फिर अपना सामान्य स्वभाव धारण कर लिया है) प्रकृतिमापद्, प्रकृतिंप्रतिपद्, प्रकृतौ स्था होश में आना, अपना चैतन्य फिर प्राप्त करना 2. नैसर्गिक स्वभाव, मिजाज, स्वभाव, आदत, (मानसिक) रचना, वृत्ति—प्रकृतिकृपण, प्रकृतिसिद्धि—दे० नी० 3. बनावट, रूप, आकृति—महानुभावप्रकृतिः—मा० १ 4. वंशानुक्रम, वंशपरंपरा—मृच्छ० ७ 5. मूल, स्रोत, मौलिक या भौतिक कारण, उपादान-कारण—प्रकृतिश्चोपादानकारणं च ब्रह्माभ्युपगन्तव्यम् शारी० (ब्रह्म० १।४।२३ पर की गई चर्चा का पूरा विवरण देखिये) यामाहुः सर्वभूतप्रकृतिरिति—श० १।१ 6· (सांख्य० में) प्रकृति (पुरुष से विभिन्न) =भौतिक सृष्टि का मूलस्रोत जिसमें तीन (सत्त्व, रजस् और तमस्) प्रधान गुण सन्निविष्ट हैं 7. (व्या० में०) मूलधातु या शब्द (प्रातिपदिक) जिसमें लकार और कारकों के प्रत्यय लगाए जाते हैं 8. आदर्श, नमूना, मानक (विशेषतः कर्मकाण्ड की पुस्तकों में 9. स्त्री 10. सृष्टि रचना में परमात्मा की मूर्त इच्छा (इसी को 'माया' या मरीचिका कहते हैं) भग० ९। १० 11. स्त्री या पुरुष की जननेन्द्रिय, योनि, लिङ्ग 12. माता, (ब० व०) 1. राजा के मन्त्री, मन्त्रिपरिषद्, मन्त्रालय—रघु० १२।१२, पंच० १।४८, ३०१ 2. (राजा की) प्रजा—प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः—श० ७।३५, नृपतिः प्रकृतीरवेक्षितुम्—रघु० ८। १८, १० 3. राज्य के संविधायी सात तत्त्व या अंग अर्थात् १. राजा २. मन्त्री ३. मित्रराष्ट्र ४. कोष ५. सेना, ६. प्रदेश ७. गढ़ आदि ८. नगरपालिका या निगम (यह भी कभी-कभी उपर्युक्त सातों के साथ

जोड़ दिया जाता है)—स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च—अमर 4. अनेक प्रभु जो युद्ध के समय विचारणीय होते हैं (पूरे विवरण के लिए दे० मनु० ७।१५५, और १५७ पर कुल्लू०) 5. आठ प्रधान तत्त्व जिनसे सांख्यशास्त्रियों के अनुसार प्रत्येक वस्तु उत्पन्न होती है; दे० सां० का० ३ 6. सृष्टि के पांच प्रधान तत्त्व, पंच महाभूत अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। सम० ईशः राजा या दण्डाधिकारी,—कृपण (वि०) स्वभाव से सुस्त, या विवेकहीन —मेघ० ५,—तरल (वि०) चंचल स्वभाव का, असंगत, बेमेल—अमरु २७,—पुरुषः मन्त्री, (राज्य का) कार्य निर्वाहक—मेघ० ६, —मंडलम् समस्त प्रदेश या राजधानी—रघु० ९।२,—लयः प्रकृति में समा जाना, विश्व का विघटन, सिद्ध (वि०) अन्तर्जात, सहज, नैसर्गिक—भर्तृ० २।५२, सुभग (वि०) स्वभाव से प्रिय, रुचिकर, स्थ (वि०) 1. प्राकृतिक अवस्था में होने वाला, स्वाभाविक, असली 2. अंतर्हित, सहज, प्रकृति के अनुरूप—रघु० ८।२१ 3. स्वस्थ, तन्दुरुस्त 4. जिसने आरोग्य प्राप्त कर लिया हो 5. स्वस्थ, आत्मलीन 6. विवस्त्र, नंगा।

प्रकृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+कृष्+क्त] 1. खींचकर निकाला हुआ 2. सुदीर्घ, लंबा, अतिविस्तृत 3. सर्वोत्तम, पूज्य, श्रेष्ठ प्रमुख, गौरवशाली 4. मुख्य, प्रधान 5. विक्षिप्त, अशांत।

प्रक्लृप्त (भू० क० कृ०) [प्र+क्लृप्+क्त] तैयार किया हुआ, सज्जीकृत, व्यवस्थित।

प्रकोथः [प्र+कुथ्+घञ्] सड़ांध, बदबू।

प्रकोष्ठः [प्र+कुष्+स्थन्] 1. कोहनी से नीचे की भुजा, गट्टे से ऊपर का हाथ—वामप्रकोष्ठार्पितहेमवेत्रः—कु० ३।४१, कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः—मेघ० २, रघु० ३।५९ श० ६।६ 2. फाटक के निकट का कमरा मुद्रा० १ 3. घर का आँगन, (चारों ओर मकानों से घिरा हुआ) चौकोर या वर्गाकार आँगन —इमं प्रथमं प्रकोष्ठं प्रविशत्वार्यः—आदि—मृच्छ० ४।

प्रकोष्ठकः [प्रकोष्ठ+कण्] फाटक के पास का कमरा —तस्थुर्विनप्रक्षितिपालसंकुले तदङ्गनद्वारबहिः प्रकोष्ठके—कु० १५।६।

प्रक्खरः [=प्रखरः पृषो०] 1. हाथी या घोड़े की रक्षा के लिए कवच 2. कुत्ता 3. खच्चर।

प्रक्रमः [प्र+क्रम्+घञ्] 1. पग, कदम 2. दूरी मापने का गज, पग का अन्तर (लगभग ३० इंच 3. आरंभ, शुरू 4. प्रगमन, मार्ग—मा० ५।२४ 5. प्रस्तुत बात 6. अवकाश, अवसर 7. नियमितता, क्रम, प्रणाली 8. मात्रा, अनुपात, माप। सम०—भंगः नियमितता और सममिति का अभाव, क्रम का टूट जाना, रचना का एक दोष (काव्य० ७ में वर्णित 'भग्न-प्रक्रमता' यही है, सममिति या समरूपता का अभाव चाहे वह अभिव्यक्ति में हो चाहे रचना में—नाथे निशायां नियतेर्नियोगादस्तं गते हंत निशापि याता—यह अभिव्यक्ति की समरूपता के अभाव का उदाहरण है, यहां 'गता निशाऽपि' ने अभिव्यक्ति की अनियमितता को शान्त कर दिया है,—विश्रब्धं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले—रचना की अनियमितता का उदाहरण है, यहाँ कविता की समरूपता को स्थिर रखने के लिए कर्मवाच्य के बजाय कर्तृवाच्य रचना की आवश्यकता है, इसी पंक्ति को बदलकर 'विश्रब्धा रचयंतु शूकरवरा मुस्ताक्षति पल्वले' पढ़ने से दोष का परिहार हो जाता है—अधिक विवरण के लिए दे० काव्य ७ 'भग्न प्रक्रमता' के नीचे।

प्रक्रान्त (भू० क० कृ०) [प्र+क्रम्+क्त] 1. आरंभ किया गया, शुरू किया गया 2. गत, प्रगत 3. प्रस्तुत, विवादग्रस्त 4. बहादुर।

प्रक्रिया [प्र+कृ+श+टाप्] 1. रीति, प्रणाली, पद्धति 2. कर्मकांड, संस्कार 3. राजचिह्न का धारण करना 4. उच्च पद, समुन्नति 5. (किसी पुस्तक का) एक अध्याय या अनुभाग—यथा उणादिप्रक्रिया 6. (व्या० में) व्युत्पत्तिजन्य रूपनिर्माण 7. प्राधिकार।

प्रक्रीडः [प्र+क्रीड्+अच्] क्रीडा, मनोरंजन, खेल या आमोद-प्रमोद।

प्रक्लिन्न (भू० क० कृ०) [प्र+क्लिद्+क्त] 1. तर, नमी वाला, गीला 2. तृप्त 3. दया से पसीजा हुआ।

प्रक्वणः, प्रक्वाणः [प्र+क्वण्+अप्, घञ् च] वीणा की झनकार।

प्रक्षयः [प्र+क्षि+अप्] नाश, बरबादी।

प्रक्षर दे० प्रक्खर।

प्रक्षरणम् [प्र+क्षर्+ल्युट्] मन्द २ स्रवित होना, रिसना।

प्रक्षालनम् [प्र+क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1. धोना, धो डालना—रघु० ६।४८ 2. मांजना, साफ करना, स्वच्छ करना 3. धोने के लिए पानी।

प्रक्षालित (भू० क० कृ०) [प्र+क्षल्+णिच्+क्त] 1. धोया गया, मांजा गया 2. स्वच्छ किया गया 3. जिसने प्रायश्चित्त कर लिया है।

प्रक्षिप्त (भू० क० कृ०) [प्र+क्षिप्+क्त] 1. फेंका गया, डाला गया, उछाला गया 2. डाला गया—मा० ५।२२ 3. निकला हुआ 4. बीच में डाला गया, नकली या खोटा यथा 'प्रक्षिप्तोऽयं श्लोकः' में।

प्रक्षीण (भू० क० कृ०) [प्र+क्षि+क्त] 1. मुर्झाया हुआ, दुर्बल होने वाला 2. नष्ट किया हुआ 3. जिसने प्रायश्चित्त कर लिया है 4. लुप्त, ओझल।

प्रक्षुण्ण (भू० क० कृ०) [प्र+क्षुद्+क्त] 1. कुचला हुआ 2. आरपार भेदा हुआ 3. उत्तेजित किया हुआ ।

प्रक्षेपः [प्र+क्षिप्+घञ्] 1. आगे फेंकना, उभारना फेंकना, डालना 3. बखेरना 4. खोट घसाना, बीच में मिलाना 5. गाड़ी का बक्स 6. किसी व्यापारिक संघ के प्रत्येक सदस्य द्वारा जमा की गई धनराशि ।

प्रक्षेपणम् [प्र+क्षिप्+णिच्+ल्युट्] फेंकना, डालना, उछालना ।

प्रक्षोभणम् [प्र+क्षुभ्+ल्युट्] उत्तेजना, क्षोभ ।

प्रक्ष्वेडनः [प्र+क्ष्विड्+ल्युट्] लोहे का तीर 2. हल्ला-गुल्ला, हड़बड़ी ।

प्रक्ष्वेडित (वि०) [प्र+क्ष्विड्+णिच्+क्त] मुखर, चीत्कार से पूर्ण, कोलाहलमय ।

प्रखर (वि०) [प्रकृष्टः+खरः–प्रा० स०] 1. अत्यन्त गरम—यथा प्रखरकिरण 2. तेज गंधयुक्त, तीक्ष्ण 3. अत्यंत कठोर, रूखा, —रः दे० 'प्रक्खर' ।

प्रख्य (वि०) [प्र+ख्या+क] 1. साफ, प्रत्यक्ष, स्पष्ट 2. (के समान) दिखाई देने वाला, मिलता-जुलता (समास के अन्त में प्रयुक्त) अमृत°, शशांक° आदि ।

प्रख्या [प्र+ख्या+अङ+टाप्] 1. प्रत्यक्षज्ञेयता, दृश्यता 2. विश्रुति, यश, प्रसिद्धि—व्यवसत्परमप्रख्यः संप्रत्येव पुरीमिमाम्—रामा० 3. उखाड़ना 4. समरूपता, समानता (समास में)—याज्ञ० ३।१० ।

प्रख्यात (भू० क० कृ०) [प्र+ख्या+क्त] 1. मशहूर, प्रसिद्ध, विश्रुत माना हुआ 2. पहले से मोल लिया हुआ, पूर्वक्रयाधिकार केवल पर अभ्यर्थित 3. खुश, प्रसन्न । सम०—वप्तृक (वि०) प्रसिद्ध पिता वाला ।

प्रख्यातिः (स्त्री० [प्र+ख्या+क्तिन्] 1. कीर्ति, विश्रुति, प्रसिद्धि 2. प्रशंसा, स्तुति ।

प्रगंडः [प्रकृष्टः गंडो यस्य प्रा० ब०] कोहनी से ऊपर कंधे तक की भुजा ।

प्रगंडी [प्रगंड+ङीष्] (नगर का) परकोटा, बाहरी दीवाल ।

प्रगत (भू० क० कृ०) [प्र+गम्+क्त] 1. आगे गया हुआ 2. पृथक्, अलग । सम०—जानु,-जानुक (वि०) धनुष्पदी, घुटने पर मुड़ी हुई टांगों वाला ।

प्रगमः [प्र+गम्+अप्] प्रेम की आराधना में प्रथम प्रगति, प्रेम की प्रथम अभिव्यक्ति ।

प्रगमनम् [प्र+गम्+ल्युट्] 1. आगे बढ़ना, प्रगति 2. प्रेम की आराधना में पहला कदम, दे० ऊ० 'प्रगम' ।

प्रगर्जनम् [प्र+गर्ज्+ल्युट्] दहाड़ना, चिंघाड़ना, गरजना ।

प्रगल्भ (वि०) [प्र+गल्भ्+अच्] 1. साहसी, भरोसा करने वाला 2. हिम्मती, बहादुर, निःशंक, उत्साही, साहसी,—रघु० २।४१ 3. वाग्मी, वाक्पटु—रघु० ६।२० 4. हाजिर जवाब, मुस्तैद 5. दृढ़ संकल्पी, ऊर्जस्वी 6. (आयु की दृष्टि से) परिपक्व, कु० १।५१ 7. परिपक्व, विकसित, पूरा बढ़ा हुआ, बलवान् प्रगल्भवाक्—कु० ५।३०, (प्रौढवाक्) मा० ९।२९, उत्तर० ६।३५ 8. कुशल—का० १२ 9. बेधड़क, उद्धत, घमंडी, उपकारशील 10. निर्लज्ज, ढीठ—रघु० १३।९ 11. गौरवशाली प्रमुख,—ल्भा 1. साहसी स्त्री 2. कर्कशा, झगड़ालू स्त्री 3. उद्धत या प्रौढ़ स्त्री, काव्यनाटक को नायिकों में से एक' (सब प्रकार के लाडप्यार व चूमा-चाटी में चतुर, ऊँचे दर्जे के व्यवहार से युक्त, शालीनता-सम्पन्न, प्रौढ़ आयु की तथा अपने पति पर शासन करने वाली—सा० द० १०१ तथा तत्संबंधी उदाहरण) ।

प्रगाढ (भू० क० कृ०) [प्र+गाह्+क्त] 1. डुबोया हुआ, तर किया हुआ, भिगोया हुआ 2. अति, अत्यधिक, तीव्र 3. दृढ़, मजबूत 4. कठोर, कठिन,—ढम् 1. कंगाली 2. तपस्या, शारीरिक, कष्ट,—ढम् (अव्य०) 1. अत्यधिक, अत्यंत 2. दृढ़तापूर्वक ।

प्रगातृ (पुं०) [प्र+गै+तृच्] उत्तम गाने वाला ।

प्रगुण (वि०) [प्रकर्षेण गुणो यत्र प्रा० ब०] 1. सीधा, ईमानदार, खरा, (आलं०, शा० से)—बहिः सर्वाकारप्रगुणरमणीयं व्यवहरन्—मा० १।१४ 2. सुदशासम्पन्न, उत्तम गुणों से युक्त—श्रमजयात्प्रगुणां च करोत्यसौ तनुमतोऽनुमतः सचिवैर्ययौ—रघु० ९।४९ 3. (क) योग्य, उपयुक्त, गुणी—मा० १।१६ (ख) प्रवीण—९।४५ 4. कुशल, चतुर (प्रगुणी कृ 1. सीधा करना, क्रम से रखना, व्यवस्थित करना 2. चिकना करना 3. पालन-पोषण करना, परवरिश करना) ।

प्रगुणित (वि०) [प्र+गुण्+क्त] 1. सीधा या समतल किया हुआ 2. चिकना किया हुआ ।

प्रगृहीत (भू० क० कृ०) [प्र+ग्रह्+क्त] 1. थामा हुआ, संभाला हुआ 2. प्राप्त, स्वीकृत 3. संधि के नियमों की अधीनता का अभाव, दे० नीचे 'प्रगृह्य' ।

प्रगृह्यम् [प्र+ग्रह्+क्यप्] संधि के नियमों से मुक्त स्वर जो स्वतंत्र रूप से बोला या लिखा जाय 'ईदूदेद्-द्विवचनं प्रगृह्यम्' पा० १।१।११ ।

प्रगे (अव्य०) [प्रकर्षेण गीयतेऽत्र—प्र+गै—के] भोर होते ही, पौ फटते ही—इत्थं रथाश्वेभनिषादिनां प्रगे गणो नृपाणामथ तोरणाद् बहिः—शि० १२।१, सायं स्नायात्प्रगे तथा—मनु० ६।९, ४।६२ । सम०—तन (वि०) प्रातः काल अनुष्ठेय कर्म,—निश,—शय (वि०) जो दिन निकल जाने पर भी सोया पड़ा है ।

प्रगोपनम् [प्र+गुप्+ल्युट्] रक्षण, संधारण ।

प्रग्रथनम् [प्र+ग्रन्थ्+ल्युट्] नत्थी करना, गूंथना, बुनना ।

प्रग्रहः [प्र+ग्रह्+अप्] 1. फैलाना, थामना 2. पकड़ना, लेना, ग्रहण करना, हथियार लेना 3. ग्रहण का आरंभ 4. रास, लगाम—धृताः प्रग्रहाः अवतरत्वायुष्मान्—श० १, शि० १२।३१ 5. रोक थाम, पाबन्दी 6. बंधन, कैद 7. कैदी, बन्दी 8. पालना, (कुत्ते आदि जानवर को) संधाना, 9. प्रकाश की किरण 10. तराजू की डोरी 11. संधि के नियमों से मुक्त स्वर, दे० 'प्रगृह्य'।

प्रग्रहणम् [प्र+ग्रह्+ल्युट्] 1. लेना, पकड़ना, धरना 2. ग्रहण का आरम्भ 3. रास, लगाम 4. रोक थाम, पाबन्दी।

प्रग्राहः [प्र+ग्रह्+घञ्] 1. पकड़ना, लेना 2. ले जाना, ढोना 3. तराजू की डोरी 4. रास, लगाम।

प्रग्रीवः,—वम् [प्रकृष्टा ग्रीवा यस्य—प्रा० ब०] 1. रंगी हुई बुर्जी 2. किसी मकान के चारों ओर लकड़ी की बाड़ 3. तबेला 4. वृक्ष की चोटी।

प्रघटकः [प्र+घट्+णिच्+ण्वुल्] नियम, सिद्धान्त, विधि (आदेश)।

प्रघटा [प्रा० स०] किसी विज्ञान के आरंभिक सिद्धान्त या मूलतत्त्व। सम०—विद् (पुं०) ऊपर ऊपर का पाठ करने वाला, पल्लवग्राही।

प्रघणः (नः), प्रघाणः (नः) [प्र+हन्+अप्, पक्षेवृद्धिः, णत्वाभावश्च] 1. भवन के द्वार के सामने बनी ड्योढ़ी, पौली, 2. तांबे का बर्तन 3. लोहे की गदा या घन (लौहदण्ड)।

प्रघस (वि०) [प्र+अद्+शप, घसादेशः] खाऊ, पेटू—सः 1. राक्षस खाऊपना, पेटूपन।

प्रघातः [प्र+हन्+घञ्] 1. हत्या 2. संघर्ष, युद्ध।

प्रघुणः [प्र+घुण्+क] अतिथि (पाठान्तर—प्राघुण, या प्राघूर्ण)।

प्रघूर्णः [प्र+घूर्ण्+अच्] अतिथि—दे० 'प्राघूर्ण'।

प्रघोषः [प्र+घुष्+घञ्] 1. शोर, शब्द, कोलाहल 2. हंगामा, होहल्ला।

प्रचक्रम् [प्रगतश्चक्रम—प्रा० स०] कूच करने वाली सेना, प्रयाणोन्मुख फ़ौज।

प्रचक्षस् (पुं०) [प्र०+चक्ष्+अस्] 1. बृहस्पति ग्रह 2. बृहस्पति का विशेषण।

प्रचंड (वि०) [प्रकर्षेण चण्डः—प्रा० श०] 1. उत्कट, अत्यन्त तीव्र, उग्र 2. मज़बूत, शक्तिशाली, भीषण 3. अत्युष्ण, दम घोटने वाली (गर्मी) 4. क्रुद्ध, कोपाविष्ट 5. साहसी, भरोसा करने वाला 6. भयंकर, भयावह 7. असहिष्णु, असह्य। सम०—आतपः भीषण गर्मी,—घोण (वि०) लंबी नाक वाला,—सूर्य (वि०) उष्ण या जलते हुए सूर्य वाला—ऋतु० १।१,१०।

प्रच (चा) यः [प्र+चि+अच्, घञ् च] 1. संग्रह करना, (फूल आदि) चुनना 2. समुच्चय, मात्रा, संचय, राशि—महावी० २।१५ 3. वृद्धि, वर्धन 4. साधारण मेलजोल।

प्रचयनम् [प्र+चि+ल्युट्] संग्रह करना, एकत्र करना।

प्रचरः [प्र+चर्+अप्] 1. मार्ग, पथ, रास्ता 2. प्रथा, रिवाज।

प्रचल (वि०) [प्र+चल्+अच्] 1. कांपता हुआ, हिलता हुआ, थरथराता हुआ,—कु० ५।३५, मा० १।३८ 2. प्रचलित, प्रथानुकूल।

प्रचलाकः [प्र+चल्+आकन्] 1. धनुर्विद्या 2. मोर की पूंछ 3. सांप।

प्रचलाकिन् (पुं०) [प्रचलाक+इनि] मोर—उत्तर० २।२९।

प्रचलायित (वि०) [प्रचल+क्यङ+क्त] इधर उधर करवट बदलने वाला, लुढ़कने वाला,—तम् सिर हिलाना (बैठे २ ऊँघते या सोते समय)।

प्रचायिका [प्र+चि+णिच्+ण्वुल्+टाप्] (फूल आदि) बारी २ से चुनना 2. चुनने वाली स्त्री।

प्रचारः [प्र+चर्+घञ्] 1. विचरण करना, भ्रमण करना 2. इधर उधर टहलना, घूमता—कु० ३।४२, 3. दर्शन, प्रकटीभवन,—उत्तर० १, मुद्रा० १ 4. प्रचलन, प्रसिद्धि, रिवाज, व्यवहार, प्रयोग—विलोक्य तैरप्यधुना प्रचारम्—त्रिका० 5. आचरण, व्यवहार 6. प्रथा, रिवाज 8. गोचरभूमि, चरागाह—याज्ञ० २।१६६ 9. रास्ता, पथ—मनु० ९।२१९।

प्रचालः [प्रकृष्टश्चालः—प्रा० स०] वीणा की गरदन।

प्रचालनम् [प्र+चल्+णिच्+ल्युट्] विलोडन, हिलाना, हलचल।

प्रचित (भू० क० कृ०) [प्र+चि+क्त] 1. एकत्र किया हुआ, संचय किया हुआ, तोड़ा हुआ 2. ढेर किया गया, संचित 3. ढका गया, भरा गया।

प्रचुर (वि०) [प्र+चुर्+क] 1. अति, यथेष्ट, बहुल, पुष्कल—नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च—भर्तृ० २।४७, शि० १२।७२ 2. बड़ा, विशाल, विस्तृत—प्रचुर पुरंदरधनुः—गीत० २ 3. (समास के अन्त में) बहुत अधिक, भरपूर, परिपूर्ण,—रः चोर। सम०—पुरुष (वि०) जनसंकुल, घना आबाद (षः) चोर।

प्रचेतस् (पुं०) [प्र+चित्+असुन्] 1. वरुण का विशेषण—कु० २।२१ 2. एक प्राचीन ऋषि जो स्मृतिकार था—मनु० १।३५।

प्रचेतृ (पुं०) [प्र+चि+तृच्] रथवान्, सारथि।

प्रचेलम् [प्र+चेल्+अच्] चन्दन की पीली लकड़ी।

प्रचेलकः [प्र+चेल्+ण्वुल्] घोड़ा।

प्रचोदः [प्र+चुद्+घञ्] 1. आगे हांकना, बलपूर्वक चलाना, आगे बढ़ने के लिए उकसना 2. भड़काना, प्रेरित करना।

प्रचोदनम् [प्र+चुद्+ल्युट्] 1. हाँक कर आगे बढ़ाना, बलपूर्वक चलाना, उकसाना 2. भड़काना, जमा देना 3. आदेश देना, निर्देश देना 4. नियम, विधि, समादेश।

प्रचोदित (भू० क० कृ०) [प्र+चुद्+क्त] 1. बलपूर्वक बढ़ाया हुआ, उकसाया हुआ 2. भड़काया हुआ 3. निर्देशित, आदिष्ट, नियत किया हुआ—मनु० २।१९१ 4. भेजा गया, प्रेषित 5. निर्णीत, निर्धारित।

प्रच्छ् (तुदा० पर०—पृच्छति, पृष्ट—प्रेर० प्रच्छयति, कर्म० पृच्छयते, इच्छा० पिपृच्छिषति, पूछना, सवाल करना, प्रश्न करना, पूछताछ करना (द्विकर्मक) पप्रच्छ रामां रमणोभिलाषम्—रघु० १४।२७, भट्टि० ६।८, रघु० ३।५, भग० २।७, ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत् —मनु० २।१२७ 2. ढूंढना, तलाश करना, अनु—, पूछताछ करना, इधर उधर के प्रश्न करना, आ—, 1. पूछना, प्रश्न करना 2. विदा करना 3. विदा होना (आ०) —आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुंगमालिंग्य शैलम् —मेघ० १२, रघु० ८।४९, १२।१०३, परि—, पूछना, प्रश्न करना, पूछताछ करना।

प्रच्छदः [प्र+छद+णिच्+घ] आवरण, आच्छादन, लपेटन, चादर, बिछावन बिस्तरे की चादर—रघु० १९।२२। सम०—पटः बिछावन, चादर।

प्रच्छनम्,—ना [प्रच्छ्+ल्युट्] पूछताछ, परिपृच्छा।

प्रच्छन्न (भू० क० कृ०) [प्र+छद्+क्त] 1. ढका हुआ, वस्त्राच्छादित, वस्त्र पहने हुए, लपेटा हुआ, लिफाफे में बन्द किया हुआ 2. निजी, गोपनीय —भर्तृ० २।६४ 3. छिपा हुआ, गुप्त (दे० प्रपूर्वक छद्),—न्नम् 1. निजी द्वार 2. झरोखा, जाली, खिड़की,—न्नम् (अव्य०) गुप्त रूप से चुपचाप। सम०—तस्करः गुप्तचर, जो चोरी करता हुआ दिखाई न दे, परन्तु चोरी करे अवश्य।

प्रच्छर्दनम् [प्र+छर्द्+ल्युट्] 1. वमन 2. बाहर निकालना, फेंकना 3. उलटी आने वाली (दवा)।

प्रच्छर्दिका [प्र+छर्द्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] उलटी होना, कै आना।

प्रच्छादनम् [प्र+छद्+णिच्+ल्युट्] 1. ढकना, छिपाना 2. उत्तरीय, ओढ़नी। सम०—पटः लपेटन, ढकना, चादर।

प्रच्छादित (भू० क० कृ०) [प्र+छद्+णिच्+क्त] 1. ढका हुआ, लपेटा हुआ, वस्त्राच्छादित आदि 2. गुप्त, छिपा हुआ।

प्रच्छायम् [प्रकृष्टा छाया यत्र] सघन छाया, छायादार स्थान—प्रच्छायसुलभनिद्राः दिवसाः परिणामरमणीयाः —श० १।३, मालवि० ३।

प्रच्छिल (वि०) [प्रच्छ्+इलच्] शुष्क, निर्जल।

प्रच्यवः [प्र+च्यु+अच्] 1. पात, बर्बादी 2. सुधार, प्रगति, विकास 3. वापसी।

प्रच्यवनम् [प्र+च्यु+ल्युट्] 1. विदा होना, मुड़ना, वापसी 2. हानि, वंचना 3. रिसना, झरना।

प्रच्युत (भू० क० कृ०) [प्र+च्यु+क्त] 1. टूट कर गिरा हुआ, झड़ा हुआ 2. भटका हुआ, विचलित 3. स्थान भ्रष्ट, विस्थापित, पतित 4. खदेड़ा हुआ, भगाया हुआ।

प्रच्युतिः (स्त्री०) [प्र+च्यु+क्तिन्] 1. विदा होना, वापसी, 2. हानि, वञ्चना, अधःपतन—नित्यं प्रच्युति शंकया क्षणमपि स्वर्गे न मोदामहे—शा० ४।२० 3. पात, बर्बादी।

प्रजः [प्रविश्य जायायां जायते—जन्+ड] पति, स्वामी।

प्रजनः [प्र+जन्+घञ्] गर्भाधान करना, पैदा करना, जन्म देना, उत्पादन—मनु० ३।६१, ९।६१ 2. पशु (नर पशु का मादा पशु से संगम) में गर्भाधान करना 3. उत्पन्न करना,—पैदा करना—मनु० ९।९६।

प्रजननम् [प्र+जन्+ल्युट्] 1. प्रसृजन, जनन, योनि में वीर्य-संसेचन 2. उत्पादन, जन्म, प्रसव 3. वीर्य 4. पुरुष या स्त्री की जननेन्द्रिय (लिंग या भग) 5. सन्तान।

प्रजनिका [प्र+जन्+णिच्+ण्वुल+टाप्, इत्वम्] माता।

प्रजनुकः [प्र+जन्+उक] शरीर, काया।

प्रजल्पः [+जल्प्+घञ्] बालकलरव, गपशप, असावधान या ऊटपटांग शब्द (प्रेमी का अभिवादन करने में प्रयुक्त)—असूयेर्ष्यामदयुजा योऽवधीरणमुद्रया, प्रियस्य कौशलोद्गारः प्रजल्पः स तु कथ्यते।

प्रजल्पनम् [प्र+जल्प्+ल्युट्] 1. बातचीत करना, बोलना 2. बालकलरव, गपशप।

प्रजविन् (वि०) स्त्री०—नी) [प्र+जु+इनि] आशु, द्रुतगामी, वेगवान्—पुं० आशुगामी दूत, हरकारा।

प्रजा [प्र+जन्+ड+टाप्] (बहु० समास के अन्त में बदल कर 'प्रजस्' हो जाता है जब कि प्रथम पद अ, सु या दुस् हो, दे० रघु० ८।३२, १८।२९) 1. प्रसृजन, प्रसूति, जनन, प्रजोत्पत्ति, जन्म, उत्पादन 2. सन्तान, प्रजा, सन्तति. बच्चे, पक्षिशावक,—प्रजार्थव्रतकर्शितांग—रघु० २।७३, प्रजायै गृहमेधिनाम् —१।७, मनु० ३।४२, याज्ञ० १।२६९, इसी प्रकार बकस्य प्रजा, सर्पप्रजा आदि 3. लोग, मनुष्य—ननन्दुः सप्रजाः प्रजाः—रघु० ४।३, प्रजाः प्रजाः स्वा इव तंत्रयित्वा—श० ५।५, (यहाँ प्रजा का 'सन्तान' अर्थ भी है) रघु० १।७, २।७३, मनु० १।८ 4. वीर्य। सम०—अंतकः मृत्यु का देवता यम —रघु० ८।४५,—ईप्सु (वि०) सन्तान की इच्छा वाला,—ईशः,—ईश्वरः मनुष्यों का राजा, प्रभु—रघु० ३।६८, ५।३२, १८।२९,—उत्पत्तिः,—उत्पादनम्

सन्तान का पैदा करना,—काम (वि०) सन्तान की इच्छा वाला,—तंतुः वंश परम्परा, कुल,—दानम् चाँदी,—नाथः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. राजा, प्रभु, राजकुमार—रघु० २।४८, १०।८३,—पः राजा,—निषेकः गर्भाधान, (गर्भाशय में स्थापित), बीज—रघु० १४।६०,—पतिः 1. सृष्टि की अधिष्ठात्री देवता—मनु० १२।१२१ 2. ब्रह्मा का विशेषण—अस्याः सर्गविधौ प्रजापतिरभूच्चंद्रो नु कांतिप्रदः—विक्रम० १।९ 3. ब्रह्मा के दस वंशप्रवर्तक पुत्र—दे० मनु० १।३४ 4. देवशिल्पी विश्वकर्मा का विशेषण 5. सूर्य 6. राजा 7. जामाता 8. विष्णु का विशेषण 9 पिता, जनक 10 लिंग,—पालः,—पालकः राजा, प्रभु,—पालिः—शिव का विशेषण,—वृद्धिः (स्त्री०) सन्तान की वृद्धि,—सृज् ब्रह्मा का विशेषण—शि० १।२८,—हित (वि०) बच्चों के या लोगों के लिए हितकर (तम्) पानी।

प्रजागरः [प्र+जागृ+अप्] 1. रात को जागते रहना, निद्रा का अभाव—प्रजागरात् खिलीभूतः तस्याः स्वप्ने समागमः—श० ६।२१ 2. चौकसी, सावधानी 3. अभिभावक, संरक्षक 4. कृष्ण का विशेषण।

प्रजात (भू० क० कृ०) [प्र+जन्+क्त] पैदा हुआ, उत्पन्न,—ता वह स्त्री जच्चा जिसके बच्चा पैदा हुआ हो।

प्रजातिः (स्त्री०) [प्र+जन्+क्तिन्] 1. प्रसृजन, प्रसूति, उत्पादन, जन्म देना 2. प्रसव 3. प्रजननात्मक शक्ति 4. प्रसववेदना, प्रसवपीड़ा।

प्रजावत् (वि०) [प्रजा+मतुप्] प्रजा या सन्तान वाला 2. गर्भवती,—ती भाई की पत्नी, भाभी—रघु० १४।४५, १५।१३ 2. विवाहिता नारी, मातृका, माता।

प्रजिनः [प्र+जि+नक्] वायु।

प्रजीवनम् [प्र+जीव्+ल्युट्] जीविका, जीवन निर्वाह का साधन।

प्रजुष्ट (वि०) [प्र+जुष्+क्त] अनुरक्त, भक्त, जुटा हुआ।

प्रज्ञ (वि०) [प्र+ज्ञा+क] बुद्धिमान, मेधावी, विद्वान्।

प्रज्ञप्तिः [त+ज्ञा+णिच्+क्तिन्] 1. सहमति, प्रतिज्ञा 2. शिक्षा, सूचना, समाचार देना 3. सिद्धान्त।

प्रज्ञा [प्र+ज्ञा+अ+टाप्] 1. मेधा, समझ, बुद्धि, बुद्धिमत्ता,—आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः—रघु० १।१५, शस्त्रं निहन्ति पुरुषस्य शरीरमेकं प्रज्ञा कुलं च विभवं च यशश्च हन्ति—सुभा० 2. विवेक, विवेचन, निर्णय 3. तरकीब, योजना 4. बुद्धिमती और विदुषी स्त्री। सम०—चक्षुस् (वि०) अंधा, (शा० बुद्धिरूपी एकमात्र आँख रखने वाला), (पुं०) धृतराष्ट्र का विशेषण, (नपुं०) मन की आँख, मानसिक चक्षु, मन—मालवि० १,—वृद्ध (वि०) समझदारी में बूढ़ा,—हीन (वि०) निर्बुद्धि मूर्ख, बेवकूफ।

प्रज्ञात (भू० क० कृ०) [प्र+ज्ञा+क्त] 1. जाना हुआ, समझा हुआ 2. अन्तरयुक्त, विविक्त 3. स्पष्ट, साफ 4. प्रसिद्ध, सुविख्यात, विश्रुत।

प्रज्ञानम् [प्र+ज्ञा+ल्युट्] 1. बुद्धि, जानकारी, समझ 2. चिह्न, प्रतीक, निशान।

प्रज्ञावत् (वि०) [प्रज्ञा+मतुप्] समझदार, बुद्धिमान।

प्रज्ञाल, प्रज्ञिन् (स्त्री०—नी), **प्रज्ञिल** (वि०) [प्रज्ञा+लच्, इनि, इलच् च] समझदार, बुद्धिमान्, मनीषी।

प्रज्ञु (वि०) [प्रगते विरले जानुनी यस्य—ब० स०, ज्ञु आदेशः] धनुष्पदी, (जिसकी टांगे धनुष की भांति मुड़ी हों), घुटने पर मुड़ी हुई टांगों वाला। ('प्रज्ञ' भी)।

प्रज्वलनम् [प्र+ज्वल्+ल्युट्] देदीप्यमान होना, लपटें उठना, जलना, दहकना।

प्रज्वलित (भू० क० कृ०) [प्र+ज्वल्+क्त] 1. लपटों में होना, जलना, लपटें उठना, देदीप्यमान होना 2. चमकीला, जगमगाता हुआ।

प्रडीनम् [प्र+डी+क्त] 1. हर दिशा में उड़ना 2. आगे दौड़ना, 'डीन' के अन्दर दे०, 3. भाग जाना।

प्रण (वि०) [पुरा भवः—प्र+न] पुराना, प्राचीन।

प्रणखः [प्रकृष्टः नखः—प्रा० स०] कील का सिरा।

प्रणत (भू० क० कृ०) [प्र+नम्+क्त] 1. झुका हुआ, रुझानवाला, प्रवण 2. प्रणाम करना, नमस्कार करना 3. विनम्र 4. कुशल, चतुर—दे० प्र पूर्वक 'नम्'।

प्रणतिः (स्त्री०) [प्र+नम्+क्तिन्] 1. प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन—तव सर्वविधेयवर्तिनः प्रणतिं बिभ्रति के न भूभृतः—शि० १६।५, रघु० ४।८८ 2. विनयशीलता, नम्रता, शिष्टाचार—स ददर्श वेतसवनाचरितां प्रणतिं बलीयसि समृद्धिकरीम्—कि० ६।५, निर्जितेषु तरसा तरस्विनां शत्रुषु प्रणतिरेव कीर्तये—रघु० ११।८९।

प्रणदनम् [प्र+नद्+ल्युट्] शब्द करना, आवाज करना, शब्द, ध्वनि।

प्रणयः [प्र+नी+अच्] 1. विवाह करना, पाणि ग्रहण करना (यथा विवाह में)—मा० ६।१४ 2. (क) प्रेम स्नेह, चाव, अनुरक्ति—अभिरुचि,—प्रीतिसाधारणोऽयमुभयोः प्रणयः स्मरस्य—विक्रम० २।१६, साधारणोऽयं प्रणयः—श० ३, ६।७, ५।२३, मेघ० १०५, रघु० ६।१२ भर्तृ० २।४२ (ख) अभिलाषा, इच्छा, लालसा—कु० ५।८५, मा० ८।७, श० ७।१६ 3. मित्रतापूर्ण परिचय, प्रीति, मैत्री, घनिष्ठता—मा० १।९ 4. परिचय, भरोसा, विश्वास—श० ६ 5. अनुग्रह, कृपा, सौजन्य—अलंकृतोऽस्मि स्वयंग्राहप्रणयेन भवता—

मृच्छ० १, १।४५ 6. अनुरोध, प्रार्थना, निवेदन—तद्भूतनाथानुग नार्हसि त्वं संबंधिनो मे प्रणयं विहन्तुम्—रघु० २।२८, विक्रम० ४।१३ 7. श्रद्धा, भक्ति 8. मोक्ष। सम०—अपराधः प्रेम या मित्रता के विरुद्ध अपचार,—उन्मुख (वि०) 1. प्रेमाविष्ट, अपना प्रेम प्रकट करने को उद्यत—मालवि० ४।१३ 2. प्रेमावेश के कारण आतुर,—कलहः प्रेमी का झगड़ा, कृत्रिम या झूठमूठ का झगड़ा—नाप्यन्यस्मात्प्रणयकलहाद्विप्रयोगोपपत्तिः—मेघ० (मल्लि०—नकली या कल्पित)—, कुपित (वि०) प्रेम के कारण क्रुद्ध—मेघ० १०५,—कोपः किसी नायिका का अपने नायक के प्रति झूठमूठ का क्रोध, नखरों से भरा क्रोध,—प्रकर्षः अत्यधिक प्रेम, तीव्र अनुराग,—भंगः 1. मित्रता का टूट जाना 2. विश्वासघात,—वचनम् प्रेमाभिव्यक्ति,—विमुख (वि०) 1. प्रेम से पराङ्मुख 2. मित्रता करने में अनिच्छुक—मेघ० २७,—विहतिः,—विघातः (प्रार्थना आदि की) अस्वीकृति, न मानना।

प्रणयनम् [प्र+नी+ल्युट्] 1. लाना, ले आना 2. संचालन करना, पहुँचाना 3. पालन करना, कार्यान्वियन करना, अनुष्ठान करना—कु० ६।९ 4. लिखना, अक्षरयोजन करना 5. निर्णयादेश देना, दण्डाज्ञा देना, परिनिर्णय या पंचनिर्णय देना, यथा दण्डस्य प्रणयनम्।

प्रणयवत् (वि०) [प्रणय+मतुप्] 1. प्रेम करने वाला, प्रीतिकर, स्नेही—रघु० १०।५७ 2. स्पष्टवक्ता, खरा 3. अत्यन्त उत्कण्ठित, आतुर।

प्रणयिन् (वि०) [प्रणय+इनि] 1. प्रेम करने वाला, स्नेही, कृपालु, अनुरक्त—मा० ३।९ 2. प्रिय, अत्यंत प्यारा 3. इच्छुक, लालायित, उत्कण्ठित—श० ७।१७, मेघ० ३, रघु० ९।५५, ११।३ 4. सुपरिचित, घनिष्ठ पुं० 1. मित्र, साथी, कृपापात्र—कु० ६।११ 2. पति, प्रेमी 3. कृतांजलि, विनम्र निवेदक, प्रार्थी—स्वार्थात् सतां गुरुतरा प्रणयिक्रियैव—विक्रम० ४।१५, १।२ 4. पूजक, भक्त—कु० ३।६६,—नी 1. गृहिणी, प्रियतमा, पत्नी 2. सखी, सहेली।

प्रणवः [प्र+नू+अप्, णत्वम्] 1. पवित्र अक्षर 'ओम्'—आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छंदसामिव—रघु० १।११, मनु० २।७४, कु० २,१२, भग० ७।८ 2. एक प्रकार का वाद्ययंत्र (ढोल या मृदंग) 3. विष्णु या परमपुरुष परमात्मा का विशेषण।

प्रणस (वि०) [प्रगता नासिका यस्य, सादेशः, अच्, णत्वम्] लम्बी नाक वाला, बड़ी नाक वाला।

प्रणाडी [=प्रणाली, लस्य डः] अन्तरायण, अन्तः प्रवेशन, माध्यम।

प्रणादः [प्र+नद्+घञ्] 1. ऊँची आवाज, चीत्कार, क्रंदन 2. दहाड़ना, दहाड़ 3. हिनहिनाना, रेंकना 4. हर्षातिरेक की कलकलध्वनि, वाहवा, क्या खूब 5. दुहाई देना 6. कान का विशेष रोग (इस रोग में कानों में 'भनभनाहट' की ध्वनि होती है)।

प्रणामः [प्र+नम्+घञ्] 1. झुकना, नमस्कार करना, नमन या नति 2. सादर नमस्कार, अभिवादन, दण्डवत् प्रणाम, प्रणति, यथा साष्टांग प्रणाम—कु० ६।९१।

प्रणायकः [प्र+नी+ण्वुल्] 1. नेता, सेनापति 2. पथप्रदर्शक, प्रधान, मुख्य।

प्रणाय्य (वि०) [प्र+नी+ण्यत्] 1. प्रिय, प्यारा 2. खरा, ईमानदार, स्पष्टवादी 3. अप्रिय, अनभिमत—भट्टि० ६।६६ 4. आवेश शून्य, विरक्त।

प्रणालः,—ली, प्रणालिका [प्र+नल्+घञ्, प्रणाल+ङीष्, प्रणाली+कन्+टाप्, ह्रस्वः] नहर, जलमार्ग, नाली—कुर्वन् पूर्णा नयनपयसां चक्रवालैः प्रणालीः—उ० सं० २, शि० ३।४४ 2. परंपरा, अविच्छिन्न सिलसिला।

प्रणाशः [प्र+नश्+घञ्] 1. विराम, हानि, लोप,—कि० १४।९ 2. मृत्यु, विनाश—रघु० १४।१।

प्रणाशन (वि०) [प्र+नश्+णिच्+ल्युट्] नष्ट करने वाला, हटाने वाला,—नम् समुच्छेदन, उन्मूलन—रघु० ३।६०।

प्रणिसित (वि०) [प्र+निस्+क्त] जिसका चुम्बन किया हो।

प्रणिधानम् [प्र+नि+धा+ल्युट्] 1. प्रयोग करना, नियुक्त करना, व्यवहार, उपयोग 2. महान् प्रयत्न, शक्ति 3. धार्मिक मनन, भावचिन्तन—रघु० १।७४, ८।१९, विक्रम० २ 4. सम्मानपूर्ण व्यवहार (अधि० के साथ) 5. कर्मफलत्याग।

प्रणिधिः [प्र+नि+धा+कि] 1. चौकन्ना रहने वाला, ताक-झांक करने वाला 2. गुप्तचर भेजना 3. जासूस, भेदिया—कु० ३।६, रघु० १७।४८, मनु० ७।१५३, ८।१८२ 4. टहलुआ, अनुचर 5. देखभाल, ध्यान 6. निवेदन, अनुरोध, प्रार्थना।

प्रणिनादः [प्र+नि+नद्+घञ्] गहरी ध्वनि।

प्रणिपतनम्, प्रणिपातः [प्र+नि+पत्+ल्युट्, घञ् च] 1. पैरों में गिरना, साष्टांग प्रणाम, विनति—रघु० ४।६४ 2. अभिवादन, नमस्कार, सादर प्रणति—कु० ३।६१,४।३५, रघु० ३।२५। सम०—रसः शस्त्रास्त्रों पर उच्चारण किया जाने वाला जादू का मंत्र।

प्रणिहित (भू० क० कृ०) [प्र+नि+धा+क्त] 1. रक्खा हुआ, व्यवहृत 2. जमा किया हुआ 3. फैलाया हुआ, पसारा हुआ—मेघ० १०५ 4. न्यस्त, समर्पित, सुपुर्द 5. एकाग्रचित्त, लवलीन, जुटा हुआ 6. निर्धारित,

निश्चित 7. सावधान, चौकस 8. अवाप्त, उपलब्ध 9. भेद लिया हुआ (दे० 'प्रणि' पूर्वक घा)।

प्रणीत (भू० क० कृ०) [प्र+नी+क्त] 1. सामने प्रस्तुत, आगे पेश किया हुआ, उपस्थित 2. सौंपा गया, दिया गया, प्रस्तुत किया गया, उपस्थित किया गया 3. लाया गया, कम किया गया 4. कार्यान्वित, कार्य में परिणत अनुष्ठित 5. सिखाया गया, नियत किया गया 6. फेंका हुआ, भेजा गया, सेवामुक्त (दे० प्र पूर्वक 'नी'),—**तः** मंत्रों से अभिसंस्कृत की गई यज्ञाग्नि,—**तम्** पकाया हुआ या संवारा हुआ कोई पदार्थ यथा चटनी, अचार आदि।

प्रणुत (भू० क० कृ०) [प्र+नु+क्त] प्रशंसा किया गया, श्लाघा किया गया।

प्रणुत्त (भू० क० कृ०) [प्र+नुद्+क्त] 1. हाँककर दूर किया हुआ, पीछे ढकेला हुआ 2. भगाया हुआ।

प्रणुन्न (भू० क० कृ०) [प्र+नुद्+क्त, नत्वम्] 1. हाँक कर दूर भगाया हुआ, 2. गतिशील किया हुआ 3. भगाया हुआ 4. हिलता हुआ, काँपता हुआ।

प्रणेतृ (पुं०) [प्र+नी+तृच] 1. नेता 2. निर्माता, स्रष्टा 3. किसी सिद्धांत का उद्घोषक, व्याख्याता, अध्यापक 4. पुस्तक का रचयिता।

प्रणेय (वि०) [प्र+नी+य] 1. पथप्रदर्शन किये जाने योग्य, नेतृत्व दिये जाने योग्य, शिक्षणीय, विनम्र, विनीत, आज्ञाकारी 2. कार्यान्वित या निष्पन्न किये जाने योग्य 3. निश्चित या स्थिर किये जाने योग्य।

प्रणोदः [प्र+नुद्+घञ्] 1. हाँकना 2. निदेश देना।

प्रतत (भू० क० कृ०) [प्र+तन्+क्त] 1. बिछाया हुआ, ढका हुआ 2. फैलाया हुआ, पसारा हुआ।

प्रततिः (स्त्री०) [प्र+तन्+क्तिन्] 1. विस्तार, फैलाव, प्रसार 2. लता।

प्रतन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+तन्+अच्] पुराना, प्राचीन।

प्रतनु (वि०) (स्त्री०—नु,—न्वी) [प्रकृष्टः तनुः, प्रा० स०] 1. पतला, सूक्ष्म, सुकुमार —मेघ० २९ 2. अत्यल्प, सीमित, भीड़ा—प्रतनुतपसाम्—का० ४३, उत्तर० १।२०, मेघ० ४१ 3. दुबला-पतला, कृश 4. नगण्य, मामूली।

प्रतपनम् [प्र+तप्+ल्युट्] गरमाना, गरम करना।

प्रतप्त (भू० क० कृ०) [प्र+तप्+क्त] 1. तपाया हुआ 2. गर्म, उष्ण 3. संतप्त, सताया हुआ, पीडित।

प्रतरः [प्र+तृ+अप्] पार जाना, पार करना या जाना।

प्रतर्कः, प्रतर्कणम् [प्र+तर्क्+अप्, ल्युट् च] 1. अटकल, कल्पना, अनुमान 2. विचारविमर्श।

प्रतलम् [प्रकृष्टं तलम्—प्रा० स०] निम्नलोक के सात विभागों से एक—दे० पाताल,—**लः** खुले हाथ की हथेली।

प्रतानः [प्र+तन्+घञ्] 1. अंकुरः तन्तु—लताप्रतानोद्ग्रथितैः सकेशैः—रघु० २।८, श० ७।११ 2. लता, नीचे भूमि पर ही फैलने वाला पौधा 3. शाखा-प्रशाखा, शाखा संविभाग 4. धनुर्वात रोग या मिरगी रोग।

प्रतानिन् (वि०) [प्रतान+इनि] 1. फैलाने वाला 2. अंकुर या तन्तु वाला,—**नी** फैलाने वाली लता।

प्रतापः [प्र+तप्+घञ्] 1. ताप, गर्मी—पंच० १।१०७ 2. दीप्ति, दहकती हुई गर्मी कु० २।२४, 3. आभा, उज्ज्वलता 4. मर्यादा, शान, यश —महावी० २।४ 5. साहस, पराक्रम, शौर्य प्रतापस्तत्र भानोश्च युगपद्व्यानशे दिशः—रघु० ४।१५, यहाँ 'प्रताप' का अर्थ गर्मी भी है) ४।३० 6. शक्ति, बल, ऊर्जा 7. उत्कण्ठा, उत्साह।

प्रतापन (वि०) [प्र+तप्+णिच्+ल्युट्] 1. गर्माने वाला 2. संताप देने वाला, **नम्** 1. जलाना, तपाना, गर्माना 2. पीड़ित करना, सताना, दण्ड देना,—**नः** एक नरक का नाम।

प्रतापवत् (वि०) [प्रताप+मतुप्, वत्वम्] 1. कीर्तिशाली, ओजस्वी 2. बलशाली, शक्तिसंपन्न, ताक़तवर—पुं० शिव का विशेषण।

प्रतारः [प्र+तृ+णिच्+घञ्] 1. पार ले जाने वाला, 2. धोखा, जालसाजी।

प्रतारकः [प्र+तृ+णिच्+ण्वुल्] ठग, छद्मवेषी।

प्रतारणम् [प्र+तृ+णिच्+ल्युट्] 1. पार ले जाना 2. धोखा देना, ठगना, छल, कपट, **णा** जालसाजी, धोखा, मक्कारी, धूर्तता, बदमाशी, दगाबाजी, पाखंड यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा, उपास्यतां कलौ कल्पलता देवी प्रतारणा, प्रतारणासमर्थस्य विद्यया किं प्रयोजनम् उद्भट।

प्रतारित (वि०) [प्र+तृ+णिच्+क्त] छला हुआ, ठगा हुआ।

प्रति (अव्य) [प्रथ्+डति] 1. धातु के पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर निम्नांकित अर्थ हैं—(क) की ओर, की दिशा में (ख) वापिस, लौट कर, फिर (ग) के विरुद्ध, के मुक़ाबले में, विपरीत (घ) ऊपर, घृणा (इस उपसर्ग से युक्त कुछ धातुओं को देखिए) 2. संज्ञाओं (कृदन्त से भिन्न) से पूर्व उपसर्ग के रूप में निम्नांकित अर्थ (क) समानता, समरूपता, सादृश्य (ख) प्रतिस्पर्धा—यथा प्रतिचन्द्र (प्रतिस्पर्धीचन्द्रमा), प्रतिपुरुप आदि 3. स्वतंत्र रूप से संबंधबोधक अव्यय के रूप में प्रयुक्त (कर्म० के साथ) निम्नांकित अर्थ —(क) की ओर, की दिशा में, की तरफ़—तौ दम्पती स्वां प्रतिराजधानीं प्रस्थापयामास वशी वसिष्ठः —रघु० २।७०, १।७५, प्रत्यनिलं विचेरुः—कु० ३।

३१, वृक्षं प्रतिविद्योतते विद्युत्—सिद्धा०, (ख) के विरुद्ध, प्रतिकूल, की विपरीत दिशा में, सम्मुख —तदा यायाद्रिपुं प्रति—मनु० ७।१७१, प्रदुद्रुवुस्तं प्रति राक्षसेन्द्रम्—रामा०, ययावजः प्रत्यरिसैन्यमेव —रघु० ७।५५, (ग) की तुलना में, सममूल्य पर, के अनुपात में, जोड़ का - त्वं सहस्राणि प्रति—ऋक्० २।१।८, (घ) निकट, के आसपास, पास की ओर, में, पर—समासेदुस्ततो गंगां शृंगवेरपुरं प्रति—रामा०, गंगां प्रति (ङ) के समय, लगभग, दौरान में—आदित्यस्योदयं प्रति—महा०, फाल्गुनं वाथ चैत्रं वा मासौ प्रति—मनु० ७।१८२, (च) की ओर से, के पक्ष में, के भाग्य में—यदत्र मां प्रतिस्यात् · सिद्धा०, हरं प्रति हलाहलं (अभवत्)—वोप०, (छ) प्रत्येक में, हरेक में, अलग-अलग (विभागसूचक), वर्षं प्रति, प्रतिवर्षम्, यज्ञं प्रति—याज्ञ० १।११०, वृक्षं वृक्षं प्रति सिंचति —सिद्धा०, (ज) के विषय में, के संबंध में, के बारे में, विषयक, बाबत, विषय में—न हि मे संशीतिरस्या दिव्यतां प्रति—का० १३२, चन्द्रोपरागं प्रति तु केनापि विप्रलब्धासि—मुद्रा० १, धर्मंप्रति–श० ५, मंदौत्सुक्यो ऽस्मि नगरगमनं प्रति—श० १, कु० ६।२७, ७।८३, याज्ञ० ९।२१८, रघु० ६।१२, १०।२०, १२।५१, (झ) के अनुसार, के समनुरूप—मां प्रति (मेरी सम्मति में), (ञ) के सामने, की उपस्थिति में, (ट) क्योंकि, के कारण 4. स्वतंत्र संबंधबोधक अव्यय के रूप में (अपा० के साथ) इसका अर्थ है, (क) प्रतिनिधि, के स्थान में, के बजाय—प्रद्युम्नः कृष्णात्प्रति—सिद्धा० संग्रामे यो नारायणतः प्रति—भट्टि० ८।८९, अथवा (ख) की एवज में, के बदले—तिलेभ्यः प्रति यच्छति माषान्—सिद्धा०, भक्तेः प्रत्यमृतं शम्भोः—वोप० 5. अव्ययीभाव समास के प्रथम पद के रूप में प्रायः इसका अर्थ है, (क) प्रत्येक में या पर, यथा प्रतिसंवत्सरम्—(प्रतिवर्ष), प्रतिक्षणं, प्रत्यहं आदि, (ख) की ओर, की दिशा में—प्रत्यग्नि शलभा डयन्ते 6. 'प्रति' कभी कभी 'अल्पतार्थ' प्रकट करने के लिए अव्ययीभाव समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त होता है सूपप्रति, शाकप्रति (विशे० निम्नांकित समासों में वह सब शब्द जिनका दूसरा पद क्रिया के साथ अव्यवहित रूप से नहीं जुड़ा हुआ है, सम्मिलित कर दिए गए हैं, अन्य शब्द अपने२ स्थानों पर मिलेंगे। सम०—अक्षरम् (अव्य०) प्रत्येक अक्षर में—प्रत्यक्षर श्लेषमयप्रबंध –वास०,—अग्नि (अव्य०) अग्नि की ओर,—अंगम् 1. (शरीर का) गौण या छोटा अंग —जैसे कि नाक 2. प्रभाग, अध्याय, अनुभाग 3. प्रत्येक अंग 4. अस्त्र (अव्य०—गम्) 1. शरीर के प्रत्येक अंग पर—यथा—प्रत्यंगमालिंगितः—गीत० १ 2. प्रत्येक उपप्रभाग या उपांग के लिए,—अनन्तर (वि०) 1. सट कर पड़ौस में होने वाला 2. उत्तराधिकारी के रूप में) निकटतम विद्यमान 3. तुरन्त बाद का, बिल्कुल जुड़ा हुआ—जीवेत् क्षत्रियधर्मेण स ह्यस्य (ब्रह्मणस्य) प्रत्यनंतरः मनु० १०।८२, ८। १८५,—अनिलम् (अव्य०) हवा की ओर, या हवा के विरुद्ध—अनीक (वि०) 1. विरोधी, विरुद्ध, विद्वेषी 2. मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला —(कः) शत्रु (—कम्) 1. विरोध, शत्रुता, विपरीत ढंग या स्थिति—न शक्ताः प्रत्यनीकेषु स्थातुं मम सुरासुराः—राम० 2. शत्रु की सेना—यस्य शूरा महेष्वासाः प्रत्यनीकगता रणे—महा०, येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः—भग० ११।३२, (यहां 'प्रति' का अर्थ 'शत्रुता' भी है) 3. (अलं० शास्त्र) अलंकार - इसमें एक व्यक्ति उस शत्रु को जो स्वयं घायल नहीं हो सकता, चोट पहुंचाने का प्रयत्न करता है—प्रतिपक्षमशक्तेन प्रतिकर्तुं तिरस्क्रिया, या तदीयस्य तत्स्तुत्यै प्रत्यनीकं तदुच्यते—काव्य० १०,—अनुमानम् प्रतिकूल उपसंहार—अंत (वि०) संसक्त, सटा हुआ, साथ लगा हुआ, सीमावर्ती (तः) 1. सीमा, हद, रघु० ४।२६, 2. सीमावर्ती देश, विशेषतः म्लेच्छों द्वारा अधिकृत प्रदेश, °देशः सीमावर्ती देश, °पर्वतः साथ लगी हुई पहाड़ी—पादाः प्रत्यंग पर्वताः—अमर०, —अपकारः प्रतिशोध, बदले में क्षति पहुंचाना—शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः—कु० २।४०,—अब्दम् (अव्य०) प्रतिवर्ष,—अभियोगः बदले में दोषारोपण, प्रत्यारोप,—अमित्रम् (अव्य०) शत्रु की ओर, —अर्कः झूठमूठ का सूरज,—अवयवम् (अव्य०) 1. प्रत्येक अंग में 2. प्रत्येक विशेषता के साथ, विवरण सहित, —अवर (वि०) 1. निम्न पद का, कम सम्मानित 2. अधम, पतित, अत्यंत निगण्य,—अश्मन् (पुं०) गेरु, —अहम् (अव्य०) प्रतिदिन, हररोज, रोज—गिरिशमुपचचार प्रत्यहम्—कु० १।६०,—आकारः, कोष, म्यान,—आघातः 1. प्रत्याक्रमण 2. प्रतिक्रिया,—आचारः उपयुक्त आचरण या व्यवहार, · आत्मम् अकेला, अलग अलग,—आदित्यः झूठमूठ का सूरज,—आरंभः 1. फिर शुरु करना, दूसरी बार आरंभ करना 2. प्रतिषेध,—आशा 1. उम्मीद, पूर्वधारणा—मा० ९।८ 2. विश्वास, भरोसा,—उत्तरम् जवाब, उत्तर का उत्तर,—उलूकः 1. कौवा 2. उल्लू से मिलता-जुलता पक्षी,—ऋच (अव्य०) प्रत्येक ऋचा में,-एक (वि०) प्रत्येक, हरेक. हरकोई (अव्य० कम्) 1. एक एक करके, एक बार में एक, अलग, अलग, अकेला, हर एक में, हर एक को (बहुधा विशेषणात्मक बल के साथ)—विवेश दण्डकारण्यं प्रत्येकं च सतां मनः—रघु०

१२।९ (प्रत्येक सज्जन पुरुष के मन में प्रवेश किया) १२।३, ७।३४, कु० २।३१,—**कंचुकः** शत्रु,—**कंठम्** (अव्य०) 1. अलग अलग, एक एक करके 2. गले के निकट,—**कशः** (वि०) उद्दंड, जो हण्टर से भी वश में न आवे,—**कायः** 1. पुतला, प्रतिमा, चित्र, समानता 2. शत्रु—की० १३।२८ 3. लक्ष्य, चाँदमारी, निशान,—**कितवः** जूए में प्रतिद्वन्द्वी,—**कुंजरः** प्रतिरोधी हाथी,—**कूपः** परिखा, खाई,—**कूल** (वि०) अननुकूल विरोधी, प्रतिपक्षी, विरुद्ध—प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता—शि० ९।६, कु० ३।२४ 2. कठोर, बेमेल, अप्रिय, अरुचिकर—अघ्यन्त-पुष्टा प्रतिकूलशब्दा—कु० १।४५ 3. अशुभ 4. विरोधी 5. उलटा, व्युत्क्रान्त 6. विपरीत, आड़ा, कर्कश, कठोर, °**आचरितम्** कुत्सित या आक्रमणात्मक कार्य अथवा आचरण—रघु० ८।८१, °**उक्तम्,** **क्तिः** (स्त्री०) विरोध, °**कारिन्** (वि०) विरोध करने वाला, °**दर्शन्** (वि०) अशुभ अथवा अभद्र दर्शनों वाला, °**प्रवर्तिन्** —**र्वातन्** (अव्य०) विपरीत कार्य करने वाला, उलटा मार्ग ग्रहण करने वाला, °**भाषिन्** (वि०) विरोध करने वाला, असंगत बोलने वाला, °**वचनम्** अरुचिकर या अप्रिय भाषण,—**कूलम्** (अव्य०) 1. विरोधी ढंग से, विपरीतता के साथ 2. उलटी तरह से, विपर्यस्त क्रम से,—**क्षणम्** (अव्य०) प्रत्येक क्षण, हर समय,—कु० ३।५६,—**गजः** आक्रमणकारी हाथी,—**गात्रम्** (अव्य०) प्रत्येक अंग में,—**गिरिः** 1. सामने का पहाड़ 2. छोटा पहाड़,—**गृहम्,**—**गेहम्** (अव्य०) हर घर में,—**ग्रामम्** (अव्य०) हर गांव में,—**चंद्रः** झूठमूठ का चाँद,—**चरणम्** (अव्य०) 1. प्रत्येक (वैदिक) सिद्धान्त या शाखा में 2. हर पग पर,—**छाया** 1. प्रतिबिम्ब, परछाई, छाया 2. प्रतिमा, चित्र,—**जंघा** टाँग का अगला भाग—**जिह्वा,**—**जिह्विका** गले की भीतर की घंटी, मांस-तालु, कोमल तालु, **तंत्रम्** (अव्य०) प्रत्येक तंत्र या सम्मति के अनुसार,—**तंत्रसिद्धान्तः** एक ऐसा सिद्धांत जिसको एक ही पक्ष ने माना हो (वादिप्रतिवाद्येकतर-मात्राभ्युपगतः),—**त्र्यहम्** (अव्य०) लगातार तीन दिन तक, **दिनम्** (अव्य०) हर रोज, **दिशम्** (अव्य०) हर दिशा में, चारों ओर, सर्वत्र मेघ० ५८,—**देशम्** (अव्य०) प्रत्येक देश में, **देहम्** (अव्य०) हरेक शरीर में,—**दैवतम्** (अव्य०) प्रत्येक देवता के निमित्त,—**द्वन्द्वः** 1. प्रतिस्पर्धी, विरोधी, शत्रु, प्रतिद्वंद्वी 2. शत्रु० (—**द्वम्**) विरोध, शत्रुता,—**द्वंद्विन्** (वि०) 1. विरोधी, शत्रुतापूर्ण 2. प्रतिकूल—कि० १६।२९ 3. लागडांट रखने वाला, प्रतिस्पर्धाशील —श० ४।४, (—पुं०) विरोधी, प्रतिपक्षी, प्रतिस्पर्धी —रघु० ७।३७, १५।२५,—**द्वारम्** (अव्य०) प्रत्येक दरवाजे पर,—**धुरः** दूसरे घोड़े के साथ जुड़ा हुआ घोड़ा,—**नप्तृ** (पुं०) प्रपौत्र, पौत्र का पुत्र,—**नव** (वि०) 1. नूतन, युवा, ताजा 2. हाल का खिला हुआ, या जिसमें अभी कलियाँ आई हों—मेघ० ३६,—**नाडी** प्रशिरा, उपनाडी,—**नायकः** किसी काव्य का खलनायक जैसे रामायण में रावण, तथा माघकाव्य में शिशुपाल,—**पक्षः** 1. विरोधी पक्ष, दल या गुटबन्दी, शत्रुता 2. प्रतिकूल, शत्रु, दुश्मन, प्रतिद्वंद्वी, **प्रतिपक्ष-कामिनी** प्रतिद्वंद्वी पत्नी—भामि० २।६४, विक्रमांक० १।७०, ७३, प्रतिपक्षमशक्तेन प्रतिकर्तुम् काव्य०१०, समास में प्रायः 'सम' या 'समान' अर्थ में प्रयुक्त 3. प्रतिवादी, मुद्दआल, **पक्षित** (वि०) 1. विरोध से युक्त, 2. विरोधात्मक प्रतिज्ञा से विफल किया हुआ, (जैसे न्याय में हेतु) (वह हेतु) जो सत्प्रतिपक्ष नामक दोष से युक्त हो),—**पक्षिन्** (वि०) विरोधी, शत्रु, **पथम्** (अव्य०) मार्ग के साथ२, रास्ते की रास्ते की ओर,—प्रतिपथगतिरामीद्वेगदीर्घीकृतांगः—कु० ३।७६, **पदम्** (अव्य०) 1. प्रत्येक पग पर 2. प्रत्येक स्थान पर, सर्वत्र 3. प्रत्येक शब्द में,—**पादम्** (अव्य०) प्रत्येक चरण में, **पात्रम्** (अव्य०) प्रत्येक भाग के विषय में, प्रत्येक पात्र के विषय में प्रतिपात्रमाधीयतां यत्नः श० १ (प्रत्येक पात्र की देख रेख की जानी चाहिए, **पादपम्** (अव्य०) प्रत्येक वृक्ष में,—**पाप** (वि०) पाप के बदले पाप करने वाला, बुराई के बदले बुराई करने वाला,—**पु (पू) रुषः** 1. समान या सदृश पुरुष 2. स्थानापन्न, प्रतिनिधि 3. साथी 4. पुतला आदमी का पुतला जिसे चोर किसी घर में स्वयं घुसने से पहले यह जानने के लिए फेंका करते थे कि कोई जाग तो नहीं रहा है 5. पुतला, **पूर्वाह्णम्** (अव्य०) प्रत्येक मध्याह्नपूर्व, हर दोपहर से पहले, **प्रभातम्** (अव्य०) प्रत्येक सुबह,—**प्राकारः** बाहरी परकोटा या फसील,—**प्रियम्** बदले में की गई कृपा या सेवा रघु० ५।५६,—**बंधुः** जो पद व स्थिति में समान हो,—**बल** (वि०) बल में समान, अपने जोड़े का, समान शक्तिशाली (—**लम्**) शत्रु की सेना—अस्त्रज्वालावलीढप्रतिबलजलधेरंतरौर्वायमाणे—वेणी० ३।५, **बाहुः** भुजा को अगला भाग, कोहनी से नीचे का भाग **बि (वि) बः,** **बम्** 1. परछाईं, प्रतिमूर्ति कु० ६।४२, शि० ९।१८ 2. प्रतिमा, चित्र, **भट** (वि०) प्रतिस्पर्धी, प्रतिद्वंद्वी—घटप्रतिभटस्तनि नै० १३।५, (**टः**) 1. प्रतिद्वंद्वी, प्रतिपक्षी 2. शत्रुपक्ष का योद्धा समालोक्याजौ त्वां विदधति विकल्पान् प्रति-भटाः काव्य० १०, **भय** (वि०) 1. भयावह भीषण, भयंकर, भयानक 2. खतरनाक—पंच०

२।१६६, (यम्) भय, खतरा,—**मंडलम्** केन्द्रभ्रष्ट परिवेश,—**मंदिरम्** (अव्य०) प्रत्येक घर में, —**मल्लः** प्रतिस्पर्धी, प्रतिद्वंद्वी—नै० १।६३, पातालप्रतिमल्लगल्ल आदि —मा० ५।२२, —**मायाः** जवाबी जादू, **मासम्** (अव्य०) प्रतिमास, मासिक, **मित्रम्** शत्रु, विरोधी, —**मुख** (वि०) 1. मुंह के सामने खड़ा हुआ, सामने स्थित —प्रतिमुखागत —मनु० ८।२९१ 2. निकटवर्ती, उपस्थित (**खम्**) नाटक की एक घटना या गौणकथा-वस्तु जो नाटक के महान् परिवर्तन या उलट फेर को या ता जल्दी लादे या और भी अधिक देर कर दे —दे० सा० द० ३३४ और ३५१ —३६४,—**मुद्रा** मुकाबले की मोहर,—**मुहूर्तम्** (अव्य०) प्रतिक्षण, —**मूर्तिः** (स्त्री०) प्रतिमा, समानता,—**यूथपः** आक्रमणकारी हाथियों के झुंड का अगुआ या नेता, —**रथः** प्रतिपक्षी योद्धा (शा० —युद्ध रथ में बैठ कर लड़ने वाला)—दौष्यंतिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य—श० ४।१९, —**राजः** विरोधी राजा, —**रात्रम्** (अव्य०) हर रात, —**रूप** (वि०) 1. तदनुरूप, समान, मुकाबले का भाग रखने वाला,—चेष्टाप्रतिरूपिका मनोवृत्तिः —श० १ 2. उपयुक्त, समुचित (**पम्**) चित्र, प्रतिमा, समानता, —**रूपकम्** चित्र, प्रतिमा, —**लक्षणम्** निशान, चिह्न, प्रतीक, —**लिपिः** (स्त्री०) लेख की नकल, लिखी हुई प्रति, —**लोम** (वि०) 1. नैसर्गिक क्रम के विरुद्ध, व्युत्क्रान्त, उलटा 2. जाति विरुद्ध (अपने पति से उच्च वर्ण की स्त्री की सन्तान) 3. विरोधी 4. नीच, दुष्ट, अधम 5. वाम (अव्य० **मम्**) बालों के विपरीत, अनाज के विरुद्ध उलटा, विपर्यस्त रूप से, °**ज** (वि०) जाति के विपरीत क्रम में उत्पन्न अर्थात् अपने पति से उच्चवर्ण की स्त्री की सन्तान,—**लोमकम्** उलटा क्रम, विपरीत क्रम,—**वत्सरम्** (अव्य०) प्रतिवर्ष, हर साल,—**वनम्** हर जंगल में,—**वर्षम्** (अव्य०) हरसाल,—**वस्तु** (नपुं०) 1. समान, प्रतिमूर्ति, प्रतिरूप 2. प्रतिदान 3. समानता, तुल्यता °**उपमा** एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने यह दी है—प्रतिवस्तूपमा तु सा, सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः—काव्य० १०, उदा० तापेन भ्राजते सूर्यः शूरश्चापेन राजते—चन्द्रा० ५। ४८,—**वातः** उलटी हवा (अव्य०—**तम्**) हवा के विरुद्ध चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य —श० १।३४,—**वासरम्** (अव्य०) प्रतिदिन —**विटपम्** (अव्य०) 1. प्रत्येक शाखा पर 2. एक एक शाखा पर, —**वेदम्** (अव्य०) प्रत्येक वेद में या हरेक वेद के लिए,—**विषम्** विषप्रतीकारक औषधि, —**विष्णुकः** मुचकुन्द वृक्ष,—**वीरः** विपक्षी, शत्रु,—**वृषः** आक्रमणकारी बैल,—**वेलम्** (अव्य०) हर समय, प्रत्येक अवसर पर,—**वेशः** 1. पड़ौस का घर, आसपास 2. पड़ौसी,—**वेशिन्** (अ०) पड़ौसी,—**वेश्मन्** (नपुं०) पड़ौसी का घर,—**वेश्यः** पड़ौसी,—**वैरम्** वैर प्रतिशोध, बदला, प्रतिहिंसा,—**शब्दः** 1. प्रतिध्वनि, गूंज,—वसुधाधरकन्दराभिसर्पी प्रतिशब्दोऽपि हरेर्भिनत्ति नागान्—विक्रम० १।१६, कु० ६।६४, रघु० २।२८ 2. गरज, दहाड़,—**शशिन्** (पुं०) झूठमूठ का चाँद,—**संवत्सरम्** (अव्य०) प्रतिवर्ष, हर साल,—**सम** (वि०) तुल्य, जोड़ का,—**सव्य** (वि०) विपर्यस्त क्रम में,—**सायम्** (अव्य०) प्रतिसंध्या, हर साँझ,—**सूर्यः**,—**सूर्यकः** 1. झूठमूठ का सूरज 2. छिपकली, गिरगिट—उत्तर० २।१६,—**सेना**, शत्रु की सेना,—**स्थानम्** (अव्य०) हर स्थान में, हर स्थान पर,—**स्रोतम्** (नपुं०) धारा के विपरीत—**हस्तः**,—**हस्तकः** प्रतिनिधि, अभिकर्ता, स्थानापन्न, प्रतिपुरुष—आश्रितानां भृतौ स्वामिसेवायां धर्मसेवने, पुत्रस्योत्पादने चैव न संति प्रतिहस्तका, —हि० २।३३।

प्रतिक (वि०) [कार्षापण+टिठन्, कार्षापणस्य प्रत्यादेशः] कार्षापण के मूल्य का या कार्षापण से खरीदा हुआ।

प्रतिकरः [प्रति+कृ+अप्] प्रतिशोध, क्षतिपूर्ति।

प्रतिकर्तृ (वि०) (स्त्री०—र्त्री) [प्रति+कृ+तृच्] प्रतिशोध लेने वाला, क्षतिपूर्ति करने वाला—(पुं०) विरोधी, विपक्षी।

प्रतिकर्मन् (नपुं०) [प्रति+कृ+मनिन्] 1. प्रतिशोध, प्रतिहिंसा 2. हर्जाना, उपचार, प्रतिकार 3. शारीरिक शृंगार, रूपसज्जा, प्रसाधन, शरीर-सज्जा (अबलाः) प्रतिकर्म कर्तुमुपचक्रमिरे समये हि सर्वमुपकारि कृतम् —शि० ९।४३, ५।२७, कु० ७।३ 4. विरोध, शत्रुता।

प्रतिकर्षः [प्रति+कृष्+घञ्] 1. एकत्रीकरण, संयोजन 2. (किसी आगे आने वाले शब्द का) पूर्व विचार।

प्रतिकषः [प्रति+कष्+अच्] 1. नेता 2. सहायक 3. संदेशहर।

प्रति (ती) कारः [प्रति+कृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. प्रतिशोध, पुरस्कार, प्रतिदान 2. बदला, प्रतिहिंसा, प्रतिफल 3. प्रतिविधान, निवारण, रोकथाम, उपचार, इलाज या चिकित्सा—विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञात्वाऽनारंभः प्रतीकारस्य श० ३, प्रतीकारो व्याधेः सुखमिति विपर्यस्यति जनः—भर्तृ० ३। ९२ 4. विरोध। सम०—**कर्मन्** (नपुं०) जीर्णोद्धार करना, सुधार करना,—**विधानम्** इलाज करना, चिकित्सा करना—प्रतिकारविधानमायुषः सति शेषे हि फलाय कल्पते रघु० ८।४०।

प्रति (ती) काशः [प्रति+कश्+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. परछाईं 2. दृष्टि, दर्शन, सादृश्य—(प्रायः

समास के अन्त में '—के समान' 'से मिलता-जुलता' अर्थ प्रकट करता है)—पुटपाकप्रतीकाशः—उत्तर० ३।१ ।
प्रतिकुंचित (वि०) [प्रति+कुञ्च्+क्त] झुका हुआ, मुड़ा हुआ ।
प्रतिकृत (भू० क० कृ०) [प्रति+कृ+क्त] 1. वापिस किया हुआ, लौटाया हुआ, प्रतिशोधित, प्रतिहिंसित 2. प्रतिविहित, उपचार किया हुआ ।
प्रतिकृतिः (स्त्री०) [प्रति+कृ+क्तिन्] 1. बदला, प्रतिहिंसा 2. वापसी, प्रतिशोध 3. परछाईं, प्रतिबिंब 4. समानता, चित्र, मूर्ति, प्रतिमा—रघु० ८।९२, १४।८७, १८।५३ 5. स्थानापन्न ।
प्रतिकृष्टः (भू० क० कृ०) [प्रति+कृष्+क्त] 1. दोबारा जोता हुआ 2. पीछे ढकेला हुआ, तिरस्कृत, अस्वीकृत 3. छिपाया हुआ, गुप्त 4. नीच, दुष्ट, अधम ।
प्रतिकोपः, प्रतिक्रोधः [प्रति+कुप् (क्रुध्)+घञ्] क्रोध के प्रति होने वाला क्रोध ।
प्रतिक्रमः [प्रति+क्रम्+घञ्] उलटा क्रम ।
प्रतिक्रिया [प्रति+कृ+श, इयङ+टाप्] 1. क्षतिपूर्ति, प्रतिशोध 2. प्रतिहिंसा, बदला, प्रतिफल 3. प्रतिविधान, प्रतीकार, दूरीकरण—अहेतुः पक्षपातो यस्तस्य नास्ति प्रतिक्रिया—उत्तर०—५।१७, रघु० १५।४ 4. विरोध 5. शरीरसज्जा, शृंगार, रूपसज्जा 6. रक्षा 7. सहायता, कुमक या साहाय्य ।
प्रतिक्रुष्ट (वि०) [प्रति+क्रुश्+क्त] दयनीय, बेचारा, गरीब,
प्रतिक्षयः [प्रति+क्षि+अच्] संरक्षक, टहलुआ ।
प्रतिक्षिप्त (भू० क० कृ०) [प्रति+क्षिप्+क्त] 1. रद्द किया हुआ, अस्वीकृत, हटाया हुआ 2. प्रतिकृत, प्रतिरुद्ध, पीछे ढकेला हुआ, अवरुद्ध किया हुआ 3. अपभाषित, भर्त्सना किया हुआ, बदनाम किया हुआ 4. भेजा हुआ, प्रेषित ।
प्रतिक्षुतम् [प्रति+क्षु+क्त] छींक ।
प्रतिक्षेपः [प्रति+क्षिप्+घञ् [1. प्राप्ति स्वीकार न करना, अस्वीकृति 2. विरोध करना, खण्डन करना, प्रतिवाद करना 3. विवाद ।
प्रतिख्यातिः [प्रति+ख्या+क्तिन्] विश्रुति, प्रसिद्धि ।
प्रतिगत (भू० क० कृ०) [प्रति+गम्+क्त] आगे या पीछे उड़ान भरना, इधर उधर चक्कर काटना ।
प्रतिगमनम् [प्रति+गम्+ल्युट्] लौटना, वापिस जाना, वापसी ।
प्रतिगर्हित (भू० क० कृ०) [प्रति+गर्ह्+क्त] कलंकित, निन्दित ।
प्रतिगर्जना [प्रति+गर्ज्+युच्+टाप्] गर्जन के जवाब में गर्जना करना, किसी की दहाड़ सुनकर दहाड़ना ।
प्रतिगृहीत (भू० क० कृ०) [प्रति+ग्रह्+क्त] 1. लिया, ग्रहण किया, स्वीकार किया 2. मान लिया, हामी भरी 3. विवाह किया ।
प्रतिग्रहः [प्रति+ग्रह्+अप्] ग्रहण करना, स्वीकार करना 2. दान ग्रहण करना या स्वीकार करना 3. दान ग्रहण करने का अधिकार 4. उपहार ग्रहण करने का अधिकार (जो कि ब्राह्मणों का ही विशेषाधिकार है)—मनु० १०८, ४।८६, याज्ञ० १।११८ 4. भेंट, उपहार, दान—राज्ञः प्रतिग्रहोऽयम्—श० १, शि० १४।३५ 5. (भेंट का) ग्रहण करने वाला 6. सादर स्वागत 7. अनुग्रह, शान 8. पाणिग्रहण 9. ध्यान पूर्वक सुनना 10. सेना का पिछला भाग 11. पीक दान ।
प्रतिग्रहणम् [प्रति+ग्रह्+ल्युट्] 1. उपहार ग्रहण 2. स्वागत 3. पाणिग्रहण ।
प्रतिग्रहिन्, प्रतिगृहीतृ (पुं०) [प्रतिग्रह+इनि.] प्रति+ग्रह्+तृच्] ग्रहण करने वाला, ग्रहीता ।
प्रतिग्राहः [प्रति+ग्रह्+ण] 1. उपहार स्वीकार करना 2. थूकदान, पीक दान ।
प्रतिघः [प्रति+हन्+ड, कुत्वम्] 1. विरोध, मुकाबला 2. लड़ाई, संघर्ष, आपस की मारपीट 3. क्रोध, रोष 4. मूर्छा 5. शत्रु ।
प्रति(ती)घातः [प्रति+हन्+णिच्+अप्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. दूर हटाना, पीछे ढकेलना 2. विरोध, मुकाबला 3. आघात के बदले आघात, जवाबी आघात 4. प्रतिक्षेप, प्रतिकार 5. प्रतिषेध ।
प्रतिघातनम् [प्रति+हन्+णिच्+ल्युट्] 1. पीछे ढकेलना, दूर हटाना 2. वध, हत्या ।
प्रतिघ्नम् [प्रति+हन्+क] शरीर ।
प्रतिचिकीर्षा [प्रति+कृ+सन्+टाप्] बदले की इच्छा, प्रतिहिंसा की इच्छा, बदला लेने की अभिलाषा ।
प्रतिचिन्तनम् [प्रति+चिन्त्+ल्युट्] मनन करना, गहनचिंतन करना ।
प्रतिच्छदनम् [प्रति+छद्+ल्युट्] ढकना, चादर ।
प्रतिच्छंदः, प्रतिच्छंदकः [प्रति+छन्द्+घञ्, कन् च] 1. समानता, चित्र, मूर्ति प्रतिमा 2. स्थानापन्न —शि० १२।२९ ।
प्रतिच्छन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+छद्+क्त] 1. ढका हुआ, आच्छादित, लपेटा हुआ 2. छिपाया हुआ, गुप्त 3. जुटाया हुआ, पूर्वसंचित 4. गोट या मगजी लगाया हुआ, जड़ा हुआ ।
प्रतिच्छेदः [प्रति+छिद्+घञ्]मुकाबला, विरोध ।
प्रतिजल्पः [प्रति+जल्प्+घञ्] उत्तर, जवाब ।
प्रतिजल्पकः [प्रतिजल्प+कन्] सादर सहमति ।
प्रतिजागरः [प्रति+जागृ+घञ्] निगरानी, देख-रेख, सावधानी ।

प्रतिजीवनम् [प्रति+जीव्+ल्युट्] पुनर्जीवन, पुनः सजीवता ।

प्रतिज्ञा [प्रति+ज्ञा+अङ+टाप्] 1. मानना, अंगीकार करना 2. व्रत, वचन, वादा, औपचारिक घोषणा —दैवात्तीर्णं प्रतिज्ञः—मुद्रा० ४।१२, तीर्त्वा जवेनैव नितांतदुस्तरां नदीं प्रतिज्ञामिव तां गरीयसीम्—शि० १२।७४ 3. उक्ति. दृढोक्ति, घोषणा, प्रकथन 4. (न्या० में) प्रस्थापना, सवाक्य पंचांगी अनुमान का प्रथम अंग, दे० 'न्याय' के अन्तर्गत ('पर्वतो वह्निमान्' सामान्य उदाहरण है) 5. अभियोग, आरोपपत्र । सम०—पत्रम् बंधपत्र, लिखित संविदापत्र, —भंगः प्रतिज्ञा का तोड़ देना,—विरोधः वचन के विरुद्ध आचरण करना,—विवाहित (वि०) जिसकी सगाई हो गई हो,—संन्यासः 1. वचन भंग करना, 2. (न्या० में) मूल प्रस्ताव का त्याग कर देना (इसी अर्थ में 'प्रतिज्ञा-हानि' शब्द भी प्रयुक्त होता है) ।

प्रतिज्ञात (भू० क० कृ०) [प्रति+ज्ञा+क्त] 1. उद्घोषित, उक्त, दृढ़ता पूर्वक कथित 2. वचनबद्ध, सहमत 3. माना हुआ, अंगीकृत—तम् वचन, वादा ।

प्रतिज्ञानम् [प्रति+ज्ञा+ल्युट्] । दृढोक्ति, प्रकथन 2. करार, वादा 3. मानना, स्वीकार करना ।

प्रतितरः [प्रति+तृ+अप्] डांड खेने वाला , मल्लाह या नाविक ।

प्रतिताली [प्रतिगता तालम्—प्रा० स० ङीप्] (दरवाजे की) कुंजी, चाबी ।

प्रतिदर्शनम् [प्रति+दृश्+ल्युट्] देखना, प्रत्यक्ष करना ।

प्रतिदानम् प्रति+दा+ल्युट्] । पलटाना. प्रत्यर्पण, वापिस देना, (धरोहर आदि की) पुनराप्ति 2. विनिमय, वस्तुओं की अदलावदली ।

प्रतिदारणम् [प्रति+दृ+णिच्+ल्युट्] 1. लड़ाई, युद्ध 2. फाड़ना ।

प्रतिदिवन् (पुं०)[प्रति+दिव्+कनिन्] 1. दिन 2. सूर्य ।

प्रतिदृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+दृश्+क्त] 1. देखा हुआ 2. दृष्टि गोचर, दृश्यमान ।

प्रतिधावनम् [प्रति+धाव+ल्युट्] धावा वोलना, हमला करना, आक्रमण करना ।

प्रतिध्वनिः, प्रतिध्वानः [प्रति+ध्वन्+इ, घञ् वा] गूंज, प्रतिध्वनन ।

प्रतिध्वस्त [भू० क० कृ०) [प्रति+ध्वंस्+क्त] पछाड़-कर नीचे गिराया हुआ, अधोमुख, खिन्न ।

प्रतिनन्दनम् [प्रति+नन्द्+ल्युट्] 1, वधाई देना, स्वागत करना 2. धन्यवाद देना ।

प्रतिनादः [प्रति+नद्+घञ्] गूंज, प्रतिध्वनि ।

प्रति (ती) नाहः [प्रति+नह+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] झंडा, पताका ।

प्रतिनिधिः [प्रति+नि+धा+कि] 1.स्थानापन्न, एवजी, वह व्यक्ति जो किसी दूसरे के बदले काम पर लगाया जाय—सोऽभवत्प्रतिनिधिर्न कर्मणा—रघु० ११।१३, १।८१, ४।५८, ५।६३, ९।४० 2. सहायक, प्रणिधि 3. स्थानापत्ति 4. जामिन 5. प्रतिमा, समानता, चित्र ।

प्रतिनियमः [प्रा० स०] सामान्य नियम ।

प्रतिनिर्जित (भू० क० कृ०) [प्रति+नि+जि+क्त] 1. पराजित, परास्त 2. निराकृत, निरस्त ।

प्रतिनिर्देश्य (वि०) [प्रति+निर्+दिश्+ण्यत्] जो पहला कहा हुआ होने पर भी फिर दोहराया जाय जिससे कि तत्संबंधी और कुछ भी फिर दोहराया जाय जिससे कि तत्संबंधी और कुछ भी कह दिया जाय —तु० काव्य० ७ में दिये गये उदाहरण की—उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च—(यहाँ 'ताम्र' शब्द की पुनरुक्ति यह बतलाने के लिए की गई कि सूर्य 'लाल' ही निकलता है, 'लाल' ही छिपता है) ।

प्रतिनिर्यातनम् [प्रति+निर्+यत् णिच्+ल्युट्] प्रति-शोध, प्रतिहिंसा ।

प्रतिनिविष्ट (वि०) [प्रति+नि+विश्+क्त] दुराग्रही, हठी, पक्का, जिद्दी । सम०—मूर्खः दुराग्रही बेवकूफ, पक्का बुद्धू—न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्—भर्तृ० २।५ ।

प्रतिनिवर्तनम् [प्रति+नि+वृत्+ल्युट्] 1. लौटाना, वापसी 2. मुड़ना ।

प्रतिनोदः [प्रति+नुद+घञ्] पीछे ढकेलना. पीछे हटाना ।

प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [प्रति+पद्+क्तिन्] 1. हासिल करना. अवाप्ति, उपलब्धि—चन्द्रलोकप्रतिपत्तिः, स्वर्ग० आदि 2. प्रत्यक्षज्ञान, अवेक्षण, चेतना, (यथार्थ) ज्ञान—वागर्थप्रतिपत्तये—रघु० १।१, तयोरभेद प्रतिपत्तिरस्ति मे—भर्तृ० ३।९९, गुणिनामपि निज रूपप्रतिपत्तिः परत एव संभवति—वास० 3. हामी भरना, आज्ञा पालन, स्वीकरण—प्रतिपत्तिपराङमुखी—भट्टि० ८।९५ (आज्ञानुपालन के विरुद्ध, यश में न आने वाला) 4. माल लेना, अभिस्वीकृति 5. दृढोक्ति, उक्ति 6. समारंभ, शुरु, उपक्रम 7. कार्यवाही, प्रगमन, क्रिया विधि—वयस्य का प्रतिपत्तिरत्र—मालवि० ४, कु० ५।४२, विषादलुप्त प्रतिपत्ति सैन्यम्—रघु० ३।४०, सेना जो क्या कार्यविधि अपनाई जाय इस बात को विषाद के कारण न जान सकी) 8. अनुष्ठान, करना, प्रगमन करना— प्रस्तुत प्रतिपत्तये—रघु० १५।७५ 9. दृढ़ संकल्प, निश्चित धारणा—व्यवसायः प्रतिपत्ति निष्ठुरः—रघु० ८।५५ 10. समाचार, गुप्त वार्ता कर्मसिद्धावाशु प्रतिपत्तिमानय—मुद्रा० ४, श० ६ 11. सम्मान, आदर, पूजनीयता का चिह्न, आदरयुक्त व्यवहार

—सामान्य प्रतिपत्ति पूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया —श० ४।१६, ७।१, रघु० १४।२२, १५।१२ 12. प्रणाली, उपाय 13. बुद्धि, प्रज्ञा 14. रिवाज, प्रयोग 15. उन्नति, तरक्की, उच्चपद प्राप्ति 16. यश, प्रसिद्धि, ख्याति 17. साहस, भरोसा, विश्वास 18. सम्प्रत्यय, प्रमाण। सम०—दक्ष (वि०) कार्य विधि का ज्ञाता,—पटहः एक प्रकार का नगाड़ा,—भेदः मतभेद, दृष्टिकोण में अन्तर,—विशारद (वि०) कार्यविधि से परिचित, कुशल, चतुर।

प्रतिपद् (स्त्री०) [प्रति+पद्+क्विप्] 1. पहुँच, प्रवेश, मार्ग 2. आरम्भ, शुरु 3. प्रज्ञा, बुद्धि 4. शुक्लपक्ष का पहला दिन 5. नगाड़ा। सम०—चन्द्रः (प्रतिपदा का) नया चाँद, (विशेष रूप से पूज्य)—प्रतिपच्चन्द्र-निभोयमात्मजः—रघु० ८।६५,—तूर्यम् एक प्रकार का नगाड़ा।

प्रतिपदा,—दी [प्रतिपद्+टाप्, ङीष् वा] शुक्लपक्ष का पहला दिन।

प्रतिपन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+पद्+क्त] 1. उपलब्ध, प्राप्त 2. किया गया, अनुष्ठित, कार्यान्वित, निष्पन्न 3. हाथ में लिया हुआ, आरब्ध 4. वचन दिया हुआ, लगा हुआ 5. सहमत, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ 6. ज्ञात समझा हुआ 7. जवाब दिया गया, उत्तर दिया गया 8. प्रमाणित, प्रदर्शित (प्रति पूर्वक 'पद्' देखो)।

प्रतिपादक (वि०) (स्त्री०—दिका) [प्रति+पद्+णिच्+ण्वुल्] 1. देने वाला, स्वीकार करने वाला, प्रदान करने वाला, समर्पित करने वाला 2. प्रदर्शित करने वाला, सहायता करने वाला, प्रमाणित करने वाला, स्थापित करने वाला 3. सोच-विचार करने वाला, व्याख्या करने वाला, सोदाहरण निरूपण करने वाला 4. उन्नत करने वाला, आगे बढ़ाने वाला, प्रगति करने वाला 5. प्रभावशाली, निष्पादन करने वाला।

प्रतिपादनम् [प्रति+पद्+णिच्+ल्युट्] 1. देना, स्वीकार करना, प्रदान करना 2. प्रदर्शन, प्रमाणन, स्थापन 3. अनुशीलन, व्याख्यान विस्तृत, रूप से प्रस्तुत करना, सोदाहरण निरूपण 4. कार्यान्विति, निष्पन्नता, पूर्णता 5. जन्म देना, पैदा करना 6. आवृत्ति, अभ्यास 7. आरम्भ।

प्रतिपादित (भू० क० कृ०) [प्रति+पद्+णिच्+क्त] 1. दिया हुआ, प्रदत्त, स्वीकृत, प्रस्तुत 2. स्थापित, प्रमाणित, प्रदर्शित 3. व्याख्यात, सविवरण प्रस्तुत 4. उद्घोषित, उक्त 3. जन्म दिया, पैदा किया।

प्रतिपालकः [प्रति+पाल्+णिच्+ण्वुल्] बचाने वाला, संरक्षक अभिभावक।

प्रतिपालनम् [प्रति+पाल्+णिच्+ल्युट्] संरक्षण, बचाना रक्षा करना, पालन करना, अभ्यास करना।

प्रतिपीडनम् [प्रति+पीड्+णिच्+ल्युट्] अत्याचार करना, सताना।

प्रतिपूजनम्,—पूजा [प्रति+पूज्+ल्युट्, प्रतिपूज्+अ+टाप्] 1. श्रद्धांजलि अर्पित करना, सम्मान प्रदर्शित करना 2. पारस्परिक अभिवादन, शिष्टाचार का विनिमय।

प्रतिपूरणम् [प्रति+पूर्+ल्युट्] 1. पूरा करना, भरना 2. (सुईदार पिचकारी द्वारा किसी तरल पदार्थ को) अन्तः क्षिप्त करना।

प्रतिप्रणामः [प्रति+प्र+नम्+घञ्] बदल में किया गया अभिवादन।

प्रतिप्रदानम् [प्रति+प्र+दा+ल्युट्] 1. वापिस करना, लौटाना 2. विवाह में देना।

प्रतिप्रयाणम् [प्रति+प्र+या+ल्युट्] वापसी, प्रत्यावर्तन।

प्रति प्रश्नः [प्रति+प्रच्छ्+नङ्] के बदले में पूछा गया प्रश्न 2. उत्तर।

प्रति प्रसवः [प्रति+प्र+सू+अप्] 1. प्रत्यपवाद, अपवाद का अपवाद (जहाँ अपवाद के अन्तर्गत उदाहरणों में ही सामान्य नियम का विधान प्रदर्शित किया जाय) —तृजकाभ्यां कर्तरि इत्यस्य प्रतिप्रसवोऽयम् (याजकादिभिश्च) सिद्धा०।

प्रति प्रहारः [प्रति+प्र+हृ+घञ्] बदल में प्रहार करना, थप्पड़ के बदले थप्पड़ लगाना।

प्रतिप्लवनम् [प्रति+प्लु+ल्युट्] पीछे की ओर कूदना।

प्रतिफलः प्रतिफलनम् [प्रति+फल्+अच्, प्रतिफल+ल्युट्] 1. परछाई, प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, छाया 2. पारिश्रमिक, प्रतिदान 3. प्रतिहिंसा, प्रतिशोध।

प्रतिफुल्लक (वि०) [प्रति+फुल्ल्+ण्वुल्] खिलने वाला, पूरा खिला हुआ।

प्रतिबद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+बंध्+क्त] 1. बांधा गया, बँधा हुआ, कसा हुआ 2. जोड़ा गया 3. अवरुद्ध, रुकावट डाली गई, बाधित 4. टंका हुआ, जड़ा हुआ —शि० ९।८ 5. समायुक्त, अधिकार में करने वाला 6. फंसा हुआ, अन्तर्ग्रस्त 7. दूर रक्खा हुआ 8. निराश 9. (दर्शन० में) अनिवार्य तथा अविच्छिन्न रूप से संयुक्त (जैसे आग और धुँआ)।

प्रतिबंधः [प्रति+बंध्+घञ्] 1. बंधन, बाँधना 2. अवरोध, रुकावट, विघ्न—सतपः प्रतिबंधमन्युना—रघु० ८।८०, महावी० ५।४ 3. विरोध, मुकाबला 4. आवरण, नाकेबंदी, घेरा 5. संबंध 2. (दर्शन० में) अनिवार्य तथा अविच्छिन्न संयोग।

प्रतिबंधक (वि०) (स्त्री०—धिका) [प्रति+बंध्+ण्वुल्] 1. बांधने वाला, जकड़ने वाला, 2. रुकावट डालने वाला, अवरोध करने वाला, विघ्नकारक 3.

मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला,—कः शाखा, अंकुर।

प्रतिबंधनम् [प्रति+बंध्+ल्युट्] 1. बाँधना, कसना 2. कैद, बंधन 3. अवरोध, रुकावट।

प्रतिबंधिः,—धी [प्रतिबन्ध्+इनि, प्रतिबन्ध+ङीष्] 1. आक्षेप 2. ऐसा तर्क जो विपक्ष पर समान रूप से प्रभाव डाले (इस अर्थ में 'प्रतिबन्दी' शब्द भी है)।

प्रतिबाधक (वि०) [प्रति+बाध्+ण्वुल्] 1. हटाने वाला, दूर करने वाला 2. रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला।

प्रतिबाधनम् [प्रति+बाध्+ल्युट्] हटाना, दूर करना, अस्वीकार करना।

प्रतिबिंबनम् [प्रतिबिम्ब+क्विप्+ल्युट्] 1. परछाईं 2. तुलना—दृष्टांतः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम् —काव्य० १०।

प्रतिबिंबित (वि०) [प्रतिबिंब+क्विप्+क्त] जिसकी परछाईं पड़ी हो, दर्पण में प्रतिफलित।

प्रतिबुद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+बुध्+क्त] 1. जागा हुआ, जगाया हुआ 2. पहचाना हुआ, देखा हुआ 3. प्रसिद्ध, विख्यात।

प्रतिबुद्धिः (स्त्री०) [प्रति+बुध्+क्तिन्] 1. जागरण 2. विरोधी अभिप्राय या इरादा।

प्रतिबोधः [प्रति+बुध्+घञ्] 1. जागना, जागरण, जगाया जाना—तदपोहितुमर्हसि प्रिये प्रतिबोधेन विषादमाशु मे—रघु० ८।५४, अप्रतिबोधशायिनी —५८, 'सदा के लिए सो जाने वाली'—कि० ६।१२, १२।४८ 2. प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी 3. अनुदेश, शिक्षण 4. तर्क, तर्कना, मनःशक्ति—किमुत याः प्रतिबोधवत्यः श० ५।२२।

प्रतिबोधनम् [प्रतिबुध्+णिच्+ल्युट्] 1. जगाना 2. शिक्षण, अनुदेश।

प्रतिबोधित (वि०) [प्रति+बुध्+णिच्+क्त] 1. जगाया हुआ 2. अनुदिष्ट, शिक्षित।

प्रतिभा [प्रति+भा+क+टाप्] 1. दर्शन, दृष्टि 2. प्रकाश, प्रभा 3. बुद्धि, समझ—कि० १६।१२, विक्रम० १।१८, २३ 4. मेधा, प्रखर बुद्धि, विशद कल्पना, प्रज्ञा (प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता) 5. प्रतिबिंब, परछाईं 6. धृष्टता, ढिठाई। सम०—अन्वित (वि०) 1. मेधावी, प्रज्ञावान् 2. बेधड़क, साहसी, —मुख (वि०) साहसी, दिलेर,—हानिः (स्त्री०) 1. अंधकार 2. प्रज्ञा या मेधा का अभाव।

प्रतिभात (भू० क० कृ०) [प्रति+भा+क्त] 1. उज्ज्वल, प्रभायुक्त 2. ज्ञात, अध्याहृत, अवगत।

प्रतिभानम् [प्रति+भा+ल्युट्] 1. प्रकाश, दीप्ति 2. बुद्धि या समझ, ज्ञान की चमक—हि० ३।१९ 3. हाजिर जवाबी,—प्रत्युत्पन्नमतित्व—कालावबोधः प्रतिभानवत्त्वम् —मा० ३।११, दमघोषसुतेन कश्चन प्रतिशिष्टः प्रतिभानवानथ—शि० १६।१।

प्रतिभावः [प्रति+भू+घञ्] तदनुरूप वृत्ति।

प्रतिभाषा [प्रति+भाष्+अ+टाप्] उत्तर, जवाब।

प्रतिभासः [प्रति+भास्+घञ्] 1. मन में स्फुरित होना, चमकना झलकना, (अकस्मात्) प्रतीति—वाच्य-वैचित्र्य प्रतिभासादेव—काव्य० १० 2. दृष्टि, दर्शन 3. भ्रम, माया।

प्रतिभासनम् [प्रति+भास्+ल्युट्] दृष्टि, दर्शन, झलक।

प्रतिभिन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+भिद्+क्त] 1. पार-विद्ध 2. सटा हुआ, जुड़ा हुआ 3. विभक्त।

प्रतिभूः [प्रति+भू+क्विप्] 1. जमानत, प्रतिभूति, जमानत देने वाला, (उत्तरदायी होने का प्रमाणपत्र), विश्वास,—सौभाग्यलाभप्रतिभूः पदानाम्—विक्रम० १।९—याज्ञ० २।१०, ५०, नै० १४।४।

प्रतिभेदनम् [प्रति+भिद्+ल्युट्] 1. आर पार बींधना, घुसेड़ना 2. काटना, खण्डित करना, फाड़ना 3. (आँख) निकाल लेना 4. विभक्त करना।

प्रतिभोगः [प्रति+भुज्+घञ्] उपभोग।

प्रतिमा [प्रति+मा+अङ+टाप्] 1. प्रतिबिंब, समानता, प्रतिमा, आकृति, बुत—रघु० १६।३९ 2. समरूपता, सादृश्य (प्रायः समास में गुरोः कृशानुप्रतिमात् —रघु० २।४९ 3. परछाईं, प्रतिबिंब—मुखमिंदु-रुज्ज्वलकपोलमतः प्रतिमाच्छलेन सुदृशामविशत्—शि० ९।४८, ७३, रघु० ७।६४, १२।१०० 4. माप, विस्तार 5. दोनों दांतों के बीच का हाथी के सिर का भाग। सम०—गत (वि०) मूर्ति में वर्तमान,—चंद्रः प्रति-बिंबित चन्द्रमा, चन्द्रमा का प्रतिबिंब—रघु० १०।६५, इसी प्रकार—प्रतिमेंदुः, प्रतिमाशशांकः,—परिचारकः पुजारी, मूर्ति का सेवक।

प्रतिमानम् [प्रति+मा+ल्युट्] 1. नमूना, प्रतिमूर्ति 2. प्रतिमा, मूर्ति 3. समानता, उपमा, समरूपता 4. बोझ 5. दांतों का मध्यवर्ती सिर का भाग-पृथुप्रतिमानभाग —, शि० ५।३६ 6. परछाईं।

प्रतिमुक्त (वि०) [प्रति+मुच्+क्त] 1. धारण किया हुआ, पहना हुआ, प्रयुक्त किया हुआ 2. कसा हुआ, बाँधा हुआ, जकड़ा हुआ 3. शास्त्र से सज्जित, हथियारबंद 4. मुक्त, छोड़ा हुआ 5. लौटाया हुआ, वापिस किया हुआ 6. फेंका हुआ, उछाला हुआ (दे० प्रतिपूर्वक 'मुच्')।

प्रतिमोक्षः, प्रतिमोक्षणम् [प्रति+मोक्ष्+घञ्, ल्युट् वा] मुक्ति, छुटकारा।

प्रतिमोचनम् [प्रति+मुच्+ल्युट्] 1. शिथिल करना 2. प्रतिशोध, प्रतिहिंसा, प्रतिदान—वैरप्रतिमोचनाय —रघु० १४।४१ 3. मुक्ति, छुटकारा।

प्रतियत्नः [प्रति+यत्+नङ्] 1. प्रयास, उद्योग, चेष्टा 2. तैयारी, परिश्रम द्वारा सम्पादन—शि० ३।५४ 3. पूर्ण या पूरा करना 4. नया गुण सिखाना—सतो गुणांतराधानं प्रतियत्नः—पा० २।३।५३ पर काशिका 5. अभिलाषा, इच्छा 6. विरोध, मुक़ाबला 7. प्रतिहिंसा, प्रतिशोध, बदला 8. बंदी बनाना, क़ैद करना 9. अनुग्रह ।

प्रतियातनम् [प्रति+यत्+णिच्+ल्युट्] प्रतिशोध, प्रतिहिंसा—जैसा कि 'वैरप्रतियातन' में ।

प्रतियातना [प्रति+यत्+णिन्+युच्+टाप्] चित्र, प्रतिमा, मूर्ति—शि० ३।३४ ।

प्रतियानम् [प्रति+या+ल्युट्] लौटना, प्रत्यावर्तन, वापसी ।

प्रतियोगः [प्रति+युज्+घञ्] 1. किसी वस्तु का प्रतिरूप होना या बनाना 2. विरोध, मुक़ाबला 3. अन्तर्विरोध, वचनविरोध 4. सहयोग 5. विषनिवारक औषधि, उपचार ।

प्रतियोगिन् (वि०) [प्रति+युज्+घिनुण्] 1. विरोध करने वाला, प्रतीकारक, बाधक 2. संबद्ध या तदनुरूप, किसी वस्तु का प्रतिरूप बनाने वाला, प्रायः न्यायविषयक रचनाओं में प्रयुक्त 3. सहयोग करने वाला—(पुं०) 1. विरोधी, विपक्षी, शत्रु—दहत्यशेषं प्रतियोगिगर्वं—विक्रम० १।११७ 2. प्रतिरूप, जोड़ का ।

प्रतियोद्धृ (पुं०) **प्रतियोधः** [प्रति+युध्+तृच्, घञ् वा] शत्रु, विपक्षी ।

प्रतिरक्षणम्,—रक्षा [प्रति+रक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् वा] बचाव, संधारण, रक्षा ।

प्रतिरंभः [प्रति+रंभ्+घञ्] क्रोध, रोष ।

प्रतिरवः [प्रति+रु+अच्] 1. कलह, झगड़ा 2 गूंज, प्रतिध्वनि ।

प्रतिरुद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+रुध्+क्त] 1. अवरुद्ध, बाधित, विघ्नयुक्त 2. रुका हुआ, अन्तरित 3. क्षतियुक्त 4. विकलीकृत 5. वेष्टित, घेरा डाला हुआ ।

प्रतिरोधः [प्रति+रुध्+घञ्] 1. अटकाव, रुकावट, विघ्न 2. घेरा, नाकेबंदी 3. विपक्षी 4. छिपाना 5. चोरी, डकैती 6. निन्दा, घृणा ।

प्रतिरोधकः, प्रतिरोधिन् (पुं०) [प्रति+रुध्+ण्वुल्, णिनि वा] 1. विपक्षी 2. लुटेरा, चोर—मालवि० ५।१० 3. रुकावट ।

प्रतिरोधनम् [प्रति+रुध्+ल्युट्] विरोध करना, रुकावट डालना ।

प्रतिलंभः [प्रति+लम्भ्+घञ्] 1. हासिल करना, प्राप्त करना, ग्रहण करना 2. निन्दा, गाली, खरीखोटी (सुनाना) ।

प्रतिलाभः [प्रति+लभ्+घञ्] वापिस लेना, ग्रहण करना, हासिल करना ।

प्रतिवचनम्, प्रतिवचस् (नपुं०) **प्रतिवाच्** (स्त्री०) **प्रतिवाक्यम्** [प्रति+वच्+ल्युट्, वच्+णिच्+क्विप्] उत्तर, जवाब—प्रतिवाचमदत्त केशवः शपमानाय न चेदिभूभुजे—शि० १६।२५, परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्—श० ४।९ ।

प्रतिवर्तनम् [प्रति+वृत्+ल्युट्] लौटाना, वापिस करना ।

प्रतिवसथः [प्रति+वस्—अथच्] ग्राम, गाँव ।

प्रतिवहनम् [प्रति+वह्+ल्युट्] वापिस ले जाना, वापिस ले जाने में नेतृत्व करना ।

प्रतिवादः [प्रति—वद्+घञ्] 1. उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब 2. इंकार करना, अस्वीकृति ।

प्रतिवादिन् (पुं०) [प्रति+वद्+णिनि] 1. विपक्षी 2. प्रतिपक्षी उत्तरवादी (कानून में) ।

प्रतिवारः, प्रतिवारणम् [प्रति+वृ+घञ्, प्रति+वृ+णिच्+ल्युट्] परे रखना, दूर रखना ।

प्रतिवार्ता [प्रा० स०] वर्णन, सूचना, समाचार, संवाद ।

प्रतिवासिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रति+वस्+णिनि] निकट रहने वाला, पड़ोस में रहने वाला—पुं० पड़ौसी ।

प्रतिविघातः [प्रति+वि+हन्+घञ्] प्रहार के बदले प्रहार करना, बचाव ।

प्रतिविधानम् [प्रति+वि+धा+ल्युट्] 1. प्रतिकार करना, विरोध में काम करना, विफल करना, विरुद्ध कार्य करना 2. व्यवस्था, क्रम 3. रोक थाम 4. स्थानापन्न संस्कार, सहकारी संस्कार ।

प्रतिविधिः [प्रति+वि+धा+कि] 1. प्रतिशोध 2. उपचार, प्रतिक्रिया के उपाय ।

प्रतिविशिष्ट (वि०) [प्रति+वि+शास्+क्त] अत्यन्त श्रेष्ठ ।

प्रतिवेशः [प्रति+विश्+घञ्] 1. पड़ोसी 2. पड़ौसी का वासस्थान, पड़ौस । सम०—**वासिन्** (वि०) पड़ौस में रहने वाला (पुं०) पड़ौसी ।

प्रतिवेशिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रतिवेश+इनि] पड़ौसी—दृष्टि हे प्रतिवेशिनि क्षणमिहाप्यस्मद्गृहे दास्यसि—सा० दा०, मृच्छ० ३।१४ ।

प्रतिवेश्यः [प्रति+विश्+ण्यत्] पड़ौसी ।

प्रतिवेष्टित (भू० क० कृ०) [प्रति+वेष्ट्+क्त] प्रत्यावृत्त विपर्यस्त, पीछे की ओर मुड़ा हुआ ।

प्रतिव्यूढ (भू० क० कृ०) [प्रति+वि+ऊह्+क्त] संग्राम—व्यूह रचना में परास्त ।

प्रतिव्यूहः [प्रति+वि+ऊह्+घञ्] 1. शत्रु के विरुद्ध सेना की व्यूह रचना 2. समुच्चय, संग्रह ।

प्रतिशमः [प्रति+शम्+घञ्] विश्राम, विराम ।

प्रतिशयनम् [प्रति+शी+ल्युट्] किसी अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति के लिए अनशन करके देवता के सामने पड़े रहना, धरना देना ।

प्रतिशयित (वि०) [प्रति+शी+क्त] अपने किसी अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति के लिए बिना खाये पीये देवता के सामने धरना देने वाला—अनया च किलास्मै प्रतिशयिताय स्वप्ने समादिष्टम्—दश० १२१।

प्रतिशापः [प्रति+शप्+घञ्] शाप के बदले शाप, बदले में शाप।

प्रतिशासनम् [प्रति+शास्+ल्युट्] 1. आदेश देना, दूत के रूप में भेजना, आज्ञा देना 2. किसी दूत को बाहर से बुला भेजना 3. वापस बुलाना 4. विरोधी आदेश, अविकृत कथन —अप्रतिशासनं जगत्—रघु० ८।२७. (पूर्ण रूप से एक ही शासक के शासन में)।

प्रतिशिष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+शास् क्त] 1. आदिष्ट, प्रेषित शि० १६।१ 2. विसर्जित किया हुआ, अस्वीकृत 3. विख्यात, प्रसिद्ध।

प्रतिश्या, प्रतिश्यानम्, प्रतिश्यायः [प्रति+श्यै+क+टाप्, ल्युट्, ण वा] जुकाम, सर्दी।

प्रतिश्रयः [प्रति+श्रि+अच्] शरणगृह, आश्रम 2. घर, आवासस्थान, निवासस्थल—याज्ञ० १।२१० मनु० १०।५१ 3. सभा 4. यज्ञ भवन 5. मदद, सहायता 6. प्रतिज्ञा।

प्रतिश्रवः [प्रति+श्रु+अप्] 1, स्वीकृति, सहमति, प्रतिज्ञा 2. गूंज।

प्रतिश्रवणम् [प्रति+श्रु+ल्युट्] 1. ध्यान पूर्वक सुनना मनु० २।१९५ 2. वचन देना, हामी भरना, सहमत होना 3. प्रतिज्ञा।

प्रतिश्रुत्, प्रतिश्रुतिः (स्त्री०) [प्रति+श्रु+क्विप्, क्तिन् वा] 1. प्रतिज्ञा 2. गूंज, प्रतिध्वनि रघु० १३।४०, १६।३१, शि० १७।४२।

प्रतिश्रुत (भू० क० कृ०) [प्रति+श्रु+क्त] वचन दिया हुआ, सहमत, हामी भरी हुई।

प्रतिषिद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+सिध्+क्त] 1. निषिद्ध, वर्जित, अननुमत, अस्वीकृत 2. खण्डित, प्रत्युक्त।

प्रतिषेधः [प्रति+सिध्+घञ्] 1. दूर रखना, परे हटाना, हांक कर दूर कर देना, निकाल देना —विक्रम० १।८ 2. प्रतिषेध यथा 'शास्त्रप्रतिषेधः' में 3. मुकरना, अस्वीकृति 4. निषेध करना, विरुद्ध कथन। सम० अक्षरम्, उक्तिः (स्त्री०) मुकर जाने के शब्द, अस्वीकृति श० ३।२५, उपमा दण्डि द्वारा वर्णित उपमा का एक भेद, इसकी परिभाषा न जातु शक्तिरिन्दोस्ते मुखेन प्रतिगर्जितुम्, कलंकिनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैव सा काव्या० २।३४।

प्रतिषेधक, प्रतिषेद्धृ (वि०) [प्रति+सिध्+ण्वुल्, तृच् वा] 1. हटाने वाला, निषेध करने वाला, रोकने वाला 2. मना करने वाला —(पुं०) विघ्नकारक, निवारक।

प्रतिषेधनम् [प्रति+सिध्+ल्युट्] 1. दूर रखना, परे हटाना, रोकना 2. निवारण करना 3. मुकरना, अस्वीकृति।

प्रतिष्कः, प्रतिष्कसः [प्रति+स्कंद्+ड, प्रति+कस्+अच्, सुट्] जासूस, संदेशवाहक, दूत।

प्रतिष्कशः [प्रति+कश्+अच्, सुट्] 1. भेदिया, दूत 2. चाबुक, हंटर।

प्रतिष्कषः [प्रति+कष्+अच्, सुट्] चाबुक, चमड़े का कोड़ा।

प्रतिष्टंभः [प्रति+स्तंभ्+घञ्, षत्व] अवरोध, रुकावट, मुकाबला, विरोध, विघ्न—बाहुप्रतिष्टंभविवृद्धमन्युः —रघु० २।३२, ५९।

प्रतिष्ठा [प्रति+स्था+अङ्+टाप्] 1. ठहरना, रहना, स्थिति, अवस्था—अपौरुषेयप्रतिष्ठम्—मा० ९, श० ७।६ 2. घर, निवासस्थान, जन्मभूमि, आवास—रघु० ६।२१, १४।५ 3. स्थैर्य, स्थिरता, दृढ़ता, स्थायिता, दृढाधार—अप्रतिष्ठे रघुज्येष्ठे का प्रतिष्ठा कुलस्य नः—उत्तर० ५।२५, अत्र खलु मे वंशप्रतिष्ठा—श० ७, वंशः प्रतिष्ठां नीतः का० २८०, शि० २।३४ 4. आधार, नींव, ठिकाना—जैसा कि 'गृहप्रतिष्ठा' में 5. पाया, टेक, सहारा (अतः) कीर्तिभाजन, विश्रुत अलंकार—त्यक्ता मया नाम कुलप्रतिष्ठा- श० ६। २४, द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य नः ३।२१, कु० ७।२७, महावी० ७।२१ 6. उच्चपद, प्रमुखता, उच्च अधिकार —मुद्रा० २।५ 7. ख्याति, यश, कीर्ति, प्रसिद्धि—मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः—रामा० (=उत्तर० २।५) 8. संस्थापना, प्रतिष्ठापन मुद्रा० १।१४ 9. अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति, निष्पत्ति, (इच्छा की) पूर्ति औत्सुक्यमात्रमवसादयति प्रतिष्ठा—श० ५।६ 10. शांति, विश्राम, विश्रान्ति 11. आधार 12. पृथिवी 13. किसी देवप्रतिमा की स्थापना 14. सीमा, हद।

प्रतिष्ठानम् [प्रति+स्था+ल्युट्] 1. आधार, नींव 2. ठिकाना, स्थिति, अवस्था 3. टाँग, पैर 4. गंगा यमुना के संगम पर स्थित एक नगर जो चन्द्रवंश के आदिकालीन राजाओं की राजधानी था—तु० विक्रम० २।५ 5. गोदावरी पर स्थित एक नगर का नाम।

प्रतिष्ठित (भू० क० कृ०) [प्रति+स्था+क्त] 1. जमाया हुआ खड़ा किया हुआ 2. स्थिर किया हुआ, स्थापित किया हुआ 3. रक्खा हुआ, अवस्थित 4. संस्थापित, प्रतिष्ठापित, अभिमंत्रित 5. पूर्ण, कार्यान्वित 6. क़ीमती, मूल्यवान् 7. विख्यात, प्रसिद्ध (दे० प्रति पूर्वक स्था)।

प्रतिसंविद् (स्त्री०) [प्रति+सम्+विद्+क्विप्] किसी वस्तु के विवरण का यथार्थ ज्ञान।

प्रतिसंहारः [प्रति+सम्+हृ+घञ्] 1. पीछे ले जाना,

वापिस हटाना 2. अल्पता, संपीडन 3. धारणा शक्ति, समावेश 4. परित्यक्त करना, छोड़ना ।

प्रतिसंहृत (भू० क० कृ०) [प्रति+सम्+हृ+क्त] 1. वापिस लिया हुआ, पीछे को खींचा हुआ, एष प्रतिसंहृतः—श० १ 2. सम्मिलित करना, अन्तर्गत करना 3. संपीडित ।

प्रतिसंक्रमः [प्रति+सम्+क्रम्+घञ्] 1. पुनश्चूषण 2. प्रतिच्छाया, परछाईं ।

प्रतिसंख्या [प्रति+सम्+ख्या+अङ्+टाप्] चेतना ।

प्रतिसंचरः प्रति+सम्+चर्+ट] 1. पीछे मुड़ना 2. पुनश्चूषण 3. विशेषतः विराट् जगत् का फिर प्रकृति के रूप में लीन हो जाना ।

प्रतिसंदेशः [प्रति+सम्+दिश्+घञ्] संदेश का जवाब, संदेश के बदले संदेश ।

प्रतिसंधानम् [प्रति+सम्+धा+ल्युट्] 1. एक स्थान पर मिलना, एकत्र होना 2. दो युगों का मध्यवर्ती संक्रमणकाल 3. उपाय, उपचार 4. आत्मनियंत्रण, आत्म दमन 5. प्रशंसा ।

प्रतिसंधिः [प्रति+सम्+धा+कि] 1. पुनर्मिलन 2. गर्भाशय में प्रवेशकरण 3. दो युगों का मध्यवर्ती संक्रमण काल 4. विराम, उपरम ।

प्रतिसमाधानम् [प्रति–सम्+आ+धा+ल्युट्] चिकित्सा, उपचार ।

प्रतिसमासनम् [प्रति+सम्+आ+अस्+ल्युट्] 1. सामना होना, जोड़ का होना 2. मुकाबला करना, विरोध करना, टक्कर लेना ।

प्रतिसरः,—रम् [प्रति+सृ+अच्] कलाई या गरदन मे पहनने का तावीज,—रः 1. सेवक, अनुचर 2. कड़ा, विवाह-कंकण स्रस्तोरगप्रतिसरेण करेण पाणिः (अगृह्यत)—कि० ५।३३ (=कौतुकसूत्र=मल्लि०) 3. पुष्पमाला या हार 4. प्रभात काल 5. सेना का पृष्ठभाग 6. एक प्रकार का जादू 7. घाव का पुरना, या घाव पर पट्टी बांधना ।

प्रतिसर्गः [प्रति+सृज्+घञ्] 1. गौण रचना (जैसा कि ब्रह्मा के मानस पुत्रों द्वारा) 2. विघटन, प्रलय ।

प्रतिसांधानिकः [प्रतिसंधान+ठक्] भाट, चारण, बंदी ।

प्रतिसारणम् [प्रति+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. घाव के किनारों की मल्हमपट्टी करना 2. घाव में मल्हम लगाने का उपकरण ।

प्रतिसीरा [प्रति+सि+क्रन्+टाप्, दीर्घः] परदा, चिक, कनात ।

प्रतिसृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+सृज्+क्त] 1. भेजा गया, प्रेषित 2. प्रसिद्ध 3. पीछे ढकेला गया, अस्वीकृत 4. नशे में चूर (धरणि के अनुसार 'प्रमत्त') ।

प्रतिस्नात (भू० क० कृ०) [प्रति+स्ना+क्त] स्नान किया हुआ ।

प्रतिस्नेहः [प्रा० स०] बदले में प्यार, प्रतिप्रेम या बदले में किया गया प्रेम ।

प्रतिस्पंदनम् [प्रा० स०] हृदय की धड़कन ।

प्रतिस्वनः, प्रतिस्वरः [प्रा० स०] गूंज, प्रतिध्वनि—शि० १३।३१ ।

प्रतिहत (भू० क० कृ०) [प्रति+हन्+क्त] 1. उलटा मारा हुआ, पछाड़ा हुआ 2. भगाया हुआ, दूर किया हुआ, पीछे ढकेला हुआ 3. विरोध किया हुआ, अवरुद्ध 4. भेजा हुआ, प्रेषित 5. घृणित, नापसंद 6. हताश, भग्नाश । सम०—**मति** (वि०) घृणा करने वाला, नापसंद करने वाला ।

प्रतिहतिः (स्त्री०) [प्रति+हन्+क्तिन्] 1. उलटकर प्रहार करना, पछाड़ना, ढकेलना 2. पलट पड़ना, परावर्तन—प्रतिहर्ति ययुरर्जुनमुष्टयः—कि० १८।५, शि० ९।४९ 3. नाउम्मीदी, भग्नाशा 4. क्रोध ।

प्रतिहननम् [प्रति+हन्+ल्युट्] उलट कर प्रहार करना, पछाड़ देना, पलट कर मारना, आघात के बदले आघात करना ।

प्रतिहर्तृ (पुं०) [प्रति+हृ+तृच्] पछाड़ने वाला, हटाने वाला, पीछे धकेलने वाला, दूर करने वाला ।

प्रति (ती) हारः [प्रति+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घः] 1. उलट कर प्रहार करना 2. दरवाजा, फाटक 3. दरबान, द्वारपाल 4. जादूगर 5. ऐन्द्रजालिक, जादूभरी चाल । सम०—**भूमिः** (स्त्री०) (घर की) देहली—कु० ३।५८,—**रक्षी** स्त्री द्वारपाल, प्रतिहारी —रघु० ६।२० ।

प्रतिहारकः [प्रति+हृ+ण्वुल्] ऐन्द्रजालिक, जादूगर ।

प्रतिहासः [प्रति+हस्+घञ्] हंसी के बदली हंसी ।

प्रतिहिंसा [प्रति+हिंस्+अ+टाप्] प्रतिशोध, बदला ।

प्रतिहित (भू० क० कृ०) [प्रति+धा+क्त] साथ जड़ा गया, साथ सटा दिया गया ।

प्रतीक (वि०) [प्रति+कन्, नि० दीर्घः] 1. की ओर मुड़ा हुआ 2. विपर्यस्त, उलटा 3. विरुद्ध, प्रतिकूल, विपरीत,—कः 1. अवयव, अंग—शि० १८।७९ 2. भाग, अंग,—**कम्** 1. प्रतिमा 2. मुंह, चेहरा 3. (किसी वस्तु का) अग्रभाग 4. (किसी श्लोक या वाक्य का) प्रथम शब्द ।

प्रतीक्षणम्, प्रतीक्षा [प्रति+ईक्ष्+ल्युट्, प्रति+ईक्ष्+अङ+टाप्] 1. इंतजार करना 2. अपेक्षा, आशा 3. ख्याल, विचार, ध्यान ।

प्रतीक्षित (भू० क० कृ०) [प्रति+उक्ष्+क्त] 1. जिसकी इंतजार की गई, अपेक्षा की गई 2. विचार किया गया ।

प्रतीक्ष्य (सं० कृ०) [प्रति+ईक्ष्+ण्यत्] 1. प्रतीक्षा किये जाने योग्य 2. ख्याल या विचार के योग्य 3. श्रद्धेय, आदरणीय—रघु० ५।१४, शि० २।१०८ 4. अनुसरणीय, प्रतिपालनीय, परिपूरणीय—शि० २।१८० ।

प्रतीची [प्रति+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] पश्चिम दिशा ।

प्रतीचीन (वि०) [प्रत्यञ्च्+ख, नलोपो दीर्घश्च] 1. पश्चिमी, पाश्चात्य 2. भावी, परवर्ती, अनुवर्ती ।

प्रतीच्छकः [प्रतिगता इच्छा यस्य प्रा० ब०, कप्] ग्रहण करने वाला ।

प्रतीच्य (वि०) [प्रतीची+यत्] पश्चिम में रहने वाला पछाहीं, पाश्चात्यदेशवासी ।

प्रतीत (भू० क० कृ०) [प्रति+इ+क्त] 1. प्रस्थित, प्रयात 2. गुजरा हुआ, बीता हुआ, गया हुआ 3. विश्वस्त, भरोसे का 4. प्रमाणित, संस्थापित 5. स्वीकृत, माना हुआ 6. पुकारा गया, ज्ञात, नामक —सोऽयं वटः श्याम इति प्रतीतः—रघु० १३।५३ 7. विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध 8. दृढ़संकल्पयुक्त 9. विश्वास करने वाला, भरोसा रखने वाला, विश्रब्ध 10. प्रसन्न, खुश—रघु० ३।१२, ५।२६, १४।४७, १६।२३ 11. प्रतिष्ठित 12. चतुर, विद्वान्, बुद्धिमान् ।

प्रतीतिः (स्त्री०) [प्रति+इ+क्तिन्] 1. धारणा, निश्चित भरोसा—श० ७।३१ 2. विश्वास 3. ज्ञान, निश्चय, स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान या समझ – अपितु वाच्यवैचित्र्य प्रतिभासादेव चारुताप्रतीतिः—काव्य० १० 4. यश, कीर्ति 5. आदर 6. खुशी ।

प्रतीत्त (वि०) [प्रति+दा+क्त] वापिस दिया हुआ, लौटाया हुआ ।

प्रतीन्धक (पुं०) विदेह देश का नाम ।

प्रतीप (वि०) [प्रतिगताः आपो यत्र, प्रति+अप्+अच्, अपईप् च] 1. विरुद्ध, प्रतिकूल, विपरीत, विरोधी —तत्प्रतीपपवनादि वैकृतं—रघु० ११।६२ 2. उलटा, विपर्यस्त, बिगड़ा हुआ 3. पिछड़ा हुआ, प्रतिगामी 4. अरुचिकर, अप्रिय 5. अड़ियल, आज्ञा का उल्लंघन करने वाला, हठी, दुराग्रही—पंच० १।४२४ 6. विघ्नकारी,—पः एक राजा का नाम, महाराज शान्तनु के पिता तथा भीष्म के पितामह का नाम, —पम् एक अलंकार का नाम जिसमें तुलना के सामान्य रूप को बदल कर उपमान की उपमेय से तुलना करते हैं—प्रतीपमुपमानस्याप्युपमेयत्वकल्पनम्, त्वल्लोचनसमं पद्मं त्वद्वक्त्रसदृशो विधुः—चन्द्रा० ५।९ (और अधिक विवरण तथा परिभाषा की जानकारी के लिए काव्य० १० में वर्णित 'प्रतीप' के अन्तर्गत दे०,—पम् (अव्य०) 1. इसके विपरीत 2. विपरीत क्रमानुसार 3. के विरुद्ध, के विरोध में—भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः—श० ४।१८ । सम० —ग (वि०) 1. विरुद्ध चलने वाला 2. विपरीत, प्रतिकूल—रघु० ११।५८,—गमनम्,-गतिः (स्त्री०) उलटा चलना—कु० २।२५,—तरणम् धार के विरुद्ध जाना या नाव चलाना, वि० १।५,—दर्शिनी स्त्री, —वचनम् 1. खण्डन 2. दुराग्रहपूर्ण या टालमटोल करने वाला कहने का ढंग,—विपाकिन् वि०) विपरीत फलदायक (कर्ता पर ही उलटा फल रखने वाला) —मा० ५।२६ ।

प्रतीरम् [प्र+तीर्+क] तट, किनारा ।

प्रतीवापः [प्रति+वप्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. (वह औषधि जो काढ़े आदि में) जोड़ी जाय या मिलायी जाय 2. धातु को भस्म करना या पिघलाना 3. छूत की बीमारी, महामारी ।

प्रतीवेशः, **प्रतीहारः**, **प्रतीहासः** [प्रति+विश्—हृ—हस् +घञ्] दे० प्रतिवेश आदि ।

प्रतीवेशिन् (वि०) [प्रतीवेश+इनि] दे० प्रतिवेशिन् ।

प्रतीहारी [प्रतीहार+अच्+ङीष्] 1. स्त्री द्वारपाल 2. ड्योढ़ीवान ।

प्रतुदः [प्र+तुद्+क] 1. पक्षियों की एक जाति (बाज, तोता, कौवा आदि) 2. चुभोने का उपकरण ।

प्रतुष्टिः (स्त्री०) [प्र+तुष्+क्तिन्] तृप्ति, सन्तोष ।

प्रतोदः [प्र+तुद्+घञ्] 1. अङ्कुश 2. लम्बा चाबुक 3. चुभोने वाला उपकरण ।

प्रतूर्ण (वि०) [प्र+त्वर्+क्त] त्वरित, क्षिप्रगामी, फुर्तीला, तेज ।

प्रतोली [प्र+तुल्+घञ्+ङीष्] गली, मुख्य मार्ग, नगर की मुख्य सड़क—प्रापत्प्रतोलीमतुलप्रतापः —शि० ३।६४

प्रत्त (भू० क० कृ०) [प्र+दा+क्त] 1. दिया हुआ, प्रदत्त, प्रदान किया हुआ, प्रस्तुत किया हुआ 2. विवाह में दिया हुआ, विवाहित ।

प्रत्न (वि०) [प्र+त्नप्] 1. पुराना, प्राचीन 2. पहला 3. परम्परा प्राप्त, प्रथागत ।

प्रत्यक् (अव्य०) [प्रति+अञ्च्+क्विन्] 1. विरुद्ध दिशा में, पीछे की ओर 2. के विरुद्ध 3. (अपा० के साथ) से पश्चिम में 4. भीतर की ओर, अन्तर की तरफ 5. पहले समय में ।

प्रत्यक्ष (वि०) [अक्ष्णः प्रति] 1. दृष्टिगोचर, दृश्य —प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः —श० १।१ 2. उपस्थित, दृष्टिगत, आँख के सामने 3. इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियसंज्ञेय 4. स्पष्ट, विशद, साफ़ 5. सीधा, व्यवधानशून्य 6. सुस्पष्ट, सुव्यक्त 7. शारीरिक, भौतिक, - क्षम् 1. प्रत्यक्षज्ञान, आँखों देखा साक्ष्य, इन्द्रियों द्वारा बोध, एक प्रकार का प्रमाण

--इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानम् प्रत्यक्षम्—तर्क० 2. सुव्यक्तता, सुस्पष्टता (प्रत्यक्षम्, प्रत्यक्षेण, प्रत्यक्षतः, या प्रत्यक्षात् रूप क्रियाविशेषण की भांति प्रयुक्त किये जाकर निम्न अर्थ प्रकट करते हैं—1. सामने, की उपस्थिति में, की दृष्टि में 2. खुलकर, सार्वजनिक रूप से 3. सीधे, अव्यवहित रूप से 4. व्यक्तिगत रूप से 5. देखकर 6. स्पष्ट रूप से। सम० --ज्ञानम् आँखों देखी गवाही, सीधा इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान,—दर्शनः-दर्शिन् (वि०) आँखों देखा गवाह, --दृष्ट (वि०) स्वयं देखा हुआ,—प्रमा सही ज्ञान या वह जानकारी जो सीधे ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त की जाय,—प्रमाणम् आँखों से देखा सबूत, स्वयं ज्ञानेन्द्रियों का साक्षी होना,—फल (वि०) स्पष्ट और दृश्य फलों के रखने वाला,—वादिन् (पुं०) वह बौद्ध जो प्रत्यक्ष प्रमाण (आँखों देखी बात) के अतिरिक्त और किसी प्रमाण को न मानता हो,—विहित (वि०) सीधा और स्पष्ट विधान किया हुआ।

प्रत्यक्षिन् (पुं०) [प्रत्यक्ष+इनि] आँखों देखा गवाह, प्रत्यक्ष द्रष्टा।

प्रत्यग्र (वि०) [प्रतिगतम् अग्रम् श्रेष्ठं यस्य--प्रा० ब०] 1. ताजा, नया, नूतन, अभिनव—प्रत्यग्रहतानां मासं —वेणी० ३, कुसुमशयनं न प्रत्यग्रम्—विक्रम० ३।१० मेघ० ४, रघु० १०।५४, रत्न० १।२१ 2. दोहराया हुआ 3. विशुद्ध। सम०—वयस् (वि०) अल्पवयस्क, जीवन की परिपक्वावस्था में, तरुण।

प्रत्यंच् (वि०) (स्त्री०—प्रतीची, वोपदेव के मतानुसार —प्रत्यंची) [प्रति+अञ्च्+क्विन्] 1. की ओर मुड़ा हुआ 2. पश्चवर्ती 3. अनुवर्ती, भावी 4. परे किया हुआ, हटाया हुआ 4. पाश्चात्य, पश्चिम दिशा का। सम०—अक्षम् (प्रत्यगक्षम्) आन्तरिक अवयव, —आत्मन् (पुं०) प्रत्यगात्मन्) वैयक्तिक जीव, आत्मा,—आशापतिः (प्रत्यगाशापतिः) पश्चिम दिशा का स्वामी, वरुण का विशेषण,—उदच् (स्त्री०) प्रत्यगुदच्) उत्तर पश्चिमी, दक्षिणतः (अव्य० प्रत्यग्दक्षिणतः) दक्षिणपश्चिम की ओर —दृश् (स्त्री०) (प्रत्यग्दृश्) आन्तरिक झांकी, अन्तर्दृष्टि,—मुख (वि०) (प्रत्यङ्मुख) 1. पश्चिमाभिमुखी 2. मुँह मोड़े हुए, स्रोतम् (वि०) (प्रत्यक्स्रोतस्) पश्चिम की ओर बहने वाला —शि० ४।६६ पर मल्लि०, (स्त्री०) नर्मदा नदी का विशेषण।

प्रत्यंचित (वि०) [प्रति+अञ्च्+क्त] सम्मानित, पूजित, अचित।

प्रत्यदनम् [प्रति+अद्+ल्युट्] 1. भोजन करना 2. भोजन।

प्रत्यभिज्ञा [प्रति+अभि+ज्ञा+अङ्+टाप्] जानना, पहचानना—सप्रत्यभिज्ञमिव मामवलोक्य—मा० १।२५।

प्रत्यभिज्ञानम् [प्रति+अभि+ज्ञा+ल्युट्] 1. पहचानना —प्रत्यभिज्ञानरत्नं च रामायादर्शयत्कृती—रघु० १२।६४।

प्रत्यभिज्ञात (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+ज्ञा+क्त] पहचाना हुआ।

प्रत्यभिभूत (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+भू+क्त] पराजित, जीता हुआ।

प्रत्यभियुक्त (भू० क० कृ०) [प्रति+अभि+युज्+क्त] बदले में अभियोग लगाया हुआ।

प्रत्यभियोगः [प्रति+अभि+युज्+घञ्] 1. अभियोक्ता के विरुद्ध दोषारोप, बदले में दोषारोपण करना —याज्ञ० २।१०।

प्रत्यभिवादः, प्रत्यभिवादनम् [प्रति+अभि+वद्+णिच् +घञ्, ल्युट् वा] नमस्कार के बदले नमस्कार, (प्रणाम के बदले आशीर्वाद)—मनु० २।१२६।

प्रत्यभिस्कंदनम् [प्रति+अभि+स्कन्द्+ल्युट्] जवाबी नालिश, प्रत्यारोप।

प्रत्ययः [प्रति+इ+अच्] 1. धारणा, निश्चित विश्वास, —मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः - मालवि० १।२, संजातप्रत्ययः—पंच० ४ 2. विश्वास, भरोसा, श्रद्धा, विश्रंभ —कु० ६।२०, शि० १८।६३, भर्तृ० ३।६० 3. संबोध, विचार, भाव, सम्मति 4. यकीन, निश्चयता 5. जानकारी, अनुभव, संज्ञान— स्थानप्रत्ययात् श० ७, 'स्थान की दृष्टि से अन्दाजा लगाते हुए' इसी प्रकार—आकृति प्रत्ययात्—मालवि० १, मेघ० ८ 6. कारण, आधार, क्रिया का साधन—कु० ३।१८ 7. प्रसिद्धि, यश, कीर्ति 8. सुप्, तिङ् आदि प्रत्यय जो शब्द व धातुओं के आगे लगते हैं, कृदन्त व तद्धित के प्रत्यय—शि० १४।६६ 9. शपथ 10. पराश्रयी 11. प्रचलन, अभ्यास, 12. छिद्र 13. बुद्धि, समझ। सम०—कारक,--कारिन् (वि०) विश्वास पैदा करने वाला, भरोसा देने वाला, (णी) मुहर, नामांकित मुद्रा या अंगूठी।

प्रत्ययित (वि०) [प्रत्यय+इतच्] 1. विश्वस्त, भरोसे का 2. विश्वासी, विश्वास पूर्वक कहा या लिखा हुआ।

प्रत्ययिन् (वि०) [प्रत्यय+इनि] 1. निर्भर करने वाला, विश्वास करने वाला, भरोसा रखने वाला 2. विश्वासपात्र, विश्वास या भरोसे के योग्य।

प्रत्यर्थ (वि०) [प्रति+अर्थ्+अच्] उपयोगी, युक्तिसंगत,—र्थम् 1. उत्तर, जवाब 2. शत्रुता, विरोध।

प्रत्यर्थकः [प्रति+अर्थ+ण्वुल्] प्रतिपक्षी, विरोधी।

प्रत्यर्थिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रति+अर्थ्+णिनि] विपक्षी, विरोधी, शत्रुतापूर्ण,—नास्मि भवत्योरीश्वरनियोगप्रत्यर्थी—विक्रम० २, (पुं०) 1. विपक्षी, विरोधी, शत्रु 2. प्रतिद्वन्द्वी, सम, जोड़ का, चन्द्रो

मुखस्य प्रत्यर्थी 3. (कानून में) प्रतिवादी—स धर्मस्थ-सखः शश्वदर्थिप्रत्यर्थिनां स्वयम्—रघु० १७।३९, मनु० ८।७९, याज्ञ० २।६। सम०—भूत (वि०) मार्ग में रुकावट, बाधक बना हुआ—कु० १।५९।

प्रत्यर्पणम् [प्रति+ऋ+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] वापिस देना, लौटा देना—सीताप्रत्यर्पणैषिणः—रघु० १५।८५।

प्रत्यर्पित (भू० क० कृ०) [प्रति+ऋ+णिच्+क्त, पुकागमः] लौटाया हुआ, वापिस दिया हुआ।

प्रत्यवमर्शः,—र्षः [प्रति+अव+मृश्+घञ्] 1. गंभीर चिंतन, गहन मनन 2. परामर्श, नसीहत 3. प्रत्युपसंहार।

प्रत्यवरोधनम् [प्रति+अव+रुध+ल्युट्] रुकावट, विघ्न।

प्रत्यवसानम् [प्रति+अव+सो+ल्युट्] खाना या पीना—पा० १।४।५२।

प्रत्यवसित (वि०) [प्रति+अव+सो+क्त] खाया हुआ, पीया हुआ।

प्रत्यवस्कन्दः,—दनम् [प्रति+अव+स्कन्द्+घञ्, ल्युट् वा] विशेष तर्क जिसको कि प्रतिवादी उत्तर के रूप में प्रस्तुत करता है परन्तु वह आरोप के रूप में नहीं समझा जाता, प्रतिवादी का वह उत्तर जिसमें वह वादी के अभियोग का खंडन करता है।

प्रत्यवस्थानम् [प्रति+अव+स्था+ल्युट्] 1. अपाकरण 2. शत्रुता, विरोध 3. यथास्थिति, पूर्वस्थिति।

प्रत्यवहारः [प्रति+अव+हृ+घञ्] 1. वापिस खींचना 2. विश्व का विनाश, (सृष्टि का) प्रलय—सर्गस्थिति-प्रत्यवहारहेतुः—रघु० २।४४।

प्रत्यवायः [प्रति+अव+अय्+घञ्] 1. ह्रास, न्यूनता 2. अवरोध, रुकावट—उत्तर० १।९ 3. विरुद्ध या विपरीत मार्ग, वैपरीत्य—मनु० ४।२४५ 4. पाप, अपराध, पापमयता—अनुत्पत्ति तथा चान्ये प्रत्यवायस्य मन्यते—जाबालि०।

प्रत्यवेक्षणम्, प्रत्यवेक्षा [प्रति+अव+ईक्ष्+ल्युट्, अङ्+टाप् वा] ध्यान रखना, ख़याल करना, देखरेख करना—रघु० १७।५३।

प्रत्यस्तमयः [प्रति+अस्तम्+अय्+अच्] 1. (सूर्य का) छिपना 2. अन्त, समाप्ति।

प्रत्याक्षेपक (वि०) (स्त्री०—पिका) [प्रति+आ+क्षिप्+ण्वुल्] ताना मारने वाला, व्यंग्यपूर्ण, उपहासजनक, चिढ़ाने वाला।

प्रत्याख्यात (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+ख्या+क्त] 1. मना किया हुआ, 2. मुकरा हुआ 3. प्रतिषिद्ध, निषिद्ध 4. एक ओर रक्खा हुआ, अस्वीकृत 5. पीछे ढकेला हुआ।

प्रत्याख्यानम् [प्रति+आ+ख्या+ल्युट्] 1. पीछे हटाना, अस्वीकार करना 2. मुकरना, मना करना, इनकार 3. अवहेलना 4. भर्त्सना 5. निराकरण।

प्रत्यागतिः (स्त्री०) [प्रति+आ+गम्+क्तिन्] वापिस आना, लौटना।

प्रत्यागमः,—प्रत्यागमनम् [प्रति+आ+गम्+अप्, ल्युट् वा] लौटना, वापिस आना।

प्रत्यादानम् [प्रति+आ+दा+ल्युट्] वापिस लेना, पुनर्ग्रहण, पुनः प्राप्ति।

प्रत्यादिष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+दिश्+क्त] 1. नियत 2. सूचित 3. अस्वीकृत, पीछे ढकेला हुआ 4. हटाया हुआ, एक ओर रक्खा हुआ 5. तिरोहित, अंधकार में डाला हुआ—रघु० १०।६८ 6. चेताया हुआ, सावधान किया हुआ।

प्रत्यादेशः [प्रति+आ+दिश्+घञ्] 1. आदेश, हुक्म 2. संसूचन, घोषणा 3. मना करना, मुकरना, अस्वीकृति, पीछे हटाना, निराकरण—प्रत्यादेशान्न खलु भवतो धीरतां कल्पयामि—मेघ० ११४, ९५, श० ६।९ 4. तिरोहित करना, ग्रस्त करना, तिरोधाता, लज्जित करने वाला, अंधकारावृत करने वाला—या प्रत्यादेशो रूपगर्विताया: श्रियः—विक्रम० १, का० ५ 5. सावधानी, चेतावनी 6. विशेष रूप से दिव्य सावधानता, अतिप्राकृतिक चेतावनी।

प्रत्यानयनम् [प्रति+आ+नी+ल्युट्] वापिस लाना, लौटा लाना।

प्रत्यापत्तिः (स्त्री०) [प्रति+आ+पद्+क्तिन्] 1. वापसी 2. अरुचि, सांसारिक विषयों के प्रति विराग, वैराग्य।

प्रत्याम्नायः [प्रति+आ+म्ना+घञ्] अनुमान प्रक्रिया का पाँचवाँ अंग अर्थात् निगमन (प्रथम प्रतिज्ञा की आवृत्ति)।

प्रत्यायः [प्रति+अय्+घञ्] चुंगी, कर।

प्रत्यायक (वि०) [प्रति+आ+इ+णिच्+ण्वुल्] 1. प्रमाणित करने वाला, व्याख्या करने वाला 2. विश्वास दिलाने वाला, भरोसा उत्पन्न करने वाला।

प्रत्यायनम् [प्रति+आ+इ+णिच्+ल्युट्] 1. (दुलहन का) घर ले जाना, विवाह करना 2. (सूर्य का) छिपना।

प्रत्यालीढम् [प्रति+आ+लिह्+क्त] निशाना लगाते समय का विशेष आसन (विप० आलीढ)।

प्रत्यावर्तनम् [प्रति+आ+वृत्+ल्युट्] लौटना, वापिस आना।

प्रत्याश्वस्त (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+श्वस्+क्त] सान्त्वना दिया हुआ, जिलाया हुआ, ताजा दम किया हुआ, ढाढस बंधाया हुआ।

प्रत्याश्वासः [प्रति+आ+श्वस्+घञ्] फिर से सांस लेना, (सांस का) फिर लौट आना, फिर चलने लगना।

प्रत्याश्वासनम् [प्रति+आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] ढाढस बधाना, सान्त्वना देना ।

प्रत्यासत्तिः (स्त्री०) [प्रति+आ+सद्+क्तिन्] 1. (समय और स्थान की दृष्टि से) अत्यंत सामीप्य, संसक्ति 2. घनिष्ठ संपर्क 3. सादृश्य ।

प्रत्यासन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+आ+सद्+क्त] समीप, निकट, संसक्त, सटा हुआ ।

प्रत्यास (सा) रः [प्रति+आ+सृ+अप्, घञ् वा] 1. सेना का पृष्ठभाग 2. एक व्यूह के पीछे दूसरा व्यूह—ऐसी व्यूह रचना या मोर्चा बन्दी ।

प्रत्याहरणम् [प्रति+आ+हृ+ल्युट्] 1. वापिस लेना, पुनः ग्रहण करना, वसूली 2 रोकना 3. ज्ञानद्रियों का नियन्त्रण करना ।

प्रत्याहारः [प्रति+आ+हृ+घञ्] 1. पीछे हटाना, वापिस चलना, प्रत्यावर्तन 2. पीछे रखना, रोकना 3. इन्द्रिय दमन करना 4. सृष्टि का विघटन या प्रलय 5. (व्या० में) एक ही ध्वनि के उच्चारण में कई अक्षरों का बोध, सूत्र के प्रथम अक्षर से लेकर अन्तिम सांकेतिक वर्ण तक जोड़ना या कई सूत्रों के होने पर अन्तिम सूत्र के अन्तिम वर्ण तक—यथा 'अ इ उ ण्' सूत्र का प्रत्याहार 'अण्' तथा 'अ इ उ ण्, ऋलृक्, ए ओङ्, ऐ औच्' इन चार सूत्रों का प्रत्याहार 'अच्' (स्वर) है प्रत्याहार है; व्यजनों का प्रत्याहार 'हल्' तथा सभी वर्णों का द्योतक 'अल्' प्रत्याहार है ।

प्रत्युक्त (भू० क० कृ०) [प्रति+वच्+क्त] उत्तर दिया गया, वदले में कहा गया, जवाब दिया हुआ ।

प्रत्युक्ति (स्त्री०) [प्रति+वच्+क्तिन्] उत्तर, जवाब ।

प्रत्युच्चारः, प्रत्युच्चारणम् [प्रति+उद्+चर्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] आवृत्ति, दोहराना ।

प्रत्युज्जीवनम् [प्रति+उद्+जीव्+ल्युट्] पुनर्जीवन होना, जीवन का फिर संचार होना, फिर से जी उठना (आलं० भी) ।

प्रत्युत (अव्य०) [प्रति+उत द्व० स०] 1. इसके विपरीत—कृतमपि महोपकारं पय इव पीत्वा निरातङ्कः, प्रत्युत हन्तुं यतते काकोदरसोदरःखलो जगति–भामि० १।७६ 2. वल्कि, भी 3. दूसरी ओर ।

प्रत्युत्क्रमः,—क्रमणम्,—क्रान्तिः (स्त्री०) [प्रति+उद्+क्रम्+घञ्, ल्युट्, क्तिन् वा] 1. (किसी कार्य को करने का) बीड़ा उठाना 2. युद्ध की तैयारी 3. शत्रु पर चढ़ाई करने के लिए प्रयाण 4. गौण कार्य जो मुख्य कार्य में सहायक हो 5. किसी व्यवसाय का समारम्भ ।

प्रत्युत्थानम् [प्रति+उद्+स्था+ल्युट्] 1. किसी के विरुद्ध उठना 2. युद्ध की तयारी करना 3. किसी अभ्यागत का स्वागत करन के लिए (सम्मान प्रदर्शित करने के लिए) अपने आसन से उठना—मनु० २।२१० ।

प्रत्युत्थित (भू० क० कृ०) [प्रति+उद्+स्था+क्त] (किसी मित्र या शत्रु आदि को) मिलने के लिए उठा हुआ ।

प्रत्युत्पन्न (भू० क० कृ०) [प्रति+उद्+पद्+क्त] 1. पुनरुत्पादित, फिर से उत्पन्न 2. उद्यत, तत्पर, फुर्तीला 3. (गणित०)गुणा किया हुआ,—न्नम् गुणा । सम०—मति (वि०) समय पर जिसकी बुद्धि ठीक कार्य करे, हाजिर जबाब 2. साहसी, दिलेर 3. तीव्र, तीक्ष्ण ।

प्रत्युदाहरणम् [प्रति+उद्+आ+हृ+ल्युट्] मुकाबले का उदाहरण, विपक्ष का उदाहरण ।

प्रत्युद्गत (भू० क० कृ०) [प्रति+उद्+गम्+क्त] अतिथि का स्वागत करने के लिए (सादर अभिवादन स्वरूप) अपने आसन से उठा हुआ · प्रत्युद्गतो मां भरतः ससैन्यः—रघु० १३।६४, १२।६२ 2. किसी के विरुद्ध आगे बढ़ा हुआ ।

प्रत्युद्गतिः (स्त्री०), **प्रत्युद्गमः, प्रत्युद्गमनम्** [प्रति+उद्+गम्+क्तिन्, अप्, ल्युट् वा] अतिथि का सत्कार करने के लिए अपने आसन से उठना या बाहर जाना ।

प्रत्युद्गमनीयम् [प्रति+उद्+गम्+अनीयर्] स्वच्छ वस्त्र का जोड़ा–गृहीतप्रत्युद्गमनीयवस्त्रा—कु० ७।११ पत्युद्गमनीय वस्त्रा' का पाठान्तर) दे० 'उद्गमनीय' ।

प्रत्युद्धरणम् [प्रति+उद्+हृ+ल्युट्]। पुनः प्राप्त करना, दी हुई वस्तु को वापिस लेना 2. फिर उठाना ।

प्रत्युद्यमः [प्रति+उद्+यम्+अप्] 1. प्रतिसंतुलन, समतोलन 2. रोक थाम, प्रतिक्रिया—भर्तृ० ८।८८, पाठान्तर ।

प्रत्युद्यात (वि०) [प्रति+उद्+या क्त] दे० 'प्रत्युद्गत' ।

प्रत्युन्नमनम् [प्रति+उद्+नम्+ल्युट्] पुनः उठना, फिर उछलना, पलटा खाकर आना ।

प्रत्युपकारः [प्रति+उप+कृ+घञ्] किसी की कृपा या सेवा का बदला चुकाना, उपकार का प्रतिदान, बदले में सेवा ।

प्रत्युपक्रिया [प्रति+उप+कृ+श, इयङ, टाप्] सेवा का प्रतिफल ।

प्रत्युपदेशः [प्रति+उप+दिश्+घञ्] बदले में परामर्श या उपदेश - कु० १।३४ ।

प्रत्युपपन्न (वि०) [प्रति+उप+पद्+क्त] दे० 'प्रत्युत्पन्न' ।

प्रत्युपमानम् [प्रति+उप+मा+ल्युट्] 1. समरूपता का प्रतिरूप 2. नमूना, आदर्श 3. मुकाबले की तुलना —विक्रम० २।३ ।

प्रत्युपलब्ध (भू० क० कृ०) [प्रति+उप+लभ्+क्त] वापिस प्राप्त, फिर लिया हुआ।

प्रत्युपवेशः,—वेशनम् [प्रति+उप+विश+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] आज्ञा-पालन कराने के लिए किसी को घेरना।

प्रत्युपस्थानम् [प्रति+उप+स्था+ल्युट्] आसपास, पड़ौस।

प्रत्युप्त (भू० क० कृ०) [प्रति+वप्+क्त] 1. जड़ा हुआ, या जमाया हुआ, जटित, भरा हुआ 2. बोया हुआ 3. स्थिर किया हुआ, गाड़ा हुआ, दृढ़ता पूर्वक टिकाया हुआ, या जमाया हुआ—मा० ५।१०, उत्तर० ३।३५, ४६।

प्रत्युषः, प्रत्युषस् (नपुं०) [प्रत्योषति नाशयति अन्धकारम्—प्रति+उष्+क, प्रति+उष्+असि] प्रभात, भोर, तड़का।

प्रत्यूषः,—षम् [प्रति+ऊष्+क] भोर, प्रभात, तड़का—प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः—मेघ० ३१, —**षः** 1. सूर्य 2. आठ वस्तुओं में से एक वस्तु का नाम।

प्रत्यूषस् (नपुं०) [प्रति+ऊष+असि] भोर, प्रभात, तड़का।

प्रत्यूहः [प्रति+ऊह+घञ्] रुकावट, बाधा, विघ्न, —विस्मयः सर्वथा हेयः प्रत्यूहः सर्वकर्मणाम्—हि० २।१५।

प्रथ् i (भ्वा० आ०—प्रथते, प्रथितम्) 1. (ऐश्वर्य का) बढ़ाना 2. (कीर्ति, अफवाह आदि का) फैलाना—तथा यशोऽस्य प्रथते—मनु० ११।१५ 3. सुविख्यात होना, प्रसिद्ध होना—अतस्तदाख्यया तीर्थं पावनं भुवि पप्रथे—रघु० १५।१०१, अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः—भग० १५।१८, शि० ९।१६, १५।२३, कु० ५।७, मेघ० २४, रघु० ५।६५, ९।७६ 4. प्रकट होना, उदय होना, प्रकाश में आना—श्रमो नु तासां मदनो नु पप्रथे—कि० ८।५३ ii (चुरा० उभ०—प्रथयति—ते, प्रथित) 1. फैलाना, उद्घोषणा करना—सज्जना एव साधूनां प्रथयन्ति गुणोत्करम्—दृष्टान्त० १२, भट्टि० १७।१०७ 2. दिखलाना, प्रकट करना, प्रदर्शन करना, प्रकाशित करना, सूचित करना—परमं वपुः प्रथयतीव जयम्—कि० ६।३५, ५।३, शि० १०।२५, रत्न० ४।१३, श० ३।१६ 3. बढ़ाना विस्तृत करना, ऊँचा करना, अधिक करना, बड़ा करना—भर्तृ० २।४५ 4. खोलना।

प्रथनम् [प्रथ्+ल्युट्] 1. फैलाना, विस्तार करना 2. बखेरना 3. फेंकना, आगे की ओर बढ़ाना 4. बतलाना, प्रकाशित करना, प्रदर्शन करना 5. वह स्थान जहाँ कोई चीज फैलायी जाय।

प्रथम (वि०) (पुं०, कर्तृ०, ब० व०—प्रथमे या प्रथमाः) [प्रथ्+अमच्] 1. पहला, सबसे आगे का—रघु० ३।४४, हि० २।३६, कि० २।४४ 2. प्रमुख, मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठतम, बेजोड़, अनुपम—शि० १५।४२, मनु० ३।१४७ 3. आदि कालीन, अत्यंत प्राचीन, प्राक्कालीन, प्राथमिक 4. पहले का, पूर्वकालीन, पहला, इससे पूर्व का—प्रथमसुकृतापेक्षया—मेघ० १७, रघु० १०।६७ 5. (व्या० में) प्रथम पुरुष (=अन्य पुरुष या पाश्चात्यपदविज्ञान के अनुसार तृतीय पुरुष), —**मः** 1. प्रथम (=अन्य) पुरुष 2. वर्ग का प्रथम व्यंजन,—**मा** कर्तृकारक,—**मम्** (अव्य०) 1. पहले, प्रथमतः, सर्वप्रथम, कु० ७।२४, रघु० ३।४ 2. पहले ही, पहले ही से, पूर्वकाल में—रघु० ३।६८ 3. तुरन्त, तत्काल 4. पहले—यात्रायै चोदयामास तं शक्तेः प्रथमं शरत्—रघु० ४।२४, उत्तिष्ठेत्प्रथमं चास्य चरमं चैव संविशेत्—मनु० २।१९४ 5. अभी अभी, हाल में,—प्रथमम्, अनन्तरम्, ततः, पश्चात् पहले, इसके बाद। सम०—**अर्धः, —र्धम्** पूर्वार्ध, —**आश्रमः** चार आश्रमों में से पहला आश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम,—**इतर** (वि०) 'प्रथम की अपेक्षा और' अर्थात् दूसरा,—**उदित** (वि०) पहले उच्चारण किया हुआ—उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः—रघु० ३।२५,—**कल्पः** चलने के लिए बढ़िया मार्ग, प्रथम नियम,—**कल्पित** (वि०) 1. पहले सोचा हुआ 2. पद या महत्त्व की दृष्टि से सर्वोच्च,—**ज** (वि०) सबसे पहले पैदा हुआ,—**दर्शनम्** पहला दर्शन,—**दिवसः** सबसे पहला दिन—मेघ० २,—**पुरुषः** प्रथम पुरुष, अन्य पुरुष (अंग्रेजी पद्धति के अनुसार 'तृतीय पुरुष'), —**यौवनम्** युवावस्था का आरंभ, किशोरावस्था, —**वयस्** (नपुं०) बचपन, शैशव,—**विरहः** पहली बार का वियोग,—**वैयाकरणः** 1. अत्यंत पूज्य वैयाकरण 2. व्याकरण में शिशिक्षु,—**साहसः** दण्ड की निम्नतम या प्रथम स्थिति,—**सुकृतम्** पूर्वकृपा या सेवा।

प्रथा [प्रथ+अङ्+टाप्] ख्याति, प्रसिद्धि—शि० १५।२७।

प्रथित (भू० क० कृ०) [प्रथ्+क्त] 1. बढ़ाया हुआ, विस्तार किया हुआ 2. प्रकाशित, उद्घोषित, फैलाया हुआ, घोषणा की हुई,—प्रथितयशसां भासकविसौमिल्लकविमिश्रादीनाम्—मालवि० १ 3. दिखाया गया, प्रदर्शन किया गया, प्रकट किया गया, प्रकाशित किया गया 4. विख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत (दे० 'प्रथ्' भी)।

प्रथिमन् (पुं०) [पृथोर्भावः—पृथु+इमनिच्] चौड़ाई, विशालता, विस्तार, महत्ता—प्रथिमानं दधानेन जघनेन घनेन सा—भट्टि० ४।१७, (गुणाः) प्रारंभसूक्ष्माः प्रथिमानमापुः—रघु० १८।४८।

प्रथिविः (स्त्री०) [=पृथिवी, पृषो०] पृथ्वी, धरती।

प्रथिष्ठ (वि०) [पृथु+इष्ठन्, प्रथादेशः] सबसे बड़ा,

सबसे चौड़ा, अत्यन्त विशाल ('पृथु' की अतिशयावस्था)।

प्रथीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [पृथु+ईयसुन्] अपेक्षाकृत बड़ा, चौड़ा, विशाल 'पृथु' की तुलनावस्था)।

प्रथु (वि०) [प्रथ्+उण्] व्यापक, दूर दूरतक फैला हुआ।

प्रथुकः [प्रथ्+उक] चिउड़े, चौले, (तु० पृथुक)।

प्रदक्षिण (वि०) [प्रा० स०] 1. दाईं ओर रक्खा हुआ, या खड़ा हुआ दाईं ओर को घूमने वाला 2. सम्मानपूर्ण, श्रद्धालु 3. शुभ, शुभलक्षणयुक्त,—णः,—णा, —णम् बाईं ओर से दाईं ओर को घूमना जिससे कि दाहिना पार्श्व सदैव उस व्यक्ति या वस्तु की ओर हो जिसकी परिक्रमा की जा रही है, श्रद्धापूर्ण अभिवादन जो इस प्रकार प्रदक्षिणा द्वारा किया जाय —कु० ७।७९, याज्ञ० १।२३२,—णम् (अव्य०) 1. बाईं ओर से दाईं ओर को 2. दाईं ओर को, जिससे कि दाहिना पार्श्व सदैव प्रदक्षिणा की गई व्यक्ति या वस्तु की ओर रहे 3. दक्षिण दिशा में, दक्षिण दिशा की ओर—मनु० ४।८७, (प्रदक्षिणी कृ) बाईं ओर से दाईं ओर को जाना (सम्मान प्रदर्शित करने के लिए)—प्रदक्षिणीकुरुष्व सद्योहुताग्नीन्—श० ४, प्रदक्षिणीकृत्य हुतं हुताशनम्—रघु० २।७१)। सम० —अर्चिस् (वि०) जिसकी दाईं ओर को ज्वालाएँ उठती हों, दाईं ओर को ज्वालाएँ रखने वाला— प्रदक्षिणार्चिर्हविरग्निराददे—रघु० ३।१४ (स्त्री०) दाईं ओर को मुड़ी हुई ज्वालाएँ—रघु० ४।२५,—क्रिया प्रदक्षिणा करना, सम्मान प्रदर्शित करने के लिए सम्माननीय व्यक्ति को दाईं ओर रखना—रघु० १।७६,—पट्टिका सहन, आंगन।

प्रदग्ध (भू० क० कृ०) [प्र+दह्+क्त] जलाया गया, भस्म किया गया।

प्रदत्त (भू० क० कृ०) [प्र+दा+क्त] दे० 'प्रत्त'।

प्रदरः [प्र+दृ+अप्] 1. तोड़ना, फाड़ना 2. अस्थिभंग होना, दरार पड़ना, फटाव, छिद्र, विवर 3. सेना का तितर बितर होना 4. तीर 5. स्त्रियों को होने वाला एक रोग।

प्रदर्पः [प्रा० स०] घमंड, अहंकार।

प्रदर्शः [प्र+दृश्+घञ्] 1. दृष्टि, दर्शन 2. निदेश, आज्ञा।

प्रदर्शक (वि०) [प्र+दृश्+ण्वुल्] दिखलाने वाला, प्रकट करने वाला।

प्रदर्शनम् [प्र+दृश्+ल्युट्] 1. दृष्टि, दर्शन जैसा कि 'घोरप्रदर्शनः' में 2. प्रकट होना, प्रदर्शन करना, दिखलाना, प्रदर्शनी, नुमायश 3. अध्यापन, व्याख्या करना 4. उदाहरण।

प्रदर्शित (भू०क०कृ०)[प्र+दृश्+णिच्+क्त] दिखलाया हुआ, सामने रक्खा हुआ, प्रकट किया हुआ, प्रकाशित किया हुआ, प्रदर्शन किया हुआ 2. जतलाया गया 3. सिखाया हुआ 4. व्याख्या किया गया, उद्घोषित किया गया।

प्रदलः [प्र+दल्+अच्] बाण, तीर।

प्रदवः [प्र+दु+अप्] जलना, ज्वालाएँ उठना।

प्रदातृ (पुं०) [प्र+दा+तृच्] 1. देने वाला, दानी 2. उदार व्यक्ति 3. (विवाह में) कन्या दान करने वाला 4. इन्द्र का विशेषण।

प्रदानम् [प्र+दा+ल्युट्] 1. देना, प्रदान करना, अर्पण करना, प्रस्तुत करना वर°, अग्नि°, काष्ठ° आदि 2. (विवाह में) कन्या दान करना, कन्या° 3. समर्पित करना, अध्यापन करना, शिक्षा देना, विद्या° 4. भेंट, दान, उपहार 5, अंकुश। सम०—शूरः अति दानशील पुरुष, दाता।

प्रदानकम् [प्रदान+कन्] पुरस्कार, भेंट, दान, उपहार।

प्रदायम् [प्र+दा+घञ्, युक्] उपहार, भेंट।

प्रदिः, प्रदेयः [प्र+दा+कि, यत् वा] उपहार, भेंट।

प्रदिग्ध (भू० क० कृ०) [प्र+दिह्+क्त] चिकनाई लपेटी हुई, पोती हुई, मालिश किया हुआ,—ग्धम् विशेष प्रकार से तला हुआ मांस।

प्रदिश् (स्त्री०) [प्रगता दिग्भ्यः—प्र+दिश्+क्विप्] 1. संकेत करना 2. आदेश, निदेश, आज्ञा 3. परिधि का अन्तर्वर्ती बिन्दु जैसे कि नैर्ऋती, आग्नेयी, ऐशानी और वायवी।

प्रदिष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+दिश्+क्त] 1. दिखाया हुआ, संकेतित 2. निर्दिष्ट, आदिष्ट 3. स्थिर किया हुआ, आदेश लागू किया हुआ, नियोजित किया हुआ —रघु० २।३९।

प्रदीपः [प्र+दीप्+णिच्+क] 1. दीपक, चिराग (आलं० से भी) अतैल पूराः सुरतप्रदीपाः—कु० १।१०, रघु० २।२४, १६।४, कुलप्रदीपो नृपतिर्दिलीपः —रघु० ६।७४, 'कुल का दीपक या अवतंस'—७।२९ 2. जो जानकारी कराता है, या बात को खोलकर कहता है, व्याख्या, विशेषतः ग्रन्थों के नामों के अन्त में प्रयुक्त, यथा महाभाष्य प्रदीप, काव्यप्रदीप आदि।

प्रदीपन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+दीप्+णिच्+ल्युट्] 1. जलाना 2. उद्दीपित करना, उत्तेजित करना,—नम् सुलगाने की क्रिया, जलाना, उदीप्त करना,—नः एक प्रकार का खनिज विष।

प्रदीप्त (भू० क० कृ०) [प्र+दीप्+क्त] 1. सुलगाया हुआ, जलाया हुआ, प्रज्वलित, प्रकाशित 2. देदीप्यमान, जाज्वल्यमान, प्रकाशमान 3. उठाया हुआ, विस्तारित—प्रदीप्तशिरसमाशीविषम्—दश० 4. उद्दीपित, उत्तेजित (क्षुधा आदि)।

प्रदुष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+दुष्+क्त] 1. बिगड़ा

हुआ, भ्रष्ट 2. दूषित, मलिन, पापमय 3. लम्पट, स्वेच्छाचारी ।

प्रदूषित (भू० क० कृ०) [प्र+दूष्+णिच्+क्त] 1. भ्रष्ट, विषाक्त, विकृत, पतित 2. अपवित्र, मलिन, भ्रष्ट ।

प्रदेय (सं० कृ०) [प्र+दा+यत्] दिए जाने के योग्य, (समाचार आदि) दिये जाने के लायक, संवहन किये जाने के उपयुक्त—रघु० ५।१८, ३१ ।

प्रदेशः [प्र+दिश्+घञ्] 1. संकेत करना, इशारा करना 2. स्थान, क्षेत्र, जगह, देश, प्रदेश, मंडल—पितुः प्रदेशास्तव देवभूमयः—कु० ५।४५, रघु० ५।६०, इसी प्रकार कंठ° तालु° हृदय° आदि 3. बित्ता, बालिश्त 4. निश्चय, निर्धारण 5. दीवार 6. (व्या० में) उदाहरण ।

प्रदेशनम् [प्र+दिश्+ल्युट्] 1. संकेत करना 2. उपदेश, अनुदेश 3. भेंट, उपहार, चढ़ावा विशेष कर देवताओं को या श्रेष्ठतर व्यक्तियों को ।

प्रदेश (शि) नी [प्रदेशन+ङीप्, प्र+दिश्+णिनि+ङीप्] तर्जनी अंगुली, अभिसूचक अंगुली ।

प्रदेहः [प्र+दिह्+घञ्] 1. लेप करना, तेल या औषधि आदि की मालिश करना 2. लेप, पलस्तर ।

प्रदोष (वि०) [प्रकृष्टः दोषो यस्य—प्रा० ब०] बुरा, भ्रष्ट,—षः 1. दोष, त्रुटि, पाप, अपराध 2. अव्यवस्थित स्थिति, विद्रोह, बगावत 3. संध्याकाल, रात्रि का आरंभ—तमः स्वभावास्तेऽप्यन्ये प्रदोषमनुयायिनः—शि० २।७८ (यहाँ प्रदोष का अर्थ मुख्य रूप से 'भ्रष्ट' और 'पतित' है),—व्रजसुन्दरीजनमनस्तोषप्रदोषः—गीत० ५, कु० ५।४४, रघु० १।९३, ऋतु० १।११ । सम०—कालः संध्या समय, रात्रि का आरंभ,—तिमिरम् सध्याकालीन अंधेरा, सांझ का झुटपुटा—कामं प्रदोषतिमिरेण न दृश्यसे त्वम्—मृच्छ० १।३५ ।

प्रदोहः [प्र+दुह्+घञ्] दुहना, दूध निकालना ।

प्रद्युम्नः [प्रकृष्टं द्युम्नं बलं यस्य—प्रा० ब०] कामदेव का विशेषण, कामदेव [यह कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र था । जब यह छः वर्ष की आयु का था तो शंबर नामक दैत्य ने इसका अपहरण कर लिया क्योंकि उसे यह पहले ही ज्ञात हो गया था कि प्रद्युम्न के द्वारा उसकी मृत्यु हो जायगी । शंबर ने उस बालक को घर्घराते हुए समुद्र में फेंक दिया जहाँ उसे एक मछली निगल गई । एक मछुवे ने इस मछली को पकड़ लिया और शंबर के सामने ला रक्खा । जब इस मछली को काटा गया तो इसके पेट से एक सुन्दर बालक मिला । नारद मुनि की इच्छानुसार शंबर की गृहिणी मायावती ने इस बालक का पालनपोषण किया । जब यह बालक जवान हो गया तो स्वयं मायावती का मन इसके सौन्दर्य पर आकृष्ट हो गया । परन्तु प्रद्युम्न ने मायावती का मातृत्व को दूषित करने वाली इस प्रकार की भावनाओं के कारण बुरा-भला कहा, क्योंकि वह तो उसे माता समझता था । परन्तु जब उसे बतलाया गया कि वह विष्णु का पुत्र है, उसे शंबर ने समुद्र में फेंक दिया था, तो उसने क्रोध से आगबबूला होकर शंबर को युद्ध के लिए ललकारा, तथा अपनी माया के द्वारा उस का वध कर दिया । उसके पश्चात् वह और मायावती कृष्ण के घर गए जहाँ नारद मुनि ने कृष्ण और रुक्मिणी को बतलाया कि यह तो उनका अपना पुत्र है तथा मायावती उसकी पत्नी है ।

प्रद्योतः [प्रकृष्टो द्योतः—प्रा० स०] 1. जग मगाना, प्रकाश, रोशनी 2. आभा, प्रकाश, कान्ति 3. प्रकाश की किरण 4. उज्जयिनी के एक राजा का नाम जिसकी पुत्री से वत्स के राजा उदयन ने विवाह किया था—प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे—मेघ० ३२ (मल्लि० इसे 'प्रक्षिप्त' समझते हैं), रत्न० १।१० ।

प्रद्योतनम् [प्र+द्युत्+ल्युट्] 1. जगमगाना, चमकना 2. प्रकाश, —नः सूर्य ।

प्रद्रवः [प्र+द्रु+अप्] दौड़ना, पलायन ।

प्रद्रावः [प्र+द्रु+घञ्]1. भाग जाना, पलायन, प्रत्यावर्तन, बच निकलना 2. द्रुतगमन, तेजी से जाना ।

प्रद्वारः, प्रद्वारम् [प्रगतं द्वारम्—प्रा० स०] दरवाजे या फाटक के सामने का स्थान ।

प्रद्वेषः, प्रद्वेषणम् [प्र+द्विष्+घञ्, ल्युट् वा] नापसन्दगी, घृणा, अरुचि ।

प्रधनम् [प्र+धा+क्यु] 1. युद्ध, लड़ाई, संग्राम, संघर्ष, —प्रहितः प्रधनाय माधवानहमाकारयितुं महीभृता—शि० १६।५२, क्षेत्रं क्षत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद्भजेथाः—मेघ० ४८, रघु० ११।७७, महावी० ६।३३ 2. युद्ध में लूट का माल 3. विनाश 4. फाड़ना, तोड़ना, चीरफाड़ ।

प्रधमनम् [प्र+धम्+ल्युट्] 1. लंबा सांस लेना 2. सुंघनी, नस्य ।

प्रधर्षः [प्र+धृष्+घञ्] हमला, आक्रमण 2. बलात्कार ।

प्रधर्षणम्, —णा [प्र+धृष्+णिच्+ल्युट्] 1. हमला, आक्रमण 2. बलात्कार, दुर्व्यवहार, अपमान ।

प्रधर्षित (भू० क० कृ०) [प्र+धृष्+णिच्+क्त] 1. हमला किया गया, आक्रान्त 2. क्षतिग्रस्त, चोट पहुँचाया हुआ 3. घमंडी, अहंकारी ।

प्रधान (वि०) [प्र+धा+ल्युट्] 1. मुख्य, मूल, प्रमुख, बड़ा, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ जैसा कि प्रधानामात्य, प्रधानपुरुष आदि में—मनु० ७।२०३ 2. मुख्य रूप से अन्तर्हित, प्रचलित, प्रबल,—नम् 1. मुख्य पदार्थ, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वस्तु, अधिष्ठाता, मुख्य—न

परिचर्या मलिनात्मनां प्रधानम्—शि० ७।६१, गंगा० १८, प्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रम्—मालवि० १, शमप्रधानेषु तपोवनेषु—श० २।७, रघु० ६।७९ 2. प्रथम विकासकर्ता, जन्मदाता, भौतिक सृष्टि का स्रोत, प्रथम जीवाणु जिसमें से यह समस्त भौतिक संसार विकसित हुआ है (सांख्य० के अनुसार)—न पुनरपि प्रधानवादी अशब्दत्वं प्रधानस्यासिद्धमित्याह —शारी०,दे० 'प्रकृति' भी 3. परमात्मा 4. बुद्धि 5. किसी मिश्रण का मुख्य अंग, —नः, —नम् 1. राजा का मुख्य सेवक या सहचर (उसका मन्त्री या अन्य विश्वस्त पुरुष) 2. महानुभाव, राजसभासद 3. महावत, —अङ्गम् 1. किसी वस्तु की मुख्य शाखा 2. शरीर का मुख्य अंग 3. राज्य का प्रधान या प्रमुख व्यक्ति। —अमात्यः प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री,—आत्मन् (पुं०) विष्णु का विशेषण, धातुः शरीर का मुख्य तत्त्व अर्थात् वीर्य, शुक्र, पुरुषः 1. प्रमुख व्यक्ति (राज्य का), 2. शिव का विशेषण,—मन्त्रिन् (पुं०) राज्य का सबसे बड़ा मंत्री, वासस् (नपुं०) मुख्य वस्त्र, —वृष्टिः (स्त्री०) वर्षा की भारी बौछार।

प्रधावनः [प्र+धाव्+ल्युट्] वायु, हवा, —नम् रगड़ देना, धो देना।

प्रधिः [प्र+धा+कि] 1. पहिये की नाभि या परिणाह —शि० १५।७९, १७।२७ 2. कुआँ।

प्रधी (वि०) [प्रकृष्टा धीः यस्य—प्रा० ब०] कुशाग्रबुद्धि, (स्त्री०) बड़ी बुद्धि, प्रज्ञा।

प्रधूपित (भू० क० कृ०) [प्र+धूप्+क्त] 1. सुवासित, सुगंधयुत 2. गर्माया हुआ, तपाया हुआ 3. प्रज्वलित 4. संतप्त, —ता 1. कष्टग्रस्त स्त्री 2. वह दिशा जिस ओर सूर्य बढ़ रहा हो।

प्रधृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+धृष्+क्त] 1. तिरस्कार पूर्वक बर्ताव किया गया 2. घमंडी, अहंकारी, दृप्त या अभिमानी।

प्रध्यानम् [प्र+ध्यै+ल्युट्] 1. गहन विचार या विमर्श 2. विचार या विमर्श।

प्रध्वंसः [प्र+ध्वंस्+घञ्] सर्वथा विनाश, संहार। सम० —अभावः विनाशजनित अभाव, चार प्रकार के अभावों में से एक, जिसमें विनाश से अभाव की उत्पत्ति होती है, जैसे कि किसी वस्तु की उत्पत्ति के पश्चात्।

प्रध्वस्त (भू० क० कृ०) [प्र+ध्वंस्+क्त] संहार किया हुआ, पूर्ण रूप से नष्ट किया हुआ।

प्रनप्तृ (पुं०) [प्रगतो नप्तारं जनकतया प्रा० स०] पौत्र का पुत्र, प्रपौत्र।

प्रनष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+नश्+क्त] 1. अन्तर्धान, लुप्त, अदृश्य 2. खोया हुआ 3. मिटा हुआ, मृत 4. बरबाद, समुच्छिन्न, उन्मूलित।

प्रनायक (वि०) [प्रगतो नायको यस्मात् प्रा० स० ब०] 1. जिसका नेता विद्यमान न हो 2. नायक या पथ-प्रदर्शक से रहित।

प्रनालः,—ली (स्त्री०) [प्रा० स०] दे० प्रणाल और प्रणाली।

प्रनिघातनम् [प्र+नि+हन्+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या।

प्रनृत्त (वि०) [प्र+नृत्+क्त] नाचने वाला, —त्तम् नाच।

प्रपक्षः [प्रा० स०] पंख का अंतिम सिरा।

प्रपञ्चः [प्रा० स०] 1. प्रदर्शन, प्रकटीकरण—रागप्रायः प्रपञ्चः—का० १४१ 2. विकास, फैलाव, विस्तार —शि० २०।४४ 3. विस्तारण, विशद व्याख्या, स्पष्टीकरण, विवरण 4. सुविस्तारता, प्रसार बाहुल्य —अलं प्रपञ्चेन 5. बहुविधता, विविधता 6. ढेर, प्राचुर्य, मात्रा 7. दर्शन, दृश्यवस्तु 8. माया, जालसाजी 9. दृश्यमान जगत् जो केवल माया, और नानात्व का प्रदर्शन मात्र है। सम०—बुद्धि (वि०) धूर्त, कपटी, —वचनम् विस्तृत प्रवचन, प्रसारयुक्त बातचीत।

प्रपञ्चयति (नामधातु—पर०) 1. दिखलाना, प्रदर्शन करना —प्रपञ्चय पञ्चमम्—गीत० १० 2. विस्तार करना, प्रसार करना।

प्रपञ्चित (भू० क० कृ०) [प्र+पंच्+क्त] 1. प्रदर्शित 2. विस्तारित, प्रसारित 3. फैलाया गया, पूरी व्याख्या की गई, विशदीकृत 4. भूल जाने वाला, भटका हुआ 5. धोखे में आया हुआ, छला हुआ।

प्रपतनम् [प्र+पत्+ल्युट्] 1. उड़ जाना 2. गिराना, अवपात 3. अवतरण 4. मृत्यु, विनाश 5. खड़ी चट्टान, ढलवाँ चट्टान।

प्रपदम् [प्रा० स०] पैर का अग्रभाग।

प्रपदीन (वि०) [प्रपद+ख] पैर के अग्रभाग से संबद्ध, या अग्रभाग तक विस्तृत।

प्रपन्न (भू० क० कृ०) [प्र+पद्+क्त] 1. पधारने वाला, पहुँचने या जाने वाला 2. आश्रय ग्रहण करने वाला, अपनाने वाला—कु० ३।५, ५।५९ 3. शरण लेने वाला, संरक्षण ढूंढने वाला, प्रार्थी, दीन, याचक —शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्—भग० २।७, 4. अनुसरण करने वाला 5. सुसज्जित, युक्त, आधिपत्य प्राप्त—श० १।१. 6. प्रतिज्ञात 7. हासिल, प्राप्त 8. बेचारा, कष्टग्रस्त।

प्रपन्नाडः [प्रपन्न+अल्+अण्, डलयोरभेदः] दे० 'प्रपुनाट'।

प्रपर्ण (वि०) [प्रपतितानि पर्णानि यस्य—प्रा० ब०] पत्तों से रहित (वृक्ष),—र्णम् गिरा हुआ पत्ता।

प्रपलायनम् [प्र+परा+अय्+ल्युट्, रस्य लः] भाग खड़ा होना, प्रत्यावर्तन।

प्रपा [प्र+पा+अङ+टाप्] 1. प्याऊ —व्याख्यास्थानान्यमलसलिला यस्य कूपाः प्रपाश्च—विक्रमांक० १८।७८ 2. कूआँ, कुण्ड - मनु० ८।३१९ 3. पशुओं को पानी पिलाने का स्थान, खेल 4. पानी का भंडार। सम० —पालिका बटोहियों को जल पिलाने वाली स्त्री —विक्रमांक० १।८९, १३।१०, - वनम् शीतोद्यान।

प्रपाठकः [प्रकृष्टः पाठोऽत्र—प्रा० व०] 1. पाठ, व्याख्यान 2. किसी का अध्याय या भाग।

प्रपाणिः [प्रकृष्टः पाणिः—प्रा० स०] 1. हाथ का अगला भाग 2. हाथ की खुली हथेली।

प्रपातः [प्र+पत्+घञ्] 1. चले जाना, विदायगी 2. नीचे गिरना, अवपात—मनोरथानामतटप्रपातः—श० ६।९, कु० ६।५७ 3. आकस्मिक आक्रमण 4. वारिप्रवाह, झरना, झाल, वह स्थान जिसके ऊपर पानी गिरता रहता है—रघु० २।२६, 5. तट, बेला, 6. खड़ी चट्टान, ढलवां चट्टान 7. गिरजाना, झड़ जाना —यथा 'केशप्रपात' 8. उत्सर्जन, प्रस्रवण, स्खलन —जैसा कि 'वीर्यप्रपात' में 9 किसी चट्टान से अपने आपको नीचे गिरा देना 10 उड़ान की एक विशेष रीति।

प्रपातनम् [प्र+पत्+णिच्+ल्युट्] गिराना, (भूमि पर) गिराना।

प्रपादिकः [प्रा० स०] मोर।

प्रपानम् [प्र+पा+ल्युट्] पीना, पेय पदार्थ।

प्रपानकम् [प्रपान+कन्] एक प्रकार का पेय।

प्रपितामहः [प्रकर्षेण पितामहः—प्रा० स०] 1. पड़ बाबा पड़दादा 2. कृष्ण का विशेषण—भग० ११।३९ 3. ब्रह्मा की उपाधि, —ही पड़दादी।

प्रपितृव्य [प्रा० स०] ताऊ।

प्रपीडनम् [प्र+पीड्+णिच्+ल्युट्] 1. भींचना, निचोड़ना 2. रक्तस्रावावरोधक औषधि।

प्रपीत (न) (वि०) [प्र+पा (प्याय्)+क्त] सूजा हुआ, फूला हुआ।

प्रपुना (ञा) टः, [प्रकर्षेण पुमांसं नाटयति-प्र+पुम्+नट्+णिच्+अण्] चक्रमर्द नाम का वृक्ष, चकवंड।

प्रपूरणम् [प्र+पूर+ल्युट्] 1. पूरा करना, भरना, पूर्ति करना 2. सन्निविष्ट करना, सुई लगाना 3. सन्तुष्ट करना, तृप्त करना 4. संबद्ध करना।

प्रपूरित (भू० क० कृ०) [प्र+पूर्+क्त] भरा हुआ।

प्रपृष्ठ (वि०) [प्रा० ब०] विशिष्ट पीठ वाला।

प्रपौत्रः [प्रा० स०] पड़पोता—याज्ञ० १।७८,—त्री पड़पोती।

प्रफुल्ल (भू०क०कृ०)[प्र+फुल्+क्त]। खिला हुआ, पूर्ण, विकसित—लोध्रद्रुमं सानुमतः प्रफुल्लम्—रघु० २।२९ 'प्रफुल्ल' का पाठान्तर)।

प्रफुल्लिः (स्त्री०) [प्र+फुल्+क्तिन्] खिलना, विस्तरण, पुष्पित होना।

प्रफुल्ल (भू० क० कृ०) [प्र+फल्+क्त, उत्वम् लत्वं च] 1. पूरा खिला हुआ, मंजरित, मुकुलित—न हि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं काङ्क्षति षट्पदाली—रघु० ६।७९, २।२९, कु० ३।४५, ७।११ 2. खिले हुए फूल की भांति फैली हुई या विस्तारयुक्त (आँख आदि) 3. मुस्कराता हुआ 4. प्रमुदित, उल्लसित, प्रसन्न। सम०—नयन,—नेत्र,—लोचन (वि०) हर्ष के कारण खिली हुई आँखों वाला,—वदन (वि०) हर्षोत्फुल्ल या हंसमुख, हंसमुख चेहरे वाला।

प्रबद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+बंध्+क्त] 1. बांधा हुआ, बंधा हुआ, कसा हुआ 2. रोका हुआ, अवरुद्ध, अटकाया हुआ।

प्रबद्धृ (पुं०) [प्र+बंध्+तृच्] प्रणेता, ग्रन्थकार।

प्रबन्धः [प्र+बन्ध+घञ्] 1. बंधन, जोड़ या गांठ 2. अविच्छिन्नता, सातत्य, नैरंतर्य, अविच्छिन्न श्रेणी या परम्परा—विच्छेद माप भुवि यस्तु कथाप्रबन्धः—का० २३९, क्रियाप्रबन्धादयमध्वराणाम्—रघु० ६।२३, ३।५८, मा० ६।३ 3. अविच्छिन्न या सुसंगत वर्णन या प्रवचन अनुज्झितार्थसंबन्धः प्रबन्धो दुरुदाहरः —शि० २।७३ 4. साहित्यिक कृति या रचना, विशेषतः काव्यरचना—प्रथितयशसां भासकविसौमिल्लकविमिश्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य—मालवि० १, प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध—आदि वास० 5. व्यवस्था, योजना, कल्पना जैसा कि 'कपटप्रबंध' में। सम० —कल्पना झूठमूठ की कहानी, किसी तथ्य के उपस्तर पर आधारित कल्पनाकृति—प्रबंधकल्पनां स्तोकसत्यां प्राज्ञाः कथां विदुः।

प्रबन्धनम् [प्र—बन्ध्+ल्युट्] बंधन, जोड़ या गाँठ।

प्रबभ्रः (पुं०) इन्द्र का नामान्तर।

प्रब (व) र्ह (वि०) [प्र+ब (व) र्ह्+अच्] सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

प्रबल (वि०) [प्रकृष्टं बलं यस्य—प्रा० ब०] 1. बहुत मज़बूत, शक्तिशाली, ताकतवर, शूरवीर (पुरुष), रघु० ३।६०, ऋतु० ३।२३ 2. प्रचंड, मज़बूत, तीव्र, अत्यधिक, बहुत बड़ा - प्रबलपुरोवातया वृष्ट्या —मालवि० ४।२, प्रबलां वेदनाम्—रघु० ८।५० 3. महत्त्वपूर्ण 4. भरपूर 5. भयानक, विनाशकारी।

प्रब (व) ह्लिका [प्र+ब (व) ह्ल्+ण्वुल्+टाप् इत्वम्] दे० 'प्रहेलिका'

प्रबाधनम् [प्र+बाध्+ल्युट्] 1. प्रत्याचार, प्रपीडन 2. अस्वीकृति, मुकरना 3. दूर रखना।

प्रबा (वा) लः, लम् [प्र+ब (व) ल्+णिच्+अच्] 1. कोंपल, अंकुर, किसलय—अपि······प्रवालमासाम-

नुबन्धि वीरुधाम्—कु० ५।३४, १।४४, ३।८, रघु० ६।१२, १३।४९ 2. मूंगा 3. वीणा की गरदन,—लः 1. शिष्य 2. जन्तु। सम०—अश्मन्तकः 1. लाल अश्मंतक वृक्ष 2. मूंगे का वृक्ष,—पद्मम् लाल कमल,—फलम् लाल चन्दन की लकड़ी,—भस्मन् (नपुं०) मूंगे की भस्म।

प्रबाहुः [प्रकृष्टो बाहुः—प्रा० स०] भुजा का अग्रभाग, पहुंचा।

प्रबाहुकम् (अव्य०) [प्रबाहु+कप्] 1. ऊँचाई पर 2. उसी समय।

प्रबुद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+बुध्+क्त] 1. जगाया हुआ, जागा हुआ 2. बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर 3. ज्ञाता, जानकार 4. पूरा खिला हुआ, फैला हुआ 5. कार्यारंभ करने वाला, या कार्यान्वित होने वाला (जादू, मंत्र आदि)।

प्रबोधः [प्र+बुध्+घञ्] 1. जागना (आलं० भी) जागरण, होश में आना, चेतना—अप्रबोधाय सुष्वाप—रघु० १२।५० मोहादभूत्कष्टतरः प्रबोधः—१४। ५६ 2. (फूलों का) खिलना, फैलना 3. जागरण, नींद का अभाव 4. सतर्कता, सावधानी 5. ज्ञान, समझ, बुद्धिमत्ता, भ्रम को दूर करना, यथार्थ ज्ञान—यथा 'प्रबोधचन्द्रोदय' में 6. सांत्वना 7. किसी सुगंध द्रव्य में सुगंध का पुनर्जीवन।

प्रबोधन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+बुध्+णिच्+ल्युट्] जागरण, जागना,—नम् 1. जागते रहना 2. जाग, जगना 3. सचेत होना 4. ज्ञान, बुद्धिमत्ता 5. शिक्षण, उपदेश देना 6. किसी गंधद्रव्य की सुगंध का पुनर्जीवन।

प्रबोध (धि) नी [प्रबोधन+ङीप्, प्र+बुध्+णिच्+णिनि+ङीप्] देव उठनी एकादशी, कार्तिक शुक्ला एकादशी जिस दिन विष्णु भगवान् चार मास की नींद लेने के पश्चात् जागते हैं।

प्रबोधित (भू० क० कृ०) [प्र+बुध्+णिच्+क्त] 1. जागा हुआ, जगाया हुआ 2. शिक्षण, प्राप्त, सूचना दिया हुआ।

प्रभञ्जनम् [प्र+भञ्ज्+ल्युट्] टुकड़े टुकड़े करना,—नः हवा, विशेषकर आंधी, झंझावात—नै० १।६१, पंच० १।१२२।

प्रभद्रः [प्रगतं भद्रं यस्मात्—प्रा० ब०] नीम का पेड़।

प्रभवः [प्र+भू+अप्] स्रोत, मूल—अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य—कु० १।३, अकिंचनः सन् प्रभवः स संपदाम्—५।७७, रघु० ९।७५ 2. जन्म, पैदायश 3. नदी का उद्गमस्थान—तस्या एव प्रभवमचलं प्राप्य गौरं तुषारैः—मेघ० ५२ 4. उत्पत्ति का कारण, (माता, पिता आदि) जन्मदाता—तमस्याः प्रभवमवगच्छ—श० १ 5. प्रणेता, रचयिता—कु० २।५ 6. जन्म स्थान 7. शक्ति, सामर्थ्य, शौर्य, भव्य गरिमा (प्रभाव) 8. विष्णु की उपाधि 9. (समास के अन्त में) उत्पन्न होने वाला, व्युत्पन्न—सूर्यप्रभवो वंशः—रघु० १।२, कु० ३।१५।

प्रभवितृ (पुं०) [प्र+भू+तृच्] शासक, महाप्रभु।

प्रभविष्णु (वि०) [प्र+भू+इष्णुच्] मजबूत, ताकतवर, शक्तिशाली,—ष्णुः 1. प्रभु, स्वामी—यत्प्रभविष्णवे रोचते—श० २ 2. विष्णु की उपाधि।

प्रभा [प्र+भा+अङ+टाप्] 1. प्रकाश, दीप्ति, कान्ति, जगमगाहट, चमक—प्रभास्मि शशिसूर्ययोः—भग० ७।८, प्रभा पतङ्गस्य—रघु० २।१५, ३१, ६।१८, ऋतु० १।१९, मेघ० ४७ 2. प्रकाश की किरण 3. धूप घड़ी पर सूरज की छाया 4. दुर्गा की उपाधि 5. कुबेर की नगरी का नाम 6. एक अप्सरा का नाम। सम०—करः 1. सूर्य—रघु० १०।७४ 2. चन्द्रमा 3. अग्नि 4. समुद्र 5. शिव का विशेषण 6. एक विद्वान् लेखक का नाम, मीमांसा दर्शन की उस एक विचारधारा के प्रवर्तक, जो उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है,—कीटः जुगनू,—तरल (वि०) जगमगाता हुआ—न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्—श० १।२६,—मण्डलम् प्रकाश का एक वृत्त, परिवेश—कु० १।२४, ६।४ रघु० ३।६०, १४। १४,—लेपिन् (वि०) कान्तियुक्त, कान्ति का प्रसारक—विक्रम० ४।३४।

प्रभागः [प्र+भज्+घञ्] 1. भाग, टुकड़ी 2. (गणित०) भिन्न का भिन्न।

प्रभात (भू० क० कृ०) [प्र+भा+क्त] जो स्पष्ट या प्रकाशित होने लगा हो—ननु प्रभाता रजनी—श० ४,—तम् दिन निकलना, पौ फटना।

प्रभानम् [प्र+भा+ल्युट्] प्रकाश, कान्ति, दीप्ति, ज्योति, चमक।

प्रभावः [प्र+भू+घञ्] 1. कान्ति, दीप्ति, उजाला 2. गरिमा, यश, महिमा, तेज, भव्य कान्ति—प्रभाववानिव लक्ष्यते श० १ 3. सामर्थ्य, शौर्य, शक्ति, अव्यर्थता—पंच० १।७ 4. राजोचित शक्ति (तीन शक्तियों में से एक) 5. अतिमानव शक्ति, अलौकिक-शक्ति—रघु० २।४१, ६२, ३।४०, विक्रम० १, २, ५, महानुभावता। सम०—ज (वि०) राजशक्ति से उत्पन्न प्रभाव से युक्त।

प्रभाषणम् [प्र+भाष्+ल्युट्] व्याख्या, अर्थकरण।

प्रभासः [प्र+भास्+घञ्] दीप्ति, सौन्दर्य, कान्ति,—सः,—सम् द्वारका के निकट स्थित एक सुविख्यात तीर्थस्थान।

प्रभासनम् [प्र+भास्+ल्युट्] प्रकाशित होना, जगमग होना, चमकना।

प्रभास्वर (वि०) [प्र+भास्+वरच्] उज्ज्वल, चमकीला, चमकदार।

प्रभिन्न (भू० क० कृ०) [प्र+भिद्+क्त] 1. अलग किया हुआ, खंडित, फाड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ 2. टुकड़े २किया हुआ 3. काटा हुआ, वियुक्त किया हुआ 4. मुकुलित, विकसित, खिला हुआ 5. बदला हुआ, परिवर्तित 6. विरूपित, विकृत 7. शिथिलित, ढीला 8. नशे में चूर, मदमस्त—कु० ५।८० (दे० प्रपूर्वक भिद्),—**न्नः** मतवाला हाथी। सम०—**अञ्जनम्** काजल।

प्रभु (वि०) (स्त्री०—**भु,—भ्वी**) [प्र+भू+डु] 1. बलवान्, मजबूत, शक्तिशाली—ऋषिप्रभावान्मयि नान्तकोऽपि प्रभुः प्रहर्तुं किमुतान्यहिंस्राः— रघु० २।६२, समाधिभेदप्रभवो भवन्ति—कु० ३।४० 3. जोड़ का —प्रभुर्मल्लो मल्लाय—महा०,—**भुः** 1. अधिपति, स्वामी—प्रभुर्बुभूषुर्भुवनत्रयस्य यः—शि० १।४९ 2. राज्यपाल, शासक, सर्वोच्च अधिकारी 3. स्वामी, मालिक 4. पारा 5. विष्णु 6. शिव 7. ब्रह्मा 8. इन्द्र। सम०—**भक्त** (वि०) अपने स्वामी में अनुरक्त, राजभक्त (**क्तः**) बढ़िया घोड़ा,—**भक्तिः** (स्त्री०) अपने स्वामी की भक्ति, राजभक्ति, स्वामिभक्त।

प्रभुता,—त्वम् [प्रभु+तल्+टाप्, प्रभु+त्व] 1. आधिपत्य, सर्वोपरिता, स्वामित्व, शासन, अधिकार—श० ५।२५, विक्रम० ४।१२ 2. मिल्कियत।

प्रभूत (भू० क० कृ०) [प्र+भू+क्त] 1. उद्भूत, उत्पन्न 2. प्रचुर, विपुल 3. असंख्य, अनेक 4. परिपक्व, पूर्ण 5. ऊँचा, उत्तुंग 6. लंबा 7. प्रधानत्व में। सम० —**यवसेन्धन** (वि०) जहाँ हरीघास और इंधन की बहुतायत हो,—**वयस्** (वि०) वयोवृद्ध, बूढ़ा, उमररसीदा।

प्रभूतिः (स्त्री०) [प्र+भू+क्तिन्] 1. उद्गम, मूल 2. शक्ति, सामर्थ्य 3. पर्याप्तता।

प्रभृतिः [प्र+भृ+क्तिन्] 1. आरंभ, शुरू (इस अर्थ में यह बहुधा बहुव्रीहि समास के अन्त में प्रयुक्त—इन्द्रप्रभृतयो देवाः आदि)—(अव्य०) 2. से, से लेकर, शुरू करके (अपा० के साथ)—शैशवात्प्रभृति पोषितां प्रियाम्—उत्तर० १।४५, रघु० २।३८,—**अद्यप्रभृति** आज (अब) से लेकर, अतः प्रभृति, ततः प्रभृति आदि।

प्रभेदः [प्र+भिद्+घञ्] 1. फाड़ना, चीरना, खोलना 2. प्रभाग, वियोग 3. हाथी के गण्डस्थल से मद का बहना—रघु० ३।३७ 4. अन्तर, भेद 5. प्रकार या क़िस्म।

प्रभ्रंशः [प्र+भ्रंश्+घञ्] गिरना, गिरकर अलग हो जाना।

प्रभ्रंशथुः [प्र+भ्रंश्+अथुच्] नाक का एक रोग, पीनस।

प्रभ्रंशित (भू० क० कृ०) [प्र+भ्रंश्+णिच्+क्त] 1. फेंका गया, डाल दिया गया 2. वञ्चित।

प्रभ्रंशिन् (वि०) [प्र+भ्रंश्+णिनि] टूटकर गिरना, झड़ना।

प्रभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+भ्रंश्+क्त] गिरा हुआ, नीचे पड़ा हुआ,—**ष्टम्** सिर पर विराजमान मुकुट की शिखापर धारण की गई फूल-माला, शिखावलंबिनी फूलमाला।

प्रभ्रष्टकम् [प्रभ्रष्ट+कन्] दे० 'प्रभ्रष्ट'।

प्रमग्न (भू० क० कृ०) [प्र+मस्ज्+क्त] डूबा हुआ, गोता दिया हुआ, डुबोया हुआ।

प्रमत (भू० क० कृ०) [प्र+मन्+क्त] विचारा हुआ।

प्रमत्त (भू० क० कृ०) [प्र+मद्+क्त] 1. नशे में चूर, मदोन्मत्त—श० ४।१ 2. उन्मत्त, पागल 3. लापरवाह, उपेक्षक, अनवधान, असावधान, अनपेक्ष (प्रायः अधि० के साथ) 4. उन्मार्गगामी, भूल करने वाला (अपा० के साथ)—स्वाधिकारात्प्रमत्तः—मेघ० १, 5. चौपट करने वाला 6. स्वेच्छाचारी, लम्पट। सम० —**गीत** (वि०) असावधानतापूर्वक गाया हुआ,—**चित्त** (वि०) लापरवाह, असावधान, बेखबर।

प्रमथः [प्र+मथ्+अच्] 1. घोडा 2. शिव के गण (जो भूत प्रेत माने जाते हैं) जो उसकी सेवा में रत हैं—कु० ७।९५। सम०—**अधिपः**,—**नाथः**—**पतिः** शिव की उपाधि।

प्रमथनम् [प्र+मथ्+ल्युट्] 1. चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, संतप्त करना 2. वध, हत्या 3. मन्थन करना, बिलोना।

प्रमथित (भू० क० कृ०) [प्र+मथ्+क्त] 1. प्रपीड़ित, कष्टग्रस्त 2. कुचला हुआ 3. कतल किया हुआ, वध किया हुआ,—मा० ३।१८ 4. भली भांति बिलोया हुआ,—**तम्** जल रहित छाछ, मठ्ठा।

प्रमद (वि०) [प्रकृष्टो मदो यस्य—प्रा० ब०] 1. मतवाला, नशे में चूर (आलं० से भी) 2. आवेशपूर्ण 3. लापरवाह 4. स्वेच्छाचारी, बदचलन,—**दः** 1. हर्ष, प्रसन्नता, खुशी—शि० ३।५४ १३।२ 5. धतूरे का पौधा। सम०—**काननम्**,—**वनम्** राजकीय अन्तःपुर से जुड़ा हुआ, प्रमोद वन, वह उद्यान जिसमें राजा अपनी रानियों के साथ विहार करता है।

प्रमदक (वि०) [प्रमद+कन्] लम्पट, कामुक।

प्रमदनम् [प्र+मद्+ल्युट्] कामेच्छा।

प्रमदा [प्रमद्+अच्+टाप्] 1. सुन्दरी नवयुवती—रघु० ९।३१, श० ५।१७ 2. पत्नी या स्त्री कु० ४।१२, रघु० ८।७२ 3. कन्याराशि। सम०—**काननम्**, —**वनम्** राजकीय अन्तःपुर के साथ जुड़ा हुआ प्रमोद

उद्यान (जहाँ रानियाँ विहार करती हैं), —जनः 1. नवयुवती, तरुणी 2. स्त्री ।

प्रमद्वर (वि०) [प्र+मद्+ष्वरच्] लापरवाह, अनवधान, असावधान ।

प्रमनस् (वि०) [प्रकृष्टं मनो यस्य—प्रा० ब०] 1. खुश, हर्षयुत, प्रसन्न, आनन्दित ।

प्रमन्यु (वि०) [प्रकृष्टो मन्युः यस्य—प्रा० ब०] 1. क्रोधाविष्ट, चिड़चिड़ा चिढ़ा हुआ (अधि० के साथ) रघु० ७।३४ 2. कष्टग्रस्त शोकान्वित, शोकसंतप्त ।

प्रमयः [प्र+मी+अच्] 1. मृत्यु 2. बरबादी, नाश, निधन 3. वध, हत्या ।

प्रमर्दनम् [प्र+मृद्+ल्युट्] मसल डालना, नष्ट करना, कुचल देना, —नः विष्णु का विशेषण ।

प्रमा [प्र+मा+अङ्+टाप्] 1. प्रतिबोध, प्रत्यक्षज्ञान 2. (तर्क० में) सही भाव, विशुद्ध ज्ञान, यथार्थ जानकारी, ठीक ठीक प्रत्यय (यथा रंजते इदं रजतमिति ज्ञानम् - तर्क०) ।

प्रमाणम् [प्र+मा+ल्युट्] 1. (लंबाई चौड़ाई) माप —रघु० १८।३८ 2. आकार, विस्तार, परिमाण (लंबाई चौड़ाई) 3. मान, मानक—पृथिव्यां स्वामिभक्तानां प्रमाणे परमे स्थितः—मुद्रा० २।२१ 4. सीमा, परिमाण 5. साक्ष्य, शहादत, प्रमाण 6. अधिकारी, सम्मोदन, निर्णेता, निश्चायक, वह जिसका शब्द प्रमाण माना जाय —श्रुत्वा देवः प्रमाणम् - पंच० १, 'यह सुनकर श्रीमान् ही निर्णय करेंगे (कि क्या करना चाहिए)'—आर्यमिश्राः प्रमाणम्—मालवि० १, मुद्रा० १।१, श० १।२२, व्याकरणे पाणिनिः प्रमाणम् 7. सत्य ज्ञान, यथार्थ प्रत्यय या भाव 8. प्रमाण की रीति, यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का उपाय (नैयायिक केवल चार प्रमाण - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द - मानते हैं, वेदान्ती और मीमांसक अनुपलब्धि और अर्थापत्ति दो और मानते हैं। सांख्य केवल प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द को ही मानते हैं तु—० 'अनुभव' भी 9. मुख्य, मूल 10. एकता 11. वेद, शास्त्र, धर्मग्रन्थ 12. कारण, हेतु, (**प्रमाणी कृ**) 1. अधिकारी मानना या समझना 2. आज्ञा मानना, अनुमत होना 3. साबित करना, सिद्ध करना 4. यथोचित भाग बांटना । सम०—**अधिक** (वि०) सामान्य से अधिक, अपरिमित, अत्यधिक—श० १।३०,—**अन्तरम्** प्रमाण की अन्य रीति,—**अभावः** प्रमाणशून्यता, **ज्ञ** (—वि०) (तार्किक की भांति) प्रमाण पद्धति का जानकार, (**ज्ञः**) शिव का विशेषण,—**दृष्ट** (वि०) अधिकारी द्वारा स्वीकृत, —**पत्रम्** लिखित अधिकारपत्र, **पुरुषः** विवाचक, निर्णायक, मध्यस्थ,—**वचनम्**, **वाक्यम्** अधिकृत वक्तव्य, —**शास्त्रम्** 1. वेद, धर्मशास्त्र 2. तर्क विज्ञान,— **सूत्रम्** मापने की डोरी ।

प्रमाणयति (ना० धा० पर०) अधिकृत समझना, प्रमाणस्वरूप मानना —हि० १।१० ।

प्रमाणिक (वि०) [प्रमाण+ठन्] 1. 'नाप' का आकार ग्रहण करने वाला 2. प्रमाण या अधिकार का रूप धारण करने वाला ।

प्रमातामहः [प्रकृष्टो मातामहः—प्रा० स०] 1. परनाना, —ही परनानी ।

प्रमाथः [प्र+मथ्+घञ्] 1. प्रपीडन, संताप देना, सताना 2. क्षुब्ध करना, बिलोना 3. वध, हत्या, विनाश - सैनिकानां प्रमाथेन सत्यमोजायितं त्वया —उत्तर० ५।३१, ४ 4. हिंसा, अत्याचार 5. बलात्कार, बलपूर्वक अपहरण ।

प्रमाथिन् (वि०) [प्र+मथ्+णिनि] 1. यन्त्रणा देने वाला, तंग करने वाला, संपीडित करने वाला, कष्ट देने वाला, दुःख पहुंचाने वाला क्व रुजा हृदयप्रमाथिनी क्व च ते विश्वसनीयमायुधम्—मालवि० ३।२, मा० २।१, कि० ३।१४ 2. वध करने वाला, विनाशकारी 3. क्षुब्ध करने वाला, गतिमान् करने वाला —भग० २।६०, ६।३४ 4. फाड़ने वाला, गिराने वाला, पछाड़ने वाला रघु० ११।५८ 5. काट कर गिराने वाला कि० १७।३१ ।

प्रमादः [प्र+मद्+घञ्] 1. अवहेलना, असावधानी, अनवधान, लापरवाही, भूल-चूक — ज्ञातुं प्रमादस्खलितं न शक्यम्—श० ६।२६, चौर० १ 2. मादकता, पागलपन, उन्मत्तता 4. गलती, भारी भूल, ग़लत निर्णय 5. दुर्घटना, उत्पात, संकट, भय—अहो प्रमादः —मा० ३, उत्तर० ३ ।

प्रमापणम् [प्र+मी+णिच्+ल्युट्, पुक्] वध, हत्या ।

प्रमार्जनम् [प्र+मृज्+णिच्+ल्युट्] मिटा देना, रगड़ देना, धो देना ।

प्रमित (भू० क० कृ०) [प्र+मा (मि) +क्त] 1. नपा तुला, सीमित 2. कुछ, थोड़ा—प्रमितविषयां शक्तिं विदन्—महावी० १।५१, शि० १६।८० 3. ज्ञात, समझा हुआ 4. प्रमाणित, प्रदर्शित ।

प्रमितिः (स्त्री०) [प्र+मा (मि) +क्तिन्] 1. माप, नाप 2. सत्य या निश्चित ज्ञान, यथार्थ भाव या प्रत्यय 3. किसी प्रमाण या ज्ञान के स्रोत से प्राप्त जानकारी ।

प्रमीढ (वि०) [प्र+मिह्+क्त] 1. घना, सघन, सटा हुआ 2. मूत्र बनकर निकला हुआ ।

प्रमीत (भू० क० कृ०) [प्र+मी+क्त] मरा हुआ, मृतक, —तः यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ या वध किया हुआ पशु ।

प्रमीतिः (स्त्री०) [प्र+मी+क्तिन्] मृत्यु, विनाश, निधन ।

प्रमीला [प्र+मील्+अ+टाप्] 1. तन्द्रा, आलस्य, उत्साहहीनता 2. स्त्रियों के राज्य की प्रभुसत्ताप्राप्त स्त्री का नाम, (जब अर्जुन का घोड़ा उस स्त्री के राज्य में पहुँचा तो उसने अर्जुन के साथ युद्ध किया, परन्तु अर्जुन के विजय हो जाने पर प्रमीला, अर्जुन की पत्नी बन गई)।

प्रमीलित (भू० क० कृ०) [प्र+मील्+क्त] मुँदी हुई आँखों वाला।

प्रमुक्त (भू० क० कृ०) [प्र+मुच्+क्त] 1. शिथिलित 2. स्वाधीन किया हुआ, स्वतंत्र छोड़ा हुआ 3. तितिक्षु, विरक्त 4. डाला हुआ, फेंका हुआ। सम०—कण्ठम् (अव्य०) फूटफूट कर।

प्रमुख (वि०) [प्रा० ब०] 1. मुँह किये हुए, मुँह मोड़े हुए 2. मुख्य, प्रधान, अग्रणी, प्रथम 3. (समास के अंत में) (क) प्रधानता में, प्रधान या मुख्य बनाकर—वासुकिप्रमुखाः कु० २।३८ (ख) से युक्त, सहित प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार—मेघ० ४,-खः 1. आदरणीय पुरुष 2. ढेर, समुच्चय,—खम् 1. मुंह 2. अध्याय या परिच्छेद का आरम्भ (प्रमुखतः, प्रमुखे क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'के सामने' 'सामने' 'के विरुद्ध' अर्थ को प्रकट करते हैं—भग० १।२५, श० ७।२२)।

प्रमुग्ध (वि०) [प्र+मुह्+क्त] 1. मूर्छित, अचेत, 2. अत्यंत प्रिय।

प्रमुद् (स्त्री०) [प्र+मुद्+क्विप्] अत्यंत हर्ष।

प्रमुदित (भू० क० कृ०) [प्र+मुद्+क्त] उल्लसित, आह्लादित, प्रसन्न, आनन्दित। सम०—हृदय (वि०) प्रसन्नमना।

प्रमुषित (भू० क० कृ०) [प्र+मुष्+क्त] चुराया हुआ, अपहृत—शि० १७।७१,—ता एक प्रकार की पहेली।

प्रमूढ (भू० क० कृ०) [प्र+मुह्+क्त] 1. विस्मित, उद्विग्न, व्याकुल 2. मूर्ख, जड़।

प्रमृत (भू० क० कृ०) [प्र+मृ+क्त] मरा हुआ, मृतक, —तम् 1. मृत्यु 2. खेती।

प्रमृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+मृज्+क्त] 1. रगड़ दिया गया, धो दिया गया, मिटा दिया गया, साफ़ किया गया—रघु० ६।४१, ४४ 2. चमकाया हुआ, चमकीला, स्वच्छ।

प्रमेय (वि०) [प्र+मा+यत्] 1. मापे जाने योग्य, निश्चित 2. प्रमाणित किये जाने योग्य, प्रदर्शनीय, —यम् 1. निश्चित ज्ञान की वस्तु, प्रदर्शित उपसंहार, साध्य 2. सिद्ध करने योग्य बात, जो विषय सिद्ध (प्रमाणित) किया जा सके।

प्रमेहः [प्र+मिह्+घञ्] एक प्रकार का मूत्र रोग (धातु क्षीणता या मधुमेह आदि) जिसमें मूत्र के साथ धातु या शक्कर गिरती हो।

प्रमोक्षः [प्र+मोक्ष्+घञ्] 1. गिराना, गिरने देना 2. मुक्त करना, स्वतंत्र करना।

प्रमोचनम् [प्र+मुच्+ल्युट्] 1. मुक्त करना, स्वतंत्र छोड़ना 2. उगलना, छोड़ना।

प्रमोदः [प्र+मुद्+घञ्] हर्ष, आह्लाद, उल्लास, प्रसन्नता —प्रमोदनृत्यैः सह वारयोषिताम्—रघु० ३।१९, मनु० ३।६१।

प्रमोदनम् [प्र+मुद्+णिच्+ल्युट्] 1. आह्लादित करना आनंदित करना, प्रसन्न करना 2. प्रसन्नता.-नः विष्णु का विशेषण।

प्रमोदित (भू० क० कृ०) [प्र+मुद्+णिच्+क्त] प्रसन्न, आह्लादित, हृष्ट, आनंदित,—तः कुबेर का विशेषण।

प्रमोहः [प्र+मुह्+घञ्] 1. मूर्छा, बेहोशी, जडता —तिरयति करणानां ग्राहकत्वं प्रमोहः- मा० १।४१, 2. विकलता, घबड़ाहट।

प्रमोहित (भू० क० कृ०) [प्र+मुह्+णिच्+क्त] आकुलित, उद्विग्न, घबड़ाया हुआ।

प्रयत (भू० क० कृ०) [प्र+यम्+क्त] 1. नियंत्रित, जितेन्द्रिय, पूत, पावन, भक्त, धार्मिक अनुष्ठानों एवं साधनाओं से जिसने अपने आपको पवित्र बना लिया है, आत्मसंयमी,—रघु० १।९५, ८।११, १३।७०, कु० १।५८, ३।१६ 2. सोत्साह, अत्युत्सुक 3. सुशील, विनम्र।

प्रयत्नः [प्र+यत्+नङ्] 1. प्रयास, चेष्टा, उद्योग-रघु० २।५६, मुद्रा० ५।२० 2. अनवरत प्रयास, धैर्य 3. श्रम कठिनाई—प्रयत्नप्रेक्षणीयः संवृत्तः—श० १, 'दुर्दृश्य' 'दुर्दृष्ट' 4. बड़ी सावधानी, चौकसी—कृतप्रयत्नोऽपि गृहे विनश्यति - पंच० १।२०५ 5. (व्या० में) उच्चारण में प्रयास, मुख का वह व्यापार जिसके सहारे वर्णों का उच्चारण होता है।

प्रयस्त (भू० क० कृ०) [प्र+यस्+क्त] अभ्यस्त, सिखाया हुआ, मसाले आदि डाल कर स्वादिष्ट किया हुआ।

प्रयागः [प्रकृष्टों यागफलं यत्र-प्रा० ब०] 1. यज्ञ 2. इन्द्र 3. घोड़ा 4. वर्तमान इलाहाबाद के पास गंगा यमुना के संगम पर बना प्रसिद्ध तीर्थस्थान—मनु० २।२१ (इस अर्थ में शब्द नपुं० भी है)। सम०—भवः इन्द्र का विशेषण।

प्रयाचनम् [प्र+याच्+ल्युट्] माँगना, प्रार्थना करना, गिड़गिड़ाना।

प्रयाजः [प्र+यज्+घञ्] प्रधानयज्ञ संबंधी एक अनुष्ठान।

प्रयाणम् [प्र+या+ल्युट्] 1. कूच करना, प्रस्थान करना, बिदा 2. अभियान, यात्रा—मार्गं तावच्छृणु कथयत-

स्त्वत्प्रयाणानुरूपम् मेघ० १३ 3. प्रगति, अग्रगमन 4. (शत्रु का) अभियान, हमला, आक्रमण, चढ़ाई —कामं पुरः शुक्रमिव प्रयाणे—कु० ३।४३, रघु० ६। ३३ 5. आरंभ, शुरु 6. मृत्यु (इस संसार से) बिदा —भग० ७।३० 7. घोड़े की पीठ 8. किसी भी जन्तु का पिछला भाग। सम०—भंगः यात्रा के बीच कहीं रुक जाना, ठहरना—पंच० १।

प्रयाणकम् [प्रयाण+कन्] यात्रा, प्रस्थान—का० ११८, ३०५।

प्रयात (भू० क० कृ०) [प्र+या+क्त] 1. आगे बढ़ा हुआ, गया हुआ, विसर्जित 2. मृतक, मरा हुआ—तः 1. आक्रमण 2. चट्टान, दलवाँ चट्टान।

प्रयापित (भू० क० कृ०) [प्र+या+णिच्+क्त, पुक्] 1. आगे पहुँचाया हुआ, भेजा हुआ 2. भगाया हुआ।

प्रयामः [प्र+यम्+घञ्] 1. अभाव, कमी, (अन्नादि की) महँगाई 2. रोकथाम, नियन्त्रण 3. लम्बाई।

प्रयासः [प्र+यस्+घञ्] 1. प्रयत्न, चेष्टा, उद्योग —रघु० १२।५३ १४।५१ 2. श्रम, कठिनाई।

प्रयुक्त (भू० क० कृ०) [प्र+युज्+क्त] 1. जोता हुआ, काठी जीन आदि कसा हुआ 2. प्रचलित, (शब्द आदि) व्यवहार में लाया हुआ 3. प्रयोग में लाया गया 4. नियत किया हुआ, मनोनीत 5. किया हुआ, प्रतिनिहित 6. उदित, उद्गत, उत्पन्न, फलित 7. युक्त 8. ध्यानमग्न, बेसुध 9. (रुपया आदि) ब्याज पर दिया हुआ 10. प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ (दे० प्र पूर्वक युज्)।

प्रयुक्तिः (स्त्री०) [प्रयुज्+क्तिन्] 1. इस्तेमाल, उपयोग प्रयोग 2. उत्तेजना, उकसाना 3. प्रयोजन, मुख्य उद्देश्य या ध्येय, अवसर 4. परिणाम, फल।

प्रयुतम् [प्रा० स०] दस लाख की संख्या।

प्रयुयुत्सुः [प्र+युध्+सन्+उ,] 1. योद्धा 2. मेंढा 3. हवा, वायु 4. सन्यासी 5. इन्द्र।

प्रयुद्धम् [प्रा० स०] संग्राम, लड़ाई।

प्रयोक्तृ (वि०) [प्र+युज्+तृच्] 1. उपाय, शब्द आदि का) उपयोग करने वाला 2. अनुष्ठाता, निदेशक, परिणायक 3. प्रेरक, उत्तेजक, उकसाने वाला 4.प्रणेता, अभिकर्ता—उत्तर० ३।४८ 5. (नाटक का) अभिनय-कर्ता 6. ब्याज पर रुपया देने वाला, साहूकार 7. तीरंदाज।

प्रयोगः [प्र+युज्+घञ्] 1. इस्तेमाल, व्यवहार, उपयोग जैसा कि 'शब्द प्रयोग' में - अयं शब्दो भूरिप्रयोगः, अल्पप्रयोगः इस शब्द का बहुल प्रयोग, या विरल प्रयोग होता है 2. प्रचलित रूप, सामान्य प्रचलन 3. फेंकना, प्रक्षेपण, मुक्त करना (विप० 'संहार')—प्रयोगसंहार विभक्तमंत्रम्—रघु० ५।५७ 4. प्रदर्शनी, अनुष्ठान, (नाटकीय) अभिनयन, नाटक खेलना—देव प्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रम्—मालवि० १, नाटिका न प्रयोगतो दृष्टा—रत्न० १ 'मंच पर अभिनीत नहीं देखी गई' 5. अभ्यास, (किसी विषय का) प्रायोगिक भाग (विप० शास्त्र या सैद्धान्तिक ज्ञान) तदत्र भवानिमं मां च शास्त्रेप्र योगे च विमृशतु —मालवि० १ 6. कार्यविधि का क्रम, सांस्कारिक रूप 7. कृत्य, कार्य 8. पाठ करना, पढ़कर सुनाना 9. आरंभ, शुरू 10. योजना, साधन, युक्ति, तरकीब 11. साधन, उपकरण 12. फल, परिणाम 13. जादू-प्रयोग, ऐन्द्रजालिक रचना, अभिचार 14. ब्याज पर रुपया देना 15. घोड़ा। सम०—अतिशयः प्रस्तावना के पाँच भेदों में से एक जिसमें प्रस्तुत प्रयोग के अन्तर्गत दूसरा प्रयोग इस रीति से उपस्थित किया जाता है कि अकस्मात् पात्र रंगमंच पर प्रवेश करते हैं अर्थात् यहाँ सूत्रधार पात्र प्रवेश का संकेत करता है और इस प्रकार अपने भावी कार्य (नृत्य) की पूर्व सूचना देता है—सा० द० परिभाषा देता है—यदि प्रयोग एकस्मिन् प्रयोगोऽन्यः प्रयुज्यते, तेन पात्रप्रवेश-श्चेत् प्रयोगातिशयस्तदा। २९१,—निपुण (वि०) नृत्याभ्यास में कुशल—मालवि० ३।

प्रयोजक (वि०) [प्र+युज्+ण्वुल्] निमित्त बनने वाला, कारण बनने वाला, सम्पन्न करने वाला, नेतृत्व करने वाला, उकसाने वाला, उद्दीपक,—कः 1. नियुक्त करने वाला, जो इस्तेमाल करे या काम ले 2. ग्रंथकर्ता 3. संस्थापक, प्रवर्तक 4. साहूकार, महाजन 5. धर्म शास्त्री, विधायक।

प्रयोजनम् [प्र+युज्+ल्युट्] 1. इस्तेमाल, काम में लगाना, नियुक्ति 2. उपयोग, आवश्यकता, (आवश्यक वस्तु में करण०, तथा उपयोक्ता में संबं०) सर्वैरपि······राज्ञां प्रयोजनम्—पंच० १, बाले किमनेन पृष्टेन प्रयोजनम्—का० १४४ 3. ध्येय, लक्ष्य, उद्देश्य, अभिप्राय प्रयोजनमनुद्दिश्य न मंदोऽपि प्रवर्तते, पुत्र प्रयोजना दाराः पुत्रः पिंडप्रयोजनः, हितप्रयोजनं मित्रं धनं सर्वप्रयोजनम्—सुभा०, गुणवत्ताऽपि परप्रयोजना —रघु० ८।३१ 4. प्राप्ति का साधन—मनु० ७।१०० 5. कारण, उद्देश्य, निमित्त 6. लाभ, स्वार्थ।

प्रयोज्य (सं० कृ०) [प्र+युज्+ण्यत्] 1. इस्तेमाल करने के योग्य, काम में लाने के योग्य 2. अभ्यास करने के लायक 3. उत्पन्न या पैदा करने के योग्य 4. नियुक्त करने के योग्य 5. चलाने या फेंकने के योग्य (अस्त्र) 6. कार्य आरम्भ करने के योग्य।

प्ररुदित (भू० क० कृ०) [प्र+रुद्+क्त] फूट फूट कर रोया हुआ, मुक्त कंठ से रुदन।

प्ररूढ (भू० क० कृ०) [प्र+रुह्+क्त] 1. पूरा बढ़ा

हुआ, पूर्ण विकसित 2. उत्पन्न, उद्भूत, पैदा हुआ —यस्यायमंगात् कृतिनः प्ररूढः --श० ७।१९ 3. बढ़ा हुआ 4. गहराई तक गया हुआ - यथा 'प्ररूढ़मूल' में 5. लम्बे बढ़े हुए –यथा 'प्ररूढकेश' 'प्ररूढमश्रु' में।

प्ररूढिः (स्त्री०) [प्र+रुह्+क्तिन्] वर्धन, वृद्धि।

प्ररोचनम् [प्र+रुच्+णिच्+ल्युट्] 1. उत्तेजना, उद्दीपन 2. निदर्शन, व्याख्या 3. (किसी व्यक्ति का) प्रदर्शन जिससे लोग देख सकें और पसंद कर—अलोकसामान्य-गुणस्तनूजः प्ररोचनार्थं प्रकटीकृतश्च—मा० १।१० (यहाँ 'प्ररोचनार्थं' का अर्थ जगद्धर पंडित 'प्रवृत्ति पाटवार्थं'—'संसार से पूर्णतः परिचित होने के लिए' करते हैं) 4. नाटक में आगे आने वाली बात का रोचक वर्णन 5. ध्येय की पूर्णरूप से प्रतिस्थापना —दे० सा० द० ३८८ (अन्तिम दोनों अर्थ को बतलाने के लिए 'प्ररोचना' भी)।

प्ररोहः [त+रुह्+घञ्] 1. अंकुरित होना, अंखुवा निकलना, बढ़ना, बीजांकुरण—यथा यवांकुरप्ररोह 2. अंकुर, अंखुवा (आलं० से भी)—प्लक्षप्ररोह इव सौधतलं बिभेद—रघु० ८।९३, प्लक्षान् प्ररोहजटिला-मिव मंत्रिवृद्धान् १३।७१, कु० ३।६०, ७।१७ 3. किसलय, सन्तान - हा राघेयकुलप्ररोह - वेणी० ४, महावी० ६।२५ 4. प्रकाशांकुर – कुर्वंति सामंतशिखा-मणीनां प्रभाप्ररोहास्तमयं रजांसि -- रघु० ६।३३, 5. नवपल्लव या टहनी, शाखा, कोंपल।

प्ररोहणम् [प्र+रुह्+ल्युट्] 1. वर्धन, अंकुरण, स्फुटन 2. कली खिलना, अंकुरण या उगाव 1. टहनी, किसलय स्फुटन, कोंपल।

प्रलपनम् [प्र+लप्+ल्युट्] 1. बात चीत करना, बात, शब्द, संलाप 2. वाचालता, बालकलरव बड़बड़, असंबद्ध बात, बकवास—इदं कस्यापि प्रलपितम् 3. विलाप, रोना-धोना—उत्तर० ३।२९।

प्रलपित (भू० क० कृ०) [प्र+लप्+क्त] कहा हुआ, प्रलाप किया हुआ,—तम् बात—दे० ऊपर 'प्रलपन'।

प्रलब्ध (भू० क० कृ०) [प्र+लभ्+क्त] धोखा दिया हुआ, ठगा हुआ।

प्रलंब (वि०) [प्र+लंब्+अच्, घञ् वा] 1. लटकनशील, नीचे की ओर लटकने वाला— जैसा कि 'प्रलंब केश' में 2. उन्नत—यथा 'प्रलंबनासिक' में 3. मन्थर, विलंबकारी,—बः 1. लटकता हुआ, आश्रित 2. कोई भी नीचे को लटकने वाली वस्तु 3. शाखा 4. कण्ठहार 5. एक प्रकार का हार 6. स्त्री की छाती 7. जस्ता या सीसा 8. एक राक्षस का नाम जिसको बलराम ने मार डाला था। सम० अंडः वह पुरुष जिसके पोते लटकते हों,—घ्नः, मथनः, हन् (पुं०) बलराम का विशेषण।

प्रलंबनम् [प्र+लम्ब्+ल्युट्] नीचे लटकना, आश्रित रहना।

प्रलंबित (वि०) [प्र+लंब्+क्त] लटकनशील, लटकने वाला, निलंबित।

प्रलंभः [प्र+लभ्+घञ्, मुमागमः] 1. प्राप्त करना, लाभ उठाना, अवाप्ति 2. धोखा देना, छलना, ठगना, प्रवंचना।

प्रलयः [प्र+ली+अच्] 1. विनाश, संहार, विघटन—स्थानानि किं हिमवतः प्रलयं गतानि—भर्तृ० ३।७० ६९, प्रलयं नीत्वा—श० ११।६६, 'तिरोहित करके' (कल्प के अन्त में) 2. संसार का विनाश, विश्वव्यापी विनाश - कु० २।६८, भग० ७।६ 3. व्यापक विनाश या बरबादी 4. मृत्यु, मरना, निधन,—प्रारब्धाः प्रलयाय मांसवदहो विक्रेतुमेते वयम् मुद्रा० ५।२१ ११।१४ भग० ११।१४ 5. मूर्छा, बेहोशी, चेतना का न रहना, गश कु० ४।२ 6. (अलं० शा० में) चेतना की हानि (३ व्यभिचारिभावों में से एक—प्रलयः सुख-दुःखाद्यै-र्गाढमिन्द्रियमूर्छनम्— प्रता० 7. रहस्यध्वनि, 'ओम्' या प्रणव। सम० कालः विश्वनाश का समय,—जलधरः सृष्टि-विघटन के अवसर की काली घटा,—दहनः सृष्टि विघटन के अवसर पर आग,—पयोधिः सृष्टि के विनाश का समुद्र।

प्रललाट (वि०) [प्रा० स०] उन्नत मस्तक वाला।

प्रलवः [प्र+लू+अप्] टुकड़ा, कतला, खंड।

प्रलवित्रम् [प्र+लू+इत्र] काटने का उपकरण।

प्रलापः [प्र+लप्+घञ्] 1. बात, वार्तालाप, प्रवचन 2. वाचालता, बालकलरव, असंबद्ध बात या बकवाद मनु० १२।६ 3. विलाप, रोना धोना—उत्तराप्रलापो-पजनितकृपो भगवान् वासुदेवः—का० १७५, वेणी० ५।३०। सम०—हन् (पुं० एक प्रकार का अंजन।

प्रलापिन् (वि०) [प्र+लप्+णिनि] 1. बातूनी, बोलने वाला –हा असंबद्धप्रलापिन्–वेणी ३ 2. वाचालता, बालकलरव।

प्रलीन (भू० क० कृ०) [प्र+ली+क्त] 1. पिघला हुआ, घुला हुआ 2. लुप्त, विनष्ट 3. निर्बुद्धि, चेतना शून्य।

प्रलून (भू० क० कृ०) [प्र+लू+क्त] काट कर गिराया हुआ।

प्रलेपः [प्र+लिप्+घञ्] लेप, मल्हम, चोपड़।

प्रलेपक [प्र+लिप्+ण्वुल्] 1. मलने वाला, लेप करने वाला 2. एक प्रकार का मन्दज्वर।

प्रलेहः [प्र+लिह्+घञ्] एक प्रकार का रसा, शोरवा।

प्रलोठनम् [प्र+लुठ्+ल्युट्] 1. (भूमि पर) लोटना 2. उत्तोलन, उछालना।

प्रलोभः [प्र+लुभ्+घञ्] 1. अतितृष्णा, लालच, लालसा 2. ललचाना, उछालना।

प्रलोभनम् [प्र+लुभ्+ल्युट्] 1. आकर्षण 2. ललचाना, फुसलाना, लालच देना 3. प्रलोभन की वस्तु, चारा, दाना।

प्रलोभनी [प्रलोभन+ङीप्] रेत, बालू ।
प्रलोल (वि०) [प्रा० स०] अत्यंत क्षुब्ध, थरथर करने वाला ।
प्रवक्तृ (पुं०) [प्र+वच्+तृच्] 1. वर्णन करने वाला, वक्ता, उद्घोषक 2. अध्यापक, व्याख्याता—मनु० ७।२० 3. सुवक्ता, धाराप्रवाह बोलने वाला ।
प्रवगः, प्रवङ्गः, प्रवङ्गमः (पुं०) बंदर, दे० 'प्लवंग' और 'प्लवङ्गमः' ।
प्रवचनम् [प्र+वच्+ल्युट्] 1. बोलना, प्रकथन करना, घोषणा करना, पंच० १।१९० 2. अध्यापन, व्याख्यान 3. खोलकर समझाना, व्याख्या करना, अर्थ करना —महावी० ४।२५ 4. वाग्मिता 5. धर्मशास्त्र, मनु० ३।१८४ । सम० —पटु (वि०) बात करने में कुशल, वाग्मी ।
प्रवटः [प्र+वट्+अच्] गेहूँ ।
प्रवण (वि०) [प्र+वण्+अच्] 1. ढलवाँ, रुझान वाला, झुकावदार, नीचे को बहने वाला 2. ढालू, दुरारोह, विप्रपाती, चट्टान जैसा 3. कुटिल, झुका हुआ, 4. अनुरक्त, प्रवृत्त, संलग्न (प्रायः समास के अन्त में) वचनप्रवणः—कि० ३।१९ 5. भक्त, अनुरक्त, व्यस्त, तुला हुआ, झुका हुआ, भरा हुआ—नृभिः प्राणत्राण-प्रवणमतिभिः कैश्चिदधुना —भर्तृ० ३।२९, शि० ८।३५, मुद्रा० ५।२१, कि० २।४४ 6. अनुकूल, उत्सुक—कु० ४।४२ 7. आतुर, तत्पर कि० २।८ 8. युक्त, सम्पन्न 9. विनम्र, सुशील, विनीत 10. मुर्झाया हुआ, बर्बाद, क्षीण, —णः चौराहा,—णम् 1. उतार, ढलवाँ उतार, चट्टान 2. पहाड़ का पार्श्वभाग, ढलान, झुकाव ।
प्रवत्स्यत् (वि०) (स्त्री०—ती,-न्ती) [प्र+वस्+स्य (लृट्)+शतृ] यात्रा पर जाने के लिए तैयार। सम०—पतिका उस नायक की पत्नी जो यात्रा पर जाने के लिए तैयार बैठा है (रीतिकाव्यों में—आठ प्रकार की नायिकाओं में से एक) ।
प्रवयणम् [प्र+वे+ल्युट्] 1. बुने हुए कपड़े का ऊपर का भाग 2. अङ्कुश—शि० १३।१९ ।
प्रवयस् (वि०) [प्रगतं वयो यस्य —प्रा० ब०] बड़ी उम्र का, वृद्ध, बूढ़ा—केऽप्येते प्रवयसस्त्वां दिदृक्षवः—उत्तर० ४, रघु० ८।१८ ।
प्रवर (वि०) [प्र+वृ+अप्] 1. मुख्य, प्रधान, सर्वश्रेष्ठ या पूज्य, सर्वोत्तम, श्रीमान्—संकेतके चिरयति प्रवरो विनोदः—मृच्छ० ३।३, मनु० १०।२७, घट० १६ 2. ज्येष्ठ,—रः 1. बुलावा, आह्वान 2. एक विशेष प्रकार का आवाहन जो अग्न्याधान के अवसर पर अग्नि को संबोधित किया जाता है 3. वंश परम्परा 4. कुल, परिवार, वंश 5. पूर्वज 6. गोत्रप्रवर्तक ऋषि 7. सन्तान, वंशज 8. ढकना, चादर, —रम् अगर की लकड़ी । सम०—वाहनौ (द्वि० व०) अश्विनी-कुमारों का विशेषण ।
प्रवर्गः [प्रवृज्यते निः क्षिप्यते हविरादिकमस्मिन्—प्र+वृज्+घञ्] 1. यज्ञीय अग्नि 2. विष्णु का विशेषण ।
प्रवर्ग्यः [प्र+वृज्+ण्यत्] सोमयाग से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान ।
प्रवर्तः [प्र+वृत्+घञ्] आरंभ, उपक्रम, काम में लगाना ।
प्रवर्तक (वि०) (स्त्री०—र्तिका) [प्र+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1. चालू करने वाला, स्थापित करने वाला 2. प्रगतिशील, उन्नेता, आगे बढ़ाने वाला 3. पैदा करने वाला, जन्म देने वाला 4. प्रबोधक, प्रोत्साहक, उकसाने वाला, भड़काने वाला (बुरे अर्थ में),—कः जन्मदाता, प्रवर्तक, प्रणेता 2. प्रबोधक, प्रोत्साहक 3. विवाचक, मध्यस्थ ।
प्रवर्तनम् [प्र+वृत्+ल्युट्] 1. चलते रहना, आगे बढ़ना 2. आरंभ, शुरु 3. कार्यारम्भ, नींव डालना, संस्थापन, प्रतिष्ठापन 4. प्रोत्साहन, बलपूर्वक चलाना, उद्दीपन 5. व्यस्त होना, काम में लगना 6. होना, घटित होना 7. क्रियता, कार्य 8. व्यवहार, आचरण, कार्यविधि, —ना कार्य में प्रेरित करना, प्रोत्साहन देना ।
प्रवर्तयितृ (वि०) [प्र+वृत्+णिच्+तृच्] संचालन करने वाला, या जो नींव डालता है, संस्थापित करता है और उसे चलाता रहता है या ढकेलता है ।
प्रवर्तित (भू० क० कृ०) [प्र+वृत्+(णिच्)+क्त] 1. मोड़ दिया हुआ, चलाया हुआ, लुढ़काया हुआ, चक्कर खाने वाला—रघु० ९।६६ 2. नींव डाला हुआ 3. प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ, भड़काया हुआ 4. सुलगाया हुआ 5. जन्म दिया हुआ, निर्मित 6. पवित्र किया हुआ, छाना हुआ—मनु० ११।१९६ ।
प्रवर्तिन् (वि०) [प्र+वृत्+णिच्+णिनि] 1. प्रगतिशील, आगे बढ़ने वाला 2. सक्रिय रहने वाला 3. जन्म देने वाला, प्रभावी 4. इस्तेमाल करने वाला ।
प्रवर्धनम् [प्र+वृध्+ल्युट्] वृद्धि करना, बढ़ाना ।
प्रवर्षः [प्र+वृष्+घञ्] भारी वृष्टि, मूसलाधार वर्षा ।
प्रवर्षणम् [प्र+वृष्+ल्युट्] 1. बरसना 2. पहली वृष्टि ।
प्रवसनम् [प्र+वस्+ल्युट्] विदेश जाना, विदेश यात्रा, यात्रा पर जाना ।
प्रवहः [प्र+वह्+अच्] 1. बहना, धार बनकर बहना 2. वायु 3. वायु के सात मार्गों में से एक (जो ग्रहों को गतिमान् करता है ।
प्रवहणम् [प्र+वह्+ल्युट्] 1. बन्द गाड़ी या पालकी (स्त्रियों के लिए) 2. गाड़ी, वाहन, सवारी 3. जहाज़ ।

प्रवह्लिः,—ह्ली [प्र+वह्ल+इन्, प्रवह्लि+ङीष्] दे० 'प्रहेलिका'।

प्रवाच् (वि०) [प्रा० ब०] वाग्मी, वक्ता—(कुर्वते) जडानप्यतुलोमार्थान् प्रवाचः कृतिनां गिरः—शि० २।२५ 2. बातूनी, वाचाल—मुद्रा० ३।१६।

प्रवाचनम् [प्र+वच्+णिच्+ल्युट्] घोषणा, उद्घोषणा, प्रकथन।

प्रवाणम् [प्र+वे+ल्युट्] बुने हुए कपड़ों के किनारों के गोट लगाना या छाँटना या सम्भालना।

प्रवाणिः,—णी (स्त्री०) [प्रवाण+ङीप्, नि० ह्रस्वो वा] जुलाहे की ढरकी।

प्रवात (भू० क० कृ०) [प्रकृष्टो वातो यस्मिन्—प्रा० ब०] तूफ़ान में पड़ा हुआ—**तम्** 1. वायु का झोका, ताजा हवा—प्रवातशयनस्था देवी—मालवि० ४ 2. तूफ़ानी हवा, आँधी—ननु प्रवातेऽपि निष्कंपा गिरयः—श० ६, 3. हवादार स्थान, कु० १।४६।

प्रवादः [प्र+वद्+घञ्] 1. शब्द या ध्वनि का उच्चारण 2. अभिधान करना, उल्लेख करना, प्रकथन करना 3. प्रवचन, वार्तालाप 4. बात, प्रतिवेदन, अफ़वाह, किंवदन्ती—अनुरागप्रवादस्तु वत्सयोः सार्वलौकिकः मा० १।१३, व्याघ्रो मानुषं खादतीति लोकप्रवादो दुर्निवारः—हि० १, रत्न० ४।५ 5. आख्यायिकाँ, गल्प 6. विवाद संबंधी भाषा 7. चुनौती के शब्द, पारस्परिक विरोध—इत्थं प्रवादं युधि संप्रहारं प्रचक्रतू रामनिशाविहारी—भट्टि० २।३६।

प्रवारः, प्रवारकः [प्र+वृ+घञ्, प्रवार+कन्] चादर, आच्छादन।

प्रवारणम् [प्र+वृ+णिच्+ल्युट्] 1. (इच्छा) पूर्ण करना छाँट की प्राथमिकता 3. निषेध, विरोध 4. काम्यदान।

प्रवालः (पुं०) दे० 'प्रवालः'।

प्रवासः [प्र+वस्+घञ्] 1. विदेशगमन, विदेशयात्रा, घर पर न रहना, परदेशनिवास—रघु० १६।४४। सम०—**गत,—स्थ,—स्थित** (वि०) विदेश की यात्रा करना, घर पर न रहने वाला।

प्रवासनम् [प्र+वस्+णिच्+ल्युट्] 1. विदेश निवास, अस्थायी रूप से वास करना 2. निर्वासन, देशनिकाला, वध, हत्या।

प्रवासिन् (पुं०) [प्र+वस्+णिनि] यात्री, बटोही, परदेशी।

प्रवाहः [प्र+वह्+घञ्] 1. बहाव, धार बन कर बहना 2. नदी, पेटा या जलमार्ग, धारा—प्रवाहस्ते वारां श्रियमयमपारां दिशतु नः—गंगा० २, रघु० ५।४६, १३।१०, ४८, कु० १।५४, मेघ० ४६ 3. बहाव, बहता हुआ पानी 4. अविच्छिन्न बहाव, अटूट शृंखला, नैरन्तर्य 5. घटना क्रम (नदी की धार की भाँति लुढ़कना) 6. क्रियता, सक्रिय व्यस्तता 7. तालाब, झील 8. बढ़िया घोड़ा (**प्रवाहे मूत्रितम्**) नदी में मूतना (शा०), व्यर्थ कार्य करना (आल०)।

प्रवाहकः [प्र+वह्+ण्वुल्] भूत प्रेत, पिशाच।

प्रवाहनम् [प्र+वह्+णिच्+ल्युट्] 1. हांक कर आगे बढ़ना 2. दस्त कराना

प्रवाहिका [प्र+वह्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्[दस्त लग जाना।

प्रवाही [प्रवाह+ङीष्] रेत, बालू।

प्रविकीर्ण (भू० क० कृ०) [प्र+वि+कृ+क्त] 1. बखेरा हुआ, इधर उधर छितराया हुआ 2. तितर बितर किया हुआ, फैलाया हुआ।

प्रविख्यात (भू० क० कृ०) [प्र+वि०+ख्या+क्त] 1. नामी, बुलाया हुआ 2. प्रसिद्ध, मशहूर, विश्रुत।

प्रविख्यातिः [प्र+वि+ख्या+क्तिन्] मशहूरी, कीर्ति, प्रसिद्धि।

प्रविचयः [प्र+वि+चि+अच्] परीक्षा, खोज, अनुसंधान।

प्रविचारः [प्रा० स०] विवेचन, विवेक।

प्रविचेतनम् [प्र+वि+चित्+ल्युट्] समझ।

प्रवितत (भू० क० कृ०) [प्र+वि+तन्+क्त] 1. बिछाया हुआ, फैलाया हुआ 2. बिखरे हुए, अस्तव्यस्त (बाल)।

प्रविदार [प्र+वि+दृ+घञ्] फट कर टुकड़े टुकड़े होना, खुलना।

प्रविदारणम् [प्र+वि+दृ+णिच्+ल्युट्] 1. फाड़ना, विदीर्ण करना, तोड़ना, फट कर टुकड़े टुकड़े होना 2. कली लगना 3. संघर्ष, युद्ध, लड़ाई 4. भीड़भाड़, गड़बड़ी, हल्ला-गुल्ला।

प्रविद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+व्यध्+क्त] डाला, हुआ, फेंका हुआ।

प्रविद्रुत (भू० क० कृ०) [प्र+वि+द्रु+क्त] तितर-बितर किया हुआ, भगाया हुआ, बखेरा हुआ।

प्रविभक्त (भू० क० कृ०) [प्र+वि+भज्+क्त] 1. अलग किया गया, वियुक्त 2. हिस्से किया गया, विभाजन किया गया, बाँटा गया, वितरित किया गया—ज्योतींषि वर्तयति च प्रविभक्तरश्मिः—श० ७।६।

प्रविभागः [प्र+वि+भज्+घञ्] भाग, तक़सीम, वितरण, वर्गीकरण—रघु० १६।२ 2. हिस्सा, अंश।

प्रविरः (पुं०) पीला चन्दन।

प्रविरल (वि०) [प्रा० स०] 1. बहुत दूर दूर, वियुक्त, अलगाया 2. बहुत कम, बहुत थोड़े, स्वल्प, थोड़ा—प्रविरला इव मुग्धवधूकथा—रघु० ९।३४।

प्रविलयः [प्र+वि+ली+अच्] 1. पिघलनकर बह जाना 2. पूरी तरह घुल जाना या अवशुष्क हो जाना।

प्रविलुप्त (भू० क० कृ०) [प्र+वि+लुप्+क्त] काटा हुआ, निकाला हुआ, हटाया हुआ।

प्रविवादः [प्र+वि+वद्+घञ्] झगड़ा कलह, तकरार।

प्रविविक्त (वि०) [प्रा० सस]। 1. बिल्कुल अकेला 2. वियुक्त, अलग किया हुआ।

प्रविश्लेषः [प्र+वि+श्लिष्+घञ्] वियोग, जुदाई।

प्रविषण्ण (भू० क० कृ०) [प्र+वि+सद्+क्त] खिन्न, उदास, हतोत्साह।

प्रविष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+विश्+क्त] 1. अन्दर गया हुआ, घुसा हुआ—पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम्—श० १।७ 2. लगा हुआ, व्यस्त 3. आरब्ध।

प्रविष्टकम् [प्रविष्ट+कन्] रंग भूमि का द्वार।

प्रविस्त (स्ता) रः [प्र+वि+स्तृ+अप्, घञ् वा] परिधि, वृत्त।

प्रवीण (वि०) [प्रकृष्टा संसाधिता वीणा येन—प्रा० ब०] चतुर, कुशल, जानकार—आमोदानथ हरिदंतुराणि नेतुं नैवान्यो जगति समीरणात्प्रवीणः—भामि० १।१५, कु० ७।४८,।

प्रवीर (अ०) [प्रा० स०] 1. अग्रणी, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ या पूज्य—रघु० १४।२९ १६।१, भग० ११।४८ 2. मजबूत, शक्तिशाली, शौर्यसम्पन्न,—रः 1. बहादुर व्यक्ति, नायक, योद्धा 2. मुख्य, पूज्य व्यक्तित्व।

प्रवृत (भू० क० कृ०) [प्र+वृ+क्त] चुना हुआ, संकलित, छांटा हुआ।

प्रवृत्त (भू० क० कृ०) [प्र+वृत्+क्त] 1. आरंभ किया गया, शुरु किया गया, प्रगत 2. स्थिर किया हुआ—अचिरप्रवृत्तं ग्रीष्मसमयमधिकृत्य—श० १ 3. व्यस्त, संलग्न 4. जाने के लिए उद्यत, कटिबद्ध 5. स्थिर, निश्चित, निर्धारित 6. निर्बाध, विवादरहित 7. गोल,—त्तः गोल आभूषण।

प्रवृत्तकम् [प्रवृत्त+कन्] रंग भूमि में अवतरण।

प्रवृत्तिः (स्त्री०) [प्र+वृत्+क्तिन्] 1. निरन्तर प्रगमन, प्रगति, आगे बढ़ना 2. उदय, मूल, स्रोत, (शब्दों का) प्रवाह—प्रवृत्तिरासीच्छब्दानां चरितार्था चतुष्टयी—कु० २।१७ 3. दर्शन, प्रकटीकरण—कुसुमप्रवृत्तिसमये—श० ४।१७, रघु० ११।४३, १४।३९, १५।४ 4. उदय, आरंभ, शुरु—आकालिकीं वीक्ष्य मधुप्रवृत्तिं—कु० ३।३४ 5. प्रयोग, व्यसन, झुकाव, रुझान, रुचि, प्रवणता—श० १।२२ 6. आचरण, व्यवहार—रघु० १४।७३ 7. काम में लगाना, व्यवसाय, क्रियाशीलता कु० ६।२६ 8. प्रयोग, नियोजन, (शब्द का) प्रचलन 9. अनवरत प्रयत्न; धैर्य 10. सार्थकता, भावार्थ, (शब्द की) स्वीकृति 11. निरन्तरता, स्थायिता, प्राबल्य 12. सक्रिय सांसारिक जीवन, सांसारिक जीवन में सक्रिय भाग लेना (विप० निवृत्ति) 13. समाचार, खबर, गुप्त वार्ता—जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्—मेघ० ४, विक्रम० ४।२० 14. नियम की प्रयोजनीयता या वैधता 15. भाग्य, नियति, किस्मत 16. संज्ञान, सीधा प्रत्यक्षज्ञान, समवबोध 17. हाथी का मद (जो मस्ती की अवस्था में उसके गंडस्थल से निकलता है), 18. उज्जयिनी नगरी का नामान्तर। सम० ज्ञः जासूस, भेदिया, दूत, गुप्तचर,—निमित्तम् किसी शब्द का किसी विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने का कारण,—मार्गः सक्रिय या सांसारिक जीवन, कार्य में अनुरक्ति, संसार में सुख तथा आनन्द।

प्रवृद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+वृध्+क्त] 1. पूरा बढ़ा हुआ 2. बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त, विस्तारित, बड़ा किया हुआ 3. पूरा, गहरा 4. घमंडी, अहंकारी 5. प्रचण्ड 6. विशाल।

प्रवृद्धिः (स्त्री०) [प्र+वृध्+क्तिन्] 1. बढ़ना, वृद्धि—रघु० १३।७१, १७।७१ 2. उन्नति, समृद्धि, पदोन्नति, तरक्की, उत्कर्ष।

प्रवेक (वि०) [प्र+विच्+घञ्] उत्तम, मुख्य, छांट का, अत्यंत श्रेष्ठ।

प्रवेगः [प्र+विज्+घञ्] तीव्र चाल, वेग।

प्रवेटः [प्र+वी+ट] जौ, यव।

प्रवेणिः,—णी (स्त्री०) [प्र+वेण्+इन्, प्रवेणि+ङीष्] 1. बालों का जूड़ा—रघु० १५।३० 2. बिखरे हुए या श्रृंगारहीन बाल (पति की अनुपस्थिति में स्त्रियाँ प्रायः ऐसे बाल धारण करती हैं) 3. हाथी की झूल 4. रंगीन ऊनी कपड़े का टुकड़ा 5. (नदी का) प्रवाह या धार।

प्रवेतृ (पुं०) [प्र+अज्+तृन्' अजेः वी आदेशः] सारथि, रथवान्।

प्रवेदनम् [प्र+विद्+णिच्+ल्युट्] जतलाना, ऐलान करना, घोषणा करना।

प्रवेपः, प्रवेपकः, प्रवेप थुः, प्रवेपनम् [प्र+वेप्+घञ्, प्रवेप+कन्, प्र+वेप्+अथुच्, प्र+वेप्+ल्युट्] कंपकंपी, ठिठुरन, थरथराना, सिहरन।

प्रवेरित (वि०) [प्रवेर+इतच्] इधर उधर डाला हुआ, फेंका हुआ।

प्रवेलः [प्र+वेल्+अच्] एक प्रकार की मूंग।

प्रवेशः [प्र+विश्+घञ्] 1. भीतर जाना, घुसना—पुरप्रवेशाभिमुखो बभूव—रघु० ७।१, कु० ३।४० 2. अन्तर्गमन, पैठ, पहुँच 3. रंगभूमि में प्रवेश—तेन पात्रप्रवेशश्चेत्—सा० द० ६ 4. (घर का) दरवाजा, घुसने का स्थान 5. आय, राजस्व 6. (किसी काम का) पीछा करना, प्रयोजन की तत्परता।

प्रवेशकः [प्र+विश्+ण्वुल्] परिचायक, निम्नपात्रों (नौकर चाकर) द्वारा अभिनीत विष्कंभक (इसमें श्रोता को रंगमंच पर अप्रस्तुत घटना का आगे होने वाली बातों की जानकारी के लिए ज्ञान कराना आवश्यक है); (विष्कंभक की भांति यह नाटक की कथा तथा कथावस्तु के अवान्तर भेदों को जो या तो अंकों के अन्तराल में घटित हो चुके हैं या अन्त में होने वाले हैं, जोड़ देता है; यह पहले अंक के आरम्भ या अंतिम अंक के अन्त में कभी प्रयुक्त नहीं होता) साहित्यदर्पणकार इसकी परिभाषा देते हैं–प्रवेशकोनुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः, अंकद्वयांतर्विज्ञेयः शेषं विष्कंभके यथा—३०८, दे० 'विष्कंभक'।

प्रवेशनम् [प्र+विश्+ल्युट्] 1. दाखिल होना, घुसना, अन्दर जाना 2. परिचय देना, नेतृत्व करना, संचालन 3. घर का मुख्य द्वार, फाटक 4. मैथुन, स्त्री संगम।

प्रवेशित (भू० क० कृ०) [प्र+विश्+णिच्+क्त] परिचित कराया हुआ, अन्दर पहुँचाया हुआ, अन्दर ले जाया गया, घुसाया हुआ।

प्रवेष्टः [प्र+वेष्ट्+अच्] 1. भुजा 2. कलाई, पहुँचा 3. हाथी की पीठ का मांसल भाग (जहां महावत बैठता है) 4. हाथी के मसूड़े 5. हाथी की झूल।

प्रव्यक्त (भू० क० कृ०) [प्रकर्षेण व्यक्तः—प्रा० स०] स्पष्ट, साफ, प्रकट, जाहिर।

प्रव्यक्तिः (स्त्री०) [प्र+वि+अंज्+क्तिन्] प्रकटी भवन, दर्शन।

प्रव्याहारः [प्र+वि+आ+हृ+घञ्] प्रवचन का फैलाव या विस्तार।

प्रव्रजनम् [प्र+व्रज्+ल्युट्] 1. विदेश जाना, अस्थायी रूप से बसना 2. निर्वासित होना 3. वानप्रस्थ हो जाना।

प्रव्रजित (भू० क० कृ०) [प्र+व्रज्+क्त] 1. विदेश गया हुआ या निर्वासित 2. संन्यासी या परिव्राजक बना हुआ,—तः 1. साधु, संन्यासी 3. चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण, भिक्षु 3. जैन या बौद्ध भिक्षु का शिष्य, —तम् संन्यासी बन जाना, साधु का जीवन।

प्रव्रज्या [प्र+व्रज्+क्यप्+टाप्] 1. विदेश जाना, देशान्तरगमन 2. पर्यटन, (साधु के रूप में इतस्ततः) भ्रमण 3. संन्यास आश्रम, संन्यासी का जीवन, ब्राह्मण की जीवनचर्या में चौथा आश्रम (भिक्षु जीवन) —प्रव्रज्यां कल्पवृक्षा इवाश्रिताः—कु० ६।६ (यहाँ मल्लि० के अनुसार 'प्रव्रज्या' का तात्पर्य वानप्रस्थ या तृतीय आश्रम है)। सम०—अवसितः वह पुरुष जिसने सन्यास ग्रहण करके उस आश्रम को छोड़ दिया हो।

प्रव्रश्चनः [प्र+व्रश्च्+ल्युट्] लकड़ी काटने का उपकरण।

प्रव्राज् (पुं०), **प्रव्राजकः** [प्र+व्रज्+क्विप्, ण्वुल् वा] साधु, संन्यासी।

प्रव्राजनम् [प्र+व्रज्+णिच्+ल्युट्] निर्वासन, देशनिकाला, निर्वासित करना।

प्रशंसनम् [प्र+शंस्+ल्युट्] प्रशंसा करना, स्तुति करना।

प्रशंसा [प्र+शंस्+अङ्+टाप्] प्रशंसा, स्तुति, प्रशस्ति, गुणगान करना—प्रशंसावचनम्, प्रशंसात्मक या सम्मानसूचक वाणी 2. वर्णन, उल्लेख—जैसा कि 'अप्रस्तुतप्रशंसा' में 3. कीर्ति ख्याति, प्रसिद्धि। सम०—उपमा दण्डिद्वारा वर्णित उपमा के अनेक भेदों में से एक —ब्रह्मणोऽप्युद्भवः पद्मश्चन्द्रः शंभुशिरोधृतः, तौ तुल्यौ त्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोपमोच्यते—काव्या० २।३१, —मुखर (वि०) ऊँचे स्वर से प्रशंसा करने वाला।

प्रशंसित (भू० क० कृ०) [प्र+शंस्+क्त] प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया, गुणगान किया गया, तारीफ़ किया गया।

प्रशत्वन् (पुं०) [प्र+शद्+क्वनिप्, तुट्] समुद्र, सागर।

प्रशत्वरी [प्रशत्वन्+ङीप्, र आदेशः] नदी।

प्रशमः [प्र+शम्+घञ्] 1. शमन, शान्ति, स्वस्थचित्तता—प्रशमस्थितपूर्वपार्थिवम् — रघु० ८।१५, कि० २।३२ 2. शान्ति, विश्राम 3. बुझाना, उपशमन —कु० २।२० 4. विराम, अन्त, विनाश—शि० २०।७३ 5. सान्त्वना, तुष्टीकरण—शि० १६।५१।

प्रशमन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रम्+णिच्+ल्युट्] शान्त करने वाला, शान्तिस्थापित करने वाला धीरज बंधाने वाला, दूर करने वाला (रोग आदि को),—नम् शान्त करना, शान्ति स्थापित करना, धीरज बंधाना 2. दमन करना, धैर्यबंधाना, दिलासा देना, हलका करना—आपन्नार्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम् —मेघ० ५३ 3. चिकित्सा करना, स्वस्थ करना—जैसा कि 'व्याधिप्रशमनम्' में 4. (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना, दमन करना, मिटा देना 5. विराम, थामना 6. उपयुक्त रूप से प्रदान करना, सत्पात्र को प्रदान करना—मनु० ७।५६, (सत्पात्रे प्रतिपादनम्—कुल्लू०, परन्तु अन्य विद्वान् इसका अगला अर्थ समझते हैं) 7. प्राप्त करना, रक्षा करना, सुरक्षित रखना—लब्धप्रशमनस्वस्थमथैनं समुपस्थिता रघु० ४।१४ 8. वध, हत्या।

प्रशमित (भू० क० कृ०) [प्र+शम्+णिच्+क्त] 1. सान्त्वना दी गई, धीरज बंधाया गया, स्वस्थचित्त, तुष्टीकृत, शान्त किया गया 2. (आग) बुझाई गई, (प्यास) शान्त की गई 3. प्रायश्चित्त किया गया, परिशोधन किया गया—उत्तर० १।४०।

प्रशस्त (भू० क० कृ०) [प्र+शंस्+क्त] 1. प्रशंसा किया गया, तारीफ़ किया गया, श्लाघा की गई,

स्तुति की गई 2. प्रशंसनीय, तारीफ़ के योग्य 3. सर्वोत्तम, श्रेष्ठ 4. सौभाग्यशाली, प्रसन्न, आनन्दित, शुभ । सम०—अद्रिः एक पहाड़ का नाम ।

प्रशस्तिः (स्त्री०) [प्र+शंस्+क्तिन्] 1. प्रशंसा, स्तुति, तारीफ़ 2. वर्णन- उत्तर० ७ 3. किसी की (उदा० संरक्षक) प्रशंसा में लिखी गई कविता 4. श्रेष्ठता, महत्त्व 5. शुभ कामना 6. निर्देशन, शिक्षण, निर्देश-नियम जैसा कि 'लेखप्रशस्ति' (लिखने का एक प्रकार) में ।

प्रशस्य (वि०) (म० अ०—श्रेयस् या ज्यायस्, उ० अ० —श्रेष्ठ या ज्येष्ठ) [प्र+शंस्+क्यप्] प्रशंसा के योग्य, तारीफ़ के लायक़, श्रेष्ठ ।

प्रशाख (वि०) [प्रशस्ता शाखा यस्य—प्रा० ब०] 1. जिसकी अनेक शाखाएँ इधर उधर फैली हों 2. गर्भपिण्ड की पाँचवीं अवस्था कहते हैं कि इस समय गर्भस्थित बालक के हाथ पैर बन जाते हैं), —खा छोटी शाखा या टहनी ।

प्रशाखिका प्रशाखा+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटी शाखा, टहनी ।

प्रशान्त (भू० क० कृ०) [प्र+शम्+णिच्+क्त] 1. शांत, शान्तिप्राप्त, स्वस्थचित्त 2. निश्चल, सौम्य, निस्तब्ध, धीर, निश्चेष्ट—अहो प्रशान्तरमणीयतोद्यानस्य 3. पालतू, वशीकृत, दबाया हुआ 5. समाप्त, विरत, निवृत्त—तत्सर्वमेकपद एव मम प्रशांतम्—मा० ९।३६, प्रशान्तमस्त्रम्—उत्तर० ६ 'कार्य करने से रुका हुआ या निवृत्त' 5. मृत, मरा हुआ (दे० प्रपूर्वक-शम्) । सम०—आत्मन् (वि०) स्वस्थमना, शान्तिपूर्ण, अचंचल,—ऊर्ज (वि०) क्षीणशक्ति, निस्तेज, विषण्ण,—काम (वि०) सन्तुष्ट,—चेष्ट (वि०) आराम करने वाला, विश्रांत, विरत,—बाध (वि०) जिसकी समस्त बाधाएँ व संकट दूर हो गये हैं—कि० १।१८ ।

प्रशान्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1. धैर्य, शान्ति, मनकी स्थिरता, निःशब्दता, विश्राम 2. आराम, विराम, ठहराव 3. निराकरण करना, (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना ।

प्रशामः [प्र+शम्+घञ्] 1. शान्ति, धैर्य, मनकी स्वस्थता 2. (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना, निराकरण करना 3 विश्राम ।

प्रशासनम् [प्र+शास्+ल्युट्] 1. शासन करना, हकूमत करना 2. आदेश देना, बल पूर्वक वसूल करना 3. राज्य शासन ।

प्रशास्तृ (पुं०) [प्र+शास्+तृच्] राजा, शासक, राज्यपाल ।

प्रशिथिल (वि०) [प्रा० स०] बहुत ढीला ।

प्रशिष्यः [प्रा० स०] शिष्य का शिष्य, पड़शिष्य—शिष्यप्रशिष्यैरुपगीयमानमवेहि तन्मंडनमिश्रधाम—शंकर० ।

प्रशुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] स्वच्छता, पवित्रता ।

प्रशोषः [प्र+शुष्+घञ्] सूखना, सूख जाना, सूखापन ।

प्रश्चोतनम् [प्र+श्चुत्+ल्युट्] छिड़कना, क्षरण—उत्तर० ३।११ ।

प्रश्नः [प्रच्छ्+नङ्] 1. सवाल, पूछताछ, परिपृच्छा, परिप्रश्न (अविज्ञातप्रवचनं प्रश्न इत्यभिधीयते) अनामयप्रश्न पूर्वकम्—श० ५, 'कुशलक्षेम के प्रश्न के साथ' 2. अदालती जाँच पड़ताल या गवेषणा 3. विवादपद, विवादास्पद विषय, विवादग्रस्त दृष्टिकोण —इति प्रश्न उपस्थितः 4. समस्या, हिसाब का प्रश्न —अहं ते प्रश्नं दास्यामि—मृच्छ० ५ 5. भविष्य संबंधी पूछताछ 6. किसी ग्रन्थ का अनुभाग या परिच्छेद । सम०—उपनिषद् (नपुं०) एक उपनिषद् का नाम (इसमें छः प्रश्न तथा उनके छः उत्तर हैं) —दूतिः,-दूती (स्त्री०) पहेली, बुझौवल ।

प्रश्रथः [प्र+श्रथ्+अच्] शिथिलता, ढीलापन, शिथिलीकरण ।

प्रश्रयः, प्रश्रयणम् [प्र+श्रि+अच्, ल्युट् वा] 1. आदर, शिष्टता, सुजनता, विनम्रता, सम्मानपूर्ण अथवा शिष्टतायुक्त व्यवहार, विनय—समागतैः प्रश्रयनम्रमूर्तिभिः—शि० १२।३३, रघु० १०।७०, ८३, उत्तर० ६।२३, सप्रश्रयम् आदरपूर्वक, सविनय 2. प्रेम, स्नेह, आदर—पंच० २।२ ।

प्रश्रित (भू० क० कृ०) [प्र+श्रि+क्त] सुजन, नम्र, शिष्ट, विनीत, शिष्टाचरणयुक्त ।

प्रश्लथ (वि०) [प्रा० स०] 1. बहुत ढीला या पिलपिला 2. उत्साह-हीन, निस्तेज ।

प्रश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+श्लिष्+क्त] 1. मरोड़ा दिया हुआ, ऐंठा दिया हुआ 2. तर्कसंगत, युक्तियुक्त ।

प्रश्लेषः [प्र+श्लिष्+घञ्] घना संपर्क, संहति ।

प्रश्वासः [प्र+श्वास्+घञ्] साँस, श्वसन, श्वास-प्रश्वासक्रिया ।

प्रष्ठ (वि०) [प्र+स्था+क] 1. सामने खड़ा हुआ —रघु० १५।२० 2. मुख्य, प्रधान, अग्रणी, उत्तम, नेता—पुलस्त्यप्रष्ठः—महावी० १।३०, ६।३०, शि० १९।३० । सम०—वाह् (पुं०) हल जोतने के लिए सधाया जाता हुआ जवान बैल ।

प्रस् (भ्वा०, दिवा०—आ० प्रंसते, प्रस्यते) 1. बच्चे को जन्म देना 2. फैलाना, प्रसार करना, विस्तार करना, बढ़ाना ।

प्रसक्त (भू० क० कृ०) [प्र+सञ्ज्+क्त] 1. लग्न, युक्त 2. अत्यन्त आसक्त या स्नेहशील-पंच० १।१९३

3. अनुगामी, अनुषक्त 4. स्थिर, तुला हुआ, भक्त, व्यस्त, व्यसनग्रस्त, प्रयुक्त—शि० ९।६३, इसी प्रकार द्यूत,° निद्रा° आदि 5. सटा हुआ, निकटस्थ 6. अविच्छिन्न, निरन्तर, अनवरत—कि० ४।१८, रघु० १३।४०, मा० ४।६, मालवि० ३।१ 7. हासिल, प्राप्त, लब्ध,—क्तम् (अव्य०) निरन्तर, लगातार—कि० १६।५५।

प्रसक्तिः (स्त्री०) [प्र+सञ्ज्+क्तिन्] 1. आसक्ति, भक्ति, व्यसन, संलग्नता, अनुरक्ति 2. संबंध, संयोग, साहचर्य 3. प्रयोजनीयता, संबंध, प्रयोग जैसा कि 'अति प्रसक्ति' (अतिव्याप्ति) में 4. ऊर्जा, धैर्य—संतापे दिशतु शिवः शिवां प्रसक्तिम्—कि० ५।५० 5. उपसंहार, घटाना 6. विषय, प्रवचन का विषय 7. संभावना का घटित होना।

प्रसंख्या [प्रा० स०] 1. कुल योग, राशि 2. विचार विमर्श।

प्रसंख्यानम् [प्र+सम्+ख्या+ल्युट्] 1. गिनना 2. विचारण, मनन, गहन चिन्तन, भाव चिन्तन—श्रुताप्सरोगीतिरपि क्षणेऽस्मिन् हरः प्रसंख्यानपरो बभूव—कु० ४।३० 3. कीर्ति, प्रसिद्धि, विश्रुति,—नः अदायगी, भुगतान।

प्रसंगः [प्र+सञ्ज्+घञ्] 1. आसक्ति, भक्ति, व्यसन, संलग्नता—स्वरूपयोग्ये सुरतप्रसंगे—कु० १।१९, तस्यात्यायतकोमलस्य सततं द्यूत प्रसंगेन किम्—मृच्छ० २।११, शि० ११।२२ 2. मेल-जोल, अन्तःसंपर्क, साहचर्य, संबंध—निवर्ततामस्माद् गणिका प्रसंगात्—मृच्छ० ४ 3. अवैध मैथुन 4. व्यस्तता, एकाग्रता, कार्यपरता—भ्रूविक्रियायां विरतप्रसंगैः—कु० ३।४७ 5. विषय, शीर्षक (प्रवचन या विवाद का) 6. अवसर, घटना—दिग्विजयप्रसंगेन—का० १९१, यात्राप्रसंगेन—मा० १ 7. संयोग, समय, अवसर—मनु० ९।५ 8. दैवयोग, घटना, काण्ड, संभावना का होना—नेश्वरो जगतः कारणमुपपद्यते कुतः वैषम्यनैर्घृण्य प्रसंगात्—शारी०, एवं चानवस्था प्रसंगः—तदेव, कु० ७।१६ 9. संबद्ध तर्कना, या युक्ति 10. उपसंहार, अनुमान 11. संबद्ध भाषा 12. अवियोज्य प्रयोग या संबंध (व्याप्ति) 13. माता पिता का उल्लेख (प्रसंगेन, प्रसंगतः, प्रसंगात्—यह क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं—1. के संबंध में 2. के फल स्वरूप, के कारण, क्योंकि, के रूप में 3. अवसरानुसार 4. के क्रम मे (यथा—कथाप्रसङ्गेन 'बातचीत के सिलसिले में')। सम०—निवारणम् भविष्य में इस प्रकार की स्थिति का रोकना,—वशात् (अव्य०) समय के अनुसार, परिस्थितिवश,—विनिवृत्तिः (स्त्री०) इस प्रकार की संकटस्थिति की पुनरावृत्ति का न होना।

प्रसञ्जनम् [प्र+सञ्ज्+ल्युट्] 1. जोड़ने की क्रिया, मिलाना, एकत्र करना 2. व्यवहार में लाना, सबल बनाना, उपयोग में लाना।

प्रसत्तिः (स्त्री०) [प्र+सद्+क्तिन्] 1. अनुग्रह, कृपालुता, शिष्टाचार 2. स्वच्छता, पवित्रता, विशदता।

प्रसन्धानम् [प्र+सम्+धा+ल्युट्] मिलान, मेल।

प्रसन्न (भू० क० कृ०) [प्र+सद्+क्त] 1. पवित्र, स्वच्छ, उज्ज्वल, निर्मल, विमल, पारदर्शी—कु० १।२३, ७।७४, श० ५।२० 2. खुश, आनन्दित, प्रतुष्ट, शान्त—गंगा शरन्नयति सिन्धुपतिं प्रसन्नाम्—मुद्रा० ३।९, गम्भीरायाः पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने—मेघ० ४० (यहाँ प्रथम अर्थ भी अभिप्रेत है), कु० ५।३५, रघु० २।६८ 3. दयालु, अनुग्रहशील, कृपालु, मंगलप्रद—अवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम्—रघु० २।६३ 4. सरल, सीधा, स्पष्ट, सुबोध (अर्थ) 5. सत्य, सही—प्रसन्नस्ते तर्कः—विक्रम० २, प्रसन्नप्रायस्ते तर्कः—मा० १,—न्ना 1. प्रसादन, अनुरंजन 2. खींची हुई मदिरा। सम०—आत्मन् (वि०) कृपालुमना, मंगलप्रद,—ईरा खींची हुई मदिरा,—कल्प (वि०) 1. शान्त प्राय 2. सत्यप्राय,—मुख—वदन (वि०) कृपालुदृष्टि वाला, प्रसन्न चेहरे वाला, मुस्कराता हुसा,—सलिल (वि०) स्वच्छ पानी वाला।

प्रसभः [प्रगता सभा समानाधिकारो यस्मात्—प्रा० ब०] बल, हिंसा, प्रचण्डता—प्रसभोद्धृतारिः—रघु० २।३०,—भम् (अव्य०) 1. बलपूर्वक, जबरदस्ती,—इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरंति प्रसभं मनः—भग० २।६०, मनु० ८।३३२ 2. बहुत अधिक, अत्यंत—तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः—श० १।५, ऋतु० ६।२५ 3. आग्रहपूर्वक—भग० ११।४१। सम०—दमनम् बलपूर्वक दबाना—श० ७।३३,—हरणम् बलपूर्वक अपहरण।

प्रसमीक्षणम्, प्रसमीक्षा [प्र+सम्+ईक्ष्+ल्युट्, प्रसम्+ईक्ष्+अङ्+टाप्] विचारण, विचारविमर्श, निर्धारण।

प्रसयनम् [प्र+सि+ल्युट्] 1. बंधन, कसना 2. जाल।

प्रसरः [प्र+सृ+अप्] 1. आगे जाना, प्रगमन करना—श० १।२९ 2. मुक्त या निर्बाध गति, मुक्त क्षेत्र, पहुँच, गति—रघु० ८।२३, १६।२०, मुद्रा० ३।५, हि० १।१८६ 3. फैलाव, प्रसार, विस्तर, विस्तार, फैलना—शि० ९।७१ 4. विस्तार, आयाम, बड़ी मात्रा शि० ३।३५ 5. प्रचलन, प्रभाव—शि० ३।१०, 6. सरिता, प्रवाह, धारा, बाढ़—पपात स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षाश्रुनिकरः—गीत० ११ 7. समूह, 8. समुच्चय युद्ध, लड़ाई 9. लोहे का बाण 10. चाल 11. विनम्र याचना।

प्रसरणम् [प्र+सृ+ल्युट्] 1. आगे जाना, दौड़ना, बढ़ना 2. बच निकलना, भाग जाना 3. दूर तक फैलाना 4. शत्रु को घेरना 5. सौजन्य ।

प्रसरणिः,—णी [प्र+सृ+अनि, प्रसरणि+ङीप्] शत्रु को घेर लेना ।

प्रसर्पणम् [प्र+सृप्+ल्युट्] 1. चलना, सरकना, आगे बढ़ना २. व्याप्त करना, सब दिशाओं में फैलना ।

प्रस (श) लः [प्र+शल्+अच्, पक्षे पृषो० शस्य सः] हेमंत ऋतु ।

प्रसवः [प्र+सू+अप्] 1. जन्म देना, जनन, प्रसूति, जन्म, उत्पादन 2. बच्चे का जन्म, गर्भ मोचन, प्रसूति —यथा 'आसन्नप्रसवा' में 3. सन्तान, प्रजा, छोटे बच्चे, बालक—केवलं वीरप्रसवा भूयाः—उत्तर० १, कु० ७।८७ 4. स्रोत, मूल, जन्मस्थान (आलं० से भी) कि० २।४३ 5. फूल, मंजरी—प्रसवविभूतिषु भूरुहां विरक्तः—शि० ७।४२, नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुता-माननै श्रीः—मेघ०, कुंदप्रसवशिथिलं जीवितम्—११३, रघु० ९।२८, कु० १।५५, ४।४, १४, ८।५, ९, मा० ९।२७, ३१, उत्तर० २।२० 6. फल, उत्पादन । सम०—उन्मुख गर्भ से मुक्त होने वाला, उत्पन्न होने वाला —पतिः प्रतीतः प्रसवोन्मुखीं प्रियां ददर्श—रघु० ३।१२,—गृहम् प्रसूतिकागृह, जच्चाघर,—धर्मिन् (वि०) उपजाऊ, उर्वर, —बन्धनम् फूल या पत्ते की डंठल, वृन्त—वेदना,—व्यथा प्रसव काल की पीडा, बच्चा जनने का कष्ट,—स्थली माता,—स्थानम् 1. प्रसूतिका-गृह, 2. जाल ।

प्रसवकः [प्रसवेन पुष्पादिना कायति शोभते—प्रसव+कै+क] पियाल वृक्ष, चिरौंजी का पेड़ ।

प्रसवनम् [प्र+सू+ल्युट्] 1. पैदा करना 2. बच्चे को जन्म देना, उपजाऊपन ।

प्रसवन्तिः (स्त्री०) [प्र+सू+झिच्, अन्तादेशः] जच्चा स्त्री ।

प्रसवन्ती [प्र+सू+शतृ+ङीप्] जच्चा स्त्री—न पश्येत् प्रसवन्तीं च तेजस्कामो द्विजोत्तमः—मनु० ४।४४ ।

प्रसवितृ (पुं०) [प्र+सू+तृ] पिता, प्रजनक ।

प्रसवित्री [प्रसवितृ+ङीप्] माता ।

प्रसव्य (वि०) [प्रगतं सव्यात्—प्रा० स०] प्रतिकूल, व्युत्क्रांत, बायाँ, उलटा ।

प्रसह (वि०) [प्र+सह्+अच्] सहनशील, सहिष्णु, सहन करने वाला,—हः 1. शिकारी जानवर या पक्षी 2. मुक़ाबला, सहन शक्ति, विरोध ।

प्रसहनः [प्र+सह्+ल्युट्] शिकारी जानवर या पक्षी, —नम् 1. सामना करना, मुक़ाबला करना 2. सहन करना, बर्दाश्त करना 3. पराजित करना, विजय प्राप्त करना 4. आलिंगन, परिरम्भण ।

प्रसह्य (अव्य०) [प्र+सह्+(क्त्वा) ल्यप्] 1. बल पूर्वक, प्रचण्डता के साथ, ज़बरदस्ती—प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकर-वक्त्रदंष्ट्राङ्कुरात् भर्तृ० २।४, शि० १।२७, 2. अत्यधिक, अत्यंत ।

प्रसातिका [प्रगता सातिः (नाश०)—सो+क्तिन्—यस्याः —प्रा० ब०, कप्+टाप्] एक प्रकार का चावल (छोटे दानों वाला) ।

प्रसादः [प्र+सद्+घञ्] 1. अनुग्रह, कृपा, दाक्षिण्य, कल्याणकारिता—कुरु दृष्टिप्रसादं 'कृपा दर्शन दीजिए', इत्याप्रसादादस्यास्त्वं परिचर्यापरो भव—रघु० १।९१, २।२२ 2. अच्छा स्वभाव, स्वभाव में करुणाशीलता 3. धीरता, शान्ति, मन की स्वस्थता, सौम्यता, गांभीर्य, उत्तेजना का अभाव—भग० २।६४ 4. स्वच्छता, निर्मलता, उज्ज्वलता, पारदर्शिता, (पानी या मन आदि की) पवित्रता—गङ्गा रोधःपतनकलुषा गृह्णतीव प्रसादम्—विक्रम० १।८, श० ७।३२, प्राप्तबुद्धि-प्रसादाः—शि० ११।६, रघु० १७।१, कि० ९।२५, 5. प्रसादगुणयुक्तता, शैली की विशदता, मम्मट के अनुसार, तीन गुणों में एक—प्रसाद गुण, परिभाषा-शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः, व्याप्नो-त्यन्यत्प्रसादोसौ सर्वत्र विहितस्थितिः—काव्य० ८, यावदर्थकपदत्वरूपमर्थवैमल्यं प्रसादः, या श्रुतमात्रा वाक्यार्थं करतलबदरमिव निवेदयन्ती घटना प्रसादस्य —रस०, दे० काव्या० १।४५, सा० द० ६११ भी 6. भगवान् की मूर्ति को भोग लगाया हुआ नैवेद्य का अवशिष्ट 7. चढ़ावा, पुरस्कार 8. शान्तिकर भेंट 9. कुशल, क्षेम । सम०—उन्मुख (वि०) अनुग्रह करने के लिए तत्पर—पराङ्मुख (वि०) 1. अनुग्रह को वापिस खींचने वाला 2. जो किसी के अनुग्रह की अपेक्षा न करे,—पात्रम् अनुग्रह का पात्र,—स्थ (वि०) 1. कृपालु, मंगलप्रद 2. शान्त, तुष्ट, आनंदित ।

प्रसादक (वि०) (स्त्री०—दिका) [प्र+सद्+णिच्+ण्वुल्] 1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, स्फटिक सदृश विशद करने वाला 2. तसल्ली देने वाला, ढाढस बंधाने वाला 3. आनन्दित करने वाला, खुश करने वाला 4. अनुग्रह करने वाला, प्रसन्न करने वाला ।

प्रसादन (वि०) (स्त्री० नी) प्र+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, निर्मल या विशुद्ध करने वाला—फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यम्बुप्रसादनम् —मनु० ६।६७ 2. सांत्वना देने वाला, ढाढस बंधाने वाला 3. खुश करने वाला, आनन्दित करने वाला, —नः राजकीय तंबू,—नम् 1. निर्मल करना, पवित्र करना 2. सांत्वना देना, ढाढस बंधाना, शान्त करना, मन स्वस्थ करना, 3. प्रसन्न करना, तुष्ट करना 4. कल्याण करना, अनुग्रह करना,—ना 1. सेवा, पूजा 2. निर्मली करण ।

प्रसादित (भू० क० कृ०) [प्र+सद्+णिच्+क्त] 1. पवित्र किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2. खुश किया हुआ, प्रसन्न किया हुआ 3. पूजा किया हुआ 4. धीरज बंधाया हुआ, सांत्वना दिया हुआ ।

प्रसाधक (वि०) (स्त्री०—धिका) [प्र+साध्+ण्वुल्] 1. निष्पन्न करने वाला, पूरा करने वाला 2. पवित्र करने वाला, छानने वाला 3. सजाने वाला, अलंकृत करने वाला, —कः पार्श्वचर, अपने स्वामी को वस्त्र पहनाने वाला सेवक ।

प्रसाधनम् [प्र+साध्+ल्युट्] 1. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, करवाना 2. व्यवस्थित करना, क्रमबद्ध करना 3. सजाना, अलंकृत करना, विभूषित करना, शरीरसज्जा, वेशभूषा—कु० ४।१८ 4. सजावट, आभूषण, सजाने या विभूषित करने का साधन—कु० ७।१३, ३०, —नः,-नम्,-नी, कंघी । सम०—विधिः सजावट, शृंगार,—विशेषः सबसे ऊँचा शृंगार—प्रसाधन विधेः प्रसाधन विशेषः—विक्रम० २।३ ।

प्रसाधिका [प्रसाधक+टाप्+इत्वम्] सेविका, वह दासी जो अपनी स्वामिनी के शृंगार की देख-रेख करे—प्रसाधिकालम्बितमग्रपादमाक्षिप्य —रघु० ७।७ ।

प्रसाधित (भू० क० कृ०) [प्र+साध्+क्त] 1. निष्पन्न, पूरा किया हुआ, पूर्ण किया हुआ 2. विभूषित, सुसज्जित ।

प्रसारः [प्र+सृ+घञ्] 1. फैलाना, विस्तार करना 2. फैलाव, प्रसृति, विस्तार, प्रसारण 3. बिछावन 4. खाद्यान्वेषण के लिए देश में इधर उधर फैल जाना ।

प्रसारणम् [प्र+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. विदेशों में फैलना, बढ़ना, वृद्धि, प्रसृति, फैलाव 2. फैलाना—यथा 'बाहुप्रसारणम्' में 3. शत्रु को घेरना 4. इंधन और घास के लिए समस्त देश में फैल जाना 5. अर्धस्वर वर्णों (यरलव) का स्वरों (इ, ऋ लृ उ) में बदल जाना, संप्रसारण ।

प्रसारिणी [प्र+सृ+णिनि ङीप्] शत्रु को घेरना ।

प्रसारित (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+णिच्+क्त] 1. प्रसार किया हुआ, फैलाया हुआ, प्रसृत किया हुआ, बढ़ाया हुआ 2. (हाथों की भांति) फैलाया हुआ 3. प्रदर्शित किया हुआ, रक्खा हुआ, (बिक्री के लिए) रक्खा हुआ ।

प्रसाहः [प्र+सह्+घञ्] अपने प्रभाव में लाना, जीत लेना, पराजित करना ।

प्रसित (भू० क० कृ०) [प्र+सि+क्त] 1. बांधा हुआ, कसा हुआ 2. संलग्न, व्यस्त, काम में लगा हुआ 3. तुला हुआ, प्रबल इच्छुक, लालायित (करण० या अधि० के साथ) —लक्ष्म्या लक्ष्म्यां वा प्रसितः —सिद्धा०, रघु० ८।२३,—तम् पीव, मवाद ।

प्रसितिः (स्त्री०) [प्र+सि+क्तिन्] 1. जाल 2. पट्टी 3. बंधन, नमदे की पट्टी ।

प्रसिद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+सिध्+क्त] 1. विश्रुत, विख्यात, मशहूर 2. सजा हुआ, अलंकृत, विभूषित —रघु० १८।४१, कु० ५।९, ७।१६ ।

प्रसिद्धिः (स्त्री०) [प्र+सिध्+क्तिन्] 1. कीर्ति, ख्याति, मशहूरी, विश्रुति 2. सफलता, निष्पन्नता, पूर्ति—कि० ३।३९, मनु० ४।३ 3. शृंगार, सजावट ।

प्रसीदिका [प्रसाद्यतेऽस्याम्—प्र+सद्+ण्वुल्, इत्वम्, टाप्, सीदादेशः] वाटिका, छोटा उद्यान ।

प्रसुप्त (भू० क० कृ०) [प्र+स्वप्+क्त] 1. सोया हुआ, निद्रित 2. प्रगाढ़ निद्रा में ।

प्रसुप्तिः (स्त्री०) [प्र+स्वप्+क्तिन्] 1. निद्रालुता, प्रगाढ़ निद्रा 2. लकवे का रोग ।

प्रसू (वि०) [प्र+सू+क्विप्] 1. प्रकाशित करने वाला, पैदा करने वाला, जन्म देने वाला—स्त्रीप्रसूश्चाधिवेत्तव्या—याज्ञ० १।७३—(स्त्री०) 1. माता—मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ—अमर० 'जनक-जननी' 2. घोड़ी 3. फैलने वाली लता 4. केला ।

प्रसूका [प्र+सू+कन्+टाप्] घोड़ी ।

प्रसूत (भू० क० कृ०) [प्र+सू+क्त] 1. उत्पन्न, जनित 2. पैदा किया हुआ, जन्म दिया हुआ, उत्पादित,—तम् 1. फूल 2. कोई उपजाऊ स्रोत,—ता जच्चा स्त्री ।

प्रसूतिः (स्त्री०) [प्र+सू+क्तिन्] 1. प्रसर्जन, जनन, प्रसव 2. जन्म देना, पैदा करना, गर्भमोचन, बच्चे को जन्म देना—रघु० १४।६६ 3. बछड़े को जन्म देना 4. अंडे देना—नै० १।१३५ 5. जन्म, उत्पादन, जनन —रघु० १०।५३ 6. दर्शन, प्रकट होना, (फूलों का) विकसन—रघु० ५।१४, कु० १।४२ 7. फल, पैदावार 8. संतति, प्रजा, अपत्य—रघु० १।२५, ७७, २।४, ५।७, कु० २।७, श० ६।२४ 9. उत्पादक, जनक, प्रस्रष्टा—रघु० २।६३ 10. माता । सम०—जम् प्रसव से उत्पन्न होने वाली पीडा,—वायुः प्रसव के समय गर्भाशय में उत्पन्न होने वाली वायु ।

प्रसूतिका [प्रसूत+ठन्+टाप्] जच्चा स्त्री, वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चे को जन्म दिया है ।

प्रसून (भू० क० कृ०) [प्र+सू+क्त, तस्य नत्वम्] पैदा किया गया, उत्पन्न,—नम् 1. फूल—लतायां पूर्वलूनायां प्रसूनस्यागमः कुतः—उत्तर० ५।२०, रघु० २।१० 2. कली, मंजरी 3. फल सम०—इषुः,—बाणः, —बाणः कामदेव का विशेषण,—वर्षः पुष्पवृष्टि ।

प्रसूनकम् [प्रसून+कन्] 1. फूल 2. कली, मंजरी ।

प्रसृत (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+क्त] 1. आगे बढ़ा हुआ 2. पसारा हुआ, बढ़ाया हुआ 3. फैलाया गया, प्रसारित किया गया 4. लंबा, लम्बा किया हुआ

5. व्यस्त, लगा हुआ 6. फुर्तीला तेज 7. सुशील, विनीत —तः हाथ की खुली हथेली, अंजलि,—तः,—तम् दो पल का माप,—ता टांग। सम०—जः पुत्रों का विशिष्ट वर्ग, व्यभिचार जनित पुत्र, कुंडगोलकरूप।

प्रसृतिः (स्त्री०) [प्र+सृ+क्तिन्] 1. आगे जाना, प्रगति 2. बहना 3. फैलाये हुए हाथ की हथेली, अंजलि 4. मुट्ठी भर (यही दो पल की माप समझी जाती है)—परिक्षीणः कश्चित्स्पृहयति यवानां प्रसृतये —भर्तृ० २।४५, याज्ञ० २।११२।

प्रसृत्वर (वि०) [प्र+सृ+क्वरप्, तुकागमः] इधर उधर फैलने वाला—भामि० ४।१।

प्रसृमर (वि०) [प्र+सृ+क्मरच्] बहता हुआ, चूने वाला, टपकने वाला।

प्रसृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+सृज्+क्त] 1. एक ओर डाला हुआ, त्यागा हुआ 2. घायल, क्षतिग्रस्त,—ष्टा फैलाई हुई अंगुली (अङ्गुल्यः प्रसृता यास्तु ताः प्रसृष्टा उदीरिताः)।

प्रसेकः [प्र+सिच्+घञ्] 1. बहना, रिसना, टपकना 2. छिड़कना, आर्द्र करना 3. उद्गिरण, प्रस्रवण —ऋतु० ३।६ 4. उद्वमन, कै।

प्रसेविका [=प्रसीदिका, पृषो०] छोटा उद्यान, वाटिका।

प्रसेवः, प्रसेवकः [प्र+सिव्+घञ्, प्रसेव+कन्] 1. थैला, (अनाज के लिए) बोरी 2. चमड़े की बोतल 3. काष्ठ का बना छोटा उपकरण जो वीणा की गर्दन के नीचे लगाया जाता है जिससे कि उसका स्वर अपेक्षाकृत कुछ गहरा हो जाय।

प्रस्कन्दनम् [प्र+स्कन्द्+ल्युट्] 1. कूद जाना, छलांग लगाना 2. विरेचन, जुलाब, अतिसार,—नः शिव का विशेषण।

प्रस्कन्न (भू० क० कृ०) [प्र+स्कन्द्+क्त] 1. फलांगा हुआ, छलाँग लगाकर पार किया हुआ 2. पतित, टपका हुआ 3. परास्त,—न्नः 1. जातिबहिष्कृत 2. पापी, अतिक्रमणकारी।

प्रस्कुन्दः [प्रगतः कुन्दं चक्रम्—प्रा० स०] गोलाकार वेदी।

प्रस्खलनम् [प्र+स्खल्+ल्युट्] 1. लड़खड़ाना 2. डगमगाना, गिर जाना।

प्रस्तरः [प्र+स्तृ+अच्] 1. पर्णशय्या, पुष्पशय्या 2. पर्यंक, खटिया 3. समतल शिखर, हमवार, समतल 4. पत्थर, चट्टान 5. मूल्यवान् पत्थर, रत्न।

प्रस्तरणम्,—णा [प्र+स्तृ+ल्युट्] 1. पलंग 2. शय्या 3. बिछौना।

प्रस्तारः [प्र+स्तृ+घञ्] 1. बखेरना, फैलाना, आच्छादित करना 2. पुष्पशय्या, पर्णशय्या 3. पलंग, खाट 4. चपटी सतह, समतल हमवार 5. वनस्थली, जंगल 6. (छन्द० में) संभावित भेदों समेत छन्द की ह्रस्व तथा दीर्घ मात्राओं की द्योतिका तालिका।

प्रस्तावः [प्र+स्तु+घञ्] 1. आरंभ, शुरू 2. आमुख 3. उल्लेख, संकेत, संदर्भ—नाममात्रप्रस्तावः—श० ७ 4. अवसर, मौका, समय, ऋतु, उपयुक्तकाल —त्वराप्रस्तावोऽयं न खलु परिहासस्य समयः—भा० ९।४४, शिष्याय बृहतां पत्युः प्रस्तावमदिशद्दृशा —शि० २८ 5. प्रवचन का प्रयोजन, विषय, शीर्षक 6. नाटक की प्रस्तावना—दे० 'प्रस्तावना' नीचे। सम० —यज्ञः ऐसा वार्तालाप जिसमें प्रत्येक अन्तर्वादी भाग ले।

प्रस्तावना [प्र+स्तु+णिच्+युच्+टाप्] 1. प्रशंसित या उल्लिखित होने का कारण बनना, प्रशंसा, सराहना 2. शुरू, आरंभ—आर्यबालचरितप्रस्तावनाडिण्डिमः महावी०—१५४ 3. परिचय, भूमिका, आमुख—प्रस्तावना इयं कपटनाटकस्य—मा० २ 4. नाटक के आरंभ में सूत्रधार तथा किसी एक पात्र के बीच में हुआ परिचयात्मक वार्तालाप (इसमें नाटककार तथा उसकी योग्यता का परिचय देकर श्रोताओं के सम्मुख नाटक की घटनाओं को रक्खा जाता है) परिभाषा के लिए दे० 'आमुख'।

प्रस्तावित (वि०) [प्र+स्तु+णिच्+क्त] 1. आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ 2. उल्लिखित, इङ्गित —मा० ३।३।

प्रस्तिरः [=प्रस्तरः नि० इत्वम्] पर्णशय्या, पुष्पशय्या।

प्रस्तीत,—म (वि०) [प्र+स्त्यै+क्त, संप्र०, पक्षे तस्य मः] 1. कोलाहल करने वाला, शब्दायमान 2. भीड़-भड़क्का, झुण्ड बनाते हुए।

प्रस्तुत (भू० क० कृ०) [प्र+स्तु+क्त] 1. जिसकी प्रशंसा की गई हो, या स्तुति की गई हो 2. आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ 3. निष्पन्न, कृत, कार्यान्वित 4. घटित 5. उपागत 6. प्रस्तुत किया गया, उद्घोषित, विचाराधीन या विचारणीय (दे० प्रपूर्वक स्तु),—तम् 1. उपस्थित विषय, विचाराधीन विषय —अधुना प्रस्तुतमनुस्रियताम् 2. (अलं० शा०) विचार के विषय की रूपरेखा बनाना, उपमेय, दे० 'प्रकृत'; अप्रस्तुतप्रशंसा सा या सैव प्रस्तुताश्रया —काव्य० १०। सम०—अङ्कुरः एक अलंकार जिसमें श्रोता के मन में निहित किसी बात को प्रकाशित करने के लिए संचारी परिस्थिति का उल्लेख किया जाता है, दे० चन्द्रा० ५।६४, और कुव० (प्रस्तुतांकुर के नीचे)।

प्रस्थ (वि०) [प्र+स्था+क] 1. जाने वाला, दर्शन करने वाला, पालन करने वाला—यथा 'वानप्रस्थ' में 2. यात्रा पर जाने वाला 3. फैलाने वाला, विस्तार करने

वाला 4. दृढ़, स्थिर,—स्थः,—स्थम् 1. समतलभूमि, चौरस मैदान, जैसा कि औषधिप्रस्थ या इंद्रप्रस्थ में 2. पर्वत के शिखर पर समतल या चौरस भूमि,—प्रस्थं हिमाद्रेर्मृगनाभिगन्धि किंचित्क्वणत्किन्नरमध्युवास—कु० १।५४, मेघ० ५८ 3. पहाड़ का शिखर या चोटी —शि० ४।११ (यहाँ यह चौथे अर्थ को भी प्रकट करता है) 4. एक विशिष्ट माप जो ३२ पलों के बराबर होता है 5. 'प्रस्थ' के तोल के बराबर कोई वस्तु। सम०—पुष्पः तुलसी का एक भेद, दोना मरुआ।

प्रस्थम्पच (वि०)[प्रस्थ+पच्+अच्, मुमागमः] प्रस्थमात्र पकाने वाला।

प्रस्थानम् [प्र+स्था+ल्युट्] 1. प्रयाण करना, कूच करना, विदा, प्रगमन करना—प्रस्थानविक्लवगतेरवलम्बनार्थम् —श० ५।३, रघु० ४।८८, मेघ० ४१, अमरु ३१ 2. पहुँचना—कु० ६।६१ 3. कूच करना, किसी सेना का या आक्राम का कूच करना 4. प्रणाली, पद्धति 5. मृत्यु, मरण 6. निकृष्ट श्रेणी का नाटक—दे० सा० द० २७६, ५४४।

प्रस्थापनम् [प्र+स्था+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. भेजना, तितर-बितर करना, प्रेषित करना 2. दूतावास में नियुक्ति 3. प्रमाणित करना, प्रदर्शन करना 4. उपयोग करना, काम में लगाना 5. पशुओं का अपहरण।

प्रस्थापित (भू० क० कृ०) [प्र+स्था+णिच्+क्त, पुकागमः] 1. भेजा गया, प्रेषित 2. स्थापित, सिद्ध।

प्रस्थित (भू० क० कृ०) [प्र+स्था+क्त] प्रयात, आगे बढ़ा हुआ, विदा हुआ, विसर्जित, यात्रा पर गया हुआ (दे० प्रपूर्वक 'स्था')।

प्रस्थितिः (स्त्री०) [प्र+स्था+क्तिन्] 1. चले जाना, विदा होना 2. कूच करना, यात्रा।

प्रस्नः [प्र+स्ना+क] स्नान-पात्र।

प्रस्नवः [प्र+स्नु+अप्] 1. उमड़ कर बहना, बह निकलना, निःस्रवण—उत्तर० ६।२२ 2. (दूध की) धार या प्रवाह—रघु० १।८४।

प्रस्नुत (भू० क० कृ०) [प्र+स्नु+क्त] झरता हुआ, रिसता हुआ, बहकर निकलता हुआ। सम०—स्तनी वह स्त्री जिसकी छाती से (मातृस्नेहातिरेक के कारण) दूध टपकता है—उत्तर० ३।

प्रस्नुषा [प्रा० स०] पौत्रवधू।

प्रस्पन्दनम् [प्र+स्पन्द्+ल्युट्] धड़कन, थरथराहट, कंपकंपी।

प्रस्फुट (वि०) [प्र+स्फुट्+क] 1. खिला हुआ, विकसित, (फूल आदि) फूला हुआ 2. उद्घोषित, प्रकाशित, (रिपोर्ट आदि) फैलाई हुई 3. सरल, साफ, प्रकट, स्पष्ट।

प्रस्फुरित (भू० क० कृ०) [प्र+स्फुर्+क्त] ठिठुरता हुआ, कांपता हुआ, थरथराता हुआ, कम्पायमान।

प्रस्फोटनम् [प्र+स्फुट्+ल्युट्] 1. फूट निकलना, खिलना, मुकुलित होना 2. स्पष्ट या साफ करना, खोलना, प्रकट करना 3. टुकड़े-टुकड़े करना 4. खिलाना, विकसित करना 5. अनाज फटकना 6. छाज 7. छेतना, पीटना।

प्रस्रंसिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+स्रंस्+णिनि] समय से पूर्व गिर जाने वाला (गर्भ), कच्चा गिरना।

प्रस्रवः [प्र+स्रु+अप्] 1. बूंद-बूंद गिरना, टपकना, बहना रिसना 2. बहाव, धारा 3. औड़ी या स्तन से टपकने वाला दूध—प्रस्रवेण (पाठान्तर 'प्रस्रवेन') अभिवर्षन्तो वत्सालोकप्रवर्तिना—रघु० १।८४ 4. मूत्र,—वाः—(ब० व०) उमड़ते हुए आंसू।

प्रस्रवणम् [प्र+स्रु कान्+ल्युट्] 1. बह निकलना, उमड़ना, टपकना, झरना, बूंद बूंद गिरना 2. स्तन या औड़ी से दूध बहना—(वृक्षकान्) घटस्तनप्रस्रवणैर्व्यवर्धयत्—कु० ५।१४ 3. जलप्रपात, प्रपातिका, निर्झर 4. झरना, फौवारा—समाचिताः प्रस्रवणैः समन्ततः—ऋतु० २।१३ मनु० ८।२४८ याज्ञ० १।१५९ 5. नाली, टोंटी 6. पहाड़ी सरिताओं से बना पोखर, पल्वल 7. स्वेद, पसीना 8. मूत्रोत्सर्ग,—णः एक पहाड़ का नाम—जनस्थानमध्यगो गिरिः प्रस्रवणो नाम—उत्तर० १।

प्रस्रावः [प्र+स्रु+घञ्] 1. बहाव, उमड़न, मूत्र।

प्रस्रुत (भू० क० कृ०) [प्र+स्रु+क्त] उमड़ा हुआ, टपका हुआ, बूंद-बूंद कर गिरा हुआ, रिसा हुआ।

प्रस्व (स्वा) नः [प्र+स्वन्+अप्, घञ् वा] ऊँची आवाज।

प्रस्वापः [प्र+स्वप्+घञ्] 1. निद्रा 2. स्वप्न 3. निद्रा लाने वाला अस्त्र।

प्रस्वापनम् [प्र+स्वप्+णिच्+ल्युट्] 1. सुलाना, निद्रित करना 2. ऐसा अस्त्र जो आक्रान्त व्यक्ति को सुला दे —रघु० ७।६१।

प्रस्विन्न (भू० क० कृ०) [प्र+स्विद्+क्त] पसीना आया हुआ, पसीने से तर।

प्रस्वेदः [प्र+स्विद्+घञ्] बहुत अधिक पसीना।

प्रस्वेदित (भू० क० कृ०) [प्र+स्विद्+णिच्+क्त] 1. स्वेदाच्छन्न, पसीने से सराबोर, पसीना आया हुआ 2. पसीना लाने वाला, गर्म।

प्रहणनम् [प्र+हन्+ल्युट्] वध, हत्या।

प्रहत [प्र+हन्+क्त] 1. घायल, वध किया हुआ, मारा हुआ 2. पीटा हुआ, (ढोल आदि) बजाना—स स्वयं प्रहतपुष्करः कृती—रघु० १९।१४, मेघ० ६४ 3. पीछे ढकेला हुआ, विजित, पराजित 4. फैलाया हुआ, फुलाया हुआ 5. सटा हुआ 6. (पगडंडी) घिसा-पिटा, गतानुगतिक 7. निष्पन्न, विद्वान्।

प्रहरः [प्र+हृ+अप्] दिन का आठवाँ भाग, प्रहर (तीन घंटे का समय)—प्रहरे प्रहरेऽसहोच्चारितानि गामानये-त्यादिपदानि न प्रमाणम्—तर्क० ।

प्रहरकः [प्रहर+कन्] एक पहर ।

प्रहरणम् [प्र+हृ+ल्युट्] 1. प्रहार करना, मारना 2. डालना, फेंकना 3. धावा करना, आक्रमण करना 4. घायल करना 5. हटाना, बाहर निकालना 6. शस्त्र अस्त्र,—या (उर्वशी) सुकुमारं प्रहरणं महेन्द्रस्य —विक्रम० १, रघु० १३।७३ भग० १।९, मा० ८।९ 7. संग्राम, युद्ध, लड़ाई 8. ढकी हुई पालकी या डोला ।

प्रहरणीयम् [प्र+हृ+अनीयर्] अस्त्र, शस्त्र ।

प्रहरिन् (पुं०) [प्रहर+इनि] 1. रखवाला 2. पहरेदार, घंटी वाला ।

प्रहर्तृ (वि०) [प्र+हृ+तृच्] 1. प्रहार करने वाला, पीटने वाला, हमला करने वाला 2. लड़ने वाला, संयोधी, योद्धा 3. तीरंदाज, निशाने बाज, धनुर्धर ।

प्रहर्षः [प्र+हृष्+घञ्] 1. अत्यधिक हर्ष, अत्यानन्द, उल्लास—गुरुः प्रहर्षः प्रबभूव नात्मनि—रघु० ३।१७ 2. लिङ्ग का खड़ा होना ।

प्रहर्षणम् [प्र+हृष्+ल्युट्] उल्लसित करना, प्रहृष्ट करना, आनन्दित करना,—णः बुध ग्रह ।

प्रहर्ष (णि) णी [प्र+हृष्+णिच्+ल्युट्+ङीप्+प्र +हृष्+णिच्+णिनि+ङीप्] 1. हल्दी 2 एक छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट ।

प्रहर्षुलः [प्र+हृष्+उलच्] बुध ग्रह ।

प्रहसनम् [प्र+हस्+ल्युट्] 1. जोर की हँसी, अट्टहास, खिलखिलाकर हँसना 2. मज़ाक, ठिठोली, व्यंग्योक्ति, उपहास—धिक् प्रहसनम्—उत्तर० ४ 3. व्यंग्यलेख, व्यंग्य 4. स्वांग, तमाशा, हँसी का सुखान्त नाटक —सा० द० में दी गई परिभाषा—भाणवत्सन्धिसध्यं-ङ्गलास्याङ्गाङ्कैर्विनिर्मितम्, भवेत्प्रहसनं वृत्तं निन्द्यानां कविकल्पितम्—५५३ तथा आगे, उदा० 'कन्दर्पकेलि' ।

प्रहसन्ती [प्र+हस्+शतृ+ङीप्] 1. एक प्रकार की चमेली, जुही, यूथिका, बासन्ती 2. एक बड़ी अंगीठी ।

प्रहसित (भू० क० कृ०) [प्र+हस्+क्त] हँसता हुआ,—तम् हँसी, हास्य ।

प्रहस्तः [प्रततः प्रसृतो हस्तः—प्रा० स०] 1. खुला हाथ जिसकी अँगुलियाँ फैली हों, (थप्पड़) 2. रावण के एक सेनापति का नाम) ।

प्रहाणम् [प्र+हा+ल्युट्] त्यागना, छोड़ना, भूल जाना —मनु० ५।५८ ।

प्रहाणिः (स्त्री०) [प्र+हा+नि, णत्वम्] 1. त्यागना 2. कमी, अभाव ।

प्रहारः [प्र+हृ+घञ्] 1. वार करना, पीटना, चोट करना—याज्ञ० ३।२४८ 2. घायल करना, मार डालना 3. आघात, मुक्का, चोट, ठोकर, धौल—रघु० ७।४४, मुष्टिप्रहार, तलप्रहार आदि 5. ठोकर—जैसा कि पादप्रहारः और लत्ताप्रहारः में 6. गोली मारना ।

प्रहारणम् [प्र+हृ+णिच्+ल्युट्] वाञ्छनीय उपहार ।

प्रहासः [प्र+हस्+घञ्] 1. ज़ोर की हँसी, अट्टहास 2. मज़ाक, दिल्लगी, हंसी 3. व्यंग्योक्ति, व्यंग्य 4. नर्तक, नट, पात्र 5. शिव 6. दर्शन, दिखावा —वेणी० २।२८ 7. एक तीर्थ स्थान का नाम—तु० प्रहास ।

प्रहासिन् (पुं०) [प्र+हस्+णिच्+णिनि] विदूषक, मसखरा ।

प्रहिः [प्र+हि+क्विप्] कुआँ ।

प्रहित (भू० क० कृ०) [प्र+धा+क्त] 1. रक्खा हुआ, प्रस्तुत किया हुआ 2. बढ़ाया हुआ, फैलाया हुआ 3. भेजा हुआ, प्रेषित, निदेशित—विचारमार्गप्रहितेन चेतसा—कु० ५।४२ 4. छोड़ा हुआ, निशाना लगाया हुआ (तीर आदि का) 5. नियुक्त किया गया 6. समुचित, उपयुक्त,—तम् चाट, चटनी ।

प्रहीण (भू० क० कृ०) [प्र+हा+क्त, ईत्, तस्य नः, णत्वम्] छोड़ा गया, खाली किया गया, त्यागा गया, —णम् विनाश, निराकरण, घाटा ।

प्रहुतः,—तम् [प्र+हु+क्त] भूतयज्ञ, बलिवैश्वदेव, दैनिक पाँच यज्ञों में एक, तु० मनु० ३।७४ ।

प्रहृत (भू० क० कृ०) [प्र+हृ+क्त] पीटा गया, आघात किया गया, चोट किया गया, घायल किया गया । —तम् मुक्का, प्रहार, चोट ।

प्रहृष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+हृष्+क्त] 1. खुश, प्रसन्न, आनंदित, आह्लादित 2. पुलकित करना, रोमांचित करना (रोंगटे खड़े होना) । सम०—आत्मन्,—चित्त, —मनस् (वि०) मन से खुश, हृदय से आनन्दित ।

प्रहृष्टकः [प्रहृष्ट+कन्] काक, कौवा ।

प्रहेलकः [प्र+हिल्+ण्वुल्] 1. एक प्रकार का सुहाल, मीठी रोटी 2. पहेली—दे० नी० 'प्रहेलिका' ।

प्रहेला [प्र+हिल्+अ+टाप्] मुक्त या अनियंत्रित व्यवहार, शिथिल आचरण, रंगरेली, विहार ।

प्रहेलिः (स्त्री०), **प्रहेलिका** [प्र+हिल्+इन्, प्रहेलि+कन् +टाप्] पहेली, बुझौवल, कूट प्रश्न, विदग्धमुख-मडन में दी गई परिभाषा—व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनात्, यत्र बाह्यान्तरावर्थौ कथ्यते सा प्रहेलिका । यह आर्थी और शाब्दी दो प्रकार की है । तरुण्यालिङ्गितः कण्ठे नितम्बस्थलमाश्रितः, गुरूणां सन्निधानेऽपि कः कूजति मुहुर्मुहुः । (यहाँ पहेली का उत्तर है ईषदूनजलपूर्णकुम्भः) यह आर्थी का उदाहरण है । सदारिमध्यापि न वैरियुक्ता नितान्त-रक्ताप्यसितैव नित्यं यथोक्तवादिन्यपि नैव दूती का

नाम कान्तेति निवेदयाशु । (यहाँ पहेली का उत्तर है ---सारिका) यह शाब्दी का उदाहरण है। दण्डी ने सोलह प्रकार की पहेलियाँ बतलाई हैं—काव्या० ३।९६—१२४।

प्रह्लन्न (भू० क० कृ०) [प्र+ह्लाद्+क्त, ह्रस्वः] खुश, आनंदित, प्रसन्न।

प्रह्ला (ह्ला) दः [प्र+ह्लाद्+घञ्, रलयोरैक्यम्] 1. अत्यधिक हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, आनन्द 2. शब्द, आवाज़ 3. हिरण्यकशिपु राक्षस के पुत्र का नाम (पद्मपुराण के अनुसार प्रह्लाद अपने पूर्व जन्म में ब्राह्मण था। जब उसने हिरण्यकशिपु के यहाँ जन्म लिया तो भी उसकी विष्णु के प्रति अनन्यभक्ति बनी रही। उसका पिता यह नहीं चाहता था कि उसका अपना पुत्र ही उसके घोर शत्रु देवों का ऐसा पक्का भक्त बने! अतः उससे छुटकारा पाने के उद्देश्य से उसने अपने पुत्र प्रहलाद को नाना प्रकार की यातनाएँ दीं। परन्तु विष्णु की कृपा से प्रह्लाद का कुछ नहीं बिगड़ा, उसने और भी अधिक उत्साह से इस बात का उपदेश करना आरम्भ कर दिया कि विष्णु सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् हैं। हिरण्यकशिपु ने क्रोधावेश में प्रह्लाद से पूछा कि बता कि यदि विष्णु सर्वव्यापक है तो इस वृक्ष के स्तंभ में वह मुझे क्तों नहीं दिखाई देता ? इस पर प्रह्लाद ने स्तंभ पर मुक्के का आघात किया (दूसरे मतानुसार स्वयं हिरण्यकशिपु ने क्रोध में भरकर अपने पुत्र के विश्वास की मूर्खता का उसे विश्वास दिलाने के लिए स्वयं स्तंभ को ठोकर मारी) फलतः विष्णु नरसिंह (अर्ध मनुष्य तथा अर्ध सिंह) के रूप में प्रकट हुआ और हिरण्यकशिपु के टुकड़े टुकड़े कर दिये। प्रह्लाद अपने पिता का उत्तराधिकारी बना और बुद्धिमत्ता पूर्वक, तथा न्यायपूर्वक राज्य किया)।

प्रह्ला(ह्ला)दन (वि०) [प्र+ह्लाद्+णिच्+ल्युट्, रलयोरैक्यम्] आनन्द देने वाला, प्रसन्न करने वाला —रघु० १३।४,—नम् हर्ष या प्रसन्नता पैदा करना, आनंद देना, खुश करना—यथा प्रह्लादनाच्चन्द्रः --रघु० ४।१२।

प्रह्व (वि०) [प्र+ह्व+वन्, नि० साधुः] 1. ढलुवाँ, तिरछा, झुका हुआ --शि० १२।५६ 2. झुकता हुआ, नीचे को झुका हुआ, विनम्र,—विनीत एष प्रह्वोऽस्मि भगवन् एषा विज्ञापना च नः—महावी० १।४७, ६।३७ 3. दीन, विनीत, सुशील, विनयी—प्रह्वेष्वनिर्बन्धरुषो हि सन्तः—रघु० १६।८० 4. अनुरक्त, भक्त, व्यस्त, आसक्त। सम०—अञ्जलि (वि०) सम्मान के चिह्न स्वरूप दोनों हाथ जोड़ कर सिर झुकाए हुए।

प्रह्वयति (ना० धा०—पर०) विनीत करना, वशवर्ती बनाना।

प्रह्वलिका (स्त्री०) दे० प्रहेलिका।

प्रह्वायः [प्र+ह्वे+घञ्] बुलावा, आमंत्रण, निमंत्रण।

प्रांशु (वि०) [प्रकृष्टा अंशवो यस्य—प्रा० ब०] 1. ऊँचा, लंबा, कद्दावर, ऊँचे कद का (मनुष्य)—शालप्रांशुर्महाभुजः—रघु० १।१३, १५।१९ 2. लंबा, बढ़ाया हुआ —श० २।१५,—शुः लंबा मनुष्य, बड़े क़द का आदमी—प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः —रघु० १।३।

प्राक् (अव्य०) [प्राचि सप्तम्यर्थे असिः तस्य लुक्] 1. पहले (अपा० के साथ)—सकलानि निमित्तानि प्राक्प्रभातात्ततो मम -- भट्टि० ८।१०, ६, प्राक् सृष्टेः केवलात्मने --कु० २।४, रघु० १४।७८, श० ५।२१ 2. सबसे पहले, पहले ही—प्रमन्यवः प्रागपि कोशलेन्द्रे -- रघु० ७।३४ 3. पहले, पूर्व, पूर्व अंश में (पुस्तक के)—इति प्रागेव निर्दिष्टम्-- मनु० १।७१ 4. पूर्व में, से पूर्व दिशा में—ग्रामात्प्राक् पर्वतः 5. सामने 6. जहाँ तक हो वहाँ तक, पर्यंत, तक---प्राक् कडारात्।

प्राकट्यम् [प्रकट+ष्यञ्] प्रकट करना, प्रकाशित करना, कुख्याति।

प्राकरणिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रकरण+ठक्] विचारणीय विषय से संबंध रखने वाला, प्रस्तुत विषय (अलंकार शास्त्रियों द्वारा प्रायः 'उपमेय' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है) से संबद्ध,—अप्राकरणिकस्याभिधानेन प्राकरणिकस्याक्षेपोऽप्रस्तुतप्रशंसा—काव्य० १०।

प्राकर्षिक (वि०) (स्त्री० - की) [प्रकर्ष+ठक्] श्रेष्ठतर या अधिक अच्छा समझा जाने का अधिकारी।

प्राकषिकः [प्र+आ+कष्+इकन्] 1. लौंडा, गांडू 2. दूसरे की स्त्री से अपनी जीविका चलाने वाला।

प्राकाम्यम् [प्रकाम+ष्यञ्] 1. इच्छा की स्वतंत्रता —प्राकाम्यं ते विभूतिषु— कु० २।११ 2. स्वेच्छाचारिता 3. अनिवार्य संकल्प, शिव की आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक (जिसकी प्राप्ति से सब मनोरथ पूरे हो जाते हैं) दे० 'सिद्धि'।

प्राकृत (वि०) (स्त्री०—ता,—ती) [प्रकृति+अण्] 1. मौलिक, नैसर्गिक, अपरिवर्तित, अविकृत—स्याताममित्रो मित्रे च सहजप्राकृतावपि—शि० २।३६, (इस पर देखो मल्लि०) 2. प्रचलित, सामान्य, साधारण 3. असंस्कृत, गंवार, असभ्य, अशिक्षित---प्राकृत इव परिभूयमानमात्मानं न रुणत्सि—का० १४६, भग० १८।२४ 3. नगण्य, महत्त्वहीन, तुच्छ—मुद्रा० १, 4. प्रकृति से उत्पन्न--- प्राकृतो लयः 'प्रकृति में ही पुनः लीन होना' 5. प्रान्तीय, देहाती (बोली), दे० नी०,—तः ओछा मनुष्य, साधारण व्यक्ति, देहाती पुरुष,—तम् एक देहाती या प्रान्तीय बोली जो संस्कृत से व्युत्पन्न तथा उससे मिलती-जुलती है—प्रकृतिः

संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं च प्राकृतम्—हेम० (इनमें बहुत सी बोलियाँ संस्कृत नाटकों में निम्न श्रेणी के पात्रों या स्त्री पात्रों द्वारा बोली जाती हैं) तद्भवस्तत्समो देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः—काव्या० १।३३, ३४, ३५ त्वमप्यस्मादृशजनयोग्ये प्राकृतमार्गे प्रवृत्तोऽसि—विद्ध० १। सम०—अरिः नैसर्गिक शत्रु अर्थात् पड़ौसी देश का शासक दे०, शि० २।२६ पर मल्लि०,—उदासीनः नैसर्गिक तटस्थ अर्थात् वह राजा जिसका राज्य नैसर्गिक मित्र राज्य के परे है,—ज्वरः सामान्य या साधारण बुखार,—प्रलयः विश्व का पूर्ण विघटन,—मित्रम् नैसर्गिक मित्र अर्थात् वह राजा जिसका राज्य नैसर्गिक शत्रु राज्य से मिला हुआ है (अथवा जिसका देश उस देश से पृथक् है जिसके साथ मित्रता का संबंध हो चुका है)।

प्राकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रकृति+ठञ्] 1. नैसर्गिक, प्रकृति से व्युत्पन्न—महावी० ७।३९ 2. भ्रान्तिजनक, भ्रमोत्पादक।

प्राक्तन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्राच्+टयु, तुडागमः] 1. पहला, पूर्व का, पिछला—प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः —कु० १।३० 2. पुराना, प्राचीन, पहले का 3. पूर्वजन्म से संबद्ध, या पूर्वजन्म में किये हुए कार्य —संस्काराः प्राक्तना इव—रघु० १।२०, कु० ६।१०।

प्राखर्यम् [प्रखर+ष्यञ्] 1. पैनापन 2. तीक्ष्णता 3. दुष्टता।

प्रागल्भ्यम् [प्रगल्भ+ष्यञ्] 1. साहस, भरोसा—निःसाध्वसत्वं प्रागल्भ्यम्—सा० द० 2. घमंड, अहंकार, 3. प्रवीणता, कुशलता 4. विकास, बडप्पन, परिपक्वता —बुद्धिप्रागल्भ्य, तमः प्रागल्भ्य आदि 5. प्रकटीकरण, प्रतीति—अवाप्तः प्रागल्भ्यं परिणतरुचः शैलतनये —काव्य० १० 'जो प्रतीत हुआ' 6. वाक्पटुता —प्रागल्भ्यहीनस्य नरस्य विद्या शस्त्रं यथा कापुरुषस्य हस्ते (यहाँ 'प्रागल्भ्य' का अर्थ 'साहस' भी है)—मा० ३।११ 7. धूमधाम, मर्यादा 8. धृष्टता, ढिठाई।

प्रागारः [प्रकृष्टः आगारः—प्रा० स०] घर, भवन।

प्राग्रम् [प्रा० स०] उच्चतम बिन्दु। सम०—सर (वि०) प्रथम, अग्रणी,—हर (वि०)-मुख्य, प्रधान—रघु० १६।२३।

प्राग्राटः [प्राग्र+अट्+अच्] पतला जमा हुआ दूध।

प्राग्र्य (वि०) [प्राग्र+यत्] मुख्य, अग्रणी, उत्तम, अतिश्रेष्ठ।

प्राघातः [प्रकृष्ट आघातः—प्रा० स०] युद्ध, लड़ाई।

प्राघारः [प्र+घृ+घञ्] टपकना, बूंद बूंद गिरना, रिसना।

प्राघुणः, प्राघुणकः, प्राघुणिकः, प्राघूर्णकः, प्राघूर्णिकः [प्र+घुण्+क, प्राघुण+कन्, प्राघुण+ठक् प्र+आ+घूर्ण्+ण्वुल्, प्राघूर्ण+ठञ्] अतिथि, पाहुना, अभ्यागत, मेहमान-चिरापराधस्मृतिमांसलोपि रोषः क्षणप्राघुणिको बभूव—भामि० २।६६, श्रवणप्राघुणिकीकृता जनैः (कथा)—नै० २।५६।

प्राङ्गम् [प्रकृष्टमगं यस्य—प्रा० ब०] एक प्रकार की ढोलक, पणव।

प्राङ्गणं (नम्). [प्रकर्षेण अंगनं गमनं यत्र—प्रा० ब०] 1. सहन, आंगन 2. (घर का) फर्श 3. एक प्रकार की ढोलक।

प्राच्, प्राञ्च् (वि०) (स्त्री०—ची) [प्र+अञ्च्+क्विन्] 1. सामने की ओर मुड़ा हुआ, सामने बिल्कुल आगे रहने वाला 2. पूर्वदिशा संबंधी, पूर्व का 3. प्राथमिक, पहला, पूर्वकाल का (पुं० ब० व०) 1. पूर्वदेश के लोग 2. पूर्वीय वैयाकरण। सम०—अग्र (वि०) (प्रागग्र) पूर्वदिशा की ओर दृष्टि फेरे हुए,—अभावः (प्रागभावः) पिछला, सत्ता का अभाव, किसी वस्तु की उत्पत्ति के पूर्व का अनस्तित्व, उत्पत्ति से पूर्व की अवस्था,—अभिहित (वि०) (प्रागभिहित) पूर्वोक्त, —अवस्था (प्रागवस्था) पहली दशा,—न तर्हि प्रागवस्थायाः परिहीयसे—मा० ४, 'पहली अवस्था की अपेक्षा कमी पर नहीं हो,'—आयत (वि०) (प्रागायत) पूर्वदिशा की ओर बढ़ा हुआ,—उक्तिः (स्त्री०) (प्रागुक्तिः) पूर्वकथित,—उत्तर (व०) (प्रागुत्तर) पूर्वोत्तर का,—उदीची (स्त्री०) (प्रागुदीची) पूर्वोत्तर दिशा,—कर्मन् (नपुं) (प्राक्कर्मन्) पूर्वजन्म में किया हुआ कार्य,—कालः (प्राक्कालः) पहला युग,—कालीन (वि०) (प्राक्कालीन) पूर्वकाल से संबंध रखने वाला, पुराना, प्राचीन,—कूल (वि०) (प्राक्कूल) जिसकी नोक पूर्वदिशा की ओर मुड़ी हुई हो (कुशग्रास) मनु० २।७५,—कृतम् (प्राक्कृतम्) पूर्वजन्म में किया गया कार्य,—चरणा (प्राक्चरणा) स्त्री की जननेन्द्रिय, योनि,—चिरम् (अव्य०) (प्राक्चिरम्) समय रहते, देर न करके,—जन्मन् (नपुं०) (प्राग्जन्मन्),—जातिः (स्त्री०) (प्राग्जातिः) पूर्वजन्म —ज्योतिषः (प्राग्ज्योतिषः) 1. एक देश का नाम, कामरूप देश का नामांतर 2. (ब० व०) इस देश के रहने वाले लोग, (षम्) एक नगर का नाम, °ज्येष्ठः विष्णु का विशेषण,—दक्षिण (वि०) (प्राग्दक्षिण) दक्षिणपूर्वी,—देशः (प्राग्देशः) पूर्वदिशा का देश,—द्वार,—द्वारिक (वि०) (प्राग्द्वार, प्राग्द्वारिक) जिसका दरवाजा पूर्वदिशा की ओर हो,—न्यायः (प्राङ् न्यायः) पहली जांचपड़ताल का तर्क, पहले से ही निर्णीत मुकदमा—आचारेणावसन्नोऽपि पुनर्लेखयते यदि, सोऽभिधेयो जितः पूर्वं प्राङ्न्यायस्तु स उच्यते 1. —प्रहारः (प्राक्प्रहारः) पहला मुक्का,— फलः

(प्राक्फलः) कटहल का पेड़,—फ (फा)ल्गुनी (प्राक्फ (फा)ल्गुनी) ग्यारहवाँ नक्षत्र, पूर्वाफाल्गुनी, °भवः 1. बृहस्पतिग्रह 2· बृहस्पति का नाम,—फाल्गुनः, —फाल्गुनेयः (प्राकफाल्गुनः, प्राक्फाल्गुनेयः) बृहस्पतिग्रह,—भक्तम् (प्राग्भक्तम्) भोजन से पूर्व औषधिसेवन—भागः (प्राग्भागः) 1. सामने का भाग 2. अगला भाग,—भारः (प्राग्भारः) 1. पहाड़ का शिखर या चोटी—मा० ९।१५ 2. सामने का भाग, (किसी चीजका) अगला भाग या किनारा—क्रन्दत्फेरवचण्डडात्कृतिभृतप्राग्भारभीमैस्तटैः—मा० ९।१५ 3. बड़ा परिमाण, ढेर, समुच्चय, बाढ़—भर्तृ० ३।१२९, मा० ५।२९,—भावः (प्राग्भावः) 1. पूर्वजन्म 2. श्रेष्ठता, उत्तमता,—मुख (वि०) (प्राङ्मुख) 1. पूर्व की ओर को मुड़ा हुआ—कु० ७।१३, मनु० २।५१, ८।८७, 2. झुका हुआ, कामना करता हुआ, इच्छुक,—वंशः (प्राग्वंशः) 1. यज्ञशाला जिसके स्तंभ पूर्व की ओर मुड़े हुए हों—रघु० १६।६१ (प्राचीनस्थूणो यज्ञशालाविशेषः—मल्लि०, परन्तु कुछ लोगों के मतानुसार इस का अर्थ है 'वह कक्ष जहाँ यजमान का परिवार और मित्र इकट्ठे रहते हों') 2. पहला वंश या पीढ़ी, —वृत्तम्=दे० प्राङ् न्याय,—वृत्तान्तः (प्राग्वृत्तान्तः) पहली घटना,—शिरस्,—शिरस,—शिरस्क (वि०) (प्राक्शिरस् आदि) पूर्वदिशा की ओर सिर मोड़े हुए, —संध्या (प्राक्संध्या) प्रातःकालीन संध्या,—सेवनम् (प्राक्सेवनम्) प्रातःकालीन जलतर्पण या यज्ञ, —स्रोतस् (वि०) (प्राक्स्रोतस्) पूर्व की ओर बहने वाला।

प्राचण्ड्यम् [प्रचण्ड+ष्यञ्] 1. उत्कटता, उग्रता, 2. भीषणता, विकराल दृष्टि—मा० ३।१७।

प्राचिका [प्र+अञ्च्+क्कुन्+टाप्, इत्वम्] 1. मच्छर डांस की जाति की एक जंगली मक्खी।

प्राची [प्र+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] पूर्व दिशा,—तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनम्—श० ४।१८। सम०—पतिः इन्द्र का विशेषण,—मूलम् पूर्वी क्षितिज —प्राचीमूले तनुमिव कलामात्रशेषां हिमांशोः —मेघ० ८९।

प्राचीन (वि०) [प्राच्+ख] 1. सामने की ओर या पूर्व दिशा की ओर मुड़ा हुआ, पूर्वी, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी 2. पहला, पूर्वकाल का, पूर्वोक्त 3. पुराना, पुरातन, —नः,—नम् बाड़, दीवार। सम०—अग्र (वि०) दे० प्रागग्र,—आवीतम् यज्ञोपवीत, जनेऊ (जो दाहिने कंधे के ऊपर से तथा बाईं भुजा के नीचे से पहना हुआ हो जैसा कि श्राद्ध के अवसर पर),—आवीतिन्, —उपवीत (वि०) जनेऊ को दायें कंधे के ऊपर से तथा बाईं भुजा के नीचे से पहनने वाला—मनु० २।६३,—कल्पः पहला कल्प,—गाथा पुरानी कहानी, —तिलकः चन्द्रमा,—पनसः बेल का वृक्ष,—बर्हिस् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—मतम् पुरानी सम्मति।

प्राचीरम् [प्र+आ+चि+क्रन्, दीर्घः] घेरा, बाड़, दीवार।

प्राचुर्यम् [प्रचुर+ष्यञ्] 1. बहुतायत, पर्याप्तता, बहुलता 2. समुच्चय।

प्राचेतसः [प्रचेतसः अपत्यम्-प्रचेतस्+अण्] 1. मनु का पैतृक नाम 2. दक्ष का कुलसूचक नाम 3. वाल्मीकि का गोत्रीय नाम।

प्राच्य (वि०) [प्राचि भवः यत्] 1. सामने से स्थित या विद्यमान 2. पूर्व दिशा में रहने वाला, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी 3. प्राथमिक पूर्ववर्ती, पहला 4. प्राचीन, पुराना—(ब० व०—च्याः) 1. पूर्वी देश, सरस्वती के दक्षिण में या पूर्व में स्थित देश 2. इस देश के निवासी। सम०—भाषा पूर्वी बोली, भारत के पूर्व में बोली जाने वाली भाषा।

प्राच्यक (वि०) [प्राच्य+कन्] पूर्वी, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी।

प्राछ् (वि०) [प्रच्छ्+क्विप्, नि० दीर्घः] (कर्तृ०, ए० व०—प्राट्,प्राड्) पूछने वाला, पूछताछ करने वाला, प्रश्न करने वाला, जैसा कि 'शब्द प्राट्' में। सम० —विवाकः (प्राड्विवाक) न्यायाधीश, कचहरी या अदालत में प्रधान पद पर अधिष्ठित अधिकारी —मनु० ८।७९, १८१, ९।२३४।

प्राजकः [प्र+अज्+णिच्+ण्वुल्] सारथि, चालक, रथवान् मनु० ८।२९३।

प्राजनः—**नम्** [प्र+अज्+ल्युट्] हंटर, चाबुक, अंकुश —त्यक्तप्राजनरश्मिरङ्किततनुः पार्थाङ्कितैर्मार्गणैः —वेणी० ५।१०।

प्राजापत्य (वि०) [प्रजापति+यक्] प्रजापति से संबंध रखने वाला या जो प्रजापति के लिए पुण्यप्रद हो,—त्यः हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें लड़की का पिता वर से बिना किसी प्रकार का उपहार लिए केवल इस लिए कन्यादान करता है जिससे वह सानन्द, श्रद्धा और भक्तिपूर्वक साथ २ रहकर दाम्पत्य जीवन बिताएँ—सहोभौ चरतां धर्ममिति वाचानुभाष्य च, कन्याप्रदानमभ्यर्च्य प्राजापत्यो विधिः स्मृतः—मनु० ३।३०, या, इत्युक्त्वाचरतां धर्मं सह या दीयतेऽर्थिने, स कायः (अर्थात्—प्राजापत्यः) पावयेत्तज्जः षट् षड् वंश्यान्सहात्मना—याज्ञ० १।६० 2. गंगा और यमुना का संगम, प्रयाग,—त्यम् 1. एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्रहीन पिता अपनी लड़की के पुत्र को अपना उत्तराधिकारी नियत करने से पूर्व करता है 2. सर्जनात्मक

ऊर्जा या शक्ति,—स्या संन्यासी बनने से पूर्व अपनी सारी संपत्ति को दान कर देना।

प्राजिकः [प्र+अज्+ठञ्] बाज, पक्षी, श्येन।

प्राजितृ, प्राजिन् (पुं०) [प्र+अज्+तृच्, प्र+अज्+णिनि] सारथि, चालक, रथवान्—शि० १८।७।

प्राजेशम् [प्रजेशो देवताऽस्य—प्रजेश+अण्] रोहिणी नक्षत्र।

प्राज्ञ (वि०) (स्त्री०—ज्ञा, ज्ञी) [प्रकर्षेण जानाति इति—प्र+ज्ञा+क=प्रज्ञ, ततः स्वार्थे—अण्] 1. मनीषी 2. बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर—किमुच्यते प्राज्ञः खलु कुमारः—उत्तर० ४,—ज्ञः 1. बुद्धिमान् पुरुष तेभ्यः प्राज्ञा न बिभ्यति—वेणी० २।१४, भग० १७।१४ 2. एक प्रकार का तोता,—ज्ञा 1. बुद्धि, समझ 2. चतुर या समझदार स्त्री,—ज्ञी 1. चतुर या विदुषी स्त्री 2. विद्वान् पुरुष की पत्नी 3. सूर्य की पत्नी का नाम।

प्राज्य (वि०) [प्र+अज्+ण्यत्] 1. प्रचुर, पर्याप्त, बहुल, अधिक, बहुत—तव भवतु विडौजाः प्राज्यवृष्टिः प्रजासु—श० ७।३४, रघु० १३।६२, शि० १४।२५ 2. बड़ा, विशाल, महत्त्वपूर्ण—प्राज्यविक्रमाः—कु० २।१८, अपि प्राज्यं राज्यं तृणमिव परित्यज्य सहसा—गंगा० ५।

प्राञ्जल (वि०) [प्र+अञ्ज्+अलच्] निश्छल, स्पष्टवक्ता, खरा, ईमानदार, निष्कपट।

प्राञ्जलि (वि०) [प्रबद्धा अञ्जलि र्येन—प्रा० ब०]विनम्रता और सम्मान के चिह्नस्वरूप जिसने अपने हाथ जोड़े हुए हैं।

प्राञ्जलिक, प्राञ्जलिन् (वि०) [प्रांजलि+कन्, इनि वा] दे० 'प्रांजलि'।

प्राणः [प्र+अन्+अच्, घञ् वा] 1. सांस, श्वास 2. जीवन का सांस, जीवनशक्ति, जीवन, जीवनदायी वायु, जीवन का मूलतत्त्व (इस अर्थ में प्रायः ब० व०, क्योंकि प्राण गिनती में पाँच हैं—प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान)—प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा—रघु० २।५३, १२।५४ 3. जीवन के पाँच प्राणों में से पहला (जिसका स्थान फेफड़े हैं) भग० ४।२० 4. वायु, अन्दर खींचा हुआ सांस 5. ऊर्जा, बल, सामर्थ्य, शक्ति, जैसा कि 'प्राणसार' में 6. जीव या आत्मा (विप० शरीर) 7. परमात्मा 8. ज्ञानेन्द्रिय,—मनु० ४।१४० 9. प्राणों के समान आवश्यक या प्रिय, प्रिय व्यक्ति या पदार्थ,—कोश—कोशः कोशवतः प्राणाः प्राणाः प्राणा न भूपतेः—हि० २।९२, अर्थपतेर्विमर्दको बहिश्चराः प्राणाः—दश० 10. कविता का सत्, काव्यमयी प्रतिभा, स्फूर्ति 11. महत्त्वाकांक्षा, श्वासग्रहण—जैसा कि महाप्राण और अल्पप्राण में 12 पाचन 13. समय का मापक सांस 14. लोबान, गोंद। सम०—अतिपातः जीवित प्राणी का वध, जान लेना,—अत्ययः जीवन की हानि,—अधिक (वि०) 1. प्राणों से भी प्रिय, 2. सामर्थ्य और बल में श्रेष्ठ,—अधिनाथः पति,—अधिपः आत्मा,—अन्तः मृत्यु,—अन्तिक (वि०) 1. घातक, नश्वर 2. जीवन भर रहने वाला, जीवन के साथ ही समाप्त होने वाला 3. फांसी का दण्ड (कम्) वध,—अपहारिन् (वि०) घातक, प्राणनाशक,—अयनम् ज्ञानेन्द्रिय,—आघातः जीवन का नाश, जीवित प्राणी का वध—भर्तृ० ३।६३,—आचार्यः राजा का वैद्य,—आद (वि०) घातक, नश्वर, प्राणघातक,—आबाधः जीवन को क्षति,—आयामः देवगुणों का मानस-पाठ करते हुए सांस रोकना,—ईशः,—ईश्वरः प्रेमी, पति—अमरु ६७, भामि० २।५७,—ईशा,—ईश्वरी पत्नी, प्रिया, गृहस्वामिनी,—उत्क्रमणम्—उत्सर्गः आत्मा द्वारा शरीर को छोड़ देना, मृत्यु,—उपाहारः भोजन,—कृच्छ्रम् जीवन का खतरा, प्राणों को भय,—घातक (वि०) जीवन का नाश करने वाला,—घ्न (वि०)घातक, जीवन-नाशक,—छेदः वध, हत्या,—त्यागः 1. आत्महत्या 2. मृत्यु,—दम् 1. पानी 2. रुधिर,—दक्षिणा प्राणों की भेंट,—दण्डः फांसी का दण्ड,—दयितः पति,—दानम् प्राणों की भेंट, किसी की जान बचाना,—द्रोहः किसी की जान पर आक्रमण,—धारः जीवित प्राणी,—धारणम् 1. भरण-पोषण, जीवन का सहारा 2. जीवनशक्ति,—नाथः 1. प्रेमी, पति 2. यम का विशेषण,—निग्रहः सांस रोकना, श्वासावरोध,—पतिः 1. प्रेमी, पति 2. आत्मा,—परिक्रयः जान जोखिम में डालना,—परिग्रहः जीवन-धारण करना, जीवन या अस्तित्व रखना,—प्रद (वि०) जीवन देने वाला, जीवन बचाने वाला,—प्रयाणम् प्राणों का चला जाना, मृत्यु,—प्रियः 'प्राणों के समान प्यारा' प्रेमी, पति,—भक्ष (वि०) वायुपक्षी,—भास्वत् (पुं०) समुद्र,—भृत् (पुं०) प्राणधारी जन्तु—अन्तर्गतं प्राणभृतां हि वेद—रघु० २।४३,—मोक्षणम् 1. प्राणों का चला जाना, मृत्यु 2. आत्महत्या,—यात्रा जीवन का सहारा, भरण-पोषण, जीविका—पिण्डपातमात्रप्राणयात्रां भगवतीम्—मा० १—योनिः (स्त्री०) जीवन का स्रोत,—रन्ध्रम् 1. मुंह 2. नथना,—रोधः 1. श्वासावरोध 2. जीवन को खतरा,—विनाशः,—विप्लवः जीवन की हानि मृत्यु,—वियोगः शरीर से आत्मा का विच्छेद, मृत्यु,—व्ययः प्राणों का उत्सर्ग,—संयमः सांस का रोकना,—संशयः,—संकटम्—संदेहः जीवन को खतरा, जीवन को भय, भीषण खतरा,—सद्मन् (नपुं०) शरीर,—सार(वि०) जीवन ही जिसका बल है, सामर्थ्य से युक्त, बलवान्, बलिष्ठ—गिरिचर इव नागः प्राणसारं (गात्रम्) बिभर्ति श० २।४,—हर (वि०) 1. प्राणघातक, जीवन का अप-

हरण करने वाला, घातक—पुरो मम प्राणहरो भविष्यसि, गीत० ७ 2. फांसी,—हारक (वि०) घातक (कम्) भयंकर विष।

प्राणकः [प्राण+कै+क] 1. जीवित प्राणी, जीवधारी जन्तु 2. लोबान।

प्राणथः [प्र+अन्+अथ] 1. वायु, हवा 2. तीर्थ स्थान 3. प्राणधारियों का स्वामी।

प्राणनः [प्र+अन्+ल्युट्] गला,—नम् 1. श्वासप्रश्वास, सांस लेना 2. जीवन, जीवित रहना।

प्राणन्तः [प्र+अन्+झ, अन्तादेशः] वायु, हवा।

प्राणन्ती [प्राणन्त+ङीष्] 1. भूख 2. सुबकना 3. हिचकी।

प्राणाय्य (वि०) (स्त्री०—य्यी) [प्र+अन्+णिच्+ण्यत्] उचित, योग्य, उपयुक्त।

प्राणित (वि०) [प्र+अन्+क्त] जीवित, जीवधारी।

प्राणिन् (वि०) [प्राण+इनि] 1. सांस लेने वाला, जीने वाला, जीवित (पुं०) जीवित या जीवधारी प्राणी, जीवित जंतु यथा—प्राणिनः प्राणवन्तः—श० १।१, मेघ० ५ 2. मनुष्य। सम०—अङ्गम् किसी जन्तु का अंग, —जातम् प्राणीवर्ग,—द्यूतम् (मुर्गों की लड़ाई, मेढ़ों की लड़ाई) तीतर बटेर आदि जन्तुओं को लड़ा कर जुआ खेलना,—पीडा जन्तुओं के प्रति क्रूरता,—हिंसा जीवन को क्षति, जीवित जन्तुओं को कष्ट देना,—हिता जूता, बूट।

प्राणीत्यम् [प्रणीत+ष्यञ्] ऋण।

प्रातर् (अव्य०) [प्र+अत्+अरन्] 1. तड़के, पौ फटने पर, प्रभात काल में 2. कल तड़के, अगले दिन सुबह, कल प्रातः काल। सम०—अह्नः दिन का प्रारम्भिक काल, दोपहर पहले,—आशः प्रातःकालीन भोजन, कलेवा—अन्यथा प्रातराशाय कुर्याम त्वामलं वयम् —भट्टि० ८।९८,—आशिन् (पुं०) जिसने कलेवा कर लिया है, या प्रातःकाल का भोजन कर लिया है, —कर्मन् (नपुं०)—कार्यम्—कृत्यम् (प्रातःकर्म —आदि) प्रातःकालीन कर्म,—कालः (प्रातःकालः) प्रातः का समय,—गेयः चारण जिसका कर्तव्य किसी राजा या अन्य महापुरुष को उपयुक्त गान द्वारा प्रातः काल जगाना है,—त्रिवर्गा (प्रातस्त्रिवर्गा) गंगा नदी, —दिनम् दोपहर से पहले,—प्रहरः दिन का पहला पहर —भोक्तृ (पुं०) कौवा,—भोजनम् प्रातः काल का भोजन, कलेवा,—संध्या (प्रातः संध्या) 1. प्रातः काल की संध्या या भजन,—समयः (प्रातः समयः) सवेरे का समय, प्रभातकाल,—सवः,—सवनम् (प्रातः सवः—आदि) सोमयाग द्वारा प्रातःकालीन तर्पण, —स्नानम् (प्रातः स्नानम्) सवेरे ही नहाना,—होमः (प्रातर्होमः) प्रातःकाल का यज्ञ।

प्रातस्तन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रातर्+ट्यु, तुट्] प्रातःकाल से संबद्ध, सुबह का।

प्रातस्तराम् (अव्य०) [प्रातर्+तरप्+आम्] सुबह बहुत सवेरे—प्रातस्तरां पतत्रिभ्यः प्रबुद्धः प्रणमन् रविम् —भट्टि० ४।१४।

प्रातस्त्य (वि०) [प्रातर्+त्यक्] सुबह का, प्रभात कालीन।

प्रातिः (स्त्री०) [प्र+अत्+इन्] 1. अंगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान 2. भरना।

प्रातिका [प्र+अत्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] जवा का पौधा।

प्रातिकूलिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिकूल+ठक्] विरुद्ध, विरोधी, प्रतिकूल रहने वाला।

प्रातिकूल्यम् [प्रतिकूल+ष्यञ्] प्रतिकूलता, विरोध, शत्रुता, अननुकूलता, अमैत्रीपूर्णता।

प्रातिजनीन (वि०) (स्त्री० नी) [प्रतिजन+खञ्] शत्रु का मुकाबला करने के लिए उपयुक्त।

प्रातिज्ञम् [प्रतिज्ञा+अण्] विचाराधीन विषय।

प्रातिदैवसिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिदिवस्+ठक्] प्रतिदिन होने वाला।

प्रातिपक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) [प्रतिपक्ष+अण्] 1. विरुद्ध, प्रतिकूल 2. शत्रुतापूर्ण, शत्रुसंबन्धी।

प्रातिपक्ष्यम् [प्रतिपक्ष+ष्यञ्] शत्रुता, विरोधिता।

प्रातिपद (वि०) (स्त्री०—दी) [प्रतिपदा+अण्] 1. उपक्रम करने वाला 2. प्रतिपदा के दिन उत्पन्न, प्रतिपदा से संबद्ध।

प्रातिपदिकः [प्रतिपदा+ठञ्] अग्नि,—कम् नाम शब्द का परिपक्व रूप, विभक्ति चिह्न के जुड़ने से पूर्व संज्ञा शब्द—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्—पा० १।२।४५।

प्रातिपौरुषिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिपुरुष+ठक्] पौरुषेय मर्दानगी या पराक्रम से संबद्ध।

प्रातिभ (वि०) (स्त्री०—भी) [प्रतिभा+अण्] प्रतिभा या दिव्यता से संबंध रखने वाला,—भम् प्रतिभा या विशद कल्पना। जमानत देने के लिए (प्रतिभू के रूप में) खड़ा होना।

प्रातिभाव्यम् [प्रतिभू+ष्यञ्] जमानत या प्रतिभूति होना, जामिनपना, किसी कर्जदार को (कचहरी में) उपस्थित करने का उत्तरदायित्व होना (क्योंकि वह विश्वासपात्र है तथा कर्ज का रुपया वापिस कर देगा)।

प्रातिभासिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिभास+ठक्] 1. जो केवल दिखाई तो दे पर वस्तुतः हो. उसका अभाव 3. वास्तविक 2. दिखाई भी देने वाली।

प्रातिलोमिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रतिलोम+ठक्] लाभ के विरुद्ध, विरोधी, शत्रुतापूर्ण, अरुचिकर।

प्रातिलोम्यम् [प्रतिलोम+ष्यञ्] 1. उलटापन, व्युत्क्रान्त या प्रतिकूल क्रम—मनु० १०।१३ 2. शत्रुता, विरोध, शत्रु जैसी भावना।

प्रातिवेशिकः, प्रातिवेश्मकः, प्रातिवेश्यकः [प्रतिवेश+ठक्, प्रतिवेश्म+अण्+कन्, प्रतिवेश+ष्यञ्+कन्] पड़ौसी।

प्रातिवेश्यः [प्रतिवेश+ष्यञ्] 1. सामान्यतः पड़ौसी 2. बराबर के घर में रहने वाला पड़ौसी (निरंतर-गृहवासी—कुल्लू०।

प्रातिशाख्यम् [प्रतिशाखं भवः—ञ्य] व्याकरण का एक ग्रंथ जिसमें स्वरसंधि तथा अन्य वर्णपरिवर्तनों के नियमों का उल्लेख है जो कि वेद की किसी भी शाखा में पाये जाते हैं तथा जिसमें स्वराघात समेत उच्चारण की पद्धति बतलाई गई है (प्रातिशाख्य चार हैं—एक तो ऋग्वेद की शाकल शाखा का, दो यजुर्वेद की दोनों शाखाओं के लिए, तथा एक अथर्ववेद का)।

प्रातिस्विक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिस्व+ठक्] विशिष्ट, असामान्य, अपना निजी।

प्रातिहन्त्रम् [प्रतिहन्तृ+अण्] बदला, प्रतिशोध।

प्रातिहारः, प्रातिहारकः, प्रातिहारिकः [प्रतिहार+अण्, प्रातिहार+कन्, प्रतिहार+ठक्] जादूगर, ऐन्द्रजालिक।

प्रातीतिक (वि०) (स्त्री० —की) [प्रतीति+ठञ्] मानसिक, केवल मन में विद्यमान, काल्पनिक।

प्रातीपः [प्रतीप+अण्] शन्तनु का पैतृक नाम।

प्रातीपिक (वि०) (स्त्री० —की) [प्रतीप+ठक्] 1. उलटा विरोधी, विपरीत।

प्रात्यन्तिकः [प्रत्यन्त+ठक्] प्रत्यन्त का एक राजकुमार।

प्रात्ययिक (वि०) (स्त्री० —की) [प्रत्यय+ठक्] 1. भरोसे का, विश्वासपात्र 2. किसी ऋणी की विश्वासपात्रता के हेतु जमानत देने के लिए (प्रतिभू के रूप में) खड़ा होना।

प्रात्यहिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रत्यह+ठक्] प्रतिदिन होने वाला, नित्य, प्रतिदिन।

प्राथमिक (वि०) (स्त्री० —की) [प्रथम+ठक्] 1. प्रारंभिक 2. पूर्व जन्म का, पूर्वकाल का, पहली बार होने वाला।

प्राथम्यम् [प्रथम+ष्यञ्] प्रथम होना, पहला उदाहरण, प्राथमिकता।

प्रादक्षिण्यम् [प्रदक्षिण+ष्यञ्] किसी व्यक्ति या पदार्थ के चारों ओर बायें से चल कर दायें को जाना, और प्रदक्षिणा किये जाने वाले पदार्थ को सदैव अपनी दाईं ओर रखना।

प्रादुस् (अव्य०) [प्र+अद्+डसि] दिखाई देने के साथ, स्पष्टतः, प्रकटरूप से, दृष्टि में (प्रायः भू, कृ और अस् के साथ प्रयोग,—प्रादुः ष्यात्क इव जितः पुरः परेण—श० ८, १२, कृ, भू और असन् के अन्तर्गत भी देखिए)। सम०—करणम् (प्रादुष्करणं) प्रकटीकरण, दृश्यमान करना,—भावः (प्रादुर्भावः) 1. अस्तित्व में आना, उदय होना—वपुः प्रादुर्भावात्—काव्य० १० 2. प्रकट या दृश्यमान होना, प्रकटीकरण, दर्शन 3. सुनने के योग्य होना 4. पृथ्वी पर देवता का प्रगट होना।

प्रादुष्यम् [प्रादुस्+यत्] प्रकटीकरण।

प्रादेशः [प्र+दिश्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. अँगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान 2. स्थान, जगह, प्रदेश।

प्रादेशनम् [प्र+आ+दिश्+ल्युट्] भेंट, दान।

प्रादेशिक (वि०) (स्त्री० —की) [प्रदेश+ठक्] 1. पूर्व दृष्टांत वाला 2. सीमित, स्थानीय 3. यथार्थ,—कः एक जिले का स्वामी।

प्रादेशिनी [प्रादेश+इनि+ङीप्] तर्जनी अँगुली।

प्रादोष (वि०) (स्त्री०—षी), **प्रादोषिक** (वि०) (स्त्री० —की) [प्रदोष+अण्]+प्रादोष+घञ्] संध्याकालीन, संध्या से संबद्ध।

प्राधनिकम् [प्रधनं संग्रामं, तत्साधनमस्य—प्रधन+ठक्] नाशकारक शस्त्र, कोई भी युद्धोपकरण।

प्राधानिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रधान+ठक्] 1. अत्यंत श्रेष्ठ या प्रमुख, सर्वोपरि, अत्यन्त पूज्य 2. प्रधान से संबद्ध या उससे उत्पन्न।

प्राधान्यम् [प्रधान+ष्यञ्] 1. प्रमुखता, सर्वोपरिता, प्रभुत्व, उदग्रता 2. प्राबल्य, सर्वोच्चता 3. मुख्य या प्रधान कारण (प्राधान्येन, प्राधान्यात्, प्राधान्यतः 'मुख्य रूप से' 'विशेष रूप से' तथा 'प्रधान रूप से' भग०—१०।१९)।

प्राधीत (वि०) [प्र+अधि+इ+क्त] भली-भांति पढ़ा लिखा, (ब्राह्मण की भांति) अत्यन्त शिक्षित।

प्राध्व (वि०) [प्रगतोऽध्वानम्—प्रा० स०] 1. दूर का, दूरवर्ती, दूर 2. झुका हुआ, रुचि रखता हुआ 3. कसा हुआ, बंधा हुआ 4. अनुकूल,—ध्वः गाड़ी,—ध्वम् (अव्य०) 1. अनुकूलता के साथ, रुचिपूर्वक, समनुरूपता के साथ, उपयुक्तता से युक्त—सभाजने मे भुजमूर्ध्वबाहुः सव्येतरं प्राध्वमितः प्रयुङ्क्ते—रघु० १३।४३ 2. टेढ़ेपन से।

प्रान्तः [प्रकृष्टः अन्तः—प्रा० स०] 1. किनारा, हाशिया, झालर, मगजी, छोर—प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः—श० ४।७ 2. (ओष्ठ व आँख आदि का) किनारा—मा० ४।२, ओष्ठ०, नयन० 3. हद, सीमा 4. अन्तिम किनारा, सीमा,—यौवनप्रांत—पंच० ४ 5. बिन्दु, नोक। सम०—ग (वि०) पास ही रहने वाला,—दुर्गम् नगर के बाहर का, नगरांचल, किले के निकट होने वाला

उपनगर,—**विरस** (वि०) अन्त में रसहीन,—**शून्य** (वि०) दे० 'प्रांतरशून्य,'—**स्थ** (वि०) जो सीमा पर रहता है।

प्रान्तरम् [प्रकृष्टम् अन्तरं व्यवधानं यत्र—प्रा० ब०] 1. लंबा और सुनसान मार्ग, जनशून्य या वीरान सड़क 2. छायारहित सड़क, निर्जन भूखण्ड 3. जंगल, उजाड़ 4. वृक्ष की कोटर। सम०—**शून्यः** लंबी सुनसान सड़क (जिस पर वृक्ष या छाया न हो)।

प्रापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [प्र+आप्+ण्वुल्] 1. ले जाने वाला, पहुँचाने वाला 2. प्राप्त कराने वाला, सामग्री से युक्त कराने वाला 3. स्थापित करने वाला, वैध बनाने वाला।

प्रापणम् [प्र+आप्+ल्युट्] 1. पहुँचना, बढ़ जाना 2. प्राप्त करना, अधिग्रहण, अवाप्ति 3. ले आना, पहुँचाना, ले जाना 4. सामग्री से युक्त करना।

प्रापणिकः [प्र+आ+पण्+ठिकन्] सौदागर, व्यापारी—आढ्यादिव प्रापणिकादजस्रम्—शि० ८।११।

प्राप्त (भू० क० कृ०) [प्र+आप्+क्त] 1. हासिल, अवाप्त, उपलब्ध, अर्जित 2. पहुँचा हुआ, निष्पन्न 3. घटित, मिला हुआ 4. (खर्च) उठाया हुआ, ग्रस्त, सहन किया हुआ 5. पहुँचा हुआ, आया हुआ, उपस्थित 6. पूरा किया हुआ 7. उचित, सही 8. नियम के अनुसार। सम०—**अनुज्ञ** (वि०) जाने के लिए अनुमत, बिदा होने के लिए जिसने अनुमति प्राप्त कर ली है,—**अर्थ** (वि०) सफल (र्थः) लब्ध पदार्थ,—**अवसर** (वि०) जिसे मौका या अवसर मिल चुका है,—**उदय** (वि०) जो उन्नत हो गया है, या जिसने उन्नति अथवा उन्नत पद प्राप्त कर लिया है,—**कारिन्** (वि०) सही कार्य करने वाला,—**काल** (वि०) 1. समयानुकूल, यथाऋतु, उपयुक्त दे० 'अप्राप्त काल, 2. विवाह के योग्य 3. नियत, भाग्य में लिखा, (लः) उचित समय, उपयुक्त या अनुकूल क्षण,—**पंचत्व** (वि०) पाँचों तत्त्वों में समाविष्ट अर्थात् मृत, तु० 'पंचत्व',—**प्रसव** (वि०) जिसने बच्चे को जन्म दे दिया है,—**बुद्धि** (वि०) शिक्षण प्राप्त किया हुआ, प्रकाशयुक्त,—**भारः** बोझा ढोने वाला पशु,—**मनोरथ** (वि०) जिसका मनोरथ पूरा हो गया है,—**यौवन** (वि०) तरुण, वयस्क, जवान,—**रूप** (वि०) 1. सुन्दर, मनोहर 2. बुद्धिमान्, विद्वान् 3. उपयुक्त, समुचित, सुयोग्य,—**व्यवहार** (वि०) वयस्क, बालिग जो कानून की दृष्टि से अपने कार्यों को संभालने का अधिकारी हो, (विप० अवयस्क)—**श्री** (वि०) जिसकी उन्नति किसी और के द्वारा हुई हो।

प्राप्तिः (स्त्री०) [प्र+आप्+क्तिन्] 1. प्राप्त करना, अधिग्रहण, उपलब्धि, अवाप्ति, लाभ—द्रव्य,° यशः,° सुख° आदि 2. पहुँचना, प्राप्त करना 3. पहुँच, आगमन 4. देखना, मिलना 5. परास, पहुँच 6. अनुमान, अटकल 7. हिस्सा, अंश, ढेर 8. भाग्य, किस्मत 9. उदय, पैदावार 10. किसी पदार्थ को प्राप्त करने की शक्ति (आठ सिद्धियों में से एक) 11. संघ, समुच्चय, संहति 12. किसी योजना की सफल समाप्ति, सुखागम। सम० **आशा** किसी चीज को प्राप्त करने की आशा (नाटकीय कथावस्तु के विकास का एक भाग)—उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसंभवा—सा० द० ६।

प्राबल्यम् [प्रबल+ष्यञ्] 1. प्रभुता, सर्वोच्चता, बोलवाला 2. शक्ति, बल, ताकत।

प्राबा (वा) लिकः [प्रबा (वा) ल+ठक्] मूंगों का व्यापार करने वाला।

प्रबोध (धि) कः [प्र+आ+बुध्+णिच्+ण्वुल्, प्रबोध+ठञ्] 1. तड़का, प्रभात 2. चारण जिसका कर्तव्य प्रातःकाल उपयुक्त भजन गाकर अपने आश्रयदाता राजा को जगाना है।

प्राभञ्जनम् [प्रभंजन+अण्] स्वातिनक्षत्र।

प्राभञ्जनिः [प्रभञ्जन+इञ्] 1. हनुमान् का विशेषण 2. भीम का विशेषण।

प्राभवम् [प्रभु+अण्] सर्वोच्चता, सर्वोपरिता, प्रभुता।

प्राभवत्यम् [प्रभवत्+ष्यञ्] सर्वोपरिता, अधिकार, सत्ता, शक्ति—मनु० ८।४१२।

प्राभाकरः [प्रभाकर+अण्] 'प्रभाकर का अनुयायी' मीमांसा के आचार्य प्रभाकर के मत (प्राभाकर) का अनुयायी।

प्राभातिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रभात+ठञ्] प्रातःकाल संबंधी, प्रभातकालीन।

प्राभृतम्, प्राभृतकम् [प्र+आ+भृ+क्त, प्राभृत+कन्] 1. उपहार, भेंट, किसी राजा या देवता को भेंट, नजराना 2. रिश्वत।

प्रामाणिक (वि०) (स्त्री० की) [प्रमाण+ठक्] 1. प्रमाण द्वारा सिद्ध, प्रमाण पर आधारित या आश्रित 2. शास्त्रसिद्ध 3. अधिकृत, विश्वसनीय 4. प्रमाण संबंधी,—**कः** 1. जो प्रमाण को मानता है 2. जो नैयायिकों के प्रमाणों का ज्ञाता है, तार्किक 3. किसी व्यवसाय का प्रधान।

प्रामाण्यम् [प्रमाण+ष्यञ्] 1. प्रमाण होना या प्रमाण पर आश्रित होना 2. विश्वसनीयता, प्रामाणिकता 3. प्रमाण, साक्ष्य, अधिकार।

प्रामादिक (वि०) [प्रमाद+ठक्] असावधानतावश, ग़लत, दोषयुक्त, अशुद्ध—इति प्रामादिकः प्रयोगः या पाठः आदि।

प्रामाद्यम् [प्रमाद+ष्यञ्] 1. त्रुटि, दोष, ग़लती, अशुद्धि, 2. पागलपन, उन्माद 3. नशा, मादकता।

प्रायः [प्र+अय्+घञ्] 1. अपगमन, विदायगी, जीवन से प्रयाण 2. आमरण अनशन, व्रत रखना, किसी इष्टसिद्धि के लिए खाना पीना छोड़ कर धरना देना, (प्रायः 'आस्' 'उपविश्' आदि शब्दों के साथ, दे० नी० प्रायोपवेशन 3. बड़े से बड़ा भोग, अधिकांश अवस्था 4. अधिकता, बहुतायत, प्रचुरता 5. जीवन की एक दशा, विशे० (समास के अन्त में लग कर 'प्राय' का अनुवाद निम्नांकित होता है (क) अधिकांश में, बहुधा, अधिकतर, लगभग, तकरीबन,—पतनप्रायौ गिरने वाले, मृतप्रायः लगभग मरा हुआ, मरने से ज़रा कम, तकरीबन मरा हुआ या (ख) से युक्त, समृद्ध, भरा हुआ, अत्यधिक, प्रचुर —कष्टप्रायं शरीरम्—उत्तर १, शालीप्रायो देशः —पंच० ३, कमलमोदप्राया वनानिलाः —उत्तर० ३।२४, सुगन्ध से भरा हुआ या (ग) के समान, मिलता-जुलता—वर्षशतप्रायं दिनम्, अमृतप्रायं वचनम् आदि। सम०—उपगमनम्,—उपवेशः —उपवेशनम्,—उपवेशनिका, बिना खाये पीये धरना देना और इस प्रकार मरने की तैयारी करना, आमरण अनशन—मया प्रायोपवेशनं कृतं विद्धि —पंच० ४, प्रायोपवेशनमतिर्नृपतिर्बभूव —रघु० ८।९४, प्रायोपवेशसदृशं व्रतमास्थितस्य—वेणी० ३।१९,—उपेत (वि०) बिना खाये रहकर मृत्यु की बाट जोहने वाला,—उपविष्ट (वि०) आमरण अनशन करने वाला, —दर्शनम् सामान्य घटनातत्त्व।

प्रायणम् [प्र+अय्+ल्युट्] 1. प्रवेश, आरंभ, शुरू 2. जीवनपथ 3. ऐच्छिक मृत्यु —मनु० ९।३२३ 4. शरण लेना।

प्रायणीय (वि०) [प्र+अय्+अनीयर्] परिचयात्मक, आरंभिक, दीक्षात्मक,—यम् सोमयाग का प्रथम दिन।

प्रायशस् (अव्य०) [प्राय+शस्] बहुधा, अधिकतर, अधिकांश में, सर्वथा—आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां सद्यःपाति प्रणयिहृदयं विप्रयोगे रुणद्धि—मेघ० १०।

प्रायश्चित्तम्, प्रायश्चित्तिः (स्त्री०) [प्रायस्य पापस्य-चित्तं विशोधनं यस्मात्—ब० स०, नि० सुट्] 1. परिशोध, पापनिष्कृति, क्षतिपूर्ति, पाप से निस्तार पाने के लिए धार्मिक साधना—मातुः पापस्य भरतः प्रायश्चित्तमिवाकरोत् रघु० १२।१९ (प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते, तपोनिश्चयसंयोगात् प्रायश्चित्तमितीर्यते —हेमाद्रि) 2. संतोष, सुधार।

प्रायश्चित्तिन्, (वि०) [प्रायश्चित्त+इनि] जो पापों का परिशोध करे।

प्रायस् (अव्य०) [प्र+अय्+असुन्] 1. अधिकतर, बहुधा, साधारणतः, अधिकांशतः, प्रायः प्रत्ययमाधत्ते स्वगुणेषूत्तमादरः कु० ६।२०, प्रायो भृत्यास्त्यजंति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः—मुद्रा० ४।२१, प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः—भर्तृ० २।९३ 2. सर्वथा, अधिकतर, संभवतः, कदाचित् —तव प्राज्ञ प्रसादाद्धि प्रायः प्राप्स्यामि जीवितम् —महा०।

प्रायाणिक, प्रायात्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रयाण+ठक्, प्रयात्रा+ठक्] यात्रा के लिए आवश्यक या उपयुक्त।

प्रायिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्राय+ठक्] प्रचलित, सामान्य।

प्रायुद्धेषिन् (पुं०) [प्रायुधि हेषते—प्रायुध्+हेष्+णिनि] घोड़ा।

प्रायेण (अव्य०) [करण०] 1. अधिकतर, साधारण नियम के अनुसार—प्रायेणैते रमणविरहेष्वङ्गनानां विनोदाः—,मेघ०, प्रायेण सत्यपि हितार्थकरे विधौ हि श्रेयांसि लब्धुमसुखानि विनान्तरायैः—कि० ५।४९, कु० ३।२८, ऋतु० ६।२३।

प्रायोगिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रयोग+ठक्] 1. प्रयुक्त 2. प्रयुज्यमान।

प्रारब्ध (भू० क० कृ०) [प्र+आ+रभ्+क्त] आरंभ किया गया. शुरू किया गया,—ब्धम् 1. जो शुरू किया गया है, व्यवसाय 2. भाग्य, नियति।

प्रारब्धिः (स्त्री०) [प्र+आ+रभ्+क्तिन्] 1. आरंभ शुरू 2. खूंटा जिससे हाथी बांधा जाय, हाथी को बांधने के लिए रस्सी।

प्रारम्भः [प्र+आ+रभ्+घञ्, मुम्] आरंभ, शुरू —प्रारम्भेऽपि त्रियामा तरुणयति निजं नीलिमानं वनेषु—मा० ५।६, रघु० १०।१९, १८।४९ 2. व्यवसाय, काम साहसिक कार्य,—आगमैः सदृशारम्भः प्रारम्भसदृशोदयः—रघु० १।१५. फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव—२०।

प्रारम्भणम् [प्र+आ+रभ्+ल्युट्, मुम्] आरम्भ करना, शुरू करना।

प्रारोहः [प्ररोह+ण] अंकुर, अंखुवा, किसलय, दे० प्ररोह।

प्रार्णम् [प्रकृष्टमृणम्—प्रा० स०] मुख्य ऋण।

प्रार्थक (वि०) (स्त्री०—र्थिका) [प्र+अर्थ+ण्वुल्] पूछने वाला, मांगने वाला, प्रार्थना करने वाला, निवेदन करने वाला, अनुरोध करने वाला, इच्छा करने वाला, कामना करने वाला,—कः आवेदक, प्रार्थी।

प्रार्थनम्, ना [प्र+अर्थ+ल्युट्] 1. याचना, अनुरोध, प्रार्थना, निवेदन ये वर्धन्ते धनपतिपुरः प्रार्थनादुःखभाजः—भर्तृ० ३।४७ 2. कामना, इच्छा—लब्धावकाशा मे प्रार्थना, या—न दुरवापेयं खलु प्रार्थना—श० १, उत्सर्पिणी खलु महतां प्रार्थना—श० ७, ७।२

3. नालिश, आवेदन, विनती, प्रणय–प्रार्थना—कदाचिदस्मत्प्रार्थनामन्तःपुरेभ्यः कथयेत्—श० २। सम० —भङ्गः प्रार्थना अस्वीकार करना,—सिद्धिः इच्छा की पूर्ति प्रार्थनासिद्धिशंसिनः—रघु० १।४२।

प्रार्थनीय (सं० कृ०) [प्र+अर्थ+अनीयर्] 1. प्रार्थना या आवेदन किये जाने के उपयुक्त 2. अभिलषणीय, चाहने के योग्य,—यम् तृतीय या द्वापर युग।

प्रार्थित (भू० क० कृ०) [प्र+अर्थ+क्त] 1. याचना किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ, पूछा हुआ, आवेदन किया गया 2. अभिलषित, इच्छित 3. आक्रान्त, शत्रु के द्वारा विरोध किया गया—रघु० ९।५६ 4. मारा गया, चोट की गई (दे० प्र पूर्वक अर्थ)।

प्रार्थिन् (वि०) [प्र+अर्थ+णिनि] 1. मांगने वाला, प्रार्थना करने वाला 2. कामना करने वाला, इच्छा करने वाला—मन्दः कवियशःप्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्—रघु० १।३।

प्रालम्ब (वि०) [प्र+आ+लम्ब्+अच्] 1. झूलता लटकता हुआ—प्रालम्बद्विगुणितचामरप्रहासः—वेणी० २।२८,—बः 1. मोतियों का बना आभूषण 2. स्त्री का स्तन,—बम् छाती तक लटकने वाला कंठहार —प्रालंबमुत्कृष्य यथावकाशं निनाय साचीकृतचारुवक्त्रः —रघु० ६।१४, मुक्ताप्रालंबेषु का० ५२।

प्रालम्बकम् [प्रालम्ब+कन्] दे० 'प्रालम्ब'।

प्रालम्बिका [प्रालम्ब+कन्+टाप्, इत्वम्] सोने का हार।

प्रालेयम् [प्र+ली+ण्यत्=प्रलेय+अण्] हिम, कुहरा, ओस, तुषार—ईशाचलप्रालेयप्लवनेच्छया—गीत० १ प्रालेयशीतमचलेश्वरमीश्वरोऽपि (अधिशेते)—शि० ४।६४, मेघ० ३९। सम०—अद्रिः,—शैलः हिमाच्छादित पहाड़, हिमालय—मेघ० ५७—अंशु,—करः, —रश्मि 1. चन्द्रमा 2. कपूर,—लेशः ओला।

प्रावटः [प्र+अव+अट्+अच्] जौ।

प्रावणम् [प्र+आ+वन्+घ] फावड़ा, खुरपा, कुदाल।

प्रावरः [प्र+आ+वृ+अप्] 1. बाड़, घेरा 2. (हेम० के मतानुसार) उत्तरीय वस्त्र 3. एक देश का नाम।

प्रावरणम् [प्र+आ+वृ+ल्युट्] ओढ़नी, चादर विशेषतः कोई उत्तरीय वस्त्र, चोंगा, लबादा या दुपट्टा।

प्रावरणीयम् [प्र+आ+वृ+अनीयर्] उत्तरीय वस्त्र।

प्रावारः [प्र+आ+वृ+घञ्] 1. उत्तरीय वस्त्र, चोंगा, लबादा 2. एक जिले का नाम। सम०—कीटः दीमक, पतंग।

प्रावारकः [प्रावार+कन्] उत्तरीय वस्त्र, चोगा या लबादा—यदीच्छसि लम्बदशाविशालं प्रावारकं सूत्रशतैर्हि युक्तम्—मृच्छ० ८।२२, जातीकुसुमवासितः प्रावारकोऽनुप्रेषितः मृच्छ० १।

प्रावारिकः [प्रावार+ठक्] उत्तरीय वस्त्रों का निर्माता।

प्रावास (वि०) (स्त्री०—सी) [प्रवास+अण्] यात्रा संबंधी, यात्रा में करने या दिये जाने के योग्य।

प्रावासिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रवास+ठक्] यात्रा के लिए उपयुक्त।

प्रावीण्यम् [प्रवीण+ष्यञ्] चतुराई, कुशलता, प्रवीणता, दक्षता—आविष्कृतं कथा प्रावीण्यं वत्सेन—उत्तर० ४, १५।६८।

प्रावृत (भू० क० कृ०) [प्र+आ+वृ+क्त] घिरा हुआ, घेरा हुआ, ढका हुआ, परदों वाला,—तः,—तम् घूंघट, बुरका, चादर (स्त्री० भी)।

प्रावृतिः (स्त्री०) [प्र+आ+वृ+क्तिन्] 1. घेरा, बाड़, आड़ 2. आध्यात्मिक अन्धकार।

प्रावृत्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रवृत्ति+ठक्] गौण, अप्रधान,—कः दूत।

प्रावृष् (स्त्री०) [प्र+आ+वृष्+क्विप्] वर्षा ऋतु, मौसमी हवा, वर्षा काल (आषाढ़ और श्रावण काल का महीना)—कलापिनां प्रावृषि पश्य नृत्यम्—रघु० ६।५१, १९।३७, प्रावृट् प्रावृडिति ब्रवीति शठधीः क्षारं क्षते प्रक्षिपन्—मृच्छ० ५।१८, मेघ० ११५। सम० —अत्ययः (प्रावृडत्ययः) वर्षा ऋतु का अन्त,—कालः (प्रावृट्कालः) वर्षा ऋतु।

प्रावृषः,—षा [प्र+आ+वृष्+क, प्रावृष+टाप्] वर्षा ऋतु, वर्षा काल।

प्रावृषिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रावृष+ठञ्] वर्षा ऋतु में उत्पन्न,—कः मोर।

प्रावृषिज (वि०) [प्रावृषि जायते जन्+ड, अलुक् स०] वर्षा ऋतु में उत्पन्न।

प्रावृषेण्य (वि०) [प्रावृष+एण्य] वर्षा ऋतु में उत्पन्न, वर्षा ऋतु से संबद्ध—सा किं शक्या जनयितुमिह प्रावृषेण्येन⋯⋯वारिदेन—भामि० १।३०, ४।६, रघु० १।३६ 2. वर्षा ऋतु में देय (ऋण आदि)—ण्यः 1. कदम्ब वृक्ष 2. कुटज वृक्ष,—ण्यम् बहुसंख्यकता, बाहुल्य, प्राचुर्य।

प्रावृष्यः [प्रावृष्+यत्] 1. एक प्रकार का कदंब का वृक्ष 2. कुटज वृक्ष,—ष्यम् वैदूर्यमणि, नीलम।

प्रावेण्यम् (नपुं०) बढ़िया ऊनी चादर।

प्रावेशन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र वेशन+अण्] प्रवेश करने पर जो दिया जाय या किया जाय (किसी घर में या रंगमंच पर)।

प्राव्राज्यम्, प्रावाज्यम् [प्रव्रज्या+यण्, पक्षे उत्तरपदवृद्धिश्च] धार्मिक साधु या सन्यासी का जीवन।

प्राशः [प्र+अश्+घञ्] 1. खाना, स्वाद चखना, निर्वाह करना, पुष्ट होना—मनु० ११।१४३, घूम° आदि 2. आहार, भोजन।

प्राशनम् [प्र+अश्+ल्युट्] खाना, पुष्ट होना, स्वाद

चखना 2. खिलाना, स्वाद चखाना—मनु० २।२९, 3. आहार, भोजन।

प्राशनीयम् [प्र+अश्+अनीयर्] आहार, भोजन।

प्राशस्त्यम् [प्रशस्त+ष्यञ्] श्रेष्ठता, स्तुत्यता, प्रमुखता।

प्राशित (भू० क० कृ०) [प्र+अश्+क्त] खाया हुआ, चखा हुआ, उपभुक्त,—तम् मृत पुरखाओं के पितरों को उदकदान और पिण्डदान, पितरों के और्ध्वदेहिक संस्कार—प्राशितम् पितृतर्पणम् · मनु० ३।७४।

प्राश्निकः [प्रश्न+ठक्] 1. परीक्षक 2. मध्यस्थ, विवाचक, न्यायाधीश अहो प्रयोगाभ्यन्तरः प्राश्निकः —मालवि० १।

प्रासः [प्र+अस्+घञ्] 1. फेंकना, डालना, (तीर) छोड़ना 2. बर्छी, भाला, फलकदार अस्त्र (जिसमें फल लगाया हुआ हो)। मनु० ६।३२, कि० १६।४।

प्रासकः [प्रास+कन्] 1. बर्छी, भाला, या फल लगा हुआ अस्त्र 2. पासा।

प्रासंगः [प्र+सञ्ज्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] बैलों के लिए जूआ।

प्रासङ्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रसंग+ठक्] 1.घनिष्ठ संयोग से उत्पन्न 2. संयुक्त, सहज 3.प्रसंगानुकूल, आकस्मिक, आपाती, यदाकदा होने वाला —प्रासङ्गिकीनां विषयः कथानाम्—उत्तर० २।६ ५. संबंधानुकूल. ऋत्वनुकूल, अवसरानुकूल 6. उपाख्यान विषयक।

प्रासङ्ग्यः [प्रासंग+यत्] हल में जुतने वाला बैल।

प्रासादः [प्रसीदन्ति अस्मिन्—प्रसद्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. महल, भवन, गगनचुंबी विशाल भवन · भिक्षुः कुटीयति प्रासादे—सिद्धा०, मेघ० ६४ 2. राजभवन 3. मंदिर का देवालय। सम०—अङ्गनम् किसी महल या मन्दिर का आंगन,—आरोहणम् महल में जाना या प्रविष्ट होना, कुक्कुटः पालतू कबूतर, —तलम् महल की समलत चपटी छत,—पृष्ठः महल की चोटी पर बना छज्जा,—प्रतिष्ठा मन्दिर की प्रतिष्ठा, या अभिमन्त्रण,—शायिन् (वि०) महल में सोने वाला, · शृङ्गम् किसी महल या मन्दिर का कलस या मीनार, कंगूरा।

प्रासिकः [प्रास्+ठक्] भाला रखने वाला, बर्छी-धारी।

प्रासूतिक (वि०) (स्त्री०—का) [प्रसूति+ठक्] प्रसव से संबंध रखने वाला, बच्चे के जन्म से संबद्ध।

प्रास्त (भू० क० कृ०) [प्र+अस्+क्त] 1. फेंका गया, (बर्छी भाला आदि) चलाया गया, डाला गया, छोड़ा गया 2. निर्वासित किया गया, बाहर निकाला गया।

प्रास्ताविक (वि०) (स्त्री०—की)[प्रस्ताव+ठक्] प्रस्तावना का काम देने वाला, प्रस्तावना या परिचय, भूमिका विषयक—जैसा कि 'प्रास्ताविक विलास' में (भामिनी-विलास का प्रथम या प्रारंभिक अंश) प्रास्ताविकं वचनम् भूमिका में दिया गया विवरण 2. ऋतु के अनुकूल, अवसरानुसार, सामयिक 3. संगत, प्रसंगानुकूल, (प्रस्तुत विषय से) संबद्ध—अप्रास्ताविकी महत्येषा कथा—मा० २।

प्रास्तुत्यम् [प्रस्तुत+ष्यञ्] विचार विमर्शका विषय होना।

प्रास्थानिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रस्थान+ठञ्] प्रयाण से संबद्ध या विदा के अवसर के उपयुक्त—रघु० २।७० 2. विदा के अनुकूल।

प्रास्थिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रस्थ+ठण्] 1. तोल में एक प्रस्थ 2. एक प्रस्थ में मोल लिया हुआ 3. प्रस्थभर तोल का 4. एक प्रस्थ बीज से बोया गया।

प्रास्रवण (वि०) (स्त्री०—णी) [प्रस्रवण+अण्] झरने से उत्पन्न स्रोत से निकला हुआ।

प्राहः [प्रकर्षेण 'आह' शब्दो यत्र—प्रा० ब०] नृत्यकला की शिक्षा।

प्राह्णः [प्रथमं च तदहश्च, कर्म० स०, टच्, अह्लादेशः, णत्वम्] दोपहर से पहले का समय।

प्राह्णेतन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्राह्ण+टयु, तुट्, नि० एत्वम्] मध्याह्न से पूर्व होने वाला, या मध्याह्नपूर्व संबंधी।

प्राह्णेतराम्-तमाम् (अव्य०) [प्राह्ण+तरप् (तमप्), आम्, नि० एत्वम्] प्रातःकाल, बहुत सवेरे।

प्रिय (वि०) [प्री+क] (म० अ०—प्रेयस्, उ० अ० —प्रेष्ठ] 1. प्रिय, प्यारा, पसन्द आया हुआ, रमणीय, —अनुकूल बन्धुप्रियाम् कु० १।२६, रघु० ३।२९ 2. सुहावना, रुचिकर—तामूचतुस्ते प्रियमप्यमिथ्याम् —रघु० १४।६ 3. चाहने वाला, अनुरक्त, भक्त —प्रियमण्डना —श० ४।९, प्रियारामा वैदेही—उत्तर० २,—यः 1. प्रेमी, पति—स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु—मेघ० २८ 2. एक प्रकार का मृग,—या प्रिया (पत्नी), पत्नी, स्वामिनी—प्रिये चारुशीले प्रिये रम्यशीले प्रिये—गीत० १० 2. स्त्री 3. छोटी इलायची 4. समाचार, संसूचन 5. खींची हुई मदिरा 6. एक प्रकार का चमेली (का फूल), —यम् 1. प्रेम 2. कृपा, सेवा अनुग्रह—प्रियमाचरितं लते त्वया मे—विक्रम०—१।१७, मत्प्रियार्थयियासोः —मेघ० २२, प्रियं मे प्रियं मे, 'मेरी अच्छी सेवा की गई'—भग० ११२३, पंच० १।३६५,१९३ 3. सुखद समाचार—रघु० १२।९१, प्रियनिवेदयितारम् श० ४ 4. आनन्द, सुख,—यम् (अव्य०) बड़े सुहावने या रुचिकर ढंग से। सम० —अतिथि (वि०) आतिथेय, अतिथिसत्कार करने वाला,—अपायः किसी प्रिय वस्तु

का अभाव या हानि,—अप्रिय (वि०) सुखद और दु:खद, रुचिकर और अरुचिकर (भावनाएँ) (यम्) सेवा और अनिष्ट, अनुग्रह और क्षति,—अम्बुः आम का वृक्ष, अर्ह (वि०) 1. प्रेम या कृपा का अधिकारी उत्तर० ३ 2. मिलनसार (र्हः) विष्णु का नाम,—असु, (वि०) जीवन का प्रेमी,—आख्य (वि०) अच्छा समाचार सुनाने वाला,—आख्यानम् रुचिकर समाचार,—आत्मन् (वि०) मिलनसार, सुखद, रुचिकर,—उक्तिः (स्त्री०)—उदितम् कृपा से युक्त या मैत्रीपूर्ण वक्तृता, चापलूसी के वचन—,उपपत्तिः (स्त्री०) आनन्दप्रद या सुखद घटना, —उपभोगः किसी प्रेमी या प्रेयसी के साथ रंगरेलियाँ—रघु० १२।२२.—एषिन् (वि०) 1. भला चाहने वाला, सेवा करने का इच्छुक 2. मित्रता से युक्त, स्नेही,—कर (वि०) सुख देने वाला या पैदा करने वाला, —कर्मन् वि०)अनुग्रह पूर्वक या मित्रता से युक्त व्यवहार करनेवाला,—कलत्रः अपनी पत्नी से प्रेम करनेवाला पति, अपनी भार्या को अत्यन्त चाहने वाला, काम (वि०) मित्रवत् व्हिार करनेवाला,सेवा करने का इच्छुक,—कार, —कारिन् (वि.) अनुग्रह करने वाला,भला करने वाला,—कृत् (पुं०)भला करने वाला, मित्र, हितैषी,—जनः प्रेमपात्र या प्यारा व्यक्ति,—जानिःअपनी नत्नीको अत्यन्त प्यार करने वाला पति,—तोषणः एक प्रकार का रतिवन्ध, मैथुन का आसन विशेष,—दर्श (वि०) देखने में सुन्दर,—दर्शन (वि०) देखने में सुहावना, सुन्दर दर्शनों वाला, सुन्दर, मनोहर, खूबसूरत—अहो प्रियदर्शनः कुमारः—उत्तर० ५, रघु० १।४७, श० ३।११, (नः) 1. तोता 2. एक प्रकार का छुहारे का वृक्ष 3. गन्धर्वों के राजा का नाम—रघु० ५।५३,—दर्शिन् (वि०)राजा अशोक का विशेषण,—देवन (वि०,जूआ खेलने का शौकीन,—धन्वः शिव का विशेषण, —पुत्रः एक प्रकार का पक्षी,—प्रसादनम् पति को प्रसन्न करना,—प्राय (वि०) अत्यन्त कृपालु या सुशील—उत्तर० २।२, (यम्)भाषा में वाक्पटुता,—प्रायस् (नपुं०) बहुत ही रोचक वक्तृता, जैसा कि एक प्रेमी का अपनी प्रेयसी के प्रति कथन,—प्रेप्सु (वि०) अपने अभीष्ट पदार्थको प्राप्त करने की इच्छा करने वाला,—भावः प्रेम की भावना उत्तर० ६।३१,—भाषणम् कृपा से युक्त या रुचिकर शब्द, —भाषिन् (वि०)मधुरभाषी,—मण्डन (वि०) अलंकारों का प्रेमी—श० ४।९—मधु (वि०) मदिरा का शौकीन, (धुः) बलराम का विशेषण–,रण (वि०) बहादुर, शूरवीर,—वचन (वि०) रोचक तथा कृपापूर्ण शब्द बोलने वाला (नम्) कृपा से युक्त, प्रोत्साहक एवं मधुर शब्द —विक्रम० २।१२,—वयस्यः प्रिय मित्र,—वर्णी प्रियंगु नामक पौधा,—वस्तु (नपुं०) प्यारी चीज़,— वाच् (वि०) कृपा से युक्त शब्द बोलने वाला, प्यारी बातें करने वाला, (स्त्री०) कृपामय और रोचक शब्द, —वादिका एक प्रकार का वाद्ययंत्र,—वादिन् (वि०) कृपा से युक्त तथा मधुर शब्द बोलने वाला, चापलूस —सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः— रामा०, —श्रवस् (पुं०) कृष्ण का विशेषण,—संवासः प्रिय व्यक्ति का सत्संग,— सखः प्रिय मित्र, (स्त्री०—खी) सहेली, अन्तरंग सहेली (किसी स्त्री की),—सत्य (वि०) 1. सत्य का प्रेमी 2. सत्य होने पर भी प्रिय, — संदेशः 1. प्रिय समाचार, प्रेमी का समाचार 2. 'चंपक' नाम का वृक्ष,—समागमः अपने प्रिय व्यक्ति (या पदार्थ) से मिलन,— सहचरी प्यारी पत्नी, —सुहृद् (पुं०) प्रिय या प्राणप्रिय मित्र, हार्दिक मित्र, — स्वप्न (वि०) सोने का प्रेमी —रघु० १२।८१।

प्रियंवद (वि०) [प्रियं वदति – प्रिय+वद्+खच्, मुम्] मधुरभाषी, प्रिय बोलने वाला, प्यारी बातें करने वाला, मिलनसार. कु० ५।२८, रघु० ३।६४,- दः 1. एक प्रकार का पक्षी 2. एक गन्धर्व का नाम।

प्रियकः [प्रिय+कन्] 1. एक प्रकार का हरिण—शि० ४।३२ 2. नीप नामक वृक्ष 3. प्रियंगु नाम की लता 4. मधुमक्खी 5. एक प्रकार का पक्षी 6. ज़ाफ़रान, केसर, — कम् असन वृक्ष का फूल—शि० ८।२८।

प्रियङ्कर, प्रियङ्करण, प्रियङ्कार (वि०) [प्रिय+कृ+खच्, ल्युन् अण् वा, मुम्] 1. अनुग्रह दर्शाने वाला, कृपा करने वाला, स्नेह करने वाला,—प्रियङ्करो मे प्रिय इत्यनन्दत् —रघु० १४।४८ 2. रुचिकर 3. मिलनसार।

प्रियङ्गुः [प्रिय+गम्+कु] एक लता का नाम (कहते हैं कि यह लता स्त्रियों के स्पर्श मात्र से खिल उठती है) प्रियङ्गुश्यामाङ्गप्रकृतिरपि — मा० ३।९ (निम्नांकित श्लोक में उन सभी कविसमयों को एकत्रित कर दिया गया है जहाँ विशिष्ट परिस्थितियों में वृक्षों के फूलों का आना बतलाया गया है—पादाघातादशोकस्तिलककुरबकौ वीक्षणालिङ्गनाभ्यां, स्त्रीणां स्पर्शात् प्रियङ्गुर्विकसति बकुलः सीधुगण्डूषसेकात्। मन्दारो नर्मवाक्यात् पटुमृदुहसनाच्चम्पको वक्त्रवातात् चूतो गीतान्नमेरुर्विकसति च पुरो नर्तनात् कर्णिकारः।) 2. बड़ी पीपल, - गु (नपुं०)। ज़ाफ़रान, केसर।

प्रियतम (वि०) [प्रिय+तमप्] अत्यंत प्रिय, सबसे अधिक प्यारा,—मः प्रेमी, पति—शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः—मेघ० ३१।७०,—मा पत्नी, स्वामिनी, बल्लभा, प्रेयसी।

प्रियतर (वि०) [प्रिय+तरप्] अधिक प्रिय, अपेक्षाकृत प्यारा।

प्रियता,—त्वम् [प्रिय+तल्+टाप्, प्रिय+त्व] 1. प्रिय होना, प्यार 2. प्रेम, स्नेह।

प्रियम्भविष्णु, प्रियम्भावुक (वि०) [प्रिय+भू+खिष्णुच्, खुकञ् वा, मुम्] स्नेह का पात्र, अत्यंत प्रिय।

प्रियालः [प्रिय+अल्+अच्] पियाल नामक वृक्ष, दे० 'पियाल',—**ला** अंगूरों की बेल ।

प्री i (क्रया०उभ० प्रीणाति, प्रीणीते प्रीत) 1. प्रसन्न करना, खुश करना, सन्तुष्ट करना, आनन्दित करना—प्रीणाति यः सुचरितैः पितरं स पुत्रः—भर्तृ० २।६८, सस्नुः पितॄन् पिप्रियुरापगासु—भट्टि ३।३८, ५।१०४, ७।६४ 2. प्रसन्न होना, खुश होना—कच्चिन्मनस्ते प्रीणाति वनवासे—महा० 3. कृपामय बर्ताव करना, अनुग्रह दर्शाना 4. प्रसन्न या हँसमुख रहना—प्रेर० (प्रीणयति–ते) प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना ।

ii (दिवा० आ०) (प्रीयते—'प्री' क्रिया का कर्मवाच्य का रूप) सन्तुष्ट या प्रसन्न होना, तृप्त होना—प्रकाममप्रीयत यज्वनां प्रियः—शि० १।१७, रघु० १५।३०, १९।३० याज्ञ० १।२४५ 2. स्नेह करना, प्रेम करना 3. सहमति या मंजूरी देना, सन्तुष्ट होना ।

प्रीण (वि०) [प्री+क्त, तस्य नः] 1. प्रसन्न, सन्तुष्ट, तृप्त 2. पुराना, प्राचीन 3. पहला ।

प्रीणनम् [प्रीण्+ल्युट्] 1. प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना 2. जो प्रसन्न या सन्तुष्ट करता है ।

प्रीत (भू० क० कृ०) [प्री+क्त, नत्वाभावः] प्रसन्न, खुश, प्रहृष्ट, आनन्दित—प्रीतास्मि ते पुत्र वरं वृणीष्व—रघु० २।६३, ३।८१, १२।९४ 2. आनंदयुक्त, आह्लादित, हर्षपूर्ण—मेघ० ४ 3. सन्तुष्ट 4. प्रिय, प्यारा 5. कृपालु, स्नेही । सम०—**आत्मन्**,—**चित्**,—**मनस्** (वि०) हृदय से खुश, मन से आनन्दित ।

प्रीतिः (स्त्री०) [प्री+क्तिन्] 1. प्रसन्नता, आह्लाद, संतोष, खुशी, आनंद, हर्ष, तृप्ति—भुवनालोकनप्रीतिः कु० २।४५, ६।२१, रघु० २।५१ मेघ० ६२ 2. अनुग्रह, कृपालुता 3. प्रेम, स्नेह, आदर—मेघ० ४।१६, रघु० १।५७, १२।५४ 4. पसन्द, चाह, खुशी, व्यसन—द्यूत° मृगया° 5. मित्रता, सौहार्द 6. कामदेव की एक पत्नी का नाम, रति की सौत (सपत्नी संजाता रत्याः प्रीतिरिति श्रुता) । सम०—**कर** (वि०) प्रेम या अनुराग उत्पन्न करने वाला, रुचिकर,—**कर्मन्** (नपुं०) मैत्री या प्रेम का बर्ताव, कृपापूर्ण कार्य,—**दः** नाटक में विदूषक या मसखरा,—**दत्त** (वि०) स्नेह के कारण दिया हुआ (**त्तम्**) स्त्री को दी हुई संपत्ति, विशेषकर विवाह के अवसर पर सास या श्वसुर द्वारा,—**दानम्**,—**दायः** प्रेमोपहार, मित्रता के नाते दिया गया उपहार—तदवसरोऽयं प्रीतिदायस्य—मा० ४, रघु० १५।६८,—**धनम्** प्रेम या सौहार्द के कारण दिया हुआ धन,—**पात्रम्** प्रेम की वस्तु, कोई प्रिय व्यक्ति, या वस्तु,—**पूर्वम्**,—**पूर्वकम्** (अव्य०) कृपा के साथ, स्नेहपूर्वक,—**मनस्** (वि०) मन में खुश, प्रसन्न, आनंदित,—**युज्**(वि०) प्रिय, स्नेही, प्यारा—कि० १।१०,—**वचस्** (नपुं०),—**वचनम्** मैत्री से भरी हुई या कृपापूर्ण वाणी,—**वर्धन** (वि०) प्रेम या हर्ष को बढ़ाने वाला (**नः**) विष्णु का विशेषण,—**वादः** मित्रवत् विचारविमर्श,—**विवाहः** प्रीति या प्रेम के कारण होने वाला विवाह, प्रेम-संबंध, (जो केवल प्रेम पर आधारित हो),—**श्राद्धम्** पितरों के सम्मानार्थ किया जाने वाला और्ध्वदैहिक संस्कार या श्राद्ध ।

प्रु (भ्वा० आ०—प्रवते) 1. जाना, चलना-फिरना 2. कूदना, उछलना ।

प्रुष् i (भ्वा० पर०—प्रोषति, प्रुष्ट) 1. जलाना, खा पी जाना 2. भस्म करना ii (क्रया० पर०—प्रुष्णाति) 1. आर्द्र या तर होना 2. उडेलना, छिड़कना 3. भरना ।

प्रुष्ट (भू० क० कृ०) [प्रुष्+क्त] जलाया हुआ, खायापीया हुआ, जला कर राख किया गया ।

प्रुष्वः [प्रुष्+क्वन्] 1. वर्षा ऋतु 2. सूर्य 3. पानी की बूंद—सिद्धा० ।

प्रेक्षकः [प्र+ईक्ष्+ण्वुल्] दर्शक, तमाशबीन, देखने वाला, दृश्य—द्रष्टा ।

प्रेक्षणम् [प्र+ईक्ष्+ल्युट्] 1. देखना, दृष्टि डालना 2. दृश्य, दृष्टि, दर्शन 3. आँख—चकित हरिणी प्रेक्षणा—मेघ० ८२ 4. तमाशा, सार्वजनिक दृश्य, दिखावा । सम०—**कूटम्** आँख का डेला ।

प्रेक्षणकम् [प्रेक्षण+कन्] दिखावा, तमाशा ।

प्रेक्षणिका [प्र+ईक्ष्+ण्वुल्, इत्वम्] तमाशा देखने की शौकीन स्त्री ।

प्रेक्षणीय (वि०) [प्र+ईक्ष्+अनीयर्] 1. दर्शनीय, विचारणीय, निगाह डालने के योग्य 2. देखने के लिए उपयुक्त, मनोहर, सुन्दर—मेघ० २, रघु० १४।१९ 3. विचारणीय, ध्यान देने के योग्य ।

प्रेक्षणीयकम् [प्रेक्षणीय+कन्] दिखावा, दृश्य, तमाशा—शि० १०।८३ ।

प्रेक्षा [प्र+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1. दृष्टि डालना, देखना, तमाशा देखना 2. अवलोकन, दृश्य, दृष्टि, दर्शन 3. तमाशबीन होना 4. कोई सार्वजनिक तमाशा, दिखावा, दृष्टि 5. विशेष कर थियेटर का तमाशा, नाटकीय प्रदर्शन, अभिनय 6. बुद्धि, समझ 7. विमर्श, विचारणा, पर्यालोचन 8. वृक्ष की शाखा । सम०—**अ (आ)गारः**,—**रम्**, **गृहम्**, **स्थानम्** 1. थियेटर, नाटयशाला, रंगशाला 2. मन्त्रणा-भवन—**समाजः** श्रोता. दर्शकों की भीड़, सभा ।

प्रेक्षावत् (वि०) [प्रेक्षा+मतुप्] विचारशील, बुद्धिमान्, विद्वान् (पुरुष) ।

प्रेक्षित (भू० क० कृ०) [प्र+ईक्ष्+क्त] देखा हुआ, विचार किया हुआ, नजर डाला हुआ, निगाह में से निकाला हुआ, अवलोकन किया हुआ,—**तम्**, रूप, छवि, झलक ।

प्रेङ्खः,–खम् [प्र+इङ्ख्+घञ्] झूलना, पेंग (झोटा) लेना।

प्रेङ्खण (वि०) [प्र+इङ्ख्+ल्युट्] घूमने वाला, इधर उधर फिरने वाला, प्रविष्ट होने वाला—भट्टि० ९।१०६,—णम् 1. झूलना 2. झूला 3. नायक, सूत्रधार आदि पात्रों से शून्य एकांकी नाटक—सा० द० द्वारा दी गई परिभाषा—गर्भावमर्शरहितं प्रेङ्खणं हीननायकम्, असूत्रधारमेकाङ्कमविष्कम्भ प्रवेशकम्, नियुद्धसंफोटयुतं सर्ववृत्तिसमाश्रितम्। ५४७, उदा० 'वालिवध'।

प्रेङ्खा [प्र+इंख्+अङ+टाप्] 1. झूला 2. नृत्य 3. पर्यटन, घूमना, यात्रा करना 4. एक प्रकार का भवन या घर 5. घोड़े का विशेष कदम।

प्रेङ्खित (भू० क० कृ०) [प्र+इङ्ख्+क्त] झूला हुआ, हिलाया हुआ, प्रदोलित या डांवाडोल।

प्रेङ्खोल् (चुरा० उभ०—प्रेङ्खोलयति—ते) झूलना, हिलना डांवाडोल होना।

प्रेङ्खोलनम् [प्रेङ्खोल्+ल्युट्] 1. झूलना, हिलना, इधर से उधर प्रदोलित होना 2. झूला, पेंग।

प्रेत (भू० क० कृ०) [प्र+इ+क्त] इस संसार से गया हुआ, मृत—स्वजनाश्रु किलातिसंततं दहति प्रेतमिति प्रचक्षते—रघु० ८।८६,—तः 1. दिवंगत आत्मा, और्ध्वदेहिक क्रिया किय जाने से पूर्व जीव की अवस्था 2. भूत, पिशाच—भग० १७।४, मनु० १२।७१। सम०—**अधिपः** यमका विशेषण,—**अन्नम्** पितरों को अर्पित आहार, —**अस्थि** (नपुं) मृतक पुरुष की हड्डी, °**धारिन्** शिव का विशेषण,—**ईशः**,—**ईश्वरः** यम का विशेषण,—**उद्देशः** पितरों के निमित्त अर्पण,—**कर्मन्** (नपुं०)—**कृत्यम्**,—**कृत्या** और्ध्वदेहिक या अन्त्येष्टि संस्कार, **गृहम्** कब्रिस्तान, शवस्थान,—**चारिन्**(पुं०) शिव का विशेषण, **दाहः** मुर्दे का जलाना, शवदाह, —**धूमः** चिता से उठता हुआ धूआँ,—**पक्षः** पितृपक्ष, आश्विन का कृष्णपक्ष जब कि पितरों के सम्मान में श्रद्धांजलियाँ अर्पित की जाती हैं, तु० 'पितृपक्ष'। —**पटहः** अर्थी ले जाते समय बजाया जाने वाला ढोल, —**पतिः** यम का विशेषण, **पुरम्** यमराज की नगरी, —**भावः** मृत्यु, **भूमिः** (स्त्री०) कब्रिस्तान, शवस्थान,—**शरीरम्** वियुक्त जीव का शरीर, मृत शरीर,—**शुद्धिः** (स्त्री),—**शौचम्** किसी संबंधी की मृत्यु हो जाने पर शुद्धि पातक शुद्धि, —**श्राद्धम्** किसी मृत संबंधी के निमित्त बरसी से पहले २ किये जाने वाली और्ध्वदेहिक (मासिक) क्रियाएँ, **हारः** 1. मृत शरीर को (श्मशानभूमि तक) ले जाने वाला 2. निकट संबंधी।

प्रेतिक [प्रकर्षेण इति गमनं यस्य प्रा० ब० प्र+इति +कन्,] भूत, प्रेत।

प्रेत्य (अव्य०) [प्र+इ+क्त्वा+ल्यप्] (इस संसार से) विदा होकर मरने के पश्चात् दूसरे लोक में—न च तत्प्रेत्य नो इह—भग० १७।२८, मनु० २।९,२६। सम०—**जातिः** (स्त्री०) परलोक की स्थिति,—**भावः** मरने के पश्चात् आत्मा की अवस्था।

प्रेत्वन् (पुं०) [प्र+इ+क्वनिप्, तुकागमः] 1. वायु 2. इन्द्र का विशेषण।

प्रेप्सा [प्र+आप्+सन्+अ+टाप्] 1. प्राप्त करने की इच्छा 2. इच्छा।

प्रेप्सु (वि०) [प्र+आप्+सन्+उ] 1. प्राप्त करने का इच्छुक, कामना करता हुआ, अभिलाषी, प्रबल इच्छुक 2. उद्देश्य रखने वाला।

प्रेमन् (पुं०, नपुं०) [प्रियस्य भावः इमनिच् प्रादेशः एकाच्कत्वात् न टिलोपः —तारा०] प्रेम, स्नेह—तत्प्रेमहेमनिकपोपलतां तनोति—गीत० ११, मेघ० ४४ 2. अनुग्रह, कृपा, कृपापूर्ण या मृदु व्यवहार 3. आमोद-प्रमोद, मनोविनोद 4. हर्ष, खुशी, उल्लास। सम० —**अश्रु** (नपुं०) हर्षाश्रु, स्नेहाश्रु,—**ऋद्धिः** (स्त्री०) स्नेहवर्धन, उत्कट प्रेम,—**पर** (वि०) स्नेहशील, प्रिय, —**पातनम्** 1. (हर्ष के) आँसू 2. (आँसू गिरानेवाली) आँख, **पात्रम्** प्रेम की वस्तु, कोई प्रिय व्यक्ति या वस्तु, **बन्धः** बन्धनम् स्नेहबन्धन, प्रेम की फाँस।

प्रेमिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [प्रेमन्+इनि] प्रिय, स्नेह-शील।

प्रेयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [अयमनयोः अतिशयन प्रियः —प्रिय+ईयसुन्, प्रादेशः 'प्रिय' की म० अ०] अधिक प्यारा, अपेक्षाकृत प्रिय या रुचिकर (पुं०) प्रेमी, पति (पुं०,नपुं०) चापलूसी, **सी** पत्नी, स्वामिनी।

प्रेयोपत्यः [अपत्यानां प्रेयः] बगुला, कंक पक्षी।

प्रेरक (वि०) (स्त्री०—रिका) [प्र+ईर्+णिच्+ण्वुल्] 1. प्रेरित करने वाला, उत्तेजक, उद्दीपक 2. भेजने वाला, निदेशक।

प्रेरणम्–णा [प्र+ईर्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रेरित करना, उत्तेजित करना, आगे बढ़ाना, उकसाना, भड़काना 2. आवेग, आवेश 3. फेंकना, डालना भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः—मेघ० ६८ 4. भेजना, प्रेषित करना 5. आदेश, निदेश 6. (व्या० में) किसी ओर से कार्य कराने की क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया।

प्रेरित (भू० क० कृ०) [प्र+ईर्+णिच्+क्त] 1. आगे बढ़ाया गया, उत्तेजित किया गया, उकसाया गया 2. उत्तेजित, उद्दीपित, प्रणोदित 3. भेजा गया, प्रेषित 4. स्पर्श किया गया, **तः** दूत, एलची।

प्रेष् (भ्वा० उभ० प्रेषति—ते) जाना, चलना-फिरना।

प्रेषः [प्र+इष्+घञ्] 1. भेजना, प्रेषण करना 2. दूत के रूप में भेजना, निदेश देना, भार या बोझ डालना, आयुक्त करना।

प्रेषित (भू० क० कृ०) [प्र+इष्+क्त] 1. (संदेशा देकर) भेजा हुआ 2. आदिष्ट, निदेशित 3. मुड़ा हुआ, स्थिर, निदिष्ट होकर, (दृष्टि) डाली हुई 4. निर्वासित ।

प्रेष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन प्रियः—प्रिय+इष्ठन्, उ० अ०] अत्यंत प्यारा, प्रियतम,—**ष्ठः** प्रेमी, पति, —**ष्ठा** पत्नी, स्वामिनी ।

प्रेष्य (वि०) [प्र+ईष्+ण्यत्] आदेश दिये जाने के योग्य, भेजे जाने या प्रेषित किये जाने के योग्य,—**ष्यः** सेवक, भृत्य, दास,—**ष्या** सेविका, दासी—,**ष्यम्** 1. दूतमंडली को भेजना 2. सेवा । सम०—**जनः** सेवकों का समूह, —**भावः** सेवक की धारिता, सेवा, बन्धन—मालवि० ५।१२,—**वधूः** 1. सेवक की पत्नी 2. सेविका, दासी, —**वर्गः** सेवकवृन्द, अनुचरवर्ग ।

प्रेहि [प्र पूर्वक इ धातु, लोट्, मध्य० पु०, एक व०] । सम०—**कटा** विशेष प्रकार की आचारविधि जिसमें चटाइयों का निषेध है,—**कर्दमा** एक विशेष अनुष्ठान जिसमें सब प्रकार की अपवित्रता वर्जित है,—**द्वितीया** एक अनुष्ठान विशेष जिसमें किसी और की उपस्थिति वर्जित है,—**वाणिजा** एक अनुष्ठानविशेष जिसमें व्यापारियों की उपस्थिति निषिद्ध है (दे० पा० २।१।७२) ।

प्रेयम् [प्रिय+अण्] कृपालु होना, अनुग्रह, प्रेम ।

प्रेषः [प्र+इष्+घञ्, वृद्धि] 1. भेजना, निदेश देना 2. आदेश, समादेश, आमन्त्रण 3. दुःख, कष्ट 4. पागलपन, उन्माद 5. कुचलना, दबाना, मर्दन करना, भींचना ।

प्रेष्यः [प्र+इष्+ण्यत्, वृद्धिः] सेवक, भृत्य, दास,—**ष्या** दासी, सेविका,—**ष्यम्** सेवा, दासता । सम०—**भावः** सेवक की क्षमता, सेवक की भाँति उपयोग करना, सेवा—कु० ६।५८ ।

प्रोक्त (भू० क० कृ०) [प्र+वच्+क्त] 1. कहा हुआ, बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ 2. नियत किया हुआ, निर्धारित किया हुआ ।

प्रोक्षणम् [प्र+उक्ष्+ल्युट्] 1. छिड़काव, पानी छिड़कना, —मनु० ५।११८, याज्ञ० १।१८४ 2. छींटे देकर अभिमंत्रित करना 3. यज्ञ में पशु का वध,—**णी** छिड़कने या अभिमंत्रण के लिए जल, पुण्यजल (ब० व०, कभी-कभी यह शब्द 'पवित्र जल से पूरित कलश' के लिए भी प्रयुक्त होता है, जिस अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होने वाला शब्द 'प्रोक्षणीपात्र' है) ।

प्रोक्षणीयम् [प्र+उक्ष्+अनीयर्] पवित्रीकरण (प्रोक्षण) के लिए उपयुक्त जल ।

प्रोक्षित (भू० क० कृ०) [प्र+उक्ष्+क्त] 1. जलमार्जन से पवित्र किया हुआ 2. यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ ।

प्रोच्चंड (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त भीषण या भयानक ।

प्रोच्चैः (अव्य०) [प्रा० स०] 1. बहुत ऊँचे स्वर से, जोर से 2. बहुत अधिकता से ।

प्रोच्छ्रित (भू० क० कृ०) [प्रा० स०] अति ऊँचा, उत्तुंग, उन्नत ।

प्रोज्जासनम् [प्र+उद्+जस्+णिच्+ल्युट्] वध, हत्या ।

प्रोज्झनम् [प्र+उज्झ्+ल्युट्] त्यागना, खाली कर देना, छोड़ना ।

प्रोज्झित (भू० क० कृ०) [प्र+उज्झ्+क्त] त्यागा हुआ, खाली किया हुआ, परित्यक्त, हटाया हुआ ।

प्रोञ्छनम् [प्र+उञ्छ्+ल्युट्] 1. मिटा देना, पोंछ देना, छील देना—नै० ५।३६ 2. अवशिष्ट पड़े हुए को चुन लेना ।

प्रोड्डीन (वि०) [प्र+उद्+डी+क्त] जो ऊपर उड़ गया हो, या उड़ गया हो ।

प्रोढ, प्रोढि [प्र+वह्+क्त, क्तिन् वा, सम्प्रसारण] दे० प्रौढ, प्रौढि ।

प्रोत (भू० क० कृ०) [प्र+वे+क्त, संप्रसारणम्] 1. सिला हुआ, टांका लगाया हुआ,—कु० ७।४९ 2. लंबा या सीधा फैलाया हुआ (विप० ओत) 3. बंधा हुआ, बाँधा हुआ, कसा हुआ—महावी० ६।३३ 4. विद्ध किया हुआ, आर-पार किया हुआ —रघु० ९।७५ 5. पारित, आर-पार निकला हुआ —तरुच्छिद्रप्रोतान् अर्थात् (चन्द्रकिरणान्) बिसमिति करी संकलयति—काव्य० १० 6. जमाया हुआ, जड़ा हुआ—महावी० १।३५,—**तम्** वस्त्र, बुना हुआ कपड़ा । सम०—**उत्सादनम्** 1. छतरी 2. वस्त्र-भंडार, तंबू ।

प्रोत्कण्ठ (वि०) [प्रकर्षेण उत्कण्ठः—प्रा० स०] गर्दन ऊपर उठाये हुए या फैलाये हुए ।

प्रोत्क्रुष्टम् [प्र+उत्+क्रुश्+क्त] कोलाहल, हल्ला-गुल्ला ।

प्रोत्खात (भू० क० कृ०) [प्र+उत्+खन्+क्त] खोदा हुआ ।

प्रोत्तुङ्ग (वि०) [प्रा० स०] बहुत ऊँचा या उन्नत ।

प्रोत्फुल्ल (वि०) [प्रा० स०] पूरा खिला हुआ, फूला हुआ ।

प्रोत्सारणम् [प्र+उत्+सृ+णिच्+ल्युट्] छुटकारा करना, साफ कर देना, हटाना, निर्वासित करना ।

प्रोत्सारित (भू० क० कृ०) [प्र+उत्+सृ+णिच्+क्त] 1. हटाया गया, छुटकारा पाया हुआ, निष्कासित 2. आगे बढ़ाया गया, उकसाया 3. परित्यक्त ।

प्रोत्साहः [प्र+उत्+सह्+घञ्] 1. अत्यनुरक्ति, उत्कटता 2. बढ़ावा, उद्दीपन ।

प्रोत्साहकः [प्र+उत्+सह्+णिच्+ण्वुल्] उकसाने वाला, भड़काने वाला ।

प्रोत्साहनम् [प्र+उत्+सह्+णिच्+ल्युट्] उकसाना, उद्दीपन, भड़काना, प्रणोदन ।

प्रोथ् (भ्वा० उभ०—प्रोथति-ते) 1. समान होना, जोड़ का होना, मुकाबला करना (सम्प्र० के साथ) —पुप्रोथास्मै न कश्चन—भट्टि० १४।८४, १५।४०, 2. योग्य होना, यथेष्ट होना, सक्षम होना 3. भरा हुआ या पूरा होना ।

प्रोथ (वि०) [प्रोथ्+घ] 1. विख्यात, सुविश्रुत 2. रक्खा हुआ, स्थिर किया हुआ 3. भ्रमण करना, यात्रा पर जाना, मार्ग चलना—वृक्षान्तमुदकान्तं च प्रियं प्रोथमनुव्रजेत्—तारा०,—थः,-थम् 1. घोड़े की नाक या नथुना—नै० १।६०, शि० ११।११, १२।७३ 2. सूअर की थूथन,—थः 1. कूल्हा, नितंब 2. खुदाई 3. वस्त्र, पुराने कपड़े 4. गर्भ, कलल ।

प्रोथिन् (पुं०) [प्रोथ+इनि] घोड़ा ।

प्रोद्घुष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+घुष्+क्त] 1. गूंजना, प्रतिध्वनि करना 2. कोलाहल करना ।

प्रोद्घोषणम्,-णा [प्र+उद्+घुष्+ल्युट्] 1. ऐलान करना, घोषणा 2. ऊँचा शब्द करना ।

प्रोद्दीप्त (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+दीप्+क्त] आग पर रक्खा हुआ, जलता हुआ, देदीप्यमान—भर्तृ० ३।८८ ।

प्रोद्भिन्न (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+भिद्+क्त] 1. अंकुरित, अँखुवा फूटा हुआ 2. फूट कर निकला हुआ ।

प्रोद्भूत (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+भू+क्त] फूटा हुआ, निकला हुआ ।

प्रोद्यत (भू० क० कृ०) [प्र+उद्+यम्+क्त] 1. उठाया हुआ 2. सक्रिय, परिश्रमशील ।

प्रोद्वाहः [प्र+उद्+वह्+घञ्] विवाह ।

प्रोन्नत (भू० क० कृ०)[प्र+उद्+नम्+क्त] 1. बहुत ऊँचा या उन्नत 2. उभरा हुआ ।

प्रोल्लाघित (वि०) [प्र+उद्+लाघ्+क्त] 1. रोग से मुक्त हो उठा हुआ, स्वास्थ्योन्मुख 2. सुगठित, हट्टाकट्टा ।

प्रोल्लेखनम् [प्र+उद्+लिख्+ल्युट्] खुरचना, चिह्न लगाना ।

प्रोषित (भू० क० कृ०) [प्र+वस्+क्त] परदेश में गया हुआ, विदेश में रहने वाला, घर से दूर, अनुपस्थित, परदेश में रहने वाला । सम०—भर्तृका वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो, शृंगारकाव्यान्तर्गत आठ नायिकाओं में से एक, सा०द० में दी गई परिभाषा —नानाकार्यवशाद्यस्या दूरदेशे गतः पतिः, सा मनोभवदुःखार्ता भवेत् प्रोषितभर्तृका—११९ ।

प्रो (प्रौ) ष्ठः [प्रकृष्टः ओष्ठो यस्य—प्रा० ब०, पररूपम्, पक्षेवृद्धिः] 1. बैल, बलीवर्द 2. तिपाई, चौकी 3. एक प्रकार की मछली (ष्ठी—भी) । सम०—पदः भाद्रपद मास (दा) पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा नाम का पच्चीसवाँ व छब्बीसवाँ नक्षत्र ।

प्रो (प्रौ) ह (वि०) [प्र+उह्+घञ्, पररूपम्, पक्षे वृद्धिः] तार्किक, विवादी,—हः 1. तर्क, उक्ति 2. हाथी का पैर 3. ग्रंथि, जोड़ ।

प्रौ (प्रो) ढ (वि०) [प्र+वह्+क्त, सम्प्रसारणम्, पररूपम्, पक्षे वृद्धिः] 1. पूरा बढ़ा हुआ, पूर्णविकसित परिपक्व, पका हुआ, पूरा बना हुआ, पूर्ण (जैसे कि चन्द्रमा)—प्रौढपुष्पैः कदम्बैः—मेघ० २५, प्रौढतालीविपाण्डु, आदि—मा० ८।१,९।२८ 2. वयस्क, बूढ़ा, वृद्ध —वर्तते हि मन्मथप्रौढसुहृदो निशीथस्य यौवनश्रीः —मा०८—शि० ११।३९ 3. घना, सघन घोर—प्रौढं तमः कुरुकृतज्ञतयैव भद्रम्—मा० ७।३, शि० ४।६२ 4. विशाल, बलवान्, समर्थ 5. प्रचंड, उत्कट 6. भरोसा करने वाला, साहसी, बेधड़क 7. घमंडी,—ढा साहसी और बड़ी उम्र की स्त्री, अपने स्वामी के सामने भी निर्भीक और निर्लज्ज, काव्यरचनाओं में वर्णित चार प्रकार की मुख्य स्त्रियों में से एक भेद—आषोडशाद्भवेद्बाला त्रिंशता तरुणी मता, पञ्चपञ्चाशता प्रौढा भवेद्वृद्धा ततः परम् । सम०—अङ्गना साहसी स्त्री, दे० ऊपर,—उक्तिः (स्त्री०) साहसयुक्त या दर्पपूर्ण उक्ति,—प्रताप (वि०)बड़ा तेजस्वी, बलवान्,—यौवन (वि०) जवानी में बढ़ा हुआ, ढलती जवानी का ।

प्रौ (प्रो) ढिः (स्त्री०) [प्र+वह्+क्तिन्] 1. पूर्ण वृद्धि या विकास, परिपक्वता, पूर्णता 2. वृद्धि, वर्धन 3. गौरव, ऐश्वर्य, समुन्नति, प्रताप—विक्रम० १।१५ 4. साहस, निर्भीकता 5. घमंड, अहंकार, आत्मविश्वास 6. उत्साह, चेष्टा, उद्योग । सम०—वादः वाग्विदग्धता से युक्त गर्वीली वाणी 2. साहसपूर्ण उक्ति ।

प्रौण (वि०) [प्र+ओण्+अच्] चतुर, विद्वान्, कुशल ।

प्लक्षः [प्लक्ष्+घञ्] 1. वटवृक्ष, गूलर का पेड़—प्लक्षप्ररोह इव सौधतलं बिभेद—रघु० ८।९३, १३।७१ 2. संसार के सात द्वीपों में से एक 3. पार्श्व द्वार या पिछवाड़े का दरवाजा, निजी गुप्त द्वार । सम०—जाता,—समुद्रवाचका सरस्वती नदी का विशेषण,—तीर्थम्,—प्रस्रवणम्,—राज् (पुं०) वह स्थान जहाँ से सरस्वती निकलती हैं ।

प्लव (वि०) [प्लु+अच्] 1. तैरता हुआ, बहता हुआ 2. कूदता हुआ, छलांग लगाता हुआ,—वः 1. तैरना, बहना 2. बाढ़, दरिया का चढ़ाव 3. कुलांच, छलांग 4. बेड़ा, घड़नई, डोंगी, छोटी नौका—नाशयेच्च शनैः पश्चात् प्लवं सलिलपूरवत्—पंच० २।३८, सर्वं ज्ञान-

प्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि—भग० ४।३६, मनु० ४।१९४, ११।१९, वेणी० ३।२५ 5. मेंढक 6. बन्दर 7. ढलान, ढलुवाँ स्थान 8. शत्रु 9. भेड़ 10. नीच जाति का पुरुष, चांडाल 11. मछली पकड़ने का जाल 12. अंजीर का पेड़ 13. कारण्डव पक्षी, एक प्रकार की बत्तख 14. पदयोजना की दृष्टि से जुड़ी हुई पाँच या अधिक पंक्तियाँ, कुलक 15. स्वर का दीर्घोच्चारण।' सम०—गः 1. बन्दर—रघु० १२।७८ 2. मेंढक 3. जलीय पक्षी, पनडुब्बी पक्षी 4. शिरीष का वृक्ष 5. सूर्य के सारथि का नाम (—गा) कन्याराशि,—गतिः मेंढक।

प्लवकः [प्लु बाहु० अक] 1. मेंढक 2. कूदने वाला व्यक्ति, कलाबाज, रस्से पर नाचने वाला नट 3. बड़ या पाकर का वृक्ष 4. चाण्डाल, जाति-बहिष्कृत 5. बन्दर।

प्लवंगः [प्लव+गम्+खच्, डित्, टिलोपः मुम्] 1. लँगूर, बन्दर 2. हरिण 3. वटवृक्ष, पाकर का वृक्ष।

प्लवङ्गमः [प्लव+गम्+खच्, मुम्,] 1. बंदर—शि० १२।५५ 2. मेंढक।

प्लवनम् [प्लु+ल्युट्] 1. तैरना 2. स्नान करना, गोता लगाना—मा० ११।१९ 3. छलाँग लगाना, कूदना 4. बड़ी भारी बाढ़, प्रलय 5. ढलान।

प्लवाका [प्लु+आकन्+टाप्] घड़नई, बेड़ा।

प्लविक (वि०) [प्लव+ठन्] नाव में बिठाकर ले जाने वाला, खिवैया।

प्लाक्षम् [प्लक्ष+अण्] प्लक्ष का फल।

प्लावः [प्लु+घञ्] 1. बह निकलना 2. कूदना, छलांग लगाना 3. इतना भरना कि किनारे से बाहर निकल जाय 4. तरल पदार्थ को छानना (उसका मैल दूर करने के लिए)—याज्ञ० १।१९० (दे० इस पर मिता०)।

प्लावनम् [प्लु+णिच्+ल्युट्] 1. स्नान, आचमन 2. बाहर निकल कर बहना, बाढ़ आ जाना, जलमय हो जाना 3. बाढ़. प्रलय।

प्लावित (भू० क० कृ०) [प्लु+णिच्+क्त] 1. तैराया गया, बहाया गया, जलथल किया गया 2. जलमय किया गया, बाढ़ में डुबोया गया, जल से लबालब भरा गया 3. तर किया गया, गीला किया गया, छिड़का गया—शि० १२।२५, कि० ११।३६ 4. ढका हुआ, आच्छादित।

प्लिह् (भ्वा० आ०—प्लेहते) जाना, चलना-फिरना।

प्ली (क्र्या०—पर० प्लीनाति) जाना, चलना-फिरना।

प्लीहन् (पुं०) [प्लिह्+क्वनिन्, नि० दीर्घः] तिल्ली, तिल्ली का बढ़ जाना (प्लिहन् भी)। सम०—उदरम् तिल्ली का बढ़ जाना,—उदरिन् वह पुरुष जो तिल्ली की वृद्धि से पीड़ित हो।

प्लीहा (स्त्री०) तिल्ली।

प्लु (भ्वा० आ०—प्लवते, प्लुत) बहना, तैरना—किं नामैतत् मज्जंत्यलाबूनि ग्रावाणः प्लवन्त इति—महावी. १, क्लेशोत्तरं रागवशात् प्लवन्ते—रघु० १६।६०, प्लवन्ते धर्मलघवो लोकेऽम्भसि यथा प्लवाः—सुभा० 2. नाव में बैठ कर पार जाना 3. इधर उधर झूलना, थरथराना 4. कूदना, छलांग लगाना, फलांगना—भट्टि० ५।४८, १४।१३, १५।१६ 5. उड़ना, उड़ान भरना, हवा में मंडराना 6. फुदकना 7. (स्वर का) दीर्घ होना, प्रेर०—प्लावयति—ते 1. तैराना, बहाना 2. हटाना, बहा ले जाना 3. स्नान करना 4. जलथल एक करना, प्रलय आना, बाढ़ आना, जल में डुबोना घट बढ़ कराना, अभि—, 1. बह निकलना 2. हावी हो जाना, पराभूत करना (आलं०), अव—, कूकना, छलांग लगाकर बाहर होना, उद्—, 1. बहना, तैरना 2. उछलना, फलांगना—मनु० ८।२३, ६३, कूदना, उचकना—शि० १२।२२, उप—, 1. बहना, तैरना 2. प्रहार करना, हमला करना, आक्रमण करना 3. अत्याचार करना, कष्ट देना, तंग करना, सताना —निशाचरोपप्लुतभर्तृकाणां (तपस्विनीनाम्)—रघु० १४।६४, १०।५, मनु० ४।१८८, परि—, 1. तैरना, बहना 2. स्नान करना, डुबकी लगाना 3. कूदना, उछलना 4 जल प्रलय होना, जलथल होना, बाढ़ आना 5. ढकना 6. हावी हो जाना (आलं०), वि—, 1. इधर उधर बहना, इधर उधर डावाँडोल होना, घटबढ़ होना 2. (समुद्र में) निरुद्देश्य संचरण करना, तितरबितर होना—हि० ३।२ 3. (मन आदि का) अव्यवस्थित होना 4. बर्बाद होना, नष्ट हो जाना 5. असफल होना, प्रेर०—1. बहाना, तैरना 2. (अयोग्य व्यक्तियों का) अध्यापन करना—मनु० ११।१९९ 3. अव्यवस्थित होना, घबड़ाना, उद्विग्न होना, सम्,— 1. घट बढ़ होना, इधर-उधर बहना 2. इकट्ठे बहना, (पानी की भांति) मिलना—भग० २।४६।

प्लुत (भू० क० कृ०) [प्लु+क्त] 1. तैरता हुआ, बहता हुआ 2. जलमय हुआ, जल में डूबा हुआ, जल में बहा हुआ 3. कूदा हुआ, फलांगा हुआ 4. (स्वर) दीर्घीकृत, प्रदीर्घ हुआ 5. ढका हुआ (दे० 'प्लु'),—तम् 1, कूद, उछल, उचक 2. कूद फांद, घोड़े का कदम विशेष। सम०—गतिः खरगोश (स्त्री०) 1. उछल कूद कर चलना 2. सरपट दौड़ना, घोड़े की टप्पेदार चाल।

प्लुतिः (स्त्री०) [प्लु+क्तिन्] 1. बाढ़, ऊपर से बहना, जलमय होना 2. उछल, कूद, उचक जैसा कि 'मंडूकप्लुति' में 3. कूदफांद कर चलना, घोड़े की एक चाल

विशेष 4. स्वर की ध्वनि का लंबा करना, प्रदीर्घ करना।

प्लुष् i (भ्वा०, दिवा० क्र्या० पर०—प्लोषति, प्लुष्यति, प्लुष्णाति, प्लुष्ट) जलाना, झुलसना, धकधकाना, गर्म लोहे से दागना—ऋतु० १।२२, भट्टि० २०।३४। ii (क्र्या० पर० प्लुष्णाति) 1. छिड़कना, गीला करना 2. लेप करना 3. भरना।

प्लुष्ट (भू० क० कृ०) [प्लुष्+क्त] झुलसाया गया, जलाया गया, दागा गया।

प्लेव् (भ्वा० आ० प्लेवते) सेवा करना, हाजरी देना, सेवा में उपस्थित रहना।

प्लोषः [प्लुष्+घञ्] जलाना, अन्तर्दाह होना ('प्रोष' भी)।

प्लोषण (वि०) (स्त्री०—णी) [प्लुष्+ल्युट्] जलना, झुलसना, जल कर राख हो जाना—तार्तीयीकं पुरारेस्तदवतु मदनप्लोषणं लोचनं वः—मा० १, (पाठान्तर),—णम् जलना, झुलसना ('प्रोषण' भी)।

प्सा (अदा० पर० प्साति, प्सात) खाना, निगल जाना।

प्सात (भू० क० कृ०) [प्सा+क्त] 1. खाया हुआ 2. भूखा।

प्सानम् [प्सा+ल्युट्] 1. खाना 2. भोजन।

फ

फक्क् (भ्वा० पर०—फक्कति, फक्कित) 1. शनैः-शनैः चलना-फिरना, फुर्ती से जाना, सरकना, धीरे-धीरे चलना 2. गलती करना, दुर्व्यवहार करना 3. फूल उठना।

फक्किका [फक्क्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. एक अवस्था, सिद्ध करने के लिए पूर्वपक्ष, उक्ति या प्रतिज्ञा जिसको बनाये रखना है—फणिभाषितभाष्यफक्किका विषमा कुण्डलनामवापिता—नै० २।९५ 2. पक्षपात, पूर्वचिन्तित सम्मति।

फट् (अव्य०) एक अनुकरणमूलक शब्द जिसे जादू मंत्रादिक के उच्चारण करने में रहस्यमय रीति से प्रयुक्त किया जाता है—अस्त्राय फट्।

फटः [स्फुट्+अच्, पृषो०] 1. साँप का प्रसारित किया हुआ फणा ('फटा' भी इसी अर्थ में)—निर्विषेणापि सर्पेण कर्तव्या महती फटा (पाठान्तर—फणा) विषं भवतु मा भूद्वा फटाटोपो भयङ्करः—पंच० १।२०४ 2. दाँत 3. धूर्त, ठग, कितव।

फडिंगा [फड् इति शब्दमिङ्गति—फड्+इङ्ग्+अच् टाप्] झींगुर, टिड्डी, टिड्डा, फतिंगा।

फण् (भ्वा० पर० फणति, फणित) 1. चलना-फिरना, इधर उधर घूमना,—रुरुजुर्भेजिरे फेणुर्बहुधाहरिराक्षसाः—भट्टि० १४।७८ 2. अनायास उत्पन्न करना, बिना किसी परिश्रमके पैदा करना (यह अर्थ कुछ के मतानुसार प्रेरणार्थक क्रिया का है)।

फणः,—णा [फण्+अच्, स्त्रियां टाप्] किसी भी साँप का फैलाया हुआ फण—विप्रकृतः पन्नगः फणं (फणां) कुरुते—श० ६।३०, मणिभिः फणस्थैः—रघु० १३। १२, कु० ६।६८, वहति भुवनश्रेणिं शेषः फणाफलकस्थिताम्—भर्तृ० २।३५। सम०—करः साँप,—धरः 1. साँप 2. शिव का नाम—भृत् (पुं०) साँप,—मणिः साँप के फण में पाई जाने वाली मणि,—मण्डलम् साँप का कुंडलीकृत शरीर—करालफलमण्डलम्—रघु०१२। ९८, तत्फणामण्डलोदर्चिर्मणिद्योतितविग्रहम्—१०।७।

फणिन् (पुं०) [फणा+इनि] 1. फणधारी साँप, सामान्य साँप, सर्प—उद्‌गिरतो यद्‌गरलं फणिनः पुष्णासि परिमलोद्‌गारैः—भामि० १।१२,५८, फणी मयूरस्य तले निषीदति—ऋतु० १।१३, रघु० १६।१७, कु० ३।२१ 2. राहु का विशेषण 3. पतंजलि का विशेषण, (पाणिनि के सूत्रों पर महाभाष्य के प्रणेता)—फणिभाषितभाष्यफक्किका—नै० २।९५। सम०—इन्द्रः,—ईश्वरः 1. शेषनाग का विशेषण 2. साँपों के अधिपति अनन्त का विशेषण 3. पतंजलि का विशेषण,—खेलः लवा, बटेर,—तल्पगः विष्णु का (शेषनाग जिनकी शय्या है) विशेषण,—पतिः 1. वासुकि या शेषनाग का विशेषण 2. पतंजलि का विशेषण—प्रियः वायु,—फेनः अफीम,—भाष्यम् (पाणिनि के सूत्रों पर किया गया भाष्य) महाभाष्य,—भुज् (पुं०) 1. मोर 2. गरुड़ का विशेषण।

फत्कारिन् (पुं०) [फत्कार+इनि] पक्षी।

फरम् [फल्+अच्, रलयोरभेदः] ढाल—तु० फलक।

फरुवकम् (नपुं०) पानदान पान रखने का डब्बा।

फर्फरीकः [स्फुर्+ईकन्, धातोः फर्फरादेशः] खुले हुए हाथ की हथेली।—कम् 1. ताजा अंकुर या टहनी का अंखुवा 2. मृदुता,—का जूता।

फल् i (भ्वा० पर० फलति, फलित) 1. फल आना, फल पैदा करना—नानाफलैः फलति कल्पलतेव विद्या—भर्तृ०

२।४०, परोपकाराय द्रुमाः फलन्ति—सुभा०—विघातुव्यापारः फलतु: च मनोज्ञश्च भवतु—मा० १।१६ (इस अर्थ में प्रायः सकर्मक के रूप में धातु का प्रयोग होता है) —मौर्यस्यैव फलन्ति विविधश्रेयांसि मन्नीतयः—मुद्रा० २।१६ 'निष्पन्न या घटित करना' 2. परिणामयुक्त होना, सफल होना, पूरा होना, निष्पन्न होना, कामयाब होना—'कैकेयि कामाः फलितास्तवेति—रघु० १३।५९, १५।७८, यदा न फेलुः क्षणदाचराणां (मनोरथाः)—भट्टि० १४।११३, १२।६६, नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलम्—भर्तृ० २।९६,११६ 3. फल निकलना, परिणाम या नतीजा पैदा करना—फलितमस्माकं कपटप्रबन्धेन—हि० १, फलितं नस्तर्हि भगवती पादप्रसादेन—मा० ६, कि० १८।२५, खलः करोति दुर्वृत्तं नूनं फलति साधुषु—हि० ३।२१, 'दुष्ट व्यक्ति बुरे कार्य करते हैं और भले पुरुषों को उनका परिणाम भुगतना पड़ता है' 4. पक्का होना, पक जाना। ii (भ्वा० पर०—फलति, फुल्ल या फुल्त (पहले अर्थ में), दूसरे अर्थ में फलित) 1. बलपूर्वक तोड़ना, खंड २ करना, फट जाना, दरार पड़ना—तस्य मूर्धानमासाद्य पफालासिवरो हि सः—महा० 2. प्रतिफलित होना, अक्स पड़ना—कि० ५।३८ 3. जाना।

फलम् [फल्+अच्] 1. फल (आलं० से भी) जैसे वृक्ष का—उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्—श० ७।३०, रघु० ४।३३, १।४९ 2. फसल, पैदावार—कृषिफलं —मेघ० १६ 3. परिणाम, फल, नतीजा, प्रभाव —अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते—हि० १।८३, फलेन ज्ञास्यसि—पंच० १, न नवः प्रभुराफलोदयात् स्थिरकर्मा विरराम कर्मणः—रघु० ८।२२, १।३३ 4. (अतः) पुरस्कार, क्षतिपूर्ति, पारितोषिक (शुभ या अशुभ) प्रतिफल—फलमस्योपहासस्य सद्यः प्राप्स्यसि पश्य माम्—रघु० १२।३७ 5. कृत्य, कर्म (विप० वचन)—ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कंठेन निजोपयोगिताम्—नै० २।४८, 'भले पुरुष अपनी उपयोगिता कर्मों से सिद्ध करते हैं न कि वचनों से' 6. उद्देश्य, आशय, प्रयोजन—परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः—पंच० १।४३, किमपेक्ष्य फलम्—कि० २।२१ 'किस आशय को विचार में रखकर', मेघ० ५४ 7. उपयोग, भलाई, लाभ, हित—जगता वा विफलेन किं फलम्—भामि० २।६१ 8. लाभ या मूलराशि का ब्याज 9. प्रजा, सन्तान—रघु० १४।३९ 10. (फल की) गिरी 11. पट्टिका या फलक 12. (तलवार का) फल 13. तीर की नोक या सिरा, बाण, गीतकार—मुद्रा० ७।१० 14. ढाल 15. अंडकोष 16. उपहार 17. (गणित में) गणना-फल 18. गुणनफल 19. रजःस्राव 20. जायफल 21. हल का फल, फाली। सम०—अदनः=फलाशन,—अनुबन्धः परिणामक्रम, फलपरम्परा,—अनुमेय (वि०) जिसका अनुमान फल या परिणाम पर निर्भर हो —फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव—रघु० १।२०,—अन्तः बांस,—अन्वेषिन् (वि०) (कर्मों के) पुरस्कार या क्षतिपूर्ति की खोज करने वाला,—अपेक्षा (कर्मों के) फल या परिणामों की आशा, नतीजे का ध्यान,—अशनः तोता,—अम्लम् इमली,—अस्थि (नपुं०) नारियल,—आकांक्षा (अच्छे परिणामों की) आशा —दे० फलापेक्षा,—आगमः 1. फलों की पैदावार, फलों का भार,—भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः—श० ५।१२ 2. फलों का मौसम, पतझड़,—आढ्य (वि०) फलों से भरा हुआ,—आढ्या एक प्रकार के अंगूर (जिसमें गुठलियाँ या बीज नहीं होते),—उत्पत्तिः (स्त्री०) 1. फलों की पैदावार 2. फायदा, लाभ (त्तिः) आम का वृक्ष (कभी-कभी इसी अर्थ को प्रकट करने के लिए 'फलोत्पत्ति' भी लिखा जाता है), —उदयः 1. फलों का दिखाई देना (आना), फल या परिणाम का निकलना, अभीष्ट पदार्थ या सफलता की प्राप्ति—आफलोदयकर्मणाम्—रघु० १।५, —उद्देशः फलों का ध्यान, दे० फलापेक्षा,—कामना परिणाम या फल की इच्छा,—कालः फलों का समय, —केशरः नारियल का पेड़,—ग्रहः हित या लाभ को ग्रहण करने वाला,—ग्रहि,—ग्रहिन् (वि०) (फलेग्रहि या फलेग्राहिन्) फलों से भरा हुआ, मौसम में फल देने वाला,—श्लाघ्यतां कुलमुपैति पैतृकं स्यान्मनोरथतरुः फलेग्रहिः—कीर्ति० ३।६०, मा० ९।३९, —द (वि०) 1. उपजाऊ, फलदार, फल देने वाला —मनु० ११।१४२ 2. ल[illegible]कर या फायदा पहुंचाने वाला (दः) वृक्ष,—निवृत्तिः (स्त्री०) परिणामों की समाप्ति,—निष्पत्तिः फलों का उत्पादन,—पाकः (फलेपाकः' भी) 1. फलों का पकना 2. परिणामों की पूर्णता,—पादपः फलवृक्ष,—पूरः,—पूरकः सामान्य नीबू का पेड़,—प्रदानम् 1. फलों का देना 2. विवाह के अवसर पर एक संस्कार विशेष,—बन्धिन् (वि०) फल को विकसित करने वाला या रूप देने वाला, —भूमिः (स्त्री०) वह स्थान जहाँ मनुष्य अपने कर्मों का शुभाशुभ फल भोगता है (अर्थात् स्वर्ग या नरक),—भृत् (वि०) फलदायी, फलों से पूर्ण,—भोगः 1. फलों का आनन्द लेना 2. भोगाधिकार,—योगः 1. अभीष्टपदार्थ या फल की प्राप्ति—मुद्रा० ७।१० 2. मजदूरी, पारिश्रमिक,—राजन् (पुं०) तरबूजा —वर्तुलम् तरबूज,—वृक्षः फलदारवृक्ष,—वृक्षकः कटहल का वृक्ष,—शाडवः अनार का पेड़,—श्रेष्ठः आम का पेड़,—संपद् 1. फलों की बहुतायत 2. सफलता,

—साधनम् अभीष्ट पदार्थ की उपलब्धि का उपाय, उद्देश्य की पूर्ति,—स्नेहः अखरोट का पेड़,—हारी काली या दुर्गा का विशेषण।

फलकम् [फल+कन्] 1. पट्ट, तख्ता, शिला, पटल या पट्टी—कालः काल्या भुवनफलके क्रीडति प्राणिशारैः—भर्तृ० ३।३९, द्यूत° चित्र° आदि 2. चपटी सतह—चुंब्यमानकपोल फलकाम्—का० २१८, धृतमुग्धगण्डफलकैर्विबभुः—शि० ९।४७,३७, तु० 'तट' 3. ढाल 4. पत्र, पृष्ठ 5. नितंब, कूल्हा 6. हाथ की हथेली। सम०—पाणि (वि०) (योद्धा की भांति) ढाल से सुसज्जित,—यन्त्रम् भास्कराचार्य द्वारा आविष्कृत एक ज्योतिर्विषयक उपकरण।

फलतः (अव्य०) [फल+तसिल्] फलस्वरूप, परिणामरूप, यथार्थतः।

फलनम् [फल्+ल्युट्] 1. फल आना, फलवान् होना 2. फल या परिणाम उत्पन्न करना।

फलवत् (वि०) [फल+मतुप्] 1. फलवान्, फलदार 2. फलदायी, परिणामदर्शी सफल, लाभकारी,—ती 'प्रियंगु' नामक लता।

फलिता [फल+इतच्+टाप्] रजस्वला स्त्री।

फलिन् (वि०) [फल+इनि] फलों से पूर्ण, फलदायी, (आलं० भी) पुष्पिणः फलिनश्चैव वृक्षास्तूभयतः स्मृताः—मनु० १।४७, मृच्छ० ४।१०, (पुं०) वृक्ष।

फलिन (वि०) [फल्+इनच्] फलों से पूर्ण, फलदायी,—नः कटहल का पेड़।

फलिनी,—फली [फलिन्+ङीप्, फल्+अच्+ङीप्] प्रियंगु लता (कवियों के द्वारा इसे 'आम की पत्नी' कहा गया है—तु० रघु० ८।६१)।

फल्गु (वि०) [फल्+उ, गुक् च] 1. बिना गूदे का, रसहीन, तत्त्वरहित, सारविहीन—सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु—पंच० १।२ 2. अयोग्य, निरर्थक, महत्त्वहीन—शि० ३।७६ 3. अल्प, सूक्ष्म 4. निर्मूल, व्यर्थ 5. दुर्बल, बलहीन, निस्सार,—ल्गुः (स्त्री०) 1 वसन्तऋतु 2. गूलर का वृक्ष 3. गया के पास एक नदी। सम०—उत्सवः वसन्तोत्सव, होली का त्योहार।

फल्गुनः [फल्+उनन्, गुक् च] 1. फाल्गुन का महीना 2. इन्द्र का नामान्तर,—नी एक नक्षत्र का नाम—कु० ७।६।

फल्यम् [फल+यत्] फूल।

फाणिः, फाणितम् [फण्+णिच्+इञ्, क्त वा] सीरा, राब।

फाण्ट (वि०) [फण्+क्त, नि० साधुः] सुगम प्रक्रिया द्वारा निर्मित, आसानी से बनाया हुआ (जैसे काढ़ा),—टः,—टम् अर्क, काढ़ा—फाण्टमनायाससाध्यः कषायविशेषः—सिद्धा०, फाण्टचित्रास्त्रपाणयः—भट्टि० ९।१७, (दे० भाष्य)।

फालः,—लम् [फल+अण, फल्+घञ् वा] 1. हल का फल, फाली—मनु० ६।१६ 2. बालों की मांग निकालना, सीमंतभाग—नै० १।१६,—लः 1. बलराम का विशेषण 2. शिव का विशेषण 3. नीबू का पेड़,—लम् 1. सूती कपड़ा 2. जोता हुआ खेत।

फाल्गुनः [फाल्गुन+अण्] 1. महीने का नाम (जो फ़रवरी-मार्च में आता है) 2. अर्जुन का विशेषण—महा० में नाम की व्याख्या इस प्रकार है—उत्तराभ्यां फल्गुनीभ्यां नक्षत्राभ्यामहं दिवा, जातो हिमवतः पृष्ठे तेन मां फाल्गुनं विदुः 3. वृक्ष का नाम, जिसे 'अर्जुन' कहते हैं। सम०—अनुजः 1. चैत्र का महीना 2. वसंतकाल 3. नकुल और सहदेव का विशेषण।

फाल्गुनी [फाल्गुनी+अण्+ङीप्] फाल्गुन मास की पूर्णिमा। सम०—भवः बृहस्पति ग्रह का विशेषण।

फिरङ्गः (पुं०) फिरंगियों अर्थात् यूरोपियनों का देश।

फिरङ्गिन् (पुं०) [फिरंग+इनि] फिरंगी, अंग्रेज, यूरोपियन।

फुकः [फु+कै+क] पक्षी।

फु (फू) त् (अव्य०) अनुकरणमूलक शब्द जो प्रायः 'कृ' के साथ प्रयुक्त होता है, तरल पदार्थों में फूंक मारने से पैदा होने वाली ध्वनि, कभी-कभी इससे घृणा सूचित होती है, फु (फू) त् कृ (किसी तरल पदार्थ में) फूंक मारना—बालः पायसदग्धो दध्यपि फूत्कृत्य भक्षयति—हि० ४।१०३। सम०—कारः,—कृतम्,—कृतिः (स्त्री०) 1. फूंक मारना 2. सांप की फुफकार 3. सी सी करना, सायं सायं की ध्वनि 4. सुबकना 5. चीख मारना, ज़ोर की चीख, चीत्कार।

फुप्फुसः,—सम् (नपुं०) फेफड़े।

फुल्ल् (भ्वा० पर० फुल्लति, फुल्लित) कली आना, फूलना, फुलाना, (पुष्प का) खिलना।

फुल्ल (भू० क० कृ०) [फल्+क्त, उत्वं लत्वम्] 1. फैलाया हुआ, खिला हुआ, फूला हुआ—पुष्पं च फुल्लं नवमल्लिकायाः प्रयाति कान्ति प्रमदाजनानाम्—ऋतु० ६।६, फुल्लारविंदवदनाम्—चौर० १ 2. फूल आना, खिला हुआ—रघु० ९।६३ 3. विस्तारित, फैलाया हुआ, (आँखों की भांति) खूब खुला हुआ—पंच० १।१३६। सम०—लोचन (वि०) (हर्ष से) खिली हुई आँखों वाला (नः) एक प्रकार का मृग।

फेट्कारः [फेट्+कृ+घञ्] चीख, हूक (कुत्ते भेड़िये की ध्वनि)।

फेनः,—नः [स्फाय्+न, फे शब्दादेशः, पक्षे णत्वम्] 1. झाग, फेन (कफ आदि)—गौरीवक्त्रभ्रुकुटिरचनां या विहस्येव फेनैः—मेघ० ५०, रघु० १३।११, मनु० २।६१

2. मुंह का झाग या बुलबुला 3. थूक। सम०—पिण्डः 1. बुलबुला 2. खोखला विचार, अनस्तित्व,—वाहिन् (पुं०) छानने के काम का कपड़ा।

फेण (न) क [फेण+कन्] दे० 'फेन'।

फेनिल (वि०) [फेन+इलच्] झागदार, बुलबुले वाला, —फेनिलमम्बुराशि —रघु० १३।२।

फेरः, फेरण्डः [फे+रा+क, फे+रण्ड्+अच्] गीदड़।

फेरवः [फे इति रवो यस्य ब० स०] 1. गीदड़—क्रन्दत्फेरवचण्डडात्कृति—मा० ५।१९ 2. धूर्त, बदमाश, ठग 3. राक्षस, पिशाच।

फेरुः [फे+रु+डु] गीदड़।

फेलम्, फेला, फेलिका, फेली [फेल्यते दूरे निक्षिप्यते, फेल्+अङ्, स्त्रियां टाप्, फेल्+इन्+कन्+टाप्, फेलि+ङीप्] उच्छिष्ट भोजन, भोजन का बचा खुचा भाग, जूठन।

ब

बंह् (भ्वा० आ० बंहते, वंहित) बढ़ना, उगना।

बंहिमन् (पुं०) [बहुल+इमनिच्, बंहादेशः] बहुतायत, बाहुल्य।

बंहिष्ठ (वि०) [बहुल+इष्ठन्, बंहादेशः उ० अ०] अत्यन्त अधिक, अत्यंत बड़ा, बहुत ही ज्यादह।

बंहीयस् (वि०) [बहुल्+ईयसुन्, बंहादेशः म० अ०] अपेक्षाकृत अधिक, बहुत ज्यादह, अपेक्षाकृत बहुसंख्यक।

बकः [वङ्क्+अच्, पृषो० साधुः] 1. बगला 2. ठग, धूर्त, पाखंडी (बगला बड़ा धूर्त पक्षी है, वह अपने पंजे में दूसरों को फांस लेता है) 3. एक राक्षस का नाम जिसे भीम ने मारा था 4. एक राक्षस का नाम जिसे कृष्ण ने मारा था 5. कुबेर का नामान्तर। सम०—चरः, —वृत्तिः,—व्रतचरः,—व्रतिकः,—व्रतिन् (पुं०) बगले की भांति आचरण करने वाला, ढोंगी, पाखंडी—अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकः, स्वार्थसाधनतत्परः, शठो मिथ्याविनीतश्च बकव्रतचरो द्विजः—मनु० ४।१९६,—जित् (पुं०) —निषूदनः 1. भीम का विशेषण 2. कृष्ण का विशेषण,—व्रतम् बगले की भांति आचरण, पाखंड।

बकुलः [वङ्क्+उरच्, रेफस्य लत्वम्, नलोपः] एक (मौलसिरी) वृक्ष (कहा जाता है कि कविसमयानुसार तरुणियों द्वारा मदिरा का गंडूष छिड़कने पर इसमें मंजरी फूट आती है)—कांक्षत्यन्यो (अर्थात् केसर या बकुल) वदनमदिरां दोहदच्छद्मनाऽस्याः—मेघ० ७८, बहुलः सीधुगंडूषसेकात् (विकसित) (इस प्रकार के अन्यवृक्षों से संबद्ध कविसमयों के लिए प्रियंगु के नीचे उद्धरण देखो),—लम् मौलसिरी वृक्ष का सुगंधित फूल—भामि० १।५४।

बकेरुका [बकानां बकसमूहानाम् ईरुकं गतिर्यत्र—ब० स०] छोटी बगली।

बकोटः (पुं०) बगला।

बटुः [वट्+उ, बवयोरभेदः] बालक, लड़का, छोकरा (बहुधा तिरस्कारसूचक) चाणक्यबटुः—आदि दे० 'वटु'।

बडि (लि) शम् (नपुं०) मछली पकड़ने का कांटा—भर्तृ० ३।३१।

बत (अव्य०) [वन्+क्त, बवयोरभेदः] निम्नांकित अर्थ प्रकट करने वाला अव्यय 1. शोक, खेद—वयं वत विदूरतः क्रमगता पशोः कन्यका —मा० ३।१८, अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्, भग० १।४५ 2. दया या करुणा—क्व वत हरिणकानां जीवितं चातिलोलम् —श० १।१० 3. संबोधन, पुकारना—बत वितरत तोयं तोयवाहाः नितान्तम्—गण०, रघु० ९।४७ 4. हर्ष या संतोष—अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः—कु० ३।२० 5. आश्चर्य, अचंभा, अहो बत महच्चित्रम्—का० १५४, 6. निन्दा ('अहो' के साथ 'बत' के अर्थ 'अहो' के अन्तर्गत दे०)।

बदरः [बद्+अरच्] बेर का पेड़,—रम् बेर का फल,—करबदरसदृशमखिलं भुवनतलं यत्प्रसादतः कवयः, पश्यन्ति सूक्ष्ममतयः सा जयति सरस्वती देवी—वास० १, भामि० २।८। सम०—पाचनम् एक पुण्यतीर्थ स्थान।

बदरिका [बदरी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] बेर का पेड़ या फल,—अन्ये बदरिकाकारा बहिरेव मनोहराः—हि० १।९४ 2. गंगा का एक स्रोत, जो नर और नारायण के आश्रम के निकट स्थित है, इसे ही बदरीनारायण कहते हैं। सम०—आश्रमः बदरिका का आश्रम।

बदरी [बदर+ङीष्] 1. बेर का पेड़; दे० बादरायण 2.=बदरिका (ऊपर 2)। सम०—तपोवनम् बदरीस्थित तपस्या करने का उद्यान—कि० १२।३३, —फलम् बेर के पेड़ का फल,—वनम् (णम्) बेर की झाड़ी या जंगल,—शैलः बदरी पर स्थित पहाड़।

बद्ध (भू० क० कृ०) [बन्ध्+क्त] 1. बांधा हुआ, बंधा

हुआ, कसा हुआ 2. शृंखलित, बेडियों से जकड़ा हुआ 3. बंदी, पकड़ा हुआ 4. अवरुद्ध, कारावासित 5, कमर कसे हुए 6. संयत, दबाया हुआ, रोका हुआ 7. निर्मित, बनाया हुआ 8. प्यार किया गया, रिझाया गया 9. मिलाया गया, संहित 10. पक्का जमाया गया, दृढ़ । सम०—**अङ्गुलित्र,—अगुङ्लित्राण** (वि०) दस्ताना पहने हुए,—**अञ्जलि** (वि०) हाथ जोड़े हुए, आदर या सम्मान प्रदर्शित करने के लिए नम्रता पूर्वक दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार करते हुए,—**अनुराग** (वि०) स्नेह में बंधा हुआ, प्रेम के कारण अनुरक्त, प्रेमबंधन में जकड़ा हुआ,—**अनुशय** (वि०) पश्चात्ताप करने वाला,—**आशङ्क** (वि०) जिसकी आशंकाएँ बढ़ गई हैं, शङ्काकुल,—**उत्सव** (वि०) उत्सव या त्यौहार मनाते हुए,—**उद्यम** (वि०) मिलकर प्रयत्न करनेवाले,—**कक्ष,—कक्ष्य** (वि०) दे० 'बद्धपरिकर'—**कोप,—मन्यु,—रोष** (वि०) 1. क्रोध अनुभव करते हुए, क्रोध या रोष की भावना रखते हुए 2. अपने क्रोध का दमन करने वाला,—**चित्त,—मनस्** (वि०) मन को किसी ओर जमाये हुए, मन को किसी ओर दृढ़तापूर्वक लगाने वाला,—**जिह्व** (वि०) जिसकी जिह्वा कील दी गई है,—**दृष्टि,—नेत्र,—लोचन** (वि०) आंख को एक ओर जमा कर ताकने वाला, टकटकी लगाकर देखने वाला,—**धार** (वि०) लगातार अविच्छिन्न रूप से बहने वाला,—**नेपथ्य** (वि०) नाटकीय वेशभूषा धारण किये हुए,—**परिकर** (वि०) कमर बांधे हुए, कमर कसे हुए, तैयार, सज्जित,—**प्रतिज्ञ** (वि०) 1. जिसने कोई व्रत या प्रतिज्ञा की है 2. दृढ़ संकल्प वाला,—**भाव** (वि०) स्नेहशील, दिल लगाये हुए, मुग्ध (अधि० के साथ)—दृढं त्वयि बद्धभावोर्वशी—विक्रम० २,—**मुष्टि** (वि०) 1. मुट्ठी बांध हुए 2. मुट्ठी भींचे हुए, कंजूस,—**मूल** (वि०) जिसकी जड़ गहराई तक गई हो, जड़ पकड़ हुए—बद्धमूलस्य मूलं हि महद्वैरतरोः स्त्रियः—शि० २।३८,—**मौन** (वि०) जीभ थामे हुए, मौन रहने वाला, चुप अदृश्यत त्वच्चरणारविन्दविश्लेषदुःखादिव बद्धमौनम्—रघु० १३।२३,—**राग** (वि०) आसक्त, मुग्ध, अनुरक्त—पंच० १।१२३,—**वसति** (वि०) अपना वास स्थान स्थिर करने वाला,—**वाच्** (व०) जिह्वा रोके हुए, चुप रहने वाला,—**वेपथु** (वि०) कंपकंपी से ग्रस्त,—**वैर** (वि०) जिसको किसी से घोर घृणा हो गई हो या पक्की शत्रुता हो गई हो,—**शिख** (वि०) 1. जिसने अपनी चोटी बांध ली ह, (चोटी में गाँठ दे ली है) 2. जो अभी बच्चा है, बालक,—**स्नेह** (वि०) अनुराग करने वाला, स्नेहशील ।

बध् (भ्वा० आ०—बीभत्सते—मूल अर्थ को बताने वाले बध् धातु का सन्नन्त रूप) घिन करना, घृणा करना, अरुचि रखना, संकोच करना, झिझकना, ऊबना (अपा० के साथ)—येभ्यो बीभत्समानाः—उत्तर० १ ।

बधिर (वि०) [बन्ध्+किरच्] बहरा,—ध्वनिभिर्जनस्य बधिरीकृतश्रुतेः—शि० १३।३, मनु० ७।१४९ ।

बधिरयति (ना० धा० पर०) बहरा बनाना (आलं० से भी)—बधिरिताशेषदिगन्तरालम्—का०, महावी० ६।८० ।

बधिरित (वि०) [बधिर+इतच्] बहरा किया गया, बहरा बनाया गया ।

बधिरिमन् (पुं०) [बधिर+इमनिच्] बहरापन ।

बन्दिः,—दी (स्त्री०) [वन्द्+इन्, वन्दि+ङीप्] 1. बंधन, कारावास 2. क़ैदी, बंधुआ—कु० २।६१ ।

बन्ध् (क्र्या० पर० बध्नाति, बद्ध, कर्म० बध्यते) 1. बांधना, कसना, जकड़ना—बद्धुं न संभावित एव तावत्करेण रुद्धोऽपि च केशपाशः—कु० ७।५७, रघु० ७।९, कु० ७।२५, भट्टि० ९।७५ 2. दबोचना, पकड़ना, जेल में डालना, जाल में फंसाना, वंदी बनाना—कर्मभिर्न स बध्यते—भग० ४।१४, बलिर्बबन्धे—भट्टि० २।३९, १४।५६ 3. ज़ंजीर में बांधना, बेड़ी में जकड़ना 4. रोकना, ठहराना, दमन करना यथा बद्धकोप, बद्धकोष्ठ आदि में 5. पहनना, धारण करना—न हि चूडामणिः पादे प्रभवामीति बध्यते—पंच० १।७२, बबन्धुरङ्गुलित्राणि भट्टि० १४।७, 6. (आंख आदि का) आकृष्ट करना, गिरफ्तार करना—बबन्ध चक्षूंषि यवप्ररोहः—कु० ७।१७, या बध्नाति मे चक्षुः (चित्रकूटः)—रघु० १३।४७ 7. स्थिर करना, जमाना, (आँख या मन आदि) निदेशित करना, डालना (अधि० के साथ)—दृष्टिं लक्ष्येषु बध्नन्—मुद्रा० १।२, रघु० ३।४, ६।३६, भट्टि० २०।२२ 8. (बाल आदि) बाँधना, मिलाकर जकड़ना—मुद्रा० ७।१७ 9. निर्माण करना, संरचन करना, रूप देना, व्यवस्थित करना—बद्धोर्मिनाकवनितापरिभुक्तमुक्तम्—कि० ८।५७, मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु० श० २।६, तस्याञ्जलिं बन्धुमतो बबन्ध—रघु० १६।५, ४।३८, ११।३५, ७८, कु० २।४७, ५।३० भट्टि० ७।७७ 10. एकत्र करना, रचना करना, (कविता श्लोक आदि) निर्माण करना—तुष्टैर्बद्धं तदलघु रघुस्वामिनः सच्चरित्रम्—विक्रम० १८।१०७, श्लोक एव त्वया बद्धः—रामा० 11. बनाना, पैदा करना, (फल आदि) जन्म देना—रघु० १२।६९, श० ६।४ 12. रखना, अधिकार में करना, ग्रहण करना, संजो कर रखना—उत्तर० २।८, ('बंध्' के अर्थों में उन संज्ञाओं के अनुसार जिनसे यह

संयुक्त होता है, नाना प्रकार के परिवर्तन होते हैं। उदा०—भ्रुकुटिं बन्ध् भौंहों में बल डालना, त्योरी चढ़ाना, मुष्टिं बन्ध् मुट्ठी बांधना, अञ्जलिं बन्ध् नम्र निवेदन के लिए हाथ जोड़ना, चित्तं, धियं, मनः, हृदयं, बन्ध् मन लगाना, दिल लगाना, प्रीतिं, भावं, रागं बन्ध्, प्रेमपाश में बद्ध होना, मुग्ध होना,—सेतुं बन्ध् पुल बनाना, सेतु का निर्माण करना, वैरं बन्ध् घृणा पैदा होना, शत्रुता, सख्यं, सौहृदं बन्ध् मैत्री करना, गोलं बन्ध् गोल बांधना, मंडलं बन्ध्, मंडल बनाना, गोल बांध कर बैठना, मौनं बन्ध्, चुप्पी साधना, परिकरं बन्ध्, कक्षां बन्ध् कमर कसना, तैयार हो जाना – दे० बद्ध के नीचे समस्त शब्द, प्रेर० –बंधवाना, बनवाना, रचवाना, निर्माण करवाना—रघु० १२।७०, अनु –, 1. बांधना, जकड़ना –शि० ८।६९ 2. लग जाना, चिपकना, जुड़ जाना—तान्येवाक्षराणि मामनुबध्नन्ति उत्तर० ३, 3. उपस्थित रखना, चुपचाप अनुसरण करना, पद चिह्नों पर चलना – मधुकरकुलैरनुबध्यमानम् का० १३९, को नु खल्वयमनुबाध्यमानस्तपस्विनीभ्यामबाल-सत्त्वो बालः –श० ७ 4. दबाव डालना, प्रेरित करना, अत्यंत आग्रह करना, आ –, 1. बांधना जकड़ना, कसना—मनु० ११।२०५ 2. बनाना, निर्माण करना, व्यवस्थित करना—आवद्धमण्डला तापसपरिषद्—का० ४९, आवद्धमालाः—मेघ० ९, भट्टि० ३।३०, कि० ५।३३,–आवद्धरेखमभितो नवमञ्जरीभिः—गीत० ११ 3. स्थिर करना, जमाना, निदेशित करना—रघु० १।४०, उद्—, बांधना, लटकाना – कंठमुद्बध्नाति —मुद्रा० ६, रघु० १६।६५, नि –, बांधना, कसना जकड़ना, शृंखलित करना, वेड़ी में बांधना आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय भग० ४।४१, ९।९, १४।७, १८।१७, मनु० ६।७४, कु० ५।१० 2. स्थिर करना, जमाना –त्वयि निबद्धरते विक्रम० ४।२९ 3. बनाना, निर्माण करना, संरचना करना व्यवस्थित करना—हेमनिबद्धं चक्रम्, पाषाणचयबद्धः कूपः आदि 4. लिखना, रचना करना मया निबद्धेय-मतिद्वयी कथा—क० ५, निस् –, दबाव डालना, प्रेरित करना, अत्यंत आग्रह करना, परि –,1. कसना, बांधना 2. पहनना 3. घेरा डालना, चारों ओर से बांधना 4. गिरफ्तार करना, ठहराना 5. विघ्न डालना, रुकावट डालना, प्रति –, 1. कसना, जकड़ना, बांधना —पोतप्रतिबद्धवत्साम् (धेनुम्) –रघु० २।१ 2. स्थिर करना, निदेशित करना, कु० ७।९१ 3. खचित करना, जड़ना, मढ़ना—यदि मणिस्त्रपुणि प्रतिबध्यते पंच १।७५, बहुलानुरागकुरुविन्ददलप्रतिबद्धमध्यमिव दिग्वलयम्—शि० ९।८ 4. अवरोध करना, विघ्न डालना, पीछे हटाना, निकाल देना, बंद कर देना—प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः—रघु० १।७९ 5. रोकना, हस्तक्षेप करना—मैनमन्तरा प्रतिबध्नीतम् श० ६, सम्—1. मिला कर बांधना या कसना, एकत्र करना, संयुक्त करना, साथ लगाना 2. संरचन करना, बनाना –दे० संबद्ध।

बन्धः [बन्ध्+घञ्] 1. ग्रन्थि, बन्धन –यथा-आज्ञाबन्ध) 2. बालों को बांधने की पट्टी, फीता –विक्रम० ४।१०, श० १।३० 3. शृंखला, वेड़ी 4. वेड़ी डालना, कारागार में डालना, जेल में बंद करना –मनु० ८।३१० 5. बोचना, पकड़ना, पकड़ लेना –गजबन्ध —रघु० १६।२ 6. निर्माण, संरचना, व्यवस्थापन —सर्गबन्धो महाकाव्यम्—सा० द० ६ 7. भावना, धारणा, विचारना – हे राजानस्त्यजत सुकविप्रेमबन्धे विरोधम्—विक्रमांक० १८।१०७,रघु० ६।८१ 8. संयोग, मिलन, अन्तः सम्पर्क 9. जोड़ना, मिलाना, मिश्रण करना—रघु० १४।१३, अञ्जलिबन्ध आदि 10. पट्टी, तनी 11. सहमति, सामंजस्य 12. प्रकटीकरण, प्रदर्शन, निरूपण—रघु० १८।५२ 13. बंधन, भवबंधन (विप० मुक्ति०—अर्थात् सांसारिक बंधनों से पूर्ण मोक्ष) बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी—भग० १८।३०, बन्धान्मुक्त्यै खलु मखमुखान् कुर्वते कर्मपाशान्—भामि० ४।२१, रघु० १३।५८, १८।७ 14. फल, परिणाम 15. स्थिति, अंगविन्यास,– आसनबन्धधीरः—रघु० २।६ कु० ३।४५, ५९ 16. मैथुन करते समय विशेष आसन, रतिबंध, (रतिमंजरी में इस प्रकार के १६ आसन बताये गये हैं, जब कि और लेखक ८४ तक बढ़ा देते हैं) 17. गोट, किनारी, रूप रेखा, ढांचा 18. किसी श्लोक का कोई विशिष्ट रूप-उदा० खड्गबंध, पद्मबंध, मुरजबंध—काव्य० ९ 19. स्नायु, कण्डरा 20. शरीर 21. अमानत, धरोहर। सम०—करणम् वेड़ी डालना, कारागार में डालना, –तन्त्रम् पूरी सेना या चतुरंगिणी सेना अर्थात् गजारोही, अश्वारोही, रथारोही तथा पदाति, –पारुष्यम् अस्वाभाविक या कृत्रिम शब्दरचना,—स्तम्भः पशुओं को बांधने का खूंटा (उदा० हाथी आदि)।

बन्धकः [बन्ध्+ण्वुल्] 1. बांधने वाला, पकड़ने वाला 2. बोचने वाला 3. बंध, गांठ, रस्सी, चमड़े का तस्मा 4. मेंढ़, किनारा, बांध 5. धरोहर, अमानत 6. शरीर का अंगन्यास 7. अदलाबदली, विनिमय 8. भंग करने वाला, तोड़ने वाला 9. प्रतिज्ञा 10. नगर 11. भाग या अंश (द्विगु समास के अन्त में)—ऋणं सदशबन्धकम् —याज्ञ० २।७६,—कम् बांधना, सीमित करना,—की 1. असती स्त्री—न मे त्वया कौमारबन्धकया प्रयोजनम् —मा० ७, वेणी० २ 2. वेश्या, वारांगना—बलात्

धृतोसि मयेति बन्धकीधार्ष्टचम्---का० २३७, 3. हथिनी।

बन्धनम् [बन्ध्+ल्युट्] 1.बांधने की क्रिया, जकड़ना, कसना, कु० ४।८ 2. चारों ओर से बाँधना, लपेटना, आलिंगन —विनम्रशाखाभुजबन्धनानि—कु०३।३९, घटय भुजबंधनम्—गीत० १०, रघु० १९।१७ 3. गाँठ, ग्रन्थि (आलं० से भी) रघु० १२।७६, आशाबन्धनम् आदि 4. बेड़ी डालना, जंजीर से बांधना, कैद करना 5. शृंखला, बेड़ी, पगहा, रज्जु आदि 6. गिरफ्तार करना, पकड़ना 7. बांधना, कैद, जेल, कारा, जैसा कि 'बन्धनागार' में 8. बन्दीगृह कारागार, जेलखाना. —त्वां कारयामि कमलोदरबन्धनस्थम् श० ६।२०, मनु० ९।२८८ 9. बनाना, निर्माण, संरचना,—सेतुबन्धनम्—कु० ४।६ 10. संयुक्त करना, मिलाना, जोड़ना 11. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 12. डंडी, डंठल, (फूल का) वृन्त—श० ३।६, ६।१८, कु० ४।१४ 13. स्नायु, पुट्ठा 14. पट्टी। सम० —आ(आ)गारः,-रम्,-आलयः कारागार, जेलखाना, —ग्रन्थिः 1. पट्टी की गाँठ 2. जाल 3. पशुओं को बाँधने का रस्सा,-- पालकः,-रक्षिन् (पुं०) काराध्यक्ष, जेल का अधीक्षक,—वेश्मन् (नपुं०) कारागार- स्थः बंदी, कैदी,—स्तम्भः खूंटा, (हाथी आदि पशुओं को बाँधने का) खंभा,—स्थानम् अस्तबल, घुड़साल।

बंधित (वि०) [बंध+इतच्] 1. बंधा हुआ, जकड़ा हुआ 2. कैदी, बंदी।

बन्धित्रः [बंध्+इत्र] 1. कामदेव 2. चमड़े का पंखा 3. धब्बा, मस्सा।

बन्धुः [बन्ध्+उ] 1. रिश्तेदार, बंधु, बांधव, संबंधी—यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे · उत्तर० ३।८, मातृबन्धुनिवासनम् · रघु० १२।१२, श० ६।२२, भग० ६।९ 2. किसी प्रकार के संबंध से बंधा हुआ, भाई, —प्रवासबन्धुः सह यात्री, धर्म बन्धुः आध्यात्मिक भ्राता —श० ४।९ 3. (विधि में) सजातीय बंधुजन, अपना निजी सगोत्र बंधु (बंधु तीन प्रकार के हैं : —आत्म,° पितृ° तथा मातृ°) 4. मित्र (जैसा कि नीचे 'बंधुकृत्य' में) प्रायः समास के अन्त में--मकरन्दगन्धबन्धो—मा० १।३६, 'गंध का मित्र अर्थात् सुवासित' ९।१३ 5. पति—वैदेहिबंधोर्हृदयं विदद्रे रघु० १४।३३ 6. पिता 7. माता 8. भ्राता 9. बंधुजीव नाम का वृक्ष 10. वह व्यक्ति जिसका किसी जाति या व्यवसाय से नाममात्र का संबंध हो, अर्थात् जो जाति में जन्म लेकर अपनी उस जाति के कर्तव्यों का पालन न करता हो (प्रायः तिरस्कारसूचक शब्द) स्त्रमेव ब्रह्मबन्धुर्नोद्भिन्नो दुर्गप्रयोगः---मालवि० ४, तु० क्षत्रबंधु। सम०—कृत्यम् 1. सगोत्रबंधु का कर्तव्य—त्वयि तु परिसमाप्तं बन्धुकृत्यं प्रजानाम् श० ५।८ 2. मैत्रीपूर्ण कार्य या सेवा कच्चित्सौम्य व्यवसितमिदं बन्धुकृत्यं त्वया मे—मेघ० ११४,---जनः 1. रिश्तेदार, भाई-बंधु 2. बंधुवर्ग, स्वजन, - जीवः,-जीवकः वृक्ष का नाम—बन्धुजीवमधुराधरपल्लवमुल्लसितस्मितशोभम्---गीत० २, रघु० ११।२५,-- दत्तम् एक प्रकार का स्त्रीधन या स्त्री की संपत्ति, विवाह के अवसर पर कन्या के संबन्धियों द्वारा कन्या को दिया गया धन--याज्ञ० २।१४४, - प्रीतिः (स्त्री०) 1. रिश्तेदार का प्रेम—बन्धुप्रीत्या—मेघ० ४९ 2. मित्र के लिए प्रेम,—भावः 1. मित्रता 2. रिश्तेदारी—वर्गः भाई-बन्धु, स्वजन,—हीन (वि०) बंधुबांधवों या मित्रों से रहित।

बन्धुकः 1. बंधुजीव नामक पेड़ 2. हरामी (सन्तान) वर्णसंकर,-- का,-की असती स्त्री (दे० बंधकी)।

बन्धुता [बन्धु+तल्+टाप्] 1. रिश्तेदार, भाई-बंधुः स्वजन (सामूहिक रूप से) 2. रिश्तेदारी, संबंध।

बंधुदा [बन्धु+दा+क+टाप्] असती स्त्री।

बंधुर (वि०) [बंध्+उरच्] 1. डाँवाडोल, लहरदार, ऊँचा-नीचा—शि० ७।३४, कु० १।४२ 2. झुका हुआ, रुझान वाला, विनत- बन्धुरगात्रि—रघु० १३।४७, (=संनतांगि) 3. टेढ़ा, वक्र 4. सुहावन, मनोहर, सुन्दर, प्रिय—श० ६।१३, (यहाँ इसका अर्थ 'डांवाडोल' भी है) 5. बहरा 6. हानिकर, उत्पातप्रिय, —रः 1. हंस 2. सारस 3. औषधि 4. खलीं 5. योनि, --राः (ब० व०) मुर्मुरे या खाद्य पदार्थ,-- रा असती स्त्री, रम् मुकुट, ताज।

बन्धुल (वि०) [बन्धु+उलच्] 1. झुका हुआ, वक्र, रुझान वाला 2. सुहावन, खुशनुमा, आकर्षक, सुन्दर, —लः 1. हरामी (संतान)—परगृहललिताः परान्नपुष्टाः परपुरुषैर्जनिताः पराङ्गनासु, परधननिरता गुणेष्ववाच्या गजकलभा इव बन्धुला ललामः—मृच्छ० ४।२८, (विदूषक के प्रश्न 'भोः के यूयं बन्धुला नाम ?' का यह उत्तर है जो स्वयं बंधुलों ने दिया) 2. वेश्या का सेवक 3. बंधूक नाम का पेड़।

बन्धूकः [बन्ध्+ऊक] एक वृक्ष का नाम—तव करनिकरेण स्पष्टबन्धूकसूनस्तबकरचितमेते शेखरं बिभ्रतीव—शि० ११।४६, ऋतु० ३।५,—कम् इस वृक्ष का फूल बन्धूकद्युतिबान्धवोऽयमधरः—गीत० १०, ऋतु० ३।२५।

बन्धूर (वि०) [बन्ध्+ऊरच्] 1. डांवाडोल, उन्नतावनत 2. झुका हुआ, रुझानवाला, विनत 3. सुहावना, खुशनुमा, प्रिय, तु० बंधुर, रम् छिद्र, सूराख।

बन्धूलिः [बंध्+ऊलि] बन्धुजीव नामक वृक्ष।

बन्ध्य (वि०) [बन्ध्+ण्यत्] 1. बांधे जाने के योग्य, बेड़ी

द्वारा जकड़े जाने योग्य, कैद किये जाने या बन्दी बनाये जाने के योग्य—याज्ञ० २।२४३ 2. मिलाकर बाँधने या जोड़ने के योग्य 3. निर्माण किये जाने के योग्य, बनाये जाने या संचरित किये जाने के योग्य 4. निरुद्ध, निगृहीत 5. बाँझ, बंजर, जो उपजाऊ न हो, निष्फल, निरर्थक (व्यक्ति या वस्तु)—वन्ध्यश्रमास्ते—रघु० १६।७५, अवन्ध्ययत्नाश्च बभूववुर ते—३।२९, कि० १।३३ 6. जिसका मासिक रजःस्राव आना बन्द हो गया हो 7. (समास के अन्त में) विहीन, विरहित। सम० —फल (वि०) निरर्थक, अर्थहीन, सुस्त।

बन्ध्या [वन्ध्य+टाप्] बाँझ स्त्री —न हि वन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम्—सुभा० 2. बाँझ गौ 3. एक प्रकार का गन्धद्रव्य—(वालछड़)। सम०—तनयः,—पुत्रः —सुतः या—दुहितृ,—सुता बाँझ स्त्री का पुत्र या पुत्री अर्थात् घोर असंभाव्यता, जिसका न अस्तित्व है न हो सकता है, एवं बन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः—दे० 'खपुष्प'।

बंध्रम् [बंध्+ष्ट्रन्] बन्धन, गाँठ।

बभ्रवी [बभ्रु+अण्+ङीप्, नवृद्धि] दुर्गा की उपाधि।

बभ्रु (वि०) [भृ+कु, द्वित्वम्—बभ्रू+उ वा] 1. गहरा भूरा, खाकी, लाली लिये हुए भूरा—ज्वालावभ्रुशिरोरुहः—रघु० १५।१६, १९।२५, बवन्ध बालारुणबभ्रु वल्कलम्—कु० ५।८ 2 किसी रोग के कारण गंजे सिर वाला,—भ्रुः 1. आग, 2. नेवला 3. खाकी रंग 4. भूरे बालों वाला 5. एक यादव का नाम–शि० २।४० 6. शिव का विशेषण 7. विष्णु का विशेषण। सम०—धातुः 1. सोना 2. गेरु, सुवर्णगैरिक,—वाहनः चित्रांगदा के गर्भ से उत्पन्न अर्जुन का एक पुत्र, [युधिष्ठिर द्वारा छोड़े गये अश्वमेध के घोड़े की देख-भाल अर्जुन करता था। वह घोड़ा घूमता हुआ मणिपुर देश में चला गया। उस समय वहाँ बभ्रुवाहन राज्य करता था। वह अद्वितीय पराक्रमी था। जब वह घोड़ा उसके पास लाया गया और उसने घोड़े के सिर पर बँधे पट्ट पर 'पांडवों' का नाम पढ़ा तथा यह जाना कि उसके पिता अर्जुन राज्य में आ गए हैं तो शीघ्रता से वह उनके पास गया, बड़े सम्मान, के साथ अपना राज्य और कोष, अश्वसहित उनके सामने प्रस्तुत किया। अर्जुन ने उस बुरे समय में बभ्रुवाहन के सिर पर प्रहार किया और उसकी कायरता के लिए उसे डाँटा, फटकारा और कहा कि यदि वह सच्चा पराक्रमी होता, तथा अर्जुन का सच्चा पुत्र होता तो उसे अपने पिता से डरना नहीं चाहिए था, और न इस प्रकार दीनता दिखलानी चाहिए थी। इन शब्दों से उस वीर युवक को अत्यन्त क्रोध आया, जोश में भरकर उसने अर्जुन पर एक अर्धचन्द्राकार बाण छोड़ा जिससे उसका सिर धड़ से अलग हो गया। संयोगवश उस समय वहाँ चित्रांगदा के पास उलूपी विद्यमान थी, उसने अर्जुन को पुनर्जीवित कर दिया। अर्जुन ने भी बभ्रुवाहन को अपना सच्चा पुत्र मान लिया और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया)।

बम्ब् (भ्वा० पर० बंबति) जाना, चलाना-फिरना।

बम्भरः [भृ+अच्, द्वित्वं मुम् च] मधुमक्खी, भौंरा।

बम्भराली [बम्भर+अल्+अच्+ङीष्] मक्खी।

बरटः [वृ+अटन्, बवयोरभेदः] एक प्रकार का अन्न।

बर्ब् (भ्वा० पर बर्बति) जाना, चलना-फिरना।

बर्बटः (बर्ब्+अटन्) एक प्रकार का अनाज, राजमाष।

बर्बटी [बर्बट+ङीप्] 1. एक प्रकार का अन्न, राजमाष 2. वेश्या, रंडी।

बर्बणा (स्त्री०) नीली मक्खी।

बर्बरः [वृ+अरच्, वुट् बवयोरभेदः] 1. जो आर्य न हो, अनार्य, असभ्य, नीच 2. मूर्ख, बुद्धू—शृणु रे बर्बर —हि० २।

बर्बुरः [बर्ब्+उरच्] एक वृक्ष, बाभल—उपसर्पेम भवन्तं बर्बुर वद कस्य लोभेन—भामि० १।२४।

बर्ह् (भ्वा० आ० बर्हते) 1. बोलना 2. देना 3. ढकना 4. क्षति पहुँचाना मार डालना, नष्ट करना 5. फैलाना, नि—, मार डालना, नष्ट करना—शि० १।२९।

बर्हः,—र्हम् [बर्ह्+अच्] 1. मोर की पूँछ—दवोल्काहतशेषबर्हाः—रघु० १६।१४ (केशपाशे) सति कुसुम सनाथे कं हरेदेष बर्हः—विक्रम० ४।१०, पाठान्तर 2. पक्षी की पूँछ 3. पूँछ का पंख (विशेषकर मोर की) मेघ० ४४, कु० १।१५, शि० ८।११ 4. पत्ता अपाण्डुरं केतकबर्हमन्यः—रघु० ६।१७ 5. अनुचरवर्ग, नौकर-चाकर। सम०—भारः 1. मोर की पूँछ 2. मोरछल, लाठी की मूठ में बंधा मोर के पंखों का गुच्छा।

बर्हणम् [बर्ह्+ल्युट्] पत्ता।

बर्हिः [बर्ह्+इन्] आग—(नपुं०) कुश नामक घास।

बर्हिणः [बर्ह्+इनच्] मोर—आवासवृक्षोन्मुखबर्हिणानि (बनानि) रघु० २।१७, १६।१४, १९।३७। सम० —वाजः मोर के पंख से युक्त बाण,—वाहनः कार्तिकेय का विशेषण।

बर्हिन् (पुं०) [बर्ह+इनि] मोर—रघु० १६।६४, विक्रम० ३।२,४।१०, ऋतु० २।६। सम०—कुसुमम्, —पुष्पम् एक प्रकार का गंधद्रव्य,—ध्वजा दुर्गा का विशेषण,—यानः,—वाहनः कार्तिकेय का विशेषण।

बर्हिस् (पुं०, नपुं०) [बर्ह्+(कर्मणि) इसि] कुश नामक घास—कु० १।६० 2. बिस्तरा या कुशघास का

बिछौना—(पुं०) 1. आग 2. प्रकाश, दीप्ति (नपुं०) 1. जल 2. यज्ञ। सम०—केश.—ज्योतिः (पुं०) आग का विशेषण,—मुखः (बर्हिर्मुखः) 1. आग का विशेषण 2. देवता (जिसका मुख अग्नि है),—शुष्मन् (पुं०) आग का विशेषण,— सद् (बर्हिषद्) (वि०) कुशनामक घास के आसन पर बैठा हुआ (पुं०) पितर (ब० व०)।

बल् i (भ्वा० पर० बलति) 1. सांस सेना, जीना 2. अनाज संग्रह करना ii (भ्वा० उभ० बलति-ते) 1. देना 2. चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना, मार डालना 3. बोलना 4. देखना, चिह्न लगाना। प्रेर०—(बालयति-ते) पालना-पोसना, भरणपोषण करना।

बलम् [बल्+अच्] 1. सामर्थ्य, शक्ति, ताकत, वीर्य, ओज 2. जबरदस्ती, हिंसा जैसा कि 'बलात्' में 3. सेना, चमू, फौज, सैन्यदल—भवेदभीष्ममद्रोणं धृतराष्ट्रबलं कथम्—वेणी० ३।२४,४३, भग० १।१०, रघु० १६।३७ 4. मोटापन, पुष्टि (शरीर की) 5. शरीर, आकृति, रूप 6. वीर्य, शुक्र 7. रुधिर 8. गोंद, रसगंध (लोबान की तरह का सुगंधित गोंद) 9. अंकुर, अँखुवा, (बलेन 'सामर्थ्य के आधार पर', 'की बदौलत'—बाहुबलेन जितः, वीर्यबलेन···, बलात् 'बलपूर्वक' 'जबरदस्ती' 'हिंसापूर्वक' 'इच्छा के विरुद्ध' बलान्निद्रा समायाता—पंच० १, हृदयमदयें तस्मिन्नेवं पुनर्वलते बलात्—गीत० ७),—लः 1. कौवा 2. कृष्ण के बड़े भाई का नाम—दे० नी० 'बलराम' 3. एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मारा था। सम०—अग्रम् अत्यधिक सामर्थ्य, शक्ति (—ग्रः) सेना का प्रधान,—अंगकः वसन्त—हेम० १५६,—अञ्चिता बलराम की वीणा,—अटः एक प्रकार का शहतीर, —अधिक (वि०) सामर्थ्य में बढ़चढ़ कर, अत्यंत बलशाली,—अध्यक्षः 1. सेनापति - मनु० ७।१८२, 2. युद्धमंत्री,—अनुजः कृष्ण का विशेषण,—अन्वित (वि०) सामर्थ्य से युक्त, बलवान्, शक्तिशाली, —अबलम् 1. तुलनात्मक सामर्थ्य और असमर्थता, आपेक्षिक सामर्थ्य तथा दुर्बलता—रघु० १७।५९ 2. आपेक्षिक सार्थकता तथा नगण्यता, तुलनात्मक महत्त्व तथा महत्त्वशून्यता—समय एव करोति बलाबलम्—शि० ६।४४,—अभ्रः बादल के रूप में सेना, —अरातिः इन्द्र का विशेषण,—अवलेपः सामर्थ्य का अभिमान,—अशः,—असः 1. क्षयरोग, तपेदिक 2. कफ का आधिक्य 3. गले में सूजन (आहार नली का अवरोध),—आत्मिका एक प्रकार का सूरजमुखी फूल, हस्तिशुंडी,—आहः पानी,—उपपन्न,—उपेत (वि०) सामर्थ्य से युक्त, मजबूत, शक्तिशाली,—ओघः सैन्यदल का समूह, असंख्य सेना—शि० ५।२,—क्षोभः में अव्यवस्था, गदर, विद्रोह,—चक्रम् 1. उपनिवेश, साम्राज्य 2. सेना, समूह,—जम् 1. नगर का फाटक, मुख्यद्वार 2. खेत 3. अनाज, अन्न का ढेर, शि० १४।७ 4. युद्ध, लड़ाई 5. वसा, मज्जा (—जा) 1. पृथ्वी 2. सुन्दरी स्त्री 3. एक प्रकार की चमेली,—दः बैल, बलीवर्द,—दर्पः शक्ति का अभिमान,—देवः 1. वायु, —हवा 2. कृष्ण के बड़े भाई का नाम—दे० नी० 'बलराम',—द्विष् (पुं०)—निषूदनः इन्द्र के विशेषण —बलनिषूदनमर्थपतिं च तम्—रघु० ९।३,—पतिः 1. सेनापति, सेनानायक 2. इन्द्र का विशेषण,—प्रद (वि०) ताकत देने वाला, बलवर्धक,—प्रसूः बलराम की माता रोहिणी,—भद्रः 1. बलवान् मनुष्य 2. एक प्रकार का बैल 3. बलराम का नाम, दे० नी० 4. लोध्र नामक वृक्ष,—भिद् (पुं०) इन्द्र का विशेषण —श० २,—भृत् (वि०) बलवान्, शक्तिशाली, —रामः 'बलवान् राम' कृष्ण के बड़े भाई का नाम (यह वसुदेव और देवकी का सातवाँ पुत्र था, कंस की क्रूरता का शिकार होने से बचाने के लिए यह रोहिणी के गर्भाशय में स्थानान्तरित कर दिया गया। यह और कृष्ण दोनों का गोकुल में नन्द द्वारा पालन-पोषण किया गया। जब यह बालक ही था तो इसने शक्तिशाली राक्षस धेनुक और प्रलंब को मार गिराया, तथा अपने भाई कृष्ण की भांति अनेक आश्चर्यजनक काम किये। एक बार मदिरा के नशे में जिसका कि वह बहुत शौकीन था यमुना नदी को निकट आने का आदेश दिया जिससे कि वह स्नान कर सके; जब उसकी आज्ञा पर ध्यान नहीं दिया गया तो उसने अपने हल की फाली से यमुना नदी को खींचा; अन्त में यमुना ने मनुष्य का रूप धारण कर उससे क्षमा मांगी। एक दूसरे अवसर पर उसने दीवारों समेत समस्त हस्तिनापुर को अपनी ओर खींचा। जिस प्रकार कृष्ण पांडवों के प्रशंसक थे, उसी प्रकार बलराम कौरवों के प्रशंसक थे जैसा कि उसकी इस बात से प्रकट होता है कि वह अपनी बहन सुभद्रा का विवाह दुर्योधन से करना चाहता था न कि अर्जुन से। इतना होते हुए भी उसने महाभारत के युद्ध में न पांडवों का पक्ष लिया और न कौरवों का। इसका वर्णन नीली वेशभूषा धारण किये हुए 'हल' से जो कि उसका अत्यंत प्रभावशाली शस्त्र था, सुसज्जित किया जाता है। उसकी पत्नी का नाम रेवती था। कई बार इसे शेषनाग का अवतार और कई बार विष्णु का आठवाँ अवतार समझा जाता है—तु० गीत०),—विन्यासः सैन्यदल की व्यूहरचना,—व्यसनम् सेना की हार,—सूदनः इन्द्र का विशेषण,—स्थः योद्धा, सैनिक,—स्थितिः

(स्त्री०) 1. शिविर, पड़ाव 2. राजकीय छावनी, —हन् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—हीन (वि०) बलहीन, दुर्बल, अशक्त ।

बलक्ष (वि०) [बलं क्षायत्यस्मात्–क्षै+क] श्वेत—द्विरदन्तबलक्षमलक्ष्यत स्फुरितभृङ्गमृगच्छवि केतकम् —शि० ६।३४ । सम० – गुः (गो 'किरण' का रूपान्तर) चन्द्रमा—यथानत्यर्जुनाब्जन्मसदृक्षांको बलक्षगुः—काव्या० १।४६, (गौडीयों के प्रसाद गुण का एक उदाहरण) ।

बललः [बल+ला+क] इन्द्र का विशेषण ।

बलवत् (वि०) [बल+मतुप्] 1. मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर—विधिरहो बलवानिति मे मतिः—भर्तृ० २।९१ 2. बलिष्ठ, हट्टा-कट्टा 3. सघन, घिनका (अंधकार आदि) 4. अधिभावी, सर्वप्रमुख, प्रभविष्णु —बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति—मनु० २।२१५ 5. अति महत्त्वपूर्ण, अत्यावश्यक—रघु० १४।४० (अव्य०) 1. मजबूती से, शक्ति के साथ—पुनर्वशित्वाद्बलवद्विगृह्य—कु० ३।६९ 2. अत्यधिक, अत्यंत, अतिशय मात्रा में—बलवदपि शिक्षितामात्मन्यप्रत्ययं चेतः—श० १।२, शीतार्ति बलवदुपेयुषेव नीरैः— शि० ८।६२, श० ५।३१ ।

बला [बल्+अच्+टाप्] शक्तिसंपन्न ज्ञान या मन्त्रयोग (यह योग विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को बतलाया था)—तौ बलातिबलयोः प्रभावतः—रघु० ११।९ ।

बलाकः,–का [बल+अक्+अच्, स्त्रियां टाप् च] बगला, —सेविष्यंते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः— मेघ० ९, मृच्छ० ५।१८, १९,— का प्रिया, कान्ता ।

बलाकिका [बलाका+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटी जाति बगला ।

बलाकिन् (वि०) [बलाका+इनि] बगलों या सारसों से भरा हुआ—कालिकेव निबिड़ा बलाकिनी— रघु० ११।१५, कु० ७।३९ ।

बलात्कारः [बल+अत्+क्विप्=बलात्+कृ०+अण्] 1. हिंसा का प्रयोग करना, बल लगाना 2. सतीत्वनाशन, विनयभंग, बल, अत्याचार, छीनाझपटी—रघु० १०।४७, बलात्कारेण निर्वर्त्य आदि 3. अन्याय 4. (विधि में) उत्तमर्ण द्वारा अधमर्ण को रोकना तथा ऋण की वापसी के लिए बल का प्रयोग करना ।

बलात्कृत (वि०) [बलात्+कृ+क्त] जिसके साथ जबरदस्ती की गई हो या जो परास्त कर दिया गया हो ।

बलाहकः [बल+आ+हा+क्वुन] 1. बादल – बलाहकच्छेदविभक्तरागामकालसन्ध्यामिव धातुमत्ताम्—कु० १।४ 2. एक प्रकार का बगला या सारस 3. पहाड़ 4. प्रलयकालीन सात बादलों में से एक ।

बलिः [बल्+इन्] 1. आहुति, भेंट, चढ़ावा (प्रायः धार्मिक) नीवारबलिं विलोकयतः—श० ४।२०, १।४९ 2. दैनिक आहार (चावल, अनाज तथा घी आदि) में से कुछ अंश का सब जीवों को उपहार, (इसे 'भूतयज्ञ' भी कहते हैं) दैनिक पंच महायज्ञों में से एक, बलिवैश्वदेव यज्ञ (दे० मनु० ३।६।९१) इसका अनुष्ठान घर के द्वार के निकट, भोजन करने से पूर्व दैनिक आहार का कुछ अंश बाहर आकाश में फेंक कर किया जाता है—यासां बलिः सपदि मद्गृहदेहलीनां हंसैश्च सारसगणैश्च विलुप्तपूर्वः —मृच्छ० १।९ 3. पूजा, आराधना—कु० १।६०, मेघ० ५५, श० ४ 4. उच्छिष्ट 5. देवमूर्ति पर चढ़ाया नैवेद्य 6. शुल्क, कर, चुंगी—प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्—रघु० १।१८, मनु० ७।८०, ८।००७, 7. चंवर का डंडा 8. एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम(यह प्रह्लाद के पुत्र विरोचन का पुत्र था, बहुत शक्तिशाली था, देवताओं को अत्यंत पीडित करता था । फलस्वरूप देवताओं ने विष्णु से सहायता की प्रार्थना की । विष्णु ने कश्यप और अदिति का पुत्र बन कर वामन का अवतार धारण किया । उसने साधु का वेश धारण किया । और बलि के पास जाकर उससे तीन पग पृथ्वी मांगी । स्वभाव से उदार बलि न निस्संकोच प्रकट रूप से इस सामान्य प्रार्थना को स्वीकार कर लिया । परन्तु शीघ्र ही वामन ने अपना विराट् रूप दिखलाया और तीन पग मापना शुरु किया । पहले पग से उसने सारी पृथ्वी को आच्छादित कर लिया, दूसरे से समस्त अन्तरिक्ष को और तीसरे पग के लिए स्थान न पाकर उसे बलि के सिर पर रख दिया, और राजा बलि को उसकी असंख्य सेना समेत पाताल लोक भेज कर वहाँ का शासक बना दिया । इस प्रकार विश्व एक बार फिर इन्द्र के शासन में आ गया)—छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुत–वामन–गीत० १, रघु० ७।३५, मेघ० ५७, – लिः (स्त्री०) तह, झुर्री (प्रायः 'वलि' लिखा जाता है) । सम० – कर्मन् (नपुं०) 1. सब जीवजन्तुओं को भोजन देना 2. कर अदायगी,– दानम् 1. देवता को नैवेद्य अर्पण करना 2. सब जीव जंतुओं को भोजन देना,— ध्वंसिन् (पुं०) विष्णु का अवतार,— नन्दनः - पुत्रः, सुतः बलि के पुत्र बाण का विशेषण,— पुष्टः,–भोजनः कौवा,–प्रियः लोध्र वृक्ष,–बन्धनः विष्णु का विशेषण,— भुज् (पुं०) 1. कौवा 2. चिड़िया 3. बगला या सारस,—मन्दिरम्, — वेश्मन् – सद्मन् (नपुं०) पाताल लोक, बलि का आवासस्थान,— व्याकुल (वि०) पूजा में अथवा सब जीव जन्तुओं को भोजन देने वाला मेघ० ८५–हन् (पुं०) विष्णु का विशेषण,— हरणम् सब जीव जन्तुओं को भोजन देना ।

बलिन् (वि०) [बल+इनि] मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, रघु० १६।३७, मनु० ७।१७४—(पुं०) 1. भैंसा 2. सूअर 3. ऊँट 4. सांड़ 5. सैनिक 6. एक प्रकार की चमेली 7. कफात्मक वृत्ति 8. बलराम का विशेषण।

बलिन, बलिभ [वलि+न, भ वा, बवयोरभेदः] दे० 'वलिन -भ'।

बलिन्दमः [बलि+दम्+खच्, मुम्] विष्णु का विशेषण।

बलिमत् (वि०) [बलि+मतुप्] 1. पूजा या आहुति की सामग्री तैयार रखने वाला --रघु० १४।१५ 2. कर उगाहने वाला।

बलिमन् (पुं०) [बल+इमनिच्] सामर्थ्य, ताकत, शक्ति।

बलिवर्द दे० बलीवर्द।

बलिष्ठ (वि०) [बलवत् (बलिन्)+इष्ठन्] अत्यन्त बलशाली, अत्यन्त मजबूत, अतिशय शक्तिशाली, —ष्ठः ऊँट।

बलिष्णु (वि०) [बल्+इष्णुच्] अपमानित, अनादृत, तिरस्कृत।

बलीकः [बल्+ईकन्] छप्पर की मुंडेर।

बलीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [बलवत् (बलिन्+ईयसुन्] 1. अपेक्षाकृत मजबूत, अधिक शक्तिशाली 2. अधिक प्रभावी 3. अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण।

बली (री) वर्दः [वृ+क्विप्=वर्, ई वश्च=ईवरौ, तौ ददाति—दा+क, ईवर्दः, बली चासो ईवर्दश्च कर्म० स०] साँड़, बैल —गोरपत्यं पुमान् वलीवर्दः।

बल्य (वि०) [बल+यत्] 1. मजबूत, शक्तिशाली 2. शक्तिप्रद,—ल्यः बौद्ध भिक्षु,—ल्यम् वीर्य, शुक्र।

बल्लवः [बल्ल्+अच् तं वाति वा+कः] 1. ग्वाला —कुञ्जेष्वाक्रांत वीरुन्निचयपरिचया बल्लवाः संचरन्तु —वेणी० ६।२, शि० ११।८ 2. रसोइया 3. विराट के यहाँ भीम का नाम जब वह रसोइये का कार्य करता था,—वी ग्वालिन—कि० ४।१७। सम० —युवतिः,-ती (स्त्री०) जवान ग्वालिन (गोपी) हरिविरहाकुलबल्लवयुवतिसखीवचनं पठनीयम् —गीत० ४।

बल्वजः—जा [?] एक प्रकार का मोटा घास—मनु० २।४३।

बल्हिकाः, बल्हीकाः (ब० व०) एक (बलख) देश का तथा उसके अधिवासियों का नाम।

बष्कय (वि०) [बष्क्+अयन्] बछड़ा (एक वर्ष का बछड़ा)।

बष्कय (यि) णी (नी) (स्त्री०) [बष्कय+इनि+ङीप्] 1. वह गाय जिसका बछड़ा पूरा बढ़ गया हो—नै० १६।९२ 2. बहुप्रसवी गाय (जिसके बहुत बछड़े पैदा हुए हैं)।

बस्तः [बस्त्+घञ्] बकरा। सम०—कर्णः साल वृक्ष।

बहल (वि०) [बह्+अलच्] 1. अत्यधिक, यथेष्ट, प्रचुर, पुष्कल, बहुविध, महान्, मजबूत—उत्तर० १।३८, ३।२३, शि० ९।८, भामि० ४।२७ 2. घिनका, सघन 3. लोमश (पूंछ की भांति)—मा० ३ 4. कठोर, दृढ़, सटा हुआ,—लः एक प्रकार का इक्षुरस, ईख, गन्ना, —ला बड़ी इलायची। सम०—गन्धः एक प्रकार का चंदन।

बहिस् (अव्य०) [बह्+इसुन्] 1. में से, बाहर (अपा० के साथ)—निवसन्नावसथे पुराद्बहिः—रघु० ८।१५, ११।२९ 2. बाहर की ओर, दरवाजे के बाहर (विप० अन्तः) बहिर्गच्छ 3. बाह्यतः, बाहर की ओर से—अन्तर्बहिः पुरत एव विवर्तमानाम्—मा० १।४०, १४—हि० १।९४ (बहिष्कृ 1. बाहर की ओर रखना, से निकालना, हांक कर बाहर कर देना—मनु० ८।३८०, याज्ञ० १।९३ 2. जाति से बाहर करना, बहिर्गम्, —या,—इ बाहर जाना, चले जाना)। सम०—अङ्ग (वि०) बाहर का, बाहर की ओर का (गम्) 1. बाहरी भाग 2. बाहरी अंग,—उपाधिः (बहिरुपाधिः) बाहरी दशा या परिस्थिति—मा० १।२४,—चर (वि०) बाहर का, बाहर की ओर का, बाहर की तरफ का—बहिश्चराः प्राणाः—दश०,—द्वारम् बाहर का दरवाजा, दहलीज।

बहु (वि०) (स्त्री०—हु,—ह्वी) [बंह्+कु नलोपः—म० अ०—भूयस्, उ० अ०—भूयिष्ठ] 1. अधिक, पुष्कल, प्रचुर, बहुत—तस्मिन् बहु एतदपि—श० ४, 'यह भी उसके लिए अधिक था' (इतना अधिक जितने की उससे अपेक्षा न की जा सके)—बहु प्रष्टव्यमत्र —मुद्रा० ३, अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्—रघु० २।४७ 2. अनेक, असंख्य—यथा 'बह्वक्षर' और 'बहु प्रकार' में 3. बार-बार किया गया, दोहराया गया 4. बड़ा, विशाल 5. भरापूरा, समृद्ध (समास के प्रथम पद के रूप में)—बहुकण्टको देशः—आदि—(अव्य०) अति, बहुतायत से, अत्यधिक, अत्यंत, अतिशयपूर्वक, बड़े परिमाण में 2. कुछ, लगभग, प्रायः जैसा कि 'बहुतृण' में (किं बहुना अधिक, कहने से क्या लाभ ? 'संक्षेप में' बहुमन् बहुत सोचना, बहुत मानना, ऊँचा मूल्य लगाना, बहुमूल्य मानना, कद्र करना—त्वत्संभावितमात्मानं बहु मन्यामहे वयम्—कु० ६।२०, ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव—श० ४।६, ७।१, रघु० १२।८९ भग० २।३५, भट्टि० ३।५३, ५।८४, ८।१२)। सम०—अक्षर (वि०) अनेक अक्षरों वाला, (शब्द) बहुत से अक्षरों से बना हुआ,—अच्,—अच्क (वि०) अनेक स्वरों से युक्त, बहुत स्वरों वाला,—अप्,—अपं (वि०) जलयुक्त,—अपत्य (वि०) अनेक संतानों से युक्त (त्यः) 1. सूअर 2. मूसा,

चूहा, (स्या) वह गाय जिसके बहुत बछड़े बछड़ियाँ हैं,—अर्थ (वि०) 1. अनेक अर्थों से युक्त 2. बहुत से उद्देश्य रखने वाला 3. महत्त्वपूर्ण,—आशिन् (वि०) बहुभोजी, पेटू,—उदकः एक प्रकार का भिक्षु जो अज्ञात नगर में निवास करता है तथा घर घर भिक्षा मांग कर अपना निर्वाह करता है—तु० 'कुटीचक', —उपाय (वि०) प्रभावी, क्रियावान्,—ऋच् (वि०) अनेक ऋचाओं से युक्त, (स्त्री०) ऋग्वेद का नामान्तर, —एनस् (वि०) अति पापमय,—कर (वि०) अति-क्रियाशील, व्यस्त, उद्योगी, (रः) 1. भङ्गी, झाड़ू देने वाला 2. ऊँट, (री) झाड़ू,—कालम् (अव्य०) बहुत देर तक,—कालीन (वि०) बहुत समय का, पुराना, प्राचीन, —कूर्चः एक प्रकार का नारियल का पेड़,—गन्धदा कस्तूरी, मुश्क,—गन्धा 1. यूथिका लता 2. चंपाकली, —गुण (वि०) 1. अनेक सद्गुणों से युक्त 2. कई प्रकार का, तरह-तरह का 3. अनेक धागों से युक्त, —जल्प (वि०) बहुभाषी, मुखर, वाचाल,—ज्ञ (वि०) बहुत जानकारी रखने वाला, अच्छा जानकार, सुविज्ञ, —तृणम् कोई पदार्थ जो बहुधा घास की भांति हो अतः महत्त्वशून्य या तिरस्करणीय हो—निदर्शनमसाराणां लघुर्बहुतृणं नरः—शि० २।५०,—त्वक्कः,—त्वच् (पुं०) एक प्रकार का भोजवृक्ष,—दक्षिण (वि०) 1. जिसमें बहुत दान और उपहार प्रस्तुत किया जाय 2. उदार, दानशील,—दायिन् (वि०) उदार, दानशील, उदारतापूर्वक दान देने वाला,—दुग्ध (वि०) बहुत दूध देने वाला, (ग्धः) गेहूँ, (ग्धा) बहुत दूध देने वाली गाय,—दृश्वन् (वि०) बड़ा अनुभवी, जिसने बहुत देखा सुना हो,—दोष (वि०) 1. जिसमें अनेक दोष हों, बहुत सी त्रुटियाँ हों, अतिदुष्ट पापपूर्ण 2. अपराधों से युक्त, भयदायी—बहुदोषा हि शर्वरी—मृच्छ० १।५८,—धन (वि०) बहुत धनी, धनाढ्य,—धारम् इन्द्र का वज्र,—धेनुकम् दूध देने वाली गौओं की बड़ी संख्या,—नादः शंख,—पत्रः प्याज, (त्रम्) अभ्रक, (त्री) तुलसी का पौधा,—पद्,—पाद्,—पादः (पुं०) बड़ का वृक्ष,—पुष्पः 1. मूंगे का पेड़ 2. नीम का वृक्ष,—प्रकार (वि०) बहुत प्रकार का, नाना प्रकार का, विविध प्रकार का,—प्रज (वि०) बहुत सन्तान वाला, अनेक बच्चों वाला, (जः) 1. सूअर 2. मूंज-एक घास,—प्रतिज्ञ (वि०) 1. नाना प्रकार की उक्ति और वाक्यों से युक्त, पेचीदा 2. (विधि में) अभियोग पत्र के रूप में जहाँ कई प्रकार का शुल्क लगे,—प्रद (वि०) अत्यन्त उदार, उदार, दाता,—प्रसूः अनेक बच्चों की माँ, प्रेयसी (वि०) जिसके बहुत से प्रेमी हों,—फल (वि०) फलों से समृद्ध, (लः) कदम्ब का वृक्ष,—बलः सिंह, —भाषिन् (वि०) मुखर, वाचाल,—मञ्जरी तुलसी का पौधा,—मत (वि०) बहुत माना हुआ, मूल्यवान्, कीमती, सम्मानित,—मतिः (स्त्री०) बड़ा मूल्य, या मूल्यांकन—कि० ७।१५,—मलम् सीसा,—मानः बड़ा सम्मान या आदर, ऊँचा मूल्यांकन,—पुरुषबहुमानो विगलितः—भर्तृ० ३।९, वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमानः—मालवि० १, विक्रम० ११२, कु० ५।३१, (नम्) उपहार जो बड़ों द्वारा छोटों को दिया जाय,—मान्य (वि०) आदरणीय, माननीय,—माय कलामय, छलयुक्त, द्रोही—पंच० १।३२१,—मार्गगा गंगा—रत्न० १।३,—मार्गी जहाँ बहुत सी सड़कें मिलती हों,—मूत्र (वि०) मधुमेह रोग से पीडित,—मूर्धन् (वि०) विष्णु का विशेषण, —मूल्य (वि०) मूल्यवान्, ऊँची कीमत का,—मृग (वि०) जहाँ बहुत से मृग हों,—रत्न (वि०) रत्नों से समृद्ध,—रूप (वि०) 1. अनेक रूपी, बहुरूपी, विश्वरूपी 2. चितकबरा, धब्बेदार, रंगविरंगा या चारखानेदार, (पः) 1. छिपकली, गिरगिट 2. बाल 3. सूर्य, 4. शिव 5. विष्णु 6. ब्रह्मा 7. कामदेव, —रेतस् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण,—रोमन् (वि०) बहुलोमी, रोंएदार (पुं०) भेड़,—लवणम् लुनिया धरती,—वचनम् (व्या० में) एक से अधिक वस्तुओं का ज्ञान कराने का प्रकार,—वर्ण (वि०) बहुरंगी, रंगविरंगा,—वार्षिक (वि०) बहुत वर्षों तक रहने वाला,—विघ्न (वि०) अनेक कठिनाइयों से युक्त, नाना विघ्नबाधाओं से भरा हुआ,—विध (वि०) अनेक प्रकार का, तरह-तरह का, विविध प्रकार का, —वी(बी)जम् शरीफा,—व्रीहि (वि०) बहुत चावलों वाला—तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः—उद्भट (यहाँ यह समास का नाम भी है), (हिः) संस्कृत के चार मुख्य समासों में एक (इसमें दो पद पास-पास रख दिये जाते हैं, विशेषणात्मक पद (चाहे वह संज्ञा हो या विशेषण) को पहले रखते हैं, जो दूसरे पद को विशेषित करता है, परन्तु वह दोनों पद पृथक्-पृथक् अभीष्ट अर्थ का प्रतिपादन नहीं करते, बल्कि मिलकर एक अन्य अर्थ द्योतक शब्द का निर्माण होता है। यह समास विशेषणपरक होता है। परन्तु कभी-कभी इसका प्रयोग संज्ञाओं की भांति किया जाता है जहाँ यह किसी विशिष्ट व्यक्ति के अर्थ में संनियंत्रित होता है उदा० चक्रपाणि, शशिशेखर, पीतांबर, चतुर्मुख, त्रिनेत्र, कुसुमशर आदि,—शत्रुः गोरैया चिड़िया,—शल्यः खदिरवृक्ष का एक भेद,—शृङ्गः विष्णु का विशेषण, —श्रुत (वि०) 1. विज्ञ पुरुष, प्रविद्वान्—हि० १।१, पंच० २।१, रघु० १५।३६ 2. वेदों का जानकार —मनु० ८।३५०,—सन्तति (वि०) अनेक बाल-बच्चों

वाला (तिः) एक प्रकार का बाँस,—सार (वि०) बहुत अधिक मज्जा या रस से युक्त, सारयुक्त, (रः) खदिरवृक्ष, खैर,—सूः 1. अनेक बच्चों की माँ 2. शूकरी, सरी,—सूतिः (स्त्री०) 1. अनेक बच्चों की माँ 2. बहुत बार ब्याने वाली गाय,—स्वन (वि०) कोलाहलपूर्ण (नः), उल्लू,—स्वामिक (वि०) जिसके स्वामी अनेक हों।

बहुक (वि०) [बहु+कन्] महंगा खरीदा हुआ, कः 1. सूर्य 2. मदार का पौधा 3. केकड़ा 4. एक प्रकार का जलकुक्कुट।

बहुतर (वि०) [बहु+तरप्] अपेक्षाकृत असंख्य, अधिक, ज्यादह।

बहुतम (वि०) [बहु+तमप्] अत्यन्त अधिक, अतिशय।

बहुतः (अव्य०) [बहु+तस्] नाना पार्श्वों से, कई तरफ से।

बहुता,-त्वम् [बहु+तल्+टाप्, त्व वा] बहुतायत, प्राचुर्य, असंख्यता।

बहुतिथ (वि०) [बहु+तिथुक्] ज्यादह, अधिक, अनेक—काले गते बहुतिथे—श० ५।३, तस्य भुवि बहुतिथास्तिथयः कि० १२।२।

बहुधा (अव्य०) [बहु+धाच्] 1. कई प्रकार से, विविध प्रकार से, बहुत तरह से—बहुधाप्यागमैर्भिन्नाः—रघु० १०।२६, भग० १३।४ 2. भिन्न-भिन्न रूप से या रीतियों से 3. बारंबार, दोहराकर 4. विविध स्थानों या दिशाओं में।

बहुल (वि०) [बंह्+कुलच्, नलोपः] (म० अ०—बंहीयस्, उ० अ०—बंहिष्ठ) 1. घिनका, सघन, सटा हुआ 2. विशाल, विस्तृत, आयत, विपुल, बड़ा 3. प्रचुर, यथेष्ट, पुष्कल, अधिक, असंख्य—अविनयबहुलतया - का० १४३ 4. अनेक, बहुत प्रकार का, अनगिनत मा० ९।१८ 5. भरापूरा, समृद्ध, प्रभूत—जन्मनि क्लेशबहुले किं नु दुःखमतः परम्—हि० १।१८४, भग० २।४३ 6. संयुक्त, संलग्न 7. कृत्तिका नक्षत्र में जिसका जन्म हुआ है 8. काल,—लः 1. मास का कृष्णपक्ष,—प्रादुरासबहुलक्षपाछविः—रघु० ११।१५, करेण भानोर्बहुलावसाने संधुक्ष्यमाणेव शशाङ्करेखा कु० ७।८,४।१३ 2. अग्नि का विशेषण,—ला 1. गाय 2. इलायची 3. नील का पौधा 4. (ब० व०) कृत्तिकानक्षत्र, लम् 1. आकाश सफेद मिर्च, (बहुलीकृ) 1. प्रकाशित करना, खोलना, भंडाफोड़ करना 2. सघन या सटाकर बनाना शि० १३।४४ 3. बढ़ाना, विस्तार करना, वृद्धि करना -भूतेषु किं च करुणां बहुलीकरोति—भामि० १। १२२ 4. फटकना, बहुलीभू 1. फैलाना, विस्तृत करना, गुणा करना—छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति -पंच० २।१७५ 2. दूर तक फैलना, प्रकाशित होना, बदनाम होना, सुविदित होना, दूर दूर तक फैल जाना —बहुलीभवन्तं.......सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे—रघु० १४।३८)। सम०—आलाप (वि०) बातूनी, वाचाल, मुखर,—गन्धा इलायची।

बहुलिका (स्त्री०—ब० व०) कृत्तिकानक्षत्र।

बहुशः (अव्य०) [बहु+शस्] 1. अत्यंत, बहुतायत के साथ, अत्यधिकता के साथ—मेघ० १०६ 2. बार बार, दोहरा कर, मुहुर्मुहुः—चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम्—श० १।२३, कु० ४।३५ 3. साधारणतः, सामान्य रूप से।

बाकुलम् [बकुल+अच्] बकुल वृक्ष का फल।

बाड् (भ्वा० आ० बाडते) 1. स्नान करना 2. गोता लगाना।

बाडवः [वडवा+अण्, बवयोरभेदः] दे० 'वाडव'।

बाडवेय (वि०) [वडवा+ढक्] दे० 'वाडवेय'।

बाडव्यम् [वाडव+यत्] दे० 'वाडव्यम्'।

बाढ (वि०) [वह्+क्त नि० साधुः] (म० अ०—साधीयस्, उ० अ० साधिष्ठ) 1. दृढ़, मजबूत 2. ऊँचे स्वर का,—ढम् (अव्य०) 1. यक़ीनन, निश्चय ही, अवश्य, वस्तुतः, हाँ (प्रश्न के उत्तर के रूप में) —चाणक्यः—चन्दनदास, एष ते निश्चयः, चन्दनदासः—बाढम्, एष मे स्थिरो निश्चयः—मुद्रा० १, बाढमेषु दिवसेषु पार्थिवः कर्म साधयति पुत्रजन्मने—रघु० १९।५२ 2. बहुत अच्छा, तथास्तु, शुभम् 3. अत्यंत, बहुत ज्यादह—शि० ९।७७।

बाणः [वण्+घञ्] तीर, बाण, शर—धनुष्यमोघं समधत्त बाणम्—कु० ३।६६ 2. तीर का निशाना, बाण का लक्ष्य 3. तीर का पंखयुक्त भाग 4. गाय का ऐन या औड़ी 5. एक प्रकार का पौधा (नीलझिंटी भी)—विकचबाणदलावलयोऽधिकं रुचिरे रुचिरेक्षणविभ्रमाः शि० ६।४६ 6. एक राक्षस का नाम, बलि का पुत्र—तु० उषा 7. एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में राजा हर्षवर्धन के दरबार में विद्यमान था (दे० परिशिष्ट २), उसने कादंबरी, हर्षचरित तथा और कई पुस्तकें लिखीं (आर्या० के ३७ वें श्लोक में गोवर्धन ने बाण के विषय में निम्नांकित कहा है—जाता शिखण्डिनी प्राग्यथा शिखण्डी तथावगच्छामि, प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं वाणी बाणो बभूवेति। इसी प्रकार—हृदयवसतिः पञ्चबाणस्तु बाणः—प्रस० १।२२) 1. 'पाँच' की संख्या के लिए प्रतीकात्मक उक्ति। सम०—असनम् धनुष,—आवलिः,—ली (स्त्री०) 1. बाणों की श्रेणी 2. एक वाक्य में अन्वित पाँच श्लोकों का एक कुलक, —आश्रयः तरकस,—गोचरः बाण का परास,—जालम्

बाणों का समूह,—जित् (पुं०) विष्णु का विशेषण, —तूणः,—धिः तरकस,—पन्थः बाण का परास,—पाणि (वि०) बाणों से सुसज्जित,—पातः 1. तीर की मार (दूरी की माप) 2. तीर की परास,—मुक्तिः,—मोक्षणम् बाण मारना, तीर छोड़ना,—योजनम् तरकस,—वृष्टिः (स्त्री०) तीरों की बौछार,—वारः वक्षस्त्राण, कवच, उरस्त्राण—तु० वारबाणः,—सुताः बाण की पुत्री ऊषा का विशेषण, दे० उषा,—हन् (पुं०) विष्णु का विशेषण।

बाणिनी [बाण+इनि+ङीप्] दे० वाणिनी।

बादर (वि०) (स्त्री०—री) [बदर+अण्] 1. बेर के वृक्ष से प्राप्त या संबद्ध 2. रूई का बना हुआ,—रः रूई का पौधा, बाड़ी,—रम् 1. बेर 2. रेशम 3. पानी 4. रूई का वस्त्र 5. दक्षिणावर्त शंख,—रा कपास का पेड़।

बादरायणः [बदरी+फक्] वेदान्त दर्शन के शारीरक सूत्रों का प्रणेता बादरायण (जिसे प्रायः व्यास का नामान्तर माना जाता है)। सम०—सूत्रम् वेदान्त दर्शन के सूत्र,—सम्बन्धः कल्पित या दूर का सम्बन्ध (आधुनिक रूप)।

बादरायणिः [बादरायण+इञ्] व्यास का पुत्र शुक।

बादरिक (वि०) (स्त्री०—की) [बदर+ठञ्] बेर एकत्र करने वाला।

बाध् (भ्वा० आ० बाधते, बाधित] 1. तंग करना, उत्पीडित करना, सताना, अत्याचार करना, छेड़ना, कष्ट देना, दुःखी करना, परेशान करना, पीड़ा देना - ऊनं न सत्त्वेष्वधिको बबाधे --रघु० २।१४, न तथा बाधते स्कन्धो यथा बाधति बाधते--सुभा०, मेघ० ५३, मनु० ९।२२९, १०।१२२, भट्टि० १४।४५ 2. मुकाबला करना, विरोध करना, निष्फल करना, रोकना, रुकावट डालना, अवरोध करना, हस्तक्षेप करना —कि० १।११, उत्तर० ५।१२ 3. आक्रमण करना, हमला करना, धावा बोलना 4. अनुचित व्यवहार करना, अन्याय करना 5. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 6. हांक कर दूर करना, पीछे ढकेलना, हटाना 7. स्थगित करना, एक ओर रखना, रद्द करना, तोड़ना, मिटाना (नियम आदि) —रघु० १७।५७, अभि , 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2. दुःख देना, तंग करना, सताना, आ, दुःख देना, सताना, क्षति पहुँचाना, परि --,कष्ट देना, पीडा पहुँचाना —श० ७।२५, प्र —,1. कष्ट देना, सताना, तंग करना, चिढ़ाना, क्षति पहुँचाना - समुच्छ्रितानेव तरून् प्रबाधते (प्रभञ्जनः) हि० १, भट्टि० १२।२ 2. हांक कर दूर हटाना, मिटाना, पार करना—कथं नु दैवं शक्येत पौरुषेण प्रबाधितुम्—महा०, सम्—,कष्ट देना, सताना।

बाधः,—धा [बाध्+घञ्] 1. पीडा, यातना, कष्ट, सन्ताप—रजन्या सह जृम्भते मदनबाधा—विक्रम० ३ 2. रुकावट, छेड़छाड़, परेशानी—इति भ्रमरबाधां निरूपयति—श० १ 3. हानि, क्षति, घाटा, चोट —चरणस्य बाधा—मालवि० ४, याज्ञ० २।१५६ 4. भय, खतरा 5. मुकाबला, विरोध 6. आपत्ति 7. प्रत्याख्यान, निराकरण 8. स्थगन, रद्द करना 9. अनुमान प्रक्रिया में त्रुटि, हेत्वाभास के पांच रूपों में से – दे० नी० 'बाधित'। सम०—अपवादः अपवाद का खण्डन।

बाधक (वि०) (स्त्री०—धिका) [बाध्+ण्वुल्] 1. कष्ट देने वाला, सताने वाला, उत्पीडक 2. छेड़छाड़ करने वाला, परेशान करने वाला 3. उन्मूलन 4. बाधा डालने वाला।

बाधनम् [बाध्+ल्युट्] 1. तंग करना, उत्पीडन, परेशान करना, अशान्ति, पीडा—श० १ 2. मिटाना 3. हटाना, स्थगन 4. निराकरण, प्रत्याख्यान,—ना पीडा, कष्ट, चिन्ता, अशान्ति।

बाधित (भ० क० कृ०) [बाध्+क्त] 1. तंग किया हुआ, उत्पीडित, परेशान 2. पीडित, सन्तप्त, कष्टग्रस्त 3. विरुद्ध, अवरुद्ध 4. रोका हुआ, प्रगृहीत 5. एक ओर रक्खा गया, स्थगित 6. निराकृत 7. (तर्क० में) खण्डित, विवादग्रस्त, असंगत (फलतः व्यर्थ)।

बाधिर्यम् [बधिर+ष्यञ्] बहरापन।

बान्धकिनेयः [बन्धकी+ढक्, इनङादेशः] दोगला, वर्णसंकर।

बान्धवः [बन्धु+अण] 1. रिश्तेदार, संबंधी—यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः—हि० १, मनु० ५।७४, १०१, ४।१७९ 2. मातृपरक रिश्तेदार 3. मित्र—धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके—सुभा० 4. भाई। सम०—जनः, रिश्तेदार, बन्धु-बांधव—दारिद्र्यात्पुरुषस्य बान्धवजनो वाक्ये न संतिष्ठते—मृच्छ० १।३६, पंच० ४।७८।

बान्धव्यम् [बान्धव+ष्यञ्] सगोत्रता, रिश्तेदारी।

बाभ्रवी [बभ्रु+अण्+ङीप्] दुर्गा का विशेषण।

बार्बटीरः [?] 1. आम का गूदा 2. जस्त 3. नया अंकुर 4. वेश्या का पुत्र।

बार्ह (वि०) (स्त्री०—र्ही) [बर्ह+अण्] मोर की पूंछ के चंदवों से बना हुआ।

बार्हद्रथ, बार्हद्रथिः [बृहद्रथ+अण्, इञ् वा] राजा जरासंध का पितृपरक नाम।

बार्हस्पत (वि०) (स्त्री०—ती) [बृहस्पति+अण्] बृहस्पति से संबद्ध, बृहस्पति की सन्तान या बृहस्पति को प्रिय।

बार्हस्पत्य (वि०) [बृहस्पति+यक्] बृहस्पति से संबंध रखने वाला,—त्यः 1. बृहस्पति का शिष्य 2. भौतिक-वाद के उग्ररूप के शिक्षक बृहस्पति का अनुयायी, भौतिकवादी,—त्यम् पुण्यनक्षत्र ।

बार्हिण (वि०) (स्त्री०—णी) [बर्हिन्+अण्] मोर से संबद्ध या उत्पन्न ।

बाल (वि०) [बल्+ण या बाल+अच्] 1. बच्चा, शिशु-वत्, अवयस्क, स्याना—बालेन स्थविरेण वा—मनु० ८।७०, बालाशोकमुपोढरागसुभगं भेदोन्मुखं तिष्ठति —विक्रम० २।७, इसी प्रकार-बालमन्दारवृक्षः—मेघ० ७५, रघु० २।४५, १३।२४ 2. नया उगा हुआ, बाल (रवि या अर्क)—रघु० १२।१००, 3. नूतन, वर्धमान (चन्द्रमा)—पुपोष वृद्धि हरिदीधितेरनुप्रवेशादिव बालचन्द्रमाः—रघु० ३।२२, कु० ३।२९ 4. बालिश 5. अनजान, अबोध,—लः 1. बालक, शिशु-बालादपि सुभाषितं ग्राह्यम्—मनु० २।२३९ 2. बालक, युवा, तरुण 3. अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का)—बाल आषोडशाद्वर्षात्—नारद 4. बछेरा, अश्वक 5. मूर्ख, भोंदू 6. पूंछ 7. बाल 8. पांच वर्ष का हाथी 9. एक प्रकार का गन्धद्रव्य । सम०—अग्रम् बाल की नोक, —अध्यापकः बच्चों का शिक्षक,—अभ्यासः बाल्यावस्था में अध्ययन, (अध्ययन में) शीघ्र लगाना, अरुण (वि०) प्रभातकालीन उषा की भाँति लाल, (णः) प्रभातकालीन उषा,—अर्कः नवोदित सूर्य—रघु० १२। १००,—अवबोधः बच्चों की शिक्षा,—अवस्थ (वि०) तरुण, नवयुवक—विक्रम० ५।१८,—अवस्था बचपन, —आतपः प्रातःकालीन धूप,—इन्दुः नया बढ़ता हुआ चन्द्रमा—कु० ३।२९,—इष्टः बेरी, बेर का पेड़, —उपचारः (आयु०) बच्चों की चिकित्सा,—उपवीतम् लंगोटी, रुमाली,—कदली केले का नया पौधा,—कुन्दः, —दम् एक प्रकार की नई चमेली (—दम्) चमेली की नई खिली हुई कली—अलके बालकुन्दानुविद्धम् —मेघ० ६५,—कृमिः जूं,—कृष्णः बालक के रूप में कृष्ण,—क्रीडनम् बच्चे का खिलौना या खेल,—क्रीडनकम् बच्चे का खिलौना, (—कः) 1. गेंद 2. शिव का विशेषण,—क्रीडा बच्चों का खेल, बालकों या तरुणों का खेल,—खिल्यः ब्रह्मा के रोम से उत्पन्न, अंगूठे के समान आकारवाली दिव्य मूर्तियाँ (जो गिनती में साठ हजार समझी जाती हैं)—तु० रघु० १५।१०, —गर्भिणी पहली बार गाभिन हुई गाय,—गोपालः "तरुण ग्वाला' बालगोपाल के रूप में कृष्ण का विशेषण,—ग्रहः बालकों को पीडा पहुँचाने वाला पिशाच (या उपग्रह),—चन्द्रः—चन्द्रमस् (पुं०) दूज का चाँद, बढ़ता हुआ चाँद—मा० २।१०,—चरितम् 1. तरुणों के खेल 2. बाललीला, बाल्यजीवन के कारनामें—उत्तर० ६,—चर्यः कार्तिकेय का नाम, (र्या) बच्चे का व्यवहार, —ज (वि०) बालों से उत्पन्न,—तनयः खदिर का वृक्ष, खैर,—तन्त्रम् धात्रीकर्म,—तृणम् नई दूब, हरी घास,—बलकः खैर,—धिः बालों वाली पूंछ—शि० १२।७३, कि० १२।४७,—पाश्या 1. बालों की माँग में पहने जाने के योग्य आभूषण 2. बालों की चोटी में धारण की जाने वाली मोतियों की लड़ियाँ,—पुष्पिका, —पुष्पी एक प्रकार की चमेली, बोधः 1. बच्चों की शिक्षा 2. अनुभवशून्य नये बालकों की शक्ति के अनुसार कोई कार्य,—भक्षकः एक प्रकार का विष,—भारः बालों से भरी हुई लम्बी पूँछ—बाधेतोल्काक्षपितचमरी बालभारो दवाग्निः—मेघ० ५३,—भावः बचपन, बाल्या-वस्था,—भैषज्यम् एक प्रकार का अंजन,—भोज्यः मटर, —मृगः मृग छौना, यज्ञोपवीतकम् वक्षःस्थल के ऊपर से पहने जाने वाला जनेऊ,—राजम् वैदूर्यमणि, नीलम्, —रोगः बच्चों का रोग,—लता नूतन बेल—रघु० २।१०,—लीला बच्चों के खेल, बालकों का मनोविनोद, —वत्सः 1. नन्हा बछड़ा 2. कबूतर,—वायजम् वैदूर्यमणि नीलम,—वासस् (नपुं०) ऊनी वस्त्र,—वाह्यः जंगली बकरा,—विधवा बाल्यावस्था में ही जिसका पति मर गया हो, व्यजनम् चंवर, चौरी (सुरागाय के बालों से बनी चौरी जो एक प्रकार का राजचिह्न है)—रघु० ९।६६, १४।११, १६।३३, ५७, कु० १।१३,—सखिः बाल्यावस्था से बना मित्र, बचपन का दोस्त,—संध्या झुटपुटा,—सुहृद् (पुं०) बचपन का मित्र,—सूर्यः, —सूर्यकः वैदूर्यमणि, नीलम,—हत्या बच्चे की हत्या, —हस्तः बालों वाली पूँछ ।

बालक (वि०) (स्त्री०—लिका) [बाल+कन्] 1. बच्चों जैसा, नन्हा, अवयस्क 2. अनजान,—कः 1. बच्चा, बाल 2. अवयस्क (विधि में) 3. अँगूठी 4. मूर्ख या बुद्धू 5. कड़ा, कंकण 6. हाथी या घोड़े की पूँछ,—कम् अँगूठी । सम०—हत्या, बच्चे की हत्या ।

बाला [बाल+टाप्] 1. लड़की, कन्या 2. सोलह वर्ष से कम आयु की युवती 3. तरुणी, युवती,—जानें तपसो वीर्यं सा बाला परवतीति मे विदितम्—श० ३।१, इयं बाला मां प्रत्यनवरतमिन्दीवरदलप्रभाचोरं चक्षुः क्षिपति—भर्तृ० ३।६७, मेघ० ८३ 4. चमेली का एक भेद 5. नारियल 6. घृतकुमारी का पौधा 7. इलायची 8. हल्दी । सम०—हत्या स्त्रीहत्या ।

बालिः [बल्+इन्] एक प्रसिद्ध बानरराज का नाम—दे० 'वालि'। सम०—हन्—हन्तृ (पुं०) राम का विशेषण ।

बालिका [बाला+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. लड़की 2. कान की बाली को घुंडी 3. छोटी इलायची 4. रेत 5. पत्तों की सरसराहट ।

बालिन् (पुं०) [वाल+इनि] एक बानर का नाम—दे० 'वालि'।

बालिनी [वालिन्+ङीप्] अश्विनी नक्षत्र।

बालिमन् (पुं०) [वाल+इमनिच्] बचपन, बाल्यावस्था, लड़कपन।

बालिश (वि०) [वाडिं श्यति, बाडि+शो+ड डलयोरभेदः] 1. बच्चों जैसा, अबोध, मूर्ख 2. बच्चा 3. मूर्ख, अनजान—मनु० ३।१७६ 4. लापरवाह,—**शः** 1. मूर्ख, बुद्धू 2. बच्चा, बालक,—**शम्** तकिया।

बालिश्यम् [वालिश+ष्यञ्] 1. लड़कपन, बचपन 2. बचकानापन, मूर्खता, बेवक़ूफ़ी।

बाली [वालि+ङीप्] एक प्रकार की कान की बाली।

बालीशः (पुं०) मूत्रावरोध।

बालुः, + **बालुकम्** [बल+उण्, बालु+कन्] एक प्रकार का गंध द्रव्य।

बालुका दे० 'वालुका'।

बालुकी, बालुङ्की, बालुङ्गी [बल+उकञ्+ङीप्] एक प्रकार की ककड़ी।

बालूकः [वल+ऊकञ्] एक प्रकार का विष।

बालेय (वि०) (स्त्री०—यी) [वलि+ढञ्] 1. बलि देने के लिए उपयुक्त 2. मृदु, मुलायम 3. बलि की संतान,—**यः** गधा।

बाल्यम् [वाल+ष्यञ्] 1. लड़कपन, बचपन—बाल्यात्परामिव वशां मदनोध्युवास रघु० ५।६३, कु० १।२९ 2. (चन्द्रमा के) बढ़ने की अवधि—कु० ७।३५ 3. समझ की अपरिपक्वता, मूर्खता, अबोधता।

बाल्हकाः, बाल्हिकाः, बाल्हीकाः (पुं० ब० व०) [वल्हिदेशे भवाः—वल्हि+वुञ्, वल्हि+ठञ्, पृषो० पक्षे दीर्घत्वम्] वल्हि के अधिवासी,—**कः** 1. बाल्हीकों का राजा 2. बलख का घोड़ा,—**कम्** 1. केसर, जाफ़रान, 2. हींग।

बाल्हिः (पुं०) एक देश का नाम। सम०—**ज** (वि०) बलख देश में पला, बलख देश की नसल।

बाष्पः—**ष्पम्** [बाध्—पृषो० सत्वं पत्वं वा] 1. आँसू, अश्रु—कंठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः—श० ४।५ 2. भाप, प्रवाष्प, कुहरा 3. लोहा। सम०—**अम्बु** (नपुं०) आँसू,—**उद्भवः** आंसुओं का आना,—**कण्ठ** (वि०) जिसका गला भर आया हो, गद्गद् कंठ वाला,—**दुर्दिनम्** आँसुओं की बाढ़,—**पूरः** आँसुओं का फूट पड़ना, आँसुओं की बाढ़,—वारंवारं तिरयति दृशोरुद्गमं बाष्पपूरः—मा० १।३५,—**मोक्षः**,—**मोचनम्** आँसू बहाना,—**बिन्दुः** (पुं) आँसू की बूंद,—**संदिग्ध** (वि०) जो आँसुओं के कारण अस्पष्ट हो।

बाष्पायते (ना० धा० आ०) आँसू बहाना, रोना—तत्किमिति बाष्पायितं भगवत्या—मा० ६, विक्रम० ५।९।

बास्त (वि०) (स्त्री०—स्ती) [वस्त+अण्] बकरे से उत्पन्न या प्राप्त—मनु० २।४१।

बाहः [=वाहु: पृषो० वह्+णिच्+अच्, बवयोरभेदः] 1. भुजा 2. घोड़ा।

बाहा [दे० बाह] भुजा,—मां प्रत्यालिङ्गतोगताभिः शाखा-बाहाभिः—श० ३। सम०—**बाहवि** (अव्य०) हस्ताहस्ति, भुजा से भुजा—तु० बाहू-बाहवि।

बाहीकाः (ब० व०) [वह्+ईकण् ववयोरभेदः] पंजाब के अधिवासी,—**कः** 1. पंजाबी 2. बैल।

बाहुः [बाध्+कु, धस्य हः] 1. भुजा—शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य—श० १।१६, इसी प्रकार 'महाबाहुः, आदि 2. कलई 3. पशु का अगला पैर 4. द्वार की चौखट का बाजू 5. (ज्या० में) समकोण त्रिभुज का आधार,—**हू** (द्वि० व०) आर्द्रा नक्षत्र। सम०—**उत्क्षेपम्** (अव्य०) भुजाओं को ऊपर उठा कर—बाहूत्क्षेपं क्रन्दितुं च प्रवृत्ता—श० ५।३०,—**कुष्ठ** **कुब्ज** (वि०) लुंजा, जिसका हाथ विकृत हो गया हो,—**कुन्थः** (पक्षी का) बाजू, डैना,—**चापः** पौरुष की माप, अर्थात् दोनों हाथों को फैलाकर मापी हुई दूरी,—**जः** क्षत्रिय वर्ण का व्यक्ति—तु० बाहू राजन्यः कृतः—ऋग्० १०।९०।१२, मनु० १।३१, 2. तोता,—**ज्या** (गणि० में) चाप के सिरों को मिलाने वाली सीधी रेखा,—**त्रः**,—**त्रम्**—**त्राणम्** भुजाओं की रक्षा करने वाला कवचविशेष,—**दण्डः** 1. डंडे की भांति लंबी भुजा 2. भुजा या मुक्के से दण्डित करना,—**पाशः** 1. मल्लयुद्ध में एक घेरा बनाना जैसा कि आलिंगन के समय किया जाता है,—**प्रहरणम्** घूंसों की लड़ाई, मल्लयुद्ध,—**बलम्** भुजा की ताक़त मांसपेशियों की शक्ति,—**भूषणम्**,—**भूषा** भुजा में पहना जाने वाला आभूषण, बाजूबंद, अंगद,—**भेदिन्** (पुं०) विष्णु का विशेषण,—**मूलम्** 1. कांख, 2. कंधे और बाहु का जोड़,—**युद्धम्** हाथापाई, मल्लयुद्ध, घूंसों की लड़ाई,—**योधः**—**योधिन्** (पुं०) मुष्टि योद्धा, घूंसेबाज,—**लता** भुजा की भांति बेल, °**अन्तरम्** स्तन, वक्षःस्थल,—**वीर्यम्** भुजाओं की शक्ति,—**व्यायाम** कसरत,—**शालिन्** (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. भीम का विशेषण,—**शिखरम्** भुजा का ऊपरी भाग, कंधा,—**संभवः** क्षत्रिय जाति का पुरुष, **सहस्रभृत्** (पुं०) कार्तवीर्य राजा का विशेषण ('सहस्रार्जुन') भी इसका नामान्तर है।

बाहुकः [बाहु+कै+क] 1. बन्दर 2. कर्कोटक के द्वारा बौना बना दिये जाने पर नल का बदला हुआ नाम।

बाहुगुण्यम् [बहुगुण+ष्यञ्] अनेक सद्गुण और श्रेष्ठताओं का स्वामित्व।

बाहुदन्तकम् [बहुदन्तक+अण्] नैतिक कर्तव्यों का स्मृति

के रूप में निरूपण जिसके रचयिता इन्द्र कहे जाते हैं।

बाहुदन्तेयः [बहुदन्त+ढ] इन्द्र का विशेषण।

बाहुदा [बाहु+दा+क+टाप्] एक नदी का नाम।

बाहुभाष्यम् [बहुभाष्+ष्यञ्] मुखरता, वाचालता, बातूनीपन।

बाहुरूप्यम् [बहुरूप+ष्यञ्] बहुरूपता, विविधता।

बाहुलः [बहुल+अण्] 1. अग्नि 2. कार्तिक का महीना, —लम् 1. बहुरूपता 2. भुजाओं की रक्षा के लिए कवच विशेष। सम०—ग्रीवः मोर।

बाहुलकम् [बाहुल+कन्] 1. अनेकरूपता 2. व्याकरण में प्रयुक्त विधिविशेष— बाहुलकाच्छन्दसि, किसी रूप, अर्थ या नियम की विविध या असीम प्रयोजनीयता।

बाहुलेयः [बहुला+ढक्] कार्तिकेय का विशेषण।

बाहुल्यम् [बहुल+ष्यञ्] 1. बहुतायत, प्राचुर्य, यथेष्टता 2. बहुरूपता, अनेकता, विविधता 3. वस्तुओं का सामान्य क्रम या प्रचलित व्यवस्था।

बाहूबाहवि (अव्य०) [बाहुभिर्बाहुभिः प्रहृत्येदं प्रवृत्तं युद्धम्] भुजा से भुजा मिला कर, हस्ताहस्ति, घमासान युद्ध।

बाह्य (वि०) [बहिर्भवः—ष्यञ्, टिलोपः] 1. बाहर का, बाहर की ओर का, बाहरी, बहिर्देश, बाहर स्थित —विरहः किमिवानुतापयेद् वद बाह्यैर्विषयैर्विपश्चितम् --रघु० ८।८९, बाह्योद्याने-मेघ० ७, कु० ६।४६, बाह्यनामन् 'बाहरी नाम', अर्थात् पत्र की पीठ पर लिखा हुआ पता या शिरोनाम, सरनामा—मुद्रा० १ 2. विदेशी, अपरिचित—पंच० १ 3. बहिष्कृत, कटघरे से बाहर—जातास्तदूर्वोरुपमानबाह्याः—कु० १।३६ 4. समाज से बहिष्कृत, जातिबहिष्कृत,—ह्यः 1. अपरिचित,—ह्यम्, बाह्येन, बाह्ये (अव्य०) बाहर, बाहर की ओर, बाहरी ढंग से।

बाह्वृच्यम् [बह्वृच+ष्यञ्] ऋग्वेद का परम्परागत अध्यापन।

बिट् (भ्वा० पर०—बेटति) 1. शपथ लेना 2. अभिशाप देना 3. चिल्लाना, जोर से बोलना।

बिटकः,—कम्, बिटका [=पिटक, पृषो०] फोड़ा, फुंसी।

बिडम् [बिड्+क] एक प्रकार का नमक।

बिडालः [बिड्+कालन्] 1. बिल्ला, बिलाव 2. आँख का डेला। सम०—पदः,—पदकम् १६ माशे के तोल का बट्टा।

बिडालकः [बिडाल+कन्] 1. बिलाव 2. आँख के बाहरी भाग पर मल्हम लगाना,—कम् पीली मल्हम।

बिडौजस् (पुं०) [विवेष्टि विट् व्यापकमोजो यस्य विडोजाः, पृषो० वृद्धिः] इन्द्र का विशेषण, —श० ७।३४।

बिद्, बिंद् (भ्वा० पर० बिंदति) 1. खण्ड खण्ड करना 2. बाँटना।

बिदलम् दे० 'विदल'।

बिन्दुः [बिन्द्+उ] 1. बूंद, बिंदी जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः "छोटी-छोटी बूंदे मिल कर एक सरोवर बन जाता है", विस्तीर्यते यशो लोके तैलबिन्दुरिवाम्भसि मनु० ७।३३, अधुना (कुतूहलस्य) बिन्दुरपि नावशेषितः -श० २ 2. बिंदु, बिंदी 3. हाथी के शरीर पर रंगीन बिंदी या चिह्न—कु० १।७ 4. शून्य, सिफर—न रोमकूपौघमिषाज्जगत्कृता कृताश्च किं दूषणशून्यबिन्दवः-नै० १।२१। सम०—चित्रकः चित्तीदार हरिण,—जालम् —जालकम् 1. बूंदों का समूह 2. हाथी के सूंड और शरीर पर बनाये गये चित्रण, चित्तियाँ,—तन्त्रः 1. पासा 2. शतरंज की बिसात,—देवः शिव का विशेषणः,—पत्रः एक प्रकार का भोजपत्र,—फलम् मोती,—रेखकः 1. अनुस्वार 2. एक प्रकार का पक्षी,—रेखा बिन्दुओं की पंक्ति, --वासरः गर्भाधान का दिन।

बिब्बोकः,(बिव्वोक, विव्वोकः) [?] 1. अभिमान के कारण अपने प्रियतम पदार्थ की ओर उदासीनता का प्रदर्शन —मनाक् प्रियकथालापे बिब्वोकोऽनादरक्रिया–प्रतापरुद्र, या, बिब्वोकस्त्वतिगर्वेण वस्तुनीष्टेऽप्यनादरः–सा० द० १३९ 2. घमंड के कारण उदासीनता 3. केलिपरक या प्रीतिविषयक संकेत—संशय्य क्षणमिति निश्चिकाय कश्चिद्बिब्बोकैर्बकसहवासिनां परोक्षैः —शि० ८।९ (विलासैः—मल्लि०)।

बिभित्सा [भिद्+सन्+अ+टाप्] भेदने की इच्छा, बींधने की या छेद करने की इच्छा।

बिभित्सु (वि०) [भिद्+सन्+उ] छेदने या बींधने की इच्छा।

बिभीषणः [भी+सन्+ल्युट्] एक राक्षस का नाम, रावण का भाई (यद्यपि वह जन्म से राक्षस था परन्तु तोभी सीता के अपहरण के कारण वह बड़ा खिन्न था, उसने रावण को इस दुष्कृत्य के लिए बहुत बुरा भला कहा। उसने बार-बार रावण को समझाया कि यदि जीवित रहना चाहते हो तो सीता को राम के पास वापिस पहुँचा दो। परन्तु उसने विभीषण की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया। अंत में जब उसने देखा कि रावण का विनाश अवश्यंभावी है तो वह राम के पास चला गया और उनका पक्का मित्र बन गया। रावण की मृत्यु के पश्चात् राम ने विभीषण को लंका की राजगद्दी पर बिठा दिया। विभीषण सात चिरंजीवियों में गिना जाता है—दे० 'चिरंजीविन्')।

बिभ्रक्षुः, बिभ्रज्जिसुः [भ्रस्ज्+सन्+उ, विकल्पेन इट्] आग।

बिम्बः,—म्बम् [वी+वन् नि० साधुः] सूर्यमण्डल या चन्द्रमंडल—वदनेन निर्जितं तव नीलीयते चन्द्रबिम्बमम्बुधरे —सुभा०, इसी प्रकार सूर्य°, रवि° आदि 2. कोई गोल या मंडलाकार सतह, मंडल या गोला जैसे 'नितम्बबिम्ब' गोलाकार कूल्हा, 'श्रोणीबिम्बः' आदि 3. प्रतिमा, छाया, प्रतिबिंब 4. शीशा, दर्पण 5. कलश 6. उपमित पदार्थ (विप० प्रतिबिंब),—म्बम् एक वृक्ष का फल (यह जब पक जाता है तो लाल रंग का हो जाता है, तरुण स्त्रियों के होठों की तुलना इसी से की जाती है)—रक्तशोकरुचा विशेषितगुणो बिम्बाधरालक्तकः—मालवि० ३।५, पक्वबिंबाधरोष्ठी—मेघ० ८२, तु० नै० २४। सम०—ओष्ठ (वि०) (बिंबो (बौ)ष्ठ) बिंब फल के समान लाल-लाल सुंदर होठों वाला—मालवि० ४।१४, (—ष्ठः) बिंब फल की भांति ओष्ठ—उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे—कु० ३।६७।

बिम्बकम् [बिम्ब+कन्] 1. सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल 2. बिंबफल।

बिम्बिका [बिम्ब+कन्, इत्वम्] 1. सूर्यमंडल या चन्द्रमण्डल 2. बिंब का पौधा।

बिम्बित (वि०) [बिम्ब+इतच्] 1. प्रतिबिंबित, प्रति छाया पड़ी हुई 2. चित्रित।

बिल् (तु० पर०, चुरा० उभ० बिलति, बेलयति—ते) खंड खण्ड करना फाड़ना, तोड़ना, बांटना, टुकड़े-टुकड़े करना।

बिलम् [बिल्+क] 1. छिद्र, विवर, खूड (हल चलाने से बनी गहरी सीधी रेखा)—खनन्नाखुबिलं सिंहः··· प्राप्नोति नखभंगं हि—पंच० ३।१७, रघु० १२।५, 2. रिक्तस्थान, गर्त, छिद्र 3. द्वारक, छिद्र, सूराख, 4. कंदरा, कोटर—लः इन्द्र के घोड़े 'उच्चैः श्रवा' का नामान्तर। सम०—ओकस् (पुं०) बिल में रहने वाला जानवर,—कारिन् (पुं०) चूहा,—योनि (वि०) बिलजन्तुओं की नस्ल के जानवर—यत्राश्वा बिलयोनयः—कु० ६।३९,—वासः गंधमार्जार,—वासिन् (बिलेवासिन्) (पुं०) साँप।

बिलंगमः [बिल+गम्+खच्, मुम्] सर्प, साँप।

बिलेशयः [बिले शेते—शी+अच्, अलुक् स०] 1. साँप 2. मूसा, चूहा 3. मांद में रहने वाला कोई भी जन्तु।

बिल्लः [बिल+ला+क नि० अकार लोपः] 1. गर्त 2. विशेषतः थांवला, आलवाल। सम०—सूः दस बच्चों की माँ।

बिल्वः [बिल्+वन्] बेल नामक वृक्ष—ल्वम् 1. बेल का फल 2. एक विशेष तोल, पल भर। सम०—दंडः शिव का विशेषण,—पेशिका,—पेशी बेल का छिल्का (जो लकड़ी के समान कड़ा होता है),—वनम् बेलों का जंगल।

बिल्वकीया [बिल्व+छ, कुक्] वह स्थान जहाँ बेल के पौधे लगाये गए हों।

बिस् (दिवा० प० बिस्यति) 1. जाना, हिलना-डुलना 2. उकसाना, प्रेरित करना, भड़काना 3. फेंकना, डाल देना 4. टुकड़े टुकड़े करना।

बिसम् [बिस्+क] 1. कमल तंतु 2. कमल की तन्तु वाली डंडी—पाथेयमुत्सृज बिसं ग्रहणाय भूयः—विक्रम० ४।१५, बिसमलमशनाय स्वादु पानाय तोयम्—भर्तृ० ३।२२, मेघ० ११, कु० ३।१७, ३।२९। सम० —कण्ठिका, —कण्ठिन् (पुं०) छोटा सारस—कुसुमम्, —पुष्पम्,—प्रसूनम् कमल का फूल,—जर्क्षुबिसं धृतविकासिबिसप्रसूनाः—शि० ५।५८,—खादिका 'कमल तन्तुओं को खाने वाली,—ग्रन्थिः कमलडंडी के ऊपर की गांठ,—छेदः कमल की तंतुमय डंडी का टुकड़ा, —जम् कमल, का फूल, कमल - तन्तुः कमल का रेशा, —नाभिः (स्त्री०) कमल का पौधा, पद्मिनी,—नासिका एक प्रकार का सारस।

बिसलम् [बिस+ला+क] नया अंकुर, अंखुवा, कली।

बिसिनी [बिस+इनि] 1. कमलिनी, कमल का पौधा भर्तृ० ३।३६ 2. कमल तंतु 3. कमलों का समूह।

बिसिल (वि०) [बिस+इलच्] बिस से संबद्ध या प्राप्त।

बिस्तः [बिस्+क्त] (८० रत्तियों के बराबर) सोने का तोल।

बिह्लणः (पुं०) विक्रमांकदेवचरित नामक काव्य का रचयिता।

बीजम् [वि+जन्+ड उपसर्गस्य दीर्घः बवयोरभेदः] बीज (आलं० से भी) बीज का दाना, अनाज —अरण्यबीजांजलिदानलालिताः—कु० ५।१५, बीजांजलिः पतति कीटमुखावलीढः—मृच्छ० १।९, रघु० १९।५७, मनु० ९।३३ 2. जीवाणु, तत्त्व 3. मूल, स्रोत, कारण, बीजप्रकृतिः श० १।१, (पाठान्तर) 4. वीर्य, शुक्र,—कु० २।५, ६० 5. किसी नाटक की कथावस्तु का बीज, कहानी आदि,—दे० सा० द० ३१८. 6. गूदा 7. बीजगणित 8 बीजमंत्र,—जः नींबू का पेड़, (बीजाकृ 1. बीज बोना—व्योमनि बीजाकुरुते—भामि० १।९८ 2. बीज बोने के बाद हल चलाना)। सम० —अक्षरम् मन्त्र का प्रथम अक्षर,—अङ्कुरः बीज का अंकुर—कु० ३।१८, °न्यायः बीज और अंकुर का न्याय, दे० 'न्याय' के अन्तर्गत,—अध्यक्षः शिव का विशेषण,—अश्वः जननाश्व, सांड़ घोड़ा,—आढ्यः, —पूरः,—पूरकः बिजौरा नीबू, चकोतरा, (रम्,—रकम्) नींबू का फल,—उत्कृष्टम् अच्छा बीज,—उदनम् ओला, —कर्तृ (पुं०) शिव का विशेषण,—कोशः,—कोष 1. बीज पात्र 2. कमल का बीजपात्र,—गणितम् बीजगणित का विज्ञान,—गुप्तिः (स्त्री०) बीजकोश, फली, सेम,

छीमी,—दर्शकः रंगशाला का व्यवस्थापक,—धान्यम् धनिया,—न्यासः नाटक की कथावस्तु के स्रोत को बतलाना,—पुरुषः कुल प्रवर्तक,— फलकः बीजपूर का पेड़,—मन्त्रः रहस्यमय अक्षर जिससे मंत्र आरम्भ होता है,—मातृका कमल का बीजकोष,—रुहः दाना, अनाज,—वापः 1. बीज बोने वाला 2. बीज का बोना, —वाहनः शिव का विशेषण,—सूः पृथ्वी,—सेक्तृ (पुं०) प्रस्रष्टा, प्रजापति।

बीजकः [बीज+कन्] 1. सामान्य नींबू 2. नींबू या चकोतरा 3. जन्म के समय बच्चे की भुजाओं की स्थिति,—कम् बीज।

बीजल (वि०)[बीज+लच्] बीजों से युक्त, बीजों वाला।

बीजिक (वि०) [बीज+ठन्] बीजों से भरा हुआ, जिसमें बहुत बीज हों।

बीजिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [बीज+इनि] बीजों से युक्त, बीज रखने वाला (पुं०) 1. वास्तविक पिता या प्रजनक (बीज का बोने वाला) (विप० क्षेत्रिन् —खेत या स्त्री का पति या स्वामी) दे०—मनु० ९। ५१ तथा आगे 2. पिता 3. सूर्य।

बीज्य (वि०) [बीज+यत्] 1. बीज से उत्पन्न 2. सम्मानित कुल का, सत्कुलोद्भव।

बीभत्स (वि०) [बध्+सन्+घञ्] 1. घृणोत्पादक, घिनौना, दुर्गंधयुक्त, भीषण, जुगुप्साजनक—हन्त बीभत्समेवाग्रे वर्तते मा० ५, 'अहो! यह निश्चित रूप से घिनौना दृश्य है' 2. ईर्ष्यालु, प्रद्वेषी, विद्वेषपूर्ण 3. बर्बर, क्रूर, खूंख्वार 4. मन से विरक्त,—त्सः 1. जुगुप्सा, घिनौनापन, गर्हणा 2. बीभत्सरस, काव्य के आठ या नौ रसों में से एक—जुगुप्सास्थायिभावस्तु बीभत्सः कथ्यते रसः—सा० द० २३६ (उदा० मा० ५।१६) 3. अर्जुन का नामान्तर।

बीभत्सुः [बध्+सन्+उ] अर्जुन का विशेषण। महा० इस प्रकार व्याख्या करता है—न कुर्यात्कर्म बीभत्सं युध्यमानः कथंचन, तेन देवमनुष्येषु बीभत्सुरिति विश्रुतः।

बुक् (अव्य०) [बुक्क्+क्विप् पृषो० उपधालोपः] अनुकरणमूलक शब्द। सम०—कारः सिंह की दहाड़।

बुक्क् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० बुक्कति, बुक्कयति-ते) 1. भौंकना—हि० ३।५२ 2. बोलना, बातें करना।

बुक्कः,—क्कम् [बुक्क्+अच्] 1. हृदय 2. दिल, छाती —बुक्काघातैर्युवतिनिकटे प्रौढवाक्येन राधा—उद्भट 3. रुधिर,—क्कः 1. बकरा 2. समय।

बुक्कन् (पुं०) [बुक्क्+शतृ] हृदय, दिल।

बुक्कनम् [बुक्क्+ल्युट्] भौंकना, भौं भौं करना।

बुक्कसः [=पुक्कस, पृषो० साधुः] चंडाल।

बुक्का,—क्की [बुक्क+टाप्, ङीप् वा] हृदय, दिल।

बुद् (भ्वा० उभ०—बोदति-ते) 1. प्रत्यक्ष करना, देखना, समझना, पहचानना 2. समझ लेना, जान लेना।

बुद्ध (भू० क० कृ०) [बुध्+क्त] 1. ज्ञात, समझा हुआ, प्रत्यक्ष किया हुआ 2. जगाया हुआ, जागरूक 3. देखा हुआ 4. प्रकाशमान।

बुद्धिमान् (दे० बुध)—द्धः 1. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, ऋषि 2. (बौद्धों के साथ) बुद्धिमान् या ज्ञानज्योति से प्रकाशमान पुरुष जो सत्य के प्रत्यक्ष ज्ञानद्वारा जन्म-मरण से छुटकारा पा चुका है तथा जो स्वयं मुक्त होने से पूर्व संसार को मोक्ष या निर्वाण प्राप्त करने की रीति बतलाता है 3. शाक्यसिंह का नाम 'बुद्ध' जो बौद्धधर्म का प्रसिद्ध प्रवर्तक था (उसने कपिलवस्तु में जन्म लिया और ईसा से ५४३ वर्ष पूर्व निर्वाण प्राप्त किया, कई बार उसे विष्णु का नवाँ अवतार माना जाता है, जयदेव कहता है: निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं सदयहृदय दर्शितपशुघातं केशव धृतबुद्धशरीर! जय जगदीश हरे —गीत० १)सम०—आगमः बौद्धधर्म के सिद्धान्त और मन्तव्य, उपासकः बुद्ध की पूजा करने वाला,—गया एक पुण्यतीर्थस्थान का नाम, मार्गः, बुद्ध के सिद्धांत और मत, बुद्धवाद।

बुद्धिः (स्त्री०) [बुध्+क्तिन्] 1. प्रत्यक्ष ज्ञान, संबोध 2. मति, समझ, प्रज्ञा, प्रतिभा तीक्ष्णा नारुन्तुदा बुद्धिः शि० २।१०९, शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिः—रघु० १।१९ 3. ज्ञान—बुद्धिर्यस्य बलं तस्य हि० २।१२२ 'ज्ञान ही शक्ति है' 4. विवेक, विवेचन, सूक्ष्म विचारणा 5. मन मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः—मालवि० १।२, इसी प्रकार कृपण° पाप° आदि 6. औसान रहना, प्रत्युत्पन्नमतित्व 7. धारणा, सम्मति, विश्वास, विचार, भावना, भाव दूरात्तमवलोक्य व्याघ्रबुद्ध्या पलायन्ते—हि० ३, अनया बुद्ध्या मुद्रा० १, 'इस विश्वास से'—अनुक्रोशबुद्ध्या मेघ० ११५ 8. आशय, प्रयोजन, प्रायोजना (बुद्ध्या) 'इरादतन' 'प्रयोजन से' 'जानबूझ कर 9. सचेत होना, मूर्छा से जागना मा० ४ 10. (सां० द० में) सांख्यशास्त्र में वर्णित पच्चीस तत्त्वों में से दूसरा। सम०—अतीत (वि०) बुद्धि की पहुँच से परे, अवज्ञानम् किसी की समझ का तिरस्कार करना या निकृष्ट मत रखना—अप्राप्तकालं वचनं बृहस्पतिरपि ब्रुवन्, प्राप्नोति बुद्ध्यवज्ञानमपमानं च पुष्कलम्—पंच० १।६३,—इन्द्रियम् प्रत्यक्षीकरण की इन्द्रिय,(विप०कर्मेन्द्रिय)(यह पांच है—कान, त्वचा, आँख जिह्वा और नाक—श्रोत्रं त्वक्चक्षुषी जिह्वा नासिका चैव पंचमी, इनमें कभी कभी 'मनस्' जोड़ा जाता है) —गम्य-ग्राह्य (वि०) पहुँच के भीतर, उपलब्ध करने योग्य, प्रतिभा,—जीवन् (वि०) 'तर्क' का

व्यवहार करने वाला, तर्कयुक्त बात करने वाला —पूर्वम्,-पूर्वकम्,पुरःसरम् (अव्य०) इरादतन, जानबूझ कर स्वेच्छा से,—भ्रमः मन का उचाट, मन की विपथगामिता,—योगः ब्रह्म से बौद्धिक सायुज्य,—लक्षणम् बुद्धिमत्ता या प्रतिभा का चिह्न—प्रारब्धस्यान्तगमनम् द्वितीयं बुद्धिलक्षणम्,—वैभवम् प्रतिभा की शक्ति,—शस्त्र (वि०) समझ या बुद्धि से युक्त,—शालिन्-संपन्न (वि०) बुद्धिमान् समझदार,—सखः,-सहायः परामर्शदाता,—हीन (वि०) प्रतिभाशून्य, मूर्ख, बेवकूफ ।

बुद्धिमत् [बुद्धि+मतुप्] 1. समझ से युक्त, प्रज्ञावान्, विवेकपूर्ण 2. समझदार, विद्वान् 3. तेज, चतुर, तीक्ष्ण ।

बुद्बुदः (पुं०) बुलबुला,—सततं जातविनष्टाः पयसामिव बुद्बुदाः पयसि—पंच०५।७ ।

बुध् (भ्वा० उभ०, दिवा० आ०—बोधति-ते, बुध्यते, बुद्ध) 1. जानना, समझना, संबोध होना—क्रमादमुं नारद इत्य बोधि सः—शि० १।३, ९।२४, नाबुद्ध कल्पद्रुमतां विहाय जातं तमात्मन्यसिपत्रवृक्षम्—रघु० १४।४८, यदि बुध्यते हरिशिशुः स्तनन्धयः—भामि० १।५३ 2. प्रत्यक्ष करना, देखना, पहचानना, ध्यान से देखना—हिरण्मयं हंसमबोधि नैषधः—नै० १।११७, अपि लङ्घितमध्वानं बुबुधे न बुधोपमः—रघु० १।४७, १२।३९ 3. सोचना, विचार करना, समझना, मानना आदि 4. ध्यान देना, चित्त लगाना 5. सोचना, विमर्श करना 6. जागना, सचेत होना, सोकर उठना—दददपि गिरमन्तर्बुध्यते नो मनुष्यः—शि० ११।४, ते च प्रापुरुदन्वन्तं बुबुधे चादिपूरुषः—रघु० १०।६ 7. फिर से सचेत होना, होश में आना—शनैरबोधि सुग्रीवः सोऽलुञ्चीत्कर्णनासिकम्—भट्टि० १५।५७, प्रेर०—बोधयति-ते 1. जतलाना, ज्ञात करना, सूचित करना, परिचित करना 2. अध्यापन करना, समाचार देना, (शिक्षा आदि) प्रदान करना 3. परामर्श देना, चेताना—बोधयन्तं हिताहितम्, भट्टि९८।८२, भग० १०।९ 4. पुनर्जीवित करना, फिर जान डालना, होश दिलाना, सचेत करना 5. फिर ध्यान दिलाना, याद दिलाना—श० ४।१ 6. जगाना, उठाना, उत्तेजित करना (आलं०)—अकाले बोधितो भ्रात्रा—रघु० १२।८१, ५।७५ 7. (गंधद्रव्य को) फिर से सुवासित करना 8. फैलाना, खिलाना—मधुरया मधुबोधितमाधवी—शि० ६।२० 9. द्योतित करना, संवहन करना, संकेत करना —इच्छा० बुबु(बो) धिषति-ते, बुभुत्सते—। जानने की इच्छा करना आदि, अनु —, 1. जानना, समझना 2. सीखना, जानकार होना, सचेत होना, प्रेर०— 1. परामर्श देना, चेताना—रघु० ८।७५ 2. ध्यान दिलाना—आर्ये सम्यगनुबोधितोऽस्मि—श० १, अव—, जानना, ज्ञात करना, समझना—मनु० ८।५३, भट्टि० १५।१०१, प्रेर०—1. ज्ञात कराना, सूचित करना, परिचय देना—ब्रह्मचोदनानुपुरुषमवबोधयत्येव केवलम् —शारी० 2. उठाना, जगाना—रघु० १२।२३, उद्—, 1. जमाना, उठाना 2. फैलाना, खिलाना—प्रेर० जागरूक करना, उत्तेजित करना, प्रबुद्ध करना, जगाना, नि—, 1. जानना, समझना, ज्ञात करना—निबोध साधो तव चेत्कुतूहलम्—कु० ५।५२, ३।१४, मनु० १।६८, याज्ञ० १।२ 2. मानना, विचार करना, समझना, प्र—, जागना, उठना, आंख खोलना—श० ५।११, शि० ९।३० 2. खिलाना, फैलाना, खिलना—साभ्रेऽह्नीव स्थलकमलिनीं न प्रबुद्धां न सुप्ताम् मेघ० ९०,—प्रेर० 1. सूचित करना, जतलाना—रघु० ३।६८ 2. जगाना, उठाना रघु० ५।६५ ६।५६ 3. फैलाना, खिलाना —कु० १।१५, प्रति-, जगाना, उठना—मनु० १।७४, याज्ञ० १।३३०, प्रेर० 1. सूचित करना जतलाना, परिचित करना, समाचार देना—रघु० १।७४, शि० ६।८, 2. जगाना, उठाना,—वि—,जागना, उठना—कु० ५।५७। प्रेर० 1. जगाना, उठाना 2. फिर से सचेत करना—अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधूर्विबोधिता—कु० ४।१, सम्,—जानना, समझना, ज्ञात करना, जानकार होना—भट्टि०१९।३०, प्रेर०— 1. सूचित करना, परिचित कराना, सूचना देना—तवागतिज्ञं समबोधयन्माम्—रघु० १३।२५ 2. संबोधित करना ।

बुध (वि०) [बुध्+क] बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान्,—धः 1. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष—निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि—नै० १।१ 2. देव,—नै० १।१ 3. बुध ग्रह · रक्षत्येनं तु बुधयोगः—मुद्रा० १।६, (यहां 'बुध' का अर्थ 'बुद्धिमान्' भी है) रघु० १।४७, १३।७६ । सम०—जनः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, · तातः चन्द्रमा,— दिनम्, —वारः—वासरः बुधवार,—रत्नम् मरकतमणि, पन्ना, —सुतः पुरूरवा का विशेषण ।

बुधानः [बुध्+आनच्, कित् च] 1. बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि 2. धर्मोपदेष्टा, अध्यात्मपथदर्शक ।

बुधित (वि०) [बुध्+क्त] जाना हुआ, समझा हुआ ।

बुधिल (वि०) [बुध्+किलच्] विद्वान्, बुद्धिमान् ।

बुध्नः [बन्ध्+नक्, बुधादेशः] 1. बर्तन की तली 2. पेड़ की जड़ 3. निम्नतम भाग 4. शिव का विशेषण (अन्तिम अर्थ में 'बुध्न्य' भी) ।

बुन्द्, बुन्ध् (भ्वा० उभ० बुन्दति—ते, बुन्धति—ते) 1. प्रत्यक्ष करना, देखना, भांपना 2. विमर्श करना, समझना ।

बुभुक्षा [भुज्+सन्+अ+टाप्] 1. खाने की इच्छा, भूख 2. किसी भी पदार्थ के उपभोग की इच्छा।

बुभुक्षित (वि०) [बुभुक्षा+इतच्] भूखा, भुखमरा, क्षुधा-पीडित—बुभुक्षितः किं न करोति पापम्—पंच० ४। १५, या बुभुक्षितः किं द्विकरेण भुङ्क्ते—उद्भट।

बुभुक्षु (वि०) [भुज्+सन्+उ] 1. भूखा, सांसारिक उपभोगों का इच्छुक (विप० मुमुक्षु)।

बुभूषा [भू+सन्+अ+टाप्] होने की इच्छा।

बुभूषु (वि०) [भू+सन्+उ] बनने की या होने की इच्छा वाला।

बुल् (चुरा० उभ० बोलयति—ते) 1. डूबना, गोता लगाना —बोलगति प्लवः पयसि 2. डुबोना।

बुलिः (स्त्री०) [बुल्+इन्, कित्] 1. भयः डर।

बुस् (दिवा० पर० बुस्यति) छोड़ना, उगलना, उडलना।

बुसं (षम्) [बुस्+क पक्षे पृषो० षत्वम्] 1. बूर, भूसी 2. कूड़ा, गंदगी 3. गाय का सूखा गोबर 4. धन, दौलत।

बुस्त् (चुरा० उभ० बुस्तयति—ते) 1. सम्मान करना, आदर करना 2. अनादर करना, तिरस्कारपूर्वक अर्थात् घृणायुक्त व्यवहार करना।

बुस्तम् [बुस्त्+घञ्] भुने हुए माँस का टुकड़ा।

बूक्कम्=बुक्क।

बृशी, बृषी (सी) [ब्रुवन्तोऽस्यां सीदन्ति—ब्रुवत्+सद्+ड+ङीप् पृषो० साधुः] किसी संन्यासी या साधु महात्मा की गद्दी।

बृंह् (भ्वा० तुदा० पर० बृंहति, बृंहित) 1. बढ़ना, उगना —बृंहितमन्युवेग—भट्टि० ३।४९ 2. दहाड़ना। प्रेर०—पालन-पोषण करना।

बृंहणम् [बृंह्+ल्युट्] (हाथी के) चिंघाड़ने का शब्द —शि० १८।३।

बृंहित (भू० क० कृ०) [बृंह्+क्त] 1. उगा हुआ, बढ़ा हुआ—भामि० २।१०९ 2. चिंघाड़ा हुआ,—तम् हाथी की चिंघाड़—शि० १२।१५, कि० ६।३९।

बृह् (भ्वा० तुदा० पर० बर्हति, बृहति) 1. उगना, बढ़ना, फैलना 2. दहाड़ना, उद् —, 1. उठाना, ऊपर को करना —मनु० ११।१४, भट्टि० १४।९, नि —, नष्ट करना, हटाना —शि० १।२९।

बृहत् (वि०) (स्त्री०—ती) [बृह्+अति] 1. विस्तृत, विशाल, बड़ा, स्थूल—मा० ९।५ 2. चौड़ा, प्रशस्त, विस्तृत, दूर तक फैला हुआ -दिलीपसूनोः स बृहद्भुजान्तरम्—रघु० ३।५४ 3. विस्तृत, यथेष्ट, प्रचुर 4. मजबूत, शक्तिशाली 5. लम्बा, ऊँचा —देवदारुबृहद्भुजः. कु० ६।५१ 6. पूर्णविकसित 7. सटा हुआ सघन—स्त्री० वाणी—शि० २।६८,—नपुं० 1. वेद 2. सामवेद का मंत्र (साम)—भग० १०।३५ 3. ब्रह्म। सम०—अङ्ग,—काय (वि०) स्थूलकाय, विशालकाय (गः) बड़े डीलडौल का हाथी,—आरण्यम्,—आरण्यकम् एक प्रसिद्ध उपनिषद्, शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्याय,—एला बड़ी इलायची,—कुक्षि (वि०) तुंदिल, बड़े पेट वाला,—केतुः अग्नि का विशेषण, —गृहः एक देश का नाम,—गोलम् तरबूज,—चित्तः नींबू का पेड़,—जघन (वि०) प्रशस्तकूल्हों वाला, —जीवन्तिका,—जीवन्ती एक प्रकार का पौधा,—ढक्का बड़ा ढोल,—नटः,—नलः—ला, राजा विराट के दरबार में नृत्य और संगीत शिक्षक के रूप में रहते हुए अर्जुन का नाम,—नेत्र (वि०) दूरदर्शी, मनीषी, —पाटलिः धतूरा,—पालः बड़ या गूलर का वृक्ष, —भट्टारिका दुर्गा का विशेषण,—भानुः अग्नि,—रथः 1. इन्द्र का विशेषण 2. एक राजा का नाम, जरासंध का पिता,—राविन् (पुं०) एक प्रकार का छोटा उल्लू, —स्फिच् (वि०) प्रशस्त कूल्हों वाला, बड़े नितंबों वाला।

बृहतिका [बृहत्+ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, चोगा, चादर।

बृहस्पतिः [बृहतः वाचः पतिः—पारस्करादि०] 1. देवों के गुरु, (इनकी पत्नी 'तारा' के चन्द्र द्वारा अपहरण के लिए दे० तारा या सोम के नीचे) 2. बृहस्पति ग्रह—बृहस्पतियोगदृश्यः—रघु० १३।७६ 3. एक स्मृतिकार का नाम—याज्ञ० १।४। सम०—पुरोहितः इन्द्र का विशेषण,—वारः,—वासरः गुरुवार।

बेडा [बेड+टाप्] नाव, किश्ती।

बेह् (भ्वा० आ० बेहते) उद्योग करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना।

बैजिकः (वि०) (स्त्री०—की) [बीज+ठक्] 1. वीर्यसंबंधी 2. मौलिक 3. गर्भविषयक 4. मैथुनसंबंधी, —कः अंखुवा, नया अंकुर,—कम् कारण, स्रोत, मूल।

बैडाल (त्रि०) (स्त्री०—ली) [बिडाल+अण्] 1. बिलाव से संबंध रखने वाला 2. बिलाव की विशिष्टता को रखने वाला। सम०—व्रतम् 'बिलाव जैसा व्रत' अर्थात् बिलाव की भांति अपना द्वेष तथा दुर्भावनाओं को पवित्रता और सरलता की आड़ में छिपाये रखना। —व्रतिः जो स्त्री सहवास न मिलने के कारण ही साधु जीवन बिताये (इस लिए नहीं कि उसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है)—व्रतिकः—व्रतिन् (पुं०) धर्म का आडंबर करने वाला, पाखंडी, ढोंगी।

बैदल [विदल+अण् बवयोरभेदः] दे० 'वैदल'।

बैम्बिकः [बिम्ब+ठञ्] जो महिलाविषयक कार्यों में मनोयोगपूर्वक लगनेवाला हो, प्रेमनिपुण, प्रेमी—दाक्षिण्यं नाम बिम्बोष्ठि बैम्बिकानां कुलव्रतम्—मालवि० ४।१४।

बैल्व (वि०) (स्त्री०—ल्वी) [बिल्व+अण्], 1. बेल के वृक्ष

या लकड़ी से संबद्ध या निर्मित 2. बेल के पेड़ों से ढका हुआ,—ल्वम् बेल के पेड़ का फल।

बोधः [बुध्+घञ्] 1. प्रत्यक्ष ज्ञान, जानकारी, समझ, आलोचना, विचार—बालानां सुखबोधाय—तर्क० 2. विचार, चिन्तन 3. समझ, प्रतिभा, प्रज्ञा, बुद्धिमत्ता 4. जागना, जागरूक होना, जागति की स्थिति, चेतनता 5. खिलना, फूलना, फैलना 6. शिक्षण, परामर्श, चेतावनी 7. जगाना उठाना 8. उपाधि, पद। सम० —अतीत (वि०) अज्ञेय, ज्ञान के परे,—कर (वि०) सिखाने वाला, सूचित करने वाला, (रः) 1. चारण या भाट (जो उपयुक्त भजन गाकर प्रातःकाल अपने स्वामी को जगाता है) 2. शिक्षक, अध्यापक,—पूर्व वि०) सप्रयोजन, सचेत तु० 'अबोधपूर्व',—वासरः कार्तिक शुक्ला एकादशी, जब विष्णु भगवान् अपनी चार मास की निद्रा को त्याग कर जागे हुए समझे जाते हैं—दे० मेघ० ११०, और 'प्रबोधिनी'।

बोधक (वि०) (स्त्री०—धिका) [बुध्+णिच्+ण्वुल्] 1. सूचना देने वाला, (स्थिति से) अवगत कराने वाला 2. शिक्षण देने वाला, अध्यापन करने वाला 3. अभिसूचक 4. जगाने वाला, उठाने वाला,—कः भेदिया, जासूस।

बोधनः [बुध्+णिच्+ल्युट्] बुधग्रह,—नम् संसूचन, अध्यापन, शिक्षण, ज्ञान देना—भयरुषोश्च तदिङ्गितबोधनम्—रघु० ९।४९ 3. ज्ञापन करना, निर्देश करना 3. जगाना, उठाना—समयेन तेन चिरसुप्तमनोभवबोधनं सममबोधिषत—शि० ९।२४ 4. धूप देना,—नी 1. कार्तिकशुक्ला एकादशी जब भगवान् विष्णु अपनी चार मास की नींद त्याग कर उठते हैं, देव उठनी एकादशी 2. बड़ी पीपल।

बोधानः [बुध्+आनच्] 1. बुद्धिमान् पुरुष 2. बृहस्पति का विशेषण।

बोधिः [बुध्+इन्] 1. पूर्ण मति या ज्ञान का प्रकाश 2. बुद्ध की ज्ञान से प्रकाशित प्रतिभा 3. पावन वटवृक्ष 4. मुर्गा 5. बुद्ध का विशेषण। सम० तरुः, —द्रुमः—वृक्षः पावन वटवृक्ष,—बः (जैनियों का) अर्हत्,—सत्त्वः बौद्ध संन्यासी या महात्मा जो पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि के मार्ग पर अग्रसर है तथा जिसके केवल कुछ ही जन्म अवशिष्ट हैं जिनको पार करके वह पूर्णबुद्ध की स्थिति को प्राप्त कर लेगा और जन्ममरण के दुःख से छुटकारा पा जायगा (यह स्थिति पावन तथा सत्कृत्यों की दीर्घशृंखला को पार करके प्राप्त की जाती है)—एवंविधै रतिविलसितैरतिबोधिसत्त्वैः—मा० १०।२१।

बोधित (भू० क० कृ०) [बुध्+णिच्+क्त] 1. जताया गया, सूचित किया गया, अवगत कराया गया 2. फिर ध्यान दिलाया गया 3. परामर्श दिया गया, शिक्षण प्रदान किया गया।

बौद्ध (वि०) (स्त्री०—द्धी) [बुद्धि+अण्] 1. बुद्धि या समझ से संबंध रखने वाला 2. बुद्ध विषयक,—द्धः बुद्ध द्वारा प्रचारित धर्म का अनुयायी।

बौधः [बुध+अण्] बुध का पुत्र, पुरूरवा का विशेषण।

बौधायनः [बोधस्यापत्यं पुमान्—बोध+फक्] एक प्राचीन मुनि का पितृपरक नाम जिसने श्रौतादि सूत्रों की रचना की।

ब्रध्नः [बन्ध्+नक्, ब्रधादेशः] 1. सूर्य 2. वृक्ष की जड़ 3. दिन 4. मदार का पौधा 5. सीसा (पुं०?) 6. घोड़ा 7. शिव या ब्रह्मा का विशेषण।

ब्रह्मम् [बृंह्+मनिन् नकारस्याकारे ऋतो रत्वम्—ये ये नान्ताः ते अकारान्ता अपि इत्युक्तेः अकारान्तोऽयं शब्दः] परमात्मा।

ब्रह्मण्य (वि०) [ब्रह्मन्+यत्] 1. ब्रह्म से संबद्ध 2. ब्रह्मा या प्रजापति से संबद्ध 3. पुनीत ज्ञान के ग्रहण से संबद्ध, पवित्र, पावन 4. ब्राह्मण के योग्य 5. ब्राह्मण के लिए सौहार्दपूर्ण या आतिथ्यकारी,—ण्यः 1. वेदों में निष्णात व्यक्ति—महावीर० ३।२६ 2. शहतूत का वृक्ष 3. ताड़ का पेड़ 4. मूंज नामक घास 5. शनिग्रह 6. विष्णु का विशेषण 7. कार्तिकेय का विशेषण,—ण्या दुर्गा का विशेषण। सम०—देवः विष्णु का विशेषण।

ब्रह्मण्वत् (पुं०) [ब्रह्मन्+मतुप्, वत्वम्] अग्नि का विशेषण।

ब्रह्मता,—त्वम् [ब्रह्मन्+तल्+टाप्, त्व वा] 1. परमात्मा में लीन होना 2. दिव्य प्रकृति।

ब्रह्मन् (नपुं०) [बृंह्+मनिन्, नकारस्याकारे ऋतो रत्वम्] 1. परमात्मा जो निराकार और निर्गुण समझा जाता है (वेदान्तियों के मतानुसार ब्रह्म ही इस दृश्यमान संसार का निमित्त और उपादान कारण है; यही सर्वव्यापक आत्मा और विश्व की जीव शक्ति है, यही वह मूलतत्त्व है जिससे संसार की सब वस्तुएँ पैदा होती हैं तथा जिसमें फिर वह लीन हो जाती हैं—अस्ति तावन्नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावं सर्वज्ञं सर्वशक्तिसमन्वितं ब्रह्म—शारी०) समीभूता दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनुते—भर्तृ० ३।८४, कु० ३।१५ 2. स्तुतिपरक सूक्त 3. पुनीत पाठ 4. वेद—कु० ६।१६, उत्तर० १।१५ 5. ईश्वरपरक पावन अक्षर 'ॐ' —एकाक्षरं परं ब्रह्म—मनु० २।८३ 6. पुरोहितवर्ग या ब्राह्मण समुदाय—मनु० ९।३२० 7. ब्राह्मण की शक्ति या ऊर्जा—रघु० ८।४ 8. धार्मिक साधना या तपस्या 9. ब्रह्मचर्य, सतीत्व—शाश्वते ब्रह्मणि वर्तते —श० १ 10. मोक्ष या निर्वाण 11. ब्रह्मज्ञान,

अध्यात्मविद्या 12. वेदों का ब्राह्मणभाग 13. धनदौलत, संपत्ति,—(पुं०) परमात्मा, ब्रह्मा, पावन त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में प्रथम जिनको संसार की रचना का कार्य सौंपा गया है (संसार की रचना का वर्णन बहुत सी बातों में भिन्न २ है, मनुस्मृति के अनुसार यह विश्व अंधकारावृत था, स्वयंभू भगवान् ने अंधकार को हटा कर स्वयं को प्रकट किया। सबसे पहले उसने जल पैदा किया तथा उसमें बीजवपन किया। यह बीज स्वर्णिम अंडे के रूप में हो गया, जिससे ब्रह्मा (संसार का स्रष्टा) के रूप में वह स्वयं उत्पन्न हुआ। फिर ब्रह्मा ने इस अंडे के दो खण्ड किये—जिससे उसने द्युलोक और अंतरिक्ष को जन्म दिया, उसके पश्चात् उसने दस प्रजापतियों (मानस पुत्रों) को जन्म दिया जिन्होंने सृष्टि के कार्य को पूरा किया। दूसरे वर्णन (रामायण) के अनुसार आकाश से ब्रह्मा का आगमन हुआ। उससे फिर मरीचि का जन्म हुआ, मरीचि से कश्यप और कश्यप से फिर विवस्वान् ने जन्म लिया। विवस्वान् से मनु की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार मनु ही मानव संसार का रचयिता है। तीसरे वृत्तान्त के अनुसार स्वयंभू ने सुनहरे अंडे को दो खण्डों (नर और नारी) में विभक्त किया उनसे विराज और मनु का जन्म हुआ—तु० कु० २।७, मनु० १।३२ तथा आगे। पौराणिक कथा के आधार पर ब्रह्मा का जन्म उस कमल से हुआ जो विष्णु की नाभि में उगा था। स्वयं अपनी पुत्री सरस्वती से उसने अवैध संबंध द्वारा सृष्टि रचना की। ब्रह्मा के प्रारम्भ में पाँच सिर थे, परन्तु एक सिर शिव ने अपनी अनामिका से काट दिया या तृतीय नेत्र की आग से भस्म कर दिया। ब्रह्मा की सवारी हंस है। उसके अनंत विशेषण हैं जिनमें से अधिकांश उसकी कमल में उत्पत्ति का संकेत करते हैं) 2. ब्राह्मण—श० ४।४ 3. भक्त 4. सोमयाग में नियुक्त चार ऋत्विजों (पुरोहितों) में से एक 5. धर्मज्ञान का ज्ञाता 6. सूर्य 7. प्रतिभा 8. सात प्रजापतियों (मरीचि, अत्रि, अंगिरस्, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ) का विशेषण 9. बृहस्पति का विशेषण 10. शिव का विशेषण। सम०—अक्षरम् पावन अक्षर 'ॐ',—अङ्गभूः घोड़ा,—अञ्जलिः वेद पाठ करते समय हाथ जोड़ कर सादर अभिवादन 2. आचार्य या गुरु का सम्मान (वेद पाठ के आरम्भ तथा समाप्ति पर),—अण्डम् 'ब्रह्मा' का अंडा', बीजभूत अंडा जिससे यह समस्त संसार या विश्व का उद्भव हुआ—ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः—दश० १, —पुराणम् 1. अठारह पुराणों में से एक पुराण, —अभिजाता गोदावरी नदी का एक विशेषण, —अधिगमः,—अधिगमनम् वेदों का अध्ययन, —अभ्यासः वेदों का अध्ययन,—अम्भस् (नपुं०) गोमूत्र, —अयणः,—नः नारायण का विशेषण,—अर्पणम् 1. ब्रह्मज्ञान का अर्पण 2. परमात्मा में अनुरक्ति 3. एक प्रकार का जादू या मन्त्र,—अस्त्रम् ब्रह्मा से अधिष्ठित एक अस्त्र,—आत्मभूः घोड़ा,—आनन्दः ब्रह्म में लीन होने का आत्यंतिक सुख या आनंद—ब्रह्मानन्द साक्षात्क्रिया—महावीर० ७।३१,—आरम्भः वेदों का पाठ आरंभ करना—मनु० २।७१,—आवर्तः (हस्तिनापुर के पश्चिमोत्तर में) सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का मार्ग—सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरं, तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते—मनु० २।१७, १९, मेघ० ४८,—आसनम् गहन समाधि के लिए विशिष्ट आसन,—आहुतिः (स्त्री०) प्रार्थनापरक मंत्रों का पाठ, स्वस्तिवाचन, दे० ब्रह्मयज्ञ,—उज्झता वेदों को भूल जाना या उनकी उपेक्षा करना—मनु० ११।५७, (अधीतवेदस्यानभ्यासेन विस्मरणम्—कुल्लू०),—उद्यम् वेद की व्याख्या करना, ब्रह्मज्ञानविषयक समस्याओं पर विचार विमर्श,—उपदेशः ब्रह्मज्ञान या वेद का शिक्षण, °नेतृ (पुं०) ढाक का वृक्ष,—ऋषिः (ब्रह्मर्षि या ब्रह्म ऋषि) ब्राह्मण ऋषि,—देशः मंडल, जिला (कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पंचालाः शूरसेनकाः, एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तरः—मनु० २।१९) —कन्यका सरस्वती का विशेषण,—करः पुरोहित वर्ग को दिया जाने वाला शुल्क,—कर्मन् (नपुं०) 1. ब्राह्मण के धार्मिक कर्तव्य 2. यज्ञ के चार मुख्य पुरोहितों में ब्राह्मण का पद,—कल्पः ब्रह्मा की आयु, —काण्डम् ब्रह्मज्ञान से संबद्ध वेद का भाग,—काष्ठः शहतूत का पेड़,—कूर्चम् एक प्रकार की साधना —अहोरात्रोषितो भूत्वा पौर्णमास्यां विशेषतः, पंचगव्यं पिबेत् प्रातर्ब्रह्मकूर्चमिति स्मृतम्,—कृत् (वि०) स्तुति करने वाला (पुं०) विष्णु का विशेषण,—गुप्तः एक ज्योतिर्विद् का नाम जो सन् ५९८ ई० में उत्पन्न हुआ था,—गोलः विश्व,—गौरवम् ब्रह्मा से अधिष्ठित अस्त्र का सम्मान—भट्टि० ९।७६, (मा भून्मोघो ब्राह्मः पाश इति),—ग्रन्थिः शरीर का विशिष्ट जोड़, ब्रह्मगांठ,—ग्रहः,—पिशाचः,—पुरुषः,—रक्षस् (नपुं०), —राक्षसः एक प्रकार का भूत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस जो जीवन भर घृणित वृत्ति में संलग्न रहता है दूसरों की पत्नियों का तथा ब्राह्मणों की संपत्ति का अपहरण करता है (परस्य योषितं हृत्वा ब्रह्मस्वमपहृत्य च, अरण्ये निर्जले देशे भवति ब्रह्मराक्षसः—याज्ञ० ३।२१२, तु० मनु० १२।६० भी),—घातकः ब्राह्मण की हत्या करने वाला,—घातिनी ऋतु के दूसरे दिन की रजस्वला स्त्री,—घोषः 1. वेद का सस्वर पाठ 2. पावन शब्द,

वेदत्रयी—उत्तर० ६।९ (पांठांतर),—घ्नः ब्राह्मण की हत्या करने वाला,—चर्यम् 1. धार्मिक शिष्यवृत्ति, वेदाध्ययन के समय ब्राह्मण बालक का ब्रह्मचर्यजीवन, जीवन का प्रथम आश्रम—अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममाचरेत्—मनु० ३।२, २।२४९, महावीर० १।२४ 2. धार्मिक अध्ययन, आत्मसंयम 3. कौमार्य, सतीत्व, विरति, इन्द्रियनिग्रह, (र्यः) वेदाध्ययनशील, —दे० ब्रह्मचारिन् ((र्या) सतीत्व, कौमार्य, °व्रतम् सतीत्व रक्षण की प्रतिज्ञा °स्खलनम् सतीत्व या ब्रह्मचर्य से गिर जाना, इन्द्रियनिग्रह का अभाव —चारिकम् वेदों के विद्यार्थी का जीवन,—चारिन् (पुं०) 1. वेद का विद्यार्थी, जीवन के प्रथम आश्रम में वर्तमान ब्राह्मण जो यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात् दीक्षित होकर गुरुकुल में अपने गुरु के साथ रहता है तथा वेदाध्ययन के समय ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करता रहता है जब तक कि वह गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट नहीं हो जाता है—मनु० २।४१, १७५, ६।८७ 2. जो आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करता है,—चारिणी 1. दुर्गा का विशेषण 2. वह स्त्री जो सतीत्व व्रत का पालन करती है,—जः कार्तिकेय का विशेषण,—जारः ब्राह्मण की पत्नी का प्रेमी, —जीविन् (पुं०) जो ब्रह्मज्ञान के द्वारा ही अपनी आजीविका कमाता है,—ज्ञ (वि०) जो ब्रह्म को जानता है (ज्ञः) 1. कार्तिकेय का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण,—ज्ञानम् सत्यज्ञान, दिव्यज्ञान, विश्व की ब्रह्म के साथ एकरूपता का ज्ञान,—ज्येष्ठः ब्राह्मण का बड़ा भाई,—ज्योतिस् (नपुं०) ब्रह्म या परमात्मा की ज्ञानज्योतिः,—तत्त्वम् परमात्मा का यथार्थ ज्ञान,—तेजस् (नपुं०) 1. ब्रह्मा की कीर्ति 2. ब्रह्म की कान्ति, वह कीर्ति या कान्ति जो ब्राह्मण को चारों ओर से घेरे हुए समझी जाती है,—दः वेदज्ञान के प्रदाता गुरु,—दण्डः 1. ब्राह्मण का शाप 2. ब्राह्मण को दिया गया उपहार 3. शिव का विशेषण,—दानम् 1. वेद पढ़ानर 2. वेद का ज्ञान जो उत्तराधिकार में या वंशानुक्रम से प्राप्त होता है, —दायादः 1. ब्राह्मण, जो वेदों को अनुवंशिक उपहार के रूप में प्राप्त करता है 2. ब्राह्मण का पुत्र, —दारुः शहतूत का पेड़,—दिनम् ब्रह्मा का दिन,—दैत्यः वह ब्राह्मण जो राक्षस बन जाय—तु०, ब्रह्मग्रह,—द्विष्,-द्वेषिन् (वि०) 1. ब्राह्मणों से घृणा करने वाला 2. वेदविहित कृत्यों या भक्ति का विरोधी, अपावन, निरीश्वरवादी,—द्वेषः ब्राह्मणों की घृणा,—नदी सरस्वती नदी का विशेषण,—नाभः विष्णु का विशेषण,—निर्वाणम् परमब्रह्म में लीन होना,—निष्ठ (वि०) परमात्मचिन्तन में लीन, (ष्ठः) शहतूत का पेड़,—पदम् 1. ब्राह्मण का पद या दर्जा 2. परमात्मा का स्थान, —पवित्रः कुश नामक घास,—परिषद् (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा,—पादपः ढाक का पेड़,—पारायणम् वेदों का पूर्ण अध्ययन, सारे वेद—उत्तर० ४।९, महावीर० १।१४,—पाशः ब्रह्मा द्वारा अधिष्ठित्र अस्त्र विशेष —भट्टि० ९।७५,—पितृ (पुं०) विष्णु का विशेषण, —पुत्रः 1. ब्राह्मण का बेटा 2. हिमालय की पूर्वी सीमा से निकलने वाला तथा गंगा के साथ मिल कर बंगाल की खाड़ी में गिरने वाला 'ब्रह्मपुत्र' नाम का दरिया, (त्री) सरस्वती नदी का विशेषण,—पुरम्,-पुरी 1. (स्वर्ग में) ब्रह्मा का नगर 2. वाराणसी,—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक का नाम,—प्रलयः ब्रह्मा के सौ वर्ष बीतने पर सृष्टि का विनाश जिसमें स्वयं परमात्मा भी विलीन माना जाता है,—प्राप्तिः (स्त्री०) परमात्मा में लीन होना,—बन्धुः ब्राह्मण के लिए तिरस्कार-सूचक शब्द, अयोग्य ब्राह्मण—मा० ४, विक्रम० २ 2. जो केवल जाति से ब्राह्मण हो, नाम मात्र का ब्राह्मण,—बीजम् ईश्वरवाचक अक्षर ॐ, —ब्रुवाणः जो ब्राह्मण होने का बहाना करता है,—भवनम् ब्राह्मण का आवास,—भागः शहतूत का वृक्ष,—भावः परमात्मा में लीन होना,—भुवनम् ब्रह्मा की सृष्टि —भग० ८।१६,—भूत (वि०) जो ब्रह्मा के साथ एक रूप हो गया है, परमात्मा में लीन,—भूतिः (स्त्री०) संध्या,—भूयम् 1. ब्रह्म के साथ एकरूपता 2. ब्रह्म में लीनता, मोक्ष, निर्वाण—स ब्रह्मभूयं गतिमाजगाम—रघु० १८।२८, ब्रह्मभूयाय कल्पते —भग० १४।२६, मनु० १।९८ 2. ब्राह्मणत्व, ब्राह्मण का पद या स्थिति,—भूयस् (नपुं०) ब्रह्म में लय, —मंगलदेवता लक्ष्मी का विशेषण—मीमांसा, वेदान्तदर्शन जिसमें ब्रह्म या परमात्माविषयक चर्चा है,—मूर्ति (वि०) ब्रह्म का रूप रखने वाला,—मूर्धभृत् शिव का विशेषण,—मेखलः मूंज घास का पौधा,—यज्ञः (गृहस्थ द्वारा अनुष्ठेय) दैनिक पंचयज्ञों में से एक, वेद का अध्यापन तथा सस्वर पाठ—अध्यापनं ब्रह्म यज्ञः—मनु० ३।७० (अध्यापनशब्देन अध्ययनमपि गृह्यते—कुल्लू०),—योगः ब्रह्मज्ञान का अनुशीलन या अभिग्रहण,—योनि (वि०) ब्रह्म से उत्पन्न,—रत्नम् ब्राह्मण को दिया गया मूल्यवान् उपहार,—रन्ध्रम् मूर्धा में एक प्रकार का विवर जहाँ से जीव इस शरीर को छोड़ कर निकल जाता है,—राक्षसः दे० ब्रह्मग्रह, —रातः शुकदेव का विशेषण,—राशिः 1. ब्रह्मज्ञान का मंडल या समस्त राशि, संपूर्ण वेद 2. परशुराम का विशेषण,—रीतिः (स्त्री०) एक प्रकार का पीतल —रे(ले) खा,-लिखितम्,-लेखः विधाता के द्वारा मस्तक पर लिखी गई पंक्तियाँ जिनसे मनुष्य का भाग्य प्रकट होता है, मनुष्य का प्रारब्ध,—लोकः ब्रह्मा

का लोक, —क्तृ (पुं०) वेदों का व्याख्याता, —वधम् ब्रह्म का ज्ञान, —वधः, वध्या, —हत्या ब्राह्मण की हत्या, —वर्चस् (नपुं०), —वर्चसम् 1. दिव्य आभा या कीर्ति, ब्रह्मज्ञान से उत्पन्न आत्मशक्ति या तेज (तस्य हेतुस्त्वद् ब्रह्मवर्चसम्—रघु० १।६३, मनु० २।३७, ४।९४ 2. ब्राह्मण की अन्तर्हित पवित्रता या शक्ति, ब्रह्मतेज—श० ६, —वर्चसिन्, —वर्चस्विन् (वि०) ब्रह्म तेज से पवित्रीकृत, शुद्धात्मा (पुं०) प्रमुख या श्रद्धेय ब्राह्मण, —वर्तः दे० ब्रह्मावर्त, —वर्धनम् तांबा, —वादिन् (पुं०) 1. जो वेदों का अध्यापन करता है, वेदव्याख्याता उत्तर० १, मा० १ 2. वेदान्त दर्शन का अनुयायी, —वासः ब्राह्मण का आवासस्थल, —विद्-विद (वि०) परमात्मा को जानने वाला, ब्रह्मज्ञ (पुं०) ऋषि, ब्रह्मवेत्ता, वेदान्ती, —विद्या ब्रह्मज्ञान, —विं (बिं) दुः वेद का पाठ करते समय मुँह से निकलने वाला थूक का छींटा, —विवर्धनः इन्द्र का विशेषण, —वृक्षः 1. ढाक का पेड़, 2. गूलर का वृक्ष, —वृत्तिः (स्त्री०) ब्राह्मण की आजीविका, —वृन्दम् ब्राह्मणों की समूह, —वेदः 1. वेदों का ज्ञान 2. ब्रह्म का ज्ञान 3. अथर्ववेद का नाम, —वेदिन् (वि०) वेदवेत्ता, तु० ब्रह्मविद्, —वैवर्तम् अठारह पुराणों में से एक, —व्रतम् सतीत्व या शुचिता की प्रतिज्ञा, —शिरस्—शीर्षन् (नपुं०) एक विशिष्ट अस्त्र का नाम, —संसद् (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा, —सती सरस्वती नदी का विशेषण, —सत्रम् 1. वेद का पढ़ना-पढ़ाना, ब्रह्मयज्ञ 2. परमात्मा में लय होना, —सदस् (नपुं०) ब्रह्मा का निवासस्थान, —सभा ब्रह्मा का दरबार, ब्रह्मा की सभा या भवन, —संभव (वि०) ब्रह्मा से उत्पन्न या प्राप्त, (वः) नारद का नामान्तर, —सर्पः एक प्रकार का साँप, —सायुज्यम् परमात्मा के साथ पूर्ण एकरूपता—तु० ब्रह्मभूय, —सार्ष्टिका ब्रह्म के साथ एकं रूपता—मनु० ४।२३२, —सावर्णिः दसवें मनु का नामान्तर, —सुतः 1. नारद का नामान्तर, मरीचि आदि 2. एक प्रकार का केतु, —सूः 1. अनिरुद्ध का नामान्तर 2. कामदेव का नामान्तर, —सूत्रम् 1. जनेऊ या यज्ञोपवीत जिसे ब्राह्मण या द्विजमात्र कंधे के ऊपर से धारण करते हैं 2. बादरायण द्वारा रचित वेदान्तदर्शन के सूत्र, —सूत्रिन् (वि०) जिसका उपनयन संस्कार हो चुका हो, यज्ञोपवीतधारी, —सृज् (पुं०) शिव का विशेषण, —स्तम्ब संसार, विश्व—महावीर० ३।४८, —स्तेयम् अवैध उपायों से उपार्जित वेदज्ञान, —स्वम् ब्राह्मण की संपत्ति या धनदौलत, —याज्ञ० ३।२१२, °हारिन् (वि०) ब्राह्मण का धन चुराने वाला, —हन् (वि०) ब्रह्महत्यारा, ब्राह्मण की हत्या करने वाला, —हुतम् दैनिक पाँच यज्ञों में से एक जिसमें अतिथिसत्कार की क्रियाएँ सम्मिलित हैं मनु० ३।७४, —हृदयः, —यम् एक नक्षत्र का नाम जिसे अंग्रेजी में कैपेल्ला कहते हैं।

ब्रह्ममय (वि०)[ब्रह्मन्+मयट्] 1. वेद से युक्त या व्युत्पन्न, वेद या वेदज्ञान से संबद्ध - ज्वलन्निव ब्रह्ममयेन तेजसा —कु० ५।३० 2. ब्राह्मण के योग्य, —यम् ब्रह्मा से अधिष्ठित अस्त्र।

ब्रह्मवत् (वि०) [ब्रह्म+मतुप्] वेदज्ञान रखने वाला।

ब्रह्मसात् (अव्य०) [ब्रह्मन्+साति] 1, ब्रह्म या परमात्मा की स्थिति 2. ब्राह्मणों की देखरेख में।

ब्रह्माणी [ब्रह्मन्+अण्+ङीप्] 1. ब्रह्मा की पत्नी 2. दुर्गा का विशेषण 3. एक प्रकार का गन्धद्रव्य (रेणुका) 4. एक प्रकार का पीतल।

ब्रह्मिन् (वि०) [ब्रह्मन्+इनि, टिलोपः] ब्रह्मा से संबद्ध, (पुं०) विष्णु का विशेषण।

ब्रह्मिष्ठ (वि०) [ब्रह्मन्+इष्ठन्, टिलोपः] वेदों का पूर्ण पंडित, अतिशय विद्वान्, या पुण्यात्मा—ब्रह्मिष्ठमाधाय निजेऽधिकारे ब्रह्मिष्ठमेव स्वतनुप्रसूतम्—रघु० १८।२८, —ष्ठा दुर्गा का विशेषण।

ब्रह्मी [ब्रह्मन्+अण्+ङीप्] ब्राह्मी बूटी का पौधा।

ब्रह्मेशयः [ब्रह्मणि तपसि शेते—शी+अच्, पृषो० साधुः] 1. कार्तिकेय का विशेषण 2. विष्णु की उपाधि।

ब्राह्म (वि०) (स्त्री०—ह्मी) [ब्रह्मन्+अण्, टिलोपः] ब्रह्मा, विधाता या परमात्मा से संबद्ध,—रघु० १३।६०, मनु० २।४०, भग० २।७२ 2. ब्राह्मणों से संबद्ध 3. वेदाध्ययन या ब्रह्मज्ञान से संबद्ध 4. वेदविहित, वैदिक 5. विशुद्ध, पवित्र, दिव्य 6. ब्रह्मा द्वारा अधिष्ठित जैसा कि मुहूर्त (दे० ब्राह्ममुहूर्त), या अस्त्र, —ह्मः हिन्दूधर्मशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक; जिसमें आभूषणों से अलंकृत कन्या, वर से विना कुछ लिये, उसे दान कर दी जाती है (यही आठों भेदों में सर्वश्रेष्ठ प्रकार है)। —ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यलङ्कृता—याज्ञ० १।५८, मनु० ३।२१,२७ 2. नारद का नामान्तर, —ह्मम् हथेली का अंगुष्ठमूल के नीचे का भाग 2. वेदाध्ययन। सम० अहोरात्रः ब्रह्मा का एक दिन और एक रात, —देया ब्राह्म विवाह की रीति से विवाहित की जाने वाली कन्या, —मुहूर्तः दिन का विशिष्ट भाग, दिन का सर्वथा सवेरे का समय (रात्रेश्च पश्चिमे यामे मुहूर्तो ब्राह्म उच्यते)- ब्राह्मे मुहूर्ते किल तस्य देवी कुमारकल्पं सुषुवे कुमारम् —रघु० ५।३६।

ब्राह्मण (वि०) (स्त्री०—णी) [ब्रह्म वेदं शुद्धं चैतन्यं वा वेत्त्यधीते वा—अण्] 1. ब्राह्मण का 2. ब्राह्मण के योग्य 3. ब्राह्मण द्वारा दिया गया, —णः 1. हिंदू

धर्म के माने हुए चार वर्णों में सर्वप्रथम वर्ण का, (पुरुष-- ब्रह्मा--के मुख से उत्पन्न—ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् ऋक्० १०।९०।१२, मालवि० १।३१, ९६) ब्राह्मण--जन्मना जायते शूद्रः संस्कारैर्द्विज उच्यते, विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते, या—जात्या कुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन च, एभिर्युक्तो हि यस्तिष्ठेन्नित्यं स द्विज उच्यते) 2. पुरोहित, ब्रह्मज्ञानी या धर्मशास्त्री 3. अग्नि का विशेषण 4. वेद का वह भाग जो विविध यज्ञों के विषय में मन्त्रों के विनियोग तथा विधियों का प्रतिपादन करता है, साथ ही उनके मूल तथा विवरणात्मक व्याख्या को तत्संबंधी निदर्शनों के साथ जो उपाख्यानों के रूप में विद्यमान हैं, प्रस्तुत करता है; वेद के मन्त्रभाग से यह बिल्कुल पृथक् है 5. वैदिक रचनाओं का समूह जिसमें ब्राह्मण भाग सम्मिलित है (वेद के मंत्रों की भाँति अपौरुषेय या श्रुति माना जाता है) प्रत्येक वेद का अपना पृथक्-पृथक् ब्राह्मण है, ये हैं ऋग्वेद के ऐतरेय या आश्वलायन, और कौशीतकी या सांख्यायन ब्राह्मण हैं, यजुर्वेद का शतपथ, सामवेद का पंचविंश, षड्विंश तथा छः और हैं, अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है)। सम०—अतिक्रमः ब्राह्मणों के प्रति सदोष या तिरस्कार सूचक व्यवहार, ब्राह्मणों का अनादर —ब्राह्मणातिक्रमत्यागो भवतामेव भूतये महावीर० २।८०,—अपाश्रयः ब्राह्मणों की शरण में जाना, —अभ्युपपत्तिः (स्त्री०) ब्राह्मण की रक्षा या पालन-पोषण, ब्राह्मण के प्रति प्रदर्शित कृपा मनु० ९।८७, —घ्नः ब्राह्मण की हत्या करने वाला,—जातम्,—जातिः (स्त्री०) ब्राह्मण की जाति,—जीविका ब्राह्मण के लिए विहित वृत्ति के साधन,—द्रव्यम्,—स्वम् ब्राह्मण की संपत्ति, निन्दकः ब्राह्मणों की निन्दा करने वाला, —ब्रुवः जो ब्राह्मण होने का बहाना करता है, नाम मात्र का ब्राह्मण जो ब्राह्मण जाति के विहित कर्तव्यों का पालन नहीं करता है बहवो ब्राह्मणब्रुवा निवसन्ति दश०, मनु० ७।८५, ८।२०, भूयिष्ठ (वि०) जिसमें अधिकतर ब्राह्मण ही रहते हों,—वधः ब्राह्मण की हत्या, ब्रह्महत्या, संतर्पणम् ब्राह्मणों को खिलाना या तृप्त करना।

ब्राह्मणकः [ब्राह्मण+कन्] 1. अयोग्य या नीच ब्राह्मण, नाम मात्र का ब्राह्मण 2. एक देश का नाम जहाँ योद्धा ब्राह्मणों का वास हो।

ब्राह्मणत्रा (अव्य०) [ब्राह्मण+त्राच्] 1. ब्राह्मणों में 2. ब्राह्मण की पदवी को—जैसा कि 'ब्राह्मणात् भवति धनम्' में।

ब्राह्मणाच्छंसिन् (पुं०) [ब्राह्मणे विहितानि शास्त्राणि शंसति द्वितीयार्थे पंचम्युपसंख्यानम्—अलुक् स०, शंस्+इनि] एक पुरोहित का नामान्तर, ब्रह्मा नामक ऋत्विज् का सहायक।

ब्राह्मणी [ब्राह्मण+ङीप्] 1. ब्राह्मण जाति की स्त्री 2. ब्राह्मण की पत्नी 3. प्रतिभा (नीलकंठ के मतानुसार 'बुद्धि') 4. एक प्रकार की छिपकली 5. एक प्रकार की भिरड़ 6. एक प्रकार का घास। सम० —गामिन् (पुं०) ब्राह्मण स्त्री का प्रेमी।

ब्राह्मण्य (वि०) [ब्राह्मण+ष्यञ् वा यत्] ब्राह्मण के योग्य,—ण्यः शनिग्रह का विशेषण,—ण्यम् 1. ब्राह्मण की पदवी या दर्जा, पौरोहित्य या याजकीय वृत्ति, —सत्यं शपे ब्राह्मण्येन—मृच्छ० ५, पंच० १।६६, मनु० ३।१७,७।४२ 2. ब्राह्मणों का समुदाय।

ब्राह्मी [ब्राह्म+ङीप्] 1. ब्रह्म की मूर्तिमती शक्ति 2. वाणी की देवी सरस्वती 3. वाणी 4. कहानी, कथा 5. धार्मिक प्रथा या रिवाज 6. रोहिणी नक्षत्र 7. दुर्गा का नामान्तर 8. ब्राह्मविवाह की विधि से परिणीता स्त्री 9. ब्राह्मण की पत्नी 10. एक प्रकार की बूटी 11. एक प्रकार का पीपल 12. नदी का नामान्तर। सम० कन्दः वाराही कंद,—पुत्रः ब्राह्मी का पुत्र—दे० ऊ०, मनु० ३।२७,३७।

ब्राह्म्य (वि०) (स्त्री०—ह्म्यी) [ब्रह्मन्+ष्यञ्] 1. ब्रह्मा अर्थात् विधाता से संबंध रखने वाला 2. परमात्मा से संबद्ध 3. ब्राह्मणों से संबद्ध,—ह्म्यम् आश्चर्य, अचम्भा विस्मय। सम० मुहूर्तः=ब्राह्ममुहूर्त,—हुतम् अतिथि-सत्कार दे० 'ब्रह्मयज्ञ'।

ब्रुव (वि०) [ब्रू+क] बनने वाला, बहाना करने वाला, अपने आपको उस नाम से पुकारने वाला जो उसका वास्तविक नाम न हो, (समास के अन्त में) यथा ब्राह्मणब्रुव, क्षत्रियब्रुव में।

ब्रू (अदा० उभ० ब्रवीति-ब्रूते या आह) (आर्धधातुक लकारों में इस धातु में असाधारण परिवर्तन होता है, इसके रूप 'वच्' धातु से बनाये जाते हैं) 1. कहना बोलना, बात करना (द्विकर्मक धा०) तां···ब्रूया एवम् मेघ० १०४, रामं यथास्थितं सर्वं भ्राता ब्रूते स्म विह्वलः भट्टि० ६।८, या माणवकं धर्मं ब्रूते—सिद्धा०, किं त्वां प्रतिब्रूमहे—भामि० १।४६ 2. कहना, बोलना, संकेत करना (किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर) अहं तु शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि श० २, 3. घोषणा करना, प्रकथन करना, प्रकाशित करना, सिद्ध करना—ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् नै० २।४६, रत्न० २।१३ 4. नाम लेना, पुकारना, नाम रखना, छंदसि दक्षा ये कवयस्तन्मणिमध्यं ते ब्रुवते श्रुत० १५ 5. उत्तर देना —ब्रूहि मे प्रश्नान्, अनु कहना, बोलना, घोषणा करना, निस्,—व्याख्या करना, व्युत्पत्ति बतलाना,

प्र—,कहना बोलना, बात करना—भट्टि० ८।८५, प्रति—, उत्तर में बोलना, उत्तर या जवाब देना —प्रत्यब्रवीच्चैनम्—रघु० २।४२ वि—, 1. कहना, बोलना 2. गलत कहना, मिथ्या बतलाना।

ब्लेष्कम् (नपुं०) फंदा, जाल, पाश।

भ

भः [भा+ड] 1. शुक्र ग्रह का नामान्तर 2. भ्रम, भ्रान्ति, आभास,—भम् 1. तारा 2. नक्षत्र 3. ग्रह 4. राशि 5. सत्ताइस की संख्या 6. मधुमक्खी। सम०—इनः, —ईशः सूर्य,—गणः,—वर्गः 1. तारापुंज, नक्षत्रपुंज 2. राशिचक्र 3. ग्रहों का राशिचक्र में भ्रमण,—गोलः तारामंडल, — चक्रम् — मण्डलम् राशिचक्र, —पतिः चन्द्रमा,—सूचकः ज्योतिषी।

भक्किका [?] झींगुर।

भक्त (भू० क० कृ०) [भज्+क्त] 1. विभक्त, नियतीकृत, निर्दिष्ट 2. विभाजित 3. सेवित, पूजित 4. व्यस्त, दत्तचित्त 5. अनुरक्त, संलग्न, श्रद्धालु, निष्ठावान् —भग० ९।३४ 6. प्रसाधित, (भोजन आदि) पक्व, दे० भज्,—क्तः पूजक, आराधक, उपासक, पुजारी या दास, स्वामिभक्त नौकर—भक्तोऽसि मे सखा चेति —भग० ४।३, ९।३१, ७।२३,—क्तम् 1. हिस्सा, भाग 2. भोजन—भर्तृ० ३।७४ 3. उबाला हुआ चावल, भात—उत्तर० ४।१ 4. पानी में डाल कर पकाया हुआ कोई भी अन्न। सम०—अभिलाषः भोजन की इच्छा, भूख,—उपसाधकः रसोइया,—कंसः भोजन की थाली,—करः नाना प्रकार के गंध द्रव्यों से तैयार की गई धूप,—कारः रसोइया,—छन्दम् भूख,—दासः भोजन मात्र पर दूसरों की सेवा करने वाला नौकर, जिसे सेवा के बदले केवल भोजन ही मिलता है—मनु० ८।४१५,—द्वेषः भोजन से अरुचि, मंदाग्नि,—मण्डः भात का मांड,—रोचन (वि०) भूख को उत्तेजित करने वाला,—वत्सल (वि०) अपने पूजक और भक्तों के प्रति कृपालु,—शाला 1. श्रोतृ-कक्ष (प्रार्थियों की बात सुनने का कमरा) 2. भोजन-गृह।

भक्तिः (स्त्री०) [भज्+क्तिन्] 1. वियोजन, पृथक्करण, विभाजन 2. प्रभाग, अंश, हिस्सा 3. उपासना, अनुरक्ति, सेवा, स्वामिभक्ति—कु० ७।३७, रघु० २।६३, मुद्रा० १।१५ 4. सम्मान, सेवा, पूजा, श्रद्धा 5. विन्यास, व्यवस्था—रघु० ५।७४ 6. सजावट, अलंकार, शृंगार —आबद्धमुक्ताफलभक्तिचित्रे—कु० ७।१०, ९४, रघु० १३।५९, ७५, १५।३० 7. विशेषण। सम०—नम्र (वि०) विनम्र अभिवादन करने वाला,—पूर्वम्, —पूर्वकम् (अव्य०) भक्तिपूर्वक, सम्मानपूर्वक,—भाज् (वि०) 1. धर्मनिष्ठ, श्रद्धालु 2. दृढ़ अनुराग रखने वाला, निष्ठावान्, श्रद्धालु,—मार्गः भक्ति की रीति अर्थात् परमात्मा की उपासना (शाश्वत शान्ति और मोक्ष प्राप्ति की रीति 'भक्ति या उपासना' ही समझी जाती है),—योगः सानुराग निष्ठा, श्रद्धापूर्वक उपासना,—वादः अनुराग का विश्वास।

भक्तिमत् (वि०) [भक्ति+मतुप्] 1. उपासक, श्रद्धालु 2. निष्ठावान्, स्वामिभक्त, अनुरागी।

भक्तिल (वि०) [भक्ति+ला+क] स्वामिभक्त, विश्वासपात्र (जैसे कि घोड़ा)।

भक्ष् (चुरा० उभ०—भक्षयति—ते, भक्षित) 1. खाना, निगलना—यथामिषं जले मत्स्यैर्भक्ष्यते श्वापदैर्भुवि —पंच० १ 2. उपयोग में लाना, उपभोग करना 3. बर्बाद करना, नष्ट करना 4. काटना।

भक्षः [भक्ष्+घञ्] 1. खाना 2. भोजन।

भक्षक (वि०) (स्त्री०—क्षिका) [भक्ष्+ण्वुल्] 1. खाने वाला, निर्वाह करने वाला 2. पेटू, भोजनभट्ट।

भक्षण (वि०) (स्त्री०—णी) [भक्ष्+ल्युट्] खाने वाला, निगलने वाला,—णम् खाना, खिलाना, जीविका चलाना।

भक्ष्य (वि०) [भक्ष्+ण्यत्] खाने के योग्य, भोजन के लायक,—क्ष्यम् कोई भी भोज्य पदार्थ, खाद्य पदार्थ, आहार, (आलं० भी)—भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिर्विपत्तेरेव कारणम्—हि० १।५५, मनु० १।११३। सम०—कारः ('भक्ष्यंकारः' भी) पाचक, रसोइया।

भगः [भज्+घ] 1. सूर्य के बारह रूपों में एक, सूर्य 2. चन्द्रमा 3. शिव का रूप 4. अच्छी किस्मत, भाग्य, सुखद नियति, प्रसन्नता—आस्ते भग आसीनस्य—ऐ० ब्रा०, भगमिन्द्रश्च वायुश्च भगं सप्तर्षयो ददुः—याज्ञ० १।२८२ 5. सम्पन्नता, समृद्धि 6. मर्यादा, श्रेष्ठता 7. प्रसिद्धि, कीर्ति 8. लावण्य, सौन्दर्य 9. उत्कर्ष, श्रेष्ठता 10. प्रेम, स्नेह 11. प्रेममय रंगरेलियाँ, केलि, आमोद 12. स्त्री की योनि—याज्ञ० ३।८८, मनु० ९।२३७ 13. सद्गुण, नैतिकता, धर्म की भावना 14. प्रयत्न, चेष्टा 15. इच्छा का अभाव, सांसारिक

विषयों में विरति 16. मोक्ष 17. सामर्थ्य 18. सर्वशक्तिमत्ता (नपुं० भी अन्तिम १५ अर्थों में),—गम् उत्तराफल्गुनी नक्षत्र। सम०—अङ्कुरः (आयु० में) चिंकु, योनिद्वार पर की गुटिका,—आधानम् दाम्पत्य-सुख प्रदान करना,—घ्नः शिव का विशेषण,—देवः पूर्ण स्वेच्छाचारी, लम्पट,—देवता विवाह की अधिष्ठात्री देवता,—दैवतम् उत्तराफल्गुनी नक्षत्र,—नन्दनः विष्णु का विशेषण,—भक्षकः विट, दलाल, भडुआ,—वेदनम् वैवाहिक आनन्द की उद्घोषणा।

भगन्दरः [भग+दृ+णिच्+खच्, मुम्] एक रोग जो गुदावर्त में व्रण के रूप में होता है।

भगवत् (वि०) [भग+मतुप्] 1. यशस्वी, प्रसिद्ध 2. सम्मानित, श्रद्धेय, दिव्य, पवित्र (देव, उपदेव तथा अन्य प्रतिष्ठित एवं संमाननीय व्यक्तियों का विशेषण)—अथ भगवान् कुशली काश्यपः—श० ५, भगवन्परवानयं जनः—रघु० ८।८१, इसी प्रकार भगवान् वासुदेवः—आदि (पुं०) 1. देव, देवता 2. विष्णु का विशेषण 3. शिव का विशेषण 4. जिन का विशेषण 5. बुद्ध का विशेषण।

भगवदीयः [भगवत्+छ] विष्णु का पूजक।

भगालम् [भज्+कालन्, कुत्वम्] खोपड़ी।

भगालिन् (पुं०) [भगाल+इनि] शिव का विशेषण।

भगिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [भग+इनि] 1. फलता-फूलता, संपन्न, भाग्यशाली 2. वैभवशाली, शानदार।

भगिनिका [भगिनी+कन्+टाप्, इत्वम्] बहन।

भगिनी [भगिन्+ङीप्] 1. बहन 2. सौभाग्यवती स्त्री 3. स्त्री०। सम०—पतिः,—भर्तृ (पुं०) बहन का पति, बहनोई।

भगिनीयः [भगिनी+छ] बहन का पुत्र, भानजा।

भगीरथः [?] एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा का नाम, सगर का प्रपौत्र, जो अतिशय घोर साधना करके स्वर्ग से दिव्य गंगा को उतार कर इस पृथ्वी पर लाया, तथा राजा सगर के ६० हजार पुत्रों (पूर्वपुरुषों) की भस्म को पवित्र करने के लिए इस पृथ्वी से पाताल लोक को ले गया। सम०—पथः,—प्रयत्नः भगीरथ का प्रयास जो किसी अतिदुष्कर कार्य या भीम कर्म को आलंकारिक रूप से प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है,—सुता गंगा का विशेषण।

भग्न (भू० कं० कृ०) [भञ्ज्+क्त] 1. टूटा हुआ, हड्डी टूटी हुई, टूटा फूटा, फटा-पुराना 2. हताश, ध्वस्त, निराश 3. अवरुद्ध, गृहीत, निलंबित 4. बिगाड़ा हुआ, तोड़ा-फोड़ा हुआ 5. पराजित, पूर्णरूप से परास्त, छिन्न-भिन्न किया हुआ—उत्तर० ५ 6. दहाया हुआ, विनष्ट (दे० भञ्ज्),—ग्नम् पैर की हड्डी का टूटना। सम०—आत्मन् (पुं०) चन्द्रमा का विशेषण,—आपद् (वि०) जिसने कठिनाइयों और आपत्तियों पर विजय प्राप्त कर ली है,—आश (वि०) निराश—भर्तृ० २।८४, हताश—भर्तृ० ३।५२,—उत्साह (वि०) जिसका उत्साह टूट गया हो, जिसकी शक्ति अवसन्न हो गई हो, जिसका उत्साह, भंग हो गया हो,—उद्यम (वि०) जिसके उद्योग निष्फल कर दिये गये हों, निराश, जिसका विकास अवरुद्ध हो गया हो,—क्रमः,—प्रक्रमः अभिव्यक्ति या निर्माण में सममिति का अतिक्रमण, दे० 'प्रक्रमभंग',—चेष्ट (वि०) निराश, हताश,—दर्प (वि०) विनीत, जिसका घमंड टूट गया हो,—निद्र (वि०) जिसकी नींद में बाधा डाल दी गई हो,—पार्श्व (वि०) जिसके पार्श्व में पीड़ा होती हो,—पृष्ठ (वि०) 1. जिसकी कमर टूट गई हो 2. सामने आता हुआ,—प्रतिज्ञ (वि०) जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी हो,—मनस् (वि०) निरुत्साहित, हतोत्साहित,—व्रत (वि०) जो अपने व्रतों में निष्ठावान् न हो,—संकल्प (वि०) जिसकी योजनाओं को उत्साहहीन कर दिया गया हो।

भग्नी [=भगिनी, पृषो० साधुः] बहन।

भङ्करी (गा) री [भमिति शब्दं करोति—भम्+कृ+ट +ङीप्] डांस, गोमक्खी।

भङ्क्तिः (स्त्री०) [भञ्ज्+क्तिन्] टूटना, (हड्डी का) टूटना।

भङ्गः [भञ्ज्+घञ्] 1. टूटना, टूट जाना, छिन्न-भिन्न होना, फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े करना, विभक्त करना—वार्यर्गलाभङ्ग इव प्रवृत्तः—रघु० ५।४५, 2. टूट, हड्डी का टूटना, विच्छेद 3. उखाड़ना, काटना—आम्रकलिका भङ्गः—श० ६ 4. पार्थक्य, विश्लेषण 5. अंश, टुकड़ा, खंड, वियुक्त अंश—पुष्पोच्चयः पल्लवभङ्गभिन्नः—कु० ३।६१, रघु० १६।१६ 6. पतन, अधः पतन, ध्वंस, विनाश, बर्बादी जैसा कि 'राज्य°, सत्त्व° आदि में 7. अलग अलग करना, तितर-बितर करना—यात्राभङ्गः—मा० १ 8. हार, पछाड़, पराभव, पराजय—पंच० ४।४१, शि० १६।७२ 9. असफलता, निराशा, हताश—रघु० २।४२, आशा-भंग आदि 10. अस्वीकृति, इंकारी—कु० १।४२, 11. छिद्र, दरार 12. विघ्न, बाधा, रुकावट—निद्रा° गति° आदि 13. अननुष्ठान, निलंबन, स्थगन 14. भगदड़ 15. मोड़, तह, लहर 16. सिकुड़न, झुकाव, संकोच या सटाना—उत्तर० ५।३३ 17. गति, चाल 18. लकवा, फालिज 19. जालसाजी, धोखेबाजी 20. नहर, जलमार्ग, नाली 21. गोलगोल या घुमघुमाकर कहने या करने का ढंग—दे० भंगि 22. पटसन। सम०—नयः बाधाओं को हटाना,—वासा हल्दी,—सार्थ (वि०) बेईमान, जालसाज।

भङ्गा [भञ्ज्+अ+टाप्] 1. पटसन 2. पटसन से तैयार किया एक मादक पेय। सम० --**कटम्** पटसन का पराग।

भङ्गिः, --गी (स्त्री०) [भञ्ज्+इन्, कुत्वम्; भङ्गि+ङीप्] 1. टूटना, हड्डी का टूटना, विच्छेद, प्रभाग 2. हिलोर 3. झुकाव, सिकुड़न--दृग्भङ्गीभिः प्रथममथुरासंगमे चुम्बितोऽस्मि उद्भट, श० १३ 4. लहर 5. बाढ़, धारा 6. टेढ़ा मार्ग, घुमावदार या चक्करदार मार्ग 7. गोलमोल या घूमघुमाकर कहने या करने का ढंग, वाग्जाल भङ्ग्यन्तरेण कथनात् काव्य० १०, बहुभङ्गिविशारदः--दश० 8. बहाना, छद्मवेष, आभास --य. पाञ्चजन्यप्रतिबिम्बभङ्ग्या धाराम्भसः फेनमिव व्यनक्ति --विक्रम० १।१ 9. दावपेंच, जालसाजी, धोखा 10. व्यंग्योक्ति 11. व्यंग्योत्तर, आशूत्तर 12. पग--रघु० १३।६९ 13. अन्तराल 14 ह्री, लज्जाशीलता। सम०--**भक्तिः** (स्त्री०) तरंगवत् कदमों या तरंगों की शृंखला में विभाजन, लहरियेदार जीना --मेघ० ६०।

भङ्गिन् (त्रि०) [भङ्ग+इनि]1. शीघ्र टूटने वाला, भंगुर, अस्थायी नदपि तत्क्षणभङ्गि करोति चेत्--भर्तृ० २।९१ 2. किसी अभियोग में पछाड़ा हुआ।

भङ्गिमत् (वि०)[भङ्गि+मतुप्] लहरियेदार, करारा।

भङ्गिमन् (पुं०) [भङ्ग+इमनिच्] 1. (हड्डी का) टूटना, तोड़ना 2. झकोर, हिलोर 3. घुंघरालापन 4. छद्मवेश, धोखा 5. आशूत्तर, व्यंग्योक्ति 6. कुटिलता।

भङ्गिलम् [भङ्ग+इलच्] ज्ञानेन्द्रियों में कोई दोष।

भङ्गुर (वि०) [भञ्ज्+घुरच्] 1. टूटने के योग्य, भिदुर, कड़कव्वल 2. दुबला-पतला, अस्थिर, अनित्य, नश्वर --आमरणान्ताः प्रणयाः कोपास्तत्क्षणभङ्गुराः हि० १।१८८, शि० १६।७२ 3. परिवर्तनशील, चर 4. कुटिल, टेढ़ा 5. वक्र, घूंघरदार--शशिमुखि तव भाति भङ्गुरभ्रूः गीत० १० 6. जालसाज, बेईमान, चालाक, **रः** किसी नदी का मोड़।

भज् i (भ्वा० उभ० --भजति ते, परन्तु व्यवहारतः आ०, भक्त) 1. (क) हिस्से करना, वितरित करना, बांटना भजेरन् पैतृकं रिक्थम् --मनु० ९।१०४, न तत्पुत्रैर्भजेत्सार्धम् २०९, ११९, (ख) निर्दिष्ट करना, नियत करना, अनुभाजन करना--गायत्रीमग्नयेऽभजत् ऐ० ब्रा० 2. किसी के लिए प्राप्त करना, हिस्सा लेना, भाग लेना पित्र्यं वा भजते शीलम् मनु० १०।५९ 3. स्वीकार करना, ग्रहण करना मा० ९।२५ 4. (क) आश्रय लेना, (अपने आप को) समर्पण करना, पहुंच रखना--शिलातलं भेजे का० १७९, मातर्लक्ष्मि भजस्व कंचिदपरम् --भर्तृ० ३।६४, न कश्चिद्वर्णानामपथमपकृष्टोऽपि भजते --श० ५।१०, भामि० १।८३, रघु० १७।२८, (ख) अभ्यास करना, अनुगमन करना, पालन करना--भेजे धर्ममनातुरः--रघु० १।२१ 5. उपभोग करना, अधिकृत करना, रखना, भोगना, अनुभव करना, मनोरंजन करना--विधुरपि भजतेतरां कलङ्कम् --भामि० १।७४, न भेजिरे भीमविषेण भीतिम् --भर्तृ० २।८०, व्यथित भजन्त्यापगाः श० ७।८, अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु --रघु० ८।४३, मा० ३।९, उत्तर० १।३५ 6. सेवा में प्रस्तुत रहना, सेवा करना रघु० २।२३ पंच० १।१८१, मृच्छ० १।३२ 7. आराधना करना, सत्कार करना (देव मान कर) पूजा करना 8. छाँटना, चुनना, पसंद करना स्वीकार करना सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते--मालवि० १।२ 9. शारीरिक सुखोपभोग करना,--पंच० ४।५० 10. अनुरक्त होना, भक्त बनना 11. अधिकार में करना 12. भाग्य में पड़ना (इस धातु के अर्थ--संज्ञाओं के साथ जुड़कर विविध रूप ग्रहण कर लेते हैं उदा० निद्रां भज् सोना, मूर्छां भज् बेहोश होना, भावं भज् प्रेम प्रदर्शित करना आदि) वि---, 1. विभक्त करना, बाँटना--विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृतः--नै० १।१६, पत्रिणां व्यभजदाश्रमाद्बहिः रघु० ११।२९, १०।५४, शि० १।३ 2. अलग २ करना, (संपत्ति, पैतृक जायदाद आदि) बांटना --विभक्ता भ्रातरः--'बंटे हुए भाई' 3. भेद करना 4. सम्मान करना, पूजा करना, **संवि** , हिस्सा लेना, हिस्से में किसी को प्रविष्ट करना वित्तं यदा यस्य च संविभक्तम् ii (चुरा० उभ०--भाजयति--ते --कई विद्वानों के मतानुसार यह 'भज्' के ही प्रेर० रूप हैं) 1. पकाना 2. देना।

भजकः [भज्+ण्वुल्] 1. बांटने वाला, वितरक 2. पूजक, भक्त, उपासक।

भजनम् [भज्+ल्युट्] 1. हिस्से बनाना, बाँटना 2. स्वत्व 3. सेवा, आराधना, पूजा।

भजमान (वि०) [भज्+शानच्] 1. बांटने वाला 2. उपभोक्ता 3. योग्य, सही, उचित।

भञ्ज् i (रुधा० प०-- भनक्ति, भग्न इच्छा० बिभंक्षति) 1. तोड़ना, फाड़ डालना, छिन्नभिन्न करना, चूर चूर करना, टुकड़े टुकड़े करना, खण्डशः करना भनज्मि सर्वमर्यादाः भट्टि० ६।३८, भङ्क्त्वा भुजौ--४।३, बभञ्जुर्वल्गयानि च ३।२२, धनुर्भाजि यत्त्वया--रघु० ११।७६ 2. उजाड़ना, उखाड़ना भनक्त्युपवनं कपिः --भट्टि० ९।२ 3. (किले में) दरार डालना 4. भगाना करना, प्रयत्न व्यर्थ करना, निराश करना, प्रगति रोकना पिनाकिना भग्नमनोरथा सती--कु० ५।१ 5. पकड़ना, रोकना, विघ्न डालना, निलंबित

करना —जैसा कि 'भग्ननिद्रः' में 6. हराना, परास्त करना—क्षत्राणि रामः परिभूय रामात् क्षत्राद्यथाऽ भज्यत स द्विजेन्द्रः—नै० २२।१३३, अव—, तोड़ डालना, ध्वस्त करना—कु० ३।७४, प्र—, 1. तोड़ डालना, ध्वस्त करना, धज्जियाँ उड़ाना 2. रोकना, गिरफ्तार करना, निलंबित करना 3. भग्नाश करना, निराश करना।

ii (चुरा० उभ० भञ्जयति ते) उज्ज्वल करना, चमकाना।

भञ्जक (वि०) (स्त्री०-जिका) [भञ्ज्+ण्वुल्] तोड़ने वाला, बाँटने वाला।

भञ्जन (वि०) (स्त्री०—नी) [भञ्ज्+ल्युट्] 1. तोड़ने वाला, टुकड़े करने वाला 2. गिरफ्तार करने वाला, रोकने वाला 3. भग्नाश करने वाला 4. प्रबल पीडा पहुँचाने वाला,—नम् 1. तोड़ डालना, ध्वस्त करना, विनष्ट करना 2. हटाना, दूर करना, भगा देना —तदुदितभवभञ्जनाय यूनाम्—गीत० १० 3. पराजित करना, हराना 4. भग्नाश करना 5. रोकना, विघ्न डालना, बाधा पहुँचाना 6. कष्ट देना, पीडित करना, —नः दांतों का गिरना।

भञ्जनकः [भञ्जन+कन्] मुख का एक रोग जिसमें दाँत गिर जाते हैं, होंठ टेढ़े हो जाते हैं।

भञ्जरुः [भञ्ज्+अरुच्] मंदिर के पास उगा हुआ वृक्ष।

भट् i (भ्वा० पर० भटति, भटित) 1. पोषण करना, पालना पोसना, स्थिर रखना 2. भाड़े पर लेना 3. मजदूरी लेना ii (चुरा० उभ० भटयति-ते) बोलना, बातें करना।

भटः [भट्+अच्] 1. योद्धा, सैनिक, लड़ने वाला —तद्भूटचातुरीतुरी —नै० १।१२, वादित्रसृष्टिर्घटते भटस्य २२।२२ भट्टि० १४।१०१ 2. भृतिभोगी, भाड़ैत सैनिक, भाड़े का टट्टू 3. जातिबहिष्कृत, वर्णसंकर 4. पिशाच।

भटित्र (वि०) [भट्+इत्र] शलाका पर रखकर पकाया गया मांस।

भट्टः [भट्+तन्] 1. प्रभु, स्वामी (राजाओं को संबोधित करने के लिए सम्मान सूचक उपाधि) 2. विद्वान् ब्राह्मणों के नामों के साथ प्रयुक्त होने वाली उपाधि —भट्टगोपालस्य पौत्रः—मा० १, इसी प्रकार 'कुमारिल भट्टः' आदि 3. कोई भी विद्वान् पुरुष या दार्शनिक 4. एक प्रकार की मिश्र जाति जिसका व्यवसाय भाट या चारणों का व्यवसाय अर्थात् राजाओं का स्तुति गान है—क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां भट्टो जातोऽनुवाचकः 5. भाट, बन्दीजन। सम०—आचार्यः प्रसिद्ध अध्यापक या विद्वान् पुरुष को दी गई उपाधि 2. विज्ञ,— प्रयागः —प्रयाग, इलाहाबाद।

भट्टार (वि०) [भट्टं स्वामित्वमिच्छति —ऋ—अण्] 1. श्रद्धास्पद, पूज्य 2. व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त होने वाली सम्मानसूचक उपाधि—यथा—भट्टार-हरिश्चन्द्रस्य पद्यबन्धो नृपायते—हर्ष०।

भट्टारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [भट्टार+कन्] श्रद्धेय, पूज्य—आदि दे० ऊ० 'भट्टार'। सम०—**वासरः** रविवार,।

भट्टिनी [भट्ट+इनि+ङीप्] 1. (अनभिषिक्त) रानी, राजकुमारी, (नाटकों में दासियों द्वारा रानी को संबोधन करने में बहुधा प्रयुक्त) 2. ऊँचे पद की महिला 3. ब्राह्मण की पत्नी।

भडः [भण्ड्+अच्, नि० नलोपः] विशेष प्रकार की एक मिश्र जाति।

भडिलः [भण्ड्+इलच्, नि० नलोपः] 1. नेता, योद्धा 2. टहलुआ, नौकर।

भण् (भ्वा० पु० भणति,) 1. कहना, बोलना—पुरुषोत्तम इति भणितव्ये-विक्रम० ३, भट्टि० १४।१६ 2. वर्णन करना—काव्यः स काव्येन सभामभाणीत्—नै० १०।५९ 3. नाम लेना, पुकारना।

भणनम्, भणितम्, भणितिः (स्त्री०) [भण्+ल्युट्, क्त, क्तिन्] 1. कहना, बोलना, बातें करना, वचन, प्रवचन, वार्तालाप— न येषामानन्दं जनयति जगन्नाथ भणितिः—भामि० ४।३९, २।७७, श्रीजयदेव भणितं हरिरमितम्—गीत० ७, इह रसभणने—तदेव।

भण्ड् i (भ्वा० आ० भण्डते) 1. भर्त्सना करना, छिड़कना 2. खिल्ली उड़ाना, व्यंग्य करना 3. बोलना 4. उपहास करना, मखौल करना ii (चुरा० उ० —भण्डयति-ते) 1. सौभाग्यशाली बनाना 2. चकमा देना (शुद्धपाठ —भंद्)।

भण्डः [भण्ड+अच्] 1. भांड, मसखरा, विदूषक—त्रयो वेदस्य कर्तारो भण्डधूर्तनिशाचरा:— सर्व० 2. एक मिश्रजाति का नाम — तु० 'भड'। सम०—तपस्विन् (पुं०) बनावटी सन्यासी, ढोंगी,—हासिनी वेश्या, वारांगना।

भण्डकः [भण्ड्+कन्] एक प्रकार का खंजन पक्षी।

भण्डनम् [भण्ड्+ल्युट्] 1. कवच, बख्तर 2. संग्राम, युद्ध 3. उत्पात, दुष्टता।

भंडिः-डी (स्त्री०) [भण्ड्+इ, भण्डि+ङीप्] लहर, तरंग।

भण्डिल (वि०) [भण्ड्+इलच्] सुखद, शुभ, सम्पन्न, सौभाग्यशाली,— लः 1. अच्छी किस्मत, प्रसन्नता, कल्याण 2. दूत 3. कारीगर, दस्तकार।

भदन्तः [भन्द्+झच्, अन्तादेशः, नलोपश्च] 1. बौद्ध धर्मानुयायी के लिए प्रयुक्त होने वाला आदर सूचक शब्द —भदन्त निथिरेव न शुध्यति—मुद्रा० ४ 2. बौद्धभिक्षु।

भदाकः [भन्द्+आक, नलोपः] सम्पन्नता, सौभाग्य।

भद्र (वि०) [भन्द्+रक्, नि० नलोपः] 1. भला, सुखद, समृद्धिशाली 2. शुभ, भाग्यवान् जैसा कि 'भद्रमुख' में 3. प्रमुख, सर्वोत्तम, मुख्य—पप्रच्छ भद्रं विजिताारिभद्रः—रघु० १४।३१ 4. अनुकूल, मंगलप्रद 5. कृपालु, सदय, श्रेष्ठ, सौहार्दपूर्ण, प्रिय; (संबोधन एक वचन में प्रयुक्त होकर अर्थ होता है 'पूज्य श्रीमान्' 'प्रिय मित्र' 'पूज्य महिले' 'पूज्य श्रीमति' 6. सुहावना, उपभोज्य, प्रिय, सुन्दर—पंच० १।१८१ 7. स्तुत्य, श्लाघ्य, प्रशंसनीय 8. प्रियतम, प्यारा 9. चटकदार, बाह्यतः रमणीय, पाखण्डी,—**द्रम्** उल्लास, सौभाग्य, कल्याण, आनन्द, समृद्धि—भद्रं भद्रं वितर भगवन् भूयसे मंगलाय—मा० १।३, ६।७, त्वयि वितरतु भद्रं भूयसे मंगलाय—उत्तर० ३।४८, (इस अर्थ में बहुधा ब० व० में प्रयोग), सर्वे भद्राणि पश्यंतु, भद्रं ते 'ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे' तुम्हें ऐश्वर्यशाली बनाए' 2. सोना 3. लोहा, इस्पात,—**द्रः** 1. बैल 2. एक प्रकार का खंजन पक्षी 3. विशेष प्रकार का हाथी 4. छद्मवेषी, पाखंडी—मनु० ९।२५८ 5. शिव का नामान्तर 6. मेरुपर्वत का विशेषण 7. एक प्रकार का कदम्बवृक्ष (भद्रा कृ हजामत करना, बाल मूँडना भद्राकरणम् मुण्डन)। सम०—**अङ्गः** बलराम का विशेषण,—**आकारः**,—**आकृति** (वि०) शुभ लक्षणों से युक्त,—**आत्मजः** तलवार,—**आसनम्** 1. राजासन, राजगद्दी, सिंहासन 2. समाधि की विशेष अंगस्थिति, योग का आसन,—**ईशः** शिव का एक विशेषण,—**एला** बड़ी इलायची,—**कपिलः** शिव का एक विशेषण, **कारक**—(वि०) मंगलप्रद,—**काली** दुर्गा का नामान्तर, **कुम्भः**—किसी तीर्थ के जल से (विशेषकर गंगाजल से) भरा हुआ सुनहरी घड़ा,—**गणितम्** जादू के रेखाचित्रों की बनावट,—**घटः**,—**घटकः** एक घड़ा जिसमें भाग्य की पर्चियाँ डाली जाय,—**दारु** (पुं० नपुं०) चीड़ का वृक्ष,—**नामन्** (पुं०) खंजनपक्षी,—**पीठम्** 1. राजगद्दी, राज-कुर्सी, सिंहासन—रघु० १७।१० 2. एक प्रकार का पंखदार कीड़ा,—**बलनः** बलराम का विशेषण,—**मुख** (वि०) 'मांगलिक चेहरे वाला', विनम्र सम्बोधन के रूप में प्रयुक्त 'मान्यवर महोदय' 'पूज्य श्रीमन्'—श० ७,—**मृगः** एक विशेष प्रकार के हाथी का विशेषण,—**रेणुः** इन्द्र के हाथी का नाम,—**वर्मन्** (पुं०) एक प्रकार की नवमल्लिका,—**शाखः** कार्तिकेय का विशेषण,—**श्रयम्**,—**श्रियम्** चन्दन का काष्ठ,—**श्रीः** (स्त्री०) चन्दन का वृक्ष,—**सोमा** गंगा का विशेषण।

भद्रक (वि०) (स्त्री०—**द्रिका**) [भद्र+कन्] 1. शुभ, मङ्गलमय 2. मनोहर, सुन्दर,—**कः** देवदारु का वृक्ष।

भद्रङ्कर (नपुं०) [भद्र+कृ+खच्, मुम्] सुख सम्पत्ति का दाता, समृद्धकारी।

भद्रवत् (वि०) [भद्र+मतुप्] मंगलमय,—(नपुं०) देवदारु का वृक्ष।

भद्रा [भद्र+टाप्] 1. गाय 2. चान्द्रमास के पक्ष की दोयज, सप्तमी और द्वादशी 3. स्वर्गंगा 4. नाना प्रकार के पौधों के नाम। सम०—**श्रयम्** चन्दन की लकड़ी।

भद्रिका [भद्रा+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. ताबीज 2. दोयज, सप्तमी व द्वादशी नाम की तिथियाँ।

भद्रिलम् [भद्र+इलच्] 1. समृद्धि, सौभाग्य 2. कंपनशील या थरथराहट वाली गति।

भम्भः [भम्+भा+क] 1. मक्खी 2. धुआँ।

भम्भरालिका, **भंभराली** [भम् इत्यव्यक्तशब्दस्य भरं बाहुल्यम् आलाति—भम्भर+आ+ला+क+ङीष् =भम्भराली+कन् टाप्, ह्रस्वः] 1. गोमक्षी 2. डाँस।

भम्भारवः [भम्भा+रु+अच्] गाय का रांभना।

भयम् [बिभेत्यस्मात्—भी-अपादाने अच्] 1. डर, आतंक, बिभीषा, आशंका (प्रायः अपा० के साथ) भोगे रोगभयं कुले च्युतिभयं वित्ते नृपालाद्भयम्—भर्तृ० ३।३३ यदि स्मरमपास्य नास्ति मृत्योर्भयम्—वेणी० ३।४ 2. डर, त्रास जगद्भयम् आदि 3. खतरा, जोखिम, संकट—तावद्भयस्य भेतव्यं यावद्भयमनागतम, आगतं तु भयं वीक्ष्य नरः कुर्याद्यथोचितम्—हि० १।५७,—**यः** बीमारी, रोग। सम०—**अन्वित**,—**आक्रान्त** (वि०) ज्वरग्रस्त—**आतुर**,—**आर्त** (वि०) डरा हुआ, आतङ्कित, भयभीत,—**आवह** (वि०) 1. भयोत्पादक 2. जोखिम वाला—स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः—भग० ३।३५,—**उत्तर** (वि०) भय से युक्त,—**कर** ('भयंकर' भी) 1. डराने वाला, भयानक, भयपूर्ण 2. खतरनाक, संकटपूर्ण इसी प्रकार 'भयकारक' 'भयकृत',—**डिण्डिमः** युद्ध में प्रयुक्त किया जाने वाला ढोल, मारू बाजा,—**द्रुत** (वि०) भय के कारण भागने वाला, पराजित, भगाया हुआ,—**प्रतीकारः** भय को दूर करना, डर हटाना,—**प्रद** (वि०) भयदायक, भयपूर्ण, भयानक,—**प्रस्तावः** भय का अवसर,—**ब्राह्मणः** डरपोक ब्राह्मण, वह ब्राह्मण जो अपनी जान बचाने के लिए (यह समझ कर कि ब्राह्मण अवध्य है) अपने ब्राह्मण होने की दुहाई देता है,—**विप्लुत** (वि०) आतंक-पीडित,—**व्यूहः** डर की अवस्था होने पर सेना की विशेष क्रम-व्यवस्था।

भयानक (वि०) [बिभेत्यस्मात्—भी+आनक] भयंकर, भीषण, भयजनक, डरावना—किमतः परं भयानकं स्यात्—उत्तर० २, शि० १७।२०, भग० ११।२७,—**कः** 1. व्याघ्र 2. राहु का नामान्तर 3. भयानक रस, काव्य के आठ या नौ रसों में एक—दे० 'रस' के अन्तर्गत,—**कम्** त्रास, डर।

भर (वि०) [भृ+अच्] धारण करने वाला, देने वाला,

भरणपोषण करने वाला आदि,—रः 1. बोझा, भार, वजन—खुरत्रये भरं कृत्वा - पंच० १, "अपने तीन खुरों पर ही अपने आपको सहारा देने वाला", फल-भरपरिणामश्यामजम्बू-आदि—उत्तर० २।२०, भर-व्यथा—मुद्रा० २।१८ 2. बड़ी संख्या, बड़ा परिमाण, संग्रह, समुच्चय—धत्ते भरं कुसुमपत्रफलावलीनाम्—भामि० १।९४,५४, शि० ९।४७ 3. प्रकाय, राशि 4. आधिक्य–निर्व्यूढसौहृदभरेति गुणोज्ज्वलेति—मा० ६।१७,शोभाभरैः संभृताः—भामि० १।१०३, कोपभरेण—गीत० ३।७ तोल की एक विशेष माप।

भरटः [भृ+अटन्] 1. कुम्हार 2. सेवक।

भरण (वि०) (स्त्री०–णी) [भृ+ल्युट्] धारण करने वाला, निर्वाह करने वाला, सहारा देने वाला, पालन-पोषण करने वाला, —णम् 1. पालन-पोषण, निर्वाह करना, सहारा देना—रघु० १।२१, श० ७।३३ 2. वहन करने या ढोने की क्रिया 3. लाना, प्राप्त करना 4. पुष्टिकारक भोजन 5. भाड़ा, मजदूरी, –णः भरणी नामक नक्षत्र।

भरणी [भरण+ङीष्] तीन तारों का पुंज जो दूसरा नक्षत्र है, सम०—भूः राहु का विशेषण।

भरण्डः [भृ+अण्डन्] 1. स्वामी, प्रभु 2. राजा, शासक 3. बैल, साँड़ 4. कीड़ा।

भरण्यम् [भरण+यत्] 1. लालन-पालन करने वाला, सहारा देने वाला, पालन-पोषण करने वाला 2. मज-दूरी, भाड़ा 3. भरणी नक्षत्र,—ण्या मजदूरी, भाड़ा। सम०—भुज् (पुं०) भृति-सेवक, भाड़े का नौकर।

भरण्युः [भरण्य् (कंड्वा०)+उ] 1. स्वामी 2. प्ररक्षक 3. मित्र 4. अग्नि 5. चन्द्रमा 6. सूर्य।

भरतः [भरं तनोति–तन्+ड] 1. शकुन्तला और दुष्यन्त का पुत्र जो चक्रवर्ती राजा था। इसीके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष है। यह कौरव और पांडवों का दूरवर्ती पूर्वपुरुष था 2. दशरथ की सबसे छोटी पत्नी कैकेयी का बेटा, राम का एक भाई, यह बड़ा धर्मात्मा और पुण्यशील व्यक्ति था, राम के प्रति इसकी इतनी अगाध भक्ति थी कि जब कैकेयी की गर्हित मांग के अनुसार राम वन में जाने को तैयार हुए तो भरत को यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि उसकी अपनी माता ने ही राम को निर्वासित किया फलतः उसने अपनी प्रभुसत्ता को अस्वीकार कर राम के नाम (राम की खड़ाउओं को लाकर उनको राज्यप्रतिनिधि के रूप में सिंहासन पर रखकर) से तब तक राज्यप्रशासन किया जबतक कि चौदहवर्ष का निर्वासन समाप्त करके राम वापिस अयोध्या नहीं आये 3. एक प्राचीन मुनि का नाम जो नाटयकला तथा संगीतविद्या के प्रवर्तक माने जाते हैं 4. अभिनेता रगमंच पर अभिनय करने वाला पात्र—तत्किमित्यु-दासते भरताः—मा० १।५ 5. भाड़े का सैनिक, केवल धन के लिए काम करने वाला नौकर 6. जंगली, पहाड़ी 7. अग्नि का विशेषण। सम०—अग्रजः 'भरत का ज्येष्ठ भ्राता', राम का विशेषण—रघु० १४।७३, —खण्डम् भारत के एक भाग का नामान्तर,—ज्ञ (वि०) भरतशास्त्र या नाट्यशास्त्र का ज्ञाता, —पुत्रकः अभिनेता—वर्षः भरत का देश अर्थात् भारत, —वाक्यम् नाटक के अन्त में दिया गया श्लोक, एक प्रकार की नान्दी (नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक भरत मुनि के सम्मानार्थ कहा गया)—तथापीदमस्तु भरतवाक्यम् (प्रत्येक नाटक में उपलब्ध)।

भरथः [भृ+अथ] 1. प्रभुसत्ता प्राप्त राजा 2. अग्नि 3. संसार के किसी एक प्रदेश की अधिष्ठात्री देवी, लोकपाल।

भरद्वाजः [भ्रियते मरुद्भिः भृ+अप=भर, द्वाभ्यां जायते द्वि+जन् ड=द्वाज, भरश्चासो द्वाजश्च –कर्म० स०] 1. सात ऋषियों में से एक का नाम 2. चातक पक्षी।

भरित (वि०) [भर+इतच्] 1. परवरिश किया गया, पाला-पोसा गया 2. भरा हुआ, भरपूर—जगज्जालं कर्ता कुसुमभरसौरम्यभरितम्—भामि० १।५४, ३३।

भरुः [भृ+उन्] 1. पति 2. प्रभु 3. शिव का नामान्तर 4. विष्णु का नाम 5. सोना 6. समुद्र।

भरुजः—जा,—जी (स्त्री०) [भ इति शब्देन रुजति —भ+रुज्+क] गीदड़।

भरुटकम् [भृ+उट+कन्] तला हुआ मांस।

भर्गः [भृज्+घञ्] 1. शिव का नाम 2. ब्रह्मा का नाम।

भर्ग्यः [भृज्+ण्यत्] शिव का विशेषण।

भर्जन (वि०) [भृज्+ल्युट्] 1. भूनने वाला तलने वाला, पकाने लाला 2. नष्ट करने वाला,—नम् 1. भूनने या तलने की क्रिया 2. कड़ाही।

भर्तृ (पुं०) [भृ+तृच्] 1. पति—यद्भर्तुरेव हितमिच्छति तत्कलत्रम्—भर्तृ० २।८, स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसाम् मा० ६।१८ 2. प्रभु, स्वामी, महत्तर—भर्तुः शापेन – मेघ० १, गण°, भूत° आदि 5. नेता, सेना-पति, मुख्य—रघु० ७।४१ 4. भरणपोषण कर्ता, भारवहनकर्ता, प्ररक्षक। सम०—घ्नी अपने पति का वध करने वाली स्त्री,—दारकः युवराज, राजकुमार, उत्तराधिकारी, कुमार (नाटक में बहुधा प्रयुक्त संबोधन),—दारिका युवराज्ञी (नाटकों में प्रयुक्त संबोधन शब्द),—व्रतम् पातिव्रत, पतिभक्ति (ता) साध्वी पतिव्रता पत्नी—तु० पतिव्रता,—शोकः पति की मृत्यु पर शोक,—हरिः एक प्रसिद्ध राजा जो तीन

शतक (श्रृंगार, नीति, वैराग्य), वाक्यपदीय तथा भट्टिकाव्य का रचयिता है।

भर्तृमती [भर्तृ+मतुप्+ङीप्] विवाहिता स्त्री जिसका पति जीवित हो।

भर्तृसात् (अव्य०) [भर्तृ+साति] पति के अधिकार में, °कृता विवाहित हुई।

भर्त्स् (चुरा० आ०— भर्त्सयते, कभी २ पर० भी) 1. धमकाना, घुड़कना 2. झिड़कना, बुरा भला कहना, अपशब्द कहना 3. व्यंग्य करना; निस्—, 1. झिड़कना, निन्दा करना, गाली देना 2. आगे बढ़ जाना, ग्रहण लगना, लज्जित करना कु० ३।५३,।

भर्त्सकः [भर्त्स्+ण्वुल्] धमकी देने वाला, घुड़कने वाला।

भर्त्सनम्, भर्त्सना, भर्त्सितम् [भर्त्स्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्, क्त वा] 1. धमकाना, घुड़कना 2. धमकी, झिड़की 3. बुरा भला कहना, गाली देना 4. अभिशाप।

भर्मम् [भृ+मनिन्, नि० नलोपः] 1. मजदूरी, भाड़ा 2. सोना 3. नाभि।

भर्मण्या [भर्मन्+यत्+टाप्] मजदूरी, भाड़ा।

भर्मन् (नपुं०) [भृ+मनिन्] 1. सहारा, संधारण, पालन-पोषण 2. मजदूरी, भाड़ा 3. सोना 4. सोने का सिक्का 5. नाभि।

भल् i (चुरा० आ०—भालयते, भालित) देखना, अवलोकन करना,—नि—, (पर० भी) 1. देखना, अवलोकन करना, प्रत्यक्ष करना, निगाह डालना—निभाल्य भूयो निजगौरिमाणं मा नाम मानं सहसैव यासीः —भामि० ३।१७६, या—यन्मां न भामिनि निभालयसि प्रभातनीलारविन्दमदभङ्गिपदैः कटाक्षैः—३।४ ii (भ्वा० आ०) दे० 'भल्ल्'

भल्ल् (भ्वा० आ० भल्लते, भल्लित) 1. वर्णन करना, बयान करना, कहना 2. घायल करना, चोट पहुँचाना, मार डालना 3. देना।

भल्लः,—ल्ली—ल्लम् [भल्ल्+अच्, स्त्रियां ङीप्] एक प्रकार का अस्त्र या बाण—क्वचिदाकर्णाविकृष्टभल्लवर्षी —रघु० ९।६६, ४।६३, ७।५८,—ल्लः 1. रीछ 2. शिव का विशेषण 3. भिलावे का पौधा, ('भल्ली' भी)।

भल्लकः [भल्ल+कन्] रीछ।

भल्लातः, भल्लातकः [भल्ल्+अत्+अच्, भल्लात+कन्] भिलावे का पौधा।

भल्लुकः, भल्लूकः [भल्ल+ऊक, पक्षे पृषो० ह्रस्वः] 1. रीछ, भालू—दधति कुहरभाजामत्र भल्लूकयूनाम् —उत्तर० २।२१ 2. कुत्ता।

भव (वि०) [भवत्यस्मात्—भू+अपादाने अप्] (समास के अन्त में) उदय होता हुआ या उत्पन्न, जन्म लेता हुआ,—वः 1 होना, होने की स्थिति, सत्ता 2. जन्म, उत्पत्तिः—भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्—रघु० ३।१४, श० ७।२७ 3. स्रोत, मूल 4. सांसारिक अस्तित्व, सांसारिक जीवन, जीवन—जैसा कि भवार्णव, भवसागर आदि में—कु० २।५१ 5. संसार 6. कुशल-क्षेम, स्वास्थ्य, समृद्धि 7. श्रेष्ठता, उत्तमता 8. शिव का नाम दक्षस्य कन्या भवपूर्वपत्नी—कु० १।२१ ३।७२ 9. देव, देवता 10 अभिग्रहण, प्राप्ति। सम०—अतिग (वि०) सांसारिक जीवन पर विजय पाने वाला, वीतराग, अन्तकृत् ब्रह्मा का विशेषण —अन्तरम् दूसरा जीवन (भूत या भावी) पंच० १। १२१,—अब्धिः,—अर्णवः, —समुद्रः,—सागरः,—सिन्धुः सांसारिक जीवन रूपी समुद्र,—अयना, —नी गंगा नदी, —अरण्यम् 'सांसारिक जीवन रूपी जंगल' 'सुनसान संसार,—आत्मजः गणेश या कार्तिकेय का विशेषण, उच्छदः सांसारिक जीवन का विनाश —रघु० १४।७४, क्षितिः (स्त्री०) जन्मस्थान, —घस्मरः दावानल, जंगल की आग,—छिद् (वि०) सांसारिक जीवन के बंधनों को काटने वाला, जन्म की पुनरावृत्ति को रोकने वाला—भवच्छिदस्त्र्यम्बकपादपांशवः—का० १,—छेदः पुनर्जन्म का रोकना शि० १।३५,—दारु (नपुं०) देवदारु का वृक्ष,—भूतिः एक प्रसिद्ध कवि का नाम, (दे० परि० २) भवभूतेः संबन्धाद्भूधरभूरेव भारती भाति, एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा। आर्या सप्त० ३६, —रुद् (पुं०) अन्त्येष्टि संस्कार के अवसर पर बजने वाला ढोल,—वीतिः (स्त्री०) सांसारिक जीवन से छुटकारा—कि० ६।४१।

भवत् (वि०) (स्त्री०—न्ती) [भू+शतृ] 1. होने वाला, घटित होने वाला, घटने वाला 2. वर्तमान—समतीतं च भवं च भावि च—रघु० ८।७८, (सार्व० वि०) (स्त्री०—ती) आदरसूचक, या सम्मानसूचक सर्वनाम —जिसका अनुवाद है—'आदरणीय श्रीमन्' 'पूज्य श्रीमति' (मध्यम पुरुष, पुरुषवाचक सर्वनाम के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त, परन्तु क्रिया अन्य पुरुष की)—अथवा कथं भवान् मन्यते—मालवि० १, भवन्त एव जानन्ति रघूणां च कुलस्थितिम्—उत्तर० ५।२३, रघु० २।४०, ३।४८, ५।१६, प्रायः इसके साथ 'अत्र' या 'तत्र' भी जोड़ दिया जाता है (शब्दों को देखो) कभी कभी 'स' के साथ लगा दिया जाता है यन्मां विधेयविषये सभवान्नियुंक्ते—मा० १।९।

भवदीय (वि०) [भवत्+छ] मान्यवर महोदय का, आपका, तुम्हारा।

भवनम् [भू+ल्युट्] 1. होना, अस्तित्व 2. उत्पत्ति, जन्म 3. आवास, निवास, घर, भवन—अथवा भवन-

प्रत्ययात् प्रविष्टोऽस्मि—मृच्छ० ३, मेघ० ३२ 4. स्थान, आवास, आवार जैसा कि 'अविनयभवनम्' में पंच० १।१९१ 5. इमारत 6. प्रकृति । सम० —उदरम् घर का मध्यवर्ती भाग,—पतिः,—स्वामिन् (पुं०) घर का स्वामी, कुल का पिता ।

भवन्तः,–तिः [भू०+झच् (झिच्) अन्तादेशः] इस समय, वर्तमान काल में ।

भवन्ती [भू+शतृ+ङीप्] गुणवती स्त्री ।

भवानी [भव+ङीप्, आनुक्] शिव की पत्नी या पार्वती का नाम—आलम्ब्य ताग्रकरमत्र भवो भवान्याः—कि० ५।२९, कु० ७।८४, मेघ० ३६, ४४, । सम० गुरुः हिमालय पर्वत का विशेषण, पतिः शिव का विशेषण —अधिवसति सदा यदेनं जनैरविदितविभवो भवानी-पतिः – कि० ५।२१ ।

भवादृक्ष (वि०) (स्त्री० क्षी) **भवादृश्** (वि०) **भवादृश** (वि०) (शी) (वि०) आपकी भांति, तुम्हारी भांति ।

भविक (वि०) (स्त्री०—की) 1. दाता, उपयुक्त, उपयोगी 2. सुखद, फलता-फूलता हुआ,—कम् संपन्नता, कल्याण ।

भवितव्य (वि०) [भू+तव्यत्] होने वाला, घटित होने वाला, होनहार (बहुधा भाववाच्य में प्रयोग होता है अर्थात् करणकारक को कर्ता के रूप में तथा क्रिया नपुं०, ए० व० में रखकर—त्वया मम सहायेन भवितव्यम् —श० २, गुरुणा कारणेन भवितव्यम्—श० ३), —व्यम् अवश्यंभावी; भवितव्यं भवत्येव यद्विधेर्मनसि स्थितम्—सुभा० ।

भवितव्यता [भवितव्य+तल्+टाप्] अनिवार्यता, होनी, प्रारब्ध, भाग्य—भवितव्यता बलवती—श० ६, सर्वङ्कषा भगवती भवितव्यतैव—मा० १।२३ ।

भवितृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [भू+तृच्] होने वाला, भावी—रघु० ६।५२, कु० १।५० ।

भविनः [भवाय इनः सूर्यः, पृषो० साधुः] कविः (भविनिन्–पुं० भी इसी अर्थ में) ।

भविलः [भू+इलच्] 1. प्रेमी, उपपति 2. लम्पट, कामी ।

भविष्णु (वि०) [भू+इष्णुच्]=भूष्णु, होने वाला ।

भविष्य (वि०) [भू+लृट्—स्य+शतृ, पृषो० त् लोपः] 1. आगे आने वाला 2. भावी, आसन्न, निकटवर्ती, —व्यम् भावी काल, उत्तर काल । सम०—कालः भविष्यत् काल,—ज्ञानम् आगे होने वाली बातों की जानकारी,—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक का नाम ।

भविष्यत् (वि०) (स्त्री०—ती,–न्ती) भू+लृट्–स्य +शतृ] होने वाला, आगामी समय में होने वाला । सम०—कालः उत्तर काल,—वक्तृ,-वादिन् (वि०) आगे होने वाली घटनाओं को बताने वाला, भविष्यवाणी करने वाला ।

भव्य (वि०) [भू+यत्] 1. विद्यमान, होने वाला, प्रस्तुत रहने वाला 2. आगे होने वाला, आने वाले समय में घटित होने वाला 3. होनहार 4. उपयुक्त, उचित, लायक, योग्य कि० ११।१३ 5. अच्छा, बढ़िया, उत्तम 6. शुभ, भाग्यवान्, आनन्दप्रद–कु० १।२२, कि० १।१२, १०।५१ 7. मनोहर, प्रिय, सुन्दर 8. सौम्य, शान्त, मृदु 9. सत्य,—व्या पार्वती, व्यम् 1. सत्ता 2. भावी काल 3. परिणाम, फल 4. अच्छा फल, समृद्धि—रघु० १७।५३ 5. हड्डी ।

भष् (भ्वा० पर० भषति) 1. भौंकना, गुर्राना, भूंकना 2. गाली देना, झिड़कना, डाटना—फटकारना, धमकाना ।

भषः, भषकः [भष्+अच्, क्वुन् वा] कुत्ता ।

भषणः [भष्+ल्युट्] कुत्ता,—णम् कुत्ते का भौंकना, गुर्राना ।

भसद् (पुं०) [भस्+अदि] 1. सूर्य 2. माँस 3. एक प्रकार की बत्तख 4. समय 5. डोंगी 6. पिछला भाग (स्त्री० और नपुं० भी) 7. योनि ।

भसनः [भस्+ल्युट्] मधुमक्खी ।

भसन्तः [भस्+झच्, अन्तादेशः] काल, समय ।

भसित (वि०) [भस्+क्त] जल कर भस्म बना हुआ, —तम् भस्म—भामि० १।८४ ।

भस्त्रका, भस्त्रा, भस्त्रिः (स्त्री०) [भस्+ष्ट्रन्+कन् +टाप्, भस्त्र+टाप्+भस्त्र+इञ्] 1. धौंकनी 2. जल भरने के लिए चमड़ का पात्र, मशक 3. चमड़े का थला, झोली ।

भस्मकम् [भस्मन्+कन्] 1. सोना या चांदी 2. एक रोग जिस में जो कुछ खाया जाय तुरंत पचा जैसा ज्ञात हो (परन्तु वस्तुतः पचता नहीं) और तीव्र भूख लगे रहना 3. आँखों का एक रोग ।

भस्मन् (नपुं०) [भस्+मनिन्] 1. राख— (कल्पते) —ध्रुवं चिताभस्मरजो विशुद्धये—कु० ५।७९ 2. विभूति या पवित्र राख (जो शरीर में मली जाती है), (भस्मनि हु राख में आहुति देना अर्थात् व्यर्थ कार्य करना,—भस्माकृ, भस्मीकृ, जला कर राख करना, भस्मीभू जल कर राख हो जाना—भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः– सर्व०) । सम०- अग्निः भोजन के जल्दी पच जाने से तीव्र भूख का लगे रहना, —अवशेष (वि०) जो केवल राख के रूप में रह जाय—कु० ३।७२,—आह्वयः कपूर, उद्‌धूलनम् —गुण्ठनम् शरीर पर राख मलना भस्मोद्‌धूलन भद्रमस्तु भवते—काव्य० १०,—कारः धोबी,—कूटः

राख का ढेर,—गन्धाः,-गन्धिका,-गन्धिनी एक प्रकार का गंधद्रव्य,— तूलम्, 1. कुहरा, हिम 2. धूल की बौछार 3. गांवों का समूह,—प्रियः शिव का विशेषण,—रोग एक प्रकार की बीमारी—तु० भस्माग्नि,—लेपनम् शरीर पर राख मलना,— विधिः राख से किया जाने वाला अनुष्ठान,—वेधकः कपूर,—स्नानम् राख मल कर निर्मल करना।

भस्मता [भस्मन्+तल्+टाप्] राख का होना।

भस्मसात् (अव्य०) [भस्मन्+साति] राख की स्थिति में, °कृ जलाकर राख कर देना।

भा (अदा० पर०—भाति, भात, प्रेर० भापयति—ते, इच्छा० बिभासति) चमकना, उज्ज्वल होना, चमकदार या चमकीला होना—पंङ्क्तिविना सरो भाति सदः खलजनैर्विना, कटुवर्णैर्विना काव्यं मानसं विषयैर्विना—भामि० १।११६, समतीत्य भाति जगती जगती—कि० ५।२५, रघु० ३।१८ 2. दिखाई देना, प्रतीत होना—बुभुक्षितं न प्रतिभाति किंचित्—महाभाष्य 3. होना, विद्यमान होना 4. इतराना, अभि—,चमकना—दिवि स्थितिः सूर्य इवाभिभाति—महा०, आ—,1. चमकना, जगमगाना, शानदार प्रतीत होना—नरेन्द्रकन्यास्तमवाप्य सत्पतिं तमोनुदं दक्षसुता इवाबभुः—रघु० ३।३३ 2. दिखाई देना, प्रकट होना—रघु० ५।१५, ७०, १३।१४, निस्—,1. चमक उठना, जगमगाना—अक्षबीजवलयेन निर्बभौ—रघु० ११।६६ 2. प्रगति करना, उन्नति करना, विचारों में आगे बढ़ना—वेदाद्धर्मो हि निर्बभौ —मनु० ५।४४, २।१०, प्र—, 1. प्रकट होना 2. चमकना, प्रकाशित होने लगना, प्रभात काल होना—ननु प्रभातारजनी श० ४, प्रभातकल्पा शशिनेव शर्वरी —रघु० २।३, प्रति—, 1 चमकना, चमकदार या चमकीला प्रकट होना—प्रतिभान्त्यद्य वनानि केतकानाम्—घट० १५ 2. इतराना, बनना 3. दिखाई देना, प्रकट होना—स्त्रीरत्नसृष्टिरपरा प्रतिभाति सा मे—श० २।९, रघु० २।४७, कु० ५।३८, ६।५४ 4. सूझना, मन में आना—नोत्तरं प्रतिभाति मे, वि—, 1. चमकना —भर्तृ० २।७१ 2. दिखाई देना, प्रकट होना, व्यति—, (आ०) बहुत चमकना, जगमगाना—अपि लोकयुगं दृशावपि श्रुतदृष्टा रमणीगुणा अपि, श्रुतिगामितया दमस्वसुर्व्यतिभाते नितरां धरापतेः—नै० २।२२, (यहाँ क्रिया इसी प्रकार 'युगम्', 'दृशौ' और 'गुणाः' के साथ भी बन सकती है—तु० पा० १।३।१४)।

भा [भा+अङ्+टाप्] 1. प्रकाश, आभा, कान्ति, सौन्दर्य —तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः—उद्भट 2. छाया, प्रतिबिंब। सम०—कोशः—षः सूर्य,—गणः तारापुंज, तारकावली,—निकरः प्रकाशपुंज, किरणों का समूह,—नेमिः सूर्य,—मंडलम् प्रभामंडल तेजोमंडल।

भाकर दे० भास्कर 'भास्' के अन्तर्गत।

भाक्त (वि०) [भक्त—अण्] 1. जो नियमित रूप से दूसरे से भोजन पाता हो, पराश्रित, सेवा के लिए प्रतिधृत अर्थात् अनुजीवी 2. भोजन के योग्य 3. घटिया, गौण (विप० मुख्य) 4. गौण अर्थ में प्रयुक्त।

भाक्तिकः [भक्त+ठक्] अनुजीवी, पराश्रयी।

भाक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) [भक्षा+अण्] पेट, भोजनभट्ट।

भागः [भज्+घञ्] 1. खण्ड, अंश, हिस्सा, प्रभाग, टुकड़ा जैसा कि भागहर, भागशः आदि में 2. नियतन, वितरण, विभाजन 3. भाग्य, किस्मत—निर्माणभागः परिणतः—उत्तर० ४ 4. किसी पूर्ण का एक खण्ड, भिन्न 5. किसी भिन्न का अंश 6. चौथाई, चतुर्थ भाग 7. किसी वृत्त की परिधि का ३६० वां घात या अंश 8. राशिचक्र का तीसवां अंश 9. लब्धि 10. कक्ष, अन्तराल, जगह, क्षेत्र, स्थान—रघु० १८।४७। सम०—अर्ह (वि०) दाय या पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी,—कल्पना हिस्सों का विभाजन, —जातिः (स्त्री०) (गणि० में) भिन्न राशियों के घटा कर हर सम्प्राप्त करना,—धेयम् 1. हिस्सा, खण्ड, अंश नीवारभागधेयोचितैर्मृगैः—रघु० १।५० 2. किस्मत, भाग्य, प्रारब्ध 3. अच्छी किस्मत, सौभाग्य —तद्भागधेयं परमं पशूनां—भर्तृ० २।१२ 4. सम्पत्ति 5. आनन्द, (यः) 1. कर—श० २ 2. उत्तराधिकारी, —भाज् (वि०) स्वार्थपर, हिस्सेदार, साझीदार,—भुज् (पुं०) राजा, प्रभु,—लक्षणा लक्षणा शब्दशक्ति का एक भेद या शब्द का गौण प्रयोग जिससे शब्द अपने अर्थ को अंशतः रखता है तथा अंशतः खो देता है, 'जहदजहल्लक्षणा' भी इसे ही कहते हैं—उदा० सोऽयं देवदत्तः,—हरः 1. सहउत्तराधिकारी 2. (गणि० में) भाग या तकसीम,—हारः (गणि० में) भाग।

भागवत (वि०) (स्त्री०—ती) [भगवतः भगवत्या वा इदं सोऽस्य देवता वा अण्] 1. विष्णु से संबंध रखने वाला या विष्णु की पूजा करने वाला 2. देवता संबंधी 3. पवित्र, दिव्य, पुण्यशील,—तः विष्णु या कृष्ण का अनुचर अथवा भक्त,—तम् अठारह पुराणों में से एक।

भागशस् (अव्य०) [भाग+शस्] 1. खण्डों में या अंशों में, खण्ड खण्ड करके 2. हिस्से के अनुसार।

भागिक (वि०) [भाग+ठन्] 1. खण्ड सम्बन्धी 2. खण्ड बनाने वाला 3. भिन्न सम्बन्धी 4. ब्याज वहन करने वाला (भागिकं शतम्) 'सौ में से एक भाग अर्थात् एक प्रतिशत', इस प्रकार भागिक् विंशतिः आदि)।

भागिन् (वि०) [भज्+घिनुण्] 1. हिस्से या भागों से युक्त 2. हिस्सा रखने वाला, हिस्सेदार 3. हिस्सा लेने वाला, भाग लेने वाला, साथी यथा दुःख°

4. सम्बन्धित, ग्रस्त 5. अधिकृतधारी, स्वामी—मनु० ९।५३ 6. हिस्से का अधिकारी—मनु० ९।१६५, याज्ञ० २।१२५ 7. भाग्यवान्, किस्मत वाला 8. घटिया, गौण।

भागिनेयः [भगिनी+ढक्] बहन का पुत्र, भानजा,—यी भानजी।

भागीरथी [भगीरथ+अण्+ङीप्] 1. गंगा नदी का नामान्तर—भागीरथी निर्झरशीकराणाम्—कु०.१।१५ 2. गंगा की तीन मुख्य शाखाओं में एक।

भाग्यम् [भज्+ण्यत्] 1. किस्मत, प्रारब्ध, तकदीर, सौभाग्य या दैव—स्त्रियाश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः—सुभा० (बहुधा ब० व० में) श० ५।३० 2. अच्छा भाग्य या किस्मत—रघु० ३।१३ 3. समृद्धि, सम्पन्नता—भाग्येष्वनुत्सेकिनी श० ४।१७ 4. आनन्द, कल्याण। सम० —आयत्त (वि०) भाग्य पर आश्रित—भाग्यायत्तमतः परम्—श० ४।१६. —उदयः सौभाग्य का प्रभात, भाग्यशाली घटना, —क्रमः भाग्य की चाल, किस्मत का फेर—भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति—मृच्छ० १।१३, —योगः भाग्य की बेला, किस्मत का मेल,—विप्लवः बुरी किस्मत, दुर्भाग्य—रघु० ८।४७,—वशात् (अव्य०) विधि की इच्छा से, भाग्य से, किस्मत से, भाग्यवश।

भाग्यवत् (वि०) [भाग्य+मतुप्] 1. भाग्यशाली, सौभाग्यसम्पन्न, आनन्दित 2. समृद्धिशाली।

भाङ्ग (वि०) (स्त्री० गी) [भङ्गा+अण्] पटसन से निर्मित, सन का बना हुआ।

भाङ्गकः [भाङ्ग+कन्] फटा पुराना कपड़ा, जीर्ण शीर्ण, चिथड़ा।

भाङ्गीनम् [भङ्गाया भवनं क्षेत्रम्—खञ्] सन या पटसन का खत।

भाज् (चुरा० उभ०) बाँटना, वितरित करना, दे० 'भज्' प्रेर०।

भाज् (वि०) [भाज्+क्विप्] (प्रायः समास के अन्त में) 1. हिस्सेदार, साथी, भागी 2. रखने वाला, उपभोग करने वाला, अधिकार करने वाला, प्राप्त करने वाला सुख°, रिक्थ° 3. अधिकारी 4. भावुक, अनुभव करने वाला, सचेतन 5. अनुरक्त 6. रहने वाला, आवासी, निवास करने वाला यथा 'कुहरभाज्' 7. जाने वाला, सहारा लेने वाला, खोजने वाला 8. पूजा करने वाला 9. भाग्य में बदा हुआ 10. अवश्यंकरणीय, कर्तव्य —भट्टि० ३।२१।

भाजकः [भाज्+ण्वुल्] 1. बांटने वाला 2. (गणि० में) वह अंक जिससे भाग किया जाय।

भाजनम् [भाज्यतेऽनेन भाज्+ल्युट्] 1. हिस्से बनाना, बांटना 2. (अंक में) भाग 3. पात्र, बर्तन, प्याला, थाली—पुण्यभाजनम्—श० ४, रघु० ५।२२ 4. (आलं०) आधार, ग्रहण करने वाला, आशय—स श्रियो भाजनं नरः—पंच० १।४३,—कल्याणानां त्वमसि महसां भाजनं विश्वमूर्ते—मा० १।३, उत्तर० ३।१५, मालवि० ५।८ 5. योग्य या पात्र, योग्य पदार्थ या व्यक्ति—भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्—का० १०८ 6. प्रतिनिधान 7. ६४ पलों की माप।

भाजितम् [भाज्+क्त] हिस्सा, अंश।

भाजी [भाज्+घञ्+ङीप्] चावल, भात का मांड, दलिया।

भाज्यम् [भाज्+ण्यत्] 1. अंश, हिस्सा, दाय, 3. (अंक में) लाभांश।

भाटम्, भाटकम् [भट्+घञ्, ण्वुल् वा] मजदूरी, भाड़ा, किराया।

भाटिः (स्त्री०) [भट्+णिच्+इञ्] 1. मजदूरी, भाड़ा, 2. वेश्या की कमाई।

भाट्टः [भट्ट+अण्] भट्ट का अनुयायी, कुमारिल भट्ट द्वारा स्थापित मीमांसादर्शन के सिद्धांतों का अनुयायी।

भाणः [भण्+घञ्] नाटयकाव्य का एक भेद; इसमें केवल रंगमंच पर एक ही पात्र होता है, जो अन्तर्वादियों के स्थान को आकाशभाषित का यथेष्ट प्रयोग करके पूरा कर देता है—भाणः स्याद्धूर्तचरितो नानावस्थान्तरात्मकः, एकाङ्क एक एवात्र निपुणः पण्डितो विटः सा० द० ५१३, आगे के श्लोक भी देखिये, उदा० वसंततिलक, मुकुंदानन्द, लीलामधुकर आदि।

भाणकः [भण्+ण्वुल्] उद्घोषक, घोषणा करने वाला।

भाण्डम् [भाण्ड्+अच्, भण्+ड स्वार्थे अण् वा—तारा०] 1. पात्र, बर्तन, बासनं (थाली, कटोरी गिलास आदि)—नीलभांडम् 'नील रखने का मटका' इसी प्रकार 'क्षीरभांडम्' 'दूध की हांडी' सुरा°, मद्य° आदि, 2. संदूक, ट्रंक, पेटी, संदूकची—क्षुरभांड—पंच० १ 3. औजार या उपकरण, यंत्र 4. संगीत-उपकरण 5. सामान, बर्तन, माल, पण्यसामग्री, दुकानदार की वाणिज्यवस्तु—मथुरागामीनि भाण्डानि—पंच० १ 6. माल की गाँठ 7. (आलं०) कोई भी मूल्यवान् संपत्ति, निधि—शान्तं वा रघुनन्दने तदुभयं तत्पुत्रभाण्डं हि मे उत्तर० ४।२४ 8. नदी का तल 9. घोड़े की जीन या साज 10. भंडैती, मसखरापन,—भाण्डाः (पुं०,ब०व०) बर्तन, पण्यसामग्री। सम० अ(आ)गार, —रम् भंडारघर, सामान का कोठा (शा० जहाँ घर का सामान और बर्तन आदि रक्खे जाते हैं)—भांडागाराण्यकृत विदुषां सा स्वयं भोगभाजि—विक्रमांक० १८।४५ 2. कोष, ज्ञान° 3. संग्रह, गोदाम, भंडार, —पतिः सौदागर,—पुटः नाई,—प्रतिभाण्डकम् विनिमय, सामान की अदलाबदली की संगणना,—भरकः बर्तन

की अन्तर्वस्तु,—मूल्यम् बर्तनों के रूप में पूंजी,—शाला गोदाम, भण्डार।

भाण्डकः,-कम् [भाण्ड+कन्] छोटा बर्तन, कटोरा,-कम् माल, पण्यसामग्री, बर्तन।

भाण्डारम् [भाण्ड+ऋ+अण्] गोदाम, भण्डार।

भाण्डारिन् (पुं०) [भाण्डार+इनि] गोदाम या भंडार का रखवाला।

भाण्डिः (स्त्री०) [भण्ड्+इन् पृषो० साधुः] उस्तरे का घर, पेटी। सम०—वाहः नाई,—शाला नाई की दुकान।

भाण्डिकः,-लः [भाण्ड+ठन्, भांडि+लच्] नाई।

भाण्डिका [माण्डि+कन्+टाप्] उपकरण, औजार, यन्त्र।

भाण्डिनी [भाण्ड+इनि+ङीप्] पेटी, टोकरी।

भाण्डीरः [भण्ड्+ईरच्, पृषो० साधुः] बड़ का या गूलर का वृक्ष।

भात (भू० क० कृ०) [भा+क्त] चमकता हुआ, जगमगाता हुआ, चमकीला,—तः उषःकाल, प्रभात, प्रातःकाल।

भातिः (स्त्री०) [भा+क्तिन्] 1. प्रकाश, चमक, कान्ति, आभा 2. प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान या प्रतीति।

भानुः [भा+तुन्] सूर्य।

भाद्रः, भाद्रपदः [भाद्रपदी वा पौर्णमासी अस्मिन् मासे भाद्री (भाद्रपदी)+अण्] चांद्रवर्ष के एक मास का नाम (अगस्त और सितम्बर के मास में आने वाला),—दाः (स्त्री०—ब० व०) पच्चीसवाँ और छब्बीसवाँ नक्षत्र (पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा)।

भाद्रपदी, भाद्री [भाद्रपद+ङीप्, भद्रा+अण्+ङीप्] भाद्रपद मास की पूर्णिमा।

भाद्रमातुरः [भद्रमातुरपत्यम् —भद्रमातृ+अण्, उकारादेशः] सती साध्वी माता का पुत्र।

भानम् [भा भावे ल्युट्] 1. प्रकट होना, दृश्यमान 2. प्रकाश, कान्ति 3. प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान।

भानुः [भा+नु] 1. प्रकाश, कान्ति, चमक 2. प्रकाश-किरण—मण्डिताखिलदिक्प्रान्ताश्चण्डांशोः पान्तु भानवः —भामि० १।१२९, शि० २।५३, मनु० ८।१३२ 3. सूर्य, —भानुः सकृद्युक्ततुरंग एव—श० ५।४, भीमभानौ निदाघे—भामि० १।३० 4. सौन्दर्य 5. दिन 6. राजा, राजकुमार, प्रभु 7. शिव का विशेषण—स्त्री० सुन्दर स्त्री। सम०—केशः (स) रः सूर्य,—जः शनिग्रह —बिम्बम्,—वारः रविवार, इतवार।

भानुमत् (वि०) [भानु+मतुप्] 1. ज्योतिर्मान्, चमकीला, जगमग करता हुआ 2. सुन्दर, मनोहर—पुं० सूर्य कु० ३।६५, रघु० ६।३६ ऋतु० ५।२, —ती दुर्योधन की पत्नी का नाम।

भामिनी [भाम्+णिनि+ङीप्] 1. सुन्दर तरुणी, कामिनी—रघु० ८।२८ 2. कामुकी स्त्री (बहुत प्यार के कारण ऐसी स्त्री के लिए 'चंडी' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है)—उपचीयत एव कापि शोभा परितो भामिनि ते मुखस्य नित्यम्—भामि० २।१।

भारः [भृ+घञ्] 1. बोझ, वजन, तोल (आलं० से भी) कुचभारानमिता न योषितः—भर्तृ० ३।२७, इसी प्रकार—श्रोणीभार—मेघ० ८२, भारः कायो जीवितं वज्रकीलम्—मा० ९।३७, 2. (आक्रमण आदि का) धक्का, (युद्ध आदि का) अत्यन्त घिचपिच भाग —उत्तर० ५।५ 3. अतिरेक, मार या उड़ान—रघु० १४।६८ 4. श्रम, मेहनत, आयास 5. राशि, बड़ी मात्रा —कच°, जटा° 6. २००० पल सोने के तोल के बराबर 7. बोझा ढोने के लिए जूआ। सम०—आक्रान्त (वि०) बोझ से अत्यन्त दबा हुआ, अधिक बोझा लिए हुए,—उद्वहः कुली, बोझा ढोने वाला,—उपजीवनम् बोझा ढोकर जीवन-यापन करना, कुली का जीवन,—यष्टिः बोझ उठाने की लकड़ी,—वाह (वि०) (स्त्री०—भारौही), बोझा ढोने वाला,—वाहः बोझा ले जाने वाला, कुली,—वाहनः बोझा ढोने वाला जानवर (नम्) गाड़ी, मालगाड़ी का डिब्बा,—वाहिकः कुली, —सह (वि०) जो अधिक बोझा उठा सके, (अतः) बहुत मजबूत, बलवान्,—हरः,—हारः बोझा ढोने वाला, कुली,—हारिन् (पुं०) कृष्ण का विशेषण।

भारण्डः [?] एक प्रकार का काल्पनिक पक्षी जिसका वर्णन केवल कहानियों में पाया जाता है ('भारुंड' भी) पंच० ५।१०२।

भारत (वि०) (स्त्री०—ती) [भरत+अण्] भरत से संबन्ध रखने वाला या भरत की सन्तान,—तः 1. भरत की सन्तान 2. भारतवर्ष या हिन्दुस्तान का निवासी 3. अभिनेता,—तम् 1. भरत का देश, भारत—शि० १४।५ 2. संस्कृत में लिखा हुआ एक अत्यन्त प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें अनन्त उपाख्यानों के साथ भरतवंशी राजाओं का इतिहास पाया जाता है (व्यास या कृष्ण-द्वैपायन इसके रचयिता माने जाते हैं परन्तु यह जिस विशाल रूप में आज मिलता है निश्चित रूप से अनेक व्यक्तियों की रचना है)—श्रवणांजलिपुटपेयं विरचितवान् भारताख्यममृतं यः, तमहमरागमकृष्णं कृष्णद्वैपायनं वंदे—वेणी० १।४, व्यासगिरां निर्यासं सारं विश्वस्य भारतं वन्दे, भूषणतयैव संज्ञां यदङ्कितां भारती वहति—आर्या० ३१,—ती वाणी, वाच्य, वचन, वाणी-प्रवाह भारतीनिर्घोषः—उत्तर० ३, तमर्थमिव भारत्या सुतया योक्तुमर्हसि—कु० ६।७९ नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति—काव्य० १ 2. वाणी की देवता, सरस्वती 3. विशेष प्रकार की शैली—भारती संस्कृतप्रायो वाग्व्यापारो नटाश्रयः—सा० द० २८५ 4. लवा, बटेर।

भारद्वाजः [भरद्वाजस्यापत्यम्—अण्] 1. कौरव पांडवों की सैनिक शिक्षा के आचार्य गुरु द्रोण 2. अगस्त्य का नामान्तर 3. मङ्गलग्रह 4. चातक पक्षी,—जम् हड्डी।

भारवः [भारं वाति—वा+क] धनुष की डोरी।

भारविः [?] किरातार्जुनीय नामक संस्कृतकाव्य के रचयिता,—तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः, उदिते च पुनर्माघे भारवेर्भा रवेरिव, भारवेरर्थगौरवम् —उद्भट।

भारिः [इभस्य अरिः पृषो० साधुः] सिंह।

भारिक, भारिन् (वि०) [भार+ठक्, इनि वा] भारी —पुं० बोझा ढोने वाला, कुली।

भार्गः [भर्ग+अण्] भर्ग देश का राजा।

भार्गवः [भृगोरपत्यम् अण्] 1. शुक्राचार्य, शुक्रग्रह का शास्ता और असुरों का आचार्य 2. परशुराम, दे० परशुराम 3. शिव का विशेषण 4. धनुर्धर 5. हाथी। सम० —प्रियः हीरा।

भार्गवी [भार्गव+ङीप्] 1. दूब 2. लक्ष्मी का विशेषण।

भार्यः [भृ+ण्यत्] सेवक, पराश्रयी (भरण-पोषण किये जाने के योग्य)।

भार्या [भर्तुं योग्या+भार्य+टाप्] 1. धर्मपत्नी—सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रजावती, सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता—हि० १।१९६ 2. मादा जानवर। सम०—आट (वि०) अपनी पत्नी के वेश्यापन से जीवन निर्वाह करने वाला,—ऊढ (वि०) विवाहित (पुरुष)—भार्योढं तमवज्ञाय—भट्टि० ४।१५, —जितः पत्नी से प्रभावित पति, जोरू का गुलाम।

भार्यारुः [भार्या+ऋ+उण्] 1. एक प्रकार का मृग 2. उस बालक का पिता जो अन्य पुरुष की पत्नी से उत्पन्न हो।

भालम् [भा+लच्] मस्तक, ललाट—यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं स्तोकं महद्वा धनम्—भर्तृ० २।४९, (स्मरस्य) वपुः सद्यो भालानलभसितजालास्पदमभूत्—भामि० १।८४ 2. प्रकाश 3. अंधकार। सम० अङ्कः 1. भाग्यवान् पुरुष जिसके मस्तक पर भाग्य रेखा विराजमान है 2. शिव का विशेषण 3. आरा 4. कछुवा, चन्द्रः 1. शिव का विशेषण 2. गणेश का विशेषण,—दर्शनम् सिंदूर,—दर्शिन् (वि०) 'मस्तक या ललाट को देखने वाला' अर्थात् वह नौकर जो अपने स्वामी की इच्छाओं के प्रति सावधान रहता है,—दृश् (पुं०)—लोचनः शिव का विशेषण,—पट्टः,—पट्टम् मस्तक, ललाट।

भालुः [भृ+उण्, वृद्धिः, रस्य लः] सूर्य।

भालुक, भालूक, भाल्लुक, भाल्लूक [भलते हिनस्ति प्राणिनः —भल्+उक (ऊक)+अण्, भल्लु (ल्लू)+क +अण्] रीछ, भालू।

९३

भावः [भू भावे घञ्] 1. होना, सत्ता, अस्तित्व—नासतो विद्यते भावः—भग० २।१६ 2. होना, घटित होना, घटना 3. स्थिति, अवस्था, होने की अवस्था—लताभावेन परिणतमस्या रूपम्—विक्रम० ४; कातरभावः, विवर्णभावः आदि 4. रीति, ढंग 5. दर्जा, स्थिति, पद, हैसियत—देवीभावं गमिता काव्य० १०, इसी प्रकार प्रेष्यभावम्, किंकरभावम् 6. (क) यथार्थ दशा या स्थिति, यथार्थता, वास्तविकता—भग० १०।८ (ख) निष्कपटता, भक्ति—त्वयि मे भावनिबन्धना रतिः —रघु० ८।५२, २।२६ 7. सहज गुण, चित्तवृत्ति, प्रकृति, स्वभाव—उत्तर० ६।१४ 8. झुकाव या मनोवृत्ति, भावना, विचार, मत, कल्पना—पंच० ३।४३, मनु० ८।२५ ४।६५ 9. भावना, संवेग, रस या मनोभाव—एको भावः—पंच० ३।६६, कु० ६।९५, (नाट्य विज्ञान या काव्यरचना में भाव बहुधा दो प्रकार के होते हैं—प्रधान या स्थायीभाव, तथा गौण या व्यभिचारिभाव। स्थायिभाव गिनती में आठ या नौ हैं, तदनुसार अपने २ स्थायिभाव से युक्त रस भी आठ या नौ हैं। व्यभिचारिभाव गिनती में तैंतीस या चौंतीस हैं तथा स्थायिभावों का विकास करने एवं संवर्धन करने में सहायक होते हैं, इनके कुछ भेदों की परिभाषा तथा गिनती के लिए—रस० का प्रथम आनन या काव्य० का चौथा समुल्लास देखो) 10. प्रेम, स्नेह, अनुराग—द्वन्द्वानि भावं क्रियया विवव्रुः—कु० ३।३५, रघु० ६।३६ 11. अभिप्राय, प्रयोजन, सारांश, आशय; इति भावः (प्रायः भाष्यकारों द्वारा प्रयुक्त) 12. अर्थ, आशय, तात्पर्य, व्यंजना मा० १।२५ 13. प्रस्ताव, संकल्प 14. हृदय, आत्मा, मन—तयोर्विवृतभावत्वात्—मा० १।१२, भग० १८।१६ 15. विद्यमान पदार्थ, वस्तु, चीज, तत्त्वार्थ,—जगति जयिनस्ते ते भावा नवेन्दुकलादयः—मा० १।१७, ३६, रघु० ३।४१, उत्तर० ३।३२ 16. प्राणी, जीवधारी जन्तु 17. भावमय मनन, चिन्तन (=भावना) 18. आचरण, गतिविधि, हावभाव 19. प्रीति द्योतक हावभाव या रस की अभिव्यक्ति, प्रेम संकेत—श० २।१ 20. जन्म, 21. संसार, विश्व 22. गर्भाशय 23. इच्छाशक्ति 24. अतिमानव शक्ति 25. उपदेश, अनुदेश 26. (नाटकों में) विद्वान् और सम्माननीय व्यक्ति, योग्य पुरुष (संबोधनशब्द)—भाव अयमस्मि—विक्रम० १, तां खलु भावेन तथैव सर्वे वर्ण्याः पातिताः—मा० १ 27. (व्या० में) भाववाचक संज्ञा का आशय, भावात्मक विचार —भावे क्तः 28. भाववाच्य 29. (ज्योतिः—में) जन्मकुंडली के स्थान 30. नक्षत्र। सम०—अनुग (वि०) स्वाभाविक, (गा) छाया,—अन्तरम् भिन्न स्थिति —अर्थः 1. स्पष्ट अर्थ या ध्वनि (किसी शब्द या

पदोच्चय की) 2. विषय-सामग्री, – आकूतम् मन के (गुप्त) विचार - अमरु ४, - आत्मक (वि०) वास्तविक, यथार्थ,—आभासः भावना का अनुकरण, बनावटी या मिथ्या संवेग,—आलीना छाया,– एकरस (वि०) केवल (निष्कपट) प्रेम के रस से प्रभावित कु० ५।८२,—गम्भीरम् (अव्य०) 1. हृदय से, हृदयतल से 2. गंभीरता के साथ, संजीदगी से, गम्य (वि०) मन से जाना हुआ—मेघ० ८५,– ग्राहिन् (वि०) 1. आशय को समझने वाला 2. मनोभाव की कदर करने वाला,—ज्ञः कामदेव,—ज्ञ विद् (वि०) हृदय को जानने वाला,– दर्शिन् (वि०) दे० 'भालदर्शिन्', —बन्धन (वि०) हृदय को मुग्ध करने वाला या बांधने वाला, हृदयों को कड़ी को जोड़ने वाला—रघु० ३।२४,– बोधक (वि०) किसी भी भावना को प्रकट करने वाला,– मिश्रः योग्य व्यक्ति, सज्जन पुरुष (नाटकों में प्रयुक्त), - रूप (वि०) वास्तविक, यथार्थ, —वचनम् भावात्मक विचार को प्रकट करने वाला, क्रिया की भावाशयता को वहन करने वाला,– वाचकम् भाववाचक संज्ञा,—शबलत्वम् नाना प्रकार के संवेगों और भावों का मिश्रण (भावानां बाध्यबाधकभावमापन्नानामुदासीनानां वा व्यामिश्रणम्—रस० तद्गत उदाहरण दे०),—शून्य (वि०) यथार्थ प्रेम से रहित, —सन्धिः दो संवेगों का मेल या सह-अस्तित्व—(भावसन्धिरन्योन्यानभिभूतयोरन्योन्याभिभावनयोग्ययोः सामानाधिकरण्यम्—रस० दे० तद्गत उदाहरण), —समाहित (वि०) भावमनस्क, भक्त,—सर्गः मानसिक सृष्टि अर्थात् मानव की मनश्शक्तियों की सृष्टि और उनका प्रभाव (विप० भौतिक सर्ग या भौतिक सृष्टि), —स्थ (वि०) आसक्त, अनुरक्त, कु० ५।५८,–स्थिर (वि०) मन में दृढ़तापूर्वक जमा हुआ—श० ५।२, —स्निग्ध (वि०) स्नेहसिक्त, सत्यनिष्ठा पूर्वक आसक्त—पंच० १।२८५ ।

भावक (वि०) [भू+णिच्+ण्वुल्] 1. उत्पादक, प्रकाशक 2. कल्याणकारक 3. उत्प्रेक्षक, कल्पना करने वाला 4. उदात्त और सुन्दर भावनाओं के प्रति रुचि रखने वाला, काव्यपरकरुचि रखने वाला,—कः 1. भावना मनोभाव 2. मनोभावों (विशेष कर प्रेम के) को बाहर प्रकट करना ।

भावन (वि०) (स्त्री०—नी) [भू+णिच्+ल्युट्] उत्पादक—दे० ऊ० भावक,—नः 1. निमित्तकारण 2. सृष्टिकर्ता—मा० ९।४ 3. शिव का विशेषण-नम् —ना 1. पैदा करना, प्रकट करना 2. किसी के हितों को अनुप्राणित करना 3. संप्रत्यय, कल्पना, उत्प्रेक्षा, विचार, धारणा —मधुरिपुरहमिति भावनशीला—गीत० ६. या भावनया त्वयि लीना—४, पंच० ३।१६२ 4. भक्ति भावना, निष्ठा पंच० ५।१०५ 5. मनन, अनुध्यान, भावात्मक चिंतन 6. कल्पना, प्राक्-कल्पना 7. निरीक्षण, गवेषणा 8. निश्चयन, निर्धारण—याज्ञ० २।१४९ 9. याद करना, प्रत्यास्मरण 10. प्रत्यक्ष ज्ञान, संज्ञान 11. (तर्क० में) प्रत्यक्ष ज्ञान से उत्पन्न स्मृति का कारण—दे०, तर्क० में 'भावना' और 'स्मृति' 12. प्रमाण प्रदर्शन, युक्ति 13. सिक्त करना, सराबोर करना, किसी सूखे चूर्ण को रस से भिगोना 14. सुवासित करना, फूलों और सुगंधित द्रव्यों से सजाना ।

भावाटः [भावं भावेन वा अटति—अट्+अण्, अच् वा] 1. संवेग, आवेश, मनोभाव 2. प्रेम की भावना का बाह्य संकेत 3. पुण्यात्मा या पुण्यशील व्यक्ति 4. रसिक व्यक्ति 5. अभिनेता 6. सजावट, वेशभूषा ।

भाविक (वि०) (स्त्री०—की) 1. प्राकृतिक, वास्तविक, अन्तर्हित, अन्तर्जात 2. भावुकतापूर्ण, भावुकता या भावना से व्याप्त 3. भावी समय,—कम् 1. उत्कट प्रेम से पूर्ण भाषा 2. (अलं० में) एक अलंकार का नाम जिसमें भूत और भविष्यत् का इस विशदता से वर्णन किया गया हो कि वस्तुतः वर्तमान प्रतीत हो । मम्मट की दी हुई परिभाषा—प्रत्यक्षा इव यद्भावाः क्रियन्ते भूतभाविनः, तद्भाविकम्—काव्य० १० ।

भावित (भू० क० कृ०) [भू+णिच्+क्त] 1. पैदा किया गया, उत्पादित 2. प्रकटीकृत, प्रदर्शित, निर्दशित —भावितविषवेगविक्रियः - दश० 3. लालन-पालन किया गया, पाला पोसा गया 4. संव्यक्त किया गया, कल्पना किया गया, कल्पित, कल्पना में उपन्यस्त 5. चिन्तित, मनन किया गया 6. बनाया गया, रूपान्तरित किया गया 7. मनन द्वारा पावन किया गया—दे० भावितात्मन् 8. सिद्ध, स्थापित 9. व्याप्त, भरा हुआ, संतृप्त, प्रेरित 10. डुबाया गया, सराबोर, मग्न 11. सुवासित, सुगंधित 12. मिश्रित,—तम् गुणनप्रक्रिया द्वारा प्राप्त गुणनफल । सम०— आत्मन्– बुद्धि (वि०) 1. जिसका आत्मा परमात्म-चिन्तन से पवित्र हो गया है, जिसने परमात्मा को प्रत्यक्ष कर लिया है 2. विशुद्ध, भक्त, पुण्यशील—पंच० ३।६६ 3. चिन्तनशील, मनस्वी – रघु० १।७४ 4. व्यस्त, व्यापृत—शि० १२।३८ ।

भावितकम् [भावित+कन्] गुणनप्रक्रिया द्वारा प्राप्त गुणनफल, तथ्यविवरण ।

भावित्रम् [भू+णि+त्रन्] तीन लोक—(स्वर्गलोक, मर्त्यलोक और पाताल लोक) ।

भाविन् (वि०) [भू+इनि, णिच्] 1. होनहार, होने वाला,—भृत्यभावि—रघु० ११।४९ 2. होने वाला, भविष्य में घटने वाला, आगे आने वाला— लोकेन भावी पितुरेव तुल्यः—रघु० १८।३८, मेघ० ४१

3. भविष्य—समतीतं च भवच्च भावि च—रघु० ८।७८, प्रत्यक्षा इव यद्भावाः क्रियन्ते भूतभाविनः —काव्य० १०, नै० ३।११ 4. होने के योग्य 5. अवश्यंभावी, भवितव्य, प्राङ्नियत या पूर्वनिर्दिष्ट— यद-भावि न तद्भावि भाविचेन्न तदन्यथा—हि० १ 6. उत्कृष्ट, सुन्दर, भव्य,—नी 1. सुन्दर स्त्री 2. उत्तम या साध्वी महिला—कु० ५।३८ 3. स्वेच्छाचारिणी स्त्री ।

भावुक (वि०) [भू+उकञ्] 1. होने वाला, घटने वाला 2. होनहार 3. समृद्ध, प्रसन्न 4. शुभ, मंगलमय 5. काव्य में रुचि रखने वाला, गुणग्राही,—कः बहनोई (बहुधा नाटकों में प्रयुक्त),—कम् 1. प्रसन्नता, कल्याण, समृद्धि—स एतु वो दुश्च्यवनो भावुकानां परंपराम्—काव्य० ७ ('अप्रयुक्तत्व' नाम काव्य रचना के दोष का उदाहरण 2. प्रेम और प्रणयोन्माद से पूर्ण भाषा ।

भाव्य (वि०) [भू+ण्यत्] 1. होने वाला, घटित होने वाला, प्रायः 'भवितव्यम्' की भांति भावरूप में प्रयुक्त —किं तैर्भाव्यं मम सुदिवसैः—भर्तृ० ३।४ 2. भविष्य 3. अनुष्ठेय या जो पूरा किया जाय 4. सोचे जाने या कल्पना किये जाने योग्य 5. सिद्ध या प्रदर्शित किये जाने योग्य 6. निर्धारण या गवेषणा किये जाने योग्य,—व्यम् 1· प्रारब्ध, अवश्यंभावी 2. भवितव्यता ।

भाष् (भ्वा० आ० भाषते, भाषित) 1. कहना, बोलना, उच्चारण करना—त्वयैकमीशं प्रति साधु भाषितम् —कु० ५।८१, बहुधा द्विकर्मक,—भीतां प्रियामेत्य वचो बभाषे—रघु० ७।६६, आखण्डलः काममिदं बभाषे—कु० ३।११, भट्टि० ९।१२२ 2. बोलना, संबोधित करना—किन्त्रिद्विहस्यार्थपतिं बभाषे—रघु० २।४६, ३।५१ 3. बोलना, घोषणा करना, प्रकथन करना—क्षितिपालमुच्चैः प्रीत्या तमेवार्थमभाषतेव —रघु० २।५१ 4. बोलना, बातें करना 5. नाम लेना, पुकारना 6. वर्णन करना,—अनु 1. बोलना, कहना 2. समाचार देना, घोषणा करना—मनु० ११।२२८, अप—,झिड़कना, बुरा भला कहना, बदनाम करना, निन्दा करना, बुराई करना—अहमणुमात्रं न किंचिदपभाषे—भामि० ४।२७, न केवलं यो महतोऽपभाषते श्रृणोति तस्मादपि यः स पापभाक्—कु० ५।८३, अभि—, 1. बोलना, भाषण देना—मनु० २।१२८ 2. बोलना, कहना 3. प्रकथन करना, घोषणा करना, कहना, समाचार देना 4. वर्णन करना, आ–,1. बोलना, भाषण देना,—वैशम्पायनश्चन्द्रापीडमाबभाष—का० ११७ 2. कहना, बोलना,–आभाषि रामेण वचः कनीयान्—भट्टि० ३।५१, परि—,परिपाटी स्थापित करना, औपचारिक रूप से बोलना, प्र—,कहना, बोलना—स्थितधीः किं प्रभाषेत—भग० २।५४, प्रति—,1. बदले में कहना, उत्तर देना—भट्टि० ५।३९ 2. कहना, वर्णन करना 3. एक के बाद बोलना, सुनकर बोलना 4. नाम लेना, पुकारना – कामिनि तामुपगीतिं प्रतिभाषन्ते महाकवयः—श्रुत० ६, वि—, ऐच्छिक नियम के रूप में निर्धारित करना, सम्—, मिलकर बोलना, बातचीत करना—मनु० ८।५५ ।

भाषणम् [भाष्+ल्युट्] 1. बोलना, बातें करना, कहना 2. वक्तृता, शब्द, बात 3. कृपापूर्ण शब्द ।

भाषा [भाष्+अङ+टाप्] 1. वक्तृता, बात—यथा 'चारुभाषः' में 2. बोली, जबान—मनु० ८।१६४ 3. सामान्य या देहाती बोली (क) बोली जाने वाली संस्कृत भाषा (विप० छंदस् वा वेद)—विभाषा भाषायाम्—पा० ६।१।१८१ (ख) कोई प्राकृत बोली (विप० संस्कृत) मनु० ८।३३२ 4. परिभाषा, वर्णन —स्थितप्रज्ञस्य का भाषा—भग० २।५४ 5. सरस्वती का विशेषण, वाणी की देवी 6. (विधि में) अभियोग की चार अवस्थाओं में से पहली, शिकायत, आरोप, दोषारोपण । सम०—अन्तरम् 1. अन्य वाणी या बोली 2. अनुवाद,— पादः आरोप, शिकायत—दे० 'भाषा' 6 ऊपर,—समः एक अलंकार का नाम जिसमें शब्दक्रम का न्यास इस प्रकार किया जाता है कि चाहे आप उसे संस्कृत समझें और चाहे प्राकृत (कोई न कोई भेद)—उदा०—मञ्जुलमणिमञ्जीरे कलगम्भीरे विहारसरसीतीरे, विरसासि केलिकीरे किमालि धीरे च गन्धसारसमीरे—सा० द० ६४२, (एष श्लोकः संस्कृतप्राकृतशौरसेनीप्राच्यावन्तीनागरापभ्रंशेष्वेकविध एव), किं त्वां भणामि विच्छेददारुणायासकारिणि, कामं कुरु वरारोहे देहि मे परिरंभणम्—मा० ६।११, (यह संस्कृत या शौरसेनी में है) इसी प्रकार ६।१० ।

भाषिका [भाषा+कन्+टाप्, ह्रस्वः, इत्वम्] वक्तृता, भाषा, बोली ।

भाषित (भू० क० कृ०) [भाष्+क्त] बोला हुआ, कहा हुआ, उच्चारण किया हुआ,—तम् भाषण, उच्चारण, शब्द, बोली—मनु० ८।२६ । सम०—पुंस्क =उक्तपुंस्क ।

भाष्यम् [भाष्+ण्यत्] 1. बोलना, बातें करना 2. सामान्य या देहाती भाषा की कोई रचना 3. व्याख्या, वृत्ति, टीका जैसा कि 'वेदभाष्य' में 4. विशेषकर सूत्रों की वृत्ति जिसमें शब्दशः व्याख्या और टिप्पण होते हैं (सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः, स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः)—संक्षिप्तस्याप्यतोऽस्यैव वाक्यस्यार्थगरीयसः, सुविस्तरतरा वाचो भाष्यभूता भवन्तु मे—शि० २।२४ 5. पाणिनि के सूत्रों पर पतंजलि का महाभाष्य । सम०—करः—कारः—कृत्

(पुं०) 1. भाष्यकार, टीकाकार 2. पतंजलि ।

भास् (भ्वा० आ० भासते, भासित) 1. चमकना, जगमगाना, जगमग करना—तावत्कामनृपातपत्रसुषमं बिम्बं बभासे विधोः—भामि० २।७४, ४।१८, कु० ६।११, भट्टि० १०।६१ 2. स्पष्ट होना, विशद होना, मन में होना—त्वदङ्गमार्दवे दृष्टे कस्य चित्ते न भासते, मालतीशशभृल्लेखाकदलीनां कठोरता—चन्द्रा० ५।४२ 3. प्रकट होना—प्रेर० (भासयति—ते) 1. चमकाना, देदीप्यमान करना, प्रकाशित करना—अधिवसंस्तनुमध्वरदीक्षितामसमभासमभासयदीश्वरः—रघु० ९।२१, भग० १५।६ 2. जाहिर करना, स्पष्ट करना, प्रकट करना—भट्टि० १५।४२, अव—, 1. चमकना, कि० ३।४६, 2. प्रकट होना, प्रकाशित होना, स्पष्ट होना—आहोस्विन्मुखमवभासते युवत्याः—शि० ८।२९, आ—, प्रकट होना,…के समान चमकना,…की तरह दिखलाई देना—स्थानान्तरं स्वर्ग इवाबभासे—कु० ७।३, रघु० ७।४३, १४।१२, उद्—, चमकना, के समान दिखाई देना,—निस्—,चमकना—कि० ७।३६, प्रति—, 1. चमकना 2. दिखलाई देना 3. स्पष्ट होना, प्रकट होना, वि—, चमकना ।

भास् (स्त्री०) [भास्+क्विप्] 1. प्रकाश, कान्ति, चमक—दृशा निशेन्दीवरचारुभासा—नै० २२।४३, रघु० ९।२१, कु० ७।३ 2. प्रकाश की किरण—कि० ५।३८, ४६, ९।६, रत्न० १।२४, ४।१६ 3. प्रतिबिंब, प्रतिमा 4. महिमा, कीर्ति, विभूति 5. लालसा, इच्छा । सम०—करः 1. सूर्य—शि० ११।६९ रघु० ११।७, १२।२५ कु० ६।४९ 2. नायक 3. अग्नि 4. शिव का विशेषण 5. एक प्रसिद्ध ज्योतिषी जो ११ वीं शताब्दी में हुए हैं, (रम्)सोना, °प्रियः लाल, °सप्तमी माघशुक्ला सप्तमी,—करिः शनिग्रह ।

भासः [भास् भावे घञ्] 1. चमक, प्रकाश, कान्ति 2. उत्प्रेक्षा 3. मुर्गा 4. गिद्ध, 5. गोष्ठ, गौशाला 6. एक कवि का नाम—भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः—प्रसन्न० १।२२, मालवि० १ ।

भासक (वि०) (स्त्री०—सिका) [भास्+ण्वुल्] 1. प्रकाश करने वाला, चमकाने वाला, रोशनी करने वाला 2. दिखलाने वाला, विशद करने वाला 3. बोधगम्य बनाने वाला,—कः एक कवि का नाम ।

भासनम् [भास्+ल्युट्] 1. चमकना, जगमगाना 2. ज्योतिर्मय, द्युतिमान् ।

भासन्त (वि०) (स्त्री०—ती) [भास्+झच्, अन्तादेशः] 1. चमकदार 2. सुन्दर, मनोहर,—न्तः 1. सूर्य 2. चन्द्रमा 3. नक्षत्र, तारा, —ती नक्षत्र ।

भासुः [भास्+उन्] सूर्य ।

भासुर (वि०) [भास्+घुरच्] 1. चमकीला, चमकदार भव्य कि० ५।५, रघु० ५।३० 2. भयानक,—रः 1. नायक 2. स्फटिक ।

भास्मन (वि०) (स्त्री०—नी) [भस्मन्+अण्, मन्नन्तत्वात् न टिलोपः] राख से बना हुआ, राख वाला—शि० ४।६५ ।

भास्वत् (वि०) [भास्+मतुप्, मस्य वः] चमकीला, चमकदार द्युतिमान, देदीप्यमान्—कु० १।२, ६।६०, पुं० 1. सूर्य- भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजालिः—सुभा०, रघु० १६।४४ 2. प्रकाश, कान्ति, आभा 3. नायक,—ती सूर्य की नगरी ।

भास्वर (वि०) [भास्+वरच्] चमकीला, प्रकाशमान, चमकदार, उज्ज्वल—रः 1. सूर्य 2. दिन ।

भिक्ष् (भ्वा० आ० भिक्षते, भिक्षित) 1. पूछना, प्रार्थना करना, मांगना (द्विकर्मक)—भिक्षमाणो वनं प्रियां—भट्टि० ६।९ 2. याचना करना (भिक्षा की)—न यज्ञार्थं शूद्राद्विप्रो भिक्षेत कर्हिचित्—मनु० ११।२४, २५ 3. बिना प्राप्त हुए पूछना 4. क्लांत या दुखी होना ।

भिक्षणम्, [भिक्ष्+ल्युट्,] मांगना, भिक्षा मांगना, भिक्षावृत्ति, भिखारीपन ।

भिक्षा [भिक्ष्+अ+टाप्] 1. मांगना, याचना करना, प्रार्थना करना—मनु० ६।५६ 2. दान के रूप में जो चीज़ दी जाय, भीख,—भवति भिक्षां देहि 3. मजदूरी, भाड़ा 4. सेवा । सम०—अटनम् भीख मांगते हुए घूमना (नः) भिखापरी, साधु—अन्नम् मांग कर प्राप्त किया गया अन्न, भीख,—अयनम् (णम्)=भिक्षाटन,—अर्थिन् (वि०) भीख माँगने वाला (पुं०) भिखारी,—अर्ह (वि०) भिक्षा के योग्य, दान के लिए उपयुक्त पदार्थ,—आशिन् (वि०) 1. भिक्षा पर निर्वाह करने वाला 2. बेईमान,—उपजीविन् (वि०) भिक्षा पर जीने वाला, भिखारी,—करणम् भिक्षा लेना, भीख माँगना,—चरणम्,—चर्यम्,—चर्या भीख माँगते हुए घूमना,—पात्रम् भिक्षा ग्रहण करने का बर्तन, भीख के लिए कटोरा—इसी प्रकार भिक्षाभाण्डम्, भिक्षाभाजनम्,—माणवः भिखारी बच्चा (तिरस्कार-सूचक शब्द),—वृत्तिः (स्त्री०) भीख माँग कर जीना, साधु या भिक्षुक का जीवन ।

भिक्षाकः (स्त्री०—की) [भिक्ष्+षाकन्] भिखारी, साधु, भिक्षुक ।

भिक्षित (भू० क० कृ०) [भिक्ष्+क्त] याचना की गई, माँगा गया ।

भिक्षुः [भिक्ष्+उन्] 1. भिखारी, साधु—भिक्षां च भिक्षवे दद्यात्—मनु० ३।९४ 2. साधु, चौथे आश्रम में पहुँचा हुआ ब्राह्मण (जब कि वह कुटुम्ब, घर द्वार छोड़ कर केवल भिक्षा पर निर्वाह करता है), संन्यासी 3. ब्राह्मण का चौथा आश्रम, संन्यास

4. बौद्ध भिक्षुक। सम०—चर्या भिक्षा मांगना, साधु का जीवन,—सङ्घः बौद्ध भिक्षुओं का समाज —सङ्घाती फटे पुराने कपड़े, चीवर।

भिक्षुकः [भिक्ष्+उक्] भिखारी, साधु—मनु० ६।५१।

भित्तम् [भिद्+क्त] 1. भाग, अंश 2. खण्ड, टुकड़ा 3. दीवार, विभाजक दीवार।

भित्तिः [भिद्+क्तिन्] 1. तोड़ना, खण्ड-खण्ड करना, बाँटना 2. दीवार, विभाजक दीवार, समया सौधभित्तिम्—दश०, शि० ४।६७ 3. (अतः) कोई स्थान, जगह या भूमि जिस पर कुछ किया जा सके, आधार, आश्रय—चित्र-कर्म रचनाभित्ति विना वर्तते—मुद्रा० २।४ 4. खण्ड, लव, टुकड़ा, अंश 5. कोई भी टूटी हुई वस्तु 6. दरार, तरेड़ 7. चटाई 8. कमी, खोट 9. अवसर। सम०—खातनः चूहा,—चोरः सेंध लगा कर घर में घुसने वाला चोर,—पातनः 1. एक प्रकार का चूहा 2. चूहा।

भित्तिका [भिद्+तिकन्+टाप्] 1. दीवार, विभाजक दीवार 2. घर की छोटी छिपकली।

भिद् i (भ्वा० पर०—भिन्दति) बाँटना, टुकड़े २ करके बाँटने वाला। ii (रुधा० उभ० भिनत्ति, भिन्ते, भिन्न) तोड़ना, फाड़ना, टुकड़े २ करना, काटकर अलग २ करना, फट जाना, छिद्र करना, बीच में से तोड़ना—अतिशीतलमप्यम्भः किं भिनत्ति न भूभृतः —हि० ३।४५ तेषां कथं नु हृदयं न भिनत्ति लज्जा—मुद्रा० ३।३४, शि० ८।३९, मनु० ३।३३ रघु० ८।५५, १२।७७ 2. खोदना, उखेड़ना, खुदाई करना- उत्तर० १।२३ 3. बीच में से निकल जाना—पंच० १।२११, २१२ 4. बाँटना, पृथक्-पृथक् करना—द्विधा भिन्ना शिखण्डिभिः—रघु० १।३९, अप्रसन्न करना—रघु० १३।३ 5. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, तोड़ना, भंग करना—समयं लक्ष्मणोऽभिनत्—रघु० १५।९४, निहतश्च स्थितिं भिन्दन् दानवोऽसौ बलद्विषा—भट्टि० ७।६८ 6. हटाना, दूर करना—शि० १५।८७ 7. विघ्न डालना, रुकावट डालना—जैसा कि 'समाधिभेदिन्' में 8. बदलना, परिवर्तन करना, (न) भिंदन्ति मन्दां गतिमश्वमुख्यः—कु० १।११ या विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगाः —श० १।१४ 9. खिलाना, फुलाना, फैलाना—सूर्यांशुभिभिन्नमिवारविन्दम्—कु० १।१२, नवोषसा भिन्नमिवैकपङ्कजम्—श० ७।१६, मेघ० १०७, 10. तितरबितर करना, बखेरना, उड़ा देना—भिन्नसारङ्गयूथः—श० १।३३, विक्रम० १।१६ 11. जोड़ खोलना, वियुक्त करना, पृथक् २ करना—मुद्रा० ३।१३ 12. ढीला करना, विश्राम करना, खोलना —पर्यङ्कबन्धं निबिडं बिभेद—कु० ३।५९ 13. भेद खोलना, भण्डाफोड़ करना 14. भटकाना, उचाट करना 15. भेद करना, विविक्त करना। कर्मवाच्य—भिद्यते, 1. टुकड़े २ होना, फटना, थरथराना—मृच्छ० ५।२२ 2. बांटा जाना, वियुक्त किया जाना 3. फैलाना, खिलना, खिलाना 4. शिथिल या विश्रांत किये जाना —प्रस्थानभिन्नां न बबन्ध नीवीम्—रघु० ७।९, ६६ 5. …पृथक् होना (अपा० के साथ) रघु० ५।३७, उत्तर० ४ 6. नष्ट किया जाना 7. भंडाफोड़ किया जाना, धोखा दिया जाना, दूर चले जाना—षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः—पंच १।९९ 8. तंग, पीड़ित, या व्यथित किये जाना—प्रेर० भेदयति—ते 1. खण्ड २ करना, फ़ाड़ना, बांटना फाड़ना आदि 2. नष्ट करना, विघटित करना 3. जोड़ खोलना, पृथक् २ करना 4. भटकना 5. सतीत्व या सत्पथ से डिगाना। इच्छा० (बिभित्सति —ते) तोड़ने की अभिलाष करना, अनु—, बांटना, तोड़ डालना, उद्—, फूटना, जमना (पौधा) पैदा होना—कु० १।२४—रघु० १३।२१, निस्—, 1. फाड़ना, फटकर अलग २ होना, टूटना—भट्टि० ९।६७ 2. खोलना, धोखा देना—उत्तर ३।१, प्र—, 1. तोड़ना, फाड़ना, फ़ाड़कर पृथक् २ करना 2. चूना, (हाथी के गण्डस्थल से) कु० ५।५०, प्रति—, पाड़ लगाना, भेदना, घुसना 2. भेद खोलना, धोखा देना 3. झिड़कना, गाली देना, निन्दा करना—प्रतिभिन्न कान्तमपराधकृतम्—शि० ९।५८, रघु० १९।२२ 4. अस्वीकार करना, मुकरना, 5. छूना, सम्पर्क करना —कु० ७।३५, वि—, 1. तोड़ना फाड़ना 2. छेद करना, घुसना 3. बांटना, अलग २ करना 4. हस्तक्षेप करना 5. बखेरना, तितरबितर करना, सम्—, 1. तोड़ना, फाड़ कर टुकड़े २ करना, टुकड़े २ होना 2. मिल जाना, संगठित होना, सम्बद्ध होना, मिश्रित होना, मिलाना, एक जगह रखना—अन्योन्यसंभिन्नदृशां सखीनाम्—मा० १।३३, भट्टि० ७।५।

भिदकः [भिद्+क्वुन्] तलवार,—कम् 1. हीरा, 2. इन्द्र का वज्र।

भिदा [भिद्+अङ्+टाप्] 1. तोड़ना, फटना, फाड़ना, चीरना—शि० ६।५ 2. वियोग 3. अन्तर 4. प्रकार, जाति, क़िस्म।

भिदिः, भिदिरम्, भिदुः [भिद्+इ, किरच् कु वा] इन्द्र का वज्र।

भिदुर (वि०) [भिद्+कुरच्] 1. तोड़ने वाला, फाड़ने वाला, टुकड़े टुकड़े करने वाला 2. भुरभुरा, शीघ्र टूटने वाला 3. सम्मिश्रित, चितकबरा, मिला हुआ, संश्लिष्ट—नीलाश्मद्युतिभिदुराम्भसोऽपरत्र—शि० ४।२६, १९।५८,—रः प्लक्ष वृक्ष,—रम् वज्र।

भिद्यः [भिद्+क्यप्] 1. वेग से बहने वाला दरिया 2. एक

विशेष नद का नाम—तोयदागम इवोद्धयभिद्ययोर्नामधेयसदृशं विवेष्टितम्—रघु० ११।८ (दे० मल्लि०)।

भिद्रम् [भिद्+रक्] वज्र।

भिन्द (बि) **पालः** [भिन्द्+इन्=भिन्दि पालयति—पाल्+अण्] 1. हाथ से फेंका जाने वाला छोटा भाला 2. गोफिया, (गोफिया या गुलेल जैसा एक उपकरण जिसमें रखकर पत्थर फेंके जायँ)।

भिन्न (भू० क० कृ०) [भिद्+क्त, तस्य नः] 1. टूटा हुआ, फटा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ, फाड़ा हुआ 2. विभक्त, वियुक्त 3. पृथक्कृत, विच्छिन्न, अलगाया हुआ 4. फैलाया हुआ, फुलाया हुआ, खुला हुआ 5. अलग, इतर (अपा० के साथ)—तस्मादयं भिन्नः 6. नानारूप विविध, 7. ढीला किया हुआ 8. संश्लिष्ट, मिलाया हुआ, मिश्रित 9. विचलित 10. परिवर्तित 11. प्रचण्ड, मदोन्मत्त 12. रहित, हीन, वंचित, (दे० भिद्),—**न्नः** किसी रत्न में दोष या खोट,—**न्नम्** 1. लव, खण्ड, टुकड़ा 2. मंजरी 3. घाव, (छुरे आदि भोंकने का) आघात 4. भिन्न राशि। सम०—**अञ्जनम्** बहुत सी औषधियों को पीसकर तैयार किया गया सुर्मा—प्रयान्ति······भिन्नाञ्जनवर्णतां घनाः—शि० १२।६८ मेघ० ५९, ऋतु० ३।५,—**अर्थ** स्पष्ट, विशद, सुबोध,—**उदरः** 'दूसरी माता से उत्पन्न' सौतेला भाई,—**करटः** मदोन्मत्त हाथी (जिसके मस्तक से मद रिसता है),—**कूट** (वि०) नेतृहीन (सेना आदि),—**क्रम** (वि०) क्रमहीन, क्रमरहित,—**गति** (वि०) 1. पग छोड़ कर चलने वाला, 2. तेज चाल चलने वाला,—**गर्भ** (वि०) (केन्द्र में) टूटा हुआ, अव्यवस्थित,—**गुणनम्** भिन्न राशियों की गुणा,—**घनः** भिन्नराशि का त्रिघात,—**दर्शिन्** (वि०) अन्तर देखने वाला, आंशिक,—**प्रकार** (वि०) अलग प्रकार या किस्म का,—**भाजनम्** टूटा बर्तन, ठीकरा,—**मर्मन्** (वि०) मर्मस्थल में घाव खाया हुआ, प्राणघातक चोट से आहत,—**मर्याद** (वि०) जिसने उचित सीमाओं का उल्लंघन कर दिया है, निरादरयुक्त,—**दः**, तातापवादभिन्नमर्याद—उत्तर० ५ 2. असंयत, अनियंत्रित,—**रुचि** (वि०) अलग रुचि रखने वाला,—भिन्नरुचिर्हि लोकः—रघु० ६।३०,—**लिङ्गम्**—**वचनम्** रचना में लिंग और वचन की असंगति—दे० काव्य० १०,—**वर्चस्**,—**वर्चस्क** (वि०) मलोत्सर्ग करने वाला,—**वृत्त** (वि०) बुरा जीवन बिताने वाला, परित्यक्त,—**वृत्ति** (वि०) 1. बुरा जीवन बिताने वाला, कुमार्ग का अनुसरण करने वाला 2. अलग प्रकार की भावनाएँ, रुचि या संवेग रखने वाला 3. नाना प्रकार के व्यवसाय करने वाला,—**संहति** (वि०) न जुड़ा हुआ, विघटित,—**स्वर** (वि०) 1. बदली हुई आवाज वाला, हकलाने वाला 2. बेसुरा,—**हृदय** (वि०) जिसका हृदय बींध दिया गया हो—रघु० ११।१९।

भिरिंटिका (स्त्री) एक प्रकार का पौधा, श्वेतगुंजा, सफेद घुंघची।

भिल्लः [भिल्+लक्] एक जंगली जाति। सम०—**गवी** नील गाय,—**तरुः** लोध्रवृक्ष,—**भूषणम्** घुंघची का पौधा।

भिल्लोटः,—**टकः** [भिल्लप्रियम् उटं पत्रं यस्य ब० स०, भिल्लोट+कन्] लोध्रवृक्ष।

भिषज् (पुं०) [बिभेत्यस्मात् रोगः भी+षुक्, ह्रस्वश्च] 1. वैद्य, चिकित्सक—भिषजामसाध्यम्—रघु० ८।९३ 2. विष्णु का नाम। सम०—**जितम्** औषधि या दवा,—**पाशः** कठवैद्य,—**वरः** श्रेष्ठ वैद्य।

भिस्मा, भिस्मिका, भिस्सटा, भिस्सिटा (स्त्री०) भुना हुआ या तला हुआ अनाज।

भिस्सा (स्त्री०) [भस्+स, टाप्, इत्वम्] उबाले हुए चावल।

भी (जुहो० पर० बिभेति, भीत) 1. डरना, भय खाना, भयभीत होना—मृत्योर्बिभेषि किं बाल, न स भीतं विमुंचति 1. रावणाद्बिभ्यतीं भृशम्—भट्टि० ८।७०, शि० ३।४५ 2. आतुर या उत्कंठित होना (आ०)—प्रेर० (भाययति) डराना,—कुंचिकयैनं भाययति—सिद्धा० (भापयते, भीषयते) डराना, त्रास देना, संत्रस्त करना—मुंडो भापयते—सिद्धा०, स्तनितेन भीषयित्वा धाराहस्तैः परामृशसि—मृच्छ० ५।२८।

भी (स्त्री०) [भी+क्विप्] भय, डर, आतंक, संत्रास, त्रास, अभीः 'निर्भय'—रघु० १५।८, वपुष्मान् वीतभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते—मनु० ७।६४।

भीत (भू० क० कृ०) [भी+क्त] 1. संत्रस्त, डराया हुआ, आतंकित, त्रस्त (अपा० के साथ)—न भीतो मरणादस्मि—मृच्छ० १०।२७ 2. खतरे में डाला हुआ, आपद्ग्रस्त। सम०—**भीत** (वि०) अत्यन्त डरा हुआ।

भीतङ्कार (वि०) [भीतं+कृ+अण्] डराने वाला।

भीतङ्कारम् (अव्य०) [भीतं+कृ+घञ्] किसी को कायर के नाम से पुकारना।

भीतिः (स्त्री०) [भी+क्तिन्] 1. डर, आशंका, भय, त्रास 2. कंपकंपी, थरथराहट। सम०—**नाटितकम्** भयभीत होने का नाट्य करना या हावभाव दिखलाना।

भीम (वि०) [बिभेत्यस्मात्, भी अपादाने मक्] भयानक, त्रास देने वाला, भयावह, डरावना, भीषण—न भेजिरे भीमविषेण भीतिम्—भर्तृ० २।८०, रघु० १।१६, ३।५४,—**मः** 1. शिव का विशेषण 2. द्वितीय

पाण्डव राजकुमार (यह पवन देव द्वारा कुन्ती से उत्पन्न हुआ था, बचपन से ही यह अपनी असाधारण शक्ति का प्रदर्शन करने लगा, अतः इसका नाम भीम पड़ा। बहुभोजी होने के कारण इसे वृकोदर 'भेड़िये के पेट वाला' भी कहते थे। इसका अचूक शस्त्र इसकी गदा थी। महाभारत के युद्ध में इसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया और युद्ध के अन्तिम दिन अपनी अमोघ गदा से दुर्योधन की जंघा को चीर दिया। इसके जीवन की कुछ पहली मुख्य घटनाएँ हैं- हिडिंब और बक राक्षस को पछाड़ना, जरासंध को परास्त करना, कौरवों के विशेष कर दुःशासन के (जिसने द्रौपदी के प्रति अपमानजनक आचरण किया) विरुद्ध भीषण प्रतिज्ञा, दुःशासन के रक्त को पीकर प्रतिज्ञा की पूर्ति, जयद्रथ को पराजित करना, राजा विराट के यहाँ रसोइये के रूप में कीचक के साथ मल्लयुद्ध, तथा कुछ और कारनामें जिनमें उसने अपनी असाधारण वीरता दिखलाई। इसका नाम अपनी असीम शक्ति व साहस के कारण लोक प्रसिद्ध हो गया)। सम०—उदरी उमा का विशेषण,—कर्मन् (वि०) भयंकर पराक्रम वाला भग० १।१५, दर्शन डरावनी शक्ल का, विकराल,—नाद (वि०) डरावना शब्द करने वाला, (दः) 1. भयानक या ऊँची आवाज शि० १५।१०, 2. सिंह 3. उन सात बादलों में से एक जो सृष्टि के प्रलय के समय प्रकट होंगे,—पराक्रम (वि०) भयानक पराक्रम वाला,—रथी मनुष्य के सततरवें वर्ष में सातवें महीने की सातवीं रात (यह अत्यंत संकट का काल कहा जाता है) (सप्तसप्ततिमे वर्षे सप्तमे मासि सप्तमी, रात्रिर्भीमरथी नाम नराणामतिदुस्तरा।), —रूप (वि०) भयानक रूप का,—विक्रम (वि०) भयानक विक्रमशील,—विक्रान्तः सिंह,—विग्रह (वि०) विशालकाय, डरावनी सूरत का,—शासनः यम का विशेषण,—सेनः 1. द्वितीय पांडवराजकुमार 2. एक प्रकार का कपूर।

भीमरन् (नपुं०) युद्ध, लड़ाई।

भीमा [भीम+टाप्] 1. दुर्गा का विशेषण 2. एक प्रकार का गंधद्रव्य, रोचना 3. हंटर।

भीरु (वि०) (स्त्री० रु, रू) [भी+क्रु] 1. डरपोक, कायर, भययुक्त,—क्षांत्या भीरुः—हि० २।२६ 2. डरा हुआ (बहुधा समास में) पाप°, अधर्म°, प्रतिज्ञाभंग° आदि,—रुः 1. गीदड़ 2. व्याघ्र, रु (नपुं०) चाँदी, स्त्री० 1. डरपोक स्त्री 2. बकरी 3. छाया 4. कानखजूरा। सम० चेतस् (पुं०) हरिण, रन्ध्रः चूल्हा, भट्टी,—सत्त्व (वि०) कायर, डरा हुआ,—हृदयः हरिण।

भीरु (लु) क (वि०) [भी+क्रु+कन्, क्लुकन् वा] 1. डरपोक, कायर, बुज़दिल, साहसहीन 2. संकोची, —कः 1. रीछ 2. उल्लू 3. एक प्रकार का गन्ना,—कम् जंगल, वन।

भीरू (लू) (स्त्री०) [भीरु+ऊङ्, पक्षे रलयोरभेदः] डरपोक स्त्री,—त्वं रक्षसा भीरु यतोऽपनीता—रघु० १३।२४।

भीलु (लू) कः [भी+क्लुकन्] रीछ, भालू।

भीषण (वि०) [भी+णिच्+ल्युट्, षुकागमः] त्रासजनक, विकराल, डरावना, घोर, दारुण —बिम्र्यबिडालेक्षणभीषणाभ्यः—शि० ३।४५,—णः (साहित्य में) 1. भयानक रस—दे० भयानक 2. शिव का नाम 3. कबूतर, कपोत,—णम् भय को उत्तेजित करने वाली कोई भी वस्तु।

भीषा [भी+णिच्+अङ्+टाप्, षुकागमः] 1. त्रास देने या डराने की क्रिया, धमकाना 2. डराना, त्रास देना।

भीषित (वि०) [भी+णिच्+क्त, षुकागमः] डराया हुआ, संत्रस्त।

भीष्म (वि०) [भी+णिच् +मक् षुकागमः] भयानक, डरावना, भीषण, कराल,—ष्मः (साहित्य में) 1. भयानक रस, दे० भयानक 2. राक्षस, पिशाच, दानव, भूत-प्रेत 3. शिव का विशेषण 4. शन्तनु का गंगा से उत्पन्न पुत्र (शंतनु से गंगा में आठ पुत्र हुए, आठवां पुत्र यही था, पहले सात पुत्रों के मर जाने के कारण यह आठवाँ पुत्र ही अपने पिता की राजगद्दी का उत्तराधिकारी था। एक बार राजा शंतनु नदी के किनारे घूम रहे थे तो उनकी दृष्टि सत्यवती नामक एक लावण्यमयी तरुणी कन्या पर पड़ी, वह एक मछुवे की बेटी थी। यद्यपि राजा ढलती उमर का था फिर भी उसके मन में उसके लिए उत्कट उत्कंठा जागरित हुई, फलतः उसने इस अपने पुत्र को बातचीत करने के लिए भेजा। लड़की के माता पिता ने कहा कि यदि शन्तनु द्वारा हमारी पुत्री के कोई पुत्र हुआ तो, राजगद्दी का उत्तराधिकारी शंतनु का पुत्र विद्यमान होने के कारण, उसे राजगद्दी न मिल सकेगी। परन्तु शंतनु के पुत्र ने अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए उनके सामने भीषण प्रतिज्ञा की कि मैं कभी राजगद्दी पर नहीं बैठूंगा, और न कभी विवाह करूँगा जिससे कि किसी समय भी किसी पुत्र का पिता न बन सकूँ अतः यदि आपकी पुत्री से मेरे पिता का कोई पुत्र होगा तो निश्चित रूप से वही राजगद्दी का अधिकारी होगा। यह भीषण प्रतिज्ञा शीघ्र ही लोगों में विदित हो गई और तब से लेकर उसका नाम भीष्म पड़ गया। वह आजीवन अविवाहित रहा, और अपने पिता की मृत्यु के बाद उसने

सत्यवती के पुत्र विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठाया तथा काशिराज की दो कन्याओं के साथ उसका विवाह कराया, एवं अपने पुत्र तथा पौत्रों (कौरव पांडवों) का अभिभावक बना रहा। महाभारत के युद्ध में वह कौरवों की ओर से लड़ा, परंतु शिखंडी की सहायता से अर्जुन ने युद्ध में भीष्म को घायल कर दिया, तब उसे 'शरशय्या' पर रक्खा गया। परन्तु अपने पिता से इच्छामृत्यु का वरदान पाने के कारण वह तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक कि उत्तरायण में न प्रविष्ट हो, जब सूर्य ने वसन्त विषुव को पार किया तब कहीं उसने अपने प्राण त्यागे। वह अपने संयम, बुद्धिमत्ता, संकल्प की दृढ़ता तथा ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति के कारण अत्यंत प्रसिद्ध हो गया)। सम०--जननी गंगा का विशेषण, --पञ्चकम् कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन (यह पाँच दिन भीष्म के लिए पावन माने जाते हैं)। --सूः (स्त्री०) गंगा नदी का विशेषण।

भीष्मकः [भीष्म+कन्] 1. शन्तनु का गंगा से उत्पन्न पुत्र 2. विदर्भ के राजा का नाम, जिसकी पुत्री रुक्मिणी को कृष्ण उठा लाया था।

भुक्त (भू० क० कृ०) [भुज्+क्त] 1. खाया हुआ 2. उपभुक्त, प्रयुक्त 3. भोगा, अनुभव किया 4. अधिकृत किया, (विधि में) अधिकार में लिया--दे० भुज्, --क्तम् 1. उपभोग करने या खाने की क्रिया 2. जो खाया जाय, आहार 3. वह स्थान जहाँ किसी ने खाया है। सम०--उच्छिष्टम्,--शेषः,--समुज्झितम् किये हुए भोजन का अवशिष्ट, जूठन, उच्छिष्ट अंश, --भोग (वि०) 1. जिसने कुछ भोगा है, या आनन्द उठाया है, उपभोक्ता 2. जो प्रयुक्त किया गया है, उपभुक्त, नियुक्त,--सुप्त (वि०) भोजन करके सोया हुआ।

भुक्तिः (स्त्री०) [भुज्+क्तिन्] 1. खाना, उपभोग करना 2. (विधि में) अधिकृत सामग्री, सुखोपभोग--पंच० ३।९४, याज्ञ० २।२२ 3. खाना 4. ग्रह की दैनिक गति। सम०--प्रदः एक प्रकार का पौधा, मूंग,--वर्जित (वि०) जिसके उपभोग करने की अनुमति नहीं है।

भुग्न (भू० क० कृ०) [भुज्+क्त, तस्य नः] 1. झुका हुआ, विनत, प्रवण--वायुभुग्न, रुजाभुग्न आदि 2. टेढ़ा, वक्र,--भट्टि० ११।८, विक्रम० ४।३२ 3. टूटा हुआ (भग्न का अर्थ)।

भुज् i (तुदा० पर० भुजति, भुग्न) 1. झुकाना 2. मोड़ना, टेढ़ा करना। ii (रुधा० उभ० भुनक्ति, भुंक्ते) 1. खाना, निगलना, खा पी जाना (आ०)--शयनस्थो न भुंजीत--मनु० ४।७४, ३।१४६, भट्टि० १४।९२, भग० २।५, 2. उपभोग करना, प्रयोग करना, (सम्पत्ति, भूमि आदि को) अधिकार में करना--विक्रम० ३।१, मनु० ८।१४६, याज्ञ० २।२४ 3. शारीरिक उपभोग करना (आ०)--सदयं बुभुजे महाभुजः--रघु० ८।७, ४।७, १५।१, १८।४, सुरूपं वा कुरूपं वा पुमानित्येव भुञ्जते--मनु० ९।१४, 4. हुकूमत करना, शासन करना, प्ररक्षा करना, रखवाली करना (पर०)--राज्यं न्यासमिवाभुनक्--रघु० १२।१८, एकः कृत्स्नां (धरित्रीं) नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति०--श० २।१४, 5. भोगना, सहन करना, अनुभव करना-- वृद्धो नरो दुःखशतानि भुङ्क्ते--सिद्धा० 6. बिताना, (समय) यापन करना --प्रेर० (भोजयति-ते) खिलाना, भोजन कराना, इच्छा० (बुभुक्षति-ते) खाने की इच्छा करना आदि। **अनु**--उपभोग करना, (बुरे या भले का) अनुभव करना, (बुरे फल) भुगताना--मेघमुक्तविशदां सचन्द्रिकाम् (अन्वभुंक्त)--रघु० १९।३९, कु० ७।५, **उप**--, 1. मजा लेना, चखना--तपसामुपभुञ्जानाः फलानि--कु० ६।१०, 2. शारीरिक रूप से मजे लेना (यथा--स्त्रीसंभोग) 3. खाना या पीना--अर्धोपभुक्तेन बिसेन--कु० ३।३७, पयः पुत्रोपभुंक्ष्व--रघु० २।६५, १।६७, भट्टि० ८।४०, 4. भोगना, सहन करना, झेलना--मनु० १२।८, 5. अधिकार में करना रखना, **परि**--1. खाना 2. उपयोग करना, आनन्द लेना--न खलु च परिभोक्तुं नैव शक्नोमि हातुम्--श० ५।१९ कि० ५।५, ८।५७, **सम्**--1. खाना 2. उपभोग करना 3. शारीरिक रूप से मजे लेना।

भुज् (वि०) [भुज्+क्विप्] (समास के अन्त में) खाने वाला, मजे लेने वाला, भोगने वाला, राज्य करने वाला, शासन करने वाला, स्वधाभुज्, हुतभुज्, पाप° क्षिति° मही° आदि, (स्त्री०) 1. उपभोग 2. लाभ, हित।

भुजः [भुज्+क] 1. भुजा--शास्यसि कियद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणाङ्क इति--श० १।१३ रघु० १।३४, २।७४, २।५, 2. हाथ 3. हाथी का सूंड 4. झुकाव, वक्र, मोड़ 5. गणितविषयक आकृति का एक पार्श्व, यथा त्रिभुज 'त्रिकोण' 6. त्रिकोण आधार। सम० --अन्तरम्,--अन्तरालम् हृदय, छाती--रघु० ३।५४ १९।३२, मालवि० ५।१०,--आपीडः भुजपाश में जकड़ना, बाहों में लिपटाना,--कोटरः बगल,--ज्या आधार की लम्बरेखा,--दण्डः--बाहुदंड, बलः,--लम् हाथ,--बन्धनम् लिपटना, आलिंगन करना--घटय भुजबन्धनम्--गीत० १०, कु० ३।३९,--बलम्--वीर्यम् भुजा की सामर्थ्य, पुट्ठों की ताकत,--मध्यम् छाती --रघु० १३।७३,--मूलम् कंधा,--शिखरम्--शिरस् (नपुं०) कंधा,--सूत्रम् आधार लंबरेखा।

भुजगः [भुज् भक्षणे क, भुजः कुटिलीभवन् सन् गच्छति गम्+ड] साँप, सर्प --भुजगाश्लेपसंवीतजानोः--मृच्छ० १।१, मेघ० ६० । सम०—अन्तकः, अशनः --आयोजिन् (पुं०),—वारणः,—भोजिन् (पुं०) 1. गरुड़ 2. मोर 3. और नेवले का विशेषण,—ईश्वरः--राजः शेष के विशेषण ।

भुजङ्गः [भुजः सन् गच्छति गम्+खच्, मुम् डिच्च] साँप, सर्प—भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्–भर्तृ० २।४ 2. उपपति, रसिया या सौन्दर्यप्रेमी —अभूमिरेषा भुजङ्गभङ्गिभाषितानाम्—का० १९६ 3. पति, प्रभु 4. लौंडा, इल्लती 5. राजा का लम्पट मित्र 6. आश्लेषा नक्षत्र 7. आठ की संख्या । सम०- इन्द्रः नागराज शेषनाग का विशेषण,--ईशः 1. वासुकि का विशेषण 2. शेषनाग का विशेषण 3. पतञ्जलि का विशेषण 4. पिंगल मुनि का विशेषण—कन्या साँप की तरुणी कन्या, भम् अश्लेषा नक्षत्र,—भुज् (पुं०) 1. गरुड का विशेषण 2. मोर,—लता पान की बेल, तांबूली,—हन् (पुं०) गरुड का विशेषण दे० भुजगांतक आदि ।

भुजङ्गमः [भुजं+गम्+खच्, मुम्] 1. साँप 2. राहु का विशेषण 3. आठ की संख्या ।

भुजा [भुज्+टाप्] 1. बाहु, हाथ— निहितभुजा लतयैकयोपकण्ठम्—शि० ७।७१ 2. हाथ 3. साँप की कुंडली 4. चक्कर, घेरा । सम०—कण्टः अंगुली का नाखून, —दलः हाथ,—मध्यः 1. कोहनी 2. छाती,—मूलम् कन्धा ।

भुजिष्यः [भुज्+किष्यन्] 1. दास, नौकर 2. साथी 3. पोहँची, सूत्र जो कलाई पर पहना जाय 4. रोग, --ष्या 1. परिचारिका, सेविका, दासी—अथांगदाश्लिष्टभुजं भुजिष्या--रघु० ६।५३, मृच्छ० ४।८, याज्ञ० २।९० 2. वारांगना, वेश्या ।

भुण्ड् (भ्वा० आ० भुण्डते) 1. सहारा देना, स्थापित रखना 2. चुनना, छांटना ।

भुर्भुरिका, भुर्भुरी (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।

भुवनम् [भवत्यत्र, भू—आधारादौ—क्युन्] 1. लोक (लोकों के नाम या तो तीन हैं— त्रिभुवनम्—या चौदह—इह हि भुवनान्यन्ये धीराश्चतुर्दश भुञ्जते —भर्तृ० ३।२३ दे० 'लोक' भी, भुवनालोकनप्रीतिः —कु० २।४५, भुवनाविदितम्—मेघ० ६ 2. पृथ्वी 3. स्वर्ग 4. प्राणी, जीवधारी जन्तु 5. मनुष्य, मानव 6. पानी 7. चौदह की संख्या । सम०—ईशः पृथ्वी का स्वामी, राजा,—ईश्वरः 1. राजा 2. शिव का नाम,—ओकस् (पुं०) देवता, त्रयम् त्रिलोकी (भूलोक, अन्तरिक्ष और द्युलोक; या स्वर्गलोक भूलोक और पाताल लोक),--पावनी गंगा का विशेषण, --शासिन् (पुं०) राजा, शासक ।

भुवन्यु [भू+कन्युच्] 1. स्वामी, प्रभु 2. सूर्य 3. अग्नि 4. चन्द्रमा ।

भुवर्, भुवस् (अव्य०) [भू०+असुन्] 1. अन्तरिक्ष, आकाश (तीनों लोकों में से दूसरा, भूलोक से ठीक ऊपर) 2. रहस्यमय शब्द, तीन व्याहृतियों में से एक (भूर्भुवः स्वः) ।

भुविस् (पुं०) [भू+इसिन्, कित्] समुद्र ।

भुशुण्डिः,—डी (स्त्री०) एक प्रकार का शस्त्र या अस्त्र ।

भू i (भ्वा० पर०–(आ० विरल)–भवति, भूत 1. होना, घटित होना— कथमयं भवेन्नाम, अस्याः किमभवत् --मा० ९।२९ 'उसके भाग्य का क्या हुआ'— उत्तर० ३।२७, यद्भावि तद्भवतु,— उत्तर० ३, 'होने दो जो कुछ होता है' इसी प्रकार दुःखितो भवति, हृष्टो भवति आदि 2. उत्पन्न होना– यदपत्यं भवेदस्याम् —मनु० ९।१२७, भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति - मृच्छ० १।१३ 3. फूटना, निकालना, उदय होना - क्रोधाद्भवति संमोहः—भग० २।६३, १४।१७ 4. घटित होना, होना, उपस्थित होना—नाततायिवधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन— मनु० ८।३५१, यदि संशयो भवेत्—आदि 5. जीवित रहना, विद्यमान रहना —अभूदभूतपूर्वः राजा चितामणिर्नाम— वास०, अभून्नृपो विबुधसखः परन्तपः—भट्टि० १।१ 6. जीवित रहना, जिंदा रहना, साँस लेना— त्वमिदानीं न भविष्यसि-श० ६, आः चारुदत्तहतक अयं न भवसि —मृच्छ० ४, दुरात्मन् प्रहर नन्वयं न भवसि- मा० ५ (तुम मर चुके हो, अब तुम्हें साँस नहीं आवेगा) भग० ११।३२ 7. किसी भी दशा या अवस्था में रहना, अच्छी या बुरी तरह बीतना—भवान् स्थले कथं भविष्यति- पंच० २ 8. ठहरना, डटे रहना, रहना उत्तर० ३।३७ 9. सेवा करना, काम आना —इदं पादोदकं भविष्यति— श० १ 10. संभव होना (इस अर्थ में प्रायः लृट् लकार)—भवति भवान् याजयिष्यति- सिद्धा० 11. नेतृत्व करना, संचालन करना, प्रकाशित करना (संप्र० के साथ)—वाताय कपिला विद्युत्···पीता भवति सस्याय दुर्भिक्षाय सिता भवेत् —महाभा०, सुखाय तज्जन्मदिनं बभूव—कु० १।२३ संस्मृतिर्भव भवत्यभवाय - कि० १८।२७, न तस्या रुचयं बभूव—रघु० ६।३४ 12. साथ देना, सहायता करना, देवा अर्जुनतोऽभवन् 13. संबन्ध रखना, पास रखना—तस्य ह शतं जाया बभूवुः—ऐत० ब्रा०, मनु० ६।३९ 14. व्यस्त होना, व्याप्त होना (अधि० के साथ)—चरणक्षालने कृष्णो ब्राह्मणानां स्वयं ह्यभूत् —महा० 15. पूर्ववर्ती संज्ञा या विशेषण से आगे 'भू' धातु का अर्थ है 'वह होना जो पहले नहीं था' या केवल मात्र 'होना'---श्वेतीभू सफेद होना, कृष्णीभू

काला होना, **पयोधरीभू** स्तन का काम देना, इसी प्रकार **क्षपणीभू** साधु होना, **प्रणिधीभू** गुप्तचर का काम करना, **आर्द्रीभू** पिघलना, **भस्मीभू** राख बन जाना, **विषयीभू** विषय बनाना, इसी प्रकार एक मतीभू, तरुणीभू आदि विशे०, 'भू' धातु का अर्थ संबद्ध क्रिया विशेषण के अनुसार नाना प्रकार से परिवर्तित होता रहता है, उदा० **अग्रेभू** आगे रहना, नेतृत्व करना **अंतर्भू** लीन होना, सम्मिलित होना —ओजस्यन्तर्भवन्त्यन्ये—काव्य० ८, **अन्यथाभू** और तरह होना, बदलना—न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति —श० ४, **आविर्भू** प्रकट होना, उदय होना, स्पष्ट होना दे० आविस्, **तिरोभू** ओझल होना, **दोषाभू** संध्या होना, सायंकाल होना, **पुनर्भू** फिर विवाह करना, **पुरोभू** अग्रसर होना, आगे खड़े होना **प्रादुर्भू** उदय होना, दिखाई देना, प्रकट होना, **मिथ्याभू** झूठ निकलना, **वृथाभू** व्यर्थ होना आदि) **प्रेर०** (भावयति—ते) 1. उत्पन्न करना, अस्तित्व में लाना, सत्ता बनाना 2. कारण बनना, पैदा करना, जन्म देना 3. प्रकट करना, प्रदर्शन करना, निदर्शन करना 4. पालना, परवरिश करना, सहारा देना, संधारण करना, जान डालना—पुनः सृजति वर्षाणि भगवान् भावयन् प्रजाः—महा०, देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः, परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ—भग० ३।११, भट्टि० १६।२७ 5. सोचना, विमर्श करना, विचारना, खयाल करना, कल्पना करना 6. देखना समझना, मानना—अर्थमनर्थं भावय नित्यम्—मोह० २ 7. सिद्ध करना, साबित करना, पक्का—याज्ञ० २।११ 8. पवित्र करना 9. हासिल करना, प्राप्त करना 10. मिलाना, मिश्रण, तैयार करना 11. परिवर्तन करना, रूपान्तरित करना 12. डुबोना,—सराबोर करना । **इच्छा०—बुभूषति**, होने की या बनने की इच्छा करना, **अति,—**अतिरिक्त होना आगे बढ़ जाना, अधिक हो जाना, **अनु—**,1. मजे लेना, अनुभव करना महसूस करना, भोगना (बुरा या भला)—असक्तः सुखमन्वभूत—रघु० १।२१, कु० २।४५ रघु० ७।२८, आत्मकृतानां हि दोषाणां फलमनुभवितव्यमात्मनैव —का० १२१, श० ५।७ 2. प्रत्यक्ष करना, बोध होना, समझना 3. जांच करना, परीक्षण करना,—**प्रेर०** —आनन्द मनवाना, अनुभव या महसूस करवाना —आमोदो न हि कस्तूर्याः शपथेनानुभाव्यते—भामि० १।१२०, **अभि—**, 1. विजय प्राप्त करना, दमन करना, परास्त करना, आगे बढ़ जाना, उत्तम होना—भग० १।३९, कि० १०।२३, रघु० ८।३६ 2. आक्रमण करना, हमला करना —विपदोऽभिभवत्यविक्रमम्—कि० २।१४ अभ्यभावि भरताग्रजस्तया—रघु० ११।१६ 3. नीचा दिखाना, अपमान करना 4. प्रभुत्व रखना, प्रभाव रखना, व्याप्त होना, **उद्—**उदय होना, उगना —उद्भूतध्वनिः, **प्रेर०** पैदा करना, सृजन करना, जन्म देना—रघु० २।६२, **परा—**, 1. हराना, परास्त करना, जीत लेना 2. चोट पहुंचाना, क्षति पहुँचाना, सताना, **परि—**, 1. हराना, दमन करना, जीतना, हावी होना (अतः) आगे बढ़ जाना, पछाड़ देना —लग्नद्विरेफं परिभूय पद्मम्—मुद्रा० ७।१६, रघु० १०।३५ 2. तुच्छ समझना, उपेक्षा करना, घृणा करना, अनादर करना, अपमान करना,—मा मां महात्मन् परिभूः—भट्टि० १।२२, ४।३७ 3. क्षति पहुँचाना, नष्ट करना, बर्बाद करना 4. कष्ट पहुँचाना, दुःख देना 5. नीचा दिखाना, लज्जित करना, **प्र —**, 1. उदय होना, निकलना, फूटना, जन्म लेना, उपजना, पैदा होना (अपा०के साथ)—लोभात्क्रोधः प्रभवति —हि० १।२७, स्वायं भुवान्मरीचेर्यः प्रबभूव प्रजापतिः —श० ७।९, पुरुषः प्रबभूवाग्नेर्विस्मयेन सहर्त्विजाम् —रघु० १०।५०, भग० ८।१८ 2. प्रकट होना, दिखाई देना—हि० ४।८४ 3. गुणा करना, बढ़ाना, दे० प्रभूत 4. मजबूत होना, शक्तिशाली होना, छा जाना, प्रभुत्व होना, बल दिखाना—प्रभवति हि महिम्ना स्वेन योगीश्वरीयं—मा० ९।५२, प्रभवति भगवान् विधिः —का० ५, 5. योग्य होना, समान होना, शक्ति रखना ('तुमुन्नन्त के साथ)—कुसुमान्यपि गात्रसङ्गमात् प्रभवत्यायुरपोहितुं यदि—रघु०८।४४, श० ६।३०, विक्रम० १।९, उत्तर० २।४ 6. नियंत्रण रखना, प्रभाव रखना, छा जाना, स्वामी होना (बहुधा संबं० के, कभी २ संप्र० या अधि० के साथ)—यदि प्रभविष्याम्यात्मनः —श० १, उत्तर० १, प्रभवति निजस्य कन्यकाजनस्य महाराजः—मा० ४, तत्प्रभवति अनुशासने देवी—वेणी० २ 7. जोड़ का होना—प्रभवति मल्लो मल्लाय —महाभा० 8. पर्याप्त होना, यथेष्ट होना—कु० ६।५९ 9. रक्खा जाना (अधि० के साथ)—गुरुः प्रहर्षः प्रबभूव नात्मनि—रघु० ३।१७ 10. उपयोगी होना 11. याचना करना, अनुनय-विनय करना, **वि—**(**प्रेर०**) 1. सोचना, विमर्श करना, विचारना 2. जानकार होना, जानना, प्रत्यक्ष करना, देखना—श० ४ 3. फसला करना, निश्चय करना, स्पष्ट करना, **सम्—**, 1. उदय होना, पैदा होना, उपजना, फूटना— कथमपि भुवनेऽस्मिंस्तादृशाः संभवन्ति—मा० २।९, धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे—भग० ४।८, कि० ५।२२, भट्टि० ६।१३८, मनु० ८।१५५ 2. होना, बनना, विद्यमान होना 3. घटित होना, घटना होना 4. संभव होना, 5. यथेष्ट होना, सक्षम होना ('तुमुन्नन्त' के साथ) —न यन्नियन्तुं समभावि भानुना—शि० १।२७

6. मिलना, एक होना, सम्मिलित होना—संभूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा—शि० २।१००, संभूयैव सुखानि चेतसि मा० ५।९ 7. संगत होना 8. पकड़ने के योग्य, (प्रेर०) 1. पैदा करना, उत्पन्न करना 2. कलना करना, सोचना, उद्भावन करना, चिन्तन करना 3. अनुमान लगाना, अटकल लगाना—श० २, 4. सोचना, खयाल करना 5. सम्मान करना, आदर करना, आदर प्रदर्शित करना—प्राप्तोऽसि संभावयितुं वनान्माम्—रघु० ५।११, ७।८ 6. सम्मान करना, उपहार देना, बड़ा करना—कु० ३।३७ 7. मढ़ना, थोपना—मृच्छ० १।३६ ।

ii (भ्वा० उभ० भवति ते) हासिल करना, प्राप्त करना ।

iii (चुरा० आ० भावयते) प्राप्त करना, उपलब्ध करना ।

iv (चुरा० उभ० भावयति—ते) 1. सोचना, विमर्श करना 2. मिलाना, मिश्रित करना 3. पवित्र होना ('भू' के प्रेर० रूप से संबद्ध) ।

भू (वि०) [भू+क्विप्] (समास के अन्त में) होने वाला, विद्यमान, बनने वाला, फूटने वाला, उगने वाला, उपजने वाला, चित्तभू, आत्मभू, कमलभू, वित्तभू आदि—(पुं०) विष्णु का विशेषण ।

भूः (स्त्री०) [भू+क्विप्] 1. पृथ्वी (विप० अन्तरिक्ष या स्वर्ग—दिवं मरुत्वानिव भोक्ष्यते भुवम्—रघु० ३।४, १८।४, मेघ० १८, मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः 2. विश्व, भूमण्डल 3. भूमि, फर्श—प्रासादोपरिभूमयः—मुद्रा० ३, मणिमयभुवः (प्रासादाः)—मेघ० ६४ 4. भूमि, भूसंपत्ति 5. जगह, स्थान, क्षेत्र, भूखण्ड—काननभुवि, उपवनभुवि आदि 6. सामग्री, विषयवस्तु 7. 'एक' की संख्या की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 8. ज्यामिति की आकृति की आधाररेखा 9. (धरती का प्रतिनिधान करने वाली) सबसे पहली (तीनों में) व्याहृति या रहस्यमूलक अक्षर 'ॐ' जिसका उच्चारण प्रतिदिन संध्या के समय मंत्रपाठ करते हुए किया जाता है । सम०—**उत्तमम्** सोना,—**कदम्बः** कदम्ब वृक्ष का भेद,—**कम्पः** भूचाल,—**कर्णः** धरती का व्यास,—**कश्यपः** कृष्ण के पिता वासुदेव का विशेषण,—**काकः** 1. एक प्रकार का बगुला 2. पनमुर्गी 3. एक प्रकार का कबूतर,—**केशः** वट-वृक्ष,—**केशा** राक्षसी, पिशाचिनी,—**क्षित्** (पुं०) सूअर,—**गरम्** विशेष प्रकार का जहर,—**गर्भः** भवभूति का विशेषण,—**गृहम्**,—**गेहम्** भूमि के नीचे का गोदाम, तहखाना,—**गोलः** भूमिगोल, भूमंडल—भूगोलमुद्बिभ्रते—गीत० १, °विद्या भूगोल,—**घनः** काया, शरीर—**चक्रम्** विषुवद्रेखा, भूमध्यरेखा—**चर** (वि०) भूमि पर घूमने वाला या रहने वाला (रः) शिव का विशेषण,—**छाया**, **छायम्** 1. भू छाया, (इसे ही ग्रामीण 'राहु' कहते हैं) 2. अंधकार—**जन्तुः** 1. एक जमीन का कीड़ा 2. हाथी,—**जम्बुः**,—**बूः** गेहूँ—**तलम्** धरातल, पृथ्वीतल,—**तृणः** (भूस्तृणः) एक प्रकार का सुगंधयुक्त घास,—**दारः** सूअर,—**देवः**,—**सुरः** ब्राह्मण,—**धनः** राजा—**धरः** 1. पहाड़ 2. शिव का विशेषण 3. कृष्ण का विशेषण 4. 'सात' की संख्या °ईश्वरः °राजः हिमालय पहाड़ का विशेषण °जः वृक्ष,—**नागः** एक प्रकार का धरती का कीड़ा, केंचुवा,—**नेतृ** (पुं०) प्रभु, शासक, राजा,—**पः** प्रभु, शासक, राजा,—**पतिः** 1. राजा, 2. शिव का विशेषण 3. इन्द्र का विशेषण,—**पदः** वृक्ष,—**पदी** एक विशिष्ट प्रकार की चमेली,—**परिधिः** पृथ्वी का घेरा,—**पालः** राजा, प्रभु—**पालनम्** प्रभुता आधिपत्य—**पुत्रः**,—**सुतः** मंगलग्रह,—**पुत्री**,—**सुता** 'धरती की बेटी' सीता का विशेषण,—**प्रकंपः** भूचाल,—**प्रदानम्** भूदान,—**बिम्बः**,—**बम्** भूलोक, भूमंडल,—**भर्तृ** (पुं०) राजा, प्रभु,—**भागः** क्षेत्र, स्थान, जगह,—**भुज्** (पुं०) राजा,—**भृत्** (पुं०) पहाड़—दाता मे भूभृतां नाथः प्रमाणीक्रियतामिति—कु० ६।१, रघु० १७।७८ 2. राजा, प्रभु—निष्प्रभश्च रिपुरास भूभृताम् रघु० ११।८१ 3. विष्णु का विशेषण—**मण्डलम्** पृथ्वी, भूमण्डल, धरती,—**रुह्** (पुं०),—**रुहः** वृक्ष,—**लोकः** (भूर्लोकः) भूमण्डल,—**वलयम्** भूमण्डल,—**वल्लभः** राजा, प्रभु,—**वृत्तम्** भूमध्यरेखा,—**शक्रः** 'धरती पर इन्द्र, राजा, प्रभु,—**शयः** विष्णु का विशेषण,—**श्रवस्** (पुं०) वमी, दीमक का मिट्टी का टीला,—**सुरः** ब्राह्मण,—**स्पृश्** (पुं०) 1. मनुष्य 2. मानवजाति 3. वैश्य,—**स्वर्गः** मेरु पहाड़ का विशेषण,—**स्वामिन्** (पुं०) भूमिधर, भूमि का स्वामी ।

भूकः,—**कम्** [भू+कक्] 1. विवर, रन्ध्र, गर्त 2. झरना 3. काल ।

भूकलः [भुवि कलयति कल्+अच्] अड़ियल घोड़ा ।

भूत (भू० क० कृ०) [भू+क्त] 1. जो हो चुका हो, होने वाला, वर्तमान 2. उत्पन्न, निर्मित 3. वस्तुतः होने वाला, जो वस्तुतः घट चुका हो, यथार्थ 4. ठीक, उचित, सही 5. अतीत, गया हुआ 6. उपलब्ध 7. मिश्रित या मिलाया हुआ 8. सदृश, समान दे० 'भू',—**तः** 1. पुत्र, बच्चा 2. शिव का विशेषण 3. चान्द्रमास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी का दिन,—**तम्** 1. प्राणी (मानव, दिव्य, या अचेतन)—कु० ४।४५, पंच० २।८७ 2. जीवित प्राणी, जन्तु, जीवधारी—भूतेषु किं च करुणां बहुली करोति—भामि० १।१२९, उत्तर० ४।६ 3. प्रेत, भूत, पिशाच, दानव 4. तत्त्व (वे पाँच हैं अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि,

वायु और आकाश)—तं वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना—रघु० १।२९ 5. वास्तविक घटना, तथ्य, वास्तविकता 6. अतीत, भूतकाल 7. संसार 8. कुशल-क्षेम, कल्याण 9. पाँच की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। सम०—**अनुकम्पा** सब प्राणियों के लिए करुणा—भूतानुकम्पा तव चेत्—रघु० २।४८, **अन्तकः** मृत्यु का देवता यम, **अर्थः** तथ्य, वास्तविक तथ्य, यथार्थ स्थिति, सचाई, वास्तविकता—आर्ये कथयामि ते भूतार्थम् श० १, भूतार्थशोभाह्रियमाणनेत्राः—कु० ७।१३, कः श्रद्धास्यति भूतार्थं सर्वो मां तुलयिष्यति—मृच्छ० ३।२४, °**कथनम्**, °**व्याहृतिः** (स्त्री०) तथ्यवर्णन—भूतार्थव्याहृतिः सा हि न स्तुतिः परमेष्ठिनः—रघु० १०।३३,—**आत्मक** (वि०) तत्त्वों से युक्त या तत्त्वों से बना हुआ,—**आत्मन्** (पुं०) 1. जीवात्मा (विप० परमात्मा), आत्मा 2. ब्रह्मा का विशेषण 3. शिव का विशेषण 4. मूलतत्त्व 5. शरीर 6. युद्ध, संघर्ष,—**आदिः** 1. परमात्मा 2. (सांख्य० में) अहंकार का विशेषण,—**आर्त** (वि०) प्रेताविष्ट,—**आवासः** 1. शरीर 2. शिव का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण,—**आविष्ट** (वि०) भूत प्रेतादि से प्रभावित,—**आवेशः** भूत या प्रेत का किसी पर सवार होना,—**इज्यम्**,—**इज्या** भूतों को आहुति देना, **इष्टा** कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी,—**ईशः** 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. शिव का विशेषण—भूतेशस्य भुजङ्गवल्लिवलयस्रङ्नद्धजूटाजटाः—मा० १।२,—**ईश्वरः** शिव का विशेषण—रघु० २।४६, **उन्मादः** भूत प्रेतादि के चढ़ने से उत्पन्न पागलपन,—**उपसृष्ट**,—**उपहत** (वि०) पिशाच से पीडित,—**ओदनः** चावलों की थाली,—**कर्तृ**—**कृत्** (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण,—**कालः** 1. बीता हुआ समय (व्या० में) अतीत या भूतकाल,—**केशी** तुलसी,—**क्रान्तिः** (स्त्री०) भूत-प्रेत की सवारी, **गणः** उत्पन्न प्राणियों का समुदाय 2. भूतप्रेत या पिशाचों का समूह—भग० १८।४,—**ग्रस्त** (वि०) जिसपर भूतप्रेत सवार हो गया हो,—**ग्रामः** 1. जीवित प्राणियों का समूह, समस्त जीव, सृष्टि—उत्तर० ७, भग० ८।१९ 2. भूतप्रेतों का समूह 3. शरीर,—**घ्नः** 1. ऊँट 2. लहसुन, (**घ्नी**) तुलसी—**चतुर्दशी** कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी,—**चारिन्** (पुं०) शिव का विशेषण,—**जयः** तत्त्वों के ऊपर विजय,—**दया** सब प्राणियों के प्रति करुणा, प्राणिमात्र पर दया,—**धरा**,—**धात्री**,—**धारिणी** पृथ्वी,—**नाथः** शिव का विशेषण,—**नायिका** दुर्गा का विशेषण,—**नाशनः** 1. भिलावें का पौधा 2. सरसों 3. कालीमिर्च,—**निचयः** शरीर,—**पतिः** 1. शिव का विशेषण—कु० ३।४३, ७४ 2. अग्नि का विशेषण 3. काली तुलसी,—**पूर्णिमा** आश्विन मास का पूर्णमासी,—**पूर्व** (वि०) पहले से विद्यमान, पहला—भूतपूर्वख तलयम्—उत्तर० २।१७,—**पूर्वम्** (अव्य०) पहले,—**प्रकृतिः** (स्त्री०) सब प्राणियों का मूल,—**बलिः**=भूतयज्ञ दे०,—**ब्रह्मन्** (पुं०) अधम ब्राह्मण जो अपना निर्वाह मूर्ति पर चढ़ावे से करता है—दे० देवल,—**भर्तृ** (पुं०) शिव का विशेषण,—**भावनः** ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण,—**भाषा**,—**भाषित** पिशाचों की भाषा,—**महेश्वरः** शिव का विशेषण,—**यज्ञः** सब प्राणियों की बलि या आहुति देना, दैनिक पाँच यज्ञों में से एक बलिवैश्वदेव,—**योनिः** उत्पन्न प्राणियों का मूलस्रोत,—**राजः** शिव का विशेषण,—**वर्गः** भूत-प्रेतों का समुदाय,—**वासः** बहेड़े का वृक्ष,—**वाहनः** शिव का विशेषण,—**विक्रिया** 1. अपस्मार, मिरगी 2. भूत या पिचाच की सवारी,—**विज्ञानम्**,—**विद्या** पिशाच विज्ञान,—**वृक्षः** बिभीतक वृक्ष, बहेड़े का पेड़,—**संसारः** मर्त्यलोक,—**संचारः** भूत पिशाच का आवेश,—**संप्लवः** विश्व का जलप्रलय, या विनाश,—**सर्गः** संसार की सृष्टि, उत्पन्न प्राणियों का समुदाय,—**सूक्ष्मम्** सूक्ष्म-तत्त्व,—**स्थानम्** 1. जीवधारी प्राणियों का आवास 2. पिशाचों का वासस्थान,—**हत्या** जीवधारी प्राणियों की हत्या।

भूतमय (वि०) [भूत+मयट्] 1. सब प्राणियों समेत 2. उत्पन्न प्राणियों या मूलतत्त्वों से निर्मित।

भूतिः (स्त्री०) [भू+क्तिन्] 1. होना, अस्तित्व 2. जन्म, उत्पत्ति 3. कुशल-क्षेय, कल्याण, आनन्द, समृद्धि—प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्—रघु० १।१८, नरपतिकुलभूत्यै—२।७४, स वोऽस्तु भूत्यै भगवान् मुकुन्दः—विक्रमांक० १।२ 4. सफलता, अच्छा भाग्य 5. धन-दौलत, सौभाग्य—विपत्प्रतीकार-परेण मंगलं निषेव्यते भूतिसमुत्सुकेन वा—कु० ५।७६ 6. गौरव, महिमा, विभूति 7. राख—भूतभूतिरहीन-भोगभाक्—शि० १६।७१ (यहां 'भूति' शब्द का अर्थ धन भी है), स्फुटोपमं भूतिसितेन शंभुना—१।४ 8. रंगीन धारियों से हाथी का शृंगार करना—भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य—मेघ० १९ 9. तपस्या या अभिचार के अनुष्ठान से प्राप्य अतिमानव शक्ति 10. तला हुआ मांस 11. हाथियों का मद,—**तिः** 1. शिव का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. पितृगण का विशेषण। सम०—**कर्मन्** (नपुं०) कोई भी शुभ कृत्य या उत्सव,—**काम** (वि०) समृद्धि का इच्छुक (**मः**) 1. राज्यमन्त्री 2. बृहस्पति का विशेषण, **कालः** शुभ या सुखद समय,—**कीलः** 1. छिद्र, गर्त 1. खाई 3. भूगर्भगृह, तहखाना,—**कृत्** (पुं०) शिव का विशेषण,—**गर्भः** भवभूति का विशे-

पण,—वः शिव का विशेषण,—निधानम् घनिष्ठा नक्षत्र,—भूषणः शिव का विशेषण,—वाहनः शिव का विशेषण।

भूतिकम् [भूति+कन्] 1. कपूर 2. चन्दन की लकड़ी 3. औषधि का पौधा, कायफल।

भूमत् (वि०) [भू+मतुप्] भूमिधर—पुं० राजा, प्रभु।

भूमन् (पुं०) [बहोर्भावः बहु+इमनिच् इलोपे भ्वादेशः] 1. भारी परिमाण, प्राचुर्य, यथेष्टता, बड़ी संख्या —भूम्ना रसानां गहनाः प्रयोगाः—मा० १।४, संभूयेव सुखानि चेतसि परं भूमानमातन्वते—५।९ 2. दौलत नपुं० 1. पृथ्वी 2. प्रदेश, जिला, भूखण्ड 3. प्राणी, जन्तु 4. बहुवचनता (संख्या की)—आपः स्त्रीभूम्नि अमर० तु० पुभून्न्।

भूमय (वि०) (स्त्री०—यी) [भू+मयट्] मिट्टी का, मिट्टी का बना या मिट्टी से उत्पन्न।

भूमिः (स्त्री०) [भवन्त्यस्मिन् भूतानि—भू+मि किच्च वा ङीप्] 1. पृथ्वी (विप० स्वर्ग, गगन या पाताल)द्यौर्भूमिरापोहृदयं यमश्च-पंच० १।१८२, रघु० २।७४ 2. मिट्टी, भूमि—उत्खातिनी भूमिः—श० १, कु० १।२४ 3. प्रदेश, जिला, देश, भू—विदर्भभूमिः 4. स्थान, जगह, जमीन, भूखण्ड—प्रमदवनभूमयः—श० ६, अधित्यकाभूमिः—नै० २२।४१, रघु० १।५२ ३।६१, कु० ३।५८ 5. स्थल, स्थिति 6. जमीन, भूसंपत्ति 7. कहानी, घर का फ़र्श—यथा 'सप्तभूमिकः प्रासादः' में 8. अभिरुचि, हावभाव 9. (नाटक में) किसी पात्र का चरित्र या अभिनय—तु० भूमिका 10. विषय, पदार्थ, आधार विश्वासभूमि, स्नेहभूमि आदि 11. दर्जा, विस्तार, सीमा कि० १०।५८ 12. जिह्वा, ज़बान। सम०—अन्तरः पड़ोसी राज्य का राजा,—इन्द्रः,—ईश्वरः राजा, प्रभु,—कदंबः कदम्ब का एक भेद,—गुहा भूमि में विवर या गुफा,—गृहम् भूगर्भगृह, भौंरा, तहखाना,—चलः—चलनम् भूचाल—जः 1. मंगलग्रह 2. नरकासुर का विशेषण 3. मनुष्य 4. भूनिंब नाम का पौधा, (जा) सीता का विशेषण,—जीविन् (पुं०) वैश्य,—तलम् भूतल, पृथ्वी की सतह,—दानम् भूदान,—देवः ब्राह्मण—धरः 1. पहाड़ 2. राजा 3. सात की संख्या,—नाथः,—पः, पतिः,—पालः,—भुज् (पुं०) राजा, प्रभु—रघु० १।४७,—पक्षः तेज घोड़ा,—पिशाचम् ताड का वृक्ष (जिससे ताड़ी तैयार की जाती है),—पुत्रः मंगलग्रह,—पुरंदरः 1. राजा 2. दिलीप का नाम,—भृत् 1. पहाड़ 2. राजा,—मण्डा एक प्रकार की चमेली,—रक्षकः तेज घोड़ा,—लाभः मृत्यु (शा° मिट्टी में मिल जाना),—लेपनम् गोबर—वर्धनः—नम् मृतक शरीर, शव,—शय (वि०) भूमि पर सोने वाला (यः) जंगली कबूतर,—शयनम्,—शय्या भूमि पर सोना,—संभवः—सुतः 1. मंगलग्रह 2. नरकासुर का विशेषण, (—वा—ता) सीता का विशेषण,—संनिवेशः देश का सामान्य दर्शन,—स्पृश् (पुं०) 1. मनुष्य 2. मानवजाति 3. वैश्य 4. चोर।

भूमिका [भूमि+कै+क+टाप्] 1. पृथ्वी, जमीन, मिट्टी 2. स्थान, प्रदेश, स्थल (भूका०) 3. कहानी, सभास्थल 4. पग, दर्जा—मधुमतीसंज्ञां भूमिकां साक्षात्कुर्वतः—योग० या नैयायिकादिभिरात्मा प्रथमभूमिकायामवतारितः—सांख्यप्र० 5. लिखने के लिए तख्ता—दे० अक्षरभूमिका 6. नाटक में किसी पात्र का चरित्र या अभिनय—या यस्य युज्यते भूमिका तां खलु तथैव भावेन सर्वे वर्ग्याः पाठिताः, कामन्दक्याः प्रथमां भूमिकां भाव एवाधीते—मा० १, लक्ष्मीभूमिकायां वर्तमानोर्वशी वारुणीभूमिकायां वर्तमानया मेनकया पृष्टा—विक्रम० ३, शि० १।६९ 7. नाटक के पात्र की अभिनय सम्बन्धी पोशाक 8. सजावट 9. किसी पुस्तक की प्रस्तावना या परिचय।

भूमी [भूमि+ङीप्] पृथ्वी, दे० भूमि। सम०—कदम्ब =भूमिकदंबः,—प्रतिः,—भुज् (पुं०) राजा,—रुह् (पुं०) रुहः वृक्ष।

भूयम्(नपुं०) होने की स्थिति—जैसा कि 'ब्रह्मभूयम्' में—दाशरथिभूयम्—शि० १४।८१।

भूयशस् (अव्य०) [भूय+शस्] 1. अधिकतर, बहुधा, सामान्यतः, साधारण नियम के रूप में 2. अत्यधिक, बड़े परिमाण में 3. फिर, और आगे।

भूयस् (वि०) (स्त्री०—सी)[बहु+ईयसुन्, ईलोपे भ्वादेशः] 1. अधिकतर, अपेक्षाकृत संख्या में अधिक या बहुत 2. अधिक बड़ा, अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत—कु० ६।१३ 3 अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण 4. बहुत बड़ा या विस्तृत, अधिकः, बहुत, असंख्य—भवति च पुनर्भूयान्भेदः फलं प्रति तद्यथा—उत्तर० २।४, भद्रं भद्रं वितर भगवभूयसे मङ्गलाय—मा० १।३, उत्तर० ३।४, रघु० १७।४१, उत्तर० २।३ 5. सम्पन्न, बहुल—एवंप्रायगुणभूयसीं स्वकृतिं—मा० १, अव्य० 1. अधिक, अत्यधिक, अत्यन्त, अधिकतर, बहुत करके 2. और अधिक, फिर, आगे, और फिर, इसके अतिरिक्त,—पाथेयमुत्सृज बिसं ग्रहणाय भूयः—विक्रम० ४।१६ रघु० २।१६, मेघ० १११ 3. बार बार, मुहुर्मुहुः—(इस शब्द का रूप भूयसा जब क्रि० वि० के रूप में प्रयुक्त होता है तो निम्नांकित अर्थ होते हैं 1. अत्यधिक, बहुत अधिक, अत्यन्त, अपरिमित, अधिकांश में—न खरो न च भूयसा मृदुः—रघु० ८।८, पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयात् भूयसा पूर्वकायम् श० १।७ 2. बहुधा, साधारणतः—भूयसा जीवधर्म एषः—उत्तर० ५)। सम०—दर्शनम् 1. बार बार

देखना 2. बार बार व्यापक दर्शन पर आधारित अनुमान,—भूयस् (अव्य०) पुनः पुनः, बार बार —भूयोभूयः सविधनगरीरथ्यापर्यटन्तम्—मा० १।१५, —विद्य (वि०) 1. अपेक्षाकृत विद्वान् 2. अत्यन्त विद्वान् ।

भूयस्त्वम् [भूयस्+त्व] 1. बहुतायत, बहुलता 2. बहुसंख्यकता, प्रबलता ।

भूयिष्ठ (वि०) [अतिशयेन बहु+इष्ठन् भ्वादेशो युक् च] 1. अत्यंत, अत्यंत असंख्यक या प्रचुर 2. अत्यंत महत्त्वपूर्ण, प्रधान, मुख्य 3. बहुत बड़ा या विस्तृत, अत्यधिक, बहुत, बहुत से, असंख्य 4. मुख्य रूप से, अत्यंत स्वस्थचित्त, अत्यंत संचरित या मुक्त, मुख्यतः भरा हुआ या चरित्र से युक्त (समास के अन्त में) —अभिरूपभूयिष्ठा परिषद्—श० १, शूल्यमांसभूयिष्ठ आहारोऽस्यते—श० २, रघु० ४।७० 5. प्रायः अधिकतर, लगभग सब (बहुधा 'क्तांत' रूप के पश्चात्)—अयं उदितभूयिष्ठ एव तपनः —मा० १, निर्वाणभूयिष्ठमथास्य वीर्यम् —कु० ३।५२, विक्रम० १।८,—ष्ठम् (अव्य०) 1. अधिकांशतः, अत्यंत —श० १।३१ 2. अत्यधिक, बहुत ज्यादह, अधिक से अधिक —भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने —श० ४।१७, रघु० ६।४, १३।१४ ।

भूर् (अव्य०) [भू+रुक्] तीन व्याहृतियों में से एक ।

भूरि (वि०) [भू+क्रिन्] 1. बहुत, प्रचुर, असंख्य, यथेष्ट 2. बड़ा, विस्तृत, (पुं०) 1. विष्णु का विशेषण 2. ब्रह्मा का विशेषण 3. शिव का विशेषण 4. इन्द्र का विशेषण (नपुं०) सोना, (अव्य०) 1. बहुत, अधिक, अत्यधिक —नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बिनो घनाः—श० ५।१२ 2. बार बार प्रायः मुहुर्मुहुः । सम०—गमः गधा,—तेजस् (वि०) अतिकान्तियुक्त (पुं०) अग्नि, —दक्षिण (वि०) 1. मूल्यवान् उपहार या पुरस्कारों से युक्त 2. पुरस्कार देने में उदार, दानशील,—दानम् उदारता,—धन (वि०) दौलतमंद, धनाढ्य,—धामन् (वि०) अतिकाँति से युक्त,—प्रयोग (वि०) जिसका बहुत उपयोग हुआ है, सामान्य व्यवहार में आने वाला (शब्द),—प्रेमन् (पुं०) चकवा,—भाग: (वि०) धनाढ्य, समृद्धिशाली,—माय: गीदड़ या लोमड़ी, —रसः गन्ना,—लाभः बहुत फायदा,—विक्रम (वि०) बड़ा बहादुर, बड़ा योद्धा, —वृष्टिः (स्त्री०) बहुत वारिश, —श्रवस् (पुं०) कौरवों के पक्ष से लड़ने वाले एक योद्धा का नाम जिसे सात्यकि ने यमपुर भेजा था ।

भूरिज् (स्त्री०) [भृ+इजि, पृषो० साधुः] पृथ्वी ।

भूर्जः [भू+ऊर्ज्+अच्] भोजपत्र का पेड़—भूर्जगतोऽक्षरविन्यासः वि० २, कु० १।७ । सम० —कण्टकः वर्णसंकर जाति का पुरुष, जाति से बहिष्कृत ब्राह्मण की उसी वर्ण की स्त्री से उत्पन्न सन्तान—व्रात्या तु जायते विप्रात्पापात्मा भूर्जकण्टकः—मनु० १०।२१, —पत्रः भोजपत्र का वृक्ष ।

भूर्णिः (स्त्री०) [भृ+नि, नि० ऊत्वम्] पृथ्वी ।

भूष् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०—भूषति, भूषयति—ते, भूषित) 1. अलंकृत करना, सजाना, शृंगार करना —शुचि भूषयति श्रुतं वपुः—भट्टि० २०।१५ 2. अपने आपको सजाना (आ०) भूषयते कन्या स्वयमेव 3. फैलाना, बखेरना, बिछाना—रघु० २।३१, अभि,— अलंकृत करना, भूषित करना, सौन्दर्य देना—शि० ७।३८, वि—, अलंकृत करना, सजाना—केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषम्—भर्तृ० २।१९, शि० ९।३३, कु० १।२८ ।

भूषणम् [भूष्+ल्युट्] 1. अलंकरण, सजावट 2. अलंकार, शृंगार, सजावट का सामान—क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्—भर्तृ० २।१९, रघु० ३।२, १३।५७ ।

भूषा [भूष्+क+टाप्] 1. सजाना, भूषित करना 2. आभूषण, सजावट जैसा कि 'कर्णभूषा' 3. रत्न ।

भूषित (भू० क० कृ०) [भूष्+क्त] सजाया हुआ, सुभूषित,—मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः ।

भूष्णु (वि०) [भू+ष्णु] 1. होने वाला, बनने वाला जैसा कि अलंभूष्णु 2. धन या समृद्धि की इच्छा करने वाला—मनु० ४।१३५ ।

भृ (भ्वा० जुहो० उभ० भरति—ते, बिभर्ति—बिभृते भृत, कर्मवा० भ्रियते, इच्छा० बिभरिषति या बुभूर्षति) । भरना—जठरं को न बिभर्ति केवलम्—पंच० १।२२ 2. भरना, व्याप्त होना, पूर्ण होना —अभार्षीद् ध्वनिना लोकान्—भट्टि० १५।२४ 3. रखना, सहारा देना, संभालना, पोषण करना —धुरं धरित्र्या बिभराम्बभूव—रघु० १८।४४ कूर्मो बिभर्ति धरणी खलु पृष्ठकेन—चौर० ५०, भट्टि० १७।१६ 4. संधारण करना, दूध पिलाना, लालन-पालन करना, प्ररक्षण करना, सँभाल रखना, परवरिश करना दरिद्रान्भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्—हि० १।१५ 5. धारण करना, रखना, अधिकार में लेना—सिन्धोर्बभार सलिलं शयनीयलक्ष्मीम्—कि० ७।५७, पिशुनजनं खलु बिभ्रति क्षितीन्द्राः—भामि० १।७४, बलित्रयं चारु बभार बाला —कु० १।३९ इन्दोर्दैन्यं त्वदनुसरणक्लिष्टकान्तेर्बिभर्ति —मेघ० ८४, श० २।४ 6. पहनना—बिभ्रज्जटामण्डलम्—श० ७।११, ६।५ विवाहकौतुकं ललितं बिभ्रत एव (तस्य)—रघु० ८।१, १०।१० जटाश्च बिभृयान्नित्यम्—मनु० ६।६ 7. महसूस करना, अनुभव करना, भोगना, सहन करना (हर्ष या दुःख आदि) भावशुद्धिसहितैर्मुदं जनो नाटकैरिव बभार

भोजनैः—शि० १४।५०, संत्रासमविभः शक्रः–भट्टि० १७।१०८, श० ७।२१ 8. समर्पण करना, प्रदान करना, देना, पैदा करना—यौवने सदलंकाराः शोभां बिभ्रति सुभ्रुवः—सुभा० 9. रखना, थामना, धारण करना (स्मृति में) 10. भाड़े पर लेना—मनु० ११।६२, याज्ञ० ३।२३५ 11. लाना, या ले जाना, उद्–, धारण करना, सहारा देना, सँभालना—भूगोलमुद्विभ्रते—गीत० १, सम्—, 1. एकत्र करना, जोड़ना, इकट्ठा रखना —त्यागाय संभृतार्थानाम्—रघु० १।७, ५।५, ८।३, भट्टि० ६।८० 2. उत्पन्न करना, पैदा करना प्रकाशित करना, सम्पन्न करना—सुरतश्रमसंभृतो मुखे स्वेदलवः —रघु० ८।५१, कि० ९।४९, मेघ० ११५ 3. संधारण करना, पालन-पोषण करना, दूध पिलाना 4. तैयार करना, सज्जित करना—विक्रम० ५, रघु० १९।५४ 5. देना, अर्पित करना, प्रस्तुत करना।

भृकुंशः (सः) [भ्रुवा कुंशः (कुंश् (स्)+अच्) भावप्रकोश—इंगितज्ञापनं यस्य, नि० संप्रसारण] स्त्री का वेष धारण करने वाला नट।

भृकुटि, टी [भ्रुवः कुटिः (कुट्+इन्) कौटिल्यं, नि० संप्र०] भौंह। दे० भ्रु (भ्रू) कुटि।

भृग् (अव्य०) अग्नि की चटपट आवाज की अभिव्यक्ति करने वाला अनुकरणात्मक (शब्द)।

भृगुः [भ्रस्ज्+कु, संप्र, कुत्वम्] एक ऋषि जो भृगुवंश का पूर्वपुरुष माना जाता है, इस वंश का वर्णन मनु० १।३५ में मिलता है; मनु से उत्पन्न दश मूलपुरुषों में से एक (एक बार जब ऋषियों का इस बात पर एक मत न हो सका कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव में से कौन सा देवता ब्राह्मणों की पूजा का श्रेष्ठ अधिकारी है तो भृगु को इन तीनों देवों के चरित्र का परीक्षण करने के लिए भेजा गया। वह पहले ब्रह्मा के निवास स्थान पर गया और जानबूझ कर प्रणाम नहीं किया इस बात पर ब्रह्मा ने उसे बहुत फटकारा परन्तु क्षमा माँगने पर वह शांत हो गए। उसके पश्चात् वह कैलाश पर्वत पर शिव जी के पास गया तथा पहले की भाँति प्रणामादि के शिष्टाचार का पालन नहीं किया। प्रतिहिंसापरायण शिव क्रुद्ध होकर भृगु का उस समय भस्म कर देता यदि मृदु शब्दों से भृगु ने उन्हें शांत न किया होता। (एक दूसरे वृत्तान्त के अनुसार भृगु का ब्रह्मा ने आदर सत्कार नहीं किया, इसलिए भृगु ने शाप दे दिया कि संसार में उसकी आराधना और पूजा नहीं होगी; शिव को भी 'लिंग' बन जाने का अभिशाप दिया क्योंकि जब भृगु शिव के पास गया तो उस समय वह उससे मिल न सका क्योंकि उस समय शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ विराजमान थे; अन्त में वह विष्णु के पास गया और जब उसे सोता हुआ पाया तो उसने विष्णु की छातीपर ठोकर मारी जिससे उसकी आँख खुल गई। क्रोध दिखाने के बजाय उस समय विष्णु ने मृदुता के साथ भृगु से पूछा कि कहीं उनके पैर में चोट तो नहीं लग गई, और यह कहने के साथ ही भृगु का पैर शनैः२ मलने लगा। तब भृगु ने कहा कि यह विष्णु ही सबसे अधिक बलशाली देवता है क्योंकि इसने अपने सबसे शक्तिशाली शस्त्र कृपालुता और उदारता से अपना स्थान सबसे प्रमुख बना लिया है, इसलिए विष्णु ही सब की पूजा का सर्वोत्तम अधिकारी समझा गया) 2. जमदग्नि ऋषि का नाम 3. शुक्र का विशेषण 4. शुक्र ग्रह 5. उत्प्रपात, ढलवां चट्टान भृगुपतनकारणमपृच्छम् —दश० 6. समतल भूमि, पहाड़ की समतल चोटी 7. कृष्ण का नाम। सम० —उद्वहः परशु राम का विशेषण, जः, तनयः शुक्र का विशेषण,—नन्दनः 1. परशुराम का विशेषण वीरो न यस्य भगवान् भृगुनन्दनोऽपि—उत्तर० ५।३४ 2. शुक्र,—पतिः परशुराम का विशेषण—भृगुपतियशोवर्त्म यत् क्रौञ्चरन्ध्रम्—मेघ० ५७, इसी प्रकार भृगूणां पतिः, —वंशः परशुराम से प्रवर्तित वंश,—वारः बासरः शुक्रवार, जुमा,—शार्दूलः,—श्रेष्ठः—सत्तमः परशुराम का विशेषण,—सुतः,—सूनुः 1. परशुराम का विशेषण 2. शुक्र का विशेषण।

भृङ्गः [भृ+गन् कित्, नुट् च] भौंरा—भामि० १।५, रघु० ८।५३ 2. एक प्रकार की भिर्र, ततैया 3. एक प्रकार का पक्षी, भीम राज 4. लम्पट, कामुक, व्यभिचारी, तु० भ्रमर 5. सोने का कलश,—गम् अभ्रक,—गी भौंरी—भृंगी पुष्पं पुरुषं स्त्री वांछति नवं नवम्। सम०—अभीष्टः आम का पेड़,—आनन्दा यूथिका बेल, —आवली भौंरों की पांत, मक्खियों का झुण्ड,—जम् 1. अगर 2. अभ्रक (जा) भांग का पौधा,—पर्णिका छोटी इलायची,—राज् (पुं०) 1. एक प्रकार की बड़ी मक्खी 2. भंगरा नाम का पौधा,—रिटिः,—रीटिः शिव का एक गण (जो बहुत कुरूप कहा जाता है), —रोलः एक प्रकार की भिर्र,—वल्लभः कदंब वृक्ष का एक भेद।

भृङ्गारः,—रम् [भृङ्ग+ऋ+अण्] 1. सोने का कलश या घट 2. विशेष आकार का कलश, झारी—शिशिर सुरभि-सलिल पूर्णोऽयं भृङ्गारः—वेणी० ६ 3. राज्याभिषेक के अवसर पर प्रयुक्त किया जाने वाला घड़ा, —गम् 1. स्वर्ण 2. लौंग।

भृङ्गारिका, भृङ्गारी [भृङ्गार+कन्+टाप्, इत्वम्] झींगुर।

भृङ्गिन् (पुं०) [भृङ्ग+इनि] 1. वट वृक्ष 2. शिव के एक गण का नाम।

भृङ्गिरि (री) टिः [भृङ्ग+रट्+इन्, पृषो० साधुः] दे० भृङ्गरिटि ।

भृङ्गेरिटि [भृङ्गे+रिट्+इ, अलुक् स०] शिव के एक गण का नाम ।

भृज् (भ्वा० आ० भर्जते) भूनना, तलना ।

भृंटिका [=भिरिण्टिका, पृषो० साधुः] एक प्रकार का घुंघची का पौधा ।

भृण्डिः (स्त्री०) [?] लहर ।

भृत ((भू० क० कृ०) [भृ+क्त] 1. धारण किया हुआ 2. सहारा दिया हुआ, संधारित, पालन पोषण किया गया, दूध पिला कर पाला गया 3. अधिकृत, सहित, सज्जित 4. परिपूर्ण, भरा हुआ 5. भाड़े पर लिया गया, वैतनिक,—**तः** भाड़े का नौकर भाड़े का टट्टू, वेतनभोगी,—उत्तमस्त्वायुधीयो यो मध्यमस्तु कृपीवलः, अधमो भारवाही स्यादित्येवं त्रिविधो भृतः—मिता० ।

भृतक (वि०) [भृतं भरणं वेतनमुपजीवति कन्] मजदूरी पर रक्खा हुआ, वैतनिक,—**कः** भाड़े का नौकर। सम०—**अध्यापकः** भाड़े का अध्यापक,—**अध्यापित** (वि०) भाड़े के अध्यापक द्वारा शिक्षित (**तः**) वह विद्यार्थी जो अपने अध्यापक को फीस देकर पढ़ा है (आधुनिक काल का फीस देकर पढने वाला विद्यार्थी) मनु० ३।१५६ ।

भृतिः (स्त्री०) [भृ+क्तिन्] 1. धारण करना, संभालना, सहारा देना 2. संपालन, संधारण 3. नेतृत्व करना, मार्ग-प्रदर्शन 4. परवरिश, सहायता, संपोषण 5. आहार 6. मजदूरी, भाड़ा 7. भाड़े के बदले सेवा 8. पूंजी, मूलधन । सम०—**अध्यापनम्** वेतन लेकर पढ़ाना (विशेषतः 'वेदाध्ययन'),—**भुज्** (पुं०) वेतनभोगी नौकर, भाड़े का टट्टू,—**रूपम्** किसी विशेष काम के लिए पारिश्रमिक के बदले दिया जाने वाला पुरस्कार ।

भृत्य (वि०) [भृ+क्यप् तुक् च] जिसकी परवरिश की जानी चाहिए, पालन-पोषण किये जाने के योग्य,—**त्यः** 1. कोई भी सहायता चाहने वाला व्यक्ति 2. नौकर, आश्रयी, दास 3. राजा का नौकर, राज्य मन्त्री,—**त्या** पालन-पोषण करना, दूध पिलाना, परवरिश करना, देखभाल करना—जैसा कि 'कुमारभृत्य' में 2. संधारण, संपोषण 3. जीवित रहने का साधन, आहार 4. मजदूरी 5. सेवा । सम०—**जनः** 1. सेवक, पराश्रित 2. सेवकजन,—**भर्तृ** (पुं०) कुल का स्वामी—**वर्गः** सेवकों का समूह,—**वात्सल्यम्** नौकरों के प्रति कृपा,—**वृत्तिः** (स्त्री०) नौकरों का भरण-पोषण—मनु० ११।७ ।

भृत्रिम (वि०) [भृ+त्रिमप्] पाला पोसा गया, परवरिश किया गया ।

भृमिः [भ्रम्+इ, संप्र०] भंवर, जलावर्त ।

भृश् (दिवा० पर० भृश्यति) नीचे गिरना, दे० भ्रंश् ।

भृश (वि०) [भृश्+क] (म० अ० भ्रशीयस्, उ० अ० भ्रशिष्ठ) मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, गहन, अत्यधिक, बहुत ज्यादह,—**शम्** (अव्य०) 1. ज्यादह, बहुत ज्यादह अत्यंत, गहराई के साथ, प्रचण्डता के साथ, अत्यधिक, बहुत ही अधिक, बहुत करके—तमवेक्ष्य रुरोद सा भृशम्—कु० ४।२५, रघुर्भृशं वक्षसि तेन ताडितः रघु० ३।६१, चुकोप तस्मै स भृशम् ३।५६, मनु० ७।१७०, ऋतु० १।११ 2. प्रायः, बार-बार 3. अपेक्षाकृत अच्छी रीति से । सम०—**कोपन** (वि०) अत्यन्त क्रोधी, **दुःखित**,—**पीडित** (वि०) अत्यन्त कष्टग्रस्त, **संहृष्ट** (वि०) अत्यन्त प्रसन्न ।

भृष्ट (भू० क० कृ०) [भृश्+क्त] तला हुआ, भुना हुआ, सूखा हुआ । सम०—**अन्नम्** उबाला हुआ या तला हुआ धान्य, अन्न,—**यवाः** (ब० व०) भुने हुए जौ ।

भृष्टिः (स्त्री०) [भ्रस्ज्+क्तिन्] 1. तलना, भूनना, सेंकना 2. उजड़ा हुआ बाग या उपवन ।

भॄ (क्रया० पर० भृणाति) 1. धारण करना, परवरिश करना, सहारा देना, पालन-पोषण करना 2. तलना 3. कलंकित करना, निन्दा करना ।

भेकः [भी+कन्] मेंढक,—पङ्के निमग्ने करिणि भेको भवति मूर्धगः 2. डरपोक आदमी 3. बादल—**की** 1. छोटा मेंढक 2. मेंढकी । सम०—**भुज्** (पुं०), सांप,—**रवः**,—**शब्दः** मेंढकों का टर्राना ।

भेडः [भी+ड] 1. मेंढा, भेड़ 2. बेड़ा, घन्नई ।

भेड्रः [=भेडः, पृषो० साधु०] भेंढा ।

भेदः [भिद्+घञ्] 1. टूटना, टुकड़े टुकड़े होना, फाड़ना, (लक्ष्यपर) आघात करना 2. चीरना, फाड़ना 3. विभक्त करना, विमुक्त करना 4. बींधना, छिद्रण 5. भंग, विदारण 6. बाधा, विघ्न 7. विभाजन, वियोजन 8. छिद्र, गर्त, विवर, दरार 9. चोट, क्षति घाव 10. भिन्नता, अन्तर—तयोरभेदप्रतिपत्तिरस्ति मे—भर्तृ० ३।९९, अगौरवभेदेन—कु० ६।१२, भग० १८।१९, २९, रस°, काल° आदि 11. परिवर्तन, विकार बुद्धिभेदम् भग० ३।२६ 12. फूट, असहमति 13. विवृति, भेद खोलना जैसा कि 'रहस्यभेद' में 14. विश्वासघात, देशद्रोह 15. किस्म, प्रकार—भेदाः पद्मसंखादयो निधेः—अमर० शिरीपपुष्पभेदः 16. द्वैतवाद (राजनय में) शत्रुपक्ष में फूट डालकर उसको जीत कर किसी को ओर करना, शत्रु के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने के चार उपायों में से एक दे० 'उपाय' और 'उपायचतुष्टय' 18. पराजय 19. (आयु० में) रेचन विधि, अन्तःकोष्ठ साफ़ करना । सम०—**अभेदौ**

(द्वि० व०) 1. फूट और मेल, असहमति और सहमति 2. भिन्नता और एकरूपता —भेदाभेदज्ञानम् उन्मुख (वि०) फूटने वाला, खिलने वाला - विक्रम० २।७,—कर,—कृत् (वि०) फूट के बीज बोने वाला —दर्शिन्—दृष्टि,—बुद्धि, (वि०) विश्व को परमात्मा से भिन्न समझने वाला,—प्रत्ययः द्वैतवाद में विश्वास, —वादिन् (पुं०) जो द्वैत सिद्धांत को मानता है,—सह (वि०) 1. जो विभक्त या वियुक्त हो सके 2. कलुषित होने योग्य, दूषणीय, प्रलोभन द्वारा जो फंसाया जा सके।

भेदक (वि०) (स्त्री०—दिका) [भिद्+ण्वुल्] 1. तोड़ने वाला, खण्ड खण्ड करने वाला, विभक्त करने वाला, अलग अलग करने वाला 2. बींधने वाला, छिद्र करने वाला 3. नष्ट करने वाला, विनाशक 4. भेद करने वाला, अन्तर करने वाला 5. परिभाषा देने वाला, —कः विशेषण या विभेदकारी विशेषता।

भेदनम् [भिद्+णिच्+ल्युट्] 1. टुकड़े-टुकड़े करना, तोड़ना, फाड़ना 2. बाँटना, अलग-अलग करना 3. भेद करना 4. फूट के बीज बोना, मनमुटाव पैदा करना 5. भंग कर, शिथिल करना 6. उखाड़ना, खोलना,—नः सूअर।

भेदिन् (वि०) [भिद्+णिनि] तोड़ने वाला, विभक्त करने वाला, भेद करने वाला आदि।

भेदिरम्, भेदुरम् [भिद्+किरच्, कुरच् वा, पृषो० गुणः] वज्र।

भेद्यम् [भिद्+ण्यत्] विशेष्य, संज्ञा। सम०—लिंग (वि०) लिंग द्वारा जो पहचाना जा सके।

भेरः [बिभेत्यस्मात्–भी+रन्] धौंसा, ताशा (बड़ा ढोल)।

भेरिः,–री (स्त्री०) [भी+क्रिन्, वा० गुणः, भेरि+ङीप्] धौंसा, ताशा (बड़ा ढोल)। भग० १।१३।

भेरुण्ड (वि०) भयानक, भयपूर्ण, डरावना, भयंकर, —डः पक्षियों का एक भेद,—डम् गर्भाधान, गर्भस्थिति।

भेरुण्डकः [भेरुण्ड+कन्] गीदड़, शृगाल।

भेल (वि०) [भी+रन्, रस्य लः] 1. डरपोक, भीरु 2. मूर्ख, अनजान 3. अस्थिर, चंचल 4. लंबा 5. फुर्तीला, चुस्त,—लः नाव, बेड़ा, घिन्नई।

भेलकः,—कम् [भेल+कन्] नाव, बेड़ा।

भेष् (भ्वा० उभ०—भेषति-ते) डरना, त्रस्त होना, भयभीत होना।

भेषजम् [भेषं रोगभयं जयति–जि+ड तारा०] औषधि, भैषज्य या दवा नरानम्ब त्रातुं त्वमिह परमं भेषजमसि—गंगा० १५, अतिवीर्यवतीव भेषजे बहुरल्पीयसि दृश्यते गुणः—कि० २।४ 2. चिकित्सा या इलाज 3. एक प्रकार का सोया। सम०—अ (आ) गारः, —रम् अत्तार (औषधविक्रेता) की दुकान,—अङ्गम् कोई चीज जो दवा खाने के बाद ली जाय।

भैक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी) [भिक्षैव तत्समूहो वा–अण्] भिक्षा पर जीवन-निर्वाह करने वाला, —क्षम् 1. मांगना भीख—मनु० ६।५५, याज्ञ० ३।४२ 2. जो कुछ भिक्षा में प्राप्त हो, भीख, दान—भैक्षेण वर्तयेन्नित्यम् मनु० २।१८८, ४।५। सम०—अन्नम् भिक्षा में प्राप्त आहार, भिक्षा का अन्न,—आशिन् (वि०) भिक्षा में प्राप्त अन्न को खाने वाला, (पुं०) भिखारी, साधु, —आहारः भिखारी,—कालः भीख मांगने का समय, —चरणम्,—चर्यम्,—चर्या भीख मांगने के लिए इधर उधर फिरना, भीख मांगना, भिक्षा एकत्र करना, जीविका,—वृत्तिः (स्त्री०) भिखारीपन,—भुज् (पुं०) भिखारी, भिखमंगा।

भैक्षवम्, भैक्षुकम् [भिक्षूणां समूहः–अण्] भिखारियों का समूह।

भैक्ष्यम् [भिक्षा+ष्यञ्] मांग कर प्राप्त किया हुआ अन्न, भिक्षा, भीख, दान दे० 'भैक्ष'।

भैम (वि०) (स्त्री०—मी) [भीम+अण्] भीमविषयक, —मी 1. भीम की पुत्री, नल की पत्नी दमयन्ती का पितृपरक नाम 2. माघ शुक्ला एकादशी, या उस दिन किया जाने वाला उत्सव।

भैमसेनिः,—न्यः [भीमसेन+इञ्, ञ्य वा] भीमसेन का पुत्र।

भैरव (वि०) (स्त्री०—वी) [भीरु+अण्] 1. भयानक, डरावना, भीषण, भयावह 2. भैरवसंबंधी,—वः शिव का (इसके आठ रूप गिनाये गये हैं) एक रूप। —वी 1. दुर्गादेवी का एक रूप 2. हिन्दू-संगीत पद्धति में एक विशेष रागिनी का नाम 3. बारह वर्ष की कन्या या किशोरी जो दुर्गा-पूजा के उत्सव पर दुर्गा का प्रतिनिधित्व करे,—वम् त्रास, भीषणता। सम० —ईशः विष्णु का विशेषण, शिव का विशेषण,—तर्जकः, —यातना काशी में जाकर शरीर त्यागने वाले व्यक्तियों की आत्मा को परमात्मा में लीन होने के योग्य बनाने के लिए भैरव द्वारा उनकी विशुद्धि के लिए उनको दी जान वाली यातना।

भैषजम् [भेषज+अण्] औषधि, दवा,—जः लवा पक्षी, लावक।

भैषज्यम् [भिषजः कर्म भेषज+स्वार्थे वा ष्यञ्] 1. औषधियां देना, चिकित्सा करना 2. दवादारू, औषधि, दवाई 3. आरोग्यशक्ति, नीरोगकारिता।

भैष्मकी [भीष्मक+अण्+ङीप्] विदर्भराज भीष्मक की पुत्री, रुक्मिणी का पितृपरक नाम।

भोक्तृ (वि०) [भुज्+तृच्] 1. उपभोक्ता 2. कब्जा करने वाला 3. उपभोग में लाने वाला, प्रयोक्ता 4. महसूस करने वाला, अनुभव करने वाला, भोगने वाला, (पुं०) 1. काबिज, उपभोक्ता, उपयोक्ता 2. पति 3. राजा, शासक 4. प्रेमी।

भोगः [भुज्+घञ्] 1. खाना, खा पी जाना 2. सुखोपयोग, आस्वाद 3. स्वामित्व 4. उपयोगिता, उपादेयता 5. हुकूमत करना, शासन, सरकार 6. प्रयोग, (धरोहर आदि का) व्यवहार 7. भोगना, झेलना, अनुभव करना 8. प्रतीति, प्रत्यक्षज्ञान 9. स्त्रीसंभोग, मैथुन, विषयसुख 10. उपभोग, उपभोग की वस्तु —भोगे रोगभयम्—भर्तृ० ३।३५, भग० १।३२ 11 भोजन, दावत, भोज 12. आहार 13. नैवेद्य 14. लाभ, फायदा 15. आय, राजस्व 16. धनसंपत्ति 17. वेश्या को दी गई मजदूरी 18. वक्र, घुमाव, चक्कर 19. साँप का फैलाया हुआ फण—श्वसदसितभुजङ्गभोगाङ्गदग्रन्थि आदि—मा० ५।२३, रघु० १०।७, ११।५९ 20. साँप। सम०—**अर्ह** (वि०) उपभोज्य (हंन्) संपत्ति, दौलत,—**अर्हम्** अनाज, अन्न,—**आधिः** बन्धक में रक्खी हुई वस्तु जिसका उपभोग तब तक किया जाए जब तक कि वह छुड़ाई न जाय,—**आवली** किसी व्यावसायिक प्रशस्तिवाचक द्वारा स्तुतिगान —नग्नः स्तुतिव्रतस्तस्य ग्रंथो भोगावली भवेत्—हेम०, —**आवासः** जनानखाना, अन्तःपुर,—**कर** (वि०) सुखद या उपभोगप्रद,—**गुच्छम्** वेश्याओं को दी गई मजदूरी,—**गृहम्** महिलाकक्ष, अन्तःपुर, जनानखाना, —**तृष्णा** सांसारिक उपभोगों की इच्छा—तदुपास्थितमग्रहीदजः पितुराज्ञेति न भोगतृष्णया—रघु० ८।२, 'स्वार्थपूर्ण उपभोग' मा० २,—**देहः** 'भोग-शरीर' सूक्ष्मशरीर या कारणशरीर जिसके द्वारा व्यक्ति परलोक में अपने पूर्वकृत शुभाशुभ कर्मों का सुखदुःख भोगता है,—**धरः** साँप,—**पतिः** राज्यपाल या विषयाधिपति,—**पालः** साईस,—**पिशाचिका** भूख,—**भृतकः** जो केवल जीविका के लिए नौकरी करता है,—**वस्तु** (नपुं०) उपभोग की वस्तु या पदार्थ,—**सद्मन्** (नपुं०) भोगावास, दे०,—**स्थानम्** 1. उपभोग का आसन शरीर 2. अन्तःपुर।

भोगवत् (वि०) [भोग+मतुप्] 1. सुखद, प्रसन्नता देने वाला, खुशी देने वाला 2. प्रसन्न, समृद्ध 3. वक्र-वाला, मंडलाकार, कुण्डलाकार, (पुं०) 1. साँप 2. पहाड़ 3. नृत्य, अभिनय, और गायन—(स्त्री०—ती) 1. पाताल गंगा का विशेषण 2. सर्पपिशाचिका 3. पाताल लोक में नाग—पिशाचिकाओं का नगर 4. चान्द्रमास की द्वितीया तिथि की रात।

भोगिकः [भोग+ठन्] साईस, घोड़े का रखवाला।

भोगिन् (वि०) [भोग+इनि] 1. खाने वाला 2. उपभोक्ता 3. भोगने वाला, अनुभव करने वाला, सहन करने वाला 4. उपभोक्ता, स्वामी—इन उपयुक्त चार अर्थों में (समास के अन्त में प्रयोग) 5. मोड़दार 6. फणदार 7. उपभोग में मग्न, विषयवासनाओं में लिप्त—पंच० १।६५, (यहाँ इसका अर्थ 'फणा से युक्त' भी है) 8. धनाढ्य, सम्पत्तिशाली, (पुं०) 1. साँप गजाजिनालम्बि पिनद्धभोगि वा—कु० ५।७८ रघु० २।३२, ४।४८, १०।७, ११।५९ 2. राजा 3. विषयी 4. नाई 5. गाँव का मुखिया 6. आश्लेषा नक्षत्र,—**नी** राजा के अन्तःपुर की स्त्री जो रानी के रूप में अभिषिक्त न हो, रखैल, उपपत्नी। सम० —**इन्द्रः**,—**ईशः** शेष या वासुकि,—**कान्तः** वायु, हवा, —**भुज्** (पुं०) 1. नेवला 2. मोर,—**वल्लभम्** चंदन।

भोग्य (वि०) [भुज्+ण्यत्, कुत्वम्] 1. उपभोग के योग्य, या काम में लाने योग्य—रघु० ८।१४, पंच० १।११७ 2. भोगने योग्य या सहन करने लायक —मेघ० १ 3. लाभदायक,—**ग्यम्** 1. उपभोग का कोई पदार्थ 2. दौलत, सम्पत्ति, जायदाद 3. अनाज, अन्न,—**ग्या** वेश्या, वारांगना।

भोजः [भुज्+अच्] 1. मालवा (या धारा) का प्रसिद्ध राजा, (ऐसा माना जाता है कि राजा भोज दसवीं शताब्दी के अन्त में या ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ में हुए थे, वे संस्कृत ज्ञान के बड़े अभिभावक थे, 'सरस्वतीकंठाभरण' आदि कई ग्रंथों का उन्हें प्रणेता समझा जाता है) 2. एक देश का नाम 3. विदर्भ के राजा का नाम—भोजेन दूतो रघवे विसृष्टः—रघु० ५।३९ ७।१ —२९, ३५,—**जाः** (पुं० ब० व०) एक जाति का नाम। सम०—**अधिपः** 1. कंस का विशेषण,—**इन्द्रः** भोजों का राजा,—**कटम्** रुक्मी द्वारा स्थापित एक नगर का नाम,—**देवः**,—**राजः**। राजा भोज दे० (१) ऊपर, —**पतिः** 1. राजा भोज, 2. कंस का एक विशेषण।

भोजनम् [भुज्+ल्युट्] 1. खाना, भोजन करना,—अजीर्णे भोजनं विषम् 2. आहार 3. भोजन (खाने के लिए) देना, खिलाना 4. उपयोग करना, उपभोग करना 5. उपभोग की सामग्री 6. जिसका उपभोग किया जाय 7. संपत्ति, दौलत, जायदाद,—**नः** शिव का विशेषण। सम०—**अधिकारः** चारे का कार्यभार, खाद्यसामग्री का अधीक्षण, कार्याध्यक्ष का पद,—**आच्छादनम्** खाना-कपड़ा,—**कालः**,—**वेला**,—**समयः** भोजन करने का समय, खाने का समय,—**त्यागः** आहार का त्याग, उपवास,—**भूमिः** (स्त्री०) भोजनकक्ष, खाने का कमरा, —**विशेषः** स्वादिष्ट भोजन, विशिष्ट भोजन,—**वृत्तिः** (स्त्री०) भोजन, आहार,—**व्यग्र** (वि०) खाने में व्यस्त,—**व्ययः** खाने-पीने का खर्च।

भोजनीय (वि०) [भुज्+अनीयर्] भक्षणीय, खाने योग्य, —**यम्** आहार।

भोजयितृ (वि०) [भुज्+णिच्+तृच्] जो दूसरों को भोजन कराये, खिलाने वाला।

भोज्य (वि०) [भुज्+ण्यत्] 1. जो खाया जा सके

2. उपभोग के योग्य, अधिकार में करने के योग्य 3. भोगने के योग्य, अनुभव करने लायक 4. संभोग सुख के योग्य, —ज्यम् 1. आहार, खाना—त्वं भोक्ता अहं च भोज्यभूतः—पंच० २, कु० २।१५, मनु० ३।२४० 2. खाद्य सामग्री का भंडार, खाद्य पदार्थ 3. स्वादिष्ट भोजन 4. उपभोग। सम०—कालः भोजन करने का समय,—संभवः आमरस, शरीर का प्रायमिक रस।

भोज्या [भोज्य+टाप्] भोज की एक रानी—रघु० ६।५९ ७२, १३।

भोटः एक देश का नाम, (कहते हैं कि 'तिब्बत' का ही यह नाम है)। सम०—अंगः 'भूटान' कहलाने वाला प्रदेश।

भोटीय (वि०) [भोट+छ] तिब्बतवासी।

भोमीरा (स्त्री०) मूंगा. विद्रुम।

भोस् (अव्य०) [भा+डोस्] संबोधन सूचक अव्यय जिसका अनुवाद होता है 'अरे, ओ, अहो, ओह, आह' कः कोऽत्र भोः—श० २, (स्वर या सघोष व्यंजन परे होने पर पदांत विसर्ग का लोप हो जाता है) अयि, भो महर्षिपुत्र—श० ७, कभी-कभी इसको दोहराया जाता है भो भोः शंकरगृहाधिवासिनो जानपदाः—मा० ३, इसके अतिरिक्त 'भोः' का प्रयोग 'शोक' तथा 'प्रश्नवाचकता' के लिए भी होता है।

भौजङ्ग (वि०) (स्त्री०—गी) [भुजङ्ग+अण्] सर्पिल, सांप जैसा—गम् 'आश्लेषा' नामक नक्षत्र।

भौट्टः [भोट+अण् पृषो०] तिब्बती, तिब्बतवासी।

भौत (वि०) (स्त्री०—ती) [भूतानि प्राणिनोऽधिकृत्य प्रवृत्तः, तानि देवता वा अस्य अण्] 1. जीवित प्राणियों से संबन्ध रखने वाला 2. मूलभूत, भौतिक 3. पैशाचिक 4. पागल, विक्षिप्त,—तः भूतप्रेत व पिशाचों की पूजा करने वाला, देवल, पुजारी,—तम् भूत-प्रेतों का समूह।

भौतिक (वि०) (स्त्री०—की) [भूत+ठक्] 1. जीवित प्राणियों से संबंध रखने वाला—मनु० ३।७४ 2. स्थूल तत्त्वों से निर्मित, मौलिक, भौतिक—पिंडेष्वनास्था खलु भौतिकेषु—रघु० २।५७ 3. भूत-प्रेतों से संबंध रखने वाला,—कः शिव का नाम,—कम् मोती। सम०—मठः—विहार,—विद्या जादूगरी, अभिचार।

भौम (वि०) (स्त्री०) [भूमि+अण्] 1. पार्थिव 2. पृथ्वी पर होने वाला, मिट्टी का बना हुआ, लौकिक—भौमो मुनेः स्थानपरिग्रहोऽयम्—रघु० १३।३६, १५।५९ 3. मिट्टी का, मिट्टी से निर्मित 4. मंगल से संबद्ध, —मः 1. मंगलग्रह 2. नरकासुर का विशेषण 3. जल 4. प्रकाश। सम०—दिनम्,—वारः,—वासरः मंगलवार,—शि० १५।१७,—रत्नम् मूँगा।

भौमनः [भूमन्+अण्] देवों के शिल्पी विश्वकर्मा का नाम।

भौमिक (वि०) (स्त्री०—की) } [भूमि+ठक् यत् वा]
भौम्य (वि०) } पार्थिव, लौकिक, पृथ्वी पर रहने वाला या विद्यमान।

भौरिकः [भूरि सुवर्णमधिकरोति—ठक्] राजकीय कोश में सुवर्णाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष।

भौवनः दे० भौमन।

भौवादिक (वि०) (स्त्री०—की) [भ्वादि+ठक्] भ्वादि अर्थात् भू से आरम्भ होने वाली धातुओं से सम्बन्ध रखने वाला।

भ्रंश् (भ्वा० आ, दिवा० पर० भ्रंशते, भ्रश्यति, भ्रष्टः (अधिकर० अपा० के साथ) 1. गिरना, टपकना, उलट जाना,—हस्ताद्भ्रष्टमिदं बिसाभरणम्—श० ३।२६ 2. गिरना, विचलित होना, अलग छूट जाना—यूथाद्भ्रष्टः—हि० ४, रघु० १४।१६ 3. वञ्चित होना, खो देना—बभ्रंशेऽसौ धृतेस्ततः—भट्टि० १४।७१, पंच २।१०८ ४।३७ 4. बच निकलना, भाग जाना,—संग्रामाद् बभ्रंशुः केचित्—भट्टि० १४।१०५, १५।५९ 5. क्षीण होना, मुर्झाना, घटना 6. ओझल होना, नष्ट होना, अलग होना—मालवि० १।८, १२, प्रेर० भ्रंशयति-ते 1. गिराना, पछाड़ देना 2. वञ्चित करना, परि—, 1. गिरना, टपकना, उलटना, फिसलना 2. बहकना, भटकना 3. अलग हो जाना, पथभ्रष्ट होना, विचलित होना 4. खोना, वञ्चित होना—मनु० १०।२० प्र—, 1. गिरना, टपकना फिसलना,—प्रभ्रश्यमानाभरणप्रसूनाम्—रघु० १४।५४ 2. खोदेना, वञ्चित होना—प्रभ्रश्यते तेजसः—मृच्छ० १।१४, प्रेर०—पछाड़ना, नीचे डालना, नीचे गिराना —रघु० १३।३६, वि—, 1. गिरना, टपकना 2. बर्बाद होना, क्षीण होना 3. गिरना, भटकना, पथभ्रष्ट होना 4. खो देना।

भ्रंशः,—सः [भ्रंश् भावे घञ्] 1. गिर पड़ना, टपक पड़ना, गिरना, फिसलना, नीचे गिरना—स्नेहोऽस्य न भ्रंशमतो न लोभात्—रघु० १६।७४, कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः—मेघ० २ 2. क्षीण होना, घटना, ह्रास होना 3. पतन, नाश, बर्बादी, विध्वंस 4. भाग जाना 5. ओझल हो जाना 6. खो जाना, हानि, वञ्चना—स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशः—भग० २।६३ इसी प्रकार 'जातिभ्रंश' 'स्वार्थभ्रंश' 7. भटकने वाला, भ्रष्ट हो जाने वाला, विचलित।

भ्रंशथुः [भ्रंश्+अथुच्] दे० 'प्रभ्रंशथु'।

भ्रंश (स) न (वि०) (स्त्री०—नी) [भ्रंश्+ल्युट्] 1. नीचे फेंक देने वाला,—नम् 1. गिर पड़ने की क्रिया 2. गिरना, वञ्चित होना, खो देना।

भ्रंशिन् (वि०) [भ्रंश्+णिनि] 1. नीचे गिरने वाला, पतनशील 2. जीर्ण होने वाला 3. भटकने वाला, 4. बर्बाद होने वाला, नष्ट होने वाला।

भ्रंस्=दे० 'भ्रंश'।

भ्रकुंशः [भ्रुवा कुंशो भाषणं यस्य ब० स०, अकारादेशः] स्त्री की वेशभूषा में नट (नाटक का पात्र)।

भ्रक्ष् (भ्वा० उभ० भ्रक्षति—ते) खाना, निगलना।

भ्रज्जनम् [भ्रस्ज्+ल्युट्] तलने की क्रिया, भूनना, सेकना।

भ्रण् (भ्वा० पर० भ्रणति) शब्द करना।

भ्रभंगः=दे० भ्रूभंगः।

भ्रम् (भ्वा०, दिवा० पर० भ्रमति, भ्रम्यति, भ्राम्यति, भ्रान्त) 1. इधर उधर घूमना, हिलना-जुलना, मारा मारा फिरना, टहलना, (आलं से भी)—भ्रमति भुवने कन्दर्पाज्ञा—मा० १।१४, मनो निष्ठाशून्यं भ्रमति च किमप्यालिखति च—३१, (बहुधा स्थान में कर्म) भुवं बभ्राम— दश०,—दिङ्मण्डलं भ्रमसि मानस चापलेन—भर्तृ० ३।७७, इसी प्रकार **भिक्षां भ्रम्** 1. इधर उधर मांगते फिरना 2. मुड़ना, चक्कर काटना, घूमना, वर्तुलाकार गति होना—सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने—भर्तृ० २।९५, भ्रमता भ्रमरेण—गीत० ३, 3. भटक जाना, भटकाना, इधर-उधर होना, विचलित होना 4. डगमगाना, लड़खड़ाना, डांवाडोल होना, संदेह की अवस्था में होना, झिझकना—मा० ५।२० 5. भूल करना, भूल में ग्रस्त होना, गलती पर होना,—आभरणकारस्तु तालव्य इति बभ्राम 6. फुरफुराना, फड़फड़ाना, कांपना, चंचल होना—चक्षुर्भ्रम्यति—पंच० ४।७८ 7. घेरना,—प्रेर० (भ्रमयति—ते, भ्रामयति—ते) टहलाना, फिराना, घुमाना, चक्कर दिलाना, आवर्तित करना—भ्रमय जलदानं भोगर्भान्—मा० ९।४१ 2. भुलाना, भ्रम में डालना, गुमराह करना, उलझाना, उद्विग्न करना, झंझट मे डालना, चकरा देना, डांवाडोल करना—विकारश्चैतन्यं भ्रमयति च संमीलयति च—उत्तर० १।३५ 3. लहराना, (तलवार) घुमाना, दोलायमान करना—लीलारविन्दं भ्रमयाञ्चकार—रघु० ६।१३. **उद्**—, 1. भ्रमण करना, इधर उधर घूमना, गड़बड़ा जाना—धावत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युद्याति मूर्छत्यपि—गीत० ४ 2. भूलना, भूल में पड़ना 3. विक्षुब्ध होना, व्याकुल होना—रघु० १२।७४,— **परि** 1. टहलना, घूमना, भ्रमण करना, इधर—उधर हिलना-जुलना—परिभ्रमसि किं वृथा क्वचन चित्त विश्रम्यताम्—भर्तृ० ३।१३७ 2. मंडराना, चक्कर लगाना—परिभ्रमन्मूर्धजषट्पदाकुलैः—कि० ५।१४ 3. घूमता, परिक्रमा करना, मुड़ना, 4. घूमना, मारा मारा फिरना (कर्म० के साथ) 5. मोड़ना, प्रदक्षिणा करना, **वि**—, 1. घूमना, इधर उधर चक्कर काटना 2. मंडराना, आवर्तित होना, चक्कर खाना 3. उड़ा देना, तितर बितर करना, इधर उधर बखेरना 4. गड़बड़ा जाना, अव्यवस्थित होना, व्याकुल होना, विस्मित होना—भग० १६।१६, (प्रेर०) घबरा देना, उद्विग्न करना—प्रभामत्तश्चन्द्रो जगदिदमहो विभ्रमयति—काव्य० १०, **सम**—, 1. घूमना, टहलना 2. गलती पर होना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना, घबड़ा जाना।

भ्रमः [भ्रम्+घञ्] 1. घूमना, टहलना, चहलकदमी करना 2. चक्कर खाना, आवर्तित होना, घूम जाना 3. चक्राकार गति, परिक्रमा 4. भटकना, विचलित होना 5. भूल, गलती अशुद्धि, ग़लतफ़हमी, भ्रान्ति—शुक्तौ रजतमिति ज्ञानं भ्रमः 6. गड़बड़ी, व्याकुलता, उलझन 7. भंवर, जलावर्त 8. कुम्हार का चक्र 9. चक्की का पाट 10. खराद 11. घूर्णि 12. फौवारा, जल प्रवाह। सम०—**आकुल** (वि०) घबराया हुआ, —**आसक्त** सिकलीगर, शस्त्रमार्जक।

भ्रमणम् [भ्रम्+ल्युट्] 1. इधर-उधर घूमना, टहलना 2. मुड़ना, क्रान्ति 3. विचलन, पथभ्रंशन 4. कांपना, डगमगाना, चंचलता, लड़खड़ाना 5. गलती करना 6. घूर्णन, घुमेरी,—**णी** 1. एक प्रकार का खेल 2. जोक।

भ्रमत् (वि०) [भ्रम्+शतृ] घूमना, टहलना आदि। सम०—**कुटी** एक प्रकार का छाता।

भ्रमरः [भ्रम्+करन्] 1. मधुमक्खी, भौंरा—मलिनेऽपि रागपूर्णा विकसितवदनामनल्पजल्पेऽपि, त्वयि चपलेऽपि च सरसा भ्रमर कथं वा सरोजिनीं त्यजसि—भामि० १।१०० (यहाँ द्वितीय अर्थ भी सुझाया जाता है) 2. प्रेमी, सौन्दर्यप्रेमी, लम्पट 3. कुम्हार का चाक, —**रम्** घूर्णन, घुमेरी। सम०—**अतिथिः** चम्पा का पौधा,—**अभिलीन** (वि०) मक्खियों से लिपटा हुआ, रघु० ३।८,—**अलकः** मस्तक पर की लट,—**इष्टः** श्योनाक का वृक्ष,—**उत्सवा** माधवी लता,—**करण्डकः** मक्खियों से भरी हुई पेटी (इसे चोर अपने साथ रखते हैं और जब चोरी करने जाते हैं तो इन मक्खियों को छोड़ देते हैं जिससे कि यह बत्ती बुझा दें),—**कीटः** भिरौं की जाति,—**प्रियः** कदम्ब वृक्ष का एक भेद, —**बाधा** भौंरे द्वारा सताया जाना—श० १,—**मण्डलम्** मक्खियों (भौंरों) का झुंड।

भ्रमरकः [भ्रमर+कन्] 1. भौंरा 2. जलावर्त, भंवर, —**कः**,—**कम्** 1. मस्तक पर लटकने वाली बालों की लट 2. खेलने के लिए गेंद 3. लट्टू।

भ्रमरिका [भ्रमरक+टाप् इत्वम्] सब दिशाओं में घूमने वाली।

भ्रमिः (स्त्री०) [भ्रम्+इ] 1. आवर्तन, मोड़, चक्राकार गति, इधर-उधर घूमना, क्रान्ति—उत्तर० ३।१९, ६।३, मा० ५।२३ 2. कुम्हार का चाक 3. खैरादी की खराद 4. भंवर 5. बवंडर 6. गोलाकार सैनिक—क्रमव्यवस्था 7. भूल, गलती।

भ्रश् दे० भ्रंश्।

भ्रशिमन् (पुं०) [भृशस्य भावः-- इयनिच्, ऋतो र]: प्रचंडता, अत्यधिकता, उग्रता, उत्कटता।

भ्रष्ट (वि०) [भ्रंश्+क्त] 1. पतित, नीचे पड़ा हुआ 2. गिरा हुआ 3. भटका हुआ, विचलित 4. वियुक्त, वञ्चित, निष्कासित, निकाला हुआ--यथा 'भ्रष्टाधिकार' में 5. मुर्झाया हुआ, क्षीण, बर्बाद 6. ओझल, खोया हुआ 7. दुश्चरित्र, दूषितचरित्र। सम० --**अधिकार** (वि०) अपनी शक्ति या पद से वञ्चित, पदच्युत,--**क्रिय** (वि०) विहित कर्मों को जिसने नहीं किया,--**गुद** (वि०) एक प्रकार के गुदरोग से ग्रस्त, --**योगः** जो धर्मच्युत हो गया हो।

भ्रस्ज् (तुदा० उभ०--भृज्जति, भृष्ट-- प्रेर० भर्जयति --ते, भ्रज्जयति--ते, इच्छा० बिभर्क्षति. विभर्जिषति, बिभ्रज्जिषति) तलना, भूनना, सेकना कील पर मांस भूनना, (आलं० से भी)--वभ्रज्ज निहते तस्मिन् शोको रावणमग्निवत्--भट्टि० १४।८६।

भ्राज् (भ्वा० आ० भ्राजते) चमकना, दमकना, चमचमाना, जगमगाना--रुरुजुर्भ्रेजिरे फेणुर्बहुधा हरिराक्षसाः--भट्टि० १४।७८, १५।२४, **वि**--जगमग करना, देदीप्यमान होना--विभ्राजसे मकरकेतनमर्चयन्ती रत्न० १।२१।

भ्राजः [भ्राज्+क] सात सूर्यों में से एक,--**जम्** एक प्रकार का साम।

भ्राजक (वि०) (स्त्री०--जिका) [भ्राज्+ण्वुल्] चमकाने वाला, देदीप्यमान, **कम्** पित्त, त्वचा में व्याप्त पित्त।

भ्राजथुः [भ्राज्+अथुच्] आभा, कान्ति, उज्ज्वलता, सौन्दर्य।

भ्राजिन् (वि०) [भ्राज्+णिनि] चमकने वाला, जगमगाने वाला।

भ्राजिष्णु (वि०) [भ्राज्+इष्णुच्] चमकने वाला, देदीप्यमान, उज्ज्वल, दीप्तिकेन्द्र,--**ष्णुः** 1. शिव का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण।

भ्रातृ (पुं०) [भ्राज्+तृच् पृषो०] 1. भाई, सहोदर 2. घनिष्ठ मित्र या संबंधी 3. निकटवर्ती रिश्तेदार 4. मित्रवत् संबोधन का चिह्न (प्रिय मित्र,) भ्रातः कष्टमहो--भर्तृ० ३।३७, २।३४, तत्त्वं चिन्तय तदिदं भ्रातः --मोह०। सम०--**गन्धि**,--**गन्धिक** (वि०) जिसका भाई केवल नाम के लिए हो, नाम मात्र का भाई, --**जः** भतीजा (**जा**) भतीजी--**जाया** (भ्रातुर्जाया भी) भाई की पत्नी, भाभी, मेघ० १०,--**दत्तम्** बहन के विवाह पर भाई द्वारा बहन को दी गई संपत्ति, --**द्वितीया** कार्तिक शुक्ला द्वितीया (इस दिन बहनें अपने भाइयों को अपने घर पर आमंत्रित करती हैं और उनकी खातिर करती हैं, भाई भी इस दिन बहनों को उपहार देते हैं, संभवतः यह दिन इस लिए मनाया जाता है कि इस दिन यमुना ने अपने भाई को आमंत्रित किया था--तु० यमद्वितीया),--**पुत्रः** (भ्रातुष्पुत्रः) भतीजा,--**वधूः** भाई की पत्नी,--**श्वसुरः** पति का बड़ा भाई, जेठ,--**हत्या** भाई की हत्या।

भ्रातृक (वि०; [भ्रातृ+कन्] भाई से संबंध रखने वाला।

भ्रातृव्यः [भ्रातुः पुत्रः व्यत्] 1. भाई का बेटा, भतीजा 2. शत्रु, विरोधी।

भ्रातृबल (वि०) [भ्रातृ+वलच्] जिसके एक या अधिक भाई हों।

भ्रात्रीयः, भ्रात्रेयः [भ्रातृ+छ] भाई का पुत्र, भतीजा।

भ्रात्र्यम् [भ्रातृ+ष्यञ्] भाईचारा, भ्रातृभाव।

भ्रान्त (वि०) [भ्रम्+क्त] 1. इधर उधर घूमा फिरा हुआ 2. मुड़ा हुआ, चक्कर खाया हुआ, घुमाया हुआ, 3. भूला हुआ, कुपथगामी, भटका हुआ 4. घबड़ाया हुआ, गड़बड़ाया हुआ, इधर उधर घूमने फिरने वाला इधर से उधर और उधर से इधर घूमने फिरने वाला, चक्कर काटने वाला,--**तम्** 1. घूमना, इधर उधर फिरना,-- वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह--भर्तृ० २।१४ 2. गलती, भूल।

भ्रान्तिः (स्त्री०) [भ्रम्+क्तिन्] 1. इधर उधर फिरना, घूमना 2. घूमकर मुड़ना, मटरगस्त करना 3. क्रान्ति, गोलाकार या चक्राकार घूमना--चक्रभ्रान्तिररान्तरेषु वितनोत्यन्यामिवारावलीम्--विक्रम० १।५ 4. भूल, गलती, भ्रम, व्यामोह, मिथ्याभाव--श्रितासि चन्दनभ्रान्त्या दुर्विपाकं विषद्रुमम्--उत्तर० १।४६ 5. घबराहट, उद्विग्नता 6. संदेह, अनिश्चय, शंका। सम०--**कर** (वि०) विह्वल करने वाला, भ्रम में डालने वाला,--**नाशनः** शिव का विशेषण,--**हर** (वि०) संदेह या भूल को दूर करने वाला।

भ्रान्तिमत् (वि०) [भ्रान्ति+मतुप्] 1. घूमने वाला, मुड़ने वाला,--भ्रान्तिमद्वारियन्त्रम्--मालवि० २।१३ 2. भूल करने वाला, गलती करने वाला, भ्रमयुक्त--पुं० एक अलंकार जिसमें दो वस्तुओं की पारस्परिक समानता के कारण एक वस्तु को भूल से अन्य वस्तु समझ लिया जाता है,--भ्रान्तिमानन्यसंवित्ततुल्यदर्शने--काव्य० १०, उदा०--कपाले मार्जारः पय इति करान् लेढि शशिनः, आदि--विक्रम० ३।२, मा० १।२, भी।

भ्रामः [भ्रम्+अण्] 1. इधर-उधर घूमना 2. मोह, भूल, गलती।

भ्रामक (वि०) (स्त्री०--मिका) [भ्रम्+णिच्+ण्वुल्] 1. घुमाने वाला 2. आवर्तित करने वाला 3. उलझाने वाला, धोखा देने वाला--**कः** 1. सूरजमुखी फूल 2. एक प्रकार का चुंबक पत्थर 3. धोखेबाज, बदमाश, ठग 4. गीदड़।

भ्रामर (वि०) (स्त्री०—री) [भ्रमरेण सभृतं भ्रमरस्येदं वा अण्] भ्रमर संबंधी,—रः,—रम् एक प्रकार का चुंबक पत्थर—रम् 1. चक्कर काटना, 2. आघूर्णन 3. अपस्मार, मिरगी 4. शहद 5. एक प्रकार का रति-बंध, संभोग का आसन विशेष—री 1. दुर्गा का विशेषण 2. चारों ओर घूमना, प्रदक्षिण करना—दीयतां भ्रामर्यः—कर्पूर० ४, विद्ध० २।

भ्रा (म्ला) श् (म्वा० दिवा० आ० भ्राशते, भ्राश्यन्ते, म्लाशते, म्लाश्यते) चमकना, दमकना, जगमगाना।

भ्राष्ट्रः,—ष्ट्रम् [भ्रस्ज्+ष्ट्रन्, भ्रष्ट्र+अण् वा] कड़ाही, —ष्ट्रः 1. प्रकाश 2. अन्तरिक्ष।

भ्राष्ट्रमिन्ध (वि०) [भ्राष्ट्र+इन्ध्+अण्, मुम्] तलने वाला या भूनने वाला, भड़भूजा।

भ्रा (म्ला) स् दे० 'भ्रा (म्ला) श्'।

भ्रु (भ्रू) कुंशः (सः) [भ्रुवा कुंशो (सो) भाषणं यस्य ब० स० ह्रस्वो वैकल्पिकः] स्त्री की वेशभूषा में नाटक का पुरुषपात्र।

भ्रुकुटिः—टी [भ्रुवः कुटिः कौटिल्यम्—ष० त०] दे० 'भ्रुकुटि'।

भ्रुड् (तुदा० पर० भ्रुडति) 1. संचय करना, एकत्र करना 2. ढकना।

भ्रू (स्त्री०) [भ्रम्+डू] भौंह, आँख की भौंह—कान्ति-भ्रुवोरायतलेखयोर्या—कु० १।४७। सम०—कुटिः, —टी (स्त्री०) भौंहों की सिकुड़न या कुटिलता, त्यौरी चढ़ाना, °बंध, °रचना भ्रूभंग या भ्रूभंगिमा, भ्रुकुटिं बंध् या रच् भौंहें सिकोड़ना, त्यौरी चढ़ाना —क्षेपः भौंहों को सिकोड़ना—भ्रूक्षेपमात्रानुमतप्रवेशाम्—कु० ३।६०,—जाहम् भौंह का मूल,—भङ्गः, —भेदः भौंहों की सिकुड़न वा कुटिलता,—त्यौरी—तरङ्ग-भ्रूभङ्गा क्षुभितविहगश्रेणिरशना—विक्रम० ४।२८, सभ्रूभङ्गमु खमिव—मेघ० २४, सभ्रूभङ्गम् 'त्यौरी—चढ़ा कर',—भेदिन् (वि०) त्यौरी चढ़ाये हुए,—मध्यम् भौंहों के बीच का स्थान,—लता बेल की भांति भौंह, महराबदार या कुटिल भौंह,—विकारः,—विक्रिया, —विक्षेपः भौंहों की सिकुड़न,—विचेष्टितम्,—विभ्रमः, —विलासः भौंहों का मोहक संचालन, भौंहों की काम केलि,—सभ्रूविलासमथ सोऽयमितीरयित्वा—मा० १। २४, मेघ० १६।

भ्रूणः [भ्रूण्+घञ्] 1. गर्भ, कलल 2. (गर्भस्थ) बच्चा, बालक। सम०—घ्न—हन् (वि०) भ्रूण हत्या करने वाला,—हतिः,—हत्या भ्रूण कागिराना, गर्भपात कराना—भ्रूणहत्यां वा एते घ्नन्ति—याज्ञ० १।६४।

भ्रेज् (म्वा० आ० भ्रेजते) चमकना।

भ्रे (म्ले) ष् (म्वा० उभ०—भ्रेषति—ते, म्लेषति—ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. गिरना लड़खड़ाना, डग-मगाना, फिसलना 3. डरना 4. क्रोध करना।

भ्रेषः [भ्रेष्+घञ्] 1. हिलना-जुलना, गति 2. डग-मगाना, लड़खड़ाना, फिसलना 3. विचलित होना, भटकना, पथभ्रंश 4. सत्य से विचलन, अतिक्रमण, पाप 2. हानि, वंचना।

भ्रौणहत्यम् [भ्रूणहत्या+अण्] गर्भस्थ शिशु की हत्या।

म्लक्ष् दे० भ्रक्ष्।

म्लाश् दे० भ्राश्।

म

मः [मा+क] 1. काल 2. विष 3. जादू का गुर 4. चन्द्रमा 5. ब्रह्मा 6. विष्णु 7. शिव 8. यम,—मम् 1. जल 2. प्रसन्नता, कल्याण।

मकरः [मं+विषं किरति—कृ+अच्—तारा०] 1. एक प्रकार का समुद्री-जन्तु, घड़ियाल, मगरमच्छ,—झषाणां मकरश्चास्मि—भग० १०।३१, मकरवक्त्र—भर्तृ० २।४ ('मकर' कामदेव का प्रतीक या कुलचिह्न माना जाता है, तु० निम्नांकित समस्त पदों की) 2. मकरराशि 3. मकरव्यूह, सेना को मकराकार स्थिति में क्रमबद्ध करना 4. मकर के आकार का कुंडल 5. मकर के रूप में हाथों को बांधना 6. कुबेर की नौ निधियों में से एक। सम०—अङ्कः 1. कामदेव का विशेषण 2. समुद्र का विशेषण,—अश्वः वरुण का विशेषण,—आकरः, —आलयः,—आवासः समुद्र, सागर,—कुण्डलम् मकर की आकृति का कुंडल,—केतनः,—केतुः—केतुमत् (पुं०) कामदेव के विशेषण,—ध्वजः 1. कामदेव का विशेषण—तत्प्रेमवारि मकरध्वजतापहारि—चौर० ४१ 2. सेना की विशेष क्रम-व्यवस्था,—राशिः (स्त्री०) मकर राशि,—संक्रमणम् सूर्य की मकरराशि में गति,—सप्तमी माघशुक्ला सप्तमी।

मकरन्दः [मकरमपि द्यति कामजनकत्वात् दो—अवखण्डने क, पृषो० मुम्—तारा०] 1. फूलों से प्राप्त शहद,

मधु, फूलों का रस—मकरन्दतुन्दिलानामरविन्दानामयं महामान्यः—भामि० १।६, ८ 2. एक प्रकार की चमेली 3. कोयल 4. भौंरा 5. एक प्रकार का सुगन्धित आम्रवृक्ष,—न्दम् फूलों का केसर।

मकरन्दवत् (वि०) [मकरन्द+मतुप्] मधु से पूर्ण,—ती पाटल की बेल या पाटल का फूल।

मकरिन् (पुं०) [मकर+इनि] समुद्र का विशेषण।

मकरी [मकर+ङीप्] मादा घड़ियाल। सम०—पत्रम्,—लेखा लक्ष्मी के मुखपर 'मकरी' का चिह्न,—प्रस्थः एक नगर का नाम।

मकुटम् [मङ्क्+उट, अनुनासिकलोपः] ताज—तु० 'मुकुट'।

मकुतिः [मङ्क्+उति पृषो०] शूद्रशासन, राजा की ओर से शूद्रों के लिए आदेश।

मकुरः [मक्+उरच्, पृषो०] 1. शीशा, दर्पण 2. बकुल का वृक्ष 3. काली 4. अरब की चमेली 5. कुम्हार के चाक का डंडा।

मकुलः [मङ्क्+उलच्, पृषो०] 1. बकुल का वृक्ष 2. काली।

मकुष्टः, मकुष्टकः [मङ्क्+उ पृषो० नलोपः, मकुं भूषां स्तकति प्रतिहन्ति—मकु+स्तक्+अच्] एक प्रकार की लोबिया।

मकुष्ठः [मकु+स्था+क] मोठ, (लोबिये का एक प्रकार)।

मकूलकः [मङ्क्+ऊलक्+कन् पृषो० नलोपः] 1. कली 2. दंती नामक वृक्ष।

मक्क् (भ्वा० आ०—मक्कते) जाना, हिलना-जुलना।

मक्कुलः [मक्क्+उलक्] धूप, गुग्गुल, गेरू।

मक्कोलः [मक्क्+ओलच्] खड़िया मिट्टी।

मक्ष् (भ्वा० पर० मक्षति) 1. इकट्ठा होना, ढेर लगना, सञ्चय करना 2. क्रुद्ध होना।

मक्षः [मक्ष्+घञ्] 1. क्रोध 2. पाखण्ड 3. समुच्चय, संग्रह। सम०—वीर्यः पियाल वृक्ष।

मक्षि (क्षी) का [मक्ष्+ण्वुल्+टाप् इत्व] मक्खी, मधुमक्खी—भो उपस्थितं नयनमधु संनिहिता मक्षिका च -मालवि० २। सम०—मलम् मोम।

मख्, मंख् (भ्वा० पर० मखति, मंखति) जाना, चलना, सरकना।

मखः [मख् संज्ञायां घ] यज्ञ, यज्ञविषयक कृत्य,—अकिंचनत्वं मखजं व्यनक्ति - रघु० ५।१६, मनु० ४।२४, रघु० ३।३९। सम०—अग्निः,—अनलः यज्ञाग्नि,—असुहृद् (पुं०) शिव का विशेषण - क्रिया यज्ञ विषयक कोई कृत्य,—त्रातृ (पुं०) राम का विशेषण,—द्विष् (पुं०) पिशाच, राक्षस - रघु० ११।२७—द्वेषिन् (पुं०) शिवका विशेषण,—हन् (नपुं०) 1. इन्द्र का विशेषण 2. शिव का विशेषण।

मगधः [मगध्+अच्, मगं दोषं दधाति वा मग+धा+क] एक देश का नाम, बिहार का दक्षिणी भाग—अस्ति मगधेषु पुष्पपुरी नाम नगरी—दश० १ अगाधसत्त्वो मगधप्रतिष्ठः—रघु० ६।२१ 2. भाट बन्दी, चारण,—धाः (ब० व०) 1. मगध देश के अधिवासी, मागध 2. बड़ी पीपल। सम०—उद्भव बड़ी पीपल,—पुरी मगध की नगरी,—लिपिः (स्त्री० मागधी लिपि या लिखावट।

मग्न (भू० क० कृ०) [मस्ज्+क्त] 1. गोता लगा हुआ डुबकी लगाई हुई 2. सराबोर, डूबा हुआ 3. लीन लिप्त (दे० मस्ज्)।

मघः [मङ्घ्+अच्, पृषो०]1. विश्व के एक द्वीप या प्रभाग का नाम 2. एक देश का नाम 3. एक प्रकार की औषधि 4. सुख 5. मघा नाम का दशवां नक्षत्र,—घ एक प्रकार का फूल।

मघव, मघवत् (पुं०) [मघवन्+तृ अन्तादेशः, ऋकारः इत्संज्ञा] इन्द्र का नाम।

मघवन् (पुं०) [मह् पूजायां कनिन्, नि० हस्य घः, वुग् गमश्च] (कर्तृ० ए० व० मघवा, कर्म० ब० व०—मघोनः) 1. इन्द्र का नाम—दुदोह गां स यज्ञाय सस्य मघवा दिवम् - रघु० १।२६, ३।४६, कि ३।५२, बृ ३।१ 2. उल्लू, पेचक 3. व्यास का नाम।

मघा [मह्+घ, हस्य घत्वम्, टाप्] दसवां नक्षत्र, पांच तारों का समूह है। सम० - त्रयोदशी भाद्र कृष्णा त्रयोदशी,—भवः,—भूः शुक्रग्रह।

मङ्क् (भ्वा० आ०—मङ्कते) 1. जाना, हिलना-जुल 2. सजाना, अलंकृत करना।

मङ्किलः [मङ्क्+इलच्] दावानल, जंगल की आग।

मङ्कुरः [मङ्क्+उरच्] दर्पण, शीशा।

मङ्क्षणम् [मङ्ख्+ल्युट्, पृषो० खस्य क्षत्वम्] टांगों रक्षा के लिए कवच, पिंडलियों की रक्षार्थ कवच।

मङ्क्षु (अव्य०)[मङ्ख्+उन्, पृषो० खस्य क्षत्वम्] तुर जल्दी से, शीघ्र,—मङ्क्षूदपाति परितः पटलैरलौ—शि० ५।३७ 2. अत्यन्त, बहुत अधिक।

मङ्खः [मंङ्ख्+अच्] 1. राजा का चारण 2. एक वि प्रकार की औषधि।

मङ्ग् (भ्वा० उभ० मङ्गति-ते) जाना, हिलना-जुलन

मङ्गः [मङ्ग्+अच् 1. नाव का अगला भाग 2. नाव एक पार्श्व।

मङ्गल (वि०)[मङ्ग्+अलच्] 1. शुभ, भाग्यशाली, कल्याणकारी, हितकाम—यथा मङ्गलदिवसः, मङ्गलवृ में, 2. समृद्ध, कल्याणप्रद 3. बहादुर,—लम् 1. शुभत्व, कल्याणकारिता जनकानां रघूणां च यत् गोत्रमंगलम् —उत्तर० ६।४२, रघु० ६।९, १० (ख) प्रसन्नता, सौभाग्य, अच्छी किस्मत, अ

उल्लास पा० १।३, उत्तर० ३।४८, (ग) कुशल, क्षेम, कल्याण, मंगल—सङ्गः सतां किमु न गङ्गलमातनोति भामि० १।१२२ 2. शुभ शकुन, कोई भी शुभ घटना 3. आशीर्वाद, नांदी, शुभकामना 4. शुभ या मंगलकारी पदार्थ 5. शुभावसर, उत्सव 6.(विवाह आदि) शुभ संस्कार 7. कोई पुरानी प्रथा 8. हल्दी, —लः मंगलग्रह,—ला पतिव्रता स्त्री। सम०—अक्षताः (पुं०, ब० व०) आशीर्वाद देते समय ब्राह्मणों के द्वारा लोगों पर फेंके जाने वाले चावल,—अगुरु (नपुं०) चन्दन का एक भेद, अयनम् आनंद या समृद्धि का मार्ग,—अलङ्कृत (वि०) शुभ अलकारों से अलंकृत कु० ६।८७, —अष्टकम् विवाह के अवसर पर वरवधू की मंगलकामना के लिए पढ़े जाने वाले आशीर्वादात्मक श्लोक, —आचरणम् (सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से) किसी भी ग्रन्थ के आरम्भ में पढ़ी जाने वाली प्रार्थना के रूप में मंगल-प्रस्तावना,—आचारः 1. शुभ, पवित्र प्रथा 2. आशीर्वादोच्चारण, नांदी,—आतोद्यम् उत्सव के अवसर पर बजाया जाने वाला ढोल, —आदेशवृत्तिः भाग्य में लिखे को बताने वाला ज्योतिषी,—आरम्भः गणेश का विशेषण—आलम्भनम् किसी शुभ वस्तु को स्पर्श करना,—आलयः, —आवासः देवालय, मन्दिर,—आह्निकम् मंगलकामना के लिए नित्य अनुष्ठेय धार्मिक कृत्य,—इच्छु आनन्द या समृद्धि का इच्छुक,—करणम् किसी (वि०) भी कार्य की सफलता के लिए पढ़ी जाने वाली प्रार्थना,—कारक,—कारिन् (वि०) शुभ, मंगलकारी,—कार्यम् उत्सव का अवसर, कोई भी मांगलिक कृत्य—श० ४, क्षौमम् उत्सव के अवसर पर पहना जाने वाला रेशमी वस्त्र—रघु० १२।८, —ग्रहः शुभग्रह घटः,—पात्रम् उत्सव के अवसर पर पानी से भरा कलश जो देवोंको अर्पित किया जाय, छायः प्लक्ष का वृक्ष, पाकड का पेड़,—तूर्यम्,—वाद्यम् एक वाद्य यंत्र बिगुल, या ढोल आदि—जो उत्सवादिक के शुभ अवसरों पर बजाया जाय—रघु० ३।२०,— देवता शुभ या रक्षक देवता,—पाठकः भाट, चारण, बन्दीजन —आः दुरात्मन् वृथामंगलपाठक शैलूपापसद—वेणी०१,—पुष्पम् शुभ फूल,—प्रतिसरः,—सूत्रम् शुभ डोरी, शुभ डोरा जो सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने गले में तब तक पहनती हैं जब तक उनका पति जीवित है, —अन्त्रैः कल्पितमङ्गलप्रतिसराः (अङ्गनाः)—मा० ५।१८ 2. ताबीज का डोरा, प्रद (वि०) शुभ (दा) हल्दी, —प्रस्थः एक पहाड़ का नाम, मात्रभूषण वि० शुभ अलंकारं अर्थात् जनेऊ या कस्तूरी-तिलक आदि से सुभूषित,—वचस् (पुं०)—वादः मंगलात्मक अभिव्यक्ति आशीर्वचन, मंगलाचरण,—वाद्यम् दे० 'मंगलतूर्यम्', वारः,— वासरः मंगलवार,—विधिः उत्सव या कोई शुभकृत्य,—शब्दः अभिनन्दन, आशीर्वादात्मक अभिव्यक्ति,—सूत्रम् दे० 'मंगलप्रतिसर', स्नानम् मंगल कामना के लिए किसी शुभ अवसर पर किया जाने वाला स्नान।

मङ्गलीय (वि०) [मङ्गल+छ] शुभ, सौभाग्यसूचक।

मङ्गल्य (वि०) [मङ्गल+यत्] 1. शुभ सौभाग्यशाली, सानंद, किस्मतवाला, समृद्ध—मनु० २।३१ 2. सुखद, रुचिकर, सुन्दर 3. पवित्र, विशुद्ध, पावन - उत्तर० ४।१०,—ल्यः 1. बट-वृक्ष 2. नारियल का पेड़ 3. एक प्रकार की दाल, मसूर की दाल,—ल्या 1. सुगन्धित चन्दन का भेद 2. दुर्गा का नाम 3. अगर की लकड़ी 4. एक विशेष सुगंध द्रव्य 5. एक प्रकार का पीला रंग,—ल्यम् (अनेक तीर्थ स्थानों से लाया गया) 1. राजा के राज्याभिषेक के लिए शुभ तीर्थजल 2. सोना 3. चन्दन की लकड़ी 4. सिंदूर 5. खट्टा दही।

मङ्गल्यकः [मंगल्य+कन्] एक प्रकार की दाल, मसूर।

मङ्घ् i (भ्वा० पर० मङ्घति) अलंकृत करना, सजाना। ii (भ्वा० आ० मङ्घते) 1. ठगना, धोखा देना 2. आरम्भ करना 3. कलंकित करना 4. निन्दा करना 5. जाना, जल्दी से जाना 6. आरंभ करना प्रस्थान करना।

मच् (भ्वा० आ० मचते) 1. दुष्ट होना 2. ठगना, धोखा देना 3. शेखी बघारना 4. घमण्डी या अहंकारी होना।

मर्चिका [मशम्भुं चर्चति-म+चर्च्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 'श्रेष्ठता या सर्वोत्तमता' को प्रकट करने के लिए संज्ञा के अन्त में लगाया जाने वाला शब्द यथा गोमर्चिका 'एक बढ़िया गाय या बैल, तु० उद्धः।

मच्छः [मद्+क्विप्-शो+ड] (मत्स्य का भ्रष्ट रूप) मछली।

मज्जन् (पुं०) [मस्ज्+कनिन्] मांस और हड्डियों में रहने वाली मज्जा, पौधे का रस। सम०—कृत् (नपुं०) हड्डी, समुद्भवः वीर्य, शुक्र।

मज्जनम् [मस्ज् भावे ल्युट्] 1. डुबकी लगाना, गोता लगाना, पानी में डुबकी, सराबोर होना 2. स्नान करना, नहाना—प्रत्यग्रमज्जनविशेषविविक्तकान्तिः —रत्न० १।२१, रघु० १६।५७ 3. डूबना 4. मांस और हड्डियों के बीच की मज्जा।

मज्जा [मस्ज्+अच्+टाप्] 1. मांस और हड्डियों के बीच का रस या वसा 2. पौधों का रस। सम० —रजस् (नपुं०) 1. एक विशेष नरक 2. गुग्गुल —रसः वीर्य, शुक्र,—सारः जायफल।

मञ्जुषा दे० मञ्जूषा ।

मञ्च् (भ्वा० आ० मञ्चते) 1. थामना 2. ऊँचा या लम्बा होना 3. जाना, चलना-फिरना 4. चमकना 5. अलंकृत करना ।

मञ्चः [मञ्च् + घञ्] 1. शय्या, चारपाई, पलंग, बिस्तरा 2. उभरा हुआ आसन, वेदी, सम्मान का आसन, राज्यासन, सिंहासन—तत्र मञ्चेषु मनोज्ञवेषान्—रघु० ६।१, ३।१० 3. मकान, टांड (खेत के रखवाले के लिए) 4. व्यासपीठ, ऊँचा आसन ।

मञ्चकम् [मञ्च+कन्] 1. शय्या, बिस्तरा, पलंग 2. उभरा हुआ आसन या वेदी 3. आँख सुरक्षित रखने का हारा । सम० —आश्रयः खटमल, खाट में रहने वाला कीड़ा ।

मञ्चिका [मञ्चक+टाप्, इत्वम्] 1. कुर्सी 2. कठौती, थाली, 3. माची (चार पायों से बनाया हुआ स्टैण्ड जिसपर बुगचों में भरा सामान लदा रहता है) ।

मञ्जरम् [मञ्ज्+अर] 1. फूलों का गुच्छा 2. मोती 3. तिलक नाम का पौधा ।

मञ्जरिः,—री (स्त्री०) [मञ्जु+ऋ+इन् शक० पररूपम्, पक्षे ङीप्] 1. कोंपल, अंकुर, बौर—निवपेः सहकार-मञ्जरीः—कु० ४।३८, सदृशकान्तिरलक्ष्यत मञ्जरी—रघु० ९।४४, १६।५१, इसी प्रकार—स्फुरतु कुच-कुम्भयोरुपरिमणिमञ्जरी—गीत० १०, मुखं मुक्तारुचो-घत्ते घर्माम्भःकणमञ्जरी—काव्य० २।७१, 2. फूलों का गुच्छा 3. फूल कली 4. फूल का वृन्त 5. समानान्तर रेखा 6. मोती 7. लता 8. तुलसी 9. तिलक का पौधा । सम०—चामरम् मंजरी की शक्ल का चंवर, पंखे जैसी मञ्जरी - विक्रम० ४।४,—नम्रः 'वेतस' का पौधा ।

मञ्जरित (वि०) [मञ्जर+इतच्] 1. फूलों या बौरों के गुच्छों से युक्त 2. वृंत पर लगी हुई कली आदि ।

मञ्जा [मञ्ज्+अच्+टाप्] 1. बकरी 2. बौरों (फूलों) का गुच्छा 3. लता ।

मञ्जिः,—जी [मञ्ज्+इन्, पक्षे ङीष्] 1. फूलों (या बौरों) का गुच्छा 2. लता । सम० फला केले का पौधा ।

मञ्जिका [मञ्ज्+ण्वुल्+टाप्+इत्वम्] वेश्या, वारांगना, बाजारू स्त्री, रंडी ।

मञ्जिमन् (पुं०) [मञ्जु+इमनिच्] सौन्दर्य, मनोहरता ।

मञ्जिष्ठा [अतिशयेन मञ्जिमती इष्ठन् मतुपो लोपः—तारा०]मजीठ । सम० प्रमेहः एक प्रकार का मूत्र-रोग,—रागः 1. मजीठ का रंग 2. मजीठ के रंग जैसा आकर्षक और टिकाऊ अर्थात् स्थायी अनुराग ।

मञ्जीरः—रम् [मञ्ज्+ईरन्] नूपुर, पैर का आभूषण —सिञ्जानमञ्जुमञ्जीरं प्रविवेश निकेतनम् - गीत० ११, या मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलिषु लोलम् ५, मा० १,—रम् वह स्थूणा जिसमें रई की रस्सी लपेटी जाती है ।

मञ्जीलः (पुं०) वह गाँव जिसमें धोबियों का निवास हो ।

मञ्जु (वि०) [मञ्ज्+उन्] प्रिय, सुन्दर, मनोहर मधुर, सुखद, रुचिकर, आकर्षक—स्खलदसमञ्जसमञ्जुजल्पितं ते (स्मरामि),उत्तर० ४।४, अयिदलदरविन्द स्यन्दमानं मरन्दं तव किमपि लिहन्तो मञ्जु गुञ्जन्तु भृङ्गाः—भामि० १।५, तन्मञ्जुमन्दहसितं श्वसितानि तानि—२।५। सम० —केशिन् (पुं०) कृष्ण का विशेषण,—गमन (वि०) सुन्दर गति वाला, (ना) 1. हंसिनी 2. राजहंस,—गर्तः नेपाल देश का नाम,—गिर् (वि०) मधुर स्वर वाला—एते मञ्जुगिरः शुकः - काव्या० २।९,—गुञ्जः प्यारी गूंज,—घोष (वि०) मधुर स्वर बोलने वाला, —नाशी 1. सुन्दर स्त्री 2. दुर्गा का विशेषण 3. इन्द्र की पत्नी शची का विशेषण,—पाठकः तोता,—प्राणः ब्रह्मा का विशेषण, भाषिन्,—वाच् (वि०) मधुर बोलने वाला - गिरमनुवदति शुकस्ते मञ्जुवाक् पञ्जरस्थः—रघु० ५।७४, १२।३९—वक्त्र (वि०) सुन्दर मुख वाला, मनोहर, -स्वन,—स्वर (वि०) मीठे स्वर वाला ।

मञ्जुल (वि०) [मञ्ज्+उ+लच् वा] प्रिय, सुन्दर, रुचिकर, मनोहर, मधुर, सुरीली (आवाज़), —संप्रति मञ्जुल-वञ्जुल सीमनि केलिशयनमनुयातम् - गीत० ११, कूजितं राजहंसानां वर्धते मदमञ्जुलम्—काव्या० २।३३४, लम् 1. लतामण्डप, कुंज, लतागृह 2. निर्झर, कूआँ,—लः एक प्रकार का जलकुक्कुट ।

मञ्जूषा [मञ्ज्+ऊषन्+टाप्] 1. संदूक, डब्बा, पेटी, आधार—मदीयपद्यरत्नानां मञ्जूषैषा मया कृता —भामि० ४।४५, 2. बड़ी टोकरी, पिटारा 3. मजीठ 4. पत्थर ।

मटकी, मटती [मट्+अप्=मट+चि+डि+ङीष्, मट् +शतृ+ङीष्] ओला ।

मटस्फटिः [मट+स्फट्+इ] 'घमंड का आरम्भ', आरब्ध अभिमान ।

मट्टकम् (नपुं०) छत की मुंडेर ।

मठ् (भ्वा० पर० मठति) 1. रसना, बसना 2. जाना, 3. पीसना ।

मठः,—ठम् [मठत्यत्र मठ् घञर्थे क] 1. संन्यासी की कोठरी, साधक की कुटिया 2. विहार, शिक्षालय 3. विद्यामंदिर, महाविद्यालय, ज्ञानपीठ 4. देवालय, मन्दिर 5. बैलगाड़ी,—ठी 1. कोठरी 2. मढ़ी, विहार । सम०—आयतनम् विद्यामन्दिर, महाविद्यालय ।

मठर (वि०) [मन्+अर्, ठ अन्तादेशः] नशे में चूर, मद्य पीकर मतवाला ।

मठिका [मठ+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटी कोठरी, कुटी, कुटीर।

मड्डुः, मड्डुकः [मस्ज्+डु, मड्डु+कन्] एक प्रकार का ढोल।

मण् (भ्वा० पर० मणति) बजाना, गुनगुनाना।

मणिः (स्त्री० भी, परन्तु विरल प्रयोग) [मण्+इन्, स्त्रीत्वपक्षे वा ङीप्] 1. रत्नजड़ित आभूषण, रत्न, मूल्यवान् जवाहर—अलब्धशाणोत्कषणा नृपाणां न जातु मौलौ मणयो वसन्ति—भामि० १।७३, मणौ वंज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः—रघु० १।४, ३।१८ 2. आभूषण 3. कोई भी उत्तम वस्तु—तु० रत्न 4. चुम्बक, लोहमणि 5. कलाई 6. जलकलश 7. चिड्कु, भगांकुर 8. लिंग का अगला भाग (इन अर्थों में 'मणी' भी लिखा जाता है)। सम०—इन्द्रः, —राजः हीरा,—कण्ठः नीलकण्ठ पक्षी,—कण्ठकः मुर्गा,—कर्णिका,—कर्णी वाराणसी में विद्यमान एक पवित्र कुण्ड,—काचः बाण का वह भाग जहां पंख लगा रहता है,—काननम् ग्रीवा,—कारः रत्नाजीव, जौहरी,—तारकः सारस पक्षी,—दर्पणः रत्नजटित शीशा,—द्वीपः 1. अनन्त नाग का फण 2. अमृत सागर में विद्यमान एक काल्पनिक टापू,—धनुः, —धनुस् (नपुं०) इन्द्रधनुष,—पाली जौहरिन, रत्न आभूषणों की देखभाल करने वाली स्त्री,—पुष्पकः सहदेव के शंख का नाम—भग० १६,—पूरः 1. नाभि 2. रत्नजटित चोली, (रम्) कलिंग देश में विद्यमान एक नगर,—बन्धः 1. कलाई—श० ७, 2. रत्नों का बांधना—रघु० १२।१०२.—बन्धनम् 1. रत्नों का (कलाई में) बांधना, मोतियों की लड़ी 2. कंकण या अंगूठी का वह भाग जहां उसमें नग जड़े जाते हों—श० ६ 3. कलाई—श० ३।१३,—बीजः, —वीजः अनाज का पेड़,—भित्तिः (स्त्री०) शेषनाग का महल,—भूः (स्त्री०) रत्नजटित फर्श,—भूमिः (स्त्री०) 1. रत्नों की खान 2. रत्नजटित फर्श, वह फर्श जिसमें रत्न जड़े हों,—मन्थम् सेंधा नमक,—माला 1. रत्नों का हार 2. कान्ति, आभा, सौन्दर्य 3. (कामकेलि में) दांत से काटे का गोल निशान 4. लक्ष्मी 5. एक छन्द का नाम,—यष्टिः (पुं०, स्त्री) रत्नजटित लकड़ी, रत्नों की लड़ी,—रत्नम् आभूषण, जड़ाऊ गहना, रत्न, जवाहर,—रागः रत्नों का रंग (गम्) सिंदूर,—शिला रत्नजटित शिला,—सरः रत्नों का हार,—सूत्रम् मोतियों की लड़ी,—सोपानम् रत्नजटित पौड़ी, जीना,—स्तम्भः रत्नों से जड़ा हुआ खंभा,—हर्म्यम् रत्नजटित या स्फटिक का महल।

मणिकः—कम् [मणि+कन्] जलकलश,—कः रत्न, जवाहर।

मणितम् [मण्+क्त] एक अस्पष्ट सी सीत्कार जो स्त्री—सम्भोग के समय उच्चरित होती है—कि० १०।७५।

मणिमत् (वि०) [मणि+मतुप्] रत्नजटित (पुं०) 1. सूर्य 2. एक पर्वत का नाम 3. एक तीर्थस्थान का नाम।

मणीचकः [मणी+चक्+अच्] रामचिरैया,—कम् चन्द्रकान्तमणि।

मणीवकम् [मणीव कायति—मणी+कै+क] फूल, पुष्प।

मण्ठ् (भ्वा० आ० मण्ठते) 1. प्रबल अभिलाष करना 2. सखेद स्मरण करना, शोक के साथ चिन्तन करना।

मण्ठः [मण्ठ्+अच्] एक प्रकार का पका हुआ मिष्टान्न।

मण्ड् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मण्डति, मण्डयति—ते मण्डित) 1. अलंकृत करना, सजाना—प्रभवति मण्डयितुं वधूरनङ्गः—कि० १०।५९, भट्टि० १०।२३ 2. हर्ष मनाना।

ii (भ्वा० आ० मण्डते) 1. वस्त्र धारण करना, कपड़े पहनना 2. घेरना, घेरा डालना ३. विभक्त करना, बाँटना।

मण्डः,—डम् [मण्ड्+अच्, मन्+ड तस्य नेत्वम् वा] 1. गाढ़ा चिकना पदार्थ जो किसी तरल पदार्थ के ऊपर जम जाता है 2. उबाले हुए चावलों का मांड़—नीवारौदनमण्डमुष्णमधुरम्—उत्तर० ४।१ 3. (दूध की) मलाई 4. झाग, फेनक, फफूंदन 5. उफान 6. भात का मांड़ 7. रस, सत् 8. सिर,—डः 1. आभूषण, शृंगार 2. मेंढक, 3. एरंड का वृक्ष,—डा 1. खींची हुई शराब, 2. आंवले का वृक्ष। सम०—उदकम् 1. खमीर, 2. उत्सवादिक के अवसर पर फर्श व दीवारों को सजाना 3. मानसिक क्षोभ या उत्तेजना,—प (वि०) मांड़ पीने वाला, मलाई खाने वाला,—हारकः शराब खींचने वाला।

मण्डकः [मण्ड+कन्] 1. कसार, एक प्रकार का पकाया हुआ मैदा 2. फुलका, पतली रोटी।

मण्डनम् [मण्ड्+ल्युट्] 1. सजाने या सुभूषित करने की क्रिया अलंकृत करना—मामक्षमं मण्डनकालहानेः—रघु० १३।१६, मण्डनविधिः—श० ६।५ 2. आभूषण, शृंगार, सजावट—सा मण्डनान्मण्डनमन्वभुङ्क्त—कु० ७।५, कि० ८।४०, रघु० ८।७१,—नः (मण्डनमिश्रः) दर्शन शास्त्र के एक विद्वान् पंडित जो शास्त्रार्थ में शङ्कराचार्य से हार गये थे।

मण्डपः[मण्डं भूषां पाति—पा+क, मण्ड्+कपन् वा]1. विवाहादि संस्कारों के अवसर पर बनाया गया अस्थायी मण्डप, खुला कमरा, विवाह मंडप 2. तंबू, मंडवा —रघु० ५।७३ 3. लता कुंज, लतागृह, लतामंडप

—मेघ ७८ 4. किसी देवता को अर्पित किया गया भवन। सम०—प्रतिष्ठा देवालय की प्रतिष्ठा।

मंण्डयन्तः [मण्ड्+णिच्+झच्] 1. आभूषण, शृंगार 2. अभिनेता 3. आहार 4. स्त्री सभा, —न्ती स्त्री।

मण्डरी [मण्ड+अरन्+ङीप्] झिल्ली, झींगुर विशेष।

मण्डल (वि०) [मण्ड्+कलच्] गोल, वृत्ताकार,—लः 1. सैनिकों का गोलाकार क्रमव्यवस्थापन 2. कुत्ता 3. एक प्रकार का साँप, —लम् 1. गोलाकार पिण्ड, गोलक, चक्र, गोलाकार वस्तु, परिधि, कोई भी गोल वस्तु—**करालफणमण्डलम्—रघु० १२।९८, आदर्श मण्डलनिभानि समुल्लसन्ति—कि० ५।४१, स्फुरत्प्रभामण्डल, चापमण्डल, मुखमण्डल, स्तनमण्डल आदि 2.(जादूगर द्वारा खींची हुई) गोलाकार रेखा—मुद्रा० २।१ 3. बिंब, विशेषतः चन्द्र या सूर्य का बिंब,—अपदर्पण ग्रहकलुषेन्दुमण्डला (विभावरी)—मालवि० ४।१५, दिनमणिमण्डनमण्डपभयखण्डन ए—गीत० 4. परिवेश, सूर्य-चन्द्र के इर्द गिर्द पड़ने वाला घेरा 5. ग्रहपथ या ग्रहकक्ष 6. समुदाय, समूह, संग्रह, संघात, टोली, वृन्द—एवं मिलितेन कुमारमण्डलेन—दश०, अखिलं चारिमण्डलम्—रघु० ४।४ 7. समाज, सम्मेलन** 8. बड़ा वृत्त 9. दृश्य क्षितिज 10 जिला या प्रान्त 11 पड़ोस का जिला या प्रदेश 12. (राजनीति में) किसी राजा के निकट और दूरवर्ती पड़ोसियों का गुट्ट—उपगतोऽपि मण्डलनाभिताम्—रघु० ९।१५ (मल्लि० द्वारा उद्धृत कामन्दक के अनुसार राजा के निकट और दूरवर्ती पड़ोसियों के गुट्ट में बारह राजा सम्मिलित हैं। एक तो केन्द्रीय राजा या विजिगीषु, पाँच अग्रवर्ती राज्यों के राजा, चार पश्चवर्ती राज्यों के राजा, एक मध्यम या अन्तर्वर्ती राजा तथा एक उदासीन अथवा तटस्थ राजा। अग्रवर्ती और पश्चवर्ती राजाओं की विशेष संज्ञाएं हैं—दे० तद्गत मल्लि० तु० शि० २।८१ भी तथा इसके ऊपर मल्लि०। कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार ऐसे राजाओं की संख्या, चार, छः, आठ, बारह या इससे भी अधिक है—दे० याज्ञ० १।३४५ पर मिता० और दूसरे विद्वानों के अनुसार गुट्ट में केवल तीन ही राजा होते हैं—प्राकृतारि या स्वाभाविक शत्रु (बगलवाले देश का प्रभु), प्राकृत मित्र या स्वाभाविक दोस्त (केन्द्रीय राजा से मिले हुए दूसरे अन्य राज्यों के बाद जिसका राज्य हो) और प्राकृतोदासीन या स्वाभाविक तटस्थ (जिसका राज्य स्वाभाविक मित्रराष्ट्र से भी परे हो)। 13. बन्दूक का निशाना लगाते समय विशेष पैंतरा 14. दिव्य विभूतियों का आवाहन करने के लिए एक प्रकार का गुप्त रेखाचित्र या तंत्र, 15. ऋग्वेद का एक खण्ड (समस्त ऋग्वेद दस मण्डलों या आठ अष्टकों में विभक्त है) 16. एक प्रकार का कोढ़ जिसमें गोल चकत्ते पड़ जाते हैं 17. एक प्रकार का गन्धद्रव्य,—ली वृत्त, समूह, संघात (**मण्डलीकृ** कुंडलाकार या वृत्ताकार बनाना, लपेटना, **मण्डलीभू** वृत्त बनाना) सम०—**अग्रः** झुकी हुई या टेढ़ी तलवार, खड्ग,—**अधिपः**,—**अधीशः**,—**ईशः**—**ईश्वरः** 1. किसी जिले या प्रान्त का राज्यपाल या शासक 2. राजा, प्रभु,—**आवृत्तिः** (स्त्री०) गोलाकार गति—उत्तर० ३।१९,—**कार्मुक** (वि०) गोलाकार धनुष को धारण करने वाला,—**नृत्यम्** मंडलाकार घूमते हुए नाचना, गोलाकार नाच,—**न्यासः** वृत्त का वर्णन करना,—**पुच्छकः** एक प्रकार का कीड़ा,—**वटः** गोलाकार रूप में बड़ का वृक्ष,—**वर्तिन्** (पुं०) एक छोटे प्रान्त का शासक, —**वर्षः** राजा के समस्त प्रदेश में बारिश का होना, देशव्यापी वर्षा।

मण्डलकम् [मण्डल+कन्] 1. वृत्त, 2. बिंब 3. जिला, प्रांत 4. समूह, संग्रह 5. सैनिकों की चक्राकार-व्यूहरचना 6. सफ़ेद कोढ़ जिसमें गोल चकत्ते होते हैं 7. दर्पण।

मण्डलयति (ना० धा० पर०) गोल या वृत्ताकार बनाना।

मण्डलायित (वि०) [मण्डलवत् आचरितम्—मण्डल+क्यङ्, दीर्घः, मण्डलाय+क्त] गोल, वर्तुल,—तम् गेंद, गोलक।

मण्डलित (वि०) [मण्डलं कृतं—मण्डल+क्विप्=मण्डल्+क्त] गोल बना हुआ, वर्तुल या गोल बनाया हुआ।

मण्डलिन् (वि०) [मण्डल+इनि] 1. वृत्त बनाने वाला, कुण्डलाकृत 2. देश का शासन करने वाला, (पुं०) 1. एक प्रकार का साँप 2. सामान्य सर्प 3. बिलाव 4. ऊदबिलाव 5. कुत्ता 6. सूर्य, 7. वटवृक्ष 8. किसी प्रांत का शासक।

मण्डित (वि०) [मण्ड्+क्त] अलंकृत, भूषित।

मण्डूकः [मण्डयति वर्षासमयं—मण्ड्+ऊकण्] मेंढक—निपानमिव मण्डूकाः सोद्योगं नरमायान्ति विवशाः सर्वसंपदः, सुभा०,—कम् स्त्रीसंभोग का एक प्रकार, रतिबन्धविशेष,—की 1. मेंढकी 2. व्यभिचारिणी स्त्री 3. कुछ पौधों के नाम। सम०—**अनुवृत्ति**,—**प्लुतिः** (स्त्री०) 'मेंढकों की उछल कूद' बीच बीच में छोड़ देना, बीच में छोड़कर आगे फलांग जाना (व्याकरण में यह शब्द कुछ सूत्र छोड़ कर उनके पूर्ववर्ती सूत्र से आपूर्ति करने के निमित्त प्रयुक्त होता है)—क्रिया ग्रहणं मण्डूकप्लुत्यानुवर्तते—सिद्धा०—,**कुलम्** मेंढकों का समूह,—**योगः** भाव-समाधि का एक प्रकार जिसमें साधक मेंढक की भांति निश्चल होकर समाधिस्थ होता है,—**सरस्**(नपुं०) मेंढकों से भरा हुआ सरोवर।

मण्डूरम् [मण्ड्+ऊरच्] लोहे का जंग, लोहे का मैल (यह पौष्टिक औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है)।

मत (भू० क० कृ०) [मन्+क्त] 1. चिंतित, विश्वसित, कल्पित 2. सोचा हुआ, माना हुआ, खयाल किया हुआ, समझा हुआ 3. मूल्यवान् माना हुआ, सम्मानित, प्रतिष्ठित—रघु० २।१६, ८।८ 4. प्रशंसित, मूल्यवान् 5. अटकल लगाया हुआ, अनुमान लगाया हुआ 6. मनन किया हुआ, चिन्तन किया हुआ, प्रत्यक्ष किया गया, पहचाना गया 7. सोचा गया 8. अभिप्रेत उद्दिष्ट 9. अनुमोदित, स्वीकृत (दे० मन्),—**तम्** चिन्तन, विचार, सम्मति, विश्वास, पर्यवेक्षण—निश्चितं मतमुत्तमम्—भग० १८।६, केषांचिन्मतेन-आदि 2. सिद्धांत, उसूल, पन्थ, धर्ममत, विश्वास—ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः—भग० ३।३१ 3. उपदेश, अनुदेश, सलाह 4. उद्देश्य, योजना, अभिप्राय, प्रयोजन 5. समनुमोदन, स्वीकृति प्रशंसा। सम० —**अक्ष** (व०) पासे के खेल में प्रवीण,—**अन्तरम्** 1. भिन्न दृष्टि 2. भिन्न पन्थ,—**अवलम्बनम्** विशेष प्रकार की सम्मति रखना।

मतङ्गः [माद्यति अनेन—मद्+अङ्गच् दस्य तः तारा०] 1. हाथी 2. बादल 3. एक ऋषि का नाम—रघु० ५।३३।

मतङ्गजः [मतङ्ग+जन्+ड] हाथी—न हि कमलिनीं दृष्ट्वा ग्राहमवेक्षते मतङ्गजः—मालवि० ३, कि० ५। ४७, रघु० १२।७३।

मतल्लिका [मतं मतिम् अलति भूषयति—मत+अल्+ण्वुल् पृषो० साधुः] सर्वोत्तमा, सर्वश्रेष्ठता प्रकट करने के लिए इस शब्द को संज्ञाओं के अन्त में जोड़ दिया जाता है, गोमतल्लिका 'श्रेष्ठ गौ' तु० उद्धः।

मतल्ली दे० मतल्लिका।

मतिः (स्त्री०) [मन्+क्तिन्] 1. बुद्धि, समझदारी, भाव, ज्ञान, संकल्प—मतिरेव बलाद्गरीयसी—हि० २।८६, अल्पविषया मतिः—रघु० १।२ 2. मन, हृदय —मम तु मतिर्न मनागपैतु धर्मात्—भामि० ४।२६, इसी प्रकार दुर्मति, सुमति 3. सोचना, विचार, विश्वास, सम्मति, भाव, कल्पना, संस्कार पर्यवेक्षण —विधिरहो बलवानिति मे मतिः—भर्तृ० २।९१, भग० १८।७८ 4. अभिप्राय, योजना, प्रयोजन—दे० मत्या 5. प्रस्ताव निर्धारण 6. सम्मान, प्रतिष्ठा, आदर —कि० १०।९ 7. अभिलाष, इच्छा, कामना—प्रायोपवेशनमतिर्नृपतिर्बभूव—रघु० ८।९४ 8. सलाह, परामर्श 9. याद, प्रत्यास्मरण (**मतिकृ**,—**धा**,—**आधा**, मन लगाना, निश्चय करना, सोचना, **मत्या** (क्रि० वि०) 1. जानबूझकर, साभिप्राय, स्वेच्छा से—मत्या भुक्त्वाचरेत् कृच्छ्रम्—मनु० ४।२२३, ५।१९ 2. इस विचार से कि व्याधमत्या पलायन्ते)। सम० —**ईश्वरः** विश्वकर्मा का विशेषण,—**गर्भ** (वि०) प्रज्ञावान्, बुद्धिमान्, चतुर,—**द्वैधम्** मतभिन्नता, —**निश्चयः** निश्चित विश्वास, दृढ़ विश्वास,—**पूर्व** (वि०) साभिप्राय, स्वेच्छाचारी, यथेच्छ,—**पूर्वम्**, —**पूर्वकम्** (अव्य०) सप्रयोजन, साभिप्राय, स्वेच्छा से, खुशी से,—**प्रकर्षः** बुद्धि की श्रेष्ठता, चतुराई,—**भेदः** विचारभिन्नता,—**भ्रमः**,—**विपर्यासः** 1. व्यामोह, मानसिक भ्रम, मन की भ्रान्ति—श० ६।९ 2. त्रुटि, गलती, भूल, गलतफहमी,—**विभ्रमः**,—**विभ्रंशः** मन की अव्यवस्था या दीवानापन, पागलपन, उन्माद, —**शालिन्** (वि०) बुद्धिमान्, चतुर,—**हीन** (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, मूढ़।

मत्क (वि०) [अस्मद्+कन्, मदादेशः] मेरा—संश्रृणुष्व कपे मत्कैः संगच्छस्व वनैः शुभैः—भट्टि० ८।१६, —**त्कः** खटमल।

मत्कुणः [मद्+क्विप्, कुण्+क, ततः कर्म० स०] 1. खटमल—मत्कुणाविव पुरापरिप्लवौ—शि० १४।६८, 2. बिना दाँत का हाथी 3. छोटा हाथी 4. बिना दाढ़ी का मनुष्य 5. भैंस 6. नारियल का पेड़,—**णम्** टांगों या जंघाओं के लिए कवच। सम०—**अरिः** पटसन का पौधा।

मत्त (भू० क० कृ०) [मद्+क्त] 1. नशे में चूर, मतवाला, मदोन्मत्त (आलं० से भी)—ज्योत्स्नापानमदालसेन वपुषा मत्ताश्चकोराङ्गनाः—विद्ध० १।११, प्रभामत्तश्चन्द्रो जगदिदमहो विभ्रमयति—काव्य० १०, इसी प्रकार ऐश्वर्य° धन° बल° आदि 2. पागल, विक्षिप्त 3. मदवाला, भीषण (हाथी)—रघु० १२।९३ 4. घमंडी, अहंकारी 5. खुश, अतिहृष्ट, हर्षोद्दीप्त 6. प्रीतिविषयक, केलिपरायण, स्वैरी,—**त्तः** 1. पियक्कड़ 2. पागल मनुष्य 3. मदवाला हाथी 4. कोयल 5. भैंसा 6. धतूरे का पौधा। सम०—**आलम्बः** (किसी धनी पुरुष के) विशाल भवन की बाड़,—**इभः** मदवाला हाथी °**गमना** मस्त हाथी के सदृश चाल वाली स्त्री अर्थात् अलसगति,—**काशि** (सि) नी एक सुन्दर लावण्यवती स्त्री,—**दन्तिन्** (पुं०)—**नागः**, —**वारणः** मदवाला हाथी, (—**णः**—**णम्**) 1. विशालभवन के चारों ओर बाड़ 2. किसी विशालभवन के ऊपर बनी अटारी 3. वरांडा, अलिंद 4. भवन का सुसज्जित बहिर्भाग,—(**णम्**) कटी हुई सुपारी।

मत्यम् [मत+यत्] 1. हल द्वारा बनाया खूड 2. ज्ञान प्राप्त करने का साधन 3. ज्ञान का अभ्यास।

मत्सः [मद्+सन्] 1. मछली 2. मत्स्य देश का स्वामी।

मत्सरः [मद्+सरन्] 1. ईर्ष्यालु, डाह करने वाला 2. अतृप्त लालची, लोभी 3. दरिद्र 4. दुष्ट,—**रः** 1. ईर्ष्या, डाह—अदत्तावकाशो मत्सरस्य—का० ४५, परवृद्धिषु बद्धमत्सराणां—कि० १३।७, शि० ९।६३,

कु० ५।१७ 2. विरोधिता, शत्रुता—रघु० ३।६० 3. घमंड—शि० ८।७१, 4. लोभ, लालच 5. क्रोध, कोपावेश 6. डांस या मच्छर।

मत्सरिन् (वि०) [मत्सर+इनि] 1. ईर्ष्यालु, डाह करने वाला—परवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनाम्—शि० १५।१, २।११५ दुष्टात्मा परगुणमत्सरी मनुष्यः —मृच्छ० ९।२७, रघु० १८।१९ 2. विरोधी, शत्रुतापूर्ण 3. लालायित, स्वार्थरत (अधि० के साथ) 4. दुष्ट।

मत्स्यः [मद्+स्यन्] 1. मछली—शूले मत्स्यानिवा-पक्ष्यन् दुर्बलान्बलवत्तराः मनु० ७।२० 2. मछलियों की विशेष जाति 3. मत्स्य देश का राजा,—**त्स्यौ** (द्वि० व०) मीन राशि,—**त्स्याः** (ब० व०) एक देश तथा उसके अधिवासियों का नाम—मनु० २।१९ याज्ञ० १।८३, । सम०—**अक्षका,—अक्षी** एक विशेष प्रकार की सोमलता,—**अद्,—अदतः—आद** (वि०) मछलियाँ खाकर पलने वाला, मत्स्यभक्षी,—**अवतारः** विष्णु के दस अवतारों में सबसे पहला अवतार (सातवें मनु के शासनकाल में दूषित हुई सारी पृथ्वी बाढग्रस्त हो गई और पावन मनु तथा सप्तर्षियों (इनको विष्णु ने मछली बनाकर बचा लिया था) को छोड़कर सब जीवधारी प्राणी कालकवलित हो गये) तु० इस अवतार का जयदेवरचित वर्णन—प्रलयपयो-धिजले धृतवानसि वेदं विहितवहित्रचरित्रमखेदं केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे—गीत० १, —**अशनः** 1. रामचिरैया (एक शिकारी पक्षी) 2. मत्स्यभक्षी,—**असुरः** एक राक्षस का नाम,—**आजीवः** मछुवा, -**आधानी—धानी** मछलियाँ रखने की टोकरी (जिसे मछुवे प्रयुक्त करते हैं)—**उदरिन्** (पुं०) विराट का विशेषण,—**उदरी** सत्यवती का विशेषण —**उदरीयः** व्यास का विशेषण,—**उपजीविन्** (पुं०) मछुवा,—**करण्डिका** मछलियाँ रखने की टोकरी,—**गन्ध** (वि०) मछली की गंध रखने वाला, (**धा**) सरस्वती का नाम—**घण्टः** एक प्रकार की मछली की चटनी —**घातिन्—जीवत्**, -**जीविन्** (पुं०) मछुवा,—**जालम्** मछलियाँ पकड़ने का जाल,—**देशः** मत्स्यवासियों का देश,—**नारी** सत्यवती का विशेषण,—**नाशकः—नाशनः** मत्स्यभक्षी उकाव, कुररपक्षी—**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक,—**बन्धः,—बन्धिन्** (पुं०) मछुवा —**बन्धनम्** मछली पकड़ने का कांटा, बंसी,—**बन्ध** (**धि**) **नी** मछलियाँ रखने की टोकरी,—**रङ्कः,—रङ्गः, —रङ्कुकः** रामचिरैया (मछली खाने वाला एक शिकारी पक्षी),—**वेधनम्,—वेधनी** मछली पकड़ने की बंसी,—**सङ्घातः** मछलियों का झुंड,—**मत्स्यण्डिका, मत्स्यण्डी** मोटी या बिना साफ की हुई चीनी - ही ही इयं सीधुपानोद्वेजितस्य मत्स्यण्डिकोपनता—मालवि० ३।

मथ् दे० मन्थ्।

मथ माथ।

मथन (वि०) (स्त्री० **नी**) [मथ्+ल्युट्] 1. बिलोने वाला, मंथन करने वाला 2. चोट पहुँचाने वाला, क्षति देने वाला 3. मारने वाला, नष्ट करने वाला, नाशक—मुग्धे मधुमथनमनुगतमनुसर राधिके—गीत० २—**नः** एक वृक्ष का नाम,—**नम्** 1. मन्थन करना, बिलोना, विक्षुब्ध करना 2. घिसना, रगड़ना 3. क्षति, चोट, नाश। सम०—**अचलः,—पर्वतः** मन्दराचल पहाड़ जिसको रई का डंडा बनाया गया था।

मथिः [मथ्+इ] रई का डंडा।

मथित (भू० क० कृ०) [मथ्+क्त] 1. मथा गया, बिलोया गया, विक्षुब्ध किया गया, खूब हिलाया गया 2. कुचला गया, पीसा गया, चुटकी काटी गई 3. कष्ट-ग्रस्त, दुःखी, अत्याचार पीड़ित 4. वध किया हुआ, नाश किया हुआ 5. स्थानभ्रष्ट (दे० मन्थ्),—**तम्** (बिना पानी डाले) मथा हुआ विशुद्ध मट्ठा।

मथिन् (पुं०) [मथ्+इनि] (कर्तृ० ए० व०—मथाः कर्म० ब० व० मथः) रई का डंडा—मुहुः प्रणुन्नेषु मथां विवर्तनैर्नदत्सु कुम्भेषु मृदङ्गमन्थरम् —कि० ४।१६, नै० २२।४४, 2. वायु 3. उज्ज, 4. पुरुष का लिंग।

मथु (**थू**) **रा** [मथ्+उ (ऊ) रच्+टाप्] यमुना नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर, कृष्ण की जन्मभूमि तथा उसके कारनामों का स्थल, यह भारत की सात पुण्यनगरियों में एक है, (दे० अवन्ति) और आज भी हजारों की संख्या में भक्त लोग दर्शनार्थ यहाँ जाते हैं। कहा जाता है कि इस नगर को शत्रुघ्न ने बसाया था—निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मथुरां मधुराकृतिः—रघु० १५।२८, कलिन्दकन्या मथुरां गताऽपि गङ्गोर्मिसंसक्तजलेव भाति—९।४८, । सम० —**ईशः,—नाथः** कृष्ण का विशेषण।

मद् उत्तमपुरुष सर्वनाम के एक वचन का रूप जो प्रायः समस्त शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त होता है—यथा मदर्थे, 'मेरे लिए' 'मेरी खातिर' 'मच्चित्त' 'मेरे विषय में सोचकर' मद्वचनम्, मत्सन्देशः, मत्प्रियम् आदि।

मद् i (दिवा० पर० माद्यति, मत्त) 1. मस्त होना, नशे में चूर होना—वीक्ष्य मद्यमितरा तु ममाद—शि० १०।२७. 2. पागल होना 3. आनन्द मनाना, खुशी मनाना 4. प्रसन्न या हृष्ट होना। प्रेर० (मादयति) 1. नशे में चूर करना, मदोन्मत्त करना, पागल बना देना 2. (मदयति) उल्लसित करना, प्रसन्न करना, खुश करना—मा० १।३६ 3. प्रणयोन्माद को उत्तेजित करना—मा० ३।६, उद्—, 1. मस्त या नशे में चूर होना (आलं० से भी) 2. पागल होना—मनु० ३। १६१, प्रेर०—नशे में चूर करना, मदोन्मत्त करना

—अद्यापि मे हृदयमुन्मदयन्ति हन्त—भामि० २।५, प्र—, 1. नशे में चूर होना, मस्त होना 2. उपेक्षक होना, लापरवाह या अवधान रहित होना (अधि० के साथ) अतोऽर्थान्न प्रमाद्यन्ति प्रमदासु विपश्चितः मनु० २।२१३ 3. भूलचूक होना, भटक जाना, विचलित होना—यथा स्वाधिकारात्प्रमत्तः—मेघ० १ में, 4. गलती करना, भूल करना राह भूल जाना—भट्टि० ५।८, १७।३९, १८।८, सम्—,1. नशे में चूर चूर होना, 2. हर्षयुक्त होना, प्रसन्न होना।
ii (चुरा० आ० मादयते) प्रसन्न करना, खुश करना।

मदः [मद्+अच्] 1. मादकता, मस्ती, मदोन्मत्तता —मदेनास्पृश्ये—दश०, मदविकाराणां दर्शकः—का० ४५, दे० नी० समस्त पद 2. पागलपन, विक्षिप्तता 3. उग्र प्रणयोन्माद, लालसापूर्ण उत्कण्ठा, गाढाभिलाषा, कामुकता, मैथुनेच्छा—इति मदमदनाभ्यां रागिणः स्पष्टरागान्—शि० १०।९१ 4. मदमत्त हाथी के मस्तक से चूने वाला मद—मदेन भाति कलभः प्रतापेन महीपतिः—चन्द्र० ५।४५, इसी प्रकार दे० मदकल, मदोत्कट, मेघ० २०, रघु० २।७, १२।१०२ 5. प्रेम, इच्छा, उत्कंठा 6. घमण्ड, अहंकार, अभिमान—पंच० १।२४० 7. उल्लास, आनन्दातिरेक 8. खींची हुई शराब 9. मधु, शहद 10. कस्तूरी 11. वीर्य, शुक्र। सम०—अत्ययः,—आतङ्कः सुरापान के परिणामस्वरूप होने वाला विकार (सिरदर्द आदि),—अन्ध (वि०) 1. मद से अन्धा, पीकर बेहोश, तीव्र उत्कण्ठा से पीते हुए—अधरमिव मदान्धा पातुमेषा प्रवृत्ता—विक्रम० ४।१३, 2. अभिमान से अंधा, घमंडी,—अपनयनम् नशा दूर करना,—अम्बरः 1 मदवाला हाथी 2. इन्द्र का हाथी ऐरावत,—अलस (वि०) नशे या जोश से निढाल,—अवस्था 1. पीकर मदहोशी की हालत 2. स्वेच्छाचारिता, कामासक्ति 3. मद चूने की स्थिति —रघु० २।७,—आकुल (वि०) मदोन्मत्त,—आढ्य (वि०) पीकर मस्त, नशे में चूर (ढ्यः) ताड़ का पेड़,—आम्नातः हाथी की पीठ पर बजाया जाने वाला ढोल या नगाड़ा,—आलापिन् (पुं०)कोयल, —आह्वः कस्तूरी,—उत्कट (वि०) 1. नशे में चूर, मद्यपान से उत्तेजित 2. तीव्र प्रणयोन्मत्त, कामुक 3. अभिमानी, घमंडी, दर्पयुक्त 4. मदवाला, मदमस्त रघु० ६।७, (टः) 1. मदवाला हाथी 2. पेंडुकी, (टा) खींची हुई शराब,—उदग्र,—उन्मत्त (वि०) 1. पीकर मस्त, नशे में चूर 2. भयंकर, जोश से भरा हुआ—मदोदग्राः ककुद्मन्तः सरितां कूलमुद्रुजाः—रघु० ४। २२, 3.अभिमानी, घमंडी, अहंकारी,—उद्धत (वि०)जोश से भरा हुआ—कु० ३।३१ 2. घमण्ड से फूला हुआ, —उल्लापिन् (पुं०) कोयल,—कर (वि०) मादक, नशे में चूर करने वाला,—कारिन् (पुं०) मदवाला हाथी,—कल (वि०) मृदुभाषी, अव्यक्तभाषी, अस्पष्टभाषी—रघु० ९।३७, प्रेम की मंदध्वनि उच्चारण करने वाला 3. जोश से भरा हुआ—उत्तर० १।३१, मा० ९।१४ 4. अस्पष्ट परन्तु मधुर—मदकलं कूजितं सारसानाम्—मेघ० ३१, 5. मदवाला, प्रचण्ड, मदोन्मत्त—विक्रम० ४।२४, (—लः) मदवाला हाथी —कोहलः (स्वेच्छा से भ्रमण करने के लिए) मुक्त सांड,—खेल (वि०) प्रणयोन्माद के कारण केलिप्रिय —विक्रम० ४।१६,—गन्धा 1. मादकपेय 2. पटसन, —गमनः भैंसा,—च्युत् (वि०) 1. (हाथी की भांति) मद चुवाने वाला 2. कामुक, स्वेच्छाचारी, पीकर धुत्त 3. आनन्ददायक, उल्लासमय (पुं०) इन्द्र का विशेषण.

—जालम्,—वारि (नपुं०) मदरस, मदवाले हाथी के गण्डस्थल से चूने वाला मद,—ज्वरः घमण्ड या जोश का बुखार—भर्तृ० ३।२३,—द्विपः उन्मत्त हाथी, मदमस्त हाथी,—प्रयोगः,—प्रसेकः,—प्रस्रवणम्—स्रावः, —स्रुतिः (स्त्री०) हाथी के गण्डस्थल से मद का चूना, —मुच् (वि०) 'मद टपकाने वाला' मदोन्मत्त, नशे में चूर—उत्तर० ३।१५,—रक्त (वि०) जोशीला,—रागः 1. कामदेव 2. मुर्गा 3. पीकर धुत्त,—विक्षिप्त (वि०) 1. मदमस्त, मदोन्मत्त 2. कामलालसा से विक्षुब्ध —विह्वल (वि०) 1. घमण्ड या काम लालसा से पागल 2. नशे के कारण निश्चेष्ट,—वृन्दः एक हाथी, —शौण्डकम् जायफल,—सारः बाड़ी,—स्थलम्,—स्थानम् मदिरालय, शराबघर, मधुशाला।

मदन (वि०) (स्त्री—नी) [माद्यति अनेन—मद् करणे ल्युट्] 1. मादक, पागलपन लाने वाला 2. आनन्ददायक, उल्लासमय,—नः 1. कामदेव—व्यापाररोधि मदनस्य निषेवितव्यम्—श० १।२७, हृतमपि निहन्त्येव मदनः—भर्तृ० ३।१८ 2. प्रेम, प्रणयोन्माद, उत्कण्ठा, कामुकता—विनयवारितवृत्तिरतस्तया न विवृतो मदनो न च संवृतः—श० २।११, सतन्त्रिगीतं मदनस्य दीपकम्—ऋतु० १।३, रघु० ५।६३, इसी प्रकार 'मदनातुर' 'मदनपीडित' आदि 3. वसन्त ऋतु 4. मधुमक्खी, भौंरा 5. मोम 6. एक प्रकार का आलिंगन 7. धतूरे का पौधा 8. बकुल का वृक्ष, खैर, —ना,—नी 1. खींची हुई शराब 2. कस्तूरी 3. अतिमुक्त लता (—नी केवल इन दो अर्थों में),—नम् 1. मादक 2. प्रसन्न करने वाला, 3. आनन्ददायक। सम० —अग्रकः एक धान्यविशेष, कोदों,—अङ्कुशः 1. पुरुष का लिंग 2. नाखून या नखक्षत (सम्भोग के समय हुआ),—अन्तकः,—अरिः,—दमनः,—दहनः,—नाशनः, —रिपुः शिव के विशेषण,—अवस्थ (वि०) प्रेमासक्त,

त्साही, तटस्थ—उदासीन 3. जड, मंदबुद्धि, मूढ, अज्ञानी, निर्बल-मस्तिष्क, मन्दोऽप्यमन्दतामेति संसर्गेण विपश्चितः —मालवि० २।८, मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्—रघु० १।३, द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्—कु० ५।७५ 4. धीमा, गहरा, खोखला (ध्वनि आदि) 5. कोमल, धुंधला, मृदु यथा 'मंदस्मितम्' में 6. थोड़ा, अल्प, जरा सा, मन्दोदरी, दे० 'अमन्द' भी 7. दुर्बल, बलहीन, कमजोर यथा 'मंदाग्नि' में 8. दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा 9. मुर्झाया हुआ 10. दुष्ट, दुश्चरित्र 11. शराब की लत वाला,—दः 1. शनिग्रह 2. यम का विशेषण 3. सृष्टि का विघटन 4. एक प्रकार का हाथी—शि० ५।४९, —दम् (अव्य०) 1. धीमे से, क्रमशः, धीरे-धीरे —यातं यच्च नितम्बयोर्गुरुतया मंदं विलासादिव—श० २।१ 2. धीरे २, हल्के २, शान्ति से—मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम्—मेघ० ९ 3. धीमे-धीमे, मंद गति से, मंद स्वर से, हल्केपन से 4. मद्धमस्वर में, गहराई के साथ (मन्दी कृ ढीलढाल करना,—मन्दीकृतो वेगः—श० १, मन्दी भू ढीला होना, कम ताकतवर होना)। सम०—अक्ष (वि०) कमजोर आँखों वाला (—क्षम्) लज्जा का भाव, लज्जाशीलता, शर्मीलापन, —अग्नि (वि०) दुर्बल पाचन शक्ति वाला, (ग्निः) अग्निमांद्य, पाचनशक्ति की मंदता,—अनिलः मृदु पवन, —असु (वि०) दुर्बल श्वास वाला,—आक्रान्ता एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट १,—आत्मन् मन्दबुद्धि वाला, मूर्ख, अज्ञानी—मन्दात्मानुजिघृक्षया मल्लि०, —आदर (वि०) 1. कम आदर प्रदर्शित करने वाला, अवज्ञा करने वाला, लापरवाह 2. असावधान,—उत्साह (वि०) हताश, उत्साहहीन—मन्दोत्साहः कृतोऽस्मि मृगयापवादिना माधव्येन—श० २,—उदरी रावण की पत्नी का नाम, पाँच सती स्त्रियों में से एक—तु० अहल्या,—उष्ण (वि०) कोष्ण, गुनगुना (—ष्णम्) कोष्णता, गुनगुनापन,—औत्सुक्य (वि०) धीमी उत्सुकता वाला, पराङ्मुख, रुचिशून्य—मन्दौत्सुक्योऽस्मि नगरगमनं प्रति—श० १,—कर्ण (वि०) कुछ बहरा, सूक्ति—बधिरान्मन्दकर्णः श्रेयान्, 'अभाव की अपेक्षा कुछ होना अच्छा है'—कान्तिः चन्द्रमा, —कारिन् (वि०) धीमे २ काम करने वाला,—गः शनि,—गति,—गामिन् (वि०) शनैः २ चलने वाला, धीमी गति वाला,—चेतस् (वि०) 1. मन्दबुद्धि, मूर्ख, मूढ 2. अन्यमनस्क 3. मूर्छालु, अचेत,—छाय (वि०) धुंधला, मद्धम, आभाशून्य—मेघ० ८०,—जननी शनि की माता,—धी,—प्रज्ञ,—मति,—मेधस् मंद बुद्धि, मूर्ख, मूढ़, भागिन्,—भाग्य (वि०) भाग्यहीन, दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा, दयनीय, बेचारा,—रश्मि (वि०) धुंधला,—वीर्यः दुर्बल,—वृष्टिः (स्त्री०) हल्की बारिश, —स्मितः,—हासः,—हास्यम् हल्की हंसी, मंद मुस्कान।

मन्दटः [मन्द+अट्+अच् शक० पररूपम्] मूंगे का वृक्ष।

मन्दनम् [मन्द्+ल्युट्] प्रशंसा, स्तुति।

मन्दयन्ती [मन्द्+णिच्+शतृ+ङीप्] दुर्गा का विशेषण।

मन्दर (वि०) [मन्द्+अर] 1. धीमा, विलम्बकारी, सुस्त 2. मोटा, सघन, दृढ़ 3. विस्तृत, स्थूल,—रः 1.एक पहाड़ का नाम (इसको समुद्रमंथन के समय देवासुरों ने मथानी—रई का डंडा—बनाया था, और तब सुधा का मंथन किया था)—पृषतैर्मन्दरोद्भूतैः क्षीरोर्मय इवाच्युतम्—रघु० ४।२७, अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए—गीत० १ शोभैव मन्दरक्षुब्धक्षुभितांभोधिवर्णना—शि० २।१०७, कि० ५।८० 2. मोतियों (आठ या सोलह लड़ियों का) का हार 3. स्वर्ग 4. दर्पण 5. इन्द्र के नन्दनकानन में स्थित पाँच वृक्षों में से एक—मन्दार वृक्ष, दे० मंदार। सम०—आवासा, —वासिनी दुर्गा का विशेषण।

मन्दसानः [मन्द+सानच्] 1. अग्नि 2. जीवन 3. निद्रा ('मन्दसानु' भी लिखा जाता है)।

मन्दाकः [मन्द+आक] धारा, नदी।

मन्दाकिनी [मन्दमकति—अक्+णिनि+ङीप्] 1. गंगा नदी—मन्दाकिनी भाति नगोपकण्ठे मुक्तावली कण्ठगतेव भूमेः—रघु० १३।४८, कु० १।२९ 2. स्वर्गंगा, वियद्गंगा (मंदाकिनी वियद्गङ्गा)—मन्दाकिन्याः सलिलशिशिरैः सेव्यमाना मरुद्भिः—मेघ० ६७।

मन्दायते (ना० धा० आ०) 1. शनैः शनैः चलना, विलंब करके चलना, पिछड़ना, मटरगश्त करना, देर लगाना —मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः—मेघ० ४०, विक्रम० ३।१५ 2. दुर्बल होना, कृश होना, धुंधला होना—रघु० ४।४९।

मन्दारः [मन्द्+आरक्] 1. मूंगे का पेड़, इंद्र के नन्दनकाननस्थित पाँच वृक्षों में से एक—हस्तप्राप्यस्तवकनमितो बालमन्दारवृक्षः—मेघ ७५, ६७, विक्रम० ४।३५ 2. आक का पौधा, मदार वृक्ष 3. धतूरे का पौधा 4. स्वर्ग 5. हाथी,—रम् मूंगे के वृक्ष का फूल—कु० ५।८०, रघु० ६।२३। सम०—माला मंदार के फूलों की माला—मंदारमाला हरिणा पिनद्धा—श० ७।२, —षष्ठी माघसुदी छठ।

मन्दारकः,मन्दारवः,मन्दारुः [मन्दार+कन्, मन्द+आ+रू+अच्, मन्द्+आरु] मूंगे का वृक्ष दे० 'मंदार'।

मन्दिमन् (पुं०) [मन्द+इमनिच्] 1. धीमापन, विलंबकारिता 2. सुस्ती, जड़ता, मूर्खता।

मन्दिरम् [मन्द्यतेऽत्र मन्द्+किरच्] 1. रहने का स्थान, आवास, महल, भवन—कु० ७।५५, भट्टि० ८।९६,

—गीत० १० 3. मीठा मादक, पेय, शराब, खींची हुई शराब—विनयन्ते स्म तद्योधा मधुभिर्विजयश्रमम् —रघु० ४।६५, ऋतु० १।३ 4. पानी 5. शक्कर 6. मिठास,—पुं० (धुः) 1. वसन्त ऋतु—क्व नु हृदयङ्गमः सखा कुसुमायोजितकार्मुको मधुः—कु० ४।२४-२५, ३।१०, ३०, चैत्र का महीना—भास्करस्य मधुमाधवाविव—रघु० ११।७, मासे मधौ मधुरकोकिलभृङ्गनादे रामा हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम् —ऋतु० ६।२४ 3. एक राक्षस का नाम जिसे विष्णु ने मारा था 4. एक और राक्षस जिसके पिता का नाम लवण था तथा जिसे शत्रुघ्न ने मारा था 5. अशोक वृक्ष 6. कार्तवीर्य राजा का नाम। सम० —अष्ठीला शहद का लौंदा, जमा हुआ शहद, —आधारः मोम, —आपात (वि०) पहली बार शहद चखने वाला—मनु० ११।९,—आम्रः एक प्रकार का आम का वृक्ष,—आसवः (शहद से) खींची हुई मीठी शराब,—आस्वाद (वि०) शहद का स्वाद चखने वाला, —आहुतिः (स्त्री०) यज्ञ में मिष्टान्न की आहुति देना —उच्छिष्टम्,—उत्थम्,—उत्थितम् मधुमक्खियों का मोम,—उत्सवः वसन्तोत्सव,—उदकम् 'मधुजल', शहद मिला हुआ पानी, जलमधु —उद्यानम् वसन्तोद्यान, —उपघ्नम् 'मधु का आवास' मथुरा का नामान्तर —रघु० १५।१५,—कण्ठः कोयल,—करः 1. भौंरा —कुटजे खलु तेनेहा तेने हा मधुकरेण कथम् —भामि० १।१०, रघु० ९।३०, मेघ० ३५।४७ 2. प्रेमी, कामुक, °गणः, °श्रेणिः (स्त्री०) मक्खियों का झुंड, —कर्कटी 1. मीठा नींबू, चकोतरा 2. एक प्रकार का छुहारा, —काननम्,—वनम् मधुराक्षस का वन, —कारः,—कारिन् (पुं०) मधुमक्खी —कुक्कुटिका, —कुक्कुटी एक प्रकार का नींबू का पेड़,—कुल्या मधु की नदी, —कृत् (पुं०) मधुमक्खी,—केशटः मधुमक्खी,—कोशः,—षः मधुमक्खियों का छत्ता, —क्रमः शहद की मक्खियों का छत्ता, (ब० व०) मदिरा पीने की होड़, आपानक,—क्षीरः, —क्षीरकः खजूर का पेड़, —गायनः कोयल,—ग्रहः मधु का तर्पण,—घोषः कोयल, —जम् मोम,—जा 1. मिसरी 2. पृथ्वी,—जम्बीरः एक प्रकार का नींबू —जित्, —द्विष्,—निषूदन, —निहन्तृ (पुं०), —मथः, —मथनः,—रिपुः,—शत्रुः, —सूदनः, विष्णु के विशेषण—इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता,—गीत० ५, रघु० ९।४८, शि० १५।१, —तृणः—णम् गन्ना, ईख,—त्रयम् तीन मीठे पदार्थ अर्थात् शक्कर, शहद और घी,—दीपः कामदेव, —दूतः आम का पेड़, —दोहः मधु या मिठास खींचना,—द्रुः 1. भौंरा 2. कामुक,—द्रवः लाल फूलों का एक वृक्ष, —द्रुमः आम का पेड़,—धातुः एक प्रकार का पीला माक्षिक,—धारा शहद की धार,—धूलिः राब, गुड़, —नालिकेरकः एक प्रकार का नारियल, —नेतृ (पुं०) भौंरा, —पः मधुकर, या पियक्कड़—राजप्रियाः कर्णविण्यो रमन्ते मधुपैः. सह=भामि० १।१२६, १।३३, (यहां दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं),—पटलम् शहद की मक्खियों का छत्ता,—पतिः कृष्ण का विशेषण,—पर्कः 'शहद का मिश्रण' एक सम्मानयुक्त उपहार जो किसी अतिथि को या कन्या के पिता के द्वार पर आ जाने पर दूल्हे को अर्पित किया जाता है, इसमें निम्नांकित पाँच पदार्थ डाले जाते हैं—दधि सर्पिर्जलं क्षौद्रं सिता चैतैश्च पंचभिः, प्रोच्यते मधुपर्कः, समांसो मधुपर्कः —उत्तर ०४, असिस्वदद्यन्मधुपर्कमर्पितं स तद् व्यधासर्कमुदर्कदर्शिनाम्, यदेष पास्यन्मधु भीमजाधरंमिषेण पुण्याहविधिं तदा कृतम्—नै० १६।१३, मनु० ३।११९ तथा आगे,—पर्क्य (वि०) मधुपर्क का अधिकारी, —पर्णिका,—पर्णी नील का पौधा,—पाथिन् (पुं०) भौंरा,—पुरम्,—री, मथुरा का विशेषण—संप्रत्युज्झितवासनं मधुपुरीमध्ये हरिः सेव्यते—भामि० ४।४४,—पुष्पः 1. अशोक वृक्ष 2. मौलसिरी का वृक्ष 3. दन्ती वृक्ष 4. सिरस का पेड़, —प्रणयः शराब की लत,—प्रमेहः मधुमेह, शर्करायुक्त मूत्र,—प्राशनम् शुद्धीकरण के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें नवजात शिशु को मधु चटाया जाता है,—प्रियः बलराम का विशेषण,—फलः एक प्रकार का नारियल,—फलिका एक प्रकार का छुहारा,—बहुला माधवी लता,—बी (वी) जः अनार का वृक्ष,—बी (वी) जपूरः एक प्रकार की नींबू, चकोतरा, —मक्षः,—क्षा,—मक्षिका मधुमक्खी, —मज्जनः अखरोट का पेड़,—मदः शराब का नशा —मल्लिः, —ल्ली (स्त्री०) मालती लता,—माधवी 1. एक प्रकार का मादक पेय 2. कोई भी वसंत ऋतु का फूल,—माध्वीकम् एक प्रकार की मादक मदिरा, —मारकः भौंरा,—मेहः=मधुप्रमेह दे०,—यष्टिः (स्त्री०) गन्ना, ईख, मुलैठी, —रसः 1. ताड़ का वृक्ष (जिससे ताड़ी बनती है) 2. गन्ना, ईख 3. मिठास, (सा) 1. अंगूरों का गुच्छा 2. अंगूरों की बेल,—लग्नः एक वृक्ष का नाम, —लिह्, —लेह,—लेहिन् (पुं०), —लोलुपः भौंरा इसी प्रकार 'मधुनो लेहः', —वनम् वह जंगल जहां मधु नामक राक्षस रहा करता था जिसको मारकर शत्रुघ्न ने मथुरा नगरी बसाई थी, (नः) कोयल, —वाराः (पुं०, ब० व०) बार २ पीने वाले, शराब के जाम पर जाम चढ़ाने वाले, डटकर शराब पीने वाले —जनितं बहुमताः प्रमदानामोष्ठयावकनुदो मधुवाराः—कि० ९।५९, क्षालितं नु शमितं नु वधूनां द्रावितं नु हृदयं मधुवारैः शि० १०।१४, (कभी कभी यह शब्द एक वचनांत भी होता है) दे०

कि० ८।५७,—व्रतः भौंरा—मार्मिकः को मरन्दानामन्तरेण मधुव्रतम्—भामि० १।११७, तस्मिन्नद्य मधुव्रते विधिवशान्माध्वीकमाकांक्षति ४६,—शर्करा शहद से तैयार की हुई शक्कर,—शाखः एक प्रकार का (महुए का) पेड़,—शिष्टम्,—शेषम् मोम,—सखः,—सहायः,—सारथिः,—सुहृद् कामदेव,—सिक्थकः एक प्रकार का विष,—सूदनः भौंरा,—स्थानम् मधुमक्खियों का छत्ता,—स्वरः कोयल,—हन् (पुं०) 1. शहद को नष्ट करने वाला या एकत्र करने वाला 2. एक प्रकार का शिकारी पक्षी 3. ज्योतिषी, भविष्यवक्ता 4. विष्णु का नामान्तर।

मधुकः [मधु+कन्, कै+क वा] 1. एक वृक्ष (=मधूक, महुआ) का नाम 2. अशोक वृक्ष 3. एक प्रकार का पक्षी,—कम् 1. जस्ता 2. मुलैठी।

मधुर (वि०) [मधु माधुर्यं राति रा+क मधु अस्त्यर्थे र वा] 1. मीठा 2. शहदयुक्त, मधुमय 3. सुखद, मनोहर, आकर्षक, रुचिकर—अहो मधुरमासां दर्शनम्—श० १, कु० ५।९, उत्तर० १।२० 4. सुरीला (स्वर),—रः लाल रंग का गन्ना, ईख 2. चावल 3. राब, गुड़ 4. एक प्रकार का आम,—रम् 1. माधुर्य 2. मधुरपेय, शर्बत 3. विष 4. जस्ता,—रम् (अव्य०) मिठास के साथ सुहावने ढंग से, रोचकता के साथ। सम०—अक्षर (वि०) मधुर ध्वनि वाला, मिष्टभाषी, रसीला,—आलाप (वि०) मधुर शब्दों का उच्चारण करने वाला (पः) मधुर या सुरीले स्वर—मधुरालापनिसर्गपण्डितानाम्—कु०४।१६, (—पा) मैना, मदनसारिका,—कण्टकः एक प्रकार की मछली,—जम्बीरम् नींबू की एक जाति,—त्रयम्=मधुत्रयम् दे०,—फलः एक प्रकार का पेंवदी बेर,—भाषिन्,—वाच् (वि०) मधुरभाषी,—स्रवा एक प्रकार का छुहारे का पेड़,—स्वर,—स्वन (वि०) मधुर स्वर से अलापने वाला, मधुरस्वर वाला।

मधुरता,—त्वम् [मधुर+तल्+टाप्, त्व वा] माधुर्य, सुहावनापन, रोचकता।

मधुरिमन् (पुं०) [मधुर+इमनिच्] माधुर्य, रोचकता मधुरिमातिशयेन वचोऽमृतम्—भामि० १।११३।

मधुलिका [मधुल+कन्+टाप्, इत्वम्] काली सरसों, राई।

मधूकः [मह्+ऊक नि० हस्य धः] 1. भौंरा 2. एक वृक्ष का नाम—महुआ,—कम् मधुक (महुए) वृक्ष का फूल—दूर्वावता पाण्डुमधूकदाम्ना—कु० ७।१४, स्निग्धो ॥धूकच्छविर्गण्डः—गीत० १०, रघु० ६।२५।

मधूलः [मधु+लाति ला+क पृषो०] एक प्रकार का वृक्ष,—ली आम का पेड़।

मधूलिका [मधूल+कन्+टाप् इत्वम्] एक प्रकार का वृक्ष।

मध्य (वि०) [मन्+यत्, नस्य धः, तारा०] 1. बीच का, केन्द्रीय मध्यवर्ती, केन्द्रवर्ती—मेघ० ४६, मनु० २।२१ 2. अन्तर्वर्ती, मध्यवर्ती 3. बीच के दर्जे का, मध्यक, दर्मियाने कदका, बीच का—प्रारम्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः—भर्तृ० २।२७ 4. तटस्थ, निष्पक्ष 5. न्याय्य, यथार्थ 6. (ज्यो० में) मध्यभाग,—ध्यः,—ध्यम् 1. मध्य, केन्द्र, मध्य या केन्द्रीय भाग—अह्नः मध्यम् दोपहर, दिन का मध्य—सहस्रदीधितिरलङ्करोति मध्यमह्नः—मा० १, 'सूर्य शिरोबिन्दु पर है। अर्थात् 'ठीक सिर के ऊपर' है, व्योममध्ये—विक्रम० २।१ 2. शरीर का मध्यभाग, कमर—मध्ये क्षामा—मेघ० ८२, वेदिविलग्नमध्या—कु० १।३९ विशालवक्षास्तनुवृत्तमध्यः—रघु० ६।३२ 3. पेट, उदर—मध्यन··· वलित्रयं चारु बभार बाला—कु० १।३९ 4. किसी वस्तु का भीतरी भाग 5. बीच की स्थिति या दशा 6. घोड़े की कोख 7. संगीत में मध्यवर्ती सप्तक 8. किसी श्रेणी की मध्यवर्ती राशि,—ध्या बीच की अंगुली,—ध्यम् दस अरब की संख्या ('मध्य' के कर्म०, करण० अपा० और अधि० के रूप क्रि० वि० की भांति प्रयुक्त होते हैं) (क) मध्यम् में, के बीच में (ख) मध्येन में से, बीच से (ग) मध्यात् में से, के बीच (संब० के साथ) से—तेषां मध्यात् काकः प्रोवाच—पंच० १ (घ) मध्ये 1. बीच में, में, मध्य में रघु० १२।२९ 2. में, के अन्दर, के भीतर, बहुधा (जब कि अव्ययीभाव समास के आदि पद के रूप में प्रयोग हो) उदा० —मध्येगङ्गम् 'गंगा में,' मध्येजठरम् 'पेट में'—भामि० १।६१, मध्येनगरम् 'नगर के भीतर' मध्येनदि 'नदी के बीच में' मध्येपृष्ठम् 'पीठ पर' मध्येभक्तम्, भोजन करने के पश्चात् फिर दोबारा भोजन करने से पूर्व बीच में ली जाने वाली औषधि, मध्येरणम् 'युद्ध में'—भामि० १।१२८, मध्येसभ 'सभा में या सभा के सामने'—नै० ६।७६, मध्येसमुद्रम् 'समुद्र के बीच में' शि० ३।३३)। सम०—अङ्गुलिः,—ली (स्त्री०) बीच की अंगुली,—अह्नः ('अहन्' के स्थान में) मध्याह्न, दोपहर, °कृत्यम्, °क्रिया दोपहर के समय की जाने वाली क्रिया, °कालः °वेलाः °समयः दोपहर का समय, °स्नानम् दोपहर का नहाना,—कर्णः अर्धव्यास, —ग (वि०) बीच में जाने वाला—गत (वि०) केन्द्रीय, मध्यवर्ती, बीच में होने वाला,—गन्धः आम का वृक्ष,—ग्रहणम् ग्रहण का मध्य,—दिनम् ('मध्यंदिनम्' भी) 1. मध्य दिन, दोपहर 2. दोपहर का उपहार,—दीपकम् दीपक अलंकार का एक भेद, इसमें सामान्य विशेषण जो समस्त चित्रण

पर प्रकाश डालता है बीच में स्थापित किया जाता है, उदा०—भट्टि० १०।२४,—देशः 1. मध्यवर्ती स्थान या प्रदेश, किसी चीज़ का मध्यवर्ती भाग 2. कमर 3. पेट 4. याम्योत्तर रेखा 5. केन्द्रीय प्रदेश, हिमालय तथा विंध्य पर्वत के बीच का भाग – हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि, प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः स कीर्तितः—मनु० २।२१,—देहः शरीर का प्रमुख भाग, पेट,—पदम् मध्यवर्ती पद, °लोपिन् दे० मध्यमपदलोपिन्,—पातः सहधर्मचारिता, समागम, —भागः 1. मध्य भाग 2. कमर,—भावः बीच की स्थिति, सामान्य स्थिति,—यवः पीली सरसों के छः दानों के बराबर का एक तोल,—रात्रः, —रात्रिः (स्त्री०) आधी रात, रात का बीच,—रेखा केन्द्रीय या प्रथमयाम्योत्तर रेखा,—लोकः तीनों लोक के बीच का लोक अर्थात् मर्त्यलोक या संसार, °ईशः, ईश्वरः राजा,—वयस् अधेड़ उम्र-वाला,—र्वातन् (वि०) बीच में स्थित, केन्द्रवर्ती (पुं०) विवाचक, मध्यस्थ,—वृत्तम् नाभि,—सूत्रम्= मध्यरेखा दे०,—स्थ (वि०) 1. बीच में स्थित या विद्यमान, केन्द्रीय 2. मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3. बीच का 4. बीच-बचाव करने वाला, दो दलों के बीच मध्यस्थता करने वाला 5. निष्पक्ष, तटस्थ 6. उदासीन, लगावरहित—श० ५, (स्थः) निर्णायक, विवाचक, मध्यस्थ 2. शिव का विशेषण,—स्थलम् 1. मध्य या केन्द्र 2. मध्य स्थान या प्रदेश 3. कमर,—स्थानम् 1. बीच का पड़ाव 2. बीच का स्थान अर्थात् वायु 3. तटस्थ प्रदेश, —स्थित (वि०) केन्द्रीय, अन्तर्वर्ती।

मध्यतः (अव्य०) [मध्य+तसिल्] 1. बीच से, मध्य से, में से 2. में।

मध्यम (वि०) [मध्ये भवः—मध्य+म] बीच में स्थित या वर्तमान, बीच का, केन्द्रीय—पितुः पदं मध्यममुत्पतन्ती—विक्रम० १।१९, इसी प्रकार 'मध्यमलोकपालः' मध्यमपदम् मध्यमरेखा 2. मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3. बीच का, बीच की स्थिति या विशेषता का, बीच के दर्जे का यथा 'उत्तमाधममध्यम' में 4. बीच का, औसत दर्जे का—तेन मध्यमशक्तीनि मित्राणि स्थापितान्यतः—रघु० १७।५८ 5. बीच के क़द का 6. न सबसे छोटा न सबसे बड़ा, (भाई) बीच में उत्पन्न —प्रणमति पितरौ वां मध्यमः पाण्डवोऽयम्—वेणी० ५।२६ 7. निष्पक्ष, तटस्थ,—मः 1. संगीत में पंचम स्वर 2. विशेष संगीत पद्धति 3. मध्यवर्ती देश, दे० मध्यदेश 4. (व्या० में) मध्यम पुरुष 5. तटस्थ प्रभु—धर्मोत्तरं मध्यममाश्रयन्ते—रघु० १३।७ 6. प्रान्त का राज्यपाल, —मा 1. बीच की अंगुली 2. विवाह योग्य कन्या, वयस्क कन्या 3. कमल का बीजकोष 4. काव्यशास्त्रों में वर्णित एक नायिका, अपनी जवानी की उम्र के बीच पहुँची हुई स्त्री, तु० सा० द० १००, —मम् कमर। सम०—अङ्गुलिः बीच की अंगुली, —आहरणम् (बीज० में) समीकरण म बीच की राशि का निरसन,—कक्षा बीच का आंगन, –जात (वि०) दो के बीच में उत्पन्न, मझला,—पदम् (समास के) बीच का पद, °लोपिन् (पुं०) तत्पुरुष समास का एक अवांतर भेद जिसमें कि रचना के बीच का शब्द लुप्त कर दिया जाता है, इसका सामान्य उदाहरण 'शाकपार्थिवः' है, इसका विग्रह है—शाकप्रियः पार्थिवः, यहाँ बीच के शब्द 'प्रिय' का लोप कर दिया गया, इसी प्रकार छायातरुः व गुडधानाः आदि शब्द हैं, – पाण्डवः अर्जुन का विशेषण,—पुरुषः (व्या० में) मध्यमपुरुष—वह पुरुष जिसको सम्बोधित किया जाय,—भृतकः किसान, खेतिहर (जो अपने लिए और अपने स्वामी के लिए खेती का काम करता है), —रात्रः आधी रात,—लोकः बीच का संसार, भूलोक, °पालः राजा—रघु० २।१६,—वयस् (नपुं०) प्रौढ़ावस्था, बीच की उम्र,—वयस्क (वि०) प्रौढ़, बीच की उम्र का,—संग्रहः बीच के दर्जे का गुप्तप्रेम, जैसे कि गहने कपड़े, पुष्प आदि उपहार भेज कर परस्त्री को फुसलाना, व्यास ने इसकी निम्नांकित परिभाषा की है—प्रेषणं गन्धमाल्यानां धूपभूषणवाससाम्, प्रलोभनं चान्नपानैर्मध्यमः संग्रहः स्मृतः,—साहसः तीन प्रकार के दण्डभेदों में द्वितीय प्रकार—मनु० ८।१३८, (सः —सम्) मध्यवर्ग के प्रति अपराध या अत्याचार,—स्थ (वि०) बीच में होने वाला।

मध्यमक (वि०) (स्त्री०—मिका) [मध्यम+कन्] बीच का, बिलकुल बीचोंबीच का।

मध्यमिका [मध्यमक+टाप्, इत्वम्] वयस्क कन्या, जो विवाह योग्य उम्र की हो गई हो।

मध्ये दे० 'मध्य' के अन्तर्गत।

मध्वः एक प्रसिद्ध आचार्य तथा शास्त्रप्रणेता, वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक तथा वेदान्तसूत्रों के भाष्यकर्ता।

मध्वकः [मधु+अक्+अच्] भौंरा।

मध्विजा [मधु ईजते प्राप्नोति—मधु+ईज्+क+टाप्, पृषो० ह्रस्वः] कोई भी मादक पेय, खींची हुई शराब।

मन् i (भ्वा० पर० मनति) 1. घमण्ड करना 2. पूजा करना ii (चुरा० आ० मानयते) घमण्डी होना, iii (दिवा० तना० आ० मन्यते, मनुते, मत) 1. सोचना, विश्वास करना, कल्पना करना, चिन्तन करना, उत्प्रेक्षा करना, विचारना—अङ्केऽपि शशाङ्के जलनिधेः पङ्के परे मेनिरे—सुभा०, वत्स मन्ये कुमारेणान्येन जृम्भकास्त्रमामन्त्रितम्—उत्तर० ५, कथं भवान्मन्यते 'आपकी क्या सम्मति है' 2. ख़याल करना,

आदर करना, मानना, देखना, समझना, मान लेना —समीभूता दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनुते—भर्तृ० ३।८४, अमंस्तचानेन परार्ध्यजन्मना स्थितेरभेत्ता स्थितिमन्तमन्वयम्—रघु० ३।२७, १।३२, ६।८४, भग० २।२६, ३५, भट्टि० ९।११७, स्तनविनिहितमपि हारमुदारं सा मनुते कृशतनुरिव भारम्—गीत० ४ 3. सम्मान करना, आदर करना, मान करना, मूल्यवान् समझना, बड़ा मानना, वरेण्य समझना—यस्यानुषङ्गिण इमे भुवनाधिपत्य भोगादयः कृपणलोकमता भवन्ति —भर्तृ० ३।७६ 4. जानना, समझना, प्रत्यक्ष करना, पर्यवेक्षण करना, लिहाज करना—मत्वा देवं धनपति-सखं यत्र साक्षाद्वसन्तम्—मेघ० ७३ 5. स्वीकृति देना, हामी भरना, अमल करना—तन्मन्यस्व मम वचनम्—मृच्छ० ८ 6. सोचना, विचार विमर्श करना 7. इरादा करना, कामना करना, आशा करना 8. मन लगाना, 'मन्' धातु के अर्थ उस शब्द के अनुसार जिसके साथ इसका प्रयोग होता है, विविध प्रकार से बदलते रहते हैं—उदा० **बहु मन्** बहुत मानना, बड़ा समझना, बहुत मूल्य आंकना, वरेण्य समझना, पूज्य मानना —बहु मनुते ननु ते तनुसंगत-सवनचलितमपि रेणुम्—गीत० ५, 'बहु' के अन्तर्गत भी दे०; **लघु मन्** तुच्छ समझना, घृणा करना, अपमान करना—श० ७।१; **अन्यथा मन्** और तरह सोचना, संदेह करना, **साधु मन्** भला सोचना, अनुमोदन करना, संतोषजनक समझना, श० १।२, **असाधु मन्** नापसंद करना, **तृणाय मन्** या **तृणवत् मन्** तिनके जैसा समझना, हलका मूल्य लगाना, तुच्छ समझना —हरिमप्यमंसत तृणाय—शि० १५।६१, **न मन्** अवज्ञा करना, अवहेलना करना, प्रेर० (मानयति-ते) सम्मान करना, श्रद्धा दिखाना, आदर करना, अभि-वादन करना, मूल्यवान् समझना—मान्यान्मानय —भर्तृ० २।७७, इच्छा० (मीमांसते) 1. विचार विमर्श करना, परीक्षण करना, अन्वेषण करना, पूछताछ करना 2. संदेह करना, पूछताछ के लिए बुलाना, (अधि० के साथ), **अनु**—स्वीकृति देना, हामी भरना, अनुमोदन करना, स्वीकार करना, अनुमति देना, अनुज्ञा देना, मंजूरी देना—राजन्यान्स्वपुरनि-वृत्तयेऽनुमेने—रघु० ४।८७, १४।२०, तत्र नाहमनु-मन्तुमुत्सहे मोघवृत्ति कलभस्य चेष्टितम्—रघु० ११।३९, कु० १।५९, ३।६०, ५।६८, भर्तृ० ३।२२, रघु० १६।८५, प्रेर०—छुट्टी मांगना, अनुमति मांगना, स्वीकृति मांगना—अनुमान्यतां महाराजः—विक्रम० २, **अभि**—, 1. कामना करना, इच्छा करना, लालायित होना —मनु० ९०।९५ 2. अनुमोदन करना, हामी भरना 3. सोचना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना, मानना, **अव**—, घृणा करना, हेय समझना, अवज्ञा करना, नीच समझना, तुच्छ समझना—चतुर्दिगीशानवमत्य मानिनी—कु० ५।५३, मनु० ४।१३५, विक्रम० २।११ **प्रति**—, सोचना, विचारना—प्रेर० 1. सम्मान करना, सम्मानित समझना, आदर करना 2. अनुमोदन करना, प्रशंसा करना 3. अनुज्ञा देना, अनुमति देना, **वि**—, (प्रेर०) अनादर करना, तुच्छ समझना, अवज्ञा करना, नीच समझना—स्त्रीभिर्विमानितानां कापुरुषाणां विव-र्धते मदनः—मृच्छ० ८।९, **सम्**—, 1. सहमत होना, एकमत होना, एक मन का होना 2. हामी भरना, स्वीकृति देना, अनुमोदन करना, पसंद करना 3. सोचना, खयाल करना, मानना 4. स्वीकृति देना, अधिकार देना 5. मान करना, सम्मान करना, महत्त्वपूर्ण समझना, —कच्चिदग्निमिवानाय्यं काले संमन्यसेऽतिथिम् —भट्टि० ६।६५, सममंस्त बन्धून् १।२ 6. अनुज्ञा देना, अनुमति देना (प्रेर०) सम्मान करना, आदर करना, प्रतिष्ठा करना।

मननम् [मन्+ल्युट्] 1. सोचना, विचार विमर्श करना, गहनचिन्तन करना, अवधारणा करना—मननान्मुनि-रेवासि—हरि० 2. प्रज्ञा, समझ 3. तर्कसंगत अनुमान 4. अटकल, अंदाजा।

मनस् (नपुं०) [मन्यतेऽनेन मन् करणे असुन्] 1. मन, हृदय, समझ, प्रत्यक्षज्ञान, प्रज्ञा, जैसा कि सुमनस्, दुर्मनस् आदि में 2. (दर्शन० में) संज्ञान और प्रत्यक्ष-ज्ञान का आन्तरिक अंग या मन, वह उपकरण जिसके द्वारा ज्ञेय पदार्थ आत्मा को प्रभावित करते हैं, (न्या० द० में मन एक द्रव्य या पदार्थ माना गया है जो आत्मा से सर्वथा भिन्न है)—तदेव सुखदुःखाद्युपलब्धिसाधन-मिन्द्रियं प्रतिजीवं भिन्नमणु नित्यं च—त० कौ० 3. चेतना, निर्णय या विवेचन की शक्ति 4. सोच, विचार, उत्प्रेक्षा, कल्पना, प्रत्यय, पश्यन्नदूरान्मनसाप्य-धृष्यम्—कु० ३।५१, रघु० २।२७, कायेन वाचा मनसाऽपि शश्वत्—५।५ 5. योजना, प्रयोजन, अभि-प्राय 6. संकल्प, कामना, इच्छा, रुचि; इस अर्थ में 'मनस्' शब्द का प्रयोग बहुधा धातु के तुमुन्नंत रूप के साथ (तुम् के अन्तिम 'म्' का लोप करके) होता है, और विशेषण शब्द बनते हैं—अयं जनः प्रष्टुमना-स्तपोनिधे—कु० ५।४०, तु० काम 7. विचारविमर्श 8. स्वभाव, प्रकृति, मिजाज 9. तेज, ओज, सत्त्व 10. मानस नामक सरोवर (**मनसा गम्** सोचना, चिन्तन करना, याद करना—कु० २।६३, **मनः कृ** मन को स्थिर करना, विचारों को निर्दिष्ट करना, (संप्र० या अधि० के साथ), **मनः बन्ध्** मन लगाना, स्नेह हो जाना —अभिलाषे मनो बबन्धान्यरसान् विलंघ्य सा—रघु० ३।४, **मनः समाधा** अपने आपको स्वस्थ करना, मनसि-

उद्भू मन को पार करना, मनसि कृ सोचना, ध्यान रखना, दृढ़ संकल्प करना, निर्धारण करना, मन में रखना) । सम०—अधिनाथः प्रेमी, पति, —अनवस्थानम् अनवधानता,—अनुग् (वि०) मनो नुकूल, रुचिकर,—उपहारिन् (वि०) हृदयहारी, —अभिनिवेशः खूब मन लगाना, प्रयोजन की दृढ़ता, —अभिराम (वि०) मन के लिए सुखद, हृदय को तृप्त करने वाला—रघु० ११३९,—अभिलाषः मन की लालसा या इच्छा,—आप (वि०) हृदयहारी, आकर्षक, सुहावना,—कान्त (वि०) (मनस्कान्त या मनः, कान्त) मन का प्रिय, सुहावना. रुचिकर,—कारः पूर्ण प्रत्यक्ष ज्ञान (सुख या दुःख का) पूरी चेतना,—क्षेपः मन की उचाट, मानसिक अव्यवस्था,—गत (वि०) मन में विद्यमान, हृदय में छिपा हुआ, आन्तरिक, अन्दरूनी, गुप्त,—नैयं न वक्ष्यति मनोगतमाधिहेतुम् —०३।१२ 2. मन पर प्रभाव डालने वाला, वांछित (तम्) 1. कामना, चाह—मनोगतं सा न शशाक शंसितुम्—कु० ५।५१ 2. विचार, चिन्तन, भाव, सम्मति,—गतिः (स्त्री०) हृदय की इच्छा,—गवी कामना, चाह,—गुप्ता मैनसिल,—ग्रहणम् मन को हराना,—ग्राहिन् (वि०) मन को हराने वाला या आकृष्ट करने वाला,—ज,—जन्मन् (वि०) मनोजात, (पुं०) कामदेव,—जव (वि०) विचार की भांति फुर्तीला, आशुगामी 2. चिन्तन और विचारण में तेज, 3. पैतृक, पितृ तुल्य संबन्ध रखने वाला—जवस् (वि०) पिता के समान, पितृतुल्य,—जात (वि०) मन में उत्पन्न, मन में उदित या पैदा हुआ,—जिघ्र (वि०) मन से सूंघने वाला अर्थात् दूसरों के मन के विचार भांपने वाला,—ज्ञ (वि०) सुहावना प्रिय, रुचिकर, सुन्दर, लावण्यमय—इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी—श० ११२०, रघु० ३।७, ६।७ (ज्ञः) एक गन्धर्व का नाम, (—ज्ञा) 1. मैनशिल 2. मादक पेय 3. राजकुमारी,—तापः,—पीड़ा 1. मानसिक पीडा या वेदना व्यथा 2. पश्चात्ताप, पछतावा,—तुष्टिः (स्त्री०) मन का संतोष,—तोका दुर्गा का विशेषण, —दण्डः मन या विचारों पर पूर्ण नियन्त्रण—मनु० १०।१० तु० त्रिदण्डिन्,—दत्त (वि०) दत्तचित्त, जिसका मन किसी वस्तु में पूरी तरह लग रहा हो, मन से दिया हुआ,—दाहः,—दुःखम् मन का क्लेश, पीडा, मनस्ताप—नाशः बुद्धि का नाश, विक्षिप्तता, पागलपन,—नीत (वि०) पसंद किया हुआ, चुना हुआ, —पतिः विष्णु का विशेषण,—पूत (वि०) 1. मन जिसे पवित्र मानता हो, अन्तरात्मा द्वारा अनुमोदित, —मनःपूतं समाचरेत्—मनु० ६।४६ 2. शुद्धात्मा, सचेत, प्रणीत (वि०) मन को रुचिकर या सुखद, —प्रसादः चित्त की स्वस्थता, मानसिक शान्ति, —प्रीतिः (स्त्री०) मानसिक सन्तोष, हर्ष, खुशी, —भवः,—भूः 1. कामदेव मनोज—रे रे मनो मम मनोभवशासनस्य पादाम्बुजद्वयमनारतमानमन्तम् —भामि० ४।३३, कु० ३।२७, रघु० ७।२२ 2. प्रेम, प्रणयोन्माद, कामुकता—अत्यारूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः —रघु० १२।३३,—मथनः कामदेव,—मय (वि) पृथक् देखिये,—यायिन् (वि०) 1 इच्छानुसार गमन करने वाला 2. तेज, फुर्तीला,—योगः दत्त चित्तता, खूब ध्यान देना,—योनिः कामदेव,—रंजनम् 1. मन को प्रसन्न करना 2. सुहावनापन,—रथः 1. मन की गाड़ी, कामना, चाह—अवतरतः सिद्धिपथं शब्दः स्वमनोरथस्येव—मालवि० ११२२, मनोरथानामगतिर्न विद्यते—कु० ५।६४, रघु० ३।७२, १२।५९ 2. अभीष्ट पदार्थ—मनोरथाय नाशंसे—श० ७।१३ 3. (नाटक में) संकेत, परोक्ष रूप से या गुप्त से प्रकट की गई कामना, °दायक (वि०) किसी एक व्यक्ति की आशाओं को पूरा करने वाला, (—कः) कल्प तरु का नाम, °सिद्धिः (स्त्री०) कल्पना की सृष्टि, हवाई किले बनाना,—रम (वि०) आकर्षक, सुखद, रुचिकर, प्रिय सुन्दर—अरुणनखमनोरमासु तस्याः(अङ्गुलीषु)—श० ६।१०,(—मा) 1. कमनीय स्त्री 2. एक प्रकार का रंग, —राज्यम् 'कल्पना का राज्य' हवाई किला—मनोराज्य विजृम्भणमेतत् 'यह हवाई किले बनाना है',—लयः चेतना का नाश,—लौल्यम् मन की चंचलता, मन की लहर या मौज,—वाञ्छा,—वाञ्छितम् हृदय की अभिलाष, इच्छा,—विकारः,—विकृति (स्त्री०) मन का संवेग,—वृत्तिः (स्त्री०) 1. मन की क्रियाशीलता, इच्छाशक्ति 2. स्वभाव, चित्तवृत्ति,—वेगः विचारों की तेजी,—व्यथा मानसिक पीडा या वेदना,—शीलः, —ला मैनसिल—मनः शिलाविच्छुरिता निषेदुः—कु० १।५५, रघु० १२।८०,—शीघ्र (वि०) मन की भांति तेज,—संगः मन की (किसी वस्तु में) आसक्ति, —सन्तापः मन की व्यथा, स्थ (वि०) हृदय में स्थित, मानसिक,—स्थैर्यम् मन की दृढ़ता,—हत (वि०) निराश,—हर (वि०) सुखद, लावण्यमय, आकर्षक, कमनीय, प्रिय—अव्याजमनोहरं वपुः—श० १।१७, कु० ३।३९, रघु० ३।३२ (—रः) एक प्रकार की चमेली, (—रम्) सोना,—हर्तृ—हारिन् (वि०) हृदय को हरण करने वाला, मनोहर, रुचिकर, सुखद—हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः—कि० १।४,—हारी असती या व्यभिचारिणी स्त्री,—ह्लादः हृदय का उल्लास,—ह्वा मैनसिल।

मनसा [मनस्+अच्+टाप्] कश्यप की एक पुत्री का नाम, नागराज अनन्त की बहन तथा जरत्कारु मुनि की पत्नी, इसी प्रकार 'मनसादेवी' ।

मनसिजः [मनसि जायते–जन्+ड, अलुक् स०] 1. कामदेव रघु० १८।५२ 2. प्रेम, प्रणयोन्माद––मनसिजरुजं सा वा दिव्या ममालमपोहितुम्––विक्रम० ३।१०, श० ३।९।

मनसिशयः [मनसि शेते–शी+अच् सप्तम्या अलुक्] कामदेव – शि० ७२।

मनस्तः (अव्य०) [मनस्+तस्] मन से, हृदय से —रघु० १४।८१।

मनस्विन् (वि०) [मनस्+विनि] 1. बुद्धिमन्, प्रज्ञावान्, चतुर, ऊँचे मन वाला, उच्चात्मा—रघु० १। ३२ पंच० २।१२० 2. स्थिरमना, दृढ़निश्चय, दृढ़ संकल्प वाला–कु० ५।६,—नी 1. उदार मन की या अभिमानिनी स्त्री–मनस्विनीमानविघातदक्षम्––कु० ३।३२, मालवि० १।१९ 2. बुद्धिमती या सती स्त्री 3. दुर्गा का नाम।

मनाक् (अव्य०) [मन्+आक्] 1. जरा, थोड़ा सा, अल्पमात्रा में, न मनाक् 'बिल्कुल नहीं' 'रे पान्थ विह्वलमना न मनागपि स्याः—भामि० १।३७, १११ 2. शनैः शनैः, विलंब से। सम०—कर (वि०) थोड़ा करने वाला, (रम्) एक प्रकार की गंधयुक्त अगर की लकड़ी।

मनाका [मन्+आक+टाप्] हथिनी।

मनित (वि०) [मन्+क्त] ज्ञात, प्रत्यक्षज्ञान, समझा हुआ।

मनीकम् [मन्+कीकन्] सुर्मा, अंजन।

मनीषा [मनसः ईषा ष० त०, शक०] 1. चाह, कामना, ––यो दुर्जनं वशयितुं तनुते मनीषां––भामि० १।९५ 2. प्रज्ञा, समझ 3. सोच, विचार।

मनीषिका [मनीषा+कन्+टाप्, इत्वम्] समझ, प्रज्ञा।

मनीषित (वि०) [मनीषा+इतच्] 1. अभिलषित, वांछित, पसंद किया गया, प्यारा, प्रिय—मनीषिताः सन्ति गृहेषु देवताः—कु० ५।४ 2. रुचिक,र,—तम् कामना, इच्छा, अभीष्ट पदार्थ––मनीषितं द्यौरपि येन दुग्धा – रघु० ५।३३।

मनीषिन् (वि०) [मनीषा+इनि] बुद्धिमान्, विद्वान्, प्रज्ञावान्, चतुर, विचारशील, समझदार—रघु० १। १५, (पुं०) बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, मुनि, पंडित —माननीयो मनीषिणाम्—रघु० १।११, संस्कारवत्येव गिरा मनीषी—कु० १।२८, ५।३९, रघु० ३।४४।

मनुः [मन्+उ] 1. एक प्रसिद्ध व्यक्ति जो मानव का प्रतिनिधि और मानवजाति का हित माना जाता है (कभी कभी यह दिव्य व्यक्ति समझे जाते हैं) 2. विशेषतः चौदह क्रमागत प्रजापति या भूलोक प्रभु—मनु० १।६३ (सबसे पहले मनु का नाम स्वायंभुव मनु है, जो एक प्रकार से गौण स्रष्टा समझा जाता है, इससे दस प्रजापति या महर्षियों का जन्म हुआ। इसी को मनुस्मृति नामक धर्मसंहिता का प्रणेता माना जाता है सातवाँ मनु वैवस्वत मनु कहलाता है क्योंकि उसका जन्म विवस्वान् (सूर्य) से हुआ। यही जीवधारी प्राणियों की वर्तमान जाति का प्रजापति समझा जाता है। जल प्रलय के समय मत्स्यावतार के रूप में विष्णु ने इसी मनु की रक्षा की थी। अयोध्या पर शासन करने वाले सूर्यवंशी राजा के सूर्यवंश का प्रवर्तक भी यही मनु समझा जाता है—दे० उत्तर० ६।१८ रघु० १।११, चौदह मनुओं के क्रमशः निम्नलिखित नाम हैं—1. स्वायंभुव 2. स्वारोचिष 3. औत्तमि 4. तामस 5. रैवत 6. चाक्षुष 7. वैवस्वत 8. सावर्णि 9. दक्षसावर्णि 10. ब्रह्मसावर्णि 11. धर्मसावर्णि 12. रुद्रसावर्णि 13. रौच्यदैवसावर्णि 14. इन्द्र सावर्णि। 3. चौदह की संख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति, —नुः (स्त्री०) मनु की पत्नी। सम०—अन्तरम् एक मनु का काल (मनु० १।७९ के अनुसार यह काल मनुष्यों के ४३२०००० वर्षों का होता है, इसी को ब्रह्मा का १।१४ दिन मानते हैं, क्योंकि इस प्रकार के १४ कालों का योग ब्रह्मा का एक पूरा दिन होता है। इन चौदह कालों में से प्रत्येक का अधिष्ठातृ-मनु पृथक् २ हैं, इस प्रकार के छः काल बीत चुके हैं, इस समय हम सातवें मन्वन्तर में रह रहे हैं, और सात और मन्वंतर अभी आने हैं),—जः मानवजाति °अधिपः, °अधिपतिः, °ईश्वरः, °पतिः, °राजः राजा, प्रभु, °लोकः मानवों की सृष्टि—अर्थात् भूलोक, ––जातः मनुष्य,––ज्येष्ठः तलवार,—प्रणीत (वि०) मनु द्वारा शिक्षित या व्याख्यात,—भूः मनुष्य, मानव, जाति,—राज् (पुं०) कुबेर का विशेषण,—श्रेष्ठः विष्णु का विशेषण,—संहिता धर्मसंहिता जो प्रथम मनु द्वारा रचित मानी जाती है, मनु द्वारा प्रणीत विधिविधान।

मनुष्यः [मनोरपत्यं यक् सुक् च] 1. आदमी, मानव, मर्त्य 2. नर। सम०––इन्द्रः,—ईश्वरः राजा, प्रभु–रघु० २।२, –जातिः मानव जाति, इंसान, –देवः 1. राजा —रघु० २।५२ 2. मनुष्यों में देव, ब्राह्मण,––धर्मः 1. मनुष्य का कर्तव्य 2. मानव चरित्र, इंसान की विशेषता,—धर्मन् (पुं०) कुबेर का विशेषण,—मारणम् मानवहत्या, –यज्ञः आतिथ्य, अतिथियों का सत्कार, गृहस्थ के पाँच दैनिक कृत्यों में एक, दे० नृयज्ञ,—लोकः मरणशील (मर्त्यों) मनुष्यों का संसार, भूलोक, विश्, –विशा (स्त्री०),—विशम् इंसान, मानवजाति,—शोणितम् मानवरक्त—(पपौ) कुतूहलेनेव मनुष्यशोणितम्––रघु० ३।५४,—सभा 1. मनुष्यों की सभा 2. भीड़, जमाव।

मनोमय (वि०) [मनस्+मयट्] मानसिक, आत्मिक। सम० - **कोशः**,—**षः** आत्मा को आवृत करने वाले पाँच कोषों में से दूसरा कोष।

मन्तुः [मन्+तुन्] 1. दोष, अपराध—मुधैव मन्तुं परिकल्प्य —भामि० २।१३ 2. मनुष्य, मानवजाति, - **तुः** (स्त्री०) समक्ष।

मन्तृ (पुं०) [मन्+तृच्] ऋषि, मुनि, बुद्धिमान्, मनुष्य, परामर्शदाता, सलाहकार।

मन्त्र् (चुरा०आ०मंत्रयते, कभी कभी 'मन्त्रयति' भी, मन्त्रित) 1. सलाह लेना, विचार करना, सोच विचार करना, मन्त्रणा करना, परामर्श लेना—न हि स्त्रीभिः सह मन्त्रयितुं युज्यते— पंच० ५, मनु० ७।१४६ 2. उपदेश देना, सलाह देना, परामर्श देना— अतीतलाभस्य च रक्षणार्थं···यन्मन्त्र्यते ऽसौ परमो हि मन्त्रः—पंच० २।१८२ 3. वेदपाठ को अभिमंत्रित करना, जादू से मुग्ध करना 4. कहना, बोलना, बातें करना, गुनगुनाना—किमपि हृदये कृत्वा मन्त्रयेथे—श०१, किमेकाकिनी मन्त्रयसि—श० ६, हला संगीतशालापरिसरेऽवलोकिता द्वितीया त्वं किं मन्त्रयन्त्यासीः - मा० २, **अनु**—,1. अभिमंत्रित करना, जादू करना—विसृष्टश्च वामदेवानुमन्त्रितोऽश्वः—उत्तर० २ 2. आशीर्वाद देकर विदा करना —रथमारोप्य कृष्णेन यत्र कर्णोऽनुमन्त्रितः—महा०, **अभि**—,1. वेदमंत्रों द्वारा अभिमंत्रित करना,—पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः—अमर०, याज्ञ० २।१०२, ३।३२६ 2. मुग्ध करना, मोहना, **आ**—.1, विदा करना, विसर्जन करना, —आमन्त्रयस्व सहचरम्—श० ३, कु० ६।९४ 2. बोलना, बुलाना, कहना, संबोधित करना, वार्तालाप करना तमामन्त्र्यांबभूव—का० ८१, वेणी० १ 3. कहना, बोलना —परिजनोऽप्येवमामन्त्रयते—का० १९५, भट्टि० ९।९८ 4. बुलाना, निमंत्रित करना, **उप**—,उपदेश देना, उकसाना, फुसलाना, **नि**—,न्योता देना, बुलाना, बुला भेजना—दिग्भ्योनिमंन्त्रिताश्चैनमभिजग्मुर्महर्षयः —रघु० १५।५९, ११।३२, याज्ञ० १।२२५, —,जादू से अभिमंत्रित करना **सम्**—, सलाह करना, परामर्श या सलाह लेना,—मम हृदयेन सह संमन्त्र्योक्तवानसि—मुद्रा० १।

मन्त्रः [मन्त्र्+अच्] 1. (किसी भी देवता को संबोधित) वैदिक सूक्त. या प्रार्थनापरक वेद मंत्र, (वेद का पाठ तीन प्रकार का है—यदि छन्दोबद्ध और उच्चस्वर से बोला जाने वाला है तो ऋक् है, यदि गद्यमय और मन्दस्वर से बोला जाने वाला है तो यजुस् है, और यदि छन्दोबद्धता के साथ गेयता है तो सामन् है) 2. वेद का संहिता पाठ (ब्राह्मण भाग को छोड़कर) 3.मोहन, वशीकरण तथा आवाहन के मंत्र,—न हि जीवन्ति जना मनागमन्त्राः—भामि० १।१११, अचिन्त्यो हि मणिमंत्रौषधीनां प्रभावः— रत्न० २, रघु० २।३२, ५।५७ 4. (प्रार्थना परक) यजुस् जो किसी देवता को उद्दिष्ट करके बोला गया हो—'ओं नमः शिवाय' आदि 5. गुप्तवार्ता, मंत्रणा, परामर्श, उपदेश, संकल्प, योजना—तस्य संवृतमन्त्रस्य —रघु० १।२०, १७।२०, पंच० २।१८२, मनु० ७।१८ 6. गुप्त योजना या मंत्रणा, रहस्य। सम०—**आराधनम्** मोहन परक या आवाहन के मंत्रों से सिद्धि की चेष्टा —मन्त्राराधनतत्परेण मनसा नीताः श्मशाने निशाः —भर्तृ० ३।४, —**उदकम्**,—**जलम्**,—**तोयम्** - वारि (नपुं०) मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित जल, मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ पानी,—**उपष्टम्भः** परामर्श द्वारा समर्थन करा,—**करणम्** 1. वेदपाठ 2. सस्वर वेदपाठ करना,—**कारः** वैदिक सूक्तों का कर्ता,—**कालः** मंत्रणा या परामर्श का समय,—**कुशल** (वि०) परामर्श देने में चतुर,—**कृत्** (पुं०) वैदिक सूक्तों का प्रणेता या रचयिता —रघु० ५।४, १।६१, १५।३१ 2. वेद पाठी 3. सलाहकार, परामर्शदाता 4. राजदूत, - **गण्डकः** ज्ञान, विज्ञान,—**गुप्तिः** (स्त्री०) गुप्त सलाह,—**गूढः** गुप्तचर, गुप्तदूत या अभिकर्ता,—**जिह्वः** अग्नि—शि० २।१०७,—**ज्ञः** 1. सलाहकार, परामर्शदाता 2. विद्वान् ब्राह्मण 3. गुप्तचर,—**दः**,—**दातृ** (पुं०) आध्यात्मिक गुरु या आचार्य, —**दर्शिन्** (पुं०) 1. वैदिक सूक्तों का द्रष्टा 2. वेदों में निष्णात ब्राह्मण, —**दीधितिः** अग्नि,—**दृश्** (पुं०) 1. वैदिक सूक्तों का द्रष्टा, ऋषि 2. परामर्शदाता, सलाहकार,—**देवता** मन्त्र द्वारा आहूत देवता,—**धरः** सलाहकार,—**निर्णयः** मंत्रणा के पश्चात् अन्तिम निर्णय, - **पूत** (वि०) मंत्रों द्वारा पवित्र किया हुआ,—**प्रयोगः** मंत्रों का प्रयोग, —**बी** (**वी**) **जम्** मंत्र का प्रथमाक्षर,—**भेदः** गुप्त परामर्श का प्रकट कर देना, भेद खोल देना, —**मूर्तिः** शिव का विशेषण,—**मूलम्** जादू,—,**यन्त्रम्** जादू के संकेत से युक्त एक रहस्यमूलक रेखाचित्र, तावीज, —**योगः** 1. मंत्रों का प्रयोग 2. जादू,—**वर्जम्** (अव्य०) विना मंत्र बोले,—**विद्** दे० ऊ० 'मंत्रज्ञ', —**विद्या** मंत्रविज्ञान, जादू,—**संस्कारः** वेदपाठ से युक्त कोई संस्कार या अनुष्ठान,—**संहिता** वेद के समस्तसूक्तों का संग्रह,—**साधकः** जादूगर, बाजीगर, —**साधनम्** 1. जादू द्वारा वश में करना, या कार्य सिद्धि 2. मोहनमंत्र, आवाहनमंत्र,—**साध्य** (वि०) जादू के मंत्रों से वशीकरण या कार्यसिद्धि के योग्य 2. मंत्रणा द्वारा प्राप्य,—**सिद्धिः** (स्त्री०) 1. किसी मंत्र की क्रियाशीलता, या सम्पन्नता 2. मंत्रज्ञान से प्राप्त होने वाली शक्ति,—**स्पृश्** (वि०) मन्त्रों द्वारा

किसी सिद्धि को प्राप्त करने वाला,—हीन (वि०) वेदमंत्रों से रहित अथवा विरुद्ध ।

मन्त्रणम्,—णा [मन्त्र्+ल्युट्] विचार, परामर्श ।

मन्त्रवत् (वि०) [मन्त्र+मतुप्] मंत्रों से युक्त—रघु० ३।३१ ।

मन्त्रिः=मन्त्रिन्, दे० ।

मन्त्रित (भू० क० कृ०) [मन्त्र्+क्त] 1. जिसका परामर्श लिया जा चुका है 2. जिस पर सलाह ली गई, परामर्श लिया गया है 3. कहा हुआ, बोला हुआ 4. मंत्र पड़ा हुआ, अभिमंत्रित 5. निश्चित, निर्धारित ।

मन्त्रिन् (पुं०) [मन्त्र्+णिनि] मन्त्री, सलाहकार, राजा का मन्त्री रघु० ८।१७. मनु० ८।१। सम०—धुर (वि०) मंत्रालय के भार को संभालने में समर्थ,–पतिः, —प्रधानः,–प्रमुखः–मुख्यः, वरः,—श्रेष्ठः प्रधान मन्त्री, मुख्यमंत्री,—प्रकाण्ड श्रेष्ठ या प्रमुख मन्त्री, —श्रोत्रियः वेदों में निष्णात मन्त्री ।

मन्थ्, मथ् (भ्वा० क्र्या० पर० मन्थति, मथति, मथ्नाति, मथित, कर्म वा० मथ्यते) 1. बिलोना, मथना (प्रायः द्विकर्मक)–सुधां सागरं ममन्थुः–या देवासुरैरमृतमम्बुनिधिर्ममन्थे–कि० ५।३० 2. क्षुब्ध करना, हिलाना, घुमाना, ऊपर नीचे करना—तस्मात् समुद्रादिद मथ्यमानात् —रघु० १६।७९ 3. पीस डालना, अत्याचार करना, सताना, कष्ट देना दुःखी करना—मन्मथो मां मन्थन्निजनाम सान्वयं करोति–दश०, जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम्—मेघ० ८३ 4. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 5. नष्ट करना, मार डालना, संहार करना, कुचल डालना–मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपात्—वेणी० १।१५, अमन्थीच्च परानीकम्—भट्टि० १५।४६, १४।३६ 6. फाड़ डालना, विस्थापित करना, उद्—, 1. प्रहार करना, मारना, नष्ट करना—मीमांसाकृतमुन्ममाथ सहसा हस्ती मुनिं जैमिनिम्—पंच० २।३३, धैर्यमुन्मथ्य—मा० १।१८, 'नष्ट करके या उखाड़ कर' 2. हिलाना, अशान्त करना 3. फाड़ना, काटना या छीलना–रघु० २।३७, निस्,–1. बिलोना, हिलाना, घुमाना—अमृतस्यार्थे निर्मथिष्यामहे जलम्–महा० 2. रगड़ से आग पैदा करना 3. खरोंचना, पीटना 4. पूर्णतः नष्ट करना, कुचल डालना, प्र—, 1. बिलोना (समुद्रः) प्रमथ्यमानो गिरिमिव भूयः—रघु० १३।१४ 2. तंग करना, अत्यन्त कष्ट देना, दुःखी करना, सताना 3. प्रहार करना, खरोंचना, आघात करना 4. फाड़ डालना, काट देना 5. उजाड़ देना 6. मार डालना, नष्ट करना —मा० ४।९, २।९ ।

मन्थः [मन्थ् करणे घञ्] 1. बिलोना, इधर उधर हिलाना, आलोडित करना, क्षुब्ध करना—मन्थादिव क्षुभ्यति गाङ्गमम्भः—उत्तर० ७।१६, रघु० १०।३ 2. संहार करना, नष्ट करना 3. मिश्रित पेय 4. रई का डंडा ('मंथा' भी) 5. सूर्य 6. सूर्य की किरण 7. आँख का मैल, ढीढ, मोतियाबिंद 8. घर्षण से अग्नि सुलगाने का उपकरण । सम० अचल,—अद्रिः,–गिरिः, —पर्वतः,—शलः मन्दर पर्वत (जो रई के डंडे के रूप में प्रयुक्त हुआ)—भामि० १।५५,—उदकः, —उदधिः क्षीर सागर,—गुणः बिलोने के रस्सी, नेता, —जम् मक्खन,—दण्डः,—दण्डकः रई का डंडा ।

मन्थनः [मन्थ्+ल्युट्] रई का डंडा,—नम् बिलोना, क्षुब्ध करना, विलोडित करना, इधर उधर हिलाना 2. घर्षण द्वारा आग सुलगाना,—नी मथनी, बिलौनी । सम०—घटी बिलौनी, मथनी ।

मन्थर (वि०) [मन्थ्+अरच्] 1. शिथिल, मन्द, विलंबकारी, सुस्त, अकर्मण्य—गर्भमन्थरा—श० ४, प्रत्यभिज्ञानमथरो भवेत् तदेव, दरमन्थरचरणविहारम्—गीत० ११—शि० ६।४०, ७।१८, ५।६२, रघु० १९।२१ 2. जड़, मूढ़, मूर्ख—मंथरकौलिकः 3. नीच, गहरा, खोखला, मंदस्वर 4. विस्तृत, विशाल, चौड़ा, बड़ा 5. झुका हुआ, टेढ़ा, वक्र,—रः 1. भंडार, कोष 2. सिर के बाल 3. क्रोध, गुस्सा 4. ताजा मक्खन 5. रई का डंडा 6. रुकावट, बाधा 7. गढ़ 8. फल 9. गुप्तचर, सूचक 10. वैशाख मास 11. मन्दर पर्वत 12. हरिण, बारहसिंघा,—रा कैकेयी की कुब्जादासी जिसने अपनी स्वामिनी को, राम के राज्याभिषेक के अवसर पर, अपने दो पूर्वदत्त वरदान (एक से राम का चौदह वर्ष के लिए निर्वासन, दूसरे से भरत का राज्यारोहण) राजा से मांगने के लिए उकसाया,—रम् कुसुम्भ । सम० विवेक (वि०) निर्णय करने में मन्द, विवेकशक्ति से शून्य—मा० १।१८ ।

मन्थरुः [मन्थ्+अरु] चंवर डुलाने से उत्पन्न हवा ।

मन्थानः [मन्थ्+आनच्] 1. रई का डंडा, मथानी 2. शिव का विशेषण ।

मन्थानकः [मन्थान+कन्] एक प्रकार का घास ।

मन्थिन् (वि०) [मन्थ्+णिनि] 1. बिलोने वाला, मंथन करने वाला 2. कष्ट देने वाला, तंग करने वाला —(पुं०) वीर्य, शुक्र,—नी बिलौनी, मथनी ।

मण्द् (भ्वा० आ० मन्दते—बहुधा वैदिक प्रयोग) 1. पीकर धुत्त होना 2. प्रसन्न होना, हर्षयुक्त होना 3. ढीलाढाला होना, शिथिल होना 4. चमकना 5. शनैः २ चलना, टहलना, घूमना ।

मन्द (वि०) [मन्द्+अच्] 1. धीमा, विलंबकारी, अकर्मण्य, सुस्त, मंद, मटरगश्ती करने वाला—(न०) भिन्दन्ति मन्दां गतिमश्वमुख्यः—कु० १।११, तच्चरितं गोविन्दे मनसिजमन्दे सखी प्राह—गीत० ६ 2. निरु-

त्साही, तटस्थ—उदासीन 3. जड, मंदबुद्धि, मूढ, अज्ञानी, निर्बल-मस्तिष्क, मन्दोऽप्यमन्दतामेति संसर्गेण विपश्चितः —मालवि० २।८, मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्—रघु० १।३, द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्—कु० ५।७५ 4. धीमा, गहरा, खोखला (ध्वनि आदि) 5. कोमल, धुंधला, मृदु यथा 'मंदस्मितम्' में 6. थोड़ा, अल्प, जरा सा, मन्दोदरी, दे० 'अमन्द' भी 7. दुर्बल, बलहीन, कमजोर यथा 'मंदाग्नि' में 8. दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा 9. मुर्झाया हुआ 10. दुष्ट, दुश्चरित्र 11. शराब की लत वाला,—दः 1. शनिग्रह 2. यम का विशेषण 3. सृष्टि का विघटन 4. एक प्रकार का हाथी—शि० ५।४९, —दम् (अव्य०) 1. धीमे से, क्रमशः, धीरे-धीरे —यातं यच्च नितम्बयोर्गुरुतया मंदं विलासादिव—श० २।१ 2. धीरे २, हल्के २, शान्ति से—मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम्—मेघ० ९ 3. धीमे-धीमे, मंद गति से, मंद स्वर से, हल्केपन से 4. मद्धमस्वर में, गहराई के साथ (मन्दी कृ ढीलढाल करना,—मन्दीकृतो वेगः—श० १, मन्दी भू ढीला होना, कम ताक़तवर होना)। सम०—अक्ष (वि०) कमजोर आँखों वाला (—क्षम्) लज्जा का भाव, लज्जाशीलता, शर्मीलापन, —अग्नि (वि०) दुर्बल पाचन शक्ति वाला, (—ग्निः) अग्निमांद्य, पाचनशक्ति की मंदता,—अनिलः मृदु पवन, —असु (वि०) दुर्बल श्वास वाला,—आक्रान्ता एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट १,—आत्मन् मन्दबुद्धि वाला, मूर्ख, अज्ञानी—मन्दात्मानुजिघृक्षया मल्लि०, —आदर (वि०) 1. कम आदर प्रदर्शित करने वाला, अवज्ञा करने वाला, लापरवाह 2. असावधान,—उत्साह (वि०) हताश, उत्साहहीन—मन्दोत्साहः कृतोऽस्मि मृगयापवादिना माधव्येन—श० २,—उदरी रावण की पत्नी का नाम, पाँच सती स्त्रियों में से एक—तु० अहल्या,—उष्ण (वि०) कोष्ण, गुनगुना (—ष्णम्) कोष्णता, गुनगुनापन,—औत्सुक्य (वि०) धीमी उत्सुकता वाला, पराङ्मुख, रुचिशून्य—मन्दौत्सुक्योऽस्मि नगरगमनं प्रति—श० १,—कर्ण (वि०) कुछ बहरा, सूक्ति—बधिरान्मन्दकर्णः श्रेयान्, 'अभाव की अपेक्षा कुछ होना अच्छा है'—कान्तिः चन्द्रमा, —कारिन् (वि०) धीमे २ काम करने वाला,—गः शनि,—गति,—गामिन् (वि०) शनैः २ चलने वाला, धीमी गति वाला,—चेतस् (वि०) 1. मन्दबुद्धि, मूर्ख, मूढ 2. अन्यमनस्क 3. मूर्छालु, अचेत,—छाय (वि०) धुंधला, मद्धम, आभाशून्य—मेघ० ८०,—जननी शनि की माता,—धी,—प्रज्ञ,—मति,—मेधस् मंद बुद्धि, मूर्ख, मूढ़,—भागिन्,—भाग्य (वि०) भाग्यहीन, दुर्भाग्यग्रस्त, अभागा, दयनीय, बेचारा,—रश्मि (वि०) धुंधला,—वीर्यः दुर्बल,—वृष्टिः (स्त्री०) हल्की बारिश,—स्मितः,—हासः,—हास्यम् हल्की हंसी, मंद मुस्कान।

मन्दटः [मन्द+अट्+अच् शक० पररूपम्] मूंगे का वृक्ष।

मन्दनम् [मन्द्+ल्युट्] प्रशंसा, स्तुति।

मन्दयन्ती [मन्द्+णिच्+शतृ+ङीप्] दुर्गा का विशेषण।

मन्दर (वि०) [मन्द्+अर] 1. धीमा, विलम्बकारी, सुस्त 2. मोटा, सघन, दृढ़ 3. विस्तृत, स्थूल,—रः 1. एक पहाड़ का नाम (इसको समुद्रमंथन के समय देवासुरों ने मथानी—रई का डंडा—बनाया था, और तब सुधा का मंथन किया था)—पृषतैर्मन्दरोद्भूतैः क्षीरोर्मय इवाच्युतम्—रघु० ४।२७, अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए—गीत० १ शोभैव मन्दरक्षुब्धक्षुभिताम्भोधिवर्णना—शि० २।१०७, कि० ५।८० 2. मोतियों (आठ या सोलह लड़ियों का) का हार 3. स्वर्ग 4. दर्पण 5. इन्द्र के नन्दनकानन में स्थित पाँच वृक्षों में से एक—मन्दार वृक्ष, दे० मंदार। सम०—आवासा, —वासिनी दुर्गा का विशेषण।

मन्दसानः [मन्द+सानच्] 1. अग्नि 2. जीवन 3. निद्रा ('मन्दसानु' भी लिखा जाता है)।

मन्दाकः [मन्द+आक] धारा, नदी।

मन्दाकिनी [मन्दमकति—अक्+णिनि+ङीष्] 1. गंगा नदी—मन्दाकिनी भाति नगोपकण्ठे मुक्तावली कण्ठगतेव भूमेः—रघु० १३।४८, कु० १।२९ 2. स्वर्गंगा, वियद्गंगा (मंदाकिनी वियद्गङ्गा)—मन्दाकिन्याः सलिलशिशिरैः सेव्यमाना मरुद्भिः—मेघ० ६७।

मन्दायते (ना० धा० आ०) 1. शनैः शनैः चलना, विलंब करके चलना, पिछड़ना, मटरगश्त करना, देर लगाना —मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः—मेघ० ४०, विक्रम० ३ १५ 2. दुर्बल होना, कृश होना, धुंधला होना—रघु० ४।४९।

मन्दारः [मन्द्+आरक्] 1. मूंगे का पेड़, इंद्र के नन्दनकाननस्थित पाँच वृक्षों में से एक—हस्तप्राप्यस्तबकनमितो बालमन्दारवृक्षः—मेघ ७५, ६७, विक्रम० ४।३५ 2. आक का पौधा, मदार वृक्ष 3. धतूरे का पौधा 4. स्वर्ग 5. हाथी,—रम् मूंगे के वृक्ष का फूल—कु० ५।८०, रघु० ६।२३। सम०—माला मंदार के फूलों की माला—मंदारमाला हरिणा पिनद्धा—श० ७।२, —षष्ठी माघसुदी छठ।

मन्दारकः, मन्दारवः, मन्दारुः [मन्दार+कन्, मन्द+आ+रु+अच, मन्द्+आरु] मूंगे का वृक्ष दे० 'मंदार'।

मन्दिमन् (पुं०) [मन्द+इमनिच्] 1. धीमापन, विलंबकारिता 2. सुस्ती, जड़ता, मूर्खता।

मन्दिरम् [मन्द्यतेऽत्र मन्द्+किरच्] 1. रहने का स्थान, आवास, महल, भवन—कु० ७।५५, भट्टि० ८।९६,

रघु० १२।८३ 2. आवास, रहने का घर —यथा क्षीराब्धिमंदिरः में 3. नगर 4. शिविर 5. देवालय। सम० —पशुः बिल्ली मणिः शिव का विशेषण।

मंदिरा [मंदिर+टाप्] घुड़साल, अस्तबल।

मंदुरा [मन्द्+उरच्+टाप्] 1. अश्वशाला, घुड़साल अस्तबल–प्रभ्रष्टोऽयं प्लवंगः प्रविशति नृपतेर्मंदिरं मंदुरायाः –रत्न० २।२, रघु० १६।४१ 2. शय्या, चटाई।

मन्द्र (वि०) [मन्द्+रक्] 1. नीचा, गहरा, गंभीर, खोखला, चरमराना—पयोदमंद्रध्वनिना धरित्री –कि० १६।३, ७।२२, मेघ० ९९, रघु० ६।५६,—न्द्रः 1. मन्दध्वनि 2. एक प्रकार का ढोल 3. एक प्रकार का हाथी।

मन्मथः [मन्+क्विप्, मथ्+अच्, ष० त०] 1. कामदेव, प्रेम का देवता—मन्यथो मां मन्यन्निज नाम सान्वयं करोति –दश० २१, मेघ० ७३ 2. प्रेम, प्रणयोन्माद—प्रबोध्यते सुप्त इवाद्य मन्मथः –ऋतु० १।८ इसी प्रकार 'परोक्षमन्मथः जनः'—श० २।१८ 3. कैथ। सम० –आनंदः एक प्रकार का आम का पेड़—आलयः 1. आम का पेड़ 2. स्त्री की भग, —कर (वि०) प्रेमोत्तेजक,—युद्धम् प्रेमकेलि, संभोग, मैथुन –लेखः प्रेम-पत्र—श० ३।२६।

मन्मनः (पुं०) 1. गुप्त कानाफूंसी (दंपत्योर्जल्पितम् मंदम्) करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्तरं, मन्मनो मन्मनोऽप्येष मत्तकोकिलनिस्वनः –काव्या० ३।११ 2. कामदेव।

मन्युः [मन्+युच्] 1. क्रोध, रोष, नाराजगी, कोप, गुस्सा—रघु० २।३२, ४९, ११।४६ 2. व्यथा, शोक, कष्ट, दुःख –उत्तर० ४।३, कि० १।३५, भट्टि० ३।४९ 3. विपद्ग्रस्त या दयनीय स्थिति, कमीनापन 4. यज्ञ 5. अग्नि का विशेषण 6. शिव का विशेषण।

मभ्र् (भ्वा० पर० मभ्रति) जाना, हिलना-जुलना।

मम [अस्मद् शब्द–सर्वनाम उत्तमपुरुष–संब० ए० व०] मेरा। सम० –कारः,—कृत्यम् मेरापन, ममता, स्वार्थ।

ममता [मम+तल्+टाप्] 1. अपने मन की भावना, स्वार्थ, स्वहित 2. घमंड, अभिमान, आत्मनिर्भरता 3. व्यक्तित्व।

ममत्वम् [मम+त्व] 1. मेरापन, अपनापन, स्वामित्व की भावना 2. स्नेहयुक्त आदर, अनुराग, मानना—कु० १।१२ 3. अहंकार, घमंड।

ममापतालः [मव्य्+आल, यलोपः, मकारादेशः, आप तुडागमः] ज्ञानेन्द्रिय का विषय।

मम्ब् (भ्वा० पर०) जाना, हिलना-जुलना।

मम्मटः 'काव्यप्रकाश' का प्रणेता।

मय् (भ्वा० आ० मयते) जाना, हिलना-जुलना।

मय (वि०) (स्त्री०–यी) 'पूर्ण' 'से युक्त' संरचित' 'से बना हुआ' अर्थ को प्रकट करने वाला तद्धित का प्रत्यय, उदा० कनकमय, काष्ठमय, तेजोमय और जलमय आदि, —यः 1. एक दानव, दानवों का शिल्पी (कहते हैं कि इसने पांडवों के लिए एक भव्य भवन का निर्माण किया था 2. घोड़ा 3. ऊँट 4. खच्चर।

मयटः [मय्+अटन्] घासफूंस की झोपड़ी, पर्णशाला।

मय (यु) ष्टकः [=मयुष्टक, पृषो० साधु]

मयुः [मय्+कु] 1. किन्नर, स्वर्गीय संगीतज्ञ 2. हरिण, बारहसिंगा। सम० –राजः कुबेर का विशेषण।

मयूखः [मा+ऊख मयादेशः] 1. प्रकाश की किरण, रश्मि, अंशु, कांति, दीप्ति—विसृजति हिमगर्भैरग्निमिन्दुर्मयूखैः –श० ३।२, रघु० २।४६, शि० ४।५६, कि० ५।५, ८ 2. सौन्दर्य 3. ज्वाला 4. धूपघड़ी की कील।

मयूरः [मी+ऊरन्] 1. मोर –स्मरति गिरिमयूर एष देव्याः—उत्तर० ३।२०, फणी मयूरस्य तले निषीदति —ऋतु० १।१३ 2. एक प्रकार का फूल 3. ('सूर्य शतक' का प्रणेता) एक कवि –यस्याश्चोरश्चिकुरनिकरः कर्णपूरो मयूरः –प्रसन्न० १।२२,—री मोरनी —सूक्ति –वरं तत्कालोपनता तित्तिरी न पुनर्दिवसांतरिता मयूरी –विद्ध० १, या— वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः 'हाथ में आया एक पक्षी, झाड़ी में बैठे दो पक्षियों से अच्छा है' अर्थात् नौ नकद न तेरह उधार। सम० –अरिः छिपकली,—केतुः कार्तिकेय का विशेषण, —ग्रीवकम् तूतिया, –चटकः गृह कुक्कट –चूडा मोर की शिखा, –तुत्थम् तूतिया—पत्रिन् (वि०) पंखयुक्त, मोर के पंखों से युक्त (बाण आदि) —रघु० ३।५६, –रथः कार्तिकेय का विशेषण,—व्यंसकः चालाक मोर, शिखा मोर की शिखा।

मयूरकः [मयूर+कन्] मोर,—कः,—कम् तूतिया, नीलाथोथा।

मरकः [मृ+वुन्] महामारी, पशुओं का एक संक्रामक रोग, प्लेग प्रसारक रोग, संक्रामक रोग।

मरकतम् मरकं तरत्यनेन—तृ+ड] पन्ना—वापी चामिन् मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा—मेघ० ७६, शि० ४।५६, ऋतु० ३।२१, (कभी-कभी 'मरक्त' भी लिखा जाता है)। सम०—मणिः (पुं०, स्त्री०) पन्ना, —शिला पन्ने की सिल्ली।

मरणम् [मृ+भावे ल्युट्] 1. मरना, मृत्यु—मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम्—रघु० ८।८७ या—संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते—भग० २।३४ 2. एक प्रकार का विष। सम० अंत, अंतक (वि०) मृत्यु के साथ समाप्त होने वाला,—अभिमुख,—उन्मुख (वि०) मृत्यु के निकट, मरणासन्न, म्रियमाण,—धर्मन्

(वि०) मर्त्य, मरणशील,—निश्चय (वि०) मरने के लिए दृढ़ निश्चय वाला—पंच० १।

मरतः [मृ+अतच्] मृत्यु।

मरन्दः,—न्दकः [मरणं द्यति खण्डयति—मर+दो+क, पृषो०, मरन्द+कन्] फूलों का रस—भामि० १।५, १०।१५, सम०—ओकस् (नपुं०) फूल।

मरारः [मरं मरणमलति निवारयति—मर+अल्+अण् लस्य रत्वम्] खत्ती, धान्यागार, अनाज का भंडार।

मराल (वि०) [मृ+आलच्] 1. मृदु, चिकना, स्निग्ध 2. सौम्य कोमल,—लः (स्त्री०—ली) 1. हंस, बलाक, राजहंस—मरालकुलनायकः कथय रे कथं वर्तताम्—भामि० १।३, विधेहि मरालविकारम्—गीत० ११, नै० ६।७२ 2. एक प्रकार का जलचर पक्षी, कारण्डव 3. घोड़ा 4. बादल 5. अंजन 6. अनारों का बाग 7. बदमाश, ठग।

मरि (री) चः [म्रियते नश्यति श्लेष्मादिकमनेन—मृ+इच, इच्चा] काली मिर्च की झाड़ी,—चम् काली मिर्च।

मरीचिः (पुं० स्त्री०) [मृ+इचि] 1. प्रकाश की किरण—न चन्द्रमरीचयः—विक्रम ३।१०, सवितुर्मरीचिभिः—ऋतु० १।१६, रघु० ९।१३, १३।४ 2. प्रकाश का कण 3. मृगतृष्णा,—चिः प्रजापति, प्रथम मनु से उत्पन्न दस मूल पुरुषों में से एक, या—ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में एक, यह कश्यप का पिता था 2. एक स्मृतिकार 3. कृष्ण का नामान्तर 4. कंजूस। सम०—तोयम् मृगतृष्णा,—मालिन् किरणों से घिरी हुई, उज्ज्वल, चमकदार (पुं०) सूर्य।

मरीचिका [मरीचि+कन्+टाप्] मृगतृष्णा।

मरीचिन् (पुं०) [मरीचि+इनि] सूर्य।

मरीचिमत् (पुं०) [मरीचि+मतुप्] सूर्य।

मरीमृज (वि०) [मृज् (यङन्तत्वात् द्वित्वम्)+अच्] बार २ मलने वाला।

मरुः [म्रियतेऽस्मिन्—मृ+उ] 1. रेगिस्तान, रेतीली भूमि, वीराना, जल से हीन प्रदेश 2. पहाड़ या चट्टान (पुं०) ब० व०), एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। सम०—उद्भवा 1. कपास का पौधा 2. ककड़ी,—कच्छः एक जिले का नाम,—जः एक प्रकार का गन्धद्रव्य,—देशः 1. एक जिले का नाम 2. जल-शून्य प्रदेश,—द्विपः,—प्रियः ऊंट,—धन्वः,—धन्वन् (पुं०) वीराना, उजाड़,—पथः,—पृष्ठम् रेतीली मरुभूमि वीराना—रघु० ४।३१,—भूः (ब० व०) मारवाड़ देश,—भूमिः (स्त्री०) मरुस्थल, रेतीला मरुप्रदेश,—संभवः एक प्रकार की मूली,—स्थलम्,—स्थली वीराना, उजाड़, बंजर—तत्प्राप्नोति मरुस्थलेऽपि नितरां मेरौ ततो नाधिकम्—भर्तृ० २।४९।

मरुकः [मरु+कः] मोर।

मरुत् (पुं.) [मृ+उति] 1. हवा, वायु, पवन—दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः—रघु० ३।१४ 2. वायु का देवता—कि० २।२५ 3. देवता, देवी—वैमानिकानां मरुतामपश्यदाकृष्टलीलान्नर लोक पालान्—रघु ६।१, १२।१०१ 4. एक प्रकार का पौधा, मरुवक (नपुं.) ग्रंथिपर्ण नाम का पौधा। सम०—आदोलः (हरिण या भैंसे की खाल से बना) एक प्रकार का पंखा,—करः एक प्रकार की सेम, लोबिया,—कर्मन् (पुं.)—क्रिया उदर,—वायु, अफारा,—कोणः पश्चिमोत्तर दिशा,—गणः देवसमूह,—तनयः,—पुत्रः—सुतः,—सूनुः 1. हनुमान् के विशेषण 2. भीम के विशेषण,—ध्वजम् हवा में लहराने वाला झण्डा (सूत का बना कपड़ा),—पटः बादबान,—पतिः,—पालः इन्द्र का विशेषण,—पथः आकाश, अन्तरिक्ष,—प्लवः सिंह,—फलम् ओला,—बद्धः 1. विष्णु का विशेषण 2. एक प्रकार का यज्ञ-पात्र,—रथः वह गाड़ी जिसमें देव प्रतिमाएँ रख कर इधर उधर ले जाई जाती हैं,—लोकः वह लोक जिसमें 'मरुत' देवता रहते हैं,—वर्त्मन् (नपुं.) आकाश, अन्तरिक्ष,—वाहः 1. धूआँ 2. अग्नि,—सखः 1. अग्नि का विशेषण 2. इन्द्र का विशेषण।

मरुतः [मृ+उत] 1. वायु 2. देवता।

मरुत्तः [मरुत+तप्] सूर्यवंश का एक राजा, कहते हैं उसने एक यज्ञ किया जिसमें देवताओं ने प्रतीक्षक सेवक का कार्य किया—तु० तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे, आविक्षितस्य कामप्रेविश्वेदेवाः सभासद इति।

मरुत्तकः [मरुदिव तकति हसति—मरुत+तक्+अच्] मरुवक पौधा।

मरुत्वत् (पुं.) [मरुत्+मतुप्, मस्य वः] 1. बादल 2. इन्द्र का नामान्तर 3. हनुमान का नामान्तर।

मरुलः [मृ+उल] एक प्रकार की बत्तख, कारंडव।

मरूवः [मरु+वा+क, नि० दीर्घः] 1. एक पौधे का नाम, मरुआ 2. राहु का विशेषण।

मरुव (ब) कः [मरुव+कन्, बवयोरभेदः] 1. एक प्रकार का पौधा, मरुआ 2. चूने का एक भेद 3. व्याघ्र 4. राहु 5. सारस।

मरूकः [मृ+ऊक] 1. मोर 2. बारहसिंगा हरिण।

मर्कटः [मर्क+अटन्] 1. लंगूर, बन्दर—हारं वक्षसि केनापि दत्तमज्ञेन मर्कटः, लेढि जिघ्रति संक्षिप्य करोत्युन्नतमासनम्—भामि० १।९९ 2. मकड़ी 3. एक प्रकार का सारस 4. एक प्रकार का रतिबंध, संभोग, मैथुन 5. एक प्रकार का विष। सम०—आस्य (वि०) बन्दर जैसे मुंह वाला (स्यम्) तांबा,—इन्दुः आबनूस,—तिंदुकः एक प्रकार का आबनूस,—पोतः

बन्दर का बच्चा, —जालः मकड़ी का जाला,—शीर्षम् सिंदूर ।

मर्कटकः [मर्कट+कन्] 1. लंगूर 2. मकड़ी 3. एक प्रकार की मछली 4. एक प्रकार का अनाज, धान्य विशेष ।

मर्करा [मर्क्+अर+टाप्] 1 पात्र, बर्तन 2. अन्तःकक्षीय छिद्र, सुरंग, विवर, खोह, गुफा 3. बांझ स्त्री ।

मर्च् (चुरा० उभ०—मर्चयति—ते) 1. लेना 2. साफ करना 3. शब्द करना ।

मर्जूः [मृज्+ऊ] 1. धोबी 2. इल्लती, लौंडा, (स्त्री०) साफ करना, धोना, पवित्र करना ।

मर्तः [मृ+तन्] 1. मनुष्य, मानव, मर्त्य 2. भूलोक, मर्त्यलोक ।

मर्त्य (वि०) [मर्त+यत्] मरणशील, —र्त्यः 1. मरणधर्मा, मानव, मनुष्य—मनु० ५।९७ 2. मर्त्यलोक, भूलोक —र्त्यम् शरीर । सम०—धर्मः मरणशीलता, —धर्मन् (वि०) मरणशील आदमी,—निवासिन् (पुं.) मनुष्य, मानव,—भावः मानव-स्वभाव,—भुवनम् मर्त्यलोक, भूलोक,—महितः देवता, —मुखः किन्नर, इसका मुख मनुष्य के मुख जैसा तथा और शेष शरीर जानवर के शरीर जैसा होता है, यह कुबेर का सेवक समझा जाता है),—लोकः मनुष्यलोक, भूलोक—क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति—भग० ९।२१ ।

मर्द (वि०) [मद्+घञ्] कुचलने वाला, चूर चूर कर देने वाला, पीसने वाला, नष्ट करने वाला (समास के अन्त में प्रयोग), —र्दः 1. पीसना, चूरा करना 2. प्रबल प्रहार ।

मर्दन (वि०) (स्त्री०—नी) [मृद्+ल्युट्] कुचलने वाला, पीसने वाला, नष्ट करने वाला, सताने वाला —नम् 1. कुचलना, पीसना 2. रगड़ना, मालिश करना 3. लेप करना (उबटन आदि से) 4. दबाना, माडना 5. पीड़ा देना, सताना, कष्ट देना 6. नष्ट करना, उजाड़ना ।

मर्दलः [मर्द+ला+क] एक प्रकार का ढोल शि० ६।३१, ऋतु० २।१ ।

मर्ब् (भ्वा० पर० मर्बति) जाना, हिलना-जुलना ।

मर्मन् (नपुं०) [मृ+मनिन्] शरीर का सजीव परम-मूलक भाग, जीवाधारक तथैव तीव्रो हृदि शोक-शंकुर्मर्माणि कृन्तन्नपि किं न सोढः—उत्तर० २।३५, याज्ञ० १।१५३ भट्टि० १६।१५, स्वहृदयमर्मणि वर्म करोति गीत० ४ 2. कोई भी दुर्बल या आलोच्य बिन्दु, दोष, त्रुटि 3. अन्तस्तल, सजीव 4. (किसी भी अंग का) सन्धिस्थान 5. गूढार्थ, (किसी बात का) तत्त्व—काव्यमर्म प्रकाशिका टीका; नत्वा गंगाधरं मर्मप्रकाशं तनुते गुरुम्—नागेश० 6. रहस्य भेद । सम०—अतिग (वि०) मर्मवेधी —शि० २०। ७० – अन्वेषणम् 1. शलाकापरीक्षण करना 2. दुर्बल और आलोच्य बातों की जाच पड़ताल करना, —आवरणम् कवच, जिरहबख्तर,—आविध्,—उपघातिन् (वि०) (हृदय के) मर्म स्थलों को वेधने वाला - महावी० ३।१०,—कीलः पति,—ग (वि०) मर्मभेदी, तीव्र, घोर,—घ्न (वि०) मूल पर आघात करने वाला, अत्यन्त पीडाकर,—चरम् हृदय,—छिद्, —भिद् (इसी प्रकार छेदिन्, भेदिन्) (वि०) मर्मस्थानों का भेदने वाला, हृदय पर चोट करने वाला, अत्यन्त कष्टदायक —उत्तर० ३।३१ 2. प्राणघातक चोट करने वाला, भयङ्कर,—ज्ञ (वि०),—विद् (वि०) 1. दूसरे के दोष या दुर्बलताओं को जानने वाला 2. किसी विषय की अत्यन्त गूढ बातों को समझने वाला 3. किसी विषय गहरी अन्तर्दृष्टि रखने वाला, अत्यन्त निपुण या चतुर, (—ज्ञः) कोई भी प्रकांड विद्वान्,—त्रम् जिरहबख्तर,—पारग (वि०) गहन अन्तर्दृष्टि रखने वाला पूरा जानकार, दूसरे के रहस्यों को जानने वाला, —भेदः 1. मर्मस्थानों को छेदना 2. दूसरों के रहस्य या दुर्बलताओं को प्रकट करना,—भेदनः,—भेदिन् (पुं०) बाण, तीर,—विद् दे० 'मर्मज्ञ',—स्थलम्, —स्थानम् 1. भावप्रवण या सजीव भाग 2. कमजोरियाँ, आलोच्य बातें,—स्पृश् 1. मर्मस्पर्शी, हृदयस्पर्शी 2. अतितीव्र, तीक्ष्ण, तेज या कटु (शब्द आदि) ।

मर्मर (वि०) [मृ+अरन्, मुट् च] (पत्तों की) खड़-खड़ाहट, (वस्त्रों की) सरसराहट– तीरेषु तालीवन-मर्मरेषु—रघु० ६।५७, ४।७३, १९।४१, मदोद्धताः प्रत्यनिलं विचेरुर्वनस्थलीर्मर्मरपत्रमोक्षाः—कु० ३।३१, —रः 1. खरखराहट की ध्वनि 2. सरसराहट ।

मर्मरी [मर्मर+ङीष्] 1. देवदारु का एक भेद 2. हल्दी ।

मर्मरीकः [मृ+ईकन्, मुट्] 1. निर्धन पुरुष, गरीब 2. दुष्ट मनुष्य ।

मर्या [मृ+यत्+टाप्] सीमा, हद ।

मर्यादा [मर्यायां सीमाया दीयते मर्या+दा+अङ+टाप्] 1. सीमा, हद (आलं से भी) छोर, सीमान्त, सरहद, किनारा—मर्यादाव्यतिक्रमः—पंच १ 2. अन्त, अवसान, अन्तिम मंजिल, उद्देश्य 3. तट, किनारा 4. चिह्न, सीमाचिह्न 5 नीति का बंधन, निश्चित प्रथा या व्यवस्थित नियम, नैतिक विधि 6. शिष्टाचार या औचित्य का नियम, औचित्य की सीमा, सदाचरण का औचित्य—आस्तातापवादभिन्नमर्याद—उत्तर० ५, पंच० १।१४२ 7. संविदा, अनुबंध, करार । सम० —अचलः,—गिरिः,—पर्वतः सरहद पर स्थित पहाड़, —भेदकः सीमाचिह्नों को नष्ट करने वाला ।

मर्यादिन् (पुं०) [मर्यादा+इनि] पड़ोसी, सीमान्तवासी।

मर्व् (भ्वा० पर० मर्वति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. भरना।

मर्शः [मृश्+घञ्] 1. विचारणा 2. परामर्श, संमन्त्रणा 3. नस्य, छींकलाने वाला।

मर्शनम् [मृश्+ल्युट्] 1. रगड़ना 2. परीक्षण, पूछताछ 3. विचारणा, संयन्त्रणा 4. उपदेश देना, सलाह देना 5. मिटाना, मल देना।

मर्षः, मर्षणम् [मृष्+घञ्, ल्युट् वा] सहनशीलता, सहिष्णुता, धैर्य।

मर्षित (भू० क० कृ०) [मृष्+क्त] 1. सहन किया हुआ, सबर के साथ सहा हुआ 2. क्षमा किया गया, माफ किया गया,—तम् सहनशीलता, धैर्य।

मर्षिन् (वि०) [मृष्+णिनि] सहन करने वाला, धैर्यशील।

मल् (भ्वा० आ०, चुरा० पर० -मलते, मलयति) थामना, अधिकार में रखना।

मलः,—लम् [मृज्यते शोध्यते मृज्+कल् टिलोपः—तारा०] 1. मैल, गंदगी, अपवित्रता, धूल, अशुद्ध सामग्री —मलदायकाः खलाः—का० २, छाया न मूर्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा—श० ७।३२ 2. तलछट, कूड़ाकरकट, गाद, पुरीष, गोबर 3. (धातुओं का मैल, जंग, खोट 4. नैतिक दोष या अपवित्रता, पाप 5. शरीर का कोई भी अपवित्र स्राव (मनु के अनुसार इस प्रकार के बारह स्राव हैं—वसा शुक्रमसृङ्मज्जा मूत्रविड् घ्राणकर्णविट्, श्लेष्माश्रुदूषिका स्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः —मनु० ५।१३५) 6. कपूर 7. 'मसीक्षेपी' जलचरविशेष का प्रमार्जन के काम आने वाला भीतरी कवच 8. कमाया हुआ चमड़ा. चमड़े का वस्त्र,—लम् एक प्रकार की खोटी धातु। सम० —अपकर्षणम् 1. मैल दूर करना पवित्र करना 2. पाप दूर करना, —अरिः एक प्रकार की सज्जी,—अवरोधः कोष्ठबद्धता, कब्ज —आकर्षिन् (पुं०) झाड़ू देने वाला, भंगी,—आवह (वि०) 1. मैल पैदा करने वाला, मैला करने वाला, मलिन करने वाला 2. दूषित करने वाला, अपवित्र करने वाला, —आशयः पेट,—उत्सर्गः टट्टी जाना, पेट से मल निकालना, —घ्न (वि०) परिमार्जक, शोधक —जम् पीप, मवाद,—दूषित (वि०) मैला, गंदा, मलिन,—द्रवः रेचन, अतिसार, —धात्री दाई जो बच्चे की आवश्यकताओं का ध्यान रखती है, —पृष्ठम् किसी पुस्तक का पहला पृष्ठ, आवरणपृष्ठ (बाह्य पृष्ठ),—भुज् (पुं०) कौवा, —मल्लकः कौपीन, लंगोट,—मासः अंतरीय या लौंद का महीना ('मलमास' इसी लिए कहलाता है कि इस अधिक मास में कोई भी धार्मिक कृत्य नहीं किया जाता है),—वासस् (स्त्री०) रजस्वला स्त्री, जो स्त्री कपड़ों से हो,—विसर्गः,—विसर्जनम्,—शुद्धिः (स्त्री०) मलत्याग, कोष्ठशुद्धि,—हारक (वि०) मैल या पाप को दूर करने वाला।

मलनम् [मल्+ल्युट्] कुचलना, पीसना,—नः तंबू।

मलयः [मलते धरति चन्दनादिकम् —मल्+कयन्] 1. भारत के दक्षिण में एक पर्वत श्रृंखला जहाँ चन्दन के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं (कविसमुदाय प्रायः मलयपर्वत से चलने वाली पवन का उल्लेख किया करता हैं, यह पवन चन्दन तथा अन्य सुगंधित पौधों की सुगंध को इधर उधर फैलाने के साथ-साथ कामार्त व्यक्तियों को विशेष रूप से प्रभावित करती है) —स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ—रघु० ४।५१, ९।२५, १३।२ 2. मलयश्रृंखला के पूर्व में स्थित देश, मलाबार 3. उद्यान 4. इन्द्र का नन्दनकानन। सम०—अचलः,—अद्रिः,—गिरिः,—पर्वतः मलय पहाड़,—अनिलः,—वातः,—समीरः मलयपहाड़ से चलने वाली पवन, दक्षिणीपवन—ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे —गीत० १, तु० अपगतदाक्षिण्यदक्षिणानिलहतक पूर्णास्ते मनोरथाः कृतं कर्तव्यं वहेदानीं यथेष्टम्—का०,—उद्भवम् चन्दन की लकड़ी,—जः चन्दन का वृक्ष —अयि मलयज महिमायं कस्य गिरामस्तु विषयस्ते—भामि० १।११, (जः—जम्) चन्दन की लकड़ी (—जम्) राहु का विशेषण, °रजस् (नपुं०) चन्दन का चूरा,—द्रुमः चन्दन का पेड़,—वासिनी दुर्गा का विशेषण।

मलाका [मलेन मनोमालिन्येन अकति कुटिलं गच्छति-मल+अक्+अच्+टाप्] 1. श्रृंगारप्रिय या कामुक स्त्री 2. दूती, अन्तरंग सखी 3. हथिनी।

मलिन (वि०) [मल्+इनन्] 1. मैला, गन्दा, घिनौना अपवित्र, अशुद्ध, भ्रष्ट, कलंकित, कलुषित (आलं० से भी) धन्यास्तदङ्गरजसा मलिनीभवंति श० ७।५७, किमिति मुधा मलिनं यशः कुरुध्वे—वेणी० ३।४ 2. काला, अंधकारमय मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्मलक्ष्मीं तनोति श० १।२०, अतिमलिने कर्तव्ये भवति खलानामतीव निपुणा धीः —वास०, शि० ९।१८ 3. पापी, दुष्ट, दुश्चरित्र —मलिनाचरितं कर्म सुरभेर्नन्वसांप्रतम् —काव्या० २।१७८ 4. नीच, दुष्ट, अधम लघवः प्रकटी भवंति मलिनाश्रयतः—शि० ९।२३ 5. मेघाच्छन्न, तिरोहित,—नम् 1. पाप, दोष, अपराध 2. मट्ठा, 3. सोहागा,—ना,—नी रजस्वला स्त्री। सम०—अंबु (नपुं०) 'काला पानी' मसी, स्याही,—आस्य (वि०) 1. काले या मैले मुंह वाला 2. नीच, गंवार 3. बहशी, क्रूर—प्रभ (वि०) तिरोहित, दूषित, मेघाच्छन्न,—मुख (वि०)=मलिनास्य, दे०

(खः) 1. अग्नि 2. भूत, प्रेत 3. एक प्रकार का बंदर, गोलांगूल ।

मलिनयति (ना० धा० पर०) 1. मैला करना, मलिन करना, कलंकित करना, दूषित करना, धब्बा लगाना, बिगाड़ना—यदा मेधाविनी शिष्योपदेशं मलिनयति तदाचार्यस्य दोषो ननु—मालवि० १, 'बदनामी कमाता है या कलंकित होता है' 2. भ्रष्ट करना, बदचलन करना ।

मलिनिमन् (पुं०) [मलिन+इमनिच्] 1. मैलापन, गंदगी अपवित्रता 2. कालिमा, कालापन—मलिनिमालिनि माधवयोषितां—शि० ६।४ 3. नैतिक अपवित्रता, पाप ।

मलिम्लुचः [मली सन् म्लोचित—मलिन्+म्लुच्+क] 1. लुटेरा, चोर—शि० १६।५२ 2. राक्षस 3. डांस, पिस्सू, खटमल 4. लौंद का महीना 5. वायु, हवा 6. अग्नि 7. वह ब्राह्मण जो दैनिक पंच महायज्ञों को नहीं करता है ।

मलीमस (वि०) [मल+ईमसच्] 1. मैला, गन्दा, अपवित्र, अस्वच्छ, कलंकित, मलिन—मा ते मलीमसविकारघना मतिर्भूत्—मा० १।३२, रघु० २।५३ 2. कृष्ण, काला, काले रंग का—पणिता न जनारवैर्वदपि कूजन्तमलि मलीमसम्—नै० २।९२, विसारितामजिहत कोकिला-वलीमलीमसा जलदमदांबुराजयः—शि० १७।५७, १।५८ 3. दुष्ट, पापपूर्ण, सदोष, बेईमान—मलीमसा माददते न पद्धतिम्—रघु० ३।४६,—सः 1. लोहा 2. हरा कसीस ।

मल्ल् (भ्वा० आ० मल्लते) थामना, अधिकार में करना ।

मल्ल (वि०) [मल्ल+अच्] 1. हृष्टपुष्ट, व्यायामशील, बलिष्ठ कि० १८।८ 2. अच्छा, उत्तम—ल्लः 1. बलवान् पुरुष 2. कसरती, मुक्केबाज, पहलवान—प्रभुर्मल्लो मल्लाय—महा० 3. पान पात्र, प्याला 4. हव्यशेष 5. गाल, कपोल, गण्डस्थल । सम०—**अरिः** 1. कृष्ण का विशेषण 2. शिव का विशेषण,—**क्रीडा** मुक्केबाजी या मल्लयुद्ध,—**जम्** काली मिर्चें,—**तूर्यम्** एक प्रकार का ढोल,—**भूः**,—**भूमिः** (स्त्री०) 1. अखाड़ा, मल्लयुद्ध का मैदान 2. एक देश का नाम,—**युद्धम्** कुश्ती करना या मुक्केबाजी, मुष्टियुद्धीय भिड़न्त या मुठभेड़,—**विद्या** मल्लयुद्ध की कला,—**शाला** व्यायामशाला, अखाड़ा ।

मल्लकः [मल्ल+कन्, मल्ल्+ण्वुल् वा] 1. दीवट 2. दीवा, तैलपात्र 3. दीपक 4. नारियल का बना हुआ प्याला 5. दांत 6. एक प्रकार की चमेली ।

मल्लिः,—**ल्ली** (स्त्री०) [मल्ल्+इन्, मल्लि+ङीप्] एक प्रकार की चमेली । सम०—**गंधि** (नपुं०) अगर,—**नाथः** एक प्रसिद्ध भाष्यकार जो चौदहवीं या पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ (उसने 'रघुवंश' 'कुमार-संभव', 'मेघदूत' 'किरातार्जुनीय', 'नैषधचरित' और शिशुपालवध पर टीकाएँ लिखीं),—**पत्रम्** छत्राक, साँप की छतरी ।

मल्लिकः [मल्लि+कन्] 1. एक प्रकार का हंस जिसकी टांगें और चोंच भूरे रंग की होती हैं 2. माघ का महीना 3. जुलाहे की ढरकी, फिरकी । सम०—**अक्षः**,—**आख्यः** एक प्रकार का हंस जिसकी टांगें और चोंच भूरे रंग की होती हैं—एतस्मिन्मदकलमल्लिकाक्षप-क्षव्याधूतस्फुरदुरुदंडपुंडरीकाः (भुवो विभागाः) —उत्तर० १।३१, मा० ९।१४,—**अर्जुनः** श्रीशैल नामक पर्वत पर विराजमान शिव का एक लिंग,—**आख्या** एक प्रकार की चमेली ।

मल्लिका [मल्लिक+टाप्] 1. एक प्रकार की चमेली—वनेषु सायंतनमल्लिकानां विजृम्भणोद्गन्धिषु कुड्मलेषु —रघु० १६।४७ 2. इस चमेली का फूल—विन्यस्त सायंतनमल्लिकेषु (केशेषु)—रघु० १६।५० —काव्या० २।२१५ 3. दीवट 4. किसी विशेष आकृति का मिट्टी का बर्तन । सम०—**गंधं** एक प्रकार की अगर ।

मल्लीकरः [अमल्लमपि आत्मानं मल्लमिव करोति—मल्ल +च्वि, ईत्वम्, कृ+अच्] चोर ।

मल्लुः [मल्ल+उ] रीछ, भालू ।

मव् (भ्वा० पर० मवति) कसना, बांधना ।

मव्य् (भ्वा० पर० मव्यति) बांधना ।

मश् (भ्वा० पर० मशति) 1. भिनभिनाना, गुंजन करना ऊं ऊं करना 2. क्रोध करना ।

मशः [मश्+अच्] 1. मच्छर 2. गूंजना, गुनगुनाना 3. क्रोध, सम०—**हरी** मच्छरदानी, मसहरी ।

मशकः [मश्+वुन्] 1. मच्छर, पिस्सू, डांस—सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति—हि० १।७८, मनु० १।८५ 2. चमड़ी का एक विशेष रोग 3. मशक, चमड़े का बना पानी भरने का थैला । सम०—**कुटिः**, —**टी** (स्त्री०),—**वरणम्** मच्छर उड़ाने का चंवर(—**हरी** मसहरी, मच्छरदानी ।

मशकिन् (पु०) [मशक+इनि] गूलर का पेड़ ।

मशुनः (पुं०) कुत्ता ।

मष् (भ्वा० पर० मषति) चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, मार डालना, नष्ट करना ।

मषिः—**षी** (स्त्री०) [मष्+इन्, मषि+ङीप्]=मसी दे० ।

मस् (दिवा० पर० मस्यति) 1. तोलना, मापना, पैमाइश करना 2. रूप बदलना ।

मसः [मस्+अच्] माप, तोल ।

मसनम् [मस्+ल्युट्] 1. मापना, तोलना 2. एक प्रकार की बूटी ।

मसरा [मस्+अरच्+टाप्] एक प्रकार की दाल, मसूर।

मसारः, मसारकः [मस्+क्विप्, मस् परिमाणम् ऋच्छति मस्+ऋ+अण्, मसार+कन्] पन्ना।

मसिः (पुं० स्त्री) [मस्+इन्] 1 स्याही 2. दीवे की स्याही, काजल 3. आंखों में लगाने की काली काजल। सम० --आधारः,--कूपी,--धानम्,--धानी,--मणिः स्याही रखने की बोतल, दवात,--जलम् रोशनाई, --पण्यः लेखक, लिपिकार,--पथः कलम, लेखनी, --प्रसूः (स्त्री०) 1. लेखनी 2. स्याही की बोतल, --वर्धनम् लोबान।

मसिकः [मसि+कन्] साँप का बिल।

मसी [मसि+ङीप्] दे० ऊपर 'मसि'। सम०--जलम् स्याही,--धानी दवात,--पटलम् काजल लगाना --शिरसि मसीपटलम् दधाति दीपः--भामि० १।७४।

मसु (सू) रः [मस्+उरन्, ऊरन् वा] 1. एक प्रकार की दाल, मसूर 2. तकिया,--रा 1. मसूर की दाल 2. वेश्या, रंडी।

मसूरिका [मसूर+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. एक प्रकार का शीतला रोग, खसरा 2. मसहरी 3. कुट्टिनी, दूती।

मसूरी [मसूर+ङीष्] छोटी चेचक।

मसृण (वि०) [ऋण् (दीप्ति)+क,पृषो० साधु] 1. स्निग्ध, चिकना--मसृणचंदनचर्चितांगी--चौर० ७, या, सरस मसृणमपि मलयजपंकम्--गीत० ४ 2. मृदु, कोमल, सरल--उत्तर० १।३८ 3. सौम्य, मृदु, मधुरमसृणवाणि--गीत० १० 4. प्रिय, मनोहर --विनयमसृणो वाचि नियमः--उत्तर० २।२, ४।२१ 5. चमकीला, उज्ज्वल--मा० १।२९, ४।२,--णा अलसी।

मस्क् (भ्वा० पर० मस्कति) जाना, हिलना-जुलना।

मस्करः [मस्क्+अरच्] 1. बाँस 2. खोखला बाँस 3. गति, चाल 4. ज्ञान।

मस्करिन् (पुं०) [मस्कर+इनि] 1. सन्यासी या साधु, सन्यास आश्रम में वर्तमान ब्राह्मण--धारयन् मस्करिव्रतम्--भट्टि० ५।६३ 2. चन्द्रमा।

मस्ज् (तुदा० पर० मज्जति, मग्न--प्रेर० मज्जयति--इच्छा० मिमंक्षति) 1. स्नान करना, डुबकी लगाना, पानी में गोता लगाना--रघु० १५।१०१, भामि० २।९५ 2. डूबना, ढलना, डूबजाना, नीचे बैठना, गोता लगाना (अधि० या कर्म० के साथ) सीदन्नंधे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा--उत्तर० ३।३८, मा० ९।३० --सोऽसंवृतं नाम तमः सह तेनैव मज्जति--मनु० ४।८१, रघु० १६।५२ 3. डूबना, पानी में नष्ट होना 4. दुर्भाग्यग्रस्त होना 5. हतोत्साह होना, निराश या उत्साहहीन होना, उद्--पानी से बाहर आना, दृष्टिगोचर होना, उठना--वन्यः सरित्तो गज उन्ममज्ज--रघु० ५।४३, १६।७९, कि० ९।२३, शि० ९।३०, नि--,डूबना, नीचे बैठना, ढल जाना (आलं से भी) यथा प्लवेनौपलेन निमज्जत्युदके तरन्, तथा निमज्जतोऽधस्तादज्ञौ दातृ प्रतीच्छकौ--मनु० ४।१९४, ५।७३, शोके मुहुश्चाविरतं न्यमांक्षीत्--भट्टि० ३।३०, १५। ३१, शि० ९।७४ गीत० १ 2. घुल जाना, डूब जाना. ओझल होना, नजर से बच निकलना,--एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतींदोः किरणेष्विवांकः--कु० १।३।

मस्तम् [मस्+क्त] सिर माथा। सम०--दारुं (नपुं०) देवदारु का पेड़,--मूलकम् गर्दन।

मस्तकः, कम् [मस्मति परिमात्यनेन मस् करणेत स्वार्थे क तारा०] 1. सिर, माथा, खोपड़ी--अतिलोभा (पाठा० तृष्णा) भिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके--पंच० ५।२२ 2. किसी चीज की चोटी या सिर न च पर्वतमस्तके --मनु० ४।४७, वृक्ष° चुल्ली° आदि। सम० --आख्यः वृक्ष की चोटी,--ज्वरः,--शूलम् तीव्र सिरदर्द, --पिंडकः,--कम् मदोन्मत्त हाथी के गंडस्थल पर का गोल उभार,--मूलकम् गर्दन,--स्नेहः मस्तिष्क।

मस्तिकम् [=मस्तकम्, पृषो० इत्वम्] सिर।

मस्तिष्कम् [मस्तं मस्तकम् इष्यति स्वाधारत्वेन प्राप्नोति मस्त+इष्+क, पृषो०] दिमाग। सम० त्वच् (स्त्री०) मस्तिष्क पर चारों ओर लिपटी हुई झिल्ली।

मस्तु (नपुं०) [मस्+तुन्] 1. खट्टी मलाई 2. छाछ। सम०--लुंगः,--गम्, लुंगकः,--कम् मस्तिष्क, दिमाग।

मह् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०--महति, महयति--ते, महित) सम्मान करना, आदर करना, बड़ा मानना, पूजा करना, श्रद्धा रखना, महत्त्वपूर्ण समझना--गोप्तारं न निधीनां महयंति महेश्वरम् विबुधाः-- सुभा०, जयश्री विन्यस्तैर्महित इव मंदारकुसुमैः--गीत० ११, कु० ५।२५, ५।१२, कि० ५।७, २४, भट्टि० १०।२, रघु० ११।४९।

ii (भ्वा० आ० महते) विकसित होना, बढ़ना।

महः [मह् घञर्थे क] 1. उत्सव, त्योहार बंधुताहृदयकौमुदीमहः--मा० ९।२१, स खलु दूरगतोप्यतिवर्तते महमसाविति बंधुतयोदितैः--शि० ६।१९, मदनमहम्, --रत्न० १ 2. उपहार, यज्ञ 3. भैंसा 4. प्रकाश, कांति तु० 'महस्' से भी।

महकः [मह+कन्] 1. प्रमुख पुरुष 2. कछुवा 3. विष्णु का नामान्तर।

महत् (वि०) (म० अ० महीयस्, उ० अ० महिष्ठ, कर्तृ० (पुं०) महान् महान्तौ महांतः, कर्म० (ब० व०)

महतः) [मह्+अति] 1. बड़ा, वृहद्, विस्तृत, विशाल, विस्तीर्ण—महान् सिंहः व्याघ्रः आदि 2. पुष्कल, यथेष्ट, विपुल, बहुत से,असंख्य—महाजनः, महान्, द्रव्यराशिः 3. लम्बा, विस्तारित, व्यापक, महांतौ बाहू यस्य स महाबाहुः इसी प्रकार महती कथा, महानध्वा 4. हृष्टपुष्ट, बलवान्, ताकतवर जैसे महान् वीरः 5. प्रचंड, गहन, अत्यधिक—महती शिरोवेदना, महती पिपासा 6. स्थूल, निबिड, सघन—महानंधकारः 7. महत्त्वपूर्ण, गुरुतर, भारी महत्कार्यमुपस्थितम्, महती वार्ता 8. ऊँचा, उन्नत प्रमुख,पूज्य, उदात्त महत्कुलम्, महान् जनः 9. उत्ताल—महान् घोषः, ध्वनिः 10. सवेरे या देर से —महति प्रत्यूषे, 'प्रातःकाल सवेरे' महत्यपराह्णे 'दोपहर वाद देर में' 11. ऊंचा-महार्घ (पुं०) 1. ऊंट 2. शिव का विशेषण 3. (सांख्य में) महत्तत्व, बुद्धि तत्त्व (मन से भिन्न) सांख्य० द्वारा माने गये पच्चीस तत्त्वों में से दूसरा—मनु० १२।१४, सां० ३।८।२२ आदि नपुं० 1. बड़प्पन, अनन्तता, असंख्यता 2. राज्य, उपनिवेश 3. पवित्रज्ञान (अव्य०) बहुत अधिक, अत्यधिक, बहुतज्यादा, अत्यन्त (विशे० महत्' शब्द तत्पुरुष समास के प्रथम पद के रूप में तथा कुछ अन्य स्थानों पर अपरिवर्तित ही रहता है, परन्तु कर्मधारय और बहुव्रीहि समासों में बदल कर 'महा' बन जाना है) । सम०—आवासः विशालभवन, —आशा ऊँची आशा,—आश्चर्य (वि०) अत्यंत आश्चर्यजनक,—आश्रयः बड़ों का सहारा, बड़ों की शरण,—कथ (वि०) बड़ों द्वारा कथित या उल्लिखित, बड़े लोगों के मुंह में,—क्षेत्र (वि०) विस्तृत प्रदेश पर अधिकार करने वाला,—ताच्वम् सांख्यों के पच्चीस तत्त्वों में से दूसरा,—बिलम् अन्तरिक्ष,—सेवा बड़ों की सेवा,—स्थानम् ऊँचा स्थान, उन्नत स्थान ।

महती [महत्+ङीप्] 1. एक प्रकार की वीणा 2. नारद की वीणा —अवेक्षमाणं महतीं मुहुर्मुहुः—शिशु० १।१० 3. सफेद बैंगन का पौधा 4. बड़प्पन, महत्त्व ।

महत्तर (वि०) [महत्+तरप्] अपेक्षाकृत बड़ा, विशाल —रः 1. प्रधान, मुख्य या सबसे बड़ा व्यक्ति अर्थात् सम्माननीय पुरुष—उत्तर० ४ 2. कंचुकी या राज भवन का महाप्रतिहार 3. दरबारी 4. गाँव का भुखिया या सबसे बड़ा आदमी ।

महत्तरकः [महत्तर+कन्] दरबारी आदमी, किसी राजभवन का महा प्रतिहार ।

महत्त्वम् [महत्+त्व] 1. बड़ापन, विशालता, विस्तृति, महाविस्तार 2. शक्तिमत्ता, विभूति, ऐश्वर्य 3. आवश्यकता 4. उन्नत अवस्था, ऊँचाई, उन्नयन 5. गहनता, प्रचण्डता, ऊँचा परिमाण ।

महनीय (वि०) [मह्+अनीयर्] सम्मान के योग्य, आदरणीय, प्रतिष्ठित, श्रीमान्, यशस्वी, उदात्त, श्रेष्ठ—महनीयशासनः—रघु० ३।६९, महनीयकीर्तिः —२।२५ ।

महंतः [मह्+झच्] किसी पद का मुख्याधिष्ठाता ।

महर् (महस्) (अव्य०) [मह्+अरु] भूलोक से ऊपर के लोकों में से चौथा लोक (स्वर् और जनस् के बीच का लोक) (इसी अर्थ में 'महर्लोक' शब्द भी) ।

महल्लः, महल्लिकः [अरबी भाषा से व्युत्पन्न शब्द महत् +ला+क] राजा के अन्तःपुर में रहने वाला खोजा या हिजड़ा ।

महल्लकः [महल्ल+कन्] निर्बल, कमजोर, पुराना, —कः 1. राजा के अन्तःपुर का खोजा या हिजड़ा विशाल भवन, महल ।

महस् (नपुं०) [मह्+असुन्] 1. उत्सव, त्योहार का अवसर 2. उपहार, आहुति, यज्ञ 3. प्रकाश, आभा —कल्याणानां त्वमसि महसां भाजनं विश्वमूर्ते—मा० १।३, उत्तर० ४।१० 4. सात लोकों में से चौथा —दे० 'महर्' ।

महस्वत्, महस्विन् (वि०) [महस्+मतुप्, विनि वा] भव्य, उज्ज्वल, चमकीला, प्रकाशयुक्त, आभामय ।

महा [मह्+घ+टाप्] गाय ।

महा [कर्म० स० और ब० स० में प्रथम पद के रूप में, तथा कुछ अन्य अनियमित शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त 'महत्' का स्थानापन्न रूप] (विशे० उन समस्त शब्दों की संख्या जिनका आदि पद 'महा' है, बहुत अधिक है; तथा और अनेक शब्द बन सकते हैं, उनमें से अपेक्षाकृत आवश्यक या जो कोई विशिष्ट अर्थ युक्त हैं, नीचे दिए गए हैं) । सम०—अक्षः शिव का विशेषण,—अंग (वि०) स्थूल, महाकाय (गः) 1. ऊँट 2. एक प्रकार का चूहा, घूंस 3. शिव का नामान्तर,—अंजनः एक पहाड़ का नाम,—अत्ययः संकट का भारी खतरा,—अध्वनिक (वि०) 'दूर तक गया हुआ' महाप्रयात, मृत,—अध्वरः बड़ा यज्ञ,—अनसम् भारी गाड़ी (—सः,—सम्) रसोई,—अनुभाव (वि०) महाप्रतापी, ओजस्वी, उदात्त, यशस्वी, महाशय, उदार, श्रीमान्—शि० शि० १।१७, श० ३ 2. गुणवान् ईमानदार, धर्मात्मा, (वः) प्रतिष्ठित या आदरणीय व्यक्ति,—अंतकः 1. मृत्यु 2. शिव का विशेषण,—अंधकारः 1. घोर अन्धेरा 2. आध्यात्मिक अज्ञान,—अंध्राः (ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम,—अन्वय,—अभिजन (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न, सत्कुलोद्भव (यः,—नः) उत्तम जन्म, ऊँचा कुल, अभिषवः सोम का अत्यन्त खींचा हुआ रस,—अमात्यः (राजा का) मुख्य

या प्रधानमंत्री,—अंशुकः शिव का विशेषण, अंबुजम् दस खरब, -अम्ल (वि०) बहुत खट्टा (—म्लम्) इमली का फल, अरण्यम् सुनसान जंगल, विशाल जंगल, -अर्घ (वि०) अतिमूल्यवान्, ऊँची कीमत वाला (-र्घः) एक प्रकार की बटेर, -अर्घ्य (वि०) मूल्यवान्, कीमती,—अर्चिस् (वि०) ऊँची ज्वालाओं वाला,—अर्णवः 1. महासागर 2. शिव का नामान्तर, —अर्बुदम् एक अरब - अर्ह (वि०) 1. अतिमूल्यवान्, बहुत क़ीमती--कु० ५।१२ 2. अनमोल, अननुमेय - उत्तर० ६।११, (—र्हम्) सफेद चन्दन की लकड़ी,—अवरोहः वटवृक्ष,—अशनिध्वजः वज्र के रूप में एक बड़ा झंडा—रघु० ३।५६,—अशन (वि०) पेटू, भोजनभट्ट,—अश्मन् (पुं०) मूल्यवान् पत्थर, लाल, -अष्टमी आश्विन शुक्ला अष्टमी, दुर्गाष्टमी, —असिः बड़ी तलवार,—असुरी दुर्गा का नामान्तर, —अह्नः दोपहर बाद का समय,—आकार (वि०) विस्तीर्ण, विशाल, बड़ा,—आचार्यः 1. प्रधान अध्यापक शिव का विशेषण,—आढ्य (वि०) धनवान्, अमीर (-ढ्यः) कदम्ब का वृक्ष, —आत्मन् (वि०) 1. महाशय, महामनस्क, उदारचेता, महोदय, अयं दुरात्मा अथवा महात्मा कौटिल्यः—मुद्रा० ७, द्विषंति मन्दाश्चरितं महात्मनां—कु० ५।७५, उत्तर० १।४९ 2. श्रीमान्, पूज्य, श्रेष्ठ, प्रमुख (पुं०) परमात्मा—मनु०१।५४ (महात्मवत् का भी वही अर्थ है जो 'महात्मन्' शब्द का),—आनकः एक प्रकार का बड़ा ढोल,—आनंदः, —नन्दः 1. बड़ा हर्ष या उल्लास 2. विशेष कर मोक्ष का आनंद, —आपगा बड़ा दरिया,—आयुधः शिव का विशेषण,—आरम्भ (वि०) बड़े-बड़े कार्यों में हाथ में लेने वाला, साहसिक (—भः) कोई बड़ा साहसिक कार्य,—आलयः 1. देवालय 2. पवित्र स्थान, आश्रम 3. बड़ा आवासस्थान 4. तीर्थस्थान 5. ब्रह्मलोक 6. परमात्मा (—या) एक विशेष देवता का नाम, - आशय (वि०) महात्मा, महामनस्क, उदारचेता, उदात्तचरित्र—दे० महात्मन् (—यः) 1. उदारमना या उदारचेता व्यक्ति—महाशयचक्रवर्ती—भामि० १।७० 2. समुद्र,—आस्पद (वि०) 1. उत्तम पद पर अधिकार करने वाला 2. ताकतवर, बलवान्, —आहवः बड़ा या महासंग्राम,—इच्छ (वि०) 1. उदारचेता, उदारमना महामना, उदात्तचरित्र—रघु० १८।३३ 2. महान् उद्देश्य और आशाएँ रखने वाला, महत्त्वाकांक्षी, —इन्द्रः 1. महेन्द्र अर्थात् महान् इन्द्र कु० ५।५३, रघु० १३।२०, मनु० ७।७ 2. मुखिया या नेता 3. एक पर्वत श्रृंखला, °चापः इन्द्रधनुष, °नगरी इन्द्र की राजधानी अमरावती, °मंत्रिन् (पुं०) बृहस्पति का विशेषण,—इष्वासः बड़ा धनुर्धर, बड़ा भारी योद्धा भग० १।४, —ईशः,—ईशानः शिव का नाम, —ईशानी पार्वती का नाम,—ईश्वरः 1. महाप्रभु, स्वामी 2. शिव का नामांतर 3. विष्णु का नाम, (—री) दुर्गा का नाम,—उक्षः ('उक्षन्' के स्थान पर) महाकाय बैल, हृष्टपुष्ट बैल—महाक्षतां वत्सतरः स्पृशन्निव—रघु० ३।३२, ४।२२, ६।७२, शि० ५।६३, —उत्पलम् एक बड़ा नील कमल,—उत्सवः 1. एक बड़ा पर्व, या हर्ष का अवसर 2. कामदेव,—उत्साह (वि०) ऊर्जस्वी, ओजस्वी, धैर्यशाली (—हः) धैर्य, —उदधिः 1. महासागर रघु० ३।१७ 2. इन्द्र का विशेषण °जः शंख, सीपी,—उदय (वि०) बड़ा समृद्धिशाली या भाग्यवान्, बड़ा यशस्वी या भव्य, अतिसमृद्ध (—यः) 1. प्रोत्कर्ष, उन्नयन, बड़प्पन, समृद्धि —रघु० ८।१८ 2. मोक्ष 3. प्रभु, स्वामी 4. कान्यकुब्ज या कन्नौज नामक जिला 5. कन्नौक की राजधानी का नाम 6. मधुपर्क,—उदर (वि०) बड़े पेट वाला, मोटा (—रम्) 1. बड़ा पेट 2. जलोदर,—उदार (वि०) अतिदानशील, या उदारचेता, वदान्य,—उद्यम (वि०)=महोत्साह दे०,—उद्योग (वि०) अतिपरिश्रमी, मेहनती, परिश्रमशील,—उन्नत (वि०) अत्यंत ऊँचा (—तः) पंखिया खजूर का वृक्ष,—उन्नतिः (स्त्री०) प्रकर्ष, उन्नयन (आलं० भी) उत्कृष्ट पद, —उपकारः बड़ा आभार,—उपाध्यायः मुख्य गुरु, विद्वान् अध्यापक,—उरगः बड़ा साँप—रघु० १२।९८, —उरस्क (वि०) विशाल वक्षस्थल वाला (—स्कः) शिव का विशेषण,—उल्का 1. एक बड़ा टूटा तारा 2. बड़ी जलती हुई लकड़ी,—ऋद्धिः (स्त्री०) बड़ी समृद्धि या सम्पन्नता,—ऋषभः साँड,—ऋषिः 1. बड़ा ऋषि या सन्त (मनु० १।३४ में यह शब्द मानवजाति के मूलपुरुष या दस प्रजापतियों के लिए प्रयुक्त हुआ है, परन्तु यह 'बड़ा ऋषि' के सामान्य अर्थ में भी प्रयुक्त होता है) 2. शिव का नाम, —ओष्ठ (महोष्ठ) (वि०) बड़े होठों वाला (—ष्ठः) शिव का विशेषण,—ओजस् बहुत ताकतवर, अतिबलशाली, प्रतापी, यशस्वी,—महौजसो मानधना धनार्चिताः—कि० १।१९, (पुं०) बड़ा शूरवीर या योद्धा, मल्ल,—ओजसम् विष्णु का चक्र,—ओषधिः (स्त्री०) 1. अमोघ औषधि का पौधा, अचूक दवा 2. दूर्वा घास,—औषधम् सर्वोपरि उपचार, रामबाण, सब रोगों की अचूक दवा 3. अदरक 4. लहसुन 5. एक प्रकार का विष, वत्सनाभ,—कच्छः 1. समुद्र 2. वरुण का नाम 3. पहाड़ का नाम,—कंदः लहसुन, —कपर्दः एक प्रकार की सीपी, कौड़ी, —कपित्थः 1. बेल का पेड़ 2. लाल लहसुन,—कंबु (वि०) बिल्कुल नंगा (—बुः) शिव का विशेषण,—कर (वि०) 1. लंबे

हाथों वाला 2. जिससे बहुत राजस्व मिलता हो—**कर्णः** शिव का विशेषण, —**कर्मन्** (वि०) बड़े-बड़े काम करने वाला (पुं.) शिव का विशेषण,—**कला** शुक्ल पक्ष की द्वितीया की रात, - **कविः** 1. कविशिरोमणि कालिदास भवभूति, बाण और भारवि आदि महाकवि 2. शुक्राचार्य का विशेषण—-**कान्तः** शिव का विशेषण (—ता) पृथ्वी,—**काय** (वि०) स्थूलकाय, बड़ा महाकाय, अतिकाय (-—यः) 1. हाथी 2. शिव का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण 4. शिव का एक अनुचर, नंदी बैल,—**कार्तिकी** कार्तिक मास की पूर्णिमा, — **कालः** प्रलयकर्ता के रूप में शिव का एक रूप 2. एक प्रसिद्ध मन्दिर या शिव (महाकाल) का मन्दिर, ('महाकाल' का यह मन्दिर उज्जैन में विद्यमान हैं, कालिदास ने अपने मेघदूत की रचना द्वारा इसे अमर कर दिया है, वहाँ (महाकाल=शिव) देवता, उसका मन्दिर, पूजा आदि के साथ-साथ नगरी का सचित्र वर्णन मिलता है तु० मेघ० ३०-३८, रघु० ६।३४ 3. विष्णु का विशेषण 4. एक प्रकार की लौकी या कद्दू, °**पुरम्** उज्जयिनी की नगरी,- **काली** दुर्गा देवी का डरावना रूप,—**काव्यम्** लौकिक काव्य, महाकाव्य (इसके विषय में पूरा विवरण जो साहित्य शास्त्रियों ने किया है सा० द० ५५९ में दे०) (महाकाव्य गिनती में पाँच हैं - रघुवंश, कुमारसंभव, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध, और नैषधचरित। यदि खंडकाव्य—मेघदूत भी सूचीमें सम्मिलित किया जाय तो छः महाकाव्य हो जाते हैं परन्तु यह गणना केवल परम्परा-प्राप्त, क्योंकि भट्टिकाव्य, विक्रमांकदेवचरित और हरविजय आदि का भी महाकाव्य की दृष्टि से विचार किया जाने का समान अधिकार है), —**कुमारः** राजा का सबसे बड़ा पुत्र, युवराज,—**कुल** (वि०) सत्कुलोत्पन्न, उच्चकुलोद्भव, ऊँचे कुल में उत्पन्न (लम्) उच्चकुल में जन्म, ऊँचा कुल, —**कृच्छ्रम्** घोर साधना, भारी तपस्या,—**कोशः** शिव का विशेषण, —**क्रतुः** महायज्ञ, उदा० अश्वमेध—रघु० ३।४६, —**क्रमः** विष्णु का विशेषण, - **क्रोधः** शिव का विशेषण,—**क्षत्रपः** महाराज्यपाल, उपशासक,- **क्षीरः** गन्ना, ईख,—**खर्वः**,—**र्वम्** (बड़ी संख्या सौ खरब की संख्या) —**गजः** बड़ा हाथी दे० दिक्करिन्, **गणपतिः** गणेश देवता का एक रूप, - **गंधः** एक प्रकार की बेत (धम्) एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी, **गवः** सुरागाय, - **गुण** (वि०) अमोघ, अचूक (औषधि आदि), —**गृष्टिः** विशाल डील की गाय, **ग्रहः** राहु का विशेषण, **ग्रीवः** 1. ऊँट 2. शिव का विशेषण,—**ग्रीविन्** (पुं.) ऊँट —**घूर्णा** खींची हुई शराब,—**घोषम्** मंडी, मेला (—षः) ऊँचा शोर, कोलाहल, गुलगपाड़ा, —**चक्रवर्तिन्** (पुं.) सार्वभौम नरेश,—**चमूः** (स्त्री०) विशाल सेना,—**छायः** वटवृक्ष,—**जटः** शिव का विशेषण, -**जत्रु** (वि०) जिसकी हंसली की हड्डी बहुत बड़ी हो (—त्रुः) शिव का विशेषण,—**जनः** 1. लोगों का समूह, बहुत से प्राणी, साधारण जनता—महाजनों येन गतः स पन्थाः—महा० 2. जनसंख्या, भीड़-भाड़ —महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति - कु० ५।७० 3. बड़ा आदमी, प्रतिष्ठित पुरुष, प्रमुख व्यक्ति—महाजनस्य संसर्ग कस्य नोन्नति कारकः, पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ता फलश्रियम् —सुभा० 4. किसी व्यवसाय का मुखिया 5. सौदागर, व्यापारी— **जातीय** (वि०) 1. दान-शील 2. उत्तम जाति का, —**ज्योतिस्** (पुं.) शिव का विशेषण,—**तपस्** (पुं.) 1. कठोर तप करने वाला 2. विष्णु का विशेषण,—**तलम्** नीचे के सात लोकों में से एक, दे० पाताल, —**तिक्तः** निबवृक्ष,- **तीक्ष्ण** (वि०) अत्यंत तेज या तीव्र (क्ष्णा) भिलावाँ,—**तेजस्** (वि०) 1. बड़ी भारी कांति या दीप्ति से युक्त 2. तेजस्वी, शक्तिशाली, शौर्ययुक्त (पुं०) 1. शूरवीर, योद्धा 2. अग्नि 3. कार्तिकेय का विशेषण (न०) पारा,—**दण्डः**—**दंतः** 1. बड़े दांतों वाला हाथी 2. शिव का विशेषण 1. लंबी भुजा 2. भारी दंड **दशा** (मनुष्य के भाग्य पर) प्रबल ग्रह का प्रभाव,—**दारु** (न पुं०) देवदारु वृक्ष,—**देवः** शिव का नामांतर (—वी) पार्वती का नामांतर,—**द्रुमः** पीपल का वृक्ष,—**धन** (वि०) 1. धनाढ्य 2. कीमती, मूल्यवान् (—नम्) 1. सोना, 2. गंध, धूप 3. मूल्यवान् वेशभूषा,—**धनुस्** (पुं०) शिव का विशेषण,—**धातुः** 1. सोना 2. शिव का विशेषण 3. मेरु का विशेषण,—**नटः** शिव का विशेषण —**नदः** बड़ा दरिया,—**नदी** 1. गंगा, कृष्णा जैसी बड़ी नदी - संभूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा—शि० २।१०० 2. बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी,—**नंदा** 1. खींची हुई शराब 2. एक नदी का नाम,—**नरकः** इक्कीस नरकों में से एक,—**नलः** एक प्रकार का नरकुल, नेजा.—**नवमी**आश्विन शुक्ला नौमी, दुर्गानवमी,—**नाटकम्** 'महानाटक' एक नाटक' का नाम जिसे 'हनुमन्नाटक' (हनुमान् के नाम से सर्वप्रिय होन के कारण) भी कहते हैं, **नादः** 1. ऊंची आवाज शोर 2. बड़ा ढोल 3. गरजने वाला बादल, 4. शंख 5. हाथी 6. सिंह 7. कान 8. ऊँट 9. शिव का विशेषण, (दम्) एक वाद्ययंत्र,—**नासः** शिव का विशेषण,—**निद्रा** 'महानिद्रा', मृत्यु,—**नियमः** विष्णु का विशेषण,—**निर्वाणम्** (बौद्धों के अनुसार) व्यष्टिसत्ता का पूर्ण नाश,—**निशा** 1. आधीरात, रात का दूसरा या तीसरा पहर—महानिशा तु विज्ञेया मध्यमं

प्रहरद्वयम्,—नीचः धोबी,—नील (वि०) गहरा नील (लः) एक प्रकार का नीलम या पन्ना—शि० १।१६, ४।४४, रघु० १८।४२, °उपलः नीलम,—नृत्यः शिव का विशेषण, नेमिः कौवा,—पक्षः 1. गरुड़ का विशेषण 2. एक प्रकार की बत्तख, (—क्षो) उल्लू,—पंचमूलम् पाँच पेड़ों की जड़ों का योग—बिल्वोग्निमन्थः श्योनाकः काश्मरी पाटला तथा, सर्वेस्तु मिलितैरेतैः स्यान्महापंचमूलकम्,—पञ्चविषम् पाँच घातक विषों का योग—शृंगी च कालकूटश्च मुस्तको वत्सनाभकः, शंखकर्णीति योगोऽयं महापंचविषाभिधः,—पथः 1. मुख्य सड़क, प्रधान वीथी, राजमार्ग—कु० ७।३ 2. परलोक अर्थात् मृत्यु का मार्ग 3. कुछ पर्वत के शिखर जहां से भक्त लोग स्वर्गपथ प्राप्त करने के लिए अपने आपको फेंका करते थे 4. शिव का एक विशेषण,—पद्मः एक विशिष्ट बड़ी संख्या, (सौ पद्म की संख्या ?) 2. नारद का नामान्तर 3. कुबेर की नौ निधियों में से एक (द्मम्) 1. श्वेत कमल 2. एक नगर का नाम, °पतिः नारद का नामान्तर,—पराह्णः देर में, दोपहर बाद,—पातकम् बहुत बड़ा पाप, जघन्य अपराध—ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः, महान्ति पातकान्याहुस्तत्संसर्गश्च पंचमम्—मनु० ११।५४ 2. कोई बड़ा पाप, या अतिक्रमण,—पात्रः प्रधान मंत्री,—पादः शिव का विशेषण,—पाप्मन् (वि०) अत्यंत पापपूर्ण या दुर्वृत्त,—पुंसः महान् पुरुष—पुरुषः 1. बड़ा आदमी, एक प्रमुख या पूज्य व्यक्ति—शब्दं महापुरुषसंविहितं निशम्य उत्तर० ६।७ 2. परमात्मा 3. विष्णु का विशेषण,—पुष्पः एक प्रकार का कीड़ा,—पूजा बड़ी पूजा, असाधारण अवसरों पर अनुष्ठित गहन पूजा,—पृष्ठः एक ऊँट,—प्रपंचः विश्व का विराटरूप,—प्रभ (वि०) बड़ी भारी कान्ति वाला (—भः) दीपक का प्रकाश,—प्रभुः 1. परमेश्वर 2. राजा महाप्रभु 3. मुख्य 4. इन्द्र का विशेषण 5. शिव का विशेषण 6. विष्णु का विशेषण,—प्रलयः 'महाविघटन' ब्रह्मा की जीवन समाप्ति पर विश्व का पूर्ण विनाश जब कि अपने अधिवासियों सहित समस्त लोक, देव, सन्त, ऋषि आदि स्वयं ब्रह्मा समेत सभी विनाश को प्राप्त हो जाते हैं,—प्रसादः 1. एक बड़ा अनुग्रह 2. (भगवान् की मूर्ति पर लगाया हुआ भोग) एक बड़ा उपहार,—प्रस्थानम् इस जीवन से विदा लेना, मृत्यु, ऊँचा श्वास, या श्वासाधिक ध्वनि जो ऊष्म वर्णों के उच्चारण में की जाती है 2. श्वासातिरेक से युक्त वर्ण—अर्थात् ख् घ् छ् झ् ठ् ढ् थ् ध् फ् भ् श् ष् स् ह्, 3. पहाड़ी कौवा,—प्लवः भारी बाढ़, जलप्लावन,—फल (वि०) बहुत फल देने वाला (ला) 1. कड़वी लौकी 2. एक प्रकार की बर्छी, (लम्) बड़ा फल या पुरस्कार,—बल बहुत मजबूत (लः) हवा (लम्) सीसा °ईश्वरः वर्तमान महाबलेश्वर के निकट स्थापित शिव का लिंग,—बाहु (वि०) लंबी भुजाओं वाला, शक्तिशाली (हुः) विष्णु का विशेषण,—बि (वि) लम्—1. अन्तरिक्ष 2. हृदय 3. जलकलश, घड़ा 4. विवर, गुफा,—बी (वी) जः शिव का विशेषण,—बी (वी) ज्यम् मूलाधार,—बोधिः बौद्धभिक्षु,—ब्रह्मम्,—ब्रह्मन् परमात्मा,—ब्राह्मणः 1. एक बड़ा या विद्वान् ब्राह्मण 2. एक नीच या तिरस्करणीय ब्राह्मण,—भाग (वि०) 1. अतिभाग्यवान्, सौभाग्यशाली, समृद्ध 2. श्रीमान्, पूज्य, यशस्वी—महाभागः कामं नरपतिरभिन्नस्थितिरसौ—श० ५।२०, मनु० ३।१९२ 3. अत्यन्त निर्मल या पवित्र, अत्यंत गुणवान्,—भागिन् (वि०) अतिभाग्यवान् या समृद्ध,—भारतम् प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें धृतराष्ट्र और पांडु के पुत्रों की प्रतिद्वन्द्विता और संघर्ष का वर्णन है (इसमें अठारह पर्व या अध्याय हैं, कहा जाता है कि इसकी रचना व्यास ने की, तु० 'भारत' शब्द की भी),—भाष्यम् 1. एक बड़ी टीका 2. विशेषकर पाणिनि के सूत्रों पर पतंजलि द्वारा लिखा गया महाभाष्य (विस्तृत टीका),—भीमः राजा शान्तनु का विशेषण,—भीरुः एक प्रकार का कीड़ा, गुबरैला,—भुज (वि०) लम्बी भुजाओं वाला, शक्तिशाली,—भूतम् मूलतत्त्व—दे० भूत—तं वेवाविदधेनूनं महाभूतसमाधिना—रघु० १।२९, मनु० १।६, (—तः) एक बड़ा जानवर,—भोगा दुर्गा का विशेषण,—मणिः क़ीमती या मूल्यवान् मणि, आभूषण, जवाहर,—मति (वि०) 1. उच्चमनस्क 2. चतुर (तिः) बृहस्पति का नाम,—मद (वि०) नशे में अत्यन्त चूर (—दः) मतवाला हाथी,—मनस्,—मनस्क (वि०) 1. उच्चमना, उदात्तमनस्क, उदाराशय 2. उदार 3. घमण्डी, अभिमानी (पुं०) 'शरभ' नाम का एक कल्पनाप्रसूत जन्तु,—मंत्रिन् (पुं०) प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री,—महोपाध्यायः 1. बहुत बड़ा उपाध्याय, अध्यापक, महापंडित, विद्वान् और प्रसिद्ध पंडितों को दी जाने वाली उपाधि उदा० महामहोपाध्याय-मल्लिनाथ सूरि आदि,—मांसम् 'मूल्यवान् मांस' विशेषकर नरमांस-मा० ५।१२,—मात्रः 1. राज्य का बड़ा अधिकारी, उच्च राज्याधिकारी, मुख्यमन्त्री—मन्त्रे कर्मणि भूषायां वित्ते माने परिच्छदे, मात्रा च महती येषां महामात्रास्तु ते स्मृताः मनु० ९।२५९ 2. महावत, हाथियों पर निगरानी रखने वाला पंच० १।१३१ 3. हाथियों का अधीक्षक (त्री) 1. मुख्यमन्त्री की पत्नी 2. आध्यात्मिक गुरु की पत्नी,—मायः विष्णु का विशेषण,—माया सांसारिक कारण भूता अविद्या जिससे यह समस्त भौतिक जगत् वास्तविक प्रतीत

होता है, --मारी हैज़ा, ववाई रोग, संक्रामक बीमारी, —**माहेश्वरः** शिव या महेश्वर का बड़ा भक्त,—**मुखः** मगरमच्छ, घड़ियाल, - **मुनिः** बड़ा ऋषि 2. व्यास (नपुं० —नि) आयुर्वेद की जड़ीबूटी,—**मूर्धन्** (पुं०) शिव का विशेषण, -**मूलम्** एक बड़ी मूली (लः) एक प्रकार का प्याज,—**मूल्य** (वि०) अत्यन्त क़ीमती (ल्यः) लाल, **मृगः** 1. कोई भी बड़ा जानवर 2. हाथी, —**मेदः** मूंगे का पेड़,—**मोहः** मन का भारी आकर्षण (—हा) दुर्गा का विशेषण, **यज्ञः** 'महायज्ञ' गृहस्थ द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पांच यज्ञ या और कोई धर्मकृत्य —अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्, होमो दैवो (देवयज्ञः) बलिर्भौतो (भूत यज्ञः) नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् - मनु० ३।७०–७२,—**यमकम्** 'बृहद्यमक' अर्थात् किसी श्लोक के चारों चरण जहां शब्दशः एक से हैं, परन्तु अर्थतः भिन्न हैं, उदा० दे० कि० १५।५२, यहां विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणाः' पंक्ति के चार भिन्न २ अर्थ हैं, तु० भट्टि० १०।१९ की भी, **यात्रा** 'बड़ी तीर्थयात्रा' काशी यात्रा, मृत्यु,—**याम्यः** विष्णु का विशेषण,—**युगम्** 'बृहद् युग' मनुष्यों के चार युगों का समाहार अर्थात् ३२०००० मानववर्ष, —**योगिन्** (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. मुर्ग़ा,—**रजतम्** 1· सोना 2. धतूरा, —**रजनम्** 1. केसर 2. सोना,—**रत्नम्** बहुमूल्य रत्न,—**रथः** 1. बड़ी गाड़ी या रथ 2. बड़ा योद्धा या नायक—कुतः प्रभावो धनंजयस्य महारथजयद्रथस्य, विपत्तिमुत्पादयितुम् - वेणी० २, रघु० ९।१, शि० ३।२२ (महारथ की परिभाषा – एको दशसहस्राणि योधयेद्यस्तु धन्विनां, शस्त्रशास्त्रप्रवीणश्च विज्ञेयः स महारथः),—**रस** (वि०) अत्यन्त रसीला (सः) 1. गन्ना, ईख 2. पारा 3. बहुमूल्य धातु (सम्) ·.ावलों का जायकेदार मांड,—**राजः** 1. बड़ा राजा, प्रभु, या सम्राट् 2. राजाओं या बड़े २ व्यक्तियों को ससम्मान संबोधित करने की रीति (महाराज, देव, प्रभु, महामहिम), °**चूतः** एक प्रकार का आम, —**राजिकाः** (पुं०, ब० व०) एक देवसमूह का विशेषण (गिनती में यह देव २२० या २३६ माने जाते हैं),—**राज्ञी** मुख्य रानी, राजा की प्रधान पत्नी, —**रात्रिः**,—**त्री** (स्त्री०) दे० महाप्रलय,—**राष्ट्रः** 1. 'महाराष्ट्र' भारत के पश्चिम में मराठों का एक देश 2. महाराष्ट्र देश के अधिवासी, मराठे (ब० व०) (ष्ट्री) मुख्य प्राकृत बोली, महाराष्ट्र के अधिवासियों की भाषा – तु० दण्डी—महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः—काव्या० १।३४,—**रूप** (वि०) रूप में बलवान् (पः) 1. शिव का विशेषण 2. राल, —**रेतस्** (पुं०) शिव का विशेषण, —**रौद्र** (वि०) बड़ा डरावना (—द्री) दुर्गा का विशेषण,—**रौरवः** इक्कीस नरकों में से एक—मनु० ४।८९–९०,—**लक्ष्मी** 1. नारायण की शक्ति या महालक्ष्मी 2. दुर्गापूजा के उत्सव पर दुर्गा बनने वाली कन्या,—**लिंगम्** बृहल्लिंग (गः) शिव का विशेषण,—**लोलः** कौवा,—**लोहम्** चुम्बक, -**वनम्** 1. एक बड़ा जंगल 2. विंध्यवन में एक बड़ा जंगल,—**वराहः** 'महावराह' विष्णु का विशेषण, तृतीय अवतार 'वराह शूकर' के रूप में,—**वसः** शिशुमार, सूंस,—**वाक्यम्** 1. लंबा वाक्य 2. अविच्छिन्न रचना या कोई साहित्यिक कृति 3. महदर्थ प्रकाशक वाक्य—जैसे तत्त्वमसि, ब्रह्मैवेदं सर्वम् आदि, —**वातः** आंधी, झंझावात,—**वार्तिकम्** पाणिनि के सूत्रों पर कात्यायन द्वारा रचित वार्तिक,—**विदेहा** योगदर्शन में प्रदर्शित मन की अवस्थाविशेष या वृत्तिविशेषः,—**विभाषा** सविकल्प नियम,—**विषुवम्** मेष की संक्रान्ति °**संक्रान्ति** वसन्तविषुव (जब सूर्य मीन राशि से मेषराशि पर संक्रमण करता है),—**वीरः** 1. बड़ा शूरवीर या योद्धा 2. सिंह 3. इन्द्र का वज्र 4. विष्णु का विशेषण 5. गरूड़ का विशेषण 6. हनुमान् का विशेषण 7. कोयल 8. सफ़ेद घोड़ा 9. यज्ञाग्नि 10. यज्ञपात्र 11. एक प्रकार का बाज पक्षी,—**वीर्या** सूर्य की पत्नी संज्ञा का विशेषण,—**वृषः** भारी बैल, सांड, —**वेग** (वि०) बहुत तेज़, प्रबलवेग वाला (गः) 1. लंबी चाल, प्रबल वेग 2. लंगूर 3. गरूड पक्षी, —**वेल** (वि०) तरंगमय,—**व्याधिः** (स्त्री०) 1. भारी बीमारी 2. (काला कोढ़) कोढ़ का भयानक रूप,—**व्याहृतिः** (स्त्री०) अत्यंत गूढ शब्द अर्थात् भूर्, भुवस् और स्वर्,—**व्रत** (वि०) अत्यंत धर्मनिष्ठ, कठोरतापूर्वक व्रत का पालन करने वाला (तम्) 1. महाव्रत, बहुत बड़ा कठिन व्रत, महान् धर्मकृत्य का पालन 2. कोई भी महान् या प्रधान कर्तव्य —प्राणैरपि हितावृत्तिरद्रोहो व्याजवर्जनम्, आत्मनीव प्रियाधानमेतन्मैत्रीमहाव्रतम्—महावी० ५।५९, —**व्रतिन्** (पुं०) 1. भक्त, संन्यासी 2. शिव का विशेषण, —**शक्तिः** 1. शिव का विशेषण 2. कार्तिकेय का विशषण,—**शंखः** 1. बड़ा शंख—भग० १।१५ 2. कनपटी की हड्डी, मस्तक 3. मानव अस्थि 4. विशिष्ट ऊँची संख्या,—**शठः** एक प्रकार का धतूरा, —**शब्द** (वि०) ऊँची ध्वनि करन वाला, अत्यंत कोलाहलपूर्ण, ऊधम मचाने वाला,—**शल्कः** समुद्री केकड़ा या झींगा मछली मनु० ३।२७२,—**शालः** बड़ा गृहस्थ,—**शिरस्** (पुं०) एक प्रकार का सांप, —**शुक्तिः** (स्त्री०) मोतियों की सीपी,—**शुक्ला** सरस्वती का विशेषण,—**शुभ्रम्** चाँदी,—**शूद्रः** (स्त्री० —द्री) 1. उच्चपदस्थ शूद्र 2. ग्वाला,—**श्मशानम्**

वाराणसी का विशेषण,—भ्रमणः बुद्ध का विशेषण, —श्वासः एक प्रकार का दमा, —श्वेता 1. सरस्वती का विशषण 2. दुर्गा का विशेषण 3. सफेद खांड, —संक्रांतिः (स्त्री०) मकर संक्रान्ति,—सती बड़ी सती साध्वी स्त्री, —सत्ता असीम अस्तित्व,—सत्यः यम का विशेषण, —सत्त्वः कुबेर का विशेषण, संधिविग्रहः शान्ति और युद्ध के मन्त्री का पद,—सम्नः कुबेर का विशेषण, —सर्जः कटहल,—सांतपनः एक प्रकार की घोर तपस्या —दे० मनु० ११।२१२,—सांधिविग्रहिकः शान्ति और युद्ध का (परराष्ट्र) मंत्री,—सारः एक प्रकार का खैर का वृक्ष, —सारथिः अरुण का विशेषण,—साहसम् अतिसाहस, बलात्कार, अत्यधिक दिलेरी,—साहसिकः डाकू, बटमार, साहसीलुटेरा,—सिंहः शरभ नाम का एक कथा से वर्णित जन्तु,—सिद्धिः (स्त्री०) एक प्रकार की जादू की शक्ति,—सुखम् 1. बड़ा आनन्द 2. संभोग,—सूक्ष्मा रेत,—सूतः सैनिक ढोल,—सेनः 1. कार्तिकेय का एक विशेषण 2. विशाल सेना का सेनापति (—ना बड़ी सेना, —स्कंधः ऊँट,—स्थली पृथ्वी,—स्थानम् बड़ा पद,—स्वनः एक प्रकार का ढोल —हंसः) विष्णु का विशेषण,—हविस् (नपुं०) घी, —हिमवत् (पुं०) एक पहाड़ का नाम।

महिका [मह्+क्वुन्+टाप्, इत्वम्] कोहरा, धुंध।

महित (भू० क० कृ०) [मह्+क्त] सम्मानित पूजित, बहुमानित, श्रद्धेय—दे० मह्,—तम् शिव का त्रिशूल।

महिमन् (पुं०) [महत्+इमनिच् टिलोपः] 1. बड़प्पन आलं से भी)—अयि मलयज महिमायं कस्य गिरामस्तु विषयस्ते—भामि० १।११ 2. यश, गौरव, ताक़त, शक्ति कु० २।६, उत्तर० ४।२१ 3. ऊँचा पद, उन्नत पदवी, या ऊँची प्रतिष्ठा 4. सिद्धियों में से एक—अपना शरीर फुलाना—दे० सिद्धि।

महिरः [मह्+इलच्, लस्य रत्वम्] सूर्य।

महिला [मह्+इलच्+टाप्] 1. स्त्री 2. मदमत्त या विलासिनी स्त्री—विरहेण विकलहृदया निर्जलमीनायते महिला—भामि० २।६८ 3. प्रियंगु नाम की लता 4. एक प्रकार का गंधद्रव्य या सुगंधित पौधा —रेणुका। सम०—आह्वया प्रियंगु लता।

महिलारोप्यम् दक्षिण भारत में स्थित एक नगर का नाम।

महिषः [मह्+टिषच्] 1. भैंसा (यम का वाहन माना जाता है) गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृंगैर्मुहुस्ताडितम्—श० २।६, एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मार गिराया था। सम०—अर्दनः. कार्तिकेय का विशेषण,—असुरः महिष नाम का राक्षस °घातिनी, °मथनी, °मर्दनी, °सूदनी दुर्गा के विशेषण, —घ्नी दुर्गा का विशेषण, —ध्वजः यम का विशेषण,—पालः, —पालकः भैंस रखने वाला, —वहनः—वाहनः यम के विशेषण—कृतान्तः किं साक्षान्महिषवहनोऽसाविति पुनः—काव्य० १०।

महिषी [महिष+ङीष्] 1. भैंस, मनु० ९।५५, याज्ञ० २।१५९ 2. पटरानी, राजमहिषी—महिषीसखः—रघु० १।४८ २।२५, ३।९ 3. रानी 4. पक्षी की मादा 5. स्त्रीदासी, सेविका, सैरंध्री 6. व्यभिचारिणी स्त्री 7. अपनी पत्नी की वेश्यावृत्ति से अर्जित धन—तु० माहिषिक। सम०—पालः भैंसों के रखने वाला, —स्तम्भः भैंस के सिर से अलंकृत खंबा।

महिष्मत् (वि०) [महिष+मतुप्, पृषो० टिलोपः] बहुत सी भैंसे रखन वाला, या जहाँ भैंसे बहुतायत से हों।

मही [मह्+अच्+ङीष्] 1. पृथ्वी—जैसा कि महीपाल और महीभृत् आदि में—मही रम्या शय्या—भर्तृ० ३।७९ 2. भूमि, मिट्टी 3. भूसम्पत्ति, ज़मीन—जायदाद 4. देश, राज्य 5. एक नदी का नाम जो खंबात की खाड़ी में गिरती है 6. (ज्या० में) समतल आकृति की आधाररेखा। सम०—इनः, ईश्वरः राजा,—न न मही नमहीनपराक्रमम्—रघु० ९।५,—कंपः भूचाल क्षित् (पुं०) राजा, प्रभु=रघु० १।११, ८५, १९। २०—जः 1. मंगलग्रह 2. वृक्ष (जम्) हरा अदरक, —तलम् धरातल,—दुर्गम् मिट्टी का किला, भूदुर्ग —धरः 1. 1. पहाड़—रघु० ६।५२, कु० ६।८९ 2. विष्णु का विशेषण,—ध्रः 1. पहाड़ भर्तृ० २।१०, शि० १५।२४, रघु० ३।६० १३।७ 2. विष्णु का विशेषण, —नाथः, —पः, —पतिः, —भुज् (पुं०), —मघवन् (पुं०),—महेन्द्रः राजा—भग० १।२०, रघु० २।३४, ६।१३,—पुत्रः, सुतः,—सूनुः 1. मंगलग्रह 2. नरकासुर का विशेषण,—पुत्री, —सुता सीता का एक विशेषण, —प्रकंपः भूचाल, —प्ररोहः, —रुह् (पुं०)—रुहः वृक्ष कि० ५।१०, शि० २०।४९, —प्राचीरम्,—प्रावरः समुद्र,—भर्तृ (पुं०) राजा, भृत् (पुं०) 1. पहाड़ —कु० १।२७, कि० ५।१ 2. राजा, प्रभु,—लता केंचुआ,—सुरः ब्राह्मण।

महीयस् (वि०) [म० अ०, महत्+ईयसुन्] अपेक्षाकृत बड़ा, विशाल, अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली भारी या महत्त्वपूर्ण अधिक ताक़तवर, मजबूत पुं० महामना, उदारचेता—प्रकृतिः खलु सा महीयसः सहते नान्य समुन्नति यया—कि० २।२१, शि० २।१३।

महीला, महेला [=महिला, पृषो० साधुः] स्त्री, नारी।

मा (अव्य) [मा+क्विप्] प्रतिषेधबोधक अव्यय, (मकारात्मक विरलतः) प्रायः लोट् लकार की क्रिया के साथ जुड़ा हुआ—यद्वाणि मा कुरु विवादमनादरेण —भामि० ४।४१, (क) लुङ् लकार की क्रिया के साथ

जबकि उसके आगम 'अकार' का लोप भी हो जाता है—पापे रतिं मा कृथाः—भर्तृ० २।७७, मा मूमुहत् खलु भवंतमनन्यजन्मा मा ते मलीमसविकारघना मतिर्भूत्—मा० १।३२ (ख) लङ् लकार की क्रिया के साथ भी (यहाँ भी आगम 'अकार' का लोप हो जाता है) मा चैनमभिभाषथाः राम० (ग) लृट् लकार या विधि लिङ् की क्रिया के साथ भी, 'ऐसा न हो कि' 'ऐसा नहीं कि' अर्थ को प्रकट करने में —लघु एनां परित्रायस्व मा कस्यापि तपस्विनो हस्ते पतिष्यति—श० २, मा कश्चिन्ममाप्यनर्थो भवेत् —पंच० ५, मा नाम देव्याः किमप्यनिष्टमुत्पन्नं भवेत्—का० ३०७, (घ) जब अभिशाप अभिप्रेत हो तो शत्रन्त (वर्तमानकालिक विशेषण) के रूप में प्रयुक्त—मा जीवन्यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति —शि० २।४५ या (ङ) संभावनार्थक कर्मवाच्य-प्रत्ययांत क्रियाओं के साथ—मैवं प्रार्थ्यम्, मा कभी कभी बिना किसी क्रिया की अपेक्षा किये प्रयुक्त होता है —मा तावत् 'अरे ऐसा मत (कहो) मा मैवम् मा नामरक्षिणः—मृच्छ० ३, 'कहीं कोई पुलिस का आदमी न हो' दे० 'नाम' के अन्तर्गत। कभी कभी 'मा' के बाद 'स्म' लगा दिया जाता है, और उस समय क्रिया में लङ् या लुङ् लकार का प्रयोग होता है तथा आगम 'अकार' का लोप हो जाता है, विधि-लिङ् के साथ प्रयोग बिरलतः देखा जाता है—क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ भग० २।३, मा स्म प्रतीपं गमः —श० ४।१७, मास्म सीमंतिनी काचिज्जनयेत्पुत्रमीदृशम्।

मा [मा+क+टाप्] 1. धन की देवी लक्ष्मी—तमाखुपत्रं राजेन्द्र भज मा ज्ञानदायकम् सुभा० 2. माता 3. माप। सम०—पः—पतिः विष्णु के विशेषण।

मा (अदा० पर०, जुहो०, दिवा० आ०—माति, मिमीते, मीयते, मित) 1. मापना—न्यधित मिमान इवावनिं पदानि शि० ७।१३ 2. नापतोल करना; चिह्न लगाना, सीमांकन करना—दे० 'मित' 3. (डील डौल में) तुलना करना, किसी भी मापदण्ड से मापना कु० ५।१५ 4. अन्दर होना, अन्दर स्थान ढूंढना, युक्त या सहित होना—तनौ ममुस्तत्र न कैटभद्विषः तपोधनाभ्यागमसंभवा मुदः—शि० १।२३, वृद्धि गतेऽप्यात्मनि नैव मांतीः ३।७३ १०।५०, माति मातुमशक्योऽपि यशोराशिर्यदत्र ते काव्य० १०—प्रेर० (मापयति—ते) मपवाना, नाप करवाना एतेन मापयति भित्तिषु कर्ममार्गम्—मृच्छ० ३।१६, इच्छा० (मित्सति—ते) मापने की कामना करना। अनु, 1. अनुमान लगाना, घटाना (कुछ कारणों के आधार पर) धूमादग्निमनुमाय—तर्क०, कु० २।२५, अन्दाज लगाना, अटकल लगाना—अन्वमीयत शुद्धेति शांतेन वपुषैव सा—रघु० १५।७७, १७।११ 2. समाधान करना, पुनर्मिलित करना, उप—, तुलना करना, समानता करना—तेनोपमीयेत तमालनीलम्—शि० ३।८, स्तनौ मांसग्रंथी कनककलशावित्युपमितौ —भर्तृ० ३।२०, निस्—, बनाना, सृजन करना, अस्तित्व में लाना निर्मातुं प्रभवेन्मनोहरमिदं रूपं पुराणो मुनिः—विक्रम० १।४, यस्मादेष सुरेन्द्राणां मात्राभ्यो निर्मितो नृपः—मनु० ७।५ १।१३ 2. (क) बनाना, रूप बनाना, संरचना करना—स्नायुनिर्मिता एते पाशाः—हि० १ (ख) बसाना, (नगर पुर आदि) नई बस्ती बसाना—निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु मथुरां मधुराकृतिः—रघु० १५।२८ 3. उत्पन्न करना, पैदा करना,—शलाकाञ्जननिर्मितेव —कु०४।४७, निर्मातु मर्म-व्ययाम्—गीत० ३ 4. रचना करना, लिखना—स्वनिर्मितया टीकया समेतं काव्यम् 5. तैयार करना, निर्माण करना, परि—, 1. मापना 2. माप कर निशान लगाना, सीमांकन करना, प्र—, 1. मापना 2. सिद्ध करना, स्थापित करना, प्रदर्शित करना, सम्—, 1. मापना 2. समान बनाना, बराबर बराबर करना—कान्तासंमिततयोपदेशयुजे —काव्य० १, दे० संमित 3. समानता करना, तुलना करना 4. युक्त या सहित होना—मृणालसूत्रमपि ते न संमाति स्तनान्तरे—सुभा०।

मांस् (नपुं०)[?] मांस (इस शब्द के पहले पाँच वचनों के रूप नहीं होते, और उसके पश्चात् इसके स्थान में विकल्प से 'मांस' आदेश हो जाता है।)

मांसम् [मन्+स दीर्घश्च] 1. मांस, गोश्त,—समांसो मधुपर्कः उत्तर० ४ (इस शब्द की व्युत्पत्ति की उद्भावना मनु० ५।५५ में इस प्रकार की गई है—मां स भक्षयिताऽमुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम्, एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः) 2. मछली का मांस 3. फल का गूदा,—सः 1. कीड़ा 2. मांस बेचनेवाली एक वर्ण संकर जाति। सम०—अद्—अद—आशिन्—भक्षक (वि०) मांस खाने वाला, आमिषभोजी (जैसे कि एक जानवर)—भट्टि० १६।२८, मनु० ५।१५—अर्गलः —लम् मांस का टुकड़ा जो मुंह से नीचे लटकता है, —अशनम् मांस खाना,—आहारः पाशव भोजन, —उपजीविन् (पुं०) मांस बेचने वाला,—ओदनः 1. मछली का भोजन 2. मांस के साथ पकाये हुए चावल,—कारि (नपुं०) रक्त, ग्रन्थिः मांस की गिल्टी,—जम्,—तेजस् (नपुं०) चर्बी, वसा,—द्राविन् (पुं०) खटमिट्ठा चोका, खट्टी भाजी,—निर्यासः शरीर के बाल,—पिटकः,—कम् 1. मांस की टोकरी 2. मांस का बड़ा ढेर,—पित्तम् हड्डी,—पेशी 1. पुट्ठा

2. मांस का टुकड़ा 3. आठ से चौदह दिन तक के गर्भ का विशेषण,—भेत्तृ,—भेदिन् (वि०) मांस काटने वाला,—योनिः रक्त-मांस से बना जीव, —विक्रयः मांस की बिक्री,—सारः,—स्नेहः चर्बी, वसा, हासा खाल, चमड़ा।

मांसल (वि०) [मांस+लच्] 1. मांस से भरा हुआ, 2. पुट्ठेदार, मोटाताजा, बलवान्, हृष्टपुष्ट—उत्तर० १ 3. स्थूलकाय, मजबूत, शक्तिशाली शाखाः शतं मांसलाः—भामि० १।३४ 4. (ध्वनि की भांति) गहरा—उत्तर० ६।२५ 5. महाकाय, हट्टाकट्टा—मा० ९।१३।

मांसिकः [मांसं पण्यमस्य ठक्] कसाई, मांस विक्रेता।

माकन्दः [मा+क्विप् माः परिमितः सुघटितः कन्द इव फलं अस्य] आम का पेड़—भामि० १।२९,—दी 1. आँवले का पेड़ 2. पीला चन्दन 3. गंगा के किनारे स्थित एक नगर का नाम।

माकर (वि०) (स्त्री०—री) [मकर+अण्] मगरमच्छ से संबद्ध, माघ मास से संबद्ध।

माकरन्द (वि०) (स्त्री०—न्द) [मकरन्द+अण्] फूलों के रस से प्राप्त या, पुष्परस से संबद्ध, शहद से भरा हुआ, मधुमिश्रित—मा० ८।१, ९।१२।

माकलिः (पुं०) 1. इन्द्र का सारथि मातलि 2. चन्द्रमा।

माक्षि (क्षी) क (वि०) (स्त्री०-की) [मक्षिकाभिः संभृत्य कृतम्—अण् पक्षे नि० दीर्घः] मधुमक्खियों से उत्पन्न या प्राप्त,—कम् 1. मधु भामि० ४।३३ 2. मधु की भांति एक खनिज पदार्थ। सम० आश्रयम्, —जम् मोम,—फलः एक प्रकार का नारियल,—शर्करा कंदयुक्त खांड।

मागध (वि०) (स्त्री०-धी) [मगध+अण्] मगध देश में रहने वाला, या उससे संबद्ध, या मगध के अधिवासी, —धः 1. मगध का राजा 2. एक मिश्रजाति (कहा जाता है कि यह जाति वैश्य पिता और क्षत्रिय माता की संतान, इस जाति का कर्तव्य कर्म व्यावसायिक भाटों का कार्य है)—मनु० १०।११।१७, याज्ञ० १।९४ 3. चारण या बन्दीजन,—धाः (ब० व०) मगध के अधिवासी,—धी 1. मगध देश की राजकुमारी—रघु० १।५७ 2. मागधी भाषा, चार मुख्य प्राकृतों में से एक 3. बड़ी पीपल 4. सफद जीरा 5. परिष्कृत खांड 6. एक प्रकार की चमेली 7. छोटी इलायची।

मागधा, मागधिका [मागध+टाप्, मागध+ठक्+टाप्] बड़ी पीपल।

मागधिकः [मगध+ठक्] मगध का राजा।

माघः [मघानक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी माघी सोऽत्र मासे अण्] 1. चान्द्रवर्ष के एक महीने का नाम (यह जनवरी-फरवरी मास में आता है) 2. एक कवि का नाम जिसने शिशुपालवध या माघकाव्य की रचना की (कवि ने शि० २०।८०-८४ में अपने कुल का वर्णन इस प्रकार किया है—श्रीशब्दरम्यकृतसर्गसमाप्तिलक्ष्म लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनचारु माघः तस्यात्मजः सुकवि-कीर्तिदुराशयादः काव्यं व्यधत्त शिशुपालवधाभिधा-नम्)—उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम् दण्डिनः पदलालित्य माघे सन्ति त्रयो गुणाः उद्भट,—घी माघ मास की पूर्णिमा।

माघमा (स्त्री०) मादा केकड़ा।

माघवन (वि०) (स्त्री०—नी) [मघवत्+अण्] इन्द्र से संबन्ध रखने वाला,—नी पूर्वदिशा। सम०—चापः इन्द्रधनुष—उत्तर० ५।११।

माघवन (वि०) (स्त्री०—नी) [मघवन्+अण्] इन्द्र से शासित या संबद्ध ककुभं समस्कुरुत माघवनीम् —शि० ९।२५, अवनीतलमेव साधु मन्ये न मनी माघ-वनी विलासहेतुः जग०।

माघ्यम् [माघे जातम्—माघ+यत्] कुन्द लता का फूल।

माङ्क्ष् (भ्वा० पर० मांक्षति) कामना करना, इच्छा करना, लालसा करना।

माङ्गलिक (वि०) (स्त्री०—की) [मंगल+ठक्] 1. शुभ, मंगलसूचक, भाग्यवान्—मुदमस्य मांगलिक-तूर्यकृतां ध्वनयः प्रतेनुरनुवप्रमपाम् कि० ६।४, महावी० ४।३५, भामि० २।५७ 2. सौभाग्यशाली।

माङ्गल्य (वि०) [मङ्गल+ष्यञ्] शुभ, सौभाग्यसूचक —श० ४।५,—ल्यम् 1. मांगलिकता, समृद्धि, कल्याण, सौभाग्य 2. आशीर्वाद, शुभकामना 3. पर्व, त्यौहार, कोई भी शुभ कृत्य। सम० मृदङ्गः शुभ अवसरों पर बजाया जाने वाला ढोल—उत्तर० ६।२५।

माचः [मा+अच्+क] सड़क, मार्ग।

माचलः [मा+चल्+अच्] 1. चोर, लुटेरा 2. मगर-मच्छ।

माचिका [मा+अञ्च्+क+कन्+टाप्, इत्वम्] मक्खी।

माञ्जिष्ठ (वि०) (स्त्री०—ष्ठी) [मञ्जिष्ठया रक्तम् अण्] मजीठ की भांति लाल,—ष्ठम् लाल रंग।

माञ्जिष्ठिक (वि०) (स्त्री०—की) [मञ्जिष्ठा+ठक्] मजीठ के रंग से रंगी हुई—उत्तर० ४।२०, महावी० १।१८।

माठरः [मठ्+अरन्, ततः अण्] 1. व्यास का नाम 2. ब्राह्मण 3. शौंडिक, कलवार, शराब खींचने वाला 4. सूर्य का एक सेवक।

माठी (स्त्री०) कवच, जिरहबख्तर।

माडः (पुं०) 1. विशेष जाति का वृक्ष 2. तोल, माप।

माढिः (स्त्री०) [माह्+क्तिन्] 1. किसलय (जो

अभी खुला न हो) 2. सम्मान करना 3. उदासी, खिन्नता 4. निर्धनता 5. क्रोध, आवेश 6. वस्त्र की किनारी *या* झालर (घोट) 7. दुहरा दाँत

माणवः [मनोरपत्यम् अण्, अल्पार्थे णत्वम्] 1. लड़का, बालक, छोकरा, बच्चा 2. छोटा मनुष्य, मुण्डा (तिरस्कार सूचक) 3. सोलह (बीस) लड़ियों की मोतियों की माला।

माणवकः [माणव+कन्] 1. लड़का, बालक, बच्चा, छोकरा (प्राय: तिरस्कारसूचक के रूप में प्रयुक्त) 2. छोटा मनुष्य, बौना, मुंडा— मायामाणवकं हरिम् —भाग० 3. मूर्ख व्यक्ति 4. छात्र धर्मशास्त्र पढ़ने वाला, विद्यार्थी 5. सोलह (या बीस) लड़ियों की मोतियों की माला।

माणवीन (वि०) [माणवस्येदं खञ्] बालकों जैसा, बच्चों जैसा।

माणव्यम् [माणवानां समूहः यत्] बच्चों या छोकरों की टोली।

माणिका [मान्+घञ्, नि० णत्वम्+कन्+टाप् इत्वम्] एक विशेष बाट (आठ पल वज़न के बराबर) या तोल।

माणिक्यम् [मणि+कन्+ष्यञ्] लाल।

माणिक्या [माणिक्य+टाप्] छिपकली।

माणिबन्धम्, माणिमन्थम् [मणिबंध (मन्थ)+अण्]. सेंधा नमक।

माण्डलिक (वि०) (स्त्री०—की) [मण्डल+ठक्] किसी प्रान्त पर शासन करने वाला या उससे सम्बन्ध रखने वाला,—**कः** प्रान्त का शासक, राज्यपाल।

मातङ्गः [मतङ्गस्य मुनेरयम् अण्] 1. हाथी—शि० १।६४ 2. नीचतम जाति का पुरुष, चाण्डाल 3. किरात, भील पहाड़ी या बर्बर 4. (समास के अन्त में) कोई भी सर्वोत्तम वस्तु—उदा० बलाहक मातंगः। सम०—**दिवाकरः** एक कवि का नाम,—**नक्रः** हाथी जैसा विशाल मगरमच्छ—रघु० १३।११।

मातरिपुरुषः [अलुक् समास] 'वह जो घर में अपनी माता के सामने ही अपनी शूरवीरता जताता हो' डरपोक, कायर, शेखीखोरा, बुज़दिल।

मातरिश्वन् (पुं०) [मातरि अन्तरिक्षे श्वयति वर्धते श्विकनिन् डिच्च, अलुक् स०] वायु—पुनरुषसि विविक्तैः मातरिश्वावचूर्ण्य ज्वलयति मदनाग्नि मालतीनां रजोभिः शि० ११।१७, कि० ५।३६।

मातलिः [मतलस्यापत्यं पुमान्—मतल+इञ्] इन्द्र के सारथि का नाम। सम० **सारथिः** इन्द्र का विशेषण।

माता [मान् पूजायां तृच् न लोपः] माता, माँ।

मातामहः [मातृ+डामहच्] नाना,—**हौ** (द्वि० व०) नाना नानी,—**ही** नानी।

मातिः (स्त्री०) [मा+क्तिन्] 1. माप 2. चिन्तन, विचार, प्रत्यय।

मातुलः [मातुर्भ्राता मातृ+डुलच्] 1. मामा—भग० १।२६ मनु० २।१३०, ५।८१ 2. धतूरे का पौधा 3. एक प्रकार का साँप। सम० **पुत्रकः** 1. मामा का बेटा 2. धतूरे का फल।

मातुलङ्गः दे० मातुलिंगः।

मातुला, मातुलानी, मातुली [मातुल+टाप्, ङीष्, वा, पक्षे आनुक् च] 1. मामी, मामा की पत्नी—मनु० २।१३१, याज्ञ० २।२३२ 2. पटसन।

मातुलिङ्गः, मातुलुङ्गः [मातुल+गम्+खच्, मुम्, पृषो० साधुः] एक प्रकार का नींबू का वृक्ष—(भुवो) भागाः प्रेंखितमातुलुङ्गवृतयः प्रेयो विधास्यन्ति वाम्—मा० ६।१९,—**गम्** इस वृक्ष का फल, चकोतरा।

मातुलेयः (स्त्री—यी) [मातुल+छ, मातुली+ढक् वा] मामा का पुत्र।

मातृ (स्त्री०) [मान् पूजायां तृच् न लोपः] 1. माँ, माता —मातृवत्परदारेषु यः पश्यति स पश्यति, सहस्रं तु पितॄन् माता गौरवेणातिरिच्यते सुभा० 2. माता (आदर तथा वात्सल्य सूचक)—मातर्लक्ष्मि भजस्व कंचिदपरम् —भर्तृ० ३।६४, ८७, अयि मातर्देवयजनसंभवे देवि सीते—उत्तर ४ 3. गाय 4. लक्ष्मी का विशेषण 5. दुर्गा का विशेषण 6. अन्तरिक्ष, आकाश 7. पृथ्वी 8. देव माता—मातृभ्यो बलिमुपहर —मृच्छ० १ (ब० व०) देव माताओं का विशेषण, जो शिव की परिचारिका कही जाती हैं परन्तु बहुधा स्कन्द की परिचर्या में लिप्त रहती हैं (ये गिनती में आठ हैं—ब्राह्मी माहेश्वरी चंडी वाराही वैष्णवी तथा, कौमारी चैव चामुंडा चर्चिकेत्यष्टमातरः। कुछ के मत में वह केवल सात हैं—ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा, माहेन्द्री चैव वाराही चामुंडा सप्त मातरः। कुछ लोग इनकी संख्या १६ तक बतलाते हैं)। सम०—**केशटः** मामा,—**गणः** देव माताओं का समूह,—**गन्धिनी** विपरीत स्वभाव वाली माता,—**गामिन्** (पुं०) माता के साथ गमन करने वाला,—**गोत्रम्** मातृकुल,—**घातः,** —**घातकः,**—**घातिन्** (पुं०), **—घ्नः** माता की हत्या करने वाला,—**घातुकः** 1. मातृहन्ता 2. इन्द्र का विशेषण,—**चक्रम्** देवमाताओं का समूह,—**देव** (वि०) जो माता को ही अपना देवता मानता है, माता को देवता की भांति पूजने वाला,—**नन्दनः** कार्तिकेय का विशेषण, **पक्ष**—(वि०) मातृकुल से संबद्ध, (—**क्षः**) मामा, नाना आदि,—**पितृ** (द्वि० व०) (मातापितरौ या मातरपितरौ) माता-पिता,—**पुत्रौ** (मातापुत्रौ) माँ और बेटा,—**पूजनम्** देवमातृकाओं की पूजा,—**बन्धुः,** **बान्धवः** मातृकुल के संबंधी—रघु० १२।१२, (ब०

व०) मातृकुल के रिश्तेदारों का समूह, वे ये हैं—मातुः पितुः स्वसुः पुत्रा मातुर्मातुः स्वसुः सुताः मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया मातृबांधवाः, मण्डलम् देवमातृकाओं का समूह,—मातृ (स्त्री०) पार्वती का विशेषण,—मुखः मूर्ख व्यक्ति, भोंदू,—यज्ञः देवमातृकाओं के निमित्त किया गया यज्ञ,—वत्सलः कार्तिकेय का विशेषण,—स्वसृ (स्त्री०) (मातृष्वसृ या मातुःस्वसृ) माता की बहन, मौसी,—स्वसेयः (मातृष्वसेयः) माता की बहन का पुत्र (यी) मौसी की पुत्री, इसी प्रकार मातृष्वस्रीयः—या ।

मातृक (वि०) [मातृ+ठञ्] 1. माता से आया हुआ, या उत्तराधिकार में प्राप्त—मातृकं च धनुरूर्जितं दधत्—रघु० ११।६४, ९० 2. माता संबंधी,—कः मामा, —का 1. माता 2. दादी 3. धात्री, दाई 4. स्रोत, मूल 5. देवमातृका 6. अक्षरों में लिखे हुए कुछ रेखाचित्र जो जादू की शक्ति रखने वाले कहे जाते हैं 7. इस प्रकार प्रयुक्त की गई वर्णमाला (व० व०)।

मात्र (वि०) (स्त्री०—त्रा, त्री) [मा+त्रन्] 'इतनी माप का जितना कि' 'इतना ऊँचा लंबा या चौड़ा जितना कि' 'वहाँ तक पहुँचता हुआ जहाँ तक कि' अर्थों को प्रकट करने के लिए संज्ञाओं के साथ जोड़ा जाने वाला प्रत्यय, जैसा कि ऊरुमात्री भित्तिः (इस अर्थ में समास के अन्त में 'मात्रा' शब्द का प्रयोग भी चिन्तनीय है, दे० नी०),—त्रम् 1. एक माप (चाहे वह लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई की हो; चाहे डीलडौल, स्थान, दूरी या संख्या की हो, प्रयोग बहुधा समास के अन्त में उदा० अंगुलिमात्रम् अंगुलि के बराबर चौड़ाई; किंचिन्मात्रं गत्वा कुछ दूरी, क्रोशमात्रे एक कोस की दूरी पर रेखामात्रमपि रेखा तक की चौड़ाई भी, इतनी चौड़ाई जितनी कि एक रेखा की होती है;—रघु० १।१७, इसी प्रकार क्षणमात्रम् निमिषमात्रम् एक क्षण का अन्तराल, शतमात्रम् संख्या में सौ, गजमात्रम् इतना ऊँचा या बड़ा जितना कि हाथी तालमात्रं, यवमात्रम् आदि 2. किसी चीज का पूरा माप, वस्तुओं की पूर्ण समष्टि, राशि जीवमात्रं या प्राणिमात्रम् जीवधारियों प्राणियों का समस्त समुदाय, मनुष्यमात्रो मर्त्यः, प्रत्येक मनुष्य मरणशील है 3. किसी चीज का सामान्य माप, केवल एक बात का उससे अधिक नहीं, इसका अनुवाद प्रायः 'केवल,' 'सिर्फ' या 'भी, ही' आदि शब्दों से किया जाता है; —जातिमात्रेण हि० १।५८, केवल जाति से; टिट्टिभमात्रेण समुद्रो व्याकुलीकृतः—२।१४९, केवल टिटहरे के द्वारा, वाचःमात्रेण जप्यसे—श० २, केवल वाणी द्वारा' इसी प्रकार अर्थमात्रम्, संमानमात्रम्—पंच० १।८३, क्तान्त शब्दों के साथ जुड़ कर 'मात्र' शब्द का अनुवाद 'ज्योंही' 'ही' आदि है, विद्धमात्रः—रघु० ५।५१, 'ज्योंही वह बेचा गया त्योंही' 'बींधे जाने पर ही', भुक्तमात्रे, 'खाने के बाद ही', °प्रविष्टमात्र एव तत्रभवति श० ३ आदि ।

मात्रा [मात्र+टाप्] 1. माप—देखो 'मात्रम्' ऊपर 2. मापदंड, मानक, नियम 3. सही माप 4. माप की इकाई, एक फुट 5. क्षण 6. कण, अणु 7. भाग, अंश —सुरेन्द्रमात्राश्रितगर्भगौरवात्—रघु० ३।११ 8. अल्पांश, अल्प परिमाण, छोटी माप दे० मात्र (३) 9. अर्थ, महत्त्व—राजेति कियती मात्रा—पंच० १।४०, 'राजा किस अर्थ का है, क्या महत्त्व है उसका' अर्थात् मैं उसे कोई महत्त्व नहीं देता—कायस्थ इति लघ्वी मात्रा मु० १ 10. धन, संपत्ति 11. (छन्दः शास्त्र में) एक मात्रा का क्षण, ह्रस्व स्वर को उच्चारण करने में लगने वाला काल 12. तत्त्व 13. भौतिक संसार, भूतद्रव्य 14. नागरी के अक्षरों का ऊपरी (अतिरिक्त) भाग, अर्थात् मात्रा 15. कान की बाली 16. आभूषण, अलंकार । सम०—छन्दस्, आधीमात्रा का क्षण,—छन्दस्, —वृत्तम्, वह छंद जिसका विनिमय मात्राओं की गिनती के आधार पर होता है—उदा० आर्या,—भस्त्रा बटवा,—सङ्गः गार्हस्थ्य सामग्री या संपत्ति में आसक्ति या अनुराग—मनु० ६।५७,—समकः एक प्रकार के छंदों का समूह दे० परिशिष्ट १,—स्पर्शः भौतिक संपर्क, भौतिक तत्त्वों के साथ इन्द्रियों का संयोग,—भग० २।१४।

मात्रिका [मात्रा+टक्+टाप्] मात्रा, या छन्दः शास्त्र का ह्रस्वस्वर के उच्चारण में लगने वाला क्षण (=मात्रा)।

मात्सर (वि०) (स्त्री० री), **मात्सरिक** (वि०) (स्त्री० की) [मत्सर+अण्, ठक् वा] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु, विद्वेषी, असूयायुक्त ।

मात्सर्यम् [मत्सर+ष्यञ्] ईर्ष्या, डाह, असूया, विद्वेष —अहो वस्तुनि मात्सर्यम्—कथा० २१।४९, कि० ३।५३ ।

मात्स्यिकः [मत्स्य+ठक्] मछुवा, माहीगीर ।

माथः [मथ्+घञ्] 1. बिलोना, मंथन, बिलोडन करना 2. हत्या, विनाश 3. मार्ग, सड़क ।

माथुर (वि०) (स्त्री०—री) [मथुरा+अण्] 1. मथुरा से आया हुआ 2. मथुरा में उत्पन्न 3. मथुरा में रहने वाला ।

मादः [मद्+घञ्] 1. नशा, मस्ती 2. हर्ष, खुशी 3. घमंड, अहंकार ।

मादक (वि०) (स्त्री०—दिका) [मद्+णिच्+ण्वुल्] 1. नशा करने वाला, उन्मत्त बनाने वाला, बेहोश करने वाला 2. आनन्ददायक,—कः जलकुक्कुट ।

मादन (वि०) (स्त्री०—नी) [मद्+णिच्+ल्युट्] नशे में चूर करने वाला—दे० मादक—नः 1. कामदेव 2. धतूरा,—नम् 1. नशा करना 2. आनन्द देना, उल्लास देना 3. लौंग।

मादनीयम् [मद्+णिच्+अनीयर्] एक नशीला पेय।

मादृक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी), **मादृश्** (वि०) मादृश (वि०) (स्त्री०—शी) [अस्मद्+दृश्+क्स (क्विप्, कञ् वा) मदादेशः, आत्वम्] मेरी भांति, मुझसे मिलता जुलता—प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः—कि० १।२५, उत्तर० २, उपचारो नैव कल्प्य इति तु मादृशाः—रस०।

माद्रकः [मद्र+वुञ्] मद्र देश का राजकुमार।

माद्रवती [मद्र+मतुप्, वत्वम् अण् ङीप्,] पाण्डु की द्वितीय पत्नी का नाम।

माद्री [मद्र+अण्+ङीत्] पाण्डु की द्वितीय स्त्री का नाम। सम०—नन्दनः नकुल और सहदेव का विशेषण, —पतिः पाण्डु का एक विशेषण।

माद्रेयः [माद्री+ढक] नकुल और सहदेव का विशेषण।

माधव (वि०) (स्त्री०—वी) [मधु+अण्, विष्णुपक्षे माया लक्ष्म्याः धवः प० त०] 1. मधु की तरह मीठा 2. शहद से बना हुआ 3. वासन्ती 4. मधु दैत्य के वंशजों से संबंध रखने वाला,—वः कृष्ण का नाम —राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहः केलयः—गीत० १, माधवे मा कुरु मानिनि मानमये 2. कामदेव का मित्र वसन्त ऋतु—स्मर पर्युत्सुक एष माधवः—कु० ४।२८, स माधवेनाभिमतेन सख्या (अनुप्रयातः) ३। २३ 3. वैशाख मास भास्करस्य मधुमाधवाविव —रघु० ११।७ 4. इन्द्र का नाम 5. परशुराम का नाम 6. यादवों का नाम (ब० व०) शि० १६।५२ 7. मायण का पुत्र एक प्रसिद्ध ग्रन्थकर्ता, सायण और भोगनाथ इसके भाई थे, लोगों की मान्यता है कि माधव पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ। यह बहुत ही प्रसिद्ध विद्वान् था, कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना का श्रेय इसे प्राप्त है। ऐसा माना जाता है कि सायण और माधव दोनों ने मिल कर संयुक्त रूप से चारों वेदों पर भाष्य लिखा—श्रुतिस्मृतिसदाचारपालकों माधवो बुधः, स्मार्तं व्याख्याय सर्वार्थं द्विजार्थं श्रौत उद्यतः। जै० न्या० वि०। सम०—वल्ली=माधवी दे०,—श्री वसन्त कालीन सौन्दर्य।

माधवकः [माधव+वुञ्] एक प्रकार की नशीली शराब (मधु से बनाई गई)।

माधविका [माधवी+कन्+टाप्, ह्रस्व] माधवी लता। माधविका परिमलललिते गीत० १।

माधवी [मधु+अण्+ङीप्] 1. कन्दयुक्त खांड 2. शहद से बनाया हुआ एक प्रकार का पेय 3. वासंती लता जिसके सुगंधि श्वेत फूल आते हैं—पत्राणामिव शोषणेन मरुता स्पृष्टा लता माधवी—श० ३।१० मेघ० ७८ 4. तुलसी 5. कुट्टिनी, दूती। सम० —लता वासंती लता, वनम् माधवी लताओं का उद्यान।

माधवीय (वि०) [माधव+छ] माधवसंबंधी।

माधुकर (वि०) (स्त्री०-री) [मधुकर+अण्] भौंरे से संबद्ध या मिलता-जुलता, जैसा कि 'माधुकरी वृत्तिः' में,—री 1. घर २ जाकर भिक्षा मांगना, जिस प्रकार मधुमक्खी एक फूल से दूसरे फूल पर जाकर मधु एकत्र करती है 2. पांच भिन्न २ स्थानों से प्राप्त भिक्षा।

माधुरम् [मधुर+अण्] मल्लिका लता का फूल।

माधुरी [माधुर+ङीप्] 1. मिठास, मधुर या मजेदार स्वाद वदने तव यत्र माधुरी सा—भामि० २।१६१, —कामालसस्वर्वामावरमाधुरीमवरयन् वाचां विपाको मम—४।४२, ३७।४३ 2. खींची हुई शराब।

माधुर्यम् [मधुर+ष्यञ्] 1. मिठास, सुहावनापन—माधुर्यमीप्टे हरिणान् ग्रहीतुम्,—रघु० १८।१३ 2. आकर्षक सौंदर्य, उत्कृष्ट सौन्दर्य,—रूपं किमप्यनिर्वाच्यं तनोर्माधुर्यमुच्यते 3. (काव्य० में) मिठास, (मम्मट के अनुसार) काव्य रचनाओं में पाये जाने वाले तीन मुख्य गुणों में से एक—चित्तद्रवीभावमयो ह्लादो माधुर्यमुच्यते—सा० द० ६०६, दे० काव्य० ८ भी।

माध्य (वि०) [मध्य+अण्] केन्द्री, मध्यवर्ती।

माध्यन्दिनः [मध्यंदिन+अण्] वाजसनेयिसंहिता की एक शाखा,—नम् शुक्लयजुर्वेद की एक शाखा जिसका अनुसरण माध्यंदिन करते हैं।

माध्यम (वि०) (स्त्री०-मी) [मध्यम+अण्] मध्यवर्ती अंश से संबद्ध, केन्द्रीय, मध्यवर्ती, बिल्कुल मध्य का।

माध्यमक (वि०) (स्त्री०-मिका), **माध्यमिक** (वि०) (स्त्री०-की) [मध्यम+वुञ्, ठक् वा] मध्यवर्ती, केन्द्रीय।

माध्यस्थं, **माध्यस्थ्यम्** [मध्यस्थ+अण्, ष्यञ् वा] 1. निष्पक्ष 2. तटस्थता, उदासीनता—अभ्यर्थनाभङ्गभयेन माधुर्माध्यस्थ्यमिष्टेऽप्यवलंबतेऽर्थे—कु० १।५२, 3. मध्यस्थीकरण, बीचबचाव करना।

माध्याह्निक (वि०) (स्त्री०-की) [मध्याह्न+ठक्] दोपहर से संबंध रखने वाला।

माध्व (वि०) (स्त्री०-ध्वी) [मधु+अण्] मधुर, मीठा, —ध्वः [मध्व+अण्] मध्वाचार्य का अनुयायी, —ध्वी एक प्रकार की शराब जो मधु से तैयार की जाती है।

माध्वीकम् [मधुना मधूकपुष्पेण निर्वृत्तम् ईकक्] एक प्रकार की शराब जो मधूक वृक्ष के फूलों से

तैयार की जाती है—चचाम मधु माध्वीकम्—भट्टि० १४।९४ 2. अंगूरों से खींची हुई शराब—साध्वी माध्वीकचिन्ता न भवति भवतः—गीत० १२ (=मधो—टी०) 3. अंगूर। सम०—फलम् एक प्रकार का नारियल।

मान् i (भ्वा० आ० 'मन्' का इच्छा०=मीमांसते) ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ०='मन्' का प्रेर०)

मानः [मन्+घञ्] आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा, सादर विचार—मानद्रविणाल्पता—पंच० २।१५९, भग० ६।७, इसी प्रकार 'मानधन' आदि 2. गर्व (अच्छे भाव में) आत्मनिर्भरता, आत्मप्रतिष्ठा—जन्मिनो मानहीनस्य तृणस्य च समागतिः - पंच० १।१०६, रघु० १६।८१ 3. अहंकार, घमण्ड, अवलेप, आत्मविश्वास 4. सम्मान की आहत भावना 5. ईर्ष्यायुक्त क्रोध, डाह के कारण उद्दीप्त रोष (विशेषतः स्त्रियों में), क्रोध,- मुंच मयि मानमनिदानम्—गीत० १०, माधवे मा कुरु मानिनि मानमये—९, शि० ९।८४, भामि० २।५६—नम् 1. मापना 2. माप, मापदण्ड 3. आयाम, संगणना 4. मापदण्ड, मापने का डंडा, मानदण्ड 5. प्रमाण सत्ताधिकार, प्रमाण या प्रदर्शन के साधन,—येऽमी माधुर्यौजःप्रसादा रसमात्रधर्मतयोक्तास्तेषां रसधर्मत्वे किं मानम्—रस०, मानाभावात्, (विवादास्पद भाषा में बहुधा प्रयुक्त) 6. समानता, मिलना-जुलना। सम० —आसक्त (वि०) दर्पवान्, अहंकारी, घमंडी,—उन्नतिः (स्त्री०) बहुत आदर, भारी सम्मान,- उन्मादः घमंड का नाश,—कलहः,—कलिः ईर्ष्यायुक्त क्रोध से उत्पन्न झगड़ा,—क्षतिः (स्त्री०)—भङ्गः,—हानिः (स्त्री०) सम्मान को क्षति, दीनता, अपमान, अप्रतिष्ठा,—ग्रन्थिः सम्मान या गर्व की क्षति—द (वि०) 1. सम्मान करने वाला 2. घमंडी,—दण्डः मापने का डंडा, गज—स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः—कु० १।१, —धन (वि०) सम्मानरूपी धन से समृद्ध—महौजसो मानधना धनार्चिताः कि० १।१९,—धानिका ककड़ी, —परिखण्डनम् मानध्वंस, दीनता,—भङ्ग दे० 'मानक्षति', —महत् (वि०) गौरव से समृद्ध, अत्यंत दर्वीला —किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी—भर्तृ० २।२९,—योगः माप तोल की ठीक रीति—मनु० ९।३३०, - रन्ध्रा एक प्रकार की जलमड़ी, एक छिद्रयुक्त जलकलश जो पानी में रखा हुआ शनैः शनैः भरता रहता है, उसी से समय की माप की जाती है,- सूत्रम् 1. मापने की डोरी 2. (सोने की) जंजीर जो शरीर में पहनी जाय, करधनी।

मानःशिल (वि०) [मनःशिला+अण्] मैनसिल से युक्त।

माननं,—ना [मान्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. सम्मान करना, आदर करना 2. हत्या—शि० १६।२।

माननीय (वि०) [मान्+अनीयर्] सम्मान के योग्य, आदरणीय, प्रतिष्ठित होने का अधिकारी (संबं० के साथ)—मेनां मुनीनामपि माननीयाम्—कु० १।१८, रघु० १।११।

मानव (वि०) (स्त्री०—वी) [मनोरपत्यम् अण्] मनु से संबंध रखने वाला, या मनु के वंश में उत्पन्न—मानवस्य राजर्षिवंशस्य प्रसवितारं सवितारम्—उत्तर० ३, मनु० १२।१०७ 2. मानवसंबंधी,—वः 1. मनुष्य, आदमी, इंसान,—मनोर्वंशो मानवानां ततोऽयं प्रथितोऽभवत्, ब्रह्मक्षत्रादयस्तस्मान्मनोर्जातास्तु मानवाः—महा०, मनु० २।९, ५।३५ 3. मनुष्यजाति (ब० व०),—वम् एक विशेष प्रकार का दंड। सम०—इन्द्र,—देवः, —पतिः मनुष्यों का स्वामी, राजा, प्रभु—रघु० १४।३२ —धर्मशास्त्रम् मनुसंहिता, मनुस्मृति,—राक्षसः मनुष्य के रूप में राक्षस या पिशाच -तेऽमी मानवराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये—भर्तृ० २।७४।

मानवत् (वि०) [मान+मतुप्, वत्वम्] घमंडी, अहंकारी, अभिमानी, दर्पवान्,—ती घमंडी या दर्पोद्धत स्त्री (ईर्ष्या के कारण क्रुद्ध)।

मानव्यम् [मानव+यत्[(माणव्यम् भी) लड़कों का समूह।

मानस (वि०) (स्त्री०—सी) [मन एव, मनस इदं वा अण्] 1. मन से संबंध रखने वाला, मानसिक, आत्मिक (विप० शारीरिक) 2. मन से उत्पन्न, इच्छा से उदित—किं मानसी सृष्टिः—श० ४, कु० १।१८, भग० १०।६ 3. केवल मनसा विचारणीय, कल्पनीय 4. उपलक्षित, ध्वनित 5. 'मानस' सरोवर पर रहने वाला,—सः विष्णु का एक रूप,—सम् 1. मन, हृदय —सपदि मदनानलो दहति मम मानसम्—गीत० १०, अपि च मानसमण्डनविधिः—भामि० १।११३, मानसं विषयैर्विना (भाति) ११६ 2. कैलाश पर्वत पर स्थित एक पुनीत सरोवर—कैलाशशिखरे राम मनसा निर्मितं सरः, ब्रह्मणा प्रागिदं यस्मात्तदभून्मानसं सरः। राम० (कहा जाता है कि यह सरोवर ही राजहंसों की जन्मभूमि है, राजहंस प्रतिवर्ष प्रसवकाल के आरंभ होने के अवसर पर या बरसाती हवाओं के आगमन पर इस सरोवर के तट पर आ विराजते हैं—मेघश्यामा दिशो दृष्ट्वा मानसोत्सुकचेतसाम्, कूजितं राजहंसानां नेदं नूपुरशिञ्जितम्—विक्रम० ४।१४, १५, यस्यास्तोये कृतवसतयो मानसं संनिकृष्टं नाध्यास्यन्ति व्यपगतशुचस्त्वामपि प्रेक्ष्य हंसाः—मेघ० ७६ दे० मेघ० ११, घट० ९ भी) रघु० ६।२६, मेघ० ६२, भामि० १।३ 3. एक प्रकार का नमक। सम०—आलयः राजहंस, मराल,—उत्क (वि०) मानसरोवर जाने के लिए उत्सुक मेघ० ११,—ओकस्,—चारिन् (पुं०) राजहंस—जन्मन् (पुं०) 1. कामदेव 2. राजहंस।

मानसिक (वि०) (स्त्री० —की) [मनस्+ठञ्] मन से उत्पन्न, मन सम्बन्धी, आत्मिक,—**कः** विष्णु का विशेषण।

मानिका [मन्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. एक प्रकार की खींची हुई शराब 2. एक प्रकार का तोल।

मानित (भू० क० कृ०) [मान+इतच्] सम्मानित, आदर-प्राप्त, प्रतिष्ठित।

मानिन् (वि०) [मान्+णिनि] 1. मानने वाला, समझने वाला, अभिमान करने वाला (समास के अन्त में) जैसा कि 'पंडितमानिन्' में 2. सम्मान करने वाला, आदर करने वाला (समास के अन्त में) 3. अभिमानी, घमण्डी, आत्माभिमानी—पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्—कि० १।४१, परवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनाम्—शि० १५।१ 4. आदरणीय, अतिसम्मानित —भट्टि० १९।२४ 5. अवज्ञापूर्ण, क्रोधयुक्त, रुष्ट (पुं०) सिंह, —**नी** 1. आत्माभिमानिनी स्त्री, दृढ संकल्प वाली, पक्के निश्चयवाली, गर्वयुक्त (अच्छे अर्थों में)—चतुर्दिगीशानवमत्यमानिनी—कु० ५।५३, रघु० १३।३८ 2. कुपित स्त्री, (ईर्ष्यायुक्त गर्व के कारण) अपने पति से रुष्ट—माधवे मा कुरु मानिनि मानमये—गीत० १, कि० ९।३६ 3. एक प्रकार का सुगन्धयुक्त या महकदार पौधा।

मानुष (वि०) (स्त्री०—षी) [मनोरयम् अण्, सुक् च] 1. मनुष्य की, मानवी, इंसानी—मानुषी तनुः, मानुषी वाक्—रघु० ११६०, १६।२२, भग० ४।१२, ९।११, मनु० ४।१२४ 2. कृपालु, दयालु,—**षः** 1. मनुष्य, मानव, इंसान 2. मिथुन, कन्या और तुला राशियों का विशेषण,—**षी** स्त्री,—**षम्** 1. मनुष्यत्व 2. मानव प्रयत्न या कर्म।

मानुषक (वि०) (स्त्री०—की) [मानुष+कन्] मनुष्य सम्बन्धी, इंसानी, मरणशील, मर्त्य।

मानुष्यम्, मानुष्यकम् [मनुष्य—अण्, वुन् वा] 1. मानव प्रकृति, मनुष्यत्व, इंसानियत 2. मनुष्य जाति, मानव-संतति 3. मानवसमुदाय।

मानोज्ञकम् [मनोज्ञ+वुञ्] सौन्दर्य, प्रियता, मनोहरता।

मान्त्रिकः [मन्त्र+ठक्] वह जो मंत्र-तंत्र से सुपरिचित है, जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक।

मान्थर्यम् [मन्थर+ष्यञ्] 1. मन्थरता, मन्दता, अकर्मण्यता 2. दुर्बलता।

मान्दारः, मान्दारवः [मन्दार+अण्] एक प्रकार का वृक्ष।

मान्द्यम् [मन्द+ष्यञ्] 1. मन्दता, सुस्ती, मन्थरता 2. जड़ता 3. दुर्बलता, निर्बल स्थिति, अग्निमांद्य 4. विराग, अनासक्ति 5. रोग बीमारी, अस्वस्थता।

मान्धातृ (पुं०) [मां धास्यति—माम्+धे तृच्] युवनाश्व का पुत्र एक सूर्यवंशी राजा (जो पिता के पेट से उत्पन्न हुआ था), ज्योंही वह पेट से बाहर निकला कि ऋषियों ने पूछा 'कम् एष धास्यति', इस पर इन्द्र नीचे उतरा और उसने कहा "मां धास्यति", इसीलिए वह बालक 'मांधातृ' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मान्मथ (वि०) (स्त्री०—थी) [मन्मथ+अण्] काम से संबंध रखने वाला या काम से उत्पन्न—आचार्यकं विजयि मान्मथमाविरासीत्—मा० १।२६, २।४।

मान्य (वि०) [मान् अर्चायां कर्मणि ण्यत्] 1. मान करने के योग्य, आदरणीय—अहमपि तव मान्या हेतुभिस्तैश्च तैश्च—मा० ६।२६ 2. आदर किये जाने के योग्य, सम्माननीय, श्रद्धेय—रघु० २।४५, याज्ञ० १।११।

मापनम् [मा+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. मापना 2. रूप बनाना, बनाना,—**नः** तराजू।

मापत्यः [मा विद्यते अपत्यं यस्य] कामदेव।

माम (वि०) (स्त्री०—मी) [मम इदम्—अस्मद्+अण्, ममादेशः] 1. मेरा 2. (संबोधन में) चाचा।

मामक (वि०) (स्त्री०—मिका) [अस्मद्+अण्, ममकादेशः] मेरा मेरे पक्ष से संबंध रखने वाला,—मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय—भग० १।१ 2. स्वार्थी, लालची, लोभी,—**कः** 1. कंजूस 2. माया।

मामकीन (वि०) [अस्मद्+खञ्, ममकादेशः] मेरा —यो मामकीनस्य मनसो द्वितीयम् निबंधनम्—मा० २, भामि० २।३२, ३।६।

मायः [माया अस्ति अस्य—माया—अच्] 1. जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक 2. राक्षस, भूत प्रेत।

माया [मीयते अनया—मा+य+टाप् वा० नेत्वम्] 1. धोखा, जालसाजी, कपट, धूर्तता, दाँव, युक्ति, चाल —पंच० १।३५९ 2. जादूगरी, अभिचार, जादू-टोना, इन्द्रजाल—स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु—श० ६।७ 3. अवास्तविक या मायावी बिंब, कल्पनासृष्टि, मनोलीला, अवास्तविक आभास, छाया—मायां मयोद्भाव्य परीक्षितोऽसि—रघु० २।६२, प्रायः समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होकर 'मिथ्या' 'आभास' 'छाया' अर्थ को प्रकट करता है—उदा० मायावचनम् 'मिथ्या शब्द', मायामृग आदि 4. राजनैतिक दांवपेंच, चाल, युक्ति, कूटनीति की चाल 5. (वेदान्त० में) अवास्तविकता, एक प्रकार की भ्रान्ति जिसके कारण मनुष्य इस अवास्तविक विश्व को वास्तविक तथा परमात्मा से भिन्न अस्तित्ववान् समझता है 6. (सांख्य० में) प्रधान या प्रकृति 7. दुष्टता 8. दया, करुणा 9. बुद्ध की माता का नाम। सम०—आचार धोखे से काम करने वाला,—**आत्मक** (वि०) मिथ्या, भ्रान्तिमान्,—**उपजीविन्** (वि०) जालसाजी और कपटपूर्ण जीवन बिताने वाला—पंच० १।२८८, —**कारः,—कृत्,—जीविन्** (पुं०) जादूगर, बाजीगर

—दः मगरमच्छ,—देवी बुद्ध की माता का नाम, °सुतः बुद्ध, धर (वि०) कपटपूर्ण, भ्रमात्मक,—पटु (वि०) धोखा देने में कुशल, जालसाज, ठग, -प्रयोगः 1. धोखा, जालसाजी या दाँवपेंच का प्रयोग 2. जादू का प्रयोग, मृग (वि०) मिथ्याहरिण, भ्रमात्मक या छाया मृग, यंत्रम् जादू-टोना, योग जादू करना, —वचनम् झूठे या कपटपूर्ण शब्द,—वादः भ्रान्ति का सिद्धांत इस सिद्धान्त के अनुसार सारी सृष्टि मिथ्या समझी जाती है, बुद्धवाद, विद् (वि०) कपट जाल रखने में कुशल, या जादू की कला, सुतः बुद्ध का विशेषण।

मायावत् (वि०) [माया+मतुप्] 1. कपटपूर्ण, जालसाज 2. भ्रान्तियुक्त, अवास्तविक, भ्रमोत्पादक 3. इन्द्रजाल की कला में कुशल, जादू की शक्ति लगाने वाला -पुं० कंस का विशेषण, -ती प्रद्युम्न की पत्नी का नाम।

मायाविन् (वि०) [माया अस्त्यर्थे विनि] 1. धोखेबाजी या चाल से काम लेने वाला, कूटयुक्ति का प्रयोग करने वाला, धोखेबाज, जालसाज—व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः—कि० १।३० 2. जादू के कार्य में कुशल 3. अवास्तविक, भ्रान्तिजनक, (पुं०) ऐन्द्रजालिक, जादूगर 2. बिल्ली. नपुं० माजूफल।

मायिक (वि०) [माया+ठन्] 1. कपटमय, जालसाज 2. भ्रान्तिमान्, अवास्तविक, कः जादूगर, कम् माजूफल।

मायिन् (वि०) [माया+इनि] दे० मायाविन्, —पुं० 1. बाजीगर 2. धूर्त, ठग 3. ब्रह्मा या काम का नामान्तर।

मायुः [मि+उण्] 1. सूर्य 2. पित्त, पैत्तिक रस (इस अर्थ में नपुं० भी)।

मायूर (वि०) (स्त्री० री) [मयूर+अण्] 1. मोर से संबंध रखने वाला, या मोर से उत्पन्न होने वाला 2. मोर के पंखों से बना हुआ 3. (गाड़ी की भांति) मोर द्वारा खींचा जाने वाला 4. मोर को प्रिय, रम् मोरों का समूह।

मायूरकः, मायूरिकः [मयूर+वुञ्, ठक् वा] मोर पकड़ने वाला।

मारः [मृ+घञ्] 1. हत्या, वध, क़तल अशेषप्राणिनामासीदमारो दश वत्सरान् राजत० ५।६४ 2. बाधा, विघ्न, विरोध 3. कामदेव,—श्यामात्मा कुटिलः करोतु कबरीभारोऽपि मारोद्यमम् गीत० ३ (यहाँ 'मार का मुख्य अर्थ 'हत्या' है) नाग० १।१ 4. प्रेम, प्रणयोन्माद 5. धतूरा 6. अनिष्ट, (बौद्धों के अनुसार) विनाशक। सम० अङ्क (वि०) 'प्रेमचिह्नित' प्रेम के संकेत करने वाला माराङ्के रतिकेलिसंकुलरणारम्भे—गीत० १२, अभिभू (भुः ?) बुद्ध का विशेषण, -अरिः रिपु शिव, आत्मक (वि०) हत्यारा—कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः कर्तव्यः —हि० १, जित् (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. बुद्ध का विशेषण।

मारकः [मृ+णिच्+ण्वुल्] 1. कोई घातक रोग, महामारी, 2. कामदेव 3. हत्या करने वाला, विनाशकर्ता 4. बाज।

मारकत (वि०) (स्त्री०—ती) [मरकत+अण्] पन्ने से संबद्ध,—काचः काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम् —हि० प्र० ४१।

मारणम् [मृ+णिच्+ल्युट्] 1. हत्या, वध, कतल, विनाश —पशुमारणकर्मदारुणः—श० ६।१ 2. शत्रु का विनाश करने के लिए किया गया जादूटोना 3. फूंकना, राख कर देना 4. एक प्रकार का विष।

मारिः (स्त्री०) [मृ+णिच्+इन्] 1. घातकरोग, महामारी 2. हत्या, बर्बादी, विनाश।

मारिच (वि०) (स्त्री० ची) [मरिच+अण्] मिर्च का बना हुआ।

मारिषः [मा रिष्यति हिनस्ति—मा+रिष्+क] किसी मुख्य पात्र को सूत्रधार द्वारा नाटक में संबोधित करने के लिए सम्मानयुक्त रीति, आदरणीय, श्रद्धेय—दे० उत्तर० १, मा० १।

मारी [मारि+ङीप्] 1. प्लेग, घातक रोग, संक्रामक रोग 2. घातक या मारक रोगों की अधिष्ठात्री देवता दुर्गा।

मारीचः (पुं०) 1. ताडका और सुन्द राक्षस की सन्तान, मारीच नाम का राक्षस। यह स्वर्णमृग का रूप धारण करके राम को सीता से दूर भगा ले गया जिससे कि रावण को सीता का अपहरण करने का अवसर मिल गया 2. एक विशाल या राजकीय हाथी 3. एक प्रकार का पौधा,—चम् मिर्च की झाड़ियों का संग्रह।

मारुण्डः (पुं०) 1. सांप का अण्डा 2. गोबर 3. पथ, मार्ग, सड़क।

मारुत (वि०) (स्त्री०—ती) [मरुत्+अण्] 1. मरुत् संबंधी या मरुत् से उत्पन्न होने वाला 2. वायु से संबंध रखने वाला, वायवी, हवाई,—तः 1. हवा—रघु० २।१२, ३४, ४।५४, मनु० ४।१२२ 2. वायु का देवता, पवन की अधिष्ठात्री देवता 3. श्वास लेना 4. प्राण, शरीर के तीन मूल रसों, (वात, पित्त, कफ) में से एक 5. हाथी की सूंड,—तम् स्वाति नाम का नक्षत्र। सम०—अशनः सांप—आत्मजः—सुतः, —सूनुः 1. हनुमान् के विशेषण 2. भीम के विशेषण।

मारुतिः [मरुतोऽपत्यम्—इञ्] 1. हनुमान् का विशेषण —रघु० १२।६० 2. भीम का विशेषण ।

मार्कंडः, मार्कण्डेयः [मृकण्डोः अपत्यम्—अण्, मृकण्डु+ढक्] एक प्राचीन ऋषि का नाम । सम०—**पुराणम्** (इस ऋषि द्वारा प्रणीत) एक पुराण ।

मार्ग् i (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मार्गति, मार्गयति-ते) 1. खोजना, ढूंढना 2. तलाश करना, पीछे पड़ना 3. प्राप्त करने का प्रयत्न करना, कोशिश करते रहना—आत्मोत्कर्षं न मार्गेत परेषां परिनिन्दया, स्वगुणैरेव मार्गेत विप्रकर्षं पृथग्जनात्—सुभा० 4. निवेदन करना, प्रार्थना करना, याचना करना—वरं वरेण्यो नृपतेरमार्गीत् – भट्टि० १।१२, याज्ञ० २।६६, 5. विवाह के लिए मांगना ।

ii (चुरा० उभ० मार्गयति – ते) 1. जाना, हिलना-जुलना, 2. सजाना, अलंकृत करना । परि–, खोजना, ढूंढना ।

मार्गः [मार्ग्+घञ्] 1. रास्ता, सड़क, पथ (आलं० भी)—अग्निशरणमार्गमादेशय—श० ५, इसी प्रकार –विचारमार्गप्रहितेन चेतसा—कु० ५।४२, रघु० २।७२ 2. क्रम, रास्ता, भूखंड (जो पार कर लिया गया हो)—वायोरिमं परिवहस्य वदन्ति मार्गम्—श० ७।७ 3. पहुँच, परास—कि० १८।४० 4. किण, व्रणचिह्न —रघु० ४।४८ १४।४ 5. ग्रहपथ 6. खोज, पूछताछ, गवेषणा 7. नहर कुल्या, जलमार्ग 8. साधन, रीति 9. सही मार्ग, उचित पथ – सुमार्ग, अमार्ग 10. पद्धति, रीति, प्रणाली, क्रम, चलन–शांति°—रघु० ७।७१, इसी प्रकार कुल° शास्त्र° धर्म० आदि 11. शैली, वाक्यविन्यास—इति वैदर्भमार्गस्य प्राणा दश गुणाः स्मृताः—काव्या० १।४१, वाचां विचित्रमार्गाणाम्—१।९ 12. गुदा, मलद्वार 13. कस्तूरी 14. 'मृगशिरस्' नाम का नक्षत्र 15. मार्गशीर्ष का महीना। सम०—**तोरणम्** सड़क पर बनाया गया उत्सवसूचक महराबदार द्वार—रघु० ११।५,—**दर्शकः** पथप्रदर्शक, —**धेनुः,**—**धेनुकम्** चार कोस की दूरी,—**बन्धनम्** रोक, आड़,—**रक्षकः** सड़क का रखवाला, सड़क पर पहरा देने वाला,—**शोधकः** दूसरे के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाला,—**स्थ** (वि०) यात्रा करने वाला, बटोही,—**हर्म्यम्** राजपथ पर बना हुआ महल ।

मार्गकः [मार्ग+कन्] मार्गशीर्ष का महीना ।

मार्गणम्,—णा [मार्ग्+ल्युट्] 1. याचना करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना 2. खोजना, तलाश करना, ढूंढना 3. गवेषणा करना, पूछताछ करना, जांचपड़ताल करना,—**णः** 1. भिक्षुक, अनुनय विनय करने वाला, साधु 2. बाण—दुर्वाराः स्मरमार्गणाः—काव्य० १०, अमी‌ दि तत्तावृगनङ्गमार्गणैर्यदस्य पौष्पैरपि धैर्यकञ्चुकम् —नै० १।४६, विक्रम १।७७, रघु० ९।१७, ६५ 3. 'पांच' की संख्या ।

मार्गशिरः मार्गशिरस्, (पुं०) **मार्गशीर्षः** [मृगशिरा+अण्, मृगशीर्ष+अण्] (नवंबर और दिसंबर में पड़ने वाला) हिन्दुओं का नवां महीना जिसम कि पूर्णचन्द्रमा मृगशिरस् नक्षत्र में विद्यमान है ।

मार्गशिरी, मार्गशीर्षी [मार्गशिर+ङीप्, मार्गशीर्ष+ङीप्] मार्गशीर्ष के महीने में आने वाली पूर्णमासी का दिन ।

मार्गिकः [मृगान् हन्ति—मृग+ठक्] 1. यात्री 2. शिकारी ।

मार्गित (भू० क० कृ०) [मार्ग्+क्त] 1. खोजा हुआ, ढूंढा हुआ, पूछताछ किया हुआ, 2. जिसके पीछे २ फिरा गया हो, अभीष्ट, निवेदित ।

मार्ज् (चुरा० उभ० मार्जयति—ते) 1. निर्मल करना, स्वच्छ करना, पोंछना—तु० मृज् 2. ध्वनि करना ।

मार्जः [मृज् (मार्ज् वा)+घञ्] 1. स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना 2. धोबी 3. विष्णु का विशेषण ।

मार्जक (वि०) (स्त्री – जिका) [मृज्+ण्वुल्] स्वच्छ करने वाला, निर्मल करने वाला, धोने वाला ।

मार्जन (वि०) (स्त्री०—नी) स्वच्छ करने वाला, निर्मल करने वाला,—**नम्** 1. स्वच्छ करना, साफ़ करना, निर्मल करना 2. पोंछ देना, रगड़ कर मिटा देना 3. साफ़ कर देना, पोंछ डालना 4. उबटन से मल मल कर शरीर स्वच्छ करना 5. हाथ से या कुशा से शरीर पर जल के छींटे डालना,—**नः** लोध्रवृक्ष,—**ना** 1. स्वच्छ करना, निर्मल करना, साफ़ करना 2. ढोल की आवाज़—मायूरी मदयति मार्जना मनांसि—मालवि० १।१८,—**नी** बुहारी, लंबी झाड़ या ब्रुश ।

मार्जारः (लः) बिलाव – कपाले मार्जारः पय इति कराँल्लेढि शशिनः—काव्य० १० 2. गंधमार्जार । सम०—**कण्ठः** मोर,—**करणम्** एक प्रकार का मैथुन या रतिबन्ध ।

मार्जारकः 1. बिलाव 2. मोर ।

मार्जारी 1. बिल्ली 2. मुश्क बिलाव, ओतु 3. कस्तूरी ।

मार्जारीयः 1. बिलाव 2. शूद्र।

मार्जितम्•(भू० क० कृ०) 1. स्वच्छ किया हुआ, मल-मल कर मांजा हुआ, निर्मल किया हुआ 2. बुहारा हुआ, झाड़ या ब्रुश से साफ किया हुआ 3. अलंकृत किया हुआ ।

मार्जिता दही में चीनी और मसाले डाल कर बनाया गया स्वादिष्ट पदार्थ, श्रीखंड ।

मार्तण्डः 1. सूर्य—अयं मार्तण्डः किं स खलु तुरगैः सप्तभिरितः—काव्य० १०, उत्तर० ६।३ 2. मदार का पौधा 3. सूअर 4. बारह की संख्या ('मार्तण्ड' भी) ।

मार्तिक (वि०) (स्त्री०—की) मिट्टी का बना हुआ, मिट्टी का,—**कः** 1. एक प्रकार का घड़ा 2. घड़े का

ढक्कन, पाली,—कम् मिट्टी का लौंदा—गुरुमध्ये हरिणाक्षी मार्तिकशकलैर्निहन्तुकामं माम्—भामि० २।४९।

मार्त्यम् —मरणशीलता।

मार्दङ्गः—ढोलकिया, मृदंग बजाने वाला,—गम् नगर, कस्बा।

मार्दङ्गिकः —मृदंग बजाने वाला, ढोलकिया।

मार्दवम् मृदुता (शा० और आलं०) लचीलापन, दुर्बलता—अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु—रघु० ८।४३, 'मृदु हो जाता है', स्वशरीरमार्दवम् कु० ५।१८ 2. नरमी, कृपा, कोमलता, उदारता—भग० १६।२।

मार्द्वीक (वि०) (स्त्री० —की) अंगूरों से बनाया हुआ, —कम् शराब—शि० ८।३०।

मार्मिक (वि०)—गहरी अन्तर्दृष्टि रखने वाला, तत्त्व सौन्दर्यादिक से पूर्ण परिचित,(—मर्मज्ञ दे०)—मार्मिकः को मरन्दानामन्तरेण मधुव्रतम्—भामि० १।११७, ९।८, ४।४०।

मार्षः—दे० 'मारिष'।

मार्ष्टिः (स्त्री०) स्वच्छ करना, मलमलकर मांजना, निर्मल करना।

मालः 1. बंगाल के पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम में एक जिले का नाम 2. एक बर्बर जाति का नाम, पहाड़ी 3. विष्णु का नाम,—लम् 1. मैदान 2. ऊँची भूमि, उठी हुई या उन्नत की हुई भूमि—(मालमुन्नतभूतलम्) क्षेत्रमारुह्य मालम्—मेघ० १६ (शैलप्रायमुन्नतस्थलम्—मल्लि०) 3. धोखा, जालसाजी। सम०—चक्रकम् कूल्हे का जोड़।

मालकः 1. नीम का पेड़ 2. गाँव के पास का जंगल 3. नारियल के खोल से बना पात्र,—कम् माला।

मालतिः, —ती (स्त्री०) (सुगंधित श्वेत फूलों से युक्त) एक प्रकार की चमेली—तन्मन्ये क्वचिदङ्ग भृङ्गतरुणैर्नास्वादिता मालती—गण०, जालकैर्मालतीनाम्—मेघ० ९८ 2. मालती का फूल—शिरसि बकुलमालां मालतीभिः समेतां—ऋतु० २।२४ 3. कली, सामान्य फूल 4. कन्या, तरुणी 5. रात 6. चांदनी। सम०—क्षारकः सुहागा, —पत्रिका जायफल का छिलका,—फलम् जायफल,—माला मालती या चमेली के फूलों की माला।

मालव (वि०) (स्त्री० —वी) मलय पर्वत से आने वाला,—वः चंदन की लकड़ी।

मालवः 1. एक देश का नाम, मध्यभारत में वर्तमान मालवा 2. राग का नाम, या स्वरग्राम की रीति, —वाः (ब० व०) मालवा प्रदेश के अधिवासी। सम०—अधीशः—इन्द्रः,—नृपतिः मालवा का राजा।

मालवकः—1. मालव वासियों का देश 2. मालवा का निवासी।

मालसी—एक पौधे का नाम।

माला—1. हार, स्रज्, गजरा—अनधिगतपरिमलाऽपि हि हरति दृशं मालतीमाला—वास० 2. रेखा, पंक्ति, सिलसिला, श्रेणी या तांता—गण्डोड्डीनालिमाला —मा० १।१, आबद्धमालाः—मेघ० ९ 3. समूह, झुरमुट, समुच्चय 4. लड़ी, कण्ठहार—जैसा कि 'रत्नमाला' में 5. जपमाला, जंजीर—जैसा कि 'अक्षमाला' में 6. लकीर, लहर, कौंध जैसा कि 'तडिन्माला' और 'विद्युन्माला' में 7. विशेषणों का सिलसिला 8. (नाटक में) अपने मनोरथ की सिद्धि के लिए नाना वस्तुओं का उपहार। सम०—उपमा उपमा का एक भेद जिसमें एक उपमेय की अनेक उपमानों से तुलना की जाती है—उदा० अनयेनेव राज्यश्रीर्दैन्येनेव मनस्विता, मम्लौ साथ विषादेन पद्मिनीव हिमाम्भसा —काव्य० १०,—करः,—कारः 1. हार बनाने वाला, फूल-विक्रेता, माली,—कृती मालाकारो बकुलमपि कुत्रापि निदधे—भामि० १।५४, पंच० १।२२० 2. मालियों की एक जाति.—तृणम् एक प्रकार का सुगंधित घास,—दीपकम् दीपक अलंकार का एक भेद, मम्मट ने इसकी परिभाषा बताई है—मालादीपकमाद्यं चेद्यथोत्तरगुणावहम्—काव्य० १०, उदा० देखें उसी स्थान पर।

मालिकः 1. फूलों का व्यापारी, माली 2. रंगने वाला, रंगरेज़।

मालिका 1. माला 2. पंक्ति, रेखा, सिलसिला 3. लड़ी, कण्ठहार 4. चमेली का एक प्रकार 5. अलसी 6. बेटी 7. महल 8. एक प्रकार का पक्षी 9. मादक पेय।

मालिन् (वि०) 1. माला पहनने वाला 2. (समास के अन्त में) मालाओं से सम्मानित, हारों से सुशोभित गजरों से लपेटा हुआ—समुद्रमालिनी पृथ्वी, अंशुमालिन्, मरीचिमालिन्, ऊर्मिमालिन् आदि,—नपुं० —फूलमाली, हार बनाने वाला,—नी 1. फूलमालिन्, हार बनाने वाले की पत्नी 2. चम्पा नगरी का नाम 3. सात वर्ष की कन्या जो दुर्गा पूजा के उत्सव पर दुर्गा का प्रतिनिधित्व करे 4. दुर्गा का नाम 5. स्वर्गंगा 6. एक छंद का नाम—दे० परिशिष्ट १।

मालिन्यम् 1. मैलापन, गंदगी, अपवित्रता 2. मलिनता, दूषण 3. पापपूर्णता 4. कालिमा 5. कष्ट, दुःख।

मालुः (स्त्री०) 1. एक प्रकार की लता 2. एक स्त्री। सम०—धानः एक प्रकार का सांप।

मालूरः 1. बेल का वृक्ष 2. कैथ का वृक्ष।

मालेया बड़ी इलायची।

माल्य (वि०) हार के उपयुक्त या हार से संबद्ध,—ल्यम् 1. हार, गजरा—माल्येन तां निर्वचनं जघान कु०

७।१९, कि० १।२१ 2. फूल— भग० ११।११, मनु० ४।७२ 3. सुमिरनी या शिरोमाल्य। सम० आपणः फूलों की मंडी,— जीवकः फूलमाली, मालाकार,—पुष्पः पटसन,—वृत्तिः फूलों का व्यापारी।

माल्यवत् (वि०) माला धारण किए हुए, हारों से सुशोभित (पुं०) 1. एक पर्वत या पर्वतशृंखला का नाम —उत्तर० १।३३, रघु० १३।२६ 2. सुकेतु का पुत्र एक राक्षस (माल्यवान् रावण का मामा और मंत्री था, उसकी बहुत सी योजनाओं में वह सहायता देता था, अपने पूर्वकाल में घोर तपस्या द्वारा उसने ब्रह्मा को प्रसन्न किया। इसके फलस्वरूप उसके लंकाद्वीप की सृष्टि की गई। कुछ वर्षों वह अपने भाइयों समेत वहाँ रहा, परन्तु बाद में उसने लंका को छोड़ दिया। कुबेर ने फिर लंका पर अपना अधिकार कर लिया। उसके पश्चात् फिर जब रावण ने कुबेर को निर्वासित कर दिया तो माल्यवान् फिर अपने बंधु-बांधवों समेत वहाँ आ गया और बरसों रावण के साथ रहा)।

माल्लः एक प्रकार की वर्णसंकर जाति।

माल्लवी कुश्ती या मुक्केबाजी की प्रतियोगिता।

माषः 1. उड़द (एक वचन पौधे के अर्थ में तथा ब० व० फल या बीज के अर्थ में) - तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान् सिद्धा० 2. सोने की एक विशेष तौल, माशा —माषो विंशतिमो भागः पणस्य परिकीर्तितः—या—गुञ्जाभिर्दशभिर्माषः 3. मूर्ख, बुद्धू। सम०— अदः, —आदः कछुवा— आज्यम् घी के साथ पकाये हुए उड़द, आशः घोड़ा, — ऊन (वि०) एक माशा कम, — वर्धकः सुनार।

माषिक (वि०) (स्त्री० - की) एक माशे के मूल्य का।

माषीणम्, माष्यम् -- उड़दों का खेत।

मास् (पुं०) = मास दे० (पहले पांच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, द्वि० वि० के द्वि० व० के पश्चात् विकल्प से 'मास' के स्थान में 'मास्' आदेश हो जाता है)।

मासः, सम्—महीना (यह चांद्र, सौर, सावन, नाक्षत्र या बार्हस्पत्य में से कोई भी हो सकता है)—न मासे प्रतिपत्तासे मां चेन्मर्तासि मैथिलि—भट्टि० ८।९५, 2. 'बारह' की संख्या। सम० अनुमासिक (वि०) प्रतिमास होने वाला, --अन्तः अमावस्या का दिन, —आहार (वि०) मास में केवल एक बार खाने वाला, —उपवासिनी 1. पूरा महीना भर उपवास रखनेवाली स्त्री 2. कुट्टिनी, लम्पट या दुश्चरित्र स्त्री (व्यंग्योक्ति-पूर्वक), - कालिक (वि०) मासिक,—जात (वि०) एक मास का, जिसको उत्पन्न हुए एक महीना हो चुका है, —ज्ञः एक प्रकार का जलकुक्कुट,—देय (वि०) जिसे महीने भर में चुकाना हो,—प्रमितः अमावस्या या प्रतिपदा का चंद्रमा, —प्रवेशः महीने का आरम्भ,—मानः वर्ष।

मासकः महीना।

मासरः उबले हुए चावलों की पीच, मांड।

मासलः वर्ष।

मासिक (वि०) (स्त्री०—की) 1. महीने से संबंध रखने वाला 2. प्रतिमास होने वाला 3. एक महीने तक रहने वाला 4. एक महीने में चुकाया जाने वाला 5. एक महीने के लिए नियुक्त,—कम् प्रत्येक मृत्यु तिथि को किया जाने वाला श्राद्ध (मनुष्य के मरने के प्रथम वर्ष में)—पितॄणां मासिकं श्राद्धमन्वाहार्यं विदुर्बुधाः।

मासीन (वि०) 1. एक मास की आयु का 2. मासिक।

मासुरी दाढ़ी।

माह् (भ्वा० उभ० माहति - ते) मापना।

माहाकुल (वि०) (स्त्री०—ली), **माहाकुलीन** (वि०) (स्त्री—नी) 1. सत्कुलोत्पन्न, उत्तम कुल का, नामी घराने या प्रख्यात कुल का।

माहाजनिक (वि० स्त्री०—की), **माहाजनीन** (वि०) (स्त्री०—नी) 1. सौदागरों के लिए उपयुक्त 2. महाजनोचित, बड़े आदमी के योग्य।

माहात्मिक (वि०) (स्त्री०—की) उन्नत-मना, उदाराशय, उत्तम, महानुभाव, यशस्वी।

माहात्म्यम् 1. उदाराशयता, महानुभावता 2. ऐश्वर्य, महिमा, उत्कृष्ट पद 3. किसी इष्ट देव या दिव्य विभूति के गुण, या एसी कृति जिसमें इस प्रकार के देवी देवताओं के गुणों का वर्णन दिया गया हो—जैसा कि देवीमाहात्म्य, शनिमाहात्म्य आदि।

माहाराजिक (वि०) (स्त्री०—की) सम्राट् के उपयुक्त, साम्राज्यसंबंधी, राजकीय या राजोचित।

माहाराज्यम् प्रभुता।

माहाराष्ट्री दे० महाराष्ट्री।

माहिरः इन्द्र का विशेषण।

माहिष (वि०) (स्त्री—षी) भैंस या भैंसे से उत्पन्न या प्राप्त, जैसा कि 'माहिषं दधि'।

माहिषिकः 1. भैंस रखने वाला, ग्वाला 2. असती या व्यभिचारिणी स्त्री का यार—माहिषीत्युच्यते नारी या च स्याद् व्यभिचारिणी, तां दृष्ट्वा कामयति यः स वै माहिषिकः स्मृतः—कालिका पुराण 3. जो अपनी पत्नी की वेश्यावृत्ति पर निर्वाह करता है—महिषीत्युच्यते नार्या भोगेनोपार्जितं धनम्, उपजीवति यस्तस्याः स वै माहिषिकः स्मृतः—वि० पु० पर श्रीवर०।

माहिष्मती एक नगर का नाम, हैहय राजाओं की कुल-क्रमागत राजधानी --रघु० ६।४३।

माहिष्यः क्षत्रिय पिता और वैश्य माता से उत्पन्न एक मिश्र या वर्णसंकर जाति।

माहेन्द्र (वि०) (स्त्री०—द्री) इन्द्र से संबंध रखने वाला —कु० ७।८४, रघु० १२।८६,—**द्री** 1. पूर्व दिशा 2. गाय 3. इन्द्राणी का नाम।

माहेय (वि०) (स्त्री०—यी) भौतिक,—**यः** 1. मंगल ग्रह 2. मूंगा।

माहेयी गाय।

माहेश्वरः शिव की पूजा करने वाला।

मि (स्वा० उभ० मिनोति, मिनुते—लौकिकसाहित्य में विरल प्रयोग) 1. फेंकना, डालना, बखेरना 2. निर्माण करना (मकान) खड़ा करना 3. मापना 4. स्थापित करना 5. ध्यानपूर्वक देखना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना।

मिच्छ् (तुदा० पर० मिच्छति) 1. विघ्न डालना, बाधा डालना 2. तंग करना।

मित (भू० क० कृ०) 1. मापा हुआ, नपा तुला 2. नाप कर निशान लगाया हुआ, हदबन्दी की हुई, सीमाबद्ध किया हुआ 3. सीमित, परिमित, मर्यादित, थोड़ा, स्वल्प, बचा रखने वाला, संक्षिप्त (शब्द आदि) —पुष्टः सत्यं मितं ब्रूते स भृत्योऽर्हो महीभुजाम्-पंच० १।८७, रघु० ९।३४ 4. मापने में, माप का (समास के अन्त में) जैसा कि 'ग्रहवसुकरिचन्द्रमिते वर्षे' अर्थात् १८८९ 5. जांच पड़ताल किया हुआ, परीक्षित (दे० मा०)। सम०—**अक्षर** (वि०) 1. संक्षिप्त, नपा-तुला, थोड़े में, सामासिक—कु० ५।६३ 2. छन्दोबद्ध, पद्यात्मक,—**अर्थ** (वि०) नपे-तुले अर्थ वाला—**आहार** (वि०) थोड़ा खाने वाला, (—**रः**) परिमित आहार,—**भाषिन्**,—**वाच्** कम बोलने वाला, नपेतुले शब्दों में अपनी बात कहने वाला—महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः—शि० २।१३।

मितङ्गम (वि०) धीरे-धीरे चलने वाला—**मः** हाथी।

मितम्पच (वि०) 1. नपा-तुला अन्न पकाने वाला, थोड़ा पकाने वाला 2. मितव्ययी, दरिद्र कंजूस।

मितिः (स्त्री०) 1. नापना, माप, तोल 2. यथार्थ ज्ञान 3. प्रमाण, साक्ष्य।

मित्रः 1. सूर्य 2. आदित्य (इसका वर्णन प्रायः वरुण के साथ मिलता है), **त्रम्** 1. दोस्त—तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत् भर्तृ० २।६८, मेघ० १७ 2. मित्रराष्ट्र, पड़ौसी राजा तु० 'मण्डल'। सम० —**आचारः** मित्र के प्रति व्यवहार,—**उदयः** 1. सूरज का उगना 2. मित्र का कल्याण या समृद्धि,—**कर्मन्** (नपुं०)—**कार्यम्**,—**कृत्यम्** मित्र का कार्य, मित्रता-पूर्ण कार्य या सेवा—रघु० १९।३१,—**घ्न** (वि०) विश्वासघाती,—**द्रुह्**,—**द्रोहिन्** (वि०) मित्र से घृणा करने वाला, मित्र के साथ विश्वासघात करने वाला, झूठा या विश्वासघाती मित्र,—**भावः** मित्रता, दोस्ती, —**भेदः** मैत्रीभंग,—**वत्सल** (वि०) मित्रों के प्रति कृपालु, शिष्टाचारयुक्त,—**हत्या** मित्र का वध करना।

मित्रयु (वि०) 1. मित्रवत् आचरण करने वाला, हितैषी 2. स्नेहशील, मिलनसार।

मिथ् (भ्वा० उभ० मेथति–ते) 1. सहकारी बनना, 2. एकत्र मिलाना, मैथुन करना, जोड़ा बनाना 3. चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, प्रहार करना, वध करना 4. समझना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, जानना 5. झगड़ा।

मिथस् (अव्य०) 1. परस्पर, आपस में, एक दूसरे को —मनु० २।१४७, (प्रायः समास में)—मिथः प्रस्थाने —श० २, मिथः समयात्—श० ५ 2. गुप्त रूप से, व्यक्तिगत रूप से, चुपचाप, निजी रूप से—भर्तुः प्रसादं प्रतिपद्य मूर्ध्ना वक्तुं मिथः प्राक्रमतैवमेनम्—कु० ३।२, ६।१, रघु० १३।१।

मिथिलः एक राजा का नाम,—**लाः** (ब० व०) एक राष्ट्र का नाम,—**ला** नगर का नाम, विदेह देश की राजधानी।

मिथुनम् 1. जोड़ा, दम्पती—मिथुनं परिकल्पितं त्वया सहकारः फलिनी च नन्विमौ—रघु० ८।६१, मेघ० १८, उत्तर० २।६ 2. यमज, 3. समागम, संगम 4. मैथुन, संभोग, सहवास 5. मिथुन राशि 6. (व्या० में) उपसर्ग से युक्त धातु। सम०—**भावः** 1. जोड़ी बनाना. जोड़ा बनने की स्थिति 2. संभोग,—**व्रतिन्** (वि०) सहवास करने वाला।

मिथुनेचरः चक्रवाक, चकवा—तु० 'द्वंद्वचरः'।

मिथ्या (अव्य०) 1. झूठमूठ, धोखे से, गलत तरीके से, अशुद्धता के साथ बहुधा विशेषण का बल रखते हुए—मणौ महानील इति प्रभावादल्पप्रमाणेऽपि यथा न मिथ्या रघु० १८।४२, यदुवाच न तन्मिथ्या —१७।४२, मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः—श० २।५ 2. विपर्यस्त रूप से, विपरीततया 3. निष्प्रयोजन, व्यर्थ, निष्फलता के साथ—मिथ्या कारयते चारैर्घोषणां राक्षसाधिपः—भट्टि० ८।४४, भग० १८।५९, **मिथ्या वद्** (वच्) मिथ्या कहना, झूठ बोलना, **मिथ्या कृ**—, मिथ्या सिद्ध करना, **मिथ्या भू**—, झूठ निकलना, झूठ होना, **मिथ्या ग्रह्**, गलत समझना, भूल होना या करना समास के आरंभ में प्रयुक्त 'मिथ्या' का अनुवाद 'झूठा' असत्य, अवास्तविक, झूठमूठ, छलयुक्त, जाली आदि शब्दों से किया जा सकता है। सम०—**अध्यवसितिः** एक अलंकार जिसमें किसी असंभव घटना पर आश्रित होने के कारण किसी वस्तु की असंभावना की अभिव्यक्ति हो—किंचिन्मिथ्यात्वसिद्धयर्थं, मिथ्यार्थान्तरकल्पनम्, मिथ्याध्यवसितिर्वेश्यां वशयेत् खस्रजं वहन्—कुव०, —**अपवादः** झूठा आरोप—**अभिधानम्** झूठी युक्ति,

—अभियोगः झूठा या निराधार आरोप,—अभिशंसनम् झूठा आक्षेप, मिथ्या दोषारोपण,—अभिशापः 1. झूठी भविष्यवाणी 2. झूठा या अन्याय्य दावा,—आचारः गलत या अनुचित आचरण,—आहारः गलत भोजन, —उत्तरम् झूठा या गोलमोल जवाब,—उपचारः बनावटी कृपा या सेवा,—कर्मन् (नपुं०) झूठा कार्य, —कोपः,—क्रोधः झूठ मूठ का गुस्सा,—क्रयः मिथ्या मूल्य, ग्रहः, ग्रहणम् समझने में भूल होना, गलत समझना,—चर्या पाखंड,—ज्ञानम् अशुद्धि, त्रुटि, गलतफहमी,—दर्शनम् पाखंडधर्म, नास्तिकता,—दृष्टिः (स्त्री०) मतविरोध, नास्तिकता के सिद्धान्तों को मानना,—पुरुषः छाया पुरुष,—प्रतिज्ञ (वि०) झूठी प्रतिज्ञा करने वाला, दगाबाज,—फलम् काल्पनिक लाभ,—मतिः भ्रम, अशुद्धि, त्रुटि,—वचनम्—वाक्यम् मिथ्यात्व, झूठ,—वार्ता झूठा विवरण,—साक्षिन् (पुं०) झूठा गवाह।

मिद् i (भ्वा० आ०, दिवा०, चुरा०, उभ० मेदते, मेद्यति-ते, मेदयति - ते) 1. चिकना या स्निग्ध होना 2. पिघलना 3. मोटा होना 4. प्रेम करना, स्नेह करना।
ii (भ्वा० उभ० मेदति—ते) दे० मिथ्।

मिद्धम् 1. तन्द्रा, निठल्लापन, सुस्ती 2. जड़ता, निद्रालुता, मन्दता (उत्साह की भी)।

मिन्द् (भ्वा० चुरा० पर० मिन्दति, मिन्दयति) दे० मिद् ii.।

मिन्व् (भ्वा० पर० मिन्वति) 1. छिड़कना, तर करना 2. सम्मान करना, पूजा करना।

मिल् (तुदा० उभ० मिलति ते, सामान्यतः मिलति, मिलित) 1. सम्मिलित होना, मिलना, साथ होना —रमण्वतो मिलितः रत्न० ४ 2. आना या परस्पर मिलना, सम्मिलित होना, इकट्ठे होना, एकत्र होना —ये चान्ये सुहृदः समृद्धिसमये द्रव्याभिलायाकुलास्ते सर्वत्र मिलन्ति हि० १।२१०; याताः किं न मिलन्ति अमरु १०, मिलितशिलीमुख··· गीत० १, स पात्रे समितोऽन्यत्र भोजनान्मिलितो न यः —त्रिका० 3. मिश्रित होना, मिलना, संपर्क में आना —मिलति तव तोयैर्मृगमदः—गंगा० ७ 4. मिलना, मुकाबला करना (युद्धादि में) सघन होना, सटना, 5. घटित होना, होना 6. मिलना, साथ आ पड़ना — प्रेर० मेलयति—ते, एकत्र लाना, इकट्ठे होना, सम्मेलन बुलाना।

मिलनम् 1. सम्मिलित होना, मिलना, एक स्थान पर एकत्र होना 2. मुकाबला करना 3. सम्पर्क, मिश्रित होना, संपर्क में आना व्यालनिलयमिलनेन गरलमिव कलयति मलयसमीरम् गीत० ४।

मिलित (भू० क० कृ०) 1. एक स्थान पर आया हुआ, एकत्र हुआ, मुकाबला किया गया, मिश्रित 2. मिला हुआ, मुठभेड़ हुई 3. मिश्रित 4. एक स्थान पर रक्खे हुए, सबको ग्रहण किया हुआ।

मिलिन्दः मधुमक्खी, भौंरा—परिणतमकरन्दमार्मिकास्ते जगति भवन्तु चिरायुषो मिलिन्दाः – भामि० १।८,१५।

मिलिन्दकः एक प्रकार का साँप।

मिश् (भ्वा० पर० मेशति) 1. शोर करना, कोलाहल करना 2. क्रुद्ध होना।

मिश्र् (चुरा० उभ० मिश्रयति---ते · 'मिश्र' की ना० धा०) मिलाना, गड्डमड्ड करना, जोड़ना, घोलना, संयुक्त करना, बढ़ाना · वाचं न मिश्रयति यद्यपि मे वचोभिः—श० १।३१, न मिश्रयति लोचने - भामि० २।१४०।

मिश्र (वि०) 1. मिला हुआ, घोला हुआ, गड्डमड्ड किया हुआ, मिलाया हुआ गद्यं पद्यं मिश्रं च तत् त्रिधैव व्यवस्थितम्—काव्या० १।११, ३१, ३२, रघु० १६। ३२ 2. साथ लगा हुआ, संयुक्त 3. बहुविध, नाना प्रकार का 4. उलझा हुआ, अन्तर्वलित 5. (समास के अन्त में) मिश्रणसमेत, अधिकांशतः युक्त,- श्रः 1. आदरणीय या योज्य व्यक्ति, यह शब्द प्रायः बड़े बड़े पुरुषों और विद्वानों के नामों से पूर्व लगाया जाता है ·· आर्यमिश्राः प्रमाणम् - मालवि० १, वसिष्ठमिश्रः, मंडनमिश्रः आदि 2. एक प्रकार का हाथी, श्रम् 1. मिश्रण 2. एक प्रकार की मूली, सलजम। सम० --जः खच्चर,—वर्ण (वि०) मिश्रित रंग का (—र्णम्) एक प्रकार की काली अगर की लकड़ी, —शब्दः खच्चर।

मिश्रक (वि०) 1. मिश्रित, गड्डमड्ड किया हुआ 2. फुटकर, —कः संयोजक 3. व्यापारिक वस्तुओं में मिलावट करने वाला,--कम् खारी मिट्टी से पैदा किया गया नमक।

मिश्रणम् मिलाना, घोलना, संयुक्त करना।

मिश्रित (भू० क० कृ०) 1. मिला हुआ, घुला हुआ, संयुक्त 2. बढ़ाया हुआ 3. आदरणीय।

मिष् i (तुदा० पर० मिषति) 1. आंख खोलना, झपकना 2. देखना, विवशतापूर्वक देखना—जातवेदो मुखान्मायी मिषतामाच्छिनत्ति नः---कु० २।४६ 3. प्रतिद्वंद्विता करना, होड़ लेना, प्रतिस्पर्धा करना, उद्–, 1. आखें खोलना—उन्मिषन्निमिषन्नपि—भग० ५।९, 2. (आँखों की तरह) खोलना—कु० ४।२ 3. खुलना, खिलना, फुल्लित होना 4. उदय होना 5. चमकना, जगमगाना, नि---, आंखें मूंदना—भग० ५।९।
ii (भ्वा० पर० मेषति) आर्द्र करना, तर करना, छिड़कना।

मिषः प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद्विता,—षम् बहाना, छद्मवेष, धोखा,

दांवपेंच, जालसाजी, झूठा आभास—बालमेनमेकेन मिषेणानीय—दश०, (उत्प्रेक्षा प्रकट करने के लिए बहुधा 'छल' की भांति प्रयुक्त होता है)—स रोमकूपौघमिषाज्जगत्कृता कृताश्च किं दूषणशून्यबिन्दवः —नै० १।२१, वदने विनिवेशिता भुजङ्गी पिशुनानां रसनामिषेण धात्रा—भामि० १।१११।

मिष्ट (वि०) 1. मधुर 2. स्वादिष्ट, मजेदार —किं मिष्टमन्नं खरसूकराणाम्, तु० व्हाई कास्ट पर्ल्स बिफोर स्वाइन' (Why cast pearls before the swine ?) अर्थात् बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद 3. तर किया हुआ, गीला किया हुआ,—ष्टम् मिष्टान्न, मिठाई।

मिह् (भ्वा० पर० मेहति, मीढ) 1. मूत्रोत्सर्ग करना 2. गीला करना, तर करना, छिड़कना 3. वीर्यपात करना।

मिहिका पाला, हिम।

मिहिरः 1. सूर्य —मयि तावन्मिहिरोऽपि निर्दयोऽभूत्—भामि० २।३४, याते मय्यचिरान्निदाघमिहिरज्वालाशतैः शुष्कताम्—१।१६, नै० २।३६, १३।५४ 2. बादल 3. चन्द्रमा 4. हवा, वायु 5. बूढ़ा आदमी।

मिहिराणः शिव का विशेषण।

मी i (क्रया० उभ० मीनाति मीनीते, श्रेण्य साहित्य में विरल प्रयोग) 1. मार डालना, विनाश करना, चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना 2. घटना, कम करना 3. बदलना, परिवर्तित करना 4. अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना ii (भ्वा० पर० चुरा० उभ० मयति, माययति—ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. जानना, समझना (गतिमत्योर्यः) iii (चुरा० आ० मीयते) मरना, नष्ट होना।

मीढ (भू० क० कृ०) 1. मूत्रोत्सृष्ट, पेशाब किया गया 2. (मूत्र की भांति) बहाया गया।

मीढुष्टमः, मीढ्वस् (पुं०) शिव का विशेषण।

मीनः 1 मछली—सुप्तमीन इव ह्रदः—रघु० १।७३, मीनो नु हन्त कतमां गतिमभ्युपैतु—भामि० १।१७ 2. बारहवीं अर्थात् मीन राशि 3. विष्णु का पहला अवतार दे० मत्स्यावतार। सम०—अण्डम् मछली का अंडा, मछली के अंडों का समूह,—आघातिन्, घातिन् (पुं०) 1. मछुवा 2. सारस, आलयः समुद्र,—केतनः कामदेव, —गन्धा सत्यवती का विशेषण—,गन्धिका जोहड़, पल्वल,—रङ्कः,—रङ्गः रामचिरैया, बहरी (एक शिकारी पक्षी)।

मीनरः मगरमच्छ नाम का समुद्री-दानव।

मीम् (भ्वा० पर० मीमति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. शब्द करना।

मीमांसकः 1. जो अनुसंधान करता है, पूछताछ करता है, अनुसंधानकर्ता, परीक्षक 2. मीमांसादर्शनशास्त्र का अनुयायी।

मीमांसनम् अनुसंधान, परीक्षण, पूछताछ।

मीमांसा गहन विचार, पूछताछ, परीक्षण, अनुसंधान,—रसगङ्गाधरनाम्नीं करोति कुतुकेन काव्यमीमांसाम् रस०, इसी प्रकार दत्तक° अलंकार° आदि 2. भारत के छः मुख्य दर्शनशास्त्रों में से एक। (मूल रूप से यह दो भागों में विभक्त है,—जैमिनि द्वारा प्रवर्तित पूर्वमीमांसा, और बादरायण के नाम से विख्यात उत्तरमीमांसा या ब्रह्ममीमांसा। परन्तु इन दोनों दर्शनों में समानता की कोई बात नहीं है। पूर्वमीमांसा तो मुख्यतः वेद के कर्मकाण्डपरक मंत्रों की सही व्याख्या तथा वेद के मूलपाठ के संदिग्ध अंशों का निर्णय करता है। उत्तर मीमांसा मुख्यतः ब्रह्म अर्थात् परमात्मा की स्थिति के विषय में विचार करता है। अतः पूर्वमीमांसा को केवल 'मीमांसा' के नाम से तथा उत्तरमीमांसा को 'वेदान्त' के नाम से पुकारते हैं। उत्तरमीमांसा में जैमिनी के दर्शनशास्त्र की उत्तरार्धता की कोई बात नहीं है, इसी लिए उसको अब एक पृथक् दर्शन माना जाता है),—मीमांसाकृतमुन्ममाथ सहसा हस्ती मुनिं जैमिनिम्—पंच० २।३३।

मीरः 1. समुद्र 2. सीमा, हद।

मील् (भ्वा० पर०+मीलति, मीलित) 1. आँखें मूंदना, पलकों को बन्द करना, आँख झपकाना, झपकी—पत्रे विभ्यति मीलति क्षणमपि क्षिप्रं तदालोकनात् गीत० १० 2. मूंदना, (आँख या फूलों का) मुदना या बन्द होना नयनयुगममीलत्—शि० ११।२, तस्यां मिमीलतुर्नेत्रे—भट्टि० १४।५४ 3. मुर्झाना, अन्तर्धान होना, नष्ट होना 4. मिलना, एकत्र होना—प्रेर० (मीलयति—ते) बन्द करवाना, मुंदवाना, (आँख या फूल आदि का) बन्द करना—शेषान्मासान्गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा—मेघ० ११०, आ—, प्रेर०-बन्द करना, नेत्रे चामीलयन्—काव्या० २।११, उद्—1. आंखें खोलना—उदमीलीच्च लोचने—भट्टि० १५।१०२, १६।८ 2. जगाया जाना, उद्बुद्ध किया जाना शि० १०।७२ 3. फूलाना, फूंक मारना कि० ४।३, मा० १।३८ 4. प्रसृत किया जाना, फैलाया जाना, गुच्छे बनना, झुण्ड हो जाना उन्मीलन्मधुगंध······गीत० १, उत्तर० १।२० 5. दिखाई देना, अंकुर फूटना खं वायुर्ज्वलनो जलं क्षितिरिति त्रैलोक्यमुन्मीलति—प्रबोध० १।२, भामि २।७२(प्रेर०) खुलना तवेतदुन्मीलय चक्षुरायंत विक्रम० १।५, मृच्छ० १।३३ नि , 1. आँखें मूंदना रघु० १२।६५ मनु० १।५२ 2. मृत्यु के कारण आँखें मुंदना, मरना निमिमील नरोत्तमप्रिया हृतचंद्रा तमसेव कौमुदी रघु० १।६८

4. (आँख या फूल आदि का) मुंदना या बन्द होना निमीलितानमिव पंकजानाम् रघु० ७।६४ 5. ओझल होना, नष्ट होना, अस्त होना (आलं०) नरेशे जीवलोकोऽयं निमीलति निमीलति— हि० ३।१४५, द्यौर्निमीलितनक्षत्रा हरि० (प्रेर०) बंद करना, मूंदना उन्मीलिताऽपि दृष्टिर्निमीलितेवांधकारेण मृच्छ० १।३३, न्यमिमीलदब्जनयनं नलिनी—शि० ९।११, लीलापद्मं न्यमीलयत्—काव्या० २।२६१, कु० ३।३६, ५।५७, रघु० १९।२८, सम्—,बंद होना, मुंदना (प्रेर०) 1. बन्द करना या मूंदना, उपांत सम्मिलितलोचनो नृपः— रघु० ३।२६, १३।१० 2. मलिन करना, अंधेरा करना, धुंधला करना विकारश्चैतन्यं भ्रमयति च संमीलयति च उत्तर० १।३६।

मीलनम् 1. आँखों का मुंदना, झपकना, झपकी लेना 2. आँखों का मूंदना 3. फूल का बन्द होना।

मीलित (भू० क० कृ०) 1. बन्द, मुंदा हुआ 2. झपकी हुई 3. अधखुला, बिना खिला 4. नष्ट हुआ, ओझल —तम् (अलं० में) एक अलंकार जिनके बीच का अन्तर या भेद उनकी प्राकृतिक या कृत्रिम समानता के कारण पूर्णरूप से अस्पष्ट रहता है, मम्मट इसकी परिभाषा करता है—सनेन लक्षणा वस्तु वस्तुना यन्निगृह्यते, निजेनागंतुना वापि तन्मीलितमिति स्मृतम्—काव्य० १०।

मीव् (भ्वा० पर० मीवति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. मोटा होना।

मीवरः सेना का नायक, सेनाध्यक्ष।

मीवा [मी+वन्] 1. पट्टकृम, अंत्रकीट, केंचुआ 2. वायु।

मुः [मुच्+डु] 1. शिव का विशेषण 2. बन्धन, कैद 3. मोक्ष 4. चिता।

मुकन्दकः प्याज।

मुकुः [मुच्+कु, पृषो०] मुक्ति, छुटकारा, विशेषतः मोक्ष।

मुकुटम् [मक्+उटन्, पृषो०] 1. ताज, किरीट, राजमुकुट मुकुटरत्नमरीचिभिरस्पृशत्— रघु० ९।१३ 2. शिखा 3. शिखर, नोक या सिरा।

मुकुटी [मुकुट+ङीप्] अंगुलियाँ चटकाना।

मुकुन्दः [मुकुम् दाति दा+क पृषो० मुम्०] 1. विष्णु या कृष्ण का नाम 2. पारा 3. मूल्यवान् पत्थर या रत्न 4. कुबेर की नौ निधियों में से एक 5. एक प्रकार का ढोल।

मुकुरः [मक्+उरच्, उत्वम्] मुंह देखने का शीशा—गुणिनामपि निजरूपप्रतिपत्तिः परत एव संभवति, स्वमहिमदर्शनमक्ष्णोर्मुकुरतले जायते यस्मात्—वास०, शि० ९।७३, न० २२।४३ 2. कली, दे० 'मुकुल' 3. कुम्हार के चाक का डंडा 4. मौलसिरी का पेड़।

मुकुलः,—लम् [मुंच्+उलक्] 1. कली आविर्भूत प्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्—मेघ० २१, रघु० ९।३१, १५।९९ 2. कली जैसी कोई वस्तु—आलक्ष्यदन्तमुकुलान् (तनयान्)—श० ७।१७ 3. शरीर 4. आत्मा, जीव (मुकुलीकृ,—कली की भांति मुंदना—कु० ५।६३)।

मुकुलित (वि०) [मुकुल+इतच्] 1. कलियों से युक्त, कलीदार, फूल 2. अधमुंदा, आधाबंद— दरमुकुलित नयनसरोजम्—गीत० २, कु० ३।७६।

मुकुष्ठः, मुकुष्ठकः [मुकु+स्था+क, मुकुष्ठ+कन्] एक प्रकार का लोबिया, मोठ।

मुक्तः (भू० क० कृ०) [मुच्+क्त] 1. ढीला किया हुआ, शिथिलित, मंद या धीमा किया हुआ 2. स्वतंत्र छोड़ा हुआ, आजाद किया हुआ, विश्राम दिया हुआ 3. परित्यक्त, छोड़ा हुआ त्यागा हुआ, एक ओर फेंका हुआ, उतार दिया हुआ 4. फेंका हुआ, डाला हुआ, कार्यमुक्त किया हुआ, ढकेला हुआ 5. गिरा हुआ, अवपतित 6. म्लान, अवसन्न 7. निकाला हुआ, उत्सृष्ट 8. मोक्ष प्राप्त किया हुआ (दे० मुच्),—क्तः जो सांसारिक जीवन के बन्धनों से मुक्ति पा चुका है, जिसने सांसारिक आसक्तियों को त्याग कर पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर लिया है, अपमुक्त संत;—सुभाषितेन गीतेन युवतीनां च लीलया, मनो न भिद्यते यस्य स वै मुक्तो ऽथवा पशुः—सुभा०। सम०—अम्बरः दिगंबर सम्प्रदाय का जन साधु,—आत्मन् (वि०) जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है (पुं०) 1. सांसारिक वासनाओं और पापों से मुक्त आत्मा 2. वह व्यक्ति जिसकी आत्मा अपमुक्त हो गई है,—आसन (वि०) अपने आसन से उठा हुआ,—कच्छः बौद्ध, —कञ्चुकः वह सांप जिसने अपनी केंचुली उतार दी है,—कण्ठ (वि०) दुहाई मचाने वाला (अव्य०—ठम्) फूट फूट कर, ऊँचे स्वर से, जोर से—रघु० १४।६८,—कर,—हस्त (वि०) उदार, खुले हाथ वाला, दानी,—चक्षुस् (पुं०) सिंह,—वसन दे० मुक्तांबर।

मुक्तकम् [मुक्त+कन्] 1. अस्त्र आयुधास्त्र 2. सरल गद्य 3. एक पृथक्कृत श्लोक जिसका अर्थ स्वयं अपने में पूर्ण हो दे० काव्या० १।१३—मुक्तकं श्लोक एवैकश्चमत्कारक्षमः सताम्।

मुक्ता [मुक्त+टाप्] 1. मोती—हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले, मुक्तानामप्यवस्थेयं के वयं स्मरकिङ्कराः अमरु १०० (यहां 'मुक्तानां' का अर्थ 'दोषमुक्त संत' भी है) मोती अनेक स्रोतों से उपलब्ध बतलाये जाते हैं परन्तु विशेष कर समुद्री सीपी से प्राप्त होते हैं;—करीन्द्र जीमूतवराहशंखमत्स्यादि शुक्त्युद्भववेणुजानि, मुक्ताफलानि प्रथितानि लोके तेषां तु शुक्त्युद्भवमेव भूरि—मल्लि०) 2. वेश्या,

गणिका । सम० —अगारः, आगारः मोती का घोंघा, —आवलिः,—ली (स्त्री०) —कलापः मोतियों का हार —गुणः मोतियों का हार, मोतियों की लड़ी —मेघ० ४६, रघु० १६।१८, —जालम् मोतियों की लड़ी या करधनी,—दामन् (नपुं०) मोतियों की लड़ी, —पुष्पः एक प्रकार की चमेली, प्रसूः (स्त्री०) मोती की शुक्ति, प्रालम्बः मोतियों की लड़ी, —फलम् 1. मोती —कु० १।६, रघु० ६।२८ १६।६२ 2. एक प्रकार का फूल 3. सीताफल या कुम्हड़ा 4. कपूर, मणिः मोती, —मातृ (स्त्री०) मोती का घोंघा, लता, —स्रज्, —हारः मोतियों की माला, शुक्तिः —स्फोटः वह घोंघा या सीपी जिसमें से मोती निकलते हैं ।

मुक्तिः (स्त्री०) [मुच्+क्तिन्] 1. छुटकारा, निस्तार, उन्मोचन 2. स्वातंत्र्य, उद्धार 3. मोक्ष, आवागमन के चक्र से आत्मा का मोचन 4. छोड़ना, त्याग, परित्याग, टालना—संसर्गमुक्तिः खलेषु —भर्तृ० २।६२ 5. फेंकना, गिरा देना, छोड़ देना, मुक्त करना 6. आजाद करना, खोलना 7. ऋण मुक्त होना, ऋण परिशोध करना । सम० क्षेत्रम् वाराणसी का विशेषण, मार्गः मोक्ष का रास्ता, —मुक्तः लोबान ।

मुक्त्वा (अव्य०) [मुच्+क्त्वा] 1. छोड़कर, परित्याग करके 2. सिवाय, छोड़ कर, विना ।

मुखम् [खन्+अच्, डित् धातोः पूर्वं मुट् च] 1. मुंह (आलं० से भी) —ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् ऋक् —१०।९०।१२ सभ्रूभङ्गं मुखमिव—मेघ० २४, त्वं मम मुखं भव —विक्रम० १, 'मेरे मुखपात्र या प्रतिनिधिवक्ता बनिये 2. चेहरा, मुखमण्डल —परिवृत्तार्धमुखी मयाद्य दृष्टा—विक्रम० १।१७, नियमक्षाममुखी धृतैकवेणिः —श० ७।२१, इसी प्रकार चन्द्रमुखी, मुखचन्द्र आदि 3. (किसी जानवर की) थूथन, थूथनी या मोहरी 4. अग्रभाग, हरावल, पुरोभाग 5. किनारा, नोक, (बाण का) फल, प्रमुख —धुरारिमप्राप्तमुखः शिलीमुखः —कु० ५।५४, रघु० ३।५७, ५९ 6. (किसी उपकरण का) की धार या तीक्ष्ण नोक 7. चूचुक, स्तनाग्र—कु० १।४०; रघु० ३।८ 8. पक्षी की चोंच 9. दिशा, तरफ़ जैसा कि 'दिङ्मुखं, अन्तर्मुखं' में 10. विवर, द्वार, मुंह—नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः —श० १।१४, नदीमुखेनेव समुद्रमाविशत् रघु० ३।२८, कु० १।८ 11. प्रवेश द्वार, दरवाज़ा, गमन मार्ग 12. आरंभ, शुरू, सखीजनोद्वीक्षणकौमुदीमुखम् —रघु० ३।१, दिनमुखानिरविर्हिमनिग्रहैर्विमलयन् मलयं नगमत्यजत्—९।२५, ५।७६, घट० २ 13. प्रस्तावना, 14. मुख्य, प्रधान, प्रमुख (इस अर्थ में प्रयोग समास के अन्त में) बन्धोन्मुक्त्यै खलु मखमुखान्कुर्वते कर्मपाशान् भामि० ४।२१, इसी प्रकार 'इन्द्रमुखा देवाः' आदि 15. सतह, ऊपरी पार्श्व 16. साधन 17. स्रोत, जन्मस्थान, उत्पत्ति 18. उच्चारण जैसा कि 'मुखसुख' में 19. वेद, श्रुति 20. (काव्य में) नाटक में अभिनयादि कर्म का मूलस्रोत, एक संधि । सम० —अग्निः 1. दावानल 2. आग के मुख वाला बेताल 3. अभिमन्त्रित या यज्ञीय अग्नि 4. चिता में अग्न्याधान के अवसर पर शव के मुख पर रक्खी जाने वाली आग, —अनिलः, —उच्छ्वासः सांस, अस्त्रः केकड़ा, —आकारः चेहरा, मुखछवि, दर्शन,—आसवः अधरामृत,—आस्रावः, स्रावः थूक, मुंह की लार, इन्दुः चन्द्रमा जैसा मुंह अर्थात् गोल सुन्दर मुख, —उल्का दावानल, —कमलम् कमल जैसा मुख, खुरः दांत,—गंधकः प्याज़—चपल (वि०) बातूनी, वाचाल,—चपेटिका मुंह पर लगाई जाने वाली चपत, चीरिः (स्त्री०) जिह्वा,—जः ब्राह्मण, जाहम् मुंह की जड़, कण्ठ,—दूषणः प्याज़, —दूषिका मुहासा, निरीक्षकः सुस्त, आलसी, मुंह की ओर ताकने वाला, —निवासिनी सरस्वती का विशेषण,—पटः घूंघट—कुर्वन् कामं क्षणमुखपटप्रीतिमैरावतस्य मेघ० ६२, —पिण्डः (भोजन का) ग्रास, —पूरणम् 1. मुंह को भरना 2. एक कुल्ला पानी, मुंहभर, —प्रसादः प्रसन्नवदन, मुख की प्रसन्नमुद्रा, प्रियः संतरा, —बंधः भूमिका, प्रस्तावना, बन्धनम् 1. भूमिका 2. ढक्कन, आवरण, —भूषणम् पान लगाना-दे० तांबूल, —भेदः चेहरे का विकृत हो जाना, मधु (वि) मिष्टभाषी, मधुराधर, मार्जनम् मुंह धोना, —यन्त्रणम् लगाम की मुखरी या वल्गा, रागः चेहरे का रंग रघु० १२।८, १७।३१, लाङ्गलः सूअर, —लेपः 1. (ढोलक के) उपरी भाग पर लेप करना 2. कफ प्रकृति वाले पुरुष की एक बीमारी, वल्लभः अनार का पेड़, वाद्यम् 1. मुंह से बजाया जाने वाला बाजा, फूंक मार कर बजाया जाने वाला बाजा 2. मुंह से 'बम् बम्' शब्द करना, वासः, वासनः श्वास को सुगंधित बनाने वाला एक गंधद्रव्य, विलुण्ठिका बकरी, —व्यादानम् मुंह फाड़ना, जंभाई लेना, —शफ (वि०) गाली देने वाला, अश्लीलभाषी, बदजबान,—शुद्धिः (स्त्री०) मुंह को धोना या निर्मल करना,—शेषः राहु का विशेषण,—शोधन (वि०) 1. मुंह को स्वच्छ करने वाला 2. तीक्ष्ण, तीखा, (नः) चरपराहट, तीखापन, (नम्) मुंह को साफ करना, श्री (स्त्री) 'मुख का सौन्दर्य' प्रिय मुखमुद्रा,— सुखम् उच्चारण की सुविधा, ध्वन्यात्मक सुख, सुरम् होठों की तरावट ।

मुखम्पचः [मुख+पच्+खच्, मुम्] भिखारी, साधु ।

मुखर (वि) [मुखं मुखव्यापारं कथनं राति—रा+क] । बातूनी, वाचाल, वाक्पटु—मुखरा

खल्वेषा गर्भदासी—रत्न० २, मुखरतावसरे हि विराजते —कि० ५।१६ 3. कोलाहलमय, लगातार शब्द करने वाला, टनटन बजने वाला, (पाजेब की भांति) रुनझुन करने वाला—स्तंम्बेरमा मुखरशृङ्खलकर्षिणस्ते —रघु० ५।७२, अन्तः कूजन्मुखरशकुनो यत्र रम्यो वनान्तः—उत्तर० २।२५, २०, मा० ९।५, मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलिषु लोलम्—गीत० ५, मृच्छ० १।३५ 3. ध्वननशील, अनुनादी, गूंजने वाला (प्रायः समास के अन्त में)—स्थाने-स्थाने मुखरककुभो झाङ्कृतैर्निर्झराणाम्—उत्तर० २।१४, मण्डली मुखरशिखरे (लताकुंजे) गीत० २; रघु० १३।४६ 4. अभिव्यंजक या सूचक 5. अश्लीलभाषी, गाली देने वाला, बदजबान 6. उपहास करने वाला, हँसी दिल्लगी करने वाला (मुखरीकृ—, शब्द करवाना, बुलवाना, प्रतिध्वनित करवाना), -रः 1. कौवा 2. नेता मुख्य या प्रधान पुरुष—यदि कार्यविपत्तिः स्यान्मुखरस्तत्र हन्यते—हि० १।२९ 3. शंख।

मुखरयति (ना० धा० पर०) 1. प्रतिध्वनित या कोलाहलमय करना, गुंजाना 2. बुलवाना या बातें करवाना, —अत एव शुश्रूषा मां मुखरयति—मुद्रा० ३ 3. अधिसूचित करना, घोषणा करना, अभिज्ञापन करना।

मुखरिका, मुखरी [मुखर+कन् टाप, इत्वम्, मुखर+ङीष्] लगाम की वल्गा, लगाम का दहाना।

मुखरित (वि०) [मुखर+इतच्] कोलाहलमय या अनुनादित किया हुआ, बजता हुआ, कोलाहलपूर्ण—गण्डोड्डीनालिमाला मुखरितककुभस्ताण्डवे शूलपाणेः —मा० १। १।

मुख्य (वि०) [मुखे आदौ भवः—यत्] 1. मुख या चेहरे से संबंध रखने वाला 2. बड़ा, प्रधान, प्रमुख, प्रथम, सर्व प्रधान, उत्तम, द्विजातिमुख्यः, वारमुख्याः, योधमुख्याः आदि,—ख्यः नेता, पथप्रदर्शक -ख्यम् 1. प्रधान यज्ञकृत्य या धार्मिक संस्कार 2. वेदों का पठनपाठन। सम०—अर्थः शब्द का मुख्य या मूल (विप० गौण) आशय,—चान्द्रः मुख्य चांद्र मास, —नृपः -नृपतिः प्रभुसत्ताप्राप्त राजा, सर्वोपरि प्रभु,—मन्त्रिन् (पुं.) प्रधान मंत्री।

मुगूहः एक प्रकार का जल कुक्कुट।

मुग्ध (वि०) [मुह्+क्त] 1. जड़ीकृत, मूर्छित 2. हतबुद्धि, प्रणयोन्मत्त 3. मूढ़, अज्ञानी, मूर्ख, जड़—शशाङ्कः केन मुग्धेन सुधांशुरिति भाषितः—भामि० २।२९ 4. सरल, सीधासादा, भोला-भाला—उत्तर० १।४६ 5. भूल करने वाला, भूल में पड़ा हुआ 6. बालोचित सरलता से मोहित करने वाला (अभी प्रेमरस से अपरिचित), बालसुलभ, —(कः)—अयमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु श० १।२५, रघु० ९।३४, (अतः) सुन्दर, प्रिय, मनोहर, कांत—हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसित केलिपरे—गीत० १, उत्तर० ३।५,—ग्धा कुमारी सुलभ भोलेपन से आकर्षक किशोरी, सुन्दर तरुणी, (काव्यकृतियों में यह एक नायिका का भेद माना जाता है)। सम०—अक्षी सुन्दर आँखों वाली युवती 'वियोगो मुग्धाक्ष्याः स खलु रिपुघातावधिरभूत् उत्तर० ३।४४, —आनना सुन्दर मुख वाली, —धी,—बुद्धि, —मति (वि०) मूर्ख, मूढ़, जड़, भोला-भाला,-भावः सादगी, भोलापन।

मुच् i (भ्वा० आ० मोचते) धोखा देना, ठगना; दे० मुञ्च्।

ii (तुदा० उभ०—मुञ्चति—ते, मुक्त) शिथिल करना, मुक्त करना, छोड़ना, जाने देना, ढीला होने देना, स्वतंत्र करना, छुटकारा करना (बन्धन आदि से) —वनाय ···यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच—रघु० २।१, ३।२०, मनु० ८।२०२, मोक्ष्यते सुरबन्दीनां वेणीर्वीर्यविभूतिभिः—कु० २।६१, रघु० १०।४७, मा भवानङ्गानि मञ्चतु विक्रम० २, भगवान् करे आपके अंग म्लान न हों,—हतोत्साह न होइए' 2. आजाद करना, ढीला छोड़ना (वाणी की भांति)—कण्ठं मुञ्चति बर्हिणः समदनः मृच्छ० ५।१४, 'अपनी वाणी या कंठ को ढील देता है अर्थात् चीत्कार करता है' 3. छोड़ना, परित्याग करना, उन्मुक्त करना, छोड़ देना, एक ओर डाल देना, उत्सर्ग करना रात्रिर्गता मतिमतां वर मुञ्च शय्याम्—रघु० ५।६६, मुनिसुता प्रणयस्मृतिरोधिना मम च मुक्तमिदं तमसा मनः श० ६।७, मौनं मुञ्चति किं च कैरवकुले- भामि० १।४, आविर्भूते शशिनि तमसा मुच्यमानेव रात्रिः—विक्रम० १।८, मेघ० ९६, ४१, रघु० ३।११ 4. अलग रखना, अपहरण करना, अलगाना, दे० मुक्ता 5. डालना, फेंकना, उछाल देना, पटक देना, बोझा उतारना—मृगेषु शरान्मुमुक्षोः रघु० ९।५८, भट्टि० १५।५३ 7. निकालना, गिराना, उड़ेलना, टपकाना (आंसू) ढलकाना —अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः—श० ४।११, चिरविरहजं मुञ्चतो बाष्पमुष्णम् मेघ० १२, भट्टि० ७।२ 8. उच्चारण करना, बोलना मा० ९।५, भट्टि० ७।५७ 9. प्रदान करना, अनुदान देना, अर्पण करना 10. पहनना (आ०) 11. उत्सर्ग करना (मलमूत्र का)—कर्मवा० (मुच्यते) ढीला किया जाना, छुटकारा पाना, स्वतंत्र होना, दोषमुक्त होना;—मुच्यते सर्वपापेभ्यः···प्रेर० (मोचयति—ते) 1. स्वतंत्र या मुक्त कराना 2. गिरवाना 3. ढीला छोड़ना, आजाद करना, छुटकारा देना 4. उद्धार करना, सुलझाना 5. जुआ हटाना, (घोड़े आदि पर से) साज उतारना।

6. प्रदान करना, अर्पण करना 7. प्रसन्न करना, आनन्दित करना इच्छा० 1. (मुमुक्षति) मुक्त या स्वतंत्र करने की इच्छा करना 2. मुमुक्षते,–मोक्षते) मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा करना। अव –,उतार देना, उड़ा देना आ,– 1. पहनना, धारण करना, चारों ओर बांधना या कसना आमुञ्चतीवाभरणं द्वितीयम् रघु० १३।२१, १२।८६, १८।७४, कि० ११।१५, आमुञ्चद्वर्म रत्नाढ्यम्—भट्टि० १७।२ 2. डालना, फेंकना, दागना आमोक्ष्यन्ते त्वयि कटाक्षान्—मेघ० ३५, उद्,—1. खोलना, रघु० ६।२८ 2. ढीला करना, मुक्त करना, स्वतंत्र करना 3. उतारना, खींच ले जाना, एक ओर करना, छोड़ना, परित्याग करना –भट्टि० ३।२२ निस्, 1. स्वतंत्र करना, आजाद करना, मुक्त करना हिमनिर्मुक्तयोर्योगे चित्रा चन्द्रमसोरिव - रघु० १।४६, भग० ७।२८ 2. छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना, परि—,1. स्वतंत्र करना, छुटकारा देना, मुक्त करना, –मेघोपरोधपरिमुक्तशशाङ्कवक्त्रा ऋतु० ३।७, चौर० ९ 2. छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना प्र ,1. स्वतंत्र करना, मुक्त करना, छुटकारा देना, 2. फेंकना, डालना, उछालना 3. गिराना, उत्सर्जन करना, बीज बिखेरना, प्रति ,1. स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, छुटकारा देना, आज़ाद करना,—गृहीतप्रतिमुक्तस्य रघु० ४।३३, अमुं तुरङ्गं प्रतिमोक्तुमर्हसि ३।४६ 2. धारण करना, पहनना 3. खाली कर देना छोड़ना, परित्याग करना, 4. फेंकना, डालना, दागना, वि—, 1. स्वतंत्र करना, मुक्त करना 2. छोड़ देना, एक ओर डाल देना, परित्याग करना, खाली कर देना—विमुच्य वासांसि गुरूणि सांप्रतम् ऋतु० १। ७ 3. जाने देना, ढील देना भट्टि० ७।५० 4. अलगाना, अलग रखना; कु० ३।३१ 5. गिराना, (आँसू) ढलकाना - चिरमश्रूणि विमुच्य राघवः —रघु० ८।२५ 6. फेंकना, डालना, सम्—,गिराना, भारमुक्त करना।

मुचकः लाख।

मुचु (च) कुन्दः 1. एक वृक्ष का नाम 2. मांधाता के पुत्र एक प्राचीन राजा का नाम (देवासुर संग्राम में देवताओं की सहायता के बदले उसे बिना किसी रोक के लम्बी नींद का सुख प्राप्त करने का वरदान मिला था। देवों का आदेश था कि जो कोई उसकी नींद में विघ्न डालेगा भस्म हो जायगा। जब कृष्ण ने बलवान् कालयवन को मारना चाहा तो उसे मुचुकुंद की गुफा में धकेल दिया। वहाँ प्रविष्ट होते ही मुचकुंद राजा की नेत्राग्नि से कालयवन भस्म हो गया)। सम० प्रसादकः कृष्ण का विशेषण।

मुचिरः [मुञ्च्+किरच्] 1. देवता 2. गुण 3. वायु।

मुचिलिन्दः एक प्रकार का फूल, तिलपुष्पी।

मुचुटी 1. अंगुलियाँ चटकाना 2. मुक्का।

मुज्, मुञ्ज् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० भोजति, भुञ्जति, भोजयति ते, भुञ्जयति ते) 1. स्वच्छ करना, निर्मल करना 2. शब्द करना।

मुञ्जः [मुञ्ज्+अच्] एक प्रकार का घास (जिससे कि ब्राह्मण की तड़ागी तैयार करनी चाहिए)—मनु० २। ४३ 2 धारापति राजा मुंज का नाम (कहते हैं कि मुंज राजा भोज का चाचा था)। सम० केशः 1. शिव का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण, केशिन् (पुं०) विष्णु का विशेषण, बन्धनम् यज्ञोपवीत पहनना अर्थात् तड़ागी धारण करना, अर्थात् उपनयन संस्कार, वासस् (पुं०) शिव का विशेषण।

मुञ्जरम् [मुञ्ज्+अरन्] कमल की रेशेदार जड़।

मुट् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मोटति, मोटयति— ते) 1. कुचलना, तोड़ना, पीसना, चूरा करना 2. कलंकित करना, बुरा भला कहना (इस अर्थ में धातु तुदा० की भी है)।

मुण् (तुदा० पर० मुणति) प्रतिज्ञा करना।

मुण्ट् (भ्वा० पर० मुण्टति) कुचलना, पीसना।

मुण्ड् i (भ्वा० पर० मुण्डति) 1. क्षौर कर्म करना, मूंडना 2. कुचलना, पीसना। ii (भ्वा० आ० मुण्डते) डूबना।

मुण्ड (वि०) [मुण्ड्+अच्] 1. मुंडा हुआ 2. कतरा हुआ, छांटा हुआ 3. कुण्ठित 4. अधम, नीच, **डः** 1. जिसका सिर मुंडा हुआ हो या गंजा हो 2. मुंडा हुआ या गंजा सिर 3. मस्तक 4. नाई 5. पेड़ का तना जिसकी ऊँची ऊँची शाखाएँ झांग दी गई हो, **डा** किसी विशेष आश्रम की स्त्रीभिक्षुणी,—**डम्** 1. सिर 2. लोहा। सम०—अयसम् लोहा, फलः नारियल का पेड़,—मण्डली ऐसा जनसमूह जिनके सिर मुंडे हुए हों,—लोहम् लोहा,—शालिः एक प्रकार का चावल।

मुण्डकः [मुण्ड–कन्] 1. नाई 2. पेड़ का तना जिसकी बड़ी बड़ी शाखाएँ झांग दी गई हों, ठूंठ,—**कम्** सिर। सम०—उपनिषद् (स्त्री०) अथर्ववेद की एक उपनिषद् का नाम।

मुण्डनम् [मुण्ड्+ल्युट्] सिर मूंडना, मुंडन।

मुण्डित (भू० क० कृ०) [मुण्ड्+क्त] 1. मुंडा हुआ 2. कतरा हुआ या छांटा हुआ, झांगा हुआ,—**तम्** लोहा।

मुण्डिन् (पुं०) [मुण्ड+इनि] 1. नाई 2. शिव का विशेषण।

मुत्यम् मोती।

मुद् i (चुरा० उभ० मोदयति— ते) 1. मिलाना, घोलना 2. स्वच्छ करना, निर्मल करना।

ii (भ्वा० आ० मोदते, प्रेर० मोदयति ते, इच्छा० मुमुदिषते या मुमोदिषते) हर्ष मनाना, प्रसन्न होना, हृष्ट या आनन्दित होना यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः भग० १६।१५, मनु० २।२३२, २९१, भट्टि० १५।९६, अनु, अनुमोदन करना, मंजूरी देना, अनुमति देना, स्वीकृति देना, रघु० १४।४३, आ , 1. प्रसन्न या हर्षित होना, हर्ष मनाना 2. सुगंधित होना, (प्रेर०) सुगंधित करना, सुवासित करना, परिमलैरामोदयन्ती दिशः भामि० १।१६, प्र ,अत्यंत प्रसन्न होना बहुत खुश होना, रघु० ६। ८६, मा० ५।२३।

मुद्, मुदा (स्त्री०) [मुद्+(भावे) क्विप्, मुद्+टाप्] हर्ष, आनंद, प्रसन्नता, खुशी, संतोष पितुर्मुदं तेन ततान सोऽर्भकः रघु० ३।२५, अश्नन् पुरां हरितकां मुदमादधानः शि० ५।५८, १।२३, विपादे कर्तव्ये विदधति जडाः प्रत्युत मुदम् भर्तृ० ३।२५; द्विपरण मुदा गीत० ११, कि० ५।२५, रघु० ७।३०।

मुदित (भू० क० कृ०) [मुद्+क्त] प्रसन्न, हर्षित, आनंदित, खुश, हर्षयुक्त, तम् 1. प्रसन्नता, आनंद, खुशी हर्ष 2. एक प्रकार का मैथुनालिङ्गन, ता हर्ष, आनंद।

मुदिरः [मुद्+किरच्]। बादल प्रचुर पुरन्दरधनुरञ्जितमेदुरमुदिर सुवेशम् गीत० २, या, मुञ्चसि नाद्यापि रुषं भामिनि मुदिरालिरुदियाय भामि० २।८८ 2. प्रेमी, कामासक्त 3. मेंढक।

मुदी [मुद्+क+ङीप्] ज्योत्स्ना, चांदनी।

मुद्गः [मुद्+गक्] 1. एक प्रकार का लोबिया, मुंग 2. ढकना, आवरण 3. एक प्रकार का समुद्री-पशु। सम० भुज्,—भोजिन् (पुं०) घोड़ा।

मुद्गरः [मुदं गिरति गृ+अच्] 1. हथौड़ा, मोंगरी, जैसा कि 'मोहमुद्गर' शंकराचार्य कृत एक छोटा काव्य) में—रघु० १२।७३ 2. गतका, गदा 3. मिट्टी के ढेले तोड़ने वाली मोंगरी 4. डम्बल, लोहे के छोटे मुग्दर 5. कली 6. एक प्रकार की चमेली (इस अर्थ में यह शब्द नपुं भी होता है)।

मुद्गलः [मुद्ग+ला+क] एक प्रकार का घास।

मुद्गष्टः (पुं०) एक प्रकार की मूंग।

मुद्रणम् [मुद्+रा+ल्युट्, पृषो०]। मोहर लगाना, मुद्रांकित करना, छापना, चिह्न लगाना 2. मूंदना, बंद करना।

मुद्रयति (ना० धा० पर०) 1. मोहर लगाना अनया मुद्र या मुद्रयेनम्—मुद्रा० १ 2. मुद्रांकित करना, चिह्न लगाना, अंकित करना 3. ढकना, मूंदना (आलं०) —विवराणि मुद्रयन् द्रागूर्णायुरिव सज्जनो जयति —भामि० १।९०।

मुद्रा [मुद्+रक्+टाप्]। मोहर लगाने या मुद्रांकित करने का उपकरण, विशेषतः मोहर लगाने की अंगूठी नामांकित अंगूठी—अनया मुद्रया मुद्रयेनम् मुद्रा० १, नाममुद्राक्षराण्यनुवाच्य परस्परमवलोकयतः श० १ 2. मोहर, छाप, अंक, चिह्न चतुःसमुद्रमुद्रः का० १९१, सिन्दूरमुद्राङ्कितः (बाहुः), गीत० ४ 3. प्रवेश-पत्र, पोतपारक (जैसा कि मुद्राङ्कित रूप में दिया जाता है) अगृहीतमुद्रः कटकान्निष्क्रामसि—मुद्रा० ५ 4. मोहर लगा सिक्का, रुपया पैसा आदि सिक्के 5. पदक, तमगा 6. प्रतिभा चिह्न, बिल्ला, प्रतीकात्मक चिह्न 7. बंद करना, मूंदना, मोहर लगा देना सैवोष्ठमुद्रा स च कर्णपाशः—उत्तर० ६।२०, क्षिप्तनिद्रामुद्रां मदनकलहच्छेद सुलभाम् मा० २।१५ 8. रहस्य 9. धर्मनिष्ठ भक्ति में अंगुलियों की विशिष्ट मुद्रा। सम० अक्षरम् 1. मोहर का अक्षर 2. टाइप (छापने के अक्षर—आधुनिक प्रयोग), कारः मोहर बनाने वाला, मार्गः मस्तक के बीच में होने वाला रध्र जिसके द्वारा (योगियों का) प्राणवायु बाहर निकल जाता है, ब्रह्मरंध्र।

मुद्रिका [मुद्रा+कन्+टाप्, इत्वम्] मोहर लगाने की अंगूठी दे० 'मुद्रा'

मुद्रित (वि०) [मुद्रा+इतच्] 1. मोहर लगा हुआ, चिह्नित, अंकित, मुद्रांकित त्यागः सप्तसमुद्रमुद्रितमही निर्व्याजदानावधिः—महावी० २।३६, काश्मीर-मुद्रित मुरो मधुसूदनस्य गीत० १, स्वयं सिन्दूरेण द्विपरण मुदामुद्रित इव ११ 2. बन्द किया हुआ, मुहरबंद 3. अनखिला।

मुधा (अव्य०) [मुह्+का, पृषो० ह्रस्य धः] 1. व्यर्थ, निष्प्रयोजन, निरर्थकता के कारण, बिना किसी लाभ के—यत्किंचिदपि मवीक्ष्य कुरुते हसितं मुधा—सा० द० 2. गलत रीति से, मिथ्यारूप से—रात्रिः सैव पुनः स एव दिवसो मत्वा मुधा जन्तवः—भर्तृ० ३।७८ (पाठान्तर)।

मुनिः [मन्+इन्, उच्च मनुते जानाति यः] 1. ऋषि, महात्मा, सन्त, भक्त, संन्यासी —मुनीनामप्यहं व्यासः भग० १०।३७, पुण्यः शब्दो मुनिरिति मुहुः केवलं राजपूर्वः श० २।१४, रघु० १।८, ३।४९, भग० २।५६ 2. अगस्त्य मुनि का नाम 3. व्यास का नाम 4. बुद्ध का नाम 5. आम का पेड़ 6. 'सात' की संख्या (ब० व०) सप्तर्षि। सम०—अन्नम् (ब० व०) संन्यासियों का भोजन,—इन्द्रः—ईशः,—ईश्वरः एक बड़ा ऋषि, —त्रयम् 'मुनित्रय' अर्थात् पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि (जो कि अन्तःप्रेरणा प्राप्त मुनि माने जाते हैं)—मुनित्रयं नमस्कृत्य या, त्रिमुनि व्याकरणम् सिद्धा०,—पित्तलम् तांबा, पुङ्गवः महान् या प्रमुख ऋषि,—पुत्रकः 1. खंजनपक्षी 2. दमनक वृक्ष

+भेषजम् 1. आंवला 2. उपवास,—व्रतम् संन्यासी की प्रतिज्ञा—कु० ५।४८।

मन्थ् (भ्वा० पर० मुंथति) जाना, हिलना-जुलना।

मुमुक्षा [मोक्तुमिच्छा · मुच्+सन्+अ+टाप्, धातोर्द्वित्वम्) छुटकारे या मोक्ष की इच्छा।

मुमुक्षु (वि०) [मुच्+सन्+उ] 1. बरी या स्वतंत्र होने का इच्छुक 2. कार्यभार से मुक्त होने का इच्छुक 3. (बाण आदि) छोड़ने को प्रस्तुत—रघु० ९।५८ 4. सांसारिक जीवन से मुक्त होनें का इच्छुक, मोक्ष, प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील,—क्षुः मोक्ष के लिए प्रयत्नशील ऋषि कु० २।५१, भग० ४।१५, विक्रम० १।१।

मुमुचानः [मुच्+आनच्, सन्वद्भावाद्द्वित्वम्] बादल।

मुमूर्षा [मृ+सन्+अ+टाप्] मरने की इच्छा - भट्टि० ९।५७।

मुमूर्षु (वि०) [मृ+सन्+उ] मरणासन्न, मृत्यु के निकट।

मुर् (तुदा० पर० मुरति) घेरना, अन्तर्वृत्त करना, परिवृत्त करना, लिपटना।

मुरः [मुर्+क] एक राक्षस का नाम जिसे कृष्ण ने मार गिराया था, रम् परिवृत्त करना, घेरना। सम०—अरिः 1. कृष्ण का विशेषण—मुरारिमारादुपदर्शयन्त्यसौ - गीत० १ 2. 'अनर्घराघव' नाटक का प्रणेता,—जित्, -द्विष्, - भिद्, मर्दनः,—रिपुः,—वैरिन्,— हन् (पुं०) कृष्ण या विष्णु के विशेषण —प्रकीर्णांसुग्बिन्दुर्जयति भुजदण्डो मुरजितः—गीत० १, मुरवैरिणो राधिकामधि वचनजातम् १०।

मुरजः [मुरात् वेष्टनात् जायते—जन्+ड] 1. एक प्रकार का ढोल या मृदंग —सानन्दं नन्दिहस्ताहत मुरजरव······मा० १।१, संगीताय प्रहतमुरजाः —मेघ० ४४, ५६, मालवि० १।२२, कु० ६।४१ 2. किसी श्लोक की भाषा को मुरज के रूप में व्यवस्थित करना, मुरजबंध भी इसे ही कहते हैं - काव्य० ९। सम०—फलः कटहल का पेड़।

मुरजा [मुरज+टाप्] 1. एक बड़ा ढोल 2. कुबेर की पत्नी का नाम।

मुरन्दला एक नदी का नाम (इसे ही बहुधा 'नर्मदा' मानते हैं)।

मुरला [मुर+ला+क+टाप्] केरल देश से निकलने वाली एक नदी का नाम (उत्तर० ३ में 'तमसा' के साथ इसका उल्लेख आता है) मुरलामारुतोद्धूतमगमत् कैतकं रजः—रघु० ४।५५।

मुरली [मुरम् अङ्गुलिवेष्टन लाति—मुर+ला+क+ङीष्] बांसुरी, वंशी, वेणु। सम०—धरः कृष्ण का विशेषण।

मुर्छ् (भ्वा० पर० मूर्छति, मूर्छित, या मूर्त, इस धातु को 'मूर्छ्' या 'मूर्च्छ्' भी लिखते हैं) 1. ठोस बनाना, जमना, गाढ़ा होना 2. मूर्छित होना, बेहोश होना, मुर्झा जाना, अचेतन होना, संज्ञारहित होना—पतत्युद्यति मूर्छत्यपि—गीत० ४ क्रीडानिर्जितविश्वमूर्छितजनाघातेन किं पौरुषम्—गीत० ३, भट्टि० १५।५५ 3. उगना, बढ़ना, बलवान् या शक्तिशाली होना —मुमूर्छ सहजं तेजो हविषेव हविर्भुजः—रघु० १०।७९, मुमूर्च्छ सख्यं रामस्य —१२।५७, मूर्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमत्तेषु—श० ५।१८ 4. बल एकत्र करना, मोटा होना, सघन होना तमसां निशि मूर्छताम्—विक्रम० ३।७ 5. (क) प्रभाव डालना —छाया न मूर्च्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा—श० ७।३२, (ख) छा जाना, प्रभावित करना—न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य—रघु० २।३४ 6· भरना, व्याप्त होना, प्रविष्ट होना, फैल जाना—कु० ६।५९, रघु० ६।९ 7. जोड़ का होना 8. बार बार होना 9. ऊँचे स्वर से शब्द करवाना—प्रेर० (मूर्छयति–ते) जडीभूत करना, मूर्छित करना—म्लेच्छौन्मूर्छयते—गीत० १, वि–, मूर्छित होना, बेहोश होना, सम्–, 1. मूर्छित होना, बेहोश होना 2. ताकतवर या शक्तिशाली होना, बलवान् होना, प्रबल होना,— कि० ५।४१।

मुर्मुरः [मुर्+क पृषो० द्वित्वम्] 1. तुषाग्नि, तुष या भूसी से तैयार की हुई अग्नि स्मरहुताशनमुर्मुरचूर्णतां रघुरिवाभ्रवणस्य रजःकणाः—शि० ६।६ 2. कामदेव 3. सूर्य का एक घोड़ा।

मुर्व् (भ्वा० पर० मुर्वति) बांधना, कसना।

मुशटी [मुष्+अटन्+ङीप्, पृषो० षस्य शः] एक प्रकार का अन्न।

मुश (स)ली छोटी छिपकली।

मुष् i (क्र्या० पर० मुष्णाति, मुषित, इच्छा० मुमुषिषति) 1. चुराना, उठा लेना, लूटना, डाका डालना, अपहरण करना (द्विक० मानी जाती है, देवदत्तं शतं मुष्णाति परन्तु लौकिकसाहित्य में विरल प्रयोग), —मुषाण रत्नानि—शि० १।५१, ३।३८, क्षत्रस्य मुष्णन् वसु जैत्रमोजः—कि० ३।४१ 2. ग्रहण लगना, ढकना, लपेटना, छिपाना—सैन्यरेणुमुषितार्कदीधितिः —रघु० ११।५१ 3. बन्दी बनाना, मुग्ध करना, लुभाना 4. पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना—मुष्णन्श्रियमशोकानां रक्तैः परिजनाम्बरैः, गीतैर्वराङ्गनानां च कोकिलभ्रमरध्वनिम्—कथा० ५५।११३, रत्न० १।२४, भट्टि० ९।३२, मेघ० ४७, परि—, लूटना, वंचित करना—परिमुषितरत्नं त्रिभुवनम् —मा० ५।३०, प्र—, अपहरण करना, निस्तेज करना ·भट्टि० १७।६०।

ii (भ्वा० पर० मोषति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, हत्या कराना ।
iii (दिवा० पर० मुष्यति) 1. चुराना 2. तोड़ना, नष्ट करना—भट्टि० १५।१६ ।
मुषकः [मुष्+ण्वुल्] चूहा ।
मुषल दे० 'मुसल' ।
मुषा-षी [मुष्+क+अप्, ङीष् वा] कुठाली ।
मुषित (भू० क० कृ०) [मुष्+क्त] 1. लूटा गया, चोरी किया गया, अपहृत 2. अपहरण किया गया, छीन कर ले जाया गया 3. वञ्चित, मुक्त 4. ठगा गया, धोखा दिया गया —दैवेन मुषितोऽस्मि - का० ।
मुषितकम् [मुषित+कन्] चुराई हुई संपत्ति ।
मुष्कः [मुष्+कक्] 1. अंडकोष 2. पोता 3. गठीला तथा हृष्ट-पुष्ट पुरुष 4. राशि, ढेर, परिमाण, समुच्चय 5. चोर । सम० —**देशः** अण्डकोष का स्थान,—**शून्यः** हिजड़ा, वधिया किया हुआ पुरुष,—**शोफः** पोतों की सूजन ।
मुष्ट (भू० क० कृ०) [मुष्+क्त] चुराया हुआ—श० ५।२०,—**ष्टम्** चुराई हुई सम्पत्ति ।
मुष्टिः (पुं०, स्त्री०) [मुष्+क्तिच्] 1. भींचा हुआ हाथ, मुट्ठी—कणाण्तमेत्य विभिदे निन्डिोऽपि मुष्टिः—रघु० ९।५८, १५।२१, शि० १०।५९ 2. मुट्ठीभर, जितना एक मुट्ठी में आवे, श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितकः श० ४।१४, रघु० १९।५७, कु० ७।६९, मेघ० ६८ 3. मूंठ, दस्ता 4. एक विशेष तोल, (=एक पल के बराबर) 5. पुरुष का लिंग । सम० —**देशः** धनुष का बीच का भाग, वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है, —**द्यूतम्** एक प्रकार का खेल, जुआ, —**पातः** मुक्केबाज़ी, —**बंधः** 1. मुट्ठी बांधना 2. मुट्ठीभर,—**युद्धम्** मुक्केबाज़ी, घूँसेवाजी ।
मुष्टिकः [मुष्टिर्मोषणं प्रयोजनमस्य - कन्] 1. सुनार 2. हाथों की विशिष्ट स्थिति 3. एक राक्षस का नाम, —**कम्** मुक्केबाज़ी, घुंसेवाजी । सम० —**अन्तकः** बलराम का विशेषण ।
मुष्टिका [मुष्टिक+टाप्] मुट्ठी ।
मुष्टिन्धयः [मुष्टि+धे+खश् मुम्] बच्चा, बालक, शिशु ।
मुष्टीमुष्टि (अव्य०) [मुष्टिभिः मुष्टिभिः प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्] मुक्केबाज़ी, घूंसेबाजी, हस्ताहस्ति युद्ध ।
मुष्ठकः राई, काली सरसों ।
मुस् (दिवा० पर० मुस्यति) फाड़ना, विभक्त करना, टुकड़े २ करना ।
मुसलः, —**लम्** [मुस्+कलच्] 1. गतका, गदा 2. मूसल (चावल कूटने के काम आता है)—मुसलमिदमियं च पातकाले मुहुरनु याति कलेन हुंकृतेन—मुद्रा० १।४, मनु० ६।५६ । सम० —**आयुधः** बलराम का विशेषण, —**उलूखलम्** मूसली और खरल ।
मुसलामुसलि (अव्य०) [मुसलैः मुसलैः प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम्] मूसल या गदाओं से लड़ना ।
मुसलिन् (पुं०) [मुसल+इनि] 1. बलराम का विशेषण 2. शिव का विशेषण ।
मुसल्य (वि०) [मुसल+यत्] गदा से चूर-चूर किये जाने अथवा मार दिये जाने योग्य ।
मुस्त् (चुरा० उभ० मुस्तयति —ते) ढेर लगाना, इकट्ठा करना, संग्रह करना, संचय करना ।
मुस्तः,—**तम्,** —**स्ता** [मुस्त्+क, स्त्रियां टाप्] एक प्रकार की घास, मोथा — विस्रब्धं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले—श० २।६, रघु० ९।५९, १५।१९ । सम० —**अदः** —**आदः** सूअर ।
मुस्रम् [मुस्+रक्] 1. मुसली 2. आँसू ।
मुह् (दिवा० पर० मुह्यति, मुग्ध या मूढ) मुर्झाना, मुछित होना, चेतना नष्ट होना, बेहोश होना — इष्टाहं द्रष्टुमाह्वं तां स्मरन्नेव मुमोह सः भट्टि० ६।२१; १।२०, १५।१६ 2. उद्विग्न होना, विह्वल होना, घबराना 3. मूढ बनना, जड़ होना, मोहित होना 4. गलती करना, भूल होना—प्रेर० (मोहयति —ते) 1. जड करना, मोहित करना —मा मूमुहत्खलु भवन्तमनन्यजन्मा —मा० १।३२ 2. अस्तव्यस्त करना, घबराना, उद्विग्न होना —भग० ३।२, ४।१६, परि —, घबराया जाना, उद्विग्न हो जाना (प्रेर० आ०) फुसलाना, बहकाना, ललचाना—भट्टि० ८।६३, प्र —, जडीभूत होना, मुग्ध होना, वि —, अव्यवस्थित होना, घबराना, उद्विग्न होना, विह्वल होना —भग० २।७२, ३।६, २७ 2. मुग्ध होना या मोहित होना, सम् —, 1. व्याकुल होना 2. मूर्ख या अज्ञानी होना (प्रेर०) मोहित करना, जडीभूत करना—अधरमधुस्यन्देन संमोहिता गीत० १२ ।
मुहिर (वि०) [मुह्+किरच्] मूर्ख, मूढ, जड़, —**रः** 1. कामदेव 2. मूर्ख, बुद्धू ।
मुहुस् (अव्य०) [मुह्+उसिक्] बहुधा, लगातार, निरंतर, बार बार—ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः श० १।७, २।६, (इस अर्थ में प्रायः 'द्वित्व' कर दिया जाता है) मुहुर्मुहुः 1. बार बार, फिर फिर, प्रायः बहुशः —गुरूणां संनिधानेऽपि कः कूजति मुहुर्मुहुः 2. कुछ समय या क्षण के लिए, थोड़ी देर के लिए मेघ० ११५, उत्तरोत्तर वाक्यखंडों में 'अब, अब' 'एक बार, दूसरी बार' अर्थ को प्रकट करने में प्रयुक्त होता है — मुहुरनुपतते बाला मुहुः पतति विह्वला, मुहुरालप्यते भीता मुहुः क्रोशति रोदिती —सुभा०, मुद्रा० ५।३ । सम०—**भाषा,**

—वचस् (नपुं०) पिष्टपेषण, पुनरुक्ति, - भज् (पुं०) घोड़ा ।

मुहूर्तः,—र्तम् [हुर्छ्+क्त धातोः पूर्वं मुट् च] 1. एक क्षण, समय का अल्पांश, निमिष—नवाम्बुदानीकमुहूर्तला-ञ्छने—रघु० ३।५३, संध्याभ्ररेखेव मुहूर्तरागाः —पंच० १।१९४, मेघ० १९, कु० ७।५०. 2. काल, समय (शुभ या अशुभ) 3. अड़तालीस मिनट का काल,— र्तः ज्योतिषी ।

मुहूर्तकः [मुहूर्त+कन्] 1. निमिष, क्षण 2. अड़तालीस मिनट का काल ।

मू (भ्वा० पर० मवते) बांधना, जकड़ना, कसना ।

मूक (वि०) [मू+कक्] 1. गूंगा, मौन, चुप्पा, वाक्-शून्य - मूकं करोति वाचालं, मूकाण्डजं (काननम्) —कु० ३।४०, सखीमियं वीक्ष्य विषादमूकाम्—गीत० ७ 2. बेचारा, दीन, दुःखी, कः 1. गूंगा मौनान्मूकः —हि० २।२६ (पाठांतर), मनु० ७।१४९ 2. बेचारा, दीन 3. मछली । सम०—अम्बा दुर्गा का एक रूप, —भावः चुप्पी, मूकता, वाक्शून्यता ।

मूकिमन् (पुं०) [मूक+इमनिच्] गूंगापन, मूकता, चुप्पी ।

मूढ (भू० क० कृ०) [मुह्+क्त] 1. जडीभूत, मोहित 2. उद्विग्न, व्याकुल, विह्वल, सूझबूझ से हीन—कि कर्तव्यतामूढः 'करणीय कर्तव्य की सूझ से हीन व्यक्ति' इसी प्रकार 'ह्रीमूढ' मेघ० ६८ 3. नासमझ, मूर्ख, मन्दबुद्धि, जड, अज्ञानी अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्—रघु० २।४७ 4. भ्रान्त, भ्रमपूर्ण, प्रतारित, विचलित 5. अपक्व-जन्मा 6. संशयोत्पादक,—ढः मूर्ख, बुद्धू, मन्दमति, अज्ञानी पुरुष—मूढः परप्रत्ययनयबुद्धिः मालवि० १।२ । सम०—आत्मन् 1. मन से जड़ीभूत 2. निर्बुद्धि, जड़, मूर्ख,—गर्भः मृत गर्भ,—ग्राहः अशुद्ध भाव, गलत, विचारण, गलत धारणा, चेतन, चेतस् (वि०) निर्बुद्धि, मूर्ख, अज्ञानी—अवगच्छति मूढचेतनः प्रियनाशं हृदि शल्यमर्पितं रघु० ८।८८, धी, बुद्धि, —मति (वि०) निर्बुद्धि, जड़, मूर्ख, सीधासादा —कि० १।३०,—सत्त्व (वि०) मोहित, दीवाना ।

मूत (वि०) [मू+क्त] 1. बांधा हुआ, करता हुआ 2. बंदी किया हुआ ।

मूत्रम् [मूत्र्+घञ्] मूत, पेशाब, नाप्सु मूत्रं समुत्सृजेत्—मनु० ४।५६, मूत्रं चकार 'मूता, लघुशंका की' सम० आघातः मूत्रसंबंधी रोग,—आशयः पेट के नीचे का स्थल जहाँ मूत्र भरा रहता है, उत्सङ्गः दे० 'मूत्रसंग', कृच्छ्रम् पीड़ा के साथ मूत्र का आना, मूत्रक्षरण, बूंद २ पेशाव का पीड़ा देकर आना, —कोशः अंडकोश, पोता,—क्षयः मूत्र का स्राव कम होना,—जठरः,—रम् मूत्र रुक जाने से पेट की सूजन, —दोषः मूत्रसंबंधी रोग,—निरोधः मूत्र का रुक जाना, —पतनः गंधमार्जार,—पथः मूत्रनलिका,—परीक्षा मूत्र-निरीक्षण, मूत्र की परीक्षा करना,—पुटम् पेट का निचला भाग, मूत्राशय, मार्गः मूत्रनलिका मूत्रद्वार, —वर्धक (वि०) अधिक पेशाव लाने की दवा, मूत्रल, —शूलः,—लम् मूत्रसंबंधी पीड़ा,—संग पेशाव आने में रुकावट, पीड़ा के साथ रक्त पेशाब आना ।

मूत्रयति (ना० धा० पर०) पेशाब, लघुशंका करना —तिष्ठन्मूत्रयति - महा० ।

मूत्रल (वि०) [मूत्र+ला+क] पेशाब लाने वाली (दवा), मूत्रवर्धक औषधि ।

मूत्रित (वि०) [मूत्र+इतच्] मूत्र के रूप में निकला हुआ ।

मूर्ख (वि०) [मुह्—ख, मूर् आदेशः] जड़ मन्दमति, बुद्धु, मूढ़, अनजान—र्खः 1. मन्दमति, बुद्धू न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्—भर्तृ० २।६, ८, मूर्खबलादपराधिनं मां प्रतिपादयिष्यसि - विक्रम० 2. एक प्रकार का लोबिया । सम० भूयम् मूर्खता, जड़ता, अज्ञानता ।

मूर्च्छन (वि०) (स्त्री०—नी) [मुर्च्छ्+णिच्+ल्युट्] 1. जडीभूत करने वाला, जडता या बेहोशी पैदा करने वाला, (कामदेव के एक वाण का विशेषण) 2. बढ़ाने वाला, वर्धन करने वाला, वल देने वाला,—नम् 1. मूर्छित होना, बेहोश होना 2. (संगी० में) स्वरारोहण, स्वरविन्यास, स्वरों का नियमित आरोहणावरोहण, सुखद स्वरसंधान करना, लयपरिवर्तन करना, स्वरसामंजस्य, स्वरमाधुर्य—स्फुटीभवद्ग्रामविशेष-मूर्च्छनाम् शि० १।१०, भूयोभूयः स्वयमपि कृतां मूर्च्छनां विस्मरन्ती मेघ०८६, वर्णानामपि मूर्च्छनान्तरगतं तारं विरामे मृदु मृच्छ० ३।५, सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा मुर्च्छनाश्चैकविंशतिः—पंच० ५।५४ (मूर्च्छा या मूर्च्छना की परिभाषा क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम्, सा मूर्च्छेत्युच्यते ग्रामस्था एताः सप्त सप्त च, अधिक विवरण के लिए दे० शि० १।१० पर मल्लि० ।

मूर्च्छा [मुर्च्छ् (भावे) अङ्+टाप्] 1. बेहोशी, संज्ञाहीनता—रघु० ७।४४ 2. आत्म अज्ञान या व्यामोह 3. धातु फूंक कर भस्म वनाने की प्रक्रिया,—मूर्च्छां गतो मृतो वा निदर्शनं पारदोऽत्र रसः—भामि० १।८२ ।

मूर्च्छाल (वि०) [मूर्च्छा+लच्] वेहोश, अचेत, चेतनारहित ।

मूर्च्छित (भू० क० कृ०) [मूर्च्छा जाता अस्य-इतच्, मूर्च्छ्+क्त वा] 1. वेहोश, संज्ञाहीन, चेतनारहित 2. मूर्ख, जड, मूढ 3. बढ़ाया हुआ, वर्धित 4. प्रचंड

किया हुआ, तीव्र किया हुआ 5. उद्विग्न, व्याकुल 6. भरा हुआ, 7. फूंका हुआ।

मूर्त (वि०) [मूर्च्छ्+क्त] 1. बेहोश, संज्ञाहीन 2. जड, मूढ 3. शरीरधारी, मूर्तिमान् –मूर्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयूथः—श० १।३६, प्रसाद इव मूर्तस्ते स्पर्शः स्नेहार्द्रशीतलः—उत्तर० ३।१४, रघु० २।६९, ७।७०, कु० ७।४२, पंच० २।९९ 4. भौतिक, पार्थिव 5. ठोस, कड़ा।

मूर्त्तिः (स्त्री०) [मूर्च्छ्+क्तिन्] 1. निश्चित आकार और सीमा की कोई वस्तु, भौतिक तत्त्व, द्रव्य, सत्त्व 2. रूप, दृश्यमान आकृति, शरीर, आकृति, मुद्रा० २।२, रघु० ३।२७, १४।४५ 3. मूर्तिमत्ता, शरीरधारण, प्रतिबिंब, स्पष्टीकरण—करुणस्य मूर्त्तिः—उत्तर० ३।४, पंच० २।१५९ 4. प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, पुतला, बुत 5. सौन्दर्य 6. ठोसपना, कड़ापन। सम० —**धर, —संचर** (वि०) शरीरधारी, मूर्तिमान्: उत्तर० ६, —**पः** प्रतिमा का पुजारी, जो किसी देव प्रतिमा के पूजाकृत्य में लगाया गया है।

मूर्तिमत् (वि०) [मूर्ति+मतुप्] 1. भौतिक, पार्थिव 2. शरीरधारी, देहवान्, साकार –शकुन्तला मूर्तिमती च सत्क्रिया—श० ५।१५, तव मूर्तिमानिव महोत्सवः करः—उत्तर० १।१८, रघु० १२।६४ 3. कड़ा, ठोस।

मूर्धन् (पुं०) [मुह्यत्यस्मिन्नाहते इति मूधा—मुह्+कनि, उपधाया दीर्घो धोऽन्तादेशो रमागमश्च] 1. मस्तक, भौं 2. सिर;—नतेन मूर्ध्ना हरिरग्रहीदपः—शि० १।१८, रघु० १६।८१, कु० ३।१२ 3. उच्चतम या प्रमुख भाग, चोटी, शिखर, शृंग, सिर—अतिष्ठन्मनुजेन्द्राणां मूर्ध्नि देवपतिर्यथा—महा० "सब राजाओं के शीर्षभाग पर" आदि—भूम्यां पर्वतमूर्धनि—श० ५।७, मेघ० १७ 4. (अतः) नेता, मुखिया, मुख्य, सर्वोपरि, प्रमुख 5. सामने का, हरावल, अग्रभाग—स किल संयुगमूर्ध्नि सहायतां मघवतः प्रतिपद्य महारथः—रघु० ९।१९। सम०—**अन्तः** सिर का मुकुट,—**अभिषिक्त** (वि०) अभिमंत्रित, किरीटधारी, यथाविधि पद पर प्रतिष्ठापित,—रघु० १६।८१ (**क्तः**) 1. अभिमंत्रित या अभिषिक्त राजा 2. क्षत्रिय जाति का पुरुष 3. मंत्री 4. मूर्धाभिसिक्त (1)—**अभिषेकः** अभिमंत्रण, प्रतिष्ठापन,—**अवसिक्तः** 1. ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति 2. अभिमंत्रित राजा —**कर्णी —कर्परी** (स्त्री०) छतरी, —**जः** 1. (सिर के) बाल—पर्याकुला मूर्धजाः—श० १।३०, विललाप विकीर्णमूर्धजा—कु० ४।४, 'शोकातिरेक में उस स्त्री ने अपने बाल नोच डाले' 2. अयाल,—**ज्योतिस्** (नपुं०) दे० ब्रह्मरन्ध्र या मुद्रा-मार्ग **पुष्पः** शिरीष का पेड़,—**रसः** उबले चावलों का मांड,—**वेष्टनम्**, साफा, मुकुट, शिरोमाल्य।

मूर्धन्य (वि०) [मूर्ध्नि भवः—यत्] 1. सिर पर विद्यमान 2. मूर्धन्य अर्थात् मूर्धा से उच्चरित होने वाले वर्ण ऋ, ॠ, ट् ठ् ड् ढ् ण् र् और ष्, ऋटुरषाणां मूर्धा 3. मुख्य, प्रमुख, सर्वोत्तम।

मूर्ध्वन् दे० 'मूर्धन्'।

मूर्वा, र्वी, मूर्विका [मुर्व्+अच्+टाप्, ङीष् वा; मूर्वा+कन्+टाप् इत्वम्] एक प्रकार की लता जिसके रेशों से धनुष की डोरी या क्षत्रियों की (कटिसूत्र) तड़ागी तैयार की जाती है।

मूल् i (भ्वा० उभ० मूलति—ते, जड़ जमना, दृढ़ होना, स्थिर होना ii (चुरा० उभ० मूलयति—ते मूलित) पौधा लगाना, उगाना, पालना, **उद्**—,उखाड़ना, जड़ से काटना, मूलोच्छेदन करना—कि० १।४१, विनष्ट करना, विध्वंस करना, **निस्**—,जड़ से उखाड़ना, उन्मूलित करना।

मूलम् [मूल्+क] 1. जड़ (आलं० से भी)—तरुमूलानि गृहीभवन्ति तेषाम्—श० ७।२०, या, शाखिनो धौतमूलाः १।२०, **मूलंबन्ध्** जड़ पकड़ना, जड़ जमना, —बद्धमूलस्य मूलं हि महद्वैरतरोः स्त्रियः—शि० २।३८ 2. जड़, किसीवस्तु का सबसे नीचे का किनारा या छोर—कस्याश्चिदासीद्रसना तदानीमङ्गुष्ठमूलार्पित सूत्रशेषा—रघु० ७।१०, इसी प्रकार 'प्राचीमूले—मेघ० ९१ 3. नीचे का भाग या किनारा, आधार, किसी भी वस्तु का किनारा जिसके सहारे वह किसी दूसरी वस्तु से जुड़ी हो—बाहोर्मूलम्—शि० ७।३२, इसी प्रकार पादमूलं, कर्णमूलं, ऊरूमूलम् आदि 4. आरंभ, शुरू—आमूलाच्छ्रोतुमिच्छामि श० १ 5. आधार, नींव, स्रोत, मूल, उत्पत्ति—सर्वेगार्हस्थ्यमूलकाः—महा०, 'रक्षोगृहे स्थितिर्मूलम्—उत्तर० १।६, इति केनाप्युक्तं तत्र मूलं मृग्यम्, 'इसका स्रोत या प्रमाण मालूम किया जाना चाहिए' 6. किसी वस्तु का तल या पैर, पर्वतमूलम्, गिरिमूलम् आदि 7. पाठ, मूल संदर्भ (भाष्य से विविक्त) 8. पड़ौस, आस पास, सामीप्य 9. मूलधन, मूलपूंजी 10. कुलक्रमागत सेवक 11. वर्गमूल 12. राजा का अपना निजी प्रदेश—स गुप्तमूलप्रत्यन्तः रघु० ४।२६, मनु० ७।१८४ 13. विक्रेता जो स्वयं विक्रेयवस्तु का स्वामी न हो—मनु० ७।२०२, (अस्वामिविक्रेता कुल्लू०) 14. ग्यारह तारकाओं का पुंज जो सत्ताइस नक्षत्रों में से उन्नीसवां (मूलनक्षत्र) है 15. झाड़ी, झाड़-झखाड़ 16. पीपरा मूल 17. अंगुलियों की विशेष स्थिति। सम०—**आधारम्** 1. नाभि 2. जननेन्द्रिय के ऊपर एक रहस्य मय वृत्त,—**आभम्**

मूली,—आयतनम् मूल आवासस्थान—,आशिन् (वि०) जो कन्दमूलादि खाकर जीवित रहे,—आह्वम् मूली —उच्छेदः पूर्णध्वंस, पूर्णविनाश, पूरी तरह उखाड़ फेंकना,—कर्मन् (नपुं०) जादू,—कारण मूलहेतु, आदि कारण, कु० ६।१३,—कारिका भट्टी, चूल्हा —कृच्छ्रः—कृच्छ्रम् एक प्रकार की तपस्या, केवल जड़ें खाकर निर्वाह करना,—केशरः नीबू,—गुणः किसी मूल का गुणांक,—जः जड़ बोने से उत्पन्न होने वाला पौधा,(जम्) हरा अदरक,—देवः कंस का विशेषण, —द्रव्यम्—धनम् मूलधन, माल, वाणिज्यवस्तु, पूंजी, —धातुः लसीका,—निकृन्तन (वि०) जड़ से काट डालने वाला,—पुरुष 'पशुपाल' किसी परिवार का वंशप्रवर्तक पुरुष,—प्रकृतिः (स्त्री०) सांख्यों का प्रधान या प्रकृति, फलदः कटहल का पेड़,—भद्रः कंस का विशेषण,—भृत्यः पुराना तथा कुलक्रमागत सेवक,—वचनम् मूलपाठ, वित्तम् पूंजी, वाणिज्य वस्तु, माल, —विभुजः रथ, शाकटः,—शाकिनम् वह खेत जिसमें मूली गाजर आदि मूल-पौधे बोये जाते हैं,—स्थानम् 1. आधार, नींव 2. परमात्मा 5. हवा, वायु,—स्रोतस् (नपुं०) प्रधान धारा या किसी नदी का उद्गम स्थान।

मूलकः,—कम् [मूल+कन्] 1. मूली 2. भक्ष्य जड़, —कः एक प्रकार का विष। सम०—पोतिका मूली।

मूला [मूल+अच्+टाप्] 1. एक पौधे का नाम, सतावर 2. मूल नक्षत्र।

मूलिक (वि०) [मूल+ठन्] मूलभूत, मौलिक,—कः भक्त, संन्यासी।

मूलिन् (पुं०) [मूल+इनि] वृक्ष।

मूलिन (वि०) [मूल+इन] जड़ बोने से उगने वाला।

मूली [मूल+ङीप्] एक छोटी छिपकली।

मूलेरः [मूल्+एरक्] 1. राजा 2. जटामांसी, बालछड़।

मूल्य (वि०) [मूल+यत्] 1. उखाड़ देने योग्य 2. मोल लेने के योग्य,—ल्यम् 1. कीमत, मोल, लागत—क्रीणन्ति स्म प्राणमूल्यैर्यशांसि—शि० १८।१५, शान्ति० १।१२ 2. मजदूरी, किराया या भाड़ा, वेतन 3. लाभ 4. पूंजी, मूलधन।

मूष् (भ्वा० पर० मूषति, मूषित) चुराना, लूटना, अपहरण करना।

मूषः [मूष्+क] 1. चूहा, मूसा 2. गोल खिड़की, मोघा रोशनदान।

मूषकः [मूष्+कन्] 1. चूहा, मूसा 2. चोर। सम० —अरातिः बिलाव,—वाहनः गणेश।

मूषणम् [मूष्+ल्युट्] चुराना, चुपके से खिसका लेना, उठा लेना।

मूषा, मूषिका [मूष+टाप्, मूषिक+टाप्] चुहिया कुठाली।

मूषिकः [मूष्+किकन्] 1. चूहा 2. चोर 3. शिरीष का पेड़ 4. एक देश का नाम। सम०—अङ्कः,—अञ्चनः —रथः गणेश के विशेषण,—अदः बिलाव,—अरातिः बिलाव,—उत्करः,—स्थलम् बांबी।

मूषिकारः (पुं०) चूहा।

मूषी, मूषीकः, मूषीका [मूष+ङीप्, मूष्+ईकन्, स्त्रियां टाप् च] चूहा, मूसा, मूसी।

मृ (तुदा० आ०—[परन्तु लिट्, लुट्, लृट् और लृङ में पर०] म्रियते, मृत) मरना, नष्ट होना, मृत्यु को प्राप्त होना, जीवन से विदा लेना—प्रेर० (मारयति—ते) वध करना, हत्या करना—इच्छा० (मुमूर्षति) 1. मरने की इच्छा करना 2. मरने के निकट होना, मरणासन्न अवस्था में होना, अनु—, बाद में मरना, मर कर अनुगमन करना—रघु० ८।८५।

मृक्ष् दे० म्रक्ष्।

मृग् (दिवा० पर०, चुरा० आ० मृग्यति, मृगयते, मृगित) 1. ढूंढना, खोजना, तलाश करना, —न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्—कु० ५।४५, गता दूता दूरं क्वचिदपि परेतान् मृगयितुम् —गंगा० २५ 2. शिकार करना, पीछा करना, अनुसरण करना 3. लक्ष्य बांधना, यत्न करना 4. परीक्षण करना, अनुसंधान करना—अविचलितमनोभिः साधकैर्मृग्यमाणः—मा० ५।१, अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते—विक्रम० १।१, 'अन्दर से खोजा गया, और अनुसंधान किया गया' 5. मांगना, याचना करना—एतावदेव मृगये प्रतिपक्षहेतोः—मा० ५।२०।

मृगः [मृग्+क] 1. चौपाया, जानवर—नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते मृगैः, विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता। दे० नी० 'मृगाधिप' 2. हरिण, बारहसिंगा—विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगाः —श० १।१४, रघु० १।४९, ५०, आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यः—श० १।३, आखेट 4. चन्द्रमा का लाञ्छन जो हरिण के रूप में लगा हुआ है 5. कस्तूरी 6. खोज, तलाश, 7. पीछा करना, अनुसरण, शिकार 8. पूछ ताछ, गवेषणा, 9. प्रार्थना, निवेदन 10. एक प्रकार का हाथी 11. मनुष्यों की एक विशिष्ट श्रेणी—मृगे तुष्टा च चित्रिणी, वदति मधुरवाणीं दीर्घनेत्रोऽतिभीरुश्चपलमतिसुदेहः शीघ्रवेगो मृगोऽयम्—शब्द० 12. 'मृगशिरा' नक्षत्र 13. 'मार्गशीर्ष' का महीना 14. मकर राशि। सम० अक्षी हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—अङ्कः 1. चन्द्रमा 2. कपूर 3. हवा,—अङ्गना हरिणी, अजिनम् मृगछाला,—अण्डजा कस्तूरी,—अद्

(पुं०),—अदनः,—अन्तकः छोटा शेर या चीता, लकड़बग्घा,—अधिपः,—अधिराजः सिंह,—केशरी निष्ठुरक्षिप्तमृगयूथो मृगाधिपः—शि० २।५३, मृगाधिराजस्य वचो निशम्य—रघु० २।४१,—अरातिः 1. सिंह 2. कुत्ता,—अरिः 1. सिंह 2. कुत्ता 3. शेर 4. वृक्ष का नाम,—अशनः सिंह,—आविध् (पुं०) शिकारी, —आस्यः मकर राशि,—इन्द्रः 1. सिंह—ततो मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रगामी—रघु० २।३० 2. शेर 3. सिंह राशि °आसनम् सिंहासन °आस्यः शिव का विशेषण —°चटकः बाज पक्षी,—इष्टः चमेली का एक भेद, —ईक्षणा हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—ईश्वरः 1. सिंह 2. सिंहराशि,—उत्तमम्,—उत्तमाङ्गम् मृगशिरा नक्षत्रपुंज, काननम् उद्यान,—गामिनी एक प्रकार का औषधद्रव्य, —जलम् मृगमरीचिका °स्नानम् मृगमरीचिका के जल में स्नान करना—अर्थात् असंभावना, —जीवनः शिकारी, बहेलिया,—तृष्, —तृषा —तृष्णा, तृष्णिका (स्त्री०) मृगमरीचिका—मृगतृष्णाम्भसि स्नातः, दे० 'खपुष्प',—दंशः,—दंशकः कुत्ता,—दृश् हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री—तदीपद्विस्तारि स्तनयुगलमासीन्मृगदृशः—उत्तर० ६।३५,—धूः शिकारी,—द्विष (पुं०) सिंह,—धरः चन्द्रमा,—धूर्तः —धूर्तकः गीदड़, नयना हरिणी जैसी आँखों वाली स्त्री,—नाभिः 1. कस्तूरी—कु० १।५४, ऋतु० ६।१२, चौर० ८, रघु० १७।२४ 2. हरिण जिसकी नाभि में कस्तूरी होती है—रघु० ४।७४, °जा कस्तूरी,—पतिः 1. सिंह 2. हरिण 3. शेर,—पालिका कस्तूरीमृग,—पिप्लुः चन्द्रमा,—प्रभुः सिंह, ब(व) धाजीवः शिकारी,—बन्धिनी हरिणों को पकड़ने का जाल,—मदः कस्तूरी—कुचतटीगतो यावन्मातर्मिलति तव तोयैर्मृगमदः—गंगा० ७, मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे गीत० ७, °वासा कस्तूरी का थैला—मन्द्रः हाथियों की एक श्रेणी, मातृका हरिणी, मुखः मकरराशि, यूथम् हरिणों का झुण्ड, —राज् (पुं०) 1. सिंह—शि० ९।१८ 2. शेर 3. सिंह राशि, राजः 1. सिंह—रघु० ६।३ 2. सिंह राशि 3. शेर 4. चन्द्रमा °धारिन्, °लक्ष्मन् (पुं०) चन्द्रमा,—रिपुः सिंह,—रोमम् ऊन, °जम् ऊनी कपड़ा,—लाञ्छनः चन्द्रमा—अङ्काधिरोपितमृगश्चन्द्रमा मृगलाञ्छनः—शि० २।५३, °जः बुधग्रह,—लेखा चन्द्रमा में हरिण जैसी धारी—मृगलेखामुपसीव चन्द्रमाः —रघु० ८।४२, लोचनः चन्द्रमा (—ना नी) हरिणी जैसी आंखों वाली स्त्री,—वाहनः हवा, —व्याधः 1. शिकारी 2. तारामंडल या नक्षत्रपुंज 3. शिव का विशेषण, शावः छौना, हरिण का बच्चा—मृगशावैः सममेधितो जनः—श० २।१८,—शिरः,—शिरस् (नपुं०) —शिरा पांचवें नक्षत्र (मृगशिरस्) का नाम जो तीन तारों का पुंज है,—शीर्षम् मृगशिरा नाम का नक्षत्रपुंज,(र्षः) मार्गशीर्ष का महीना,—शीर्षन् (पुं०) मृगशिरा नाम का नक्षत्र,—श्रेष्ठः शेर,—हन् (पुं०) शिकारी।

मृगणा [मृग्+युच्+टाप्] खोजना, तलाश करना, पूछताछ, अनुसंधान।

मृगया [मृग्यते यत्यनया या घञर्थे क] शिकार, पीछा करना—मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः श० २।५, मृगयापवादिना माढव्येन श० २ मृगयावेप, मृगयाविहारिन् आदि।

मृगयुः [मृग अस्त्यर्थे युच्] 1. शिकारी, बहेलिया हन्ति नोपशयस्थोऽपि शयालुर्मृगयुर्मृगान्—शि० २।८० 2. गीदड़ 3. ब्रह्मा का विशेषण।

मृगव्यम् [मृग+व्यध्+ड] 1. पीछा करना, शिकार —कि० १३।९ 2. निशाना, लक्ष्य।

मृगी [मृग+ङीप्] 1. हरिणी, मृगी 2. मिरगी रोग 3. स्त्रियों की एक विशिष्ट श्रेणी। सम०—दृश् (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी आँखें हरिणी जैसी होती हैं, पतिः कृष्ण का विशेषण।

मृग्य (वि०) [मृग्+ण्यत्] खोजे जाने या तलाश किये जाने योग्य, शिकार किये जाने के योग्य—तत्र मूलम् मृग्यम्।

मृज् i (भ्वा० पर० मार्जति) शब्द करना।
ii (अदा० पर०, चुरा० उभ० मार्ष्टि, मार्जयति—ते, इच्छा० मिमृक्षति या मिमार्जिषति) 1. पोंछना, धो डालना, स्वच्छ करना, साफ़ करना 2. बुहारी देकर साफ करना (आलं० से भी) स्वेदलवान्ममार्ज—शि० ३।७९ 3. चिकना करना, (घोड़े आदि को) खरहरे से रगड़ना 4. सजाना, अलंकृत करना 5. निर्मल करना, पानी से धोना, साफ़ करना—ललुः खड्गान्मार्जुश्च ममृजुश्च परश्वधान् भट्टि० १४।९२, (शुद्धान् चक्रुः या शोधितवन्तः), अव —, 1. मलना, गुदगुदाना 2. धो डालना, उद्—,पोंछ देना, हटाना,—रघु० १५।३२, निस् —, पोंछना, धो देना, परि —, पोंछ डालना, धो देना, हटाना—(वाच्यं) त्यागेन पत्न्याः परिमार्ष्टुमैच्छत्—रघु० १४।३४ 2. मलना, गुदगुदाना, प्र —, पोंछ डालना, हटाना, प्रायश्चित्त करना स्वभावलोलेत्य यशः प्रमृष्टम्—रघु० ६।३१, प्रणिपातलङ्घनं प्रमार्ष्टुकामा—विक्रम० ३, मालवि० ४, वि —, 1. पोंछ डालना, पोंछ देना 2. निर्मल करना, स्वच्छ करना सम् —, 1. बुहार कर साफ करना, निर्मल करना 2. पोंछ देना, पोंछ डालना, हटाना 3. मलना, गुदगुदाना 4. निचोड़ना, छानना।

मृजः [मृज्+क] 'मुरज' नाम का वाद्यविशेष।

मृजा [मृज्+अङ्+टाप्] 1. स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, नहाना-धोना 2. स्वच्छता, निर्मलता —भट्टि० २।१३, शुद्धि 3. आकार-प्रकार, निर्मल त्वचा और स्वच्छ मुखमण्डल ।

मृजित (वि०) [मृज्+क्त] धो डाला गया, स्वच्छ किया गया, हटाया गया ।

मृडः [मृड्+क] शिव का विशेषण ।

मृडा, मृडानी, मृडी [मृड+टाप्, मृड+ङीप्, पक्षे आनुक्] पार्वती का विशेषण · शङ्के सुन्दरि कालकूटमपिबत् मूढो मृडानीपतिः— गीत० १२ ।

मृण् (तुदा० पर० मृणति) वध करना, हत्या करना, नष्ट करना ।

मृणालः,—लम् [मृण्+कालन्] कमल की तन्तुमय जड़, कमल-तन्तु—भङ्गेऽपि हि मृणालानामनुबध्नन्ति तन्तवः —हि० १।९५, सूत्रं मृणालादिव राजहंसी विक्रम० १।१९, ऋतु० १।१९, विक्रम० ३।१३,—लम् सुगंधित घास की जड़, वरिणमूल । सम—भङ्गः कमलतंतु का टुकड़ा, —सूत्रम् कमलवृन्त का तन्तु ।

मृणालिका, मृणाली [मृणाल+कन्+टाप्, इत्वम्, मृणाल+ङीप्] कमलवृन्त या तन्तु—परिमृदितमृणालीम्लानमङ्गं—मा० १।२२, या, परिमृदितमृणालीदुर्बलान्यङ्गकानि—उत्तर० १।२४ ।

मृणालिन् (पुं०) [मृणाल+इनि] कमल ।

मृणालिनी [मृणालिन्+ङीप्] 1. कमल का पौधा 2. कमलों का समूह 3. जहाँ कमल बहुतायत से मिलते हों ।

मृत (भू० क० कृ०) [मृ+क्त] 1. मरा हुआ, मृत्यु को को प्राप्त 2. मृतक जैसा, व्यर्थ, निष्फल मृतो दरिद्रः पुरुषो मृतं मैथुनमप्रजम्, मृतमश्रोत्रियं श्राद्धं मृतो यज्ञस्त्वदक्षिणः -पंच० २।९४ 3. भस्म किया हुआ, फूंका हुआ—मूर्च्छां गतो मृतो वा निदर्शनं पारदोऽत्र रसः -भामि० १।८२, तम् 1. मृत्यु 2. भिक्षा में प्राप्त अन्न, दान या भिक्षा - दे० अमृतम् (८) । सम० अङ्गम् शव,—अण्डः सूर्य,—अशौचम् किसी संबंधी की मृत्यु से उत्पन्न अपवित्रता, अशौच, दे० 'अशौच',—उद्भवः समुद्र, सागर,—कल्प (वि०) मृतप्राय, बेहोश, गृहम् कबर, दारः रंडवा, विधुर, —निर्यातकः जो शवों को कब्रिस्तान में ढोकर ले जाता है,—मत्तः,—मत्तकः गीदड़, संस्कारः अन्त्येष्टि या और्ध्वदेहिक कृत्य, संजीवन (वि०) मुर्दों को जिलाने वाला (नम्, नी मुर्दों का पुनर्जीवित करना, (नी) मुर्दों को जिलाने का मंत्र, गंडा या तावीज, सूतकम् मरे हुए (मृत जात) बच्चे को जन्म देना,—स्नानम् किसी की मृत्यु होने पर स्नान करना ।

मृतकः, कम् [मृत+कन्] मुर्दा शव ध्रुवं ते जीवन्तोऽप्यहह मृतका मन्दमतयो, न येषामानन्दं जनयति जगन्नाथभणितिः—भामि० ४।१९,—कम् किसी संबंधी की मृत्यु हो जाने पर उत्पन्न अशौच । सम० अंतकः गीदड़ ।

मृतण्डः (पुं०) सूर्य ।

मृतालकम् [मृत+अल्+णिच्+ण्वुल्] एक प्रकार की मिट्टी, पिंडोर या चिक्कण मृत्तिका ।

मृतिः (स्त्री०) [मृ+क्तिन्] मृत्यु, मरण ।

मृत्तिका [मृद्+तिकन्+टाप्] 1. पिंडोर, मिट्टी मनु० १।१८२ 2. ताजी मिट्टी 3. एक प्रकार की गंधयुक्त मिट्टी ।

मृत्युः [मृ+त्युक्] 1. मरण जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च—भग० २।२७ 2. मृत्यु का देवता यमराज 3. ब्रह्मा का विशेषण 4. विष्णु का विशेषण 5. माया का विशेषण 6. कलि का विशेषण 7. कामदेव । सम० — तूर्यम् एक प्रकार का ढोल जो और्ध्वदेहिक संस्कार के अवसर पर बजाया जाता है,—नाशकः पारा, —पाः शिव का विशेषण,—पाशः मृत्यु या यम का फंदा —पुष्पः ईख, गन्ना, प्रतिबद्ध (वि०) मरणशील, मर्त्य —फला, —ली केला,—बीजः, बीजः बांस,—राज् (प्र०) मौतका देवता, यमराज,—लोकः 1. मुर्दों की दुनिया, यमलोक 2. भूलोक, मर्त्यलोक—तु० 'मर्त्यलोक —वञ्चनः 1. शिव का विशेषण 2. पहाड़ी कौवा, —सूतिः (स्त्री०) केकड़ी ।

मृत्युञ्जयः [मृत्यु+जि+खच, मुम्] शिव का विशेषण ।

मृत्सा, मृत्स्ना [मृद्+स (स्न)+टाप्] 1. मिट्टी, पिंडोर 2 अच्छी मिट्टी या पिंडोर, चिक्कण मिट्टी 3. एक प्रकार की गंधयुक्त मिट्टी ।

मृद् (क्र्या० पर० मृद्नाति, मृदित) 1. निचोड़ना, दबाना भींचना मम च मृदितं क्षौमं बाल्यत्वदङ्गविवर्तनैः —वेणी० ५।४० 2. कुचलना, रौंदना, टुकड़े-टुकड़े कर देना, हत्या करना, नष्ट करना, पीस देना, रगड़ देना, चकनाचूर कर देना—तानमर्दीदखादीच्च—भट्टि० १५।१५, बालान्यमृद्नान्नलिनाभवक्त्रैः रघु० १८।५ 3. मसलना, गुदगुदाना, घिसना, स्पर्श करना शि० ४।६१ 4. जीत लेना, आगे बढ़ जाना 5. पोंछ देना, रगड़ देना, हटाना, अभि , निचोड़ना, भींचना, कुचलना, अव— रौंदना, कुचलना, उप—, 1. निचोड़ना भींचना 2. नष्ट करना, मार डालना, कुचल देना —यामिकाननुपमृद्य नै० ५।११०, परि—, भींचना निचोड़ना—परिमृदितमृणाली दुर्बलान्यङ्गकानि—उत्तर० १।२४ 2. मार डालना, नष्ट करना 3. पोंछ देना, रगड़ देना, प्र : कुचलना, चकनाचूर करना, पीस देना, हत्या कर देना, वि , 1. भींचना, निचोड़ना 2. चकनाचूर करना, कुचलना, पीसना मनु० ४।७० 3. मार

डालना, नष्ट करना, सम्—, इकट्ठा कर निचोड़ना, चकनाचूर करना, पीस देना, हत्या करना।

मृद् (स्त्री०) [मृद्+क्विप्]। पिंडोर, मिट्टी, मिट्टी का गारा—आमोदं कुसुमभवं मृदेव धत्ते मृद्गंधं न हि-कुसुमानि धारयन्ति—सुभा०, प्रभवति शुचिबिम्बोद्ग्राहे मणिर्न मृदां चयः—उत्तर० २।४ 2. मिट्टी का ढेला, चिकनी मिट्टी का लौंदा 3. मिट्टी का टीला 4. एक प्रकार की सुगंधित मिट्टी। सम०—कणः मिट्टी की डली या लौंदा,—करः कुम्हार,—कांस्यम् मिट्टी का बर्तन,—गः एक प्रकार की मछली,—चयः (मृच्चयः) मिट्टी का ढेर,—पचः कुम्हार,—पात्रम्,—भाण्डम् मिट्टी का बर्तन, चिकनी मिट्टी के बने पात्र,—पिण्डः मिट्टी का लौंदा,—बुद्धिः 'आलसी' बुद्धू,—मया च मत्पिण्डबुद्धिना तथैव गृहीतम्—श० ६,—लोष्टः मिट्टी का ढेला,—शकटिका (मृच्छकटिका) मिट्टी की छोटी गाड़ी; (शूद्रक द्वारा लिखित इस नाम का एक नाटक)।

मृदङ्गः [मृद्+अंगच् किच्च] 1. एक प्रकार का ढोल या मुरज, डफली 2. बाँस। सम०—फलः कटहल का वृक्ष।

मृदर (वि०) [मृद्+अरच्] 1. क्रीडाशील, खिलाड़ी 2. क्षणभङ्गुर, क्षणिक, अस्थायी।

मृदा दे० 'मृद' (स्त्री)।

मृदित (भू० क० कृ०) [मृद्+क्त] 1. भींचा हुआ, निचोड़ा हुआ—सुरतमृदिता बालवनिता—भर्तृ० २।४४ 2. कुचला गया, पीसा गया, पीस डाला गया, रौंदा गया, मार डाला गया 3. मसल दिया गया, हटाया गया (दे० मृद्)।

मृदिनी [मृद्+क+इनि+ङीप्] अच्छी, चिकनी मिट्टी।

मृदु (वि०) (स्त्री०—दु,—द्वी) [मृद्+कु] (म० अ० म्रदीयस्, उ०अ० म्रदिष्ठ) 1. चिकना, कोमल, पतला, लचीला, सुकुमार—मृदु तीक्ष्णतरं यदुच्यते तदिदं मन्मथ दृश्यते त्वयि—मालवि० ३।२, अथवा मृदु वस्तु हिंसितुं मृदुनैवारभते प्रजान्तकः—रघु० ८।४५, ५७ श० १।१०, ४।१०, 2. कोमल, सुकुमार, नम्र—न खरो न च भूयसा मृदुः—रघु० ८।९; बाणं कृपामृदुमनाः प्रतिसंजहार—९।४७ 'दया के कारण कोमल मन वाला' ११।८३, श० ६।१ महर्षिर्मृदुतामगच्छत्—रघु० ५।५४, 'दयार्द्र' खातमूलमनिलो नदीरयैः पातयत्यपि मृदुस्तटद्रुमम्—११।७६, 'मृदु और मन्द पवन भी' 3. दुर्बल, कमज़ोर—सर्वथा मृदुरसौ राजा—हि० ३, ततस्ते मृदवोऽभूवन् गन्धर्वाः शर—पीडिताः—महा० 4. मध्यम, संयत,—दुः शनिग्रह,—दु (अव्य०) कोमलता से, मन्दस्वर में, मधुर ढंग से—स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः श० १।२३, वादयते मृदु वेणुम्—गीत० ५। सम०—अङ्ग (वि०) कोमल अंगों वाला, (—गम्) टीन, जस्त (—गी) कोमल अंगों वाली स्त्री,—उत्पलम् कोमल अर्थात् नीलकमल,—कार्ष्णायसम् सीसा, कोष्ठ (वि०) नरम कोठे वाला जिसे हलके विरेचन से दस्त आ जाय,—गमन (वि०) मन्द या अलसपूर्ण चाल वाला, (ना) हंसी, राजहंसी,—चर्मिन्,—छदः, त्वच्,—त्वचः (पुं०) एक प्रकार के भोजपत्र का वृक्ष,—पत्रः सरकंडा या नरकुल,—पर्वकः,—पर्वन् (नपुं०) नरकुल, बेंत,—पुष्पः शिरिष का वृक्ष,—पूर्व (वि०) जो आरंभ में मंद हो, स्निग्ध हो, सौम्य तथा सुहावना हो,—भाषिन् (वि०) मधुर बोलने वाला,—रोमन् (पुं०)—रोमकः खरगोश,—स्पर्श (वि०) छूने में नरम।

मृदूत्तकम् [मृद+उद्+नी+ड+कन्] सोना, स्वर्ण।

मृदुल (वि०) [मृदु+लच्] 1. स्निग्ध, कोमल, सुकुमार 2. ऋजु, सरल, साधु,—लम् 1. जल 2. अगर की लकड़ी का एक भेद।

मृद्वी, मृद्वीका [मृदु+ङीष्, पक्षे कन्+टाप् च] अंगूरों की बेल या गुच्छा—वाचं तदीयां परिपीय मृद्वीं मृद्वीकया तुल्यरसां स हंसः—नै० ३।६०, भामि० ४।१३, ३७।

मृध् (भ्वा० उभ० मर्धति-ते) गीला होना, या गीला करना।

मृधम् [मृध्+क] संग्राम, युद्ध, लड़ाई—सत्त्वविहितमतुलं भुजयोर्बलमस्य पश्यत मृधेऽधिकुप्यतः—कि० १२।३९, रघु० १३।६५, महावी० ५।१३।

मृन्मय (वि०) [मृद्+मयट्] मिट्टी का बना हुआ, रघु० ५।२।

मृश् (तुदा० पर० मृशति, मृष्ट) 1. स्पर्श करना, हाथ से पकड़ना 2. मलना, गुदगुदाना 3. सोचना, विमर्श, विचार करना, अभि—, स्पर्श करना, हाथ से पकड़ना, आ—, स्पर्श करना, हाथ लगाना, हाथ डालना (आलं० से भी); नवातपामृष्टसरोजचारुभिः—कि० ४।१४, शरासनज्यां मुहुराममर्श—कु० ३।६४; शि० ९।३४ 2. झपट्टा मारना, खा जाना—रघु० ५।९ 3. आक्रमण करना, हमला करना; आमृष्टं नः पदं परैः—कु० २।३१, परा—, 1. स्पर्श करना, मलना, गुदगुदाना; परामृशत् हर्षजडेन पाणिना तदीयमङ्गं कुलिशव्रणाङ्कितम्—रघु० ३।६८, शि० १७।११, मृच्छ० ५।२८ 2. किसी पर हाथ डालना, आक्रमण करना, हमला करना, पकड़ लेना—मृच्छ० १।३९, 3. दूषित करना, भ्रष्ट करना, बलात्कार करना, 4. विचार विमर्श करना, चिंतन करना—किं भवितेति सशङ्कं पङ्कजनयना परामृशति—भामि० २।५३ 5. मन से सोचना, प्रशंसा करना—ग्रन्थारम्भे विघ्नविघाताय समुचितेष्टदेवतां ग्रन्थकृत्परामृशति—काव्य० १, परि—, 1. स्पर्श करना, जरा छू जाना—शिखरशतैः परिमृष्टदेवलोकम्—भट्टि० १०।४५ 2. ज्ञात करना, वि—,

1. स्पर्श करना 2. चिन्तन करना, सोचना, विचार करना, मनन करना—वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वमेव संपदः कि० २।३०, रामप्रवासे व्यमृशन्न दोषं जनापवादं सनरेन्द्रमृत्युम्—भट्टि० ३।७, १२।२४, कु० ६।८७, भग० १८।६३ 3. प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, पर्यवेक्षण करना 4. परीक्षा लेना, परीक्षण करना—तदत्रभवानिमं मां च शास्त्रे प्रयोगे च विमृशतु—मालवि० १।

मृष् i (भ्वा० पर० मर्षति) छिड़कना ii (भ्वा० उभ० मर्षति–ते) बर्दाश्त करना, सहन करना–आदि (प्रायः दिवा० उभ०) iii (दिवा०, चुरा० उभ०–मृष्यति–ते, मर्षयति—ते, मर्षित) 1. झेलना, भोगना, सहन करना, साथ रहना—तत्किमिदमकार्यमनुष्ठितं दैवेन, लोको न मृष्यतीति—उत्तर० ३ रघु० ९।६२ 2. अनुमति देना, इजाजत देना 3. क्षमा करना, माफ करना, दोषमुक्त करना, क्षमाशील होना—मृष्यन्तु लवस्य बालिशतां तातपादाः—उत्तर० ६, प्रथममिति प्रेक्ष्य दुहितृजनस्यैकोऽपराधो भगवता मर्षयितव्यः—श० ४, आर्य मर्षय मर्षय- वेणी० १, महाब्राह्मण मर्षय —मृच्छ० १।

मृषा (अव्य०) [मृष्+का] मिथ्या, गलती से, असत्यता के साथ, झूठमूठ—यद्वक्त्रं मुहुरीक्षसे न धनिनां ब्रूषे न चाटुं मृषा–भर्तृ० ३।१४७, मृषाभाषासिन्धो–भामि० २।२४ 2. व्यर्थ, निष्प्रयोजन, निरर्थक। सम० —अध्यायिन् (पुं०) एक प्रकार का सारस,—अर्थक (वि०) 1. असत्य 2. बेहूदा (—कम्) असंगति, असंभावना,—उद्यम् मिथ्यात्व, झूठ, झूठी उक्ति —तत्किं मन्यसे राजपुत्रि मृषोद्यं तद्वदति उत्तर० ४, —ज्ञानम् अज्ञान, अशुद्धि, भूल,—भाषिन्,—वादिन् (पुं०) झूठा, झूठ बोलने वाला, वाच् (स्त्री०) असत्योक्ति, व्यङ्ग्योक्ति, व्यंग्यकाव्य, ताना,—वादः 1. असत्योक्ति, झूठ, मिथ्या 2. कपटपूर्ण उक्ति, चापलूसी 3. व्यंग्य, व्यंग्योक्ति।

मृषालकः [मृषा+अल+कै+क] आम का पेड़।

मृष्ट (भू० क० कृ०) [मृज्, मृश् वा+क्त] 1. स्वच्छ किया हुआ, निर्मल किया हुआ 2. लीपा हुआ 3. प्रसाधित, पकाया हुआ 4. छूआ हुआ 5. सोचा हुआ, विचारा हुआ 6. चटपटा मसालेदार, रुचिकर। सम० गन्धः चटपटी और रोचक गंध।

मृष्टिः (स्त्री०) [मृज् (मृश्)+क्तिन्] 1. स्वच्छ करना, साफ करना, निर्मल करना 2. पकाना, प्रसाधन करना, तैयारी करना 3. स्पर्श, संपर्क।

मे (भ्वा० आ० मयते, मित, इच्छा० मित्सते) विनिमय करना, अदला बदली करना, नि , विनि , विनिमय या अदला बदली करना।

मेकः [मे इति कायति शब्दं करोति मे+कै+क] बकरा।

मेकलः ('मेखलः' भी) 1. एक पहाड़ का नाम 2. बकरा। सम०—अद्रिजा, - कन्यका, - कन्या नर्मदा नदी के विशेषण।

मेखला [मीयते प्रक्षिप्यते कायमध्यभागे—मी+खल+टाप, गुणः] 1. करधनी, तगड़ी, कमरबन्द, कटिबन्ध (आलं० से भी), कोई वस्तु जो चारों ओर से लपेट सके—मही सागरमेखला 'सागरावेष्टित भूमण्डल' —रत्नानुविद्धार्णवमेखलाया दिशः सपत्नी भव दक्षिणस्याः —रघु० ६।६३, ऋतु० ६।२ 2. विशेष कर स्त्री की तगड़ी नितम्ब बिम्बैः सुदुकूलमेखलैः—ऋतु० १४; रघु० ८।६४, मेखलागुणैरुत गोत्रस्खलितेषु बन्धनम् कु० ४।८ 3. तीन लड़ों वाली मेखला जो पहले तीन वर्ण के ब्रह्मचारियों द्वारा पहनी जाती है—तु० मनु० २।४२ 4. पहाड़ का ढलान,–आमेखलं संचरतां घनानाम् कु० १।५, मेघ० १२ 5. कूल्हा 6. तलवार की मूठ 7. तलवार की मूठ में बंधी हुई डोरी की गांठ 8. घोड़े की तंग 9. नर्मदा नदी का नाम। सम० पदम् कूल्हा, बन्धः कटिसूत्र धारण करना।

मेखलालः [मेखला+अल्+अच्] शिव का विशेषण।

मेखलिन् (पुं०) [मेखला+इनि] 1. शिव का विशेषण 2. धर्मशिक्षा ग्रहण करने वाला ब्रह्मचारी।

मेघः [मेहति वर्षति जलम्, मिह्+घञ्, कुत्वम्] 1. बादल,- -, कुर्वन्नञ्जनमेचका इव दिशो मेघः समुत्तिष्ठते मृच्छ० ५।२३, २, ३ आदि 2. ढेर, समुच्चय 3. सुगन्धित घास घन् सेलखड़ी। सम०- अध्वन् (पुं०)–पथः,–मार्गः 'बादलों का मार्ग' अन्तरिक्ष,–अन्तः शरद् ऋतु,—अरिः वायु, अस्थि (नपुं०) ओला —आख्यम् सेलखड़ी,—आगमः बारिश का आना, बरसात, आटोपः सघन मोटा बादल, आडम्बरः मेघों की गर्जन,—आनन्दा एक प्रकार का सारस, आनन्दिन् (पुं०) मोर,—आलोकः बादलों का दिखाई देना मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः—मेघ० ३, आस्पदम् आकाश, अन्तरिक्ष,—उदकम् वृष्टि,—उदयः बादलों का घिर आना, कफः ओला, कालः वृष्टि, वर्षा ऋतु,—गर्जनम्, गर्जना चिंतकः चातक पक्षी, जः बड़ा मोती, जालम् 1. बादलों के सघन समूह 2. सेलखड़ी,—जीवकः, —जीवनः चातक पक्षी, ज्योतिस् (पुं०, नपुं०) बिजली, डम्बर बादलों की गरज,- दीपः बिजली, द्वारम् आकाश, अन्तरिक्ष, नादः 1. बादलों की गरज, गड़गड़ाहट 2. वरुण का विशेषण 3. रावण के पुत्र इन्द्रजित् का विशेषण °अनुलासिन्, °अनुलासकः मोर, °जित् (पुं०) लक्ष्मण का विशेषण, –निर्घोषः

बादलों की गरज, पंक्तिः, माला बादलों की श्रेणी, पुष्पम् 1. पानी 2. ओला 3. नदियों का पानी, -- प्रसवः पानी, भूतिः वज्र, मण्डलम् अन्तरिक्ष, आकाश, मालः, मालिन् (वि०) बादलों से घिरा हुआ, योनिः धुंध, धूआँ,—रवः गरज,—वर्णा नील का पौधा, वर्त्मन् (नपुं०) अन्तरिक्ष, वह्निः बिजली, वाहनः 1. इन्द्र का विशेषण श्रयति स्म मेघामिव मेघवाहनः शि० १३।१८ 2. शिव का विशेषण, —विस्फूर्जितम् 1. गरज, बादलों की गड़गड़ाहट 2. एक छन्द का नाम . दे० परि० १,—वेश्मन् (नपुं०) अन्तरिक्ष, सारः एक प्रकार का कपूर, सुहृद् (पुं०) मोर, स्तनितम् गरज।

मेघङ्कर (वि०) [मेघं करोतीति कृ+अच्] बादलों को पैदा करने वाला।

मेचक (वि०) [मच्+वुन्, इत् च] काला, गहरानीला, काले रंग का —कुर्वन्नञ्जनमेचका इव दिशो मेघः समुत्तिष्ठते मृच्छ० ५।२३, उत्तर० ६।२५, मेघ० ५९, --कः। कालिमा, गहरा नीला वर्ण 2. मोर की पूंछ (पंख) की आँख (चंदा) 3. बादल 4. धूआँ 5. चुचुक 6. एक प्रकार का रत्न,—कम् अंधकार। सम० आपगा यमुना का विशेषण।

मेट्, मेड् (भ्वा० पर मेटति, मेडति) पागल होना।

मेटुला आँवले का पेड़।

मेठः 1. मेष 2. हाथी का रखवाला, महावत।

मेठिः, मेथिः 1. खंभा, स्थाणु 2. खलिहान में गड़ा हुआ खंभा जिससे बैल बांधे जाते हैं 3 गाय भैंस आदि बांधने का खूंटा 4. गाड़ी के बम को सहारने के लिए बल्ली।

मेढ्रः [मिह्+ष्ट्रन्] मेंढा, मेष, - ढ्रम् पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग —(यस्य) मेढ्रं चोन्मादशुक्राभ्यां हीनं क्लीबः स उच्यते। सम० चर्मन् (नपुं०) लिंग की सुपाड़ी का चमड़ा,—जः शिव का विशेषण,—रोगः लिंग संबंधी रोग।

मेढ्रकः [मेढ्र+कन्] 1. भुजा 2. लिंग, पुरुष की जननेन्द्रिय।

मेण्ठः, मेण्डः हाथी का रखवाला, महावत।

मेंढ्रः, मेढ्रकः मेष, मेंढा।

मेंढ्र दे० मेढ्र।

मेथ् (भ्वा० उभ० मेथति --ते) 1. मिलना 2. एक दूसरे से मिलन होना (आ०) 2. बुरा भला कहना 4. जानना, समझाना 5. चोट मारना, क्षति पहुँचाना, जान से मार डालना।

मेथिका, मेथिनी [मेथ्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, मेथ+णिनि +ङीप्] एक प्रकार का घास, मेथी।

मेदः [मेदते स्निह्यति—मिद्+अच्] 1. चर्बी 2. एक विशेष प्रकार की वर्णसंकर जाति 3. एक नाग राक्षस का नाम। सम० -जम् एक प्रकार का गूगल,—भिल्लः एक पतित जाति का नाम।

मेदकः [मिद्+ण्वुल्] अर्क जो शराब खींचने के काम आता है।

मेदस् (नपुं०) [मेदते स्निह्यति मिद्+असुन्] 1. चर्बी वसा (शरीर के सात धातुओं में से एक जिसका पेट में विद्यमान होना माना जाता है) मनु० ३।१८२, याज्ञ० १।४४ 2. मांसलता, शरीर का मोटापा—मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः—श० २।५। सम० —अर्बुदम् एक मोटी रसौली,—कृत् (पुं०, नपुं०) मांस,—ग्रन्थिः मेद युक्त गांठ या रसौली,—जम्,—तेजस् (नपुं०) हड्डी,—पिण्डः, चर्बी का डला,—वृद्धिः (स्त्री०) 1. चर्बी की वृद्धिः, मोटापा 2. फोतों का बढ़ जाना।

मेदस्विन् (वि०) [मेदस्+विनि] 1. मोटा, स्थूलकाय 2. मजबूत, हृष्टपुष्ट शि० ५।६४।

मेदिनी [मेद+इनि+ङीप्]। पृथ्वी—न मामवति सद्वीपा रत्नसूरपि मेदिनी—रघु० १।६५, वज्ज्वलं वसु नितान्तमुन्नता मेदिनीमपि हरन्त्यरातयः—कि० १३।५३ 2. जमीन, भूमि, मिट्टी 3. स्थान, जगह 4. एक कोश का नाम। सम०—ईशः—पतिः राजा,— द्रवः धूल।

मेदुर (वि०) [मिद्+घुरच्] 1. मोटा 2. चिकना, स्निग्ध मृदु 3. ठोस, सघन --मा० ८।११, फूला हुआ, भरा हुआ, ढका हुआ (प्राय करण० के साथ या समास के अन्त में)—मेघैर्मेदुरमम्बरम्—गीत० १, मकरन्दसुन्दरगलन्मन्दाकिनीमेदुरं (पदारविंदम्)—७।

मेदुरित (वि०) [मेदुर+इतच्] मोटा, फुलाया हुआ, सघन किया हुआ—उत्तर० १।

मेद्य (वि०) [मेद+यत्] 1. चर्बीयुक्त 2. सघन, मोटा।

मेध् (भ्वा० उभ० दे० 'मेथ्'।

मेधः [मेध्यते हन्यते पशुः अत्र—मेध्+घञ्] 1. यज्ञ जैसा कि 'नरमेध' में 2. यज्ञीय पशु, यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु। सम०—जः विष्णु का विशेषण।

मेधा [मेध्+अङ्+टाप्] (ब० स० में सु, दुस्, तथा नकारात्मक अ पूर्व आने पर मेधा का बदल कर 'मेधस्' रूप रह जाता है) 1. धारणात्मक शक्ति, (स्मरण शक्ति की) धारणाशक्ति--धीर्धारणावती मेधा - अमर० 2. प्रज्ञा. बुद्धि—भग० १०।३४, मनु० ३।२६३, याज्ञ० ३।१७४ 3. सरस्वती का एक रूप 4. यज्ञ। सम०—अतिथिः मनुस्मृति का एक विद्वान् भाष्यकार,— रुद्रः कालिदास का विशेषण।

मेधावत् (वि०) [मेधा+मतुप्, वत्वम्] बुद्धिमान्, समझदार।

मेधाविन् (वि०) [मेधा+विनि] 1. बहुत समझदार, अच्छी स्मरणशक्ति वाला 2. बुद्धिमान्, समझदार, प्रज्ञावान्—पुं० 1. विद्वान् पुरुष, ऋषि, विद्यासंपन्न 2. तोता 3. मादक पेय।

मेषि दे० 'मेधि' ।

मेध्य (वि०) [मिध्+ण्यत् मेधाय हितं यत् वा] 1. यज्ञ के लिए उपयुक्त—याज्ञ० १।१९४; मनु० ५।५४ 2. यज्ञ संबंधी, यज्ञीय—मेध्येनाश्वेनेजे, रघु० १३।५, 3. विशुद्ध, पुण्यशील, पवित्रात्मा; रघु० १।८४, ३।३१, १४।८१,—ध्यः 1. बकरा 2. खैर का पेड़ 3. जौ (मेदिनी के अनुसार), —ध्या कुछ पौधों के नाम ।

मेनका [मन्+वुन् अकारस्य एत्वम्] 1. एक अप्सरा (शकुन्तला की माता) का नाम 2. हिमालय की पत्नी का नाम । सम०—आत्मजा पार्वती का नाम ।

मेना [मान+इनच्, नि० साधुः] 1. हिमालय की पत्नी का नाम—मेनां मुनीनामपि माननीयां (उपयेमे) कु० १।१८, ५।५ 2. एक नदी का नाम ।

मेनादः [मे इति नादोऽस्य] 1. मोर 2. बिलाव 3. बकरा ।

मेन्धिका, मेधी (स्त्री०) एक पौधा जिसे महंदी कहते हैं (इसके पत्तों से लाल सा रंग निकाला जाता है, जिससे कि अंगुलियों के नाखून, पैरों के तले तथा हाथ की हथेलियाँ रंगी जाती हैं) ।

मेप् (भ्वा० आ० मेपते) जाना, हिलना-जुलना ।

मेय (वि०) [मा (मि)+यत्] 1. नापने योग्य, जो नापा जा सके 2. जिसका अनुमान लगाया जा सके 3. पहचाने जाने के योग्य, ज्ञेय, जो जाना जा सके ।

मेरुः [मि+रु] उपाख्यानों में वर्णित एक पर्वत का नाम (ऐसा माना जाता है कि समस्त ग्रह इसके चारों ओर घूमते हैं, यह भी कहते हैं कि मेरु सोने और रत्नों से भरा हुआ है)—विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृतः —नै० १।१६, स्वात्मन्येव समाप्तहेममहिमा मेरुर्न मे रोचते—भर्तृ० ३।१५१ 2. रुद्राक्षमाला के बीच का गुरिया 3. हार के बीच की मणि । सम०—धामन् (पुं०) शिव का विशेषण,—यन्त्रम् तकुवे के आकार की बनी एक आकृति ।

मेरुकः [मेरु+कन्] धूप, धूनी ।

मेलः [मिल्+घञ्] मिलाप, एकता, संलाप, समवाय, सभा ('मेलक' भी) ।

मेलनम् [मिल्+णिच्+ल्युट्] 1. एकता, संयोग 2. समाज 3. मिश्रण ।

मेला [मिल्+णिच्+अच्+टाप्] 1. मिलना, समागम 2. समवाय, सभा, समाज 3. सुर्मा 4. नील का पौधा 5. स्याही, मसी 6. संगीत की माप, स्वरग्राम । सम०—अन्धुकः,—अम्बुः—मन्दः,—नन्दा—मन्दा कलम दान, दवात ।

मेव् (भ्वा० आ० मेवते) पूजा करना, सेवा करना, टहल करना ।

मेषः [मिषति अन्योऽन्यं स्पर्धते—मिष्+अच्] 1. मेढ़ा, भेड़ 2. मेष राशि । सम०—अण्डः इन्द्र का विशेषण, —कम्बलः एक ऊनी कंबल या धुस्सा, —पालः,—पालकः गडरिया, —मांसम् भेड़ या बकरे का मांस,—यूथम् भेड़ों का रेवड़ ।

मेषा [मिष्यतेऽसौ मिष्+घञ्+टाप्] छोटी इलायची ।

मेषिका, मेषी [मेष+कन्+टाप्, इत्वम्, मेष+ङीप्] भेड़ (मादा) ।

मेहः [मिह्+घञ्] 1. लघुशंका करना, मूत्र करना 2. मूत्र 3. मूत्र संबंधी रोग 4. मेंढा 5. बकरा । सम०—घ्नी हल्दी ।

मेहनम् [मिह्+ल्युट्] 1. मूत्रोत्सर्ग करना 2. मूत्र 3. लिंग ।

मैत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [मित्र+अण्] 1. मित्रसंबंधी 2. मित्र द्वारा दिया गया 3. दोस्ताना, कृपापूर्ण, सौहार्दपूर्ण, कृपालु मनु० २।८७, भग० १२।१३ 4. मित्र नाम के देवता से संबंध रखने वाला (जैसा कि 'मुहूर्त') कु० ७।६, —त्रः 1. ऊँचा या पूर्ण ब्राह्मण 2. एक विशेष वर्णसंकर जाति मनु० १०। २३ 3. गुदा, —त्री 1. मित्रता, दोस्ती, सद्भाव 2. घनिष्ठ संबंध या साहचर्य, मिलाप, संपर्क—प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः मेघ० ३१ 3. अनुराधा नाम का नक्षत्र, —त्रम् 1. मित्रता, दोस्ती 2. मलोत्सर्ग करना—मनु० ४।१५२ 3. अनुराधा नाम का नक्षत्र, (इसी अर्थ में 'मैत्रभम्' शब्द भी) ।

मैत्रकम् [मैत्र+कन्] मित्रता, दोस्ती ।

मैत्रावरुणः [मित्रश्च वरुणश्च—द्व० स०, मित्रस्यानङ्; मित्रावरुण+अण्] 1. वाल्मीकि का विशेषण 2. अगस्त्य का विशेषण 3. यज्ञ के प्रतिनिधि ऋत्विजों में से एक ।

मैत्रावरुणिः [मित्रावरुण+इञ्] 1. अगस्त्य का विशेषण 2. वशिष्ठ का विशेषण 3. वाल्मीकि का विशेषण ।

मैत्रेय (वि०) (स्त्री०—यी) [मैत्रे मित्रतायां साधुः, मैत्र+ढञ्] दोस्त या मित्र से संबंध रखने वाला, दोस्ताना,—यः एक वर्णसंकर जाति का नाम ।

मैत्रेयकः [मैत्रेय+कन्] एक वर्णसंकर जाति का नाम मनु० १०।३३ ।

मैत्रेयिका [मैत्रेयक+टाप्, इत्वम्] मित्रों या मित्रराष्ट्रों में संघर्ष, मित्रयुद्ध ।

मैत्र्यम् [मित्र+ष्यञ्] मित्रता, दोस्ती, मैत्री ।

मैथिलः [मिथिलायां भवः—अण्] मिथिला का राजा रघु० ११।३२, ४८,—ली सीता का नाम—रघु० १२।२९ ।

मैथुन (वि०) (स्त्री०—नी) [मिथुनेन निर्वृत्तम्—अण्] 1. युग्ममय, जुड़ा हुआ 2. विवाहसूत्र में आबद्ध 3. संभोग से संबन्ध रखने वाला,—नम् 1. रति क्रीडा,

संभोग,—गूतं मैथुनमप्रजम्—पंच० २।९४ 2. विवाह 3. मिलाप, संयोग। सम०—ज्वरः मैथुनोन्माद की उत्तेजना,—धर्मिन् (वि०) सहवासी,—वैराग्यम् स्त्री-संभोग से विरक्त।

मैथुनिका [मैथुन+वुन्+टाप्, इत्वम्] विवाह द्वारा मिलाप, वैवाहिक गठबंधन।

मैधावकम् (नपुं०) समझ, बुद्धि।

मैनाकः [मेनकायां भवः अण्] हिमालय और मेना के पुत्र (एक पर्वत) का नाम, यही एक ऐसा पर्वत था जिसके डैने समुद्र से मित्रता होने के कारण अक्षुण्ण रहे जबकि इन्द्र ने और दूसरे पर्वतों के बाजू काट डाले। तु० कु० १।२०। सम—स्वसृ (स्त्री) पार्वती का विशेषण।

मैनालः (पुं०) मछुवा, माहीगीर।

मैन्दः (पुं०) एक राक्षस का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मार गिराया था। सम०—हन् (पुं०) कृष्ण का विशेषण।

मैरेयः,–यम्, मैरेयकः,–कम् [मिरा देशभेदे भवः—ढक्] एक प्रकार का मादक पेय—अधिरजनि वधूभिः पीत-मैरेयरिक्तम् शि० ११।५१, गंगा० ३४।

मैलिन्दः [मिलिंद+अण्] मधुमक्खी, भौंरा।

मोकम् (नपुं०) किसी जानवर की उतरी हुई खाल।

मोक्ष् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० मोक्षति, मोक्षयति-ते) 1. छोड़ना, स्वतंत्र करना, मुक्त करना, मुक्ति देना 2. ढीला करना, खोलना, बिगाड़ना 3. बलपूर्वक छीनना 4. डालना, फेंकना, उछालना 5. ढलकाना।

मोक्षः [मोक्ष्+घञ्] 1. मुक्ति, छुटकारा, बचाव, स्वतंत्रता—साऽधुना तव वन्धे मोक्षे च प्रभवति—का०; मेघ० ६१, लब्धमोक्षाः शुकादयः—रघु० १७।२० धुर्याणां च धुरो मोक्षम्—१७।१९, 2. उद्धार, परित्राण, मोचन 3. परममुक्ति, आवागमन अर्थात् पुनर्जन्म के चक्कर से आत्मा की मुक्ति, मानवजीवन के चार उद्देश्यों में से अन्तिम दे० अर्थ, भग० ५।२८, १८।३०, रघु० १०।८४, मनु० ६।३५ 4. मृत्यु, 5. अधःपतन, अवपतन, गिरना वनस्थलीर्मर्मरपत्र-मोक्षाः—कु० ३।३१ 6. ढीला करना, खोलना, बन्धन-मुक्त करना—वेणिमोक्षोत्सुकानि—मेघ० ९९ 7. ढलकाना, गिराना, बहाना वाष्पमोक्ष, अश्रुमोक्ष 8. निशाना लगाना, फेंकना, दागना बाणमोक्षः—श० ३।५ 9. बखेरना, छितराना 10. (किसी ऋण आदि का) परिशोध करना 11. (ज्योतिष में) ग्रहणग्रस्त ग्रह की मुक्ति। सम०—उपायः मोक्ष प्राप्त करने का साधन,—देवः चाहिः चीनी यात्री ह्यूनतसांग के साथ व्यवहृत होने वाला विशेषण,—द्वारम् सूर्य,—पुरी कांची नामक नगरी का विशेषण।

मोक्षणम् [मोक्ष+ल्युट्] 1. छोड़ना, मुक्त करना, परम मुक्ति, स्वतंत्रता देना 2. उद्धार, छुटकारा 3. ढीला करना, खोलना 4. छोड़ना, परित्याग करना, त्याग देना 5. ढरकारना 6. अपव्यय करना।

मोघ (वि०) [मुह्+घ अच् वा, कुत्वम्] 1. व्यर्थ, अर्थ-हीन, निष्फल, लाभरहित असफल—याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा—मेघ०६, मोघवृत्ति कलभस्य चेष्टितम्—रघु० ११।३९, १४।६५, भग० ९।१२ 2. निरुद्देश्य, निष्प्रयोजन, अनिश्चित 3. छोड़ा गया परित्यक्त 4. आलसी,—घः बाड़, घेरा, झाड़बन्दी,—घम् (अव्य०) व्यर्थ, विना किसी प्रयोजन के, विना किसी उपयोग के। सम०—कर्मन् (वि०) अनुपयुक्त कार्यों में व्यस्त,—पुष्पा वांझ स्त्री।

मोघोलिः झाड़बन्दी, बाड़।

मोचः [मुच्+अच्] 1. केले का पौधा 2. शोभाञ्जन या सोहञ्जने का पेड़,—चा 1. केले का वृक्ष 2. कपास का पौधा 3. नील का पौधा,—चम् केले का फल।

मोचकः [मुच्+ण्वुल्] 1. भक्त, संन्यासी 2 परममुक्ति, छुटकारा 3. केले का पौधा।

मोचन (वि०) (स्त्री०–नी) [मुच्+ल्युट्] छोड़ने वाला, स्वतन्त्र करने वाला,—नम् 1. छोड़ना, मुक्त करना, स्वतन्त्र करना, मोक्ष 2. जूआ उतारना 3. निर्वहण करना, उत्सर्जन करना 4. किसी कर्तव्यभार या ऋण का परिशोध करना। सम०—पट्टकः छन्ना, (कपड़ा जिससे दूध जल आदि छाना जाय)।

मोचयितृ (वि०) [मुच्+णिच्+तृच्] छुड़ाने वाला, स्वतन्त्र करने वाला।

मोचाटः [मुच्+णिच्+अच्=मोच+अट्+अच्] 1. केले का गूदा या फल 2. चन्दन की लकड़ी।

मोटकः,–कम् [मुट्+ण्वुल्] वटी, गोली,—कम् कुश घास की दो पत्तियाँ जो श्राद्ध के अवसर पर दी जाती हैं, (भग्नकुशपत्रद्वयम्)।

मोट्टायितम् [मुट्+घञ् वा० तुक्,+क्यङ्+(भावे)क्त] जब कभी बातचीत चलती है या अन्यमनस्का होकर नायिका कान आदि कुरेदती है तो उस समय चुप-चाप विना इच्छा के अपने प्रिय के प्रति स्नेह की अभिव्यक्ति। उज्ज्वल मणि ने इसकी परिभाषा दी है:—कान्तस्मरणवार्तादौ हृदि तद्भावभावितः। प्राकट्यमभिलाषस्य मोट्टायितमुदीर्यते॥ दे० सा० द० १४१ भी।

मोदः [मुद्+घञ्] 1. आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष, खुशी यत्रानन्दाश्च मोदाश्च—उत्तर० २।१२, रघु० ५।१५ 2. गंधद्रव्य, सुगंधि। सम०—आख्यः आम का पेड़।

मोदक (वि०) (स्त्री०–का,–की) [मोदयति-मुद्+णिच्+ण्वुल्] सुहावना, आनंदप्रद, प्रसन्नतादायक,—कः,–

—कम् मिठाई, लड्डू—याज्ञ० १।२८९,—कः एक वर्ण संकर जाति (क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से उत्पन्न)।

मोदनम् [मुद्+ल्युट्] 1. हर्ष, प्रसन्नता 2. प्रसन्न करने की क्रिया 3. मोम।

मोदयन्तिका, न्मोदयन्ती[मुद्+णिच्+शतृ+ङीप्=मोदयन्ती+कन्+टाप्, ह्रस्व] एक प्रकार की चमेली।

मोदिन् (वि०) [मुद्+णिनि] 1. प्रसन्न, सुखी, खुश 2. प्रसन्नता-दायक, आनन्दप्रद, -नी 1. नाना प्रकार (अमोद, मल्लिका, जूही) के पौधों के नाम 2. कस्तूरी 3. मादक या खींची हुई शराब।

मोरटः [मुर्+अटन्] 1. मीठे रस वाला एक पौधा 2. ताज़ी ब्याई गाय का दूध,—टम् गन्ने की जड़।

मोषः [मुष्+घञ्] 1. चोर, लुटेरा 2. चोरी, लूट 3. लूटखसोट, चोरी, उठा ले जाना, हटाना (आल० से भी)—न पुष्पमोषमर्हत्युद्यानलता—मृच्छ० १, दृष्टिमोषे प्रदोषे—गीत० ११ 4. चुराई हुई संपत्ति। सम० -कृत् (पुं०) चोर।

मोषकः [मुष्+ण्वुल्] लुटेरा, चोर।

मोषणम् [मुष्+ल्युट्] 1. लूटना, खसोटना, चोरी करना, ठगना 2. काटना, 3. नष्ट करना।

मोषा [मुष्+अ+टाप्] चोरी, लूट।

मोहः [मुह्+घञ्] 1. चेतना की हानि, मूर्छित होना, निःसंज्ञा, बेहोशी—मोहेनान्तर्वरतनुरियं लक्ष्यते मुच्यमाना—विक्रम० १।८, कु० ३।७३ 2. घबराहट, व्यामोह, उद्विग्नता, अव्यवस्था—यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव—भग० ४।३५ 3. मूर्खता, अज्ञान, दीवानापन—तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्—रघु० १।२, श० ७।२५ 4. त्रुटि, भूल, अशुद्धि 5. आश्चर्य, अचम्भा 6. कष्ट, पीड़ा 7. जादू की कला जो शत्रु को परास्त करने में प्रयुक्त की जाय 8. (दर्शन० में) व्यामोह जो सत्य को पहचानने में अवरोधक है, (इसके अनुसार मनुष्य को सांसारिक पदार्थों की वास्तविकता में विश्वास होता है, और वह विषय सुखों से तृप्ति करने का अभ्यस्त हो जाता है)। सम० —कलिल मोटा और व्यामोहक जाल, -निद्रा अन्धविश्वास, -मन्त्रः व्यामोहक जादू,—रात्रिः (स्त्री०) प्रलय की रात जब कि समस्त विश्व नष्ट हो जायगा, —शास्त्रम् मिथ्या सिद्धान्त या गुरु।

मोहन (वि०) (स्त्री०-नी) [मुह्+णिच्+ल्युट्] 1. जडीभूत करने वाला 2. व्याकुल करने वाला, उद्विग्न करने वाला, विह्वल करने वाला 3. व्यामोहक, संभ्रामक 4. आकर्षक, —नः 1. शिव का विशेषण 2. काम के पांच बाणों में से एक धतूरा, —नम् 1. जड़ीभूत करना 2. सुस्त करना, घबरा देना, विह्वल करना, 3. जडता, बेहोशी 4. दीवानापन, व्यामोह, ग़लती 5. फुसलाना, प्रलोभन करने के लिये जादू-टोना। सम०—अस्त्रम् एक ऐसा आयुध-अस्त्र जो उस व्यक्ति को जिस पर कि चलाया जाय, मुग्ध कर ले।

मोहनकः [मोहन+के+क] चैत्र का महीना।

मोहित (भू० क० कृ०) [मुह्+क्त] 1. जडीभूत किया हुआ 2. घबराया हुआ, विह्वल 3. व्यामुग्ध, आकृष्ट, मुग्ध किया हुआ, फुसलाया हुआ।

मोहिनी [मुह्+णिच्+णिनी+ङीप्] 1. एक अप्सरा का नाम 2. मनोहारिणी स्त्री (अमृत बांटते समय राक्षसों को ठगने में विष्णु ने यही रूप धारण किया था) 3. एक प्रकार का चमेली का फूल।

मौक (कु) लिः (पुं०) कौवा—उत्तर० २।२९।

मौक्तिकम् [मुक्तैव स्वार्थे ठक्] मोती—मौक्तिकं न गजे गजे—सुभा०। सम०—आवली मोतियों की लड़ी —गुम्फिका मोती की मालाएँ गूंथने वाली स्त्री,—दामन् (नपुं०) मोतियों की लड़ी—प्रसवा मोतियों को जन्म देने वाली सीपी,—शुक्ति (स्त्री०) मोतियों की सीपी,—सरः मोतियों की लड़ी, या हार।

मौक्यम् [मूक+ष्यञ्] गूंगापन, मूकता, मौन।

मौखरिः [मुखर+इञ्] एक कुल का नाम—पदे पदे मौखरिभिः कृतार्चनम्—का०।

मौखर्यम् [मुखरस्य भावः ष्यञ्] 1. वातूनीपना, बहुभाषिता 2. गाली, मानहानि, झूठा आरोप।

मौख्यम् [मुख+ष्यञ्] पूर्ववर्तिता, वरिष्ठता।

मौग्ध्यम् [मुग्ध+ष्यञ्] 1. मूर्खता, मूढता 2. कलाहीनता सरलता, भोलापन 3. लावण्य, सौन्दर्य।

मौचम् [मोच+अण्] केले का फल।

मौज (वि०) (स्त्री० —जी) [मुंज+अण्] मूंज की घास का बना हुआ,—जः मूंज की घास का पत्ता।

मौञ्जी [मौञ्ज+ङीप्] मूंज की घास की तीन लड़की बनी, ब्राह्मण की तगड़ी—कु० ५।१०, मनु० २।४२। सम०—निबन्धनम्,—बन्धनम् मूंज की घास का बना कटिसूत्र पहनना, उपनयन संस्कार,—मनु० २।२७,१६९।

मौढ्यम् [मूढ+ष्यञ्] 1. अज्ञान, जड़ता, मूर्खता 2. लड़कपन।

मौत्रम् [मूत्रस्येदम्—अण्] मूत्र की मात्रा।

मौदकिकः [मोदक+ठक्] हलवाई।

मौद्गलिः [मुद्गल+इञ्] कौवा।

मौद्गीन (वि०) [मुद्ग+खञ्] (खेत) जो लोबिया (मूंग) बोने के उपयुक्त हो।

मौनम् [मुनेर्भावः—अण्] चुप्पी, मूकभाव; —मौनं सर्वार्थसाधनम्, -मौनं त्यज 'होठ हिलाओ' —मौनं समाचर 'जीभ को ताला लगाओ'। सम०—मुद्रा मौन धारण की अभिरुचि,—व्रतम् चुप रहने की प्रतिज्ञा।

मौनिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [मौन+इनि] चुप रहने की प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, चुप, मूक,—भग० १२।१९—पुं० एक पुण्यशील ऋषि, संन्यासी, साधु।

मौरजिकः [मुरज+ठक्] मृदंग बजाने वाला।

मौर्ख्यम् [मूर्ख+ष्यञ्] मूर्खता, बुद्धूपन, जड़ता।

मौर्यः [मुराया अपत्यम्— मुरा+ण्य] चन्द्रगुप्त से आरंभ करके राजाओं का एक वंश मौर्ये नवे राजनि —मुद्रा० ४।१५, मौर्यैर्हिरण्यार्थिभिरर्चाः प्रकल्पिताः —महा० (इस संदर्भ में 'मौर्य शब्द के अर्थ में विद्वानों में मतविभिन्नता है)।

मौर्वी [मूर्वाया विकारः अण्+ङीप्] 1. धनुष की डोरी —मौर्वीकिणाङ्को भुजः— श० १।१३, मौर्वी धनुषि चातता— रघु० १।१९, १८।४८, कु० ३।५५ 2. मूर्वा घास की बनी तगड़ी (क्षत्रियों के धारण किये जाने योग्य मनु० २।४२।

मौल (वि०) (स्त्री०—,ला—ली) [मूलं वेत्ति मूलादागतो वा अण्] 1. मूलभूत, मौलिक 2. प्राचीन, पुराना, (प्रथा आदि) बहुत समय से चली आती हुई 3. सत्कुलोद्भव, उच्च कुल में उत्पन्न 4. पीढ़ियों से राजा की सेवा में पला हुआ, प्राचीन काल से पदारूढ़, आनुवंशिक—मनु० ७।५४, रघु० १९।५७,—लः पुराना या वंशक्रमागत मंत्री,—रघु० १२।१२, १४।१०, १८।३८।

मौलि (वि०) [मूलस्यादूरभवः इञ्] प्रधान, प्रमुख, सर्वोत्तम—अखिलपरिमलानां मौलिना सौरभेण, भामि० १।१२१,—लिः 1. प्रधान, शिरोमणि—मौली वा रचयाञ्जलिम्— वेणी० ३।४०, रघु० १३।५९, कु० ५।७९ 2. किसी वस्तु का सिर या चोटी, उच्चतम बिन्दु, उत्तर० २।३० 3. अशोकवृक्ष, —लिः (पुं० या स्त्री०) 1. ताज, किरीट, मुकुट—भामि० १।७३ 2. सिर की चोटी के बाल, शिखा— जटामौलि—कु० २।२६ (जटाजूट - मल्लि०) 3. मींढी, केशविन्यास —वेणी० ६।३४, लिः—ली (स्त्री०) पृथ्वी। सम० **मणिः,—रत्नम्** मुकुट की मणि, मुकुट में लगा रत्न, —**मण्डनम्** शिरोभूषण,—**मुकुटम्** ताज, किरीट।

मौलिक (वि०) (स्त्री०— की) [मूल+ठञ्] 1. मूलभूत 2. मुख्य, प्रधान 3. घटिया।

मौल्यम् [मूल्य+अण्] मूल्य, कीमत।

मौष्टा [मुष्टि प्रहरणं अस्यां क्रीडायाम्—मुष्टि+ण] मुक्के बाजी, घूंसे बाजी, मुष्टामुष्टि मुठभेड़।

मौष्टिकः [मुष्टि+ठक्] बदमाश, ठग, धूर्त।

मौसल (वि०) (स्त्री० —ली) [मुसल+अण्] 1. मुद्गर की भांति बना हुआ, मूसल के आकार का 2. (युद्ध आदि) जो गदाओं से लड़ा जाय 3. (पर्व आदि) जो गदा युद्ध से संबद्ध हो।

मौहूर्तः, मौहूर्तिकः [मुहूर्त+अण्, ठक् वा] ज्योतिषी।

म्ना (भ्वा० पर० मनति, म्नात) 1. (मन में) दोहराना 2. परिश्रम पूर्वक याद करना 3. स्मरण करना, आ—, 1. सोचना, मनन करना—पादाम्बुजद्वयमनारतमामनन्त —भामि० ४।०२ 2. परंपरानुसार दे देना, निर्धारित करना, उल्लेख करना, सोचना, बोलना—त्वामामनन्ति प्रकृतिं पुरुषार्थप्रवर्तिनीम्— कु० २।१३, ५।८१, ६।३१ 3. अध्ययन करना, सीखना, याद करना — यद्ब्रह्म सम्यगाम्नातम्—कु० ६।१६; भट्टि० १७। ३०; **समा**—, 1. आवृत्ति करना 2. निर्धारित करना, निश्चित करना, - तं हि धर्मसूत्रकाराः समामनन्ति—उत्तर० ४।

म्नात (भ० क० कृ०) [म्ना+क्त] 1. दोहराया गया 2. याद किया गया, अध्ययन किया गया।

म्रक्ष् (भ्वा० पर० म्रक्षति) 1. रगड़ना 2. ढेर लगाना, संचय करना, इकट्ठा करना 3. लेप करना, रगड़ना, मलना 4. मिश्रण करना, मिलाना।

म्रक्षः [म्रक्ष्+घञ्] पाखंड, कपटाचरण।

म्रक्षणम् [म्रक्ष्+ल्युट्] 1. शरीर पर उबटन मलना 2. लेप करना, सानना 3. संचय करना, ढेर लगाना 4. तेल, मल्हम।

म्रद् (भ्वा० आ०—म्रदते—प्रेर० म्रदयति - ते) पीसना, चूरा करना, कुचलना, रौंदना।

म्रदिमन् (पुं०) [मृदोर्भावः इमनिच्] 1. कोमलता, मृदुता, 2. ऋजुता, दुर्बलता, (स्वर्भानुः)— हिमांशुमाशु ग्रसते तन्म्रदिम्नः स्फुटं फलम्—शि० २।४९।

म्रुञ्च् (भ्वा० पर० म्रोचति) जाना, हिलना-जुलना।

म्रुञ्च् (भ्वा० पर० म्रुंचति) जाना, हिलना-जुलना।

म्लक्ष् चुरा० उभ० म्लक्षयति—ते काटना, विभक्त करना।

म्लात (भू० क० कृ०) [म्लै+क्त] मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ।

म्लान (भू० क० कृ०) [म्लै+क्त क्तस्य नः] 1. मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ 2. क्लांत, थका हुआ, निढाल 3. निर्मलीकृत, क्षीण, दुर्बल, कृश 4. उदास, खिन्न अवसन्न 5. गन्दा, मलिन। सम०—**अङ्ग** (वि०) क्षीणकाय (—गी) रजस्वला स्त्री,—**मनस्** (वि०) उदास मन वाला, उत्साहहीन, हताश।

म्लानिः (स्त्री०) [म्लै+क्तिन्] 1. मुर्झाना, कुम्हलाना, ह्रास 2. क्लान्ति, शैथिल्य, थकान 3. उदासी, खिन्नता 4. गंदगी।

म्लायत्,—म्लायिन् (वि०) [म्लै+शतृ, णिनि वा] कुम्हलाता हुआ, पतला और कृश होता हुआ।

म्लास्नु (वि०) [म्लै+स्नु] 1. मुर्झाया हुआ या कुम्हलाया हुआ या होने वाला 2. पतला और कृश होने वाला 3. निढाल और क्लान्त होने वाला।

म्लिष्ट (वि०) [म्लेच्छ्+क्त नि० साधुः] 1. अस्फुट बोला हुआ (मानों बर्बर लोगों ने बोला हो) 2. अस्पष्ट असभ्य (बर्बर), असंस्कृत 3. कुम्हलाया हुआ, मुर्झाया हुआ,—ष्टम् अस्फुट या असंस्कृत भाषण।

म्लुच्, म्लुञ्च्, दे० म्रुच्, म्रुञ्च्।

म्लेच्छ या म्लेछ् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० म्लेच्छति, म्लेच्छयति, म्लिष्ट, म्लेच्छित) अव्यवस्थित रूप से बोलना, अस्फुट स्वर से बोलना, या बर्बरतापूर्वक बोलना।

म्लेच्छः [म्लेच्छ्+घञ्] 1. असभ्य, अनार्य (जो संस्कृत भाषा न बोलता हो, जो हिन्दू या आर्य पद्धतियों का पालन न करता हो), विदेशी,—ग्राह्या म्लेच्छप्रसिद्धिस्तु विरोधादर्शने सति—जै० न्या०, म्लेच्छान् मूर्छयते —या—म्लेच्छनिवहनिधन कलयसि करवालम्—गीत० १ 2. जाति से बहिष्कृत, नीच मनुष्य, बौधायन 'म्लेच्छ' शब्द की परिभाषा देता ह—गोमांसखादको यस्तु विरुद्धं बहु भाषते, सर्वाचारविहीनश्च म्लेच्छ इत्यभिधीयते 3. पापी, दुष्ट पुरुष,—च्छम् तांबा। सम०- **आस्यम्** तांबा,—**आशः** गेहूँ—**आस्यम्**,—**मुखम्** तांबा—**कन्दः** लहसुन,—**जातिः** (स्त्री०) असभ्य, जंगली (बर्बर) जाति, पहाड़ी, बर्बर,—**देशः**,—**मण्डलम्** वह देश जहाँ अनार्य लोग (बर्बर) रहते हों, विदेश या असभ्य देश मनु० २।२३,—**भाषा** विदेशी भाषा,—**भोजनः** गेहूँ,(—नम्) जौ,—**वाच्** (वि०) बर्बर जाति की या विदेशी भाषा बोलने वाला।

म्लेच्छित (भू० क० कृ०) [म्लच्छ्+क्त] अस्फुट रूप से या बर्बरतापूर्वक बोला हुआ,—**तम्** विदेशी भाषा 2. व्याकरण विरुद्ध शब्द या भाषण।

म्लेट्, म्लेड् (म्लेट ड - ति) पागल होना।

म्लेव् (भ्वा० आ० म्लेवते) पूजा करना, सेवा करना।

म्लै (भ्वा० पर० म्लायति, म्लान) मुर्झाना, कुम्हलाना—म्लायतां भूरुहाणां—भामि० १।३६, शि० ५।४३ 2. थक जाना, निढाल होना, श्रान्त या क्लांत होना; पथि······मम्लतुर्न मणिकुट्टिमोचितौ- रघु० ११।९; भट्टि० १४।६ 3. उदास या खिन्न होना; उत्साहहीन या हतोत्साह होना - मम्लौ साथ विषादेन - काव्य० १०, म्लायते मे मनो हीदम्—महा० 4. पतला, या कृशकाय होना 5. ओझल होना, नष्ट होना परि , 1. मुर्झाना, कुम्हलाना, परिम्लानमुखश्रियम्—कु० २।२ रघु० १४।५० 2. खिन्न या निरुत्साहित होना, प्र –, 1. मुर्झाना, कुम्हलाना 2. उदास या खिन्न होना 3. निढाल होना 4. मलिन या गन्दा होना, मैला होना।

य

यः [या+ड] 1. जो चलता है या गतिमान् है, जाने वाला, गन्ता 2. गाड़ी 3. हवा, वायु 4. मिलाप 5. यश 6. जौ।

यकन् (नपुं०) जिगर (पहले पाँच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, कर्म०, द्वि० व०, के पश्चात् 'यकृत्' शब्द का ही यह वैकल्पिक रूप है)।

यकृत् (नपुं०) [यं संयमं करोति कृ क्विप् तुक् च] जिगर, या तद्गत प्रभावशालिता। सम०—**आत्मिका** तेलचोर (भौंरे के आकार का एक छोटा सा कीड़ा)। —**उदरम्** जिगर की वृद्धि,—**कोषः** जिगर को ढकने वाली झिल्ली।

यक्षः [यक्ष्यते–यक्ष्+(कर्मणि) घञ्] एक देवयोनि विशेष जो धनसंपत्ति के देवता कुबेर के सेवक हैं तथा उसके कोष और उद्यानों की रक्षा करते हैं - यक्षोत्तमा यक्षपति धनेशं रक्षन्ति वै प्रासगदादिहस्ताः-हरि०, मेघ० १, ६६, भग० १०।२३, ११।२२ 2. एक प्रकार का भूत-प्रेत 3. इन्द्र का महल 4. कुबेर,—**क्षी** यक्ष जाति की स्त्री। सम०—**अधिपः**,—**अधिपतिः**,—**इन्द्रः** यक्षों का राजा कुबेर,—**आवासः** जंजीर का वृक्ष,—**कर्दमः** एक प्रकार का लेप जिसमें कपूर, अगर, कस्तूरी और कंकोल समान मात्रा में डाले जाते हैं (कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार चन्दन और केसर भी इसमें सम्मिलित किये जाते हैं (कर्पूरागुरुकस्तूरीकक्कोलैर्यक्षकर्दमः- अमर०, कुङ्कुमागुरुकस्तूरी कर्पूरं चन्दनं तथा। महासुगन्धमित्युक्तं नामतो यक्ष कर्दमः ॥),—**ग्रहः** यक्ष या भूत प्रेतादि की बाधा से युक्त व्यक्ति,—**तरुः** बटवृक्ष, **धूपः** गूगल, लोबान, **रसः** एक प्रकार का मादक पेय,—**राज्** (पुं०)—**राजः** कुबेर का नाम, **रात्रिः** दीपमाला का उत्सव,—**वित्तः** यक्ष जैसा अर्थात् जो विपुलधनसंपत्ति का स्वामी हो परन्तु व्यय कुछ न करे।

यक्षिणी [यक्ष+इनि+ङीप्] 1. यक्ष जाति की स्त्री 2. कुबेर की पत्नी का नाम 3. दुर्गा की सेवा में रहने वाली यक्षस्त्री 4. एक अप्सरा (इसका संबन्ध मर्त्यलोक वासियों से कहा जाता है)।

यक्ष्मः, यक्ष्मन् (पुं०) [यक्ष्+मन्, मनिन् वा] 1. फेफड़ों

का रोग, क्षयरोग 2. रोगमार्ग। सम० ग्रह क्षयरोग का आक्रमण,—ग्रस्त (वि०) क्षयरोगी, घ्नी अंगूर।

यक्ष्मिन् (वि०) [यक्ष्म+इनि] जो क्षयरोग से ग्रस्त या पीड़ित है मनु० ३।१५४।

यज् (भ्वा० उभ० यजति—ते, इष्ट, कर्मवा० इज्यते, इच्छा० यियक्षति—ते) 1. यज्ञ करना, त्याग पूर्वक पूजा करना (प्राय: 'यज्ञार्थक' शब्दों के करण० से संबद्ध); —यजेत राजा क्रतुभि:—मनु० ७।७९,५।५३, ६।३६, ११।४०, भट्टि० १४।९०, इसी प्रकार 'अश्वमेधेनेजे, पाकयज्ञेनेजे—आदि 2. आहुति देना (देवतापरक कर्म० तथा यज्ञीय साधन या आहुतिपरक करण० के साथ) —पशुना रुद्रं यजते—सिद्धा० यस्तिलै: यजते पितॄन् —महा०, मनु० ८।१०५, ११।११८ 3. पूजा करना, सुभूषित करना, सम्मान करना, आदर करना प्रेर० (याजयति—ते) 1. यज्ञ करवाना 2. यज्ञ में सहायता देना। अ, परि, प्र यज्ञ करना, आहुति देना, —सम् अलंकृत करना, पूजा करना समयष्टास्त्रमण्डलम् भट्टि० १५।९६।

यजतिः [यज्+तिप्] 1. उन यज्ञीय अनुष्ठानों का पारिभाषिक नाम जिनके साथ 'यजति' क्रिया का प्रयोग होता है (आगे के विवरण के लिए 'जुहोति' शब्द देखो)।

यजत्रः [यज्+अत्र] 1. वह गृहस्थ जो यज्ञीय अग्नि को स्थिर रखता है, अग्निहोत्री, त्रम् अभिमन्त्रित अग्नि का स्थापित रखना।

यजनम् [यज्+ल्युट्] 1. यज्ञ करने की क्रिया 2. यज्ञ, —देवयजन संभवे देवि सीते—उत्तर० ४ 3. यज्ञ करने का स्थान।

यजमानः [यज्+शानच्] 1. वह व्यक्ति जो नियमित रूप से यज्ञ करता है और उसका व्ययभार स्वयं वहन करता है 2. वह व्यक्ति जो अपने लिए यज्ञ करवाने के लिए पुरोहित या पुरोहितों को नियुक्त करता है 3. आतिथेयी, संरक्षक, धनी व्यक्ति 4. कुल का प्रधान पुरुष। सम० शिष्यः स्वयं यज्ञ करने वाले ब्राह्मण का शिष्य—श० ४।

यजिः [यज्+इन्] 1. यज्ञकर्ता 2. यज्ञ करने की क्रिया 3. यज्ञ—दानमध्ययनं यजिः मनु० १०।७९।

यजुस् (नपुं०) [यज्+उसि] 1. यज्ञीय प्रार्थना या मन्त्र, 2. यजुर्वेद का पाठ, यजुर्वेद के गद्यात्मक मन्त्रों का संग्रह जो यज्ञ के अवसर पर पढ़े जायं—तु० मन्त्र 3. यजुर्वेद का नाम। सम० विद् (वि०) यज्ञीय विधि का ज्ञाता, - वेदः तीन (अथर्व वेद को सम्मिलित करके) या चार प्रधान वेदों में द्वितीय (यह यज्ञ सम्बन्धी पवित्र पाठ का गद्यात्मक संग्रह है; इसकी दो मुख्य शाखाएं हैं—तैत्तिरीय या कृष्णयजुर्वेद; तथा वाजसनेयि या शुक्लयजुर्वेद।

यज्ञः [यज्+(भावे)नङ्] 1. याग या मख, यज्ञ सम्बन्धी कृत्य—यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः, तस्माद्यज्ञात्सर्व हुतः —आदि 2. पूजा का कार्य, कोई भी पवित्र या भक्ति सम्बन्धी क्रिया (प्रत्येक गृहस्थ, विशेषतः ब्राह्मण को प्रति पाँच ऐसे भक्तिपरक कृत्य प्रतिदिन करने पड़ते हैं, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ और ब्रह्मयज्ञ, यही पाँचों समष्टिरूप से 'पञ्च महा यज्ञ' कहलाते हैं, दे० 'महायज्ञ' और 'पाँच' शब्द पृथक्-पृथक्) 3. अग्नि का नाम 4. विष्णु का नाम। सम० —अंशः यज्ञ का एक भाग, °भुज् (पुं०) देवता देव—कु० ३।१४ अ(आ)गारः,—रम् एक यज्ञीय भूमि,—अङ्गम् 1. यज्ञ का एक भाग 2. कोई भी यज्ञीय आवश्यकता, यज्ञ का साधन यज्ञाङ्गयोनित्वमवेक्ष्य यस्य—कु० १।१७, (—गः) 1. गूलर का पेड़ 2. विष्णु का नाम, —अरिः शिव का विशेषण, —अशनः देव, आत्मन् (पुं०), ईश्वरः विष्णु का नाम,— उपकरणम् यज्ञपात्र या यज्ञ का कोई आवश्यक उपकरण,—उपवीतम् द्विजों द्वारा पहना जाने वाला यज्ञोपवीत (अब आज कल और निम्न जातियाँ भी पहनती हैं) जो बायें कन्धे के ऊपर तथा दाहिनी भुजा के नीचे पहना जाता है —दे० मनु० २।६३ (मूल रूप से 'यज्ञोपवीत' उपनयन संस्कार का ही नाम है जिसमें जनेऊ पहना जाय),—कर्मन् (वि०) यज्ञकार्य में व्यस्त (नपुं०) यज्ञीय कृत्य,—कल्प (वि०) यज्ञ की प्रकृति का, या यज्ञ के समान, कीलकः वह खूंटा जिसके साथ यज्ञीय बलि-पशु बाँधा जाता है,— कुण्डम् हवनकुण्ड, अग्निकुण्ड, —कृत् (वि०) यज्ञानुष्ठान करने वाला, (पुं०) 1. विष्णु का नाम 2. यज्ञ कराने वाला पुरोहित,—क्रतुः 1. यज्ञीय कृत्य 2. पूर्णकृत्य या मुख्य अनुष्ठान 3. विष्णु का विशेषण,—घ्नः वह राक्षस जो यज्ञों में विघ्न डालता है, - दक्षिणा यज्ञीय उपहार, यज्ञानुष्ठान कराने वाले पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा, — दीक्षा 1. किसी यज्ञीय कृत्य में प्रवेश या उपक्रम 2. यज्ञ का अनुष्ठान मनु० ५।१६९,—द्रव्यम् यज्ञ के लिए प्रयुक्त होने वाली कोई वस्तु (उदा० यज्ञ पात्र आदि), —पतिः 1. जो किसी यज्ञ की स्थापना या प्रतिष्ठा करता है दे० 'यजमान' 2. विष्णु का नाम, —पशुः 1. यज्ञ के लिए पशु, यज्ञीय बलि 2. घोड़ा, —पुरुषः, - फलदः विष्णु के विशेषण, - भागः 1. यज्ञ का एक अंश, यज्ञ के उपहारों में हिस्सा 2. देव, देवता, —भुज् (पुं०) देव, देवता,— भूमिः (स्त्री०) यज्ञ के लिए स्थान, यज्ञीय भूमि,- भृत् (पुं०) विष्णु का विशेषण,—भोक्तृ (पुं०) विष्णु या कृष्ण का विशेषण,

—रसः,—रेतस् (नपुं०) सोम,—वराहः शूकरावतार में विष्णु,—वल्लिः,—ल्ली (स्त्री०) सोम की बेल या पौधा,—वाटः यज्ञ के लिए तैयार की गई या घेरी गई भूमि,—वाहनः विष्णु का विशेषण,—वृक्षः वट वृक्ष,—वेदिः,—दी (स्त्री०) यज्ञ की वेदी,—शरणम् यज्ञकक्ष या अस्थायी छप्पर जिसके नीचे बैठकर यज्ञ किया जाय,—शाला यज्ञ का कमरा,—शेषः,—षम् यज्ञ का अवशिष्ट—यज्ञशेषं तथामृतम्—मनु० ३।२८५,—श्रेष्ठा सोम का पौधा,—सदस् (नपुं०) यज्ञ में उपस्थित जनमण्डली,—संभारः यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री,—सारः विष्णु का विशेषण,—सिद्धिः (स्त्री०) यज्ञ की पूर्ति,—सूत्रम् दे० यज्ञोपवीत,—सेनः राजा द्रुपद का विशेषण,—स्थाणुः यज्ञ का खम्भा,—हन् (पुं०)—हनः शिव का विशेषण।

यज्ञिकः [यज्ञ+ठन्] ढाक का पेड़।

यज्ञिय (वि०) [यज्ञाय हितः—घ] 1. यज्ञसम्बन्धी, यज्ञोपयुक्त, या यज्ञपरक 2. पुनीत, पवित्र, दिव्य 3. अर्चनीय, पूजनीय 4. भक्त, पुण्यशील,—यः 1. देव, देवता 2. तीसरा युग, द्वापर। सम०—देशः यज्ञों का देश—कृष्णसारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः, स ज्ञेयो यज्ञियो देशो म्लेच्छदेशस्ततः परः—मनु० ९।२३,—शाला यज्ञमण्डप।

यज्ञीय (वि०) [यज्ञ+छ] यज्ञ संबंधी,—यः गूलर का पेड़। सम०—ब्रह्मपादपः विकंकत नामक पेड़।

यज्वन् (वि०) (स्त्री०-यज्वरी) [यज्+क्वनिप्] यज्ञ करने वाला, पूजा करने वाला, अर्चना करने वाला आदि, (पुं०) 1. जो वेदविहितविधि के अनुसार यज्ञानुष्ठान करता है, यज्ञों का अनुष्ठाता—नीपान्वयः पार्थिव एष यज्वा—रघु० ६।४६, १।४४, ३।३९, १८।११, कु० २।४६ 2. विष्णु का नाम।

यत् (भ्वा० आ० यतते, यतित) 1. यत्न करना, कोशिश करना, प्रयास करना, उद्योग करना (बहुधा संप्र० या तुमुन्नन्त के साथ)—सर्वः कल्ये वयसि यतते लब्धुमर्थान् कुटुम्बी—विक्रम० ३।१ 2. प्रयास करना, उत्सुक या आतुर होना, उत्कण्ठित होना—या न ययौ प्रियमन्यवधूभ्यः सारतरागमना यतमानम्—शि० ४।४५, रघु० ९।७ 3. हाथ पैर मारना, निरन्तर उद्योग करना, श्रम करना 4. सावधानी बरतना, खबरदार रहना—भग० २।६०—प्रेर० (यातयति-ते) 1. लौटाना वापिस करना, बदला देना, हरजाना देना, फेर देना 2. घृणा करना, निन्दा करना 3. प्रोत्साहन देना, प्राण फूंकना, सजीव बनाना 4. सताना, दुःखी करना, परेशान करना 5. तैयार करना, विस्तार से कार्य करना, आ—, 1. प्रयास करना कोशिश करना 2. भरोसे पर रहना, निर्भर रहना, (अधि० के साथ)—वयं त्वय्यायतामहे—महावी० १।४९, निस्—, प्रेर० 1. लौटाना, फेर देना—निर्यातय हस्तन्यासम्—विक्रम० ५; मनु० ११।१६४ 2. बदला देना, वापिस करना, प्रतिहिंसा करना—रामलक्ष्मणयोर्वैरं स्वयं निर्यातयामि वै—रामा०, प्र—, चेष्टा करना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, प्रति—, चेष्टा करना (प्रेर०) फेर देना, वापिस करना—दे० निस् पूर्वक यत्, सम्—, संघर्ष करना, तर्क वितर्क करना—देवासुरा वा एषु लोकेषु संयेतिरे।

यत (भू० क० कृ०) [यम्+क्त] 1. प्रतिबद्ध, दमन किया हुआ, नियंत्रित, पराभूत 2. सीमित, संयत, मर्यादित,—तम् महावत द्वारा हाथी को एड़ लगाना। सम०—आत्मन् (वि०) स्वयं अपने को अनुशासित करने वाला, स्वसंयत, जितेन्द्रिय, (तस्मै) यतात्मने रोचयितुं यतस्व—कु० ३।१६, १।४५,—आहार (वि०) मिताहारी, संयमी,—इन्द्रिय (वि०) जितेन्द्रिय, पवित्र, धर्मात्मा,—चित्त,—मनस्,—मानस (वि०) मन को वश में रखने वाला,—वाच् (वि०) मितभाषी, मौनी, मौनावलंबी—दे० 'वाग्यत',—व्रत (वि०) 1. प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, अपने व्रत को पूरा करने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ।

यतनम् [यत्+ल्युट्] चेष्टा, प्रयत्न।

यतम (वि०) (नपुं०—मत्) [यद्+डतमच्] जो या जौन सा (बहुतों में से)।

यतर (वि०) (नपुं०—रत्) [यद्+डतरच्] जो (दो में से)।

यतस् (अव्य०) [यद्+तसिल्] (बहुधा संबंधबोधक सर्वनाम 'यद्' के अपा० के रूप में प्रयुक्त) 1. जहां से (व्यक्ति या वस्तु का उल्लेख करते हुए) जिस जगह से, जिस स्थान से या जिस दिशा से—यतस्त्वया ज्ञानमशेषमाप्तम्—रघु० ५।४ (यतः=यस्मात् जिस से)—यतश्च भयमाशङ्केत्प्राचीं तां कल्पयेद्दिशम्—मनु० ७।१८९ 2. जिस कारण, जिस लिए 3. क्योंकि, चूंकि, के कारण से, इस लिए कि—उवाच चैनं परमार्थतो हरं न वेत्सि नूनं यत एवमात्थ माम्—कु० ५।७५, रघु० ८।७६, प्रायः सहवर्ती 'ततः' के साथ; रघु० १६।७४ 4. जिस समय से लेकर, ...जब से कि 5. ताकि, जिससे कि (यतस्ततः 1. जिस किसी जगह से, किसी भी दिशा से 2. चाहे किसी व्यक्ति से 3. चाहे जहां, चारों ओर, किसी भी दिशा में, मनु० ४।१५, यतो यतः 1. चाहे जिस जगह से 2. चाहे जिस से, किसी भी व्यक्ति से 3. चाहे जहां, चाहे जिस दिशा में—यतोयतः षट्चरणोऽभिवर्तते—श० १।२४, भग० ६।२६; यतः प्रभृति जिस समय

से लेकर)। सम० --भव (वि०) जिससे उत्पन्न, --मूल (वि०) जिसमें जन्म लेने वाला, या जिससे उदित।

यति (सर्व० वि०) [यद् परिमाणे अति] (रूप केवल बहुवचन में, -कर्तृ० और कर्म० यति) जितने, जितनी बार, जितने कि।

यतिः (स्त्री०) [यम्+क्तिन्] 1. प्रतिबंध, रोक, नियंत्रण 2. रोकना, ठहरना, आराम 3. दिग्दर्शन 4. संगीत में विराम 5. (छन्द० में) विश्राम—यतिर्जिह्वेष्ट-विश्रामस्थानं कविभिरुच्यते सा विच्छेदविरामाद्यैः पदैर्वाच्या निजेच्छया—छं० १, म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् 6. विधवा, —तिः संन्यासी, जिसने संसार को त्याग दिया है और अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है—यथा दानं विना हस्ती तथा ज्ञानं विना यतिः—भामि० १।११९।

यतित (वि०) [यत्+क्त] चेष्टा की गई, प्रयत्न किया गया, कोशिश की गई, प्रयास किया गया।

यतिन् (पुं०) [यत+इनि] संन्यासी।

यतिनी [यतिन्+ङीप्] विधवा।

यत्नः [यत् (भावे) नङ्] 1. प्रयत्न, चेष्टा, प्रयास, कोशिश, उद्योग—यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः—हि० प्र० ३१ 2. मेहनत, गंभीर मनोयोग, अध्यवसाय 3. देखरेख, उत्साह, सावधानता, जागरूकता—महान्हि यत्नस्तव देवदारौ—रघु० २।५६, प्रतिपात्रमाधीयतां यत्नः—श० १ 4. पीड़ा, कष्ट, श्रम, कठिनाई—शेषाङ्गनिर्माणविधौ विधातुर्लावण्य उत्पाद्य इवास यत्नः—कु० १।३५, ७।६६, रघु० ७।१४।

यत्र (अव्य०) [यद्+त्रल्] 1. जहाँ, जिस स्थान में, जिधर—सैव सा (द्यौः) चलति यत्र हि चित्तम्—नै० ५।५७, कु० १।७, १० 2. जब, जैसा कि 'यत्र काले' में 3. चूँकि क्योंकि, जब से, जहाँ (यत्रयत्र जहाँ कहीं—यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निः—तर्क० यत्र यत्र चाहे जिस स्थान में, सर्वत्र, यत्रकुत्र यत्रक्वचन—क्वापि 1. जहाँ कहीं, चाहे जिस जगह 2. जब कभी

यत्रत्य (वि०) [यत्र+त्यप्] जिस स्थान का, जिस स्थान पर रहता हुआ।

यथा (अव्य०) [यद् प्रकारे थाल्] 1. स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने पर इसके निम्नांकित अर्थ हैं—(क) कथितरीति के अनुसार—यथाज्ञापयति महाराजः—'जैसा कि महाराज आज्ञा करते हैं" (ख) नामतः, जैसा कि आगे आता है—तद्यथानुश्रूयते पं० १, उत्तर० २।४ (ग) जैसा कि, की भांति (तुलनाद्योतक तथा समानता के चिह्न का सूचक) आसीदियं दशरथस्य गृहे यथा श्रीः—उत्तर० ४।८, कु० ४।३४, प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा (न मुंचति)—काव्य० १० (घ) जैसा कि उदाहरणस्वरूप,—दृष्टान्ततः यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निर्यथा महानसे तर्क०, पंच० १।२८८, (ङ) प्रत्यक्ष उक्ति को आरंभ करने के समय प्रयुक्त, अन्त में चाहे 'इति' हो या न हो—अकथितोऽपि ज्ञायत एव यथायमाभोगस्तपोवनस्येति—श० १, विदितं खलु ते यथा स्मरः क्षणमप्युत्सहते न मां विना—कु० ४।३६, (स्त्री०) जिससे कि, इसलिए कि—दर्शय तं चौरसिंहं यथा व्यापादयामि—पंच० १ 2. तथा के सहवर्तित्व में प्रयुक्त होकर 'यथा' के निम्नलिखित अर्थ हैं:—(क) जैसा, वैसा (इस अवस्था में तथा के स्थान में 'एवं' और 'तद्वत्' भी बहुधा प्रयुक्त होते हैं) यथा वृक्षस्तथा फ़लम्—या यथाबीजं तथाङ्कुरः—भग० ११।२९ (इस अवस्था में संबंध की समानता को अधिक आश्चर्यजनक और प्रभावशाली बनाने के लिए 'एवं' शब्द यथा के साथ, अथवा दोनों के साथ जोड़ दिया जाता है)—वधूचतुष्केऽपि यथैव शान्ता प्रिया तनूजास्य तथैव सीता—उत्तर० ४।१६, न तथा बाधते स्कन्धो (या शीतम्) यथा बाधति बाधते, (इतना-जितना, जैसा कि)—कु० ६।७०, उत्तर० २।४, विक्रम० ४।३३, इस अर्थ में 'तथा' का बहुधा लोप कर दिया जाता है, तब उस अवस्था में 'यथा' का अर्थ उपर्युक्त (ग) में दिया हुआ है, (ख) ताकि जिससे कि (यहाँ 'यथा' 'जिससे' और तथा 'कि' को सूचित करता है)—यथा बन्धुजनशोच्या न भवति तथा निर्वाहय—श० ३, तथा प्रयतेथा यथा नोपहस्यते जनैः का०—१०१, तस्मान्मुच्ये यथा तात संविधातुं तथार्हसि रघु० १।७२, ३६, ३।६६ १५।६८, (ग) क्योंकि—इसलिए, क्योंकि, अतः—यथा इतोमुखागतैरपि कलकलः श्रुतस्तथा तर्कयामि—आदि—मा० ८, कभी-कभी 'तथा' को लुप्त कर दिया जाता है—मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाम्...सेविष्यन्तेनयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः—मेघ० ९ (घ) यदि—तो, इतने विश्वास से कि, बड़े निश्चय से (उक्ति और अनुरोध का दृढ़ रूप)—वाङ्मनःकर्मभिः पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे तथा विश्वम्भरे देवि मामन्तर्धातुमर्हसि—रघु० १५।८१, यथा यथा—तथा तथा—जितना अधिक...उतना ही...जितना कम...उतना ही—यथायथा यौवनमतिचक्राम तथा तथावर्धतास्य संतापः—का० ५९, मनु० ८।२८६, १२।७३, यथा-तथा किसी रीति से, किसी भी ढंग से, यथाकथंचित् किसी न किसी प्रकार। (विशे० अव्ययीभाव समास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होकर 'यथा' का प्रायः अनुवाद किया जाता है: के अनुसार, के अनुरूप, तदनुसार, तदनुरूप, के अनुपात से, अधिक न होकर; दे० समस्त शब्द नीचे,—अंशम्,—अंशतः

(अव्य०) ठीक-ठीक अनुपातनुरूप में,—अधिकारम् (अव्य०) अधिकार या प्रमाण के अनुसार, अधीत (वि०) जैसा पढ़ा हुआ या अध्ययन किया हुआ है, मूलपाठ के समनुरूप,—अनुपूर्वम्-अनुपूर्व्यम्, अनुपूर्व्या (अव्य०) नियमित क्रम या परम्परा में, क्रमशः, यथाक्रम,—अनुभूतम् (अव्य०) 1. अनुभव के अनुसार 2. पूर्वानुभव के अनुरूप,—अनुरूपम् (अव्य०) यथार्थ समनुरूपता में, उचित रूप से,—अभिप्रेत —अभिमत, अभिलषित, अभीष्ट (वि०) जैसा कि चाहा था, जैसा कि इरादा था या इच्छा की थी, इच्छा के अनुकूल, अर्थ (वि०) 1. सचाई के अनुरूप, सत्य, वास्तविक, सही—सौम्येति चाभाष्य यथार्थभाषी -रघु० १४।४४, इसी प्रकार 'यथार्थानुभवः' (सही या शुद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान) और 'यथार्थवक्ता' 2. सत्य अर्थ के समनुरूप, अर्थ के अनुसार सही ठीक, उपयुक्त, सार्थक करिष्यन्निव नामास्य (अर्थात् शत्रुघ्न) यथार्थनरनिग्रहात् रघु० १५।६, युधि सद्यः शिशुपाल तां यथार्था शि० १६।८५, कि० ८।३९ कु० १।१६ 3. योग्य, उपयुक्त (र्थम्—अर्थतः) सत्यतापूर्वक, सही, उचित प्रकार से, °अक्षर (वि०) सार्थक, अक्षरशः सत्य वि० १।१, °नामन् (वि०) जिसका नाम अर्थ की दृष्टि से सही है या पूर्णतः सार्थक है (जिसके कार्य नाम के अनुरूप हैं) - ध्रुवसिद्धेरपि यथार्थनाम्नः सिद्धि न मन्यते —मालवि० ४, परन्तपो नाम यथार्थनामा —रघु० ६।२१, °वर्णः गुप्तचर ('यथार्हवर्ण के स्थान पर'), अर्ह (वि०) 1. गुणों के अनुसार अधिकारी 2. समुचित, उपयुक्त न्यायोचित, °वर्णः गुप्तचर, दूत अर्हम्, अर्हतः (अव्य०) गुण या योग्यता के अनुरूप—रघु० १६।४०, -अर्हणम् (अव्य०) 1. औचित्य के अनुरूप 2. गुण या योग्यता के अनुरूप,—अवकाशम् (अव्य०) 1. कक्ष या स्थान के अनुसार 2. जैसा कि अवसर हो, अवसरानुकूल, अवकाशानुकूल, औचित्यानुकूल 3. ठीक स्थान पर प्रालम्बमुत्कृष्य यथावकाशं निनाय —रघु० ६।१४, अवस्थम् (अव्य०) दशा या परिस्थिति के अनुकूल, -आख्यात (वि०) जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पूर्वोल्लिखित,—आख्यातम् (अव्य०) जैसा कि पहले बतलाया गया है, -आगत (वि०) मूर्ख, जड, (अव्य० तम्) जैसा कि कोई आया, उसी रीति से जैसे कि कोई आया यथागतं मातलिसारथिर्ययौ —रघु० ३।६७,—आचारम् (अव्य०) प्रथा के अनुसार, जैसा कि प्रचलन है, आम्नातम्, -आम्नायम् (अव्य०) जैसा कि वेदों में विहित है, —आरम्भम् (अव्य०) आरंभ के अनुसार, नियमित क्रम या अनुक्रम में,—आवासम् (अव्य०) अपने रहने के अनुसार, प्रत्येक अपने अपने निवास के अनुसार, —आशयम् (अव्य०) 1. इच्छा या आशय के अनुसार 2. करार के अनुसार, -आश्रमम् (अव्य०) आश्रम या किसी व्यक्ति के धार्मिक जीवन के विशिष्ट के अनुसार,- इच्छा, इष्ट, ईप्सित (वि०) इच्छा या कामना के अनुसार, अपनी रुचि के अनुकूल, यथेष्ट, जैसा कि चाहा गया हो या कामना की गई हो, (अव्य० च्छम्, ,ष्टम्, तम्) 1. इच्छा या कामना के अनुसार, इच्छा या मन के अनुकूल रघु० ४।५१ 2. जितनी आवश्यकता हो, मन भर कर यथेष्टं बुभुजे मांसम् चौर० ३, ईक्षितम् (अव्य०) जैसा कि स्वयं देखा हो, जैसा कि वस्तुतः प्रत्यक्ष किया हो, उक्त, उदित (वि०) जैसा कि ऊपर कहा गया है, पूर्वोक्त, उपर्युल्लिखित यथोक्ताः संवृत्ताः पंच० १, यथोक्तव्यापारा श० १, रघु० २।७०, उचित (वि०) उपयुक्त, उचित, वाजिब, योग्य (अव्य०—तम्) ठीक-ठीक, उपयुक्त रूप से, उचित रूप से,—उत्तरम् (अव्य०) नियमित क्रम या परंपरा में, क्रमशः, संबन्धोऽत्र यथोत्तरम् सा० द० ७२९, उत्साहम् (अव्य०) 1. अपनी शक्ति या ताकत के अनुसार 2. अपनी पूरी शक्ति से, उद्दिष्ट (वि०) जैसा कि वर्णन किया गया है या संकेतित है, (ष्टम्) या उद्देशम् (अव्य०) संकेतित रीति से, उपजोषम् (अव्य०) मन या इच्छा के अनुसार, —उपदेशम् (अव्य०) जैसा कि परामर्श या अनुदेश दिया गया है, उपयोगम् (अव्य०) आवश्यकता या कार्य की दृष्टि से, परिस्थिति के अनुसार, काम (वि०) इच्छा के अनुरूप (अव्य० मम्) रुचि के अनुकूल, इच्छा के अनुरूप, मन भर कर - यथाकामार्चितार्थिनाम् - रघु० १।६, ४।५१, कामिन् (वि०) स्वतंत्र, प्रतिबंधरहित, - कालः ठीक या सही समय, उचित समय-रघु० १।६, (अव्य०—लम्) ठीक समय पर, समयानुकूल, मौसम के अनुसार, —सोपसर्पैर्जजागार यथाकालं स्वपन्नपि—रघु० १७।५१, —कृत (वि०) जैसा कि मान लिया गया है, किसी नियम या प्रथा के अनुसार किया गया, प्रथानुकूल —मनु० ८।१८३,—क्रमम्,—क्रमेण (अव्य०) ठीक क्रम या परंपरा से, नियमित रूप से, सही रूप में, उचित रीति से—रघु० ३।१०, ९।२६, क्षमम् (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार, जितना संभव हो, जात (वि० मूर्ख, अज्ञानी जड, ज्ञानम् (अव्य०) व्यक्ति की अधिक से अधिक जानकारी या बुद्धि के अनुसार, ज्येष्ठम् (अव्य०) पद के अनुसार, वरिष्ठता के अनुसार,—तथ (वि०) 1. सत्य, सही 2. परिशुद्ध, खरा, (—थम्) किसी वस्तु के विवरण या

विशेषताओं का आख्यान, विवरण मूलक या सूक्ष्म कथन, (अव्य०—थम्) 1. यथार्थतः, सूक्ष्मतया 2. सही तौर पर, उचित रूप से, जैसा कि वस्तुतः बात हो, —दिक्,—दिशम् (अव्य०) सब दिशाओं में,—निर्दिष्ट (वि०) जैसा कि पहले उल्लेख हो चुका है, जैसा कि ऊपर विशेषता बता दी गई है—यथानिर्दिष्ट-व्यापारा सखी—आदि,—न्यायम् (अव्य०) न्यायतः, सही रूप से, उचित रीति से—मनु० १।१, —पुरम् (अव्य०) जैसा कि पहले था, जैसा कि पूर्व अवसरों पर था,—पूर्व (वि०),—पूर्वक (वि०) जैसा कि पहले था, पूर्ववर्ती—रघु० १२।४८, (—र्वम्)—पूर्वकम् (अव्य०) 1. जैसा कि पहले था—मनु० ११।१८७ 2. क्रम या परंपरा में, क्रमशः—एते मान्या यथापूर्वम् —याज्ञ० १।३५,—प्रदेशम् (अव्य०) 1. उचित या उपयुक्त स्थान में—यथाप्रदेशं विनिवेशितेन—कु० १।४९, आसञ्जयामास यथाप्रदेशं कंठे गुणम्—रघु० ६।८३, ७।३४ 2. विधि या निदेश के अनुसार, —प्रधानम्,—प्रधानतः (अव्य०) पद या स्थिति के अनुकूल, पूर्ववर्तिता के अनुसार—आलोकमात्रेण सुरा-नशेषान् संभावयामास यथाप्रधानम्—कु० ७।४६, —प्राणम् (अव्य०) सामर्थ्य के अनुसार, अपनी पूरी शक्ति से,—प्राप्त (वि०) परिस्थितियों के अनुरूप, —प्रार्थितम् (अव्य०) प्रार्थना के अनुकूल,—बलम् (अव्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के साथ, अपनी शक्ति से,—भागम्,—भागशः (अव्य०) 1. प्रत्येक के भाग के अनुसार, ठीक अनुपात से 2. प्रत्येक अपने क्रमिक स्थान पर—यथाभागमवस्थिताः—भग० १।११ 3. ठीक स्थान पर—यथाभागमवस्थितेपि—रघु० ६।१९,—भूतम् (अव्य०) जो कुछ हो चुका उसके अनुसार, सचाई के अनुसार, सत्यतः, यथार्थतः,—मुखीन (वि०) ठीक सामने देखने वाला (संब० के साथ) —(मृगः) यथामुखीनः सीतायाः पुप्लुवे बहु लोभयन् —भट्टि० ५।४८,—यथम् (अव्य०) 1. यथा योग्य, जैसा कि योग्य है, यथोचित—कि० ८।२ 2. नियमित क्रम में, पृथक् पृथक् एक एक करके—बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम्—सा० द० ३३७ —युक्तम्,—योगम् (अव्य०) परिस्थितियों के अनु-कूल, यथायोग्य, उपयुक्त रूप से, योग्य (वि०) उपयुक्त, योग्य, उचित, सही,—रुचम्,—रुचि (अव्य०) अपनी पसन्द या रुचि के अनुकूल,—रूपम (अव्य०) 1. रूप या दर्शन के अनुसार 2. ठीक-ठीक, यथोचित, यथायोग्य,—वस्तु (अव्य०) जैसे कि तथ्य है, यथार्थतः, विशुद्ध रूप से, सचमुच, विधि (अव्य०) नियम या विधि के अनुसार, ठीक-ठीक, यथोचित —यथाविधिहुताग्नीनाम्—रघु० १।६, संचस्कारोभय-प्रीत्या मैथिलेयौ यथाविधि—१५।३१, ३।७०,—विभ-वम् (अव्य०) अपनी आय के अनुपात से, अपने साधनों के अनुरूप,—वृत्त (वि०) जैसा कि हो चुका है, किया गया है, (—त्तम्) वास्तविक तथ्य, किसी घटना की परिस्थितियाँ या विवरण,—शक्ति, —शक्त्या (अव्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के अनुसार, जहाँ तक संभव हो,—शास्त्रम् (अव्य०) धर्मशास्त्रों के अनुसार जैसा कि धर्मशास्त्रों में विहित है—मनु० ६।८८,—श्रुतम् (अव्य०) 1. जैसा कि सुना है, या बताया गया है 2. (यथाश्रुति) वैदिक विधि के अनुसार,—संख्यम् अलंकार शास्त्र में एक अलंकार यथासंख्यं क्रमेणैव क्रमिकाणां समन्वयः—काव्य० १०—उदा० शत्रुं मित्रं विपत्तिं च जय रञ्जय भञ्जय चन्द्रा० ५।१०७, (—ख्यम्), संख्येन (अव्य०) संख्या के अनुसार, क्रमशः, संख्या के संख्या—याज्ञ० १।२१,—समयम् (अव्य०) 1. उचित समय पर, करार के अनुसार, सर्वसम्मत प्रचलन के अनुसार,—संभव (वि०) शक्य, जो हो सके,—सुखम् (अव्य०) 1. मन या इच्छा के अनुसार 2. आराम से, सुखपूर्वक, इच्छानुकूल, जिससे सुख हो,—अङ्के निधाय करभोरु यथासुखं ते संवाहयामि चरणावुत पद्मताम्रौ—श० ३।२२, रघु० ८।४८, ४।४३, स्थानं सही और उचित स्थान, (अव्य० —नम्) उचित स्थान पर, ठीक-ठीक,—स्थित (वि०) 1. वास्तविक तथ्य या परिस्थितियों के अनुकूल, जैसी कि स्थिति हो—भट्टि० ८।८ 2. सचमुच, उचित रूप से,—स्वम् (अव्य०) 1. अपने अपने क्रम से, क्रमशः —अध्यासते चीरभृतो यथास्वम्—रघु० १३।२२, कि० १४।४३ 2. वैयक्तिक रूप से रघु० १७।६५, 3. ठीक ठीक, यथोचित, सही रूप से।

यथावत् (अव्य०) [यथा+वति] 1. ठीक ठीक, ज्यों का त्यों, यथोचित, सही रूप से; प्रायः विशेषण के बल के साथ अध्यापिपद् गाधिसुतो यथावत्—भट्टि० २।२१, लिपेर्यथावद्ग्रहणेन—रघु० ३।२८ 2. विधि या नियम के अनुसार, जैसा कि नियमों द्वारा विहित है,—ततो यथावद् विहिताध्वराय—रघु० ५।१९, मनु० ६।१, ८।२१४।

यद् (सर्व० वि०) [यज्+अदि, डित्] (कर्तृ०, ए० व०, पुं० यः, स्त्री० या, नपुं० यत्—द्) संबंधबोधक सर्वनाम जो जौन सा, जो कुछ (क) इसका उपयुक्त सहसंबंधी 'तद्' है,—यस्य बुद्धिर्बलं तस्य, परन्तु कभी-कभी 'तद्' के स्थान पर इदम्, अदस् या एतद् को भी प्रयुक्त किया जाता है, कभी कभी 'यद्' शब्द अकेला ही प्रयुक्त होता है, तथा उसके सहसंबंधी सर्वनाम का ज्ञान प्रकरण से ही कर लिया जाता है, दोनों संबंध-

बोधक सर्वनाम बहुधा एक ही वाक्य में प्रयुक्त किये जाते हैं --यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् (ख) जब इस शब्द की आवृत्ति कर दी जाती है तो इसका अर्थ होता है 'समष्टि' तथा इस शब्द का अनुवाद होता है 'जो कोई' 'जो कुछ'; इस अवस्था में सह-संबंधी सर्वनाम 'तद्' की भी आवृत्ति की जाती है--यो यः शस्त्रं बिभर्ति स्वभुजगुरुबलः पाण्डवीनां चमूनाम् ·· क्रोधान्धस्तस्य तस्य स्वयमिह जगतामन्तकस्यान्तकोऽहम् --वेणी० ३।३० (ग) जब 'यद्' को किसी प्रश्न-वाचक सर्वनाम या उससे व्युत्पन्न किसी और शब्द के साथ जोड़ दिया जाता है, साथ में निपात 'चिद् चन, वा या अपि' लगे हों या न लगे हों, तो इसका अर्थ होता है 'कुछ भी' 'चाहे जो कोई' 'कोई'; **येन केन प्रकारेण** जिस किसी प्रकार से, किसी न किसी प्रकार से; यत्र कुत्रापि, यो वा को वा, यः कश्चन आदि; **यत्किंचिदेतद्** 'यह तो केवल तुच्छ बात है'। यानि कानि च मित्राणि--आदि, (अव्य०) अव्यय के रूप में 'यद्' नाना प्रकार से प्रयुक्त होता है 1. किसी प्रत्यक्ष या आश्रित वाक्य को आरम्भ करने में अन्त में चाहे 'इति' हो या न हो --सत्योऽयं जनप्रवादो यत्संपत्संपदमनुबध्नातीति--का० ७३,--तस्य कदा-चिच्चिन्ता समुत्पन्ना यदर्थोत्पत्त्युपायाश्चिन्तनीयाः कर्तव्याश्च--पंच० १ 2. क्योंकि, चूंकि--प्रियमाचरितं लते त्वया मे ······यदियं पुनरप्यपाङ्गनेत्रा परि-वृत्तार्धमुखी मयाद्य दृष्टा--विक्रम० १।१७, या--किं शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येव यत् --मुद्रा० २।१८, रघु० १।२७, ८७, इस अर्थ में 'यद्' के पश्चात् इसका सहसम्बन्धी तद् या ततः आता है; दे० नै० २२।४६। सम०--**अपि** (अव्य०) यद्यपि, अगर्चे--वक्रः पन्था यदपि भवतः --मेघ० २७,--**अर्थम्**,--**अर्थे** (अव्य०) 1. जिस लिए, जिस कारण, जिस वास्ते, जिस हेतु, श्रूयतां यदर्थमस्मि हरिणा भवत्सकाशं प्रेपितः--श० ६, कु० ५।५२ 2. चूंकि, क्योंकि--नूनं दैवं न शक्यं हि पुरुषेणातिवर्तितुम्, यदर्थं यत्नवानेव न लभे विप्रतां विभो--महा०,--**कारणम्**,--**कारणात्** (अव्य०) 1. जिस लिए, जिस कारण 2. चूंकि, क्योंकि,--**कृते** (अव्य०) जिस लिए, जिस वास्ते, जिस पुरुष या वस्तु के लिए,--**भविष्यः** भाग्यवादी (जो कहता है --'जो होना है वह होगा') -- पंच० १।३१८,--**वा** (अव्य०) अथवा, या,--नैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः--भग० २।६ (भाष्य-कार बहुधा इस शब्द को विकल्पार्थ बतलाते समय प्रयुक्त करते हैं),--**वृत्तम्** साहसिकता,--**सत्यम्** (अव्य०) निश्चय ही, सचाई तो यह है कि, सत्यतः सचमुच--अमङ्गलाशंसया वो वचनस्य यत्सत्यम् कंपित-मिव मे हृदयम्--वेणी० १, मुद्रा० १, मृच्छ० ४।

यदा (अव्य०) [यद्‌काले दाच्] 1. जब, उस समय जब कि, **यदायदा** जब कभी, **यदैवतदैव** उसी समय, ज्योंही, **यदाप्रभृति**······**तदाप्रभृति** जब से लेकर······तब से लेकर 2. यदि--पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्--भर्तृ० २।९३ 3. जब कि, चूंकि, यतः।

यदि (अव्य०) [यद्+णिच्+इन्, णिलोपः] 1. अगर, जो (दशासूचक, और इस अर्थ में प्रायः विधिलिङ के साथ प्रयोग, परन्तु कभी-कभी भविष्यत्काल अथवा वर्तमानकाल के साथ भी; प्रायः इसके पश्चात् 'तर्हि' और कभी कभी 'ततः' तदा, तत् या अत्र का प्रयोग किया जाता है) -- प्राणैस्तपोभिरथवाभिमतं मदीयैः कृत्यं घटेत सुहृदो यदि तत्कृतं स्यात्--मा० १।९, वदसि यदि किंचिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमति-घोरम्--गीत० १०, यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र (=कस्तर्हि) दोषः--हि० प्र० ३५ 2. चाहे, अगर --वद प्रदोषे स्फुटचन्द्रतारका विभावरी यद्यरुणाय कल्पते--कु० ५।४४ 3. बशर्ते कि, जब कि 4. यदि कदाचित्, शायद--यदि तावदेवं क्रियतां 'शायद आप ऐसा कर सकें'-- पूर्वं स्पृष्टं यदि किल भवेदङ्गमेभिस्त-वेति--मेघ० १०३, याज्ञ० ३।१०४, (**यद्यपि**) हालांकि, अगर्चे--शि० १६।८२, भग० १।३८, श० १।३१, **यदि वा** या,--यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः--भग० २।६, भर्तृ० २।८३, या शायद, कदा-चित्, भले ही, प्रायः, निजवाचक सर्वनाम से भी आवश्यकतानुसार आशय अभिव्यक्त कर दिया जाता है -उत्तर० १।१२, ४।५।

यदुः [यज्+उ पृषो० जस्य दः] एक प्राचीन राजा का नाम, ययाति और देवयानी का ज्येष्ठ पुत्र, यादवों का वंश प्रवर्तक। सम०--**कुलोद्वहः**,--**नन्दनः**,--**श्रेष्ठः** कृष्ण का विशेषण।

यदृच्छा [यद्+ऋच्छ+अङ+टाप्] 1. मनपसन्द करना, स्वेच्छा, (कार्य करने की) स्वतंत्रता 2. संयोग, घटना, इस अर्थ में प्रायः करण० एक व० में प्रयोग होता है और 'घटनावश', 'संयोगवश' शब्दों से अनु-वाद किया जाता है--किंनरमिथुनं यदृच्छयाऽद्रा-क्षीत्--का०, 'देखने का संयोग हुआ', आदि--वसि-ष्ठधेनुश्च यदृच्छयाऽऽगता श्रुतप्रभावा ददृशेथ नन्दिनी --रघु० ३।४२, विक्रम० १।१०, कु० १।१४। सम० --**अभिज्ञः** ऐच्छिक अथवा स्वपुरस्कृत साक्षी, --**संवादः** 1. अकस्मात् वार्तालाप 2. स्वतःस्फूर्त अथवा संयोगवश मिलन, घटनावश मिलाप।

यदृच्छातस् (अव्य०) [यदृच्छा+तसिल्] अकस्मात्, घटनावश, संयोग से।

यन्तृ (पुं०) [यम्+तृच्] 1. निदेशक, राज्यपाल, शासक 2. चालक (जैसे कि हाथी का, गाड़ी का), कोचवान सारथि—यन्ता गजस्याभ्यपतद्गजस्थं—रघु० ७।३७, अथ यन्तारमादिश्य धुर्यान् विश्रामयेति सः १।५४ 3. महावत, हस्ति चालक, हस्त्यारोही।

यन्त्र् (भ्वा० चुरा० उभ० यन्त्रति—ते) नियंत्रण में करना, दमन करना, रोकना, बांधना, कसना, बाध्य करना—शापयन्त्रितपौलस्त्यबलात्कारकचग्रहै:—रघु० १०।४७, नि , 1. दमन करना, नियंत्रण में करना बेड़ियाँ डालना 2. कसना, बांधना, सम् , रोकना, नियंत्रण में करना, ठहराना—संयन्त्रितो मया रथ:—श० ७।

यन्त्रम् [यन्त्र्+अच्] 1. जो नियन्त्रण करता है, या कसता है, थूणी, खंभा, सहारा टेक जैसा कि गृहयंत्र' में (इस शब्द के नीचे उद्धरण देखिये) 2. बेड़ी, पट्टी, कसना, कंठबंध या ग्रंथि, चमड़े का तस्मा 3. शल्योपयोगी उपकरण विशेष कर ठूंठा उपकरण (विप० शस्त्र) 4. कोई भी उपकरण या मशीन, यन्त्र, साधन, सामान्य उपकरण—कूपयन्त्रम्-मृच्छ० १०।५९, 'कुएँ से पानी निकालने वाली मशीन' इसी प्रकार 'तैल°, जल° आदि 5. चटकनी, कुंडी, ताला 6. नियंत्रण, बल 7. तावीज, एक रहस्यमय ज्योतिष का रेखाचित्र जो तावीज की भांति प्रयुक्त किया जाय। सम०—**उपलः** चक्की, का पाट,—**करण्डिका** एक प्रकार का जादू का पिटारा,—**कर्मकृत्** (पुं०) कलाकार, शिल्पकार,—**गृहम्** 1. तेली का कोल्हू 2. निर्माणशाला, शिल्पगृह,—**चेष्टितम्** जादू का करतब, जादू-टोना,—**दृढ** (वि०) (द्वार) कुंडी या चटखनी जिसमें लगी हुई है,—**नालम्** यन्त्रमूलक कोई नली,—**पुत्रकः**,—**पुत्रिका** यन्त्रचालित गुड़िया, या पुतली जिसमें डोरी या तार आदि कोई ऐसी कल लगी हो जिससे कि पुतली नाचे,—**प्रवाहः** पानी की एक कृत्रिम सरिता—रघु० १६।४९,—**मार्गः** एक नली या पतनाला,—**शरः** कोई तीर या अस्त्र जो किसी यंत्र द्वारा छोड़ा जाय।

यन्त्रकः [यन्त्र्+ण्वुल्] 1. जो कल-पुर्जों से सुपरिचित हो 2. कुशल यान्त्रिक,—**कम्** 1. पट्टी (आयु० में) 2. खैराद.

यन्त्रणम्,—**णा** [यन्त्र्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1 नियंत्रण, दमन, रोक-थाम—करयन्त्रणदन्तुरान्तरे व्यलिखच्चञ्चुपुटेन पक्षति,—नै० २।२ 2. नियन्त्रण, प्रतिबंध, रोक—ह्रीयन्त्रणां तत्क्षणमन्वभूवन्नन्योन्यलोलानि विलोचनानि—कु०७।७५, रघु० ७।२३ 3. कसना, बांधना,—निबिडपीनकुचद्वययन्त्रणा तमपराधमधात् प्रतिबध्नती—नै० ४।१० 4. बल, बाध्यता, निग्रह, कष्ट, पीड़ा या वेदना (जो विवशता से उत्पन्न हो)—अलमलमुपचारयन्त्रणया—मालवि० ४ 5. अभिरक्षा, 6. पट्टी।

यन्त्रणी, यन्त्रिणी [यन्त्रण+ङीप्, यन्त्र्+णिनि+ङीप्] पत्नी की छोटी बहन, छोटी साली।

यन्त्रिन् (वि०) [यन्त्र+इनि, यन्त्र्+णिनि वा] 1. (घोड़ा आदि) जो जीन व साज से सुसज्जित हो 2. पीड़क, सताने वाला, 3. जिसने तावीज बाधा हुआ हो।

यम् (भ्वा० पर० यच्छति, यत, इच्छा० यियंसति) 1. रोकना, दमन करना, नियन्त्रण करना, वश में करना, दवाना, ठहराना, बन्द करना—यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञः—कठ०, यतचित्तात्मन्—भग० ४।२१, दे० यत 2. प्रदान करना, देना, अर्पण करना-प्रेर० (यमयति-ते) नियंत्रण करना, रोकना आदि, आ—, 1. विस्तार करना, लंबा करना, फैलाना,—वस्त्रम् पाणिमायच्छते—सिद्धा०, स्वाङ्गमायच्छमानः—श० ४ (पाठान्तर) 2. ऊपर खींचना, वापिस खींचना,—आयच्छति कूपाद्रज्जुम्, सिद्धा०, बाणामुद्यतमायंसीत्—भट्टि० ६।११९ 3. नियन्त्रित करना, थामना, दवाना, (श्वास आदि) रोकना—मनु० ३।२१७, ११।१००, याज्ञ० १।२४, अंगड़ाई लेना, (आ०) लम्बा बढ़ जाना 5. ग्रहण करना, अधिकार करना, रखना—श्रियमायच्छमानाभिरुत्तमाभिरनुत्तमाम्—भट्टि० ८।४६ 6. ले आना, नेतृत्व करना, उद्—, (प्रायः आ०) 1 उठाना, ऊपर करना, उन्नत करना—बाहू उद्यम्य—श०१, परस्य दण्डं नोद्यच्छेत् मनु० ४।१०४, रघु० ११।१७, १५।२३, भट्टि० ४।३१ 2. तैयार होना, प्रस्थान करना, आरंभ करना, (संप्र० या तुमुन्नंत के साथ) उद्यच्छमाना गमनाय भूयः—रघु० १६।२९, भट्टि० ८।४७ 3. प्रयास करना, घोर प्रयत्न करना—उद्यच्छति वेदम्—सिद्धा० 4. शासन करना, प्रबन्ध करना, हकूमत करना, उप (आ०) 1. विवाह करना—भवानिमथः समयादिमामुपायंस्त श० ५, (मेनां) आत्मानुरूपां विधिनोपयेमे—कु० १।१८ रघु० १४।८७, शि० १५।२७ 2. पकड़ना, थामना, लेना, स्वीकार करना, अधिकार करना—शस्त्राण्युपायंसत जित्वराणि—भट्टि० १।१६, १५।२१, ८।३३ 3. प्रकट करना, संकेत करना—भट्टि० ७।१०१, नि—, 1. नियंत्रित करना, दमन करना, रोकना, वश में करना, शासन करना—प्रकृत्या नियताः स्वया—भग० ७।२०, (सुतां) शशाक मेना न नियन्तुमुद्यमात्—कु० ५।५, 'उसे हटा नहीं सका' आदि 2. दवाना, निलंबित करना, रोकना, (श्वास आदि)—मनु० २।१९२—न कथंचन दुर्योनिः प्रकृतिं स्वां नियच्छति—मनु० १०।५९, 'न दबाता है न छुपाता

हैं' आदि 3. दान करना, देना—को नः कुले निवपनानि नियच्छतीति --श० ६।२४ 4. सजा देना, दण्ड देना नियन्तव्यश्च राजभिः मनु० ९।२।१३ 5. विनियमित करना या निदेशित करना 6. प्राप्त करना, अवाप्त करना—तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति- याज्ञ० ३।११५, मनु० २।९३ 7. धारण करना (प्रेर०) 1. नियन्त्रित करना, वश में करना, विनियमित करना, रोकना, दण्ड देना—नियमयसि विमार्गप्रस्थितानात्तदण्डः --श० ५।८ 2. बांधना, कसना --शि० ७।५०, रघु० ५।७३ 3. मर्यादित करना, हलका करना, विश्राम देना कु० १।६१, विनि --, दमन करना, नियंत्रण रखना, भग० ६।२४, सम् -- 1. नियंत्रित करना, दमन करना, रोकना, नियंत्रण में रखना (आ०)—भग० ६।३६, मनु० २।१०० 2. बांधना, कैद करना, कसना, बंदी बनाना —वानरं मा न संयसीः --भट्टि० ९।५०, मालवि० ११७, रघु० ३।२०, ४२ 3. एकत्र करना (आ)—व्रीहीन्संयच्छते—सिद्धा० 4. बन्द करना, भेड़ना भग० ८।१२।

यमः [यम्+घञ्] 1. संयत करना, नियंत्रित करना, दमन करना 2. नियन्त्रण, संयम 3. आत्मनियन्त्रण 4. कोई महान् नैतिक कर्तव्य या धर्मसाधना (विप० नियम)—तप्तं यमेन नियमेन तपोऽमुनैव—नै० १३।१६, यम और नियम की निम्न प्रकार से भिन्नता दर्शायी गई है—शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः, नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् --अमर०, दे० कि० १०।१० पर मल्लि० भी; यमों की संख्या बहुधा दस बतलाई जाती है, परन्तु भिन्न भिन्न लेखकों ने उनके भिन्न भिन्न नाम दिये हैं—उदा० ब्रह्मचर्यं दया क्षान्तिर्दानं सत्यमकल्कता, अहिंसाऽस्तेयमाधुर्ये दमश्चेति यमाः स्मृताः याज्ञ० ३।३१३, या आनृशंस्यं दया सत्यमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्, प्रीतिः प्रसादो माधुर्यं मार्दवं च यमा दश। कभी-कभी यम केवल पांच ही बताये जाते हैं—अहिंसा सत्यवचनं ब्रह्मचर्यमकल्कता, अस्तेयमिति पंचैव यमाख्यानि व्रतानि च 5. योग प्राप्ति के आठ अंगों या साधनों में पहला साधन। आठ अंग यह हैं—यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावंगानि 6. मृत्यु का देवता, मृत्यु का मूर्त रूप, यह सूर्य का पुत्र माना जाता है – दत्ताभये त्वयि यमादपि दण्डधारे -उत्तर० २।११ 7. यमल–धर्मात्मजं प्रति यमौ च (अर्थात् नकुलसहदेवौ) कथैव नास्ति—वेणी० २।२५, यमयोश्चैव गर्भेषु जन्मतो ज्येष्ठता मता मनु० ९।१२६ 8. जोड़े में एक —मम् जोड़ा, जोड़ी। सम० अनुगः -अनुचरः यम का सेवक या टहलुआ,– अन्तकः 1. शिव का विशेषण 2. यम का विशेषण किङ्करः यम का सेवक, मृत्यु का दूत,– कीलः विष्णु,—ज (वि०) जन्म से जुड़वा, यमल —भ्रातरौ आवां यमजौ -- उत्तर० ६, दूतः 1. मृत्यु का दूत 2. कौवा, द्वितीया कार्तिक शुक्ला दूज जब बहनें अपने भाइयों का सत्कार करती हैं, भाईदूज, तु० भ्रातृद्वितीया, धानी यम का निवास स्थान -नरः संसारान्ते विशति यमधानीजवनिकाम् भर्तृ० ३।११२, भगिनी यमुना नदी, यातना मरणोपरांत पापियों को यम के द्वारा दी जाने वाली पीड़ा (कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग 'भीषण यातनाएं' या 'घोर पीड़ा' प्रकट करने के लिए भी किया जाता है), राज् (पुं०) यम, मृत्यु का देवता, सभा यमराज की न्यायसभा, सूर्यम् एक भवन जिसमें केवल दो कमरे हों, एक का मुंह पश्चिम को तथा दूसरे का उत्तर को हो।

यमकः [यम+स्वार्थे कन्] 1. प्रतिबंध, रोक 2. यमल या जुड़वां 3. एक महान् नैतिक या धार्मिक कर्तव्य दे० यम,—कम् 1. दोहरी पट्टी 2. (अलं० में) एक ही श्लोक में किसी भी स्थान पर शब्दों या अक्षरों की पुनरावृत्ति परन्तु अर्थ की भिन्नता के साथ, एक प्रकार की लय (इसके कई भेदों का वर्णन—काव्या० ३।२।५२ में किया है) आवृत्ति वर्णसंघातगोचरां यमकं विदुः - काव्या० १।६१, ३।१, सा० द० ६४०।

यमन (वि०) (स्त्री०—नी) [यम्+ल्युट्] संयमी, दमन करने वाला, शासक आदि,—नम् 1. संयम करना, दमन करना, बांधना 2. ठहरना, थमना 3. विराम, विश्राम,– नः मृत्यु का देवता यम।

यमनिका [यमन+कन्+टाप्, इत्वम्] परदा, ओट, तु० जवनिका।

यमल (वि०) [यम+ला+क] जोड़वां, जोड़ी में से एक, —लः दो की संख्या, लौ (द्वि० व०) जोंड़ी, लम् —ली मिथुन, जोड़ी।

यमवत् (वि०) [यम+मतुप्, वत्वम्] जिसने अपनी वासनाओं पर संयम कर लिया है, आत्म नियंत्रित —यमवतामवतां च धुरि स्थितः - रघु० ९।१।

यमसात् (अव्य०) [यम+साति] यम के हाथों में, यमकी शक्ति में, यमसात् कृ मृत्यु को सौंपना।

यमुना [यम्+उनन्+टाप्] एक प्रसिद्ध नदी का नाम (जो यम की बहन मानी जाती है)। सम० भ्रातृ (पुं०) मृत्यु का देवता यम।

ययातिः [यस्य वायोरिव यातिः सर्वत्र रत्नगतिर्यस्य] एक प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा का नाम, नहुष का पुत्र, [ययाति ने शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से विवाह किया। दैत्यों के राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा

दासी के रूप में देवयानी के साथ गई, क्योंकि इसने किसी समय देवयानी का अपमान किया था और उस अपमान की क्षति पूर्ति के लिए आज शर्मिष्ठा को देवयानी की सेविका बनना पड़ा (दे० देवयानी)। परन्तु ययाति को इस दासी से प्रेम हो गया, फलतः उसने गुप्त रूप से उससे विवाह कर लिया। इस बात से खिन्न होकर देवयानी अपने पिता के पास चली गई और उनसे अपने पति के आचरण की शिकायत की। शुक्राचार्य ने ययाति को प्राक्कालिक वार्धक्य तथा अशक्तता से ग्रस्त कर दिया। ययाति ने जब बहुत अनुनय-विनय किया तो प्रसन्न होकर शुक्राचार्य ने ययाति को अनुमति दे दी कि वह अपने बुढ़ापे को जिस किसी को दे सकता है यदि वह लेना स्वीकार करे। उसने अपने पाँचों पुत्रों से पूछा, परन्तु सब से छोटे पुरु को छोड़कर किसी ने भी बुढ़ापा लेना स्वीकार नहीं किया। फलस्वरूप ययाति ने अपना बुढ़ापा पुरु को देकर उसकी जवानी ले ली। इस प्रकार इस समृद्ध यौवन को पाकर ययाति फिर विषयवासनाओं तथा आमोद प्रमोद में व्यस्त रहने लगा। इस प्रकार का क्रम १००० वर्ष तक चला परन्तु ययाति की तृप्ति नहीं हुई। आखिरकार, बड़े प्रयत्न के साथ ययाति ने इस विलासी जीवन को छोड़कर, पुरु की जवानी उसको वापिस कर दी और उसे राज्य का उत्तराधिकारी बना स्वयं पवित्रजीवन बिताने तथा परमात्मचिन्तन करने के लिए बन को प्रस्थान किया]

ययावरः=यायावर दे०।

ययिः,– यी (पुं०) [या+ई, कित्, धातोर्द्वित्वम्] 1.अश्वमेघ या अन्य किसी यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा–शि० १५।६९ 2. घोड़ा।

यर्हि (अव्य०) [यद्+हिल्] 1. जब, जब कि, जब कभी 2. क्योंकि, यतः, चूँकि, (इसका उपयुक्त सहसंबन्धी 'तर्हि' या 'एतर्हि' है परन्तु अत्युत्तम साहित्य में इसका विरल प्रयोग है)।

यवः [यु+अच्] 1. जौ यवाः प्रकीर्णाः न भवन्ति शालयः मृच्छ० ४।१७ 2. जौ के दाने या जौ के दानों का भार 3. लम्बाई की एक नाप एक अंगुल का १/६ या १/८ 4. हाथ की अंगुलियों में बना जौ के दाने का चिह्न जो धनधान्य, प्रजा, और सौभाग्य का सूचक है। सम० —**अङ्कुरः**, **प्ररोहः** जौ का अंखुवा या पत्ती,—**आग्रयणम्** जौ की खेती का पहला फल, - **क्षारः** जवाखार, शोरा, सज्जी, **शूकः**,–**शूकजः** जौ की भूसी को जला कर उसकी राख से तैयार किया गया क्षारीय नमक, सज्जी,—**सुरम्** जौ की शराब, यवमद्य।

यवनः [यु+युच्] 1. ग्रीस देश का निवासी, यूनान देश का वासी 2. विदेशी, जंगली—मनु० १०।४४ (आजकल इस शब्द का प्रयोग मुसलमान और यूरोपियन के लिए भी किया जाता है) 3. गाजर।

यवनानी [यवनानां लिपिः - यवन+आनुक्, ङीप् च] यवनों की लिपि या लिखावट।

यवनिका, यवनी [यु+ल्युट्+ङीप्=यवनी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. यवनस्त्री, ग्रीस देश की स्त्री या मुसलमानी,—यवनी नवनीतकोमलांगी–जग०, यवनीमुखपद्मानां सेहे मधुमदं न सः घु० ४।६१, (नाटकों से ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व काल में यवन बालाएँ राजाओं की दासियों के रूप में नियुक्त की जाया करती थीं विशेषकर राजाओं के धनुष और तरकस को संभालने के लिए, नु० एष बाणासहस्ताभिर्यवनीभिः परिवृत इत एवागच्छति प्रियवयस्यः—श० २, प्रविश्य शार्ङ्गहस्ता यवनी श० ६, प्रविश्य चापहस्ता यवनी —विक्रम० ५ आदि) 2. परदा।

यवसम् [यु+असच्] घास, चारा, चरागाहों का घास यवसेंधनम् पंच० १, याज्ञ० ३।३०, मनु० ७।७५।

यवागू (स्त्री०) [यूयते मिश्र्यते—यु+आगू] चावलों का मांड़, चावलों के माड़ की कांजी, या जौ आदि किसी और अन्न की कांजी यवागूर्विरलद्रवा–सुश्रु०, मूत्राय कल्पते यवागूः— गहा०।

यवानिका, यवानी [दुष्टो यवो यवानी-- यव+ङीप्, आनुक्, पक्षे कन्+टाप्, ह्रस्वः] अजवायन।

यविष्ठ (वि०) [युवन्+इष्ठन्, यवादेशः] कनिष्ठ, सबसे छोटा,—**ष्ठः** सबसे छोटा भाई, कनिष्ठ भ्राता।

यवीयस् (वि०) [युवन्+ईयसुन् यवादेशः] छोटा, बच्चा,—पुं० 1. छोटा भाई 2. शूद्र।

यशस् (नपुं०) [अश् स्तुतौ असुन् धातोः युट् च] प्रसिद्धि, ख्याति, कीर्ति, विश्रुति - विस्तीर्यते यशो लोके तैलबिन्दुरिवाम्भसि—मनु० ७।३४, यशस्तु रक्ष्यं परतो यशोधनैः—रघु० ३।४८, २।४०। सम० —**कर** (वि०) (यशस्कर) कीर्ति देने वाला. यशस्वी मनु० ८।३८७,—**काम** (वि०) (यशस्काम) 1. प्रसिद्धि प्राप्त करने का इच्छुक 2. उच्चाकांक्षी, महत्त्वाकांक्षी,—**कायम्**, शरीरम् प्रसिद्धि के रूप में शरीर, कीर्तिदेह,—यशः शरीरे भव मे दयालुः—रघु० २।५७, रघु० १।५७, भर्तृ० २।३४,—**द** (वि०) (यशोद) कीर्तिकर (**दः**) पारा (**दा**) नन्द की पत्नी और कृष्ण की पालक माता का नाम, - **धन** (वि०) (वि०) कीर्ति ही जिसका धन है, ख्याति में समृद्ध, अत्यंत विश्रुत—अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियार्थात् यशोधनानां हि यशो गरीयः—रघु० १४।३५, २।१,—**पटहः**

यशरूपी ढोल,—शेष (वि०) जिसकी केवल ख्याति शेष हो, सिवाय कीर्ति के जिसका और कुछ न बचा हो,—अर्थात् मृतव्यक्ति, तु० कीर्तिशेष, (षः) मृत्यु।

यशस्य (वि०) [यशसे हितं—यत्] 1. सम्मान या कीर्ति की ओर ले जाने वाला—मनु० २।५२ 2. विश्रुतं, प्रसिद्ध, विख्यात ।

यशस्विन् (वि०) [यशस्+विनि] प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत ।

यष्टिः,—ष्टी (स्त्री०) [यज्+क्तिन्, नि० न संप्रसारणम्]। 1. लकड़ी, लाठी 2. सोटा, गदका, गदा 3. खंभा, सतून, स्तम्भ 4. अड्डा—जैसा कि 'वासयष्टि' में 5. वृन्त, सहारा 6. झंडे का डंडा जैसा कि ध्वजयष्टि' में 7. डंठल, वृन्त 8. शाखा, टहनी—'कदम्बयष्टिः स्फुटकोरकेव—उत्तर० ३।४१, इसी प्रकार 'चूतयष्टिः—कु० ६।२, सहकारयष्टिः आदि 9. डोरी, लड़ी, (जैसे मोतियों की) हार,—विमुच्य सा हारमहार्यनिश्चया विलोलयष्टिः प्रविलुप्तचन्दनम्—कु० ५।८, रघु० १३।५४ 10. कोई लता 11. कोई भी पतली या सुकुमार वस्तु ('शरीर' अर्थ को प्रकट करने वाले शब्दों के पश्चात् समास के अन्त में प्रयोग)—तं वीक्ष्य वेपथुमती सरसाङ्गयष्टिः कु० ५।८५, 'पसीने से तर सुकुमार अंगों वाली'। सम०—ग्रहः गदाधारी, लाठी रखने वाला —निवासः मोर आदि पक्षियों के बैठने का अड्डा —वृक्षेशया यष्टिनिवासभङ्गात्—रघु० १६।१४ 2. खड़े हुए डंडों पर स्थिर कबूतरों का घर या छतरी, —प्राण (वि०) 1. निर्बल, शक्तिहीन 2. प्राणहीन ।

यष्टिकः [यष्टि+कन्] टिटिहरी पक्षी ।

यष्टिका [यष्टिक+टाप्] 1. लाठी, डंडा, सोटा, गदका 2. (एक लड़का) मोतियों का हार ।

यष्टी दे० यष्टि ।

यष्टृ (पुं०) [यज्+तृच्] पूजा करने वाला, यजमान ।

यस् (म्वा० दिवा० पर० यसति, यस्यति, यस्त) प्रयास करना, कोशिश करना, परिश्रम करना । प्रेर० (यासयति—ते कष्ट देना, आ—1. प्रयास करना, कोशिश करना, चेष्टा करना—मुद्रा० ३।१४ 2. थका देना, थक जाना—नायस्यसि तपस्यन्ती—भट्टि० ६।६९, १५।५४, (प्रेर०)—कष्ट देना, सताना, पीड़ा देना प्र —, प्रयास करना, कोशिश करना ।

या (अदा० पर० याति, यात) 1. जाना, हिलना—जुलना, चलना, आगे बढ़ना,—ययौ तदीयामवलम्ब्य चाङ्गुलिम् —रघु० ३।२५, अन्वययौ मध्यमलोकपालः—२।१६ 2. चढ़ाई करना, आक्रमण करना—मनु० ७।१८३ 3. जाना, प्रयाण करना, कूच करना (कर्म० या संप्र० के साथ अथवा 'प्रति' के साथ) 4. गुजर जाना, वापिस होना, बिदा होना 5. नष्ट होना, ओझल होना—यातस्तवापि च विवेकः—भामि० १।६८, भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति मृच्छ० १।१३ 6. गुजर जाना, बीतना (समय का)—यौवनमनिवर्ति यातं तु काव्य० १० 7. टिकना 8. होना, घटित होना 9. जाना, घटना, होना (प्राय: भाववाचक संज्ञा के कर्म० के साथ) 10 उत्तरदायित्व संभालना—न त्वस्य सिद्धौ यास्यामि सर्गव्यापारमात्मना—कु० २।५४ 11. मैथुनसंबंध स्थापित करना 12. प्रार्थना करना, याचना करना 13. ढूंढना, खोजना ('गम्' की भांति 'या' के अर्थ भी संयुक्त संज्ञा शब्द के अनुसार नाना प्रकार से बदलते रहते हैं—उदा० अग्रे या आगे आगे चलना, नेतृत्व करना, मार्ग दिखाना, अधो या डूबना, अस्तं या छिपना, अस्त होना क्षीण होना, उदयं या उदय होना नाशं या नष्ट होना, निद्रां या सो जाना पदं या पद प्राप्त करना, पारं या पार जाना, स्वामी होना, पार कर जाना, आगे बढ़ जाना, प्रकृतिं या फिर स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त करना, लघुतां या हलका होना, वशं या वस में होना, अधिकार में आना, वाच्यतां या कलङ्कित या निन्दित होना, विपर्यासं या परिवर्तित होना, रूप बदलना, शिरसा महीं या भूमि पर सिर झुकाना आदि). प्रेर०—(यापयति—ते) 1. चलाना, आगे बढ़ाना 2. हटाना, दूर हांकना—रघु० ९।३१ 3. व्यय करना, (समय) बिताना—तावत्कोकिल विरसान्यापय दिवसान्—भामि० १।७, मेघ० ८९ 4. सहारा देना, पालनपोषण करना, इच्छा० (यियासति) जाने की इच्छा करना, जाने को होना; अति —, 1. पार जाना, अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना 2. आगे बढ़ना,—अधि—, चले जाना, आगे बढ़ना, बच निकलना कुतोऽधियास्यसि क्रूर निहतस्तेन पत्रिभिः—भट्टि० ८।९०, अनु—, 1. अनुसरण करना, पीछे जाना (आलं० से भी) अनुयास्यन्मुनितनयां—श० १।२९, कु० ४।२१, भट्टि० २।७७ 2. नकल करना, बराबर करना—स किलानुययुस्तस्य राजानो रक्षितुर्यशः—रघु० १।२७, ९।६, शि० १२।३ 3. साथ चलना, अनुसम्—, क्रमशः चलना, अप—,चले जाना, विदा होना, वापिस होना, अभि , पहुँचना, जाना, नजदीक होना—अभिययौ स हिमाचलमुच्छ्रितम्—कि० ५।१, रघु० ९।२७ 2. प्रयाण करना, आक्रमण करना—रघु० ५।३० 3. संलग्न करना, आ—, 1. आना, पहुँचना, निकट होना 2. पहुँचना, प्राप्त करना, भुगतना, किसी भी अवस्था में होना, क्षयं, तुलां, नाशम् आदि, उप—, 1. पहुँचना, निकट जाना—कि० ६।१६, 2. (किसी विशेष अवस्था को) प्राप्त होना—मृत्युं, तनुताम्,

रुजम् आदि, निस्—, 1. निकलना, बाहर जाना —रघु० १२।८३ 2. गुजरना, (समय) बीतना, परि—, चारों ओर घूमना चक्कर काटना, प्रदक्षिणा करना, प्र —, 1. चलना, जाना—श्वस्तादृभुतं नगरदैवतवत्प्रयासि —मृच्छ० १।२७ 2. प्रयाण करना, कूच करना, प्रति —, वापिस जाना, लौटना— रघु० १।७५, १५।१८, ८।९०, प्रत्युद्—, (आदर स्वरूप) उठकर मिलना, अभिवादन करना, सत्कार करना—तानर्घ्यानर्घ्यमादाय दूरात्प्रत्युद्ययौ गिरिः—कु० ६।५०, मेघ० २२, रघु० १।४९, विनिस्—, बाहर जाना, निकल जाना, में से चले जाना—प्राणास्तस्या विनिर्ययुः, —सम्—, 1. चले जाना, बिदा होना, मार्ग पार कर लेना—घग० १५।८ 2. जाना, प्रविष्ट होना—तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही —भग० २।२२ 3. पहुँचना।

यागः [यज्+घञ्, कुत्वम्] 1. उपहार, यज्ञ, आहुति 2. कोई भी अनुष्ठान जिसमें आहुतियाँ दी जायं —रघु० ८।३०।

याच् (भ्वा० आ० याचते–विरल प्रयोग–याचति याचित) मांगना, याचना करना, निवेदन करना, प्रार्थना करना, अनुरोध करना, अनुनय-विनय करना (द्विकर्म० के साथ)—बलिं याचते वसुधाम्—सिद्धा०, पितरं प्रणिपत्य पादयोरपरित्यागमयाचतात्मनः—रघु० ८।१२, भट्टि० १४।१०५ (उपसर्ग लगने पर इस धातु के अर्थों में कोई महान् परिवर्तन नहीं होता)।

याचकः (स्त्री०—की) [याच्+ण्वुल्] भिक्षुक, भिखारी, आवेदक—तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः—सुभा०।

याचनम्,—ना [याच्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च] 1. मांगना, याचना करना, निवेदन करना, 2. प्रार्थना, अनुरोध, आवेदन याचना माननाशाय, बध्यतामभययाचनाञ्जलिः—रघु० ११।७८।

याचनकः [याचन्+कन्] भिखारी, अभियोक्ता, आवेदक।

याचिष्णु (वि०) [याच्+इष्णुच्] भीख मांगने पर उतारू याचनाशील, मांगने के स्वभाव वाला।

याचित (भू० क० कृ०) [याच्+क्त] मांगा गया, निवेदन किया गया, याचना किया गया, अनुरोध किया गया, प्रार्थना की गई।

याचितकम् [याचित+कन्] भिक्षा में प्राप्त वस्तु, उधार ली हुई कोई वस्तु।

याच्ञा [याच्+नङ्+टाप्] 1. मांगना, याचना करना 2. भिखारीपन 3. प्रार्थना, निवेदन, अनुरोध—याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा—मेघ० ६।

याजकः [यज्+णिच्+ण्वुल्] 1 यज्ञ कराने वाला, यज्ञ कराने वाला पुरोहित 2. राजकीय हाथी 3. मदोन्मत्त हाथी।

याजनम् [यज्+णिच्+ल्युट्] यज्ञ का संचालन या अनुष्ठान कराने की क्रिया—मनु० ३।६५, १।८८।

याज्ञसेनी [यज्ञसेन+अण्+ङीप्] द्रौपदी का पितृपरक नाम।

याज्ञिक (वि०) (स्त्री०—की) [यज्ञाय हितं, यज्ञः प्रयोजनमस्य वा ठक्] यज्ञसंबंधी,—कः यज्ञ कराने वाला, या यज्ञ करने वाला, या यज्ञ कराने वाला पुरोहित।

याज्य (वि०) [यज्+ण्यत्] 1. त्याग करने के योग्य 2. यज्ञ संबंधी 3. जिसके लिये यज्ञ किया जाय 4. शास्त्र द्वारा जो यज्ञ करने का अधिकारी माना है,—ज्यः यज्ञकर्ता, यज्ञसंस्थापक,—ज्यम् उपहार या दक्षिणा जो यज्ञ कराने के उपलक्ष्य में प्राप्त हो।

यात (भू० क० कृ०) [या+क्त] 1. गया हुआ, प्रयात, चला हुआ 2. गुजरा हुआ, विसर्जित, दूर गया हुआ (दे० 'या'),—तम् 1. चाल, गति 2. प्रयाण 3. भूतकाल। सम०—याम,—यामन् (वि०) 1. बासी, इस्तेमाल किया हुआ, विकृत, परित्यक्त, जो निरर्थक हो गया है अयातयामं वयः—दश० 2. कच्चा, अधपका (भोजन आदि)—यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्—भग० १७।२० 3. जीर्ण, थका हुआ, घिसा हुआ।

यातनम् [यत्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रतिकार, बदला, प्रतिशोध, प्रतिहिंसा जैसा कि 'वैरयातनं' में 2. प्रतिहिंसा, वैरशोधन,—ना 1. प्रतिशोध, क्षतिपूर्ति, बदला 2. संताप संपीड़न, वेदना 3. यम के द्वारा पापियों को दी गई यातना, नरक की यन्त्रणा (ब० व०)।

यातुः [या+तुन्] 1 यात्री, बटोही 2. हवा 3. समय, पुं०, नपुं० भूतप्रेत, पिशाच, राक्षस। सम०—धान भूतप्रेत, पिशाच,—भट्टि० २।२१, रघु० १२।४५।

यातृ (स्त्री०) [यत्+ऋन्, वृद्धिश्च] जिठानी या देवरानी।

यात्रा [या ष्ट्रन्+टाप्] 1. जाना, गति, सफ़र, महावी० ६।१, रघु० १८।१६ 2. सेना का प्रयाण, चढ़ाई, आक्रमण—मार्गशीर्षे शुभे मासि यायाद्यात्रां महीपतिः —मनु० ७।१८२, पंच० ३।३७, रघु० १७।५६ 3. तीर्थाटन यथा तीर्थयात्रा 4. तीर्थ यात्रियों का समूह 5. उत्सव, पर्व, किसी उत्सव या संस्कार का अवसर—कालप्रियानाथस्य यात्राप्रसङ्गेन—मा० १, उत्तर० 6. जुलूस, उत्सवयात्रा, प्रवृत्ता खलु यात्राभिमुखं मालती—मा० ६, ६।२ 7. सड़क 8. जीवन का सहारा, जीविका, निर्वाह, यात्रामात्र प्रसिद्धयर्थम्—मनु० ४।३, शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः —भग० ३।८ 9. (समय का) बीतना 10. संव्यवहार —यात्रा चैव हि लौकिकी—मनु० ११।१८४, लोकयात्रा वेणी० १, मनु० ९।२७ 11. रीति, उपाय,

तरकीब 12. प्रथा, प्रचलन, दस्तूर, रीति—एषोदिता लोकयात्रा नित्यं स्त्रीपुंसयोः परा - मनु० ९।२५, (लोकचारः—कुल्लू०) 13. वाहन, सवारी।

यात्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [यात्रा+ठक्] 1. यात्रा करता हुआ 2. किसी यात्रा या आन्दोलन से सम्बद्ध 3. जीवन-धारण की आवश्यक सामग्री 4. प्रचलित, प्रथानुकूल, —कः यात्री, —कम् 1. प्रयाण, अभियान या चढ़ाई 2. खाद्य सामग्री, (यात्रा के लिए) रसद, सम्भरण।

याथातथ्यम् [यथातथ+ष्यञ्] 1. वास्तविकता, सचाई 2. न्याय्यता, औचित्य।

याथार्थ्यम् [यथार्थ+ष्यञ्] 1. वास्तविक या सही प्रकृति, सचाई, सच्चा चरित्र—न सन्ति याथार्थ्यविदः पिनाकिनः—कु० ५।७७, रघु० १०।२४ 2. न्याय्यता, उपयुक्तता 3. उद्देश्य की पूर्ति या निष्पन्नता।

यादवः [यदोरपत्यम् - अण्] यदु की संतान, यदुवंशी।

यादस् (नपुं०) [यान्ति वेगेन—या+असुन्, दुगागमः] कोई भी विशालकाय जलजन्तु, समुद्री दानव—यादांसि जलजन्तवः—अमर०, वरुणो यादसामहम्—भग०, १०।२९, कि० ५।२९, रघु० १।१६। सम०—पतिः, —नाथः (यादसां पतिः, यादसां नाथः भी) 1. समुद्र, 2. वरुण का नाम—रघु० १७।२१।

यादृक्ष (वि०) (स्त्री०—क्षी), **यादृश्, यादृश** (वि०) (स्त्री० शी) [यद्+दृश्+क्त, क्विन्, कञ् वा, आत्वम्] जिस प्रकार का, जिसके समान, जिस प्रकृति का, जैसा।

यादृच्छिक (वि०) (स्त्री०—की) [यदृच्छा+ठक्] 1. ऐच्छिक, स्वतः स्फूर्त, स्वतंत्र 2. आकस्मिक, अप्रत्याशित।

यानम् [या भावे ल्युट्] 1. जाना, हिलना-जुलना, चलना टहलना, सवारी करना जैसा कि गजयानम्, उष्ट्र° रथ° आदि 2. जलयात्रा, यात्रा—समुद्रयानकुशलाः —मनु० ८।१५७, याज्ञ० १।१४ 3. अभियान करना, आक्रमण करना (राजनीति के छः गुणों में से एक) -अहितान् प्रत्यभीतस्य रणे यानम् —अमर०, मनु० ७।१६० 4. जलूस, परिजन 5. सवारी, वाहन, गाड़ी, रथयानं सस्मार कौबेरम्—रघु० १५।४५, १३।६९, कु० ६।७६, मनु० ४।१२०। सम० पात्रम् जहाज, नौका, —भङ्गः जहाज़ का टूट जाना,—मुखम् गाड़ी का अगला भाग, गाड़ी का वह भाग जहाँ जूआ बांधा जाता है।

यापनम्,—ना [या+णिच्+ल्युट्, पुकागमः, स्त्रियां टाप् च] 1. जाने देना, हांक कर बाहर निकालना, निष्कासन, हटाना 2. (किसी रोग की) चिकित्सा या प्रशमन 3. समय बिताना जैसा कि 'कालयापन' में 4. विलम्ब, दीर्घसूत्रता 5. सहारा, निर्वाह 6. प्रचलन, अभ्यास।

याप्य (वि०) [या+णिच्+ण्यत्, पुकागमः] 1. हटाये जाने के योग्य, निकाले जाने के योग्य अथवा अस्वीकार किय जाने के योग्य 2. नीच, तिरस्करणीय, मामूली, अनावश्यक। सम०—यानम् शिविका या पालकी, डोली।

यामः [यम्+घञ्] 1. निरोध, धैर्य, नियन्त्रण 2. पहर, दिन का आठवाँ भाग, तीन घंटे का समय—पश्चिमाद्यामिनीयामात्प्रसादमिव चेतना—रघु० १७।१, इसी प्रकार यामवती, त्रियामा आदि। सम०—घोषः 1. मुर्गा 2. घण्टा या घड़ियाल जिससे रात के पहरों की टनटन होती है—मन्द्रध्वनित्याजितयामतूर्यः—रघु० ६।५६, यमः प्रत्येक घण्टे के लिए निर्दिष्ट कार्य, —वृत्तिः (स्त्री०) पहरा देना, चौकीदारी करना।

यामलम् [यमल+अण्] जोड़ी, मिथुन।

यामवती [याम+मतुप्, वत्वम्, ङीप्] रात—कि० ८।५६,

यामिः,—मी (स्त्री०) [याति कुलात् कुलान्तरम्—या+मि, ङीप् च] 1. बहन (दे० जामि)—शि० १५।५३ 2. रात।

यामिकः [यामे नियुक्तः याम+ठक्] पहरेदार, रात को पहरे पर नियुक्त, चौकीदार—नै० ५।११०।

यामिका, यामिनी [यामिक+टाप्, याम+इनि+ङीप्] रात—सवितां विधवति विधुरपि सवितरति दिनन्ति यामिन्यः, यामिनयन्ति दिनानि च सुखदुःखवशीकृते मनसि—काव्य० १०। सम० पतिः 1. चन्द्रमा 2. कपूर।

यामुन (वि०) (स्त्री० नी) [यमुना+अण्] यमुना से संबद्ध, या निकला हुआ, या यमुना से उत्पन्न, नम् एक प्रकार का अंजन, सुर्मा।

यामुनेष्टकम् [यमुना+इष्टकम्] सीसा, रांग।

याम्य (वि०) [यम+ष्यञ्] 1. दक्षिणी—द्वारं ररंधतुर्याम्यम्—भट्टि० १४।१५ 2. यम से संबंध रखने वाला या यम से मिलता जुलता। सम०—अयनम् दक्षिणायन, मकरसंक्रांति,—उत्तर (वि०) दक्षिण से उत्तर को जाने वाला।

याम्या [याम्य+टाप्] 1. दक्षिणदिशा 2. रात्रि।

यायजूकः [यज्+यङ्+ऊक] वार २ यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला, जो लगातार यज्ञ करता रहता है, इज्याशील—तं यायजूकः सह भिक्षुमुख्यैः—भट्टि० २।२०।

यायावर (वि०) [पुनः पुनः याति देशान्तरं गच्छति या +यङ्+वरच्] परिव्रज्याशील साधु, संत,—यायावरः पुण्यफलेन चाप्ये प्रानर्चुरर्च्या जगदर्चनीयम्—भट्टि० २।२०, महाभागस्तस्मिन्नयमजनि यायावरकुले

—बालरा० १।१३ (यहाँ 'यायावर' एक कुल का नाम है)।

यावः,—यावकः,—कम् [यु+अच्+अण्=याव+कन्] 1. जौ से तैयार किया हुआ आहार 2. लाख, लाल रंग, महावर—लम्यते स्म परिरक्ततयात्मा यावकेन वियतापि यवत्याः—शि० १०।९, १५।१३, कि० ५।४०।

यावत् (वि०) (स्त्री०—ती) [यद्+वतुप्, आत्वम्] ('तावत्' का सहसंबंधी) 1. जितना, जितने ('जितने' के लिए यावत् तथा 'उतने' के लिए तावत् का प्रयोग होता है) - पुरे तावन्तमेवास्य तनोति रविरातपम्। दीर्घकाकमलोन्मेपो यावन्मात्रेण साध्यते—कु० २।३३, ते तु यावन्त एवाजौ तावांश्च ददृशे स तैः—रघु० १२। ४५, १७।१७ 2. जितना बड़ा, जितना विस्तृत, कितना बड़ा या कितना विस्तृत यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके, तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः —भग० २।४६, १८।५५ 3. सब, समस्त (यहाँ दोनों मिल कर समष्टि या साकल्य का अर्थ प्रकट करते हैं) —यावद्दत्तं तावद्भुक्तम्—गण० अव्य०, 'यावत्' अकेला प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) जहां तक, तक, पर्यन्त, जब तक कि, (कर्म० के साथ)—स्तन्यत्यागं यावत् पुत्रयोरवेक्षस्व—उत्तर० ७, कियन्तमवधिं यावदस्मच्चरितं चित्रकारेणालिखितम् —उत्तर० १, सर्पकोटरं यावत्—पंच० १ (ख) तभी, ठीक उसी समय, इसी बीच में (तुरन्त किये जाने वाले कार्य को दर्शाने वाला),—तद्यावत् गृहिणीमाहूय संगीतकमनुतिष्ठामि श० १, यावदिमां छायामाश्रित्य प्रतिपालयामि श० ३ 2. यदि यावत् और तावत् मिलकर प्रयुक्त हों तो निम्नांकित अर्थ प्रकट होता है (क) इतनी देर कि, इतने समय तक कि, —यावद्वित्तोपार्जनशक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः—मोह० ८ (ख) ज्योंही, अभी-अभी, इसी समय—एकस्य दुःखस्य न यावदन्तं गच्छामि······तावद्द्वितीयं समुपस्थितं मे हि० १।२०४, मेघ० १०५, कु० ३।७२ (ग) जबकि, उसी समय तक आश्रमवासिनो यावदवेक्ष्याहमुपावर्ते तावदार्द्रपृष्ठाः क्रियन्तां वाजिनः श० १, प्रायः 'न' के साथ भी प्रयोग जब कि 'यावन्न' का अर्थ होता है 'इससे पूर्व कि' यावदेते सरसो नोत्पतन्ति तावदेतेभ्यः प्रवृत्तिरवगमयितव्या —विक्रम० ४ (घ) जब, जिस समय यावदुत्थाय निरीक्षते तावद् हंसोऽवलोकितः हि० ३। सम० **अन्तम्,—अन्ताय** (अव्य०) अन्त तक, आखीर तक,—**अर्थ** (वि०) आवश्यकता के अनुसार, उतने जितने कि अर्थ प्रकट करने के लिए आवश्यक हैं (शब्द)—यावदर्थपदां वाचमेवमादाय माधवः विरराम—शि० २।१३, (अव्य० **अर्थम्**) 1. उतना जितना उपयोगी हो 2. सभी अर्थों में—वयमपि च गिरामीश्महे यावदर्थम्—भर्तृ० ३।३० (पाठान्तर),—**इष्टम्, —ईप्सितम्** (अव्य०) यथेच्छ, इच्छा के अनुकूल, —**इत्थम्** (अव्य०) आवश्यकता के अनुसार, जितना आवश्यक हो,—**जन्म,—जीवम्,—जीवेन** (अव्य०) जीवन भर, जीवनपर्यंत, आजीवन,—**बलम्** (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार, जितना अधिक से अधिक बल हो,—**भाषित उक्त** (वि०) उतना जितना कहा जा चुका है,—**मात्र** (वि०) 1. इतना बड़ा, इतना विस्तृत, जहाँ तक व्यापक हो—कु० २।३३ 2. नगण्य, तुच्छ, मामूली,—**शक्यम्,—शक्ति** (अव्य०) जहाँ तक संभव हो, अपनी शक्ति के अनुसार—इसी प्रकार 'यावत्सत्त्वम्'।

यावन (वि०) (स्त्री०—नी) [यवन+अण्, यु+णिच् +ल्युट् वा] यवनों से संबंध रखने वाला, न वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि—सुभा०,—नः लोबान।

यावसः [यवस+अण्] 1. घास का ढेर 2. चारा, खाद्य-सामग्री।

याष्टीक (वि०) (स्त्री०—की) [यष्टिः प्रहरणमस्य —ईकक्] लाठी या सोटे से सुसज्जित,—**कः** लाठी से सुसज्जित योद्धा।

यास्कः [यस्कस्यापत्यम् यस्क+अण्] निरुक्तकार का नाम।

यु i (अदा० पर० यौति, युत; प्रेर० यावयति, इच्छा० यियविषति या युयूषति) 1. सम्मिलित होना, मिलना 2. मिलाना, गड्डमड्ड करना।
ii (जुहो० पर० युयोति) अलग-अलग करना।
iii (क्या० उभ० युनाति, युनीते) बांधना, जकड़ना, सम्मिलित होना, मिलना।
प्र , थामना, अनुष्ठान करना, **व्यति** , मिश्रण करना—अन्योन्यं स्म व्यतियुतः शब्दाञ्शब्दैस्तु भीषणान्—भट्टि० ८।६।

युक्त (भू० क० कृ०) [युज्+क्त] 1. सम्मिलित, मिला हुआ 2. जकड़ा हुआ, जूए में जोता हुआ, साज-सामान से संनद्ध 3. युक्त किया हुआ, सुव्यवस्थित 4. सहित 5. सुसज्जित, युक्त, भरा हुआ, सहित (समास में या करण० के साथ) 6. स्थिर, तुला हुआ, लीन, व्यस्त (अधि० के साथ) 7. कर्मपरायण, परिश्रमी 8. कुशल अनुभवी, चतुर 9. योग्य, उचित, ठीक, उपयुक्त (संबं० या अधि० के साथ) 10. आदिकालीन, मौलिक (शब्द),—**क्तः** महात्मा जो परब्रह्म परमात्मा से सायुज्य प्राप्त कर चुका है,—**क्तम्** जोड़ी, जुआ या युग्म। सम०—**अर्थ** (वि०) समझदार, विवेकी, सार्थक, **कर्मन्** (वि०) जिसे किसी कर्तव्य कर्म पर

लगाया गया है,—वध्य (वि०) न्यायोचित दंड देने वाला—रघु० ४।८,—मनस् (वि०) सावधान,—रूप (वि०) योग्य, उचित, लायक, उपयुक्त (संबं० या अधि० के साथ)—जन्म यस्य पुरोर्वंशे युक्तरूपमिदं तव—श० १।७, अनुकारिणि पूर्वेषां युक्तरूपमिदं त्वयि—२।१६।

युक्तिः (स्त्री०) [युज्+क्तिन्] 1. मिलाप, संगम, सम्मिश्रण 2. प्रयोग, इस्तेमाल, काम में लाना 3. जुए में जोतना 4. व्यवहार, प्रचलन 5. उपाय, तरकीब, योजना, जुगत 6. कपटयोजना, कूटयुक्ति, दाव-पेंच 7. औचित्य, योग्यता, सामंजस्य, संगति, उपयुक्तता 8. कौशल, कला 9. तर्कना, युक्ति, दलील 10. अनुमान, निगमन 11. हेतु, कारण 12. क्रमबद्धता, रचना—यत्र खल्वियं वाचोयुक्तिः मा० १ 13. (विधि में) संभावना, परिस्थिति की गणना या विशेषता (समय, स्थान आदि की दृष्टि से)—युक्तिप्राप्तिक्रियाचिह्नसंबंधाभोगहेतुभिः याज्ञ० २।९२, २१२ 14. (नाटकों में) घटनाओं की नियमित शृंखला, तु० सा० द० ३४३ 15. (अलं० में) किसी के प्रयोजन या अभिकल्प की प्रच्छन्न अथवा प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 16. कुल राशि, योग 17. धातु में खोट मिलाना। सम० -कथनम् हेतुओं का वर्णन, -कर (वि०) 1. उपयुक्त, योग्य 2. सिद्ध, -ज्ञ (वि०) तरकीब या उपायों में कुशल, आविष्कार कुशल, युक्त (वि०) 1. उपयुक्त, योग्य 2. विशेषज्ञ, कुशल 3. स्थापित, सिद्ध 4. तर्कयुक्त।

युगम् [युज्+घञ्, कुत्वम्, गुणाभावः] 1. जुआ (पुं० भी इस अर्थ में) —युगव्यायत बाहुः रघु० ३।३४, १०।६७, शि० ३।६८ 2. जोड़ा, दम्पती, युगल—कुचयोर्युगेन तरसा कलिता - शि० ९।७२, स्तनयुग—श० १।१९ 3. श्लोकार्ध जिसमें दो चरण होते हैं, युग्म 4. सृष्टि का युग (युग चार हैं: कृत या सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि—प्रत्येक की अवधि क्रमशः १७२८०००, १२९६०००, ८६४००० और ४३२००० वर्ष है, चारों को मिलाकर ४३२०००० वर्ष का एक महायुग होता है) ऐसा माना जाता है कि युगों की उत्तरोत्तर घटती हुई अवधि के अनुसार शारीरिक और नैतिक शक्ति भी मनुष्यों में बराबर गिरती गई है; संभवतः इसीलिए कृतयुग को स्वर्णयुग और कलियुग को लौहयुग कहते हैं, धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे - भग० ४।८, युगशतपरिवर्तान्—श० ७।३४ 5. पीढ़ी, जीवन,—आ सप्तमाद्युगात् - मनु० १०।६४, जात्युत्कर्षो युगे ज्ञेयः पञ्चमे सप्तमेऽपि वा याज्ञ० १।९६ (युगे=जन्मनि मिता०) 6. 'चार' की संख्या की अभिव्यक्ति, 'बारह' की संख्या के लिए विरलप्रयोग। सम० अन्तः 1. जुए का किनारा 2. युग का अन्त, सृष्टि का अन्त या विनाश - युगान्तकालप्रतिसंहृतात्मनो जगन्ति यस्यां सविकासमासत शि० १।२३, रघु० १३।६ 3. मध्याह्न, दोपहर, - अवधिः सृष्टि का अन्त या विनाश शि० १७।४०, कीलकः जुए की कीली —पार्श्वग (वि०) जुए के पास जाने वाला, जुए में जुतने वाला बैल, बाहु (वि०) लम्बी भुजाओं वाला—कु० २।१८।

युगन्धरः,—रम् [युग+धृ+खच्, मुम्] गाड़ी की जोड़ी जिसके साथ जुआ कस दिया जाता है।

युगपद् (अव्य०) [युग+पद्+क्विप्] एक ही समय, सब एक साथ, सब मिलकर उसी समय कु० ३।१ प्रायः समास में श० ४।२।

युगलम् [युज्+कलच्, कुत्वम्] जोड़ा दम्पती - बाहु° हस्त° चरण° आदि।

युगलकम् [युगल+कन्] 1. जोड़ी, 2. श्लोकार्ध, जो दो मिलकर पूरा श्लोक या वाक्य बनाएं, दे० युग्म।

युग्म (वि०) [युज्+मक्, कुत्वम्] सम०—युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु, तस्माद्युग्मासु पुत्रार्थी संविशेदार्तवे स्त्रियम्—मनु० ३।४८, याज्ञ० १।७९ 1. जोड़ी, दम्पती, दे० अयुग्म 2. संगम, मिलाप 3. (नदियों का) संगम 4. जुड़वां 5. श्लोकार्ध - जिन दो से मिलकर पूरा एक वाक्य बने - द्वाभ्यां युग्ममिति प्रोक्तम् 6. मिथुन राशि।

युग्य (वि०) [युगाय हितः—यत्] 1. जोतने के योग्य 2. जुता हुआ, साज सामग्री से संनद्ध 3. खींचा गया जैसा कि 'अश्वयुग्यो रथः' में,—ग्यः जुता हुआ या खींचने वाला जानवर, विशेषतः रथ का घोड़ा—हरियुग्यं रथं तस्मै—प्रजिघाय पुरन्दरः—रघु० १२।८४।

युज् i (रुधा० उभ० युनक्ति, युङ्क्ते, युक्त) 1. संमिलित होना, मिलना, अनुरक्त होना, संबद्ध होना, जुड़ना—तमर्थमिव भारत्या सुनया योक्तुमर्हसि—कु० ६।७९, दे० कर्मवा० नीचे 2. जोतना, जीन कसकर संनद्ध करना, लगाना—भानुः सकृद्युक्ततुरङ्ग एव - श० ५।४, भग० ११४ 3. सुसज्जित करना, से युक्त करना जैसा कि गुणयुक्त में 4. प्रयुक्त करना, काम में लगाना, इस्तेमाल करना—प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते—भग० १७।२६, मनु० ७।२०४ 5. नियुक्त करना, स्थापित करना (अधि० के साथ) 6. निदेशित करना, (मन आदि का) स्थिर करना, जमाना 7. अपना ध्यान संकेन्द्रित करना—मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः—भग० ६।१४, युञ्जन्नेवं सदात्मानं—१५ 8. रखना, स्थिर करना, जमाना (अधि० के साथ)

9. तैयार करना, सुव्यवस्थित करना, सज्जित करना, युक्त करना 10. देना, प्रदान करना, सादर समर्पित करना—आशिषं युयुजे, कर्मवा० (युज्यते) 1. संमिलित होने के योग्य—रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि युज्यते नदी—कु० ४।४४, रघु० ८।१७ 2. प्राप्त करना, स्वामी होना—इष्टेन युज्यस्व—श० ५, महावी० ७, रघु० २।६५ 3. योग्य या सही होना, समुचित होना, उपयुक्त होना (अधि० या संबंध के साथ) या यस्य युज्यते भूमिका तां खलु भावेन तथैव सर्वे वर्ग्याः पाठिता —मा० १, त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं त्वयि युज्यते—हि० १ 4. तैयार होना—ततो युद्धाय युज्यस्व भग० २।३८, ५० 5. तुल जाना, लीन होना, निदेशित होना —मनु० ३।७५, १४।३५, कि० ७।१३। प्रेर० (योजयति—ते) 1. सम्मिलित होना, मिलना एकत्र करना —रघु० ७।१४ 2. उपहार देना, समर्पण करना, प्रदान, करना—रघु० १०।५६ 3. नियुक्त करना, काम पर लगाना, इस्तेमाल करना—शत्रुभिर्योजयेच्छत्रुम्—पंच० ४।१७ 4. मुड़ना, किसी ओर निदेशित करना—पापान्निवारयति योजयते हिताय—भर्तृ० २।७२ 5. उत्तेजित करना, प्रेरित करना, भड़काना 6. सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 7. तैयार करना, सुव्यवस्थित करना, सुसज्जित करना—इच्छा० (युयुक्षति-ते) सम्मिलित होने की इच्छा करना, जोतने की इच्छा करना, देने की कामना करना, अनु—,(आ०) 1. पूछना प्रश्न करना —अन्वयुंक्त गुरुमीश्वरः क्षितेः रघु० ११।६२, ५।१८, शि० १०।६८ 2. परीक्षण करना, जांच करना मनु० ७।७९, अभि ,(आ०) चेष्टा करना, काम में पिल जाना 2. आक्रमण करना, धावा करना भवन्तमभियोक्तुमुद्युङ्क्ते—दश० 3. दोषारोपण करना, दोषी ठहराना मनु० ८।१८३ 4. अधिकार जताना, मांग प्रस्तुत करना (जैसे कि किसी कानूनी अभियोग में)—विभावितैकदेशेन देयं यदभियुज्यते- विक्रम० ४।१७, याज्ञ० २।९ 5. कहना, बोलना उद्—,

उत्तेजित करना, सक्रियता उद्दीप्त करना 2. कोशिश करना, प्रयास करना भवन्तमभियोक्तुमुद्युङ्क्ते—दश० 3. तैयार करना, उप—,(आ०) 1. इस्तेमाल करना, काम में लगाना—षाड्गुण्यमुपयुञ्जीत—शि० २।९३, पणबन्धमुखान्गुणानजः षडुपायुङ्क्त समीक्ष्य तत्फलम् रघु० ८।२१, मालवि० ५।१२ 2. चखना, स्वाद लेना अनुभव करना (आलं० से भी) रघु० १८।४६, भट्टि० ८।३९ 4. उपभोग करना, खाना—मनु० ८।४०, नि (आ०) 1. नियुक्त करना, प्रतिनियुक्त करना, आदेश देना (अधि० के साथ) - यन्मां विधेयविषये स भवान्नियुङ्क्ते—मा० १।९, असाधुदर्शी तत्र भवान् काश्यपः य इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते श० १, कु० ३।१३, रघु० ५।२९ 2. सम्मिलित होना, मिलना 3. नियत करना आदिष्ट करना। (प्रेर०) 1. सम्मिलित करना, मिलाना, से युक्त करना, प्रदान करना—कु० ४।४२ 2. जोतना, संनद्ध करना, 3. उकसाना, प्रेरित करना—भग० ३।१, प्र—,(आ०) 1. इस्तेमाल करना, काम में लाना —अयमपि च गिरं नस्त्वत्प्रबोधप्रयुक्ताम्—रघु० ५।७५, सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते—भग० १७।२६ 2. नियत करना, काम में लगाना, निदेशित करना, आदेश देना—मा मां प्रयुङ्क्थाः कुलकीर्तिलोपे—भग० ३।५४, प्रायुङ्क्त राज्ये बत दुष्करे त्वाम्—३।५१, कु० ७।८५ 3. देना, प्रदान करना, अभिदान करना —अशिषं प्रयुयुजे न वाहिनीम्—रघु० ११।६, २।७०, ५।३५, १५।८ 4. हिलना-जुलना, गतिदेना—मरुत्प्रयुक्ताः (बाललताः)—रघु० २।१० 5. उत्तेजित करना, प्रेरित करना, प्रेरणा देना, हांकना—कु० १।२१, भग० ३।३६ 6. संपन्न करना, करना—रघु० ७।८६, १७।१२ 7. रंगमंच पर प्रतिनिधित्व करना, अभिनय करना, नाट्य करना—उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयुज्यते —उत्तर० १।२, परिषदि प्रयुञ्जानस्य मम कु० १. 8. इस्तेमाल करने के लिए उधार देना, (धन आदि) ब्याज पर देना मनु० ८।१४६, वि—,(आ०) 1. छोड़ना, परित्याग करना—कि० २।४९, रघु० १३।६३ 2. अलग-अलग करना—पुरो वियुक्ते मिथुने कृपावती कु० ५।२६ 3. ढीला करना, शिथिल करना, विनि—, 1. इस्तेमाल करना, व्यय करना 2. नियुक्त करना, काम में लगाना 3. बांटना, अनुभाजन करना, वितरण करना—प्रत्येकं विनियुक्तात्मा कथं न ज्ञास्यसि प्रभो—कु० २।३१ 4. वियुक्त करना, अलग करना, सम्—,सम्मिलित होना (कर्मवा० में)—संयोक्ष्यसे स्वेन वपुर्महिम्ना रघु० ५।२५, (प्रेर०) मिलाना, सम्मिलित करना।

ii (भ्वा० चुरा० पर० योजति, योजयति) जोड़ना, मिलाना, जोतना दे० ऊपर 'युज्'।

iii (दिवा० आ० युज्यते) मन को संकेन्द्रित करना ('युज्' के कर्मवा० रूप के समरूप)।

युज् (वि०) [युज्+क्विन्] (समास के अन्त में) 1. जुड़ा हुआ, मिला हुआ, जुता हुआ, खींचा जाता हुआ 2. सम, अविषम, पुं० 1. सम्मेलक, जो जोड़ देता है, मिला देता है 2. ऋषि मुनि, जो अपने आपको भावसमाधि में संलग्न रखता है 3. जोड़ा, दंपती (इस अर्थ में नपुं० भी)।

युञ्जानः [युज्+शानच्] 1. हांकने वाला, रथवान् 2. वह ब्राह्मण जो परमात्मा से सायुज्य प्राप्त करने के लिए योगाभ्यास में व्यस्त है।

युत (भू० क० कृ०) [यु+क्त] 1. जुड़ा हुआ, सम्मिलित,

मिला हुआ 2. से युक्त या सहित—जैसा कि 'गुणगण-युतो करः' में ।

युतकम् [युत+कन्] 1. जोड़ी 2. मिलाप, मित्रता, मैत्री 3. विवाहोपहार 4. स्त्रियों की एक प्रकार की वेशभूषा 5. स्त्रियों के वस्त्र की किनारी या झालर ।

युतिः (स्त्री०) [यु+क्तिन्] 1. मिलाप, संगम 2. सुसज्जित होना, 3. स्वामित्व प्राप्त करना 4. जोड़, योग 5. (ज्योति० में) संयुक्ति, दो ग्रहों का स्पष्ट योग ।

युद्धम् [युध्+क्त] 1. संग्राम, समर, लड़ाई, भिड़न्त, मुठभेड़, संघर्ष, द्वन्द्व वत्स केयं वार्ता युद्धं युद्धमिति उत्तर० ६ 2. (ज्योति० में) ग्रहों का संघर्ष या विरोध । सम०—**अवसानम्** युद्ध की समाप्ति, सुलह, —**आचार्यः** सैन्यशिक्षा का गुरु,—**उन्मत्त** (वि०) युद्ध के लिए पागल, रणोन्मत्त,—**कारिन्** (वि०) लड़ने वाला, संघर्षशील,—**भूः**,—**भूमिः** (स्त्री०) रणक्षेत्र, **मार्गः** सैनिक कूटचाल या छलबल, युद्धाभिनय, तिकड़मबाजी,—**रङ्गः** रणक्षेत्र, लड़ाई का अखाड़ा,—**वीरः** 1. योद्धा, शूरवीर, मल्ल 2. (अलं० में) सैन्यविक्रम से उत्पन्न वीरता का मनोभाव, वीररस दे० सा० द० २३४, 'युद्धवीर' के नीचे रस०, —**सारः** घोड़ा ।

युध् (दिवा० आ० युध्यते, युद्ध) लड़ना, संघर्ष करना, विवाद करना, युद्ध करना—भग० १।२३, भट्टि० ५।१०१, प्रेर०—(योधयति-ते) 1. लड़वाना 2. युद्ध में सामना करना या विरोध करना—रघु० १२।५० —इच्छा० (युयुत्सते) लड़ने की इच्छा करना, नि–, मल्लयुद्ध करना, विरोध करना, प्रति–, युद्ध में सामना करना, विरोध करना ।

युध् (स्त्री०) [युध्+क्विप्] संग्राम, जंग, लड़ाई, मुठभेड़ —निघातयिष्यन् युधि यातुधानान्—भट्टि० २।२१, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः भर्तृ० २।६३ ।

युधानः [युध्+आनच्, स च कित्] योद्धा, क्षत्रिय जाति का पुरुष ।

युप् (दिवा० पर० युप्यति) 1. मिटा देना, विलुप्त करना 2. कष्ट देना ।

युयुः [या+यङ्+डु] घोड़ा ।

युयुत्सा [युध्+सन्+अङ्+टाप्] लड़ने की इच्छा, विरोधी इरादा ।

युयुत्सु (वि०) [युध्+सन्+उ] लड़ने की इच्छा वाला

युवतिः,—ती (स्त्री०) [युवन्+ति, ङीप् वा] तरुणी स्त्री, तरुणी मादा (चाहे मनुष्य की हो या किसी पशु की हो) सुरयुवतिसंभवं किल मुनेरपत्यम्—श० २।८, इसी प्रकार 'इभयुवतिः' ।

युवन् (वि०) (स्त्री—युवतिः, ती, यूनी—म० अ० —यवीयस् या कनीयस्, उ० अ०—यविष्ठ या कनिष्ठ) [यौतीति युवा, यु+कनिन्] 1. तरुण, जवान, वयस्क, परिपक्वावस्था को प्राप्त 2. हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ 3. श्रेष्ठ, उत्तम । पुं० (कर्तृ० युवा, युवानौ, युवानः, कर्म० ब० व० यूनः, करण० ब० व० युवभिः आदि) 1. जवान आदमी, तरुण,—सा यूनित स्मिन्नभिलाषबन्धं शशाक शालीनतया न वक्तुम्—रघु० ६।८१ 2. छोटी सन्तान (बड़ी सन्तान जीवित रहते हुए) —जीवति तु वंश्ये युवा—पा० ४।१।११३ (दे० इस पर सिद्धा०) । सम०—**खलति** (वि०) (स्त्री०-तिः,-ती) जवानी में ही गंजा,—**जरत्** (स्त्री०-ती) जवानी में ही बूढ़ा दिखाई देन वाला, समय से पूर्व बूढ़ा हो जाने वाला, **राज्** (पुं०)—**राजः** प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी, राज्याधिकारी राजकुमार, राजा का उत्तराधिकारी पुत्र,—(असौ) नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक्—रघु० ३।३५ ।

युष्मद् [युष्+मदिक्] मध्यमपुरुष के पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रातिपदिक रूप (कर्तृ० त्वम्, युवाम्, यूयम्) तू, तुम (कई समासों के आरंभ में प्रयुक्त) ।

युष्मादृश्, **-श** (वि०) [युष्मद्+दृश्+क्विन्, आत्वम्] तुम्हारी तरह ।

यूकः,—का [यु+कन्, दीर्घः, स्त्रियां टाप्] जूँ, मनु० १।४५ ।

यूतिः (स्त्री०) [यु+क्तिन्, ति० दीर्घः] मिश्रण, मिलाप, संगम, संबंध, करोमि वो बहिर्यूतीन् पिधध्वं पाणिभिर्दृशः —भट्टि० ७।६९। ।

यूथम् [यु+थक्, पृषो० दीर्घः] रेवड़, लहंडा, भीड़, टोली झुण्ड (जैसे वन्य पशुओं का)—स्त्रीरत्नेषु ममोर्वशी प्रियतमा यूथे तवेयं दशा—विक्रम० ४।२५, श० ५।५ । सम०—**नाथः**,—**पः**, **पतिः** 1. किसी टोली या दल का नेता 2. किसी रेवड़ या भीड़ (प्रायः हाथियों की) का मुखिया, विशालकाय हाथी —गजयूथप यूथिकाशबलकेशी—विक्रम० ४।२४ ।

यूथिका, यूथी [यूथं पुष्पवृन्दमस्ति अस्याः—यूथ+ठन्+टाप्, यूथ+अच्+ङीप्] एक प्रकार की चमेली, जूही, बेला या इसका फूल यूथिकाशबलकेशी —विक्रम० ४।२४, मेघ० २६ ।

यूपः [यु+पक्, पृषो० दीर्घः] 1. यज्ञ की स्थूणा (यह प्रायः बाँस या खदिर वृक्ष की लकड़ी से बनाई जाती है) जिसके साथ बलि दिया जाने वाला पशु, मेध के समय बाँध दिया जाता है अपेक्ष्यते साधुजनेन वैदिकी श्मशान-शूलस्य न यूपसत्क्रिया—कु० ५।७३ 2. विजय-स्मारक, विजयोपहार ।

यूषः,—षम्, यूषन् (पुं०, नपुं०) [यूष्+क, कनिन् वा] रसा, झोल, शोरबा, मटर का रसा ('यूषन्' शब्द के

पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होते, कर्म० द्वि० व० के पश्चात् 'यूष्' के स्थान में विकल्प से यूषन् हो जाता है) ।

येन (अव्य०) ['यद्' शब्द का करण० का एक वचनांत रूप जो क्रियाविशेषण की भांति प्रयुक्त होता है] 1. जिससे, जिसके द्वारा, जिस लिए, जिस कारण से, जिसके साधन से किं तद् येन मनो हर्तुमलं स्यातां न शृण्वताम् रघु० १५।६४, १४।७४ 2. जिससे कि -- दर्शय तं चौरसिंहं येन व्यापादयामि पंच० ४ 3. चूंकि, क्योंकि ।

योक्त्रम् [युज्+ष्ट्रन्] 1. डोरी, रस्सी, तस्मा, रज्जु 2. हल के जुए की रस्सी 3. वह रस्सी जिसके द्वारा किसी पशु को गाड़ी के जोड़े से बाँध दिया जाता है ।

योगः [युज् भावादौ घञ्, कुत्वम्] 1. जोड़ना, मिलाना 2. मिलाप, संगम, मिश्रण, उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणी योगम्—श० ७।२२, गुणमहतां महते गुणाय योगः – कि० १०।२५, (वा) योगस्तडित्तोयदयोरिवास्तु रघु० ६।६५ 3. संपर्क स्पर्श, संबंध तमङ्कमारोप्य शरीरयोगजैः सुखैर्निषिञ्चन्तमिवामृतं त्वचि रघु० ३।२६ 4. काम में लगाना, प्रयोग, इस्तेमाल—एतैरुपाययोगैस्तु शक्यास्ताः परिरक्षितुम् —मनु० ९।१०, रघु० १०।८६ 5. पद्धति, रीति, क्रम, साधन—कयायोगेन बुध्यते—हि० १, 'बातचीत के क्रम में, 6. फल, परिणाम (अधिकतर समास के अन्त में या अपा० के साथ) रक्षायोगादयमपि तपः प्रत्यहं संचिनोति—श० २।१४, कु० ७।५५ 7. जुआ 8. वाहन, सवारी, गाड़ी 9. जिरहबक्तर, कवच 10. योग्यता, औचित्य, उपयुक्तता 11. व्यवसाय, कार्य, व्यापार 12. दाव-पेंच, जालसाजी, कूट चाल 13. तरकीब, योजना, उपाय 14. कोशिश उत्साह, परिश्रम, अध्यवसाय—मनु० ७।४४ 15. उपचार, चिकित्सा 16. इन्द्रजाल, अभिचार, मंत्रयोग, जादू, जादू-टोना 17. लब्धि, अवाप्ति, अभिग्रहण 18. धन दौलत, द्रव्य 19. नियम, विधि 20 पराश्रय, संबंध, नियमित आदेश या संयोग, एक शब्द की दूसरे शब्द पर निर्भरता 21. निर्वचन, या अर्थ की दृष्टि से शब्द व्युत्पत्ति 22. शब्द के निर्वचनमूलक अर्थ (विप० रूढि) 23. गंभीर भावचिन्तन, मन का संकेन्द्रीकरण, परमात्मचिन्तन, जिसे योगदर्शन में 'चित्तवृत्तिनिरोध' कहते हैं,—सती सती योगविसृष्टदेहा—कु० १।२१, योगेनान्ते तनुत्यजाम् – रघु० १।८ 24. पतंजलि द्वारा स्थापित दर्शन पद्धति जो सांख्य दर्शन का ही दूसरा भाग समझा जाता है, परन्तु व्यवहारतः यह एक पृथक् दर्शन है (योगदर्शन का मुख्य सिद्धांत उन उपायों की शिक्षा देना है जिनके द्वारा मानव आत्मा पूर्ण रूप से परमात्मा में मिल जाय और इस प्रकार मोक्ष की प्राप्ति हो जाय । इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गंभीर भावचिन्तन ही मुख्य साधन बताया गया है, इस प्रकार के योग या मन के संकेन्द्रीकरण के समुचित अभ्यास के लिए विस्तार के साथ नियमों का प्रतिपादन किया गया है) 25. (अंक में) जोड़, संकलन 26. (ज्योति० में) संयुक्ति, दो ग्रहों का योग 27. तारापुंज 28. विशेष प्रकार का ज्योतिषीय समय-विभाग (इस प्रकार के बहुधा २७ योग गिनाये गये हैं) 29. किसी नक्षत्र पुंज का मुख्य तारा 30 भक्ति, परमात्मा की पवित्र खोज 31. भेदिया, गुप्तचर 32. द्रोही, विश्वासघाती । सम० अंगम् योग की प्राप्ति के साधन (यह गिनती में आठ हैं, नामों के लिए दे० यम 5.) —**आचारः** 1. योग का अभ्यास या पालन 2. बुद्ध के उस संप्रदाय का अनुयायी जो केवल विज्ञान या प्रज्ञा के शाश्वत अस्तित्व को ही मानता है,—**आचार्यः**, 1. जादू का शिक्षक 2. योग दर्शन का अध्यापक, —**आधमनम्** जालसाजी से भरी बन्धकावस्था—मनु० ८।१६५,—**आरूढ** (वि० (सूक्ष्मभावचिन्तन में निमग्न, —**आसनम्** सूक्ष्मभावचिन्तन के अनुरूप अंग-स्थिति, —**इन्द्रः**,—**ईशः**, – **ईश्वरः** 1. योग में निष्णात या सिद्धहस्त 2. जिसने अलौकिक शक्ति सम्पादन कर ली है 3. जादूगर 4. देवता 5. शिव का विशेषण 6. याज्ञवल्क्य का विशेषण, **क्षेमः** 1. सामान की सुरक्षा, संपत्ति की देखभाल 2. दुर्घटनाओं से संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए शुल्क, बीमा 3. कल्याण, कुशलक्षेम, सुरक्षा समृद्धि तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्—भग० ९।२२, मुग्धाया मे जनन्या योगक्षेमं वहस्व मालवि० ४ 4. संपत्ति, लाभ, फायदा (पुं०, नपुं० द्वि० व०, मौ,—मे, नपुं० ए० व० मम्) (संपत्ति का) भिग्रहण और प्ररक्षण, उपलब्धि और सुरक्षा, पुरान का प्ररक्षण तथा नूतन का अभिग्रहण (जो पहले से अप्राप्त हो) अलभ्यलाभो योगः स्यात् क्षेमो लब्धस्य पालनम् दे० याज्ञ० १।१०० और उस पर मिता०, **चूर्णम्** जादू का चूर्ण, जादू की शक्ति वाला चूरा,— कल्पितमनेन योगचूर्णमिश्रितमौषधं चन्द्रगुप्ताय—मुद्रा० २,—**तारका**, – **तारा** नक्षत्रपुंज का मुख्य तारा,—**दानम्** 1. योग के सिद्धांतों का संचारण 2. जालसाजी से युक्त उपहार, **धारणा** सतत भक्ति, अनवरतभजन **नाथः** शिव का विशेषण,—**निद्रा** अर्धचिन्तन और अर्धनिद्रित अवस्था, जागरण और निद्रा के मध्य की स्थिति अर्थात् लघुनिद्रा —योगनिद्रां गतस्य मम—पंच० १, हि० ३।७५, भर्तृ० ३।४१ 2. युग के अन्त में

विष्णु की निद्रा --रघु० १०।१४, १३।६,—पट्टम् भावसमाधि के अवसर पर संन्यासियों द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र जो पीठ से लेकर घुटनों तक शरीर को ढक लेता है,—पतिः विष्णु का विशेषण,—बलम् 1. भक्ति की शक्ति, भावचिंतन की शक्ति, अलौकिक शक्ति 2. जादू की शक्ति,—माया 1. योग की जादू जैसी शक्ति 2. ईश्वर की सर्जन शक्ति जिससे कि देवता के रूप में मूर्त धरा की रचना की जाती है (भगवतः सर्जनार्था शक्तिः) 3. दुर्गा का नाम,—रङ्गः नारंगी,— रूढ (वि०) वह शब्द जिसके निर्वचनमूलक अर्थ भी हैं, साथ ही उसका विशेष परंपरागत अर्थ है, उदा० 'पंकज' इसका व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है 'कीचड़ से उत्पन्न होने वाला कोई भी पदार्थ' परन्तु प्रचलन या परंपरा के प्रयोगानुसार इसका अर्थ 'कीचड़ में उत्पन्न किसी वस्तु - अर्थात् कमल' में प्रतिबद्ध हो जाता है, तु० 'आतपत्र' छतरी, — रोचना एक प्रकार का जादू का लेप जिसके लगाने से मनुष्य अदृश्य और अभेद्य हो जाता है - तेन च परितुष्टेन योगरोचना मे दत्ता—मृच्छ० ३,—वर्तिका जादू का लैम्प या बत्ती,—वाहिन् (पुं०, नपुं०) औषधियों को मिलाने का माध्यम—उदा० शहद – नानाद्रव्यात्मकत्वाच्च योगवाहि परं मधु—सुश्रु०, —वाही 1. रेह, सज्जी 2. मधु 3. पारा,—विक्रयः धोखे की बिक्री,— विद् (वि०) योग का जानकार (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. योगाभ्यासी 3. योग-सिद्धांतों का अनुयायी 4. जादूगर 5. दवाइयों के बनाने वाला,— विभागः बहुधा एक स्थान पर जुड़े हुओं को अलग-अलग करना, विशेषतः सूत्र के शब्दों को अलग अलग करना, एक ही नियम के दो तीन टुकड़े करना (महाभाष्य में पतंजलि ने इसका बहुत प्रयोग किया है—उदा० अदसो मात् पा० १।१।१२),— शास्त्रम् योगदर्शन,—समाधिः आत्मा का गूढ़ भावचिन्तन में लीन होना --तमसः परमापदव्ययं पुरुषं योगसमाधिना रघुः—रघु० ८।२४, योगविधि ८।२२, - सारः सब रोगों की एक दवा, रामबाण, सर्वव्याधिहर,—सेवा भावचिंतन का अभ्यास करना।

योगिन् (वि०) [युज्+घिनुण्, योग+इनि वा] 1. से युक्त, या सहित 2. जादू की शक्ति से युक्त, पुं० 1. चिन्तनशील महात्मा, भक्त, संन्यासी—सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः --पंच० १।२८५, बभूव योगी किल कार्तवीर्यः--रघु० ६।३८ 2. जादूगर, ओझा, बाजीगर 3. योगदर्शन के सिद्धांतों का अनुयायी, —नी 1. जादूगरनी, अभिचारिका, ओझाइन, मायाविनी 2. भक्तिनी 3. शिव या दुर्गा की सेविकाओं की टोली (यह गिनती में आठ माने जाते हैं)।

योगेष्टम् (नपुं०) सीसा, रांग।

योग्य (वि०) [योगमर्हति यत्, युज्+ण्यत् वा] 1. लायक, उचित, उपयुक्त, योग्यता-प्राप्त - योग्यो ऽयं दृश्यते नरः 2. योग्य, उपयुक्त, योग्यताप्राप्त, सक्षम, अर्ह (अधि० संप्र०, संबं० के साथ तथा समास में प्रयुक्त) 3. उपयोगी, सेवा करने के योग्य 4. योग या भावचिन्तन के योग्य,—ग्यः युक्ति या तरकीबों का कलयिता,--ग्या 1. अभ्यास, व्यवहार—अपरः प्रणिधानयोग्यया मरुतः पंचशरीरगोचरान् - रघु० ८।१९, इसी प्रकार 'मानयोग्या' काव्या० २।२४३, धनुर्योग्या अस्त्रयोग्या आदि 2. सैनिक कवायद, अभ्यास,—ग्यम् 1. सवारी, गाड़ी, वाहन 2. चन्दन की लकड़ी 3. रोटी 4. दूध।

योग्यता [योग्य+तल्+टाप्] 1. सामर्थ्य, सक्षमता - न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसैः—रामा० 2. अनुरूपता, औचित्य 3. समुपयुक्तता 4. (न्या० में) ज्ञान की अनुरूपता या संगति, शब्दों द्वारा संकेतित वस्तुओं के पारस्परिक संबंध की असंगति का अभाव —उदा० 'अग्निना सिंचति' में योग्यता नहीं है, इसकी परिभाषा यह है: --एकपदार्थेऽपरपदार्थसंसर्गो योग्यता —त० कौ०।

योजनम् [युज् भावादौ ल्युट्] 1. जोड़ना, मिलाना, जोतना 2. प्रयोग करना, स्थिर करना 3. तैयारी, व्यवस्था 4. व्याकरणसम्मत रचना, शब्दान्वय 5. आठ यानी मील अथवा चार कोस की दूरी की माप—न योजनशतं दूरं वाह्यमानस्य तृष्णया—हि० १।१४६ 6. उत्तेजित करना, भड़काना 7. मन का संकेन्द्रीकरण, भाव (=योग),—ना 1. संगम, मिलाप, संबंध 2. व्याकरणसंमत शब्दान्वय। सम०--गन्धा 1. कस्तूरी 2. व्यास की माता सत्यवती।

योत्रम् दे० योक्त्रम्।

योधः [युध्+अच्] 1. योद्धा, सैनिक, लड़ाकू, - सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः --महा० 2. संग्राम, लड़ाई। सम० —अगारः,—रम् सैनिकों का निवास, सैन्यावास, बारक, - धर्मः सैनिकों का कानून, सैन्यविधि या नियम, - संरावः लड़ाकू सिपाहियों की पारस्परिक ललकार, आह्वान।

योधनम् [युध् भावे ल्युट्] संग्राम, लड़ाई, मुठभेड़।

योधिन् (पुं०) [युध्+णिनि] योद्धा, सिपाही, लड़ाकू।

योनिः (पुं०,स्त्री०) [यु+नि] 1. गर्भाशय, बच्चेदानी, भग, स्त्रियों की जननेन्द्रिय 2. जन्मस्थान, मूलस्थान, उद्गम, मूल, जननात्मक कारण, निर्झर, फौवारा सा योनिः सर्ववैराणां सा हि लोकस्य निर्ऋतिः उत्तर० ५।३०, कु० २।९, ४।४३, उत्पन्न या उदित के अर्थ में प्रयोग प्रायः समास के अन्त में— भग०

५।२२ 3. स्नान 4. आवास, स्थान, भाजन या पात्र, आसन, आधार 5. घर, मांद 6. कुल, गोत्र, वंश, जन्म, अस्तित्व का रूप—जैसा कि 'मनुष्ययोनि, पक्षि°, पशु° आदि 7. जल। सम०—गुणः जन्मस्थान या गर्भाशय का गुण,—ज (वि०) गर्भाशय से जन्म लेने वाला, जरायुज,—देवता पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र,—भ्रंशः बच्चेदानी का अपने स्थान से हट जाना,—रञ्जनम् रजःस्राव,—लिंगम् भगांकुर, चिकु,—संकरः अवैध अन्तर्जातीय विवाहों से उत्पन्न वर्ण संकर जाति।

योनी दे० योनिः।

योपनम् [युप+ल्युट्] 1. मिटाना, विलुप्त करना 2. कोई वस्तु जिससे मिटाया जाय 3. विकलता, घबराहट 4. उत्पीडन, अत्याचार, ध्वंस।

योषा, योषित् (स्त्री०), योषिता [यौति मिश्रीभवति-यु +स+टाप्, योषति पुमांसम्—युष्+इति, योषित् +टाप्] स्त्री, लड़की, तरुणी, जवान स्त्री—गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तं—मेघ० ३७, शि० ४।४२, ८।२५।

यौक्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [युक्तित आगतः—ठक्] 1. उपयुक्त, योग्य, उचित 2. तर्क संगत, तर्क या हेतु पर आधारित 3. तर्क्य, अनुमेय 4. प्रचलित, प्रथानुकूल,—कः राजा का आमोदप्रिय साथी—तु० 'नर्मसचिव'।

यौगः [योग+अण्] योगदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी।

यौगपद्यम् [युगपद्+ष्यञ्] समकालिकता, समसामयिकता।

यौगिक (वि०) (स्त्री० की) [योग+ठक्] 1. उपयोगी, सेवा के योग्य, उचित 2. प्रचलित 3. व्युत्पन्न, निर्वचनमूलक, शब्दव्युत्पत्ति के अनुरूप (विप० रूढ या परम्परागत) 4. उपचार परक 5. योग संबंधी, योग से व्युत्पन्न।

यौतक (वि०) (स्त्री०—की) [युते विवाहकाले अधिगतं वुण्] किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति जिस पर उसका एकान्ततः अपना ही अधिकार हो, ऐसी सम्पत्ति जिस पर यथार्थतः उसका ही एकमात्र अधिकार हो —'विभागभावना ज्ञेया गृहक्षेत्रैश्च यौतकैः'—याज्ञ० २।१४९—कम् 1. निजी सम्पत्ति 2. स्त्री का दहेज, स्त्रीधन (विवाह के अवसर पर कन्या को उपहार में दिया गया धन)—मातुस्तु यौतकं यत् स्यात् कुमारी भाग एव सः मनु० ९।१३१।

यौतवम् [यु+तु=योतु+अण्] एक प्रकार की माप।

यौध (वि०) (स्त्री०—धी) [योध+अण्] लड़ाकू, लड़ने-वाला।

यौन (वि०) (स्त्री०—नी) [योनितः योनि संबन्धात् वा आगतम्—अण्] 1. सोदर 2. वैवाहिक, विवाह संबंधी —मनु० २।१०,—नम् विवाह, वैवाहिक सम्बन्ध —मनु० ११।१८०।

यौवतम् [युवतीनां समूहः—अण्] तरुणियों या जवान स्त्रियों का समूह—अववृत्य दिवोऽपि यौवतैर्न सहाधीतवतीमिमामहम्—नैव० २।४१ 2. तरुणी स्त्री का गुण (सौन्दर्य आदि) तरुणी स्त्री होने की अवस्था —अहो विबुधयौवतं वहसि तन्वि पृथ्वीगता—गीत० १०, (सुरसुन्दरी रूपम्)।

यौवनम् [यूनो भावः अण्] 1. जवानी (आलं० से भी) तारुण्य, तरुणाई, वयस्कता—मुग्धत्वस्य च यौवनस्य च सखे मध्ये मधुश्रीः स्थिता—विक्रम० २।७, यौवनेऽभ्यस्तविद्यानाम्—रघु० १।८, ६।५० दिनयौवनोत्थान्—१३।२० 2. जवान व्यक्तियों का विशेष कर तरुणियों का समूह। सम०—अन्त (वि०) जवानी में समाप्त होने वाला, लंबी जवानी होना कु० ६।४४,—आरम्भः जवानी का उभार, खिलती हुई जवानी,—दर्पः 1. जवानी भरा अभिमान 2. जवानी में सहजसुलभ अविवेक,—लक्षणम् 1. जवानी का चिह्न 2. आकर्षण, लावण्य 3. स्त्रियों के कुच।

यौवनकम् [यौवन्+कन्] जवानी।

यौवनाश्वः [युवनाश्व+अण्] युवनाश्व का पुत्र मान्धाता।

यौवराज्यम् [युवराज+ष्यञ्] युवराज का पद या अधिकार, यौवराज्येऽभिषिक्तः, (युवराज पद का मुकुट धारण किये हुए)।

यौष्माक (वि०) (स्त्री०—की), यौष्माकीण (वि०) [युष्मद्+अण्, खञ् वा, युष्माक आदेशः] तुम्हारा, आपका।

र

रः [रा+ड] 1. अग्नि 2. गर्मी 3. प्रेम, इच्छा 4. चाल, गति।

रंह् (भ्वा० पर० रंहति) हिलना—जुलना, वेग से चलना, जल्दी करना—न ररंहाश्वकुंजरम्—भट्टि० १४।९८, प्रेर०—(रंहयति—ते—कुछ के अनुसार चुरा० उभ०) 1. जल्दी से चलाना, प्रेरणा देना 2. बहाना 3. जाना 4. बोलना।

रंहतिः (स्त्री०) [रंह्+क्तिप्] चाल, वेग।

रंहस् (पुं०) [रंह्+असुन्, हुक् च] 1. चाल, वेग, रघु० २।३४ शि० १२।७, कि० २।४० 2. आतुरता, प्रचण्डता, उत्कटता, उग्रता।

रक्त (भू० क० कृ०) [रञ्ज् करणे क्तः] 1. रंगीन, रंगा हुआ, हलके रंग वाला, रंग लिप्त—आभाति बालातपरक्तसानुः—रघु० ६।६० 2. लाल, गहरा लाल रंग, लोहितवर्ण, सांध्यं तेजः प्रतिनवजवापुष्परक्तं दधानः मेघ० ३६, इसीप्रकार रक्ताशोक, रक्तांशुक आदि 3. मुग्ध, सानुराग, अनुरक्त, प्रेमासक्त—अयमैन्द्रीमुखं पश्य रक्तश्चुम्बति चन्द्रमाः—चन्द्रा० ५।५८ (यहां यह द्वितीयार्थ भी रखता है) 4. प्रिय, वल्लभ 5. सुहावना, आकर्षक, मधुर, सुखद श्रोत्रेषु संमूर्छति रक्तमासां गीतानुगं वारिमृदङ्गवाद्यम्—रघु० १६।६४ 6. खेल का शौकीन, खिलाड़ी, क्रीडाप्रिय,—क्तः 1. लाल रंग 2. कुसुम्भ,—क्ता 1. लाख 2. गुंजा का पौधा,—क्तम् 1. रुधिर 2. तांबा 3. जाफरान 4. सिन्दूर। सम०—अक्ष (वि०) 1. लाल आँखों वाला 2. डरावना (—क्षः) 1. भैंसा 2. कबूतर,—अंकः मूँगा,—अंगः 1. खटमल 2. मङ्गलग्रह 3. सूर्यमण्डल या चन्द्रमण्डल,—अधिमंथः आंखों की सूजन अंबरम् लाल वस्त्र (—रः) गेरुआ वस्त्रधारी परिव्राजक,—अर्बुदः रसौली,—अशोकः लाल फूलों वाला अशोक वृक्ष—मालवि० ३।५,—आधारः चमड़ी, खाल,—आभ (वि०) लाल दिखाई देने वाला, आशयः एक प्रकार का आशय जिसमें रुधिर रहता है तथा जिससे निकलता रहता है (हृदय, तिल्ली और जिगर आदि),—उत्पलम् लालकमल,—उपलम् गेरु, लाल मिट्टी,—कण्ठ, कण्ठिन् (वि०) मधुरकण्ठवाला (पुं०) कोयल कंदः,—कंदलः मूँगा,—कमलम् लाल कमल चन्दनम् 1. लाल चन्दन, जाफरान, केसर,—चूर्णम् सिन्दूर,—छर्दिः (स्त्री०) रुधिर की कै करना,—जिह्वः सिंह,—तुण्डः तोता,—दृश् (पुं०) कबूतर,—धातुः 1. गेरु या हरताल 2. तांबा—पः पिशाच, भूत-प्रेत,—पल्लवः अशोकवृक्ष, पा जोंक—पातः नरहत्या,—पाद (वि०) लाल पैरों वाला, (—दः) 1. लालपैरों का पक्षी, तोता 2. युद्धरथ 3. हाथी,—पायिन् (पुं०) खटमल,—पायिनी जोंक,—पिण्डम् 1. लाल रंग की फुन्सी 2. नाक और मुंह से रक्तस्राव होना,—प्रमेहः मूत्र के साथ रक्त का निकलना, भवम् मांस,—मोक्षः,—मोक्षणम् रुधिर निकलना,—वटी,—वरटी चेचक, वर्गः 1. लाख 2. अनार का पेड़ 3. कुसुम्भ, वर्ण (वि०) लाल रंग का (र्णः) 1. लाल रंग 2. बीरबहूटी नामक कीड़ा (—र्णम्) सोना, वसन, वासस् (वि०) लाल रंग की वेश भूषा धारण किये हुए, सारस,—शासनम् सिन्दूर,—शीर्षकः एक प्रकार का सारस, सन्ध्यकम् लाल कमल,—सारम् लाल चन्दन।

रक्तक (वि०) [रक्त+कन्] 1. लाल, 2. सानुराग, अनुरक्त, स्नेहशील 3. सुहावना, विनोदप्रिय 4. रक्तरञ्जित—कः 1. लाल रंग की वेशभूषा 2. सानुराग व्यक्ति, शृङ्गार-प्रिय पुरुष 3. खिलाड़ी।

रक्तिः (स्त्री०) [रञ्ज्+क्तिन्] 1. सुहावनापन, प्रियता, आकर्षण, लावण्य 2. आसक्ति, स्नेह, निष्ठा, भक्ति।

रक्तिका [रक्ति+कन्+टाप्] गुंजा का पौधा या इसका बीज जो तोलने (एक रत्ती) के काम आता है।

रक्तिमन् (पुं०) रक्त+इमनिच्] ललाई।

रक्ष् (भ्वा० पर० रक्षति, रक्षित) 1. रक्षा करना, चौकीदारी करना, देखभाल करना, पहरा देना, (पशु आदि) पालना, राज्य करना, (पृथ्वी पर) शासन करना—भवानिमां प्रतिकृतिं रक्षतु—श० ६, ज्ञास्यसि कियद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणांक इति—श० १।१३ 2. सुरक्षित रखना, (भेद) न खोलना—हस्यं रक्षति 3. सन्धारण करना, बचाना, बचा कर रखना (बहुधा अपा० के साथ) अलब्धं चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेदवक्षयात्—हि० २।८, आपदर्थे धनं रक्षेत्—हि० १।४१, रघु० २।५०, ११।७७ 4. टालमटूल करना—मुद्रा० १।२, (अभि, परि, सम् आदि उपसर्ग जोड़ने पर इस धातु के अर्थों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता)।

रक्षक (वि०) (स्त्री—क्षिका) [रक्ष्+ण्वुल्] चौकसी रखने वाला, रक्षा करने वाला—कः रखवाला, अभिभावक, चौकीदार, पहरेदार।

रक्षणम् [रक्ष्+ल्युट्] रक्षा करना, बचाव, संधारण, चौकसी, देखभाल आदि ('रक्षणम्' भी) णी रास, लगाम।

रक्षस् (नपुं०) [रक्ष्यतेहविरस्मात्, रक्ष्+असुन्] भूत-प्रेत पिशाच, भूतना, बैताल—चतुर्दश सहस्राणि रक्षसां भीमकर्मणाम्, त्रयश्च दूषणखरत्रिमूर्धानो रणे हताः—उत्तर० २।१५। सम० ईशः, नाथः रावण का विशेषण जननी रात्रि,—सभम् राक्षसों की सभा।

रक्षा [रक्ष्—भावे अ+टाप्] 1. बचाव, संधारण, चौकसी मयि सृष्टिर्हि लोकानां रक्षा युष्मा स्ववस्थिता—कु० २।२८, शि० १८।३१, श० १।१४, रघु० २।४, मेघ० ४३ 2. देखभाल, सुरक्षा 3. चौकसी, पहरा 4. ताबीज या गण्डा, परिरक्षो, जैसे कि नीचे 'रक्षाकरण्ड' में 5. अभिभावक देवता 6. भस्म, राख 7. रक्षाबन्धन, पहुँची (विशेषकर श्रावण पूर्णिमा के दिन कलाई में बांधी जाने वाली रेशम या सूत की डोरी) ताबीज या गण्डे के रूप में (इस अर्थ में 'रक्षी' शब्द भी प्रयुक्त है)। सम०—अधिकृतः जिसे प्ररक्षण या अधीक्षण कार्य

सुपुर्द किया गया है, अधीक्षक या शासक अथवा राज्यपाल 2. दण्डनायक, मजिस्ट्रेट 3. मुख्य आरक्षाधिकारी अपेक्षकः 1. कुली, द्वारपाल 2. अन्तःपुर का पहरेदार 3. गांडू, लौंडा 4. नाटक का पात्र अभिनेता,–करण्डः –करण्डकम् तवीज़ की डिबिया, गण्ड, जादू की डिबिया अहो रक्षाकरण्डकमस्य मणिबन्धे न दृश्यते —श० ७,–गृहम् प्रसूति का गृह, – रक्षागृहगता दीपाः प्रत्यादिष्टा इवाभवन्—रघु० १०।५९,—पात्रः एक प्रकार का भोजपत्र,—पालः,—पुरुषः पहरेदार, चौकीदार, प्रारक्षी,–प्रदीपः वह दीपक जो भूत प्रेत से बचाव के लिए जलता हुआ रखा जाता है,—भूषणम्,—मणि, —रत्नम् एक प्रकार का आभूषण जो तावीज़ की भांति भूत प्रेतादि की बाधा से बचाव के लिए पहना जाता है।

रक्षितृ, रक्षिन् (वि०) [रक्ष्+तृच्, णिनि वा] बचाने वाला, चौकसी करने वाला, राज्य करने वाला—नै० १.१ (पुं०) 1. रक्षा करने वाला, संरक्षक, बचाने वाला 2. चौकीदार, सन्तरी, प्रारक्षी—अये पदशब्द इव मा नाम रक्षिणः —मृच्छ० ३।

रघुः [लंघति ज्ञानसीमानं प्राप्नोति—लंघ्+कु, न लोपः, लस्य रः] एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा, दिलीप का पुत्र और अज का पिता (ऐसा प्रतीत होता है कि इसका नाम रघु (रघ् या रन्घ्=जाना) इस कारण पड़ा हो क्योंकि इसके पिता ने यह पहले ही जान लिया कि यह लड़का विद्या के ही पार नहीं जायगा अपि युद्ध में अपने शत्रुओं को भी परास्त कर देगा—तु० रघु० ३।२१ अपने नाम की सार्थकता के अनुसार उसने दिग्विजय आरम्भ किया, समस्त ज्ञात भूमण्डल का चक्कर लगाया और कीर्ति तथा विजयोपहार के साथ वापिस आया। आ कर उसने विश्वजित् यज्ञ का आयोजन किया और दक्षिणा में ब्राह्मणों को सर्वस्व दे डाला, तथा अज को अपने राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया)। सम० नन्दनः,—नाथः–पतिः–श्रेष्ठः–सिंहः राम के विशेषण।

रङ्क (वि०) [रमते तुष्यति रम्+क] 1. अधम, दरिद्र भंगता, अभागा, दयनीय 2. मन्थर,–कः भिखारी. मन्दभाग्य. भूखा, क्षुधार्त, भुखमरा—प्रेतरङ्कः —मा ५।१६, बुभुक्षित या 'भुखमरी आत्मा' पञ्च० १।२५४।

रङ्कुः [रम्+कु] हरिण, कुरङ्ग, कृष्णसार मृग नै० २।८३।

रङ्गः [रञ्ज् भावे घञ्] 1. रङ्ग, वर्ण, रङ्गने का मसाला रङ्गलेप या रोगन 2. रङ्गमंच, नाट्यशाला, नाट्यगृह अखाड़ा, सार्वजनिक आमोदस्थली —जैसा कि रङ्गविघ्नोपशान्तये सा० द० २८१ 3. सभा-भवन, श्रोतृवर्ग—अहो रागवद्धचित्तवृत्तिरालिखितः इव सर्वतो रङ्गः—श० १, रङ्गस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा नृत्यात्, पुरुषस्य तथात्मानं प्रकाश्य विनिवर्तते प्रकृतिः शब० 5. रणक्षेत्र 6. नाचना, गाना, अभिनय 7. आमोद, मनोविनोद 8. सुहागा 9. स्वर का अनुनासिक उच्चारण— सरंगम् कम्पयेत्कंपम् रथीवेति निदर्शनम्—शिक्षा० ३०, इसी प्रकार २६, २७,२८, —गः गम् रांग, टिन। सम०—अङ्गणम् अखाड़ा, नाचघर,—अवतरणम् 1. रङ्गमंच पर प्रवेश 2. अभिनेता या नाट्यपात्र का व्यवसाय,-अवतारकः–अवतारिन् (पुं० अभिनेता, नाटक का पात्र,—आजीवः 1. अभिनेता 2. चित्रकार, इसी प्रकार, उपजीविन् (पुं०),–कारः जीवकः चित्रकार, रंगदेपक,—चरः 1. अभिनेता, नाटक का पात्र 2. वाग्मी,- जम् सिन्दूर,- देवता क्रीड़ा तथा सार्वजनिक आमोद-प्रमोद की अधिष्ठात्री देवता,—द्वारम् 1. रङ्गशाला का द्वार 2. किसी नाटक का मंगलाचरण या प्रस्तावना,–भूतिः (स्त्री०) आश्विन मास की पूर्णिमा की रात,–भूमिः (स्त्री०) 1. रङ्गमंच, नाट्यशाला 2. अखाड़ा, रणक्षेत्र, मंडपः रङ्गशाला, —मातृ (स्त्री०) 1. लाख, लालरङ्ग, महावर, इसे पैदा करने वाला कीड़ा 2. कुटनी, दूती,—वस्तु (नपुं०) रङ्गलेप, वाटः अखाड़ा, बाड़ा जहाँ नाटक नाच आदि होते हों,— शाला नाचघर, नाट्यगृह, नाटकघर।

रन्घ् (भ्वा० उभ० रन्घति-ते) 1. जाना 2. शीघ्र जाना, जल्दी करना—द्वारम् ररन्घतुर्याम्यम्—भट्टि० १४।१५।

रच् (चुरा० उभ० रचयति-ते ,रचित) 1. व्यवस्थित करना, सज्जित करना, तैयार करना, बना लेना, रचना करना—पुष्पाणां प्रकरः स्मितेन रचितो नो कुन्दजात्यादिभिः—अमरु ४०,रचयति शयनं सचकितनयनम्—गीत० ५ 2. बनाना, रूप देना, कार्यान्वित करना, रचना करना पैदा करना—मायाविकल्परचितैः स्यंदनैः—रघु० १३।७५, माधुर्यं मधुबिंदुना रचयितुं क्षारांबुधेरीहते—भर्तृ० २।६. मौलो वा रचयांजलिम्– वेणी० ३।४० 3. लिखना, रचना करना, (किसी कृति आदि को) एकत्र करना—अश्वधाटीं जगन्नाथो विश्वहृद्यामरीरचत्-अश्व० २६, श० ३।१५ 4. रखना, स्थिर करना, जमाना—रचयति चिकुरे कुरवककुसुमम्–गीत० ७, कु० ४।१८, ३४, श० ६।१७ 5. अलंकृत करना, सजाना मेघ० ६६ 6. (मन को) लगाना, आ —,व्यवस्थित करना, वि—, 1. व्यवस्थित करना 2. रचना करना 3. कार्यान्वित करना, पैदा करना, बनाना— मेघ० ९५, भामि० १।३०।

रचनम् —ना [रच्+युच्, स्त्रियां टाप् [1. व्यवस्था, तैयारी, विन्यास —अभिषेक°, संगीत° आदि 2. बनाना सर्जन करना, उत्पन्न करना—अन्यैव कापि रचना वचनावलीनां—भामि० १।६९, इसी प्रकार—भ्रुकुटि रचना—मेघ० ९५ 3. सम्पन्नता, पूर्ति, निष्पत्ति,

कार्यान्वयन—कुरु मम वचनं सत्वररचनम्—गीत० ५, रघु० १०।७७ 4. साहित्यिक रचना या सृजन, निर्माण, संरचना—संक्षिप्ता वस्तु रचना—सा० द० ४२२ 5. बाल संवारना 6. सैन्यव्यूहन 7. मन की सृष्टि, कृत्रिम उद्भावना ।

रजः दे० रजस् ।

रजकः [रञ्ज्+ण्वुल्, नलोपः] धोबी ।

रजका,—की [रजक+टाप्, ङीष् वा] धोबन ।

रजत (वि०) [रञ्ज्+अतच्, नलोपः] 1. चांदी के रंग का, चाँदी का बना हुआ 2. उज्ज्वल—**तम्** 1. चाँदी —शुक्तौ रजतमिदमिति ज्ञानं भ्रमः कि० ५।४१, नै० २२।५२ 2. स्वर्ण 3. मोतियों का आभूषण या माला 4. रुधिर 5. हाथी दाँत 6. नक्षत्रपुंज, तारासमूह ।

रजनिः,—नी (स्त्री०) [रज्यतेऽत्र, रञ्ज्+कनि वा ङीप्] रात—हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम्—गीत० ५ । सम० **करः** चन्द्रमा -**चरः** रात को घूमने वाला, पिशाच, बेताल,—**जलम्** ओस, धुन्ध, —**पतिः,—रमणः** चन्द्रमा,—**मुखम्** सन्ध्या, सायंकाल ।

रजनिमन्य (वि०) (वह दिन) जो रात जैसा बीते या रात जैसा दिखाई दे -भट्टि० ७।१३ ।

रजस् (पुं०) [रञ्ज्+असुन्, नलोपः] 1. धूल, रेणु, गर्द—धन्यास्तदङ्गरजसा मलिनीभवन्ति -श० ७।१७, आत्मोद्धतैरपि रजोभिरलंघनीयाः -१।८, रघु० १।४२, ६।३२ 2. फूल की रेणु या पराग - भूयात्कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः (पंथाः)—श० ४।१०, मेघ० ३३,६५ 3. सूर्य किरणों में फैले हुए कण, कोई भी छोटा सा कण -तु० मनु० ८।१३२, याज्ञ० १।३६२ 4. जुती हुई भूमि, कृषियोग्य खेत 5. अन्धकार, अन्धेरा 6. मलिनता, आवेश, संवेग, नैतिक या मानसिक अन्धकार—अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपिरजोनिमीलिताः रघु० ९।७४ 7. सब प्रकार के भौतिक द्रव्यों के घटक गुणों अथवा तीन गुणों में से दूसरा -—(दूसरे दो गुण हैं सत्त्व और तमस्, जीवजन्तुओं में बड़ी भारी क्रियाशीलता का कारण 'रजस्' समझा जाता है, यह गुण मनुष्यों में बहुतायत से पाया जाता है जैसे कि देवताओं में सत्त्व तथा राक्षसों में तमस् पाया जाता है), अन्तर्गतमपास्तं में रजसोऽपि परं तमः —कु० ६।६९, भग० ६।२७, मा० १।२० 8. रजःस्राव, ऋतुस्राव मनु० ४।४१, ५।६६ । सम० **गुणः** दे० (7) ऊपर, **तमस्क** (वि०) रज और तम दोनों गुणों से प्रभावित, **तोकः,—कम्,** -**पुत्रः** 1. लोलुपता, लालच 2. 'जोश का पुतला' यह प्रकट करने के लिए कि यह व्यक्ति तुच्छ है, नगण्य है, इस शब्द का प्रयोग किया जाता है,—**दर्शनम्** प्रथम बार रजोधर्म का होना, सबसे पहला रजःस्राव,—**बन्धः** रजोधर्म का बन्द हो जाना,—**रसः** अन्धेरा,- **शुद्धिः** रजोधर्म की विशुद्ध दशा,- **हरः** 'मैल हटाने वाला' धोबी ।

रजसानुः [रज्यतेऽस्मिन्–रञ्ज्+असानु] 1. बादल 2. आत्मा, दिल ।

रजस्वल (वि०) [रजस्+वलच्] 1. मैला, धूल से भरा हुआ—रघु० ११।६०, शि० १७।६१, (यहां इसका अर्थ 'रजोधर्म में होने वाली' भी है) 2. आवेश या संवेग से भरा हुआ—मनु० ६।७७,—**लः** भैंसा,—**ला** 1. रजस्वला स्त्री—रजस्वलाः परिमलिनांबरश्रियः —शि० १७।६१, याज्ञ० ३।२२९, रघु० ११।६० 2. विवाह के योग्य कन्या ।

रज्जुः (स्त्री०) [सृज्+उ, असुमागमः धातोस्सलोपः, आगमसकारस्य जश्त्वं दकारः, तस्यापि चुत्वं जकारः] 1. रस्सा, डोरी, सुतली 2. कशेरुका स्तम्भ से निकलने वाली स्नायु 3. स्त्रियों के सिर की चोटी । सम० -**दालकम्** एक प्रकार का जंगली मुर्गा, इसी प्रकार रज्जुवालः,—**पेड़ा** सुतली से बनी हुई टोकरी ।

रंज् (भ्वा० दिवा० उभ०–रजति–ते, रज्यति–ते, रक्त, कर्मवा० रज्यते, इच्छा० रिरंक्षन्ति) 1. रंगे जाने के योग्य, लाल रंग से रंगना, लाल होना, चमकना,—कोपरज्यन्मुखश्रीः—उत्तर० ५।२, नेत्रे स्वयं रज्यतः—५।२६, नै० ३।१२०, ७।६०, २२।५२ 2. रंगना, हलका रंग देना रंगीन बनाना, रंगलेप करना 3. अनुरक्त होना, भक्त बनना (अधि० के साथ) देवानियं निषधराजरुचस्त्यजंती रूपादरज्यत नलेन विदर्भसुभ्रूः -नै० १३।३८. सा० द० १११ 4. मुग्ध होना, प्रेमासक्त होना, स्नेह की अनुभूति होना 5. प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, खुश होना—प्रेर० (रंजयति–ते) 1. रंगना, हलका रंगना, रंगीन बनाना, लाल करना, रंगलेप करना —सा रंजयित्वा चरणौ कृताशीः—कु० ७।१९, ६।८१, कि० १।४०, ४।१४ 2. प्रसन्न करना, तृप्त करना, मनाना, सन्तुष्ट करना ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मा नरं न रंजयति—भर्तृ० २।३ (इस अर्थ में 'रजयति' भी दे० कि० ६।२५) स्फुरतु कुचकुंभयोरुपरि मणिमंजरी रंजयतु तव हृदयेशम्—गीत० १० 3. मेल करना, जीत लेना, सन्तुष्ट रहना -मनु० ७।१९ 4. हरिण का शिकार करना (इस अर्थ में केवल 'रंजयति'), **अनु–**, 1. लाल होना, शि० ९।७ 2. स्नेहशील होना, भक्त होना, अनुरक्त बनना, प्रेम करना, पसन्द करना (अधि० के साथ कर्म० के भी) पंच० १।१०१, मनु० ३।१७३ 3. खुश होना —भग० ११।३६ **अप–**, 1. असन्तुष्ट होना, सन्तोषरहित होना,

(अपा० के साथ, नयहीनादपरज्यते जनः—कि० २।४९ 2. पीला होना, विवर्ण होना--श्वासापरक्ताधरः--श० ६।५, उप--, 1. ग्रहणग्रस्त होना,- उपरज्यते भगवांश्चन्द्रः—मुद्रा० १ 2. हलके रंग का होना, रंगीन होना—शि० २।१० 3. कष्टग्रस्त या विपद्ग्रस्त होना वि--, 1. रंगरहित होना, मलिन होना, घटिया या भद्दा होना—केशा अपि विरज्यंते निःस्नेहाः कि न सेवकाः—पंच० १।८२ (यहाँ यह द्वितीयार्थ भी रखता है) 1. असन्तुष्ट होना, निर्लिप्त होना, नापसंद करना, घृणा करना—चिरानुरक्तोऽपि विरज्यते जनः—मृच्छ० १।५३, यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता–भर्तृ० २।२, भट्टि० १८।२२, संसार से विरक्त होना, सांसारिक आसक्तियों का छोड़ देना।

रंजकः [रंजयति-रंज्+णिच्+ण्वुल्] 1. चित्रकार, रंगलेपक, रंगरेज 2. उत्तेजक, उद्दीपक,—कम् 1. लाल चन्दन 2. सिन्दूर।

रंजनम् [रज्यतेऽनेन–रञ्ज् करणे ल्युट्] 1. रंग करना, हलका रंगना, रंगलेप करना 2. वर्ण, रंग 3. प्रसन्न करना, खुश करना, सन्तुष्ट रहना, तृप्त होना प्रसन्नता देना--राजा प्रजारंजनलब्धवर्णः—रघु० ६।२१, तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरंजनात्—४।१२ 4. लाल चन्दन की लकड़ी।

रंजनी [रंजन+ङीप्] नील का पौधा।

रट् (भ्वा० पर० रटति रटित) 1. चिल्लाना, चीत्कार करना, चीखना, क्रंदन करना, दहाड़ना, चिंघाड़ना —घोराश्चाराटिषुः शिवाः—भट्टि० १५।२७, पपात राक्षसो भूमौ रराट च भयंकरम्—१४।८१ 2. जोर से बोलना, उद्घोषणा करना 3. प्रसन्नता से चिल्लाना, प्रशंसा करना आ--, पुकारना, चिल्लाना —प्रियसहचरमपश्यंत्यातुरा चक्रवाक्यारटति--श० ४।

रटनम् [रट्+ल्युट्] 1. क्रन्दन की क्रिया, चिलाना, जोर से आवाज देना 2. प्रशंसा का चीत्कार, पसंदगी।

रण् (भ्वा० पर० रणति, रणित) ध्वनि करना, टनटनाना, झुनझुनाना, झनझनाना (पायजेब आदि का)—रणद्भिराघट्टनया नभस्वतः पृथग्विभिन्नश्रुतिमंडलैः स्वरैः शि० १।१०, चरणरणितमणिनूपुरया परिपूरितसुरतवितानम्—गीत० २।

रणः,-णम् [रण्+अप्] 1. संग्राम समर, युद्ध, लड़ाई ---रणः प्रववृते तत्र भीमः प्लवगरक्षसाम्—रघु० १२।७२, ' वचोजीवितयोरासीद्बहिर्निःसरणे रणः सुभा० 2. युद्धक्षेत्र,—णः 1. शब्द, शोर 2. सारंगी बजाने का गज 3. गति, चाल। सम० --अग्रम् युद्ध का अगला भाग,—अंगम् युद्धशस्त्र, शस्त्र तलवार, संयदे शोणितं व्योम रणांगानि प्रजज्वलुः—भट्टि० १४।९६,—अंगणम्,–नम् युद्धक्षेत्र,–अपेत (वि०) युद्ध से भागने वाला, भगोड़ा—स बभार रणापेतां चमूं पश्चादवस्थिताम्—कि० १५।३३,—आतोद्यम्,—तूर्यम्, —दुंदुभिः सैनिक ढोल, मारु बाजा,—उत्साहः युद्ध में प्रदर्शित विक्रम,—क्षितिः (स्त्री०),—क्षेत्रम्,—भूः (स्त्री०),—भूमिः (स्त्री०),--स्थानम् युद्धक्षेत्र,–धुरा युद्ध में आगे रहना, युद्ध का भार—ताते चापद्वितीये वहति रणधुरां को भयस्यावकाशः—वेणी० ३।५, --प्रिय (वि०) युद्ध का शौकीन, लड़ाकू,–मत्तः हाथी —मुखम्,—मूर्धन् (पुं०),--शिरस् (नपुं०) 1. युद्ध का अगला भाग, लड़ाई का मुख्य वार—श० ६।३०, ७।२६ 2. सेना का अग्रभाग,—रंकः हाथी के दाँतों के मध्य का फासला, रंगः युद्धक्षेत्र,—रणः डांस, मच्छर (--णम्) 1. प्रबल इच्छा, उत्कण्ठा 2. खोई हुई वस्तु के लिए खेद,—रणकः,—कम् 1. चिंता, बेचैनी, खेद, (किसी प्रिय वस्तु के लिए) कष्ट या संताप (प्रेम से उत्पन्न) रणरणकविवृद्धि बिभ्रदावर्तमानम्–मा० १।४१, उत्तर० १ 2. प्रेम, इच्छा(--कः) कामदेव,--वाद्यम् मारू बाजा, सैनिक संगीत बाजा,--शिक्षा सैन्यविज्ञान, युद्धकला, या युद्ध विज्ञान,—संकुलम् घोर-युद्ध, तुमुल-युद्ध,—सज्जा युद्ध की सामग्री, सैनिक साज-सामान —सहायः मित्र, सहायक,--स्तंभः विजयस्मारक, विजयचिह्न।

रणत्कारः [रण्+शतृ, ष० त०] 1. खड़खड़ाहट, झनझनाहट या छनछन की आवाज 2. (मक्खियों का) भनभनाना।

रणितम् [रण्+क्त] खड़खड़ाहट, टनटन, झनझनाहट या छनछन की आवाज।

रंडः [रम्+ड] 1. वह पुरुष जो पुत्रहीन मरे 2. बंजर वृक्ष,--डा फूहड़स्त्री, पुंश्चली, स्त्रियों को संबोधित करने में निंदापरक शब्द-- रंडे पंडितमानिनि—पंच० १।३९२, (पाठान्तर) प्रतिकूलामकुलजां पापां पापानुवर्तिनीम्, केशेष्वाकृष्य तां रंडां पाखण्डेषु नियोजय -- प्रबो० २ 2. विधवा स्त्री—रंडाः पीनपयोधराः कति मया नोद्गाढ़मालिंगिताः - प्रबो० ३।

रत (भू० क० कृ०) [रम्+क्त] 1. प्रसन्न, खुश, तृप्त 2. प्रसन्न या खुश, स्नेहशील, मुग्ध, अनुरक्त 3. तुला हुआ, व्यस्त, संलग्न, (दे० रम्),—तम् 1. प्रसन्नता 2. मैथुन, संभोग—रघु० १९।२३, २५, मेघ० ८९ 3. उपस्थ इन्द्रिय। सम०—अयनी वेश्या, रंडी,–अर्थिन् (वि०) कामुक, कामासक्त,–उद्वहः कोयल,–ऋद्धिकम् 1. दिन 2. आनन्द के लिए स्नान,—कीलः कुत्ता, --कूजितम् कामासक्त व्यक्ति की मैथुन के समय की सीत्कार,—ज्वरः कौवा,—तालिन् (पुं०) स्वेच्छाचारी, कामासक्त,--ताली कुटनी, दूती,—नारीचः 1. विषयी 2. कामदेव, मदन 3. कुत्ता 4. मैथुन के समय की

कामार्त व्यक्ति की सी-सी ध्वनि,—**बंधः** मैथुन, संभोग, —**हिंडकः** 1. स्त्रियों को फुसलाकर उनसे बलात्कार करने वाला 2. विलासी।

रतिः (स्त्री०) [रम्+क्तिन्] 1. आनन्द, खुशी, सन्तोष, हर्ष—श० २।१ 2. स्नेहशीलता, भक्ति, अनुराग, आनन्दानुभूति (अधि० के साथ) पापे रति मा कृथाः —भर्तृ० २।७७, स्वयोपिति रतिः—२।६२, रघु० १।२३ कु० ५।६५ 3. प्रेम, स्नेह, सा० द० द्वारा की गई परिभाषा—रतिर्मनोऽनुकूलेऽर्थे मनसः प्रवणायितम् —२०७, तु० २०६ से भी 4. सम्भोग का आनन्द— दाक्षिण्योदकवाहिनी विगलिता याता स्वदेशं रतिः —मृच्छ० ८।३८, इसी प्रकार 'रतिसर्वस्वम्' दे० नी० 5. मैथुन, संभोग, सहवास 6. रतिदेवी, कामदेव की पत्नी—साक्षात्कामं नवमिव रतिर्मालती माधवं यत् —मा० १।१६, कु० २।२३, ४।४५, रघु० ६।२ 7. योनि, भग। सम०—**अंगम्**,—**कुहरं** योनि, भग, —**गृहम्**,—**भवनम्**,—**मन्दिरम्** 1. क्रीडा गृह 2. चकला, रंडीखाना 3. योनि, भग, —**तस्करः** फुसलाने वाला, व्यभिचारी,—**दूतिः**,—**ती** (स्त्री०) प्रेम का संदेश ले जाने वाली—कु० ४।१६,—**पतिः**,—**प्रिय**,—**रमणः** कामदेव, अपि नाम मनागवतीर्णोऽसि रतिरमणवाणगोचरम् मा० १, दधति स्फुटं रतिपतेरिषवः शिततां यदुत्पलपलाशदृशः शि० ९।६६, **रसः** संभोग का आनन्द, **लंपट** (वि०) कामी, कामासक्त, कामुक, —**सर्वस्वम्** रतिक्रीडा का अत्युत्तम रस, अत्यानन्द —करं व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरम् श० १।२४।

रत्नम् [रमतेऽत्र, रम्+न, तान्तादेशः] 1. मणि, आभूषण, हीरा—किं रत्नमच्छा मतिः भामि० १।८६, न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्—कु० ५।४५, (रत्न गिनती में पांच, नौ या चौदह बतलाये जाते हैं—दे० शब्द पंचरत्न, नवरत्न, और चतुर्दशरत्न) 2. कोई भी मूल्यवान् पदार्थ, क़ीमती खज़ाना 3. अपने प्रकार की अत्युत्तम वस्तु (समास के अन्त में) जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्रत्नमभिधीयते मल्लि०, कन्यारत्नमयोनिजन्म भवतामास्ते वयं चार्थिनः महावी० १।३०, इसी प्रकार पुत्र°, स्त्री°, अपत्य° आदि चुम्बकः। सम०—**अनुविद्ध** (वि०) रत्नों से जड़ा हुआ, **आकारः** 1. रत्नों की खान 2. समुद्र रत्नेषु लुप्तेषु बहुष्वमर्त्यैरद्यापि रत्नाकर एव सिंधुः—विक्रम० १।१२, रत्नाकरं वीक्ष्य—रघु० १३।१,—**आलोकः** मणि की कान्ति, **आवली**, **माला** रत्नों का हार, —**कंदलः** मूंगा, **खचित** (वि०) रत्न या मणियों से जड़ा हुआ,—**गर्भः** समुद्र (—र्भा) पृथ्वी,—**दीपः**, —**प्रदीपः** 1. रत्नों का बना दीपक 2. रत्न जो दीपक का काम, दे० अर्चिस्तुंगानभिमुखमपि प्राप्य रत्नप्रदीपान्—मेघ० ६८,—**मुख्यम्** हीरा,—**राज्** (पुं०) लाल, **राशिः** 1. रत्नों का ढेर 2. समुद्र,—**सानुः** मेरु पर्वत,—**सू** (वि०) रत्नों को उत्पन्न करने वाला —रघु० १।६५,—**सू**,—**सूतिः** (स्त्री०) पृथ्वी।

रत्निः (पुं०, स्त्री०) [ऋ+कत्निच्, यण्] 1. कोहनी 2. कोहनी से मुट्ठी तक की दूरी, एक हाथ का परिमाण (पुं०) बन्द मुट्ठी (यह शब्द 'अरत्नि' का ही भ्रंश प्रतीत होता है)।

रथः [रम्यतेऽनेन अत्र वा—रम्+कथन्] गाड़ी, जलूसी गाड़ी, यान, वाहन, विशेषकर युद्धरथ 2. नायक (रथिन्) 3. पैर, 4. अवयव, भाग, अंग 5. शरीर, तु० आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु कठ० 6. नरकुल। सम०—**अक्षः** गाड़ी का धुरा—**अंगम्** 1. गाड़ी का कोई भाग 2. विशेषकर गाड़ी के पहिये —रथो रथांगध्वनिना विजज्ञे रघु० ७।४१, श० ७।१० 3. चक्र, विशेषकर विष्णु का,—चक्रधर इति रथांगमदः सततं बिभर्षि भुवनेषु रूढये—शि० १५।२६ 4. कुम्हार का चाक °आह्वयः, °नामकः, °नामन् (पुं०) चकवा, चक्रवाक—रथांगनामन् वियतो रथांगश्रोणिबिंबया, अयं त्वां पृच्छति रथी मनोरथशतैर्वृतः—विक्रम० ४।१८, कु० ३।३७, रघु० ३।२४, (कविसमय के अनुसार चकवा रात होने पर चकवी से वियुक्त हो जाता है, फिर सूर्योदय होने पर उनका मेल होता है) °पाणिः विष्णु का नाम,—**ईशः** रथ पर बैठ कर युद्ध करने वाला योद्धा,—**ईषा**,—**शा** गाड़ी का जोड़ा (गाड़ी में लगने वाली सबसे लम्बी दो लकड़ियाँ जिन पर गाड़ी का सारा ढांचा जमाया जाता है),—**उद्वहः**, —**उपस्थः** रथ का वह स्थान जहाँ सारथि बैठता है, चालक का आसन,—**कट्या**,—**कड्या** रथों का समूह, —**कल्पकः** राजा के रथों की व्यवस्था का अधिकारी। —**कारः** गाड़ी बनाने वाला, बढ़ई, पहिये घड़ने वाला रथकारः स्वकां भार्यां सजारां शिरसावहत्—पंच० ४।५४,—**कुटुंबिकः**,—**कुटुंबिन्** (पुं०) रथवान्, सारथि, **कूबरः**,—**रम्** गाड़ी की शहतीरी—**केतुः** रथ का झण्डा,—**क्षोभः** रथ का हचकोला—रघु० १।५८, —**गर्भकः** डोली, पालकी,—**गुप्तिः** (स्त्री०) रथ के चारों ओर लगा लोहे या लकड़ी का ढांचा जिससे रथ की किसी से टकराने पर रक्षा हो सके,—**चरणः**, —**पादः** 1. रथ का पहिया 2. चकवा,—**चर्या** रथ का इधर उधर घुमना, रथ का उपयोग, रथ पर सवारी करना—अनभ्यस्तरथचर्याः—उत्तर० ५,—**धुर्** (स्त्री०) गाड़ी के जोड़े की शहतीरी,—**नाभिः** (स्त्री०) रथ के पहिये की नाह या नाभि,—**नीडः** रथ के अन्दर का भाग या आसन,—**बंधः** रथ का साज-सामान, रस्सी

आदि,—महोत्सवः,—यात्रा रथ में देव प्रतिमा स्थापित कर जलूस निकालना (ऐसे रथ को प्रायः मनुष्य स्वयं खींचते हैं),—मुखम् गाड़ी का अगला भाग,—युद्धम् 'रथों का युद्ध' वह युद्ध जिसमें योद्धा रथों पर बैठ कर युद्ध करते हैं,—वर्त्मन् (नपुं०),—वीथिः राजमार्ग, मुख्य सड़क,—वाहः 1. रथ का घोड़ा 2. सारथि,—शक्तिः (स्त्री०) वह ध्वज जिस पर रथ युद्ध की पताका लहराती रहती है,—शाला गाड़ीवर, गाड़ियाँ रखने का स्थान,—सप्तमी माघशुक्ला सप्तमी का दिन।

रथिक (वि०) (स्त्री०—की) [रथ+ठन्] 1. रथ पर सवारी करने वाला 2. रथ का स्वामी।

रथिन् (वि०) [रथ+इनि] 1. रथ में सवारी करने वाला, या रथ हांकने वाला 2. रथ को रखने वाला या रथ का स्वामी—(पुं०) 1. गाड़ी का स्वामी 2. वह योद्धा जो रथ पर बैठ कर युद्ध करता है—रघु० ७।३७।

रथिन, रथिर (वि०) [रथ+इन, इरच् वा] दे० ऊ० 'रथिन्'।

रथ्यः [रथं वहति—यत्] 1. रथ का घोड़ा धावंत्यमी मृगजवाक्षमयेव रथ्याः—श० १।८ 2. रथ का एक भाग।

रथ्या [रथ्य+टाप्] 1. गाड़ियों के आने जाने के लिए सड़क, राजमार्ग, मुख्य सड़क—भूयोभूयः सविधनगरीरथ्यया पर्यटन्तम्—मा० १।१४ 2. वह स्थान जहाँ कई सड़कें मिलती हों 3. गाड़ियों या रथों का समूह—शि० १८।३।

रद् (भ्वा० पर० रदति) 1. टुकड़े टुकड़े करना, फाड़ना, 2. खुरचना।

रदः [रद्+अच्] 1. टुकड़े टुकड़े करना, खुरचना 2. दांत, (हाथी का) दांत—यातास्चेन्न पराञ्चन्ति द्विरदानां रदा इव—भामि० १।६५। सम०—खण्डनम् दाँत से काटना, जनय रदखण्डनम्—गीत० १०,—छदः, ओष्ठ।

रदनः [रद्+ल्युट्] दाँत। सम०—छदः ओठ।

रध् (दिवा० पर० रध्यति, रद्ध, प्रेर० रन्धयति, इच्छा० रिरधिषति या रिरत्सति) 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, संताप देना मार डालना, नष्ट करना—अक्षं रधिनुमारेभे—भट्टि० ९।२९ 2. भोजन बनाना (खाना) पकाना या तैयार करना।

रन्तिदेवः [रम्+तिक्=रन्तिश्चासौ देवश्च-कर्म० स०] एक चन्द्रवंशी राजा, भरत के बाद छठी पीढ़ी में (यह अत्यन्त पुण्यात्मा और उदार व्यक्ति था, उसके पास अपार धनराशि थी जो इसने बड़े २ यज्ञों के अनुष्ठान में व्यय की। उसके राज्य में यज्ञ में बलि दिये गये तथा उसकी रसोई में उपयुक्त किये गये पशुओं की इतनी बड़ी संख्या थी कि उनकी खालों से रुधिर की नदी निकली मानी जाती है, इसी नदी का बाद में 'चर्मण्वती' नाम पड़ गया—तु० मेघ० ४५, और तदुपरि मल्लि०)।

रन्तुः [रम्+तुन्] 1. रास्ता, मार्ग 2. नदी।

रन्धनम्, रन्धिः (स्त्री०) [रध्+ल्युट्, इन् वा, नुमागमः] 1. क्षति पहुंचाना, सन्ताप देना, नष्ट करना 2. पकाना।

रन्ध्रम् [रध्+रक्, नुमागमः] 1. थिवर, छेद, गर्त, मुँह खाई, दरार—रन्ध्रेष्विवालक्ष्यनभः प्रदेशा—रघु० १३।५६, १५।२, नासाग्ररन्ध्रम्—मा० १।१; क्रौंचरन्ध्रम् मेघ० ५७ 2. (क) बलहीन स्थान, वह जगह जहाँ आक्रमण किया जा सके—रन्ध्रोपनिपातिनोऽनर्थाः श० ६, रन्ध्रान्वेषणदक्षाणां द्विषामामिषतां ययौ रघु० १२।११, १५।१७, १७।३१, (ख) त्रुटि, दोष, कमी। सम०—अन्वेषिन्, अनुसारिन् (वि०) दूसरों के कमजोर स्थलों को ढूंढ़ने वाला मृच्छ० ८।५७, बभ्रुः चूहा,—वंशः खोखला या पोला बांस।

रभ् (भ्वा० आ० रभते, रब्ध, प्रेर० रम्भयति—ते; इच्छा० रिप्सते) आरंभ करना, आ ,प्रा—,1. आरंभ करना शुरू करना, काम में लग जाना, जिम्मेवारी ले लेना प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः भर्तृ० २।२७, आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः सुभा०, भट्टि० ५।३८, रघु० ८।४५ 2. व्यस्त होना, सोत्साह होना—शि० २।९१, परि ,कौली भरना, आलिङ्गन करना इत्युक्तवन्तं परिरभ्य दोर्भ्यां—कि० ११।८०, भामि० १।९५, कु० ५।३, शि० ९।७२, सम्—, 1. क्षुब्ध होना भाव विभोर होना, प्रभावित होना 2. कुपित होना, उत्तेजित होना, क्रोधोन्मत्त या चिड़-चिड़ा होना (प्रायः क्तान्त रूप प्रयुक्त)—रघु० १६।१६।

रभस् (नपुं०) [रभ्+असुन्] 1. प्रचण्डता, उत्साह 2. बल, सामर्थ्य।

रभस (वि०) [रभ्+असच्] 1. प्रचण्ड, उग्र, भीषण, प्रखर 2. प्रबल, गहन, उत्कट, शक्तिशाली, तीक्ष्ण, तीव्र (उत्कण्ठा आदि) रभसया नु दिगन्तदिदृक्षया—कि० ५।१, रघु० ९।६१, मुद्रा० ५।२४.—सः 1. प्रचण्डता, भीषणता, उग्रता, शीघ्रता, वेग, आतुरता, उत्कटता—आलीषु केलीरभसेन बाला मुहुर्ममालापमपालपन्ती—भामि० २।१२, त्वदभिसरणरभसेन वलन्ती गीत० ६, शि० ६।१३, ११।२३, कि० ९।४७ 2. उतावलापन, साहसिकता, जल्दबाजी—अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेर्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः—भर्तृ० २।९९ 3. क्रोध, आवेश,

कोप, भीषणता 4. खेद, शोक 5. हर्ष, आनंद, खुशी—मनसि रभसविभवे हरिरुदयतु सुकृतेन—गीत० ५।

रम् (भ्वा०-आ० रमते, परन्तु वि, आ, परि उपसर्ग लगने पर पर०, रत) 1. प्रसन्न होना, खुश होना, हर्ष मनाना, तृप्त होना—रहसि रमते—मा० ३।२—मनु० २।२२३ 2. हर्षित होना,—प्रसन्न होना, आनन्द मनाना, स्नेहशील होना (करण० और अधि० के साथ) लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि—मेघ० २७, व्यजेष्ट षड्वर्गमरंस्त नीतौ—भट्टि० १।२ 3. खेलना, क्रीडा करना, प्रेमालिङ्गन करना, जी बहलाना, -राजप्रियाः कैरविण्यो रमन्ते मधुपैः सह—भामि० १।१२६ (यहाँ दूसरा अर्थ भी संकेतित है) भट्टि० ६।१५, ६७ 4. संभोग करना—सा तत्पुत्रेण सह रमते हि० ३ 5 रहना, ठहरना, टिकना. प्रेर०—(रमयति—ते) प्रसन्न करना, खुश करना, सन्तुष्ट करना—इच्छा० (रिरंसते) क्रीडा करने की इच्छा करना—शि० १५।८८, अभि—,हर्ष मनाना, प्रसन्न या आनन्दित होता, अत्यनुरक्त होना—भट्टि० १।७, भग० १८।४५, आ—, (पर०) 1. आनन्द लेना, खुशी मनाना भट्टि० ८।५२, ३।३८ 2. ठहरना, थमना, छोड़ देना (बोलना आदि), समाप्त करना—मनु० २।७३, उप—, (पर० और आ०) 1. रुकना, अन्त करना, समाप्त करना—सङ्गतावुपरराम च लज्जा—नि० ९।४४, १३।६९ 2. रुकना, थमना—भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः—भग० २।३५, भट्टि० ८।५४, ५५, कि० ४।१७ 3. चुप होना, शांत होना, भग० ६।२०, 4. मरना—दे० उपरत, परि—, (पर०) प्रसन्न होना, खुश होना—भट्टि० ८।५३, वि—,(पर०) 1. अन्त होना, समाप्त होना, अवसान होना अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्—उत्तर० १।२७ 2. रुकना, बन्द होना थमना, छोड़ देना (बोलना आदि)—एतावदुक्त्वा विरते मृगेन्द्रे—रघु० २।५१, शि० २।१३, प्रायः अपा० के साथ, हा हन्त किमिति चित्तं विरमति नाद्यापि विषयेभ्यः—भामि० ४।२५, उत्तर० १।३३, सम्—(आ०) प्रसन्न होना, हर्ष मनाना—भट्टि० १९।३०।

रम (वि०)[रम्+अच्] सुहावना, आनन्दप्रद, संतोषजयक, आदि,—मः 1. हर्ष खुशी 2. प्रेमी, पति 3. कामदेव.

रमठम् [रमेः अठः] हींग। सम०—ध्वनिः हींग।

रमण (वि०) (स्त्रीणा—) [रमयति-रम्+णिच्+ल्युट्] सुहावना, सन्तोषजनक, आनन्दप्रद, मनोहर—भट्टि० ६।७०—णः 1. प्रेमी, पति पप्रच्छ रामां रमणोऽभिलाषम्—रघु० १४।२७, मेघ० ३७,८७, कु० ४।२१, शि० ९।६० 2. कामदेव 3. गधा 4. अंडकोष—णम् 1. क्रीड़ा करना 2. प्रेमालिंगन, जी बहलाना, केलिक्रीडा 3. रति, मैथुन 4. हर्ष, उल्लास 5. कूल्हा, पुट्ठा।

रमणा, रमणी [रमण+टाप्,ङीप् वा] 1. सुन्दर तरुण स्त्री, लता रम्या सेयं भ्रमरकुलरम्या न रमणी—भामि० २।९० 2. पत्नी, स्वामिनी—भोगः को रमणीं बिना—सुभा०।

रमणीय (वि०) [रम्यतेऽत्र-रम् आधारे अनीयर्] सुहावना, आनन्दप्रद, प्रिय, मनोहर, सुन्दर—स्मितं नैतत्किन्तु प्रकृतिरमणीयं विकसितम्—भामि० २।९०।

रमा [रमयति—रम्+अच्+टाप्] 1. पत्नी, स्वामिनी 2. लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी तथा धनदौलत की देवी 3. धन। सम०—कान्तः,—नाथः, पतिः विष्णु का विशेषण,—वेष्टः तारपीन।

रम्भा [रम्भ्+अच्+टाप्] 1. केले का पौधा—विजितरम्भमूरुद्वयम्—गीत० १०, पिबोरुरम्भातरुपीवरोरु—नै० २२।४३ २।३७ 2. गौरी का नाम, नलकुबेर की पत्नी जो इन्द्र के स्वर्ग में अत्यंत सुन्दरी मानी जाती है—तरुमूरुयुगेन सुन्दरी किमु रम्भां परिणाहिना परम्, तरुणीमपि जिष्णुरेव तां धनदापत्यतपःफलस्तनीम्—नै० २।३७, सम०—ऊरु (वि०) (स्त्री०—रु,—रू) केले के आन्तर भाग के समान जंघाओं वाला या वाली—शि० ८।१९, रघु० ६।३५।

रम्य (वि०) [रम्यतेऽत्र यत्] 1. सुहावना, सुखद, आनन्दप्रद, रुचिकर—रम्यास्तपोवनानां क्रियाः समवलोक्य—श० १।१३ 2. सुन्दर प्रिय, मनोहर—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं—श० १।२०, ५।२,—म्यः चम्पक नाम का वृक्ष,—म्यम् वीर्य।

रय् (भ्वा० आ-रयते, रयित) जाना, हिलना-जुलना।

रयः [रय्+अच्] 1. नदी की धारा, प्रवाह,—जम्बूकुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः—मेघ० २० 2. बल, चाल, वेग उत्तर० ३।३६ 3. उत्साह, उत्कण्ठा, उत्कटता, उग्रता।

रल्लकः [रमणं रत्=इच्छा तां लाति ला+क=रल्ल+कन्] 1. ऊनी वस्त्र, कंबल 2. पलक मारना युवतिरल्लक-भल्लसमाहतो भवति को न यवा गतचेतनः 3. एक प्रकार का हरिण।

रवः [रु+अप्] 1. क्रन्दन, चीख, चीत्कार, हू हू, (जानवरों की) चिंघाड़ 2. गाना, (पक्षियों की) कूजनध्वनि—रघु० ९।२९ 3. झनझनाहट 4. शब्द, कोलाहल घंटा°. भूषण° चाप° आदि।

रवण (वि०) [रु+युच्] 1. क्रंदन करने वाला, चिंघाड़ने वाला, चीखने वाला 2. ध्वन्यात्मक, शब्दायमान—उत्कण्ठावन्त्यनैः शुभ्रं रवणैरम्वरं ततम् भट्टि० ७।१४ 3. तीक्ष्ण, तप्त 4. चंचल, अस्थिर,—णः 1. ऊँट—शि० १२।२ 2. कोयल,—णम् पीतल, कांसा।

रविः [रु+इ] सूर्य—सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः रघु० १।१८। सम०—कान्तः सूर्यकान्तमणि,—जः, —तनयः,—पुत्रः,—सूनुः 1. शनिग्रह 2. कर्ण के विशेषण 3. वालि के विशेषण 4. वैवस्वत मनु के विशेषण 5. यम के विशेषण 6. सुग्रीव के विशेषण, —दिनं,—वारः,—वासरः,—वासरम् रविवार, आदित्यवार,—संक्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।

रशना, रसना [अश्+युच्, रशादेशः] 1. रस्सी, डोरी 2. रास, लगाम 3. कटिबंध, कमरबंद, स्त्रियों की करधनी—रसतु रसनापि तव घनजघनमण्डले घोषयतु मन्मथनिदेशम्—गीत० १०, रघु० ७।१०, ८।५७, मेघ० ३५ 4. जिह्वा—भामि० १।१११। सम० —उपमा उपमा अलंकार का एक भेद, यह उपमाओं की एक श्रृंखला है जिसमें पूर्व उपमेय, आगे चलकर उपमान बनता जाता है—दे० सा० द० ६६४।

रश्मिः [अश्+मि धातोरुट्, रश्+मि वा] 1. डोर, डोरी, रस्सी 2. लगाम, रास, मुक्तेषु रश्मिषु निरायतपूर्वकायाः—श० १।८, रश्मिसंयमनात्—श० १ 3. सांटा, हंटर 4. किरण, प्रकाश किरण—श० ७।६, नै० २२।५६, इसी प्रकार 'हिमरश्मि' आदि। सम० —कलापः चव्वन लड़ियों की मोतियों की माला।

रश्मिमत् (पुं०) [रश्मि+मतुप्] सूर्य।

रस् i (भ्वा० पर० रसति, रसित) 1. दहाड़ना, हूहू करना, चिल्लाना, चीखना—करीव वन्यः परुषं ररास —रघु० १६।७८, शि० ३।४८ 2. शब्द करना, कोलाहल करना, टनटन करना, झनझन करना —राजन्योपनिमंत्रणाय रसति स्फीतं यशोदुन्दुभिः —वेणी० १।२५, रसतु रसनापि तव घनजघनमण्डले —गीत० १० 3. प्रतिध्वनि करना, गूंजना।
ii (चुरा० उभ० रसयति-ते, रसित) चखना, स्वाद लेना —मृद्वीका रसिता—भामि० ४।१३, शि० १०।२७।

रसः [रस्+अच्] 1. सार, (वृक्षों का) दूध, रस, इक्षुरसः कुसुमरसः आदि 2. तरल, द्रव—कु० १।७ 3. पानी —सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः—रघु० १।१९ भामि० २।१४४ 4. मदिरा, शराब—मनु० २।१७७, 5. घूंट एक मात्रा, खूराक 6. चखना, रस, स्वाद (आलं० से भी) (वैशेषिक दर्शन के २४ गुणों, में से एक; रस छः हैं:—कटु, अम्ल, मधुर, लवण, तिक्त और कषाय)—परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्तु पुरुषः—मुद्रा० ३।४, उत्तर० २।२ 7. चटनी, मिर्च मसाला 8. कोई स्वादिष्ट पदार्थ—रघु० ३।४ 9. किसी वस्तु के लिए स्वाद या रुचि, पसन्दगी, इच्छा इष्टे वस्तुन्युपचितरसाः प्रेमराशीभवन्ति —मेघ० ११२ 10. प्रेम, स्नेह,—जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः—उत्तर० १।३९, प्रसरति रसो निर्वृतिघनः ६।११, 'प्रेम की अनुभूति'—कु० ३।३७ 11. आनन्द, प्रसन्नता, खुशी—रघु० ३।२६ 12. लावण्य, अभिरुचि, सौन्दर्य, लावण्य 13. करुणरस, भाव-भावना 14. (काव्य रचनाओं में) रस—नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति—काव्य० १, (रस प्रायः आठ हैं:—शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः। बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसा स्मृताः॥ परन्तु कभी कभी 'शांत' रस को जोड़ कर नौ रस बना दिये जाते हैं,—निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः —काव्य० ४; कभी कभी दसवां रस 'वात्सल्य' और मिला दिया जाता है। प्रत्येक काव्यरचना के रस आवश्यक घटक हैं, परन्तु विश्वनाथ के मतानुसार 'रस' काव्य की आत्मा है—वाक्यं रसात्मकं काव्यम् —सा० द० ३) 15. सत्, सार, तत्त्व, सर्वोत्तम भाग 16. शरीर के संघटक द्रव 17. वीर्य 18. पारा 19. विष, जहरीला पेय, जैसा कि 'तीक्ष्णरसदायिनः' में 20. कोई भी खनिज या धातुसंबंधी लवण।

सम०—अञ्जनम् रसौत, एक प्रकार का अंजन, —अम्लः अमलवेत,—अयनम् 1. अमृत, कोई भी औषध जो बुढ़ापे को रोक कर जीवन को लम्बा करे,—निखिलरसायनमहितो गन्धेनोग्रेण लशुन इव—रस० 2. (आलं०) अमृत का काम देने वाला अर्थात् जो मन को तृप्त भी करे साथ ही हर्षित भी करे, आनन्दनानि हृदयैकरसायनानि मा० ६।८, मनसश्च रसायनानि—उत्तर० १।३६, श्रोत्र कर्ण° आदि 3. रससिद्धि, रसायन °श्रेष्ठः पारा, —आत्मक (वि०) 1. रसीला, रसदार 2. तरल, द्रव,—आभासः किसी रस का बाह्यरूप या केवल प्रतीति 2. किसी रस का अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन, —आस्वादः 1. सत् या रस आदि चखना 2. काव्यरस की अनुभूति, काव्य सौन्दर्य का प्रत्यक्षीकरण —जैसा कि 'काव्यामृतरसास्वादः' में,—इन्द्रः 1. पारा 2. पारसमणि, चिन्तामणि (कहते हैं कि इसके स्पर्श से लोहा, सोना बन जाता है),—उद्भवम्,—उपलम् मोती,—कर्मन् (नपुं०) उन वस्तुओं को तैयार करना जिनमें पारा इस्तेमाल किया जाता है,—केसरम् कपूर, —गन्धः,—धम् लोबान की तरह का खुशबूदार गोंद, रसगन्ध,—ग्रह (वि०) 1. रसों का ज्ञाता 2. आनन्द मनाने वाला, जः राब, शीरा,—जम् रुधिर,—ज्ञ (वि०) 1. जो रस की उत्तमता को परखता है, जो स्वाद जानता है, सांसारिकेषु च सुखेषु वयं रसज्ञाः —उत्तर० २।२७ 2. वस्तुओं के सौन्दर्य को पहचानने में सक्षम (—ज्ञः) 1. स्वाद का जानकार, भावुक, विवेचक, काव्यमर्मज्ञ, कवि 2. रससिद्धि का ज्ञाता 3. पारे

के योग से बनने वाली औषधियों के तैयार करने वाला वैद्य, (–ज्ञा) जिह्वा, - भामि० २।५९, तेजस् (नपुं०) रुधिर —दः वैद्य, —धातु (नपुं०) पारा, —प्रबन्धः कोई भी काव्यरचना, विशेष कर नाटक, —फलः नारियल का पेड़, -भङ्गः रस का टूट जाना या अवरोध, —भवम् रुधिर, —राजः पारा, विक्रयः मदिरा की बिक्री, —शास्त्र रससिद्धि का विज्ञान, —सिद्ध (वि०) 1. काव्य-सम्पन्न, रसवेत्ता —जयन्ति ते सुकृतिनः रससिद्धाः कवीश्वराः— भर्तृ० २।२४ 2. रस-सिद्धि म कुशल, —सिद्धिः (स्त्री०) रससिद्धि में कुशलता।

रसनम् [रस्+ल्युट्] 1. क्रन्दन करना, चिल्लाना, चिंघाड़ना, शोर मचाना, टनटन करना, कोलाहल करना 2. बादलों की गड़गड़ाहट, बादलों की गरज 3. स्वाद, रस 4. स्वाद लेने की इन्द्रिय, जिह्वा —इन्द्रियं रसग्राहकं रसनं जिह्वाग्रवर्ति —तर्क०, भग० १५।९ 5. प्रत्यक्षीकरण, गुणागुणविवेचन, ज्ञान—सर्वे-ऽपि रसनाद्रसाः—सा० द० २४४।

रसना दे० रशना। सम०– रदः पक्षी, —लिह् (पुं०) कुत्ता।

रसवत् (वि०) [रस+मतुप्] 1. रसेदार, रसीला 2. स्वादिष्ट, मशालेदार, मजेदार, सुरस संसारसुख-वृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले, काव्यामृतरसास्वादः सम्पर्कः सज्जनैः सह 3. तर, गीला, पानी से आर्द्र 4. मनोहर, शानदार, प्रांजल, परिष्कृत 5. भावों से भरा हुआ, जोशीला 6. स्नेहसिक्त, प्रेमपूरित 7. साहसी, रसिक, —ती रसोई।

रसा [रस्+अच्=टाप्] 1. निम्नतर नारकीय प्रदेश, नरक 2. पृथ्वी, भूमि, मिट्टी—भामि० १।५९, स्मरस्य युद्धरङ्गतां रसारसारसारसा —नलो० २।१० 3. जिह्वा। सम०– तलम् 1. पृथ्वी के नीचे सात पातालों में से एक, दे० पाताल 2. नीचे की दुनिया, नरक, राज्यं यातु रसातलं पुनरिदं न प्राणितुं कामये - भामि० २।६३ जातिर्यातु रसातलम्— भर्तृ० २।३९।

रसालः [रसमालाति–आ+ला+क, प० त०] 1. आम का पेड़,–भृङ्गाः रसालकुसुमानि समाश्रयन्ते—भामि० १।१७ 2. गन्ना, ईख,—ला 1. जिह्वा 2. वह दही जिसमें शक्कर तथा मसाले मिला दिए गये हों 3. 'दूर्वा' घास, दूब 4. अंगूरों की बेल या अंगूर, —लम् लोबान।

रसिक (वि०) [रसोऽस्त्यस्य ठन्] 1. मसालेदार, मजेदार, स्वादिष्ट 2. शानदार, ललित, सुन्दर 3. जोशीला 4. उत्तमता या रस को पहचानने वाला, स्वादयुक्त, गुणग्राही, विवेचक—तद् वृत्तं प्रवदन्ति काव्यरसिकाः शार्दूलविक्रीडितम्—श्रुत० ४० 5. आनन्द लेने वाला, खुशी मनाने वाला, प्रसन्नता अनुभव करने वाला, भक्त (प्रायः समास में) —इयं मालती भगवता सदृश-संयोगरसिकेन वेधसा मन्मथेन मया च तुभ्यं दीयते —मा० ६, इसी प्रकार 'कामरसिकः'—भर्तृ० ३।११२, परोपकाररसिकस्य—मृच्छ० ६।१९,—कः 1. रसिया, गुणग्राही, सहृदय पुरुष तु० अरसिक 2. स्वेच्छाचारी 3. हाथी 4. घोड़ा, —का 1. ईख का रस, राब, मीठा 2. जिह्वा 3. स्त्रियों की करधनी—दे० 'रसाला' भी।

रसित (भू० क० कृ०) [रस्+क्त] 1. चखा हुआ 2. रस या मनोभाव से युक्त 3. मुलम्मा चढ़ा हुआ, —तम् 1. शराब या मदिरा 2. क्रंदन, दहाड़, गरज, चिंघाड़, कोलाहल, शोर—हेरम्बकण्ठरसितप्रतिमानमेति —मा० ९।३।

रसोनः [रसेनैकेन ऊनः] लहसुन - तु० लशुन।

रस्य (वि०) [रस+यत्] रसवाला, मजेदार, सुस्वादु, रुचिकर —रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः—भग० १७।८।

रह् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० रहति, रहयति—ते, रहित) छोड़ देना, त्याग देना, परित्याग करना, तिलांजलि देना, छोड़कर अलग हो जाना—रहयत्या-पदुपेतमायतिः—कि० २।१४।

रहणम् [रह्+ल्युट्] छोड़ कर भाग जाना, परित्याग कर देना, अलग हो जाना - सहकारवृते समये सह का रहणस्य केन सस्मार पदम् —नलो० २।१४।

रहस् (नपुं०) [रह्+असुन्] 1. एकान्तता, एकान्तवास, अकेलापन, एकाकीपन, निर्जनता—रघु० ३।३, १५।९२, पंच० १।१३८ 2. उजड़ा हुआ या सुनसान स्थान, छिपने की जगह 3. भेद की बात, रहस्य 4. मैथुन, संभोग 5. गुप्त इन्द्रिय —(अव्य०) चुपचाप, आँख बचा कर, गुप्त रूप से, एकान्त में, निर्जनस्थान में, अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात्सङ्गतं रहः— श० ५।२४, प्रायः समास में—वृत्तं रहः प्रणयमप्रतिपद्यमाने — ५।२३।

रहस्य (वि०) [रहसि भवः—यत्] 1. गुप्त, निजी, प्रच्छन्न 2. भेदभरा, —स्यम् 1. भेद (आलं० से भी) —स्वयं रहस्यभेदः कृतः—विक्रम० २ 2. रहस्य से भरा जादू, मंत्र, (अस्त्रसंबंधी) भेद, गुप्त बात—सरह-स्यानि जृम्भकास्त्राणि—उत्तर० १ 3. आचरण का भेद या रहस्य, गुप्त बात—रहस्यं साधूनामनुपधि विशुद्धं विजयते— उत्तर० २,२ 4. गुह्य या गोपनीय शिक्षा, एक रहस्यमय सिद्धान्त—भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम्—भग० ४।३, मनु० २।१५०, (अव्य०— स्यम्) चुपचाप, गुप्तरूप से—याज्ञ० ३।३०१ (यहाँ यह विशेषण के रूप में भी समझा जा सकता है)। सम०—आख्यायिन् (वि०) भेद की बात

बताने वाला—रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः—श० १।२४,—भेदः—विभेदः किसी भेद या गुप्त बात का खोलना,—व्रतम् 1. गुप्त प्रतिज्ञा या साधना 2. जादू के शस्त्रास्त्रों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए एक रहस्यमय विज्ञान।

रहित (भू० क० कृ०) [रह् कर्मणि क्त] 1. छोड़ा गया, छोड़ दिया गया, परित्यक्त, सम्परित्यक्त 2. वियुक्त, मुक्त, वञ्चित, हीन, के बिना (करण० के साथ या समास के अन्त में—रहिते भिक्षुभिर्ग्रामे—याज्ञ० ३।५९, गुणरहितः, सत्त्वरहितः आदि 3. अकेला, एकाकी,—तम् गोपनीयता, परदा या ओट।

रा (अदा० पर० राति, रात) देना, अनुदान देना, समर्पण करना—स रातु वो दुश्च्यवनो भावुकानां परम्पराम्—काव्य० ७।

राका [रा+क+टाप्] 1. पूर्णिमा का दिन, विशेषरूप से रात्रि,—दारिद्र्यं भजते कलानिधिरयं राकाधुना म्लायति—भामि० २।७२, ५४, ९४, १५०, १६५, १७५, ३।११ 2. पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी 3. वह कन्या जिसे अभी रजोधर्म होना आरंभ हुआ है 4. खुजली, खाज।

राक्षस (वि०) (स्त्री०-सी) [रक्षस इदम् अण्] दैत्य या राक्षस से संबंध रखने वाला, पैशाची, निशाचर के स्वभाव वाला—उत्तर० ५।३०, भग० ९।१२,—सः 1. पिशाच, भूतप्रेत, बैताल, दानव, शैतान 2. हिन्दु-धर्मशास्त्रों में प्रतिपादित विवाह के आठ भेदों में से एक प्रकार जिसमें दुलहिन के सम्बन्धियों को युद्ध में परास्त कर कन्या को बलात् उठाकर ले जाया जाता है—राक्षसो युद्धहरणात्—याज्ञ० १।६१, तु० मनु० ३।३३ भी (इसी ढंग से कृष्ण रुक्मिणी को उठा लाया था) 3. ज्योतिषविषयक एक योग 4. नन्द राजा का मन्त्री, जो मुद्राराक्षस नाटक में एक प्रधान पात्र है,—सी पिशाचिनी।

राक्षा दे० लाक्षा (कदाचित् अशुद्ध रूप है)।

रागः [रञ्ज् भावे घञ्, नलोपकुत्वे] 1. वर्ण, रंग, रंजक वस्तु 2. लाल रङ्ग, लालिमा,—अधरः किसलयरागः—श० १।२१ 3. लाल रङ्ग, लाल रङ्ग की लाख, महावर,—रागेण बालारुणकोमलेन चूतप्रवालोष्ठमलञ्चकार—कु० ३।३०, ५।११ 4. प्रेम, प्रणयोन्माद, स्नेह, प्रीतिविषयक या काम-भावना,—मलिनेऽपिरागपूर्णाम्—भामि० १।१०० (यहाँ इसका अर्थ 'लाली भी है) —अथ भवन्तमन्तरेण कीदृशोऽस्या दृष्टिरागः—श० २, दे० 'चक्षूराग' भी 5. भावमय संवेग, सहानुभूति, हित 6. हर्ष, आनन्द 7. क्रोध रोष 8. प्रियता, सौन्दर्य 9. संगीत के राग या स्वरग्राम मूलराग छः हैं—भैरवः कौशिकश्चैव हिन्दोलो दीपकस्तथा। श्रीरागो मेघरागश्च रागाः षडिति कीर्तिताः—भरत। दूसरे लेखकों ने भिन्न-भिन्न नाम बतलाये हैं, प्रत्येक राग के अनुरूप उनके साथ छः छः रागिनियाँ होती हैं, इस प्रकार सबको मिलाकर संगीत के अनेक राग हो जाते हैं) 10. संगीत की संगति, संगीतमाधुर्य—तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः—श० १।५, अहो रागपरिवाहिणी गीतिः—श० ५ 11. खेद, शोक 12. लालच, ईर्ष्या। सम०—आत्मक (वि०) जोशीला,—चूर्णः 1. खैर का वृक्ष 2. सिन्दूर 3. लाख 4. होली के उत्सव पर एक दूसरे पर फेंका जाने वाला गुलाल या अबीर 5. कामदेव,—द्रव्यम् रंगने वाला पदार्थ, रङ्गलेप, रङ्ग,—बन्धः भावना का प्रकटीकरण, (नाना प्रकार संवेगों के) उपयुक्त वर्णन से उत्पन्न रुचि—भावो भावं नुदति विषयाद्रागबन्धः स एव—मालवि० २।९,—युज् (पुं०) लाल,—सूत्रम् 1. रङ्गीन धागा 2. रेशमी धागा 3. तराजू की डोरी।

रागिन् (वि०) [राग+इनि] 1. रङ्गीन, रङ्गा हुआ 2. रङ्ग करने वाला, रङ्गलेप करने वाला 3. लाल 4. भावना और आवेश से पूर्ण, जोशीला 5. प्रेमपूरित 6. सावेश, स्नेहशील, श्रद्धानुरागपूर्ण, अभिलाषी, लालायित (समास के अन्त में), (पुं०) 1. चित्रकार 2. प्रेमी 3. स्वेच्छाचारी, कामासक्त,—णी 1. संगीत के स्वरग्राम की विकृतियाँ जिनमें से तीस या छत्तीस भेद गिनाये जाते हैं 2. स्वैरिणी, पुंश्चली, कामुकी।

राघवः [रघोर्गोत्रापत्यम् अण्] 1. रघुवंशी, रघु की संतान विशेषतः राम 2. एक प्रकार का बड़ा मच्छ—भामि० १।५५।

राङ्कव (वि०) (स्त्री०—वी) [रङ्कोरयं विकारो वा तल्लोमजातत्वात् अण्] रङ्कु नाम की हरिण जाति से सम्बन्ध रखने वाला, या इसके बालों से बना हुआ, ऊनी विक्रमांक० १८।३१,—वम् 1. हरिण के बालों से बनाया हुआ ऊनी कपड़ा, ऊनी, वस्त्र 2. कम्बल।

राज् (भ्वा० उभ० राजति-ते, राजित) 1. (क) चमकना, जगमगाना, शानदार या सुन्दर प्रतीत होना, प्रमुख होना—रेजे ग्रहमयीव सा—भर्तृ० १।१७, राजन् राजति वीरवैरिवनिता वैधव्यदस्ते भुजः—काव्य० १०, रघु० ३।७, कि० ४।२४, ११।६: (ख) प्रतीत होना, झलक दिखाई देना,—तोयान्तर्भास्करालीव रेजे मुनिपरम्परा—कु० ६।४९ 2. हकूमत करना, शासन करना—प्रेर० (राजयति-ते) चमकाना, रोशनी करना, उज्ज्वल करना। निस्—,प्रेर० चमकाना, रोशनी करना, उज्ज्वल करना, अलकृत करना, देदीप्यमान करना—दिव्यास्त्रस्फुरदुग्रदीधितिशिखानीराजितज्यं धनुः—उत्तर० ६।१८, नीराजयन्ति भूपालाः पादपीठान्तभूतलम्—प्रबो० २ 2. आरती उतारना, नीराजन करना (पूजा या सम्मान की दृष्टि के कारण जलते हुए दीपकों के थाल को घुमाना)

—नानायोधसमाकीर्णो नीराजितहयद्विपः - काम० ४।६६ वि —, 1. चमकाना, भामि० १।८८ 2. दिखाई देना, प्रतीत होना - रघु० २।२०।

राज् (पुं०) [राज्+क्विप्] राजा, सरदार, युवराज।

राजकः [राजन्+कन्] छोटा राजा, मामूली राणा,—**कम्** राजा या राणाओं का समूह, प्रभुसत्ता प्राप्त राजाओं का समुदाय—सहते न जनोऽप्यधःक्रियां किमु लोकाधिकधाम राजकम्—कि० २।४७, शि० १४।४३।

राजत (वि०) (स्त्री०—ती) [रजत+अण्] चांदी का, चांदी का बना हुआ, शि० ४।१३,—**तम्** चाँदी।

राजन् (पुं०) [राज्+कनिन्, रञ्जयति रञ्ज्+कनिन् नि० वा] 1. राजा, शासक, युवराज, सरदार या मुखिया (तत्पुरुष समास के अन्त में 'राजन्' का बदल कर 'राज' बन जाता है) वंगराजः, महाराजः आदि —तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात्—रघु० ४।१२ 2. सैनिक जाति का पुरुष, क्षत्रिय शि० १४।१४ 3. युधिष्ठिर का नाम 4. इन्द्र का नाम 5. चन्द्रमा—भामि० १।१२६ 6. यक्ष। सम० —**अङ्गनम्** राजकीय कचहरी या दरबार, महल का आंगन,—**अधिकारिन्**, **अधिकृतः** 1. राजकीय अधिकारी या अफ़सर 2. न्यायाधीश,—**अधिराजः**,—**इन्द्रः** राजाओं का राजा, सर्वोपरि राजा, प्रमुख प्रभु, सम्राट्,—**अनकः** 1. घटिया राजा, छोटा राणा, 2. एक प्रकार की उपाधि जो पहले पूजनीय विद्वानों और कवियों को दी जाती थी,—**अपसदः** अयोग्य या पतित राजा,—**अभिषेकः** राजा का राजतिलक,—**अर्हम्** अगर की लकड़ी, एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी, —**अर्हणम्** राजकीय सम्मानसूचक उपहार,—**आज्ञा** राजा का अनुशासन, अध्यादेश, अथवा आदेश, —**आभरणम्** राजा का आभूषण,—**आवलिः**,—**ली** राजकीय वंशावली, राजवंशावली,—**उपकरणम्** (ब० व०) राजकीय साज-सामान, राजचिह्न,—**ऋषिः** (**राज ऋषिः या राजर्षिः**) राजकीय ऋषि, सन्तसमान राजा, क्षत्रिय जाति का पुरुष जिसने अपने पवित्र जीवन तथा साधनामय भक्ति से ऋषि का पद प्राप्त किया हो। जैसे पुरूरवा, जनक और विश्वामित्र, —**करः** राजा को दिया जाने वाला शुल्क—**कार्यम्** राज्य का कार्य,—**कुमारः** युवराज,—**कुल** 1. राजकीय परिवार, राजा का कुटुम्ब 2. राजा का दरबार 3. न्यायालय (**राजकुले कथ्, या निविद्** (प्रेर०) न्यायालय में किसी के विरुद्ध अभियोग चलाना, या नालिश करना) 4. राजा का महल 5. राज, महाराज (बोलने की सम्मानसूचक रीति),—**गामिन्** (वि०) राज्याधीन या राजाधिकार में होने वाली सम्पत्ति आदि (जिस सम्पत्ति का कोई उत्तराधिकारी न हो),—**गृहम्** 1. राजकीय निवास, राजा का महल 2, मगध के मुख्य नगर या राजधानी का नाम (जो पाटलिपुत्र से लगभग ७५ या ८० मील की दूरी पर स्थित है)—**चिह्नम्** राजचिह्न, राजाधिकार या राजशक्ति,—**तालः**,—ताली सुपारी का पेड़,—**दण्डः** 1. राजा के हाथ का डंडा 2. राज शासन या राजाधिकार 3. राजाद्वारा दिया गया दण्ड,—**दन्तः** (दन्तानां राजा) आगे का दाँत—नै० ७।४६,—**दूतः** राजदूत, राजा का प्रतिनिधि,—**द्रोहः** राजा के विरुद्ध विश्वासघात, राजसत्ता के विरुद्ध आन्दोलन, राजविद्रोह,—**द्वार्** (स्त्री०),—**द्वारम्** राजा के महल का मुख्य द्वार या फाटक,—**द्वारिकः** राजमहल का ड्योढ़ीवान्,—**धर्मः** 1. राजा का कर्तव्य 2. राजाओं से सम्बन्ध रखने वाला नियम या विधि (प्रायः ब० व० में) —**धानम्**,—**धानिका**,—**धानी** राजा का निवास स्थान, मुख्य नगर, राजधानी, शासन के कार्यालय का स्थान,—रघु० २।२०,—**धुर्** (स्त्री०), —**धुरा** शासन का उत्तर दायित्व या भार,—**नयः**,—**नीतिः** (स्त्री०) राज्य का प्रशासन, सरकार का प्रशासन, राजनय, राजनीतिज्ञता, **नीलम्** पन्ना, मरकत मणि,—**पट्टः** घटिया हीरा,—**पथः**,—**पद्धतिः** (स्त्री०)=राज-मार्ग दे०,—**पुत्रः** 1. राजकुमार, युवराज 2. क्षत्रिय, सैनिक जाति का पुरुष 3. बुधग्रह, **पुत्री** राजकुमारी,—**पुरुषः** 1. राजा का सेवक 2. मन्त्री, **प्रेष्यः** राजा का सेवक (—**ष्यम्**) राजा की सेवा (अधिक शुद्ध 'राजप्रैष्य'), —**बीजिन्**,—**वंश्य** (वि०) राजा की सन्तान, राजवंशज,—**भृतः** राजा का सिपाही,—**भृत्यः** 1. राजा का सेवक या मंत्री 2. कोई सरकारी अधिकारी, —**भोगः** राजा का भोजन, खाना, **भौतः** राजा का विदूषक या हंसोकड़ा, **मात्रधरः**, —**मन्त्रिन्** (पुं०) राजा का सलाहकार,—**मार्गः** 1. मुख्य मार्ग, मुख्य सड़क, राजकीय या मुख्य पथ, मुख्य रास्ता या प्रधान मार्ग 2. राजाओं की कार्य-विधि प्रणाली, या रीति,—**मुद्रा** राजा की मोहर,—**यक्ष्मन्** (पुं०) क्षयरोग, फुपफुसीय क्षयरोग, तपेदिक,—राजयक्ष्मपरिहानिराययौ कामयानसमवस्थया तुलाम्—रघु० १९।२५, राजयक्ष्मेव रोगाणां समूहः स महीभृताम्—शि० २।९६ (इस शब्द की व्याख्या के लिए दे० मल्लि० इस पर और शि० १३।२९ पर),—**यानम्** राजा की सवारी, पालकी,—**योगः** 1. जन्म के समय ग्रहों और नक्षत्रों का ऐसा संरूपण जिससे उस व्यक्ति के राजा होने का संकेत मिले 2. धार्मिक चिन्तन का एक सरल योग (राजाओं द्वारा अभ्यास करने योग्य) जो हठ योग (दे०) जैसे और कठोर योगों से भिन्न है,—**रङ्गम्** चाँदी,—**राजः** 1. प्रमुख राजा, सर्वोपरि प्रभु, सम्राट्

2. कुबेर का नाम—अन्तर्वाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ—मेघ० ३ 3. चन्द्रमा, —रीतिः (स्त्री०) कांसा, फूल, —लक्षणम् 1. मनुष्य के शरीर पर कोई ऐसा चिह्न, जो उसकी भावी राजकीयता को प्रकट करे 2. राजकीय चिह्न, राजचिह्न, राजशक्ति,—लक्ष्मीः,श्रीः (स्त्री०) राजा का सौभाग्य या समृद्धि, (देवी का मूर्तरूप) राजा की कीर्ति या महिमा—रघु० २।७,—वंशः राजाओं का वंश, —वंशावली राजाओं की वंशावली, राजाओं का वंशविवरण, —विद्या 'राजकीय नीति' राजा का कौशल, राज्य की नीति, राजनीति (तु० राजनय) इसी प्रकार 'राजशास्त्रम्',—विहारः राजकीय शिक्षालय,—शासनम् राजा का अनुशासन, —शृङ्गम् सुनहरी डंडी का राजकीय छाता,—संसद् (स्त्री०) न्यायालय,—सदनम् महल,—सर्षपः काली सरसों, —सायुज्यम् प्रभुसत्ता, —सारसः मोर, —सूयः,—यम् एक वृहद यज्ञ जिसका अनुष्ठान चक्रवर्ती राजा (इसमें सहायक राजा लोग भी भाग लेते हैं) इसलिए करते हैं जिससे कि प्रकट हो कि उनका राजतिलक बिना किसी विरोध के सर्वसम्मति से हो रहा है—राजा वै राजसूयेनेष्ट्वा भवति—शत०, तु० 'सम्राट' से भी,—स्कन्धः घोड़ा, —स्वम् 1. राजकीय संपत्ति 2. राजा को दिया जाने वाला शुल्क, मालगुजारी,—हंसः मराल (श्वेतरंग का हंस जिसकी चोंच और टांगें लाल हों) —संपत्स्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः—मेघ० ११,—हस्तिन् (पुं०) राजकीय हाथी अर्थात् शाही तथा सुन्दर हाथी।

राजन्य (वि) [राजन्+यत्] शाही, राजकीय,—न्यः 1. क्षत्रिय जाति का पुरुष, राजकीय व्यक्ति—राजन्यान् स्वपुरनिवृत्तयेऽनुमेने—रघु० ४।८७, ३।३८, मेघ० ४८ 2. श्रेष्ठ या पूज्य व्यक्ति।

राजन्यकम् [राजन्य+कन्] क्षत्रियों या योद्धाओं का समूह।

राजन्वत् (वि०) [राजन्+मतुप्, वत्वम्] न्यायपरायण या उत्तम राजा द्वारा शासित (देश के रूप में, यह शब्द राजवत्—'केवल राजा से युक्त'—शब्द से भिन्न है)—सुराज्ञि देशे राजन्वान् स्यात् ततोऽन्यत्र राजवान् —अमर०, राजन्वतीमाहुरनेन भूमिम्—रघु० ६।२२, काव्या० ३।६।

राजस (वि०) (स्त्री०—सी) [रजसा निर्मितम्—अण्] रजोगुण से प्रभावित या संबद्ध, रजोगुण से युक्त —ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः —भग० १४।१८, ७।१२, १७।२।

राजसात् (अव्य०) [राजन्+साति] राज्य में सम्मिलित या राजा के अधिकार में।

राजिः,—जी (स्त्री०) [राज्+इन् वा ङीप्] धारी, रेखा, पंक्ति, कतार—सर्वं पण्डितराजराजितिलकेनाकारि लोकोत्तरम्—भामि० ४।४४, दानराजिः—रघु० २।७, कि० ४।५।

राजिका [राजि+कन्+टाप्] 1. रेखा, पंक्ति, कतार 2. खेत 3. काली सरसों 4. सरसों (एक परिमाण, तोल)।

राजिलः [राज्+इलच्] सांपों की एक सरल जाति जिसमें विष नहीं होता—कि महोरगविसर्पिविक्रमो राजिलेषु गरुडः प्रवर्तते—रघु० ११।२७, तु० 'डुंडुभ'।

राजीवः [राजी दलराजी अस्त्यस्य व] 1. एक प्रकार का हरिण 2. सारस 3. हाथी,—वम् नील कमल, कु० ३।४६। सम०—अक्ष (वि०) कमल जैसी आंखों वाला।

राज्ञी [राजन्+ङीप्, अकारलोपः] रानी, राजा की पत्नी।

राज्यम् [राज्ञो भावः कर्म वा, राजन्+यत्, नलोपः] 1. राजकीयता, प्रभुसत्ता, राजकीय अधिकार—राज्येन किं तद्विपरीतवृत्तेः—रघु० २।५३, ४।१ 2. राजधानी, राज्य, साम्राज्य—रघु० १।५८ 3. हकूमत, राज्य, शासन, राज्य का प्रशासन। सम०—अङ्गम् राज्य का संविधायी सदस्य, राजप्रशासन की आवश्यक सामग्री, यह बहुधा सात बतलाई जाती हैं—स्वाम्यमात्यसुहृत्कोषराष्ट्रदुर्गबलानि च—अमर०, —अधिकारः 1. राज्य पर अधिकार 2. प्रभुसत्ता का अधिकार, —अपहरणम् हड़पना, बलाद् ग्रहण करना, —अभिषेकः राजा का राजतिलक या सिंहासनारोहण,—करः वह शुल्क जो एक अधीनस्थ राजा द्वारा दिया जाता है, —च्युत (वि०) गद्दी से उतारा हुआ, सिंहासनच्युत,—तन्त्रम् शासनविज्ञान, प्रशासन पद्धति, राज्य का शासन या प्रशासन—मुद्रा० १, —धुरा,—भारः शासन का जुआ, सरकार का उत्तरदायित्व या प्रशासन,—भङ्गः प्रभुसत्ता का विनाश, —लोभः उपनिवेश बनाने की इच्छा, प्रादेशिक वृद्धि की इच्छा,—व्यवहारः प्रशासन, सरकारी काम-काज,—सुखम् राजकीय-माधुर्य।

राढा (स्त्री०) 1. आभा 2. बंगाल के एक जिले का नाम, उसकी राजधानी—गौडं राष्ट्रमनुत्तमं निरुपमा तत्रापि राढापुरी—प्रबो० २।

रात्रिः,—त्री (स्त्री०) [राति सुखं भयं वा रा+त्रिप् वा ङीप्] रात—रात्रिर्गता मतिमतां वर मुञ्च शय्याम् —रघु० ५।६३, दिवा काकरवाद्भीता रात्रौ तरति नर्मदाम्। सम०—अटः 1. बेताल, पिशाच, भूत-प्रेत 2. चोर, —अन्ध (वि०) जिसे रात को दिखाई न दे,—करः चन्द्रमा,—चरः ('रात्रिंचर' भी) (स्त्री० —री) 1. निशाचर, डाकू, चोर 2. पहरेदार, आरक्षी,

चौकीदार 3. पिशाच, भूत, प्रेत—(तं) यातं वने रात्रिचरी डुढौके—भट्टि० २।२३, —चर्या 1. रात में इधर उधर घूमना 2. रात को होने वाला कार्य या संस्कार, —जम् तारा, नक्षत्रपुंज, —जलम् ओस, —जागरः 1. रात को पहरा देना, रात को जागते रहना, रात में बैठे रहना—रघु० १९।३४ 2. कुत्ता, —तरा आधी रात, मध्यरात्रि, —पुष्पम् कुमुद (जो रात को ही खिलता है), —योगः रात का आ जाना, —रक्षः, —रक्षकः पहरेदार, रखवाला, —रागः अंधकार, घना अंधेरा, —वासस् (नपुं०) 1. रात की वेशभूषा 2. अंधकार - विगमः रात का अंत, दिन का निकलना, पौ फटना, प्रभात का प्रकाश—वेदः—वेदिन् (पुं०) मुर्गा।

रात्रिन्दिवम्, रात्रिन्दिवा (अव्य०) [द्व० स०] रात दिन, लगातार, अनवरत—रात्रिन्दिवं गन्धवहः प्रयाति —श० ५।४।

रात्रिंमन्व (वि०) [रात्रिम्+मन्+खश्] रात की भांति दिखाई देने वाला (जैसे दुर्दिन या मेघाच्छादित दिन हो) तु० 'रजनिंमन्यः'।

राद्ध (भू० क० कृ०) [राध् कर्तरि कर्मणि वा क्त] 1. आराधित, प्रसादित, मनाया गया 2. कार्यान्वित सम्पन्न, निष्पन्न, अनुष्ठित 3. पकाया हुआ, (खाना) राधा हुआ 4. तैयार किया हुआ 5. प्राप्त किया हुआ हासिल किया हुआ 6. सफल, सौभाग्यशाली, प्रसन्न 7. जादू की शक्ति से पूर्ण, दे० राध्। सम०—अन्तः सिद्ध या स्थापित तथ्य, प्रदर्शित उपसंहार या सचाई, अन्तिम निर्णय, सिद्धांत, मत—सर्ववैनाशिकराद्धान्तो नितरामनपेक्षितव्य इतीदानीमुपपादयामः—शारी०, —अन्वित (वि०) प्रदर्शित, प्रमाणों द्वारा स्थापित, तर्कसिद्ध।

राध् i (स्वा० पर० राध्नोति, राद्ध; इच्छा० रिरात्सति, परन्तु 'मारना चाहता है' के लिए रित्सति) 1. राजी करना, मनाना, प्रसन्न करना 2. सम्पन्न करना, कार्यान्वित करना, पूरा करना, अनुष्ठान करना, निष्पन्न करना 3. प्रस्तुत करना, तैयार करना 4. क्षतिग्रस्त करना, नष्ट करना, मार डालना, उखाड़ना —वानरा भूधरान् रेधुः—भट्टि० १४।१९।

ii (दिवा० पर० राध्यति, राद्ध) 1. अनुकूल या दयार्द्र होना, 2. सम्पन्न, या पूर्ण होना 3. सफल होना, कामयाब होना, समृद्ध होना 4. तैयार होना 5. मार डालना, नष्ट करना, प्रेर० (राधयति—ते) 1. राजी करना 2. सम्पन्न करना, पूरा करना, अनु —, आराधना करना, पूजा करना, मनाना, अप - , 1. रुष्ट करना, ठेस पहुंचाना, पाप करना (संबं० या अधि० के साथ, अथवा स्वतंत्र रूप से)—यस्मिन्कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शकुन्तला—श० ४, अपराद्धोऽस्मि तत्र भवतः कण्वस्य—श० ७ 2. चूक जाना, लक्ष्यवेध न कर सकना, शि० २।२७ 3. सताना, चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना—न तु ग्रीष्मस्यैवं सुभगमपराद्धं युवतिषु —श० ३।९, आ—, आराधना करना (प्रेर०) 1. राजी करना, मनाना, प्रसन्न करना परेषां चेतांसि प्रतिदिवसमाराध्य बहुधा—भर्तृ० ३।३४, २।४, ५ 2. पूजा करना, सेवा करना—मेघ० ४५, वि—, चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, रुष्ट करना, ठेस पहुँचाना, —क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः—शि० २।४३, विराद्ध एवं भवता विराद्धा बहुधा च नः—२।४१।

राधः [राधा विशाखा तद्वती पौर्णमासी राधी, सा अस्मिन् अस्ति—राधी+अण्] वैशाख का महीना।

राधा [राध्नोति साधयति कार्याणि—राध्+अच्+टाप्] 1. समृद्धि, सफलता 2. प्रसिद्ध गोपिका जिस पर कृष्ण भगवान् का बड़ा अनुराग था (इसकी छद्मप्रीति को जयदेव ने अपने गीतगोविन्द की रचना द्वारा अमर कर दिया है)—तदिमं राधे गृहं प्रापय—गीत० १ 3. अधिरथ की पत्नी तथा कर्ण की पालिका माता का नाम 4. विशाखा नाम का नक्षत्र 5. बिजली।

राधिका दे० 'राधा'।

राधेयः [राधा+ढक्] कर्ण का विशेषण।

राम (वि०) [रम् कर्तरि घञ्, ण वा] 1. सुहावना, आनंदप्रद, हर्षदायक 2. सुन्दर, प्रिय, मनोहर 3. मलिन, धूमिल, काला 4. श्वेत, —मः 1. तीन प्रसिद्ध व्यक्तियों का नाम—(क) जमदग्नि का पुत्र परशुराम (ख) वसुदेव का पुत्र बलराम जो कृष्ण का भाई था (ग) दशरथ और कौशल्या का पुत्र रामचन्द्र या सीताराम, रामायण का नायक। [जब राम बालक ही थे तो विश्वामित्र, दशरथ की अनुमति लेकर लक्ष्मण समेत राम को, राक्षसों से अपने यज्ञों की रक्षा करने के लिए अपने आश्रम में ले गये। राम ने अनायास ही उन सब राक्षसों को मार गिराया और पुरस्कार के रूप में ऋषि से कई चमत्कारयुक्त अस्त्र प्राप्त किये। उसके पश्चात् राम विश्वामित्र के साथ जनक की राजधानी मिथिला नगरी गये, वहाँ शिव के धनुष को झुकाने का आश्चर्यजनक करतब दिखाकर सीता से विवाह किया और वापिस अयोध्या आ गये। यह देखकर कि राम ही राज्य का उपयुक्त अधिकारी हो रहा है, दशरथ ने उसे अपना युवराज बनाने का निश्चय किया, परन्तु ठीक राज्याभिषेक के दिन दशरथ की प्रियपत्नी कैकेयी ने, अपनी दुष्ट दासी मन्थरा के द्वारा भड़काये जाने पर, दशरथ को अपने दो पूर्व प्रतिज्ञात वरदान पूरा करने के लिए कहा, एक से उसने रामका चौदह वर्ष

का निर्वासन तथा दूसरे से अपने प्रिय पुत्र भरत का युवराज के रूप में राज्याभिषेक मांगा। राजा को इस मांग से भयानक धक्का लगा, उसने कैकेयी को उन दुष्ट मांगों से हटाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु अन्त में उसे झुकना पड़ा। तुरन्त ही आज्ञाकारी पुत्र राम अपनी सुन्दर तरुण पत्नी सीता तथा भक्त भ्राता लक्ष्मण के साथ निर्वासित होने को तैयार हो गये। उसका निर्वासन काल बड़ी-बड़ी घटनाओं से भरा हुआ है, दोनों भाइयों ने कई शक्तिशाली राक्षसों का काम तमाम कर दिया, फलतः रावण की द्वेषाग्नि भड़क उठी। दुष्ट रावण ने मारीच की सहायता से राम की शक्ति को देखने के लिए उसकी प्रिय पत्नी सीता का बलात् अपहरण किया। सीता का पता लगाने के लिए अनेक निष्फल पृच्छाओं के पश्चात् हनुमान् ने यह निश्चय किया कि सीता लंका में हैं, और फिर उसने राम को प्रेरित किया कि लंका के ऊपर चढ़ाई की जाय तथा दुष्ट रावण को मौत के घाट उतारा जाय। वानरों ने समुद्र को पार करने के लिए एक पुल बनाया जिसके ऊपर से अपनी असंख्य सेना के साथ पार होकर राम लंका में प्रविष्ट हुए तथा उसे जीत कर सब राक्षसों समेत रावण का वध किया। उसके पश्चात् राम अपनी पत्नी सीता, तथा अन्य युद्ध-मित्रों के साथ, विजयपताका फहराते हुए, वापिस अयोध्या आये जहाँ वशिष्ठ द्वारा उनका राज्यतिलक किया गया। राम ने बहुत वर्षों तक न्यायपूर्वक राज्य किया उसके पश्चात् कुश युवराज बनाया गया। राम, विष्णु भगवान् का सातवाँ अवतार माना जाता है, तु० जयदेव—वितरसि दिक्षु रणे दिक्पति-कमनीयं दशमुखमौलिबलिं रमणीयं। केशव धृतरघु-पतिरूप जय जगदीश हरे—गीत० १। सम० —अनुजः एक प्रसिद्ध सुधारक, वेदान्ती संप्रदाय के प्रवर्तक तथा कई पुस्तकों के प्रणेता, वैष्णव,—अयनम् (णम्) 1. राम के साहसिक कार्य 2. वाल्मीकिप्रणीत एक प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें सात काण्ड तथा २४००० श्लोक हैं। —गिरिः एक पहाड़ का नाम,—(चक्रे) स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु—मेघ० १, —चन्द्रः,—भद्रः दशरथ के पुत्र राम का नाम—दूतः, हनुमान् का नाम,—नवमी चैत्रशुक्ला नवमी, राम की जयंती,—सेतुः 'राम का पुल' भारत और लंका को मिलाने वाला रेत का पुल जिसे आजकल 'एडम्स ब्रिज' कहते हैं।

रामठः,—ठम् [रम्+अठ, धातोर्वृद्धिः] हींग।

रामणीयक (वि०) (स्त्री०—की) [रमणीय+वुञ्] प्रिय, सुन्दर सुखद,—कम् प्रियता, सौन्दर्य —सा रामणीयकनिवेरधिदेवता वा—मा० १।२१, ९।४७, तरुणीस्तन एव मणिहारावलिरामणीयकम्—नैं० २। ४४, कि० १।३३ ४।४।

रामा [रमतेऽनया रम् करणे घञ्] 1. सुन्दरी स्त्री, मनोहारिणी तरुणी—अथ रामा विकसन्मुखी बभूव —भामि० २।१६, ३।६ 2. प्रिया, पत्नी, गृहस्वामिनी —रघु० १२।२३ १४।२७ 3. स्त्री,—रामा हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम्—ऋतु० ६।२५ 4. नीच जाति की स्त्री 5. सिंदूर 6. हींग।

राम्भः [रम्भा+अण्] बाँस की लाठी जिसे ब्रह्मचारी या संन्यासी रखते हैं।

रावः [रु+घञ्] 1. क्रन्दन, चीत्कार, चीख, दहाड़, किसी जानवर की चिंघाड़ 2. शब्द, ध्वनि—मुरज-वाद्यरावः—मालवि० १।२१, मधुरिपुरावम्—गीत० ११।

रावण (वि०) [रावयति भीषयति सर्वान्—रु+णिच्+ल्युट्]

रावण (वि०) [रावयति भीषयति सर्वान्—रु+णिच् +ल्युट्] क्रन्दन करने वाला, चीखने वाला, दहाड़ने वाला, शोक के कारण रोने धोने वाला,—णः एक प्रसिद्ध राक्षस, लंका का राजा, राक्षसों का मुखिया (रावण के पिता का नाम विश्रवा तथा माता का केशिनी या कैकशी था, इसी लिए वह कुबेर का सौतेला भाई था। पुलस्त्य ऋषि का पौत्र होने के कारण वह पौलस्त्य कहलाता है। मूल रूप से लङ्का पर पहले कुबेर का अधिकार था, परन्तु रावण ने उसे वहाँ से निकाल दिया और लंका को अपनी राजधानी बनाया। उसके दस सिर (इसीलिए वह दशग्रीव, दशवदन, आदि कहलाता है) और बीस भुजाएँ थीं, कुछ के अनुसार उसकी टाँगें भी चार थी (तु० रघु० १२।८८ और उस पर मल्लि०) ऐसा वर्णन मिलता है कि रावण ने ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए दस हजार वर्ष तक कठोर तपश्चर्या की; और प्रति हजार वर्ष के पश्चात् अपना सिर ब्रह्मा के आगे प्रस्तुत किया। इस प्रकार उसने नौ सिर प्रस्तुत किये और दसवां सिर प्रस्तुत करने लगा ही था कि ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि उसकी मृत्यु न मनुष्य द्वारा होगी और न देवता द्वारा। इस शक्ति से सम्पन्न होकर वह बड़ा अत्याचार करने लगा, उसने लोगों को सब प्रकार से सताना आरम्भ किया। उसकी शक्ति इतनी अधिक हो गई कि देवता भी उसके घरेलू नौकरों की भांति उसकी सेवा करने लगे। उसने अपने समय के प्रायः सभी राजाओं को जीत लिया, परन्तु कार्तवीर्य ने उसे कारागार में डाल दिया जब कि रावण ने उसके देश पर आक्रमण किया। एक बार उसने कैलास पर्वत उठाने का प्रयत्न किया, परन्तु शिव ने ऐसा दबाया

कि उसकी अंगुलियाँ कुचल गई। फलतः उसने शिव की एक हजार वर्ष तक इतने ऊँचे स्वर से स्तुति की कि उसका नाम रावण पड़ गया, और उसे शिव ने उस पीड़ा से मुक्त कर दिया। परन्तु यद्यपि वह इतना बलवान् और अजेय था, तो भी उसका अन्तिम दिन निकट आ गया। राम —जिन्होंने इस राक्षस का वध करने के लिए ही विष्णु का अवतार धारण किया था,—अपना निर्वासित जीवन जंगल में रहकर बिता रहा था। एक दिन रावण ने उसकी पत्नी सीता का अपहरण किया और उससे अपनी पत्नी बन जाने का अनुरोध करने लगा—परन्तु उसने रावण की प्रार्थना को ठुकराया और वह उसके यहाँ रहती हुई भी पतिव्रता, सती साध्वी बनी रही। अन्त में राम ने अपनी वानरसेना की सहायता से लंका पर चढ़ाई की और रावण तथा उसकी सेना का काम तमाम किया। वह राम का उपयुक्त शत्रु था और इसीलिए यह कहावत प्रसिद्ध हुई—रामरावणयोर्युद्धम् रामरावणयोरिव)।

रावणिः [रावणस्यापत्यम्–इञ्] 1. इन्द्रजित् का नाम, —रावणिश्चाव्ययो योद्धुमारब्ध च महीगंतः—भट्टि० १५।७८, ८९ 2. रावण का कोई पुत्र—भट्टि० १५।७९, ८०।

राशिः [अश्नुते व्याप्नोति–अश्+इञ्, धातोरुडागमश्च] 1. ढेर, अंबार, संग्रह, परिमाण, समुदाय घनराशिः, तोयराशिः, यशोराशिः आदि 2. अंक या संख्याएं जो अंकगणित की किसी विशेष प्रक्रिया के लिए प्रयुक्त की जायँ (जैसे जोड़ना, गुणा करना आदि) 3. ज्योतिश्चक्र, बारह राशियाँ। सम०—**अधिपः** कुण्डली में किसी विशेष घर का स्वामी,—**चक्रम्** तारामण्डल, बारह राशियाँ, **त्रयम्** त्रैराशिक गणित,—**भागः** किसी राशि का भाग या अंश,—**भोगः** सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रहों का राशिचक्र में से होकर मार्ग अर्थात् किसी ग्रह का किसी राशि पर रहने का काल।

राष्ट्रम् [राज्+ष्ट्रन्] 1. राज्य, देश, साम्राज्य—राष्ट्रदुर्गबलानि च—अमर०, मनु० ७।१०९, १०।६१ 2. जिला, प्रदेश, देश, मण्डल जैसा कि 'महाराष्ट्र' में —मनु० ७।३२ 3. अधिवासी, जनता, प्रजा—मनु० ९।२५४,—**ष्ट्रः**—**ष्ट्रम्** कोई राष्ट्रीय या सार्वजनिक संकट।

राष्ट्रिकः [राष्ट्र+ठक्] 1. किसी राज्य या देश का वासी मनु० १०।६१ 2. किसी राज्य का शासक, राज्यपाल।

राष्ट्रिय, राष्ट्रीय (वि०) [राष्ट्रे भवः य] राज्य से सम्बन्ध रखने वाला,—**यः** 1. राज्य का शासक, राजा —जैसा कि 'राष्ट्रियश्यालः' में, मृच्छ० ९ 2. राजा का साला (रानी का भाई) श्रुतं राष्ट्रियमुखाद् यावदङ्गुलीयकदर्शनम्—श० ६।

रास् (भ्वा० आ० रासते) क्रंदन करना, चिल्लाना, किलकिलाना, शब्द करना, हूहू करना।

रासः [रास्+घञ्] 1. होहल्ला, कोलाहल, शोरगुल 2. शब्द, ध्वनि 3. एक प्रकार का नाच जिसका अभ्यास, कृष्ण और गोपिकाएं करती थीं, विशेषतः वृन्दावन की गोपियाँ—उत्सृज्य रासे रसं गच्छन्तीम् —वेणी० १।२, रासे हरिमिह विहितविलासं स्मरति मनो मम कृत परिहासम् गीत० २, १ भी। सम० —**क्रीडा, मण्डलम्** क्रीडामूलक नाच, कृष्ण और वृन्दावन की गोपिकाओं का वर्तुलाकार नाच।

रासकम् [रास+कन्] एक प्रकार का छोटा नाटक दे० सा० द० ५४८।

रासभः [रासेः अभाच्] गधा, गर्दभ।

राहित्यम् [रहित+ष्यञ्] बिना किसी वस्तु के रहना, अभाव, किसी वस्तु का न होना।

राहुः [रह्+उण्] एक राक्षस का नाम, विप्रचित्त और सिंहिका का पुत्र, इसीलिए कई बार यह सैंहिकेय कहलाता है (जब समुद्रमंथन के परिणाम स्वरूप समुद्र से निकला अमृत देवताओं को परोसा जाने लगा तो राहु ने वेश बदलकर उनके साथ स्वयं भी अमृत पीना चाहा। परन्तु सूर्य और चन्द्रमा को इस षड्यन्त्र का पता लगा तो उन्होंने विष्णु को इस चालाकी का ज्ञान कराया। फलतः विष्णु ने राहु का सिर काट डाला, परन्तु चूंकि थोड़ा सा अमृत वह चख चुका था, तो उसका सिर अमर हो गया। परन्तु कहते हैं कि पूर्णिमा या अमावस्या को वे दोनों चन्द्र और सूर्य को अब भी सताते रहते हैं—तु० भर्तृ० २।३४। ज्योतिष में राहु भी केतु की भांति समझा जाता है, यह आठवाँ ग्रह है, या चन्द्रमा का आरोही शिरोबिन्दु है) 2. ग्रहण, या ग्रस्त होने का क्षण। सम०—**ग्रसनम्,—ग्रासः,—दर्शनम्,—संस्पर्शः** (चाँद या सूर्य का) ग्रहण, —**सूतकम्** राहु का जन्म अर्थात् (चाँद या सूर्य का) ग्रहण याज्ञ० १।१४६ तु० मनु० ४।११०।

रि i (तुदा० पर० रियति, रीण) जाना, हिलना-जुलना।
ii (क्या० उभ० — दे० 'री')।

रिक्त (भू० क० कृ०) [रिच्+क्त] 1. खाली किया गया, साफ किया गया, रिताया गया 2. खाली, शून्य 3. से रहित, वञ्चित, के बिना 4. खोखला किया गया (जैसे हाथ की अंजलि) 5. दरिद्र 6. विभक्त, वियुक्त (दे० रिच्),—**क्तम्** 1. खाली स्थान, शून्यक निर्वातता 2. जंगल, उजाड़, बियाबान। सम०—**पाणि, हस्त** (वि०) खाली हाथ वाला, (फूल आदि के) उपहार

से रहित—अहमपि देवीं प्रेक्षितुमरिक्तपाणिर्भवामि—मालवि० ४।

रिक्तक (वि०) [रिक्त+कन्] दे० 'रिक्त'।

रिक्ता [रिक्त+टाप्] चान्द्रमास के पक्ष की चतुर्थी, नवमी या चतुर्दशी का दिन।

रिक्थम् [रिच्+थक्] 1. दायभाग, उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति, मरने के पश्चात् विरासत में छोड़ी हुई सम्पत्ति—विभजेरन् सुताः पित्रोरूर्ध्वं रिक्थमृणं समम्—याज्ञ० २।११७, मनु० ९।१०४,—ननु गर्भः पित्र्यं रिक्थमर्हति—श० ६ 2. सम्पत्ति धनदौलत, सामान—मनु० ८।२७, 3. सोना। सम०—आदः,—ग्राहः,—भागिन् (पुं०),—हरः,—हारिन् (पुं०) उत्तराधिकारी।

रिङ्ख्, रिङ्ग् (तुदा० पर० रिङ्खति, रिङ्गति) 1. रेंगना, दबे पाँव चलना 2. मन्दगति से चलना।

रिङ्खणम्, रिङ्गणम् [रिङ्ख्+(ग्)+ल्युट्] 1. रेंगना, पेट के बल चलना (गुडलियो चलना) 2. (सदाचार से) विचलित होना, उन्मार्गगामी होना।

रिच् (रुधा० उभ० रिणक्ति, रिंक्ते, रिक्त) 1. खाली करना, रिताना, साफ करना, निर्मल करना—रिणच्मि जलधेस्तोयम्—भट्टि० ६।३६, आविर्भूते शशिनि तमसा रिच्यमानेव रात्रिः—विक्रम० १।८ 2. वञ्चित करना, विरहित करना—(प्रायः भू० क० कृ०) दे० रिक्त, अति—, आगे बढ़ना, प्रगति करना, पीछे छोड़ देना (कर्म वा० में और अपा० के साथ)—गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते—पंच० ४।८१, हि० ४।१३१, भग० २।३६, वाचः कर्मातिरिच्यते—"उपदेश से निदर्शन उत्तम है" एग्जांपल इज बैटर दैन प्रिसेप्ट—Example is better than Precep)—उद्, 1. आगे बढ़ना, पीछे छोड़ देना, प्रगति करना 2. बढ़ाना, विस्तार करना,—व्यति बढ़ जाना, पीछे छोड़ना—स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यन्ते दूराणि चरितानि ते—रघु० १०।३०।

ii (भ्वा० चुरा० पर० रेचति, रेचयति, रेचित 1. विभक्त करना, वियुक्त करना, अलग-अलग करना 2. परित्याग करका, छोड़ना 3. सम्मिलित होना, मिलना, आ—, सिकोड़ना, खेल-खेल में चलना—आरेचितभ्रूचतुरैः कटाक्षैः—कु० ३।५।

रिटिः [रि+टिन्] 1. एक प्रकार का बाजा 2. शिव के एक सेवक (गण) का नाम—तु० 'भृङ्ग (गे) रिटिः'।

रिपुः [रप्+उन्, पृषो० इत्वम्] शत्रु, दुश्मन, प्रतिपक्षी।

रिफ् (तुदा० पर० रिफति, रिफित) 1. कटकटाने का शब्द करना 2. बुरा भला कहना, कलङ्क लगाना।

रिष् (भ्वा० पर० रेषति, रिष्ट) 1. क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, ठेस पहुँचाना—तस्येहार्थो न रिष्यते—महा०, तेन यायात्सतां मार्गस्तेन गच्छन् न रिष्यते—मनु० ४।१७८ 2. मार डालना, नष्ट करना—भट्टि० ९।३१।

रिष्ट (भू० क० कृ०) [रिष्+क्त] 1. क्षतिग्रस्त, चोट पहुँचाया हुआ, 2. अभागा,—ष्टम् 1. उत्पात, क्षति, ठेस 2. बदकिस्मत, दुर्भाग्य 3. विनाश, हानि 4. पाप 5. सौभाग्य, समृद्धि।

रिष्टिः (स्त्री०) [रिष्+क्तिन्] दे० ऊ० 'रिष्टम्',—पुं० तलवार।

री i (दिवा० आ० रीयते) टपकना, बूंद-बूंद गिरना, रिसना, पसीजना, बहना।

ii (क्र्या० उभ० रिणाति, रिणीते, रीण-प्रेर० रेपयति-ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 3 हू हू करना।

रीज्या (स्त्री०) 1. निन्दा, झिड़की, कलंक 2. शर्म, हया

रीढकः (पुं०) मेरु दण्ड, रीढ की हड्डी।

रीढा [रिह्+क्त+टाप्] अनादर, तिरस्कार, अपमान।

रीण (भू० क० कृ०) [री+क्त] टपका हुआ, बहा हुआ, बूंद-बूंद करके गिरा हुआ।

रीतिः (स्त्री) [री+क्तिन्] 1. हिलना-जुलना, बहना 2. गति, क्रम 3. धारा, नदी 4. रेखा, सीमा 5. प्रणाली, ढंग, तरीक़ा, मार्ग, शैली, विधा, प्रक्रिया—रीति गिराममृतवृष्टिकरीं तदीयां—भामि० ३।१९, सर्वत्रैषा विहिता रीतिः—मोह० २, उक्तरीत्या, अनयैव रीत्या आदि 6. रिवाज, प्रथा, प्रचलन 7. शैली, वाक्यविन्यास—पदसंघटना रीतिरङ्गसंस्था विशेषवत्। उपकर्त्री रसादीनां सा पुनः स्याच्चतुर्विधा। वैदर्भी चाथ गौडी च पाञ्चाली लाटिका तथा—सा० द० ६२४–५ 8. पीतल, कांसा (इस अर्थ में 'रीती' भी) 9. लोहे का जंग, मुर्चा 10 धातु के तल पर लगा जारेय।

रु (अदा० पर० रौति, रवीति, रुत) क्रंदन करना, हू हू करना, चिल्लाना, चीखना, जोर से बोलना, दहाड़ना (मक्खियों का) भनभनाना, शब्द करना—कर्णे कलं किमपि रौति शनैर्विचित्रम्—हि० १।८१, भट्टि० ३।१७, १२।७२, १४।२१, वि 1.क्रन्दन करना, विलाप करना शोक में रोना—ननु सहचरीं दूरे मत्वा विरौषि समुत्सुकः—विक्रम० ४।२०, भट्टि० ५।५४, ऋतु० ६।२७, 2. कोलाहल करना, शोर मचाना—न स विरौति न चापि स शोभते—पंच० १।७५, जीर्णत्वाद् गृहस्य विरौति कपाटः—मृच्छ० ३, एते त एव गिरयो विरुवन्मयूराः—उत्तर० २।२३।

रुक्म (वि०) [रुच्+मन्, नि० कुत्वम्] उज्ज्वल, चमकदार, क्मः सोने का आभूषण—शि० १५।७८,—क्मम् 1. सोना, 2. लोहा। सम०—कारकः सुनार,—पृष्ठक

(वि०) सोने के मुलम्मे से युक्त, सोना चढ़ा हुआ, —वाहनः द्रोणाचार्य का नामान्तर।

रुक्मिन् (पुं०) [रुक्म+इनि] भीष्मक के ज्येष्ठ पुत्र तथा रुक्मिणी के भाई का नाम।

रुक्मिणी [रुक्मिन्+ङीप्] विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री का नाम (रुक्मिणी की सगाई रुक्मिणी के पिता ने शिशुपाल से कर दी गी, परन्तु रुक्मिणी गुप्त रूप से कृष्ण से प्रेम करती थी। उसने कृष्ण को एक पत्र भेज कर प्रार्थना की कि उसका अपहरण कर लिया जाय, बलराम सहित कृष्ण आया और रुक्मिणी के भाई को युद्ध में परास्त कर रुक्मिणी को उठा कर ले गया। रुक्मिणी से कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का जन्म हुआ)।

रुक्ष (वि०)=रूक्ष, दे०।

रुग्ण (भू० क० कृ०) [रुज्+क्त] 1. टूटा हुआ, नष्ट भ्रष्ट 2. व्यर्थीकृत 3. झुका हुआ, वक्रीकृत 4. क्षति ग्रस्त, चोट पहुँचाया हुआ 5. रोगी, बीमार (दे० रुज्)। सम०—**रय** (वि०) जिसका आक्रमण रोक दिया गया हो, जिसका धावा विफल कर दिया गया हो।

रुच् (भ्वा० आ० रोचते, रुचित) 1. चमकना, सुन्दर या शानदार दिखलाई देना, जगमगाना—रुरुचिरे रुचिरेक्षणविभ्रमाः—शि० ६।४६, मनु० ३।६२ 2. पसन्द करना, (अन्य व्यक्तियों से) प्रसन्न होना, (वस्तुओं से) प्रसन्न होना, रुचिकर होना; (प्रसन्न व्यक्ति के लिए संप्र० तथा वस्तु के लिए कर्तृ०)—न स्रजो रुरुचिरे रमणीभ्यः—कि० ९।३५, यदेव रोचते यस्मै भवेत् तत् तस्य सुन्दरम्—हि० २।५३, कई बार व्यक्ति के लिए संबं०,—दारिद्रयान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्रयम्-मृच्छ० १।११, प्रेर०—(रोचयति-ते) पसन्द कराना, रुचिकर या सुहावना करना—कु० ३।१६,—इच्छा० (रुरु-रोचिषते) पसन्द करने की इच्छा करना, अभि -, पसन्द करना, रुचिकर होना —यदभिरोचते भवते—विक्रम २, प्र—, 1. बहुत चमकना 2. पसन्द किया जाना, वि० चमकना, जगमगाना—रघु० ६।५, १७।१४, भट्टि० ८।६६।

रुच, रुचा (स्त्री०) [रुच्+क्विप्, रुच्+टाप्] 1. प्रकाश, कान्ति, उज्ज्वलता,—क्षणदासु यत्र च रुचैकतां गताः —शि० १३।५३ ९।२३, २५, शिखरमणिरुचः—कि० ५।४३, मेघ० ४४ 2. रङ्ग, छवि (समास के अन्त में) चलयन्मृगरुचस्तालकान् -रघु० ८।५३, कु० ३।६५, कि० ५।४५ 3. अभिरुचि, इच्छा।

रुचक (वि०) [रुच्+क्वुन्] 1. रुचिकर, सुखद 2. क्षुधावर्धक या भूख बढ़ाने वाली (औषधि) 3. तीक्ष्ण, चर्परा, -कः 1. नीबू 2. कबूतर, कम् 1. दांत 2. सोने का आभूषण विशेषकर हार 3. पौष्टिक या पाचनशक्तिवर्धक 4. माला, हार 5. काला नमक।

रुचा दे० 'रुच्'।

रुचिः (स्त्री०) [रुच्+कि]। प्रकाश, कान्ति, आभा, उज्ज्वलता,—रुचिमिन्दुदले करोत्यजः परिपूर्णेन्दुरुचिर्महीपतिः—शि० १६।७१, रघु० ५।६७, मेघ० १५ 2. प्रकाश किरण—जैसा कि 'रुचिभर्तृ' में 3. छवि, रङ्ग, सौन्दर्य बहुधा समास के अन्त में—पटलं बहिर्बहलपङ्करुचि —शि० ९।१९ 4. स्वाद, मज़ा—जैसा कि 'रुचिकर' में 5. सुस्वाद, भूख, क्षुधा 6. कामना, इच्छा, खुशी,—स्वरुच्या स्वेच्छा से, खुशी से 7. अभिरुचि, स्वाद—विमार्गगायाश्च रुचिः स्वकान्ते—भामि० १।१२५, 'अभिरुचि या प्रेम' —न स क्षितीशो रुचये बभूव, भिन्नरुचिर्हि लोकः—रघु० ६।३०, नाटयं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् – मालवि० १।४; 'संलग्न' 'व्यस्त' या 'अनुरक्त' के अर्थ में प्रयोग बहुधा समास के अन्त में— हिंसारुचेः —मा० ५।२९ 8. प्रणयोन्माद, किसी की बात में लवलीनता। सम०—**कर** (वि०) 1. स्वादिष्ट, चटपटा, मज़ेदार 2. इच्छा का उत्तेजक 3. पाचनशक्तिवर्धक, पौष्टिक,—**भर्तृ** (पुं०) 1. सूर्य—शि० ९।१७ 2. पति।

रुचिर (वि०) [रुचिं राति ददाति—रुच्+किरच्] 1. उज्ज्वल, चमकदार, प्रकाशमान, जगमगाता,—हेमरुचिराम्बर—चौर० १४, कनकरुचिरम्, रत्नरुचिरम् आदि 2. स्वादिष्ट, मजेदार 3. मधुर, ललित 4. क्षुधावर्धक, भूख बढ़ाने वाला 5. पुष्टिदायक, बलवर्धक, —रा 1. एक प्रकार का पीला रंग 2. वृत्तविशेष दे० परिशिष्ट १,—**रम्** 1. केसर 2. लौंग।

रुच्य (वि०) [रुच्+क्यप्] उज्ज्वल, प्रिय आदि, दे० 'रुचिर'।

रुज् (तुदा० पर० रुजति, रुग्ण) 1. तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े करना, नष्ट करना—रघु० ९।६३।१२।७३, भट्टि० ४।४२ 2. पीड़ा देना, क्षति पहुँचाना, अस्वस्थ करना, रोगग्रस्त करना - रावणस्येह रोक्ष्यन्ति कपयो भीमविक्रमाः – भट्टि० ८।१२० 3. झुकना।

रुज्, रुजा (स्त्री०) [रुज्+क्विप्, रुज्+टाप्] 1. भग, अस्थिभंग 2. पीड़ा, संताप, यातना, वेदना— अनिशमपि मकरकेतुर्मनसो रुजमावहन्नभिमतो मे श० ३।४, क्व रुजा हृदयप्रमाथिनी - मालवि० ३।२, चरणं रुजापरतिम्—४।३ 3. बीमारी, व्याधि, रोग—रघु० ४९।५२ 4. थकावट, श्रम, प्रयत्न, कष्ट। सम० —**प्रतिक्रिया** प्रतिकार या रोग की चिकित्सा, इलाज, चिकित्सा का व्यवसाय,—**भेषजम्** औषध,—**सद्मन्** (नपुं०) विष्ठा, मल।

रुण्डः,—**डम्** [रुड्+ड, रुण्ड्+अच् वा] सिर रहित शरीर, धड़मात्र, कवन्ध—वेल्लद्भैरवरुण्डमुण्डनिकरैर्वीरो विधत्ते भुवम्—उत्तर० ५।६, मा० ३।१७।

रुतम् [रु+क्त] क्रन्दन, किलकिलाना, दहाड़ना, शब्द

करना, कोलाहल, (पक्षियों का) कूजना, (मक्खियों का) भनभनाना, पक्षि°, हंस°, कोकिल° अलि°। सम०—ज्ञः भविष्यवक्ता, नजूमी,—व्याजः 1. कूटक्रंदन 2. स्वांग।

रुद् (अदा० पर० रोदिति, रुदित,—इच्छा० रुरुदिषति) 1. क्रंदन करना, रोना, विलाप करना, शोक मनाना, आंसू बहाना—निराधारो हा रोदिमि कथय केषामिह पुरः—गंगा० ४, अपि ग्रावा रोदिति अपि दलतिवज्रस्य हृदयम्—उत्तर० १।२८ 2. हूहू करना, दहाड़ना, चिल्ली मारना, प्र—, फूट फूट कर रोना।

रुदनम्, रुदितम् [रुद्+ल्युट्, क्त वा] रोना, क्रन्दन करना, विलाप करना, शोक में रोना-धोना अत्यन्तमासीद्रुदितं वनेऽपि—रघु० १४।६९, ७०, मेघ० ८४।

रुद्ध (भू० क० कृ०) [रुध्+क्त] 1. अवरुद्ध, बाधायुक्त, विरोधी 2. घेरा डाला हुआ, घिरा हुआ, घेरा हुआ।

रुद्र (वि०) [रोदिति–रुद्+रक] भयानक, भयंकर, डरावना, भीषण,—द्रः 1. देवसमूह विशेष, (गिनती में ग्यारह), ऐसा माना जाता है कि शंकर या शिव के ही यह अपकृष्ट रूप हैं, शिव स्वयं इस समूह के मुखिया हैं—रुद्राणां शंकरश्चास्मि—भग० १०।२३, रुद्राणामपि मूर्धानः क्षतहुंकारशंसिनः—कु० २।२६ 2. शिव का नाम। सम०—अक्षः एक प्रकार का वृक्ष, (क्षम्) इसी वृक्ष के फल के बीज, जिनसे रुद्राक्षमाला बनाई जाती है—भस्मोद्धूलन भद्रमस्तु भवते रुद्राक्षमाले शुभम्—काव्य० १०,—आवासः 1. रुद्र का निवासस्थल, कैलास पर्वत 2. वाराणसी, 3. श्मशान—तु० पितृसद्मगोचरः।

रुद्राणी [रुद्र+ङीप्, आनुक्] रुद्र की पत्नी, पार्वती का नामान्तर।

रुध् (रुधा० उभ० रुणद्धि, रुद्धे, रुद्ध,—इच्छा० रुरुत्सति—ते) 1. अवरुद्ध करना, ठहराना, गिरफ्तार करना, रोकना, विरोध करना, विघ्न डालना, बाधा डालना, मना करना—इदं रुणद्धि मां पद्ममन्तःकूजितषट्पदम्—विक्रम० ४।२१, रुद्धालोके नरपतिपथे—मेघ० ३७, ९१, प्राणापानगती रुद्ध्वा—भग० ४।२९ 2. थामना, संधारण करना, (गिरने से) बचाना, आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि, मेघ० १० 3. बन्द करना, ताला लगाना, रोकना, भेड़ना, बन्द कर देना—अधि० के साथ, परन्तु कभी-कभी दोकर्म० के साथ—भट्टि० ६।३५, व्रजं रुणद्धिगाम्—सिद्धा० 4. बांधना, सीमित करना—व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते—भर्तृ० २।६ 5. घेरा डालना, घेरना, नाकेबन्दी करना—रुन्धन्तु वारणघटा नगरं मदीयाः—मुद्रा० ४।१७ अरुणद् यवनः साकेतं-या—माध्यमिकान्—महा०, भट्टि० १४।२९ 6. छिपाना, ढकना, ओझल करना, गुप्त करना 7. अत्याचार करना, सताना, अत्यन्त कष्ट देना; अनु—, (बहुधा प्रयोग ऐसा होता है मानो धातु दिवा० की है) 1. अवेक्षण करना, अभ्यास करना—मनु० ५।६३ 2. प्रेम करना, अनुरक्त होना—स्वधर्ममनुरुन्धते—कि० ११।७८, नानुरोत्स्ये जगल्लक्ष्मीः—भट्टि० १६।२३ 3. आज्ञा मानना, अनुसरण करना, अनुरूप होना—निर्यातिं लोक इवानुरुध्यते—कि० २।१२, अनुरुध्यस्व चन्द्रकेतोर्वचनं—उत्तर० ५, मद्वचनमनुरुध्यते वा भवान्—कि० १८१ 4. स्वीकृति देना, सहमत होना, अनुमोदन करना 5. प्रेरित करना, दबाव डालना, अव—, 1. रोकना, अटकाना—श० २।२ 2. बन्दी बनाना, कैद करना, बन्द करना (कभी-कभी दो कर्मों के साथ)—शोकं चित्तमवारुधत्—भट्टि० ६।९ 3. घेरा डालना, उप—, 1. अवरुद्ध करना, विघ्न डालना—उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्—श० ४ 2. तंग करना, दुःखी करना, कष्ट देना—पौरास्तपोवनमुपरुन्धन्ति श० १ 3. पार कर लेना, दबा देना—रघु० ४।८३ 4. कैद करना, बन्दी बनाना, नियन्त्रण में रखना 5. छिपाना, ढक लेना, नि—, 1. अवरुद्ध करना, रोकना, विरोध करना बन्द करना—न्यरुधंश्चास्य पन्थानम्—भट्टि० १७।४९ १६।२०, मृच्छ० १।२२ 2. बन्दी बनाना, कैद करना—मनु० ११।१७६, भग० ८।१२ 3. ढकना, छिपाना—मनु० १४।१६, प्रति—, अवरुद्ध करना, वि—, विरोध करना, अवरोध करना 2. विवाद करना, झगड़ना 3. भिन्नमत का होना, सम्—, 1. अवरुद्ध करना, अटकाना, रोकना—स चेत्तु पथि संरुद्धः पशुभिर्वा रथेन वा—मनु० ८।२९५ 2. बाधा डालना, रुकावट डालना, रोकना—रघु० २।४३ 3. दृढतापूर्वक थामना, शृंखलाबद्ध करना—तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि—भर्तृ० २।१७ 4. अधिकार में करना, बलात् अभिग्रहण करना, पकड़ना—मनु० ८।२३५।

रुधिरम् [रुध्+किरच्] 1. लहू 2. जाफरान, केसर,—रः मंगलग्रह। सम०—अशनः 'खून पीने वाला' राक्षस, भूत-प्रेत,—आमयः रक्तस्राव,—पायिन् (पुं०) पिशाच।

रुरुः [रौति रु+क्रुन्] एक प्रकार का हरिण—रघु० ९।५१, ७२।

रुश् (तुदा० पर० रुशति] चोट पहुँचाना, जान से मार डालना, नष्ट करना।

रुशत् (वि०) [रुश्+शतृ] चोट पहुँचाने वाला, अरुचिकर, (शब्द आदि जो) बुरे लगें।

रुष् i (दिवा० पर० रुष्यति–विरलप्रयोग-रुष्यते, रुषित, रुष्ट) रूसना, नाराज होना, क्षुब्ध होना—ततोऽरुष्यदन

दंक्ष—भट्टि० १७।४०, मामुहो मा रुषोऽधुना —१५।१६, ९।२०।

ii (भ्वा० पर० रोषति) 1. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना 2. नाराज करना, सताना।

रुष्, रुषा (स्त्री०) [रुष्+क्विप्, रुष्+टाप्] क्रोध, रोष, गुस्सा,--निर्बन्धसंजातरुषा · रघु० ५।२१, प्रद्वेष्व-निर्बन्धरुषा हि सन्तः —१६।८०, १९।२०।

रुह् (भ्वा० पर० रोहति, रूढ) 1. उगना, फूटना, अंकुरित होना, उपजना—रूढरागप्रवालः—मालवि० ४।१, केसरैरर्धरूढैः—मेघ० २३, छिन्नोऽपि रोहति तरुः —भर्तृ० २।८७ 2. उपजना, विकसित होना, बढ़ना 3. उठना, ऊपर चढ़ना, उन्नत होना 4. पकना, (व्रण आदि को) स्वस्थ होना—प्रेर० (रोपयति—ते, रोहयति—ते) 1. उगाना, पौधा लगाना, भूमि में (बीज) बखेरना 2. उठाना, उन्नत करना 3. सौंपना, सुपुर्द करना, देखरेख में देना,—गुणवत्सुतरोपितश्रियः —रघु० ८।११ 4. स्थिर करना, निदेशित करना, जमाना--रघु० ९।२२, इच्छा० (रुरुक्षति) उगाने की इच्छा करना,--अधि—, चढ़ना, सवार होना, सवारी करना --रघु० ७।३७, कु० ७।५२ (प्रेर०) उन्नत होना, ऊपर उठाना, बिठाना—रघु १९।४४, अव—, नीचे जाना, उतरना—श० ७।८, आ—, चढ़ना, सवार होना, पकड़ लेना, सवारी करना, (आ पूर्वक रुह् धातु के अर्थ प्रयुक्त संज्ञा के अनुसार विभिन्न प्रकार के होते हैं—उदा० प्रतिज्ञाम् आरुह् वचन देना, प्रतिज्ञा करना, तुलाम् आरुह् समानता के स्तर पर होना, संशयं आरुह् जोखिम उठाना, सन्दिग्धावस्था में होना आदि), (प्रेर०) 1. उन्नत होना, उठाना 2. रखना, जमाना, निदेशित करना 3. मढ़ना, थोपना, आरोपित करना 4. (धनुष पर) प्रत्यंचा चढ़ाना 5. नियुक्त करना, कार्य भार सौंपना, प्र—, उगना, अंकुरित होना—न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति—मृच्छ० ४।१७, वि—, उगना, अंकुर फूटना --रघु० २।२६, मृच्छ० १।९ (प्रेर०) (व्रण आदि का) स्वस्थ होना, सम्--, उगना, · रघु० ६।४७।

रुह्, रुह (वि०) (समास के अन्त में) [रुह्+क्विप्, क वा] उगा हुआ या उत्पन्न, जैसा कि 'महीरुह्' और 'पङ्केरुह्' में।

रुहा [रुह्+टाप्] दूर्वा घास, दूबड़ा।

रूक्ष (वि०) [रूक्ष्+अच्] 1. खुरदरा, कठोर, (स्पर्श या शब्द आदि) जो मृदु न हो, रूखा--रूक्षस्वरं वाशति वायसोऽयम् -- मृच्छ ९।१०, कु० ७।१७ 2. कसैला (स्वाद) 3. ऊवड़-खाबड़, असम, कठिन, कर्कश 4. दूषित, मलिन, मैला - रघु० ७।७०, मुद्रा० ४।५ 5. क्रूर, निर्दय, कठोर--नितान्तरूक्षाभिनिवेशमीशम् —रघु० १४।४३, श० ७।३२, पंच० ४।९१ 6. नीरस, भुना हुआ, सूखा, वीरान -स्निग्धश्यामाः क्वचिदपरतो भीषणाभोगरूक्षाः—उत्तर० २।१४, (रूक्षीकृ--, ऊवड़-खाबड़ करना, मैला करना, मिट्टी लथेड़ना)।

रूक्षणम् [रूक्ष्+ल्युट्] 1. सुखाना, पतला करना 2. (आयु० में) (शरीर की) मेद को घटाने की चिकित्सा।

रूढ (भू० क० कृ०) [रुह्+क्त] 1. उगा हुआ, अंकुरित, फूटा हुआ, उपजा हुआ 2. जन्मा हुआ, उत्पन्न 3. बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त, विकसित 4. उठा हुआ, चढ़ा हुआ 5. विस्तृत, बड़ा, स्थूलकाय 6. विकीर्ण, इधर उधर फैला हुआ 7. विदित, ज्ञात, व्यापक —क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः रघु० २।५३, (यहाँ क्षत्र का अर्थ योगरूढ है) 8. सर्वजनस्वीकृत, परंपराप्राप्त, प्रचलित, सर्वप्रिय (शब्द या अर्थ, विप० यौगिक या निर्वचनमूलक अर्थ) --व्युत्पत्तिरहिताः शब्दा रूढा आखण्डलादयः, नाम रूढमपि च व्युदपादि --शि० १०।२३ 9. निश्चित, निश्चित किया हुआ।

रूढिः (स्त्री०) [रुह्+क्तिन्] 1. उगना, उपजना, 2. जन्म, पैदायश 3. वृद्धि, विकास, वर्धन, प्रवृद्धता 4. ऊपर उठना, चढ़ना 5. प्रसिद्धि, ख्याति, बदनामी —शि० १५।२६ 6. परम्परा, प्रथा, परंपरागत रिवाज, —शास्त्राद् रूढिर्बलीयसी, 'विधि से प्रथा अधिक बलवती है' 7. सामान्य प्रचार, साधारण व्यापकता या प्रचलन 8. सर्वमान्य अर्थ, शब्द का प्रचलित अर्थ —मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्—काव्य० २।

रूप् (चुरा० उभ०—रूपयति—ते, रूपित) 1. रूप बनाना, गढ़ना 2. रूप धर कर रंगमंच पर आना, अभिनय करना, हावभाव प्रदर्शित करना --रथवेगं निरूप्य—श० १ 3. चिह्न लगाना, ध्यान पूर्वक पालन करना, देखना, नजर डालना 4. मालूम करना, ढूंढना 5. खयाल करना, विचार करना 6. तय करना, निश्चय करना 7. परीक्षा करना, अन्वेषण करना 8. नियुक्त करना,--वि—, विरूपित करना, रूप विगाड़ना।

रूपम् [रूप्+क, भावे अच् वा] 1. शक्ल, आकृति, सूरत विरूपं रूपवन्तं वा पुमानित्येव भुञ्जते—पंच० १।१४३, इसी प्रकार 'कुरूप' 'सुरूप' 2. रूप या रंग का प्रकार (वैशेषिकों के चौबीस गुणों में एक)—चक्षुर्मात्र-ग्राह्यजातिमान् गुणो रूपम्—तर्क० (यह छः प्रकार का है: --शुक्ल, कृष्ण, पीत, रक्त, हरित और कपिल, यदि 'चित्र' को जोड़ दिया जाय तो सात हो जाते

हैं) 3. कोई भी दृश्य पदार्थ या वस्तु 4. मनोहर रूप या आकृति, सुन्दर सूरत, सौन्दर्य, लावण्य, लालित्य —मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य संभवः—श० १। २६, विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम्—भर्तृ० २।२०, रूपं जरा हन्ति आदि 5. स्वाभाविक स्थिति या दशा, प्रकृति, गुण, लक्षण, मूलतत्त्व 6. ढंग, रीति 7. चिह्न, चेहरा-मोहरा 8. प्रकार, भेद, जाति 9. प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया 10. सादृश्य, समरूपता, 11. नमूना, प्रकार, बनत 12. किसी क्रिया या संज्ञा का व्युत्पन्न रूप, विभक्ति या लकार के चिह्न से युक्त रूप, 13. 'एक' की संख्या, गणित की एक इकाई 14. पूर्णांक 15. नाटक, खेल, दे० रूपक 16. किसी ग्रंथ को बार बार पढ़ कढ़ कर या कंठस्थ करके पारंगत होने की क्रिया 17. मवेशी 18. ध्वनि, शब्द, ('रूप का प्रयोग बहुधा समास के अन्त में होता है यदि निम्नांकित अर्थ हो—'बना हुआ' 'से युक्त' 'के रूप में' 'नामतः' 'सूरत शक्ल में'— तपोरूपं धनं धर्मरूपः सखा)। सम० —अधिबोधः ज्ञानेन्द्रियों द्वारा किसी पदार्थ के रंग रूप का प्रत्यक्ष करना, —अभिग्राहित (वि०) काम करते हुए पकड़ा गया, मौके पर पकड़ा गया,—आजीवा वेश्या, रंडी, गणिका,—आश्रयः अत्यंत सुन्दर व्यक्ति,—इन्द्रियम् आँख, रंगरूप को प्रत्यक्ष करने वाली इन्द्रिय, —उच्चयः ललित रूपों का समूह श० २।९,—कारः,—कृत् (पुं०) मूर्तिकार, शिल्पी, —तत्त्वं अन्तर्हित गुण, मूलतत्त्व,—धर (वि०) रूप धरे हुए, छद्मवेषी, —नाशनः उल्लू,—लावण्यम् रूप की उत्कृष्टता, चारुता, —विपर्ययः विरूपण, शारीरिक रूप में विकृत परिवर्तन, —शालिन् (वि०) सुन्दर,— संपद्, संपत्तिः (स्त्री०) रूप की उत्कृष्टता, सौन्दर्य की वृद्धि, सौन्दर्यातिरेक।

रूपकः [रूप्+ण्वुल्, रूप+कन् वा] विशेष सिक्का, रुपया,—कम् 1. शक्ल, आकृति, सूरत, (समास के अन्त में) 2. कोई वर्णन या प्रकटीकरण 3. चिह्न, चेहरा-मोहरा 4. प्रकार, जाति 5. नाटक, खेल नाट्यकृति (नाट्य रचनाओं के प्रमुख दो भेदों में से एक, दृश्य, इसके फिर आगे दस भेद हैं, इसके अतिरिक्त इसके और अवान्तर भेद हैं जो गिनती में अठारह हैं तथा 'उपरूपक' नाम से विख्यात हैं)—दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपात्तु रूपकम्—सा० द० २७२, २७३ 6. (अलं० में) अंग्रेजी के मैटाफर (metaphor) के अनुरूप एक अलंकार जिसमें उपमेय को उपमान के ठीक समतुरूप वर्णित किया जाता है—तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः—काव्य० १० (विवरण के लिये देखो यही स्थान) 7. एक प्रकार का तोल। सम०—तालः संगीत में विशेष-समय,—शब्दः आलंकारिक या रूपकोक्ति।

रूपणम् [रूप्+ल्युट्] 1. सारोप वर्णन या आलंकारिक वर्णन 2. गवेषण, परीक्षा।

रूपवत् (वि०) [रूप+मतुप्, वत्वम्] 1. रंगरूप वाला 2. शारीरिक, दैहिक 3. सशरीर 4. मनोहर, सुन्दर, —ती सुन्दरी स्त्री।

रूपिन् (वि०) [रूप+इनि] 1. के सदृश दिखाई देने वाला 2. सशरीर, मूर्तिमान् 3. सुन्दर।

रूप्य (वि०) [रूप+यत्] सुन्दर ललित,—प्यम् 1. चांदी 2. चाँदी (या सोने) का सिक्का, मुद्रांकित सिक्का, रुपया 3. शुद्ध किया हुआ सोना।

रूष् i (भ्वा० पर० रूषति, रूषित) 1. अलंकृत करना, सजाना 2. पोतना, चुपड़ना, मण्डित करना, लीपना (मिट्टी आदि से)।

ii (चुरा० उभ० रूषयति–ते) 1. कांपना 2. फट जाना।

रूषित (भू० क० कृ०) [रूष्+क्त] 1. अलंकृत 2. पोता हुआ, ढका हुआ, बिछाया हुआ 3. मिट्टी में लथेड़ा हुआ 4. खुरदरा, ऊबड़ खाबड़ 5. कूटा हुआ, चूर्ण किया हुआ।

रे (अव्य०)[रा+के] संबोधनात्मक अव्यय—रे रे शंकरगृहाधिवासिनो जानपदाः —मा० ३।

रेखा [लिख्+अच्+टाप्, लस्य रः] 1. लकीर, धारी, मदरेखा, दानरेखा, रागरेखा आदि 2. लकीर की माप, अल्पांश, लकीर इतना—न रेखामात्रमपि व्यतीयुः - रघु० १।१७ 3. पंक्ति, परास, लकीर, श्रेणी 4. आलेखन, रूपरेखा, चित्रांकन लावण्यं रेखया किंचिदन्वितं —श० ६।१४ 5. भारतीय ज्योतिषियों की प्रथम याम्योत्तर रेखा जो लंका से उज्जैन होते हुए मेरु पर्वत तक खिंची हुई है 6. पूर्णता, सन्तोष 7. धोखा, जालसाजी। सम०—अंशः रेखांश, द्राघिमांश के घात, देशान्तरीय घात,—अन्तरम् प्रथम याम्योत्तर रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी, किसी स्थान का देशान्तर,—आकार (वि०) परम्परा प्राप्त, रेखामय, धारीदार,—गणितम् ज्यामिति।

रेच दे० 'रेचक'।

रेचक (वि०) (स्त्री०—चिका) [रेचयति रिच्+णिच्+ण्वुल्] 1. रिक्त करने वाला, निर्मल करने वाला 2. दस्तावर, मुलय्यन (मल को ढीला करने वाला) 3. फेफड़ों को खाली करने वाला, श्वास को बाहर फेंकने वाला,—कः 1. श्वास का बाहर निकालना बहिःश्वसन, निःश्वसन विशेष कर एक नथने से (विप० पूरक अर्थात् अन्तः श्वसन, सांस अन्दर ले जाना और कुम्भक, श्वास को जहां का तहाँ रोकना) 2. वस्तियन्त्र या पिचकारी 3. जवाखार, शोरा, —कम् दस्तावर, विरेचन।

रेचनम्,—ना [रिच्+ल्युट्] 1. रिक्त करना 2. घटाना, कम करना 3. श्वास बाहर निकालना 4. निर्मल करना 5. मल बाहर निकालना।

रेचित (वि०) [रिच्+णिच्+क्त] रिताया गया, साफ़ किया गया,—तम् घोड़े की दुलकी चाल।

रेणुः (पुं०, स्त्री०) [रीयतेः णुः नित्] 1. धूल, धूलकण, रेत आदि—तुरगखुरहतस्तथा हि रेणुः—श० १।३१ 2. पराग, पुष्परज।

रेणुका [रेणु+कै+क+टाप्] जमदग्नि की पत्नी तथा परशुराम की माता—दे० जमदग्नि।

रेतस् (नपुं०) [री+असुन्, तुट् च] वीर्य, धातु।

रेप (वि०) [रेप्+घञ्] 1. तिरस्करणीय, नीच, अधम 2. क्रूर, निष्ठुर।

रेफ (वि०) [रिफ्+अच्] नीच, कमीना, तिरस्करणीय,—फः 1. कर्कश ध्वनि, गड़गड़ध्वनि 2. 'र्' वर्ण 3. प्रणयोन्माद, अनुराग।

रेवटः [रेव्+अटच्] 1. सूअर 2. बाँस की छड़ी 3. बवंडर।

रेवतः [रेव्+अतच्] नींबू का पेड़।

रेवती [रेवत+ङीष्] 1. सत्ताइसवां नक्षत्रपुंज जिसमें बत्तीस तारे होते हैं 2. बलराम की पत्नी का नाम —शि० २।१६।

रेवा [रेव्+अच्+टाप्] नर्मदा नदी का नाम,—रेवारोधसि वेतसीतरुतले चेतः समुत्कण्ठते—काव्य० १, रघु० ६।४३, मेघ० १९।

रेष् (भ्वा० आ० रेषते, रेषित) 1. दहाड़ना, हूहू करना, किलकिलाना 2. हिनहिनाना।

रेषणम्, रेषा [रेष्+ल्युट्, रेष्+अ+टाप्] दहाड़ना, हिनहिनाना।

रै (पुं०) [रातेः डैः] (कर्तृ० राः रायौ रायः) दौलत, सम्पत्ति, धन।

रैवतः, रैवतकः [रेवत्या अदूरो देशः—रेवती+अण्=रैवत +कन्] द्वारका के निकट विद्यमान पहाड़, (इस पहाड़ के विवरण के लिए दे०, शि० ४)।

रोकम् [रु+कन्] 1. छिद्र 2. नाव, जहाज 3. हिलता हुआ, लहराता हुआ।

रोगः [रुज्+घञ्] रुजा, बीमारी, व्याधि, मनोव्यथा या आधि, अशक्तता संतापयन्ति कमपथ्यभुजं न रोगाः—हि० ३।११७, भोगे रोगभयम्—भर्तृ० ३।३५, सम०—आयतनम् शरीर,—आर्त (वि०) रोगग्रस्त, बीमार,—शान्तिः (स्त्री०) रोग का उपशमन या चिकित्सा,—हर (वि०) चिकित्सापरक (—रम्) औषधि,—हारिन् (वि०) चिकित्साविषयक, (—पुं०) वैद्य, डाक्टर।

रोचक (वि०) [रुच्+ण्वुल्] 1. सुखद, रुचिकर 2. भूख बढ़ाने वाला, क्षुधोत्तेजक,—कम् 1. भूख 2. मन्दाग्नि को दूर करने वाली कोई पुष्टि कारक औषधि उद्दीपक, पौष्टिक 3. काँच की चूड़ियाँ या अन्य बनावटी आभूषण बनाने वाला।

रोचन (वि०) (स्त्री०—ना,—नी) [रुच्+ल्युट्, रोचयति वा] 1. प्रकाश करने वाला, रोशनी करने वाला, जगमगा देने वाला 2. उज्ज्वल, शानदार, सुन्दर, प्रिय, सुहावना, रुचिकर—भट्टि० ६।७३ 3. क्षुधावर्धक, —नः भूख बढ़ाने वाली औषधि,—नम् उज्ज्वल आकाश, अन्तरिक्ष।

रोचना [रोचन+टाप्] 1. उज्ज्वल आकाश, अन्तरिक्ष 2. सुन्दरी स्त्री 3. एक प्रकार का पीलारंग=गोरोचना रघु० ६।६५, १७।२४, शि० ११।५१।

रोचमान (वि०) [रुच्+शानच्] 1. चमकदार, उज्ज्वल 2. प्रिय, सुन्दर, मनोहर,—नम् घोड़े की गर्दन के बालों का गुच्छा।

रोचिष्णु (वि०) [रुच्+इष्णुच्] 1. उज्ज्वल, चमकीला, चमकदार, देदीप्यमान 2. छैल-छबीला, भड़कीले कपड़ों वाला, प्रफुल्लवदन 3. क्षुधावर्धक।

रोचिस् (नपुं०) [रुचेः इसिः] प्रकाश, आभा, उज्ज्वलता, ज्वाला—शि० १।५।

रोदनम् [रुद्+ल्युट्] 1. रोना, दे० रुदन 2. आंसू।

रोदस् (नपुं०) (स्त्री० द्वि० व०—रोदसी) [रुद् +असुन्] आकाश और पृथ्वी—रवः श्रवणभैरवः स्थगितरोदसीकन्दरः—वेणी० ३।२, वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदसी—विक्रम० १।१, शि० ८।१५।

रोधः [रुध्+घञ्] 1. रोकना, पकड़ना, रुकावट डालना —शि० १०।८९ 2. अवरोध, ठहराना, बाधा, रोक, प्रतिषेध, दबाना—शापादसि प्रतिहता स्मृतिरोधरूक्षे —श० ७।३२, उपरुरोध—कि० ५।१५, याज्ञ० २।२२० 3. बन्द करना, रोकना, नाकेबंदी करना, घेरा डालना—प्रीतिरोधमसहिष्ट सा पुरी—रघु० ११।५२ 4. बाँध।

रोधनः [रुध्+ल्युट्] बुधग्रह,—नम् ठहराना, रोकना, बन्दी बनाना, नियंत्रण, रोक थाम।

रोधस् (नपुं०) [रुध्+असुन्] 1. तट, पुश्ता, बाँध—गङ्गा रोधःपतनकलुषा गृह्णतीव प्रसादम्—विक्रम० १।८, रघु० ५।४२, मेघ० ५१ 2. किनारा, ऊंचा तट—रघु० ८।३३। सम०—वक्रा,—वती 1. नदी 2. वेग से बहने वाली नदी।

रोध्रः [रुध्+रन्] एक प्रकार का वृक्ष, लोध्रवृक्ष,—ध्रः, —ध्रम् पाप—ध्रम् अपराध, क्षति।

रोपः [रुह्+णिच्+अच्, ह्रस्व पः] 1. उगाना, बोना 2. पौध लगाना 3. बाण—शि० १९।१२० 4. छिद्र, गह्वर।

रोपणम् [रुह्+णिच्+ल्युट् ह्रस्य पः] 1. सीधा खड़ा करना, जमाना, उठाना 2. पौध लगाना 3. स्वस्थ होना, 4. (व्रण आदि पर) स्वास्थ्यप्रद औषध का प्रयोग।

रोमकः [रोमन्+कन्] 1. रोम नाम का नगर 2. रोमवासी, रोम नगर का निवासी (ब० व० में)। सम० —पत्तनम् रोम नगर, —सिद्धान्तः पाँच मुख्य सिद्धान्तों में से एक (रोमवासियों से प्राप्त होने के कारण ही संभवतः इसका यह नाम पड़ा)।

रोमन् (नपुं०) [रु+मनिन्] मनुष्य और अन्य जीव जंतुओं के शरीर पर होने वाले बाल, विशेषतः, छोटे-छोटे बाल, कड़े बाल—मनु० ४।१४४, ८।११६। सम० —अङ्कः बाल का चिह्न, —बिभ्रती श्वेतरोमाङ्कम्—रघु० १।८३,—अञ्चः (हर्षातिरेक, बिभीषिका या आश्चर्य आदि में) पुलक, रोंगटे खड़े होना - हर्षाद्भुतभयादिभ्यो रोमाञ्चो रोमविक्रिया—सा० द० १६७, —अञ्चित (वि०) हर्ष के कारण पुलकित,—अन्तः हथेली की पीठ पर के बाल,—आली,—आवलिः, —ली (स्त्री०) रोमों की पंक्ति जो पेट पर ठीक नाभि के ऊपर को गई हो—शिखा धूमस्येयं परिणमति रोमावलिवपुः—काव्य० १०, दे० 'रोमराजि' भी, —उद्गमः,—उद्भेदः (शरीर पर) बालों का खड़ा होना, पुलक, रोमांच—कु० ७।७७,—कूपः,—पम्, —गर्तः, चमड़ी के ऊपर के छिद्र जिनमें रोम उगे हों, लोमछिद्र,—केशरम्,—केसरम् मुरछल, चंवर,—पुलकः रोंगटे खड़े होना, हर्षातिरेक—चौर० ३४,—भूमिः 'बालों का स्थान' अर्थात् खाल, चमड़ी,—रन्ध्रम् रोमकूप,—राजिः,—जी,—लता (स्त्री०) पेट पर ठीक नाभि के ऊपर रोमावली—रराज तन्वी नवरो (लो)-मराजिः—कु० १।३८, शि० ९।२२,—विकारः, —विक्रिया,—विभेदः पुलक, रोमांच,—कि० ९।४६, कु० ५।१०,—हर्षः बालों या रोंगटों का खड़े होना, पुलक—वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते—भग० १।२९,—हर्षण (वि०) पुलक या रोमांच करने वाला, रोंगटे खड़े कर देने वाला, विस्मयोत्पादक—एतानि खलु सर्वभूतरो (लो) महर्षणानि—उत्तर० २, संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम्—भग० १८।७४ (—णः) सूत का नामान्तर, व्यास का एक शिष्य जिसने शौनकमुनि को कई पुराण सुनाये थे, (—णम्) शरीर पर रोंगटे खड़े होना, पुलक।

रोमन्थः [रोमं मथ्नाति—मन्थ्+अण्, पृषो० गलोपः] 1. जुगाली करना, खाये हुए घास को चर्वण करना, छायाबद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु—श०२।८ 2. (अतः) लगातार पिष्टपेषण।

रोमश (वि०) [रोमाणि सन्त्यस्य श] बालों वाला, बहुत से रोओं से युक्त, पशमदार या ऊर्णामय,—शः 1 भेड़, मेंढा 2. कुत्ता, सूअर।

रोरुदा [रुद्+यङ्+अ+टाप्] प्रचंडक्रंदन, अत्यन्त विलाप—लुठयन् सशोको भुविरो रुदावान्—भट्टि० ३।३२।

रोलम्बः [रो+लम्ब्+अच्] भौंरा—तस्या रोलम्बावली केशजालं—दश०, भामि० १।११८।

रोषः [रुष्+घञ्] क्रोध, कोप, गुस्सा—रोषोऽपि निर्मलधियां रमणीय एव—भामि० १।७१, ४४।

रोषण (वि०) (स्त्री०—णी) [रुष्+युच्] क्रोधी, चिड़चिड़ा, गुस्सैल, आवेशी,—णः 1. कसौटी 2. पारा 3. बंजर पड़ी हुई रिहाली जमीन।

रोहः [रुह्+अच्] 1. उठान, ऊँचाई, गहराई 2. किसी चीज का ऊपर उठाना (जैसे कि एक छोटी संख्या को बड़ी संख्या बनाना) 3. वृद्धि, विकास (आलं०) 4. कली, बौर, अंकुर।

रोहणः [रुह्+ल्युट्] लंका के एक पहाड़ का नाम,—णम् सवार होने, सवारी करने, चढ़ने और स्वस्थ होने की क्रिया। सम०—द्रुमः, चन्दन का पेड़।

रोहन्तः [रुहेः झच्] वृक्ष,—ती लता।

रोहिः [रुह्+इन्] 1. एक प्रकार का हरिण 2. धार्मिक पुरुष 3. वृक्ष 4. बीज।

रोहिणी [रुह्+इनन्+ङीष्] 1. लाल रंग की गाय 2. गाय—शि० १२।४० 3. चौथा नक्षत्रपुंज (जिसमें पाँच तारे हैं) जिसकी आकृति 'गाड़ी' की है, दक्ष की एक पुत्री जो चन्द्रमा की अत्यन्त प्रिय संगिनी है—उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणी योगम्—श० ७।२२ 4. वसुदेव की एक पत्नी तथा बलराम की माता का नाम 5. तरुण कन्या जिसे अभी रजोधर्म होना आरंभ हुआ है - नववर्षा च रोहिणी 6. बिजली। सम०—पतिः,—प्रियः,—बल्लभः—रमणः 1. सांड 2. चन्द्रमा,—शकटः 'गाड़ी'-की आकृति का रोहिणी नक्षत्रपुंज—रोहिणी शकटमर्कनन्दनश्चोद्भिनत्ति रुधिरोऽथवा शशी—पंच० १।२१३ (=वराह० ४७।१४)।

रोहित (वि०) (स्त्री० रोहिणी, रोहिता) [रुहेः इतन् रश्च लो वा] लाल, लालरंग का,—तः 1. लाल रंग 2. लोमड़ी 3. एक प्रकार का हरिण 4. मछली की एक जाति,—तम् 1. रुधिर 2. जाफरान, केसर। सम०—अश्वः अग्नि।

रोहिषः [रुह्+इषन्] 1. एक प्रकार की मछली 2. एक प्रकार का हरिण।

रौक्ष्यम् [रूक्ष+ष्यञ्] 1. कठोरता, सूखापन, अनुपजाऊपन 2. खुरदुरापन, कर्कशता, क्रूरता—प्रतिषेधरौक्ष्यम्—रघु० ५।५८, निदेश° १४।५८।

रौद्र (वि०) (स्त्री०—द्रा, द्री) [रुद्र+अण्] 1. 'रुद्र जैसा प्रचंड, चिड़चिड़ा, गुस्सैल 2. भीषण, बर्बर, भयानक,

जंगली,—द्रः 1. रुद्र का उपासक 2. गर्मी, उत्कण्ठा, सरगर्मी, जोश, मन्यु या भीषणता का मनोभाव—दे० सा० द० २३२ या काव्य० ४,—द्रम् 1. क्रोध, कोप 2. उग्रता, भीषणता, बर्बरता 3. गर्मी, उष्णता, सूर्यताप ।

रौप्य (वि०) [रूप्य+अण्] चाँदी का बना हुआ, चाँदी, चाँदी जैसा,—प्यम् चाँदी ।

रौरव (वि० (स्त्री०—वी) [रुरु+अण्] 1. 'रुरु' मृग की खाल का बना हुआ—रघु० ३।३१ 2. डरावना, भयानक 3. जालसाजी से भरा हुआ, बेईमान,—वः 1. बर्बर 2. एक नरक का नाम—मनु० ४।८८ ।

रौहिणः [रोहिण+अण्] 1. चन्दन का वृक्ष 2. वटवृक्ष ।

रौहिणेयः [रोहिणी+ढक्] 1. बछड़ा 2. बलराम का नामांतर 3. बुधग्रह,—यम् पन्ना, मरकतमणि ।

रौहिष् (पुं०) एक प्रकार का हरिण ।

रौहिषः [रुह्+टिषच्, धातोश्च वृद्धिः] दे० 'रोहिष',—षम् एक प्रकार का घास ।

ल

लः [ली+ड] 1. इन्द्र का विशेषण 2. (छन्द० में) लघु, ह्रस्व मात्रा 3. पाणिनि द्वारा प्रयुक्त (दस लकारों के लिए) परिभाषिक शब्द, जो दस काल तथा अवस्थाओं को प्रकट करते हैं ।

लक् (चुरा० उभ० लाकयति—ते) 1. स्वाद लेना 2. प्राप्त करना ।

लकः [लक्+अच्] 1. मस्तक 2. जंगली चावलों की बाल ।

लकचः, लकुचः [लक्+अचन्, उचन् वा] बडहर का पेड़,—चम् बडहर का फल ।

लकुटः [लक्+उटन्] मुद्गर, सोटा ।

लक्तकः [लक्+क्त+कन्, रक्त+कै+क, रस्य लत्वं वा] 1. लाख, महावर 2. चिथड़ा, जीर्ण कपड़ा ।

लक्तिका [लक्तक+टाप्, इत्वम्] छिपकली ।

लक्ष् i (भ्वा० आ० लक्षते, लक्षित) प्रत्यक्ष करना, समझना, अवलोकन करना, देखना ।

ii (चुरा० उभ० लक्षयति—ते, लक्षित) 1. देखना, अवलोकन करना, निरखना, ज्ञात करना, प्रत्यक्ष करना—आर्यपुत्रः शून्यहृदय इव लक्ष्यते—विक्रम० २, रघु० ९।७२, १६।७ 2. चिह्न लगाना, प्रकट करना, चरित्रचित्रण करना, संकेत करना—सर्वभूतप्रसूतिर्हि बीजलक्षणलक्षिता—मनु० ९।३५ 3. परिभाषा करना—इदानीं कारणं लक्षयति—आदि 4. गौण रूप से संकेत करना, गौण अर्थ में सार्थक करना—यथा गंगा शब्दः स्रोतसि सबाध इति तटं लक्षयति तद्वत् यदि तटेऽपि सबाधः स्यात्तत्प्रयोजनं लक्षयेत्—काव्य० २, अत्र गोशब्दो वाहीकार्थं लक्षयति—सा० द० २ 5. लक्ष्य करना 6. ख़याल करना, आदर करना, सोचना, अभि—, अंकित करना, देखना, आ—, देखना, प्रत्यक्ष करना, अवलोकन करना—आलक्ष्य दन्तमुकुलान्—श० ७।१७, नातिपर्याप्तमालक्ष्य मत्कुक्षेरद्य भोजनम्—रघु० १५।१८, उप—, 1. देखना, अवलोकन करना, निगाह डालना, अंकित करना,—सम्यगुपलक्षितं भवत्या—श० ३ 2. अंकित करना, चिह्न लगाना—याज्ञ० १।३०, २।१५१ 3. प्रकट करना, मनोनीत करना 4. अतिरिक्त उपलक्षित होना, वस्तुतः अभिव्यक्त की अपेक्षा अधिक सम्मिलित करना—नक्षत्रशब्देन ज्योतिःशास्त्रमुपलक्ष्यते—मनु० ३।१६२ पर कुल्लू० 5. मनन करना, विचारकोटि में लाना 6. ख़याल करना, मानना, वि—, 1. अवलोकन करना, ध्यान देना, देखना 2. चरित्रचित्रण करना, अन्तर प्रकट करना 3. व्याकुल होना, चकित होना, घबरा जाना—निर्व्यापारविलक्षितानि सान्त्वय बलानि—उत्तर० ६, सम्—, 1. अवलोकन करना, प्रत्यक्ष करना, देखना, ध्यान देना—आश्चर्यदर्शनः संलक्ष्यते मनुष्यलोकः,—श० ७, संलक्ष्यते न छिद्रुरोऽपि हारः—रघु० १६।६२, 'ध्यान नहीं दिया जाता या ज्ञात नहीं होता' ८।४२ 2. परीक्षण करना, सिद्ध करना, निर्धारित करना—हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा—रघु० १।१० 3. सुनना, जानना, समझना 4. चरित्रचित्रण करना, भेद बताना ।

लक्षम् [लक्ष्+अच्] 1. सौ हज़ार (इस अर्थ में पुं० भी),—इच्छति शती सहस्रं सहस्री लक्षमीहते—सुभा०, त्रयो लक्षास्तु विज्ञेयाः—याज्ञ० ३।१०२ 2. चिह्न, चाँदमारी, लक्ष्य, निशाना—प्रत्यक्षवदाकाशे लक्षं बध्वा—मुद्रा० १ 3. निशान, निशानी, चिह्न 4. दिखावा, बहाना, जालसाजी, छद्मवेश, जैसा कि 'लक्षसुप्तः' में 'झूठमूठ सोया हुआ'। सम०—अधीशः लाखों की सम्पत्ति का स्वामी ।

लक्षक (वि०) [लक्ष्+ण्वुल्] अप्रत्यक्षरूप से सूचित करने वाला, गौण रूप से अभिव्यक्त करने वाला,—कम् सौ हज़ार, एक लाख ।

लक्षणम् [लक्ष्यतेऽनेन-लक्ष् करणे ल्युट्] 1. चिह्न, निशानी, निशान, संकेत, विशेषता, भेद बोधक चिह्न,—वधूदुकूलं कलहंसलक्षणम्—कु० ५।०७, अनारंभो हि कार्याणां प्रथमं बुद्धिलक्षणम्—सुभा० अव्याक्षेपो भविष्यन्त्याः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम्—रघु० १०।६, १९।४७, गर्भलक्षण —श० ५, पुरुषलक्षणम्, वीर्यवत्ता का चिह्न या पुंस्त्व-द्योतक इन्द्रिय 2. (रोग का) लक्षण 3. विशेषण, खूबी 4. परिभाषा, यथार्थ वर्णन 5. शरीर पर भाग्य-सूचक चिह्न (यह गिनती में ३२ हैं)—द्वात्रिंशल्लक्षणोपेत: 6. (शुभाशुभ भाग्य का सूचक) शरीर पर बना कोई चिह्न—क्व तद्विधस्त्वं क्व च पुण्यलक्षणा—कु० ५।३७, क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाहम्—रघु० १४।५ 7. नाम, पद, अभिधान (प्राय: समास के अन्त में) —विदिशालक्षणां राजधानीम्—मेघ० २५, नै० २२।४१ 8. श्रेष्ठता उत्कर्ष, अच्छाई जैसा कि 'आहितलक्षण' —रघु० ६।७१ में (यहाँ मल्लि० इस शब्द का अनुवाद करता है 'प्रख्यातगुण' और अमर० का उद्धरण—गुणै: प्रतीते तु कृतलक्षणाहितलक्षणौ—देता है) 9. उद्देश्य, क्रियाक्षेत्र या लक्ष्य, ध्येय 10. (कर आदि का) निश्चित भाव—मनु० ८।४०५ 11. रूप, प्रकार प्रकृति 12. कर्तव्यनिर्वाह, कार्यप्रणाली 13. कारण, हेतु 14. सिर, शीर्षक, विषय 15. बहाना, छद्मवेश (=लक्ष)—प्रसुप्तलक्षण: —मा० ७,—ण: सारस,—णा 1. उद्देश्य, ध्येय 2. (अलं० में) शब्द का परोक्षप्रयोग या गौण सार्थकता, शब्द की एक शक्ति, इसकी परिभाषा इस प्रकार है :—मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथप्रयोजनात्, अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपितक्रिया:—काव्य० २, दे० सा० द० १३ भी 3. हंस। सम० अन्वित (वि०) शुभलक्षणों से युक्त,—ज्ञ (वि०) (शरीर पर विद्यमान) चिह्नों की व्याख्या करने में सक्षम,—भ्रष्ट (वि०) अभागा, दुर्भाग्यग्रस्त, - लक्षणा=जहल्लक्षणा, दे०,—संनिपात: दाग लगाना, कलंकित करना।

लक्षण्य (वि०) [लक्षण+यत्] 1. चिह्न का काम देने वाला 2. अच्छे लक्षणों से युक्त।

लक्षशस् (अव्य०) [लक्ष+शस्] लाख-लाख करके अर्थात् बड़ी संख्या में।

लक्षित (भू० क० कृ०) [लक्ष्+क्त] 1. दृष्ट, अवलोकित चिह्नित, निगाह डाली गई 2. प्रकट किया गया, सकेतित 3. चरित्रचित्रित, चिह्नित, अन्तर बताया गया 4. परिभाषित 5. उद्दिष्ट 6. परोक्ष रूप से अभिव्यक्त संकेतित, इशारा किया गया 7. पूछताछ की गई, परीक्षित।

लक्ष्मण (वि०) [लक्ष्मन्+अण्, न वृद्धि:] 1. चिह्नों से युक्त 2. शुभलक्षणों से युक्त, सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मत वाला 3. समृद्धिशाली, फलता-फूलता —ण: 1. सारस 2. सुमित्रा नामक पत्नी से उत्पन्न दशरथ का एक पुत्र (बचपन से ही लक्ष्मण राम में इतना अधिक अनुरक्त था कि वह उसकी वनयात्रा में जाने को तैयार हो गया। राम के चौदह वर्ष के निर्वासन काल में घटित घटनाओं में लक्ष्मण का बड़ा हाथ था। लङ्का के युद्ध में उसने कई बलवान् राक्षसों को, विशेष कर रावण के पुत्रों में अत्यंत शक्तिशाली मेघनाद को मार डाला। सबसे पहले तो स्वयं लक्ष्मण ही मेघनाद की शक्ति का शिकार हुआ, परन्तु हनुमान् द्वारा लाई गई संजीवन बूटी के उपयोग से सुषेण वैद्य ने उसे फिर जीवित कर दिया। एक दिन काल साधु के वेश में राम के पास आया और कहा कि "जो कोई उनको एकान्त में वार्तालाप करते हुए कभी देख ले तो तुरन्त उसका परित्याग किया जाना चाहिए" यह बात मान ली गई। एक बार लक्ष्मण ने राम व सीता की एकान्तता में भंग डाल दिया, फलत: लक्ष्मण ने अपने भाई राम के वचन को 'स्वयं सरयू में छलांग लगा कर सत्य सिद्ध करके दिखा दिया (दे० रघु० १५।९२-५, उस का विवाह ऊर्मिला से हुआ, तथा अंगद और चन्द्रकेतु नामक दो पुत्र हुए), —णा हंसिनी,—णम् 1. नाम अभिधान 2. चिह्न, संकेत, निशानी। सम०—प्रसू: लक्ष्मण की माता सुमित्रा।

लक्ष्मन् (पुं०) [लक्ष्+मनिन्] 1. चिह्न, निशान, निशानी, विशेषता—शि० ११।३०, कि० ११।२८, १४।६४, रघु० १०।३० कु० ७।४३ 2. चित्ती, धब्बा —मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति—श० १।२०, मा० ९।२५ 3. परिभाषा—पुं० 1. सारस पक्षी, 2. लक्ष्मण का नामान्तर।

लक्ष्मी: (स्त्री०) [लक्ष्+ई, मुट्+च] 1. सौभाग्य, समृद्धि, धनदौलत—सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम्—कि० ८।१८, तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान् संरुणद्धि —भर्तृ० २।१७ 2. सौभाग्य, अच्छी किस्मत 3. सफलता, सम्पन्नता—उत्तर० २।१८ 4. सौन्दर्य, प्रियता, अनुग्रह, लावण्य, आभा, कान्ति—मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति—श० १।२०, मा० ९।२५, ५।३९, ५२, ९।२, कु० ३।४९ 5. सौभाग्यदेवी, समृद्धि, सौन्दर्य, लक्ष्मी विष्णु की पत्नी मानी जाती है (देवासुरों द्वारा अमृत प्राप्ति के लिए समुद्रमंथन किये जाने पर अन्य मूल्यवान् रत्नों के साथ लक्ष्मी भी समुद्र से निकली)—इयं गेहे लक्ष्मी:—उत्तर० १।३८, राजकीय या प्रभुशक्ति, उपनिवेश, राज्य (यह बहुधा रानी की सपत्नी के रूप में मानी जाती है, और राजा की रानी के रूप में इसका मूर्तवर्णन किया जाता है)—तामेकभार्यां परिवादभीरो: साध्वीमपि त्यक्तवतो नृपस्य, वक्षस्यसंघट्टसुखं वसन्ती रेजे सपत्नी-

रहितेव लक्ष्मीः—रघु० १४।८६, १२।२६ 7. नायक की पत्नी 8. मोती 9. हल्दी। सम०—ईशः 1. विष्णु का विशेषण 2. आम का वृक्ष 3. समृद्ध या भाग्यशाली पुरुष,—कान्तः 1. विष्णु का विशेषण 2. राजा,—गृहम् लाल कमल का फूल, ताल: एक प्रकार का ताड़ का वृक्ष,—नाथः विष्णु का विशेषण,—पतिः 1. विष्णु का विशेषण, 2. राजा विहाय लक्ष्मीपतिलक्ष्म कार्मुकम् कि० १।४४ 3. सुपारी का पेड़, लौंग का वृक्ष,—पुत्रः 1. घोड़ा 2. कामदेव का नामान्तर,—पुष्पः लाल,—पूजनम् लक्ष्मी के पूजा करने का कृत्य (दुलहन को विवाह करके घर लाने के पश्चात् दूल्हे द्वारा दुलहन के साथ मिलकर किया जाने वाला अनुष्ठान),—पूजा कार्तिकमास की अमावस्या के दिन किया जाने वाला लक्ष्मीपूजन (मुख्य रूप से साहूकार और व्यापारियों के द्वारा जिनका कि वाणिज्यवर्ष, आज के दिन समाप्त होकर नया वर्ष आरम्भ होता है),—फलः बिल्व वृक्ष,—रमणः विष्णु का विशेषण,—वसतिः (स्त्री०) 'लक्ष्मी का निवास' लाल कमल का फूल,—वारः बृहस्पतिवार,—वेष्टः तारपीन,—सखः लक्ष्मी की कृपा का पात्र,—सहजः,—सहोदरः चन्द्रमा के विशेषण।

लक्ष्मीवत् (वि०) [लक्ष्मी+मतुप्, वत्वम्] 1. सौभाग्यशाली, किस्मत वाला, अच्छे भाग्य वाला 2. दौलतमंद, धनवान्, समृद्धिशाली 3. मनोहर, प्रिय, सुन्दर।

लक्ष्य (सं० कृ०) [लक्ष्+ण्यत्] 1. देखने के योग्य, अवलोकन करने योग्य, दृश्य, अवेक्षणीय, प्रत्यक्ष जानने के योग्य —दुर्लक्ष्यचिह्ना महतां हि वृत्तिः—कि० १७।२३ 2. संकेतित या अभिज्ञेय (करण० के साथ या समास में)—दूराल्लक्ष्यं सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन—मेघ० ७५, प्रवेपमानाधरलक्ष्यकोपया कु० ५। ७४, रघु० ४।५, ७।६० 3. ज्ञातव्य या प्राप्य, सुराग लगाने योग्य—कु० ५।७२, ८१ 4. चिह्नित या चित्रित किया जाना 5. परिभाषा के योग्य 6. उद्दिष्ट किये जाने योग्य 7. अभिव्यक्त किया जाना या परोक्ष रूप से प्रकट किया जाना 8. ख़याल किये जाने योग्य, चिन्तनीय,—क्ष्यम् 1. उद्देश्य, निशाना, चिह्न, चांदमारी, उद्दिष्ट चिह्न, (आलं० से भी)—उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले—श० २।५, दृष्टि लक्ष्येषु बध्नन्—मुद्रा० १।२, रघु० १।६१, ६।११, ९।६७, कु० ३।४७, ६४, ५।४९ 2. निशान, निशानी 3. वस्तु जिसकी परिभाषा की गई है (विप० लक्षण)—लक्ष्यैकदेशे लक्षणस्यावर्तनमव्याप्तिः—तर्क० 4. परोक्ष या गौण अर्थ जो लक्षणा शक्ति से प्रतीत हों, —वाच्यलक्ष्यव्यंग्या अर्थाः—काव्य० २ 5. बहाना, झूठमूठ, छद्मवेश—इदानीं परोक्षे किं लक्ष्यसुप्तमुत परमार्थसुप्तमिदं द्वयं—मृच्छ० ३, ३।१८, कन्दर्प प्रवणमना सखीसिसिक्षालक्ष्येण प्रतियुवमञ्जलिं चकार—शि० ८।३५, रघु० ६।५८ 6. लाख, सौ हजार। सम०—क्रम (वि०) ध्वनि आदि अर्थ जिसकी प्रणाली (गौणरूप से) प्रत्यक्षज्ञेय है,—भेदः,—वेधः निशाना लगाना—कि० ३।२७,—सुप्त (वि०) झूठमूठ सोया हुआ,—हन् (वि०) निशाना मारने वाला, (पुं०) बाण, तीर।

लख्, लङ्ख् (भ्वा० पर० लखति, लङ्खति) जाना, हिलना जुलना।

लग् i (भ्वा० पर० लगति, लग्न) 1. लग जाना, दृढ़ रहना, चिपकना, जुड़ जाना—श्यामाथ हंसस्य करानवाप्तेर्मन्दाक्षलक्ष्या लगति स्म पश्चात्—नै० ३।८, गमनसमय कण्ठे लग्ना निरुध्य माम्—मा० ३।२ 2. स्पर्श करना, संपर्क में आना—कर्णे लगति चान्यस्य प्राणैरन्यो वियुज्यते—पंच० १।३०५, यथा यथा लगति शीतवातः—मृच्छ०, ५।११ 3. स्पर्श करना, प्रभावित करना, लक्ष्य स्थान तक जाना—विदितेङ्गिते हि पुर एव जने सपदीरिताः खलु लगन्ति गिरः—शि० ९।६९ 4. मिल जाना, सम्मिलित होना, (रेखा आदि) काटना 5. ध्यानपूर्वक अनुसरण करना, अनुघटित होना, बाद में घटित होना,—अनावृष्टिः संपद्यते लग्ना—पंच० १ 6. नियुक्त करना, अटकाना, (किसी को) धन्धे में लगाना—तत्र दिनानि कतिचिल्लगिष्यन्ति—पंच० ४, 'मुझे कुछ दिन वहाँ लग जायेंगे', अव—, जुड़ जाना, चिपक जाना—रघु० १६।६८, आ—, जमे रहना,—काव्या० ३।५०, वि—,चिपकना, लग जाना, जुड़ जाना।
ii (चुरा० उभ०—लागयति—ते) 1. स्वाद लेना 2. प्राप्त करना।

लगड (वि०) [लग्+अलच्, डलयोः ऐक्यात् डः] प्रिय, मनोहर, सुन्दर।

लगित (भू० क० कृ०) [लग्+क्त] 1. जुड़ा हुआ, चिपका हुआ 2. संबद्ध, अनुषक्त 3. प्राप्त, उपलब्ध।

लगुडः, लगुरः, —गुलः [लग्+उलच्, पक्षे लस्य डः, रः वा] मुद्गर, छड़ी, लाठी, सोटा।

लग्न (भू० क० कृ०) [लग्+क्त] 1. जुड़ा हुआ, चिपका हुआ, सटा हुआ, दृढ़ थामा हुआ—लताविटपे एकावली लग्ना—विक्रम० १, 2. स्पर्श करना, संपर्क में आना 3. अनुपक्त, संबद्ध 4. चिपटा हुआ, जुड़ा हुआ, साथ लगा हुआ 5. काटना, (रेखा आदि का) मिलाना 6. ध्यानपूर्वक अनुसरण करना, आसन्न या निकटवर्ती 7. व्यस्त, काम में लगा हुआ 8. शुभ

(दे० लग्),—ग्नः 1. भाट, चारण 2. मदोन्मत्त हाथी, —ग्नम् 1. संपर्क बिन्दु, मियश्छेदन-विंदु, वह बिन्दु जहाँ कि क्षितिज और क्रान्ति—वृत्त या ग्रहपथ मिलते हैं 2. क्रान्ति वृत्त का बिन्दु जो एक समय क्षितिज या याम्योत्तर—रेखा पर होता हैं 3. वह क्षण जिसमें सूर्य का प्रवेश किसी राशि विशेष में होता है 4. बारह राशियों की आकृति 5. शुभ या सौभाग्य प्रद क्षण 6. (अतः) कार्यारंभ का उचित समय। सम० —अहः,—दिनम्, दिवसः,—वासरः, शुभदिन ज्योतिषियों द्वारा (विवाहादि संस्कार के लिए) बताया गया शुभ समय,—नक्षत्रम् शुभ नक्षत्र,—मण्डलम् राशिचक्र,—मासः शुभ महीना,—शुद्धिः (स्त्री०) किसी धर्मकृत्य के अनुष्ठान के लिए बताये गये मुहूर्त की मांगलिकता।

लग्नकः [लग्न+कन्] प्रतिभू, जमानत, वह जो जमानत करे।

लग्निका [लग्न+कन्+टाप्, इत्वम्] 'नग्निका' का अपभ्रंश रूप, दे०।

लघयति (ना० धा० पर०) 1. हलका करना, भार कम करना (धा०)—नितान्तगुर्वी लघयिष्यता धुरम्—रघु० १३।३५ 2. कम करना, घटाना, धीमा करना, न्यून करना—विक्रम० ३।१३, रघु० ११।६२ 3. तुच्छ समझना, तिरस्कार करना, घृणा करना—कि० २।१८; महत्त्वहीन या नगण्य समझना—कि० ५।४, १३।३८।

लघिमन् (पुं०) [लघु+इमनिच्] 1. हलकापन, भार का अभाव 2. लघुता, अल्पता, नगण्यता 3. तुच्छता, ओछापन, नीचता, कमीनापन—मानुषतासुलभो लघिमा प्रश्नकर्मणि मां नियोजयति—का० 4. नासमझी, छिछोरपन 5. इच्छानुसार अत्यंत लघु हो जाने की अलौकिक शक्ति, आठ सिद्धियों में से एक।

लघिष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन लघुः—इष्ठन्] हलके से हलका, निम्नतम, अत्यंत हलका ('लघु' शब्द की उ० अ०)।

लघीयस् (वि०) [अयमनयोः अतिशयेन लघुः —ईयसुन्] अपेक्षाकृत हलका, निम्नतर, बहुत हलका ('लघु' शब्द की उ० अ०)।

लघु (वि०) (स्त्री०—घु, —घ्वी) [लङ्घेः कुः नलोपश्च] 1. हलका, जो भारी न हो—तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः—सुभा०, रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय—मेघ० २० (यहाँ शब्द का अर्थ 'तिरस्करणीय' भी है) रघु० ९।६२ 2. तुच्छ, अल्प, न्यून—पंच० १।२५३, शि० ९।३८, ७८ 3. ह्रस्व, संक्षिप्त, सामासिक—लघुसंदेशपदा सरस्वती —रघु० ८।७७ 4. क्षुद्र, तृणप्राय, नगण्य, महत्त्वहीन —कायस्थ इति लघ्वी मात्रा—मुद्रा० १ 5. नीच, अधम, निंद्य, तिरस्करणीय—शि० ९।२६, पंच० १।१०६ 6. अशक्त, दुर्बल 7. ओछा, मन्दबुद्धि 8. फुर्तीला, चुस्त, चपल, स्फूर्त श० २।५ 9. तेज, द्रुतगामी, त्वरित—किंचित् पश्चात् व्रज लघुगतिः —मेघ० १६, रघु० ५।४५ 10. सरल, जो कठिन न हो—रघु० १२।६६ 11. सुलभ, सुपाच्य, हलका (भोजन) 12. ह्रस्व (जैसे कि छन्दः शास्त्र में स्वर) 13. मृदु, मन्द, कोमल 14. सुखद, रुचिकर, वांछनीय —रघु० ११।१२ ८० 15. प्रिय, मनोहर, सुन्दर 16. विशुद्ध, स्वच्छ अव्य० 1. हलकेपन से, क्षुद्रभाव से, अनादरपूर्वक 2. शीघ्र, फुर्ती से, लघु लघूत्थिता —श० ४, 'सवेरे उठा हुआ', (नपुं०) 1. काला अगर, या विशेष प्रकार का अगर 2. समय की विशेष माप। सम०—आशिन्,—आहार (वि०) थोड़ा खाने वाला, मितभोजी, मिताहारी,—उक्तिः (स्त्री०) अभिव्यक्ति का संक्षिप्त प्रकार,—उत्थान,—समुत्थान (वि०) फुर्तीला, द्रुतगति से कार्य करने वाला,—काय (वि०) हलके शरीर वाला, (यः) बकरा,—क्रम (वि०) शीघ्र पग रखने वाला, जल्दी चलने वाला,—खट्विका खटोला, छोटी खाट,—गोधूमः छोटी जाति का गेहूँ,—चित्त, —चेतस्,—मनस्,—हृदय (वि०) 1. हलके मन वाला, नीचहृदय, क्षुद्रमन का, कमीने दिल का 2. मन्दबुद्धि 3. चंचल, अस्थिर,—जङ्गलः लवा पक्षी,—द्राक्षा बिना बीज का अंगूर, किशमिश,—द्राविन् (वि०) अनायास पिघल जाने वाला,—पाक (वि०) सुपाच्य,—पुष्पः एक प्रकार का कदंब का वृक्ष,—प्रयत्न (वि०) 1. (वर्ण आदि) थोड़े से जिह्वाव्यापार से उच्चरित 2. निठल्ला, आलसी,—बदरः,—बदरी (स्त्री०) एक प्रकार का बेर,—भवः नीच योनि या क्षुद्र घर में जन्म,—भोजनम् हलका भोजन,—मांसः एक प्रकार का तीतर,—मूलम् समीकरण की राशि का न्यूनतर मूल,—मूलकम् मूली, —लयम् एक प्रकार सुगन्धित जड़, खस, वीरणमूल, —वासस् (वि०) हलके और निर्मल वस्त्र धारण करने वाला,—विक्रम (वि०) तेज क़दम वाला, शीघ्र पग उठाने वाला,—वृत्ति (वि०) 1. बदचलन, नीच, दुष्ट 2. क्षुद्र, मंदबुद्धि, कुव्यवस्थित, दुर्वृत्त,—वेधिन् (वि०) बारीक निशाना लगाने वाला,—हस्त (वि०) —स्तः (वि०) 1. हलके हाथ का, चतुर, दक्ष, विशेषज्ञ—रघु० ९।६३ 2. सक्रिय, फुर्तीला, (स्तः) विशेषज्ञ या कुशल धनुर्धर।

लघुता,—त्वम् [लघु+तल्+टाप्+लघु+त्व वा] 1. हलकापन, ओछापन 2. छोटापन, थोड़ापन 3. नगण्यता, महत्त्वहीनता, तिरस्कार, मर्यादा का अभाव —इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः 4. अपमान, निरादर—पंच० १।१४०, ३५३ 5. क्रिया-

शीलता, फुर्ती 6. संक्षेप, संक्षिप्तता 7. सुगमता, सुविधा 8. नासमझी, निरर्थकता 9. स्वेच्छाचारिता।

लघ्वी [लघु+ङीप्] 1. कोमलांगिनी स्त्री 2. हलकी गाड़ी—शि० १२।२४।

लङ्का [लक्+अच्, मुम् च] 1. रावण का निवास और राजधानी, वर्तमान सीलोन टापू या तद्वर्ती राजधानी उस समय की लंका है; परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार वह लंका सीलोन के वर्तमान टापू से कहीं अधिक बड़ी थी। मूलरूप से यह माल्यवान् के लिए बनाई गई थी 2. व्यभिचारिणी स्त्री, रंडी, वेश्या 3. शाखा 4. एक प्रकार का अनाज। सम०—अधिपः, —अधिपति,—ईशः,—ईश्वरः,—नाथः,—पति लंका का स्वामी अर्थात् रावण या विभीषण,—अरिः राम का विशेषण,—दाहिन् (पुं०) हनुमान् का विशेषण।

लङ्खनी [लङ्ख्+ल्युट्+ङीप्] लगाम की वल्गा (लोहे का बना वह भाग जो मुंह में रहता है), मुखरी।

लङ्गः [लङ्ग्+अच्] 1. लंगड़ापन 2. संघ समाज 3. प्रेमी, जार (उपपति)।

लङ्गूलम् [लङ्ग्+ऊलच् पृषो०] जानवर की पूंछ, तु० 'लांगूलम्' से।

लङ्घ् (भ्वा० उभ० लङ्घति-ते, लङ्घित, इच्छा० लिलङ्घिषति-ते) 1. उछलना कूदना, छलांग लगाना 2. सवारी करना, चढ़ना—अन्ये चालङ्घिषुः शैलान् —भट्टि० १५।३२ 3. परे चले जाना, अतिक्रमण करना—लङ्घते स्म मुनिरेष विमानिन्—नै० ५।४ उपवास करना, अनशन करना 5. सूखना, सूख जाना (पर०) 6. झपट्टा मारना, आक्रमण करना, खा जाना, क्षति पहुँचाना—पल्लवान् हरिणो लङ्घितुमागच्छति—मालवि० ४, प्रेर० या चुरा० उभ० (लङ्घयति —ते) 1. ऊपर से कूद जाना, छलांग लगा देना, परे जाना—सागरः प्लवगेन्द्रेण क्रमेणैकेन लङ्घितः—महा०, मनु० ४।३८ 2. तय कर लेना, चल कर पार कर लेना (दूरी आदि) रघु० १।४७ 3. सवारी करना, चढ़ना—रघु० ४।५२ 4. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, अवज्ञा करना—रघु० ९।९ याज्ञ० २।१८७ 5. रुष्ट करना, अपमान करना, निरादर करना, उपेक्षा करना—हस्त इव भूतिमलिनो यथा यथा लंघयति खलः सुजनम्, दर्पणमिव तं कुरुते तथा-तथा निर्मलच्छायम्—वास० 6. रोकना, विरोध करना, ठहराना, टालना, हटाना—भाग्यं न लङ्घयति कोऽपि विधिप्रणीतम्—सुभा०, मृच्छ० ६।२ 7. आक्रमण करना, झपट्टा मारना, क्षतिग्रस्त करना, चोट पहुँचाना—रघु० ११।९२ 8. आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना, अपेक्षाकृत अधिक चमकना, ग्रहणग्रस्त करना,—(यशः) जगत्प्रकाशं तदशेषमिज्यया भवद्गुरुर्लङ्घयितुं ममोद्यतः —रघु० ३।४८ 9. उपवास करवाना 10. चमकना 11. बोलना, अभि—, 1. परे चले जाना, ऊपर से छलांग लगा देना 2. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, अवज्ञा करना, उद्—, 1. पार जाना, पार कर लेना, परे चले जाना—शि० ७।७४ 2. सवारी करना चढ़ना 3. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना—मुद्रा० १।१०, शि० १२।५७, वि—, 1. पार जाना, उछलकर पार करना, यात्रा करना—निवेशयामास विलङ्घिताध्वा —रघु० ५।४२, १६।३२, शि० १२।२४ 2. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, बाहर कदम रखना, अवहेलना करना, उपेक्षा करना—गन्तुं प्रवृत्ते समयं विलङ्घ्य—कु० ५।२५, रघु० ५।४८ 3. औचित्य की सीमा का उल्लंघन करना—रघु० ९।७४ 4. उठाना, चढ़ना, ऊपर जाना —कि० ५।१, नै० ५।२ 5. छोड़ देना, परित्याग करना एक ओर फेंक देना—मनोबबन्धान्यरसान् विलङ्घ्य सा —रघु० ३।४ 6. आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना—इति कर्णोत्पलं प्रायस्तव दृष्ट्या विलङ्घ्यते—काव्य० २।२२४ 7. उपवास कराना।

लङ्घनम् [लङ्घ्+ल्युट्] 1. छलांग लगाना, कूदना 2. उछल कर चलना, यात्रा करना, पार जाना, चलना, गतिशील होना—यूयमेव पथि शीघ्रलङ्घनाः—घट० ८ 3. सवारी करना, चढ़ना, उठना (आलं० से भी)—नभोलङ्घन —रघु० १६।३३, जनोऽयमुच्चैः पदलङ्घनोत्सुकः—कु० ५।६४, उच्चपद प्राप्त करने को इच्छुक 4. धावा बोलना, एकाएक आक्रमण द्वारा दुर्गादि हथिया लेना, अधिकार में कर लेना—जैसा कि 'दुर्गलङ्घनम्' में 5. आगे बढ़ना, परे चले जाना, बाहर कदम रखना, उल्लंघन, अतिक्रमण 'आज्ञालङ्घनं' नियमलङ्घनम्' आदि 6. अवहेलना करना, घृणा करना, तिरस्कार पूर्वक व्यवहार करना, अपमान करना—प्रणिपातलङ्घनं प्रमार्ष्टुकामा —वि० ३, मालवि० ३।२२ 7. अन्यायाचरण, मानहानि, अपमान 8. अनिष्ट, क्षति, जैसा कि आतपलङ्घनम् में दे० 9. उपवास करना, संयम—शि० १२।२५ (यहाँ इसका अर्थ छलांग भी होता है) 10. घोड़े का एक कदम।

लङ्घित (भू० क० कृ०) [लङ्घ्+क्त] 1. ऊपर से कूदा हुआ पार गया हुआ 2. यात्रा द्वारा पार किया हुआ 3. अतिक्रान्त, उल्लंघन किया हुआ 4. अवज्ञात, अपमानित, अनादृत (दे० 'लङ्घ्')।

लछ् (भ्वा० पर० लच्छति) चिह्न लगाना, देखना, तु० 'लक्ष्'।

लज् i (तुदा० आ० लज्जते) लज्जित होना।
ii (भ्वा० पर० लजति) कलंकित करना आदि, दे० 'लज्ज्' भ्वा०।
iii (चुरा० पर० लजयति) 1. दिखाई देना, प्रतीत

होना, चमकना 2. ढकना, छिपाना (कुछ विद्वानों के मतानुसार इसी अर्थ में 'लाजयति' रूप भी बनता है)।

लज्ज् (तुदा० आ० लज्जते लज्जित) लज्जित होना, शर्मिदा होना।

लज्जका [लज्ज्+अच्+कन्+टाप्] जंगली कपास का पौधा।

लज्जा [लज्ज्+अ+टाप्] 1. शर्म—कामातुराणां न भयं न लज्जा—सुभा०, विहाय लज्जाम्—रघु० २।४०, कु० १।४८ 2. शर्मीलापन, विनय—शृङ्गारलज्जां निरूपयति—श० १, कु० ३।७, रघु० ७।२५ 3. छुईमुई का पौधा। सम०—अन्वित (वि०) विनयशील, शर्मीला,—आवह,—कर (वि०) (स्त्री०—रा,—री) लज्जाजनक, शर्मनाक, अकीर्तिकर, कलंकी,—शील (वि०) शर्मीला, शालीन,—रहित—शून्य,—हीन (वि०) निर्लज्ज, ढीठ, बेहया।

लज्जालु (वि०) [लज्जा+आलुच्] विनयशील, शर्मीला पुं०, स्त्री० छुईमुई का पौधा।

लज्जित (भू० क० कृ०) [लज्ज्+क्त] 1. विनयशील, शर्मीला 2. लजाया हुआ, शर्मिदा।

लञ्ज् i (भ्वा० पर० लञ्जति) 1. कलंक लगाना, निन्दा करना, बदनाम करना 2. भूनना, तलना।

ii (चुरा० उभ० लञ्जयति—ते) 1. क्षतिग्रस्त करना, प्रहार करना, मार डालना 2. देना 3. बोलना 4. सबल या शक्तिशाली होना 5. निवास करना, 6. चमकना।

लञ्जः [लञ्ज्+अच्] 1. पैर 2. धोती की लांग या किनारा जो पीछे कमर में टांग लिया जाता है—तु० कक्षा 3. पूंछ।

लञ्जा [लञ्ज+टाप्] 1. धार 2. व्यभिचारिणी स्त्री 3. लक्ष्मी का नामान्तर 4. निद्रा।

लञ्जिका [लञ्ज्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] रण्डी, वेश्या।

लट् (भ्वा० पर० लटति) 1. बालक बनना 2. बालकों की तरह व्यवहार करना 3. बच्चों की भांति तोतली बातें करना, तुतलाना 4. क्रन्दन करना, रोना।

लटः [लट्+अच्] 1. मूर्ख, बुद्धू 2. त्रुटि, दोष 3. लुटेरा।

लटकः [लट्+क्वुन्] ठग, बदमाश, पाजी, दुष्ट।

लटभ (वि०) [प्राकृत 'लडह' शब्द से संबद्ध, स्वयं 'लडह' शब्द भी इस 'लटभ' से ही बना प्रतीत होता है] लावण्यमय, मनोहर, सुन्दर, आकर्षक, प्रिय,—अतिक्रान्तः कालो लटभललनाभोगसुलभः—भर्तृ० ३।३२, (यहाँ भाष्यकार 'लटभ' का अर्थ 'सलावण्य' करते हैं), 'तस्याः पादनखश्रेणिः शोभते लटभभ्रुवः—विक्रमांक० ८।६, बिल्हण ने इस शब्द को इसी पुस्तक में और तीन स्थानों पर प्रयुक्त किया है जहाँ इसका अर्थ 'तरुणी स्त्री' या 'सुन्दरी स्त्री' प्रतीत होता है—उदा० किं वा वर्णनया समस्तलटभालङ्कारतामेष्यति—८।८६, अनर्घ्यलावण्यनिधानभूमिर्न कस्य लोभं लटभा तनोति—९।६८ केशबन्धविभवैर्लटभानां पिण्डतामिव जगाम तमिस्रम् ११।१८।

लट्टः (पुं०) दुष्ट, बदमाश, दे० 'लटक'।

लट्वः [लटे: क्वन्] 1. घोड़ा 2. नाचने वाला लड़का 3. एक जाति का नाम,—ट्वा 1. एक प्रकार का पक्षी 2. मस्तक पर बालों का घूंघर, अलक 3. चिड़िया, गोरैया 4. एक प्रकार का वाद्ययन्त्र 5. एक खल 6. ज़ाफ़रान, केसर 7. व्यभिचारिणी स्त्री।

लड् i (भ्वा० पर० लडति) खेलना, क्रीडा करना, हाव-भाव दिखलाना।

ii (भ्वा० पर०, चुरा० पर० लडति, लडयति) 1. फेंकना, उछालना 2. कलंक लगाना 3. जीभ लपलपाना 4. तंग करना, सताना।

iii (चुरा० उभ० लाडयति—ते) 1. लाड प्यार करना, पुचकारना, दुलारना 2. सताना।

लडह (वि०) [प्राकृत शब्द] सुन्दर, मनोहर।

लडु=लटक दे०।

लड्डुः, लड्डुकः (पुं०) एक प्रकार की मिठाई, लड्डू, मोदक (चीनी, आटा, घी आदि पदार्थों को मिलाकर बनाये हुए गोल गोल पिंड)।

लण्ड् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० लण्डति, लण्डयति—ते) 1. ऊपर को उछालना, ऊपर की ओर फेंकना 2. बोलना।

लण्डम् [लण्ड्+घञ्] विष्ठा, मल।

लण्ड्रः [संभवतः फ्रैंच् भाषा के लौंड्रेज़ (Londres) शब्द का आधुनिक रूप] लन्दन।

लता [लत्+अच्+टाप्] 1. बेल, फैलने वाला पौधा—लताभावेन परिणतमस्या रूपम्—विक्रम० ४, लतेव संनद्धमनोज्ञपल्लवा—रघु० ३।७, (विशेष रूप से 'भुजा' 'भौं' 'बिजली' आदि अर्थों को प्रकट करने वाले शब्दों के साथ समास के अन्त में, सौन्दर्य, कोमलता तथा पतलेपन को प्रकट करने के लिए प्रयोग—भुजलता, बाहुलता, भ्रूलता, विद्युल्लता, इसी प्रकार खड्ग°, अलक° आदि, तु०, कु० २।६४, मेघ० ४७, श० ३।१९, रघु० ९।४५) 2. शाखा 3. प्रियंगु लता 4. माधवी लता 5. कस्तूरी लता 6. हंटर या कोड़े का सड़ाका 7. मोतियों की लड़ी 8. सुकुमार स्त्री। सम०—अन्तम् फूल,—अम्बुजम् एक प्रकार की ककड़ी,—अर्कः हरा प्याज,—अलकः हाथी,—आननः नाचते समय हाथों की विशेष मुद्रा,—उद्गमः लता का ऊपर को चढ़ना,—करः नाचते समय हाथों की विशेष मुद्रा,—कस्तूरिका,—कस्तूरी कस्तूरी की बेल,—गृहः,—हम् लतागृह, लताकुंज—कु० ४।४१,—जिह्वः,

—रसनः सांप,—तरुः 1. साल का वृक्ष 2. संतरे का पेड़,—पनसः तरबूज,—प्रतानः लतातन्तु— रघु० २।८, —भवनम् लतागृह, लताकुंज,— मणिः मूंगा,—मण्डपः लताकुंज लतागृह,—मृगः बन्दर,—यावकम् अंकुर, अंखुवा,—वलयः,—यम् लताकुंज,—वृक्षः नारियल का पेड़,—वेष्टः एक प्रकार का रतिबंध, संभोग का प्रकार,—वेष्टनम्,—वेष्टितकम् आलिङ्गन का प्रकार।

लतिका [लता+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. छोटी लता, बेल 2. मोतियों की लड़ी।

लत्तिका [लत्+तिकन्+टाप्] एक प्रकार की छिपकली।

लप् (भ्वा० पर० लपति) 1. बोलना, बातें करना 2. चायं चायं करना, चीं चीं करना 3. कानाफूसी करना— कपोलतले मिलिता लपितुं किमपि श्रुतिमूले —गीत० १, प्रेर०—(लापयति–ते) बातें करवाना, अनु —, दोहराना, बार बार बातें करना, अप—, मुकरना, स्वीकार नहीं करना, इन्कार कर देना—शतमपलपति —सिद्धा० 2. छिपाना, ढकना, आ—, 1. बातें करना, वार्तालाप करना 2. बातें करना बोलना 3. चायं चायं करना, चीं चीं करना, उद्—, जोर से पुकारना, प्र—, 1. बातें करना, बोलना —वचो वै देहीति (वैदेहीति) प्रतिपदमुदश्रु प्रलपितम्—सा० द० ६ 2. यूं ही बोलना, असंगत बातें करना, चायं चायं करना, चीं चीं करना, बक-बक करना, निरर्थक बातें करना, वि —, 1. कहना, बोलना 2. विलाप करना, शोक मनाना, क्रन्दन करना, रोना — विललाप विकीर्णमूर्धजा — कु० ४।४, विललाप स बाष्पगद्गदं —रघु० ८।४३, ७०, भट्टि० ६।११, तामिह वृथा किं विलपामि — गीत० ३, विप्र —, झगड़ा करना, विरोध करना, वादविवाद करना, तू तू मैं मैं करना, सम् —, 1. बातें करना, वार्तालाप करना — संलपतो जनसमाजात्—दश० 2. नाम लना, पुकारना।

लपनम् [लप्+ल्युट्] 1. बातें करना, बोलना 2. मुख।

लपित (भू० क० कृ०) [लप्+क्त] बोला हुआ, कहा हुआ, चीं चीं किया हुआ,—तम् वाणी, आवाज।

लब्ध (भू० क० कृ०) [लभ्+क्त] 1. हासिल किया, प्राप्त किया, अवाप्त 2. लिया, प्राप्तकिया 3. प्रत्यक्ष-ज्ञान प्राप्त किया, बोध पाया 4. उपलब्ध किया (भाग आदि से), दे० लभ् —ब्धम् जो प्राप्त कर लिया गया, या सुरक्षित हो गया —लब्धं रक्षेदवक्षयात् हि० २।८, रघु० १९।३। सम०—अन्तर (वि०) 1. जिसने कोई अवसर प्राप्त कर लिया है 2. जिसकी कहीं पहुंच हो गई है या प्रवेश मिल गया है —रघु० १६।७,—अवकाश, —अवसर (वि०) 1. जिसे किसी बात का अवसर मिल गया है 2. (कोई भी बात) जिसे (कार्य के लिए) क्षेत्र मिल गया है —लब्धावकाशा मे प्रार्थना —श० १ 3. जिसने फुरसत प्राप्त करली है, जिसे अवकाश का समय मिल गया है, इसी प्रकार 'लब्धक्षण',—आस्पद (वि०) जिसने कहीं पैर जमा लिया है, या कोई पद प्राप्त कर लिया है — मावि० १।१७,—उदय (वि०) 1. जन्मलिया हुआ, उत्पन्न, उदित —लब्धोदया चांद्रमसीव लेखा —कु० १।२५ 2. समृद्धिशाली, या उन्नत—स त्वत्तो लब्धोदयः 'उसकी उन्नति तुम्हारी बदौलत हुई', —काम (वि०) जिसे अभीष्ट पदार्थ मिल गये हैं —कीर्ति (वि०) विश्रुत, प्रसिद्ध विख्यात,—चेतस्,—संज्ञ (वि०) जिसे होश आ गया है, जिसकी बेहोशी दूर हो गई है,—जन्मन् (वि०) उत्पन्न, पैदा,—नामन्, —शब्द (वि०) विश्रुत, विख्यात,—नाशः प्राप्त की हुई वस्तु का नाश —लब्धनाशो यथामृत्युः,—प्रशमनम् 1. प्राप्त की हुई वस्तु को सुरक्षापूर्वक रखना 2. सुपात्र को दान या धनसमर्पण —मनु० ७।५६ पर कुल्लू०,—लक्ष,—क्ष्य (वि०) 1. जिसने ठीक निशाने पर आघात किया है 2. अस्त्रप्रयोग में कुशल,—वर्ण (वि०) विद्वान्, बुद्धिमान् —चित्रं त्वदीये विषये समन्तात् सर्वेऽपि लोकाः किल लब्धवर्णाः—राजप्र० 2. प्रसिद्ध, विश्रुत, विख्यात —मृच्छ० ४।२६, °भाज् (वि०) विद्वानों का आदर करने वाला—कृच्छ्र-लब्धमपि लब्धवर्णभाक् तं दिदेश मुनये सलक्ष्मणम् —रघु० ११।२,—विद्य (वि०) विद्वान् शिक्षित, बुद्धिमान्,—सिद्धि (वि०) जिसने अभीष्ट पदार्थ (सफलता) या पूर्णता प्राप्त कर ली है।

लब्धिः (स्त्री०) [लभ्+क्तिन्] 1. अभिग्रहण, प्राप्ति, अवाप्ति 2. लाभ, फायदा 3. (गणि० में) भजनफल।

लब्धिम (वि०) [लभ्+क्त्रि, मप्] प्राप्त, अवाप्त, उपलब्ध।

लभ् (भ्वा० आ० लभते, लब्ध) 1. हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना, अवाप्त करना —लभेत सिक-तासु तैलमपि यत्नतः पीडयंन् —भर्तृ० २।५, चिराय याथार्थ्यमलम्भि दिग्गजैः —शि० १।६४, रघु० ९।२९ 2. रखना, अधिकार में लेना, कब्जे में होना 3. लेना, प्राप्त करना 4. पकड़ना, लेना, दबोचना —रघु० १।३ 5. मालूम करना, मुकाबला होना —यत्किंचिल्लभते पथि 6. वसूल करना, उगाहना 7. जानना, सीखना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, समझना —भ्रमणं....गमनादेव लभ्यते —भाषा० ६, सत्यमलभमान—मनु० ८।१६९ पर कुल्लू० 8. (किसी बात को करने के) योग्य होना ('तुमुन्' के साथ) —मर्तुमपि न लभ्यते, नाधर्मो लभ्यते कर्तुं लोके वैधाघरे (संज्ञाशब्दों के साथ प्रयुक्त होकर 'लभ्' के अर्थों में तदनुकूल परिवर्तन हो जाता

है, उदा० **गर्भलभ्** गर्भवती होना, गर्भ धारण करना, **पदं लभ्**, **आस्पदं लभ्** पैर जमाना, प्रभाव रखना, दे० 'पद' के नीचे, **आन्तरं लभ्** पग रखना, प्रविष्ट होना,—लेभेऽन्तरं चेतसि नोपदेशः—रघु० ६।६६, मन पर प्रभाव नहीं पड़ा, **चेतनां लभ्**—,**संज्ञां लभ्** होश में आना, **जन्म लभ्** पैदा होना, —कि० ५।४३, **दर्शनं लभ्** भेंट होना, साक्षात्कार होना, दर्शन करना **स्वास्थ्यं लभ्** स्वस्थ होना, आराम में होना)—प्रेर० (लम्भयति—ते) 1. प्राप्त करवाना, लिवाना कि० २।५८ 2. देना, प्रदान करना, अर्पण करना—मोदकशरावं माणवकं लम्भय—विक्रम० ३ 3. कष्ट उठाना 4. प्राप्त करना, लेना 5. मालूम करना, खोजना—इच्छा० (लिप्सते) प्राप्त करने की इच्छा करना, प्रबल लालसा रखना—अलब्धं चैव लिप्सेत—हि० २।८, आ—, 1. स्पर्श करना गामालभ्यार्कमीक्ष्य वा—मनु० ५। ८७, भट्टि० १४।९१ 2. प्राप्त करना, हासिल करना, पहुँचना—येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमालप्स्यते ते—मेघ० १५ (पाठान्तर) 3. मार डालना, (यज्ञ में पशु का बलिदान करना—गर्दभं पशुमालभ्य—याज्ञ० ३।२८०, उप—, 1. जानना, समझना, देखना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना—पंच० १।७६ 2. निश्चय करना, मालूम करना—ब्रूहि यदुपलब्धम्—उत्तर० १, तत्त्वत एनामुपलप्स्ये—श० १ 3. हासिल करना, प्राप्त करना, अवाप्त करना, उपभोग करना, अनुभव प्राप्त करना—उपलब्धसुखस्तदा स्मरं वपुषा स्वेन नियोजयिष्यति—कु० ४।४२, विक्रम० २।१०, रघु० ८।८२, १०।२, १८।२१, मनु० ११।१७, उपा—, 1. कलंक लगाना, बुरा भला कहना, चुभती बात कहना, खरी खोटी सुनाना—पयोधरविस्तारयितृकमात्मनो यौवनमुपालभस्व मां किमुपालभसे—श० १, कु० ५। ५८, रघु० ७।४४, शि० ९।६०, **प्रति—**, 1. वसूल करना, फिर से उपलब्ध करना 2. हासिल करना, प्राप्त करना, **विप्र—**, 1. ठगना, धोखा देना, आँख में धूल झोंकना 2. वसूल करना, फिर से प्राप्त करना 3. अपमान करना, अनादर करना, **सम्**—हासिल करना।

लभनम् [लभ्+ल्युट्] 1. हासिल करने की क्रिया, प्राप्त करना 2. प्रत्यय (पहचानने) की क्रिया।

लभसः [लभ्+असच्] 1. दौलत, धन 2. जो निवेदन करता है, निवेदक,—**सम्**, घोड़े को बांधने की रस्सी (पुं० भी)।

लभ्य (वि०) [लभ् कर्मणि यत्] 1. प्राप्त होने के योग्य, पहुँचने के योग्य अवाप्त होने या प्राप्त करने के योग्य—प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः—रघु० १।३, ४।८८ कु० ५।१८ 2. मिलने के योग्य—कु० १।४० 3. योग्य, उपयुक्त, उचित 4. सुबोध।

लमकः [रभ्+क्वुन्, रस्य लत्वम्] प्रेमी, जार (उपपति)।

लम्पट (वि०) [रम्+अटन्, पुक्, रस्य लः] 1. लालची, लोलुप, लालायित 2. विषयी, विलासी, कामुक, व्यसनी, इन्द्रियपरायण, —**टः** स्वेच्छाचारी दुश्चरित्र, दुराचारी ('लम्पाक' शब्द भी इसी अर्थ में)।

लम्फः [लम्फ्+घञ्] कूद, उछाल, छलांग।

लम्फनम् [लम्फ्+ल्युट्] कूदना, उछलना।

लम्ब् (भ्वा० आ० लम्बते, लंबित) 1. लटकना, टांगना, दोलायमान होना ऋषयो ह्यत्र लम्बन्ते महा० 2. अनुषक्त होना, चिपकना, सहारा लेना, आश्रित होना—ललम्बिरे सदसि लताः प्रिया इव शि० ७।७५, प्रस्थानं ते कथमपि सखे लम्बमानस्य भावि—मेघ० ४१ (यहां लं० का अर्थ है 'नीचे लटकता हुआ' या 'कूल्हों का सहारा लिये हुए') 3. नीचे जाना, डूबना, (सूर्य आदि का) अस्त होना या डूबना, नीचे गिरना लम्बमाने दिवाकरे—शि० ९।३०, कि० ९।१, त्वदधरचुम्बनलम्बितकज्जलमुज्ज्वलय प्रियलोचने गीत० १२ (=गलित) 4. पीछे गिरना या पड़ना, पिछड़ना 5. विलंब करना, ठहरना 6. ध्वनि करना प्रेर० (लम्बयति—ते), 1. हराना, नीचे लटकाना 2. ऊपर लटकाना, स्थगित करना 3. बिछाना, (हाथ आदि) फैलाना—करेण वातायनलम्बितेन—रघु० १३।२१, को लम्बयेदाहरणाय हस्तम् ६।७५,**अव—**, लटकना, लटकाना, स्थगित होना—कनकशृङ्खलावलम्बिनी—मुद्रा० २ 2. नीचे डूब जाना, उतरना 3. थामना, जुड़ना, झुकना या सहारा लेना, पालनपोषण करना—दण्डकाष्ठमवलम्ब्य स्थितः श० २, ययौ तदीयामवलम्ब्य चाङ्गुलिम्—रघु ३।२५ 4. थामना, संभालना, पालनपोषण करना, जीवित रहना (आलं० से भी) ले लेना—हस्तेन तस्यावलम्ब्य वासः—रघु ७।९, कु० ३।५५, ६।६८, हृदयं न त्ववलम्बितुं क्षमाः—रघु० ८।६० 5. निर्भर रहना, टिकना—व्यवहारोऽयं चारुदत्तमवलम्बते—मृच्छ० ९, भट्टि १८।४१ 6. सहारा लेना, आश्रय लेना, भरोसा करना, **धैर्यमवलम्ब्** धैर्य या साहस से काम लेना,—कि स्वातन्त्र्यमवलम्बसे—श० ५, माध्यस्थ्यमिष्टेऽप्यवलम्बतेऽर्थे—कु० ३।५२, शि० २।१५, **आ—**, 1. आराम करना (किसी के सहारे) झुकना 2. लटकना, स्थगित होना विक्रम० ५।२, 3. हथियाना, पकड़ना—अथालम्ब्य धनू रामः—भट्टि० ६।३५, १४।९५ 4. पालनपोषण करना, थामना, उत्तरदायित्व लेना—आधोरणालम्बितं—रघु० १८।३९ 5. निर्भर होना—तमालम्ब्य रसोद्गमान्—सा० द० ६३ 6. सहारा लेना, आसरा लेना, हाथ पकड़ना, धारण करना—अमुमेवार्थमालम्ब्य न जिजीविषाम्—मुद्रा० २।२०, कि० १७।३४, **उद्—**, खड़ा होना, सीधा खड़ा

होना,—पादेनैकेन गगने द्वितीयेन च भूतले, तिष्ठाम्युल्लम्बितस्तावद्यावत्तिष्ठति भास्करः -- मृच्छ० २।१० वि —, 1. लटकाना, लटकना, स्थगित होना - रघु० १०।६२ 2. अस्त होना, क्षीण होना (सूर्यादि का) 3. ठहरना, पिछड़ना, रह जाना -- कु० ७।१३, 4. देर करना, मन्दगति होना — विलम्बितफलैः कालं निनाय स मनोरथैः—रघु० १।३३, किं विलम्ब्यते त्वरितं तं प्रवेशय—उत्तर० १ ।

लम्ब (वि०) [लम्ब्+अच्] 1. नीचे की ओर लटकता हुआ, झूलता हुआ, लम्बमान, दोलायमान—पाण्ड्योऽयमंसार्पितलम्बहारः—रघु० ६।६०, ८४, मेघ० ८४ 2. लटकता हुआ, अनुषक्त 3. बड़ा, विस्तृत 4. विस्तीर्ण 5. लंबा, ऊँचा,—**बः** 1. लम्बमापक 2. सह-अक्ष-रेखा, किसी स्थान के ऊर्ध्वबिन्दु और ध्रुवबिन्दु का मध्यवर्ती चाप, अक्षरेखा का पूरक । सम० —**उदर** (वि०) बड़े पेट वाला, तोंदवाला, स्थूलकाय भारीभरकम (रः) 1. गणेश का नामांतर 2. भोजन भट्ट, —**ओष्ठः** (लम्बो–बौ–ष्ठः) ऊँट, —**कर्णः** 1. गधा, 2. बकरा 3. हाथी 4. बाज, शिकरा 5. पिशाच, राक्षस,—**जठर** (वि०) मोटे पेट वाला, भारीभरकम, —**पयोधरा** वह स्त्री जिसके स्तन भारी हों और नीचे को लटकते हों,—**स्फिच्** (वि०) जिसके नितंब भारी और उभरे हुए हों ।

लम्बकः [लम्ब+कन्] (ज्या० में) 1. लंबरेखा 2. अक्षरेखा का पूरक, (ज्यो० में) सह-अक्षरेखा ।

लम्बनः [लम्ब्+ल्युट्] 1. शिव का विशेषण 2. कफ-प्रधान प्रकृति, – **नम्** 1. नीचे लटकना, निर्भर रहना, उतरना आदि 2. झालर 3. (चन्द्रमा के) देशान्तर में स्थान-भ्रंश 4. एक प्रकार का लंबा हार ।

लम्बा [लम्ब+टाप्] 1. दुर्गा का विशेषण 2. लक्ष्मी का विशेषण ।

लम्बिका [लम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] कोमल तालु का लटकता हुआ मांसल भाग, उपजिह्वा, कण्ठ के अन्दर का कौवा ।

लम्बित (भू० क० कृ०) [लम्ब्+क्त] 1. नीचे लटकता हुआ, झूलता हुआ 2. स्थगित 3. डूबा हुआ, नीचे गया हुआ 4. सहारा लिये हुए, अनुषक्त (दे० लम्ब्) ।

लम्बुषा (स्त्री०) सात लड़ियों का हार ।

लम्भः [लभ्+घञ्, नुम्] 1. सिद्धि, अवाप्ति 2. मिलन 3. पुनः प्राप्ति 4. लाभ ।

लम्भनम् [लभ्+ल्युट्, नुम्] 1. सिद्धि, अवाप्ति 2. पुनः प्राप्ति ।

लम्भित (भू० क० कृ०) [लभ्+क्त, नुम्] 1. उपार्जित, हासिल, प्राप्त 2. दत्त, 3. सुधारा हुआ 4. नियुक्त, प्रयुक्त 5. संयोया 6. कहा गया, संबोधित ।

लय् (भ्वा० आ० लयते) जाना, हिलना-जुलना ।

लयः [ली+अच्] 1. चिपकना, मिलाप, लगाव 2. प्रच्छन्न, छिपा हुआ 3. संगलन, पिघलना, घोल 4. अदर्शन, विघटन, बुझाना, विनाश, लयं या विघटित होना, नष्ट होना 5. मन की लीनता, गहन एकाग्रता अनन्य भक्ति (किसी भी पदार्थ के प्रति)—पश्यन्ती शिवरूपिणं लयवशादात्मानमभ्यागता—मा० ५।२, ७, ध्यानलयेन --गीत० ४ 6. संगीत की लय (तीन प्रकार की -- द्रुत, मध्य और विलंबित)—किसलयैः सलयैरिव पाणिभिः—रघु० ९।३५, पादन्यासो लयमनुगतः -- मालवि० २।९ 7. संगीत में विश्राम 8. आराम 9. विश्राम स्थान, आवास, निवास —अलया—शि० ४।५७, 'कोई स्थिर निवास न रखते हुए, घूमते हुए' 10 मन की शिथिलता, मानसिक अकर्मण्यता 11. आलिंगन । सम० —**आरम्भः**, —**आलम्भः** पात्र, अभिनेता, नर्तक,—**कालः** (सृष्टि का) प्रलयकाल,—**गत** (वि०) विघटित, पिघला हुआ,—**पुत्री** नटी, अभिनेत्री, नर्तकी ।

लयनम् [ली+ल्युट्] 1. अनुषक्त होना, जुड़ना, चिपकना 2. विश्राम, आराम 3. विश्रामस्थल, घर ।

लर्ब् (भ्वा० पर० लर्बति) जाना, हिलना-जुलना ।

लल् i (भ्वा० उभ० ललति—ते) खेलना, क्रीडा करना, इठलाना, किलोल करना—पनसफलानीव वानरा ललन्ति—मृच्छ० ८।८, गजकलभा इव बन्धुला ललामः ४।२८ ।

ii (चुरा० उभ० या प्रेर० लालयति—ते, लालित) खेलने की प्रेरणा देना, पुचकारना, लाड-प्यार करना, दुलार करना, प्रेमालिंगन करना – लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः, तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्न तु लालयेत्—सुभा०—कु० ५।१५ 2. इच्छा करना ।

iii (चुरा० उभ० लालयति – ते) 1. लाडप्यार करना, मृच्छ० ४।२८ 2. जीभ लपलपाना 3. इच्छा करना ।

लल (वि०) [लल्+अच्] 1. क्रीडासक्त, विनोद प्रिय 2. लपलपाने वाला 3. अभिलाषी, इच्छुक । सम० —**जिह्व**=ललजिह्व, जीभ से लपलप करने वाला ।

ललत् (वि०) [लल्+शतृ] 1. खेलने वाला, विहार करने वाला 2. लपलपाता हुआ । सम०—**जिह्व** (वि०) (ललज्जिह्व) 1. जीभ से लपलपाने वाला 2. बर्बर, भीषण (ह्वः) 1. कुत्ता 2. ऊँट ।

ललनम् [लल्+ल्युट्] 1. क्रीडा, खेल, आमोद, रंगरेली 2. जीभ बाहर निकालना ।

ललना [लल्+णिच्+ल्युट्+टाप्] स्त्री,—शठ नाकलोकललनाभिरविरतरतं रिरंससे—शि० १५।८८

2· स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3. जिह्वा। सम०--प्रियः कदंब का पेड़।

ललनिका [ललना+कन्+टाप् इत्वम्] छोटी स्त्री, अभागी स्त्री—काव्या० ३।५०।

ललन्तिका [लल्+शतृ+ङीप्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] 1. लंबी माला 2. छिपकली।

ललाकः [लल्+आकन्] पुरुष का लिंग, जननेन्द्रिय।

ललाटम् [लड्+अच् डस्य लः, ललमटति अट्+अण् वा] मस्तक—लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः—हि० १।२१, नै० १।१५। सम०—अक्षः शिव का विशेषण,—तटम् मस्तक का ढलान, माथा,—पट्टः, पट्टिका 1. मस्तक का सपाट तल 2. (तेहरा) शिरोवेष्टन, त्रिमुकुट, सिर की चोटी, केशबंध,—लेखा मस्तक की रेखा।

ललाटकम् [ललाट+कन्] 1. मस्तक 2. सुन्दर माथा।

ललाटन्तप (वि०) [ललाट+तप्+खश्, मुम्] 1. (मस्तक) को जलाने या तपाने वाला—ललाटन्तपस्तपति तपनः मा० १, उत्तर० ६, 'सूर्य ऊपर ठीक सिर पर चमक रहा है'—ललाटन्तपसप्तसप्तिः—रघु १३।४१ 2. (अतः) बहुत पीडाकर—लिपिर्ललाटन्तपनिष्ठुराक्षरा—नै० १।१३८,—पः सूर्य।

ललाटिका [ललाट+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. मस्तक पर पहना जाने वाला आभूषण, टीका 2. मस्तक पर चन्दन का या अन्य किसी सुगंधित चूर्ण का तिलक—कु० ५।५५।

ललाटूल (वि०) उन्नत और सुन्दर मस्तकवाला।

ललाम (वि०) (स्त्री०—मी) [लड्+क्विप्, डस्य लत्वम्, तम् अमति—अम्+अण्] सुन्दर, प्रिय, मनोहर,—मम् मस्तक का आभूषण, टीका, सामान्य अलंकार (इस अर्थ में पुं० भी)—अहं तु तामाश्रमललामभूतां शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि—श० २, शि० ४।२८ 2. कोई भी श्रेष्ठ वस्तु 3. मस्तक का तिलक 4. चिह्न, प्रतीक, तिलक 5. झण्डा, पताका 6. पंक्ति, माला, रेखा 7. पूँछ 8. अयाल, गरदन के बाल 9. प्राधान्य, मर्यादा, सौन्दर्य 10. सींग,—मः घोड़ा।

ललामकम् [ललाम+कन्] फूलों का गजरा जो मस्तक पर धारण किया जाता है।

ललामन् (नपुं०) [लल्+इमनिन्] 1. अलंकार, आभूषण, 2. (अतः) कोई भी अपने प्रकार की श्रेष्ठवस्तु—कन्याललाम कमनीयमजस्य लिप्सोः—रघु० ५।६४ 'कन्याओं में श्रेष्ठ या अलंकारभूत' 3. झंडा पताका 4. साम्प्रदायिक चिह्न, तिलक, संकेत, प्रतीक 6. पूंछ।

ललित (वि०) [लल्+क्त] 1. क्रीडासक्त, खेलने वाला, इठलाने वाला 2. शृंगारप्रिय, क्रीडाप्रिय, स्वेच्छाचारी, विषयासक्त 3. प्रिय, सुन्दर मनोहर, प्रांजल,—सलीलाललितललितंर्ज्योत्स्नाप्रायैरकृत्रिमविभ्रमैः (अंगकैः) उत्तर० १।२०, विधाय सृष्टिं ललितां विधातुः—रघु० ६।३७, १९।३९, ८।१, मा० १।१५, कु० ३।७५, ६।४५, मेघ० ३२,६४ 4. सुहावना, लावण्यमय, रुचिकर, बढ़िया—प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ—रघु० ८।६७, संदर्शितेव ललिताभिनयस्य शिक्षा—मालवि० ४।९, विक्रम० २।१८ 5. अभीष्ट 6. मृदु, कोमल—शि० ७।६४ 7. थरथराता हुआ, कम्पायमान,—तम् 1. क्रीडा, रंगरेली, खेल 2. शृंगार परक विनोद, गतिलावण्य, स्त्रियों में प्रीति विषयक हावभाव—शि० ९।७९, कि० १०।५२ 3. सौन्दर्य, लावण्य, आकर्षण 4. कोई भी प्राकृतिक या स्वाभाविक क्रिया 5. सरलता, भोलापन। सम०—अर्थ (वि०) सुन्दर या प्रीतिविषयक अर्थ वाला—विक्रम० २।१४,—पद (वि०) प्रांजलरचनायुक्त—श० ३,—प्रहारः मृदु या कोमल आघात।

ललिता [ललित+टाप्] 1. स्त्री 2. स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3. कस्तूरी 4. दुर्गा का एक रूप 5. विभिन्न छन्दों के नाम सम,—पञ्चमी आश्विनशुक्ल का पांचवां दिन,—सप्तमी भाद्रपद के शुक्लपक्ष का सातवां दिन।

लवः [लू+अप्] 1. उत्पाटन, उल्लुंचन 2. कटाई, (पके अनाज की) लावनी 3. अनुभाग, टुकड़ा, खण्ड, कवल या ग्रास 4. कण, बूंद, अल्पमात्रा, थोड़ा (इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में—जललवमुचः—मेघ० २०,७०, आचामति स्वेदलवान् मुखे ते—रघु० १३।२०, ६।५७, १६।६६, अश्रु० १५।९७, अमृत०—कि० ५।४४, भ्रूक्षेपलक्ष्मीलवक्रीते दास इव—गीत० ११, इसी प्रकार तृण°, अपराध° ज्ञान°, सुख° धन° आदि 5. ऊन, पशम 6. क्रीडा 7. समय का सूक्ष्म विभाग (=एक निमेष का छठा भाग) 8. किसी भिन्न राशि अंश 9. (ज्योति० में) घात 10. हानि, विनाश 11. राम का एक पुत्र, यमल (जोड़वां) में से एक—दूसरे का नाम कुश था, लव का अपने भाई कुश के साथ वाल्मीकि मुनि के द्वारा पालनपोषण हुआ, सभास्थल आदि स्थानों में पाठ करने के लिए दोनों को महा कवि द्वारा रामायण की शिक्षा दी गई, (इस नाम की व्युत्पत्ति के लिये दे० रघु० १५।३२),—वम् 1. लौंग, 2. जायफल,—वम् (अव्य०) कुछ, थोड़ा सा—लवमपि लवङ्गे न रमते—सरस्वती० १।

लवङ्गः [लू+अङ्गच्] लौंग का पौधा—द्वीपान्तरानीतलवङ्गपुष्पैः—रघु० ६।५७, ललित लवङ्गलता परिशीलन कोमल मलयसमीरे—गीत० १,—गम् लौंग। सम०—कलिका लौंग।

लवङ्गकम् [लवङ्ग+कन्] लौंग।

लवण (वि०) [लू+ल्युट्, पृषो० णत्वम्] 1. क्षारीय, सलोना, नमकीन 2. प्रिय, मनोहर, —णः 1. खारी स्वाद 2. नमकीन पानी का समुद्र 3. एक राक्षस का नाम, मधुका पुत्र, यह शत्रुघ्न के द्वारा मारा गया था—रघु० १५।२, ५,१६, २६ 4. एक नरक का नाम,—णम् 1. नमक 2. समुद्री नमक, लूण 3. कृत्रिम नमक। सम०—अन्तकः शत्रुघ्न का विशेषण,—अब्धिः खारी समुद्र, °जम् समुद्रीनमक,—अम्बुराशिः समुद्र,—आमाति वेला लवणाम्बुराशेः—रघु० १३।१५, विक्रम० १।१५, —अम्भस् (पुं०) समुद्र—रघु० १२।७०, १७।५४, (नपुं०) नमकीन पानी, —आकरः 1. नमक की खान 2. नमकीन जलाशय अर्थात् समुद्र 3. (आलं०) लावण्य की खान —आलयः समुद्र, —उत्तमम् 1. सेंधा नमक 2. यवक्षार, —उदः 1. समुद्र 2. नमकीन पानी का समुद्र,—उदकः, —उदधिः—जलः समुद्र,—क्षारम् एक प्रकार का नमक,—मेहः एक प्रकार का मूत्ररोग,—समुद्रः नमकीन समुद्र, सागर।

लवणा [लवण+टाप्] कान्ति, सौन्दर्य।

लवणिमन् (पुं०) [लवण+इमनिच्] 1. नमकीनपना लावण्य 2. सौन्दर्य, मनोहरता, चारुता।

लवनम् [लू भावे कर्मणि च ल्युट्] 1. लुनाई, लावनी, (पके अनाज की) कटाई 2. काटने का उपकरण, दरांती, हँसिया।

लवली [लव+ला+क+ङीप्] एक प्रकार की लता, —मया लब्धः पाणिर्ललितलवलीकन्दलनिभः—उत्तर० ३।४०।

लवित्रम् [लूयतेऽनेन+लू+इत्र] काटने का उपकरण, दरांती, हँसिया।

लश् (चुरा० उभ० लशयति—ते) किसी कला का अभ्यास करना, तु० 'लस्'।

लशु (शू) नः,—नम् [अशेः उनन्, लशश्च] लहसुन, —निखिलरसायनमहितो गन्धेनोग्रेण लशुन इव—रस० (=भामि० १।८१), यशः—सौरभ्यलशुनः—भामि० १।९३।

लष् (भ्वा० दिवा० पर० लषति, लष्यति, लषित) चाहना, इच्छा करना, लालायित होना, उत्सुक होना (प्रायः 'अभि' उपसर्ग के साथ), अभि—, चाहना, इच्छा करना, लालायित होना—मानुषानभिलष्यन्ति—भट्टि० ४।२२, तेन दत्तमभिलेषुरङ्गनाः—रघु० १९।१२।

लषित (भू० क० कृ०) [लष्+क्त] चाहा हुआ, वाञ्छित।

लष्वः [लष्+वन्] नाटक का पात्र, अभिनेता, नट, नर्तक।

लस् (भ्वा० पर० लसति, लसित) 1. चमकना, दमकना, जगमगाना,—मुक्ताहारेण लसता हसतीव स्तनद्वयम्—काव्य० १०, करवाणि चरणद्वयं सरसलसदलक्तकरागं—गीत० १०, अमरु १६, नै० २२।५३ 2. प्रकट होना, उगना, प्रकाश में आना 3. आलिंगन करना 4. खेलना, किलोल करना, उछल-कूद करना, नाचना प्रेर० (लासयति—ते) 1. चमकना, शोभा बढ़ाना, अलंकृत करना 2. नचाना 3. कला का अभ्यास करना, उद्—, 1. क्रीडा करना, खेलना, लहराना, फड़फड़ाना शि० ५।४७ 2. चमकना, जगमगाना, देदीप्यमान होना—उल्लसत्काञ्चनकुण्डलाग्रम्—शि० ३।५, ३३, ५।१५, २०।५६ 3. उदित होना, उगना शि० ४।५८, ६।११, मा० ९।३८ 4. फूंक मारना, खुलना, विस्तीर्ण होना, (प्रेर०) रोशनी करना, उज्ज्वल करना, परि—, चमकना, सुन्दर लगना, वि—, 1. चमकना, जगमगाना, देदीप्यमान होना,—वियति च विललास तद्वदिन्दुर्विलसति चन्द्रमसो न यद्वदन्यः—भट्टि० १०।६८, मेघ० ४७, रघु० १३।७६ 2. दिखाई देना, उदय होना, प्रकट होना—प्रेम विलसति महत्तदहो—शि० १५।१४, ९। ८७ 3. क्रीडा करना, मनोविनोद करना, खेलना, किलोल करना,—कापि चपला मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा—गीत० ७, हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे—गीत० १, 4. ध्वनि करना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना।

लसा [लसति-लस्+अच्+टाप्] 1. ज़ाफ़रान, केसर 2. हल्दी।

लसिका [लस्+अच्+कन्+टाप् इत्वम्] थूक लार।

लसित (भू० क० कृ०) [लस्+क्त] खेला, कीडा की, दिखाई दिया, प्रकट हुआ, इधर उधर उछल कूद करने वाला, दे० 'लस्'।

लसीका [लस्+ङीष्+कन्+टाप्] 1. थूक 2. पीप, मवाद 3. ईख का रस 4. टीके का रस।

लस्ज् (भ्वा० आ० लज्जते, लज्जित) 1. शर्मिन्दा होना, लज्जा अनुभव करना (बहुधा करण० या तुमुन्नंत के साथ)—स्त्रीजनं प्रहरन्कथं न लज्जसे—रत्न० २, भट्टि० १५।३३ 2. शर्माना, लजाना प्रेर० (लज्जयति—ते) लज्जित करना—रघु० १९।१४, वि—,शर्मीला, या विनीत होना, संकोच करना—यत्रांशुकाक्षेपविलज्जितानां—कु० १।१४, रघु० १४।२७।

लस्त (वि० [लस्+क्त] 1. आलिङ्गित, भुजपाशबद्ध 2. दक्ष, कुशल।

लस्तकः [लस्त+कन्] धनुष का मध्यभाग, वह भाग जहाँ हाथ से पकड़ा जाता है।

लस्तकिन् (पुं०) [लस्तक+इनि] धनुष।

लहरिः,—री (स्त्री०) [लेन इन्द्रेण इव ह्रियते ऊर्ध्वगमनाय ल+हृ+इन्, पक्षे ङीप्] लहर, तरंग, बड़ी

लहर, झाल—करेणोत्क्षिप्तास्ते जननि विजयन्तां लहरयः—गंगा० ४०, इमां पीयूषलहरीं जगन्नाथेन निर्मिताम्—५३, इसी प्रकार आनन्द°, तरुणा°, सुधा° आदि ।

ला (अदा० पर० लाति) लेना, प्राप्त करना, ग्रहण करना संभालना—ललुः खड्गान्—भट्टि० १४।९२ १५।५३ ।

लाकुटिक (वि०) (स्त्री०—की) [लकुटः प्रहरणमस्य ठक्] लाठी या सोटे से सुसज्जित,—कः सन्तरी, पहरेदार पंच० ४ ।

लाक्षकी (स्त्री०) सीता का नाम ।

लाक्षणिक (वि०) (स्त्री०—की) [लक्षणया बोधयति ठक्] 1. वह जो चिह्न या निशानों से परिचित हो 2. विशिष्ट, संकेतक 3. गौण अर्थ रखने वाला, गौण अर्थ में प्रयुक्त (शब्द आदि—लक्षक जो वाच्य और व्यंजक से भिन्न हो)—स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा—काव्य० २ 4. गौण, निकृष्ट 5. पारिभाषिक,—कः पारिभाषिक शब्द ।

लाक्षण्य (वि०) [लक्षणं वेत्ति—ष्यञ्] 1. चिह्न संबंधी, संकेतद्योतक 2. लक्षणों का ज्ञाता, लक्षण या संकेतों की व्याख्या करने के योग्य ।

लाक्षा [लक्ष्यतेऽनया—लक्ष्+अच्, पृषो० वृद्धिः] एक प्रकार का लाल रंग, महावर, लाख (प्राचीनकाल में यह स्त्रियों की एक प्रसाधन सामग्री थी, वे इससे अपने पैर के तलवे तथा ओष्ठ रंगती थी, तु० 'अलक्तक'। कहते हैं कि वीरबहूटी नामक कीड़े से अथवा किसी विशेष वृक्ष की राल से यह रंग तैयार किया जाता था)—निष्ठ्यूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित् (तरुणा)—श० ४।५, ऋतु० ६।१३, कि० ५।२३ 2. 'वीरबहूटी' जिससे यह रंग बनता है। सम०—तरुः—वृक्षः एक वृक्ष का नाम, पलास, ढाक —प्रसादः,—प्रसाधनः लाल लोध्रवृक्ष,—रक्त (वि०) लाख से रंगा हुआ ।

लाक्षिक (वि०) (स्त्री०—की) [लाक्षा+ठक्] 1. लाख से संबंध रखने वाला, लाख से बना हुआ या रंगा हुआ 2. एक लाख (संख्या) से संबद्ध ।

लाख् (भ्वा० पर० लाखति) 1. सूख जाना, नीरस होना 2. अलंकृत करना 3. पर्याप्त होना, सक्षम होना 4. प्रदान करना 5. रोकना ।

लागुडिक (वि०) [लगुड+ठक्] दे० 'लाकुटिक'।

लाघ् (भ्वा० आ० लाघते) बराबर होना, पर्याप्त होना, सक्षम होना ।

लाघवम् [लघोर्भावः अण्] 1. अल्पता, क्षुद्रता 2. लघुता, हलकापन 3. अविचार, निष्फलता 4. नगण्यता 5. अनादर, घृणा, अपमान, अप्रतिष्ठा—सेवां लाघवकारिणीं कृतधियः स्थाने श्ववृत्तिं विदुः—मुद्रा० ३।१४, भग० २।३५ 6. फुर्ती, चुस्ती, वेग 7. क्रियाशीलता, दक्षता, तत्परता—हस्तलाघवम् 8. सर्वतोमुखी प्रतिभा —बुद्धिलाघवम् 9. संक्षेप, (अव्यक्ति की संक्षिप्तता) 10. (कविता में) मात्रा की कमी ।

लाङ्गलम् [लङ्ग्+कलच्, पृषो० वृद्धिः] 1. हल 2. हल की शकल का शहतीर 3. ताड़ का वृक्ष 4. शिश्न, लिंग, 5. एक प्रकार का फूल । सम०—ग्रहः हाली, किसान, —दण्डः हल का लट्ठा, हलस,—ध्वजः बलराम का नामान्तर,—पद्धतिः (स्त्री०) खूड, हल से बनी रेखा, सीता,—फालः हलकी फाली ।

लाङ्गलिन् (पुं०) [लाङ्गल+इनि] 1. बलराम का नाम —बन्धुप्रीत्या समरविमुखो लाङ्गली याः सिषेवे—मेघ० ४९ 2. नारियल का पेड़ 3. साँप ।

लाङ्गली [लाङ्गल+अच्+ङीप्] नारियल का पेड़ ।

लाङ्गलीषा [लाङ्गल+ईषा] हलस, हल का लट्ठा ।

लाङ्गुलम् [लङ्ग्+उलच्; बा० वृद्धिः] 1. पूँछ 2. शिश्न, लिंग ।

लाङ्गूलम् [लङ्ग्+ऊलच् पृषो०] 1. पूंछ—लाङ्गूलचालनमधश्चरणावपातम्......श्वा पिंडदस्य कुरुते—भर्तृ० २।३१, 'कुत्ता पूंछ हिलाता है' 2. शिश्न, लिंग ।

लाङ्गूलिन् (पुं०) [लाङ्गूल+इनि] बन्दर, लंगूर ।

लाज्, लाञ्ज् (भ्वा० पर० लाजति, लाञ्जति) 1. कलंक लगाना, निन्दा करना 2. भूनना, तलना ।

लाजः [लाज+अच्] गीला धान,—जाः (ब० व०) भुना हुआ, या तला हुआ धान (स्त्री० भी)—(तं) अवाकिरन्बाललताः प्रसूनैराचारलाजैरिव पौरकन्याः —रघु० २।१०, ४।२७, ७।२५, कु० ७।६९, ८० ।

लाञ्छ् (भ्वा० पर० लांछति) 1. भेद करना, चिह्नित करना, विशिष्ट बनना 2. सजाना, अलंकृत करना ।

लाञ्छनम् [लाञ्छ् कर्मणि ल्युट्] 1. चिह्न, निशान, निशानी, विशिष्टताद्योतक चिह्न—नवाम्बुदानीकमुहूर्तलाञ्छने (धनुषि)—रघु० ३।५३, प्रायः समास के अन्त में 'चिह्नित' 'विशिष्टीकृत' अर्थ बतलाने के लिए—जातेऽथ देवस्य तया विवाहमहोत्सवे साहसलाञ्छनस्य विक्रमांक० १०।२, रघु० ६।१८, १६।८४, इसी प्रकार 'श्रीकण्ठपदलाञ्छनः' मा० १, 'श्रीकण्ठ' विशेषण को धारण करते हुए 2. नाम, अभिधान 3. दाग, धब्बा, अपकीर्ति का चिह्न 4. चन्द्रमा का कलंक (काला धब्बा) कु० ७।३५ 5. सीमान्त ।

लाञ्छित (वि०) [लाञ्छ्+क्त] 1. चिह्नित, अन्तरयुक्त, विशिष्ट 2. नामी, नामक 3. विभूषित 4. सुसज्जित ।

लाट (पुं०, द० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम—एष च (लाटानुप्रास): प्रायेण लाटजनप्रियत्वाल्लाटानुप्रासः—सा० द० १०,—टः 1. लाट देश का राजा 2. पुराने जीर्णशीर्ण वस्त्र 3. कपड़े

4. बच्चों जैसी भाषा। सम०—अनुप्रासः अनुप्रास अलंकार के पाँच भेदों में से एक, शब्द या शब्दों की पुनरावृत्ति उसी अर्थ में परन्तु भिन्न प्रयोग के साथ, मम्मट ने उसका सोदाहरण निरूपण किया है: —शब्दस्तु लाटानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रतः —उदा० वदनं वरवर्णिन्यास्तस्याः, सत्यं सुधाकरः सुधाकरः क्व नु पुनः कलङ्कविकलो भवेत्—या—यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य, यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य—काव्य० ९।

लाटक (वि०) (स्त्री०—टिका) [लाट्+वुन्] लाट देश से संबद्ध।

लाटिका, लाटी [लट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, लाट्+अच् +ङीष्] रचना, की एक विशेषशैली—दे० सा० द० ६२९ 2. एक प्राकृतिक बोली का नाम—दे० काव्या० १।३५।

लाड् (चुरा० उभ० लाडयति —ते) 1. लाडप्यार करना, पुचकारना, दुलारना 2. कलङ्कित करना, निन्दा करना 3. फेंकना, उछालना—तु० 'लड्'।

लाञ्छनी (स्त्री०) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी।

लात (भू० क० कृ०) [ला+क्त] लिया, ग्रहण किया।

लापः [लप्+घञ्] 1. बोलना, बातें करना 2. किलकिलाना, तुतला कर बोलना।

लावः, लावकः [लू+घञ्, पृषो०] एक प्रकार का लवा पक्षी, बटेर।

लाबुः (बूः) (पुं०) एक प्रकार की लौकी, तुमड़ी।

लाबुकी (स्त्री०) एक प्रकार की सारंगी।

लाभः [लभ्+घञ्] 1. उपलब्धि, प्राप्ति, अवाप्ति, अधिग्रहण—शरीरत्यागमात्रेण शुद्धिलाभममन्यत—रघु० १२।१०, स्त्रीरत्नलाभम्—७।३४, ११।९२, क्षणमप्यवतिष्ठते श्वसन् यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ—रघु० ८।८७ 2. नफ़ा, मुनाफ़ा फायदा—सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ—भग० २।३८, याज्ञ० २।२५९ 3. सुखोपभोग 4. लूट का माल, विजित प्रदेश 5. प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी, संबोध। सम०—कर,—कृत् (वि०) लाभकारी, फायदेमंद,—लिप्सा लाभ की इच्छा, लोलुपता, लालच।

लाभकः [लाभ+कन्] फ़ायदा, मुनाफ़ा।

लामज्जकम् [ला+क्विप्, ला आदीयमाना मज्जा सारो यस्य ब० स०, कप्] एक सुगंधयुक्त घास विशेष की जड़, खस, वीरणमूल।

लाम्पटयम् [लम्पट+ष्यञ्] लम्पटता, कामुकता, भोगासक्ति।

लालनम् [लल्+ल्युट्] 1. दुलारना, लाड प्यार करना, पुचकारना—सुतलालनम्—आदि 2. तुष्ट करना, आवश्यकता से अधिक स्नेह करना, आत्मरंजन, अत्यधिक लाडप्यार—लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः दे० लल्।

लालस (वि०) [लस्+यङ्, लुक् द्वित्वम्, अच्] 1. अत्यंत लालायित, बहुत इच्छुक, आतुर—प्रणामलालसाः का० १४, ईशानसंदर्शनलालसानां—कु० ७।५६, शि० ४।६ 2. आनन्द लेने वाला, भक्त, अनुरागी, लीन—विलासलालसम्—गीत० १, शोक°, मृगया° आदि।

लालसा [लस् स्पृहायां यङ् लुक् भावे अ] 1. प्रबल इच्छा उत्कण्ठा, बड़ी अभिलाषा, उत्सुकता 2. याचना, निवेदन, अभ्यर्थना 3. खेद, शोक 4. दोहद, गर्भिणी स्त्री की इच्छा।

लालसीकम् (नपुं०) चटनी।

लाला [लल्+णिच्+अच्+टाप्] लार, थूक भर्तृ० २।९। सम०—स्रवः मक्कड़,—स्रावः 1. लार बहाना 2. मक्कड़।

लालाटिक (वि०) (स्त्री०—की) [ललाटं प्रभोर्भालं पश्यति ठञ्] 1. मस्तक पर स्थित या मस्तकसंबंधी 2. भाग्य से मिलना या भाग्य पर निर्भर रहने वाला —प्राप्तिस्तु लालाटिकी—उद्भट 3. निकम्मा, नीच, कमीना, —कः 1. सावधान सेवक (शा० जो अपने स्वामी की मुखमुद्रा से समझ लेता है कि अब क्या क्या करना आवश्यक है) 2. निठल्ला, लापरवाह, निरर्थक व्यक्ति 3. एक प्रकार का आलिंगन।

लालाटी [ललाट+अण्+ङीप्] मस्तक, माथा।

लालिकः [लाला+ठञ्] भैंसा।

लालित (भू० क० कृ०) [लल्+णिच्+क्त] 1. दुलार किया गया, लाडप्यार किया गया, लालन किया गया, अत्यंत स्नेह किया गया 2. सत्पथ से डिगाया गया 3. प्रेम किया गया, अभिलषित,—तम् आनन्द, प्रेम, हर्ष।

लालितकः [लालित+कन्] लाडला, दुलारा, प्रिय, स्नेहभाजन।

लालित्यम् [ललित+ष्यञ्] 1. प्रियता, लावण्य, सौन्दर्य, आकर्षण, माधुर्य, दण्डिनः पदलालित्यम्—उद्भट 2. प्रीति विषयक हाव भाव।

लालिन् (पुं०) [लल्+णिच्+णिनि] बहकानेवाला, फुसलाने वाला।

लालिनी [लालिन्+ङीप्] स्वेच्छाचारिणी स्त्री।

लालुका (स्त्री०) एक प्रकार की माला, हार।

लाव (वि०) (स्त्री०-वी) [लू कर्तरि घञ्] 1. काटने वाला, लुनाई करने वाला, उखाड़नेवाला—कुशसूचिलावम्—रघु० १३।४३ 2. उत्पाटन करने वाला, एकत्र करने वाला 3. काट कर गिराने वाला, मारने वाला, नष्ट करने वाला—भट्टि० ६।८७,—वः 1. काटना 2. लवा नामक पक्षी।

लावकः [लू+ण्वुल्] 1. काटने वाला, खंड-खंड करने वाला 2. लावनी करने वाला, एकत्र करने वाला 3. लवा, बटेर।

लावण (वि०) (स्त्री०-णी) [लवणं संस्कृतम् अण्] 1. नमकीन 2. लवण से युक्त, लवण द्वारा संस्कृत।

लावणिक (वि०) (स्त्री०-की) [लवणे संस्कृतं ठण्] 1. नमकीन, नमक से प्रसाधित 2. नमक का व्यापारी 3. प्रिय, सुन्दर, लावण्यमय—शि० १०।३८, (यहाँ इसका अर्थ 'नमक का व्यापारी' भी है), कः नमक का व्यापारी,—कम् लवण-पात्र, नमक का बर्तन।

लावण्यम् [लवण+ष्यञ्] 1. नमकीनपना 2. सौन्दर्य सलोनापन मनोहरता—तथापि तस्या लावण्यं रेखया किंचिदन्वितम्—श० ६।१३, कु० ७।१८, शब्द० में 'लावण्य' की परिभाषा—मुक्ताफलेषु छायायास्तरलत्वमिवान्तरा प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते। सम० अर्जितम् विवाहिता स्त्री की निजी सम्पत्ति जो विवाह के अवसर पर उसे अपने पिता या सास से प्राप्त हुई हो।

लावण्यमय, लावण्यवत् (वि०) [लावण्य+मयट्, मतुप् वा] प्रिय, मनोहर।

लावाणकः [लू+आनकः] मगध के निकट एक ज़िले का नाम।

लाविकः [लाव+ठक्] भैंसा।

लाषुक (वि) (स्त्री०-का,-की) [लष्+उकञ्] लोलुप, लोभी लालची।

लासः [लस्+घञ्] 1. कूदना, खेलना, उछलना, नाचना 2. प्रेमालिंगन, केलि क्रीडा 3. स्त्रियों का नाच, रासलीला 4. रसा, झोल।

लासक (वि०) (स्त्री०-सिका) [लस्+ण्वुल्] 1. खेलने वाला, किलोल करने वाला, विहार करने वाला 2. इधर उधर घूमने वाला, कः 1. नर्तक 2. मोर 3. आलिंगन 4. शिव का नामान्तर, कम् चौबारा, बुर्ज।

लासकी [लासक+ङीप्] नर्तकी।

लासिका [लस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. नर्तकी 2. वेश्या, स्वेच्छाचारिणी या व्यभिचारिणी स्त्री।

लास्यम् [लस्+ण्यत्] 1. नाचना, नृत्य,—आस्ये धास्यति कस्य लास्यमधुना...वाचां विपाको मम-भामि० ४।४२, रघु० १६।१४ 2. गाने बजाने के साथ नाच 3. वह नृत्य जिसमें प्रेम की भावनाएँ विभिन्न हाव भाव तथा अंगविन्यासों द्वारा प्रकट की जाती हैं, स्यः नट, नर्तक, अभिनेता, स्या नर्तकी।

लिकुचः [लक्+उच, पृषो० इत्वम्] दे० 'लकुच'।

लिक्षा [रिष्+स किन्] 1. लीक, जूओं के अंडे 2. अत्यन्त सूक्ष्म माप (जो चार या आठ त्रसरेणु के बराबर मानी जाती है)—जालान्तरगते भानौ यच्चाणु दृश्यते रजः, तैश्चतुर्भिर्भवेल्लिक्षा, या, त्रसरेणवोऽष्टौ विज्ञेयां लिक्षैका परिमाणतः—मनु० ८।१३३, दे० याज्ञ० १।३६२ भी।

लिक्षिका [लिक्षा+कन्+टाप्, इत्वम्] लीक।

लिख (तुदा० पर० लिखति, लिखित) 1. लिखना, लिख रखना, अंतरंकण करना, रेखांकन करना, उत्कीर्ण करना,—अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख - उद्भट, ताराक्षरैर्यामसिते कठिन्या निशाऽलिखद् व्योम्नि तमः प्रशस्तिम्—नै० २२।५४, याज्ञ० २।८७, श० ७।५ 2. रेखाचित्र बनाना, रेखा खींचना, आलेखन, चित्रित करना, रङ्ग भरना—मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनिकरे—गीत० ७, मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती—मेघ० ८५, ८०, कु० ६।४८, स्मितवा पाणौ खड्गलेखां लिलेख—काव्य० १० 3. खुरचना, रगड़ना, घिसना, फाड़ देना—न किंचिदूचे चरणेन केवलं लिलेख बाष्पाकुललोचना भुवम् कि० ८।१४, मूर्ध्ना दिवमिवालेखीत्—भट्टि० १५।२२ 4. (शल्यक्रिया) करना, खाल काटना 5. स्पर्श करना, खरोंच पैदा करना 6. (पक्षी की भाँति) चोंचें मारना 7. चिकना करना 8. स्त्री के साथ सहवास करना, आ–, 1. लिखना, चित्रित करना, रेखाएँ खींचना— मा० १।३१ 2. रङ्ग भरना, चित्र बनाना—आलिखित इव सर्वतो रङ्गः—श० १, त्वामालिख्य प्रणयकुपिताम्—मेघ० १०५, रघु० १९।१९ 3. खुरचना, छीलना, उद्–, 1. खुरचना, छीलना, फाड़ना, खोंचा लगाना शि० ५।२०, मनु० १।२३ 2. पीस डालना, रोगन करना—त्वष्टा विवस्वन्तमिवोल्लिलेख,—कि० १७।४८, रघु० ६।३२, श० ६।६ 3. रङ्ग भरना, लिखना, चित्रित करना—कु० ५।५८ 4. खोदना, काटकर बनाना, प्रति–,उत्तर देना, जवाब देना, बदले में लिखना, वि–,लिखना, अन्तरंकण करना 2. रेखांकन करना, रङ्ग भरना, चित्रित करना, चित्र बनाना लिलिखति रहसि कुरङ्गमदेन भवन्तमसमशरभूतम्—गीत० ४ 3. खुरचना, छीलना, फाड़ना—मन्दं शब्दायमानो विलिखति शयनादुत्थितःक्ष्मां खुरेण—काव्य० १०, व्यलिखच्चञ्चुपुटेन पक्षती—नै० २।२, पादेन हैमं विलिलेख पीठम्—रघु० ६।१५, कु० २।२३ 4. रोपना, जमाना—हि० ४।७२ पाठान्तर, सम्–,खुरचना, छीलना।

लिखनम् [लिख्+ल्युट्] 1. लिखना, अन्तरंकण 2. रेखांकन रङ्ग भरना 3. खुरचना 4. लिखित दस्तावेज़, लेख या हस्तलेख।

लिखित (भू० क० कृ०) [लिख्+क्त] लिखा हुआ, रङ्ग भरा हुआ, खुरचा हुआ आदि दे० लिख्, तः विधि या धर्मशास्त्र के एक प्रणेता का नाम ('शंख के साथ

इस नाम का उल्लेख मिलता है),—तम् 1. लेख, दस्तावेज 2. कोई पुस्तक या रचना।

लिगुः [लिग्+कु] 1. हरिण 2. मूर्ख, बुद्धू,– नपुं॰ हृदय।

लिङ्ख् (भ्वा॰ पर॰ लिङ्खति) जाना, हिलना-जुलना।

लिङ्ग् i (भ्वा॰ पर॰ लिङ्गति, लिङ्गित) जाना, हिलना-जुलना, आ –,आलिङ्गन करना, परिरंभण करना। ii (चुरा॰ उभ॰ लिङ्गयति-ते) रङ्ग भरना, चित्रित करना 2. किसी संज्ञाशब्द की उसके लिङ्ग के अनुसार रूपरचना करना।

लिङ्गम् [लिङ्ग्+अच्] 1.निशान, चिह्न, निशानी, प्ररूप, बिल्ला, प्रतीक, विभेदक चिह्न, लक्षण—यतिपार्थिवलिङ्गधारिणौ—रघु॰ ८।१६ मुनिर्दोहदलिङ्गदर्शी १४।७१, मनु॰ १।३०, ८।२५, २५२ 2. अवास्तविक या मिथ्या चिह्न, वेश, छद्मवेश, धोखे में डालने वाला बिल्ला—लिङ्गैर्मुदः संवृतविक्रियास्ते – रघु॰ ७।३०, क्षपणकलिङ्गधारी मुद्रा॰ १, न लिङ्गं धर्मकारणम् —हि॰ ४।८५, दे॰ नी॰ लिङ्गिन् 3. लक्षण, रोग के चिह्न 4. प्रमाण के साधन, प्रमाण, सबूत साक्ष्य 5. (तर्क॰ में) किसी प्रतिज्ञा का विषय 6. लिङ्गचिह्न 7. योनि —गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गम् न च वयः —उत्तर॰ ४।११ 8 पुरुष की जननेन्द्रिय, शिश्न 9. (व्या॰ में) स्त्री या पुरुषवाची शब्द पहचानने का चिह्न, लिङ्ग 10. शिवलिङ्ग 11. देवमूर्ति, प्रतिमा 12. एक प्रकार का संबंध या अभिसूचक (जैसे कि संयोग, वियोग और साहचर्य आदि) जो किसी शब्द के किसी विशेष संदर्भ में अर्थ निश्चित करने का काम देता है – उदा॰ कुपितो मकरध्वजः में कुपित शब्द मकरध्वज शब्द के अर्थ का 'काम' के अर्थ में बंधेज कर देता है – काव्य॰ २, तथा तत्स्थानीय भाष्य 13. (वेदांत॰ में) सूक्ष्म शरीर, दृश्यमान स्थूल शरीर का अविनश्वर मूल शरीर, तु॰ पंचकोष। सम॰ –अग्रम् लिङ्ग की मणि, सुपारी,–अनुशासनम् व्याकरण विषयक लिङ्ग ज्ञान, वे नियम जिनसे शब्द के लिङ्गों का ज्ञान मिलता है, — अर्चनम् शिव की लिङ्ग के रूप में पूजा,—देहः–शरीरम् सूक्ष्म शरीर—दे॰ लिङ्ग (१३) ऊपर,—धारिन् (वि॰) बिल्लाधारी, – नाशः 1. विशिष्ट चिह्नों का लोप 2. शिश्न का न रहना 3. दृष्टिशक्ति का अभाव, एक प्रकार का आँखों का रोग, परामर्शः (तर्क॰ में) विचिह्न को ढूंढना या विचारना (उदा॰ 'अग्नि' का सूचक चिह्न 'धूआँ' है), —पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण, – प्रतिष्ठा 'लिङ्ग' अर्थात् शिवजी की पिण्डी की स्थापना, वर्धन (वि॰) पुरुष की जननेन्द्रिय में उत्तेजना पैदा करने वाला,–विपर्ययः लिङ्गपरिवर्तन,–वृत्तिः (वि॰) पाखंड से भरा हुआ वृत्ति धर्म के कार्यों में पाखण्ड करने वाला,—वेदी वह आधार जिस पर शिवलिङ्ग स्थापित किया जाता है।

लिङ्गकः [लिङ्ग+कै+क] कपित्थ वृक्ष, कैंथ का पेड़।

लिङ्गनम् [लिङ्ग्+ल्युट्] आलिङ्गन करना।

लिङ्गिन् (वि॰) [लिङ्गमस्त्यस्य इति] 1. चिह्न या निशान रखने वाला 2. विशेषतायुक्त 3. बिल्ला या निशान रखने वाला, दिखाई देने वाला, छद्मवेशी, पाखंडी, झूठे बिल्ले लगाने वाला (समास के अन्त में)– स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः —कि॰ १।१, इसी प्रकार 'लिङ्गिन्' 4. लिङ्ग से युक्त 5. सूक्ष्म शरीरधारी 1. —पुं॰, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण सन्यासी – पंच॰ ४।३९ 2. शिवलिङ्ग की पूजा करने वाला 3. पाखण्डी, बना हुआ भक्त, संन्यासी 4. हाथी 5. (तर्क॰ में) प्रतिज्ञा का विषय।

लिपिः,—पी [लिप्+इक, ङीप् वा] 1. लीपना, पोतना 2. लिखना, लिखावट 3. लिखित अक्षर, वर्ण, वर्णमाला—यवनाल्लिप्याम्—वा॰, लिपेर्यथावद् ग्रहणेन वाङ्मयं नदीमुखेनेव समुद्रमाविशत्—रघु॰ ३।२८, ४६ 4. लिखने की कला 5. (अक्षर, दस्तावेज, या हस्तलेख आदि) लिखना—अयं दरिद्रो भवितेति वैधसीं लिपिं ललाटेऽर्थिजनस्य जाग्रतीम्– नै॰ १।१५, १३८ 6. चित्रकला, रेखांकण। सम॰—करः 1. पलस्तर करने वाला, सफ़ेदी करने वाला, राज 2. लेखक, लिपिक 3. उत्किरक (उभरा हुआ लिखने वाला, नक्काशी करने वाला) ('लिपिकार' भी),—कारः लेखक, लिपिक, – ज्ञ (वि॰) जो लिख सकता है, —न्यासः लिखने या नक़ल करने की कला,—फलकम् लिखने का पट्ट या तख्ता,– शाला वह स्कूल जहाँ लिखना सिखाया जाय,– सज्जा लिखने का सामान या उपकरण।

लिपिका [लिपि+कन्+टाप्] दे॰ 'लिपी'।

लिप्त (भू॰ क॰ कृ॰) [लिप्+क्त] 1. लीपा हुआ, पोता हुआ, साना हुआ, ढका हुआ 2. दाग लगा, बिगड़ा हुआ, दूषित, मलिन 3. विषयुक्त, (बाण आदि) जहर में बुझाया हुआ 4. खाया हुआ 5. जुड़ा हुआ, मिला हुआ।

लिप्तकः [लिप्त+कन्] जहर में बुझा तीर।

लिप्सा [लभ्+सन् भावे अ] 1. प्राप्त करने की इच्छा, भामि॰ १।१२५ 2. अभिलाषा।

लिप्सु (वि॰) [लभ्+सन्+उ] प्राप्त करने का इच्छुक।

लिबिः,—बी (स्त्री॰) [लिप्+इन्, बा॰ पस्य बः] दे॰ 'लिपि'।

लिबिङ्करः [लिबिं करोति कृ+ट, पृषो॰ द्वितीयाया अलुक्] लिपिक, लेखक, लिपिकार।

लिम्प् (तुदा॰ उभ॰ लिम्पति-ते, लिप्त) 1. लीपना, पोतना

सानना—लिम्पतीव तमोऽङ्गानि—मृच्छ० १।०४ 2. ढक देना, बिछा देना—शि० ३।४८ 3. दाग लगाना, दूषित करना, मलिन करना, कलंकित करना, कलुषित करना—यः करोति स लिप्यते—पंच० ४।६४, न मां कर्माणि लिम्पन्ति—भग० ४।१४, १८।१७, मनु० १०।१०६ 4. प्रज्वलित करना, सुलगाना—तस्यालिपत शोकाग्निः स्वान्तं काष्ठमिव ज्वलन्—भट्टि० ६।२२, अनु—,लीपना, पोतना वपुरन्वलिप्त न वधूः—शि०९।५१ १५ 2. ढक देना, फैलाना, घेर लेना—रघु० १०।१०, श० ७।७, अव—,लीपना, पोतना (कर्मवा०) फूल जाना घमंडी बनना, उन्नत होना, आ—, 1. लीपना पोतना —उत्तर० ३।३९, ऋतु० ६।१२ 2. दूषित करना, दाग लगाना, उप—,धब्बा लगाना, मलिन करना, —भग०१३।३२, वि—,लीपना, पोतना, मलना,—कु० ५।७९, भट्टि० ३।२०, १५।६, शि० १६।६२ ।

लिम्पः [लिप्+श, मुम्] लेप, पोतना, मालिश ।

लिम्पट (वि०) [=लम्पट, पृषो०] कामासक्त, विषयी, —टः व्यभिचारी, दुश्चरित्र ।

लिम्पाकः [लिप्+आकन्, पृषो०] 1. नींबू या चकोतरे का वृक्ष 2. गधा,—कम् चकोतरा, नींबू ।

लिश् i (तुदा० पर० लिशति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. चोट पहुँचाना—दे० रिश् ।

ii (दिवा० उभ० लिश्यति—ते) छोटा होना, घटना ।

लिष्ट (भू० क० कृ०) [लिश्+क्त] जो छोटा हो गया हो, घट गया हो या न्यून हो गया हो ।

लिश्वः [लिप्+वन्] अभिनेता, नर्तक ।

लिह् (अदा० उभ० लेढि, लीढे, लीढ, इच्छा० लिलिक्षति —ते) 1. चाटना—कपाले मार्जारः पय इति करांल्लेढि शशिनः—काव्य० १९, भामि० १।१९, कि० ५।३८, शि० १।४० 2. चाट जाना, चखना, घूंट-घूंट से पीना, लप-लप करके पीना—नै० २।९९, १००, अव—, 1. चाटना, लपलप करके पीना, थोड़ा थोड़ा करके चखना—भवव्यालावलीढात्मनः—गंगा० ५०, वेणी० ३।५, भामि० १।१११ 2. चबाना, खाना दर्भैरर्धावलीढैः—श० १।७, मृच्छ० १।९, आ—, 1. चाटना, लपलप करके पीना 2. घायल करना, आघात पहुँचाना—सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रैः—रघु० २।३७ 3. (आँखों से) ग्रहण करना, देखना,—न याम्यामालीढा परमरमणीया तव तनुः - गंगा० ३२, उद्—, चमकाना, घर्षण द्वारा चिकना बनाना, रगड़ना—मणिः शाणोल्लीढः—भर्तृ० २।४४, परि—, सम्—, चाटना—भट्टि० १३।४२ ।

ली i (क्र्या० पर० लयति) पिघलना, विघटित होना ।

ii (क्र्या० पर० लिनाति) 1. जुड़ जाना 2. पिघलना —प्रायः 'वि' उपसर्ग के साथ ।

iii (दिवा० आ० लीयते, लीन) 1. चिपकना, दृढ़ता पूर्वक जमे रहना, जुड़ जाना—मालवि० ३।५ 2. भुजपाश में बांधना, आलिंगन करना 3. लेटना, विश्राम करना, टेक लेना, ठहरना, रहना, दुबकना, छिपना, लुकना—(भृङ्गाङ्गनाः) लीयन्ते मुकुलान्तरेषु शनकैः संजातलज्जा इव—रत्न० १।२६, रघु० ३।९, श० ६।१६, कु० १।१२, ७।२१, भट्टि० १८।१३, कि० ५।२६ 4. विघटित होना, पिघलना 5. चिपचिपा, लसलसा 6. लीन हो जाना, भक्त या अनुरक्त होना,—माधवमनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना—गीत० ४ 7. नष्ट होना लोप होना,—प्रेर० (लापयति—ते) लाययति-ते, लीनयति-ते लालयति-ते) पिघलाना, विघटित करना, तरल बनाना, गलाना ('लापयते' रूप सम्मान या सम्मानित करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है—जटाभिर्लापयते—पूजामधिगच्छति—तु० पा० १।३।७०), अभि—, 1. जुड़ना, चिपकना—रघु० ३।८ 2. ढक लेना, ऊपर फैला देना—पश्चादुच्चैर्भुजतरुवनं मण्डलेनाभिलीनः—मेघ० ३८, आ—,1. बस जाना, छिपना, दुबकना, विक्रम० २।२३, 2. जुड़ना, चिपकना—रघु० ४।५१, नि—, 1. चिपकना, जमे रहना, लेट जाना, आराम करना, बस जाना, उतर पड़ना—निलिल्ये मूर्ध्नि गृध्रोऽस्य—भट्टि० १४।७६, २।५ 2. दुबकना, छिपना, अपने आपको छिपा लेना—गुहास्वन्ये न्यलेषत—भट्टि० १५।३२ निशि रहसि निलीय—गीत० २ 3. अपने आपको छिपा लेना (अपा० के साथ)—मातुर्निलीयते कृष्णः —सिद्धा० 4. मरना, नष्ट होना, प्र—, 1. लीन होना, विघटित होना, गल जाना—आत्मना कृतिना च त्वमात्मन्येव प्रलीयसे—कु० २।१०, रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके—भग० ८।१८, मनु० १।५४ 2. नष्ट होना, लोप होना 3. नाश को प्राप्त होना, नष्ट होना, वि—, 1. जुडना, चिपकना, जमे रहना 2. विश्राम करना, बस जाना, उतर पड़ना—पुरोऽस्य यावन्न भुवि व्यलीयत—शि० १।१२ 3. विगलित होना, पिघल जाना, लीन होना महावीर० ६।६०, ७।१४ 4. लोप होना, ओझल होना 5. नष्ट होना, सम्—, 1. चिपकना, जुड़ना 2. लेट जाना, बस जाना, उतरना 3. दुबकना, छिपना 4. पिघलना ।

लीक्का (स्त्री०) लीख, यूकांड, दे० लिक्षा ।

लीढ (भू० क० कृ०) [लिह्+क्त] चाटा गया, चुसकी ली गई, चखा गया, खाया गया आदि०, दे० 'लिह्' ।

लीन (भू० क० कृ०) [ली+क्त] 1. जुड़ा हुआ, चिपका हुआ, चूसा हुआ 2. दुबकाया हुआ, छिपाया हुआ, प्रच्छन्न 3. विश्राम करता हुआ, टेक लगाये हुए

4. पिघला हुआ, विगलित – मा० ५।१० 5. पूर्णरूप से विलीन, या निगलित, गहरा जुड़ा हुआ—नद्यः सागरे लीना भवन्ति 6. भक्त, छोड़ा हुआ 7. ओझल लुप्त (दे० ली)।

लीला [ली+क्विप् लियं लाति ला+क वा] 1. खेल, क्रीडा, विनोद, दिलबहलावा, आनन्द, मनोरंजन —क्लमं ययौ कन्दुकलीलयापि या कु० ५।१९ (प्रायः समास के प्रथमखण्ड के रूप में प्रयुक्त) लीला कमलं, लीलाशुकः आदि 2. प्रीतिविषयक मनोविनोद, स्वेच्छाचारिता, रतिक्रीडा, केलिकीडा—उत्सृष्टलीलागतिः रघु० ७।७, ४।२२, ५।७०, क्षुभ्यन्ति प्रसभमहो विनाऽपि हेतोर्लीलाभिः किमु सति कारणे रमण्यः —शि० ८।२४, मेघ० ३५, (उज्ज्वलनीलमणि ने इस अर्थ में 'लीला' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है —अप्राप्तबल्लभसमागमनायिकायाः सख्याः पुरोऽत्र निजचित्तविनोदबुद्ध्या । आलापवेशगतिहास्यविलोकनाद्यैः प्राणेश्वरानुकृतिमाकलयन्ति लीलाम् ॥) 3. आसानी से, सुविधा, क्रीडामात्र, बच्चों का खेल —लीलया जघान 'आसानी से मार डाला' 4. दर्शन, आभास, हावभाव, छवि—यः संगति प्राप्तपिनाकिलीलः—रघु० ६।७२, 'पिनाकी की भांति दिखलाई देने वाला' 5. सौन्दर्य, लावण्य, लालित्य —मुहुरवलोकित मण्डनलीला—गीत० ६, रघु० ६।१, १६।७१ 6. बहाना, छद्मवेश, ढोंग, बनावट यथा लीलामनुष्यः, लीलानटः। सम० —अ (आ) गारः, —रम्,—गृहम्,—गेहम्, —वेश्मन् (नपुं०) आनन्दभवन रघु० ८।९५, —अङ्ग (वि०) ललित अंगों वाला,—अब्जम् अम्बुजम्,—अरविन्दम्,—कमलम्, —तामरसम्,—पद्मम् 'कमल-खिलौना' कमल का फूल जो खिलौने की भांति हाथ में लिया हुआ हो - रघु० ६।१३, मेघ० ७५, कु० ६।८४, अवतारः (विष्णु का) पृथ्वी पर मनोरंजन के लिए उतरना, —उद्यानम् 1. प्रमोदवन 2. देववन, इन्द्र का स्वर्ग, —कलहः 'क्रीडामय कलह' तु० प्रणय कलह,—चतुर (वि०) विशुद्ध मनोहर, —मनुष्यः कपटी मनुष्य, छद्मवेशी, —मात्रम् क्रीडामात्र, केवल खेल, बच्चों का खेल, अनायास, —रतिः (स्त्री०) मनोविनोद, क्रीडा, —वापी आनन्दबावडी,—शुकः आनन्द के लिए पाला हुआ तोता।

लीलायितम् [लीला+क्यच्+क्त] खेल, क्रीडा, मनोरंजन, आनन्द।

लीलावत् (वि०) [लीला+मतुप्, मस्य वः] क्रीडामय, खिलाड़ी, —ती 1. मनोहर या लावण्यवती स्त्री 2. शृंगारप्रिय या स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3. दुर्गा का नाम।

लुक् (अव्य०) पाणिनि द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो प्रत्ययों का लोप करने के लिए काम में आता है।

लुञ्च् (भ्वा० पर० लुञ्चति, लुञ्चित) 1. तोड़ना, खींचना, छीलना, काटना 2. फाड़ देना, उखाड़ देना, खींच डालना।

लुञ्चः,—चनम् [लुञ्च्+घञ्, ल्युट् वा] छीलना, उखाड़ना।

लुञ्चित (भू० क० कृ०) [लुञ्च्+क्त] 1. छीला हुआ 2. तोड़ा हुआ, उखाड़ा हुआ, फाड़ा हुआ।

लुट् i (भ्वा० आ० लोटते) 1. मुकाबला करना, पीछे धकेलना, विरोध करना 2. चमकना 3. कष्ट उठाना,।
ii (चुरा० उभ० लोटयति—ते) 1. बोलना 2. चमकना
iii (भ्वा० दिवा० पर० लोटति, लुट्यति) 1. लोटना, जमीन पर लुढ़कना तु० लुठ् 2. संबद्ध होना, 3. अपहरण करना, लूटना, खसोटना (संभवतः 'लुण्ठ्' या 'लुण्ट्')।

लुठ् i (भ्वा० पर० लोठति) प्रहार करना, पछाड़ देना।
ii (भ्वा० आ० लोठते) 1. भूमि पर लोटना, इधर उधर करवटें बदलना, गुड़मुड़ी खाना, लुढ़कना, इधर उधर घूमना—मणिर्लुठति पादेषु काचः शिरसि धार्यते - हि० २।६८, लुठति न सा हिमकरकिरणेन—गीत० ७, हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले—अमरु १००, भट्टि० १४।५४, भामि० २।१७६, प्र—, वि—, लोटना, लुढ़कना, आदि, भट्टि० ५।१०८।

लुठनम् [लुठ्+ल्युट्] लोटना, लुढ़कना, इधर उधर घूमना।

लुठित (भू० क० कृ०) [लुठ्+क्त] लोटा हुआ, लोटता हुआ या जमीन पर लुढ़कता हुआ।

लुड् i (भ्वा० पर० लोडति) हरकत देना, क्षुब्ध करना, बिलोना, आलोडित करना—प्रेर० (लोडयति—ते) हरकत करना, बिलोना, विलोडित करना (इसी अर्थ में 'वि' उपसर्ग के साथ प्रयुक्त)–शि० ११।८, १९।६९।
ii (तुदा० पर० लुडति) 1. जुड़ना, चिपकना 2. ढकना।

लुण्ट् i (भ्वा० पर० लुंटति) 1. जाना 2. चुराना, लूटना, खसोटना 3. लँगड़ा या विकलांग होना 4. आलसी या सुस्त होना।
ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० लुण्टयति—ते) 1. लूटना, खसोटना, चुराना 2. अवज्ञा करना, घृणा करना।

लुण्टाक (वि०) (स्त्री०—की) [लुण्ट्+षाकन्] चोरी करने वाला (आलं० से भी) लुटेरा, डाकू—तरुणानां हृदयलुण्टाकी परिप्वक्कमाणां निवारयति काव्य० १०, आः सिनशकुनयः केयं लुण्टाकता -बालरा० ५।

लुण्ठ् (भ्वा० पर० लुण्ठित) 1. जाना 2. हरकत देना, क्षुब्ध करना, गति देना 3. सुस्त होना 4. लँगड़ा होना 5. लूटना, खसोटना 6. मुकाबला करना।

लुण्ठकः [लुण्ठ्+ण्वुल्] लुटेरा, डाकू, चोर।

लुण्ठनम् [लुण्ठ्+ल्युट्] खसोटना, लूटना, चुराना,--यदस्य दैत्या इव लुण्ठनाय काव्यार्थचौराः प्रगुणीभवन्ति —विक्रमांक० १।११।

लुण्ठा [लुण्ठ्+अ+टाप्] 1. लूट, खसोट 2. लुढ़क-पुढ़क।

लुण्ठाकः [लुण्ठ्+षाकन्] 1. लुटेरा 2. कौवा।

लुण्ठिः,—ठी (स्त्री०) [लुण्ठ्+इन्, लुण्ठि+ङीप्] खसोटना, लूटना, डकैती डालना।

लुण्ड् (चुरा० उभ० लुण्डयति—ते) खसोटना, लूटना डकैती डालना।

लुण्डिका [लुण्ड्+इन्+कन्+टाप्] 1. गोल पिंडी, गेंद 2. उचित चाल चलन।

लुण्डी [लुण्डि+ङीष्] उचित या शोभन चालचलन।

लुन्थ् (भ्वा० पर० लुन्थति) 1. प्रहार करना, चोट पहुंचाना, मार डालना 2. भुगतना, पीड़ित होना, कष्ट उठाना।

लुप् i (दिवा० पर० लुप्यति) 1. घबड़ा देना, विस्मित करना 2. विस्मित हो जाना या घबड़ा जाना।

ii (तुदा० उभ० लुम्पति—ते, लुप्त) 1. तोड़ना, भंग करना, काट देना, नष्ट करना, क्षतिग्रस्त करना —अनुभवं वचसा सखि लुम्पसि—नै० ४।१०५ 2. अपहरण करना, वञ्चित करना, ठगना, लूटना 3. छीन लेना, झपट्टा मार लेना 4. लोप करना, दबा देना, ओझल करना—कर्मवा० (लुप्यते) 1. भंग होना, टूट जाना 2. लुप्त होना, नष्ट होना, ओझल या लोप होना, (व्या० में) प्रेर० (लोपयति—ते) 1. तोड़ना, भंग करना, उल्लंघन करना, अपकार करना 2. भूल जाना, उपेक्षा करना, वियुक्त करना —रघु० १२।९, इच्छा० (लुलुप्सति, लुलोपिषति)—यङन्त लोलुप्यते या लोलोप्ति; अव—,प्र—, अपहरण करना, नष्ट करना वि—,1. तोड़ देना, खींच कर भग्न कर देना, काट देना 2. छीन लेना, खसोटना, लूट लेना, उठा कर भाग जाना 3. बिगाड़ना 4. नष्ट करना, बर्बाद करना, ओझल करना—प्रियमत्यन्तविलुप्तदर्शनम्—कु० ४।२, 'सदा के लिए ओझल हो गया' उत्तर० ३।२८ 5. पोंछ देना, मिटा देना।

लुप्त (भू० क० कृ०) [लुप्+क्त] 1. टूटा हुआ, भग्न, क्षतिग्रस्त, नष्ट 2. खोया हुआ, वञ्चित —रघु० १४।५६ 3. लूटा गया, ठगा गया 4. हटाया गया, लोप किया गया, ओझल या लोप हुआ (व्या० में) 5. भूल से रहा हुआ, उपेक्षित 6. व्यवहारातीत, अप्रयुक्त, अप्रचलित —उत्तर ३।३३, दे० लुप्, प्तम् चुराई हुई संपत्ति, लूट का माल। सम० -उपमा खंडित या न्यून पद उपमा अर्थात् वह उपमा जिसमें उपमा के आवश्यक चारों अंगों में से एक, दो, अथवा तीन पद लुप्त हो गये हों—दे० काव्य० १० उपमा के अन्तर्गत,—पद (वि) न्यून पदों से युक्त,—पिंडोदकक्रिया (वि०) श्राद्धकर्म से विरहित,—प्रतिज्ञ (वि०) जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी है, श्रद्धाहीन, विश्वासघाती, प्रतिभ (वि०) तर्कनाशक्ति से हीन।

लुब्ध (भू० क० कृ०) [लुभ्+क्त] 1. लालची, लोभी, लोलुप 2. इच्छुक, लालायित, उत्सुक यथा धनलुब्ध, मांसलुब्ध और गुणलुब्ध आदि में, ब्धः 1. शिकारी 2. स्वेच्छाचारी, लम्पट।

लुब्धकः [लुब्ध+कन्] 1. शिकारी, बहेलिया, - मृगमीनसज्जनानां तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनाम्, लुब्धक धीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति—भर्तृ० २।६१ 2. लोभी या लालची पुरुष 3. स्वेच्छाचारी 4. उत्तरी गोलार्द्ध का एक तेजस्वी तारा।

लुभ् (दिवा० पर० लुभ्यति, लुब्ध) 1. लालच करना, लालायित होना, उत्सुक होना (सम्प्र० या अधि० के साथ) – तथापि रामो लुलुभे मृगाय 2. रिझाना, फुसलाना 3. घबरा जाना, विस्मित होना, भटकना—प्रेर० (लोभयति—ते) 1. ललचाना, लालायित करना, उत्कंठित करना—पुप्लुवे बहु लोभयन् भट्टि० ५।४८ 2. वासना को उत्तेजित करना 3. फुसलाना, बहकाना, प्रलोभन देना, आकृष्ट करना—लोभ्यमाननयनः श्लथांशुकैर्मेखलागुणपदैर्नितम्बिभिः – रघु० १९।२६ 4. अस्तव्यस्त करना, अव्यवस्थित करना, व्याकुल करना, प्र –, ललचना या इच्छुक होना (प्रेर०) रिझाना, आकृष्ट करना, फुसलाना, वि–, अव्यवस्थित या अस्तव्यस्त होना — भट्टि० ९।४०, (प्रेर०) रिझाना फुसलाना, आकृष्ट करना —स्मर यावन्न विलोभ्यसे दिवि — कु० ४।२०, अङ्गनास्तमधिकं व्यलोभयन् (मुखैः)—रघु० १९।१० 2. बहलाना, मनोरंजन करना, रिझाना--क्व दृष्टि विलोभयामि—श० ६।

लुम्ब् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० लुम्बति, लुम्बयति—ते) सताना, तंग करना।

लुम्बिका [लुम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

लुल् (भ्वा० पर० लोलति लुलित) 1. लोटना, इधर-उधर लुढ़कना, इधर उधर घूमना, करवटें बदलना—लुलितदृष्टि मदादिव चस्खले—कि० १८।६, शि० ३।७२, १०।३६ 2. हिलाना, हरकत देना, क्षुब्ध करना, कंपायमान करना, अव्यवस्थित करना 3. दबाना, कुचलना —दे० नी० 'लुलित,' प्रेर० (लोलयति ते) हिलाना, चालित करना शि० ९।५, आ—, जरा छूना मालवि० २।७, वि—, 1. इधर उधर चक्कर काटना 2. हिला देना, कम्पायमान करना 3. अव्यवस्थित करना, अस्तव्यस्त करना, (बालों को) छितराना।

लुलापः, लुलायः [लुल् घञर्थे क, तमाप्नोति अण्] भैंसा, —खुरविघुरघरित्री चित्रकायो लुलायः ।

लुलित (भू० क० कृ०) [लुल्+क्त] 1. हिलाया हुआ, करवट बदला हुआ, इधर उधर लुढ़का हुआ, कम्पायमान, लहराता हुआ—सुरालयप्राप्तिनिमित्तमम्भस्त्रैस्रोतसं नौलुलितं ववन्दे रघु० १६।३४,५९ 2. अशान्त किया हुआ, दुःखित-लुलितमकरन्दो मधुकरैः—वेणी० १।१ 3. अव्यवस्थित, (बाल) छितराये हुए - ऋतु० ४।१४ 4. दबाया हुआ, कुचला हुआ, क्षत्रिग्रस्त - श० ३।२७ 5. दबाने वाला, मर्मस्पर्शी,- अनतिलुलितज्याघातांकं (कनकवलयम्)—श० ३।१४ 6. थका हुआ, झुका हुआ—अलसलुलितमुग्धान्यध्वसंजातखेदात् (अंगकानि) - उत्तर० १। २४, मा० १।१५ ३।६ 7. प्रांजल, सुन्दर - वनं लुलितपल्लवम् भट्टि० ९।५६ ।

लुष् (भ्वा० पर० लोषति) दे० 'लूष्' ।

लुषभः [रुषेः अभच् नित् लुष् च] मदोन्मत्त हाथी ।

लुह् (भ्वा० पर० लोहति) लालच करना, उत्सुक होना, लालायित होना । तु० 'लुभ्' ।

लू (क्या० उभ० लुनाति लुनीते, लून—प्रेर० लवयति — ते, इच्छा० लुलूषति— ते) 1. काटना, कतरना, चुटकी से पकड़ना, वियुक्त करना, विभक्त करना, तोड़ना, लुनाई करना, (फूल) चुनना—शरासनज्यामलुनाद् बिडौजसः—रघु० ३।५९, ७।४५, १२।४३ —पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनम्—शि० १।५१, क्रीडन्ति काकैरिव लूनपक्षैः—पंच० १।१८७, कु० ३।६१, भग० ९।८० 2. काट देना, पूर्णतः नष्ट कर देना, विध्वंस करना—लोकानलावीद्विजितांश्च तस्य–भट्टि० २।५३, आ –, आहिस्ता से उखाड़ना—कु० २।४१, वि –, काटना, छाँटना, उखाड़ देना–उत्तर० ३।५१ ।

लूता [लू+तक्+टाप्] 1. मकड़ी 2. चींटी । सम० - तन्तुः मकड़ी का जाल, मर्कटकः 1. लंगूर 2. एक प्रकार का चमेली का फूल ।

लूतिका [लूता+कन्+टाप्, इत्वम्] मकड़ी ।

लून (भू० क० कृ०) [लू+क्त] 1. काटा गया, छाँटा गया, वियुक्त किया गया, काट दिया गया 2. तोड़ा गया, (फूल आदि) चुने गये 3. नष्ट किया हुआ 4. कर्तन किया गया, कुतरा गया 5. घायल किया गया,—नम् पूंछ ।

लूमम् [लू+मक्] पूंछ । सम० —विषः 'जहरीली पूंछ वाला' वह जानवर जो अपनी पूँछ से डंक मारता है ।

लूष् (भ्वा० पर० लूषति) 1. चोट पहुंचाना, क्षतिग्रस्त करना 2. लूटना, डकैती डालना, चुराना ।

लेखः [लिख्+घञ्] 1. लिखावट, दस्तावेज, (निर्मीममेति नोत्तरमिदं मुद्रा मदीया यतः मुद्रा० ५।१८, निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्त्वा खलु वाचिकम् – शि० २।७०, अनंगलेख--कु० १।७, मन्मथलेख-- श० ३। २६ 2. देव, सुर । सम० अधिकारिन् (पुं०) पत्र लिखने का कार्य भारवाहक, (राजा का) सचिव, —अर्हः एक प्रकार का ताड़ का वृक्ष, -ऋषभः इन्द्र का नामांतर, पत्रम्, पत्रिका 1. पत्र में लिखी कविता, पत्र, लेख या लिखावट 2. लेख्य या पट्टा, दस्तावेज (विधि), संदेशः लिखा हुआ संदेसा,—हारः —हारिन् (पुं०) पत्रवाहक ।

लेखकः [लिख्+ण्वुल्] 1. लिखने वाला, लिपिक, लिपिकार 2. चितेरा । सम० —दोषः,—प्रमादः, लिपिक की भूल-चूक, लिपिकार की त्रुटि ।

लेखन (वि०) (स्त्री०—नी) [लिख्+ल्युट्] लिखने वाला, चितेरा, खुरचने वाला आदि,—नः एक प्रकार का नरकुल जिसके कलम बनते हैं,—नम् 1. लिखना, प्रतिलिपि करना 2. खुरचना, छीलना 3. चराई, स्पर्श करना 4. पतला करना, कृश या दुबला करना 5. ताड़पत्र (लिखने के लिए),—नी 1. क़लम, लिखने के लिए नरकुल, नरकुल का क़लम 2. चम्मच । सम० —साधनम् लिखने की सामग्री या उपकरण ।

लेखनिकः [लेखन+ठन्] पत्रवाहक ।

लेखिनी [लेख्+ल्युट्+ङीप्] 1. कलम 2. चम्मच ।

लेखा [लिख्+अ+टाप्] 1. रेखा, धारी, लकीर-कान्तिर्भ्रुवोरायतलेखयोर्या कु० १।४७, कु० ७।१६, ८।७, कि० १६।२, मेघ० ४४, विद्युल्लेखा, फेनलेखा, मदलेखा आदि 2. लकीर, सीता या खूड, पंक्ति, चौड़ी धारी 3. लिखावट, रेखांकन, आलेखन, चित्रण —पाणिर्लेखाविधिषु नितरां वर्तते किं करोमि मा० ४।३५ 4. दूज का चाँद, चाँद की रेख - लब्धोदया चांद्रमसीव लेखा कु० १।२५, २।३४, कि० ५।४४ 5. आकृति, समानता, छाप, निशान- उपसि सयावकसव्यपादलेखा—कि० ५।४० 6. गोट, किनारी, अंचल, झालर 7. चोटी ।

लेख्य (वि०) [लिख्+ण्यत्] अंकित किये जाने के योग्य, लिखे जाने योग्य, रंग भरे जाने योग्य, खुरचे जाने योग्य,—ख्यम् 1. लिखने की कला 2. लिखना, प्रतिलिपि करना 3. लेख पत्र, दस्तावेज, हस्तलेख 4 शिलालेख 5. चित्रण, रेखांकण 6. चित्रित आकृति । सम० - आरूढ, कृत (वि०) लिख लिया गया, लिख कर रखा गया, - गत (वि०) चित्रित, चित्रचित्रित —चूर्णिका कूची, तूलिका, - पत्रम्, —पत्रकम् 1. पत्र, दस्तावेज 2. ताड़ का पत्ता, प्रसङ्गः दस्तावेज, - स्थानम् लिखने का स्थान ।

लेतः,–तम् (पुं०, नपुं०) आँसू ।

लेप् (भ्वा० आ० लेपते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. पूजा करना ।

लेपः [लिप्+घञ्] 1. लीपना, पोतना, मालिश करना. —याज्ञ० १।१८८ 2. उबटन, मल्हम, अनुलेप 3. पलस्तर करना (सफ़ेदी करना या चूना पोतना) 4. हाथों की पोंछन 3. हाथों में चिपके भोजन का अवशेष) जब कि श्राद्ध में सबसे पहले तीन पुरुषाओं —पितृ, पितामह और प्रपितामह–को श्राद्ध में आहुतियाँ प्रस्तुत करने के पश्चात्; (प्रपितामह के पश्चात्; यह पोंछन तीन पूर्वपुरुषों को प्रस्तुत की जाती है अर्थात् चौथी पांचवीं और छठी पीढ़ी के पितृतुल्य पूर्वपुरुषों को)—लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः 5. धब्बा, दाग, दूषण, कालुष्य 6. नैतिक अपवित्रता, पाप 7. भोजन । सम० करः पलस्तर करने वाला, सफ़ेदी करने वाला, ईंट की चिनाई करने वाला,—भागिन्, - भुज् (पुं०) चौथी, पांचवीं और छठी पीढ़ी के पितृसंबंधी पूर्वपुरुष –मनु० ४।२१६ ।

लेपकः [लिप्+ण्वुल्] पलस्तर करने वाला, राज, सफ़ेदी करने वाला ।

लेपनः [लिप्+ल्युट्] धूप, लोबान,—नम् 1. मालिश करना पोतना, लीपना —याज्ञ० १।१८८ 2. पलस्तर, मल्हम 3. चूना, सफ़ेदी 4. मांस, मोटाई ।

लेप्य (वि०) [लिप्+ण्यत्] लीपे या पोते जाने के योग्य, —प्यम् 1. लीपना. पोतना 2. ढालना, मूर्ति बनाना, आदर्श या प्रतिरूपण बनाना । सम०—कृत् (पुं०) 1. प्रतिमाकार 2. ईंट का रद्दा लगाने वाला,—(स्त्री) वह स्त्री जिसने उबटन का लेप किया तथा तैलादिक से शरीर सुवासित किया हुआ है ।

लेप्यमयी [लेप्य+मयट्+ङीप्] गुड़िया, पुतली ।

लेलायमाना [लेला इवाचरति –क्यच्+शानच्+टाप्] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

लेलिहः [लिह्+यङ्, लुक् द्वित्वादि, ततः अच्] सर्प, सांप ।

लेलिहानः [लिह्+यङ्, लुक्, द्वित्वादि, ततः शानच्] 1. सर्प, सांप 2. शिव का विशेषण ।

लेशः [लिश्+घञ्] 1. थोड़ा सा टुकड़ा, अंश, कण, अणु, अत्यन्त तुच्छ मात्रा, क्लेश) पाठा० स्वेद)—लेशैरभिन्नम् —श० २।४, श्रमवारिलेशैः –कु० ३।३८, इसी प्रकार भक्ति°, गुण° आदि 2. समय की माप (दो कलाओं के बराबर 3. (अलं० में) एक प्रकार का अलंकार जिस में इष्ट का अनिष्ट के रूप में तथा अनिष्ट का इष्ट के रूप में वर्णन विद्यमान होता है, रस० में इसकी परिभाषा —गुणस्यानिष्टसाधनतया दोषत्वेन दोषस्येष्टसाधनतया गुणत्वेन च वर्णनं लेशः; उदाहरणों के लिए दे० तत्स्थानीय (प्रतीत होता है कि मम्मट ने इस अलंकार को 'विशेष' के साथ मिलाया है–दे० काव्य० १०, 'विशेष' के नीचे तथा भाष्य) । सम०–उक्त (वि०) सुझावमात्र, संकेतित, वक्रोक्ति द्वारा सूचित ।

लेश्या (स्त्री०) प्रकाश, रोशनी ।

लेष्टुः [लिष्+तुन्] ढेला, मिट्टी का लौंदा । सम०–भेदनः वह उपकरण जिससे ढेले फोड़े जाते हैं ।

लैसिकः (पुं०) गजारोही, हाथी पर चढ़ने वाला ।

लेहः [लिह्+घञ्] 1. चाटना, आचमन, जैसा कि 'मधुनो लेहः'–भट्टि० ६।८२ में 2. चखना 3. चाट, चटनी 4. भोज्य पदार्थ ।

लेहनम् [लिह्+ल्युट्] चाटना, जिह्वा से आचमन करना ।

लेहिनः [लिह्+इकन्] सुहागा ।

लेह्य (वि०) [लिह्+ण्यत्] चाटे जाने या चाट कर खाये जाने के योग्य, जीभ से लपलप पीने के योग्य,—ह्यम् 1. कोई भी चाटकर खाई जाने वाली वस्तु (जैसे कि कोई भोज्यपदार्थ), चाट 2. भोजन,

लैङ्गम् [लिङ्गस्य इदम्—लिङ्ग+अण्] अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम ।

लैङ्गिक (वि०) (स्त्री० की) [लिङ्ग+ठण्] 1. किसी चिह्न या निशान पर निर्भर या तत्संबंधी 2. अनुमित, —कः प्रतिमाकार, मूर्तिकार ।

लोक् i (भ्वा० आ० लोकते, लोकित) देखना, नज़र डालना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, अव—,देखना, निगाह डालना —नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् –भर्तृ० २।९३, आ–,देखना, निगाह डालना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना—भट्टि० २।२४ ।

ii (चुरा० उभ० या प्रेर० लोकयति– ते, लोकित) 1. देखना, निगाह डालनी, निहारना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2. जानना, जानकार होना 3. चमकना 4. बोलना, अव—, 1. देखना, निहारना, निगाह डालना—परिक्रम्यावलोक्य (नाटकों में) 2. मालूम करना, जानना, निरीक्षण करना—अवलोकयामि कियदवशिष्टं रजन्याः—श० ४ 3. परखना, मनन करना, विमर्श करना—कु० ८।५०, रघु० ८।७४, आ –, 1. देखना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, निहारना, निगाह डालना 2. ख़याल करना, विचार करना, ध्यान देना– तृणमिव जगज्जालमालोकयामः—भर्तृ० ३।६६ 3. जानना, मालूम करना 4. अभिवादन करना, बधाई देना, वि –, 1. देखना, निहारना, निगाह डालना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना – विलोक्य वृद्धोक्षमधिष्ठितं त्वया महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति—कु० ५।७०, रघु० २।११, ६।५९ 2. तलाश करना, ढूंढना ।

लोकः [लोक्यतेऽसौ लोक्+घञ्] 1. दुनिया, संसार, विश्व का एक प्रभाग (स्थूलरूप यदि कहा जाय तो

लोक तीन हैं -स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक; अधिक विस्तृत वर्गीकरण के अनुसार लोक चौदह हैं; सात तो पृथ्वी से आरम्भ करके ऊपर क्रमशः एक दूसरे के ऊपर अर्थात् 'भूर्लोक भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, और सत्य या ब्रह्मलोक, तथा अन्य सात पृथ्वी से नीचे की ओर एक दूसरे के नीचे-अर्थात् अतल, वितल, सतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल) 2. भूलोक, पृथ्वी इहलोके 'इस संसार में' (विप० परत्र) 3. मानव जाति, मनुष्य जाति, मनुष्य— लोकातिग, लोकोत्तर इत्यादि 4. प्रजा, राष्ट्र के व्यक्ति (विप० राजा) स्वसुखनिरभिलाषः खिद्यसे लोकहेतोः -श० ५।७, रघु० ४।८ 5. समुदाय, समूह, समिति आकृष्टलीलान् नरलोकपालान् रघु० ६।१, शशाम तेन क्षितिपाललोकः -७।३ 6. क्षेत्र, इलाका, ज़िला प्रान्त 7. सामान्य जीवन, (संसार का) सामान्य व्यवहार —लोकवत्तु लीलाकैवल्यम् - ब्रह्म० २।१।३३, यथा लोके कस्यचिदाप्तैषणस्य राज्ञः शारी० (इसी ग्रन्थ के और अन्य स्थल) 8. सामान्य लोक प्रचलन (विप० वैदिक प्रयोग या वाग्धारा—वेदोक्ता वैदिकाः शब्दाः सिद्धा लोकाच्च लौकिकाः; प्रियतद्धिता दाक्षिणात्याः; यथा लोके वेदे चेति प्रयोक्तव्ये यथा लौकिकवैदिकेष्विति प्रयुज्जते महा० (और अन्य अनेक स्थानों पर)—अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः—भग० १५।१८ 9. दृष्टि, दर्शन 10. 'सात' या चौदह की संख्या। सम० - **अतिग** (वि०) असाधारण, अतिप्राकृतिक, - **अतिशय** (वि०) संसार के लिए श्रेष्ठ, असाधारण, - **अधिक** (वि०) असाधारण, असामान्य, सर्वं पंडितराजराजितिलकेनाकारि लोकाधिकम् —भामि० ४।४४, कि० २।४७, - **अधिपः** 1. राजा 2. सुर, देव, — **अधिपतिः** संसार का स्वामी, —**अनुरागः** 'मनुष्य जाति से प्रेम' विश्वप्रेम, साधारण हितैषिता, परोपकार, - **अन्तरम्** 'परलोक' दूसरी दुनिया, भावी जीवन रघु० १।६९, ६।४५, लोकान्तरं गम्, --प्राप् मरना, **अपवादः** सब लोगों में बदनामी, सार्वजनिक निन्दा लोकापवादो बलवान्मतो मे रघु० १४।४०, —**अभ्युदयः** लोककल्याण, —**अयनः** नारायण का नामांतर, - **अलोकः** एक काल्पनिक पहाड़ जो इस पृथ्वी को घेरे हुए है और निर्मल जल के उस समुद्र से परे स्थित है जिसने सात महाद्वीपों में से अन्तिम द्वीप को घेर रक्खा है, इस लोकालोक से परे घोर अन्धकार है, और इस ओर प्रकाश है इस प्रकार यह पहाड़ इस दृश्यमान संसार को अन्धकार के प्रदेश से विभक्त करता है—प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोक इवाचलः रघु० १।६८, (आगे की व्याख्या के लिए दे० मा० १०।७९ पर डा० भाण्डारकर का नोट), (**कौ**) दृश्यमान और अदृष्ट लोक, **आचारः** सामान्य प्रचलन, सार्वजनिक या साधारण प्रथा, लोकव्यवहार, **आत्मन्** (पुं०) विश्व की आत्मा, **आदिः** 1. संसार का आरंभ 2. संसार का रचयिता,—**आयत** (वि०) नास्तिकतासंबंधी, अनात्मवाद संबंधी, (—**तः**) भौतिकवादी, नास्तिक, चार्वाक दर्शन का अनुयायी,(**तम्**) भौतिकवाद नास्तिकता, (इसके वर्णन को सर्वदर्शनसंग्रह के प्रथम अध्याय में देखिये),—**आयतिकः** नास्तिक, अनात्मवादी,— **ईशः** 1. राजा (संसार का प्रभु) 2. ब्रह्मा 3. पारा, **उक्तिः** (स्त्री०) 1. कहावत, लोकोक्ति 2. सामान्य चर्चा, लोकमत, **उत्तर** (वि०) असाधारण, असामान्य, अप्रचलित लोकोत्तरा च कृतिः —भामि० १।६९, ७०, उत्तर० २।७, (—**रः**) राजा, **एषणा** स्वर्ग की इच्छा, **कण्टकः** कष्ट देने वाला या दुष्ट पुरुष, मानवजाति का अभिशाप दे० कण्टक, **कथा** सर्वप्रिय कहानी, **कर्तृ**, **कृत्** (पुं०) संसार का रचयिता, **गाथा** परंपरा से लोगों में गाया जाने वाला गान, **चक्षुस्** (नपुं०) सूर्य, **चारित्रम्** लोकव्यवहार, **जननी** लक्ष्मी का विशेषण, **जित्** (पुं०) 1. बुद्ध का विशेषण 2. संसार का विजेता, —**ज्ञ** (वि०) संसार को जानने वाला, **ज्येष्ठः** बुद्ध का विशेषण,—**तत्त्वम्** मनुष्यजाति का ज्ञान,—**तन्त्रम्** जनतंत्र, **तुषारः** कपूर, **त्रयम्**, **त्रयी** सामूहिक रूप से तीनों लोक, उत्खातलोकत्रयकण्टकेऽपि रघु० १४।७३, **द्वारम्** स्वर्ग का दरवाजा,—**धातुः** संसार का विशेष प्रकार का विभाजन, **धातृ** (पुं०) शिव का विशेषण, **नाथः** 1. ब्रह्मा 2. विष्णु 3. शिव 4. राजा, प्रभु 5. बुद्ध, **नेतृ** (पुं०) शिव का विशेषण, —**पः**, **पालः** दिक्पाल ललिताभिनयं तमद्य भर्ता मरुतां द्रष्टुमनाः सलोकपालः विक्रम० २।१८, रघु० २।७५, २।८९, १७।७८, (लोक पाल गिनती में आठ हैं —दे० अष्ट दिक्पाल) 2. राजा, प्रभु,—**पक्तिः** (स्त्री०) मनुष्यजाति का आदर, साधारण आदरणीयता, **पतिः** 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. राजा, प्रभु,—**पथः**, **पद्धतिः** (स्त्री०) साधारण व्यवहार, दुनिया का तरीका,—**पितामहः** ब्रह्मा का विशेषण,—**प्रकाशनः** सूर्य,—**प्रवादः** किंवदन्ती अफ़वाह, सर्वसाधारण में प्रचलित बात, **प्रसिद्ध** (वि०) सुज्ञात, विश्वविख्यात,—**बन्धुः**,—**बान्धवः** सूर्य,—**बाह्य**, **वाह्य** (वि०) 1. समाज से बहिष्कृत, बिरादरी से खारिज 2. दुनिया से भिन्न, सनकी, अकेला (—**ह्यः**) जातिच्युत व्यक्ति, **मर्यादा** मानी हुई या प्रचलित प्रथा, **मातृ** (स्त्री०) लक्ष्मी का

विशेषण, —मार्गः लोकसंमत प्रथा,—यात्रा 1. दुनिया के मामले, लौकिक जीवनचर्या, लोकव्यवहार—एवं किलेयं लोकयात्रा महावी० ७, यावदयं संसारस्ताव-त्प्रसिद्धैवेयं लोकयात्रा वेणी० ३ 2. सांसारिक अस्तित्व, जीवनचर्या मा० ४ 3. आजीविका, वृत्ति, —रक्षः राजा, प्रभु,—रञ्जनम् जनता को संतुष्ट करना, सर्वप्रियता, —रवः जनश्रुति, सार्वजनिक चर्चा, —लोचनम् सूर्य,—वचनम् सार्वजनिक किंवदन्ती, अफवाह,—वादः किंवदन्ती, सामान्य चर्चा, सार्व-जनिक अफवाह—मां लोकवादश्रवणादहासीः—रघु० १४।६१,—वार्ता किंवदन्ती, अफवाह, —विद्विष्ट (वि०) जिससे सब लोग घृणा करते हों, जिसे लोग पसंद न करते हों, —विधिः 1. कार्य विधि का प्रकार, लोक में प्रचलित प्रक्रिया 2. संसार का रचयिता, —विश्रुत (वि०) दूर दूरतक मशहूर, जगद्विख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी,—वृत्तम् 1. लोक व्यवहार, संसार में प्रचलित प्रथा 2. इधर उधर की बातें, गपशप, —वृत्तान्तः, —व्यवहारः 1. लोकाचार, लोकरीति, साधारण प्रथा—श० ५ 2. घटनाक्रम,—श्रुतिः (स्त्री०) 1. जनश्रुति 2. विश्वविख्यात कीर्ति, —संकरः संसार की साधारण अव्यवस्था, —संग्रहः 1. समस्त विश्व, 2. लोककल्याण 3. लोगों की भलाई चाहना,—साक्षिन् (पु०) 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. अग्नि,—सिद्ध (वि०) 1. लोगों में प्रचलित, रिवाजी, प्रथागत 2. लोक या समाज द्वारा स्वीकृत,—स्थितिः (स्त्री०) 1. विश्व का अस्तित्व या संचालन, सांसारिक अस्तित्व 2. विश्वनियम,—हास्य (वि०) संसार द्वारा उपहसित, उपहसित, लोकनिंदित, —हित (वि०) मनुष्य जाति के लिए कल्याणकारी, (—तम्) जनसाधारण का कल्याण।

लोकनम् [लोक्+ल्युट्] देखना, दर्शन करना, निहारना।

लोकम्पृण (वि०) [लोक+पृण्+क, मुमागमः] संसार में व्याप्त या संसार को भरनेवाला, —लोकम्पृणैः परिमलैः परिपूरितस्य काश्मीरजस्य कटुताऽपि नितान्तरम्या —भामि० १।७०।

लोच् i (भ्वा० आ० लोचते) देखना, निहारना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, निरीक्षण करना ii (चुरा० उभ० या प्रेर० लोचयति—ते) दिखलाना, आ, 1. देखना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2. विचारना, विमर्श करना, चिंतन करना, सोचना —आलोचयन्तो विस्तारमम्भसां दक्षिणोदधेः—भट्टि० ७।४० ii (चुरा० उभ० लोचयति—ते) 1. बोलना 2. चमकना।

लोचम् [लोच्+अच्] आंसू।

लोचकः [लोच्+ण्वुल्] 1. मूर्ख पुरुष 2. आँख की पुतली 3. दीपक की कालिमा, काजल 4. एक प्रकार का कान का कुंडल 5. काली या नीली वेशभूषा 6. धनुष की डोरी 7. स्त्रियों द्वारा मस्तक पर धारण किया जानेवाला आभूषण, टीका 8. मांसपिंड 9. सांप की केंचुली 10. झुर्रीदार चमड़ी 11. भौं जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हैं 12. केले का पौधा।

लोचनम् [लोच्+ल्युट्] 1. देखना, दृष्टि, दर्शन 2. आँख —शेषान्मासान् गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा—मेघ० ११०। सम० —गोचरः,—पथः, —मार्गः दृष्टि परास, दृष्टिक्षेत्र।

लोट् (भ्वा० पर० लोटति) पागल या मूर्ख होना।

लोठः [लुट्+घञ्] भूमि पर लोटना, लुढ़कना।

लोड् (भ्वा० पर० लोडति) पागल या मूर्ख होना।

लोडनम् [लोड्+ल्युट्] अशान्त करना, उद्विग्न करना, आलोडित करना।

लोणारः [लवण+ऋ+अण्, पृषो०] नमक का एक प्रकार।

लोतः [लू+तन्] 1. आँसू 2. निशान, चिह्न, निशानी।

लोत्रम् [लू+ष्ट्रन्] चुराई हुई सम्पत्ति, लूट का माल, —लोत्रेण (लोप्त्रेण) गृहीतस्य कुम्भीलकस्यास्ति वा प्रतिवचनम्—विक्रम० २।

लोध्रः, लोध्रः [रुणद्धि औष्ण्यम्, रुध्+रन्] लाल या सफ़ेद फूलों वाला वृक्ष विशेष —लोध्रद्रुमं सानुमतः प्रफुल्लं रघु० २।२९, मुखेन सालक्ष्यत लोध्रपाण्डुना ३।२, कु० ७।९।

लोपः [लुप् भावे घञ्] 1. हटा लेना, वंचना 2. हानि, विनाश 3. उन्मूलन, अपाकरण, (प्रथाओं का) उत्सादन, अन्तर्धान, अप्रचलन 4. उल्लंघन, अतिक्रमण रघु० १।७६ 5. अभाव, असफलता, अनुपस्थिति रघु० १।६८ 6. भूल-चूक, छूट—तद्धर्मस्य लोपे स्यात् काव्य० १० 7. अदर्शन, वर्णलोप (व्या० में), अदर्शनं लोपः—पा० १।१।६०।

लोपनम् [लुप्+ल्युट्] 1. उल्लंघन, अतिक्रमण 2. भूल-चूक, छूट।

लोपा, लोपामुद्रा [लुप्+णिच्+अच्+टाप्, लोपा +आमुद्रा कर्म० स०] विदर्भराज की एक कन्या, अगस्त्य मुनि की पत्नी (कहा जाता है कि विभिन्न जन्तुओं के अत्यन्त सुन्दर भागों से मुनि ने स्वयं इस कन्या का, निर्माण किया था जिससे कि उसे अपने मनोनुकूल पत्नी मिल सके; उसके पश्चात् इसे चुप-चाप विदर्भराज के महल में पहुँचा दिया गया जहाँ यह राजा की पुत्री के रूप में पलती रही। बाद में अगस्त्य मुनि के साथ इसका विवाह हो गया। लोपामुद्रा ने अगस्त्य मुनि से कहा कि मुझ से संबंध रखने के लिए विपुल धनराशि प्राप्त करो। तदनुसार मुनि पहले तो राजा श्रुतर्वन् के पास गया, वहाँ से फिर

और राजाओं के पास; इस प्रकार वह अत्यन्त धनाढ्य राक्षस इल्वल के पास गया, और उसे परास्त कर उसकी विपुलधनराशि से अपनी पत्नी को सन्तुष्ट किया)।

लोपाकः, लोपापकः [लोपम् आदर्शनमाप्नोति, लोप+आप्+ण्वुल्] एक प्रकार का गीदड़, शृगाल।

लोपाशः, लोपाशकः [लोपमाकुलीभावं चकितमश्नाति लोप+अश्+अण्, लोप+अश्+ण्वुल्] गीदड़, लोमड़।

लोपिन् (वि०) [लुप्+णिनि] 1. क्षतिग्रस्त करने वाला, नुक़सान पहुँचाने वाला 2. लुप्त होने वाला।

लोप्त्रम् [लुप्+त्रन्] दे० 'लोत्रम्'।

लोभः [लुभ्+घञ्] 1. लोलुपता, लालसा, लालच, अतितृष्णा—लोभश्चेदगुणेन किम्—भर्तृ० २।५५ 2. इच्छा, उत्कण्ठा (संबं० के साथ या समास में) —कङ्कणस्य तु लोभेन—हि० १।५, आननस्पर्शलोभात् —मेघ० १०५। सम०—अन्वित (वि०) लोलुप, लालची, लोभी,—**विरहः** लोलुपता का अभाव —हि० १।

लोभनम् [लुभ्+ल्युट्] 1. प्रलोभन, ललचाना, बहकाना, फुसलाना 2. सोना।

लोभनीय (वि०) [लुभ्+अनीयर्] फुसलाने वाला प्रलोभन देने वाला, आकर्षक, इसी प्रकार 'लोभ्य'।

लोमः (पुं०) पूंछ।

लोमकिन् (पुं०) [लोमक+इनि] एक पक्षी।

लोमन् (नपुं०) [लू+मनिन्] मनुष्य और जानवरों के शरीर पर उगने वाले बाल—दे० रोमन्। सम० —**अञ्चः**='रोमांच' दे०,—**आलिः**,—**ली**,—**आवलिः**, —**ली**,—**राजिः** (स्त्री०) छाती से लेकर नाभि तक बालों की पंक्ति—दे० रोमावली आदि,—**कर्णः** खरगोश, —**कीटः**, जूं, यूका,—**कूपः**,—**गर्तः**,—**रंध्रम्**,—**विवरम्** खाल में छिद्र,—**घ्नम्** दूषित गंज,—**मणिः** बालों से बनाया हुआ तावीज,—**वाहिन्** (वि०) पंखधारी, —**संहर्षण** (वि०) पुलकित करने वाला, रोमांच पैदा करने वाला,—**सारः** पन्ना, **हर्ष**,—**हर्षण**,—**हर्षिन्** —दे० रोमहर्ष,—**हृत्** (पुं०) हरताल।

लोमश (वि०) [लोमानि सन्ति अस्य लोमन्+श] 1. बालों वाला, ऊनी, रोएँदार 2. ऊनी 3. बालों वाला,—**शः** भेड़, मेंढा, **शा** 1. लोमड़ी 2. गीदड़ी 3. लंगूर 4. कासीस। सम०—**मार्जारः** गंधबिलाव।

लोमाशः [लोमन्+अश्+अण्] गीदड़, शृगाल।

लोल (वि०) [लोड्+अच्, डस्य लः, लुल्+घञ् वा] 1. हिलता हुआ, लोटता हुआ, कांपता हुआ, दोलायमान, थरथराता हुआ, बहता हुआ, लहराता हुआ (जैसे कि बाल, अलकें) परिस्फुरल्लोल शिखाग्रजिह्वं जगज्जिघत्सन्तमिवान्तवह्निम्—कि० ३।२०, लोलांशुकस्य पवनाकुलितांशुकान्तम्—वेणी० २।२२, लोलापाङ्गैः लोचनैः मेघ० २७, रघु० १८।४३ 2. विक्षुब्ध अशान्त, बेचैन, परेशान 3. चंचल, चपल, परिवर्ती, अस्थिर येन श्रियः संश्रयदोषरूढं स्वभावलोलेत्य यशः प्रमृष्टम् रघु० ६।४१, इसी प्रकार कु० १।४३ 4. अस्थायी, नश्वर—श० १।१० 5. आतुर, उत्सुक, उत्कण्ठित (प्रायः समास में)—अग्रे लोलः करिकलभकां यः पुरा पोषितोऽभूत्—उत्तर० ३।६, कर्णे लोलः कथयितुमभूदाननस्पर्शलोभात्—मेघ० १०३, शि० १।६१, १८।४६, १०।६६, कि० ४।२०, मेघ० ६१, रघु० ७।२३, ९।३७, १६।५४, ६१,—**ला** 1. लक्ष्मी का नाम 2. बिजली 3. जिह्वा। सम० **अक्षि** (नपुं०) चंचल नेत्र, **अक्षिका** चंचल नेत्रों वाली स्त्री,—**जिह्व** (वि०) चचल जिह्वा से युक्त, लालची, —**लोल** (वि०) अत्यंत थरथराने वाला, सदैव बेचैन।

लोलुप (वि०) [लुभ्+यङ् अच्, पृषो० भस्य पः] बहुत उत्सुक, अत्यंत इच्छुक, लालायित, लालची अभिनवमधुलोलुपस्त्वं तथा परिचुंब्य चूतमंजरीम्, कमलवसतिमात्रनिर्वृतो मधुकर विस्मृतोस्येनां कथम्—श० ५।१, मिथस्त्वदाभाषणलोलुपं मनः शि० १।४०, रघु० १९।२४,—**पा** लालसा, उत्कण्ठा, उत्सुकता।

लोलुभ (वि०) [लुभ्+यङ+अच्] अत्यन्त लालसायुक्त, लालची—दे० 'लोलुप'।

लोष्ट् (भ्वा० आ० लोष्टते) ढेर लगाना, अंबार लगाना।

लोष्टः, **ष्टम्** [लुप्+तन्] ढेला, मिट्टी का लौंदा—परद्रव्येषु लोष्टवत् यः पश्यति स पश्यति; समलोष्टकाञ्चनः —रघु० ८।२१,—**ष्टम्** लोहे का मोर्चा, जंग। सम० —**घ्नः**,—**भेदनः**,—**नम्** ढेलों को फोड़ने का उपकरण, पटेला, हेंगा।

लोष्टुः [लुप्+तुन्] ढेला, मिट्टी का लौंदा।

लोह (वि०) [लूयतेऽनेन, लू+ह] 1. लाल, लाल रंग का 2. तांबे का बना हुआ, ताम्रमय 3. लोहे का बना हुआ, **हः हम्** 1. तांबा 2. लोहा 3. इस्पात 4. कोई धातु 5. सोना 6. रुधिर 7. हथियार मनु० ९।३२१ 8. मछली पकड़ने का कांटा,—**हः** लाल बकरा, **हम्** अगर की लकड़ी। सम० **अजः** लाल बकरा,—**अभिसारः**,—**अभिहारः** 'नीराजन' से मिलता जुलता एक सैनिक-संस्कार, **उत्तमम्** सोना,—**कान्तः** लोहमणि, चुम्बक, **कारः** लुहार,—**किट्टम्** लोहे का जंग,—**घातकः** लुहार, **चूर्णम्** रेतने से निकला हुआ लोहे का चूरा, लोहे का जंग. **जम्** 1. कांसा 2. लोहे का बुरादा, **जालम्** कवच,—**जित्** (पुं०) हीरा,—**द्राविन्** (पुं०) सुहागा. **नालः** लोहे का बाण, **पृष्ठः** एक

प्रकार का बगला, कंकपक्षी, -**प्रतिमा** 1. घन 2. लोहमूर्ति, **बद्ध** (वि०) लोहे से युक्त या जिसकी नोक पर लोहा जड़ा हो,—**मुक्तिका** लाल मोती, —**रजस्** (नपुं०) लोहे का जंग, मोर्चा,—**राजकम्** चांदी, –**वरम्** सोना, –**शङ्कुः** लोहे की सलाख, **श्लेषणः** सुहागा,—**संकरम्** नीले रंग का इस्पात ।

लोहल (वि०) [लोहमिव जाति—ला+क] लोहे का बना हुआ 2. अस्पष्टभाषी, तुतला कर बोलने वाला ।

लोहिका [लोह+ठन्+टाप्] लोहे का पात्र ।

लोहित (वि०) (स्त्री०—लोहिता, लोहिनी) [रुह्+इतन्, रस्य लः] 1. लाल, लाल रंग का, –स्रस्तांसावतिमात्रलोहिततलौ बाहू घटोत्क्षेपणात्—श० १।३०, कु० ३।२९, मुहुश्चलत्पल्लवलोहिनीभिरुच्चैः शिखाभिः शिखिनोवलीढाः –कि० १६।५३ 2. तांबा, तांबे से बना हुआ,—**तः** 1. लाल रंग, 2. मंगल ग्रह 3. सांप 4. एक प्रकार का हरिण 5. एक प्रकार के चावल,—**ता** आग की सात जिह्वाओं में से एक,—**तम्** 1. तांवा 2. रुधिर –मनु० ८।२८४, 3. ज़ाफ़रान, केसर 4. युद्ध 5. लाल चन्दन 6. एक प्रकार का चन्दन 7. इन्द्र धनुष का अधूरा रूप । सम० —**अक्षः** 1. लाल रंग 2. एक प्रकार का सांप 3. कोयल 4. विष्णु का विशेषण,—**अङ्गः** मंगलग्रह, —**अयस्** (नपुं०) तांबा, **अशोकः** (लाल फूलों का) अशोक वृक्ष,—**अश्वः** आग,—**आननः** नेवला,—**ईक्षणः** (वि०) लाल आंखों वाला, **उद्** (वि०) लाल या रुधिर के समान लाल पानी वाला, –**कल्माष** (वि०) लाल धब्बों वाला,—**क्षयः** रुधिर का नाश, **ग्रीवः** अग्नि का विशेषण, **चन्दनम्** केसर, ज़ाफ़रान,—**पुष्पकः** अनार का वृक्ष, **मृत्तिका** लाल खड़िया, गेरु, —**शतपत्रम्** लाल कमल का फूल ।

लोहितक (वि०) (स्त्री० **तिका**) [लोहित+कन्] लाल, **कः** 1. लालमणि, -शि० १३।५२ 2. मंगल ग्रह 3. एक प्रकार का चावल, **कम्** कांसा ।

लोहितिमन् (पुं०) [लोहित+इमनिच्] लालिमा, लाली ।

लोहिनी [लोहित+ङीप्, तकारस्य नकारः] वह स्त्री जिसकी चमड़ी लाल रंग की हो ।

लौकायतिकः [लोकायतमधीते वेद वा लोकायत+ठक्] चार्वाकमतानुयायी, नास्तिक, अनीश्वरवादी, भौतिकवादी ।

लौकिक (वि०) (स्त्री० –**की**) [लोके विदितः प्रसिद्धो हितो वा ठण्] 1. सांसारिक, दुनियावी, भौमिक, पार्थिव 2. साधारण, सामान्य, प्रचलित, मामूली, गंवारू उत्तर० १।१० 3. दैनिक जीवन संबंधी, सामान्यतः माना हुआ, सर्वप्रिय, प्रथागत—कु० ७।८८ 4. सामयिक, धर्मनिरपेक्ष (विप० आर्ष, या शास्त्रीय) मनु० ३।२८२ 5. जो वैदिक न हो, सांसारिक (शब्द या उसका अर्थ) वाक्यं द्विविधं वैदिकं लौकिकं च —तर्क० (दे० लोक ८ के नीचे उद्धृत महा०) 6. संसार से संबंध रखने वाला–जैसा कि 'ब्रह्मलौकिक' में,—**काः** (ब० व०) सामान्य मनुष्य, संसार के लोग, **कम्** कोई साधारण लोकाचार । सम० **ज्ञ** (वि०) लोकव्यवहार को जानने वाला, लोक प्रथाओं से परिचित—वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् —श० ४ ।

लौक्य (वि०) [लोके भवः लोक+ष्यञ्] 1. सांसारिक, दुनियावी, ऐहिक, मानवी 2. सामान्य, मामूली, रिवाजी ।

लौड् (भ्वा० पर० लौडति) पागल या मूर्ख होना ।

लौल्यम् [लोलस्य भावः ष्यञ्] 1. चंचलता, अस्थिरता, चाञ्चल्य 2. उत्सुकता, उत्कण्ठा, लालच, लालसापूर्णता, अत्यन्त प्रणयोन्माद या अभिलाषा, जिह्वालौल्यात् –पंच० १, रघु० ७।६१, १६।७६, १८।३०, कु० ६।३० ।

लौह (वि०) (स्त्री० **ही**) [लोह+अण्] 1. लोहे का बना हुआ, लोहा 2. ताम्रमय 3. धातु का बना 4. तांबे के रंग का, लाल,—**हम्** लोहा, भट्टि० १५।५४, **हा** कड़ाही । सम०—**आत्मन्** (पुं०)—**भूः** (स्त्री०) बायलर, कड़ाही, कड़ाह,—**कारः** लुहार, –**जम्** लोहे का जंग,–**बन्धः** पम् लोहे की बेड़ी, जंजीर,—**भाण्डम्** लोहे का पात्र,–**मलम्** लोहे का जंग, —**शङ्कुः** लोहे की सलाख ।

लौहितः [लोहित+अण्] शिव का त्रिशूल ।

लौहित्यः [लोहितस्य भावः ष्यञ्, स्वार्थे ष्यञ् वा] एक नदी का नाम, ब्रह्मपुत्र –चकम्पे तीर्णलौहित्ये तस्मिन् प्राग्ज्योतिषेश्वरः –रघु० ८।८१, (यहां मल्लि० बिना किसी प्रमाण के कहता है तीर्णा लौहित्या नाम नदी येन),—**त्यम्** लाली ।

ल्पी, ल्यी (क्र्या० पा० ल्पिनाति, ल्यिनाति) मिलना, सम्मिलित होना, मेलजोल करना ।

ल्वी (क्र्या० पर० ल्विनाति) जाना, हिलना-जुलना, पहुंचना ।

वः [वा+ड] 1. वायु, हवा 2. भुजा 3. वरुण 4. समाधान 5. संबोधित करना 6. मांगलिकता 7. निवास, आवास 8. समुद्र 9. व्याघ्र 10. कपड़ा 11. राहु, - **वम्** वरुण (मेदिनी)—अव्य० की भांति, के समान 'जैसा कि' मणी वोष्ट्रस्य लम्बेते प्रियौ वत्सतरौ मम— सिद्धा० (यहाँ शब्द 'व' अथवा 'वा' हो सकता है)।

वंशः [वमति उद्गिरति वम्+श तस्य नेत्वम्] 1. बाँस—धनुर्वंशविशुद्धोऽपि निर्गुणः किं करिष्यति—हि० प्र० २३, वंशभवो गुणवानपि संगविशेषेण पूज्यते पुरुषः - भामि० १।८० (यहां 'वंश' का अर्थ 'कुल या परिवार' भी है) मेघ० ७९ 2. जाति, परिवार, कुटुम्ब, परंपरा—स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् —हि० २, क्व सूर्यप्रभवो वंशः—रघु० १।२, दे० वंशकरम्, वंशस्थिति आदि 3. लाठी 4. बांसुरी, मुरली, अलगोझा या विपंचीनाद—कूजद्भिरापादितवंशकृत्यं—रघु० २।१२ 5. संग्रह, संघात, समुच्चय (प्रायः एक समान वस्तुओं का)—सान्द्रीकृतः स्यन्दनवंशचक्रैः—रघु० ७।३९ 6. आर-पार, शहतीर 7. (बांस में) जोड़ 8. एक प्रकार का ईख 9. रीढ़ की हड्डी 10. साल का वृक्ष 11. लम्बाई नापने का एक विशेष माप (दस हाथ के बराबर)। सम० —**अग्रम्**, - **अङ्कुरः** 1. बांस का किनारा 2. बांस का अंखुआ,—**अनुकीर्तनम्** वंशावली,—**अनुक्रमः** वंशावली, —**अनुचरितम्** एक परिवार या कुल का परिचय, —**आवली**, वंशतालिका, वंशविवरण,—**आह्वः** वंसलोचन. —**कठिनः** बांसों का झुरमुट,—**कर** (वि०) 1. कुलप्रवर्तक 2. वंशस्थापक—रघु० १८।३१ (—**रः**) मूलपुरुष,—**कर्पूररोचना**, **रोचना**, - **लोचना** वंसलोचन, तवाशीर,—**कृत्** (पुं०) कुल संस्थापक, या वंशप्रवर्तक, —**क्रमः** वंशपरंपरा,—**क्षीरी** वंसलोचन,—**चरितम्** कुलपरिचय,—**चिन्तकः** वंशावली जानने वाला, **छेत्तृ** (वि०) किसी कुल का अंतिम पुरुष,—**ज** (वि०) 1. कुल में उत्पन्न—रघु० १।३१ 2. सत्कुलोद्भव (—**जः**) 1. प्रजा, संतान, औलाद 2. बांस का बीज (—**जम्**) वंसलोचन, **नर्तिन** (पुं०) नट, मसखरा, —**नाडि(ली)** का बांस की बनाई बांसुरी,—**नाथः** किसी वंश का प्रधान पुरुष,—**नेत्रम्** ईख की जड़,—**पत्रम्** बांस का पत्ता (**त्रः**) नरकुल, —**पत्रकः** 1. नरकुल 2. पौंडा, गन्ने का श्वेत प्रकार, (—**कम्**) हरताल, —**परंपरा** वंशानुक्रम, कुलपरंपरा, —**पूरकम्** गन्ने की जड़, —**भोज्य** (वि०) आनुवंशिक, (—**ज्यम्**) आनुवंशिक भूसंपत्ति,—**लक्ष्मीः** (स्त्री०) कुल का सौभाग्य, **वितति**: (स्त्री०) 1. परिवार, सन्तान 2. बांसों का झुरमुट, —**शर्करा** वंसलोचन, **शलाका** वीणा में लगी बांस की खूंटी,—**स्थितिः** (स्त्री०) कुल की अविच्छिन्नता रघु० १८।३१।

वंशकः [वंश+कन्] 1. एक प्रकार का गन्ना 2. बांस का जोड़ 3. एक प्रकार की मछली,—**कम्** अगर की लकड़ी।

वंशिका [वंश+ठन्+टाप्] 1. एक प्रकार की बांसुरी, अगर की लकड़ी।

वंशी [वंश+अच्+ङीप्] 1. बांसुरी, मुरली—न वंशीमज्ञासीद्भुवि करसरोजाद्विगलिताम्—हंस० १०८, कंसरिपोर्व्यपोहतु स वोऽश्रेयांसि वंशीरवः गीत० ९ 2. शिरा या धमनी 3. वंसलोचन 4. एक विशेष तोल। सम० - **धरः**,—**धारिन्** (पुं०) 1. कृष्ण का विशेषण 2. वंशी बजाने वाला,।

वंश्य (वि०) [वंशे भवः यत्] 1. मुख्य शहतीर से संबंध रखने वाला 2. मेरुदण्ड से संबंध रखने वाला 3. परिवार से संबंध रखने वाला 4. अच्छे कुल में उत्पन्न, उत्तम कुल का 5. वंशधर, वंशप्रवर्तक,—**श्यः** 1. सन्तान परवर्ती (ब० व०) इतरेऽपि रघोर्वंश्याः—रघु० १५।३५ 2. पूर्वज, पूर्वपुरुष—नूनं मत्तः परं वंश्या पिण्डविच्छेददर्शिनः रघु० १।६६ 3. परिवार का कोई सदस्य 4. आरपार, शहतीर 5. भुजा या टांग की हड्डी 6. शिष्य।

वंह् दे० बंह्।

वक् दे० बक्।

वकुलः दे० बकुल।

वक्क् (भ्वा० आ०—वक्कते) जाना, हिलना-जुलना।

वक्तव्य (सं० कृ०) [वच्+तव्यत्] 1. कहे जाने या बोले जाने के योग्य, बात किये जाने या प्रकथन के योग्य - तत्तद्धि वक्तव्यं न वक्तव्यम् (महा० में अनेक बार) 2. किसी विषय में कहे जाने के योग्य 3. गर्हणीय, दूषणीय, निन्दनीय 4. नीच, दुष्ट, कमीना 5. स्पष्टव्य, उत्तरदायी 6. आश्रित,—**व्यम्** 1. बोलना, भाषण 2. विधि, नियम, सिद्धान्त वाक्य 3. कलंक, निन्दा, भर्त्सना।

वक्तृ (वि०, या पुं०) [वच्+तृच्] 1. बोलने वाला, बातें करने वाला, वक्ता 2. वाक्पटु, प्रवक्ता—किं करिष्यन्ति वक्तारः श्रोता यत्र न विद्यते, दर्दुरा यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभनम्—सुभा० 3. अध्यापक, व्याख्याता 4. विद्वान पुरुष, बुद्धिमान व्यक्ति।

वक्त्रम् [वक्ति अनेन वच्—करणे ष्ट्रन्] 1. मुख 2. चेहरा —यद्वक्त्रं मुहुरीक्षसे न धनिनां ब्रूषे न चाटून्मृषा भर्तृ० ३।१४७ 3. थूथन, प्रोथ, चोंच 4. आरम्भ 5. (बाण की) नोक, किसी पात्र की टोंटी 6. एक प्रकार का वस्त्र 7. अनुष्टुप् से मिलता-जुलता एक छन्द, दे०

सा० द० ५६७, काव्या० १।२६। सम०—आसवः लार,—खुरः दांत,—जः ब्राह्मण,—तालम् मुंह से बजाया जाने वाला वाद्ययन्त्र,—दलम् तालु,—पटः परदा,—रन्ध्रम् मुखविवर,—परिस्पन्दः भाषण,—भेदिन् (वि०) चरपरा, तीक्ष्ण,—वासः सन्तरा,—शोधनम् 1. मुंह साफ करना 2. नींबू, चकोतरा,—शोधिन् (नपुं०) चकोतरा (पुं०) चकोतरे का वृक्ष।

वक्र (वि०) [वङ्क्+रन्, पृषो० नलोपः] 1. कुटिल (आलं० से भी) झुका हुआ, टेढ़ा, चक्करदार, घुमावदार—वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशाम्—मेघ० २७, कु० ३।२९ 2. गोलमोल, परोक्ष, टालमटूल, मण्डलाकार, घुमा फिरा कर बात कहना, द्वयर्थक या सन्दिग्ध (भाषण)—किमेतैर्वक्रभणितैः—रत्न० २, वक्रवाक्यरचनारमणीयः—…सुभ्रुवां प्रववृते परिहासः—शि० १०।१२ दे० 'वक्रोक्ति' भी 3. छल्लेदार, लहरियेदार, घुंघराले (बाल) 4. प्रतिगामी (गति आदि) 5. बेईमान जालसाज़, कुटिल स्वभाव का 6. क्रूर, घातक (ग्रह आदि) 7. छन्दःशास्त्र की दृष्टि से गुरु (दीर्घ),—क्रः 1. मंगलग्रह 2. शनिग्रह 3. शिव 4. त्रिपुर राक्षस,—क्रम् 1. नदी का मोड़ 2. (ग्रह का) प्रतिगमन। सम०—अङ्गम् टेढ़ा, अवयव (गः) 1. हंस 2. चकवा 3. सांप,—उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार का नाम जिसमें टालमटोल करने वाली बात या तो श्लेषपूर्ण ढंग से कही जाती है या स्वर बदल कर। मम्मट इसकी परिभाषा इस प्रकार देता है:—यदुक्तमन्यथा वाक्यमन्यथान्येन योज्यते, श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा—काव्य० ९, उदाहरण के लिए मुद्रा० का आरम्भिक श्लोक (धन्या केयं स्थिता…) देखिए 2. वाक्छल, कटाक्ष, व्यंग्य—सुबन्धुर्बाणभट्टश्च कविराज इति त्रयः, वक्रोक्तिमार्गनिपुणाश्चतुर्थो विद्यते न वा 3. कटूक्ति, ताना,—कण्टः बेर का पेड़,—कण्टकः खैर का वृक्ष,—खड्गः,—खड्गकः कटार, टेढ़ी तलवार,—गति,—गामिन् (वि०) 1. टेढ़ी चाल वाला, चक्करदार 2. जालसाज, बेईमान,—ग्रीवः ऊँट—चञ्चुः तोता,—तुण्डः 1. गणेश का विशेषण 2. तोता,—दंष्ट्रः सूअर,—दृष्टि (वि०) 1. भेंगी आँख वाला, ऐंचाताना 2. विद्वेषपूर्ण दृष्टि रखने वाला 3. डाह करने वाला, (स्त्री०) तिरछी निगाह, तिर्यग्दृष्टि,—नक्रः 1. तोता 2. नीच पुरुष,—नासिकः उल्लू,—पुच्छः,—पुच्छिकः कुत्ता,—पुष्पः ढाक वृक्ष,—बालधिः,—लांगूलः कुत्ता,—भावः 1. टेढ़ापन 2. धोखा,—वक्त्रः सूकर।

वक्रयः (पुं०) मूल्य, क़ीमत ('अवक्रयः' के बदले)।

वक्रिन् (वि०) [वक्र+इनि] 1. कुटिल 2. प्रतिगामी (पुं०) जैन या बुद्ध।

वक्रिमन् (पुं०) [वक्र+इमनिच्] 1. कुटिलता, वक्रता, 2. वाक्छल, टालमटोल, संदिग्धता, चक्कर, घुमाव, (वाणी की) परोक्षता,—तद्वत्क्राम्बुजसौरभं स च सुधास्यन्दी गिरां वक्रिमा—गीत०, ३ 3. धूर्तता, चालाकी, मक्कारी।

वक्रोष्टिः,—**वक्रोष्टिका** (स्त्री०) [वक्रः ओष्ठो यस्यां ब० स०, कप्+टाप् इत्वम्] मृदु मुसकान।

वक्ष् (भ्वा० पर० वक्षति) 1. वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना 2. शक्तिशाली होना 3. क्रुद्ध होना 4. संचित होना।

वक्षस् (नपुं०) [वह्+असुन्, सुट् च] छाती, हृदय, सीना कपाटवक्षाः परिणद्धकन्धरः—रघु० ३।३४। सम०—जः,—रुह्,—रुहः (वक्षोजः, वक्षोरुह्, वक्षोरुहः) स्त्री की छाती—भामि० २।१७,—स्थलम् (वक्ष या वक्षः स्थलम्) छाती या हृदय।

वख्, **वंख्** (वखति, वंखति) जाना, हिलना-जुलना।

वगाहः [भागुरिमते 'अवगाह' इत्यत्र अकारलोपः] दे० 'अवगाह'।

वङ्कः [वङ्क्+अच्] नदी का मोड़।

वङ्का [वङ्क+टाप्] घोड़े की जीन की अगली मेंडी।

वङ्किलः [वङ्क्+इलच्] कांटा।

वङ्क्रि [वकि+क्रिन्, इदित्वात् धातोर्नुम्] 1. (किसी जानवर या भवन की पसली), (कुछ लोग इस शब्द को स्त्रीलिंग बताते हैं) 2. छत का शहतीर 3. एक प्रकार का वाद्य यन्त्र (इन दो अर्थों में नपुं० भी)।

वङ्क्षुः [वह्+कुन्, नुम्] गंगा नदी की एक शाखा।

वङ्ग् (भ्वा० पर० वङ्गति) 1. जाना 2. लंगड़ाना, लंगड़ा कर चलना।

वङ्गाः (ब० व०) [वङ्ग्+अच्] बंगाल प्रदेश तथा उसके अधिवासियों का नाम—वङ्गानुत्खाय तरसा नेता नौसाधनोद्यतान्—रघु० ४।३६, रत्नाकरं समारभ्य ब्रह्मपुत्रान्तगः प्रिये, वङ्गदेश इति प्रोक्तः,—गः 1. कपास 2. बैंगन का पौधा,—गम् 1. सीसा 2. रांगा। सम०—अरिः हरताल,—जः 1. पीतल 2. सिंदूर,—जीवनम् चाँदी,—शुल्वजम् कांसा।

वच् (भ्वा० आ० वचते) 1. जाना 2. तेजी से चलना, 3. आरम्भ करना, 4. निन्दा करना, दूषित करना।

वच् (अदा० पर०) (आर्धधातुक लकारों में आ० भी, कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि सार्वधातुक लकारों में, अन्यपुरुष बहुवचन के रूप सदोष होते हैं, तथा कुछ के अनुसार समस्त बहुवचन में वक्ति, उक्तम्) 1. कहना, बोलना—वैराग्यादिव वक्षि—काव्य० १०,

(प्राय: दो कर्मों के साथ)—तामूचतुस्ते प्रियमप्यमिथ्या —रघु० १४।६, कभी कभी 'भाषण' अर्थ को बतलाने वाले शब्दों के साथ दूसरी विभक्ति में—उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः रघु० ३।५०, २।५९, क एवं वक्ष्यते वाक्यम् रामा० 2. वर्णन करना, बयान करना - रघूणामन्वयं वक्ष्ये--रघु० १।९ 3. कहना, समाचार देना, घोषणा करना, प्रकथन करना —उच्यतां मद्वचनात् सारथिः—श० २, मेघ० ९८ 4. नाम लेना, पुकारना—तदेकसप्ततिगुणं मन्वन्तर-मिहोच्यते - मनु० १।७९, प्रेर०—(वाचयति ते) 1. बुलवाना 2. निगाह डालना, पढ़ना, अवलोकन करना 3. कहना, बोलना, प्रकथन करना 4. प्रतिज्ञा करना, इच्छा० (ववक्षति) बोलने की इच्छा करना, (कुछ) कहने का इरादा करना, अनु,–वाद में कहना, आवृत्ति करना, पाठ करना, (प्रेर०) मन में पढ़ना —नाममुद्राक्षराण्यनुवाच्य— श० १, निस् 1. अर्थ करना, व्याख्या करना वेदा निर्वक्तुमक्षमाः 2. वर्णन करना, बोलना, प्रकथन करना, घोषणा करना 3. नाम लेना, पुकारना, प्रति , उत्तर में बोलना, जवाब देना, प्रतिवाद करना न चेद्रहस्यं प्रतिवक्तुमर्हसि—कु० ५।४२, रघु० ३।४८, वि —, व्याख्या करना, सम् —कहना, बोलना ।

वचः [वच्+अच्] 1. तोता 2. सूर्य, . चा 1. मैना पक्षी 2. एक सुगन्धित जड़, - चम् बोलना, बातें करना ।

वचनम् [वच्+ल्युट्] 1. बोलने, उच्चारण करने या कहने की क्रिया 2. भाषण, उद्गार, उक्ति, वाक्य—ननु वक्तृविशेषनिःस्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः —कु० २।५, प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार - मेघ० ४ 3. दोहराना, पाठ करना 4. मूल, वाक्य विन्यास, नियम, विधि, धार्मिक ग्रन्थ का सन्दर्भ —शास्त्रवचनं, श्रुतिवचनं, स्मृतिवचनम् आदि 5. आदेश, हुक्म, निदेश, 'मद्वचनात्' मेरे नाम से अर्थात् मेरे आदेश से 6. उपदेश, परामर्श, अनुदेश 7. घोषणा, प्रकथन 8. (व्या० में) (वर्ण का) उच्चारण 9. शब्द की यथार्थता–अथ पयोघर शब्दः मेघवचनः 10. (व्या० में) वचन, (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन इस प्रकार वचन तीन होते हैं) 11. सूखा अदरक । सम० उपक्रमः प्रस्तावना, आमुख, कर (वि०) आज्ञाकारी, आदेश का पालन करने वाला,—कारिन् (वि०) आज्ञा पालन करने वाला, आज्ञाकारी, क्रमः प्रवचन, ग्राहिन् (वि०) आज्ञाकारी, अनुवर्ती, विनीत,—पटु (वि०) बोलने में चतुर, विरोधः विधियों की असङ्गति, विरोध, पाठ की अननुरूपता, –शतम् सौ भाषण, अर्थात् बार बार घोषणा, पुनरुक्त उक्ति, स्थित (वि०) ('वचने स्थितः' भी) आज्ञाकारी, अनुवर्ती ।

वचनीय (वि०) [वच्+अनीयर्] 1. कहे जाने, बोले जाने या वर्णन किये जाने के योग्य 2. निन्दनीय, दूषणीय,—यम् कलंक, निन्दा, निर्भर्त्सना—न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते - कु० ५।८२, वचनीयमिदं व्यवस्थितं रमण त्वामनुयामि यद्यपि–४।२१, भवति योजयितुर्वचनीयता—पंच० १।७५, कि० ८।३९, ६५, मृच्छ० ४।१ ।

वचरः (पुं०) 1. मुर्गा 2. बदमाश, नीच, शठ, दुष्ट ।

वचस् (नपुं०) [वच्+असुन्] 1. भाषण, वचन, वाक्य, —उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः—रघु० ३।२५, ४७, इत्यव्यभिचारि तद्वचः कु० ५।३६, वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम् सुभा० 2. हुक्म, आदेश, विधि, निषेधाज्ञा 3. उपदेश, परामर्श 4. (व्या० में) वचन । सम० कर (वि०) 1. आज्ञाकारी, अनुवर्ती 2. दूसरों की आज्ञा पालन करने वाला,—क्रमः प्रवचन, —ग्रहः कान, प्रवृत्तिः (स्त्री०) भाषण करने का प्रयत्न - श० ७।१७ ।

वचसाम्पतिः [वचसां वाचां पतिः षष्ठया अलुक्] बृहस्पति का विशेषण, गुरु ग्रह ।

वज् i (भ्वा० पर० वजति) जाना, हिलना-जुलना, इधर-उधर घूमना । ii (चुरा० उभ० वाजयति–ते) काटछांटकर ठीक करना, तैयार करना 2. बाण की नोक में पर लगाना 3. जाना, हिलना-जुलना ।

वज्रः,–ज्रम् [वज्+रन्] 1. वज्र, बिजली, इन्द्र का शस्त्र, (कहते हैं कि इन्द्र का वज्र दधीचि की हड्डियों से बना था)--आशंसन्ते समितिषु सुराः सक्तवैरा हि दैत्यैरस्याधिज्ये धनुषि विजयं पौरुहूते च वज्रे--श० २।१५ 2. इन्द्र के वज्र जैसा कोई भी घातक या विनाशकारी हथियार 3. हीरे की अणि, मणि माणिक्यों को बींधने का उपकरण—मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः रघु० १।४ 4. हीरा, वज्र– वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि उत्तर० २।७, रघु० ६।१९ 5. कांजी, - ज्रः 1. एक प्रकार का सैनिकव्यूह 2. एक प्रकार का कुश नामक घास 3. अनेक पौधों के नाम, --ज्रम् 1. इस्पात 2. अभ्रक 3. वज्र जैसी या कठोर भाषा 4. बालक, बच्चा 5. आंवला । सम०–अङ्गः सांप,—अभ्यासः अनुप्रस्थगुणन, अशनिः इन्द्र का वज्र, आकरः हीरों की खान, रघु० १८।२१,--आख्यः एक बहुमूल्य पत्थर, मणि,–आघातः 1. बिजली का प्रहार 2. (अतः आलं० से) आकस्मिक धक्का या संकट,—आयुधः इन्द्र का हथियार, —कङ्कटः हनुमान् का विशेषण, कीलः वज्र, बिजली, वज्र की कील - जीवितं वज्रकीलम् मा० ९।३७,

तु० उत्तर० १।४७, -क्षारम् रिहाली मिट्टी,—गोपः, —इन्द्रगोपः वीरबहूटी, -चञ्चुः गिद्ध, -चर्मन् (पुं०) गैंडा,—जित् (पुं०) गरुड,—ज्वलनम्, ज्वाला बिजली,—तुण्डः 1. गिद्ध 2. मच्छर, डाँस 3. गरुड 4. गणेश,—तुल्यः नीलम, -दंष्ट्रः एक प्रकार का कीडा, -दन्तः 1. सूअर 2. चूहा,—दशनः एक चूहा, —देह,—देहिन् (वि०) दृढ शरीर वाला, -धरः इन्द्र का विशेषण—वज्रधरप्रभावः—रघु० १८।२१,—नाभः कृष्ण का (सुदर्शन) चक्र, -निर्घोषः,—निष्पेषः बिजली की कड़क, —पाणिः इन्द्र का विशेषण—वज्रं मुमुक्षन्निव वज्रपाणिः रघु० २।४२, -पातः बिजली का गिरना, बिजली का आघात,—पुष्पम् तिल का फूल —भृत् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—मणिः हीरा, कड़ा पत्थर भर्तृ० २।६,—मुष्टिः इन्द्र का विशेषण, -रवः सूअर,—लेपः एक प्रकार बड़ा कड़ा सीमेंट, वज्रलेपघटितेव—मा० ५।१०, उत्तर० ४ (इसके योग से बनने वाले पदार्थों के लिए दे० बृहत्० अ० ५७) —लोहकः चुम्बक,—व्यूहः एक प्रकार का सैनिक व्यूह, -शल्यः साही नामक जानवर, —सार (वि०) पत्थर की भांति कठोर, बिजली की शक्तिवाला, अत्यन्त कड़ा—क्व च निशितनिपाता वज्रसाराः शरास्ते श० १।१०, त्वमपि कुसुमबाणान्वज्रसारी करोषि—३।३,—सूचिः,—ची (स्त्री०) हीरे की सुई,—हृदयम् पत्थर जैसा कड़ा दिल।

वज्रिन् (पुं०) [वज्र+इनि] 1. इन्द्र—ननु वज्रिण एव वीर्यमेतद्विजयन्ते द्विषतो यदस्य पक्ष्याः—विक्रम० १।५, रघु० ९।२४ 2. उल्लू।

वञ्च् (भ्वा० पर० वञ्चति) 1. जाना, पहुँचना—ववञ्चुश्चाहवक्षितिम्—भट्टि० १४।७४, ७।१०६ 2. घूमना 3. चुपचाप चले जाना, खिसक जाना—प्रेर० (वंचयति—ते) 1. टालना, बचना, खिसकना, बिदकना —अहिं वञ्चयति, अवञ्चयत मायाश्च स्वमायाभिर्नरद्विपाम्—भट्टि० ८।४३ 2. ठगना, धोखा देना, जालसाजी करना (आ० मानी जाती है, पर बहुधा पर० भी)—मूर्खास्त्वामववञ्चन्त—भट्टि० १५।१५, कथमथ वञ्चयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनम् गीत० ८, (बन्धनं) वञ्चयन् प्रणयिनीः प्रववाप सः रघु० १९।१७, कु० ४।१०, ५।४९, रघु० १२।५३ 3. वंचित करना, दरिद्र करना रघु० ७।८।

वञ्चक (वि०) [वञ्च्+णिच्+ण्वुल्] 1. जालसाज, धोखेबाज, मक्कार 2. ठगने वाला, धोखा देने वाला, —कः 1. बदमाश, ठग, उचक्का 2. गीदड़ 3. छछूंदर 4. पालतू नेवला।

वञ्चतिः (पुं०) अग्नि, आग।

वञ्चथः [वञ्च्+अथः] 1. ठगना, बदमाशी, धोखा, चालाकी 2. ठग, बदमाश, उचक्का 3. कोयल।

वञ्चनम्,—ना [वञ्च्+ल्युट्] 1. ठगना, 2. दावपेंच, धोखा, जालसाज़ी, धोखादेही, चालाकी वञ्चना परिहर्तव्या बहुदोषा हि शर्वरी—मृच्छ० १।५८, स्वर्गाभिसन्धिसुकृतं वञ्चनामिव मेनिरे—कु० ५।४७ 3. माया, भ्रम 4. हानि, क्षति, अड़चन—दृष्टिपातवञ्चना—मा० ३, रघु० ११।३६।

वञ्चित (भू० क० कृ०) [वञ्च्+क्त] 1. प्रतारित, ठगा गया 2. विरहित,—ता एक प्रकार की पहेली या बुझौवल।

वञ्चुक (वि०) (स्त्री०—की) [वञ्च्+उकन्] धोखे से पूर्ण, जालसाज़, मक्कार, बेईमान,—कः गीदड़।

वञ्जुलः [वञ्च्+उलच्, पृषो० चस्य जः] 1. बेंत या नरकुल —आमञ्जुवञ्जुललतानि च तान्यमूनि नीरन्ध्रनील निचुलानि सरित्तटानि—उत्तर० २।२३, या, मञ्जुलवञ्जुलकुञ्जगतं विचकर्ष करेण दुकूले—गीत० १ 2. एक प्रकार का फूल 3. अशोकवृक्ष 4. एक प्रकार का पक्षी। सम०—द्रुमः अशोकवृक्ष,—प्रियः बेंत।

वट् i (भ्वा० पर० वटति) घेरना।
ii (चुरा० उभ० वाटयति—ते) 1. कहना, 2. बाँटना, विभाजन करना 3. घेरना, घेरा डालना।

वटः [वट्+अच्] 1. बड़ का पेड़—अयं च चित्रकूटयायिनि वर्त्मनि वटः श्यामो नाम— उत्तर० १, रघु० १३।५३ 2. छोटी शुक्ति या कौड़ी 3. छोटी गेंद, गोलिका, वटिका 4. गोलअंक, शून्य 5. एक प्रकार की रोटी 6. डोरी, रस्सी (इस अर्थ में नपुं० भी) 7. रूपसादृश्य। सम—पत्रम् श्वेत तुलसी का एक भेद (त्रा) चमेली,—वासिन् (पुं०) यक्ष।

वटकः [वट+कन्, वट्+क्वुन् वा] 1. बाटी, एक प्रकार की रोटी 2. छोटा पिंड, गेंद, गोली, वटिका।

वटरः [वट्+अरन्] 1. मुर्गा 2. चटाई 3. पगड़ी 4. चोर, लुटेरा 5. रई का डंडा 6. सुगंधित घास।

वटाकरः, वटारकः (पुं०) डोरा, डोरी।

वटिकः [वट्+इन्+कन्] शतरंज का मोहरा।

वटिका [वट्+इन्+कन्+टाप्] 1. टिकिया, गोली 2. शतरंज का मोहरा।

वटिन् (वि०) [वट्+इन्] डोरीदार, वर्तुलाकार—पुं० =वटिक।

वटी [वट्+अच्+ङीप्] 1. रस्सी या डोरी 2. गोली, वटिका।

वटुः [वटति अल्पवस्त्रम् —वट्+उः] 1. छोकरा, लड़का जवान, किशोर (बहुधा अंग्रेजी के 'चैप'—chap या फैलो—fellow शब्द के समान प्रयोग) चपलोऽयं वटुः श० २, निवार्यतामालि किमप्ययं वटुः

दुर्निवक्षुः स्फुरितोत्तराधरः—कु० ५।८३, तु० 'वट्' से भी 2. ब्रह्मचारी ।

वटुकः [वटु+कन्] 1. छोकरा, लड़का 2. ब्रह्मचारी 3. मूर्ख, बुद्धू ।

वठ् (भ्वा० पर० वठति) 1. बलवान् या शक्तिशाली होना 2. मोटा होना ।

वठर (वठ्+अरन्] 1. मन्दबुद्धि, जड़ 2. दुष्ट, -रः 1. मूर्ख या बुद्धू 2. बदमाश, या दुष्ट 3. वैद्य या डाक्टर 4. जल-पात्र ।

वडभिः,—भी दे० वलभिः, -भी ।

वडवा [बलं वाति बल+वा+क+टाप्, डलयोरैक्यात् लस्य डत्वम्] 1. घोड़ी 2. अश्विनी नाम की अप्सरा जिसने घोड़ी के रूप में सूर्य के द्वारा अश्विनीकुमार नाम के दो पुत्र उत्पन्न करवाये दे० संज्ञा 3. दासी 4. वेश्या रण्डी 5. ब्राह्मण जाति की स्त्री, द्विजयोषित् । सम० **अग्निः, अनलः** समुद्र के भीतर रहने वाली आग, **मुखः** 1. समुद्र के भीतर रहने वाली आग 2. शिव का नाम ।

वडा [वड्+अच्+टाप्] एक प्रकार की रोटी ।

वडिशम् [वलिनो मत्स्यान् श्यति नाशयति शो+क, लस्य डत्वम्] दे० 'बडिश' ।

वड्र (वि०) [वड्+रक्] विशाल, बड़ा, महान् ।

वण् (भ्वा० पर० वणति) शब्द करना, ध्वनि करना ।

वणिज् (पुं०) [पणायते व्यवहरति पण्+इजि पस्य वः] 1. सौदागर, व्यापारी—यस्यागमः केवलजीविकायै तं ज्ञानपण्यं वणिजं वदन्ति—मालवि० १।१७ 2. तुला राशि (स्त्री०) पण्यवस्तु, व्यापार । सम० **कर्मन्** (नपुं०),—**क्रिया** क्रयविक्रय, व्यापार,—**जनः** 1. (सामूहिक रूप से) व्यापारी वर्ग 2. व्यापारी, सौदागर, **पथः** 1. व्यापार, क्रयविक्रय 2. सौदागर 3. बनिये की दुकान, आपणिका 4. तुलाराशि, **वृत्तिः** (स्त्री०) व्यापार, क्रयविक्रय भर्तृ० ३।८१,—**सार्थः** व्यापारियों का दल, टोली ।

वणिजः [वणिज्+अच् (स्वार्थे)] 1. सौदागर, व्यापारी 2. तुला राशि ।

वणिजकः [वणिज+कन्] सौदागर, बनिया ।

वणिज्यं, वणिज्या [वणिज्+यत्, स्त्रियां टाप् च] व्यापार क्रयविक्रय ।

वण्ट् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० वण्टति, वण्टयति —ते) बांटना, अंश बनाना, विभाजन करना, हिस्से करना ।

वण्टः [वण्ट्+घञ्] 1. भाग या खण्ड, अंश, हिस्सा 2. दरांती का दस्ता 3. अविवाहित पुरुष, कुँआरा ।

वण्टकः [वण्ट्+घञ्, स्वार्थे क] 1. बाँटने वाला, वितरण करने वाला 2. वितरक 3. भाग, अंश, हिस्सा ।

वण्टनम् [वण्ट्+ल्युट्] विभाजन करना, अंश बनाना, बाँटना या विभक्त करना ।

वण्टालः, वण्डालः [वण्ट+आलच्, पक्षे पृषो० टस्य डत्वम्] 1. शूरवीरों की प्रतियोगिता 2. कुदाल, खुर्पा 3. नाव ।

वण्ठ् (भ्वा० आ० वण्ठते) अकेले जाना, बिना किसी को साथ लिए चलना ।

वण्ठ (वि०) [वण्ठ्+अच्] 1. अविवाहित 2. ठिंगना 3. विकलाङ्ग, **-ठः** 1. अविवाहित पुरुष, कुंआरा 2. सेवक 3. ठिंगना 4. भाला, नेजा ।

वण्ठरः [वण्ठ्+अरन्] 1. बाँस का आवेष्टन, बाँस का मोटा पत्ता 2. ताड का नया किसलय 3. (बकरे को) बाँधने के लिए रस्सी 4. कुत्ता 5. कुत्ते की पूंछ 6. बादल 7. स्त्री की छाती ।

वण्ड् i (भ्वा० आ० वण्डते) 1. बाँटना, हिस्से करना, अंश बनाना 2. घेरना, चारों ओर से आवेष्टित करना । ii (चुरा० उभ० वण्डयति—ते) हिस्से करना, बाँटना, अंश बनाना ।

वण्ड (वि०) [वण्ड्+अच्] 1. अपाङ्ग, अपाहिज, विकलाङ्ग 2. अविवाहित 3. नपुंसक बनाया हुआ, **डः** 1. वह आदमी जिसकी खतना हो चुकी है या जिसकी जननेन्द्रिय के अग्रभाग को ढकने वाला चमड़ा नहीं है 2. बिना पूँछ का बैल, **डा** व्यभिचारिणी स्त्री —तु० 'रण्डा' ।

वण्डरः [वण्ड्+अरन्] 1. कञ्जूस, मक्खीचूस 2. हिजड़ा ।

वत् (वि०) i एक प्रत्यय जो 'स्वामित्व' की भावना को प्रकट करने के लिए 'संज्ञाशब्दों' के साथ लगाया जाता है—उदा० **धनवत्**—धनाढ्य, **रूपवत्** सुन्दर, इसी प्रकार भगवत्, भास्वत् आदि, (इस प्रकार बने हुए शब्द विशेषण होते हैं) 2. भू० क० कृ० के आधार से 'वत्' लगा कर कर्तृवा० का रूप बना लिया जाता है—इत्युक्तवन्तं जनकात्मजायाम्—रघु० १४।४३ 3. अव्य० 'समानता' और 'सादृश्य' अर्थ को प्रकट करने के लिए संज्ञा या विशेषण शब्दों के साथ 'वत्' जोड़ दिया जाता है उदा० आत्मवत्सर्वभूतानि यः पश्यति स पण्डितः ।

वत [वन्+क्त] दे० वत ।

वतंसः [अवतंस्+अच् वा घञ्, भागुरिमते 'अव' इत्यस्य अकारलोपः] दे 'अवतंस'—कपोलविलोलवतंसं —गीत० २ ।

वतोका [अवगतं तोकं यस्याः—अवस्य अकार लोपः] बाँझ या निस्सन्तान स्त्री, वह गाय या स्त्री जिसका किसी दुर्घटनावश गर्भपात हो गया हो ।

वत्सः [वद्+सः] 1. बछड़ा, किसी जानवर का बच्चा, तेनाथ वत्समिव लोकममुं पुपाण—भर्तृ० २।५६, यं सर्वशैलाः परिकल्प्य वत्सं—कु० १।२ 2. लड़का

पुत्र, (यह शब्द इस अर्थ में बहुधा संबोधन के रूप में प्रयुक्त होता है, वात्सल्य द्योतक शब्द 'मेरे प्रिय' 'मेरे लाल' आदि शब्दों से व्यवहृत)—अयि वत्स कृतं कृतमतिविनयेन किमपराद्धं वत्सेन—उत्तर० ६ 3. संतान, बच्चे, जीववत्सा 'जिसके बच्चे जीवित हों' 4. वर्ष 5. एक देश का नाम (इसकी राजधानी कौशांबी थी जहां उदयन राज्य करता था) या उसके अधिवासी,—त्सा 1. बछिया 2. छोटी लड़की 'वत्से सीते' (बेटी सीता) आदि,—त्सम् छाती। सम० अक्षी एक प्रकार की ककड़ी,—अदनः भेड़िया, —ईशः —राजः वत्स देश का राजा, लोके हारि च वत्सराजचरितं नाट्ये च दक्षा वयम्—नाग० १,—काम (वि०) बच्चों को प्यार करने वाला, (मा) वह गाय जो बछड़े से मिलने की प्रबल लालसा रखती है,—नाभः 1. एक वृक्ष का नाम 2. एक प्रकार अत्यंत कठोर विष,—पालः बछड़ों को पालने वाला, कृष्ण या बलराम,—शाला गौशाला।

वत्सकः [वत्स+कन्] 1. नन्हा बछड़ा, बछड़ा 2. बच्चा 3. 'कुटज' नाम का पौधा,—कम् पुष्पकसीस।

वत्सतरः [वत्स+तरप्] वह बछड़ा जिसने अभी हाल में दूध चूंघना छोड़ा है, जवान बैल जिसके ऊपर अभी जुआ नहीं रक्खा गया है—महोक्षतां वत्सतरः स्पृशन्निव—रघु० ३।३२,—री बछिया, कलोर श्रोत्रियाभ्यागताय वत्सतरीं वा महोक्षं वा निर्वपन्ति गृहमेधिनः—उत्तर० ४।

वत्सरः [वस्+सरन्] 1. वर्ष— याज्ञ० १।२०५ 2. विष्णु का नाम। सम०—अन्तकः फाल्गुन का महीना, —ऋणम् वह ऋण जो वर्ष की समाप्ति पर वापिस किया जाय।

वत्सल (वि०) [वत्सं लाति ला+क] 1. बच्चों को प्यार करने वाला, बच्चों के प्रति स्नेह शील जैसा कि वत्सला धेनुः माता 2. स्नेहशील, अतिप्रिय, स्नेहानुरागी, दयालु,—करुणामयतद्वत्सलः क्व स तपस्विजनस्य हन्ता—मा० ८।८, ६।१४, रघु० २।६९, ८।४१, इसी प्रकार 'शरणागतवत्सलः, 'दीनवत्सलः आदि,—लः घास से प्रज्वलित अग्नि, ला अपने बछड़े को प्यार करने वाली गाय,—लम् स्नेह, प्यार।

वत्सलयति (ना० धा० पर०) उत्कण्ठा पैदा करना, उत्सुक बनाना, स्नेहयुक्त करना—नूनमनपत्या मां वत्सलयति श० ७।

वत्सा, वत्सिका [वत्स+टाप्, वत्सा+कन्+टाप् इत्वम्] बछिया, वहड़ी।

वत्सिमन् (पुं०) [वत्स+इमनिच्] बचपन, कौमार्य, उभरती जवानी।

वत्सीयः [वत्स+छ] गोप, ग्वाला।

वद् (भ्वा० पर० वदति, परन्तु कुछ अर्थों में तथा कुछ उपसर्गों के साथ आ०, दे० नी०, उदित, कर्म वा० उद्यते, इच्छा० विवदिषति) 1. कहना, बोलना, उच्चारण करना, संबोधित करना, बातें करना—वदप्रदोषे स्फुटचन्द्रतारका विभावरी यद्यरुणाय कल्पते —कु० ५।४४, वदतां वरः—रघु० १।५९, 'वाक्पटुओं में प्रमुखतम' 2. घोषणा करना, कहना, समाचार देना, सूचित करना यो गोत्रादि वदति स्वयम् 3. किसी के विषय में कहना, वर्णन करना, भग० २।२९ 4. अंकित करना, निर्धारित करना, बयान मनु० २।९, ४।१४ 5. नाम लेना, पुकारना वदन्ति वर्ण्यावर्ण्यानां धर्मैक्यं दीपकं बुधाः—चन्द्रा० 6. संकेत करना, आभास देना कृतज्ञतामस्य वदन्ति संपदः—कि० १।१४ 7. स्वर ऊँचा उठाना, क्रन्दन करना, गायन करना कोकिलः पंचमेन वदति, वदन्ति मधुरा वाचः—आदि 8. होशियारी या प्रवीणता दर्शाना, किसी विषय पर अधिकारी होना (आ०) शास्त्रे वदते, पाणिनिर्वदते—वोप० 9. चमकना, उज्ज्वल या देदीप्यमान दिखलाई देना (आ०), भट्टि० ८।२७ 10. उद्योग करना, चेष्टा करना, परिश्रम करना (आ०) क्षेत्रे वदते सिद्धा०, प्रेर० (वादयति-ते) 1. कहलवाना 2. शब्द करवाना, बाजा बजना—वीणामिव वादयन्ती—विक्रम० १।१०, वादयते मृदु वेणुम्—गीत० ५, अनु—, 1. बोलने में नकल करना, दोहराना (गिरं नः) अनुवदति शुकस्ते मञ्जुवाक्पञ्जरस्थः—रघु० ५।७४ 2. प्रतिध्वनि करना, गूंजना (पर० और आ०) अनुवदति वीणा 3. अनुमोदन करना (उसी मनोभाव की प्रतिध्वनि करके) शि० २।६७ ... नक़ल करना (आ०) भट्टि० ८।२९ 5. समर्थन के रूप में आवृत्ति करना, अप—, (सदैव आ०, परन्तु कभी कभी पर० भी) 1. बुरा भला कहना, गाली देना, निन्दा करना—शि० १७।१९, मनु०४।२३६, कभी कभी संप्र० के साथ—भट्टि० ८।४५, 2. न अपनाना, 3. गिनना विरोध करना, अभि—, 1. अभिव्यक्त करना, उच्चारण करना, मूल्य या वजन रखना—यद्वाचाऽनभ्युदितं येन वागभ्युद्यते, तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते केन०, 2. नमस्कार करना, अभिवादन करना, (प्रेर०) प्रणाम करना—भगवन्नभिवादये,उप—, (आ०) 1. लुभाना, चापलूसी करना, फुसलाना—भट्टि० ८।२८, 2. मनाना, अनुकूल करना, परि—, गाली देना, निन्दा करना, बुरा भला कहना, प्र—, 1. बोलना, उच्चारण करना 2. बातें करना, संबोधित करना—भट्टि० ७।२४ 3. नाम लेना, पुकारना 4. खयाल करना, सोचना, प्रति—, उत्तर में बोलना, जवाब देना—रघु०

३।६४ 2. बोलना, उच्चारण करना 3. दोहराना वि–, (आ०) 1. झगड़ा करना, विवाद करना–परस्परं विवदमानौ भ्रातरौ 2. भिन्नमत का होना, प्रतिकूल होना, विरोधी होना–परस्परं विवदमानानां शास्त्राणां—हि० १ 3. (न्यायालय आदि में) दृढ़ता पूर्वक कहना, विप्र–, (पर० आ०) वादविवाद करना, कलह करना, झगड़ा करना भट्टि० ८।४२, विसम् , 1. असंगत होना, भिन्न मत का होना 2. असफल होना (प्रेर०) असंगत बनाना सम् , 1. बातें करना, संबोधित करना 2. मिलकर बोलना, वार्तालाप करना, प्रवचन करना 3. समरूप होना, अनुरूप होना, समान होना (करण० के साथ)–अस्य मुखं सीताया मुखचन्द्रेण संवदत्येव–उत्तर० ४ 4. नाम लेना, पुकारना 5. बोलना, उच्चारण करना (प्रेर०) 1. परामर्श करना, सलाह-मशवरा (करण० के साथ) करना 2. शब्द करवाना, वाद्ययंत्र बजाना, संप्र , (आ०) (मनुष्यों की तरह) ऊँचे स्वर से या स्पष्ट बोलना संप्रवदन्ते ब्राह्मणाः –सिद्धा० 2. क्रन्दन करना, क्रन्दन ध्वनि का उच्चारण करना (पर०)–वरतनु संप्रवदन्ति कुक्कुटाः महा० ।

वद (वि०) [वद्+अच्] बोलने वाला, बातें करने वाला, अच्छा बोलने वाला ।

वदनम् [वद्+ल्युट्] 1. चेहरा आसीद्विवृत्तवदना च विमोचयन्ती– श० २।१०, इसी प्रकार 'सुवदना' कमलवदना आदि 2. मुख–वदने विनिवेशिता भुजङ्गी पिशुनानां रसनामिषेण धात्रा–भामि० १।१११ 3. पहलू, छवि, दर्शन 4. अगला भाग 5. (किसी माला का) पहला शब्द । सम० आसवः लार ।

वदन्ती [वद्+झच्+ङीप्] भाषण, प्रवचन ।

वदन्य (वि०) [वद्+अन्य, पृषो० ह्रस्वः] दे० 'वदान्य'।

वदरः [वद्+अरच्] दे० 'बदर' ।

वदालः [वद्+क, अल्+अच्] 1. बवण्डर, भंवर 2. एक प्रकार की जर्मन मछली ।

वदावद (वि०) [अत्यन्तं वदति –वद्+अच्, नि०] 1. बोलने वाला, वाक्पटु 2. बातूनी, वाचाल ।

वदान्य (वि०) [वद् +आन्यः] 1. धारा प्रवाह से बोलने वाला, वाक्पटु 2. सानुग्रह बोलने वाला 3. उदार, दयालु, दानशील मनु० ४।२२४, न्यः उदार या दानशील व्यक्ति, दाता, अत्युदार व्यक्ति–शिरसा वदान्यगुरवः सादरमेनं वहन्ति सुरतरवः–भामि० १।११, या नम्रं वदान्यगुरवे तस्मै नमोऽस्तु–१।३४ नै० ५।११, रघु० ५।२४ ।

वदि (अव्य०) (चान्द्रमास का) कृष्णपक्ष, ज्येष्ठवदि (विप० सुदी) ।

वद्य (वि०) [वद्+यत्] 1. कहने के योग्य, दूषण देने के अयोग्य तु० अवद्य 2. कृष्णपक्ष (चान्द्रमास का एक पक्ष वद्यपक्षः=कृष्णपक्षः),–द्यम् भाषण, इधर-उधर की बातें करना ।

वध् (भ्वा० पर० वधति) मारना, कतल करना (लौकिक या शास्त्रीय संस्कृत में इसका प्रयोग केवल लुङ व आशीर्लिङ् में 'हन्' धातु के स्थान पर होता है) ।

वधः [हन्+अप्, वधादेशः] 1. मार डालना, हत्या, कतल, विनाश–आत्मनो वधमाहर्ता क्वासौ विहगतस्करः–विक्रम० ५।१, मनुष्यवधः मानवहत्या, पशुवधः आदि 2. आघात, प्रहार 3. लकवा, 4. लोप, अन्तर्धान 5. (गणित में) गुणा, सम० –अङ्गकम् विष, –अर्ह (वि०) फांसी के दण्ड का अधिकारी –उद्यत (वि०) 1. हत्या संबंधी 2. हत्यारा, कातिल –उपायः हत्या की तरकीब, –कर्माधिकारिन् (वि०) फांसी पर लटकाने वाला, जल्लाद, –जीविन् (पुं०) 1. शिकारी 2. कसाई, –दण्डः 1. शारीरिक दण्ड (हंटर आदि लगाना) 2. फांसी, –भूमिः (स्त्री०) –स्थली (स्त्री०)–स्थानम् 1. फांसी की जगह 2. बूचड़खाना,–स्तम्भः फांसी – मृच्छ० १० ।

वधकः [हन्+क्वुन्, वध च] 1. जल्लाद, फांसी पर लटकाने वाला 2. क़ातिल, हत्यारा ।

वधत्रम् [वध+अत्रन्] घातक हथियार ।

वधित्रम् [वध्+इत्र] 1. कामदेव 2. कामोन्माद, कामातुरता ।

वधुः, वधुका [=वधूः, नि० ह्रस्वः] 1. पुत्रवधू, स्नुषा 2. युवती स्त्री ।

वधूः (स्त्री०) [उह्यते पितृगेहात् पतिगृहं वह्+ऊधुक्] 1. दुलहिन–वरः स वध्वा सह राजमार्गं प्राप ध्वजच्छायनिवारितोष्णम्–रघु० ७।४. १९, समानयंस्तुल्यगुणं वधूवरं चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः श० ५।१५, कु० ६।८२ 2. पत्नी, भार्या–इयं नमति वः सर्वांस्त्रिलोचनवधूरिति–कु० ६।८९, रघु० १।९० 3. पुत्रवधू एषा च रघुकुलमहत्तराणां वधूः –उत्तर० ४, ४।१६, तेषां वधूस्त्वमसि नन्दिनि पार्थिवानाम्–१।९ 4. महिला, तरुणी, स्त्री–हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे–गीत०, स्वयशांसि विक्रमवतामवतां न वधूष्वधानि विमृशन्ति धियः–कि० ६।४५, नै० २२।४७, मेघ० १६,४७, ६५, 5. अपने से छोटे रिश्तेदार की पत्नी, नाते में छोटी स्त्री 6. किसी भी पशु की मादा–मृगवधूः (हरिणी) व्याघ्रवधूः, गजवधूः आदि । सम०–गृह प्रवेशः,–प्रवेशः दुलहिन का अपने पति के घर में सर्व प्रथम प्रवेश समारंभ, –जनः पत्नी, स्त्री, –पक्षः (विवाह के अवसर पर) कन्या पक्ष के लोग,–वस्त्रम् दुलहिन की वेशभूषा, वैवाहिक पोशाक ।

वधूटी [अल्पवयस्का वधूः---वधू+टि+ङीप्] 1. तरुणी, स्त्री, नवयुवती—रथं वधूटीमारोप्य पापः क्वाप्यप गच्छति—महावीर० ५।१७, गोपवधूटीदुकूलचौराय (कृष्णाय)—भापा० १, पुत्रवधू।

वध्य (वि०) [वधमर्हति वध+यत्] 1. मारे जाने के योग्य, हत्या किये जाने के योग्य 2. जिसे प्राण दण्ड की आज्ञा मिल चुकी है 3. शारीरिक दण्ड दिये जाने के योग्य, शारीरिक रूप से दण्डय,—ध्यः 1. शिकार, मृत्यु की तलाश में—मुद्रा० १।९ 2. शत्रु०। सम० पटहः वह ढोल जो किसी को फांसी पर लटकाते समय बजाया जाय। —भूः,—भूमिः (स्त्री०) स्थलम्,—स्थानम् फांसी घर, माला फूलों की माला जो फांसी पर लटकाने के लिए तैयार व्यक्ति को पहनाई जाय।

वध्या [वध्य+टाप्] वध, हत्या, क़तल।

वध्रम् [वन्ध्+ष्ट्रन्] 1. चमड़े का तस्मा—शि० २०।५० 2. सीसा,—ध्री चमड़े की पट्टी।

वध्र्यः [वध्र+यत्] जूता।

वन् i (भ्वा० पर० वनति) 1. संमान करना, पूजा करना 2. सहायता करना 3. शब्द करना 4. व्यापृत या व्यस्त होना।

ii (तना० उभ० वनोति, वनुते) 1. याचना करना, कहना, प्रार्थना करना (द्विक० धातु मानी जाती है) —तोयदादितरं नैव चातको वनुते जलम् 2. खोज करना, प्राप्त करने की चेष्टा करना 3. जीतना, स्वामित्व प्राप्त करना।

iii (भ्वा० पर० चुरा० उभ० वनति, वानयति–ते) 1. अनुग्रह करना, सहायता करना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना 3. ध्वनि करना 4. विश्वास करना।

वनम् [वन्+अच्] अरण्य, जंगल, वृक्षों का झुरमुट —एको वासः पत्तने वा वने वा—भर्तृ० ३।१२०, वनेऽपि दोषाः प्रभवन्ति रागिणाम् 2. गुल्म, झुण्ड, सघन क्यारी में उगे हुए कमल या अन्य पौधों का समुच्चय,—चित्र-द्विपाः पद्मवनावतीर्णाः रघु० १६।१६, ६।८६ 3. आवासस्थल, निवासस्थान, घर 4. फौवारा (पानी का) झरना 5. पानी—शि० ६।७३ 6. लकड़ी, काष्ठ (समास) में प्रथमपद के रूप में इसका प्रयोग 'जंगली' 'वनैला' अर्थों में होता है—उदा० वनवराह, वनकदली, वनपुष्पम् आदि)। सम० अग्निः दावानल, —अजः जंगली बकरा,—अन्तः 1. किसी जंगल की सीमा या दामन—रघु० २।५८ 2. वन्यप्रदेश, जंगल —उत्तर० २।२५,—अन्तरम् 1. दूसरा जंगल 2. जंगल का भीतरी प्रदेश विक्रम० ४।२६, अरिष्टा जंगली हल्दी,—अलक्तम् लाल मिट्टी, गेरु या लाल खड़िया, —अलिका सूरजमुखी,—आखुः खरगोश,—आखुकः एक प्रकार का लोबिया,—आपगाः जंगली नदी, अरण्यसरिता,—आर्द्रका जंगली अदरक,—आश्रमः जंगल में आवास, वानप्रस्थ–जीवन का तीसरा आश्रम, —आश्रमिन् (पुं०) वानप्रस्थी, संन्यासी, तपस्वी, आश्रयः 1. वनवासी 2. एक प्रकार का पहाड़ी कौवा,—उत्साहः गैंडा,—उद्भवा जंगली कपास का पौधा,—उपप्लवः दावानल,—ओकस् (पुं०) 1. वनवासी, जंगल में रहने वाला 2. संन्यासी, तपस्वी 3. जंगली जानवर, जैसे कि बन्दर, सूअर,—कणा वनपिप्पली,—कदली जंगली केला, करिन् (पुं०) —कुञ्जरः,—गजः जंगली हाथी,—कुक्कुटः जंगली मुर्ग,—खण्डम् जंगल का एक भाग,—गवः जंगली बैल,—गहनम् झुरमुट, जंगल का सघन भाग, गुप्तः भेदिया, जासूस गुल्मः जंगली झाड़ी,—गोचर (वि०) बार-बार जंगल में जाने वाला, (रः) 1. शिकारी 2. वनवासी (रम्) वन, जंगल,—चन्दनम् 1. देवदारु का वृक्ष 2. अगर की लकड़ी,—चन्द्रिका,—ज्योत्स्ना एक प्रकार की चमेली,—चम्पकः जंगली चम्पा का पौधा,—चर (वि०) वनवासी, वन में विचरने वाला, वन देवता, (रः) 1. वनवासी, वन में रहने वाला, जंगली आदमी उपतस्थुरास्थितविषादधियः शतयज्वनो वनचरा वसतिम्—कि० ६।२९, मेघ० १२ 2. वन्य पशु 3. आठ पैरों वाला शरभ नाम का एक काल्पनिक जन्तु, चर्या जंगल में घूमना या निवास, छागः 1. जंगली बकरा 2. सूअर,—जः 1. हाथी 2. एक प्रकार का सुगन्धित घास 3. जंगली नीबू का पेड़ (—जम्) नीलकमल,—जा 1. जंगली अदरक 2. जंगली कपास का पौधा—जीविन् वनवासी, जंगली आदमी,—दः बादल,—दाहः दावानल,—देवता वनदेवी, जंगल–परी, रघु० २।१२, ९।५२, श० ४।४, कु० ३। ५२, ६।३९,—द्रुमः जंगली पेड़,—धारा वृक्षावलि, छायादार मार्ग,—धेनुः (स्त्री०) गाय, जंगली बैल की मादा, पांसुलः शिकारी,—पार्श्वम् जंगल के आस पास का क्षेत्र, वनप्रदेश, पुष्पम् जंगली फूल,—पूरकः जंगली नीबू का पेड़, प्रवेशः तपस्विजीवन का आरम्भः,—प्रस्थः अधित्यका या पठार में स्थित जंगल, —प्रियः कोयल, (यम्) दारचीनी का पेड़,—बर्हिणः, —वर्हिणः जंगली मोर,—भूः जंगल की भूमि—मक्षिका गोमक्खी, डांस,—मल्ली जंगली चमेली,—माला जंगली फूलों की माला जैसी कि श्रीकृष्ण पहनते थे रघु० ९।५१, इसका वर्णन है: आजानुलम्बिनी माला सर्वर्तुं कुसुमोज्ज्वला। मध्ये स्थूलकदम्बाढ्या वनमालेति कीर्तिता॥ °धरः श्रीकृष्ण का विशेषण, मालिन् (पुं०) कृष्ण का एक विशेषण धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली—गीत०

५, तव विरहे वनमाली सखि सीदति गीत० ५, —मालिनी द्वारका नगर का नामांतर, — मुच् (वि०) जल डालने वाला, —रघु० ९।२२, (पुं०) — मूतः बादल, —मुद्गः एक प्रकार की मूंग, —मोचा जंगली केला, —रक्षकः वन का रखवाला, —राजः सिंह, —रुहम् कमल का फूल, —लक्ष्मीः (स्त्री०) 1. जंगल का आभूषण या सौंदर्य 2. केला—लता जंगली बेल, लता दूरीकृताः खलुगुणैरुद्यानलता वनलताभिः—श० १।१७, —वह्निः,—हुताशनः दावानल, —वासः 1. जंगल में रहना, वन में वास — श० ४।१० 2. जंगली या यायावरीय (घुमक्कड़) जीवन 3. वनवासी, वन में रहने वाला, —वासनः गंधविलाव, —वासिन् (पुं०) 1. जंगल में रहने वाला, वनवासी 2. तपस्वी इसी प्रकार 'वनस्थायिन्', — व्रीहिः जंगली चावल, —शोभनम् कमल, —श्वन् (पुं०) 1. गीदड़ 2. व्याघ्र 3. गंधविलाव, —संकटः एक प्रकार की दाल, मसूर —सद्,—संवासिन् (पुं०) वनवासी —सरोजिनी (स्त्री०) जंगली कपास का पौधा, —स्थः 1. हरिण 2. तपस्वी —स्था बरगद का पेड़, —स्थली जंगल, जंगल की भूमि, — स्रज् (स्त्री०) जंगली फूलों की माला।

वनरः (पुं०) दे० 'वानर'।

वनस्पतिः [वनस्य पतिः, नि० सुट्] 1. एक बड़ा जंगली वृक्ष, विशेषकर वह जिसे बिना बौर आये फल लगता है 2. वृक्ष, पेड़, —तमाशु विघ्नं तपसस्तपस्वी वनस्पतिं वज्र इवावभज्य कु० ३।७४।

वनायुः [वन+इण्+उण्, वन्+आयुच् वा] एक जिले का नाम — रघु० ५।७३। सम० —ज (नपुं०) वनायु में उत्पन्न घोड़ा आदि।

वनिः (स्त्री०) [वन्+इ] कामना, इच्छा।

वनिका [वनी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] छोटा जंगल, जैसे कि 'अशोकवनिका'।

वनिता [वन्+क्त+टाप्] 1. स्त्री, महिला वनितेति वदंत्येतां लोकाः सर्वे वदन्तु ते, यूनां परिणता सेयं तपस्येति मतं मम — भामि० २।१२७, पथिकवनिताः —मेघ० ८ 2. पत्नी, गृहस्वामिनी—वनेचराणां वनितासखानाम् कु० १।१०, रघु० २।१९ 3. कोई भी प्रेयसी स्त्री 4. किसी भी जानवर की मादा। सम० —द्विष् (पुं०) स्त्रीद्वेषी, स्त्रियों से घृणा करने वाला, —विलासः स्त्रियों का इच्छानुकूल मनोरंजन।

वनिन् (पुं०) [वन+इनि] 1. वृक्ष 2. सोम लता 3. वानप्रस्थ, तीसरे आश्रम में रहने वाला।

वनिष्णु (वि०) [वन्+इष्णुच्] मांगने वाला, याचना करने वाला।

वनी [वन+ङीप्] जंगल, अरण्य, (वृक्षों का) गुल्म या झुरमुट — अवनीतलमेव साधु मन्ये न वनी माधवनी विलासहेतुः—जग०।

वनीयकः, वनीपकः [वनिं याचनामिच्छति—वनि+क्यच्, +ण्वुल्] भिक्षुक, साधु—वनीयकानां स हि कल्पभूरुहः नै० १५।६०।

वनेकिंशुकाः (ब० व०) [वने किंशुक इव, सप्तम्या अलुक्] जंगल में 'किंशुक' अनायास ही मिलने वाला पदार्थ।

वनेचरः [वने चरति—चर्+ट, सप्तम्या अलुक्] जंगल में रहने वाला, —रः 1. वनवासी, जंगल में रहने वाला आदमी वनेचराणां वनितासखानाम्—कु० १।१०, १।२ 2. संन्यासी, तपस्वी 3. वन्य पशु 4. वनदेवता, वनमानुष 5. पिशाच।

वनेज्यः [वने इज्यः, स० त०] एक प्रकार का आम।

वंद् (भ्वा० आ० वंदते, वंदित) प्रणाम करना, सादर नमस्कार करना, श्रद्धांजलि प्रदान करना—जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ—रघु० १।१, १३।७७, १४।५ 2. आराधना करना, पूजा करना 3. प्रशंसा करना, स्तुति करना, अभि —, प्रणाम करना, सादर नमस्कार करना—रघु० १६।८१।

वंदकः [वन्द्+ण्वुल्] प्रशंसक।

वंदथः [वन्द्+अथः] प्रशंसक, चारण या भाट, स्तुति गायक।

वंदनम् [वन्द्+ल्युट्] 1. नमस्कार, अभिवादन 2. श्रद्धा, सत्कार 3. किसी ब्राह्मणादि को (चरणस्पर्श करते हुए) प्रणाम 4. प्रशंसा, स्तुति—ना 1. पूजा, अर्चना 2. प्रशंसा,— नी 1. पूजा, अर्चना 2. प्रशंसा 3. याचना, 4. मृतक को पुनर्जीवित करने वाली औषधि। सम० —मालः, —मालिका किसी द्वार पर लगाई गई फूलमाला।

वंदनीय (वि०) [वंद्+अनीयर्] अभिवादन के योग्य, सत्कार के योग्य, —या हरताल, गोरोचना।

वंदा [वंद्+अच्+टाप्] भिक्षुणी, भीख मांगने वाली स्त्री।

वंदारु (वि०) [वन्द्+आरु] 1. प्रशंसा करने वाला 2. श्रद्धालु, सम्मानपूर्ण, विनीत, शिष्ट—परमनुगृहीतो महामुनिवंदारुः — मुद्रा० ७, नपुं० प्रशंसा।

वंदिन् (पुं०) [वन्द्+इन्] 1. स्तुति गायक, चारण, भाट, अग्रदूत (भाट या चारण एक विशिष्ट जाति है जो क्षत्रिय पिता और शूद्र माता की सन्तान है) 2. बंदी, कैदी।

वंदी (स्त्री०) [वन्दि+ङीप्] दे० बंदी। सम० — पालः कारााध्यक्ष, जेलर।

वंद्य (वि०) [वन्द्+ण्यत्] 1. सत्कार के योग्य, श्रद्धेय 2. सादर नमस्करणीय—रघु० १३।७८, कु० ६।८३, मेघ० १२ 3. स्तुत्य, श्लाघ्य, प्रशंसनीय।

वंद्रः [वंद्+रक्] पूजा करने वाला, भक्त, द्रुम् समृद्धि।
वंधुर (वि०) दे० 'वंधुर'।
वंध्य, वंध्या दे० वंध्य, वंध्या।
वन्य (वि०) [वने भवः यत्] 1. जंगल से संबंध रखने वाला, जंगल में उगने वाला या उत्पन्न, जंगली कल्पवित्कल्पयाभास वन्यामेवास्य संविधाम्—रघु० १।९४, वन्यानां मार्गशाखिनाम् ४५ 2. बर्बर, जो पालतू या घरेलू न हो रघु० २।८, ३७, ५।४३, न्यः जंगली जानवर,—न्यम् जंगली पैदावार (जैसे कि फल, मूल क्षादि) रघु० १२।२०। सम० —इतर (वि०) पालतू, घरेलू, गजः,—द्वीपः जंगली हाथी।
वन्या [वन्य+टाप्] 1. विशाल जंगल, झुरमुटों का समूह 2. जलराशि, बाढ़, जल-प्रलय।
वप् (भ्वा० उभ० वपति, वपते, उप्तः, कर्मवा० उप्यते, इच्छा० विवप्सति ते) 1. बोना, (बीज) बिखेरना, पौधा लगाना यथेरिणे बीजमुप्त्वा न वप्ता लभते फलम्—मनु० ३।१४२, न विद्यामिरिणे वपेत्—२।११३, यादृशं वपते बीजं तादृशं लभते फलम् सुभा०, कु० २।५, श० ६।२३ 2. फेंकना, (पांसा) डालना 3. जन्म देना, पैदा करना 4. बुनना 5. मूंडना, बाल काटना (प्रायः वैदिक), प्रेर० (वापयति—ते) बोना, पौधा लगाना, भूमि में डालना, आ 1. बिखेरना, इधर उधर फेंकना 2. बोना 3. यज्ञ आदि में आहुति देना उद् , उडेलना नि 1. (बीज) इधर-उधर बिखेरना 2. (आहुति) देना, विशेषतः पितरों को, न्युप्य पिण्डांस्ततः मनु० ३।२१६, (स्मरमुद्दिश्य) निवपेः सहकार मंजरीः—कु० ४।३८ 3. बलि चढ़ाना, यज्ञ के पशु का वध करना निस्—, 1. बिखेरना, (बीज चादि) छितराना 2. प्रस्तुत करना, पेश करना—श्रोत्रियायाभ्यागताय वत्सतरीं वा महोक्षं वा निर्वपंति गृहमेधिनः उत्तर० ४ 3. तर्पण करना, विशेषकर पितरों का 4. अनुष्ठान करना प्रति—, 1. बोना 2. पौधा लगाना, जमाना, रोपना—उत्तर०३।४६, मा० ५। १० 3. जमाना, (रत्नादिक) जड़ना, प्र—, फेंकना डालना, प्रस्तुत करना—भट्टि० ९।९८।
वपः [वप्+घ] 1. बीज बोना 2. जो बीज बोता है, बोने वाला 3. मूंड़ना 4. बुनना।
वपनम् [वप्+ल्युट्] 1. बीज बोना 2. मूंड़ना, काटना मनु० ११।१५१ 3. वीर्य, शुक्र, बीज—नी 1. नाई की दुकान 2. बुनने का उपकरण 3. तन्तुशाला।
वपा [वप्+अच्+टाप्] 1. चर्बी, वसा—याज्ञ० ३।९४ 2. छिद्र, रन्ध्र 3. वमी, दीमकों द्वारा बनाया गया मिट्टी का टीला। सम०—कृत् (पुं०) वसा, मज्जा।
वपिलः [वप्+इलच्] प्रजापति, पिता।
वपुनः (पुं०) सुर, देवता।
वपुष्मत् (वि०) [वप्+उसि+मतुप्] 1. मूर्त, देहधारी, शरीरधारी—ददृशे जगतीभुजा मुनिः स वपुष्मानिव पुण्यसंचयः—कि० २।५६ 2. सुन्दर, मनोहर, पुं० विश्वेदेवों में से कोई एक।
वपुस् (नपुं०) [वप्+उसि] 1. (क) शरीर, देह (स्मरं) वपुषा स्वेन नियोजयिष्यति—कु० ४।४२, नवं वयं कांतमिदं वपुश्च रघु० २।४७, शि० १। ५०, (ख) रूप, आकृति, सूरत या छवि—लिखितवपुषौ शंखपद्मौ च दृष्ट्वा मेघ० ८०, परिघः क्षतजतुल्यवपुः बृहत्० ३०।२५ 2. रस, प्रकृति मनु० ५।९६ 3. सौन्दर्य, सुन्दर रूप या छवि। सम० गुणः, प्रकर्षः रूप की श्रेष्ठता, वैयक्तिक सौन्दर्य—संघुक्षयंतीव वपुर्गुणेन—कु० ३।५२, वपुः प्रकर्षादजयद् गुरुं रघुः रघु० ३।३४, कि० ३।२, धर (वि०) 1. मूर्त 2. सुन्दर स्रवः शरीर से चूने वाला तरल रस।
वप्तृ (पुं०) [वप्+तृच्] 1. (बीज का) बोने वाला, पौधा लगाने वाला, किसान न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते—मुद्रा० १।३, मनु० ३।१४२ 2. पिता, प्रजापति 3. कवि, अन्तःस्फूर्त या प्रणोदित ऋषि।
वप्रः,—प्रम् [उप्यते अत्र वप्+रन्] दुर्गप्राचीर, मिट्टी की दीवार, गारे की भित्ति—वेलावप्रवलयां (ऊर्वीम्) रघु० १।३० 2. तटबंध या टीला (जिसमें कि सांड या हाथी टक्कर लगाते हैं) रघु० १३।४७, दे० नी० वप्रक्रीडा 3. किसी पहाड़ या चट्टान का ढलान —बृहच्छिलावप्रघनेनं वक्षसा—कि० १४।४० 4. चोटी, शिखर, अधित्यका—तीव्रं महाव्रतमिवात्र चरन्ति वप्राः शि० ४।५८, ३।३७, कि० ५।३६, ६। ७ 5. नदीतट, पार्श्व, किनारा, वेलातट,—ध्वनयः प्रतेनुरनुवप्रनपाम्—कि० ६।४, ७।११, १७।५८ 6. किसी भवन की नींव 7. शहरपनाह या दुर्गप्राचीर से युक्त नगर का फाटक 8. खाई 9. वृत्त का व्यास 10. खेत 11. मिट्टी का टीला (जिसको कि हाथी या सांड़ टक्कर मारे)= प्रः पिता,—प्रम् सीसा। सम० —अभिघातः (किसी पहाड़ या नदी आदि के) तटबंध पर टक्कर मारना—कि० ५।४२, तु० 'तटाघात' —क्रिया,—क्रीड़ा किसी टीले या तटबन्ध पर हाथी (या सांड़) का टक्कर मार कर विहार करना—वप्रक्रियामृक्षवतस्तटेषु—रघु० ५।४४, वप्रक्रीड़ापरिणत गजप्रेक्षणीयं ददर्श—मेघ० २।
वप्रिः [वप्+क्रिन्] 1. खेत 2. समुद्र।
वप्री [वप्रि+ङीष्] मिट्टी का टीला, पहाड़ी।

वभ्र (भ्वा० पर० वभ्रति) जाना, हिलना-जुलना।

वम् (भ्वा० पर० वमति, वांत, प्रेर० वामयति, वमयति, परन्तु उपसर्गयुक्त होने पर केवल 'वमयति') 1. वमन करना, थूक देना, मुंह से बाहर निकालना—रक्तं चावमिषुर्मुखैः—भट्टि० १५।६२, ९।१०, १४।३० 2. बाहर भेजना, उडेलना, बाहर करना, उद्गीरण करना, बाहर निकालना, उत्सर्जन करना (आलं° से भी) किमाग्नेयग्रावा विकृत इव तेजांसि वमति —उत्तर० ६।१४, श० २।७, रघु० १६।६६, मेघ० २०, अविदितगुणाऽपि सत्कविभणितिः कर्णेषु वमति मधुधाराम्—वास० 3. बाहर फेंकना, नीचे डाल देना—वान्तमाल्यः—रघु० ७।६ 4. अस्वीकृत करना, उद्—1. थूक देना, उद्वमन करना 2. कै करना, भेज देना, उडेल देना—उद्वामेन्द्रसिक्ता भूबिलमग्नाविवोरगी —रघु० १२।५, मुद्रा० ६।१३।

वमः [वम्+अप्] कै करना, वमन करना, बाहर निकालना।

वमथुः [वम्+अथुच्] 1. कै करना, उद्वमन, थूकना 2. हाथी के द्वारा अपनी सूंड से फेंका गया पानी।

वमनम् [वम्+ल्युट्] 1. कै करना, उलटी 2. बाहर खींचना, बाहर निकालना, जैसा कि 'स्वर्गाभिष्यन्द-वमनम्' में, रघु० १५।२९, कु० ६।३७ 3. उलटी लानेवाली 4. आहुति देना - नः गांजा—नी जोक।

वमनीया [वम्+अनीयर्+टाप्] मक्खी।

वमिः [वम्+इन्] 1. आग 2. ठग, बदमाश—मिः (स्त्री०) 1. बीमारी, जी मिचलाना 2. उलटी लाने वाली (औषधि)।

वमी [वमि+ङीप्] उलटी करना।

वंभारवः [प० त०] पशुओं के रांभने की आवाज़।

वम्रः,—म्री [वम्+रक्, वम्रि+ङीप्] चिऊँटी। सम० —**कूटम्** बांबी।

वय् (भ्वा० आ०—वयते) जाना, हिलना-जुलना।

वयनम् [वे+ल्युट्] बुनना।

वयस् (नपुं०) [अज्+असुन्, वीभावः] 1. आयु, जीवन का कोई काल या समय,—गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः उत्तर० ४।११, नवं वयः —रघु० २।४७, पश्चिमे वयसि— १९।१, न खलु वयस्तेजसो हेतुः—भर्तृ० २।३८, तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते —रघु० ११।१, कु० ५।१६ 2. जवानी, जीवन का प्रमुख अंश—वयोगते कि वनिताविलासः—सुभा० इसी प्रकार 'अतिक्रान्तवया' 3. पक्षी—स्मरणीयाः समये वयं वयः—नै० २।६२, मृगयोगवयोपचितं वनम् रघु० ९।५३, २।९, शि० ३।५५, ११।४७ 4. कौवा —पंच० १।२३ (यहाँ इसका अर्थ 'पक्षी' भी हो सकता है)। सम०—**अतिग**—**अतीत** (वि०) (वयोतिग आदि) बड़ी आयु का, बूढ़ा, जीर्ण, शक्तिहीन,—**अधिक** (वि०) (वयोधिक) आयु में अधिक, वयोवृद्ध, वरिष्ठ **अवस्था** (वयोऽवस्था) जीवन की एक अवस्था, आयु की माप,—मा० ९।२९,—**कर** (वि०) स्वास्थ्य देनेवाला, जीवन को पुष्ट करनेवाला, आयु बढ़ानेवाला- **गत** (वि०) 1. वयस्क 2. वयोवृद्ध **परिणतिः, परिणामः** आयु की परिपक्वावस्था, वयोवृद्धता—**प्रमाणम्** 1. जीवन का माप या लम्बाई 2. जीवन की अवधि,—**वृद्ध** (वि०) (वयोवृद्ध) बूढ़ा, बड़ी आयु का,—**सन्धिः** 1. जीवन के एक काल से दूसरे काल में संक्रमण—श्रयो वयः सन्धयः 2. वयस्कता, परिपक्वावस्था (वयस्क होने का काल),—**स्थ** (वि०) (वयःस्थ-या-वयस्य) 1. जवान 2. वयः प्राप्त, वालिग़ 3. बलवान्, शक्तिशाली (—**स्था**) सखी, सहेली, —**हानिः** (वयोहानिः) 1. जवानी का ह्रास 2. यौवन का ह्रास।

वयस्य (वि०) [वयसा तुल्यः यत्] 1. समान आयु का 2. समसामयिक,—**स्यः** मित्र, सखा, साथी (प्रायः समान ही आयु का)—**स्या** सखी, सहेली।

वयुनम् [वय्+उनन्] 1. ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रत्यक्षज्ञान की शक्ति 2. मन्दिर (उणादिसूत्रों में इस शब्द को इसी अर्थ में पुंल्लिङ्ग भी बतलाया गया है)।

वयोधस् (पुं०) [वयो यौवनं दधाति—वयस्+धा+असि] युवा या प्रौढ़ व्यक्ति।

वयोरंगम् [वयसा रंगमिव] सीसा

वर् (चुरा० उभ० वरयति - ते, वृ या वॄ का प्रेर० रूप) मांगना, चुनना, छांटना, खोज करना,—दे० 'वृ'।

वर (वि०) [वृ कर्मणि अप्] 1. श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दरतम, या अत्यंत मूल्यवान्, छांटा हुआ, बढ़िया (संबं० या अधि० के साथ अथवा समास के अन्त में) वदतां वरः—रघु० १।५९, वेदविदां वरेण—५।२३, ११। ५४, कु० ६।१८, नृवरः, तरुवराः, सरिद्वराः आदि 2. अपेक्षाकृत अच्छा, दूसरे से अच्छा, ग्रंथिभ्यो धारिणो वराः मनु० १२।१०३, याज्ञ० १।३५१,—**रः** 1. चुनने और छांटने की क्रिया 2. छांट, चुनाव 3. वरदान, आशीर्वाद, अनुग्रह, वरं वृ या याच् वर मांगना, प्रीतास्मि ते पुत्र वरं वृणीष्व—रघु० २।६३, भवल्लब्धवरोदीर्ण—कु० २।३२, ('वर' और 'आशिस्' का अन्तर जानने के लिए दे० 'आशिस्') 4. भेंट, उपहार, पारितोषिक, पुरस्कार 5. कामना, इच्छा 6. याचना, अनुरोध 7. दूल्हा, पति—वरं वरयते कन्या, दे० वधू (२) के नीचे भी 8. पाणिग्रहणार्थी, विवाहार्थी 9. स्त्रीधन, दहेज 10. जामाता 11. कामुक, कामासक्त 12. चिड़िया,—**रम्** ज़ाफ़रान, केसर, ('वरम्' को पृथक् देखिये)। सम०—**अंग** (वि०) उत्तम रूप

वाला (—गः) हाथी (,—गी) हल्दी, (,—गम्) 1. सिर 2. उत्तम भाग 3. प्रांजल रूप 4. योनि, 5. हरी दारचीनी,—अंगना कमनीय स्त्री—अर्ह (वि०) वर पाने के योग्य,—आजीवन (पुं०) ज्योतिषी, —आरोह (वि०) सुन्दर कूल्हों वाला (—हः) उत्तम सवार(—हा) सुन्दर स्त्री,—आलिः चाँद, आसनम् 1. उत्तम चौकी 2. मुख्य आसन, सम्मान की कुर्सी 3. चीनी गुलाब,—उरुः,—रूः (स्त्री०) सुन्दर स्त्री (शा० सुन्दर जंघाओं से युक्त स्त्री), क्रतुः इन्द्र का विशेषण,—चन्दनम् 1. एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी 2. देवदारु, चीड़ का पेड़, —तनु (वि०) सुन्दर अवयवों वाला (स्त्री० नुः) सुन्दर स्त्री—वरतनुरथवासौ नैव दृष्टा त्वया मे—विक्रम० ४।२२,—तंतुः एक प्राचीन मुनि का नाम—रघु० ५।१,—त्वचः नीम का पेड़ —द (वि०) 1. वर देने वाला, वरदान प्रदान करने वाला 2. मंगलप्रद (दः) 1. उपकारी 2. पितृवर्ग (दा) 1. नदी का नाम मालवि० ५।१ 2. कुमारी, कन्या, —दक्षिणा दुलहिन के पिता-द्वारा दूल्हे को दिया गया उपहार,—दानम् वर प्रदान करना द्रुमः अगर का वृक्ष,—निश्चयः दूल्हे का चुनाव, —पक्षः (विवाह में) दूल्हे के दल के लोग—रघु० ६।८६,—प्रस्थानम्,—यात्रा विवाह संस्कार के लिए दूल्हे का जलूस के रूप में दुलहिन के घर की ओर कूच करना,—फलः नारियल का पेड़, बाह्लिकम् जाफ़रान, केसर,—युवतिः,—ती (स्त्री०) सुन्दर तरुणी स्त्री,—रुचिः एक कवि और वैयाकरण का नाम (विक्रमादित्य राजा के दरबार के नवरत्नों में से एक, दे० नवरत्न; कुछ लोग पाणिनि के सूत्रों पर प्रसिद्ध वार्तिककार कात्यायन से इसकी अभिन्नता सिद्ध करते हैं),—लब्ध (वि०) जिसने वरदान प्राप्त कर लिया है (ब्धः) चम्पक वृक्ष,—वत्सला सास, श्वश्रू, वर्णम् सोना,—वर्णिनी 1. उत्तम और सुन्दर रंगरूप वाली स्त्री 2. स्त्री 3. हल्दी 4. लाख 5. लक्ष्मी का नामांतर 6. दुर्गा का नामांतर 7. सरस्वती का नाम 8. 'प्रियंगु' नाम की लता,—स्रज् 'दूल्हे की माला' वह माला जो दुलहिन, दूल्हे के गले में डालती है।

वरकः [वृ+वुन्] 1. इच्छा, प्रार्थना, वर 2. चोगा लंतिये का एक प्रकार, कम् 1. नाव को ढकने की चादर 2. तौलिया, अंगोछा।

वरटः [वृ+अटन्] 1. हंस 2. एक प्रकार का अनाज 3. एक प्रकार की बर्र, भिड़,—टा,—टी 1. हंसिनी, नवप्रसूतिवरटा तपस्विनी—नै० १।१३५ 2. भिड़, बर्र या उसके प्रकार भो वयस्य एते खलु दास्याः पुत्रा अर्थकल्यवर्ती वरटा भीता इव गोपालदारका आरण्ये यत्रयत्र न खाद्यन्ते तत्र-तत्र गच्छन्ति—मृच्छ० १,—टम् कुंद का फूल।

वरणम् [वृ+ल्युट्] 1. छांटना, चुनना 2. मांगना, याचना करना, प्रार्थना करना 3. घेरना, घेरा डालना 4. ढकना, परदा डालना, प्रच्छा करना 5. दुलहिन का चुनाव,—णः 1. परकोटा, फ़सील 2. पुल 3. वरुण नामक वृक्ष 4. वृक्ष इह सिंघवश्च वरणावरणाः करिणां मुदे सनलदानलदाः—कि० ५।२५ 5. ऊँट। सम०—माला,—स्रज् दे० वरस्रज्।

वरणसी (अधिक प्रचलित रूप=वाराणसी)—दे०।

वरंडः [वृ+अंडच्] 1. समुदाय, वर्ग 2. मुंह पर निकली फुंसी 3. वरामदा 4. घास का ढेर 5. झोला (यदिदानीमहं वरण्डलम्बुक इव दूरमुत्क्षिप्य पातितः—मृच्छ० में 'वरण्डलबुक' शब्द का अर्थ सन्दिग्ध है, इसका अर्थ प्रतीत होता है 'ऊपर लटकती हुई या उभरी हुई दीवार' जो यदि और ऊपर उठाई गई तो उसका लुढ़ना जाना निश्चित है; यही बात सूत्रधार के विषय में है जिसकी आशाएँ अत्यंत ऊंची उठी परन्तु केवल निराशा में परिणत होने के लिए)।

वरंडकः [वरंड+कन्] 1. मिट्टी का टीला 2. हाथी की पीठ पर बना हौदा 3. दीवार 4. मुंह पर मुंहासा।

वरंडा [वरंड+टाप्] 1. बर्छी, छुरी 2. एक पक्षी —सारिका 3. दीपक की बत्ती।

वरत्रा [वृ+अत्रन्+टाप्] फ़ीता, (चमड़े का) तस्मा या पट्टी, शि० ११।४४ 2. घोड़े या हाथी का तंग।

वरम् (अव्य) [वृ+अप्] अपेक्षाकृत, श्रेष्ठतर, श्रेयस्कर, अधिक अच्छा, कभी-कभी यह अपा० के साथ प्रयुक्त होता है—समुन्नयंन् भूतिमनार्यसंगमाद्वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः—कि० ४।८, परन्तु इस शब्द का प्रयोग बहुधा बिना किसी शर्त के होता है, 'वरम्' प्रायः उस वाक्य खंड के साथ प्रयुक्त होता है जिसमें अपेक्षित वस्तु विद्यमान है; तथा 'न च' 'न तु' और 'न पुनः' उस वाक्यखंड के साथ जिनमें वह वस्तु विद्यमान है जिसकी अपेक्षा पूर्ववर्ती को प्रमुखता दी गई है। (दोनों कर्तृ० में रक्खे जाते हैं), वरं मौनं कार्यं न च वचनमुक्तं यदनृतं......वरं भिक्षाशित्वं न च परधनास्वादनसुखम् हि० १, वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः—तदेव०, कभी कभी 'न' का प्रयोग 'च, तु, और पुनः' के बिना भी होता है—याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा—मेघ० ६।

वरलः [वृ+अलच्] एक प्रकार की बर्र, भिड़,—ला 1. हंसिनी 2. एक प्रकार की भिड़, बर्र।

वरा [वृ+अच्+टाप्] 1. त्रिफला 2. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य 3. हल्दी 4. पार्वती का नाम।

वराक (वि०) (स्त्री०—की) [वृ+षाकन्] बेचारा, दयनीय आर्त, मन्दभाग्य दुःखी, अभागा (बहुधा दया दिखाने के लिए प्रयुक्त) तन्मया न युक्तं कृतं यत्स

वराकोऽपमानितः —पंच० १, तत्किमुज्जिहानजीवितां वराकीं नानुकंपसे—मा० १०,—कः 1. शिव 2. संग्राम, युद्ध ।

वराटः [वरमल्पमटति अट्+अण्] 1. कौड़ी 2. रस्सी, डोरी ।

वराटकः [वराट+कन्] 1. कौड़ी—प्राप्तः काणवराटकोऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुंच माम्—भर्तृ० ३।४ 2. कमल फूल का बीजकोष 3. डोरी, रस्सी (इस अर्थ में 'नपुं०' भी)। सम० —रजस् (पुं०) नाग केसर नामक वृक्ष ।

वराटिका [वराट्+कन्+टाप्, इत्वम्] कौड़ी—भामि० २।४२ ।

वराणः [वृ+शान च्] इन्द्र का विशेषण ।

वराणसी दे० वाराणसी ।

वरारकम् [वर+ऋ+ण्वुल्] हीरा ।

वरालः, वरालकः [वृ+आलच् स्वार्थे कन् च] लौंग ।

वराशिः—सिः [वरम् आवरणमश्नुते वर+अश्+इन्, वरैः श्रेष्ठैः अस्यते क्षिप्यते—वर+अस्+इन्] मोटा कपड़ा ।

वराहः [वराय अभीष्टाय मुस्तादिलाभाय आहन्ति भूमिन्—आ+हन्+ड] सूअर, वधिया किया गया सूअर,—विस्रब्धं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले —श० २।६ 2. मेंढ़ा 3. बैल 4. बादल 5. मगरमच्छ 6. शूकराकृति में बना सैनिक व्यूह 7. विष्णु का तीसरा वराह-अवतार—तु० वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना शशिनि कलङ्क कलेव निमग्ना । केशव धृतशूकररूप जय जगदीश हरे—गीत० १ 8. एक विशेष माप 9. वराहमिहिर का नामान्तर 10. अठारह पुराणों में से एक। सम०—अवतारः विष्णु का तीसरा अवतार, वराहावतार,—कंदः वाराहीकंद, एक खाद्य पदार्थ,—कर्णः एक प्रकार का बाण, —कर्णिका एक प्रकार का अस्त्र,—कल्पः वराहावतार का समय, वह काल जब विष्णु का वराह का अवतार धारण किया, मिहिरः एक विख्यात ज्योतिर्वेत्ता, बृहत्संहिता का प्रणेता (राजा विक्रमादित्य की राजसभा के नवरत्नों में से एक),— शृंगः शिव का नाम ।

वरिमन् (पुं०) [वर+इमनिच्] श्रेष्ठता, सर्वोपरिता, प्रमुखता ।

वरिवसि (स्यि) त [वरिवस् (स्या)+इतच्] पूजा गया, सम्मानित, अर्चित, सत्कृत ।

वरिवस्या [वरिवसः पूजायाः करणम्—वरिवस्+क्यच्+अ+टाप्] पूजा, सम्मान, अर्चना, भक्ति ।

वरिष्ठ (वि०) [अयमेषामतिशयेन वरः उरुर्वा उरु+इष्ठन् वरादेशः उरु की उ० अ०] 1. सर्वोत्तम, अत्यंत श्रेष्ठ, अत्यन्त पूज्य, प्रमुख 2. अत्यन्त विशाल, उरुतम् 3. अत्यन्त विस्तृत 4. गुरुतम,—ष्ठः 1. तित्तिर पक्षी, तीतर 2. संतरे का पेड़,—ष्ठम् 1. तांबा 2. मिर्च ।

वरी [वृ+अच्+ङीप्] 1. सूर्य की पत्नी छाया 2. शतावरी नाम का पौधा ।

वरीयस् (वि०) [अयमनयोरतिशयेन वरः उरुर्वा उरु+ईयसुन्, वरादेशः, उरु की म० अ०] 1. अपेक्षाकृत अच्छा, अधिक श्रेष्ठ, अधिमान्य 2. अत्युत्तम, बहुत अच्छा मा० १।१६ 3. अपेक्षाकृत बड़ा, चौड़ा या विस्तृत ।

वरी (ली) वर्दः [वृ+क्विप्=वर्, ई वश्च=ईवरी, तौ ददाति दा+क=ईवर्दः, वली चासौ ईवर्दश्च, कर्म० त०] बैल, सांड ।

वरीषुः [वरः श्रेष्ठः इषुः यस्य, पृषो०] कामदेव का नाम ।

वरुटः (पुं०) म्लेच्छ जाति का नाम ।

वरुडः (पुं०) एक नीच जाति का नाम ।

वरुणः [वृ+उनन्] 1. आदित्य का नाम (बहुधा 'मित्र' के साथ युक्त होकर) 2. परवर्ती पौराणिकता के अनुसार) समुद्र की अधिष्ठात्री देवता, पश्चिम दिशा का देवता (हाथ में पाश लिए हुए) यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अव पश्यञ्जनानाम्, वरुणो यादसामहम्—भग० १०।२९, प्रतीचीं वरुणः पति—महा० अतिसक्तिमेत्य वरुणस्य दिशा भृशमन्वरज्यदतुषारकरः शि० ९।७ 3. समुद्र 4. अन्तरिक्ष । सम० अंगरुहः अगस्त्य का विशेषण,—आत्मजा मदिरा (समुद्र से निकलने के कारण इसका यह नाम पड़ा),—आलयः,—आवासः समुद्र,—पाशः घड़ियाल —लोकः 1. वरुण का संसार 2. जल ।

वरुणानी [वरुण+ङीष्, आनुक्] वरुण की पत्नी ।

वरुत्रम् [वृ+उत्र] उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा ।

वरुथम् [वृ+ऊथन्] 1. एक प्रकार का लकड़ी का बना, आवरण जो रथ की टक्कर हो जाने पर रथ की रक्षा करे (इस अर्थ में पुं० भी) वरूथो रथगुप्तिर्या तिरोधत्ते रथस्थितिम् 2. कवच बख्तर 3. ढाल 4. वर्ग, समुच्चय, समवाय, थः 1. कोयल 2. काल ।

वरूथिन् (वि०) [वरूथ+इन्] 1. कवचधारी, बख्तरयुक्त 2. अंगारगुप्ति या बचाऊ जंगले से सुसज्जित—अपनिमेकरथेन वरूथिना जितवतः किल तस्य धनुर्भृतः —रघु० ९।११ 3. बचाने वाला, आश्रय देने वाला 4. गाड़ी में बैठा हुआ, पुं० 1. रथ 2. अभिरक्षक, प्रतिरक्षक,—नी सेना स्खलितसलिलामुल्लंघ्यैनां जगाम वरूथिनी शि० १२।७७, रघु० १२।५० ।

वरेण्य (वि०) [वृ+एन्य] 1. अभिलषणीय, वांछनीय, पात्र वरणीय—अनेन चेदिच्छसि गृह्यमाणं पाणिं वरेण्येन रघु० ६।२४ 2. (अतः) सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम, प्रमुख, पूज्यतम, मुख्य—वेधा विधाय पुनरुक्त-

मिवेन्दुबिंबं दूरीकरोति न कथं विदुषां वरेण्यः—भामि० २।१५८, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ऋक् ३।३२।१०, रघु० ६।८४, भट्टि० १।४, कु० ७।९०, —ण्यम् ज़ाफ़रान, केसर।

वरोटः [वराणि श्रेष्ठानि उटानि दलानि यस्य ब० स०] मरुवे का पौधा,—टम् मरुए का फूल।

वरोलः [वृ+ओलच्] बर्र, भिड़।

वर्करः [वृक्+अरन्] 1. भेड़ या बकरी का बच्चा मेमना 2. बकरा 3. कोई पालतू जानवर का बच्चा 4. आमोद, क्रीडाविहार, मनोरंजन। सम० कर्करः चमड़े की रस्सी या तस्मा जिससे बकरी या भेड़ बांधी जाय।

वर्कराटः [वर्करं परिहासम् अटति गच्छति वर्कर+अट्+अण्] 1. तिरछी नजर, कटाक्ष 2. स्त्री के कुचों पर उसके प्रेमी के नखक्षतों के चिह्न।

वर्कुटः (पु०) कील, अर्गला, चटखनी।

वर्गः [वृज्+घञ्] 1. श्रेणी, प्रभाग, समूह, दल, समाज, जाति, संग्रह (एक समान वस्तुओं का), न्यषेधि शेषोऽप्यनुयायिवर्गः—रघु० २।४, ११।७, इसी प्रकार पौरवर्गः, नक्षत्रवर्गः आदि 2. टोली, पक्ष, कु० ७।७३ 3. प्रवर्ग 4. एक स्थान पर वर्गीकृत शब्दसमूह यथा मनुष्यवर्गः, वनस्पतिवर्गः आदि 5. वर्णमाला में व्यंजनों का समूह 6. अनुभाग, अध्याय, या पुस्तक का परिच्छेद 7. विशेषरूप से ऋग्वेद के अध्यायान्तर्गत अवभाग, सूक्त 8. घात—दो समान अंकों का गुणनफल 9. सामर्थ्य। सम०—अन्त्यम्, उत्तमम् पांचों वर्गों में से प्रत्येक का अन्तिम वर्ण अर्थात् अनुनासिक अक्षर, —घनः वर्ग का घनफल,—पदम्, —मूलम् वर्गमूल, वह अंक जिसके घात से को वर्गांक बने,—वर्गः वर्ग का वर्ग।

वर्गणा (स्त्री०) गुणन, घात।

वर्गशस् (अव्य०) [वर्ग+शस्] समूहों में श्रेणीवार।

वर्गीय (वि०) [वर्ग+छ] किसी श्रेणी या प्रवर्ग से संबद्ध, —यः सहपाठी।

वर्ग्य (वि०) [वर्गे भवः यत्] एक ही श्रेणी का,—र्ग्यः एक ही श्रेणी या दल से संबद्ध, सहयोगी, सहपाठी, सहाध्यायी (शिक्षा में) या यस्य युज्यते भूमिका तां खलु भावेन तथैव सर्वे वर्ग्याः पाठिताः मा० १, शि० ५।१५।

वर्च् (भ्वा० आ० वर्चते) चमकना, उज्ज्वल या आभायुक्त होना।

वर्चस् (नपुं०) [वर्च्+असुन्] 1. वीर्य, बल, शक्ति 2. प्रकाश, कान्ति, उजाला, आभा 3. रूपः, आकृति, शकल 4. विष्ठा, मल। सम० —ग्रहः कोष्ठ बद्धता, कब्ज।

वर्चस्कः [वर्चस्+कन्] 1. उजाला, कान्ति 2. वीर्य 3. विष्ठा।

वर्चस्विन् (वि०) [वर्चस्+विनि] 1. शक्तिशाली, ओजस्वी, सक्रिय 2. देदीप्यमान्, उज्ज्वल, तेजस्वी।

वर्जः [वृज्+घञ्] छोड़ देना, परित्याग।

वर्जनम् [वृज्+ल्युट्] 1. छोड़ना, त्याग, तिलांजलि 2. वैराग्य 3. अपवाद, बहिष्करण 4. चोट, क्षति, हत्या।

वर्जम् (अव्य०) निकाल कर, बाहर करके, सिवाय (समास के अन्त में) गौतमीवर्जम्गितरा निष्क्रांताः श० ४, कु० ७।७२।

वर्जित (भू० क० कृ०) [वृज्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, अलगाया हुआ 2. परित्यक्त, उत्सृष्ट 3. बहिष्कृत 4. वंचित, विरहित, हीन जैसा कि 'गुणवर्जित' में।

वर्ज्य (वि०) [वृज्+ण्यत्] 1. टाले जाने के योग्य, बिदकाये जाने के योग्य 2. बहिष्कृत किये जाने के योग्य या छोड़े जाने के योग्य 3. छोड़कर, सिवाय … के,।

वर्ण (चुरा० उभ० वर्णयति—ते, वर्णित) 1. रंग करना, रोगन करना, रंगना यथा हि भरता वर्णैर्वर्णयन्त्यात्मनस्तनुम् सुभा० 2. बयान करना, वर्णन करना, व्याख्या करना, लिखना, चित्रित करना, अंकित करना, निरूपण करना—वर्णितं जयदेवेन हरेरिदं प्रणतेन गीत० ३, कि० ५।१० 3. प्रशंसा करना, स्तुति करना 4. फैलाना, विस्तृत करना 5. रोशनी करना, उप— बयान करना, वर्णन करना निस्— 1. ध्यान से देखना, सावधानता पूर्वक अंकित करना 2. देखना, निहारना।

वर्णः [वर्ण्+घञ्] 1. रंग, रोगन—अतः शुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः—मेघ० ४९ 2. रोगन, रंग, दे० वर्ण् (1), 3. रंग, रूप, सौन्दर्य, त्वय्यादातुं जलमवनते शार्ङ्गिणो वर्णचौरे—मेघ० ४६, रघु० ८।४२ 4. मनुष्य श्रेणी, जनजाति या कबीला, जाति (मुख्य रूप से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्ण के लोग) वर्णानामानुपूर्व्येण—वार्ति० न कश्चिद्वर्णानामपथमपकृष्टोऽपि भजते—श० ५।१०, रघु० ५।१९ 5. श्रेणी, वंश, जनजाति, प्रकार, जाति जैसा कि 'सवर्णम् अक्षरम्' में 6. (क) अक्षर, वर्ण, ध्वनि में वर्णविचारक्षमादृष्टिः विक्रम० ५, (ख) शब्द, मात्रा—सा० द० ९ 7. ख्याति, कीर्ति, प्रसिद्धि, विश्रुति राजा प्रजारंजनलब्धवर्णः रघु० ६।२१ 8. प्रशंसा 9. वेशभूषा, सजावट 10. बाहरी छवि, रूप, आकृति 11. चादर, दुपट्टा 12. ढकने के लिए ढक्कन, चपनी 13. किसी विषय का क्रमगीत में, गीतक्रम उपात्तवर्णे चरिते पिनाकिनः कु० ५।५६, 'गीतिस्थान' अर्थात् गान का विषय बना हुआ

14. हाथी की झूल 15. गुण, धर्म 16. धर्मानुष्ठान 17. अज्ञात राशि —र्णम् 1. केसर, जाफरान 2. रंगदार उबटन या सुगन्धद्रव्य। सम० अंका लेखनी, —अपसदः जातिच्युत—अपेत (वि०) जातिशून्य, जातिच्युत, पतित—अर्हः एक प्रकार का लोबिया, —आगमः किसी अक्षर का जोड़ना भवेद्वर्णागमाद्धंसः —सिद्धा०,—आत्मन् (पुं०) शब्द,—उदकम् रंगीन पानी—रघु० १६।७०,—कूपिका दवात,—क्रमः 1. वर्ण व्यवस्था, रंगों का क्रम 2. वर्णमाला—चारकः चितेरा, ज्येष्ठः ब्राह्मण, तूलिः,—तूलिका,—तूली (स्त्री०) कूची, चितेरे का ब्रुश,—द (वि०) रंगसाज (—दम्) दारुहल्दी—दात्री हल्दी—दूतः पत्र,—धर्मः प्रत्येक जाति के विशिष्ट कर्तव्य,—पातः किसी अक्षर का लोप हो जाना,—पुष्पम् पारिजात का फूल,—पुष्पकः पारिजात, —प्रकर्षः रंग की श्रेष्ठता, प्रसादनम् अगर की लकड़ी,—मातृ (स्त्री०) लेखनी, पैंसिल, कूची,—मातृका सरस्वती,—माला, राशिः (स्त्री०) अक्षरों की यथाक्रमसूची, वर्णमाला,—वर्तिः,—वर्तिका (स्त्री०) रंग भरने की तूलिका,—विपर्ययः वर्णों का उलट फेर—(भवेत्) सिंहो वर्ण विपर्ययात्—सिद्धा०, विलासिनी हल्दी,—विलोडकः 1. सेंध लगाकर घर में घुसने वाला 2. साहित्य चोर (शा० शब्दचोर),—वृत्तम् वर्णों की गणना के आधार पर विनियमित छन्द या वृत्त (विप० मात्रावृत्त),—व्यवस्थितिः (स्त्री०) वर्णव्यवस्था, वर्णविभाग,—शिक्षा वर्णमाला सिखलाना,—श्रेष्ठः ब्राह्मण,—संयोगः एक ही वर्ण के लोगों में विवाहसंबंध होना,—संकरः 1. अन्तर्जातीय विवाह के कारण वर्णों का सम्मिश्रण 2. रंगों का मिश्रण —चित्रेषु वर्णसंकरः—का० (यहां, दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) शि० १४।३७,—संघातः,—समाम्नायः वर्णमाला।

वर्णकः [वर्णयति—वर्ण्+ण्वुल्] 1. मुखावरण, नकाब अभिनेता की वेशभूषा 2. चित्रकारी, चित्रकारी के लिए रंग—शि० १६।६२ 3. रंगलेप या कोई उबटन के रूप में प्रयुक्त होने वाली वस्तु—एतैः पिष्टतमालवर्णकनिभैरालिप्तमम्भोधरैः मृच्छ० ५।४६, भट्टि० १९।११ 4. भाट, चारण, स्तुतिगायक 5. चन्दन (वृक्ष),—का 1. कस्तूरी 2. रंगलेप, चित्रकारी के लिए रंग 3. उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा,—कम् 1. रंगलेप, रंग, वर्ण श० ६।१५ 2. चन्दन 3. परिच्छेद, अध्याय, प्रभाग।

वर्णनम्,—ना [वर्ण्+ल्युट्] 1. चित्रकारी 2. वर्णन, आलेखन, चित्रण स्वभावोक्तिस्तु डिंभादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्—काव्य० १० 3. लिखना 4. वक्तव्य, उक्ति 5. प्रशंसा, सस्ताव (—ना केवल इसी अर्थ में)।

वर्णसिः [वृञ्+असि, नुक्] जल।

वर्णाटः [वर्ण+अट्+अच्] 1. चित्रकार 2. गायक 3. जो अपनी आजीविका अपनी पत्नी के द्वारा करता है, स्त्रीकृताजीव।

वर्णिका [वर्णा अक्षराणि लेख्यत्वेन सन्त्यस्याः ठन्] 1. अभिनेता की वेशभूषा या नकाब 2. रंग, रंगलेप 3. स्याही, मसी 4. लेखनी, पेंसिल। सम०—परिग्रहः स्वांग भरना या नकाब धारण करना—ततः प्रकरणनायकस्य मालतीवल्लभस्य माधवस्य वर्णिकापरिग्रहः कथम्—मा० १।

वर्णित (भू० क० कृ०) [वर्ण्+क्त] 1. चित्रित 2. वर्णन किया गया, बयान किया गया 3. स्तुति की गई, प्रशंसा की गई।

वर्णिन् (वि०) [वर्णोऽस्त्यस्य इनि] (समास के अंत में प्रयुक्त) 1. रंग रूप वाला 2. जाति से संबंध रखने वाला—पुं० 1. चित्रकार 2. लिपिकार, लेखक 3. ब्रह्मचारी, दे० ब्रह्मचारिन्,—अथाह वर्णी—कु० ५।६६, ५२, वर्णाश्रमाणां गुरवे स वर्णी विचक्षणः प्रस्तुतमाचचक्षे—रघु० ५।१९ 4. इन चार मुख्य वर्णों में से किसी एक वर्ण का व्यक्ति। सम०—लिङ्गिन् (वि०) ब्रह्मचारी की वेशभूषा धारण किए हुए, या उसके चिह्नों को धारण करने वाला—स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः—कि० १।१।

वर्णिनी [वर्णिन्+ङीप्] 1. स्त्री 2. चारों वर्णों में से किसी एक वर्ण की स्त्री 3. हल्दी।

वर्णुः [वृ+णुः नित्] सूर्य।

वर्ण्य (वि०) [वर्ण्+ण्यत्] वर्णन करने के योग्य (प्रकृत और प्रस्तुत शब्दों की भांति यह 'वर्ण्य' शब्द भी काव्य ग्रन्थों में प्रायः प्रयुक्त होता है),—र्ण्यम् केसर, जाफरान।

वर्तः [वृत्+घञ्] (प्रायः समास के अन्त में) जीविका, वृत्ति—जैसा कि 'कल्यवर्तम्' में। सम०—जन्मन्

वर्तक (वि०) [वृत्+ण्वुल्] जीवित, विद्यमान, वर्तमान—कः 1. बटेर, लवा 2. घोड़े का सुम,—कम् एक प्रकार का पीतल या कांसा।

वर्तका,—की [वर्तक+टाप्, ङीप् वा] बटेर, लवा।

वर्तन (वि०) [वृत्+ल्युट्] 1. टिकाऊ, रहने वाला, ठहरने वाला, विद्यमान 2. स्थिर,—नः ठिंगना, बौना —नी 1. मार्ग, सड़क 2. जीना, जीवन 3. पीसना, चूर्ण बनाना 4. तकुआ,—नम् 1 [illegible] विद्यमान रहना 2. ठहरना, डटे रहना [illegible] वास करना 3. कर्म, गति, जीने का ढंग [illegible] [illegible]ाका, स्मरसि च तदुपान्तेष्वावयोर्वर्तनानि—उत्तर० १।२६, (यहाँ शब्द का अर्थ 'आवास या निवास' भी है) 4. जीवित रहना,

जीवनयापन करना (समास के अन्त में) 5. आजीविका, जीवन निर्वाह, वृत्ति 6. जीवन निर्वाह का साधन, वृत्ति, व्यवसाय 7. चालचलन, व्यवहार, आचरण 8. मज़दूरी, वेतन, भाड़ा 9. व्यापार, लेन-देन 10. तकवा 11. गोलक, गेंद।

वर्तनिः [वर्तन्तेऽस्यां जनाः, वृत्+निः] 1. भारत का पूर्वी भाग, पूर्ववर्ती प्रदेश 2. सूक्त, प्रशंसा, स्तोत्र, —निः (स्त्री०) मार्ग, सड़क।

वर्तमान (वि०) [वृत्+शानच् मुक्] 1. मौजूद, विद्यमान 2. जीता हुआ, जीवित रहने वाला, समसामयिक—प्रथितयशसां भासकविसोमिल्लकविमिश्रादीनां प्रबंधानतिक्रम्य वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमानः—मालवि० १ 3. मुड़ना, चक्कर काटना, घूम जाना—नः (व्या० में) वर्तमान काल—वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा—पा० ३।३।१३१।

वर्तरूकः [वर्त+रा+ऊक] 1. पोखर, जोहड 2. भँवर, बवंडर, जलावर्त 3. कौवे का घोंसला 4. द्वारपाल 5. नदी का नाम।

वर्तिः,—र्ती (स्त्री०) [वृत्+इन् वा ङीप्] 1. कोई भी लिपटी हुई गोल वस्तु, पत्राली, वही 2. उबटन, मल्हम, आँखों का लेप, काजल, अंगराग (गोली या टिकिया के रूप में)—सा पुनर्मम प्रथमदर्शनात्प्रभृत्यमृतवर्तिरिव चक्षुषोरानन्दमुत्पादयन्ती – मा० १, इयममृतवर्तिर्नयनयोः – उत्तर० १।३८, कर्पूरवर्तिरिव लोचनतापहंत्री—भामि० ३।१६, विद्ध० १ 3. दीपक की बत्ती मा० १०।४ 4. (कपड़े की) झालर, फलवे, किनारी 5. जादू का लेंप 6. वर्तन के चारों ओर का उभार 7. जर्राही उपकरण (रम्भनाल आदि) 8. धारी, रेखा।

वर्तिकः [वृत+तिकन्] बटेर, लवा।

वर्तिका [वृतः तिकन्+टाप्] 1. चितेरे की कूंची तदुनय चित्रफलकं चित्रवर्तिकाश्च मा० १, अंगुलिक्षरणसन्नवर्तिकः—रघु० १९।१९ 2. दीपक की बत्ती 3. रंग, रंगलेप 4. बटेर, लवा।

वर्तिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वृत्+णिनि] (बहुधा समास के अन्त में) 1. डटा रहने वाला, होने वाला, ठहरा रहने वाला, टिकने वाला, स्थित 2. जाने वाला, गतिशील, मुड़ने वाला 3. अभिनय करने वाला, व्यवहार करने वाला 4. अनुष्ठाना, अभ्यास करने वाला।

वर्ति (र्ती) रः [वृत्+इरच्, पक्षे पृषो० दीर्घः] बटेर, लवा

वर्तिष्णु (वि) [वृत्+इष्णुच्] 1. चक्कर काटने वाला 2. वर्तमान, डटा रहने वाला 3. वर्तुलाकार।

वर्तुल (वि०) [वृत्+उलच्] गोल, कुण्डलाकार, मण्डलाकार—लः 1. एक प्रकार की दाल, मटर 2. गेंद, —लम् वृत्त।

वर्त्मन् (नपुं०) [वृत्+मनिन्] 1. रास्ता, सड़क, पथ, मार्ग पगडंडी—वर्त्म भानोस्त्यजाशु—मेघ० ३९, पारसीकांस्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना, 'स्थलमार्ग से' आकाशवर्त्मना 'आकाश के मार्ग से' 2. (आलं०) रीति, मार्ग, सर्वसम्मत तथा निर्धारित प्रचलन, प्रचलित रीति या आचरण क्रम—मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः भग० ३।२३, रेखामात्रमपि क्षुण्णादामनोर्वर्त्मनः परम्, न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियंतुर्नेमिवृत्तयः—रघु० १।१७ (यहाँ पर शाब्दिक अर्थ भी अभिप्रेत है), अहमेत्य पतंगवर्त्मना पुनरंकाश्रयिणी भवामि ते कु० ४।२०, 'परवाने के ढंग से 3. स्थान, कर्म के लिए क्षेत्र न वर्त्म कस्मैचिदपि प्रदीयताम् कि० १४।१४ 4. पलक 5. धार, किनारा। सम० पातः मार्ग से व्यतिक्रम,—बंधः, —बंधकः पलकों का एक रोग।

वर्त्मनिः,—नी (स्त्री०) सड़क, रास्ता।

वर्ध् (चुरा० उभ० वर्धयति—ते, वर्धापयति भी) 1. काटना बाँटना, मूँडना 2. पूरा करना।

वर्धः [वर्ध्+अच्, घञ् वा] 1. काटना, बाँटना 2. बढ़ाना, वृद्धि या समृद्धि करना 3. बृद्धि, बढ़ोतरी, —र्धम् 1. सीसा 2. सिंदूर।

वर्धकः, वर्धकिः, वर्धकिन (पुं०)) [वृध्+णिच्+ण्वुल्, वर्ध+कष्+डि, वर्ध्+अच्+कन्+इनि] बढ़ई।

वर्धन (वि०) [वृध्+णिच्+ल्युट्] 1. बढ़ने वाला, उगने वाला 2. बढ़ाने वाला, विस्तृत करने वाला, आवर्धन करने वाला, नः 1. समृद्धिदाता 2. वह दाँत जो दाँत के ऊपर उगता है 3. शिव का नाम—नी 1. बुहारी, झाड़ू 2. विशेष आकार का जलघट,—नम् 1. उगना, फलना फूलना 2. विकास, वृद्धि, समृद्धि, आवर्धन, विस्तार 3. उन्नति 4. उल्लास, सजीवता 5. शिक्षा देना, पालन-पोषण करना 6. काटना, बाँटना जैसा कि 'नाभिवर्धनम्' में।

वर्धमान (वि०) [वृध्+शानच्] विकसित होने वाला, बढ़ने वाला नः 1. एरंड का पौधा 2. एक प्रकार की पहेली 3. विष्णु का नाम 4. एक जिले का नाम (इसी को लोग वर्तमान बर्दवान मानते हैं),—नः, —नम् 1. एक विशेष सूरत की तश्तरी, ढक्कन 2. एक रहस्यमय रेखाचित्र 3. वह भवन जिसका दक्षिण की ओर कोई द्वार न हो, —ना एक जिले का नाम (वर्तमान बर्दवान)। सम० पुरम् बर्दवान नामक नगर।

वर्धमानकः [वर्धमान+कन्] एक प्रकार का पात्र, तश्तरी, ढक्कन, चपनी।

वर्धापनम् [वर्धं छेदं करोति वृध्+णिच्+आप् ततो भावे ल्युट्] 1. काटना, बाँटना 2. नालच्छेदन या

तत्संबंधी कोई संस्कार 3. जन्मदिन का उत्सव 4. कोई सामान्य उत्सव जब समृद्धि की मंगलकामनाएँ तथा बधाइयों की अभिव्यक्ति की जाती है।

वर्धित (भू० क० कृ०) [वृध्+णिच्+क्त] 1. विकसित बढ़ा हुआ 2. विस्तृत किया हुआ, विशाल बनायाहुआ।

वर्धिष्णु (वि०) [वृध्+इष्णुच.] विकसित होने वाला, बढ़ने वाला, फलने फूलने वाला।

वर्ध्रम् [वृध्+रन्] 1. चमड़े का तस्मा या पट्टी 2. चमड़ा 3. सीसा।

वर्ध्रिका, वध्री [वर्ध्र+ङीष्, वध्री+कन्+टाप्, ह्रस्व] चमड़े का तस्मा या पट्टी।

वर्मन् (नपुं०) [आवृणोति अंगम्—वृ+मनिन्] 1. कवच, जिरहबक्तर—स्वहृदयमर्मणि वर्म करोति सजलनलिनीदलजालम्—गीत० ४, रघु० ४।५६, मुद्रा० २।८ 2. छाल, वल्कल, पुं० क्षत्रियों के नामों के साथ लगने वाला एक प्रत्यय—यथा चंडवर्मन्, प्रहारवर्मन् तु० दास। सम०—हर (वि०) 1. कवचधारी 2. इतना बड़ा जो कवच धारण कर सके (अर्थात् युद्ध में भाग लेने के योग्य)—सम्यग्विनीतमथ वर्महरं कुमारम्—रघु० ८।९४।

वर्मणः (पुं०) नारङ्गी का पेड़।

वर्मिः (पुं०) मत्स्य विशेष, वामी मछली।

वर्मित (वि०) [वर्मन्+इतच्] जिरहबक्तर पहने हुए, कवच से सुसज्जित।

वर्य (वि०) [वृ+यत्] 1. चुने जाने या छांटे जाने के योग्य पात्र 2. सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, मुख्य, प्रधान (बहुधा समास के अन्त में) अन्वीतः स कतिपयैः किरातवर्यैः—कि० १२।५४,—र्यः कामदेव—र्या 1. वह कन्या जो स्वयं अपना पति वरण करे 2. कन्या।

वर्वट दे० 'बर्बट'।

वर्वणा दे० 'बर्बणा'।

वर्वरः (वि०) [वृ+अरच्, वुट् च] 1. हकलाने वाला 2. बल खाता हुआ,—रः 1. बर्बर देश का वासी 2. बुद्धू, प्रलापी मूर्ख 3. जातिच्युत 4. घुंघराले बाल 5. हथियारों की झनकार 6. नृत्य की एक भावमुद्रा—रा,—री 1. एक प्रकार की मक्खी 2. वनतुलसी—रम् 1. पीला चन्दन 2. सिन्दूर 3. लोबान।

वर्वरकम् [वर्वर+कन्] एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी।

वर्वरीकः [वृ+ईकन्, द्वेरुक् अभ्यासस्य] 1. घुंघराले बाल 2. एक प्रकार की तुलसी 3. एक झाड़ी विशेष।

वर्वू (र्वु) रः [वृ+वुरच् पक्षे वुरच्] एक वृक्ष विशेष, बबूल, कीकर।

वर्षः,—र्षम् [वृष् भावे घञ्, कर्तरि अच् वा] 1. वर्षा, बारिश, वृष्टि की बौछार विद्युत्स्तनितवर्षेषु—मनु० ४।१०३ मेघ० ३५ 2. छिड़कना, उत्सरण, फेंकना, बौछार सुरभि सुरविमुक्तम् पुष्पवर्षं पपात रघु० १२।१०२, इसी प्रकार शरवर्षः, शिलावर्षः, तथा लाजवर्षः आदि 3. वीर्यपात 4. वर्ष, साल (प्रायः नपुं०) इयन्ति वर्षाणि तया सहोग्रमभ्यस्यतीव व्रतमासिधारम्—रघु० १३।६७, न ववर्ष वर्षाणि द्वादश दक्षशताक्षः—दश०, वर्षभोग्येण शापेन—मेघ० १ 5. सृष्टि का प्रभाग, महाद्वीप (इस प्रकार के प्रायः नौ महाद्वीप गिनाये गये हैं— 1. कुरु 2. हिरण्मय 3. रम्यक 4. इलावृत 5. हरि 6. केतुमाला 7. भद्राश्व 8. किन्नर और 9. भारत) एतद्गूढगुरुभारभारतं वर्षमद्य मम वर्तते वशे—शि० १४।५ 6. भारतवर्ष, हिन्दुस्तान 7. बादल (हेमचन्द्र के अनुसार केवल पुं०)। सम०—अंशः,—अंशकः,—अंगः महीना, मास,—अंबु (नपुं०) बारिश का पानी,—अयुतम् दस हजार वर्ष—अर्चिस् (पुं०) मंगलग्रह,—अवसानम् शरद् ऋतु,—अघोषः मेंढक,—आमदः मोर,—उपलः ओला,—करः बादल (—री) झींगुर,—कोशः,—षः 1. मास, महीना 2. ज्योतिषी,—गिरिः,—पर्वतः 'वर्ष-पहाड़' अर्थात् वह पर्वतशृंखला जो सृष्टि के भिन्न भिन्न प्रभागों को एक दूसरे से पृथक् करती है,—ज (वि०) ('वर्षज' भी) बरसात में उत्पन्न,—धरः 1. बादल 2. हिजड़ा अन्तःपुर का रक्षक, खोजा—मालवि० ४, (इसी अर्थ में वर्षधर्ष शब्द भी है),—पूगः वर्षों का समुच्चय,—प्रतिबन्धः सूखा, अनावृष्टि,—प्रियः चातक पक्षी,—वरः हिजड़ा, अन्तःपुर का रक्षक, खोजा,—वृद्धिः (स्त्री०) जन्मदिन,—शतम् शताब्दी, सौ वर्ष,—सहस्रम् एक हजार वर्ष।

वर्षक (वि०) [वृष्+ण्वुल्] बरसने वाला।

वर्षणम् [वृष्+ल्युट्] 1. वृष्टि, वर्षा 2. छिड़कना, बौछार, (आलं० से भी) द्रव्यवर्षणम्, 'धन की बौछार या धन बखेरना'।

वर्षणिः (स्त्री०) [वृष्+अनिः] 1. वृष्टि 2. यज्ञ, यज्ञ सम्बन्धी कृत्य 3. क्रिया, कर्म 4. टिकना, रहना, डटे रहना, वर्तन।

वर्षा [वृष्+अच्+टाप्] (प्रायः स्त्री०, ब० व०) 1. बरसात, वर्षाऋतु, वर्षावायु ग्रीष्मे पंचाग्निमध्यस्थो वर्षासु स्थण्डिलेशयः—याज्ञ० ३।५२, भट्टि० ७।१ 2. बारिश, वृष्टि (इस अर्थ में एक वचन)। सम०—कालः बरसात, वर्षाऋतु, इसी प्रकार 'वर्षासमयः',—कालीन (वि०) वर्षा से उत्पन्न या संबंध रखने वाला—भू (पुं०) 1. मेंढक 2. एक कृषि विशेष, इन्द्रगोप,—भूः, भ्वी (स्त्री०) मेंढकी या छोटा मेंढक,—रात्रः 1. बरसात की रात 2. बरसात।

वर्षिक (वि०) [वर्ष+ण्णिक] बरसने वाला, बौछार करने वाला,—कम् अगर की लकड़ी।

वर्षितम् [वृष्+क्त] वृष्टि, वर्षा।

वर्षिष्ठ (वि०) [अतिशयेन वृद्धः, वृद्ध+इष्ठन्, वर्षादेशः वृद्ध की उ० अ०] 1. अत्यंत बूढ़ा, बहुत बड़ा 2. अत्यंत बलवान् 3. विशालतम, अत्यंत विस्तृत।

वर्षीयस् (वि०) स्त्री०—सी) [अममनयोरतिशयेन वृद्धः वृद्ध+ईयसुन्, वर्षादिशः, वृद्ध की म० अ०] 1. अपेक्षाकृत बड़ा, बहुत बूढ़ा 2. अपेक्षाकृत बलवान्।

वर्षुक (वि०) (स्त्री०—की)[वृष्+उकञ्] बरसने वाला, जलमय, पानी डालने वाला—वर्षुकस्य किमयः कृतोन्नतेरंबुदस्य परिहार्यमूषरम् - शि० १४।४६, भट्टि० २।३७। सम० - **अब्दः,—अंबुदः** बारिश करने वाला बादल।

वर्ष्मम् [वृष्+मन्] शरीर, दे० नी०।

वर्ष्मन् [वृष्+मनिन्] 1. शरीर, देह 2. माप, ऊँचाई —वर्ष्म द्विपानां विरुवंत उच्चकैर्वनेचरेभ्यश्चिरमाचचक्षिरे—शि० १२।६४, रघु० ४।७६ 3. सुन्दर या मनोहर रूप।

वर्ह्, वर्ह, वर्हण, वर्हिण, वर्हिन्, वर्हिस् } दे० बर्ह्, बर्ह, बर्हण, बर्हिण, बर्हिन्, बर्हिस्।

वल् (भ्वा० आ० वलते—परन्तु कभी कभी 'वलति' भी, वलित) 1. जाना, पहुंचना, जल्दी करना, अन्योऽन्यं शरवृष्टिरेव वलते महावी० ६।४१, प्रणयिनं परिरब्धुमथांगनां ववलिरे वलिरेचितमध्यमाः - शि० ६।३१, ६।११, १९।४२, त्वदभिसरणरभसेन वलंती पतति पदानि कियंति चलंती—गीत० ६ 2. हिलना-जुलना, मुड़ना, घूम जाना—वलितकंधर मा० १।२९ 3. मुड़ना आकृष्ट होना, अनुरक्त होना · हृदयमदये तस्मिन्नेवं पुनर्वलते बलात्—गीत० ७, नलो० ३।५ 4. बढ़ाना वलन्नूपुरनिस्वना - सा० द० ११६, अमन्दं कन्दर्पज्वरजनितचिन्ताकुलतया वलद्बाधां राधां सरसमिदमूचे सहचरी—गीत० १ 5. ढकना, घेरना 6. ढका जाना, घेरा जाना या घिर जाना, वि—, इधर-उधर सरकना, इधर-उधर लुढ़कना स्खिद्यति कूणति वेल्लति विवलति निमिषति विलोकयति तिर्यक्—काव्य० १०, सम्, - , 1. मिलाना, गड़बड़ करना 2. संबद्ध करना, जोड़ना (बहुधा क्तान्त रूप - दे० संवलित)।

वल, दे० बल।

वलक्ष, दे० बलक्ष।

वलग्नः, —ग्नम् [अवलग्न इत्यत्र भागुरिमते अकारलोपः] कमर।

वलनम् [वल् भावे ल्युट्] 1. सरकना, मुड़ना 2. वर्तुलाकार घूमना 3. (ज्यो० में) ग्रह की वक्रगति।

वलभिः,—भी [वल्यते आच्छाद्यते वल्+अभि वा ङीप्] ('वडभिः, —भी' का प्रयोग भी अनेक वार होता है) 1. ढलवां छत, लकड़ी का बना छप्पर का ढांचा —धूपैंजलिविनिः सृतैर्वलभयः संदिग्धपारावताः—विक्रम० ३।२, मालवि० २।१३ 2. (घर का) सबसे ऊँचा भाग, दृष्ट्वा दृष्ट्वा भवनवलभीतुंगवातायनस्था —मा० १।१५, मेघ० ३८, शि० ३।५३ 3. सौराष्ट्र प्रदेश के अन्तर्गत एक नगर का नाम—अस्ति सौराष्ट्रेषु वलभी नाम नगरी—दश०, भट्टि० २२।३५।

वलंब [अवलंब इत्यत्र भागुरिमते अकारलोपः] दे० 'अवलंब'।

वलयः,— [वल्+अयन्] कंकण, बाजूबंद— विहितविशद विसकिसलयवलया जीवति परमिह तव रतिकलया - गीत० ६, भट्टि ३।२२, मेघ० २, ६०, रघु० १३। २१, ४३ 2. छल्ला, कुंडल श० १।३३, ७।११ 3. विवाहित स्त्री की करधनी 4. वृत्त, परिधि (प्रायः समास के अन्त में) भ्रांतभ्रवलयः दश० वेलावप्रवलयाम् (उर्वीम्)—रघु० १।३०, दिग्वलय—शि० ९।८ 4. बाड़ा, निकुंज—यथा 'लतावलयमंडप' में, —**यः** 1. बाड़, झाड़बन्दी 2. गलगण्ड रोग (**वलयी कृ** कंकण बनाना, **वलयी भू** करधनी या कंकण का काम देना)।

वलयित (वि) [वलय+इतच्] घिरा हुआ, घेरा हुआ, लपेटा हुआ।

वलाक दे० 'बलाक'।

वलाकिन् दे० 'बलाकिन्'।

वलाहक दे० 'बलाहक'।

वलिः, ली (स्त्री०) (वलिः—ली भी लिखा जाता है) [वल्+इन्, पक्षे ङीष्] 1. (खाल पर) शिकन या झुर्री वलिभिर्मुखमाक्रान्तम् 2. पेट के ऊपरी भाग में चमड़े पर पड़ी शिकन, झुर्री, सिकुड़न, (विशेष कर स्त्रियों के यह एक सौन्दर्य का चिह्न समझा जाता है) मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या वलित्रयं चारु बभार बाला - कु० १।३९ 3. छप्पर की छत की बंडेरी। सम० **भृत्** (वि०) घूंघर वाला, घुंघराले बालों वाला —कुसुमोत्खचितान् वलीभृतश्चलयन् भृंगरुचस्तवालकान् रघु० ८।५३,—**मुखः,—वदनः** बंदर, मा० ९।३१।

वलिकः, कम् [वलि+कन्] छप्पर की छत का किनारा, ओलती।

वलित (भू० क० कृ०) [वल्+क्त] 1. गतिशील 2. हिला-जुला, घूमा हुआ, मुड़ा हुआ 3. घिरा हुआ, लिपटा हुआ 4. झुर्रीदार · कि० ११।४।

वलिन, वलिभ (वि०) [वलि+न (भ) वा] झुर्रीदार, सिकुड़नदार, झुर्रियों के रूप में आकुंचित, जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हुई हों, पिलपिला—शि० ६।१३।

वलिमत् (वि) [वलि+मतुप्] झुर्रीदार।

वलिर (वि) [वल्+किरच्] भैंगी आंख वाला, ऐंचाताना, कनखी से देखने वाला।

वलिशम्,—शी [वलि+शो+क, वलिश+ङीष्] मछली पकड़ने का कांटा।

वलीकम् [वल्+कीकन्] छप्पर की छत का किनारा, ओलती – शि० ३।५३।

वलूकः [वल्+ऊकः] एक पक्षिविशेष,—**कम्** कमल की जड़, विस।

वलूल (वि०) [वल्+लच्, ऊङ्] बलवान्, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली।

वल्क् (चुरा० उभ० वल्कयति-ते) बोलना।

वल्कः,—कम् [वल्+क, कस्य नेत्वम्] 1. वृक्ष की छाल—स वल्कवासांसि तवाधुना हरन् करोति मन्युं न कथं धनंजयः—कि० १।३५, रघु० ८।११, भट्टि० १०।१ 2. मछली की खाल की परत या पपड़ी 3. भाग, खण्ड। सम०—**तरुः** वृक्षवीशेष,—**लोध्रः** लोध्र वृक्ष का एक भेद।

वल्कलः,—लम् [वल्+कलच्, कस्य नेत्वम्] 1. वृक्ष की छाल 2. वक्कल से बनाई गई पोशाक, छाल से बने वस्त्र—इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी श० १।२०, १९, रघु० १२।८, कु० ५।८, हैमवल्कलाः —६।६, 'सुनहरी छालवस्त्र धारी' (तु० चीरपरिग्रहाः - कु० ६।९२)। सम०—**संवीत** (वि०) छालवस्त्रधारी।

वल्कवत् (वि०) [वल्क+मतुप्] मछली (जिसके शरीर पर पपड़ी हो)।

वल्किलः [वल्क्+इलच्] कांटा।

वल्कुटम् (नपुं०) छाल, वक्कल।

वल्ग् (भ्वा० उभ० वल्गति - ते, वल्गित) हिलना-जुलना, जाना, इधर उधर घुमाना, शि० १२।२० 2. कूदना, उछलना, चौकड़ी भरना, छलांग मार कर चलना, सरपट दौड़ना (आलं० से भी)—पंच० १।६२. 3. नाचना—भर्तृ० ३।१२५ शि० १८।५३ 4. प्रसन्न होना—भट्टि० १३।२८ 5. खाना, शि० १४।२९ 6. अकड़ कर चलना, डींग मारना—भामि० १।७२।

वल्गनम् [वल्ग्+ल्युट्] उछलना, कूदना, सरपट दौड़ना। रघु० ९।५१।

वल्गा [वल्ग्+अच्+टाप्] लगाम, रास—आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते मृच्छ० १।५०।

वल्गित (भू० क० कृ०) [वल्ग्+क्त] 1. कूदा हुआ, छलांग लगाई हुई, उछला हुआ 2. गतिशील किया गया, नचाया गया—काव्या० २।७३,—**तम्** 1. सरपट दौड़, घोड़े की एक प्रकार की दौड़ 2. अकड़ कर चलना, शेखी बघारना, डींग मारना —निमिनादपराद्धेपोर्धानुष्कस्येव वल्गितम् —शि० २।२७।

वल्गु (वि०) [वल् संवरणे उ गुक् च] 1. प्रिय, सुन्दर, मनोहर, आकर्षक - रघु० ५।६८, शि० ५।२९, कि० १८।११ 2. मधुर—भामि० २।१३६ 3. मूल्यवान्,—**ल्गुः** बकरा। सम०—**पत्रः** एक प्रकार की जंगली दाल।

वल्गुक [वल्गु+कन्] मनोहर, प्रिय, सुन्दर—**कम्** 1. चन्दन 2. मूल्य 3. लकड़ी।

वल्गुलः [वल्गु+उल] गीदड़।

वल्गुलिका [वल्गुल+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. तैलचोर 2. पेटी, डब्बा।

वल्भ् (भ्वा० आ०) खाना, निगलना।

वल्मिक,—वल्मिकि (पुं०, नपुं०) दे० 'वल्मीक'।

वल्मी [वल्+अच्, मुम्, नि० ङीष्] चिऊँटी। सम० —**कूटम्** बामी, दीमकों द्वारा बनाया मिट्टी का टीला।

वल्मीकः,—कम् [वल्+ईक, मुट् च] बामी, दीमकों से बनाया गया मिट्टी का टीला,—धर्मं शनैः संचिनुयाद्वल्मीकमिव पुत्तिकाः - सुभा०, मेघ० १५, श० ७।११,—**कः** 1. शरीर के कुछ भागों का सूज जाना, हाथी पाँव 2. वाल्मीकि कवि। सम०—**शीर्षं** एक प्रकार का सुरमा (जो अंजन की भांति प्रयुक्त किया जाता है)।

वल्यु (ल्यू) ल् (चुरा० पर० वल्युलयति) 1. काट डालना 2. निर्मल करना।

वल्ल् (भ्वा० आ० वल्लते) 1. ढकना 2. ढका जाना 3. जाना, हिलना-जुलना।

वल्लः [वल्ल्+अच्] 1. चादर 2. ती गुंजाओं के बराबर भार (वज़न) 3. दूसरा बाट जो डेढ़ या दो गुंजा के बराबर होता है (आयु० में) 4. प्रतिषेध।

वल्लकी [वल्ल्+क्वुन्+ङीप्] वीणा —अजस्रमास्फालितवल्लकीगुणक्षतोज्ज्वलांगुष्ठनखांशुभिन्नया—शि० १।९, ४।५७, ऋतु० १।८, रघु० ८।४१, १९।१३।

वल्लभ (वि०) [वल्ल्+अभच्] 1. प्यारा, अभिलषित, प्रिय 2. सर्वोपरि—**भः** 1. प्रेमी, पति—मा० ३।८, शि० ११।३३ 2. कृपापात्र, —पंच० १।५३ 3. अधीक्षक, अध्यवेक्षक 4. मुख्य गोप 5. उत्तम घोड़ा (शुभ लक्षणों से युक्त)। सम०—**आचार्यः** वैष्णव संप्रदाय के प्रसिद्ध प्रवर्तक का नाम, —**पालः** साईस।

वल्लभायितम् [वल्लभ+क्यङ्+क्त] सुरतानन्द का आसन विशेष, रतिबंध, तु० 'पुरुषायित'।

वल्लरम् [वल्ल्+अरन्] 1. अगर की लकड़ी 2. निकुंज 3. झुरमुट।

वल्लरी,—री (स्त्री०) [वल्ल्+अरि वा ङीप्] 1. बेल, लता—अनपायिनि संश्रयद्रुमे गजभग्ने पतनाय वल्लरी—कु० ४।३१, तमोवल्लरी - मा० ५।६ 2. मंजरी।

वल्लवः (स्त्री०—वी) [वल्ल+वा+क] दे० 'वल्लवः' शि० १२।३९ ।

वल्लिः (स्त्री०) [वल्ल्+इन्] 1. लता, बेल—भूतेशस्य भुजंगवल्लिवलयस्रङ्नद्धजूटा जटाः -मा० १।२ 2. पृथ्वी । सम० दूर्वा एक प्रकार का घास ।

वल्ली (स्त्री०) [वल्लि+ङीप्] बेल, घुमावदार पौधा, लता । सम०—जम् मिर्च,—वृक्षः साल का वृक्ष ।

वल्लुरम् [वल्ल्+उरन्] 1. निकुञ्ज, पर्णशाला 2. वनस्थली, झुरमुट 3. मंजरी 4. अनजुता खेत 5. रेगिस्तान, जंगल, उजाड़ 6. सूखा मांस ।

वल्लूरम् [वल्ल्+ऊरन्] 1. सूखा मांस 2. (जंगली) सूअर का मांस,—रम् 1. झुरमुट 2. उजाड़, वीरान 3. अनजुता खेत ।

वल्ह् i (भ्वा० आ० वल्हते) 1. प्रमुख होना, सर्वोत्तम होना 2. ढकना 3. मार डालना, चोट पहुंचाना 4. बोलना 5. देना ।

ii (चुरा० उभ० वल्हयति-ते) 1. बोलना 2. चमकना ।

वल्हिक, वल्हीक दे० वल्हिक, वल्हीक ।

वश् (अदा० पर० वष्टि, उशित) 1. चाहना, इच्छा करना, लालसा करना - निःस्वो वष्टिशतं शती दशशतम्—शान्ति० २।६, अमी हि वीर्यप्रभवं भवस्य जयाय सेनान्यमुशन्ति देवाः—कु० ३।१५, श० ७।२० 2. अनुग्रह करना 3. चमकना ।

वश (वि०) [वश् कर्तरि अच् भावे अप् वा] 1. अधीन, प्रभावित, प्रभावगत, नियन्त्रणगत (प्रायः समास में) शोकवशः, मृत्युवशः आदि 2. आज्ञाकारी, विनीत, अनुवर्ती 3. विनम्र, वशीकृत 4. मुग्ध, आकृष्ट 5. जादू द्वारा वश में किया हुआ,—शः,—शम् 1. अभिलाषा, चाह, इच्छा 2. शक्ति, प्रभाव, नियन्त्रण, स्वामित्व, अधिकार, अधीनता, दीनता, स्ववशः 'अपने अधीन' स्वतन्त्र, परवशः 'दूसरों के प्रभाव में'—अनयत् प्रभुशक्तिसम्पदा वशमेको नृपतीननंतरान् —रघु० ८।१९, वशं नी,- आनी अधीन करना, वश में करना जीत लेना, वशं गम्,—इ,—या, अधीन होना, मार्ग से हट जाना, दब जाना, विनीत होना न शुचो वशं वशिनामुत्तम गन्तुमर्हसि—रघु० ८।१०, वशे कृ या वशीकृ वस में करना, हावी होना, जीत लेना, मुग्ध करना, जादू से वस में करना, वशात् (अपा०) क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'शक्ति के द्वारा' 'प्रभाव के द्वारा' 'के कारण' 'प्रयोजन से' अर्थ प्रकट करता है, दैववशात्, वायुवशात्, कार्यवशात् आदि 3. पालतू, रहने वाला 4. जन्म,—शः वेश्याओं का वासस्थान, चकला । सम०—अनुज,—वर्तिन् (इसी प्रकार 'वशंगत) (वि०) आज्ञाकारी, दूसरे की इच्छा का वशवर्ती, विनीत, अधीन (पुं०) सेवक, —आढ्यकः सूंस, क्रिया जीतना, अधीन करना—ग (वि०) अधीन, आज्ञाकारी—भर्तृ० २।९४ (—गा) आज्ञाकारिणी पत्नी ।

वशंवद (वि०) [वश+वद्+खच्, मुम्] आज्ञाकारी, अनुवर्ती, विनीत, अधीन, प्रभावित (श० तथा आलं०) कोपस्य किं नु करभोरु वशंवदाऽमूः भामि० ३।९, २।१३६, १५७, नै० १।३३, सा ददर्श गुरुहर्षवशंवदवदनमनंगनिवासम् - गीत० ११ ।

वशका [वश+कै+क+टाप्] आज्ञाकारिणी पत्नी ।

वशा [वश्+अच्+टाप्] 1. स्त्री, अबला 2. पत्नी 3. पुत्री 4. ननद 5. गाय 6. बांझ स्त्री 7. बंध्या गाय 8. हथिनी स्त्रीरत्नेषु ममोर्वशी प्रियतमा यूथे तवेयं वशा—विक्रम० ४।२५ ।

वशिः [वश्+इन्] 1. अधीनता 2. सम्मोहन, मन्त्रमुग्धता (नपुं०) वश्यता ।

वशिक (वि०) [वश+ठन्] शून्य, रहित,—कः अदर की लकड़ी ।

वशिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वशः अस्त्यस्य इनि] 1. शक्तिशाली 2. नियन्त्रण में, वशीभूत, अधीन, विनीत 3. जिसने अपनी विषयवासनाओं पर विजय प्राप्त कर ली है, जितेन्द्रिय (संज्ञा शब्द की भांति भी प्रयुक्त)—रघु० २।७०, ८।९०, १९।१, श० ५।२८ ।

वशिनी [वशिन्+ङीप्] शमीवृक्ष, जैंडी का पेड़।

वशिरः [वश्+किरच्] एक प्रकार की मिर्च,—रम् समुद्रीनमक ।

वशिष्ट दे० 'वसिष्ठ' ।

वश्य (वि०) [वश्+यत्] 1. वश में होने के योग्य, नियन्त्रणीय, शासित होने के योग्य—आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति–भग० २।६४ 2. वशीभूत, विजित, सधा हुआ, विनीत—भग० ६।३६ 3. प्रभाव या नियन्त्रण में, अधीन, आश्रित, आज्ञाकारी—तस्य पुत्रो भवेद्वश्यः समृद्धो धार्मिकः सुधीः -हि० प्र० १८, (प्रायः समास में) (मनः) हृदि व्यवस्थाप्य समाधिवश्यम् कु० ३।५०,—श्यः सेवक, आश्रित,—श्या विनम्रा या आज्ञाकारिणी पत्नी—यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते उत्तर० १।२ (जिसका भाषा पर पूरा आधिपत्य है),—श्यम् लौंग ।

वश्यका [वश्य+कन्+टाप्] दे० 'वश्या' ।

वष् (भ्वा० पर० वषति) क्षति पहुँचाना, चोट मारना, वध करना ।

वषट् (अव्य०) [वह्+डषटि] किसी देवता को आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द (देवता के लिए संप्र० के साथ) इन्द्राय वषट्, पूष्णे वषट्

आदि। सम०—कर्तृ (पुं०) पुरोहित जो 'वषट्' का उच्चारण करके आहुति देता है, -- कारः 'वषट्' शब्द का उच्चारण करना।

वष्क् (भ्वा० आ० वष्कते) जाना, हिलना-जुलना।

वष्कयः [वष्क+अयन्] एक वर्ष का बछड़ा।

वष्कयणी, वष्कयिणी (स्त्री०) [वष्कय+नी+क्विप् +ङीप्, णत्वम्, वष्कय+इनि+ङीप्, णत्वम्] वह गाय जिसके बछड़े बहुत बड़े हो गये हैं, चिर प्रसूता, बहुत दिनों की ब्यायी हुई।

वस् i (भ्वा० पर० वसति—कभी कभी—वसते, उषित) 1. रहना, बसना, निवास करना, ठहरना, डठे रहना, वास करना (प्रायः अधि० के साथ, परन्तु कभी कभी कर्म० के साथ) धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली—गीत० ५ 2. होना, विद्यमान होना, मौजूद होना, - वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि कि० ८।३७, यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति, भूतिः श्रीर्ह्रीर्धृतिः कीर्तिर्दक्षे वसति नालसे—सुभा० 3. वेग से चलना, (समय) बिताना (कर्म० के साथ), प्रेर० बसाना, आवास देना, आबाद करना - इच्छा० (विवत्सति) रहने की इच्छा करना; अधि—, (कर्म० के साथ) 1. रहना, बसना, निवास करना, बस जाना यानि प्रियासहचरश्चिरमध्यवात्सम् उत्तर० ३।८,' बाल्यात्परामिव दशां मदनोऽध्युवास—रघु० ५।६३, ११।६१, शि० ३।५९, मेघ० २५, भट्टि० १।३ 2. उतरना, या अड्डे पर बैठना अनु—, (कर्म० के साथ) निवास करना, आ—,(कर्म० के साथ) निवास करना, बसना —रविमावसते सतां क्रियायै विक्रम० ३।७, मनु० ७।६९ 2. कार्यवाही प्रारम्भ करना—मनु० ३।२ 3. व्यय करना, (समय) बिताना उप—, 1. रहना, ठहरना (इस अर्थ में कर्म० के साथ) 2. उपवास रखना, अनशन करना—मनु० २।२२०, ५।२०, (आलं० से भी) उपोषिताभ्यामिव नेत्राभ्यां पिबन्ती—दश०, नि—, 1. रहना, निवास करना, ठहरना—अहो निवत्स्यति समं हरिणाङ्गनाभिः—श० १।२७,' निवसिष्यसि मय्येव—भग० १२।८ 2. मौजूद होना. विद्यमान होना,—पंच० १।३१ 3. अधिकार करना, बसना, अधिकार में लेना, निस्—, रह चुकना, अर्थात् (किसी विशेष काल) की समाप्ति तक जाना, प्रेर०—निर्वासित करना, बाहर निकाल देना, देश निकाला देना,—रघु० १४।६७, परि—, 1. निवास करना, ठहरना 2. रात बिताना—दे० पर्युषित, प्र—, 1. रहना, निवास करना 2. विदेश जाना, यात्रा करना, घर से बाहर जाना, देशाटन करना—विधाय वृत्तिं भार्यायाः प्रवसेत्कार्यवान्नरः—मनु० ९।७४, रघु० ११।४, (प्रेर०) देशनिकाला देना, निर्वासित करना प्रति—, निकट रहना, पास में होना, वि—, परदेश में रहना (प्रेर०) देश निकाला देना, निर्वासित करना - भट्टि० ४।३५, विप्र—, देशाटन करना, घर से बाहर जाना—रघु० १२।११, सम्—, 1. रहना, निवास करना 2. साथ रहना, साहचर्य करना—मनु० ४।७९, याज्ञ० ३।१५।

ii (अदा० आ० वस्ते) पहनना, धारण करना—वसने परिधूसरे वसाना—श० ७।२१, शि० ९।७५, रघु० १२।८, कु० ३।५४, ७।९, भट्टि० ४।१०, प्रेर० (वासयति—ते) पहनवाना, नि—, सुसज्जित करना —भट्टि० १५।७, वि—, धारण करना, पहनना—भट्टि० ३।२०।

iii (दिवा० पर० वस्यति) 1. सीधा होना 2. दृढ़ होना 3. स्थिर करना।

iv (चुरा० उभ० वासयति—ते) 1. काटना, बाँटना, काट डालना 2. रहना 3. लेना, स्वीकार करना 4. चोट पहुँचाना, हत्या करना।

v (चुरा० उभ० वसयति—ते) सुगन्धित करना, सुवासित करना।

वसतिः,—ती (स्त्री०) [वस्+अति वा ङीप्] 1. रहना, निवास करना, टिके रहना आश्रमेषु वसतिं चक्रे —मेघ० १, 'अपना निवास स्थिर किया'—श० ५।११ 2. घर, आवास, निवास, वासस्थान—हर्षो हर्षो हृदयवसतिः पञ्चबाणस्तु बाणः—प्रसन्न० १।२२, श० २।१४ 3. आधार, आशय, पात्र (आलं०) कु० ६।३७, इसी प्रकार 'विनयवसतिः' 'धर्मैकवसतिः' 4. शिविर, पड़ाव 5. ठहरने और आराम करने का समय—अर्थात् रात्रि, तस्य मार्गवशादेका बभूव वसतिर्यतः—रघु० १५।११, (वसतिः=रात्रिः, मल्लि०) 'उसने रात को विश्राम किया', तिस्रो वसतीरुषित्वा—७।३३, ११।३३।

वसनम् [वस्+ल्युट्] 1. रहना, निवास करना, ठहरना 2. घर, निवास स्थान 3. प्रसाधन करना, वस्त्र धारण करना, कपड़े पहनना 4. वस्त्र, कपड़ा, परिधान, कपड़े वसने परिधूसरे वसाना—श० ७।२१, उत्संगे वा मलिनवसने सौम्य निक्षिप्य वीणाम् मेघ० ८६, ४१ 5. करधनी, तगड़ी।

वसंतः [वस्+झच्] 1. वसंत ऋतु, बहार का मौसम (चैत्र और वैशाख यह दो मास वसंत ऋतु के होते हैं) मधुमाधवौ वसंतः—सुश्रु०, सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते—ऋतु० ६।२, विहरति हरिरिह सरसवसंते गीत० १ 2. मूर्त या मानवीकृत वसंत जो कामदेव का साथी माना जाता है—सुहृदः पश्य वसंत किं स्थितम्—कु० ४।२७ 3. पेचिस 4. चेचक, शीतला। सम०—उत्सवः वसन्तोत्सव, वसन्त ऋतु की रंगरेलियां (यह आनंदमंगल पहले चैत्र की पूर्णिमा को होली—उत्सव के अवसर पर मनाये जाते हैं),

—कालः वसन्त की लहर, वसन्त ऋतु,—घोषिन् (पुं०) कोयल, जा 1. वासन्ती या माधवी लता 2. वासन्ती चहल-पहल, दे० वसन्तोत्सव,—तिलकः —कम् वसन्त ऋतु का अलंकार—फुल्लं वसन्ततिलकं तिलकं वनाल्याः—छंद० ५, (कः का, कम्) एक छंद का नाम, दे० परिशिष्ट १,—दूतः 1. कोयल 2. चैत्र का महीना 3. हिंदोल राग 4. आम का वृक्ष,—दूती शृंगवल्ली का फूल,—द्रुः,—द्रुमः आम का वृक्ष,—पंचमी माघ शुक्ला पंचमी, बंधुः, सखः कामदेव के विशेषण।

वसा [वस्+अच्+टाप्] 1.मेद, चरबी, मज्जा, पशुमज्जा, पशुओं के गुर्दे की चर्बी—मुद्रा० ३।२८, रघु० १५।१५ 2. कोई तेल या चर्बीवाला स्राव 3. मस्तिष्क। सम० —आढ्यः,—आढ्यकः सूंस, छटा भेजा—पायिन् (पुं०) कुत्ता।

वसिः [वस्+इन्] 1. कपड़े 2. निवास, आवास।

वसित (भू० क० कृ०) [वस्+णिच्+क्त] 1. पहना हुआ, धारण किया हुआ 2. निवास 3. (अनाज आदि) संगृहीत।

वसिरम् [वस्+किरच्] समुद्री नमक।

वसिष्ठः ('वशिष्ठं' भी लिखा जाता है] 1. एक विख्यात मुनि का नाम, सूर्यवंशी राजाओं का कुल पुरोहित, कई वैदिक सूक्तों के ऋषि, विशेष कर ऋग्वेद के सातवें मंडल के; ब्राह्मणोचित प्रतिष्ठा तथा शक्ति के आदर्श प्रतिनिधि, विश्वामित्र ने उनकी समानता करने का बहुत प्रयत्न किया, और इसी कारण तत्संबन्धी अनेक उपाख्यान प्रचलित हो गये—तु० विश्वामित्र 2. स्मृति के प्रणेता का नाम (कभी-कभी ऋषि के नाम पर ही इसका नाम 'वसिष्ठ स्मृति' लिया जाता है)।

वसु (नपुं०) [वस्+उन्] 1. दौलत, धन स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्नुता वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी—कि० १।१८, रघु० ८।३१, ९।६ 2. मणि, रत्न 3. सोना 4. पानी 5. वस्तु, द्रव्य 6. एक प्रकार का नमक 7. एक जड़ी-विशेष, वृद्धि (पुं०) 1. एक देव समूह (इस अर्थ में ब० व०) जो गिनती में आठ हैं—1. आप 2. ध्रुव 3. सोम 4. धर या धव 5. अनिल 6. अनल 7. प्रत्यूष और 8. प्रभास, कभी-कभी 'आप' के स्थान में 'अह' को गिनते हैं—धरो ध्रुवश्च सोमश्च अहश्चैवानिलोऽनलः, प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टाविति स्मृताः 2. आठ की संख्या 3. कुबेर 4. शिव 5. अग्नि 6. वृक्ष 7. सरोवर, तालाब 8. रास 9. जुवा बांधने की रस्सी १० बागडोर 11. प्रकाश की किरण —निरकाशं यद्रविमपेतवसुं वियदालयादपरदिग्गणिका —शि० ९।१०, शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ—कि० १।४६, (दोनों अवस्थाओं में 'वसु' शब्द का अर्थ धन दौलत भी है) 12. सूर्य —स्त्री० प्रकाश, किरण। सम०—ओ (औ) कसारा 1. इन्द्र की नगरी अमरावती 2. कुबेर की नगरी अलका 3. एक नदी का नाम जो अलका या अमरावती से संबद्ध है,—कीटः,—कृमिः भिक्षुक, दा पृथ्वी,—देवः कृष्ण के पिता और सूर के पुत्र का नाम एक यदुवंशी, °भूः,—सुतः कृष्ण के विशेषण देवता,—देव्या धनिष्ठा नाम का नक्षत्र, धर्मिका स्फटिक,—धा 1. पृथ्वी वसुधेयमवेक्ष्यतां त्वया—रघु० ८।८३ 2. भूमि—कु० ४।४, °अधिपः राजा °धरः पहाड़ विक्रम० १।७ °नगरम् वरुण की राजधानी —धारा,—धारा कुबेर की राजधानी,—प्रभा आग की सात जिह्वाओं में से एक,—प्राणः अग्नि का विशेषण,—रेतस् (पुं०) अग्नि,—श्रेष्ठम् 1. तपाया हुआ सोना 2. चाँदी,—षेणः कर्ण का नाम, स्थली कुबेर की नगरी का विशेषण।

वसु (सू) कः [वसु+कै+क] आक का पौधा,—कम् 1. समुद्री नमक 2. शिलीभूत लवण।

वसुन्धरा [वसूनि धारयति—वसु+धृ+णिच्+खच् +टाप्, मुम्] पृथ्वी, नानारत्ना वसुन्धरा—रघु० ४।७।

वसुमत् (वि०) [वसु+मतुप्] दौलतमंद, धनवान,—ती पृथ्वी—वसुमत्या हि नृपाः कलत्रिणः—रघु० ८।८२, श० १।२५।

वसुलः [वसु+ला+क] सुर, देवता।

वसूरा [वस्+ऊरच्+टाप्] वेश्या, रंडी गणिका।

वस्क् (भ्वा० आ० वस्कते) जाना, हिलना-जुलना।

वस्क्रय दे० 'वष्क्रय'।

वस्कयणी दे० 'वष्कयणी'।

वस्कराटिका (स्त्री०) बिच्छू।

वस्त् (चुरा० उभ० वस्तयति-ते) 1. क्षति पहुँचाना, हत्या करना 2. मांगना, निवेदन करना, याचना करना 3. जाना, हिलना-जुलना।

वस्तः [वस्त्+अच्] आवासस्थान—स्तः बकरा दे०'बस्त'।

वस्तकम् [वस्त+कै+क] कृत्रिम लवण।

वस्तिः (पुं०, स्त्री०) [वस्+तिः] 1. निवास, आवास, टिकना 2. उदर, पेट का नाभि से नीचे का भाग 3. पेडू 4. मूत्राशय 5. पिचकारी, एनीमा। सम० —मलम् मूत्र,—शिरस् (नपुं०) 1. एनीमा की नली, —शोधनम् (मूत्राशय साफ करने की) मूत्र बढ़ाने वाली दवा।

वस्तु (नपुं०) [वस्+तुन्] 1. वस्तुतः विद्यमान चीज, वास्तविक, वास्तविकता—वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽज्ञानम् 2. चीज, पदार्थ, सामग्री, द्रव्य, मामला—अथवा

मृदु वस्तु हिंसितुं मृदुनैवारभते कृतांतकः—रघु० ८।४५, किं वस्तु विद्वन् गुरवे प्रदेयम्—५।१८, ३।५, वस्तुनीप्टेप्यनादरः—सा० द० 3. धनदौलत, सम्पत्ति, वैभव 4. सत, प्रकृति, नैसर्गिक या प्रधान गुण 5 सामान (जिससे कोई वस्तु बन सके), सामग्री, मूलपदार्थ (आलं० से भी) आकृतिप्रलयादेवैनामनून-वस्तुकां संभावयामि—मालवि० १ 6. (नाटक की) कथावस्तु, किसी काव्यकृति की विषयवस्तु, कालिदासप्रथितवस्तुना नवेनाभिज्ञानशकुंतलाख्येन नाटकेनोपस्थातव्यमस्माभिः—श० १, अथवा सद्वस्तु पुरुप-बहुमानात्—विक्रम० १।२, आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम्—सा० द० ६, वेणी० १ 7. किसी वस्तु का मुद्रा 8. योजना, रूपरेखा। सम० —अभावः 1. वास्तविकता की कमी 2. सम्पत्ति की हानि, —उत्थापनम् ओझाई या झाड़फूंक अथवा अभिचार के द्वारा (नाटकों में) किसी उपाख्यान की रचना —सा० द० ४२०, —उपमा, दण्डी के अनुसार उपमा का एक भेद, दण्डी द्वारा निरूपित लक्षण राजीवमिव ते वक्त्रं नेत्रे नीलोत्पले इव, इयं प्रतीयमानैकधर्मा वस्तूपमैव सा—काव्या० २।१६, (यह एक ऐसी उपमा की बात है जहां साधारण धर्म का लोप हो गया है), —उपहित (वि०) उपयुक्त पदार्थ के साथ व्यवहृत, उपयुक्त सामग्री पर अर्पित—रघु० ३।२९, —मात्रम् किसी विषय की केवल रूपरेखा या ढांचा (जिसे बाद में विकसित किया जा सके)।

वस्तुतस् (अव्य०) [वस्तु+तस्] 1. दरअसल, वास्तव में, सचमुच, वाकई 2. अनिवार्यतः, यथार्थतः, तत्त्वतः 3. इसका स्वाभाविक फल यह है कि सच बात तो यह है कि, निस्सन्देह।

वस्त्यम् [वस्ति+यत्] घर, आवासस्थान, निवासस्थान —शि० १३।६३।

वस्त्रम् [वस्+ष्ट्रन्] 1. परिधान, कपड़ा, कपड़े, पहनावा 2. वेशभूषा, पोशाक। सम० —अगारः,—रम्,—गृहम्, तम्बू,—अंचलः,—अंतः कपड़े की किनारी या वस्त्र की झालर,—कुट्टिमम् 1. तम्बू 2. छतरी,—ग्रंथिः धोती या साड़ी की गांठ (जो नाभि के निकट कपड़े में लगाई जाती है), तु० नीवि,—निर्णेजकः धोबी, —परिधानम् कपड़े पहनना, वस्त्रधारण करना, —पुत्रिका गुड़िया, पुत्तलिका, —पूत (वि०) कपड़े में छाना हुआ—वस्त्रपूतं पिबेज्जलम्—मनु० ६।४६, —भेदकः,—भेदिन् (पुं०) दर्जी, —योनिः कपड़े का उपादान (कपास आदि), —रंजनम् कुसुंभ।

वस्नम् [वस्+न] 1. भाड़ा, मजदूरी (इस अर्थ में पुं० भी) 2. निवासस्थान, आवासस्थान 3. दौलत, द्रव्य 4. वस्त्र, कपड़े 5. चमड़ा 6. मूल्य 7. मृत्यु।

वस्ननम् [वस्+नन] करधनी, पटका या तागड़ी।

वस्नसा [वस्नं चर्म सीव्यति—सिव्+ड+टाप्] कण्डरा, स्नायु।

वंह् (चुरा० उभ० वंहयति—ते) उज्ज्वल करना, चमकाना, रोशनी करना।

वह् (भ्वा० उभ० वहति—ते, ऊढ, कर्म० उह्यते) 1. ले जाना, नेतृत्व करना, धारण करना, वहन करना, परिवहन करना, (प्रायः दो कर्म० के साथ)—अजां ग्रामं वहति, वहति विधिहुतं या हविः—श० १।१, न च हव्यं वहत्यग्निः—मनु० ४।२४० 2. ढोना, आगे चलाना, बहा कर ले जाना, धकेलना—जलानि या तीरनिखातयूपा वहत्ययोध्यामनु राजधानीम्—रघु० १३।६१, त्रिस्रोतसं वहति यो गगनप्रतिष्ठाम्—श० ७।७, रघु० ११।१० 3. जाकर लाना, ले आना —वहति जलमियम्—मुद्रा० १।४ 4. धारण करना, सहारा देना, थाम लेना, जीवित रहना—न गर्दभा वाजिधुरं वहंति मृच्छ० ४।१७, ताते चापद्वितीये वहति रणधुरां को भयस्यावकाशः—वेणी० ३।५, 'जब मेरे पिता हरावल का नेतृत्व कर रहे हैं, वहति भुवनश्रेणीं शेषः फणाफलकस्थिताम्—भर्तृ० २।३५, श० ७।१७, मेघ० १७ 5. उठाकर ले जाना, अपहरण करना—अद्रेः शृंगं वहति (पाठांतर—'हरति') पवनः किं स्विद्—मेघ० १४ 6. विवाह करना—यदूढया वारणराजहार्यया—कु० ५।७०, मनु० ३।३८ 7. रखना, अधिकार में करना, भारवहन करना—वहसि हि धनहार्यं पण्यभूतं शरीरम्—मृच्छ० १।३१, वहति विषधरान् पटीरजन्मा—भामि० १।७४ 8. धारण करना, प्रदर्शित करना, दिखाना—लक्ष्मीमुवाह सकलस्य शशांकमूर्तेः—कि० ५।१२, ९।२ 9. मुंह ताकना, सेवा करना, देखभाल करना—मुग्धाया मे जनन्या योगक्षेमं वहस्व—मालवि० ४, तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्—भग० ९।२२ 10. भुगतना, टटोलना, अनुभव करना, भामि० १।९४, इसी प्रकार—दुःखं, हर्षं, शोकं तापं आदि 11. (इस अर्थ में तथा निम्नांकित अर्थों में अकर्मक) धारण किया जाना, ले जाया जाना, चलते रहना, वहतं बलीवर्दो वहतम्—मृच्छ० ६, उत्थाय पुनरवहत्—का०, पंच० १।४३, २९१ 12. (नदी आदि का) बहना—प्रत्यग्वहुर्महानद्यः—महा०, परोपकाराय वहंति नद्यः—सुभा० 13. (हवा का) चलना, मंदं वहति मारुतः—राम०, वहति मलयसमीरे मदनमुपनिधाय गीत० ५, प्रेर० (वाहयति—ते) 1. धारण कराना, भिजवाना, मँगवाना, ले जाया जाना 2. हाँकना, ठेलना, निदेश देना 3. आर पार जाना, पारगमन करना—सवाह्यते राजपथः शिवाभिः—रघु० १६।१२, भवान् वाहयेदध्वशेषम्

—मेघ० ३८ 4. उपयोग करना, ले जाना—भट्टि० १४।२३, इच्छा० (विवक्षति—ते) ले जाने की इच्छा करना, अति –, गुज़ारना, (समय) बिताना, मुख्य रूप से प्रेर०, मा० ६।१३, रघु० ९।७०, अप–, 1. हाँक कर दूर भगा देना, हटाना, दूर ले जाना रघु० १३। २२, १६।६ 2. छोड़ना, त्यागना, तिलांजलि देना —रघु० ११।२५ 3. घटाना, व्यवकलन करना, आ–, 1. पूरी तरह समझा देना 2. जन्म देना, पैदा करना प्रवृत्त होना या झुकना—व्रीडमावहति मे स संप्रति रघु० ११।७३, श० ३।४ 3. वहन करना, कब्जे में करना, रखना—चौर० १८ 4. बहना 5. प्रयोग करना, उपयोग करना (प्रेर०) (देवता का) आवाहन करना, उद् , 1. विवाह करना—पार्थिवीमुदवहद्रघूद्वहः—रघु० ११।५४, मनु० ३।८, भट्टि० २।४८ 2. ऊपर उठाना, उन्नत होना 3. संभालना, जीवित रखना, ऊँचे उठाना, सहारा देना—रघु० १६।६० 4. भुगतना, अनुभव करना 5. अधिकार में करना, रखना, पहनना, धारण करना,—कु० १।१९, विक्रम० ४।४२ 6. समाप्त करना, पूरा करना, उप –, 1. निकट लाना 2. उपक्रम करना, आरम्भ करना, नि—, संभाले रखना, जीवित रखना, सहारा देना वेदानुद्धरते जगन्निवहते—गीत० १, निस्–, 1. समाप्त होना 2. अवलंबित होना,···की सहायता से निर्वाह करना,(प्रेर०) —समाप्ति तक ले जाना, पूरा करना, समाप्त करना, प्रबंध करना—श० ३, परि , छलकना, प्र , वहन करना, ले जाना, खींचते रहना 2. वहां ले जाना, ले जाना, वहन करते जाना—भट्टि० ८।५२ 3. सहारा देना, (भार) वहन करना, 4. बहना 5. खिलना 6. रखना, अधिकार में करना, स्पर्श करना या महसूस करना, वि—, विवाह करना, सम्, , 1. ले जाना, धारण किये जाना 2. मसलना, दबाना, दे० प्रेर० 3. विवाह करना, दिखाना, प्रदर्शित करना, प्रस्तुत करना, (प्रेर०) मसलना, या मालिश करना श० ३।२१।

वहः [वह्+कर्तरि अच्] 1. वहन करने वाला, ले जाने वाला, सहारा देने वाला 2. बैल के कंधे 3. सवारी यान 4. विशेष करके घोड़ा 5. हवा, वायु 6. मार्ग सड़क 7. नद, नाला 8. चार द्रोण की माप।

वहतः [वह्+अतच्] 1. यात्री 2. बैल।

वहतिः [वह्+अतिः] 1. बैल 2. हवा, वायु 3. मित्र, परामर्शदाता, सलाहकार।

वहती, वहा [वहति+ङीष्, वह+टाप्] नदी, सरिता।

वहतुः [वह्+अतु] बैल।

वहनम् [वह्+ल्युट्] 1. ले जाना, धारण करना, ढोना 2. सहारा देना 3. बहना 4. गाड़ी, यान 5. नाव, डोंगी।

वहंतः [वह्+झच्] 1. वायु 2. शिशु।

वहल (वि०) दे० 'बहल'।

वहित्रम्, वहित्रकम् वहिनी [वह्+इत्र, वहित्र+कन्, वह्+इनि+ङीप्] डोंगी, बेड़ा, नाव, किश्ती,—प्रत्यूषस्यदृश्यत किमपि वहित्रम्—दश०, प्रलय पयोधिजले धृतवानसि वेदं विहितवहित्रचरित्रमखेदम्—गीत०१।

वहिस् दे० 'बहिस्'।

वहिष्क (वि०) [वहिस्+कन्] बाहरी, बाह्यपत्रसंबंधी।

वहेडुकः (पुं०) बहेड़े का पेड़, विभीतक का वृक्ष।

वह्निः [वह्+निः] 1. अग्नि—अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति सुभा० 2. पाचनशक्ति, आमाशय का रस 3. हाजमा, भूख लगना 4. यान। सम० **कर** (वि०) 1. अन्तर्दाहक 2. पाचनशक्ति को उद्दीप्त करने वाला, क्षुधावर्धक,—**काष्ठम्** एक प्रकार की अगर की लकड़ी, —**गंधः** धूप, लोबान,—**गर्भः** 1. बांस 2. शमी या जँडी का वृक्ष, तु० अग्निगर्भ',—**दीपकः** कुसुंभ का पेड़,—**भोग्यम्** घी,—**मित्रः** हवा, वायु, —**रेतस्** (पुं०) शिव का विशेषण,—**लोहम्**, —**लोहकम्** तांबा, **वर्णम्** लाल रंग का कुमुद, रक्तोत्पल, —**वल्लभः** राल,—**बीजम्** 1. सोना 2. चूना—**शिखम्** 1. केसर 2. कुसुंभ, **सखः** हवा, **संज्ञकः** चित्रकवृक्ष।

वह्यम् [वह्+यत्] 1. गाड़ी 2. यान, सवारी,—**ह्या** एक मुनि की पत्नी।

वह्लिक, वह्लीक दे° 'ब ह्लिक, बह्लीक'।

वा (अव्य०) [वा+क्विप्] 1. विकल्प बोधक अव्यय, या, परंतु संस्कृत में इसकी स्थिति भिन्न है, या तो यह प्रत्येक शब्द या उक्ति के साथ प्रयुक्त होता है, अथवा अन्तिम के साथ, परन्तु यह वाक्य के आरंभ में कभी प्रयुक्त नहीं होता, तु० 'च' 2. इसके निम्नांकित अर्थ हैं (क) और, भी,—वायुर्वा दहनो वा—गण०, अस्ति ते माता स्मरसि वा तातम् उत्तर० ४, (ख) के समान, जैसा कि जातां मन्ये तुहिनमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम्—मेघ० ८३, मणी वोष्ट्रस्य लंबेते —सिद्धा०, हृष्टो गर्जति चातिदर्पितबलो दुर्योधनो वा शिखी—मृच्छ० ५।६, मालवि० ५।१२, शि० ३।६३, ४।३५, ७।६४, कि० ३।१३ (ग) विकल्प से—(इस अर्थ में बहुधा इसका प्रयोग व्याकरण के नियमों में—जैसा कि पाणिनि के सूत्र—होता है) दोषो णौ वा चित्तविरागे—पा० ६।४।९०, ९१ (घ) संभावना (इस अर्थ में 'वा' बहुधा प्रश्नवाचक सर्वनाम और उससे व्युत्पन्न 'इव' 'नाम' जैसे शब्दों के साथ जोड़ दिया जाता है तथा 'संभवतः' या 'कदाचित्' शब्दों से उसे अनूदित किया जाता है —कस्य वान्यस्य वचसि मया स्थातव्यम्—का०, परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते—पंच०

११२७, (ङ) कभी-कभी केवल पादपूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है 3. जब 'वा' की पुनरुक्ति की जाती है तो इसका अर्थ होता है या—या—सा वा शंभोस्तदीया वा मूर्तिर्जलमयी मम—कु० २।६०, तदत्र परिश्रमानुरोधाद्वा उदात्तकथावस्तुगौरवाद्वा नवनाटकदर्शनकुतूहलाद्वा भवद्भिरवधानं दीयमानं प्रार्थयेविक्रम० १, (अथवा या, कुछ-कुछ, अन्यथा—दे० 'अथ' के नीचे, न वा नहीं, न तो, न, यदि वा अगर, अन्यथा, किं वा कि, क्या, आया कि आदि।

वा (भ्वा० अदा० पर० वाति, वात या वान) 1. हवा का चलना—वाता वाता दिशि दिशि न वा सप्तधा सप्तभिन्ना—वेणी० ३।६, दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः—रघु० ३।१४, मेघ० ४२, भट्टि० ७।१, ८।६१ 2. जाना, हिलना-जुलना 3. प्रहार करना, चोट पहुंचाना, क्षतिग्रस्त करना—प्रेर० (वापयति—ते) 1. हवा चलवाना 2. वाजयति—ते डुलना, आ—, हवा का चलना—बद्धां बद्धां भित्तिशंकाममुष्मिन्नावानावान्मातरिश्वा निहन्ति—कि० ५।३६, भट्टि० १४।९७, निस्—, 1. खिलना 2. ठंडा होना, शान्त होना, (आलं० से भी) वपुर्जलार्द्रापवनैर्न निर्ववौ—शि० १।६५, त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलिते सुभा० 3. फूंक मारना, बुझना, तिष्प्रभ होना—निर्वाणदीपे किमु तैलदानम्, निर्वाणभूयिष्ठमथास्य वीर्यं संधुक्षयंतीव वपुर्गुणेन कु० ३।५२, शि० १४।८५, (प्रेर०) 1. फूंक मारना, बुझाना 2. शांत करना, गर्मी दूर करना, शीतल करना—रत्न० ३।११, रघु० १९।५६ 3. रिझाना, सान्त्वना देना, आराम पहुंचाना—रघु० १२।६३, प्र—, वि—, हवा का चलना—वायुर्विवाति हृदयानि हरन्नराणाम्—ऋतु० ६।२३।

वांश (वि०) (स्त्री०—शी) [वंश+अण्] बांस का बना हुआ, —शी वंसलोचन।

वांशिकः [वंश+ठक्] 1. बांस काटने वाला 2. बांसुरी बजाने वाला, बांसुरिया।

वाकम् [बक+अण्] सारसों का समूह या उड़ान।

वाकुल दे० 'बाकुल'।

वाक्यम् [वच्+ण्यत्, चस्य कः] 1. वक्तृता, वचन, वक्तव्य, उक्ति, कथन—शृणु मे वाक्यम् 'मेरे वचन सुनो', वाक्ये न संतिष्ठते 'आज्ञा पालन नहीं करता है'—शि० २।२४ 2. बात, उपवाक्य (किसी विचार का पूर्णोच्चारण)—वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः—सा० द० ६, श्रोत्रार्थी च भवेद्वाक्ये समासे तद्धिते तथा—काव्य १० 3. तर्क, अनुमान (तर्क में) 4. विधि, नियम, सूत्र। सम०—**अर्थः** वाक्य का अर्थ, °उपमा दण्डी के अनुसार उपमा का एक भेद—दे० काव्या० २।४३,—**आलापः** वार्तालाप, बातचीत, प्रवचन,—**खंडनम्** किसी उक्ति या तर्क का निराकरण,—**पदीयम्** भर्तृहरि द्वारा रचित एक पुस्तक का नाम,—**पद्धतिः** (स्त्री०) वाक्य बनाने की रीति, वाक्यविन्यास, लेखनशैली,—**प्रबंधः** 1. पुस्तक, संबद्ध रचना 2. वाक्य प्रवाह,—**प्रयोगः** वक्तृता को काम में लाना, भाषा का उपयोग,—**भेदः** भिन्न उक्ति, विभिन्न वक्तव्य मुद्रा० २,—**रचना**, **विन्यासः** वाक्य में शब्दों का क्रम, शब्द योजना, वाक्यरचनाविचार,—**शेषः** 1. किसी बात का अवशिष्ट भाग, पूरा न किया गया या अपूर्ण वाक्य सदोषावकाश इव ते वाक्य शेषः—विक्रम० ३ 2. न्यून पद वाक्य।

वागरः [वाचा इयर्ति गच्छति, वाच्+ऋ+अच्] 1. ऋषि, मुनि, पुण्यात्मा 2. विद्वान् ब्राह्मण, विद्यार्थी 3. शूर, वीर, सूरमा 4. सान, सिल्ली 5. बाधा, रुकावट 6. निश्चिति 7. बड़वानल 8. भेड़िया।

वागा (स्त्री०) लगाम।

वागुरा [वा हिंसने उरच् गन् च] खटकेदार पिंजड़ा, जाल, पाश, फन्दा, जालीदार फ़न्दा—को वा दुर्जनवागुरासु पतितः क्षेमेण यातः पुमान्—पंच० १।१४६। सम०—**वृत्तिः** जंगली जानवरों को पकड़ कर प्राप्त होने वाली आजीविका (—त्तिः) बहेलिया, शिकारी।

वागुरिकः [वागुरा+ठक्] बहेलिया, शिकारी, हरिण पकड़ने वाला—रघु० ९।५३।

वाग्मिन् (वि०) [वाच् अस्त्यर्थे ग्मिनिः चस्य कः] 1. वाक्पटु, वाक्चतुर 2. बातूनी 3. शब्दाडम्बरपूर्ण, शब्दसंक्रान्त पुं० 1. प्रवक्ता सुवक्ता—अनिर्लोडितकार्यस्य वाग्जालं वाग्मिनो वृथा—शि० २।२७, १०९, कि० १४।६, पंच० ४।८६ 2 बृहस्पति का नाम।

वाग्य (वि०) [वाचं यच्छति—यम्+ड] 1. कम बोलने वाला, मितभाषी 2. सत्य बोलने वाला, —ग्यः विनय, नम्रता।

वांकः (पुं०) समुद्र।

वांक्ष् (भ्वा० पर० वांक्षति) अभिलाषा करना, इच्छा करना।

वाङ्मय (वि०) (स्त्री०—यी) [वाच्+मयट्] 1. शब्दों से युक्त रघु० ३।२८ 2. वाणी या वचनों से संबन्ध रखने वाला—मनु० १२।६, भग० १७।१५ 3. वाणी से युक्त 4. वाक्पटु, अलंकारपूर्ण, वाग्विदग्ध,—**यम्** 1. वाणी, भाषा—स्पष्टस्तजन्मगैर्लीतैरेभिर्दशभिरक्षरैः समस्तं वाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना—छन्द० १, कु० ७।९०, शि० २।७२ 2. वाग्मिता 3. आलंकारिक,—**यी** सरस्वती देवी।

वाच् (स्त्री०) [वच्+क्विप् दीर्घोऽसंप्रसारणं च] 1. वचन, शब्द, पदावली (विप० अर्थ) वागर्थाविव

सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये —रघु० १।१ 2. वचन, बात, भाषा, वाणी–वाचि पुण्यापुण्यहेतवः—मा० ४, लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते, ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति उत्तर० १।१०, विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे कि० १।१०, 'यह वचन कहे', 'निम्नांकित कहा' १४।२, रघु० १।५९, शि० २।१३, २३, कु० २।३ 3. वाणी, शब्द—अशरीरिणी वागुदचरत्—उत्तर० २, मनुष्यवाचा—रघु० ३।५३ 4. उक्ति, वक्तव्य 5. भरोसा, प्रतिज्ञा 6. पदोच्चय, कहावत, लोकोक्ति 7. विद्या की देवी सरस्वती । सम०—**अर्थः** (वागर्थः) शब्द और उसका अर्थ—रघु० १।१, ऊ० दे०,—**आडम्बरः** (वागाडम्बरः) शब्दाडम्बर, वाग्जाल, —**आत्मन्** (वागात्मन्) (वि०) शब्दों से युक्त उत्तर० २,–**ईशः** (वागीशः) 1. सुवक्ता, वाक्पटु 2. देवताओं के गुरु बृहस्पति का विशेषण 3. ब्रह्मा का विशेषण—कु० २।३, (–**शा**) सरस्वती का नाम, —**ईश्वरः** (वागीश्वरः) 1. सुवक्ता, वाक्पटु 2. ब्रह्मा का विशेषण, (–**री**) वाणी की देवता सरस्वती देवी, —**ऋषभः** (वागृषभः) बोलने में प्रमुख, वाक्पटु या विद्वान् पुरुष, **कलहः** (वाक्कलह) झगड़ा, उत्पात, —**कीरः** (वाक्कीरः) पत्नी का भाई,—**गुदः** (वाग्गुदः) एक प्रकार का पक्षी,—**गुलिः**,—**गुलिकः** (वाग्गुलि आदि) राजा का पानदान-वाहक–तु० 'तांबूलकरंक वाहिन्',—**चपल** (वि०) (वाक्चपल) बकवात करने वाला, निरर्थक और असंगत बातें करने वाला, **चापल्यम्** (वाक्चापल्यम्) निरर्थक बातें, बकवास, गपशप, **छलम्** (वाक्छलम्) शब्दों के द्वारा बेईमानी, टालमटूल उत्तर, गोलमाल–मुद्रा० १,—**जालम्** (वाग्जालम्) शब्दाडंबरपूर्ण असार बातें शि० २।२७, **डंबरः** (वाग्डंबरः) 1. निस्सार उक्ति 2. बड़े बोल, **दंडः** (वाग्दंडः) 1. भर्त्सनापूर्ण वचन, डांट-फटकार, झिड़की 2. बोलने पर नियन्त्रण, शब्दों या वचनों पर रोक—तु० त्रिदंडः, **दत्त** (वाग्दत्त) (वि०) प्रतिज्ञात, संबद्ध, जिसकी सगाई हो चुकी हो, (**त्ता**) संबद्ध या सगाई हुई कन्या,—**दरिद्र** (वाग्दरिद्र) (वि०) वचनों में दरिद्र अर्थात् कम बोलने वाला, **दलम्** (वाग्दलम्) ओष्ठ—**दानम्** (वाग्दानम्) सगाई, **दुष्ट** (वाग्दुष्ट) (वि०) 1. गाली देने वाला, बदजबान, अश्लीलभाषी 2. व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भाषा बोलने वाला, (**ष्टः**) 1. निन्दक 2. वह ब्राह्मण जिसका उपनयनसंस्कार ठीक समय पर न हुआ हो,—**देवता**,—**देवी** (वाग्देवता, वाग्देवी) वाणी की देवता सरस्वती देवी वाग्देवता-...: मांमुख्यमावत्ते—सा० द० १,—**दोष**:(वाग्दोषः) 1. (अरुचिकर) शब्द का उच्चारण—वाग्दोषात् गर्दभो हतः—हि० ३ 2. अपशब्द, मानहानि 3. व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध भाषण,—**निबंधन** (वाग्निबंधन) (वि०) वचनों पर आश्रित रहने वाला, **निश्चयः** (वाङ्निश्चयः) मुंह के वचन से मंगनी, विवाह-संविदा, **निष्ठा** (वाङ्निष्ठा) (अपने वचनों या प्रतिज्ञा) के प्रति भक्ति या श्रद्धा,—**पटु** (वि०) (वाक्पटु) बोलने में कुशल, वाक्चतुर, —**पति** (वि०) (वाक्पति) वाक्चतुर, अलंकारयुक्त, (**तिः**) बृहस्पति का नाम (इस अर्थ में 'वाचसां पतिः' का भी प्रयोग होता है),—**पारुष्यम्** (वाक्पारुष्यम्) 1. भाषा की कर्कशता 2. शब्दों द्वारा अपमान, अपशब्दयुक्त भाषा, मानहानि,—**प्रचोदनम्** (वाक्प्रचोदनम्) वचनों में अभिव्यक्त किया गया आदेश,—**प्रतोदः** (वाक्प्रतोदः) वचनों द्वारा उकसाना, भड़काने वाली या उपालंभयुक्त भाषा,—**प्रलापः** (वाक्प्रलापः) वाग्मिता,—**बंधनम्** (वाग्बंधनम्) भाषण बंद करना, चुप करना अमरु० १३,—**मनसे** (द्वि० व०–वाङ्मनसी—वैदिक भाषा में) वाणी और मन,—**मात्रम्** (वाङ्मात्रम्) केवल वचन,—**मुखम्** (वाङ्मुखम्) किसी वक्तृता का आरंभ या प्रस्तावना, आमुख, भूमिका,—**यत** (वि०) (वाग्यत) जिसने अपनी वाणी को नियंत्रित कर लिया है या दमन कर लिया है, मौनी,—**यमः** (वाग्यमः) जिसने अपनी बोली को नियंत्रित कर लिया है, मुनि, ऋषि,—**यामः** (वाग्यामः) मूक पुरुष, **युद्धम्** (वाग्युद्धम्) शब्दों की लड़ाई, गरमागरम वादविवाद या चर्चा, विवादास्पद विषय, **वज्रः** (वाग्वज्रः) 1. कठोर (वज्र की भांति) शब्द अहह दारुणो वाग्वज्रः—उत्तर० १ 2. कठोर भाषा,—**विदग्ध** (वाग्विदग्धः) (वि०) बोलने में कुशल (**ग्धा**) मधुरभाषिणी और मनोहारिणी,—**विभवः** (वाग्विभवः) शब्दों का भंडार, वर्णनशक्ति, भाषा पर आधिपत्य—मा० १।२६, रघु० १।९,—**विलासः** (वाग्विलासः) ललित या प्रांजल भाषा,—**व्यवहारः** (वाग्व्यवहारः) मौखिक विचारविमर्श—प्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रं किमत्र वाग्व्यवहारेण मालवि० १, **व्ययः** (वाग्व्ययः) शब्दों का ह्रास, **व्यापारः** (वाग्व्यापारः) 1. बोलने की रीति 2. भाषणशैली या अभ्यास, **संयमः** (वाक्संयमः) भाषण या बोलने पर नियंत्रण ।

वाचः [वच्+णिच्+अच्] 1. एक प्रकार की मछली 2. मदन नाम का पौधा ।

वाचंयम (वि०) [वाचो वाक्यात् यच्छति विरमति—वाच्+यम्+खच् नि० अम्] जिह्वा को रोकने वाला, पूर्ण निस्तब्धता रखने वाला, चुप रहने वाला, मौनी, स्वल्पभाषी—उपस्थिता देवी तद्वाचंयमो भव—विक्रम०

३, विद्वांसो वसुधातले परवचः श्लाघासु वाचंयमाः —भामि० ४। ४२, रघु० १३।४४,—मः मौन रहने वाला मुनि।

वाचक (वि०) [वक्ति अभिधावृत्त्या बोधयति अर्थान् वच्+ण्वुल्] 1. बोलने वाला, घोषणा करने वाला, व्याख्यात्मक 2. अभिव्यक्त करने वाला, अर्थ बतलाने वाला, प्रत्यक्ष संकेत करने वाला (शब्द के रूप में, 'लाक्षणिक' और 'व्यंजक' से भिन्न) दे० काव्य० २ 3. मौखिक—**कः** 1. वक्ता 2. पाठक 3. महत्त्वपूर्ण शब्द 4. दूत।

वाचनम् [वच्+णिच्+ल्युट्] 1. पढ़ना, पाठ करना 2. घोषणा, प्रकथन, उच्चारण जैसा कि 'स्वस्ति-वाचनं' 'पुण्याहवाचनम्' में।

वाचनकम् [वाचन+कन्] पहेली, बुझौवल।

वाचनिक (वि०) (स्त्री०—की) [वचनेन निर्वृत्तम्—ठक्] मौखिक, शब्दों में अभिव्यक्त।

वाचस्पतिः [वाचः पतिः षष्ठ्यलुक्] 'वाणी का स्वामी', देवों के गुरु बृहस्पति का विशेषण।

वाचस्पत्यम् [वाचस्पति+ष्यञ्] वाक्पटुतायुक्त भाषण, वक्तृता, प्रभावशाली भाषण—तदूरीकृत्य कृतिभिर्वाचस्पत्यं प्रतायते—हि० ३।९६ (=शि० २।३०)।

वाचा [वाक्+आप्] 1. भाषण 2. धार्मिक ग्रन्थों का पाठ, सूत्र 3. शपथ।

वाचाट (वि०) वाच्+आटच्, चस्य न कः] बातूनी, वाचाल, बहुत बातें करने वाला अरेरे वाचाट—वेणी० ३, महावीर० ६, भट्टि० ५।२३।

वाचाल (वि०) [वाच्+आलच्, चस्य न कः] 1. कोलाहलपूर्ण, शब्दायमान, क्रन्दनशील 2. बातूनी, बकवास करने वाला, दे० वाचाट, शि० १।४०।

वाचिक (वि०) (स्त्री०—का—की) [वाचाकृतं वाच्+ठञ्, चन कः] 1. शब्दों से युक्त या अभिव्यक्त वाचिकं पारुष्यम् 2. मौखिक, शाब्दिक, मौखिक रूप से अभिव्यक्त,—**कम्** 1. संदेश, मौखिक या शाब्दिक समाचार —वाचिकमप्यार्येण सिद्धार्थकाच्छ्रोतव्यमिति लिखितम्—मुद्रा० ५, निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्त्वा खलु वाचिकम्—शि० २।७० 2. समाचार, वार्ता, खबर।

वाचोयुक्ति (वि०) [वाचो युक्तिः यस्य ब० स०, षष्ठ्या अलुक्] बोलने में कुशल, वाक्पटु,—**क्तिः** (स्त्री०) 'शब्दों का क्रम' घोषणा, अभिज्ञापन, भाषण—यत्र खल्वियं वाचोयुक्तिः—मा० १।

वाच्य (वि) [वच्+कर्मणि ण्यत्] 1. कहे जाने या बतलाये जाने के योग्य, संबोधित किये जाने योग्य—वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा—रघु० १४।६१, 'मेरी ओर से राजा को कहिए' 2. अभिधानीय, गुणवाचक, विशेषक 3. अभिव्यक्त (शब्दार्थ आदि) तु० लक्ष्य व्यंग 4. दूषणीय, निन्दनीय, डांटने-फटकारने योग्य —शि० २।६४, हि० ३।१२९,—**च्यम्** 1. कलंक, निन्दा, झिड़की—प्रमदामनु संस्थितः शुचा नृपतिः सन्निति वाच्यदर्शनात् रघु० ८।७२, ८४, चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः—श० ५।१५, शि० ३।५८ 2. अभिव्यक्त अर्थ जो अभिधा द्वारा ज्ञात हों, तु० लक्ष्य, व्यंग्य; अपि तु वाच्यवैचित्र्यप्रतिभासादेव चारुताप्रतीतिः—काव्य० १० 3. विधेय 4. क्रिया की वाच्यता (कर्मवाच्य या भाववाच्य)। सम०—**अर्थः** अभिव्यक्त अर्थ,—**चित्रम्** अधम काव्य के दो भेदों में से एक, इसमें काव्य सौन्दर्य चमत्कार युक्त तथा उद्भावना युक्त विचारों की अभिव्यंजना में निहित है (विप० शब्द चित्र), दे० 'चित्र' भी,—**वज्रम्** कठोर और कर्कश भाषा।

वाजः [वज्+घञ्] 1. बाजू, डैना 2. पंख 3. बाण का पंख 4. युद्ध, लड़ाई 5. ध्वनि,—**जम्** 1. घी 2. श्राद्ध या और्ध्वदैहिक क्रिया के अवसर पर प्रदान किया गया पिण्ड 3. भोज्यसामग्री 4. जल 5. यज्ञ की पूर्णाहुति का मन्त्र। सम०—**पेयः,** **यम्** एक विशेष यज्ञ का नाम,—**सनः** 1. विष्णु का नाम 2. शिव का नाम,—**सनिः** सूर्य।

वाजसनेयः [वाजसनिः सूर्यस्य छात्रः—वाजसनि+ढक्] शुक्ल यजुर्वेद या वाजसनेयी संहिता के प्रणेता याज्ञवल्क्य का नाम।

वाजसनेयिन् (पुं०) [वाजसनेय+इनि] 1. शुक्लयजुर्वेद के प्रवर्तक तथा प्रणेता याज्ञवल्क्य मुनि का नाम 2. शुक्लयजुर्वेद का अनुयायी, वाजसनेयि संप्रदाय से सम्बन्ध रखने वाला।

वाजिन् (पुं०) [वाज+इनि] 1. घोड़ा—न गर्दभा वाजिधुरं वहन्ति—मृच्छ० ४।१७, रघु० ३।४३, ४।२५, ६७, शि० १८।३१ 2. बाण 3. पक्षी 4. यजुर्वेद की वाजसनेयिशाखा का अनुयायी। सम०—**पृष्ठः** गोल-सदाबहार,—**भक्षः** छोटी मटर,—**भोजनः** एक प्रकार का लोबिया,—**मेधः** अश्वमेध यज्ञ,—**शाला** अस्तबल, घुड़शाला।

वाजीकर (वि०) [वाज+च्वि+कृ+अच्] कामकेलि इच्छाओं का उद्दीपक।

वाजीकरण [वाज+च्वि+कृ+ल्युट्] कामोद्दीपकों द्वारा कामनाओं को उत्तेजित या उद्दीप्त करना।

वांछ् (भ्वा० पर० वांछति, वांछित) अभिलाषा करना, चाहना—न संहतास्तस्य न भिन्नवृत्तयः प्रियाणि वांछत्यसुभिः समीहितुम्—कि० १।१९, **अभि—,** **सम्—,** कामना करना, अभिलाषा करना, इच्छा करना,—भट्टि० १७।५३।

वांछनम् [वांछ्+ल्युट्] कामना, इच्छा करना।

वांछा [वांछ्+अ+टाप्] कामना, इच्छा, अभिलाषा, —वांछा सज्जनसंगमे भर्तृ० २।६२।

वांछित (भू० क० कृ०) [वांछ्+क्त] अभीष्ट, इच्छित, —तम् अभिलाष, इच्छा।

वांछिन् (वि०) [वांछ्+णिनि] 1. अभिलाषी 2. विलासी।

वाटः,—टम् [वट्+घञ्] 1. बाड़ा, घिरा हुआ भूभाग, अहाता—स्ववाटकुक्कुटविजयहृष्टः—दश०, इसी प्रकार देश°, श्मशान° आदि 2. उद्यान, उपवन, फलोद्यान 3. सड़क 4. तट पर लगाया गया लकड़ी के तख्तों का बांध 5. अन्न विशेष। सम०—धानः ब्राह्मण स्त्री में पतित ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान —दे० मनु० १०।२१।

वाटिका [वट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. वह भूखण्ड जहाँ पर कोई भवन बनाना हो 2. फलोद्यान, बगीचा —अये दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालाप इव श्रूयते—श० १, इसी प्रकार पुष्प°, अशोक° आदि।

वाटी [वाट+ङीप्] 1. वह भूखण्ड जहाँ पर कोई भवन बनाया है 2. घर, आवास स्थान 3. अहाता, बाड़ा 4. उद्यान, उपवन, फलोद्यान—वाटीभुवि क्षितिभुजाम्—अश्व० ५ 5. सड़क 6. पानी रोकने के लिए लकड़ी के तख्तों का बांध 7. एक प्रकार का अन्न।

वाट्या, वाट्यालः, वाट्याली [वाटी+यत्+टाप्, वाटी +अल्+अण्, वाट्यालय+ङीप्] एक पौधे का नाम, अतिबला।

वाड् (भ्वा० आ० वाडते) स्नान करना, गोता लगाना।

वाडवः [वडवाया अपत्यं वडवानां समूहो वा अण्] 1. वडवानल 2. ब्राह्मण, —वम् घोड़ियों का समूह। सम० —अग्निः, अनलः समुद्र के भीतर रहने वाली आग।

वाडवेयः [वडवा+ढक्] 1. सांड़ 2. घोड़ा, —यौ (पुं०, द्वि० व०) दोनों अश्विनी कुमार।

वाडव्यम् [वाडव+यन्] ब्राह्मणों का समूह।

वाढ दे० 'बाढ'।

वाण दे० 'बाण'।

वाणिः (स्त्री०) वण्+इण्] 1. बुनना 2. जुलाहे की लड्डी, करघा।

वाणिजः [वणिज्+अण् (स्वार्थं)] व्यापारी, सौदागर।

वाणिज्यम् [वणिज्+ष्यञ्] व्यापार, वनिज, लेन देन।

वाणिनी [वण्+णिनि+ङीप्] 1. चतुर और धूर्त स्त्री 2. नर्तकी, अभिनेत्री 3. मत्त स्त्री (ना० या आलं० रूप से) शृङ्गारप्रिय स्वेच्छाचारिणी स्त्री —रघु० ९।७५।

वाणी [वण्+इण्+ङीप्] 1. भाषण, वचन, भाषा —वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते —भर्तृ० २।१९ 2. बोलने की शक्ति 3. ध्वनि, आवाज़—केका वाणी मयूरस्य—अमर०, इसी प्रकार आकाशवाणी 4. साहित्यिक कृति या रचना—मद्वाणि मा कुरु विषादमनादरेण मात्सर्यमग्नमनसां सहसा खलानाम्—भामि० ४।४१, उत्तर० ७।२१ 5. प्रशंसा 6. विद्या की देवी सरस्वती।

वात् (चुरा० उभ० वातयति—ते) 1. हवा का चलना 2. पंखा करना, हवादार करना 3. सेवा करना 4. प्रसन्न करना 5. जाना।

वात (भू० क० कृ०) [वा+क्त] 1. बही हुई 2. इच्छित या अभीष्ट, प्रर्थित,—तः 1. हवा, वायु 2. वायु का देवता, वायु की अधिष्ठात्री देवता 3. शरीर के तीन दोषों में से एक 4. गठिया, सन्धिवात। सम०—अटः 1. वातमृग, बारहसिंगा 2. सूर्य का घोड़ा,—अंडः फोतों का रोग, अंडकोषवृद्धि,—अतिसारः शरीरगत वायु के विकृत होने से उत्पन्न पेचिश,—अयम् पत्ता, —अयनः घोड़ा, (नम्) 1. खिड़की, झरोखा—मा० २।११, कु० ७।५९, रघु० ६।२४, १३।२१ 2. अलिन्द, द्वारमण्डप 3. मंडवा मंडप,—अयुः बारहसिंगा,—अरिः एरण्ड का वृक्ष,—अश्वः बहुत तेज चलने वाला घोड़ा, —आमोदा कस्तूरी,—आलिः (स्त्री०) भंवर,—आहत (वि०) 1. हवा से हिलाया हुआ 2. गठिया रोग से ग्रस्त,—आहतिः (स्त्री०) हवा का प्रचंड झोंका, —ऋद्धिः (स्त्री०) 1. वायु की अधिकता 2. गदा, मुद्गर, लोहे की स्याम से जटित लाठी,—कर्मन् (नपुं०) पाद मारना,—कुंडलिका मूत्ररोग जिसमें मूत्र पीडा के साथ बूंद-बूंद उतरता है,—कुंभः हाथी का गंडस्थल,—केतुः धूल,—केलिः 1. प्रेमरसयुक्त बातचीत, प्रेमियों की कानाफूंसी 2. प्रेमी या प्रेमिका के शरीर पर नख क्षत,—गुल्मः 1. आँधी, अंधड़ 2. गठिया,—ज्वरः विषाक्त वायु से उत्पन्न बुखार —ध्वजः बादल,—पुत्रः भीम, हनुमान्,—पोथः,—पोथकः पलाश का वृक्ष, ढाक का पेड़,—प्रकोपः वायु की अधिकता,—प्रमी (पुं०, स्त्री०) तेज चलने वाला हरिण,—मंडली भंवर,—मृगः वेग से दौड़ने वाला हरिण,—रक्तम्,—शोणितम् तीक्ष्ण गठिया,—रंगः गूलर का वृक्ष,—रूषः 1. तूफान, प्रचंड हवा, आँधी 2. इन्द्रधनुष 3. रिश्वत,—रोगः,—व्याधिः गठिया का रोग,—वस्तिः (स्त्री०) मूत्ररोकना,—वृद्धिः (स्त्री०) अंडकोष की सूजन,—शीर्षम् पेडू,—शूलम् उदर पीड़ा के साथ अफारा होना,—सारथिः आग।

वातकः [वात+कन्] 1. उपपति, जार 2. एक पौधे का नाम।

वातकिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वातोऽतिशयितोऽस्ति अस्य वात+इनि, कुक्] गठिया रोग से ग्रस्त ।

वातगजः [वातमभिमुखीकृत्य अजति गच्छति—वात+अज्+खश्, मुम्] तेज दौड़ने वाला हरिण ।

वातर (वि०) [वात+रा+क] 1. तूफानी, झंझामय 2. तेज, चुस्त । सम०—अयणः 1. बाण 2. बाण की उड़ान, तीर के लक्ष्य तक पहुंचने की दूरी, शरपरास 3. चोटी, शिखर 4. आरा 5. पागल या नशे में उन्मत्त पुरुष 6. निठल्ला 7. सरल वृक्ष, चीड़ का पेड़ ।

वातल (वि०) (स्त्री०—ली) [वातं रोगभेदं लाति ला+क] 1. तूफानी, झंझामय 2. हवा से फूला हुआ —लः 1. वायु 2. चना ।

वातापिः (पुं०) एक राक्षस का नाम जिसको अगस्त्य ने खा कर पचा लिया । सम०—द्विष् (पुं०),—सूदनः,—हन् (पुं०) अगस्त्य के विशेषण ।

वातिः [वा+क्तिच्] 1. सूर्य 2. वायु, हवा 3. चन्द्रमा । सम०—गः,—गमः बैंगन ('वातिगण' शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है) ।

वातिक (वि०) (स्त्री०—की) [वातादागतः+ठक्] 1. तूफानी, हवाई, झंझामय 2. गठियाग्रस्त, सन्धिवात से पीड़ित 3. पागल,—कः वायु की विकृत अवस्था से उत्पन्न ज्वर ।

वातीय (वि०) [वात+छ] हवादार,—यम् भात का मांड ।

वातुल (वि०) [वात+उलच्] 1. वायु रोग से ग्रस्त, गठिया पीड़ित 2. पागल, वायुप्रकोप के कारण जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो—हि० २।२६,—लः भँवर ।

वातुलिः [वा+उलि, तुट्] बड़ा चमगीदड़ ।

वातूल (वि०) [वात+ऊलच्] दे० 'वातुल' ।

वातृ (पुं०) [वा+तृच्] हवा, वायु ।

वात्या [वातानां समूहः यत्] तूफान, अन्धड़, भँवर, तूफान या झंझामय वायु—वात्याभिः परुषीकृता दश दिशश्चण्डातपो दुःसहः—भामि० १।१३, रघु० ११। १६, कि० ५।३९, वेणी० २।२१ ।

वात्सकम् [वत्स+वुञ्] बछड़ों का समूह ।

वात्सल्यम् [वत्सलस्य भावः ष्यञ्] 1. (अपने बच्चों के प्रति) स्नेह, वत्सलता सुकुमारता—न पुत्रवात्सल्यमपाकरिष्यति—कु० ५।१४, पतिवात्सल्यात्—रघु० १५।९८, इसी प्रकार भार्या° प्रजा° शरणागत° आदि 2. लाडप्यार या पक्षपात ।

वात्सिः,—सी (स्त्री०) शूद्र स्त्री की ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न पुत्री ।

वात्स्यायनः [वत्सस्य गोत्रापत्यम्—वत्स+यञ्+फक्] 1. कामसूत्र (रतिशास्त्र पर लिखा गया एक ग्रन्थ) के प्रणेता 2. न्यायसूत्र पर किये गये भाष्य के प्रणेता ।

वादः [वद्+घञ्] 1. बातें करना, बोलना 3. भाषण, वचन, बात—सामवादाः सकोपस्य तस्य प्रत्युत दीपकाः—शि० २।५५, इसी प्रकार 'कैतववादः'—गीत० ८, सांख्यवादः आदि 3. वक्तव्य, उक्ति, आरोप—अवाच्यवादांश्च बहून् वदिष्यन्ति तवाहिताः—भग० २।३६ 4. वर्णन, वृत्त—शाकुंतलादीनितिहासवादान् मा० ३।३ 5. विचार विमर्श, विवाद, वादविवाद, तर्कवितर्क—वादे वादे जायते तत्त्वबोधः—सुभा०, सोमा°—मनु० ८।२६५ 6. उत्तर 7 विवृति, व्याख्या 8. प्रदर्शित उपसंहार, सिद्धान्त, तत्त्व—इदानीं परमाणुकारणवादं निराकरोति—शारी० (तथा पुस्तक के अन्य विभिन्न स्थलों पर) 9 ध्वननं, ध्वनि 10. विवरण, अफवाह 11. (विधि में) अभियोग, नालिश । सम०—अनुवादौ (पुं० द्वि० व०) 1. उक्ति और उत्तर, अभियोग तथा उसका उत्तर, दोषारोपण तथा उसका बचाव 2. वादविवाद, शास्त्रार्थ,—कर,—कृत् (वि०) विवाद करने वाला,—ग्रस्त (वि०) विवादास्पद, विवादग्रस्त—वादग्रस्तोऽयं विषयः,—चंचु (वि०) श्लेषगर्भित उत्तर देने में निपुण, हाजिरजवाब, प्रतिवादः शास्त्रार्थ,—युद्धम् विवाद, तर्कवितर्क,—विवादः तर्कवितर्क, विचारविमर्श, वाक्प्रतियोगिता ।

वादकः [वद्+णिच्+ण्वुल्] बजाने वाला ।

वादनम् [वद्+णिच्+ल्युट्] 1. ध्वनि करना 2. बाजा, वाद्ययन्त्र ।

वादर (वि०) (स्त्री० री) [वदरायाः कार्पस्याः विकारः वादरा+अण्] कपास से युक्त या कपास से निर्मित,—रा कपास का पौधा,—रम् सूती कपड़ा ।

वादरंगः [वादर+गम्+खच्, डित्] पीपल का पेड़, गूलर का वृक्ष ।

वादरायण दे० 'बादरायण' ।

वादालः [वात+ला+क, पृषो०] जर्मन मछली ।

वादि (वि०) [वादयति व्यक्तमुच्चारयति+वद्+णिच्+इञ्] बुद्धिमान्, विद्वान्, कुशल ।

वादित (भू० क० कृ०) [वद्+णिच्+क्त] 1. उच्चरित कराया गया, बुलवाया गया 2. बजाया गया, ध्वनि किया गया ।

वादित्रम् [वद्+णित्रन्] 1. बाजा नै० १२।२२ 2. संगीत ।

वादिन् (वि०) [वद्+णिनि] 1. बोलने वाला, बातें करने वाला, प्रवचन करने वाला 2. दृढ़तापूर्वक कहने वाला 3. तर्क-वितर्क करने वाला, विपक्षी मुद्रा० ५।१०, रघु० १२।९२ 3. दोषारोपण करने वाला अभियोक्ता 4. व्याख्याता, अध्यापक ।

वाविशः (पुं०) विद्वान् पुरुष, ऋषि, विद्याव्यसनी।

वाद्यम् [वद्+णिच्+यत्] 1. बाजा 2. बाजे की ध्वनि रघु० १६।६४, (वाद्यध्वनिः—मल्लि)। सम०—**करः** संगीतज्ञ, —**भांडम्** 1. बाजों का समूह, वाद्य यंत्रों का ढेर 2. मृदंग आदि बाजे।

वाध्, वाध, वाधक, वाधन-ना, वाधा दे० 'बाध्, बाध, बाधना-ना, बाधा'।

वाधु (धू) क्यम् [वधु (धू)+यत्, कुक्] विवाह।

वाध्रीणसः [=वार्ध्रीणस, पृषो०] गैंडा।

वान (वि०) [वन+अण्] 1. खिला हुआ, 2. (हवा से) सूखा हुआ, शुष्क 3. जंगली —**नम्** 1. सूखा फल (पुं० भी) 2. (हवा का) चलना 3. जीना 4. लुढ़कना, हिलना-जुलना 5. गन्ध द्रव्य, खुशबू 6. वृक्षों का समूह या झुरमुट 7. बुनना 8. तिनकों से बनी चटाई 9. घर की दीवार में छिद्र।

वानप्रस्थः [वाने वनसमूहे प्रतिष्ठते—स्था+क] 1. अपने धार्मिक जीवन के तीसरे आश्रम में प्रविष्ट ब्राह्मण 2. वैरागी, साधु 3. मधूक वृक्ष 4. पलाश वृक्ष, ढाक।

वानरः [वान वनसंबंधि फलादिकं राति गृह्णाति रा+क, वा विकल्पेन नरो वा] बन्दर, लंगूर। सम०—**अक्षः** जंगली बकरा,—**आघातः** लोध्र नामक वृक्ष—**इन्द्रः** सुग्रीव या हनुमान्, —**प्रियः** खिरनी (क्षीरिन्) का पेड।

वानलः [वानं वनभावं निविडतां लाति—ला+क] तुलसी का पौधा (काली तुलसी)।

वानस्पत्यः [वनस्पति+ष्यञ्] वह वृक्ष जिसका फल उसकी मंजरी से उत्पन्न होता है, उदा० आम का पेड़।

वाना [वान+टाप्] बटेर, लवा।

वानायुः [=वनायुः पृषो०] भारत के उत्तर-पश्चिम में स्थित देश। सम०—**जः** वनायु घोड़ा अर्थात् वनायु देश में उत्पन्न घोड़ा।

वानीरः [वन्+ईरन्+अण्] एक प्रकार का बेंत—स्मरामि वानीरगृहेषु सुप्तः—रघु० १३।३५, मेघ० ४१, मा० ९।१५, रघु० १३।३०, १६।२१।

वानीरकः [वानीर+कन्] मूंज नामक घास, एक प्रकार का नड।

वानेयम् [वन+ढञ्] एक सुगंधित घास, मोथा।

वांतम् (भू० क० कृ०) [वम्+क्त] 1. कै की गई, थूका गया 2. उगला गया, प्रक्षिप्त, उंडेला हुआ। सम०—**अदः** कुत्ता।

वांतिः (स्त्री०) [वम्+क्तिन्] 1. वमन 2. प्रक्षेप, उगाल। सम०—**कृत्**, —**द** वमन कराने वाला।

वान्या [वन+यत्+टाप्] उपवनों या जंगलों का समूह।

वापः [वप्+घञ्] 1. बीज बोना 2. बुनना 3. क्षौरकर्म करना, बाल मूंडना—मनु० ११।१०८। सम०—**दण्डः** जुलाहे का करघा।

वापनम् [वप्+णिच्+ल्युट्] 1. बुवाना 2. मुंडन, क्षौर।

वापित (भू० क० कृ०) [वप्+णिच्+क्त] 1. बोया हुआ 2. मुंडा हुआ।

वापिः,—पी (स्त्री०) [वप्+इञ्, वा ङीप्] कुआं, बावड़ी पानी का विस्तृत आयताकार जलाशय—वापी चास्मिन्मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा—मेघ० ७६। सम०—**हः** चातक पक्षी।

वाम (वि०) [वम्+ण, अथवा वा+मन्] बायाँ (विप० दायाँ) विलोचनं दक्षिणमंजनेन संभाव्य तद्वंचितवामनेत्रा—रघु० ७।८, मेघ० ७८, ९६ 2. बाईं ओर स्थित या विद्यमान—वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगंधः —मेघ० ९ (**वामेन** क्रिया विशेषण के रूप में इसी अर्थ को प्रकट करता है उदा० वामेनात्र वटस्तमध्वगजनः सर्वात्मना सेवते काव्य० १०) 3. (क) उलटा, विरुद्ध, विरोधी, विपरीत, प्रतिकूल—तदहो कामस्य वामा गतिः—गीत० १२, मा० ९।८, भट्टि० ६।१७, (ख) विरुद्ध-कार्य करने वाला, विपरीत प्रकृति का,—श० ४।१८, (ग) कुटिल, वक्रप्रकृति, दुराग्रही, हठी,—श० ६ 4. दुष्ट दुर्वृत्त, अधम, नीच, कमीना कि० ११।२४ 5. प्रिय, सुन्दर, लावण्यमय जैसा कि 'वामलोचना', —**मः** 1. सजीव प्राणी, जन्तु 2. शिव 3. प्रेम का देवता, कामदेव 4. सांप 5. औड़ी, ऐन, स्त्री की छाती,—**मम्** धनदौलत, जायदाद। सम० —**आचारः,—मार्गः** तांत्रिक मत में प्रतिपादित अनुष्ठानपद्धति, —**आवर्तः** शंख जिसका घुमाव दाईं ओर से बाईं ओर को गया हो, —**ऊरु,—ऊरू** (स्त्री०) सुंदर जंघाओं वाली स्त्री, —**दृश्** (स्त्री) (मनोहर आंखों से युक्त) स्त्री,—**देवः** 1. एक मुनि का नाम 2. शिव का नाम,—**लोचना** मनोहर आंखोंवाली स्त्री—विरूपाक्षस्य जयिनीस्ताः स्तुवे वामलोचनाः—काव्य० १०, रघु० १९।१३, —**शील** (वि०) कुटिल या वक्र प्रकृति का (—**लः**) कामदेव का विशेषण।

वामक (वि०) [वाम+कन्] 1. बायाँ 2. विपरीत, विरुद्ध—मा० १।८ (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं)।

वामन (वि०) [वम्+णिच्+ल्युट्] 1. (क) क़द में छोटा, ठिंगना, बौना—छलवामनम्—शि० १३।१२ (ख) (अतः) स्वल्प, ह्रस्व, थोड़ा, लंबाई में कम—वामनार्चिरिव दीपभाजनम्—रघु० ११।५१, कथ कय तानि (दिनानि) च वामनानि—नै० २२।५७ 2. विनत, नम्र—शि० १३।१२ 3. दुष्ट, नीच, ओछा,—**नः** 1. बौना, ठिंगना—प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः—रघु० १।३, १०।६० 2. विष्णु का पाँचवां अवतार जब उन्होंने बलि राक्षस को विनम्र करने के लिए बौने के रूप में जन्म लिया, (दे० बलि)—छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन पदनखनीरजनितजनपावन

केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे -गीत० १ 3. दक्षिण दिशा का दिक्पाल हाथी 4. पाणिनि के सूत्रों पर काशिकावृत्ति नामक भाष्य के प्रणेता 5. अंकोट नामक वृक्ष। सम०—आकृति (वि०) ठिंगना,—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण।

वामनिका [वामनी+कन्+टाप्, ह्रस्वः] ठिंगनी स्त्री।

वामनी [वामन+ङीप्] 1. बौनी स्त्री 2. घोड़ी 3. एक स्त्रीविशेष।

वामलूरः [वाम+लू+रक्] वांबी, दीमकों द्वारा बनाया गया मिट्टी का ढेर।

वामा [वामति सौन्दर्यम्—वम्+अण्+टाप्] 1. स्त्री 2. मनोहारिणी स्त्री—भामि० ४।३९, ४२ 3. गौरी 4. लक्ष्मी 5. सरस्वती।

वामिल (वि०) [वाम+इलच्] 1. सुन्दर, मनोहर 2. घमंडी, अहंकारी 3. चालाक, कपटपूर्ण।

वामी [वाम+ङीप्] 1. घोड़ी—अथोष्ट्रवामीशतवाहितार्थं रघु० ५।३२ 2. गधी 3. हथिनी 4. गीदड़ी।

वायः [वे+घञ्] बुनना, सीना। सम०—दंडः जुलाहे का करघा।

वायकः [वे+ण्वुल्] 1. जुलाहा 2. ढेर, समुच्चय, संग्रह।

वायनम्, वायनकम् [वे+णिच्+ल्युट्, वायन+कन्] नैवेद्य, उत्सव के अवसर पर किसी देवता या ब्राह्मण को दिया गया मिष्टान्न, उपवास रखना आदि।

वायव (वि०) (स्त्री०—वी) [वायु+अण्] वायु से संबद्ध या प्राप्त 2. हवाई।

वायवीय, वायव्य (वि०) [वायु+छ, यत् वा] हवा से सम्बन्ध रखने वाला, हवाई। सम०—पुराणम् एक पुराण का नाम।

वायसः [वयोऽसच् णित्] 1. कौवा—बलिमिव परिभोक्तुं वायसास्तर्कयन्ति—मृच्छ० १०।३ 2. सुगन्धित अगर की लकड़ी, अगुरुकाष्ठ 3. तारपीन। सम०—अरातिः,—अरिः उल्लू,—आह्वा एक प्रकार भक्ष्य शाक,—इक्षुः एक प्रकार का लम्बा घास।

वायुः [वा उण् युक् च] 1. हवा, पवन—वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून्—कवि० (इसकी उत्पत्ति के लिए दे० मनु० १।७६—सात पवनमार्ग हैं—आवहः प्रवहश्चैव संवहश्चोद्वहस्तथा, विवहाख्यः परिवहः परावह इति क्रमात्) 2. वायुदेवता, पवनदेवता 3. जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण पांच प्रकार का वायु गिनाया गया है—प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान 4. वातप्रकोप, वातरोग में ग्रस्तता। सम०—आस्पदम् आकाश, अन्तरिक्ष,—केतुः धूल,—कोणः पश्चिमोत्तरी कोना,—गण्डः अफारा (जो अनपच के कारण हुआ हो),—गुल्मः 1. आंधी, तूफान 2. भंवर,—गोचरः पवन का परास,—ग्रस्त (वि०) 1. वातरोग में ग्रस्त, जिसे अफारा हो गया हो 2. गठिया रोग से ग्रस्त,—जातः, तनयः,—नन्दनः, पुत्रः,—सुतः, सूनुः हनुमान् या भीम के विशेषण,—दारुः बादल,—निघ्न (वि०) वात प्रकोप से पीड़ित सनकी, पागल, उन्मत्त,—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक,—फलम् 1. ओला 2. इन्द्रधनुष,—भक्षः,—भक्षणः,—भुज् (पुं०) 1. जो केवल वायु पीकर रहे, सन्यासी 2. साँप—तु० पवनाशनः,—रोषा रात्रि,—रुग्ण (वि०) वायुप्रकोप के कारण अस्वस्थ—रघु० ९।६३,—वर्त्मन् (पुं०, नपुं०) आकाश, अन्तरिक्ष,—वाहः धूआं,—वाहिनी शिरा, धमनी, शरीर की नाडी, वेग,—सम (व०) पवन की भांति तेज,—सखः,—सखिः (पुं०) आग।

वार् (नपुं०) [वृ+णिच्+क्विप्] जल—भामि० १।३०। सम०—आसनम् जलाशय,—किटिः (वा: किटिः) सूंस,—चः हंसिनी या हंस—दः बादल,—दरम् 1. जल 2. रेशम 3. भाषण 4. आम का बीज 5. घोड़े के गरदन की भौंरी 6. शंख,—धिः समुद्र, °भवम् एक प्रकार का नमक,—पुष्पम् (वा: पुष्पम्) लौंग,—भटः मगरमच्छ, घड़ियाल,—मुच् (पुं०) बादल, राशिः समुद्र,—वटः किश्ती, नाव,—सदनम् (वा: सदनम्) जलाशय, टंकी,—स्थ (वि०) (वा: स्थान) जल में विद्यमान।

वारः [वृ+घञ्] 1. आवरण, चादर 2. समुदाय, बड़ी संख्या—जैसा कि 'वारयुवति' में 3. ढेर, परिमाण 4. रेवड़, लहंडा शि० १८।५६ 5. सप्ताह का एक दिन यथा बुधवार, शनिवार 6. समय, बारी—शशकस्य वारः समायातः—पंच० १, रघु० १९।१८, अंग्रेजी के 'टाइम्ज'—Times शब्द की भांति बहुधा ब० व० में प्रयुक्त, बहुवारान् बहुत बार, कतिवारान् कितनी बार) 7. अवसर, मौका 8. दरवाजा, फाटक 9. नदी का सामने का तट 10. शिव,—रम् 1. मदिरापात्र 2. जलौघ, जल का ढेर। सम०—अंगना—नारी,—युवति (स्त्री०),—योषित् (स्त्री०),—वनिता,—विलासिनी,—सुन्दरी,—स्त्री गणिका, बाजारू स्त्री, वेश्या, पतुरिया, रण्डी—रत्न० १।२६, शृंगार० १६,—कीरः 1. पत्नी का भाई, साला (त्रिका० के अनुसार) 2. वडवाग्नि 3. कंघी 4. जूं 5. युद्ध का घोड़ा (यह अर्थ मेदिनीकोश में दिये हुए हैं) —बु (बू) षा केले का वृक्ष,—मुख्या प्रधान वेश्या—बा (बा) णः,—णम् कवच, जिरह बख्तर—रघु० ४।८४,—वाणिः 1. बांसुरिया, मुरली बजाने वाला 2. वादित्र-कुशल 3. वर्ष 4. न्यायाधीश,—(—णिः) वेश्या, वाणी वेश्या, सेवा 1. वेश्यावृत्ति, रंडी का व्यवसाय 2. वेश्याओं का समुदाय।

वारक (वि०) [वृ+णिच्+ण्वुल्] रुकावट डालने

वाला, विरोध करने वाला,—कः 1. एक प्रकार का घोड़ा 2. सामान्य घोड़ा 3. घोड़े का कदम, कम् 1. पीड़ा होने का स्थान 2. एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, ह्रीवेर।

वारकिन् (पुं०) [वारक+इनि] 1. विरोधी, शत्रु 2. समुद्र 3. शुभ लक्षणों से युक्त एक घोड़ा 4. वह संन्यासी जो केवल पत्ते खाकर रहता है।

वारंकः (पुं०) पक्षी।

वारंगः [वृ+अंगच् णित्] किसी चाकू का दस्ता या तलवार की मूठ।

वारटम् [वृ+णिच्+अटच्] 1. खेत 2. खेतों का समूह, —टा हंसिनी।

वारण (वि०) (स्त्री०—णी) [वृ+णिच्+ल्युट्] हटाने वाला, मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला, —णम् हटाना, रोकना, अड़चन डालना —न भवति बिसतंतुर्वारणं वारणानाम् भर्तृ० २।१७ 2. रुकावट, विघ्न 3. मुकाबला, विरोध 4. प्रतिरक्षा, संरक्षा, प्ररक्षा,—णः 1. हाथी —न भवति बिसतंतुर्वारणं वारणानाम्—भर्तृ० २।१७, कु० ५।७०, रघु० १२।९३, शि० १८।५६ 2. कवच, जिरहबख्तर। सम० —बुषा,—सा, वल्लभा केले का वृक्ष,—साह्वयम् हस्तिनापुर का नाम।

वारणसी दे० 'वाराणसी'।

वारणावत (पुं०, नपुं०) एक नगर का नाम।

वारत्रम् [वरत्रा+अण्] चमड़े का तस्मा।

वारंवारम् (अव्य०) [वृ+णमुल्, द्वित्वम्] प्रायः, बहुधा, बार बार, फिर फिर वारंवारं निरयति दृशोरुद्गमं वाष्पपूरः मा० १।३५।

वारला [वार+ला+क+टाप्] 1. बर्र, भिड़ 2. हंसिनी, तु० 'वरटा'।

वाराणसी [वरणा च असी च तयोः नद्योरदूरे भवा इत्यर्थे अण्+ङीप्, पृषो० साधुः] बनारस का पावन नगर।

वारांनिधिः [वारां जलानां निधिः, पष्ठ्यलुक् स०] समुद्र।

वाराह (वि०) (स्त्री०—ही) [वराह+अण्] शूकर से सम्बद्ध, मुद्रा० ८।१९, याज्ञ० १।२५९, —हः 1. शूकर 2. एक प्रकार का वृक्ष। सम०—कल्पः वर्तमान कल्प (जिसमें हम रह रहे हैं) का नाम, —पुराणम् अठारह पुराणों में से एक।

वाराही [वाराह+ङीप्] 1. शूकरी 2. पृथ्वी 3. 'वराह' के रूप में विष्णु भगवान की शक्ति 4. माप। सम० —कंदः महाकंद, गेंठी।

वारि (नपुं०) [वृ+इञ्] 1.जल यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति सुभा० 2. तरल पदार्थ 3. एक प्रकार का सुगंध द्रव्य, ह्रीवेर, —रिः, —री (स्त्री०) 1. हाथी को बांधने का तस्मा वारी धारैः सस्मरे वारणानाम् शि० १८।५६, रघु० ५।४५, 2. हाथी को बांधने का रस्सा 3. हाथियों को पकड़ने का गड्ढा या पिंजरा 4. बंदी, क़ैदी 5. जलपात्र 6. सरस्वती का नाम। सम०—ईशः समुद्र, —उद्भवम् कमल, —ओकः जोंक, —कर्पूरः एक प्रकार की मछली, इलीश, —कुब्जकः सिंघाड़ा, शृंगाटक का पौधा—क्रिमीः जोंक,—चत्वरः जलाशय, —चर (वि०) जलचर (—रः) 1. मछली 2. कोई जलजन्तु —ज (वि०) जल में उत्पन्न, (—जः) 1. कमल—शि० १५।७२ 2. कोई भी द्विकोषीय (—जम्) 1. कमल—शि० ४।६६ 2. एक प्रकार का नमक 3. एक प्रकार का पौधा, गौरसुवर्ण 4. लौंग, —तस्करः बादल, —त्रा छतरी, —दः बादल —वितर वारिद वारि दवातुरे—सुभा०, भामि० १।३०, (—दम्) एक प्रकार का गन्धद्रव्य,—द्रः चातक पक्षी, —धरः बादल—नववारिधरोदयादहोभिर्भवितव्यं च निरातपत्वरम्यैः—विक्रम० ४।३, —धारा वृष्टि की बौछार,—धिः समुद्र—वारिधिसुतामक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः —गीत० १२, —नाथः 1. समुद्र 2. वरुण का विशेषण 3. बादल,—निधिः समुद्र,—पथः,—थम् 'समुद्र यात्रा' जलयात्रा,—प्रवाहः झरना, जलप्रपात, —मसिः,—मुच्, —रः बादल, —यंत्रम् जलघटिका, रहट। मालवि० २।१३,—रथः डोंगी, नाव, घड़नई, —राशिः 1. समुद्र सरोवर, —रुहम् कमल,—वासः कलाल, शराब बेचने वाला,—वाहः,—वाहनः बादल, —शः विष्णु का नाम, —संभवः 1. लौंग 2. अंजनविशेष 3. खस की सुगन्धित जड़, उशीर।

वारित (भू० क० कृ०) [वृ+णिच्+क्त] 1. हटाया हुआ, मना किया हुआ, रोका हुआ 2. प्रतिरक्षित, प्ररक्षित।

वारी दे० (स्त्री०—वारि)।

वारीटः [वारी+इट्+क] हाथी।

वारुः [वारयति रिपून् वृ+णिच्+उण्] विजयकुंजर, जंगी हाथी।

वारुटः (पु०) अरथी, (वह टिकटी जिस पर शव रख कर श्मशानभूमि में ले जाया जाता है)।

वारुण (वि०) (स्त्री०—णी) [वरुणस्येदम्—अण्] 1. वरुणसंबंधी 2. वरुण को सादर समर्पित 3. वरुण को दिया हुआ, —णः भारतवर्ष के नौ प्रभागों या खण्डों में से एक, —णम् पानी।

वारुणिः [वरुण+इञ्] 1. अगस्त्य मुनि 2. भृगु।

वारुणी [वारुण+ङीप्] 1. पश्चिम दिशा (वरुण के द्वारा अधिष्ठित दिशा) 2. कोई मदिरा—पयोपि शौंडिकीहस्ते वारुणीत्यभिधीयते—हि० ३।११, पंच० १।२७८,

(यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं)· कु० ४।१२ 3. शतभिषज् नामक नक्षत्र 4. एक प्रकार का घास, दूब । सम० वल्लभः वरुण का विशेषण ।

वारंडः [वृ+णिच्+उंड] नाग जाति का प्रधान, **डः, —डम्** 1. आँख का मैल या ढीड 2. कान का मैल 3 नाव में से पानी उलीच कर बाहर निकालने का बर्तन ।

वारेन्द्री बंगाल के एक भाग का नाम, वर्तमान राजशाही ।

वार्क्ष (वि०) (स्त्री०—र्क्षी) [वृक्ष+अण्] वृक्षों से युक्त **—क्षम्** जंगल ।

वार्णिकः [वर्ण+ठञ्] लिपिकार, लेखक ।

वार्ताकः, वार्ताकिः (स्त्री०) **वार्ताकिन्** (पुं०) **वार्ताकी** (स्त्री०) **वार्ताकुः** (पुं०, स्त्री०) [वृत्+काकु अत्वं वृद्धिश्च, वार्ताक+इञ् इनि वा, वृत्+काकु, ईत्वं वृद्धिश्च, वृत्+काकु, वृद्धिः] बैंगन का पौधा ।

वार्तिका (स्त्री०) बटेर, लवा ।

वार्त्त (वि०) [वृत्ति+अण्] 1. स्वस्थ, नीरोग, तन्दुरुस्त 2. हलका, कमजोर, सारहीन 3. व्यवसायी, **—र्त्तम्** 1. कल्याण, अच्छा स्वास्थ्य—सर्वत्र नो वार्त्तमवेहि राजन्—रघु० ५।१३, १३।७१, स पृष्टः सर्वतो वार्त्तमाख्यद्राज्ञे न संततिम्—१५।४१, शि० ३।६८ 2. कुशलता, दक्षता—अनुयुक्त इव स्ववार्त्तमुच्चैः—कि० १३।३४ 3. भूसी, बूरा ।

वार्त्ता [वार्त्त+टाप्] 1. ठहरना, डटे रहना 2. समाचार खबर, गुप्त बात, सागरिकायाः का वार्ता—रत्न० ४ 3. आजीविका, वृत्ति 4. खेती, वैश्य का व्यवसाय रघु० १६।२, मनु० १०।८०, याज्ञ० १।३१० 5. बैंगन का पौधा । सम०—**आरंभः** व्यापारिक उपक्रम, या व्यवसाय—**वहः,—हरः** 1. दूत 2. अंगराग, मोमबत्ती आदि पदार्थ बेचने वाला,—**वृत्तिः** जो खेती के व्यवसाय से निर्वाह करे,—**व्यतिकरः** सामान्य विवरण ।

वार्त्तायनः [वार्त्तानामयनमनेन] समाचारवाहक, दूत, भेदिया, जासूस ।

वार्त्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [वृत्ति+ठक्] 1. समाचार संबन्धी 2. समाचार लाने वाला 3. व्याख्यात्मक, कोष सम्बन्धी,—**कः** 1. दूत, भेदिया 2. किसान (वैश्यवर्ण का व्यक्ति),—**कम्** एक व्याख्यापरक अतिरिक्त नियम जो उक्त, अनुक्त, या किसी अधूरी बात की व्याख्या करता है अथवा किसी छूटी हुई बात को जोड़ देता है—उक्तानुक्तदुरुक्तार्थव्यक्ति (चिंता) कारि तु वार्त्तिकम् (यह शब्द पाणिनि के सूत्रों पर कात्यायन द्वारा निर्मित व्याख्यापरक नियमों के लिए विशेषरूप से प्रयुक्त होता है) ।

वार्त्रघ्नः [वृत्रहन्+अण्] अर्जुन का नाम—कु० १५।१ ।

वार्द्धकम् [वृद्धानां समूहः तस्य भावः कर्म वा वुञ्] 1. बुढ़ापा—किमित्यपास्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्द्धकशोभि वल्कलम्—कु० ५।४४, रघु०, १।८ नै० १।७७ 2. बुढ़ापे की दुर्बलता 3. बूढ़ों का समुदाय ।

वार्द्धक्यम् [वार्द्धक+ष्यञ्] 1. बुढ़ापा 2. बुढ़ापे की दुर्बलता ।

वार्द्धुषिः, वार्द्धुषिकः, वार्द्धुषिन् [पुं०) [=वार्द्धुषिकः पृषो० कलोपः, वृद्ध्यर्थं द्रव्यं वृद्धिः, तां प्रयच्छति वृद्धिठक् वृधुषि आदेशः, वार्द्धुष+इनि] सूदखोर, ब्याज पर रुपया देने वाला ।

वार्द्धुष्यम् [वार्द्धुषि+ष्यञ्] सूद, अत्यन्त ऊँचा सूद, हद से ज्यादह ब्याज ।

वार्ध्रम्, वार्ध्री [वार्घ्र+अण्, ङीप् वा] चमड़े का तस्मा ।

वार्ध्रीणसः [वार्ध्रीव नासिका अस्य ब० स०, नासिकाया नसा देशः, णत्वम्] गैंडा, दे० 'वाध्रीणस' भी ।

वार्मणम् [वर्मन्+अण्] कवच से सुसज्जित पुरुषों का समूह ।

वार्यम् [वृ+ण्यत्] आशीर्वाद, वरदान (ब० व०) सम्पत्ति, जायदाद ।

वार्वणा [ववर्णा+अण्+टाप्] नीले रंग की मक्खी ।

वार्ष (वि०) (स्त्री०—र्षी) [वर्ष+अण्] 1. वर्षा से संबंध रखने वाला 2. वार्षिक ।

वार्षिक (वि०) (स्त्री०—की) [वर्ष+ठक्] 1. वर्षा संबंधी वार्षिकं संजहारेन्द्रो धनुर्जैत्रं रघुर्दधौ—रघु० ४।१६ 2. सालाना, प्रतिवर्ष घटित होने वाला 3. एक वर्ष तक रहने वाला—मानुषाणां प्रमाणं स्याद्भुक्तिर्वै दशवार्षिकी, इसी प्रकार वार्षिकमन्नम्—याज्ञ० १।१२४,—**कम्** जड़ी बूटी ।

वार्षिला [वार्जाता शिला, पृषो० शस्य षः] ओला ।

वार्ष्णेयः [वृष्णि+ढक्] 1. वृष्णि की सन्तान 2. विशेष रूप से कृष्ण 3. नल के सारथि का नाम ।

वार्ह, वार्हद्रथ, वार्हद्रथि, वार्हस्पत, वार्हस्पत्य, वार्हिण, वाल, वालक } दे० बार्ह, बार्हद्रथ, बार्हद्रथि, बार्हस्पत, बार्हस्पत्य, बार्हिण, बाल, बालक ।

वालखिल्य दे० 'बालखिल्य' ।

वालिः [वाले केशे जाते दल+इञ्] प्रसिद्ध वानरराज बालि जो उसके छोटे भाई सुग्रीव की इच्छानुसार राम के द्वारा मारा गया ।

(वर्णन ऐसा मिलता है कि वानरराज वालि अत्यन्त बलवान् था, कहते हैं कि उनसे रावण को जब वह उससे लड़ने गया, पकड़ कर अपनी कांख में रख लिया । जब वालि दुंदुभि के भाई को मारने के लिए किष्किंधापुरी से बाहर गया तो उसके भाई सुग्रीव ने वालि को युद्ध में मरा जान, उसका सिंहासन हथिया लिया । जिस समय वालि वापिस आया

तो सुग्रीव को भाग कर ऋष्यमूक पर्वत पर शरण लेनी पड़ी। सुग्रीव की पत्नी तारा को वालि ने छीन लिया, परन्तु राम के द्वारा वालि का वध होने पर वह फिर सुग्रीव को मिल गई)।

वालुका [वल्+उण्+कन्+टाप्] 1. रेत, बजरी—अक्तज्ञस्योपकृतं वालुकास्विव मूत्रितम् 2. चूर्ण 3. कपूर, —का,—की एक प्रकार की ककड़ी। सम०—आत्मिका शर्करा।

वालेय दे० बालेय।

वाल्क (वि०) (स्त्री०—ल्की) [वल्क+अण्] वृक्षों की छाल से बना हुआ।

वाल्कल (वि०) (स्त्री०—ली) [वल्कल+अण्] वृक्षों की छाल से बना हुआ,—लम् बक्कल की पोशाक,—ली मदिरा, शराब।

वाल्मीकः, वाल्मीकिः [वल्मीके भवः अण् इञ् वा] एक विख्यात मुनि तथा रामायण के प्रणेता का नाम (जन्म से यह ब्राह्मण था, परन्तु बचपन में मातापिता द्वारा परित्यक्त होने पर यह कुछ बर्बर पहाड़ियों को मिल गया जिन्होंने इसे चोरी करना सिखलाया। यह शीघ्र ही चौर्यकला में प्रवीण हो गया और कुछ वर्षों तक बटोहियों को मारने और लूटने का कार्य करता रहा। एक दिन उसे एक महामुनि मिला जिसको इसने मार डालने का भय दिखा कर कहा कि जो कुछ पास हैं सब निकाल कर रख दो। परन्तु मुनि ने इसे कहा कि पहले घर जाकर अपनी पत्नी और बच्चों को पूछो कि क्या वह लोग तुम्हारे इस अनन्त अत्याचार व लूटमार के जो तुम अब तक करते रहे हो. साझीदार हैं। वह तुरन्त घर गया परन्तु उनकी अनिच्छा को जानकर बड़ा उद्विग्न हुआ। तब मुनि ने उसे 'मरा' 'मरा' (जो 'राम' प्रतीप है) उच्चारण करने के लिए कहा और अन्तर्धान हो गया। यह लुटेरा इस शब्द का वर्षों जप करता रहा, यहां तक कि उसका शरीर दीमको द्वारा लाई गई मिट्टी से ढक गया। वही मुनि फिर आया और उसने इसे बांबी से निकाला, वल्मीक (बांबी) से निकलने के कारण इसका नाम वाल्मीकि पड़ गया। यही बाद में बड़ा प्रसिद्ध मुनि हुआ। एक दिन जब कि वह स्नान कर रहा था, उसने क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक को बहेलिये द्वारा मरते हुए देख, इस पर इस ऋषि के मुख से उस दुष्ट बहेलिये के लिए अनजान में कुछ अभिशाप के शब्द निकल गये जिन्होंने अनुष्टुप् छन्द में श्लोक का रूप धारण किया। रचना की यह नई शैली थी। ब्रह्मा के आदेश से इसने 'रामायण' नामक प्रथम काव्य की रचना की। जब राम ने सीता का परित्याग कर दिया तो इस ऋषि ने सीता को अपने आश्रम में शरण दी, उसके दोनों पुत्रों का पालन पोषण किया, उन्हें शिक्षा दी। बाद में इसने इनको राम के सुपुर्द कर दिया।

वाल्लभ्यम् [वल्लभ+ष्यञ्] प्रिय होने का भाव, वल्लभता।

वावदूक (वि०) [पुनः पुनरतिशयेन वा वदति—वद्+यङ्, लुक्, द्वित्वम्=वावद्+ऊकञ्] 1. बातूनी, मुखर 2. वाक्पटु।

वावयः [वय्+यङ्, लुक्, दित्वम्, अच्] एक प्रकार की तुलसी।

वावुटः (पुं०) नाव, डोंगी।

वावृत् (दिवा० आ० वावृत्यते) 1. छांटना, पसन्द करना, चुनना, प्रेम करना—ततो वावृत्यमानासौ रामशालां न्यविक्षत भट्टि० ४।२८ 2. सेवा करना।

वावृत्त (वि०) [वावृत्+क्त] छांटा गया, चुना गया, पसंद किया गया।

वाश् i (दिवा० आ० वाश्यते, वाशित) 1. दहाड़ना, क्रंदन करना, चीत्कार करना, चिल्लाना, हू हू करना, (पक्षियों का) गुनगुनाना, ध्वनि करना—(शिवाः) तां श्रिताः प्रतिभयं ववाशिरे—रघु० ११।६१, शि० १८।७५, ७६, भट्टि० १४।१४, ७६ 2. बुलाना।

वाशक [वाश्+ण्वुल्] दहाड़ने वाला, मुखर, निनादी।

वाशकम् [वाश्+ल्युट्] 1. दहाड़ना, चिंघाड़ना, गुर्राना, आक्रोश करना 2. पक्षियों का चहचहाना, कूकना, (मक्खियों का) भिनभिनाना।

वाशिः [वाश्+इञ्] अग्नि देवता, आग।

वाशितम् [वाश्+क्त] पक्षियों का कलरव।

वाशिता वासिता [वाशित+टाप्, वस्+णिच्+क्त+टाप्] 1. हथिनी—अभ्यपद्यत स वाशितासखः पुष्पिताः कमलिनीरिव द्विपः—रघु० १९।११ 2. स्त्री।

वाश्रः [वाश्+रक्] दिन—श्रम् 1. आवास स्थान, घर 2. चौराहा 3. गोबर।

वाष्पः, —ष्पम् दे० 'बाष्प'।

वास् i (चुरा० उभ० वासयति—ते) 1. सुगंधित करना, सुवासित करना, धूप देना, धूनी देना, खुशबूदार करना—वासिताननविशेषितगंधा—कि० ९।८०, प्रकटित पटवासैर्वासयन् काननानि—गीत० १, उत्तर० ३।१६, रघु० ४।७४, मेघ० २० ऋतु० ५।५ 2. सिक्त करना, भिगोना 3. मसाला डालना, मसालेदार बनाना।

ii (दिवा० आ०) दे० 'वाश्'।

वासः [वास्+घञ्] 1. सुगंध 2 निवास, आवास—वासो यस्य हरेः करे—भामि० १।६३, रघु० १९।२,

भग० १।४४ 3. आवास, रहना, घर 4. जगह, स्थित 5. कपड़े, पोशाक। सम०—अ(आ) गारः,—रम्, —गृहम्, वेश्मन् (नपुं०) घर का आन्तरिक कक्ष, विशेषतः शयनागार - धर्मासनाद्विशति वासगृहं नरेन्द्रः —उत्तर० १।७, विक्रम० १,—कर्णी वह कमरा जहाँ सार्वजनिक प्रदर्शन (नाच, कुश्ती, तथा अन्य प्रतियोगिताएँ) होते हैं,—तांबूलम् अन्य सुगन्धित मसालों से युक्त पान, - भवनम्, —मन्दिरम्, सदनम् निवासस्थान, घर,- यष्टिः (स्त्री०) पक्षियों के बैठने का डंडा, छतरी, अड्डा, वेणी० २।१, मेघ० ७९, —योगः एक प्रकार का सुगन्धित चूर्ण, - सज्जा= वासक सज्जा दे०।

वासक (वि०) (स्त्री० का, —सिका) [वास्+णिच्+ण्वुल्] 1. सुगन्धित करने वाला, सुवासित करने वाला, धुपाने वाला, धूप देने वाला 2. बसाने वाला, आवाद करने वाला, —कम् वस्त्र, कपड़े। सम० —सज्जा—सज्जिका वह स्त्री जो अपने प्रेमी का स्वागत, सत्कार करने के लिए अपने आपको वस्त्रालंकार से भूषित करती तथा घर को साफ़ सुथरा रखती है, विशेषतः उस समय जब कि प्रेमी का मिलन नियत किया हुआ हो; भावी नायिका, नायिका का भेद साहित्यदर्पणकार परिभाषा देता है: कुरुते मंडनं यस्याः (या तु) सज्जिते वासवेश्मनि, सा तु वासकसज्जा स्याद्विदितप्रियसंगमा १२०; भवति विलंबिनि विगलितलज्जा विलपति रोदिति वासकसज्जा —गीत० ६।

वासतः [वास्+अतच्] गधा।

वासतेय (वि०) (स्त्री०—यी) [वसतये हितं साधुवा ढञ्] निवास करने के योग्य,—यी रात।

वासनम् [वास्+ल्युट्] 1. सुगन्धित करना, सुवासित करना 2. धुपाना 3. निवास करना, टिकना 4. आवासस्थान, निवासस्थान 5. कोई पात्र, आधार, टोकरी, सन्दूक, वर्तन आदि—याज्ञ० २।६५, (वासनं निक्षेपाधारभूतं संपुटादिकं समुद्रं ग्रन्थ्यादियुतम्) 6. ज्ञान 7. वस्त्र, परिधान 8. गिलाफ़, लिफ़ाफ़ा।

वासना [वास्+णिच्+युच्+टाप्] 1. स्मृति में प्राप्त ज्ञान, तु० भावना 2. विशेषतः अपने पहले शुभाशुभ कर्मों का अनजाने में मन पर पड़ा हुआ संस्कार जिससे सुख या दुःख की उत्पत्ति होती है 3. उत्प्रेक्षा, कल्पना, विचार 4. मिथ्या विचार, अज्ञान 5. अभिलाषा, इच्छा, रुचि -संसारवासनाबद्धशृंखला—गीत० ३ 6. आदर, रुचि, सादर मान्यता तेषां (पक्षिणां) मध्ये मम तु महती वासना चातकेषु—भामि० ४।१७।

वासंत (वि०) (स्त्री० -ती) [वसन्त+अण्] 1. वसन्तकालीन, माधवीं, बहार के लायक, बसतर्तु में उत्पन्न 2. जीवन का बसन्त, जवान 3. परिश्रमी, सावधान (कर्तव्यपालन में),—तः 1. ऊँट 2. जवान हाथी 3. कोई भी जवान जन्तु 4. कोयल 5. दक्षिणी पवन, मलय पहाड़ से चलने वाली हवा—तु० मलय समीर 6. एक प्रकार का लोबिया 7. लंपट, दुराचारी,—ती 1. एक प्रकार की चमेली (सुगंधित फूलों से लदी हुई) - वसन्ते वासन्तीकुसुमसुकुमारैरवयवैः—गीत० १ 2. बड़ी पीपल 3. जूही का फूल 4. कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव—तु० वसंतोत्सव।

वासंतिक (वि०) (स्त्री०—की) [वसन्त+ठक्] वसन्त ऋतु से संबद्ध,—कः 1. नाटक का विदूषक या हंसोकड़ा 2. अभिनेता।

वासरः रम् [सुखं वासयति जनान् वास्+अर] (सप्ताह का) एक दिन। सम० संगः प्रातः काल।

वासव (वि०) (स्त्री० वी) [वसुरेव स्वार्थे अण्, वसूनि सन्त्यस्य अण् वा] इन्द्र सम्बन्धी पांडुतां वासवी दिगयासीत्—का०, वासवीनां चमूनाम् - मेघ० ४३, —वः इन्द्र का नाम—कु० ३।१२, रघु० ५।५। सम० —दत्ता 1. सुबन्धु की एक रचना 2. कई कहानियों में वर्णित नायिका (इस स्त्री) का वर्णन भिन्न-भिन्न कवि विविध प्रकार से करते हैं। 'कथासरित्सागर' के अनुसार वह उज्जयिनी के महाराजा चण्डमहासेन की पुत्री थी जिसका अपहरण वत्स के राजा उदयन ने किया था। श्रीहर्ष उसे प्रद्योत राजा की पुत्री बतलाते हैं (दे० रत्न० १।१०) और मल्लि० की टीका के अनुसार—प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे वह उज्जयिनी के राजा प्रद्योत की पुत्री थी। भवभूति कहते हैं कि उसके पिता ने उसकी सगाई राजा संजय के साथ की थी, परन्तु उसने अपने आपको उदयन की सेवा में अर्पित किया (दे० मा० २)। परन्तु सुबन्धु की वासवदत्ता की वत्स की कहानी से कोई समानता नहीं। हाँ, उसका नाम अवश्य एक ही था। भवभूति के अनुसार उसके पिता ने उसकी सगाई पुष्पकेतु के साथ की थी, परन्तु कंदर्पकेतु उसे अपहृत कर ले गया। यह संभव है कि 'वासवदत्ता' नाम की कई नायिकाएँ हों)।

वासवी [वासव+ङीप्] व्यास की माता का नाम।

वासस् (नपुं०) [वस् आच्छादने असि णिच्च] वस्त्र, परिधान, कपड़े वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि - भग० २।२२, कु० ७।९, मेघ० ५९।

वासिः (पुं०, स्त्री०) [वस्+इञ्] बसूला, छोटी कुल्हाड़ी, छेनी,—सिः निवास, आवास।

वासित (भू० क० कृ०) [वास्+क्त] 1. सुवासित, या सुगन्धित 2. भिगोया, तर किया हुआ 3. मसालेदार, मसाला डाला गया 4. कपड़े पहने हुए, वस्त्रों से सज्जित 5. जनसंकुल, आबाद 6. विख्यात, प्रसिद्ध, —तम् 1. पक्षियों का कलरव या कूजना 2. ज्ञान —तु० वासना (२)।

वासिता [वास्+क्त+टाप्] दे० 'वाशिता'।

वासि (शि) ष्ठ (वि०) (स्त्री०—ष्ठी) [वसि+शिष्ठ +अण्] वशिष्ठ संबंधी, वशिष्ठ द्वारा रचित (बल्कि दृष्ट) जैसा कि ऋग्वेद का दसवां मण्डल,—ष्ठः वशिष्ठ की सन्तान।

वासुः [सर्वोऽत्र वसति—वस्+उण्] 1. आत्मा 2. विश्वात्मा, परमात्मा 3. विष्णु।

वासुकिः, वासुकेयः [वसुक+इञ्, ढञ् वा] एक विख्यात नाग का नाम, नागराज (कहते हैं कि यह कश्यप का पुत्र था)—कु० २।३८, भग० १०।२८।

वासुदेवः [वसुदेवस्यापत्यम् अण्] 1. वसुदेव की संतान 2. विशेष रूप से कृष्ण।

वासुरा [वस्+उरण्+टाप्] 1. पृथ्वी 2. रात 3. स्त्री 4. हथिनी।

वासूः (स्त्री०) [वास्+ऊ] तरुणी कन्या, कुमारी, (मुख्यतः नाटकों में प्रयुक्त)—एषासि वासु शिरसि गृहीता—मृच्छ० १।४१, वासु प्रसीद—मृच्छ०।

वास्त दे बास्त।

वास्तव (वि०) (स्त्री०—वी) [वस्तु+अण्] 1. असली, सच्चा, सारयुक्त 2. निर्धारित, निश्चित,—वम् कोई भी निश्चित या निर्धारित बात।

वास्तवा [वास्तव+टाप्] प्रभात, उषा।

वास्तविक (वि०) (स्त्री०—की) [वस्तुतो निर्वृत्तं ठक्] सच्चा, असली, सारगर्भित, यथार्थ विशुद्ध।

वास्तिकम् [वस्त+ठक्] बकरों का समूह।

वास्तव्य (वि०) [वस्+तव्यत्, णित्] 1. निवासी, वासी, रहने वाला—पुरेऽस्य वास्तव्यकुटुंबितां ययुः—शि० १।६६ 2. रहने के योग्य, वास करने के योग्य —व्यः 1. आवासी, रहने वाला, निवासी—नानादिगंतवास्तव्यो महाजनसमाजः—मा० १,—व्यम् 1. रहने के योग्य स्थान, घर 2. वसति, निवासस्थान।

वास्तु (पुं०, नपुं०) [वस्+तुण्] 1. घर बनाने की जगह, भवनभूखण्ड, जगह 2. घर, आवास, निवास भूमि,—रवेरविषये वास्तु किं न दीपः प्रकाशयेत्—सुभा० मनु० ३।८९। सम०—यागः घर की आधारशिला रखते समय किया जाने वाला यज्ञानुष्ठान।

वास्तेय (वि०) (स्त्री०—यी) [वस्ति+ढञ्] 1. रहने के योग्य, निवास करने के योग्य 2. पेडू संबंधी।

वास्तोष्पतिः [वास्तोः पतिः, नि० षष्ठ्या अलुक्, षत्वम्] 1. एक वैदिक देवता (घर की आधारशिला की अधिष्ठात्री देवता मानी जाती है) 2. इन्द्र का नाम।

वास्त्र (वि०) [वस्त्र+अण्] वस्त्र से निर्मित,—स्त्रः कपड़े से ढकी हुई गाड़ी।

वास्प दे० 'वाष्प'।

वास्पेयः [वास्पाय हितं वाष्प+ढक्] 'नागकेशर' नाम का वृक्ष।

वाह् (भ्वा० आ० वाहते) प्रयत्न करना, चेष्टा करना, उद्योग करना।

वाह (वि०) [वह्+घञ्] धारण करने वाला, ले जाने वाला (समास के अन्त में) जैसा कि अंबुवाह, और 'तोयवाह' में,—हः 1. ले जाना, धारण करना 2. कुली 3. खींचने वाला जानवर, बोझा ढोने वाला जानवर 4. घोड़ा—रघु० ४।५६, ५।७३ १४।५२ 5. सांड —कु० ७।४९ 6. भैंसा 7. गाड़ी, यान 8. भुजा 9. वायु हवा 10. एक मापविशेष जो दस कुंभ या चार भार के तुल्य होती है—वाहो भारचतुष्टयं। सम०—द्विषत् (पुं०) भैंसा,—श्रेष्ठः घोड़ा।

वाहकः [वह्+ण्वुल्] 1. कुली 2. गड़वाला, गाड़ीवान् चालक 3. घुड़सवार।

वाहनम् [वाहयति—वह्+णिच्+ल्युट्] 1. धारण करना, ले जाना, ढोना 2. (घोड़े आदि को) हांकना 3. गाड़ी, किसी प्रकार की सवारी—मनु० ७।७५, नै० २२।४५ 4. खींचने वाला या सवारी का जानवर, जैसा कि घोड़ा—स दुष्प्रापयशाः प्रापदाश्रमं श्रांतवाहनः—रघु० १।४८, ९।२५, ६० 5. हाथी।

वाहसः [न वहति नगच्छति, वह्+असच्] 1. पतनाला, जलमार्ग 2. बड़ा नाग, अजगर।

वाहिकः [वाह+ठक्] 1. बड़ा ढोल 2. बैलगाड़ी 3. बोझ ढोने वाला।

वाहितम् [वह्+णिच्+क्त] भारी बोझ।

वाहित्थम् [वाहिन्+स्था+क] हाथी के मस्तक का ललाट से नीचे का भाग।

वाहिनी [वाहो अस्त्यस्याः इनि ङीप्] 1. सेना, —आशिषं प्रयुयुजे न वाहिनीम्—रघु० ११।६, १३।६६ 2. अक्षौहिणी सेना जिसमें ८१ गजारोही, ८१ रथारोही, २४३ अश्वारोही तथा ४०५ पदाति सम्मिलित हैं 3. नदी। सम०—निवेशः सेना का पड़ाव, शिविर,—पतिः 1. सेनापति, सेनाध्यक्ष 2. (नदियों का स्वामी) समुद्र।

वाहीक दे० 'वाहीक'।

वाहुक दे० 'बाहुक'।

वाह्य दे० 'बाह्य'।

वाह्लिः (पुं०) एक देश का नाम, (आधुनिक बलख)। सम० —जः बलख देश का घोड़ा।

वाह्लि (ह्ली) कः (पुं०) 1. एक देश का नाम (आधुनिक बलख) 2. बलख देश का घोड़ा, बलख देश में पला घोड़ा,—**कम्** 1. जाफरान, केसर 2. हींग ।

वि (अव्य०) [वा+इण्, स च डित्] 1. धातु और संज्ञा शब्दों के पूर्व जुड़ कर इसका निम्नांकित अर्थ होता है:—(क) पृथक्करण, वियोजन (एक ओर, अलग-अलग, दूर, परे आदि) यथा वियुज्, विहृ, विचल् आदि (ख) किसी कर्म का उलट, यथा क्री खरीदना, विक्री बेचना, स्मृ याद करना विस्मृ भूल जाना (ग) प्रभाग यथा विभज्, विभाग (घ) विशिष्टता—यथा विशिष् विशेष; विविच्, विवेक (ङ) विभेदीकरण—व्यवच्छेद: (च) क्रम, व्यवस्था यथा विधा, विरच् (छ) विरोध यथा विरुध्, विरोध; अभाव यथा विनी, विनयन (ज) विचार, यथा विचर्, विचार (झ) तीव्रता—विध्वंस 2. संज्ञा या विशेषण शब्दों में (जो कि क्रिया से सटे हुए न हों) जुड़कर 'वि' निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) निषेध या अभाव (ऐसी अवस्था में इसका प्रयोग अधिकतर उसी प्रकार होता है जैसे कि 'अ' या 'निर्' का, अर्थात् इसके लगने पर बहुव्रीहि समास बनता है—विधवा, व्यसुः आदि (ख) तीव्रता, महत्ता—यथा विकराल (ग) वैविध्य—यथा विचित्र (घ) अन्तर—यथा विलक्षण (ङ) बहुविधता—यथा विविध (च) वैपरीत्य, विरोध—यथा विलोम (छ) परिवर्तन—यथा विकार (ज) अनौचित्य —यथा विजन्मन् ।

विः (पुं० स्त्री०) [वा+इण्, स च डित्] 1. पक्षी 2. घोड़ा ।

विंश (वि०) (स्त्री०—शी) [विंशति+डट्, तेः लोपः] बीसवाँ,—**शः** बीसवाँ भाग ।

विंशक (वि०) (स्त्री०—की) [विंशति+ण्वुल्, तिलोपः] बीस ।

विंशतिः (स्त्री०) [द्वे दश परिमाणमस्य नि० सिद्धिः] बीस, एक कोड़ी । सम० **ईशः,—ईशिन्** (पुं०) बीस गाँवों का शासक ।

विकम् [विगतं कं जलं सुखं वा यत्र] ताज़ी व्यायी गाय का दूध ।

विकङ्कतः,—तः [वि+कंक्+अटन्, अतच् वा] एक वृक्ष विशेष (जिसकी लकड़ी से श्रुवा बनते हैं) —रघु० ११।२५ ।

विकच (वि०) [विकच्+अच्] 1. खिला हुआ, फूला हुआ, खुला हुआ, (जैसा कि कमल आदि)—विकचकिंशुकसंहतिरुच्चकैः—शि ६।२१, रघु० ९।३७ 2. फैलाया हुआ, बखेरा हुआ—भामि० १।३ 3. बालों से शून्य, —**चः** 1. बौद्धसाधु 2. केतु ।

विकट (वि०) [वि+कटच्] 1. विकराल, कुरूप 2. (क) दुर्धर्ष, भयानक, भीषण डरावना—पृथुललाटतटघटित विकट भ्रूकुटिना वेणी० १, विधुमिव विकटविधुंतुददंतदलनगलितामृतधारम्—गीत० ४ (ख) दारुण, खूंखार, बर्बर 3. बड़ा, विस्तृत, विशाल, प्रशस्त, व्यापक जृम्भाविडम्बिविकटोदरमस्तु चापम्—उत्तर० ४।२९; आवरिष्ट विकटेन विवोढुर्वक्षसैव कुचमण्डलमन्या—शि० १०।४२, १३।१०, मा० ७ 4. घमंडी, अभिमानी विकटं परिक्रामति उत्तर० ६, महावीर० ६।३२ 5. सुन्दर मृच्छ० ७ 6. त्यौरी चढ़ाये हुए, 7. गूढ 8. शकल बदले हुए, —**टम्** फोड़ा, अर्बुद या रसौली ।

विकत्थन (वि+कत्थ्+ल्युट्] 1. शेखी बघारने वाला, डींग मारने वाला, आत्मश्लाघा करने वाला, अपनी प्रशंसा करने वाला विद्वांसोऽप्यविकत्थना भवंति मुद्रा० ३, रघु० १४।७३ 2. व्यंग्योक्ति पूर्वक प्रशंसा करने वाला,—**नम्** 1. दर्पोक्ति, धौंस जमाना 2. व्याजोक्ति, मिथ्या प्रशंसा ।

विकत्था [वि+कत्थ्+अङ्+टाप्] शेखी बघारना, डींग, आत्मश्लाघा, दर्पोक्ति 2. प्रशंसा 3. मिथ्या प्रशंसा, व्यंग्योक्ति ।

विकम्प (वि०) [विशेषेण कम्पो यस्य-प्रा० ब०] 1. दीर्घ निःश्वास लेने वाला 2. अस्थिर, चंचल ।

विकरः [विकीर्यंते हस्तपादादिकमनेन—वि+कृ+अप्] बीमारी, रोग ।

विकरणः [वि+कृ+ल्युट्] क्रियारूपरचनापरक निविष्ट जोड़ (अनुषंगी), क्रिया के रूपों की रचना के समय धातु और लकार के प्रत्ययों के बीच में रक्खा जाने वाला गणद्योतक चिह्न ।

विकराल (वि०) [विशेषेण करालः प्रा० स०] अत्यंत डरावना या भयानक, भयपूर्ण ।

विकर्णः [विशिष्टौ कर्णौ यस्य प्रा० ब०] एक कुरुवंशी राजकुमार का नाम भग० १।८ ।

विकर्तनः [विशेषण कर्तनं यस्य प्रा० ब०] 1. सूर्य—उत्तर० ५ 2. मदार का पौधा 3. वह पुत्र जिसने अपने पिता का राज्य छीन लिया हो ।

विकर्मन् (वि) [विरुद्धं कर्म यस्य प्रा० ब०] अनुचित रीति से कार्य करने वाला, नपुं० अवैध या प्रतिनिषिद्ध कार्य, पापकर्म—भग० ४।१७, मनु० ९।२२६ । सम० —**क्रिया** अवैध कार्य, अधार्मिक आचरण,—**स्थ** (वि०) प्रतिपिद्ध कार्यों को करने वाला, दुर्व्यसनों में ग्रस्त ।

विकर्षः [वि+कृष्+घञ्] 1. अलग-अलग रेखांकन करना, स्वतंत्र रूप से खींचना 2. तीर, बाण ।

विकर्षणः [वि+कृष्+ल्युट्] कामदेव के पाँच बाणों में

से एक,—णम् 1. रेखांकन, खींचना, अलग-अलग खींचना 2. तिरछा फेंकना।

विफल (वि०) [विगतः कलो यत्र प्रा० ब०] 1. किसी भाग या अंग से वञ्चित, सदोष, अधूरा, अपाहज, विकलांग—कूटकृद्विकलेन्द्रियाः—याज्ञ० २।७०, मनु० ८।६६, उत्तर० ४।२४ 2. डरा हुआ, त्रस्त 3. शून्य, विरहित—आरामाधिपतिर्विवेकविकलाः—भामि० १। ३१, मृच्छ० ५।४१ 4. विक्षुब्ध, कमज़ोर, उत्साह शून्य, हतोत्साह, म्लान, अवसन्न, स्फूर्तिहीन—किमिति विषीदसि रोदिषि विकला विहसति युवतिसभा तव सकला—गीत० ९, विरहेण विकलहृदया—भामि० २।७१, १६४, श्रुतियुगले पिकरुतविकले—गीत० १२, उत्तर ३।३१, मा० ७।१, ९।१२ 5. मुर्झाया हुआ, क्षीण। सम० —अंग (वि०) अधिक या कम अंगों वाला,—इन्द्रिय (वि०) जिसकी ज्ञानेन्द्रियाँ दूषित या विकृत हैं,—पाणिकः लूला-लंगड़ा।

विकला [विगतः कलो यस्याः–प्रा० ब०] कला का साठवाँ भाग।

विकल्पः [वि+क्लृप्+घञ्] 1. सन्देह, अनिश्चय, अनिर्णय, संकोच—तत् सिषेवे नियोगेन स विकल्पपराङ्मुखः—रघु० १७।४९ 2. शंका, मुद्रा० १ 3. कूटयुक्ति, कला मायाविकल्परचितैः -रघु० १३।७५ 4. वरणस्वतंत्रता, (व्या० में) वैकल्पिक 5. प्रकार, भेद 6. अशुद्धि, भूल, अज्ञान। सम०—उपहारः वैकल्पिक पुरस्कार, —जालम् जाल की तरह का अनिर्णय, दुविधा।

विकल्पनम् [वि+क्लृप्+ल्युट्] 1. सन्देह में पड़ना 2. इच्छा की छूट 3. अनिर्णय।

विकल्मष (वि०) [विगतः कल्मषो यस्य प्रा० ब०] निष्पाप, कलंकरहित, निर्दोष।

विकषा (सा) [वि+कष् (स्)+अच्+टाप्] बगाली मजीठ।

विकसः [वि+कस्+अच्] चन्द्रमा।

विकसित (भू० क० कृ०) [वि+कस्+क्त] खिला हुआ, पूरा खुला हुआ या फूला हुआ —भामि० १।१००।

विकस्व (श्व) र (वि०) [विकस्+वरच्] 1. खुला हुआ, फूला हुआ—कुशेशयैरत्र जलाशयोषिता मुदा रमन्ते कलभा विकस्वरैः - शि० ४।३३ 2. ऊँचे स्वर वाला, (ध्वनि आदि) जो स्पष्ट सुनाई दे, उदडीयत वैकृतात्करग्रहजादस्य विकस्वरस्वरः—नै० २।५।

विकारः [वि+कृ+घञ्] 1. रूप या प्रकृति का परिवर्तन, रूपान्तरण, प्राकृतिक अवस्था से व्यत्यय, तु० विकृति 2. परिवर्तन, अदल-बदल, सुधार—पंच० १।४४ 3. बीमारी, रोग, व्याधि—विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञात्वाऽनारम्भः प्रतीकारस्य - श० ४, कु० २।३८ 4. मन या अभिप्राय का बदलना—मूर्छंत्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमत्तेषु—श० ५।१९ 5. भावना, संवेग—उत्तर० १।३५, ३।२५, ३६ 6. विक्षोभ, उत्तेजना, उद्वेग—कि० १७।२३ 7. विकृत रूप, आकुंचन (मुखमुद्रा, हावभाव आदि) प्रमथमुखविकारैर्हासयामास गूढम्—कु० ७।९५ 8. (सांख्य० में) जो पूर्वस्रोत या प्रकृति से विकसित हो। सम०—हेतुः प्रलोभन, फुसलाना, उद्वेग का कारण—विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः—कु० १।५९।

विकारित (वि०) [वि+कृ+णिच्+क्त] परिवर्तित, पथभ्रष्ट, भ्रष्टाचारग्रस्त।

विकारिन् (वि०) [वि+कृ+णिनि] परिवर्तनशील, संवेग तथा अन्य संस्कारों को ग्रहण करने वाला,—भ्रमति भुवने कंदर्पाज्ञा विकारि च यौवनम्—मा० १।१७।

विकालः, विकालकः [विरुद्धः कालः प्रा० स०] संध्या, सांध्यकालीन झुटपुटा, दिन की समाप्ति।

विकालिका [विज्ञातः कालो यया - प्रा० ब०] पानी में रक्खा हुआ छिद्रयुक्त ताम्रकलश जो क्रमशः पानी भरने के द्वारा समय का अंकन करता है—तु० मानरन्ध्रा।

विकाशः [वि+कश्+घञ्] 1. प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिखलावा 2. खिलना, फूलना (इस अर्थ में प्रायः विकाश लिखा जाता है)—कु० ३।२९ 3. खुला सीधा मार्ग—कि० १५।५२ 4. टेढ़ा मार्ग—कि० १५।५२ 5. हर्ष, आनन्द—कि० १५।५२ 6. उत्सुकता, प्रबल उत्कंठा—शि० ९।४१, (यहाँ इसका अर्थ खिलना, भी है) 7. एकान्तवास, एकाकीपन, सूनापन।

विकाशक (वि०) (स्त्री०—शिका) [वि+काश्+ण्वुल्] 1. प्रदर्शन करने वाला 2. खोलने वाला।

विकाशनम् [वि+काश्+ल्युट्] 1. प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिखावा 2. खिलना, (फूलों का) फूलना।

विकाशि (सि) न् (वि०) (स्त्री०—नी) [वि+काश् (स्)+णिनि] 1. दिखाई देने वाला, चमकने वाला 2. फूलने वाला, खुलने वाला, खिलने वाला।

विकासः [वि+कस्+घञ्] खिलना, फूलना—दे० ऊ० विकाश।

विकासनम् [वि+कस्+ल्युट्] फूलना, खुलना, खिलना।

विकिरः [वि+कॄ+अप्] 1. बिखरा हुआ भाग या गिरा हुआ नन्हा टुकड़ा 2. जो फाड़ता या बखेरता है पक्षी —कंकोलीफलजग्धिमुग्धविकिरव्याहारिणस्तद्भुवो भागाः —मा० ६।१९ 3. कूआँ 4. वृक्ष।

विकिरणम् [वि+कॄ+ल्युट्] 1. बखेरना, इधर उधर फेंकना छितराना 2. दूर-दूर तक फैलाना 3. फाड़ डालना 4. हिंसा करना 5. ज्ञान।

विकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+कॄ+क्त] 1. बखेरा हुआ छितराया हुआ 2. प्रसृत 3. विख्यात। सम०—केश, —मूर्धज (वि०) बालों को नोचने वाला, बालों को बिखेरने या उलक्ष-पुलक्ष करने वाला,—क्षम् एक प्रकार की सुगन्ध।

विकुण्ठः [विगता कुंठा यस्य प्रा० ब०] विष्णु का स्वर्ग।

विकुर्वाण (त्रि०) [वि+कृ+शानच्] 1. परिवर्तित होने वाला, या परिवर्तन करने वाला 2. प्रसन्न, खुश, हृष्ट।

विकुस्रः [वि+कस्+रक्, उत्वम्] चन्द्रमा।

विकूजनम् [वि+कूज्+ल्युट्] 1. गुटरगूं करना, कलरव करना 2. (अंतड़ियों या नलों में) गुड़गुड़ाहट।

विकूणनम् [वि+कूण्+ल्युट्] तिरछी चितवन, कटाक्ष।

विकूणिका [वि+कूण्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] नाक।

विकृत (भू० क० कृ०] 1. परिवर्तित, बदला हुआ, सुधारा हुआ 2. रोगी, बीमार 3. क्षतविक्षत, विरूपित, जिसकी सूरत बिगड़ गई हो 4. अपूर्ण अधूरा 5. आवेशग्रस्त 6. पराङ्मुख, ऊबा हुआ 7. बीभत्स 8. अनोखा, असाधारण (दे० वि पूर्वक कृ),—तम् 1. परिवर्तन, सुधार 2. और भी बिगड़ जाना, बीमारी 3. अरुचि, जुगुप्सा।

विकृतिः (स्त्री०) [वि+कृ+क्तिन्] (अभिप्राय, मन, रूप आदि का) बदलना—चित्तविकृतिः, अंगुलीयकं सुवर्णस्य विकृतिः 2. अस्वाभाविक, अचानक घटित होने वाली परिस्थिति, दुर्घटना—मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः—रघु० ८।८७ 3. बीमारी 4. उत्तेजना, उद्वेग, क्रोध, रोष—कि० १३।५६, शि० १५।११, ४०, दे० 'विकार' और 'विक्रिया' भी।

विकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+कृष्+क्त] 1. अलग-अलग घसीटा हुआ, इधर-उधर खींचा हुआ 2. आकृष्ट, खींचा हुआ, किसी की ओर आकृष्ट 3. विस्तारित, फैलाया हुआ 4. शब्दायमान (दे० वि पूर्वक कृष्)।

विकेश (वि०) (स्त्री०—शी) [विकीर्णाः केशायस्य —प्रा०ब० [1. बिखरे बालों वाला 2. बिना बालों का गंजा (सिर),—शी 1. ढीले बालों वाली स्त्री 2. बालों के शून्य (गंजी) स्त्री 3. मींढी, या बालों की छोटी छोटी लटों को मिला कर बनाई हुई चोटी, वेणी।

विकोश-ष (वि०) [विगतः कोशो यस्य—प्रा० ब०] 1. बिना भूसी का 2. बिना म्यान का, बिना ढका हुआ—कि० १७।४५, रघु० ७।४८।

विक्कः [विक्+कै+क] तरुण हाथी।

विक्रमः [वि+क्रम्+घञ्, अच् वा] 1. कदम, डग, पग—श० ७।६, तु० त्रिविक्रम 2. कदम रखना, चलना 3. पकड़ लेना, प्रभाव डाल लेना 4. वीरता, शौर्य, नायक की बहादुरी, अनुत्सेकः खलु विक्रमालंकारः—विक्रम० १, रघु० १२।८७, ९३ 5. उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध राजा का नाम—दे० परि० २ 6. विष्णु का नाम। सम०—अर्कः—आदित्यः दे० विक्रम, —कर्मन् (नपुं०) शूरवीरता का कार्य, पराक्रम के करतब।

विक्रमणम् [वि+क्रम्+ल्युट्] (विष्णु का) एक डग—छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन—गीत० १।

विक्रमिन् (वि०) [वि+क्रम्+णिनि] पराक्रमी, शूरवीर—पुं० 1. सिंह 2. नायक 3. विष्णु का विशेषण।

विक्रयः [वि+क्री+अच्] बिक्री, बेचना—मनु० ३।५४। सम०—अनुशयः बिक्री का खण्डन करना,—पत्रम् बिक्री का पत्र, बैनामा।

विक्रयिकः, विक्रयिन् (पुं०) [विक्री+इकन्, णिनि वा] व्यापारी, विक्रेता, बेचने वाला।

विक्रस्रः [वि+कस्+रक्, अत्वं, रेफादेशः] चाँद।

विक्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+क्रम्+क्त] 1. परे तक गया हुआ, डग रक्खे हुए 2. शक्तिशाली, शूरवीर, बहादुर, पराक्रमी 3. विजयी, (अपने शत्रुओं को) परास्त करने वाला,—न्तः 1. शूरवीर, योद्धा 2. सिंह, —तम् 1. पद, डग 2. घोड़े की सरपट चाल 4. शूरवीरता, बहादुरी, पराक्रम।

विक्रान्तिः (स्त्री०) [वि+क्रम्+क्तिन्] 1. कदम रखना, डग भरना 2. घोड़े की सरपट चाल 3. शूरवीरता बहादुरी, पराक्रम।

विक्रान्तृ (वि०) [वि+क्रम्+तृच्] बहादुर, विजयी, पुं० सिंह।

विक्रिया [वि+कृ+श+टाप्] 1. परिवर्तन, सुधार, बदलना—श्मश्रुप्रवृद्धिजनिताननविक्रियान्—रघु० १३। ७१, १०।१७ 2. विक्षोभ, उत्तेजना, उद्वेग, जोश आना—अथ तेन निगृह्य विक्रियामभिशप्तः फलमेतदन्वभूत् -कु० ४।४१, ३।३४ 3. क्रोध, गुस्सा, अप्रसन्नता—साधोः प्रकोपितस्यापि मनो नायाति विक्रियाम् —सुभा०, लिंगैर्मुदः संवृतविक्रियास्ते—रघु० ७।३० 4. उलट, अनिष्ट—कु० ६।२९ (विक्रियायै—वैकल्योत्पादनाय 'दोष'—मल्लि) 5. (मोजे इत्यादि) बुनना, आकुंचन वा (भौंहों की) सिकुड़न—भ्रूविक्रियायां विरतप्रसंगैः कु० ३।४७ 6. आकस्मिक आन्दोलन जैसा कि 'रोमविक्रिया' में—विक्रम० १। १२, 'रोमांच होना' 7. अकस्मात् रोगग्रस्तता, बीमारी 8. उल्लंघन, (उचित कर्तव्य का) बिगाड़ देना, रघु० १५।४८। सम०—उपमा दण्डी द्वारा वर्णित उपमा का एक भेद -दे० काव्य० २।४१।

विक्रुष्ट (भू० क० कृ०) [वि+क्रुश्+क्त] 1. चीत्कार किया, चिल्लाया 2. कठोर, क्रूर, निर्दय,—ष्टम्

1. सहायता प्राप्त करने के लिए क्रंदन करना, दुहाई देना 2. गाली ।

विक्रेय (वि०) [वि+क्री+यत्] बेचने के योग्य, (कोई वस्तु) बिक्री कर दी जाने के योग्य ।

विक्रोशनम् [वि+क्रुश्+ल्युट्] 1. चिल्लाना, चीत्कार करना 2. गाली देना ।

विक्लव (वि०) [वि+क्लु+अच्] 1. भयभीत, भड़का हुआ, चौंका हुआ, त्रस्त –आचकांक्ष घनशब्दविक्लवाः– रघु० १९।३८, कु० ४।११ 2. डरपोक –शि० ७।४३, मेघ० ३७ 3. रोगग्रस्त, परास्त –कि० १।६ 6. विक्षुब्ध, उत्तेजित, घबराया हुआ, विह्वल –श० ३।२६ 5. दुःखी, कष्टग्रस्त, संतप्त—शि० १२।६३, कु० ४।३९ 6. ऊबा हुआ, अरुचिवान् –मृगयाविक्लवं चेतः –श० २ 7. हकलानेवाला, लड़खड़ानेवाला – प्रस्थानविक्लवगतेरवलंबनार्था श० ५।३ ।

विक्लिन्न (भू० क० कृ०) [वि+क्लिद्+क्त 1. अत्यंत गीला, पूरी तरह भीगा हुआ 2. मुर्झाया हुआ, सूखा हुआ 3. पुराना ।

विक्लिष्ट (भू० क० कृ०) [वि+क्लिश्+क्त] 1. अत्यंत कष्टग्रस्त, दुःखी 2. घायल, नष्ट किया हुआ, –ष्टम् उच्चारण दोष ।

विक्षत (भू० क० कृ०) [वि+क्षण्+क्त] फाड़ कर अलग अलग किया हुआ, घायल, चोट पहुंचाया हुआ, आघातग्रस्त ।

विक्षावः [वि+क्षु+घञ्] 1. खांसी, छींक आना 2. ध्वनि ।

विक्षिप्त (भू० क० कृ०) [वि+छिप्+क्त] 1. बिखेरा हुआ, इधर उधर फेंका हुआ, छितराया हुआ, डाला हुआ 2. अलग करना, पदच्युत करना 3. भेजा गया, प्रेषित 4. भ्रान्त, व्याकुल, विक्षुब्ध 5. निराकृत (दे० वि पूर्वक क्षिप्) ।

विक्षीणकः (पुं०) 1. शिव के सेवकगण का मुखिया 2. देवसभा ।

विक्षीरः [विशिष्टं विगतं वा क्षीरं यस्य प्रा० ब०] मदार का पौधा ।

विक्षेपः [वि+छिप्+घञ्] 1. इधर-उधर फेंकना, बखेरना 2. डालना, फेंकना 3. कर्तव्य निर्वाह करना (विप० संहार) --रघु० ५।४५ 4. भेजना, प्रेषण 5. ध्यान हटाना, हड़बड़ी, व्याकुलता –मा० १ 6. खटका, भय 7. तर्क का निराकरण 8. ध्रुवीय अक्षरेखा ।

विक्षेपणम् [वि+क्षिप्+ल्युट्] 1, फेंकना, डालना, निकाल बाहर करना 2. प्रेषण, भेजना 3. बखेरना, छितराना 4. हड़बड़ी, व्याकुलता ।

विक्षोभः [वि+क्षुभ्+घञ्] 1. हिलाना, हलचल, आन्दोलन, वीचि° -रघु० १।४३ 2. मन की हलचल, ध्यान हटाना, खलबली 3. द्वन्द्व, संघर्ष ।

विख, विखु, विख्य, विखू, विखृ, विख्र [विगता नासिका यस्य -ब० स० नासिकायाः खु, ख्य, खू, खृ, ख्र वा आदेशः] नासिका से रहित, बिना नाक ।

विखण्डित (भू० क० कृ०) [वि+खण्ड्+क्त] 1. टूटा हुआ, विभक्त किया हुआ 2. दो खण्डों में किया हुआ ।

विखानसः (पुं०) एक प्रकार का साधु ।

विखुरः (पुं०) 1. राक्षस, पिशाच 2. चोर ।

विख्यात (भू० क० कृ०) [वि+ख्या+क्त] 1. प्रख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध, मशहूर 2. नामवर, नामधारी 3. स्वीकृत, माना हुआ ।

विख्यातिः (स्त्री०) [वि+ख्या+क्तिन्] प्रसिद्धि, कीर्ति, यश, नाम ।

विगणनम् [वि+गण्+ल्युट्] 1. गिनना, संगणन, हिसाब लगाना 2. विचारना, विचारविनिमय करना 3. ऋण का परिशोध करना ।

विगत (भू० क० कृ०) [वि+गम्+क्त] 1. जिसने प्रयाण कर लिया है, जो चला गया है, लुप्त 2. जो अलग किया गया है, वियुक्त 3. मृतक 4. विरहित, शून्य, मुक्त (समास में) विगतमदः 5. खोया हुआ 6. धुंधला, अस्पष्ट । सम०—आर्तवा वह स्त्री जिसे बच्चा होना (या रजोधर्म होना) बन्द हो चुका हो,—कल्मष (वि०) निष्पाप, पवित्र,—भी (वि०) निर्भय, निडर, —लक्षण (वि०) भाग्यहीन, अशुभ ।

विगन्धकः [विरुद्धः गंधो यस्य ब० स०] इंगुदी नाम का पेड़ ।

विगमः [वि+गम्+अप्] 1. प्रस्थान करना, अन्तर्धान, समाप्ति, अन्त –चारुनृत्यविगमे च तन्मुखम् रघु० १९।१५, ईतिविगम -मालवि० ५।२०, ऋतु० ६।२२ 2. परित्याग—करणविगमात्–मेघ० ५५(देहत्यागात्) 3. हानि, नाश 4. मृत्यु ।

विगरः (पुं०) 1. नग्न रहने वाला सन्यासी 2. पहाड़ 3. वह पुरुष जिसने भोजन करना त्याग दिया हो ।

विगर्हणम्,–णा [वि+गर्ह्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] निन्दा, कलंक, भर्त्सना, अपशब्द -वेणी० १।१२ ।

विगर्हित (भू० क० कृ०) [वि०+गर्ह्+क्त] 1. निन्दित, फटकारा हुआ, गाली दिया हुआ 2. तिरस्कृत 3. दोषी ठहराया गया, बुरा भला कहा गया, प्रतिषिद्ध 4. नीच, दुष्ट 5. बुरा, बदमाश ।

विगलित (भू० क० कृ०) [वि+गल्+क्त] 1. बूंद बूंद चूआ हुआ, मन्द मन्द निःसृत 2. अन्तर्हित, गया हुआ 3. अधः पतित 4. पिघला हुआ, घुला हुआ 5. तितर-बितर हुआ 6. ढीला किया हुआ, खोला हुआ – विक्रम० ४।१० 7. खुला हुआ, बिखरा हुआ, अस्त-व्यस्त (बाल आदि) (दे० वि पूर्वक 'गल्') ।

विगानम् [विरुद्धं गानं प्रा० स०] 1. निन्दा, भर्त्सना, मान-

हानि, बदनामी 2. परस्पर विरोधी उक्ति, विरोध, असंगति (शांकरभाष्य में पौनःपुन्येन प्रयोग)।

विगाहः [वि+गाह्+घञ्] डुबकी लगाना, स्नान, गोता।

विगीत (भू० क० कृ०) [वि+गै+क्त] 1. निन्दित, बुराभला कहा गया, डांटा फटकारा गया 2. विरोधी, असंगत।

विगीतिः (स्त्री०) [वि+गै+क्तिन्] 1. निन्दा, बुराभला कहना, झिड़कना 2. परस्पर विरोधी उक्ति, विरोध।

विगुण (वि०) [विगतः विपरीतो वा गुणो यस्य ब० स०] 1. गुणों से शून्य, निकम्मा, बुरा -भग० ३।३५, शि० ९।१२, मुद्रा० ६।११ 2. गुणों से हीन 3. बिना रस्सी का -मुद्रा० ७।११।

विगूढ (भू० क० कृ०) [वि+गुह्+क्त] 1. भेद, गुप्त, छिपा हुआ 2. निर्भर्त्सित, निन्दित।

विगृहीत (भू० क० कृ०) [वि०+ग्रह्+क्त] 1. विभक्त, भग्न किया हुआ, विश्लिष्ट किया हुआ, (समास के रूप में) विघटित —विग्रह किया हुआ 2. पकड़ा हुआ 3. मुक़ाबला किया गया, विरोध किया गया (दे० वि पूर्वक ग्रह्)।

विग्रहः [वि०+ग्रह्+अप्] 1. फैलाव, विस्तार, प्रसार 2. रूप, आकृति, शक्ल 3. शरीर—त्रयी विग्रहवत्येव सममध्यात्मविद्यया—मालवि० १।१४, गूढ विग्रहः - रघु० ३।२९, ९।५२, कि० ४।११, १२।४३ 4. पृथक्करण, विघटन, विश्लेषण, वियोजन (यथा समास के घटक पदों को पृथक् पृथक् करना) वृत्त्यर्थ समासार्थ) बोधकं वाक्यं विग्रहः 5. कलह, झगड़ा, (बहुधा प्रणयकलह) विग्रहाच्च शयने पराङ्मुखी- र्नानुनेतुमबलाः स तत्वरे—रघु० १९।३८, ९।४७, शि० ११।३५ 6. संग्राम, शत्रुता, लड़ाई, युद्ध, (विप० संधि) नीति के छः गुणों में से एक दे० गुण 7. अननुग्रह 8. भाग, अंश, प्रभाग।

विघटनम् [वि+घट्+ल्युट्] अलग-अलग करना, बर्बादी, विनाश।

विघटिका [विभक्ता घटिका यया—ब० स०] समय की माप, एक घड़ी का साठवां भाग, पल (या लगभग चौबीस सेकेण्ड के बराबर समय)।

विघटित (भू० क० कृ०) [वि+घट्+क्त] 1. वियुक्त, अलग-अलग किया हुआ 2. विभक्त।

विघट्टनम्,—ना [वि०+घट्ट्+ल्युट्] 1. प्रहार करना, टक्कर मारना 2. घिसना, रगड़ना 3. वियोजन, विगाड़ना, खोलना 5. ठेस पहुंचाना, चोट पहुँचाना।

विघट्टित (भू० क० कृ०) [वि+घट्ट्+क्त] 1. विभक्त किया हुआ, वियुक्त किया हुआ, अलग-अलग किया हुआ, तितर-बितर किया हुआ—भर्तृ० ३।५४ 2. खोला हुआ, ढीला किया हुआ, विवृत किया हुआ 3. रगड़ा हुआ, स्पर्श किया हुआ 4. हिलाया हुआ, बिलोया हुआ 5. चोट पहुँचाया हुआ, आघात किया हुआ।

विघनः [वि+हन्+अप्, घनादेशः] मोंगरी, हथौड़ा।

विघसः [वि+अद्+अप् घसादेशः] 1. आधा चर्वण किया हुआ ग्रास, भोज्य पदार्थ का अवशेष या जूठन—विघसो भुक्तशेषं तु—मनु० ३।२८५, उत्तर० ५।६, मा० ५।१४ 2. भोजन, सम् मोम। सम०—आशः, आशिन् (पुं०) भुक्तशेष या चढ़ावे के जूठन को खाने वाला।

विघातः [वि+हन्+घञ्] 1.विनाश, हटाना, दूर करना—क्रिया दधानां मघवा विघातम्—कि० ३।५२ 2. हत्या, वध 3. बाधा, रुकावट, विघ्न—क्रिया विघाताय कथं प्रवर्तसे—रघु० ३।४४, अध्वरविघातशांतये—१।११ 4. थप्पड़, प्रहार 5. परित्याग करना, छोड़ना। सम० —सिद्धि (स्त्री०) बाधाओं का दूर करना।

विघूर्णित (भू० क० कृ) [वि+घूर्ण्+क्त] लुढ़काया हुआ, दोलायित, (आखें आदि) चारों ओर घुमाई हुई।

विघृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+घृष्+क्त] 1. अत्यंत रगड़ा हुआ, घिसा हुआ 2. पीडित।

विघ्नः (विरलतः नपुं०) [वि+हन्+क] 1. बाधा, हस्तक्षेप, रुकावट, अड़चन—कुतो धर्मक्रियाविघ्नः सतां रक्षितरि त्वयि—श० ५।१४, १।३३, कु० ३।४० 2. कठिनाई, कष्ट। सम०—ईशः,—ईशानः,—ईश्वरः गणेश का विशेषण, °वाहनम् चूहा,—कर,—कर्तृ, कारिन् (वि०) विरोध करने वाला, अवरोध करने वाला—ध्वंसः,—विघातः बाधाओं को दूर करना, —नायकः,—नाशकः, —नाशनः गणेश के विशेषण, —प्रतिक्रिया बाधाओं को दूर करना—रघु० १५।३, —राजः,—विनायकः,—हारिन् (पुं०) गणेश के विशेषण,—सिद्धिः (स्त्री०) बाधाओं को दूर करना।

विघ्नित (त्रि०) [विघ्न+इतच्] बाधायुक्त, अड़चनों से भरा हुआ, अवरुद्ध, रुकावसहित।

विङ्खः (पुं०) घोड़े का खुर।

विच् (जुहो० रुधा० उभ० वेवेक्ति, वेविक्ते, विनक्ति, विंक्ते, विक्त) 1. वियुक्त करना, विभक्त करना, अलग-अलग करना 2. विवेचन करना, विभेद करना, अन्तर पहचानना 3. वञ्चित करना, हटाना (करण० के साथ)—भट्टि १४।१०३, वि–, 1. वियुक्त करना, दूर करना - विविनच्मि दिवः सुरान्—भट्टि ६।३६ 2. अन्तर पहचानना, विवेचन करना 3. निर्णय करना, निश्चय कर, निर्धारण करना—रे खल तव खलु चरितं विदुषामग्रे विविच्य वक्ष्यामि—भामि० १।१०८ 4. वर्णन करना, वर्ताव करना 5. फाड़ देना।

विचकिलः [विच्+क, किल्+क, क० स०] एक प्रकार चमेली, मदन नामक वृक्ष।

विचक्षण (वि०) [वि+चक्ष्+ल्युट्] 1. स्पष्टदर्शी, दीर्घदर्शी, सावधान 2. बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान् —रघु० ५।१९ 3. विशेषज्ञ, कुशल, योग्य—रघु० १३।६९, —णः विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान् आदमी—न दत्वा कस्यचित्कन्यां पुनर्दद्याद्विचक्षणः—मनु० ९।७१ ।

विचक्षुस् (वि०) [विगतं विनष्टं वा चक्षुर्यस्य] अंधा, दृष्टिहीन 2. व्याकुल, उदास ।

विचयः [वि+चि+अप्] 1. खोज, ढूंढ, तलाश—उत्तर० १।२३ 2. छानबीन, तहक़ीकात ।

विचयनम् [वि०+चि+ल्युट्] खोजना, छानबीन करना ।

विर्चाचका [विशेषेण चर्च्यंते पाणिपादस्य त्वक् विदार्यंतेऽनया वि+चर्च्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] खुजली, विसर्पिका, खाज ।

विर्चाचत (वि०) [वि+चर्च्+क्त] लेप किया हुआ, मला हुआ, मालिश किया हुआ ।

विचल (वि०) [वि+चल्+अच्] 1. इधर उधर घूमने वाला, हिलने वाला, थरथराने वाला, लड़खड़ाने वाला, चंचल 2. अभिमानी, घमंडी ।

विचलनम् [वि+चल्+ल्युट्] 1. स्पन्दन 2. व्यतिक्रम 3. अस्थिरता, चंचलता 4. अभिमान ।

विचारः [वि+चर्+घञ्] 1. विमर्श, विनिमय, चिंतन, सोच—विचारमार्गप्रहितेन चेतसा—कु० ५।४२ 2. परीक्षा, विचारविमर्श, गवेषणा, तत्त्वार्थविचार 3. (किसी बात की) जाँच-पड़ताल—मृच्छ० ९।४३ 4. निर्णय, विवेचन, विवेक, तर्कना—विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम् —रघु० २।४७ 5. निश्चय, निर्धारण 6. चयन 7. संदेह, संकोच 8. दूरदर्शिता, सतर्कता । सम०—ज्ञ (वि०) निश्चय करने के योग्य, निर्णायक, —भूः (स्त्री०) 1. न्यायाधिकरण, न्यायासन 2. विशेष कर यम की न्यायासन, —शील (वि०) विचारपूर्ण, सचेत, दूरदर्शी,—स्थलम् 1. न्यायाधिकरण 2. तर्कसंगत चर्चा ।

विचारकः [वि०+चर्+ण्वुल्] छानबीन या तहक़ीक़ात करने वाला, न्यायाधीश ।

विचारणम् [वि+चर्+णिच्+ल्युट्] 1. चर्चा, चिन्तन, परीक्षा, पर्यालोचन, अन्वेषण 2. संदेह, संकोच ।

विचारणा [वि+चर्+णिच्+युच्+टाप्] 1. परीक्षण, विचारविमर्श, गवेषणा 2. पुनर्विचार, सोच-विचार, चिन्तन 3. संदेह 4. दर्शनशास्त्र की मीमांसापद्धति ।

विचारित (भू० क० कृ०) [वि+चर्+णिच्+क्त] 1. सोचा गया, पूछताछ की गई, परीक्षा की गई, विचारविमर्श किया गया 2. निश्चित, निर्धारित ।

विचिः (पुं०, स्त्री०) **विचीः** (स्त्री०) [विच्+इन् स च कित्, विचि+ङीष्] लहर, तरंग ।

विचिकित्सा [वि+कित्+सन्+अ+टाप्] 1. सन्देह, शक 2. भूल, चूक ।

विचित (भू० क० कृ०) [वि+चि+क्त] खोजा, तलाशी ली गई ।

विचितिः (स्त्री०) [वि+चि+क्तिन्] ढूंढना, खोज, तलाश करना ।

विचित्र (वि०) [विशेषेण चित्रम्, प्रा० स०] 1. रंग-बिरंगा, चितकबरा, चित्तीदार, धब्बेदार 2. नानाविध, बहुविध 3. रंगलिप्त 4. सुन्दर, मनोहर—क्वचिद्विचित्रं जलयंत्रमंदिरम्—ऋतु० १।२ 5. आश्चर्ययुक्त, अचंभे वाला, अजीब—हतविधिलसितानां ही विचित्रो विपाकः—शि ११।६४, त्रम्—1. बहुरङ्गी रङ्ग 2. आश्चर्य । सम०—अंग (वि०) चितकबरे शरीर वाला, (—गः) 1. मोर 2. व्याघ्र,—देह (वि०) मनोहर शरीर वाला (हः) बादल,—रूप (वि०) विविध प्रकार का,—वीर्यः एक चन्द्रवंशी राजा का नाम, (यह सत्यवती नामक पत्नी से उत्पन्न राजा शन्तनु का एक पुत्र तथा भीष्म का सौतेला भाई था । जब निस्सन्तानावस्था में इसकी मृत्यु हो गई तो इसकी माता सत्यवती ने अपने पुत्र (विवाह होने से पहले ही उत्पन्न) व्यास को बुलाया और नियोग की विधि से विचित्रवीर्य के नाम पर सन्तानोत्पादन के लिए प्रार्थना की । व्यास ने माता की आज्ञा का पालन किया और फलतः अम्बिका तथा अम्बालिका (उसके भाई की विधवा पत्नियाँ) में क्रमशः धृतराष्ट्र और पांडु का जन्म हुआ) ।

विचित्रकः [विचित्र+कप्] भोजपत्र का पेड़,—कम् आश्चर्य, ताज्जुब, अचम्भा ।

विचिन्वत्कः [वि+चि+शतृ+कन्] 1. खोज 2. गवेषणा 3. शूरवीर ।

विचीर्ण (वि०) [वि+चृ+क्त] 1. अधिकृत, व्याप्त 2. प्रविष्ट ।

विचेतन (वि०)[विगता चेतना यस्य —प्रा० ब०] 1.चेतनारहित, निर्जीव, अचेतन, मृतक 2. प्राणहीन ।

विचेतस् (वि०) [विगतं चेतो यस्य—प्रा० ब०] 1. संज्ञाहीन, मूढ, अज्ञानी 2. व्याकुल, घबड़ाया हुआ, उदास ।

विचेष्टा [विशिष्टा चेष्टा प्रा० स०] प्रयत्न, उद्यम, कोशिश ।

विचेष्टित (भू० क० कृ०) [वि+चेष्ट्+क्त] 1. उद्योग किया गया, कोशिश की गई, संघर्ष किया गया 2. परीक्षण किया गया, गवेषणा की गई 3. दुष्कृत, मूर्खतापूर्वक किया गया,—तम् 1. कर्म, कार्य 2. प्रयत्न, आन्दोलन, उद्योग, साहसिक कार्य 3. भावभंगी 4. कार्यकरण, संवेदना, खेल—विक्रम० २।९ 5. कूट प्रबन्ध, षड्यन्त्र ।

विच्छ् i (तुदा० पर० विच्छति—विच्छयति-ते भी—) जाना, हिलना-जुलना ।

ii (चुरा० उभ० विच्छयति-ते) 1. चमकना 2. बोलना।

विच्छन्दः, विच्छन्दकः [विशिष्टः छन्दोऽभिप्रायो यस्मिन् —ब० स०. पक्षे कन् च] महल, विशालभवन जिसमें कई खण्ड या मञ्जिल हों।

विच्छर्दकः [वि+छृद्+ण्वुल्] महल, प्रासाद, दे० ऊ० 'विच्छंद'।

विच्छर्दनम् [वि+छृद्+ल्युट्] कै करना, उलटी करना, उगलना।

विच्छर्दित (भू० क० कृ०) [वि०+छृद्+क्त] 1. कै किया हुआ, उगला हुआ 2. जिसकी अवज्ञा की गई हो, जिसकी उपेक्षा की गई हो 3. टूटा-फूटा, न्यूनीकृत।

विच्छाय (वि०) [विगता छाया यस्य—प्रा० ब०] निष्प्रभ, धुन्धला,—रत्न० १।२६,—यः मणि, रत्न।

विच्छित्तिः (स्त्री०) [वि+छिद्+क्तिन्] 1. काट डालना, फाड़ देना—भर्तृ० ३।११ 2. बांटना, अलग-अलग करना 3. अन्तर्धान, अनुपस्थिति, लोप 4. विराम 5. शरीर को उवटन या रङ्गलेप से रङ्गना, रङ्ग-चित्रण, महावर—श० ७।५, शि० १६।८४ 6. सीता (घर आदि की) हद 7. कविता में विराम, यति 8. विशेष प्रकार की शृङ्गारप्रिय भावभंगिमा, जिसमें वेशभूषा के प्रति उपेक्षा भी सम्मिलित हो (अपने व्यक्तिगत सौन्दर्य के अभिमान के कारण)—स्तोकाप्याकल्परचना विच्छित्तिः कांतिपोषकृत्—सा० द० १३८।

विच्छिन्न (भू० क० कृ०) [वि+छिद्+क्त] 1. फाड़ा हुआ, काटा हुआ 2. तोड़ा हुआ, पृथक् किया हुआ, विभक्त, वियुक्त—अर्धे विच्छिन्नम्—श० १।९ 3. हस्तक्षेप किया गया, रोका गया 4. अन्त किया गया, बन्द किया गया, समाप्त किया गया 5. चितकबरा 6. गुप्त 7. उवटन आदि रंगलेप से पोता गया (दे० वि पूर्वक छिद्)।

विच्छुरित (भू० क० कृ०) [विच्छुर्+क्त] 1. ढका गया, ऊपर ले फैलाया गया, पोता गया 2. जड़ा गया 3. लीपा गया, पोता गया।

विच्छेदः [वि+छिद्+घञ्] 1. काट डालना, काटना, विभक्त करना, वियोग—मा० ६।११ 2. तोड़ना—शि० ६।५१ 3. रोक, हस्तक्षेप, विराम, बन्द कर देना—विच्छेदमाप भुवि यस्तु कथाप्रबंधः का०, पिंडविच्छेददर्शिनः—रघु० १।६६ 4. हटाना, प्रतिषेध 5. फूट अनबन 6. पुस्तक का अनुभाग या परिच्छेद 7. अन्तराल, अवकाश।

विच्युत (भू० क० कृ०) [वि+च्यु+क्त] 1. अधः पतित, नीचे गिरा हुआ 2. विस्थापित, पातित 3. व्यतिक्रांत, पथविचलित।

विच्युतिः (स्त्री०) [वि+च्यु+क्तिन्] 1. अधः पतन, पृथक् होना, वियोग 2. ह्रास, क्षय, पतन 3. विचलन 4. गर्भस्राव, असफलता जैसा कि 'गर्भविच्युति' में।

विज् i (जुहो० उभ० वेवेक्ति, वेविक्ते, विक्त) 1. वियुक्त करना, विभक्त करना 2. भेद करना, अन्तर पहचानना, विवेचन करना (प्रायः वि पूर्वक, तथा विपूर्वक विच् के समान)।

ii (तुदा० आ०, रुधा० पर० विजते, विनक्ति, विग्न) 1. हिलना, कांपना 2. विक्षुब्ध होना, भय से कांपना 3. डरना, भयभीत होना—चक्रंद विग्ना कुररीव भूयः—रघु० १४।६८ 4. दुखी होना, कष्टग्रस्त होना, प्रेर०—(वेजयति—ते) त्रास देना, डराना, आ—, डरना, उद्—, भयभीत होना, डरना (प्रायः अपा० के साथ, कभी कभी संबं० के साथ)—तीक्ष्णादुद्विजते—मुद्रा० ३।५, यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः—भग० १२।१५, भट्टि० ७।९२ 2. खिन्न या कष्टग्रस्त होना, दुःखी होना—न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम्—भग० ५।२० 3. ऊबना (अपा० के साथ) जीवितादुद्विजमानेन—मा० ३, मनो नोद्विजते तस्य दहतोऽयमहर्निशम्, उद्विनक्ति तु संसारादसारात्तत्त्ववेदिनः—कवि० 4. डराना, कष्ट देना, (प्रेर०)—1. कष्ट देना, तंग करना—कु० १।५, ११ 2. डराना।

विजन (वि०) [विगतो जनो यस्मात्—ब० स०] अकेला, सेवानिवृत्त, एकाकी,—नम् एकान्त स्थान, सुनसान स्थान (विजने निजी रूप से)।

विजननम् [वि+जन्+ल्युट्] जन्म, प्रसूष्टि, प्रसव।

विजन्मन् (वि० या पुं०) [विरुद्धं जन्म यस्य—प्रा० ब०] हरामी, जो अवैधरूप से उत्पन्न हुआ है।

विजपिलम् [विज्+क, पिल्+क, कर्म० स] गारा, कीचड़।

विजयः [वि+जि+घञ्] 1. जीतना, हराना, परास्त करना 2. जीत, फ़तह, जय यात्रा—कि० १०।३५, रघु० १२।४४, कु० ३।१९, श० २।१४ 3. देवताओं का रथ, दिव्य रथ 4. अर्जुन का नाम—महा० नाम की व्याख्या करता है—अभिप्रयामि संग्रामे यदहं युद्धदुर्मदान्, नाजित्वा विनिवर्तामि तेन मां विजयं विदुः 5. यम का विशेषण 6. बृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष 7. विष्णु के सेवक का नाम। सम०—**अभ्युपायः** विजय का साधन या उपाय,—**कुंजरः** लड़ाई का हाथी,—**छंदः** पाँचसी लड़ी का हार,—**डिंडिमः** सेना का विशाल ढोल,—**नगरम्** एक नगर का नाम,—**मर्दलः** एक विशाल सैनिक ढोल,—**सिद्धिः** (स्त्री०) सफलता, जीत, फतह।

विजयंतः (पुं०) इन्द्र का नाम।

विजया [विजय+टाप्] 1. दुर्गा का नाम 2. उसकी सेवि-

काओं में से एक —मुद्रा० १।१ 3. एक विशेष विद्या जो विश्वामित्र ने राम को सिखाई थी—भट्टि० २।२१ 4. भांग 5. एक उत्सव का नाम=विजयोत्सव, दे० नी० 6. हरीतकी। सम०—उत्सवः दुर्गादेवी के सम्मान में उत्सव जो आश्विन शुक्ला दशमी के दिन मनाया जाता है, —दशमी आश्विनशुक्ला दशमी।

विजयिन् (पुं०) [वि+जि+इनि] विजेता, जीतने वाला।

विजरम् [विगता जरा स्मात् —प्रा० ब०] वृक्ष का तना।

विजल्पः [वि०+जल्प्+घञ्] 1. वाल कलरव, ऊटपटांग या मूर्खतापूर्ण बात 2. सामान्य वार्ता 3. दुर्भावनापूर्ण या विद्वेषपूर्ण भाषण।

विजल्पित (भू० क० कृ०)] वि+जल्प्+क्त] 1. कहा गया, जिससे बातें की गई 2. भोली भाली बात, बाल सुलभ तुतलाहट।

विजात (भू० क० कृ०) [विरुद्धं जातं जन्म यस्य—प्रा० ब०] 1. नीच कुलोत्पन्न, वर्णसंकर 2. उत्पन्न, जन्मा हुआ 3. रूपान्तरित,—ता माता, मातृका वह स्त्री जिसके अभी सन्तान हुई हो।

विजातिः (स्त्री०) [विभिन्ना जातिः प्रा० स०] 1. भिन्न मूल या जाति 2. भिन्न प्रकार, जाति, या कुटुम्ब।

विजातीय (वि०) [विजाति+छ] 1. भिन्न प्रकार या जाति का, असमान, विषम 2. भिन्न वर्ण या जाति का 3. मिली जुली जाति का।

विजिगीषा [वि+जि+सन्+अ+टाप्] 1. जीतने की या विजय प्राप्त करने की इच्छा 2. आगे बढ़ने की इच्छा, प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता, महत्त्वाकांक्षा।

विजिगीषु (वि०) [वि+जि+सन्+उ] 1. जीत का इच्छुक, विजय करने की इच्छा वाला—यशसे विजिगीषूणां—रघु० १।७ 2. प्रतिस्पर्धी, महत्वाकांक्षी,—षुः 1. योद्धा, शूरवीर 2. प्रतिद्वन्द्वी, झगड़ालू, प्रतिपक्षी।

विजिज्ञासा [वि+ज्ञा+सन्+आ] स्पष्ट जानने की इच्छा।

विजित (भू० क० कृ०) [वि+जि+क्त] परास्त किया हुआ, जीता हुआ, जिसके ऊपर विजय प्राप्त की गई हो, हराया हुआ। सम० —आत्मन् (वि०) जिसने अपनी वासनाओं का दमन कर दिया है, जितेन्द्रिय, —इन्द्रिय (वि०) जिसने इन्द्रियों का दमन कर दिया है, या नियन्त्रण कर लिया है।

विजितिः (स्त्री०) [वि+जि+क्तिन्] जीत, फ़तह, विजय—काव्या० ३।८५।

विजिलः,-नम् (लः,—लम्) [विज्+इनच्, इलच् वा] चटनी (कांजी मिश्रित)।

विजिह्म (वि०) [विशेषेण जिह्मः—प्रा० स०] 1. कुटिल मुड़ा हुआ, मुड़ा हुआ—कि० १।२१, रघु० १९।३५ 2. बेईमान।

विजुलः [विज्+उलच्] शाल्मलि या सेमल का पेड़।

विजृम्भणम् [वि+जृम्भ्+ल्युट्] 1. मुंह फाड़ना, जम्भाई लेना 2. बौर आना, कली आना, खिलना, उन्मुक्त होना, —वनेषु सायंतनमल्लिकानां विजृम्भणोद्गंधिषु कुड्मलेषु—रघु० १६।४७ 3. दिखलाना, प्रदर्शन करना, खोलना 4. फैलाना 5. मनोरंजन, आमोद-प्रमोद, रंगरेलियाँ।

विजृम्भित (भू० क० कृ०) [वि०+जृम्भ्+क्त] 1. मुंह फाड़ा, जम्भाई ली—मृच्छ० ५।५१ 2. उद्घाटित, विकसित, फैलाया हुआ 3. प्रदर्शित, दिखाया गया, प्रकट किया गया—रघु० ७।४२ 4. दर्शन दिये गये 5. खेला गया,—तम् 1. क्रीड़ा, मनोरंजन 2. अभिलाषा, इच्छा 3. प्रदर्शन, प्रदर्शनी—अज्ञानविजृंभितमेतत् 4. कृत्य, कर्म, आचरण—मा० १०।२१।

विज्जनम्,-लम् [विध्+जन् (जड् -डलयोरभेदः) +अच्] 1. एक प्रकार की चटनी, दे० 'विजुल' 2. तीर, बाण।

विज्जुलम् (नपुं०) दारचीनी।

विज्ञ (वि०) [वि+ज्ञा+क] 1. जानने वाला, प्रतिभावान्, बुद्धिमान्, विद्वान् 2. चतुर, कुशल, प्रवीण, —ज्ञः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष।

विज्ञप्त (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञप्+क्त] सादर कहा गया, प्रार्थित।

विज्ञप्तिः [वि+ज्ञप्+क्तिन्] 1. सादर उक्ति या समाचार, प्रार्थना, अनुरोध 2. घोषणा।

विज्ञात (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञा+क्त] 1. विदित, जाना हुआ, प्रत्यक्ष ज्ञान किया हुआ 2. विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध।

विज्ञानम् [वि+ज्ञा+ल्युट्] 1. ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा, समझ,—विज्ञानमयः कोशः, 'प्रज्ञा का म्यान' (आत्मा के पाँच कोशों में से पहला) 2. विवेचन, अन्तर पहचानना 3. कुशलता, प्रवीणता—प्रयोगविज्ञानम् —श० १।२ 4. सांसारिक या लौकिक ज्ञान, सांसारिक अनुभव से प्राप्त ज्ञान (विप० 'ज्ञानम्' ब्रह्म या परमात्मविषयक जानकारी)—भग० ३।४१, ७।२, (भग० का समस्त सातवाँ अध्याय ज्ञान और विज्ञान की व्याख्या करता है) 5. व्यवसाय, नियोजन 6. संगीत। सम० ईश्वरः याज्ञवल्क्य स्मृति की मिताक्षरा नामक टीका का प्रणेता, पादः व्यास का नाम, मातृकः बुद्ध का विशेषण, वादः ज्ञान का सिद्धान्त, बुद्ध द्वारा सिखाया गया सिद्धान्त।

विज्ञानिक (वि०) [विज्ञान+ठन्] बुद्धिमान्, विद्वान् दे० 'विज्ञ'।

विज्ञापकः [वि+ज्ञा+णिच्+ण्वुल्, पुकागमः] 1. सूचना देने वाला 2. अध्यापक, शिक्षक।

विज्ञापनम्,—ना [वि+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. शिष्ट उक्ति या संवाद, प्रार्थना, अनुरोध—कालप्रयुक्ता खलु कार्यविद्भिर्विज्ञापना भर्तृषु सिद्धिमेति —कु० ७।९३, रघु० १७।४० 2. सूचना, वर्णन 3. शिक्षण ।

विज्ञापित (भू० क० कृ०) [वि+ज्ञा+णिच्+क्त, पुकागमः] 1. शिष्टतापूर्वक कहा हुआ या संवाद दिया हुआ 2. प्रार्थित 3. संसूचित 4. शिक्षित ।

विज्ञाप्तिः [वि+ज्ञा+णिच्+क्तिन्, पुकागमः] दे० 'विज्ञप्ति' ।

विज्ञाप्यम् [वि+ज्ञा+णिच्+यत्, पुकागमः] प्रार्थना —उत्तर० १ ।

विज्वर (वि०) [विगतो ज्वरो यस्य—ब० स०] ज्वर से मुक्त, चिन्ता या दुःख से मुक्त ।

विंजामरम् (नपुं०) आँखों की सफेदी, नेत्रों का श्वेत भाग ।

विंजोलिः,—ली (स्त्री०) [विज्+उल, पृषो० साधुः] रेखा, पंक्ति ।

विट् (भ्वा० पर० वेटति) 1. ध्वनि करना 2. अभिशाप देना, दुर्वचन कहना ।

विटः [विट्+क] 1. जार, यार, उपपति—मा० ८।८, शि० ४।४८ 2. लंपट, कामुक 3. (नाटकों में) किसी राजा या दुश्चरित्र युवक का साथी, किसी ऐसी वेश्या का साथी, जिसको गायन, संगीत तथा कविता निर्माण की कला में कुशलता प्राप्त हो, नायक पर आश्रित परान्नभोजी जो विदूषक का कार्य करे—दे० मृच्छ० अंक १, ५ व ८) परिभाषा के लिए दे० सा० द० ७८ 4. धूर्त, ठग 5. गांडू, इल्लती 6. चूहा 7. खैर या खदिर का पेड़ 8. नारंगी का पेड़ 9. पल्लवयुक्त शाखा । सम० —**माक्षिकम्** एक प्रकार का खनिजपदार्थ, सोनामाखी, —**लवणम्** रोगनाशक नमक ।

विटङ्कः [विशेषेण टंकयते वध्यते इति—वि+टंक्+घञ्] 1. चिड़िया-घर, कबूतर का दरबा 2. सबसे ऊंचा सिरा, कलश य कंगूरा, ऊंचाई—अयमेव महीधर विटंकः—मा० १०, विक्रम० ५।७७ ।

विटङ्ककः [विटंक+कन्] दे० विटंक ।

विटङ्कित (वि०) [वि+टंक्+क्त] चिह्नित, मुद्रांकित ।

विटपः [विटं विस्तारं वा पाति पिबति—पा+क] 1. शाखा, (लता या वृक्ष की) टहनी —कोमलविटपानुकारिणौ बाहू —श० १।२१, ३१, यदनेन तरुनं पातितः क्षपिता तद्विटपाश्रिता लता—रघु० ८।४७, शि० ४।४८, कु० ६।४१ 2. झाड़ी 3. नया अंकुर या किसलय—शि० ७।५३ 4. गुल्म, झुण्ड, झुरमुट 5. विस्तार 6. अंडकोष पटल ।

विटपिन् (पुं०) [विटप+इनि] 1. वृक्ष परितो दृष्टाश्च विटपिनः सर्वे भामि० १।२१, २९ 2. वटवृक्ष, गूलर । सम०—**मृगः** बन्दर, लंगूर ।

विट्ट (ठ्ठ) लः (पुं०) विष्णु या कृष्ण का रूप (बंबई प्रान्त में स्थित पंढरपुर में इस रूप की पूजा होती है) ।

विठङ्क (वि०) बुरा, दुष्ट, अधम, नीच ।

विठरः (पुं०) बृहस्पति का नाम ।

विड् (भ्वा० पर० वेडति) 1. अभिशाप देना, दुर्वचन कहना, बुरा भला कहना 2. जोर से चिल्लाना ।

विडम् [विड्+क] एक प्रकार का कृत्रिम नमक ।

विडंगः,—गम् [विड्+अंगच्] एक प्रकार का शाक, वायविडंग (कृमिनाशक औषधि के रूप में बहुधा प्रयुक्त) ।

विडम्बः [विडम्ब्+अप्] 1. नकल 2. दुःखी करना, तंग करना, कष्ट देना ।

विडम्बनम्,—ना [विडंब्+ल्युट्] 1. नकल 2. छद्मवेश, छलमुद्रा 3. धोखेबाजी, जालसाजी 4. क्लेश, संताप 5. पीडित करना, दुःख देना 6. निराश करना 7. मजाक, उपहास, परिहासविषय—इयं च तेऽन्या पुरतो विडंबना—कु०५।७०, असति त्वयि वारुणीमदः प्रमदानामधुना विडंबना—४।१२ ।

विडंबित (भू० क० कृ०) [विडंब्+क्त] 1. अनुकरण किया गया, नकल किया गया, परिहास किया गया, मजाक बनाया गया 3. ठगा गया 4. क्लेश पहुंचाया गया, संतप्त किया गया 5. हताश किया गया 6. नीच, कमीना, दीन ।

विडारकः [विडाल+कन्, लस्य रः] विलाव ।

विडालः, विडालकः (पुं०) दे० बिडाल, बिडालक ।

विडीनम् [वि+डी+क्त] पक्षियों की एक उड़ानविशेष । दे० डीन ।

विडुलः [विड्+कुलन्] एक प्रकार की बेंत ।

विडूरजम् [विजुर+जन्+ड] वैदूर्य, नीलम ।

विडौ (डो) जस् (पुं०) [विट् व्यापकम् ओजो यस्य —ब० स०] इन्द्र का नाम, दे० 'बिडौजस्' ।

वितंसः [वि+तंस्+घञ्] 1. पक्षियों का पिंजरा 2. रस्सी, शृंखला, जाल या जंजीर आदि जिनसे बनैले पशु-पक्षी क़ैद किये जाय ।

वितंडः [वि+तंड्+अच्] 1. हाथी 2. एक प्रकार का ताला या चटखनी ।

वितंडा [वितंड+टाप्] 1. सदोष आक्षेप, निराधार छिद्रान्वेषण, ओछा तर्क, निरर्थक तर्कवितर्क—स (जल्पः) प्रतिपक्षस्थापनाहीनो वितंडा—गौत० 2. तू-तू-मैं-मैं, दोषपूर्ण आलोचना 3. चम्मच, स्रुवा 4. गुग्गुल, धूप ।

वितत (भू० क० कृ०) [वि+तन्+क्त] 1. फैलाया

हुआ, विस्तृत किया हुआ, बिछाया हुआ 2. आयत, विशाल, विस्तीर्ण 3. सम्पन्न, निष्पन्न, कार्यान्वित —विततयज्ञः श० ७।३४ 4. ढका हुआ 5. प्रसृत —दे० वि पूर्वक तन्, – तम् कोई भी ऐसा उपकरण जिसमें तार लगे हों वीणा आदि। सन धन्वन् (वि०) जिसने अपने धनुप को पूरी तरह तान लिया है।

विततिः (स्त्री०) [वि+तन्+क्तिन्] 1. विस्तार, प्रसार 2. परिमाण, संग्रह, गुल्म, झुण्ड 3. रेखा, पंक्ति–मा० ९।४७।

वितथ (वि०) [वि+तन्+क्थन्] 1. झूठ, मिथ्या—आज न्मनो न भवता वितयं विलोक्तम् –वेणी ३।१३, ५।४१, रघु० ९।८ 2. व्यर्थ, निरर्थक–यथा 'वितय-प्रयत्न' में।

वितथ्य (वि०) [वितथ+यत्] मिथ्या, दे० ऊपर।

वितद्रुः (स्त्री०) [वि+तन्+रु, दुट्] पंजाब की एक नदी का नाम, वितस्ता या झेलम नदी।

वितंतुः (पुं०) अच्छा घोड़ा स्त्री० विधवा।

वितरणम् [वि+तृ+ल्युट्] 1. पार जाना 2. उपहार, दान 3. छोड़ देना, त्याग करना, तिलांजलि देना।

वितर्कः [वि+तर्क्+अच्[1. युक्ति, दलील, अनुमान 2. अन्दाज अटकल, कल्पना, विश्वास –शिरीषपुष्पा-धिकसौकुमार्यौ बाहू तदीयाविति मे वितर्कः—कु० १।४१ 3. उद्भावन, चिन्तन –भर्तृ० ३।४५ 4. सन्देह, कि० ४।५, १३।२ 5. विचारविनिमय, विचारविमर्श।

वितर्कणम् [वि+तर्क्+ल्युट्] 1. तर्क करना 2. अटकल करना, अन्दाज लगाना 3. सन्देह 4. तर्क वितर्क।

वितर्दिः,—र्दी वितर्दिका, (स्त्री०) [वि+तर्द्+इन्, वितर्दि+ङीप्, वितर्दि+कन्+टाप्] 1. आंगन में बना हुआ चौकोर चबूतरा 2. छज्जा, बरामदा।

वितर्द्धिः,—र्द्धी, वितर्द्धिका (स्त्री०) दे० वितर्दि आदि।

वितलम् [विशेषेण तलम्—प्रा०स०] पृथ्वी के नीचे स्थित सात तलों में से दूसरा—दे० पाताल या लोक।

वितस्ता (स्त्री०) पंजाब की एक नदी जिसको यूनानी Hydaspes कहते हैं तथा जो आजकल 'झेलम' या 'वितस्ता' के नाम से विख्यात है।

वितस्तिः [वि+तस्+ति] बारह अंगुल की लम्बाई की माप (हाथ को पूरा फैला कर अंगूठे से कन्नो अंगुली तक की दूरी)।

वितान (वि०) [वि+तन्+घ्] 1 खाली, रीता 2. सार-3. हतोत्साह, उदास—रघु० ४।८६ 4. बुद्धू, जड 5. दुष्ट, परित्यक्त नः, नम् 1. फैलाना, प्रसार करना, विस्तार करना—शि० ११।२८ 2. शामियाना, चंदोवा –विद्युल्लेखाकनकरुचिरश्रीवितानं ममाभ्रम् —विक्रम० ४।१३, रघु० १९।३९, कि० ३।४२, शि० ३।५० 3. गद्दी 4. संग्रह, परिमाण, समवाय –कि० १७।६१, मा० ६।५ 5. यज्ञ, आहुति—वितानेष्वप्येवं तव मम च सोमे विधिरभूत—वेणी० ६।३०, ३।१६, शि० १४।१० 6. यज्ञ की वेदी 7. ऋतु, मौसम, –नम् अवकाश, विश्राम।

वितानकः, कम् [वितान+कन्] 1. प्रसार 2. ढेर, परिणाम, संग्रह राशि शि० ३।६ 3. शामियाना, चंदोवा 4. माड नामक वृक्ष।

वितीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+तॄ+क्त] 1. पार किया हुआ, पास से गुजरा हुआ 2. दिया हुआ, अर्पित, प्रदत्त शि० ७।६७, १७।६५ 3. नीचे गया हुआ, अवतरित रघु० ६।७७ 4. ढोया गया 5. दमन किया गया, जीत लिया गया (दे० वि पूर्वक तृ)।

वितुन्नम् [वि०+तुद्+क्त] 1. 'सुनिषण्णक' नामक शाक, सुसना 2. शैवाल नाम का पौधा, सेवार।

वितुन्नकम् [वितुन्न+कन्] 1. धनिया 2. तूतिया, –कः तामलकी नामक पौधा।

वितुष्ट (भू० क० कृ०) [वि+तुष्+क्त] असन्तुष्ट, अप्रसन्न, सन्तोष से शून्य।

वितृष्ण (वि०) [विगता तृष्णा यस्य प्रा० ब०] इच्छा से मुक्त, सन्तुष्ट।

वित्त् (चुरा० उभ० वित्तयति—ते, कुछ के मतानुसार वित्तापयति—ते भी) पुरस्कार देना, दान देना।

वित्त (भू० क० कृ०) [विद् लाभे+क्त] 1. पाया, खोजा 2. लब्ध, अवाप्त 3. परीक्षित, अनुसंहित 4. विख्यात, प्रसिद्ध, – त्तम् 1. धन दौलत जायदाद, संपत्ति, द्रव्य 2. शक्ति। सम०— आगमः,—उपार्जनम् धन का अधिग्रहण,—ईशः कुबेर का विशेषण, भग० १०।२३, मनु ७।४, – दः दानी, दाता,—मात्रा संपत्ति।

वित्तवत् (वि०) [वित्त+मतुप्] धनवान्, दौलतमंद।

वित्ति (स्त्री०) [विद्+क्तिन्] 1. ज्ञान 2. निर्णय, विवेचन, चिन्तन 3. लाभ, अधिग्रहण 4. संभावना।

वित्रासः [वि+त्रस्+घञ्] भय, खटका, त्रास या डर।

वित्सनः [क्विद्+क्विप्, सन्+अच्] बैल, सांड।

विथ् (भ्वा० आ० वेथते) प्रार्थना करना, निवेदन करना।

विथुरः [व्यथ्+उरच्, संप्रसारणं च] 1. राक्षस 2. चोर।

विद् (अदा० पर० वेत्ति या वेद, विदित, इच्छा० विवि-दिषति) 1. जानना, समझना, सीखना, मालूम करना, निश्चय करना, खोजना अवैल्लवणतोयस्य स्थिता दक्षिणतः कथम्—भट्टि० ८।१०६, तं मोहांधः कथमय ममुं वेत्तु देवं पुराणम् –वेणी० १।२३, ३।३९, श० ५।२७, भग० ४।३५, १८।१ 2. महसूस करना, अनुभव करना मुद्रा० ३।४ 3. मुंह ताकना, सम्मान करना, मानना, जाना, समझना विद्धि व्याधिव्याल ग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् – मोह० ५, भग०

२।१७, रघु० ३।३९, मनु० १।३३, कु० ६।३०, प्रेर० —(वेदयति - ते) 1. जतलाना, सूचना देना, सूचित करना, अवगत कराना, बताना 2. अध्यापन करना, व्याख्या करना,—वेदार्थंस्वानवेदयत्—सिद्धा० 3. महसूस करना, अनुभव करना—मनु० १२।१३, आ —, (प्रेर०) 1. घोषणा करना, कहना, प्रकथन करना—किमिति नावेदयति अथवा किमावेदितेन—वेणी० १, रघु० १२।५५, कु० ६।२१, भट्टि० ३।४९ 2. प्रदर्शन करना, दिखाना इंगित करना—आवेदयंति प्रत्यासन्नमानंदमग्रजातानि शुभानि निमित्तानि—का० 3. प्रस्तुत करना, देना, नि—, (प्रेर०) 1. बताना, समाचार देना, सूचित करना (संप्र० के साथ)—रघु० २।६८ 2. अपनी उपस्थिति की घोषणा करना—कथ मात्मानं निवेदयामि—श० १ 3. इंगित करना, दिखलाना - दिगंबरत्वेन निवेदितं वसु—कु० ५।७२ 4. प्रस्तुत करना, उपस्थित होना, भेंट चढ़ाना—मनु० २।५१, याज्ञ० १।२७ 5. देख रेख में सौंपना, दे देना, प्रति—(प्रेर०) समाचार देना सूचित करना, सम्—, (आ०) जानना, सावधान होना—भट्टि० ५।३७. ८।१७ 2. पहचानना, (प्रेर०) जतलाना, प्रत्यक्ष ज्ञान कराना —भट्टि० १७।६३।

ii (दिवा० आ० विद्यते, वित्त) होना, विद्यमान होना —अपापानां कुले जाते मयि पापं न विद्यते —मृच्छ० ९।३७, नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः भग० २।१६ (तु० 'अस्')।

iii (तुदा० उभ० विंदति—ते, वित्त) 1. हासिल करना प्राप्त करना, अवाप्त करना, उपलब्ध करना—एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विंदते फलम्—भग० ५।४, याज्ञ० ३।१९२ 2. मालूम करना, खोजना, पहचानना, यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विंदति मातरम्—सुभा०, कु० १।६, मनु० ८।१०९ 3. महसूस करना, अनुभव करना—रघु० १४।५६, भग० ५।२१, ११।२४, १८।४५ 4. विवाह करना—मनु० ९।६९, अनु—, 1. हासिल करना, प्राप्त करना 2. भुगतना, अनुभव करना, महसूस करना —पांथ मंदमते किं वा संतापमनु विंदसि —भामि० २।११२, गीत० ४।

iv (रुधा० आ० विंत्ते, वित्त या विन्न) 1. जानना, समझना 2. मानना, लिहाज करना, समझना—न तृणेह्लीति लोकोऽयं विंत्ते मां निष्पराक्रमम्—भट्टि० ६।३९ 3. मालूम करना, भेंट होना 4. तर्क करना, विमर्श करना 5. परीक्षण करना, पूछताछ करना।

v (चुरा० आ० वेदयते) 1. कहना, प्रकथन करना, घोषणा करना, समाचार देना 2. महसूस करना, अनुभव करना 3. रहना (निम्नांकित श्लोक में धातु के विभिन्न रूपों का उल्लेख है—वेत्ति सर्वाणि शास्त्राणि गर्वस्तस्य न विद्यते, विंत्ते धर्मं सदा सद्भिस्तेषु पूजां च विंदति)।

विद् (वि०) [विद्+क्विप्] (समास के अन्त में) जानने वाला, जानकार, वेदविद् आदि, (पुं०) 1. बुधग्रह 2. विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान मनुष्य - (स्त्री०) 1. ज्ञान 2. समझ, बुद्धि।

विदः [विद्+क] 1. विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान मनुष्य, पंडितजन 2. बुधग्रह, दा 1. ज्ञान, अधिगम 2. समझदारी।

विदंशः [वि+दंश्+घञ्] चटपटा भोजन जिसके खाने से प्यास अधिक लगे।

विदग्ध (भू० क० कृ०) [वि+दह्+क] 1. जला हुआ, आग से भस्म हुआ 2. पका हुआ 3. पचा हुआ 4. नष्ट किया हुआ, गला-सड़ा 5. चतुर, कुशाग्रबुद्धि, निपुण, सूक्ष्मदर्शी 6. धूर्त, कलाभिज्ञ, षड्यंत्रकारी 7. अनजला या अनपचा,—ग्धः 1. बुद्धिमान या विद्वान् पुरुष, विद्याव्यसनी 2. स्वेच्छाचारी,—ग्धा चालाक, चतुर स्त्री, कलाविद् स्त्री।

विदथः [विद्+कथच्] 1. विद्वान् पुरुष, विद्याव्यसनी 2. संन्यासी, मुनि।

विदरः [वि+दृ+अप्] तोड़ना, फटना, विदीर्ण होना, —रम् कांटदारी नाशपाती, कंकारी वृक्ष।

विदर्भाः (पुं०, ब० व०) [विगता दर्भाः कुशा यतः] 1. एक जिले का नाम, आधुनिक बरार—अस्ति विदर्भो नाम जनपदः—दश०, अस्ति विदर्भेषु पद्मपुरं नाम नगरम्—मा० १, रघु० ५।४०, ६०, नै० १।५० 2. विदर्भ के निवासी,—र्भः 1. विदर्भ देश का राजा 2. सूखी या मरुभूमि। सम०—जा,—तनया, —राजतनया,—सुभ्रूः विदर्भ- राज की पुत्री दमयन्ती के विशेषण।

विदल (वि०) [विघट्टितानि दलानि यस्य वि+दल्+क] 1. टुकड़े टुकड़े हुए, आरपार चीरा हुआ 2. खुला हुआ, (फूल आदि) खिला हुआ, —लः 1. विभक्त करना, अलग अलग करना 2. फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना 3. रोटी 4. पहाड़ी आबनूस,—लम् 1. बाँस की खपच्चियों की बनी टोकरी, या लचीली डालियों की बनी बस्तुएँ 2. अनार की छाल 3. टहनी 4. किसी द्रव्य की फांक।

विदलनम् [वि+दल्+ल्युट्] खण्ड खण्ड करना, फाड़ कर अलग अलग करना, काटना, विभक्त करन।

विदारः [वि+दृ+घञ्] 1. फाड़ना, चीरना, खण्ड खण्ड करना 2. संग्राम, युद्ध 3. (किसी नदी बाढ तालाब का) ऊपर से बहना, जलप्लावन।

विदारकः [वि+दृ+ण्वुल्] 1. फाड़ने वाला, बाँटने वाला 2. नदी की धार के मध्य में स्थित वृक्ष या चट्टान

(जो नदी के मार्ग को विभक्त कर दे) 3. किसी शुष्क नदी के पाट में पानी के लिए बनाया गया छिद्र।

विदारणः [वि+दृ+णिच्+ल्युट्] 1. नदी के मध्य में स्थित चट्टान या वृक्ष (जिससे नाव बाँध दी जाय) 2. संग्राम, युद्ध 3. कर्णिकार या कनियर का वृक्ष, —णा संग्राम, युद्ध, —णम् 1. फाड़ना, खण्ड खण्ड करना, चीरना, छिन्न करना, तोड़ना—श्रुतं. सखे श्रवणविदारणं वचः—मुद्रा० ५।६, युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले —गीत० १, कि० १४। ५४, (यहाँ 'विदारण' विशेषण का कार्य करता है) 2. कष्ट देना, सन्ताप देना 3. वध, हत्या।

विदारुः [वि+दृ+णिच्+उ] छिपकली।

विदित (भू० क० कृ०) [विद्+क्त] 1. ज्ञात, समझा हुआ, सीखा हुआ 2. सूचित 3. विश्रुत, विख्यात, प्रसिद्ध—भुवनविदिते वंशे—मेघ० ६ 4. प्रतिज्ञात, इकरार किया हुआ,—तः विद्वान पुरुष, विद्याव्यसनी, —तम् ज्ञान, सूचना।

विदिश् (स्त्री०) [दिग्भ्यो विगता] दो दिशाओं का मध्यवर्ती बिन्दु।

विदिशा (स्त्री०) दशार्ण नामक प्रदेश की राजधानी (वर्तमान भेलसा नगर) तेषां -(दशार्णानां) दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीम् —मेघ० २४ 2. मालवा प्रदेश की एक नदी का नाम 3. =विदिश् दे०।

विदीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+दृ+क्त] 1. फाड़ा हुआ, खण्ड खण्ड किया हुआ, विदारण किया हुआ, फाड़ कर खोला हुआ 2. खोला हुआ, फैलाया हुआ (दे० विपूर्वक 'दृ')।

विदुः [विद्+कु] हाथी के गंडस्थल का मध्य भाग, हाथी का ललाट, (हस्तिकुंभमध्यभागः)।

विदुर (वि०) [विद्+कुरच्] बुद्धिमान्, मनीषी,—रः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष 2. धूर्त आदमी, षड्यन्त्रकारी 3. पाण्डु के छोटे भाई का नाम (जब सत्यवती को ज्ञात हुआ कि व्यास द्वारा उसकी दोनों पुत्रवधुओं से उत्पन्न दोनों पुत्र शारीरिक रूप से सिंहासन के अयोग्य हैं क्योंकि धृतराष्ट्र अन्धा था तथा पाँडु पीला एवं अस्वस्थ था—तो उसने उन्हें एक बार फिर व्यास की सहायता मांगने के लिए कहा। परन्तु व्यास मुनि की तपोमय उग्र दृष्टि से भयभीत होकर बड़ी विधवाने अपनी एक दासी को अपने वस्त्र पहना कर उनके पास भेजा—और यही दासी विदुर की माता बनी। वह अपनी बड़ी बुद्धिमत्ता, सच्चाई और घोर निष्पक्षता के कारण प्रसिद्ध हैं, वह पांडवों से विशेष स्नेह रखते थे, तथा कई बार उन्हें अनेक संकटग्रस्त विपत्तियों से बचाया)।

विदुलः [वि+दुल्+क] 1. एक प्रकार का कान्ना, बेंत 2. लोबान की तरह का एक सुगंधित गंधरस।

विदून (भू० क० कृ०) [वि+दू+क्त] कष्टग्रस्त, संतप्त, दुःखी (दे० वि पूर्वक 'दु')।

विदूर (वि०) [विशेषण दूरः प्रा० स०] जो बहुत दूर हो, दूरस्थित—सरिद्विदूरांतरभावतन्वी—रघु० १३।४८, —रः पहाड़ का नाम जहाँ से वैदूर्यमणि निकलती है—विदूरभूमिर्नवमेघशब्दादुद्भिन्नया रत्नशलाकयेव—कु० १।२४, दे० इस पर तथा शि० ३।४५ पर मल्लि० **विदूरम्, विदूरेण, विदूरतः, विदूरात्** शब्द क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'दूर से' 'दूरी पर' 'दूर' अर्थ को प्रकट करते हैं। सम० —ग (वि०) दूर दूर तक फैला हुआ,—जम् वैदूर्य मणि।

विदूषक (वि०) (स्त्री०—की) [विदूषयति स्वं परं वा—वि+दूष्+णिच्+ण्वुल्] 1. दूषित करने वाला, मलिन करने वाला, छूत फैलाने वाला, भ्रष्ट करने वाला 2. बदनाम करने वाला, गाली-गलौज बकने वाला 3. रसिक, मसखरा, ठिठोलिया,—कः 1. हंसोड़, भांड, परिहासक 2. विशेषतः नाटक में नायक का दिल्लगीबाज साथी और अन्तरंग मित्र जो अपनी अनोखी वेशभूषा, बातचीत, हावभाव, मुखमुद्रा आदि से तथा अपने आपको परिहास का पात्र बना कर उल्लास में वृद्धि करता है, सा० द० ७९ पर दी गई परिभाषा —कुसुमवसंताद्यभिधः कर्मवपुर्वेशभाषाद्यैः, हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात्स्वकर्मज्ञः 3. स्वेच्छाचारी, लंपट।

विदूषणम् [वि+दूष्+ल्युट्] 1. मलिनीकरण, भ्रष्टाचार 2. दुर्वचन, झिड़की, परिवाद।

विदृतिः [वि+दृ+क्तिन्] सीवन, सन्धि।

विदेशः [विप्रकृष्टो देशः प्रा० स०] दूसरा देश, परदेश—भजते विदेशमधिकेन जितस्तदनुप्रवेशमथवा कुशलः—शि० ९।४८। सम० —ज (वि०) विदेशी, परदेशी।

विदेशीय (वि०) [विदेश+छ] परदेशी, विदेशी।

विदेहाः (पुं० ब० व०) [विगतो देहो देहसंबंधो यस्य—प्रा० ब०] एक देश का नाम, प्राचीन मिथिला (दे० परि० ३)—रघु० ११।३६, १२।३६ 2. इस देश के निवासी,—हः विदेह का ज़िला,—हा विदेह।

विद्धम् (भू० क० कृ०) [व्यध्+क्त] 1. बींधा हुआ, चुभा हुआ, घायल, छुरा भोंका हुआ 2. पीटा हुआ, कशाहत, बेत्राहत 3. फेंका गया, निदेशित, प्रेषित 4. विरोध किया गया 5. मिलता जुलता,—द्धम् घाव। सम० —कर्ण (वि०) जिसके कान छिदे हों।

विद्या [विद्+क्यप्+टाप्] 1. ज्ञान, अवगम, शिक्षा, विज्ञान—(तां) विद्यामभ्यसनेनेव प्रसादयितुमर्हसि

—रघु० १।८८, विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्—भर्तृ० २।२०, (कुछ विद्वानों के मतानुसार विद्या चार हैं—आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दंडनीतिश्च शाश्वती —काम०, कि० २।६, इन चारों में मनु० ७।४३ पांचवीं विद्या—आत्मविद्या—को और जोड़ देता है। परन्तु विद्या साधारणतः चौदह मानी जाती हैं—अर्थात् चार वेद, छः वेदांग, धर्म, मीमांसा, तर्क या न्याय, और पुराण—दे० चतुर के नीचे चतुर्दश विद्या, तथा नै० १।४) 2. यथार्थ ज्ञान, अध्यात्म ज्ञान—उत्तर० ६।६, तु० अविद्या 3. जादू, मन्त्र 4. दुर्गादेवी 5. ऐन्द्रजालिक कुशलता। सम०—अनुपालिन्—अनुसेविन् (वि०) ज्ञानोपार्जन करने वाला, आगमः,—अर्जनम्,—अभ्यासः, ज्ञान प्राप्त करना, शिक्षा ग्रहण करना, अध्ययन,—अर्थः ज्ञान की खोज, —अर्थिन् (वि०) छात्र, विद्याव्यसनी, शिष्य,—आलयः विद्यालय, महाविद्यालय, विद्यामन्दिर,—उपार्जनम् =विद्यार्जनम्,—करः विद्वान् पुरुष,—धण,—चंचु (वि०) अपने ज्ञान एवं शिक्षा के लिए प्रसिद्ध,—देवी सरस्वती देवी,—धनम् विद्यारूपी दौलत,—धरः (स्त्री०री) एक देवयोनि विशेष, अर्धदेवता,—प्राप्तिः =विद्यार्जन,—लाभः 1. ज्ञान की प्राप्ति 2. ज्ञान के द्वारा प्राप्त किया गया धन आदि,—विहीन (वि०) निरक्षर, अज्ञानी,—वृद्ध (वि०) ज्ञान में बढ़ा हुआ, शिक्षा में प्रगतिशील,—व्यसनम्,—व्यवसायः ज्ञान की खोज।

विद्युत् (स्त्री०) [विशेषेण द्योतते—वि+द्युत्+क्विप्] बिजली—वाताय कपिला विद्युत्—महा०, मेघ० ३८, ११५ 2. वज्र। सम०—उन्मेषः बिजली की कौंध,—जिह्वः एक प्रकार का राक्षस,—ज्वाला,—द्योतः बिजली की कौंध या कांति—दामन् (नपुं०) वक्र गति से युक्त बिजली की कौंध या चमक,—पातः बिजली का गिरना या प्रहार,—प्रियम् कांसा,—लता, लेखा (विद्युल्लता, विद्युल्लेखा) 1. बिजली की कौंध या लहर 2. वक्रगतिशील या कुटिल बिजली।

विद्युत्वत् (वि०) [विद्युत्+मतुप्] बिजली से युक्त—मेघ० ६४, (पुं०) बादल—कु० ६।२७।

विद्योतन (वि०) स्त्री० नी) [वि+द्युत्+णिच्+ल्युट्] 1. प्रकाश करने वाला, चमकाने वाला 2. सोदाहरण निरूपण करने वाला, व्याख्या करने वाला।

विद्रः [व्यध्+रक्, दन्तादेशः, सम्प्रसारणम्] 1. फाड़ना, खण्ड खण्ड करना, छेद करना 2. दरार, छिद्र, विवर।

विद्रधिः [विद्+रुध्+कि, पृषो०] पीपदार फोड़ा।

विद्रवः [वि+द्रु+अप्] 1. भाग जाना, उड़ान, प्रत्यावर्तन 2. आतंक 3. प्रवाह 4. पिघलना, गलना।

विद्राण (वि०) [वि+द्रा+क्त] नींद से जागा हुआ, उद्बुद्ध।

विद्रावणम् [वि+द्रु+णिच्+ल्युट्] 1. भगाना, खदेड़ना, हांक कर दूर करना, परास्त करना 2. गलाना, पिघालना।

विद्रुमः [विशिष्टो द्रुमः] 1. मूंगे का वृक्ष (लाल रंग के मूल्यवान मूंगों (मणियों) को पैदा करने वाला) 2. मूंगा प्रवाल—तवाधरस्पर्धिषु विद्रुमेषु—रघु० १३।१३, कु० १।४४ 3. कोंपल या किसलय। सम०—लता 1. मूंगे की शाखा 2. एक प्रकार का गंधद्रव्य,—लतिका 'नलिका' नामक एक गंध द्रव्य।

विद्वस् (वि०) [विद्+क्वसु] (कर्तृ०, ए० व०, पुं० विद्वान्; स्त्री० विदुषी, नपुं० विद्वत्) 1. जानने वाला (कर्म० के साथ)—आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कदाचन; तव विद्वानपि तापकारणम्—रघु० ८।७६, कि० ११।३० 2. बुद्धिमान्, विद्वान् (पुं०) विद्वान् मनुष्य या बुद्धिमान्, व्यक्ति, विद्याव्यसनी —किं वस्तु विद्वन् गुरवे प्रदेयम्—रघु०५।१८। सम० —कल्प,—देशीय,—देश्य (वि०) विद्वत्कल्प, विद्वद्देशीय, विद्वद्देश्य) थोड़ा पढ़ा लिखा, कम विद्वान्, —जनः (विद्वज्जनः) विद्वान् या बुद्धिमान् पुरुष, मुनि।

विद्विष् (पुं०) **विद्विषः** [वि+द्विष्+क्विप्, क वा] शत्रु, दुश्मन—विद्विषोऽप्यनुनय—भर्तृ० २।७७, रघु० ३।६०, याज्ञ० १।१६२।

विद्विष्ट (भू० क० कृ०) [वि+द्विष्+क्त] घृणित, अनीप्सित, कुत्सित।

विद्वेषः [वि+द्विष्+घञ्] 1. शत्रुता, घृणा, कुत्सा, मनु० ८।३४६ 2. तिरस्करणीय घमण्ड, गर्हा (मानहानि)—विद्वेषोऽभिमतप्राप्तावपि गर्वादनादरः—भारत।

विद्वेषण [वि+द्विष्+ल्युट्] 1. घृणा करने वाला, शत्रु,—णी रोषपूर्ण स्वभाव की स्त्री,—णम् घृणा और शत्रुता पैदा करना 2. शत्रुता, घृणा।

विद्वेषिन्, विद्वेष्टृ (वि०) [विद्विष्+णिनि, तृच् वा] घृणा करने वाला, शत्रुतापूर्ण (पुं०) घृणक, शत्रु।

विध् (तुदा० पर० विधति) 1. चुभोना, काटना 2. सम्मान करना, पूजा करना 3. राज्य करना, शासन करना, प्रशासन करना।

विधः [विध्+क] 1. प्रकार, किस्म यथा बहुविध, नानाविध में 2. ढंग, रीति, रूप 3. तह (समास के अन्त में, विशेष कर अंकों के पश्चात्) त्रिविध, अष्टविध आदि 4. हाथियों का आहार 5. समृद्धि 6. छेद करना।

विधवनम् [वि+धू+ल्युट्] 1. हिलाना, विक्षुब्ध करना 2. थरथराहट, कंपकंपी।

विधवा [विगतो धवो यस्याः सा] रांड, बेवा –सा नारी विधवा जाता गृहे रोदिति तत्पतिः सुभा० । सम० —आवेदनम् बेवा स्त्री से विवाह करना,- गामिन् जो विधवा स्त्री से सहवास करता है।

विधव्यम् [वि+धू+ण्यत्] थरथराहट, विक्षोभ ।

विधस् (पुं०) सर्व सृष्टि का उत्पादक ब्रह्मा ।

विधा [वि+धा+क्विप्] 1. ढंग, रीति, रूप 2. प्रकार, किस्म 3. समृद्धि, सम्पन्नता 4. हाथी घोड़ों का चारा, खाद्य पदार्थ 5. छेद करना 6. किराया, मजदूरी ।

विधातृ (पुं०) [वि+धा+तृच्] 1. निर्माता, स्रष्टा —कु० ७।३६ 2. स्रष्टा, ब्रह्मा–विधाता भद्रं नो वितरतु मनोज्ञाय विधये—मा० ६।७, रघु० ११।३५, ६।११, ७।३५ 3. अनुदाता, दाता, प्रदाता—कु० १।५७ 4. भाग्य, दैव—हि० १।४० 5. विश्वकर्मा 6. कामदेव 7. मदिरा । सम० आयुस् (पुं०) 1. सूर्य की चमक, धूप 2. सूरजमुखी फूल,—भूः नारद का विशेषण ।

विधानम् [वि+धा+ल्युट्] 1. क्रम से रखना, व्यवस्था करना 2. अनुष्ठान, निर्माण, करण,–कार्यान्वियननेपथ्य-विधानम् श० १, आज्ञा° यज्ञ° आदि 3. सृष्टि, रचना –रघु० ६।११, ७।१४, कु० ७।६६ 4. नियोजन, उपयोग, प्रयोग -प्रतिकारविधानम् –रघु० ८।४० 5. नियत करना, विहित करना, आदेश देना 6. नियम, उपदेश, अध्यादेश, धार्मिक नियम या विधि, निषेध—मनु० ९।१४८, भग० १६।२४, १७।२४ 7. ढंग, रीति 8. साधन या तरकीब 9. हाथियों का आहार (जो उन्हें मदोन्मत्त करने के लिए दिया जाता है) विधानसंपादितदानशोभितैः —का० (यहाँ 'विधान' का अर्थ 'नियम' भी है) शि० ५।५१ 10. धन दौलत 11. पीड़ा, वेदना, सन्ताप, दुःख 12. शत्रुता का कार्य । सम० गः, –ज्ञः बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष,—युक्त (वि०) वेदविधि के अनुरूप, या अनुकूल ।

विधानकम् [विधान+कन्] दुःख, कष्ट, पीड़ा ।

विधायक (वि०) (स्त्री०–यिका) [वि+धा+ण्वुल्] 1. क्रमबद्ध करने वाला, व्यवस्थित करने वाला 2. बनाने वाला, निर्माण करने वाला, सम्पन्न करने वाला, कार्यान्वित करने वाला 3. रचना करने वाला 4. व्यवस्थित करने वाला, विहित करने वाला, निर्धारित करने वाला 5. अर्पण करने वाला, सौंपने वाला, (किसी की देख रेख में) हवाले करने वाला ।

विधिः [वि+धा+कि] 1. करना, अनुष्ठान, अभ्यास कृत्य, कर्म--ब्रह्मध्यानाभ्यसनविधिना योगनिद्रां गतस्य --भर्तृ० ३।४१, योगविधि—रघु० ८।२२, लेखाविधि–मा० १।३५ 2. प्रणाली, रीति, पद्धति, साधन, ढंग - पंच० १।३७६ 3. नियम, समादेश, कोई विधि जो सबसे किसी बात को लागू करती है (यह 'विधि' शब्द नियम और परिसंख्या से भिन्न है) विधिरत्यंतमप्राप्तौ 4. वेद विधि या नियम, अध्यादेश, निषेध, कानून, वेदाज्ञा, धार्मिक समादेश (विप० 'अर्थवाद' अर्थात् व्याख्यापरक उक्ति जिसमें आख्यान और दृष्टान्तों का चित्रण हो दे० अर्थवाद) - श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम् श० ७।२९, रघु० २।१६ 5. कोई धार्मिक कृत्य या संस्कार, धार्मिक रस्म, संस्कार—स चेत् स्वयं कर्मसु धर्मचारिणां त्वमंतरायो भवसि च्युतो विधिः—रघु० ३।४५, १।३४ 6. व्यवहार, आचरण 7. दशा विक्रम० ४ 8. रचना, बनावट सामग्र्यविधौ - कु० ३।२८, कल्याणी विधिषु विचित्रता विधातुः कि० ७।७ 9. सृष्टा 10. भाग्य, दैव, किस्मत विधौ वामारंभे मम समुचितैषा परिणतिः मा० ४।४ 11. हाथियों का खाद्य पदार्थ 12. काल 13. डाक्टर, वैद्य 14. विष्णु । सम० ज्ञ (वि०) कर्मकाण्ड का ज्ञाता (ज्ञः) कर्मकांड में निष्णात ब्राह्मण, कर्मकाण्डी, - दृष्ट, विहित (वि०) नियत, विहित, द्वैधम् नियमों की विविधता, विधि या समादेश की विभिन्नता, पूर्वकम् (अव्य०) नियमानुकूल, प्रयोगः नियम का व्यवहार, योगः भाग्य का बल या प्रभाव, वधूः (स्त्री०) सरस्वती का विशेषण, हीन (वि०) नियम शून्य, अनधिकृत, अनियमित ।

विधित्सा [वि+धा+सन्+अ+टाप्] 1. सम्पन्न करने की इच्छा 2. आयोजन, प्रयोजन, इच्छा ।

विधित्सित (वि०) [वि+धा+सन्+क्त] किये जाने के लिये अभिप्रेत, –तम् इरादा, अभिप्राय, आयोजन ।

विधुः [व्यध्+कु] 1. चन्द्रमा, सविता विधवति विधुरपि सवितरति दिनंति यामिन्यः काव्य० १० 2. कपूर 3 पिशाच, दानव 4. प्रायश्चित्तपरक आहुति 5. विष्णु का नाम 6. ब्रह्मा । सम० -क्षयः चन्द्रमा की कलाओं का ह्रास, कृष्ण पक्ष का समय, पंजरः (पिंजरः भी) खड्ग, कटार, प्रिया रोहिणी नक्षत्र ।

विधुत दे० 'विधूत' ।

विधुतिः (स्त्री०) [वि+धु+क्तिन्] हिलना, संक्षोभ, थरथराहट वेनायकश्चिरं वो वदनविधुतयः पांतु चीत्कारवत्यः मा० १।१ ।

विधुननम् [वि+धू+णिच्+ल्युट्, नुट्, पृषो० ह्रस्वः] 1. हिलना, झूमना, विक्षुब्ध होना 2. कंपकंपी, थरथराहट ।

विधुन्तुदः [विधुं तुदति पीडयति—विधु+तुद्+खश्,

मुम्] राहु विधुमिव विधुन्तुद दंतदलनगलितामृतधारम् गीत० ४, नै० ४।७१, शि० २।६१।

विधुर (वि०) [विगता धूः कार्यभारो यस्मात् प्रा० ब०] 1. दुःखी, विपद्ग्रस्त, कष्टग्रस्त, शोकाकुल, दयनीय---मा० २।३, ९।११, उत्तर० ३।१८, ६।४१, कि० ११।२६ 2. जिससे प्रेम करने वाला कोई न रहा हो, शोकग्रस्त, पत्नी या पति की विरहव्यथा से व्याकुल —मयि च विधुरे भावः कांता प्रवृत्तिपराङ्मुखः —विक्रम० ४।२०, विधुरा ज्वलनातिसर्जनान्ननु मां प्रापय पत्युरन्तिकम् —कु० ४।३२, शि० ६।२९, १२।८ 3. शुन्य, वञ्चित, विरहित, मुक्त —सा वै कलंकविधुरो मधुराननश्रीः—भामि० २।५ 4. विरोधी, वैरी, शत्रु पंच० २।८१,–रः रंडुवा,–रम् 1. खटका, भय, चिन्ता 2. पति या पत्नी से वियोग, प्रेमी या प्रेमिका द्वारा शोकाकुलता।

विधुरा [विधुर+टाप्] दही जिसमें चीनी व मसाले डाले हुए हों।

विधुवनम् [वि+धु+ल्युट्, कुटादित्वात् साधुः] हिलना, थरथरी, कंपकंपी।

विधूत (भू० क० कृ०) [वि+धू+क्त] 1. हिला हुआ, उथलपुथल हुआ, तरंगित 2. थरथराता हुआ 3. उखड़ा हुआ, मिटाया हुआ, हटाया हुआ 4. अस्थिर 5. परित्यक्त,—तम् विरक्ति, अरुचि।

विधूतिः (स्त्री०) **विधूननम्** [वि+धू+क्तिन्, वि+धू+णिच्+ल्युट्, नुक्] हिलना, थरथरी, कंपकपी विक्षोभ।

विधृत (भू० क० कृ०) [वि+धृ+क्त] 1. पकड़ा हुआ, थामा हुआ, ग्रहण किया हुआ 2. वियुक्त, अलग-अलग रक्खा गया 3. धारण किया गया, कब्जे में किया गया 4. रोका गया, नियन्त्रित किया गया 5. सहारा दिया गया, प्ररक्षित, समर्थित (दे० वि पूर्वक धृ),–तम् 1. आदेश की अवहेलना 2. असन्तोष।

विधेय (सं० कृ०) [वि+धा+यत्] 1. किये जाने के योग्य, अनुष्ठेय 2. विहित या नियत किये जाने के योग्य 3. (क) आश्रित, निर्भर अथ विधिविधेयः परिचयः—मा० २।१३ (ख) अधीन, प्रभावित, नियन्त्रित, दमन किया गया, परास्त किया गया (प्रायः समास में) निद्राविधेयं नरदेवसैन्यम्—रघु० ७।६२, संभाव्यमानस्नेहरसेनाभिसंधिना विधेयीकृतोऽपि मा० १, भग० २।६४, मुद्रा० ३।१, शि० ३।२०, रघु० १९।४ 4. आज्ञाकारी, शासनीय, अनुवर्ती, वश्य,—अविधेयेंद्रियः पुंसां गौरिवैति विधेयताम्—कि० ११।३३ 5. (व्या०) विधेय—(कर्ता के संबंध में कही गई बात --) होने के योग्य–अत्र मिथ्यामहिमत्वं नानुवाद्यं अपि तु विधेयम् —काव्य ७, ·यम् 1. जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य,–कि० १६।६२ 2. प्रतिज्ञा या प्रस्थापना की उक्ति, –यः सेवक, भृत्य। सम० –अविमर्शः रचनासंबंधी दोष जिससे विधेय आश्रित स्थिति का हो जाय या उसका अधूरा कथन किया जाय—अविमृष्टः प्राधान्येनानिर्दिष्टो विधेयांशो यत्र ---काव्य० ७, उदा० उस स्थान पर देखो,– आत्मन् (पुं०) विष्णु,– ज्ञ (वि०) जो अपना कर्तव्य जानता है—पंच० १।३३७, पदम् 1. सम्पन्न किया जाने वाला उद्देश्य 2. कर्ता के संबंध में कहीं गई उक्ति विधेय।

विध्वंसः [वि+ध्वंस्+घञ्] 1. बरबादी, विनाश 2. शत्रुता, अरुचि, नापसन्दगी 3. अपमान, अपराध।

विध्वंसिन् (वि०) [वि+ध्वंस्+णिनि] बरबाद होने वाला, टुकड़े टुकड़े हो जाने वाला।

विध्वस्त (भू० क० कृ०) [वि+ध्वंस्+क्त] 1. बरबाद हुआ, विनष्ट 2. इधर उधर बिखेरा हुआ, छितराया हुआ 3. अस्पस्ट, धुंधला 4. ग्रहणग्रस्त।

विनत (भू० क० कृ०) [वि+नम्+क्त] 1. झुका हुआ, नंवा हुआ 2. अवनत हुआ, लटकता हुआ, मुड़ा हुआ श० ३।११ 3. डूबा हुआ, अवसन्न 4. झुका हुआ, कुटिल, वक्र 5. विनीत, शिष्ट (दे० वि पूर्वक नम्)।

विनता [विनत+टाप्] 1. अरुण और गरुड़ की माता जो कश्यप की एक पत्नी थी —दे० गरुड़ 2. एक प्रकार की टोकरी। सम०—नंदनः, सुतः,– सूनुः गरुड़ या अरुण के विशेषण।

विनतिः (स्त्री०) [वि+नम्+क्तिन्] 1. नमना, झुकना, नीचे को होना 2. विनय, विनम्रता 3. प्रार्थना।

विनदः [वि+नद्+अच्] 1. ध्वनि, कोलाहल 2. एक वृक्ष का नाम।

विनमनम् [वि+नम्+ल्युट्] झुकना, नमना, सिर और कंधे झुका कर चलना।

विनम्र (वि०) [वि+नम्+र] 1. झुका हुआ, झुक कर चलता हुआ कि० ४।३ 2. अवसन्न, डूबा हुआ 3. विनयशील, विनीत।

विनम्रकम् [विनम्र+कन्] 'तगर' वृक्ष का फूल।

विनय (वि०) [वि+नी+अच्] 1. डाला हुआ, फेंका हुआ 2. गुप्त 3. अशिष्टाचारी, –यः 1. निर्देश, अनुशासन, अनुदेश (अपने कर्तव्यक्षेत्र में) नैतिक प्रशिक्षण —रघु० १।२४, मा० १०।५ 2. औचित्य, शिष्टाचार, सुशीलता—श० १।२९ 3. शिष्ट आचरण, सज्जनोचित व्यवहार, सच्चरित्र, अच्छा चलन—रघु० ६।७९, मा० १।१८ 4. शालीनता, विनम्रता---सुष्ठु शोभसे आर्यपुत्र एतेन विनयमाहात्म्येन—उत्तर० १, विद्या ददाति विनयम्; तथापि नीचैर्विनयाददृश्यत रघु० ३।३४, १०।७१, (यहां मल्लि० 'विनय' शब्द का

अर्थ 'इन्द्रियजय' बतलाता है जो हमारे मतानुसार अनावश्यक है) 5. श्रद्धा, शिष्टता, सौजन्य 6. सदाचरण 7. खींच लेना, दूर करना, हटाना —शि० १०। ४२ 8. जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया है —जितेन्द्रिय 9. व्यापारी, सौदागर। सम०—अवनत (वि०) झुका हुआ, विनम्र, -ग्राहिन् (वि०) शासनीय, आज्ञाकारी अनुवर्ती,—वाच् (वि०) मृदुभाषी, मिलनसार,—स्थ (वि०) विनयशील, शालीन।

विनयनम् (वि०+नी+ल्युट्) 1. हटना, दूर करना—मेघ० ५२ 2. शिक्षा, शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुशासन।

विनशनम् [वि+नश्+ल्युट्] नाश, हानि, विनाश, लोप,—नः उस स्थान का नाम जहाँ सरस्वती नदी रेत में लुप्त हो गई है —तु० मनु० २।२१।

विनष्ट (भू० क० कृ०) [वि+नश्+क्त] 1. ध्वस्त, उच्छिन्न, बर्बाद 2. ओझल, लुप्त 3. बिगड़ा हुआ, भ्रष्ट।

विनस (वि०) (स्त्री०—सा,—सी) [विगता नासिका यस्य, नासिकाशब्दस्य नसादेशः] विना नाक का, नाकरहित —भट्टि० ५।८।

विना (अव्य०) [वि+ना] बग़ैर, सिवाय (कर्म०, करण० या अपा० के साथ) यथा तानं विना रागो यथा मानं विना नृपः, यथा दानं विना हस्ती तथा ज्ञानं विना यतिः —भामि० १।११९, पंकैर्विना सरो भाति सदः खलजनैर्विना, कटुवर्णैर्विना काव्यं मानसं विषयैर्विना १।११६, विना वाहनहस्तिभ्यः क्रियतां सर्वमोक्षः मुद्रा०७, शि० २।९, (विना कृ छोड़ना, परित्याग करना, विरहित करना, वञ्चित करना—मदनेन विनाकृता रतिः कु० ४।२१, 'काम से विरहित')। सम० —उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार जिसमें 'विना' काव्य की दृष्टि से सुन्दर ढंग से प्रयुक्त होता है,—विनार्थसम्बन्ध एव विनोक्तिः—रस०, दे०, काव्य० १० भी।

विनाडिः, विनाडिका [विगता नाडिः नाडिका वा यया] समय की एक माप जो घड़ी के साठवें भाग के बराबर होती है, एक पल या चौबीस सेकंड।

विनायकः [विशिष्टो नायकः प्रा० स०] 1. (बाधाओं के) हटाने वाला 2. गणेश 3. बुद्ध धर्म का देवरूप अध्यापक 4. गरुड़ 5. रुकावट, अड़चन।

विनाशः [वि+नश्+घञ्] 1. ध्वंस, बर्बादी, भारी हानि, क्षय 2. हटाना। सम० —उन्मुख (वि०) नष्ट होने वाला, मरने के लिए तैयार, —धर्मन्, धर्मिन् (वि०) क्षीण होने वाला, नष्ट होने वाला, क्षणभंगुर —विषयेषु विनाशधर्मसु त्रिदिवस्थेष्वपि निःस्पृहोऽभवत् —रघु० ८।१०।

विनाशनम् [वि+नश्+णिच्+ल्युट्] विनाश, बर्बादी, उन्मूलन,—नः विनाशक, विनाशकर्ता।

विनाहः [वि+नह्+घञ्] कुएँ के मुंह का ढकना। तु० 'वीनाह'।

विनिक्षेपः [वि+नि+क्षिप्+घञ्] फेंक देना, भेज देना।

विनिग्रहः [वि+नि+ग्रह्+अप्] 1. नियंत्रण करना, दमन करना, वश में करना —भग० १३।७, १७।१६, मनु० ९।२६३ 2. पारस्परिक विरोध या अर्थान्तरन्यास।

विनिद्र (वि०) [विगता निद्रा यस्य—प्रा० ब०] 1. निद्रारहित, जागा हुआ (आलं० से भी) रघु० ५।६५ 2. मुकुलित, खुला हुआ, खिला हुआ, फूला हुआ —विनिद्रमंदाररजोरुणांगुली- कु० ५।८०।

विनिपातः [वि+नि+पत्+घञ्] 1. अधः पतन, गिराव 2. भारी अवपात, संकट, बुराई, हानि, बर्बादी, विनाश —विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः—भर्तृ० २।१० (यहां यह 'प्रथम अर्थ' भी प्रकट करता है) कि० २।३४ 3. क्षय, मृत्यु 4. नरक, नारकीय यन्त्रणा—श० ५ 5. घटना, घटित होना 6. पीड़ा, दुःख 7. अनादर।

विनिमयः [वि+नि+मी+अप्] 1. अदला-बदली, वस्तु के बदले वस्तु का लेन-देन—कार्यं विनिमयेन—मालवि० १, संपद्विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम्—रघु० १।२६ 2. न्यास, धरोहर, अमानत।

विनिमेषः [वि+नि+मिष्+घञ्] (आंखों का) झपकना।

विनियत (भू० क० कृ०) [वि+नि+यम्+क्त] नियंत्रित, रोका गया, प्रतिबद्ध, विनियमित—यथा विनियताहार तथा विनियतवाच् आदि म।

विनियमः [वि+नि+यम्+अच्] नियन्त्रण, प्रतिबन्ध, रोक।

विनियुक्त (भू० क० कृ०)[वि+नि+युज्+क्त] 1. अलग किया हुआ, ढीला, विच्छिन्न 2. अनवक्त, नियुक्त 3. व्यवहृत 4. समाविष्ट, विहित।

विनियोगः [वि+नि+युज्+घञ्] 1. अलग होना, जुदा होना, विच्छिन्न होना 2. छोड़ना, त्यागना, तिलाञ्जलि देना 3. काम में लगाना, उपयोग, प्रयोग, नियंत्रण —बभूव विनियोगज्ञः साधनीयेषु वस्तुषु —रघु० १७।६७, प्राणायामे विनियोगः 4. किसी कर्तव्य पर लगाना, कार्याधिकार, कार्यभार—विनियोगप्रसादा हि किंकराः प्रभविष्णुषु—कु० ६।६२ 5. रुकावट, अड़चन।

विनिर्जयः [वि+निर्+जि+अच्] पूर्ण विजय।

विनिर्णयः [वि+निर्+नी+अच्] 1. पूर्ण रूप से निबटारा या निर्णय, पूरा फैसला 2. निश्चय 3. निश्चित नियम।

विनिर्बंधः [वि+नि+र्+बंध्+घञ्] आग्रह, दृढ़ता।

विनिर्मित (भू० क० कृ०) [वि+निर्+मा+क्त] 1. बनाया हुआ, निर्माण किया हुआ 2. बना हुआ, रचा हुआ ।

विनिवृत्त (भू० क० कृ०) [वि+नि+वृत्+क्त] 1. लौटा हुआ, वापिस आया हुआ 2. ठहरा हुआ, थमा हुआ, रुका हुआ 3. (सेवा) मुक्त, फ़ारिग ।

विनिवृत्तिः (स्त्री०)[वि+नि+वृत्+क्तिन्] 1. विश्रान्ति, रोकना, हटाना --शक्राभ्यसूयाविनिवृत्तये-रघु० ६।७४ 2. अन्त, अवसान, समाप्ति ।

विनिश्चयः [वि+निस्+चि+अच्] 1. स्थिर करना, तय करना, निश्चय करना 2. फ़ैसला, पक्का निश्चय ।

विनिश्वासः [वि+नि+श्वस्+घञ्] कठिनाई से सांस लेना, आह भरना, आह (गहरी साँस) ।

विनिष्पेषः [वि+निस्+पिष्+घञ्] चूर चूर करना, कुचलना, पीस डालना ।

विनिहत (भू० क० कृ०)[वि+नि+हन्+क्त] 1. आहत, घायल 2. मार डाला हुआ 3. पूरी तरह परास्त किया हुआ, —तः 1.कोई बड़ा या अनिवार्य संकट, जैसे कि भाग्य-दोष से या दैवात् आपद्ग्रस्त होना 2. अपशकुन, धूमकेतु ।

विनीत (भू० क० कृ०) [वि+नी+क्त] 1. दूर ले जाया गया, हटाया हुआ 2 सुप्रशिक्षित, अनुशासित 3. संस्कृत, आचरणशील 4. सुशील, विनम्र, विनीत, सौम्य 5. शिष्ट, शालीन, सौजन्यपूर्ण 6. प्रेषित, विसर्जित 7. पालतू, सधाया गया 8. सीधा, सरल (वेशभूषा आदि) 9. आत्म संयमी, जितेन्द्रिय 10 सज़ा प्राप्त, दंडित 11. शासनीय, शासन किये जाने के योग्य 12. प्रिय, मनोहर (दे० वि पूर्वक नी), —तः 1. सधाया हुआ घोड़ा 2. व्यापारी ।

विनीतकम् [विनीत+कन्] 1. गाड़ी, सवारी (डोली आदि 2. ले जाने वाला, वाहक ।

विनेतृ (पुं०) [वि+नी+तृच्] 1. नेता, पथ प्रदर्शक 2. अध्यापक, शिक्षक रघु० ८।९१ 3. राजा, शासक 4. सज़ा देने वाला, दण्ड देने वाला – अयं विनेता दृप्तानाम् – महावी० ३।८६, ४।१, रघु० ६।३९, १४।२३ ।

विनोदः [वि+नुद्+घञ्] 1. हटाना, दूर करना—श्रम विनोदः 2. मनोरंजन, दिल बहलाव, कोई भी रोचक या रंजनकारी व्यवसाय प्रायेणैते रमणविरहेष्वंगनानां विनोदाः मेघ० ८७, श० २।५ 3. खेल, क्रीडा, आमोद-प्रमोद 4. उत्सुकता, उत्कण्ठा 5. आनन्द, प्रसन्नता, परितृप्ति – विलपनविनोदोऽप्यसुलभः – उत्तर० ३।३०, जनयतु रसिकजनेषु मनोरमरतिरसभावविनोदम् गीत० १२ 6. एक प्रकार का रतिबंध ।

विनोदनम् [वि+नुद्+ल्युट्] 1. हटाना 2. मनोरंजन आदि--दे० 'विनोद' ।

विन्दु (वि०) [विद्+उ, नुमागमः] 1. मनीषी, बुद्धिमान् 2. उदार,—दुः बूंद, दे० 'बिन्दु' ।

विंध्यः [विदधाति करोति भयम्] एक पर्वत श्रेणी जो उत्तर भारत को दक्षिण से पृथक् करती है, यह सात कुल पर्वतों में से एक है, यह मध्यदेश की दक्षिणी सीमा है, दे० मनु० २।२१, (एक उपाख्यान के अनुसार विन्ध्य पर्वत को मेरु पर्वत हिमालय पहाड़) से ईर्ष्या हुई । अतः उसने सूर्य से मांग की कि जिस प्रकार वह मेरु के चारों ओर घूमता है, उस प्रकार उसे विन्ध्य के चारों ओर घूमना चाहिए, सूर्य नें विन्ध्य पर्वत की मांग ठुकरा दी । फलतः विन्ध्य पर्वत ने ऊपर को उठना आरंभ किया जिससे कि सूर्य और चन्द्रमा का मार्ग रोका जा सके । देवताओं में आतंक छा गया, उन्होंने अगस्त्य मुनि से सहायता मांगी । अगस्त्य विंध्य पर्वत के पास गया और उससे निवेदन किया कि ज़रा नीचे झुक जाओ जिससे कि मुझे दक्षिण में जाने का मार्ग मिले, और जब तक मैं वापिस न आऊँ, इसी प्रकार झुके रहो । विंध्य पर्वत ने इस बात को मान लिया (क्योंकि एक वर्णन के अनुसार अगस्त्य मुनि विंध्य पर्वत का गुरु माना जाता है) परन्तु अगस्त्य फिर दक्षिण से वापिस न लौटा, और विंध्य को मेरु जैसी उत्तुंगता न मिल सकी) 2. शिकारी । सम०-**अटवी**, विन्ध्य महावन, —**कूटः**, —**कूटनम्** अगस्त्य ऋषि के विशेषण, —**वासिन्** (पुं)वैयाकरण व्याडि का विशेषण, (—नी) दुर्गा का विशेषण ।

विन्न (भू० क० कृ०) [विद्+क्त] 1. ज्ञात 2. हासिल, प्राप्त 3. विचार विमर्श किया हुआ, अनुसंहित 4. रक्खा हुआ, स्थिर किया हुआ 5. विवाहित (दे० विद्) ।

विन्नकः [विन्न+कन्] अगस्त्य का नाम ।

विन्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+नि+अस्+क्त] 1. रक्खा हुआ, डाला हुआ 2. जड़ा हुआ, फर्श जमाया हुआ या खड़ंजा लगाया हुआ 3. स्थिर 4. क्रमबद्ध 5. समर्पित 6. उपस्थित किया गया, प्रस्तुत 7. जमा किया हुआ, निक्षिप्त ।

विन्यासः [वि+न्यस्+घञ्] 1. सौंपना, जमा करना 2. धरोहर 3. क्रमपूर्वक रखना, समंजन, निपटारा, अक्षरविन्यासः अक्षर उत्कीर्ण करना—प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिः-- वास०, किसी ग्रन्थ की रचना 4. संग्रह समवाय 6 स्थान, आधार ।

विपक्विम (वि०) [वि+पच्+क्त्रि+मप्] 1. पूर्ण रूप से पका हुआ, परिपक्व 2. विकसित, (पूर्वकृत्यों के परिणाम स्वरूप) पूर्णता को प्राप्त ।

विपक्व (वि+पच्+क्त] 1. पूर्णरूप से पका हुआ, परिपक्व 2. विकसित, पूर्ण अवस्था को प्राप्त—कि० ६।१६ 3. पकाया हुआ।

विपक्ष (वि०) [विरुद्धः पक्षो यस्य प्रा० ब०] वैरी, शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल, विरुद्ध, **क्षः** 1. शत्रु, विरोधी, प्रतिरोधी—रघु० १७।७५, शि० ११।५९ 2. वह पत्नी जिसकी दूसरी के साथ प्रतिद्वन्द्विता चल रही हो—रघु० १०।२० 3. झगड़ालू कि० १७।४३ 4. (तर्क में) नकारात्मक दृष्टान्त, विपक्षियों की ओर से दिया गया दृष्टान्त (अर्थात् वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव हो), निश्चितसाध्याभाववान् विपक्षः—तर्क०, मुद्रा० ५।१०।

विपंचिका, विपंची [विपंची+कन्+टाप्] 1. वीणा 2. खेल, क्रीडा, मनोरंजन।

विपणः, विपणनम् [वि+पण्+घञ्, ल्युट् वा] 1. विक्री मनु० ३।१५२ 2. छोटा व्यापार।

विपणिः, णी (स्त्री०) [विपण्+इन्, विपणि+ङीप्] 1. बाजार, मण्डी, हाट,—हा हा नश्यति मन्मथस्य विपणिः सौभाग्यपण्याकरः—मृच्छ० ८।३८, शि० ५।२४, रघु० १६।४१ 2. बिक्री के लिए रक्खा हुआ माल, सामान 3 वाणिज्य, व्यापार—मनु० १०।११६।

विपणिन् (पुं०) [विपण+इनि] व्यापारी, सौदागर, दुकानदार शि० ५।२४।

विपत्तिः (स्त्री०) [वि+पद्+क्तिन्] 1. संकट, दुर्भाग्य, अनर्थ, अनिष्टपात, आफ़त संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता—सुभा० 2. मृत्यु, विनाश अति रभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेर्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः—भर्तृ० २।९९, रघु० १९।५६, वेणी० ४।६, हिमसेकविपत्तिः नलिनी—रघु० ८।४५ 3. वेदना, यातना—**त्तिः** (पुं०) श्रेष्ठ पदाति, पैदल-सिपाही—कि० १५।१६।

विपथः [विरुद्धः पन्था—प्रा० स०] बुरी सड़क, कुमार्ग। (शा० तथा आलं०)।

विपद् (स्त्री०) [वि+पद्+क्विप्] 1. संकट, दुर्भाग्य, आपदा, दुःख—तत्त्वनिकषग्रावा तु तेषां (मित्राणां) विपद् हि० १।२१० 2. मृत्यु सिंहादवापद्विपदं नृसिंहः रघु० १८।३५। सम०—**उद्धरणम्,—उद्धारः,** मुसीबत से राहत, विपत्ति से मुक्ति,—**कालः** आवश्यकता का समय, संकट-काल, मुसीबत, **युक्त** (वि०) अभागा, दुःखी।

विपदा—दे० 'विपद्'।

विपन्न (भू० क० कृ०) [विपद्+क्त] 1. मरा हुआ 2. लुप्त, नष्ट 3. अभागा, कष्टग्रस्त, दुःखी, मुसीबतज़दा 4. क्षीण 5. अयोग्य, अशक्त (दे० वि पूर्वक पद्), **न्नः** सांप।

विपरिणमनम्, विपरिणामः [वि+परि+नम्+ल्युट्, घञ् वा] 1. परिवर्तन, बदलना 2. रूपपरिवर्तन, रूपान्तरण।

विपरिवर्तनम् [वि+परि+वृत्+ल्युट्] इधर उधर मुड़ना, लुढ़कना।

विपरीत (वि०) [वि+परि+इ+क्त] 1. प्रतिवर्तित, विपर्यस्त 2. प्रतिकूल विरोधी, प्रतिवर्ती, औंधा—रघु० २।५३ 3. अशुद्ध, नियमविरुद्ध 4. मिथ्या, असत्य—भामि० २।१७७ 5. अननुकूल, उलटा 6. व्यत्यस्त, उलटे ढग से अभिनय करने वाला 7. अरुचिकर, अशुभ,—**तः** एक रतिबंध,—**ता** 1. दुश्चरित्रा, असती पत्नी 2. पुंश्चली स्त्री। सम० **कर,—कारक-कारिन्,—कृत्** (वि०) कुमार्गी, विरुद्ध ढंग से कार्य करने वाला—शि० १४।६६,—**चेतस्,—मति** (वि०) जिसका दिमाग फिर गया हो,—**रतम्** रतिक्रिया का उलटा आसन, तु० 'पुरुषायित'।

विपर्णकः [विशिष्टानि पर्णानि यस्य प्रा० ब०] पलाश का वृक्ष, ढाक का पेड़।

विपर्ययः [वि+परि+इ+अच्] 1. वैपरीत्य, व्यतिक्रम, औंधापन—आहितो जयविपर्ययोऽपि मे श्लाघ्य एव परमेष्ठिना त्वया—रघु० ११।८६, ८।८९, नभसः स्फुटतारस्य रात्रेरिव विपर्ययः (न भाजनम्) कि० ११।४४, विपर्यये तु—श० ५, 'यदि अन्यथा हुआ' यदि इसके विपरीत हुआ' 2. (अभिप्राय, वेश आदि बदलना—कथमेत्य मतिविपर्ययं करिणी पंकमिवाव-सीदति—कि० २।६, इसी प्रकार 'वेषविपर्ययः'—पंच० १ 3. अभाव, अनस्तित्व—समुद्रगारूपविपर्ययेऽपि कु० ७।४२, त्यागे श्लाघाविपर्ययः रघु० १।२२ 4. लोप, हानि निद्रा संज्ञाविपर्ययः कु० ६।४४, 'सुधबुध न रहना' 5. पूर्ण विनाश, ध्वंस 6. विनिमय, अदल बदल 7. त्रुटि, उल्लंघन, भूल, कुछ का कुछ समझना 8. संकट, दुर्भाग्य, उलटा भाग्य 9. शत्रुता, दुश्मनी।

विपर्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+परि+अस्+क्त] 1. परिवर्तित, व्युत्क्रान्त, उलटा हुआ—हंत विपर्यस्तः संप्रति जीवलोकः—उत्तर० १ 2. विरोधी, प्रतिकूल 3. भूल से वास्तविक समझा हुआ।

विपर्यायः [वि+परि+इ+घञ्] 1. उलटापन, वैपरीत्य, दे० 'विपर्यय'।

विपर्यासः [वि+परि+अस्+घञ्] 1. परिवर्तन, वैपरीत्य, व्यतिक्रम—विपर्यासं यातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम् उत्तर० २।२७ 2. विपरीतता, अननुकूलता यथा 'दैवविपर्यासात्' में 3. अन्तः परिवर्तन, अदल-बदल—प्रवहणविपर्यासेनागता मृच्छ० ८ 4. त्रुटि, भूल।

विपलम् [विभक्तं पलं येन—प्रा० ब०] क्षण, समय का अत्यंत छोटा प्रभाग (जो पल का साठवां या छठा भाग समझा जाता है)।

विपलायनम् [विशेषेण पलायनम्—प्रा० स०] दौड़ जाना, विभिन्न दिशाओं को भाग जाना।

विपश्चित् (वि०) [विप्रकृष्टं चिनोति चेतति चिन्तयति वा—वि+प्र+चित्+क्विप्, पृषो०] विद्वान्, बुद्धिमान्—विपश्चितो विनिन्युरेनं गुरवो गुरुप्रियम्—रघु० ३।२९, पुं०—एक विद्वान या बुद्धिमान् पुरुष, मुनि—भवति ते सभ्यतमा विपश्चितां मनोगतं वाचि निवेशयंति ये—कि० १४।४।

विपाकः [वि+पच्+घञ्] 1. खाना पकाना, भोजन बनाना 2. पाचनशक्ति 3 पकना, पक्वता, परिपक्वता, विकास (आलं० भी)—अमी पृथुस्तंबभृतः पिशङ्गतां गता विपाकेन फलस्य शालयः—कि० ४।२६, वाचा विपाको मम—भामि० ४।४२, 'मेरे परिपक्व, पूर्ण विकसित अथवा गौरवान्वित शब्द' 4. परिणाम, फल, नतीजा, पूर्वजन्म अथवा इस जन्म के कर्मों का फल,—अहो मे दारुणतरः कर्मणां विपाकः—का० ३५४, ममैव जन्मांतरपातकानां विपाकविस्फूर्जथुरप्रसह्यः—रघु० १४।६२, भर्तृ० २।९९ महावी० ५।५६, 5. (क) अवस्थापरिवर्तन उत्तर० ४।६, (ख) असंभावित बात या घटनाव्यतिक्रम, भाग्य का पलटा खाना, दुःख, संकट, उत्तर० ३।३, ४।१२ 6. कठिनाई, उलझन 7, रसास्वाद, स्वाद।

विपाटनम् [वि+पट्+णिच्+ल्युट्] 1. खण्ड खण्ड करना, फाड़ कर खोलना 2. उखाड़ना 3. अपहरण।

विपाठः (पुं०) एक प्रकार का लंबा तीर।

विपाण्डु, विपाण्डुर (वि०) [विशेषेण पाण्डुः, पाण्डुरः प्रा० स०] विवर्ण, पीला, कि० ५।६, शि० ९।३, इसी प्रकार 'विपांडुर'—शि० ४।५, रत्न० २।४।

विपादिका (स्त्री०) 1. पैर का एक रोग, बिवाई 2. प्रहेलिका, पहेली।

विपाश, विपाशा (स्त्री०) [पाशं विमोचयति—वि+पश् णिच्+क्विप्, वि+पश्+णिच्+अच्+टाप्] पंजाब की एक नदी, वर्तमान व्यास नदी।

विपिनम् [वेपन्ते जनाः अत्र वेप्+इनन्, ह्रस्व] जंगल, वन, वाटिका, झुरमुट—वृन्दावन विपिने ललितं वितनोतु शुभानि यशस्यम् गीत० १, विपिनानि प्रकाशानि शक्तिमत्वाच्चकार सः—रघु० ४।३१।

विपुल (वि०) [विशेषेण पोलति—वि+पुल्+क] 1. विशाल, विस्तृत, आयत, विस्तीर्ण, चौड़ा, प्रशस्त विपुलं नितम्बदेशे मालवि० ३।७, शिरसि तनुविपुलश्च मध्यदेशे—मृच्छ० ३।२२, इसी प्रकार विपुलम् पृष्ठम्, विपुलः कुक्षिः 2. बहुत, पुष्कल, पर्याप्त,—कि० १८।१४ 3. गहरा, अगाध—महावी० १।२, रोमाञ्चित, पुलकित शि० १६।३, (यहाँ 'प्रथम' अर्थ भी घटता है, —लः 1. मेरु पर्वत 2. हिमालय पर्वत 3. संमाननीय पुरुष। सम०—छाय (वि०) छायादार, छायामय,—जघना विशाल कूल्हों वाली स्त्री,—मति (वि०) मनीषी, प्रज्ञावान्,—रसः गन्ना, ईख।

विपुला [विपुल+टाप्] पृथ्वी।

विपूयः [वि+पू+क्यप्] 'मूंज' नामक घास।

विप्रः [वप्+रन् पृषो० अत इत्वम्] 1. ब्राह्मण, उऋण, दे० 'ब्राह्मण' के अन्तर्गत 2. मुनि, बुद्धिमान् पुरुष 3. पीपल का पेड़। सम० ऋषिः=ब्रह्मर्षि दे०,—काष्ठम् रुई का पौधा,—प्रियः पलाश का वृक्ष, ढाक,—समागमः ब्राह्मणों का जमाव या धर्मपरिषद्,—स्वम् ब्राह्मणों की संपत्ति।

विप्रकर्षः [वि+प्र+कृष्+घञ्] दूरी, फ़ासला।

विप्रकारः [वि+प्र+कृ+घञ्] 1. अपमान, कटु व्यवहार, दुर्वचन, तिरस्कारयुक्त व्यवहार—कि० ३।५५ 2. क्षति, अपराध 3. दुष्टता 4. विरोध, प्रतिक्रिया 5. प्रतिहिंसा।

विप्रकीर्ण (वि०) [वि+प्र+कृ+क्त] 1. इधर उधर फैलाया हुआ, तितर बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ 2. ढीला, (बाल आदि) बिखरे हुए 3. प्रसारित, बिछाया हुआ 4. चौड़ा, विस्तृत।

विप्रकृत (भू० क० कृ०) [वि+प्र+कृ+क्त] 1. आहत, जिसे ठेस पहुंचाई गई है, घायल 2. अपमानित, जिसे गाली दी गई है, जिसके साथ कटुव्यवहार किया गया है 3. जिससे विरोध किया गया है 4. प्रतिहिंसित, जिससे बदला ले लिया गया है (दे० विप्र पूर्वक कृ)।

विप्रकृतिः (स्त्री०) 1. क्षति, आघात 2. अपमान, अपशब्द, कटुव्यवहार 3. प्रतिहिंसा, बदला।

विप्रकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+प्र+कृष्+क्त] 1. खींच दिया गया, हटाया हुआ 2. फ़ासले पर, दूर का, दूरवर्ती 3. सुदीर्घ, लम्बा किया गया, विस्तारित।

विप्रकृष्टक (वि०) [विप्रकृष्ट+कन्] दूरवर्ती, फ़ासले पर।

विप्रतिकारः [वि+प्रति+कृ+घञ्] 1. प्रतिक्रिया, विरोध, वचनविरोध 2. प्रतिहिंसा।

विप्रतिपत्तिः (स्त्री०) [वि+प्रति+पद्+क्तिन्] 1. पारस्परिक असंगति, प्रतियोगिता, संघर्ष, झगड़ा, विरोध (मतों का या हितों का) 2. असहमति, आपत्ति 3. हैरानी, घबड़ाहट 4. पारस्परिक सम्बन्ध परिचय, जानपहचान।

विप्रतिपन्न (भू० क० कृ०) [वि+प्रति+पद्+क्त]—

1. परस्परविरुद्ध, विरोधी, असहमत 2. घबड़ाया हुआ, व्याकुल, हैरान 3. मुकावले का, विवादग्रस्त 4. परस्परसंयुक्त या सम्बद्ध।

विप्रतिषेधः [वि+प्रति+सिध्+घञ्] 1. नियन्त्रण में रखना, वश में रखना 2. समान रूप से महत्त्वपूर्ण दो बातों का विरोध, दो समान हितों का संघर्ष —हरिविप्रतिषेधं तमाचचक्षे विचक्षणः शि० २।६, (तुल्यबलविरोधो विप्रतिषेधः मल्लि०) 3. (व्या० में) दो नियमों का (जिनसे दो भिन्न नियमों के अनुसार व्याकरण की दो भिन्न प्रक्रियाएं सम्भव हों) संघर्ष, समानरूप से महत्त्वपूर्ण दो नियमों की टक्कर —विप्रतिषेधे परं कार्यम् पा० १।४।२, इस पर दे० काशिका या महाभाष्य) 4. रोक, वर्जन।

विप्रति (ती) सारः [वि+प्रति+सृ+घञ्, पक्षे दीर्घः] 1. पछतावा, शि० १०।२० 2. क्रोध, रोष, गुस्सा 3. दुष्टता, अनिष्ट।

विप्रदुष्ट (भू० क० कृ०) [वि+प्र+दुष्+क्त] 1. दूषित, विकृत, मलिन 2. भ्रष्ट।

विप्रनष्ट (भू० क० कृ०) [वि+प्र+नश्+क्त] 1. खोया हुआ, लुप्त 2. व्यर्थ, निरर्थक।

विप्रमुक्त (भू० क० कृ०) [वि+प्र+मुच्+क्त] 1. स्वतन्त्र छोड़ा हुआ, आजाद किया हुआ, खुला छोड़ा हुआ 2. गोली का निशाना बनाया गया, बन्दूक से दागा गया 3. छुटकारा पाया हुआ।

विप्रयुक्त (भू० क० कृ०) [वि+प्र+युज्+क्त] 1. पृथक् किया हुआ, वियुक्त, विच्छिन्न 2. अलग हुआ, अनुपस्थित मेघ० २ 3. मुक्त किया हुआ, रिहा किया हुआ वञ्चित, विरहित, बिना (समास में)।

विप्रयोगः [वि+प्र+युज्+घञ्] 1. अनैक्य पार्थक्य, वियोग, अलगाव, जैसा कि 'प्रिय°' में 2 विशेषकर प्रेमियों का बिछोह—मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः मेघ० ११५, १०, रघु० १३।२६, १४।६६ 3. कलह, असहमति।

विप्रलब्ध (भू० क० कृ०) [वि+प्र+लभ्+क्त] 1. धोखा दिया गया, ठगा गया 2. निराश किया गया 3. चोट पहुंचाया गया, क्षतिग्रस्त, —ब्धा वह स्त्री जो अपने प्रियतम को नियत स्थान पर न पाकर निराश हो गई हो (काव्यग्रन्थों में वर्णित एक नायिका)—सा० द० ११८ पर दी गई परिभाषा —प्रियः कृत्वापि संकेतं यस्या नायाति संनिधिम्। विप्रलब्धेति सा ज्ञेया नितान्तमवमानिता॥

विप्रलम्भः [वि+प्र+लम्भ्+घञ्] 1. धोखा, छल, चालाकी—कि० ११।२७ 2. विशेषकर मिथ्या उक्तियों या झूठी प्रतिज्ञाओं से छलना 3. कलह, असहमति 4. अनैक्य, पार्थक्य, अलगाव 5. प्रेमियों का बिछोह —शुश्रुवे प्रियजनस्य कातरं विप्रलम्भपरिशंकिनो वचः रघु० १९।१८, वेणी० २।१२ 6. (अलं० में) विप्रलम्भ शृंगार (इसमें नायक नायिका के विरहजन्य सन्ताप आदि का वर्णन किया जाता है) शृंगार के दो मुख्य भेदों में से एक, (विप० संभोग), अपर: (विप्रलम्भः) अभिलाष विरहेर्ष्या प्रवासशापहेतुक इति पंचविधः काव्य० ४, यूनोरयुक्तयोर्भावो युक्तयोर्वाथवा मिथः। अभीष्टालिङ्गनादीनामनवाप्तौ प्रहृष्यते। विप्रलम्भः स विज्ञेयः उज्ज्वलनीलमणिः, तु० सा० द० २१२, तथा अ.गे।

विप्रलापः [वि+प्र+लप्+घञ्] 1. व्यर्थ या निरर्थक बात, बकवास, अनाप-शनाप, निस्सार 2. पारस्परिक वचनविरोध, विरोधी उक्तियाँ 3. झगड़ा, तू-तू मैं-मैं 4. अपनी प्रतिज्ञा तोड़ना, वचन पूरा न करना।

विप्रलयः [विशेषेण प्रलयः प्रा० स०] पूर्ण विनाश या विघटन, सर्वनाश, विद्याकल्पेन मरुता मेघानां भूयसामपि, ब्रह्मणीव विवर्तानां क्वापि विप्रलयः कृतः —उत्तर० ६।६।

विप्रलुप्त (भू० क० कृ०) [वि+प्र+लुप्+क्त] 1. अपहृत, छीना हुआ 2. बाधायुक्त, हस्तक्षेप किया गया।

विप्र,लोभिन् (पुं०) [वि+लुभ्+णिच्+णिनि] दो वृक्षों के नाम, अशोक और किंकिरात।

विप्रवासः [वि+प्र+वस्+घञ्] परदेश में रहना, विदेश में निवास करना (अपनी जन्मभूमि से दूर रहना)।

विप्रश्निका [विशेषेण प्रश्नो यस्याः वि+प्रश्न+कप्+टाप्, इत्वम्] स्त्री ज्योतिषी, जो भाग्य की बातें बतलाये।

विप्रहीण (वि०) [वि+प्र+हा+क्त] वञ्चित, विरहित।

विप्रिय (वि०) [वि+प्री+क, इगभावः] अरुचिकर, जो पसन्द न हो, जो सुखद न हो, जो स्वादिष्ट न हो, —यम् अपराध, अनिष्ट, अरुचिकर कार्य मनसापि न विप्रियं मया कृतपूर्वं तव किं जहासि माम् —रघु० ८।५२, कु० ४।७, कि० ९।३९, शि० १५।११।

विप्रुष् (स्त्री०) [वि+प्रुष्+क्विप्] 1. (पानी या किसी अन्य द्रव की) बूंद संतापं नवजलविप्रुषो गृहीत्वा —शि० ८।४०, स्वेदविप्रुषः २।१८ 2. चिह्न, बिन्दु, धब्बा।

विप्रोषित (भू० क० कृ०) [वि+प्र+वस्+क्त] 1. परदेश में रहना, जन्मभूमि से दूर होना, अनुपस्थित 2. निर्वासित, देशनिकालाप्राप्त रघु० १२।११। सम० भर्तृका वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हुआ है।

विप्लवः [वि+प्लु+अप्] 1. बहना, इधर-उधर टहलना, विभिन्न दिशाओं में बहना 2. विरोध, वैपरीत्य

3. हैरानी, व्याकुलता 4. हुल्लड़, हंगामा, हल्ला-गुल्ला मालवि० १ 5. निर्जनीकरण, वह संग्राम जिसमें लूटपाट खूब हो, शत्रु से भय 6. बलात् लूटपाट 7. हानि, विनाश—सत्त्वविप्लवात् रघु० ८।४१ 8. आपदा, आपत्काल अथवा मम भाग्यविप्लवात्—रघु० ८।४७ 9. दर्पण पर जमी हुई धूल या जंग —अपवर्जितविप्लवे शुचौ ''मतिरादर्श इवाभिदृश्यते —कि० २।२६, (यहाँ 'विप्लव' का 'प्रमाणबाध' अर्थात् तर्काभाव भी है) 10. अतिक्रमण, उल्लंघन—कि० १।१३ 11. अनिष्ट, संकट 12. पाप दुष्टता, पापमयता।

विप्लावः [वि+प्लु+घञ्] 1. जलप्लावन, बाढ़ 2. उपद्रव 3. घोड़े की सरपट दौड़।

विप्लुत (भू० क० कृ०) [वि+प्लु+क्त] 1. जो इधर उधर बह गया हो 2. डूबा हुआ, निमग्न, बाढ़ग्रस्त, किनारों से बाहर होकर बहा हुआ 3. हैरान, परेशान 4. विध्वस्त, उजाड़ा, हुआ 5. लुप्त ओझल 6. अपमानित, अनादृत 7. बर्बाद 8. तिरोहित, विरूपित 9. दुश्चरित्र, लम्पट, दुराचारी, लुच्चा 10. विपरीत, उलटा 11. मिथ्या, झूठा उत्तर० ४।१८।

विप्लुष् दे० 'विप्रुष्'।

विफल (वि०) [विगतं फलं यस्य—प्रा० ब०] 1. फलरहित, अनुपयोगी, व्यर्थ, प्रभावशून्य, अलाभकर—मम विफलमेतदनुरूपमपि यौवनं गीत० ७, जगता वा विफलेन किं फलम् रस०, शि० ९।६, कु० ७।६६, मेघ० ६८ 2. बेकार, निरर्थक।

विबंधः [वि+बन्ध्+घञ्] 1. कोष्ठ बद्धता 2. रुकावट।

विबाधा [विशिष्टा बाधा—प्रा० स०] पीडा, वेदना, संताप, मानसिक कष्ट।

विबुद्ध (भू० क० कृ०) [वि+बुध्+क्त] 1. उठाया हुआ, जगाया हुआ, जागरूक—श० २ 2. फुलाया हुआ, मंजरीयुक्त, पूरा खिला हुआ 3. चतुर, कुशल।

विबुधः [विशेषेण बुध्यते—बुध्+क] 1. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, ऋषि, मुनि—सख्यं साप्तपदीनं भो इत्याहुर्विबुधा जनाः—पंच० २।४३ 2. सुर, देवता,—अभूनृपो विबुधसखः परंतपः भट्टि० १।१, गोप्तारं न निधीनां महयन्ति महेश्वरं विबुधाः सुभा० 3. चाँद। सम०—अधिपतिः, इन्द्रः, ईश्वरः इन्द्र का विशेषण,—द्विष्, शत्रुः राक्षस—विक्रम १।३।

विबुधानः [वि+बुध्+शानच्] 1. विद्वान् पुरुष 2. अध्यापक।

विबोधः [विबुध्+घञ्] 1. जागरण, जागते रहना 2. प्रत्यक्षज्ञान, खोजना 3. बुद्धि, प्रतिभा 4. जाग जाना, सचेत होना, अलं० में ३३ या ३४ व्यभिचारी भावों में से एक,—निद्रानाशोत्तरं जायमानो बोधो विबोधः—रस०।

विब्वोक दे० 'बिब्बोक'।

विभक्त (भू० क० कृ०) [वि+भज्+क्त] 1. बांटा हुआ, विभाजित की हुई संपत्ति आदि) 2. बंटा हुआ, स्वार्थ की दृष्टि से अलग अलग किया हुआ, 'विभक्ता भ्रातरः' में 3. जुदा किया हुआ, अलग किया हुआ, भिन्न किया हुआ,—शि० १।३ 4. विभिन्न, विविध 5. सेवानिवृत्त, एकान्तवासी 6. नियमित, सममित 7. विभूषित (दे० वि पूर्वक भज्),—क्तः कार्तिकेय।

विभक्तिः (स्त्री०) [वि+भज्+क्तिन्] 1. बांटना, प्रभाग, विभाजन, बंटवारा 2. पार्थक्य, स्वार्थ में अलगाव 3. हिस्सा, दायभाग 4. (व्या० में) संज्ञा शब्दों के साथ लगा कारक या कारक चिह्न।

विभंगः [वि+भंज्+घञ्] 1. टूटना, अस्थिभंग 2. ठहराना, अवरोध, पड़ाव भग० २।२६ 3. झुकना, (भौंहों आदि का) सिकोड़ना भ्रूविभंगकुटिलं च वीक्षितं—रघु० १९।१७ 4. शिकन, झुर्री 5. पग, सीढ़ी —रघु० ६।३ 6. फूट पड़ना, प्रकटीकरण—विविधविकार विभंगम्—गीत० ११।

विभवः [वि+भू+अच्] 1. दौलत, धन, सम्पत्ति—अतनुषु विभवेषु ज्ञातयः सन्तु नाम श० ५।८, रघु० ८।६९ 2. ताक़त, शक्ति, पराक्रम, बड़प्पन एतावान्मम मतिविभवः—विक्रम०२, वाग्विभवः मा० १।२०, रघु० १।९, कि० ५।२१ 3. उन्नत अवस्था, पद, प्रतिष्ठा 4. महत्ता 5. मोक्ष, मुक्ति।

विभा [वि+भा+क्विप्] 1. प्रकाश, आभा 2. प्रकाश, किरण 3. सौन्दर्य। सम०—करः सूर्य,—वत बत लसत्तेजःपुंजो विभाति करः—काव्य० १० 2. मदार का पौधा 3. चन्द्रमा, वसुः 1. सूर्य 2. अग्नि रचयिष्यामि तनुं विभावसौ—कु० ४।३४, रघु० ३।३७, १०।८३, भग० ७।९ 3. चन्द्रमा 4. एक प्रकार का हार।

विभागः [वि+भज्+घञ्] 1. प्रभाग, विभाजन, अंश (दायभाग आदि का)—समस्तत्र विभागः स्यात् —मनु० ९।१२०, २१०, याज्ञ० २।११४ 2. दायभाग 3. भाग या हिस्सा 4. बांटना, अलग-अलग करना, पार्थक्य (न्या० में यह एक गुण माना जाता है)—कु० २४, भग० ३।२९ 5. अंश 6. अनुभाग। सम०—कल्पना हिस्सों का नियत करना—याज्ञ० २।१४९, —धर्मः दायभाग की विधि, बंटवारे का कानून,—पत्रिका विभाजन की दस्तावेज़,—भाज् (पुं०) पहले से बंटी हुई सम्पत्ति का हिस्सेदार याज्ञ० १।१२२।

विभाजनम् [वि+भज्+णिच्+ल्युट्] बंटवारा, वितरण करना।

विभाज्य (वि०) [वि+भज्+ण्यत्] 1. अंशों में विभक्त किये जाने के योग्य, बांटे जाने के योग्य 2. विभाजनीय।

विभातम् [वि+भा+क्त] प्रभात, पौ फटना।

विभावः [वि+भू+घञ्] मन या शरीर को किसी विशेष स्थिति में विकसित करने वाली दशा, रस-भाव की उद्‌बोधक स्थिति, तीन मुख्य भावों में से एक (दूसरे दो हैं—अनुभाव तथा व्यभिचारीभाव) रत्याद्युद्‌बोधका लोके विभावाः काव्यनाट्ययोः—सा० द० ६१, (इसके मुख्य अवान्तर भेद हैं—आलंबन और उद्दीपक—दे० आलंबन) 2. मित्र, परिचित।

विभावनम्,—ना [वि+भू+णिच्+ल्युट्,] 1. स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान, या निश्चय, विवेक, निर्णय 2. विचार विमर्श, गवेषण, परीक्षा 3. प्रत्यय, कल्पना,—ना आलं में) एक अलंकार जिसमें बिना कारण के कार्यों का होना वर्णित होता है—क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना—काव्य० १०।

विभावरी [वि+भा+वनिप्+ङीप्, र आदेशः] 1. रात—अपर्वणि ग्रहकलुषेंदुमंडला विभावरी कथय कथं भविष्यति—मालवि० ४।१५, ५।७, कु० ५।४४ 2. हल्दी 3. कुटनी 4. वेश्या 5. वामाचारिणी स्त्री 6. मुखरा स्त्री, बातूनी।

विभावित (भू० क० कृ०) [वि+भू+णिच्+क्त] 1. प्रकटीकृत, स्पष्ट रूप से दर्शनीय किया हुआ 2. ज्ञात, जाना हुआ, निश्चित किया हुआ 3. देखा हुआ, सोचा हुआ 4. निर्णीत, विवेचन किया हुआ 5. अनुमित, संकेतित 6. सिद्ध, सर्वसम्मत। सम०—**एकदेश** (वि०) 'जिसके साथ एक भाग का पता लगाया गया' अर्थात् जो (विवादास्पद विषय के) एक भाग के संबंध में अपराधी पाया गया—विभावितैकदेशेन देयं यदभियुज्यते—विक्रम० ४।१७।

विभाषा [वि+भाष्+अ+टाप्] 1. ईप्सित वस्तु, विकल्प 2. नियम की वैकल्पिकता।

विभासा [वि+भास्+अ+टाप्] प्रकाश, कान्ति, आभा।

विभिन्न (भू० क० कृ०) [वि+भिद्+क्त] 1. तोड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ, खण्ड खण्ड किया हुआ बींधा हुआ, घायल 3. दूर हटाया हुआ, भगाया हुआ, तितर बितर किया 4. हैरान, परेशान, व्याकुल, 5. इधर उधर डोला हुआ 6. निराश किया हुआ 7. विविध, नानाप्रकार के 8. मिश्रित, मिलाया हुआ, चितकबरा, रंगबिरंगा—विभिन्नवर्णा गरुडाग्रजेन सूर्यस्य रथ्याः परितः स्फुरंत्या—शि० ४।१४, (दे० वि पूर्वक भिद्),—**न्नः** शिव का नाम।

विभीतः, —तम्, विभीतकः, —कम्, विभीतकी विभीता [विशेषेण भीतः, विभीत+कन्, विभीतक+ङीप्, विभीत+टाप्] एक वृक्ष का नाम, बहेड़ा, (त्रिफला में से एक) बहेड़े का पेड़।

विभीषक (वि०) [विशेषेण भीषयते— वि+भी+णिच+ण्वुल् षुक् आगमः] डरावना, त्रास या भय देने वाला।

विभीषिका [वि+भी+णिच्+ण्वुल्+टाप्, षुकागमः, इत्वं च] 1. त्रास 2. डराने के साधन, हौवा (चिड़ियों को डराने के लिए फूंस का पुतला, जु जू) —यदि ते संति संत्वेव केयमन्या विभीषिका—उत्तर० ४।२९।

विभु (वि०) (स्त्री०—भु,—भ्वी) [वि+भू+डु] 1. ताकतवर, शक्तिशाली 2. प्रमुख, सर्वोपरि 3. योग्य, समर्थ (तुमुन्नंत के साथ)—(धनुः) पूरयितुं भवंति विभवः शिखरमणिरुचः—कि० ५।४३ 4. आत्मसंयमी, धीर, जितेन्द्रिय—कमपरमवशं न विप्रकुर्युर्विभुमपि तं यदमी स्पृशंति भावाः—कु० ६।९५ 5. (न्या० में) नित्य०, सर्वव्यापक, सर्वगत,—**भुः** 1. अन्तरिक्ष 2. आकाश 3. काल 4. आत्मा 5. स्वामी, शासक, प्रभु, राजा 6. सर्वोपरि शासक—भग० ५।१४, १०।१२ 7. सेवक 8. ब्रह्मा 9. शिव—कु० ७।३१ 10 विष्णु।

विभुग्न (वि०) [वि+भुज्+क्त] वक्र, झुका हुआ, टेढ़ा, कुटिल।

विभूतिः (स्त्री०) [वि+भू+क्तिन्] 1. ताकत, शक्ति, बड़प्पन—शि० १४।५, कु० २।६१ 2. समृद्धि, कल्याण 3. प्रतिष्ठा, उच्च पद 4. धन, प्राचुर्य, महिमा, क़ान्ति अहो राजाधिराजमंत्रिणो विभूतिः—मुद्रा० ३, रघु० ८।३६ 5. दौलत, धन—रघु० ४।१९, ६।७६, १७।४३ 6. अतिमानव शक्ति (इसमें आठ शक्तियां सम्मिलित हैं अणिमन्, लघिमन्, प्राप्ति, प्राकाम्यम्, महिमन्, ईशिता, वशिता और कामावसायिता)—कु० २।११ 7. [illegible] की राख।

विभूषणम् [वि+भूष्+ल्युट्] अलंकार, सजावट,—विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम्—भर्तृ० २।७, रघु० १६।८०।

विभूषा [वि+भूष्+अ+टाप्] अलंकार, सजावट,— संपेदे श्रमसलिलोद्‌गमो विभूषा—कि० ७।५, रघु० ४।५४ 2. प्रकाश, कान्ति 3. सौंदर्य, आभा।

विभूषित (भू० क० कृ०) [वि+भूष्+णिच्+क्त] अलंकृत, सुशोभित, सुभूषित।

विभृत (भू० क० कृ०) [वि+भृ+क्त] संभाला गया, सहारा दिया गया, संधारित या संपोषित।

विभ्रंशः [वि+भ्रंश्+घञ्] 1. गिरना, टूट पड़ना 2. ह्रास, क्षय, बर्बादी 3. चट्टान।

विभ्रंशित (भू० क० कृ०) [वि+भ्रंश्+क्त] 1. बहकाया गया, फुसलाया गया 2. वंचित, विरहित।

विभ्रमः [वि+भ्रम्+घञ्] 1. इधर उधर टहलना,

घूमना 2. भ्रमण, फेरा, इधर उधर लुढ़कना 3. त्रुटि, भूल, गलती 4. उतावली, अव्यवस्था, हड़बड़ी, गड़बड़ी विशेषतः प्रेम के कारण उत्पन्न मन की अस्थिरता —चित्तवृत्त्यनवस्थानं शृङ्गाराद्विभ्रमो भवेत् 5. (अतः) हड़बड़ी के कारण अलंकारादिक का उलटा-सीधा पहनना -- विभ्रमस्त्वरयाऽकाले भूषास्थान विपर्ययः, दे० कु० १।४ तदुपरि मल्लि० 6. रंगरेलियाँ, कामकेलि, आमोद-प्रमोद - मा० १।२६, ९।३८ 7. सौन्दर्य, लालित्य, लावण्य—नै० १५।२५, उत्तर० १।२०, ३४, ६।४, शि० ६।४६, ७।१५, १६।६४ 8. सन्देह, आशंका 9. सनक, वहम।

विभ्रमा [वि+भ्रम्+अच्+टाप्] बुढ़ापा।

विभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [वि+भ्रंश्+क्त] 1. गिरा हुआ, पड़ा हुआ, अलग किया हुआ 2. क्षीण, लुप्त, पतित, बर्बाद 3. ओझल, अन्तर्हित।

विभ्राज् (वि०) [वि+भ्राज्+क्विप्] चमकीला, दीप्तिमान्, प्रकाशमान।

विभ्रांत (भू० क० कृ०) [वि+भ्रम्+क्त] 1. चक्कर खाया हुआ 2. विक्षुब्ध, व्याकुल, अव्यवस्थित, हड़बड़ाया हुआ 3. भ्रम में पड़ा हुआ, भूल करने वाला। सम० –नयन (वि०) विलोलदृष्टि, चंचल आंखों वाला,–शील (वि०) 1. जिसका चित्त अव्यवस्थित हो 2. नशे में चूर, मतवाला, –लः 1. बन्दर 2. सूर्यमंडल या चन्द्रमंडल।

विभ्रान्तिः (स्त्री०) [वि+भ्रम्+क्तिन्] 1. चक्कर, फेरा 2. हड़बड़ी, त्रुटि, गड़बड़ी 3. उतावली, जल्दबाजी।

विमत (भू० क० कृ०) [वि+मन्+क्त] 1. असहमत, असम्मत, भिन्न मत रखने वाला 2. विषम, असंगत 3. अनादृत, अपमानित, उपेक्षित, –तः शत्रु।

विमति (वि०) [विरुद्धा विगता वा मतिर्यस्य—प्रा० ब०] मूर्ख, प्रज्ञाशून्य, मूढ,—तिः (स्त्री०) 1. असम्मति, असहमति, मतविभिन्नता 2. अरुचि 3. जड़ता।

विमत्सरम् (वि०) [विगतः मत्सरो यस्य—प्रा० ब०] ईर्ष्या से मुक्त, ईर्ष्यारहित—भग० ४।२२।

विमद (वि०) [विगतः मदो यस्य—प्रा० ब०] 1. नशे से मुक्त 2. हर्षशून्य, ईर्ष्यालु।

विमनस्, विमनस्क (वि०) [विरुद्धं मनो यस्य, पक्षे कप्, प्रा० ब०] 1. उदास, विषण्ण, अवसन्न, खिन्न, म्लान—उत्तर० १।७ 2. अनमना 3. हैरान, परेशान 4. अप्रसन्न 5. जिसका मन या भावना बदली हुई हो।

विमन्यु (वि०) [विगतः मन्युर्यस्य प्रा० ब०] 1. क्रोध से मुक्त 2. शोक से मुक्त।

विमयः [वि+मी+अच्] विनिमय, अदला-बदली।

विमर्दः [वि+मृद्+घञ्] 1. चूरा करना, कुचलना, चकना चूर करना 2. मसलना, रगड़ना—विमर्दसुरभिर्वकुलावलिका खल्वहम्—मालवि० ३, रघु० ५।६५ 3. स्पर्श 4. उबटन आदि शरीर पर मलना 5. संग्राम, युद्ध, लड़ाई, भिड़न्त विमर्दक्षमां भूमिमवतरावः—उत्तर० ५ 6. विनाश, उजाड़,—रघु० ६।६२ 7. सूर्य और चन्द्रमा का मेल 8. ग्रहण।

विमर्दक: [वि+मृद्+ण्वुल्] 1. पीसने वाला, चूरा करने वाला, चकनाचूर करने वाला 2. गन्ध द्रव्यों की पिसाई 3. ग्रहण 4. सूर्य और चन्द्र का मेल।

विमर्दनम्,—ना [वि+मृद्+ल्युट्] 1. चूरा करना, कुचलना, रौंदना 2. आपस में मसलना, रगड़ना 3. विनाश, हत्या 4. गंध द्रव्यों की पिसाई 5. ग्रहण।

विमर्शः [वि+मृश्+घञ्] 1. विचार विनिमय, सोच विचार, परीक्षण, चर्चा 2. तर्कना 3. विपरीत निर्णय 4. संकोच, संदेह 5. पिछले शुभाशुभ कर्मों की मन के ऊपर बनी छाप, दे० वासना।

विमर्षः [वि+मृष्+घञ् 1. विचार, विचारविनिमय 2. अधीरता, असहिष्णुता 3. असन्तोष, अप्रसन्नता 4. (नाटकों में) नाटकीय कथा वस्तु की सफल प्रगति में परिवर्तन, किसी प्रेमाख्यान के सफल प्रक्रम में किसी अदृष्ट दुर्घटना के कारण परिवर्तन, सा० द० ३३६ पर इसकी परिभाषा यह है—यत्र मुख्यफलोपाय उद्भिन्नो गर्भतोऽधिकः, शापाद्यैः सांतरायश्च स विमर्ष इति स्मृतः दे० मुद्रा० ४।३, (इन सब अर्थों के लिए बहुधा विमर्श लिखा जाता है)।

विमल (वि०) [विगतो मलो यस्मात्—प्रा० ब०] 1. पवित्र, निर्मल, मलरहित, स्वच्छ (आल० से भी) 2. साफ़, शुभ्र, स्फटिक जैसा, पारदर्शी (जैसे जल) विमलं जलम् 3. श्वेत, उज्ज्वल,—लम् 1. चांदी की कलई 2. तालक, सेलखड़ी। सम० – दानम् देवता के लिए चढ़ावा,—मणिः स्फटिक।

विमांसः, - सम् [विरुद्धं मांसम्—प्रा० स०] अस्वच्छ मांस (जैसे कुत्तों का)।

विमातृ (स्त्री०) [विरुद्धा माता—प्रा० स०] सौतेली माँ। सम०—जः सौतेली माँ का बेटा।

विमानः,—नम् [वि+मन्+घञ्, वि+मा+ल्युट् वा] 1. अनादर, अपमान 2. माप 3. गुब्बारा, व्योमयान (आकाश में घूमने वाला) पदं विमानेन विगाहमानः—रघु० १३।१, ७।५१, १२।१०४, कु० २।४५, ७।४०, विक्रम० ४।४३, कि० ७।११ 4. यान, सवारी—रघु० १६।६८ 5. कमरा, शानदार कमरा या सभाभवन—रघु० १७।९ 6. (सात मंजिलों का) महल —नेत्रा नीताः सततगतिना यद्विमानाग्रभूमीः—मेघ० ६९ 7. घोड़ा। सम०—चारिन्, यान (वि०) गुब्बारे में बैठ कर घूमने वाला,—राजः 1. श्रेष्ठ व्योमयान—उत्तर० ३ 2. व्योमयान का संचालक।

विमानना [वि+मन्+णिच्+युच्+टाप्] अनादर, निरादर, अपमान, प्रतिष्ठा भंग विमानना सुभ्रु कुतः पितुर्गृहे कु० ५।४३, अभवन्नास्य विमानना क्वचित् —रघु० ८।८ ।

विमानित (भू० क० कृ०) [वि+मन्+णिच्+क्त] अनादृत, निरादृत ।

विमार्गः [विरुद्धो मार्गः—प्रा० स०] 1. खराब सड़क 2. कुपथ, दुराचरण, अनैतिकता 3. झाड़ू । सम० --गा असती स्त्री विमार्गगायाश्च रुचिः स्वकांते —भामि० १।१२५, गामिन्, प्रस्थित (वि०) असदाचारी—श० ५।८ ।

विमार्गणम् [वि+मार्ग्+ल्युट्] ढूंढना, खोजना, तलाश करना ।

विमिश्रित, विमिश्रित (वि०)[वि+मिश्र्+अच्, क्त वा] मिला हुआ, सम्पृक्त, गड्डमड्ड किया हुआ (करण० के साथ या समास में)—पुंभिर्विमिश्रा नार्यश्च—महा०, दंपत्योरिह को न को न तमसि व्रीडाविमिश्रो रसः गीत० ५ ।

विमुक्त (भू० क० कृ०) [वि+मुच्+क्त] 1. आजाद किया हुआ, रिहा किया हुआ, स्वतन्त्र किया हुआ, 2. परित्यक्त, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, पीछे रहा हुआ 3. स्वतंत्र 4. जोर से फेंका गया, (बन्दूक से) दागा गया 5. अभिव्यक्त । सम० कंठ (वि०) क्रन्दन करने वाला, फूट फूट कर रोने वाला ।

विमुक्तिः (स्त्री०) [वि+मुच्+क्तिन्] 1. रिहाई, छुटकारा 2. वियोग 3. मोक्ष, उद्धार ।

विमुख (वि०) (स्त्री०—खी) [विरुद्धमननुकूलं मुखं यस्य प्रा० ब०] 1. मुंह मोड़े हुए 2. पराङ्मुख, अनिच्छुक, विरुद्ध—न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय, प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः मेघ० १७,२७, (रघूणां) मनः परस्त्रीविमुखप्रवृत्ति रघु० १६।८, १९।४७ 3. शत्रु—हि० १।१३० 4. रहित, शून्य (समास में) करुणाविमुखेन मृत्युना हरता त्वां वद किं न मे हृतम् रघु० ८।६७ ।

विमुग्ध (वि०) [वि+मुह्+क्त] अव्यवस्थित घबराया हुआ, व्याकुल ।

विमुद्र (वि०) [विगता मुद्रा यस्य प्रा० ब०] 1. बिना मोहर लगा 2. खुला हुआ, मुकुलित, खिला हुआ ।

विमूढ (भू० क० कृ०) [वि+मुह्+क्त] 1. घबराया हुआ, व्याकुल 2. बहकाया हुआ, लुभाया हुआ, फुसलाया हुआ 3. जड़ ।

विमृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+मृज्+क्त] 1. मला हुआ, पोंछा गया, साफ किया गया 2. सोचा हुआ, विचार किया हुआ, चिन्तन किया हुआ ।

विमोक्षः [वि+मोक्ष्+घञ्] 1. रिहाई, मुक्ति, छुटकारा 2. गोली दागना, निशाना लगाना 3. मुक्ति ।

विमोक्षणम्,-णा [वि+मोक्ष्+ल्युट्] 1. छुटकारा, रिहाई मुक्त करना 2. गोली दागना 3. त्यागना, छोड़ना, परित्यक्त करना 4. (अण्डे) देना ।

विमोचनम् [वि+मुच्+ल्युट्] 1. खोल देना, जूआ हटा लेना 2. रिहाई, स्वतन्त्रता 3. छुटकारा, मोक्ष ।

विमोहन (वि०) (स्त्री० -ना,-नी) [वि+मुह्+णिच्+ल्युट्] 1. रिझाना, प्रलोभन देना, आकृष्ट करना, —नः, नरक का एक प्रभाग, —नम् फुसलाना, लुभाना, आकृष्ट करना ।

विंबः, —बम् दे० 'विम्ब' ।

विंबकः दे० 'विम्बक' ।

विंबटः [विब्+अट्+अच्, शक० पररूपम्] राई का पौधा ।

विंबिका दे० 'विंविका' ।

विंबा,—बी (स्त्री) [विब्+अच्+टाप्, ङीप् वा] एक बेल का नाम ।

विंबित दे० 'विंबित' ।

विंबुः (पुं०) सुपारी का पेड़ ।

वियत् (नपुं०) [वियच्छति न विरमति— वि+यम्+क्विप्, म लोपः, तुकागमः] आकाश, अन्तरिक्ष, निरभ्रव्योम पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति श० १।७, रघु० १३।४० । सम० —गंगा 1. स्वर्गीय गंगा 2. आकाशगंगा,—चारिन् (वियच्चारिन्) (पुं०) चील,—भूतिः (स्त्री०) अंधकार, मणिः (वियन्मणिः) सूर्य ।

वियतिः (पुं०) पक्षी ।

वियमः [वि+यम्+अप्] 1. प्रतिबंध, रोक, नियन्त्रण 2. दुःख, पीड़ा, कष्ट 3. विराम, पड़ाव ।

वियात (वि०) [विरुद्धं निंदां यातः—प्रा० स०] 1. धृष्ट 2. साहसी, निर्लज्ज, ढीठ ।

वियाम दे० 'वियम' ।

वियुक्त (भू० क० कृ०) [वि+युज्+क्त] 1. विच्छिन्न, पृथक्कृत, अलग किया हुआ 2. जुदा किया हुआ, परित्यक्त 3. मुक्त, वंचित (करण० के साथ या समास में) ।

वियुत (भू० क० कृ०) [वि+यु+क्त] वियुक्त, विरहित, वञ्चित विक्रम० ४।१८ ।

वियोगः [वि+युज्+घञ्] 1. जुदाई, विच्छेद,—अयमेकपदे तया वियोगः सहसा चोपनतः सुदुःसहो मे—विक्रम० ४।३, त्वयोपस्थितवियोगस्य तपोवनस्यापि समवस्था दृश्यते श० ४, संघत्ते भृशमरतिं हि सद्वियोगः कि० ५।४१, रघु० १२।१०, शि० १२।६३ 2. अभाव, हानि 3. व्यवकलन ।

वियोगिन् (वि०) [वियोग+इनि] वियुक्त—(पुं०) चक्रवाक ।

वियोगिनी [वियोगिन्+ङीप्] 1. अपने पति या प्रेमी

वियुक्त स्त्री,—गुरुनिःश्वसितैः कविर्मनीषी निरणैषीदथ तां वियोगिनीति –भामि० ४।३५ 2. एक छन्द या वृत्त का नाम (दे० परि० १)।

वियोजित (भू० क० कृ०) [वि+युज्+णिच्+क्त] 1. अलगाया हुआ 2. जुदा किया हुआ, वञ्चित।

वियोनिः,—नी [विविधा विरुद्धा वा योनिः प्रा० स०] 1. नाना जन्म 2. पशुओं का गर्भाशय (मनु० १२।७७ पर कुल्लू०) 3. हीन या कलंकपूर्ण जन्म।

विरक्त (भू० क० कृ०) [वि+रंज+क्त] 1. बहुत लाल, लालिमा से युक्त—रघु० १३।६४ 2. बदरंग 3. अनुरागहीन, स्नेहशून्य, अप्रसन्न—भर्तृ० २।२ 4. सांसारिक राग या लालसा से मुक्त, उदासीन 5. आवेश पूर्ण।

विरक्तिः (स्त्री०) [वि+रञ्ज्+क्तिन्] 1. चित्तवृत्ति में परिवर्तन, असन्तोष, असंतृप्ति, स्नेहशून्यता 2. अलगाव 3. उदासीनता, इच्छा का अभाव, सांसारिक लालसा या आसक्तियों से मुक्त।

विरचनम्,—ना [वि+रच्+ल्युट्] 1. क्रम व्यवस्थापन —शि० ५।२१ 2. रचना करना, संरचन 3. निर्माण करना, सृजन करना 4. साहित्य-रचना करना, संकलन करना।

विरचित (भू० क० कृ०) [वि+रच्+क्त] 1. क्रम से रक्खा गया, बनाया गया, निर्मित, तैयार किया गया 2. घटित किया हुआ, संरचना किया हुआ 3. लिखा हुआ, साहित्य-सृजन किया हुआ 4. काट-छांट किया गया, संवारा गया, परिष्कृत किया गया, बनाव-सिंगार किया गया 5. धारण किया गया, पहनाया गया 6. जड़ा गया, बैठाया गया।

विरज (वि०) [विगतं रजो यस्मात्—प्रा० ब०] जिस पर धूल या गर्द न हो, जिसमें राग न हो,—**जः** विष्णु का विशेषण।

विरजस्, विरजस्क (वि०) [विगतं रजः यस्मात् यस्य वा प्रा० ब०] 1. जिस पर धूल न पड़ी हो, राग रहित शि० २०।८० 2. जिसका रजोधर्म आना बंद हो गया हो।

विरजस्का [विरजस्+कप्+टाप्] वह स्त्री जिसको रजोधर्म आना बन्द हो गया हो।

विरंचः, —चिः [वि+रच्+अच्, इन् वा, मुम्] ब्रह्मा।

विरटः (पुं०) एक प्रकार का काला अगुरु, अगर का वृक्ष।

विरणम् [विशिष्टो रणो मूलं यस्य—प्रा० ब०] एक प्रकार का सुगन्धित घास, तु० वीरण।

विरत [वि+रम्+क्त] 1. बन्द किया हुआ, रुका हुआ (अपा० के साथ) 2. विश्रान्त, थका हुआ, ठहरा हुआ 3. समाप्त, उपसंहृत, समाप्ति पर विरतं गेयमृतुर्निरुत्सवः रघु० ८।६६।

विरतिः (स्त्री०) [वि०+रम्+क्तिन्] 1. बन्द करना, ठहरना, रोकना 2. विश्राम, अवसान, यति 3. सांसारिक वासनाओं के प्रति उदासीनता भर्तृ० ३।७९।

विरमः [वि+रम्+अप्] 1. रोक, थाम 2. सूर्य का छिपना।

विरल (वि०) [वि+रा+कलन्] 1. छिद्रों से युक्त, जिसके बीच में अन्तराल हों, पतला, जो सघन न हो, सटा हुआ न हो विपर्यासं यातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम्—उत्तर० २।२७, भवति विरलभक्तिम्लान पुष्पोपहारः रघु० ५।७४ 2. पतला, कोमल 3. ढीला, विस्तृत 4. निराला, दुर्लभ, अनूठा,—पंच० १।२९ 5. कम, थोड़ा (संख्या या परिमाण संबंधी) —तत्त्वं किमपि काव्यानां जानाति विरलो भुवि—भामि० १।११७, विरला तपच्छविः—शि० ९।३ 6. दूरवर्ती, दूरस्थ, लम्बा (समय या दूरी आदि),—**लम्** दही, जमाया हुआ दूध, **लम्** (अव्य०) कठिनाई से, कभी कभी, जो बहुतायत से न हो, नहीं के बराबर। सम० **जानुक** (वि०) धनुः **पदी**, जिसके घुटनों में अधिक दूरी हो,—**द्रवा**, एक प्रकार की लपसी।

विरस (वि०) [विगतः रसो यस्य प्रा० ब०] 1. स्वादरहित, फीका, नीरस 2. अप्रिय, अरुचिकर, पीडाकर—तावत्कोकिल विरसान् यापय दिवसान् बनान्तरे निवसन् –भामि० १।७ 3. क्रूर, निर्दय,—**सः** पीडा।

विरहः [वि+रह्+अच्] 1. बिछोह, वियोग 2. विशेषतः प्रेमियों की जुदाई—सा विरहे तव दीना –गीत० ४, क्षणमपि विरहः पुरा न सेहे तदेव, मेघ० ८, १२, २९, ८५, ८७ 3. अनुपस्थिति 4. अभाव 5. उजड़ना, परित्याग, छोड़ देना। सम० **अनलः** वियोगाग्नि,—**अवस्था** वियोगदशा, **आर्त**, –**उत्कण्ठ**, –**उत्सुक** (वि०) वियोग का कष्ट भोगने वाला, बिछोह के कारण दुःखी,—**उत्कण्ठिता** वह स्त्री जो अपने पति या प्रेमी के वियोग से दुःखी है, काव्यग्रंथों में वर्णित एक नायिका दे० सा० द० १२१, **ज्वरः** वियोग की वेदना या ज्वर।

विरहिणी [विरहिन्+ङीप्] 1. अपने पति या प्रेमी से वियुक्त स्त्री 2. मज़दूरी, भाड़ा।

विरहित (भू० क० कृ०) [वि+रह्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, परित्यक्त, त्यागा हुआ 2. वियुक्त 3. अकेला, एकाकी 4. हीन, शून्य, मुक्त (बहुधा समास में)।

विरहिन् (वि०) (स्त्री० विरहिणी) [विरह+इनि] अनुपस्थित, अपनी प्रेयसी या प्रेमी से वियुक्त होने वाला, –नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते गीत० १।

विरागः [वि+रञ्ज्+घञ्] 1 रंग का बदलना 2. वृत्तिपरिवर्तन, स्नेहाभाव, असन्तृप्ति असन्तोष,—

विरागकारणेषु परिहृतेषु -- मुद्रा० १ 3. अरुचि, इच्छा न होना 4. सांसारिक वासनाओं के प्रति उदासीनता, राग से मुक्ति।

विराज् (पुं०) [वि+राज्+क्विप्] 1. सौन्दर्य, आभा 2. क्षत्रिय जाति का पुरुष 3. ब्रह्मा की प्रथम सन्तान, तु० मनु० १।३२, तस्मात् विराडजायत ऋग् १०। ९०।५, (यहाँ 'विराज्' को पुरुष से उत्पन्न बतलाया गया है) 4. शरीर, स्त्री० एक वैदिक वृत्त या छन्द का नाम।

विराज दे० 'विराज्'।

विराजित (भू० क० कृ०) [वि+राज्+क्त] 1. देदीप्यमान, प्रकाशित 2. प्रदर्शित, प्रकटीकृत।

विराटः [विशेषो राटो यत्र] 1. भारतवर्ष के एक जिले का नाम 2. मत्स्य देश के एक राजा का नाम (पाण्डव लोगों ने एक वर्ष तक इस राजा की सेवा में छद्मवेश में रहकर अपने अज्ञात वास का समय बिताया) यह उनके निर्वासन का तेरहवाँ वर्ष था। विराटराज की कन्या उत्तरा का विवाह अभिमन्यु से हुआ। उत्तरा परीक्षित् की माता थी। परीक्षित् ने हस्तिनापुर में युधिष्ठिर के बाद राज्य की बागडोर सम्भाली। सम० जः एक प्रकार का घटिया हीरा, —पर्वन् (नपुं०) महाभारत का चौथा पर्व।

विराटकः [विराट+कन्] घटिया प्रकार का हीरा, हीरे की घटिया प्रकार।

विराणिन् (पुं०) [वि+रण्+णिनि] हाथी।

विराद्ध (भू० क० कृ०) [वि+राध्+क्त] 1. विरुद्ध, प्रतिकृत 2. कुपित, क्षतिग्रस्त, घृणापूर्वक व्यवहृत, उद्धरण देखिये वि पूर्वक 'राध्' के नीचे।

विराधः [वि+राध्+घञ्] 1. विरोध 2. सताना, सन्तप्त करना, छेड़छाड़ 3. राम के द्वारा मारा गया एक बलवान् राक्षस।

विराधनम् [वि+राध्+ल्युट्] 1. विरोध करना 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, प्रकुपित करना 3. पीड़ा, वेदना।

विरामः [वि+रम्+घञ्] 1. रोकना, बन्द करना 2. अन्त, समाप्ति, उपसंहार रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् गीत० ५, उत्तर० ३।१६, मा० ९।३४ 3. यति, ठहरना 4. आवाज़ का रुकना या थमना—मृच्छ० ३।५ 5. एक छोटी तिरछी लकीर जो व्यंजन के नीचे लगाई जाती है, प्रायः वाक्य के अन्त में, हल्चिह्न 6. विष्णु का नाम।

विराल दे० 'विडाल'।

विरावः [वि+रु+घञ्] कोलाहल, शोर, ध्वनि — आलोकशब्दं वयसां विरावैः—रघु० २।९, १६।३१।

विराविन् (वि०) [विराव+इनि] 1. रोने वाला, चिल्लाने वाला, शोर मचाने वाला 2. विलाप करने वाला,—णी 1. रोने या चिल्लाने वाली 2. झाड़ू।

विरिंचः, विरिंचनः [वि+रिच्+अच्, ल्युट् वा, मुम्] ब्रह्मा।

विरिंचिः [वि+रिच्+इन्, मुम्] 1. ब्रह्मा — विक्रम० १।४६, नै० ३।४४, शि० ९।९ 2. विष्णु 3. शिव।

विरुग्ण (भू० क० कृ०) [वि+रुज्+क्त] 1. टुकड़े टुकड़े हुआ 2. विनष्ट 3. झुका हुआ 4. ठूंठा।

विरुत (भू० क० कृ०) [वि+रु+क्त] 1. चीखा हुआ, चिल्लाया हुआ 2. गुंजायमान, चीत्कारपूर्ण,—तम् 1. चिल्लाना, चीखना, दहाड़ना आदि 2. चिल्लाहट, ध्वनि, शोर, कोलाहल, घोष 3. गाना, भिनभिनाना, कूजना, गुंजारना—परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम् श० ४।९।

विरुदः,—दम् (पुं०, नपुं०) 1. घोषणा करना 2. जोर से चिल्लाना 3. स्तुतिपरक कविता गद्यपद्यमयी राजस्तुतिर्विरुदमुच्यते सा० द० ५७०, नदन्ति मददन्तिनः परिलसन्ति वाजिव्रजाः, पठन्ति विरुदावली महिनमन्दिरे वन्दिनः—रस०।

विरुदितम् [विरुद+इतच्] जोरजौर से रोना धोना, विलाप करना उत्तर० ३।३० (पाठान्तर)।

विरुद्ध (भू० क० कृ०) [वि+रुध्+क्त] 1. बाधित, रोका गया, विरोध किया गया, रुकावट डाली गई 2. घेरा हुआ, कैद में बन्द किया हुआ 3. विपरीत, घेरा डाला हुआ, नाकेबन्दी की गई 4, विपरीत, असंगत, बेमेल, असम्बद्ध 5. प्रतिकूल, विरोधी, गुणों में विपरीत 6. परस्पर विरोधी, वैपरीत्य को सिद्ध करने वाला (जैसा कि तर्क० में 'हेतु') उदा० शब्दो नित्यः कृतकत्वात् तर्क० 7. विरोधी, उलटा, शत्रुतापूर्ण 8. अननुकूल, अनुपयुक्त, 9. प्रतिषिद्ध, वर्जित (भोजन आदि) 10. अशुद्ध, अनुचित,-द्धम् 1. विरोध, वैपरीत्य, शत्रुता 2. वैमत्य, असहमति।

विरूक्षणम् [वि+रूक्ष+ल्युट्] 1. रूखा करना 2. रक्तस्राव को रोकने का कार्य करने वाली (औषधि) 3. कलंक, निन्दा 4. अभिशाप, कोसना।

विरूढ (भू० क० कृ०) [वि+रुह्+क्त] 1. उगाया हुआ, अंकुरित, फूटा हुआ मृच्छ० १।९ 2. उत्पादित, उपजाया हुआ, उत्पन्न किया हुआ 3. उगा हुआ, अभिवर्धित 4. मुकुलित, खिला हुआ 5. चढ़ा हुआ, सवारी की हुई।

विरूप (वि०) स्त्री० पा, पी) [विकृतं रूपं यस्य प्रा० ब०] 1. विरूपित, कुरूप, बदशक्ल, बदसूरत पञ्च० १।१४३ 2. अप्राकृतिक, विकटाकार 3. विश्वरूप, विविधरूपों वाला, पम् 1. कुत्सित

रूप, कुरूपता 2. रूप, स्वभाव या चरित्र की विभिन्नता। सम० -अक्ष (वि०) भद्दी आँखों वाला--वपुर्विरूपाक्षम् --कु० ५।७२, (·क्षः) शिव (विषम संख्या की आँखें होने के कारण)--दृशा दग्धं मनसिजं जीवयन्ति दृशैव याः, विरूपाक्षस्य जयिनीस्ताः स्तुवे वामलोचनाः - विद्ध० १।२, कु० ६।२१,—करणम् 1. बदसूरत बनाना 2. क्षति पहुँचाना,—चक्षुस् (पुं) शिव का विशेषण, रूप (वि०) भद्दा, बेडौल।

विरूपिन् (वि०) (स्त्री० णी) [विरुद्धं रूपमस्ति अस्य —विरूप+इनि] भद्दा, कुरूप, बदसूरत।

विरेकः [वि+रिच्+घञ्] 1. मलाशय को रिक्त करना, साफ करना 2. विरेचक, जुलाब की दवा।

विरेचनम् दे० 'विरेक'।

विरेचित (वि०) [वि+रिच्+णिच्+क्त] पेट साफ किया गया, पेट निर्मल और रिक्त किया गया।

विरेफः [विशिष्टो रेफो यस्य वि+रिफ्+अच्] 1 नदी, सरिता 2. 'र' अक्षर का अभाव।

विरोकः,—कम् [वि+रुच्+घञ्, अच् वा] छिद्र, सूराख, दरार,--कः प्रकाश की किरण।

विरोचनः [विशेषण रोचते -वि+रुच्+ल्युट्] 1. सूर्य 2. चन्द्रमा 3. अग्नि 4. प्रह्लाद के पुत्र और बालि के पिता का नाम। सम० —सुतः बालि का विशेषण।

विरोधः [वि० -रुध्+घञ्] 1. प्रतिरोध, रुकावट, विघ्न 2. नाकेबंदी, घेरा, आवरण 3. प्रतिबन्ध, रोक 4. असंगति, असंबद्धता, परस्परविरोध 5. अर्थ विरोध वैषम्य 6. शत्रुता, दुश्मनी —विरोधो विश्रान्तः—उत्तर० ६।११, पंच० १।३३२, रघु० १०।१३ 7. कलह, असहमति 8. संकट, दुर्भाग्य 9. (अलं० में) प्रतीयमान असंगति जो केवल शाब्दिक हो, तथा संदर्भ को ठीक से अन्वित करने पर स्पष्ट हो जाय; इसमें परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले शब्द (जो वस्तुतः वैसे न न हों) सम्मिलित रहते हैं, वस्तुओं का ऐसा वर्णन करना जो मिली हुई प्रतीत हों, परन्तु वस्तुतः हों भिन्न भिन्न, (इस अलंकार का बाण और सुबंधु ने बहुत उपयोग किया है पुष्पवत्यपि पवित्रा, कृष्णोऽप्यसुदर्शनः, भरतोऽपि शत्रुघ्नः आदि उदाहरण प्रसिद्ध हैं) मम्मट ने इसकी परिभाषा दी है:—विरोधः सोऽविरोधेऽपि विरुद्धत्वेन यद्वचः - काव्य० १०, इस अलंकार का नाम विरोधाभास भी है। सम०—उक्तिः (स्त्री०), वचनम् परस्परविरोध, विरोध, कारिन् (वि०) झगड़ा करने वाला, कृत् (वि०) विरोधी (पुं०) शत्रु।

विरोधनम् [वि+रुध्+ल्युट्] 1. बाधा डालना, विघ्न डालना, रुकावट डालना 2. घेरा डालना, नाकेबंदी करना 3. प्रतिरोध करना, मुकाबला करना 4. परस्परविरोध, असंगति।

विरोधिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वि+रुध्+णिनि] 1. मुकाबला, करने वाला, प्रतिरोध करने वाला, अवरोध करने वाला 2. घेरा डालने वाला 3. परस्पर विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी, असंगत, तपोवन° श० १ 4. विद्वेषी, शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल --विरोधिसत्त्वोज्झित-पूर्वमत्सरम् कु० ५।१७ 5. झगड़ालू—पुं० शत्रु --शि० १६।६४।

विरोप (ह) णम् [वि+रुह्+ल्युट्] (घाव आदि का) भरना व्रणविरोपणं तैलम् श० ४।१४।

विल् i (तुदा० पर० विलति) 1. ढकना, छिपाना 2. तोड़ना, बाँटना ii (चुरा० उभ० वेलयति—ते) फेंकना, धकेलना।

विलम् दे० 'बिल'।

विलक्ष (वि०) [विलक्ष्+अच्] 1. जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो 2. व्याकुल, विह्वल 3. आश्चर्यान्वित, अचंभे में पड़ा हुआ 4. लज्जित, शर्मिंदा, अशान्त गोत्रेषु स्खलितस्तदा भवति च व्रीडाविलक्षश्चिरम्—श० ६।५, अनोखा, अनूठा।

विलक्षण (वि०) [विगतं लक्षणं यस्य—प्रा० ब०] 1. जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हों 2. भिन्न, इतर 3. अनोखा, असाधारण, अनूठा 4. अशुभ लक्षणो से युक्त,—णम् व्यर्थ या निरर्थक स्थिति।

विलक्षित (भू० क० कृ०) [वि+लक्ष्+क्त] 1. विश्रुत, प्रत्यक्षीकृत, दृष्ट, आविष्कृत 2. विवेचनीय 3. उद्विग्न, घबराया हुआ, विह्वल, व्याकुल 4. प्रकुपित, नाराज।

विलग्न (वि०) [वि+लस्ज्+क्त] 1. चिपटा हुआ, चिपका हुआ, अवलंबित, बंधा हुआ - श० ७।२५, शि० ९।२० 2. ढाला हुआ, स्थिर किया हुआ, निर्दिष्ट कु० ७।५० 3. धिगत, बीता हुआ (समय आदि) 4. पतला, छरहरा, सुकुमार मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या कु० १।३९, विक्रम० ४।३७, ग्नम् कमर 2. कूल्हा 3. तारामण्डल का उदित होना।

विलंघनम् [वि+लंघ्+ल्युट्] 1. अतिक्रमण करना, लाँघ जाना 2. अपराध, अतिक्रमण, क्षति।

विलंघित (भू० क० कृ०) [वि+लंघ्+क्त] 1. पार या परे गया हुआ, दुहराया हुआ 2. अतिक्रांत 3. आगे गया हुआ, आगे बढ़ा हुआ 4. परास्त, पराजित।

विलज्ज (वि०) [विगता लज्जा यस्य प्रा० ब०] निर्लज्ज, बेशर्म।

विलपनम् [वि+लप्+ल्युट्] 1. बातें करना 2. निकम्मी बातें करना, चहचहाना, चहकना 3. विलाप करना, रोना-धोना,—विलपनविनोदोऽप्यसुलभः—उत्तर० ३।३० 4. चीकट, तलछट।

विलपितम् [वि+लप्+क्त] 1. विलाप करना, क्रन्दन 2. रोदन ।

विलम्बः [वि+लम्ब्+घञ्] 1. लटकना, दोलायमानता 2. धीमापन, देरी, दीर्घसूत्रता ।

विलम्बनम् [वि+लम्ब्+ल्युट्] 1. लटकना, निर्भरता 2. देरी, टालमटोल न कुरु नितम्बिनि गमनविलम्बनम् —गीत० ५, या तन्मुखे विफलं विलम्बनमसौ रम्योऽभिसारक्षणः—तदेव ।

विलम्बिका [वि+लम्ब्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] कब्जी, कोष्ठबद्धता ।

विलम्बित (भू० क० कृ०) [वि+लम्ब्+क्त] 1. लटकना, निर्भरता 2. लम्बमान, लटकाने वाला 3. आश्रित, सुसम्बद्ध 4. मन्द, दीर्घसूत्री, आलसी 5. मन्थर, धीमा (संगीत में काल आदि), दे० वि पूर्वक 'लम्ब्',—तम् देरी ।

विलम्बिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [विलम्ब+णिनि] 1. नीचे लटकता हुआ, निर्भर, लटकन—नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः श० ५।१२, अलघुविलम्बिपयोधरोपरुद्धाः—शि० ४।२९, ५९, कु० १।१४, कि० ५।६, रघु० १६।८४, १८।२५, मृच्छ० ५।१३ 2. देर करने वाला, टालमटोल करने वाला, मन्द रहने वाला,—भवति विलम्बिनि विगलितलज्जा विलपति रोदिति वासकसज्जा गीत० ६ ।

विलम्भः [वि+लभ्+घञ्, मुम्] 1. उदारता 2. भेंट, दान ।

विलयः [वि+ली+अच्] 1. विघटन, पिघलना 2. विनाश, मृत्यु, अन्त उत्तर० ७ 3. संसार का विघटन या विनाश, (विलयं गम् घुल जाना, अन्त हो जाना, समाप्त हो जाना दिवसोऽनुमित्रमगलद्विलयम्—शि० ९।१७ ।

विलयनम् [वि+ली+ल्युट्] 1. घुल जाना, पिघल जाना, घोल या विघटन 2. जंग लग जाना, मुर्चा खा जाना 3. हटाना, दूर करना 4. पतला करना 5. पतला करने वाली औषधि ।

विलसत् (शत्रन्त वि०) (स्त्री०—न्ती) [वि+लस्+शतृ] 1. चमकने वाला, प्रकाशमान, उज्ज्वल 2. चमचमाने वाला, सहसा कौंधने वाला 3. लहराने वाला 4. क्रीडाप्रिय, विनोदप्रिय ।

विलसनम् [वि+लस्+ल्युट्] 1. दमकना, चमचमाना चमकना, जगमगाना 2. क्रीडा करना, इठलाना, चोचले करना ।

विलसित (भू० क० कृ०) [वि+लस्+क्त] 1. दमकता हुआ, चमकता हुआ, जगमगाता हुआ 2. प्रकट हुआ, प्रकटीकृत 3. क्रीडाप्रिय, स्वेच्छाचारी, —तम् 1. दमकना, जगमगाना 2. चमक, दमक—रोघोभुवां मुहुरमुत्र हिरण्मयीनां भासस्तडिद्विलसितानि विडम्बयन्ति कि० ५।४६, मेघ० ८१, विक्रम० ४ 3. दर्शन, प्रकटीकरण—जैसा कि अज्ञातविलसितम् आदि में 4. क्रीडा, खेल, रंगरेली, सानुराग हावभाव ।

विलापः [वि+लप्+घञ्] क्रन्दन, शोक करना, रोदन, कराहना—लंकास्त्रीणां पुनश्चक्रे विलापाचार्यकं शरैः रघु० १२।७८ ।

विलालः [वि+लल्+घञ्] 1. बिलाव 2. उपकरण, यन्त्र ।

विलासः [वि+लस्+घञ्] 1. क्रीडा, खेल, मनोरंजन 2. केलिपरक मनोविनोद, दिलबहलावा, प्रसन्नता जैसा कि 'विलासमेखला'—रघु० ८।६४ में, इसी प्रकार विलासकाननम्, विलासमन्दिरम् आदि 3. ललित अभिनय, रंगरेली, अनुराग, कामुकता, सुन्दर चाल, रतिद्योतक कोई भी स्त्रियोचित हावभाव श० २।२, कु० ५।१३, शि० ९।२६ 4. लालित्य सौन्दर्य, चारुता, लावण्य मा० २।६ 5. चमक, दमक ।

विलासनम् [विलस्+णिच्+ल्युट्] 1. क्रीडा, खेल मनोरंजन 2. कामुकता, रंगरेली ।

विलासवती [विलास+मतुप्+ङीप्, मस्य वः] स्वेच्छाचारिणी या कामुक स्त्री रघु० ९।४८, ऋतु० १।१२ ।

विलासिका [वि+लस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] प्रेमलीला से पूर्ण एकाङ्की नाटक, इसकी परिभाषा सा० द० ५५२ पर इस प्रकार दी है शृङ्गारबहुलैकांका दशलास्यांगसंयुता, विदूषकविटाभ्यां च पीठमर्देन भूषिता । हीना गर्भविमर्शाभ्यां संधिभ्यां हीननायका । स्वल्पवृत्ता सुनेपथ्या विख्याता सा विलासिका ।।

विलासिन् (वि०) (स्त्री० नी) [विलास+इनि] क्रीडा युक्त, लीलापर, रंगरेली में व्यस्त, कामुक, चोंचले करने वाला, रघु० ६।१४, पुं० 1 विषयी, भोगासक्त, रसिकजन, उपमानमभूद्विलासिनां करणं यत्तव कांतिमत्तया कु० ४।५ 2. अग्नि 3. चन्द्रमा 4. सांप 5. कृष्ण या विष्णु का विशेषण 6. शिव का विशेषण 7. कामदेव का विशेषण ।

विलासिनी [विलासिन्+ङीप्] 1. रमणी 2. हावभाव करने वाली स्त्री,—हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनी विलसति केलिपरे गीत० १, कु० ७।५९, शि० ८।७०, रघु० ६।१७ 3. स्वेच्छाचारिणी, वेश्या ।

विलिखनम् [वि+लिख्+ल्युट्] खुरचना, कुरेदना, लिखना ।

विलिप्त (भू० क० कृ०) [वि+लिप्+क्त] लीपा हुआ, पोता हुआ, चुपड़ा हुआ

विलीन (भू० क० कृ०) [वि+ली+क्त] 1. चिपकने वाला, चिपटा हुआ, अनुपक्त 2. अड्डे पर बैठा हुआ, बसा हुआ उतरा हुआ 3. संसक्त, संस्पर्शी 4. पिघला हुआ, घुला हुआ, गलाया हुआ 5. अन्तर्हित, ओझल 6. मृत, नष्ट ।

विलुंचनम् [वि+लुंच्+ल्युट्] फाड़ डालना, छीलना ।

विलुंठनम् [वि+लुंठ्+ल्युट्] लूटना, डाका डालना ।

विलुप्त (भू० क० कृ०) [वि+लुप्+क्त] 1. तोड़ा हुआ, फाड़ा हुआ—पंच० २।२ 2. पकड़ा हुआ, छीना हुआ, अपहरण किया हुआ 3. लूटा हुआ, डाका डाला हुआ 4. विनष्ट, बर्बाद 5. बिगाड़ा हुआ, तोड़ा-फोड़ा हुआ ।

विलुंपकः [वि+लुप्+ण्वुल्, मुम्] चोर, लुटेरा, अपहर्ता ।

विलुलित (भू० क० कृ०) [वि+लुल्+क्त] 1. इधर उधर घूमने वाला, अस्थिर, हिला हुआ, लुढ़का हुआ, थरथराता हुआ 2. क्रमरहित, क्रमशून्य -गलित कुसुमदलविलुलितकेशा—गीत० ७ ।

विलून (भू० क० कृ०) [वि+लू+क्त] कटा हुआ, काट डाला हुआ, चीरा हुआ, काट कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ ।

विलेखनम् [वि+लिख्+णिच्+ल्युट्] 1. खुरचना, कुरेदना, गूडना 2. खोदना 3. उखाड़ना ।

विलेपः [वि+लिप्+घञ्] 1. उबटन, मल्हम 2. चूना 3. लिपाई-पुताई ।

विलेपनम् [वि+लिप्+ल्युट्] 1. लीपना, पोतना 2. मल्हम, उबटन, कोई भी शरीर पर लेप करने के योग्य सुगन्धित पदार्थ (केसर व चन्दन आदि) —यान्येव सुरभिकुसुमधूपविलेपनादीनि का० ।

विलेपनी [विलेपन+ङीप्] 1. सुगन्धित द्रव्यों से सुवासित स्त्री 2. सुवेशा 3. चावल का मांड ।

विलेपिका, विलेपी, विलेप्यः [विलेपी+कन्+टाप्, ह्रस्वः, विलेप+ङीप्, वि+लिप्+ण्यत्] चावल का मांड ।

विलोकनम् [वि+लोक्+ल्युट्] 1. देखना, निहारना, दृष्टि डालना कि० ५।१६ 2. दृष्टि, निरीक्षण —शि० १।२९ ।

विलोकित (भू० क० कृ०) [वि+लोक्+क्त] 1. देखा गया, निरीक्षण किया गया, समीक्षित, निहारा गया 2. परीक्षित, चिन्तन किया गया,—तम् दृष्टि, नजर —श० २।३ ।

विलोचनम् [वि+लोच्+ल्युट्] आँख - रघु० ७।८, कु० ४।१, ३।६७ । सम० -अम्बु (नपुं०) आँसू ।

विलोडनम् [वि+लोड्+ल्युट्] विक्षुब्ध होना, दोलायमान होना, हिल-जुल, मन्थन करना -शि० १४।८३ ।

विलोडित (भू० क० कृ०) [वि+लोड्+क्त] डुलाया हुआ, बिलोया हुआ, हिलाया हुआ, विक्षुब्ध, —तम् बिलोया हुआ दूध ।

विलोपः [वि+लुप्+घञ्] 1. ले जाना, अपहरण करना, पकड़ना, लूटना 2. लोप, हानि, नाश, अदर्शन ।

विलोपनम् [वि+लुप्+ल्युट्] 1. काट डालना 2. अपहरण 3. नष्ट करना, विनाश ।

विलोभः [वि+लुभ्+घञ्] आकर्षण, फुसलाहट, प्रलोभन ।

विलोभनम् [वि+लुभ्+णिच्+ल्युट्] 1. मोह लेना, ललचाना 2. रिझाना, प्रलोभन, फुसलाना 3. प्रशंसा खुशामद ।

विलोम (वि) (स्त्री०—मी) [विगतं लोम यत्र—प्रा० ब०] 1. व्युत्क्रान्त, प्रतिकूल, प्रतिलोम, विपरीत, विरुद्ध 2. प्रतिकूल क्रम में उत्पन्न 3. पिछड़ा हुआ, —मः विपरीत क्रम, प्रतिलोम 2. कुत्ता 3. साँप 4. वरुण, —मम् रहट, कुएँ से पानी निकालने का यन्त्र । सम०—उत्पन्न —ज,—जात, -वर्ण (वि०) प्रतिकूल क्रम में उत्पन्न अर्थात् ऐसी माता से जन्म लेना जो पिता की अपेक्षा उच्च वर्ण की हो—तु० प्रतिलोमक भी, —क्रिया.— विधिः 1. प्रतिकूल कर्म 2. प्रतिलोम नियम (गणि० में), जिह्वः हाथी ।

विलोमी [विलोम+ङीप्] आँवला ।

विलोल (वि०) [विशेषेण लोलः—प्रा० स०] 1. दोलायमान, काँपता हुआ, थरथर करने वाला, अस्थिर, डोलने वाला, चंचल, इधर उधर लुढ़कने वाला पृषतीषु विलोलमीक्षितम् रघु० ८।५९, शि० ८।८ १५।६२, २०।४२, वेणी० २।२८, रघु० ७।४१, १६।६८ 2. ढीला, विपर्यस्त, बिखरे हुए (बाल आदि)—उत्तर० ३।४ ।

विलोहितः [विशेषेण लोहितः प्रा० स०] रुद्र का नाम ।

विल्ल दे० 'बिल्ल' ।

विल्व दे० 'बिल्व' ।

विवक्षा [वच्+सन्+अ+टाप्] 1. बोलने की इच्छा 2. अभिलाषा, इच्छा 3. अर्थ, आशय 4, इरादा, प्रयोजन ।

विवक्षित (वि०) [विवक्षा+इतच्] 1. कहे जाने या बोले जाने के लिए अभिप्रेत—विवक्षितं ह्यनुक्तमनुतापं जनयति—श० ३ 2. अर्थयुक्त, अभिप्रेत, उद्दिष्ट 3. अभिलषित इच्छित 4. प्रिय, —तम् 1. प्रयोजन, अभिप्राय 2. आशय, अर्थ ।

विवक्षु (वि०) [वच्+सन्+उ] बोलने की इच्छा वाला,—कु० ५।८३ ।

विवत्सा [विगतः वत्सो यस्याः प्रा० ब०] बिना बछड़े की गाय ।

विवधः [विवधो विगतो वा वधः हननं गतिर्वा यत्र प्रा० ब०] 1. बोझा ढोने के लिए जूआ 2. मार्ग, सड़क 3. बोझा, भार 4. अनाज का संग्रह 5. घड़ा ।

विवधिकः [विवध+ठन्] 1. बोझा ढोने वाला, कुली 2. फेरी वाला, आवाज़ लगा कर बेचने वाला।

विवरम् [वि+वृ+अच्] 1. दरार, छिद्र, रन्ध्र, खोखलापन, रिक्तता —यच्चकार विवरं शिलाघने ताडकोरसि स रामसायकः रघु० ११।१८, ९।६१, १९।७ 2. अन्तःस्थान, अन्तराल, बीच की जगह श० ७।७ 3. एकान्त स्थान कि० १२।३७ 4. दोष, त्रुटि, ऐब, कमी 5. विच्छेद, घाव 6. 'नौ' की संख्या। सम०—नालिका बंसरी, बंसी, मुरली।

विवरणम् [वि+वृ+ल्युट्] 1. प्रदर्शन, अभिव्यंजन, उद्घाटन, खोलना 2. अनावृत करना, खुला छोड़ना 3. विवृति, व्याख्या, वृत्ति, टीका, भाष्य।

विवर्जनम् [वि+वृज्+ल्युट्] छोड़ना, निकाल देना, परित्याग करना—याज्ञ० १।१८१।

विवर्जित (भू० क० कृ०) [वि+वृज्+क्त] 1. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 2. परिहृत 3. वञ्चित, विरहित, के बिना (प्रायः समास में) 4. प्रदत्त, वितरित।

विवर्ण (वि०) [विगतः वर्णो यस्य—प्रा० ब०] 1. बिना रंग का, निष्प्रभ, पाण्डु, फीका—नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः—रघु० ६।६७ 2. जिस पर कोई रंग न चढ़ा हो, निर्जल, श० ३।१४, 3. नीच, दुष्ट 4. अज्ञानी, मूढ, निरक्षर, —र्णः जाति-बहिष्कृत, नीच जाति से संबंध रखने वाला।

विवर्तः [वि+वृत्+घञ्] 1. गोल चक्कर खाना, चारों ओर घूमना, भंवर 2. आगे को लुढ़कना 3. पीछे को लुढ़कना, लौटना 4. नृत्य 5. बदलना, सुधारना, रूप में परिवर्तन, बदली हुई दशा या अवस्था—शब्दब्रह्मणस्तादृशं विवर्तमितिहासं रामायणं प्रणिनाय उत्तर० २, एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान् उत्तर० ३।४७, महावी० ५।५७ 6. (वेदान्त० में) एक प्रतीयमान भ्रान्तिजनक रूप, अविद्या या मानव की भ्रांति से उत्पन्न मिथ्या रूप, (यह वेदान्तियों का एक प्रिय सिद्धांत है जिनके अनुसार यह समस्त संसार एक माया है मिथ्या और भ्रान्तिजनक रूप—जब कि ब्रह्म या परमात्मा ही वास्तविक रूप है; जैसे कि सांप, रस्सी का विवर्त है, इसी प्रकार यह संसार उस पर ब्रह्म का विवर्त है, यह भ्रान्ति या माया सत्य ज्ञान अथवा विद्या से ही दूर होती है, तु० भवभूति— विद्याकल्पेन मरुता मेघानां भूयसामपि, ब्रह्मणीव विवर्तानां क्वापि विप्रलयः कृतः—उत्तर० ६।६ 7. ढेर, समुच्चय, संग्रह, समवाय। सम० —वादः वेदान्तियों का सिद्धांत कि यह दृश्यमान संसार माया है केवल ब्रह्म ही एक वास्तविकता है।

विवर्तनम् [वि+वृत्+ल्युट्] 1. चक्कर खाना, क्रान्ति, भंवर 2. इधर उधर लुढ़कना, करवटें बदलना—श० ५।६ 3. पीछे लुढ़कना, लौटना 4. नीचे को लुढ़कना, उतरना 5. विद्यमान रहना, दृढ़ रहना 6. ससम्मान अभिवादन 7. नाना प्रकार की सत्ताओं व स्थितियों में से गुज़रना 8. परिवर्तित दशा—उत्तर० ४।१५, मा० ४।७।

विवर्धनम् [वि+वृध्+ल्युट्] 1. बढ़ना 2. वृद्धि, वर्धन, बढ़ती 3. विस्तार, अभ्युदय।

विवर्धित (भू० क० कृ०) [वि+वृध्+क्त] 1. बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 2. प्रगत, प्रोन्नत, आगे बढ़ाया हुआ 3. संतृप्त, संतुष्ट।

विवश (वि०) [वि+वश्+अच्] 1. अनियन्त्रित, जो वश में न किया गया हो 2. लाचार, आश्रित, अधीन, दूसरे के नियन्त्रण में, असहाय—परीता रक्षोभिः श्रयति विवशा कामपि दशाम्—भामि० १।८३, मुद्रा० ६।१८, शि० २०।५८, हि० १।१७२, महावी० ६।३२, ६३ 3. बेहोश, जो अपने आपको काबू में न रख सके — विवशा कामवधूर्विबोधिता—कु० ४।१ 4. मृत, नष्ट—उपलब्धवती दिवश्च्युतं विवशा शापनिवृत्तिकारणम्—रघु० ८।८२ 5. मृत्युकामी, मृत्यु की आशंका करने वाला।

विवसन (वि०) [विगतं वसनं यस्य—प्रा० ब०] नंगा, विवस्त्र,—नः जैन साधु।

विवस्वत् (पुं०) [विशेषेण वस्ते आच्छादयति—वि+वस्+क्विप्+मतुप्] 1. सूर्य—त्वष्टा विवस्वंतमिवोल्लिलेख कि० १७।४८, ५।४८, रघु० १०।३०, १७।४८ 2. अरुण का नाम 3. वर्तमान मनु का नाम 4. देव 5. अर्क का पौधा, मदार।

विवहः [वि+वह्+अच्] आग की सात जिह्वाओं में से एक।

विवाकः [विशिष्टो वाको यस्य—प्रा० ब०] न्यायाधीश, तु० 'प्राड्विवाक'।

विवादः [वि+वद्+घञ्] (क) कलह, प्रतियोगिता, संघर्ष - विषय, शास्त्रार्थ, विचारविमर्श, वाद-विवाद, झगड़ा, झंझट—अलं विवादेन,—कु० ५।८३ एतयोर्विवाद एव मे न रोचते—मालवि० १, एकाप्सरः प्रार्थितयोर्विवादः—रघु० ७।५३ (ख) तर्क, तर्कना, चर्चा 2. वचन विरोध - एष विवाद एव प्रत्याययति—श० ७ 3. मुकदमेबाजी, क़ानूनी नालिश, क़ानूनी संघर्ष, सीमाविवादः, विवादपदम् आदि, परिभाषा इस प्रकार की गई है—ऋणादिदायकलहे द्वयोर्बहुतरस्य वा विवादो व्यवहारस्य, दे० 'व्यवहार' भी 4. उच्च-क्रंदन, ध्वनन 5. आदेश, आज्ञा—रघु० १८।४३। सम०—अर्थिन् (पुं०) 1. मुकदमेबाज 2. वादी, अभियोक्ता, प्राभियोक्ता,—पदम् कलह का शीर्षक, —वस्तु (नपुं०) कलह का विषय, विचारणीय विषय।

विवादिन् (वि०) [विवाद+इनि] 1. कलह करने वाला, तर्क वितर्क करने वाला, तर्कप्रिय, कलहशील 2. (क़ानूनी पहलू पर) विवाद करने वाला—पुं० मुक़दमेबाज़, क़ानूनी अभियोग में भाग लेने वाला।

विवारः [वि+वृ+घञ्] 1. मुंह, विस्तार 2. अक्षरों का उच्चारण करते समय कण्ठ का विस्तार (एक अभ्यंतर प्रयत्न, विप० संवार, दे० पा० १।१।९ पर सिद्धा०)।

विवासः, विवासनम् [वि+वस्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] देश निर्वासन, देशनिकाला, निष्कासन,- रामस्य गात्रमसि दुर्वहगर्भखिन्नसीताविवासनपटोः करुणा कुतस्ते —उत्तर० २।१०।

विवासित (भू० क० कृ०) [वि+वस्+णिच्+क्त] देश से निर्वासित किया गया, देश निकाला दिया गया, निष्कासित।

विवाहः [वि+वह्+घञ्] शादी, ब्याह (हिन्दू स्मृतिकारों ने आठ प्रकार के विवाह बताये हैं—ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः, गांधर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः मनु० ३।२१, दे० याज्ञ० १। ५८, ६१ भी, इन रूपों की व्याख्या के लिए उस शब्द को देखो। सम० —चतुष्टयम् चार पत्नियों से विवाह करना, —दीक्षा विवाह संस्कार या कर्म।

विवाहित (भू० क० कृ०) [वि+वह्+णिच्+क्त] ब्याहा हुआ।

विवाह्यः [वि+वह्+ण्यत्] 1. जामाता 2. दूल्हा।

विविक्त (भू० क० कृ०) [वि+विच्+क्त] 1. वियुक्त, पृथक्कृत, अलगाया हुआ, बेसुध 2. अकेला, एकाकी, निवृत्त, विलग्न 3. एकल, एकी 4. प्रभिन्न, विवेचन किया हुआ 5. विवेकशील 6. पवित्र, निर्दोष रत्न० १।२१,—क्तम् 1. एकान्त स्थान, निर्जन स्थान शि० ८।७० 2. अकेलापन, निर्जनता, एकान्तस्थान—क्ता भाग्यहीन या अभागी स्त्री, जो अपने पति को प्यारी न हो, दुर्भगा।

विविग्न (वि०) [विशेषेण विग्नः वि+विज्+क्त] अत्यंत क्षुब्ध, या डरा हुआ रघु० १८।१३।

विविध (वि) [विभिन्ना विधा यस्य—प्रा० ब०] नाना प्रकार का, विभिन्न प्रकार का, बहुरूपी, विश्वरूपी, प्रकीर्ण मनु० १।८, ३९।

विवीतः [विशिष्टं वीतं गवादिप्रचारस्थानं यत्र प्रा० ब०] घिरा हुआ स्थान, बाड़ा, जैसे चरागाह।

विवृक्त (भू० क० कृ०) [वि+वृज+क्त] छोड़ा हुआ, परित्यक्त, संपरित्यक्त।

विवृक्ता [विवृक्त+टाप्] वह स्त्री जिसको उसका पति प्यार नहीं करता, तु० 'विविक्ता'।

विवृत (भू० क० कृ०) [वि+वृ+क्त] 1. प्रदर्शित, प्रकटीकृत, अभिव्यक्त 2. स्पष्ट, सामने खुला हुआ 3. खुला हुआ, अनावृत, नंगा पड़ा हुआ 4. खोला, प्रकट किया हुआ, नग्न, उद्घाटित 5. उद्घोषित 6. भाष्य किया गया, व्याख्या की गई, टीका की गई 7. विस्तारित, फैलाया गया 8. विस्तृत, विशाल, प्रशस्त। सम० अक्ष (वि०) बड़ी बड़ी आँखों वाला, (क्षः) मुर्गा, —द्वार (वि०) खुले दरवाजों वाला - कु० ४।३६।

विवृतिः (स्त्री०) [वि+वृ+क्तिन्] 1. प्रदर्शन, प्रकटीकरण 2. विस्तार 3. अनावरण, व्यक्तीकरण 4. भाष्य, टीका, वृत्ति, वाच्यान्तर।

विवृत्त (भू० क० कृ०) [वि+वृत्+क्त] 1. मुड़ कर आया हुआ 2. मुड़ना, चक्कर काटना, लुढ़कना, भंवर।

विवृत्तिः (स्त्री०) [वि+वृत्+क्तिन्] 1. मुड़ना, भंवर, चक्कर 2. (व्या०) उच्चारण भंग।

विवृद्ध (भू० क० कृ०) [वि+वृध्+क्त] 1. विकसित 2. बढ़ा हुआ, आवर्धित, ऊँचा किया हुआ, बढ़ाया हुआ, तीव्र (शोक हर्षादिक) 3. विपुल, विशाल, प्रचुर।

विवृद्धिः (स्त्री०) [वि+वृध्+क्तिन्] 1. बढ़ना, वर्धन, बढ़ती, विकास ययुः शरीरावयवा विवृद्धिम्—रघु० १७।४९, विवृद्धिमश्नुवते वसूनि—१३।५, इसी प्रकार शोक° हर्ष° आदि 2. समृद्धि।

विवेकः [वि+विच्+घञ्] 1. विवेचन, निर्धारण, विचारणा, विज्ञता,—काश्यपि यातस्तवापि च विवेकः भामि० १।६८,६६, ज्ञातोऽयं जलधर तावको विवेकः—९६ 2. विचार, विचारविमर्श, गवेषणा— यच्छृंगारविवेकतत्त्वमपि यत्काव्येषु लीलायितम्— गीत० १२, इसी प्रकार द्वैत° धर्म° 3. भेद, अन्तर, (दो वस्तुओं में) प्रभेद नीरक्षीर विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत् भामि० १।५३, भट्टि० १७।६० 4. (वेदान्त० में) दृश्यमान जगत् तथा अदृश्य आत्मा में भेद करने की शक्ति, माया या केवल वाह्य रूप से वास्तविकता को पृथक् करना 5. सत्य ज्ञान 6. जलाशय, पात्र, जलाधार। सम०—ज्ञ (वि०) विवेकशील, विवेचक,—ज्ञानम् विवेचन करने की शक्ति, - दृश्वन् (पुं०) सूक्ष्मदर्शी पुरुष, - पदवी पुनर्विमर्श, विचार, चिन्तन।

विवेकिन् (वि०) [विवेक+इनि] विवेचक, विचारवान्, विवेकशील, पुं० 1. न्यायकर्ता, गुणदोषविवेचक 2. दार्शनिक।

विवेक्तृ (पुं०) [वि+विच्+तृच्] 1. न्यायकारी 2. ऋषि, दार्शनिक।

विवेचनम्,—ना [वि+विच्+ल्युट्] 1. गुणदोषविचारणा 2. विचारविमर्श, विचार 3. फ़ैसला, निर्णय।

विवोढृ (पुं) [वि+वह्+तृच्] दूल्हा, पति।

विव्वोक दे० **बिब्बोक**—विव्वोकस्ते मुरविजयिनो वर्त्मपाती बभूव—उ० सं० ४३।

विश् (तुदा० पर० विशति, विष्ट) 1. प्रविष्ट होना, जाना, दाखिल होना—विवेश कश्चिज्जटिलस्तपोवनम्—कु० ५।३०, रघु० ६।१०, १२, मेघ० १०२, भग० ११।२९ 2. जाना या पहुंचना, अधिकार में आना किसी के हिस्से में पड़ना—उपदा विविशुः शश्वन्नोत्सेकाः कोशलेश्वरम्—रघु० ४।७० 3. बैठ जाना, बस जाना 4. घुस जाना, व्याप्त हो जाना 5. स्वीकार करना, उत्तरदायित्व लेना, —प्रेर० (वेशयति—ते) घुसाना, प्रविष्ट कराना —इच्छा० (विविक्षति) प्रविष्ट होने की इच्छा करना, **अनु—**, 1. सम्मिलित होना 2. किसी का अनुगमन करना, बाद में प्रविष्ट होना, **अनुप्र—**,सम्मिलित होना (आलं० से) दूसरे की इच्छानुसार अपने आप को ढालना, —यस्य यस्य हि यो भावस्तस्य तस्य हितं नरः, अनुप्रविश्य मेधावी क्षिप्रमात्मवशं नयेत्—पंच० १।६८, **अभिनि—** (आ०) 1. सम्मिलित होना, अधिकार करना 2. सहारा लेना, अधिकार कर लेना —अभिनिविशते सन्मार्गम्—सिद्धा०, भयं तावत्सेव्यादभिनिविशते—मुद्रा० ५।१२, भट्टि० ८।८०, **आ—**,1. प्रविष्ट होना—रघु० २।२६ 2. अधिकार करना, कब्जे में ले लेना, काबू कर लेना 3. पहुँचना 4. किसी विशेष स्थिति पर पहुंचना, **उप—**,1. बैठ जाना, आसन ग्रहण करना भग० १।४६ 2. डेरा डालना 3. स्वीकार करना, अभ्यास करना—प्रायमुपविशति 4. उपवास करना—भट्टि० ७।७५, **नि—**, (आ०) 1.बैठ जाना, आसन ग्रहण करना—नवांबुदश्यामवपुर्न्यविक्षत (आसने)—शि० १।१९ 2. पड़ाव डालना, डेरा लगाना—रघु० १२।६८ 3. प्रविष्ट होना, रामशालां न्यविक्षत—भट्टि० ४।२८, ६।१४३, ८।७, रघु० ९।८२ 4. स्थिर किया जाना, निर्दिष्ट किया जाना—सूर्यनिविष्टदृष्टिः—रघु० १४।६६ 5. व्यस्त होना, अनुपक्त होना, तुल जाना, अभ्यास करना—श्रुतिप्रामाण्यतो विद्वान्स्वधर्मे निविशेत वै—मनु० २।८ 6. विवाह करना ('निर्विश्' के स्थान पर), (प्रेर०) 1. जमाना, निर्दिष्ट करना, (मन, चित्त) लगाना, भग० १२।८ 2. स्थित करना, धरना, रखना रघु० ६।१६, ४।३९, ७।६३ 3. बिठाना, स्थापित करना—रघु० १५।९७ 4. जोवन में स्थित कराना, विवाह कराना—श० ४।१९ 5. (सेना आदि का) डेरा डालना रघु० ५।४२, १६।३७ 6. रेखांकन करना, चित्रित करना, चित्र बनाना—चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा—श० २।९, मालवि० ३।११ 7. लिख लेना, उत्कीर्ण करना—विक्रम० २।१४ 8. सुपुर्द करना, सौंपना रघु० १९।४, **निस्—**, 1. सुखोपभोग करना—ज्योत्स्नावतो निर्विशति प्रदोषान्—रघु० ६।३४, निर्विष्टविषयस्नेहः स दशांतमुपेयिवान्—रघु० १२।१, ४।५१, ६।५०, ९।३५, १३।६०, १४।८०, १८।३, १९।४७, मेघ० ११० 2. अलंकृत करना, आभूषित करना 3. विवाह करना, **प्र—**, 1. प्रविष्ट होना 2. आरम्भ करना, शुरु करना, (—प्रेर०) प्रस्तुत करना, प्रवेष्टा के रूप में आगे आगे चलना, **विनि—**,रक्खा जाना, बिठाया जाना, (प्रेर०) 1. स्थिर करना, रखना—कु० १।४९, रघु० ६।६३, मदुरसि कुचकलशं विनिवेशय—गीत० १२ 2. बसाना, नई बस्ती बसाना—कु० ६।३७, **सम्—**, 1. प्रविष्ट होना 2. सोना, लेटना, आराम करना—संविष्टः कुशशयने निशां निनाय—रघु० १।९५ मनु० ४।५५, ७।२२५ 3. सहवास करना, मैथुन करना—षोडशर्तुनिशाः स्त्रीणां तस्मिन् युग्मासु संविशेत्—याज्ञ० १।७९, मनु० ३।४८ 4. सुखोपभोग करना, **समा—**, 1. प्रविष्ट होना, भट्टि० ८।२७ 2. पहुंचना 3. लग जाना, तुल जाना, **संनि**, (प्रेर०)—1. रखना, धरना 2. स्थापित करना, ऊपर धरना—रघु० १२।५८।

विश् (पुं०) [विश्+क्विप्] 1. तीसरे वर्ण का मनुष्य, वैश्य 2. मनुष्य 3. राष्ट्र, स्त्री० 1. राष्ट्र, प्रजा 2. पुत्री। सम०—पण्यम् सामान, व्यापारिक माल, —पतिः (विशांपतिः' भी) राजा, प्रजा का स्वामी।

विशम् [विश्+क] कमल की गंडी के तन्तु, रेशे—तु० बिस। सम०—आकरः एक प्रकार का पौधा, भद्रचूड, —कंठा सारस।

विशङ्कट (वि०) (स्त्री०—टा,—टी) [वि+शंक्+अटच्] 1. बड़ा, विशाल, बृहत्—विशङ्कटो वक्षसि बाणपाणिः—भट्टि० २।५०, शि० १३।३४ 2. मजबूत, प्रचंड, शक्तिशाली।

विशङ्का [विशिष्टा विगता वा शङ्का—प्रा० स०] डर, आशङ्का।

विशद (वि०) [वि+शद्+अच्] 1. स्वच्छ, पवित्र, निर्मल, विमल, विशुद्ध—योगनिद्रान्तविशदैः पावनैरवलोकनैः—रघु० १०।१४, १९।३९, रत्न० ३।९, कि० ५।१२ 2. सफेद, विशुद्धश्वेत रङ्ग का—निर्धौतहारगुलिकाविशदं हिमांभः—रघु० ५।७०, कु० १।४०, ६।२५, शि० ९।२६, कि० ४।२३ 3. उज्ज्वल, चमकीला, सुन्दर—कु० ३।३३, शि० ८।७० 4. साफ, स्पष्ट, प्रकट 5. शान्त, निश्चिन्त आराम सहित—जातो ममायं विशदः प्रकामं (अन्तरात्मा)—श० ४।२२।

विशयः [वि+शी+अच्] 1. सन्देह, अनिश्चयता, अधिकरण के पांच अंगों में से दूसरा 2. शरण, सहारा।

विशरः [वि+शृ+अप्] 1. टुकड़े-टुकड़े करना, फाड़ डालना 2. वध, हत्या, विनाश ।

विशल्य (वि०) [विगतं शल्यं यस्मात्—प्रा० ब०] कष्ट और चिन्ता से मुक्त, सुरक्षित ।

विशसनम् [वि+शस्+ल्युट्] 1. वध, हत्या, पशुमेत्र—उत्तर० ४।५ 2. बर्बादी,—नः 1. कटार, टेढ़े फल की तलवार 2. तलवार ।

विशस्त (भू० क० कृ०) [वि+शंस्+क्त] 1. काटा हुआ, चीरा हुआ 2. उजड्ड, अशिष्ट 3. प्रशस्त, विख्यात ।

विशस्तृ (पुं०) [वि+शस्+तृच्] 1. हत्या करने वाला या बलि के लिए वध करने वाला व्यक्ति 2. चाण्डाल ।

विशस्त्र (वि०) [विगतं शस्त्रं यस्य] बिना हथियारों के, शस्त्ररहित, जिसके पास बचाव के लिए कुछ न हो ।

विशाखः [विशाखानक्षत्रे भवः—विशाखा+अण्] 1. कार्तिकेय का नाम - महावी० २।३८ 2. धनुष से तीर छोड़ते समय की स्थिति (इसमें धनुर्धारी एक पग पीछे तथा एक जरा आगे करके खड़ा होता है) 3. भिक्षुक, आवेदक 4. तकुवा 5. शिव का नाम । सम०—जः नारंगी का पेड़ ।

विशाखल दे० विशाख (2) ।

विशाखा [विशिष्टा शाखा प्रकारो यस्य—प्रा० ब०](प्रायः द्विवचनान्त) सोलहवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित होते हैं—किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशकलेखामनुवर्तेते—श० ३ ।

विशायः [वि+शी+घञ्] बारी-बारी से सोना, शेष पहरेदारों का बारी-बारी से पहरा देना ।

विशारणम् [वि+शृ+णिच्+ल्युट्] 1. टुकड़े-टुकड़े करना, फाड़ना 2. हत्या, वध ।

विशारद (वि०) [विशाल+दा+क, लस्य रः] 1. चतुर, कुशल, प्रवीण, विज्ञ, जानकार (प्रायः समास में)—मधुदान विशारदाः—रघु० ९।२९, ८।१७ 2. विद्वान्, बुद्धिमान् 3. मशहूर, प्रसिद्ध 4. साहसी, भरोसे का,—दः बकुलवृक्ष, मौलसिरी का पेड़ ।

विशाल (वि०) [वि०+शालच्] 1. विस्तृत, बड़ा, दूर तक फैला हुआ, प्रशस्त, व्यापक, चौड़ा,—गृहैर्विशालैरपि भूरिशालः—शि० ३।५०, ११।२३, रघु० २।२१, ६।३२, भग० ३।२१ 2. समृद्ध, भरपूरा—श्रीविशालां विशालाम्—मेघ० ३० 3. प्रमुख, श्रीमान् महान्, उत्तम, प्रख्यात, लः 1. एक प्रकार का हरिण 2. एक प्रकार का पक्षी, - ला 1. उज्जयिनी नगर का नाम .पूर्वोद्दिष्टामनुसर पुरीं श्रीविशालाम्—मेघ० ३० 2. एक नदी का नाम । सम० अक्ष (वि०) बड़ी-बड़ी आँखों वाला, (—क्षः) शिव का विशेषण (क्षी) पार्वती का विशेषण ।

विशिख (वि०) [विगता शिखा यस्य प्रा० ब०] मुकुट रहित, बिना चोटी का, बिना नोक का,—खः 1. बाण, माधव मनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना—गीत० ४, रघु० ५।५०, महावी० २।३८ 2. एक प्रकार का नरकुल 3. एक लोहे का कौवा ।

विशिखा [विशिख+टाप्] 1. फावड़ा 2. नकुँवा 3. सुई या पिन 4. बारीक बाण 5. राजमार्ग 6. नाई की पत्नी ।

विशित (वि०) [वि+शो+क्त] तीव्र, तीक्ष्ण ।

विशिपम् [विशेः कपन्[1. मन्दिर 2. आवासस्थान, घर ।

विशिष्ट (भू० क० कृ०) [वि+शिष्+क्त] 1. विलक्षण, स्वतंत्र 2. विशेष, असामान्य, असाधारण, प्रभेदक 3. विशेषगुणसम्पन्न, लक्षणयुक्त, विशेषतायुक्त, सविशेष 4. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, प्रमुख, उत्कृष्ट, बढ़िया । सम० अद्वैतवादः रामानुज का एक सिद्धान्त, जिसके अनुसार ब्रह्म और प्रकृति समरूप तथा वास्तविक सत्ता मानी जाती हैं अर्थात् मूलतः दोनों एक ही हैं,—बुद्धिः (स्त्री०) प्रभेदक ज्ञान, प्रभेदीकरण,—वर्ण (वि०) प्रमुख या श्रेष्ठ रंग का ।

विशीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+शृ+क्त] 1. छिन्न-भिन्न किया हुआ, तोड़कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ 2. मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ 3. गिरा हुआ,—कु० ५।२८ 4. सिकुड़ा हुआ, संकुचित, या झुर्रियाँ जिसमें पड़ गई हों । सम० पर्णः नीम का पेड़,—मूर्ति (वि०) जिसका शरीर नष्ट हो गया हो, अनंग - कु० ५।५४, (र्तिः) काम देव का विशेषण ।

विशुद्ध (वि०) [वि+शुध्+क्त] 1. शुद्ध किया हुआ, स्वच्छ 2. पवित्र, निर्व्यसन, निष्पाप 3. बेदाग, निष्कलंक 4. सही, यथार्थ 5. सद्गुणी, पुण्यात्मा, ईमानदार, खरा - मा० ७।१ 6. विनीत ।

विशुद्धिः (स्त्री०) [वि+शुध्+क्तिन्] 1. पवित्रीकरण, शुद्धिकरण तदंगसंसर्गमवाप्य कल्पते ध्रुवं चिताभस्मरजो विशुद्धये - कु० ५।७९, भग० ६।१२, मनु० ६।६९, ११।५३ 2. पवित्रता, पूर्णपवित्रता,—रघु० १।१०, १२।४८ 3. याथातथ्य, यथार्थता 4. परिष्कार, भूलसुधार 5. समानता, समता ।

विशूल (व०) [विगतं शूलं यस्य—प्रा० ब०] बिनाबर्छी, जिसके पास बर्छी न हो—रघु० १५।५।

विश्रृंखल (वि०) [विगता श्रृंखला यस्य—प्रा० ब०] 1. जो श्रृंखला में न बंधा हो (शा०) 2. विश्रृंखलित, अनियंत्रित, अप्रतिबद्ध, निरंकुश, बेरोक—शि० १२।७—भामि० २।१७७ 3. सब प्रकार के नैतिक बंधनों से मुक्त, लम्पट—भर्तृ० २।५९ ।

विशेष (वि०) [विगतः शेषो यस्मात्—प्रा० ब०] 1. अजीब 2. पुष्कल, प्रचुर—रघु० २।१४,—षः 1. विवेचन, विभेदीकरण 2. प्रभेद, अन्तर—निर्विशेषो

विशेषः —भर्तृ० ३।५० 3. विशिष्टतायुक्त अन्तर, अनोखा चिह्न, विशेष गुण, विशे षता, वैशिष्ट्य,प्रायः समास में प्रयुक्त तथा 'विशिष्ट' और'अजीब' शब्दों से अनूदित —श० ६।६ 4. अच्छा मोड़, रोग में मोड़, अर्थात् अपेक्षाकृत अच्छा परिवर्तन --अस्ति मे विशेषः --श० ३, 'अब अपेक्षाकृत अच्छा हूँ' 5. अवयव, अंग - पुपोष लावण्यमयान् विशेषान् - कु० १।२५ 6. जाति, प्रकार, प्रभेद, भेद, ढंग (प्रायः समास के अंत में)—भूतविशेषः उत्तर० ४, परिमलविशेषान् पंच० १, कदलीविशेषाः - कु० १।३६ 7. विविध उद्देश्य, नाना प्रकार के विवरण (व० व०)—मेघ० ५८, ६४ 8. उत्तमता, श्रेष्ठता, भेद, प्रायः समास के अन्त में, उत्तम, पूज्य, प्रमुख, उत्कृष्ट - अनुभावविशेषात्तु -- रघु० १।३७, वपुर्विशेषेण कु० ५।३१, रघु० २।७, ६।५, कि० ९।५८, इसी प्रकार आकृतिविशेषाः 'उत्तम रूप' अतिथिविशेषः 'पूज्य अतिथि' आदि 9. अनोखा विशेषण, नौ द्रव्यों में से प्रत्येक की शाश्वत विभेदक प्रकृति 10. (तर्क० में) वैयक्तिकता — (विप० सामान्य) अनूठापन 11. प्रवर्ग, वर्ग 12. मस्तक पर चन्दन या केसर का तिलक 13. वह शब्द जो किसी अन्य शब्द के अर्थ को सीमित कर देता है, दे० विशेषण 14. ब्रह्मांड का नाम 15. (अलं० में) एक अलंकार का नाम जिसके तीन भेद बताये गये हैं, मम्मट ने इसकी परिभाषा यह दी है:—विना प्रसिद्धमाधारमाधेयस्य व्यवस्थितिः, एकात्मा - युगपद् वृत्तिरेकस्यानेकगोचरा। अन्यत्प्रकुर्वतः कार्यमशक्यान्यस्य वस्तुनः, तथैव करणं चेति विशेषस्त्रिविधः स्मृतः - काव्य० १०। सम०—अतिदेशः विशेष अतिरिक्त नियम, विशेष विस्तारित प्रयोग,—उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार जिसमें कारण के विद्यमान रहते हुए भी कार्य का होना नहीं पाया जाता --विशेषोक्तिरखंडेषु कारणेषु फलावचः - काव्य० १०, उदा० - हृदि स्नेहक्षयो नाभूत्स्मरदीपे ज्वलत्यपि, —ज्ञ, - विद् (वि०) 1. भेदों को जानने वाला, गुणदोषविवेचक, पारखी 2. विद्वान्, बुद्धिमान् भर्तृ० २।३, - लक्षणम्,—लिंगम् विशेष या लक्षणदर्शी चिह्न, - वचनम् वि पाठ या विधि,-- विधिः,— शास्त्रम् विशेष नियम।

विशेषक (वि०) [वि+शिष्+ण्वुल्] प्रभेदक, - कः, - कम् 1. एक प्रभेदक विशिष्टता या लक्षण विशेषण 2. चन्दन या केसर का माथे पर लगा तिलक - मालवि० ३।५ 3. रंगीन उबटन तथा अन्य सुगंधित पदार्थों से मुख या शरीर पर रेखांकन करना—स्वेदोद्गमः किंपुरुषांगनानां चक्रे पदम् पत्रविशेषकेषु—कु० ३।३३, रघु० ९।२९, शि० ३।६३, १०।१४, - कम् तीन श्लोकों का समूह जो व्याकरण की दृष्टि से एक ही वाक्य बनता है—द्वाभ्यां युग्ममिति प्रोक्तं त्रिभिः श्लोकैर्विशेषकम्, कलापकं चतुर्भिः स्यात्तदूर्ध्वं कुलकं स्मृतम्।

विशेषण (वि०) [वि+शिष्+ल्युट्] गुणवाचक, - णम् 1. विभेदन, विवेचन 2. प्रभेदन, अन्तर 3. वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द की विशेषता प्रकट करता है, गुणवाचक शब्द, गुण, विशेषता, (विप० विशेष्य), (विशेषण तीन प्रकार का बताया जाता है --व्यावर्तक, विधेय और हेतुगर्भ) 4. प्रभेदक लक्षण या चिह्न, 5. जाति, प्रकार।

विशेषतस् (अव्य०) [विशेष+तस्] विशेष रूप से, खास तौर से।

विशेषित (भू० क० कृ०) [वि+शिष्+णिच्+क्त] 1. विलक्षण 2. परिभाषित, जिसके विवरण बता दिये गए हों 3. विशेषण के द्वारा जिसकी भिन्नता दर्शा दी गई हो 4. श्रेष्ठ, बढ़िया।

विशेष्य (वि०) [वि+शिष्+ण्यत्] 1. विलक्षण होने के योग्य 2. मुख्य, बढ़िया, —ष्यम् वह शब्द जिसे विशेषण के द्वारा सीमित कर दिया गया हो, वह पदार्थ जो किसी दूसरे शब्द द्वारा परिभाषित, या विशिष्ट कर दिया गया हो, संज्ञाशब्द,- विशेष्यं नाभिधा गच्छेत्क्षीणशक्तिर्विशेषणे --काव्य० २।

विशोक (वि०) [विगतः शोको यस्य —प्रा० ब०] शोक से मुक्त, प्रसन्न, —कः अशोक वृक्ष,—का शोक से छुटकारा।

विशोधनम् [वि+शुध्+ल्युट्] 1. शुद्ध करना, स्वच्छ करना (आलं० से)—राज्यकंटकविशोधनोद्यतः -- विक्रम० ५।१ 2. पवित्रीकरण, निष्पाप या दोषरहित होना 3. प्रायश्चित्त, परिशोधन।

विशोध्य (वि०) [वि+शुध्+ण्यत्] पवित्र किये जाने के योग्य, निर्मल या शुद्ध किये जाने के योग्य।

विशोषणम् [वि+शुष्+ल्युट्] सुखाना, शुष्कीकरण।

विश्रणनम्, विश्राणनम् [वि+श्रण्+ल्युट्, पक्षे णिच्] प्रदान करना, समर्पण करना, अनुदान, उपहार, दान—विश्राणनाच्चान्यपयस्विनीनाम् - रघु० २।५४।

विश्रब्ध (भू० क० कृ) (विस्रब्ध भी) [वि+श्रम्भ+क्त] 1. बन्द किया गया, विश्वास किया गया, सौंपा गया 2. विस्वस्त, निडर, भरोसा करने वाला —मुद्रा० ३।३ 3. विश्वसनीय, भरोसे का 4. निश्चल, सौम्य, शान्त, निश्चिन्त 5. दृढ़, स्थिर 6. नम्र, विनीत 7. अत्यधिक, बहुत ज्यादह, - ब्धम् (अव्य०) विश्वासपूर्वक, निर्भीकता के साथ, विना डर व संकोच के -- विश्रब्धं क्रियतां वराहततिभिः मुस्ताक्षतिः पल्वले -- श० २।६।

विश्रमः [वि+श्रम्+अप्] 1. आराम, विश्रान्ति 2. विराम, विश्राम।

विश्रम्भः [वि+श्रम्भ्+घञ्] 1. विश्वास, भरोसा, अन्तरंग विश्वास, पूर्ण घनिष्ठता या अन्तरंगता— विश्रम्भादुरसि निपत्य लब्धनिद्राम्—उत्तर० १।४९, मा० ३।१ 2. गुप्त बात, रहस्य — विश्रंभेष्वभ्यंतरीकरणीया —का० 3. आराम, विश्राम 4. स्नेहसिक्त परिपृच्छा 5. प्रेम-कलह, प्रीतिविषयक झगड़ा 6. हत्या। सम०— आलापः,— भाषणम् गुप्त वार्तालाप, वार्तालाप,— पात्रम्,— भूमिः,— स्थानम् विश्वास करने के योग्य पदार्थ या व्यक्ति, विश्वस्त, विश्वसनीय व्यक्ति।

विश्रयः [वि+श्रि+अच्] शरण, आश्रयस्थल।

विश्रवस् (पुं०) पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम, जो कैकसी से उत्पन्न रावण, कुंभकर्ण, विभीषण और शूर्पणखा का पिता था, कुबेर के एक पुत्र का नाम जो उसकी पत्नी इडाविडा से उत्पन्न हुआ था।

विश्राणित (भू० क० कृ०) [वि+श्रण्+णिच्+क्त] प्रदान किया गया, अर्पित किया गया—निःशेषविश्राणितकोशजातम्— रघु० ५।१।

विश्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+श्रम्+क्त] 1. बन्द किया हुआ, रोका गया 2. आराम किया हुआ, विश्राम किया हुआ 3. सौम्य, शान्त, स्वस्थ।

विश्रान्तिः (स्त्री०) [वि+श्रम्+क्तिन्] 1. आराम, विश्राम 2. रोक, थाम।

विश्रामः [वि+श्रम्+घञ्] 1. रोक, थाम 2. आराम, चैन— विश्रामो हृदयस्य यत्र— उत्तर० १।३९ 3. शान्ति, सौम्यता, स्वस्थता।

विश्रावः [वि+श्रु+घञ्] 1. चूना, टपकना, बहना ('विस्राव' के स्थान में) 2. ख्याति, कीर्ति।

विश्रुत (भू० क० कृ०) [वि+श्रु+क्त] प्रख्यात, लब्धप्रतिष्ठ, यशस्वी, प्रसिद्ध 2. प्रसन्न, आनन्दित, खुश 3. बहता हुआ।

विश्रुतिः (स्त्री०) [वि+श्रु+क्तिन्] प्रसिद्धि, ख्याति।

विश्लथ (वि०) [विशेषण श्लथः - प्रा० स०] 1. ढीला, शिथिल, खुला हुआ,—रघु० ६।७३ 2. स्फूर्तिहीन, निस्तेज।

विश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [वि+श्लिष्+क्त] वियुक्त, पृथक्कृत, अलग अलग किया हुआ रघु० १२।७६।

विश्लेषः [वि+श्लिष्+घञ्] 1. अलगाव, वियोजन 2. विशेषतः प्रेमियों अथवा पति-पत्नी का बिछोह 3. वियोग तनयाविश्लेषदुःखैः— श० ४।५, चरणारविंदविश्लेष—रघु० १३।२३ 4. अभाव, हानि, शोकावस्था 5. दरार, छिद्र।

विश्लेषित (भू० क० कृ०) [वि+श्लिष्+णिच्+क्त] अलग किया हुआ, वियुक्त, जुदा किया हुआ।

विश्व (सा० वि०) [विश्+व] 1. सारे, सारा, समस्त, सार्वलौकिक 2. प्रत्येक, हरेक, (पुं० ब० व०) दस देवों का समूह (यह 'विश्वा' के पुत्र समझे जाते हैं, इनके नाम हैं — वसुः सत्यः क्रतुर्दक्षः कालः कामो धृतिः कुरुः, पुरूरवा माद्रवाश्च विश्वेदेवाः प्रकीर्तिताः— **श्वम्** 1. सम्पूर्ण सृष्टि, समस्त संसार — इदं विश्वं पाल्यम्—उत्तर० ३।३०, विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः भामि० १।१३ 2. सूखा अदरक, सोंठ। सम० आत्मन् (पुं) 1. परमात्मा (विश्व की आत्मा) 2. ब्रह्मा का विशेषण 3. शिव का विशेषण—अथ विश्वात्मने गौरी संदिदेश मिथः सखीम् कु० ६।१ 4. विष्णु का विशेषण,—ईशः,— ईश्वरः 1. परमात्मा, विश्व का स्वामी 2. शिव का विशेषण, कद्रु (वि०) दुष्ट, नीच, दुर्वृत्त, (द्रुः) 1. शिकारी कुत्ता, मृगयाकुक्कुर 2. स्वस्थ,— कर्मन् (पुं०) 1. देवों का शिल्पी, तु० त्वष्टृ 2. सूर्य का विशेषण, °जा, °सुता; सूर्य की पत्नी संज्ञा का विशेषण, कृत् (पुं०) 1. सब प्राणियों का स्रष्टा 2. विश्वकर्मा का विशेषण—,केतुः अनिरुद्ध का विशेषण, गंधः प्याज, (-धम्) लोबान, गुग्गुल,— गंधा पृथ्वी, जनम् मानवजाति, जनीन,—जन्य (वि०) मानवमात्र के लिए हितकर, मनुष्य जाति के उपयुक्त, सब मनुष्यों के लिए लाभकर—भट्टि० २।४८, २१।१७,— जित् (पुं०) 1. यज्ञ विशेष का नाम— रघु० ५।१ 2. वरुण का पाश, देव विश्व (पुं०) के नीचे दे०, धारिणी पृथ्वी, धारिन् (पुं०) देव — नाथः विश्व का स्वामी, शिव का विशेषण,— पा (पुं०) 1. सब का रक्षक 2. सूर्य 3. चन्द्रमा 4. अग्नि, —पावनी, पूजिता तुलसी का पौधा,— प्सन् (पुं०) 1. देव 2. सूर्य 3. चन्द्रमा 4. अग्नि का विशेषण — भुज् (वि०) सर्वोपभोक्ता, सब कुछ खाने वाला (पुं०) इन्द्र का विशेषण, भेषजम् सूखा अदरक, सोंठ, मूर्ति (वि०) सब रूपों में विद्यमान, सर्वव्यापक, विश्वव्यापी,—मा० १।३,— योनिः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण,— राज्,— राजः विश्वप्रभु,— रूप (वि०) सर्व व्यापक, सर्वत्र विद्यमान (पः) विष्णु का विशेषण, (पम्) अगर की लकड़ी,— —रेतस् (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण,— वाह (वि०) (स्त्री० विश्वौही) सब कुछ ढोने वाला, सब का भरण पोषण करने वाला,— सहा पृथ्वी, सृज् (पुं०) —ब्रह्मा का विशेषण, स्रष्टा प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः—कु० ३।२८, १।४९।

विश्वंकरः [विश्वं सर्वं करोति प्रकाशयति— कृ+ट, द्वितीयाया अलुक्] आँख, (कुछ के अनुसार—नपुं०)।

विश्वतस् (अव्य०) [विश्व+तसील्] सब ओर, सर्वत्र, सब जगह भामि० १।३०। सम० **मुख** (वि०) सब ओर मुख किये हुए—भग० ९।१५।

विश्वथा (अव्य) [विश्व+थाल्] सर्वत्र, सब जगह।

विश्वंभर (वि०) [विश्वं बिभर्ति विश्व+भृ+खच्, मुम्] सब का भरणपोषण करने वाला, **रः** 1. सर्व व्यापक प्राणी, परमात्मा 2. विष्णु का विशेषण 3. इन्द्र का विशेषण, **-रा** पृथ्वी – विश्वंभरा भगवतीं भवतीमसूत – उत्तर० १।९, विश्वंभराप्यतिलघुर्नरनाथ तवांतिके नियतम्—काव्य० १०।

विश्वसनीय (सं० कृ०) [वि+श्वस्+अनीयर] 1. विश्वास किये जाने के योग्य, विश्वासपात्र, जिस पर भरोसा किया जा सके 2. विश्वास उत्पन्न करने के योग्य – श० २, मालवि० ३।२।

विश्वस्त (भू० क० कृ०) [वि+श्वस्+क्त] 1. जिस पर विश्वास किया गया है, निष्ठ, जिस पर भरोसा किया गया है 2. विश्वास करने वाला, भरोसा करने वाला 3. निडर, विश्रब्ध 4. विश्वास के योग्य, जिस पर भरोसा किया जा सके।

विश्वाधायस् (पुं०) [विश्वं दधाति पालयति –विश्व+धा णिच्+असुन्, पूर्वदीर्घः] देव, सुर।

विश्वानरः [विश्व+नरः, पूर्वपददीर्घः] सविता का विशेषण।

विश्वामित्रः [विश्व+मित्रः, विश्वमेव मित्रं यस्य ब० स०, पूर्वपदस्याकारस्य दीर्घः] एक विख्यात ऋषि का नाम। यह कान्यकुब्ज का राजा होने के कारण क्षत्रिय था, इसके पिता का नाम गाधि था। एक बार यह मृगया के लिए घूमता-घूमता वसिष्ठ ऋषि के आश्रम में पहुँचा, वहाँ अनेक गौओं को देख कर उसने अनंत धन राशि देकर भी उनको लेना चाहा और न मिलने पर बलात् उनको छीनने का प्रयत्न किया। इस बात पर एक महान् संघर्ष हुआ, और राजा विश्वामित्र पूर्णरूप से परास्त हो गया। इस पराजय से विश्वामित्र अत्यंत क्षुब्ध हुआ और साथ ही वसिष्ठ के ब्राह्मणत्व की शक्ति से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि वह ब्राह्मणत्व प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या करता रहा। यहां तक कि बाद में उसे क्रमशः राजर्षि, ऋषि, महर्षि और ब्रह्मर्षि की उपाधि मिली, परन्तु उसे सन्तोष न हुआ क्योंकि वसिष्ठ ने अपने मुख से उसे ब्रह्मर्षि नहीं कहा। विश्वामित्र हजारों वर्ष तपस्या करता रहा, तब कहीं जाकर वसिष्ठ ने उसे ब्रह्मर्षि कहा। विश्वामित्र ने कई बार वसिष्ठ को उत्तेजित करने का प्रयत्न किया, उदाहरणतः वसिष्ठ के सौ पुत्रों को विश्वामित्रने मौत के घाट उतार दिया, परन्तु वशिष्ठ तब भी नहीं घबराया। अन्तिमरूप से ब्रह्मर्षि बनने से पहले विश्वामित्र की शक्ति बहुत अधिक थी, उदाहरणतः उसने त्रिशंकु को स्वर्ग भेजने, इन्द्र के हाथ से शुनःशेपको रक्षा करने, तथा ब्रह्मा की भांति पुनः सृष्टि की रचना करने में अत्यधिक बल का प्रदर्शन किया। यह बालक राम का साथी और परामर्श दाता था, इसने राम को अनेक आश्चर्य जनक अस्त्र प्रदान किये)।

विश्वावसुः [विश्व+वसुः, पूर्वपदस्याकारस्य दीर्घः] एक गन्धर्व का नाम।

विश्वासः [वि+श्वस्+घञ्] 1. भरोसा, प्रत्यय, निष्ठा, विश्रम्भ,—दुर्जनः प्रियवादीति नैतद्विश्वासकारणम्—श० १।१४, रघु० १।५१, हि० ४।१०३ 2. भेद, रहस्य, गोपनीय समाचार। सम०—**घातः, भंगः** विश्वास को तोड़ देना, धोखा देही, द्रोह, **घातिन्** (पुं०) धोखा देने वाला मनुष्य, द्रोही,—**पात्रम्, भूमिः, स्थानम्** भरोसे की वस्तु, विश्वसनीय या भरोसे का मनुष्य, विश्वासी पुरुष।

विष् i (जुहो० उभ० वेवेष्टि, वेविष्टे, विष्ट) 1. घेरना 2. फैलाना, विस्तार करना, व्यापक होना 3. सामने जाना, मुक़ाबला करना (परिनिष्ठित संस्कृत में इसका प्रयोग बहुधा नहीं होता)।

ii (क्र्या० पर० विष्णाति) वियुक्त करना, अलग-अलग करना।

iii (भ्वा० पर० वेषति) छिड़कना, उडेलना।

विष् (स्त्री०) [विष्+क्विप्] 1. मल, विष्ठा, लीद 2. फैलाना, प्रसारण 3. लड़की जैसा कि 'विट्पति' में। सम०—**कारिका** (विट्कारिका) एक प्रकार का पक्षी,—**ग्रहः** (विड्ग्रहः) कोष्ठबद्धता, कब्ज,—**चरः,**—**वराहः** (विट्चरः, विड्वराहः) पालतू या गाँव का सूअर,—**लवणम्** (विड्लवणम्) एक प्रकार का औषधियों में प्रयुक्त होने वाला नमक,—**सङ्गः** (विट्सङ्गः) कोष्ठबद्धता, क़ब्ज,—**सारिका** (विट्सारिका) एक प्रकार का पक्षी, मैना।

विषम् [विष्+क] 1. जहर, हलाहल (इस अर्थ में 'पुं०' भी कहा जाता है) – विषं भवतु मा भूद्वा फटाटोपो भयङ्करः—पंच० १।२०४ 2. जल, – विषं जलधरैः पीतं मूर्छिताः पथिकाङ्गनाः —चन्द्रा० ५।८२, (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) 3. कमलडण्डी के तन्तु या रेशे 4. लोबान, एक सुगन्धित द्रव्य का गोंद, रसगन्ध। सम० **अक्त,**—**दिग्ध** (वि०) विषैला, जहरीला,—**अंकुरः** 1. बर्छी 2. विष में बुझा तीर,—**अंतकः** शिव का विशेषण,—**अपह,**—**घ्न** (वि०) विषनाशक, विषनिवारक औषधि, **आननः,**—**आयुधः, आस्यः,** साँप,—**आस्वाद** (वि०) जहर चखने वाला,—**कुम्भः** जहर से भरा हुआ घड़ा,—**कृमिः** जहर में पला हुआ कीड़ा,—**न्याय** दे० न्याय के अन्तर्गत,—**ज्वरः** भैंसा,

—दः बादल (दम्) तूतिया,—दन्तकः सांप,—दर्शन-मृत्युकः,—मृत्युः एक पक्षी (इसे चकोर कहते हैं), —धरः सांप—भामि० १।७४, °निलयः निम्नतर प्रदेश, सांपों का बिल,—पुष्पम् नील कमल,—प्रयोगः जहर का इस्तेमाल, जहर देना,—भिषज्,—वैद्यः विषनाशक औषधियों का विक्रेता, सांपों के काटने की चिकित्सा करने वाला—संप्रति विषवैद्यानां कर्म-मालवि० ४,—मन्त्रः 1. सांप के काटे का विष उतारने का मन्त्र 2. सपेरा, बाजीगर,—वृक्षः जहरीला पेड़,—विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम् —कु० २।५५, °न्याय न्याय के नीचे देखो,—वेगः जहर का संचार या प्रभाव,—शालूकः कमल की जड़, —शूकः,—भृङ्गिन्,—सृक्कन् (पुं०) भिड़, बर्र, —हृदय (वि०) विषाक्त दिलवाला अर्थात् दुष्टहृदय, मलिनात्मा।

विषक्त (भू० क० कृ०) [वि+सञ्ज्+क्त] 1. दृढ़ता-पूर्वक जमा हुआ, सटा हुआ 2. चिपटा हुआ, चिपका हुआ।

विषण्डम् [विशेषेण षंडम्—प्रा० स०] कमलडण्डी के तन्तु या रेशे।

विषण्ण (भू० क० कृ०) [वि+सद्+क्त] खिन्न, मुंह लटकाये हुए, उदास, दुःखी, निरुत्साह, हताश। सम० —मुख, वदन (वि०) उदास दिखाई देने वाला, —रूप (वि०) उदासी की अवस्था में पड़ा हुआ।

विषम (वि०) [विगतो विरुद्धो वा समः—प्रा० स०] 1. जो सम या समान न हो, खुरदरा, ऊबड़-खाबड़—पथिषु विषमेष्वप्यचलता—मुद्रा० ३।३, पञ्च० १६४, मेघ० १९ 2. अनियमित, असमान—मा० ९।४३ 3. उच्चा-वच, असम 4. कठिन, समझने में दुष्कर, आश्चर्य-जनक कि० २।३ 5. अगम्य, दुर्गम—कि० २।३ 6. मोटा, स्थूल 7. तिरछा मा० ४।२ 8. पीड़ाकर, कष्टदायक—भर्तृ० ३।१०५ 9. बहुत मजबूत, उत्कट —मा० ३।९ 10. खतरनाक, भयानक—मृच्छ० ८।१, २७ मुद्रा० १।१८, २।२० 11. बुरा, प्रतिकूल, विपरीत—पंच० ४।१६ 12. अजीब, अनोखा, अनुपम 13. बेईमान, कलापूर्ण,—मम् 1. असमता 2. अनोखापन 3. दुर्गम स्थान, चट्टान, गड्ढा आदि 4. कठिन या खतरनाक स्थिति, कठिनाई, दुर्भाग्य,—सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुरा-कृतानि भर्तृ० २।९७, भग० २।२ 5. एक अलंकार का नाम जिसमें कार्य कारण के बीच में कोई अनोखा या अघटनीय संबंध दर्शाया जाता है यह चार प्रकार का माना जाता है दे० काव्य०, क० १२६ व १२७,—मः विष्णु का नाम। सम० अक्षः, —ईक्षणः,—नयनः,—नेत्रः,—लोचनः शिव के विशेषण,—अन्नम् अनोखा या अनियमित आहार —आयुधः,—इषुः,—शरः कामदेव के विशेषण, —कालः अननुकूल ऋतु,—चतुरस्रः,—चतुर्भुजः विषम कोण वाला चतुष्कोण,—छदः सप्तपर्ण नाम का पेड़,—ज्वरः कभी कम तथा कभी अधिक होने वाला बुखार,—लक्ष्मीः दुर्भाग्य,—विभागः सम्पत्ति का असमान वितरण,—स्थ (वि०) 1. दुर्गम स्थिति में होने वाला 2. कठिनाई में रहने वाला, अभागा।

विषमित (वि०) [विषम+इतच्] 1. ऊबड़-खाबड़ किया हुआ, असम, कुटिल 2. सिकुड़न वाला, त्योरीदार 3. कठिन या दुर्गम बनाया गया।

विषयः [विषिण्वन्ति स्वात्मकतया विषयिणं संबध्नन्ति —वि+सि+अच्, षत्वम्] ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त पदार्थ (यह पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के अनुरूप गिनती में पाँच हैं—रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द जिनका संबंध क्रमशः आँख, जिह्वा, नाक, त्वचा और कान से है),—श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् —श० १।१ 2. लौकिक पदार्थ, या वस्तु, मामला, लेन-देन 3. ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त आनन्द, लौकिक या मैथुनसंबन्धी उपभोग, वासनात्मक पदार्थ (प्रायः ब० व० में), यौवने विषयैषिणाम्—रघु० १।८, निर्विष्ट विषयस्नेहः—१२।१, ३।७०, ८।१०, १९।४९, विक्रम० १।९, भग० २।५९ 4. पदार्थ, वस्तु, मामला, बात—नार्यो न जग्मुर्विषयांतराणि—रघु० ७।१२, ८।८९ 5. उद्दिष्ट पदार्थ या वस्तु, चिह्न, निशान —भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्याः—श० १।३१, शि० ९।४० 6. कार्यक्षेत्र, परास, पहुँच, परिधि —सौमित्रेरपि पत्रिणामविषये तत्र प्रिये क्वासि भोः —उत्तर० ३।४५, सकलवचनानामविषयः—मा० १।३०, ३६, उत्तर० ५।१९, कु० ६।१७ 7. विभाग, क्षेत्र, प्रान्त, भूमि, तत्त्व सर्वत्रौदरिकस्याभ्यवहार्यमेव विषयः विक्रम० ३ 8. विषयवस्तु, आलोच्य विषय, प्रसंग,—भामि० १।१०, इसी प्रकार 'शृङ्गारविषयिको ग्रन्थः' ऐसी पुस्तक जिसमें प्रीतिविषयक बातों का उल्लेख हो 9. व्याख्येय प्रसंग या विषय, शीर्षक, अधिकरण के पाँचों अंगों में से पहला 10. स्थान, जगह—परिसरविषयेषु लीढमुक्ताः कि० ५।३५ 11. देश, राष्ट्र, राज्य, प्रदेश, मंडल, साम्राज्य 12. शरण, आश्रय 13. ग्रामों का समूह 14. प्रेमी, पति 15. वीर्य, शुक्र 16. धार्मिक अनुष्ठान (विषय की बाबत, के विषय में, के संबंध में, इस मामले में के बारे में, बाबत—या तत्रास्ते युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः—मेघ० ८२, स्त्रीणां विषये, धनविषये आदि)। सम० अभिरतिः 1. सांसारिक विषय वासनाओं में आसक्ति—कि० ६।४४, इसी प्रकार

--अभिलाषः–कि० ३।१३,–आत्मक (वि०) सांसारिक पदार्थों से युक्त, आसक्त,–निरत (वि०) विषयवासनाओं में लिप्त, विषयी, विलासी, इन्द्रियासक्त,–आसक्ति –उपसेवा, निरतिः (स्त्री०), –प्रसंगः भोगविलास, कामासक्ति, - ग्रामः उन पदार्थों का समूह जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जाने जाते हैं,–सुखम् इन्द्रियासक्ति, विषयोपभोग।

विषयायिन् (पुं०) [विषयान् अयते प्राप्नोति—विषय+अय्+णिनि] 1. इन्द्रियसुखों में लिप्त, भोगविलासी 2. संसार के कार्यों में लिप्त मनुष्य 3. कामदेव 4. राजा 5. ज्ञानेन्द्रिय 6. भौतिकवादी।

विषयिन् (वि०) [विषय+इनि] इन्द्रियसुखसंबंधी, शारीरिक, पुं० 1. सांसारिक पुरुष, विषयी, दुनियादार आदमी 2. राजा 3. कामदेव 4. भोगविलासी, लंपट –पंच० १।१४६, श० ५, नपुं० 1. ज्ञानेन्द्रिय 2. ज्ञान।

विषलः (पुं०) ज़हर, हलाहल।

विषह्य (वि०) [वि+सह्+यत्] 1. सहन करने के योग्य, जो बर्दाश्त किया जा सके अविषह्यव्यसनेन धूमिताम् –कु० ४।३०, रघु० ६।४७ 2. जो बसाया जा सके जो निर्धारित किया जा सके मनु० ८।२६५, संभव, शक्य।

विषा [विष्+अच्+टाप्] 1. विष्ठा, मल 2. प्रतिभा, समझ।

विषाणः,–णम्, णी [विष्+कानच्, स्त्रियां ङीप्] 1. सींग - साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः–भर्तृ० २।१२, कदाचिदपि पर्यटञ्शशविषाणमासादयेत्—२।५ 2. हाथी या सूअर के दांत—तप्तानासुपदधिरे विषाणभिन्नाः प्रह्लादं सुरकरिणां घनाः क्षरन्तः –कि० ७।१३, शि० १।६०।

विषाणिन् (वि०) [विषाण+इनि] सींगों वाला या दांतों वाला,–पुं० 1. वह जानवर जिसके सींग हों या दांत बाहर निकले हों 2. हाथी शि० ४।६३, १२।७७ 3. सांड़।

विषादः [वि+सद्+घञ्] 1. खिन्नता, उदासी, उत्साहहीनता, रंज, शोक - मद्वाणि मा कुरु विषादम् –भामि० ४।४१ विषादे कर्तव्ये विदधति जडाः प्रत्युत मुदम् भर्तृ० ३।३५, रघु० ८।५४ 2. निराशा, हताशा, नैराश्य, - विषादलुप्तप्रतिपत्तिसैन्यम्—रघु० २।४० (विषादश्चेतसो भंग उपायाभावनाशयोः) 3. थकान, म्लान अवस्था,—मा० २।५ ∴ मन्दता, जडता, संज्ञाहीनता।

विषादिन् (वि०) [विषाद+इनि] 1. खिन्न, उद्विग्न 2. उदास, विषण्ण।

विषारः [विष+ऋ+अच्] सांप।

विषालु (वि०) [विष+आलुच्) विषैला, ज़हरीला।

विषु (अव्य०) [विष्+कु] 1. दो समान भागों में, समान रूप से 2. भिन्नतापूर्वक, विविध प्रकार से 3. समान, सदृश।

विषुपम् [विषु+पा+क] दो स्थलविन्दु जहाँ पर सूर्य विषुवत् रेखा को पार करता है।

विषुवम् [विषु+वा+क] मेषराशि या तुलाराशि का प्रथम विन्दु जिसमें सूर्य शारदीय या वासन्तिक विषुव में प्रविष्ट होता है, विषुवीय विन्दु। सम०—छाया मध्याह्नकाल में धूपघड़ी के शंकु की छाया,– दिनम् विषुवीय दिन, रेखा विषुवीय रेखा,—संक्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य का विषुवीय मार्ग।

विषूचिका [वि+सूच्+ण्वुल्+टाप्, षत्वम्, इत्वम्] हैज़ा।

विष्क् (चुरा० उभ० विष्कयति ते) 1. वध करना, चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना (इस अर्थ में केवल आत्मनेपदी) 2. देखना, प्रत्यक्ष करना।

विष्कन्दः [वि+स्कन्द्+अच्, षत्वम्] 1. तितरबितर होना 2. जाना, गमन।

विष्कम्भः [वि+स्कंभ्+अच्] 1. अवरोध, रुकावट, बाधा 2. दरवाजे की सांकल, चटकनी 3. घर में लगा शहतीर 4. थूणी, खंभ 5. वृक्ष 6. (नाटकों में) नाटकों के अंकों के मध्य में मध्यरंग का दृश्य जो दो मध्यम या निम्नदर्जे के पात्रों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, तथा जिसमें श्रोताओं के सामने अंकों के अन्तराल में तथा बाद में होने वाली घटनाओं को संक्षेप में कह कर नाटक की कथावस्तु के अवान्तर भागों का नाटक की मुख्य कथा से संबन्ध स्थापित कर दिया जाता है। साहित्यदर्पण में इसकी निम्नांकित परिभाषा दी गई है वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः। संक्षिप्तार्थस्तु विष्कंभः आदावंकस्य दर्शितः। मध्येन मध्यमाभ्यां वा पात्राभ्यां संप्रयोजितः। शुद्धः स्यात् स तु संकीर्णो नीचमध्यमकल्पितः—३०८ 7. वृत्त का व्यास 8. योगियों की विशेष मुद्रा 9. विस्तार, लम्बाई।

विष्कंभक दे० विष्कंभ।

विष्कंभित (वि०) [विष्कंभ+इतच्] बाधायुक्त, अवरुद्ध।

विष्कंभिन् (पुं०) [विष्कभ्+इनि] द्वार की अर्गला सांकल या चटखनी।

विष्किरः [वि+कॄ+क, सुट्, षत्वम्] 1. इधर उधर बखेरना, फाड़ डालना 2. मुर्गा 3. पक्षी, तीतर की जाति का पक्षी–छायापस्किरमाणविष्किरमुखव्याकृष्टकीटत्वचः उत्तर० २।९।

विष्टपः,–पम् [विष्+कपन्, तु] संसार, भुवन– कु०

३।२०, तु० त्रिविष्टप। सम० हारिन् (वि०) जो संसार को प्रसन्न करता है भर्तृ० २।२५।

विष्टब्ध (भू० क० कृ०) [वि+स्तंभ्+क्त] 1. पक्का जमाया हुआ, भली भांति आश्रित 2. टेक लगा हुआ, सहारा दिया हुआ 3. अवरुद्ध, सबाध 4. लकवा के रोग से ग्रस्त, गतिहीन।

विष्टंभः [वि+स्तंभ्+घञ्] 1. पक्की तरह से जमाना 2. अवरोध, रुकावट, बाधा 3. मूत्रावरोध, मलावरोध कोष्ठबद्धता 4. लकवा 5. ठहरना, टिकाव।

विष्टरः [वि+स्तृ+अप्, षत्वम्] 1. आसन, (स्टूल, कुर्सी आदि) —रघु० ८।१८ 2. तह, परत, बिस्तरा (कुश आदि घास का) 3. मुट्ठीभर कुशघास 4. यज्ञ में ब्रह्मा का आसन 5. वृक्ष। सम० —भाज् (वि०) आसन पर बैठा हुआ, आसन पर विराजमान—कु० ७।७२, —श्रवस् (पुं०) विष्णु या कृष्ण का विशेषण —शि० १४।१२।

विष्टिः (स्त्री०) [विष्+क्तिन्] 1. व्याप्ति 2. कर्म, व्यवसाय 3. भाड़ा, मजदूरी 4. बेगार 5. प्रेषण 6. नरकवास।

विष्ठलम् [विदूरं स्थलम् प्रा० स०] दूरवर्ती स्थान, फासले पर स्थित।

विष्ठा [वि+स्था+क+टाप्, षत्वम्] 1. मल, लीद, पाखाना, —मनु० ३।१८०, १०।९१ 2. पेट।

विष्णुः [विष्+नुक्] देवत्रयी में दूसरा, जिसको संसार का पालनपोषण सौंपा गया है, (इस कर्तव्य को भिन्न भिन्न अवतार धारण करके संपन्न किया जाता है, अवतारों के विवरण के लिए दे० अवतार) इस शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है —यस्माद्विश्वमिदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मनः, तस्मादेवोच्यते विष्णुर्विशधातोः प्रवेशनात् — 2. अग्नि 3. पुण्यात्मा 4. विष्णुस्मृति के प्रणेता। सम० —**कांची** एक नगर का नाम, —**क्रमः** विष्णु के पग, —**गुप्तः** चाणक्य का नाम, —**तैलम्** एक प्रकार औषधियों से बनाया गया तेल, —**दैवत्या** प्रत्येक पक्ष (चान्द्रमास के) की एकादशी और द्वादशी, —**पदम्** 1. आकाश, अन्तरिक्ष 2. क्षीरसागर 3. कमल, —**पदी** गंगा का विशेषण, —**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक पुराण, —**प्रीतिः** (स्त्री०) विष्णुपूजा को स्थापित रखने के लिये ब्राह्मणों को अनुदान के रूप में दी गई शुल्क से मुक्त भूमि, —**रथः** गरुड का विशेषण, रिंगी बटेर, लवा, —**लोकः** विष्णु का संसार, —**वल्लभा** 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. तुलसी का पौधा, —**वाहनः**, —**वाह्यः** गरुड के विशेषण।

विष्पन्दः [वि+स्पन्द+घञ्] धड़कन, स्पन्दन, धक-धक होना।

विष्फारः [वि+स्फुर+णिच्, उकारस्य आत्वम्] 1. धनुष की टंकार 2. थरथराहट।

विष्य (वि०) [विषेण वध्यः—विष+यत्] विष देकर मारे जाने योग्य, जिसको जहर देकर मार दिया जाय।

विष्यन्दः [वि+स्यन्द्+घञ्] बहना, टपकना।

विष्व (वि०) पीडाकर, क्षतिकर, उत्पातकारी।

विष्वच्, विष्वञ्च् (वि०) [विषुम् अञ्चति— विषु+अंच्+क्विन्] (कर्तृ०, ए० व० पुं० विष्वङ्, स्त्री० विषूची, नपुं० विष्वक्) 1. सर्वत्र जाने वाला, सर्वव्यापक,—विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि —उत्तर० ३।३८, मा० ९।२० 2. भागों में अलग अलग करने वाला 3. भिन्न, (विष्वक् शब्द क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो इस का अर्थ है 'सर्वत्र' 'सबओर' 'चारों तरफ' कि० १५।५९, पञ्च० २।२, मा० ५।४, ९।२५)। सम० —**सेनः** (विष्वक्सेनः, या विष्वक्षेणः) विष्णु का विशेषण —साम्यमाप कमलासखविष्वक्सेनसेवितयुगान्तपयोधेः—शि० १०।५५, विष्वक्सेनः स्वतनुमविशत्सर्वलोकप्रतिष्ठाम् रघु० १५।१०३, —**प्रिया** लक्ष्मी का नाम।

विष्वणनम्, विष्वाणः [वि+स्वन्+ल्युट्, घञ् वा, षत्वणत्वे] भोजन करना, खाना।

विष्वद्र्यच् (द्र्य) च् (वि०) (स्त्री० विष्वद्रीची) [विष्वच्+अञ्च्+क्विन् अद्रि आदेशः] सर्वग, सर्वव्यापक, विश्वद्रीचीविक्षिपन् सैन्यवीचीः—शि० १८।२५, विष्वद्रीच्या भुवनमभितो भासते यस्य भासा भामि० ४।१८।

विस् i (दिवा० पर० विस्यति) डालना, फेंकना, भेजना। ii (भ्वा० पर० वेसति) जाना, हिलना-जुलना।

विस् दे० 'बिस'।

विसंयुक्त (भू० क० कृ०) [वि+सम्+युज्+क्त] अलग-अलग किया हुआ, पृथक् पृथक् किया हुआ।

विसंयोगः [वि+सम्+युज्+घञ्] अलग-अलग होना, बिछोह, वियोग।

विसंवादः [वि+सम्+वद्+घञ्] 1. धोखा, प्रतिज्ञा भंग करना, निराशा 2. असंगति, असंबद्धता, असहमति 3. वचनविरोध।

विसंवादिन् (वि०) [विसंवाद+इनि] 1. निराश करने वाला, धोखा देने वाला 2. असंगत, विरोधात्मक 3. भिन्न मत रखने वाला, असहमत —रघु० १२।६७ 4. जालसाज, धूर्त, मक्कार।

विसंष्ठुल (वि०) [वि+सम्+स्था+उलच्] 1. अस्थिर, विक्षुब्ध 2. असम।

विसंकट (त्रि०) [विशिष्टः संकटो यस्मात् —प्रा० ब०]

भयानक, डरावना—मा० ५।१३—तु० विशंकट, —टः 1. सिंह 2. इंगुदी का वृक्ष।
विसंगत (वि०) [वि+सम्+गम्+क्त] अयोग्य, असम्बद्ध, बेमेल।
विसंधिः [विरुद्धः सन्धि,—प्रा० स०] अनभिमत सन्धि या सन्धि का अभाव (यह साहित्यरचना में एक दोष माना जाता है) दे० काव्य० ७।
विसरः [वि+सृ+अप्] 1. जाना 2. फैलाना, विस्तार करना 3. भीड़, समुच्चय, रेवड़, लहण्डा 4. बड़ी राशि, ढेर मा० १।३७।
विसर्गः [वि+सृज्+घञ्] 1. भेज देना, उद्गार 2. गिराना, उडेलना, बूंद-बूंद करके गिराना—रघु० १६।३८ 3. डालना, फेंकना 4. प्रदान करना, भेंट, दान—आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव—रघु० ४।८६, (यहाँ शब्द का अर्थ 'उडेलना' भी है) 5. भेज देना, विसर्जन 6. परित्याग, छोड़ देना 7. उत्सर्जन, मलत्याग जैसा कि 'पुरीष विसर्ग' में 8. जुदाई, वियोग 9. मोक्ष 10. प्रकाश, ज्योति 11. लिखने में एक प्रतीक, जो स्पष्ट रूप से महाप्राण है तथा दो बिन्दु (:) लगा कर प्रकट किया जाता है 12. सूर्य का दक्षिणायन 13. लिङ्ग, शिश्न।
विसर्जनम् [वि+सृज्+ल्युट्] 1. उद्गार, प्रेषण, उडेलना—समतया वसुवृष्टिविसर्जनैः—रघु० ९।६ 2. प्रदान करना, भेंट, दान—रघु० ९।६ 3. मलत्याग, मनु० ४।४८ 4. डाल देना, त्याग देना, परित्याग करना—रघु० ८।२५ 5. भेज देना, बिदा करना, 6. (देवता को) विदा करना (विप० आवाहन) 7. किसी विशेष अवसर पर सांड को छोड़ देना।
विसर्जनीय (वि०) [वि+सृज्+अनीयर्] परित्यक्त किये जाने के योग्य,—यः=विसर्ग (:) दे०।
विसर्जित (भू० क० कृ०) [वि+सृज्+णिच्+क्त] 1. उद्गीर्ण, उगला गया 2. प्रदत्त 3. छोड़ा गया, त्याग दिया गया, परित्यक्त 4. भेजा गया, प्रेषित 5. बिदा किया गया, तितर-बितर किया गया।
विसर्पः [वि+सृप्+घञ्] 1. रेंगना, सरकना 2. इधर से उधर आना और जाना 3. फैलाव, संचार—उत्तर० १।३५ 4. किसी कर्म का अप्रत्याशित या अनपेक्षित फल 5. एक प्रकार का रोग, सूखी खुजली। सम० —घ्नम् मोम।
विसर्पणम् [वि+सृप्+ल्युट्] 1. रेंगना, सरकना, शनैः शनैः चलना 2. प्रसारण, फैलाव, विस्तारण।
विसर्पिः, विसर्पिका दे० ऊ० विसर्प (5)।
विसल दे० 'विसल'।
विसारः [वि+सृ+घञ्] 1. फैलाना, बिखराना, प्रसारण 2. रेंगना, सरकना 3. मछली,—रम् 1. लकड़ी 2. शहतीर।
विसारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [वि+सृ+णिनि] 1. फैलाने वाला, प्रसार करने वाला 2. रेंगने वाला, सरकने वाला, पुं० मछली।
विसिनी दे० 'बिसिनी'।
विसिल दे० 'बिसिल'।
विसूचिका [वि+सूच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] हैजा।
विसूरणम्,—णा [वि+सूर्+ल्युट्] दुःख, शोक।
विसूरितम् [वि+सूर्+क्त] पश्चाताप, दुःख,—ता बुखार, ज्वर।
विसृत (भू० क० कृ०) [वि+सृ+क्त] 1. फैलाया हुआ, विस्तृत किया हुआ, प्रसारित किया हुआ 2. विस्तारित, ताना हुआ 3. कहा हुआ।
विसृत्वर (वि०) (स्त्री०—री) [वि+सृ+क्वरप्, तुक्] 1. इधर उधर फैलने वाला, व्याप्त होने वाला—विसृत्वरैरंबुरुहां रजोभिः—शि० ३।११ 2. रेंगना, सरकना।
विसृमर (वि०) [वि+सृ+क्मरच्] 1. रेंगने वाला, सरकने वाला, शनैः शनैः चलने वाला—विसृमरहेषित-हयः—वेणी० ४।
विसृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+सृज्+क्त] 1. उद्गीर्ण, उगला हुआ 2. उत्पन्न, निःसृत 3. ढलकाया हुआ, टपकाया हुआ 4. भेजा हुआ, प्रेषित—रघु० ५।२९ 5. विदा किया गया, जाने दिया गया, कार्यभार से मुक्त किया गया—रघु० २।९ 6. निकाल बाहर किया गया, फेंका गया 7. दिया गया, प्रदत्त, स्वीकृत-ग्रामेष्वात्मविसृष्टेषु—रघु० १।४४ 8. परित्यक्त, उन्मुक्त, हटाया गया (दे० वि पूर्वक सृज्)।
विस्त दे० 'बिस्त'।
विस्तरः [वि+स्तृ+अप्] 1. विस्तार, फैलाव 2. सूक्ष्म विवरण, ब्योरेवार वर्णन, सूक्ष्म ब्यौरे—संक्षिप्तस्याप्यतोऽस्यैव वाक्यस्यार्थगरीयसः, सुविस्तरतरा वाचो भाष्यभूता भवंतु मे शि० २।२४ (**विस्तरेण विस्तरतः**, **विस्तरशः** ब्योरेवार, विस्तारपूर्वक, पूरी तरह से, सूक्ष्म विवरण सहित, पूरी विशेषताओं के साथ,—अंगुलिमुद्राधिगमं विस्तरेण श्रोतुमिच्छामि—मुद्रा० १, भग० १०।१८) 3. सुविस्तरता, प्रसार—अलं विस्तरेण 4. बहुतायत, परिमाण, समुच्चय, संख्या 5. बिस्तरा, तह, स्तर 6. आसन, तिपाई।
विस्तारः [वि+स्तृ+घञ्] 1. फैलाव, विस्तृति, प्रसारण—प्रांतविस्तारभाजाम्—मा० १।२७ 2. आयाम, चौड़ाई—विलोकयंत्यो वपुरापुरक्ष्णां प्रकामविस्तारफलं हरिण्यः रघु० २।११, भग० १३।३० 3. फैलाव, विपुलता, विशालता—मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तार-पाडुः मेघ० १८ 4. विवरण, पूरा ब्योरा कर्मांशि

तावच्छुतविस्तारः क्रियताम्—श०७ 5. वृत्त का व्यास 6. झाड़ी 7. नूतन पल्लवों से युक्त पेड़ की शाखा ।

विस्तीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+स्तृ+क्त] 1. बिछाया गया, फैलाया गया, विस्तार किया गया 2. चौड़ा, विस्तृत 3. विशाल, बड़ा, विस्तारयुक्त । सम० —पर्णम् एक प्रकार की जड़, मानक ।

विस्तृत (भू० क० कृ०) [वि+स्तृ+क्त] 1. प्रसारित, फैलाया गया, विस्तारयुक्त 2. चौड़ा, फैला हुआ 3. विपुल 4. सुविस्तर, लंबा-चौड़ा ।

विस्तृतिः (स्त्री०) [वि+स्तृ+क्तिन्] 1. विस्तार, फैलाव 2. चौड़ाई, फ़ासला, विशालता 3. वृत्त का व्यास ।

विस्पष्ट (वि०) [विशेषेण स्पष्टः—प्रा० स०] 1. सीधा, साफ़, सुबोध 2. प्रकट, स्फुट, सुव्यक्त, खुला, प्रत्यक्ष ।

विस्फारः [वि+स्फुर्+घञ्, उकारस्य आकारः] 1. थरथराहट, कम्पन, धड़कन 2. धनुष की टंकार ।

विस्फारित (भू० क० कृ०) [विस्फार+इतच्] 1. थरथरी पैदा की गई 2. कम्पमान, थरथराता हुआ 3. टंकारयुक्त 4. विस्तृत किया हुआ, फैलाया हुआ 5. प्रकटित, प्रदर्शित ।

विस्फुरितः (भू० क० कृ०) [वि+स्फुर्+क्त] 1. थरथराने वाला, कांपने वाला 2. सूजा हुआ, विस्तारित ।

विस्फुलिंगः [वि+स्फुर्+ड=विस्फु तादृशं लिंगमस्ति यस्य] 1. आग की चिनगारी अग्नेर्ज्वलतो विस्फुलिंगा विप्रतिष्ठेरन्—शारी० 2. एक प्रकार का विष ।

विस्फूर्जथुः [वि+स्फूर्ज्+अथुच्] 1. दहाड़ना, गरजना, कड़कना 2. बादल की गरज, बिजली की कड़क 3. बिजली जैसी कड़क, अकस्मात् आभास या आघात—मर्मेव जन्मांतरपातकानां विपाकविस्फूर्जथुरप्रसह्यः—रघु० १४।६२ 4. (लहरों का) आन्दोलित होना, लहरों का उठना—महोर्मिविस्फूर्जथुनिर्विशेषाः—रघु० १३।१२ ।

विस्फूर्जितम् [वि+स्फूर्ज्+क्त] 1. दहाड़, चीत्कार 2. लुढ़कना 3. फल, परिणाम भर्तृ० २।१२५, ३।१४८ ।

विस्फोटः,—टा [वि+स्फुट्+घञ्] 1. फोड़ा, अर्बुद, रसौली 2. शीतला, चेचक ।

विस्मयः [वि+स्मि+अच्] 1. आश्चर्य, ताज्जुब, अचम्भा, अचरज—पुरुषः प्रबभूवाग्नेर्विस्मयेन सहर्त्विजाम्—रघु० १०।५१ 2. आश्चर्य या अचम्भे की भावना, जिससे अद्भुत रस की निष्पत्ति होती है, सा० द० २०७ पर इसकी परिभाषा दी गई है: विविधेषु पदार्थेषु लोकसीमातिवर्तिषु, विस्फारश्चेतसो यस्तु स विस्मय उदाहृतः 3. घमंड, अभिमान,—तपः क्षरति विस्मयात्—मनु० ४।२३७ 4. अनिश्चय, सन्देह । सम० —आकुल, —आविष्ट (वि) आश्चर्ययुक्त, अचरज से भरा हुआ ।

विस्मयंगम (वि०) [विस्मयं गच्छति—विस्मय+गम्+खश्, मुम्] अचरज से भरा हुआ, आश्चर्यजनक ।

विस्मरणम् [वि+स्मृ+ल्युट्] भूल जाना, विस्मृति, स्मृति का न रहना, बिसर जाना—श० ५।२३ ।

विस्मापन (वि०) (स्त्री०—नी) [वि+स्मि+णिच्+ल्युट्, पुकागमः, आत्वम्] आश्चर्यजनक,—नः 1. कामदेव 2. चाल, धोखा, भ्रम,—नम् 1. आश्चर्य पैदा करना 2. कोई भी आश्चर्यजनक वस्तु 3. गंधर्वों का नगर (पुं० भी कहा जाता है) ।

विस्मित (भू० क० कृ०) [वि+स्मि+क्त] 1. आश्चर्यान्वित, चकित, भौचक्का, हक्काबक्का 2. उलटपुलट किया गया 3. घमंडी ।

विस्मृत (भू० क० कृ०) [वि+स्मृ+क्त] भूला हुआ ।

विस्मृतिः (स्त्री०) [वि+स्मृ+क्तिन्] भूल जाना, बिसार देना, अस्मरण ।

विस्मेर (वि०) [वि+स्मि+रन्] भौचक्का, आश्चर्यान्वित, चकित ।

विस्रम् [विस्+रक्] कच्चे मांस की गंध के समान गंध । सम०—गंधिः हरताल ।

विस्रंसः,—सा [वि+स्रंस्+घञ्] 1. नीचे गिरना 2. क्षय, शैथिल्य, कमज़ोरी, निर्बलता ।

विस्रंसन (वि०) [वि+स्रंस्+ल्युट्] 1. पतनशील या बिन्दुपाती—अन्तर्मोहनमौलिघूर्णनचलन्मन्दारविस्रंसनः—गीत० ३ 2. खोलने वाला, ढीला करने वाला नीवीविस्रंसनः करः—काव्य० ७. —नम् 1. अधःपतन 2. बहना, टपकना 3. खोलना, ढीला करना 4. रेचक, दस्तावर ।

विस्रब्ध, विस्रंभ दे० विश्रब्ध, विश्रम्भ ।

विस्रसा [वि+स्रंस्+क+टाप्] क्षय, निर्बलता, जर्जरता ।

विस्रस्त (भू० क० कृ०) [वि+स्रंस्+क्त] 1. ढीला किया हुआ 2. दुर्बल, बलहीन ।

विस्रवः, विस्रावः [वि+स्रु+अप्, घञ् वा] बहना, बूँद बूँद टपकना, चूना, रिसना ।

विस्रावणम् [वि+स्रु+णिच्+ल्युट्] रक्त बहना ।

विस्रुतिः (स्त्री०) [वि+स्रु+क्तिन्] बह जाना, चूना, रिसना ।

विस्वर (वि०) [विरुद्धः विगतो वा स्वरो यस्य—प्रा० ब०] बेसुरा ।

विहगः [विहायसा गच्छति गम्+ड, नि०] 1. पक्षी —मेघ० २८, ऋतु० १।२३ 2. बादल 3. बाण 4. सूर्य 5. चांद 6. नक्षत्र ।

विहंगः [विहायसा गच्छति गम्+खच्, मुम्] 1. पक्षी रघु० ११५१, मनु० ९१५५ 2. बादल 3. बाण 4. सूर्य 5. चन्द्रमा । सम० - **इन्द्रः,—ईश्वरः,—राजः** गरुड़ के विशेषण ।

विहंगमः [विहायसा गच्छति—गम्+खच्, मुम्, विहादेशः] पक्षी - (गृह दीर्घिकाः) मदकलोलकलोलविहंगमाः—रघु० ९।३७, मनु० १।३९, हि० १।३७।

विहंगमा, विहंगिका [विहंगम+टाप्, विहंग+कन्+टाप्, इत्वम्] विहंगी, वह बांस जिसके दोनों सिरों पर बोझ बांध कर लटका दिया जाता है ।

विहत (भू० क० कृ०) [वि+हन्+क्त] 1. पूरी तरह आहत, वध किया गया 2. चोट पहुंचाई गई 3. अवरुद्ध, विरोध किया गया, मुकाबला किया गया ।

विहतिः [वि+हन्+क्तिच्] मित्र, साथी, —(स्त्री०) 1. हत्या करना, प्रहार करना 2. असफलता 3. पराजय, हार ।

विहननम् [वि+हन्+ल्युट्] 1. हत्या करना, प्रहार करना 2. चोट, क्षति 3. अवरोध, रुकावट, अड़चन 4. रुई धुनने की धुनकी ।

विहरः [वि+हृ+अप्] 1. अपहरण करना, हटना 2. वियोग, बिछोह ।

विहरणम् [वि+हृ+ल्युट्] 1. दूर करना, अपहरण करना 2. सैर करना, हवाखोरी, इधर उधर टहलना 3.आमोद-प्रमोद, मनोरञ्जन ।

विहर्तृ (पुं) [वि+हृ+तृच्] 1. भ्रमणशील 2. लुटेरा ।

विहर्षः [विशिष्टो हर्षः प्रा० स०] बहुत अधिक प्रसन्नता, उल्लास ।

विहसनम् विहसितम् विहासः [वि+हस्+ल्युट्, क्त घञ्, वा] मन्द हंसी, मुस्कान ।

विहस्त (वि०) [विगतः हस्तो यस्य प्रा० ब०] 1. हस्तरहित 2. घबराया हुआ, व्याकुल, पराभूत, शक्तिहीन किया हुआ,—मा० १, रघु० ५।५९ 3. अशक्त (उपयुक्त कार्य करने के लिए) अक्षम, रुजा विहस्तचरणम् मालवि० ४ 4. विद्वान्, बुद्धिमान् ।

विहा (अव्य०) [वि+हा+आ, नि०] स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

विहापित (भू० क० कृ०) [वि+हा+णिच्+क्त, पुकागमः] 1. परित्यक्त कराया गया 2 तोड़ मरोड़ कर निकाला गया, छुड़ाया गया, तम् भेंट, दान ।

विहायस् (पुं० नपुं०) [वि+हय्+असुन्, नि० वृद्धि], आकाश, अन्तरिक्ष कि० १६।४३, (पुं) पक्षी नैं० ३।९९ ।

विहायस दे० 'विहायस्' ।

विहारः [वि+हृ+घञ्] 1. हटाना, दूर करना 2. सैर सपाटा, हवाखोरी, भ्रमण, सैर करना 3. क्रीडा, खेल, मनोबिनोद, मनोरञ्जन, आमोद-प्रमोद, विलास विहारशैलानुगतेव नागैः रघु० १६।२६, ७६, ५।४१, ९।६८, १३।३८, १९।३७ 4. पग रखना, कदम बढ़ाना,—दरमन्थरचरणविहारम्—गीत० ११, कि० ४।१५ 5. वाटिका, उद्यान, विशेषतः प्रमोदवन 6. कन्धा 7. जैनमन्दिर या बौद्धमन्दिर, मठ, आश्रम या संघाराम 8. मन्दिर 9. वागिन्द्रिय का बृहद् विस्तार। सम०—**गृहम्** प्रमोदभवन, वासी संन्यासिनी, भिक्षुणी ।

विहारिका [विहार+ कन्+टाप्, इत्वम्] बौद्धमठ ।

विहारिन् (वि०) [विहार+इनि] मनोविनोदी या दिलबहलावा करने वाला मृगयाविहारिणः—श० १ ।

विहित (भू० क० कृ०) [वि+धा+क्त] 1. किया हुआ, अनुष्ठित, कृत, बनाया हुआ 2. क्रमबद्ध किया हुआ, स्थिर किया हुआ, सुव्यवस्थित, नियोजित, निर्धारित 3. आदिष्ट, विधान किया हुआ, समादिष्ट 4. निर्मित, संरचित 5. रक्खा हुआ, जमा किया हुआ, 6. सुसज्जित, सम्पन्न 7.किये जाने के योग्य 8. वितरित, बांटा गया (दे० वि पूर्वक धा),—**तम्** आदेश, आज्ञा ।

विहितिः (स्त्री०) [वि+धा+क्तिन्] 1. अनुष्ठान, क्रिया, कर्म 2. व्यवस्था ।

विहीन (भू० क० कृ०) [वि+हा+क्त] 1. छोड़ा गया, परित्यक्त, त्यागा गया 2. शून्य, रहित, वञ्चित (प्रायः समास में) विद्याविहीनः पशुः - भर्तृ० २।२० 3. अधम, नीच, कमीना । सम०—**जाति योनि** (वि०) नीच घर में उत्पन्न, नीच कुल में पैदा हुआ ।

विहृत (भू० क० कृ०) [वि+हृ+क्त] 1. क्रीडा की, खेला हुआ 2. फुलाया हुआ, तम् स्त्रियों द्वारा प्रेम प्रदर्शित करने की दस रीतियों में से एक दे० सा० द० १२५, १४६, (इस अर्थ में 'विकृत' भी लिखा जाता है) ।

विहृतिः (स्त्री०) [वि+हृ+क्तिन्] 1. हटाना, दूर करना 2. क्रीडा, मनो विनोद, विहार 3. प्रसार ,

विहेठकः [वि+हेठ्+ण्वुल्] क्षति पहुँचाने वाला ।

विहेठनम् [वि+हेठ्+ल्युट्] 1. क्षति पहुँचाना, घायल करना 2. मसलना, पीसना 3. कष्ट देना 4. पीडा, दुःख, सताना

विह्वल (वि०) [वि+ह्वल्+अच्] 1. विक्षुब्ध, अशान्त, व्याकुल, घबराया हुआ रघु० ८।३७ 2. डरा हुआ, संत्रस्त 3. उन्मत्त, आपे से बाहर 4. कष्टग्रस्त, दुःखी—कु० ४।४ 5. विषादपूर्ण 6. गला हुआ, पिघला हुआ ।

वी (अदा० पर० वेति—शास्त्रीय साहित्य में विरल प्रयोग) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. पहुँचना 3. व्याप्त होना

4. लाना, पहुँचाना 5, फेंक देना, डालना 6. खाना, उपभोग करना 7. प्राप्त करना 8. गर्भधारण करना, उत्पन्न करना 9. पैदा होना, जन्म लेना 10. चमकना, सुन्दर होना।

वीकः [अज्+कन्, वी आदेशः] 1. वायु 2. पक्षी, 3. मन।

वीकाश दे 'विकाश'।

वीक्षम् [वि+ईक्ष्+अच्] 1. दृश्य पदार्थ 2. अचम्भा, आश्चर्य, —क्षः,—क्षा, देखना, ताकना।

वीक्षणम्,—णा [वि+ईक्ष्+ल्युट्] देखना, निहारना, दृष्टि डालना।

वीक्षितम् [वि+ईक्ष्+क्त] दृष्टि, झलक।

वीक्ष्य (वि०) [वि+ईक्ष्+ण्यत्] 1. देखे जाने के योग्य 2. दृश्य, दृष्टिगोचर,—क्ष्यः 1. नर्तक, नट, अभिनेता, पात्र 2. घोड़ा, —क्ष्यम् 1. देखे जाने के योग्य कोई भी वस्तु, दृश्यमान पदार्थ 2. आश्चर्य, अचंभा।

वीङ्खा [वि+इङ्ख्+अ+टाप्] 1. जाना, हिलना-जुलना, प्रगति 2. घोड़े का कदम 3. नाच 4. संगम, मिलन।

वीचिः (पुं०, स्त्री०) **वीची** [वे+ईचि, डिच्च, वीचि —ङीप्] 1. लहर—समुद्रवीचीव चलस्वभावाः—पंच० १।१९४, रघु० ६।५६, १२।१००, मेघ० २८ 2. असंगति, विचारशून्यता 3. आनन्द, प्रसन्नता 4. विश्राम, अवकाश 5. प्रकाश की किरण 6. स्वल्पता। सम० —मालिन् (पुं०) समुद्र।

वीची दे० 'वीचि'।

वीज् i (भ्वा० आ० वीजते) जाना।
ii (चुरा० उभ० वीजयति ते) पंखा करना, पंखा करके ठंडा करना —खं वीज्यते मणिमयैरिव तालवृन्तैः —मृच्छ० ५।१३, कु० २।४२, अभि—, उप—, परि —, पंखा करना —ऋतु० ३।४, श० ३।

वीज वीजक, वीजल, वीजिक वीजिन्, वीज्य दे० बीज, बीजक, बीजल, बीजिक, बीजिन् और बीज्य।

वीजनः [वीज्+ल्युट्] 1. चक्रवाक 2. एक प्रकार का चकोर, —नम् 1. पंखा करना —कु० ४।३६ 2. पंखा।

वीटा [वि+इट्+क+टाप्] 1. लकड़ी का एक छोटा टुकड़ा, गुल्ली (लगभग एक बालिश्त) जिसको लड़के डंडा मार कर खेलते हैं, गुल्ली डंडा।

वीटिः, वीटिका, वीटी [वि—इट्+इन्, स च कित्, वीटि +कन्+टाप्, वीटि+ङीष् वा] 1. पान की बेल, 2. पान लगाना 3. बंधन, गाँठ, ग्रंथि (पहने जाने वाले वस्त्र की) 4. चोली की तनी अमरु २३।

वीणा [वेति वृद्धिमात्रमपगच्छति—वी+न, नि० णत्वम्] 1. सारंगी, वीणा मूकीभूतायां वीणायाम् —का०, मेघ० ८६ 2. बिजली। सम० —आस्यः नारद का विशेषण,—दण्डः वीणा की गर्दन—भामि० १।८०,—वादः, —वादकः वीणा बजाने वाला।

वीत (भू० क० कृ०) [वि+इ+क्त] 1. गया हुआ, अंतर्हित 2. जो चला गया, विदा हो गया 3. जिसको जाने दिया गया, ढीला, उन्मुक्त 4. अलगाया हुआ, विमुक्त किया हुआ 5. अनुमोदित, पसंद किया गया 6. युद्ध के अयोग्य 7. पालतू, शान्त 8. मुक्त, शून्य (बहुधा समास में) वीतचित, वीतस्पृह, वीतभी, वीतशंक आदि,—तः हाथी या घोड़ा जो युद्ध के अयोग्य हो या सधाया न गया हो, —तम् (हाथी को) अंकुश से गोदना तथा पैरों से प्रहार करना,—वीतवीतभया नागाः कु० ६।३९ (पाठांतर—दे० इस पर मल्लि०) शि० ५।४७। सम० —दम्भ (वि०) विनम्र, विनीत, —भय (वि०) निर्भय, निडर (यः) विष्णु का विशेषण, —मल (वि०) पवित्र, निर्मल, —राग (वि०) 1. इच्छारहित कु० ६।४३ 2. निरावेश, सौम्य, शान्त 3. विवर्ण, बिना रंग का, (गः) एक ऋषि जिसने अपने रागों का दमन कर लिया था,—शोकः (=अशोकः) अशोक वृक्ष।

वीतंसः [विशेषेण बहिरेव तस्यते भूष्यते —वि+तंस्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. पींजरा या जाल जिसमें पक्षी या अन्य वन्य पशु फंसाये जाते हैं 2. चिड़ियाघर, शिकार के पशुओं को पालने का स्थान।

वीतनौ (पुं०, द्वि० व०) [विशिष्टं तनोति—वि+तन् +अच्, पृषो० दीर्घः] गले के अगल बगल के पार्श्व।

वीतिः [वी+क्तिन्] घोड़ा,—तिः (स्त्री०) 1. गति, चाल 2. पैदावार, उपज 3. सुखोपभोग 4. भोजन करना 5. प्रकाश, कान्ति। सम०—होत्रः 1. अग्नि 2. सूर्य।

वीथिः, —थी (स्त्री०) [विथ+इन्, ङीप् वा, पृषो०] 1. सड़क, मार्ग, —कि० ७।१७ 2. पंक्ति, कतार 3. हाट, आपणिका, मंडी में दुकान शि० ९।३२ 4. नाटक का एक भेद। इसकी परिभाषा सा० द० निम्नांकित है वीथ्यामेको भवेदङ्कः कश्चिदेकोऽत्र कल्प्यते, आकाशभाषितैरुक्तैश्चित्रां प्रत्युक्तिमाश्रितः। सूचयेद्भूरि शृङ्गारं किञ्चिदन्यान्रसानपि। मुखनिर्वहणे सन्धी अर्थप्रकृतयोऽखिलाः, ५२०।

वीथिका [वीथि+कन्+टाप्] 1. सड़क आदि 2. चित्रशाला, चित्रसारी (जिस पर चित्र चित्रित किये जाते हैं) चित्रागार, चित्रावली—आर्यस्य चरित्रमस्यां वीथिकायामालिखितम्—उत्तर० १।

वीध्र (वि०) [विशेषेण इन्धते —वि+इन्ध्+रक्, उपसर्गस्य दीर्घः] निर्मल, स्वच्छ, —ध्रम् 1. आकाश 2. वायु, हवा 3. अग्नि।

वीनाहः [वि+नह्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] कुएँ का ढक्कन या मणि ।
वीपा (स्त्री०) विद्युत्, बिजली ।
वीप्सा [वि+आप्+सन्+अ+टाप्, ईत्वम्] 1. परिव्याप्ति 2. (निरंतर प्रकट करने के लिए) शब्द द्विरुक्ति—यथा वृक्षं वृक्षं सिंचति इति वीप्सायां द्विरुक्तिः 3. सामान्य पुनरुक्ति ।
वीभ् (भ्वा० आ० वीभते) शेखी मारना, डींग मारना ।
वीर (वि) [अजेः रक् वीभावश्च] 1. शूर, वीर 2. ताकतवर, शक्तिशाली, **रः** 1. शूरवीर, योद्धा, प्रजेता —कोऽप्येष संप्रति नवः पुरुषावतारो वीरो न यस्य भगवान् भृगुनन्दनोऽपि उत्तर० ५।३४ 2. (आलं० में) वीरभावना, वीररस, इसके चार भेद (दानवीर, धर्मवीर, दयावीर और युद्धवीर) किये गये हैं, स्पष्टीकरण के लिए दे० इन शब्दों को 3. अभिनेता 4. आग 5. यज्ञ की अग्नि 6. पुत्र 7. पति 8. अर्जुन वृक्ष 9. विष्णु का नाम, **रम्** 1. नरकुल 2. मिर्च 3. चावल का माड़ 4. उशीर का जड़, खस । सम० —**आशंसनम्** 1. निगरानी रखना 2. युद्ध में जोखिम से भरा पद 3. छोड़ी हुई आशा, —**आसनम्** 1. योगाभ्यास करते समय एक विशेष मुद्रा, परिभाषा के लिए दे० पर्यंक (३) 2. एक घुटना मोड़ कर बैठना 4. संतरी की चौकी, **ईशः,—ईश्वरः** 1. शिव के विशेषण 2. महान् वीर, **उज्झः** वह ब्राह्मण जो यज्ञाग्नि में आहुति नहीं डालता, अग्निहोत्र न करने वाला ब्राह्मण,—**कीटः** तुच्छ सैनिक, **जयन्तिका** 1. रणनृत्य 2. संग्राम, युद्ध, **तरुः** अर्जुनवृक्ष, —**धन्वन्** (पुं०) कामदेव,—**पानम्**(**णम्**) एक उत्तेजक या श्रमापहारक तेज जो सैनिक लोग युद्ध के आरम्भ या अवसान पर पीते हैं, —**भद्रः** 1. एक शक्तिशाली शूरवीर जिसे शिव ने अपनी जटाओं से निकाला था दे० 'दक्ष' 2. माना हुआ योद्धा 3. अश्वमेध यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा 4. एक प्रकार का सुगन्धित घास,—**मुद्रिका** पैर की मध्यमा अंगुली में पहना जाने वाला छल्ला, **रजस्** (नपुं०) सिन्दूर, **रस** 1. वीरता का भाव 2. सामरिक भावना,—**रेणुः** भीमसेन का नाम, **विप्लावकः** शूद्र से धन लेकर हवन करने वाला,—**वृक्षः** 1. अर्जुन वृक्ष 2. भिलावें का वृक्ष,—**सूः** (स्त्री०) शूरवीर पुरुष की माता (इसी प्रकार **वीरप्रसवा, प्रसूः,—प्रसविनी**), —**सैन्यम्** लहसुन,—**स्कन्धः** भैंसा,—**हन्** (पुं०) 1. वह ब्राह्मण जिसने दैनिक अग्निहोत्र करना छोड़ दिया है 2. विष्णु ।
वीरणम् [वि+ईर्+ल्युट्] एक सुगन्धित घास, उशीर (जिसकी जड़ें—खस—शीतलता प्रदान करने के लिए प्रयुक्त होती हों) ।
वीरणी [वीरण+ङीष्] 1. तिरछी चितवन, कटाक्ष 2. गहरा स्थान ।
वीरतरः [वीर+तरप्] 1. महान् वीर 2. बाण,—**रम्** एक प्रकार का सुगन्धित घास, उशीर ।
वीरन्धरः [वीर+धृ+खच्, मुम्] 1. मोर 2. वन्य पशुओं के साथ लड़ाई 3. चमड़े की जाकेट ।
वीरवत् (वि०) [वीर+मतुप्] शूरवीरों से भरा हुआ, —**ती** वह स्त्री जिसका पति और पुत्र जीवित हों ।
वीरा [वीर+टाप्] 1. शूरवीर पुरुष की स्त्री 2. पत्नी 3. माता, गृहिणी 4. मुरा नामक एक गन्धद्रव्य, 5. शराब 6. अगर की लकड़ी 7. केले का पेड़ ।
वीरिणम् दे० 'ईरिण' ।
वीरुध्,—धा (स्त्री०) [विशेषेण रुणद्धि अन्यान् वृक्षान् —वि+रुध्+क्विप् पक्षे टाप्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. लहलहाने वाली लता लता प्रतानिनी वीरुत् —भट्टि०, आहोस्वित्प्रसवो ममापचरितैर्विष्टंभितो वीरुधाम् श० ५।९, कु० ४।३४, रघु० ८।३६ 2. शाखा, अङ्कुर 3. काटने पर ही बढ़ने वाला पौधा 4. बेल, लता, झाड़ी—कि० ४।१९ ।
वीर्यम् [वीर्+यत्] 1. शूरवीरता, पराक्रम, बहादुरी —वीर्यावदानेषु कृतावमर्षः—कि० ३।४३, रघु० २।४, ३।६२, ११।७८, वेणी० ३।३ 2. बल, सामर्थ्य 3. पुंस्त्व 4. ऊर्जा, दृढ़ता, साहस 5. शक्ति, क्षमता श० ३।२ 6. (औषधियों की) अचूकता, अतिवीर्यवतीव भेषजे बहुरल्पीयसि दृश्यते गुणः कि० २।२४, कु० २।४८ 7. शुक्र, वीर्य —कु० ३।१५, पंच० ४।५० 8. आभा, कान्ति 9. गौरव, महिमा । सम० **जः** पुत्र,—**प्रपातः** वीर्य का क्षरण या स्खलन ।
वीर्यवत् (वि०) [वीर्य+मतुप्] 1. मजबूत, हृष्टपुष्ट, बलवान् 2. अचूक, अमोघ ।
वीवधः [वि+वध्+घञ्, वृद्धयभावो दीर्घश्च] 1. बोझा ढोने के लिए जूआ, बहंगी 2. बोझा 3. अनाज का भंडार भरना 4. मार्ग, सड़क ।
वीवधिकः [वीवध+ठन्] बहंगी ढोने वाला ।
वीहारः [वि+हृ+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. जैन विहार या बौद्धमठ 2. देवालय ।
वुङ्ग् (भ्वा० पर० वुङ्गति) छोड़ना, परित्याग करना ।
वुण्ट् (चुरा० उभ० वुण्टयति-ते) 1. चोट पहुँचाना वध करना 2. नष्ट करना ।
वुवूर्षु (वि०) [वृ+सन्+उ) पसन्द करने का इच्छुक ।
वुस् दे० 'बुस्' ।
वूर्ण (वि०) [वृ+क्त] छांटा हुआ, चुना हुआ ।
वृ i (भ्वा०, स्वा०, क्र्या० उभ० वरति-ते, वृणोति-वृणुते, वृणाति-वृणीते, वृत, कर्मवा० व्रियते) 1.छांटना, चुनना, पसन्द करना—वृतं तेनेदमेव प्राक्—कु० २।५६, वबार

रामस्य वनप्रयाणम्—भट्टि० ३।६ 2. अपने लिए चुनना (आ०) वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः—कि० २।३०, रघु० ३।६ 3. विवाह के लिए वरण करना, प्रणय-प्रार्थना करना, प्रणययाचना करना —महावी० १।२८, अनर्घ० ३।४२ 4. प्रार्थना करना, निवेदन करना, याचना करना 5. ढकना, छिपाना गुप्त रखना, परदा डालना, लपेटना—मेघैर्वृतश्चन्द्रमाः —मृच्छ० ५।१४ 6. घेरना, लपेटना भट्टि० ५।१०, रघु० १२।६१ 7. परे हटना, दूर करना, नियंत्रण करना, रोकना 8. विघ्न डालना, विरोध करना, अड़चन डालना, प्रेर०—(वारयति-ते) 1. ढकना, छिपाना 2. (किसी वस्तु से) आँख फेर लेना (अपा० के साथ) 3. रोकना, हटाना, नियंत्रण करना, दबाना, जांच पड़ताल करना, विघ्न डालना—शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक्—भर्तृ० २।११, इच्छा० वुवूर्षति-ते, विविरिषति—ते, विवरिषति—ते, चुनने की इच्छा करना, अप -, खोलना (प्रेर०) ढकना, छिपाना अपा—, खोलना आ—, 1. ढकना, छिपाना, गुप्त रखना आवृणोदात्मनो रन्ध्रं रन्ध्रेषु प्रहरन् रिपून् - रघु० १७।६१, भट्टि० ९।२४ 2. पूरना, व्याप्त होना --भग० १३।१३, मनु० २।१४४ 3. चुनना, इच्छा करना 4. निवेदन करना, प्रार्थना करना 5. घेरना, नाके बंदी करना, रोकना —रघु० ७।३१ 6. दूर रखना -भट्टि० १४।१०९, नि—, घेरा डालना, घेरना भट्टि० १४।१९, (प्रेर०)--परे हटना दूर करना, आँखें फेरना (अपा० के साथ) --पापान्निवारयति योजयते हिताय —भर्तृ० २।७२, निस् , (बहुधा क्तांत रूप) प्रसन्न होना, संतुष्ट या संतृप्त होना निर्ववार मधुनींद्रियवर्गः—शि० १०।३, दे० निर्वृत, परि—, घेरना, प्र—, 1. ढाकना, लपेटना प्रावारिपुरिव क्षोणीं क्षिप्ता वृक्षाः समन्ततः भट्टि० ९।२५ 2. पहनना, धारण करना 3. चुनना, छाटना, प्रा—, पहनना, धारण करना, वि—, 1. ढक देना, ठहरना 2. खोलना—कु० ४।२६ 3. तह खोलना, भंडाफोड़ करना, भेद खोलना, प्रकट करना, प्रदर्शन करना नै० ९।१, कु० ३।१५, रघु० ६।८५, भट्टि० ७।७३ 4. सिखाना, व्याख्या करना, स्पष्ट करना—महावी० २।४३ 5. फैलाना, भामि० १।५ 6. चुनना विनि—, (प्रेर०) रोकना, दूर हटाना, दबाना विनयं विनिवार्य मा० १।१८, सम्—, 1. छिपाना, ढकना, प्रच्छन्न करना—मुहुरङ्गुलिसंवृताधरोष्ठम्—श० ३।१५, २।१०, रघु० १।२०, ७।३० 2. दबाना, नियंत्रित करना, विरोध करना भट्टि० ९।२७ 3. बन्द करना।

ii (चुरा० उभ० वरयति—ते) 1. वरण करना, चुनना —वरं वरयते कन्या माता वित्तम् पिता श्रुतम्—पंच० ३।६७ 2. विवाह के लिए पसंद करना 3. याचन करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना।

वृंह्, वृंहित दे० 'बृंह्' बृंहित।

वृक् (भ्वा० आ० वर्कते) पकड़ना, लेना, ग्रहण करना।

वृकः [वृ+कक्+] 1. भेड़िया 2. लकड़बग्घा 3. गीदड़ 4. कौवा 5. उल्लू 6. लुटेरा 7. क्षत्रिय 8. तारपीन 9. गन्धद्रव्यों का मिश्रण 10 एक राक्षस का नाम 11 एक वृक्ष का नाम, बकवृक्ष 12. जठराग्नि। सम० —अरातिः, -अरिः कुत्ता,—उदरः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. द्वितीय पांडव राजकुमार भीम का विशेषण भग० १।१५, कि० २।१,—दंशः कुत्ता, -धूपः 1. तारपीन 2. मिश्रगंध,—धूर्तः गीदड़।

वृक्कः,—क्का 1. हृदय 2. गुर्दा (इस अर्थ में द्वि० व०)।

वृक्ण (भू० क० कृ०) [व्रश्च्+क्त] 1. कटा हुआ, बांटा हुआ 2. फाड़ा हुआ 3. तोड़ा हुआ।

वृक्त (भू० क० कृ०) [वृज्+क्त] स्वच्छ किया गया, साफ़ किया गया, निर्मल किया गया।

वृक्ष् (भ्वा० आ० वृक्षते) 1. स्वीकार करना, चुनना 2. ढकना।

वृक्षः [व्रश्च्+क्स] 1. पेड़—आत्मापराधवृक्षाणां फलान्येतानि देहिनाम्। सम०—अदनः 1. बढ़ई की चौरसी 2. कुल्हाड़ी 3. बड़ का पेड़ 4. पियाल वृक्ष,—अम्लः आमड़ा,—आलयः एक पक्षी,—आवासः 1. एक पक्षी 2. संन्यासी, -आश्रयिन् (पुं०) एक प्रकार का छोटा उल्लू, कुक्कुटः जंगली मुर्गा,—खंड निकुंज, वृक्षों का समूह,—चरः बन्दर,—छाया वृक्ष की छाया (यम्) सघन छाया, बहुत से वृक्षों की (गाढ़ी) छाया,—धूपः तारपीन, नाथः बड़ का पेड़,—निर्यासः गोंद, राल, -पाकः बड़ का पेड़,—भिद् (स्त्री०) कुल्हाड़ी, -मर्कटिका गिलहरी,—वाटिका, -वाटी उद्यान, उपवन, शः छिपकली,—शायिका गिलहरी।

वृक्षकः [वृक्ष+कन्] 1. छोटा पेड़ —कु० ५।१४ 2. पेड़।

वृच् (रुधा० पर० वृणक्ति) छांटना, चुनना।

वृज् i (अदा० आ० वृक्ते) टाल जाना, कतराना, परित्याग करना।

ii (रुधा० पर० वृणक्ति) 1. टाला जाना, कतराना, छोड़ देना, परित्याग करना 2. चुनना —आसामेकतमां वृंग्धि सवर्णां स्वर्गभूषणाम् - भाग० 3. प्रायश्चित करना, पोंछ डालना, निर्मल करना - तन्मे रेतः पिता वृंक्तामित्यस्यैतन्निदर्शनम्—मनु० ९।२० 4. मुड़ना, आँख फेरना।

iii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० वर्जति, वर्जयति—ते, वर्जित) 1. कतराना, टाल जाना 2. छोड़ना, परित्याग करता 3. निकाल देना, एक ओर रख देना 4. अलग रहना 5. टुकड़े टुकड़े कर देना (कविरहस्य से उद्धृत

निम्नांकित पद्य धातु के विभिन्न रूपों का चित्रण करता है वृणक्ति वृजिनैः संगं वृक्ते च वृषलैः सह, वर्जत्यनार्जवोपेतैः स वर्जयति दुर्जनैः, अप -1. नष्ट करना 2. समाप्त करना 3. छोड़ना, त्याग देना —रघु० १७।१९, कि० १।२९ 4. उडेलना, फेंकना —शि० १३।३७ आ —, 1. झुकना, मुड़ना, आवर्ज्य शाखाः सदयं च यासां—रघु० १६।१९, १३।१७, आवर्ज्य दृष्टीः— मेघ० ४६ 2. प्रस्तुत करना, देना रघु० १।६२, ६७, ८।२६, कु० ५।३४ 3. परास्त करना, जीतना, परि—, टाल जाना, कतराना, वि —1. कतराना, टाल जाना 2. विरहित करना, वञ्चित करना।

वृजनः [वृजेः क्युः] 1. बाल 2. घुंघराले बाल,—नम् 1. पाप 2. संकट 3. आकाश 4. घेर, बाड़ा, विशेषतः एक गोचरभूमि।

वृजिन [वृजेः इनज् कित् च] 1. कुटिल, झुका हुआ, वक्र 2. दुष्ट, पापी, नः 1. बाल, घुंघराले बाल 2. दुष्ट पुरुष—वृणक्ति वृजिनैः संगम्—कवि०,—नम् 1. पाप,—सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि—भग० ४।३६, रघु० १४।५७ 2. पीडा, दुःख (इस अर्थ में पुं० भी माना जाता है)।

वृण् (तना० उभ० वृणोति, वृणुते) खाना, उपभोग करना

वृत् i (दिवा० आ० वृत्यते) 1. चुनना, पसंद करना—तु० वावृत् 2. वितरण करना, बाँटना।

ii (चुरा० उभ० वर्तयति—ते) चमकना।

iii (भ्वा० आ० वर्तते, परन्तु लुङ्, लृट्, लुट् तथा लृङ् लकार में एवं सन्नंत में पर० भी, वृत्त) 1. होना, विद्यमान होना, डटे रहना, मौजूद होना, जीते रहना, टिके रहना -इदं मे मनसि वर्तते,—श० १, अत्र विषयेऽस्माकं महत्कुतूहलं वर्तते —पंच० १, मरालकुलनायकः कथय रे कथं वर्तताम्—भामि० १।३, केवल संयोजक के रूप में बहुधा प्रयुक्त, अतीत्य हरितो हरींश्च वर्तन्ते वाजिनः—श० १ 2. किसी विशेष दशा या परिस्थिति में होना—पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य—का०, इसी प्रकार दुःखे, हर्षे, विषादे—वर्तते 3. होना, घटित होना, आ पड़ना, सामने आना—सीता देव्याः किं वृत्तमित्यस्ति काचित्प्रवृत्तिः—उत्तर० २, सायं संप्रति वर्तते पथिक रे स्थानान्तरं गम्यताम् सुभा०, 'अब सायंकाल हो गया है · · · ' शृङ्गार० ६, भग० ५।२६ 4. चलते रहना, प्रगतिशील रहना—सर्वथा वर्तते यज्ञः—मनु० २।१५, निर्व्याजमिज्या ववृते—भट्टि० २।३७, रघु० १२।५६ 5. संधारित या संपोषित होना, जीवित रहना, जीते रहना (आलं० से भी) —फलमूलवारिभिर्वर्तमाना—का० १७२, मनु० ३।७७ 6. मुड़ना, लुढकते रहना, चक्कर खाना—यावदियं लोकयात्रा वर्तते—वेणी० ३ 7. अपने आप को कार्य में लगाना, काम में लगना, आरम्भ करना (अधि० के साथ) भगवान् काश्यपः शाश्वते ब्रह्मणि वर्तते —श० १, इतरो दहने स्वकर्मणां ववृते ज्ञानमयेन वह्निना - रघु० ८।२०, मनु० ८।३४६, भग० ३।२२ 8. कर्तव्य निभाना, व्यवहार करना, आचरण करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना (प्रायः अधि० के साथ या स्वतंत्र रूप से) – आर्योऽस्मिन् विनयेन वर्तताम् उत्तर० ६, कविर्निसर्गसौहृदेन भरतेषु वर्तमानः —मा० १, औदासीन्येन वर्तितुम्—रघु० १०।२५, मनु० ७।१०४, ८।१७३, ११।३० 9. कार्य करना, विशेष प्रकार का आचरण करना—साध्वीं वृत्तिं वर्तते—'वह सत्कार्य में प्रवृत्त होता है' 10. अर्थ रखना, अभिप्राय बतलाना, अर्थ में प्रयुक्त होना —पुष्यसमीपस्थे चन्द्रमसि पुष्यशब्दो वर्तते—पा० ४। २।३ पर महाभाष्य (प्रायः कोशों में इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है) 11. प्रवृत्त करना, प्रेरित करना —(संप्र० के साथ)—पुत्रेण किं फलं यो वै पितृदुःखाय वर्तते 12. सहारा लेना, आश्रित होना—प्रेर० (वर्तयति—ते 1. प्रवृत्त कराना 2. घुमाना, चक्कर दिलाना श० ७।६ 3. (अस्त्र-शस्त्र) घुमाना, पैंतरे बदलना, घुमा कर फेंकना—भट्टि० १५।३७ 4. कार्य करना, अभ्यास करना, प्रदर्शित करना—मा० ९। ३३ 5. संपन्न करना, निबटाना, ध्यान देना, नज़र डालना सोऽधिकारमभिकः कुलोचितं काश्चन स्वयमवर्तयत्समाः—रघु० १९।४, महावी० ३।२३ 6. बिताना, (समय आदि) गुज़ारना 7. जीवन निर्वाह करना जीते रहना - कि० २।१८, रघु० १२।२० 8. वर्णन करना, बयान करना—इच्छा० (विवृत्सति, विवर्तिषते), अति—, 1. परे जाना, आगे बढ़ जाना, मा० १।२६ 2. आगे निकल जाना, सर्वोत्कृष्ट होना कि० ३।४०, शि० १४।५९ 3. उल्लंघन करना, बाहर कदम रखना, अतिक्रमण करना—शि० ६।१९ 4. उपेक्षा करना, अवहेलना करना -मनु० ५।१६ 5. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, नाराज करना 6. पराजित करना, वशीभूत करना 7. (समय का) बिताना 8. विलंब करना, देरी करना—मनु० २।३८, अनु —, 1. अनुसरण करना, अनुरूप होना, अनुकूल कार्य करना प्रभुचित्तमेव हि जनोऽनुवर्तते—शि० १५।४१, मा० ३।२ 2. अनुरंजन करना, दूसरे की इच्छा के अनुसार अपने आपको बनाना, दूसरे के द्वारा पथप्रदर्शन प्राप्त किया जाना 3. आज्ञा मानना 4. मिलना-जुलना, नकल करना 5. प्रसन्न करना, खुश करना 6. (व्या० में) किसी पूर्ववर्ती सूत्र से आवृत्ति प्राप्त करना (प्रेर०) 1. मुड़ना 2. अनुगमन

करना, आज्ञा मानना, अप—, 1. मुड़ जाना, पीठ मोड़ना —तस्मादपावर्तत दूरकृष्टा नीत्येव लक्ष्मीः प्रतिकूलदैवात्—रघु० ६।५८, ७।३३ 2. व्यत्यस्त या व्युत्क्रान्त होना, उलटा हो जाना—कि० १२।४९ 3. मुंह नीचे कर लेना - मा० ३।१७, (प्रेर०) एक ओर हो जाना, झुकना मा० १।४०, कि० ४।१५, अभि —, 1. पहुँचाना, जाना, निकट होना, समीप होना, मुड़ना —इत एवाभिवर्तते—श० १, रघु० २।१० 2. आक्रमण करना, धावा बोलना, टूट पड़ना —कि० १३।३ 3. आरम्भ करना, (दिन), निकलना 4. सर्वोपरि होना, सबसे ऊपर होना 5. होना, मौजूद होना, घटित होना, आ—, 1. चक्कर खाना 2. वापिस आना—रघु० १।८९, २।१९ 3. पास जाना, 4. बेचैन होना, चक्कर खाना-मा० १।४१, उद्-,1. चढ़ना 2.उदित होना, बढ़ना 3. घमंडी या अभिमानी होना 4. उमड़ना, बह निकलना—उद्वृत्तः क इव सुखावहः परेषाम् —शि० ८।१८, मुद्रा० ३।८, रघु० ७।५६, उप—, 1. पहुँचना 2. लौटना नि—, 1. वापिस आना, लौटना - न च निम्नादिव सलिलं निवर्तते मे ततो हृदयम्—श० ३।१, कु० ४।३०, रघु० २।४३, भग० ८।२१, १५।४ 2. भाग जाना, पलायन करना—भट्टि० ५।१०२ 3. मुड़ जाना, आंखें फेर लेना—रघु० ५।२३, ७।६१ 4. अलग रहना प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात्—मनु० ५।४९, १५३, भट्टि० १।१८, निवृत्तमांसस्तु जनकः—उत्तर० ४ 5. मुक्त होना, बच निकलना—भग० १।३९ 6. बोलना बन्द कर देना, रुक जाना, ठहर जाना 7. हट जाना, अन्त होना, बन्द हो जाना, अन्तर्धान होना—भग० २।५९, १४।२२, मनु० ११।१८५, १८६ 8. रुकवाना, निकलवाना, (प्रेर०) 1. लौटाना, वापिस भेजना रघु० २।३, ३।४७, ७।४४ 2.वापिस लेना, दूर रहना, मुड़ जाना, मन फेर लेना रघु० २।२८, कु० ५।११, निस्—, 1. समाप्त होना, अन्त होना, भट्टि० ८।६९ 2. संपन्न होना—रघु० १७।६८, मनु० ७।१६१, 3. रुक जाना, न होना,—भट्टि० १६।६, (प्रेर०) 1. सम्पन्न करना, निष्पन्न करना, समाप्त करना, पूरा करना—रघु० २।४५, ३।३३, ११।३०, परा—, लौटना, वापिस आना, परि —, 1. घूमना, चक्कर खाना—कु० १।१६ 2. इधर-उधर भ्रमण करना, इधर-उधर आना जाना 3. बदलना, विनिमय करना, अदला-बदली करना 4. पीठ मोड़ना रघु० ४।७२, विक्रम० १।१७ 5. होना, आ पड़ना—मा० ९।८ 6. क्षीण होना, नष्ट होना, लुप्त होना—मा० १०।६, प्र—, 1. आगे चलना, चलते जाना, प्रगति करना, पंच० १।८१ 2. उदित होना, उत्पन्न होना, फूट निकलना 3. होना, घटित होना, आ पड़ना 4. आरंभ करना, शुरू करना, (प्रायः तुमुन्नन्त)—हन्त प्रवृत्तं संगीतकं—मालवि० १, कु० ३।२५ 5. प्रयत्न करना, जोर लगाना—प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः - श० ७।३५ 6. अमल करना, अनुसरण करना, पंच० १।११६, 7. कार्य में लगना, व्यस्त होना,—श० १, कु० ५।२३ 8. करना, कार्य में लगना—श० ६, 9. व्यवहार करना 10. व्याप्त होना, विद्यमान होना - राजन् प्रजासु ते कश्चिदपचारः प्रवर्तते—रघु० १५।४७ 11. ठीक उतरना 12. बिना रुकावट के प्रगति करना, फलना-फूलना,—भग० १७।२४, मनु० ३।६१, (प्रेर०) 1. प्रगति करना, जारी रखना —मुद्रा० १ 2. सूत्रपात करना 3. जारी करना, स्थापित करना, बुनियाद रखना 4. हांकना, प्रेरित करना, उकसाना, उद्दीप्त करना 5. उन्नति करना, प्रगति करना, प्रतिनि—, 1. पीठ मोड़ना, लौटना —गत्वेव पुनः प्रतिनिवृत्तः श० १।२९, विक्रम० १ 2. चक्कर काटना, वि—, 1. मुड़ना, लुढ़कना, चक्कर काटना, घूमना - मा० १।४० 2. एक ओर हो जाना, झुकना—रघु० ६।१६, श० २।११ 3. होना, घटित होना, विनि—, 1. लौटना 2. रुक जाना, अन्त होना—भ० २।५९, मनु० ५।७ 3. हाथ खींचना, मुड़ जाना, अलग रहना—देवनात्, युद्धात् आदि, विपरि—, चक्कर काटना (आलं० से भी) भग० ९।१०, व्यप—, 1. लौटना, वापिस मुड़ना—चेतः कथं कथमपि व्यपवर्तते—मा० १।१८ 2. हाथ खींचना छोड़ देना उत्तर० ५।८, व्या—, 1. वापिस होना, मुड़ना सहभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया—रत्न० १।२ 2. मुड़ना, हटना, उलट होना—विषयव्यावृत्तकौतूहलः —विक्रम० १।९, (प्रेर०) प्रतिबन्ध लगाना, सीमित करना, निकाल देना, गिरफ्तार करना—तु शब्दः पूर्वपक्षं व्यावर्तयति शारी०. अपवाद इवोत्सर्गं व्यावर्तयितुमीश्वरः रघु० १५।७, सम्—, 1. होना, घटित होना—ते यथोक्ताः संवृत्ताः—पंच० १ 2. पैदा होना, उदय होना, फूटना, निकलना 3. घटित होना, आ पड़ना 4. सम्पन्न होना।

वृत (भू० क० कृ०) [वृ+क्त] 1. छांटा गया, चुना गया 2. ढका गया, पर्दा डाला गया 3. छिपाया गया 4. घेरा गया, लपेटा गया 5. सहमत या सम्मत 6. किराये पर लिया गया 7. विगाड़ा गया, विपाक्त किया गया 8. सेवित, सेवा किया गया।

वृतिः (स्त्री०) [वृ+क्तिन्] 1. छांटना, चुनना 2. छिपाना, ढकना, गुप्त रखना 3. याचना करना, निवेदन करना 4. अनुरोध, प्रार्थना 5. घेरना, लपेटना 6. झाड़बंदी, बाड़, बाड़ा—मेघ० ७८।

वृतिंकर (वि०) [वृति+कृ+ट, मुम्] घेरने वाला, लपेटने वाला,—**रः** विकंकत नाम का पेड़ ।

वृत्त (भू० क० कृ०) [वृत्+क्त] 1. जीवित, विद्यमान 2. घटित, संभूत 3. सम्पूरित, समाप्त 4. अनुष्ठित, कृत, किया गया 5. गुजरा हुआ, बीता हुआ 6. गोल, वर्तुलाकार—रघु० ६।३२ 7. मृत, स्वर्गगत 8. दृढ़, स्थिर 9. पठित, अधीत 10. व्युत्पन्न 11. प्रसिद्ध (दे० वृत्),—**त्तः** कछुवा,—**त्तम्** 1. बात, घटना 2. इतिहास, वर्णन रघु० १५।६४ 3. समाचार, खबर 4. प्रवर्तन, पेशा, जीवनवृत्ति, व्यवसाय—सतां वृत्तमनुष्ठिताः—मनु० १०।१२७, (पाठांतर) ७। १२२, याज्ञ० ३।४४ 5. आचरण, व्यवहार, रीति, कर्म, कृत्य, जैसा कि सद्वृत्त या दुर्वृत्त में 6. साधु या सत्य आचरण -पंच० ४।२८ 7. माना हुआ नियम, प्रचलन या कानून, प्रथा, इस प्रकार के नियम या प्रचलन का पालन करना, कर्तव्य, रघु० ५।३३ 8. गोल घेरा, वृत्त की परिधि 9. छन्द, विशेषकर मात्राओं की गणना के आधार पर विनियमित (विप० जाति) दे० परि० १ । सम०—**अनुपूर्व** (वि०) गोल शुंडाकार,—कु० १।३५,—**अनुसारः** 1. विहित नियमों की अनुरूपता 2. छन्द की अनुरूपता, -**अन्तः** 1. अवसर, घटना, बात—अनेनारण्यकवृत्तान्तेन पर्याकुलाः स्मः -श० १, रघु० ३।६६, उत्तर० २।१७ 2. समाचार, खबर, गुप्तवार्ता - को नु खलु वृत्तान्तः—विक्रम० ४, रघु० १४।८७ 3. वर्णन, इतिहास, कथा, आख्यान, कहानी 4. विषय, प्रकरण 5. प्रकार, क़िस्म 6. ढंग, रीति 7. अवस्था, दशा 8. कुलयोग, समष्टि 9. विश्राम, अवकाश 10. गुण, प्रकृति,—**इर्वारुः**,—**कर्कटी** तरबूज, सरदा,—**गन्धि** (नपुं०) एक प्रकार का गद्य जो पढ़ने में पद्य जैसा आनन्द दे, -**चूड,—चौल** (वि०) मुंडित, जिसका मुंडन संस्कार हो चुका हो—उत्तर० २, -**पुष्पः** 1. बेत, बानीर 2. सिरस का पेड़ 3. कदम्ब का पेड़, -**फलः** 1. बेर, उन्नाव का पेड़ 2. अनार का पेड़, -**शस्त्र** (वि०) जिसने शस्त्र विज्ञान में पांडित्य प्राप्त कर लिया है—भट्टि० ९।१९।

वृत्तिः [वृत्+क्तिन्] 1. अस्तित्व, सत्ता 2. टिकना, रहना, रुख, किसी विशेष स्थिति में होना जैसा कि विरुद्धवृत्ति या विपक्षवृत्ति में 3. अवस्था, दशा 4. कार्य, गति, कृत्य, कार्यवाही—शतैस्तमक्ष्णाम-निमेषवृत्तिभिः -रघु० ३।४३, कु० ३।७३, श० ४।१५ 5. क्रम, प्रणाली, श० २।११ 6. आचरण, व्यवहार, चालचलन, कार्यपद्धति—कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने—श० ४।१८, मेघ० ८, वैतसीवृत्ति, बकवृत्ति आदि 7. पेशा, व्यवसाय, काम-धंधा, रोज़गार, जीवन-चर्या (प्रायः समास के अन्त में)—वार्धके मुनिवृत्तीनाम् —रघु० १।८, श० ५।६, पंच० ३।१२५ 8. जीविका, संपोषण, जीविका के उपाय (बहुधा समास में)—रघु० २।३८, श० ७।१२, कु० ५।२८, (जीविका के विभिन्न उपायों के लिए दे० मनु० ४।४-६ 9. मजदूरी, भाड़ा 10. क्रियाशीलता का कारण 11. सम्मानपूर्ण बर्ताव 12. भाष्य, टीका, विवृति—सद्वृत्तिः सन्निबन्धना—शि० २।११२, काशिकावृत्तिः आदि 13. चक्कर काटना, मुड़ना 14. किसी वृत्त या पहिये की परिधि 15. (व्या०) जटिल रचना जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता पड़े 16. शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा किसी अर्थ का अभिधान, संकेत अथवा व्यंजना की जाय (यह शक्तियाँ अभिधा, लक्षणा और व्यंजना के नाम से विख्यात) 17. रचना की शैली (यह चार हैं—कैशिकी, भारती, सात्वती और आरभटी)। सम० **अनुप्रासः** एक प्रकार का अनुप्रास,—दे० काव्य० ९, -**उपायः** जीविका का उपाय,—**कर्षित** (वि०) जीविका के अभाव में अत्यन्त दुःखी—मनु० ८।४११, -**चक्रम्** राज चक्र पञ्च० १।८१,—**छेदः** जीविका के साधनों से वञ्चित,—**भगः**,—**वैकल्यम्** जीविका का अभाव—पञ्च० १।१५३,—**स्थ** (वि०) 1. किसी भी स्थिति या नियुक्ति में रहने वाला 2. सदाचारी, अच्छा बर्ताव करने वाला, (**स्थः**) छिपकली, गिरगिट।

वृत्रः [वृत्+रक्] 1. एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था (वह अन्धकार का मूर्तरूप माना जाता है), दे० 'इन्द्र' 2. बादल 3. अन्धकार 4. शत्रु 5. ध्वनि 6. पर्वत। सम०—**अरिः**—**द्विष्** (पुं०) —**शत्रुः**—**हन्** (पुं०) इन्द्र के विशेषण—क्रुद्धेऽपि पक्षिच्छिदि वृत्रशत्रौ—कु० १।२०, वाचा हरिं वृत्रहणं स्मितेन—७।४६।

वृथा (अव्य०) [वृ+थाल् किच्च] 1. बिना किसी अभिप्राय के, व्यर्थ, निरर्थक, बिना किसी लाभ के, (बहुधा विशेषण की शक्ति से युक्त)—व्यर्थं यत्र कपीन्द्रसख्यमपि मे वीर्यं हरीणां वृथा—उत्तर० ३।४५, दिवं यदि प्रार्थयसे वृथा श्रमः—कु० ५।४५ 2. अनावश्यक रूप से 3. मूर्खता से, आलस्य पूर्वक, बेलगाम 4. गलत तरीके से, अनुचित रूप से (समास के आरम्भ में 'वृथा' शब्द का अनुवाद 'व्यर्थ, निरर्थक', अनुचित, मिथ्या या आलसी, किया जा सकता है। सम०—**अट्या** अलसता के साथ टहलना, सामोद भ्रमण करना, -**आकारः** मिथ्या रूप, खाली तमाशा,—**कथा** बेहूदी बात,—**जन्मन्** (नपुं०) अलाभकर या व्यर्थ जन्म,—**दानम्** वह उपहार जो प्रतिज्ञात होने पर भी न दिया गया हो,—**मति** (वि०) दुर्बुद्धि, मूर्ख, -**मांसम्** वह मांस जो देवताओं

या पितरों के लिए अभिप्रेत न हो, —वादिन् (वि०) मिथ्या भाषी,—श्रमः व्यर्थ चेष्टा या कष्ट उठाना।

वृद्ध (वि०) [वृध्+क्त] (म० अ० ज्यायस् या वर्षीयस्, उ० अ० ज्येष्ठ या वर्षिष्ठ) 1. बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 2. पूर्णविकसित, बड़ी उम्र का 3. बूढ़ा, वयोवृद्ध, बहुत वर्षों का वृद्धास्ते न विचारणीयचरिताः—उत्तर० ५।२५ 4. प्रगत या विकसित (समास के अन्त में), तु० वयोवृद्ध, धर्मवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, आगमवृद्ध 5 बड़ा, विशाल 6. एकत्रित, संचित 7. बुद्धिमान्, विद्वान्, —द्धः 1. बूढ़ा व्यक्ति—हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान् - रघु० १।४५, ९।८, मेघ० ३० 2. योग्य या आदरणीय पुरुष 3. मुनि, सन्त 4. वंशज, —द्धम् गुग्गुल। सम०—अङ्गुलिः (स्त्री०) पैर का अंगूठा,—अवस्था बुढ़ापा,—आचारः प्राचीन प्रथा, - उक्षः बूढ़ा बैल,—काकः पहाड़ी कौवा, —नाभि (वि०) स्थूलकाय, मोटे पेट वाला,—भावः बुढ़ापा,—मतः प्राचीन ऋषियों का उपदेश,—वाहनः आम का पेड़, - श्रवस् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—संघः वृद्धजनों की सभा, —सूत्रकम् रूई का गल्हा, कपास का गाला, इन्द्रतूल।

वृद्धा [वृद्ध+टाप्] 1. बूढ़ी स्त्री 2. वंशजा (स्त्री)।

वृद्धिः [वृध्+क्तिन्] 1. विकास, बढ़ोत्तरी, वर्धन, सम्बर्धन पुपोष वृद्धि हरिदश्वदीधितेरनुप्रवेशादिव बालचन्द्रमाः - रघु० ३।२२, तपोवृद्धि, ज्ञानवृद्धि आदि 2. (चन्द्रमा का) वर्धित होना, चन्द्रमा की कलाओं का बढ़ना, - पर्यायपीतस्य सुरैहिमांशोः कलाक्षयः श्लाघ्यतरो हि वृद्धेः - रघु० ५।१६, कु० ७।१ 3. धन की वृद्धि, समृद्धि, धनाढ्यता—पंच०२।११२ 4. सफलता, बढ़ावत, उन्नति, प्रगति परिवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनां—शि० १५।१ 5. दौलत, जायदाद 6. ढेर, परिमाण, समुच्चय 7. सूद, ब्याज, सरला वृद्धिः, चक्रवृद्धिः 8. सूदखोरी 9. लाभ फायदा 10. अंडकोष की वृद्धि 11. शक्ति या राजस्व का विस्तार 12. (व्या० में) स्वरों का लंबा करना या वृद्धि, अ, इ, उ, ऋ (चाहे ह्रस्व हों या दीर्घ) और लृ को क्रमशः आ, ऐ, औ, आर् और आल् में बदलना 13. परिवार में, (प्रसव के कारण) उत्पन्न अशौच, जननाशौच। सम० —आजीवः,—आजीविन् (पुं०) सूदखोर, साहूकार, ब्याज पर रुपया उधार देनेवाला,—जीवनम्,—जीविका सूदखोरी, साहूकारी, —द (वि०) समृद्धि को उन्नत करने वाला, —पत्रम् एक प्रकार का उस्तरा, —श्राद्धम् पुत्रजन्मादि के उत्सवों पर पितरों का श्राद्ध, नान्दीमुख श्राद्ध।

वृध् i (भ्वा० आ०—परन्तु लुट्, लृट्, लुङ्, लृङ् और सन्नन्त में पर०, वर्धते, वृद्ध, इच्छा० विवृत्सति या विवर्धिषते) 1. विकसित होना, बढ़ना, विस्तृत होना, मजबूत या बलवान् होना, फलना, समृद्ध होना—अन्योन्यजनसंरम्भो ववृधे वादिनोरिव—रघु० १२।९२, १०।७८, धनक्षये वर्धति जाठराग्निः - सुभा०, भट्टि० १४।१३, १९।२६ 2. जारी रखना, टिकाऊ रहना 3. उठना, चढ़ना 4. बधाई का कारण होना—(प्रायः 'दिष्ट्या' के साथ) दिष्ट्या धर्मपत्नीसमागमेन पुत्रमुखदर्शनेन चायुष्मान् वर्धते—श० ७, "धर्मपत्नी के मिलने के उपलक्ष्य में आपको बधाई हो, प्रेर० (वर्धयति—ते, वर्धापयति—ते भी) 1. विकसित कराना, बढ़ाना, वृद्धियुक्त करना, ऊँचा उठाना, ऊँचा करना, उन्नत करना—वर्धयन्निव तत्कूटानुद्धूतैर्धातुरेणुभिः —रघु०४।७१ 2. समृद्ध कराना, यशस्वी बनाना, विस्तीर्ण करना, बड़ाई करना हि० ३।३ 3. बधाई देना, अभिनन्दन करना (इस अर्थ में 'वर्धापयति'), अभि—, विकसित होना बढ़ना —क्षीणः क्षीणोऽपि शशी भूयो भूयोऽभिवर्धते नित्यम्—काव्य० १०, परि · प्र · वि —, विकसित होना, बढ़ना, समृद्ध होना, सम्—, बढ़ना,—रघु० ५।१६।

ii (चुरा० उभ० वर्धयति—ते) 1. बोलना, चमकना।

वृधसानः [वृधेः छन्दसि असानच्, कित्] मनुष्य।

वृधसानुः [वृध्+असानुच्] 1. मनुष्य 2. पत्ता 3. कर्म, कार्य।

वृन्तम् [वृ+क्त, नि० मुम्] 1. किसी फल या पत्ते का डंठल, डंडी—वृन्ताच्छ्लथं हरति पुष्पमनोकहानाम् रघु० ५।६९ 2. घड़ौंची 3. स्तन की बौंडी या अग्रभाग।

वृन्ताकः, - की [वृन्त+अक्+अण्] बैंगन का पौधा।

वृन्तिका [वृन्त+कन्+टाप्, इत्वम्] छोटा डंठल।

वृन्दम् [वृ+दन्, नुम्, गुणाभावः] 1. समुच्चय, समूह बड़ी संख्या, दल—अनुगतमलिवृन्दैर्गण्डभित्तीर्विहाय —रघु० १२।१०२, मेघ० ९९, इसी प्रकार अभ्र० 2. ढेर, परिमाण।

वृन्दा [वृन्द+टाप्] 1. पवित्र तुलसी 2. गोकुल के निकट एक वन। सम० —अरण्यम्, —वनम् गोकुल के निकट एक जंगल—वृन्दारण्ये वसतिरघुना केवलं दुःखहेतुः —पदा० ३८।४१, रघु० ६।५०,—वनी तुलसी का पौधा।

वृन्दार (वि०) [वृन्द+ऋ+अण्] 1. अधिक, बड़ा, विशाल 2. प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ 3. सुहावना, आकर्षक, सुन्दर।

वृन्दारक (वि०) (स्त्री०—का,—रिका) [वृन्द+आरकन्, पक्षे टाप्, इत्वम् च] 1. अधिक, बड़ा, बहुत 2. प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ 3. सुहावना, आकर्षक, सुन्दर, मनोहर 4. आदरणीय, सम्माननीय,—कः 1. देव, सुर,

श्रितो वृंदारण्यं नतनिखिलवृंदारकवृतः - भामि० ४।५ 2. किसी भी चीज़ का मुख्य (समास के अन्त में) दे० (२) ऊपर।

वृन्दिष्ठ (वि) [अयमेषामतिशयेन वृन्दारकः--इष्ठन्, वृन्दादेशः] 1. अत्यंत बड़ा या विशालतम 2. अत्यंत मनोहर, सुन्दरतम।

वृन्दीयस् (वि०) ['वृन्दारक' की म० श० अयमनयोरतिशयेन वृन्दारकः+ईयसुन्, वृन्दादेशः] 1. अपेक्षाकृत बड़ा, विशालतर 2. अपेक्षाकृत मनोहर, सुन्दरतर।

वृश् (दिवा० पर० वृश्यति) छाँटना, चुनना।

वृशः [वृश्+क] चूहा,—शा एक ओषधि, अडूसा,—शम् अदरक।

वृश्चिकः [व्रश्च्+किकन्] 1. बिच्छू 2. वृश्चिक राशि 3. केंकड़ा 4. कानखजूरा 5. बसूँत्वा, गोबर का कीड़ा 6. एक रोएंदार कीड़ा।

वृष् i (भ्वा० पर० वर्षति, वृष्ट) 1. बरसना (बहुधा 'इन्द्र' 'पर्जन्य' या बादल आदि सार्थक शब्दों के साथ कर्ता के रूप में, या कभी-कभी भावात्मक रूप से) —द्वादशवर्षाणि न ववर्ष दशशताक्षः—दश०, काले वर्षतु मेघाः, गर्ज वा वर्ष वा शक्र—मृच्छ० ५।३१, मेघा वर्षन्तु गर्जन्तु मुञ्चन्त्वशनिमेव वा—५।१६ 2. बारिश करना, उडेलना, बौछार करना—वर्षतीवाञ्जनं नभः —मृच्छ० १।३४ इसी प्रकार–शरवृष्टिम् कुसुमवृष्टिं वर्षति आदि 3. बरसाना ढलकाना 4. अनुदान देना, अर्पण करना 5. तर करना 6. पैदा करना, उत्पन्न करना 7. सर्वोपरि शक्ति रखना 8. प्रहार करना, चोट मारना, अभि–, 1. बौछार करना, बरसाना, उडेलना, छिड़कना रघु० १।८४, १०।४८ 2. प्रदान करना, अर्पण करना, प्र–, बरसाना, बौछार करना—यस्यायमभितः पुष्पैः प्रवृष्ट इव केसरः–राम० (=उत्तर० ६।३६)।

ii (चुरा० आ० वर्षयते) 1. शक्तिशाली या प्रमुख होना, 2. उत्पन्न करने की शक्ति रखना।

वृषः [वृष्+क] 1. सांड—असंपदस्तस्य वृषेण गच्छतः –कु० ५।८०, मेघ० ५२, रघु० २।३५, मनु० ९।१२३ 2. वृष राशि 3. किसी वर्ग का मुख्य या उत्तम, अपने दल का सर्वश्रेष्ठ (समास के अन्त में) मुनिवृषः, कपिवृषः आदि 4. कामदेव 5. मज़बूत या व्यायाम शील व्यक्ति 6. कामातुर, रतिग्रंथों में वर्णित चार प्रकार के पुरुषों में से एक- दे० रति० ३७ 7. शत्रु, विपक्षी 8. चूहा 9. शिव का नंदी बैल 10 नैतिकता, न्याय 11. गुण, सत्कर्म या पुण्यकार्य–न सद्गतिः स्याद् वृषवर्जितानाम्—कीर्ति० ९।६२, (यहाँ 'वृष' का अर्थ सांड भी है) 12. कर्ण का नामान्तर 13. विष्णु का नाम 14. एक विशेष ओषधि का नाम —षम् मोर का पंख। सम० अङ्कः शिव का विशेषण—रघु० ३।२३ 2. पुण्यात्मा, सद्गुणी 3. भिलावाँ 4. षंढ, °जः छोटा ढोल,—अञ्चनः शिव का विशेषण —अन्तकः विष्णु का विशेषण,—आहारः बिलाव, —उत्सर्गः मृत पुरुष के नाम पर दाग कर सांड़ छोड़ना,—दंशः,—दंशकः बिलाव, - ध्वजः 1.शिव का विशेषण---रघु० ११।४४ 2. गणेश का विशेषण 3. सद्गुणी, पुण्यात्मा,—पतिः शिव का विशेषण, --पर्वन् (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. एक राक्षस का नाम जिसने असुराचार्य शुक्र की सहायता से बहुत दिनों तक देवताओं से संघर्ष किया, इसकी पुत्री शर्मिष्ठा का विवाह ययाति के साथ हुआ—दे० ययाति और देवयानी 3. बर्र, भिरड़,—भासा इन्द्र और देवताओं का आवास—अर्थात् अमरावती, —लोचनः बिलाव,—वाहनः शिव का विशेषण।

वृषणः [वृष्+क्यु] अंडकोष, अंड या फोते।

वृषन् (पुं०) [वृष्=कनिन्] 1. सांड़ 2. वृषराशि 3. किसी वर्ग का मुखिया—महावी० १।७ 4. बीजाश्व, सांड़, घोड़ा 5. पीड़ा, शोक 6. पीड़ा के प्रति असंवेद्यता 7. इन्द्र का नाम—वृषेव सीतां तदवग्रहक्षताम्—कु० ५।६१, ८०, रघु० १०।५२, १७।७७ 8. कर्ण का नाम 9. अग्नि का नाम।

वृषभः [वृष्+अभच् किच्च] 1. सांड़ 2. कोई भी नर जानवर 3. अपने वर्ग का मुखिया (समास के अन्त में) द्विजवृषभः—रत्न० १।५, ४।२१ 4. वृषराशि, 5. एक प्रकार की ओषधि—तु० ऋषभ 6. हाथी का कान 7. कान का विवर। सम०—गतिः,—ध्वजः शिव के विशेषण—रघु० २।३६, कु० ३।६२।

वृषभी (स्त्री०) [वृषभ+ङीष्] 1. विधवा 2. कवच।

वृषलः [वृष्=कलच्] 1. शूद्र 2. घोड़ा 3. लहसुन 4. पापी, दुष्ट, अधर्मी 5. जाति से बहिष्कृत 6. चन्द्रगुप्त का नाम (विशेषतः चाणक्य द्वारा प्रयुक्त—दे० मुद्रा० अंक १, ३)।

वृषलकः [वृषल+कन्] तिरस्करणीय शूद्र।

वृषली [वृषल+ङीष्] 1. बारह वर्ष की अविवाहित कन्या, रजस्वला होने पर भी विवाह न होने के कारण पिता के घर रहने वाली कन्या—पितुर्गेहे च या नारी रजः पश्यत्यसंस्कृता, भ्रूणहत्या पितुस्तस्याः सा कन्या वृषली स्मृता 2. रजस्वला 3. बांझ स्त्री 4. सद्योजात बच्चे की माता 5. शूद्र की पत्नी या शूद्रा स्त्री। सम०—पतिः शूद्र स्त्री का पति, --सेवनम् शूद्रा स्त्री के साथ संभोग।

वृषसृक्की (स्त्री०) बर्र, भिरड़।

वृषस्यन्ती [वृष+क्यच्, सुक्, शतृ+ङीप्, नुम्] 1. संभोग करने की इच्छा वाली स्त्री (पुरुष में कर्म० के साथ,

—रघुनन्दनं वृषस्यन्ती शूर्पणखा प्राप्ता—महावी० ५, भट्टि० ४।३०, रघु० १२।३४ 2. कामासक्ता या कामातुरा स्त्री 3. गर्भायी हुई गाय ।

वृषाकपायी [वृषाकपेः पत्नी—वृषाकपि+ङीप्, ऐ आदेशः] 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. गौरी का विशेषण 3. शची का विशेषण 4. अग्नि की पत्नी स्वाहा का विशेषण 5. सूर्य की पत्नी ऊषा का विशेषण ।

वृषाकपिः [वृषः कपिः अस्य—ब० स०, पूर्वपददीर्घः] 1. सूर्य का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. शिव का विशेषण 4. इन्द्र का विशेषण 5. अग्नि का विशेषण ।

वृषायणः (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. गोरैया चिड़िया ।

वृषिन् (पुं०) [वृष+इनि] मोर ।

वृषी (स्त्री०) संन्यासी या ब्रह्मचारी का आसन (कुश घास से बना हुआ) ।

वृष्ट (भू० क० कृ०) [वृष्+क्त] 1. बरसा हुआ 2. बरसता हुआ 3. बौछार करता हुआ, उडेलता हुआ ।

वृष्टिः (स्त्री०) [वृष्+क्तिन्] 1. बारिश, बारिश की बौछार - आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः —मनु० ३।७६ 2. (किसी भी वस्तु की) बौछार —अस्त्रवृष्टि—रघु० ३।५८, पुष्पवृष्टि २।६०, इसी प्रकार शर° घन° उपल° आदि । सम० - कालः बरसात का समय,—**जीवन** (वि०) बारिश द्वारा सिंचित (प्रदेश), तु० देवमातृक, - भूः मेंढक ।

वृष्टिमत् (वि०) [वृष्टि+मतुप्] बरसने वाला, बरसाती, (पुं०) बादल ।

वृष्णि (वि०) [वृषेः निः किच्च] 1. धर्मभ्रष्ट, पाखंडी 2. क्रुद्ध, कोपाविष्ट, (पुं०) 1. बादल 2. मेंढा 3. प्रकाश की किरण 4. कृष्ण के किसी पूर्वज का नाम 5. कृष्ण का नाम 6. इन्द्र 7. अग्नि । सम० गर्भः कृष्ण का विशेषण ।

वृष्य (वि०) [वृष्+क्यप्] 1. जिसके ऊपर बरस सके, बौछार की जा सके 2. कामोद्दीपक, वाजीकर, पुंस्त्व बढ़ाने वाला, - ष्यः माष, उड़द ।

वृह्, वृहत्, वृहतिका दे० बृह्, बृहत्, बृहतिका ।

वृहती [वृह्+अति+ङीप्] 1. नारद की वीणा 2. छत्तीस की संख्या 3. दुपट्टा, चोगा, आवरण 4. भाषण आशय (जैसे जलाशय) दे० 'बृहती' भी । सम० —पतिः बृहस्पति का विशेषण ।

वृहस्पति दे० 'बृहस्पति' ।

वॄ (क्र्या० उभ० वृणाति, वृणीते, वूर्ण, कर्मवा० वूर्यते, इच्छा० विवूर्षति-ते, विवरिषति-ते) छांटना, चुनना (दे० 'वृ' 1) ।

वे (भ्वा० उभ० वयति-ते, उत, प्रेर० वाययति—ते) 1 बुनना सितांशुवर्णैर्वयति स्म तद्गुणैः—नै० १।१२ 2. बाल गूंथना, पौधे लगाना 3. सीना 4. बनाना, रचना, नत्थी करना. प्र—, 1. बुनना 2. बांधना, कसना 3. जमाना, स्थिर करना 4. परस्पर बुनना, संग्रथित करना, दे० 'प्रोत' ।

वेकटः (पुं०) 1. हंसोकड़ा 2. जौहरी 3. युवा पुरुष ।

वेगः [विज्+घञ्] 1. आवेग, संवेग 2. गति, प्रवेग, शीघ्रता 3. विक्षोभ 4. अतिवेगशीलता, प्रचण्डता, बल 5. प्रवाह, धारा जैसा कि 'अम्बुवेगः' में 6. तेज, क्रियाशीलता, संकल्प 7. शक्ति, सामर्थ्य,—मदनज्वरस्य वेगात् का० 8. संचार, क्रिया, (विष—आदि का) प्रभाव उत्तर० २।२६, विक्रम० ५।१८ 9. शीघ्रता, जल्दबाजी, आकस्मिक आवेग—पंच० १।१०९ 10. बाण की गति—कि० १३।२४ 11. प्रेम, प्रणयोन्माद 12. आन्तरिक भाव का बाहर प्रकट होना 13. आनन्द, प्रसन्नता 14. मलत्याग 15. शुक्र, वीर्य । सम० अनिलः 1. आंधी का झोंका विक्रम० १।४ 2. प्रचण्ड वायु,—आघातः 1. अकस्मात् वेग का अवरोध, गति को रोकना, 2. मलावरोध, कोष्ठबद्धता,—नाशनः श्लेष्मा, कफ,—**वाहिन्** (वि०) स्फूर्त, तेज,— **विधारणम्** गति का रोकना, सरः खच्चर ।

वेगिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वेग+इनि] तेज, चुस्त, द्रुतगामी, प्रचण्ड, फुर्तीला (पुं०) 1. हरकारा 2. बाज, —नी नदी ।

वेङ्कटः (पुं०) एक पहाड़ का नाम, वेंकटाचल ।

वेचा [विच्+अच्+टाप्] भाड़ा, मजदूरी ।

वेडम् [विड्+अच्] एक प्रकार का चन्दन ।

वेडा [वेड+टाप्] किश्ती, नाव ।

वेण्, वेन् (भ्वा० उभ० वेणति-ते, वेनति-ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. जानना, पहचानना, प्रत्यक्ष करना 3. विचारविमर्श करना, सोचना 4. लेना 5. बाजा बजाना ।

वेणः [वेण्+अच्] 1. गायक जाति का पुरुष—तु० मनु० १०।१९; वेणानां भांडवादनम्—१०।४९ 2. एक राजा का नाम, अङ्ग का पुत्र और स्वायंभुव मनु का वंशज (जब वह राजा बना तो उसने सब प्रकार की पूजा व यज्ञादि को बन्द करने की घोषणा कर दी । ऋषियों ने इसका बड़ा विरोध किया, परन्तु जब उसने उनकी एक न सुनी तो उन्होंने अभिमन्त्रित कुशतृण की पत्ती से उसकी हत्या कर दी । अब देश में कोई शासक न रहा । अतः उन्होंने उस मृतक शरीर की जंघा को मसला, तब उसमें से एक निषाद निकला जो शरीर का ठिगना तथा चौड़े मुख वाला था । उसके पश्चात् उन्होंने उसकी दक्षिण भुजा को रगड़ा जहां से भव्य पृथु (दे० पृथु) का

जन्म हुआ। पद्मपुराण के अनुसार वह भली भांति शासन करने लगा, परन्तु बाद में वह जैन-नास्तिकता में फंस गया। यह भी कहा जाता है कि उसने वर्णव्यवस्था में गड़बड़ी फैलाई, तु० मनु० ७।४१, ९।६६-६७)।

वेणा [वेण+टाप्] एक नदी का नाम (जो कृष्णा नदी में जाकर मिलती है)।

वेणिः,–णी (स्त्री०) [वेण्+इन्, ङीप् वा] 1. गुंथे हुए बाल, बालों की मींढी,—तरङ्गिणी वेणिरिवायता भुवः —शि० १२।७५, मेघ० १८ 2. बालों की एक अनलंकृत चोटी जो पीठ पर लटकती रहती हैं (कहा जाता है कि वही स्त्रियां ऐसी चोटी करती हैं जिनके पति घर पर न हों) वनान्निवृत्तेन रघूत्तमेन मुक्ता स्वयं वेणिरिवावभासे—रघु० १४।१२, अबलावेणिमोक्षोत्सुकानि–मेघ० ९९, कु० २।६१ 3. अनवच्छिन्न प्रवाह, धारा, सरिता जलवेणिरम्यां रेवां यदि प्रेक्षितुमस्ति कामः—रघु० ६।४३, मेघ० २९, तु० 'त्रिवेणी' शब्द की भी 4. दो या अधिक नदियों का संगम 5. गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम 6. एक नदी का नाम। सम० **—बन्धः** गुथे हुए बाल, मींढी —रघु० १०।४७,**—वेधनी** जोक,**—वेधिनी** कंघी, **—संहारः** 1. बालों को गूंथ कर मींढी बनाना वेणी० ६ 2. भट्टनारायणकृत एक नाटक का नाम।

वेणुः [वेण्+उण्] 1. बांस, मलयेऽपि स्थितो वेणुर्वेणुरेव न चन्दनम् सुभा०, रघु० १२।४१ 2. नरकुल 3. बंसरी, मुरली —नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदु वेणुम्–गीत० ५। सम० **जः** बांस का बीज, **—ध्मः** बांसुरी बजाने वाला, मुरलीवाला, **निस्रुतिः** ईख,**—यष्टिः** बांस की लकड़ी,**—वादः,—वादकः** मुरली वाला, बांसुरी वजाने वाला, **बीजम्** बांस का बीज।

वेणुकम् [वेणु+कन्] बांस की मूठ वाला अंकुश।

वेणुनम् [वेण्+उनन्] काली मिर्च।

वेतं (दं) डः (पुं०) हाथी भामि० १।६२।

वेतनम् [अज्+तनन् वीभावः] 1. किराया, मजदूरी, भृति, तनख्वाह, वृत्ति—रघु० १७।६६ 2. आजीविका, जीवननिर्वाह का साधन। सम०**—अदानम्,—अनपाकर्मन्** (नपुं०),**—अनपक्रिया** 1. पारिश्रमिक या मजदूरी न देना 2. मजदूरी न मिलने के कारण किया गया प्रयत्न, **जीविन्** (पुं०) वृत्ति पाने वाला, वैतनिक।

वेतसः [अज्+असुन् नुक् च, वीभावः] 1. नरसल, नरकुल, बेंत—अविलम्बितमेधि वेतसस्तरुवन्माधव मा स्म भज्यथाः -शि० १६।५३, रघु० ९।७५ 2. नींबू, बिजौरा।

वेतसी [वेतस्+ङीप्] नरसल,—वेतसीतरुतले–काव्य० १।

वेतस्वत् (वि०) (स्त्री०—ती) [वेतस+ड्मतुप, मस्य वः] जहां नरकुल बहुतायत से पाये जायें।

वेतालः [अज्+विच्, वी आदेशः, तल्+घञ्, कर्म० स०] 1. एक प्रकार की भूतयोनि, पिशाच, प्रेत, विशेषकर शव पर अधिकार रखने वाला भूत—मा० ५।२३, शि० २०।६० 2. द्वारपाल।

वेत्तृ (पुं०) [विद्+तृच्] 1. ज्ञाता 2. ऋषि, मुनि 3. पति, पाणिग्रहीता।

वेत्रः [अज्+त्रल्, वी भावः] 1. बेंत, नरसल 2. लाठी, छड़ी, विशेष कर द्वारपाल की छड़ी,—वामप्रकोष्ठार्पितहेमवेत्रः—कु० ३।४१। सम०**—आसनम्** बेंत की बनी गद्दी,**—धरः,–धारकः** 1. द्वारपाल 2. आसाधारी, छड़ीबरदार।

वेत्रकीय (वि०) [वेत्र+छ, कुक्] वेत्रबहुल, जहां नरकुल बहुत पाये जायें।

वेत्रवती [वेत्र+मतुप्+ङीप्] 1 स्त्री द्वारपाल 2. एक नदी का नाम मेघ० २४।

वेत्रिन् (पुं०) [वेत्र+इनि] 1. द्वारपाल, दरबान 2. चोबदार।

वेथ् (भ्वा० आ० वेथते) प्रार्थना, निवेदन करना, कहना।

वेदः [विद्+घञ्, अच् वा] 1. ज्ञान 2. आध्यात्मिक या धार्मिक ज्ञान, हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ (मूलरूप से केवल तीन वेद थे, ऋग्वेद, यजुर्वेद, और सामवेद जिन्हें समष्टिरूप से 'त्रयी' कहते थे, परन्तु बाद में 'अथर्ववेद' उनके साथ जोड़ दिया गया। प्रत्येक वेद के दो भाग हैं—मन्त्र या संहिता पाठ तथा ब्राह्मण भाग। हिन्दुओं की निरी धर्मनिष्ठता के अनुसार वेद अपौरुषेय (जो पुरुषों द्वारा की गई रचना न हो) हैं, क्योंकि वह परमात्मा से प्रकट हुए या सुने गये हैं, इसीलिए उन्हें 'श्रुति' कहते हैं, इसके विपरीत 'स्मृति' अर्थात् जो याद रक्खे जायं या जो पुरुषों की कृति हो; दे० 'श्रुति' तथा 'स्मृति' भी, इसीलिए बहुत से ऋषि जिनका नाम वेद के सूक्तों से संबद्ध है 'द्रष्टारः' देखने वाले कहलाते हैं, उन्हें 'कर्तारः' या 'स्रष्टारः' अर्थात् रचयिता नहीं कहा जाता) 3. कुशा घास का गुच्छा —मनु० ४।३६, 4. विष्णु का नाम। सम०**—अङ्गम्** 'वेद का अंग' एक प्रकार के ग्रन्थ जो मंत्रोच्चारण, व्याख्या और संस्कारों में यत्र-तत्र सही विनियोग में सहायता देने के लिए प्रयुक्त होते हैं अतः वेदाध्ययन में सहायक हैं, (वेदांग गिनती में छः हैं 1. शिक्षा, अर्थात् उच्चारण-विज्ञान 2. छंदस् छन्दः शास्त्र, 3. व्याकरण 4. निरुक्त अर्थात् वेद के कठिन शब्दों की निर्वचनपरक व्याख्या 5. ज्योतिष अर्थात् नक्षत्रविद्या या गणितज्योतिष और 6. कल्प अर्थात् कर्मकाण्ड या अनुष्ठानपद्धति),**—अधिगमः, अध्ययनम्**

धार्मिक अध्ययन, वेदाध्ययन,—अध्यापकः वेद का पढ़ाने वाला, धर्मगुरु,—अन्तः 1. 'वेद का अन्त' (वेद के अन्त में आने वाली) उपनिषद् 2. हिन्दुओं के छः मुख्य दर्शनों में अन्तिम दर्शन ('वेदान्त' इसलिए कहलाता है कि यह वेद के अन्तिम ध्येय और कार्यक्षेत्र की शिक्षा देता है, या इसलिए कि यह उन उपनिषदों पर आधारित हैं जो वेद का अन्तिम भाग हैं), (दर्शन की इस पद्धति को कभी-कभी 'उत्तरमीमांसा' के नाम से पुकारते हैं, यही जैमिनि की पूर्वमीमांसा का उत्तरार्ध, या अन्तिम भाग है, परन्तु व्यवहारतः यह एक स्वतंत्र शास्त्र है, दे० मीमांसा, यह हिन्दुओं के 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के सर्वेश्वरवाद का प्रवर्तक है, इसके अनुसार समस्त विश्व एक ही अनादि शक्ति अर्थात् ब्रह्म या परमात्मा का संश्लिष्ट रूप है, दे० 'ब्रह्मन्' भी) °गः, °ज्ञः, वेदान्त दर्शन का अनुयायी, —अन्तिन् (पुं०) वेदान्त दर्शन का अनुयायी,—अर्थः वेदों का अर्थ,—अवतारः वेदों का प्रकटीकरण, अर्थात् ईश्वरीय संदेश,—आदि (नपुं०),—आदिवर्णः —आदिबीजम् 'ओम्' की पुनीत ध्वनि,—उक्त (वि०) शास्त्रसम्मत, वेदविहित, कौलेयकः शिव का विशेषण,—गर्भः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण, ज्ञः वेदों को जानने वाला ब्राह्मण, —त्रयम्, त्रयी सामूहिक रूप से तीनों वेद, —निन्दकः नास्तिक, पाखण्डी, श्रद्धाहीन (जो वेद के स्वरूप तथा उसके अपौरुषेयत्व पर विश्वास नहीं करता है),—निन्दा अविश्वास, पाखण्ड,—पारगः वेदों में पारंगत ब्राह्मण,—मातृ (स्त्री०) वैदिक पुनीत मंत्र, गायत्रीमंत्र, वचनम्,—वाक्यम् वेद का मूलपाठ, वदनम् व्याकरण,—वासः ब्राह्मण,—बाह्य (वि०) वेद के विरुद्ध, जो वेद में उपलब्ध न हो, —विद् (पुं०) वेदविशारद ब्राह्मण,—विहित (वि०) वेदों में जिसका विधान पाया जाय, व्यासः व्यास का विशेषण जिसने वेदों को वर्तमान रूप दिया है, दे० व्यास,—संन्यासः वेदों के कर्मकाण्ड का त्याग।

वेदनम्, वेदना [विद्+ल्युट्] 1. ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान 2. भावना, संवेदन 3. पीडा, संताप, क्लेश, अंघि —अवेदनाज्ञं कुलिशक्षतानाम् कु० १।२०, —रघु० ८।५० 4. अधिग्रहण, दौलत, जायदाद 5. विवाह —मनु० ३।४४, ९।६५, याज्ञ० १।६२।

वेदारः [वेद+ऋ+अण्] गिरगिट।

वेदिः [विद्+इन्] विद्वान् पुरुष, ऋषि, पंडित, दिः,—दी (स्त्री०) 1. यज्ञकार्य के लिए तैयार की हुई भूमि, वेदी, 2. वेदी विशेष जिसके मध्यवर्ती किनारे परस्पर मिले हुए हों—मध्येन सा वेदिविलग्नमध्या—कु० १।३७ (कुछ लोग इस शब्द का अर्थ इस स्थान पर 'मोहर की अंगूठी' समझते हैं 3. किसी मन्दिर या महल का चौकोर सहन 4. मुद्रा—अंगूठी 5. सरस्वती 6. भूखण्ड, प्रदेश। सम०—जा द्रौपदी का विशेषण, क्योंकि यह राजा द्रुपद की यज्ञवेदी के मध्य से उत्पन्न हुई थी।

वेदिका [वेदी+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1. यज्ञभूमि या वेदी 3. चबूतरा, उच्चसमतलभूमि (जो प्रायः धर्मकृत्यों के लिये ठीक की गई हो—सप्तपर्णवेदिका—श०१, कु० ३।४४ 3. आसन 4. वेदी, ढेप, टीला, मन्दाकिनीसैकतवेदिकाभिः—कु० १।२९, 'वेदी या रेत के टीले बना कर' 5. आंगन में बीच में बना चौकोर चबूतरा 6. लतामंडप, निकुंज।

वेदिन् (वि०) [विद्+णिनि] 1. ज्ञाता जैसा कि 'कृतवेदिन्' में 2. विवाह करने वाला, (पुं०) 1. जानकार 2. अध्यापक 3. विद्वान् पुरुष 4. ब्राह्मण का विशेषण।

वेदी दे० 'वेदि (स्त्री०)।

वेद्य (वि०) [विद्+ण्यत्] 1. ज्ञात होने के योग्य 2. व्याख्येय या शिक्षणीय 3. विवाहित होने के योग्य।

वेधः [विध्+घञ्] 1. छेद करना, बींधना, छिद्र युक्त करना 2. घायल करना, घाव 3. छिद्र, खुदाई या गर्त 4. (खुदाई की) गहराई 5. समय की माप विशेष।

वेधकः[विध्+ण्वुल्] 1. नरक के एक प्रभाग का नाम 2. कपूर, कम् धान में विद्यमान चावल।

वेधनम् [विध्+ल्युट्] 1. छेदने या बींधने की क्रिया 2. प्रवेशन, छेदन 3. शून्यीकरण, वेधन 4. चुभोना, घायल करना 5. (खुदाई की) गहराई।

वेधनिका [वेधनी+कन्+टाप्, ह्रस्व] एक तेज नोक वाला उपकरण जिससे मणि या सीप आदि में छिद्र किये जाते हैं, बर्मा।

वेधनी [वेधन+ङीप्] 1. हाथी का कान बींधने वाला उपकरण 2. एक तेज नोक का सीप व मणि आदि को बींधने वाला उपकरण, बर्मा।

वेधस् (पुं०) [विधा+असुन्, गुणः] 1. स्रष्टा—मा० १।२१ 2. ब्रह्मा, विधाता तं वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना रघु० १।२९, कु० २।१६, ५।४१ 3. गौण सृष्टिकर्ता (जैसे कि ब्रह्मा से उत्पन्न दक्ष प्रजापति) कु० २।१४ 4. शिव 5. विष्णु 6. सूर्य 7. मदार का पौधा 8. विद्वान् पुरुष।

वेधसम् [वेधस्+अच्] अंगूठे की जड़ के नीचे का हथेली का भाग।

वेधित (भू० क० कृ०) [वेध+इतच्] बींधा हुआ, छिद्रित।

वेन् (भ्वा० उभ० वेनति—ते) दे० वेण्।

वेन्ना दे० 'वेणा'।

वेप् (भ्वा० आ० वेपते, वेपित) कांपना, हिलना, थरथराना, लरजना—कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी,–भग० ११।३५, रघु० ११।६५, **प्र** -, थरथराना, धड़कना, कांपना—कु० ५।२७,७४ ।

वेपथुः [वेप्+अथुच्] थरथरी, कंपकंपी, (स्तनों का) हिलना अद्यापि स्तनवेपथुं जनयति श्वासः प्रमाणाधिकः—श० १।३०, शि० ९।२२, ७३, रघु० १९। २३, कु० ४।१७, ५।८५ ।

वेपनम् [वेप्+ल्युट्] थरथरी, कंपकपी ।

वेमः, वेमन् (पुं०, नपुं०) [वि+मन्, मनिन् वा] करघा, खंड्डी—महासिवेम्नः सहकृत्वरी वहुम्—नै० १।१२, तुरीवेमादिकम् – तर्क० ।

वेरः, -रम् [अज्+रन्, वीभावः] 1. शरीर 2. केसर जाफरान 3. बैंगन ।

वेरटः (पुं०) नीच पुरुष, छोटी जाति का पुरुष, **-टम्** बेर का फल ।

वेल् i (भ्वा० पर० वेलति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. हिलना, इधर उधर घूमना, कांपना ।
ii (चुरा० उभ० वेलयति—ते) समय की गणना करना ।

वेलम् [वेल्+अच्] उद्यान, वाटिका ।

वेला [वेल+टाप्] 1. समय—वेलोपलक्षणार्थमादिष्टोऽस्मि—श० ४ 2. ऋतु, अवसर 3. विश्राम का अन्तराल, अवकाश 4. लहर, प्रवाह, धारा 5. समुद्र तट, समुद्री किनारा वेलानिलाय प्रसृता भुजङ्गाः रघु० १३।१२,१५, १।३०, ८।८०, १७।३७, शि० ३।७९, ९।३८ 6. सीमा, हदबन्दी 7. भाषण 8. बीमारी 9. सहज मृत्यु 10. मसूड़े । सम० **कुलम्** ताम्रलिप्त नामक जिला,—**मूलम्** समुद्र-तट, **वनम्** समुद्रीकिनारे का जंगल ।

वेल्ल् (भ्वा० पर० वेल्लति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. हिलाना, कांपना, इधर-उधर फिरना भामि० १।५५, शि० ७।७२ ।

वेल्लः, वेल्लनम् [वेल्ल्+घञ्, ल्युट् वा] 1. हिलना, गतिशील होना 2. (भूमि पर) लोटना ।

वेल्लहलः [वेल्ल+हवल्+अच्, पृषो०] लम्पट, दुराचारी ।

वेल्लिः (स्त्री०) [वेल्ल्+इन्] लता, बेल तु० 'वल्लि' ।

वेल्लित (भू० क० कृ०) [वेल्ल्+क्त] 1. कंपायमान, थरथराने वाला, हिलाया हुआ 2. टेढ़ा-मेढ़ा, **-तम्** 1. जाना, चलना-फिरना 2. हिलना ।

वेवी (अदा० आ० वेवीते) 1. जाना 2. प्राप्त करना 3. गर्भधारण करना, गर्भवती होना 4. व्याप्त करना 5. डाल देना, फेंकना 6. खाना 7. कामना करना, चाहना (शास्त्रीय साहित्य में विरल प्रयोग) ।

वेशः [विश्+घञ्] 1. प्रवेशद्वार 2. अन्तः प्रवेश, पैठना 3. घर, आवासस्थल 4. वेश्याओं का घर, चकला,—तरुणजनसहायश्चिन्त्यतां वेशवासः – मृच्छ० १।३१ 5. पोशाक, वस्त्र, कपड़े (इस अर्थ में 'वेष' भी लिखा जाता है)—मृगयावेषधारी,—विनीतवेषेण—श० १, कृतवेशे केशवे – गीत० ११ । सम० —**दानम्** सूरजमुखी फूल,—**धारिन्** (वि०) छद्मवेशी, कपटरूपधारी,—**नारी,**—**वनिता** वेश्या—मुद्रा० ३।१०,—**वासः** वेश्याओं का घर, चकला ।

वेशकः [वेश+कन्] घर ।

वेशनम् [विश्+ल्युट्] 1. प्रवेश करना, प्रवेशद्वार 2. घर ।

वेशन्तः [विश्+झच्] 1. छोटा तालाब, पोखर 2. आग ।

वेशरः [वेश+रा+क] खच्चर ।

वेश्मन् (नपुं०) [विश्+मनिन्] घर, निवासस्थान, आवास, भवन, महल—रघु० १४।१५, मेघ० २५, मनु० ४।७३, ९।८५ । सम०—**कर्मन्** (नपुं०) घर बनाना,—**कलिङ्गः** एक प्रकार की चिड़िया,—**नकुलः** छछून्दर,—**भूः** (स्त्री०) वह स्थान जहां घर बनाना है, भवननिर्माण के लिए भूखण्ड ।

वेश्यम् [विश्+ण्यत्, वेशाय हितं वा यत्] वेश्याओं का घर, चकला ।

वेश्या [वेशेन पण्ययोगेन जीवति—वेश्+यत्+टाप्] बाजारू स्त्री, रंडी, गणिका, रखैल मृच्छ० १।३२, मेघ० ३५, याज्ञ० १।१४१ । सम०—**आचार्यः** 1. वह पुरुष जो वेश्याओं का स्वामी हो, उन्हें रखता हो 2. भड़वा 3. लौंडा, गांडू,—**आश्रयः** वेश्याओं का वासस्थल, चकला,—**गमनम्** व्यभिचार, रंडीबाजी, **गृहम्** चकला, **-जनः** रंडी, **पणः** भोग के लिए रंडी को दी जाने वाली मजदूरी ।

वेश्वरः (पुं०) खच्चर ।

वेष दे० 'वेश' ।

वेषणम् [विष्+ल्युट्] अधिकृत वस्तु, स्वामित्व, कब्जा ।

वेष्ट् (भ्वा० आ० वेष्टते) 1. घेरना, अहाता बनाना, घेरा डालना, लपेटना 2. चाबी देना, मरोड़ना 3. वस्त्र पहनना । प्रेर० (वेष्टयति –ते) 1. घेरना 2. घेराबन्दी डालना, **आ** —, तह करना, **परि** - , **सम्**—,परस्पर तह करना, लपेटना, मरोड़ना, उमेठना ।

वेष्टः [वेष्ट्+घञ्] 1. घेरा, घिराव 2. बाड़ा, बाड़ 3. पगड़ी 4. गोंद, राल, रस 5. तारपीन । सम० —**वंशः** एक प्रकार का बांस, **सारः** तारपीन ।

वेष्टकः [वेष्ट्+ण्वुल्] 1. बाड़ा, बाड़ 2. लौकी,—**कम्** 1. पगड़ी 2. चादर, लबादा 3. गोंद, रस 4. तारपीन ।

वेष्टनम् [वेष्ट्+ल्युट्] 1. लपेटना, चारों ओर से घेरना,

घेराबन्दी करना,—अङ्गुलिवेष्टनम्, 1. अंगूठी 2. कुंडलित होना, गोल मरोड़ी लेना,—रघु० ४।३८ 3. लिफ़ाफ़ा, लपेटन 4. ओढ़नी, ढकना, संदूक 5. पगड़ी, त्रिमुकुट —अस्पृष्टोलकवेष्टनौ रघु० १।४२, शिरसा वेष्टनशोभिना—८।१२ 6. बाड़ा, घेर - क्रीडाशैल: कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीय:—मेघ० ७७ 7. तगड़ी, कमरबन्द 8. पट्टी 9. बाहरी कान 10. गुंगुल 11. नृत्य की विशेष मुद्रा ।

वेष्टनकः [वेष्टन+कन्] संभोग के अवसर की विशेष अंगस्थिति ।

वेष्टित (भू० क० कृ०) [वेष्ट्+क्त] 1. घिरा हुआ, घेरा हुआ, चारों ओर से लपेटा हुआ, बन्द किया हुआ 2. लिपटा हुआ, वस्त्रों से सुसज्जित किया हुआ 3. ठहराया हुआ, रोका हुआ, विघ्न डाला हुआ 4. घेराबन्दी किया हुआ ।

वेष्पः, वेष्यः [विषे: प:] जल, पानी ।

वेष्याः दे० 'वेश्या' ।

वेसरः [वेस्+अरन्] खच्चर—शि० १२।१९ ।

वेस (श) वारः [वेस्+वृ+अण्] गर्म मसाला, (जीरा, राई, मिर्च, अदरक आदि के योग से तैयार किया गया मसाला) ।

वेह् (भ्वा० आ० वेहते) दे० 'बेह्' ।

वेहत् (स्त्री०) [विशेषेण हन्ति गर्भम्—वि+हन्+अति] बांझ गौ ।

वेहारः [=विहारः, पृषो०] एक देश का नाम, बिहार ।

वेल्ल् (भ्वा० पर० वेल्लते) जाना, हिलना-जुलना ।

वै (भ्वा० पर० वायति) 1. सूखना, शुष्क होना 2. म्लान, निढाल, अवसन्न ।

वै (अव्य०) [वा+डै] स्वीकृति या निश्चयवाचक अव्यय (निःसन्देह, सचमुच, वस्तुतः) परन्तु केवल पूरक के रूप में प्रयुक्त आपो वै नरसूनवः मनु० १।१०, २।२३१, ९।४९, ११।७७, यह कभी कभी सम्बोधन के रूप में भी प्रयुक्त होता है तथा कभी कभी अनुनय को प्रकट करता है ।

वैंशतिक (वि०) (स्त्री० - की) [विंशतिक+अण्] बीस में मोल लिया हुआ ।

वैकक्षम् [विशेषेण कक्षति व्याप्नोति—अण्] 1. एक माला जो यज्ञोपवीत की भांति एक कंधे के ऊपर से तथा दूसरे कंधे के नीचे से धारण की जाती है 2. उत्तरीय वस्त्र, चोगा, ओढ़नी ।

वैकक्षकम्, वैकक्षिकम् [वैकक्ष+कन्, ठन् वा] यज्ञोपवीत की भांति बायें कन्धे के ऊपर तथा दायें कन्धे के नीचे से पहनी जाने वाली माला ।

वैकटिकः (पुं०) जौहरी ।

वैकर्तनः [विकर्तनस्यापत्यम् - अण्] कर्ण का नाम ।

वैकल्पम् [विकल्प+अण्] 1. ऐच्छिकता 2. संशय, संदिग्धता 3. अनिश्चय, असमंजस ।

वैकल्पिक (वि०) (स्त्री० की) [विकल्प+ठक्] 1. ऐच्छिक 2. संदिग्ध, ससंशय, अनिश्चित, अनिर्णीत।

वैकल्यम् [विकल+ष्यञ्] 1. त्रुटि, कमी, अधूरापन 2. अङ्गभङ्ग, विकलाङ्ग या पंगु होना 3. अक्षमता 4. विक्षोभ, हड़बड़ी, उत्तेजना, 5. अनस्तित्व ।

वैकारिक (वि०) (स्त्री०—की) [विकार+ठक्] 1. विकारविषयक 2. विकारशील 3. विकृत ।

वैकालः [विकाल+अण्] तीसरा पहर, मध्याह्नोत्तर काल, सायंकाल ।

वैकालिक (वि०) (स्त्री०—की) वैकालीन (वि०) [विकाल+ठक्, ख वा] सायंकालसम्बन्धी या सायंकाल के समय घटित होने वाला ।

वैकुण्ठः [विकुण्ठायां मायायां भवः—अण्] 1. विष्णु का विशेषण 2. इन्द्र का विशेषण 3. तुलसी का पौधा, —ठम् 1. विष्णु का स्वर्ग 2. अभ्रक । सम०—चतुर्दशी कार्तिकशुक्ला चौदस,—लोकः विष्णु की दुनिया ।

वैकृत (वि०) (स्त्री०—ती) [विकृत+अण्] 1. परिवर्तित 2. बदला हुआ,—तम् 1. परिवर्तन, अदल-बदल, हेर-फेर 2. अरुचि, जुगुप्सा, घिनौनापन 3. अवस्था या सूरत शक्ल में परिवर्तन, विरूपता आदि— नै० ४।५ 4. अपशकुन, कोई भी अनिष्टसूचक घटना तत्प्रतीपपवनादि वैकृतं प्रेक्ष्य रघु० ११।६२ । सम० विवर्तः दुर्दशा, दयनीय दशा, कष्टग्रस्त—वैकृतविवर्तदारुणः—मा० १।३९ ।

वैकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [विकृति+ठक्] 1. परिवर्तित, संशोधित 2. विकृति सम्बन्धी (सांख्य० में) ।

वैकृत्यम् [विकृत+ष्यञ्] 1. परिवर्तन, अदल-बदल 2. दुःखद स्थिति, दयनीय दशा 3. जुगुप्सा ।

वैक्रान्तम् [विक्रान्त्या दीव्यति—विक्रान्ति+अण्] एक प्रकार का रत्न ।

वैक्लवं, वैक्लव्यम् [विक्लव+अण्, ष्यञ् वा] 1. गड़बड़ी, विक्षोभ, घबराहट 2. हुल्लड़, हलचल 3. कष्ट, दुःख, शोक, रंज श० ४।६, वेणी० ५, मृच्छ० ३ ।

वैखरी [विशेषेण खं रानि—रा+क+अण्+ङीप्] 1. स्पष्ट-उच्चारण, ध्वनि-उत्पादन, दे० कु० २।१७ पर मल्लि० 2. वाक्शक्ति 3. वाणी, भाषण ।

वैखानस (वि०) (स्त्री०—सी) [वैखानसस्य इदम्-अण्] किसी वानप्रस्थ, सन्यासी, या भिक्षु आदि से सम्बद्ध, —वैखानसं किमनया व्रतमाप्रदानाद् व्यापाररोधि मदनस्य निषेवितव्यम् श० १।२७, सः वैरागी, वानप्रस्थ, तीसरे आश्रम में वास करने वाला ब्राह्मण —रघु० १४।२८, भट्टि० ३।४९ ।

वैगुण्यम् [विगुण+ष्यञ्] 1. गुण या विशेषण का अभाव

2. सद्गुणों का अभाव, त्रुटि, दोष, कमी 3. गुणों की भिन्नता, विविधता, विरोधिता 4. घटियापन, तुच्छता 5. अकुशलता ।

वैचक्षण्यम् [विचक्षण+ष्यञ्] कौशल, निपुणता, प्रवीणता ।

वैचित्यम् [विचित+ष्यञ्] शोक, मानसिक विकलता, अफसोस—मा० ३।१ ।

वैचित्र्यम् [विचित्र+ष्यञ्] 1. विविधता, विभिन्नता 2. बहुविधता 3. अचरज 4. विस्मयोत्पादकता जैसा कि 'वाच्यवैचित्र्य' में, काव्य० १० 5. आश्चर्य ।

वैजननम् [विजनन+अण्] गर्भ का अन्तिम मास ।

वैजयन्तः [वैजयन्ती+अण्] 1. इन्द्र का महल 2. इन्द्र का झण्डा 3. ध्वज, पताका 4. घर ।

वैजयन्तिकः [वैजयन्ती+ठक्] झण्डा उठाने वाला ।

वैजयन्तिका [वैजयन्ती+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1. झण्डा, पताका (आलं० से भी)—संचारिणीव देवस्य मकरकेतोर्जगद्विजयवैजयन्तिका काप्यागतवती—मा० १ 2. एक प्रकार की मोतियों की माला ।

वैजयन्ती [वि+जि+झच् = विजयन्त+अण्+ङीप्] 1. झंडा, पताका—स्तनपरिणाहविलासवैजयन्ती—मा० ३।१५ 2. चिह्न 3. माला, हार 4. विष्णु का हार 5. एक शब्दकोश का नाम ।

वैजात्यम् [विजात+ष्यञ्] 1. जाति या प्रकार की भिन्नता 2. जाति या वर्ण की भिन्नता 3. अचरज 4. जातिबहिष्कार 5. बदचलनी, स्वेच्छाचारिता ।

वैजिक (वि०) दे० 'बैजिक' ।

वैज्ञानिक (वि०) (स्त्री० —की) [विज्ञान—ठक्] चतुर, कुशल, प्रवीण ।

वैडाल दे० 'बैडाल' ।

वैणः [वेणु+अण्, उकारस्य लोपः] बांस का कार्य करने वाला ।

वैणव (वि०) (स्त्री०—वी) [वेणु+अण्] 1. बांस से उत्पन्न या बांस का बना हुआ,—वः 1. बांस की छड़ी 2. बांस का कार्य करने वाला, बंसोड़,—वी वंसलोचन, -वम् बांस का फल या बीज ।

वैणविकः [वैणव+ठक्] मुरली बजाने वाला, बांसुरी बजाने वाला ।

वैणविन् (पुं०) [वैणव+इनि] शिव की उपाधि ।

वैणिकः [वीणा+ठक्] वीणा बजाने वाला ।

वैणुकः [वेणुक+अण्] मुरली बजाने वाला, बांसुरी बजाने वाला,—कम् अंकुश दे० 'वेणुक' ।

वैतंसिकः [वितंस+ठक्] मांस विक्रेता ।

वैतण्डिकः [वितण्डा+ठक्] वितंडावादी, व्यर्थ विवाद करने वाला, छिद्रान्वेषी ।

वैतनिक (वि०) (स्त्री०—की) [वेतन+ठक्] वेतन से निर्वाह करने वाला,—कः 1. वेतन लेकर काम करने वाला, श्रमिक 2. वेतन भोगी (कर्मचारी) ।

वैतरणिः,—णी (स्त्री०) [वितरेणन दानेन लंध्यते —वितरण+अण्+ङीप्, पक्षे पृषो० ह्रस्वः] 1. नरक की नदी का नाम 2. कलिङ्ग देश की नदी का नाम ।

वैतस (वि०) (स्त्री० – सी) [वेतस+अण्] 1. बेंत से संबन्ध रखने वाला 2. नरकुल जैसा अर्थात् अपने से अधिक शक्तिशाली शत्रु के सामने घुटने टेक देने वाला —जैसा कि 'वैतसी वृत्तिः' रघु० ४।३५, पंच० ३।१९ ।

वैतान (वि०) (स्त्री०—नी) [वितान+अण्] यज्ञीय, पवित्र, वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु—श० ४।७, —नम् 1. यज्ञीय कृत्य 2. यज्ञीय आहुति ।

वैतानिक (वि०) (स्त्री०—की) [वितान+ठक्] दे० 'वैतान' ।

वैतालिकः [विविधस्तालस्तेन व्यवहरति—ठक्] 1. भाट, चारण 2. जादूगर, बाजीगर, विशेषकर वह जो वेताल का भक्त हो ।

वैत्रक (वि०) (स्त्री० की) [वेत्र+वुञ्] बेंत से युक्त, नरकुल का ।

वैदः [वेद+अण्] बुद्धिमान् मनुष्य, विद्वान् पुरुष ।

वैदग्धम्, वैदग्धी, वैदग्ध्यम् [विदग्ध+अण्=वैदग्ध+ङीप्, विदग्ध+ष्यञ्] 1. कौशल, दक्षता, प्रवीणता, निपुणता—अहो वैदग्ध्यम्—मा० १, प्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिः—वास०, शि० ४।२६ 2. क्रमस्थापन में कौशल, सौन्दर्य—मा० १।३७ 3. बुद्धिमत्ता, स्फूर्ति, चतुराई—रत्न० २ 4. बुद्धि ।

वैदर्भः [विदर्भ+अण्] विदर्भ देश का राजा—र्भी 1. दमयन्ती 2. रुक्मिणी 3. रचना की विशेष शैली, सा० द० में दी गई परिभाषा—माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका । अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वदर्भी रीतिरिष्यते ॥ ६२६, दण्डी ने बड़ी सूक्ष्मता पूर्वक गौड़ी रीति से इसकी विभिन्नता दर्शायी है—दे० काव्या० १।४१—५३ ।

वैदल (वि०) (स्त्री०—ली) [विदलस्य विकारः विदल +अण्] 1. बेंत या टहनियों से बनाया हुआ,—लः एक प्रकार की रोटी 2. कोई भी दाल का अनाज, —लम् 1. भिक्षुओं का कमगहरा भिक्षापात्र 2. बांस या टहनियों की बनी डलिया, या आसन ।

वैदिक (वि०) (स्त्री०—की) [वेदं वेत्त्यधीते वा ठञ्, वेदेषु विहितः वेद+ठक्] 1. वेदों से व्युत्पन्न या वेदों के समनुरूप, वेदविषयक 2. पवित्र, वेदविहित, धर्मात्मा —कु० ५।७३, —कः वेदों में निष्णात ब्राह्मण । सम० —पाशः वेद का अल्पज्ञान रखने वाला, कठज्ञानी, जिसे वेद का अधूरा ज्ञान हो ।

वैदुषी (स्त्री०) **वैदुष्यम्** [विद्वस्+अण्+ङीप्, विद्वस्ष्यञ्] ज्ञान, अधिगम, बुद्धिमत्ता।

वैदूर्य (वि०) (स्त्री०—री,—र्यी) [विदूर+ष्यञ्] विदूर से उत्पन्न या लाया गया,—**र्यम्** वैदूर्य मणि, नीलम —कु० ७।१०, शि० ३।४५।

वैदेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [विदेश+ठञ्] दूसरे देश से संबंध रखने वाला, अन्य देश का, और देशों से लाया हुआ,—**कः** अन्य देश का व्यक्ति, विदेशी।

वैदेश्यम् [विदेश+ष्यञ्] विदेशीपन, विदेशी होना।

वैदेहः [विदेह+अण्] 1. विदेह देश का राजा 2. विदेह का रहने वाला 3. व्यापारी वैश्य 4. ब्राह्मण स्त्री में वैश्य पुरुष से उत्पन्न सन्तान - मनु० १०।११, **हाः** (पुं०, ब० व०) विदेह देश के राष्ट्रजन,—**ही** सीता —वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे—रघु० १४।३३ (यहाँ 'वैदेही' शब्द का अन्तिम स्वर ह्रस्व कर दिया गया है)।

वैदेहकः [वैदेह+कन्] 1. व्यापारी 2.=वैदेह (४)।

वैदेहिकः [विदेह+ठक्] सौदागर।

वैद्य (वि०) (स्त्री०—द्यी) [विद+यत्] 1. वेद सम्बन्धी, आध्यात्मिक 2. आयुर्वेद सम्बन्धी, आयुर्वेद विषयक, —**द्यः** [विद्या अस्ति अस्य —विद्या+अण्] 1. विद्वान् पुरुष, विद्यावान्, पण्डित 2. आयुर्वेदाचार्य, चिकित्सक —वैद्ययत्नपरिभाविनं गदं न प्रदीप इव वायुमत्यगात् — रघु० १९।५३, वैद्यानामातुरः श्रेयान्—सुभा० 2. वैद्य जाति का पुरुष, जो वर्णसङ्कर समझा जाता है (वैश्य स्त्री में ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान)। सम० —**क्रिया** वैद्य का व्यवसाय, चिकित्सक के रूप में अभ्यास, —**नाथः** 1. धन्वन्तरि 2. शिव।

वैद्यकः [वैद्य+कन्] वैद्य, चिकित्सक,—**कम्** चिकित्सा-विज्ञान।

वैद्युत (वि०) (स्त्री०—ती) [विद्युत+अण्] बिजली से सम्बद्ध या उत्पन्न, बिजली—वृक्षस्य वैद्युत इवाग्नि-रुपस्थितोऽयम्—विक्रम० ४।१६, उत्तर० ५।१३। सम० —**अग्निः**, **अनलः** **वह्निः** बिजली की आग।

वैध (वि०) (स्त्री०—धी), **वैधिक** (वि०) (स्त्री०—की) [विधि+अण्, ठक् वा] 1. नियम के अनुरूप, व्यवस्थित, निश्चित, कर्मकाण्डविषयक 2. क़ानूनी, विधि या क़ानून सम्मत।

वैधर्म्यम् [विधर्म+ष्यञ्] 1. असमानता, भिन्नता 2. लक्षण गुणों का अन्तर 3. कर्तव्य या आभार का अन्तर 4. वैपरीत्य 5. अवैधता, अनौचित्य, अन्याय 6. पाखण्ड।

वैधवेयः [विधवा+ढक्] विधवा का पुत्र।

वैधव्यम् [विधवा+ष्यञ्] विधवापन, कु० ४।१, मालवि० ५।

वैधुर्यम् [विधुर+ष्यञ्] 1. शोकावस्था 2. विक्षोभ थरथरी, सिहरन।

वैधेय (वि०) (स्त्री०—यी) [विधि+ढक्] 1. नियमानुकूल, विहित 2. मूर्ख, बुद्धू, जड, —**यः** मूढ, जडमति—प्रल-पत्येष वैधेयः—श० २, विक्रम० २।

वैनतेयः [विनता+ढक्] 1. गरुड,—वैनतेय इव विनता-नन्दनः—का०, रघु० ११।५९, १६।७७, भग० १०।३० 2. अरुण।

वैनयिक (वि०) (स्त्री०—की) [विनय+ठक्] 1. शिष्टता, सौजन्य, सदाचरण या अनुशासनसम्बन्धी 2. शिष्टा-चार का व्यवहार करने वाला, —**कः** सामरिक रथ।

वैनायक (वि०) (स्त्री०—की) [विनायक+अण्] गणेशसम्बन्धी—मा० १।१।

वैनायिकः [विनायं खण्डनमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः विनाय +ठक्] 1. बौद्ध संप्रदाय के दर्शन-सिद्धान्त 2. उस सम्प्रदाय का अनुयायी।

वैनाशिकः [विनाश+ठक्] 1. दास 2. मकड़ी 3. ज्योतिषी 4. बौद्धों के सिद्धान्त 5. उन सिद्धान्तों का अनुयायी।

वैनीतक दे० 'विनीतक'।

वैपरीत्यम् [विपरीत+ष्यञ्] 1. विरोधिता, विरोध 2. असंगति।

वैपुल्यम् [विपुल+ष्यञ्] 1. विस्तार, विशालता 2. पुष्कलता, बहुतायत।

वैफल्यम् [विफल+ ष्यञ्] निरर्थकता, विफलता।

वैबोधिकः [विबोध+ठक्] 1. चौकीदार 2. विशेषकर वह जो रात में सोने वालों को, पहरा देते समय, समय की घोषणा करके जगाता रहता है कि० ९।७४।

वैभवम् [विभु+अण्] 1. बड़प्पन, यश, महिमा, चमक-दमक, ठाट-बाट, दौलत 2. शक्ति, ताकत कि० १२।३।

वैभाषिक (वि०) (स्त्री० की) [विभाषा+ठक्] ऐच्छिक, वैकल्पिक।

वैभ्रम् (नपुं०) विष्णु का वैकुण्ठ।

वैभ्राजम् [विभ्राज्+अण्] स्वर्गीय उपवन या उद्यान।

वैमत्यम् [विमत+ष्यञ्] 1. मतभेद, अनबन 2. नाप-संदगी, अरुचि।

वैमनस्यम् [विमनस्+ष्यञ्] 1. मन का उचटना, मानसिक अवसाद, शोक, उदासी—श० ६ 2. रोग।

वैमात्रः, **वैमात्रेयः** [विमातृ+अण्, ढक् वा] सौतेली माँ का बेटा।

वैमात्रा, **वैमात्री**, **वैमात्रेयी** [वैमात्र+टाप्, ङीप् वा, वैमात्रेय+ङीप्] सौतेली मां की बेटी।

वैमानिक (वि०) (स्त्री० की) [विमान+ठक्] देव-यान में आसीन,—**कः** गगनविहारी।

वैमुख्यम् [विमुख+ष्यञ्] 1. मुंह मोड़ना, पलायन, प्रत्यावर्तन 2. अरुचि, जुगुप्सा।

वैमेयः [विमय+अण्] बदला, विनिमय।

वैयग्रम्, वैयग्र्यम् [व्यग्र+अण्, ष्यञ् वा] 1. व्यग्रता, बेचैनी, घबराहट 2. अनन्य भक्ति, तल्लीनता महावी० ७।३८।

वैयर्थ्यम् [व्यर्थ+ष्यञ्] व्यर्थता, अनुत्पादकता।

वैयधिकरण्यम् [व्यधिकरण+ष्यञ्] भिन्न स्थानों में होने का भाव, दे० 'व्यधिकरण'।

वैयाकरण (वि०) (स्त्री०—णी) [व्याकरणमधीते वेत्ति वा—अण्] व्याकरणविषयक, व्याकरणसंबन्धी,—णः व्याकरण जानने वाला वैयाकरणकिरातादपशब्द-मृगाः क्व यातु संत्रस्ताः—सुभा०। सम०—पाशः जिसे व्याकरण का अच्छा ज्ञान न हो,—भार्यः जिसकी पत्नी व्याकरण को जानने वाली हो।

वैयाघ्र (वि०) (स्त्री० घ्री) [व्याघ्र+अञ्] 1. चीते की तरह का 2. चीते की खाल से ढका हुआ—घ्रः चीते की खाल से ढकी हुई गाड़ी।

वैयात्यम् [वियात+ष्यञ्] 1. साहस, अविनय, निर्लज्जता—अन्यदाभूषणं पुंसां क्षमा लज्जेव योषिताम्, पराक्रमः परिभवे वैयात्यं सुरतेष्विव—शि० २।४४ 2. उजड्डपन, अक्खड़पन।

वैयासिकः [व्यासस्य अपत्यम्, व्यास+इञ्, अकङ् आदेशः, ऐकारात् पूर्वं ऐच्] व्यास का पुत्र।

वैरम् [वीरस्य भावः—अण्] 1. विरोध, शत्रुता, दुश्मनी वैमनस्य, द्रोह, प्रतिपक्ष, कलह—दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशनम्—सुभा०, अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्—श० ५।२३, 'वैरभाव में परिणत हो जाता है,' विधाय वैरं सामर्षे नरोऽरौ य उदासते, प्रक्षिप्योदर्चिषं कक्षे शेरते तेऽभिमारुतम् शि० २। ४२ 2. घृणा, प्रतिहिंसा 3. शूरवीरता, पराक्रम। सम०—अनुबन्धः शत्रुता का आरंभ,—अनुबन्धिन् (वि०) शत्रुता की ओर ले जाने वाला,—आतङ्कः अर्जुनवृक्ष,—आनृण्यम्,—उद्धारः,—निर्यातनम्,—प्रतिक्रिया,—प्रतीकारः—यातना,—शुद्धिः (स्त्री०),—साधनम् शत्रुता का बदला, बदला देना, प्रतिहिंसा,—करः, कारः, कृत् (पुं०) शत्रु,—भावः शत्रुतापूर्ण रवैया—रक्षिन् (वि०) शत्रुता का निवारण करने वाला।

वैरक्तम्,—क्त्यम् [विरक्त+अण्, ष्यञ् वा] 1. सांसारिक आसक्तियों के प्रति उदासीनता, इच्छा का अभाव 2. अप्रसन्नता, नापसन्दगी, अरुचि।

वैरङ्गिकः [विरङ्गं विरागं नित्यमर्हति ठक्] जिसने अपनी सब इच्छाओं एवं वासनाओं का दमन कर दिया है, संन्यासी, वैरागी।

वैरल्यम् [विरल+ष्यञ्] 1. न्यूनता, विरलता 2. ढीलापन 3. मृदुता।

वैरागम् दे० 'वैराग्यम्'।

वैरागिकः, वैरागिन् (पुं०) [विराग+ठक्, विराग+अण्+इनि] वह संन्यासी जिसने अपनी सब इच्छाओं और वासनाओं का दमन कर लिया है।

वैराग्यम् [विरागस्य भावः—ष्यञ्] 1. सांसारिक वासनाओं व इच्छाओं का अभाव, सांसारिक बंधनों से उदासीनता, विरक्ति भग० ६।३५, १३।८ 2. असंतृप्ति, अप्रसन्नता, असंतोष—कामं प्रकृतिवैराग्यं सद्यः शमयितुं क्षमः—रघु० १७।५५ 3. अरुचि, नापसन्दगी 4. रंज, शोक, अफ़सोस।

वैराज (वि०) (स्त्री०—जी) [विराज्+अण्] ब्रह्मा-संबंधी—उत्तर० २।

वैराट (वि०) (स्त्री०—टी) [विराट+अण्] विराट संबंधी,—टः एक प्रकार का मिट्टी का कीड़ा, इन्द्रगोप।

वैरिन् (वि०) [वैर+इनि] विरोधी, शत्रुतापूर्ण (पुं०) शत्रु,—शौर्यं वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलम्—भर्तृ० २।३९, भग० ३।३७, रघु० १२।१०४।

वैरूप्यम् [विरूप+ष्यञ्] 1. विरूपता, कुरूपता रघु० १२।४० रूपों की विभिन्नता या वैविध्य।

वैरोचनः, वैरोचनिः, वैरोचिः [विरोचनस्यापत्यम् अण्, इञ् वा, विरोच+घञ्] विरोचन के पुत्र बलि राक्षस के विशेषण।

वैलक्षण्यम् [विलक्षणस्य भावः—ष्यञ्] 1. आश्चर्य 2. वैपरीत्य, विरोध 3. अन्तर, भेद।

वैलक्ष्यम् [विलक्ष+ष्यञ्] 1. उलझन, गड़बड़ी 2. अस्वाभाविकता, कृत्रिमता—वैलक्ष्यस्मितम् 'कृत्रिम या बलपूर्वक की गई मुस्कान 3. लज्जा 4. वैपरीत्य, व्युत्क्रम।

वैलोम्यम् [विलोम+ष्यञ्] विरोध, व्युत्क्रम, वैपरीत्य।

वैल्व (वि०) दे० 'बैल्व'।

वैवधिकः [विवध+ठक्] 1. फेरी वाला, आवाज लगा कर बेचने वाला 2. (बहंगी में रख कर) भार ढोने वाला।

वैवर्ण्यम् [विवर्णस्य भावः—ष्यञ्] 1. रंग या चेहरे की आभा का परिवर्तन, फीकापन, निष्प्रभता 2. विभिन्नता, विविधता 3. जाति से विचलना।

वैवस्वतः [विवस्वतोऽपत्यम् अण्—1. सातवां मनु०, जो वर्तमान युग का अधिष्ठाता है, मनु के नीचे दे०—वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम् रघु० १।११, उत्तर० ६।१८ 2. यम—रघु० १५।४५ 3. शनिग्रह,—तम् विवस्वान् के पुत्र सातवें मनु, द्वारा अधिष्ठित वर्तमान युग या मन्वन्तर।

वैवस्वती [वैवस्वत+ङीप्] 1. दक्षिण दिशा 2. यमुना नदी।

वैवाहिक (वि०) (स्त्री०--की) [विवाह+ठञ्] विवाहसंबंधी, विवाहविषयक, विवाह के कारण होने वाला—कु० ७।२,—कः,—कम् विवाह, शादी,—कः पुत्र वधू का श्वसुर, या दामाद का श्वसुर।

वैशद्यम् [विशद+ष्यञ्] 1. स्वच्छता, निर्मलता (आलं०) 2. स्पष्टता 3. सफ़ेदी 4. शान्ति, (मन की) स्वस्थता।

वैशसम् [विशस+अण्] 1. विनाश, हत्या, वध—कु० ४।३१, उत्तर० ४।२४, ६।४० 2. दुःख, सन्ताप, पीड़ा, कष्ट, कठिनाई—उपरोधवैशसम्—मुद्रा० २, मा० ९।३५।

वैशस्त्रम् [विशस्त्र+अण्] 1. असुरक्षा 2. राजकीय शासन।

वैशाखः [विशाख+अण्] 1. चान्द्रवर्ष का दूसरा महीना (अप्रैल-मई) 2. रई का डण्डा--द्रुततरकरदक्षाः क्षिप्तवैशाखशैले···कलशिमुदधिगुर्वीं वल्लवा लोडयन्ति—शि० ११।८,—खम् बाण चलाते समय की एक मुद्रा, दे० 'विशाख'—खी वैशाख मास की पूर्णिमा।

वैशिक (वि०) [वेशेन जीवति—वेश+ठक्] वेश्याओं द्वारा अभ्यस्त—वैशिकीं कलाम्—मृच्छ० १।३, वेश्याओं द्वारा अभ्यस्त कलाएँ,—कः जो वेश्याओं के साहचर्य में रहता है, श्रृङ्गार-साहित्य में पाया जाने वाला एक नायक,—कम् वेश्यावृत्ति, वेश्याओं की कलाएँ।

वैशिष्ट्यम् [विशिष्ट+ष्यञ्] 1. भेद, अन्तर 2. विशिष्टता, विशेषता, अनूठापन—वैशिष्ट्यादन्यमर्थं या बोधयेत्सार्थसम्भवा—सा० द० २७ 3. श्रेष्ठता—सा० द० ७८ 4. विशिष्टलक्षणसम्पन्नता।

वैशेषिक (वि०) (स्त्री०—की) [विशेषं पदार्थभेदमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः—विशेष+ठक्] 1. विशेषता युक्त 2. वैशेषिक दर्शन के सिद्धान्तों से संबंध रखने वाला,—कम् छः हिन्दूदर्शनशास्त्रों में से एक दर्शन जिसके प्रणेता कणाद थे, गौतम के न्यायदर्शन से इसकी भिन्नता इस बात में है कि इसमें सोलह के बजाय केवल सात तत्त्वों का विवेचन है तथा 'विशेष' पर विशेष बल दिया गया है।

वैशेष्यम् [विशेष+ष्यञ्] श्रेष्ठता, प्रमुखता, सर्वोत्तमता।

वैश्यः [विश+ष्यञ्] तृतीय वर्ण का पुरुष, इसका व्यवसाय व्यापार और कृषि है—विशत्याशु पशुभ्यश्च कृष्यादानरुचिः शुचि, वेदाध्ययनसम्पन्नः स वैश्य इति संज्ञितः पद्म०। सम० - कर्मन् (नपुं०) —वृत्तिः (स्त्री०) वैश्य का व्यवसाय या पेशा, व्यापार, खेती आदि।

वैश्रवणः [विश्रवणस्यापत्यम्—अण्] 1. धन का स्वामी कुबेर,—विभाति यस्यां ललितालकायां मनोहरा वैश्रवणस्य लक्ष्मीः—भामि० २।१० 2. रावण का नाम। सम०—आलयः,—आवासः 1. कुबेर का आवासस्थल 2. बड़ का वृक्ष,—उदयः बड़ का पेड़।

वैश्वदेव (वि०) (स्त्री०—वी) [विश्वदेव+अण्] विश्वेदेवों से सम्बन्ध रखने वाला,—वम् 1. विश्वेदेवों को प्रस्तुत किया गया उपहार 2. सभी देवताओं को भेंट (भोजन करने से पूर्व विश्वदेव यज्ञ में आहुति देकर)।

वैश्वानरः [विश्वानर+अण्] 1. अग्नि का विशेषण,—त्वत्तः खाण्डवरङ्गताण्डवनटो दूरेऽस्तु वैश्वानरः—भामि० १।५७ 2. जठराग्नि,—अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् (वेदान्त०) 3. परमात्मा।

वैश्वासिक (वि०) (स्त्री०—की) [विश्वास+ठक्] विश्वसनीय, गोपनीय।

वैषम्यम् [विषम+ष्यञ्] 1. असमता 2. खुरदरापना, कठोरता 3. असमानता 4. अन्याय 5. कठिनाई, विपत्ति, संकट 6. एकाकीपन।

वैषयिक (वि०) (स्त्री०—की) [विषय+ठक्] 1. किसी पदार्थ-सम्बन्धी 2. विषयों से सम्बन्ध रखने वाला, वासनात्मक, शारीरिक,—कः कामी, लम्पट।

वैष्टुतम् [विष्टुत्या निर्वृत्तम्—विष्टुति+अण्] भस्मीकृत आहुतियों की राख।

वैष्टः [विश+ष्ट्रन्, वृद्धि] 1. अन्तरिक्ष, आकाश 2. हवा, वायु 3. लोक, विश्व का एक प्रभाग।

वैष्णव (वि०) (स्त्री०—वी) [विष्णु+अण्] 1. विष्णु सम्बन्धी, रघु० ११।८५ 2. विष्णु की पूजा करने वाला,—वः तीन महत्त्वपूर्ण आधुनिक हिन्दू-संप्रदायों में से एक, दूसरे दो हैं शैव और शाक्त,—वम् भस्मीकृत आहुतियों की राख। सम० पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण।

वैसारिणः [विशेषेण सरति विसारी मत्स्यः स एवं-विसारिन्+अण्] मछली।

वैहायस (वि०) (स्त्री०-सी) [विहायस्+अण्] हवा में विद्यमान, हवाई।

वैहार्य (वि०) [विशेषेण ह्रियते—वि+हृ+ण्यत्+अण्] जिससे हंसी दिल्लगी की जाय, जिसे उपहास का विषय बनाया जाय (जैसे पत्नी का भाई, या ससुराल का कोई रिश्तेदार)।

वैहासिकः [विहासं करोति-विहास+ठक्] हंसोकड़ा, विदूषक।

वोङ्कः [वा+उड्] 1. एक प्रकार का सांप 2. एक तरह की मछली।

वोड्री [वोड्+ङीष्] पण का चौथा भाग।

वोढृ (पुं०) [वह्+तृच्] 1. ढोने वाला, कुली 2. नेता

3. पति 4. साँड़ 5. रथवान् 6. खींचने वाला घोड़ा।

वोंटः (पुं०) डंठल, वृन्त।

वोद (वि०) [अवसिक्तमुदकं यत्र-प्रा० ब०, उदकस्य उदादेशः, भागुरिमते अकार लोपः—] तर, गीला, आर्द्र।

वोदालः [वोदः आर्द्रः सन् अलति —वोद+अल्+अच्] जर्मन-मछली।

वोर (ल) कः [अवनतं लेखन काले उरो यस्य—प्रा० ब०, कप्, अवस्य अकारलोपः, पृषो० सलोपः, पक्षे रलयोरभेदः] लिपिकार, लेखक।

वोरटः [वो इति रटन्ति भृङ्गा यत्र-वो+रट्+क] कुंद का एक भेद।

वोलः [वुल्+अच्] गुग्गुल, रसगंध।

वोल्लाहः (पुं०) एक प्रकार का घोड़ा।

वौद्ध (वि०) दे० 'बौद्ध'।

वौषट् (अव्य०) [उह्यतेऽनेन हविः —वह्+डौषट्) पितरों या देवों को आहुति देते समय प्रयुक्त किया जाने वाला उद्गार या सांकेतिक शब्द।

व्यंशकः [विशिष्टः अंशो यस्य-प्रा० ब०, कप्] पहाड़।

व्यंशुकः (वि०) [विगतम् अंशुकं यस्य—प्रा० ब०] वस्त्रहीन, विवस्त्र, नंगा—कि० ९।२४।

व्यंसकः [वि+अंस्+ण्वुल्] धूर्त, ठग, जैसा कि 'मयूर व्यंसक' 'बंचन मोर'—शठमयूर'।

व्यंसनम् [वि+अंस्+ल्युट्] ठगना, धोखा देना।

व्यक्त (भू० क० कृ०) [वि+अञ्ज+क्त] 1. प्रकटीकृत, प्रदर्शित 2. विकसित, रचित—कु० २।११ 3. स्पष्ट, प्रकट, साफ, सरल, भिन्न, विशद रूप से विद्यमान 4. विशिष्ट, विदित, विख्यात 5. अकेला मनुष्य 6. बुद्धिमान्, विद्वान्,—क्तम् (अव्य०) स्पष्ट, स्पष्ट रूप से, साफ़तौर पर, निश्चित रूप से। सम० —गणितम् अंकगणित, - दृष्टार्थः वह साथी जिसने घटना अपनी आँखों से देखी है, गवाह,—राशिः ज्ञात अंक, - रूपः विष्णु का विशेषण,—विक्रम (वि०) शक्ति प्रदर्शित करने वाला

व्यक्तिः (स्त्री०) [वि+अञ्ज्+क्तिन्] 1. प्रकटीकरण, दृश्यमानता, विशद प्रत्यक्षज्ञान,—राज्ञः समक्षमेवाघरोत्तरव्यक्तिर्भविष्यति—मालवि० 1. स्नेहव्यक्तिः—मेघ० १२ 2. दृश्यमान सूरत, स्पष्टता, विशदता - श० ७।८ 3. भेद, विवेचन,—तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः—रघु० १।१० 4. वास्तविक रूप या प्रकृति, सच्चरित्र,—न हि ते भगवान् व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः —भग० १०।१४ 5. वैयक्तिकता (विप० जाति) भग० ८।१८ 6. अकेला मनुष्य, पुरुष 7. (व्या० में) लिंग 8. विभक्ति में प्रयुक्त प्रत्यय।

व्यग्र (वि०) [विरुद्धम् अगति --वि+अग्+रक्] 1. व्याकुल, विस्मित, उचाट 2. आतङ्कित, भयभीत 3. किसी कार्य में साभिप्राय व्यस्त (अधि० या करण० के साथ अथवा समास में)—रघु० १७।२७, महावी० १।१३, ४।२८, कु० ७।२, उत्तर० १।२३, भामि० १।१२३, शि० २।७९।

व्यङ्ग (वि०) [विगतं वा अङ्गं यस्य - प्रा० ब०] 1. देहहीन 2. अङ्गहीन, विरूप, विकलाङ्ग, अपाहज, लुञ्जा,—गः 1. लुञ्जा 2. मेंढक 3. गाल पर पड़े काले धब्बे।

व्यङ्गुलम् (नपुं०) लम्बाई का अत्यन्त छोटा माप, अंगुल का ६० वां अंश।

व्यङ्ग्य (वि०) [वि+अञ्ज्+ण्यत्] 1. व्यञ्जना शक्ति द्वारा ध्वनित, परोक्षसङ्केत द्वारा सूचित 2. ध्वनित (अर्थ),—ग्यम् उपलक्षित अर्थ, व्यङ्ग्योक्ति, परोक्ष सङ्केत (विप० वाच्य 'मुख्यार्थ' और लक्ष्य 'गौण या सङ्केतित अर्थ')—इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः—काव्य० १।

व्यच् (तुदा० पर० विचति, कर्मवा० विच्यते) ठगना, धोखा देना, चाल चलना।

व्यजः [वि+अज्+घञ्] पंखा।

व्यजनम् [वि+अज्+ल्युट्] पंखा,— निवतिव्यजनम्—हि० २।१६५, रघु० ८।४०, १०।५२ तु० 'बालव्यजन'।

व्यञ्जक (वि०) (स्त्री० - जिका) [वि+अञ्ज्+ण्वुल्] 1. स्पष्ट करने वाला, सङ्केतक, बतलाने वाला, प्रकट करने वाला 2. अर्थ को उपलक्षित या ध्वनित करने वाला (शब्द), (विप० वाचक और लाक्षणिक), —कः 1. नाटकीय हावभाव, आन्तरिक भावों को उपयुक्त हावभाव द्वारा प्रकट करने वाला बाह्य सङ्केत 2. सङ्केत, प्रतीक।

व्यञ्जनम् [वि+अञ्ज्+ल्युट्] 1. स्पष्ट करना, सङ्केत करना, प्रकट करना 2. चिह्न, निशान, सङ्केत 3. स्मारक मा० ९ 4. छद्मवेश, परिधान—धि० २।५६, तपस्विव्यञ्जनोपेताः आदि 5. व्यञ्जन अक्षर 6. लिङ्गद्योतक चिह्न अर्थात् स्त्री या पुरुष का परिचायक अङ्ग 7. अधिकार-चिह्न, बिल्ला 8. वयस्कता का चिह्न 9. दाढ़ी 10. अङ्ग, सदस्य 11. मिर्च मसाला, चटनी, सिझाई हुई वस्तु—नै० १६।१०४ 12. तीनों शब्दशक्तियों में अन्तिम जिससे अर्थ उपलक्षित या ध्वनित होता है, दे० अञ्जन, ना (8) (इस अर्थ में यह 'व्यञ्जना' भी लिखा जाता है)। सम० उदय (वि०) वह जिसके पश्चात् व्यञ्जन अक्षर आता हो, सन्धिः व्यञ्जन वर्णों का संयोग या संश्लेष।

व्यञ्जना दे० ऊ० 'व्यञ्जन' (12)।

व्यञ्जित (भू० क० कृ०) [वि+अञ्ज्+क्त] 1. साफ किया गया, प्रकट किया गया, सङ्केत किया गया

2. चिह्नित, भिन्न, चित्रित 3. सुझाव दिया गया, ध्वनित ।

व्यडम्बकः व्यडम्बनः [डम्ब्+ण्वुल्, ल्युट् वा, विशेषेण न डम्बकः] अरण्ड का पेड़ ।

व्यतिकरः [वि+अति+कृ+अप्] 1. मिश्रण, अन्तः मिश्रण, इकट्ठा मिला देना—तीर्थे तोयव्यतिकरभवे जह्नुकन्यासरय्वोः—रघु० ८।९५, व्यतिकर इव भीमस्तामसो वैद्युतश्च—उत्तर० ५।१२, मा० ९।५२ 2. सम्पर्क, मिलाप, सम्मिलन—मालवि० १।४, शि० ४।५३, ७।२८ 3. रगड़ना कु० ५।८५ 5. घटना, सम्भूति, वृत्तान्त, वस्तु, मामला—एवंविधे व्यतिकरे —'ऐसी बात होने पर' 6. अवसर 7. मुसीबत, संकट 8. पारस्परिक सम्बन्ध, पारस्परिकता 9. विनिमय, अदलाबदली ।

व्यतिकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+अति+कृ+क्त] 1. मिला हुआ, मिश्रित 2. संयुक्त ।

व्यतिक्रमः [वि+अति+क्रम्+घञ्] 1. अतिक्रमण, विचलन, भटकना 2. उल्लंघन, भंग, अननुष्ठान —यथा 'संविद् व्यतिक्रमः'—रघु० १।७९ 3. अवहेलना, उपेक्षा, भूल 4. वैपरीत्य, उलट, व्यत्यास 5. पाप, दुर्व्यसन, जुर्म 6. आपत्काल, दुर्भाग्य ।

व्यतिक्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+क्रम्+क्त] 1. पार किया गया, अतिक्रमण किया गया, उल्लंघन किया गया, उपेक्षित 2. औंधा, विपर्यस्त 3. बीता हुआ, गुजरा हुआ (समय) ।

व्यतिरिक्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+रिच्+क्त] 1. वियुक्त, भिन्न अव्यतिरिक्तेयमस्मच्छरीरात् —का०, कु० १।३१, ५।२२ 2. आगे बढ़ने वाला, सर्वोत्कृष्ट होने वाला, आगे निकल जाने वाला 3. प्रत्याहृत, रोका हुआ 4. अलगाया हुआ ।

व्यतिरेकः [वि+अति+रिच्+घञ्] 1. भेद, अन्तर 2. वियोग 3. निष्कासन, अपवर्जन 4. श्रेष्ठता, आगे बढ़ जाना, आगे निकल जाना 5. वैषम्य, असमानता 6. (तर्क० में) अनन्वय (विप० अन्वय) उदा० 'यत्र वह्निर्नास्ति तत्र धूमो नास्ति' यह व्यतिरेक व्याप्ति का उदाहरण है 7. (अलं० में) एक अर्थालंकार जिसमें किन्हीं विशेष दशाओं में उपमान की अपेक्षा उपमेय को श्रेष्ठतर बताया जाता है—उपमानाद्यदन्यस्य व्यतिरेकः स एव सः—काव्य० १० ।

व्यतिरेकिन् (वि०) [व्यतिरेक+इनि] 1. भिन्न 2. आगे बढ़ जाने वाला; आगे निकल जाने वाला 3. बाहर निकालने वाला, अपवर्जन करने वाला 4. अभाव या अनस्तित्व दर्शाने वाला जैसा कि 'व्यतिरेकि लिङ्गम्' में ।

व्यतिषक्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+सञ्ज्+क्त] 1. आपस में मिला हुआ, पारस्परिक संबंधयुक्त, शृंखलाबद्ध या एकत्र जुड़ा हुआ 2. अन्तः मिश्रित 3. अन्तर्जातीय विवाह करने वाला ।

व्यतिषंगः [वि+अति+सञ्ज्+घञ्] 1. पारस्परिक संबन्ध, अन्योन्यसम्बन्ध 2. अन्तः मिश्रण 3. संयोग, या मिलाप ।

व्यति (ती) हारः [वि+अति+हृ+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य इकारस्य दीर्घः] 1. अदल-बदल, विनिमय 2. पारस्परिकता, अन्तः परिवर्तन—रघु० १२।९३ ।

व्यतीत (भू० क० कृ०) [वि+अति+इ+क्त] 1. गुजरा हुआ, गया हुआ, बीता हुआ, पार किया हुआ—रघु० १५।१४ 2. मृत 3. छोड़ा हुआ, परित्यक्त, विसर्जित 4. अवज्ञात ।

व्यतीपातः [वि+अति+पत्+घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. समूचा प्रयाण, सम्पूर्णविचलन 2. भारी उत्पात, भारी संकट को सूचित करने वाला अपशकुन 3. अनादर, तिरस्कार ।

व्यत्ययः [वि+अति+इ+अच्] 1. पार करना 2. विरोध, वैपरीत्य 3. व्यत्यस्त क्रम, व्युत्क्रान्ति 4. अन्तःपरिवर्तन, रूपान्तरण 5. अवरोध, अड़चन ।

व्यत्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+अति+अस्+क्त] 1. व्युत्क्रांत, विपर्यस्त 2. विपरीत, विरोधी 3. असंगत —व्यत्यस्तं लपति—भामि० २।८४ 4. विरेखित, इस प्रकार रक्खी हुई (दो वस्तुएँ) जिसमें एक दूसरी को काटती हो—व्यत्यस्त पादः, व्यत्यस्त भुजः आदि ।

व्यत्यासः [वि+अति+अस्+घञ्] 1. व्युत्क्रांत स्थिति या क्रम 2. विरोध, वैपरीत्य ।

व्यथ् (भ्वा० आ० व्यथते, व्यथित) 1. शोकान्वित होना, पीडित होना, कष्टग्रस्त होना, विक्षुब्ध या अशांत होना—विश्वंभराऽपि नाम व्यथते इति जितमपत्यस्नेहेन—उत्तर० ७, न विव्यथे तस्य मनः कि० १।२, २४ 2. आन्दोलित होना, दोलायमान होना—कि० ५।११ 3. कांपना 4. भयभीत होना 5. सूखना, शुष्क होना, प्रेर० (व्यथयति—ते) पीडा देना, कष्ट देना, नाराज करना, दुःखी करना—उत्तर० १।२८, प्र अत्यन्त क्रुद्ध होना—भग० ११।२० ।

व्यथक (वि०) (स्त्री०—थिका) [व्यथ्+णिच्+ण्वुल्] पीडाजनक, दुःखद, कष्टकर—कि० २।४ ।

व्यथनम् [व्यथ्+ल्युट्] पीडा देना, सताना ।

व्यथा [व्यथ्+अङ्+टाप्] 1. पीडा, वेदना, आधि—तां च व्यथां प्रसवकालकृतामवाप्य—उत्तर० ४।२३, १।१२ 2. भय, आतंक, चिन्ता—स्वन्तमित्यलघशलस तद्व्यथाम्—रघु० ११।६२ 3. विक्षोभ, अशान्ति 4. रोग ।

व्यथित (भू० क० कृ०) [व्यथ्+क्त] 1. कष्टग्रस्त, दुःखी, पीडित 2. आतङ्कित 3. विक्षुब्ध, अशान्त, बेचैन।

व्यध् (दिवा० पर० विध्यति, विद्ध) 1. बींधना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना, छुरा भोंकना, मार डालना —अक्षितारासु विव्याध द्विपतः स तनुत्रिणः शि० १९।९९, विद्धमात्रः—रघु० ५।५१, ९।६०, १४।७०, भट्टि० ५।५२, ९।६६, १५।६९ 2. सूराख करना, छिद्र करना, आरपार बींधना 3. खोदना, गड्ढा करना, अनु—, 1. बींधना, चोट पहुँचाना, घायल करना 2. गूंथना, घेरना 3. जड़ना, जटित करना—दे० अनुविद्ध, अप—, 1. फेंकना, डालना, उछालना —महावी० २।२३, रघु० १९।४४ 2. बींधना—हृदयमशरणं मे पक्ष्मलाक्ष्याः कटाक्षैरपहृतमपविद्धं पीतमुन्मूलितं च —मा० १।२८ 3. त्यागना, परित्यक्त करना, आ—, 1. बींधना 2. फेंकना, डालना, दे० आविद्ध, परि—, सम्—, बींधना, घायल करना।

व्यधः [व्यध्+अच्] 1. बींधना, टुकड़े टुकड़े करना, प्रहार करना—शि० ७।२४ 2. आघात करना, घायल करना, प्रहार 3. छिद्र करना।

व्यधिकरणम् [वि+अधि+कृ+ल्युट्] भिन्न आधार या स्तर पर जीवित रहना (जैसा कि 'व्यधिकरण बहुव्रीहि' में, अर्थात् वह बहुव्रीहि समास जहाँ पहला पद दूसरे पद से नितान्त भिन्न कारक का हो, यदि उनका विग्रह करके देखा जाय—उदा० चक्रपाणिः चन्द्रमौलिः आदि।

व्यध्यः [व्यध्+ण्यत्] चाँदमारी के पीछे का टीला, निशाना, लक्ष्य।

व्यध्वः [विरुद्धः अध्वा —प्रा० स०] कुमार्ग, बुरी सड़क।

व्यनुनादः [विशिष्टः अनुनादः प्रा० स०] प्रतिध्वनि, ऊँची गूँज।

व्यन्तरः [विशिष्टः अन्तरो यस्य—प्रा० ब०] 1. पिशाच, यक्ष आदि एक प्रकार का अतिप्राकृतिक प्राणी।

व्यप् (चुरा० उभ० व्यपयति—ते) 1. फेंकना 2. घटाना, बरबाद करना, कम करना।

व्यपकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+अप्+कृष्+क्त] एक ओर खींचा हुआ, दूर किया हुआ, हटाया हुआ।

व्यपगत (भू० क० कृ०) [वि+अप्+गम्+क्त] 1. गया हुआ, विसर्जित, अन्तर्हित—मदो मे व्यपगतः भर्तृ० २।८, मेघ० ७६ 2. हटाया हुआ 3. गिराया हुआ।

व्यपगमः [वि+अप+गम्+अप्] विसर्जन, अन्तर्धान।

व्यपत्रप (वि०) [विगता अपत्रपा यस्य—प्रा० ब०] निर्लज्ज, ढीठ।

व्यपदिष्ट (भू० क० कृ०) [वि+अप+दिश्+क्त] 1. नामाङ्कित 2. बतलाया गया, प्रस्तुत किया गया, द्योतित 3. बहाने या छल के रूप में प्रतिपादित किया गया।

व्यपदेशः [वि+अप+दिश्+घञ्] 1. निरूपण, सन्देश, सूचना 2. नामकरण, नाम रखना 3. नाम, अभिधान, उपाधि— एवं व्यपदेशभाजः—उत्तर० ६।४, परिवार, वंश,—अथ कोऽस्य व्यपदेशः—श० ७, व्यपदेशमाविलयितुं किमीहसे जनमिमं च पातयितुम्—श० ५।२० 5. कीर्ति, यश, प्रसिद्धि 6. चाल, बहाना, दाँव, उपाय 7. जालसाजी, चालाकी।

व्यपदेष्टृ (पुं०) [वि+अप+दिश्+तृच्] छलिया, धोखेबाज।

व्यपरोपणम् [वि+अप+रुह्+णिच्+ल्युट्, ह्रस्व पः] 1. उन्मूलन, उखाड़ना 2. भगाना, हटाना, दूर करना 3. काट डालना, फाड़ डालना, तोड़ लेना—चुकोप तस्मै स भृशं सुरस्त्रियः प्रसह्य केशव्यपरोपणादिव —रघु० ३।५६।

व्यपाकृतिः (स्त्री०) [वि+अप+आ+कृ+क्तिन्] 1. निष्कासन, दूरीकरण, निकाल देना 2. मुकरना।

व्यपायः [वि+अप+इ+घञ्] अन्त, लोप, समाप्ति, —कु० ३।३३, रघु० ३।३७।

व्यपाश्रयः [वि+अप+आ+श्रि+अप्] 1. उत्तराधिकारिता 2. शरण लेना, सहारा लेना, भरोसा करना भग० ३।१८ 3. निर्भर होना—धर्मो रामव्यपाश्रयः — राम०।

व्यपेक्षा [वि+अप+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1. प्रत्याशा, आशा 2. लिहाज, विचार—रघु० ८।२४ 3. पारस्परिक सम्बन्ध, अन्योन्याश्रय 4. पारस्परिक लिहाज 5. व्यवहार 6. (व्या० में) दो नियमों का पारस्परिक प्रयोग।

व्यपेत (भू० क० कृ०) [वि+अप+इ+क्त] 1. वियुक्त अलगाया हुआ 2. गया हुआ, विसर्जित, (प्रायः समास में व्यपेतकल्मषः, व्यपेतभी, व्यपेतहर्ष आदि)।

व्यपोढ (भू० क० कृ०) [वि+अप्+वह्+क्त] 1. निकाला गया, हटाया गया 2. विपरीत, विरोधी कि० ४।१२ 3. प्रकटीकृत, प्रदर्शित, बतलाया गया।

व्यपोहः [वि+अप+ऊह्+घञ्] निकालना, दूर करना, अलग रखना।

व्यभि (भी) चारः [वि+अभि+चर्+घञ्] 1. दूर चले जाना, विचलन, सन्मार्ग छोड़ देना, कुमार्ग का अनुसरण करना,—मंत्रज्ञमव्यसनिनं व्यभिचारविवर्जितम्—हि० ३।१६, भग० १४।२६ 2. अतिक्रमण, उल्लंघन मनु० १०।२४ 3. अशुद्धि, जुर्म, पाप 4. विच्छेद्यता, अलग होने की सामर्थ्य 5. अभक्ति, अनास्था, पति-पत्नी में अविश्वास, पतिव्रत या पत्नी-

व्रत का अभाव,—व्यभिचारात्तु भर्तुः स्त्री लोके प्राप्नोति गर्ह्यताम्—मनु० ५।१६४, वाङ्मनः कर्मभिः पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे —रघु० १५।८१, याज्ञ० १।७१ 6. असंगति, अनियमितता, अपवाद 7. (तर्क० में) आभासी हेतु, हेत्वाभास, साध्य के न होने पर भी हेतु की विद्यमानता।

व्यभिचारिणी [व्यभिचारिन्+ङीप्] असती स्त्री, परपुरुषगामिनी स्त्री।

व्यभिचारिन् (वि०) [व्यभिचार+इनि] 1. भटका हुआ, भूला हुआ, पथभ्रष्ट, भ्रान्त, नियम भंग करने वाला 2. अनियमित, असंगत 3. असत्य, मिथ्या —दे० अव्यभिचारिन् 4. श्रद्धाहीन, जो ब्रह्मचारी न हो, परस्त्रीगामी, (पुं०—व्यभिचारिभावः संचारिभाव, सहकारी भाव (विप० स्थायी भाव) यद्यपि स्थायी भावों की भाँति यह सहकारी भाव रस का कोई आधारभूत रूप नहीं बनाते, फिर भी यह प्रवहमान रस के पोषक हैं, अतः प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यह रस की पुष्टि करते हैं। इनकी संख्या तेंतीस या चौंतीस है, इनकी गणना के लिए दे० काव्य० ४, कारिका ३१—३४, सा० द० १६९, या रस० प्रथम आनन, तु० विभाव और स्थायिभाव की।

व्यय् i (चुरा० उभ० व्यययति—ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. व्यय करना, प्रदान करना, अर्पण करना।
ii (भ्वा० उभ० व्ययति—ते) जाना, हिलना-जुलना।
iii (चुरा० उभ० व्याययति—ते, व्यापयति—ते भी) 1. फेंकना, डालना 2. हाँकना।

व्यय (वि०) [वि+इ+अच्] परिवर्तनीय, परिणामशील, विकारवान्—तु० अव्यय, —यः 1. (क) हानि, लोप, विनाश—आपाद्यते न व्ययमन्तरायैः कच्चिन्महर्षेस्त्रिविधं तपस्तत्—रघु० ५।५, १२।३३, (ख) लागत लगाना, त्याग—प्राणव्ययेनापि मया विधेयः —मा० ४।४, कु० ३।२३ 2. रुकावट, अड़चन—रघु० १५।३७, 3. क्षय, ह्रास, पराजय, अधःपतन 4. खर्च, मूल्य, परिव्यय, विनियोग, प्रयोग, (विप० आय) —आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः—पंच० १।१६३, आयाधिकं व्ययं करोति 'अपनी आय से अधिक व्यय करता है'—रघु० ५।१२, १५।३, मनु० ९।११ 5. अपव्यय, फ़िज़ूलखर्ची। सम०—पर (वि०) मुक्तहस्त से खर्च करने वाला,—पराङ्मुख (वि०) कृपण, कंजूस, मक्खीचूस,—शील (वि०) अतिव्ययी, फ़िज़ूलखर्च,—शुद्धिः (स्त्री०) हिसाब चुकाना।

व्ययनम् [व्यय्+ल्युट्] 1. खर्च करना 2. बर्बाद करना, विनष्ट करना।

व्ययित (भू० क० कृ०) [व्यय्+क्त] 1. व्यय किया गया, खर्च किया गया 2. बर्बाद किया गया, क्षयग्रस्त।

व्यर्थ (वि०) [विगतोऽर्थो यस्मात्—प्रा० ब०] 1. अनुपयोगी, निरर्थक, विफल, अलाभकर—व्यर्थं यत्र कपीन्द्रसख्यमपि मे—उत्तर० ३।४५ 2. अर्थहीन, निरर्थक, बेकारी।

व्यलीक (वि०) [विशेषेण अलति—वि+अल्+कीकन्] 1. मिथ्या, झूठा 2. कुत्सित, अनभिमत, असुखद 3. जो मिथ्या न हो—शि० ५।१,—कः 1. स्वेच्छाचारी 2. गांडू, लौण्डा,—कम् कोई भी अप्रिय या असुखद वस्तु, अप्रियता—इत्थं गिरः प्रियतमा इव सोऽव्यलीकाः शुश्राव सूततनयस्य तदा व्यलीकाः—शि० ५।१ 2. बेचैनी का कारण, पीड़ा, शोक या रंज का कारण—सुतनु हृदयात्प्रत्यादेशव्यलीकमपैतु ते—श० ७।२४, कि० ३। १९, कु० ३।२५, रघु० ४।८७ 3. दोष, अपराध, अतिक्रमण, अनुचित कार्य, सव्यलीकमवबोरितखिन्नं प्रस्थितं सपदि कोपपदेन—कि० ९।४५, शि० ९।८५, रत्न० ३।५ 4. जालसाजी, चाल, धोखा—पंच १। १२०, २४२ 5. मिथ्यापन 6. व्युत्क्रम, वैपरीत्य।

व्यवकलनम् [वि+अव+कल्+ल्युट्] 1. वियोग 2. (गणि० में) घटाना, एक राशि में से दूसरी राशि कम करना।

व्यवक्रोशनम् [वि+अव+क्रुश्+ल्युट्] तू तू मैं मैं, आपस में गाली-गलौज।

व्यवच्छिन्न (भू० क० कृ०) [वि+अव+छिद्+क्त] 1. काट डाला गया, चीरा गया, फाड़ा गया 2. वियुक्त, विभक्त 3. विशिष्ट किया गया, विशिष्ट 4. अंकित, विलक्षण—शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली —काव्या० १।१० 5. अवरुद्ध, बाधित।

व्यवच्छेदः [वि+अव+छिद्+घञ्] 1. काट डालना, फाड़ देना 2. विभाजन, वियोजन 3. चीर-फाड़ करना 4. विशिष्टीकरण 5. विभेदक, विशिष्ट 6. वैषम्य, वैशिष्ट्य 7. निर्धारण 8. बन्दूक दागना, तीर छोड़ना 9. किसी पुस्तक का अध्याय या अनुभाग।

व्यवधा [वि+अव+धा+अङ+टाप्] 1. व्यवधायक 2. आड़, पर्दा, व्यंशन 3. छिपाव, दुराव।

व्यवधानम् [वि+अव+धा+ल्युट्] 1. हस्तक्षेप, अन्तःक्षेप, वियोग 2. अवरोध, दृष्टि से गुप्त रखना —दृष्टि विमानव्यवधानमुक्तां पुनः सहस्रार्चिषि संनिधत्ते रघु० ३।४४ 4. छिपाना, अन्तर्धान 5. पर्दा, व्यंशन 6. ढकना, आवरण—कु० ३।४४, 7. अन्तराल, अवकाश 8. (व्या० में) किसी अक्षर या मात्रा का बीच में आ पड़ना।

व्यवधायक (वि०) (स्त्री०—यिका) [वि+अव+धा ण्वुल्] 1. बीच में आ पड़ने वाला, आवरण, ढकने

वाला 2. अवरोध करन वाला, छिपाने वाला 3. मध्यवर्ती ।

व्यवधिः [वि+अव+धा+कि] आवरण, हस्तक्षेप आदि, दे० व्यवधान ।

व्यवसायः [वि+अव+सो+घञ्] 1. प्रयत्न, चेष्टा, ऊर्जा, उद्योग, धैर्य—करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्ततः हि० २।१४ 2. संकल्प, प्रस्ताव, निर्धारण —मन्दीचकार मरणव्यवसायबुद्धिम्—कु० ४।४५, 'मरने के संकल्प का विचार' —भग० २।४१, १०।३६ 3. कृत्य, कर्म, क्रिया—व्यवसायः प्रतिपत्तिनिष्ठुरः रघु० ८।६५ 4. व्यापार, नौकरी, वाणिज्य 5. आचरण, व्यवहार 6. उपाय, कूटयुक्ति, जुगत 7. शेखी बघारना 8. विष्णु ।

व्यवसायिन् (वि०) [व्यवसाय+इनि] 1. ऊर्जस्वी, उद्योगी, परिश्रमी 2. दृढ़ संकल्पी, धैर्यवान् ।

व्यवसित (भू० क० क०) [वि+अव+सो+क्त] 1. प्रयास किया गया कोशिश की गई,—श० ६।९ 2. ज़िम्मेवारी ली गई, 3. संकल्प किया गया, निर्धारित, निश्चित 4. प्रकल्पित, आयोजित 5. प्रयत्नशील, दृढ़ निश्चयी 6. धयवान्, ऊर्जस्वी 7. ठगा गया, छला गया, —तम् निश्चयन, निर्धारण ।

व्यवस्था [वि+अव+स्था+अङ+टाप्] 1. समंजन, क्रमस्थापन, निपटारा—यथा—वर्णाश्रम व्यवस्था 2. स्थिरता, निश्चितता,—रघु० ७।५४ 3. दृढ़ता, दृढ़ आधार—आजह्रतुस्तच्चरणौ पृथिव्यां स्थलारविंदश्रियमव्यवस्थाम्—कु० १।३३ 4. संबद्ध स्थिति 5. निश्चित नियम, कानून, सविधि आदेश, निर्णय, क़ानूनी सलाह, क़ानून की लिखित घोषणा (विशेष कर संदिग्ध स्थलों पर या जहाँ विरोधी पाठों का समंजन करना हो 6. सहमति, संविदा 7. अवस्था, दशा ।

व्यवस्थानम्, व्यवस्थितिः (स्त्री०) [वि+अव+स्था+ल्युट्, क्तिन् वा] 1. क्रमबन्धन, समाधान, निर्धारण, फ़ैसला 2. नियम, विधान, निश्चय 3. स्थिरता, अचलता 4. दृढ़ता, धैर्य 5. वियोग ।

व्यवस्थापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [वि+अव+स्था णिच्+ण्वुल्, पुक्] 1. क्रमस्थापन करने वाला, उपयुक्त क्रम में रखने वाला, समंजन करने वाला, स्थिर करने वाला, व्यवस्था करने वाला, फ़ैसला करने वाला 2. वह जो कानूनी सलाह देता है 3. प्रबन्धक (वर्तमान प्रयोग) ।

व्यवस्थापनम् [वि+अव+स्था+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1. क्रमस्थापन, उपयुक्त समंजन 2. स्थिर करना, निर्धारण, निश्चय करना, फ़ैसला करना ।

व्यवस्थापित (भू० क० कृ०) [वि+अव+स्था+णिच्+क्त, पुक्] क्रमबद्ध, निश्चित आदि, °वाच्—कु० ५।६८ ।

व्यवस्थित (भू०क०कृ०) [वि+अव+स्था+क्त] 1. क्रम में रक्खा हुआ, समंजित, क्रमविन्यस्त 2. निश्चित, स्थिर—किं व्यवस्थितविषयाः क्षात्रधर्माः—उत्तर० ५ 3. फ़ैसला किया गया, निर्धारित, क़ानून द्वारा घोषित 4. एक ओर रक्खा हुआ, वियुक्त 5. निकाला हुआ (रस आदि) 6. आधारित, अवलम्बित । सम० —विभाषा निश्चित इच्छा ।

व्यवस्थिति दे० 'व्यवस्थान' ।

व्यवहर्तृ (पुं०) [वि+अव+हृ+तृच्] 1. किसी व्यवसाय का प्रबंधकर्ता 2. नालिश करने वाला, अभियोक्ता, वादी या मुद्दई 3. न्यायाधीश 4. साथी, संगी ।

व्यवहारः [वि+अव+हृ+घञ्] 1. आचरण, बर्ताव, कर्म 2. मामला, व्यवसाय, काम 3. पेशा, धंधा 4. लेनदेन, काम-काज 5. वाणिज्य, तिजारत, सौदागरी 6. रुपये पैसे का लेनदेन, सूदखोरी 7. प्रचलन, प्रथा, दस्तूर, रिवाज 8. संबन्ध, मेलजोल—पंच० १।७९ 9. न्यायालयी या अदालती कार्यविधि, किसी अभियोग या मामले की छान-बीन, न्याय प्रशासन; —व्यवहारस्तमाह्वयति, अलं लज्जया व्यवहारस्त्वां पृच्छति—मृच्छ० ९ 10. क़ानूनी झगड़ा, अभियोग, नालिश, क़ानूनी मुक़दमा, मुक़दमेबाजी,— व्यवहारोऽयं चारुदत्तमवलम्बते, इति लिख्यतां व्यवहारस्य प्रथमः पादः, केन सह मम व्यवहारः—मृच्छ० ९, रघु० १७।३९ 11. क़ानूनी कार्यविधि का शीर्षक, मुक़दमेबाजी का अवसर । सम०—अङ्गम् दीवानी और फ़ौजदारी क़ानूनों का समूह,— अभिशस्त (वि०) अभियोजित, दोषारोपित,—आसनम् न्यायाधिकरण. न्यायासन—रघु० ८।१८,— ज्ञः 1. जो व्यवसाय को समझता है 2. वयस्क युवा, बालिग, 3. जो न्यायालयीय कार्यविधि से परिचित हो,—तन्त्रम् आचरणक्रम, मा०४, —दर्शनम् जांच, न्यायिक जांच-पड़ताल,— पदम् व्यवहार विषय,—पादः 1. क़ानूनी कार्यवाही की चार अवस्थाओं में से कोई सी एक 2. चौथी अवस्था अर्थात् निर्णयपाद जिसमें व्यवस्था या फ़ैसला बतलाया गया है, - मातृका 1. क़ानूनी प्रक्रिया 2. न्यायप्रशासन या न्यायालयों के निर्माण से सम्बन्ध रखने वाला कोई भी कर्म या विषय, (इसके तीस शीर्षक गिनाये गये हैं),—विधिः क़ानून का नियम, विधिसंहिता,— विषयः (इसी प्रकार—पदम्—मार्गः,—स्थानम्) क़ानूनी कार्यविधि का शीर्षक या विषय, ऐसी बात जिसमें क़ानूनी कार्यवाही करनी चाहिए, वादयोग्य विषय (यह विषय अठारह हैं, इनके नामों की जानकारी के लिए दे० मनु० ८।४–७) ।

व्यवहारकः [वि+अव+हृ+ण्वुल्] विक्रेता, व्यापारी, सौदागर।

व्यवहारिक (वि०) (स्त्री०—का,—की) [व्यवहार+ठन्] 1. व्यवसाय सम्बन्धी 2. व्यवसाय में लगा हुआ, अभ्यासप्राप्त 3. न्यायालयसंबंधी, क़ानूनी 4. मुक़दमेबाज़ 5. प्रचलित, रूढ़ या प्रथानुसार।

व्यवहारिका [वि+अव+हृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. रिवाज, प्रथा 2. झाड़ू 3. इंगुदी का वृक्ष।

व्यवहारिन् (वि०) [व्यवहार+इनि] 1. व्यवसायी, कर्मशील, अभ्यासपरायण 2. अभियोग में व्यस्त, मुकदमेबाज 3. चिरप्रचलित, प्रथानुसार।

व्यवहित (भू० क० कृ०)[वि+अव+धा+क्त] 1. अलग अलग रक्खा हुआ 2. किसी अन्तःक्षिप्त वस्तु के कारण वियुक्त किया गया—शि० २।८५ 3. बाधित, रोका गया, अवरुद्ध, अड़चन से युक्त 4. दृष्टि से ओझल, छिपाया हुआ, गुप्त 5. जिसका निरन्तर सम्बन्ध न हो 6. किया गया, सम्पन्न 7. भूला हुआ, छोड़ा हुआ 8. आगे बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ 9. विपक्षी, विरोधी।

व्यवहृतिः (स्त्री०) [वि+अव+हृ+क्तिन्] 1. अभ्यास, प्रक्रिया 2. कर्म, सम्पादन।

व्यवायः [वि+अव+अय्+अच्] 1. वियोजन, विश्लेषण (अवयवों का) पृथक्करण 2. विघटन 3. आवरण, छिपाव 4. हस्तक्षेप, अन्तराल अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि 5. अड़चन, रुकावट 6. मैथुन, सम्भोग 7. पवित्रता, —यम् दीप्ति, आभा।

व्यवायिन् (पुं०) [व्यवाय+इनि] 1. विलासी, स्वेच्छाचारी 2. कामोद्दीपक, वाजीकरण।

व्यवेत (भू० क० कृ०) [वि+अव+इ+क्त] 1. वियोजित, विश्लिष्ट 2. भिन्न।

व्यष्टि (स्त्री०) [वि+अश्+क्तिन्] 1. वैयक्तिकता, एकाकीपन 2. वितरणशील फैलाव 3. (वेदान्त० में) समष्टि को उसके पृथक्-पृथक् अवयवों के रूप में देखना, एक अंश (विप० समष्टि)।

व्यसनम् [वि+अस्+ल्युट्] 1. फेंक देना, दूर कर देना, वियोजन, विभाजन 3. उल्लंघन, व्यतिक्रमण 4. हानि विनाश, पराजय, पतन, दोष, दुर्बलपक्ष अमात्यव्यसनम्—पंच० ३, स्वबलव्यसने--कि० १३।१५ 5 (क) विपत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, अनिष्ट, संकट, अभाग्य—अज्ञातभर्तृव्यसना मुहूर्तं कृतोपकारेव रतिर्बभूव --कु० ३।७३, ४।३०, रघु० १२।५७ (ख) आपत्काल, आवश्यकता—स सुहृद् व्यसने यः स्यात्—पंच० १।३२७ 'आवश्यकता पड़ने पर जो मित्र रहे वही मित्र है' 6. (सूर्य आदि का) अस्त होना - तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्याम् श० ४।१, (यहाँ 'व्यसन' का अर्थ 'पतन' भी है) 7. दुर्व्यसन, बुरी लत, बुरी आदत - मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग् विनोदः कुतः - श० ४।५, रघु० १८।१४, याज्ञ० १।३०९ (इस प्रकार के दुर्व्यसन दस बताये गये हैं --- मनु० ७।४७-८) समानशीलव्यसनेषु सख्यं —सुभा० 8. संलग्नता, जुट जाना, परिश्रमपूर्वक आसक्ति —विद्यायां व्यसनं भर्तृ० २।६२-३ 9. बहुत ज्यादा आदि होना 10. जुर्म, पाप 11. दण्ड 12. अयोग्यता, अक्षमता 13. निष्फल प्रयत्न 14. हवा, वायु। सम० अतिभारः भारी अनर्थ या संकट---रघु० १४।६८, अन्वित,—आर्त, पीडित (वि०) संकटग्रस्त, दुःख में फंसा हुआ।

व्यसनिन् (वि०) [व्यसन+इनि] 1. किसी दुर्व्यसन में ग्रस्त, दुश्चरित्र 2. अभागा, भाग्यहीन 3. किसी कार्य में अत्यन्त संलग्न (प्रायः समास में)।

व्यसु (वि०) [विगताः असवः प्राणाः यस्य—प्रा० ब०] निर्जीव, मृतक शि० २०।३।

व्यस्त (भू० क० कृ०) [वि+अस्+क्त] 1. डाला हुआ, फेंका हुआ, उछाला हुआ—मा० ५।२३ 2. तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ उत्तर० ५।१४ 3. हटाया हुआ, दूर फेंका हुआ 4. वियुक्त, विभक्त अलगाया हुआ—विक्रम० ५.२३ 5. पृथक् रूप से विचारित, एक एक करके ग्रहण—किं पुनर्व्यस्तैः—उत्तर० ५, तदस्ति किं व्यस्तमपि त्रिलोचने—कु० ५।७२ 6. सरल, समासरहित (शब्द आदि) 7. बहुविध, 8. हटाया गया, निकाला गया 9. विक्षुब्ध, कष्टमय, अव्यवस्थित 10. क्रमरहित, भग्नक्रम, विशृंखलित 11. उलटाया हुआ, उलट-पुलट किया हुआ 12. विपर्यास (अनुपात आदि)।

व्यस्तारः (पुं०) हाथी के गंडस्थलों से मद का निकलना।

व्याकरणम् [व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः येन—वि+आ+कृ+ल्युट्] 1. विग्रह, विश्लेषण 2. व्याकरण सम्बन्धी शब्द-पृथक्करण-प्रक्रिया, छः वेदांगों में से एक, व्याकरण---सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत्प्राणान् प्रियान् पाणिनेः—पंच० २।३३।

व्याकारः [वि+आ+कृ+घञ्] 1. रूपान्तरण, रूपपरिवर्तन 2. विरूपता।

व्याकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि+आ+कृ+क्त] 1. बिखेरा हुआ, इधर उधर फेंका हुआ 2. अस्तव्यस्त किया हुआ।

व्याकुल (वि०) [विशेषेण आकुलः—प्रा० स०] 1. विक्षुब्ध, विस्मित, घबराया हुआ, किंकर्तव्य विमूढ़, शोकव्याकुल, बाष्प° 2. आतंकित, उद्विग्न, भयभीत वृष्टिव्याकुलगोकुल गीत० ४ 3. भरापूरा, घिरा हुआ 4. संलग्न, व्यस्त आलोके ते निपतति पुरा सा

बलिव्याकुला वा—मेघ० ८५ 5. दमकने वाला, इधर उधर हिलजुल करने वाला—उत्तर० ३।४३।

व्याकुलित (वि०) [वि+आ+कुल्+क्त] विक्षुब्ध, हतबुद्धि, घबराया हुआ, उद्विग्न आदि।

व्याकूतिः (स्त्री०) [विशिष्टा आकूतिः—प्रा० स०] जालसाजी, छद्मवेश, धोखा।

व्याकृत (भू० क० कृ०) [वि+आ+कृ+क्त] 1. विश्लिष्ट, वियुक्त 2. व्याख्यात, स्पष्ट किया गया 3. विकृत, व्याकृष्ट, बिगाड़ा हुआ, विरूपित।

व्याकृतिः (स्त्री०) [वि+आ+कृ+क्तिन्] 1. विग्रह 2. विश्लेषण, व्याख्या 3. रूप परिवर्तन, विकास 4. व्याकरण।

व्याक्रोश (ष) (वि०) [वि+आ+क्रुश् (ष्)+अच्] 1. फुलाया हुआ, प्रफुल्लित, पुष्पित, मुकुलित—व्याक्रोशकोकनदतां दधते नलिन्यः-शि० ४।४६ 2. विकसित —भर्तृ० ३।१७।

व्याक्षेपः [वि+आ+क्षिप्+घञ्] 1. इधर उधर उछालना 2. अवरोध, रुकावट 3. विलम्ब—अव्याक्षेपो भविष्यन्त्याः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम्—रघु० १०।६ 4. उलझन।

व्याख्या [वि+आ+ख्या+अङ्+टाप्] 1. वृत्तान्त, वर्णन 2. स्पष्टीकरण, विवृति, टीका, भाष्य।

व्याख्यात [वि+आ+ख्या+क्त] 1. कथित, वर्णित 2. स्पष्टीकृत, विवृत, टीकायुक्त।

व्याख्यातृ (पुं०) [वि+आ+ख्या+तृच्] व्याख्याकार, भाष्यकार।

व्याख्यानम् [वि+आ+ख्या+ल्युट्] 1. संसूचन, वर्णन 2. भाषण, वक्तृता 3. स्पष्टीकरण, विवृति, अर्थकरण, टीका।

व्याघट्टनम् [वि+आ+घट्+ल्युट्] 1. बिलोना, मथना 2. रगड़ना, घर्षण।

व्याघातः [वि+आ+हन्+क्त] 1. रगड़ना 2. थप्पड़, प्रहार 3. विघ्न, रुकावट 4. वचन विरोध 5. एक अलंकार जिसमें परस्पर विरोधी फल एक ही कारण से उत्पन्न दिखाये जाते हैं, मम्मट इसकी परिभाषा निम्नांकित करता है—तद्यथा साधितं केनाप्यपरेण तदन्यथा। तथैव यद्विधीयेत स व्याघात इति स्मृतः॥ काव्य० १०, उदा० दे० विद्ध० १।२, या विरूपाक्ष के नीचे दिया गया उद्धरण।

व्याघ्रः [व्याजिघ्रति—वि+आ+घ्रा+क] 1. बाघ, चीता 2. (समास के अन्त में) सर्वोत्तम, प्रमुख, मुख्य —जैसा कि नरव्याघ्र या पुरुषव्याघ्र में 3. लालरंग का एरंड का पौधा,—घ्री मादा चीता—व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती—भर्तृ० ३।१०९। सम० —अटः चातक पक्षी,—आस्यः बिलाव, —नखः, —नखम् 1. बाघ का पंजा 2. एक प्रकार का गन्धद्रव्य 3. खरोंच, नखक्षत,—नायकः गीदड़।

व्याजः [व्यजति यथार्थव्यवहारात् अपगच्छति अनेन—वि+अज्+घञ्] 1. धोखा, चाल, छल, जालसाजी 2. कला कौशल - अव्याज मनोहरं वपुः - श० १।१८, 'स्वाभाविक रूप से प्रिय' 3. बहाना, व्यपदेश, आभास — ध्यानव्याजमुपेत्य—नाग० १।१, रघु० ४।२५, ५८, १०।६६, ११।६६ 4. युक्ति, चाल, कूटयुक्ति—व्याजार्धसन्दर्शितमेखलानि—रघु० १३।४२। सम०—उक्तिः (स्त्री०) एक अलङ्कार जिसमें किसी कारण के स्पष्ट फल का जानबूझ कर कोई दूसरा कारण बताया जाता है, जहां वास्तविक भावना को कोई दूसरा कारण बताकर छिपा लिया जाता है—दे० काव्य० १० 'व्याजोक्ति' के नीचे 2. परोक्ष सङ्केत, व्यंग्योक्ति, —निन्दा छल या कपट से की गई निन्दा, —सुप्त (वि०) झूठमूठ सोया हुआ,—स्तुतिः (स्त्री०) अंग्रेजी के 'आइरनी' (Irony) से मिलता जुलता एक अलङ्कार जिसमें व्यक्त की गई प्रशंसा से निन्दा तथा प्रत्यक्ष निन्दा से स्तुति उपलक्षित होती है—व्याजस्तुतिर्मुखे निन्दा स्तुतिर्वा रूढिरन्यथा—काव्य० १०।

व्याडः [वि+आ+अड्+अच्] 1. मांस भक्षी जानवर, जैसे कि चीता, शेर आदि 2. बदमाश, गुण्डा 3. साँप 4. इन्द्र तु० 'व्याल'।

व्याडिः (पुं०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण।

व्यात्त (भू० क० कृ०) [वि+आ+दा+क] विवृत, फैलाया गया, फुलाया गया।

व्यात्युक्षी [वि+आ+अति+उक्ष्+णिच्+अञ्+ङीप्] जलविहार, जलक्रीडा।

व्यादानम् [वि+आ+दा+ल्युट्] खोलना, उद्घाटन।

व्यादिशः [विशेषेण आदिशति स्वे स्वे कर्मणि नियोजयति —वि+आ+दिश्+क] विष्णु का विशेषण।

व्याधः [व्यध्+ण] 1. शिकारी, बहेलिया (जाति से या पेशे के कारण) 2. दुष्ट मनुष्य, अधम पुरुष। सम० —भीतः हरिण।

व्याधामः, व्याधावः [व्याध+अम्+णिच्+अच्] इन्द्र का वज्र।

व्याधिः [वि+आ+धा+कि] 1. बीमारी, रोग, रुजा, अस्वस्थता (प्रायः शारीरिक—विप० 'आधि' अर्थात् मानसिक रोग दुःख, चिन्ता आदि)—रिपुरुन्नतधीरचेतसः सततव्याधिरनीतिरस्तु ते शि० १६।११ (यहाँ 'व्याधि' का अर्थ 'आधि से मुक्त' भी है) तु० आधि 2. कोढ़। सम० —कर (वि०) अस्वास्थ्यकर,—ग्रस्त (वि०) रोगाक्रान्त, बीमार।

व्याधित (वि०) [व्याधिः सञ्जातोऽस्य इतच्] रोगाक्रान्त, बीमार।

व्याघूत (भू० क० कृ०) [वि+आ+घू+क्त] झंझोड़ा हुआ, कांपता हुआ, थरथराता हुआ।

व्यानः [व्यानिति सर्वशरीरं व्याप्नोति—वि+आ+अन्+अच्] शरीरस्थ पाँच प्राणों में से एक जो समस्त शरीर म व्याप्त है।

व्यानतम् [वि+आ+नम्+क्त] मैथुन का एक विशेष प्रकार, रतिबन्ध।

व्यापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [विशेषेण आप्नोति वि+आप+ण्वुल्] 1. फैला हुआ, बहुग्राही, प्रसारी, विस्तृत रूप से फैलने वाला, सर्वतोमुखी—तिर्यगूर्ध्वमधस्ताच्च व्यापको महिमा हरेः—कु० ६।७१ 2. नितान्त सहवर्ती,—कः नितान्त सहवर्ती या अन्तर्हित विशेषण, कम् नितान्त सहवर्ती या अन्तर्हित गुण।

व्यापत्तिः (स्त्री०) [वि+आ+पद्+क्तिन्] 1. बर्बादी, संकट, दुर्भाग्य—मनु० ६।२० 2. स्थानापन्नता 3. मृत्यु—रघु० १२।५६।

व्यापद् (स्त्री०) [वि+आ+पद्+क्विप्] 1. संकट, दुर्भाग्य, भर्तृ० ३।१०५ 2. रोग 3. विशृङ्खलता, चित्तविक्षेप 4. मृत्यु, निधन।

व्यापनम् [वि+आप्+ल्युट्] फैलना, पैठना, सर्वत्र फैल जाना।

व्यापन्न (भू० क० कृ०)[वि+आ+पद्+क्त] 1. दुर्भाग्यग्रस्त, बर्बाद 2. विफल, उलट गया (गर्भस्राव हो गया) 3. चोट लगा हुआ, घायल 4. मृत, उपरत, मरा हुआ जैसा कि 'अव्यापन्न' में 5. विक्षिप्त, विकृत 6. स्थानापन्न, परिवर्तित।

व्यापादः, व्यापादनम् [वि+आ+पद्+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] 1. हत्या, वध 2. बर्बादी, विनाश 3. दुर्भावना, द्वेष।

व्यापादित (भू० क० कृ०) [वि+आ+पद्+णिच्+क्त] 1. वध किया हुआ, क़तल किया हुआ, विनष्ट किया हुआ 2. बर्बाद, घायल, चोटिल।

व्यापारः [वि+आ+पृ+घञ्] 1. नियोजन, संलग्नता, व्यवसाय, धन्धा—ततः प्रविशति यथोक्तव्यापारा शकुन्तला श० १, कु० २।५४ 2. प्रयोग, काम—मु० २।४ 3. पेशा, वाणिज्य, व्यवसाय, कार्य—यथा 'शस्त्रव्यापार' में 4. कर्म, क्रिया, निष्पादन 5. कार्यपद्धति, प्रक्रिया, कृत्य, प्रभाव—(व्रतं) व्यापाररोधि मदनस्य निषेवितव्यम्—श० १।२७, तस्यानुमेने भगवान् विमन्युर्व्यापारमात्मन्यपि सायकानाम् कु० ७।९३, विक्रम० ३।१७ 6. ऊपर रक्खा जाने वाला,—मालवि० ४, १४ 7. उद्योग, प्रयत्न—आर्याप्यरुन्धती तत्र व्यापारं कर्तुमर्हति कु० ६।३२, 'उस दिशा में कार्य करने के लिए प्रसन्न होंगी' (व्यापारं कृ 1. भाग लेना 2. प्रभाव डालना 3. हाथ डालना—जैसा कि 'अव्यापारेषु व्यापारं यो नरः कर्तुमिच्छति पंच० १।२१)।

व्यापारित (भू० क० कृ०) [वि+आ+पृ+णिच्+क्त] 1. काम पर लगाया हुआ, स्थापित, नियोजित, नियुक्त—रघु० २।३८ 2. रक्खा हुआ, निश्चित, जमाया हुआ वेणी० ३।१९।

व्यापारिन् (पुं०) [व्यापार+इनि] 1. विक्रेता, व्यापार करने वाला 2. व्यवसायी।

व्यापिन् (वि०) [वि+आप्+णिनि] 1. व्याप्त होने वाला, अपूर्ण करने वाला, अधिकार करने वाला (समास के अन्त में) 2. सर्वव्यापक, सहविस्तृत, नितान्त सहवर्ती 3. आवरक (पुं०) विष्णु का विशेषण।

व्यापृत (भू० क० कृ०) [वि+आपृ+क्त] 1. काम में लगा हुआ, व्यस्त, नियोजित (अधि० के साथ) 2. स्थापित, स्थिर किया हुआ—(पुं०) कर्मचारी, मन्त्री।

व्यापृतिः (स्त्री०) [व्यापृ+क्तिन्] 1. काम में लगाना व्यस्त करना, व्यवसाय—स्वस्वव्यापृतिमग्नमानसतया—भामि० १।५७ 2. प्रकार्य, कर्म 3. चेष्टा 4. पेशा, व्यवसाय दे० 'व्यापार'।

व्याप्त (भू० क० कृ०) [वि+आप्+क्त] 1. चारों ओर फैला हुआ, पैठा हुआ, व्यापक, विस्तार किया हुआ, आच्छादित, ढका हुआ 2. व्यापक, सर्वत्र फैला हुआ 3. भरा हुआ, पूर्ण 4. चारों ओर से लपेटा हुआ, घिरा हुआ 5. स्थापित, जमाया हुआ 6. प्राप्त किया हुआ, अधिकृत 7. समझा हुआ, सम्मिलित 8. नितांत संसक्त (तर्क० में) 9. प्रसिद्ध, विख्यात 10. फुलाया हुआ, बिछाया हुआ।

व्याप्तिः (स्त्री०) [वि+आप्+क्तिन्] 1. प्रसार, फैलाव 2. (तर्क० में) विश्वतः फैलाव, नितांत सहवर्तिता, किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला होना—यत्र-यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निरिति साहचर्यं नियमो व्याप्तिः—तर्क० 3. सार्वजनिक नियम, विश्वव्यापकता 4. पूर्णता 5. प्राप्ति। सम० **ग्रहः** सार्वजनिक सहवर्तिता का बोध, **ज्ञानम्** सार्वजनिक सहवर्तिता की जानकारी।

व्याप्य (वि०) [वि+आप्+ण्यत्] व्यापकता के योग्य भरे जाने के योग्य, **प्यम्** (तर्क० में) अनुमान प्रक्रिया का चिह्न (=हेतु, साधन)।

व्याप्यत्वम् [व्याप्य+त्व] नित्यता। सम० **असिद्धिः** (स्त्री०) अधूरी अटकल, अपूर्ण अनुमान।

व्याम्युक्षी=व्यात्युक्षी (दे०)।

व्यामः—व्यामनम् [वि+आ+अम्+घञ्, ल्युट् वा] एक माप विशेष, जब दोनों हाथ पूर्ण रूप से दोनों ओर

फैलाये हों तो हाथों की अंगुलियों के कोरों के बीच की दूरी ।

व्यामिश्र (वि०) [वि+आ+मिश्र+अच्] मिला हुआ मिश्रित, गड्‌ड-मड्‌ड किया हुआ ।

व्यामोहः [वि+आ+मुह्+घञ्] 1. प्रणयोन्माद 2. व्याकुलता, परेशानी, बेचैनी -कंसस्यालमभूज्जितं जितमिति व्यामोहकोलाहलः गीत० १०, काव्या० ३।१०१ ।

व्यायत (भू० क० कृ०) [वि+आ+यम्+क्त] 1. लम्बा, विस्तृत —युवा युगव्यायतबाहुरंसलः—रघु० ३।३४ 2. फुलाया हुआ, खुला हुआ 3. जिसने व्यायाम किया है, अनुशिष्ट 4. व्यस्त, काम में लगा हुआ, अधिकृत 5. कठोर, दृढ़ 6. मजबूत, गहन, अत्यधिक 7. ताकतवर, शक्तिशाली 8. गहरा कु० ५।५४ ।

व्यायतत्वम् [व्यायत+त्व] पुट्ठों का विकास श० २।४ ।

व्यायामः [वि+आ+यम्+घञ्] 1. विस्तार करना, फैलाना 2. कसरत, शारीरिक व्यायाभों का अभ्यास —शि० २।९४ 3. थकान, श्रम 4. प्रयत्न, चेष्टा 5. वाग्युद्ध, संघर्ष 6. दूरी की माप विशेष (=व्याम दे०) ।

व्यायामिक (वि०) (स्त्री० की) [व्यायाम+ठक्] मल्लविद्या-विषयक, शारीरिक कसरत संबंधी ।

व्यायोगः [वि+आ+युज्+घञ्] नाट्यसाहित्य में एक प्रकार का एकांकी नाटक, सा० द० ५१४ पर इसकी निम्न परिभाषा दी गई है—ख्यातेतिवृत्तो व्यायोगः स्वल्पस्त्रीजनसंयुतः । हीनो गर्भविमर्षाभ्यां नरैर्बहुभिराश्रितः । एकांकश्च भवेदस्त्रीनिमित्तसमरोदयः । कैशिकीवृत्तिरहितः प्रख्यातस्तत्र नायकः । राजर्षिरथ दिव्यो वा भवेद्धीरोद्धतश्च सः । हास्यशृङ्गारशान्तेभ्य इतरे ऽत्राङ्गिनो रसाः ॥

व्याल (वि०) [वि+आ+अल्+अच्] 1. दुष्ट, दुर्व्यसनी —व्यालद्विपा यन्तृभिरुन्मदिष्णवः—शि० १२।२८, यंता गजं व्यालमिवापराद्धः—कि० १७।२५ 2. बुरा, पापिष्ठ 3. क्रूर, भीषण, बर्बर कि० १३।४, **लः** 1. खूनी हाथी व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते - भर्तृ० २।६ 2. शिकार का जानवर 3. सांप—हि० ३।२९ 4. बाघ, - मा० ३।५ 5. चीता 6. राजा 7. ठग, बदमाश 8. विष्णु । सम० **खड्‌गः**, —**नखः** एक प्रकार की बूटी, —**ग्राहः**, **ग्राहिन्** (पुं०) सपेरा,—**मृगः** 1. जंगली जानवर 2. शिकारी चीता, **रूपः** शिव का विशेषण ।

व्यालकः [व्याल+कन्] दुष्ट या खूनी हाथी ।

व्यालम्बः [विशेषेण आलम्बते वि+आ+लम्ब्+अच्] एक प्रकार का एरंड का पौधा ।

व्यालोल (वि०) [वि+आ+लोड्+अच्, डस्यलः] 1. कांपने वाला, थरथराने वाला 2. अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त व्यालोलः केशपाशः गीत० ११ ।

व्यावकलनम् [वि+आ+अव+कल्+ल्युट्] घटाना ।

व्यावक्रोशी, व्यावभाषी [वि+आ+अव+क्रुश् (भाष्) +णिच्+अञ्+ङीप्] परस्पर दुर्वचन कहना, आपस की गालीगलौज ।

व्यावर्तः [वि+आ+वृत्+घञ्] 1. घेरना, लपेटना 2. क्रान्ति, भ्रमण, चक्कर खाना 3. फटी हुई अर्थात् आगे को निकली हुई नाभि ।

व्यावर्तक (वि०) (स्त्री०—र्तिका) [वि+आ+वृत् +णिच्+ण्वुल्] 1. लपेटने वाला, घेरा डालने वाला 2. निकालने वाला, अपवर्जन करने वाला, वियुक्त करने वाला 3. मुड़ने वाला 4. गोड़ खाने वाला ।

व्यावर्तनम् [वि+आ+वृत्+ल्युट्] 1. घेरना, लपेटना 2. घूमना, मुड़ना चक्करखाना कि० ५।३० 3. रस्सी आदि का गोल लपेट, पट्टी ।

व्यावल्गित (भू० क० कृ०) [वि+आ+वल्ग्+क्त] पसीजा हुआ, द्रवित, विक्षुब्ध ।

व्यावहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [व्यवहार+ठक्] 1. व्यवसाय संबंधी, प्रयोगात्मक 2. कानूनी, वैध 3. प्रथागत, प्रचलित 4. भ्रमात्मक—तु० प्रातिभासिक,—**कः** परामर्शदाता, मंत्री ।

व्यावहारी [वि+आ+अव+हृ+णिच्+अञ्+ङीप्] पारस्परिक बंधन, लेन देन ।

व्यावहासी [वि+आ+अव+हस्+णिच्+अञ्+ङीप्] पारस्परिक अवज्ञा, एक दूसरे की हंसी उड़ाना ।

व्यावृत्तिः (स्त्री०) [वि+आ+वृत्+क्तिन्] 1. आवरण, परदा डालना 2. निकाल देना, निष्कासन ।

व्यावृत्त (भू० क० कृ०) [वि+आ+वृत्+क्त] 1. हटाया हुआ, वापिस लिया हुआ—व्यावृत्ता यत्परस्वेभ्यः श्रुतौ तस्करता स्थिता—रघु० १।२१, विक्रम० १।९ 2. वियुक्त किया गया, अलग हटाया हुआ 3. निकाला हुआ, एक ओर रक्खा हुआ 4. चक्कर खाया हुआ, मुड़ा हुआ 5. लपेटा हुआ, घिरा हुआ 6. रुका हुआ, उपरत—कु० २।६५ 7. फाड़कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ ।

व्यासः [वि+अस्+घञ्] 1. वितरण, विभाजन 2. समास का विग्रह या विश्लेषण 3. अलगाव, पृथक्ता 4. प्रसार, फैलाव 5. अर्ज, चौड़ाई 6. वृत्त का व्यास 7. उच्चारणदोष 8. व्यवस्था, संकलन 9. व्यवस्थापक, संकलयिता 10. एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम (यह पराशर का पुत्र था, सत्यवती इसकी माता थी) (सत्यवती का शन्तनु के साथ विवाह होने से पूर्व इसका

जन्म हुआ था) और जन्म होते ही यह वन में चला गया। जहाँ यह वानप्रस्थ होकर घोर तपस्साधना में लीन रहा जब तक कि इसकी माता सत्यवती ने अपने पुत्र विचित्रवीर्य की विधवा पत्नियों में सन्तान उत्पन्न करने के लिए इसे नहीं बुलाया। इस प्रकार यह पाण्डु, धृतराष्ट्र और विदुर का पिता था। पहले पहले यह रंग का काला होने तथा एक द्वीप पर सत्यवती से जन्म लेने के कारण 'कृष्णद्वैपायन' कहलाया, परन्तु बाद में इसका नाम व्यास पड़ा क्योंकि इसने ही वेदों के मन्त्रों को क्रमबद्ध कर वर्तमान रूप दिया। "विव्यास वेदान्यस्मात्स तस्माद्व्यास इतिस्मृतः"। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसी ने महाभारत की रचना कर उसे गणपति द्वारा लेखबद्ध करवाया। अठारह पुराणों तथा ब्रह्मसूत्रों का रचयिता भी इसी को माना जाता है, यह सात चिरजीवियों में से एक हैं तु० 'चिरजीविन्) 11. वह ब्राह्मण जो सार्वजनिक रूप से पुराणों की कथा करता है।

व्यासक्त (भू० क० कृ०) [वि+आ+सञ्ज्+क्त] 1. जो दृढ़ता पूर्वक डटा रहे 2. जुड़ा हुआ, लगा हुआ, तुला हुआ व्यस्त, (अधि० के साथ) 3. नियुक्त, पृथक् किया हुआ, अलग किया हुआ 4. परेशान, व्याकुल, घबड़ाया हुआ।

व्यासङ्गः [वि+आ+सञ्ज्—घञ्] 1. सटा होना, डटे रहना, तुला रहना 2. एकनिष्ठता, भक्ति—भामि० १।७९ 3. सपरिश्रम अध्ययन 4. ध्यान 5. पृथक्ता, संयोग।

व्यासिद्ध (भू० क० कृ०) [वि+आ+सिध्+क्त] 1. प्रतिषिद्ध, वर्जित 2. निषिद्धपण्य, चोरी का माल।

व्याहत (भू० क० कृ०) [वि+आ+हन्+क्त] 1. अवरुद्ध, रोका हुआ 2. हटाया हुआ, पीछे ढकेला हुआ 3. विफल किया हुआ, निराश - शि० ३।४० 4. व्याकुल, घबड़ाया हुआ, आतंकित। सम० अर्थता रचना का एक दोष ---दे० काव्य० ७।.

व्याहरणम् [वि+आ+हृ+ल्युट्] 1. बोलना, उच्चारण करना 2. भाषण, वर्णन।

व्याहारः [वि+आ+हृ+घञ्] 1. भाषण, बोलना, वचन -उत्तर० ४।१८, ५।२९ 2. आवाज, स्वर, ध्वनि मालवि० ५।१।

व्याहृत (भू० क० कृ०) [वि+आ+हृ+क्त] कहा हुआ, बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ।

व्याहृतिः (स्त्री०) [वि+आ+हृ+क्तिन्] 1. उच्चारण, भाषण, वचन न हीश्वरव्याहृतयः कदाचित्पुष्णन्ति लोके विपरीतमर्थम्---कु० ३।६० 2. वक्तव्य, अभिव्यक्ति—भूतार्थव्याहृतिः सा हि न स्तुति परमेष्ठिनः —रघु० १०।३३ 3. सन्ध्या करते समय प्रतिदिन प्रत्येक ब्राह्मण द्वारा उच्चारित ईश्वर परक शब्द विशेष (यह व्याहृतियाँ तीन हैं—भूर्, भुवस्, तथा स्वर् जिनका 'ओ३म्' के पश्चात् उच्चारण किया जाता है, कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार व्याहृतियाँ गिनती में सात हैं)।

व्युच्छित्तिः (स्त्री०), **व्युच्छेदः** [वि+उत्+छिद्+क्तिन्, घञ् वा] काट डालना, उन्मूलन, पूर्ण विनाश।

व्युत्क्रमः [वि+उत्+क्रम्+घञ्] 1. अतिक्रमण, विचलन 2. उलटा क्रम, वैपरीत्य 3. अव्यवस्था, गड़बड़ी।

व्युत्क्रान्त (भू० क० कृ०) [वि+उत्+क्रम्+क्त] 1. अतिक्रान्त, उल्लंघन किया गया 2. जो विदा हो गया हो, छोड़कर चला गया हो, बीत गया हो।

व्युत्थानम् व्युत्थितिः (स्त्री०) [वि+उ+स्था+ल्युट्, क्तिन् वा] 1. महान् क्रियाकलाप 2. किसी के विरुद्ध खड़े होना, विरोध, रुकावट 3. स्वतन्त्र कर्म, मनोऽनुकूल कार्य 4. (योग० में) धार्मिक मनोयोग की पूर्ति या भावात्मक मनन 5. एक प्रकार का नृत्य 6. (हाथी को) उठाना—शि० १८।२६

व्युत्पत्तिः (स्त्री०) [वि+उत्+पद्+क्तिन्] 1. मूल, उत्पत्ति 2. व्युत्पादन, निर्वचन 3. पूरी प्रवीणता, पूरी जानकारी 4. विद्वत्ता, ज्ञान—व्युत्पत्तिरावर्जितकोविदापि न रञ्जनाय क्रमते जडानाम् विक्रम० १।१५, १८।१०८।

व्युत्पन्न (भू० क० कृ०) [वि+उत्+पद्+क्त] 1. उत्पादित, पैदा किया गया 2. निर्वचन द्वारा निर्मित 3. व्याकरण द्वारा निष्पन्न, निरुक्त, (शब्द) जिसके निर्वचन का पता लग गया हो (विप० अव्युत्पन्न या मूल) 4. पूरा किया गया, सम्पन्न किया गया महावी० ४।५७ 5. पूरी तरह प्रवीण, विद्वान्, पण्डित।

व्युत्त (भू० क० कृ०) [वि+उन्द्+क्त] क्लिन्न, आर्द्र, भिगोया हुआ।

व्युदस्त (भू० क० कृ०) [वि+उद्+अस्+क्त] एक ओर फेंका हुआ, अस्वीकृत, दूर किया हुआ।

व्युदासः [वि+उद्+अस्+घञ्] 1. एक ओर फेंकना, अस्वीकृति 2. (व्या० में) निकाल देना 3. प्रतिषेध 4. उपेक्षा, उदासीनता 5. हत्या, विनाश शि० १५।३७

व्युपदेशः [वि+उप+दिश्+घञ्] व्याज, बहाना।

व्युपरमः [वि+उप+रम्+अप्] विराम, यति, समाप्ति।

व्युपशमः [वि+उप+शम्+अच्] 1. विराम का अभाव 2. अशान्ति 3. पूर्ण विराम (यहाँ 'वि' का अर्थ 'तीव्रता' है।

व्युष्ट (भू० क० कृ०) [वि+उष्+क्त] 1. जलाया गया 2. पौफटी, प्रभात 3. जो उज्ज्वल या स्वच्छ हो 4. बसा हुआ, —ष्टम् 1. पौ फटना, प्रभात शि० १२।४ 2. दिन 3. फल।

व्युष्टिः (स्त्री०) [वि+वस्+क्तिन्] 1. प्रभात 2. समृद्धि 3. प्रशंसा 4. फल, परिणाम।

व्यूढ (भू० क० कृ०) [वि+वह्+क्त] 1. फुलाया हुआ, विकसित, विशाल, व्यापक —व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः—रघु० १।१३ 2. दृढ़, सटा हुआ 3. क्रमबद्ध, व्यवस्थित, (सेना आदि) सुविन्यस्त—भग० १।३ 4. अव्यवस्थित, क्रमहीन 5. विवाहित। सम०—कङ्कट (वि०) कवचित, जिरह बख्तर पहने हुए।

व्यूत (वि०) [वि+वे+क्त] 1. अन्तर्वलित, सीया गया, गूँथा गया।

व्यूतिः [स्त्री०) [वि+वे+क्तिन्] 1. बुनाई, सिलाई 2. बुनाई की मजदूरी।

व्यूहः [वि+ऊह्+घञ्] 1. सैनिक विन्यास—मनु० ७।१८७ 2. सेना, दल, टुकड़ी—व्यूहावुभौ तावितरेतरस्मात् भङ्गं जयं चापतुरव्यवस्थम् रघु० ७।५४ 3. बड़ीमात्रा, समवाय, समुच्चय, संग्रह 4. भाग, अंश, उपशीर्ष 5. शरीर 6. संरचन, निर्माण 7. तर्कना, तर्क। सम० पार्ष्णिः (स्त्री०) सेना का पिछला भाग,—भङ्गः, —भेदः सैनिक व्यूह को तोड़ देना।

व्यूहनम् [वि+ऊह्+ल्युट्] 1. सेना को व्यवस्थित करना, सेना को क्रमबद्ध करना 2 शरीर के अंगों की संरचना।

व्यृद्धिः (स्त्री०) [विगता ऋद्धिः—प्रा० स०] 1. समृद्धि का अभाव, बुरी क़िस्मत, दुर्भाग्य (विगता ऋद्धि-व्यृद्धिः) जैसा कि यवनानां व्युद्धिर्दर्यवनम्—सिद्धा०।

व्ये (भ्वा० उभ० व्ययति—ते, ऊत, प्रेर० व्याययति—ते, इच्छा० विव्यासति) 1. ढकना 2. सीना।

व्योकारः [व्यो+कृ+अण्] लुहार।

व्योमन् (नपुं०) [व्ये+मनिन्, पृषो०] आकाश, अन्तरिक्ष —अस्त्येवं जडधामता तु भवतो यद् व्योम्नि विस्फूर्जसे —काव्य० १०, मेघ० ५१, रघु० १३।६७, नै० २२।५४ 2. जल 3. सूर्य का मन्दिर 4. अभ्रक। सम०—उदकम् वारिश का पानी, ओस,—केशः,—केशिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—गंगा स्वर्गीय गंगा, —चारिन् (पुं०) 1. देव 2. पक्षी 3. सन्त, महात्मा 4. ब्राह्मण 5. तारा, नक्षत्र, —धूमः बादल,—नाशिका एक प्रकार की बटेर, लवा,—मंजरम्,—मंडलम् झंडा, पताका, —मुद्गरः हवा का झोंका, —यानम् दिव्यसवारी, आकाशयान,—सद् (पुं०) 1. देव, सुर 2. गन्धर्व 3. भूत-प्रेत,—स्थली पृथ्वी,—स्पृश् (वि०) गगनचुंबी, अत्यन्त ऊंचा।

व्रज् (भ्वा० पर० व्रजति) 1. जाना, चलना, प्रगति करना, —नाविनीतैर्व्रजेद् धुर्यैः मनु० ४।६७ 2. पधारना, पहुँचना दर्शन करना—मामेकं शरणं व्रज—भग० १८।६६ 3. विदा होना, सेवा से निवृत्त होना, पीछे हटना 4. (समय का) बीतना—इयं व्रजति यामिनी त्यज नरेन्द्र निद्रारसम्—विक्रम० ११।७४, (यह धातु प्रायः गम् या या धातु की भाँति प्रयुक्त होती है), अनु—, 1. बाद में जाना, अनुगमन करना—मनु० ११।१११ कु० ७।३८ 2. अभ्यास करना, सम्पन्न करना 3. सहारा लेना, आ—, आना, पहुँचना, परि—, भिक्षु या साधु के रूप में इधर-उधर घूमना, संन्यासी या परिव्राजक हो जाना, प्र—, 1. निर्वासित होना 2. सांसारिक वासनाओं को छोड़ देना, चौथे आश्रम में प्रविष्ट होना, अर्थात् संन्यासी हो जाना—मनु० ६।३८, ८।३६३।

व्रजः [व्रज्+क] 1. समुच्चय, संग्रह, रेवड़, समूह —नेत्रव्रजाः पौरजनस्य तस्मिन् विहाय सर्वान्नृपतीन्निपेतुः —रघु० ६।७, ७।६७, शि० ६।६, १४।३३ 2. ग्वालों के रहने का स्थान 3. गोष्ठ, गौशाला—शि० २।६४ 4. आवास, विश्रामस्थल 5. सड़क, मार्ग 6. बादल 7. मथुरा के निकट एक जिला। सम०—अङ्गना, —युवतिः (स्त्री०) व्रज में रहने वाली स्त्री, ग्वालन —भामि० २।१६५,—अजिरम् गोशाला, —किशोरः —नाथः,—मोहनः,—वरः,—वल्लभः कृष्ण के विशेषण।

व्रजनम् [व्रज्+ल्युट्] 1. घूमना, फिरना, यात्रा करना 2. निर्वासन, देश निकाला।

व्रज्या [व्रज्+क्यप्+टाप्] 1. साधु या भिक्षु के रूप में इधर-उधर घूमना 2. आक्रमण, हमला, प्रस्थान 3. रेवड़, समुदाय, जनजाति या क़बीला, संप्रदाय 4. रंगभूमि, नाट्यशाला।

व्रण् i (भ्वा० पर० व्रणति) ध्वनि करना।
ii (चुरा० उभ० व्रणयति—ते) चोट पहुँचाना, घायल करना।

व्रणः, व्रणम् [व्रण्+अच्] 1. घाव, क्षत, ज़ख्म, चोट —रघु० १२।५५ 2. फोड़ा, नासूर। सम०—अरिः बोल नामक गंधद्रव्य,—कृत् (वि०) घाव करने वाला, (पुं०) भिलावे का पेड़,—विरोपण (वि०) घाव भरने वाला —श० ४।१३,—शोधनम् घाव का साफ करना तथा पट्टी बाँधना, —हः एरंड का पौधा।

व्रणित (वि०) [व्रण+इतच्] घायल, जिसके खरोंच आ गई हो —उत्तर० ४।१३।

व्रतः, व्रतम् [व्रज्+घ, जस्य तः] 1. भक्ति या साधना का धार्मिक कृत्य, प्रतिज्ञात का पालन, प्रतिज्ञा, पण—अभ्यर्थनीय व्रतमासिधारम्—रघु० १३।६७, २।४, २५, (भिन्न भिन्न पुराणों में अनेक व्रतों का वर्णन किया गया है,

परन्तु उनकी संख्या निश्चित नहीं हो सकी क्योंकि बराबर नये नये व्रतों की रचना प्रतिदिन होती रहती है यथा सत्यनारायण व्रत 2. संकल्प, प्रतिज्ञा, दृढ़ निश्चय—सोऽभूत् भग्नव्रतः शत्रूनुद्धृत्य प्रतिरोपयन् —रघु० १७।४२, इसी प्रकार 'सत्यव्रत, दृढ़व्रत' इत्यादि 3. भक्ति या आस्था का पदार्थ, भक्ति, जैसा कि पतिव्रता (पतिर्व्रतं यस्याः सा)—यान्ति देवव्रता देवान् पितृन् यान्ति पितृव्रताः—भग० ९।२५ 4. संस्कार अनुष्ठान, अभ्यास, जैसा कि 'अर्कव्रत' में 5. जीवन-चर्या, आचरण, चालचलन—श० ५।२६ 6. अध्यादेश, विधि, नियम 7. यज्ञ 8. कर्म, करतब, कार्य। सम०—आचरणम् किसी प्रतिज्ञा का पालन करना, —आदेशः (किसी द्विज के) बालक का यज्ञोपवीत संस्कार,—उपवासः किसी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए अनशन करना,—ग्रहणम् किसी धार्मिक अनुष्ठान को पूरा करने के लिए संकल्प लेना,—चर्यः ब्रह्मचारी, वेदविद्यार्थी—दे० ब्रह्मचारिन्,—चर्या ब्रह्मचर्य का पालन करना,—पारणम्,—णा उपवास खोलना या प्रतिज्ञा की सफल समाप्ति,—भङ्गः 1. संकल्प तोड़ना 2. प्रतिज्ञा तोड़ना,—भिक्षा उपनयन संस्कार के अवसर पर भिक्षा मांगना,—लोपनम् प्रतिज्ञा को तोड़ना,—वैकल्यम् किसी धार्मिक संकल्प का अधूरा रह जाना,—संग्रहः व्रत की दीक्षा लेना,—स्नातकः वह ब्राह्मण जिसने ब्रह्मचर्य आश्रम की अवस्था को पूरा कर लिया है अर्थात् ब्रह्मचर्य नामक प्रथम आश्रम—दे०स्नातक।

व्रततिः,—ती (स्त्री०) [प्र+तन्+क्तिन् च, पृषो० पस्य वः व्रतति+ङीष्] 1. बेल, लता—पादाकृष्टव्रततिवलयासंगसंजातपाशः —श० १।३३, रघु० १४।१ 2. फैलाव, विस्तार।

व्रतिन् (वि०) [व्रत+इनि] प्रतिज्ञा पालन करने वाला, भक्त, पुण्यात्मा, (पुं०) 1. ब्रह्मचारी 2. संन्यासी, भक्त—श० ५।९ 3. जो यज्ञ का उपक्रम करता है—दे० 'यजमान'।

व्रश्न दे० 'वृश्न'।

व्रह्मन् दे० 'ब्रह्मन्'।

व्रश्च् (तुदा० पर० वृश्चति, वृक्ण, प्रेर० व्रश्चयति—ते, इच्छा० विव्रश्चिषति या विव्रक्षति) 1. काटना, काट डालना, फाड़ना, चीरना 2. घायल करना।

व्रश्चनः [व्रश्च्+ल्युट्] 1. छोटी आरी 2. बारीक रेती जिसे सुनार काम में लाते हैं,—नम् काटना, फाड़ना घायल करना।

व्राजिः (स्त्री०) [व्रज्+इञ्] हवा का झोंका, तूफानी हवा, झंझावात।

व्रातः [वृ+अतच्, पृषो० साधुः] समुदाय, रेवड़, समुच्चय —श्वपाकानां व्रातैः—गंगा० २९, रघु० १२।९४, शि० ४।३५,—तम् 1. शारीरिक श्रम, मजदूरी 2. दैनिक मजदूरी 3. यदा-कदा कार्य में नियुक्ति।

व्रातीन (वि०) [व्रातेन जीवति—व्रात+ख] दैनिक-मजदूरी से जीविका चलाने वाला, किराये का मजदूर, बेलदार, झल्ली वाला।

व्रात्यः [व्रातात् समूहात् च्यवति-यत्] 1. प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जो मुख्य संस्कार या शोधक कृत्यों का अनुष्ठान न करने के कारण पतित हो गया है (जिसका उपनयन संस्कार नहीं हुआ); जातिवहिष्कृत भवत्या हि व्रात्याधमपतितपाखण्डपरित्यक्तपरित्राणस्नेहः गंगा० ३७ 2. नीच पुरुष, अधम पुरुष 3. विशेष नीच जाति (शूद्रपिता और क्षत्रिय माता की सन्तान)का पुरुष। सम०—ब्रुव जो अपने आपको 'व्रात्य' कहता है,—स्तोमः उपयुक्त संस्कारों का अनुष्ठान न करने के कारण छीने गये अधिकारों को फिर से प्राप्त करने के लिए किया गया यज्ञ।

व्री i (क्र्या० पर० व्रिणाति-व्रीणाति) छांटना, चुनना, तु० 'वृ०'।
ii (दिवा० आ० व्रीयते, व्रीण) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. चुना जाना।

व्रीड् (दिवा० पर० व्रीडयति) 1. लज्जित होना, शर्मिन्दा होना 2. फेंकना, डालना, भेज देना।

व्रीडः,—डा [व्रीड्+घञ्,+व्रीड्+अ+टाप्] 1. लज्जा व्रीडादिवाभ्यासगतैर्विलिल्ये शि० ३।४०, व्रीडमावहति मे स (शब्दः) संप्रति—रघु० ११।७३ 2. विनय, लज्जाशीलता—शि० १०।१८।

व्रीडित (भू० क० कृ०) [व्रीड्+क्त] लज्जित किया गया, शर्मिन्दा, लज्जाशील।

व्रीस् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० व्रीसति, व्रीसयति—ते) क्षति पहुंचाना, हत्या करना।

व्रीहिः [व्री+हि, किच्च] 1. चावल, जैसा कि 'बहुव्रीहि' में 2. चावल का दाना। सम०—अगारम् धान्यागार, खत्ती,—काञ्चनम् मसूर की दाल,—राजिकम् चना, कंगू या कांगनी चावल।

व्रुड् (तुदा० पर० व्रुडति) 1. ढकना 2. इकट्ठा होना 2. एकत्र करना, संचय करना 4. डूबना, नीचे जाना।

व्रुस् (भ्वा० पर०, उभ०) दे० 'व्रीस्'।

व्रैहेय (वि०) (स्त्री०—यी) [व्रीहि+ढक्] 1. चावलों के योग्य 2. चावल के साथ बोया हुआ,—यम् चावल का खेत, वह खेत जिसमें चावल बोये जाने चाहिए।

व्ली (क्र्या० पर० व्लिनाति—'व्लीनाति' विरल प्रयोग—प्रेर० व्लेपयति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. भरण-पोषण करना, थामे रखना, निर्वाह करना 3. छांटना, चुनना।

व्लेक्ष् (चुरा० उभ० व्लेक्षयति—ते) देखना।

श

शः [शो+ड] 1. काटने वाला, विनाशकर्ता —कि० १५। ४५ 2. शस्त्र 3. शिव,—शम् आनन्द—भर्तृ० २।१६।

शंयु (वि०) [शं शुभम् अस्त्यस्य—शम्+युस्] प्रसन्न, समृद्ध —भट्टि० ४।१८।

शंवः [शम्+व] 1. प्रसन्न, भाग्यशाली —(पुं०) 1. ठीक दिशा में हल चलाना 2. इन्द्र का वज्र 3. मूसल का सिर जो लोहे का बना होता है।

शंस् (भ्वा० पर० शंसति, शस्त, कर्मवा० शस्यते) 1. प्रशंसा करना, स्तुति करना, अनुमोदन करना —साधु साध्विति भूतानि शशंसुर्मारुतात्मजम्—राम०, भग० ५।१ 2. कहना, बयान करना, अभिव्यक्त करना, प्रकथन करना, संसूचित करना, घोषणा करना, विवरण देना (संप्र० या कभी संबं० के साथ अथवा स्वतंत्र रूप से) —शशंस सीता परिदेवनान्तमनुष्ठितं शासनमग्रजाय—रघु० १४।८३, न मे ह्रिया शंसति किंचिदीप्सितम्—३।५, २।६८, ४।७२, ९।७७, ११।८४, कु० ३।६०, ५।५१ 3. संकेत करना, कह रखना, जताना—यः (अशोकः) सावज्ञो माधवश्रीनियोगे पुष्पैः शंसत्यादरं त्वत्प्रयत्ने—मालवि० ५।८, कि० ५।२३, कु० २।२२ 4. आवृत्ति करना, पाठ करना 5. चोट मारना, क्षति पहुँचाना 6. बुरा भला कहना, बदनाम करना, अभि—, 1. अभिशाप देना 2. दोषारोपण करना, निन्दा करना, बदनाम करना —याज्ञ० ३।२८६ 3. प्रशंसा करना, आ—(प्रायः आ) 1. आशा करना, प्रत्याशा करना, इच्छा करना, अभिलाषा करना—स्वकार्यसिद्धिं पुनराशशंसे—कु० ३। ५७, संग्रामं चाशशंसिरे—भट्टि० १४।७०, ९०, मनोरथाय नाशंसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा—श० ७।१३, २।१५ 2. आशीर्वाद देना, सदिच्छा प्रकट करना, मंगलकामना करना—एवं ते देवा आशंसन्तु—मृच्छ० १, राज्ञः शिवं सावरजस्य भूयादित्याशशंसे करणैरबाह्यैः—रघु० १४।५० 3. कहना, वर्णन करना —आशंसता बाणगतिं वृषांके कार्यं त्वया नः प्रतिपन्नकल्पम्—कु० ३।१४ 4. प्रशंसा करना 5. दोहराना, प्र—, सराहना, स्तुति करना, अनुमोदन करना, गुणकथन करना, श्लाघा करना—हरिणायुवतिः प्रशशंसे —गीत० १, यच्च वाचा प्रशस्यते—मनु० ५।१२७, प्राशंसीत्तं निशाचरः—भट्टि० १२।६५, रघु० ५।२५, १७।३६।

शंसनम् [शंस्+ल्युट्] 1. प्रशंसा करना 2. कहना, वर्णन करना 3. पाठ करना।

शंसा [शंस्+अ+टाप्] 1. श्लाघा 2. अभिलाषा, इच्छा, आशा 3. दोहराना, वर्णन करना।

शंसित (भू० क० कृ०) [शंस्+क्त] 1. जिसकी श्लाघा की गई हो, स्तुति की गई हो 2. बोला गया, कहा गया, उक्त, घोषित 3. अभिलषित, इच्छित 4. निश्चय किया गया, स्थापित, निर्धारित 5. जिस पर मिथ्या दोषारोपण किया गया हो, कलंकित।

शंसिन् (वि०) [शंस्+इनि] (प्रायः समास के अन्त में) 1. श्लाघा करने वाला 2. कहने वाला, घोषणा करने वाला, संसूचित करने वाला,—प्रजावती दोहदशंसिनी ते—रघु० १४।४५ 3. संकेत करने वाला, पहले से कह रखने वाला—मूर्धानः क्षतहुंकारशंसिनः —कु० २।२६, प्रार्थनासिद्धिशंसिनः—रघु० १।४२, शि० ९।७७ 4. शकुन बताने वाला, भविष्य कथन करने वाला—रघु० ३।१४, १२।९०।

शक् i (स्वा० पर० शक्नोति, शक्त) 1. योग्य होना, सक्षम होना, सबल होना, अमल में लाना (प्रायः 'तुमुन्नन्त' के साथ, प्रयुक्त होकर 'सकना' अर्थ प्रकट करना)—अदर्शयन् वक्तुमशक्नुवत्यः शाखाभिरावर्जितपल्लवाभिः—रघु० १३।२४, भट्टि० ३।६, मेघ० २० कभी कभी कर्म० या संप्र० के साथ—मनु० ११।१९४ 2. सहन करना, बर्दाश्त करना 3. शक्तिशाली होना —कर्मवा० समर्थ होना, सम्भव होना, व्यवहार के योग्य होना (निम्नांकित तुमुन्नंत को कर्मवा० का अर्थ देना)—तत्कर्तुं शक्यते 'यह किया जा सकता है', इच्छा० (शिक्षति) 1. समर्थ होने की इच्छा करना 2. सीखना।

ii (दिवा० उभ०—शक्यति—ते, शक्त) 1. समर्थ होना, अमल में लाने की शक्ति रखना 2. सहन करना, बर्दाश्त करना।

शकः [शक्+अच्] 1. एक राजा (विशेषतः 'शालिवाहन', परन्तु इस शब्द के सही अर्थ तथा क्षेत्र के विषय में अभी तक विद्वानों में मतैक्य नहीं हो सका) 2. काल, सम्वत् (यह शब्द विशेष रूप से शालिवाहन सम्वत् के लिए जो खीस्ताब्द से ७८ वर्ष के पश्चात् आरम्भ हुआ, प्रयुक्त होता है),—काः (पुं० ब० व०) 1. एक देश का नाम 2. एक विशेष जन-जाति या राष्ट्र का नाम (मनु० १०।४४ में 'पौण्ड्रक' के साथ इस शब्द का भी प्रयोग मिलता है) सम०—अन्तकः, —अरिः राजा विक्रमादित्य के विशेषण जिसने शकों का उन्मूलन किया,—अब्दः शकसंवत् का वर्ष,—कर्तृ, —कृत् (पुं०) संवत् का प्रवर्तक।

शकटः,—टम् [शक्+अटन्] गाड़ी, छकड़ा, भार ढोने की गाड़ी—रोहिणी शकटम्—पंच० १।२१३, २११, याज्ञ० ३।४२,—टः 1. सैनिक व्यूहविशेष—मनु० ७।१८७ 2. एक विशेष प्रकार की तोल जो एक गाड़ी-भर बोझ या २००० पल के बराबर है 3. एक राक्षस का

नाम जिसे कृष्ण ने अपने बचपन में ही, मार डाला था 4. तिनिश नामक पेड़। सम०—अरिः,—हन् (पुं०) कृष्ण के विशेषण,—आह्वा रोहिणी नामक नक्षत्र (इसका आकार 'शकट' जैसा होता है), —बिलः जलकुक्कुट।

शकटिका [शकट+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] छोटी गाड़ी, खिलौना-गाड़ी जैसा कि 'मृच्छकटिका' में।

शकन् (नपुं०) मल, विष्ठा, विशेषकर जानवरों का मल, लीद गोबर आदि (इस शब्द के पहले पांच वचनों में कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व० से आगे विकल्प से 'शकृत्' आदेश हो जाता है)।

शकलः [शक्+कलक्] 1. भाग, अंश, हिस्सा, टुकड़ा, खण्ड (इस अर्थ में नपुं० भी)—उपशकलमेतद्भेदकं गोमयानां—मुद्रा० ३।१५, रघु० २।४६, ५।७० 2. बक्कल, छिलका 3. (मछली की) खाल, परत।

शकलित (वि०) [शकल+इतच्] खण्ड-खण्ड किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

शकलिन् (वि०) [शकल+इनि] मछली।

शकारः (पुं०) राजा की रखैल का भाई, राजा की उस पत्नी का भाई जिससे विधिपूर्वक विवाह न किया गया हो, अनूढा भ्राता (इसका वर्णन बहुधा मिश्रित मिलता है, नीच कुल में जन्म लेने के कारण मूर्खता, घमंड, आदि अवगुणों के विद्यमान रहते हुए भी राजा का साला होने के कारण इसे उच्चपद मिल जाता है, शूद्रकरचित मृच्छकटिक नाटक में यह प्रमुख भाग लेता है, मिथ्या यश, हलकापन तथा ओछापन इसके चरित्र की विशेषता है, बार-बार उसके उच्चसम्बन्ध का उल्लेख, उसकी उपहासास्पद मूर्खता, एवं प्रमाद तथा अपनी इच्छा की पूर्ति न होने पर नायिका का गला घोटने की क्रूरता इसकी योग्यता के परिचायक हैं सा० द० ८१ में इसकी परिभाषा दी गई है मदमूर्खताभिमानी दुष्कुलतैश्वर्यसंयुक्तः। सोऽयमनूढाभ्राता राज्ञः श्यालः शकार इत्युक्तः॥

शकुनः [शक्+उनन्] 1. पक्षी—शकुनोच्छिष्टम्—याज्ञ० १।१६८ 2. पक्षिविशेष, चील, गिद्ध,—नम् 1. सगुन, लक्षण, शुभाशुभ बतलाने वाला चिह्न शि० ९।८३ 2. शंकासूचक सगुन। सम०—ज्ञ (वि०) सगुनों को जानने वाला,—ज्ञानम् सगुनों का ज्ञान, भवितव्यता, होनहार,—शास्त्रम् वह शास्त्र जिसमें सगुनसम्बन्धी विचार किये गये हैं, सगुन शास्त्र।

शकुनिः [शक्+उनि] 1. पक्षी—उत्तर० २।२५, मनु० १२।६३ 2. गिद्ध, चील, बाज 3. मुर्गा गांधारराज सुबल का एक पुत्र, धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी का भाई, इस प्रकार यह दुर्योधन का मामा था। इसी ने पांडवों को उखाड़ने के लिए दुर्योधन की अनेक दुरभियोजनाओं में सहायता दी। आजकल इस नाम का प्रयोग उस दुर्वृत्त रिश्तेदार के लिए होता है जिसका परामर्श बर्बादी का कारण बने। सम० ईश्वरः गरुड़, प्रपा पक्षियों को पानी पिलाने की कूंड—वादः 1. पक्षी की कूजन 2. मुर्गे की बांग।

शकुनी [शकुन+ङीप्] 1. चिड़िया, गोरैया 2. एक पक्षिविशेष।

शकुन्तः [शक्+उन्त] 1. एक पक्षी—अंसव्यापिशकुन्तनीडनिचितं बिभ्रज्जटामण्डलम् श० ७।११ 2. नीलकंठ पक्षी 3. पक्षिविशेष।

शकुन्तकः [शकुन्त+कन्] पक्षी।

शकुन्तला [शकुन्तैः लायते—ला घञर्थे क+टाप्] विश्वामित्र ऋषि की तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र द्वारा भेजी गई मेनका अप्सरा से उत्पन्न विश्वामित्र की पुत्री (जब मेनका स्वर्ग गई तो वह इस बच्ची को एकान्त जंगल में छोड़ गई, वहाँ पक्षियों ने इसका पालन पोषण किया, इसी लिए इसका नाम शकुन्तला पड़ा। बाद में वह महर्षि कण्व को मिली। कण्व ने उसे अपनी पुत्री की भांति पाला। जब आखेट करता हुआ दुष्यन्त कण्व ऋषि के आश्रम की ओर आया तो वह शकुन्तला के लावण्य से आकृष्ट हो गया। उसने शकुन्तला को अपनी पत्नी बनाने के लिए उसे राजी कर उससे गांधर्व विवाह कर लिया (दे० दुष्यन्त)। शकुन्तला से एक पुत्र पैदा हुआ, इसका नाम भरत था, यह चक्रवर्ती राजा बना, इसी के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

शकुन्तिः [शक्+उन्ति] पक्षी कलमविरलं रत्युत्कंठाः क्वणन्तु शकुन्तयः—उत्तर० ३।२४।

शकुन्तिका [शकुन्ति+कन्+टाप्] 1. पक्षी—उत्तर० १।४५ 2. पक्षिविशेष 3. टिड्डी, झींगुर।

शकुलः, —ली [शक्+उलच्] एक प्रकार की मछली। सम०—अदनी एक जड़ीबूटी, कटकी या कुटकी, —अर्भकः एक प्रकार की मछली।

शकृत् (नपुं०) [शक्+ऋतन्] मल, विष्ठा, विशेषकर जानवरों की लीद, गोबर आदि। सम० करिः (पुं०; स्त्री०)—करी बछड़ा,—शकृत्करिर्वत्सः—सिद्धा०, —द्वारम् गुदा, मलद्वार, —पिण्डः, —पिण्डकः गोबर का गोला शष्पाण्यत्ति प्रकिरति शकृत्पिण्डकानाम्रमात्रान् उत्तर० ४।२७।

शक्करः, **शक्करिः** [शक्+क्विप्, कृ+अच्. कर्म० स०] बैल, साँड़।

शक्करी [शक्कर+ङीप्] 1. नदी 2. करधनी, मेखला 3. नीच जाति की स्त्री।

शक्त (भू० क० कृ०) [शक्+क्त] 1. योग्य, सक्षम, समर्थ

(सम्बं०, अधि० या तुमुन्नन्त के साथ)—बहवोऽस्य कर्मणः शक्ताः वेणी० ३, तस्योपकारे शक्तस्त्वं किं जीवन् किमुतान्यथा—त० 2. मजबूत, ताक़तवर, शक्तिशाली 3. धनाढ्य, समृद्धिशाली—मनु० ११।९ 4. सार्थक, अभिव्यञ्जक (शब्द) 5. चतुर, प्रज्ञावान् 6. प्रियवादी।

शक्तिः (स्त्री०) [शक्+क्तिन्] 1. बल, योग्यता, धारिता, सामर्थ्य, ऊर्जा, पराक्रम दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या—पंच० १।३६१, ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ रघु० १।२२, इसी प्रकार यथाशक्ति, स्वशक्ति आदि, राज्यशक्ति (इस के तीन तत्त्व हैं 1. प्रभुशक्ति या प्रभावशक्ति 'राजा की अपनी प्रमुख पदवी' 2. मन्त्रशक्ति 'सत्परामर्श की शक्ति' तथा 3. उत्साह शक्ति 'प्रेरकशक्ति') राज्यं नाम शक्तित्रयायत्तम् दश०, त्रिसाधना शक्तिरिवार्थसञ्चयम् —रघु० ३।१३, ६।३३, १७।६३, शि० २।२६ 2. रचनाशक्ति, काव्य शक्ति या प्रतिभा—शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् काव्य० १, दे० तत्स्थानीय व्याख्या 3. देव की सक्रिय शक्ति, यह शक्ति देवपत्नी मानी जाती है, देवी, दिव्यता (इनकी गिनती विविध प्रकार से की जाती है कहीं आठ, कहीं नौ और कहीं पचास तक)—स जयति परिणद्धः शक्तिभिः शक्तिनाथः—मा० ५।१, श० ७।३५ 4. एक प्रकार का अस्त्र,—शक्तिखण्डार्मार्पितेन गाण्डीविनोक्तम् वेणी० ३, ततो विभेद पौलस्त्यः शक्त्या वक्षसि लक्ष्मणम् रघु० १२।७७ 5. बर्छी, नेज़ा, शूल, भाला 6. (न्या० में) किसी पदार्थ का उसके बोधक शब्द से सम्बन्ध 7. कारण की अन्तर्हित शक्ति जिससे कार्य की उत्पत्ति होती है 8. (काव्य० में) शब्दशक्ति या शब्द की अर्थशक्ति (यह संख्या में तीन हैं अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना) सा० द० ११ 9. अभिधाशक्ति, शब्दसङ्केत (विप० लक्षणा और व्यञ्जना), 10. स्त्री की जननेन्द्रिय, भग, शाक्तसंप्रदाय के अनुयाइयों द्वारा पूजित शिवलिङ्ग की मूर्ति। सम० अर्धः उद्योग तथा श्रम के फलस्वरूप हांपना तथा शरीर का पसीने से तर होना, अपेक्ष, अपेक्षिन् (वि०) सामर्थ्य का ध्यान रखने वाला,—**कुण्ठनम्** शक्ति को कुण्ठित करना,—ग्रहु (त्रि०) 1. बल या अर्थ को धारण करने वाला 2. बर्छीधारी, (—हः) बल या अर्थ का बोध अथवा शब्दशक्ति का ज्ञान 3. बर्छीधारी, भालाधारी 4. शिव का विशेषण 5. कार्तिकेय का विशेषण,—**ग्राहक** (वि०) शब्द के अर्थ की स्थापना या निर्धारण करने वाला, (—कः) कार्तिकेय का विशेषण, त्रयम् राज्यशक्ति के संघटक तीन तत्त्व दे० शक्ति (2) ऊपर,—धर (वि०) ताक़तवर, शक्तिशाली, (—रः) 1. बर्छीधारी 2. कार्तिकेय का विशेषण,—पाणिः, भृत् (पुं०) 1. बर्छीधारी 2. कार्तिकेय का विशेषण, पातः शक्तिक्षय, पराजय,—**पूजकः** शाक्त, पूजा शक्ति की पूजा,—**वैकल्यम्** शक्तिक्षय, दुर्बलता, अक्षमता,—**हीन** (वि०) शक्तिहीन, निर्बल, बलरहित, नपुंसक,—**हेतिकः** भाला धारी, बर्छीधारी।

शक्तितः (अव्य०) [शक्ति+तसिल्] शक्ति के अनुसार, यथायोग्य, यथाशक्ति।

शक्न, शक्ल (वि०) [शक्+न, क्ल वा] शिष्टभाषी, प्रियवादी।

शक्य (सं० कृ०) [शक्+यत्] 1. संभव, क्रियात्मक, किये जाने के योग्य, (प्रायः तुमुन्नंत के साथ) शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् भर्तृ० २।११, रघु० २।४९, ५४ 2. कार्यान्वियन के योग्य 3. कार्यान्वयन में सरल 4. प्रत्यक्ष कहा गया, अभिहित (शब्दार्थ आदि) —शक्योऽर्थोऽभिधया ज्ञेयः सा० द० ११ 5. संभाव्य (कभी-कभी शक्यम्' शब्द कर्मवा० में तुमुन्नन्त के साथ विधेय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, उस समय तुमुन्नंत का वास्तविक अभिप्राय कर्तृ० में होता है एवं हि प्रणयवती सा शक्यमुपेक्षितुं कुपिता —मालवि० ३।२२, शक्यं...अविरलमालिङ्गितुं पवनः —श० ३।६, विभूतयः शक्यमवाप्तुमूर्जिताः—सुभा०, भग० १८।११। सम० अर्थः प्रत्यक्ष अभिहितार्थ।

शक्रः [शक्+रक्] 1. इन्द्र—एकः कृती शकुन्तेषु योऽन्यं शक्रान्न याचते कुवल० 2. अर्जुन का वृक्ष 3. कुटज का पेड़ 4. उल्लू 5. ज्येष्ठा नक्षत्र 6. चौदह की संख्या। सम०—अशनः कुटज का वृक्ष, आख्यः उल्लू, —आत्मजः 1. इन्द्र का पुत्र जयन्त 2. अर्जुन,—उत्थानम्, उत्सवः भाद्रपदशुक्ला द्वादशी को इन्द्र के सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव, पर्व, गोपः एक प्रकार का लाल कीड़ा, तु० इन्द्रगोप—जः, —जातः कौवा,—जित्, भिद् (पुं०) रावण के पुत्र मेघनाद के विशेषण, द्रुमः देवदारु का वृक्ष, —धनुस्, शरासनम् इन्द्रधनुष, ध्वजः इन्द्र के सम्मान में स्थापित झंडा, पर्यायः कुटज का वृक्ष, —पादपः 1. कुटज का पेड़ 2. देवदारु वृक्ष, प्रस्थ इन्द्रप्रस्थ, भवनम्,—भुवनम्, वासः स्वर्ग, वैकुण्ठ, मूर्धन् (नपुं०) शिरस् (नपुं०) बांबी, वल्मीक, —लोकः इन्द्र का संसार,—वाहनम् बादल, शाखिन् (पुं०) कुटज का वृक्ष, सारथिः इन्द्र का रथवान्, मातलि का विशेषण, सुतः 1. जयंत का विशेषण 2. अर्जुन का विशेषण, 3. वालि का विशेषण।

शक्राणी [शक्र+ङीष्, आनुक्] इन्द्र की पत्नी, शची।

शक्रिः [शक्+क्रिन्] 1. बादल 2. इन्द्र का वज्र 3. पहाड़ 4. हाथी।

शक्वरः [शक्+वन्, र] सांड, बैल, तु० शक्कर।

शङ्क् (भ्वा० आ० शङ्कते, शङ्कित) 1. संदेह करना, अनिश्चित होना, संकोच करना, संदिग्ध होना – शङ्के जीवति वा न वा—राम० 2. डरना, भय होना, त्रस्त होना (अपा० के साथ)—नाशङ्किष्ट विवस्वतः—भट्टि० १५।३९—अशङ्कितेभ्यः शङ्केत शङ्कितेभ्यश्च सर्वतः—सुभा० 3. शंका करना, अविश्वास करना, भरोसा न करना—स्वैर्दोषैर्भवति हि शङ्कितो मनुष्यः—मृच्छ० ४।२ 4. सोचना, विश्वास करना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना, संभव समझना, शंका करना, डरना – त्वय्यासन्ने नयनमुपरिस्पन्दि शङ्के मृगाक्ष्याः—मेघ० ९५, नाहं पुनस्तथा त्वयि यथा हि मां शङ्कसे भीरु — विक्रम० ३।१४, भट्टि० ३।२६, नै० २२।४२ 5. आक्षेप करना, अपनी शंका या ऐतराज उठाना —अत्रेदं शङ्क्यते, (बहुधा विवादास्पद भाषा में प्रयुक्त) —न च ब्रह्मणः प्रमाणान्तरगम्यत्वं शङ्कितुं शक्यम् —सर्व०, अभि –, 1. शंका करना 2. संदिग्ध या अनिश्चयी होना—मनु० ६।६६, आ –, शङ्का करना, भरोसा न करना, संदेह रखना – भट्टि० २१।१ 2. सन्देह करना, विश्वास करना, सोचना—आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्—श० १।२८, शि० ३।७२ भट्टि० ६।६ मनु० ७।१८५ 3. डरना, आशंका करना, भरतागमनं पुनः आशङ्क्य—रघु० १२।२४, पंच० १।३, ९२ 4. आक्षेप करना, संदेह करना अत एव न ब्रह्मशब्दस्य जात्याद्यर्थान्तरमाशङ्कितव्यम् – शारी० (तथा कुछ अन्य स्थानों पर), परि –1. शंका करना, विश्वास करना, उत्प्रेक्षा करना – पत्रेऽपि संचारिणि प्राप्तं त्वां परिशङ्कते—गीत० ६ 2. संदेह करना, संदेहशील होना 3. डरना, भयभीत होना, - रघु० ८।७८, वि –, 1. शंका करना, डरना, संदेहशील या शंकालु होना,—विशङ्कसे भीरु यतोऽवधीरणाम् —श० ३।१४, सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते – ५।१७ 2. सत्ता का चिन्तन करना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना विशङ्कमाना रमितं कयाऽपि जनार्दनं दृष्टवदेतदाह—गीत० ७।

शङ्कः [शङ्क्+अच्] कर्षक बैल, (गाड़ी) खींचने वाला बैल।

शङ्कर (वि०) (स्त्री० - रा,– री) [शं सुखं करोति –कृ+अच्] आनन्द या समृद्धि देने वाला, शुभ, मङ्गलमय,—रः 1. शिव 2. विख्यात आचार्य और ग्रन्थप्रणेता शंकराचार्य दे० परि० २, – री 1. शिव की पत्नी पार्वती 2. मंजिष्ठा, मजीठ 3. शमीवृक्ष।

शङ्का [शङ्क्+अ+टाप्] 1. संदेह, अनिश्चितता 2. संकल्प-विकल्प, दुविधा 3. आशंका, अविश्वास, अनिष्टशंका, अपायशंका, अरिष्टशंका आदि 4. डर, आशंका, त्रास, आतंक—जातशङ्कैर्देवैर्मेनका नामाप्सराः प्रेषिता श० १, कैकेयीशंकयेवाह—रघु० १२।२, १३।४२, मेघ० ६९ 5. आशा, प्रत्याशा 6. (भ्रान्त) विश्वास, आशंका, (मिथ्या) धारणा—स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया—श० ७।२४, कुर्वन् वधूजनमनःसु शशाङ्कशङ्काम्—कि० ५।४२, हरिततृणोद्गमशङ्कया—५।३८।

शङ्कित (भू० क० कृ०) [शङ्क्+क्त] 1. सन्दिग्ध, आशंकायुक्त, त्रस्त 2. शंकालु, आशंका करने वाला, अविश्वासपूर्ण 3. अनिश्चित, संदिग्ध 4. भयपूर्ण, सशंक, आतंकित (दे० शङ्क्)। सम०—चित्त,—मनस् (वि०) भीरु, कातरहृदय 2. शंकाकुल, अविश्वासपूर्ण 3. संदिग्ध।

शङ्किन् (वि०) [शङ्का+इनि] सन्देह करने वाला, शंका करने वाला, डरने वाला, विश्वास करने वाला (समास के अंत में)– त्वदुपावर्तनशङ्कि मे मनः— रघु० ८।५३, अतिस्नेहः पापशङ्की श० ४।

शङ्कुः [शङ्क्+उण्] 1. नेज़ा, बर्छी, नुकीली कील, शक्ति, कटार, (प्रायः समास के अन्त में)—शोकशङ्कुः 'शोकरूपी कटार' अर्थात् तीक्ष्ण एवं हृदयविदारक शोक —उत्तर० ३।३५, रघु० ८।९३ 2. खूंटा, खम्बा, स्तम्भ, शूल या नोकदार छड़ 3. कील, मेख, खूंटी —रघु० १२।९५ 4. बाण की तीखी नोक, काँटा या आँकड़ा 5. (कटे हुए वृक्ष का) तना, पेड़ का ठूंठ, मुंडा पेड़ 6. घड़ी की सूई 7. बारह अंगुल की माप 8. गज, मापने का डंडा 9. (ज्यो० में) लंबरेखा या ऊँचाई 10. सौ खरब या एक नील की संख्या 11. पत्तों के रेशे 12. वल्मीक, वमी 13. पुरुष की जननेन्द्रिय 14. एक प्रकार की मछली, तनुका 15. राक्षस 16. विष 17. पाप 18. जलचर, विशेषकर कलहंस 19. शिव 20. साल का पेड़। सम० – कर्ण (वि०) जिसके कान शंकु के समान लंबे और नुकीले हों, (र्णः) गधा—तरुः वृक्षः साल का पेड़।

शङ्कुला [शङ्क्+उलच्] 1. एक प्रकार का चाकू या दो धार वाला नश्तर 2. सरौता। सम०—खंडः सरौते से काटा हुआ टुकड़ा।

शङ्खः,—खम् [शम्+ख] 1. शंख, घोंघा—न श्वेतभावमुज्झति शङ्खः शिखिभुक्तमुक्तोऽपि – पंच० ४।११०, शङ्खान् दध्मुः पृथक् पृथक्—भग० १।१८ 2. मस्तक की हड्डी, कु० ७।३३ 3. कनपटी की हड्डी 4. हाथी के दोनों दाँतों के बीच का भाग 5. दस नील की संख्या 6. सैनिक ढोल या मारूबाजा 7. एक प्रकार का गन्धद्रव्य, नखी 8. कुबेर की नवनिधियों में से एक 9. एक राक्षस जिसको विष्णु ने मार डाला था 10. एक स्मृतिकार ('लिखित' के साथ

संयुक्त नाम का उल्लेख)। सम०— उदकम् शंख में डाला हुआ पानी, — कारः, — कारकः शंखकार नाम की एक वर्णसंकर जाति, —चरी, — चर्चो (मस्तक पर लगाया गया) चन्दन का तिलक —चूर्णम् शंख को पीस कर बनाया गया चूरा, — द्रावः, — द्रावकः एक प्रकार का घोल जिसमें शंख भी घुल जाता है, — ध्मः —ध्मा (पुं०) शंख बजाने वाला, — ध्वनिः शंख की आवाज (कभी-कभी, परन्तु प्रायः आतंक या निराशा की द्योतक ध्वनि), — प्रस्थः चन्द्रमा का कलंक,—भृत् (पुं) विष्णु का विशेषण, — मुखः घड़ियाल, मगर, — स्वनः शंखध्वनि।

शङ्खकः,—कम् [शंख+कन्] 1. शंख 2. कनपटी की हड्डी, — कः (शङ्ख का बना) कड़ा—शि० १३।४१।

शङ्खनकः, (—खः) एक छोटा शंख या घोंघा।

शङ्खिन् (पुं०) [शङ्ख+इनि] 1. समुद्र 2. विष्णु 3. शंख बजाने वाला।

शङ्खिनी [शङ्खिन्+ङीप्] काम शास्त्र के लेखकों के अनुसार स्त्रियों के किये गये चार भेदों में से एक, रतिमञ्जरी में लिखा है: दीर्घातिदीर्घनयना वरसुन्दरी या कामोपभोगरसिका गुणशीलयुक्ता। रेखात्रयेण च विभूषितकण्ठदेशा संभोगकेलिरसिका किल शङ्खिनी सा— ६, तु० चित्रिणी, हस्तिनी और पद्मिनी भी 2. प्रेतात्मा, अप्सरा, परी।

शच् (भ्वा० आ० शचते) बोलना, कहना, बतलाना।

शचिः,—ची (स्त्री०) [शच्+इन्, शचि+ङीप्] इन्द्र की पत्नी—रघु० ३।१३, २३। सम०—पतिः,—भर्तृ (पुं०) इन्द्र के विशेषण।

शञ्च् (भ्वा० आ० शञ्चते) जाना, हिलना-जुलना।

शट् (भ्वा० पर० शटति) 1. बीमार होना 2. बांटना, वियुक्त करना।

शट (वि०) [शट्+अच्] खट्टा, अम्ल, कसैला।

शटा [शट+टाप्] संन्यासी के उलझे बाल—तु० जटा।

शटिः (स्त्री०) [शट्+इन्] कचूर का पौधा, आमा हल्दी।

शठ् i (भ्वा० पर० शठति) 1. धोखा देना, ठगना, जालसाजी करना 2. चोट मारना, मार डालना 3. कष्ट उठाना।

ii (चुरा० पर० शाठयति) 1. समाप्त करना 2. असमाप्त छोड़ देना 3. जाना, हिलना-जुलना 4. आलसी या सुस्त होना 5. धोखा देना, ठगना (इस अर्थ में 'शठयति')।

शठ (वि०) [शठ्+अच्] 1. चालाक, धोखेबाज, जालसाज, बेईमान, कपटी 2. दुष्ट, दुर्वृत्त, — ठः 1. बदमाश, ठग, धूर्त, मक्कार मनु० ४।३०, भग० १८।२८ 2. झूठा या धोखेबाज प्रेमी (जो एक स्त्री के प्रति प्रेम प्रदर्शित करता है परन्तु मन किसी दूसरी स्त्री में रमाया रहता है)—ध्रुवमस्मि शठः शुचिस्मिते विदितः कैतववत्सलस्तव—रघु० ८।४९, १९।३१, मालवि० ३।१९, सा० द० 'शठ' की इस प्रकार परिभाषा देता है—शठोऽयमेकत्र बद्धभावो यः दर्शितबहिरनुरागो विप्रियमन्यत्र गूढमाचरति—७४ 3. मूढ, बुद्धू 4. मध्यस्थ, बिचवाक 5. धतूरे का पौधा 6. आलसी पुरुष, सुस्त व्यक्ति, —ठम् 1. लोहा 2. केसर, जाफरान।

शणम् [शण्+अच्] सन, पटसन। सम०—सूत्रम् 1. सन की बनी डोरी या रस्सी 2. सन का बना जाल 3. रस्सियाँ, डोरियाँ।

शण्डः [शण्ड्+अच्] 1. नपुंसक, हिजड़ा 2. साँड़ 3. छोड़ा हुआ साँड़,—डम् संग्रह, समुच्चय—तु० षंड या खण्ड की।

शण्ढः [शाम्यति ग्राम्यधर्मात्—शम्+ढ] 1. हिजड़ा, नपुंसक 2. अन्तःपुर में रहने वाला टहलुआ, पुरुषसेवक (हिजड़ों या बधिया किये गये पुरुषों में से चुना हुआ) 3. साँड़ 4. छोड़ा हुआ साँड़ 5. पागल आदमी।

शतम् [दश दशतः परिमाणमस्य—दशन्+त, श आदेशः नि० साधुः] सौ की संख्या—निःस्वो वष्टि शतं —शान्ति० २।६, शतमेकोऽपि संधत्ते प्राकारस्थो धनुर्धरः — पंच० १।२२९ ('शत' शब्द किसी भी लिंग के बहुवचनांत संज्ञा शब्दों के साथ एक वचन में ही प्रयुक्त होता है—शतं नराः, शतं गावः, या शतं गृहाणि, इस दशा में यह संख्यावाचक विशेषण माना जाता है, परन्तु कभी कभी द्विवचन तथा बहुवचन में भी प्रयुक्त होता है—द्वे शते, दश शतानि आदि। संब० के संज्ञा-शब्द के साथ भी प्रयुक्त होता है—गवां शतम्,; समास के अन्त में यह अपरिवर्तित रूप में रह सकता है भव भर्ता शरच्छतम्, या बदल कर 'शती' हो जाता है यथा गोवर्धनाचार्य की कृति 'आर्यासप्तशती') 2. कोई भी बड़ी संख्या। सम० — अक्षी 1. रात्रि, 2. दुर्गादेवी, — अङ्गः गाड़ी, छकड़ा विशेषतः युद्धरथ, — अनीकः बूढ़ा आदमी,—अरम्, — आरम् इन्द्र का बज्र, — आनकम् श्मशान, क़बरिस्तान, — आनन्दः 1. ब्रह्मा 2. विष्णु, कृष्ण 3. विष्णु का वाहन 4. गौतम और अहिल्या का पुत्र, जनकराज का कुलपुरोहित— उत्तर० १।१६, — आयुस् (वि०) सौ वर्ष तक जीवित रहने वाला या टिकने वाला, — आवर्तः, —आवर्तिन् (पुं०) विष्णु, — ईशः 1. सौ के ऊपर शासन करने वाला, 2. सौ गाँव का शासक मनु० ७।११५,—कुम्भः एक पहाड़ का नाम (कहते हैं कि यहाँ पर सोना पाया जाता है), —कुम्भम् सोना,—कृत्वः (अव्य०) सौ गुणा, —कोटि (वि०) सौ धार वाला,

(ढिः) इन्द्र का वज्र, (स्त्री०) एक अरब या सौ करोड़ की संख्या, क्रतुः इन्द्र का विशेषण—रघु० ३।३८, खण्डम् सोना,–गु (वि०) सौ गायों का स्वामी, गुण, गुणित (वि०) सौगुणा बढ़ा हुआ –विक्रम० ३।२२, ग्रन्थिः (स्त्री) दूर्वा घास,–घ्नी 1. एक प्रकार का शस्त्र जो अस्त्र की भांति प्रयुक्त किया जाय (कुछ विद्वानों के मतानुसार यह एक प्रकार का राकेट है, परन्तु दूसरों के मतानुसार यह एक प्रकार का विशाल पत्थर है जिसमें लोहे की शलाकाएँ जड़ी हुई हैं यह लम्बाई में 'चार ताल' है —शतघ्नी च चतुस्ताला लोहकण्टकसंचिता, या, अयः कण्टकसंछन्ना शतघ्नी महती शिला) रघु० १२।९५ 2. बिच्छू की मादा 3. गले का एक रोग जिह्वः शिव का विशेषण,—तारका,—भिषज्,–भिषा (स्त्री०) सौ तारिकाओं का पुंज शतभिषा नामक नक्षत्र,—दला सफ़ेद गुलाब,–द्रुः (स्त्री०) पंजाब की एक नदी जिसका वर्तमान नाम सतलज है,—धामन् (पुं०) विष्णु का विशेषण, धार (वि०) सौ धारों वाला, (–रम्) इन्द्र का वज्र,—धृतिः 1. इन्द्र का विशेषण, 2. ब्रह्मा का विशेषण 3. स्वर्ग,—पत्रः 1. मोर 2. सारस 3. खुट–बढ़ई पक्षी, 4. तोता या तोते की जाति, (त्रा) स्त्री (त्रम्) कमल—आवृत्तवृन्तशतपत्रनिभं (आननम्) वहन्त्या—मा० १।२९, °योनिः ब्रह्मा का विशेषण,—कम्पेन मूर्ध्नः शतपत्रयोनिं(संभावयामास) कु० ७।३६,—पत्रकः खुटबढ़ई,—पद्, पाद् (वि०) सौ पैरों वाला, पदी कानखजूरा,– पद्मम् 1. वह कमल जिसमें सौ पंखड़ियाँ हों 2. श्वेत कमल, —पर्वन् (पुं०) बांस (स्त्री०) 1. आश्विन मास की पूर्णिमा 2. दूर्वा घास 3. कटुक का पौधा, °ईशः शुक्र, ग्रह,—भीरुः (स्त्री०) अरबदेश की चमेली, मख, —मन्युः 1. इन्द्र के विशेषण, कि० २।२३, भट्टि० १।५, कु० २।६४, रघु० ९।१३ 2. उल्लू, मुख (वि०) 1. जिसके सौ रास्ते हों 2. सौ द्वार या मुंह वाला—विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः —भर्तृ० २।१०, (यहाँ शब्द का (१) अर्थ भी है। (–खम्) सौ रास्ते या द्वार, (–खी) बुहारी, झाड़ू, —मूला दूर्वा घास, दूबड़ा, –यज्वन् (पुं०) इन्द्र का विशेषण,—यष्टिकः सौ लड़ियों का हार, रूपा ब्रह्मा की एक पुत्री (जो ब्रह्मा की पत्नी भी मानी जाती है, अपने पिता के साथ इस व्यभिचार के परिणाम स्वरूप उससे स्वायम्भुव मनु का जन्म हुआ),—वर्षम् सौ बरस, शताब्दी, वेधिन् (पुं०) एक प्रकार का खटमिठा शाक, चोका,—सहस्रम् 1. सौ हज़ार 2. कई हज़ार अर्थात् एक बड़ी संख्या,–साहस्र (वि०) 1. सौ हज़ार से युक्त 2. सौ हज़ार में मोल लिया हुआ, ह्रदा 1. बिजली, कु०७।३९, मृच्छ० ५।४८ 2. इन्द्र का वज्र।

शतक (वि०) [शत+कन्] 1. सौ 2. सौ से युक्त, कम् 1. शताब्दी 2. सौ श्लोकों का संग्रह जैसा कि नीति,° वैराग्य° और श्रृङ्गार°, अर्थात् नीति आदि विषयक सौ श्लोकों का संग्रह।

शततम (वि०) (स्त्री०–मी) [शत+तमप्] सौवां।

शतधा (अव्य०) [शत+धाच्] 1. सौ तरह से 2. सौ भागों में या सौ टुकड़ों में 3. सौगुना।

शतशस् (अव्य०) [शत+शस्] 1. सौ सौ करके 2. सौ बार– शतशः शपे—प्रबो० ३, मनु० १२।५८ सौगुना, 3. सौ तरह से, विविध प्रकार से, नाना प्रकार से —भग० ११।५।

शतिक (वि०) (स्त्री० की), शत्य (वि०) [शत+ठन् यत् वा] 1. सौ से युक्त —याज्ञ० २।२०८ 2. सौ से सम्बन्ध रखने वाला 3. सौ से प्रभावित 4. सौ में मोल लिया हुआ 5. सौ से बदला किया हुआ 6. प्रतिशत शुल्क या ब्याज देने वाला 7. सौ का सूचक।

शतिन् (वि०) [शत+इनि] 1. सौगुणा 2. असंख्य–पुं० सौ का स्वामी निःस्वो वष्टि शतं शती दशशतं शान्ति० २।६, पंच० ५।८२।

शत्रिः [शद्+त्रिप्] हाथी।

शत्रुः [शद्+त्रुन्] 1. परास्त करने वाला, विनाशक, विजेता 2. दुश्मन, वैरी, प्रतिपक्षी—क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणम्—सुभा० 3. राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी, पड़ौस का प्रतिद्वन्द्वी राजा। सम० उपजापः दुश्मन की गुपचुप कानाफूसी, शत्रु का विश्वासघाती प्रस्ताव, कर्षण, दमन, निबर्हण (वि०) शत्रु का दमन करने वाला, शत्रु को जीतने वाला या शत्रु को नष्ट करने वाला,—घ्नः 'शत्रुओं को नष्ट करने वाला' सुमित्रा का पुत्र होने के कारण लक्ष्मण का यमलभ्राता, राम का भाई। इसने 'लवण' नामक राक्षस का वध किया, मथुरा को बसाया। सुबाहु और बहुश्रुत नाम के इसके दो पुत्र थे –दे० रघु० १५,—पक्षः 1. शत्रु का पक्ष या दल 2. प्रतिपक्षी, विरोधी, विनाशनः शिव का विशेषण,—हत्या शत्रु की हत्या,—हन् (वि०) शत्रु का वध करने वाला।

शत्रुञ्जयः [शत्रु+जि+खच्, मुम्] 1. हाथी 2 एक पहाड़ का नाम, गिरनार पर्वत।

शत्रुन्तपः (वि०) [शत्रु+तप्+खच्, मुम्] अपने शत्रु को परास्त करने वाला या नष्ट करने वाला।

शत्वरी (स्त्री०) रात।

शद् i (भ्वा० पर० (परन्तु सार्वधातुक लकारों में आ०) —शीयते, शत्त) 1. पतन होना, नष्ट होना, मुर्झाना, कुम्हलाना 2. जाना–प्रेर० (शादयति-ते) 1. पहुँचाना,

ठेलना 2. शातयति-ते (क) गिराना, नीचे फेंक देना, काट डालना शि० १४।८०, १५।२४ (ख) वध करना, नष्ट करना ।

ii (भ्वा० पर० शदति) जाना (प्रायः 'आ' पूर्वक) ।

शदः [शद्+अच्] खाद्य, शाकभाजी (फल मूल आदि) ।

शद्रिः [शद्+क्रिन्] 1. हाथी 2. बादल 3. अर्जुन,—द्रिः (स्त्री०) बिजली ।

शद्रुः (वि०) [शद्+रु] 1. जाने वाला, गतिशील 2. पतनशील, नश्वर, क्षय होने वाला ।

शनकैः (अव्य०) [शनैः+अकच्] शनैः शनैः दे० शनैः ।

शनिः [शो+अनि किच्च] 1. शनिग्रह (सूर्य का पुत्र, जो काले रंग का या काले वस्त्रों से सज्जित बतलाया गया है) 2. शनिवार 3. शिव । सम० **जम्** काली मिर्च,—**प्रदोषः** शिव की (सांध्यकालीन) पूजा जो शुक्लपक्ष की त्रयोदशी को शनिवार आ पड़ने पर की जाती है,—**प्रियम्** नीलममणि,—**वारः**,—**वासरः** शनिवार का दिन ।

शनैस् (अव्य०) [शण्+डैस्, पृषो० नुक्] 1. आहिस्ता से, धीमे, चुपचाप 2. यथाक्रम क्रमशः, थोड़ा थोड़ा करके धर्मं—सञ्चिनुयाच्छनैः—कु० ३।५९, मनु० ३।२१७ 3. उत्तरोत्तर, उपर्युक्त क्रम में मनु० १।१५, 4. मृदुता से, नरमी से 5. सुस्ती के साथ, आलस्य-पूर्वक **शनैः शनैः** आहिस्ता से, आहिस्ता आहिस्ता । सम०—**चर** (वि०) शनैः शनैः घूमने वाला या चलने वाला—शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव सा—भर्तृ० १।१७, (यहाँ इसका अर्थ 'शनि' भी है) (—रः) शनिग्रह ।

शन्तनुः [शं मंगलात्मका तनुर्यस्य—ब० स०] एक चन्द्रवंशी राजा जिसने गंगा व सत्यवती से विवाह किया । गंगा का पुत्र भीष्म था, तथा सत्यवती के चित्रांगद और विचित्रवीर्य नामक दो पुत्र हुए । भीष्म आजन्म ब्रह्मचारी रहा, तथा इसके छोटे भाई निस्सन्तान स्वर्ग सिधारे, तु० 'भीष्म' ।

शप् (भ्वा०, दिवा० उभ० शपति ते, शप्यति ते, शप्त) 1. अभिशाप देना, कोसना अशपद्भव मानुषीति ताम्—रघु० ८।८०, सोऽभूत् परासुरथ भूमिपतिं शशाप (वृद्धः) ९।७८, १।७७ 2. शपथ लेना, कसम उठाना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना, सौगंध खाना (प्रायः प्रतिज्ञात में संप्र० तथा प्रतिज्ञाता के लिए करण० प्रयुक्त होता है)—भरतेनात्मना चाहं शपे ते मनुजाधिप । यथा नान्येन तुष्येयमृते रामविवासनात् राम०, कर्मरहित प्रयोग होने पर शपथवस्तु में करण० तथा जिसके द्वारा शपथ की जाय उसमें संप्र० प्रयुक्त होता है—सत्यं शपामि ते पादपंकजस्पर्शेन—का०, घट० २२, अशप्त निह्नवानोसौ सीतायै स्मरमोहितः—भट्टि० ८।७४, ३३, कभी कभी 'शप्' का सजातीय कर्म के अनुसार प्रयोग होता है सहस्रशोऽसौ शपथानशप्यत्—भट्टि० ३।३२ 3. कलंकित करना, धमकाना, बुरा-भला कहना, गाली देना (संप्र० के साथ या स्वतंत्ररूप से)—द्विषद्भ्यश्चाशपंस्तथा भट्टि० १७।४, प्रतिवाचमदत्त केशवः शपमानाय न चेदिभूभुजे शि० ४।२५,—प्रेर० (शापयति ते) शपथद्वारा बाँध लेना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना—शापितोऽसि गोब्राह्मणकाम्यया मृच्छ० ३, मा० ८ ।

शपः [शप्+अच्] 1. अभिशाप, सरापना, कोसना 2. शपथ, सौगन्ध ।

शपथः [शप्+अथन्] 1. कोसना 2. अभिशाप, आक्रोश, फटकारा 3. सौगन्ध, कसम खाना, शपथ लेना या दिलवाना, शपथोक्ति—आमोदो न हि कस्तूर्याः शपथेनानुभाव्यते—भामि० १।१२०, मनु० ८।१०९ 4. शपथपूर्वक अनुरोध, सौगन्ध से बांधना—मा० ३।२ ।

शपनम् [शप्+ल्युट्] दे० 'शपथ' ।

शप्त (भू० क० कृ०) [शप्+क्त] 1. अभिशप्त 2. जिसने सौगन्ध खाली है 3. बुरा भला कहा गया, दुर्वचन कहा गया (दे० शप्) ।

शफः,—**फम्** [शप्+अच्, पृषो० पस्य फः] 1. सुम 2. वृक्ष की जड़ ।

शफरः (स्त्री०—री) [शफ राति—रा+क] एक प्रकार की छोटी चमकीली मछली—मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि—मेघ० ४०, शि० ८।२४। कु० ४।३९ । सम०—**अधिपः** 'इलीश' नामक मछली ।

शब (व) रः [शव्+अरन्] 1. पहाड़ी, असभ्य, भील, जंगली—राजन् गुञ्जाफलानां स्रज इति शबरा नैव हारं हरन्ति—काव्य० १० 2. शिव 3. हाथ 4. जल 5. एक शास्त्र विशेष या धार्मिक पुस्तक 6. मीमांसा के प्रसिद्ध भाष्यकार,—**री** 1. भीलनी 2. राम की अनन्य भक्त एक भीलनी । सम० **आलयः** जंगली, पहाड़ियों और भीलों का निवासस्थान,—**लोध्र** जंगली लोध्र का वृक्ष ।

शब (व) ल (वि०) [शप्+अल, बश्च] 1. धब्बेदार, रंग-बिरंगा, चितकबरा—रघु० ५।४४, १३।५६, महावीर० ७।२६ 2. नानारूप, अनेक भागों में विभक्त,—**लः** नानाप्रकार का रंग,—**ला**,—**ली** 1. धब्बेदार या चितकबरी गाय 2. कामधेनु,—**लम्** पानी ।

शब्द (चुरा० उभ० शब्दयति—ते, शब्दित) 1. ध्वनि करना, शोर मचाना 2. बोलना, बुलाना, आवाज़ देना—विततमृदुकराग्रः शब्दयन्त्या वयोभिः परिपतति दिवोऽङ्के हेलया बालसूर्यः—शि० ११।४७ 3. नाम

लेना, पुकारना अत एव सागरिकेति शब्द्यते रत्न० ४, अभि–, नाम रखना, प्र , व्याख्या करना, सम् बुलाना।

शब्दः [शब्द्+घञ्] 1. ध्वनि (श्रोत्रेन्द्रिय का विषय, आकाशगुण, - रघु० १३।१ 2. आवाज, कलरव (पक्षियों का या मनुष्यादिकों का), कोलाहल, --वि-श्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगाः- श० १।१४, भग० १।१३, श० ३।१, मनु० ४।११३, कु० १।४५, 3. बाजे की आवाज - वाद्यशब्दः पंच० २।२४, कु० १।४५ 4. वचन, ध्वनि, सार्थक ध्वनि, शब्द (परिभाषा के लिए दे० महाभाष्य की प्रस्तावना) — एकः शब्दः सम्यग्घीतः सम्यक् प्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग्भवति, इसी प्रकार 'शब्दार्थौ' 5. विकारीशब्द, संज्ञा, प्रातिपदिक 6. उपाधि, विशेषण—यस्यार्थयुक्तं गिरिराजशब्दं कुर्वन्ति बालव्यजनैश्चमर्यः–कु० १।१३, श० २।१४, नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक् रघु० ३।३५, २।५३, ६४, ३।४९, ५।२२, १८।४१, विक्रम० १।१ 7. नाम, केवल नाम जैसा कि 'शब्दपति' में 8. शाब्दिक प्रामाणिकता (नैयायिकों के द्वारा 'शब्द प्रमाण' माना जाता है)। सम० अतीत (वि०) शब्दों की शक्ति से परे, अनिर्वचनीय, —अधिष्ठानम् कान, - अध्याहारः (शब्दन्यूनता को पूरा करने के लिए) शब्दपूर्ति,—अनुशासनम् शब्दों का शास्त्र अर्थात् व्याकरण, अर्थः शब्द के अर्थ (र्थौ–द्वि० व०) शब्द और उसका अर्थ अदोषौ शब्दार्थौ—काव्य० १, —अलङ्कारः वह अलङ्कार जो अपने शब्द सौन्दर्य पर निर्भर करता है, तथा जब उसी अर्थ को प्रकट करने वाला दूसरा शब्द रख दिया जाता है तो उसका सौन्दर्य लुप्त हो जाता है (विप० अर्थालङ्कार) उदा० दे० काव्य० ९, आख्येय (वि०) शब्दों में भेजा जाने वाला समाचार मेघ० १०३ (यम्) मौखिक या शाब्दिक सन्देश, आडम्बरः वाग्जाल, वाक्प्रपंच, शब्दाधिक्य, अतिशयोक्तिपूर्ण शब्द, आदि (त्रि०) 'शब्द' से आरम्भ होने वाले (ज्ञान के विषय) - रघु० १०।२५, कोशः अभिधान, शब्दसंग्रह, गत (वि०) शब्द के अन्दर रहने वाला, ग्रहः 1. शब्द पकड़ना 2. कान, चातुर्यम् शैली की निपुणता, वाक्पटुता, चित्रम् कविता की अन्तिम श्रेणी के दो उपभेदों में से एक (अवर या अधम) (इस प्रकार के काव्य में सौन्दर्य उन शब्दों के प्रयोग में है जो कर्णमधुर होते हैं, 'चित्र' के अन्तर्गत दिया हुआ उदाहरण देखो), चोरः 'शब्दचोर' साहित्यचोर, तन्मात्रम् ध्वनि का सूक्ष्म तत्त्व, —पतिः नाममात्र स्वामी, नाम का प्रभु—ननु शब्दपतिः क्षितेरहं त्वयि मे भावनिबन्धना रतिः—रघु० ८।५२, पातिन् (वि०) शब्द सुन कर ही अदृश्य निशाना लगाने वाला, शब्दवेधी, निशाना लगाने वाला—रघु० ९।७३, प्रमाणम् शाब्दिक या मौखिक प्रमाण, बोधः मौखिक साक्ष्य से प्राप्त ज्ञान ब्रह्मन् (नपुं०) 1. वेद 2. शब्दों में निहित आध्यात्मिक ज्ञान, आत्मा- या परमात्मसम्बन्धी ज्ञान —उत्तर० २।७ २० 3. शब्द का गुण, 'स्फोट', भेदिन् (वि०) शब्दवेधी निशान लगाने वाला (पुं०) 1. अर्जुन का विशेषण 2. गुदा 3. एक प्रकार का बाण, योनिः (स्त्री०) धातु, मूल शब्द,—विद्या, शासनम्, शास्त्रम् शब्दशास्त्र अर्थात् व्याकरण —अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रम्—पंच० १, शि० २।११२, १४।२४, विरोधः (शास्त्र में) शब्दों का विरोध, —विशेषः ध्वनि का एक भेद,—वृत्तिः (स्त्री०) साहित्य शास्त्र में शब्द का प्रयोग, वेधिन् (वि०) ध्वनि सुनकर ही शब्दवेधी निशाना लगाने वाला —दे० 'शब्दपातिन्' (पुं०) 1. अर्जुन का विशेषण 2. एक प्रकार का बाण,—शक्तिः (स्त्री०) शब्द की अभिव्यञ्जक शक्ति, शब्द की सार्थकता—दे० शक्ति, —शुद्धिः (स्त्री०) 1. शब्दों की पवित्रता 2. शब्दों का शुद्ध प्रयोग,—श्लेषः शब्दों में अनेकार्थता, द्व्यर्थकता (यह अलङ्कार 'अर्थश्लेष' से इसलिए भिन्न है कि इसके संघटक शब्दों को हटाकर समानार्थक शब्दों को रख देने मात्र से श्लिष्टता नष्ट हो जाती है, जबकि 'अर्थश्लेष' अपरिवर्तित ही रहता है - शब्द-परिवृत्ति सहत्वमर्यश्लेषः),—संग्रहः शब्दकोश, शब्दावली, सौष्ठवम् शब्दों का लालित्य, ललित और प्राञ्जल शैली सौकर्यम् अभिव्यक्ति की सरलता।

शब्दन (वि०) [शब्द्+ल्युट्] 1.शब्द करनेवाला, ध्वननशील नम् ध्वनन, कोलाहल करना, शब्द करना 2. आवाज, कोलाहल 3. पुकारना, बुलाना 4. नाम लेना।

शब्दायते (नामधातु आ०) 1. कोलाहल करना, शोर करना - शब्दायन्ते मधुरमनिलैः कीचकाः पूर्यमाणाः —मेघ० ५६ 2. क्रन्दन करना, दहाड़ना, चिल्लाना, चीं चीं करना भट्टि० ५।५२, १७।९१ 3. बुलाना, पुकारना— एते हस्तिनापुरगामिन ऋषयः शब्दायन्ते —श० ४, मुद्रा० १, मृच्छ० १, वेणी० ३।

शब्दित (भू० क० कृ०) [शब्द+क्त] 1. ध्वनित, आवाज निकाली गई, (वाद्ययंत्रादिक) बजाया गया 2. कहा गया, उच्चारण किया गया 3. बुलाया गया, पुकारा गया नाम रक्खा गया, अभिहित।

शम् (अव्य०) [शम्+क्विप्] कल्याण, आनन्द, समृद्धि, स्वास्थ्य को द्योतन करने वाला अव्यय, आशीर्वाद या मंगल कामना प्रकट करने के लिए प्रयुक्त (संप्र० या संबं० के साथ) शं देवदत्ताय देवदत्तस्य वा,

(आधुनिक पत्रों में शुभ समाप्तिसूचक प्रयोग--इति शम्) । सम०—कर दे० धातु के नीचे, ताति (वि०) आनन्द प्रदान करने वाला, मंगलमय, शुभ -पाक: 1. लाख, महावर, लाल रंग 2. पकाना, परिपक्व करना,—भु दे० धातु के नीचे ।

शम् i (दिवा० पर० शाम्यन्ति, शान्त) 1. शान्त होना, चुप होना, संतुष्ट होना, प्रसन्न होना—शाम्येत्प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः—कु० २।४०, रघु० ७।३, शान्तो लवः—उत्तर० ६।७ 2.थमना, ठहरना, समाप्त होना—चिन्ता शशाम सकलाऽपि सरोरुहाणाम्—भामि० ३।७, न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति—मनु० २।९४, 'सन्तुष्ट नहीं होता' 3. शांत होना, बुझना—शशाम वृष्ट्यापि विना दवाग्निः रघु०—२।१४, उत्तर० ५।७ 4. काम तमाम करना, नष्ट करना, मार डालना (इसी अर्थ में क्र्या० भी) —प्रेर० (शमयति—ते, परन्तु देखना अर्थ में 'शामयति ते' दे० शम् ii) 1. प्रसन्न करना, उपशमन करना, शान्त करना, धीरज देना, सांत्वना देना, ढाढस बंधाना—कः शीतलैः शमयिता वचनैस्तवाधिम्—भामि० ३।१, श० ५।७ 2. अन्त करना, रोकना—कु० २।५६ 3. हटाना, परे करना—प्रतिकूलं दैवं शमयितुम्—श० १ 4. दमन करना, पालतू बनाना, हराना, छीनना, परास्त करना—शमयति गजानन्यान् गन्धद्विपः कलभोऽपि सन्—विक्रम० ५।१८, रघु० ९।१२, ११।५९ 5. मार डालना, नष्ट करना, वध करना—वेणी० ५।५ 6. शान्त करना, बुझाना मेघ० ५३, हि० १।८८ 7. त्याग देना, रुकना, थमना, उप—, 1. शान्त करना—भट्टि० २०।५ 2. थमना, ठहरना, बुझना 3. हट जाना, बोलना बन्द होना 4. परे रहना, बुझ जाना,—प्रशान्तं पावकास्त्रम् उत्तर० ६ 5. मुर्झाना, कुम्हलाना (प्रेर०) 1. सांत्वना देना, प्रसन्न करना, शान्त करना,—मनु० ८।३९१ 2. दूर करना, बुझाना, शीतल करना, दवा देना—त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवम्—मेघ० १७ 3. हटाना, अन्त करना—तम् (अपचारं) अन्विष्य प्रशमयेत्—रघु० १५।४७ 4. जीतना, परास्त करना, वशीभूत करना—मृच्छ० १०।६० 5. प्रतिष्ठित होना, समंजन करना, स्वस्थचित्त होना प्रशमयसि विवादं कल्पसे रक्षणाय—श० ५।८, सम्—, 1. शान्त करना 2. निराकृत होना, बुझना, लुप्त होना—सत्त्वं संशाम्यतीव मे—भट्टि० १८।२८ 3. हट जाना ।
ii (चुरा० उभ० शामयति—ते) 1. देखना, निगाह डालना, निरीक्षण करना 2. बतलाना, प्रदर्शन करना, नि—, 1. देखना, अवलोकन करना 2. सुनना, कान देना निशामय प्रियसखि—मा० ७ ।

शमः [शम्+घञ्] 1. मूकता, शान्ति, धैर्य 2. विश्राम, ठहराव, आराम, निवृत्ति 3. वासनाओं पर प्रतिबन्ध या अभाव, मानसिक शान्ति, विरक्ति—शमरतेऽमरतेजसि पार्थिवे रघु० ९।४, कि० १०।१०, १६।४८, शि० २।९४ श० २।७, भग० १०।४ 4. निराकरण, लघूकरण, उन्नयन, सन्तोषीकरण, (शोक, प्यास, भूख आदि का) प्रशमन—शममुपयातु ममापि चित्तदाहः—उत्तर० ६।८, शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से श० ४।२० 5. शान्ति, जैसा कि 'शमोपन्यास' वेणी० ५ 6. (संसार की समस्त भ्रान्तियों व आसक्तियों से) मोक्ष 7. हाथ । सम०—अन्तकः कामदेव (मानसिक शान्ति को नष्ट करने वाला), —पर (वि०) शान्त, मूक, विषयविरागी ।

शमथः [शम्+अथच्] 1. शान्ति, स्थिरता, विशेषतः मानसिक शान्ति, आवेशाभाव 2. परामर्शदाता, मन्त्री ।

शमन (वि०) (स्त्री०—नी) [शम्+णिच्+ल्युट्] शमन करने वाला, दमन करने वाला, वशीभूत करने वाला आदि,—नम् 1. प्रसन्न करना, निराकरण करना, ढाढस बंधाना जीतना, उन्नयन करना 2. स्थैर्य, शान्ति 3. अन्त, ठहराव, समाप्ति, विनाश 4. चोट पहुँचाना, घायल करना 5. यज्ञ के लिए पशुवध करना, पशुमेध 6. निगल जाना, चबाना,—नः 1. एक प्रकार का हरिण, बारहसिंगा 2. मृत्यु का देवता, यम । सम० स्वसृ (स्त्री०) 'यमस्वसा' यमुना नदी का विशेषण ।

शमनी [शमन+ङीप्] रात । सम० सदः (षदः) राक्षस, पिशाच, भूत-प्रेत ।

शमलम् [शम्+कलच्] 1. मल, लीद, विष्ठा 2. अपवित्रता, गाद, तलौंछ 3. पाप, नैतिक मलिनता ।

शमित (भू० क० कृ०) [शम्+णिच्+क्त] 1. प्रसन्न किया गया, निराकृत, ढाढस बंधाया गया, शान्त 2. धीमा किया गया, चिकित्सा की गई, भारविमुक्त किया गया 3. विश्राम दिया गया 4. शान्त, सौम्य परिमित किया गया, मृदु किया गया ।

शमिन् (वि०) [शम+इनि] 1. सौम्य, शान्त, प्रशान्त 2. जिसने अपने आवेशों का दमन कर लिया है, आत्मनियंत्रित भट्टि० ७।५ ।

शमी (शमि) [शम्+इन्, ङीप् वा] 1. एक वृक्ष (कहा जाता है कि इसमें आग रहती है) अग्निगर्भां शमीमिव श० ४।२, मनु० ८।२४७, याज्ञ० १।३०२, 2. फली, छीमी, सेम । सम० गर्भः 1. अग्नि का विशेषण 2. ब्राह्मण, अग्निहोत्री ब्राह्मण, धान्यम् फलियों में उत्पन्न या दाल आदि, द्विदलीय अन्न ।

शम्पा [शम्+पा+क] बिजली ।

शम्ब् i (भ्वा० पर० शम्बति) जाना, हिलना-जुलना। ii (चुरा० पर० शम्बयति) संचय करना, ढेर लगाना।

शम्ब (व) [शम्ब्+अच्] 1. प्रसन्न, भाग्यशाली 2. बेचारा, अभागा,—**बः** 1. इन्द्र का वज्र 2. मूसली का लोहे का बना सिर 3. लोहे की ज़ञ्जीर जो कमर के चारों ओर पहनी जाय 4. नियमित रूप से हल चलाना 5. जुते हुए खेत में हल चलाना (शंबाकृ दोबारा हल चलाना)।

शम्बरः [शम्ब्+अरच्] 1. एक राक्षस का नाम जिसे प्रद्युम्न ने मार गिराया था 2. पहाड़ 3. एक प्रकार का हरिण 4. एक प्रकार की मछली 5. युद्ध,—**रम्** 1. जल 2. बादल 3. दौलत 4. संस्कार या कोई धार्मिक अनुष्ठान। सम०—**अरिः, सूदनः** प्रद्युम्न या कामदेव के विशेषण, **असुरः** शंबर नामक राक्षस।

शम्बरी [शम्बर+ङीष्] 1. माया, जादू 2. स्त्री जादूगरनी।

शम्बलः,—लम् [शम्ब्+कलच्] 1. तट, किनारा 2. पाथेय, मार्गव्यय, राहखर्च 3. स्पर्धा, ईर्ष्या।

शम्बली [शम्बल+ङीष्] कुटनी।

शम्बुः, शम्बुकः, शम्बूकः [शम्ब्+उण्, शम्बु+कन्] द्विकोषीय घोंघा।

शम्बूकः [शम्ब्+ऊकः] 1. द्विकोषीय घोंघा 2. शंख 3. घोंघा 4. हाथी की सूंड की नोक 5. एक शूद्र (इसे राम ने उसकी जाति के लिए वर्जित साधना का अभ्यास करने के कारण मार डाला था, दे० उत्तर० २, तथा रघु० १५।

शम्भः [शम्+भ] 1. प्रसन्न मनुष्य 2. इन्द्र का वज्र।

शम्भली [शम्भल+ङीष्] दूती, कुटनी।

शम्भु (वि०) [शम्+भू+डु] आनन्द देने वाला, समृद्धि प्रदान करने वाला—**भुः** 1. शिव 2. ब्रह्मा 3. ऋषि, श्रद्धेय पुरुष 4. एक प्रकार का सिद्ध। सम०—**तनयः—नन्दनः,—सुतः** कार्तिकेय या गणेश के विशेषण,—**प्रिया** 1. दुर्गा 2. आमल की,—**वल्लभम्** श्वेत कमल।

शम्या [शम्+यत्+टाप्] 1. लकड़ी की छड़ी या थूणी 2. डंडा 3. जूए की कील, सिलम 4. एक प्रकार की झांझ 5. यज्ञीय पात्र।

शय (वि०) (स्त्री०—या, यी) [शी+अच्] लेटने वाला, सोने वाला, (प्रायः समास के अन्त में) —रात्रिजागरपरो दिवाशयः—रघु० १९।३४, इसी प्रकार उत्तानशय, पार्श्वशय, वृक्षेशय, विलेशय आदि,—**यः** 1. नींद 2. बिस्तरा, शय्या 3. हाथ 4. सांप विशेषतः अजगर 5. दुर्वचन, कोसना, अभिशाप।

शयण्ड (वि०) [शी+अण्डन्] निद्रालु, सोने वाला।

शयथ (वि०) [शी+अथच्] निद्रालु, सोया हुआ,—**थः** 1. मृत्यु 2. एक प्रकार का सांप, अजगर 3. मछली।

शयनम् [शी+ल्युट्] 1. सोना, निद्रा, लेटना 2. बिस्तरा, शय्या—शयनस्थो न भुञ्जीत—मनु० ४।७४, रघु० रघु० ११९५ विक्रम० ३।१० 3. मैथुन, संभोग। सम० —**अ (आ) गारः,—रम्,—गृहम्** शयनकक्ष, सोने का कमरा,—**एकादशी** आषाढ़ शुक्ला एकादशी (इस दिन विष्णु भगवान् चार मास तक विश्राम के लिए लेट जाते हैं),—**सखी** एक शय्या पर साथ सोने वाली सहेली - **स्थानम्** सोने का कमरा, शयनकक्ष।

शयनीयम् [शी+अनीयर्] बिस्तरा, शय्या,—परिशून्यं शयनीयमद्य मे—रघु० ८।६६ कान्तासखस्य शयनीय शिलातलं ते—उत्तर० ३।२१ (इसी अर्थ में शयनीयकम्)।

शयानकः [शी+शानच्+कन्] 1. गिरगिट 2. एक सांप, अजगर।

शयालु (वि०) [शी+आलुच्] निद्रालु, तन्द्रालु, आलसी शि० २।८०,—**लुः** 1. एक प्रकार का सांप, अजगर 2. कुत्ता 3. गीदड़।

शयित (भू० क० कृ०) [शी कर्तरि क्त] 1. सोने वाला, विश्रान्त, सुप्त 2. लेटा हुआ।

शयुः [शी+उ] बड़ा सांप, अजगर।

शय्या [शी आधारे क्यप्+टाप्] 1. बिस्तरा, बिछौना —शय्या भूमितलम्—शान्ति० ४।९, मही रम्या शय्या - भर्तृ० ३।७९, रघु० ५।६६ 2. बांधना, नत्थी करना। सम०—**अध्यक्षः,—पालः** राजा के शयनकक्ष का अधीक्षक,—**उत्सङ्गः** पलंग का एक पार्श्व, —**गत** (वि०) 1. पलंग पर लेटा हुआ 2. रोगी, - **गृहम्** शयन-कक्ष,—रघु० १६।४।

शरः [शृ+अच्] 1. बाण, तीर—क्व च निशितनिपाता वज्रसाराः शरास्ते - श० १।१० 2. एक प्रकार का सफेद सरकंडा या घास—शरकाण्डपाण्डुगण्डस्थला —मालवि० ३।८, मुखेन सीता शरपाण्डुरेण—रघु० १४।२६, शि० ११।३० 3. कुछ जमे हुए दूध की मलाई, मलाई 4. चोट, क्षति, घाव 5. पांच की संख्या,—**रम्** पानी। सम० **अग्रयः** बढ़िया तीर, —**अभ्यासः** तीरंदाजी,—**असनम्,—आस्यम्** धनुष, कमान—रघु० ३।५२, कु० ३।६४,—**आक्षेपः** तीरों की वर्षा,—**आरोप,— आवापः** धनुष,—**आश्रयः** तरकस, —**आहत** (वि०) जिसके तीर लगा हो,—**ईषिका** बाण, **इष्टः** आम का वृक्ष, **ओघः** बाणों का समूह, ब.णवर्षा—**काण्डः** 1. नरकुल की डंडी 2. बाण की लकड़ी, **घातः** बाण से लक्ष्यवेध करना, तीरंदाजी, **जम्** ताजा मक्खन,—**जन्मन्** (पुं०) कार्तिकेय का विशेषण—रघु० ३।२८,—**जालम्** बाणों का समूह या ढेर

--धिः तरकस, --पातः बाण का छोड़ना, --°स्थानम् बाण का निशाना, --पुङ्खः, पुङ्खा बाण का पंखदार किनारा,--फलम् बाण का फल--भङ्गः एक ऋषि जिसके दर्शन राम ने दण्डकारण्य में किये थे रघु० १३।४५,—भूः कार्तिकेय,—मल्लः धनुर्धर, तीरंदाज़, —वनम् (वणम्) नरकुलों का झुरमुट - मेघ० ४५, °उद्भवः, °भवः कार्तिकेय के विशेषण,—वर्षः बाणों की वर्षा या बौछार, --वाणिः 1. बाण का सिरा 2. धनुर्धर 3. बाणनिर्माता 4. पदाति,—वृष्टिः (स्त्री०) बाणों की बौछार—व्रातः बाणों का समूह,—संधानम् बाण का निशाना लगाना—शरसंधानं नाटयति—श० १, --संबाध (वि०) बाणों से ढका हुआ, --स्तम्बः नरकुलों का गुच्छा।

शरटः [शॄ+अटन्] 1. गिरगिट 2. कुसुम्भ।

शरणम् [शॄ+ल्युट्] 1. प्ररक्षा, सहायता, साहाय्य, प्रतिरक्षा—रघु० १४।६४, विक्रम० १।३, उत्तर० ४।२३ 2. आसरा आश्रयस्थान—कु० ३।८, पंच० २।२३ 3. ओट, सहारा, विश्रामस्थल (व्यक्तियों के लिए भी प्रयुक्त)—सुरासुरस्य जगतः शरणम्—कि० १८।२२, संतप्तानां त्वमसि शरणम् मेघ० ७, शरणं गम्—ई—या शरण में जाना, आश्रय लेना, सहारा लेना यामि हे कमिह शरणम्—गीत० ७ 4. देवालय, शौचागार, कक्ष—अग्निशरणमार्गमादेशय—श० ५ 5. आवास, घर, निवासस्थल—मुद्रा० ३।१५, भट्टि० ६।९ 6. भट, बिल, माँद 7. क्षति, हत्या। सम० —अर्थिन् (वि०) —एषिन् (वि०) शरण या रक्षा ढूंढने वाला,—भर्तृ० २।७६, --आगत, -आपन्न (वि०) प्ररक्षा या शरण में गया हुआ, आश्रय लेने वाला, आश्रयार्थी, —उन्मुख (वि०) शरण या प्ररक्षा खोजने वाला—रघु० ६।२१।

शरण्डः [शॄ+अंडच्] 1. पक्षी 2. गिरगिट 3. ठग, धूर्त 4. लम्पट, स्वेच्छाचारी 5. एक प्रकार का आभूषण।

शरण्य (वि०) [शरणे साधुः यत्] 1. रक्षा करने के योग्य, शरण देने वाला, प्ररक्षक, आश्रय असौ शरण्यः शरणोन्मुखानाम्—रघु० ६।२१, शरण्यो लोकानाम् महावी० ४।१, रघु० २।३०, १४।६४, १५।२, कु० ५।७६ 2. जिसे रक्षा की आवश्यकता है, दीन, दयनीय, —ण्यः शिव का विशेषण, —ण्यम् 1. आश्रयस्थल, शरणगृह 2. प्ररक्षक, जो शरणागत की रक्षा करता है 3. प्ररक्षा, प्रतिरक्षा 4. क्षति, चोट।

शरण्युः [शॄ+अन्यु] 1. प्ररक्षक 2. बादल 3. हवा।

शरद् (स्त्री०) [शॄ+अदि] 1. पतझड़, शरदृतु (आश्विन तथा कार्तिक मास में होने वाली ऋतु),—यात्रायै चोदयामास तं शक्तेः प्रथमं शरद् रघु० ४।२४ 2. वर्ष,—त्वं जीव शरदः शतम्—रघु० १०।१, उत्तर० १।१५, मालवि० १।१५। सम०—अन्तः शरद् का अन्त, सर्दी का मौसम, —अम्बुधरः शरदृतु का बादल, —उदाशयः शरत्कालीन सरोवर, —कामिन् (पुं०) कुत्ता, —कालः शरत् काल, पतझड़ का मौसम, —घनः, —मेघः शरदृतु का बादल,—चन्द्रः (शरच्चन्द्रः) शरत्कालीन चन्द्रमा, त्रियामा शरत्कालीन रात्रि, —पद्मः,—द्मम् श्वेत कमल, —पर्वन् (नपुं०) को, जागर नाम का उत्सव, —मुखम् शरदृतु का आरम्भ।

शरदा [शरद्+टाप्] 1. पतझड़ 2. वर्ष।

शरदिज (वि०) [शरदि जायते—जन्+ड, सप्तम्या अलुक्] पतझड़ या शरदृतु से सम्बन्ध रखने वाला।

शरभः [शॄ+अभच्] 1. हाथी का बच्चा 2. आख्यायिकाओं में वर्णित आठ पैर का जन्तु जो सिंह से बलवान् होता है शरभकुलमजिह्मं प्रोद्धरत्यम्बुकूपात् —ऋतु० १।२३, अष्टपादः शरभः सिंहघाती महा० 3. ऊँट 4. टिड्डा 5. टिड्डी।

शरयुः (यूः) (स्त्री०) [शॄ+अयुः, पक्षे ऊङ्] एक नदी, सरयू, दे० सरयु (यू)।

शरल (वि०) [शॄ+अलच्] दे० 'सरल'।

शरलकम् [शरल+कन्] पानी।

शरव्यम् [शरवे शरशिक्षायै हितं—शरु+यत्] (तीर मारने का) निशाना, लक्ष्य (आलं० से भी)—तौ शरव्यमकरोत्स नेतरान् रघु० ११।२७, कृताः शरव्यं हरिणा तवासुराः—श० ६।२९, रघु० ७।४५, शि० ७।२४, व्यसनशतशरव्यतां गताः का०।

शराटिः, —तिः [शर+अट् (अत्)+इन्] एक प्रकार का पक्षी।

शरारु (वि०) [शॄ+आरु] अहितकर, अनिष्टकर, क्षतिकारक।

शरावः,—वम् [शरं. दध्यादिसारभवति अव्+अण्] 1. कम गहरा बर्तन, थाली, मिट्टी का तौला, कसोरा, तस्तरी—मोदकशरावं गृहीत्वा—विक्रम० ३, मनु० ६।५६ 2. ढकना, ढक्कन 3. दो कुडव के बराबर नाप।

शरावती [शर+मतुप्+ङीप्, दीर्घ वकारश्च] वह नगर जिसका शासक राम ने लव को बनाया था रघु० १५।९७।

शरिमन् (पुं०) [शृणाति यौवनम् शॄ+इमन्] पैदा करना, जन्म देना।

शरीरम् [शॄ+ईरन्] (जड चेतन पदार्थों की) काया, देह, —शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्—कु० ५।३३ 2. संघटक तत्त्व—काव्या० १।१० 3. दैहिक शक्ति 4. मृत शरीर, शव। सम० —अन्तरम् 1. शरीर का आन्तरिक भाग 2. दूसरा शरीर,—आवरणम् 1. खाल, चमड़ी,—कर्तृ (पुं०) पिता,—कर्षणम् शरीर को

कृशता,—जः 1. रोग 2. काम, प्रणयोन्माद 3. कामदेव 4. पुत्र, सन्तान—कि० ४।३१,—तुल्य (वि०) समान अर्थात् उतना प्रिय जितना अपना शरीर,—दण्डः 1. शारीरिक दंड 2. कार्य-साधना (जैसा की तपस्या में),—धृक् (वि०) शरीरधारी, पतनम्, पातः मृत्यु, मौत,—पाकः (शरीर की) कृशता,—बद्ध (वि०) शरीर से युक्त, शरीरधारी, शरीरी—कु० ५।३०,—बन्धः 1. शारीरिक ढांचा रघु० १६।२३ 2. शरीर से युक्त होना अर्थात् शरीरधारी प्राणी का जन्म—रघु० १३।५८,—बन्धकः सशरीर प्रतिभू,—भाज् (वि०) शरीरधारी, शरीरी (पुं०) जन्तु, शरीरधारी प्राणी,—भेदः (आत्मा से) शरीर का वियोग, मृत्यु,—यष्टिः (स्त्री०) पतला शरीर, सुकुमार, दुबला-पतला,—यात्रा आजीविका,—विमोक्षणम् आत्मा का शरीर से छुटकारा, मुक्ति,—वृत्तिः (स्त्री०) शरीर का पालनपोषण—रघु० २।४५,—वैकल्यम् शारीरिक रोग, बीमारी, व्याधि,—शुश्रूषा व्यक्तिगत सेवा,—संस्कारः 1. व्यक्ति की सजावट 2. नाना प्रकार के शुद्धिसंस्कारों के अनुष्ठान द्वारा शरीर को निर्मल करना,—संपत्तिः (स्त्री०) शरीर की समृद्धि, (अच्छा) स्वास्थ्य,—पावः शरीर की दुर्बलता, कृशता—रघु० ३।२,—स्थितिः (स्त्री०) 1. शरीर का पालन-पोषण—रघु० ५।९ 2. भोजन करना, खाना (का० में बहुधा प्रयुक्त)।

शरीरकम् [शरीर+कन्] 1. देह 2. छोटा शरीर,—कः आत्मा।

शरीरिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शरीर+इनि] शरीरधारी, शरीरयुक्त, शरीरी—करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी—उत्तर० ३।४, मालवि० १।१० 2. जीवित (पुं०) 1. कोई भी शरीरधारी वस्तु (चाहे जड़ हो चाहे चेतन) शरीरिणां स्थावरजंगमानां सुखाय तज्जन्मदिनं बभूव—कु० १।२३, रघु० ८।४३ 2. सजीव प्राणी 3. मनुष्य आत्मा (शरीर से युक्त)—रघु० ८।८९, भग० २।१८।

शर्करजा [शॄ+करन्+जन्+ड+टाप्] कंदयुक्त चीनी, मिश्री।

शर्करा [शॄ+करन्+टाप्] 1. कंदयुक्त चीनी 2. कंकड़ी, रोड़ी, बजरी—मृच्छ० ५ 3. कंकरीला रूप 4. बालू से युक्त भूमि, रेत 5. टुकड़ा, खण्ड 6. ठींकरा, 7. कोई भी कड़ा कण जसा कि 'जलशर्करा', पानी का कण, अर्थात् ओला 8. पथरी का रोग। सम०—उदकम् खांडमिश्रित जल, चीनी डाल कर मीठा किया हुआ पानी,—सप्तमी वैशाख शुक्ला सप्तमी के दिन मनाया जाने वाला अनुष्ठान।

शर्करिक (वि०) (स्त्री०—की) **शर्करिल** (वि०) [शर्करा+ठक्, इलच् वा] कंकरीला, बजरीदार, किरकिरा।

शर्करी (स्त्री०) 1. नदी 2. करधनी, मेखला।

शर्धः [शृध्+घञ्] 1. अपानवायु का त्याग, अफारा (इस अर्थ में नपुं० भी होता है) 2. दल, समूह 3. सामर्थ्य, शक्ति।

शर्धंजह (वि०) [शर्ध+हा+खश्, मुम्] अफारा उत्पन्न करने वाला,—हः उड़द या माष की दाल।

शर्धनम् [शृध्+ल्युट्] अपानवायु को छोडने की क्रिया।

शर्ब् (भ्वा० पर० शर्बति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. क्षतिग्रस्त करना, मार डालना।

शर्मन् (पुं०) [शॄ+मनिन्] ब्राह्मण के नाम के आगे जोड़ी जाने वाली उपाधि यथा विष्णुशर्मन्, तु० वर्मन्, दास, गुप्त (नपुं०) 1. प्रसन्नता, आनन्द, खुशी—त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितं व्रतम्—नै० १।५०, रघु० १।६९, भर्तृ० ३।९७ 2. आशीर्वाद 3. घर, आधार (इस अर्थ में बहुधा वैदिक)। सम०—द (वि०) आनन्ददायक (—दः) विष्णु का विशेषण।

शर्मरः [शर्मन्+रा+क] एक प्रकार का परिधान, वस्त्र।

शर्या [शॄ+यत्+टाप्] 1. रात्रि 2. अंगुली।

शर्व् (भ्वा० पर० शर्वति) 1. जाना 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना।

शर्वः [शॄ+व] 1. शिव—रघु० ११।९३, कु० ६।१४ 2. विष्णु।

शर्वरः [शॄ+ष्वरच्] कामदेव,—रम् अन्धकार।

शर्वरी [शॄ+वनिप्, ङीप्, वनोर च] 1. रात—शशिनं पुनरेति शर्वरी रघु० ८।५३, ३।२, ११।९३, शि० ११।५ 2. हल्दी 3. स्त्री। सम०—ईशः चन्द्रमा।

शर्वाणी [शर्व+ङीष्, आनुक्] शिव की पत्नी पार्वती।

शर्शरीक (वि०) [शॄ+ईकन्, द्वित्वादि] उपद्रवी, क्रूर,—कः धूर्त, पाजी, दुर्जन।

शल् i (भ्वा० आ० शलते) 1. हिलाना, हरकत देना, क्षुब्ध करना 2. कांपना।
ii (भ्वा० पर० शलति) 1. जाना 2. तेज दौड़ना।
iii (चुरा० आ० शालयते) प्रशंसा करना।

शलः [शल्+अच्] 1. सांग, बर्छी 2. मेख 3. भृंगी नाम का शिव का एक गण 4. ब्रह्मा,—लम् साही का कांटा (कुछ के अनुसार पुं० भी)।

शलकः [शल+कन्] मक्कड़, मकड़ा।

शलङ्कुः [शल्+अङ्कच्] राजा, प्रभु।

शलभः [शल्+अभच्] 1. टिड्डा, टिड्डी—श० १।३२ 2. पतंगा—कौरव्यवंशदावेऽस्मिन् क एष शलभायते—वेणी० १।१९, शि० २।११७, कु० ४।४०।

शललम् [शल्+अलच्] साही का कांटा, **ली** 1. साही का काटां 2. छोटी साही ।

शलाका [शल्+आकः, टाप्] 1. छोटी छड़ी, खूंटी, डण्डा, कील, टुकड़ा, पतला सीखचा—अयस्कान्तमणिशलाका— मा० १ 2. पेन्सिल (आंख में सुर्मा आंजने की) सलाई—अज्ञानान्धस्य लोकस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै पाणिनये नमः ।। शिक्षा० ५८, कु० १।४७, रघु० ७।८ 3. वाण 4. साँग, नेज़ा 5. एक नोकदार शल्योपकरण (घाव की गहराई नापने के लिए) 6. छतरी की तीली 7. (हाथ पैर की अंगुलियों की जड़ की) हड्डी—याज्ञ० ३।८५ 8. अंकुर, फुनगी, कोंपल—कु० १।२४ 9. रंग भरने की कूची 10. दांत साफ़ करने की कूची, दाँत-कुरेदनी 11. साही 12. हाथी दांत या हड्डी का बना जूआ खेलने का आयताकार (पासा) टुकड़ा । सम०—**धूर्तः** (शलाकाधूर्तः) उचक्का, ठग, **परि** (अव्य०) जूए में मनहूस पासा पड़ना, तु० परि, अक्षपरि ।

शलाटु (वि०) [शल्+आटु] अनपका, **टुः** कन्द-विशेष ।

शलाभोलिः (पुं०) ऊँट ।

शल्कम्, शल्कलम् [शल्+कन्, कलच् वा] 1. मछली का वल्कल या छिलका मनु० ५।१५, याज्ञ० १। १७८ 2. वल्कल, छाल (वृक्षों की) 3. भाग, अंश, खण्ड ।

शल्कलिन्, शल्किन् (पुं०) [शल्कल (शल्क)+इनि] मछली ।

शल्भ् (भ्वा० आ० शल्भते) प्रशंसा करना ।

शल्मलिः,—ली (स्त्री०) [शल्+मलच्+इन् पक्षे ङीप्] रेशमी रूई का वृक्ष, सेमल ।

शल्यम् [शल्+यत्] 1. बर्छी, नेज़ा, सांग 2. वाण, तीर, शल्यं निखातमुदहारयतामुरस्तः— रघु० ९।७८, शल्यप्रोतम्—९।७५, श० ६।९ 3. कांटा, खपची 4. मेख, खूंटी, थूणी (उपर्युक्त चारों अर्थों में पुं० भी होता है) 5. शरीर में घुसा हुआ कोई पीड़ा कारक कांटा आदि —अलातशल्यम्—उत्तर० ३।३५ 6. (अलं०) हृदयविदारक शोक या किसी तीक्ष्ण पीड़ा का कारण —उद्धृतविषादशल्यः कथयिष्यामि—श० ७ 7. हड्डी 8. कठिनाई, कष्ट 9. पाप, जुर्म 10. विष, **ल्यः** 1. साही, झाऊ चूहा 2. कांटेदार झाड़ी 3. (आयु० में) शल्यचिकित्सा में खपचियों का उखेड़ना 4. बाड़, सीमा 5. एक प्रकार की मछली 6. मद्रदेश का राजा, पांडु की द्वितीय पत्नी माद्री का भाई, नकुल और सहदेव का मामा (महाभारत के युद्ध में उसने पांडवों की ओर से लड़ने का विचार किया परन्तु दुर्योधन ने चालाकी से उस पर प्रभाव डाल कर उसे अपनी ओर कर लिया, अन्ततः वह कौरवों की ओर से लड़ा । कर्ण के सेनापति बनने पर वह उसका सारथि बना, और कर्ण की मृत्यु हो जाने पर उसे कौरव सेना का सेनापतित्व मिला । एक दिन तक उसने सेनापतित्व का भार संभाला, परन्तु दूसरे दिन युधिष्ठिर ने उसे मौत के घाट उतार दिया) । सम० —**अरिः** युधिष्ठिर का विशेषण, —**आहरणम्, उद्धरणम्, उद्धारः, क्रिया,— शास्त्रम्** कांटा या फांस आदि निकालना, शल्यशास्त्र का वह भाग जो शरीर से असंगत सामग्री को उखाड़ फेंकने से संबंध रखता है,—**कण्ठः** झाऊ चूहा,— **लोमन्** (नपुं०) साही का कांटा, **हर्तृ** (पुं०) निरैया, निराने वाला ।

शल्यकः [शल्य+कन्] 1. साँग, नेज़ा, सलाख 2. खपची, फांस, कांटा 3. झाऊ चूहा, साही ।

शल्लः [शल्ल्+अच्] मेंढक,—**ल्लम्** वक्कल, छाल ।

शल्लकः [शल्ल+कन्] वृक्ष, शोण वृक्ष,—**कम्** बक्कल, छाल ।

शल्लकी [शल्लक+ङीष्] 1. साही 2. एक वृक्ष विशेष जो हाथियों को बहुत प्रिय है—तु० उत्तर० २।२१, ३।६, मा० ९।६, विक्रम० ४।२३ । सम० —**द्रवः** धूप, लोबान ।

शल्वः [शल्+वन्] एक देश का नाम, दे० 'शाल्व' ।

शव् (भ्वा० पर० शवति) 1. जाना, पहुँचना 2. बदलना, परिवर्तन करना, रूपान्तर करना ।

शवः, वम् [शव्+अच्] लाश, मुर्दा शरीर —मनु० १०।५५, **वम्** जल, - **आच्छादनम्** मृतक शरीर का आवरण, दफन,—**आश** (वि०) मुर्दा खाकर जीने वाला—भट्टि० १२।७५,—**काम्यः** कुत्ता **यानम्**, —**रथः** मुर्दा ढोने की गाड़ी, अरथी, एक प्रकार की पालकी जिसमें मृतक शरीर रख कर श्मशान भूमि में ले जाते हैं ।

शवर, शवल दे० शबर शबल ।

शवसानः [शव+असानच्] 1. यात्री 2. मार्ग, सड़क, —**नम्** क़ब्रिस्तान, शवाधिस्थान ।

शशः [शश्+अच्] 1. खरगोश, खरहा—मनु० ३।२७०, ५।१८ 2. चन्द्रमा का कलंक (जो खरगोश की आकृति का समझा जाता है) 3. कामशास्त्र में वर्णित चार प्रकार के पुरुषों में से एक भेद । ऐसे मनुष्य के लक्षण ये हैं मृदुवचनसुशीलः कोमलांगः सुकेशः, सकलगुणनिधानं सत्यवादी शशोऽयम्—शब्द०, दे० रति० ३५ भी 4. लोध्र वृक्ष 5. बोल नामक खुशबूदार गोंद । सम० —**अङ्कः** 1. चाँद 2. कपूर—°**अर्धमुख** (वि०) अर्धचन्द्राकार सिर वाला (वाण आदि) - °**मूर्तिः** चन्द्रमा का विशेषण °**लेखा** चाँद की कला, चन्द्रकला, —**अदः** 1. बाज़, श्येन 2. पुरंजय के पिता इक्ष्वाकु का एक

पुत्र, —अदनः बाज़, श्येन,—ऊर्णम्,—लोमम् खरगोश के बाल, खरहे की त्वचा, —धरः 1. चन्द्रमा—प्रसरति शशधरबिंबे गीत० ७ 2. कपूर °मौलिः शिव का विशेषण,—लुप्तकम् नखक्षत, नाखून का घाव,—भृत् (पुं०) चाँद °भृत् (पुं०) शिव का विशेषण,—लक्ष्मणः चाँद का विशेषण,—लाञ्छनः 1. चन्द्रमा—कु० ७।६, 2. कपूर—विं(बि) बुः 1. चाँद 2. विष्णु का विशेषण, —विषाणम्—भृंगम् खरगोस का सींग (असंभव बात का संकेत करने के लिए प्रयुक्त, नितान्त (असंभावना) कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादयेत् —भर्तृ० २५, शशश्रृङ्गधनुर्धरः—दे० 'खपुष्प', —स्थली गंगा यमुना के बीच की भूमि, दोआबा।

शशकः [शश+कन्] 1. खरगोश, खरहा 2. शश (३)।

शशिन् (पुं०) [शशोऽस्त्यस्य इनि] 1. चाँद शशिनं पुनरेति शर्वरी—रघु० ८।५६, ६।८५, मेघ० ४१ 2. कपूर। सम०—ईशः शिव का विशेषण,—कला चन्द्रमा की एक लेखा—मुद्रा० १।१,—कान्तः चन्द्रकांतमणि (—तम्) कमल,—कोटिः चन्द्रशृङ्ग, - ग्रहः चन्द्रमा का ग्रहण,—जः बुध का विशेषण (चन्द्रमा का पुत्र),—प्रभ (वि०) चन्द्रमा की कांति वाला, चाँद जैसा उज्ज्वल और श्वेत—रघु० ३।१६, (—भम्) कुमुदिनी,—प्रभा चाँद का प्रकाश,—भूषणः, भृत्, (पुं०)—मौलिः,—शेखरः शिव के विशेषण, —लेखा चन्द्रमा की कला।

शश्वत् (अव्य०) [शश्+वत्, वा] 1. लगातार, अनादि काल से, सदा के लिए 2. सतत, बार-बार, सदैव, बहुशः, पुनः पुनः—रघु० २।४५, ४।७०, मेघ० ५५ 3. समास में प्रयुक्त होने पर 'शश्वत्' का अर्थ है 'टिकाऊ, नित्य' यथा शश्वच्छान्ति अर्थात् नित्य शान्ति।

शष्कु (स्कु) ली [शप् (स्)+कुलच्+ङीप्] कान का विवर, श्रवण-मार्ग—अवलम्बितकर्णशष्कुलीकलसीकं रचयन्नवोचत नै० २।८, याज्ञ० ३।९६ 2. एक प्रकार की पकी हुई रोटी, याज्ञ० १।१७३ 3. चावल की कांजी 4. कान का एक रोग।

शष्पः (ष्पा) [शप्+पक्] प्रतिभाक्षय, औसान का अभाव, —ष्पम् नया घास उत्तर० ४।२७, रघु० २।२६।

शस् i (भ्वा० पर० शसति) काटना, मारडालना, नष्ट करना, वि—काट डालना, मार डालना—उत्तर० ४। ii (अदा० पर० शस्ति) सोना, तु० 'शंस्' से भी।

शसनम् [शस्+ल्युट्] 1. घायल करना, मार डालना 2. बलि, मेघ, (यज्ञ में पशु का)।

शस्त (भू० क० कृ०) [शंस्+क्त] 1. प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया 2. शुभ आनन्द प्रद 3. यथार्थ, सर्वोत्तम 4. क्षतिग्रस्त, घायल 5. वध किया हुआ, —स्तम् 1. आनन्द, कल्याण 2. श्रेष्ठता, मांगलिकता 3. शरीर 4. अंगुलित्राण (इसी अर्थ में 'शस्तकम्' भी)।

शस्तिः (स्त्री०) [शंस्+क्तिन्] प्रशंसा, स्तुति।

शस्त्रम् [शस्+ष्ट्रन्] 1. हथियार, आयुध—क्षमाशस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति—सुभा०—रघु० २।४०, ३।५१, ६२, ५।२८ 2. उपकरण, औज़ार 3. लोहा 4. इस्पात, 5. स्तोत्र। सम०—अभ्यासः शस्त्रास्त्रों के चलाने का अभ्यास, सैनिक व्यायाम, —अयसम् 1. इस्पात 2. लोहा,—अस्त्रम् प्रहार करने और फेंक कर मारने वाले हथियार, आयुध और अस्त्र 3. आयुध या शस्त्र,—आजीवः—उपजीविन् (पुं०) पेशेवर सिपाही,—उद्यमः (प्रहार करने के लिए) शस्त्र उठाना,—उपकरणम् युद्ध के उपकरण या शस्त्रास्त्र, सैनिक सामग्री,—कारः शस्त्रनिर्माता —कोषः किसी हथियार का म्यान, आवरण,—ग्राहिन् (वि०) (युद्ध के लिए) शस्त्रास्त्र धारण करने वाला उत्तर० ५।३३,—जीविन्, - वृत्ति (पुं०) शस्त्र प्रयोग के द्वारा जीवन यापन करने वाला, व्यावसायिक सैनिक,—देवता 1. आयुधों की अधिष्ठात्री देवता 2. देवरूपकृत हथियार,—धरः—शस्त्रभृत्,—न्यासः हथियार डाल देना, इसी प्रकार शस्त्र (परि) त्यागः, —पाणि (वि०) शस्त्र धारण करने वाला, शस्त्रों से सुसज्जित (पुं०) सशस्त्र योद्धा,—पूत (वि०) 'शस्त्रों द्वारा पवित्रीकृत' युद्धक्षेत्र में मारे जाने से मुक्त—अशस्त्रपूतं निर्व्याजं (महामांसं)—मा० ५।१३ (दे० शब्द की जगद्धरकृत व्याख्या) अहमपि तस्य मिथ्याप्रतिज्ञावैलक्ष्यसंपादितमशस्त्रपूतं मरणमुपदिशामि वेणी० २,—प्रहारः हथियार से किया गया आघात, —भृत् (पुं०) सैनिक, योद्धा—रघु० २।४०,—मार्जः हथियार साफ़ करने वाला, शस्त्रनिर्माता, सिकलीगर, —विद्या—शास्त्रम् शस्त्र विज्ञान,—संहतिः (स्त्री०) 1. शस्त्रसंग्रह 2. आयुधागार,—संपातः हथियारों का अकस्मात् गिरना,—हत (वि०) हथियार से मारा गया,—हस्त (वि०) शस्त्रधर (स्तः) शस्त्रधारी मनुष्य।

शस्त्रकम् [शस्त्र+कन्] 1. इस्पात 2. लोहा।

शस्त्रिका [शस्त्रक+टाप्, इत्वम्] चाकू।

शस्त्रिन् (वि०) [शस्त्र+इनि] शस्त्रधारी, हथियारबंद, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित।

शस्त्री [शस्त्र+ङीष्] चाकू—पण्यस्त्रीषु विवेककल्पलतिका शस्त्रीषु रज्येत कः—सुभा०, शि० ४।४०।

शस्यम् [शस्+यत्] 1. अन्न, धान्य—दुदोह गां स यज्ञाय शस्याय मघवा दिवम्—रघु० १।२६ 2. किसी वृक्ष या पौधे का फल या उपज—शस्यं क्षेत्र-

गतं प्राहुः सतुपं धान्यमुच्यते—दे० 'तंडुल' भी 3. गुण। सम० क्षेत्रम् अन्न का खेत, भक्षक (वि०) अन्नहारी, अनाज खाने वाला, मञ्जरी अनाज की बाल,—मालिन् (वि०) जिसका खेत हरा भरा खड़ा हो,—शालिन्, संपन्न (वि०) अन्न या धान्य से परिपूर्ण, शूकम् अनाज का सिर्टा,—संपद् (स्त्री०) अनाज की बहुतायत, सम्ब (म्ब) रः शाल का वृक्ष, साल का पेड़।

शाकः, कम् [शक्यते भोक्तुम्—शक्+घञ्] शाक, साग—भाजी, खाद्यपत्ते, फल या कन्द जो शाक की भांति उपयोग में लाये जायं—दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा मनोरथान् पूरयितुं समर्थः, अन्यैर्नृपालैः परिदीयमानं शाकाय वा स्याल्लवणाय वा स्यात् जग०,—कः 1. शक्ति, सामर्थ्य, ऊर्जा 2. सागौन का वृक्ष 3. शिरीप का वृक्ष 4. एक जाति का नाम—दे० शक 5. वर्ष, विशेषतः शालिवाहन संवत्सर। सम०—अङ्गम् मिर्च, अम्लम् महादा, इमली, -आख्यः सागौन का वृक्ष, (ख्यम्) शाकभाजी, —आहारः शाकभाजी खाने वाला (वनस्पति खाकर जीवित रहने वाला),—चुक्रिका इमली,—तरुः सागौन का वृक्ष,—पणः 1. मुट्ठीभर भार के बराबर तोल 2. मुट्ठीभर शाकभाजी,—पार्थिवः अपने नाम से वर्ष चलाने का शौकीन, दे० मध्यमपदलोपिन्, —प्रति (अव्य०) थोड़ी सी वनस्पति,—योग्यः धनिया, —वृक्षः सागौन का पेड़, -शाकटम्, शाकिनम् साग भाजी का खेत, रसोई के योग्य सब्जियों का उद्यान।

शाकट (वि०) (स्त्री०—टी) [शकट+अण्] 1. गाड़ी सम्बन्धी 2. गाड़ी में बैठकर जाने वाला,—टः 1. गाड़ी खींचने वाला बैल 2. श्लेष्मान्तक वृक्ष (नपुं०) खेत—तु० शाकशाकटम्।

शाकटायनः [शकटस्यापत्यम् शकट+फक्] भाषाविज्ञान और व्याकरण का पंडित जिसका पाणिनि और यास्क ने कई बार उल्लेख किया है—तु० व्याकरणे शकटस्य च तोकम् -निरु०।

शाकटिक (वि०) (स्त्री० की) [शकट+ठक्] 1. गाड़ीसम्बन्धी 2. गाड़ी में बैठकर जाने वाला।

शाकटीनः [शकट+खञ्] गाड़ी में समाने योग्य बोझ, बीस तुला के समान बोझ की तोल।

शाकल (वि०) (स्त्री० ली) [शकल+अण्] टुकड़े से सम्बन्ध रखने वाला,—लः ऋग्वेद की एक शाखा, इस शाखा के अनुयायी (व०व०)। सम० प्रातिशाख्यम् ऋग्वेद का प्रातिशाख्य, शाखा ऋग्वेद का परम्परागत पाठ जो शाकल शाखा में प्रचलित है।

शाकल्यः [शकलस्यापत्यम् यञ्] एक प्राचीन वैयाकरण जिसका उल्लेख पाणिनि ने किया है (कहा जाता है कि इसी ने ऋग्वेद के पद-पाठ को व्यवस्थित किया था)।

शाकारी (स्त्री०) प्राकृत का एक निम्नतम रूप, शकार द्वारा बोली गई बोली जैसा कि मृच्छकटिक में।

शाकिनम् [शाक+इनच्] खेत जैसा कि 'शाकशाकिन' में।

शाकिनी [शाकिन्+ङीप्] 1. साग-भाजी का खेत 2. दुर्गादेवी की सेविका (जो एक पिशाचिनी या परी समझी जाती है)।

शाकुन (वि०) (स्त्री०—नी) [शकुन+अण्] 1. पक्षियों से सम्बन्ध रखने वाला—मनु० ३।२६८ 2. सगुन सम्बन्धी 3. शकुनसम्बन्धी।

शाकुनिकः [शकुनेन पक्षिवधादिना जीवति ठञ्] बहेलिया, चिड़ीमार—मृच्छ० ६, मनु० ८।२६०, कम् शकुनों की व्याख्या।

शाकुनेयः [शकुनि+ढक्] छोटा उल्लू।

शाकुन्तलः [शकुन्तला+अण्] भरत का मातृपरक नाम (शकुन्तला का पुत्र) लम् कालिदास का अभिज्ञान शाकुन्तल नामक नाटक।

शाकुलिकः [शकुल+ठक्] मछुआ, मछली मारने वाला।

शाक्करः [शक्कर+अण्] बैल।

शाक्त (वि०) (स्त्री०—क्ती) [शक्ति+अण्] 1. शक्तिसम्बन्धी 2. दिव्यशक्ति की स्त्री प्रतिमा से सम्बन्ध रखने वाला, क्तः शक्तिपूजक (शाक्त लोग प्रायः दुर्गा के उपासक होते हैं, दुर्गा ही दिव्यशक्ति की स्त्रीमूर्ति है, अनुष्ठान पद्धति दो प्रकार की है, पवित्र अर्थात् दक्षिणाचार तथा अपवित्र अर्थात् वामाचार)।

शाक्तिकः [शक्ति+ठक्] 1. शक्ति का पूजक 2. बर्छीधारी, भाला रखने वाला।

शाक्तीकः [शक्ति+ईकक्] बर्छी रखने वाला, भालाधारी।

शाक्तेयः [शक्ति+ढक्] शक्ति का उपासक।

शाक्यः [शक्+घञ्, तत्र साधुः यत्] 1. बुद्ध के कुटुम्ब का नाम 2. बुद्ध। सम० भिक्षुकः बौद्धभिक्षु, मुनिः, सिंहः बुद्ध के विशेषण।

शाक्री [शक्र+अण्+ङीप्] 1. इन्द्र की पत्नी शची 2. दुर्गादेवी।

शाक्वरः [शक्वर+अण्] बैल, तु० 'शाक्कर'।

शाखा [शाखति गगनं व्याप्नोति—शाख्+अच्+टाप्] 1. (वृक्ष आदि की) डाली, शाख—आवर्ज्य शाखाः —रघु० १६।१९ 2. भुजा 3. दल, अनुभाग, गुट 4. किसी कार्य का भाग या उपभाग 5. सम्प्रदाय, शाखा, पन्थ 6. परम्परा प्राप्त वेद का पाठ, किसी सम्प्रदाय द्वारा मान्यताप्राप्त परम्परागत पाठ यथा शाकल शाखा, आश्वलायन शाखा, वाष्कल शाखा आदि। सम० -चन्द्रन्यायः दे० 'न्याय' के अन्तर्गत, -नगरम्, -पुरम् नगराञ्चल, नगर परिसर, -पित्तः

शरीर के हाथ, कन्धा आदि छोरों म सूजन,—भृत् (पुं०) वृक्ष, भेदः (वेद की) शाखाओं का अन्तर, —मृगः 1. बन्दर, लंगूर 2. गिलहरी, रण्डः अपनी शाखा के प्रति द्रोह करने वाला, वह ब्राह्मण जिसने अपनी वैदिक शाखा को बदल दिया है,— रथ्या गली, वीथिका।

शाखालः [शाखा+ला+क] एक प्रकार का बेंत, वानीर।

शाखिन् (वि०) [शाखा+इनि] 1. शाखाधारी आलं० से भी) 2. शाखाओं से युक्त, शाखामय 3. (वेद के) किसी सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्ध रखने वाला—(पुं०) 1. वृक्ष श० १।१५ 2. वेद 3. वेद की किसी भी शाखा का अनुयायी।

शाखोटः, शाखोटकः [शाख्+ओटन्, शाखोट+कन्] एक वृक्ष, पेड़—कस्त्वं भोः कथयामि दैवहतकं मां विद्धि शाखोटकम्—काव्य० १०।

शाङ्करः [शङ्कर+अण्] बैल।

शाङ्करिः [शङ्कर+इञ्] 1 कार्तिकेय 2. गणेश 3. अग्नि।

शाङ्खिकः [शङ्ख+ठक्] 1. शङ्खकार, शङ्ख को काट कर उसकी चीजें बनाने वाला 2. एक वर्णसङ्कर जाति 3. शङ्ख बजाने वाला—शि० १५।७२।

शाटः, शाटी [शट्+घञ्, शाट+ङीप्] 1. वस्त्र, कपड़ा 2. अधोवस्त्र, साड़ी।

शाटकः,—कम् [शाट+कन्] 1. वस्त्र, कपड़ा, अधोवस्त्र, साड़ी—पंच० १।१४४।

शाठ्यम् [शठ+ष्यञ्] बेईमानी, छल, कपट, चालाकी, जालसाजी, दुष्कर्म—आजन्मनः शाठ्यमशिक्षितो यः —श० ५।२५, मुद्रा० १।१।

शाण (वि०) (स्त्री०—णी) [शणेन निर्वृत्तम्—अण्] सन का बना हुआ, पटसन का बना हुआ,—णः 1. कसौटी—भामि० १।७३, भर्तृ० २।४४, 2. सान रखने वाला पत्थर 3. आरा 4. चार माशे की तोल, —णम् 1. मोटा कपड़ा, बोरे या थैले आदि बनाने का कपड़ा 2. सन का बना वस्त्र—मनु० २।४१ १०।८७। सम०—आजीवः शस्त्रनिर्माता, सिकलीगर।

शाणिः [शण्+इण्] एक पौधा जिसके रेशों से वस्त्र बनता है, पटुआ।

शाणित (भू० क० कृ०) [शण्+णिच्+क्त] सान पर रक्खा हुआ, पीसा हुआ, (शाण पर रख कर) पैनाया हुआ।

शाणी [शण+ङीप्] 1. कसौटी 2. सान 3. आरा 4. सन का बना वस्त्र 5. फटा कपड़ा, चिथड़ा 6. छोटा पर्दा या तंबू 7. अंगविक्षेप, हाथ या आँख आदि से संकेत करना।

शाणीरम् [शण्+ईरण्] शोण नदी का तट, शोण नदी का भूभाग।

शाण्डिल्यः [शण्डिल+यञ्] 1. एक ऋषि जिसने विधि-शास्त्र पर ग्रन्थ लिखा 2. बिल्ववृक्ष, बेल का पेड़ 3. अग्नि का रूप। सम० **गोत्रम्** शांडिल्य का परिवार।

शात (भू० क० कृ०) [शो+क्त] 1. तीक्ष्ण किया हुआ, पैनाया हुआ 2. पतला, दुबला 3. दुर्बल, कमजोर 4. सुन्दर, मनोहर 5. प्रसन्न, फलता-फूलता,—तः धतूरे का पौधा,—तम् आनन्द, प्रसन्नता, खुशी मानिनी-जनजनितशातम्—गीत० १०। सम०—उदरी कृशोदरी, पतली कमर वाली स्त्री शि० ५।२३, रघु० १०। ६९,—शिख (वि०) तेज नोक वाला, तीक्ष्ण नोकदार।

शातकुंभम् [शतकुंभे पर्वते भवम् अण्] 1. सोना,—शि० ९।९, नै० १६।३४ 2. धतूरा।

शातकौम्भम् [शतकुम्भ+अण्] सुवर्ण, सोना।

शातनम् [शो+णिच्+तङ्+ल्युट्] 1. पैनाना, तेज करना 2. काटने वाला, विनाशकर्ता रघु० ३।४२ 3. गिराना या नष्ट करना 4. कुम्हलाहट पैदा करना 5. पतला या छोटा होना, पतलापन 6. मुर्झाना, कुम्हलाना।

शातपत्रकः,—की [शतपत्र+अण्+कन्] चाँद का प्रकाश।

शातभीरुः [शाताः दुर्बलाः पान्थाः भीरवो यस्याः—ब० स०] एक प्रकार की मल्लिका।

शातमान (वि०) (स्त्री० नी) [शतमानेन क्रीतम् अण्] एक सौ में मोल लिया हुआ।

शात्रव (वि०) (स्त्री०—वी) [शत्रु+अण्] 1. शत्रुसंबंधी, —रघु० ४।४२ 2. विरोधी, शत्रुतापूर्ण, वः दुश्मन शि० १४।४४, १८।२०, वेणी० ५।१, भट्टि० ५। ८१, कि० १४।२, मुद्रा० २।५, वम् 1. शत्रुओं का समूह 2. शत्रुता, दुश्मनी—त्रयीशात्रवशात्रवे—रस०।

शात्रवीय (लि०) [शत्रु+छ] 1. शत्रुसंबंधी 2. विरोधी, शत्रुतापूर्ण।

शादः [शद्+घञ्] 1. छोटी घास 2. कीचड़। सम० —हरितः—तम् नये घास के कारण हरियाली भूमि, वह भूमि जिस पर हरियाली छा गई है।

शाद्वल (वि०) [शादाः सन्त्यत्र वलच्] 1. तृणयुक्त 2. जहाँ नई घास, या हरी हरी घास उग आई हो 3. हरा भरा, सब्ज, हरियाली से युक्त,—लः, —लम् घास से युक्त भूमि, हरियाली, चरागाह—शय्या शाद्वलम्—शान्ति०।

शान् (भ्वा० उभ० शीशांसति—ते—निश्चित रूप से 'शान्' का इच्छा० रूप, मूल अर्थ में प्रयुक्त—) तेज करना, पैनाना।

शानः [शान्+अच्] 1. कसौटी 2. सान का पत्थर। सम०—पादः 1. चन्दन पीसने का पत्थर 2. पारियात्र पर्वत।

शान्त (भू० क० कृ०) [शम्+क्त] 1. प्रसन्न किया हुआ, दमन किया हुआ, धीरज दिलाया हुआ, सन्तुष्ट किया हुआ, प्रशान्त—रघु० १२।२० 2. चिकित्सित, सान्त्वना दिया हुआ—शान्तरोगः 3. घटाया हुआ, कम किया हुआ, समाप्त किया हुआ, हटाया हुआ, बुझाया हुआ—शान्तरथक्षोभपरिश्रमम्—रघु० १।५८, ५।४७, शातार्चिषं दीपमिव प्रकाशः—कि० १७।१६ 4. विरत, ठहराया हुआ—कु० ३।४२ 5. मृत, उपरत 6. शान्त किया हुआ, दबाया हुआ 7. सौम्य, चुपचाप, बाधाहीन, निस्तब्ध, मूक, मौन—शान्तमिदमाश्रमपदम् श० १।१६, ४।१९ 8. सधाया हुआ, पाला हुआ—रघु० १४।७९ 9. आवेशरहित, आराम से, सन्तुष्ट 10. छायादार 11. पवित्रीकृत 12. शुभ (शकुन)—(शान्तं पापम् 'अहो ! नहीं, यह कैसे हो सकता है, भगवान् करे ऐसी अशुभ या दुर्भाग्यपूर्ण घटना न घटे'—श० ५, मुद्रा० १),—तः 1. वैरागी, संन्यासी 2. शान्ति, निस्तब्धता, मौनभाव, सांसारिक विषय वासनाओं के प्रति तटस्थता की प्रभावना, दे० निर्वेद और रस,—तम् (अव्य०) बस, और नहीं, ऐसा नहीं, शर्म की बात है, चुप रहो, भगवान् न करे—शान्तं कथं दुर्जनाः पौरजानपदाः—उत्तर० १, तामेव शान्तमथवा किमिहोत्तरेण—३।२६। सम०—आत्मन्,—चेतस् (वि०) सौम्य, शान्तमना, धीर, स्वस्थमना,—तोय (वि०) जिसका पानी स्थिर हो,—रसः मौनभाव—दे० ऊ० शान्तम्।

शान्तनवः [शन्तनु+अण्] शन्तनु का पुत्र भीष्म।

शान्ता [शान्त+टाप्] दशरथ की पुत्री जिसे लोमपाद ऋषि ने गोद ले लिया था तथा जो ऋष्यश्रृङ्ग को ब्याही गई थी। दे० उत्तर० १।४, 'ऋष्यश्रृङ्ग' भी।

शान्तिः (स्त्री०) [शम्+क्तिन्] 1. प्रशमन, निराकरण, सान्त्वना, हटाव—अध्वरविघातशान्तये—रघु० ११।१, ६२ 2. धैर्य, प्रशान्तता, निःशब्दता, अमन-चैन, विश्राम—कु० ४।१७, मा० ६।११ 3. वैरनिरोध—भामि० १।२५ 4. विराम, निवृत्ति 5. आवेश का अभाव, मौनभाव, सभी सांसारिक भोगों के प्रति पूर्ण उदासीनता—रघु० ७।७१ 6. सान्त्वना, ढाढस 7. सामञ्जस्यविधान, विरोधोपशमन 8. भूख की तृप्ति 9. प्रायश्चित्त अनुष्ठान, पाप को दूर करने के लिए तुष्टिप्रद अनुष्ठान 10. सौभाग्य, बधाई, आशीर्वाद, माङ्गलिकता 11. दोषमार्जन, कलंक से मुक्ति, परिरक्षण। सम०—उदम्,—उदकम्,—जलम् शान्तिकर तथा प्रसादपूर्ण जल—श० ३,—कर,—कारिन् (वि०) सान्त्वक, प्रशामक,—गृहम् विश्रामकक्ष,—होमः पाप का निस्तारण करने के लिए यज्ञ करना—मनु० ४।१५०।

शान्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [शान्ति+कन्] प्रायश्चित्तात्मक, सान्त्वनाप्रद, तुष्टिकर,—कम् संकट को दूर करने के लिए किया गया अनुष्ठान।

शान्त्व् दे० 'सान्त्व्'।

शापः [शप्+घञ्] 1. अभिशाप, अवक्रोश, फटकार—शापेनास्तं गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः—मेघ० १, ९२, रघु० १।७८, ५।५६, ५९, ११।१४ 2. सौगन्ध, शपथोक्ति 3. दुर्वचन, मिथ्या आरोप। सम०—अन्तः—अवसानम्,—निवृत्तिः (स्त्री०) अभिशाप की समाप्ति, मेघ० ११०, रघु० ८।८२,—अस्त्रः 'अभिशाप को ही जिसने अपना आयुध बनाया है' ऋषि, महात्मा—रघु० १५।३,—उत्सर्गः अभिशाप का उच्चारण,—उद्धारः,—मुक्तिः,—मोक्षः अभिशाप से छुटकारा,—प्रस्त (वि०) अभिशाप से दबकर परिश्रम करने वाला,—मुक्त (वि०) अभिशाप से जिसने छुटकारा पा लिया है,—यन्त्रित (वि०) अभिशाप के कारण नियन्त्रणपूर्ण।

शापित (भू० क० कृ०) [शप्+णिच्+क्त] 1. सौगन्ध से बंधा हुआ, शपथपूर्वक उक्त 2. गृहीशपथ, जिसने शपथ ले ली है।

शाफरिकः [शफरान् हन्ति-शफर+ठक्] मछुआ, मछली पकड़ने वाला।

शाव (ब) र (वि०) (स्त्री०—री) [शव (ब) र+अण्] 1. असभ्य, जंगली 2. नीच, कमीना, अधम—रः 1. अपराध, दोष 2. पाप, दुष्टता 3. लोध्र नामक वृक्ष—री प्राकृत बोली का एक निम्नरूप (पहाड़ी लोगों से बोला जाने वाला। सम०—भेदाख्यम् (भेदाक्षम् भी) तांबा।

शाब्द (वि०) (स्त्री०—ब्दी) [शब्द+अण्] 1. शब्द संबंधी या शब्द से व्युत्पन्न 2. ध्वनि पर निर्भर या ध्वनि सम्बन्धी (विप० आर्थ) 3. शाब्दिक, मौखिक 4. ध्वननशील, मुखर,—ब्दः वैयाकरण। सम०—बोधः शब्दों के अर्थ का अवबोध या प्रत्यक्षीकरण,—व्यंजना शब्दों पर आधारित व्यंग्योक्ति।

शाब्दिक (वि०) (स्त्री—की) [शब्द+ठक्] 1. जबानी, मौखिक 2. निनादी,—कः वैयाकरण।

शामनः [शमन+अण्] यम—नम् 1. हत्या, वध 2. शान्ति, अमन-चैन 3. अन्त,—नी दक्षिण दिशा।

शामित्रम् [शम्+णिच्+इत्रच्] 1. यज्ञ करना 2. मेध, यज्ञ में पशुवध करना 3. यज्ञ के लिए बलिपशु बांधना 4. यज्ञीय पात्र।

शामिलम् [शमी+ष्लञ्] भस्म, राख।

शामिली [शामिल+ङीप्] यज्ञीय स्रुवा, स्रुच्।

शाम्बरी [शम्बर+अण्+ङीप्] 1. बाजीगरी, जादूगरी 2. जादूगरनी।

शाम्बविकः [शम्बु+ठक्] शंखों का व्यापारी।
शाम्बु (बू) क, [शम्बुक+अण्] द्विकोषीय घोंघा।
शाम्भव (वि०) (स्त्री० - वी) [शम्भु+अण्] शिव-सम्बन्धी - भर्तुं वाञ्छति शांभवो गणपतेराखुं क्षुधार्तः फणी - पंच० १।१५९,—वः 1. शिवोपासक 2. शिव जी का पुत्र 3. कपूर 4. एक प्रकार का विष,—वम् देवदारु वृक्ष।
शाम्भवी [शाम्भव+ङीप्] 1. पार्वती 2. एक पौधा, नीलदूर्वा।
शायकः [शो+ण्वुल्] 1. बाण 2. तलवार, तु० सायक।
शार् (चुरा० उभ० शारयति ते) 1. दुर्बल करना 2. कमज़ोर होना।
शार (वि०) [शार्+अच्, शृ+घञ् वा] चितकबरा, धब्बेदार चित्तीदार, शबल, रः 1. रंगबिरंगा रंग, 2. हरा रंग 3. हवा, वायु 4. शतरंज का मोहरा, गोट - भर्तृ० ३।३९ 5. क्षति पहुँचाने वाला, आघात करने वाला।
शारङ्गः [शारम् अङ्गम् यस्य—ब० स०] 1. चातक पक्षी 2. मोर 3. भौंरा 4. हरिण 5. हाथी, तु. सारंग।
शारङ्गी [शारङ्ग+ङीप्] एक संगीत वाद्य विशेष जो गज से बजाया जाता है, तु० सारंगी।
शारद (वि०) [शरदि भवम् - अण्] 1.पतझड़ से संबंध रखने वाला, शरत्कालीन (इस अर्थ में स्त्री०—शारदी है)—विमलशारदचन्दिरचन्द्रिका—भामि० १।११३, रघु० १०।९ 2. वार्षिक 3. नया, नूतन 4. अनुभवहीन, नौसिखिया 5. विनीत, शर्मीला, लज्जालु 5. शंकालु, साहसहीन, - दः 1. वर्ष 2. शरत्कालीन बीमारी 3. शरत्कालीन धूप 4. एक प्रकार का लोबिया या उड़द 5. वकुल का वृक्ष, मौलसिरी,—दी कार्तिक मास की पूर्णिमा,—दम् 1. अनाज, धान्य 2. श्वेत कमल, दा 1. एक प्रकार की वीणा या सारंगी 2. दुर्गा 3. सरस्वती।
शारदिकः [शरद्+ठञ्] 1. शरत्कालीन रोग 2. शरत्कालीन धूप या गर्मी, कम् शरत्कालीन या वार्षिक श्राद्ध।
शारदीय (वि०) [शरद्+छ] शरत्कालीन, पतझड़ संबन्धी।
शारिः [शृ+इञ्] 1. शतरंज का मोहरा, गोट 2. छोटी गोल गेंद 3. एक प्रकार का पासा, रि (स्त्री०) 1. सारिका पक्षी, मैना 2. जालसाज़ी, चाल 3. हाथी की झूल। सम०—पट्टः,—फलम्,—फलकः,—कम् शतरंज खेलने की बिसात,।
शारिका [शारि+कन्+टाप्] 1. एक पक्षी, मैना 2. तन्त्रयुक्त वाद्ययन्त्रों को बजाने वाला गज 3. शतरंज खेलना 4. शतरंज का मोहरा, गोटी।
शारी [शारि+ङीष्] एक पक्षी, मैना।
शारीर (वि०) (स्त्री०—री) [शरीर+अण्] 1. शरीर से संबद्ध शारीरिक, दैहिक 2. शरीरधारी, मूर्तिमान्, —रः शरीरधारी, जीवात्मा, मानवात्मा, वैयक्तिक आत्मा 2. साँड़ 3. एक प्रकार की औषधि।
शारीरक (वि०) (स्त्री० - की) [शरीर+कन्+अण्] शरीर सम्बन्धी, —कम् 1. मूर्तिमान् जीव, जीव के स्वरूप की पृच्छा (ब्रह्मसूत्रों पर शङ्कराचार्य द्वारा किया गया भाष्य)। सम०—सूत्रम् वेदान्त दर्शन के सूत्र।
शारीरिक (वि०) (स्त्री०—की) [शरीर+ठक्] दैहिक, शरीर संबन्धी, भौतिक।
शारुक (वि०) (स्त्री०—की) [शृ+उकञ्] अनिष्टकर, चोट पहुँचाने वाला, उपद्रवी।
शार्कक: [शर्क+अण्+कन्] दानेदार चमकीली खांड़, मिसरी।
शार्कर (वि०) (स्त्री०—री) [शर्करा+अण्] 1. चीनी का बना हुआ, शर्करामिश्रित 2. पथरीला, कंकरीला, —रः कंकरीला स्थान 2. दूध का झाग, पपड़ी 3. मलाई।
शार्ङ्ग (वि०) [शृङ्ग+अण्] 1. सींग का बना हुआ, सींग वाला 2. धनुर्धारी, धनुष से सुसज्जित —भट्टि० ८।१२३ ङ्गः,—ङ्गम् 1. धनुष 2. विष्णु का धनुष। सम०—धन्वन् (पुं०),—धरः,—पाणिः,—भृत् विष्णु के विशेषण।
शार्ङ्गिन् (पुं०) [शार्ङ्ग+इनि] 1. तीरंदाज, धनुर्धारी 2. विष्णु का विशेषण—धर्मसंरक्षणार्थैव प्रवृत्तिर्भुवि शार्ङ्गिणः—रघु० १५।४, १२।७०, मेघ० ४६।
शार्दूलः [शृ+ऊलल्, दुक् च] 1. व्याघ्र 2. चीता 3. राक्षस 4. एक पक्षी 5. (समास के अन्त में) प्रमुख या पूज्य पुरुष, अग्रणी—जैसा कि 'नरशार्दूल' में, तु० कुंजर। सम०—चर्मन् (नपुं०) व्याघ्र की खाल,—विक्रीडितम् 1. चीते की क्रीड़ा—कन्दर्पोऽपि यमायते विरचयन् शार्दूलविक्रीडितम् — गीत०४ 2. छन्द या वृत्त—दे० परि० १।
शार्वर (वि०) (स्त्री०—री) [शर्वरी+अण्] 1. रात्रिकालीन—कु० ८।५८ 2. उपद्रवी, प्राणहर,—रम् अंधकार, घुप अंधेरा,—री रात।
शाल् (भ्वा० आ० शालते) 1. प्रशंसा करना, खुशामद करना 2. चमकना 3. पूरित होना—कि० ५।४४ पर मल्लि० 4. कहना।
शालः [शल्+घञ्] 1.एक वृक्ष (बड़ा लंबा, और शानदार, —रघु० १।३८, शि० ३।४० 2.वृक्ष, पेड़,—रघु० १।१३, वेणी० ४।३ 3. बाड़ा, बाड़ 4. एक प्रकार की मछली 5. राजा शालिवाहन। सम० ग्रामः विष्णु भगवान्

की आदर्श प्रस्तरमूर्ति जैसा कि शिवलिंग, °गिरि पर्वत का नाम, °शिला शालग्राम पत्थर,–जः,–निर्यासः सालवृक्ष का प्रस्राव, राव –रघु० १।३१,—भञ्जिका 1. गुड़िया, पुत्तलिका, मूर्ति—विद्ध० १, नै० २।८३ 2. वेश्या, रंडी,—भञ्जी गुड़िया, पुत्तलिका,–वेष्टः साल के पेड़ से निकली राल, तु० 'साल',–सारः 1. उत्कृष्ट-वृक्ष 2. हींग ।

शालवः [शाल+वल्+ड] लोध्र वृक्ष ।

शाला [शाल्+अच्+टाप्] 1. कक्ष, प्रकोष्ठ, बैठक, कमरा–गृहैर्विशालैरपि भूरिशालैः –शि० ३।५०, इसी प्रकार संगीतशाला, रंगशाला आदि 2. घर, आवास —रघु० १६।४१ 3. वृक्ष की मुख्य शाखा 4. वृक्ष का तना । सम०—अजिरः, ·रम् मिट्टी का कसोरा, —मृगः गीदड़,—वृकः 1. कुत्ता—भामि० १।७२ 2. भेड़िया हरिण 4. बिल्ली 5. गीदड़ 6. बन्दर ।

शालाकः (पुं०) पाणिनि ।

शालाकिन् (पुं०) [शालाक+इन्] 1. भाला रखने वाला, बर्छीधारी 2. जर्राह 3. नाई ।

शालातुरीयः [शलातुर+छ] पाणिनि का विशेषण (जन्म स्थान 'शलातुर' होने के कारण –'शालोत्तरीय' भी लिखा जाता है) ।

शालारम् [शाला+ऋ+अण्] 1. ज़ीना, सीढ़ी 2. पिंजरा ।

शालिः [शाल्+णिनि] चावल—न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते –मुद्रा० १।१३, यवाः प्रकीर्णा न भवन्ति शालयः –मृच्छ० ४।१६ 2. गंधविलाव । सम० —ओदनः,—नम् भात (उत्कृष्टतर प्रकार का) —गोपी चावल के खेत की रखवाली करने वाली स्त्री,—रघु० ४।२०, चूर्णः, –र्णम् चावल का आटा –पिष्टम् स्फटिक, –भवनम् चावल का खेत,–वाहनः भारत का एक विख्यात राजा जिसके नाम से ख़िस्ताब्द ७८ में एक संवत्सर आरंभ हुआ,—होत्रः 1. पशुचिकित्सा पर ग्रन्थप्रणेता 2. घोड़ा,—होत्रिन् (पुं०) घोड़ा ।

शालिकः [शालि+कै+क] 1. जुलाहा 2. मार्गकर, शुल्क ।

शालिन् (वि०) (स्त्री०–नी) [शाला+इनि] (बहुधा समास के अन्त में) 1. सहित, युक्त, सम्पन्न, चमकीला, चमकदार–कि० ८।१७, ५५, भट्टि० ४।२ 2. घरेलू ।

शालिनी [शालिन्+ङीप्] 1. घर की स्वामिनी, गृहिणी 2. छन्द का नाम दे० परि० १ ।

शालीन (वि०) [शाला+खञ्] 1. विनीत, लज्जाशील, शर्मीला, लज्जालु निसर्गशालीनः स्त्रीजनः–मालवि० ४, रघु० ६।८१, १८।१७, शि० १६।८३ 2. सदृश, समान, नः गृहस्थ (शालीनी कृ विनयी बनाना, विनम्र करना) ।

शालुः [शाल्+उण्] 1. मेंढक 2. एक प्रकार का गन्ध द्रव्य, लु (नपुं०) कुमुदिनी की जड़ ।

शालु (लू) कम् [शल्+ऊकण्] 1. कुमुदिनी की जड़ 2. जायफल, कः मेंढक ।

शालु (लू) रः [शाल्+ऊर्] मेंढक ।

शालेयम् [शालि+ढक्] चावलों का खेत ।

शालोत्तरीयः [शालोत्तरे ग्रामे भवः—छ] पाणिनि का विशेषण—दे० शालातुरीय ।

शाल्मलः [शाल्+मलच्] 1. सेमल का पेड़ 2. भू-मण्डल के सात बड़े खण्डों में से एक ।

शाल्मलिः [शाल्+मलिच्] 1. सेमल का पेड़—भामि० १।११५, मनु० ८।२४६ 2. भू-मण्डल के सात बड़े खण्डों में से एक 3. नरक का एक भेद । सम० स्थः गरुड़ का विशेषण ।

शाल्मली [शाल्मलि+ङीष्] 1. सेमल का पेड़ 2. पाताल लोक की एक नदी 3. नरक का एक भेद । सम० —वेष्टः, वेष्टकः सेमल के पेड़ का गोंद ।

शाल्वः [शाल्+व] 1. एक देश का नाम 2. शाल्व देश का राजा ।

शाव (वि०) (स्त्री०–वी) [शव+अण्] शवसम्बन्धी, (किसी रिश्तेदार की) मृत्यु से उत्पन्न—दशाहं शावमाशौचं सपिण्डेषु विधीयते—मनु० ५।५९, ६१ 2. भूरे रङ्ग का, गहरे पीले रङ्ग का, ·वः किसी जानवर का छोटा बच्चा, कुरङ्गक, मृगछौना, वन्यपशुशावक —क्व वयं क्व परोक्षमन्मथो मृगशावैः सममेधितो जनः —श० २।१८, मृगराजशावः · रघु० ६।३, १८।३७ ।

शावकः [शाव+कन्] किसी भी वन्य पशु का बच्चा ।

शावर दे० 'शाबर' ।

शाश्वत (वि०) (स्त्री०–ती) [शश्वद् भवः अण्] नित्य, सनातन, चिरस्थायी · शाश्वतीः समाः –रामा० (=उत्तर० २।५) 'अविच्छिन्न वर्षों के लिए,' 'सदा के लिए' 'समस्त आगामी समय के लिए' उत्तर० ५।२७, रघु० १४।१४,—तः 1. शिव 2. व्यास 3. सूर्य, –तम् (अव्य०) नित्य, निरन्तर, सदा के लिए ।

शाश्वतिक (वि०) (स्त्री०–की) [शाश्वत+ठक्] नित्य, स्थायी, सनातन, सतत–शाश्वतिको विरोधः "नैसर्गिक विरोध" ।

शाश्वती [शाश्वत+ङीप्] पृथ्वी ।

शाष्कुल (वि०) (स्त्री०–ली) [शष्कुल+अण्] मांस (या मत्स्य) भक्षी ।

शाष्कुलिकम् [शष्कुली+ठक्] पूरियों का ढेर ।

शास् (अदा० पर० शास्ति, शिष्ट) 1. अध्यापन करना, शिक्षण प्रदान करना, प्रशिक्षित (इस अर्थ में धातु द्विकर्म० है) माणवकं धर्मं शास्ति—सिद्धा०, भट्टि० ६।१०, शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्—भग०

२।७ 2. राज्य करना, शासन करना,—अनन्यशासनामुर्वी शशासैकपुरीमिव–रघु० १।३०, १०।१, १४।८५, १९।५७, श० १।१४, भट्टि० ३।५३ 3. आज्ञा देना, समादिष्ट करना, निदेश देना, हुक्म देना —रघु० १२।३४, कु० ६।२४, भट्टि० ९।६८ 4. कहना, सम्वाद देना, सूचित करना, (संप्र० के साथ) --तस्मिन्नायोधनं वृत्तं लक्ष्मणायाशिषन्महत्--भट्टि० ६।२७, मनु० ११।८२ 5. उपदेश देना—स किसखा साधु न शास्ति योऽधिपम् कि० १।५ 6. आदेश देना, राजाज्ञा लागू करना 7. दण्ड देना, सज़ा देना, निर्दोष बनाना, मनु० ४।१७५, ८।२९ 8. सधाना, वशीभूत करना, महावी० ६।२०, अनु , 1. (क) उपदेश देना, प्रेरित करना–कु० ५।५, (ख) अध्यापन करना, शिक्षण प्रदान करना, आज्ञा देना, आदेश करना—रघु० ६।५९, १३।७५, भट्टि० २०।१७ 2. राज्य करना, शासन करना 3. सज़ा देना, दण्ड देना –वेणी० २ 4. प्रशंसा करना, स्तुति करना, आ—, (बहुधा आ०) 1. आशीर्वाद देना, आशीर्वाद उच्चारण करना, –ऋक्छन्दसा आशास्ते—श० ४, उत्तर० १ 2. आज्ञा देना, आदेश देना, निदेश देना (इस अर्थ में पर०) भट्टि० ६।४ 3. इच्छा करना, खोजना, आशा करना, प्रत्याशा करना—सर्वमस्मिन्वयमाशास्महे श० ७, आशासतं ततः शान्तिमस्तुरनीनहावयत्—भट्टि० १७।१, ५।१६, मनु० ३।८० 4. प्रशंसा करना, प्र , 1. अध्यापन करना, शिक्षण देना, उपदेश करना, -भट्टि० १९।१९ 2. आदेश देना, समादिष्ट करना—प्रशाधि यन्मया कार्यम् -- मार्कण्डेय० 3. राज्य करना, शासन करना, प्रभु बनना—द्यां प्रशाधि गलितावधिकालम् -- नै० ५।२४, रघु० ६।७६, ९।११ 4. दण्ड देना, सज़ा देना 5. प्रार्थना करना, याचना करना, तलाश करना, (आ०)—इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे उत्तर० १।१ (आपूर्वक शास् के अर्थ में प्रयुक्त)।

शासनम् [शास्+ल्युट्] 1. शिक्षण, अध्यापन, अनुशासन 2. राज्य, प्रभुत्व, सरकार -अनन्यशासनामुर्वीम्—रघु० १।३०, इसी प्रकार 'अप्रतिशासनम्' 3. आज्ञा, आदेश, निदेश—तरुभिरपि देवस्य शासनं प्रमाणीकृतम्—श० ६, रघु० ३।६९, १४।८३, १८। १८ 4. राजविज्ञप्ति, अधिनियम, राजाज्ञा 5. विधि, नियम 6. अग्रहार, राजा द्वारा दान की हुई भूमि, अधिकारपत्र, अहं त्वां शासनशतेन योजयिष्यामि —पंच० १, याज्ञ० २।२४०, २९ 7. पट्टा, दस्तावेज़, लिखित समझौता 8. आवेशों का नियन्त्रण (समास के अन्त में प्रयुक्त 'शासन' का अर्थ है, दण्ड देने वाला, विनाशक, या मारक यथा स्मरशासनः, पाकशासनः)।

सम०—**पत्रम्** 1. वह ताम्रपत्र जिस पर भूदान की राजाज्ञा खोदी गई हो 2. वह कागज़ जिस पर कोई राजाज्ञा अंकित हो, **हारिन्** (पुं०) राजदूत, संदेशवाहक --रघु० ३।६८।

शासित (भू० क० कृ०) [शास्+क्त] 1. राज्य किया गया, शासन किया गया 2. दण्डित।

शासितृ (पुं०) [शास्+तृच्] 1. राज्य करने वाला, शासक 2. दण्ड देने वाला—श० १।२५।

शास्तृ (पुं०) [शास्+तृच्, इडभावः] 1. अध्यापक, शिक्षक 2. शासक, राजा, प्रभु 3. पिता 4. बुद्ध या जैन धर्म का गुरु, आचार्य।

शास्त्रम् [शिष्यतेऽनेन–शास्+ष्ट्रन्] 1. आज्ञा, समादेश, नियम, विधि 2. वेदविधि, धर्मशास्त्र की आज्ञा 3. धार्मिक ग्रन्थ, वेद, धर्मशास्त्र, दे० नी० समस्तपद 4. विद्याविभाग, विज्ञान –इति गुह्यतमं शास्त्रम् —भग० १५।२०, शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिः—रघु० १।१९; प्रायः समास के अन्त में विषयद्योतक शब्द के पश्चात्, या उस विषय पर समष्टि-अध्ययन का संचित भण्डार वेदान्त शास्त्र, न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र, अलंकार शास्त्र आदि 5. पुस्तक, ग्रन्थ—तन्त्रैः पंचभिरेतच्चकार सुमनोहरं शास्त्रम्—पंच० १ 6. सिद्धान्त (विप० प्रयोग या अभ्यास)—मालवि० १। सम० —**अतिक्रमः**, -**अननुष्ठानम्** वैदिक विधियों का उल्लंघन, धार्मिक प्रामाणिकता की अवहेलना,—**अनुष्ठानम्** वेदविधि का पालन या तदनुरूपता, -**अभिज्ञ** (वि०) शास्त्रों में निष्णात, **अर्थः** 1. वेदविधि का अर्थ 2. वैदिक विधि या शास्त्रीय वक्तव्य,—**आचरणम्** वेदविधि का पालन,—**उक्त** (वि०) शास्त्रविधि से विहित, शास्त्रों की आज्ञा, वैध, क़ानूनी,—**कारः**,—**कृत्** (पुं०) 1. किसी धर्मशास्त्र का रचयिता 2. ग्रन्थ प्रणेता,—**कोविद** (वि०) शास्त्रों में निष्णात,—**गण्डः** दिखाऊ पाठक, हलका अध्ययन करने वाला विद्यार्थी, पल्लवग्राही, **चक्षुस्** (नपुं०) व्याकरण (शास्त्रों को समझने के लिए 'आँख'), **ज्ञ**, -**विद्** (वि०) शास्त्रों का जानकार, **ज्ञानम्** धर्मशास्त्र का ज्ञान, वेद की जानकारी,—**तत्त्वम्** शास्त्रों में वर्णित सचाई, वैदिक तत्त्व,—**दर्शिन्** (वि०) धर्मशास्त्रों का ज्ञाता,—**दृष्ट** (वि०) धर्मशास्त्रों में विहित या उक्त,—**दृष्टिः** (स्त्री०) शास्त्रीय दृष्टिकोण,—**योनिः** शास्त्रों का स्रोत या उद्गमस्थान,—**विधानम्**,—**विधिः** शास्त्रीय विधि, वेदाज्ञा,—**विप्रतिषेधः**,—**विरोधः** 1. शास्त्रीय विधियों का पारस्परिक विरोध, विधि-विधान की असंगति 2. वेद विधि के विरुद्ध आचरण,—**विमुख** (त्रि०) अध्ययन से पराङ्मुख—पंच० १, **विरुद्ध** (त्रि०) शास्त्रों के विपरीत, अवैध, गैरक़ानूनी,

व्युत्पत्तिः (स्त्री०) धर्मशास्त्रों का अन्तरंग ज्ञान, शास्त्रों में प्रवीणता, शिल्पिन् (पुं०) काश्मीरदेश, —सिद्ध (वि०) धर्मशास्त्रों के प्रमाणानुसार स्थापित।

शास्त्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शास्त्र+इनि] शास्त्रों में अभिज्ञ, कुशल (पुं०) शास्त्रों में पारंगत, विद्वान् पुरुष, महान् पंडित।

शास्त्रीय (वि०) [शास्त्रेण विहितः छ] 1. वेदविहित, शास्त्रानुमोदित 2. वैज्ञानिक।

शास्य (वि०) [शास्+ण्यत्] 1. सिखलाये जाने योग्य, उपदेश दिये जाने योग्य 2. विनियमित या शासित किये जाने के योग्य 3. दण्डनीय, दण्डार्ह।

शि (स्वा० उभ० शिनोति, शिनुते) 1. तेज करना, पैनाना 2. कृश करना, पतला करना 3. उत्तेजित करना 4. सावधान होना 5. तीक्ष्ण होना।

शिः [शि+क्विप्] 1. माङ्गलिकता, स्वरसाम्यता 2. स्वस्थता, सौम्यता, शान्ति, अमन-चैन 3. शिव का विशेषण।

शिंशपा [शिवं पाति—शिव+पा+क, पृषो० साधुः] 1. शीशम का पेड़ 2. अशोक वृक्ष।

शिक्कु (वि०) [सिच्+कु, पृषो०] सुस्त, आलसी, अकर्मण्य।

शिक्थम् [सिच्+थक्, पृषो०] मोम, तु० सिक्थ'।

शिक्यम्, शिक्या [स्रंस्+यन्, कुगागमः, शि आदेशः —शिक्य+टाप्] 1. (रस्सी से बुना हुआ) छींका, झोला 2. वहंगी पर लटका कर ले जाये जाने वाला बोझ।

शिक्यित (वि०) [शिक्य+णिच्+क्त] छींके में लटकाया हुआ।

शिक्ष् (भ्वा० आ० शिक्षते शिक्षित) सीखना, अध्ययन करना, ज्ञानार्जन करना अशिक्षतास्त्रं पितुरेव मन्त्रवत्—रघु० ३।३१।

शिक्षकः (स्त्री० शिक्षका, शिक्षिका) [शिक्ष्+णिच्+ण्वुल्] 1. सीखने वाला 2. अध्यापक, सिखाने वाला,—यस्योभयं (अर्थात् क्रिया और संक्रान्ति) साधु स शिक्षकाणां धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव—मालवि० १।१६।

शिक्षणम् [शिक्ष्+ल्युट्] 1. सीखना, अधिगम, ज्ञानार्जन 2. अध्यापन, सिखाना।

शिक्षमाणः [शिक्ष्+शानच्] शिष्य, विद्यार्थी, विद्याभ्यासी।

शिक्षा [शिक्ष् भाव अ+टाप्] 1. अधिगम, अध्ययन, ज्ञानाभिग्रहण —रघु० ९।६३ 2. किसी कार्य को करने के योग्य होने की इच्छा, निष्णात होने की इच्छा 3. अध्यापन, शिक्षण, प्रशिक्षण—काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासः काव्य० १, अभूच्च नम्रः प्रणिपातशिक्षया —रघु० ३।२५, मालवि० ४।९, रणशिक्षा 'युद्धविज्ञान' 4. छः वेदांगों में से एक जिसके द्वारा शब्दों का सही उच्चारण तथा सन्धि के नियम सिखाये जाते हैं 5. विनय, विनम्रता। सम० करः 1. अध्यापक, शिक्षक 2. व्यास, नरः इन्द्र का विशेषण, शक्तिः (स्त्री०) कुशलता।

शिक्षित (भू० क० कृ०) [शिक्ष्+क्त, शिक्षा जाताऽस्य —तार० इतच्] 1. अधिगत, अधीत 2. अध्यापित, सिखाया गया—अशिक्षितपटुत्वम् श० ५।२१ 3. प्रशिक्षित, अनुशासित 4. सधाया हुआ, विनयशील 5. कुशल, चतुर 6. विनीत, लज्जाशील। सम०—अक्षरः शिष्य,—आयुध (वि०) हथियारों के संचालन में अभिज्ञ।

शिखण्डः [शिखाममति—अम्+ड, शक० पररूपम्] 1. मुंडन—संस्कार के अवसर पर रखी गई शिखा, चोटी, या दोनों पार्श्व में छोड़े गये बाल, काकपक्ष 2. मोर की पूंछ।

शिखण्डकः [शिखण्ड इव+कन्] 1. चूडाकर्म सस्कार के अवसर पर सिर पर रक्खी गई चोटी 2. सिर के पार्श्वभागों में छोड़े गये बाल (क्षत्रियों के लिए यह चोटी तीन या पाँच होती हैं) उत्तर० ४।१९ 3. कलंगी, बालों का गुच्छा, चूडा या शेखर 4. मयूर पुच्छ।

शिखण्डिकः [शिखण्डिन्+कै+कः] मुर्गा।

शिखण्डिका दे० शिखण्ड (1)।

शिखण्डिन् (वि०) [शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि] कलगीदार, शिखाधारी. (पुं०) 1. मोर—नदति स एष वधूसखः शिखण्डी—उत्तर० ३।१८, रघु० १।३९, कु० १।१५ 2. मुर्गा 3. बाण 4. मोर की पूंछ 5. एक प्रकार की चमेली 6. विष्णु 7. द्रुपद के एक पुत्र का नाम (शिखण्डी मूलरूप से स्त्री था, क्योंकि अंबा ने भीष्म से बदला चुकाने के लिए द्रुपद के घर जन्म लिया (दे० अंबा)। परन्तु जन्म से ही उस कन्या की पुत्ररूप में घोषणा की गई और पुत्र की भांति ही उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई। समय पाकर उसका विवाह हिरण्यवर्मा की पुत्री से हुआ, परन्तु जब हिरण्यवर्मा को ज्ञात हुआ कि मेरा जामाता तो सचमुच स्त्री है तो उसे बड़ा दुःख हुआ, इसलिए उसने इस धोखा दिये जाने के कारण द्रुपद की राजधानी पर चढ़ाई करने की सोची। परन्तु शिखंडी ने एक जंगल में रह कर घोर तपस्या की, और किसी उपाय से उसने अपना स्त्रीत्व यक्ष को देकर उसका पुरुषत्व बदले में प्राप्त किया और इस प्रकार द्रुपद के ऊपर आए हुए संकट को टाला। बाद में महा-

भारत के युद्ध में भीष्म पितामह को मारने का एक साधन बना। जब अर्जुन ने शिखंडी को अपने योद्धा के रूप में आगे कर दिया तो भीष्म पितामह ने स्त्री के साथ युद्ध करने से हाथ खींच लिया। बाद में अश्वत्थामा ने शिखंडी को मार डाला)।

शिखण्डिनी [शिखण्डिन्+ङीप्] 1. मोरनी 2. एक प्रकार की चमेली 2. द्रुपद की पुत्री दे० ऊ० 'शिखंडिन्'।

शिखरः, –रम् [शिखा अस्त्यस्य–अरच् आलोपः] 1. चोटी, पहाड़ का सिरा या शृंग—जगाम गौरी शिखरं शिखण्डिमत् कु० ५।७, १।४, मेघ० १८ 2. वृक्ष का सिर या चोटी 3. कलगी, चूडा 4. तलवार की नोक या धार 5. चोटी, शृंग, शीर्षबिन्दु 6. कांख, बगल 7. बालों का कड़ा होना 8. अरबी चमेली की कली 9. एक लाल की भांति मणि। सम०—वासिनी दुर्गा का विशेषण।

शिखरिणी [शिखरिन्+ङीप्] 1. नारीरत्न 2. चीनी मिश्रित दही जिसमें मसाले पड़े हों, श्रीखंड 3. रोमावली जो वक्षःस्थल से चलकर नाभि को पार कर जाती है 4. एक छन्द का नाम - दे० परि० १।

शिखरिन् (वि०) (स्त्री०–णी) [शिखरमस्त्यस्य इनि] 1. चोटी वाला, शिखाधारी 2. नुकीला, शिखरयुक्त —शिखरिदशना - मेघ० ८२, (पुं०) 1. पहाड़ —इतश्च शरणार्थिनां शिखरिणां गणाः शेरते —भर्तृ० २।७६, मेघ० १३, रघु० ९।१२, २२ 2. पहाड़ी दुर्ग 3. वृक्ष 4. टिटिहरी 5. अपामार्ग का पौधा।

शिखा [शि+खक् तस्य नेत्वम्, पृषो०] 1. सिर की चोटी पर बालों का गुच्छा मुद्रा० ३।३०, शि० ४।५०, मा० १०।१६ 2. चोटी, शिखाग्रन्थि 3. चूड़ा, कलगी 4. चोटी, शिखर, शीर्षबिन्दु - कि० ६।१७ 5. तेज सिरा, धार, नोक या सिरा—श० १।४, भामि० १।२ 6. वस्त्र का छोर, श० १।१४ 7. अग्नि ज्वाला प्रभामहत्या शिखयेव दीपः कु० १।२८, रघु० १७।३४ 8. प्रकाश की किरण कु० ३।३८ 9. मोर की कलगी 10 जटायुक्त जड़ 11. शाखा (विशेष रूप से जड़ पकड़ती हुई) 12. प्रधान या मुखिया 13. कामज्वर। सम० तरुः दीपाधार, दीवट,—धरः मोर, - °जम् मोर का पंख, – धारः मोर,—मणिः चूड़ामणि, मूलम् 1. गाजर 2. मूली,—वरः कटहल का पेड़,—वल (वि०) नुकीला कलगीदार, (—लः) मोर, वृक्षः दीपाधार, दीवट, —वृद्धिः (स्त्री०) प्रतिदिन बढ़ने वाला ब्याज।

शिखालुः [शिखा+आलुच्] मोर की कलँगी।

शिखावत् (वि०) [शिखा+मतुप्] 1. कलगीदार 2. ज्वालामय, (पुं०) 1. दीपक 2. आग।

शिखिन् (वि०) [शिखा अस्त्यस्य इनि] 1. नुकीला 2. कलगीदार, शिखाधारी 3. घमंडी (पुं०) 1. मोर-पंच० १।१५९, विक्रम० २।२३, शि० ४।५० 2. अग्नि रिपुरिव सखीसंवासोऽयं शिखीव हिमानिलः गीत० ७, पंच० ४।११०, रघु० १९।५४, शि० १५।७ 3. मुर्गा 4. बाण 5. वृक्ष 6. दीपक 7. साँड़ 8. घोड़ा 9. पहाड़ 10. ब्राह्मण 11. साधु 12. केतु 13. तीन की संख्या 14. चित्रक वृक्ष। सम० -कण्ठम् -ग्रीवम् तूतिया, नीला थोथा ध्वजः 2. कार्तिकेय का विशेषण 2. धूआँ पिच्छम् —पुच्छम् मोर की पूँछ, दुम,—यूपः बारहसिंगा, वर्धकः गोल लौकी,—वाहनः कार्तिकेय का विशेषण —शिखा 1. ज्वाला 2. मोर की कलंगी।

शिग्रुः [शि+रुक् गुक् च] 1. सागभाजी 2. सहिजन का पेड़।

शिङ्ख् (भ्वा० पर० शिंखति) जाना, हिलना-जुलना।

शिङ्घ् (भ्वा० पर०) सूंघना।

शिङ्घाणः [शिङ्घ्+आणक, पृषो० कलोपः] 1. पपड़ी, झाग 2. बलगम, कफ,—णम् 1. नाक की मैल, सिणक 2. लोहे का जंग 3. शीशे का बर्तन।

शिङ्घाणकः, कम् [शिङ्घ्+अणक] नासिकामल, सिणक, कः कफ, बलगम।

शिञ्ज् (अदा० आ०, चुरा० उभ०—शिञ्जते, शिङ्क्ते, शिञ्जयति ते, शिञ्जित) टनटनाना, झनझनाना, खड़खड़ाना—शि० १०।६२।

शिञ्जः [शिञ्ज्+घञ्] टंकार, झनझनाहट, टनटन या झनझन की ध्वनि, विशेषकर झांवर आदि गहनों की झंकार।

शिञ्जञ्जिका (स्त्री०) कटिबंध, करधनी।

शिञ्जा [शिञ्ज्+अ+टाप्] 1. टंकार, झंकार आदि 2. धनुष की डोरी।

शिञ्जित (भू० क० कृ०) [शिञ्ज्+क्त] टंकृत, झंकृत तम् टंकार, (झांवर आदि गहनों की) झंकार, —कूजितं राजहंसानां नेदं नूपुरशिञ्जितम्—विक्रम० ४।१४।

शिञ्जिनी [शिञ्ज्+णिनि+ङीप्] 1. धनुष की डोरी 2. झांवर नूपुर (पैरों में पहना जाने वाला गहना)।

शिट् (भ्वा० पर० शेटति) तुच्छ समझना, घृणा करना, तिरस्कार करना।

शित (भू० क० कृ०) [शो+क्त] 1. तेज किया हुआ, पैनाया हुआ 2. पतला, कृश 3. छीजा हुआ-क्षीण दुर्बल, बलहीन। सम० —अग्रः काँटा,—धारा (वि०) तेज धार वाला, - शूकः 1. जौ 2. गेहूँ।

शितद्रुः (स्त्री०) सतलुज नाम की नदी दे० 'शतद्रु'।

शिति (वि०) [शि+क्तिच्] 1. श्वेत 2. काला - शि० १५।४८ —तिः भूर्जवृक्ष। सम०—कण्ठः 1. शिव

का विशेषण—तस्यात्मा शितिकण्ठस्य सैनापत्यमुपेत्य वः—कु० २।६१, ६।८१ 2. मोर—अवनतशितिकण्ठ कण्ठलक्ष्मीमिह दधति स्फुरिताणुरेणुजालाः—शि० ४।५६ 3. जलकुक्कुट,—छदः,—पक्षः हंस,—रत्नम् नीलम,—वासस् (पुं०) बलराम का विशेषण—विडम्बयन्तं शितिवाससस्तनुम्—शि० १।६।

शिथिल (वि०) [श्लथ्+किलच्, पृषो०] 1. ढीला, धीमा, सुस्त, विश्रान्त 2. विनबंधा, खुला हुआ—श० २।६ 3. वियुक्त, डाल से टूटा हुआ—श० २।८, 4. निढाल, निश्शक्त, असमर्थ 5. दुर्बल, कमजोर—अशिथिलपरिरम्भ—उत्तर० १।२४, २७, गाढ या दृढ़ालिंगन 6. पिलपिला, ढीलाढाला 7. घुला हुआ 8. मुर्झाया हुआ 9. निष्क्रिय, निरर्थक, व्यर्थ 10. असावधान 11. ढीलेढाले ढंग से किया हुआ, पूरी पाबन्दी के साथ जिसको सम्पन्न न किया गया हो 12. फेंका हुआ, परित्यक्त,—लम् 1. ढीलापन, शिथिलता 2. सुस्ती (शिथिली कृ 1. ढीला करना, खोलना, खुला छोड़ना, 2. छूट देना, ढील डालना 3. दुर्बल करना, निर्बल करना, कमजोर बनाना 4. छोड़ देना, परित्यक्त करना—रघु० २।४१. शिथिली भू 1. ढीला होना, सुस्त होना 2. गिर पड़ना—मृच्छ० १।१३)।

शिथिलयति (ना० धा० पर०) 1. विश्राम करना, धीमा करना, ढीला करना 2. छोड़ देना, परित्याग करना—वेणी० ५।६ 3. कम करना, शान्त होने देना—विक्रम० २।

शिथिलित (वि०) [शिथिल+इतच्] 1. ढीला किया हुआ 2. विश्रान्त, खोला हुआ 3. घुला हुआ, प्रविलीन।

शिनिः [शी+निः ह्रस्वश्च] यादवों के पक्ष का एक योद्धा (शिनेर्नप्तृ (पुं०) सात्यकि)।

शिपिः [शी+क्विप्, शी+पा+क, पृषो० ह्रस्वः इत्वं च] प्रकाश की एक किरण—(स्त्री०) त्वचा, चमड़ा—(नपुं०) जल शैत्याच्छयनयोगाच्च शिपिवारि प्रचक्षते—व्यास। सम०—**विष्ट** (वि०) (शिपविष्ट, तथा शिविपिष्ट भी लिखा जाता है) 1. किरणों से व्याप्त 2. गंजा, गंजेसिर वाला 3. कोढ़ी (**ष्टः**) 1. विष्णु 2. शिव 3. गंजी खोपड़ी वाला 4. शिश्नाप्रच्छदविहीन 5. कोढ़ी।

शिप्रः [शि+रक्, पुक्] हिमालय पर्वत पर स्थित एक सरोवर।

शिप्रा [शिप्र+टाप्] शिप्र सरोवर से निकली एक नदी का नाम जिसके तट पर उज्जयिनी नगर बसा हुआ है—शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः—मेघ० ३१।

शिफः दे० 'शिफा'।

शिफा (स्त्री०) 1. रेशेदार जड़ 2. कमल की जड़ 3. जड़ 4. कोड़े की मार 5. माँ 6. एक नदी। सम०—**धरः** शाखा,—**रुहः** वटवृक्ष।

शिफाकः [शिफा+कन्] कमल की जड़।

शिबिः (वि) [शि+वि] 1. शिकारी जानवर 2. भूर्जवृक्ष 3. एक देश का नाम (ब० व०) 4. एक राजा का नाम (कहते हैं कि कबूतरी के रूप में इसने बाज रूपधारी इन्द्र से अग्नि की रक्षा की थी, और तोल में कबूतर के बराबर अपना मांस इन्द्र के सामने प्रस्तुत किया था) तु० मुद्रा० ६।१७।

शिबि (वि) का [शिवं करोति शिव+णिच्+ण्वुल्] 1. पालकी, डोली 2. अरथी।

शिबि (वि) रम् [शेरते राजबलानि अत्र—शी+किरच्, बुकागमः, ह्रस्वः] 1. तंबू—धृष्टद्युम्नः स्वशिबिरमयं याति सर्वं सहध्वम्—वेणी० ३।१८, शि० ५।६८ 2. राजकीय तंबू, या खेमा 3. सेना की रक्षा के लिए अकाट्य निवेश 4. एक प्रकार का अन्न।

शिबि (वि) रथः [शिवेः भूर्जवृक्षस्य ईः शोभा यत्र तादृशो रथः] पालकी, डोली।

शिम्बा [शम्+इम्बच्, पृषो०] फली, छीमी, सेम।

शिम्बिका [शिम्बा+कन्+टाप्, इत्वम्] 1. फली, सेम 2. एक प्रकार के काले उड़द (कुछ के अनुसार पुं० भी)।

शिम्बी (स्त्री०) 1. फली, सेम 2. एक प्रकार का पौधा।

शिरम् [शॄ+क] 1. सिर 2. पिप्परामूल (इन अर्थों में कुछ के अनुसार पुं० भी),—**रः** 1. शय्या 2. अजगर। सम०—**ज** बाल।

शिरस् (नपुं०) [शॄ+असुन्, निपातः] 1. सिर शिरसा श्लाघते पूर्वं (गुणं) परं (दोषं) कण्ठे नियच्छति—सुभा० 2. खोपड़ी 3. शृङ्ग, चोटी, शिखर (पहाड़ आदि का)—हिमगौरैरचलाधिपः शिरोभिः—कि० ५।११, शि० ४।५४ 4. वृक्ष की चोटी 5. किसी चीज का सिर या शिरोबिन्दु—शिरसि मसीपटलं दधाति दीपः—भामि० १।७४ 6. कंगूरा, कलश, उच्चतम बिन्दु 7. अग्रभाग, अगला भाग, सेना का अगला भाग—श० ७।२६, उत्तर० ३।५ 8. मुख्य, प्रधान, मुखिया (बहुधा समास के अन्त में) (सघोष व्यंजनों के पूर्व 'शिरस्' बदल कर समास में 'शिरो' हो जाता है)। सम०—**अस्थि** (शिरोऽस्थि) खोपड़ी,—**कपालिन्** (पुं०) मनुष्य-खोपड़ी रखने वाला संन्यासी,—**गृहम्** सबसे ऊपर का घर, चन्द्रशाला, अट्टालिका,—**ग्रहः** सिर पीड़ा, सिर दर्द, **छेदः**—**छेदनम्** (शिरच्छेदः आदि) सिर काट देना, सिर कलम कर देना,—**तापिन्** (पुं०) हाथी,—**त्रम्**,—**त्राणम्** 1. लोहे का टोप च्युतैः शिरस्त्रैश्चषकोत्तरेव

—रघु० ७।४९, ६६, अपनीतशिरस्त्राणाः—४।६४ 2. सिर की टोपी, पगड़ी,—धरा,—धिः ग्रीवा, गरदन, शि० ४।५२, ५।६५,—पीड़ा सिर दर्द फलः नारियल का पेड़,—भूषणम् सिर पर पहनने का आभूषण —मणि 1. मस्तक पर धारण करने का रत्न 2. चूड़ामणि 3. विद्वान् पुरुषों के लिए सम्मानद्योतक उपाधि, —मर्मन् (पुं०) सूअर,—मालिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—रत्नम् शिरोमणि,—रुजा सिरदर्द, रुह् (पुं०) रुहः (शिरसिरुह्-रुहः भी) सिर के बाल —ऋतु० १।४, कु० ५।९, रघु० १५।१६,—वर्तिन् (वि०) मुखिया (पुं०) मुख्य, प्रधान के रूप में रहने वाला, वृत्तम् मिरच,- वेष्टः,—वेष्टनम् सिर पर पहनने का वस्त्र, पगड़ी, - शूलम् सिरदर्द,—हारिन् (पुं०) शिव का विशेषण।

शिरसिजः [शिरसि जन्+ड सप्तम्या अलुक्] सिर के बाल,—शि० ७।६२।

शिरस्कम् [शिरस्+कन्] 1. लोहे का टोप 2. पगड़ी, टोपी।

शिरस्का [शिरस्क+टाप्] पालकी।

शिरस्तस् (अव्य०) [शिरस्+तस्] सिर से —कु० ३।४९, भर्तृ० २।१०।

शिरस्य (वि०) [शिरसि भव· यत्] सिर संबंधी या सिर पर स्थित,—स्यः स्वच्छ केश।

शिरा (शॄ+क+टाप्) नलिका के आकार की· शरीर की वाहिका, नाड़ी, खून की नाड़ी, रक्तवाहिनी नाड़ी। सम०—पत्रः कपित्थ, कैथवृक्ष,—वृत्तम् सीसा।

शिराल (वि०) [शिरा+लच्] स्नायवी, शिरायुक्त, शिराबहुल।

शिरिः [शॄ+कि] 1. तलवार 2. वध करने वाला, क़तल करने वाला 3. बाण 4. टिड्डी।

शिरीषः [शॄ+ईषन्, किच्च] सिरस का पेड़,—षम् सिरस का फूल (यह सुकुमारता का नमूना समझा जाता है) —शिरीषपुष्पाधिकसौकुमार्यौ बाहू तदीयाविति मे वितर्कः —कु० १।४१, ५।४, रघु० १६।४८, मेघ० ६५।

शिल् (तुदा० पर० शिलति) शिलोंछन, सिला चुगना, बालें इकट्ठा करना।

शिलः,-लम् [शिल्+क] शिलोंछन, बालें चुनना,—दे० मनु० १०।११२ पर कुल्लू०। सम०—उञ्छः 1. शिलावृत्ति 2. अनियमित वृत्ति।

शिला [शिल+टाप्] 1. पत्थर चट्टान 2. चक्की 3. चौखट की नीचे की लकड़ी 4. खंबे की चोटी 5. कंडरा, रक्तवाहिका 6. मनः शिला, मैनसिल 7. कपूर। सम०—अष्टकः 1. छिद्र 2. बाड़, बाड़ा 3. चौबारा, अटारी,—आत्मजम् लोहा,—आत्मिका कुठाली, घरिया, —आरम्भा काष्ठकदली, जंगली केला,—आसनम् 1. पत्थर का आसन, चौकी आदि 2. शैलेय गन्धद्रव्य, गुग्गुल,—आह्वम् शिलाजतु,—उच्चयः पहाड़, विशाल चट्टान—रघु०२।३४,—उत्थम् शैलेयगन्धद्रव्य, गुग्गुल, उद्भवम् 1. शैलेयगन्धद्रव्य 2. बढ़िया क़िस्म की चन्दन की लकड़ी,—ओकस् (पुं०) गरुड़ का विशेषण —कुट्टकः पत्थर तोड़ने की छैनी, टाँकी,—कुसुमम्, पुष्पम्, शैलेय गन्धद्रव्य,—ज (वि०) शिलाजीत, खनिजद्रव्य (—जम्) 1. शिलाजीत 2. शैलेयगन्धद्रव्य 3. पेट्रोल 4. लोहा 5. कोई भी शिलीभूत पदार्थ, जतु (नपुं०) 1. शिलाजीत 2. गेरु,—जित् (स्त्री०), —दद्रुः शिलाजीत,—धातुः 1. ख़ड़िया मिट्टी 2. गेरु 3. सफेद शिलीभूत पदार्थ,—पट्टः, पत्थर की शिला जिस पर बैठा जाय, शिलासन,—पुत्रः,—पुत्रकः मशाला पीसने की छोटी शिला, सिल, प्रतिकृतिः (स्त्री०) प्रस्तर मूर्ति, फलकम् पत्थर की सिल, भवम् शैलेयगन्धद्रव्य,—भेदः संगतराश की छेनी, टांकी,—रसः 1. शैलेयगन्धद्रव्य 2. धूप, वल्कलम् एक प्रकार की काई जो पत्थर पर जम जाती है, वृष्टिः (स्त्री०) 1. पत्थरों की वर्षा 1. ओलों की वारिश,—वेश्मन् (नपुं०) गुफा, पत्थर की दरार, व्याधिः शिलाजीत।

शिलिः [शिल्+कि] भूर्जवृक्ष (स्त्री०) चौखट की नीचे की लकड़ी।

शिलिन्दः [शिलि+दा+क, पृषो० मुम्] एक प्रकार की मछली।

शिली [शिलि+ङीप्] 1. दरवाजे की चौखट की नीचे की लकड़ी 2. एक प्रकार का भूकीट, केंचुआ 3. खंभे की चोटी 4. भाला 5. बाण 6. गण्डूपद 7. मेंढकी। सम०—मुखः भौंरा—मिलितशिलीमुखपाटलिपटलकृतस्मरतूणविलासे—गीत० १, रघु० ४।५७ 2. बाण—सा कुसुमघटितशिलीमुखमनोहरान्मदनचापादिव प्रमदवनात् अस्यस्ति—का० २२५, या, युगपद्विकाशमुदयाद्गमिते शशिनः शिलीमुखगणोऽलभत शि० ९।४१, (दोनों संदर्भों में शब्द (1.) तथा (2.) अर्थ में प्रयुक्त हुआ है) 3. मूर्ख।

शिलीन्ध्रः [शिलीं धरति—धृ+क पृषो० मुम्] 1. एक प्रकार की मछली 2. एक वृक्ष,—ध्रम् 1. कुकुरमुत्ता. साँप की छतरी, जैसा कि 'उच्छिलीन्ध्र' में 2. केले के वृक्ष का फूल—अविपुरन्ध्रि शिलीन्ध्रसुगन्धिभिः—शि० ६।३२, या, अलिनारमतालिनी शिलीन्ध्रे—७२ 3. ओला।

शिलीन्ध्रकम् [शिलीन्ध्र+कन्] कुकुरमुत्ता, खुंब, साँप की छतरी।

शिलीन्ध्री [शिलीन्ध्र+ङीप्] 1. मृत्तिका, मिट्टी 2. केंचुआ।

शिल्पम् [शिल्+पक्] 1. कला, ललितकला, यान्त्रिक

कला, (इस प्रकार की कलाएँ चौंसठ गिनाई गई हैं) 2. (किसी भी कला में) कुशलता, कारीगरी —मालवि० १।६, मृच्छ० ३।१५ 3. विदग्धता, पटुता 4. कार्य, शारीरिक श्रम या कार्य 5. कृत्य, अनुष्ठान 6. यज्ञीय चमचा, स्रुवा। सम० **कर्मन्** (नपुं०)—**क्रिया** कोई भी शारीरिक श्रम, दस्तकारी, —**कारः**,—**कारकः**,—**कारिन्** दस्तकार, कारीगर, —**शालम्**,—**शाला** कारखाना, निर्माणी, शिल्पविद्यालय, शिल्पगृह, —**शास्त्रम्** 1. कला विषय पर (चाहे ललित हो या यान्त्रिक) लिखा गया ग्रंथ 2. शिल्पविज्ञान।

शिल्पिन् (वि०) [शिल्प+इनि] 1. ललित या यांत्रिक कला संबंधी 2. यांत्रिक, यंत्रवत् (पुं०) 1. दस्तकार, कलाकार, कारीगर 2. जो किसी भी कला में प्रवीण हो।

शिव (वि०) [श्यति पापम्—शो+वन्, पृषो०] 1. शुभ, मांगलिक, सौभाग्यशाली—इयं शिवाया नियतेरिवायतिः —कि० ४।२१, १।३८, रघु० ११।३३ 2. स्वस्थ, प्रसन्न, समृद्ध, सौभाग्यशाली शिवानि वस्तीर्थजलानि कच्चित् —रघु० ५।८, (=अनुपप्लवानि 'शान्त') शिवास्ते सन्तु पन्थानः 'भगवान् आपकी यात्रा सफल करें',—**वः** हिन्दुओं के तीन प्रधान देवताओं (त्रिमूर्ति) में से तीसरा देव जिसका कार्य सृष्टि का संहार करना है, जिस प्रकार ब्रह्मा का कार्य उत्पादन तथा विष्णु का सृष्टि-पालन है—एको देवः केशवो वा शिवो वा —भर्तृ० ३।११५ 2. पुरुष की जननेन्द्रिय, शिश्न 3. शुभ ग्रहों का योग 4. वेद 5. मोक्ष 6. पशुओं का बाँधने का खूँटा 7. सुर, देवता 8. पारा 9. गुग्गुल 10. काला धतूरा, —**वौ** (पुं०, द्वि व०) शिव और पार्वती —कि० ५।४०,—**वम्** 1. समृद्धि, कल्याण, मंगल, आनन्द —तत्र वर्त्मनि वर्ततां शिवम् नै० २।६२, रत्न० १।२, रघु० १।६० 2. परमानन्द, मांगलिकता 3. मोक्ष 4. जल 5. समुद्री नमक 6. सेंधा नमक 7. शुद्ध सोहागा। सम०—**अक्षम्**=रुद्राक्ष, दे०,—**आत्मकम्** सेंधा नमक,—**आदेशकः** 1.शुभ समाचार लाने वाला 2. भविष्यवक्ता, —**आलयः** 1. शिव का आवास 2. लाल तुलसी (—**यम्**) 1. शिव मन्दिर 2. श्मशान,—**इतर** (वि०) अशुभ, दुर्भाग्यपूर्ण—शिवेतर-क्षतये—काव्य० १, —**कर** ('शिवंकर' भी) (त्रि०) आनन्दप्रदायक, मंगलप्रद,—**कीर्तनः** भृंगी का नाम, —**गति** (वि०) समृद्ध, आनन्दित,—**धर्मजः** मंगलग्रह, —**ताति** (वि०) जिसका अन्त कल्याणकारी हो, आनन्ददायक, मंगलप्रद —प्रयत्नः कृत्स्नोऽयं फलतु शिवतातिश्च भवतु मा० ६।७ 2. मृदु, जो राक्षसी न हो—मा पूतनात्वमुपगाः शिवतातिरेधि —९।४९, (—**तिः**) मांगलिकता, आनन्द, —**दत्तम्** विष्णु का चक्र, —**दारु** (नपुं०) देवदारु का पेड़ —**द्रुमः** बल का पेड़,—**द्विष्टा** केतकी का पेड़,—**धातुः** पारा,—**पुरम्**,—**पुरी** बनारस, वाराणसी,—**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक,—**प्रियः** 1. स्फटिक 2. बक नाम का पेड़ 3. धतूरा,—**मल्लकः** अर्जुनवृक्ष,—**राज-धानी** वाराणसी,—**रात्रिः** (स्त्री०) फाल्गुनकृष्ण चतुर्दशी जब शिव के सम्मान में कठोरव्रत का पालन किया जाता है, —**लिङ्गम्** शिव जिसकी पिंडी या लिंग के रूप में पूजा होती है, —**लोकः** शिव का संसार —**वल्लभः** आम का वृक्ष,(—**भा**) पार्वती,—**वाहनः** साँड़, —**बीजम्** पारा, —**शेखरः** 1. चाँद 2. धतूरा, —**सुन्दरी** दुर्गा का विशेषण।

शिवकः [शिव+कन्] 1. वह खूँटा जिसके साथ प्रायः गौ आदि पशु बाँधे जाते हैं 2. वह खंबा जिससे पशु अपना शरीर रगड़ता है, पशुओं के शरीर को खुज-लाने के लिए खूँटा।

शिवा [शिव+टाप्] 1. पार्वती 2. गीदड़ी —जहासि निद्रा-मशिवैः शिवारुतैः—कि० १।३८, हरेरद्य द्वारे शिव-शिव शिवानां कलकलः—भामि० १।३२, रघु० ७।५०, ११।६१, १२,३९ 3. मोक्ष 4. शमी (जैंडी) का वृक्ष 5. आंवला 6. दूर्वाघास, दूब 7. पीला रंग 8. हल्दी, सम० —**अरातिः** कुत्ता,—**प्रियः** बकरा,—**फलः** शमी (जैंडी) का वृक्ष,—**रुतम्** गीदड़ का रोना —कि० १।३८।

शिवानी [शिव+ङीप्, आनुक्] शिव की पत्नी पार्वती।

शिवालुः [शिव+आलुच्] गीदड़।

शिशिर (वि०) [शश्+किरच्—नि] ठंडा, शीतल, सर्द जमा हुआ—कुरु यदुनन्दनचन्दनशिशिरतरेण करेण पयोधरे—गीत० १२, रघु ९।५९, १४।३, १६।४९, —**रः**,—**रम्** 1. ओस, तुषार या पाला—पद्मानां शिशिरा-द्रुयम्, जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम् —मेघ० ८३ 2. जाड़े का मौसम, (माघ और फाल्गुन की) सर्दी—कण्ठेषु स्खलितं गतेऽपि शिशिरे पुंस्कोकि-लानां रुतम् —श० ६।३ 3. ठंडक, शीतलता। सम० —**अंशुः**,—**करः**,—**किरणः**,—**दीधितिः**,—**रश्मि**. चन्द्रमा —बुध इव शिशिरांशोः—विक्रम० ५।२१, शिशिरकिरण-कान्तं वासरान्तेऽभिसार्य—शि०११।२१, शिशिरदीधि-तिना रजन्यः —ऋतु० ३।२, —**अत्ययः**,—**अपगमः**, जाड़े का अन्त, वसन्त ऋतु —स्वहस्तलूनः शिशिरात्य-यस्य (पुष्पोच्चयः)—कु० ३।६१, उपहितं शिशिराप-गमश्रिया —रघु० ९।३१,—**कालः**, —**समयः** जाड़े की ऋतु,—**घ्नः** अग्नि का विशेषण।

शिशुः [शो+कु, सन्वद्भावः, द्वित्वम्] 1. बालक, बच्चा, शिशुर्वा शिष्या वा—उत्तर० ४।११ 2. किसी भी जानवर का बच्चा (बछड़ा, पिल्ला, छौना आदि)

श० १।१४, ७।१४,१८ 3. आठ या सोलह वर्ष से कम आयु का बालक। सम०—क्रन्दः,—क्रन्दनम् बच्चे का रोना,—गन्धा एक प्रकार की मल्लिका,—पालः दमघोष का पुत्र तथा चेदि देश का राजा (विष्णुपुराण के अनुसार यह राजा पूर्वजन्म में राक्षसों का राजा पापी हिरण्यकशिपु था जिसे नरसिंह का रूप धारण कर विष्णु ने मार गिराया था। उसके पश्चात् इसने दस सिर वाले रावण के रूप में जन्म लिया, और राम ने इसको मार डाला। फिर इसी ने दमघोष के घर जन्म लिया और विष्णु के अष्टम अवतार कृष्ण भगवान् से और भी अधिक निष्ठुरता के साथ निरन्तर द्वेष करता रहा (दे० शि०१) जब युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में यह कृष्ण से मिला तो उसे बुरा भला कहने लगा, कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से इसका सिर काट डाला। इसकी मृत्यु ही, माघकवि के प्रसिद्धकाव्य का विषय है), °हन्, (पुं०) कृष्ण का विशेषण,—मारः सूंस नाम का जलजन्तु,—वाहकः,—वाह्यकः जंगली बकरा।

शिशुकः [शिशु+कन्] 1. बालक, बच्चा 2. किसी भी जानवर का बच्चा 3. वृक्ष 4. सूंस।

शिश्नम्, शिस्नम् [शश्+नक् इत्वम्] पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्ग—याज्ञ० ११।१७, मनु० ११।१०४।

शिश्विदान (वि०) [श्वित्+सन्+आनच्, सनो लुक्, द्वित्वम्, रकारस्य दकारः 1. पवित्र आचरण वाला, सद्गुणी, पुण्यात्मा 2. दुष्ट, पापी।

शिष् i (भ्वा० पर०, शेषति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

ii (भ्वा पर०, चुरा० उभ० शेषति, शेषयति—ते) अवशिष्ट छोड़ देना, बचा देना।

iii (रुधा० पर० शिनष्टि, शिष्ट) 1. बाक़ी छोड़ना, बचा रखना, अवशिष्ट छोड़ना 2. दूसरों से भिन्नता करना—प्रेर० (शेषयति—ते) छोड़ना, **अव**—, बाक़ी छोड़ना, पीछे छोड़ना (प्रायः कर्मवा० में) स्तम्बेन नीवार इवावशिष्टः—रघु० ५।१५, कियदवशिष्टं रजन्याः—श० ४, निद्रागमसीम्नः कियदवशिष्टम्—महावी० ६, भग० ७।२, **उद्**—, बाक़ी छोड़ना—दे० 'उच्छिष्ट', **परि**—, अवशिष्ट छोड़ना (प्रेर० भी—भविता करेणुपरिशेषिता मही—भामि० १।५३, **वि**—, 1. विशिष्ट करना, विशेषता देना, विशेष रूप से कहना, परिभाषा करना 2. भेद करना, विवेचन करना 3. बढ़ाना, ऊँचा करना, वृद्धि करना, गहरा करना—पुनरकाण्डविवर्तनदारुणो विधिरहो विशिनष्टि मनोरुजम्—मा० ४।८, उत्तर० ४।१५ (कर्मवा०) 1. भिन्न होना—रघु० १७।६२ 2. अपेक्षाकृत अच्छा या ऊँचे दर्जे का होना, आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना, (अपा० के साथ) अपेक्षाकृत बढ़िया और दूसरों से अच्छा होना मनु० २।८३, ३।२०३, (प्रेर०) आगे बढ़ जाना श्रेष्ठ होना—मृच्छ० ४।४, मालवि० ३।५।

शिष्ट (भू० क०कृ०) [शास्+क्त, शिष्+क्त वा] 1. छोड़ा हुआ, बचा हुआ, अवशिष्ट, बाक़ी 2. आदिष्ट, समादिष्ट 3. प्रशिक्षित, शिक्षित, अनुशिष्ट 4. सधाया हुआ, पालतू, वश्य 5. बुद्धिमान्, विद्वान्—शि० २।१० 6. सद्गुणसंपन्न, माननीय 7. शिष्ट, नम्र 8. मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य, प्रमुख,—ष्टः प्रमुख या पूज्य व्यक्ति 2. बुद्धिमान् पुरुष 3. परामर्शदाता। सम० आचारः 1. बुद्धिमान् मनुष्यों का आचरण शिष्टाचरण, सच्चरित्र,—सभा विद्वान् या श्रेष्ठ पुरुषों की सभा, राज्यसभा।

शिष्टिः (स्त्री०) [शास्+क्तिन्] 1. राज्य, शासन 2. आज्ञा, आदेश 3. सजा, दण्ड।

शिष्यः [शास्+क्यप्] 1. छात्र, चेला, विद्यार्थी,—शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्—भग० २।७ 2. क्रोध, आवेश। सम० परम्परा चेलों का अनुक्रम, किसी गुरु–संप्रदाय की परंपरित शिष्यमंडली,—शिष्टिः (स्त्री०) छात्र का शोधन, भर्त्सना।

शिह्लः, शिह्लकः [सिह्+लक्, नि० सस्य शः] शैलेय गन्धद्रव्य।

शी (अदा० आ० शेते, शयित, कर्मवा० शय्यते, इच्छा० शिशयिषते) 1. लेटना, लेट जाना, विश्राम करना, आराम करना, इतश्च शरणार्थिनः शिखरिणां गणाः शेरते—भर्तृ० २।७६ 2. सोना, (आलं० से भी)—किं नि.शङ्कं शेषे-शेषे वयसः समागतो मृत्युः। अथवा सुखं शयीथा निकटे जागर्ति जाह्नवी जननी—भामि० ४।३०, भर्तृ० ३।७९, कु० ५।१२, प्रेर० (शाययति—ते) सुलाना, लिटाना, **अति**—, 1. सोने में पहल करना 2. बाद में सोना- अपेक्षाकृत देर तक सोना अहं पर्तान्नातिशये महा० 3. श्रेष्ठ होना, आगे बढ़ जाना—पूर्वान्महाभाग तयातिशेषे रघु० ५।१४, चरितैन चातिशयिता मुनयः—कि० ६।३२, भट्टि० ७।४६, (प्रेर०) आगे बढ़ने का कारण बनना—धाम्या-तिशाययति धाम सहस्रधाम्नः—मुद्रा० ३।१७, **अधि**—, (स्थान में कर्म० के साथ) लेटना, सोना, आराम करना—अध्यशयिष्ट गाम्—भट्टि० १५।१४, अमुं युगान्तोचितयोगनिद्रः संहृत्य लोकान् पुरुषोऽधिशेते रघु० १३।६, १६।४९, १९।३२, कि० १।३८, 2. बसना, रहना,—भट्टि० १०।३५, **उप**, सोना, निकट लेटना, **सम्**, संदेह में होना—संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः—कि० ३।१४, ४२, भामि० २।११५।

शी [शी+क्विप्] 1. निद्रा, विश्राम 2. शान्ति।

शीक् i (भ्वा० आ० शीकते) 1. तर करना, छिड़कना 2. शनैः शनैः जाना, हिलना-जुलना।
ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० शीकति, शीकयति–ते) 1. क्रोध करना 2. आर्द्र करना, गीला करना।

शीकरः [शीक्+अरन्] 1. वायुप्रेरित छींटे, सूक्ष्मवृष्टि, बौछार, तुषार—कु० १।१५, २।५२, रघु० ५।४२, ९।६८, कि० ५।१५ 2. जलकण, वृष्टिकण—गतमुपरिघनानां वारिगर्भोदराणां पिशुनयति रथस्ते शीकरक्लिन्ननेमिः—श० ७।७, रघु० १७।६२,–रम् 1. सरलवृक्ष 2. इस वृक्ष की राल।

शीघ्र (वि०) [शिङ्घ्+रक्, नि०] फुर्तीला, त्वरित, सत्वर—विवभ्रन्मणि मण्डलचारशीघ्रः– विक्रम०५।२, –घ्रः (ज्योति० में) ग्रहयोग,–घ्रम् (अव्य०) फुर्ती से, तेजी से, जल्दी से। सम०—उच्चः (ज्योति० में) ग्रहयोग, कारिन् (वि०) फुर्तीला, चुस्त, —कोपिन् (वि०) चिड़चिड़ा, क्रोधी, चेतनः कुत्ता, –बुद्धि (वि०) तीक्ष्णबुद्धि वाला, तेज बुद्धिवाला, —लङ्घन (वि०) तेज जाने वाला, पैर फुर्ती से रखने वाला—घट० ८, वेधिन् (पुं०) तेज धनुर्धर।

शीघ्रिन् (वि०) [शीघ्र+इनि] सत्वर, फुर्तीला।

शीघ्रिय (वि०) [शीघ्र+घ] चुस्त,–यः 1. विष्णु 2. शिव बिल्लियों की लड़ाई।

घ्र्यम् [शीघ्र+यत्] चुस्ती, शीघ्रता।

शीत् (अव्य०) आकस्मिक पीड़ा या आनन्द को अभिव्यक्त करने वाली ध्वनि (विशेषकर आनन्दोद्रेक की वह ध्वनि जो सम्भोग के समय होती है)। सम० —कारः,–कृत् (पुं०) उपर्युक्तध्वनि, सिसकारी।

शीत (वि०) [श्यै+क्त] 1. ठण्डा, शीतल, जमा हुआ, –तव कुसुमशरत्वं शीतरश्मित्वमिन्दोः—श० ३।२ 2. मन्द, सुस्त, उदासीन, आलसी 3. अलस, सुस्त, जड़, तः 1. एक प्रकार का नरकुल 2. नील का वृक्ष 3. जाड़े की ऋतु, (नपुं० भी) 4. कपूर, तम् 1. ठण्डक, शीतलता, सर्दी आः शीतं तुहिनाचलस्य करयोः—काव्य० १० 2. जल 3. दारचीनी। सम० —अंशुः 1. चांद वक्त्रेन्द्रौ तव सत्ययं यदपरः शीतांशुरुज्जृम्भते काव्य० १० 2. कपूर, अदः मसूड़ों के पकजाने या उनमें व्रण हो जाने का रोग, पायरिया, अद्रिः हिमालय पहाड़,–अश्मन् (पुं०) चन्द्रकान्तमणि,–आर्त (वि०) ठंड से व्याकुल, जाड़े से ठिठुरा हुआ, –उत्तमम् पानी, कालः जाड़े की ऋतु, सर्दी का मौसम, कालीन (वि०) जाड़े में होने वाला,—कृच्छ्रः,– च्छ्रम् एक प्रकार की धार्मिक साधना, –गन्धम् सफेद चन्दन,–गुः 1. चांद 2. कपूर, चम्पकः 1. दीपक 2. दर्पण, दीधितिः चांद,–पुष्पः शिरीष का वृक्ष, शिरस का पेड़, पुष्पकम् शैलेय गन्धद्रव्य, प्रभः कपूर,–भानुः चांद,–भीरुः एक प्रकार की मल्लिका, –मयूखः, मरीचिः, रश्मिः 1. चाँद 2. कपूर,—रम्यः दीपक, –रुच् (पुं०) चांद, –वल्कः गूलर का पेड़, –वीर्यकः बड़ का पेड़,–शिवः शमीवृक्ष, जँडी का पेड़, (वम्) 1. सेंधानमक 2. सुहागा,—शूकः जौ, –स्पर्श (वि०) ठंडक पहुँचाने वाला।

शीतक (वि०) [शीत+कन्] ठण्डा, दे० 'शीत', कः 1. कोई ठण्डी वस्तु 2. जाड़े की ऋतु, सर्दी का मौसम 3. मन्थर, दीर्घसूत्री 4. आनन्दित, निश्चिन्त 5. बिच्छू।

शीतल (वि०) [शीतं लाति-ला+क, शीतमस्त्यस्य लच् वा] ठण्डा, शीतलगुण युक्त, सर्द, (ठण्ड के कारण) जमा हुआ (आलं० से भी) – अतिशीतलमप्यम्भः किं भिनत्ति न भूभृतः—सुभा०, महदपि परदुःखं शीतलं सम्यगाहुः—विक्रम० ४।१३, लः 1. चांद, 2. एक प्रकार का कपूर 3. एक प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान, —लम् 1. ठण्डक, ठण्डापन 2. जाड़े की ऋतु 3. शैलेयगन्धद्रव्य 4. सफेद चन्दन, या चन्दन 5. मोती 6. तूतिया 7. कमल 8. वीरण नामक मूल। सम० —छदः चम्पक वृक्ष,–जलम् कमल,–प्रदः–दम् चन्दन, —षष्ठी माघ शुक्ला छठ।

शीतलकम् [शीतल+कन्] सफेद कमल।

शीतला [शीतल+टाप्] 1. चेचक 2. चेचक (शीतला) की अधिष्ठात्री देवता। सम० पूजा शीतला देवी की पूजा।

शीतली [शीतल+ङीष्] चेचक।

शीता दे० 'सीता'।

शीतालु (वि०) [शीतं न सहते शीत+आलुच्] सर्दी से ठिठुरता हुआ, जिसे सर्दी लग गई है, जाड़े के कारण कष्ट पाता हुआ शि० ८।१९।

शीत्य दे० 'सीत्य'।

शीधु (पुं०, नपुं०) [शी+धुक्] 1. कोई भी प्रासुत मदिरा, अंगूरी शराब 2. शराब। सम० गन्धः बकुल वृक्ष, मौलसिरी का पेड़, पः शराबी।

शीन (वि०) [श्यै+क्त] 1. जमा हुआ, घनीभूत, नः 1. जड़, बुद्धू 2. अजगर।

शीभ् (भ्वा० आ० शीभते) 1. शेखी बघारना 2. बतलाना, कहना, बोलना, (कथने ?)।

शीभ्यः [शीभ्+ण्यत्] 1. साँड़ 2. शिव।

शीरः [शीङ्+रक्] अजगर दे० 'सीर' भी।

शीर्ण (भू० क० कृ०) [शॄ+क्त] 1. कुम्हलाया हुआ, मुर्झाया हुआ, सड़ा हुआ 2. सूखा, शुष्क 3. टूटा फूटा, चूर चूर हुआ 4. दुबला-पतला, कृश (दे० शॄ),—र्णम् एक प्रकार का गन्ध द्रव्य। सम० अङ्घ्रिः,—पादः 1. यम का विशेषण 2. शनिग्रह का विशेषण,—पर्णम्

कुम्हलाया हुआ पत्ता (इसी प्रकार 'शीर्णपत्रम् (र्णः) नीम का पेड़, वृन्तम् तरबूज।

शीर्वि (वि०) [शॄ+क्विन्] विनाशकारी, आघातयुक्त, अनिष्टकर, क्षतिकर।

शीर्षम् [शिरस् पृषो० शीर्षादेशः, शॄ+क सुक् च वा] 1. सिर शीर्षे सर्पो देशान्तरे वैद्यः —कर्पूर०, मुद्रा० १।२१ 2. काला अगर। सम० अवशेषः केवल सिर ही बचा हुआ,—**आमयः** सिर का कोई भी रोग, —**छेदः** सिर काट डालना, -**छेद्य** (वि०) जिसका सिर काट डालना चाहिए, सिर काट कर मारे जाने के योग्य—उत्तर० २।८, रघु० १५।५१, -**रक्षकम्** लोहे का टोप।

शीर्षकः [शीर्ष+कन्] राहु का विशेषण, कम् 1. सिर 2. खोपड़ी 3. लोहे का टोप 4. सिर का वस्त्र, (टोपी, टोप आदि) 5. व्यवस्था, निर्णय, न्यायालय का निर्णय।

शीर्षण्यः [शीर्षन्+यत्] साफ़ तथा सुलझे हुए सिर के बाल,—**ण्यम्** 1. लोहे का टोप 2. टोप, टोपी।

शीर्षन् (नपुं०) [शिरस् शब्दस्य पृषो० शीर्षन् आदेशः] सिर, (इस शब्द के पहले पाँच वचनों में कोई रूप नहीं होते, कर्म० द्वि० व० के पश्चात् 'शिरस्' या 'शीर्ष' को विकल्प से आदेश हो जाता है)।

शील् i (भ्वा० पर० शीलति) 1. मध्यस्थता करना, भली भांति सोचना 2. सेवा करना, सम्मान करना, पूजा करना 3. सम्पन्न करना, अभ्यास करना।

ii (चुरा० उभ० शीलयति—ते) 1. सम्मान करना, पूजा करना 2. बार बार अभ्यास करना, प्रयोग करना, अध्ययन करना, चिन्तन करना, ध्यान करना —श्रुतिशतमपि भूयः शीलितं भारतं वा भामि० २।३५, शीलयन्ति मुनयः सुशीलताम् - कि० १३।४३ 3. धारण करना, पहनना—चल सखि कुञ्जं सतिमिरपुञ्जं शीलय नीलनिचोलम्—गीत० ५ 4. जाना, दर्शन करना, बार बार जाना—यदनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितम् गीत० ७, स्मेरानना सपदि शीलय सौधमौलिम्—भामि० २।४, अनु , परि , बार बार अभ्यास करना, सुधारना, चिन्तन करना—शश्वच्छ्रुतोऽपि मनसा परिशीलितोऽसि—राज०।

शीलः [शील्+अच्] अजगर, लम् 1. स्वभाव, प्रकृति, चरित्र, प्रवृत्ति, रुचि, आदत, प्रथा - समानशीलव्यसनेषु सख्यम् - सुभा०, 'अनुसक्त' 'दुर्व्यस्त' 'प्रवण' 'लीन' 'अभ्यास' आदि अर्थ प्रकट करने के लिए बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त, कलहशील 'कलह करने के स्वभाव वाला' 'झगड़ालू' भावनशील चिन्तनशील, इसी प्रकार दान°, मृगया°, दया°, पुण्य°, आश्वासन° आदि 2. आचरण, व्यवहार 3. अच्छा स्वभाव, अच्छी प्रकृति —शीलं परं भूषणम्—भर्तृ० २।८२ पंच० ५।१२ 4. सद्‌गुण, नैतिकता, सदाचरण, सज्जीवन, शुचिता, ईमानदारी—दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति……शीलं खलोपासनात्—भर्तृ० २४२, ३९, तथा हि ते शीलमुदारदर्शने तपस्विनामप्युपदेशतां गतम्—कु० ५।३६, कि० ११।२५, रघु० १०।७० 5. सौन्दर्य, सुन्दर रूप। सम० **खण्डनम्** शुचिता या नैतिकता का उल्लंघन—पंच० १, **धारिन्** (पुं०) शिव का विशेषण,—**वंचना** शुचिता का उल्लंघन, प्राप्तेयं शीलवंचना—मृच्छ० १।४४।

शीलनम् [शील्+ल्युट्] 1. बार बार अभ्यास, प्रयोग, अध्ययन, संवर्धन 2. निरन्तर प्रयोग 3. सम्मान करना, सेवा करना 4. वस्त्र पहनना।

शीलित (भू० क० कृ०) [शील्+क्त] 1. अभ्यस्त, प्रयुक्त 2. धारण किया हुआ 3. बार-बार किया हुआ, देखा हुआ 4. कुशल 5. युक्त, सहित, सम्पन्न।

शीवन् (पुं०) [शीङ्+क्वनिप्] अजगर।

शुंशुमारः ['शिशुमार' का भ्रष्ट रूप] सूँस नामक जल जन्तु।

शुक् (भ्वा० पर० शोकति) जाना, हिलना-जुलना।

शुकः [शुक्+क] 1. तोता—आत्मनो मुखदोषेण बध्यन्ते शुकसारिकाः—सुभा०। तुंडैराताम्रकुटिलैः पक्षैर्हरितकोमलैः। त्रिवर्णराजिभिः कण्ठैरेते मंजुगिरः शुकाः—काव्या० २।९ 2. सिरस का पेड़ 3. व्यास का एक पुत्र (कहा जाता है कि 'शुक' व्यास के वीर्य से उत्पन्न हुआ था, जब घृताची नाम की अप्सरा शुकी के रूप में इस पृथ्वी पर घूम रही थी तो उसको देख कर व्यास का वीर्यपात हो गया था। शुक जन्म से ही दार्शनिक था उसने अपनी नैतिक वाक्पटुता से स्वर्गीय अप्सरा रम्भा के काम मार्ग पर प्रेरित करने के प्रत्येक प्रयत्न का सफलता पूर्वक मुकाबला किया। कहते हैं कि उसी ने राजा परीक्षित को भागवत पुराण सुनाया। अत्यन्त कठोर साधक के रूप में उसका नाम किंवदन्ती की तरह प्रसिद्ध हो गया,—**कम्** 1. कपड़ा, वस्त्र 2. लोहे का टोप 3. पगड़ी 4. वस्त्र की किनारी या मगजी। सम०—**अदनः** अनार का पेड़,—**तरुः**,—**द्रुमः** सिरस का पेड़ **नास** (वि०) तोते जैसी नाक वाला, **नासिका** तोते की नाक जैसी नाक, - **पुच्छः** गन्धक, **पुष्पः**, —**प्रियः** सिरस का पेड़,—**पुष्पा** जामुन का पेड़,—**वल्लभः** अनार का पेड़, **वाहः** कामदेव का विशेषण।

शुक्त (भू० क० कृ०) [शुच्+क्त] 1. उज्ज्वल, विशुद्ध, स्वच्छ 2. अम्ल, खट्टा 3. कर्कश, खरखरा, कड़ा, कठोर 4. संयुक्त, जुड़ा हुआ 5. परित्यक्त, एकाकी,

क्तम् 1. मांस 2. कांजी 3. एक प्रकार का खट्टा तरल पदार्थ, (सिरका आदि)।

शक्तिः (स्त्री०) [शुच्+क्तिन्] 1. सीप का खोल —मोती की सीप पात्रविशेषन्यस्तं गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातुः। जलमिव समुद्रशुक्तौ मुक्ताफलतां पयोदस्य-मालवि० १।६, भर्तृ० २।६७ रघु० १३।१७ 2. शंख 3. छोटी सीप, पुट्ठा 4. खोपड़ी का एक भाग 5. घोड़े की छाती (या गर्दन पर) पर बालों का घूंघर, शि० ५।४, दे० उस पर मल्लि० 6 एक प्रकार का गंधद्रव्य 7. दो कर्ष के समान विशेष तोल। सम०—उद्भवं जम् मोती, पुटम्,—पेशी मोती की सीप का खोल,—वधूः मोती का सीप, बीजम् मोती।

शुक्तिका [शुक्ति+कन्+टाप्] मोती का सीप, सीपी।

शुक्रः [शुच्+रक्, नि० कुत्वम्] 1. शुक्रग्रह 2. राक्षसो के गुरु जिसने अपने जादू के मंत्रों से युद्ध में मरे हुए राक्षसों को पुनर्जीवित कर दिया था - दे० 'कच' ,देवयानी' और 'ययाति' 3. ज्येष्ठमास 4. अग्नि, —क्रम् 1. वीर्य पुमान् पुंसोऽधिके शुक्रे स्त्री भवत्यधिके स्त्रियाः मनु० ३।६९, ५।६३ 2. किसी भी वस्तु का सत्। सम०—अङ्गः मोर,—कर (वि०) शुक्र या वीर्य सम्बन्धी, (रः) हड्डियों में रहने वाली मज्जा,—वारः, वासरः भृगुवार, जुमा —शिष्यः राक्षस।

शुक्रल, शुक्रिय (वि०) [शुक्र+ला+क, शुक्र+घ] 1. वीर्यसम्बन्धी 2. शुक्र या वीर्य को बढ़ाने वाला।

शुक्ल (वि०) [शुच्+लुक्, कुत्वम्] सफेद, विशुद्ध, उज्ज्वल जैसा कि 'शुक्लापाङ्ग' में, —क्लः 1. सफेद रंग 2. चांद्रमास का उज्ज्वल या सुदी पक्ष 3. शिव, —क्लम् 1. चाँदी 2. आंखों की सफेदी में होने वाला रोग विशेष 3. ताजा मक्खन 4. (खट्टी) कांजी। सम०—अङ्गः—अपाङ्गः मोर (आंखों के श्वेत कोण होने के कारण) शुक्लापांगैः सजलनयनैः स्वागतीकृत्य केकाः -मेघ० २२—अम्लम् एक प्रकार का खट्टा साग, चूक,—उपला रवेदार चीनी,—कण्ठकः एक प्रकार का जल कुक्कुट,—कर्मन् (वि०) शुद्धाचारी, सद्गुणी, —कुष्ठम् सफेद कोढ़,—धातुः खड़िया मिट्टी,—पक्षः मास का सुदी पक्ष,—वस्त्र (वि०) श्वेत वस्त्रधारी, —वायसः सारस

शुक्लक (वि०) [शुक्ल+कन्] सफ़ेद,—कः 1. सफ़ेद रंग, 2. चान्द्र मास का सुदी पक्ष।

शुक्लल (वि०) [शुक्ल+ला+क] सफ़ेद।

शुक्ला [शुक्ल+टाप्] 1. सरस्वती 2. रवेदार चीनी 3. श्वेतवर्ण वाली स्त्री 4. काकोली नाम का पौधा।

शुक्लिमन् (पुं०) [शुक्ल+इमनिच्] श्वेतता, सफ़ेदी।

शुक्षिः [शुस्+क्सिः] 1. वायु, हवा 2. प्रकाश, कान्ति 3. अग्नि।

शुङ्गः [शुम्+ग, नि० साधुः] 1. वड़ का पेड़ 2. पॅवदी बेर का पेड़ 3. अनाज का टूँड़, किशारु।

शुङ्गा [शुङ्ग—टाप्] 1. नूतन कली का कोप 2. जौ या अनाज की बाल, किशारु।

शुङ्गिन् (पुं०) [शुङ्गा+इनि] वड़ का पेड़, वटवृक्ष।

शुच् i (भ्वा० पर० शोचति) खिन्न होना, दुःखी होना, शोक करना, विलाप करना—अरोदीद्रावणोऽशोचीन्गोहं चाशिश्रियत्परम्—भट्टि० १५।७१, २।१६, भग० १६।५ 2. खेद प्रकट करना, पछताना, अनु ,शोक मनाना, विलाप करना, खेद प्रकट करना - नष्ट मृतमतिक्रान्तं नानुशोचन्ति पंडिताः पंच० १।३३३—भग० २।११, वेणी० ५।४, उत्तर० ३।३२, परि—, विलाप करना, शोक मनाना।

ii (दिवा० उभ० शुच्यति—ते) 1. खिन्न होना, दुःखी होना 2. आर्द्र होना 3. चमकना 4. स्वच्छ या निर्मल होना 5. कुम्हलाना, मुर्झाना।

शुच्, शुचा (स्त्री०) [शुच्+क्विप्, टाप् वा] रंज, शोक, कष्ट, दुःख—विकलकरणः पाण्डुच्छायः शुचा परिदुर्बलः —उत्तर० ३।२२, कामं जीवति मे नाथ इति सा विजहौ शुचम्—रघु० १२।७५, ८।७२, मेघ० ८८, श० ४।१८।

शुचि (वि०) [शुच्+कि] 1. विमल, विशुद्ध, स्वच्छ —सकलहंसगुणं शुचिमानसं—कि० ५।१३ 2. श्वेत, कि० १८।१८ 3. उज्ज्वल, चमकदार—प्रभवति शुचिर्बिम्बोद्ग्राहे मणिर्न मृदां चयः—उत्तर० २।४ 4. सद्गुणी, पवित्रात्मा, पुण्यात्मा, निष्पाप, निष्कलंक —अथ तु वेत्सि शुचिव्रतमात्मनः—श० ५।२७, पयः शुचेर्दर्शयितार ईश्वराः—रघु० ३।४६, कि० ५।१३ 5. पवित्रीकृत, निर्मल किया हुआ, पुनीत बनाया हुआ—रघु० १।८१, मनु० ४।७१ 6 ईमानदार, खरा, निष्ठावान्, सच्चा, निश्छल—पंच० १।२०० 7. सही यथार्थ,—चिः 1. श्वेत वर्ण 2. पवित्रता, पवित्रीकरण 3. भोलापन, सद्गुण, भद्रता, खरापन 4 शुद्धता, यथार्थता 5. ब्रह्मचारी की दशा 6. पवित्रात्मा 7. ब्राह्मण 8. ग्रीष्म ऋतु—उपययौ विदधन्नवमल्लिकाः शुचिरसौ चिरसौरभसंपदः - शि० ६।२२, १।५८, रघु० ३।३, कु० ५।२० 9. ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने 10. निष्ठावान् या सच्चा मित्र 11. सूर्य 12. चन्द्रमा 13. अग्नि 14. शृंगार रस 14. शुक्रग्रह 16. चित्रक वृक्ष। सम०—द्रुमः पवित्र वटवृक्ष, —मणिः स्फटिक, —मल्लिका एक प्रकार की चमेली, नवमल्लिका,—रोचिस् (पुं०) चन्द्रमा, —व्रत (वि०) पुण्यात्मा, सद्गुणी,—स्मित (वि०) मधुर मुस्कान वाला—कु० ५।२०, रघु० ८।४८।

शुचिस् (नपुं०) [शुच्+इसुन्] प्रकाश, कान्ति।
शुच्य् (भ्वा० पर० शुच्यति) 1. स्नान करना, नहाना-धोना 2. निचोड़ना, (रस) निकालना 3. अर्क खींचना 4. बिलोना।
शुटीरः [=शोटीरः, पृषो०] वीर, नायक।
शुठ् i (भ्वा० पर० शोठति) 1. बाधा डाला जाना, रुकावट डाली जानी 2. लड़खड़ाना, लंगड़ा होना 3. मुक़ाबला करना।
ii (चुरा० उभ० शोठयति–ते) सुस्त होना, आलसी होना, मन्द होना।
शुण्ठ् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० शुण्ठति, शुण्ठयति–ते) 1. पवित्र करना 2. सूखना, दे० शुठ् (1) भी।
शुण्ठिः–ठी (स्त्री०), **शुण्ठ्यम्** [शुण्ठ्+इन् शुंठि+ङीप्, शुण्ठ्+यत्] सोंठ, सूखा अदरक।
शुण्डः [शुण्ड्+अच्] 1. मदमाते हाथी के गण्डस्थल से निकलने वाला रस 2. हाथी की सूंड।
शुण्डकः [शुण्ड+कन्] 1. शराब खींचने वाला, कलाल 2. एक प्रकार का सैनिक संगीत या वाद्ययन्त्र।
शुण्डा [शुण्ड+टाप्] 1. हाथी की सूंड़ 2.खींची हुई शराब 3. मद्यपानगृह, मधुशाला 4. कमल डण्डी 5. वेश्या, रंडी 6. कुटनी, दूती। सम०—**पानम्** मदिरालय, शराबख़ाना।
शुण्डारः [शुण्ड+ऋ+अण्] 1. शराब खींचने वाला 2. हाथी की सूंड या नासावृद्धि–महावी० १।५३।
शुण्डालः [=शुण्डारः, रलयोरभेदः] हाथी।
शुण्डिका [शुण्डा+कन्+टाप्, इत्वम्] दे० 'शुण्डा'।
शुण्डिन् (पुं०) [शुण्ड+णिनि] 1. शराब खींचने वाला, कलाल 2. हाथी। सम० –**मूषिका** छछूंदर।
शुतुद्रिः,–द्रुः (स्त्री०) सतलुज नदी —तु० 'शतद्रु'।
शुद्ध (भू० क० कृ०) [शुध्+क्त] 1. विशुद्ध, विमल, पवित्रीकृत–अन्तः शुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः —मेघ० ४९ 2. पुनीत, अकलुषित, शुचि, निर्दोष —अन्वमीयत शुद्धेति शान्तेन वपुषैव सा –रघु० १५।७७, १४।१४ 3. श्वेत, उज्ज्वल 4. निष्कलंक, बेदाग़ 5. भोला-भाला, सीधा-सादा, निर्दोष 6. ईमानदार, खरा 7. सही, अशुद्धिरहित, यथार्थ 8. ऋण चुकाया गया, क़र्ज़ अदा किया गया 9. केवल, मात्र 10. सरल, विशुद्ध, अनमिश्रित, (विप० मिश्र) 11. अद्वितीय 12. अधिकृत 13. पैनाया हुआ, तेज किया हुआ 14. अननुनासिक, —**द्धः** शिव का विशेषण, —**द्धम्** 1. कोई भी विशुद्ध वस्तु 2. विशुद्ध सुरा 3. सेंधा नमक 4. काली मिर्च। सम० –**अन्तः** राजा का अन्तःपुर, रनवास, अन्दर महल —शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि जनस्य—श० १।१७, कु० ६।५२, °**चारिन्** (पुं०) अन्तःपुर का सेवक, कंचुकी —उत्तर० १, °**पालकः**, °**रक्षक** अन्तःपुर का रखवाला, **आत्मन्** (वि०) शुद्धात्मा, ईमानदार —**ओदनः** (**शुद्धोदनः**) विख्यात बुद्ध का पिता °**सुतः** बुद्ध –**चैतन्यम्** विशुद्ध, प्रतिभा, प्रज्ञा –**जंघः** गधा —**धी,—भाव, मति** (वि०) विशुद्धमना, निर्दोष, ईमानदार।

शुद्धिः (स्त्री०) [शुध्+क्तिन्] 1. विशुद्धता, स्वच्छता 2. चमक, कान्ति—मुक्तागुणशुद्धयोऽपि (चन्द्रपादाः) —रघु० १६।१८ 3. पवित्रता, पुण्यशीलता—तीर्थाभिषेकजां शुद्धिमादधानाः महीक्षितः—रघु० १।८५ 4. पवित्रीकरण, प्रायश्चित्त, परिशोधन, प्रायश्चित्त परक कृत्य—शरीरत्यागमात्रेण शुद्धिलाभममन्यत –रघु० १२।१० 5. पवित्रीकरणमूलक या प्रायश्चित्त परक संस्कार 6. (ऋण) परिशोध 7. प्रतिहिंसा, प्रतिशोध 8. छुटकारा, (जांच द्वारा सिद्ध) निर्दोषता 9. सचाई, यथार्थता, याथातथ्यता 10. समाधान, संशोधन 11. व्यवकलन 12. दुर्गा। सम०—**पत्रम्** ऐसी सूची जिसमें अशुद्ध शब्द शुद्ध रूपों सहित लिखे गये हों 2. प्रायश्चित्त के द्वारा हुई शुद्धि का प्रमाणपत्र।

शुध् (दिवा० पर०)—शुध्यति, शुद्ध०) 1. शुद्ध या पवित्र होना, (आलं० से भी) मृत्तोयैः शुध्यते शोध्यं नदी वेगेन शुध्यति। अद्भिर्गात्राणि शुध्यंति मनः सत्येन शुध्यति –मनु० ५।१०८–९ 2. शुभ होना, अनुकूल होना, पात्र होना –तिथिरेव यावन्न शुध्यति–मुद्रा० ५ 3. स्पष्ट किया जाना, संदेह दूर करना—न शुध्यति मे अन्तरात्मा–मृच्छ० ८ 4. व्यय किया जाना, (खर्च) चुकाया जाना –व्ययः शुध्यति – पंच० ५, प्रेर०—(शोधयति—ते) 1. पवित्र करना, निर्मल करना धो डालना 2. (ऋण) परिशोध करना, चुकाना, **परि –, वि—, सम्—**, पवित्र किया जाना,—रघु० १२।१०४, मनु० ५।६४।

शुन् (तुदा० पर० शुनति) जाना, हिलना-जुलना।
शुनःशेपः (फः) [शुन इव शेफः यस्य—अलुक् स०] एक वैदिक ऋषि, अजीगर्त का पुत्र (ऐतरेय ब्राह्मण में बताया गया है कि राजा हरिश्चन्द्र ने निस्सन्तान होने के कारण यह प्रतिज्ञा की कि यदि मुझे पुत्र लाभ हुआ तो मैं वरुण देवता के लिए उसकी बलि दे दूंगा। अन्त में उसके घर पुत्र ने जन्म लिया, उसका नाम रोहित रक्खा गया। राजा अपनी प्रतिज्ञा को किसी न किसी बहाने टालता रहा। अन्ततः रोहित ने सौ गौओं के बदले अजीगर्त के मध्यम पुत्र शुनःशेप को अपने स्थान पर बलि दिये जाने के लिए खरीद लिया। परन्तु बालक शुनःशेप ने विष्णु, इन्द्र तथा अन्य देवताओं की स्तुति

करके अपने आपको मृत्यु से बचा लिया। उसके पश्चात् विश्वामित्र ने उस लड़के को अपने कुल में गोद ले लिया और उसका नाम रक्खा 'देवरात')।

शुनकः [शुन्+क=शुन्+कन्] 1. भृगुवंश में उत्पन्न एक ऋषि का नाम 2. कुत्ता।

शुनाशी (सी) रः [शुनाशीरौ वायुसूर्यौ अस्य स्तः इति अच्] 1. इन्द्र का विशेषण 2. उल्लू।

शुनिः [शुन्+इन्] कुत्ता।

शुनी (स्त्री०) (श्वन्+ङीप्] कुतिया, कुक्कुरी।

शुनीरः [शुनी+र] कुतियों का समूह।

शुन्ध् (भ्वा० चुरा० उभ० शुन्धति—ते, शुन्धयति—ते) 1. पवित्र या विमल होना 2. निर्मल करना, पवित्र करना।

शुन्ध्युः [शुन्ध्+युः] हवा, वायु।

शुभ् (भ्वा० आ० शोभते) 1. चमकना, शानदार होना, सुन्दर या मनोहर दिखाई देना—सुष्ठु शोभसे एतेन विनयमाहात्म्येन—उत्तर० १, रघु० ८।६ 2. लाभकर प्रतीत होना —सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते—मृच्छ० १।१० 3. उपयुक्त होना, शोभा देना, योग्य होना (संबं० के साथ)—रामभद्र इत्येवोपचारः शोभते तात पौरजनस्य—उत्तर० १, प्रेर० (शोभयति ते) सजाना, संवारना, अलंकृत करना, परि—, वि —, चमकना, शानदार दिखाई देना।

शुभ (वि०) [शुभ्+क] 1. चमकीला, उज्ज्वल 2. सुन्दर, मनोहर —जङ्घे शुभे सृष्टवतस्तदीये—कु० १।३५ 3. मांगलिक, सौभाग्यशाली, प्रसन्न, समृद्धिशाली 4. प्रमुख, भद्र, सद्गुणी —पंच० १ ३५८,—भम् मांगलिकता, कल्याण, अच्छा भाग्य, प्रसन्नता, समृद्धि —मा० १।२३ 2. अलंकार 3. जल 4. एक प्रकार की सुगंधित लकड़ी। सम०—अक्षः शिव का विशेषण, —अंग (वि०) सुन्दर (गी) 1. सुन्दर स्त्री 2. कामदेव की पत्नी रति,—अपांगा सुन्दर स्त्री,—अशुभम् सुख-दुःख, भला-बुरा, —आचार (वि०) पवित्र आचरण वाला, सदाचारी,—आनना मनोरम स्त्री,—इतर(वि०) (वि०) 1. बुरा, खराब 2. अशुभ, आमांगलिक, —उदर्क (वि०) जिसका अन्त आनन्ददायक हो,—कर (वि०) कल्याणकर, मंगलप्रद,—कर्मन् (नपुं०) पुण्यकार्य, —गंधकम् एक गन्धद्रव्य, बोल,—ग्रहः अनुकूल ग्रह,—द्रः वटवृक्ष,—दंती सुन्दर दाँतों वाली,—लग्नः, —लग्नम् शुभ मुहूर्त, मंगल घड़ी,—वार्ता शुभ समाचार, —वासनः मुंह को सुभाषित करने वाला गंधद्रव्य, —शंसिन् (वि०) शुभसूचक, मंगल की सूचना देने वाला—रघु० ३।१४, —स्थली 1. वह भवन जहाँ यज्ञों का अनुष्ठान होता हो, यज्ञभूमि 2. मंगलभूमि।

शुभंयु (वि०) [शुभमस्यास्ति—युस्] 1. मंगलमय, सौभाग्यसूचक, भाग्यशाली, मंगलान्वित—अधिकं शुशुभे शुभंयुना द्वितयेन द्वयमेव संगतम्—रघु० ८।६, भट्टि० १।२०।

शुभङ्कर (वि०) [शुभ+कृ+खच्, मुम्] 1. कल्याणकारी 2. आनन्दवर्धक।

शुभंभावुक (वि०) [शुभम्+भू+णिच्+उकञ्] सजाया हुआ, सुभूषित, अलंकृत, उज्ज्वल।

शुभा [शुभ+टाप्] 1. कान्ति, प्रकाश 2. सौन्दर्य 3. इच्छा 4. पीलारंग, गोरोचन 5. शमी वृक्ष 6. देवसभा 7. दूब 8. प्रियंगु लता।

शुभ्र (वि०) [शुभ्+रक्] 1. चमकीला, उज्ज्वल, देदीप्यमान 2. श्वेत —पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शंखमपि पीतं—काव्य० १०, रघु० २।६९,—भ्रः 1. श्वेत रंग 2. चन्दन (नपुं०), —भ्रम् 1. चाँदी 2 अभ्रक 3. सेंधा नमक 4. कसीस। सम० —अंशुः, —करः 1. चंद्रमा 2. कपूर, —रश्मिः चन्द्रमा।

शुभ्रा [शुभ्र+टाप्] 1. गंगा 2. स्फटिक 3. वंशलोचन।

शुभ्रिः [शुभ्+क्रिन्] ब्रह्मा का विशेषण।

शुम्भ् (भ्वा० पर० शुम्भति) 1. चमकना 2. बोलना 3. आघात पहुँचाना, क्षति पहुँचाना।

शुम्भः [शुम्भ्+अच्] एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मार डाला था। सम०—घातिनी, —मर्दिनी दुर्गा का विशेषण।

शु (शू) र् (दिवा० आ० शूर्यते) 1. चोट पहुँचाना, मार डालना 2. दृढ़ करना, स्थिर करना, ठहराना।

शुल्क् (चुरा० उभ० शुल्कयति—ते) 1. लाभ उठाना 2. अदा करना, देना 3. रचना करना 4. कहना, वर्णन करना 5. छोड़ना, त्यागना, परित्यक्त करना।

शुल्कः, —**कम्** [शुल्क्+घञ्] 1. चुंगी, कर, महसूल, सीमाशुल्क, विशेषतः वह कर जो राज्य द्वारा घाट या मार्ग आदि पर लिया जाता है—कः सुधीः संत्यजेद्भाण्डं शुल्कस्यैवातिसाध्वसात्—हि० ३।१२५, मनु० ८।१५९, याज्ञ० २।४७ 2. किसी सौदे को पक्का करने के लिये दिया गया अगाऊ धन 3. (कन्या का) विक्रय मूल्य, कन्या के पिता को कन्या के बदले दिया गया धन —पीडितो दुहितृशुल्कसंस्थया—रघु० ११।४७, न कन्यायाः पिता विद्वान् गृह्णीयाच्छुल्कमण्वपि मनु० ३।५१, ८।२०४, ९।९३, ९८ 4. विवाहोपहार 5. विवाह निश्चित करने के लिए दिया गया धन, दहेज 6. वर पक्ष की ओर से दुलहिन को दिया गया उपहार। सम० —ग्राहक,—ग्राहिन् (वि०) शुल्कसंग्रहकर्ता,—दः 1. विवाहोपहार देने वाला 2. वाग्दत्त विवाहार्थी, —शाला, —स्थानम् शुल्क जमा करने की जगह, चुंगीघर।

शुल्लम् [शुल्व्+अच्, पृषो०] 1. सुतली, रस्सी, डोरी 2. तांबा।

शुल्व् (**ल्ब्**) (चुरा० उभ० शुल्व-ल्ब-यति,—ते) देना, प्रदान करना 2. भेजना, तितर बितर करना, 3. मापना ।

शुल्वम् (**ल्बम्**) [शुल्व्+अच्] 1. रस्सी, डोरी 2. तांबा 3. यज्ञीय कर्म 4. जल का सामीप्य, जल का निकटवर्ती स्थान 5. नियम, क़ानून, विधिसार,—ल्वा, —ल्वी दे० ऊपर ।

शुश्रू (स्त्री०) [श्रु+यङ् लुक्, द्वित्वादि+क्विप्] माता ।

शुश्रूषक (वि०) [श्रु+सन्, द्वित्वादि+ण्वुल्] सावधान, आज्ञाकारी,—कः सेवक, टहलुआ ।

शुश्रूषणम्, —णा [श्रु+सन्+इत्वादि+ल्युट्] 1. सुनने की इच्छा 2. सेवा, टहल 3. आज्ञाकारिता, कर्त्तव्यपरायणता ।

शुश्रूषा [श्रु+सन्, द्वित्वादि+अ+टाप्] 1. सुनने की इच्छा—अतएव शुश्रूषा मां मुखरयति—मुद्रा० ३ 2. सेवा, टहल 3. कर्तव्यपरायणता, आज्ञाकारिता 4. सम्मान 5. बोलना, कहना ।

शुश्रूषु (वि०) [श्रु+सन्, द्वित्वादि+उ] 1. सुनने का इच्छुक 2. सेवा या टहल करने की इच्छा वाला 3. आज्ञाकारी, सावधान ।

शुष् (दिवा० पर० शुष्यति, शुष्क) 1. सूखना, शुष्क होना, खुश्क होना—तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि—भर्तृ० ३।९२ 2. मुर्झा जाना, प्रेर० (शोषयति-ते) 1. सुखाना, मुर्झाना, खुश्क होना 2. कृश करना, उद्—, परि—, 1. सुखाया जाना, सुखाना —भट्टि० १०।४१, भग० १।२९ 2. म्लान होना, कुम्हलाना, मुर्झाना, वि—, सम्—, सुखाया जाना ।

शुषः, **शुषी** [शुष्+क, शुष+ङीष्] 1. सूखना, सुखाना 2. बिल, भूरन्ध्र ।

शुषिः [शुष्+कि] 1. सुखाना 2. रन्ध्र, छिद्र 3. साँप के विषैले दांत का पोला भाग ।

शुषिर (वि०) [शुष्+किरच्] छिद्रयुक्त, रन्ध्रमय,—रः 1. आग 2. चूहा,—रम् 1. छिद्र 2. अन्तरिक्ष 3. हवा या फूंक से बजने वाला बाजा ।

शुषिरा [शुषिर+टाप्] 1. नदी 2. एक प्रकार का गन्धद्रव्य ।

शुषिलः [शुष्+इलच्, स च कित्] हवा, वायु ।

शुष्क (भू० क० कृ०) [शुष्+क्त] 1. सूखा, सुखाया हुआ—शाखायां शुष्कं करिष्यामि—मृच्छ० ८ 2. भुना हुआ, म्लान 3. झुर्रीदार, सिकुड़न वाला, कृश 4. झूठ मूठ, व्याजमुक्त, नक़ली कामिनः स्म कुरुते करभोरूर्हारि शुष्करुदितं च सुखेऽपि शि० १०।६९ 5. रिक्त, व्यर्थ, अनुपयोगी, अनुत्पादक—मालवि० २ 6. निराधार, निष्कारण 7. बुरा लगने वाला, कठोर —तस्मै नाकुशलं ब्रूयान्न शुष्कां गिरमीरयेत्—मनु० ११।३५ । सम०—अङ्ग (वि०) कृशकाय, (गी) छिपकली,—अन्नम् वह अनाज जिसमें से भूसा अलग नहीं किया गया,—कलहः 1. व्यर्थ या निराधार झगड़ा 2. बनावटी झगड़ा—मुद्रा० ३,—वैरम् निराधार वैर,—व्रण वह घाव जो अच्छा हो गया है, घाव का चिह्न ।

शुष्कलः,—लम् [शुष्क+ला+क] 1. सूखा मांस 2. मांस ।

शुष्मः [शुष्+मन्, किच्च] 1. सूर्य 2. आग 3. वायु, हवा 4. पक्षी,—ष्मम् 1. पराक्रम, सामर्थ्य 2. प्रकाश, कान्ति ।

शुष्मन् (पुं०) [शुष्+ङ, मनिप्] अग्नि—शि० १४।२२, —(नपुं०) 1. सामर्थ्य, पराक्रम 2. प्रकाश, कान्ति ।

शूकः,—कम् [श्वि+कक्, संप्रसारणम्] 1. जौ की बाल, दाढ़ी 2. पौधों के कड़े रोएँ, वृतं च खलु शूकैः—भामि० १।२४ 3. नोक, सिरा, तेज़ किनारा 4. सुकोमलता, करुणा 5. एक प्रकार का विषैला कीड़ा । सम० —कीटः,—कीटकः एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर रोएँ खड़े हों,—धान्यम् कोई भी ऐसा अन्न जो बालों टूंडो में से निकलता है (जौ आदि),—पिण्डिः, —डी,—शिम्बा,—शिम्बिका,—शिम्बि केवाँच, कपिकच्छु ।

शूककः [शूक+कन्] 1. एकार का अन्न 2. सुकोमलता करुणा ।

शूकरः [शू इत्यव्यक्तं शब्दं करोति—शू+कृ+अच्] सूअर—गच्छ शूकर भद्रं ते वद सिंहो मया हतः, पण्डिता एव जानन्ति सिंहशूकरयोर्बलम्—सुभा० । सम०—इष्ट एक प्रकार का घास, मोथा ।

शूकलः [शूकवत् क्लेशं ददाति—शूक+ला+क] अड़ियल घोड़ा ।

शूद्रः [शुच्+रक्, पृषो० चस्य दः, दीर्घः] चौथे वर्ण का पुरुष, हिन्दुओं के चार मुख्य वर्णों में से अन्तिम वर्ण का पुरुष (कहा जाता है कि वह 'पुरुष या ब्रह्मा' के पैरों से उत्पन्न हुआ—पद्भ्यां शूद्रो अजायत ऋक्० १०।९०।१२, मनु० १।८७, उसका मुख्य कर्तव्य तीनों उच्चवर्णों की सेवा करना है—तु० मनु० १।९१) । सम०—आह्निकम् शूद्र का दैनिक अनुष्ठान,—उदकम् शूद्र के स्पर्श से दूषित जल,—कृत्यम्,—धर्मः शूद्र का कर्तव्य,—प्रियः प्याज,—प्रेष्यः तीनों उच्चवर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जो शूद्र का सेवक हो —भूयिष्ठ (वि०) जहाँ अधिकांश शूद्र रहते हों,—याजकः जो शूद्र के लिए यज्ञ का संचालन करता है,—वर्गः शूद्रश्रेणी या सेवकवर्ग,—सेवनम् शूद्र की सेवा करना, शूद्र का सेवक बनना ।

शूद्रकः [शूद्र+कन्] एक राजा, मृच्छकटिक का प्रख्यात प्रणेता ।

शूद्रा [शूद्र+टाप्] शूद्र वर्ण की स्त्री। सम०—**भार्यः** जिसकी पत्नी शूद्रवर्ण की हो,—**वेदनम्** शूद्रस्त्री से विवाह करना,—**सुतः** (किसी भी जाति के पिता द्वारा) शूद्र माता का पुत्र।

शूद्राणी, शूद्री [शूद्र+ङीप् पक्षे आनुक्] शूद्र की पत्नी।

शून (भू० क० कृ०) [श्वि+क्त] 1. सूजा हुआ 2. वर्धित उगा हुआ, समृद्ध।

शूना [श्वि अधिकरणे क्त, संप्र० दीर्घश्च] 1. मृदु तालु, घंटी, उपजिह्विका 2. बूचड़खाना 3. कोई भी वस्तु (जैसे कि घर गृहस्थी का कुछ सामान) जिससे जीव हिंसा होती हो (यह गिनती में पांच हैं—चूल्हा, चक्की बुहारी, ओखली और जलपात्र)—पञ्च शूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्करः। कण्डणी चोदकुम्भश्च वध्यते यास्तु वाहयन्—मनु० ३।६८।

शून्य (वि०) [शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्] 1. रिक्त, खाली 2. सूना (हृदय, तथा चितवन आदि के लिए भी प्रयुक्त) - गमनमलसं शून्या दृष्टिः —मा० १।१७ दे० नी० शून्यहृदय 3. अविद्यमान 4. एकान्त, निर्जन, विविक्त, वीरान—शून्येषु शूरा न के —काव्य० ७, भट्टि० ६।९, उत्तर० ३।३८, मा० ९।२० 5. खिन्न, उदास, उत्साहहीन -शून्या जगाम भवनाभिमुखी कथंचित्—कु० ३।७५, कि० १७।३९ 6. नितान्त रहित, वञ्चित, विहीन, अभावयुक्त (करण० के साथ या समास में) -अंगुलीयकशून्या मे अंगुलिः—श० ५, दया° ज्ञान° आदि 7. तटस्थ 8. निर्दोष 9. अर्थहीन, निरर्थक शि० ११।४ 10. विवस्त्र, नंगा,—**न्यम्** 1. निर्वातता, रिक्त, खोखलापन 2. आकाश, अन्तरिक्ष 3. सिफर, बिन्दु 4. अस्तित्वहीनता, (पूर्ण, असीम) अविद्यमानता—दूषण शून्य बिन्दवः नै० १।२१ 1. सम० **मध्यः** खोखला नरकुल,—**मनस्-मनस्क** (वि०) अन्यमनस्क, भग्नचेता, —**मुख, वदन** (वि०) हक्का-बक्का, उदास, किंकर्तव्य विमूढ़, **वादः** वह दार्शनिक सिद्धांत जो (जीव ईश्वर आदि) किसी भी पदार्थ की सत्ता स्वीकार नहीं करता, बौद्ध दर्शन, **वादिन्** (पुं०) 1. नास्तिक 2. बौद्ध, —**हृदय** (वि०) 1. अन्यमनस्क विक्रम० २, श० ४ 2. खुले दिल वाला, जो दूसरों पर किसी प्रकार का संदेह न करे।

शून्या [शून्य+टाप्] 1. खोखला नरकुल 2. बांझ स्त्री।

शूर (चुरा० उभ० शूरयति-ते) 1. शौर्य के कार्य करना, शक्तिशाली होना 2. प्रबल उद्योग करना।

शूर (वि०) [शूर्+अच्] बहादुर, वीर, पराक्रमी, ताकतवर—शून्येषु शूरा न के —काव्य० ७, **रः** 1. सूरमा, योद्धा, पराक्रमी 2. सिंह 3. सूअर 4. सूर्य 5. साल का पेड़ 6. कृष्ण का दादा, एक यादव। सम०—**कीटः** तिरस्करणीय योद्धा, महावीर० ६।३२,—**मानम्** अभिमान, अहंकार, **सेन** (पुं० ब० व०) मथुरा के निकट एक देश या उस देश के अधिवासी - रघु० ६।४५।

शूरणः [शूर्+ल्युट्] सूरन नामक एक खाद्यमूल, कंद।

शूरंमन्य (वि०) [आत्मानं शूरं मन्यते—शूर+मन्+खश्, मुम्] जो व्यक्ति अपने आपको पराक्रमी समझता है।

शूर्पः, र्पम् [शृ+पः ऊश्च नित्] छाज,—**र्पः** दो द्रोण का तोल। सम०—**कर्णः** हाथी,—**णखा, खी** (नखा के स्थान पर) जिसके नख छाज जैसे लंबे चौड़े हों, रावण की बहन का नाम (वह राम के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उनसे विवाह करने की प्रार्थना करने लगी। परन्तु राम ने कहा कि मेरे साथ तो मेरी पत्नी है, अच्छा हो कि तुम लक्ष्मण के पास जाओ। परन्तु जब लक्ष्मण ने भी उसकी प्रार्थना न मानी तो वह वापिस राम के पास आई। इस बात पर सीता को हंसी आ गई। फलतः शूर्पणखा ने अपने आपको अत्यधिक अपमानित समझकर बदला लेने की इच्छा से भीषण रूप धारण किया और सीता को खाने के लिए दौड़ी। परन्तु उसी समय लक्ष्मण ने उसके कान और नाक काटली और उसका रूप बिगाड़ दिया —रघु० १२।३२ -४०),—**वातः** छाज को हिलाने से उत्पन्न हवा —**श्रुतिः**, हाथी।

शूर्पी [शूर्प+ङीष्] 1. छोटा छाज या पङ्खा 2. शूर्पणखा।

शूर्मः,—**शूर्मिः** (पुं०, स्त्री०) **शूर्मिका, शूर्मी** [सुष्ठु ऊर्मिः अस्ति अस्याः, पक्षे अच्; शूर्मि+कन्+टाप्, शूर्मि ङीष्] 1. लोहे की बनी प्रतिमा 2. घन, निहाई।

शूल् (भ्वा० पर० शूलति) 1. बीमार होना 2. कोलाहल करना 3. गड़बड़ करना, बिगाड़ना।

शूलः,—लम् [शूल्+क] 1. पैना या नोकदार हथियार, नुकीला काँटा, नेजा, बर्छी, भाला 2. शिव का त्रिशूल 3. लोहे की सलाख (जिस पर मांस भूना जाता है) शूले संस्कृतं शूल्यम्—तु० अयः शूल 4. एक स्थूण जिसके सहारे अपराधियों को सूली दी जाती थी—(विभ्रत्) स्कन्धेन शूलं हृदयेन शोकम् —मृच्छ० १०।२१, कु० ५।७३ 5. तीव्र पीड़ा 6. उदरशूल 7. गठिया, जोड़ों में दर्द 8. मृत्यु 9. झण्डा, ध्वज (शूलाकृ लोहे की सलाख पर रख कर भूनना)। सम० **अग्रम्** सलाख की नोक, **ग्रन्थिः** (स्त्री०) एक प्रकार का घास, दूब, **घातनम्** लोहे का बुरादा, लोहे का चूरा जो लोहे को रेतने से निकलता है, **घ्न** (वि०) शामक औषधि, वेदनाहर,—**धन्वन्**,—**धर**, —**धारिन्**,—**भृत्**, **पाणि**, **भृत्** (पुं०) शिव के विशेषण,—अधिगतधवलिम्नः शूलपाणेरभिख्याम्—शि० ४।६५, रघु० २।३८, **शत्रुः** एरण्ड का पौधा,—**स्थ** (वि०) सूली-

पर चढ़ाया गया, - हन्त्री एक प्रकार का जौ,—हस्तः भालाधारी।

शूलकः [शूल+कन्] अड़ियल घोड़ा।

शूला [शूल+टाप्] 1. अपराधियों को सूली देने की स्थूणा 2. वेश्या।

शूलाकृतम् [शूल+डाच्+कृ+क्त] भुना हुआ मांस।

शूलिक (वि०) [शूल+ठन्] 1. शूलधारी 2. सलाख पर भूना हुआ, - कः खरगोश, - कम् भुना हुआ मांस।

शूलिन् (वि०) [शूलमस्त्यस्य इनि] 1. बर्छीधारी - दुर्जनो लवणः शूली—रघु० १५।५ 2. उदरशूल से पीड़ित (पुं०) 1. बर्छीधारी 2. खरगोश 3. शिव —कुर्वन् सन्ध्यावलिपटहतां शूलिनः श्लाघनीयाम्—मेघ० ३६, कु० ३।५७।

शूलिनः [शूल+इनन्] वरगद का पेड़।

शूल्य (वि०) [शूल+यत्] 1. सलाख पर भूना हुआ —श० २ 2. सूली पाने के योग्य, - ल्यम् भुना हुआ मांस।

शूष् (भ्वा० पर० शूषति) 1. पैदा करना, उत्पन्न करना 2. जन्म देना।

शृकालः [=शृगालः] गीदड़—दे० 'शृगाल'।

शृगालः [असृजं लाति—ला+क, पृषो०] 1. गीदड़ 2. ठग, धूर्त, उचक्का 3. भीरु 4. दुष्ट प्रकृति, कटुभाषी 5. कृष्ण। सम० - केलिः एक प्रकार का बेर,—जम्बुः, - बूः (स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी, खीरा,—योनिः गीदड़ की योनि में जन्म लेना, - रूपः शिव का विशेषण।

शृगालिका, शृगाली [शृगाल+ङीष्, पक्षे कन्+टाप् ह्रस्वः] 1. गीदड़ी 2. लोमड़ी 3. पलायन, प्रत्यावर्तन।

शृङ्खलः,—ला,—लम् [शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो०] 1. लोहे की जञ्जीर, बेड़ी 2. जञ्जीर, हथकड़ी (आलं० भी)—भट्टि० ९।९०, लीलाकटाक्षमालाशृङ्खलाभिः—दश०, संसारवासनाबद्ध शृङ्खलाम् - गीत० ३ 3. हाथी के पैरों को बाँधने की जञ्जीर —स्तम्बेरमा मुखरशृङ्खलकर्षिणस्ते—रघु० ५।७२, कि० ७।३१ 4. कमर की पेटी, करधनी 5. नापने की जञ्जीर 6. जञ्जीर, श्रेणी, परम्परा। सम०—यमकम् यमक अलङ्कार का एक भेद - दे० कि० १५।४२।

शृङ्खलकः [शृङ्खल+कन्] 1. जञ्जीर 2. ऊँट।

शृङ्खलित (वि०) [शृङ्खला+इतच्] जञ्जीर में जकड़ा हुआ, बेड़ी पड़ा हुआ, बँधा हुआ।

शृङ्गम् [शृ+गन्, पृषो० मुम् ह्रस्वश्च] 1. सींग—वन्यैरिदानीं महिषैस्तदम्भः शृङ्गाहतं क्रोशति दीर्घिकाणाम् —रघु० १६।१३, गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृङ्गैर्मुहुस्ताडितम्—श० २।६ 2. पहाड़ की चोटी —अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किं स्विदित्युन्मुखीभिः—मेघ० १४, ५२, कि० १५।४२, रघु० १३।२६ 3. भवन की चोटी, बुर्जी 4. उत्तुंगता, ऊँचाई 5. प्रभुता, स्वामित्व, सर्वोपरिता, प्रमुखता - शृङ्गं स दृप्तविनयाधिकृतः परेषामत्युच्छ्रितं न ममृषे न तु दीर्घमायुः - रघु० ९।६२, (यहाँ शब्द का अर्थ 'सींग' भी है) 6. चन्द्रचूड़ा, चाँद की नोक 7. चोटी, नोक, अग्रभाग 8. (भैंस आदि का) सींग जो फूंक मार कर बजाया जाता है 9. पिचकारी - वर्णोदकैः काञ्चन शृङ्गमुक्तैः—रघु० १६।७० 10. कामोद्रेक, अभिलाषोदय 11. निशान, चिह्न 12. कमल। सम० अन्तरम् (गौ आदि पशुओं के) सींगों का मध्यवर्ती स्थान,—उच्चयः ऊँची चोटी,—जः बाण (जम्) अगर की लकड़ी,—प्रहारिन् (वि०) सींग से मारने वाला, - प्रियः शिव का विशेषण, - मोहिन् (पुं०) चम्पक वृक्ष,—वेरम् 1. वर्तमान मिर्जापुर के निकट गंगा के किनारे बसा हुआ एक नगर—उत्तर० १।२१ 2. अदरक।

शृङ्गकः,—कम् [शृङ्ग+कन्] 1. सींग 2. चन्द्रमा की नोक, चन्द्रचूड़ा 3. कोई भी नोकीली वस्तु 4. पिचकारी - रत्न० १।

शृङ्गवत् (वि०) [शृङ्ग+मतुप्] चोटीवाला—(पुं०) पहाड़।

शृङ्गाटः, शृंगाटकः [शृङ्गं प्रधान्यम् अटति—शृङ्ग+अट्+अण्] 1. एक पहाड़ 2. एक पौधा—कम्,—कम् चौराहा।

शृङ्गारः [शृङ्गं कामोद्रेकमृच्छत्यनेन ऋ+अण्] प्रणयरस, कामोन्माद, रतिरस (काव्यरचनाओं में वर्णित आठ या नौ प्रकार के रसों में सबसे पहला रस, यह दो प्रकार का है—संभोग शृंगार और विप्रलंभ शृंगार) - शृङ्गारः सखि मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति - गीत० १, (इसकी परिभाषा यह है—पुंसः स्त्रियां स्त्रियाः पुंसि संभोगं प्रति या स्पृहा। स शृङ्गार इति ख्यातः क्रीडारत्यादिकारकः॥ दे० सा० द० २१० भी) 2. प्रेम, प्रणयोन्माद संभोगेच्छा - विक्रम० १।९ 3. शृङ्गारिक समालापों के उपयुक्त वेश, ललित वेशभूषा 4. मैथुन, संभोग 5. हाथी के शरीर पर बनाये गए सिंदूर के निशान 6. चिह्न, - रम् 1. लौंग 2. सिंदूर 3. अदरक 4. शरीर या वस्त्रों के लिए सुगन्धित चूर्ण 5. काला अगर। सम०—चेष्टा कामानुरक्ति का संकेत—रघु० ६।१२, —भाषितम् प्रेमालाप, प्रणयकथा,—भूषणम् सिंदूर,—योनिः कामदेव का विशेषण, —रसः साहित्यशास्त्र में वर्णित शृंगाररस, प्रणयरस,—विधिः,—वेशः प्रेमालापों के उपयुक्त वेशभूषा (जिसे पहन कर प्रेमी अपने प्रिय से मिलता है), —सहायः प्रेमव्यापार में सहायक व्यक्ति, नर्मसचिव।

शृङ्गारकः [शृङ्गार+कन्] प्रेम, **कम्** सिंदूर।
शृङ्गारित (वि०)[शृङ्गार+इतच्] 1. प्रेमाविष्ट, प्रणयोन्मत्त 2. सिंदूर से लाल 3. अलंकृत, सजा हुआ।
शृङ्गारिन् (वि०) [शृङ्गार+इनि] शृङ्गारप्रिय, प्रेमासक्त, प्रणयोन्मत्त (पुं०) 1. प्रणयोन्मत्त, प्रेमी 2. लाल 3. हाथी 4. वेशभूषा, सजावट 5. सुपारी का पेड़ 6. पान का वीड़ा दे० 'ताम्बूल'।
शृङ्गिः [= शृङ्गी, पृषो० ह्रस्वः] आभूषणों के लिए सोना (स्त्री०) सिंगी मछली।
शृङ्गिकम् [शृङ्ग+ठन्] एक प्रकार का विष, **का** एक प्रकार का भूर्जवृक्ष।
शृङ्गिणः [शृङ्ग+इनन्] भेड़ा, मेंढा।
शृङ्गिणी [शृङ्गिन्+ङीप्] 1. गाय 2. एक प्रकार की मल्लिका, मोतिया।
शृङ्गिन् (वि०) (स्त्री० **णी**) [शृङ्ग+इनि] 1. सींगों वाला 2. शिखाधारी, चोटी वाला, (पुं०) 1. पहाड़ 2. हाथी 3. वृक्ष 4. शिव 5. शिव के एक गण का नाम शृङ्गी भृङ्गी रिटीस्तुण्डी—अमर०।
शृङ्गी [शृङ्ग+ङीप्] 1.आभूषणों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सोना 2. एक औषधि–मूल, काकड़ासिंगी, अतीस 3. एक प्रकार का विष 4. सिंगी मछली। सम०—**कनकम्** गहना बनाने के लिए सोना।
शृणिः (स्त्री०) [शृ+क्तिन्, पृषो० तस्य नः, ह्रस्वश्च] अंकुश, प्रतोद।
शृत (भू० क० कृ०) [श्रृ+क्त] 1. पकाया हुआ 2. उबाला हुआ (पानी, दूध आदि)।
शृध् i (भ्वा० आ०—परन्तु लृट्, लुङ् और लृङ् में पर० भी शर्धते) अपान वायु छोड़ना, पाद मारना।
ii (भ्वा० उभ० शर्धति—ते) 1. आर्द्र करना, गीला करना 2. काट डालना।
iii (चुरा० उभ० शर्धयति—ते) 1. प्रयत्न करना, 2. लेना, ग्रहण करना 3. अपमान करना (पाद मार कर) नकल करना, मजाक उड़ाना।
शृधुः [शृध्+कु] 1. बुद्धि 2. गुदा।
शॄ (क्र्या० पर० शृणाति, शीर्ण) 1. फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े कर डालना 2. चोट पहुँचाना, क्षति ग्रस्त करना 3. मार डालना, नष्ट करना कि० १४।१३, कर्मवा० (शीर्यते) 1. चिथड़े-चिथड़े होना, कुम्हलाना, मुरझाना, बर्बाद होना, **अव** , जबरन ले भागना (कर्मवा०) मुर्झाना, कुम्हलाना—मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य विशीर्येत वनेऽथवा—भर्तृ० २।१०४।
शेखरः [शिख्+अरन्, पृषो०] 1. चूड़ा, कलगी, फूलों का गजरा, सिर पर लपेटी हुई माला—कपालि वा स्यादथवेन्दुशेखरम् कु० ५।१८, ७।३२, नवकर निकरेण स्पष्टबन्धूकसूनस्तबकरचितमेते शेखरं बिभ्रतीव शि० ११।४६, ३।५७, मगधदेशशेखरीभूता पुष्पपुरी नाम नगरी दश० 2. किरीट, मुकुट, 3. चोटी. शृंग 4. (समास के अन्त में प्रयुक्त) किसी भी श्रेणी का सर्वोत्तम या प्रमुखतम 5. गीत का ध्रुव विशेष, **रम्** लौंग।
शेपः, शेपस् (नपुं०) **शेफः, फम्, शेफस्** (नपुं०) [शी+पन्, शी+असुन्, पुट्, शी+फन्, शी+असुन्, फुक्] 1. लिंग, पुरुषकी जननेन्द्रिय 2. अंडकोष 3. पूँछ।
शेफालिः, ली, शेफालिका (स्त्री०) [शेफाः शयनशालिनः अलयो यत्र—ब० स०, शेफालि+ङीप्, कन्+टाप् वा] एक प्रकार का पौधा, निर्गुण्डी, नीलिका, नील सिंधुवार का पौधा।
शेमुषी [शी+विच् शेः मोहः तं मुष्णाति—शे+मुष्+क+ङीप्] बुद्धि, समझ।
शेल् (भ्वा० पर० शेलति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. कांपना।
शेवः [शुक्रपाते सति शेते—शी+वन्] 1. सांप 2. लिंग 3. ऊंचाई, उत्तुंगता 4. आनन्द 5. दौलत, खजाना, **—वम्** 1. लिंग 2. आनन्द। सम०—**धिः** 1. मूल्यवान् कोष विद्या ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्तेऽस्मि रक्ष माम् मनु० २।११४, सर्वे कामाः शेवधिर्जीवितं वा स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसाम्—मा० ६।१८ 2. कुबेर के नौ कोषों में से एक।
शेवलम् [शी+विच् तया भूतः सन् वलते वल्+अच्] मांथे की भांति हरे रंग का पदार्थ जो पानी के ऊपर उग आता है, काई 2. एक प्रकार का पौधा।
शेवलिनी [शेवल+इनि+ङीप्] नदी।
शेवालः दे० 'शेवल'।
शेष (वि०) [शिष्+अच्] बचा हुआ, बाकी, अन्य सब —न्यषेधि शेषोऽप्यनुयायिवर्गः—रघु० २।४, ४।६४, १०।३०, मेघ० ३०,८७, मनु० ३।४७, कु० २।४४; इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में—भक्षितशेष, आलेख्यशेष, आदि, **षः, —षम्** 1. बचा हुआ, बाकी, अवशिष्ट ऋणशेषोऽग्निशेषश्च व्याधिशेषस्तथैव च। पुनश्च वर्धते यस्मात्तस्माच्छेषं न कारयेत् चाण० ४०, अध्वशेष मेघ० २८, विभागशेष कु० ५।५७, वाक्यशेषः विक्रम०३ 2. छोड़ी हुई कोई बात, या भूली हुई बात, ('इतिशेषः' बहुधा भाष्यकारों द्वारा रचना को पूरा करने के लिए किसी आवश्यक न्यून पद की पूर्ति करने के निमित्त प्रयुक्त होता है) 3. बचाव, मुक्ति, शान्ति,—**षः** 1. परिणाम, प्रभाव 2. अन्त, समाप्ति, उपसंहार 3. मृत्यु, विनाश 4. एक विख्यात नाग का नाम, जिसके एक हजार फणों का होना कहा जाता है, तथा जिस का वर्णन विष्णु की

शय्या के रूप में; या समस्त संसार को अपने सिर पर सम्भाले हुए मिलता है—किं शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष यत्—मुद्रा० २।१८, कु० ३।१३, ६।६८, मेघ० ११०, रघु० १०।१३ 5. बलराम (जो शेष का अवतार माना जाता है, षा फ़ूल तथा अन्य चढ़ावा जो मूर्ति के सामने प्रस्तुत किया जाता है) और उसके पुण्य अवशेष के रूप में पूजा करने वालों में बाँट दिया जाता है—श० ३, कु० ३।२२,—षम् उच्छिष्ट अन्न, चढ़ावे का अवशेष (शेषे क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, इसका अर्थ है—1. अन्त में, आखिरकार 2. अन्य विषयों में) । सम० अन्नम् जूठन, अवस्था बुढ़ापा,—भागः शेष, बाक़ी,—भोजनम् जूठनखाना,—रात्रिः रात का चौथा पहर,—शयनः,—शायिन् (पुं०) विष्णु के विशेषण ।

शैक्षः [शिक्षां वेत्त्यधीते अण् वा] 1. शिक्षा अर्थात् उच्चारण शास्त्र को पढ़ने वाला विद्यार्थी, जिसने वेदाध्ययन अभी अभी आरम्भ किया है 2. नौसिखिया, नवशिष्य ।

शैक्षिकः [शिक्षा+ठक्] शिक्षाशास्त्र में निष्णात ।

शैक्ष्यम् [शिक्षा+यत्] अधिगम, प्रवीणता ।

शैघ्र्यम् [शीघ्र+ष्यञ्] फुर्ती, सत्वरता ।

शैत्यम् [शीत+ष्यञ्] ठंडक, शीतलता, जमाव—शैत्यं हि यत्सा प्रकृतिर्जलस्य—रघु० ५।६४, कु० १।३४ ।

शैथिल्यम् [शिथिल+ष्यञ्] 1. ढीलापन, नरमी 2. मन्थरता 3. दीर्घसूत्रता, अनवधानता 4. कमजोरी, भीरुता ।

शैनेयः [शिनि+ढक्] सात्यकि का नाम ।

शैन्याः (पुं०, ब० व०) [शिनि+यञ्] शिनि की सन्तान, शिनि के वंशज ।

शैब्य दे० 'शैव्य' ।

शैलः [शिला+अण्] 1. पर्वत, पहाड़—शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे—चाण० ५५, शैलौ मलयदर्दुरौ—रघु० ४।५१ 2. चट्टान, बड़ा भारी पत्थर,—लम् 1. सुहागा, धूप, गुग्गुल 2. शिलाजीत 3. एक प्रकार का अंजन । सम०—अंशः एक देश का नाम,—अग्रम् पहाड़ की चोटी,—अटः 1. पहाड़ी, असभ्य 2. किसी देवमूर्ति का पुजारी 3. सिंह 4. स्फटिक,—अधिपः,—अधिराजः,—इन्द्रः,—पतिः,—राजः हिमालय पर्वत के विशेषण, आख्यम् शैलेयगन्ध द्रव्य, धूप,—कटकः पहाड़ की ढलान,—गन्धम् एक प्रकार का चन्दन,—जम् 1. शैलयगन्ध द्रव्य, धूप 2. शिलाजीत,—जा, तनया,—पुत्री,—सुता पार्वती के विशेषण—अवाप्तः प्रागल्भ्यं परिणतरुचः शैलतनये—काव्य० १०, कु० ३।६८,—धन्वन् (पुं०) शिव का विशेषण,—धरः कृष्ण का विशेषण,—निर्यासः शैलेयगन्धद्रव्य, धूप,—पत्रः बेल का पेड़,—भित्तिः (स्त्री०) पत्थर काटने का उपकरण, टांकी, रन्ध्रम् गुफा, कन्दरा,—शिविरम् समुद्र,—सार (वि०) पत्थर की तरह सबल, चट्टान की तरह दृढ़—कि० १०।१४ ।

शैलकम् [शैल+कन्] 1. शैलेयगन्ध द्रव्य, धूप 2. शिलाजीत ।

शैलादिः [शिलादस्यापत्यम्—शिलाद+इञ्] शिव का गण, नन्दी ।

शैलालिन् (पुं०) [शिलालिना मुनिना प्रोक्तं नटसूत्रमधीयते—शिलालि+णिनि] अभिनेता, नर्तक ।

शैलिक्यः [गर्हितं शीलमस्त्यस्य—ठन्, शैलिक+ष्यञ्] पाखण्डी, दम्भी, ठग ।

शैली [शीलमेव स्वार्थे ष्यञ् ङीपि यलोपः] 1. व्याकरण सूत्र की संक्षिप्त वृत्ति 2. अभिव्यक्ति या अर्थकरण का एक प्रकार—प्रायेणाचार्याणामियं शैली यत्स्वाभिप्रायमपि परोपदेशमिव वर्णयन्ति—मनु० १।४ पर कुल्लू० 3. व्यवहार, काम करने का ढंग, आचरण, क्रम ।

शैलूषः [शिलूषस्यापत्यम्—शिलूष+अण्] 1. अभिनेता, नर्तक—आः शैलूषापसद—वेणी० १, एते पुरुषाः सर्वमेव शैलूषजनं व्याहरन्ति—तदेव, अवाप्य शैलूष इवष भूमिकाम् शि० १।६९ 2. वादित्र-कुशल—बैण्डबाजे का नायक, संगीत मण्डली का प्रधान 3. संगीत सभा में तालधारक 4. धूर्त 5. बेल का पेड़ ।

शैलूषिकः [शैलूषं तद्वृत्तिम् अन्वेष्टा—ठक्] जो अभिनेता का व्यवसाय करता हो ।

शैलेय (वि०) (स्त्री०—यी) [शिलायां भवः, शिला+ढक्] 1. पहाड़ी 2. चट्टानों से उत्पन्न 3. पत्थर की तरह कड़ा, पथरीला,—यः 1. सिंह 2. भ्रमर,—यम् 1. पर्वत गंधद्रव्य, धूप,—शैलेयगन्धीनि शिलातलानि—रघु० ६।५१, कु० १।५५ 2. सुगंधित राल 3. सेंधा नमक ।

शैल्य (वि०) (स्त्री०—ल्या) [शिला+ष्यञ्] पथरीला,—ल्यम् चट्टान जैसी कठोरता, कड़ापन ।

शैव (वि०) (स्त्री०—वी) [शिवो देवताऽस्य—अण्] शिवसंबंधी,—वः 1. हिन्दुओं के तीन मुख्य संप्रदायों में से एक 2. शैव संप्रदाय का पुरुष,—वम् अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम ।

शैवलः [शी+वलच्] एक प्रकार का जलीय पौधा, पद्मकाष्ठ, सेवार, काई, मोथा—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्—श० १।२०,—लम् एक प्रकार की सुगंधित लकड़ी ।

शैवलिनी [शैवल+इनि+ङीप्] नदी ।

शैवाल दे० 'शैवल' ।

शैव्यः [शिवि+ञ्य] 1. कृष्ण के चार घोड़ों में से एक 2. पांडव सेना का एक योद्धा, एक राजा का नाम 3. घोड़ा।

शैशवम् [शिशोर्भावः अण्] बचपन, बाल्यावस्था (सोलह वर्ष से नीचे का समय)—शैशवात्प्रभृति पोषितां प्रियाम्—उत्तर० १।४५, शैशवेऽभ्यस्तविद्यानाम्—रघु० १।८।

शैशिर (वि०) (स्त्री०—री) [शिशिर+अण्] जाड़े के मौसम से संबन्ध रखने वाला,—रः काले रंग का चातकपक्षी।

शैष्योपाध्यायिका [शिष्योपाध्याय+वुञ्] किशोरावस्था के छात्रों को पढ़ाना।

शो (दिवा० पर० श्यति, शात या शित, कर्मवा० शायते —प्रेर० शाययति, इच्छा० शिशासति) 1. पैनाना, तेज़ करना 2. पतला करना, कृश करना, नि—, तेज़ करना।

शोकः [शुच्+घञ्] अफ़सोस, रंज, दुःख, कष्ट, विलाप रुदन, वेदना—श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः—रघु० १४।७०, भग० १।६। सम० अग्निः,—अनलः शोक रूपी आग,—अपनोदः रंज को दूर करना,—अभिभूत,,—आकुल,—आविष्ट, उपहत,—विह्वल (वि०) कष्टग्रस्त, वेदनाग्रस्त,—चर्चा शोक में लीन, नाशः अशोकवृक्ष,—परायण, लासक (वि०) शोक से ग्रस्त, पीडाभिभूत,—विकल (त्रि०) शोकाकुल,—स्थानम् शोक का कारण।

शोचनम् [शुच्+ल्युट्] रंज, अफ़सोस, विलाप।

शोचनीय (वि०) [शुच्+अनीयर्] विलाप करने योग्य, चिन्त्य, शोच्य, दुःखद।

शोच्य (वि०) [शुच्+ण्यत्] 1. शोचनीय, विलाप करने योग्य, चिन्तनीय, दयनीय श० ३।१० 2. कमीना, दुश्चरित्र।

शोचिस् (नपुं०) [शुच्+इसि] 1. प्रकाश, कान्ति, चमक 2. ज्वाला। सम०—केशः (शोचिष्केशः) अग्नि का विशेषण।

शोटीर्यम् [शुटीर+ष्यञ्, 'शौटीर्यम्' इति साधुः] पराक्रम, शौर्य, शूरवीरता।

शोठ (वि०) [शुठ्+अच्] 1. मूर्ख 2. कमीना, अधम 3. आलसी; सुस्त,—ठः 1. मूर्ख 2. निकम्मा, आलसी 3. अधम या कमीना पुरुष 4. धूर्त, ठग।

शोण् (भ्वा० पर० शोणति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. लाल होना।

शोण (वि०) (स्त्री०—णा, णी) [शोण्+अच्] 1. लाल, गहरा लाल रंग, हल लालका रंग—स्त्यानावनद्धघनशोणितशोणपाणिरुत्तंसयिष्यति कचांस्तव देवि भीमः—वेणी० १।२१, मुद्रा० १।८, कु० १।७ 2. लाख के रंग का, लालिमायुक्त भूरा,—णः 1. लोहित वर्ण, लाल रंग 2. आग 3. एक प्रकार का लाल रंग का गन्ना, ईख 4. कुम्मैत घोड़ा 5. एक दरिया का नाम जो गोंडवाना से निकलकर पटना के निकट गंगा में गिरती है—प्रत्यग्रहीत् पार्थिववाहिनीं तां भागीरथीं शोण इवोत्तरङ्गः—रघु० ७।३६ 6. मंगलग्रह तु० लोहित, णम् 1. रुधिर 2. सिंदूर। सम०—अम्बुः एक प्रकार का बादल जो प्रलय के समय उठता है, —अश्मन् (पुं०)—उपलः 1. लाल पत्थर 2. लाल, एक माणिक्य,—पद्मम् लाल रंग का कमल,—रत्नम् लाल नामक माणिक्य, पद्मरागमणि।

शोणित (वि०) [शोण+इतच्] 1. लाल, लोहित, रक्त वर्ण का,—तम् 1. रुधिर—उपस्थिता शोणितपारणा मे—रघु० २।३९, वेणी० १।२१, मुद्रा० १।८ 2. केसर, जाफ़रान। सम०—आह्वयम् केसर, जाफ़रान,—उक्षित (वि०) रक्तरंजित,—उपलः पद्मरागमणि,—चन्दनम् लाल चंदन,—प (वि०) रुधिर पीने वाला,—पुरम् बाणासुर का नगर।

शोणिमन् (पुं०) [शोण+इमनिच्] लालिमा, लाली।

शोथः [शु+थन्] सूजन, स्फीति। सम०—घ्न,—जित् (वि०) सूजन को दूर करने वाला, सूजन या स्फीति को हटाने वाली औषधि,—जिह्वः पुनर्नवा,—रोगः हाथ पाँव आदि में सूजन होने का रोग, जलोदर, —हृत् (वि०) सूजन हटाने वाली दवा (पुं०) भिलावाँ।

शोधः [शुध्+घञ्] 1. शुद्धिसंस्कार 2. संशोधन, समाधान 3. ऋणभुगतान, (ऋण) परिशोध 4. प्रतिहिंसा, प्रतिदान, बदला।

शोधक (वि०) (स्त्री०—का, धिका) [शुध्+णिच्+ण्वुल्] 1. शुद्ध करने वाला 2. रेचक 3. संशोधन करने वाला

शोधन (वि०) (स्त्री—नी) [शुध्+णिच्+ल्युट्] शुद्ध करने वाला, स्वच्छ करने वाला,—नम् 1. शुद्ध करना, स्वच्छ करना 2. संशोधन, (ऋण) परिशोधन करना 3. यथार्थ निर्धारण 4. अदायगी, बेबाकी, ऋण चुकाना 5. प्रायश्चित्त, परिशोधन 6. धातुओं को साफ़ करना 7. प्रतिहिंसा, प्रतिदान, दण्ड 8. (गणि० में) व्यवकलन 9. तूतिया 10. मल, विष्ठा।

शोधनकः [शोधन+कन्] दंड-न्यायालय का एक अधिकारी, मृच्छ० ९, फ़ौजदारी अदालत का अफ़सर।

शोधनी [शोधन+ङीप्] झाड़ू, बुहारी।

शोधित (भू० क० कृ०) [शुध्+णिच्+क्त] 1. शुद्ध किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2. संस्कृत 3. छाना हुआ 4. संशोधित, समाहित 5. ऋण परिशोध किया हुआ, चुकाया हुआ 6. बदला लिया हुआ, प्रतिहिंसा की हुई।

शोध्य (वि०) [शुध्+णिच्+यत्] शुद्ध किये जाने के

योग्य, संस्कृत किये जाने के योग्य ऋण परिशोध किये जाने के योग्य,—ध्यः अभियुक्तव्यक्ति, वह पुरुष जिसने लगाये हुए आरोप से अपने आप को मुक्त करना है।

शोफः [शु+फन्] सूजन, अर्बुद, रसौली, शोथ। सम० —जित्,—हृत् (पुं०) भिलावे का पौधा।

शोभन (वि०) (स्त्री०—नी) [शोभते—शुभ्+ल्युट्] 1. चमकीला, शानदार 2. मनोहर, सुन्दर, लावण्यमय 3. भद्र, शुभ, सौभाग्य शाली 4. खूब सजाया हुआ 4. सदाचारी, पुण्यात्मा,—नः 1. शिव 2. ग्रह 3. अच्छे परिणामों की प्राप्ति के लिए यज्ञाग्नि में दी गई आहुति,—ना 1. हल्दी 2. सुन्दर या सती स्त्री —कु० ४।४४ 3. एक प्रकार का पीला रंग, गोरोचना,—नम् 1. सौन्दर्य, कान्ति, दीप्ति 2. कमल।

शोभा [शुभ्+अ+टाप्] 1. प्रकाश, कान्ति, दीप्ति, चमक 2. (क) वैभव, सौन्दर्य, लालित्य, चारुता, लावण्य —वपुरभिनवमस्याः पुष्यति स्वां न शोभाम्—श० १।१९, मेघ० ५२,५९ (ख) नैसर्गिक सौन्दर्य, (पर्वत आदि की) गरिमा,—अद्रिशोभा रघु० २।२७ 3. अलंकार, ललित अभिव्यक्ति – शोभैव मन्दरक्षुब्धक्षुभिताम्भोधि-वर्णना—शि० २।१०७ 4. हल्दी 5. एक प्रकार का रंग, गोरोचना। सम०—अञ्जनः एक अत्यंत उपयोगी वृक्ष, सौहंजना।

शोभित (भू० क० कृ०) [शुभ्+णिच्+क्त] 1. अलंकृत, चारु, सजाया हुआ 2. सुन्दर, प्रिय।

शोषः [शुष्+घञ्] 1. सूखना, सूखापन —हृदशोषविक्लवाम्—कु० ४।३९, इसी प्रकार आस्यशोषः, कंठशोषः 2, कृशता, कुम्हलान—शरीरशोषः, कुसुमशोष आदि 3. फुप्फुसीय क्षय, या क्षयरोग - संशोषणाद् रसादीनां शोष इत्यभिधीयते—सुश्रु०। सम०—संभवम् पिप्पला-मूल।

शोषण (वि०) (स्त्री०—णी) [शुष्+ल्युट्, स्त्रियां ङीप् च] 1. सूखना, शुष्क करना 2. सुखाना, कृश करना, —णः कामदेव का एक बाण,—णम् 1. सूखना, शुष्क होना 2. चूसना, रसाकर्षण, अवशोषण 3. निःशेषण, क्लांति 4. कृशता, कुम्हलाहट 5. सोंठ।

शोषित (भू० क० कृ०) [शुष्+णिच्+क्त] 1. सुखाया गया 2. कृश हुआ, कुम्हलाया हुआ 3. परिश्रान्त।

शोषिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [शुष्+णिच्+णिनि] सुखाने वाला, कुम्हलाता हुआ, क्षीण होने वाला।

शौकम् [शुक+अण्] तोतों की लार, तोतों का झुण्ड।

शौक्त (वि०) (स्त्री०—क्ती) [शुक्ति+अण्] अम्ल, सिरके का।

शौक्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [शुक्ति+ठक्] 1. मोती से सम्बन्ध रखने वाला 2. खट्टा, सिरके का, तेजाबी।

शौक्तिकेयम्, शौक्तेयम् [शुक्तिका+ढक्, शुक्ति+ढक्] मोती।

शौक्तिकेयः [शुक्तिका+ढक्] एक प्रकार का विष।

शौक्ल्यम् [शुक्ल+ष्यञ्] श्वेतता, सफ़ेदी, स्वच्छता।

शौचम् [शुचेर्भावः अण्] 1. पवित्रता, स्वच्छता—पच० १।१४७ 2. मलत्याग के कारण दूषित व्यक्तित्व का शुद्धीकरण, विशेषतः किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु होने पर (लोक-व्यवहार के अनुसार निश्चित समय पर क्षौरकर्म आदि करा कर) शुद्ध होना 3. स्वच्छ होना, निर्मल होना 4. मलत्याग करना 5. खरापन, ईमानदारी। सम० आचारः, कर्मन् (नपुं०) —कल्पः शुद्धि विषयक संस्कार, कूपः सण्डास, शौचालय।

शौचेयः [शुचि+ढक्] धोबी।

शौट् (भ्वा० पर० शौटति) घमण्डी या अहंकारी होना।

शौटीर (वि०) [शौटेः ईरन्] घमण्डी, अहंकारी, रः 1. शूरवीर, मल्ल, योधा 2. घमण्डी मनुष्य 3. संन्यासी।

शौटीर्यम्, शौण्डीर्यम् [शौटीर (शौण्डीर)+ष्यञ्] घमण्ड, अभिमान, दर्प।

शौडति (भ्वा० पर० शौडति) दे० 'शौट्'।

शौण्ड (वि०) (स्त्री० डी) [शुण्डायां सुरायामभिरतः अण्] 1. शराबी, शराब पीने का शौक़ीन, मद्यप 2. उत्तेजित, मतवाला, नशे में चूर—(आलं०) अनिकृतिनिपुणं ते चेष्टितं मानशौण्ड—वेणी० ५।२१, अभिमान में चूर, घमण्डी 3. कुशल, दक्ष (अधि० के साथ या समास में) अक्षशौण्ड, दानशौण्ड आदि।

शौण्डिकः, शौण्डिन् (पुं०) [शुण्डा सुरा पण्यमस्य ठक्, इनि वा] शराब खींचने वाला, कलाल, शराब विक्रेता, सुराजीवी, —की,—नी कलाली, शराब विक्रेत्री —पयोपि शौण्डिकीहस्ते वारुणीत्यभिधीयते हि० ३।११।

शौण्डिकेयः [शुण्डिका+ढक्] राक्षस।

शौण्डी [शुण्डा करिकरः तदाकारः अस्ति अस्याः—शुण्डा +अण्+ङीप्] गजपिप्पली, बड़ी पीपल।

शौण्डीर (वि०) [शुण्डा गर्वोऽस्ति अस्य—शुण्डा+ईरन् +अण्] 1. घमण्डी, अभिमानी 2. उत्तुङ्ग, उन्नत।

शौद्धोदनिः [शुद्धोदन+इञ्] बुद्ध का विशेषण, शुद्धोदन का पुत्र।

शौद्र (वि०) (स्त्री०—द्री) [शूद्र+अण्] शूद्र सम्बन्धी, —द्रः शूद्रा स्त्री का पुत्र जिसका पिता (तीन वर्णों में से) किसी भी वर्ण का हो—दे० मनु० ९।१६०।

शौनम् [शूना+अण्] क़साईखाने में रक्खा हुआ मांस।

शौनकः [शुनक+अण्] एक महर्षि, ऋग्वेद प्रातिशाख्य तथा अन्य अनेक वैदिक रचनाओं के प्रणेता।

शौनिकः [शूना प्राणिवधस्थानं प्रयोजनमस्य ठक्] 1. क़साई, —छद्मना परिददामि मृत्यवे, शौनिको गृहशकुन्तिकामिव—उत्तर० १।४५ 2. बहेलिया, चिड़ीमार 3. शिकार, आखेट।

शौभः [शोभायै हितम्—शोभा+अण्] 1. देवता, दिव्यता 2. सुपारी का पेड़।

शौभाञ्जनः [शोभाञ्जन+अण्] एक वृक्ष का नाम, दे० 'शोभाञ्जन'।

शौभिकः [शौभं व्योमपुरं शिल्पमस्य—शौभ+ठक्] 1. मदारी, बाजीगर 2. शिकारी, बहेलिया -इति चिन्तयतो हृदये पिकस्य समवायि शौभिकेन शरः —भामि० १।११४।

शौरसेनी [शूरसेन+अण्+ङीप्] एक प्रकार की प्राकृत बोली का नाम।

शौरिः [शूर+इञ्] 1. कृष्ण या विष्णु 2. बलराम 3. शनिग्रह।

शौर्यम् [शूरस्य भावः ष्यञ्] 1. पराक्रम, शूरता, वीरता, —शौर्ये वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलम् —भर्तृ० २।३९, नये च शौर्ये च वसन्ति संपदः—सुभा० 2. सामर्थ्य, शक्ति, ताक़त 3. युद्ध और अतिप्राकृतिक घटनाओं का रंगमंच पर अभिनय करना—तु० 'आरभटी'।

शौल्कः, शौल्किकः [शुल्के तदादानेऽधिकृतः अण्, ठक् वा] चुंगी का अधीक्षक, शुल्काधिकारी।

शौल्वि (ल्बि) कः [शुल्व+ठक्] तांबे के बर्तन बनाने वाला, कसेरा।

शौव (वि०) (स्त्री०—वी) [श्वन्+अण्, टिलोपः] कुत्तों से संबन्ध रखने वाला, कुक्कुरसंबंधी, -**वम्** 1. कुत्तों का झुंड 2. कुत्तों का स्वभाव।

शौव (वि०) आगामी कल संबन्धी।

शौवन (वि०) (स्त्री०—नी) [श्वन्+अण्] 1. कुक्कुर संबन्धी 2. कुत्ते के गुणों से युक्त,—**नम्** 1. कुत्ते का स्वभाव 2. कुत्ते की संतति।

शौवस्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [श्वस्+ठक्, तुट् च] आगामी कल संबन्धी या आगामी कल तक ठहरने वाला, एकदिवसीय, अल्पजीवी।

शौष्कलः [शुष्कल+अण्] 1. मांस विक्रेता 2. मांसभक्षी, **लम्** शुष्क मांस का मूल्य।

श्चुत् दे० नी० 'श्च्युत्'।

श्च्युत् (भ्वा० पर० श्च्योतति) 1. टपकना, रिसना, बहना, चूना,—शि० ८।६३, कि० ५।२९ 2. ढालना, उड़ेलना, फैलाना, बखेरना, नि -, बहना, रिसना, टपकना निश्च्योतन्ते सुतनु कवरीबिन्दवो यावदेते —मा० ८।२।

श्च्यो (श्चो) तः, श्च्यो (श्चो) तनम् [श्च्यु (श्चु) त्+घञ्, ल्युट् वा] रिसना, बहना, स्रवित होना, चूना।

श्मशानम् [श्मानः शयाः शेरतेऽत्र—शी+आनच्, डिच्च, अथवा श्मन् शब्देन शवः प्रोक्तः तस्य शानं शयनम्] शवस्थान, क़ब्रिस्तान, शवदाह स्थान, मरघट—राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः—सुभा०। सम०—**अग्निः** मरघट की आग,—**आलयः** क़ब्रिस्तान, —**गोचर** (वि०) मसान में घूमने वाला—मनु० १०। ३९, —**निवासिन्**, —**वर्तिन्** (पुं०) भूत, —**भाज्**, —**वासिन्** (पुं०) शिव के विशेषण,—**वेश्मन्** (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. भूत-प्रेत, —**वैराग्यम्** क्षणिक विरक्ति, श्मशान भूमि के दर्शन से उत्पन्न अस्थायी संसार त्याग की भावना, —**शूलः**,—**लम्** श्मशान भूमि में स्थित लोहे या लकड़ी की सूली कु० ५।७३, —**साधनम्** भूत-प्रेतों को वश में करने के लिए श्मशान में तांत्रिक मन्त्रों की साधना करना।

श्मश्रु (नपुं०) [श्म पुं० मुखं श्रूयते लक्ष्यतेऽनेन—श्रु+डु] दाढ़ी-मूँछ ज्योतिष्कणाहतश्मश्रु कण्ठनालादपातयत् —रघु० १५।५२। सम०—**प्रवृद्धिः** दाढ़ी का बढ़ना, -रघु० १३।७१, —**मुखी** दाढ़ीमूँछ वाली स्त्री, —**वर्धकः** नाई।

श्मश्रुल (वि०) [श्मश्रु+लच्] दाढ़ी मूंछ वाला, श्मश्रुधारी भल्लापवर्जितैस्तेषां शिरोभिः श्मश्रुलैर्महीं (तस्तार) रघु० ४।६३।

श्मील् (भ्वा० पर० श्मीलति) आँख झपकना, पलक मारना, आँखें मटकाना।

श्मीलनम् [श्मील्+ल्युट्] आँख मीचना, पलक झपकना।

श्यान (भू० क० कृ०) [श्यै+क्त] 1. गया हुआ 2. जमा हुआ, पिंडीभूत 3. घनीभूत, चिपकना, सांद्र 4. सिकुड़ा हुआ, सूखा—भर्तृ० २।४४, —**नम्** धूआं।

श्याम (वि०) [श्यै+मक्] 1. काला, गहरा नीला, काले रंग का प्रत्याख्यातविशेषकं कुरबकं श्यामावदातारुणम्—मालवि० ३।५, विक्रम० २।७ कुवलयदलश्यामस्निग्धः—उत्तर० ४।१९, मेघ० १५, २३ 2. भूरा 3.गहरा-हरा,—**मः** 1. काला रंग 2. बादल 3. कोयल 4. प्रयाग में यमुना के किनारे स्थित बरगद का पेड़ —अयं च कालिन्दीतटे वटः श्यामो नाम—उत्तर० १, सोऽयं वटः श्याम इति प्रतीतः—रघु० १३।५३, —**मम्** 1. समुद्री नमक 2. काली मिर्च। सम० —**अङ्ग** (वि०) काला, (**गः**) बुध ग्रह,—**कण्ठः** 1. शिव (नीलकंठ) का विशेषण 2. मोर,—**कर्णः** अश्वमेघ यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा, **पत्रः** तमाल वृक्ष,

—भास्,—रुचि (वि०) चमकीला काला,—सुन्दरः कृष्ण का विशेषण ।

श्यामल (वि०) [श्याम+लच्, ला+क वा] काला, गहरानीला, सांवला, - निशितश्यामलस्निग्धमुखी शक्तिः—वेणी० ४, शि० १८।३६, उत्तर० २।२५, —लः 1. काला रंग 2. काली मिर्च 3. भौंरा 4. वटवृक्ष ।

श्यामलिका [श्यामल+कन्+टाप्, इत्वम्] नील का पौधा ।

श्यामलिमन् (पुं०) [श्यामल+इमनिच्] कालिमा, कालापन श्यामां श्यामलिमानमानयत भोः सान्द्रैः मषीकूर्चकैः—विद्ध० ३।१ ।

श्यामा [श्याम+टाप्] रात, विशेषतः काली रात, —श्यामां श्यामलिमानमानयत भोः सान्द्रैर्मषीकूर्चकैः —विद्ध० ३।१ 2. छांह, छाया 3. काली स्त्री 4. स्त्री विशेष (नै० ३।८ पर मल्लि० के अनुसार 'यौवनमध्यस्था'—शि० ८।३६, मेघ० ८२, या, शीते सुखोष्णसर्वांगी ग्रीष्मे या सुखशीतला । तप्तकांचनवर्णाभा सा स्त्री श्यामेति कथ्यते—भट्टि० ५।१८ तथा ८।१०० पर एक टीकाकार के अनुसार) 5. निस्सन्तान स्त्री 6. गाय 7. हल्दी 8. मादा कोयल 9. प्रियंगुलता—मालवि० २।७, मेघ० १०४ 10. नील का पौधा 11. तुलसी का पौधा 12. कमल का बीज 13. यमुना नदी 14. कई पौधों का नाम ।

श्यामाकः [श्याम+अक्+अण्] एक प्रकार का अन्न, धान्य, सावां चावल—(न) श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति —श० ४।१३, ('श्यामक' भी) ।

श्यामिका [श्याम+ठन् भावे] 1. कालिमा. श्यामता —कु० ५।२१ 2. मलिनता, खोटापन (धातु आदिकों का).—हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा —रघु० १।१० ।

श्यामित (वि०) [श्याम+इतच्] काला किया हुआ, कृष्ण रंग का किया हुआ. कलूटा ।

श्यालः [श्यै+कालन्] पत्नी का भाई, साला ।

श्यालकः [श्याल+कन्] 1. पत्नी का भाई 2. साला ।

श्यालकी, श्यालिका, श्याली [श्यालक+ङीप्+टाप् इत्वं वा, श्याल+ङीप्] पत्नी की बहन, साली ।

श्याव (वि०) (स्त्री० वा,—वी) [श्यै+वन्] कपिश, गहरा भूरे रंग का, काला, धूसर, धुमैला 2. लाख के रंग का, भूरा, - वः भूरा रंग । सम०—दंतः आम का वृक्ष ।

श्येत (वि०) (स्त्री०—ता,—ना) [श्यै+इतन्] सफेद, —तः श्वेत रंग ।

श्येनः [श्यै+इनन्] 1. सफेद रंग 2. सफेदी 3. बाज, शिकरा 4. हिंसा, प्रचण्डता । सम०—करणम्, —करणिका 1. अलग चिता पर दाह करना 2. बाज की भांति झपट कर शीघ्रता से किसी काम में लगना, —चित्,—जीविन् (पुं०) बाज को पकड़ कर तथा उसे वेच कर जीवन निर्वाह करने वाला ।

श्यै [भ्वा० आ० श्यायते, श्यान, शीत या शीन] 1. जाना, हिलना-जुलना 2. जम जाना 3. सूख जाना, कुम्हलाना, आ—,सूख जाना - रघु० १७।३७, दे० 'आश्यान' भी ।

श्यैनंपाता [श्येनस्य पातोऽत्र अण्, मुम् च] बाज की भांति झपटना, शिकार, आखेट ।

श्योणाकः, श्योनाकः [श्यै+ओणा (ना) क] एक वृक्ष का नाम, सोना पाड़ा ।

श्रङ्क् (भ्वा० आ० श्रङ्कते) जाना, रेंगना ।

श्रङ्ग् (भ्वा० पर० श्रङ्गति) जाना, हिलना-जुलना, रेंगना ।

श्रण् (भ्वा० पर० चुरा० उभ० श्रणति, श्राणयति-ते) देना, प्रदान करना, अर्पण करना (प्रायः वि पूर्वक) —रघु० ५।१ ।

श्रत् (अव्य०) [श्री+डति] एक प्रकार का उपसर्ग जो 'धा' धातु के पूर्व में लगता है, दे० 'धा' के अन्तर्गत ।

श्रथ् i (भ्वा० पर०, क्र्या० पर० श्रथति श्रथ्नाति) चोट पहुंचाना क्षति पहुंचाना, मार डालना ।

ii (भ्वा० पर० पर० चुरा० उभ० श्रथति, श्राथयति-ते) 1. चोट पहुँचाना, मार डालना 2. खोलना, ढीला करना, स्वतन्त्र करना, मुक्त करना ।

iii (चुरा० उभ० श्रथयति-ते) 1. प्रयत्न करना, व्यस्त रहना 2. निर्बल होना, कमजोर होना 3. प्रसन्न होना ।

श्रथनम् [श्रथ्+ल्युट्] 1. मारना, विनाश करना 2. खोलना, ढीला करना, मुक्त करना 3. प्रयत्न, चेष्टा 4. बांधना, बन्धन में डालना ।

श्रद्धा [श्रत्+धा+अङ्+टाप्] 1. आस्था, निष्ठा, विश्वास, भरोसा 2. दैवीसन्देशों में विश्वास, धार्मिक निष्ठा—श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत्समागतम् —श० ७।२९, रघु० २।१६, भग० ६।३७, १७।३ 3. शान्ति, मन की स्वस्थता 4. घनिष्ठता, परिचय 5. आदर, सम्मान 6. प्रबल या उत्कट इच्छा—तथापि वैचित्र्यरहस्यलुब्धाः श्रद्धां विधास्यन्ति सचेतसोऽत्र विक्रम० १।१३, मालवि० ६।१८ 7. दोहद, गर्भवती स्त्री की इच्छा ।

श्रद्धालु (वि०) [श्रद्धा+आलुच्] 1. विश्वास करने वाला, निष्ठावान् 2. इच्छुक, (किसी वस्तु का) अभिलाषी, —लुः (स्त्री०) दोहदवती, गर्भवती स्त्री जो किसी वस्तु की कामना करे ।

श्रन्थ् i (भ्वा० आ० श्रन्थते) 1. दुर्बल होना 2. निढाल या विश्रान्त होना 3. ढीला करना, विश्राम करना ।

ii (क्र्या० पर० श्रथ्नाति) 1. ढीला करना, स्वतन्त्र करना मुक्त करना 2. खूब प्रसन्न होना ।

श्रन्थः [श्रन्थ्+घञ्] 1. ढीला करना, स्वतन्त्र करना 2. ढीलापन, 3. विष्णु।

श्रन्थनम् [श्रथ्+ल्युट्] 1. ढीला करना, खोलना 2. चोट पहुँचाना, मार डालना, विनाश करना 3. बांधना, बन्धन में डालना।

श्रपणम्,—णा [श्रा+णिच्+ल्युट्] उबलवाना, गरम करना।

श्रपित (भू० क० कृ०) [श्रा+णिच्+क्त] गरम किया गया या उबलाया गया,— ता माँड, कांजी।

श्रम् (दिवा० पर० श्राम्यति, श्रान्त) 1. चेष्टा करना, उद्योग करना, मेहनत करना, परिश्रम करना 2. तपश्चर्या करना, (तपस्या के द्वारा) इन्द्रियदमन करना —कियच्चिरं श्राम्यसि गौरि—कु० ५।५० 3. श्रान्त होना, थकना, परिश्रान्त होना—रतिश्रान्ता शेते रजनिरमणी गाढमुरसि—काव्य० १०, शि० १४।३८, भट्टि० १४।११० 4. कष्टग्रस्त होना, दुःखी होना —यो वृन्दानि त्वरयति पथि श्राम्यतां प्रोषितानाम् —मेघ० ९९, प्रेर० (श्र-श्रा-मयति-ते) थकाना, परि—, अत्यन्त थक जाना,—श० १, वि—, 1. विश्राम करना, आराम करना, ठहरना - कु० ३।९ 2. थमना, अन्त होना, दे० 'विश्रान्त' भी - रघु० १।५४, उतरवाना, बसाना।

श्रमः [श्रम्+घञ्, न वृद्धिः] 1. मेहनत, परिश्रम, चेष्टा, प्रयत्न - अलं महीपाल तव श्रमेण—रघु० २।३४, जानाति हि पुनः सम्यक् कविरेव कवेः श्रमम्—सुभा० —रघु० १६।७५, मनु० ९।२०८ 2. थकावट, थकान, परिश्रान्ति,— विनयन्ते स्म तद्योधा मधुभिर्विजयश्रमम् —रघु० ४।३५, ६७, मेघ० १७।५२, कि० ५।२८ 3. कष्ट, दुःख 4. तपस्या, साधना, इन्द्रियदमन,—दिवं यदि प्रार्थयसे वृथा श्रमः - कु० ५।४५ 5. व्यायाम, विशेषतः सैनिक व्यायाम, क़वायद 6. घोर अध्ययन। सम०— अम्बु (नपुं०)—जलम् पसीना,— कर्षित (वि०) थका-मांदा,—साध्य (वि०) परिश्रम द्वारा सम्पन्न होने योग्य, कष्टसाध्य।

श्रमण (वि०) (स्त्री०—णा,-णी) [श्रम्+युच्] 1. परिश्रमी, मेहनती 2. नीच, अधम, कमीना,—णः 1. संन्यासी, भक्त, साधु 2. बौद्धभिक्षु, णा, णी 1. भक्तिनी, भिक्षुणी 2. लावण्यमयी स्त्री 3. नीच जाति की स्त्री 4. बंगाली मजीठ 5. जटामांसी, बालछड़।

श्रम्भ् (भ्वा० आ० श्रम्भते, श्रब्ध) 1. उपेक्षक होना, असावधान होना, लापरवाह होना 2. गलती करना, वि—, विश्वास करना, भरोसा करना—दे० 'विश्रब्ध'।

श्रयः, श्रयणम् [श्रि+अच्, ल्युट् वा] शरण, पनाह, बचाव, आश्रय।

श्रवः [श्रु+अप्] 1. सुनना, जैसा कि 'सुखश्राव' में 2. कान 3. किसी त्रिकोण का कर्ण।

श्रवणः,—णम् [श्रु+ल्युट्] 1. कान—ध्वनति मधुप समूहे श्रवणमपि दधाति—गीत० ५ 2. किसी त्रिकोण का कर्ण, णः,—णा इस नाम का नक्षत्र (जिसमें तीन तारे सम्मिलित है), णम् 1. सुनने की क्रिया,—श्रवणसुभगम् - मेघ० ११ 2. अध्ययन 3. ख्याति, कीर्ति 4. जो सुना गया या प्रकट हुआ,— वेद, इति श्रवणात् 'वैदिक पाठ ऐसा होने के कारण' 5. दौलत। सम० - इन्द्रियम् श्रोत्रेन्द्रिय, कान,—उदरम् कान का बाह्य-विवर,- गोचर (वि०) श्रवणपरास के अन्तर्गत (रः) सुनाई देने की सीमा तक, यथा 'श्रवणगोचरे तिष्ठ, अर्थात् जहाँ तक सुनाई देता रहो वहीं तक रहो,—पथः, विषयः कान की पहुँच, श्रवण परास - वृत्तान्तेन श्रवणविषयप्रापिणा - रघु० १४।८७,—पालिः—ली (स्त्री०) कान का सिरा,—सुभग (वि०) कर्ण-सुखद।

श्रवस् (नपुं०) [श्रु+असि] 1. कान 2. ख्याति कीर्ति, 3. दौलत 4. सूक्त।

श्रवस्यम् [श्रवस्+यत्] ख्याति, कीर्ति, विश्रुति।

श्रवाय्यः,—य्यः [श्रु+आय्य] यज्ञ में बलि दिये जाने के योग्य पशु।

श्रविष्ठा [श्रवः ख्यातिः अस्ति अस्याः श्रव+मतुप्, इष्ठनि मतुबो लुक्] 1. धनिष्ठा नाम का नक्षत्र 2. श्रवणा नाम का नक्षत्र। सम० जः बुधग्रह।

श्रा (अदा० पर० श्राति, श्राण या शृत, प्रेर० श्रपयति—ते) पकाना, उबालना, भोजन बनाना, परिपक्व करना, पकना।

श्राण (वि०) [श्रा+क्त] 1. पकाया हुआ, भोजन बनाया हुआ, उबाला हुआ 2. आर्द्र, गीला, तर।

श्राणा [श्राण+टाप्] कांजी, यवागू।

श्राद्ध (वि०) [श्रद्धा हेतुत्वेनास्त्यस्य अण्] निष्ठावान्, विश्वास करने वाला,—द्धम् 1. मृतक सम्बन्धियों की दिवङ्गत आत्माओं के सम्मान में अनुष्ठेय संस्कार, अन्त्येष्टि संस्कार—श्रद्धया दीयते यस्मात्तस्माच्छ्राद्धं निगद्यते; यह तीन प्रकार का है— नित्य, नैमित्तिक और काम्य 2. और्ध्वदैहिक आहुति, श्राद्ध के अवसर पर उपहार या भेंट। सम०— कर्मन् (नपुं०)—क्रिया अन्त्येष्टि संस्कार, कृत् (पुं०) अन्त्येष्टि संस्कार करने वाला, - दः अन्त्येष्टि आहुति या श्राद्ध भेंट करने वाला - दिनः,—नम् उस स्वर्गीय सम्बन्धी की बरसी जिसके सम्मान में श्राद्ध किया जाय,—देवः, —देवता 1. अन्त्येष्टि संस्कार की अधिष्ठात्री देवता 2. यम का विशेषण 3. विश्वदेव दे० 4. पिता, प्रजनक, भुज्,— भोक्तृ (पुं०) दिवङ्गत, पूर्व पुरुष।

श्राद्धिक (वि०) (स्त्री०—की) [श्राद्धेयं, श्राद्धं तद्द्रव्यं भक्ष्यत्वेनास्त्यस्य वा ठन्] श्राद्ध सम्बन्धी और्ध्व दैहिक

भेंट को स्वीकार करने वाला,— कम् श्राद्ध के अवसर पर दिया गया उपहार।

श्राद्धीय (वि०) [श्राद्ध+छ] श्राद्ध सम्बन्धी।

श्रान्त (भू० क० कृ०) [श्रम्+क्त] 1. थका हुआ, थका-मांदा, क्लान्त, परिश्रांत 2. शान्त, सौम्य,— तः संन्यासी।

श्रान्तिः (स्त्री०) [श्रम्+क्तिन्] क्लान्ति, परिश्रान्ति, थकावट।

श्रामः [श्राम्+अच्] 1. मास 2. समय 3. अस्थायी छाजन।

श्रायः [श्रि+घञ्] आश्रय, बचाव, शरण, सहारा।

श्रावः [श्रु+घञ्] सुनना, कान देना।

श्रावकः [श्रु+ण्वुल्] 1. श्रोता 2. छात्र, शिष्य—श्रावकावस्थायाम्—मा० १०, अर्थात् छात्रावस्था में 3. बौद्ध-भिक्षु, बौद्ध सन्त, महात्मा 4. बौद्ध भक्त 5. पाखण्डी, 6. कौवा।

श्रावण (वि०) (स्त्री०—णी) [श्रवण+अण्] 1. कान सम्बन्धी 2. श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न,—णः सावन का महीना, (जूलाई—अगस्त में आने वाला) 2. पाखण्डी 3. छद्मवेशी 4. एक वैश्य संन्यासी जिसको दशरथ ने बन जाने मार डाला, बाद में उसके माता-पिता ने दशरथ को शाप दिया कि वह अपने पुत्रों के वियोग से दुःखी हृदय होकर मरेगा।

श्रावणिक (वि०) [श्रावण+ठक्] श्रावण मास सम्बन्धी, —कः सावन का महीना।

श्रावणी [श्रवणेन नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी —श्रवण+अण्+ङीप्] 1. श्रावण मास की पूर्णिमा 2 एक वार्षिक पर्व जिस दिन यज्ञोपवीत बदले जायें, सलोनों, रक्षाबन्धन।

श्रावस्तिः,—स्ती (स्त्री०) गंगा नदी के उत्तर में राजा श्रावस्त द्वारा स्थापित एक नगर।

श्रावित (वि०) [श्रु+णिच्+क्त] कहा हुआ, सुनाया गया, वर्णन किया गया।

श्राव्य (वि०) [श्रु+णिच्+यत्] 1. सुने जाने के योग्य (विप० दृश्य) 2. जो सुना जा सके, स्पष्ट।

श्रि (भ्वा० उभ० श्रयति—ते, श्रितः, प्रेर० श्राययति —ते, इच्छा० शिश्रीषति—ते, शिश्रयिषति—ते) जाना, पहुँचना, सहारा लेना, दौड़ होना, बचाव के लिए पहुँच होना,—यं देशं श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम्—हि० १।१७१, रघु० ३।७०, १९।१ 2. जाना, पहुँचना, भुगतना, (अवस्था) धारण करना—परीता रक्षोभिः श्रयति विवशा कामपि दशाम्—भामि० १।८३, द्विपेन्द्रभावं कलभः श्रयन्निव—रघु० ३।३२ 3. चिपकना, झुकना, आश्रित होना, निर्भर रहना—उत्तर० १।३२ 4. निवास करना, बसना 5. सम्मान करना, सेवा करना, पूजा करना 6. सेवन करना काम पर लगाना, 7. संलग्न करना, अनुरक्त होना। अधि—, 1. निवास करना 2. सवारी करना, चढ़ना, आ—, 1. सहारा लेना, आश्रय लेना, अवलम्ब होना, विक्रम० ५।१७, भट्टि० १४।१११ 2. अनुगमन करना—रघु० ४।३५ 3. शरण लेना, निवास करना, बसना—रघु० १३।७, पंच० १।५१ 4. आश्रित होना,—मनु० ३।७७ 5. पार जाना, अनुभव प्राप्त करना, भुगतना, धारण करना एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान्—उत्तर० ३।४७ 6. जमे रहना, डटे रहना 7. चुनना, छांटना, पसन्द करना 8. सहायता करना, मदद करना, उद्—, ऊपर उठाना, उन्नत करना, ऊँचा करना, उपा—, पहुँच या अवलम्ब होना,—भग० १४।२, उत्तर० १।३७, सम्—, 1. पहुँच होना, सहारा होना, शरण में जाना, सहायता के लिए पहुँचना 2. अवलम्बित होना, आश्रित होना —उत्तर० ६।१२, मा० १।२४ 3. हासिल करना, प्राप्त करना 4. अभिगमन करना, संभोग के लिए पहुँचना 5. सेवा करना।

श्रित (भू० क० कृ०) [श्रि+क्त] 1. गया हुआ, पहुँचा हुआ, शरण में पहुँचा हुआ 2. चिपका हुआ, सहारा लिया हुआ, बैठा हुआ 3. संयुक्त, सम्मिलित, संबद्ध 4. बचाया हुआ 5. सम्मानित, सेवित 6. अनुसेवी, सहकारी 7 आच्छादित, बिछाया हुआ 8. युक्त, पूरित ९. समवेत, एकत्रित 10. सहित, संपन्न।

श्रितिः (स्त्री०) [श्रि+क्तिन्] अवलम्ब, सहारा, पहुँच।

श्रियंमन्य (वि०) 1. अपने आप को योग्य मानने वाला 2. घमंडी।

श्रियापतिः (पुं०) शिव का विशेषण।

श्रिष् (भ्वा० पर० श्रषति) जलाना।

श्री (क्र्या० उभ० श्रीणाति, श्रीणीते) पकाना, भोजन बनाना, उबालना, तैयार करना।

श्री (स्त्री०) [श्रि+क्विप्, नि०] 1. धन, दौलत, प्राचुर्य, समृद्धि, पुष्कलता अनिर्वेदः श्रियो मूलम् —रामा०, साहसे श्रीः प्रतिवसति—मृच्छ० ४, 'सौभाग्य वीरों पर अनुग्रह करता है'—मनु० ९।३०० 2. राजसत्ता, ऐश्वर्य, राजकीय धनदौलत—कि० १।१ 3. गौरव महिमा, प्रतिष्ठा—श्रीलक्षण कु० ७।४६, अर्थात् महिमा या गौरव का चिह्न 4. सौन्दर्य, चारुता, लालित्य, कान्ति (मुखं) कमलश्रियं दधौ—कु० ५।२१, ७।३२, रघु० ३।८, कि० १।७५ 5. रंग, रूप, कु० २।२ 6. विष्णु की पत्नी लक्ष्मी जो धन की देवी है,—आसीदियं दशरथस्य गृहे यथा श्रीः—उत्तर०

४।६, श० ३।१४, शि० ११।१ 7. गुण, श्रेष्ठता 8. सजावट 9. बुद्धि, समझ 10. अतिमानव शक्ति 11. मानवजीवन के तीन उद्देश्यों की समष्टि (धर्म, अर्थ, और काम) 12. सरल वृक्ष 13. बेल का पेड़ 14. हींग 15. कमल ('श्री' शब्द सम्मान सूचक पद है जो पूज्य व्यक्तियों तथा देवों के नामों के पूर्व लगाया जाता है—श्रीकृष्णः श्रीरामः, श्री वाल्मीकिः, श्रीजयदेवः, कुछ प्रसिद्ध ग्रन्थों के पूर्व भी जिनका विषय धार्मिक है—श्रीभागवत, श्रीरामायण आदि, किसी पाण्डुलिपि या पत्रादिक के आरम्भ में भी मंगलाचरण के रूप में प्रयुक्त होता है; माघ ने अपने 'शिशुपालवध' काव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में इस शब्द का प्रयोग किया है, जिस प्रकार भारवि ने 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया है)। सम० —आह्वम् कमल,—ईशः विष्णु का विशेषण —कण्ठः 1. शिव का विशेषण 2. भवभूति कवि का विशेषण—श्रीकण्ठपदलाञ्छनः—उत्तर० १, सखः कुबेर का विशेषण,—करः विष्णु का विशेषण (—रम्) लाल कमल, करणम् लेखनी, —कान्तः विष्णु का विशेषण, —कारिन् (पुं०) एक प्रकार का बारहसिंगा, —खण्डः,—डम् चन्दन की लकड़ी श्रीखण्डविलेपनं सुखयति—हि० १।९७, —गदितम् एक प्रकार का छोटा नाटक,—गर्भः 1. विष्णु का विशेषण 2. तलवार, —ग्रहः पक्षियों को पानी पिलाने की कुण्डी, घनम् खट्टी दही, (नः) बौद्ध महात्मा,—चक्रम् 1. भूवृत्त, भूमण्डल 2. इन्द्र के रथ का पहिया, जः काम का विशेषण,—दः कुबेर का विशेषण, दयितः,—धरः विष्णु के विशेषण, नगरम् एक नगर का नाम —नन्दनः राम का विशेषण,—निकेतनः,—निवासः विष्णु के विशेषण,—पतिः 1. विष्णु का विशेषण शि० १३।६९ 2. राजा, प्रभु,—पथः मुख्य सड़क, राजमार्ग, पर्णम् कमल,—पर्वतः एक पहाड़ का नाम —मा० १, पिष्टः तारपीन, पुष्पम् लौंग, फलः बेल का पेड़ (लम्) बेल का फल,—फला,—फली 1. नील का पौधा 2. आमलकी, आँवला,—भ्रातृ (पुं०) 1. चाँद 2. घोड़ा, मस्तकः लहसुन, मुद्रा वैष्णवों का विशेष तिलक जो मस्तक पर लगाया जाता है,—मूर्तिः (स्त्री०) 1. विष्णु या लक्ष्मी की प्रतिमा 2. कोई भी प्रतिमा,—युक्त,—युत,—, 1. सौभाग्यशाली, प्रसन्न 2. धनवान्, समृद्धिशाली (प्रायः पुरुषों के नामों के पूर्व लगाया जाने वाला सम्मान सूचक पद,—रङ्गः विष्णु का विशेषण,—रसः 1. तारपीन 2, राल,—वत्सः 1. विष्णु का विशेषण, विष्णु की छाती पर बालों का घूंघर या चिह्नविशेष—प्रभानुलिप्तश्रीवत्सं लक्ष्मीविभ्रमदर्पणम् रघु० १०।१०, °अङ्कः °धारिन्, °भृत्, °लक्ष्मन्, °लाञ्छन, (पुं०) विष्णु के विशेषण कु० ७।४३, वत्सकिन् (पुं०) एक घोड़ा जिसकी छाती पर बालों का घूंघर होता है,—वरः, वल्लभः विष्णु के विशेषण,—वल्लभः लक्ष्मी का प्रिय, सौभाग्यशाली या सुखी व्यक्ति, —वासः 1. विष्णु का विशेषण 2. शिव का विशेषण 3. कमल 4. तारपीन,—वासस् (पुं०) तारपीन, वृक्षः 1. बेल का पेड़ 2. अश्वत्थवृक्ष 3. घोड़े के मस्तक और छाती पर बालों का घूंघर, वेष्टः 1. तारपीन 2. राल, संज्ञम् लौंग, सहोदरः चन्द्रमा, —सूक्तम् एक वैदिक सूक्त का नाम, हरिः विष्णु का विशेषण, हस्तिनी सूर्यमुखी फूल का पौधा।

श्रीमत् (वि०) [श्री+मतुप्] 1. दौलतमन्द, धनवान् 2. सुखी, सौभाग्यशाली, समृद्धिशाली, फलता-फूलता 3. सुन्दर, सुहावना, सुखद कि० १।१ 4. विख्यात, प्रसिद्ध, कीर्तिशाली, प्रतिष्ठित (प्रसिद्ध और सम्मानित पुरुष या वस्तुओं के नामों के पूर्व आदरसूचक शब्द (पुं०) विष्णु का विशेषण 2. कुबेर का विशेषण 3. शिव का विशेषण 4. तिलक वृक्ष 5. अश्वत्थवृक्ष।

श्रील (वि०) [श्रीः अस्ति अस्य लच्] 1. धनवान्, दौलतमन्द 2. सौभाग्यशाली, समृद्धिशाली 3. सुन्दर 4. विख्यात, प्रसिद्ध।

श्रु i (भ्वा० पर० श्रवति) जाना, हिलना, जुलना—नु० 'स्रु'। ii (स्वा० पर० शृणोति, श्रुत) 1. सुनना, (ध्यानपूर्वक) श्रवण करना, कान देना शृणु मे सावधेयं वचः विक्रम० २, रुतानि चाश्रोषत षट्पदानाम्—भट्टि० २।१०, संदेशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि, श्रोत्रपेयम्—मेघ० १३ 2. अधिगम करना, अध्ययन करना—द्वादशवर्षैभिर्व्याकरणं श्रूयते—पंच० १ 3. सावधान होना, आज्ञा मानना (इतिश्रूयते—(ऐसा सुना जाता है अर्थात् वेदों में इसका विधान है, ऐसा धर्मविधि), प्रेर० (श्रावयति—ते) सुनवाना, समाचार देना, कहना बयान करना —इच्छा० (शुश्रूषते) 1. सुनने की इच्छा करना 2. सावधान होना, आज्ञाकारी होना, हुक्म मानना पंच० ४।७८ 3. सेवा करना, सेवा में उपस्थित रहना—शुश्रूषस्व गुरून्—श० ४।१७, कु० १।५९, मनु० २।४४, अनु—, 1. सुनना मनु० ९।१००, तद्यथानुश्रूयते—पंच० १ 2. गुरुपरम्परा से प्राप्त, अभि—, 1. सुनना 2. ध्यान देकर सुनना, आ—, 1. सुनना 2. प्रतिज्ञा करना (व्यक्ति में संप्र०)—याज्ञ० २।१९६, तु० पा० १।४।४०, उप—, 1. सुनना 2. जाना, निश्चय करना—केशिना हृतामुर्वशीं नारदादुपश्रुत्य गन्धर्वसेना समादिष्टा विक्रम० १, परि—, सुनना, प्रति—, प्रतिज्ञा करना (उस व्यक्ति में संप्र० जिसके

लिए प्रतिज्ञा की जाय—तस्यै प्रतिश्रुत्य रघुप्रवीरस्त-दीप्सितम्—रघु० १४।२९, २।५६, ३।६७ १५।४, वि - ,सुनना (प्रायः क्तांत रूप प्रयुक्त), सम्—सुनना, ध्यान लगा कर सुनना—संश्रृणोति न चोक्तानि —भट्टि० ५।१९, ६।५, (परन्तु अकर्मक प्रयोग में आ०)—हितान्न यः संश्रृणुते स किं प्रभुः—कि०१।५।

श्रुक्तिका (स्त्री०) शोरा, सज्जी, खार।

श्रुत (भू० क० कृ०) [श्रु+क्त] 1. सुना हुआ, ध्यान लगा कर श्रवण किया हुआ 2. वर्णित, कर्णगोचर 3. अधिगत, निर्धारित, समझा गया 4. सुज्ञात, प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत - रघु० ३।४०, १४।६१ 5. नामक, पुकारा हुआ, तम् 1. सुनने का विषय 2. जो दैवी संदेश से सुना गया, अर्थात् वेद, पवित्र अधिगम, पुनीत ज्ञान—श्रुतप्रकाशम् - रघु० ५।२ 3. सामान्य अधिगम, विद्या,—श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन (विभाति) भर्तृ० २।७१, रघु० ३।२१, ५।२२, पंच० २।१४७, ४।६१। सम० अध्ययनम् वेदों का पढ़ना,—अन्वित (वि०) वेदों का ज्ञाता- अर्थः मौखिक रूप से या जबानी कहा गया तथ्य,—कीर्ति (वि०) प्रसिद्ध, विश्रुत, (पुं०) 1. उदार व्यक्ति 2. दिव्य ऋषि (स्त्री०) शत्रुघ्न की पत्नी,—देवी सरस्वती,—धर (वि०) सुनी हुई बात को याद रखने वाला, मेधावी।

श्रुतवत् (वि०) [श्रुत+मतुप्] वेदज्ञाता, वेदवेत्ता, वेदज्ञ, —रघु० ९।७४।

श्रुतिः (स्त्री०) [श्रु+क्तिन्] 1. सुनना चन्द्रस्य ग्रहणमिति श्रुतेः—मुद्रा० १।७, रघु० १।२७ 2. कान,—श्रुतिसुखभ्रमरस्वनगीतयः—रघु० ९।३५, श० १।१, वेणी० ३।२३ 3. विवरण, अफ़वाह, समाचार, मौखिक संवाद 4. ध्वनि 5. वेद (दिव्य संदेश होने के कारण-विप० स्मृति—दे० 'वेद' के अन्तर्गत) 6. वैदिकपाठ वेदमंत्र,—इतिश्रुतेः या इति श्रुतिः 'ऐसा वेद कहता है' 7. वेदज्ञान, पुनीतज्ञान, पुण्य अधिगम 8. (संगीत में) सप्तक का प्रभाग, स्वर का चतुर्थांश या अन्तराल —शि० १।१०, ११।१, (दे० तत्स्थानीय मल्लि०) 9. श्रवण नक्षत्र। सम०—अनुप्रासः अनुप्रास का एक भेद—दे० काव्य० ९,—उक्त,—उदित (वि०) वेदविहित,—कटः 1. साँप 2. तपश्चर्या, प्रायश्चित्त साधना, —कटु (वि०) सुनने में कड़वा (टुः) कर्णकटु, अमधुर ध्वनि, (यह रचना का एक दोष माना जाता है), —चोदनम्,—ना शास्त्रीय विधि, वेदविधि,—जीविका धर्मशास्त्र, विधिसंहिता,—द्वैधम् वेदविधियों का परस्पर विरोध या निष्क्रमता,—धर (वि०) सुनने वाला, निदर्शनम् वेदों का साक्ष्य,—पथः कर्ण-परास —मालती० ४।१,—प्रसादन (वि०) कर्णप्रिय,—प्रामाण्यम् वेदों की प्रामाणिकता या स्वीकृति,- मण्डलम् कान का बाहरी भाग,—मूलम् 1. कान की जड़,—लपितुं किमपि श्रुतिमूले - गीत० १ 2. वेद का संहितापाठ, —मूलक (वि०) वेद पर आधारित,—विषयः 1. सुनने का विषय, अर्थात् ध्वनि—श० १।१ 2. कर्ण परास —एतत्प्रायेण श्रुतिविषयमापतितमेव—का० 3. वेद का विषय 4. धार्मिक अध्यादेश,—वेधः कान बींधना, —स्मृति (स्त्री०) (द्वि० व०) वेद और धर्मशास्त्र।

श्रुवः [श्रु+क] 1. यज्ञ 2. यज्ञीय स्रुवा।

श्रुवा [श्रुव+टाप्] 1. यज्ञीय चमस, तु० स्रुवा। सम० —वृक्षः विकंटक वृक्ष।

श्रेढी [श्रेण्यं राशीकरणाय ढौकते—श्रेणी+ढौक्+ड, पृषो०] (गणि० में) भिन्न जातीय द्रव्यों को मिलाने के लिए गणनांग भेद। सम०—फल श्रेढ़ी का योग जोड़।

श्रेणि (पुं०, स्त्री०) **श्रेणी** (स्त्री०) [श्रि+णि, वा ङीप्] 1. रेखा, शृंखला, पंक्ति,—तरङ्गभ्रूभङ्गा क्षुभितविहग-श्रेणिरसना—वेणी० ४।२८, न षट्पदश्रेणिभिरेव पङ्कजं सशैवलासङ्गमपि प्रकाशते—कु० ५।९, मेघ० २८, ३५ 2. दल, संचय, समूह—उत्तर० ४ 3. व्यापारियों का संघ, शिल्पियों का संघटन, निगम 4. बोक्का, बालटी। सम० - धर्माः (पुं०, ब० व०) व्यापारिवर्ग या शिल्पकार-संघों के नियम, रीतियाँ आदि।

श्रेणिका [श्रेणि+कन्+टाप्] तम्बू, खेमा।

श्रेयस् (वि०) [अतिशयेन प्रशस्यम्—ईयसुन्, श्रादेशः] 1. अपेक्षाकृत अच्छा, वरीयस्, श्रेष्ठतर,—वर्धनाद्रक्षणं श्रेयः—हि० ३।३, भग० ३।३५, २।५ 2. सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम 3. अधिक सुखी या सौभाग्यशाली 4. अधिक आनन्ददायक, प्रियतर (पुं०) 1. सद्गुण, पुण्यकर्म, नैतिक गुण, धार्मिक गुण 2. आनन्द, सौभाग्य, मंगल, शुभ, कल्याण, आशीर्वाद, शुभ परिणाम—पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखं हि परिवर्तते श० ७।१३, प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः—रघु० १।७९, उत्तर० ५।२७, ७।२०, रघु० ५।३४ 3. शुभ अवसर श० ७ 4. मोक्ष, मुक्ति। सम —अर्थिन् (वि०) 1. आनन्द का अन्वेषक, आनन्द या इच्छुक 2. हितैषी, —कर 1. आनन्दप्रद, अनुकूल 2. मंगलमय, शुभ, परिश्रमः मुक्ति प्राप्त करने की चेष्टा।

श्रेष्ठ (वि०) [अतिशयेन प्रशस्यः, इष्ठन्, श्रादेशः] 1. सर्वोत्तम, अत्यन्त श्रेष्ठ, प्रमुखतम (संबं० या अधि० के साथ) 2. अत्यन्त प्रसन्न या समृद्ध 3. प्रियतम, अत्यन्त प्रिय 4. सबसे अधिक पुराना, वृद्धतम, —ष्ठः 1. ब्राह्मण 2. राजा 3. कुबेर का नाम 4. विष्णु का नाम, ष्ठम् गाय का दूध। सम०—आश्रमः 1. मनुष्य के धार्मिक जीवन का सर्वोत्तम आश्रम अर्थात् गृहस्थाश्रम 2. गृहस्थ,—वाच् (वि०) वाग्मी।

श्रेष्ठिन् (वि०) [श्रेष्ठं धनादिकमस्त्यस्य इनि] किसी व्यापारसंघ या शिल्पिसंस्थान का प्रधान या अध्यक्ष—निक्षेपे पतिते हर्म्ये श्रेष्ठी स्तौति स्वदेवताम्—पंच० १।१४।

श्रै (भ्वा० पर० श्रायति) 1. स्वेद आना, पसीना निकलना 2. पकाना, उबालना।

श्रोण् (भ्वा० पर० श्रोणति) 1. एकत्र करना, ढेर लगाना 2. एकत्र होना, संचित होना।

श्रोण (वि०) [श्रोण्+अच्] विकलांग, लंगड़ा,—**णः** एक प्रकार का रोग।

श्रोणा [श्रोण+टाप्] 1. कांजी 2. श्रवण नक्षत्र।

श्रोणिः,—णी (स्त्री०) [श्रोण्+इन् वा ङीप्] 1. कूल्हा, नितम्ब, चूतड़—श्रोणीभारादलसगमना—मेघ० ८२, श्रोणीभारस्त्यजति तनुताम्—काव्य० १० 2. सड़क, मार्ग। सम०—**तटः** कूल्हों की ढलान,—**फलकम्** 1. विशाल कूल्हे 2. नितम्ब,—**बिम्बम्** 1. गोल कूल्हे—विक्रम० ४।१८ 2. कमर-पट्टा, **सूत्रम्**—1. मेखला 2. कमर से लटकती हुई तलवार का बन्धन।

श्रोतस् (नपुं०) [श्रु+असुन् तुट् च] 1. कान 2. हाथी की सूँड 3. ज्ञानेन्द्रिय 4. सरिता, प्रवाह ('स्रोतस्' के स्थान पर)। सम०—**रन्ध्रम्** सूँड का विवर, नथुना—मेघ० ४२, ('स्रोतोरन्ध्र' भी लिखा जाता है)।

श्रोतृ (पुं०) [श्रु+तृच्] 1. सुनने वाला 2. छात्र।

श्रोत्रम् [श्रूयतेऽनेन—श्रु करणे+ष्ट्रन्] 1. कान—भर्तृ० २।७१ 2. वेदों में प्रवीणता 3. वेद। सम० **पेय** (वि०) कान से ग्रहण करने के योग्य, ध्यानपूर्वक सुनने के योग्य—संदेशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम्—मेघ० १३,—**मूलम्** कान की जड़।

श्रोत्रिय (वि०) [छन्दो वेदमधीते वेत्ति वा—छन्दस्+घ, श्रोत्रादेशः] 1. वेद में प्रवीण या अभिज्ञ 2. शिष्य, अनुशासित होने के योग्य,—**यः** विद्वान् ब्राह्मण, धर्मज्ञान में सुविज्ञ—जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते। विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते—मा० १।५, रघु० १६।२५। सम०—**स्वम्** विद्वान् ब्राह्मण की संपत्ति।

श्रौत (वि०) (स्त्री०—**ती**) [श्रुतौ विहितम् अण्] 1, कान से संबंध रखने वाला 2. वेदसंबंधी, वेद पर आधारित, वेदविहित,—**तम्** 1. वेदविहित कोई भी कर्म या अनुष्ठान 2. वेदप्रतिपादित कर्मकाण्ड 3. यज्ञाग्नि को संधारण करना 4. तीनों यज्ञाग्नियों की समष्टि (अर्थात् गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण)। सम०—**कर्मन्** (नपुं०) वैदिक कृत्य,—**सूत्रम्** वेद पर आधारित सूत्रग्रन्थों का संग्रह (आश्वलायन, सांख्यायन और कात्यायन आदि के नाम से अभिहित)।

श्रौत्रम् [श्रोत्र+(स्वार्थे) अण्] 1. कान 2. वेदों में प्रवीणता।

श्रौषट् (अव्य०) [श्रु+डौषट्] [illegible] को उद्देश्य करके यज्ञाग्नि में आहुति देते समय उच्चारित होने (बोला जाने) वाला अव्यय, (तु० वषट् या वौषट्)।

श्लक्ष्ण (वि०) [श्लिष्+क्स्न, नि०] 1. कोमल, मृदु, सौम्य, स्निग्ध (शब्द आदि) 2. चिकना, चमकदार, शि० ३।४६ 3. स्वल्प, सूक्ष्म, पतला, सुकुमार 4. सुन्दर, लावण्यमय 5. निश्छल, ईमानदार, खरा।

श्लक्ष्णकम् [श्लक्ष्ण+कन्] सुपारी, पूगीफल।

श्लङ्क् (भ्वा० आ० श्लङ्कते) जाना, हिलना-जुलना।

श्लङ्ग् (भ्वा० आ० श्लङ्गते) जाना, हिलना-जुलना।

श्लथ् (चुरा० उभ० श्लथयति—ते) 1. शिथिल या ढीला-ढाला होना 2. दुर्बल या बलहीन होना 3. शिथिल होना, ढीला होना, विश्राम करना (आलं० भी) श्लथयितुं क्षणमक्षमताङ्गना न सहसा सहसा कृतवेपथुः—शि० ६।५७, परित्राणस्नेहः श्लथयितुमशक्यः खलु यया—गंगा० ३७ 4. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना।

श्लथ (वि०) [श्लथ्+अच्] 1. बिना बँधा, बिना जकड़ा 2. शिथिल, विश्रांत, खुला हुआ, फिसला हुआ—वृन्ताच्छ्लथं हरति पुष्पमनोकहानाम्—रघु० ५। ३७, १९।२६ 3. बिखरे हुए (जैसे बाल)। सम०—**उद्यम** (वि०) जिसने अपने प्रयत्न ढीले कर दिये हों,—**लम्बिन्** (वि०) ढीला-ढाला, नीचे लटकता हुआ,—कु० ५।४७।

श्लाख् (भ्वा० पर० श्लाखति) व्याप्त होना, प्रविष्ट होना।

श्लाघ् (भ्वा० आ० श्लाघते) प्रशंसा करना, स्तुति करना, सराहना, गुणगान करना शिरसा श्लाघते पूर्वं (गुणं) परं (दोषं) कण्ठे नियच्छति—सुभा०, यथैव श्लाघ्यते गङ्गा पादेन परमेष्ठिनः—कु० ६।७० (कुछ लोग यहाँ 'श्लाघ्यते' के स्थान पर 'श्लाघते' पाठ समझते हैं, और अगला अर्थ घटाते हैं) 2. शेखी बघारना, घमंड करना,—श्लाघिष्ये केन को न्वभून्नेष्यत्युन्नतिमुन्नतः—भट्टि० १६।४ 3. खुशामद करना, फुसलाकर काम निकालना (संप्र० के साथ)—गोपी कृष्णाय श्लाघते—सिद्धा०, भट्टि० ८।७३।

श्लाघनम् [श्लाघ्+ल्युट्] 1. प्रशंसा करना, स्तुति करना 2. खुशामद करना।

श्लाघा [श्लाघ्+अ+टाप्] 1. प्रशंसा, स्तुति, सराहना,—कर्ण-जयद्रथयोर्वा कात्र श्लाघा—वेणी० २ 2. आत्म-प्रशंसा, शेखी बघारना—हते जरति गाङ्गेये पुरस्कृत्य शिखण्डिनम्, या श्लाघा पाण्डुपुत्राणां सैवास्माकं भविष्यति—वेणी० २।४ 3. खुशामद 4. सेवा 5. कामना, इच्छा। सम०—**विपर्ययः** डींग मारने का अभाव,—त्यागे श्लाघा विपर्ययः—रघु० १।२२।

श्लाघित (भू० क० कृ०) [श्लाघ्+क्त] प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया, सराहा गया ।

श्लाघ्य (वि०) [श्लाघ्+ण्यत्] 1. प्रशंसनीय, योग्य —उत्तर० ४।९, १३ 2. आदरणीय, श्रद्धेय ।

श्लिकुः [श्लिष्+कु, पृषो०] 1. कामुक, लंपट 2. दास, आश्रित (नपुं०) नक्षत्र विद्या, फलित ज्योतिष ।

श्लिक्युः [श्लिष्+क्यु, पृषो०] 1. लंपट 2. सेवक ।

श्लिष् i (भ्वा० पर० श्लेषति) जलना ।

ii (दिवा० पर० श्लिष्यति, श्लिष्ट) आलिंगन करना, -श्लिष्यति चुम्बति जलधरकल्पं हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम् गीत० ६ 2. जमे रहना, चिपके रहना, डटे रहना 3. संयुक्त होना, सम्मिलित होना 4. ग्रहण करना, लेना, समझना -नै० ३।६९, आ—, उप—, आलिंगन करना, परिरंभण करना, वि—, 1. वियुक्त होना, दूर होना 2. फट जाना, फट कर उड़ जाना, - भट्टि० १४।६७, (प्रेर०) अलग-अलग करना, मेघ० ७, सम् –, 1. डटे रहना, चिपके रहना 2. सम्मिलित होना, मिलना ।

iii (चुरा० उभ० श्लेषयति–ते) जोड़ना, सम्मिलित करना, मिलाना ।

श्लिषा [श्लिष्+अ+टाप्] 1. आलिंगन 2. चिपकना, जुड़ जाना ।

श्लिष्ट (भू० क० कृ०) [श्लिष्+क्त] 1. आलिंगित 2. चिपका हुआ, जुड़ा हुआ 3. टिका हुआ, झुका हुआ 4. श्लेष से युक्त, दो अर्थों की संभावना से युक्त—अत्र विषमादयः शब्दाः श्लिष्टाः—काव्य० १० ।

श्लिष्टिः (स्त्री०) [श्लिष्+क्तिन्] 1. आलिंगन 2. परिरंभण ।

श्लीपदम् [श्री युक्तं वृत्तियुक्तं पदम् अस्मात्, पृषो०] सूजी हुई टांग या फूला हुआ पैर, फीलपाँव । सम० —प्रभवः आम का पेड़ ।

श्लील (वि०) [श्रीः अस्ति अस्य—लच्, पृषो०] 1. भाग्यशाली, समृद्ध, दे० श्रील, 2. शिष्ट तु० 'अश्लील' ।

श्लेषः [श्लिष्+घञ्] 1. आलिंगन 2. चिपकना, जुड़ना 3. मिलाप, संगम, संपर्क—निरन्तरश्लेषघनाः —का० (यहाँ इसमें अगला अर्थ भी घटित होता है) 4. अनेकार्थ शब्द प्रयोग, एक से अधिक अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों का प्रयोग, द्व्यर्थक, किसी शब्द या वाक्य की दो या दो से अधिक अर्थों की संभाव्यता, (यह एक अलंकार समझा जाता है, कवि इसका बहुत प्रयोग करते हैं, परिभाषा के लिए दे० काव्य० कारिका ८४ तथा ९६)—आश्लेषि न श्लेषकवेर्भवत्याः श्लोकद्वयार्थः सुधिया मया किम्—नै० ३।६९, दे० 'शब्दश्लेष' भी । सम०—अर्थः अनेकार्थ शब्द प्रयोग, द्व्यर्थक शब्द प्रयोग,—भित्तिक (वि०) श्लेष पर टिका हुआ (शा० -आधारित) ।

श्लेष्मकः [श्लेष्मन्+कन्] कफ, बलगम ।

श्लेष्मज (वि०) [श्लेष्मन्+जन्+ड] कफ से उत्पन्न, कफमूलक ।

श्लेष्मन् (पुं०) [श्लिष्+मनिन्] कफ, बलगम, कफ की प्रकृति । सम० -अतिसारः कफविकार से उत्पन्न पेचिश, मरोड़ -ओजस् (नपुं०) कफ की प्रकृति,-घ्ना —घ्नी 1. मल्लिका, एक प्रकार का मोतिया 2. केतकी, केवड़ा ।

श्लेष्मल (वि०) [श्लेष्मन्+लच्] कफ प्रकृति का, बलगमी ।

श्लेष्मातः, श्लेष्मातकः [श्लेष्मन्+अत्+अच्, पक्षे कन् च] एक वृक्ष विशेष, लिसोड़े का पेड़ ।

श्लोक् (भ्वा० आ० श्लोकते) 1. प्रशंसा करना, पद्य रचना करना, छन्दोबद्ध करना 2. अवाप्त करना 3. त्यागना, छोड़ना ।

श्लोकः [श्लोक्+अच्] 1. कवितामय प्रशंसन, स्तुतीकरण 2. स्तोत्र मनु० ७।२६ 3. ख्याति, प्रसिद्धि, विश्रुति, यश, यथा 'पुण्यश्लोक' में 4. प्रशंसा का विषय 5. किंवदन्ती, कहावत 6. पद्य, कविता—रघु० १४।७० 7. अनुष्टुप् छन्द में कोई पद्य या कविता ।

श्लोण् (भ्वा० पर० श्लोणति) एकत्र करना, इकट्ठा करना, बीनना तु० 'श्रोण' ।

श्लोणः [श्लोण्+अच्] लंगड़ा पुरुष, विकलांग ।

श्वङ्क् (भ्वा० आ० श्वङ्कते) जाना, हिलना-जुलना ।

श्वच्, श्वञ्च् (भ्वा० आ० श्वचते, श्वञ्चते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. खुला होना, मुँह बाना, फटना, दरार हो जाना ।

श्वज् (भ्वा० आ० श्वजते) जाना, हिलना-जुलना ।

श्वठ् (चुरा० उभ० श्वठयति ते) 1. निन्दा करना (कुछ के मतानुसार 'श्वठयति') 2. (श्वाठयति—ते) (क) जाना, हिलना-जुलना (ख) अलंकृत करना (ग) समाप्त करना, सम्पन्न करना (कुछ के मतानुसार इन अर्थों में केवल 'श्वठयति') ।

श्वण्ठ् (चुरा० उभ० श्वण्ठयति ते) निन्दा करना ।

श्वन् (पुं०) [श्वि+कनिन्, नि० (कर्तृ० श्वा, श्वानौ, श्वानः कर्म० ब० व० शुनः, स्त्री० शुनी) कुत्ता —श्वा यदि क्रियते राजा स किं नाश्नात्युपानहम् · सुभा० भर्तृ० २।३१, मनु० २।२०१ । सम० —क्रीडिन् (पुं०) शिकारी कुत्तों को पालने वाला, — गणः कुत्तों का झुंड, गणिकः 1. शिकारी, 2. कुत्तों को खिलाने वाला, धूर्तः गीदड़, नरः कमीना आदमी, नीच व्यक्ति, निशम्, निशा वह रात जिसमें कुत्ते भौंकते हों, पच् (पुं०)—पचः 1. अतिनीच और

पतित जाति का पुरुष, जातिबहिष्कृत, चांडाल,—भामि० ४।२३ 2. कुत्तों को खिलाने वाला,—पदम् कुत्ते का पैर, —पाकः जाति से बहिष्कृत, चाण्डाल—गंगा० २९, —फलम् खट्टा नींबू या चकोतरा,—फल्कः अक्रूर के पिता का नाम, —भीरुः गीदड़,—यूथ्यम् कुत्तों का झुंड, —वृत्तिः (स्त्री०) कुत्ते का जीवन, (बहुधा 'नौकरी' की समता इससे की जाती है)—सेवां लाघवकारिणीं कृतधियः स्थानेश्ववृत्तिं विदुः—मुद्रा० ३।१४, मनु० ४।६ 2. सेवावृत्ति, सेवा—मनु० ४।४, —व्याघ्रः 1. शिकारी जानवर 2. बाघ 3. चीता, —हन् (पुं०) शिकारी।

श्वभ्र् (चुरा० उभ० श्वभ्रयति—ते) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. बींधना, सूराख करना, छिद्र करना 3. दरिद्रता में रहना।

श्वभ्रम् [श्वभ्र्+अच्] रन्ध्र, विवर,—विक्रम० १।१८, कि० १४।३३।

श्वयः [श्वि+अच्] सूजन, शोथ, वृद्धि।

श्वयथुः [श्वि+अथुच्] सूजन, शोथ।

श्वयीची [श्वि+ईचि+ङीप्] बीमारी, रोग।

श्वल् (भ्वा० पर० श्वलति) दौड़ना, फुर्ती से जाना।

श्वल्क् (चुरा० उभ० श्वल्कयति—ते) कहना, वर्णन करना।

श्वल्ल् (भ्वा० पर० श्वल्लति) दौड़ना दे० 'श्वल्'।

श्वशुरः [शु आशु अश्नुते आशु+अश्+उरच् पृषो०] ससुर, पत्नी या पति का पिता—मनु० ३।११९।

श्वशुरकः [श्वशुर+कन्] ससुर।

श्वशुर्यः [श्वशुरस्यापत्यम्—श्वशुर+यत्] 1. साला पत्नी या पति का भाई 2. पति का छोटा भाई, देवर।

श्वश्रूः (स्त्री०) [श्वशुर+ऊङ्, उकार—अकारलोपः] सास, पत्नी या पति की माँ—रघु० १४।१३। सम०—श्वशुर (पुं०) द्वि० व०) सास और ससुर।

श्वस् (अदा० पर० श्वसिति, श्वस्त—श्वसित) 1. साँस लेना, सांस निकालना, सांस खींचना स कर्मकारभस्त्रेव श्वसन्नपि न जीवति—हि० २।११, रघु० ८।८७ 2. आह भरना, हाँपना, ऊँचा साँस लेना, श्वसिति विहगवर्गः ऋतु० १।१२ 3. फूत्कार करना, खुर्राटे भरना, प्रेर०—(श्वासयति-ते) साँस दिलाना, जीवित रखना, आ—, 1. सांस लेना, महावीर० ५।५१ 2. सांस लेने लगना, साहसी बनना, हिम्मत करना—मेघ० ८ 3. पुनर्जीवित करना—भट्टि० ९।५६, (प्रेर०) सांत्वना देना आराम देना, प्रसन्न करना उद्—, 1. सांस देना, जीना वेणी० ५।१५, मनु० ३।७२ 2. उत्साह बढाना, जी उठना, हिम्मत बांधना कि० ३।८, शि० १८।५८ 3. खुलना, खिलना, (जैसे कमल का)—शि० १०।५८,११।१५ 4. हांपना, गहरा सांस लेना—भट्टि० ६।१२०, १४।५५ 5. ऊँचा सांस लेना, धड़कना 6. उन्मुक्त होना, नि—निस्—, आह भरना, ऊँचा साँस लेना, वि—, विश्वास करना, भरोसा करना, विश्वास रखना (प्रायः अधि० के साथ)—पुंसि विश्वसिति कुत्र कुमारी—नै० ५।११० —कु० ५।१५,(कभी कभी संबं० के साथ) 2. सुरक्षित रहना, निर्भय या विश्वस्त होना—विशङ्क्वसे पक्षिगणः समन्तात्—भट्टि० ८।१०५, समा—, साहसी होना, हिम्मत बांधना, ढाढस रखना (प्रेर०) सांत्वना देना, प्रोत्साहित करना, उत्साह बढ़ाना।

श्वस् (अव्य०) [आगामि अहः पृषो०] 1. आने वाला कल,—वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः—सुभा० 2. भविष्य काल (समास के आरंभ में)। सम०—भूत (वि०) (श्वोभूत) कल होने वाला—,वसीय,—वसीयस् (श्वोवसीय, श्वोवसीयस्) (वि०) प्रसन्न, शुभ, भाग्यशाली; (नपुं०) प्रसन्नता, सौभाग्य,—श्रेयस् (श्वः श्रेयस्) (वि०) प्रसन्न, समृद्धि, (सम्) 1. प्रसन्नता, समृद्धि 2. ब्रह्मा या परमात्मा का विशेषण।

श्वसनः [श्वसित्यनेन—श्वस्+ल्युट्] 1. हवा, वायु,—श्वसनसुरभिगन्धिः—शि० ११।२१ 2. एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था—, नम् 1. सांस, साँस लेना, सांस निकालना—श्वसनचलितपल्लवाधरोष्ठे—कि० १०।३४, रत्न० २।४, (यहाँ यह प्रथम अर्थ भी प्रकट करता है) शि० ९।५२ 2. आह भरना —कि० २।४५। सम०—अशनः साँप,—ईश्वरः अर्जुन वृक्ष,—उत्सुकः साँप,—ऊर्मिः (स्त्री०) हवा का झोंका।

श्वसित (भू० क० कृ०) [श्वस्+क्त] 1. साँस लिया हुआ, आह भरी हुई 2. सांस लेने वाला,—तम् 1. सांस लेना, सांस निकालना 2. ऊँचा सांस लेना।

श्वस्तन (वि०) (स्त्री०—नी) **श्वस्त्य** (वि०) [श्वस्+ट्युल्, तुट् श्वस्+त्यप् वा] आगामी कल से संबंध रखने वाला, भावी, आगे आने वाला।

श्वाकर्णः [शुनः कर्णः ष० त०, अन्येषामपीति दीर्घः] कुत्ते का कान।

श्वागणिकः [श्वगणेन चरति—श्वगण+ठञ्] कुत्ते रखने वाला, कुत्ते पाल कर अपनी जीविका चलाने वाला।

श्वादन्तः [शुनो दन्तः ष० त०, अन्येषामपीति दीर्घः] कुत्ते का दाँत।

श्वानः [श्वैव+अण् न टिलोपः] कुत्ता। सम०—निद्रा कुत्ते की नींद, बहुत हलकी नींद,—वैखरी क्रुद्ध कुत्ते का गुर्राना।

श्वापद (वि०) (स्त्री०—दी) [शुन इव आपद् अस्मात्

ब० स, श्वन्+आपद्+अच्,] वर्बर, हिस्र, –दः 1. शिकारी जानवर, जंगली जानवर 2. बाघ।

श्वापुच्छः –च्छम् [शुनः पुच्छम् –ष० त०, नि० दीर्घ] कुत्ते की पूँछ, दुम।

श्वाविध् (पुं०) [शुना आविध्यते–श्वन्+आ+व्यध्+क्विप्] साही, शल्यक।

श्वासः [श्वस्+घञ्] सांस लेना, सांस, श्वासप्रश्वास क्रिया, ऊँचा सांस अद्यापि स्तनवेपथुं जनयति श्वासः प्रमाणाधिकः –श० १।२९, कु० २।४२ 2. आह, हाँपना 3. हवा, वायु 4. दमा। सम० –कासः दमा, –रोधः सांस का रोकना, –हिक्का एक प्रकार की हिचकी, –हेतिः (स्त्री०) नींद।

श्वासिन् (वि०) [श्वास+इनि] सांस लेने वाला–(पुं०) 1. हवा, वायु 2. श्वास लेने वाला जानवर, जीवित प्राणी 3. जो फूत्कार की ध्वनि के साथ (वर्ण) उच्चारण करता है।

श्वि (भ्वा० पर० श्वयति, शून) 1. विकसित होना, बढ़ना (आलं० से भी) सूजना (जैसे आँख का) –रुदतोऽशिश्वियच्चक्षुरास्यं हेतोस्तवाश्वयीत् –भट्टि० ६।११९, ३१, १४।७९, १५।३० 2. फलना-फूलना, समृद्ध होना 3. जाना, पहुँचना, अभिमुख चलना, उद्–, सूजना, बढ़ना, विकसित होना –प्रबलरुदितोच्छूननेत्रं (मुखम्)–मेघ० ८४ 2. घमण्डी होना, घमण्ड से फूल जाना।

श्वित् (भ्वा० आ० श्वेतते) श्वेत होना, सफ़ेद होना –व्यतिकरितदिगन्ताः श्वेतमानैर्यशोभिः –मा० २।९।

श्वित (वि०) [श्वित्+क] सफ़ेद।

श्वितिः (स्त्री०) [श्वित्+इन्] सफ़ेदी।

श्वित्य (वि०) [श्वित्+यत्] सफ़ेद।

श्वित्रम् [श्वित्+रक्] 1. सफ़ेद कोढ़ 2. फुलबहरी, कोढ का दाग़ (त्वचा पर)–तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथंचन। स्याद्वपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्भगम् काव्या० १।७।

श्वित्रिन् (वि०) (स्त्री०–णी) [श्वित्र+इनि] कोढ़ के रोग से ग्रस्त (पुं०) कोढ़ी।

श्विन्द् (भ्वा० आ० श्विन्दते) सफ़ेद होना।

श्वेत (वि०) (स्त्री०–ता,–ती) [श्वित्+घञ्, अच् वा] सफ़ेद,–ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ–भग० १।१४,–तः 1. सफ़ेद रङ्ग 2. शङ्ख 3. कौड़ी 4. रति कूट पौधा 5. शुक्र ग्रह, शुक्र ग्रह की अधिष्ठात्री देवता 6. सफ़ेद बादल 7. जीरा 8. पर्वतश्रेणी दे० कुलाचल या कुलपर्वत 9. ब्रह्माण्ड का एक प्रभाग,–तम् चाँदी। सम० –अम्बरः,–वासस् (पुं०) जैन सन्यासियों का एक सम्प्रदाय, –इक्षुः एक प्रकार का ईख, गन्ना,–उदरः कुबेर का विशेषण, –कमलम्, –पद्मम् सफ़ेद कमल –कुञ्जरः इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण,–कुष्ठम् सफ़ेद कोढ़,–केतुः बौद्ध श्रमण या जैनसाधु, –कोलः एक प्रकार की मछली, शफर, –गजः –द्विपः 1. सफ़ेद हाथी 2. इन्द्र का हाथी, –गरुत् (पुं०) –गरुतः हंस, –छदः 1. हंस 2. एक प्रकार की तुलसी, सफ़ेद तुलसी, –द्वीपः इस महाद्वीप के अठारह लघु प्रभागों में से एक,–धातुः 1. सफ़ेद खनिज पदार्थ 2. खड़िया मिट्टी, 3. दूधिया पत्थर, –धामन् (पुं०) 1. चाँद 2. कपूर 3. समुद्रफेन, –नीलः बादल,–पत्रः हंस, °रथः ब्रह्मा का विशेषण, –पाटला शृङ्गवल्ली का फूल –पिङ्गः सिंह,–पिङ्गलः 1. सिंह 2. शिव का विशेषण, –मरिचम् सफ़ेद मिर्च,–मालः 1. बादल 2. धूआँ, –रक्तः गुलाबी रङ्ग,–रञ्जनम् सीसा, –रथः शुक्र-ग्रह, –रोचिस् (पुं०) चन्द्रमा,–रोहितः गरुड़ का विशेषण,–वल्कलः गूलर का पेड़, –वाजिन् (पुं०) 1. चन्द्रमा 2. अर्जुन का विशेषण,–वाह् (पुं०) इन्द्र का विशेषण, –वाहः 1. अर्जुन का विशेषण 2. इन्द्र का विशेषण, –वाहनः 1. अर्जुन का विशेषण 2. चन्द्रमा 3. समुद्री दानव, मगरमच्छ, घड़ियाल, –वाहिन् (पुं०) अर्जुन का विशेषण,–शुङ्गः,–शृङ्गः जौ, –हयः 1. इन्द्र का घोड़ा 2. अर्जुन का विशेषण,–हस्तिन् (पुं०) इन्द्र का हाथी ऐरावत।

श्वेतकः [श्वेत+कन्] कौड़ी, –कम् चाँदी।

श्वेता [श्वित्+अच्+टाप्] 1. कौड़ी 2. पुनर्नवा 3. सफ़ेद दूब 4. स्फटिक 5. रवेदार चीनी 6. बंसलोचन 7. अनेक पौधों के नाम (श्वेत कण्टकारी, श्वेत बृहती आदि)।

श्वेतौही (स्त्री०) [श्वेतवाह+ङीष्] इन्द्र की पत्नी, शची।

श्वेत्रम् (नपुं०) सफ़ेद कोढ़।

श्वैत्यम् [श्वेत+ष्यञ्] 1. सफ़ेदी 2. सफ़ेद कोढ़।

श्वैत्रम्, श्वैत्र्यम् [श्वित्र+अण्, ष्यञ् वा] सफ़ेद कोढ़।

ष

वि०–बहुत सी धातुएँ जो 'स्' से आरंभ होती हैं, धातु पाठ में 'ष्' पूर्वक लिखी जाती है जिससे कि यह प्रकट हो सके कि कुछ उपसर्गों के पश्चात् 'स्' बदल कर 'ष्' हो जाता है। इस प्रकार की धातुएँ 'स्' के अन्तर्गत ही अपने उचित स्थान पर मिलेंगी।

ष (वि०) [सो+क, पृषो० षत्वम्] सर्वोत्तम, सर्वो-

क्रुष्ट, --षः 1. हानि, विनाश 2. अन्त 3. शेष, अवशिष्ट 4. मोक्ष।

षट्क (वि०) [षड्भिः क्रीतम्—षष्+कन्] छः गुना, --**कम्** छः की समष्टि --मासषट्क, उत्तर षट्क आदि।

षड्धा दे० षोढा।

षण्डः [सन्+ड, पृषो० षत्वम्] 1. साँड़ 2. नपुंसक (भिन्न-भिन्न लेखकों ने नपुंसकों के १४ से २० तक अनेक भेद लिखे हैं) 3. समूह, समुच्चय, संग्रह, ढेर, राशि, (इस अर्थ में नपुं० भी)—कलरवमुपगीते षट्पदौघेन धत्तः कुमुदकमलषण्डे तुल्यरूपामवस्थाम्–शि० ११।१५, तु० 'खंड' भी।

षण्डकः [षण्ड+कन्] नपुंसक, हिजड़ा।

षण्डाली [षण्ड+अल्+अच्+ङीष्] 1. तालाब, जोहड़ 2. व्यभिचारिणी या असती स्त्री।

षण्ढः [सन्+ढ, पृषो० षत्वम्] 1. नपुंसक, हिजड़ा, --याज्ञ० १।२१५ 2. नपुंसकलिंग --निवेशः शिविरं षण्ढे—अमर०। सम० **तिलः** बंध्य तिल, वह तिल जो उग न सके।

षष् (संख्या० वि०) [सो+क्विप्, पृषो०] (केवल ब० व० में प्रयुक्त कर्तृ० षट्, संबं० षण्णाम्) छः–मनु० १।१६, ८।४०३। सम०—**अक्षीणः** (षडक्षीणः) मछली, —**अङ्गम्** समष्टि रूप से ग्रहण किये गये शरीर के छः भाग—जंघे बाहू शिरोमध्यं षडङ्गमिदमुच्यते 2. वेद के छः अंग सहायक भाग,—शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चितिः। ज्योतिषामयनं चैव षडङ्गो वेद उच्यते, दे० 'वेदांग' भी 3. छः शुभ वस्तुएँ --अर्थात् गोमाता से प्राप्त छः पदार्थ–गोमूत्रं गोमयं क्षीरं सर्पिर्दधि च रोचना। षडंगमेतन्मांगल्यं पठितं सर्वदा गवाम् **अङ्घ्रिः** (षडङ्घ्रिः) भौंरा, —**अधिक** (वि०) (षडधिक) वह जिसमें छः अधिक हों, - मा० ५।१, **अभिज्ञः** (षडभिज्ञः) देवरूप बौद्ध महात्मा,—**अशीत** (वि०) (षडशीत) छयासीवां, --**अशीतिः** (स्त्री०) (षडशीतिः) छयासी, **अहः** (षडहः) छः दिन का समय या अवधि, **आननः** —**वक्त्रः**,—**वदनः** (षडाननः, षड्वक्त्रः, षड्वदनः) कार्तिकेय के विशेषण –षडाननापीतपयोधरासु नेता चमूनामिव कृत्तिकासु –रघु० १४।२२, **आम्नायः** (षडाम्नायः) छः तन्त्र,—**ऊषणम्** (षडूषणम्) समष्टि रूप से ग्रहण किये हुए छः मसाले—पंचकोलं स मरिचं षडूषणमुदाहृतम्,--**कर्ण** (वि०) (षट्कर्ण) छः कानों से सुना गया, अर्थात् वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा भी सुना गया, एक से अधिक श्रोताओं को सुनाया गया (परामर्श, भेद आदि)—षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः पंच० १।९९, (**र्णः**) एक प्रकार की वीणा,--**कर्मन्** (नपुं०) (षट्कर्मन्) 1. ब्राह्मणों के लिए विहित छः कर्तव्य—अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा। दानं प्रतिग्रहश्चैव षट्कर्माण्यग्रजन्मनः - मनु० १०।७५ 2. छः कर्म जो ब्राह्मण की जीविका के लिए विहित हैं उञ्छं प्रतिग्रहो भिक्षा वाणिज्यं पशुपालनम्। कृषिकर्म तथा चेति षट्कर्माण्यग्रजन्मनः 3. जादू के छः करतब शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेष, उच्चाटन तथा मारण 4. योगाभ्याससंबंधी छः क्रियाएँ—धौतिर्वस्ती तथा नेती (नौलिकी) त्राटकस्तथा। कपालभाती चैतानि षट्कर्माणि समाचरेत्॥ (पुं०) ब्राह्मण, —**कोण** (वि०) (षट्कोण) 1. छः कोणों से युक्त (**णम्**) 1. षड्भुज, छः कोनिया 2. इन्द्र का वज्र, -- **गवम्** (षड्गवम्) 1. छः बैलों की जोड़ी 2. वह जुवा जिसमें छः बैल जोते जायं (कभी कभी अन्य जानवरों के नाम पर) उदा० °हस्ति, °अश्व छः हाथी छः घोड़े आदि,—**गुण** (वि०) (षड्गुण) 1. छः गुना 2. छः विशेषणों से युक्त (**णम्**) 1. छः गुणों का समुदाय 2. किसी राजा की विदेशनीति में प्रयोक्तव्य छः उपाय - दे० 'गुण' के अन्तर्गत (२१), तु० 'षाड्गुण्य' के साथ भी, **ग्रन्थि** (वि०) (षड्ग्रन्थि) पिप्परामूल,- **ग्रन्थिका** (षट्ग्रन्थिका) शटी, आमाहल्दी, **चक्रम्** (षट्चक्रम्) शरीर के छः रहस्यमय चक्र (मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा),—**चत्वारिंशत्** (षट्चत्वारिंशत्) छयालीस,—**चरणः** (षट्चरणः) 1. मधुमक्खी 2. टिड्डी 3. जूं,– **जः** (षड्जः) भारतीय स्वरग्राम के सात प्राथमिक स्वरों में से चौथा स्वर (कुछ के अनुसार पहला) क्योंकि यह स्वर छः अंगों से व्युत्पन्न है नासांकंठमुरस्तालु जिह्वां दन्तांश्च संस्पृशन्। षड्जः संजायते (षड्भ्यः संजायते) यस्मात् तस्मात् षड्ज इति स्मृतः, कहते हैं कि मोर के स्वर से यह स्वर मिलता-जुलता है, षड्जं रौति मयूरस्तु - नार० षड्जसम्वादिनीः केकाः द्विधा भिन्नाः शिखण्डिभिः -- रघु० १।३९, **त्रिंशत्** (स्त्री०) (षट्त्रिंशत्) छत्तीस (षट्त्रिंश) (वि०) छत्तीसवां,—**दर्शनम्** (षड्दर्शनम्) हिन्दू दर्शन के छः मुख्य शास्त्र सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त,—**दुर्गम्** (षड्दुर्गम्) छः प्रकार के गढ़ों की समष्टि धन्वदुर्गं महीदुर्गं गिरिदुर्गं तथैव च। मनुष्यदुर्गं मृद्दुर्गं वनदुर्गमितिक्रमात् **नवतिः** (षण्णवतिः) छयानवे, **पञ्चाशत्** (स्त्री०) (षट्पञ्चाशत्) छप्पन,–**पदः** (षट्पदः) 1. भौंरा—न पङ्कजं तद्यदलीनषट्पदं न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्ज यः कलम् भट्टि० २।१९, कु० ५।९, रघु० ६।६९ 2. जूं

°अतिथिः आम का वृक्ष, °आनन्दवर्धनः अशोक या किंकिरात वृक्ष, °ज्य (वि०) जिस की डोरी भौरों से बनी है (जैसे कि कामदेव का धनुष)—प्राय-श्चापं न वहति भयान्मन्मथः षट्पदज्यम् –मेघ० ७३, °प्रियः नागकेशर नाम का वृक्ष, –पदी (षट्पदी) 1. छः पंक्तियों का श्लोक 2. भ्रमरी 3. जूँ,—प्रश्नः (षट्प्रश्नः) जो छः विषयों से सुपरिचित है अर्थात् चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) या मानव-जीवन के उद्देश्य और लोकप्रकृति, ब्रह्मप्रकृति—धर्मार्थ-काममोक्षेषु लोकतत्त्वार्थयोरपि। षट्सु प्रज्ञा तु यस्यासौ षट्प्रज्ञः परिकीर्तितः॥ 2. विलासी, कामासक्त पुरुष —बिन्दुः (षड्बिन्दुः) विष्णु का विशेषण, –भागः (षड्भागः) छठा भाग, ⅙ भाग—श० २।१३, मनु० ७।१३१, ८।३३, –भुज (वि०) (षड्भुज) 1. छः हैं सहायक जिसके, छः कोनों वाला, (जः) षट्कोण (जा) 1. दुर्गा का विशेषण 2. तरबूज, –मासः (षण्मासः) छः महीने का समय,—मासिक (वि०) (षाण्मासिक) छमाही, अर्धवार्षिक, –मुखः (षण्मुखः) कार्तिकेय का विशेषण—रघु० १७।६७, (–खा) तर-बूज,—रसम्—रसाः (पुं० ब० व०) (षड्रसम् आदि) छः रसों की समष्टि – दे० 'रस' के अन्तर्गत,– रात्रम् (षड्रात्रम्) छः रातों का समय या अवधि,—वर्गः (षड्वर्गः) 1. छः वस्तुओं की समष्टि 2. विशेष रूप से मनुष्य के छः शत्रु, ('षड्रिपु' भी कहते हैं)— कामः क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सरः। कृतारिषड्वर्ग-जयेन–कि० १।९, व्यजेष्ट षड्वर्गम्– भट्टि० १।२, —विंशतिः (स्त्री०) (षड्विंशतिः) छब्बीस (षड्-विंश छब्बीसवाँ),—विध (षड्विध) (वि०) छः प्रकार का, छः गुना –रघु० ४।२६,—षष्टिः (स्त्री०) (षड्षष्टिः) छासठ,—सप्ततिः (षट्-सप्ततिः) छिहत्तर।

षष्टिः (स्त्री०) [षड्गुणिता दशतिः नि०] साठ—मनु० ३।७७, याज्ञ० ३।८४, °तम साठवाँ। सम०—भागः शिव का विशेषण,—मत्तः साठ वर्ष की आयु का हाथी जिसके मस्तक से मद चूता है, योजनी (स्त्री०) साठ योजन का विस्तार या यात्रा,—संवत्सरः साठ वर्ष की अवधि या समय,—हायनः 1. (साठवर्ष की आयु का) हाथी 2. एक प्रकार का चावल।

षष्ठ (वि०) (स्त्री० –ष्ठी) [षण्णां पूरणः - षष्+डट्, थुक्] छठा, छठा भाग—षष्ठं तु क्षेत्रजस्यांशं प्रदद्या-त्पैतृकाद्धनात् मनु० ९।१६४, ७।३०, षष्ठे भागे —विक्रम० २।१, रघु० १७।७८। सम०—अंशः 1. सामान्य छठा भाग—याज्ञ० ३।३५ 2. विशेष कर उपज का छठा भाग जिसको कि राजा अपनी प्रजा से भूमिकर के रूप में ग्रहण करता है –ऊधस्यमिच्छामि तवोपभोक्तुं षष्ठांशमुर्व्या इव रक्षितायाः—रघु० २। ६६, (उपज के भिन्न भिन्न भेद जिनके छठे भाग का अधिकारी राजा है—मनु० ७।१३१–२ में बताये गये हैं) °वृत्तिः उपज के छठे भाग का अधिकारी राजा, —षष्ठांशवृत्तेरपि धर्म एषः–श० ५।४,—अन्नम् छठा भोजन, °कालः तीन दिन में केवल एक बार भोजन करने वाला, जैसा कि प्रायश्चित्तस्वरूप किया जाता है।

षष्ठी [षष्ठ+ङीप्] 1. चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ 2. (व्या० में) छठी विभक्ति या सम्बन्ध कारक 3. कात्यायनी के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो सोलह दिव्य मातृकाओं में से एक है। सम०—तत्पुरुषः छठी विभक्ति के लोप वाला तत्पुरुष समास, ऐसे समास में विग्रह करने पर पहला पद सदैव छठी विभक्ति का होता है, —पूजनम्,—पूजा बालक उत्पन्न होने के छठे दिन छठी देवी की पूजा करना।

षहसानुः [सह्+आन्, असुक्, पृषो० षत्वम्] 1. मोर 2. यज्ञ।

षाट् (अव्य०) [सह्+णिच्, पृषो० षत्वं टत्वम् सम्बोधक अव्यय।

षाट्कौशिक (वि०) (स्त्री०—की) [षट्कोश+ठक्] छः तहों में लिपटा हुआ।

षाडवः [षड्+अव्+अच् ततः स्वार्थे अण्] 1. राग, मनोवेग 2. गाना, संगीत 3. (संगीत में) एक राग जिस में संगीत के सात स्वरों में से छः स्वर प्रयुक्त होते हैं—पंचमः पञ्चभिः प्रोक्तः स्वरैः षड्भिस्तु षाडवः।

षाड्गुण्यम् [षड्गुण+ष्यञ्] 1. छः गुणों की समष्टि 2. राजा के द्वारा प्रयुक्त छः युक्तियाँ, राजनीति के छः उपाय,–शि० २।९३, दे० 'गुण' के अन्तर्गत 3. छः से किसी संख्या का गुणन। सम०–प्रयोगः राजनीति के छः उपाय, या छः युक्तियों का प्रयोग।

षाण्मातुरः [षण्णां मातृणाम् अपत्यम्, षण्मातृ+अण्, उत्व, रपर] छः माताओं वाला, कार्तिकेय का विशेषण।

षाण्मासिक (वि०) (स्त्री०—की) [षण्मास+ठक्] 1. छमाही, अर्धवार्षिक 2. छः महीने का,– मौक्तिका-नां षाण्मासिकानाम्—विद्ध० ११।१७।

षाष्ठ (वि०) (स्त्री०—ष्ठी) [षष्ठ+अण् स्वार्थे] छठा।

षिड्गः [सिट्+गन्, पृषो० षत्वम्] 1. विलासी, ऐयाश, कामुक, कामासक्त 2. प्रेमनिपुण, असंगत प्रेमी, विट—षिड्गैरगद्यत ससंभ्रममेव काचित्–शि० ५।३४।

षुः [सु+डु, पृषो० पत्वम्] प्रसूति, प्रजनन।

षोडश (वि०) (स्त्री०—शी) [षोडशन्+डट्] सोलहवाँ=मनु० २।६५,८६।

षोडशन् (संख्या० वि०) ब० व०, सोलह। सम०—अंशुः शुक्रग्रह,—अङ्ग (वि०) एक प्रकार का गन्धद्रव्य,—अङ्गुलक (वि०) छः अंगुल की चौड़ाई का,—अङ्घ्रिः केकड़ा,—अचिस् (पुं०) शुक्र ग्रह,—आवर्तः शंख,—उपचारः (पुं०, ब० व०) किसी देवता को श्रद्धांजलि अर्पित करने की सोलह रीतियाँ, जिनकी गिनती यह है—आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्। मधुपर्काचमस्नानं वसनाभरणानि च। गंधपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं वन्दनं तथा,—कलः चन्द्रमा की सोलह कलाएँ, जिनके नाम यह हैं— अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टी रतिर्धृतिः। शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरेव च। अङ्गदा च तथा पूर्णामृता षोडश वै कलाः,—भुजा दुर्गा की एक मूर्ति,—मातृका (स्त्री०) ब० व०, सोलह दिव्य माताएँ जिनके नाम निम्नांकित हैं—. गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः। शान्तिः पुष्टिर्धृतिस्तुष्टिः कुलदेवात्मदेवताः॥

षोडशधा (अव्य०) [षोडशन्+धाच्] सोलह प्रकार से।

षोडशिक (वि०) (स्त्री०—की) [षोडशन्+ठक्] सोलह भागों से युक्त, सोलह गुना- षोडशिको देवतोपचारः।

षोडशिन् (पुं०) [षोडशन्+इनि] अग्निष्टोम यज्ञ का रूपान्तर।

षोढा (अव्य०) [षष्+धाच्, षष उत्वम्, धस्य ष्टुत्वम्] छः प्रकार से। सम०-न्यासः मंत्र पढ़ते हुए शरीर स्पर्श के छः प्रकार,—मुखः छः मुंह वाला, कार्तिकेय,—द्रोढा जनोर्जनितपोढामुखः समिति वोढा सा हाटकगिरेः—अश्व० ७।

ष्ठिव् (भ्वा० दिवा० पर० ष्ठीवति, ष्ठीव्यति, ष्ठ्यूत) 1. थूकना, मुंह से खखार निकालना, 2. राल टपकना,—भट्टि० १२।१८, नि –, 1. प्रक्षेपण करना, निकालना, वकेलना—श० ४।४, रघु० २।७५ भट्टि० १४।१००, १७।१०, १८।१४, काव्या० १।९५ 2. मुंह से खखार निकालना मनु० ४।१३२, याज्ञ० ३।२१३।

ष्ठीवनम्, ष्ठेवनम् [ष्ठीव्+ल्युट्, ष्ठिव्+ल्युट्] 1. थूकना 2. लार, थूक, खखार।

ष्ठ्यूत (भू० क० कृ०) [ष्ठिव्+क्त, ऊ] थूका हुआ, खखारा हुआ।

ष्वक्क्, ष्वस्क् (भ्वा० आ० ष्वक्कते, ष्वस्कते) जाना, हिलना-जुलना।

स

स (अव्य०) सह, सम्, तुल्य या सदृश, और एक अथवा समान शब्दों के स्थान पर आदेश होने वाला उपसर्ग, जो विशेषण अथवा क्रियाविशेषण बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के साथ समास में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) के साथ, मिला कर, के साथ साथ, संयुक्त होकर, युक्त, सहित- सपुत्र, सभार्य, सतृण्ण, सघन, सरोषम्, सकोपम्, सहरि आदि (ख) समान, सदृश, सधर्मन् 'समान प्रकृति का', इसी प्रकार सजाति, सवर्ण (ग) वही, सोदर, सपक्ष, सपिंड, सनाभि आदि, (पुं०) 1. साँप 2. वायु, हवा 3. पक्षी 4. 'षड्ज' नामक संगीत स्वर का संक्षिप्त 5. शिव का नाम 6. विष्णु का नाम।

संयः [सम्+यम्+ड] कंकाल, पंजर।

संयत् (स्त्री०) [सम्+यम्+क्विप्] युद्ध, संग्राम, लड़ाई- यः संयति प्राप्तपिनाकिलीलः रघु० ६।७२, ७।३९, १८।२०, कि० १।१९, शि० १६।१५। सम० वरः राजा, राजकुमार।

संयत (भू० क० कृ०) [सम्+यम्+क्त] 1. रोका हुआ, दबाया हुआ, वश में किया हुआ 2. जकड़ा हुआ, एक स्थान पर बाँधा हुआ 3. बेड़ियों से जकड़ा हुआ 4. बन्दी, क़ैदी, कारावासी—रघु० ३।२० 5. उद्यत, तैयार 6. व्यवस्थित, दे० सम् पूर्वक 'यम्'। सम०—अञ्जलि (वि०) जिसने विनय प्रार्थना के लिए हाथ जोड़े हुए हैं,—आत्मन् (वि०) जिसने मन को वश में कर लिया है, नियंत्रितमना, आत्मनिग्रही। आहार (वि०) मिताहारी,—उपस्कर (वि०) जिसका घर सुव्यवस्थित हो, जिसके घर का सामान सब क्रमपूर्वक रक्खा हो, चेतस्, मनस् (वि०) मन को नियन्त्रण में रखने वाला, प्राण (वि०) जिसका श्वास नियंत्रित किया हुआ है, प्राणायाम का अभ्यास करने वाला,—वाच् (वि०) मूक, मौन रहने वाला, मितभाषी।

संयत्त (वि०) [सम्+यत्+क्त] 1. सन्नद्ध, तत्पर, तैयार महावीर० ५।५१ 2. सावधान, सतर्क।

संयमः [सम्+यम्+अप्] 1. प्रतिबंध, रोकथाम, नियंत्रण—श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति—भग०

४।२६, २७ 2. मन की एकाग्रता, योग की अंतिम तीन अवस्थाओं को प्रकट करने वाला शब्द—धारणाध्यानसमाधित्रयमन्तरङ्गं संयमपदवाच्यम् — सर्व०, कु० २।५९ 3. धार्मिक व्रत 4. धार्मिक भक्ति, तपस्साधना, — श० ४।१९ 5. दयाभाव, करुणा की भावना।

संयमनम् [सम्+यम्+ल्युट्] 1. प्रतिबन्ध, रोकथाम 2. अंतःकर्षण श० १ 3. बांधना—उत्तर० १, विक्रम० ३।६ 4. कैद 5. आत्मोत्सर्ग, नियन्त्रण 6. धार्मिक व्रत या आभार 7. चार घरों का वर्ग, —नः नियामक, शासक,—नी यम की नगरी का नाम।

संयमित (भू० क० कृ०) [संयम्+णिच्+क्त] 1. नियंत्रित 2. बद्ध, बेड़ी से जकड़ा हुआ 3. निरुद्ध, रोका हुआ।

संयमिन् (वि०) [सम्+यम्+णिनि] दमन करने वाला, रोकने वाला, नियंत्रित करने वाला—(पुं०) जिसने अपने आवेगों को रोक लिया या नियंत्रण में कर लिया, ऋषि, संन्यासी रघु० ८।११, भग० २।६९।

संयानः [सम्+या+ल्युट्] साँचा,—नम् 1. साथ-साथ जाना, मिलकर चलना 2. यात्रा करना, प्रगति करना 3. शव को उठा कर ले जाना।

संयामः [सम्+यम्+घञ्] दे० 'संयम'।

संयावः [सम्+यु+घञ्] गेहूँ के आटे का मिष्टान्न, हलुवा—मनु० ५।७।

संयुक्त (भू० क० कृ०) [सम्+युज्+क्त] 1. मिला हुआ, जुड़ा हुआ, सम्मिलित 2. सम्मिश्रित, मिला हुआ, संपृक्त 3. सहित 4. संपन्न, से युक्त 5. अन्वित, बना हुआ।

संयुगः [सम्+युज्+क, जस्य गः] 1. संयोजन, मिलाप, मिश्रण 2. लड़ाई, संग्राम, युद्ध, संघर्ष—संयुगे सांयुगीनं तमुद्यतं प्रसहेत कः कु० २।५७, रघु० ९।१९। सम० गोष्पदम् भिड़न्त, नगण्य या तुच्छ झगड़ा, मामूली बात पर कलह।

संयुज् (वि०) [सम्+युज्+क्विन्] संबद्ध, संबंध रखने वाला शि० १४।५५।

संयुत (भू० क० कृ०) [सम्+यु+क्त] 1. मिला हुआ, एकत्र जोड़ा हुआ, संबद्ध 2. संपन्न, सहित, दे० सम् पूर्वक 'यु'।

संयोगः [सम्+युज्+घञ्] 1. संयोजन, मिलाप, मिश्रण, संगम, मिलना-जुलना, घनिष्ठता संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति संभवम् — सुभा० 2. जोड़ना (वैशेषिकों के चौबीस गुणों में से एक) 3. जोड़, मिलाना 4. संचय आभरणसंयोगाः—मा० ६ 5. दो राजाओं में किसी एक से समान उद्देश्य के लिए मित्रता 6. (व्या० में) संयुक्त व्यंजन 7. (ज्यो० में) दो तारिकाओं का मिलन 8. शिव का विशेषण। सम०—पृथक्त्वम् अनित्य संबंधों का पार्थक्य,—विरुद्धम् साथ-साथ मिलाकर खाने से रोग उत्पन्न करने वाला खाद्यपदार्थ।

संयोगिन् (वि०) [संयोग+इनि] 1. मिलाया हुआ, सम्मिलित 2. मिलने वाला।

संयोजनम् [सम्+युज्+ल्युट्] 1. मिलाप, एक साथ जोड़ना 2. मैथुन, संभोग।

संरक्त (भू० क० कृ०) [सम्+रञ्ज्+क्त] 1. रंगीन, लाल 2. आवेशपूर्ण, प्रणयाग्नि में दग्ध 3. क्रुद्ध, चिड़चिड़ा, क्रोधाग्नि से जलता हुआ 4. मोहित, मुग्ध 5. लावण्यमय, सुन्दर।

संरक्षः [सम्+रक्ष्+घञ्] प्ररक्षण, देख-भाल, संधारण।

संरक्षणम् [सम्+रक्ष्+ल्युट्] 1. प्ररक्षण, संधारण 2. उत्तरदायित्व, निगरानी।

संरब्ध (भू० क० कृ०) [सम्+रम्भ्+क्त] 1. उत्तेजित विक्षुब्ध 2. प्रज्वलित, संक्षुब्ध, क्रुद्ध, भीषण 3. वर्धित 4. सूजा हुआ 5. अभिभूत।

संरंभः [सम्+रभ्+घञ्, मुम्] 1. आरंभ 2. हुल्लड़, खलबली, उग्रता, प्रचण्डता श० ७ 3. विक्षोभ, उत्तेजना, हड़बड़ी —कु० ३।४८ 4. ऊर्जा, उत्साह, उत्कण्ठा—रघु० १२।९६ 5. क्रोध, रोष, कोप—प्रणिपातप्रतीकारः संरंभो हि महात्मनाम् रघु० ४।६४, १२।३६, विक्रम० २।२१, ४।२८ 6. घमंड, अहंकार 7. शोथ और जलन (फोड़े फुंसी की)। सम०—परुष (वि०) जो गुस्से के कारण कठोर हो गया हो, —रस (वि०) अत्यंत क्रुद्ध, —वेगः क्रोध की उग्रता।

संरम्भिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [संरम्भ+इनि] 1. उत्तेजित, विक्षुब्ध, हड़बड़ी से युक्त शि० २।६७ 2. क्रुद्ध, प्रकुपित, रोषाविष्ट 3. घमंडी, अहंकारी।

संरागः [सम्+रञ्ज्+घञ्] 1. रंगत 2. प्रणयोन्माद, अनुरक्ति 3. रोष, क्रोध।

संराधनम् [सम्+राध्+ल्युट्] 1. प्रसन्न करना, मेल करना, पूजा आदि के द्वारा तुष्ट करना 2. सम्पन्न करना 3. प्रकृष्ट या गहन मनन।

संरावः [सम्+रु+घञ्] 1. गुलगपाड़ा, हल्लागुल्ला, शोरगुल 2. कोलाहल।

संरुग्ण (भू० क० कृ०) [सम्+रुज्+क्त] जो टुकड़े टुकड़े हो गया हो, चूर-चूर, छिन्नभिन्न।

संरुद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+रुध्+क्त] 1. रोका गया, बाधित, अवरुद्ध 2. रुका हुआ, भरा हुआ 3. घेरा डाला हुआ, वेष्टित, उपरुद्ध 4. ढका हुआ, छिपाया हुआ 5. अस्वीकृत, अटकाया हुआ, दे० सम् पूर्वक रुध्।

संरूढ (भू० क० कृ०) [सम्+रुह्+क्त] 1. साथ-साथ

उगा हुआ 2. किणान्वित, घाव भरा हुआ, जैसा कि 'संरूढव्रण' में 3. फूटा हुआ, अंकुर निकला हुआ, मुकुलित, उपजा हुआ – रघु० ६।४७ 4. पक्का जमा हुआ, जिसकी जड़ दृढ़ हो गई हो 5. साहसी, भरोसे का ।

संरोधः [सम्+रुध्+घञ्] 1. पूरी रुकावट या विघ्न, अड़चन, रोक, रोक थाम 2. घेरावंदी, घेरना 3. बंधन, बेड़ी 4. फेंकना, डालना ।

संरोधनम् [सम्+रुध्+ल्युट्] रुकावट, ठहराना, रोकना ।

संलक्षणम् [सम्+लक्ष्+ल्युट्] निशान लगाना, पहचानना, चित्रण करना ।

संलग्न (भू० क० कृ०) [सम्+लग्+क्त] 1. घनिष्ठ, सटा हुआ, संहत, जुड़ा हुआ 2. गुत्थमगुत्था होना, भिड़ जाना ।

संलयः [सम्+ली+अच्] 1. लेटना, सोना 2. घुल जाना 3. प्रलय ।

संलयनम् [सम्+ली+ल्युट्] 1. जुड़ जाना, चिपक जाना 2. घुल जाना ।

संललित (भू० क० कृ०) [सम्+लल्+क्त] लाड लगाया हुआ, प्यार किया हुआ ।

संलापः [सम्+लप्+घञ्] 1. समालाप, बातचीत, प्रवचन 2. गोपनीय या गुप्त बातें, अंतरंग वार्तालाप, 3. (नाटकों में) एक प्रकार का संवाद, सम्भाषण ।

संलापकः [संलाप+कन्] एक प्रकार का उपरूपक, संवादात्मक प्रकार का, दे० सा० द० ५४९ ।

संलीढ (भू० क० कृ०) [सम्+लिह्+क्त] चाटा हुआ, उपभुक्त ।

संलीन (भू० क० कृ०) [सम्+ली+क्त] 1. चिपका हुआ, जुड़ा हुआ 2. साथ साथ मिलाया हुआ 3. छिपाया हुआ, गुप्त रक्खा हुआ 4. दहला हुआ 5. सिकुड़ा हुआ, शिकन पड़ा हुआ । सम०—कर्ण (वि०) जिसके कान नीचे लटके हों,—मानस (वि०) खिन्नमना, उदास ।

संलोडनम् [सम्+लोड्+ल्युट्] बाधा डालना, गड़बड़ करना ।

संवत् (अव्य०) [सम्+वय्+क्विप्, यलोपः तुक् च] 1. वर्ष 2. विशेष कर विक्रमादित्य वर्ष, (जो ख़ीस्ताब्द से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था ।

संवत्सरः [संवसन्ति ऋतवोऽत्र—संवस्+सरन्] 1. वर्ष 2. विक्रमादित्याब्द 3. शिव । सम० करः शिव का विशेषण, —भ्रमि (वि०) एक वर्ष में पूरा चक्कर करने वाला (सूर्य), —रथः एक वर्ष में पूरा होने वाला मार्ग ।

संवदनम् [सम्+वद्+ल्युट्] 1. वार्तालाप करना, मिल कर बातें करना 2. समाचार देना 3. परीक्षण, ख़याल करना 4. जादू मंत्र के द्वारा वश में करना 5. मन्त्र, ताबीज़ ।

संवरः [सम्+वृ+अप् वा अच्] 1. ढक्कन 2. समझ 3. संपीडन, संकोचन 4. बांध, सेतु, पुल 5. एक प्रकार का हरिण 6. एक राक्षस का नाम—दे० शंबर,—रम् 1. छिपाव 2. सहनशीलता, आत्मनियंत्रण 3. जल 4. बौद्धों का एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान ।

संवरणम् [सम्+वृ+ल्युट्] 1. आवरण, आच्छादन 2. छिपाव, दुराव—मा० १ 3. बहाना, छद्मवेश —दे० 'संवर' भी ।

संवर्जनम् [सम्+वृज्+ल्युट्] 1. आत्मसात्करण 2. उपभोग करना, खा जाना ।

संवर्तः [सम्+वृत्+घञ्] 1. मुड़ना 2. घुलना, विनाश 3. संसार का नियतकालिक प्रलय—महावीर० ६।२६ 4. बादल 5. (जल से भरा हुआ) बादल 6. संसार में प्रलय होने पर उठने वाले सात बादलों में से एक 7. वर्ष 8. संग्रह, समुच्चय ।

संवर्तकः [सम्+वृत्+णिच्+ण्वुल्] 1. एक प्रकार का बादल 2. प्रलयाग्नि, विश्वप्रलय के समय संसार को भस्म करने वाली आग—इतोऽपि वडवानलः सह समस्तसंवर्तकैः—भर्तृ० २।७६ 3. वड़वानल 4. बलराम का नाम ।

संवर्तकिन् (पुं०) [संवर्तक+इनि] बलराम का नाम ।

संवर्तिका [संवर्तक+टाप्, इत्वम्] 1. कमल का नया पत्ता 2. पराग केशर के पास की पंखड़ी 3. दीप शिखा आदि (दीपादेः शिखा—तारा०) ।

संवर्धक (वि०) (स्त्री०—र्धिका) [सम्+वृध्+णिच्+ण्वुल्] 1. पूर्ण विकसित करने वाला, बढ़ाने वाला 2. सत्कार करने वाला, स्वागत करने वाला (अभ्यागतों का), आतिथ्यकारी ।

संवर्धित (भू० क० कृ०) [सम्+वृध्+णिच्+क्त] 1. पाला-पोसा हुआ, पालन-पोषण किया हुआ 2. बढ़ाया हुआ ।

संवलित (भू० क० कृ०) [सम्+वल्+क्त] 1. साथ मिला हुआ, मिलाया हुआ, मिश्रित मा० ६।५ 2. तर किया हुआ,—मा० ४।९ 3. संबद्ध, संयुक्त 4. टूटा हुआ उदितोपलस्खलनसंवलिताः (ध्वनयः) कि० ६।४ ।

संवल्गित (वि०) [सम्+वल्ग्+क्त] पददलित किया हुआ, तम् ध्वनि मा० ५।१९ ।

संवसथः [सम्+वस्+अथच्] मिलकर रहने का स्थान, ग्राम, बस्ती ।

संवहः [सम्+वह्+अच्] वायु के सात मार्गों में से तीसरा मार्ग ।

संवाद: [सम्+वद्+घञ्] 1. मिलकर बोलना, बात चीत, वार्तालाप, कथोपकथन, —महावीर० १।१२ 2. चर्चा, वादविवाद 3. समाचार देना 4. सूचना, समाचार 5. स्वीकृति, सहमति 6. समनुरूपता, मेल-जोल, समागता, सादृश्य—रूपसंवादाच्च संशयादनया पृष्टः—दश०, (नादः) चित्ताकर्षी परिचित इव श्रोत्र-संवादमेति —मा० ५।२० ।

संवादिन् (वि०) [संवाद+इनि] 1. बोलने वाला, बातचीत करने वाला 2. सदृश, समान, मिलता-जुलता, अनुरूप—षड्जसंवादिनीः केकाः—रघु० १। ३९, अस्मदङ्गसंवादिन्याकृतिः - उत्तर० ६ ।

संवारः [सम्+वृ+घञ्] 1. आवरण, आच्छादन 2. वर्णोच्चारण के समय कण्ठादिकों का संकोचन, मन्द उच्चारण (विप० विवार) 3. न्यूनता 4. प्रक्षण, संरक्षण 5. सुव्यवस्थापन ।

संवासः [सम्+वस्+घञ्] 1. मिलकर रहना 2. समाज, मण्डली,—पंच० १।२५० 3. घरेलू व्यवहार 4. घर, आवास स्थान 5. मनोरंजन के या सभा आदि के लिए खुला मैदान ।

संवाहः [सम्+वह्+घञ्] 1. ले जाना, ढोना 2. मिलकर दबाना 3. मालिश करना, मुट्ठी भरना 4. वह नौकर जो मालिश करने या मुट्ठी भरने के लिए रक्खा गया हो ।

संवाहकः [सम्+वह्+ण्वुल्] मालिश करने वाला, दे० ऊपर संवाह (4) ।

संवाहनम्,-ना [सम्+वह्+णिच्+ल्युट्] 1. बोझा ढोना, उठाकर ले जाना 2. मालिश करना, मुट्ठी भरना,—उत्तर० १।२४, मा० ९।२५ ।

संविक्तम् [सम्+विज्+क्त] अलग किया हुआ, विशिष्ट ।

संविग्न [सम्+विज्+क्त] 1. विक्षुब्ध, उत्तेजित, अशान्त, उद्विग्न, हड़बड़ाया हुआ जैसा कि 'संविग्न-मानस' में 2. त्रस्त, भीत ।

संविज्ञात (भू० क० कृ०) [सम्+वि+ज्ञा+क्त] विश्वविदित, सबके द्वारा माना हुआ, सर्वसम्मत ।

संवित्तिः (स्त्री०) [सम्+विद्+क्तिन्] 1. ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान चेतना, भावना - त्वस्त्वया सुखसंवित्तिः स्मरणीयाऽधुनातनी—कि० ११।३४, १६।३२ 2. समझ, बुद्धि 3. पहचान, प्रत्यास्मरण 4. (भावना का) सांमनस्य, मानसिक समझौता ।

संविद् (स्त्री०) [सम्+विद्+क्विप्] 1. ज्ञान समझ, बुद्धि.—कि० १८।४२ 2. चेतना, प्रत्यक्षज्ञान —मा० ६।१३ 3. इकरार, वचन, संविदा, अनुबन्ध, प्रतिज्ञा —रघु० ७।३१ 4. स्वीकृति, सहमति 5. माना हुआ प्रचलन, विहित प्रथा 6. संग्राम, युद्ध, लड़ाई 7. युद्ध की ललकार, प्रहरी-संकेत 8. नाम, अभिधान 9. चिह्न, संकेत 10. प्रसन्न करना, खुश करना, तुष्टीकरण - शि० १६।३७ 11. सहानुभूति, साथ देना 12. मनन 13. वार्तालाप, संलाप 14. भाँग । सम० —व्यतिक्रमः प्रतिज्ञा भंग करना, संविदा का उल्लंघन ।

संविदा [संविद्+टाप्] करार, प्रतिज्ञा, ठेका ।

संविद्वत (वि०) जानने वाला, प्रतिभाशाली 2. सांमनस्य पूर्ण ।

संविदित (भू० क० कृ०) [सम्+विद्+क्त] 1. जाना हुआ, समझा हुआ 2. पहचाना हुआ 3. सुविदित, विश्रुत 4. खोजा हुआ 5. सम्मत 6. उपदिष्ट, समझाया बुझाया हुआ—दे० सम् पूर्वक विद्,—तम् करार, प्रतिज्ञा ।

संविधा [सम्+वि+धा+अङ्+टाप्] 1. व्यवस्था, उपक्रमण, आयोजन–रघु० ७।१७, १४।१७ 2. जीवन यापन का ढंग, जीवनचर्या के साधन—रघु० १।९४ ।

संविधानम् [सम्+वि+धा+ल्युट्] 1. व्यवस्था, प्रबन्ध —मा० ६ 2. अनुष्ठान 3. आयोजन, रीति 4. कृत्य 5. (कथावस्तु में) घटनाओं का क्रम—मा० ६ ।

संविधानकम् [संविधान+कन्] 1. (कथावस्तु में) घटनाओं का क्रम, किसी नाटक की कथावस्तु–अहो संविधान-कम्—उत्तर० ३ 2. अद्भुत कर्म, असाधारण घटना ।

संविभागः [सम्+वि+भर्ज्+घञ्] 1. विभाजन, बांटना 2. भाग, अंश, हिस्सा ।

संविभागिन् (पुं०) [संविभाग+इनि] सहभागी, हिस्सेदार, साझीदार ।

संविष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+विश्+क्त] 1. सोता हुआ, लेटा हुआ—रघु० १।९५ 2. साथ-साथ घुसा हुआ 3. मिलकर बैठा हुआ 4. वस्त्र पहने हुए, कपड़े धारण किये हुए ।

संवीक्षणम् [सम्+वि+ईक्ष्+ल्युट्] सब दिशाओं में देखना, खोज, खोई हुई वस्तु की तलाश ।

संवीत (भू० क० कृ०) [सम्+व्ये+क्त] 1. वस्त्रों से सज्जित, कपड़े पहने हुए 2. ढका हुआ, लिपटा हुआ, अधिच्छादित 3. अलंकृत 4. लपेटा हुआ, घेरा हुआ, बन्द किया हुआ, परिवेष्टित 5. अभिभूत ।

संवृक्त (भू० क० कृ०) [सम्+वृज्+क्त] 1. खाया हुआ, उपभुक्त 2. नष्ट ।

संवृत (भू० क० कृ०) [सम्+वृ+क्त] 1. ढका हुआ, आच्छादित मुहुरङ्गुलिसंवृताधरोष्ठं (मुखम्)—श० ३।२६ 2. प्रच्छन्न, गुप्त- श० २।११ 3. रहस्य 4. समाप्त, बन्द, सुरक्षित 5. अवकाश प्राप्त, एकान्त-सेवी 6. संकुचित, भींचा हुआ 7. बलपूर्वक छीना हुआ, जब्त किया हुआ 8. भरा हुआ, पूर्ण 9. सहित, दे० सम् पूर्वक वृ, - तम् 1. गुप्त स्थान, एकान्त स्थान,

गोपनीयता 2. उच्चारण का एक प्रकार। सम० —आकार (वि०) जो अपनी आन्तरिक भावनाओं को बाहर प्रकट नहीं होने देता है, जो अपने मन के विचारों का अता —पता नहीं देता, —मन्त्र (वि०) जो अपनी योजनाओं को गुप्त रखता है—रघु० १।२० ।

संवृतिः (स्त्री०) [सम्+वृ+क्तिन्] 1. आवरण, आच्छादन 2. छिपाव, दवाना, गुप्त रखना कि० १०।४४ 3. गुप्त प्रयोजन, अभिसंधि ।

संवृत्त (भू० क० कृ०) [सम्+वृत्+क्त] 1. हुआ, घटा, घटित हुआ 2. भरा गया, सम्पन्न 3. संचित, एकस्थान पर राशीकृत 4 बीता हुआ, गया हुआ 5. ढका हुआ 6. सुसज्जित,—त्तः वरुण का नाम ।

संवृत्तिः (स्त्री०) [सम्+वृत्+क्तिन्] 1. होना, घटना घटित होना 2. निष्पन्नता 3. आवरण ।

संवृद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+वृध्+क्त] 1. पूर्णविकसित, बढ़ा हुआ, पूर्ण वृद्धि को प्राप्त 2. ऊँचा या लंबा, बढ़ा हुआ, बड़ा विशाल 3. समृद्धिशाली, खिलता हुआ, फलता फूलता हुआ ।

संवेगः [सम्+विज्+घञ्] 1. विक्षोभ, हड़बड़ी, उत्तेजना महावीर० १।३९ 2. प्रचंड गति, शीघ्रगामिता, प्रचंडता—उत्तर० २।२४, मा० ५।६ 3. जल्दी, चाल 4. तड़पाने वाली पीड़ा, वेदना, तीक्ष्णता ।

संवेदः [सम्+विद्+घञ्] प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी, चेतना, भावना ।

संवेदनम्, —ना [सम्+विद्+ल्युट्] 1. प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी 2. तीव्र अनुभूति, भावना, अनुभूति, भोगना —दुःखसंवेदनायैव रामे चैतन्यमर्पितम्—उत्तर० १।४७ 3. देना, आत्मसमर्पण करना—मुद्रा० १।२३ ।

संवेशः [सम्+विश्+घञ्] 1. निद्रा, विश्राम—रघु० १।९३ 2. स्वप्न 3. आसन (कुर्सी आदि) 4. मैथुन, संभोग या रतिबंध विशेष ।

संवेशनम् [सम्+विश्+ल्युट्] मैथुन, संभोग ।

संव्यानम् [सम्+व्ये+ल्युट्] 1. आवरण, परिवेष्टन 2. वस्त्र, कपड़ा, परिधान 3. उत्तरीय वस्त्र शि० १८।६९ ।

संशप्तकः [सम्यक् शप्तमङ्गीकारो यस्य कप्] वह योद्धा जिसने युद्ध से न भागने की शपथ खायी हो और जो दूसरे योद्धाओं को भागने से रोकने के लिए रक्खा गया हो 2. छंटा हुआ योद्धा 3. सहयोगी योद्धा 4. वह षड्यन्त्रकारी जिसने किसी को मार डालने का बीड़ा उठाया हो ।

संशयः [सम्+शी+अच्] 1. संदेह, अनिश्चिति, चपलता, संकोच, मनस्तु मे संशयमेव गाहते—कु० ५।४६, त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न हि उपपद्यते —भग० ६।३९ 2. शंका, शक 3. संदेह, या अनिर्णय (न्या० में) न्यायदर्शन में वर्णित सोलह भेदों में से एक —एक धर्मिकविरुद्धभावाभवप्रकारकं ज्ञानं संशयः 4. डर, खतरा, जोखिम —न संशयमनारुह्य नरो भद्राणि पश्यति—हि० २।७, याता पुनः संशयमन्यथैव—मा० १०।१३, कि० १३।१६, वेणी० ६।१ 5. संभावना । सम०—आत्मन् (वि०) संदेह करने वाला, शंकाशील, —आपन्न,—उपेत,—स्थ (वि०) संदेहपूर्ण, अनिश्चित, अस्थिर, —गत (वि०) खतरे में पड़ा हुआ —श० ६, —छेदः संदेह का निवारण, निर्णय, —छेदिन् (वि०) सभी संदेहों को मिटाने वाला, निर्णयात्मक—श० ३ ।

संशयान, संशयालु (वि०) [सम्+शी+शानच्, संशय+आलुच्] सन्देहपूर्ण, अस्थिर, अनिश्चित, चंचल ।

संशरणम् [सम्+शृ+ल्युट्] युद्ध का आरम्भ, आक्रमण, चढ़ाई, धावा ।

संशित (भू० क० कृ०) [सम्+शो+क्त] 1. तेज किया हुआ, प्रोत्तेजित किया हुआ 2. तेज, तीक्ष्ण 3. सर्वथा पूरा किया हुआ, क्रियान्वित, निष्पन्न 4. निर्णीत, सुनिश्चित, निर्धारित, निश्चित । सम० —आत्मन् (वि०) जिसका मन सर्वथा परिपक्व या अनुशिष्ट है, —व्रत (वि०) जिसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली है ।

संशुद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+शुध्+क्त] 1. पूरी तरह शुद्ध किया हुआ, पवित्र 2. पालिश किया हुआ, संस्कृत 3. प्रायश्चित्त के द्वारा विशुद्ध किया हुआ ।

संशुद्धिः (स्त्री०) [सम्+शुध्+क्तिन्] 1. नितान्त पवित्रीकरण, —भग० १५।१ 2. स्वच्छ करना, विमल करना 3. संशोधन, समाधान, परिशोधन 4. स्वच्छता, सफ़ाई 5. (ऋण का) भुगतान ।

संशोधनम् [सम्+शुध्+ल्युट्] पवित्रीकरण, स्वच्छता आदि ।

संश्चत् (नपुं०) [सम्+श्चु+डति] दाव—पेंच, जादूगरी, इन्द्रजाल, मरीचिका—पुं० जादूगर ।

संश्यान (भू० क० कृ०) [सम्+श्यै+क्त] 1. संकुचित, सिकुड़ा हुआ 2. जमा हुआ, ठिठुरा हुआ 3. लपेटा हुआ 4. अवसन्न ।

संश्रयः [सम्+श्रि+अच्] विश्रामस्थल, आवास स्थान, निवासस्थान, वासस्थान—परस्पर विरोधिन्योरेकसंश्रयदुर्लभम् —विक्रम० ५।२४, रघु० ६।४१, इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में, 'साथ रहने वाला' 'संबद्ध या विषयक' 'निर्देशानुसार'—ज्ञातिकुलैकसंश्रयाम्—श० ५।१७, नौसंश्रयः—रघु० १६।५७, मनोरथोऽस्याः शशिमौलिसंश्रयः—कु० ५।६०, द्विसंश्रयां प्रीतिमवाप

लक्ष्मीः—१।४३ एकार्थसंश्रयमुभयोः प्रयोगम् —मालवि० १ 2. प्रक्षण या शरण की खोज, शरण के लिए दौड़ना, मित्रता करना, पारस्परिक प्ररक्षण के लिए संघटित होना, राजनीति में वर्णित छः उपायों में से एक, दे० 'गुण' के अन्तर्गत भी, मनु० ७।१६० 3. आश्रय, शरण, आश्रम, प्ररक्षण, पनाह – अनपायिनि संश्रयद्रुमे गजभग्ने पतनाय वल्लरी--कु० ४।३१, मेघ० १७, पंच० १।२२ ।

संश्रवः [सम्+श्रु+अप्] 1. ध्यानपूर्वक सुनना 2. प्रतिज्ञा, करार, वादा ।

संश्रवणम् [सम्+श्रु+ल्युट्] 1. सुनना 2. कान ।

संश्रित (भू० क० कृ०) [सम्+श्रि+क्त] 1. शरण में गया हुआ 2. सहारा दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ ।

संश्रुत (भू० क० कृ०) [सम्+श्रु+क्त] 1. प्रतिज्ञात, करार किया हुआ 2. भली भांति सुना हुआ ।

संश्लिष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+श्लिष्+क्त] 1. बांधा हुआ, साथ साथ मिला हुआ, जुड़ा हुआ, संयुक्त 2. आलिंगित 3. संबद्ध, साथ साथ जुड़ा 4. सटा हुआ, संस्पर्शी, संसक्त 5. सुसज्जित, युक्त, सहित ।

संश्लेषः [सम्+श्लिष्+घञ्] 1. आलिंगन, परिरम्भण 2. मिलाप, संबंध, संपर्क ।

संश्लेषणम्,-णा [सम्+श्लिष्+ल्युट्] 1. मिला कर भींचना 2. साथ साथ बांधने का साधन ।

संसक्त (भू० क० कृ०) [सम्+सञ्ज्+क्त] 1. साथ जुड़ा हुआ, चिपका हुआ 2. जमा हुआ, संलग्न, आसक्त, सटा हुआ 3. साथ मिलाया हुआ, शृंखलाबद्ध, पास पास मिला हुआ –रघु० ७।२४ 4. निकट, आसन्न, सटा हुआ 5. अव्यवस्थित मिला हुआ, मिश्रित, गड्डमड्ड किया हुआ—मदमुखरमयूरीमुक्तसंसक्तकेकः मा० ९।५, कलिन्दकन्या मथुरां गताऽपि गङ्गोर्मिसंसक्तजलेव भाति -रघु० ६।४८, मा० ५।११ 6. डटा हुआ, तुला हुआ 7. संपन्न, सहित 8. जकड़ा हुआ, प्रतिबद्ध । सम०—मनस् (वि०) जिसका मन किसी विषय पर जमा हुआ हो, युग (वि०) जूए में जुता हुआ, जीन कसा हुआ—शि० ३।६३ ।

संसक्तिः [सम्+सञ्ज्+क्तिन्] 1. सटे रहना, घनिष्ठ मिलन या संगम कि० [illegible] २७ 2. घनिष्ट संपर्क, सामीप्य 3. आपसी मेलजोल, घनिष्ठता, घनिष्ट परिचय -शि० ९।६७ 4. बांधना, मिला कर जकड़ना 5. भक्ति, (किसी कार्य में) दुर्व्यस्तता ।

संसद् (स्त्री०) [सम्+सद्+क्विप्] 1. सभा, सम्मिलन, मंडल -संसत्सु जाते पुरुषाधिकारे कि० ३।५१, छात्रसंसदि लब्धकीर्तिः-पंच० १, रघु० १६।२४ 2. न्यायालय मनु० ८।५२ ।

संसरणम् [सम्+सृ+ल्युट्] 1. जाना, प्रगति करना, चक्कर काटना 2. संसार, सांसारिक जीवन, लौकिक सत्ता -ग्रीष्मचण्डकरमण्डलभीष्मज्वालसंसरणतापितमूर्तेः—भामि० ४।६ 3. जन्म और पुनर्जन्म 4. सेना का निर्बाध कूच 5. युद्ध का आरम्भ 6. राजमार्ग 7. नगर के दरवाज़ों के समीप की धर्मशाला ।

संसर्गः [सम्+सृज+घञ्] 1. सम्मिश्रण, संगम, मिलाप 2. सम्पर्क, संगति, साहचर्य, समाज—संसर्गमुक्तिः खलेषु—भर्तृ० २।६२, श० २।३ 3. सामीप्य, संस्पर्श 4. मेल-जोल, परिचय 5. मैथुन, संभोग – मनु० ६।७२ 6. सह-अस्तित्व, घनिष्ठ संबंध । सम० —अभावः अभाव के दो मुख्य भेदों में से एक, सापेक्ष अभाव जो तीन प्रकार का है (प्रागभाव=पूर्ववर्ती अभाव, प्रध्वंसाभाव=आपाती अभाव, और अत्यन्ताभाव=निरपेक्ष, अनस्तित्व),--दोषः साहचर्य या संगति के विशेषकर कुसंगति के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली बुराई या दोष ।

संसर्गिन् (वि०) [संसर्ग+इनि] संयुक्त, मिला हुआ, (पुं०) सहचर, साथी ।

संसर्जनम् [सम्+सृज्+ल्युट्] 1. सम्मिश्रण 2. छोड़ना, परित्याग करना 3. खाली करना, शून्य करना ।

संसर्पः [सम्+सृप्+ल्युट्] 1. सरकना, रेंगना 2. मलमास, लौंद का महीना जो क्षयमास वाले वर्ष में होता है ।

संसर्पणम् [सम्+सृप्+ल्युट्] 1. सरकना 2. अचानक आक्रमण, सहसा धावा ।

संसर्पिन् (वि०) [संसर्प+इनि] सरकने वाला, रेंगने वाला, कु० ७।८१ ।

संसादः [सम्+सद्+घञ्] सभा ।

संसारः [सम्+सृ+घञ्] 1. मार्ग, रास्ता 2. सांसारिक जीवनचक्र, धर्मनिरपेक्ष जीवन, लौकिक जिंदगी, दुनिया असारः संसारः -उत्तर० १, मा० ५।३०, संसारधन्वभुवि किं सारमामृशसि शंसाधुना शुभमते –अश्व० २२, या, परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते-पंच० १।२७ 3. आवागमन, जन्मान्तर, जन्म-परंपरा 4. सांसारिक भ्रम । सम०—गमनम् आवागमन, --गुरुः कामदेव का विशेषण, मार्गः 1. लौकिक बातों का क्रम, सांसारिक जीवन 2. योनिमुख, भगद्वार, मोक्षः,—मोक्षणम् ऐहिक जीवन से मुक्ति ।

संसारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [संसार+इनि] लौकिक, दुनियावी, देहान्तरगामी पुं० 1. सजीव प्राणी, जीवजन्तु 2. जीवधारी, जीवात्मा ।

संसिद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+सिध्+क्त] 1. सर्वथा निष्पन्न, पूरा किया हुआ 2. जिसे मोक्ष की सिद्धि प्राप्त हो गई है, मुक्त ।

संसिद्धिः (स्त्री०) [सम्+सिध्+क्तिन्] 1. पूर्णता, पूर्ण निष्पन्नता - स्वनुष्ठितस्य धर्मस्य संसिद्धिर्हरितोषणम्—भाग०, कु० २।६३ 2. कैवल्य, मोक्ष—संसिद्धि परमां गताः—भग० ८।१५ ३।२० 3. प्रकृति, नैसर्गिक वृत्ति, अवस्था या गुण 4. प्रणयोन्मत्त या नशे में चूर स्त्री।

संसूचनम् [सम्+सूच्+ल्युट्] 1. प्रकट करना, सिद्ध करना 2. सूचित करना, कहना 3. संकेत करना, भेद खोलना -अर्थस्य संसूचनम् 4. भर्त्सना, झिड़कना।

संसृतिः (स्त्री०) [सम्+सृ+क्तिन्] 1. मार्ग, धारा, प्रवाह 2. लौकिक जीवन, संसारचक्र 3. देहान्तरगमन, आवागमन—किं मां निपातयसि संसृतिगर्तमध्ये—भामि० ४।३२, शि० १४।६३, तु० 'संसार'।

संसृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+सृज्+क्त] 1. मिश्रित, मिला हुआ, साथ साथ मिलाया हुआ, सम्मिलित किया हुआ 2. साझीदारों की भांति साथ साथ संबद्ध 3. प्रशांत 4. पुनर्युक्त 5. फँसा हुआ, 6. निर्मित 7. स्वच्छ वस्त्रों से सुसज्जित।

संसृष्टता-त्वम् [सम्+सृज्+क्त+ता (त्वम्) 1. समाज, संघ 2. (विधि में) आर्थिक हित की दृष्टि से बंधु बांधवों का ऐच्छिक पुनर्मिलन (जैसे कि पिता और पुत्र का अथवा संपत्ति के विभाजन के पश्चात् भाइयों का)।

संसृष्टिः (स्त्री०) [सम्+सृज्+क्तिन्] 1. संबंध, मिलाप 2. साहचर्य, मेल-जोल, सहभागिता, साझीदारी 3. एक ही परिवार में मिलकर रहना—दे० संसृष्टता (2) 4. संग्रह 5. संचय करना, जोड़ना 6. (सा० में) एक ही संदर्भ में दो या दो से अधिक अलंकारों का स्वतंत्र रूप से सह-अस्तित्व—मिथोऽनपेक्षयैतेषां (शब्दार्थालङ्काराणाम्) स्थितिः संसृष्टिरुच्यते—सा० द० ७५६।

संसेकः [सम्+सिच्+घञ्] छिड़कना, जल से तर करना।

संस्कर्तृ (पुं०) [सम्+कृ+तृच्] 1. जो सुसज्जित करता है, खाना बनाता है, या किसी प्रकार की तैयारी करता है—मनु० ५।५१ 2. जो अभिमंत्रित करता है, पहल करता है—उत्तर० ७।१३।

संस्कारः [सम्+कृ+घञ्] 1. पूर्ण करना, संस्कृत करना, पालिश करना,—(मणिः) प्रयुक्तसंस्कार इवाधिकं बभौ—रघु० ३।१८ 2. संस्क्रिया, पूर्णता, व्याकरण की दृष्टि से (शब्दों की) विशुद्धता—कु० १।२८ (यहाँ मल्लि० 'व्याकरणजन्या शुद्धिः' लिखता है) रघु० १५।७६ 3. शिक्षा, अनुशीलन (मानसिक) प्रशिक्षण—निसर्गसंस्कारविनीत इत्यसौ नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक्—रघु० ३।३५, कु० ७।२० 4. तैयार करना, आसज्जा 5. खाना बनाना, भोज्य पदार्थ तैयार करना 6. शृंगार, सजावट, अलंकार—स्वभावसुन्दरं वस्तु न संस्कारमपेक्षते—दृष्टान्त० ४९, श० ७।२३, मुद्रा० २।१० 7. अभिमन्त्रण, अन्तःशुद्धि, पवित्रीकरण 8. छाप, रूप, सांचा, कार्यवाही, प्रभाव—यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्—हि० प्र० ८, भर्तृ० ३।८४ 9. विचार भाव, प्रत्यय 10. मनःशक्ति या धारिता 11. कार्य का प्रभाव, किसी कर्म का गुण—रघु० १।२० 12. अपनी पूर्वजन्म की वासनाओं को पुनर्जीवित करने का गुण, छाप डालने की शक्ति, वैशेषिकों द्वारा माने हुए चौबीस गुणों में से एक (यह गुण तीन प्रकार का है—भावना, वेग और स्थिति-स्थापकता) 13. प्रत्यास्मरणशक्ति, संस्मरण—संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः—तर्क० 14. शुद्धिसंस्कार, पुनीत कृत्य पुण्यसंस्कार—संस्कारार्थं शरीरस्य—मनु० २।६६, रघु० १०।७९ (मनु बारह संस्कारों का उल्लेख करता है—दे० मनु० २।२७, कुछ लेखक इस संख्या को सोलह तक बढ़ाते हैं) 15. धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान 16. उपनयन संस्कार 17. अन्त्येष्टि संस्कार 18. मांजकर चमकाने के काम आने वाला पत्थर, झांवां—श० ६।६, (यहाँ 'संस्कार' का अर्थ 'मांजना' भी है)। सम०—पूत (वि०) 1. पुण्यकृत्यों द्वारा शुद्ध किया हुआ 2. शिक्षा या अन्य संस्कारों द्वारा पवित्र किया हुआ,—रहित वर्जित,—हीन (वि०) वह द्विज जो संस्कार हीन हो, अथवा जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो, और इस लिए जो व्रात्य (पतित, जातिबहिष्कृत) हो गया हो—तु० 'व्रात्य'।

संस्कृत (भू० क० कृ०) [सम्+कृ+क्त] 1. पूरा किया गया, परिष्कृत, मांज कर चमकाया हुआ, आवर्धित—वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते—भर्तृ० २।१९ 2. कृत्रिम रूप से बनाया गया, सुरचित, सुनिर्मित, सुसम्पादित 3. तैयार किया गया, संवारा गया, सुसज्जित किया गया, पकाया गया (भोजन) 4. अभिमन्त्रित पुनीत किया गया 5. सांसारिक जीवन में दीक्षित, विवाहित 6. स्वच्छ किया गया, पवित्र किया गया 7. अलंकृत किया गया, सजाया गया 8. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम,—तः 1. व्या॰ रण के नियमों के अनुसार सिद्ध किया गया शब्द, नियमित व्युत्पन्न शब्द 2. द्विजाति का वह व्यक्ति जिसका शुद्धिसंस्कार हो चुका हो 3. विद्वान् पुरुष,—तम् 1 परिष्कृत या अत्यन्त परिमार्जित भाषा, संस्कृत भाषा 2. धार्मिक प्रचलन 3. चढ़ावा, आहुति (बहुधा वैदिक)।

संस्क्रिया [सम्+कृ+श, इयङ्, टाप्] 1. शुद्धिसंस्कार

2. अभिमन्त्रण 3. और्ध्वदैहिकक्रिया, अन्त्येष्टि संस्कार ।

संस्तम्भः [सम्+स्तम्भ्+घञ्] 1. सहारा, टेक 2. दृढ़ करना, सबल बनाना, जमाना 3. विराम, यति 4. जड़ता, लकवा ।

संस्तरः [सम्+स्तृ+अप्] 1. शय्या, पलंग, बिस्तर —नवपल्लवसंस्तरेऽपि ते —रघु० ८।५७ नवपल्लवसंस्तरे यथा रचयिष्यामि तनुं विभावसौ—कु० ४।३४ 2. यज्ञ ।

संस्तवः [सम्+स्तु+अप्] 1. प्रशंसा, स्तुति 2. जान-पहचान, घनिष्ठता, परिचय गुणाः प्रियत्वेऽधिकृता न संस्तवः—कि० ४।२५, नवैर्गुणैः सम्प्रति संस्तवस्थिरं तिरोहितं प्रेम घनागमश्रियः ४।२२, शि० ७।३१ ।

संस्तावः [सम्+स्तु+घञ्] 1. प्रशंसा, ख्याति 2. सम्मिलित स्तुतिपाठ, 3. यज्ञ में स्तुति पाठक ब्राह्मणों के बैठने का स्थान ।

संस्तुत (भू० क० कृ०) [सम्+स्तु+क्त] 1. प्रशस्त, जिसकी स्तुति की गई हो 2. मिलकर प्रशंसा किया गया 3. सम्मत, संवादी 4. घनिष्ठ, परिचित ।

संस्तुतिः (स्त्री०) [सम्+स्तु+क्तिन्] प्रशंसा, स्तुति ।

संस्त्यायः [सम्+स्त्यै+घञ्] 1. संचय, राशि, संघात 2. सामीप्य 3. फैलाव, प्रसार, विस्तार 4. घर, निवासस्थान, आवास संस्त्यायमेव गच्छावः मा० ११९ 5. परिचय, मित्रों या परिचितों की बातचीत ।

संस्थ (वि०) [सम्+स्था+क] 1. ठहरने वाला, डटा रहने वाला, टिकाऊ 2. रहने वाला, विद्यमान, मौजूद, स्थित (मास के अन्त में) शिष्टा क्रिया कस्य चिदात्मसंस्था —मालवि० १।५६, कु० ६।६०, मा० ५।१६ 3. पालतू, घरेलू बनाया हुआ, सधाया हुआ 4. स्थिर, अचल 5. समाप्त, नष्ट, मृत, स्थः 1. निवासी, वास्तव्य 2. पड़ौसी, स्वदेशवासी, 3. गुप्तचर ।

संस्था [सम्+स्था+अङ्+टाप्] 1. संघात, सभा 2. स्थिति, प्राणी की अवस्था या दशा 3. रूप, प्रकृति —रघु० ११।३८ 4. धंधा, व्यवसाय, रहन-सहन का बंधा हुआ तरीका पृथक् संस्थाश्च निर्ममे—मनु० १।२१ 5. शुद्ध और उचित आचरण 6. अन्त, पूर्ति 7. विराम, यति 8. हानि, विनाश 9. प्रलय 10. अनुरूपता 11. राजकीय आज्ञा 12. सोम यज्ञ का एक रूप ।

संस्थानम् [सम्+स्था+ल्युट्] 1. संचय, राशि, मात्रा 2. प्राथमिक अणुओं की समष्टि 3. संरूपण, विन्यास आकृतिरवयवसंस्थानविशेषः 4. रूप, आकृति, दर्शन, सूरत, शक्ल श्री संस्थानं चाप्सरस्तीर्थमाराद्दुत्क्षिप्यैनां ज्योतिरेकं जगाम श० ५।३०, मनु० ९।२६१ 5. संरचना, निर्माण 6. पड़ौस 7. आवास का सामान्य स्थल, सार्वजनिक स्थान 8. स्थिति अवस्था 9. कोई स्थान या जगह 10. चौराहा 11. निशान, चिह्न, विशेषक चिह्न 13. मृत्यु ।

संस्थापनम् [सम्+स्था+णिच्+ल्युट्] 1. एक स्थान पर रखना, संचय करना 2 जमाना, निर्धारण करना, विनियमित करना कुर्वीत चैषां प्रत्यक्षमर्घसंस्थापनं नृपः—मनु० ८।४०२ 3. स्थापित करना, पुष्ट करना 4. नियंत्रित करना, दमन करना, ना 1. नियन्त्रण, दमन 2. शान्त करने के उपाय, संस्थापना प्रियतरा विरहातुराणाम् मृच्छ० ३।३ ।

संस्थित (भू० क० कृ०) [सम्+स्था+क्त] 1. साथ साथ खड़ा होने वाला, 2. विद्यमान, ठहरने वाला —नियोगसंस्थित—पंच० १।९२ 3. सटा हुआ, मिला हुआ 4. मिलता-जुलता, समान 5. संचित, राशीकृत 6. स्थिर, जमा हुआ, स्थापित 7. अन्दर या ऊपर रक्खा हुआ, अन्तर्वर्ती 8. अचल 9. रोका हुआ, पूरा किया हुआ, अन्त तक निष्पन्न, समाप्त—श० ३ 10. मृत, उपरत दे० सम् पूर्वक 'स्था' ।

संस्थितिः (स्त्री०) [सम्+स्था+क्तिन्] 1. साथ-साथ होना, मिल कर रहना 2. सटा होना, निकटता, सामीप्य 3. निवासस्थान, आवासस्थल, विश्रामगृह, यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्—मनु० ६।९० 4. संचय, ढेर 5. अवधि, कालावधि—हि० १।४३ 6. अवस्थान, स्थिति, जीवन की दशा 7. प्रतिबंध 8. मृत्यु ।

संस्पर्शः [सम्+स्पृश्+घञ्] 1. संपर्क, छूना, सम्मिलन, मिश्रण 2. छूआ जाना, प्रभावित होना 3. प्रत्यक्षज्ञान, संवेदन ।

संस्पर्शी [सम्+स्पृश्+अच्+ङीप्] एक प्रकार का गंधयुक्त पौधा ।

संस्फालः [सम्यक् स्फाळः स्फुरणं यस्य प्रा० ब०] 1. मेंढा 2. बादल ।

संस्फेटः, संस्फोटः [सम्=स्फिट् (स्फुट्)+घञ्] संग्राम, युद्ध ।

संस्मरणम् [सम्+स्मृ+ल्युट्] याद करना, मन में लाना ।

संस्मृतिः (स्त्री) [सम्+स्मृ+क्तिन्] याद, प्रत्यास्मरण, संस्मृतिभंव भवत्यभवाय—कि० १८।२७ ।

संस्रवः, संस्रावः [सम्+स्रु+अप्, घञ् वा] 1. बहना, टपकना, रिसना 2. सरिता 3. तर्पण का अवशिष्टांश 4. एक प्रकार का चढ़ावा या तर्पण ।

संहत (भू० क० कृ०) [सम्+हन्+क्त] 1. मिलकर आघात किया हुआ, घायल 2. बन्द, अवरुद्ध, 3. सुग्रथित, दृढ़तापूर्वक जुड़ा हुआ 4. मिलाकर जोड़ा हुआ, मित्रता में बंधा हुआ कि० १।१९ 5. सम्पृक्त,

दृढ़, ठोस 6. संबद्ध, युक्त, मिलाकर रक्खा हुआ, शरीर का अंग बना हुआ, सटा हुआ जालमादाय गच्छन्ति संहताः पक्षिणोऽप्यमी पंच० २।९, ५।१०१, हि० १।३७ 7. एकमत 8. संघात, संचित । सम० जानु (वि०) जिसके घुटने आपस मे टकराते हों, लग्नजानुक, भ्रू (वि०) सघन भौंहों से युक्त, -स्तनी वह स्त्री जिसके दोनों स्तन सटे हुए हों ।

संहतता, त्वम् [संहत+तल्+टाप् (त्व)] 1. घना संपर्क, संयोजन 2. सम्पृक्तता 3. सहमति, एकता 4. सांमनस्य, समेकता ।

संहतिः (स्त्री०) [सम्+हन्+क्तिन्] 1. दृढ़ या घना संपर्क, घनिष्ट मेल—कु० ५।८ 2. मेल, सम्मिलन, —संहतिः कार्यसाधिका, संहतिः श्रेयसी पुंसां हि० १, तु० "संघे शक्तिः" 3. संपृक्तता, दृढ़ता, ठोसपन 4. पुंज, राशि—गुरुतां नयन्ति हि गुणा न संहतिः —कि० १२।१० 5. सहमति, सांमनस्य 6. संचय, ढेर, संघात, समुच्चय -वनान्यवाञ्चीव चकार संहतिः —कि० १४।३४, २७, ३।२०, ५।४, मुद्रा० ३।२ 7. सामर्थ्य 8. पिण्ड, समवाय ।

संहननम् [सम्+हन्+ल्युट्] 1. सघनता, दृढ़ता 2. देह, व्यक्ति—अमृताध्मातजीमूतस्निग्धसहननस्य ते उत्तर० ६।२१, महावीर० २।४६ 3. सामर्थ्य, दे० 'संहतिः' भी ।

संहरणम् [सम्+हृ+ल्युट्] 1. एकत्र करना, साथ-साथ मिलाना, संचय करना 2. लेना, ग्रहण करना 3. सिकोड़ना 4. नियंत्रित करना 5. नष्ट करना, बर्बाद करना ।

संहर्तृ (पुं०) [सम्+हृ+तृच्] विनाशक, नष्ट करने वाला ।

संहर्षः [सम्+हृष्+घञ्] 1. रोमांच होना, भय या हर्ष से पुलकित होना 2. आनन्द, हर्ष, खुशी 3. प्रतियोगिता, होड़, प्रतिद्वन्द्विता 4. वायु 5. साथ-साथ रगड़ना ।

संहातः [सम्+हन्+घञ् वा० कुत्वाभावः, संघात का पाठान्तर] इक्कीस नरकों में से एक मनु० ४।८९ ।

संहारः [सम्+हृ+घञ्] 1. मिलाकर खींचना, या साथ-साथ लाना, संचय करना अनुभवतु वेणीसंहार-महोत्सवम्—वेणी० ६ 2. संकोचन, भींचना, संक्षेपण 3. रोकदेना, पीछे खींच लेना, वापिस लेना (विप० प्रयोग या विक्षेप) -प्रयोगसंहारविभक्तमन्त्रम्—रघु० ५।५७, ४५ 4. प्रतिबंध लगाना, रोक लेना 5. विनाश, विशेषकर सृष्टि का, प्रलय, विश्वनाश 6. समाप्ति, अन्त, उपसंहार 7. संघात, समूह 8. उच्चारण दोष 9. जादू के शस्त्रास्त्रों को वापिस हटाने के लिए मंत्र या जादू 10. व्यवसाय, कुशलता 11. नरक का एक प्रभाग । सम०—भैरवः भैरव का एक रूप, -मुद्रा तन्त्र-पूजा में विशेष प्रकार की मुद्रा, इसकी परिभाषा अधोमुखे वामहस्ते ऊर्ध्वास्यं दक्ष हस्तकम् । क्षिप्ताङ्गुलीरङ्गुलीभिः संगृह्य परिवर्तयेत् ॥

संहित (भू० क० कृ०) [सम्+धा+क्त, हि आदेशः] 1. साथ-साथ रक्खा हुआ, मिला हुआ, संयुक्त 2. सहमत, समनुरूप, अनुकूल 3. सम्बन्धी 4. संचित 5. अन्वित, सुसज्जित, सहित, युक्त 6. उत्पन्न दे० सम् पूर्वक धा ।

संहिता [संहित+टाप्] 1. सम्मिश्रण, संघ, संयोजन 2. संचय, संकलन, संग्रह 3. कोई पद्य या गद्यसंग्रह जिसका क्रम सुव्यवस्थित हो 4. विधि या क़ानूनों का संग्रह या संकलन, (किसी विषय के) नियम, नियमावली, सारसंग्रह, मनुसंहिता 5. वेद का क्रमबद्ध मंत्रपाठ, या विभिन्न शाखाओं के अनुसार उच्चारण-सम्बन्धी परिवर्तनों से युक्त पदपाठ—पदप्रकृतिः संहिता नि० 6. (व्या० में) सन्धि के नियमों के अनुसार वर्णों का मेल पा० १।४।१०९, वर्णानामतिशयितः संनिधिः संहितासंज्ञः स्यात् सिद्धा०, या. वर्णानामेकप्राणयोगः संहिता 7. विश्व को संघटित रखने वाली शक्ति, परमात्मा ।

संहूति (स्त्री०) [सम्+ह्वे+क्तिन्] चीखना, चिल्लाना, भारी हंगामा, अत्यन्त शोरगुल ।

संहृत (भू० क० कृ०) [सम्+हृ+क्त] 1. मिलाकर खींचा हुआ 2. सिकोड़ा हुआ, संक्षिप्त किया हुआ 3. वापिस लिया हुआ, पीछे खींचा हुआ 4. संचित, संगृहीत 5. पकड़ा हुआ, हाथ डाला हुआ 6. दबाया हुआ, नियन्त्रण में रक्खा हुआ 7. नष्ट किया हुआ ।

संहृतिः (स्त्री०) [सम्+हृ+क्तिन्] 1. सिकुड़न, भींचना 2. विनाश, हानि 3. लेना, पकड़ना 4. प्रतिबन्ध. 5. संचय ।

संहृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+हृष्+क्त] 1. पुलकित, या हर्ष से रोमांचित, प्रसन्न 2. जिसके रोंगटे खड़े हैं या जो काँप रहा है 3. स्पर्धा के भाव से उद्दीप्त ।

संह्लादः [सम्+ह्लद्+घञ्] 1. शोरगुल, चीत्कार, होहल्ला 2. कोलाहल ।

संह्रीण (वि०) [सम्+ह्री+क्त] 1. विनयशील, शर्मीला 2. सर्वथा लज्जित ।

सकट (वि०) [कटेन अशुचिना शवादिना सह वर्तमानः] बुरा, कुत्सित, दुष्ट ।

सकण्टक (वि०) [कण्टेन सह कप्, ब० स०] 1. काँटेदार, चुभने वाला 2. कष्टप्रद, भयानक, -कः जलीय पौधा, शैवल दे० ।

सकम्प, सकम्पन (वि०) [कम्पेन, कम्पनेन सह वा, ब० स०] कांपता हुआ, थरथराता हुआ ।

सकरुण (वि०) [करुणया सह ब० स०] कोमल, दयालु ।

सकर्ण (वि०) (स्त्री० र्णा,—र्णी) [कर्णेन श्रवणेन सह—ब० स०] 1. कान वाला, जिसके कान हों 2. सुनने वाला, श्रोता ।

सकर्मक (वि०) [कर्मणा सह कप् ब० स०] 1. कर्मशील या कर्मकर्ता 2. (व्या० में) कर्म रखने वाला, (क्रिया) कर्म से युक्त ।

सकल (वि०) [कलया कलेन सह वा—ब० स०] 1. भागों सहित 2. सब, समस्त, पूरा, पूर्ण 3. सब अंकों से युक्त, पूरा (जैसे कि चांद) यथा 'सकलेन्दुमुखी' में 4. मृदु या मन्द स्वर वाला । सम० वर्ण (वि०) (अर्थात् पद या वाक्य) क और ल वर्णों से युक्त अर्थात् झगड़ालू, (अर्थात् क+ल+ह) —नल० २।१४ ।

सकल्प (वि०) [कल्पेन सह ब० स०] यज्ञ संबन्धी कृत्यों से युक्त, वेद के कर्मकाण्ड का अनुष्ठाता,—मनु० २।१४०,—ल्पः शिव ।

सकाकोलः [काकोलेन सह—ब० स०] इक्कीस नरकों में से एक नरक दे० मनु० ४।८९ ।

सकाम (वि०) [कामेन सह—ब० स०] 1. प्रेमपूरित, प्रणयोन्मत्त, प्रिय 2. कामनायुक्त, कामी 3. लब्धकाम, तुष्ट, तृप्त,—काम इदानीं सकामो भवतु—श० ४, —मम् (अव्य०) 1. प्रसन्नतापूर्वक 2. संतोष के साथ 3. विश्वासपूर्वक, निस्सन्देह ।

सकाल (वि०) [कालेन सह, ब० स०] ऋतु के अनुकूल, समयोचित, लम् (अव्य०) कालानुरूप, समय से पूर्व, ठीक समय पर, तड़के ।

सकाश (वि०) [काशेन सह—ब० स०] दर्शन देने वाला, दृश्य, प्रस्तुत, निकटवर्ती, शः उपस्थिति, पड़ोस; सामीप्य, (सकाशम्, सकाशात्—क्रि० वि० की भांति प्रयुक्त, 1. निकट 2. निकट से, पास से)

सकुक्षि (वि०) [सह समानः कुक्षिः यस्य—ब० स०] एक ही कोख से उत्पन्न, एक ही माता से जन्म लेने वाला, सहोदर, (भाई आदि) ।

सकुल (वि०) [कुलेन सह ब० स०] 1. उच्चवंश से सम्बन्ध रखने वाला 2. एक ही कुल में उत्पन्न 3. एक ही परिवार का 4. सपरिवार, लः 1. रिश्तेदार 2. एक प्रकार की मछली सकुली ।

सकुल्यः [समाने कुले भवः सकुल+यत्] 1. एक ही परिवार का 2. एक ही गोत्र का परन्तु दूर का रिश्तेदार, जैसे कि चौथी, पांचवीं, छठी या सातवीं, आठवीं अथवा नवीं पीढ़ी का 3. दूरवर्ती रिश्तेदार ।

सकृत् (अव्य०) [एक सुच्, सकृत् आदेश, सुचो लोपः] 1. एक बार सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या प्रदीयते । सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत् मनु० ९।४७ 2. एक समय, एक अवसर पर, पहले, एक दफ़ा—सकृत्कृतप्रणयोऽयं जनः—श० ५ 3. तुरन्त 4. साथ साथ पुं०, स्त्री० मल, विष्ठा (प्रायः 'शकृत्' लिखा जाता है। सम०—गर्भा 1. खच्चर 2. एक ही बार गर्भवती होने वाली स्त्री,—प्रजः कौवा,—प्रसूता, प्रसूतिका 1. वह स्त्री जिसके केवल एक ही सन्तान हुई हो 2. वह गाय जो केवल एक ही बार ब्याई हो,—फला केले का वृक्ष ।

सकैतव (वि०) [कैतवेन सह—ब० स०] धोखा देने वाला, जालसाज़, —वः ठग, धूर्त ।

सकोप (वि०) [कोपेन सह—ब० स०] क्रुद्ध, कुपित, पम् (अव्य०) क्रोधपूर्वक, गुस्से से ।

सक्त (भू० क० कृ०) [संज्+क्त] 1. चिपका हुआ, लगा हुआ, संपृक्त 2. व्यसनग्रस्त, भक्त, अनुरक्त, शौक़ीन सक्तासि किं कथय वैरिणि मौर्यपुत्रे—मुद्रा० २।६ 3. जमाया हुआ, जड़ा हुआ—रघु० २।२८ 4. सम्बन्ध रखने वाला । सम०—वैर (वि०) शत्रुता में प्रवृत्त, लगातार विरोध करने वाला—श० २।१४ ।

सक्तिः (स्त्री०) [सञ्ज्+क्तिन्] 1. संपर्क, स्पर्श 2. मेल, सङ्गम, —सक्तिं जवादपनयत्यनिलो लतानाम्—कि० ५।४६ 3. अनुराग, आसक्ति, भक्ति (किसी वस्तु के प्रति) ।

सक्तु (पुं० ब० व०) [सञ्ज्+तुन्—किच्च] सत्तू, जौ को भून कर फिर पीस कर बनाया हुआ आटा, जो से तैयार किया गया भोजन भिक्षासक्तुभिरेव संप्रति वयं वृत्तिं समीहामहे—भर्तृ० ३।६४ ।

सक्थि (नपुं०) [सञ्ज्+क्थिन्] 1. जंघा (समास में उत्तर, पूर्व तथा मृग शब्द के पश्चात् या जब समास में तुलना अभिप्रेत हो तो 'सक्थि' को बदल कर 'सक्थ' हो जाता है, दे० पा० ५।४।९८) 2. हड्डी 3. गाड़ी का लट्ठा ।

सक्रिय (वि०) [क्रियया सह—ब० स०] फुर्तीला, गतिशील ।

सक्षण (वि०) [क्षणेन सह—ब० स०] जिसके पास अवकाश हो ।

सखि (पुं०) [सह समानं ख्यायते ख्या+डिन् नि०] (कर्तृ० सखा, सखायौ सखायः, कर्म० सखायं, सखायौ, संबं०, ए० व० सख्युः अधि० ए० व० सख्यौ) मित्र, साथी, सहचर, तस्मात्सखा त्वमसि यन्मम तत्तवैव —उत्तर० ५।१०, सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः —कि० १।१०, (समास के अन्त में 'सखि' शब्द बदल कर 'सख' हो जाता है वनितासखानाम्—कु० १।१०, सचिवसखः—रघु० ४।८७, १।४८, १२।९, भट्टि० १।१) ।

सखी [सखि+ङीष्] सहेली, सहचरी, नायिका की सहेली, —नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते —गीत० १ ।

सख्यम् [सख्युर्भावः यत्] 1. मित्रता, घनिष्ठता, मैत्री, —मुमूर्छ सख्यं रामस्य समानव्यसने हरौ —रघु० १२। ५७, समानशीलव्यसनेषु सख्यम् —सुभा० 2. समानता, —ख्यः मित्र ।

सगण (वि०) [गणेन सह—ब० स०] दल बल सहित उपस्थित, —णः शिव का विशेषण ।

सगर (वि०) [गरेण सह—ब० स०] विषैला, ज़हरीला,—रः एक सूर्यवंशी राजा । (यह बाहुराजा का पुत्र था, गर सहित पैदा होने के कारण इसका सगर पड़ा क्योंकि इसकी माता को इसके पिता की दूसरी पत्नी ने विष दे दिया था । सुमति नाम की इसकी पत्नी से इसके साठ हज़ार पुत्र हुए । इसने ९९ यज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न किये, परन्तु जब सौवां यज्ञ होने लगा तो इन्द्र ने इसका घोड़ा उड़ा लिया और पाताल लोक ले गया! इस बात पर सगर ने अपने साठ हज़ार पुत्रों को घोड़ा ढूंढने का आदेश दिया, जब इस पृथ्वी पर घोड़े का पता न लगा तो वह पाताल में जाने के लिए इस पृथ्वी को खोदने लगे, ऐसा करने पर समुद्र की सीमाएँ बढ़ गई और इसी लिए वह 'सागर' के नाम से विख्यात हुआ —तु० रघु० १३।३, जब उन्हें कपिल ऋषि के दर्शन हुए तो उन्होंने उस पर घोड़ा चुराने का आरोप लगाकर बुरा भला कहा । ऋषि के शाप से वे साठ हज़ार पुत्र तुरन्त भस्म हो गए । फिर कई हज़ार वर्ष के पश्चात् उन्हीं का वंशज भगीरथ गंगा को पाताल लोक ले जाने में सफल हुआ, वहां उसने उनकी भस्म को गंगा जल से सींच कर पवित्र किया तथा इस प्रकार उनकी आत्माओं को स्वर्ग में भिजवाया) ।

सगर्भः,—र्भ्यः [सह समानो गर्भो यस्य—ब० स०, समाने गर्भे भवः यत् वा] सहोदर भाई —महावीर० ६।२७।

सगुण (वि०) [गुणेन सह—ब० स०] 1. गुणवान् गुणों से युक्त 2. अच्छे गुणों से युक्त, सद्गुणी 3. भौतिक 4. (धनुष की भांति) डोरी से सुसज्जित, ज्यायुक्त 5. साहित्यिक गुणों से युक्त ।

सगोत्र (वि०) [सह समानं गोत्रमस्य—ब० स०] एक ही कुल में उत्पन्न, बन्धु, रिश्तेदार, —त्रः 1. एक ही पूर्वज की सन्तान, श० ७ 2. एक ही कुल का, श्राद्ध, पिण्ड, तर्पण साथ करने वाला व्यक्ति 3. दूर का रिश्तेदार 4. परिवार, कुल, वंश ।

सग्धिः (स्त्री०) [अद्+क्तिन् नि० घि, सहस्य सः] साथ-खाना, मिलकर भोजन करना ।

सङ्कट (वि०) [सम्+कटच्, सम्+कट्+अच् वा] 1. संकरा, सिकुड़ा हुआ, भीड़ा, सकीर्ण 2. अभेद्य, अगम्य 3. पूर्ण, भरा हुआ, जड़ा हुआ, झालरदार —संकटा ह्याहिताग्नीनां प्रत्यवायैर्गृहस्थता—महावीर० ४।३३, उत्तर० १।६, —टम् 1. भीड़ा रास्ता, संकीर्ण घाटी, तंग दर्रा 2. कठिनाई, दुर्दशा, जोखिम, डर, खतरा संकटेष्वविषण्णधीः—का०, संकटे हि परीक्ष्यन्ते प्राज्ञाः शूराश्च संगरे कथा० ३१।९३ ।

सङ्कथा [सम्+कथ्+अ+टाप्] समालाप, वातचीत ।

सङ्करः [सम्+कॄ+अप्] 1. सम्मिश्रण, मिलावट, अन्तर्मिश्रण श० २ 2. साथ मिलानः, मेल 3. (जातियों का) मिश्रण या अव्यवस्था, अन्तर्जातीय अवैध विवाह जिसका परिणाम मिश्रजातियाँ हैं चित्रेषु वर्णसंकरः का०, भग०, १।४२, मनु० १०।४० 4. (अलं०) दो या दो से अधिक आश्रित अलंकारों का एक ही सन्दर्भ में मिश्रण (विप० संसृष्टि जिसमें अलंकार स्वतन्त्र होते हैं अविश्रान्ति-जुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वं तु संकरः—काव्य० १०, या —अङ्गाङ्गित्वेऽलङ्कृतीनां तद्वदेकाश्रयस्थितौ । संदिग्धत्वे च भवति संकरस्त्रिविधः पुनः - सा० द० ७५७ 5. धूल, बुहारन, कूड़ाकरकट, —री दे० नी० संकारी ।

सङ्कर्षणम् [सम्+कृष्+ल्युट्] 1. मिलकर खींचने की क्रिया, सिकुड़न 2. आकर्षण 3. हल चलाना, खूड निकालना —णः बलराम का नाम—संकर्षणात्तु गर्भस्य स हि संकर्षणो युवा - हरि० ।

सङ्कलः [सम्+कल्+अच् (भावे)] 1. संग्रह, संचय 2. जोड़ ।

सङ्कलनम्—ना [सम्+कल्+ल्युट्] 1. ढेर लगाने की क्रिया, 2. संपर्क, संगम 3. टक्कर 4. मरोड़ना, ऐंठना 5. (गणि० में) योग, जोड़ ।

सङ्कलित (भू० क० कृ०) [सम्+कल्+क्त] 1. ढर लगाया गया, चट्टा लगाया गया, संचित किया गया 2. साथ-साथ मिलाया गया, अन्तर्मिश्रित 3. पकड़ा गया, हाथ में लिया गया 4. जोड़ा गया ।

सङ्कल्पः [सम्+कॢप्+घञ्, गुणः, रस्य लः] 1. इच्छा-शक्ति, कामनाशक्ति, मानसिक दृढ़ता,—कः कामः संकल्पः—दश० 2. प्रयोजन, उद्देश्य, इरादा, विचार 3. कामना, इच्छा सङ्कल्पमात्रोदितसिद्धयस्ते—रघु० १४।१७ 4. चिन्तन, विचार, विमर्श, उत्प्रेक्षा, कल्पना तत्संकल्पोपहितजडिमस्तम्भमभ्येति गात्रम् —मा० १।३५, वृथैव सङ्कल्पशतैरजस्रमनङ्ग नीतोऽसि मया विवृद्धिम्—श० ३।४ 5. मन, हृदय,—मा० ७।२ 6. कोई धार्मिक कृत्य करने की प्रतिज्ञा 7. किसी ऐच्छिक पुण्यकार्य से फल की आशा । सम० —जः,—जन्मन् (पुं०) — योनिः कामदेव के विशेषण

—भगवन्सङ्कल्पयोने—मालवि० ४, कु० ३।२४,—रूप (वि०) 1. ऐच्छिक 2. इच्छा के अनुरूप।

सङ्कसुक (वि०) [सम्+कस्+उकञ्] 1. अस्थिर, चंचल, परिवर्तनशील, अनियमित 2. अनिश्चित, संदिग्ध 3. बुरा, दुष्ट 4. निर्बल, बलहीन, कमजोर।

सङ्कारः [सम्+कृ+घञ्] 1. धूल, बुहारन, कूड़ाकरकट 2. ज्वालाओं के चटखने का शब्द।

सङ्कारी [संकार+ङीप्] वह लड़की जिसका कौमार्य अभी अभी भंग हुआ हो, नई दुलहिन।

सङ्काश (वि०) [सम्+काश्+अच्] 1. सदृश, समान, मिलता-जुलता (समास के अन्त में) अग्नि°, हिरण्य° 2. निकट, पास, नज़दीक, —शः 1. दर्शन, उपस्थिति 2. पड़ौस।

सङ्किलः [सम्+किल्+क] जलती हुई लकड़ी, जलती हुई मशाल।

सङ्कीर्ण (भू० क० कृ०) [सम्+कृ+क्त] 1. साथ साथ मिलाया हुआ, अन्तर्मिश्रित 2. अव्यवस्थित, विभिन्न 3. बिखरा हुआ, फैला हुआ, खचाखच भरा हुआ 4. अस्पष्ट 5. दान बहाता हुआ, नशे में चूर —हि० ४।१७ 6. वर्णसंकर जाति का, अपवित्रकुल या संकरजाति में जन्मा हुआ 7. हरामी, दोगला 8. तंग, संकुचित, —र्णः 1. संकर जाति का व्यक्ति, 2. मिश्रस्वर 3. वह हाथी जिसके मस्तक से मद बहता हो, मस्तहाथी,—र्णम् कठिनाई। सम० —जाति, —योनि (वि०) वर्णसंकर, दोगली नस्ल का, (जैसे कि खच्चर),—युद्धम् अव्यवस्थित लड़ाई, रणसंकुल।

सङ्कीर्तनम्,—ना [सम्+कृत्+णिच्+ल्युट्, ईत्वम्] 1. प्रशंसा करना, सराहना, स्तुति करना 2. (किसी देवता का) यशोगान करना 3. भजन के रूप में किसी देवता के नाम का जप करना।

सङ्कुचित(भू० क० कृ०)[सम्+कुच्+क्त] 1. सिकोड़ा हुआ, संक्षिप्त किया हुआ —लङ्कापतेः सङ्कुचितं यशो यत् —विक्रमांक० १।२७ 2. सिकुड़न वाला, झुर्रियाँ पड़ा हुआ 3. ढका हुआ, बंद किया हुआ 4. आवरण।

सङ्कुल (वि०) [सम्+कुल्+क] 1. अव्यवस्थित 2. आकीर्ण, खचाखच भरा हुआ, पूर्ण—नक्षत्रताराग्रह-सङ्कुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः—रघु० ६।२२, मा० १।२ 3. विकृत 4. असंगत,—लम् 1. भीड़, जमघट, भीड़भाड़, संग्रह, छत्ता, झुंड,—महतः परिजनस्य सङ्कुलेन विघटितायां तस्यामागतोऽस्मि—मा० १ 2. अव्यवस्थित लड़ाई, रणसंकुल 3. असंगत या परस्पर-विरोधी भाषण—उदा०—यावज्जीवमहं मौनी, ब्रह्मचारी च मे पिता। माता तु मम वन्ध्यैव पुत्रहीनः पितामहः॥

सङ्केतः [सम्+कित्+घञ्] 1. इशारा, इंगित 2. निशान, अंगचेष्टा, सुझाव—मुद्रा० १ 3. इंगितपरक चिह्न, निशानी, प्रतीक 4. सहमति, सम्मिलन —सङ्केतो गृह्यते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च—सा० द० १२ 5. प्रेमी प्रेमिका का पारस्परिक ठहराव, नियुक्ति, (प्रेमी या प्रेमिका के मिलने का) निर्दिष्ट स्थान नामसमेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदु वेणुम् —गीत० ५ 6. (प्रेमियों का) मिलन-स्थल, समागम-स्थान कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साभिसारिका —अमर० 7. प्रतिबंध, शर्त 8. (व्या० में) संक्षिप्त विवृति, सूत्र। सम० —गृहम्,—निकेतनम्,—स्थानम् निर्दिष्ट स्थान, प्रेमी और प्रेमिका का मिलन-स्थान।

सङ्केतकः [सङ्केत+कन्] 1. सहमति, सम्मिलन 2. नियुक्ति, निर्देशन 3. प्रेमी और प्रेमिका का मिलन-स्थान 4. वह प्रेमी या प्रेमिका जो मिलने के लिए समय या स्थान का संकेत करे —सङ्केतके चिरयति प्रवरो विनोदः —मृच्छ० ३।३।

सङ्केतित (वि०) [सङ्केत+इतच्] 1. ठहराया हुआ, मिलकर नियमानुसार निर्धारित,—साक्षात्संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः—काव्य० 2. आमन्त्रित, बुलाया हुआ।

सङ्कोचः [सम्+कुच्+घञ्] 1. सिकुड़ना, शिकन पड़ना 2. संक्षेपण, न्यूनीकरण, भींचना 3. त्रास, भय 4. बंद करना, मूंदना 5. बांधना 6. एक प्रकार की मछली, —चम् केसर, ज़ाफ़रान।

सङ्क्रन्दनः [सम्+क्रन्द्+ल्युट्] श्री कृष्ण का नाम।

सङ्क्रमः [सम्+क्रम्+घञ्] 1. सहमति, संगमन, साथ जाना 2. संक्रान्ति, यात्रा, स्थानान्तरण, प्रगति 3. किसी ग्रह का एक राशिचक्र से दूसरी राशि में जाना 4. गमन करना, यात्रा करना,—मः —मम् 1. कठिन या संकरा मार्ग 2. सेतु, पुल नदीमार्गेषु च तथा संक्रमानवसादयेत्—महा० 3. किसी लक्ष्य की प्राप्ति का साधन, तामेव संक्रमीकृत्य —दश०, सोऽतिथिः स्वर्गसङ्क्रमः—पंच० ४।२।

सङ्क्रमणम् [सम्+क्रम्+ल्युट्] 1. संगमन, सहमति 2. संक्रान्ति, प्रगति, एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु पर जाना 3. सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना 4. सूर्य के उत्तरायण में प्रवेश करने का दिन 5. मार्ग।

सङ्क्रान्त (भू० क० कृ०) [सम्+क्रम्+क्त] 1.…में से गया हुआ, प्रविष्ट हुआ 2. स्थानान्तरित, न्यस्त, समर्पित—उत्तर० १।२२ 3. पकड़ा, ग्रस्त 4. प्रतिफलित, प्रतिबिंबित 5. चित्रित।

सङ्क्रान्तिः (स्त्री०) [सम्+क्रम्+क्तिन्] 1. संगमन, मेल 2. एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक का मार्ग, अवस्थांतर 3. सूर्य या किसी और ग्रहपुंज का एक राशि से

दूसरी राशि में जाने का मार्ग 4. स्थानान्तरण, (किसी दूसरे को) सौंपना—संपातिता:···पयसो गण्डूषसङ्क्रान्तय: --उत्तर० ३।१६ 5. (अपना ज्ञान दूसरों तक) हस्तान्तरित करना, (दूसरों को) विद्यादान की शक्ति —विवादे दर्शयिष्यन्तं क्रियासङ्क्रान्तिमात्मन:—मालवि० १।१८, शिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था संङ्क्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता--१।१६ 6. प्रतिमा, प्रतिबिंब 7. चित्रण ।

सङ्क्राम -- दे० 'संक्रम' ।

सङ्क्रीडनम् [सम्+क्रीड्+ल्युट्] मिल कर खेलना ।

सङ्क्लेदः [सम्+क्लिद्+घञ्] 1. तरी, नमी 2. गर्भाधान के पश्चात् प्रथम मास में स्रवित होने वाला रस जिससे भ्रूण के आरंभिक रूप का निर्माण होता है ।

सङ्क्षयः [सम्+क्षि+अच्] 1. विनाश 2. पूर्ण विनाश या उपभोग 3. हानि, बर्बादी 4. अन्त 5. प्रलय ।

सङ्क्षिप्तिः (स्त्री०) [सम्+क्षिप्+क्तिन्] 1. साथ साथ फेंकना 2. भींचना, संक्षेपण 3. फेंकना, भेजना 4. घात में रहना ।

सङ्क्षेपः [सम्+क्षिप्+घञ्] 1. साथ साथ फेंकना 2. भींचना, छोटा करना 3. लाघव, संहृति 4. निचोड़, सारांश 5. फेंकना, भेजना 6. अपहरण करना 7. किसी अन्य व्यक्ति के कार्य में सहायता देना (संक्षेपेण, संक्षेपतः (क्रि० वि०) थोड़े अक्षरों में, संहरण करके, संक्षेप में)

सङ्क्षेपणम् [सम्+क्षिप्+ल्युट्] 1. ढेर लगाना 2. छोटा करना, लघूकरण 3. भेजना ।

सङ्क्षोभः [सम्+क्षुभ्+घञ्] 1. आन्दोलन, कंपकपी 2. बाधा, हलचल—मृच्छ० १ 3. उथल पुथल, उलट पुलट 4. घमंड, अहंकार ।

सङ्ख्यम् [सम्+ख्या+क] संग्राम, युद्ध, लड़ाई -सङ्ख्ये द्विषां वीररसं चकार -विक्रम० १।६७, ७० वेणी० ३।२५, शि० १८।७० ।

सङ्ख्या [सम्+ख्या+अङ्+टाप्] 1. गणना, गिनती, हिसाब लगाना - सङ्ख्यामिवैषां भ्रमरश्चकार —रघु० १६।४७ 2. अंक 3. अंकबोधक 4. जोड़ 5. हेतु, समझ, प्रज्ञा 6. विचार, विमर्श 7. रीति । सम०—अतिग, —अतीत (वि०) असंख्य, अनगिनत, गणनातीत, —वाचक (वि०) संख्या बोधक (कः) अंक ।

सङ्ख्यात (भू० क० कृ०) [सम्+ख्या+क्त] 1. गिना गया 2. हिसाब लगाया गया, गिना हुआ, -तम् अंक, -ता एक प्रकार की पहेली ।

सङ्ख्यावत् (वि०) [सङ्ख्या+मतुप्] 1. संख्या वाला 2. हेतु से युक्त---पुं० विद्वान् पुरुष ।

सङ्गः [सञ्ज् भावे घञ्] 1. साथ मिलना, सम्मिलन 2. मिलना, मेल, संगम (जैसे नदियों का) 3. स्पर्श, सम्पर्क 4. संगति, साहचर्य, मैत्री, अनुराग—सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति—उत्तर० २।१, संगमनुव्रज् संगति में रहना, मंडली में रहना,—मृगाः मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति—सुभा० 5. अनुरक्ति, प्रीति, अभिलाषा—ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते --भग० २।६२ 6. सांसारिक विषयों में आसक्ति, मनुष्यों के साथ साहचर्य दौर्मंत्र्यान्नृपतिर्विनश्यति यतिः सङ्गात् -भर्तृ० २।४२ 7. मुठभेड़, लड़ाई ।

सङ्गणिका [सम्+गण्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] श्रेष्ठ या अनुपम प्रवचन ।

सङ्गत (भू० क० कृ०) [सम्+गम्+क्त] 1. मिला, हुआ, जुड़ा हुआ, साथ साथ आया हुआ, साहचर्य से युक्त 2. एकत्रित, संचित, संयोजित, सम्मिलित 3. प्रणयग्रन्थि में आबद्ध, विवाहित 4. मैथुन द्वारा मिला हुआ 5. साथ साथ भरा हुआ. समुचित, युक्तियुक्त, संवादी—श० ३ 6. से युक्त (जैसे कि ग्रहों से) 7. शिकनवाला सिकुड़ा हुआ, दे० सम् पूर्वक 'गम्', -तम् 1. मिलाप, सम्मिलन, मैत्री,—विक्रम० ५।२४, श० ५।२३ 2. समाज, मण्डली 3. परिचय, मित्रता, घनिष्टता—कु० ५।३९ 4. सामंजस्यपूर्ण या सुसंगत वाणी, युक्तियुक्त टिप्पण ।

सङ्गतिः (स्त्री०) [सम्+गम्+क्तिन्] 1. मेल, मिलना, संगम 2. संसर्ग, सहयोगिता, साहचर्य, पारस्परिक मेलजोल -मनो हि जन्मान्तरसङ्गतिज्ञम् -रघु० ७।१५ 3. मैथुन 4. दर्शन करना, बार बार आना-जाना 5. योग्यता, उपयुक्तता, प्रयोगात्मकता, संगत, सम्बन्ध 6. दुर्घटना, दैवयोग, आकस्मिक घटना 7. ज्ञान 8. अधिक जानकारी के लिए पूच्छा ।

सङ्गमः [सम्+गम्+अप्] 1. मिलना, मेल—विक्रम० ४।३७, रघु० १२।६६, ९० 2. साहचर्य, संगति, सहयोगिता, पारस्परिक मेलजोल—जैसा कि 'सद्भिः संगमः' में 3. सम्पर्क, स्पर्श—रघु० ८।४४ 4. मैथुन या रतिक्रिया -अयं स ते तिष्ठति सङ्गमोत्सुकः—श० ३।१४, रघु० १९।३३ 5. (नदियों का) मिलना, संगम स्थान - गङ्गायमुनयोः सङ्गमः 6. योग्यता, अनुकूलन 7. मुठभेड़, लड़ाई 8. (ग्रहों का) संयोग ।

सङ्गमनम् [सम्+गम्+ल्युट्] मिलना, मेल, दे० 'सङ्गम' ।

सङ्गरः [सम्+गृ+अप्] 1. प्रतिज्ञा, करार,—तथेति तस्यावितथं प्रतीतः प्रत्यग्रहीत्सङ्गरमग्रजन्मा—रघु० ५।२६, ११।४०, १३।०५ 2. स्वीकृति, हाथ में लेना 3. सौदा 4. संग्राम युद्ध, लड़ाई—अतरस्त्वभुजौजसा मुहुर्महतः सङ्गरसागरानसौ शि० १६।६७ 5. ज्ञान 6. निगल जाना 7. दुर्भाग्य, संकट 8. विष ।

सङ्गवः [संगता गावो दोहनाय अत्र—नि०] प्रातःस्नान के तीन मुहूर्त बाद का समय जो दिन के पांच भागों में

से दूसरा है, और जब गायें दूहने के बाद चरने के लिए ले जाई जाती हैं।

सङ्गदः [सम्+गद्+घञ्] प्रवचन, समालाप, बातचीत।

सङ्गिन् (वि०) [सञ्ज्+घिनुण्] 1. संयुक्त, मिला हुआ 2. अनुरक्त, भक्त, स्नेहशील—श० ५।११, रघु० १९।१६, मालवि० ४।२, भग० ३।२६, १४।१५।

सङ्गीत (भू० क० कृ०) [सम्+गै+क्त] मिलकर गाया हुआ, सहगान, सम्मिलित कण्ठों से गाया हुआ,—तम् 1. सामूहिक गान, बहुत से कण्ठों से मिलकर गाया जाने वाला गान,—जगुः सुकण्ठयो गन्धर्व्यः सङ्गीतं सहभर्तृकाः—भाग० 2. गायन, मधुर गायन, विशेषतः वह गायन जो नृत्य तथा वाद्ययन्त्रों के साथ गाया जाय, त्रिताल युक्त गान - गीतं वाद्यं नर्तनं च त्रयं सङ्गीतमुच्यते; किमन्यदस्याः परिषदः श्रुतिप्रसादनतः सङ्गीतात् - श० १, मृच्छ० १ 3. संगीत गोष्ठी, सहसंगीत 4. नृत्य वाद्य के साथ गाने की कला—भर्तृ० २।१२। सम०—अर्थः 1. संगीत प्रदर्शन का विषय 2. संगीतशाला के लिए आवश्यक सामग्री या उपकरण —मेघ० ५६,—शाला गायनालय,—मा० २,—शास्त्रम् गानविद्या।

सङ्गीतकम् [सङ्गीत+कन्] 1. संगीतगोष्ठी, सुरताल से युक्त गान 2. सार्वजनिक मनोरंजन जिसमें नाच-गाना हो।

सङ्गीर्ण (भू० क० कृ०) [सम्+गृ+क्त] 1. सम्मत, स्वीकृत 2. प्रतिज्ञात।

सङ्ग्रहः [सम्+ग्रह्+अप्] 1. पकड़ना, ग्रहण करना 2. मुट्ठी बाँधना, चंगुल, पकड़ 3. स्वागत, प्रवेश 4. संरक्षण, प्ररक्षण—तथा ग्रामशतानां च कुर्याद्राष्ट्रस्य संग्रहम् मनु० ७।११४ 5. अनुग्रहण, प्रसादन, आदर-सत्कार करना, पालन-पोषण करना मनु० ३।१३८, ८।३११ 6. भरना, संग्रह करना, एकत्र करना, संचय करना —तैः कृतप्रकृतिसङ्ग्रहैः - रघु० १९।५५, १७।६० 7. शासन करना, प्रतिबंध लगाना, नियन्त्रण करना 8. राशीकरण 9. संयोजन 10. संघट्टीकरण (एक प्रकार का 'संयोग') 11. सम्मेल करना, अवधारणा 12. संकलन 13. सारांश, सार, संक्षेपण, सारसंग्रह —सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये भग० ८।११, इसी प्रकार 'तर्क सङ्ग्रह' 14. जोड़, राशि, समष्टि—करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसङ्ग्रहः—भग० १८।१८ 15. तालिका, सूची 16. भंडारगृह 17. प्रयत्न, चेष्टा 18. उल्लेख, हवाला 19. बड़प्पन, ऊँचापन 20. वेग 21. शिव का नाम।

सङ्ग्रहणम् [सम्+ग्रह्+ल्युट्] 1. पकड़ना, ले लेना 2. सहारा देना, प्रोत्साहित करना 3. संकलन करना, संचय करना 4. गड्ड-मड्ड करना 5. मंढना, जड़ना —कनकभूषणसङ्ग्रहणोचितः (मणिः)—पंच० १।७५ 6. मैथुन, स्त्रीसंभोग 7. व्यभिचार - मनु० ८।६, ७२, याज्ञ० २।७२ 8. आशा करना 9. स्वीकार करना, प्राप्त करना,—णी पेचिस।

सङ्ग्रहीतृ (पुं०) [सं+ग्रह्+तृच्] सारथि।

सङ्ग्रामः [सङ्ग्राम्+अच्] रण, युद्ध, लड़ाई—सङ्ग्रामाङ्गणमागतेन भवता चापे समारोपिते—काव्य० १०। सम० —जित् (वि०) युद्ध में जीतने वाला,—पटहः युद्ध में बजाया जाने वाला एक बड़ा भारी ढोल।

सङ्ग्राहः [सम्+ग्रह्+घञ्] 1. हाथ डालना, ले लेना 2. बलात् छीन लेना 3. मुट्ठी बाँधना 4. तलवार की मूठ।

सङ्घः [सम्+हन्+अप्, टिलोपः, घत्वम्] 1. समूह, संग्रह, समुच्चय, झुण्ड जैसा कि महर्षिसङ्घ, मनुष्यसङ्घ 2. एक साथ रहने वाले लोगों का समूह। सम० चारिन् (पुं०) मछली,—जीविन् (पुं०) किराये का मजदूर, कुली, वृत्ति (स्त्री०) संघटनवृत्ति।

सङ्घटना [सम्+घट्+णिच्+युच्+टाप्] साथ साथ मिलना, मेल, सम्मेल—रत्न० ४।२०।

सङ्घट्टः [सम्+घट्ट्+अच्] 1. संघर्षण, के एक साथ घिसना, रगड़ना सरलस्कन्धसङ्घट्टजन्मा (दवाग्निः) - मेघ० ५३, मा० ५।३ 2. टक्कर, खटपट, मुठभेड़ - शि० २०।२६ 3. भिड़न्त, संघर्ष 4. मिलना, सम्मिलन, टक्कर या स्पर्धा (जैसे कि पत्नियों की)—रघु० १४।८६ 5. आलिंगन—ट्टा एक बड़ी लता, बेल।

सङ्घट्टनम्,—ट्टना [सम्+घट्ट+ल्युट्] 1. मिला कर रगड़ना, संघर्षण 2. टक्कर, खटपट 3. घनिष्ठ संपर्क, लगाव 4. संपर्क, मेल, चिपकाव 5. पहलवानों का पारस्परिक लिपटना 6. मिलना, मुठभेड़।

सङ्घशस् (अव्य०) [संघ+शस्] झुंडों में, दल बनाकर।

सङ्घर्ष [सम्+घृष्+घञ्] 1. दो चीजों की रगड़, घृष्टि 2. पीस डालना, चूरा करना 3. टक्कर, खटपट 4. प्रतिद्वन्द्विता, प्रतिस्पर्धा, श्रेष्ठता के लिए होड़, —तस्याश्च मम च कस्मिंश्चित्सङ्घर्षे - दश०, नाट्याचार्ययोर्महान् ज्ञानसङ्घर्षो जातः - मालवि० १ 5. ईर्ष्या, डाह 6. सरकना, मन्द मन्द बहना।

सङ्घाटिका [सम्+घट्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. जोड़ा, दम्पती 2. दूती, कुटनी 3. गंध।

सङ्घाणकः,—कम् [शिघाण पृषो०] नाक का मल, सिणक।

सङ्घातः [सम्+हन्+घञ्] 1. संघ, मिलाप, समाज 2. समुदाय, समवाय, समुच्चय,—उपायसङ्घात इव प्रवृद्धः—रघु० १४।११, कु० ४।६ 3. बध, हत्या 4. कफ 5. सम्मिश्रणों का निर्माण 6. नरक के एक प्रभाग का नाम।

सचकित (वि०) विस्मित, भयभीत,—तम् (अव्य०) कांपते हुए, चौंक कर, चौकन्ना होकर, विस्मित होकर।

सचिः [सच्+इन्] 1. मित्र 2. मैत्री, घनिष्ठता—स्त्री० इन्द्र की पत्नी, दे० 'शची'।

सचिल्लक (वि०) [सह क्लिन्नेन, सहस्य सः, कप्, नि०] क्लिन्नाक्ष, चौंधाई आँखों वाला।

सचिवः [सचि+वा+क] 1. मित्र, सहचर 2. मन्त्री परामर्श दाता—सचिवान् सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्—मनु० ७।५४, रघु० १।३४, ४।८७, कार्यान्तरसचिवः—मालवि० १।

सची दे० 'शची'।

सचेतन (वि०) [सह चेतनया ब० स०, सहस्य सः] चेतनायुक्त, जीवधारी, विवेकपूर्ण।

सचेतस् (वि०) [सह चेतसा - ब० स०] 1. प्रज्ञावान् 2. भावुक 3. एकमत।

सचेल (वि०) [सह चेलेन - ब० स०] वस्त्रों से सुसज्जित।

सचेष्टः [सच्+अच्, तथाभूतः सन् इष्टः] आम का वृक्ष।

सजन (वि०) [सह जनेन ब० स०] मनुष्यों या जीवधारी प्राणियों से युक्त,—नः एक ही परिवार का व्यक्ति, बंधु, संबन्धी।

सजल (वि०) [सह जलेन—ब० स०] जलमय, जलयुक्त, आर्द्र, गीला, तर।

सजाति, सजातीय (वि०) [समान जातिः अस्य, ब० स०, समानस्य सः, समानां जातिमर्हति—समान+छ] 1. एक ही जाति का, एक ही वर्ग का 2. समान, एक सा—पुं० एक ही जाति के स्त्री और पुरुष से उत्पन्न पुत्र।

सजुष् (स) (वि०) [सह जुषते जुष्+क्विप्, सहस्य सः] 1. प्रिय, अनुरक्त 2. साथ लगा हुआ—पुं० (कर्तृ० सजूः, सजुषौ, सजुषः, करण० द्वि० सजूर्भ्याम्) मित्र, साथी (अव्य०), सहित, युक्त।

सज्ज (वि०) [सस्ज्+अच्] 1. तत्पर, तैयार कियाहुआ, तैयार कराया हुआ—सज्जो रथः—उत्तर० १ 2. वस्त्रों से सुसज्जित, कपड़े धारण किये हुए 3. संवारा हुआ, सजधज या टीपटाप से तैयार हुआ 4. पूर्णतः सुसज्जित, शस्त्र धारण किये हुए 5. क़िलेबन्दी करके सुसज्जित।

सज्जनम् [सस्ज्+णिच्+ल्युट्] 1. जकड़ना, बाँधना 2. वेशभूषा धारण करना 3. तैयारी करना, शस्त्रास्त्र धारण करना, सुसज्जित करना 4. चौकीदार, पहरेदार 5. घाट,—नः भद्र पुरुष, दे० 'सत्' के अन्तर्गत,—ना 1. सजाना, संवारना, सुसज्जित करना 2. वस्त्राभूषण धारण करके तैयार होना, सजावट।

सज्जा [सस्ज्+अ+टाप्] 1. वेशभूषा, सजावट 2. सुसज्जा, परिच्छद 3. सैनिक साज सामान, कवच, जिरहबक्तर।

सज्जित (वि०) [सज्जा+इतच्] 1. वस्त्र धारण किये हुए 2. सजाया हुआ 3. तैयार किया हुआ, साजसामान से लैस 4. संवारा हुआ, हथियारों से लैस।

सज्य (वि०) [सहज्यया - ब० स०, सहस्य सः] 1. धनुष की डोरी से युक्त 2. डोरी से कसा हुआ (धनुष आदि)।

सज्योत्स्ना [सह ज्योत्स्नया - ब० स०] चाँदनी रात।

सञ्चः [संचीयते अत्र—सम्+चि+ड] ग्रंथ लेखन के काम आने वाले पत्रों का संग्रह।

सञ्चत् (पुं०) [सम्+चत्+क्विप्] ठग, धूर्त, बाजीगर।

सञ्चयः [सम्+चि+अच्] 1. ढेर लगाना, एकत्र करना 2. ढेर, राशि, संग्रह, भंडार, वाणिज्यवस्तु कर्तव्यः सञ्चयो नित्यं कर्तव्यो नातिसञ्चयः—सुभा० 3. भारी परिमाण, संग्रह।

सञ्चयनम् [सम्+चि+ल्युट्] 1. एकत्र करना, संग्रह करना 2. फूल चुनना, शव भस्म हो जाने के बाद भस्मास्थिचय करना।

सञ्चरः [सम्+चर्+क] 1. मार्ग, एक राशि से दूसरी राशि पर स्थानान्तरण 2. रास्ता, पथ—यत्रौषधिप्रकाशेन नक्तं दर्शितसंचराः—कु० ६।४३, रघु० १६। १२ 3. भीड़ी सड़क, संकरा मार्ग, संकीर्ण पथ 4. प्रवेश द्वार 5. शरीर 6. हत्या 7. विकास।

सञ्चरणम् [सम्+चर्+ल्युट्] जाना, गमन करना, यात्रा करना।

सञ्चल (वि०) [सम्+चल्+अच्] कांपने वाला, ठिठुरने वाला।

सञ्चलनम् [सम्+चल्+ल्युट्] विक्षोभ, कंपकंपी, हिलना, थरथरी—अचलसञ्चलनाहरणो रणः—कि० १८।८।

सञ्चाय्यः [सम्+चि+ण्यत्, नि०] विशेष प्रकार का एक यज्ञ।

सञ्चारः [सम्+चर्+घञ्] 1. गमन, गति यात्रा, पर्यटन—स पुनः पार्थसञ्चारं सञ्चरत्यवनीपतिः—काव्य० १०, रघु० २।१५ 2. पारण, मार्ग, संक्रम 3. पथ, रास्ता, सड़क, दर्रा 4. कठिन प्रगति या यात्रा 5. कठिनाई, दुःख 6. गतिमान् करना 7. भड़काना 8.नेतृत्व करना, मार्ग प्रदर्शन करना 9. संक्रामण, स्पर्शसंचार 10. सांप की फण में पाई जाने वाली मणि।

सञ्चारक (वि०) [सम्+चर्+ण्वुल्] संचार करने वाला, संक्रमण करने वाला,—कः 1. नेता, पथ प्रदर्शक 2. उकसाने वाला।

सञ्चारणम् [सम्+चर्+णिच्+ल्युट्] गतिशील होना, प्रणोदित करना, संप्रेषण, नेतृत्व करना आदि।

सञ्चारिका [सम्+चर्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. दूती, (दो प्रेमियों की) परस्पर संदेशवाहिका 2. दूती, कुटनी 3. जोड़ा, दम्पती 4. गंध, ब।

सञ्चारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सम्+चर्+णिनि] 1. गतिशील,गमनीय—सञ्चारिणी नगर देवतेव—मा० १, कु० ३।५४, ६।६७ 2. पर्यटन, भ्रमण 3. परिवर्तनशील, अस्थिर, चंचल 4. दुर्गम, अगम्य 5. क्षणभंगुर जैसे कि भाव, दे० नी० 6. प्रभावशाली 7. आनुवंशिक, वंशपरम्पराप्राप्त (रोग आदि) 8. छूत का रोग 9. प्रणोदन, -पुं० 1. वायु, हवा 2. धूप 3. वह क्षणभंगुर भाव जो स्थायी को शक्तिसम्पन्न करता है— दे० व्यभिचारिन् ।

सञ्चाली [सम्+चल्+ण+ङीप्] गुंजा की झाड़ी ।

सञ्चित (भू० क० कृ०)[सम्+चि+क्त] 1. ढेर लगाया हुआ, संगृहीत, जोड़ा गया, इकट्ठा किया गया 2. रक्खा गया, जमा किया गया 3. गिना गया, गणना की गई 4. भरा हुआ, सुसम्पन्न, युक्त 5. बाधित, अवरुद्ध 6. सघन, घिनका (जैसे कि जंगल) ।

सञ्चितिः (स्त्री०)[सम्+चि+क्तिन्] संग्रह, सञ्चय ।

सञ्चिन्तनम् [सम्+चिन्त्+ल्युट्] विचार, विमर्श ।

सञ्चूर्णनम् [सम्+चूर्ण्+ल्युट्] चूर चूर करना ।

सञ्छन्न (भू० क० कृ०) [सम्+छद्+क्त] 1. लिपटा हुआ, ढका हुआ, छिपा हुआ 2. वस्त्र पहने हुए ।

सञ्छादनम् [सम्+छद्+णिच्+ल्युट्] ढकना, छिपाना ।

सञ्ज् (भ्वा० पर० सजति, सक्त, इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के लगाने पर धातु का 'स्' बदल कर ष् हो जाता है) 1. संलग्न होना, जुड़े रहना, चिपके रहना, —तुल्यगन्धिषु मत्तेभकटेषु फलरेणवः (ससञ्जुः)—रघु० ४।४७ 2. जकड़ना - कर्मवा० (सज्जयते) संलग्न होना, चिमटना, जुड़े रहना - प्रेर० (सञ्जयति-ते) —इच्छा० (सिसंक्षति); अनु—, 1. चिपकना, चिमटना 2. जुड़ना, साथ होना—मृत्युर्जरा च व्याधिश्च दुःखं चानेककारणम् । अनुषक्तं सदा देहे – महा०, उत्तर० ४।२, (कर्मवा०) चिमटना, जुड़ जाना (आलं० से भी)—धर्मपूते च मनसि नभसीव न जातु रजोऽनुषज्यते —दश०, भग० ६।४, १८।१०, अव—, निलम्बित करना, संलग्न करना, चिमटना, फेंकना, रखना—शि० ५।१६, ७।१६, ९।७, कु० ७।२३ 2. सौंपना, सुपुर्द करना, निर्दिष्ट करना, (कर्मवा०) 1. सम्पर्क में होना, मिलते रहना—मृच्छ० १।५४ 2. व्यस्त होना, तुल जाना, उत्सुक होना, आ—, 1. जकड़ना, जमाना, जोड़ना, मिलाना, रखना—चापमासज्य कण्ठे कु० २।६४, श० ३।२६ (भुजे) भूयः स भूमेर्धुरमाससञ्ज —रघु० २।७४ 2. अभिदान करना, प्रेरित करना कि० १३।४४ 3. सिपुर्द करना, निर्दिष्ट करना 4. चिमटना, लगे रहना नि—, 1. जमे रहना, चिमटना, डाल दिया जाना, रक्खा जाना—कण्ठे स्वयंग्राहनिषक्तबाहुं कु० ३।७, रघु० ९।५०, ११।७०, १९।४५ 2. प्रतिबिम्बित होना—कु० १।१०, ७।३६ 3. संलग्न होना प्र—, 1. चिमटना, जुड़ना 2. प्रयुक्त होना, अनुकरण करना, प्रयुक्त किया जाना, सही उतरना, ठीक बैठना — इतरेतराश्रयः प्रसज्येत, वैषम्यनैर्घृण्ये नेश्वरस्य प्रसज्येते—शारी० 3. संलग्न होना, तस्यामसौ प्रासजत्—दश०, व्यति—, मिलाना, साथ-साथ जोड़ना, — व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोऽपि हेतुः—उत्तर० ६।१२ ।

सञ्जः [सम्+जन्+ड] 1. ब्रह्मा का नाम 2. शिव का नाम ।

सञ्जयः [सम्+जि+अच्] धृतराष्ट्र के सारथि का नाम, (संजय ने कौरवों और पाण्डवों के झगड़े में शान्तिपूर्ण समझौता कराने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु निष्फल रहा । इसी ने अंधे राजा धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध का विवरण सुनाया—तु० भग० १।१) ।

सञ्जल्पः [सम्+जल्प्+घञ्]1. वार्तालाप 2. अव्यवस्थित बातचीत, बकवाद करना, गड़बड़ 3. शोरगुल, हंगामा ।

सञ्जवनम् [सम्+जु+ल्युट्] चतुःशाल, आमने सामने के चार घरों का समूह जिनके बीच में आंगन बन गया हो ।

सञ्जा [सञ्ज+टाप्] बकरी ।

सञ्जीवनम् [सम्+जीव्+ल्युट्] 1. साथ साथ रहना 2. जीवित करना, जीवन देना, पुनर्जीवन, पुनः सजीवता 3. इक्कीस नरकों में से एक नरक, दे० मनु० ४।८९ 4. चार घरों का समूह, चतुःशाल,—नी एक प्रकार का अमृत (कहते हैं कि इसके सेवन से मृतक भी पुनर्जीवित हो जाता है) ।

सञ्ज्ञ (वि०) [सम्+ज्ञा+क] 1. जिसके घुटने चलते समय आपस में टकराते हों 2. होश में आया हुआ 3. नामवाला, नामक— दे० नी० संज्ञा,—ज्ञम् एक प्रकार का पीला सुगंधित काष्ठ ।

सञ्ज्ञपनम् [सम्+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, पुकागमः, ह्रस्वः] हत्या, वध ।

सञ्ज्ञा [सम्+ज्ञा+अङ्+टाप्] 1. चेतना, होश—सञ्ज्ञां लभ्, आपद् या प्रतिपद् फिर चैतन्य प्राप्त करना, होश में आना 2. जानकारी, समझ 3. बुद्धि, मन 4. संकेत, इंगित, निशान, हाव-भाव—मुखार्पितैकांगुलिसञ्ज्ञयैव मा चापलायेति गणान् व्यनैषीत्—कु० ३।४१ 5. नाम, पद, अभिधान, इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में—द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसञ्ज्ञैः —भग० १५।५ 6. (व्या० में) 1. विशेष अर्थ रखने वाला नाम या संज्ञा, व्यक्ति वाचक संज्ञा 7. 'प्रत्यय' का परिभाषिक नाम 8. गायत्री मन्त्र, दे० गायत्री 9. विश्वकर्मा की पुत्री और सूर्य की पत्नी, यम, यमी और दोनों अश्विनी कुमारों की माता, (इस विषय में

एक उपाख्यान प्रसिद्ध है, कहते हैं एक बार संज्ञा अपने पितृगृह जाने की इच्छा करने लगी, उसने अपने पति सूर्य से अनुमति मांगी, परन्तु वह न मिल सकी। संज्ञा ने अपनी इच्छापूर्ति का दृढ़ निश्चय कर लिया, अतः अपनी दिव्यशक्ति के द्वारा उसने ठीक अपने जैसी एक स्त्री का निर्माण किया, जो मानो उसकी छाया थी (और इसी लिए उसका नाम छाया पड़ा)। उस निर्मित स्त्री को अपने स्थान पर रख कर वह सूर्य को बिना बताये अपने पितृगृह चली गई। बाद में सूर्य के छाया से तीन बालक उत्पन्न हुए (दे० छाया), छाया सुख पूर्वक सूर्य के साथ रहती जब संज्ञा वापिस आई तो सूर्य ने उसे घर में नहीं रक्खा। अपमानित और निराश होकर संज्ञा ने घोड़ी का रूप धारण कर लिया और पृथ्वी पर घूमने लगी। समय पाकर सूर्य को वस्तुस्थिति का पता लगा, उसने जाना कि उसकी पत्नी घोड़ी के रूप में घूमती है। फलतः उसने भी घोड़े के रूप धारण कर अपनी पत्नी से समागम किया। उससे उसके अश्विनी कुमार नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए)। सम० —अधिकारः एक प्रधान नियम जिसके अनुसार तदन्तर्गत नियमों का विशेष नाम रक्खा जाता है, और वे सब नियम उससे प्रभावित होते हैं,—विषयः विशेषण,—सुतः शनि का विशेषण।

सञ्ज्ञानम् [सम्+ज्ञा+ल्युट्] जानकारी, समझ।

सञ्ज्ञापनम् [सम्+ज्ञा+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1. सूचित करना 2. अध्यापन 3. वध, हत्या।

सञ्ज्ञावत् (वि०) [सञ्ज्ञा+मतुप्] 1. सचेतन, होश में आया हुआ, पुनर्जीवित 2. नाम वाला।

सञ्ज्ञित (वि०) [सञ्ज्ञा+इतच्] नाम वाला, नामक, नाम धारी।

सञ्ज्ञिन् (वि०) [सञ्ज्ञा+इनि] 1. नामवाला 2. जिसका नाम रक्खा जाय।

सञ्ज्ञु (वि०) [संहते जानुनी यस्य—ब० स०, जानुस्थाने ज्ञुः] जिसके घुटने चलते समय टकराते हों।

सञ्ज्वरः [सम्+ज्वर्+अप्] 1. अतिताप, बुखार 2. गर्मी 3. क्रोध।

सट् i (भ्वा० पर० सटति) बांटना, भाग बनाना।
ii (चुरा० उभ० साटयति—ते) प्रकट करना, प्रदर्शन करना स्पष्ट करना।

सटम्, सटा [सट्+अच्,+टाप् वा] 1. संन्यासी की जटाएँ 2. (सिंह की) अयाल—मुद्रा० ७।६, शि० १।४७ 3. सूअर के खड़े बाल विद्यन्तमुद्धृतसटाः प्रतिहन्तुमीषुः—रघु० ९।६० 4. शिखा, चोटी। सम० —अङ्कः सिंह।

सट्ट् (चुरा० उभ० सट्टयति—ते) 1. क्षति पहुँचाना, मार डालना 2. बलवान् होना 3. देना 4. लेना, 5. रहना।

सट्टकम् [सट्ट्+ण्वुल्] प्राकृत भाषा का एक उपरूपक, उदा० कर्पूरमंजरी—दे० सा० द० ५४२।

सट्वा (स्त्री०) [सट्+व, पृषो०] 1. एक पक्षिविशेष 2. एक वाद्ययंत्र।

सठ् (चुरा० उभ० साठयति—ते) 1. समाप्त करना, पूरा करना 2. अधूरा छोड़ देना 3. जाना, हिलना-जुलना 4. अलंकृत करना, सजाना।

सणसूत्रम् [=शणसूत्र, पृषो०] सन की बनी डोरी या रस्सी।

सण्ड दे० 'षण्ड'।

सण्डिशः [=सन्दश, पृषो०] चिमटा या संडासी।

सण्डीनम् [सम्+डी+क्त] पक्षियों की विभिन्न उड़ानों में से एक; दे० 'डीन'।

सत् (वि०) (स्त्री०—) [अतीस्+शतृ, अकारलोपः] 1. वर्तमान, विद्यमान, मौजूद—सन्तः स्वतः प्रकाशन्ते गुणा न परतो नृणाम्—भामि० १।१२० श० ७।१२ 2. वास्तविक, असली, सत्य 3. अच्छा, सद्गुणसंपन्न, धर्मात्मा या सती—सती योगविसृष्टदेहा—कु० १।२१, श० ५।१७ 4. कुलीन, योग्य, उच्च, जैसा कि 'सत्कुलम्' में 5. ठीक, उचित 6. सर्वोत्तम, श्रेष्ठ 7. सम्माननीय, आदरणीय 8. बुद्धिमान्, विद्वान् 9. मनोहर, सुन्दर 10. दृढ़, स्थिर,—(पुं०) भद्रपुरुष, सद्गुणी व्यक्ति, ऋषि—आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव—रघु० ४।८६, अविरतं परकार्यकृतां सतां मधुरिमातिशयेन वचोऽमृतम् भामि० १।११३, भर्तृ० २।१८, रघु० १।१०, (नपुं०) 1. जो वस्तुतः विद्यमान हो, सत्ता, अस्तित्व, सर्वनिरपेक्ष सत्ता, 2. वस्तुतः विद्यमान, सचाई, वास्तविकता 3. भद्र, जैसा कि 'सदसत्' में 4. ब्रह्म या परमात्मा, (सत्कृ आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

सम०—असत् (सदसत्) (वि०) 1. विद्यमान और अविद्यमान, मौजूद, जो मौजूद न हो 2. असली और नकली 3. सत्य और मिथ्या 4. भला और बुरा, ठीक और गलत 5. पुण्यात्मा और दुष्ट (नपुं० द्वि० व०) 1. अस्तित्व और अनस्तित्व 2. भलाई और बुराई, ठीक और गलत, °विवेकः भलाई और बुराई में अथवा सच और झूठ में विवेक, °व्यक्तिहेतुः भलाई और बुराई में विवेक का कारण—तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः—रघु० १।१०, —आचारः (सदाचारः) 1. सद्व्यवहार, शिष्ट आचरण 2. मानी हुई रस्म, परंपराप्राप्त पर्व, स्मरणातीत प्रथा—मनु० २।१८, —आत्मन् (वि०) गुणी, भद्र,—उत्तरम् उचित या अच्छा जवाब,—कर्मन्

(नपुं०) 1. गुणयुक्त या पुण्यकार्य 2. सद्गुण, पावनता 3. आतिथ्य,—काष्ठः बाज़, चील,—कारः 1. कृपा तथा आतिथ्यपूर्ण व्यवहार, सत्कारयुक्त स्वागत 2. सम्मान, आदर 3. देखभाल, ध्यान 4. भोजन 5. पर्व, धार्मिक त्योहार, कुलम् सत्कुल, उत्तम कुल, कुलीन (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव, कृत (वि०) 1. भलीभांति या उचित ढंग से किया गया 2. सत्कार पूर्वक स्वागत किया गया 3. पूज्य, प्रतिष्ठित, सम्मानित 4. पूजित, अलंकृत 5. स्वागत किया गया, (तः) शिव का विशेषण, (तम्) 1. आतिथ्य 2, सद्गुण, शुचिता —कृतिः, (स्त्री०) 1. सादर व्यवहार, आतिथ्य, आतिथ्यपूर्ण स्वागत 2. सद्गुण, सदाचार,—क्रिया 1. सद्गुण, भलाई—शकुन्तला मूर्तिमती च सत्क्रिया-श० ५।१५ 2. धर्मार्थता, सत्कर्म, पुण्यकार्य 3. आतिथ्य, आतिथ्यपूर्ण स्वागत 4. शिष्टाचार, अभिवादन 5. शुद्धिसंस्कार 6. अन्त्येष्टि संस्कार, और्ध्वदैहिक क्रिया,—गतिः (स्त्री०) (सद्गतिः) उत्तम स्थिति, आनन्द, स्वर्गसुख,—गुण (वि०) अच्छे गुणों से युक्त, पुण्यात्मा, (णः) पुण्यकार्य, उत्तमता, भलाई, नेकी—चरित,—चरित्र (वि०) (सच्चरित—त्र) सदाचारी, ईमानदार पुण्यात्मा, धर्मात्मा—सूनुः सच्चरितः—भर्तृ० २।२५, (नपुं०) 1. सदाचार, पुण्याचरण 2. भद्रपुरुषों का इतिहास—श० १,—चारा (सच्चारा) हल्दी,—चिद् (नपुं०) (सच्चिद्) परमात्मा, °अंशः सत् और चित् का भाग, °आत्मन् (पुं०) सत् और चित् से युक्त आत्मा °आनन्दः 'सत् या अस्तित्व, ज्ञान और हर्ष' परमात्मा का विशेषण,—जनः (सज्जनः) भद्र पुरुष, पुण्यात्मा, —पत्रम् कमल,का नया पत्ता,—पथः 1. अच्छा मार्ग 2. कर्तव्य का सन्मार्ग, शुद्धाचरण, पुण्याचरण 3. शास्त्र-विहित सिद्धांत,—परिग्रहः योग्य व्यक्ति से (दान) ग्रहण करना,—पशुः यज्ञ में दी जाने वाली बलि के लिए उपयुक्त पशु, सुचारु यज्ञीय बलि,—पात्रम् योग्य व्यक्ति, पुण्यात्मा, °वर्षः योग्य आदाता के प्रति अनुग्रह की वर्षा, योग्यव्यक्ति के प्रति उदारता का बर्ताव, °र्षिन् (वि०) पात्रता का विचार कर दान आदि देने वाला,—पुत्रः 1. भला पुत्र, योग्य पुत्र 2. वह पुत्र जो पितरों के सम्मान में सभी विहित कर्मों का अनुष्ठान करे,—प्रतिपक्षः (तर्क० में) पांच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, प्रति संतुलित हेतु, वह हेतु जिसके विपक्ष में अन्य समकक्ष हेतु भी हो, उदा० 'शब्द नित्य है क्योंकि यह श्रव्य है, —शब्द अनित्य है क्योंकि यह उत्पन्न हुआ है',—फलः अनार का पेड़, भावः (सद्भावः) 1. सत्ता, विद्यमानता, अस्तित्व 2. वस्तुस्थिति, वास्तविकता 3. सद्वृत्ति, अच्छा स्वभाव, सौजन्य 4. भद्रता, साधुता,—मातुरः (सन्मातुरः) धर्मपरायण माता का पुत्र,—मात्रः (सन्मात्रः) जिसका केवल अस्तित्व माना जाय, जीव, आत्मा, मानः (सन्मानः) भद्रपुरुषों का सम्मान, मित्रम् (सन्मित्रम्) विश्वासपात्र मित्र, —युवतिः (स्त्री०) सती साध्वी स्त्री,—वंश (वि०) अच्छे कुल का, कुलीन,—वचस् (नपुं०) रुचिकर तथा सुखद भाषण,—वस्तु (नपुं०) 1. अच्छी वस्तु 2. अच्छी कथावस्तु—विक्रम० १।२,—विद्य (वि०) सुशिक्षित, बहुश्रुत,—वृत्त (वि०) 1. अच्छे व्यवहार का, सदाचारी, पुण्याचरण करने वाला, खरा 2. बिल्कुल गोल, वर्तुलाकार सद्वृत्तः स्तन-मण्डलस्तव कथं प्राणैर्मम क्रीडति—गीत० ३, (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं, (त्तम्) 1. सदाचार, पुण्याचरण 2. अच्छा स्वभाव, रोचक प्रकृति,—संसर्गः,—सन्निधानम्,—सङ्गः,—सङ्गतिः,—समागमः, भले मनुष्यों का समाज या मण्डली, भले मनुष्यों का समाज या मण्डली, भले मनुष्यों की संगति—तथा सत्संनिधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम् हि० १—संप्रयोगः सही प्रयोग,—सहाय (वि०) अच्छे मित्र जिसके सहायक हैं, (यः) अच्छा साथी,—सार (वि०) अच्छे रस वाला (रः) 1. एक प्रकार का वृक्ष 2. कवि 3. चित्रकार,—हेतुः (सद्धेतुः) निर्दोष अथवा वैध कारण।

सतत (वि०) [सम्+तन्+क्त, समः अन्त्यलोपः] निरंतर नित्य, सदा रहने वाला, शाश्वत,—तम् (अव्य०) लगातार, अविच्छिन्न रूप से, नित्य, सदा, हमेशा —सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः—राम०। सम०—गः—गतिः वायु—सलिलतले सततगतीनन्तः संचारिणः संनिगुह्य शय्या कार्या—दश०, सततगास्त-तगानगिरोऽलिभिः शि० ६।५, नेत्रा नीताः सतत गतिना यद्विमानाग्रभूमीः—मेघ० ६९,—यायिन् (वि०) 1. सदैव गतिशील 2. क्षयशील।

सतर्क (वि०) [तर्केण सह—ब० स०] 1. तर्क करने में निपुण 2. सचेत, सावधान।

सतिः (स्त्री०) [सम्+क्तिन् मलोपः] 1. उपहार, दान 2. अन्त, विनाश।

सती (स्त्री०) [सत्+ङीप्] 1. साध्वी स्त्री (या पत्नी) कु० १।२१ 2. संन्यासिनी 3. दुर्गादेवी—कु० १।२१।

सतीत्वम् [सती+त्व] सती होने का भाव, सतीपन।

सतीनः [सती+नी+ड] 1. एक प्रकार की दाल, मटर 2. बाँस।

सतीर्थः,—सतीर्थ्यः [समानः तीर्थः गुरुर्यस्य—ब० स०, तीर्थे गुरौ वसति इत्यर्थे यत् प्रत्ययः—समानस्य

सः] सहाध्यायी, साथ अध्ययन करने वाले ब्रह्मचारी।

सतीलः [सती+लक्+ड] 1. बांस 2. हवा, वायु 3. मटर, दाल (स्त्री० भी)।

सतेरः [सन्+एर, तान्तादेशः] भूसी, चोकर।

सत्ता [सत्+तल्+टाप्] 1. अस्तित्व, विद्यमानता, होने का भाव 2. वस्तुस्थिति, वास्तविकता 3. उच्चतम जाति या सामान्यता 4. उत्तमता, श्रेष्ठता।

सत्त्रम् [बहुधा 'सत्रम्'— लिखा जाता है, सद्+ष्ट्रन्] 1. यज्ञीय अवधि जो प्रायः १३ से १०० दिन तक होने वाले यज्ञों में पाई जाती है 2. यज्ञमात्र 3. आहुति, चढ़ावा, उपहार 4. उदारता, वदान्यता 5. सद्गुण 6. घर, निवासस्थान 7. आवरण 8. धनदौलत 9. जंगल, बन—कि० १३।९ 10 तालाब, पोखर 11. जालसाजी, ठगना 12. शरणगृह, आश्रम, आश्रयस्थान। सम०—**अयनम्** (णम्) यज्ञों का चलने वाला दीर्घ कार्यकाल।

सत्रा (अव्य०) [सद्+त्रा] के साथ, मिल कर, सहित। सम०—**हन्** (पुं०) इन्द्र का विशेषण।

सत्त्रिः [सद्+त्रि] 1. बादल 2. हाथी।

सत्त्रिन् (पुं०) [सत्त्र+इनि] जो निरन्तर यज्ञानुष्ठान करता रहता है, उदार गृहस्थ—शि० १४।३२।

सत्त्वम् (प्रथम दस अर्थों में पुं० भी होता है) [सतो भावः सत्+त्व] 1. होने का भाव, अस्तित्व, सत्ता 2. प्रकृति, मूलतत्त्व 3. स्वाभाविक चरित्र, सहज स्वभाव 4. जीवन, जीव, प्राण, जीवनी शक्ति, प्राणशक्ति का सिद्धान्त—श० २।९ 5. चेतना, मन, ज्ञान 6. भ्रूण 7. तत्त्वार्थ, वस्तु, सम्पत्ति 8. मूलतत्त्व, जैसे कि पृथ्वी, वायु, अग्नि आदि 9. प्राणधारी जीव, जानदार, जन्तु,—वन्यान् विनेष्यन्निव दुष्टसत्त्वान्—रघु० २।८, १५।१५, श० २।७ 10. भूत, प्रेत, पिशाच 11. भद्रता, सद्गुण, श्रेष्ठता 12. सचाई, वास्तविकता, निश्चय 13. सामर्थ्य, ऊर्जा, साहस, बल, शक्ति, अन्तर्हित शक्ति, वह तत्त्व जिससे पुरुष बनता है, पुरुषार्थ—क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे—सुभा०—रघु० ५।३१, मुद्रा० ३।२२ 14. बुद्धिमत्ता, अच्छी समझ 15. भद्रता और शुचिता का सर्वोत्तम गुण, सात्त्विक, (देवों तथा स्वर्गीय प्राणियों में यह बहुतायत से पाया जाता है) 16. स्वाभाविक गुण या लक्षण 17. संज्ञा, नाम। सम०—**अनुरूप** (वि०) मनुष्य के सहज स्वभाव या अन्तर्हित चरित्र के अनुसार—भर्तृ० २।३० 2. अपने साधन या संपत्ति के अनुसार—रघु० ७।३२, (यहाँ मल्लि० व्याख्या प्रकरणानुकूल उपयुक्त प्रतीत नहीं होती),—**उद्रेकः** 1. भद्रता के गुण का आधिक्य 2. साहस या सामर्थ्य में प्रमुखता, **लक्षणम्** गर्भ के लक्षण—श० ५, —**विप्लवः** चेतना की हानि, -**विहित** (वि०) 1. प्राकृतिक 2. सद्गुणी, पुण्यात्मा, खरा, **संशुद्धिः** (स्त्री०) प्रकृति की पवित्रता या खरापन, **संपन्न** (वि०) सद्गुणों से युक्त, पुण्यात्मा,—**संप्लवः** 1. बल या सामर्थ्य की हानि 2. विश्वविनाश, प्रलय, —**सारः** 1. सामर्थ्य का सार, असाधारण साहस 2 अत्यन्त शक्तिशाली पुरुष,—**स्थ** (वि०) 1. अपनी प्रकृति में स्थित 2. पशुओं में अन्तर्हित 3. सजीव 4. सत्त्वगुण विशिष्ट, उत्तम, श्रेष्ठ।

सत्त्वमेजय (वि०) [सत्त्व+एज्+णिच्+खश्, मुम्] पशुओं या जीवधारी प्राणियों को डराने वाला।

सत्य (वि०) [सते हितम्—सत्+यत्] 1. सच्चा, वास्तविक, असली, जैसा कि सत्यव्रत, सत्यसन्ध में 2. ईमानदार, निष्कपट, सच्चा, निष्ठावान् 3. सद्गुणसम्पन्न, खरा, —**त्यः** ब्रह्मलोक, सत्यलोक, भूमि के ऊपर सात लोकों में सबसे ऊपर का लोक—दे० लोक 2. पीपल का पेड़ 3. राम का नाम 4. विष्णु का नाम 5. नांदीमुख श्राद्ध की अधिष्ठात्री देवता,—**त्यम्** 1. सचाई—मौनात्सत्यं विशिष्यते—मनु० २।८३, सत्यं ब्रू 1. सच बोलना 2. निष्कपटता 3. भद्रता, सद्गुण, शुचिता 4. शपथ, प्रतिज्ञा, गंभीर दृढोक्ति—सत्याद् गुरुमलोपयन्—रघु० १२।९, मनु० ८।११३ 5. सचाई, प्रदर्शित सत्यता या रूढ़ि 6. चारों युगों में पहला युग, स्वर्णयुग, सत्ययुग 7. पानी,—**त्यम्** (अव्य०) सचमुच, वस्तुतः, निस्संदेह, निश्चय ही, वस्तुतस्तु—सत्यं शपामि ते पादपङ्कजस्पर्शेन—का०, कु० ६।१९। सम० —**अनृत** (वि०) 1. सच और मिथ्या—सत्यानृता च परुषा—हि० २।१८३ 2. सच प्रतीत होने वाला परन्तु मिथ्या (—**तम्**,—**ते**) 1. सचाई और झूठ 2. झूठ और सच का अभ्यास अर्थात् व्यापार, वाणिज्य—मनु० ४।४, ६, **अभिसन्धि** (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने वाला, निष्कपट,—**उत्कर्षः** 1. सचाई में प्रमुखता 3. सच्ची श्रेष्ठता,—**उद्य** (वि०) सत्यभाषी, —**उपयाचन** (वि०) प्रार्थना पूरी करने वाला,—**कामः** सत्य का प्रेमी, **तपस्** एक ऋषि का नाम,—**दर्शिन्** (अव्य०) सचाई को देखने वाला, सत्यता को भांपने वाला, —**घन** (वि०) सत्य के गुण से समृद्ध, अत्यंत सच्चा —**धृति** (वि०) परम सत्यवादी,—**पुरम्** विष्णुलोक, —**पूत** (वि०) सत्यता से पवित्र किया हुआ (जैसे कि वचन) सत्यपूतां वदेद्वाणीम्—मनु०—६।४६,—**प्रतिज्ञ** (वि०) वादे का पक्का, अपने वचन का पालन करने वाला, -**भामा** सत्राजित् की पुत्री तथा कृष्ण की प्रिय पत्नी का नाम, (इसी सत्यभामा के लिए कृष्ण ने इन्द्र से युद्ध किया, तथा नन्दनवन से पारि-

जात वृक्ष लाकर उसके उद्यान में लगाया), —**युगम्** स्वर्णयुग, दे० ऊ० सत्य (६) —**वचस्** (वि०) सत्यवादी, सत्यनिष्ठ, (पुं०) 1. सन्त, ऋषि 2. महात्मा (नपुं०) सचाई, ईमानदारी,—**वद** (वि०) सत्यभाषी (**द्यम्**) सचाई, ईमानदारी,—**वाच्** (वि) सत्यवादी, सत्यनिष्ठ, खरा (पुं०) 1. सन्त, महात्मा, ऋषि, कौवा,—**वाक्यम्** सत्यभाषण, खरापन,—**वादिन्**(वि०) 1. सत्यभाषी 2. निष्कपट, स्पष्टभाषी, खरा, —**व्रत**, —**संगर,—संध** (वि०) 1. वादे का पक्का, अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, सत्यनिष्ठ, ईमानदार, निष्कपट,—**श्रावणम्** शपथग्रहण, **संकाश** (वि०) प्रशस्त, गुंजाइश वाला, देखने में ठीक जंचता हुआ, सत्याभ।

सत्यङ्कारः [सत्य+कृ+घञ्, मुम्] सत्य करना, वादा पूरा करना, सौदे या संविदा की शर्तें पूरी करना 2. बयाने की रकम, अगाऊ दिया गया धन, ठेके का काम पूरा करने के लिए जमानत के रूप में दी गई अग्रिम राशि —कि० ११।५०।

सत्यवत् (वि०) [सत्य+मतुप्] सत्यभाषी, सत्यनिष्ठ, पुं० एक राजा का नाम, सावित्री का पति,—**ती** एक मछुए की लड़की जो पराशर मुनि के सहवास से व्यास की माता बनी, °सुतः व्यास।

सत्या [सत्यमस्ति अस्याः —सत्य+अच्+टाप्] 1. सचाई, ईमानदारी 2. सीता का नाम 3. द्रौपदी का नाम, —कि० ११।५० 4. व्यास की माता सत्यवती का नाम 5. दुर्गा का नाम 6. कृष्ण की पत्नी सत्यभामा का नाम।

सत्यापनम् [सत्य+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. सत्यभाषण करना, सत्य का पालन करना 2. (किसी संविदा या सौदे आदि की) शर्तें पूरी करना।

सत्र दे० 'सत्त्र'।

सत्रप (वि०) [सह त्रपया—ब० स०] लज्जाशील, विनयी।

सत्राजित् (पुं०) निघ्न का पुत्र तथा सत्यभामा का पिता (सत्राजित् को सूर्य से स्यमन्तक नाम की मणि प्राप्त हुई थी, और उसने उसको अपने कण्ठ में पहन लिया था। बाद में सत्राजित् ने इस मणि को अपने भाई प्रसेन को दे दिया—प्रसेन से यह मणि वानरराज जांबवान् के हाथ लगी, जब कि उसने प्रसेन का वध किया। फिर कृष्ण ने जांबवान् से युद्ध किया और उसे परास्त कर दिया। अतः जांबवान् ने अपनी पुत्री के साथ यह मणि कृष्ण को दे दी। दे० जाम्ववत्। कृष्ण ने इस मणि को इसके मूल अधिकारी सत्राजित् को दे दिया। सत्राजित् ने भी कृतज्ञता के कारण यह मणि, अपनी पुत्री सत्यभामा समेत कृष्ण को ही अर्पित कर दी। उसके पश्चात् एक बार जब इस मणि के साथ सत्यभामा अपने पिता के घर विद्यमान थी तो अक्रूर नामक यादव के भड़काने पर, जो स्वयं इस मणि को लेना चाहता था, शतधन्वा ने सत्राजित् को मार डाला और वह मणि लेकर अक्रूर को दे दी। उसके बाद कृष्ण ने शतधन्वा को मार डाला। परन्तु जब उन्हें पता लगा कि वह मणि तो अक्रूर के पास है तो उन्होंने कहा कि एक बार वह मणि सब लोगों को दिखा दी जाय तथा फिर अक्रूर भले ही उस मणि को अपने पास रक्खें)।

सत्वर (वि०) [सह त्वरया—ब० स०] फुर्तीला, द्रुतगामी, चुस्त,—**रम्** (अव्य०) शीघ्र, जल्दी से।

सथूत्कार (वि०) [सह थूत्कारेण] वह मनुष्य जिसके मुंह से बोलते समय थूक निकले, —**रः** बात के साथ मुंह से थूक निकलना।

सद् (भ्वा० पर०—कुछ के अनुसार तुदा० पर०—सीदति, सन्न, 'प्रति' को छोड़कर अन्य इकारान्त तथा उकारान्त उपसर्ग के लगने पर सद् के स् को ष् हो जाता है) 1. बैठना, बैठ जाना, आराम करना, लेटना, लेट जाना, विश्राम करना, बस जाना,—अमदाः सेदुरेकस्मिन् नितम्बे निखिला गिरेः—भट्टि० ९।५८ 2. डूबना, गोते लगाना—तेन त्वं विदुषां मध्ये पङ्के गौरिव सीदसि—हि० प्र० २४ (यहाँ इस शब्द का अर्थ —४—भी है) 3. जीना, रहना, बसना, वास करना 4. खिन्न होना, हतोत्साह होना, निराश होना, हताश होना, भग्नाशा में डूब जाना—नाथ हरे जय नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे—गीत० ६ 5. म्लान होना, नष्ट होना, बर्बाद होना, छीजना, नष्ट होना —विपन्नायां नीतौ सकलमवशं सीदति जगत्—हि० २।७७, रघु० ७।६४, हि० २।१३० 6. दुःखी होना, पीडित होना, कष्टग्रस्त होना, असहाय होना —कि० १३।६०, मनु० ८।२१ 7. बाधित होना, विघ्न युक्त होना,—मनु० ९।९४ 8. म्लान होना, क्लान्त होना, थका हुआ होना, निढाल होना, अवसन्न होना —सीदति मे हृदयं—का०, सीदन्ति मम गात्राणि —भग० १।२८ 9. जाना, —प्रेर० (सादयति —ते) 1. बिठाना, आराम कराना इच्छा० (सिषत्सति) बैठने की इच्छा करना, **अव** —, 1. निढाल होना, मूर्छित होना, विफल होना, रास्ते से हट जाना —करिणो पङ्कमिवावसीदति कि० २।६, ४।२०, भट्टि० ६।२४ 2. भुगतना, उपेक्षित होना 3. हतोत्साह होना, श्रान्त होना 4. नष्ट होना, क्षीण होना, समाप्त होना—नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वायं नावसीदति,—(प्रेर०) 1. अवसन्न करना, हतोत्साह करना, बर्बाद करना—भग० ६।५ 2. दूर करना, हटाना —औत्सुक्यमात्रमवसादयति प्रतिष्ठा—श० ५।६ 3. नष्ट

करना, मार डालना, आ–, 1. नीचे बैठना, निकट बैठना 2. घात में रहना 3. पहुँचना, उपगमन करना, पास जाना—हिमालयस्यालयमाससाद–कु० ७।६९,शि० २।२ रघु० ६।४ 4. अकस्मात् मिलना, प्राप्त करना, निर्माण करना – रघु० ५।६०, १४।२५ 5. भुग तना–भट्टि० ३।२६ 6. मुठभेड़ होना, आक्रमण करना 7. रखना, (प्रेर०) 1. दुर्घटना होना, पाना, हासिल करना, प्राप्त करना,—अमरगणनालेख्यमासाद्य—रघु० ८।९५ 2. उपगमन करना, पास जाना, पहुँचना, अधिकार में करना नक्रः स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति —पंच० ३।४६, मेघ० ३४, भट्टि० ८।३७ 3. पकड़ लेना—अनेन रथवेगेन पूर्वप्रस्थितं वैनतेयमप्यासादयेयम् - विक्रम० १ 4. मुठभेड़ होना, आक्रमण करना —भट्टि० ६।९५, उद्—, 1, डूबना (आलं० से भी), बर्बाद होना, क्षीण होना–उत्सीदेयुरिमे लोकाः—भग० ३।२४ 2. छोड़ देना, त्याग देना 3. विद्रोह के लिए उठना; (प्रेर०) 1. नष्ट करना, उन्मूलन करना —उत्साद्यन्ते जातिधर्माः—भग० १।४२ मनु० ९।२६७ 2. उलटना 3. मलना, मालिश करना, उप–, 1. निकट बैठना, पहुँचना, पास जाना उपसेदुर्दशग्रीवम् –भट्टि० ९।९२, ६।१३५ 2. सेवा में प्रस्तुत रहना, सेवा करना —आकल्पसाधनैस्तैस्तैरुपसेदुः प्रसाधकाः—रघु० १७।२२, शि० १३।३४ 3. चढ़ाई करना, नि –, 1. नीचे बैठ जाना, लेटना, विश्राम करना —उष्णालुः शिशिरं निषीदति तरोर्मूलालवाले शिखी –विक्रम० २।२३ 2. डूबना, विफल होना, निराश होना, प्र –, 1. प्रसन्न होना, कृपालु होना, मंगलप्रद होना —प्रायः तुमुन्नन्त के साथ तमालपत्रास्तरणासु रन्तुं प्रसीद शश्वन्मलयस्थलीषु—रघु० ६।६४ 2. आश्वस्त होना, परितुष्ट होना, सन्तुष्ट होना—निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति –पंच० १।२८३ 3. निर्मल होना, स्वच्छ होना, स्पष्ट होना, चमकना (शा० और आ०) दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः—रघु० ३।१४, प्रससादोदयादम्भः कुम्भयोनेर्महौजसः –४।२१ 4. फल आना, सफल होना, कामयाब होना—क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति—रघु० ३।२९, दे० प्रसन्न, (प्रेर०) 1. राज़ी करना, अनुग्रह प्राप्त करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्—भग० ११।४४, रघु० १।८८, याज्ञ० ३।२८३ 2. स्पष्ट करना –चेतः प्रसादयति भर्तृ० २।२३, वि , डूबना, थक जाना, 2. हताश होना, निढाल होना, कष्टग्रस्त होना, खिन्न होना, निराश होना, नाउम्मीद होना—विलपति हसति विषीदति रोदिति चञ्चति मुञ्चति तापम्- गीत० ४, भग० २।१, भट्टि० ७।८९, रघु० ९।७५, प्रेर० 1. निराश करना, हताश करना 2. कष्टग्रस्त करना, पीडित करना।

सदः [सद्+अच्] वृक्ष का फल।

सदंशकः [दंशेन सह कप्, ब० स०] केकड़ा।

सदंशवदनः [सदंशं वदनं यस्य– ब० स०] बगले का एक भेद, कंक पक्षी।

सदनम् [सद्+ल्युट्] 1. घर, महल, भवन 2. म्लान होना, क्षीण होना, नष्ट होना 3. अवसाद, श्रान्ति, क्लान्ति 4. हानि 5. यज्ञ-भवन 6. यम का आवास स्थान।

सदय (वि०) [सह दयया—ब० स०] कृपालु, सुकुमार, दयापूर्ण, -यम् (अव्य०) कृपा करके, दया करके।

सदस् (नपुं०) [सीदत्यस्याम्–सद्+असि] 1. आसन, आवास, घर, निवासस्थान 2. सभा—पङ्क्तैर्विना सरो भाति सदः खलजनैर्विना—भामि० १।११६, भर्तृ० २।६३। सम०—गत (वि०) सभा में बैठा हुआ, —रघु० ३६६,—गृहम् सभा-भवन, परिषत्-कक्षा —रघु० ३।६७।

सदस्यः [सदसि साधु वसति वा यत्] 1. सभा का समासद् या सभा में उपस्थित व्यक्ति, सभा का मेम्बर (पंच, जूरी का सदस्य) 2. याजक, यज्ञ में ब्रह्मा या सहायक ऋत्विज् श० ३।

सदा (अव्य०) [सर्वस्मिन् काले—सर्व+दाच्, सादेशः] हमेशा, सर्वदा, नित्य, सदैव। सम० आनन्द (वि०) सदा प्रसन्न रहने वाला, (दः) शिव का विशेषण, —गतिः 1. वायु 2. सूर्य 3. शाश्वत आनन्द, मोक्ष, —तोया, -नीरा 1. करतोया नदी का नाम 2. वह नदी जिसमें सदैव पानी रहता है, बहती हुई नदी, —दान (वि०) सदैव उपहार देने वाला, (वह हाथी) जिसके सदैव मद बहता हो–पंच० २।७९ (—नः) 1. मद बहाने वाला हाथी 2. गन्धद्विप, 3. इन्द्र के हाथी का नाम 4. गणेश, नतः एक पक्षी, खंजन —फल (वि०) हमेशा फलने वाला, (लः) 1. बेल का पेड़ 2. कटहल का पेड़ 3. गूलर का पेड़ 4. नारियल का पेड़, योगिन् (पुं०) कृष्ण का विशेषण, शिवः शिव का नाम।

सदृक्ष (स्त्री०–क्षी), **सदृश्**, **सदृश** (स्त्री० शी) (वि०) [समानं दर्शनमस्य– दृश्+क्स, क्विन्, कञ् वा, समानस्य सादेशः] 1. समान, मिलता-जुलता, तुल्य, अनुरूप (संबं० या अधि० के साथ अथवा समास में प्रयुक्त) 2. योग्य, समुचित, उपयुक्त, समानरूप जैसा कि प्रस्तावसदृशं वाक्यम्—हि० २।५१ 3. योग्य, ठीक, शोभाप्रद श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य - रघु० १४।६१, १।१५।

सदेश (वि०) [सह देशेन ब० स०] 1. किसी देश का

स्वामी 2. एक ही स्थान से सम्बन्ध रखने वाला 3. आसन्नवर्ती, पड़ोसी ।

सद्मन् (नपुं०) [सीदत्यस्मिन् - सद्+मनिन्] 1. घर, मकान, आवासस्थान चकिततनतताङ्गी सद्म सद्यो विवेश -भामि० २।३२ 2. स्थान, जगह 3. मन्दिर 4. वेदी 5. जल ।

सद्यस् (अव्य०) [समेऽह्नि - नि०] 1. आज, उसी दिन —गवादीनां पयोऽन्येद्युः सद्यो वा जायते दधि, पापस्य हि फलं सद्यः सुभा० 2. तुरन्त, तत्काल, फ़ौरन, अकस्मात् चकिततनतताङ्गी सद्म सद्यो विवेश —भामि० २।३२, कु० ३।२९, मेघ० १६ 3. हाल ही में, कुछ ही समय पीछे, जैसा कि सद्यो हुताग्नीन् —श० ४ में । सम० —**कालः** वर्तमान काल, —**कालीन** (वि०) हाल ही का,—**जात** (वि०) (सद्योजात) अभी पैदा हुआ, (**तः**) 1. बछड़ा 2. शिव का विशेषण,—**पातिन्** (वि०) शीघ्र नष्ट होने वाला, नश्वर मेघ० १०, **शुद्धिः**, —**शौचम्** तत्काल की हुई शुद्धि ।

सद्यस्क (वि०) [सद्यस्+कन्] 1. नूतन, अभिनव 2. तात्कालिक ।

सद्रु (वि०) [सद्+रु] 1. विश्राम करने वाला, ठहरने वाला 2. जाने वाला ।

सद्वन्द्व (वि०) [सह द्वन्द्वेन ब० स०] झगड़ालू, कलहप्रिय, विवादपूर्ण ।

सद्वसथः [सद्+वस्+अथच्] गाँव ।

सधर्मन् (वि०) [समानो धर्मोऽस्य सधर्म+अनिच्, ब० स०] 1. समान गुणों से युक्त 2. एक जैसा कर्तव्यों वाला 3. उसी जाति या सम्प्रदाय का 4. समान, मिलता-जुलना । सम० धारिणी वैध स्त्री, शास्त्रीय-रीति से विवाहसूत्र में बद्ध स्त्री ।

सधर्मिणी दे० ऊ० 'सधर्मचारिणी' ।

सधर्मिन् (वि०) (स्त्री० णी) [सहधर्मोऽस्ति अस्य सधर्म+इनि, ब० स०] दे० 'सधर्मन्' ।

सधिस् (पुं०) [सह+इसिन्, हस्य धः] बैल, सांड ।

सध्रीची [सध्र्यञ्च्+ङीप्, अलोपः, दीर्घः] सखी, सहेली, अन्तरंग सहेली भट्टि० ६।७ ।

सध्रीचीन (वि०) [सध्र्यञ्च्+ख, अलोपः, दीर्घः] साथ रहने वाला, सहचर ।

सध्र्यञ्च् (वि०) (स्त्री० सध्रीची) [सहाञ्चति सह+अञ्च्+क्विन्, सध्रि आदेशः] साथ चलने वाला, सहचर, साथी, पुं०—सहचर (पति)—शि० ८।४४ ।

सन् (भ्वा० पर०, तना० उभ० सनति, सनोति, सनुते, सात, कर्मवा० सन्यते, सायते, इच्छा० सिसनिषति, सिषासति) 1. प्रेम करना, पसन्द करना 2. पूजा करना, सम्मान करना 3. प्राप्त करना, अधिगत करना 4. अनुग्रह के साथ प्राप्त करना 5. उपहारों से सम्मान करना, देना, प्रदान करना, वितरण करना ।

सनः [सन्+अच्] हाथी के कानों की फड़फड़ाहट ।

सनत् (पुं०) [सन्+अति] ब्रह्मा का विशेषण—(अव्य०) सदा, नित्य । सम०—**कुमारः** ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक ।

सनसूत्र दे० 'सणसूत्र' ।

सना (अव्य०) [=सदा, नि० दस्य नः] हमेशा, नित्य ।

सनात् (अव्य०) [सना+अत्+क्विप्] सदा, हमेशा ।

सनातन (वि०) (स्त्री०—नी) [सदा+ट्युल्, तुट्, नि० दस्य नः] 1. नित्य, निरन्तर, शाश्वत, स्थायी एष धर्मः सनातनः 2. दृढ़, स्थिर, निश्चित —उत्तर० ५।२२ 3. पूर्वकालीन, प्राचीन,—**नः** पुरातन पुरुष, विष्णु—सनातनः पितरमुपागमत् स्वयम् भट्टि० १।१ 2. शिव का नाम 3. ब्रह्मा का नाम, —**नी** 1. लक्ष्मी का नाम 2. दुर्गा या पार्वती का नाम 3. सरस्वती का नाम ।

सनाथ (वि०) [सह नाथेन—ब० स०] 1. स्वामी वाला, प्रभु या पति वाला—त्वया नाथेन वैदेही सनाथा ह्यद्य वर्तते रामा० 2. जिसका कोई अभिभावक या प्ररक्षक हो—सनाथा इदानीं धर्मचारिणः —श० १ 3. कब्जा किया हुआ, अधिकार किया हुआ 4. सम्पन्न, सहित, युक्त, समेत, पूर्ण, प्रायः समास में—लतासनाथ इव प्रतिभाति श० १, शिलातलसनाथो लतामण्डपः—विक्रम० ९, मेघ० ९८, कु० ७।९४, रघु० ९।४२, विक्रम० ४।१० ।

सनाभि (वि०) [समाना नाभिर्यस्य ब० स०] 1. एक ही पेट का, सहोदर 2. रिश्तेदार, बंधु 3. समान, मिलता-जुलता—गङ्गावर्तसनाभिर्नाभिः—दश० 4. स्नेहशील,—**भिः** 1. सगा भाई, नजदीकी रिश्तेदार 2. रिश्तेदार, बंधु कि० १३।११ 3. रिश्तेदार जो सात पीढ़ी के अन्तर्गत हो ।

सनाभ्यः [सनाभि+यत्] सात पीढ़ियों के भीतर एक ही वंश का रिश्तेदार ।

सनिः [सन्+इन्] 1. पूजा, सेवा 2. उपहार, दान 3. अनुरोध, सादर निवेदन (स्त्री०) भी इस अर्थ में) ।

सनिष्ठीवम्, सनिष्ठेवम् [सह निष्ठी (ष्ठे) वेन ब० स०] वह भाषण जिसमें मुँह से थूक निकले, ऐसी बोली जिसमें थूक उछले ।

सनी [सनि+ङीप्] 1. सादर अनुरोध 2. दिशा 3. हाथी के कानों की फड़फड़ाहट ।

सनीड (ल) (वि०) [समानं नीडमस्त्यस्य—ब० स०] 1. एक ही घोंसले में रहने वाला, साथ-साथ रहने वाला 2. निकटस्थ, समीपवर्ती ।

सन्तः [सन्+त–] दोनों हाथ जुड़े हुए, अंजलि, संहततल।

सन्तक्षणम् [सम्+तक्ष्+ल्युट्] ताना, व्यंग्य, लगने की बात।

सन्तत (भू० क० कृ०) [सम्+तन्+क्त] 1. फैलाया हुआ, विस्तारित 2. विघ्नरहित, अनवरत, अनवच्छिन्न, नियमित 3. टिकाऊ, नित्य 4. बहुत, अनेक,—तम् (अव्य०) सदैव, लगातार, नित्य, निरंतर, शाश्वत।

सन्ततिः (स्त्री०) [सम्+तन्+क्तिन्] 1. बिछाना, फैलाना 2. फासला, प्रसार, विस्तार—श० ७।८ 3. अनवच्छिन्न पंक्ति, अविराम प्रवाह, श्रेणी, परास, परम्परा, निरन्तरता—चितासन्ततितन्तुजालनिविडस्यूतेव लग्ना प्रिया —मा० ५।१०, कुसुमसन्ततिसन्ततसङ्गिभिः—शि० ६।३६ 4. नित्यता, अविच्छिन्न निरन्तरता—रघु० ३।१ 5. कुल, वंश, परिवार 6. सन्तान, प्रजा—सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे —रघु० १।६९ 7. ढेर, राशि (अलम्) सहसा सन्ततिमंहसां विहन्तुम्—कि० ५।१७।

सन्तपनम् [सम्+तप्+ल्युट्] 1. गरम करना, प्रज्वलित करना 2. पीडित करना।

सन्तप्त (भू० क० कृ०) [सम्+तप्+क्त] 1. गर्म किया हुआ, प्रज्वलित, लाल-गरम, चमकता हुआ 2. दुःखी कष्टग्रस्त, पीडित –मेघ०७। सम० –अयस् (नपुं०) लाल-गरम लोहा,—वक्षस् (नपुं०) जिसे सांस लेने में कठिनाई हो।

सन्तमस् (नपुं०) **सन्तमसम्** [सन्ततं तमः - प्रा० स०, पक्षे अच्] सर्वव्यापी या विश्वव्यापी अंधकार, घोर अंधकार—निमज्जयन्संतमसे पराशयम्—नै० ९।१८, शि० ९।२२, भट्टि० ५।२।

सन्तर्जनम् [सम्+तर्ज्+ल्युट्] धमकाना, डांटना-डपटना।

सन्तर्पणम् [सम्+तृप्+ल्युट्] 1. सन्तुष्ट करना, संतृप्त करना 2. खुश करना, प्रसन्न करना 3. जो खुशी का देने वाला हो 4. एक प्रकार का मिष्टान्न।

सन्तानः, नम् [सम्+तनु+घञ्] 1. बिछाना, विस्तृत करना, विस्तार, प्रसार, फैलाव 2. नैरन्तर्य, अनवच्छिन्न पंक्ति या प्रवाह, परम्परा, अनवच्छिन्नता अच्छिन्नामलसन्ताना—कु० ६।६९, संतानवाहीनि दुःखानि – उत्तर० ४।८ 3. परिवार, वंश 4. प्रजा, औलाद, बाल-बच्चा—सन्तानार्थाय विधये – रघु० १।२४, संतानकामाय राज्ञे—२।६५, १८५२ 5. इन्द्र के स्वर्गस्थित पाँच वृक्षों में से एक।

सन्तानकः [सन्तान+कन्] इन्द्र के स्वर्गीय पांच वृक्षों में से एक वृक्ष या उसका फूल—कु० ६।४६, ७।३, शि० ६।६।

सन्तानिका [सम्+तन्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. फेन झाग 2. मलाई 3. मकड़ी का जाला 4. चाकू या तलवार का फल।

सन्तापः [सम्+तप्+घञ्] 1. गर्मी, प्रदाह, जलन—मा० ३।४ 2. दुःख, सताना, भुगतना, पीडा, वेदना, व्यथा —सन्तापसन्ततिमहाव्यसनाय तस्यामासक्तमेतदनपेक्षित हेतु चेतः – मा० १।२३ श० ३ 3. आवेश, रोष 4. पश्चात्ताप, पछतावा - पंच० १।१०९ 5. तपस्या, तप की थकान, शरीर की साधना—सन्तापे दिशतु शिवः शिवां प्रसक्तिम्—कि० ५।५०।

सन्तापनम् (स्त्री० –नी) [सम्+तप्+णिच्+ल्युट्], जलन, दाह, –नः कामदेव के पाँच बाणों में से एक, —नम् 1. जलाना, झुलसना 2. पीडा देना, कष्ट देना 3. आवेश उत्तेजित करना, जोश भरना।

सन्तापित (भू० क० कृ०) [सम्+तप्+णिच्+क्त] गरम किया हुआ, कष्टग्रस्त, पीडित।

सन्तिः [सन्+क्तिन्] 1. अन्त, विनाश 2. उपहार—तु० सति।

सन्तुष्टिः (स्त्री) [सम्+तुष्+क्तिन्] पूर्ण संतोष।

सन्तोषः [सम्+तुष्+घञ्] 1. शान्ति, परितुष्टि, सबर, सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्—सुभा० 2. प्रसन्नता, खुशी, हर्ष 3. अंगूठा या तर्जनी अंगुली।

सन्तोषणम् [सम्+तुष्+णिच्+ल्युट्] प्रसन्न करना, परितृप्त करना, आराम पहुँचाना।

सन्त्यजनम् [सम्+त्यज्+ल्युट्] छोड़ना, त्याग देना।

सन्त्रासः [सम्+त्रस्+घञ्] डर, भय, आतंक।

सन्दंशः [सम्+दंश्+अच्] 1. चिमटा, सन्डासी 2. स्वरों (या वर्णों) के उच्चारण में दांतों का भींचना 3. एक नरक का नाम।

सन्दंशकः [संदंश+कन्] चिमटा, सिंडासी।

सन्दर्भः [सम्+दृभ्+घञ्] 1. मिलाकर नत्थी करना, ग्रथन करना, क्रम में रखना 2. संग्रह, मिलाप, मिश्रण 3. संगति, निरन्तरता, नियमित संबंध, संलग्नता —सन्दर्भशुद्धि गिराम्–गीत०१ 4. संरचना 5. निबंध, साहित्यिक कृति—रसगंगाधरनामा संदर्भोऽयं चिरं जयतु—रस०, उत्तर० ४।

सन्दर्शनम् [सम्+दृश्+ल्युट्] 1. देखना, अवलोकन, नज़र डालना 2. ताकना, टकटकी लगा कर देखना 3. मिलना, एक दूसरे को देखना 4. दृष्टि, दर्शन, निगाह 5. खयाल, ध्यान।

सन्दानम् [सम्+दो+ल्युट्] 1. रस्सी, डोरी 2. शृंखला, बेड़ी, –नः हाथी का गंडस्थल जहां से मद बहता है।

सन्दानित (वि०) [सन्दान+इतच्] 1. बद्ध, कसा हुआ 2. बेड़ी में जकड़ा हुआ, शृंखलित।

सन्दानिनी [सन्दानं बन्धनं गवाम् अत्र-सन्दान+इनि+ङीप्] गोष्ठ, गोशाला।

सन्दावः [सम्+द्रु+घञ्] भगदड़, प्रत्यावर्तन ।

सन्दाहः [सम्+दह्+घञ्] जलन, उपभोग ।

सन्दिग्ध (भू० क० कृ०) [सम्+दिह्+क्त] 1. सना हुआ, ढका हुआ 2. भ्रामक, सन्देहात्मक, अनिश्चित —जैसा कि 'संदिग्ध मति-बुद्धि' में 3. भ्रान्त, विह्वल—मा० १।२ 4. सशंक, प्रश्नास्पद 5. अव्यवस्थित, अस्पष्ट, दुरूह (जैसे कि वाक्य) 6. खतरनाक, जोखिम से भरा हुआ, असुरक्षित 7. विपाक्त ।

सन्दिष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+दिश्+क्त] 1. संकेतित, इंगित किया हुआ 2. निर्दिष्ट 3. उक्त, वर्णित, सूचित 4. वादा किया हुआ, प्रतिज्ञात,—ष्टः जिसे संदेश पहुँचाने का कार्य सौंपा गया हो, संदेशवाहक, दूत, हल्कारा, संदिष्टार्थ,—ष्टम् सूचना, समाचार, खबर ।

सन्दित (वि०) [सम्+दो+क्त] बद्ध, शृंखलित, बेड़ी से जकड़ा हुआ ।

सन्दी [सम्+दो+ड+ङीप्] खटोला, छोटी खाट, शय्याकुश ।

सन्दीपन (वि०)(स्त्री०—नी) [सम्+दीप्+णिच्+ल्युट्] 1. सुलगाने वाला, प्रज्वलित करने वाला, भड़काने वाला—उत्तर० ३ 2. उद्दीपक उत्तर० ४,—नः 1. कामदेव के पांच बाणों में से एक,—नम् 1. सुलगाना, प्रज्वलित करना 2. भड़काना, उद्दीप्त करना अनंगसन्दीपनमाशु कुर्वते - ऋतु० १।१२ ।

सन्दीप्त (भू० क० कृ०) [सम्+दीप्+क्त] 1. सुलगाया हुआ, प्रज्वलित किया हुआ 2. उत्तेजित, उद्दीपित 3. भड़काया हुआ, उकसाया हुआ, प्रणोदित ।

सन्दुष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+दुष्+क्त] 1. कलुषित किया हुआ, मलिन किया हुआ 2. दुष्ट, कमीना ।

सन्दूषणम् [सम्+दूष्+णिच्+ल्युट्] मलिन करना, भ्रष्ट करना, विपाक्त करना, खराब करना ।

सन्देशः [सम्+दिश्+घञ्] 1. सूचना, समाचार, खबर 2. संदेश, संवाद सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य मेघ० ७, १३, रघु० १२।६३, कु० ६।२ 3. आज्ञा, आदेश—अनुष्ठिता गुरोः संदेशः श० ५ । सम० अर्थः संदेश का विषय, वाच् संदेश,—हरः 1. संदेशवाहक, दूत 2. दूत, राजदूत ।

सन्देहः [सम्+दिह्+घञ्] 1. संशय, अनिश्चितता, शंका, —अत्र कः सन्देहः 2. जोखिम, खतरा, डर जीवितसन्देहदोलामारोपितः का०, अर्थार्जने प्रवृत्तिः ससन्देहः —हि० १ 3. (अलं० शा० में) इस नाम का एक अलंकार जिसमें दो पदार्थों की घनिष्ठ समानता के कारण भ्रान्ति से एक वस्तु को अन्य वस्तु समझ लिया जाय (इस अलंकार को मम्मट तथा अन्य कुछ विद्वान् 'ससंदेह' नाम से भी पुकारते हैं) ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः—काव्य० १०, उदा० दे० मा० १।२, (पाठान्तर), विक्रम० ३।२ । सम०—दोला अनिश्चिति का झूला, शंका की स्थिति, दुविधा, असमंजस ।

सन्दोहः [सम्+दुह्+घञ्] 1. दूध दूहना 2. किसी वस्तु की समष्टि, समुच्चय, ढेर, राशि, संघात कुन्दमाकन्दमधुविंदु सन्दोहवाहिना मारुतेनोत्ताम्यति मा० ३, भामि० ४।९ ।

सन्द्रावः [सम्+द्रु+घञ्] भगदड़, प्रत्यावर्तन ।

सन्धा [सम्+धा+अङ्+टाप्] 1. मिलाप, साहचर्य 2. घनिष्ठ मेल, प्रगाढ़ संबंध 3. स्थिति, दशा 4. वादा, प्रतिज्ञा अनुबन्ध, सम्विदा ततार सन्धामिव सत्यसन्धः रघु० १४।५२, महावीर० ७।८ 5. सीमा, हद 6. स्थिरता, स्थैर्य 7. संध्या 8. मद्यसंधान ।

सन्धानम् [सम्+धा+ल्युट्] 1. मिलाना, जोड़ना 2. मेल, संगम, सम्बन्ध—यदर्धे विच्छिन्नं भवति कृतसन्धानमिव तत्—श० १।९, कु० ५।२७, रघु० १२।१०१ 3. मिश्रण, (औषधि-आदि का) सम्मिश्रण 4. पुनरुद्धार, जीर्णोद्धार 5. ठीक बैठाना, जमाना (जैसे कि धनुष की डोरी पर बाण का साधना)—तत्साधुकृतसन्धानं प्रतिसंहर सायकम् श० १।११, शि० २०।८ 6. मैत्री, मेल, दोस्ती, मेल-मिलाप - मृद्घटवत्सुखभेद्यो दुःसन्धानश्च दुर्जनो भवति हि० १।९२ (यहाँ इसका अर्थ 'मिलाना या जोड़ना' भी है) 7. जोड़, ग्रन्थि—पादजङ्घयोः सन्धाने गुल्फः—सुश्रु० 8. अवधान 9. निदेशन 10. संभालना 11. (मदिरा का) आसवन 12. मदिरा या उसका कोई भेद 13. पीने की इच्छा उत्तेजित करनेवाली चटपटी चीजें 14. अचार आदि बनाना 15. रक्तस्रावरोधक औषधियों के द्वारा त्वचा की सिकुड़न 16. कांजी ।

सन्धानित (वि०) [सन्धान+इतच्] 1. मिलाया हुआ, साथ साथ नत्थी किया हुआ 2. बांधा हुआ, कसा हुआ ।

सन्धिः [सम्+धा+कि] 1. मेल, संगम, सम्मिश्रण, सम्बन्ध—सन्धये सरला सूची वक्रा छेदाय कर्तरी—सुभा०, मेघ० ५८ 2. संविदा, करार 3. मित्रता, संघट्टन, मैत्री, मेल-मिलाप, सन्धिपत्र सुलहनामा (विदेशनीति में प्रयोज्य छः उपायों में से एक) —कति प्रकाराः सन्धीनां भवन्ति—हि० (हि० ४।१०६—१२५ तक कई प्रकारों का वर्णन किया है), शत्रूणां न हि संदध्यात्सुश्लिष्टेनापि सन्धिना हि० १।८८ 4. जोड़, (शरीर का) सन्धान—तुरगानुधावनकाण्डितसन्धेः—श० २ 5. (वस्त्र की) तह 6. छेद, विवर, दरार 7 विशेषतया सुरंग, या सेंध जो चोर किसी मकान में घुसने के लिए बनाते हैं—वृक्षवाटिका परिसरे सन्धिं कृत्वा प्रविष्टोऽस्मि मध्यम-

कम्—मृच्छ० ३, मनु० ९।२७६ 8. पार्थक्य, प्रभाग 9. (व्या० में) संहिता, उच्चारण की सुगमता के लिए ध्वनिपरिवर्तन की प्रवृत्ति, वर्णविकार 10. अन्तराल, विश्राम 11. संकट काल 12. उपयुक्त अवसर 13. युगांत-काल 14. (ना० से) प्रभाग या जोड़ (यह संधियाँ गिनती में पाँच हैं—सा० द० ३३०-३३२) कु० ७।९१ 15. भग, स्त्री की जननेन्द्रिय। सम०—अक्षरम् संयुक्त स्वर संधिस्वर, (ए, ऐ, ओ, औ),—चौरः घर में सेंध लगाने वाला, वह चोर जो घर में पाड़ लगाता है,—छेदः (दीवार आदि में) छिद्र या सूराख करना,—जम् मादक मदिरा, —जीवकः जो अधर्म की कमाई से जीवन-निर्वाह करता है (विशेषतया जैसे कि दलाल) अर्थात् स्त्रियों को पुरुषों से मिला कर जीविका अर्जन करने वाला, —दूषणम् संधि या सुलह का भंग कर देना अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशा विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि—कि० १।४५,—बन्धः जोड़ों का ऊतक —श० २,—बन्धनम् स्नायु, कण्डरा, शिरा,—भङ्गः,—मुक्तिः (स्त्री०) किसी जोड़ का संबंध टूट जाना, —विग्रह (पुं०, द्वि० व०) शान्ति और युद्ध °अधिकारः विदेश विभाग का मन्त्रालय, —विचक्षणः संधि की बातचीच करने में निपुण,—विद् (पुं०) संधि की बातचीत करने वाला,—बेला 1. संध्या-काल 2. कोई भी संधिकाल,—हारकः घर में सेंघ लगाने वाला।

सन्धिकः [सन्धि+कन्] एक प्रकार का ज्वर।

सन्धिका [सन्धिक+टाप्] (मदिरा का) आसवन।

सन्धित (वि०) [सन्धा+इतच्] 1. मिलाया हुआ, जोड़ा हुआ 2. बद्ध, कसा हुआ 3. समाहित, पुनर्मिलित, मित्रता में आबद्ध 4. स्थिर किया हुआ, ठीक बैठाया हुआ 5. आपस में मिलाया हुआ 6. अचार डाला हुआ, प्ररक्षित,—तम् 1. अचार 2. मदिरा।

सन्धिनी [सन्धा+इनि+ङीप्]। गर्माई हुई गाय (या तो सांड से संयुक्त, या उसके द्वारा गाभिन गाय) 2. असमय दुही जाने वाली गाय।

सन्धिला [सन्धि+ला+क+टाप्] 1. भीत में किया हुआ छिद्र, गड्ढा, विवर 2. नदी 3. मदिरा।

सन्धुक्षणम् [सम्+धुक्ष्+ल्युट्] 1. सुलगना,प्रज्वलित होना 2. उत्तेजित करना, उद्दीपन।

सन्धुक्षित (भू०क०कृ०) [सम्+धुक्ष्+क्त] सुलगा हुआ, प्रज्वलित, भभकाया हुआ।

सन्धेय (वि०) [सम्+धा+यत्] 1. मिलाये जाने या जोड़े जाने के योग्य 2. पुनर्मिलित होने के योग्य—सुजनस्तु कनकघटवद् दुर्भेद्यश्चाशुसन्धेयः—हि० १।९२ 3. जिसके साथ सन्धि की जा सके 4. जिस पर निशाना लगाया जा सके।

सन्ध्या [सन्धि+यत्+टाप्, सम्+ध्यै+अङ्+टाप् वा] 1. मिलाप 2. जोड़, प्रभाग 3. प्रातः या सायंकाल का संधिवेला, झुटपुटा—अनुरागवती सन्ध्या दिवसस्तत्पुरस्सरः। अहो दैवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः —काव्य० ७ 4. प्रभात काल 5. सायंकाल, सांझ का समय 6. युग का पूर्ववर्ती समय, दो युगों का मध्यवर्ती काल, मनु० १।६९ 7. प्रातः काल, मध्याह्न काल तथा सायंकाल की ब्राह्मण द्वारा प्रार्थना—मनु०२।६९, ४।९३ 8. प्रतिज्ञा, वादा, 9. हद, सीमा 10 चिन्तन, मनन 11. एक प्रकार का फूल 12. एक नदी का नाम 13 ब्रह्मा की पत्नी का नाम। सम० अभ्रम् 1. सायंकालीन बादल (सूर्य की सुनहली आभा से युक्त)—सन्ध्याभ्ररेखेव मुहूर्तरागा पंच० १।१९४ 2. एक प्रकार की लाल खड़िया, गेरु,—कालः 1. संध्या का समय 2. सांझ,—नाटिन् (पुं०) शिव का विशेषण, —पुष्पी 1. एक प्रकार की चमेली 2. जायफल,—बलः राक्षस,—रागः सिंदूर,—रामः (कई विद्वान् यहाँ 'आराम' शब्द को रखते हैं) ब्रह्मा का विशेषण, —वन्दनम् प्रातःकाल और संध्या काल की प्रार्थना।

सन्न (भू० क० कृ०) [सद्+क्त] 1. बैठा हुआ, आसीन, लेटा हुआ 2. खिन्न, दुःखी, उदास 3. म्लान, विश्रान्त 4. दुर्बल, निश्शक्त, कमज़ोर 5. क्षीण, छीजा हुआ 6. नष्ट, लुप्त 7. स्थिर, गतिहीन 8. सिकुड़ा हुआ 9. सटा हुआ, निकटस्थ,—न्नः पियाल नामक वृक्ष, चिरौंजी का पेड़, —म् थोड़ा सा, अल्पमात्रा।

सन्नक (वि०) [सन्न+कन्] नाटा, छोटेकद का। सम० —द्रुः पियालवृक्ष।

सन्नत (भू० क० कृ०) [सम्+नम्+क्त] 1. झुका हुआ, नतांग या प्रवण 2. उदास 3. सिकुड़ा हुआ।

सन्नतर (वि०) [सन्न+तरप्] अपेक्षाकृत धीमा, विषण्ण (जैसे कि स्वर)।

सन्नतिः (स्त्री०) [सम्+नम्+क्तिन्] 1. अभिवादन, सादर प्रणाम, सम्मान 2. विनम्रता 3. एक प्रकार का यज्ञ 4. ध्वनि, कोलाहल।

सन्नद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+नह्+क्त] 1. एक साथ मिलाकर कटिबद्ध 2. कवचित, सुसज्जित, वस्तरबंद 3. व्यवस्थित, तैयार, युद्धके लिए उद्यत, शस्त्रास्त्र से पूर्णतः सुसज्जित,—नवजलधरः सन्नद्धोऽयं न दृप्तनिशाचरः—विक्रम० ४।१, मेघ० ८ 4. तत्पर, उद्यत, निर्मित, सुव्यवस्थित—कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्—श० १।२१ 6. किसी भी वस्तु से युक्त 7. घातक 8. नितान्त संलग्न, सीमावर्ती, निकटस्थ।

सन्नयः [सम्+नी+अच्] 1. संचय, समुच्चय, परिमाण, संख्या 2. पृष्ठभाग, (किसी सेना का) पृष्ठभाग।

सन्नहनम् [सम्+नह्+ल्युट्] 1. तैयार होना, सन्नद्ध होना, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना 2. तैयारी 3. कस कर बांधना 4. उद्योग, प्रयत्न।

सन्नाहः [सम्+नह्+घञ्] 1. आपने आपको शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना, युद्ध के लिए तैयार होना, कवच पहनना 2. युद्ध जैसी तैयारी, सुसज्जा 3. कवच, बख्तर अस्मिन्कलौ खलोत्सृष्टदुष्टवाग्बाणदारण। कथं जीवेज्जगन्न स्युः सन्नाहाः सज्जना यदि - कीर्ति० १।३६, कि० १६।१२।

सन्नाह्यः [सम्+नह्+ण्यत्] युद्ध का हाथी।

सन्निकर्षः [सम्+नि+कृष्+घञ्] 1. निकट खींचना, समीप लाना, 2. पड़ोस, सामीप्य, उपस्थित—उत्कण्ठते च युष्मत्सन्निकर्षस्य—उत्तर०६, ३।७४, रघु० ७।८, ६।१० 3. संबंध, रिश्तेदारी 4. (न्याय० में) इंद्रिय का विषय से संबंध, (यह छः प्रकार का है)।

सन्निकर्षणम् [सम्+नि+कृष्+ल्युट्] 1. निकट लाना 2. पहुँचना, समीप जाना 3. सामीप्य, पड़ोस।

सन्निकृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+नि+कृष्+क्त] 1. समीप आया हुआ 2. समीपवर्ती, सटा हुआ, विकटस्थ,—ष्टम् सामीप्य, पड़ोस।

सन्निचयः [सम्+नि+चि+अच्] संग्रह, संचय।

सन्निधातृ (पुं०) [सम्+नि+धा+तृच्] 1. निकट लाने वाला 2. जमा करने वाला 3. चोरी का माल लेने वाला - मनु० ९।२७८ 4. न्यायालय में लोगों का परिचय कराने वाला अधिकारी।

सन्निधानम्, सन्निधिः [सम्+नि+धा+ल्युट्, कि वा] 1. मिलाकर रखना, साथ साथ रखना 2. सामीप्य, पड़ौस, उपस्थिति—नै० २।५३ 3. दृष्टिगोचरता दर्शन 4. आधार 5. ग्रहण करना, कार्य भार लेना, 6. सम्मिश्रण, समष्टि।

सन्निपातः [सम्+नि+पत्+घञ्] 1. नीचे गिरना, उतरना, नीचे आना 2. एक साथ गिरना, मिलना, —कि० १३।५८ 3. टक्कर, संपर्क 4. मेल, संगम, सम्मिश्रण, मिश्रण, विविध संचय धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः—मेघ० ५ 5. संघात, संग्रह, समुच्चय, संख्या—नानारत्नज्योतिषां सन्निपातैः कु० १।३ 6. आना, पहुँचना 7. (वात, पित्त कफ) तीनों दोषों का एक साथ बिगड़ना जिससे कि विषम ज्वर हो जाता है 8. संगीत में एक प्रकार का समय, ताल। सम०—ज्वरः तीनों दोषों के बिगड़ जाने पर उत्पन्न होने वाला भीषण ज्वर।

सन्निबन्धः [सम्+नि+बन्ध्+घञ्] 1. कस कर बांधना 2. संबंध, आसक्ति 3. प्रभावकारिता।

सन्निभ (वि०) [सम्+नि+भा+क] समान, सदृश, (समास के अन्त में प्रयुक्त)— ऋतु० १।११।

सन्नियोगः [सम्+नि+युज्+घञ्] 1. मेल, अनुराग 2. नियुक्ति।

सन्निरोधः [सम्+नि+रुध्+घञ्] अड़चन, रुकावट।

सन्निवृत्तिः (स्त्री.) [सम्+नि+वृत्+क्तिन्] 1. वापसी —श० ६।१०, रघु० ८।४९, १०।२७ 2. हटना रुकना 3. निग्रह, सहिष्णुता।

सन्निवेशः [सम्+नि+विश्+घञ्] 1. गहरी पैठ, उत्कट भक्ति या अनुराग, संलग्नता 2. संचय, समुच्चय, संघात 3. मेल, मिलाप, व्यवस्था — रमणीय —एष वः सुमनसां सन्निवेशः मा० १।९ 4. स्थान, जगह, स्थिति, अवस्था—कु० ७।२५, रघु० ६।१९ 5. पड़ौस, सामीप्य 6. रूप, आकृति—उद्दामशरीर सन्निवेशः मा० ३, निर्माणसन्निवेशः—का० 7. झोपड़ी, रहने की जगह,—रघु० १४।७६ 8. उपयुक्तस्थानों पर आसन देना, बिठाना—क्रियतां समाजसन्निवेशः—उत्तर० ७ 9. बीच में रखना 10. नगर के निकट खुला मैदान जहाँ लोग मनोरंजन, व्यायाम आदि के लिए एकत्र होते हैं।

सन्निहित (भू० क० कृ०) [सम्+नि+धा+क्त] 1. निकट रक्खा गया, पास पड़ा हुआ, निकटस्थ, सटा हुआ, पड़ौस का —श० ४ 2. निकट, समीप, नजदीक 3. उपस्थित—अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः—श० १, हृदयसन्निहिते—श० ३।२० 4. जमाया हुआ, रक्खा हुआ, जमा किया हुआ 5. उद्यत, तत्पर मुद्रा० १ 6. ठहरा हुआ, अन्तर्वर्ती। सम०—अपाय (वि०) जिसका विनाश निकट ही हो, क्षणभंगुर नश्वर, अस्थायी कायः सन्निहितापायः—पंच० २।१७७।

सन्न्यसनम् [सम्+नि+अस्+ल्युट्] 1. त्याग, (हथियार) डाल देना 2. पूर्णवैराग्य, विरक्ति - न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति—भग० ३।४ 3. सौंपना, सुपुर्द करना।

सन्न्यस्त (भू० क० कृ०) [सम्+नि+अस्+क्त] 1. डाला हुआ, नीचे रक्खा हुआ 2. जमा किया हुआ 3. सौंपा हुआ, सुपुर्द किया हुआ 4. एक ओर डाला, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।

सन्न्यासः [सम्+नि+अस्+घञ्] 1. छोड़ना, त्याग करना 2. सांसारिक विषयों तथा अनुरागों से पूर्ण वैराग्य, सांसारिक वासनाओं का परित्याग, भग० ६।२, १८।२, मनु० १।११४, ५।१०८ 3. धरोहर, निक्षेप 4. खेल में शर्त लगाना 5. शरीर त्यागना, मृत्यु 6. जटामांसी, बालछड़।

सन्न्यासिन् (पुं०) [सम्+नि+अस्+णिनि] 1. जो त्याग देता और जमा कर देता है 2. जो संसार और इसकी आसक्तियों का पूर्णतः त्याग कर देता है,

वैरागी, चौथे आश्रम में स्थित ब्राह्मण—ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति -भग० ५।३ 3. भोजन का त्याग करने वाला, त्यक्ताहार, —भट्टि० ७।७६ ।

सप् (भ्वा० पर० सपति) 1. सम्मान करना, पूजा करना 2. संबंध जोड़ना ।

सपक्ष (वि०) [सह पक्षेण—ब० स०] 1. पंखों वाला, डैनों वाला 2. पक्षवाला, दलवाला 3. एक ही पक्ष या दल का 4. बन्धु, समान, सदृश—(आलं०) दलद्द्राक्षानिर्यद्रसभरसपक्षा भणितयः—भामि० २।७७ 5. जिसमें अनुमान का पक्ष या साध्य विषय विद्यमान हो, क्षः 1. समर्थक, अनुगामी, पक्षपाती, हिमायती 2. सजातीय, रिश्तेदार—मालवि० ४ 3. (तर्क० में) साध्यपक्ष का दृष्टांत, समान उदाहरण—निश्चितसाध्यवान् सपक्षः - तर्क० ।

सपत्नः [सह एकार्थे पतति - पत्+न, सहस्य सः] शत्रु, विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी—रघु० ९।८ ।

सपत्नी [समानः पतिः यस्याः - ब० स० ङीप्, न आदेशः] 1. प्रतिद्वन्द्वी या सहपत्नी, प्रतिद्वन्द्वी गृहिणी, सौत (एक ही पति की दूसरी पत्नी)—दिशः सपत्नी भव दक्षिणस्याः - रघु० ६।६३, १४।८६ ।

सपत्नीक (वि०) [सपत्नी+कप्] पत्नी सहित ।

सपत्राकरणम् [सह पत्रेण सपत्र+डाच्+कृ+ल्युट्] 1. इस प्रकार बाण मारना जिससे कि बाण का पुंखदार भाग शरीर में घुस जाय 2. अत्यंत पीडाकारक —तु० निष्पत्राकरण ।

सपत्राकृतिः (स्त्री०) [सपत्र+डाच्+कृ+क्तिन्] वेदना, पीडा, अत्यंत कष्ट या सन्ताप ।

सपदि (अव्य०) [सह+पद्+इन्, सहस्य सः] तुरन्त, क्षण भर में, फौरन, तत्काल - सपदि मदनानलो दहति मम मानसम् - गीत० १०, कु० ३।७६, ६।४ ।

सपर्या [सपर्+यक्+अ+टाप्] 1. पूजा, अर्चना, सम्मान—सोऽहं सपर्याविधिभाजनेन—रघु० ५।२२, २।२२, ११।३५, १३।४६, शि० १।१४ 2. सेवा, परिचर्या ।

सपाद (वि०) [सहपादेन - ब० स०] 1. पैरों वाला 2. एक चौथाई बढ़ा हुआ ।

सपिण्डः [समानः पिंडो मूलपुरुषो निवापो वा यस्य - ब० स०] समान पितरों को पिंडदान देने वाला, एक समान पितरों को पिण्डदान देने के कारण संबंधी, बन्धु याज्ञ० १।५२, मनु० २।२४७, ५।५९ ।

सपिण्डीकरणम् [सपिण्ड+च्वि+कृ+ल्युट्] समान पितरों के सम्मान में किया जाने वाला विशेष श्राद्ध का अनुष्ठान, (यह श्राद्ध किसी बन्धुबांधव की मृत्यु के एक वर्ष पश्चात् किया जाता है, परन्तु आजकल बहुधा मृत्यु से बारहवें दिन ही किया जाने लगा है) ।

सपीतिः (स्त्री०) [सह एकत्र पीतिः पानम्—पा+क्तिन्] साथ साथ पीना, मिलकर पीना, सहपान ।

सप्तक (वि०) (स्त्री—का, की) [सप्तानां समूहः सप्तन्+कन्] 1. जिसमें सात सम्मिलित हों 2. सात 3. सातवां,—कम् सात वस्तुओं का संग्रह (कविता आदि का) ।

सप्तकी [सप्तभिः स्वरैः इव कायति शब्दायते—सप्तन्+कै+क+ङीप्] स्त्री की करधनी या तगड़ी ।

सप्ततिः (स्त्री०) [सप्तगुणिता दशतिः—नि०] सत्तर, °तम् (वि०) सत्तरवां ।

सप्तधा (अव्य०) [सप्तन्+धाच्] सात गुण, सात प्रकार से ।

सप्तन् (सं० वि०) [सदैव बहुवचनान्त—कर्तृ० व कर्म० सप्त [सप्+तनिन्] सात । सम० - अङ्ग (वि०) दे० नी० सप्तप्रकृति, - अर्चिस् (वि०) 1. सात जिह्वा या लौ वाला 2. बुरी आंख वाला, अशुभ दृष्टि वाला, (पुं०) 1. अग्नि 2. शनि, - अशीतिः (स्त्री०) सतासी, —अश्रम् सतकोन, - अश्वः सूर्य,—°वाहनः सूर्य,—अहः सात दिन अर्थात् एक हफ्ता, - आत्मन् (पुं०) ब्रह्म का विशेषण, - ऋषि (सप्तर्षि) (पुं० ब० व०) 1. सात ऋषि, अर्थात् मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ 2. सप्तर्षि नामक नक्षत्रपुंज (सात तारों का समूह जो उपर्युक्त सात ऋषि कहे जाते हैं),- चत्वारिंशत् (स्त्री०) सैंतालिस,—जिह्वः, —ज्वालः आग,—तन्तुः यज्ञ - शि० १४।६, - त्रिंशत् (स्त्री०) सैंतीस,—दशन् (वि०) सत्रह,—दीधितिः अग्नि —द्वीपा पृथ्वी का विशेषण, - धातु (पुं० ब० व०) शरीर के संघटक सात मूलतत्त्व अर्थात् अन्नरस, रुधिर, मांस, चर्बी, हड्डी, मज्जा, वीर्य, - नवतिः (स्त्री०) सत्तानवे,—नाडीचक्रम् ज्योतिष का एक रेखाचित्र जिसके द्वारा वर्षाविषयक भविष्यकथन किया जाता है,—पर्णः (इसी प्रकार सप्तच्छदः, सप्तपत्रः) एक वृक्ष का नाम, - पदी विवाह में सात पग चलना (दूल्हा और दुलहिन विवाह संस्कार के अवसर पर सात पग मिलकर चलते हैं—इसके बाद विवाहसम्बन्ध अटूट हो जाता है), - प्रकृतिः (स्त्री० ब० व०) राज्य के सात संघटक अंग—स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च - अमर०, दे० 'प्रकृति' भी, —भद्रः सिरस का पेड़, - भूमिक, - भौम (वि०) सातमंजिल ऊँचा (जैसे कि महल),—रात्रम् सात रात का समय, - विंशतिः (स्त्री०) सत्ताइस, - विध (वि०) सातगुना, सात प्रकार का,—शतम् 1. सात सौ 2. एक सौ सात, (ती) सात सौ श्लोकों का संग्रह,

—सप्तिः सूर्य का विशेषण—सर्वैरुस्रैः समग्रैस्त्वमिव नृपगुणैर्दीप्यते सप्तसप्तिः—मालवि० २।१३।

सप्तम (वि०) (स्त्री०—मी) [सप्तानां पूरणः - सप्तन् +डट्, मट्] सातवां, **मी** (स्त्री०) 1. सातवीं विभक्ति (व्या० में) अधिकरण कारक 2. चान्द्रवर्ष के किसी पक्ष का सातवां दिन।

सप्तला (स्त्री०) एक प्रकार की चमेली।

सप्तिः [सप्+ति] 1. जूआ 2. घोड़ा—जवो हि सप्तेः परमं विभूषणम्—सुभा०—दे० 'सप्तसप्ति' भी।

सप्रणय (वि०) [सह प्रणयेन – ब० स०] स्नेही, मित्रतापूर्ण।

सप्रत्यय (वि०) [प्रत्ययेन सह - ब० स०] 1. विश्वास रखने वाला 2. निश्चित, विश्वस्त।

सफरः-री [सप्+अरन्, पृषो० पस्य फः] छोटी चमकीली मछली · तु० 'शफर'।

सफल (वि०) [सहफलेन ब० स०] 1. फलों से पूर्ण, फल देने वाला, उपजाऊ (आलं० से भी) 2. सम्पन्न, पूरा किया गया, कामयाब।

सबन्धु (वि०) [सह बन्धुना—ब० स०] 1. जिसके साथ निकट सम्बन्ध हो 2. मित्रयुक्त, मित्रता के सूत्र में बंधा हुआ, **धुः** रिश्तेदार, बन्धु-बांधव।

सबलिः [सहबलिना ब० स०] सांध्यकालीन झुटपुटा, गोधूलिवेला।

सबाध (वि०) [सह बाधया ब० स०] 1. आघातपूर्ण 2. पीडादायक।

सब्रह्मचर्यम् [समानं ब्रह्मचर्यम् · सहस्य सः] सहपाठिता (एक ही गुरु के शिष्य होने के कारण)।

सब्रह्मचारिन् (पुं०) [समानं ब्रह्म वेदग्रहणकालीनं व्रतं चरति चर्+णिनि, समानस्य सः] 1. सहपाठी (समान अध्ययन या समान साधना करने वाला) 2. सहभोगी, सहानुभूति रखने वाला व्यक्ति—दुःखसब्रह्मचारिणी तरलिका क्व गता का०, हे व्यसनसब्रह्मचारिन् यदि न गुह्यं ततः श्रोतुमिच्छामि—मुद्रा० ६।

सभा [सह भान्ति अभीष्टनिश्चयार्थमेकत्र यत्र गृहे] 1. जलसा, परिषद्, ·गुप्तसभा—पण्डितसभां कारितवान्—पंच० १, न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः—हि० १ 2. समिति, समाज, सम्मिलन, बड़ी संख्या 3. परिषद्-कक्ष, या सभा भवन 4. न्यायालय 5. सार्वजनिक जलसा 6. जूआ खाना 7. कोई भी स्थान जहां लोग प्रायः आते जाते हों। सम० -आस्तारः 1. सभा में सहायक 2. सभासद्, –पतिः सभा का अध्यक्ष, सभापति 2. जुए का अड्डा चलाने वाला,—पूजा दर्शकों के प्रति सम्मान प्रदर्शन,—सद् (पुं०) 1. किसी सभा या जलसे में सहायक 2. सभासद्, मेम्बर, 3. अदालत की पंचायत का सदस्य, जूरी का सदस्य।

सभाज् (चुरा० उभ० सभाजयति—ते) 1. अभिवादन करना, प्रणाम करना, नमस्कार करना, श्रद्धांजलि अर्पित करना, बधाई देना—स्नेहात्सभाजयितुमेत्य, —उत्तर० १।७, शि० १३।१४, श० ५ 2. सम्मान करना, पूजा करना, आदर करना 3. प्रसन्न करना, तृप्त करना 4. सुन्दर बनाना, अलंकृत करना, सजाना—उत्तर० ४।१९ 5. प्रदर्शन करना।

सभाजनम् [सभाज्+ल्युट्] 1. (क) प्रणाम करना, अभिवादन करना, सम्मानित करना, पूजा करना—शि० १३।१४ (ख) स्वागत करना, बधाई देना—रघु० १३।४३, १४।१८ 2. शिष्टता, शिष्टाचार, विनम्रता 3. सेवा।

सभावनः [सह भावनेन—ब० स०] शिव का नाम।

सभि (भी) कः [सभा द्यूतं प्रयोजनमस्य—ईक] जुए का अड्डा चलाने वाला, जुआ खेलाने वाला,—अयमस्माकं पूर्वसभिको माथुर इत एवागच्छति—मृच्छ० ३, याज्ञ० २।१३९।

सभ्य (वि०) [सभायां साधुः—यत्] 1. सभा से संबंध रखने वाला 2. समाज के योग्य 3. संस्कृत, परिष्कृत, विनीत 4. सुशील, विनम्र, शिष्ट—रघु० १।५५, कु० ७।२९ 5. विश्वस्त, विश्वसनीय, ईमानदार,—**भ्यः** 1. मूल्यनिदर्शक 2. सभासद् 3. संमानित कुल में उत्पन्न 4. जुआ-खाने का संचालक 5. द्यूतगृह के संचालक का सेवक।

सभ्यता—त्वम् [सभ्य+तल्+टाप्, त्व वा] विनम्रता, सुशीलता, कुलीनता।

सम् i (भ्वा० पर० समति) 1. विक्षुब्ध या अव्यवस्थित होना 2. विक्षुब्ध या अव्यवस्थित न होना।
ii (चुरा० उभ० समयति—ते) विक्षुब्ध होना।

सम् (अव्य०) [सो+डमु] धातु या कृदन्त शब्दों से पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर इसका निम्नांकित अर्थ है (क) के साथ मिल कर, साथ साथ—यथा संगम, संभाषण, संधा, संयुज् आदि में (ख) कभी कभी यह धातु के अर्थ को प्रकट कर देता है, और इसका अर्थ होता है - 1. बहुत, बिल्कुल, खूब, पूर्णतः, अत्यन्त—यथा संतुष्, संतोष, संन्यस्, संन्यास, संताप आदि 2. समास में संज्ञा शब्दों के पूर्व प्रयुक्त होकर इसका अर्थ है की भांति, समान, एक जैसा यथा 'समर्थ' में 3. कभी कभी इसका अर्थ होता है—निकट, पूर्व, जैसा कि 'समक्ष' में।

सम (वि०) [सम्+अच्] 1. वही, समरूप 2. समान, जैसा कि 'समलोष्टकांचनः' में रघु० ८।२१, भग० २।३८ 3. के समान, वैसा ही, मिलता-जुलता, करण० या संबंध० के साथ अथवा समास में,—गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः—सुभा०—कु० ३।१३, २३.

4. समान, समतल चौरस - समदेशवर्तिनस्ते न दुरासदो भविष्यति - श० १ 5. समसंख्या, 6. निष्पक्ष, न्याययुक्त 7. न्यायोचित, ईमानदार, खरा 8. भला, सद्गुण संपन्न 9. सामान्य, मामूली 10 मध्यवर्ती, बीच का 11. सीधा 12. उपयुक्त, सुविधाजनक 13. तटस्थ, अचल, निरावेश 14. सब, प्रत्येक 15. सारा, पूर्ण, समस्त, पूरा,—मम् समतल मैदान, चौरस देश कि० ९।११,—मम् (अव्य०) 1. से, के साथ, मिलकर, सहित, (करण० के साथ) आहो निवत्स्यति समं हरिणाङ्गनाभिः—श० १।२७, रघु० २।२५, ८।६३, १६।७२ 2. एक समान—यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयते समम् मनु० ९।३११ 3. के समान, इसी प्रकार, इसी रीति से - पंच० १।७८ 4. पूर्णतः 5. युगपत्, एकही साथ, सब मिल कर, उसी समय, साथ साथ—नवं पयो यत्र घनैर्मया च त्वद्विप्रयोगाश्रु समं विसृष्टम्—रघु० १३।२६, ४।४, १०।६०, १४।१।

सम०—अंशः समान भाग, °हारिन् (पुं०) सहदायभागी,- अन्तर (वि०) समानान्तर,—आचार 1. समान या एक जैसा आचरण 2. उचित व्यवहार,—उदकम् आधा दही और आधा पानी मिलाकर बनाई गई छाछ, मट्ठा,—उपमा उपमा अलंकार का एक भेद, —कन्या योग्य या उपयुक्त कन्या (विवाह के योग्य), —कर्णः ऐसा चतुष्कोण जिसके कर्ण एक समान हों, —कालः वही समय या क्षण, लम् (अव्य०) उसी समय, युगपत्, कालीन (वि०) समवयस्क, समसामयिक, कोलः सर्प, साँप, क्षेत्रम् (ज्योतिः० में) नक्षत्रों के एक विशेषक्रम का विशेषण, खातः समान खुदाई, समानान्तर चतुर्भुजों से बनी हुई आकृति, गन्धकः एक जैसे पदार्थों से बना धूप, चतुरस्र (वि०) वर्ग, (स्रम्) समभुज चतुष्कोण, - चतुर्भुजः, —जः विषमकोण समचतुर्भुज,—चित्त (वि०) 1. सममनस्क, एक समान, प्रशान्तचित्त 2. उदासीन, —छेद,—छेदन (वि०) वह भिन्न जिनके हर समान हों,—जाति (वि०) समान जाति या वर्ग का,—ज्ञा ख्याति,—त्रिभुजः,—,जम् समभुज त्रिकोण, दर्शन —दर्शिन् (वि०) समान रूप से देखने वाला, निष्पक्ष, —विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि, शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः—भग० ५।१७, दुःख (वि०) दूसरों के दुःख को अपने जैसा दुःख समझने वाला, (दूसरों से) सहानुभूति रखने वाला, दुःख में साथी, कु० ४।४, °सुख (वि०) सुख और दुःख का साथी - श० ३।१२, दृश् दृष्टि (वि०) पक्षपातरहित,—बुद्धि (वि०) 1. निष्पक्ष 2. तटस्थ, निःसंग,—भाव (वि०) एक-सी प्रकृति या गुण रखने वाला, (वः) समानता, तुल्यता, -मण्डलम् (ज्यो० में) मुख्य खड़ी रेखा,—मय (वि०) एक समान मूल वाले, रंजित (वि०) हलके रंग वाला,— रंभः एक प्रकार का रतिबंध, -रेख (वि०) सीधा, - प्रकृत्या वक्रं तदपि समरेखं नयनयोः—श० १।९,—लम्बः —बम् विषम चतुर्भुज,- वर्णः एक ही जाति का, —वर्तिन् (वि०) सममनस्क, पक्षपातरहित (पुं०) मृत्यु का देवता, यमराज, वृत्तम् 1. वह छंद जिसके चारों चरण समान हों 2. दे० 'सममंडल',—वृत्ति (वि०) धीर, गंभीर,—वेधः बीच के दर्जे की गहराई, शोधनम् समीकरण के प्रश्नों में एक सी राशि का दोनों ओर घटाना, समव्यवकलन, - सन्धिः एक समान शर्तों पर शान्तिस्थापन, - सुप्तिः (स्त्री०) विश्वनिद्रा (कल्पान्त के अवसर पर समस्त चराचर चिरनिद्रा में विलीन हो जाते हैं),—स्थ (वि०) 1. बराबर, एक रूप का 2. समतल, हमवार 3. समान,—स्थलम् समतल भूमि।

समक्ष (वि०) [अक्ष्णोः समीपम् समक्ष + अच्] आँखों के सामने मौजूद, दर्शनीय, वर्तमान,—क्षम् (अव्य०) की उपस्थिति में, देखते देखते, आँखों के सामने - कु० ५।१।

समग्र (वि०) [समं सकलं यथा स्यात्तथागृह्यते—सम् + ग्रह् + ड] सब, पूर्ण, समस्त, पूरा—मालवि० २।१३।

समङ्गा [सम् + अञ्ज् + घ + टाप्] मंजिष्ठा, मजीठ।

समजः [सम् + अज् + अप्] 1. पशुओं का झुण्ड, पक्षियों का गोल, लहंडा, रेवड़ 2. मूर्खों की संख्या,—जम् जंगल, अरण्य।

समज्या [सम् + अज् + क्यप् + टाप्] 1. सम्मिलन, सभा 2. ख्याति, यश, कीर्ति।

समञ्जस (वि०) [सम्यक् अञ्जः औचित्यं यत्र ब० स०] 1. उचित, तर्कसंगत, ठीक, योग्य 2. सही, सच, यथार्थ 3. स्पष्ट, बोधगम्य जैसा कि 'असमञ्जस', सद्गुणसंपन्न, भला, न्यायोचित,—भृशाधिरूढस्य समञ्जसं जनम् कि० १०।१२ 5. अभ्यस्त, अनुभूत 6. स्वस्थ, सम् 1. औचित्य, योग्यता 2. यथार्थता 3. सच्ची गवाही।

समता, —त्वम् [सम + तल् + टाप्, त्व वा] 1. एकसापन, एकरूपता 2. समानता, एक जैसापन 3. बराबरी 4. निष्पक्षता, न्याय्यता, समतां नी, समान व्यवहार करना मनु० ९।२१८ 5. सन्तुलन 6. पूर्णता 7. सामान्यता 8. समानता।

समतिक्रमः [सम् + अति + क्रम् + घञ्] उल्लंघन, भूल।

समतीत (वि०) [सम् + अति + इ + क्त] बीता हुआ, गया हुआ - रघु० ८।७८।

समद (वि०) [सह मदेन—ब० स०] 1. नशे में चूर,

भीषण 2. मद के कारण मस्त 3. प्रणयोन्मत्त,–उत्तर० २।२० ।

समधिक (वि०) [सम्यक् अधिकः–प्रा० स०] 1. अतिशय 2. अत्यंत अधिक, पुष्कल, बहुत अधिक –उत्तर० ४, कम् (अव्य०) अत्यंत, अधिकता के साथ ।

समधिगमनम् [सम्+अधि+गम्+ल्युट्] आगे बढ़ जाना, पार कर लेना, जीत लेना ।

समध्व (वि०) [समानः अध्वा यस्य—ब० स०] साथ यात्रा करने वाला ।

समनुज्ञानम् [सम्+अनु+ज्ञा+ल्युट्] 1. हामी भरना, स्वीकृति देना 2. पूर्ण अनुमति, पूरी सहमति ।

समन्त (वि०) [सम्यक् अन्तो यत्र ब० स०] 1. हर दिशा में मौजूद, विश्वव्यापी 2. पूर्ण, समस्त, तः सीमा, हद, मर्यादा (समन्तम्, समन्ततः, समन्तात् क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं 'सब ओर से' 'चहुँओर' 'सब ओर' पूर्णरूप से, 'पूरी तरह से' । सम० –दुग्धा थूहर, स्नुही, —पञ्चकम् कुरुक्षेत्र या उसके निकट का प्रदेश–वेणी० ६, —भद्रः बुद्ध भगवान्,—भुज् (पुं०) आग ।

समन्यु (वि०) [सह मन्युना ब० स०] 1. शोकाकुल 2. रोषपूर्ण, रुष्ट ।

समन्वयः [सम्+अनु+इ+अच्] 1. नियमित परंपरा या क्रम 2. संबद्ध अनुक्रम, पारस्परिक सम्बन्ध, तात्पर्य, तत्तु समन्वयात्– ब्रह्म० १।१।४, न च तद्गतानां पदानां ब्रह्मस्वरूपविषये निश्चिते समन्वये ऽर्थान्तरकल्पना युक्ता शारी० 3. संयोग ।

समन्वित (भू० क० कृ०) [सम्+अभि+प्लु+क्त] 1. संबद्ध, प्राकृतिक क्रम में आबद्ध 2. अनुगत 3. सहित, युक्त, भरा हुआ 4. ग्रस्त ।

समभिप्लुत (भू० क० कृ०) [सम्+अभि+प्लु+क्त] 1. बाढ़ग्रस्त 2. ग्रहण ग्रस्त ।

समभिव्याहारः [सम्+अभि+वि+आ+हृ+घञ्] 1. मिलाकर उल्लेख करना 2. साहचर्य, साथ 3. शब्द का साहचर्य या सामीप्य, जब कि उस (शब्द) का अर्थ स्पष्ट रूप से निश्चित कर लिया गया हो ।

समभिसरणम् [सम्+अभि+सृ+ल्युट्] 1. पहुँचना 2. खोज करना, कामना करना ।

समभिहारः [सम्+अभि+हृ+घञ्] 1. साथ-साथ ले जाना 2. आवृत्ति 3. अतिरिक्त, फालतू ।

समभ्यर्चनम् [सम्+अभि+अर्च्+ल्युट्] पूजा करना, अर्चना करना ।

समभ्याहारः [सम्+अभि+आ हृ+घञ्] साथ रहना, साहचर्य ।

समयः [सम्+इ+अच्] 1. काल 2. अवसर, मौका 3. योग्य काल, उपयुक्त काल, या ऋतु, ठीक वक्त कु० ३।२५ 4. करार, समझौता, संविदा, पहले से किया गया ठहराव मिथः समयात्—श० ५ 5. रूढ़ि, प्रथा 6. चालचलन का संस्थापित नियम, संस्कार, लोकप्रचलन कि० १।२८, उत्तर० १ 7. कवियों का अभिसमय (उदा० बादलों के दर्शन से प्रेमी और प्रेमिका का वियोग हो जाता है) 8. नियुक्ति, स्थिरीकरण 9. अनुबंध, शर्त—विक्रम० ५ 10. कानून, नियम, विनियम याज्ञ० ३।१९ 11. निदेश, आदेश, निर्देश, विधि 12. आपत्काल, संकटकाल 13. शपथ 14. संकेत, इंगित, इशारा 15. सीमा, हद 16. प्रदर्शित उपसंहार, सिद्धांत, मतवाद—बौद्ध,° वैशेषिक° 17. अन्त, उपसंहार, समाप्ति 18. सफलता, समृद्धि 19. कष्ट का अन्त । सम०—अध्युषितम् ऐसा समय जब कि न सूर्य दिखाई देता है न तारे अनुवर्तिन् (वि०) मानी हुई प्रथा का पालन करने वाला,—अनुसारेण,— उचितम् (अव्य०) अवसर के अनुकूल जैसा मौक़ा हो,—आचारः लोकप्रचलित चलन, मानी हुई प्रथा,- क्रिया करार करना,—परिरक्षणम् किसी समझौते का पालन करना, सन्धि या करार—न समयपरिरक्षणं क्षमं ते–कि० १।४५,—व्यभिचारः प्रतिज्ञा तोड़ना, ठेके का उल्लघंन या भंग,—व्यभिचारिन् (वि०) प्रतिज्ञा या वचन भंग करने वाला ।

समया (अव्य०) [सम्+इ+आ] 1. ठीक, ऋतु के अनुकूल, ठीक समय पर 2. निश्चित समय पर 3. बीच में, के अन्दर, (दो के) बीच में 4. निकट (कर्म० के साथ) - समया सौधभित्तिम्—दश०, शि० ६।७३, १५।१९, नल० ४।८ ।

समरः, - रम् [सम्+ऋ+अप्] संग्राम, युद्ध, लड़ाई, —कर्णादयोऽपि समरात्पराङ्मुखीभवन्ति—वेणी० ३ । सम० उद्देशः,–भूमिः रणक्षेत्र,— मूर्धन् (पुं०) —शिरस् (नपुं०) युद्ध का अग्रभाग ।

समर्चनम् [सम्+अर्च्+ल्युट्] पूजा, अर्चना, आराधना ।

समर्ण (वि०) [सम्+अर्द्+क्त] 1. कष्टग्रस्त, पीडित, घायल 2. पृष्ट, निवेदित ।

समर्थ (वि०) [सम्+अर्थ्+अच्] 1. मजबूत, शक्तिशाली 2. सक्षम, अभ्यनुज्ञात, पात्र, योग्यताप्राप्त प्रतिग्रहसमर्थोऽपि–मनु० ४।१८६, याज्ञ० १।२१३ 3. योग्य, उपयुक्त, उचित—तद्धनुर्ग्रहणमेव राघवः प्रत्यपद्यत समर्थमुत्तरम्—रघु० ११।७९ 4. योग्य या समुचित बनाया हुआ, तैयार किया हुआ 5. समानार्थी 6. सार्थक 7. समुचित उद्देश्य या बल रखने वाला, अतिबलशाली 8. पास-पास विद्यमान 9. अर्थतः संबद्ध,—र्थः 1, (व्या० में) सार्थक शब्द 2. सार्थक वाक्य में मिला कर रक्खे हुए शब्दों की संसक्ति ।

समर्थकम् [सम्+अर्थ्+ण्वुल्] अगर की लकड़ी।

समर्थनम् [सम्+अर्थ्+ल्युट्] 1. संस्थापन, पुष्टि करना, ताईद करना 2. रक्षा करना, सहारा देना, न्यायसंगत सिद्ध करना—स्थितेष्वेतत् समर्थनम्—काव्य० ७ 3. वकालत करना, हिमायत करना 4. अनुमान लगाना, विचार करना, चिन्तन करना 5. विचार-विमर्श, निर्धारण, किसी वस्तु के औचित्यानौचित्य का निर्णय करना 6. पर्याप्तता, अचूकता, बल, धारिता 7. ऊर्जा, धैर्य 8. भेदभाव दूर कर फिर समझौता करना, कलह दूर करना 9. आक्षेप।

समर्धक (वि०) [सम्+ऋध्+ण्वुल्] 1. वरदाता 2. समृद्ध करने वाला।

समर्पणम् [सम्+अर्प्+ल्युट्] देना, हस्तांतरण करना, सौंपना, हवाले करना।

समर्याद (वि०) [सह मर्यादया - ब० स०] 1. सीमित, बंधा हुआ 2. निकटवर्ती, समीपवर्ती 3. शुद्धाचारी, औचित्य की सीमा के अन्दर रहने वाला 4. सम्मानपूर्ण, शिष्ट।

समल (वि०) [मलेन सह—ब० स०] 1. मैला, गन्दा, मलिन, अपवित्र 2. पापपूर्ण, —लम् पुरीष, मल, विष्ठा।

समवकारः [सम्+अव+कृ+घञ्] नाटक का एक भेद (सा० द० ५१५ में निम्नांकित परिभाषा दी गई है - वृत्तं समवकारे तु ख्यातं देवासुराश्रयम्। संध्रयो निर्विमर्शास्तु त्रयोऽङ्काः॥)

समवतारः [सम्+अव+तॄ+घञ्] 1. उतार 2. घाट-जहाँ से किसी नदी या पुण्यस्नानतीर्थ में उतरा जाय —समवतारसमैरसमैस्तटैः—कि० ५।७।

समवस्था [समा तुल्या अवस्था वा सम्+अव+स्था+अङ्+टाप्] 1. निश्चित अवस्था 2. समान दशा या स्थिति श० ४ 3. अवस्था या दशा -रघु० १९।५०, मालवि० ४।७।

समवस्थित (भू० क० कृ०) [सम्+अव+स्था+क्त] 1. स्थिर रहता हुआ 2. स्थिर।

समवाप्तिः (स्त्री०) [सम्+अव+आप्+क्तिन्] प्राप्ति, अभिग्रहण।

समवायः [सम्+अव+इ+अच्] 1. सम्मिश्रण, मिलाप, संयोग, समष्टि, संग्रह—सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनं किमुत समवायः—का०, बहूनामप्यसाराणां समवायो हि दुर्जयः—सुभा० 2. संख्या, समुच्चय, राशि 3. घनिष्ठ संबंध, संसक्ति 4. (वैशे० में) प्रगाढ़ मिलाप, अविच्छिन्न तथा अविच्छेद्य संयोग, अभेद्य संलग्नता या एक वस्तु का दूसरी में अस्तित्व (जैसे पदार्थ और गुण, अंगी और अंग), वैशेषिकों के सात पदार्थों में से एक।

समवायिन् (वि०) [समवाय+इनि] 1. घनिष्ठ रूप से संबद्ध 2. समुच्चयवाचक, बहुसंख्यक। सम० —कारणम् अभेद्य कारण, उपादान कारण (वैशेषिक दर्शन में वर्णित तीन कारणों में से एक)।

समवेत (भू० क० कृ०) [सम्+अव+इ+क्त] 1. एकत्र आये हुए, मिले हुए, जुड़े हुए, सम्मिलित 2. घनिष्ठता के साथ संबद्ध, अन्तर्भूत, अभेद्य रूप से संयुक्त 3. बड़ी संख्या में समाविष्ट या सम्मिलित।

समष्टिः (स्त्री०) [सम्+अश्+क्तिन्] समुच्चयात्मक व्याप्ति, एक जैसे अंगों का समूह, अवयवों जो समतत्त्वता से युक्त अवयवों का पुंज है (विप० व्यष्टि) —समष्टिरीशः सर्वेषां स्वात्मतादात्म्यवेदनात्। तदभावात्तदन्ये तु ज्ञायंते व्यष्टिसंज्ञया॥ पंच०।

समसनम् [सम्+अस्+ल्युट्] 1. एक साथ मिलाना, सम्मिश्रण 2. संयुक्त करना, समस्त (समास युक्त) शब्दों का निर्माण 3. संकुचित करना।

समस्त (भू० क० कृ०) [सम्+अस्+क्त] 1. एक जगह डाला हुआ, सम्मिश्रित 2. संयुक्त 3. किसी पदार्थ में पूर्णतः व्याप्त 4. संक्षिप्त, संकुचित, संक्षेपित 5. सारा, पूर्ण, पूरा।

समस्या [सम्+अस्+क्यप्+टाप्] 1. पूर्ण करने के लिए दिया जाने वाला छंद का चरण, कविता का वह भाग जो पूर्ति के लिए प्रस्तुत किया जाय—कः श्रीपतिः का विषमा समस्या—सुभा०। इस प्रकार 'वागर्थाविव संपृक्तौ' 'शतकोटिप्रविस्तरम्' 'तुरासाहं पुरोधाय' पंक्तियाँ 'नेमुः सर्वे सुराः शिवौ' से पूर्ण हो जाती हैं) 2. (अतः) अधूरे को पूरा करना—गौरीव पत्या सुभगा कदाचित्कर्त्रीयमप्यर्धतनू समस्याम्—नै० ७।८२, (समस्या—संघटनम्)।

समा [सम्+अच्+टाप्] (प्रायः ब० व० में प्रयोग, परन्तु पाणिनि द्वारा एक वचन में भी प्रयुक्त—उदा० समां समाम्—पा० ५।२।१२) वर्ष,—तेनाष्टौ परिगमिताः समाः कथंचित् रघु० ८।९२, तयोश्चतुर्दशैकेन रामं प्राव्राजयत्समाः—१२।६, १९।४, महावीर० ४।४१, अव्य०—से, साथ मिला कर।

समांसमीना [समां समां विजायते प्रसूते—ख प्रत्ययेन नि०] वह गाय जो प्रतिवर्ष ब्याती है और बछड़ा देती है।

समाकर्षिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सम्+आ+कृष्+णिनि] 1. आकर्षक 2. दूर तक गंध फैलाने वाला, या प्रसार करने वाला, पुं० प्रसृत गंध, दूर तक फैली गंध।

समाकुल (वि०) [सम्यक् आकुलः प्रा० स०] 1. भरा हुआ, आकीर्ण, भीड़-भाड़ से युक्त 2. संक्षुब्ध, घबराया हुआ: उद्विग्न, हड़बड़ाया हुआ।

समाख्या [सम्+आ+ख्या+अङ्+टाप्] 1. यश, कीर्ति, ख्याति 2. नाम, अभिधान।

समाख्यात (भू० क० कृ०) [सम्+आ+ख्या+क्त] 1. हिसाब लगाया हुआ, गिना हुआ, जोड़ा हुआ 2. पूर्णतः वर्णित, उद्घोषित, प्रकथित 3. विख्यात, प्रसिद्ध।

समागत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+गम्+क्त] 1. साथ साथ आया हुआ, मिला हुआ, सम्मिलित, संयुक्त 2. पहुँचा हुआ 3. जो संयुक्त अवस्था में हो।

समागतिः [सम्+आ+गम्+क्तिन्] 1. साथ साथ आना, मेल, मिलाप 2. पहुँचना, उपगमन 3. समान दशा या प्रगति।

समागमः [सम्+आ+गम्+घञ्] 1. मेल, मिलन, मुठभेड़, सम्मिश्रण,—अहो दैवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः—काव्य० ७ रघु० ८।४, ९२, १९।१६ 2. सहवास, साहचर्य, संगति – जैसा कि 'सत्समागम' में 3. उपगमन, पहुँच 4. (ज्योति० में) संयोग।

समाघातः [सम्+आ+हन्+घञ्] 1. वध, हत्या 2. संग्राम, युद्ध।

समाचयनम् [सम्+आ+चि+ल्युट्] सञ्चयन, बीनना।

समाचरणम् [सम्+आ+चर्+ल्युट्] अभ्यास करना, पालन करना, व्यवहार करना।

समाचार [सम्+आ+चर्+घञ्] 1. प्रगमन, गति 2. अभ्यास, आचरण, व्यवहार 3. सदाचार या अच्छा चालचलन 4. खबर, सूचना, विवरण, वार्ता।

समाजः [सम्+अज्+घञ्] 1. सभा, मिलन, मजलिस, –विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम् – भर्तृ० २।७ 2. मण्डल, गोष्ठी, समिति या परिषद् 3. संख्या, समुच्चय, संग्रह 4. दल, आमोद-प्रमोद विषयक मिलन 5. हाथी।

समाजिकः [समाज+ठक्] सभासद् – दे० 'सामाजिक'।

समाज्ञा [सम्+आ+ज्ञा+अङ्+टाप्] यश, कीर्ति।

समादानम् [सम्+आ+दा+ल्युट्] 1. पूर्णतः लेना 2. उपयुक्त उपहार लेना 3. जैन सम्प्रदाय का नित्य-कृत्य।

समादेशः [सम्+आ+दिश्+घञ्] आज्ञा, हुक्म, निदेश, निर्देश।

समाधा [सम्+आ+धा+अङ्+टाप्] दे० नी० 'समाधान'।

समाधानम् [सम्+आ+धा+ल्युट्] 1. साथ साथ रखना, मिलाना 2. ब्रह्म के गुणों का मन से चिन्तन करना, 3. भावचिन्तन, गहन मनन 4. एकनिष्ठता 5. स्थैर्य, स्वस्थता, (मन की) शान्ति, सन्तोष –चित्तस्य समाधानम्, बुद्धेः समाधानम् गंगा० १८ 6. संदेह-निवारण करना, पूर्वपक्ष का उत्तर देना, आक्षेप का उत्तर देना 7. सहमत होना, प्रतिज्ञा करना 8. (नाट० में) मुख्य घटना जिस पर नाटक की पूर्ण वस्तुकथा अवलंबित है।

समाधिः [सम्+आ+धा+कि] 1. संग्रह करना, स्वस्थ करना, (मन को) एकाग्र करना 2. भावचिन्तन, किसी एक विषय पर मन को केन्द्रित करना, ब्रह्म-चिन्तन में पूर्णलीनता अर्थात् (योग की आठवीं और अन्तिम अवस्था) आत्मेश्वराणां न हि जातु विघ्नाः समाधिभेदप्रभवो भवन्ति कु० ३।४०, ५०, मृच्छ० १।१, भर्तृ० ३।५४, रघु०८।७८, शि० ४।५५ 3. एकनिष्ठता, संकेन्द्रण, मनोयोग तस्यां लग्नसमाधि (मानसम्) —गीत० 4. तपस्या, धर्मकृत्य, साधना — अस्त्येतदन्यसमाधिभीरुत्वं देवानाम्—श० १, तपःसमाधिः—कु० ३।२४, ५।६, १।५९, ५।४५ 5. साथ मिलाना, संकेन्द्रण, सम्मिश्रण, संग्रह तं वेधा विदधे नूनं महाभूत समाधिना—रघु० १।२९ 6. पुनर्मिलन, मतभेद दूर करना 7. निस्तब्धता 8. अंगीकार, स्वीकृति, प्रतिज्ञा 9. प्रतिदान 10. पूर्ति, सम्पन्नता 11. अत्यन्त कठिनाइयों में धैर्य धारण करना 12. असम्भव बात के लिये प्रयत्न करना 13. (दुर्भिक्ष के अवसर पर) अनाज बचा कर रखना, अन्न संचय करना 14. मक़बरा, शव प्रकोष्ठ 15 गरदन का जोड़, गरदन की विशेष अवस्था—कि० १६।२१ 16. (अलं० में) एक अलंकार जिसकी मम्मट ने निम्नाङ्कित परिभाषा की है—समाधिः सुकरं कार्यं कारणान्तरयोगतः - काव्य० १०, दे० सा० द० ६।१४ 17. शैली के दस गुणों में से एक, दे० काव्या० १।९३।

समाध्मात (भू०क०कृ०) [सम्+आ+ध्मा+क्त] 1. फूंक मारा हुआ 2. फुलाया हुआ, प्रफुल्लित, स्फीत, हवा भरा हुआ।

समान (वि०) [सम्+अन्+अण्] 1. वही, तुल्य, सदृश, एक जैसा समानशीलव्यसनेषु सख्यम् – सुभा० 2. एक, एकरूप 3. भला, सद्गुणसम्पन्न, न्याय्य 4. सामान्य, साधारण 5. सम्मानित,– नः 1. मित्र, तुल्य 2. पाँच प्राणों में से एक (इसका स्थान नाभि का गर्त है, तथा पाचन शक्ति के लिये परमावश्यक है) –नम् (अव्य०) समान रूप से, सदृश (करण० के साथ) जलधरेण समानमुमापतिः—कि० १८।४। सम० –अधिकरण (वि०) 1. समान आधार वाला 2. उसी वर्ग या पदार्थ में विद्यमान 3. (व्या० में) एक ही कारक की विभक्ति से युक्त होना (णम्) 1. वही स्थान या परिस्थिति 2. कारक में समान होना, कारक सम्बन्ध 3. वर्ग (जिसमें अनेक सम्मिलित हों), प्रजातीय गुण, –अर्थः उसी अर्थ वाला, पर्यायवाची –उदकः ऐसा सम्बन्धी जो समान पितरों को जल तर्पण के कारण संबद्ध है (यह सम्बन्ध सातवीं या ग्यारहवीं पीढ़ी से तेरहवीं या कुछ के अनुसार चौदहवीं

पीढ़ी तक जाता है)—समानोदकभावस्तु निवर्तेता-चतुर्दशात् --दे० मनु० ५।६० भी, --उदर्य: एक पेट से उत्पन्न, सहोदर भाई,—उपमा एक प्रकार की उपमा —दे० काव्या० २।२९,—काल—कालीन(वि०) एककालिक, समकालीन—गोत्र: =सगोत्र, एक ही गोत्र का, दुःख (वि०) सहानुभूति रखने वाला, —धर्मन् (वि०) एक ही प्रकार के गुणों से युक्त, सहानुभूतिदर्शक, गुणों को सराहने वाला --मा० १।६, —यमः स्वर का वही उच्चग्राम, रुचि (वि०) एक सी रुचि वाला ।

समानयनम् [सम्+आ+नी+ल्युट्] साथ लाना, संग्रह करना, संचालन ।

समापः [समा आपो यस्मिन् ब० स०] देवताओं के प्रति यज्ञ करना या आहुति देना ।

समापत्तिः (स्त्री०) [सम्+आ+पद्+क्तिन्] 1. मिलना, मुठभेड़ 2. दुर्घटना, आकस्मिक घटना, अकस्मात् मुठभेड़ --समापत्तिदृष्टेन केशिना दानवेन–विक्रम० १, क्रियासमापत्तिनिवर्तितानि --रघु० ७।२३, कु० ७।७५ ।

समापक (वि०) (स्त्री०–पिका) [सम्+आप्+ण्वुल्] समाप्त करने वाला, सम्पन्न करने वाला, पूरा करने वाला ।

समापनम् [सम्+आप्+ल्युट्] 1. पूर्ति, उपसंहार, समाप्ति करना मनु० ५।८८ 2. अभिग्रहण 3. मार डालना, नष्ट करना 4. अनुभाग, अध्याय 5. गहन मनन ।

समापन्न (भू० क० कृ०)[सम्+आ+पद्+क्त] 1. प्राप्त, अवाप्त 2. घटित, हुआ 3. आगत, पहुँचा हुआ 4. समाप्त, पूर्ण, सम्पन्न 5. प्रवीण 6. सम्पन्न 7. दुःखी, कष्टग्रस्त 8. वध किया हुआ ।

समापादनम् [सम्+आ+पद+णिच्+ल्युट्] सम्पन्न करना, मूल रूप देना ।

समाप्त (भू० क० कृ०) [सम्+आप्+क्त] 1. पूर्ण किया हुआ, उपसंहृत, पूरा किया हुआ 2. चतुर ।

समाप्तालः [समाप्ताय अलति पर्याप्नोति—समाप्त+अल्+अच्] प्रभु, पति ।

समाप्तिः (स्त्री०) [सम्+आप्+क्तिन्] 1. अन्त, उपसंहार, पूर्ति, समाप्त करना 2. निष्पन्नता, पूरा करना, पूर्णता 3. पुनर्मिलन, मतभेद दूर करना, विवाद को समाप्त करना ।

समाप्तिक (वि०) [समाप्ति+ठन्] 1. अन्तिम, समापक 2. समापिका 3. जिसने कोई काम पूरा किया है कः 1. समापक 2. जिसने वेदाध्ययन का पूर्ण पाठ्यक्रम समाप्त कर लिया है ।

समाप्लुत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+प्लु+क्त] 1. बाढ़ग्रस्त, बाढ़ में डूबा हुआ 2. भरा हुआ ।

समाभाषणम् [सम्+आ+भाष्+ल्युट्] समालाप, वार्तालाप रघु० ६।१६ ।

समाम्नानम् [सम्+आ+म्ना+ल्युट्] 1. आवृत्ति, उल्लेख 2. गणना 3. परम्परा प्राप्त पाठ ।

समाम्नायः [सम्+आ+म्ना+य] 1. परम्परागत पाठ, अनुश्रुति 2. परम्परागत (शब्द) संग्रह—अश्वइति पशुसमाम्नाये पठपते—उत्तर० ४ 3. साहित्य परम्परा, अनुश्रुति 4. पाठ, सस्वर पाठ, निर्देशन 5. जोड़, समष्टि, संग्रह अक्षरसमाम्नायम् शिक्षा० ५७, (अर्थात् अ से ह तक की वर्णमाला जो शिव की कृपा से पाणिनि को प्रगट हुई) ।

समायः [सम्+आ+इ+अच्] 1. पहुँचना, आना 2. दर्शन करना ।

समायत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+यम्+क्त] खींचा हुआ, बढ़ाया हुआ, लंबा किया हुआ ।

समायुक्त (भू० क० कृ०) [सम्+आ+युज्+क्त] 1. साथ जोड़ा हुआ, संबद्ध, संयुक्त 2. कृतसंकल्प, संलग्न 3. तैयार किया गया, उद्यत 4. युक्त, सज्जित, भरा हुआ, सहित, अन्वित 5. जिसको कोई कार्यभार सौंप दिया गया है, नियुक्त किया हुआ ।

समायुत (भू० क० कृ०)[सम्+आ+यु+क्त] 1. संयुक्त, सम्बद्ध, साथ मिलाया हुआ 2. संगृहीत, एकत्र किया हुआ 3. सहित, युक्त, सज्जित, अन्वित ।

समायोगः [सम्+आ+युज्+घञ्] 1. मेल, सम्बन्ध, संयोग 2. तैयारी 3. धनुष पर (बाण) साधना 4. संग्रह, ढेर, समुच्चय 5. कारण, प्रयोजन, उद्देश्य ।

समारम्भः [सम्+आ+रभ्+घञ्, मुम्] 1. आरम्भ, शुरू 2. साहसिक कार्य, उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य, काम, कर्म—भव्यमुख्याः समारम्भा······तस्य गूढं विपेचिरे —रघु० १७।५३, भग० ४।१९ 3. अंगराग ।

समाराधनम् [सम्+आ+राध्+ल्युट्] 1. सन्तुष्ट करने का साधन, प्रसन्न करना, खुशी नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्–मालवि० १।४ 2. सेवा, टहल,– रघु० २।५, १८।१० ।

समारोपणम् [सम्+आ+रुह्+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1. अवस्थित करना, रखना 2. सौंप देना, हवाले करना ।

समारोपित (भू० क० कृ०) [सम्+आ+रुह्+णिच् क्त, पुक्] 1. चढ़ाया हुआ, सवार किया हुआ 2. (धनुष आदि) ताना हुआ—भवता चापे समारोपिते --काव्य० १० 3. रक्खा गया, पौध लगाई गई, ठहराया गया 4. सौंपा गया, हवाले किया गया ।

समारोहः [सम्+आ+रुह्+घञ्] 1. चढ़ना, ऊपर जाना 2. सवारी करना 3. सहमत होना ।

समालम्बनम् [सम्+आ+लम्ब्+ल्युट्] टेक लगाना, सहारा लेना, चिपटे रहना ।

समालम्बिन् (अव्य०) [सम्+आ+लम्ब्+णिनि] लटकने वाला, सहारा लेने वाला,—नी एक प्रकार का घास ।

समालम्भः, समालम्भनम् [सम्+आ+लभ्+घञ्, ल्युट् वा, मुम्] 1. पकड़ना, छीनना 2. यज्ञ में बलि-पशु का अपहरण करना 3. शरीर पर अंगराग व उबटन आदि का लेप करना—मङ्गलसमालम्भनं विरचयावः —श० ४ ।

समावर्तनम् [सम्+आ+वृत्+ल्युट्] 1. वापसी 2. विशेष कर वेदाध्ययन समाप्त करके ब्रह्मचारी का घर वापिस आना ।

समावायः [सम्+आ+अव+इ+अच्] 1. साहचर्य, संबंध 2. अविच्छेद्य संबंध दे० समवाय 3. समष्टि 4. समुच्चय, संख्या, ढेर ।

समावासः [सम्+आ+वस्+घञ्] निवास स्थान, घर रहने का स्थान ।

समाविष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+आ+विश्+क्त] 1. पूर्णतः प्रविष्ट, पूर्णतः अधिकृत, व्याप्त 2. छीना हुआ, पराभूत, एकाधिकृत 3. प्रेताविष्ट 4. सहित 5. निश्चित, स्थिर किया हुआ, बिठाया हुआ 6. सुनिर्दिष्ट ।

समावृत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+वृ+क्त] 1. परिवलयित, घेरा डाला हुआ, घिरा हुआ, लपेटा हुआ 2. पर्दा पड़ा हुआ, घूंघट से आच्छादित 3. गुप्त, छिपाया हुआ 4. प्ररक्षित 5. बंद किया हुआ 6. रोका हुआ ।

समावृत्तः, समावृत्तकः [सम्+आ+वृत्+क्त, पक्षे कन् च] वह ब्रह्मचारी जो अपना वेदाध्ययन समाप्त करके घर लौट आया है ।

समावेशः [सम्+आ+विश्+घञ्] 1. प्रविष्ट होना, साथ रहना 2. मिलना, साहचर्य 3. सम्मिलित करना, समझ 4. घुसना 5. प्रेतावेश 6. प्रणयोन्माद, भावोद्रेक ।

समाश्रयः [सम्+आ=श्रि+अच्] 1. प्ररक्षण या पनाह ढूंढना 2. शरण, पनाह, प्ररक्षण 3. शरणगृह, आश्रयस्थान, घर 4. आवासस्थान, निवास ।

समाश्लेषः [सम्+आ+श्लिष्+घञ्] प्रगाढ़ आलिंगन ।

समाश्वासः [सम्+आ+श्वस्+घञ्] 1. जी में जी आना, आराम की सांस लेना 2. राहत, प्रोत्साहन, तसल्ली 3. आस्था, विश्वास, भरोसा ।

समाश्वासनम् [सम्+आ+श्वस्+णिच्+ल्युट्] 1. पुनर्जीवित करना, प्रोत्साहन, आराम देना 2. ढाढस बंधाना विक्रम० २ ।

समासः [सम्+अस्+घञ्] 1. समष्टि, मिलाप, सम्मिश्रण 2. शब्दरचना, समाहार, मिलाना (समास के मुख्य चार भेद हैं द्वन्द्व, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और अव्ययीभाव) 3. पुर्नमिलन, मतभेद दूर करना 4. संग्रह, संघात 5. पूर्णता, समष्टि 6. सिकुड़न, संहृति, संक्षिप्तता, (समासेन, समासतः थोड़े में, संक्षेप से, लघुता के साथ—एषा धर्मस्य वो योनिः समासेन प्रकीर्तिता—मनु० २।२५, ३।२०, भग० १३।१८, समासतः श्रूयताम्—विक्रम० २) । सम० —उक्तिः (स्त्री०) एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने निम्नांकित दी है—परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः —काव्य० १० ।

समासक्तिः (स्त्री०), **समासङ्गः** [सम्+आ+सञ्ज्+क्तिन्, घञ् वा] मिलाप, साथ-साथ रहना, अनुरक्ति, आसक्ति ।

समासञ्जनम् [सम्+आ+सञ्ज्+ल्युट्] 1. मिलाना, संयुक्त करना 2. जमाना, रखना 3. संपर्क, सम्मिश्रण, संबंध ।

समासर्जनम् [सम्+आ+सृज्+ल्युट्] 1. पूर्णतः त्याग देना 2. सुपुर्द करना ।

समासादनम् [सम्+आ+सद्+णिच्+ल्युट्] 1. पहुँचना 2. प्राप्त करना, मिलना, अवाप्त करना 3. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना ।

समाहरणम् [सम्+आ+हृ+ल्युट्] संयुक्त करना, संग्रह करना, सम्मिश्रण, संचय करना ।

समाहर्तृ (पुं०) [सम्+आ+हृ+तृच्] 1. जो संग्रह करने में अभ्यस्त हो 2. (कर आदि का) संग्राहक, जमा करने वाला ।

समाहारः [सम्+आ+हृ+घञ्] 1. संग्रह, समष्टि, संघात —भा० ९ 2. शब्दरचना 3. शब्दों या वाक्यों का संयोजन 4. द्विगु और द्वन्द्व समास का समष्टिविधायक एक उपभेद 5. संक्षेपण, संकोचन, संहृति ।

समाहित (भू० क० कृ० [सम्+आ+धा+क्त] 1. मिलाया गया, साथ जोड़ा गया 2. समंजित, तय किया गया 3. इकट्ठा किया गया, संगृहीत, (मन आदि) प्रशांत 4. एकनिष्ठ, लीन, संकेन्द्रित 5. समाप्त 6. सहमत ।

समाहृत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+हृ+क्त] 1. मिलाया गया, संगृहीत, संचित 2. पुष्कल, अत्यधिक, बहुत 3. ग्रहण किया गया, स्वीकृत, लिया गया संक्षेप किया गया, कम किया गया ।

समाहृतिः (स्त्री०) [सम्+आ+हृ+क्तिन्] संकलन, संक्षेपण ।

समाह्वः [सम्+आ+ह्वे+घ] चुनौती, ललकार ।

समाह्वयः [सम्+आ+ह्वे+अच्] 1. पुकारना, ललकारना 2. संग्राम, युद्ध 3. मल्लयुद्ध, दो व्यक्तियों में होने

वाला युद्ध 4. मनोरंजन के लिए जानवरों को लड़ाना, जानवरों की लड़ाई पर शर्त लगाना—याज्ञ० २।२०३, मनु० ९।२२१ 5. नाम, अभिधान।

समाह्वा [सभा आह्वा यस्याः ब० स०] नाम, अभिधान, — शि० ११।२६।

समाह्वानम् [सम्+आ+ह्वे+ल्युट्] 1. मिलकर बुलाना, संबोधन 2. ललकार, चुनौती।

समिकम् [समि (सम्+इ+डि)+कन्] भाला, बल्लम।

समित् (स्त्री०) [सम्+इ+क्विप्] संग्राम, युद्ध —समिति पतनिपाताकर्णन -, नै० १२।७५।

समिता [सम्+इ+क्त+टाप्] गेहूँ का आटा।

समितिः [सम्+इ+क्तिन्] 1. मिलना, मिलाप, साहचर्य 2. सभा 3. रेवड़, लहंडा—कि० ४।३२ 4. संग्राम, युद्ध— श० २।१४, कि० ३।१५, शि० १६।१३ 5. सादृश्य, समता 6. मर्यादन।

समितिञ्जय (वि०) [समिति+जि+खच्, मुम्] युद्ध में विजयी।

समिथः [सम्+इ+थक्] 1. संग्राम, युद्ध 2. आग।

समिद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+इन्ध्+क्त] 1. सुलगाया हुआ, जलाया हुआ 2. आग लगाई हुई 3. प्रज्वलित, उत्तेजित।

समिध् (स्त्री०) [सम्+इन्ध्+क्विप्] लकड़ी, इंधन, विशेष कर यज्ञाग्नि के लिए समिधाएँ, —समिदाहरणाय—श० १, कु० १।५७, ५।३३।

समिधः [सम्+इन्ध्+क] आग।

समिन्धनम् [सम्+इन्ध्+ल्युट्] 1. आग सुलगाना 2. इंधन।

समिरः [=समीर, पृषो०] वायु, हवा।

समीकम् [सम्+ईकक्] संग्राम, युद्ध,—शि० १५।८३।

समीकरणम् [असमः समः क्रियतेऽनेन—सम+च्वि+कृ+ल्युट्] 1. पूरी छानबीन 2. दर्शनशास्त्र की सांख्य पद्धति—शि० २।५९।

समीक्षा [सम्+ईक्ष्+अङ्+टाप्] 1. अनुसंधान, खोज 2. विचार 3. भलीभांति निरीक्षण, समालोचना 4. समझ, बुद्धि 5. नैसर्गिक सत्य 6. अनिवार्य सिद्धांत 7. दर्शनशास्त्र की मीमांसा पद्धति।

समीचः [सम्+इ+चट्, कित्, दीर्घः] समुद्र।

समीचकः [समीच+कन्] रतिक्रिया, मैथुन।

समीची [समीच+ङीप्] 1. हरिणी 2. प्रशंसा।

समीचीन [सम्+अञ्च्+क्विन्+ख] 1. ठीक, सही 2. सत्य, शुद्ध 3. योग्य, समुचित 4. सुसंगत, —नम् 1. सचाई 2. औचित्य।

समीदः (पुं०) गेहूँ का बारीक मैदा।

समीन (वि०) [समाम् अधीष्टो मृतो भूतो भावी वा—समा+ख] 1. वार्षिक, सालाना 2. एक वर्ष के लिए भाड़े पर लिया हुआ 3. एक वर्ष का।

समीनिका [समां प्राप्य प्रसूते समा+ख+कन्+टाप्, इत्वम्] प्रतिवर्ष ब्याने वाली गाय।

समीप (वि०) [संगता आपो यत्र—अच्, आत ईत्वम्] निकट, पास ही, सटा हुआ, नजदीक,—पम् सामीप्य, पड़ोस (समीपम्, समीपतः, समीपे (क्रि० वि०) निकट, सामने, की उपस्थिति में'—अतः समीपे परिणेतुरिष्यते श० ५।१७।

समीरः [सम्+ईर्+अच्] 1. हवा, वायु धीर-समीरे यमुनातीरे गीत० ५ 2. शमीवृक्ष, जँड़ी का पेड़।

समीरणः [सम्+ईर्+ल्युट्] 1. हवा, वायु—समीरणो नोदयिता भवेति व्यादिश्यते केन हुताशनस्य—कु० ३।२१, १।८ 2. सांस, 3. यात्री 4. एक पौधे का नाम, मरुवक, —णम् फेंकना, भेजना।

समीहा [सम्+ईह्+अ+टाप्] प्रबल इच्छा, चाह, प्रबल उद्योग।

समीहित (भू० क० कृ०) [सम्+ईह्+क्त] 1. अभिलषित, इच्छित, अभीष्ट 2. आरब्ध,—तम् कामना, अभिलाषा, इच्छा।

समुक्षणम् [सम्+उक्ष्+ल्युट्] ढालना, बहाव, प्रसार।

समुच्चय [सम्+उत्+चि+अच्] 1. संग्रह, संघात, समष्टि, राशि, पुंज 2. शब्दों या वाक्यों का संयोग दे० 'च' 3. एक अलंकार का नाम काव्य० १० (११५ से ११६ कारिकाएँ तक)।

समुच्चरः [सम्+उत्+चर्+अच्] 1. चढ़ना 2. चलना, यात्रा करना।

समुच्छेदः [सम् उद्+छिद्+घञ्] पूर्ण विनाश, समूलोन्मूलन, उखाड़ देना।

समुच्छ्रयः [सम्+उद्+श्रि+अच्] 1. उत्तुंगता, ऊंचाई 2. विरोध, शत्रुता।

समुच्छ्रायः [सम्+उद्+श्रि+घञ्] उत्तुंगता, ऊंचाई।

समुच्छ्वासितम्, समुच्छ्वासः [सम्+उद्+श्वस्+क्त, घञ् वा] गहरी सांस लेना, दीर्घ सांस लेना।

समुज्झित (वि०) [सम्+उज्झ्+क्त] 1. त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ 2. जाने दिया गया 3. मुक्त।

समुत्कर्षः [सम्+उत्+कृष्+घञ्] 1. उन्नति 2. अपने आपको ऊपर उठाना, अपनी जाति की अपेक्षा किसी अन्य ऊंची जाति से सम्बन्ध रखना—मनु० ११।५६।

समुत्क्रमः [सम्+उत्+क्रम्+घञ्] 1. ऊपर उठना, चढ़ाई 2. औचित्य की सीमा का उल्लंघन करना।

समुत्क्रोशः [सम्+उद्+क्रुश्+घञ्] 1. जोर से चिल्लाना 2. भारी कोलाहल 3. कुररी।

समुत्थ (वि०) [सम्+उद्+स्था+क] 1. उठता हुआ,

जागता हुआ 2. उगा हुआ, उत्पन्न, जन्मा (समास के अन्त में)—अथ नयनसमुत्थं ज्योतिरत्रेरिव द्यौः - रघु० २।७५, भग० ७।२७ 3. घटित होने वाला, उत्पन्न ।

समुत्थानम् [सम्+उद्+स्था+ल्युट्] 1. उठना, जागना 2. पुनरुज्जीवन 3. पूरी चिकित्सा, पूरा आराम 4. (घाव आदि का) भरना, स्वस्थ होना—मनु० ८।२८७, याज्ञ० २।२२२ 5. रोग का चिह्न 6. उद्योग में लगना, परिश्रमयुक्त धन्धा—जैसा कि 'संभूय समुत्थानम्', में—मनु० ८।४ ।

समुत्पतनम् [सम्+उद्+पत्+ल्युट्] 1. उड़ना, ऊपर चढ़ना 2. प्रयत्न, चेष्टा ।

समुत्पत्तिः (स्त्री०) [सम्+उद्+पद्+क्तिन्] 1. पैदावार, जन्म, मूल 2. घटना ।

समुत्पिञ्ज, समुत्पिञ्जल (वि०) [सम्+उद्+पिञ्ज्+अच्, कलच् वा] अत्यन्त उद्विग्न या घबराया हुआ, अव्यवस्थित,—जः,—लः 1. अव्यवस्थित सेना 2. भारी अव्यवस्था ।

समुत्सवः [सम्+उद्+सू+अप्] महान् पर्व ।

समुत्सर्गः [सम्+उद्+सृज्+घञ्] 1. परित्याग, छोड़ना 2. ढारना, डालना, प्रदान करना 3. मलत्याग करना, विष्ठा करना—मनु० ४।५० ।

समुत्सारणम् [सम्+उद्+सृ+णिच्+ल्युट्] 1. हांक देना 2. पीछा करना, शिकार करना ।

समुत्सुक (वि०) [सम्यक् उत्सुकः—प्रा० स०] 1. अत्यन्त बेचैन, आतुर, अधीर · विरौपि समुत्सुकः—विक्रम० ४।२०, रघु० १।३३, कु० ५।७६ 2. उत्कंठित, उत्सुक, शौक़ीन 3. शोकपूर्ण, खेदजनक ।

समुत्सेधः [सम्+उद्+सिध् घञ्] 1. ऊँचाई, उन्नति 2. मोटापन, गाढ़ापन ।

समुदक्त (भू०क०कृ०) [सम्+उद्+अञ्ज्+क्त] उठाया हुआ, ऊपर खींचा हुआ (जैसा कुएँ से पानी) ।

समुदयः [सम्+उद्+इ+अच्] 1. चढ़ाई, (सूर्य का) उदय होना 2. उगना 3. संग्रह, समुच्चय, संख्या, ढेर,—सामर्थ्यानामिव समुदयः संचयो वा गुणानाम् —उत्तर० ६।९ 4. सम्मिश्रण 5. संपूर्ण 6. राजस्व 7. प्रयत्न, चेष्टा 8. संग्राम युद्ध 9. दिन 10 सेना का पिछला भाग ।

समुदागमः [सम्+उद्+आ+गम्+घञ्] पूर्ण ज्ञान ।

समुदाचारः [सम्+उद्+आ+चर्+घञ्] 1. उचित व्यवहार या प्रचलन 2. संबोधित करने को उपयुक्त रीति 3. प्रयोजन, इरादा, रूपरेखा ।

समुदायः [सम्+उद्+अय्+घञ्] संग्रह, समुच्चय आदि, दे० 'समुदय' ।

समुदाहरणम् [सम्+उद्+आ+हृ+ल्युट्] 1. उद्घोषणा, उच्चारण करना 2. निदर्शन ।

समुदित (भू० क० कृ०) [सम्+उद्+इ+क्त] 1. ऊपर गया हुआ, उठा हुआ, चढ़ा हुआ 2. ऊँचा, उन्नत 3. पैदा किया हुआ, उगा हुआ, उत्पन्न 4. संहत किया हुआ, संचित, संयुक्त मद्भाग्योपचयादयं समुदितः सर्वो गुणानां गणः— रत्न० १।६ 5. सहित, सज्जित ।

समुदीरणम् [सम्+उद्+ईर्+ल्युट्] 1. कह डालना, बोलना, उच्चारण करना 2. दुहराना ।

समुद्ग (वि०) [सम्+उद्+गम्+ड] 1. उगने वाला, चढ़ने वाला 2. पूर्णतः व्यापक 3. आवरण या ढक्कन से युक्त 4. फलियों से युक्त,—द्गः 1. ढका हुआ संदूक 2. एक प्रकार का कृत्रिम श्लोक—दे० नीचे 'समुद्गक' ।

समुद्गकः [समुद्ग+कन्] 1. एक ढका हुआ संदूक या पेटी —श० ४ 2. एक प्रकार का श्लोक जिसके दो चरणों की ध्वनि समान हों परन्तु अर्थ पृथक्-पृथक् हों—उदा० कि० १५।१६ ।

समुद्गमः [सम्+उद्+गम्+घञ्] 1. उठान, चढ़ाई 2. उगना, निकलना 3. जन्म, पैदायश ।

समुद्गिरणम् [सम्+उद्+गॄ+ल्युट्] 1. वमन करना, उगलना 2. जो उगल दिया जाय, उल्टी 2. उठाना, ऊपर करना ।

समुद्गीतम् [सम्+उद्+गै+क्त] ऊँचे स्वर से बोला जाने वाला गीत ।

समुद्देशः [सम्+उद्+दिश्+घञ्] 1. पूर्णतः निर्देश करना 2. पूर्णविवरण, विशिष्टीकरण, निर्देश करना ।

समुद्धत (भू० क० कृ०) [सम्+उद्+हन्+क्त] 1. ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उन्नीत 2. उत्तेजित, हडबड़ाया हुआ 3. घमंड से फूला हुआ, घमंडी, अभिमानी 4. अशिष्ट, असभ्य 5. घृष्ट, ढीठ ।

समुद्धरणम् [सम्+उद्+हृ+ल्युट्] 1. ऊपर उठाना, ऊँचा करना 2. उठाना 3. बाहर खींच लेना 4. उद्धार, मुक्ति 5. निवारण, समूलोच्छेदन 6. (किनारे) से बाहर निकालना 7. डाला हुआ या उगला हुआ भोजन ।

समुद्धर्तृ (पुं०) [सम्+उद्+हृ+तृच्] मोचक, मुक्तिदाता ।

समुद्भवः [सम्+उद्+भू+अप्] जन्म, उत्पत्ति ।

समुद्यमः [सम्+उद्+यम्+घञ्] 1. ऊपर उठाना 2. बड़ा प्रयत्न, चेष्टा कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रण-समुद्यमे भग० १।२२, समुद्यमः कार्यः 3. उपक्रम, समारंभ 4. धावा, चढ़ाई ।

समुद्योगः [सम्+उद्+युज्+घञ्] सक्रिय चेष्टा, ऊर्जा ।

समुद्रः (वि०) [सह मुद्रया—ब० स०] मुहर बंद, मुहर लगा हुआ, मुद्रांकित—समुद्रो लेखः,—द्रः [सम्+उद्+रा+क] 1. सागर, महासागर 2. शिव का विशेषण 3. 'चार' की संख्या। सम०—अन्तम् 1. समुद्रतट 2. जायफल,—अन्ता 1. कपास का पौधा, —अम्बरा पृथ्वी, —अरुः,-आरुः 1. मगरमच्छ 2. एक बड़ी विशाल मछली 3. राम का पुल,—कफः,-फेनः समुद्रझाग, ग (वि०) समुद्र पर घूमने वाला, (गः) 1. समुद्री व्यापार करने वाला 2. समुद्री कार्य करने वाला, समुद्र में घूमने वाला इसी प्रकार 'समुद्र-गामिन्,-यायिन्' आदि, (गा) नदी, गृहम् गरमी के दिनों के लिए जल में बना हुआ भवन,—चुलुकः अगस्त्य मुनि का विशेषण, -नवनीतम् 1. चन्द्रमा 2. अमृत, सुधा, —मेखला,-रसना,-वसना पृथ्वी, —यानम् 1. समुद्री यात्रा 2. पोत, जहाज, किश्ती, -यात्रा समुद्र के रास्ते यात्रा,—यायिन् (वि०) दे० 'समुद्रग', योषित् (स्त्री०) नदी, वह्निः वडवानल, -सुभगा गंगा नदी।

समुद्वहः [सम्+उद्+वह्+अच्] 1. ढोना 2. उठाने वाला।

समुद्वाहः [सम्+उद्+वह्+घञ्] 1. ढोना 2. विवाह।

समुद्वेगः [सम्+उद्+विज्+घञ्] बड़ा डर, आतंक त्रास।

समुन्दनम् [सम्+उन्द्+ल्युट्] 1. आर्द्रता 2. गीलापन, सील, तरी।

समुन्न (वि०) [सम्+उन्द्+क्त] गीला, आर्द्र।

समुन्नत (भू० क० कृ०) [शम्+उद्+नम्+क्त] 1. ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ 2. ऊँचाई, उत्तुंगता, (मानसिक भी) ऊँचा उठना—मनसः शिखराणां च सदृशी ते समुन्नतिः कु० ६।६६, रघु० ३।१० 3. प्रमुखता, ऊँचा पद या मर्यादा, उल्लास —उत्तमैः सह सङ्गेन को न याति समुन्नतिम्, स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् सुभा० 4. उन्नति, समृद्धि, वृद्धि, सफलता विनिपातोऽपि समः समुन्नतेः —कि० २।३४, या प्रकृतिः खलु सा महीयसः सहते नान्यसमुन्नतिं यया—२।२१ 5. घमंड, अभिमान।

समुन्नद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+उद्+नह्+क्त] 1. उन्नत, उच्छ्रित 2. सूजा हुआ 3. पूरा 4. घमंडी, अभिमानी, असहनशील 5. आत्माभिमानी, पण्डितं-मन्य 6. बंधनमुक्त।

समुन्नयः [सम्+उद्+नी+अच्] 1. हासिल करना, प्राप्त करना 2. घटना, बात।

समुन्मूलनम् [सम्+उद्+मूल्+ल्युट्] जड़ से उखाड़ना, समूलोच्छेदन, पूर्ण विनाश।

समुपगमः [सम्+उप+गम्+अप्] पहुँच, संपर्क।

समुपजोषम् (अव्य०) [सम्+उप+जुष्+अम्] 1. बिल्कुल इच्छा के अनुसार 2. प्रसन्नतापूर्वक।

समुपभोगः [सम्+उप+भुज्+घञ्] मैथुन, संभोग।

समुपवेशनम् [सम्+उप+विश्+ल्युट्] 1. भवन, आवास, निवास 2. बिठाना।

समुपस्था, समुपस्थानम् [सम्+उप+स्था+अङ, ल्युट् वा] 1. पहुँच, समीप जाना 2. सामीप्य, निकटता 3. होना, आ पड़ना, घटना।

समुपस्थितिः='समुपस्थानम्' दे०।

समुपार्जनम् [सम्+उप+अर्ज्+ल्युट्] एक साथ प्राप्त करना, एक समय में ही अभिग्रहण।

समुपेत (भू० क० कृ०) [सम्+उप+इ+क्त] 1. मिल कर आये हुए, एकत्रित, इकट्ठे हुए 2. पहुँचा 3. सज्जित,⋯सहित,⋯युक्त।

समुपोढ (भू० क० कृ०) [सम्+उप+वह्+क्त] 1. ऊपर गया हुआ, उठा हुआ 2. वृद्धि को प्राप्त 3. निकट लाया गया 4. नियंत्रित।

समुल्लासः [सम्+उत्+लस्+घञ्] 1. अत्यंत चमक 2. अति हर्ष, आनन्द।

समूढ (भू० क० कृ०) [सम्+ऊह् (वह्)+क्त] 1. निकट लाया गया, एकत्रित 2. संचित, संगृहीत 3. लपेटा हुआ 4. सहित 5. सद्योजात, जो तुरन्त पैदा हुआ हो 6. शांत, वशीकृत, शान्त किया हुआ 7. वक्र, झुका हुआ 8. निर्मल, स्वच्छ 9. साथ ही वहन किया गया 10. नेतृत्व किया गया, संचालित किया गया 11. विवाहित।

समूरः, समूरुः, समूरकः [संगतौ ऊरू यस्य—प्रा० ब०] एक प्रकार का हरिण।

समूल (वि०) [सह मूलेन—ब० स०] जड़ों समेत जैसा 'समूलघातन्'—'पूर्णरूप से उखाड़ कर, जड़ समेत शाखाओं को उखाड़ देना।

समूहः [सम्+ऊह्+घञ्] 1. समुच्चय, संग्रह, संघात, समष्टि, संख्या—जनसमूहः, विघ्नसमूहः, पदसमूहः, आदि 2. रेवड़, टोली।

समूहनम् [समूह्+ल्युट्] 1. साथ मिलाना 2. संग्रह, राशि।

समूहनी [सम्+ऊह्+ल्युट्+ङीप्] बुहारी, झाड़ू।

समूह्यः [सम्+ऊह्+ण्यत्] एक प्रकार की यज्ञाग्नि।

समृद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+ऋध्+क्त] 1. समृद्धि-शाली, फलता-फूलता हुआ, हरा-भरा 2. प्रसन्न, भाग्यशाली 3. सम्पन्न, दौलतमंद 4. भरा पूरा, विशेषरूप से युक्त या सम्पन्न, खूब बढ़ा चढ़ा 5. फलवान्।

समृद्धिः (स्त्री०) [सम्+ऋध्+क्तिन्] 1. भारी वृद्धि, बढ़ती, फलना-फूलना 2. सम्पन्नता, सम्पत्ति,

ऐश्वर्य 3. धन, दौलत 4. बाहुल्य, पुष्कलता, प्राचुर्य --यथा 'धनधान्यसमृद्धिरस्तु' में 5. शक्ति, सर्वोपरिता ।

समेत (भू० क० कृ०) [सम्+आ+इ+क्त] 1. साथ आया हुआ या मिला हुआ, एकत्रित 2. संयुक्त, सम्मिश्रित 3. निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ 4. से युक्त 5. सहित, सज्जित, युक्त, के साथ 6. टक्कर खाया हुआ, भिड़ा हुआ 7. सहमत ।

सम्पत्तिः (स्त्री०) [सम्+पद्+क्तिन्] 1. समृद्धि, धन की बढ़ती, --संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता —सुभा० 2. सफलता, पूर्ति निष्पन्नता 3. पूर्णता, श्रेष्ठता–जैसा कि 'रूपसम्पत्ति' में 4. प्राचुर्य, पुष्कलता, बाहुल्य ।

सम्पद् (स्त्री०) [सम्+पद्+क्विप्] 1. धन, दौलत —नीता विवोत्साहगुणेन सम्पद्–कु० १।२२, आपन्नार्ति प्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्- मेघ० ५३ 2. समृद्धि, ऐश्वर्य, फलना-फूलना (विप० विपद् या आपद्)—ते भृत्याः नृपतेः कलत्रमितरे सम्पत्सु चापत्सु च—मुद्रा० १।१५ 3. सौभाग्य, आनन्द, क़िस्मत 4. सफलता, पूर्ति, अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति—श० ७।३० 5. पूर्णता, श्रेष्ठता, जैसा कि 'रूपसंसद' में –शि० ३।३५ 6. धनाढ्यता, पुष्कलता, बाहुल्य, प्राचुर्य, आधिक्य --तुषारवृष्टिक्षतपद्मसम्पदाम्—कु० ५।२७, रघु० १०।५९ 7. कोश 8. लाभ, हित, दग्दान 9. सद्गुणों की वृद्धि 10. सजावट 11. सही ढंग 12. मोतियों का हार । सम०—वर, राजा, —विनिमयः हितों या सेवाओं का आदान-प्रदान–रघु० १।२६ ।

सम्पन्न (भू०क०कृ०) [सम् पद्+क्त] 1. समृद्धिशाली, फलता-फूलता, धनाढ्य 2. भाग्यशाली, सफल, प्रसन्न 3. कार्यान्वित, साधित, निष्पन्न 4. पूरा किया गया, पूर्ण कर दिया गया 5. पूर्ण 6. पूर्णविकसित, परिपक्व 7. प्राप्त किया गया, हासिल किया गया 8. शुद्ध, सही 9. सहित, युक्त 10. हुआ हुआ, घटित, न्नः शिव का विशेषण, न्नम् 1. धन, दौलत 2. स्वादिष्ट भोजन, मधुर और मज़ेदार भोजन ।

सम्परायः [सम्+परा+इ+अच्] 1. संघर्ष, मुठभेड़, संग्राम, युद्ध 2. संकट, दुर्भाग्य 3. भावी स्थिति, भविष्य 4. पुत्र ।

सम्पराय (यि) कम् [सम्पराय +कन्, ठन् वा] मुठभेड़, संग्राम, युद्ध ।

सम्पर्कः [सम्+पृच्+घञ्] 1. मिश्रण 2. मिलाप, मेल-जोल, स्पर्श पादेन नापेक्षत सुन्दरीणां सम्पर्कमाशिञ्जितनूपुरेण कु० ३।२६, मेघ० २५, विक्रम० १।१३ 3. मण्डली, समाज, साथ न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि- भर्तृ०—२।१४ 4. मैथुन, संभोग ।

सम्पा [सम्यक् अतर्कितं पतति—सम्+पत्+ड+टाप्] बिजली ।

सम्पाक (वि०) [सम्यक् पाको यस्य यस्मात् वा—प्रा०ब०] 1. सुतार्किक, खूब बहस करने वाला 2. चालाक, चलता पुरज़ा 3. लम्पट, विलासी 4. थोड़ा, अल्प, —कः 1. परिपक्व होना 2. आरग्वध वृक्ष ।

सम्पाटः [सम्+पट्+णिच्+घञ्] 1. त्रिभुज की बढ़ी हुई भुजा से किसी रेखा का मिलना 2. तकुआ ।

सम्पातः [सम्+पत्+घञ्] 1. मिल कर गिरना, सहगमन 2. आपस में मिलना, मुठभेड़ होना 3. टक्कर, भिड़न्त 4. अधःपतन, उतरना भग० १।२० 5 (पक्षी आदि का) उतरना 6. (तीर की) उड़ान 7. जाना, हिलना-जुलना 8. हटाया जाना, हटाना मनु० ६।५६ 9. पक्षियों की उड़ान विशेष तु० डीन 10. (चढ़ावे का) अवशिष्ट अंश, उच्छिष्ट ।

सम्पातिः [सम्+पत्+णिच्+इन्] एक पौराणिक पक्षी, गरुड़ का पुत्र, जटायु का बड़ा भाई ।

सम्पादः [सम्+पद्+णिच्+घञ्] 1. पूर्ति, निष्पन्नता 2. अभिग्रहण ।

सम्पादनम्[सम्+पद्+णिच्+ल्युट्] 1. निष्पादन, कार्यान्वयन, पूरा करना 2. उपार्जन करना, प्राप्त करना, अवाप्त करना 3. स्वच्छ करना, साफ करना, (भूमि आदि) तैयार करना, मनु० ३।२२५ ।

सम्पिण्डित (भू०क०कृ०) [सम्+पिण्ड्+क्त] 1. राशीकृत 2. सिकुड़ा हुआ ।

सम्पीडः [सम्+पीड्+घञ्] 1. निचोड़ना, भींचना 2. पीडा, यातना 3. विक्षोभ, बाधा 4. भेजना, निदेशन, आगे आगे हांकना, प्रणोदन—सम्पीडक्षुभितजलेषु तोयदेषु--कि० ७।१२ ।

सम्पीडनम् [सम्+पीड्+ल्युट्] 1. निचोड़ना, मिलाकर दाबना 2. प्रेषण 3. दण्ड, कशाघात 4. झकोलना, क्षुब्ध होना ।

सम्पीतिः (स्त्री०) [सम्+पा+क्तिन्] मिल कर पीना, सहपान ।

सम्पुटः [सम्+पुट्+क] 1. गह्वर—स्वात्यां सागरशुक्तिसम्पुटगतं (पयः) सन्मौक्तिकं जायते भर्तृ० २।६७, (पाठान्तर) काव्या० २।२८८, ऋतु० १।२१ 2. रत्नपेटी, डिब्बा 3. कुरवक फूल ।

सम्पुटकः, सम्पुटिका [सम्पुट+कन्, सम्पुटक+टाप्, इत्वम्] संदूक, रत्नपेटी ।

सम्पूर्ण (वि०) [सम्+पूर्+क्त] 1. भरा हुआ 2. सारे, सारा, दे० पूर्ण, र्णम् अन्तरिक्ष ।

सम्पृक्त (भू० क० कृ०) [सम्+पृच्+क्त] 1. एकीकृत, मिश्रित 2. संयुक्त, संबद्ध, घनिष्ठ, संबंध से युक्त —वागर्थाविव सम्पृक्तौ–रघु० १।१ 3. स्पर्श करना ।

सम्प्रक्षालनम् [सम्+प्र+क्षल्+णिच्+ल्युट्] 1. पूर्ण मार्जन 2. स्नान, नहलाई–धुलाई 3. जल-प्रलय ।

सम्प्रणेतृ (पुं०) [सम्+प्र+णी+तृच्] शासक, न्यायाधीश ।

सम्प्रति (अव्य०) [सम्+प्रति- द्व० स०] अब, हाल में, इस समय अयि सम्प्रति देहि दर्शनम्- कु० ४।८ ।

सम्प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [सम्+प्रति+पद्+क्तिन्] 1. उपगमन, पहुँच 2. उपस्थिति 3. लाभ, प्राप्ति, उपलब्धि 4. करार 5. मानना, स्वीकार कर लेना —मुद्रा० ५।१८ 6. किसी तथ्य को मानना, क़ानून में विशेष प्रकार का उत्तर 7. धावा, आक्रमण 8. घटना 9. सहयोग 10. करना, अनुष्ठान ।

सम्प्रतिरोधकः, -कम् [सम्+प्रति+रुध्+घञ्+कन्] 1. पूरा अवरोध 2. कैद, जेल ।

सम्प्रतीक्षा [सम्+प्रति+ईक्ष्+अङ+टाप्] आशा लगाना या बांधना ।

सम्प्रतीत (भू० क० कृ०) [सम्+प्रति+इ+क्त] 1. वापिस आया हुआ 2. पूर्णतः विश्वास दिलाया हुआ 3. प्रमाणित, माना हुआ 4. विश्रुत 5. सम्मान पूर्ण ।

सम्प्रतीतिः [सम्+प्रति+इ+क्तिन्] 1. पूरा निश्चय 2. कार्यपालन, प्रसिद्धि, ख्याति, कुख्याति कु० ३।४३ ।

सम्प्रत्ययः [सम्+प्रति+इ+अच्] 1. दृढ़ विश्वास 2. करार ।

सम्प्रदानम् [सम्+प्र+दा+ल्युट्] 1. पूरी तरह से दे देना, हवाले कर देना 2. उपहार भेंट, दान 3. विवाह कर देना 4. चतुर्थी विभक्ति द्वारा अभिव्यक्त अर्थ ।

सम्प्रदानीयम् [सम्+प्र=दा+अनीयर्] भेंट, दान ।

सम्प्रदायः [सम्+प्र+दा+घञ्] 1. परंपरा, परंपरा प्राप्त सिद्धान्त या ज्ञान, परम्परा प्राप्त शिक्षा —उत्तर० ५।१५ 2. धर्म-शिक्षा की विशेष पद्धति, धार्मिक सिद्धान्त जिसके द्वारा किसी देवताविशेष की पूजा बतलाई जाय 3. प्रचलित प्रथा, प्रचलन ।

सम्प्रधानम् [सम्+प्र+धा+ल्युट्] निश्चय करना ।

सम्प्रधारणम् —णा [सम्+प्र+णिच्+ल्युट्] 1. विचार 2. किसी वस्तु का औचित्य या अनौचित्य निर्धारित करना ।

सम्प्रपदः [सम्+प्र+पद्+क] पर्यटन, भ्रमण ।

सम्प्रभिन्न (भू० क० कृ०) [सम्+प्र+भिद्+क्त] 1. फटा हुआ, चिरा हुआ 2. मद में मत्त ।

सम्प्रमोदः [सम्+प्र+मुद्+घञ्] हर्षातिरेक, उल्लास ।

सम्प्रमोषः [सम्+प्र+मुष्+घञ्] हानि, विनाश, पृथक्करण, अलगाव ।

सम्प्रयाणम् [सम्+प्र+या+ल्युट्] विदाई ।

सम्प्रयोगः [सम्+प्र+युज्+घञ्] 1. संयोग, मिलाप, सम्मिलन, संयोजन, संपर्क–(जलस्य) उष्णत्वमग्न्यातपसम्प्रयोगात्—रघु० ५।५४, मालवि० ५।३ 3. संयोजक कड़ी, बंधन या जकड़न —एतेन मोचयति भूषणसम्प्रयोगात्— मृच्छ० ३।१६ 3. संबंध, निर्भरता 4. पारस्परिक संबन्ध या अनुपात 5. संयुक्त श्रेणी या क्रम 6. मैथुन, संभोग 7. प्रयोग, 8. जादू ।

सम्प्रयोगिन् (वि०) [सम्+प्र+युज्+घिनुण्] साथ साथ मिलने वाला, पुं० 1. मेलापक, संयोजक, 2. बाजीगर 3. लम्पट 4. चुल्ली, पांडू ।

सम्प्रवृष्टम् [सम्+प्र+वृष्+क्त] अच्छी वर्षा ।

संप्रश्नः [सम्यक् प्रश्नः—प्रा०स०] 1. पूरी या शिष्टतापूर्ण पूछ-ताछ 2. पृच्छा, पूछ-ताछ ।

सम्प्रसादः [सम्+प्र+सद्+घञ्] 1. प्रसादन, तुष्टीकरण 2. अनुग्रह, कृपा 3. शान्ति, सौम्यता 4. विश्वास, भरोसा 5. आत्मा ।

सम्प्रसारणम् [सम्+प्र+सृ+णिच्+ल्युट्] य्, व्, र्, ल्, के स्थान पर क्रमशः इ, उ, ऋ या लृ को रखना इग्यणः सम्प्रसारणम् —पा० १।१।४५ ।

सम्प्रहारः [सम्+प्र+हृ+घञ्] 1. पारस्परिक प्रहार 2. मुठभेड़, संग्राम, युद्ध संघर्ष— उत्तर० ६।७ ।

सम्प्राप्तिः (स्त्री०) [सम्+प्र+आप्+क्तिन्] निष्पत्ति, अभिग्रहण ।

सम्प्रीतिः (स्त्री०) [सम्+प्री+क्तिन्] 1. अनुराग, स्नेह 2. सद्भावना, मैत्रीपूर्ण स्वीकृति 3. हर्ष, उल्लास ।

सम्प्रेक्षणम् [सम्+प्र+ईक्ष्+ल्युट्] 1. अवेक्षण, अवलोकन 2. विचार करना, गवेषणा करना ।

सम्प्रेषः [सम्+प्र+इष्+घञ्] 1. भेजना, बर्खास्तगी 2. निदेश, समादेश, आज्ञा ।

सम्प्रोक्षणम् [सम्+प्र+उक्ष्+ल्युट्] मार्जन, जल के छींटे देना, अभिमंत्रित जल छिड़कना ।

सम्प्लवः [सम्+प्लु+अप्] 1. प्लावन, जलप्रलय 2. लहर 3. बाढ़ 4. बर्बाद हो जाना 5. विध्वंस, तहसनहस ।

सम्फालः [सम्यक् फालो गमनं यस्य—प्रा० ब०] भेड़, मेढ़ ।

सम्फेटः (पुं०) क्रोधपूर्ण संघर्ष, दो क्रुद्ध व्यक्तियों की पारस्परिक मुठभेड़ को अभिव्यक्त करने वाली घटना—दे० सा० द० ३३९, ४२०, उदा०—माधव और अघोरघंट के मध्य मुठभेड़— मा० ५ ।

सम्ब् i (भ्वा० पर० सम्बति) जाना, हिलना-जुलना ।
ii (चुरा० उभ० सम्बयति–ते) संग्रह करना, संचय करना ।

सम्बम् [सम्ब्+अच्] खेत को दूसरी बार जोतना (सम्बाकृ दो बार हल चलना) दे० 'शम्ब' भी ।

सम्बद्ध (भू० क० कृ०) [सम्+बंध्+क्त] 1. संग्रथित,

मिलाकर बांधा हुआ 2. अनुरक्त 3. संयुक्त, जुड़ा, हुआ, संबंध रखने वाला 4. सहित ।

सम्बन्धः [सम्+बन्ध्+घञ्] 1. संयोग मिलाप, साहचर्य 2. रिश्ता, रिश्तेदारी 3. छठी विभक्ति या संबंध कारक के अर्थस्वरूप संबंध 4. वैवाहिक संपर्क—कु० ६।२९, ३० 5. मित्रता का संबंध, मैत्री,—सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः—रघु० २।५८ 6. योग्यता, औचित्य 7. समृद्धि, सफलता ।

सम्बन्धक (वि०) [सम्+बन्ध्+ण्वुल्] 1. रिश्ता रखने वाला, संबंध रखने वाला 2. योग्य, उपयुक्त,—कः 1. मित्र, जन्म या विवाह के कारण बना संबंध, एक प्रकार की शान्ति ।

सम्बन्धिन् (वि०) [सम्बन्ध+णिनि] 1. संबंध रखने वाला 2. संयुक्त, जुड़ा हुआ, अन्तर्हित 3. अच्छे गुणों से युक्त—पुं० 1. विवाह के फल स्वरूप बनी बन्धुता —उत्तर० ४।९ 2 रिश्तेदार, बन्धु ।

सम्बरः [सम्ब्+अरन्] 1. बांध, पुल 2. एक हरिण विशेष 3. प्रद्युम्न के द्वारा मारा गया राक्षस दे० शम्बर और प्रद्युम्न 4. पहाड़ का नाम,—रम् 1. प्रतिबंध 2. जल । सम०—अरिः,—रिपुः कामदेव ।

सम्बलः, लम् [सम्ब्+कलच्] पाथेय, यात्रा के लिए सामग्री, मार्गव्यय, लम् पानी ।

सम्बाध (वि०) [सम्यक् बाधा यत्र—प्रा०ब०] संकुल, भीड़ से युक्त, अवरुद्ध, संकीर्ण सम्बाधं बृहदपि तद्बभूव वर्त्म—शि० ८।२, व्योम्नि संबाधवर्त्मभिः—रघु० १२।६७,—धः 1. भीड़ का होना 2. दबाव, घिसर, चोट,—स्तनसम्बाधमुरो जघान च—कु० ४।२६ 3. रुकावट, कठिनाई, भय, विघ्न कि० ३।५३ 4. नरक का मार्ग 5. डर भय 6. भग, योनि ।

सम्बाधनम् [सं+बाध्+ल्युट्] 1. रोकना, अवरोध 2. भींचना 3. शुल्कद्वार, फाटक ४. योनि, भग 5. सूली, या सूली की नोक 6. द्वारपाल ।

सम्बुद्धिः (स्त्री०) [सम्+बुध्+क्तिन्] 1. पूर्ण ज्ञान या प्रत्यक्षज्ञान 2. पूर्ण चेतना 3. पुकारना, बुलाना 4. (व्या० में) संबोधन कारक एङ् ह्रस्वात् संबुद्धेः—पा० ६।१।६९ ।

सम्बोधः [सम्+बुध्+घञ्] 1. व्याख्या करना, निर्देश देना, सूचित करना 2. पूर्ण या सही प्रत्यक्षज्ञान 3. भेजना, फेंक देना 4. हानि, विनाश ।

सम्बोधनम् [स+बुध्+णिच्+ल्युट्] व्याख्या करना 2. संबोधित करना 3. संबोधन कारक 4. (किसी को बुलाने के लिए प्रयुक्त शब्द) विशेषण भामि० ३।१३ ।

सम्भक्तिः (स्त्री०) [सम्+भज्+क्तिन्] 1. हिस्सा लेना, अधिकार करना 2. वितरण करना ।

सम्भग्नः (भू० क० कृ०) [सम्+भज्+क्त] छिन्न-भिन्न, तितर-बितर, ग्नः शिव का विशेषण ।

सम्भली [सम्+भल्+अच्+ङीप्] दूती, कुटनी- दे० शम्भली ।

सम्भवः [सम्+भू+अप्] 1. जन्म, उत्पत्ति, फूटना, उगना, अस्तित्व प्रियस्य सुहृदो यत्र मम तत्रैव संभवो भूयात् मा० ९, मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवः- श० १।२६, भग० ३।१४, (इस अर्थ में प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त)—अप्सरःसम्भवैषा —श० १ 2. उत्पादन, पालन-पोषण—मनु० २।२२७ (इस पर कुल्लू० की टीका देखो) 3. कारण, मूल, प्रयोजन 4. मिलाना, मिलाप, सम्मिश्रण 5. संभावना —संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति सम्भवम्—सुभा० 6. समनुकूलता, संगति 7. अनुकूलन, उपयुक्तता 8. करार, पुष्टि 9. धारिता 10. समानता (एक प्रमाण) 11. परिचय 12. हानि, विनाश ।

सम्भारः [सम्+भृ+घञ्] 1. एकत्र मिलाना, संग्रह करना 2. तैयारी, सामग्री, आवश्यक वस्तुएँ, अपेक्षित वस्तुएं, उपकरण, किसी कार्य के लिए आवश्यक वस्तुएँ सविशेषमद्य पूजासम्भारो मया संनिधापनीयः —मा० ५, रघु० १२।४, विक्रम० २ 3. अवयव, संघटक, उपादान 4. समुच्चय, ढेर, राशि, संघात, जैसा कि 'शस्त्रास्त्रसम्भार' में 5. पूर्णता 6. दौलत, धनाढ्यता 7. संधारण, पालन-पोषण ।

सम्भावनम्,—ना [सम्+भू+णिच्+ल्युट्] 1. विचारना, विचारविमर्श करना रघु० ५।२८ 2. उद्भावना, उत्प्रेक्षा—सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्—काव्य० १० 3. विचार, कल्पना, चिन्तन 4. आदर, सम्मान, मान, प्रतिष्ठा सम्भावनागुणमवेहि तमीश्वराणाम् श० ७।३ 5. शक्यता 6. योग्यता, पर्याप्तता—कि० ३।३९ 7. सक्षमता, योग्यता 8. संदेह 9. स्नेह, प्रेम 10 ख्याति ।

सम्भावित (भू० क० कृ०) [सम्+भू+णिच्+क्त] चिन्तित, कल्पित, विचारित—पित्राहं दोषेषु सम्भावितः—का० 2. प्रतिष्ठित, सम्मानित, आदरित —भर्तृ० २।३४ 3. उपयुक्त, योग्य, पर्याप्त, युक्त 4. संभव ।

सम्भाषः [सम्+भाष्+घञ्] समालाप—मनु० २।१९५, ८।३६४ ।

सम्भाषा [संभाष+टाप्] 1. प्रवचन, समालाप 2. अभिवादन 3. आपराधिक संबंध 4. करार, संविदा 5. संकेत-शब्द, युद्धघोष ।

सम्भूतिः (स्त्री०) [सम्+भू+क्तिन्] 1. जन्म, उद्भव, उत्पत्ति—मनु० २।१४७ 2. सम्मिश्रण, मिलाप 3. योग्यता, उपयुक्तता 4. शक्ति ।

सम्भृत (भू० क० कृ०) [सम्+भृ+क्त] 1. एकत्रित, संगृहीत, संकेन्द्रित 2. उद्यत, तैयार, अन्वित, सज्जित 3. सुसज्जित, संपन्न, युक्त, सहित 4. रक्खा हुआ, जमा किया हुआ 5. पूर्ण, पूरा, समस्त 6. लब्ध, अवाप्त 7. ले जाया गया, वहन किया गया 8. पोषित 9. उत्पादित, पैदा किया गया।

सम्भृतिः (स्त्री०) [सम्+भृ+क्तिन्] 1. संग्रह 2. तैयारी, साज-सामान, सामग्री 3. पूर्णता 4. सहारा, संधारण, पोषण।

सम्भेदः [सम्+भिद्+घञ्] 1. टूटना, टुकड़े-टुकड़े करना 2. मिलाप, मिश्रण, सम्मिश्रण—आलोकतिमिरसम्भेदम्—मा० १०।११, हर्षोद्वेगसम्भेद उपनतः—मा० ८ 3. मिलना (जैसे निगाहों का) 4. संगम, (दो नदियों का) मिलन तदुत्तिष्ठ पारसिन्धुसम्भेदमवगाह्य नगरीमेव प्रविशावः, अयमसौ महानद्योः सम्भेदः—मा० ४, मधुमतीसिंधुसम्भेदपावनः—९।

सम्भोगः [सम्+भुज्+घञ्] 1. आनन्द लेना, मजे लेना सत्सम्भोगफलाः श्रियः सुभा० 2. कब्जा, उपयोग, अधिकृति—मनु० ८।२०० 3. रति रस, मैथुन, सहवास—सम्भोगान्ते मम समुचितो हस्तसंवाहनानाम्—मेघ० ९५ 4. लम्पट, गांडू 5. शृंगाररस का एक उपभेद, दे० 'शृंगार' के अन्तर्गत।

सम्भ्रमः [सम्+भ्रम्+घञ्] 1. घुड़ना, आवर्तन, चक्कर काटना 2. जल्दबाजी, उतावली 3. अव्यवस्था, विक्षोभ, हड़बड़ी कु० ३।४८ 4. डर, आतंक, भय,—श० १, कि० १५।२ 5. त्रुटि, भूल, अज्ञान 6. उत्साह, क्रियाशीलता 7. आदर, श्रद्धा गृहमुपगते सम्भ्रमविधिः—भर्तृ० २।६३, तव वीर्यवतः कश्चिद्यद्यस्ति मयि सम्भ्रमः—रामा०। सम०—ज्वलित (वि०) विक्षोभ से उत्तेजित,—भृत् (वि०) घबड़ाया हुआ, हड़बड़ाया हुआ।

सम्भ्रान्त (भू० क० कृ०) [सम्+भ्रम्+क्त] 1. आवर्तित 2. हड़बड़ाया हुआ, विक्षुब्ध, विस्मित, व्याकुल।

सम्मत (भू० क० कृ०) [सम्+मन्+क्त] 1. सहमत, स्वीकृत, माना हुआ 2. पसन्द किया हुआ, प्रिय, प्रियतम 3. समान, मिलता-जुलता 4. खयाल किया गया, सोचा गया, विचारा गया 5. अत्यन्त आदृत, सम्मानित, प्रतिष्ठित, तम् सहमति, दे० सम्मति।

संमतिः (स्त्री०) [सम्+मन+क्तिन्] 1. सहमति 2. समनुकूलता, मान्यता, अनुमोदन, समर्थन 3. अभिलाषा, इच्छा 4. आत्मज्ञान, आत्मा की जानकारी, सत्यज्ञान 5. खयाल, आदर, प्रतिष्ठा—कथमिव तव सम्मतिर्भवित्री सममृतुभिर्मुनिनावधीरितस्य—कि० १०।३६ 6. प्रेम, स्नेह।

सम्मदः [सम्+मद्+अप्] अतिहर्ष, खुशी, प्रसन्नता—शि० १५।७७।

सम्मर्दः [सम्+मृद्+घञ्] 1. आपस में घिसना, घर्षण 2. जमघट, भीड़, जमाव यद्गोप्रतरकल्पोऽभूत्सम्मर्दस्तत्र मज्जताम्—रघु० १५।१०१, मा० १० 3. कुचलना, पैरों से रौंदना 4. संग्राम, युद्ध।

सम्मातुर=संमातुर दे० 'सत्' के अन्तर्गत।

सम्मादः [सम्मद्+घञ्] मद, नशा, पागलपन।

सम्मानः [सम्+मन्+घञ्] आदर, प्रतिष्ठा,—नम् 1. माप 2. तुलना।

सम्मार्जकः [सम्+मृज्+ण्वुल्] झाड़ने वाला, बुहारी देने वाला, भंगी।

सम्मार्जनम् [सम्+मृज्+ल्युट्] 1. बुहारना, मांजना 2. निर्मल करना, साफ करना, झाड़ना।

सम्मार्जनी [सम्मार्जन+ङीप्] झाड़ू, बुहारी।

सम्मित (भू० क० कृ०) [सम्+मान्+क्त] 1. मापा हुआ, नापा हुआ 2. समान माप, विस्तार या मूल्य का, सम, वैसा ही, बराबर मिलता-जुलता कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे—का० १, रघु० ३।१६ 3. इतना बड़ा जितना कि, पहुँचता हुआ 4. समरूप, समनुकुल, समानुपातिक 5. से युक्त, सुसज्जित।

सम्मिश्र, सम्मिश्रित (वि०) [सम्+मिश्र्+अच्, क्त वा] 1. परस्पर मिलाया हुआ, अन्तर्मिश्रित।

सम्मिश्लः [=सम्मिश्र, पृषो० रस्य लः] इन्द्रका विशेषण।

सम्मीलनम् [सम्+मील+ल्युट्] (फूल आदि का) बन्द होना, ढकना, लपेटना।

सम्मुख (वि०) [स्त्री०—खा, खी] संमुखीन (वि०) [संगतं मुखं येन—प्रा० ब०, सर्वस्य मुखस्य दर्शनः—सममुख+ख, सम सब्दस्य अन्त्यलोपः नि०] 1. सामने का, सम्मुख स्थित, आमने सामने, अभिमुखी, सामना करने वाला—काम न निष्ठति मदाननसंमुखी सा—श० १।३१, रघु० १५।१६, शि० १०।८६ 2. मुठभेड़ करने वाला, मुकाबला करने वाला 3. स्वस्थ।

सम्मुखिन् (पुं०) [सम्मुखमस्य अस्ति सम्मुख+इनि] दर्पण, शीशा, आईना।

सम्मूर्छनम् [सम्+मूर्छ्=ल्युट्] 1. मूर्छा, बेहोशी 2. जमना, गाढ़ा होना 3. गाढ़ा करना, बढ़ाना 4. ऊँचाई 5. विश्वव्याप्ति, सह-विस्तार, पूर्ण व्याप्ति।

सम्मृष्ट (भू० क० कृ०) [सम्+मृज्+क्त]। भली भांति बुहारा गया, मांजा-धोया गया 2. छना हुआ, छाना हुआ।

सम्मेलनम् [सम्+मिल्+ल्युट्] 1. परस्पर मिलना, मिलाप 2. मिश्रण 3. एकत्र करना, संग्रह करना।

सम्मोहः [सम्+मुह+घञ्] 1. घबराहट, अव्यवस्था, प्रेमोन्माद 2. मूर्छा, बेहोशी 3. अज्ञान, मूर्खता 4. आकर्षण।

सम्मोहनम् [सम्+मुह+णिच्+ल्युट्] मंत्रमुग्ध करना,

वशीकरण, -नः कामदेव के पाँच बाणों में से एक कु० ३।६६।

सम्यच् सम्यञ्च् (वि०) (स्त्री०—**समीची**) [सम्+अञ्च्+क्विन्, समि आदेशः पक्षे नलोपः] 1. साथ जाने वाला, साथ रहने वाला 2. सही, युक्त, उचित, यथोचित 3. शुद्ध, सत्य, यथार्थ 4. सुहावना, रुचिकर —किं च कुलानि कवीनां निसर्ग-सम्यञ्चि रञ्जयतु-रस० 5. वही, एकरूप 6. सब, पूर्ण, समस्त—(अव्य० —**सम्यक्**) 1. के साथ, साथ-साथ 2. अच्छा, उचित रूप से, सही ढंग से, शुद्धतापूर्वक, सचमुच सम्यगियमाह . श० १, मनु० २।५, १४ 3. यथावत्, यथोचित ढंग से, ठीक-ठीक, सचमुच 4. सम्मान पूर्वक 5. पूरी तरह से, पूर्णतः 6. स्पष्ट रूप से।

सम्राज् (पुं०) [सम्यक् राजते-सम्+राज्+क्विप्] 1. सर्वोपरि प्रभु, विश्वराट्, विशेषतः वह जो अन्य राजाओं पर शासन करता हो तथा जिसने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान कर लिया है—येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः। शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राट्--अमरः,--रघु० २।५।

सय् (भ्वा० आ० सयते) जाना, हिलना-जुलना।

सयूथ्यः [सयूथ+यत्] एक ही वर्ग या जाति का।

सयोनि (वि०) [समाना योनिर्यस्य ब० स०, समानस्य सादेशः] एक ही कोख का, एक ही गर्भ से उत्पन्न, सहोदर,—**निः** 1. सगा या सहोदर भाई 2. सरोता 3. इन्द्र का नाम।

सर (वि०) [सृ+अच्] 1. जाने वाला, गतिशील 2. रेचक, दस्तावर—**रः** 1. जाना, गति 2. बाण 3. आतंच, दही का चक्का, मलाई 4. नमक 5. लड़ी, हार—अयं कण्ठे बाहुः शिशिरमसृणो मौक्तिकसरः --उत्तर० १।३९ २९ 6. जलप्रपात,—**रम्** 1. जल 2. झील, सरोवर। सम०—**उत्सवः** सारस, **जम्** ताज़ा मक्खन, नवनीत, तु० शरज।

सरकः, --**कम्** [सृ+वुन्] 1. सड़क राजमार्ग की अनवरत पंक्ति, 2. मदिरा, उग्र सुरा—चकुरथ सह पुरन्ध्रिजनैरयथार्थसिद्धि सरकं महीभृतः—शि० १५। ८०, १०।१२ 4. पीने का बर्तन, शराब पीने का प्याला, कटोरा—शि० १०।२० 5. तेज़ शराब का वितरण,—**कम्** 1. जाना, गति 2. तालाब, सरोवर 3. स्वर्ग।

सरघा [सरं मधुविशेषं हन्ति-सर+हन्+ड नि०] मधुमक्खी,—तस्तार सरघाव्याप्तैः स क्षौद्रपटलैरिव —रघु० ४।६३, शि० १५।२३।

सरङ्गः [सृ+अङ्गच्] 1. चतुष्पाद, चौपाया, 2. पक्षी।

सरजस्,-सा (स्त्री०), सरजस्का [सहरजसा —ब० स०, पक्षे कप्+टाप्] रजस्वला स्त्री।

सरट् (पुं०) [सृ+अटिः] 1. हवा, वायु 2. बादल 3. छिपकली 4. मधुमक्खी।

सरटः [सृ+अटच्] 1. वायु 2. छिपकली—लूता हि सरटानां च तिरश्चां चाम्बुचारिणाम्—मनु० १२।५७।

सरटिः [सृ+अटिन्] 1. वायु 2. बादल।

सरड्डुः [सृ+अडु] छिपकली, गिरगिट।

सरण (वि०) [सृ+ल्युट्] 1. जाने वाला, गतिशील 2. बहने वाला,—**णम्** 1. प्रगतिशील, जाने वाला, बहनशील 2. लोहे का जंग, मुर्चा।

सरणिः,-णी (स्त्री०) [सृ+निः] 1. पथ, मार्ग, सड़क, रास्ता—आनन्द० १८ 2. क्रम, विधि 3. सीधी अनवरत पंक्ति 4. कण्ठरोग।

सरण्डः [सृ+अण्डच्] 1. पक्षी 2. लम्पट, दुश्चरित्र व्यक्ति 3. छिपकली 4. धूर्त 5. एक प्रकार का अलंकार।

सरण्युः [सृ+अन्युच्] 1. वायु, हवा 2. बादल 3. जल 4. वसंत ऋतु 5. अग्नि 6. यम का नाम।

सरत्निः (पुं०, स्त्री०) [सह रत्निना ब० स०] एक हाथ का माप, तु० रत्नि या अरत्नि।

सरथ (वि०) [समानो रथो यस्य रथेन सह वा—ब० स०] एक ही रथ पर सवार,—**थः** रथ पर सवार योद्धा।

सरभस (वि०) [सह रभसेन--ब० स०] 1. वेगवान्, फुर्तीला 2. प्रचण्ड, उग्र 3. क्रोधपूर्ण 4. प्रसन्न,—**सम्** (अव्य०) अत्यंत वेग से।

सरमा [सृ+अम+टाप्] 1. देवों की कुतिया 2. दक्ष की पुत्री का नाम 3. रावण के भाई विभीषण की पत्नी का नाम।

सरयुः [सृ+अयु] वायु, हवा, -**युः,-यूः** (स्त्री०) एक नदी का नाम जिसके तट पर अयोध्यानगरी स्थित है—रघु० ८।९५, १३।६१, ६३, १४।३०।

सरल (वि०) [सृ+अलच्] 1. सीधा, अवक्र 2. ईमानदार, खरा, निष्कपट, निश्छल 3. सीधासादा, भोला भाला, स्वाभाविक—सरले साहसरागं परिहर—मा० ६।१०, अयि सरले किमत्र मया भगवत्या शक्यम्—२,—**लः** 1. चीड़ का वृक्ष विघट्टितानां सरलद्रुमाणाम्—कु० १।९, मेघ० ५३, रघु० ४।७५ 2. आग। सम० **अङ्गः** सरल वृक्ष का रस, विरोजा, तारपीन, **द्रवः** सुगंधित विरोजा।

सरव्य दे० शरव्य।

सरस् (नपुं०) [सृ+असुन्] 1. सरोवर, तालाब, पोखर, पानी का विशाल तलता—सरसामस्मि सागरः—भग० १०।१ 2. जल। सम० **जम्,-जन्मन्** (नपुं०) **—रुहम्**, (सरोजम्, सरोजन्मन्, सरोरुहम्) **सरसिजम्, सरसिरुहम्** कमल—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम् —श० १।२०, सरोरुहद्युतिमुषः पादांस्तवासेवितुम् —रत्न० १।३०, --**जिनी,-रुहिणी** 1. कमल का पौधा

····भ्रमर कथं वा सरोजिनीं त्यजसि—भामि० १।१०० 2. कमलों से भरा हुआ सरोवर,– रक्षः (सरोरक्षः) तालाब का संरक्षक, रुह (सरोरुह) (नपुं०) कमल, वरः (सरोवरः) झील ।

सरस (वि०) [रसेन सह ब० स०] 1. रसीला, सजल 2. स्वादु, मधुर 3. आर्द्र—शि० ११।५४ 4. पसीने से तर –कु० ५।८५ 5. प्रेमपूर्ण, प्रणयोन्मत्त—भामि० १।१०० (यहाँ इसका अर्थ 'मधुपूर्ण' भी है) 6. लावण्यमय, प्रिय, रुचिकर, सुन्दर—सरसवसन्त गीत० १ 7. ताजा, नया, सम् 1. झील, तालाब 2. रसायन विद्या ।

सरसी [सरस्+ङीप्] झील, पोखर, सरोवर—भामि० २।१४४ । सम०—रुहम् कमल ।

सरस्वत् (वि०) [सरस्+मतुप्] 1. सजल, जलयुक्त 2. रसीला, मजेदार 3. ललित 4. भावुक, पुं० 1. समुद्र 2. सरोवर 3. नद 4. भैंस 5. वायु का नाम ।

सरस्वती [सरस्वत्+ङीप्] 1. वाणी और ज्ञान की अधिष्ठात्री देवता जिसका वर्णन ब्रह्मा की पत्नी के रूप में किया गया है 2. बोली, स्वर, वचन –कु० ४।३९, ४३, रघु० १५।४६ 3. एक नदी का नाम (जो कि मरुस्थल के रेत में लुप्त हो गई है) 4. नदी 5. गाय 6. श्रेष्ठ स्त्री 7. दुर्गा का नाम 8. बौद्धों की एक देवी 9. सोमलता 10. ज्योतिष्मती नामक पौधा ।

सराग (वि०) [सह रागेण—ब० स०] 1. रंगीन, हलके रंग वाला, रंगदार–(अकारि) सरागमस्या रसनागुणास्पदम्—कु० ५।१० 2. लाल रंग की लाख से रंगा हुआ—रघु० १६।१० 3. प्रणयोन्मत्त, प्रेमाविष्ट, मुग्ध —मुनेरपि मनोऽवश्यं सरागं कुरुतेऽङ्गना—सुभा० ।

सराव (वि०) [सह रावेण—ब० स०] 1. शब्द करने वाला, कोलाहल करने वाला,– वः 1. ढक्कन, आवरण 2. कसोरा, चाय की तश्तरी, तु० 'शराव' ।

सरिः (स्त्री०) [सृ+इन्] झरना, फौवारा ।

सरित् (स्त्री०) [सृ+इति] 1. नदी— अन्या सरितां शतानि हि समुद्रगाः प्रापयन्त्यब्धिम्—मालवि० ५।१९ 2. धागा, डोरी । सम० –नाथः,–पतिः (सरितांपतिः भी), -भर्तृ (पुं०) समुद्र, ·· वरा (सरितांवरा) गंगा का नाम, सुतः भीष्म का विशेषण ।

सरि(री)मन् (पुं०) [सृ+ईमनिच्] 1. गति, सरकना 2. वायु ।

सरिलम् [सृ+इलच्] जल ।

सरीसृपः [कुटिलं सर्पति—सृप्+यङ (लुक्)+द्वित्वादि +अच्] साँप ।

सरुः [सृ+उन्] तलवार की मूठ ।

सरूप (वि०) [समानं रूपमस्य—ब० स०] 1. समान रूप वाला 2. समान, मिलता-जुलता, वैसे ही—रघु० ६।५९ ।

सरूपता,-त्वम् [सरूप+तल्+टाप्, त्व वा] 1. समानता 2. ब्रह्मरूप हो जाना, मुक्ति के चार प्रकारों में से एक ।

सरोष (वि०) [सह रोषेण ब० स०] 1. क्रुद्ध, रोषपूर्ण 2. कुपित ।

सर्कः [सृ+क] 1. वायु, हवा 2. मन ।

सर्गः [सृज्+घञ्] 1. छोड़ना, परित्याग 2. सृष्टि ·· अस्याः सर्गविधौ प्रजापतिरभूच्चन्द्रो नु कान्तिप्रदः --विक्रम० १।९ 3. सृष्टिरचना – कु० २।६, रघु० ३।२७ 4. प्रकृति, विश्व 5. नैसर्गिक गुण, प्रकृति 6. निर्धारण, संकल्प गृहाण शस्त्रं यदि सर्ग एष ते —रघु० ३।५१, १४।४२, शि० १९।३८ 7. स्वीकृति, सहमति 8. अनुभाग, अध्याय, (काव्य आदि का) सर्ग, 9. धावा, हमला, (सेना का) प्रगमन 10. मलत्याग 11. शिव का नाम । सम० क्रमः सृष्टि का क्रम, बन्धः महाकाव्य,–सर्गबन्धो महाकाव्यम्–सा० द० ।

सर्ज् (भ्वा० पर० सर्जति) 1. अवाप्त करना, उपलब्ध करना 2. उपार्जन करना ।

सर्जः [सृज्+अच्] 1. साल का पेड़ 2. साल वृक्ष का चूने वाला रस । सम० निर्यासकः,–मणिः,-रसः बिरोजा, लाख ।

सर्जकः [सृज्+ण्वुल्] साल का वृक्ष ।

सर्जनम् [सृज्+ल्युट्] 1. परित्याग, छोड़ना 2. ढीला करना 3. रचना करना 4. मलत्याग 5. सेना का पिछला भाग ।

सर्जिः, सर्जिका, सर्जी (स्त्री०) [सृज्+इन्, सर्जि+कन् +टाप्, सर्जि+ङीष्] सज्जीखार ।

सर्जुः, सर्जूः [सृज्+ऊः] व्यापारी—स्त्री० 1. बिजली 2. हार 3. गमन, अनुसरण ।

सर्पः [सृप्+घञ्] 1. सर्पीली गति, घुमावदार चाल, खिसकना 2. अनुसरण, गमन 3. नाग, साँप । सम० अरातिः,—अरिः 1. नेवला 2. मोर 3. गरुड का विशेषण, अशनः मोर,—आवासम्—इष्टम् चन्दन का वृक्ष,--छत्रम् कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी, खुंब, —तृणः नेवला,--दंष्ट्रः साँप का विषैला दाँत,–धारकः सपेरा,—भुज् (पुं०) 1. मोर 2. सारस 3. अजगर, —मणिः साँप के फण की मणि,—राजः वासुकि ।

सर्पणम् [सृप्+ल्युट्] 1. रेंगना, सरकना 2. वक्रगति 3. बाण की भूमि के समानांतर उड़ान ।

सर्पिणी [सृप्+णिनि+ङीप्] 1. साँपनी 2. एक प्रकार की जड़ी बूटी ।

सर्पिन् (वि०) [सृप्+णिनि] 1. रेंगने वाला, सरकने वाला, घुमावदार, टेढ़ी चाल चलने वाला 2. जाने

वाला, हिलने-जुलने वाला—यूका मन्दविसर्पिणी —पंच० १।२५२।

सर्पिस् (नपुं०) [सृप्+इसि] पिघलाया हुआ घृत, घी (घृत और सर्पिस् के अन्तर को जानने के लिए दे० आज्य)। सम०—**समुद्रः** घृतसागर, सात समुद्रों में से एक।

सर्पिष्मत् (वि०) [सर्पिस्+मतुप्] घी (से प्रसाधित) युक्त।

सर्व् (भ्वा० पर० सर्वति) जाना, हिलना-जुलना।

सर्मः [सृ+मन्] 1. चाल, गति 2. आकाश।

सर्व् (भ्वा० पर० सर्वति) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, वध करना।

सर्व (नि० वि०) [सृतमनेन विश्वमिति सर्वम्—कर्तृ० ब० व० पुं०, सर्वे] 1. सब, प्रत्येक,—उपर्युपरिपश्यतः सर्व एव दरिद्रति,—हि० २।२, रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय—मेघ० २०।९३ 2. पूर्ण, समस्त, पूरा,—**र्वः** 1. विष्णु का नाम 2. शिव का नाम। सम०—**अङ्गम्** समस्त शरीर,—**अङ्गीण** (वि०) समस्त शरीर में व्याप्त या रोमांचकारी—सर्वाङ्गीणः स्पर्शः सुतस्य किल—विक्रम० ५।११, **अधिकारिन्** (पुं०) —**अध्यक्षः** अधीक्षक,—**अन्नीन** सब प्रकार के अन्न को खाने वाला सर्वान्नभोजिन् आदि,—**आकारम्** (समास में) सर्वथा, पूर्ण रूप से, पूरी तरह से, —**आत्मन्** (पुं०) पूर्ण आत्मा, **सर्वात्मना** सर्वथा, पूरी तरह से, पूर्ण रूप से, **ईश्वरः** सबका स्वामी —**ग, गामिन्** (वि०) विश्वव्यापी, सर्वव्यापक, —**जित्** (वि०) सर्वजेता, अजेय, **ज्ञ,—विद्** (वि०) सब कुछ जानने वाला, **सर्वज्ञ** (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. बुद्ध का विशेषण,—**दमन** (वि०) सब का दमन करने वाला, दुर्निवार, **नामन्** (नपुं०) संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का समूह, —**मंगला** पार्वती का विशेषण,—**रसः** लाख, विरोजा, —**लिंगिन्** (पुं०) पाखंडी, छद्मवेशी, ढोंगी, **व्यापिन्** (वि०) सर्वत्र व्यापक रहने वाला, **वेदस्** (पुं०) सर्वस्व दक्षिणा में देकर यज्ञानुष्ठान करने वाला, —**सहा** (**सर्वंसहा** भी) पृथ्वी, **स्वम्** 1. प्रत्येक वस्तु, 2. किसी व्यक्ति की समस्त संपत्ति, जैसा कि 'सर्वस्वदंड' में, °**हरणम्** 1. सारी संपत्ति का अपहरण या जब्ती 2. किसी वस्तु का सर्वांश दे० श० १।२४, ६।२, मा० ८।६, भामि० १।६३।

सर्वंकष (वि०) [सर्व+कष्+खच्, मुम्] 'सब कुछ नष्ट करने वाला', सर्वशक्तिमान्—सर्वंकषा भगवती भवितव्यतैव—मा० १।२३, भामि० ४।२,—**षः** दुष्ट, बदमाश।

सर्वतः (अव्य०) [सर्व+तसिल्] 1. प्रत्येक दिशा से, सब ओर से 2. सब ओर, सर्वत्र, चारों ओर 3. पूर्णतः सर्वथा। सम०—**गामिन्** (वि०) 1. सर्वत्र पहुँच रखने वाला—कु० ३।१२,—**भद्रः** 1. विष्णु का रथ 2. बाँस 3. एक प्रकार का चित्रकाव्य—उदा० कि० १५।२५ 4. मन्दिर या महल जिसके चारों ओर द्वार हों (इस अर्थ में नपुं० भी) (**द्रा**) नर्तकी, नटी —**मुख** (वि०) सब प्रकार का, पूर्ण, असीमित—श० ५।२५, (**खः**) 1. शिव का विशेषण 2. ब्रह्मा का विशेषण—कु० २।३, (चारों ओर मुख किये हुए) 3. परमात्मा 4. आत्मा 5. ब्राह्मण 6. आग 7. स्वर्ग।

सर्वत्र (अव्य०) [सर्व+त्रल्] 1. प्रत्येक स्थान पर, सब जगहों पर 2. हर समय।

सर्वथा (अव्य०) [सर्व+थाल्] 1. हर प्रकार से, सब तरह से उत्तर० १।५ 1. बिल्कुल, पूर्णतः (प्रायः नकारपरक) 3. पूर्णतः, बिल्कुल, नितान्त 4. सब समय।

सर्वदा (अव्य०) [सर्व+दाच्] सब समय, सदैव, हमेशा।

सर्वरी दे० 'शर्वरी'।

सर्वशः (अव्य०) [सर्व+शस्] 1. पूर्णतः, सर्वथा, पूरी तरह से 2. सर्वत्र 3. सब ओर।

सर्वाणी दे० 'शर्वाणी'।

सर्षपः [सृ+अप, सुक्] 1. सरसों—खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति, सुभा०, मा०—१०।६ 2. एक छोटा बाट 3. एक प्रकार का विष।

सल् (भ्वा० पर० सलति) जाना, हिलना-जुलना।

सलम् [सल्+अच्] जल।

सलज्ज (वि०) [लज्जया सह ब० स०] विनीत, लज्जाशील।

सलिलम् [सलति गच्छति निम्नम् सल्+इलच्] पानी, सुभगसलिलावगाहाः—श० १।३। सम० **अर्थिन्** (वि०) प्यासा, **आशयः** तालाब, ताल, पानी की टंकी,—**इन्धनः** वड़वानल,—**उपप्लवः** जलप्लावन, प्रलय बाढ़,—**क्रिया** 1. अन्त्येष्टि संस्कार के अवसर पर शवस्नान 2. जलतर्पण, उदकक्रिया,—**जम्** कमल,—**निधिः** समुद्र।

सलील (वि०) [सहलीलया ब० स०] क्रीड़ाशील, स्वेच्छाचारी, शृंगारप्रिय।

सलोकता [समानः लोको यस्य—इति सलोकः तस्य भावः तल्+टाप्] एक ही लोक में होना, किसी विशेष देवता के साथ एक ही स्वर्ग में निवास (मुक्ति की चार प्रकार की अवस्थाओं में से एक)।

सल्लकी [शल्+वुन्, लुक्, पृषो० शस्य सः] एक प्रकार का पेड़, सलाई का पेड़, दे० 'शल्लकी'।

सवः [सु+अच्] 1. सोमरस का निकालना 2. चढ़ावा, तर्पण 3. यज्ञ 4. सूर्य 5. चांद 6. प्रजा,— वम् 1. पानी 2. फूलों से लिया गया मधु।

सवनम् [सु (सू)+ल्युट्] 1. सोम रस का निकालना या पीना 2. यज्ञ—अथ तं सवनाय दीक्षितः —रघु० ८।७५, श० ३।२८ 3. स्नान, शुद्धिपरक स्नान 4. जनन, प्रसव, बच्चे पैदा करना।

सवयस् (वि०) [समानं वयो यस्य—ब० स०] एक ही आयु का पुं० 1. समवयस्क, समसामयिक 2. एक ही आयु के साथी, स्त्री० सखी, सहेली।

सवरः (पुं०) 1. शिव का नाम 2. जल।

सवर्ण (वि०) [समानो वर्णो यस्य—ब०स०] 1. एक ही रंग का 2. एक सी सूरत शक्ल का, समान, मिलता-जुलता दुर्वर्णभित्तिरिह सान्द्रसुधासवर्णा—शि० ४। २८, मेघ० १८, रघु० ९।२१ 3. एक ही जाति का 4. एक ही प्रकार का, एक जैसा 5. एक ही वर्णमाला का, एक ही स्थान से (वागिन्द्रियों द्वारा) उच्चारण किये जाने वाले वर्ण—तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम् पा० १।१।९।

सविकल्प, सविकल्पक (वि०) [सह विकल्पेन—ब० स० पक्षे कप्] 1. ऐच्छिक 2. संदिग्ध 3. कर्ता और कर्म के अन्तर को पहचानने वाला, ज्ञाता और ज्ञेय के भेद को जानने वाला (विप० निर्विकल्पक)।

सविग्रह (वि०) [सह विग्रहेण—ब०स०] 1. शरीरधारी, देहधारी 2. सार्थक, अर्थवाला 3. संघर्षरत, झगड़ालू।

सवितर्क, सविमर्श (वि०) [सह वितर्केण विमर्शेन वा—ब० स०] विचारवान्,—र्कम्,—र्शम् (अव्य०) विचारपूर्वक।

सवितृ (वि०) (स्त्री० त्री) [सू+तृच्] जनक, उत्पादक, फल देने वाला—सवित्री कामानां यदि जगति जागर्ति भवती —गंगा० २३, —पुं० 1. सूर्य —उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च—काव्य० ७ 2. शिव 3. इन्द्र 4. मदार का पेड़, अर्क वृक्ष।

सवित्री [सवितृ+ङीप्] 1. माता—कु० १।२४ 2. गाय।

सविध (वि०) [सह विधया—ब० स०] 1. एक ही प्रकार या ढंग का 2. निकट, सटा हुआ, समीपी —भूयो भूयः सविधनगरीरथ्यया पर्यटन्तम्—मा० १।१५,—धम् सामीप्य, पड़ोस—यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य—काव्य० ९, किमासेव्यं पुंसा सविधमनवद्यं द्युसरितः—१०, नै० २।४७, शि० १४।६९, भामि० २।१८२।

सविनय (वि०) [सह विनयेन—ब० स०] विनीत, विनम्र,—यम् (अव्य०) विनयपूर्वक।

सविभ्रम (वि०) [सह विभ्रमेण ब० स०] क्रीड़ायुक्त, विलासयुक्त।

सविशेष (वि०) [सह विशेषेण ब० स०] 1. विशिष्ट गुणों से युक्त 2. विशेष, असाधारण 3. विशिष्ट, खास—उत्तर० ४ 4. प्रमुख, श्रेष्ठ, बढ़िया 5. विलक्षण (सविशेषम्, सविशेषतः (क्रि० वि०) विशेष कर, खास तौर से, अत्यंत—अनेन धर्मः सविशेषमद्य मे त्रिवर्गसारः प्रतिभाति भामिनि—कु० ५।३८, प्रायः समास में—कु० १।२७, रघु० १६।५३)।

सविस्तर (वि०) [सह विस्तरेण—ब० स०] विवरण सहित, सूक्ष्म, पूर्ण,—रम् (अव्य०) विवरण के साथ, विस्तार पूर्वक।

सविस्मय (वि०) [सह विस्मयेन—ब० स०] आश्चर्यान्वित, अचंभे से युक्त, चकित।

सवृद्धिक (वि०) [सह वृद्धया—ब० स० कप्] जिसका ब्याज मिले, ब्याज से युक्त।

सवेश (वि०) [सह वेशेन—ब० स०] 1. सजा हुआ, अलंकृत, वेशभूषा से युक्त 2. निकट, समीपवर्ती।

सव्य (वि०) [सू+य] 1. बायां, बायां हाथ 2. दक्षिणी 3. विरोधी, पिछड़ा हुआ, उलटा 4. सही,—व्यम् (अव्य०) जनेऊ का बायें कंधे पर लटकते रहना —तु० अपसव्य। सम०—इतर (वि०) सही, ठीक, —साचिन् (पुं०) अर्जुन का विशेषण—निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्—भग० ११।३३, (महाभारत में नाम की व्याख्या निम्नांकित है—उभौ मे दक्षिणौ पाणी गांडीवस्य विकर्षणे। तेन देवमनुष्येषु सव्य साचीति मां विदुः॥)।

सव्यपेक्ष (वि०) [व्यपेक्षया सह —ब० स०] संयुक्त, निर्भर—स्नेहश्च निमित्तसव्यपेक्षश्चेति विप्रतिषिद्धमेतत् —मा० १, उत्तर० ६।

सव्यभिचारः [सह व्यभिचारेण—ब० स०] (तर्क० में) हेत्वाभास के पांच मुख्य भेदों में से एक, साधारण मध्यपद, व्याख्या के लिए दे० 'अनैकान्तिक'।

सव्याज (वि०) [सह व्याजेन—ब० स०] 1. चालबाज 2. बगुलाभगत, रंगासियार, चालाक।

सव्यापार (वि०) [व्यापारेण सह ब० स०] व्यस्त, व्यापृत, कार्य में नियुक्त।

सव्रीड (वि०) [व्रीडया सह—ब० स०] 1. लज्जाशील शर्मिन्दा।

सव्येष्ठृ (पुं०), सव्येष्ठः [सव्ये तिष्ठति—सव्ये+स्था +ऋन्, क वा, अलुक् स०, षत्वम्] सारथि, रथ हांकने वाला।

सशल्य (वि०) [सहशल्येन—ब०स०] 1. कांटेदार 2. बर्छी या कांटों से बिंधा हुआ।

सशस्य (वि०) [सहशस्येन—ब० स०] सस्य से युक्त, अन्नोत्पादक,—स्या सूर्यमुखी फूल का एक भेद।

सश्मश्रु (वि०) [सह श्मश्रुणा—ब० स०] दाढ़ी-मूंछ वाला, स्त्री० वह स्त्री जिसके दाढ़ी मूंछ दिखाई दे।

सश्रीक (वि०) [श्रिया सह—ब० स०, कप्] 1. समृद्धिशाली, सौभाग्यशाली 2. प्रिय, सुन्दर।

सस् (अदा० पर० सस्ति) सोना।

ससत्त्व (वि०) [सह सत्त्वेन · ब०स०] 1. जीवन शक्ति से युक्त, ऊर्जस्वी, बलवान्, साहसी 2. गर्भवती, · **त्त्वा** गर्भवती स्त्री।

ससन्देह (वि०) [सह सन्देहेन—ब० स०] संदिग्ध,—**हः** एक अलंकार का नाम · दे० 'सन्देह'।

ससनम् [सस्+ल्युट्] पशुमेध, यज्ञीयपशु का वध।

ससन्ध्य (वि०) [सन्ध्यया सह—ब० स०] संध्यासंबंधी, सायंकालीन।

ससाध्वस (वि०) [सह साध्वसेन—ब० स०] आतंकित, डरा हुआ, भीरु।

सस्ज् दे० सज्ज्।

सस्यम् [सस्+यत्] 1. अनाज, अन्न—(एतानि) सस्यैः पूर्णे जठरपिठरे प्राणिनां संभवन्ति—पंच० ५।९७ दे० 'शस्य' भी 2. किसी भी पौधे का फल 3. शस्त्र 4. सद्गुण, खूबी। सम०—**इष्टिः** (स्त्री०) फ़सल पक जाने पर नये अन्न से किया जाने वाला यज्ञ,—**प्रद** (वि०) उपजाऊ,—**मारिन्** (वि०) अन्न को नष्ट करने वाला, (पुं०) एक प्रकार का चूहा, घूंस,—**संवरः** साल का पेड़।

सस्यक (वि०) [सस्य+कन्] अच्छे गुणों से युक्त, गुणान्वित, श्लाघ्य, प्रशंसनीय, - **कः** 1. तलवार 2. शस्त्र 3. एक प्रकार का मूल्यवान् पत्थर।

सस्वेद (वि०) [सह स्वेदेन—ब० स०] पसीने से तर, प्रस्विन्न,—**दा** वह कन्या जिसका हाल में ही कौमार्यभंग हुआ हो।

सह् i (दिवा० पर० सह्यति) 1. सन्तुष्ट करना 2. प्रसन्न होना 3. सहन करना, झेलना।

ii (भ्वा० आ०—सहते, सोढ, नि, परि, वि आदि इकारान्त उपसर्गों के पश्चात् सह् के स् को मूर्धन्य ष् हो जाता है, यदि सह् के ह् को ढ नहीं हुआ) (क) झेलना, सहन करना, भुगतना, गम खाना—खलोल्लापाः सोढाः—भर्तृ० ८।६, पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं न पुनः पतत्रिणः—कु० ५।४, इसी प्रकार दुःखं, क्लेशं आदि-रघु० १२।६३, ११।५२, भट्टि० १७।५९ (ख) 1. सहन करना, अनुमति देना,—प्रकृतिः खलु सा महीयसः सहते नान्यसमुन्नतिं यया—कि० २। २१, मेघ० १०५, रघु० १४।६३ 2. क्षमा करना, सहलेना—वारंवारं मर्षतस्यापराधः सोढः—हि० ३, भग० ११।४४ 3. प्रतीक्षा करना, सब्र करना—द्वित्राण्यहान्यर्हसि सोढुमर्हन्—रघु० ५।२५, १५।४५ 4. वहन करना, सहारा देना, ढकेलना श० ३ 5. जीतना, परास्त करना, विरोध करना, मुक़ाबला करना 6. दबाना, रोकना 7. योग्य होना ('तुम्' के साथ), प्रेर० (साहयति–ते) 1. धारण करवाना, भुगतवाना 2. धारण करने या सहारा देने के योग्य बनना—गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति श० ४।१६, इच्छा० (सिसहिषते) सहन करने की इच्छा करना, **उद्**—, 1. योग्य होना, शक्ति या ऊर्जा रखना, साहस करना, दिलेरी दिखाना—तवानुवृत्तिं न च कर्तुमुत्सहे—कु० ५।६५, "मैं पसंद नहीं करता" आदि—भट्टि० ३। ५४, ५।५४, १४।८९, शि० १४।८३ 2. (क) प्रयास करना, प्रणोदित होना कि० १।३६ (ख) ढाढस बंधाना, विषण्ण न होना, हिम्मत न हारना - भट्टि० १९।१६ 3. आराम में होना—कु० ४।३६ 4. आगे बढ़ना प्रयाण करना (इच्छा०) उकसाना, उद्बुद्ध —भट्टि० ९।६९, **परि**—, सहन करना भट्टि० ९।७३ **प्र**—, 1. सहन करना, झेलना—न तेजस्तेजस्वी प्रसृतमपरेषां प्रसहते—उत्तर० ६।१४ 2. सामना करना, मुक़ाबला करना, पछाड़ना—संयुगे सांयुगीनं तमुद्यतं प्रसहेत कः—कु० २।५७ 3. चेष्टा करना, प्रयास करना 4. योग्य होना 5. शक्ति या ऊर्जा रखना—दे० 'प्रसह्य' भी, **वि**—, 1. सहन करना, झेलना रघु० ४।६३, ८।५६ 2. मुक़ाबला करना, सामना करना, प्रतिरोध करने के योग्य होना—रघु० ४।४९ 3. योग्य होना 4. अनुमति देना 5. इच्छा करना, पसंद करना।

सह (वि०) [सहते—सह्+अच्] 1. सहन करने वाला, झेलने वाला, भुगतने वाला 2. धीर 3. योग्य—दे० 'असह', **हः** मंगसिर का महीना,—**हः**,—**हम्** शक्ति, सामर्थ्य।

सह (अव्य०) 1. के साथ, मिलकर, साथ-साथ, सहित, से युक्त (करण०)—शशिना सह याति कौमुदी सह मेघेन तडित्प्रलीयते—कु० ४।३३ 2. साथ मिलकर, एक ही समय, युगपत्—अस्तोदयौ सहैवासौ कुरुते नृपतिद्विषाम् सुभा०। सम०—**अध्यायिन्** (पुं०) सहपाठी,—**अर्थ** (वि०) समानार्थक (**र्थः**) समान या सामान्य उद्देश्य,—**उक्तिः** (स्त्री०) अलंकारशास्त्र में एक अलंकार का नाम—सा सहोक्तिः सहार्थस्य बलादेकं द्विवाचकम्—काव्य० १०, उदा०—पपात भूमौ सह सैनिकाश्रुभिः—रघु० ३।६१,—**उटजः** पर्णकुटी,—**उदरः** एक ही पेट से उत्पन्न, सगा भाई विक्रमांक० १।२१, **उपमा** उपमा का एक भेद,—**ऊढः**,—**उढजः** विवाह के समय गर्भवती स्त्री का पुत्र (हिन्दूधर्मशास्त्रों में वर्णित बारह प्रकार के पुत्रों में से एक),—**कार** (वि०) 'ह' की ध्वनि से युक्त नल० २।१४, (**रः**) 1. सहयोग 2. आम का पेड़ क इदानीं सहकारमन्तरेण पल्लवितामतिमुक्तलतां सहते—श० ३,—**भञ्जिका** एक प्रकार का खेल, - **कारिन्**,—**कृत्** (वि०) सहयोग

देने वाला (पुं०) सहप्रशासक, सहकारी, सहकर्मी —**कृत** (वि०) सहयोग दिया हुआ, से सहायताप्राप्त, —**गमनम्** 1. साथ जाना 2. किसी स्त्री का अपने मृत पति के शरीर के साथ जलना, विधवा का सती होना —**चर** (वि०) साथ जाने वाला, साथ रहने वाला उत्तर० ३।८ (**रः**) 1. साथी, मित्र, सहभागी 2. पति 3. प्रतिभू (स्त्री० **री**) 1. सहेली 2. पत्नी, सखी, —**चरित** (वि०) साथ रहने वाला, सेवा में उपस्थित रहने वाला, साथ देने वाला, **चारः** 1. साथ रहना 2. सहमति, सांमनस्य 3. (तर्क० में) हेतु के साथ साध्य का अनिवार्यतः साथ रहना—**चारिन्** दे० 'सहचर',—**ज** (वि०) 1. अन्तर्जन्मा, स्वाभाविक, अन्तर्जात 2. आनुवंशिक (**जः**) 1. सगा भाई 2. नैसर्गिक स्थिति या वृत्ति, °**अरिः** नैसर्गिक शत्रु, °**मित्रम्** नैसर्गिक दोस्त, —**जात** (वि०) प्राकृतिक—दे० 'सहज', —**दार** (वि०) 1. सपत्नीक 2. विवाहित,—**देवः** पांडवों का कनिष्ठ भ्राता, नकुल का जुड़वाँ भाई जो अश्विनीकुमारों की कृपा से माद्री के पेट से उत्पन्न हुआ, यह मानव-सौन्दर्य का एक आदर्श माना जाता है, **धर्मः** समान कर्तव्य, °**चारिन्**(पुं०)पति, °**चारिणी** 1. धर्मपत्नी, वैध पत्नी 2. सहकर्मी, **पांशुक्रीडिन्**, —**पांशुकिल** (पुं०) सखा, बचपन का मित्र, लंगोटिया यार,—**भाविन्** (पुं०) मित्र, हिमायती, अनुयायी, —**भू** (वि०) नैसर्गिक, सहजात—रत्न० १।२, —**भोजनम्** मित्रों के साथ बैठ कर भोजन करना, —**मरणम्** दे० सहगमन, **युध्वन्** संगी साथी (युद्ध में साथ देने वाला),—**वसतिः**, **वासः** मिलकर रहना —सहवसतिमुपेत्य यः प्रियायाः कृत इव मुग्धविलोकितोपदेशः—श० २।३ ।

सहता, —त्वम् [सह् + तल् + टाप्, त्व वा] मिलाप, साहचर्य ।

सहन (वि०) [सह् + ल्युट्] सहन करने वाला, झेलने वाला, —**नम्** 1. सहन करना, झेलना 2. सहिष्णुता, सहनशीलता ।

सहस् (पुं०)[सह् + असि] 1. मंगसिर का महीना शि० ६।४७, १६।४७ 2. जाड़े की ऋतु नपुं० 1. शक्ति, ताकत, सामर्थ्य 2. बल, हिंसा 3. विजय, जीत 4. कान्ति, चमक ।

सहसा [सह + सो + डा] 1. बलपूर्वक, जबरदस्ती 2. उतावली के साथ, अंधाधुंध, विना विचारे - सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्—कि० २।३० 2. अकस्मात्, अचानक आतंग नक्रैः सहसोत्पतद्भिः—रघु० १३।११ ।

सहसानः [सह् + असानच्] 1. मोर 2. यज्ञ, आहुति ।

सहस्यः [सहसे बलाय हितः सहस् + यत्] पौष मास, — सहस्यरात्रीरुदवासतत्परा—कु० ५।२६ ।

सहस्रम् [समानं हसति—हस् + र] हजार । सम०—**अंशु**, —**अर्चिः**,—**कर**,—**किरण**,—**दीधिति**,—**धामन्**,—**पाद** —**मरीचि**,**रश्मि** (पुं) सूर्य—श० ७।४, रघु० १३।४४, मुद्रा० ६।१७,—**अक्ष** (वि०) 1. हजार आँखों वाला 2. जागरूक, सजग (**क्षः**) 1. इन्द्र का विशेषण पुरुष का विशेषण—ऋक्० १०।९० 3. विष्णु का विशेषण,—**काण्डा** सफेद दूब,—**कृत्वस्** (अव्य०) हजार बार, **द** (वि०) उदार, **धारः** विष्णु का चक्र,—**पत्रम्** कमल—रघु० ७।११,—**बाहुः** 1. राजा कार्तवीर्य का विशेषण 2. बाण राक्षस का विशेषण 3. शिव का (कुछ के अनुसार विष्णु का) विशेषण, —**भुजः**,—**मूर्धन्**,—**मौलि** (पुं०) विष्णु का विशेषण —**रोमन्** (नपुं०) कंबल,—**वीर्या** हींग—**शिखरः** विन्ध्य पर्वत का विशेषण ।

सहस्रधा (अव्य०) [सहस्र + धाच्] हजार भागों में, हजार प्रकार से—दीर्यें किं न सहस्रधाहमथवा रामेण किं दुष्करम्—उत्तर० ६।४० ।

सहस्रशस् (अव्य०) [सहस्र + शस्] हजार-हजार करके ।

सहस्रिन् (वि) [सहस्र + इनि] 1. हजार से युक्त, हजारी, — सहस्री लक्षमीहते—पंच० ५।८२ 2. हजारों से युक्त 3. हजार तक (जुरमाना आदि)—मनु० ८।३७६, पुं० 1. हजार मनुष्यों की टोली 2. हजार सैनिकों का सेनापति ।

सहस्वत् (वि०) [सहस् + मतुप्] समर्थ, शक्तिशाली ।

सहा [सह + अच् + टाप्] 1 पृथ्वी 2. घीकुंवार का पौधा. केतकी का फूल ।

सहायः [सह एति—सह + इ + अच्] 1. मित्र, साथी—सहायसाध्याः प्रदिशन्ति सिद्धयः—कि० १४।४४, कु० ३।२१ 2. अनुयायी, अनुगामी 3. 'संधि' द्वारा बनाया गया मित्र 4. सहायक, अभिभावक 5. चक्रवाक 6. एक प्रकार का गन्धद्रव्य 7. शिव का नाम ।

सहायता,—त्वम् [सहाय + तल् + टाप्, त्व वा] 1. साथियों का समूह 2. साथ, मिलाप, मैत्री 3. सहायता, मदद —कुसुमास्तरणे सहायतां बहुशः सौम्य गतस्त्वमावयोः कु० ४।२५, रघु० ९।१९ ।

सहायवत् (वि०) [सहाय + मतुप्] 1. मित्रों से युक्त 2. मित्रता में आबद्ध, सहायवान्, सहायता प्राप्त ।

सहारः [सह + ऋ + अच्] 1. आम का पेड़ 2. विश्व का नाश, प्रलय ।

सहित (वि०) [सह् + इतच्, सह् + क्त, हितेन सह वा स + धा + क्त] सहगत या सेवित, साथ-साथ, संयुक्त, से युक्त—पवनाग्निसमागमो ह्ययं सहितं ब्रह्म यदस्त्रतेजसा रघु० ८।४, **तम्** (अव्य०) साथ-साथ, के साथ ।

सहितृ (वि०) [सह् + तृच्] सहन करने वाला, सहनशील सहिष्णु।

सहिष्णु (वि०) [सह् + इष्णुच्] 1. सहन करने के योग्य, झेलने में समर्थ—रविकिरणसहिष्णुःक्लेशलेशैरभिन्नम् —श० २।४ 2. क्षमाशील, तितिक्षु, सहनशील —सुकरस्तरुवत्सहिष्णुना रिपुरुन्मूलयितुं महानपि —कि० २।५०।

सहिष्णुता,—त्वम् [सहिष्णु + तल् + टाप्, त्व वा] 1. वहन करने की शक्ति, सहारा देने की शक्ति 2. क्षमाशीलता, तितिक्षा।

सहुरिः [सह् + उरिन्] सूर्य, स्त्री० पृथ्वी।

सहृदय (वि०) [सह हृदयेन—ब० स०) 1. अच्छे हृदय वाला, कृपालु, करुणाशील 2. निष्कपट,—यः 1. विद्वान् पुरुष 2. (गुणों की) सराहना करने वाला, रसिक, विवेकशील—इत्युपदेशं कवेः सहृदयस्य च करोति—काव्य० १, परिष्कुर्वन्त्यन्ये सहृदयधुरीणाः कतिपये—रस०।

सहृल्लेख (वि०) [हृदयस्य लेखः कालुष्यकरणम्, सह हृल्लेखेन—ब० स०] प्रष्टव्य, संदिग्ध,—खम् दूषित आहार।

सहेल (वि०) [सह हेलेन—ब० स०] क्रीडाशील, केलिपरक, विनोदप्रिय।

सहोढः [सह ऊढेन—ब० स०] चुराये गये सामान के साथ पकड़ा गया चोर।

सहोर (वि) [सह् + ओर] अच्छा, श्रेष्ठ,—रः सन्त, महात्मा।

सह्य (वि०) [सह् + यत्] 1. वहन करने के योग्य, सहारा दिये जाने के योग्य, सहन करने योग्य—अपि सह्या ते शिरोवेदना—मुद्रा० ५, मालवि० ३।४ 2. सहन किये जाने योग्य, झेले जाने योग्य—कथं तूष्णीं सह्यो निरवधिरिदानीं तु विरहः—उत्तर० ३।४४ 3. सहन करने योग्य 4. सहन करने में समर्थ, सहन करने के योग्य 5. समर्थ, शक्तिशाली,—ह्यः भारत की सात प्रधान पर्वतश्रेणियों में एक, समुद्र से कुछ दूरी पर पश्चिमी घाट का कुछ भाग, सह्याद्रिश्रेणी—रामास्त्रोत्सारितोऽप्यासीत्सह्यलग्न इवार्णवः—रघु० ४।५३, ५२, कि० १८।५, —ह्यम् 1. स्वास्थ्य, आरोग्यलाभ 2. सहायता 3. युक्तता, पर्याप्ति।

सा [सो + ड + टाप्] 1. लक्ष्मी का नाम 2. पार्वती का नाम।

सांयात्रिकः [संयात्रा + ठञ्] समुद्र-व्यापारी, पोतवणिक्, समुद्री व्यापार करने वाला—पंच० १।३१६।

सांयुगीन (वि०) [संयुगे साधुः—ख] युद्धसंबंधी, रणकुशल—रघु० ११।३०, विक्रम० ५,—नः भारी योद्धा, युद्धकुशल सैनिक—कु० २।५७।

सांराविणम् [सम्० + रु + णिनि = संराविन् + अण्] ऊँची आवाज, भारी कोलाहल—उत्तालाः कटपूतनाप्रभृतयः सांराविणं कुर्वते—मा० ५।११, भट्टि० ७।४३।

सांवत्सर (स्त्री०—री), **सांवत्सरिक** (स्त्री०—की) (वि०) [संवत्सर + अण् ठञ् वा] वार्षिक, सालाना,—कः ज्योतिषी, दैवज्ञ।

सांवादिक (वि०) (स्त्री० की) [संवाद + ठञ्] 1. (बोलचाल में) प्रचलित 2. विवादग्रस्त,—कः तार्किक, नैयायिक।

सांवृत्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [संवृत्ति + ठक्] भ्रामक, अलौकिक (घटना या तत्त्वविषयक)।

सांशयिक (वि०) (स्त्री०—की) [सशय + ठक्] 1. सन्दिग्ध 2. अनिश्चित, अस्थिरमति।

सांसारिक (वि०) (स्त्री०—की) [संसार + ठक्] दुनियावी, लौकिक—सांसारिकेषु च सुखेषु वयं रसज्ञाः —उत्तर० २।२२।

सांसिद्धिक (वि०) [संसिद्धि + ठञ्] 1. प्राकृतिक, स्वतः विद्यमान, सहज, अन्तर्हित 2. स्वभावतः प्रवृत्त, स्वतः स्फूर्त 3. स्वयंभूत 4. अतिप्राकृतिक साधनों से प्रभावित। सम० द्रवः स्वाभाविक तरलता (विप० नैमित्तिक—जनित) केवल जलसंबंधी।

सांस्थानिकः [संस्थान + ठक्] समानदेशीय, एक ही देश के निवासी।

सांस्राविणम् [सम् + स्रु + णिनि + अण्] सामान्य प्रवाह या सरिता।

सांहननिक (वि०) (स्त्री०—की) [संहनन + ठक्] शारीरिक, कायिक।

साकम् (अव्य०) [सह अकति—अक् + अमु, सादेशः] 1. के साथ, साथ मिलकर (करण० के साथ)—यान्ती गुरुजनैः साकं स्मयमाना नतांबुजा—भामि० २।१३२, १।४१ 2. उसी समय, युगपत्, एक ही समय।

साकल्यम् [सकल + ष्यञ्] समष्टि, सम्पूर्णता, किसी वस्तु का संपूर्ण या समस्त भाग—यावत्साकल्ये—नल० ३।१९, (साकल्येन) पूर्णतः, पूरी तरह से, पूर्ण रूप से—मनु० १२।२५।

साकूत (वि०) [सह आकूतेन—ब० स०] 1. साभिप्राय, सार्थक, अर्थवाला—साकूतस्मितम्—गीत० २, साकूतं वचनम् आदि 2. सप्रयोजन 3. शृंगार प्रिय, स्वेच्छाचारी,—तम् (अव्य०) 1. अर्थतः, सार्थकतापूर्वक जैसा कि 'साकूतं मां निवर्ण्य' में 2. सानुराग 3. भावुकता के साथ, मार्मिकतापूर्वक।

साकेतम् [सह आकेतेन—ब० स०] अयोध्या नगरी का नाम—साकेतनार्योऽञ्जलिभिः प्रणेमुः—रघु० १४।१३, १३।७९, १८।३५, अरुणद्यवनः साकेतम्—महा०, —ताः (पुं०, ब० व०) अयोध्या निवासी।

साकेतकः [साकेत+कन्] अयोध्या का निवासी।

साक्तुकम् [सक्तूनां समाहार—सक्तु+ठञ्] भुने हुए अन्न या सत्तू का ढेर, —कः जौ।

साक्षात् (अव्य०) [सह+अक्ष्+आति] 1. के सामने, आंखों के सामने, दृश्य रूप से, हूबहू, स्पष्ट रूप से 2. व्यक्तिशः, वस्तुतः, मूर्तरूप में साक्षात्प्रियामुपगतामपहाय पूर्वम् श० ६।१६, १।६ 3. प्रत्यक्ष, (समास में प्रायः 'शरीरी'—साक्षाद्यमः, या खुला, सीधा—तत्साक्षात्प्रतिषेधः कोपाय मा० १।११ (साक्षात्कृ 'अपनी आंखों से देखना, स्वयं जान लेना)। सम०—करणम् 1. दृष्टिगोचर करना 2. इन्द्रियग्राह्य बनाना 3. अन्तर्ज्ञानमूलक प्रत्यक्षज्ञान,—कारः प्रत्यक्षज्ञान, समक्ष, जानकारी।

साक्षिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सह अक्षि अस्य, साक्षाद् द्रष्टा साक्षी वा सह+अक्ष+इनि] 1. देखने वाला, अवलोकन करने वाला, सबूत देने वाला, पुं० गवाह, अवेक्षक, चश्मदीद गवाह, आंखों देखी बात बताने वाला, फलं तपः साक्षिषु दृष्टमेष्वपि कु० ५।६०।

साक्ष्यम् [साक्षिन्+ष्यञ्] 1. गवाही, शहादत—तमेव चाधाय विवाहसाक्ष्ये रघु० ७।२० 2. अभिप्रमाण, सत्यापन।

साक्षेप (वि०) [सह आक्षेपेण ब० स०] जिसमें आक्षेप या व्यंग्य भरा हो, दुर्वचनयुक्त।

साखेय (वि०) (स्त्री०—यी) [सखि+ढञ्] 1. मित्रसंबन्धी 2. मैत्रीपूर्ण, सौहार्दपूर्ण।

साख्यम् [सखि+ष्यञ्] मित्रता, सौहार्द।

सागरः [सगरेण निर्वृत्तः—अण्] 1. समुद्र, उदधि सागरः सागरोपमः (आलं० से भी) दयासागर, विद्यासागर आदि, तु० सगर 2. चार या सात की संख्या 3. एक प्रकार का हरिण। सम०—अनुकूल (वि०) समुद्र के किनारे स्थित,—अन्त (वि०) समुद्र की सीमा से युक्त, जिसके सब ओर समुद्र छाया है, —अम्बरा, —नेमिः मेखला पृथ्वी, —आलयः वरुण का नाम, —उत्थम् समुद्रीनमक,—गा गंगा,—गामिनी नदी।

साग्नि (वि०) [सह अग्निना ब० स०] 1. अग्नि सहित 2. यज्ञाग्नि रखने वाला।

साग्निक (वि०) [सह अग्निना ब० स० कप्] 1. यज्ञाग्नि रखने वाला 2. अग्नि से संबद्ध, —कः यज्ञाग्नि रखने वाला गृहस्थ।

साग्र (वि०) [सह अग्रेण—ब० स०] 1. समस्त 2. अतिरिक्त समेत, अपेक्षाकृत अधिक रखने वाला।

साङ्कर्यम् [सङ्कर+ष्यञ्] मिश्रण, सम्मिश्रण, गड्डमड्ड किया हुआ या मिलाया हुआ घोल।

साङ्कल (वि०) (स्त्री०—ली) [सङ्कल+ष्यञ्] जोड़ या संकलन से उत्पन्न।

साङ्काश्यम्,—श्या जनक के भ्राता कुशध्वज की राजधानी का नाम।

साङ्केतिक (वि०) (स्त्री०—की) [संकेत+ठक्] 1. प्रतीकात्मक, संकेतपरक 2. व्यवहार-सिद्ध, रीत्यनुसार।

साङ्क्षेपिक (वि०) (स्त्री०—की) [संक्षेप+ठक्] संक्षिप्त, संकुचित, छोटा किया हुआ।

साङ्ख्य (वि०) [सङ्ख्या+अण्] 1. संख्या संबंधी 2. आकलन कर्ता, गणक 3. विवेचक 4. विचारक, तार्किक, तर्क कर्ता—त्वं गतिः सर्वसाङ्ख्यानां योगिनां त्वं परायणम् —महा०,—ख्यः—ख्यम् छः हिन्दू दर्शनों में से एक जिसके प्रणेता कपिल मुनि माने जाते हैं (इस शास्त्र का नाम 'सांख्य दर्शन' इस लिए पड़ा कि इसमें पच्चीस तत्त्व या सत्य सिद्धांतों का वर्णन किया गया है, इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य पच्चीसवें तत्व अर्थात् पुरुष या आत्मा—का अन्य चौबीस तत्त्वों के शुद्ध ज्ञान द्वारा तथा आत्मा की उनसे समुचित भिन्नता दर्शाकर, उसे सांसारिक बंधनों से मुक्त कराना है। सांख्य शास्त्र समस्त विश्व को निर्जीव प्रधान या प्रकृति का विकास मानता है, जब कि पुरुष (आत्मा) सर्वथा निर्लिप्त एक निष्क्रिय दर्शक है। संश्लेषणात्मक होने के कारण वेदान्त से इसकी समानता, तथा विश्लेषणपरक न्याय और वैशेषिक से भिन्नता कही जाती है। परन्तु वेदान्त से भिन्नताकी सब से बड़ी बात यह है कि सांख्य शास्त्र दो (द्वैत) सिद्धान्तों का समर्थक है जिनको वेदान्त नहीं मानता। इसके अतिरिक्त सांख्यशास्त्र परमात्मा को विश्व के स्रष्टा और नियन्त्रक के रूप में नहीं मानता, जिनकी कि वेदान्त पुष्टि करता है), —ख्यः सांख्य शास्त्र का अनुयायी भग० ३।५, ५।११। सम० प्रसादः, —मुख्यः शिव के विशेषण।

साङ्ग (वि०) [सह अङ्गैः—ब० स०] 1. अंगों सहित 2. प्रत्येक भाग से पूर्ण 3. सहायक अंगों से युक्त।

साङ्गतिक (वि०) (स्त्री०—की) [सङ्गति+ठक्] समाज या संघ से संबंध रखने वाला, साहचर्यशील, —कः दर्शक, अतिथि, नवागंतुक।

साङ्गमः [सङ्गम+अण्] मिलाप, मिलन तु० संगम्।

साङ्ग्रामिक (वि०) (स्त्री०—की) [संग्राम+ठञ्] युद्ध संबंधी, योद्धा, जंगजू, सैनिक, सामरिक—उत्तर० ५।१२, —कः सेनाध्यक्ष, सेनापति।

साचि (अव्य०) [सच्+इण्] टेढ़ेपन से, तिरछेपन से, तिर्यक्, वक्रगति से, टेढ़े-टेढ़े,—साचि लोचनयुगं नमयन्ती —कि० ९।४४, १०।५७, (साचीकृ मोड़ना, एक ओर झुकाना, टेढ़ा करना—निनाय साचीकृतचारुवक्त्रः —रघु० ६।१४, कु० ३।८, साचीकरोत्याननम् —तालवि० ४।१४।

साचिव्यम् [सचिव+ष्यञ्] 1. मंत्रालय, मंत्रित्व 2. मंत्रिमंडल, प्रशासन 3. मैत्री ।

साजात्यम् [सजाति+ष्यञ्] 1. जाति की समानता, वर्ग, श्रेणी या प्रकार की समानता 2. जाति का समुदाय, समजातीयता ।

साञ्जनः [सह अञ्जनेन ब० स०] छिपकली ।

साट् (चुरा० उभ० साटयति–ते] बतलाना, प्रकट करना ।

साटोप (वि०) [सह आटोपेन—ब० स०] 1. घमंड में भरा या फूला हुआ, अहङ्कारी 2. गौरवशाली, शानदार 3. उभरा हुआ, बढ़ा हुआ (जैसे पानी से) —पंच० १,—पम् घमंड के साथ, हेकड़ी के साथ, अकड़ कर, इठला कर, रौब से ।

सात् (अव्य०) तद्धित का एक प्रत्यय जो किसी शब्द के साथ इसलिए जोड़ा जाता है कि शब्द से अभिहित वस्तु के साथ किसी वस्तु का पूर्ण परिवर्तन हो जाता है, या वह वस्तु पूर्ण रूप से तदधीन या उसके नियंत्रण में हो जाती है, भस्मसात् भू बिल्कुल राख बन जाना, अग्निसात् कृत्वा मालवि० ५, भस्मसात्कृतवतः पितृद्विषः पात्रसाच्च वसुधां ससागराम्—रघु० ११।८६, विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृतः नै० १।१६, इसी प्रकार ब्राह्मणसात्, राजसात् आदि०—शि० १४।३६ ।

सातत्यम् [सतत+ष्यञ्] निरन्तरता, स्थायित्व ।

सातिः (स्त्री०) [सन्+क्तिन्] 1. भेंट, उपहार, दान 2. प्राप्त करना, हासिल करना 3. सहायता 4. विनाश 5. अन्त, उपसंहार 6. तेज या तीव्र वेदना ।

सातीनः, सातीनकः [सतीन+अण्, सातीन+कन्] मटर ।

सात्त्विक (वि०) (स्त्री०—की)[सत्त्व+ठञ्] 1. वास्तविक, आवश्यक 2. सत्य, असली, प्राकृतिक 3. ईमानदार, निष्कपट, अच्छा 4. सद्गुणी, मिलनसार 5. बलशाली 6. सत्त्वगुण से युक्त 7. सत्त्वगुण से संबद्ध या उत्पन्न—ये च सात्त्विका भावाः—भग० ७।१०, १४।१६ 8. आन्तरिक भावनाओं से उत्पन्न (जैसे प्रेम आदि से) आन्तरिक तद्भूरिसात्त्विकविकारमपास्तधैर्यमाचार्यकं विजयि मान्मथमाविरासीत् मा० १।२६, कः (आन्तरिक) भावनाओं या संवेगों का बाह्य संकेत, काव्य में भावों का एक प्रकार (भाव आठ हैं : स्तम्भः स्वेदोऽथ रोमाञ्चः स्वरभङ्गोऽथ वेपथुः । वैवर्ण्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्त्विकाः स्मृताः ।। —सा० द० ११६ 2. ब्राह्मण 3. ब्रह्मा ।

सात्यकिः [सत्यक+इञ्] यदुवंशी योद्धा जो कृष्ण का सारथि था तथा जिसने महाभारत के युद्ध में पांडवों का पक्ष लिया ।

सात्यवतः, सात्यवतेयः [सत्यवती+अण्, ढक् वा] व्यास मुनि का मातृपरक नाम ।

सात्वत् (पुं०) [सातयति सुखयति–सात्+क्विप्, सात् परमेश्वरः, स उपास्यत्वेन अस्ति अस्य–सात्+मतुप्, मस्य वः] (कृष्ण आदि का) अनुयायी, उपासक ।

सात्वतः (पुं०) 1. विष्णु का नाम 2. बलराम का नाम 3. जाति से बहिष्कृत वैश्य का पुत्र, ताः (पुं०, ब० व०) एक जाति का नाम—शि० १६।१४ ।

सात्वती (स्त्री०) 1. चार प्रकार की नाट्यशैलियों में से एक— दे० सा० द० ४१६ 2. शिशुपाल की माता का नाम—शि० २।११ ।

सादः [सद्+घञ्] 1. बैठना, बसना 2. क्लान्ति, थकावट उदितोरुसादमतिवेपथुमत् शि० ९।७७ 3. क्षीणता, दुबला-पतलापन, कृशता—शरीरसादादसमग्रभूषणा रघु० ३।२ 4. ध्वंस, क्षय, लोप, विनाश, विश्रांति—गतिविभ्रमसादनीरवा—रघु० ८।५६, नलोद० ३।२४ 5. पीडा, संताप 6. स्वच्छता, पवित्रता ।

सादनम् [सद्+णिच्+ल्युट्] 1. थकाना, क्लान्त करना 2. नष्ट करना 3. थकावट, क्लान्ति 4. घर, निवासस्थान ।

सादिः [सद्+इण्] 1. सारथि, रथवान् 2. योद्धा ।

सादिन् (वि०) [सद्+णिच्+णिनि] 1. बैठा हुआ 2. थकाने वाला, नष्ट करने वाला,—पुं० 1. घुड़सवार 2. हाथी पर सवार या रथ में बैठा हुआ ।

सादृश्यम् [सदृश+ष्यञ्] 1. समानता, मिलता-जुलतापन, समरूपता सति पुनर्नामधेयसादृश्यानि श० ७, तवाक्षिसादृश्यमिव प्रयुञ्जते—कु० ५।३५, ७।१६, रघु० १।४०, १५।६७ 2. प्रतिलिपि, आलोकचित्र, प्रतिमा—मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती मेघ० ८४ ।

साद्यन्त (वि०) [सह आद्यन्ताभ्याम्—ब० स०] पूरा, समस्त ।

साद्यस्क (वि०) (स्त्री०-स्की) [सद्यस्क+अण्] शीघ्र होने वाला, जिसमें विलंब न हो ।

साध् i (स्वा० पर० साध्नोति) 1. पूरा करना, समाप्त करना, संपन्न करना 2. जीतना ।

ii (दिवा० पर० साध्यति) पूरा किया जाना, निष्पन्न किया जाना, प्रेर० 1. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, घटित करना, सम्पन्न करना—अपि साधय साधयेप्सितं नै० २।६२, कु० २।३३, रघु० ५।२५ 2. पूरा करना, समाप्त करना, उपसंहार करना 3. उपलब्ध करना, प्राप्त करना, पाना—रघु० १७।३८, मनु० ६।७५ 4. साबित करना, सिद्ध करना 5. दमन करना, पराजित करना, जीतना (शत्रु आदि का), वश में करना—न हि साम्ना न दानेन न भेदेन च पाण्डवाः, शक्याः साधयितुम्—महा० 6. मार

डालना, नष्ट करना -- सुग्रीवान्तकमासेदुः साधयिष्याम इत्यरिम्—भट्टि० ७।३१ 7. समझना, जानना 8. चिकित्सा करना,स्वस्थ करना 9. जाना, अलग होना, अपने रास्ते लगना, - साधयाम्यहमविघ्नमस्तु ते–रघु० ११।९१, श० १।७–प्रायेण ण्यन्तकः साधिर्गमेरर्थे प्रयुज्यते–सा० द० ३।४० 10. (ऋण की भांति) उगाहना 11. पूर्ण कर देना, प्र–(प्रेर०) 1. आगे बढ़ना, उन्नति करना 2. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना 3. उपलब्ध करना, प्राप्त करना 4. पराभूत करना, दवाना 5. वस्त्र धारण करना, सजाना, सम् , 1. सफल होना (आ०) 2. निष्पन्न करना, पूरा करना —मनु० २।१०० 3. सुरक्षित करना, प्राप्त करना 4. बस जाना 5. पुनः प्राप्त करना मनु० ८।५० 6. तय किया जाना या चुकता किया जाना—मनु० ८।२१३ 7. नष्ट करना, मार डालना 8. बुझाना।

साधक (वि०) (स्त्री०—धका—धिका) [साध्+ण्वुल्, सिध्+णिच्+ण्वुल् साधादेशः वा] 1. संपन्न करने वाला, पूरा करने वाला, कार्यान्वित करने वाला, पूर्ण करने वाला 2. दक्ष, प्रभावशाली—कु० ३।१२ 3. कुशल, निपुण 4. जादू से कार्य में परिणत करने वाला, ऐन्द्रजालिक 5. सहायक, मददगार।

साधन (वि०) (स्त्री०–नी) [सिध्+णिच्+ल्युट्, साधादेशः] निष्पन्न करने वाला, कार्यान्वित करने वाला, —नम् 1. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, अनुष्ठान करना—जैसा कि 'स्वार्थसाधनम्' में 2. पूरा करना, सम्पन्नता किसी पदार्थ की पूर्ण अवाप्ति -प्रजार्थसाधने तौ हि पर्यायोद्यतकार्मुकौ - रघु० ४।१६ 3. उपाय, तरकीब, किसी कार्य को सम्पन्न करने की तदबीर—शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्,—कु० ५।३३, ५२, रघु० १।९, ३।१२, ४।३६, ६२ 4. उपकरण, अभिकर्ता, कुठारः छिदिक्रियासाधनम् · 5. निमित्तकारण, स्रोत, सामान्य हेतु 6. करण कारक 7. उपकरण, औज़ार 8. यन्त्र, सामग्री 9. मूल पदार्थ, संघटक तत्त्व 10 सेना या उसका अंग—मनु० ५।१० 11. सहायता, मदद, सहारा 12. प्रमाण, सिद्ध करना, प्रदर्शन करना 13. अनुमान की प्रक्रिया में हेतु, कारण, जो हमें किसी परिणाम पर पहुँचाये—साध्ये निश्चितमन्वयेन घटितं बिभ्रत् सपक्षे स्थितिं, व्यावृत्तं च विपक्षतो भवति यत्तत्साधनं सिद्धये - मुद्रा० ५।१० 14. दमन करना, जीत देना 15. जादूमंत्र से वश में करना 16. जादू या मंत्र से किसी कार्य को निष्पन्न करना 17. 'स्वस्थ करना, चिकित्सा करना 18. वध करना, विनाश करना फलं च तस्य प्रतिसाधनम्–कि० १४। १७ 19. संराधन, प्रसादन, तुष्टीकरण 20, बाहर जाना, कूच करना, प्रस्थान 21. अनुगमन, पीछे चलना 22. साधना, तपस्या 23 मोक्ष प्राप्त करना 24. औषधि निर्माण, भेषज, जड़ी-बूटी 25. (विधि में) ऋण आदि की प्राप्ति के लिए आदेश, जुर्माना करना 26. शरीर का कोई अवयव 27 शिश्न, लिंग 28. औड़ी, ऐन 29. दौलत 30 मैत्री 31 लाभ, फ़ायदा 32. शव की दाह क्रिया 33. मृतकसंस्कार 34 धातुओं का मारण या जारण। सम०—क्रिया समापिका क्रिया,—पत्रम् लिखित प्रमाण।

साधनता,—त्वम् [साधन+तल्+टाप्, त्व वा] उपायवत्ता, उद्देश्यपूर्ति का जरिया होना—प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता—शि० ९।६।

साधना [सिध्+णिच्+युच्+टाप्, साधादेशः] 1. निष्पन्नता, पूरा करना, पूर्ति 2. पूजा, अर्चा 3. संराधन, प्रसादन।

साधन्तः [साध्+झच्, अन्तादेशः] भिक्षुक, भिखारी।

साधर्म्यम् [सधर्म+ष्यञ्] 1. समानता, कर्तव्य की एकता, समानधर्मता—पञ्चमं लोकपालानामूचुः साधर्म्ययोगतः —रघु० १७।७८ 2. प्रकृति की समानता, समान चरित्र, समता, गुणों की समानता—साधर्म्यमुपमा भेदे — काव्य० १०, भग० १४।२, भाषा० १२।

साधारण (वि०) (स्त्री०–णा,–णी) [सह धारणया–ब० स० सधारण+अण्] 1. (दो या दो से अधिक अंकों में) समान, संयुक्त,—साधारणोऽयं प्रणयः–श० ३, साधारणो भूषणभूष्यभावः–कु० १।४३,रघु० १६।५,विक्रम० २।१६ 2. मामूली, सामान्य -- साधारणी न खलु बाधा भवस्य–अश्व० १०, 3. सार्वजनिक, विश्वव्यापी 4. मिश्रित, मिला-जुला समान —उत्कण्ठासाधारणं परितोषमनुभवामि–श० ४, वीज्यते स हि संसुप्तः श्वाससाधारणानिलैः —कु० २।४२ 5. तुल्य, सदृश, समान 6. (तर्क० में) एक से अधिक निदर्शनों से संबद्ध, हेत्वाभास के तीन प्रभागों में से एक, अनैकान्तिक, —णम् 1. सामान्य या सार्वजनिक नियम, सार्वजनिक विधि या नियम 2. जातिगत या निर्विशेष गुण। सम० - धनम् संयुक्त संपत्ति, —स्त्री सामान्य स्त्री, वेश्या, रंडी।

साधारणता, त्वम् [साधारण+तल्+टाप्, त्व वा] 1. सामुदायिकता, विश्वव्यापकता 2. संयुक्त हित।

साधारण्यम् [साधारण+ष्यञ्] समानता—दे० साधारणता।

साधिका [सिध्+णिच्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्, साधादेशः] 1. कुशल या निपुण स्त्री 2. गहरी नींद।

साधित (भू० क० कृ०) [साध्+क्त] 1. निष्पन्न, कार्यान्वित, अवाप्त 2. पूरा किया हुआ, समाप्त 3. सिद्ध, प्रदर्शित 4. प्राप्त, उपलब्ध 5. उन्मुक्त 6. वश में किया हुआ, दमन किया हुआ 7. पूरा किया

हुआ, पुनः प्राप्त 8. दण्डित 9. दापित 10. (दंड या जुर्माना) दिया हुआ।

साधिमन् (पुं०) [साधु+इमनिच्] भद्रता, श्रेष्ठता, उत्तमता।

साधिष्ठ (वि०) [साधु या वाढ की उत्तमावस्था—अतिशयेन साधुः—इष्ठन्] 1. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, उचिततम 2. अत्यंत मज़बूत, कठोर या दृढ़।

साधीयस् (वि०) [साधु+ईयसुन्, उकारलोपः, साधु या बाढ़ की मध्यमावस्था] 1. अधिक अच्छा, अधिक श्रेष्ठ —भामि० १।८८ 2. कठोरतर, अपेक्षाकृत मज़बूत।

साधु (वि०) (स्त्री०—धु,—ध्वी) [साध्+उन, मध्य० अ० साधीयस्, उत्त० अ० साधिष्ठ] 1. उत्तम, श्रेष्ठ, पूर्ण -यद्यत्साधु न चित्रे स्यात्क्रियते तत्तदन्यथा -श० ६।१३, आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् -१।२ 2. योग्य, उचित, सही जैसा कि 'साधुवृत्त, साधुसमाचार' में 3. गुणी, पुण्यात्मा, सम्माननीय, पवित्रात्मा 4. (क) कृपालु, दयालु —रघु० २।२८, पंच० १।२४७ (ख) शिष्टाचारी (अधि० के साथ) मातरि साधुः—सिद्धा० 5. शुद्ध, पवित्र, गौरव युक्त या श्रेष्ठ (जैसे कि भाषा) 6. सुखकर, रुचिकर, सुहावना—अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा—कि० १।४ 7. भद्र, कुलीन, सत्कुलोद्भव,—धुः 1. भद्रपुरुष, पुण्यात्मा—रघु० १३।५५, २।६२, मेघ० ८० 2. ऋषि, मुनि, संत—साधोः प्रकोपितस्यापि मनो नायाति विक्रियाम् -सुभा० 3. सौदागर -कि० २।७३ 4. जैनसाधु 5. सूदखोर, महाजन (अव्य०) 1. अच्छा, बहुत अच्छा, शाबास, बढ़िया -साधु गीतम् -श० १, साधु रे पिंगलवानर साधु—मालवि० ४ 2. काफी, बस। सम० —धी (वि०) अच्छे स्वभाव का,—वादः 'शाबास' की ध्वनि, 'धन्य' की ध्वनि—शि० १८।५५,—वृत्त (वि०) 1. अच्छे चालचलन का, खरा, सद्गुणी—प्रायेण साधुवृत्तानामस्थायिन्यो विपत्तयः—भर्तृ० २।८५, (यहाँ दूसरा अर्थ भी अभिप्रेत है) 2. खूब गोल-गोल किया हुआ (त्तः) सद्गुणी (सद्गुणी (त्तम्) अच्छा आचरण, सद्गुण, पावनता, सचाई, ईमानदारी, इसी प्रकार 'साधु वृत्ति'।

साधृतम् [सह आधृतेन—ब० स०] 1. हाट, दुकान 2. छतरी 3. मोरों का झुंड।

साध्य (वि०) [साध्+णिच्+यत्] 1. कार्यान्वित होने योग्य, निष्पन्न होने योग्य, किया जाने योग्य —साध्ये सिद्धिर्विधीयताम् हि० २।१५ 2. जो हो सके, जो किया जा सके, प्राप्य 3. सिद्ध किये जाने योग्य, प्रदर्शनीय आप्तवागनुमानाभ्यां साध्यं त्वां प्रति का कथा —रघु० १०।२८ 4. स्थापित करने योग्य, पूरा किये जाने योग्य 5. अनुमेय, उपसंहार्य, —अनुमानं तदुक्तं यत्साध्यसाधनयोर्वचः—काव्य० १०, जीते जाने के योग्य, वश्य, जेय—कु० ३।१५ 7. जिसकी चिकित्सा हो सके 8. वध किये जाने योग्य, विनष्ट किये जाने योग्य,—ध्यः दिव्य प्राणियों का एक विशेष वर्ग —तु० मनु० १।२२, ३।१९५ 2. देवता 3. एक मन्त्र का नाम,—ध्यम् 1. निष्पन्नता, पूर्णता 2. वह बात जो अभी सिद्ध की जाती है, प्रमाणित की जाने वाली वस्तु 3. (तर्क० में) प्रस्ताव का विधेय, अनुमानप्रक्रिया की बड़ी बात—साध्ये निश्चितमन्वयेन घटितम्……, यत्साध्यं स्वयमेव तुल्यमुभयोः पक्षे विरुद्धं च यत्—मुद्रा० ५।१० —अभावः मुख्य शर्त या बंधन की कमी,—सिद्धिः (स्त्री०) 1. निष्पन्नता 2. उपसंहार।

साध्यता [साध्य+तल्+टाप्] 1. संभावना, शक्यता 2. (रोग का) अच्छा किये जाने की स्थिति में होना। सम०—अवच्छेदकम् जिस रूप से किसी के गुणों का पता लगे, लक्षण की जानकारी हो, या मुख्य शर्त का पता चले।

साध्वसम् [साधु+अस्+अच्] 1. डर, आतंक, भय, त्रास,—कुसुमस्तेयसाध्वसात्—कु० २।३५, ३।५१ 2. जाड्य 3. विक्षोभ, अस्तव्यस्तता।

साध्वी [साधु+ङीप्] 1. सती स्त्री 2. पतिव्रता स्त्री 3. एक प्रकार की जड़।

सानन्द (वि०) [सह आनन्देन -ब० स०] प्रसन्न, खुश।

सानसिः [सन्+इण्, असुक्] सोना, सुवर्ण।

सानिका, सानेयिका, सानेयी [सन्++ण्वुल्+टाप्, इत्वम्; सानेयी+कन्+टाप्, ह्रस्वः; सानेय+ङीप्] पीपनी, बाँसुरी।

सानु (पुं०, नपुं०) [सन्+ञुण्] 1. चोटी, शिखर, शैल-शिला—सानूनि गन्धः सुरभीकरोति—कु० १।९, मेघ० २, कु० १।६, कि० ५।३६ 2. पहाड़ की चोटी पर समतल भूमि, पठार 3. अंखुवा, अंकुर 4. वन, जंगल 5. सड़क 6. सतह, बिन्दु, किनारा 7. चट्टान 8. हवा का झोंका 9. विद्वान् पुरुष 10. सूर्य।

सानुमत् (पुं०) [सानु+मतुप्] पहाड़,—ती एक अप्सरा का नाम—श० ६।

सानुक्रोश (वि०) [अनुक्रोशेन सह—ब० स०] दयालु, करुणाकर।

सानुनय (वि०) [सह अनुनयेन —ब० स०] सभ्य, शिष्ट।

सानुबन्ध (वि०) [सह अनुबन्धेन—ब० स०] क्रमबद्ध, अविच्छिन्न।

सानुराग (वि०) [सह अनुरागेण—ब० स०] आसक्त, अनुरक्त, प्रेम में मुग्ध।

सान्तपनम् [सम्+तप्+ल्युट्+अण्] एक कठोर व्रत —तु० मनु० ११।२१२।

सान्तर (वि०) [सह अन्तरेण ब-स०] 1. अंतर या अवकाशयुक्त 2. झीना।

सान्तानिक (वि०) (स्त्री०—की) [सन्तान+ठक्] 1. फैलने वाला, विस्तारयुक्त (जैसे कि वृक्ष) 2. संतानसंबंधी 3. सन्तान नामक वृक्षसंबंधी,—कः वह ब्राह्मण जो संतान की इच्छा से विवाह करना चाहता है।

सान्त्व् (चुरा० उभ० सान्त्वयति - ते) शान्त करना, खुश करना, सुलह करना, ढाढ़स बँधाना, आराम पहुँचाना —भट्टि० ३।२३।

सान्त्वः, सांत्वनम्,—ना [सान्त्व्+घञ्, ल्युट् वा] 1. खुश करना, शान्त करना, ढाढस बँधाना 2. सुलह करना, मृदु या हलका उपाय 3. कृपापूर्ण या ढाढस बँधाने वाले शब्द 4. मृदुता 5. अभिवादन एवं कुशलक्षेम।

सान्दीपनिः [सन्दीपन+इञ्] एक ऋषि का नाम (विष्णुपुराण के अनुसार वह कृष्ण और बलराम के आचार्य थे। गुरुदक्षिणा में उन्होंने अपने पुत्र को जिसे पंचजन नामक राक्षस उठा कर पानी में घुस गया था, वापिस माँगा। श्रीकृष्ण ने पानी में गोता लगाया। वहाँ उस राक्षस को मार डाला, और गुरु के पुत्र को लाकर उनके सुपुर्द कर दिया)।

सान्दृष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [सन्दृष्टि+ठक्] देखते ही देखते होने वाला, तात्कालिक,—कम् तात्कालिक परिणाम।

सान्द्र (वि०) [सह अन्द्रेण—ब० स०] 1. पासपास, सटाहुआ, अनन्तराल 2. मोटा, घन, ठोस, गाढ़ा - दुर्वर्णभित्तिरिह सान्द्रसुधासवर्णा —शि० ४।२८, ६४, ९।१५, रघु० ७।४१, ऋतु० १।२० 3. गुच्छा बना हुआ, संगृहीत 4. हृष्टपुष्ट, मजबूत, हट्टाकट्टा 5. अत्यधिक, विपुल, प्रचुर—सान्द्रानन्दक्षुभितहृदयप्रस्रवेणेव सिक्तः उत्तर० ६।२२ 6. उग्र, प्रखर, प्रचण्ड—व्याप्तान्तराः सान्द्रकुतूहलानाम्—रघु० ७।११, शि० ९।३७ 7. चिकना, तैलाक्त, चिपचिपा 8. स्निग्ध, मृदु, सौम्य 9. सुखकर, रुचिकर,—द्रः राशि, ढेर।

सान्धिकः [सन्धां सुराच्यावनं शिल्पं वेत्ति—ठक्] कलाल, शराब खींचने वाला।

सान्धिविग्रहिकः [सन्धिविग्रह+ठक्] विदेश मंत्री (राज्यसचिव) (जो संधि और विग्रह का निर्णय करे)।

सान्ध्य (वि०) (स्त्री०—ध्यी [सन्ध्या+अण्] सायंकालीन, साँझ-संबंधी सान्ध्यं तेजः प्रतिनवजवापुष्परक्तं दधानः —मेघ० ३६, कि० ५।८, रघु० ११।६०, शि० ९।१५।

सान्नहनिक (वि०) (स्त्री०—की) [सन्नहन+ठक्] 1. कवचधारी 2. शस्त्र उठाने के लिए कहने वाला, युद्ध के लिए तैयार होने को प्रोत्साहन देने वाला —शि० १५।७२,—कः कवचधारी।

सान्नाय्यः [सम्+नी+ण्यत्, नि०] घीयुक्त कोई पदार्थ जो आहुति के रूप में अग्नि में डाला जाय—शि० ११।४१।

सान्निध्यम् [सन्निधि+ष्यञ्] 1. पड़ोस, सामीप्य—वदनामलेन्दुसान्निध्यतः मा० ३५ 2. उपस्थिति, हाजरी — रघु० ४।६, ७।३, कु० ७।३३।

सान्निपातिक (वि०) (स्त्री०—की) [सन्निपात+ठक्] 1. विविध 2. जटिल 3. कफ, पित्त, वायु तीनों ही दोष जिसके विकृत हो गये हों—कु० २।४८, पंच० १।१२७।

सान्न्यासिक [संन्यासः प्रयोजनमस्य—ठक्] 1. अपने धार्मिक जीवन के चौथे आश्रम में विद्यमान ब्राह्मण देखो सन्न्यासिन् 2. साधु।

सान्वय (वि०) [सह अन्वयेन - ब० स०] आनुवंशिक।

सापत्न (वि०) (स्त्री०—त्नी) [सपत्नी+अण्] सौतेली पत्नी से उत्पन्न, —त्नाः (पुं० ब० व०) एक ही पति से भिन्न भिन्न पत्नियों के बच्चे।

सापत्न्यम् [सपत्नी+ष्यञ्] 1. सौतेली पत्नी की दशा 2. प्रतिद्वन्द्विता, महत्त्वाकांक्षा, शत्रुता,—त्न्यः 1. सौतेली पत्नी का पुत्र 2. शत्रु।

सापराध (वि०) [सह अपराधेन—ब० स०] अपराधी, जुर्म करने वाला, मुजरिम।

सापिण्ड्यम् [सपिण्ड+ष्यञ्] समान पितरों को पिंडदान के संबंध, बंधुता, रक्तसम्बन्ध।

सापेक्ष (वि०) [सह अपेक्षया—ब० स०] लिहाज करने वाला, निर्भर।

साप्तपद (वि०) (स्त्री०—दी) **साप्तपदीन** (वि०) [सप्तपद+अण् खञ् वा] सात पग साथ-साथ चलने से बनी हुई (मैत्री)—यतः सतां सन्नतगात्रि सङ्गतं मनीषिभिः साप्तपदीनमुच्यते—कु० ५।३९ (यहाँ द्वितीयार्थ, अधिक अच्छा लगता है, पंच० २।४३, ४।१०३, —दम्, —नम् 1. विवाह के अवसर पर दूल्हा व दुल्हिन द्वारा यज्ञाग्नि की सात प्रदक्षिणाएँ करना (यह विवाहसम्बन्ध को अटूट बना देती हैं) 2. मित्रता, घनिष्ठता।

साप्तपौरुष (वि०) (स्त्री०—षी) [सप्तपुरुष+अण्] सात पीढ़ियों तक फैला हुआ—मनु० ३।१४६।

साफल्यम् [सफल+ष्यञ्] 1. सफलता, उपयोगिता, उपजाऊपन 2. लाभ, फायदा 3. कामयाबी।

साब्दा (स्त्री०) एक प्रकार का अंगूर।

साभ्यसूय (वि०) [सह अभ्यसूयया—ब० स०] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु।

साम् (चुरा० उभ० सामयति-ते) खुश करना, ढाढस बंधाना, तसल्ली देना।

सामकम् [समक+अण्] मूल ऋण, -कः साण, (वह पत्थर जिस पर औजार तेज किये जाते हैं)।

सामग्री [समग्रस्य भावः ष्यञ्, स्त्रीत्वपक्षे ङीषि यलोपः] 1. सामान का संग्रह, या संघात, उपकरण, घर का सामान —भर्तृ० ३।१५५ 2. सामान. माल-असबाब।

सामग्र्यम् [समग्र+ष्यञ्] 1. समग्रता, पूर्णता, समूचापन, समष्टि—प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः—कु० ३।२८ 2. अनुचरवर्ग, नौकर-चाकर 3. उपकरणों का संग्रह, औजारों का भण्डार 4. भण्डार, सामान।

सामञ्जस्यम् [समञ्जस+ष्यञ्] 1. योग्यता, संगति, औचित्य, तु० असमञ्जस 2. यथार्थता. शुद्धता।

सामन् (नपुं०) [सो+मनिन्] 1. खुश करना, शान्त करना, आराम पहुँचाना, तसल्ली देना 2. सुलह करना, शान्ति के उपाय, समझौता-वार्ता करना (राजा के द्वारा अपने शत्रु के प्रति किये जाने वाले चार साधनों में सबसे पहला)—सामदण्डौ प्रशंसन्ति नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये—मनु० ७।१०९ 3. शान्तिदायक या मृदु उपाय, शान्त या ढाढस बंधाने वाला आचरण, मृदुवचन —पंच० ४।२६, ४८ 4. मृदुता, कोमलता 5. छन्दोबद्ध सूक्त या प्रशंसात्मक गान सप्तसामोपगीतं त्वाम् —रघु० १०।२१, भग०. १०।३५ 6. सामवेद का मंत्र 7. सामवेद (सूर्य से उत्पन्न कहा जाता है—तु० मनु० १।२३)। सम०—उद्भवः हाथी,—उपचारः, —उपायः मृदु और शान्ति देने वाले उपाय, कोमल या शान्त युक्तियाँ, -गः सामवेद के मंत्रों का गायन करने वाला ब्राह्मण, -ज, -जात (वि०) 1. सामवेद से उत्पन्न 2. शान्ति के उपायों से उद्भूत (-जः,-तः) हाथी—शि० १२।११, १८।३३, -योनिः 1. ब्राह्मण 2. हाथी, -वादः कृपावचन, मधुरशब्द,—शि० २।५५, —वेदः चारों में से तीसरा वेद।

सामन्त (वि०) [समन्त+अण्] 1. सीमावर्ती, सरहदी, पड़ोसी 2. विश्वव्यापक, -तः 1. पड़ोसी 2. पड़ोस का राजा 3. मांडलिक, कर देने वाला राजा सामन्तमौलिमणिरञ्जितपादपीठम् -विक्रम० ३।१९, रघु० ५।२८, ६।३२ 4. नेता, नायक, -तम् पड़ोस।

सामयिक (वि०) (स्त्री०—की) [समय+ठञ्] 1. प्रथानुसारी, परम्परागत 2. सम्मत, प्रतिज्ञात 3. करार के अनुरूप, नियत समय का पालन करने वाला,—देवि, सामयिका भवामः—मालवि० १ 4. समय पालक वक्त का पाबन्द 5. ऋतु के अनुकूल, समय पर होने वाला —कि० २।१० 6. नियत समय पर होने वाला 7. अस्थायी। सम०—अभावः अस्थायी अनस्तित्व।

सामर्थ्यम् [समर्थ+ष्यञ्] 1. शक्ति, बल, धारिता, ताकत 2. उद्देश्य की समानता 3. अर्थ की एकता 4. पर्याप्ति, योग्यता 5. शब्दार्थ शक्ति, शब्द की अर्थमूलक शक्ति 6. हित, लाभ 7. दौलत।

सामवायिक (वि०) (स्त्री०—की) [समवाये प्रसृतः ठञ्] 1. किसी संग्रह या संघात से संबद्ध 2. अटूट सम्बन्ध से युक्त, —कः मंत्री, पार्षद।

सामाजिक (वि०) (स्त्री०—की) [समाजः-सभावेशनं प्रयोजनमस्य ठञ्] किसी सभा से सम्बद्ध, —कः किसी सभा का सदस्य, सभा में दर्शक तेन हि तत्प्रयोगादेवाश्रभवतः सामाजिकानुपास्महे मा० १।

सामानाधिकरण्यम् [समानाधिकरण+ष्यञ्] 1. उसी दशा या स्थिति में होना 2. सामान्य पद, कार्य या प्रशासन, समान सम्बन्ध (जैसे कि कारक का) 3. एक ही पदार्थ से संबन्ध होने की स्थिति।

सामान्य (वि०) [समानस्य भावः ष्यञ्] 1. समान, साधारण—सामान्यमेषां प्रथमावरत्वम्—कु० ७।४४, आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् —सुभा०, रघु० १४।६७, कु० २।२६ 2. सदृश, तुल्य, समान 3. मामूली, औसतदर्जे का, बीच का—भर्तृ० २।७४ 4. तुच्छ, नाचीज, नगण्य 5. समस्त, संपूर्ण,—न्यम् 1. समुदाय, साधारणता, विश्वव्यापकता 2. सामान्य या संघटक गुण, साधारणलक्षण 3. समष्टि, समस्तता 4. भेद, प्रकार 5. अनुरूपता 6. समानता, समता 7. सार्वजनिक कार्य 8. साधारण उक्ति—उक्तिरर्थान्तरन्यासः स्यात्सामान्यविशेषयोः—चन्द्रा० ५।१२० 9. (अलं० में) एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट ने निम्नांकित लिखी है—प्रस्तुतस्य यदन्येन गुणसाम्यविवक्षया, एकात्म्यं बध्यते योगात्तत्सामान्यमिति स्मृतम् काव्य० १०। सम०—ज्ञानम् लोकविषयक व्यापक बातों का ज्ञान,—पक्षः मध्यस्थिति, —लक्षणम् व्यापक परिभाषा इति द्रव्यसामान्यलक्षणानि—तर्क०, -वनिता सामान्य स्त्री, वेश्या, -शास्त्रम् साधारण नियम।

सामासिक (वि०) (स्त्री०—की) [समास+ठक्] 1. सामूहिक, समस्त को समझने वाला, समुच्चयात्मक 2. संहत, संक्षिप्त 3. समाससंबंधी, -कम् सब प्रकार के समासों का वर्ग -द्वन्द्वः सामासिकस्य च -भग० १०।३३।

सामि (अव्य०) [साम्+इन्] 1. आधा. अर्थात् अपूर्ण —अभिवीक्ष्य सामिकृतमण्डनं यतीः कररुद्धनीविगलदंशुकाः स्त्रियः—शि० १३।३१, रघु० १९।१६ 2. कलंकनीय, नीच, निंदनीय।

सामिधेनी [सम्+इन्ध्+ल्युट्, नि०] 1. एक प्रकार के प्रार्थनामंत्र जिनका पाठ यज्ञाग्नि प्रज्वलित करते

समय या समिधाएँ हवन में डालते समय किया जाता है।

सामीची (स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति।

सामीप्यम् [समीप+ष्यञ्] पड़ोस, निकटता, आसन्नता, –प्यः पड़ोसी।

सामुद्र (वि०) (स्त्री०–द्री) [समुद्र+अण्] समुद्र में उत्पन्न, समुद्रसंबंधी जैसा कि 'सामुद्रं लवणम्' में, –द्रः नाविक, समुद्रयात्री, –द्रम् 1. समुद्री नमक 2. समुद्रझाग 2. शरीर का चिह्न।

सामुद्रकम् [सामुद्र+कन्] समुद्री नमक।

सामुद्रिक (वि०) (स्त्री–की) [समुद्र+ठञ्] 1. समुद्र से उत्पन्न, समुद्रसंबंधी 2. शरीर के चिह्नों से संबद्ध (जो शुभाशुभ फल के सूचक समझे जाते हैं), –कः सामुद्रिक विद्या का ज्ञाता, जो शरीर के लक्षणों को देखकर शुभाशुभ फल का कथन करे,–कम् हस्तरेखाओं को देखकर शुभाशुभ फल कहने की विद्या।

साम्पराय (वि०) (स्त्री०–यी) [सम्पराय+अण्] 1. युद्धसंबंधी, सामरिक 2. परलोक संबंधी, भावी,–यः –यम् 1. संघर्ष, झगड़ा 2. भावीजीवन, भवितव्यता 3. परलोक प्राप्ति के उपाय 4. भावी जीवन संबंधी पृच्छा 5. पृच्छा, गवेषणा 6. अनिश्चय।

साम्परायिक (वि०) (स्त्री०–की) [सम्पराय+ठक्] 1. सामरिक 2. सैनिक, सामरिक महत्त्व का 3. विपत्तिकारक 4. परलोकसंबंधी, –कम् युद्ध, लड़ाई, संघर्ष शि० १८।१, –कः लड़ाई का रथ। सम० —कल्पः सामरिक महत्त्व का व्यूह।

साम्प्रत (वि०) 1. योग्य, उचित, उपयुक्त—वेणी० ३।३ 2. संगत, –तम् (अव्य०) 1. अब, इस समय हन्त स्थानं क्रोधस्य साम्प्रतं देव्याः वेणी० १ 2. तत्काल 3. ठीक प्रकार, उचित रीति से, ऋतु के अनुकूल।

साम्प्रतिक (वि०) (स्त्री० –की) [सम्प्रति+ठक्] 1. वर्तमान काल संबंधी 2. योग्य, उचित, सही – उत्तर० ३।

साम्प्रदायिक (वि०) (स्त्री० –की) [सम्प्रदाय+ठक्] परम्पराप्राप्त सिद्धांत से संबद्ध, परम्पराप्राप्त, क्रमागत

साम्बः [सह अम्बया –ब० स०] शिव का नाम।

साम्बन्धिक (वि०) (स्त्री० –की) [संबन्ध+ठक्] संबंध से उत्पन्न, –कम् संबंध, रिश्तेदारी, मित्रता।

साम्बरी [सम्बर+अण्+ङीप्] जादूगरनी।

साम्भवी [सम्भव+अण्+ङीप्] 1. लाल लोध्रवृक्ष 2. शक्यता, संभावना।

साम्यम् [सम+ष्यञ्] 1. बराबरी, समता, समतलता —कु० ५।३१ 2. समानता, मिलना-जुलना, सादृश्य —स्पष्टं प्रापत्साम्यमुर्वीधरस्य शि० १८।३८, हि० १।४५, कि० १७।५१ 3. तुल्यता 4. सामंजस्य, 5. अन्तराभाव, निष्पक्षपातिता, ऐकमत्य—येषां साम्ये स्थितम् मनः –भग० ५।१९।

साम्राज्यम् [सम्राज+ष्यञ्] 1. विश्व प्रभुता, सार्वभौम-राज्य—साम्राज्यशंसिनो भावाः कुशस्य च लवस्य च –उत्तर० ६।२३, रघु० ४।५ 2. पूर्णाधिपत्य, प्रभुत्व।

सायः [सो+घञ्] 1. अन्त, समाप्ति, अवसान 2. दिन की समाप्ति, संध्या 3. बाण। सम०—अह्न् (पुं०) (सायाह्नः) सांझ, संध्याकाल – भामि० २।१५७।

सायकः [सो+ण्वुल्] बाण –तत्साधुकृतसन्धानं प्रतिसंहर सायकम् श० १।११ 2. तलवार। सम०—पुङ्खः बाण का पंखीला भाग—सक्ताङ्गुलिः सायकपुङ्ख एव रघु० २।३१।

सायनम् [सो+ल्युट्] किसी ग्रह की लंबाई (देशान्तर रेखा) जो वासन्ती-विषवीय बिन्दु से मापी जाती है।

सायन्तन (वि०) (स्त्री०–नी) [सायम्+टयुल्, तुट्] संध्या-संबंधी, सायंकाल,–सायन्तने सवनकर्मणि संप्रवृत्ते —श० ३।२७।

सायम् (अव्य०) [सो+अमु] सायंकाल के समय, – प्रयता प्रातरन्वेतु सायं प्रत्युद्व्रजेदपि—रघु० १।९०। सम० –कालः संध्या, सांझ, –मण्डनम् 1. सूर्य का छिपना 2. सूर्य,–संध्या 1. सायंकालीन झुटपुटा 2. सायंकालीन प्रार्थना।

सायिन् (पुं०) [साय+इन्] घुड़सवार।

सायुज्यम् [सयुज+ष्यञ्] 1. घनिष्ठ मेल, समरूपता, लीनता, विशेषतः देवता में (मुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक) 2. सादृश्य, समानता।

सार (वि०) [सृ+घञ्, सार्+अच् वा] 1. आवश्यक 2. सर्वोत्तम, उच्चतम, श्रेष्ठ—मुद्रा० १।१३ 3. वास्तविक, सच्चा, असली 4. मजबूत, बलवान् 5. ठोस, पूर्णतः सिद्ध,—रः,–रम् (प्रथम चार अर्थों के अतिरिक्त सर्वत्र पुं०) 1. सत्, सत्त्व—स्नेहस्य तत्फलमसौ प्रणयस्य सारः –मा० १।९, असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम्, काश्यां वासः सतां सङ्गो गंगांभः शंभुसेवनम्–धर्म०१४ 2. निचोड़, रस 3. मज्जा 4. वास्तविक सचाई, मुख्यबिंदु 5. वृक्षों का रस, गोंद जैसा कि खदिरसार या सर्जसार में 6. सारांश, संक्षेप, संक्षिप्त संग्रह 7. सामर्थ्य, बल, शक्ति, ऊर्जा—सारं धरित्रीधरणक्षमं च –कु० १।१७, रघु० २।७४ 8. पराक्रम, शौर्य, साहस रघु० ४।७९ 9. दृढ़ता, कठोरता 10. धन, दौलत—रघु० ५।२६ 11. अमृत 12. ताजा मक्खन 13. हवा, वायु 14. मलाई, दही की मलाई 15. रोग 16. मवाद, पीप 17. मूल्य, श्रेष्ठता, उच्चतम प्रत्यक्षज्ञान 18. शतरंज का मोहरा 19. सोडे का बिना छना अंगाराम्लयुक्त द्रव्य 20. अंग्रेजी के कलाई-

मैक्स (Climax) नाम अलंकार से मिलता जुलता एक अलंकार—उत्तरोत्तरमुत्कर्षो भवेत्सारः परावधि—काव्य १०,—रम् 1. जल 2. योग्यता, औचित्य 3. जंगल, झाड़-झंखाड 4. इस्पात, लोहा। सम० —असार (वि०) मूल्यवान् और निर्मूल्य, मजबूत और दुर्बल, (—रम्) 1. मूल्य और निर्मूल्यता 2. मूल-पदार्थ और रिक्तता 3. सामर्थ्य और कमज़ोर,—गन्धः चन्दन की लकड़ी,—ग्रीवः शिव जी का नाम, —जम् ताजा मक्खन,—तरुः केले का पेड़, —दा 1. सरस्वती का नाम 2. दुर्गा का नाम,—द्रुमः खैर का पेड़, —भङ्गः बल की हानि:—भाण्डः 1. एक प्राकृतिक बर्तन 2. समान का गट्ठा, पण्यसामग्री 3. उपकरण,—लोहम् इस्पात।

सारघम् [सरघाभिः निर्वृत्तम्—अण्] मधु, शहद।

सारङ्ग (वि०) (स्त्री०—गी) [सृ+अङ्गच्+अण्] चितकबरा, रंगबिरंगा, —गः 1. रंगबिरंगा रंग 2. चित्रमृग, कुरंग—एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा—श० १।५ 3. हरिण —सारङ्गास्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम् - मेघ० २० (यहाँ 'हाथी' या 'भ्रमर' के बजाय यही अर्थ लेना ठीक है) 4. सिंह 5. हाथी 6. भौंरा 7. कोयल 8. सारस 9. राजहंस 10 मोर 11. छतरी 12. बादल 13. परिधान 14. बाल 15. शंख 16. शिव का नाम 17 कामदेव 18. कमल, 19. कपूर 20. धनुष 21. चन्दन 22. एक प्रकार का वाद्ययंत्र 23. आभूषण 24. सोना 25. पृथ्वी 26. रात 17. प्रकाश।

सारङ्गिकः [सारङ्गं हन्ति—ठक्] बहेलिया, चिड़ीमार।

सारङ्गी [सारङ्ग+ङीप्] 1. एक प्रकार का वाद्ययंत्र, सितार, वायलिन 2. चित्तीदार हरिण।

सारण (वि०) (स्त्री० —णी) [सृ+णिच्+ल्युट्] भेजना, बहाना,—णः 1. पेचिस 2. पँवदी बेर,—णम् एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

सारणा [सृ+णिच्+युच्+टाप्] धातुओं की विशेष कर पारे की एक प्रकार की प्रक्रिया।

सारणिः, —णी (स्त्री०) [सृ+णिच्+अनि—पक्षे ङीप्] 1. नहर, नाली, पतनाला, जलमार्ग 2. एक छोटी नदी।

सारण्डः [सृ+णिच्+अण्ड] साँप का अण्डा।

सारतः (अव्य०) [सार+तसिल्] 1. धन के अनुसार 2. बलपूर्वक।

सारथिः [सृ+अथिण् सह रथेन सरथः घोटकः तत्र नियुक्तः इञ् वा] 1. रथवान्- स शापो न त्वया राजन् न च सारथिना श्रुतः—रघु० १।७८, मातलिसारथिर्ययौ ३।६७ 2. साथी, सहायक—रघु० ३।३७ 3. समुद्र।

सारथ्यम् [सारथि+ष्यञ्] रथवान् का पद, गाड़ीवान् का पद।

सारमेयः [सरमा+ढक्] कुत्ता,—यी [सारमेय—ङीप्] कुतिया।

सारल्यम् [सरल+ष्यञ्] सरलता (आलं० से भी) सीधापन, ईमानदारी, खरापन।

सारवत् (वि०) [सार+मतुप्] 1. तत्त्वयुक्त 2. उपजाऊ 3. रसीला।

सारस (वि०) (स्त्री—सी) [सरस इदम् अण्] सरोवर संबन्धी, काव्या० ३।१४, नलोद० २।४०,—सः 1. सारस, (कुछ विद्वानों के अनुसार 'हंस')—विभिद्यमाना विससार सारसानुदस्य तीरेषु तरङ्गसंहतिः कि० ८।३१, शि० ६।७५, १२।४४, मेघ० ३१, रघु० १।४१ 2. पक्षी 3. चन्द्रमा,—सम् 1. कमल 2. स्त्री की तगड़ी।

सारस (स) नम् [सार+सन्+अच्] 1. तगड़ी, करधनी —सारशनं महानहिः— कि० १८।३२ 2. सैनिक पेटी।

सारस्वत (वि०) (स्त्री० ती) [सरस्वती देवतास्य, सरस्वत्या इदं वा अण्] 1. सरस्वती देवी से संबद्ध 2. सरस्वती नदी से संबंध रखने वाला—कृत्वा तासामभिगममपाम् सौम्य सारस्वतीनाम् —मेघ० ४९ 3. वाक्पटु, —तः 1. सरस्वती नदी के आस पास का प्रदेश 2. ब्राह्मण जाति का एक भेद 3. बिल्वदंड, —ताः (पुं० ब० व०) सारस्वत देश के निवासी, —तम् भाषण, वाक्पटुता,—शृङ्गारसारस्वतम् —गीत० १२।

सारालः [सार+आ+ला+क] तिल का पौधा।

सारिः,—री (स्त्री०) [सृ+इण्] 1. शतरंज का मोहरा, गोट 2. एक प्रकार का पक्षी। सम०— फलकः शतरंज खेलने की बिसात।

सारिका [सरति गच्छति—सृ+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] एक प्रकार का पक्षी, मैना—आत्मनो मुखदोषेण बध्यन्ते शुकसारिकाः—सभा०, सारिकां पञ्जरस्थाम् —मेघ० ८५।

सारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सृ+णिनि] 1. जाने वाला, सहारा लेने वाला 2. तत्त्वयुक्त, सारवान्।

सारूप्यम् [सरूप+ष्यञ्] 1. रूप की समता, समानता, सादृश्य, सरूपता, मिलना-जुलना—मा० ५ 2. देव में लीनता (मुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक) 3. (नाटकों में) रूपसादृश्यजन्य भ्रम में किया जाने वाला (क्रोधादि) व्यवहार— सा० द० ४६४ 4. किसी पदार्थ को या उससे मिलती जुलती सूरत को देख कर आश्चर्य।

सारोष्ट्रिकः [सारः श्रेष्ठः उष्ट्रो यत्र, सारोष्ट्रः देशभेदः तत्र भवः—सारोष्ट्र+ठक्] एक प्रकार का विष।

सार्गल (वि०) [सह अर्गलेन -ब० स०] 1. रोका हुआ, अवरुद्ध, अड़चन वाला--रघु० ११७९ ।

सार्थ (वि०) [सह अर्थेन--ब० स०] 1. अर्थयुक्त, सार्थक 2. सोद्देश्य 3. समानार्थक, समानाशय 2. उपयोगी, कामलायक 5. धनवान्, दौलतमंद, मालदार,—र्थः 1. धनवान् पुरुष 2. सौदागरों की टोली, व्यापारियों का दल -सार्थाः स्वैरं स्वकीयेषु चेरुर्वेश्म स्विवाद्रिषु —रघु० १७।६४, दे० सार्थवाह 3. दल 4. लहंडा, रेवड़ (एक ही जाति के जानवरों का)—अथ कदाचित्तै-रितस्ततो भ्रमद्भिः सार्थाद् भ्रष्टः कथनको नामोष्ट्रो दृष्टः-- पंच० १ 5. संचय, संग्रह—अर्थिसार्थः–पञ्च० १, त्वया चन्द्रमसा चातिसन्धीयते कामिजनसार्थः—श० ३ 6. तीर्थयात्रियों की टोली में से एक। सम०—ज काफ़ले में पला हुआ,—वाहः काफ़ले का नेता, व्यापारी, सौदागर श० ६ ।

सार्थक (वि०) [सह अर्थेन—ब० स० कप्] 1. अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण 2. उपयोगी, कामचलाऊ, लाभदायक ।

सार्थवत् (वि०) [सार्थ+मतुप्] 1. अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण 2. बहुत साथियों से युक्त ।

सार्थिकः [सार्थ+ठक्] व्यापारी, सौदागर ।

सार्द्र (वि०) [सह आर्द्रेण—ब० स०] गीला, भीगा, तर, सीला ।

सार्ध (वि०) [सह अर्धेन—ब० स०] जिसमें आधा बढ़ा हुआ हो, जिसमें आधा जुड़ा हुआ हो, जिसमें आधा अधिक हो—'सार्धशतम्' आदि ।

सार्धम् (अव्य०) [सह+ऋध्+अमु] साथ-साथ, के साथ, के साथ में (करण० के साथ)—वनं मया सार्धमसि प्रपन्नः—रघु० १४।६८, मनु० ४।४३, भट्टि० ६।२६, मेघ० ८९ ।

सार्पः (प्पुं०) [सर्पो देवताऽस्य - सर्प+अण्, ष्यञ् वा] आश्लेषा नाम का नक्षत्रपुंज ।

सार्पिष (वि०) (स्त्री०—षी), **सार्पिष्क** (वि०) (स्त्री० —ष्की) [सर्पिस्+अण्, ठक् वा] घी में तला हुआ, घी मिश्रित ।

सार्वकामिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वकाम+ठक्] प्रत्येक इच्छा को शान्त करने वाला, समस्त कामनाओं को पूरा करने वाला - कि० १८।२५ ।

सार्वकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वकाल+ठक्] नित्य, शाश्वत, सदैव रहने वाला ।

सार्वजनिक (वि०) (स्त्री०—की) **सार्वजनीन** (वि०) (स्त्री०—नी) [सर्वजन+ठक्, खञ् वा] सर्वजन व्यापक, विश्वव्यापी, सर्वसाधारण संबंधी ।

सार्वज्ञम् [सर्वज्ञ+अण्] सर्वज्ञता, सब कुछ जानना ।

सार्वत्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वत्र+ठक्] प्रत्येक स्थान का, सामान्य, सब स्थानों या परिस्थितियों से संबंध रखने वाला—जैसा कि 'सार्वत्रिको नियमः, में ।

सार्वधातुक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वधातु+ठक्] संपूर्ण धातुओं में व्यवहृत होने वाला, गण विकरण लगाने के पश्चात् धातु के समस्त रूप में घटने वाला, अर्थात् चार गण और चार लकारों के साथ प्रयुक्त होने वाला, कम् चार लकारों (लट्, लोट्, लङ्, लिङ्) के तिङादि प्रत्यय (या लिट् तथा आशीर्लिङ को छोड़ कर और सभी लकारों के विभक्तिचिह्न और 'शू' ध्वनि से प्रकट होने वाले विकरण) ।

सार्वभौतिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वभूत+ठक्] 1. सभी मूलतत्त्वों या प्राणियों से संबंध रखने वाला 2. सभी जीवधारी जन्तुओं से युक्त ।

सार्वभौम (वि०) (स्त्री०—मी) [सर्वभूमि+अण्] समस्त धरती से संबद्ध या युक्त, विश्वव्यापी,—मः 1. सम्राट्, चक्रवर्ती राजा—नाज्ञाभंगं सहन्ते नृवर नृपतयस्त्वादृशाः सार्वभौमाः मुद्रा० ३।२२ 2. कुबेर की दिशा, उत्तर दिशा का दिक्कुञ्जर ।

सार्वलौकिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्वलोक+ठञ्] सब लोकों का ज्ञात, समस्त संसार में व्याप्त, सार्वजनिक, विश्वव्यापी--अनुरागप्रवादस्तु वत्सयोः सार्वलौकिकः -- मा० १।१३ ।

सार्ववर्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्ववर्ण+ठक्] 1. प्रत्येक प्रकार का, हर तरह का 2. प्रत्येक जाति या वर्ग से सम्बन्ध रखनेवाला ।

सार्वविभक्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [सर्व विभक्ति+ठञ्] किसी शब्द की सभी विभक्तियों में घटने वाला, सभी विभक्तियों से संबद्ध ।

सार्ववेदसः [सर्ववेदस्+अण्] जो किसी यज्ञ या अन्य पुण्यकार्य में अपना समस्त धन दे देता है ।

सार्ववैद्यः [सर्ववेद+ष्यञ्] सभी वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण ।

सार्षप (वि०) (स्त्री०—पी) [सर्षप+अण्] सरसों का बना हुआ, —पम् सरसों का तेल ।

सार्ष्टि (वि०) समान स्थान, दशा, या पद से युक्त समान अधिकार रखने वाला ।

सार्ष्टिता [सार्ष्टि+तल्+टाप्] 1. पद अधिकार व अवस्थाओं में समानता 2. शक्ति में तथा अन्य विशेषताओं में परमात्मा से समानता, मुक्ति की चार अवस्थाओं में से अन्तिम अवस्था ब्रह्मदो ब्रह्मसार्ष्टितां (प्राप्नोति)—मनु० ४।२३२ ।

सार्ष्ट्यम् [सार्ष्टि+ष्यञ्] चौथे दर्जे की मुक्ति ।

सालः [सल्+घञ्] 1. एक वृक्ष का नाम, या उसकी राल 2. वृक्ष—यथा 'कल्पसाल' 'रसालसाल' में 3. किसी भवन की चारदिवारी या फसील, परकोटा 4. भीत, दीवार 5. एक प्रकार की मछली (समासों के लिए देखो 'शाल' के अन्तर्गत) ।

सालनः [सल्+णिच्+ल्युट्] साल वृक्ष की राल।

साला [सालः प्राकारोऽस्ति अस्याः—साल+अच्+टाप्] 1. दीवार, फसील 2. घर, मकान—दे० शाला। सम०—करी 1. घर, में कार्य करने वाला 2. बन्दी (विशेष कर वह जो युद्ध में पकड़ लिया गया हो) —वृकः दे० 'शालावृक'।

सालारम् [साला+ऋ+अण्] दीवार में गड़ी खूंटी, 'ब्रैकेट'।

सालूरः [सल्+उरच्, णित्त्व, वृद्धि] मेंढक, दे० 'शालूर'।

सालेयम् [साला+ढक्] सोआ, मेथी दे० 'शालेय'।

सालोक्यम् [समानो लोकोऽस्य—ब० स० सलोक+ष्यञ्] 1. उसी लोक या संसार में दूसरे के साथ रहना 2. उसी स्वर्ग में किसी देवता के साथ रहना।

साल्वः [साल्व+अण्] 1 एक देश का नाम, उसके निवासियों का नाम (इस अर्थ में ब० व०) 2. एक राक्षस का नाम जिसको विष्णु ने मार गिराया था। सम० —हन् (पुं०) विष्णु का विशेषण।

साल्विकः [साल्व+ठक्] सारिका नामक पक्षी, मैना।

सावः [सु+घञ्] तर्पण।

सावक (वि०) (स्त्री०—विका) [सु+ण्वुल्] उत्पादक, जन्म देने वाला, प्रसवसम्बन्धी, —कः जानवर का बच्चा (दे० 'शावक')।

सावकाश (वि०) [सह अवकाशेन—ब० स०] जिसको अवकाश हो, अवकाश वाला, खाली, —शम् (अव्य०) अवकाश पाकर, अपनी सुविधानुकूल।

सावग्रह (वि०) [अवग्रहेण सह—ब० स०] 'अवग्रह' चिह्न से युक्त।

सावज्ञ (वि०) [सह अवज्ञया ब० स०] घृणा करने वाला, तिरस्कारपूर्ण, अपमान अनुभव करने वाला।

सावद्यम् [अवद्येन सह—ब० स०] संन्यासी के द्वारा प्राप्य।

सावधान (वि०) [अवधानेन सह ब० स०] 1. ध्यान देने वाला, दत्तचित्त, सचेत, खबरदार 2. चौकस 3. परिश्रमी, —नम् (अव्य०) सावधानता से, ध्यानपूर्वक, चौकस होकर।

सावधि (वि०) [सह अवधिना ब० स०] सीमायुक्त, सीमित, समापिका, परिभाषित, सीमाबद्ध—सावधिस्तोयराशिस्ते यशोराशेस्तु नावधिः सुभा०।

सावन (वि०) (स्त्री०—नी) [सवन+अण्] तीनों सवनों से युक्त या संबद्ध,—नः 1. यजमान, जो यज्ञ में पुरोहितों का वरण करता है 2. यज्ञ का उपसंहार, वह संस्कार जिसके द्वारा यज्ञ की पूर्णाहुति दी जाती है 3. वरुण का नाम 4. तीस सौरदिवस का मास 5. सूर्योदय से सूर्यास्त तक का दिन 6. विशेष वर्ष।

सावयव (वि०) [सह अवयवेन ब० स०] भागों या अंगों से बना हुआ—सावयवत्वे चानित्यप्रसङ्गः न ह्यविद्याकल्पितेन रूपभेदेन सावयवं वस्तु संपद्यते शारी०।

सावरः [सवरेण निर्वृत्तः अण्] 1. दोष, अपराध 2. पाप, दुष्टता, जुर्म 3. लोध्र वृक्ष।

सावरण (वि०) [सह आवरणेन—ब० स०] 1. गूढ़, गुप्त, रहस्य 2. ढका हुआ, बन्द।

सावर्ण (वि०) (स्त्री०—र्णी) [सवर्ण+अण्] एक ही रंग का, एक ही जाति का, एक ही रंग या जाति से संबद्ध,—र्णः आठवें मनु का मातृपरक नाम, दे० सावर्णि। सम० —लक्ष्यम् 1. एक ही रंग या जाति का चिह्न 2 त्वचा, खाल।

सावर्णिः [सवर्णा+इञ्] आठवें मनु का मातृपरक नाम (सूर्य की पत्नी सवर्णा से उत्पन्न)।

सावर्ण्यम् [सवर्ण+ष्यञ्] 1. रंग की एकता 2. किसी श्रेणी या जाति की एकता 3. आठवें मनु द्वारा अधिष्ठित मन्वन्तर।

सावलेप (वि०) [सह अवलेपेन] अभिमानपूर्ण, घमंडी, हेकड़वान, —पम् (अव्य०) घमंड से, हेकड़ी के साथ, अहंकारपूर्वक।

सावशेष (वि०) [सह अवशेषेण—ब० स०] 1. अवशिष्ट से युक्त, जिसमें कुछ बाकी बचे 2. अपूर्ण, अधूरा, असमाप्त।

सावष्टम्भ (वि०) [सह अवष्टम्भेन—ब० स०] 1. घमंडी, प्रतिष्ठित, उत्कृष्ट, शानदार 2. साहसी, दृढ़निश्चयी 3. दृढ़ता से पूर्ण, —म्भम् (अव्य०) दृढ़निश्चय के साथ, दृढ़तापूर्वक, साहस के साथ।

सावहेल (वि०) [सह अवहेलया ब० स०] तिरस्कारपूर्ण निरादर करने वाला, घृणा करने वाला, —लम् (अव्य०) निरादर के साथ, घृणापूर्वक।

साविका [सू+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] दाई, प्रसव के समय प्रसूता की देखभाल करने वाली।

सावित्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [सवितृ+अण्] 1. सूर्य संबंधी 2. सूर्य की संतान, सूर्यवंश से संबद्ध, (राजाओं के)—यत्सावित्रैर्दीपितं भूमिपालैः- उत्तर० १।४२ 3. गायत्री मंत्र से युक्त, —त्रः 1. सूर्य 2. भ्रूण, गर्भ 3. ब्राह्मण 4. शिव का विशेषण 5. कर्ण का विशेषण, —त्रम् यज्ञोपवीत संस्कार (इसका "सावित्रम्" नाम इसी लिए पड़ा कि इस संस्कार में मुख्यरूप से गायत्री मंत्र का जाप करना पड़ता है, उसी समय यज्ञोपवीत धारण किया जाता है।

सावित्री [सावित्र+ङीप्] 1. प्रकाश की किरण 2. ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध मंत्र (इसका नाम 'सावित्र' सूर्य को संबोधित करने के कारण पड़ा) इसे गायत्री भी कहते हैं। अधिक जानकारी के लिए दे० 'गायत्री' 3. यज्ञोपवीत

संस्कार 4. ब्राह्मण की पत्नी 5. पार्वती 6. कश्यप की पत्नी 7. शाल्वदेश के राजा सत्यवान् की पत्नी (सावित्री राजा अश्वपति की एकमात्र सन्तान थी। वह इतनी सुन्दर थी कि वे सब वर जो उसे पाने की इच्छा से वहाँ आय उसकी अभिराम कान्ति से इतने चकित हुए कि वापिस ही लौट गये। विवाह योग्य अवस्था होने पर सावित्री को वर न मिल सका। अन्त में उसके पिता ने उसे कहा कि अब तुम स्वयं जाओ और अपनी इच्छा के अनुसार वर ढूंढो। सावित्री ने वैसा ही किया, और वर चुन कर वह पिता के पास वापिस आई और कहने लगी कि मैंने शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान् को चुन लिया है। राजा द्युमत्सेन उन दिनों अपने राज्य से निकाल दिये गये थे—वे अपनी सहधर्मिणी समेत अब वानप्रस्थ जीवन बिता रहे थे। नारद मुनि भी घूमते हुए उस समय आ गये थे, जब उन्होंने सुना तो राजा अश्वपति तथा सावित्री को कहा कि मुझे तुम्हारे चुनाव पर खेद है, क्योंकि यद्यपि सत्यवान् सब प्रकार से तुम्हारे योग्य है परन्तु उसकी आयु अब केवल एक वर्ष और बाकी है, अतः उसको चुनना जीवन भर के लिए वैधव्य तथा कष्ट का भार लेना है। उसके मातापिता ने उसके मन को बदलने का घोर प्रयत्न किया परन्तु उस उच्चात्मा सावित्री ने कहा कि मेरा निश्चय अब नही बदल सकता। तदनुसार समय पर उसका विवाह सत्यवान् से हो गया। विवाह के पश्चात् सावित्री ने अपना सब राजसी ठाठबाट, बहुमूल्य आभूषण तथा वस्त्रादिक उतार दिये और अपने बूढ़े सास-ससुर की सेवा करने लगी। यद्यपि बाहर से उसकी मुख-मुद्रा से कुछ प्रकट न होता था, वह प्रसन्न ही रहती थी। परन्तु वह नारद के वचन अभी तक नहीं भूली थी। उसे दिन बीतते देर न लगी। और अन्त में वह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस जिस दिन सत्यवान् का प्राणान्त होना था निकट आ गया। उसने मन में सोचा कि अभी तीन दिन और बाक़ी है, इन तीनों दिन में कठोर व्रत साधन करूंगी। उसने व्रत किया और चौथे दिन जब सत्यवान् यज्ञ की समिधाएँ लेने के लिए जंगल जाने को तैयार हुआ तो सावित्री भी उसके साथ साथ गई। कुछ समिधाएँ एकत्र करने के पश्चात् सत्यवान् थक कर बैठ गया। और अपना सिर सावित्री की छाती पर रख कर सो गया। उसी समय यमराज आया और सत्यवान् की आत्मा को लेकर दक्षिण की ओर चल दिया। सावित्री ने यह सब देखा और यमराज का पीछा किया। यमराज ने सावित्री को बताया कि सत्यवान् की आयु समाप्त हो चुकी है। परन्तु पतिव्रता सावित्री ने यमराज से ऐसे करुण स्वर में प्रार्थना की कि यमराज ने उसे सत्यवान् के प्राणों को छोड़ कर और कोई वर मांगने के लिए कहा। सावित्री की अनन्य भक्ति एवं पातिव्रत धर्म पर मुग्ध होकर अन्त में यमराज ने सत्यवान् के प्राण भी लौटा दिये। वह प्रसन्न होकर वापिस आई और देखा कि सत्यवान् मानों गहरी निद्रा से जाग गया है। उसने सत्यवान् को सारी घटना बता दी। तथा वे दोनों आश्रम में वापिस आ गये। शीघ्र ही उसके श्वसुर द्युमत्सेन ने यमराज के द्वारा दिये गये वरों का फल पाया। सावित्री पातिव्रत धर्म का उच्चतम आदर्श मानी जाती है। बड़ी बूढ़ी स्त्रियां आज भी विवाहित तरुणी को आशीर्वाद (जन्मसावित्री भव) देती हैं। तथा उसके सामने सावित्री का आदर्श पूरा करने के लिए उसका उदाहरण रखती हैं)। सम० पतित,—परिभ्रष्ट पहले तीनों वर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जिसका समय पर यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो, तु० व्रात्य व्रतम् ज्येष्ठमास के शुक्लपक्ष के अन्तिम तीन दिनों का व्रत जिसे आर्य ललनाएँ विशेष रूप से वैधव्य से बचने के लिए रखती हैं।

साविष्कार (वि०) [सह आविष्कारेण—ब० स०] 1. घमंडी, अहंकार 2. प्रकट।

साशंस (वि०) [सह आशंसया - ब० स०] कामना और उत्कण्ठा से पूर्ण, इच्छुक, आशावान्, प्रत्याशी,—सम् (अव्य०) कामना पूर्वक, आशा से।

साशङ्क (वि०) [सह आशङ्कया--ब० स०] डर अनुभव करने वाला, आशंका करने वाला, डरा हुआ, चकित।

साशयन्दकः (पुं०) एक छोटी छिपकली।

साशूकः (पुं०) गलकंबल, सास्ना।

साश्चर्य (वि०) [सह आश्चर्येण ब० स०] 1. आश्चर्य जनक, विलक्षण 2. आश्चर्यचकित,—र्यम् (अव्य०) आश्चर्य के साथ, अद्भुत प्रकार से।

साश्र (स्र) (वि०) [सह अश्रेण—] 1. कोन या किनारों से युक्त, कोणदार 2. आँसू से भरा हुआ, रोता हुआ।

साश्रुधी [साश्रु ध्यायति – साश्रु + ध्यै + क्विप्, संप्रसारण] सास, पति या पत्नी की माता।

साष्टाङ्गम् (अव्य०) [सह अष्टाङ्गैः ब० स०] लंबा दण्डवत् लेट कर (शरीर के आठ अंगों से पृथ्वी को छूकर--दे० 'अष्टन्' के अन्तर्गत 'अष्टांग प्रणाम')

सास (वि०) [सह आसेन] धनुर्धारी—कि० १५।५।

सासु (वि०) बाण धारण करने वाला—कि० १५।५।

सासूय (वि०) [सह असूयया] डाह करने वाला, ईर्ष्यालु, तिरस्कारपूर्ण,—यम् (अव्य०) डाह के साथ, रोषपूर्वक तिरस्कार के साथ—श० २।२।

सास्ना [सस् + न, णित् वृद्धि] गाय या बैल का गल-

कम्बल,—गोः सास्नादिमत्त्वं लक्षणम्—तर्क०, रोमन्थमन्थरचलद्गुरुसास्नमासांचक्रे निमीलदलसेक्षणमौक्षकेण — शि० ५।६२।

साहचर्यम् [सहचर + ष्यञ्] साथ, साथीपना, साथ रहना, साथ साथ बसना, सहवर्तिता कि न स्मरसि यदेकत्र नो विद्यापरिग्रहाय नानादिगन्तवासिनां साहचर्यमासीत् —मा० १, कु० ३।२१, रघु० १६।८७, वेणी० १।२०, शि० १५।२४।

साहनम् [सह् + णिच् + ल्युट्] सहन करना, भुगतना।

साहसम् [सहसा बलेन निर्वृत्तम् अण्] 1. प्रचण्डता, बल, लूटखसोट— मनु० ७।४८, ८।६ 2. कोई भी घोर अपराध (जैसे कि डाका, बलात्कार, लूट-खसोट आदि महापातक), जघन्य अपराध, अग्रधर्षणपरक कार्य 3. क्रूरता, अत्याचार शि० ९।५९ 4. हिम्मत, दिलेरी, उग्र शौर्य—साहसे श्रीः प्रतिवसति—मृच्छ० ४ 5. साहसिकता, उतावलापन, औद्धत्य, अविमृश्यकारिता, साहसिक कार्य—तदपि साहसाभासम् मा० २, किमपरमतो निर्व्यूढं यत्करार्पणसाहसम् ९।१०, कि० ९७।४२ 6. सजा, दण्ड, जुर्माना (इस अर्थ में पुं० भी), दे० मनु० ८।१३८, याज्ञ० १।६६, ३६५। सम०—अङ्कः 1. राजा विक्रमादित्य का विशेषण 2. एक कवि का विशेषण 3. एक कोशकार का विशेषण,—अध्यवसायिन् (वि०) उतावली या जल्दबाजी करने वाला, ऐकरसिक (वि०) नितान्त प्रचण्डता पर तुला हुआ, भीषण, क्रूर, कारिन् (वि०) 1. दिलेर, बेधड़क 2. जल्दबाज, अविवेकी, लाञ्छन (वि०) जिसमें साहस परिचायक के रूप हों।

साहसिक (वि०) (स्त्री० की) [साहसे प्रसृतः ठक्] 1. बहुत अधिक जोर लगाने वाला, नृशंस, प्रचण्ड, उत्पीडक, क्रूर, लूट-खसोट करने वाला 2. हिम्मती, दिलेर, निर्भीक, विचारशून्य, उद्धत — न सहास्मि साहसमसाहिकी शि० ९।५९, केचित्तु साहसिकास्त्रिलोचनमितिः पेठुः —कु० ३।४४ पर मल्लि० 3. दण्डमूलक, दण्डात्मक,—कः 1. हिम्मतवर, दिलेर, उद्यमी —पंच० ५।३१ 2. आततायी, भयंकर, भीषण या किल त्रिविधजीवोपहारप्रियेति साहसिकानां प्रवादः — मा० १, साहसिकः खल्वेषः—६ 3. लुटेरा, लूटमार करने वाला, डाकू।

साहसिन् (वि०) [साहस + इनि] 1. प्रचण्ड, उग्र, भीषण, क्रूर 2. हिम्मती, दिलेर, जल्दबाज, आशुकर्ता।

साहस्र (वि०) (स्त्री०—स्री) [सहस्र + अण्] 1. हजार से संबंध रखने वाला 2. हजार से युक्त 3. एक हजार में मोल लिया हुआ 4. प्रति हजार दिया हुआ (ब्याज आदि) 5. हजार गुना,—स्रः एक हजार सैनिकों की टुकड़ी,—स्रम् एक हजार का समूह।

साहायकम् [सहाय + वुण्] 1 सहायता, साहाय्य, मदद सकुलोचितमिन्द्रस्य साहायकमुपेयिवान् रघु० १७।५ 2. सहचरत्व, मैत्री, सौहार्द 3. मित्रमंडली 4. सहायक सेना।

साहाय्यम् [सहाय + ष्यञ्] 1. सहायता, मदद, सहकार 2. सौहार्द, मैत्री।

साहित्यम् [सहित + ष्यञ्] 1. साहचर्य, भाईचारा, मेल-मिलाप, सहयोगिता 2. साहित्यिक या आलंकारिक रचना—साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः—भर्तृ० ३।१२ 3. रीतिशास्त्र, काव्यकला—विक्रमांक० १।११, साहित्यदर्पण आदि 4. किसी वस्तु के उत्पादन या सम्पन्नता के लिए सामग्री का संग्रह (संदिग्ध अर्थ)।

साह्यम् [सह + ष्यञ्] 1. संयोजन, मेल, साहचर्य, सहयोग 2. सहायता, मदद। सम० कृत् (पुं०) साथी।

साह्वयः [सह आह्वयेन ब० स०] जानवरों की लड़ाई करा कर जूआ खेलना।

सि (स्वा० क्र्या० उभ० सिनोति, सिनुते; सिनाति, सिनीते) 1. बांधना, कसना, जकड़ना 2. जाल में फँसना।

सिंहः [हिंस् + अच्, पृषो०] 1. शेर (कहा जाता है कि इस शब्द की व्युत्पत्ति 'हिंस्' धातु से हुई है—तु० भवेद्वर्णागमाद्धंसः सिंहो वर्णविपर्ययात् - सिद्धा०) — न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः—सुभा० 2. 'सिंह' राशि का चिह्न 3. (समास के अन्त में प्रयुक्त) सर्वोत्तम, श्रेणी में प्रमुख, उदा०—रघुसिंह, पुरुषसिंह। सम० अवलोकनम् शेर का पीछे मुड़ कर देखना,—°न्यायः सिंहावलोकन का न्याय, वस्तु का प्रायः पूर्ववर्ती और पारवर्ती संबंध बतलाने के लिए प्रयुक्त, व्याख्या के लिए 'न्याय' के अन्तर्गत देखिए,—आसनम् राजगद्दी, सम्मान का आसन, (नः) एक प्रकार का रतिबंध,—आस्यः हाथों की विशेष स्थिति,—गः शिव का विशेषण,—तलम् अंजलि,—तुण्डः एक प्रकार की मछली, दंष्ट्रः शिव का विशेषण, दर्प (वि०) शेर की भांति गर्वीला,—ध्वनिः—नादः 1. शेर की दहाड़ कु० १।५६, मृच्छ० ५।२९ 2. युद्ध-ध्वनि, ललकार, —द्वारम् मुख्य दरवाजा,—याना रथा पार्वती देवी, लीलः एक प्रकार का संभोग, —वाहनः शिव का विशेषण,—संहनन (वि०) 1. शेर की भांति मजबूत 2. सुन्दर, (नम्) शेर का मार डालना।

सिंहलम् [सिंहोऽस्त्यस्य लच्] 1. टिन 2. पीतल 3. बल्क, वृक्ष की छाल 4. लङ्काद्वीप (प्राय-ब०व०)—सिंहलेभ्यः प्रत्यागच्छता सिंहलेश्वरदुहितुः फलकासादनम्—रत्ना० १,—लाः (पुं० ब०व०) लंका देशवासी लोग।

सिंहलकम् [सिंहल+कन्] लंका का द्वीप :
सिंहाणम् (**नम्**) [शिङ्घ्+आनच्, पृषो०] 1. लोहे का जंग 2. नाक का मल।
सिंहिका [सिंह+कन्+टाप्, इत्वम्] राहु की माँ। सम० —**तनयः**, **पुत्रः**—**सुतः**—**सूनुः** राहु के विशेषण।
सिंही [सिंह+ङीप्] 1. शेरनी 2. राहु की माता का नाम।
सिकता [सिक्+अतच्+टाप्] 1. रेतीली जमीन 2. रेत (प्रायः ब० व० में)—लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्—भर्तृ० २।५ 3. बजरी, पथरी (एक रोग)।
सिकतिल (वि०) [सिकता+इलच्] रेतीला,—भर्तृ० ३।३८।
सिक्त (भू० क० कृ०) [सिच्+क्त] 1. छिड़का गया, पानी से गीला किया गया 2. तर किया गया, गीला किया गया, भिगोया गया 3. गर्भित, दे० 'सिच्'।
सिक्थः [सिच्+थक्] 1. उबले हुए चावल 2. भात का पिंड—ग्रासोद्गलितसिक्थेन का हानिः करिणो भवेत् —सुभा०, **क्थम्** 1. मधुमक्खियों से बनाया गया मोम 2. नील।
सिक्यम् दे० शिक्यम्।
सिक्यः (पुं०) स्फटिक, शीशा।
सिङ्घ (**घा**) **णम्** [शिङ्घ्+आनच्, पृषो०] 1. नाक का मल 2. लोहे का जंग।
सिङ्घिणी [शिङ्घ्+णिनि+ङीप्, पृषो०] नाक।
सिच् (तुदा० उभ० सिंचति-ते, सिक्त) (इकारान्त और उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् सिच् के स् को ष् हो जाता है) 1. छिड़कना, छोटी-छोटी बूंदों में बखेरना —भट्टि० १९।२३ 2. सींचना, तर करना, भिगोना, गीला करना मेघ० २६, मनु० ९।२५५ 3. उडेलना, उत्सर्जन करना, निकालना, ढालना रघु० १६।६६ 4. भरना, बूंद-बूंद टपकाना, डालना —जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम् —भर्तृ० २।२३ 5. उडेल देना, प्रस्तुत करना अन्यथा तिलोदकं मे सिञ्चतम् —श० ३, प्रेर० (सेचयति-ते) छिड़कवाना, इच्छा० (सिसिक्षति-ते) छिड़कने की इच्छा करना, अभि 1 छिड़कना, उडेलना, सींचना, गीला करना, बौछार करना (आलं० से भी)—अथ वपुरभिषेक्तुं तास्तदाम्भोभिरीषुः शि० ७।७५, भट्टि० ६।२१, १५।३ 2. लेप करना, संस्कारित करना, नियत करना (सिर पर जल के छींटे देकर) मुकुट पहनाना, राज्याभिषेक करना, पदासीन करना—अग्निवर्णमभिषिच्य राघवः स्वे पदे -रघु० १९।१, १७।१३, विक्रम० ५।२३ (प्रेर०) ताज पहनना, राजगद्दी पर बिठाना, आ—, छिड़कना (प्रेर०) छिड़कवाना, उडलवाना —तप्तमासेचयेत्तैलं वक्त्रे श्रोत्रे च पार्थिवः मनु० ८।२७२, उद्—, छिनकना, उडेलना, फैलाना (कर्मवा०) 1. तेज प्रवाहित होना, झाग उगलना, ऊपर की ओर फेंका जाना 2. फूल जाना, उन्नत होना, अहंकार युक्त होना न तस्योत्सिषिचे मनः—रघु० १७।४३ 3. बाधित होना—मनु० ८।७२, (प्रेर०) घमंड से भरना, नि , छिड़कना, उडेलना, ऊपर डाल देना, अन्दर डालना रघु० ३।२६, श० ४।१३, कु० २।५७ 2. गर्भयुक्त करना—निषिञ्चन्माधवीमेतां लतां कौन्दीं च नर्तयन् विक्रम० २।४, (यहां पहला अर्थ भी अभिप्रेत है), परि—छिड़कना, उडेलना।
सिञ्चयः [सच्+अयच्. कित्] वस्त्र, कपड़ा।
सिञ्चिता [सिच+इतच्, पृषो०] पीपलामूल।
सिञ्जा [=शिञ्जा, पृषो०] धातु के बने आभूषणों की झनकार।
सिञ्जितम् [=शिञ्जित, पृषो०] झनझनाहट, झनकार —आदिदसुभिर्नूपुरसिञ्जितानि—कु० १।३४, विक्रम० ४।१४।
सिट् (भ्वा० पर० सेटति) अवज्ञा करना, घृणा करना।
सित (वि०) [सो (सि)+क्त] 1. सफेद 2. बंधा हुआ, कसा हुआ, जकड़ा हुआ, बेड़ी पड़ा हुआ 3. घिरा हुआ 4. अवसित, समाप्त, **तः** 1. सफेद रंग 2. चान्द्रमास का शुक्ल पक्ष 3. शुक्रग्रह 4. बाण,—**तम्** 1. चाँदी 2. चन्दन 3. मूली। सम० **अग्रः** कांटा,—**अपाङ्गः** मोर,—**अभ्रः**,—**अभ्रम्** कपूर, **अम्बरः** श्वेतवस्त्रधारी संन्यासी,—**अर्जकः** सफेद तुलसी, **अश्वः** अर्जुन का विशेषण, असित बलराम का विशेषण, **आदि** राब, गुड़, **आलिका** कोकला, सितुही, **इतर** (वि०) जो श्वेत न हो अर्थात् काला,—**उद्भवम्** सफेद चन्दन, **उपलः** स्फटिक, **उपला** मिश्री, चीनी,—**करः** 1. चन्द्रमा 2. कपूर, **धातुः** चाक, खड़िया, **रश्मिः** चाँद, **वाजिन्** (पुं०) अर्जुन का नाम,—**शर्करा** चीनी **शिम्बिकः** गेहूँ,—**शिवम्** सेंधा नमक,—**शूकः** जौ।
सिता [सित+टाप्] चीनी, शक्कर,—पित्तेन दूने रसने सितापि तिक्तायते हंसकुलावतंस—नै० ३।९४, भामि० ४।१३ 2. ज्योत्स्ना 3. मनोरमा स्त्री 4. मदिरा 5. सफेद दूब 6. चमेली, बेला।
सिति (वि०) [सो+क्तिच्] 1. सफेद 2. काला,—**तिः** सफेद या काला रंग। सम०—**कण्ठ**,—**वासस्** दे० शितिकंठ, शितिवासस्।
सिद्ध (भू० क० कृ०) [सिध्+क्त] 1. सम्पन्न, कार्यान्वित, अनुष्ठित, अवाप्त, पूर्ण 2. प्राप्त, उपलब्ध, अवाप्त 3. कामयाब, सफल 4. बसा हुआ, स्थापित नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि उत्तर० १।१४ 5. सावित, प्रमाणित तस्मादिन्द्रियं प्रत्यक्षप्रमाणमिति सिद्धम्-तर्क०, मनु० ८।१७८ 6. वैध, न्याय्य (जैसे कि नियम) 7. मन माना हुआ 8. फैसला किया हुआ, निर्णीत

(जैसे कि कोई कानूनी अभियोग) 9. दिया गया, गुगताया गया, (ऋणं आदि) चुकता किया गया 10. पकाया गया, (भोजन) बनाया गया 11. परिपक्व, पका हुआ 12. सर्वथा तैयार किया गया, मिश्रित, (वनस्पति आदि) एकत्र पकाई गई 13. (रुपया आदि) तैयार 14. वश में किया गया, जीता गया, (जादू के द्वारा) अधीन किया गया 15. वशीभूत किया गया, मंगलप्रद बना हुआ 16. पूर्णतः विज्ञ या दक्ष, प्रवीण जैसा कि 'रससिद्धम्' 17. संपादित, (साधना आदि के द्वारा) पवित्रीकृत 18. मुक्त किया हुआ 19. अलौकिक शक्ति से युक्त 20. पावन, पवित्र, पुण्यात्मा 21. दिव्य, अविनश्वर, नित्य 22. विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध 23. उज्ज्वल, शानदार,—द्धः 1. अर्धदिव्य प्राणी जो अत्यंत पवित्र और पुण्यात्मा माना जाता है, विशेष रूप से देवयोनि विशेष जिसमें आठ सिद्धियाँ हों—उद्वेजिता वृष्टिभिराश्रयन्ते शृङ्गाणि यस्यातपवन्ति सिद्धाः—कु० १।५ 2. अंतर्दृष्टि प्राप्त सन्त ऋषि या महात्मा (जैसे कि व्यास) 3. कोई भी संत, ऋषि या महात्मा—सिद्धादेश—रत्ना० १ 4. जादूगर, ऐन्द्रजालिक 5. कानूनी मुक़दमा, अदालती जाँच 6. गुड़,—द्धम् समुद्री नमक। सम०—अन्तः 1. सर्वसम्मत फल 2. किसी तर्क का प्रदर्शित उपसंहार, किसी प्रश्न का सर्वसम्मत रूप, सही तथा तर्कसंगत उपसंहार (पूर्वपक्ष के निराकरण के पश्चात्) 3. प्रमाणित तथ्य, मानी हुई सचाई, राद्धान्त, मत 4. निर्णायक साक्ष्य के आधार पर अवलंबित कोई माना हुआ मूलपाठ का ग्रन्थ, °कोटिः (स्त्री०) युक्तिगत बिन्दु जो तर्कसंगत उपसंहार माना जाता है, °पक्षः किसी युक्ति का तर्कसंगत पार्श्व,—अन्नम् पकाया हुआ भोजन,—अर्थ (वि०) जिसने अपना अभीष्ट सम्पन्न कर लिया है, सफल (—र्थः) 1. सफेद सरसों 2. शिव का नाम 3. महात्मा बुद्ध का नाम,—आसनम् धर्मसाधना में विशेष प्रकार की बैठने की स्थिति,—गङ्गा,—नदी,—सिन्धुः स्वर्गंगा, आकाशगंगा,—ग्रहः विशेष प्रकार का पागलपन, मनोविक्षिप्त,—जलम् कांजी,—धातुः पारा,—पक्षः किसी प्रतिज्ञा का सर्वसम्मत तथा तर्कसंगत पहलू,—प्रयोजनः सफेद सरसों,—योगिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—रस (वि०) खनिज, धातुमय (—सः) 1. पारा 2. रसायनज्ञाता—सङ्कल्प (वि०) जिसने अपना अभीष्ट सिद्ध कर लिया है, —सेनः कार्तिकेय का नाम,—स्थाली ऋषि की बटलोई या पात्र (ऐसा समझा जाता है कि इस बर्तन से इच्छानुसार भोजन प्राप्त किया जा सकता है और फिर भी यह भोजन से भरपूर रहता है)।

सिद्धता,—त्वम् [सिद्ध+तल्+टाप्, त्व वा] सम्पन्नता, पूर्णता, पूरा करना।

सिद्धिः (स्त्री०) [सिध्+क्तिन्] 1. निष्पन्नता, पूर्णता, संपूर्ति, पूरा होना, (किसी पदार्थ की) पूर्ण अवाप्ति —क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे—सुभा० 2. सफलता, समृद्धिः, कल्याण, कुशल-क्षेम 3. स्थापना प्रतिष्ठा 4. प्रमाणन, प्रदर्शन, प्रमाण, निर्विवाद परिणाम 5. (किसी नियम या विधि की) वैधता 6. फैसला, निर्णय, व्यवस्था (किसी क़ानूनी मुक़दमे की) 7. निश्चिति, सचाई, यथार्थता, शुद्धता 8. अदायगी, (ऋण का) परिशोध 9. तैयार करना, (औषधि आदि का) पकाना 10. समस्या का समाधान 11. तत्परता 12. नितान्त पवित्रता या विशुद्धता 13. अतिमानव शक्ति—यह गिनती में आठ हैं—अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा, ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामावसायिता 14. जादू के द्वारा अतिमानव शक्तियों को प्राप्त करना 15. विलक्षण कुशलता या क्षमता 16. अच्छा प्रभाव या फल 17. मुक्ति, मोक्ष 18. समझ, बुद्धि 19. छिपाना, अन्तर्धान होना, अपने आपको अदृश्य करना 20. जादू की खड़ाऊँ 21. एक प्रकार का योग 22. दुर्गा का नाम। सम०—द (वि०) सफलता या सर्वोपरि आनन्दातिरेक देने वाला (—दः) शिव का विशेषण, —दात्री दुर्गा का विशेषण, —योगः ग्रहों का विशेष प्रकार का शुभ संयोग।

सिध् (दिवा० पर० सिध्यति, सिद्ध, प्रेर०—साधयति या सेधयति—इच्छा० सिषित्सति) 1. सम्पन्न होना, पूरा होना —यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः —हि० प्र० ३१, उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः —३६ 2. कामयाब होना, सफलता प्राप्त करना —सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः—श० ७।४ 3. पहुँचना, आघात करना, सही पड़ना—श० २।५ 4. अभीष्ट पदार्थ प्राप्त करना 5. सिद्ध होना, प्रमाणित होना, वैध होना —यदि वचनमात्रेणैवाधिपत्यं सिध्यति —हि० ३ 6. व्यवस्थित या अभिनिर्णीत होना 7. सर्वथा तैयार किया हुआ या पकाया हुआ होना 8. विजित या जीता हुआ होना—पंच० २।३६, प्र—, 1. सम्पन्न होना, कार्यान्वित होना, सफल होना —शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः—भग० ३।८, तपसैव प्रसिध्यन्ति —मनु० ११।२३१ 2. उपलब्ध या अवाप्त होना 3. विख्यात होना, दे० 'प्रसिद्ध', सम्—, 1. पूरा किया जाना 2. सर्वथा सम्पन्न या क्रियान्वित होना, पूरी तरह अनुष्ठित होना 3. आनन्दातिरेक प्राप्त करना, प्रसन्न होना—जप्येनैव तु संसिध्येद् ब्राह्मणो नात्र संशयः—मनु० २।८७।

ii (भ्वा० पर० सेधति, सिद्ध, इकारान्त उकारान्त

उपसर्गों के पश्चात् 'सिध्' के 'स्' को मूर्धन्य 'ष्' हो जाता है) 1. जाना 2. हटाना, दूर करना 3. नियन्त्रण करना, रुकावट डालना, रोकना 4. निषेध करना, प्रतिषेध करना 5. आदेश देना, समादेश देना, निदेश देना 6. शुभ निकलना, मंगलमय होना, अप—, दूर करना, हटाना संवत्सरं यवाहारस्तत्पापमपसेधति—मनु० ११।१९९, नि—, 1. परे हटाना, रोकना, नियंत्रण में रखना, पीछे हटाना—न्यषेधि शेषोऽप्यनुयायिवर्गः—रघु० २।४, ३।४२, ५।१८ 2. विरोध करना, प्रतिवाद करना, आक्षेप करना - रघु० १४।४३ 3. प्रतिषेध करना, मना करना—निषिद्धो भाषमाणस्तु सुवर्णं दण्डमर्हति—मनु० ८।३६१ 4. पराजित करना, जीतना—रघु० १८।१ 5. हटाना, दूर करना, निवारण करना—न्यषेधत्पावकास्त्रेण रामस्तद्राक्षसांस्ततः—भट्टि० १७।८७, १।१५, प्रति , 1. रोकना, दूर रखना, नियंत्रित करना मनु० २।२०६, रघु० ८।२३ 2. मना करना प्रतिषेध करना - नृपतेः प्रतिषिद्धमेव तत्कृतवान् पंक्तिरथो विलम्व्य यत् रघु० ९।७४, विप्रति , प्रतिवाद करना, विरोध करना—स्नेहश्च निमित्तसव्यपेक्षश्चेति विप्रतिषिद्धमेतत् मा० १।

सिध्मम्, सिध्मन् (नपुं०) [सिध्+मन्, किच्च] 1. छाला, ददोरा, खुजली 2. कोढ़ 3. कुष्ठ ग्रस्त स्थान।

सिध्मल [सिध्म+लच्] 1. जिसको खुजली हो, कोढ़ के चिह्नों से युक्त, कोढ़ी।

सिध्मा [सिध्म+टाप्] 1. छाला, ददोरा, खुजली, कोढ़ युक्त स्थान 2. कोढ़।

सिध्यः [सिध्+णिच्+यत्] पुष्य नक्षत्र।

सिध्रः [सिध्+रक्] 1. पवित्रात्मा, पुण्यात्मा 2. वृक्ष।

सिध्रकावणम् [सिध्रकप्रधानं वनम्, णत्वम्, दीर्घश्च] दिव्य उद्यानों में से एक उद्यान।

सिनः [सि+नक्] ग्रास, कौर।

सिनी [सिन+ङीप्] गौर वर्ण की स्त्री।

सिनीवाली [सिनीं श्वेतां चन्द्रकलां वलति धारयति, सिनी वल्+अण्+ङीप्] चन्द्रदर्शन से पूर्ववर्ती दिन, प्रतिपदा, (जिस दिन चन्द्रमा दिखाई देता है), —या पूर्वामावास्या सा सिनीवाली उत्तरा सा कुहूः ऐ० ब्रा०, या—सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः—अमर०।

सिन्वुकः, सिन्दुवारः [स्यन्द्+उ, संप्रसारण, सिन्दु+वृ+अण्] एक वृक्ष का नाम।

सिन्दूरः [स्यन्द्+उरन् सम्प्रसारणम्] एक प्रकार का वृक्ष, - **रम्** लाल रंग का सुरमा स्वयं सिन्दूरेण द्विपरणमुदा मुदित इव गीत० ११, नै० २२।४५।

सिन्धुः [स्यन्द्+उद संप्रसारणम् दस्य धः] 1. समुद्र, सागर 2. सिंधुनदी के चारों ओर का देश 4. मालवा में बहने वाली एक नदी का नाम - मेघ० २९ (यहां पर मल्लि० का टिप्पण—सिन्धु नाम नदी तु कुत्रापि नास्ति—निरर्थक है)—मा० ४।९. (उस स्थान पर भांडारकर का नोट देखो) 5. हाथी के सूंड से निकला हुआ पानी 6. हाथी के गण्डस्थलों से बहने वाला दान या मद 7. हाथी—(पुं०ब०व०) बड़ा दरिया या नदी —पिबत्यसौ पाययते च सिन्धूः—रघु० १३।९, मेघ० ४६। सम० ज (वि०) 1. नदी से उत्पन्न 2. समुद्र से उत्पन्न 3. सिंध देश में उत्पन्न, (—जः) चन्द्रमा (—जम्) सेंधा नमक,—नाथः सागर।

सिन्धुकः, सिन्धुवारः [सिन्धु+क,=सिन्दुवारः, दस्य धः] एक वृक्ष का नाम।

सिन्धुरः [सिन्धु+र] हाथी।

सिन्व् (भ्वा० पर० सिन्वति) गीला करना, भिगोना।

सिप्रः [सप्+रक्, पृषो०] 1. पसीना, स्वेद 2. चाँद।

सिप्रा [सिप्र+टाप्] 1. स्त्री की करधनी या तगड़ी 2. भैंस 3. उज्जयिनी के निकट एक नदी का नाम, दे० शिप्रा।

सिम (वि०) [सि+मन्] प्रत्येक, सब, संपूर्ण, समस्त।

सिम्बा,—बी दे० शिम्बा,—बी।

सिरः [सि+रक्] पीपलामूल की जड़।

सिरा [सिर+टाप्] 1. शरीर की नलिकाकार वाहिका (जैसे कि शिरा, धमनी, नाड़ी आदि) 2. डोलची, पानी उलीचने का वर्तन।

सिव् (दिवा० पर० सीव्यति, स्यूत) 1. सीना, रफ़ू करना, तुरपना, टांका लगाना,—मनोभवः सीव्यति दुर्यशःपटो—नै० १।८०, मा० ५।१० 2. मिलाना, एकत्र करना स हि स्नेहात्मकस्तन्तुरन्तर्मर्माणि सीव्यति —उत्तर० ५।१७, अनु नत्थी करना, मिला कर जोड़ना।

सिवरः [सि+ष्वरप्] हाथी।

सिषाधयिषा [साधयितुमिच्छा— साध्+सन्+अ+टाप्, धातोर्द्वित्वम्] संपन्न करने या क्रियान्वयन की इच्छा 2. स्थापित करने की इच्छा, सिद्ध करने की इच्छा, प्रदर्शित करने की इच्छा।

सिसृक्षा [सृज्+सन्+अ+टाप्, धातोर्द्वित्वम्] रचना करने की इच्छा।

सिहुण्डः [सो+कि=सिः छेदः तं हुण्डते—सि+हुण्ड्+अण्] सेहुंड (खेत की बाड़ में लगने वाला कांटेदार दूधिया पौधा।

सिह्लः, सिह्लकः [स्निह्+लक् पृषो०, सिह्ल+कन्] गुग्गुल, गंधद्रव्य।

सिह्लकी, सिह्ली [सिह्लक (सिह्ल)+ङीप्] लोबान का वृक्ष।

सीक् i (भ्वा० आ० सीकते) 1. छिड़कना, छोटी छोटी बूंदें करके बखेरना 2. जाना, हिलना-जुलना ।
ii (भ्वा० पर०, चुरा० उभ सीकति, सीकयति—ते) 1. उतावला होना 2. सहिष्णु होना 3. स्पर्श करना ।

सीकरः [सीक्यते सिच्यतेऽनेन+सीक्+अरन्] 1. फुहार वर्षा, जलकण पड़ना, फूही पड़ना 2. छींटे, पानी की छोटी छोटी बूंदें, दे० शीकर ।

सीता [सि+त पृषो० दीर्घः] 1. हल के चलाने से खेत में बनी हुई रेखा, खूड, हल की फाल से खुदी हुई रेखा 2. जुती हुई या खूडवाली भूमि, हल से जोती हुई भूमि—वृषेव सीतां तदवग्रहक्षताम् कु० ५।६१ 3. कृषि, खेती जैसा कि 'सीताद्रव्य' में 4. मिथिला के राजा जनक की पुत्री का नाम, राम की पत्नी का नाम [इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि राजा जनक ने इसे हल की फाल द्वारा बने खूड से प्राप्त किया । बात यह थी कि सन्तान प्राप्ति की इच्छा से राजा ने एक यज्ञ का आरंभ किया था, उसकी तैयारी के समय उसे हल चलाते समय सीता खूड में से मिली । इसीलिए 'अयोनिजा' या 'धरापुत्री' इसके विशेषण हैं । राम के साथ सीता का विवाह हुआ, उनके साथ वह वन में गई । जब रावण उसे वन में से उठा कर ले गया और उसका सतीत्व भंग करने की चेष्टा करने लगा तो सीता ने उसके इस दुष्ट प्रस्ताव को घृणा के साथ ठुकरा दिया । जब राम को इस बात का पता लगा कि सीता लंका में है, तो उसने लंका पर चढ़ाई की, रावण और उसकी सेना को मार कर सीता का उद्धार किया । राम के द्वारा पत्नी के रूप में फिर से स्वीकृत किये जाने से पूर्व सीता को भीषण अग्नि-परीक्षा में से गुजरना पड़ा । यद्यपि राम को उसके सतीत्व पर पूरा विश्वास था फिर भी लोकापवाद के कारण उन्होंने सीता का परित्याग कर दिया । सीता इस समय गर्भवती थी । वाल्मीकि ऋषि के रूप में अपने प्ररक्षक को पा सीता उन्हीं के आश्रम में रहने लगी वहीं कुश और लव नाम के दो पुत्रों को जन्म दिया वाल्मीकि मुनि ने. बच्चों का पालन पोषण किया । अन्त में वाल्मीकि के द्वारा सीता राम को सौंप दी गई]। 5. एक देवी का नाम, इन्द्र की पत्नी 6. उमा का नाम 7. लक्ष्मी का नाम 8. गंगा की चार धाराओं में से एक (पूर्वी धारा) 9. मदिरा । सम०—**द्रव्यम्** खेती के उपकरण, कृषि के औजार—मनु० ९।२९३, —**पतिः** रामचन्द्र का नाम,—**फलः** कुम्हड़े की बेल, (—**लम्**) कुम्हड़ा ।

सीतानकः (पुं०) मटर ।

सीत्कारः, सीत्कृतिः (स्त्री०) [सीत्+कृ+घञ्, क्तिन् वा] साँस ऊपर खींचने का शब्द, सिसकारी, (आह भरने या सरदी से ठिठुरने के समय सी-सी करना या मर्मर ध्वनि)—मया दष्टाधरं तस्याः ससीत्कार-मिवाननम्—विक्रम० ४।२१ ।

सीत्य (वि०) [सीता+यत्] जोते गये या हल की फाल से बने खूडों से मापा गया,—**त्यम्** चावल, धान्य, अन्न ।

सीद्यम् (नपुं०) आलस्य, शिथिलता, सुस्ती ।

सीधु (पुं०) [सिध्+उ, पृषो०] राब या गुड़ से बनाई हुई शराब, ईख की मदिरा—स्फुरदधरसीधवे तव वदन-चन्द्रमा रोचयति लोचनचकोरम्—गीत० १०, शि० ९।८७, रघु० १६।५२ । सम०—**गन्धः** बकुलवृक्ष, मौलसिरी का पेड़,—**पुष्पः** 1. कदम्ब का वृक्ष 2. मौल-सीरी का पेड़,—**रसः** आम का पेड़, —**संज्ञः** मौलसीरी का पेड़ ।

सीध्रम् (नपुं०) गुदा, मलद्वार ।

सीपः (पुं०) नाव की शक्ल का यज्ञ-पात्र ।

सीमन् (स्त्री०) [सि+मनिन्, नि० दीर्घः] 1. सीमा, हद, दे० सीमा—सीमानमत्यायतयोऽत्यजन्तः शि० ३।५७, दे० 'निःसीमन्' भी 2. अण्डकोष सीम्नि पुष्कलको हतः सिद्धा० ।

सीमन्तः [सीम्नोऽन्तः, शक० पररूपम्] 1. सीमारेखा, सीमान्त 2. सिर के बालों की विभाजक रेखा, सिर की मांग जिसके दोनों ओर बाल विभक्त हों—सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम् मेघ० ६५, शि० ८।६९, महावीर० ५।४४ । सम०—**उन्नयनम्** 'बालों का विभाजन' बारह संस्कारों में से एक जिसको स्त्रियाँ गर्भाधान के चौथे, छठे या आठवें महीने में मनाती हैं ।

सीमन्तकः [सीमन्त+कन्] विशेष प्रकार के नरक का अधिवासी,—**कम्** सिन्दूर ।

सीमन्तयति (ना० धा०, पर०) 1. बालों को अलग-अलग करना 2. मांग निकालना सेनां सीमन्तयन्नरैः—कीर्ति० ५।४४ ।

सीमन्तित (वि०) [सीमन्त्+णिच्+क्त] 1. (बाल आदि) विभाजित 2. मांग निकाल कर अलग किये हुए समीरसीमन्तितकेतकीकाः (प्रदेशाः) शि० ३।८०, रथाङ्गसीमन्तितसान्द्रकर्दमान् (पथः) कि० ४।१८ ।

सीमन्तिनी [सीमन्त+इनि+ङीप्] स्त्री, महिला मा स्म सीमन्तिनी काचिज्जनयेत्पुत्रमीदृशम् हि० २।७, मेघ० ११०, भट्टि० ५।२२ ।

सीमा [सीमन्+डाप्] 1. हद, मर्यादा, किनारा, छोर, मरहद्द 2. खेत, गाँव आदि की सीमा पर सीमा द्योतक टीला या मेंड सीमां प्रति समुत्पन्ने विवादे

—मनु० ८।२४५, याज्ञ० २।१५२ 3. चिह्न, सीमान्त 4. किनारा, तीर, समुद्रतट 5. क्षितिज 6. सीवनी, मांग (जैसे खोपड़ी की) 7. शिष्टाचार या नीति की सीमा, औचित्य की मर्यादा 8. उच्चतम या अधिकतम सीमा, उच्चतम बिन्दु, चरमसीमा—सीमेव पद्मासन कौशलस्य भट्टि० १।६ 9. खेत 10. ग्रीवा का पृष्ठ भाग 11. अण्डकोष। सम० अधिपः पड़ौसी राजा, —अन्तः 1. सीमारेखा, छोर, सरहद 2. अधिकतम सीमा, °पूजनम् 1. गाँव की सीमा का पूजन 2. बरात के आने पर गाँव की सीमा पर दूल्हे का सत्कार, —उल्लङ्घनम् अतिक्रमण करना, सीमा पार करना, सरहद लांघना, निश्चयः सीमान्त या सीमारेखाओं के विषय में क़ानूनी निर्णय,—लिङ्गम् सीमा चिह्न, भू चिह्न,—वादः सीमा संबंधी झगड़ा,—विनिर्णयः सीमारेखाओं के झगड़ों का फैसला, विवादः सीमासंबंधी झगड़ा या मुक़दमेबाजी, °धर्मः सीमाविषयक झगड़ों से संबंध रखने वाला क़ानून, —वृक्षः वह पेड़ जो सीमारेखा का काम दे रहा है,—सन्धिः दो सीमाओं का मिलन।

सीमिकः [स्यम्+किनन्, सम्प्रसारणं, दीर्घश्च] 1. एक वृक्षविशेष 2. बामी 3. चिऊँटी या ऐसा ही छोटा कोई जन्तु।

सीरः [सि+रक्, पृषो०] 1. हल सद्यः सीरोत्कषणसुरभि क्षेत्रमारुह्य मालम् -मेघ० 2. सूर्य 3. आक या मदार का पौधा। सम० —ध्वजः जनक का विशेषण, —पाणिः,—भृत् (पुं०) बलराम के विशेषण, योगः हल में पशु को जोतना, या हल में जुती पशु की जोडी।

सीरकः [सीर+कन्] दे० 'सीर'।

सीरिन् (पुं०) [सीर+इनि] बलराम का विशेषण शि० २।२।

सीलन्धः घः (पुं०) एक प्रकार की मछली।

सीवनम् [सिव्+ल्युट्, नि० दीर्घः] 1. सीना, तुरपना, टांका लगाना 2. जोड़, सन्धिरेखा (जैसे खोपड़ी की)।

सीवनी [सीवन+ङीष्] 1. सुई 2. लिंगमणि का सन्धिशोथ।

सीसम्, सीसकम्, सीसपत्रकम् [सि+क्विप्, पृषो० दीर्घः =सी, सो+क=स, सी+स कर्म० स०; सीस +कन्, सीस+पत्रक] सीसा, -मालवि० ५।१४४, याज्ञ० १।१९०।

सीहुण्डः [=सिहुण्ड, पृषो०] सेंहुड (बाड़ लगाने का एक कांटेदार पौधा)।

सु i (भ्वा० उभ० सुवति–ते) जाना, हिलना-जुलना।
ii (भ्वा० अदा० पर० सवति, सौति) शक्ति या सर्वोपरि सत्ता धारण करना।
iii (स्वा० उभ० सुनोति, सुनुते, सुत, इकारान्त या उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् धातु के स् को मूर्धन्य ष् हो जाता है) 1. भींचना, दबा कर रस निकालना 2. अर्क खींचना 3. उडेलना, छिड़कना, तर्पण करना 4. यज्ञानुष्ठान करना, सोमयज्ञ करना 5. स्नान करना, इच्छा० (सुषूसति–ते)। अभि–, 1. सोमरस निकालना 2. मिलाना, मिश्रण करना, गड्डमड्ड करना –यानि चैवाभिषूयन्ते पुष्पमूलफलैः शुभैः–मनु० ५।१० 3. छिड़कना –भट्टि० ९।९०, उद्–उत्तेजित करना, विक्षुब्ध करना, प्र–, पैदा करना, जन्म देना।

सु (अव्य०) [सु+डु] एक निपात जो कर्मधारय और बहुव्रीहि समास बनाने के लिए संज्ञा शब्दों से पूर्व जोड़ा जाता है, विशेषण और क्रियाविशेषणों में भी जुड़ता है। निम्नांकित इसके अर्थ हैं- 1. अच्छा, भला, श्रेष्ठ यथा 'सुगन्धिः' में 2. सुन्दर, मनोहर–यथा 'सुमध्यमा, सुकेशी' आदि में 3. खूब, सर्वथा, पूरी तरह, ठीक प्रकार से–सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः सुशासिता स्त्री नृपतिः सुसेवितः। सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम्–हि० १।२२ 4. आसानी से, तुरन्त यथा 'सुकर और सुलभ' में 5. अधिक, अत्यधिक, बहुत अधिक–यथा 'सुदारुण और सुदीर्घ' आदि। सम० अक्ष (वि०) 1. अच्छी आँखों वाला 2. उग्र और तेज अंगों वाला,—अङ्ग (वि०) सुडौल, मनोहर, प्रिय,—अच्छ (वि०) दे० शब्द के नीचे,—अन्त (वि०) जिसका अंत भला हो, अच्छी समाप्ति वाला, –अल्प, अल्पक (वि०) दे० शब्द के नीचे,—अस्ति,—अस्तिक दे० शब्द के नीचे, —आकार,—आकृति (वि०) सुनिर्मित, मनोहर, सुन्दर, आगत दे० शब्द के नीचे,—आभास (वि०) बड़ा शानदार व प्रसिद्ध कि० १५।२२,—इष्ट (वि०) भली भाँति किया गया यज्ञ, °कृत् (पुं०) अग्नि का एक रूप. उक्त (वि०) अच्छा बोला हुआ, खूब कहा हुआ–अथवा सूक्तं खलु केनापि–वेणी० ३, (—क्तम्) अच्छी या समझदारी की उक्ति —नेतुं वाञ्छति यः खलान् पथि सतां सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः भर्तृ० २।६, रघु० १५।९५ 2. वैदिक भजन या सूक्त यथा 'पुरुषसूक्त' आदि, °दर्शिन् (पुं०) मंत्रद्रष्टा, वैदिक ऋषि, °वाच् (स्त्री०) 1. भजन 2. स्तुति का शब्द, उक्तिः (स्त्री०) 1. अच्छा या सौहार्दपूर्ण भाषण 2. अच्छा या चातुर्यपूर्ण कथन 3. शुद्ध वाक्य, उत्तर (वि०) 1. अतिश्रेष्ठ 2. उत्तर दिशा की ओर, उत्थान (वि०) खूब प्रयत्न करने वाला, बलशाली, फुर्तीला, (—नम्) प्रबल प्रयत्न या उद्योग,—उन्मद,—उन्माद (वि०) बिल्कुल पागल, दीवाना,—उपसदन (वि०) जिसके पास पहुँचना

आसान हो, उपस्कर (वि०) अच्छे उपकरणों से युक्त, कण्डुः खुजली,—कन्दः 1. प्याज 2. आलू, कचालू, शकरकंद आदि कंद 3. एक प्रकार का घास, —कन्दकः प्याज,—कर (वि०) (स्त्री० रा—री) 1. जो आसानी से किया जा सके, क्रियात्मक, कार्य, —वक्तुं सुकरं, कर्तुं (अध्यवसितुम्) दुष्करम्–वेणी० ३, 'करने की अपेक्षा कहना आसान है' 2. जिसका प्रबंध आसानी से किया जा सके, (रा) सुशील गौ, (—रम्) दान, परोपकार,—कर्मन् (वि०) 1. जो अच्छे कार्य करता है, पुण्यात्मा, भला 2. सक्रिय, परिश्रमी, (पुं०) विश्वकर्मा का नाम,- फल (वि०) (वि०) (धन को) उदारता पूर्वक देने तथा सदुपयोग करने में जिसने कीर्ति अर्जित कर ली हो, काण्डिन् (वि०) 1. सुन्दर वृंतों से युक्त 2. सुंदरता के साथ जुड़ा हुआ, (पुं०) भौंरा, कुन्दकः प्याज,—कुमार (वि०) 1. मृदु, सुकुमार, कोमल 2. सौंदर्ययुक्त तरुण, (—रः) 1. सुन्दर युवक 2. एक प्रकार का गन्ना,— कुमारकः 1. सुन्दर तरुण 2. 'शालि' चावल, (कम्) तमालपत्र,—कृत् (वि०) 1. भला करने वाला, उपकारी 2. पवित्रात्मा, गुणसंपन्न, धर्मात्मा 3. बुद्धिमान्, विद्वान् 4. भाग्यशा. , क़िस्मत वाला 5. अच्छे यज्ञ करने वाला, (पुं०) 1. कुशल कर्मकर 2. त्वष्टा का नाम,—कृत (वि०) भली-भांति किया हुआ 2. सर्वथा किया हुआ 3. खूब किया हुआ या सुरचित 4. जिसके साथ कृपापूर्वक व्यवहार किया गया हो, सहायता दिया गया, मित्रता के सूत्र में आबद्ध 5. सद्गुणी, धर्मात्मा, पवित्रात्मा 6. भाग्यशाली, क़िस्मत वाला, (- तम्) कोई भी भला या अच्छा कार्य, कृपा, अनुग्रह, सेवा—नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः—भग० ५।१५, मेघ० १७ 2. सद्गुण, नैतिक या धार्मिक गुण—स्वर्गाभिसन्धिसुकृतं वञ्चनामिव मेनिरे - कु० ६।४७, तच्चिन्त्यमानं सुकृतं तवेति–रघु० १४।१६ 3. सौभाग्य, मांगलिकता 4. प्रतिफल, पुरस्कार,—कृतिः (स्त्री०) 1. कृपा, सद्गुण 2. तपस्या करना,— कृतिन् (वि०) 1. भलाई करने वाला, कृपापूर्वक व्यवहार करने वाला 2. सद्गुणसम्पन्न, पवित्रात्मा, भला, धर्मात्मा-- सन्तः सन्तु निरापदः सुकृतिनां कीर्तिश्चिरं वर्धताम् हि० ४।१३२, भग० ७।१६ 3. बुद्धिमान्, विद्वान् 4. परोपकारी 5. भाग्यशाली क़िस्मत वाला,—केश (स) रः गलगल का पेड़, क्रतुः 1. अग्नि का नाम 2. शिव का नाम 3. इन्द्र का नाम 4. मित्र और वरुण का नाम 5. सूर्य का नाम, ग (वि०) 1. सजीली चाल चलने वाला 2. शोभन, ललित 3. सुगम्य --पंच० २।१४१ 4. बोधगम्य, आसानी से समझे जाने योग्य (विर० दुर्ग) (—गम्) 1. विष्ठा, मल 2. प्रसन्नता,—गत (वि०) 1. भली-भांति किया हुआ 2. भली-भांति प्रदान किया हुआ, (तः) बुद्ध का विशेषण, गन्धः 1. खुशबू, अच्छी गंध, गन्धद्रव्य 2. गन्ध 3. व्यापारी, (—धम्) 1. चन्दन 2. जीरा 3. नील कमल 4. एक प्रकार का सुगन्धित घास (—धा) पवित्र तुलसी, - गन्धकः 1. गन्धक 2. लाल तुलसी 3. सन्तरा 4. एक प्रकार की लौकी, गन्धि (वि०) 1. मधुर गन्ध वाला, खुशबूदार, सुरभित 2. सद्गुणों से युक्त, पवित्रात्मा, (—न्धिः) 1. गंधद्रव्य, सुरभि 2. परमात्मा 3. एक प्रकार का मधुगन्ध वाला आम (—नपुं०—न्धि) 1. पिप्परामूल 2. एक प्रकार का सुगन्धित घास 3. धनिया, °त्रिफला 1. जायफल 2. लौंग,— गन्धिकः 1. धूप 2. गन्धक 3. एक प्रकार का (बासमती) चावल, (—कम्) सफेद कमल,—गम (वि०) 1. जहाँ आसानी से पहुँचा जाय, सुलभ 2. आसान 3. सरल, बोधगम्य, गहना यज्ञस्थान को अस्पृश्यादि के संपर्क से बचाने के लिए बनाया गया घेरा, °वृत्तिः दे० ऊपर का शब्द, गृह (वि०) (स्त्री०—ही) सुन्दर घर वाला, भली भांति रहने वाला—सुगृही निर्गृही कृता पंच० १।३९०, गृहीत (वि०) 1. भली भांति पकड़ा हुआ, अच्छी तरह समझा हुआ 2. समुचित रूप से या शुभ रीति से प्रयुक्त, °नामन् (वि०) 1. वह जिसका नाम मांगलिक रूप से लिया जाय, या जिसका नाम लेना (बलि, युधिष्ठिर आदि) शुभ समझा जाय, प्रातः स्मरणीय, सम्मानपूर्वक नाम लेने की रीति को द्योतन करने वाला शब्द - सुगृहीतनाम्नः भट्टगोपालस्य पौत्रः— मा० १,—ग्रासः स्वादिष्ट कौर या निवाला—ग्रीव (वि०) अच्छी गर्दन वाला, (—वः) 1. नायक 2. हंस 3. एक प्रकार का शस्त्र 4. सुग्रीव जो वालि का भाई था (कबन्ध की बात मान कर राम सुग्रीव के पास गये। सुग्रीव ने बतलाया कि किस प्रकार उसके भाई वालि ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया। साथ ही अपनी पत्नी का उद्धार करवाने के लिए राम से सहायता मांगी। स्वयं सुग्रीव ने यह प्रतिज्ञा की कि मैं भी आपकी पत्नी सीता का उद्धार करवाने में आपकी सहायता करूँगा। फलतः राम ने वालि को मार गिराया, सुग्रीव को राजगद्दी पर बिठाया। तब सुग्रीव ने अपनी वानर सेना साथ लेकर राम का साथ दिया जिससे कि राम ने रावण को मार कर सीता का उद्धार किया), °ईशः राम का नाम,—ग्ल (वि०) बहुत थका हुआ, श्रान्त,— चक्षुस् (वि०) अच्छी आंखों वाला, भली भांति देखने वाला, (पुं०) 1. विवेकशील, या बुद्धिमान् व्यक्ति, विद्वान् पुरुष 2. गूलर

का पेड़, चरित, चरित्र (वि०) अच्छे आचरण वाला, शिष्टाचारयुक्त (—तम्,—त्रम्) 1. सदाचार, अच्छा चालचलन 2 गुण तव सुचरितमङ्गुलीय नूनं प्रतनु—श० ६।११, (—ता,—त्रा) सदाचारिणी, पतिव्रता, और सती साध्वी स्त्री,—चित्रकः 1. रामचिरैया, एक पक्षी 2. चीतल सांप, चित्रा एक प्रकार की लौकी, चिन्ता गहनचिन्तन, गम्भीर,—चिरस् (अव्य०) दीर्घ काल तक, बहुत देर तक, चिरायुस् (पुं०) सुर देवता, जनः 1. भला पुरुष, सद्गुणी, परोपकारी 2. सज्जन,—जनता 1. भलाई, नेकी, परोपकार, सद्गुण—ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता—भर्तृ० २।८२ 2. भले पुरुषों का समूह, —जन्मन् (वि०) सत्कुलोत्पन्न, कुलीन,—या कौमुदी नयनयोर्भवतः सुजन्मा —मा० १।३४,—जल्पः अच्छी वाणी,—जात (वि०) 1. उच्चकुलोत्पन्न 2. सुन्दर, प्रिय—मा० १।१६, रघु० ३।८,—तनु (वि०) 1. सुन्दर शरीर वाला 2. अत्यन्त सुकुमार, दुबला-पतला 3. कृशकाय, दुर्बल-शरीर, (स्त्री० – नुः —नूः) कोमलाङ्गी, सुन्दरशरीर —एताः सुतनु मुखं ते सख्यः पश्यन्ती हेमकूटगताः —विक्रम० १।११,—तपस् (वि०) 1. जो घोर तपस्या करता हो 2. अतिशय तापयुक्त (पुं०) 1. संन्यासी, भक्त, साधु, वैरागी 2. सूर्य, (नपुं०) कठोर साधना —तराम् (अव्य०) 1. अपेक्षाकृत अच्छा, अधिक श्रेष्ठ ढंग से 2. अत्यंत, अधिक, अत्यधिक, बहुत ज्यादह—तया दुहित्रा सुतरां सवित्री स्फुरत्प्रभामण्डलया चकाशे कु० १।२४, सुतरां दयालुः रघु० २।५३, ४।९, १८।२४ 3. और अधिक, और भी ज्यादह —नत्वप्यवस्था न ते चेत्त्वयि मम सुतरामेव राजन् गतोऽस्मि—भर्तृ० ३।३०, तर्दनः कोयल,—तलम् 1. 'अत्यन्त गहराई' भूमि के नीचे सात लोकों में से एक, दे० 'पाताल' 2. किसी बड़े भवन की बुनियाद, —तिक्तकः मूंगे का पेड़, तीक्ष्ण (वि०) 1. बहुत तेज 2. अत्यंत तीखा 3. बहुत पीडाकारक, (क्ष्णः) 1. सहिजन का पेड़ 2. एक ऋषि का नाम नाम्ना सुतीक्ष्णश्चरितेन दान्तः रघु० १३।४१, °दशनः शिव का विशेषण,—तीर्थः 1. अच्छा गुरु, 2. शिव का नाम, —तुङ्ग (वि०) बहुत ऊँचा या लंबा, (—गः) नारियल का पेड़,—दक्षिण (वि०) 1. अत्यन्त निष्कपट व खरा 2. बहुत उदार, यज्ञ मे खूब दक्षिणा देने वाला—पंच० १।३०, (—णा) दिलीप राजा की पत्नी का नाम, —तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा। पत्नी सुदक्षिणेत्यासीत् -रघु० १।३१, ३।१, दण्डः बेंत, दत् (वि०) (स्त्री० ती) अच्छे दांतों वाला, —दन्तः 1. अच्छा दांत 2. अभिनेता, नर्तक, नट, (ती) पश्चिमोत्तर दिशा की दिक्करिणी, दर्शन (वि०) (स्त्री०—ना,—नी) 1. प्रियदर्शन, सुंदर, मनोहर 2. जो आसानी से दिखाई दे (नः) 1. विष्णु का चक्र, जैसा कि 'कृष्णोप्यसुदर्शनः' का० 2. शिव का नाम 3. गिद्ध, (—नम्) जंबू द्वीप का नाम, दर्शना 1. सुन्दर स्त्री 2. स्त्री 3. आदेश, आज्ञा 4. एक प्रकार की बूटी, दा (वि०) यथेष्ट, दामन् (वि०) जो उदारता पूर्वक देता है (पुं०) 1. बादल 2. पहाड़ 3. समुद्र 4. इन्द्र के हाथी का नाम 5. एक दरिद्र ब्राह्मण का नाम जो अपने मित्र कृष्ण से मिलने के लिए भुने चावलों की भेंट लेकर, द्वारकापुरी गया था तथा जिसे श्रीकृष्ण ने फिर धनधान्य और कीर्ति से सम्पन्न किया,—दायः 1. मांगलिक उपहार 2. विशिष्ट अवसरों पर दिया जाने वाला विशेष उपहार,—दिनम् 1. आनन्दप्रद शुभ दिवस 2. अच्छा दिन, अच्छा मौसम (विप० दुर्दिन), इसी प्रकार 'सुदिनाहम्' इसी अर्थ में,—दीर्घ (वि०) बहुत लंबा या विस्तृत (—र्घा) एक प्रकार की लकड़ी—दुर्लभ (वि०) अत्यंत दुष्प्राप्य या विरल, दूर (वि०) बहुत दूर स्थित या दूरवर्ती (सुदूरम् 1. बहुत दूर 2. बहुत ऊँचाई तक, अत्यधिक, सुदूरात् दूर से, फ़ासले से),—दृश् (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (स्त्री०) सुन्दर स्त्री,—धन्वन् (वि०) बढ़िया धनुष को धारण करने वाला, (—पुं०) 1. अच्छा तीरंदाज या धनुर्धारी 2. विश्वकर्मा का नाम धर्मन् (लि०) कर्तव्यपरायण (स्त्री०) देव परिषद्, देवसभा, धर्मा, —धर्मी देवसभा -यथावुदीरितालोकः सुधर्मानवमां सभाम्—रघु० १७।२८,—धी (वि०) अच्छी समझ वाला, बुद्धिमान्, चतुर, प्रतिभाशाली, (—धीः) बुद्धिमान् या प्रतिभाशाली पुरुष, विद्वान् पुरुष या पंडित, (स्त्री०) अच्छी समझ, भला ज्ञान, प्रज्ञा, —उपास्यः 1. एक विशेष प्रकार का महल 2. कृष्ण के सेवक का नाम, (स्यम्) बलराम का मुद्गर, —उपास्या 1. स्त्री 2. उमा या उसकी कोई सखी 3. एक प्रकार का रंजक, नन्वा स्त्री, नयः 1. अच्छा चालचलन 2. अच्छी नीति, नयन (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (नः) हरिण, (—ना) 1. सुन्दर आखों वाली स्त्री 2. सामान्य स्त्री, नाभ (वि०) सुन्दर नाभि वाला 2. अच्छे नाह या केन्द्र वाला, (—भः) 1. पहाड़ 2. मैनाक पहाड़, निभृत (वि०) बिल्कुल अकेला, निजी, (अव्य० तम्) चुपचाप, छिपे-छिपे, सट कर, निजी रूप से, निश्चलः शिव का विशेषण,—नीत (वि०) अच्छे आचरण वाला, शिष्टाचार युक्त 2. नम्र, विनयी (तम्) 1. अच्छा चालचलन, शिष्ट आचरण 2. अच्छी नीति, दूरदर्शिता नीतिः (स्त्री०) 1. अच्छा आचरण, शिष्टाचार,

औचित्य 2. अच्छी नीति 3. ध्रुव की माता का नाम, —नीथ (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, सदाचारी, धर्मात्मा, सद्गुणी, भला, (—थः) 1. ब्राह्मण 2. शिशुपाल का नाम, —नील (वि०) बिल्कुल काला, या नीला, (—लः) अनार का पेड़, (—ला) सामान्य सन का पौधा,—नेत्र (वि०) सुन्दर आंखों वाला,—पक्व (वि०) 1. अच्छा पका हुआ 2. सर्वथा परिपक्व या पका हुआ (—क्वः) एक प्रकार का सुगन्धित आम, पत्नी वह स्त्री जिसका पति भद्रपुरुष हो, पथः 1. अच्छी सड़क 2. सुमार्ग 3. अच्छा चालचलन,—पथिन् (पुं०) (कर्तृ० ए० व०—सुपन्थाः) अच्छी सड़क,—पर्ण (वि०) (स्त्री०—र्णा,—र्णी) 1. अच्छे पंखों वाला 2. सुन्दर पत्तों वाला, (—र्णः) 1. सूर्य की किरण 2. अर्धदिव्य चरित्र के पक्षियों जैसे प्राणी, देवगन्धर्व 3. अलौकिक पक्षी 4. गरुड का विशेषण 5. मुर्गा, —पर्णा,—पर्णी (स्त्री०) 1. कमलों का समूह 2. कमलों से भरा ताल 3. गरुड़ की माता का नाम, —पर्याप्त (वि०) 1. बहुत विस्तार युक्त 2. सुयोग्य —पर्वन् (वि०) अच्छे ज़ोड़ों या संधियों वाला, जिसमें बहुत से जोड़ या ग्रन्थियां हों, (पुं०) 1. बाँस 2. बाण 3. सुर, देवता 4. विशेष चान्द्र दिवस (प्रत्येक मास की पूर्णिमा, अमावस्या, अष्टमी और चतुर्दशी) 5. धूआं,—पात्रम् 1. अच्छा या उपयुक्त बर्तन, योग्य भाजन 2. योग्य या सक्षम व्यक्ति, किसी पद के समुपयुक्त व्यक्ति, समर्थ व्यक्ति, पाद् (स्त्री० पाद्,—पदी) अच्छे या सुन्दर पैरों वाली, पार्श्वः पाकड़ का पेड़, प्लक्ष, —पीतम् गाजर, (—तः) पाँचवां मुहूर्त, (—पुंसी) वह स्त्री जिसका पति भला व्यक्ति हो, पुष्प (वि०) (स्त्री०—ष्पा, ष्पी) अच्छे फूल वाला, (—ष्पः) मूंगे का पेड़ (—ष्पम्) 1. लौंग 2. स्त्रीरज,—प्रतर्कः स्वस्थ विचार,—प्रतिभा मदिरा, —प्रतिष्ठ (वि०) 1. भली-भांति खड़ा हुआ 2. बहुत प्रसिद्ध, विश्रुत, कीर्तिशाली, विख्यात, (—ष्ठा) 1. अच्छी स्थिति 2. अच्छा मान, प्रसिद्धि, ख्याति 3. स्थापना, निर्माण 4. मूर्ति आदि की स्थापना, अभिषेक, —प्रतिष्ठित (वि०) 1. भली-भांति स्थापित, 2. अभिषिक्त 3. विख्यात, (—तः) गूलर का पेड़, —प्रतिष्णात (वि०) 1. सर्वथा पवित्रीकृत 2. किसी विषय का अच्छा जानकार, प्रतीक (वि०) 1. सुन्दर आकृति वाला, प्रिय, मनोहर 2. सुन्दर स्कन्ध वाला, (—कः) 1. कामदेव का विशेषण 2. शिव का विशेषण 3. पश्चिमोत्तर दिशा का दिग्गज,—प्रपाणम् अच्छा ताल, —प्रभ (वि०) बड़ा प्रतिभाशाली, यशस्वी, (—भा) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक,—प्रभातम् 1. शुभ प्रभात, मंगलमय प्रातः काल दिष्ट्या सुप्रभातमद्य यदयं देवो दृष्टः - उत्तर० ६ 2. प्रातः कालीन ऊषा, प्रयोगः 1. अच्छा प्रबन्ध, भली-भांति काम में लाया जाना 2. दक्षता,—प्रसाद (वि०) अति करुणामय, कृपानिधि, (—दः) शिव का नाम, प्रिय (वि०) अत्यंत प्रिय, रुचिकर, (—या) 1. मनोहारिणी स्त्री 2. प्रेयसी, —फल (वि०) 1. अत्यन्त फल देने वाला, बहुत उत्पादक 2. बहुत उपजाऊ, (—लः) 1. अनार का पेड़ 2. बेरी का पेड़ 3. एक प्रकार का लोबिया, (—ला) 1. कद्दू, लौकी 2. केले का पेड़ 3. भूरे रंग का अंगूर,—बन्धः तिल,—बल (वि०) अत्यन्त शक्तिशाली, (—लः) शिव का नाम, बोध (वि०) जो आसानी से समझा जाय, (—धः) भला समाचार या उपदेश,—ब्रह्मण्यः 1. कार्तिकेय का विशेषण 2. यज्ञ में वरण किये गये सोलह पुरोहितों में एक,—भग (वि०) 1. अत्यन्त भाग्यवान् या समृद्धिशाली, प्रसन्न, सौभाग्यशाली, अत्यन्त अनुगृहीत 2. प्रिय, मनोहर, सुन्दर, मनोरम - न तु ग्रीष्मस्यैवं सुभगमपराद्धं युवतिषु—श० ३।९, कु० ४।३४, रघु० ११।८० मा० ९ 3. सुहावना, कृतार्थ, रुचिकर, मधुर—श्रवणसुभग —मालवि० ३।४, श० १।३ 4. प्रियतम, इष्ट, स्नेही, प्रिय—सुमुखि सुभगः पश्यन् स त्वामुपैतु कृतार्थताम् गीत० ५ 5. श्रीमान्, (—गः) 1. सुहागा 2. अशोक वृक्ष 3. चम्पक वृक्ष 4. लाल कटसरैया, सदाबहार, (—गम्) अच्छा भाग्य °मानिन्, सुभगंमन्य (वि०) अपने आपको सौभाग्यशाली मानने वाला, सुशील हितकर—वाचालं मां न खलु सुभगंमन्यभावः करोति—मेघ० ९४,—भगा 1. पति की प्रियतमा, प्रेयसी 2. सम्मानित माँ 3. वनमल्लिका 4. हल्दी 5. तुलसी का पौधा, °सुतः पतिप्रिया पत्नी का पुत्र —भङ्गः नारियल का पेड़, भद्र (वि०) अत्यानन्दित या सौभाग्यशाली, (—द्रः) विष्णु का नाम (—द्रा) बलराम और कृष्ण की बहन का नाम जिसका विवाह अर्जुन के साथ हुआ था। उससे अभिमन्यु नाम का पुत्र पैदा हुआ,—भाषित (वि०) 1. भली भाँति कहा गया, सुन्दर रूप से कहा गया 2. सुन्दर भाषण करने वाला, वाग्मी, (—तम्) 1. सुन्दर भाषण, वाग्मिता, अधिगम—जीर्णमङ्गे सुभाषितम्—भर्तृ० ३।२ 2. नीतिवाक्य, सूक्ति, समुपयुक्त कथन - सुभाषितेन गीतेन युवतीनां च लीलया। मनो न भिद्यते यस्य स वै मुक्तोऽथवा पशुः—सुभा० 3. अच्छी उक्ति —बालादपि सुभाषितं (ग्राह्यम्),—भिक्षम् 1. अच्छी भिक्षा, सफल याचना 2. अन्न की बहुतायत, अनाज धान्यादिक की प्रचुर राशि, अन्नसंभरण,—भ्रू (वि०) सुन्दर भौंह वाला (स्त्री०—भ्रूः) मनोज्ञ स्त्री (इस

शब्द का संबोधन—ए० व०—सुभ्रूः बनता है, परन्तु भट्टि, कालिदास और भवभूति जैसे लेखकों ने 'सुभ्रु' का प्रयोग किया है - तु० भट्टि० ६।१११, कु० ५।४३, मा० ३।८), मति (वि०) बहुत बुद्धिमान् (स्त्री० —तिः) 1. अच्छा मन या स्वभाव, कृपा, परोपकार, सौहार्द 2. देवों का अनुग्रह 3. उपहार, आशीर्वाद 4. प्रार्थना, सूक्त 5. कामना, इच्छा 6. सगर की पत्नी का नाम जो साठ हजार पुत्रों की माता थी, —मदनः आम का वृक्ष, मध्य,—मध्यम (वि०) पतली कमर वाला,—मध्या,—मध्यमा मनोरम स्त्री, —मन (वि०) बहुत आकर्षक, प्रिय, सुन्दर (—नः) 1. गेहूँ 2. धतूरा (—ना) फूलों से लदी चमेली, —मनस् (वि०) 1 अच्छे मन वाला, अच्छे स्वभाव का, उदार 2. खूब प्रसन्न, संतुष्ट, (पुं०) 1. देव, देवता 2. विद्वान् पुरुष 3. वेद का विद्यार्थी 4. गेहूँ 5. नीम का वृक्ष (स्त्री०, नपुं०—कुछ विद्वानों के अनुसार केवल ब० व० में प्रयोग) फूल—रमणीय एष वः सुमनसां संनिवेशः—मा० १, (यहाँ संख्या १ में दिया गया विशेषणपरक अर्थ भी अभिप्रेत है),—किं सेव्यते सुमनसां मनसापि गन्धः कस्तूरिकाजननशक्तिभृता मृगेण—रस०, शि० ६।६६, °फलः कैथ, °फलम् जायफल, —मित्रा दशरथ की एक पत्नी और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता का नाम,—मुख (वि०) (स्त्री० —खा,—खी) 1. सुन्दर चेहरे वाला, प्रिय 2. सुहावना 3. निर्वर्तित, आतुर - कि० ६।४२, (—खः) 1. विद्वान् पुरुष 2. गरुड का विशेषण 3. गणेश का विशेषण 4. शिव का विशेषण, (—खम्) नाखून की खरोंच (—खा —खी) 1. सुन्दर स्त्री 2. दर्पण, —मूलकम् गाजर,—मेधस् (वि०) अच्छी समझ रखने वाला, बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली (पुं०) बुद्धिमान्, पुरुष, —मेरुः 1. 'सुमेरु' नाम का पवित्र पर्वत 2. शिव का नाम,—यवसम् सुंदर घास, अच्छी चरागाह,—योधनः दुर्योधन का विशेषण,—रक्तकः 1. गेरु 2. एक प्रकार का आम का पेड़,—रङ्गः 1. अच्छा रंग 2. संतरा °धातुः गेरु,—रञ्जनः सुपारी का पेड़, —रत (वि०) 1. अति प्रमोदी 2. क्रीडाशील 3. अत्यधिक अनुरक्त 4. करुणामय, सुकुमार, (—तम्) 1. बड़ी प्रसन्नता, अत्यानन्द 2. संभोग, मैथुन, रतिक्रिया सुरतमृदिता बालवनिता—भर्तृ० २।४४, °ताली 1. दूती, कुट्टनी 2. शिरोभूषण, सिर की माला, °प्रसंगः कामकेलि में व्यसन—कु० १।१९,—रतिः (स्त्री०) भोग-विलास, आनन्द, मजे,—रस (वि०) 1. अच्छे रस वाला, रसीला, मजेदार 2. मधुर 3. ललित (रचना), (—सः, —सा) सिंधुवार पौधा (—सा) दुर्गा का नाम,—रूप (वि०) 1. अच्छा बना हुआ, सुंदर, मनोहर—सुरूपा कन्या 2. बुद्धिमान्, विद्वान् (—पः) शिव का विशेषण,—रेभ (वि०) अच्छी आवाज वाला—कि० १५।१६, (—भम्) टीन, जस्त,—लक्षण (वि०) 1. शुभ व सुन्दर लक्षणों से युक्त 2. भाग्यशाली, (—णम्) 1. निरीक्षण, सुपरीक्षण, निर्धारण, निश्चयन 2. अच्छा या शुभ चिह्न, —लभ (वि०) 1. जो आसानी से मिल सके, सुप्राप्य, प्राप्य, सुकर—न सुलभा सकलेन्दुमुखी च सा—विक्रम० २।९, इदमसुलभवस्तु प्रार्थना दुर्निवारम्—२।६ 2. तत्पर, अनुकूल बना हुआ, योग्य, उपयुक्त—निष्ठ्यूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित्—श० ४।५ 3. स्वाभाविक, समुपयुक्त—मानुषतासुलभो लघिमा—का०, °कोप (वि०) जो शीघ्र क्रुद्ध हो जाय, जो आसानी से भड़काया जा सके,—लोचन (वि०) सुन्दर आँखों वाला, (—नः) हरिण, (—ना) सुन्दर स्त्री,—लोहकम् पीतल,—लोहित (वि०) गहरा लाल, (—ता) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक,—वक्त्रम् 1. सुन्दर चेहरा या मुख 2. शुद्ध उच्चारण,—वचनम्, —वचस् (नपुं०) वाग्मिता, —वर्चिकः,—का सज्जी, क्षार,—वर्ण दे० शब्द के नीचे,—वह (वि०) 1. सहनशील, सहिष्णु 2. धैर्यवान्, झेलने वाला 3. जो आसानी से ले जाया जा सके, —वासिनी 1. विवाहित या एकाकिनी स्त्री जो अपने पिता के घर रहती है 2. विवाहिता स्त्री जिसका पति जीवित है,—विक्रान्त (वि०) बहादुर, साहसी, शूर (—तम्) शौर्य,—विद् (पुं०) विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान् व्यक्ति (स्त्री०) बुद्धिमती या चतुर स्त्री,—विदः अन्तःपुर का सेवक,—विदन् (पुं०) राजा,—विदल्लः अन्तःपुर का सेवक ('सौविदल्ल' का अशुद्ध रूप) (—ल्लम्) अन्तःपुर, रनिवास,—विदल्ला विवाहित स्त्री,—विध (वि०) अच्छी प्रकार का,—विधम् (अव्य०) आसानी से,—विनीत (वि०) भली-भाँति प्रशिक्षित, विनयी, (—ता) सुशील गाय,—विहित (वि०) 1. भली भाँति रक्खा हुआ, अच्छी तरह जमा किया हुआ 2. सुव्यवस्थित, सुसंभृत, खाद्यसामग्री से युक्त, भली-भाँति क्रमबद्ध—सुविहितयोगतया आर्यस्य न किमपि परिहास्यते—श० १. कलहंसमकरन्दप्रवेशावसरे तत् सुविहितम्—मा० १,—बी (वी) ज (वि०) अच्छे बीजों वाला (—जः) 1. शिव का नाम 2. खसखस (—जम्) अच्छा बीज,—वीराम्लम् कांजी,—वीर्य (वि०) 1. अति बलशाली 2. शौर्यबल युक्त, शूरवीर, पराक्रमी, (—र्यम्) 1. अतिशौर्य 2. शूरवीरों की बहुतायत 3. बेर का फल, (—र्या) जंगली कपास,—वृत्त (वि०) 1. शिष्टाचार युक्त, सद्गुणी, नेक, भला,—मयि तस्य सुवृत्तवर्तते लघु-

सन्देशपदा सरस्वती —रघु० ८।७७ 2. अच्छा गोल, सुन्दर वर्तुलाकार या गोल — मृदुनाति सुवृत्तेन सुमृष्टेनातिहारिणा । मोदकेनापि किं तेन निष्पत्तिर्यस्य सेवया,—या सुमुखोऽपि सुवृत्तोऽपि सन्मार्गपतितोऽपि च । महतां पादलग्नोऽपि व्यथयत्येव कण्टकः (यहाँ सभी विशेषण दोहरे अर्थों में प्रयुक्त किए गए हैं) —वेल (वि०) 1. शान्त, निश्चल 2. विनम्र, निस्तब्ध (—लः) त्रिकूट पर्वत का नाम,—व्रत (वि०) धार्मिक व्रतों के पालन में दृढ़, सर्वथा धार्मिक तथा सद्गुणी, (—तः) ब्रह्मचारी (—ता) 1. सुन्दर व्रत वाली साध्वी पत्नी 2. सुशील गाय, सीधी गाय जिसका दूध आसानी से निकाला जा सके,—शंस (वि०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी, प्रशंसनीय,—शक (वि०) सुसाध्य, आसान, सरल —शल्यः खदिर वृक्ष,—शाकम् अदरक,—शासित (वि०) भली-भांति नियंत्रण में, सुनियंत्रित,—शिक्षित (वि०) सुशिक्षाप्राप्त, प्रशिक्षित, अच्छी तरह सधाया हुआ, —शिखः अग्नि (—खा) 1. मोर की शिखा 2. मुर्ग की कलगी,—शील (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, मिलनसार (—ला) 1. यम की पत्नी का नाम 2. कृष्ण की आठ प्रेयसियों में से एक, —श्रुत (वि०) 1. अच्छी तरह सुना हुआ 2. वेदज्ञ, (—तः) एक आयुर्वेद पद्धति का प्रणेता, जिसकी कृति, चरक की कृति के साथ-साथ आज भी भारतवर्ष में प्राचीनतम आयुर्वेद का प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है,—श्लिष्ट (वि०) 1. भली-भांति क्रमबद्ध, संयुक्त 2. भली-भांति उपयुक्त—मा० १,—श्लेषः आलिंगन या घनिष्ठ मिलाप,—संदृश् (वि०) देखने में रुचिकर,—संनत (वि०) सुनिदेशित (जैसा कि बाण),—सह (वि०) 1. जो आसानी से सहन किया जा सके 2. सहनशील, सहिष्णु (—हः) शिव का विशेषण,—सार (वि०) अच्छे रस वाला, रसीला (—रः) 1. अच्छा रस, सत या अर्क 2. सक्षमता 3. लाल फूल का खदिरवृक्ष, स्थ (वि०) 1. समुपयुक्त, अच्छे अर्थ में प्रयुक्त 2. अच्छे स्वास्थ्य में, स्वस्थ, सुखी 3. अच्छी या समृद्ध परिस्थितियों में, समृद्धिशाली 4. प्रसन्न, भाग्यशाली, (—स्थम्) सुख की स्थिति, कल्याण सुस्थे को वा न पण्डितः—हि० ३।२१ (इसी अर्थ में सुस्थित)—स्थिता, स्थितिः (स्त्री०) 1. अच्छी दशा, कुशल क्षेम, कल्याण, आनन्द 2. स्वास्थ्य, रोगोपशमन, स्मित (वि०) प्रसन्नता पूर्वक मुस्कराने वाला, (—ता) प्रसन्नवदना, हँसमुख स्त्री,—स्वर (वि०) 1. सुरीला, सुमधुर स्वर वाला 2. उच्च स्वर,—हित (वि०) 1. नितान्त योग्य, या उपयुक्त, समुचित 2. हितकर, श्रेयस्कर 3. सौहार्दपूर्ण, स्नेही 4. सन्तुष्ट (—ता) अग्नि की सात जिह्वाओं में एक, —हृद् (वि०) कृपापूर्ण हृदय वाला, हार्दिक, मैत्रीपूर्ण, प्रिय, स्नेही (पुं०) 1. मित्र सुहृदः पश्य वसन्त किं स्थितम्—कु० ४।२७, मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः मेघ० ४० 2. मित्र, °भेदः मित्रों का वियोग, °वाक्यम् सद्भावपूर्ण सम्मति, —हृदः मित्र,—हृदय (वि०) 1. सुन्दर हृदय वाला 2. प्रिय, स्नेही, प्रेमी ।

सुख (वि०) [सुख्+अच्] 1. प्रसन्न, आनन्दित, हर्षपूर्ण, खुश 2. रुचिकर, मधुर, मनोहर, सुहावना —दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः—रघु० ३।१४ इसी प्रकार—सुखश्रवा निस्वनाः—३।१९ 3. सद्गुणी, पुण्यात्मा 4. आनन्द लेने वाला, अनुकूल - श० ७।१८ 5. आसान, सुकर—कु० ५।४९ 6. योग्य, उपयुक्त, —खम् 1. आनन्द, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता, आराम —यदेवोपनतं दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम्—विक्रम० ३।२१ 2. समृद्धि अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगुणं सर्वास्ववस्थासु यत् - उत्तर० १।३९ 3. कुशल क्षेम, कल्याण, स्वास्थ्य—देवीं सुखं प्रष्टुं गता—मालवि० ४ 4. चैन, आराम, (दुःखादिकों का) प्रशमन—(प्रायः समास में प्रयुक्त—यथा सुखशयन, सुखोपविष्ट सुखाश्रय आदि) 5. सुविधा, आसानी, सहूलियत 6. स्वर्ग, वैकुण्ठ 7. जल, —खम् (अव्य०) 1. प्रसन्नता पूर्वक, हर्ष पूर्वक 2. सकुशल, स्वस्थ—सुखमास्तां भवान् (भगवान् आपको स्वस्थ तथा सकुशल रक्खे) 3. आसानी से, आराम से —असञ्जातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गडिः—काव्य० १० 4. अनायास, आराम —अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः—भर्तृ० २।३ 5. वस्तुतः, इच्छा पूर्वक 6. चुपचाप, शान्ति पूर्वक । सम०—आधारः स्वर्ग, —आप्लव (वि०) स्नान के लिए उपयुक्त,—आयतः —आयनः खूब सधाया हुआ या सीधा घोड़ा, आरोह (वि०) जिस पर चढ़ना आसान हो,—आलोक (वि०) सुदर्शन, प्रिय, मनोहर,—आवह (वि०) आनन्द की ओर ले जाने वाला, सुहावना. सुखकर,—आशः वरुण का नाम,—आशकः ककड़ी,—आस्वाद (वि०) 1. मधुर स्वादयुक्त, मधुर रसयुक्त 2. रुचिकर, आनन्ददायी (—दः) 1. सुखकर रस 2. (सुख का) उपभोग,—उत्सवः 1. आनन्द मनाना, खुशी, उत्सव, आनंदोत्सव 2. पति —उदकम् गरम पानी उदयः आनन्द की अनुभूति या सुख का उदय, उदर्क (वि०) फल में सुखदायी — उद्य (वि०) जिसका उच्चारण रुचि के साथ या सुख से हो सके,— उपविष्ट (वि०) आराम से बैठा हुआ, सुख से बैठा हुआ, - एषिन् (वि०) आनन्द चाहने वाला, सुख की अभिलाषा करने वाला, कर, —कार,—दायक: (वि०) आनन्द देने वाला, सुखकर, सुहावना,—द (वि०) सुख देने वाला, (—दा)

इन्द्र के स्वर्ग की वारांगना, (**बम्**) विष्णु का आसन, —**बोधः** 1. सुख संवेदना 2. आसानी से प्राप्य ज्ञान, —**भागिन्**, **भाज्** (वि०) प्रसन्न,—**श्रव,श्रुति** (वि०) कानों को मीठा, कर्णमधुर,—कि० १४।३,—**सङ्गिन्** सुख का साथी, **स्पर्श** (वि०) छूने में सुखकर।

सुत (भू० क० कृ०) [सु+क्त] 1. उड़ेला गया 2. निकाला गया, या निचोड़ा गया (जैसे कि सोमरस) 3. जन्म दिया गया, उत्पादित, पैदा किया गया,—**तः** 1. पुत्र 2. राजा। सम०—**आत्मजः** पोता, (—**जा**) पोती —**उत्पत्तिः** (स्त्री०) पुत्र का जन्म,—**निर्विशेषम्** (अव्य०) 'जो सीधे पुत्र से प्राप्त न हो' 'पुत्र की भांति'—रघु० ५।६,—**वत्करा** सात पुत्रों की माता, —**स्नेहः** पितृप्रेम, वात्सल्य।

सुतवत् (वि०) [सुत+मतुप्] पुत्रों वाला—पुं० पुत्र का पिता।

सुता [सुत+टाप्] पुत्री,—तमर्यमिव भारत्या सुतया योक्तुमर्हसि कु० ६।७९।

सुतिः [सु+क्तिन्] सोमरस का निकालना।

सुतिन् (वि०) (स्त्री०—**नी**) [सुत+इनि] बच्चे वाला या बच्चों वाला, (पुं०) पिता।

सुतिनी [सुतिन्+ङीप्] माता—तेनाम्बा यदि सुतिनी स्याद्वद वन्ध्या कीदृशी भवति—सुभा०।

सुतुस् (वि०) अच्छी आवाज वाला।

सुत्या [सु+क्यप्+टाप्, तुक्] 1. सोमरस निकालना, या तैयार करना 2. यज्ञीय आहुति 3. प्रसव।

सुत्रामन् (पुं०) [सुष्ठु त्रायते सु+त्रै+मनिन्, पृषो०] इन्द्र का नाम।

सुत्वन् (पुं०) [सु+क्वनिप्, तुक्] 1. सोमरस को उपहार में देने वाला या पीने वाला 2. वह ब्रह्मचारी जिसने (यज्ञ के आरंभ में या पूर्णाहुति पर) आचमन और मार्जन का अनुष्ठान कर लिया है।

सुदि (अव्य०) [सुष्ठु दीव्यति सु+दिव्+डि] चान्द्रमास के शुक्लपक्ष में तु० 'वदि'।

सुधन्वाचार्यः (पुं०) पतितवैश्य का सवर्णा स्त्री में उत्पन्न पुत्र—तु० मनु० १०।२३।

सुधा [सुष्ठु धीयते, पीयते धे (धा)+क+टाप्] 1. देवों का पेय, पीयूष, अमृत निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि—नै० १।१ 2. फूलों का रस या मधु 3. रस 4. जल 5. गंगा का नाम 6. सफ़ेदी, पलस्तर, चूना—कैलासगिरिणेव सुधासितेन प्राकारेण परिगता—का०, रघु० १६।१८ 7. ईंट 8. बिजली 9. सेंहुड। सम०—**अंशुः** 1. चाँद 2. कपूर, °रत्नम् मोती, **अङ्गः**,—**आकारः**, **आधारः** चाँद, —**जीविन्** (पुं०) पलस्तर करने वाला, ईंट की चिनाई करने वाला, राज, **द्रवः** अमृत के समान तरलद्रव्य,—**धवलित** (वि०) पलस्तर किया हुआ, सफ़ेदी किया हुआ, **निधिः** 1. चाँद कपूर, —**भवनम्** चूने लिपा-पुता मकान, **भित्तिः** (स्त्री०) 1. पलस्तर की हुई दीवार 2. ईंटों की दीवार 3. पाँचवां मुहूर्त या दोपहरबाद।—**भुज्** (पुं०) सुर, देव—**भृतिः** 1. चाँद 2. यज्ञ, आहुति—**मयम्** ईंट या पत्थरों का बना मकान 2. राजकीय महल, **वर्षः** अमृतवर्षा,—**वर्षिन्** (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण, **वासः** 1. चाँद 2. कपूर, —**वासा** एक प्रकार की ककड़ी,—**सित** (वि०) 1. चूने जैसा सफ़ेद 2. अमृत जैसा उज्ज्वल 3. अमृत से भरा हुआ जगतीशरणे युक्तो हरिकान्तः सुधाशितः कि० १५।४५, (यहाँ पर इस शब्द का प्रथम और द्वितीय अर्थ भी घटता है), **सूतिः** 1. चांद 2. यज्ञ 3. कमल —**स्यन्दिन्** (वि०) अमृतमय, अमृत बहाने वाला —भर्तृ० २।६,—**स्रवा** तालुजिह्वा, कोमल तालु का लटकता हुआ मांसल भाग,—**हरः** गरुड़ का विशेषण, दे० 'गरुड'।

सुधितिः (पुं०, स्त्री०) [सु+धा+क्तिच्] कुल्हाड़ा।

सुनारः [सुष्ठु नालमस्य—प्रा० ब०, लस्य रः] 1. कुतिया की औड़ी 2. साँप का अण्डा 3. चिड़िया, गोरैया।

सुनासी (शी) **रः** [सुष्ठी नासी (शी) रम् अग्रसैन्यं यस्य —प्रा० ब०] इन्द्र का विशेषण।

सुन्दः (पुं०) एक राक्षस, उपसुंद का भाई,—यह दोनों भाई निकुम्भ राक्षस के पुत्र थे (उन्हें ब्रह्मा से एक वर मिला था—कि वे जब तक स्वयं अपना वध न करें, मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे। इस वरदान के कारण वे बड़ा अत्याचार करने लगे। अन्त में इन्द्र को तिलोत्तमा नाम की अप्सरा भेजनी पड़ी—जिसके लिए झगड़ा करते हुए दोनों ने एक दूसरे को मार डाला)।

सुन्दर (वि०) (स्त्री०—**री**) [सुन्द्+अरः] 1. प्रिय, मनोज्ञ, मनोहर, आकर्षक 2. यथार्थ,—**रः** कामदेव का नाम,—**री** मनोरम स्त्री, एका भार्या सुन्दरी वा दरी वा—भर्तृ० ३।११५, विद्याधरसुन्दरीणाम्—कु० १।७।

सुप्त (भू० क० कृ०) [स्वप्+क्त] 1. सोया हुआ, सोता हुआ, निद्राग्रस्त—न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः—हि० प्र० ३६ 2. लकवा मारा हुआ, स्तम्भित, सुन्न, बेहोश—दे० स्वप्,—**प्तम्** निद्रा, गहरी निद्रा। सम०—**जनः** 1. सोता हुआ व्यक्ति 2. मध्यरात्रि, **ज्ञानम्** स्वप्न,—**त्वच्** (वि०) अधांगग्रस्त, लकवा मारा हुआ।

सुप्तिः (स्त्री०) [स्वप्+क्तिन्] 1. निद्रा, सुस्ती, ऊंघ 2. बेहोशी, लकवा, स्तम्भ, जाड्य 3. विश्वास भरोसा।

सुमः [सुष्ठु मीयतेऽदः—सु+मा+क] 1. चांद 2. कपूर 3. आकाश,—**मम्** फूल—भामि० १।८४।

सुरः [सुष्ठु राति ददात्यभीष्टम्—सु+रा+क] 1. देव, देवता—सुराप्रतिग्रहाद् देवाः सुरा इत्यभिविश्रुताः—राम०, सुधया तर्पयते सुरान् पितृंश्च—विक्रम० ३।७ रघु० ५।१६ 2. ३३ की संख्या 3. सूर्य 4. ऋषि, विद्वान् पुरुष। सम०—**अङ्गना** दिव्यांगना, देवी, अप्सरा—रघु० ८।७९,—**अधिपः** इन्द्र का विशेषण —**अरिः** 1. देवों का शत्रु, राक्षस 2. झींगुर की चीं चीं,—**अर्हम्** 1 सोना 2. केसर, ज़ाफ़रान,—**आचार्यः** बृहस्पति का विशेषण,—**आपगा** 'स्वर्गीय नदी' गङ्गा का विशेषण,—**आलयः** 1. मेरु पर्वत 2. स्वर्ग, बैकुण्ठ, —**इज्यः** बृहस्पति का नाम,—**इज्या** पवित्र तुलसी, —**इन्द्रः**, —**ईशः**, —**ईश्वरः** इन्द्र का नाम,—**उत्तमः** 1. सूर्य 2. इन्द्र,—**उत्तरः** चन्दन की लकड़ी,—**ऋषिः** (**सुरर्षिः**) दिव्य ऋषि, देवर्षि,—**कारुः** विश्वकर्मा का विशेषण,—**कार्मुकम्** इन्द्रधनुष,—**गुरुः** बृहस्पति का विशेषण,—**ग्रामणी** (पुं०) इन्द्र का नाम,—**ज्येष्ठः** ब्रह्मा का विशेषण,—**तरुः** स्वर्ग का वृक्ष, कल्पवृक्ष, —**तोषकः** कौस्तुभ नाम की मणि,—**दारु** (नपुं०) देवदारु वृक्ष,—**दीर्घिका** गंगा का विशेषण,—**दुन्दुभी** पवित्र तुलसी,—**द्विपः** 1. देवों का हाथी 2. ऐरावत,—**द्विष्** (पुं०) राक्षस—रघु० १०।१५,—**धनुस्** (नपुं०) इन्द्रधनुष,—सुरधनुरिदं दूराकृष्टं न नाम शरासनम् —विक्रम० ४।१,—**धूपः** तारपीन, राल,—**निम्नगा** गंगा का विशेषण,—**पतिः** इन्द्र का विशेषण,—**पथम्** आकाश, स्वर्ग,—**पर्वतः** मेरु पहाड़,—**पादपः** स्वर्ग का वृक्ष, जैसे कि कल्पतरु,—**प्रियः** 1. इन्द्र का नाम 2. बृहस्पति का नाम,—**भूयम्** देव के साथ अनन्यरूपता, देवत्वग्रहण, देवत्वारोपण,—**भूरुहः** देवदारु वृक्ष,—**युवतिः** (स्त्री०) दिव्य तरुणी, अप्सरा,—**लासिका** मुरली, बांसुरी,—**लोकः** स्वर्ग,—**वर्त्मन्** (नपुं०) आकाश,—**वल्ली** पवित्र तुलसी,—**विद्विष्**,—**वैरिन्** —**शत्रु** (पुं०) असुर, दानव, दैत्य,—**सद्मन्** (नपुं०) स्वर्ग, बैकुंठ,—**सरित्**, —**सिन्धु** (स्त्री०) गंगा—सुरसरिदिव तेजो वह्निनिष्ठ्यूतमैशम्—रघु० २।७५, —**सुन्दरी**,—**स्त्री** दिव्यांगना, अप्सरा—विक्रम० १।३।

सुरङ्गः, —**गा** [?] 1. सेंध 2. अन्तःकक्ष मार्ग, मकान के नीचे खोदा हुआ मार्ग—ऐकागारिकेण तावतीं सुरङ्गां कारयित्वा—दश०, सुरङ्गया बहिरपगतेषु युष्मासु —मुद्रा० २, ('सुरुङ्गा' भी लिखा जाता है)।

सुरभि (वि०) [सु+रभ्+इन्] 1. मधुर गंध युक्त, खुशबूदार, सुगंध युक्त—पाटलसंसर्गसुरभिवनवाताः —श० १।३, मेघ० १६, २०, २२ 2. सुहावना, रुचिकर 3. चमकीला, मनोहर—तां सौरभेयीं सुरभियशोभिः 4. प्रियतम, मित्रसदृश 5. विख्यात, प्रसिद्ध 6. बुद्धिमान्, विद्वान् 7. नेक, भला,—**भिः** 1. सुगंध, खुशबू, सुवास 2. जायफल 3. साल वृक्ष की राल, या कोई भी राल 4. चम्पक वृक्ष 5. शमी वृक्ष 6. कदंब का पेड़ 7. एक प्रकार की सुगंधित घास 8. वसन्त ऋतु—विक्रम० २।२०, (स्त्री०) 1. लोबान का वृक्ष 2. तुलसी 3. मोतिया 4. एक प्रकार की सुगंध, या सुगंधित पौधा 5. मदिरा 6. पृथ्वी 7. गाय 8. समृद्धि देने में प्रसिद्ध गाय—सुतां तदीयां सुरभेः कृत्वा प्रतिनिधिम्—रघु० १।८१, ७५ 9. मातृकाओं में से एक, (नपुं०) 1. मधुर गंध, सुवास, खुशबू 2. गंधक 3. सोना। सम०—**घृतम्** सुगंधित मक्खन, खुशबूदार घी,—**त्रिफला** 1. जायफल 2. लौंग 3. सुपारी, —**बाणः** कामदेव का विशेषण,—**मासः** वसंत ऋतु, —**मुखम्** वसंत ऋतु का आरम्भ।

सुरभिका [सुरभि+कन्+टाप्] एक प्रकार का केला।

सुरभिमत् (पुं०) [सुरभि+मतुप्] अग्नि का नाम।

सुरा [सु+क्रन्+टाप्] 1. मदिरा, शराब—सुरा वै मलमन्नानाम्—मनु० ११।९३, गौडी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा—९४ 2. जल 3. पान-पात्र 4. सांप। सम०—**आकारः** शराब खींचने की भट्टी,—**आजीवः**, —**आजीविन्** (पुं०) कलाल,—**आलयः** मदिरालय, मधुशाला,—**उदः** शराब का समुद्र,—**ग्रहः** मदिरा भर कर रक्खा हुआ बर्तन,—**ध्वजः** शराब की दुकान के बाहर टंगा हुआ झंडा,—**प** (वि०) 1. शराबी, मद्यप 2. सुहावना, रुचिकर 3. बुद्धिमान्, ऋषि, —**पाणम्**,—**पानम्** मदिरा या शराब का पीना, —**पात्रम्**,—**भाण्डम्** शराब का प्याला, या गिलास —**भागः** खमीर, फेन,—**मण्डः** (खमीर पैदा होने के समय). मदिरा के ऊपर जमने वाला फेन,—**सन्धानम्** मदिरा खींचना।

सुवर्ण (वि०) [सुष्ठु वर्णोऽस्य—प्रा० ब०] 1. अच्छे रंग का, सुन्दर रंग का, चमकीले रंग का, उज्ज्वल, पीला, सुनहरा 2. अच्छी जाति या बिरादरी का 3. अच्छी ख्याति का, यशस्वी, विख्यात,—**र्णः** 1. अच्छा रंग 2. अच्छी जाति या बिरादरी 3. एक प्रकार का यज्ञ 4. शिव का विशेषण 5. धतूरा,—**र्णम्** 1. सोना 2. सोने का सिक्का (पुं० भी)—नन्वहं दश सुवर्णान् प्रयच्छामि—मृच्छ० २ 3. सोलह माशे के बराबर सोने का तोल या १७५ ग्रेन के लगभग (पुं० भी) 4. धन, दौलत, ऐश्वर्य 5. एक प्रकार की पीले चन्दन की लकड़ी 6. एक प्रकार का गेरु। सम०—**अभिषेकः** दूल्हा और दुल्हिन पर उस जल के छींटे देने जिसमें सोने का टुकड़ा डाला हुआ हो,—**कदली** केले का एक

प्रकार,—**कर्तृ**,—**कार**,—**कृत्** (पुं०) सुनार,—**गणितम्** गणित में हिसाब लगाने की एक विशेष रीति,—**पुष्पित** (वि०) सोने से भरा-पूरा उदा० सुवर्णपुष्पितां पृथ्वीं विचिन्वन्ति त्रयो जनाः। शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् पंच० १।४५,—**पृष्ठ** (वि०) सोना चढा हुआ, सोने का मुलम्मा चढ़ा हुआ,—**माक्षिकम्** खनिज पदार्थ विशेष, सोनामाखी,—**यूथी** पीली जूही,—**रूप्यक** (वि०) सोने और चाँदी से भरपूर,—**रेतस्** (पुं०) शिव का विशेषण,—**वर्णा** हल्दी,—**सिद्धः** जिसने जादू से सोना प्राप्त कर लिया है,—**स्तेयम्** सोने की चोरी (पाँच महापातकों में से एक)।

सुवर्णकम् [सुवर्ण+कन्] 1. पीतल, कांसा 2. सीसा।

सुवर्णवत् (वि०) [सुवर्ण+मतुप्] 1. सुनहरा 2. सुनहरे रंग का, सुन्दर, मनोहर।

सुषम (वि०) [सुष्ठु समं सर्वं यस्मात् प्रा० व०] अत्यंत प्रिय या सुन्दर, बहुत सुखकर,—**मा** परम सौन्दर्य, अत्यधिक आभा या कान्ति कुरबककुसुमं चपलासुषमं—गीत० ७, सुषमाविषये परीक्षणे निखिलं पद्ममभाजि तन्मुखात्—नै० २।३७, भामि० १।२६, २।१२।

सुषवी [सु+सु+अच्+ङीष्] 1. एक प्रकार की लौकी 2. काला जीरा 3. जीरा।

सुषाव: (पुं०) शिव का विशेषण।

सुषिः (स्त्री०) [शुष्+इन्, पृषो० शस्य सः] छिद्र, सूराख, तु० 'शुषिः'।

सुषि (षी) म (वि०) [सु+श्यै+मक्, सम्प्रसारण, पृषो०] 1. शीतल, ठंडा 2. सुखकर, रुचिकर, **मः** 1. शीतलता 2. एक प्रकार का सांप 3. चन्द्रकान्तमणि।

सुषिर (वि०) [शुष्+किरच्, पृषो० शस्य सः] 1. छिद्रों से पूर्ण, खोखला, सरन्ध्र 2. उच्चारण में मन्द,—**रम्** 1. छिद्र, रन्ध्र, सूराख 2. कोई भी बाजा जो हवा से बजे।

सुषुप्तिः (स्त्री०) [सु+स्वप्+क्तिन्] 1. गहरी या प्रगाढ़ निद्रा, प्रगाढ़ विश्राम 2. भारी बेहोशी, आत्मिक अज्ञान अविद्यात्मिका हि बीजशक्तिरव्यक्तशब्दनिर्देश्या परमेश्वराश्रया मायामयी महासुषुप्तिर्यस्यां स्वरूपप्रतिबोधरहिताः शेरते संसारिणो जीवाः—ब्रह्मसूत्र पर शारी० भाष्य—१।४।३।

सुषुम्णः [सुषु+म्ना+क] सूर्य की प्रधान किरणों में से एक,—**म्णा** शरीर की एक विशेष नाड़ी जो इडा तथा पिंगला नाम की वाहिकाओं के मध्य में स्थित है।

सुष्ठु (अव्य०) [सु+स्था+कु] 1. अच्छा, उत्तमता के साथ, सुन्दरता से 2. अत्यंत, बहुत ज्यादह—सुष्ठु शोभसे आर्यपुत्र एतेन विनयमाहात्म्येन उत्तर० १. 3. सचमुच, ठीक,—शब्दः सुष्ठु प्रयुक्तः—सर्व०, अथवा सुष्ठु खल्विदमुच्यते।

सुष्मम् [सु+मक्, सुक्] रस्सी, डोरी, रज्जु।

सुह्माः (पुं०, ब० व०) एक राष्ट्र का नाम—आत्मा संरक्षितः सुह्मैर्वृत्तिमाश्रित्य वैतसीम्—रघु० ४।३५।

सू i (अदा० दिवा० आ०—सूते, सूयते, सूत) उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्म देना (आलं० से भी)—असूत सा नागवधूपभोग्यम् कु० १।२०, कीर्ति सूते दुष्कृतं या हिनस्ति उत्तर० ५।३१, प्र—, उत्पन्न करना पैदा करना, जन्म देना।

ii (तुदा० पर० सुवति) 1. उत्तेजित करना, उकसाना, प्रेरित करना 2. (ऋण का) परिशोध करना।

सू (वि०) [सू+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) उत्पन्न करने वाला, पैदा करने वाला, फल देने वाला—(स्त्री०) 1. जन्म 2. माता।

सूकः [सू+कन्] 1. बाण 2. हवा, वायु 3. कमल।

सूकरः [सू+करन्, कित्] 1. वराह, सूअर—दे० शूकर 2. एक प्रकार का हरिण 3. कुम्हार,—**री** 1. सूअरी 2. एक प्रकार की काई, शैवाल।

सूक्ष्म [सूक्+मन्, सुक् च नेट्] 1. बारीक, महीन, आणविक—जालांतरस्थसूर्यांशौ यत् सूक्ष्मं दृश्यते रजः 2. थोड़ा, छोटा—इदमुपहितसूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्धदेशे श० १।१८, रघु० १८।४९ 3. बारीक, पतला, कोमल, बढ़िया 4. उत्तम 5. तेज़, तीक्ष्ण, वेधी 6. कलाभिज्ञ, चालबाज, धूर्त, प्रवीण 7. यथार्थ, यथातथ्य, बिल्कुल सही, ठीक,—**क्ष्मः** 1. अणु, 2. केतक का पौधा 3. शिव का विशेषण,—**क्ष्मम्** 1. सर्वव्यापक सूक्ष्म तत्त्व, परमात्मा 2. बारीकी 3. संन्यासियों द्वारा प्राप्य तीन प्रकार की शक्तियों में से एक, तु० सावद्य 4. कलाभिज्ञता, प्रवीणता 5. जालसाजी, धोखा 6. बारीक धागा 7. एक अलंकार का नाम जिसकी परिभाषा मम्मट ने इस प्रकार दी है कुतोऽपि लक्षितः सूक्ष्मोऽप्यर्थोऽन्यस्मै प्रकाश्यते। धर्मेण केनचिद्यत्र तत्सूक्ष्मं परिचक्षते॥ काव्य० १०। सम०—**एला** छोटी इलायची, **तण्डुलः** पोस्त, **तण्डुला** 1. पीपल, पीपली 2. एक प्रकार का घास,—**दर्शिता** सूक्ष्मदृष्टि होने का भाव, तीक्ष्णता, अग्रदृष्टि, बुद्धिमानी,—**दर्शिन्**,—**दृष्टि** (वि०) 1. तेज़ नजर वाला श्येन जैसी दृष्टि वाला 2. बारीक विवेचनकर्ता 3. तीक्ष्ण, तेज मन वाला,—**दारु** (नपुं०) लकड़ी का पतला तख्ता, फलक,—**देहः**,—**शरीरम्** लिंग शरीर जो सूक्ष्म पंच महाभूतों से युक्त है,—**पत्रः** 1. धनिया 2. एक प्रकार का जंगली जीरा 3. एक प्रकार का

लाल गन्ना 4. बबूल का पेड़ 5. एक प्रकार की सरसों, —**पर्णी** एक प्रकार की तुलसी,—**पिप्पली** वनपीपली —**बुद्धि** (वि०) तेज बुद्धि वाला, प्रखर, बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली, (स्त्री०—**द्धिः**) तेज बुद्धि, सूक्ष्म प्रतिभा, मानसिक प्रगल्भता,—**मक्षिकम्**,—**का** मच्छर, डांस, —**मानम्** यथार्थ माप, सही से गणना (विप० स्थूलमान—जिसका अर्थ है—खुली माप, मोटी माप) —**शर्करा** बारीक बजरी, रेत, बालुका,—**शालिः** एक प्रकार का बारीक चावल, **षट्चरणः** एक प्रकार की जूं, जमजूं।

सूच् (चुरा० उभ० सूचयति—ते, सूचित) 1. बीधना 2. निर्देश करना, इंगित करना, बतलाना, प्रकट करना, सावित करना—त्वां सूचयिष्यति तु माल्यसमुद्भवोऽयं (गन्धः) मृच्छ० १।३५, मेघ० २१, श० १।१४ 3. भेद खोलना, प्रकट करना, भण्डाफोड़ करना —स जातु सेव्यमानोऽपि गुप्तद्वारो न सूच्यते रघु० १७।५० 4. हावभाव व्यक्त करना, अभिनय करना, इशारों से सूचित करना वामाक्षिस्पन्दनं सूचयति, रथवेगं सूचयति—आदि 5. पता लगाना, गुप्त भेद जानना, निश्चय करना। **अभि** , दिखलाना, संकेत करना—अमन्यत नलं प्राप्तं कर्मचेष्टाभिसूचितं—महा०, **प्र**,—**सम्**, संकेत करना, सूचित करना—संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति संभवम् सुभा०।

सूचः [सूच्+अच्] कुशा का नुकीला अंकुर या पत्ता।

सूचक (वि०) (स्त्री०—**चिका**) [सूच्+ण्वुल्] 1. संकेत परक, संकेत करने वाला, सिद्ध करने वाला, दिखलाने वाला 2. प्रकट करने वाला, सूचित करने वाला,—**कः** 1. वेधक 2. सूई, छिद्र करने या सीने के लिए कोई उपकरण 3. सूचना देने वाला, कहानी बतलाने वाला, बदनाम करने वाला, भेदिया 4. वर्णन करने वाला, पढ़ाने वाला, सिखाने वाला 5. किसी मण्डली का प्रबन्धक या प्रधान अभिनेता 6. बुद्ध 7. सिद्ध 8. दुष्ट, बदमाश 9. राक्षस, पिशाच 10. कुत्ता 11. कौवा 12. बिलाव 13. एक प्रकार का महीन चावल। सम० **वाक्यम्** किसी सूचना देने वाले द्वारा दी गई सूचना।

सूचनम्,—**ना** [सूच् भावे ल्युट्] 1. बींधने या छिद्र करने की क्रिया, सूराख करना, छेदना 2. इशारे से बताना, संकेत करना, सूचित करना 3. विरुद्ध सूचित करना, भेद खोलना, कलंक लगाना, बदनाम करना 4. हावभाव प्रकट करना, उचित चेष्टाओं या चिह्नों से संकेत करना 5. इशारा करना, इंगित 6. सूचना 7. पढ़ाना, दिखाना, वर्णन करना 8. गुप्त भेद जानना, रहस्य का पता लगाना, देखना, निश्चय करना 9. दुष्टता, बदमाशी।

सूचा [सूच्+अ+टाप्] 1. बींधना 2. हावभाव 3. भेद जानना, देखना, दृष्टि।

सूचिः,—**ची** (स्त्री) [सूच्+इन् वा ङीप्] 1. बींधना, छेद करना 2. सूई 3. तेज़ नोक, या नुकीली पत्ती (कुशा आदि की) अभिनवकुशसूच्या परिक्षतं मे चरणम्—श० १, इसी प्रकार 'मुखे कुशसूचिविद्धे—श० ४।१४ 4. तेज़ नोक या किसी वस्तु का सिरा—कः करं प्रसारयेत् पन्नगरत्नसूचये—कु० ५।४३ 5. कलिका की नोक 6. एक प्रकार का सैनिकव्यूह, स्तंभ या पंक्ति —दण्डव्यूहेन तन्मार्गं यायात्तु शकटेन वा। वराहमकराभ्यां वा सूच्या वा गरुडेन वा मनु० ७।१८७ 7. समलंबक के पार्श्वों से निर्मित त्रिकोण 8. शंकु, स्तूप 9. अंगचेष्टाओं से संकेत करना, संकेतों द्वारा बतलाना, हावभाव 10. नृत्यविशेष 11. नाटकीय कर्म 12. विषयानुक्रमणिका, विषयसूची, 13. फ़हरिस्त, विवरणिका 14. (ज्योति० में) ग्रहण की संगणना के लिए पृथ्वी का गोला। सम० **अग्र** (वि०) सूई की भांति नोक वाला, सूई के समान तेज़ नोक रखने वाला, पैना किया हुआ, (**ग्रम्**) सूई की नोक,—**आस्यः** चूहा, **कटाहन्यायः** दे० 'न्याय' के नीचे, **खातः** स्तूप की खुदाई, शंकु,—**पत्रकम्** अनुक्रमणिका, विषयसूचि (—**कः**) एक प्रकार का शाक, सितावर—**पुष्पः** केतक वृक्ष, **भिन्न** (वि०) कली के किनारों का खिलना —पाण्डुच्छायोपवनवृतयः केतकैः सूचिभिन्नैः मेघ० २८, **भेद्य** (वि०) 1. जो सूई के द्वारा बींधा जा सके 2. मोटा, सघन, घोर, गाढ़ा, बिल्कुल,—रुद्धालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः 3. स्पर्शज्ञेय, सहजग्राह्य, **मुख** (वि०) 1. सूई जैसे मुख वाला, नुकीली चोंच वाला 2. नुकीला, (—**खः**) 1. पक्षी 2. सफ़ेद कुशा 3. हाथों की विशेष स्थिति (—**खम्**) हीरा,—**रोमन्** (पुं०) सूअर,—**वदन** (वि०) सूई जैसे मुख वाला, नुकीली चोंच वाला, (—**नः**) 1. डांस, मच्छर 2. नेवला, —**शालिः** एक प्रकार का बारीक चावल।

सूचिकः [सूचि+ठन्] दर्जी।

सूचिका [सूचि+क+टाप्] 1. सूई 2. हाथी की सूंड। सम०—**धरः** हाथी,—**मुख** (वि०) नुकीले मुंह वाला, नुकीले सिर वाला, (—**खम्**) खोल, सीपी, शंख।

सूचित (भू० क० कृ०) [सूच्+क्त] 1. बींधा हुआ, सूराख किया हुआ, छिद्रित 2. इशारे से बताया हुआ, दिखाया हुआ, सूचना दिया हुआ, संकेतित, इंगित किया हुआ 3. जतलाया गया या हावभावों से संकेतित 4. समाचार दिया गया, उक्त, प्रकट किया गया 5. निश्चय किया गया, ज्ञात।

सूचिन् (वि०) (स्त्री०—**नी**) [सूच्+णिनि] 1. वेधने वाला, छिद्र करने वाला 2. इशारा करने वाला,

सूचना देने वाला, संकेत करने वाला 3. विरुद्ध सूचित करने वाला 4. रहस्य का पता लगाने वाला (पुं०) भेदिया, सूचना देने वाला।

सूचिनी [सूचिन्+ङीप्] 1. सूई 2. रात।

सूची दे० 'सूचि'।

सूच्य (वि०) [सूच्+ण्यत्] सूचित किये जाने योग्य, जताया जाने योग्य।

सूत् (अव्य०) अनुकरणात्मक ध्वनि (जैसे खर्राटे का शब्द)।

सूत (भू० क० कृ०) [सू+क्त] 1. जन्मा हुआ, उत्पन्न, जन्म दिया हुआ, पैदा किया हुआ 2. प्रेरित, उद्गीर्ण, —तः रथवान् सारथि—सूत चोदयाश्वान् पुण्याश्रमदर्शनेन तावदात्मानं पुनीमहे—श० १ 2. ब्राह्मणवर्ण की स्त्री में क्षत्रिय द्वारा उत्पन्न पुत्र (इसका कार्य रथ हांकने का होता है)—क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां सूतो भवति जातितः—मनु० १०।११, सूतो वा सूतपुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम्—वेणी० ३।३३ 3. बंदीजन 4. रथकार 5. सूर्य 6. व्यास के एक शिष्य का नाम—तः, —तम् पारा। सम०—तनयः कर्ण का विशेषण, —राज् (पुं०) पारा।

सूतकम् [सूत+कन्] 1. जन्म, पैदायश—मनु० ४।११२ 2. प्रसव (या गर्भपात) के कारण उत्पन्न अशौच (जननाशौच),—कः,—कम् पारा।

सूतका [सूत+कन्+टाप्] सद्यः प्रसूता, वह स्त्री जिसने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो, जच्चा,—मनु० ५।८५।

सूता [सूत+टाप्] जच्चा स्त्री।

सूतिः (स्त्री०) [सू+क्तिन्] 1. जन्म, पैदायश, प्रसव, जनन, बच्चा पैदा करना 2. सन्तान, प्रजा 3. स्रोत, मूलस्रोत, आदिकारण—तपसां सूतिरसूतिरापदाम्—कि० २।५६ 4. वह स्थान जहाँ सोमरस निकाला जाता है। सम०—अशौचम् परिवार में बच्चे के जन्म के कारण अपवित्रता (जो दश दिन तक रहती है), —गृहम् जच्चा घर, प्रसूति-गृह,—मासः (सूतीमासः भी) प्रसव का महीना, गर्भाधान के पश्चात् दसवाँ महीना।

सूतिका [सूत+कन्+टाप्, इत्वम्] वह स्त्री जिसके हाल ही में बच्चा हुआ हो, जच्चा। सम०—अगारम्, —गृहम्,—गेहम्,—भवनम् जच्चाखाना, सौरी,—रोगः प्रसव के पश्चात् होने वाला रोग, प्रसवजन्य रोग, —षष्ठी प्रसव के पश्चात् छठे दिन पूजी जाने वाली देवी विशेष का नाम।

सूत्परम् [सु+उद्+पृ+अप्] मदिरा का खींचना या चुआना।

सूत्या [सू+क्यप्+टाप्, तुक्] दे० 'सुत्या'।

सूत्र् (चुरा० उभ० सूत्रयति-ते, सूत्रित) 1. बांधना, कसना धागा डालना, नत्थी करना, 2. सूत्र के रूप में या संक्षेप से रचना करना—तथा च सूत्र्यते हि भगवता पिङ्गलेन, जैमिनिरपि इदमपि धर्मलक्षणमसूत्रयत्, आदि 3. योजना बनाना, क्रमबद्ध करना, ठीक पद्धति में रखना—तन्निपुणं मया निसृष्टार्थदूतीकल्पः सूत्रयितव्यः—मा० १ 4. शिथिल करना, ढीला करना।

सूत्रम् [सूत्र्+अच्] 1. धागा, डोरी, रेखा, रस्सी—पुष्पमालानुषङ्गेण सूत्रं शिरसि धार्यते—सुभा०, मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः—रघु० १।४ 2. रेशा, तन्तु—सुरागनां कर्षति खण्डिताग्रात्सूत्रं मृणालादिव राजहंसी—विक्रम० १।१९, कु० १।४०, ४९ 3. तार 4. धागों की आटी 5. यज्ञोपवीत, जनेऊ (जो पहले तीन वर्ण धारण करते हैं)—शिखासूत्रवान् ब्राह्मणः—तर्क० 6. पुत्तलिका का तार या डोरी 7. संक्षिप्त विधि, गुर, सूत्र 8. परिभाषा परक संक्षिप्त वाक्य—परिभाषा—स्वल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतो मुखम्। अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः॥ 9. सूत्रग्रन्थ—उदा० मानवकल्पसूत्र, आपस्तंबसूत्र 10. विधि, धर्म-सूत्र, आज्ञप्ति (विधि में)। सम० —आत्मन् (वि०) डोरी या धागे के स्वभाव वाला, (पुं०) आत्मा,—आली माला, (जो कण्ठ में पहनी जाये, हार,—कण्ठः 1. ब्राह्मण 2. कबूतर, पेंडुकी 3. खंजन पक्षी,—कर्मन् (नपुं०) बढ़ई का काम —कारः,—कृत् (पुं०) सूत्र रचने वाला,—कोणः, —कोणकः डमरु, डुगडुगी,—गण्डिका एक प्रकार की यष्टिका जिसका उपयोग जुलाहे धागे लपेटने में करते हैं,—चरणम् वैदिक विद्यामन्दिर जिनके द्वारा अनेक सूत्रग्रंथों का निर्माण हुआ,—दरिद्र (वि०) कम धागों वाला वह कपड़ा जिसमें थोड़े धागे लगे हों, झीना —अयं पटः सूत्रदरिद्रतां गतः—मृच्छ० २।९,—धरः, —धारः 1. 'डोरी पकड़ने वाला' रंगमंच का प्रबंधक, वह प्रधान नट जो पात्रों को एकत्र कर उन्हें प्रशिक्षित करता है, तथा जो प्रस्तावना में प्रमुख कार्य करता है—परिभाषा यह है—नाट्यस्य यदनुष्ठानं तत्सूत्रं स्यात् सबीजकम्। रङ्गदैवतपूजाकृत् सूत्रधार इति स्मृतः॥ 2. बढ़ई, दस्तकार 3. सूत्रकार 4. इन्द्र का विशेषण,—पिटकः बुद्धसंबन्धी त्रिपिटक का प्रथम खंड,—पुष्पः कपास का पौधा,—भिद् (पुं०) दर्जी —भृत् (पुं०) सूत्रधार,—यन्त्रम् 1. 'धागा यंत्र' ढरकी 2. जुलाहे की खड्डी,—वीणा एक प्रकार की बांसुरी —वेष्टनम् जुलाहे की ढरकी।

सूत्रणम् [सूत्र्+ल्युट्] 1. मिला कर नत्थी करना, क्रम में रखना, क्रम बद्ध करना 2. सूत्रों के अनुसार क्रमपूर्वक रखना।

सूत्रला [सूत्र+ला+क+टाप्] तकवा, तकली ।
सूत्रामन्=सुत्रामन्—दे०
सूत्रिका [सूत्र्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] सेंवई, सीमी ।
सूत्रित (भू० क० कृ०) [सूत्र्+क्त] 1. नत्थी किया हुआ, क्रमबद्ध, प्रणालीबद्ध, पद्धतिकृत 2. सूत्रविहित, सूत्रों के रूप में अभिहित ।
सूत्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सूत्र+इनि] 1. धागों वाला 2. नियमों वाला,—(पुं०) कौवा ।
सूद् i (म्वा० आ० सूदते) 1. प्रहार करना, चोट पहुँचाना, घायल करना, मार डालना, नष्ट करना 2. ढालना, उंडेलना 3. जमा करना 4. प्रक्षेपण, फेंक देना ।
ii (चुरा० उभ० सूदयति+ते) 1. उकसाना, प्रवर्तित करना, उत्तेजित करना, उभाड़ना, प्राण फूंकना 2. आघात करना, चोट पहुँचाना, मार डालना 3. खाना पकाना, रांधना, सिझाना, तैयार करना 4. उडेलना ढालना 5. हामी भरना, सहमत होना, प्रतिज्ञा करना 6. डालना, फेंकना, नि—, (निषूदयति—ते) मारना ।
सूदः [सूद्+घञ्, अच्, वा] 1. नष्ट करना, विनाश, जनसंहार 2. उडेलना, चुआना 3. कूआं, झरना 4. रसोइया, 5. चटनी, रसा, झोल 6. कोई भी वस्तु सिझायी हुई, तैयार खाना 7. दली हुई मटर 8. कीचड़, दलदल 9. पाप, दोष 10. लोध्र वृक्ष । सम० —कर्मन् रसोइये का काम, —शाला रसोई ।
सूदन (वि०) (स्त्री०—नी) [सूद् -ल्युट्] 1. नाश करने वाला, वध करने वाला, विनाशक—दानवसूदन, अरिगणसूदन आदि 2. प्यारा, प्रियतम,—नम् 1. नष्ट करना, विनाश, जनसंहार 2. हामी भरना, प्रतिज्ञा करना 3. डाल देना, फेंक देना ।
सून (भू० क० कृ०) [सू+क्त, क्तस्य नः] 1. जन्मा हुआ, उत्पन्न 2. फूला हुआ, मुकुलित, खुला हुआ, कलिकायुक्त 3. रिक्त, खाली (संभवतः इस अर्थ में शून या शून्य समझ कर),—नम् 1. जन्म देना, प्रसव होना 2. कली, मंजरी 3. फूल ।
सूनरी (स्त्री०) सुन्दर स्त्री ।
सूना [सुञ्: नः दीर्घश्च] 1. क़साई घर, बुचड़खाना, —भवानपि सूना परिचर इव गृध्र आमिषलोलुपो भीरुकश्च—मा० २.2. मांस की बिक्री 3. चोट पहुंचाना, मार डालना, नष्ट करना 4. मृदुतालु, काकल 5. करधनी, तगड़ी 6. गलग्रन्थियों की सूजन, हापू 7. प्रकाश की किरण 8. नदी 9. पुत्री,—नाः (स्त्री०, ब० व०) घर में होने वाली पाँच वस्तुएं जिनसे जीव हिंसा होने की संभावना होती है, दे० 'शूना' या 'पंचशूना' के अन्तर्गत ।
सूनिन् (पुं०) [सूना+इनि] 1. क़साई, मांस-विक्रेता 2. शिकारी ।
सूनुः [सू+नुक्] 1. पुत्र—पितुरहमेवैकः सूनुरभवम्—का० 2. बाल, बच्चा 3. पोता (दौहित्र) 4. छोटा भाई 5. सूर्य 6. मदार का पौधा ।
सूनू (स्त्री०) [सूनु+ऊङ्] पुत्री ।
सूनृत (वि०) [सु+नृत्+क- उपसर्गस्य दीर्घः] 1. सत्य और सुखद, कृपालु और निष्कपट—तत्रसूनृतगिरश्च सूरयः पुण्यमृग्यजुषमध्यगीषत शि० १४।२१, रघु० १।९३ 2. कृपालु, सुशील, सज्जन, शिष्ट—तां चाप्यंतां मातरं मङ्गलानां धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः—उत्तर० ५।३१, तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूनृता । एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन—मनु० ३।१०१, रघु० ६।२९ 3. शुभ, सौभाग्यसूचक 4. प्रियतम, प्यारा,—तम् 1. सत्य तथा रोचक भाषण 2. कृपापूर्ण एवं सुखकर प्रवचन, शिष्ट भाषा—रघु० ८।९२ 3. मांगलिकता ।
सूपः [सुखेन पीयते—सु+पा+घञर्थे क, पृषो०] 1. यूष रसा—न स जानाति शास्त्रार्थं दर्वी सूपरसानिव —सुभा०, मनु० ३।२२६ 2. चटनी, मिर्च, मशाला 3. रसोइया 4. कड़ाही, बर्तन 5. बाण । सम० —कारः रसोइया, —धूपनम्,—धूपकम् हींग ।
सूमः [सू+मक्] 1. पानी 2. दूध 3. आकाश, गगन ।
सूर् (दिवा० आ० सूर्यते) 1. चोट पहुँचाना, मार डालना 2. दृढ़ करना या दृढ़ होना ।
सूर्ण (वि०) [सूर्+क्त, क्तस्य न.] चोट पहुँचाया हुआ, क्षतिग्रस्त ।
सूरः [सुवति प्रेरयति कर्मणि लोकानुदयेन—सू+क्रन्] 1. सूर्य 2. मदार का पौधा 3. सोम 4. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष 5. नायक, राजा । सम०— चक्षुस् (वि०) सूर्य की भांति चमकीला,— सुतः शनि का विशेषण,—सूतः सूर्य का सारथि, अर्थात् अरुण ।
सूरणः [सूर्+ल्युट्] सूरन, जमीकंद ।
सूरत (वि०) [सु+रम्+क्त, पृषो० दीर्घः] 1. कृपालु, दयालु, कोमल 2. शान्त, धीर ।
सूरिः [सू+क्रिन्] 1. सूर्य 2. विद्वान्, या बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि—अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः—रघु० १।४, शि० १४।२१ 3. पुरोहित 4. पूजा करने वाला, जैन मत के आचार्यों को दिया गया सम्मान-सूचक पद, उदा०—मल्लिनाथसूरि 6. कृष्ण का नाम ।
सूरिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [सूर्+णिनि] बुद्धिमान्, विद्वान् (पुं०) बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, पंडित ।
सूरी [सूरि+ङीप्] 1. सूर्य की पत्नी का नाम 2. कुन्ती का नाम ।
सूर्क्ष् (म्वा० दिवा० पर० सूर्क्षति, सूर्क्ष्यति) 1. सम्मान

करना, आदर करना 2. अनादर करना, अपमान करना, तिरस्कार करना।

सूर्क्षं (क्ष्यं) णम् [सूर्क्ष् (क्ष्यं्)+ल्युट्] अनादर, अपमान।

सूर्क्ष्यः [सूर्क्ष्य्+घञ्] माष, उड़द।

सूर्प दे० शूर्प।

सूर्मिः,-र्मी (स्त्री०) [=शूर्मि, पृषो० शस्य सः, पक्षे ङीप्] 1. लोहे या अन्य किसी धातु की बनी मूर्ति —मनु० ११।३ 2. घर का स्तंभ 3. आभा, कान्ति 4. ज्वाला।

सूर्यः [सरति आकाशे सूर्यः, यद्वा सुवति कर्मणि लोकं प्रेरयति—सृ+क्यप्, नि०] 1. सूरज - सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा—रघु० ५।१३, (पुराणों के अनुसार सूर्य को कश्यप और अदिति का पुत्र माना जाता है—तु० श० ७; उसका वर्णन किया जाता है कि वह अपने सात घोड़ों के रथ में बैठ कर घूमता है, अरुण इस रथ का सारथि है। सूर्य भगवान् रथ में बैठा हुआ सब लोकों को, तथा उनके शुभाशुभ कर्मों को देखता है। संज्ञा (छाया या अश्विनी) उसकी प्रधान पत्नी का नाम है, इससे यम और यमुना पैदा हुए दो अश्विनीकुमारों तथा शनि का जन्म भी इसी से हुआ। राजाओं के सूर्यवंश का प्रवर्तक विवस्वान् मनु भी सूर्य का ही पुत्र था) 2. मदार का पौधा 3. बारह की संख्या (सूर्य के बारह रूपों से व्युत्पन्न)। सम० अपायः सूर्य का छिपना—मेघ० ८०,—अर्घ्यम् सूर्य की सेवा में उपहार प्रस्तुत करना,—अश्मन् (पुं०) सूर्यकान्तमणि, अश्वः सूर्य का घोड़ा,—अस्तम् सूर्य का छिपना, —आतपः सूर्य की गरमी या चमक, धूप,—आलोकः धूप, - आवर्तः एक प्रकार का सूरजमुखी फूल, हुलहुल, —आह्व (वि०) सूर्य के नाम पर जिसका नाम है, (ह्वः) मदार का भारी पौधा, आक, (—ह्वम्) तांबा, —इन्दुसङ्गमः (सूर्यचन्द्रमा का मिलन) अमावस्या —दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः अमर०,—उत्थानम्, उदयः सूर्य का निकलना,— ऊढः 1. सूर्य, द्वारा लाया गया, सायंकाल के समय आने वाला अतिथि—पंच० १, सूर्य छिपने का समय,—कांतः आतशीशीशा, एक स्फटिक मणि—श० २।७, क्रान्तिः (स्त्री०) 1. सूर्य की दीप्ति 2. एक पुष्प विशेष 3. तिल का फूल, —कालः दिन का समय, दिन, °अनलचक्रम् ज्योतिपशास्त्र में शुभाशुभ फल जानने का एक चक्र, ग्रहः 1. सूर्य 2. सूर्यग्रहण 3. राहु और केतु का विशेषण 4. घड़े का पेंदा,—ग्रहणम् सूर्यग्रहण (चन्द्रमा की छाया पड़ने से सूर्यबिंब का छिप जाना—पौराणिक मत से राहु या केतु द्वारा सूर्य का ग्रास),—चन्द्रौ (इसी प्रकार—सूर्याचन्द्रमसौ) (पुं०, द्वि० व०) सूर्य और चाँद,—जः तनयः, पुत्रः 1. सुग्रीव के विशेषण 2. कर्ण के विशेषण 3. शनिग्रह के विशेषण 4. यम के विशेषण,—जा, तनया यमुना नदी,—तेजस् (नपुं०) सूर्य की चमक या गर्मी,—नक्षत्रम् वह नक्षत्रपुंज जिसमें सूर्य हो,—पर्वन् (नपुं०) (सूर्य के नई राशि में प्रवेश या सूर्यग्रहण आदि का) पुण्यकाल, सूर्यपर्व, —प्रभव (वि०) सूर्य से उत्पन्न—रघु० १।२,—फणिचक्रम्=सूर्यकालानलचक्रम्, दे० ऊ०,—भक्त (वि०) सूर्य का उपासक, (क्तः) बन्धुकवृक्ष या गुलदुपहरिया या इसका फूल,—मणिः सूर्यकांतमणि, मण्डलम् सूर्य का घेरा, परिवेश,—यन्त्रम् 1. (सूर्योपासना में व्यवहृत) सूर्य का चित्र या प्रतिमा 2. सूर्य के वेध में काम आने वाला एक उपकरण,—रश्मिः सूर्य की किरण, सूर्यमयूख या सविता,—लोकः सूर्य का लोक, वंशः राजाओं का सूर्यवंश (जो अजोध्या में राज्य करते थे) इक्ष्वाकुवंश,—वर्चस् (वि०) सूर्य के समान तेजोमंडित,—विलोकनम् बच्चे को चार महीने का होने पर, बाहर ले जाकर सूर्यदर्शन कराने का संस्कार—तु० उपनिष्क्रमणम्,—सङ्क्रमः, सङ्क्रान्तिः (स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश, संज्ञम् केसर, ज़ाफ़रान,—सारथिः अरुण का विशेषण,—स्तुतिः (स्त्री०)—स्तोत्रम् सूर्य के प्रति की गई स्तुति,—हृदयम् सूर्य का एक स्तोत्र।

सूर्या [सूर्य+टाप्] सूर्य की पत्नी।

सूष् (भ्वा० पर० सूषति) फल प्रस्तुत करना, उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्म देना।

सूषणा [सूष्+युच्+टाप्] माता।

सूष्यती (स्त्री०) प्रसवोन्मुखी, आसन्न प्रसवा।

सृ (भ्वा० जुहो० पर० सरति, सिसर्ति,—धावति भी, सृत) 1. जाना हिलना-जुलना, प्रगति करना मृगाः प्रदक्षिणं सस्रुः—भट्टि० १४।१४ 2. पास जाना, पहुँचना—निष्पाद्य हरयः सेतं प्रतीताः सस्रुरर्णवम् —राम० 3. धावा बोलना, चढ़ाई करना (तं) ससाराभिमुखः शूरः शार्दूल इव कुञ्जरम् महा० 4. दौड़ना, तेज चलना, खिसक जाना— सरति सहसा बाह्वोर्मध्यं गताप्यबला सती—मालवि० ४।११ 5. (हवा की भांति) तेज चलना,—तं चेद्वायौ सरति सरलस्कन्धसङ्घट्टजन्मा—मेघ० ५३ 6. बहना प्रेर० (सारयति—ते) 1. चलना या घूमना 2. विस्तार करना 3. मलना, (अंगुलियों से) शनैः शनैः छूना —तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथंचित् मेघ० ८६ 4. पीछे धकेलना, हटाना -सारयन्ती गण्डाभोगा कठिनविषमामेकवेणीं करेण मेघ० ९२, इच्छा० (सिसीर्षति) जाने की इच्छा करना, अनु—,1. अनु-

गमन करना (सभी अर्थों में), पीछे जाना, ध्यान देना, पैरवी करना 2. पहुँचना, (अपने को) पहुँचाना—पूर्वोद्दिष्टामनुसर पुरीम् – मेघ० ३०, तेनोदीचीं दिशमनुसरेः—५७ 3. अनुशीलन करना, पार करना (प्रेर०) 1. अग्रणी होना – वायुरनुसारयतीव माम् - राम० 2. पीछे चलना, अप –, 1. अलग होना, निवृत्त होना, वापिस लेना - यदपसरति मेषः कारणं तत्प्रहर्तुम्—पंच० ३।४३ 2. ओझल होना अन्तर्धान होना (प्रेर०) भिजवाना, पहुँचाना, हटाना, वापिस हटना, दूर हांक देना –अपसारय घनसारं —काव्य० ९, मनु० ७।१४९, अभि—1. जाना, पहुँचना—कि० ८।४ 2. मिलने के लिए जाना या आगे बढ़ना (किसी नियत स्थान पर), नियत करके मिलना—सुन्दरीरभिससार--का० ५८, शि० ६।२६ 3. आक्रमण करना, हमला करना, (प्रेर०) नियत करके मिलना, मिलने के लिए आगे बढ़ना वल्लभानभिसिसारयिषूणाम्—शि० १०।२०, कि० ९।३८, सा० द० ११५, उद्—,(प्रेर०) दूर भगाना, निकाल देना, उप—, 1. पास जाना, पहुँचना,—रघु० १९।१६ 2. सजग रहना, दर्शन देना—कैलासनाथमुपसृत्य निवर्तमाना—विक्रम० १।३ 3. चढ़ाई करना, आक्रमण करना 4. आपसी मेल-जोल करना, निस्—, 1. चले जाना, बाहर निकलना, खिसक जाना, निकलना —बाणैः स्वरकार्मुकनिःसृतैः—राम०, इसी प्रकार –वसुधाप्तनिःसृतमिवाहिपतेः—शि० ९।२५ 2. विदा होना, कूच करना—मनु० ६।४ 3. बहना, पसीजना, रिसना—यो हेमकुम्भस्तननिःसृतानां स्कन्दस्य मातुः पयसां रसज्ञः—रघु० २।३६ (प्रेर०) हांक कर दूर करना, निष्कासित करना, बाहर निकाल देना, परि–, चारों ओर बहना–वनं सरस्वती परिससार—ऐत०, परिसस्रुरापः—महा० 2. चक्कर काटना, घूमना प्रदक्षिणं तं परिसृत्य–भाग०, (परिपतति– के स्थान पर परिसरति–पाठान्तर) शिखी भ्रान्तिमद्वारियन्त्रम् —मालवि० २।१३, प्र—, 1. बह जाना, झरना, उदय होना, प्रोद्गत होना—लोहिताद्या महानद्यः प्रसस्रुस्तत्र चासकृत्—महा० 2. आगे जाना, आगे बढ़ना - वेलानिलाय प्रसृता भुजङ्गाः—रघु० १३।१२, अन्वेषण–प्रसृते च मित्रगणे—दश० 3. फैलना, चारों ओर फैलना—कृशानुः किं साक्षात्प्रसरति दिशो नैष नियतम् —काव्य० १०, प्रसरति तृणमध्ये लब्धवृद्धिः क्षणेन (दवाग्निः)—ऋतु० १।२५ 4. फैलना, छा जाना, व्याप्त होना –प्रसरति परिमाथी कोऽप्ययं देहदाहः —मा० १।४१, भित्त्वा भित्त्वा प्रसरति बलात्कोऽपि चेतोविकारः—उत्तर० ३।३६ 5. बिछाया जाना, विस्तार करना—न मे हस्तौ प्रसरतः—श० २ 6. (किसी कार्य को करने के लिए) उन्मुख होना, इच्छुक होना, न मे उचितेषु करणीयेषु हस्तपादं प्रसरति—श० ४, प्रसरति मनः कार्यारम्भे 7. छा जाना, आरम्भ करना, उपक्रम करना – प्रससार चोत्सवः—कथा० १६।८५ 8. लम्बा होना, दीर्घ होना - विक्रम० ३।२२ 9. मजबूत होना, प्रबल होना–प्रसृततरं सख्यम् – दश०, 10. (समय) बिताना, (प्रेर०) 1. फैलाना, बिछाना —भट्टि० -१०।४४ 2. बिछाना, विस्तार करना, (हाथ आदि) फैलाना—कालः सर्वजनान् प्रसारितकरो गृह्णाति दूरादपि - पंच० २।२० 3. फैलाना, बिक्री के लिए खिलाना—क्रेतारः क्रीणीयुरिति बुद्ध्यापणे प्रसारितं क्रव्यम् – सिद्धा०, मनु० ५।१२९ 4. चौड़ा करना, (आँखों की पुतली को) फैलाना 5. प्रकाशित करना, ढिंढोरा पीटना, प्रचारित करना, प्रति - , 1. वापिस जाना, लौटना 2. धावा बोलना, चढ़ आना, आक्रमण करना, हमला करना—दैत्यः प्रत्यसरद्दैवं मत्तो मत्तमिव द्विपम् - हरि० (प्रेर०) पीछे की ओर धकेलना, बदल देना कनकवलयं स्रस्तं स्रस्तं मया प्रतिसार्यते – श० ३।१३, वि ,फैलाना, विस्तृत होना, प्रसृत होना—चक्रीवदङ्गरुहधूम्ररुचो विसस्रुः —शि० ५।८, ९।१९, ३७, कि० १०।५३ (प्रेर०) 1. फैलना, बिछाना 2. व्याप्त होना, सम्—1. फैलना 2. हिलना-जुलना 3. मिलकर जाना या उड़ना 4. जाना, पहुँचना—पापान् संसृत्य संसारान् प्रेष्यतां यान्ति शत्रुषु–मनु० १२।७०, (प्रेर०) 1. ऊपर फैलाना 2. घुमाना, चक्कर देना—जन्मवृद्धिक्षयैर्नित्यं संसारयति चक्रवत्—मनु० १२।१२४।

सृकः [सृ+कक्] 1. हवा, वायु 2. बाण 3. वज्र 4. कमल, कैरव।

सृकण्डु (स्त्री०) [सृ+क्विप्, पृषो० तुक् न, सृ+कण्डु क० स०] खुजली।

सृकालः [सृ+कालन्] दे० 'शृगाल'।

सृक्कम्, सृक्कणी, सृक्कन् (नपुं०) **सृक्किणी, सृक्किन्** (नपुं०), **सृक्वम्, सृक्वणी, सृक्वन्** (नपुं०), **सृक्विणी, सृक्विन्** (नपुं०) } [सृज्+कन्, कनिन्, क्वनिप् वा] मुंह का किनारा सृक्विणी परिलेलिहन्—पंच० १।

सृगः [सृ+गक्] एक प्रकार का बाण या नेजा, भिंदिपाल।

सृगालः [सृ+गालन्] दे० 'शृगाल'।

सृङ्का (स्त्री०) रत्नों या मणियों से बना हार, मणियों की जगमगाती लड़ी।

ईसृज् i (तुदा० पर० सृजति, सृष्ट] 1. रचना करना, पैदा करना, बनाना, प्रसव करना, जन्म देना अर्गन

नारी तस्यां स विराजमसृजत् प्रभुः - मनु० १।३२, ३३, ३४, ३६, तन्तुनाभः स्वत एव तन्तून् सृजति —शारी० 2. पहनना, रखना, प्रयोग में लाना 3. जाने देना, ढीला छोड़ना, मुक्त करना 4. उत्सर्जन करना, छितराना, प्रसृत करना, बिखेरना, डालना —अस्राक्षुरस्रं करुणं रुवन्तः—भट्टि० ३।१७, आनन्द-शीतामिव वाष्पवृष्टि हिमस्रुतिं हैमवतीं ससर्ज—रघु० १६।४४, ८।३५ 5. कहला भेजना, उच्चारण करना, कु० २।५३ ७।४७ 6. फेंकना, डाल देना 7. छोड़ना, छोड़ कर चले जाना, त्यागना, हटा देना।

ii (दिवा० आ० सृज्यते) ढीला होना, इच्छा० (सिसृक्षति) रचना करने की इच्छा करना। अति—, 1. देना, अर्पण करना—विक्रम० १।१५, रघु० ११।४८ 2. त्यागना, पदच्युत करना 3. उगलना 4. अनुज्ञा देना, अनुमति देना, अभि , देना, प्रदान करना, अव - , 1. डालना, फेंकना, बोना (बीज) बखेरना, अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत् —मनु० १।८ 2. ढालना, बूंद-बूंद टपकाना—उत्तर० ३।२३ 3. ढीला छोड़ना, उद्—, 1. उडेलना, उगलना, निकाल देना,—व्यलीकनिःश्वासमिवोत्ससर्ज कु० ३।२५, सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः—रघु० १।१८, 'उडेल देना, वापिस देना या लौटाना 2. (क) छोड़ कर चले जाना, छोड़ देना, परित्याग करना, —रघु० ५।५१, ६।४६, कु० २।३६, (ख) एक ओर फेंकना, स्थगित करना—स चापमुत्सृज्य विवृद्ध-मन्युः—रघु० ३।५०, ४।५४ 3. ढीला छोड़ना, स्वच्छन्द घूमने देना तुरङ्गमुत्सृष्टमनर्गलं पुनः—रघु० ३।३९ 4. दागना, फेंकना, गोली मारना—भट्टि० १४।४५ 5. बोना, (बीज) बखेरना 6. उपहार देना, प्रदान करना 7. बिछाना, विस्तार करना 8. हटाना 9. दूर करना 10. मिटाना, प्रतिबंध लगाना, उप , 1. उडेलना, (जल आदि) प्रस्तुत करना 2. जोड़ना, मिलाना, संयुक्त करना, संसक्त करना, संबद्ध करना —सुखं दुःखोपसृष्टम् 3. व्याकुल करना, अत्याचार करना, सताना—रोगोपसृष्टतनुर्दुर्वसतिं मुमुक्षुः—रघु० ८।९४ 4. ग्रहण लगना, ग्रस्त करना,- मनु० ४।३७ याज्ञ० १।२७२ 5. पैदा करना, क्रियान्वित करना 6. नष्ट करना, नि - , 1. स्वतन्त्र करना, वरी करना —न स्वामिना निसृष्टोपि शूद्रो दास्याद्विमुच्यते —मनु० ८।४१४ 2. हवाले करना, सौंपना, सुपुर्द करना—तु० निसृष्ट, प्र —, 1. छोड़ना, त्यागना 2. ढीला छोड़ना 3. बोना, बखेरना 4. क्षतिग्रस्त करना, चोट पहुँचाना, वि , 1. त्यागना, छोड़ना, तिलांजलि देना—विसृज सुन्दरि सङ्गमसाध्वसम् —मालवि० ४।१३, पूर्वार्धविसृष्टतल्पः रघु० १६।६, भामि० १।७८ 2. जाने देना, ढीला छोड़ना 3. ढालना, उडेलना—रघु० १३।२६ 4. भेजना, प्रेषित करना भोजेन दूतो रघवे विसृष्टः—रघु० ५।३९ 5. पदच्युत करना, जाने की अनुमति देना, भेजना—रघु० ८।९१, १४।१९ 6. देना—रघु० १३।६७, १८।७ 7. भेज देना, डाल देना, बिसार देना, फेंकना—विसृजति हिम-गर्भैरग्निमिन्दुर्मयूखैः—श० ३।२ 8. डालना, गिरने देना, प्रहार करना—विसृज शूद्रमुनौ कृपाणम्—उत्तर० २।१० 9. उच्चारण करना—शि० १५।६२ 10. उतार फेंकना, संबंध-विच्छेद करना,—सम्—, 1. मिलना, मिश्रण करना, संयुक्त करना, संपृक्त करना—संसृज्यते सरसिजैररुणांशुभिन्नैः—रघु० ५।६९, अस्ना रक्षः संसृजत्—ऐत० 2. मिलना,—सौमित्रिणा तदनु संससृजे—रघु० १३।७३, कु० ७।७४ 3. रचना करना।

सृजिकाक्षारः [ष० त०] सज्जी का खार, शोरा, रेह।

सृञ्जयाः (पुं० ब० व०) एक राष्ट्र या जनपद का नाम।

सृणिः (स्त्री०) [सृ + निक्] अंकुश, हाथी को हांकने का आंकड़ा—मदान्धकरिणां दर्पोपशान्त्यै सृणिः—हि० २।१६५, शि० ५।५, —णिः 1. शत्रु 2. चन्द्रमा।

सृणि (णी) का [सृणि + कन् (ईकन्) + टाप्] लार, थूक।

सृतिः (स्त्री०) [सृ + क्तिन्] 1. जाना, सरकना,—मनु० ६।६३ 2. रास्ता, मार्ग, पथ (आलं० से भी—नैते सृती पार्थ जानन् योगी मुह्यति कश्चन—भग० ८।२७ 3. चोट पहुंचाना, क्षतिग्रस्त करना।

सृत्वर (वि०) (स्त्री०—री) [सृ + क्वरप्, तुक्] जाने वाला, सरणशील, री 1. नदी, दरिया 2. माता।

सृदरः [सृ + अरक्, दुक्] सांप।

सृदाकुः [सृ + काकु, दुकुच] 1. हवा, वायु 2. अग्नि 3. हरिण 4. इन्द्र का वज्र 5. सूर्यमंडल,—स्त्री० नदी, सरिता।

सृप् (भ्वा० पर० सर्पति, सृप्त, इच्छा० सिसृप्सति) 1. रेंगना, पेट के बल चलना, शनैः शनैः सरकना 2. जाना, हिलना-जुलना, अनु—, 1. पास जाना, पहुँचना - गिरिमन्वसृपद्रामः—भट्टि० ६।२७ 2. पीछा करना - भट्टि० १५।५९, अप् , 1. चले जाना, पीछे हट जाना, लौट पड़ना—तरवरितमनेन तरुगहनेनाप-सर्पत—उत्तर०४ 2. सरक जाना, मन्द मन्द चलना 3. (भेदिये की भांति) छिप कर देखना—उत्तर० १ 4. अलग होना, छोड़ना, उद्—, 1. ऊपर को उड़ना 2. ऊपर जाना, पहुँचना—सरित्प्रवाहस्तटमुत्ससर्प—रघु० ५।४६, उप—, 1. पहुँचना, निकट जाना— मालवि० १।१२ 2. हरकत करना, जाना—पंच० २।२३ 3. पहुँचना, प्राप्त करना, भुगतना दुःखम् सुखम्··· 4. आरंभ करना- मनु० १०।१०५ 5. आक्रमण

करना, परि—, 1. चारों ओर घूमना, छा जाना 2. इधर उधर घूमना, प्र—, 1. आगे जाना, बाहर निकलना, आगे आना, प्रगति करना—भट्टि० १४। २० 2. फैलाना, प्रचारित करना, (आलं० से भी) रुधिरेण प्रसर्पता—महा०, आलर्क विषमिव सर्वतः प्रसृप्तम्—उत्तर० १।४०, वि—, 1. जाना, प्रयाण करना, प्रगति करना—यः सुबाहुरिति राक्षसोऽपरस्तत्र तत्र विससर्प मायया—रघु० ११।२९, ४।५२ 2. इधर उधर उड़ना या घूमना 3. फैलाना—मनोरागस्तीव्रं विषमिव विसर्पत्यविरतम्—मा० २।१ 4. साथ साथ बहना, नीचे गिरना—(बाष्पौघः) विसर्पन् धाराभिर्लुठति धरणीं जर्जरकणः—उत्तर० १।२६ 5. लेकर चम्पत होना, बच निकलना 6. छा जाना 7. मुड़ना, घूमना 8. भिन्न भिन्न दिशाओं में जाना सम्—, 1. हिलना-जुलना,—संसर्पत्या सपदि भवतः स्रोतसि च्छाययासौ—मेघ० ५१ 2. साथ साथ चलना, बहना —मेघ० २९।

सृपाटः [सृप्+काटन्] एक प्रकार की माप।

सृपाटिका [सृपाट+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] पक्षी की चोंच।

सृपाटी [सृपाट+ङीष्] एक प्रकार की माप।

सृप्रः [सृप्+क्रन्] चन्द्रमा।

सृभ्, सृम्भ (भ्वा० पर० सर्भति, सृम्भति) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, वध करना।

सृमर (वि०) (स्त्री०री) [सृ+क्मरच्] गमन करने वाला, जाने वाला,—रः एक प्रकार का हरिण।

सृष्ट (भू० क० कृ०) [सृज्+क्त] 1. रचित, उत्पादित 2. उंडेला हुआ, उगला हुआ 3. ढीला छोड़ा हुआ 4. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 5. हटाया गया, दूर भेजा गया 6. निश्चय किया गया, निर्धारित 7. संयुक्त, संबद्ध 8. अधिक, प्रचुर, असंख्य 9. अलंकृत—दे० 'सृज्'।

सृष्टिः (स्त्री०) [सृज्+क्तिन्] 1. रचना, कोई भी रचित वस्तु—कि मानसी सृष्टिः—श०४, या सृष्टिः स्रष्टुराद्या —श०१।१, सृष्टिराद्येव धातुः—मेघ० ८२ 2. संसार की रचना 3. प्रकृति, प्राकृतिक संपत्ति 4. ढीला छोड़ना, उद्गार 5. प्रदान करना, भेंट 6. गुणों की विद्यमानता 7. पदार्थ का अभाव। सम०—गर्तृ (पुं०) स्रष्टा, रचयिता।

सॄ (क्र्या० पर० सृणाति] चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना।

सेक् (भ्वा० आ० सेकते) जाना, हिलना-जुलना।

सेकः [सिच्+घञ्] छिड़कना, (वृक्षों को) पानी देना, —सेकः सीकरिणा करेण विहितः कामम्—उत्तर० ३।१६, रघु० १।५१, ८।४५, १६।३०, १७।१६ 2. उद्गार, प्रसार 3. वीर्यपात 4. तर्पण, चढ़ावा। सम०—पात्रम् 1. पानी छिड़कने का पात्र, जल-पात्र 2. डोलची, बोका।

सेकिमम् [सेक+डिम] मूली।

सेक्तृ (वि०) (स्त्री०—क्त्री) [सिच्+तृच्] सींचने वाला (पुं०) 1. छिड़काव करने वाला 2. पति।

सेक्त्रम् [सिच्+ष्ट्रन्] डोलची, सींचने का पात्र।

सेचक (वि०) (स्त्री०—चिका) [सिच्+ण्वुल्] सींचने वाला,—कः बादल।

सेचनम् [सिच्+ल्युट्] सींचना, (वृक्षों को) पानी देना, —वृक्षसेचने द्वे धारयसि मे श० १ 2. स्राव, छिड़काव 3. मन्द-मन्द रिसना, टपकना 4. डोलची। सम० —घटः सींचने का बर्तन।

सेचनी [सेचन+ङीप्] डोलची।

सेटुः [सिट्+उन्] 1. तरबूज 2. एक प्रकार की ककड़ी।

सेतिका (स्त्री०) अयोध्या का नाम।

सेतुः [सि+तुन्] 1. मिट्टी का टीला, मेंड, किनारा, ऊँचा मार्ग, बांध—नलिनीं क्षतसेतुबन्धनो जलसंघात इवासि विद्रुतः—कु० ४।६, रघु० १६।२ 2. पुल —वैदेहि पश्यामलयाद्विभक्तं मत्सेतुना फेनिलमम्बुराशिम् रघु० १३।२, सैन्यैर्बद्धद्विरदसेतुभिः—४।३८ १२।७०, कु० ७।५३ 3. सीमाचिह्न, मेंड—मनु० ८। २४५ 4. संकुचित मार्ग, दर्रा, संकीर्ण गिरिपथ 5. हद, सीमा 6. जंगला, परिसीमा, किसी प्रकार का अवरोध —दूष्येः सर्ववर्णाश्च भिद्येरन् सर्वसेतवः—सुभा० 7. निश्चित नियम या विधि, सर्वसम्मत प्रथा 8. 'ओम्' पुनीत अक्षर—मन्त्राणां प्रणवः सेतुस्तत्सेतुः प्रणवः स्मृतः। स्रवत्यनोंकृतं पूर्वं परस्ताच्च विदीर्यते। कालिका०। सम०—बन्धः 1. पुल का निर्माण, नवारा की रचना—वयोगते किं वनिताविलासो जले गते किं खलु सेतुबन्धः—सुभा०, कु० ४।६ 2. शैल शृंखला जो कारोमण्डल समुद्रतट की दक्षिणी सीमा से लंका तक फैली हुई है (कहते हैं कि यही वह पुल है जिसे नलनील ने राम के लिए बनाया था) 3. कोई भी पुल या नवारा,—भेदिन् (वि०) 1. बन्धनों को तोड़ने वाला 2. रुकावटों को हटाने वाला (पुं०) एक वृक्ष का नाम, दन्ती।

सेतुकः [सेतु+क] 1. समुद्रतट, नवारा, पुल 2. दर्रा।

सेत्रम् [सि+ष्ट्रन्] बन्धन, हथकड़ी, बेड़ी।

सेदिवस् (वि०) (स्त्री०—सेदुषी) [सद्+लिट्+क्वसु] बैठा हुआ।

सेन (वि०) [सह इनेन ब० स०] प्रभु वाला, जिसका कोई स्वामी हो, नेता हो।

सेना [सि+न+टाप्, सह इनेन प्रभुणा वा] 1. फौज —सेनापरिच्छदस्तस्य द्वयमेवार्थसाधनम्—रघु० १।१९

2. संग्राम के देवता कार्तिकेय की मूर्त पत्नी सेना, फौज—तु० देवसेना। सम०—अग्रम् सेना का अग्रभाग, °गः सेना का नायक या सेनापति,—अङ्गम् सेना का संघटक भाग (यह गिनती में चार है—हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम्),—चरः 1. सैनिक 2. अनुचरवर्ग, निवेशः सेना का शिविर - रघु० ५। ४९, नी (पुं०) 1. सेना का नायक, सेनापति, सेनाध्यक्ष सेनानीनामहं स्कन्दः भग० १०।२४, कु० २।५१ 2. कार्तिकेय का नाम अथैनमद्रेस्तनया शुशोच सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रैः रघु० २।३७, पतिः 1. सेना का नायक 2. कार्तिकेय का नाम परिच्छद (वि०) सेना से घिरा हुआ (रघु० १।१९ में 'सेनापरिच्छदः' कभी कभी एक ही शब्द समझा गया और तदनुकूल ही अर्थ किया गया, परन्तु इनको अलग-अलग दो शब्द समझना ज्यादह अच्छा है), पृष्ठम् सेना का पिछला भाग, - भङ्गः सेना का भग्न हो जाना, सर्वथा तितर-बितर होना, अव्यवस्थित रूप से इधर उधर भागना, मुखम् 1. सेना का एक दस्ता या भाग 2. विशेषतः वह दस्ता जिसमें तीन हाथी, तीन रथ, नौ घोड़े और पन्द्रह पदाति हों 3. नगर फाटक के बाहर बना मिट्टी का टीला, योगः सेना की सुसज्जा, - रक्षः पहरेदार, सन्तरी।

सेफः [सि+फः] पुरुष का लिंग—तु० 'शेफ'।

सेमन्ती [सिम्+क्षि+ङीष्] सफेद गुलाब, सेवती।

सेरः (पुं०) एक विशेष माप, सेर का बट्टा, (लीलावती इसकी परिभाषा की है पादोनगद्यानकतुल्यटङ्कैर्द्विसप्त तुल्यैः कथितोऽत्र सेरः)।

सेराहः (पुं०) दुग्ध के समान श्वेत रंग का घोड़ा।

सेरु (वि०) [सि+रु] बाँधने वाला, कसने वाला।

सेल् (भ्वा० पर० सेलति) जाना, हिलना-जुलना।

सेव् (भ्वा० आ० सेवते, सेवित, प्रेर० सेवयति ते, इच्छा० सिसेविषते नि, परि, वि आदि इकारांत उपसर्गों के पश्चात् सेव् का स् बदल कर प्रायः मूर्धन्य ष् हो जाता है) 1. सेवा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सम्मान करना, पूजा करना, आज्ञा मानना —प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः -- मुद्रा० ४।२१, या, ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरमयं लोकोऽर्थतः सेवते—१।४ 2. अनुगमन करना, पीछा करना, अनुसरण करना 3. उपयोग में लाना, उपभोग करना —किं सेव्यते सुमनसां मनसापि गन्धः कस्तूरिकाजननशक्तिभृता मृगेण—रस० 4. शारीरिक सुखोपभोग करना—भामि० १।११८ 5. अनुराग करना, अनुष्ठान करना --मनु० २।१, कु० ५।३८, रघु० १७।४९ 6. सहारा लेना, आश्रित होना, रहना, बार-बार आना जाना, बसना,—तप्तं वारि विहाय तीरनलिनीं कारण्डवः सेवते—विक्रम० २।२३, पंच० १।९ 7. पहरा देना, रखवाली करना, रक्षा करना, आ—, उपभोग करना - यद्वायुरन्विष्टमृगैः किरातैरासेव्यते भिन्नशिखण्डिबर्हः - कु० १।१५, प्रवातमासेवमानां तिष्ठति —मालवि० १ 2. अभ्यास करना, अनुष्ठान करना 3. सहारा लेना, उप—, 1. सेवा करना, पूजा करना, सम्मान करना, मनु० ४।१३३ 2. अभ्यास करना, अनुसरण करना, ध्यान देना, पीछा करना 3. व्यस्त होना, उपभोग करना—भग० १५।९ 4. (किसी स्थान पर) नित्य जाना, बसना 5. मलना, मालिश करना, नि—, पीछा करना, अनुसरण करना, संलग्न करना, अभ्यास करना—श० १।२७ 2. उपभोग करना -- निषेवते श्रान्तमना विविक्तम्—श० ५।५, कु० १।६ 3. शारीरिक सुखोपभोग करना—यथा यथा नामरसेक्षणा मया पुनः सरागं नितरां निषेविता - भामि० २।१५५ 4. सहारा लेना, बसना, नित्य आना-जाना—कु० ५। ७६ 5. उपयोग में लाना, काम में लाना—विषतां निषेवितमपक्रियया समुपैति सर्वमिति सत्यमदः—शि० ९।६८ 6. सेवा में उपस्थित रहना, हाजरी देना 7. नजदीक जाना, पहुँचना 8. भुगतना, अनुभव करना, परि—, 1. सहारा लेना 2. उपभोग करना, लेना।

सेव दे० 'सेवन'।

सेवक (वि०) [सेव्+ण्वुल्] 1. सेवा करने वाला, पूजा करने वाला, सम्मान करने वाला 2. व्यवसाय करने वाला, अनुगामी 3. आश्रित, दास,—कः 1. टहलुआ, —आश्रित सेवया धनमिच्छद्भिः सेवकैः पश्य किं कृतम्। स्वातंत्र्यं यच्छरीरस्य मूढैस्तदपि हारितम्—हि० २।२० 2. भक्त, पूजक 3. सीने वाला, दर्जी 4. बोरा, थैला।

सेवधि (अव्य०) दे० 'शेव' के अन्तर्गत 'शेवधि'।

सेवनम् [सेव्+ल्युट्] 1. सेवा करना, सेवा हाजरी में खड़े रहना, पूजा करना—पात्रीकृतात्मा गुरुसेवनेन —रघु० १८।३० 2. अनुगमन करना, अभ्यास करना, काम में लगाना मनु० १२।५२ 3. उपयोग करना, उपभोग करना 4. शारीरिक सुखोपभोग करना —यत्करोत्येकरात्रेण वृषलीं सेवनाद्द्विजः—मनु० ११। १७९ 5. सीना, टाँका लगाना 6. बोरा, थैला।

सेवनी [सेवन+ङीप्] 1. सुई 2. सीवन, संधिरेखा 3. संधि या सीवन की भाँति शरीर के अंगों का संधान।

सेवा [सेव्+अङ्+टाप्] 1. परिचर्या, खिदमत, दासता, टहल- सेवां लाघवकारिणीं कृतधियः स्थाने श्ववृत्तिं विदुः—मुद्रा० ३।१४, हीनसेवा न कर्तव्या—हि० ३।११ 2. पूजा, श्रद्धांजलि, सम्मान 3. संलग्नता,

भक्ति, चाव 4. उपयोग, अभ्यास, काम में लगना, प्रयोग 5. बार बार आना—जाना, आश्रय लेना 6. चापलूसी, बहकाना, चिकने चुपड़े शब्द अलं सेवया मध्यस्थतां गृहीत्वा भण—(मालवि० ३ । सम० —आकार (वि०) दासता के रूप में—विक्रम० ३।१, काकुः सेवा में आवाज़ में परिवर्तन (यह विक्रम० ३।१ में 'सेवाकारा' शब्द का रूपान्तर है), धर्मः 1. सेवा करने का कर्तव्य सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः—पंच० १।२८५ 2. सेवा का दायित्व,—व्यवहारः सेवा की विधि या प्रथा ।

सेवि (नपुं०) [सेव्+इन्] 1. बेर 2. सेव ।

सेवित (भू० क० कृ०) [सेव्+क्त] 1. सेवा किया गया, जिसकी टहल की गई है, पूजा किया गया 2. अनुगत, अभ्यस्त, पीछा किया गया 3. जहाँ नित्य-प्रति आया जाय, सहारा लिया गया, जहाँ (लोग) बसे हुए हों, जहाँ संगी-साथी हों 4. उपभुक्त, उपयुक्त,—तम् 1. सेव 2. बेर ।

सेवितृ (पुं०) [सेव्+तृच्] सेवक, दास ।

सेविन् (वि०) [सेव्+णिनि] 1. सेवा करने वाला, पूजा करने वाला 2. अनुगन्ता, अभ्यासी, उपयोक्त 3. बसने वाला, रहने वाला, -(पुं०) सेवक ।

सेव्य (वि०) [सेव्+ण्यत्] 1. सेवा किए जाने के योग्य, टहल किए जाने के योग्य 2. उपयोग में लाने के योग्य, काम में लाने के योग्य 3. उपभोग किए जाने के योग्य 4. देख-भाल किए जाने के योग्य, पहरा दिए जाने के योग्य,—व्यः 1. स्वामी (विप० सेवक),—भयं तावत्सेव्यादभिनिविशते सेवकजनम्—मुद्रा० ५।१२, पंच० १।४८ 2. अश्वत्थवृक्ष, व्यम् एक प्रकार की जड़ । सम०-सेवकौ (पुं०, द्वि० व०) स्वामी और नौकर ।

सै (भ्वा० पर०—सायति) बर्बाद होना, क्षीण होना, नष्ट होना ।

सैंह (वि०) (स्त्री० ही) [सिंह+अण्] सिंह से संबद्ध, सिंह सम्बन्धी —द्युति सैंहीं किं श्वा धृतकनकमालोऽपि लभते हि० १।१७५ ।

सैंहल (वि०) [सिंहल+अण्] लंका सम्बन्धी, लंका में उत्पन्न, या लंका में होने वाला ।

सैंहिकः,—सैंहिकेयः [सिंहिक+अण्, सिंहिका+ढक्] राहु का मातृ परक नाम ।

सैकत (वि०) (स्त्री० ती) [सिकताः सन्त्यत्र अण्] 1. रेत युक्त या रेत से बना हुआ, रेतीला, कंकरीला —तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः—उत्तर० ३।३६ 2. रेतीली भूमि वाला, तम् रेतीला तट —सुरगज इव गांगं सैकतं सुप्रतीकः रघु० ५।७५, ५।८, १०।६९, १३।१७, ६२, १३।७६, १६।२१, कु० १।२९, श० ६।१७ 2. रेतीले तटों वाला द्वीप 3. किनारा या द्वीप । सम० इष्टम् अदरक ।

सैकतिक (वि०) (स्त्री०—की) [सैकत+ठन] 1. रेतीले तट से संबन्ध रखने वाला 2. घट-बढ़ होने वाला, तरंगित, सन्देह की अवस्था में रहने वाला, सन्देहजीवी, —कः 1. साधु 2. संन्यासी,—कम् मंगलसूत्र जो सौभाग्यशाली बनने के लिए कलाई में बांधा जाता है या कंठ में पहना जाता है ।

सैद्धान्तिक (वि०) (स्त्री० की) [सिद्धान्त+ठक्] किसी राद्धांत या प्रदर्शित सत्य से सम्बन्ध रखने वाला 2. जो वास्तविक सचाई को जानता है ।

सैनापत्यम् [सेनापति+ष्यञ्] किसी सेना का सेनापतित्व, सेनाध्यक्षता—कु० २।६१ ।

सैनिक (वि०) (स्त्री०—की) [सेनायां समवैति ठक्] 1. सेनासम्बन्धी 2. फौजी, कः 1. सिपाही—पपात भूमौ सह सैनिकाश्रुभिः —रघु० ३।६१ 2. पहरेदार, संतरी 3. सामरिक व्यूह में व्यवस्थित सैन्यसमूह —रघु० ३।५७ ।

सैन्धव (वि०) (स्त्री०—वी) [सिन्धुनदीसमीपे देशे भवः अण्] 1. सिंधु प्रदेश में उत्पन्न या पैदा हुआ 2. सिंधु नदी संबन्धी 3. नदी में उत्पन्न 4. समुद्र संबन्धी, सागर सम्बन्धी, सामुद्रिक,—वः 1. घोड़ा, विशेषतः वह जो सिंधु देश में पला हो—नै० १।७१ 2. एक ऋषि का नाम, —वाः,—वम् एक प्रकार का सेंधा नमक,—वाः (पुं०, ब० व०) सिंधु प्रदेश के अधिवासी । सम०—घनः नमक का ढेला,—शिला एक प्रकार का पहाड़ से निकलने वाला नमक ।

सैन्धवक (वि०) (स्त्री०—की) [सैंधव+वुञ्] सैंधव सम्बन्धी, कः सिंधु देश का कोई आपद्ग्रस्त व्यक्ति जिसकी दशा दयनीय हो ।

सैन्धी (स्त्री०) एक प्रकार की मदिरा (सम्भवतः वह जो ताड़ के रस से तैयार की गई हो) ताड़ी ।

सैन्यः [सेनायां समवैति ञ्य] 1. सैनिक, सिपाही—शि० ५।२८ 2. पहरेदार, संतरी, —न्यम् सेना, सेना की टुकड़ी—स प्रतस्थेऽरिनाशाय हरिसैन्यैरनुद्रुतः—रघु० १२।६७ ।

सैमन्तिकम् [सीमन्त+ठक्] सिंदूर ।

सैरन्ध्रः, सैरिन्ध्रः [सीरं हलं धरति—सीर+धृ+क, मुम् =सीरन्ध्रः कृषकः तस्येदं शिल्पकर्म सीरन्ध्र+अण् पक्षे इत्वम्] 1. घरेलू नौकर, किंकर 2. एक मिश्र जाति, दस्यु जाति के पुरुष तथा अयोगव जाति की स्त्री से उत्पन्न सन्तान—सैरिन्ध्रं वागुरावृत्तिं सूते दस्युरयोगवे मनु० १०।३२ ।

सैरन्ध्री, सैरिन्ध्री [सैरं (रि) ध्र+ङीप्] 1. दासी या सेविका जो अन्तःपुर में काम करे (सैरंध्र 2. में

वर्णित मिश्र जाति की स्त्री) 2. स्वतन्त्र स्त्री जो शिल्पकारिणी के रूप में दूसरे के घर जाकर काम करे 3. द्रौपदी का विशेषण (अज्ञात वास में विराट् की पत्नी सुदेष्णा की सेवा करते समय द्रौपदी ने यह नाम रख लिया था)।

सैरिक (वि०) (स्त्री० की) [सीर+ठक्] 1. हल-सम्बन्धी 2. खूडों से युक्त,—कः 1. हल में चलने वाला बैल 2. हाली, हलवाहा।

सैरिभः [सीरे हले तद्वहने इभ इव शूरत्वात्, शक० पर०, सीर+इभ्+अण्] 1. भैंसा—अवमानित इव कुलीनो दीर्घं निःश्वसिति सैरिभः—मृच्छ० ४ 2. इन्द्र का स्वर्ग।

सैवाल दे० 'शेवाल'।

सैसक (वि०) (स्त्री की) [सीसक+अण्] सीसे का बना हुआ, सीसा सम्बन्धी।

सो (दिवा० पर० स्यति, सित, प्रेर० साययति—ते, इच्छा० सिषासति, कर्मवा० सीयते—इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् 'सो' के 'स्' को मूर्धन्य 'ष्' हो जाता है) 1. वध करना, नष्ट करना 2. समाप्त करना, पूरा करना, अन्त तक पहुँचाना, **अव**—, 1. समाप्त करना, पूरा करना—यूपवत्यवसिते क्रियाविधौ—रघु० ११।३७, अवसितमण्डनासि—श० ४ 2. नष्ट करना 3. जानना, भट्टि० १९।२९ 4. विफल होना, किनारे पर होना (अक०)—शक्तिर्ममावस्यति हीनयुद्धे—कि० १६।१७, **अध्यव** , 1. संकल्प करना, निर्धारित करना, मन पक्का करना—कथमिदानीं दुर्जनवचनादध्यवसितं देवेन—उत्तर० १, अभिधातुमध्यवससौ न गिरा—शि० ९।७६, 2. प्रयास करना, दायित्व लेना, सम्पन्न करना—मा साहसमध्यवस्यः—दश०, वक्तुं सुकरमध्यवसातुं दुष्करम् वेणी० ३, 'करने की अपेक्षा कहना आसान है' 3. दबोच लेना 4. सोचना, विचार करना, **पर्यव** , 1. पूरा करना, समाप्त करना 2. निर्धारित करना, संकल्प करना 3. परिणाम होना, घट जाना, समाप्त हो जाना—एष एव समुच्चयः सद्योगेऽसद्योगे सदसद्योगे च पर्यवस्यतीति न पृथक् लक्ष्यते काव्य० १० 4. नष्ट होना, खो जाना, क्षीण होना 5. प्रयत्न करना, **व्यव**—1. ज़ोर लगाना, हाथ-पांव मारना, कोशिश करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना, आरम्भ करना—ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति—श० १।१८ 2. चिन्तन करना, कामना करना, चाहना—पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या—श० ४।९ 3. लगातार चेष्टा करना, परिश्रमी या उद्योगी होना 4. संकल्प करना, निर्धारित करना, निश्चित करना, फैसला करना—श० ५।१८ 5. स्वीकार करना, दायित्व लेना कच्चित्सौम्य व्यवसितमिदं बन्धुकृत्यं त्वया मे मेघ० ११४ 6. करना, सम्पन्न करना 7. विश्वास करना, विश्वस्त होना, प्रतीत होना 8. विचार-विमर्श करना, **सम्व** , निर्णय करना, आदेश देना—मनु० ७।१३।

सोढ (भू० क० कृ०) [सह्+क्त] सहन किया गया, भुगता गया, बर्दाश्त किया गया, झेला गया—आदि दे० 'सह्'।

सोढृ (वि०) (स्त्री०—ढ्री) [सह्+तृच्] 1. सहनशील, बर्दाश्त करने वाला, सहिष्णु 2. शक्तिशाली, समर्थ।

सोत्क, सोत्कण्ठ (वि०) [सह उत्केन, उत्कण्ठया वा—ब० स०] 1. अत्यन्त उत्सुक, अतीव आतुर, आकुल, यथा—'सोत्कण्ठमालिंगनम्' 2. खिन्न 3. शोकाकुल, खिद्यमान, —ठम् (अव्य०) 1. अत्यंत उत्सुकता के साथ, बड़ी उत्कंठा के साथ,—प्रोड्डीयेव बलाकया सरभसं सोत्कण्ठमालिङ्गितः—मृच्छ० ५।२३ 2. खेदपूर्वक, दुःखपूर्वक।

सोत्प्रास (वि०) [सह उत्प्रासेन—ब०स०] 1. अत्यधिक 2. अतिशयोक्तिपूर्ण 3. व्यंग्यात्मक, व्यंगपूर्ण,—सः अट्टहास,—सः,—सम्, व्यंग्यात्मक अतिशयोक्ति, व्यंगोक्ति, व्यंगवाक्य, तु० व्याजस्तुति।

सोत्सव (वि०) [उत्सवेन सह—ब०स०] उत्सवयुक्त, उछाह भरा, हर्षपूर्ण।

सोत्साह (वि०) [सह उत्साहेन—ब०स०] प्रबल, सक्रिय, उत्साही, धीर,—हम् (अव्य०) फ़ुर्ती से, उत्साह पूर्वक, सावधानी से।

सोत्सुक (वि०) 1. खिन्न, झल्लाने वाला, आतुर, शोकान्वित 2. उत्कण्ठित, लालायित।

सोत्सेध (वि०) [सह उत्सेधेन ब०स०] उन्नीत, उन्नत, ऊँचा, उत्तुंग—सोत्सेधैः स्कन्धदेशैः मुद्रा० ४।७।

सोदर (वि०) [समानमुदरं यस्य, समानस्य सः] एक ही पेट से उत्पन्न, सहोदर, रः सगा भाई, रा सगी बहन।

सोदर्यः [सोदर+यत्] सहोदर भाई, सगा भाई (आलं० से भी)—भ्रातुः सोदर्यमात्मानमिन्द्रजिद्वधशोभिनः—रघु० १५।२६, अवज्ञासोदर्यं दारिद्र्यम्—दश०।

सोद्योग (वि०) [सह उद्योगेन ब०स०] प्रबल उद्योग करने वाला, परिश्रमी, सक्रिय, धीर, मेहनती।

सोद्वेग (वि०) [सह उद्वेगेन—ब०स०] 1. आतुर, आशंकालु 2. शोकान्वित,—गम् (अव्य०) आतुरता के साथ, उतावलेपन से, उत्सुकतापूर्वक।

सोनहः [सु+विच्+सो, नह्+क=नह] लहसुन।

सोन्माद (वि०) [सह उन्मादेन—ब०स०] पागल, दीवाना, आपे से बाहर, मदविक्षिप्त।

सोपकरण (वि०) [सह उपकरणेन—ब०स०] सब प्रकार

के आवश्यक सामान या उपकरणों से युक्त, समुचित रूप से सुसज्जित, इसी प्रकार 'सोपकार'।

सोपद्रव (वि०) [सह उपद्रवेण—ब०स०] संकट और उपद्रवों से युक्त।

सोपध (वि०) [सह उपधया—ब०स०] जालसाज़ी और धोखे से भरा हुआ, कपटपूर्ण।

सोपधि (वि०) [सह उपधिना—ब०स०] जालसाज, अव्य० कपट के साथ, जालसाज़ी करके—अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशा विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि —कि० १।४५।

सोपप्लव (वि०) [सह उपप्लवेन—ब०स०] 1. संकटग्रस्त 2. शत्रुओं द्वारा आक्रान्त 3. ग्रहणग्रस्त (जैसे कि चन्द्र व सूर्य)।

सोपरोध (वि०) [सह उपरोधेन—ब०स०] 1. अवरुद्ध, बाधायुक्त 2. अनुगृहीत,—**धम्** (अव्य०) सानुग्रह, सादर।

सोपसर्ग (वि०) [सह उपसर्गेण—ब०स०] 1. संकटग्रस्त, दुर्भाग्यग्रस्त 2. अनिष्टसूचक 3. किसी भूत प्रेत से आविष्ट 4. उपसर्ग से युक्त (व्या० में)।

सोपहास (वि०) [सह उपहासेन ब०स०] व्यंग्यपूर्ण हंसी से युक्त, उपालंभपूर्ण, व्यंग्यमय, सम् (अव्य०) उपालंभपूर्वक, उलाहने के साथ।

सोपाकः [=श्वपाकः, पृषो०] पतित जाति का पुरुष, चांडाल, दे० मनु० १०।३८।

सोपाधि (वि०) **सोपाधिक** (वि०) (स्त्री०—की) [सह उपाधिना—ब०स०, पक्षे कप्] 1. किसी शर्त या सीमा से प्रतिबद्ध, विशिष्ट लक्षणों से युक्त, सीमित, मर्यादित, विशिष्ट (दर्शन० में) 2. विशिष्ट विशेषण से युक्त।

सोपानम् [उप+अन्+घञ्=उपानः उपरिगतिः सह विद्यमानः उपानः येन—ब०स०] पौड़ी, सीढ़ी का डंडा, ज़ीना, सीढ़ी—आरोहणार्थं नवयौवनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम् कु० १।३९। सम०—**पङ्क्तिः** (स्त्री०),—**पथः**,—**पद्धतिः** (स्त्री०), -**परम्परा**, **मार्गः** सीढ़ी, ज़ीना वापी चास्मिन् मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा मेघ० ७६, समारुरुक्षुर्दिवमायुषः क्षये ततान सोपानपरम्परामिव—रघु० ३।६९, ६।३, १६।५६।

सोमः [सू+मन्] 1. एक पौधे का नाम, प्राचीन काल के यज्ञों में आहुति देने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण औषधि 2. 'सोम' नामक पौधे का रस—जैसा कि सोमया तथा सोमपीथिन् शब्दों में 3. अमृत, देवताओं का पेय पदार्थ 4. चन्द्रमा (पुराणों में चन्द्रमा को अत्रि ऋषि की आँख से उत्पन्न होने वाला वर्णन किया गया है (तु० रघु० २।७५), ऐसा भी वर्णन मिलता है कि समुद्रमन्थन के अवसर पर चन्द्रमा भी समुद्र से निकला। पुराणों में वर्णित सत्ताइस नक्षत्र जो दक्ष की कन्याएँ बतलाई गई हैं, चन्द्रमा की पत्नियाँ कही जाती हैं। चन्द्रमा की कलाओं के पाक्षिक क्षय की घटना का भी समाधान यह किया गया है कि चन्द्रमा की अमृतमयी कलाओं को विविध देवताओं ने बारी बारी से पी लिया, इसी प्रसंग में एक और कथा का भी आविष्कार किया गया है जिसमें बतलाया गया है कि चन्द्र .ा रोहिणी (दक्ष की २७ कन्याओं में से एक) पर विशेष रूप से अनुरक्त था, अतः उसके श्वसुर दक्ष ने इसे 'क्षयरोग से ग्रस्त' होने का शाप दे दिया, बाद में चन्द्रमा की अन्य पत्नियों के बीच में पड़ने पर यह शाप सीमित कालावधि (पाक्षिक) में बदल दिया गया। यह भी वर्णन मिलता है कि चन्द्रमा ने बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण किया उससे चन्द्रमा का बुध नामक एक पुत्र पैदा हुआ। यही बुध बाद में राजाओं के चन्द्रवंश का प्रवर्तक हुआ, (दे० तारा (ख) भी) 5. प्रकाश की किरण 6. कपूर 7. जल 8. वायु, हवा 9. कुबेर 10. शिव 11. यम 12. (समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त) मुख्य, प्रधान, उत्तम - जैसा कि 'नृसोम' में,—**मम्** 1. चावलों की कांजी 2. आकाश, गगन। सम०—**अभिषवः** सोमरस का खींचना,—**अहः** सोमवार,—**आख्यम्** लाल कमल,—**ईश्वरः** शिव की प्रसिद्ध प्रतिमा 'सोमनाथ', —**उद्भवा** नर्मदा नदी—रघु० ५।५९ (यहाँ मल्लि० ने अमर० का उद्धरण दिया है—'रेवातु नर्मदा सोमोद्भवा'),—**कान्तः** चन्द्रकान्तः मणि,—**क्षयः** चन्द्रमा की कलाओं का ह्रास,—**ग्रह** सोमरस रखने का पात्र, —**ज** (वि०) चन्द्रमा से उत्पन्न. (—**जः**) बुधग्रह का विशेषण, (—**जम्**) दूध,—**धारा** आकाश, गगन,—**नाथः** प्रसिद्ध 'शिव लिंग' या वह स्थान जहाँ यह प्रतिमा स्थापित की गई है (इसी 'प्रतिमा' की अतुल धनराशि व वैभव ने ग़ज़नी के मोहम्मद गोरी को आकृष्ट किया, जिसने १०२४ ई० में सोमनाथ का मन्दिर तोड़ा और उसके ख़ज़ाने को उठा कर ले गया)—तेषां मार्गे परिचयवशादर्जितं गुर्जराणां यः सन्तापं शिथिलमकरोत् सोमनाथं विलोक्य ॥ विक्रमांक० १८।८७, —**प**,—**पा** (पुं०) 1. सोमपायी 2. सोमयाजी 3. पितरों का विशेष समूह,—**पतिः** इन्द्र का नाम,—**पानम्** सोमरस का पीना,—**पायिन्**,—**पीथिन्** (पुं०) सोमरस को पीने वाला—तत्र केचित्……सोमपीथिन उदुम्बरनामानो ब्रह्मवादिनः प्रतिवसन्ति स्म मा० १, —**पुत्रः**,—**भूः**—**सुतः** बुध के विशेषण,—**प्रवाकः** सोमयज्ञ के पुरोहितों को वरण करने वाला,—**बन्धुः** कुमुद,—**यज्ञः**, **यागः** सोमयज्ञ,—**योनिः** एक प्रकार का पीला और सुगन्धित चन्द्रमा—**रोगः**, स्त्रियों का

एक विशेष रोग,—लता—वल्लरी 1. सोम का पौधा 2. गोदावरी नदी,—वंशः बुध द्वारा स्थापित राजाओं का चन्द्रवंश,—वारः,- वासरः सोमवार,—विक्रयिन् (पुं०) सोमरस विक्रेता,—वृक्षः,—सारः सफेद खैर का वृक्ष,—शकला एक प्रकार की ककड़ी,—संज्ञम् कपूर,—सद् (पुं०) पितरों का विशेषवर्ग—मनु० ३।१९५,—सिन्धुः विष्णु का विशेषण, -सुत् (पुं०) सोमरस खींचने वाला,—सुता नर्मदा नदी तु० सोमोद्भव,—सूत्रम् शिव लिंग के स्नान का जल निकलने की नाली, °प्रदक्षिणा शिवलिंग की इस तरह परिक्रमा करना कि नाली लांघनी न पड़े।

सोमन् (पुं०) [सु+मनिन्] चन्द्रमा।

सोमिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [सोम+इनि] सोमयज्ञ का अनुष्ठान करने वाला,—(पुं०) सोमयज्ञ का अनुष्ठाता।

सोम्य (वि०) [सोम+यत्] 1. सोम के योग्य 2. सोम की आहुति देने वाला 3. आकृति में सोम से मिलता-जुलता 4. मृदु, सुशील, मिलनसार।

सोल्लुण्ठः, सोल्लुण्ठनम् [उल्लुण्ठेन उल्लुण्ठनेन वा सह—ब० स०] व्यंग्य, ताना, चुटकी,—ठम्, नम् (अव्य०) व्यंग्यपूर्वक, ताने के साथ—उत्तर० ५।

सोष्मन् (वि०) [सह उष्मणा - ब० स०] 1. गरम, तप्त 2. (व्या० में) ऊष्मा युक्त (पुं०) ऊष्मवर्ण।

सौकर (वि०) (स्त्री०—री) [सूकर+अण्] सूअरसंबंधी, सूअर का कि० १२।५३।

सौकर्यम् [सू (सु) कर+ष्यञ्] 1. सूअरपना 2. आसानी, सुविधा—सौकर्यं च कार्यस्यानायासेन सिद्धया सांगसिद्धया च बोध्यम् 3. क्रियात्मकता, सुकरता 4. निपुणता, कुशलता 5. किसी भोज्यपदार्थ या औषधि की सरल तैयारी।

सौकुमार्यम् [सुकुमार+ष्यञ्] 1. मृदुता, सुकुमारता, कोमलता—शिरीषपुष्पाधिकसौकुमार्यौ बाहू तदीयाविति मे वितर्कः—कु० १।४१. 2. जवानी।

सौक्ष्म्यम् [सूक्ष्म+ष्यञ्] बारीकी, महीनपना, सूक्ष्मता।

सौखशायनिकः, सौखशायिकः [सुखशयनं पृच्छति—सुखशय (न)+ठक्] वह पुरुष जो किसी पुरुष से उसके सुखसूर्वक सोने की बात पूछे—भृग्वादीननुगृह्णन्तं सौखशायनिकानृषीन्—रघु० १०।१४।

सौखसुप्तिकः [सुखसुप्ति सुखेन शयनं पृच्छति—ठञ्] 1. किसी अन्य पुरुष से सुखपुर्वक सोने का हाल पूछने वाला 2. चारण, भाट, बन्दी (इसका कार्य राजा या अत्यंत समृद्धिशाली व्यक्ति को स्तुतिपाठ द्वारा जगाने का होता है)।

सौखिक (वि०) (स्त्री०—की), **सौखीय** (वि०) (स्त्री०—यी) [सुख+ठक्, छण् वा] सुखसम्बन्धी, आनन्ददायक, हर्षप्रद।

सौख्यम् [सुख+ष्यञ्] सुख, प्रसन्नता, सन्तोष, सुविधा, आनन्द।

सौगतः [सुगत+अण्] बौद्ध (बुद्ध या सुगत का अनुयायी) (बौद्धों के चार बड़े संप्रदाय हैं—माध्यमिक, सौत्रान्तिक, योगाचार और वैभाषिक)—सौगतजरत्परिव्राजकायास्तु कामन्दक्याः प्रथमां भूमिकां भाव एवाधीते—मा० १।

सौगतिकः [सुगत+ठक्] 1. बौद्ध 2. बौद्धभिक्षु 3. नास्तिक, पाखंडी, अविश्वासी,—कम् अविश्वास, पाखंडधर्म, नास्तिकता, अनीश्वरवाद।

सौगन्ध (वि०) (स्त्री०—धी) [सुगन्ध+अण्] मधुरगन्धयुक्त, सुगन्धित,—धम् 1. मधुरगन्धता, सुवास 2. एक प्रकार का सुगन्धित तृण, कत्तृण।

सौगन्धिक (वि०) (स्त्री०—का—की) [सुगन्ध+ठन्] मधुरगन्ध वाला, सुगन्धित,—कः 1. गन्ध द्रव्यों का विक्रेता, गन्धी 2. गन्धक,—कम् 1. सफेद कुमुद 2. नील कमल 3. एक प्रकार का सुगन्धित घास, कत्तृण 4. लाल।

सौगन्ध्यम् [सुगन्ध+ष्यञ्] गन्धमाधुर्य, सुगन्ध, सुवास।

सौचिः, सौचिकः [सूचि+इञ्, ठञ्] दर्जी—मनु ४।२१४ पर कुल्लूक।

सौजन्यम् [सुजन+ष्यञ्] 1. नेकी, कृपालुता, भलाई—उत्तर० ३।१३, मृच्छ० ८।३८ 2. महिमा, उदारता 3. कृपा, करुणा, अनुकम्पा 4. मित्रता, सौहार्द, प्रेम।

सौण्डी [शुण्डा तदाकारोऽस्ति अस्याः - शुण्डा+अण्+ङीप्, पृषो०] गजपीपल।

सौतिः [सूत+इञ्] कर्ण का नामान्तर।

सौत्यम् [सूत+ष्यञ्] सारथि का पद,—नल० ४।९।

सौत्र (वि०) (स्त्री०—त्री) [सूत्र+अण्] 1. धागे या डोरी से संबंध रखने वाला 2. सूत्रसंबंधी, सूत्र में वर्णित, सूत्र में निर्दिष्ट,—त्रः 1. ब्राह्मण 2. कृत्रिम धातु जो केवल सूत्रों में वर्णित है, नियमित धातुओं की भांति उसकी रूपरचना नहीं होती, यौगिक शब्दों के निर्माण में ही उसका उपयोग होता है।

सौत्रान्तिकाः (पुं० ब० व०) बौद्धों के चार सम्प्रदायों में से एक, तु० 'सौगत'।

सौत्रामणी (सुत्रामा इन्द्रो देवता अस्याः—सुत्रामन्+अण्+ङीप्] पूर्वदिशा चकोरनयनारुणा भवति दिक् च सौत्रामणी - विद्ध० ४।१।

सौदर्यम् (नपुं०) [सोदर+ष्यञ्] भ्रातृत्व, भाईपना।

सौदामनी, सौदामिनी, सौदाम्नी [सुदामा पर्वतभेदः तेन एका दिक्, सुदामन्+अण्+ङीप्, पक्षे पृषो० साधुः] बिजली,—सौदामन्या कनकनिकषस्निग्धया दर्शयोर्वीम्—मेघ० ३९, सौदामिनीव जलदोदर संधिलीना—मृच्छ० १।३५।

सौदायिक (वि०) (स्त्री०—की) [सुदाय+ठञ्] स्त्रीधन, कन्या के विवाह के अवसर पर जो धन उसके माता पिता या संबंधियों द्वारा उसे दिया जाता है, और जो उसकी निजी संपत्ति हो जाता है,—**कम्** दाज या दहेजसम्बन्धी ।

सौध (वि०) (स्त्री०—धी) [सुधया निर्मितं रक्तं वा अण्] 1. अमृतमय, अमृतसम्बन्धी 2. पलस्तर से युक्त, या चूने से पुता हुआ,—**धम्** 1. वह भवन जिसमें सफ़ेदी की हुई है, सुधालिप्त, पलस्तरदार 2. विशालभवन, महल, बड़ी हवेली—निवासमुटजेन विस्मृतः संचिकाय फलनिःस्पृहस्तपः—रघु० १९।२, ७।५, १३।४० 3. चाँदी 4. दूधिया पत्थर । सम०—**कारः** 1. पलस्तर करने वाला 2. मकान बनाने वाला,—**वासः** महल जैसा भवन ।

सौन (वि०) (स्त्री०—नी) [सूना+अण्] क़साईपने या क़साईखाने से सम्बन्ध रखने वाला,—**नम्** क़साई के घर का मांस । सम० **धर्म्यम्** घोर शत्रुता की अवस्था ।

सौनन्दम् [सुनन्द+अण्] बलराम का मूसल ।

सौनन्दिन् (पुं०) [सौनन्द+इनि] बलराम का विशेषण ।

सौनिकः [सूना+ठण्] क़साई, तु० 'शौनिकः' ।

सौन्दर्यम् [सुन्दर+ष्यञ्] सुन्दरता, मनोहरता, लावण्य, लालित्य—सौन्दर्यसारसमुदायनिकेतनं वा—मा० १।२१, कु० १।४२, ५।४१ ।

सौपर्णम् [सुपर्ण+अण्] 1. सूखा अदरक, सौंठ 2. मरकत ।

सौपर्णेयः [सुपर्ण्याः विनतायाः अपत्यम् सुपर्णी+ढक्] गरुड का विशेषण ।

सौप्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [सुप्ति+ठक्] 1. निद्रासम्बन्धी 2. निद्राजनक,—**कम्** रात का आक्रमण, सोते हुए पर हमला । सम०—**पर्वन्** (नपुं०) महाभारत का दसवाँ पर्व जिसमें वर्णन किया गया है कि अश्वत्थामा, कृतवर्मा, कृप और कौरवसेना के बचे हुए योद्धाओं ने रात को पांडवशिविर पर आक्रमण कर हजारों सोते हुए सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया,—**वधः** (उपर्युक्त) पांडवशिविर के सैनिकों का रात में संहार—मार्गो ह्येष नरेन्द्रसौप्तिकवधे पूर्वं कृतो द्रौणिना—मृच्छ० ३।११ ।

सौबलः [सुबल+अण्] शकुनि का नामान्तर ।

सौबली, सौबलेयी [सौबल+ङीप्, सुबला+ढक्+ङीप्] धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी ।

सौभम् [सुष्ठु सर्वत्र लोके भाति—सु+भा+क+अण्] हरिश्चन्द्र का नगर (कहते हैं कि यह नगर अन्तरिक्ष में लटक रहा है) ।

सौभगम् [सुभग+अण्] 1. अच्छा भाग्य, सौभाग्य 2. समृद्धि, धन, दौलत ।

सौभद्रः, सौभद्रेयः [सुभद्रा+अण्, ढक् वा] सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु का विशेषण ।

सौभागिनेयः [सुभगा+ढक्, इनङ्, द्विपदवृद्धि] सबसे प्रिय पत्नी का पुत्र ।

सौभाग्यम् [सुभगायाः सुभगस्य वा भावः—ष्यञ्, द्विपदवृद्धिः] 1. अच्छा भाग्य, अच्छी क़िस्मत, सौभाग्यशालिता (मुख्यतः इसमें पति-पत्नी का पारस्परिक अनुग्रह प्राप्त करना, तथा एक दूसरे के प्रति दृढ़ भक्ति का होना पाया जाता है)—प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता—कु० ५।१, सौभाग्यं ते सुभग विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती—मेघ० २९, (दोनों स्थानों में 'सौभाग्य' शब्द पर मल्लि० के टिप्पण देखें) 2. स्वर्गीय सुख, माङ्गलिकता 3. सौन्दर्य लावण्य, लालित्य; —(यस्य) हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम्—कु० १।३, २।५३, ५।४९, रघु० १८।१९, उत्तर० ६।२७ 4. शोभा, उदात्तता 5. अहिवात (विप० वैधव्य) 6. बधाई, मंगलकामना 7. सिंदूर 8. सुहागा । सम० —**चिह्नम्** 1. अच्छे भाग्य का चिह्न, अच्छी क़िस्मत का चिह्न 2. अहिवात का चिह्न (जैसे कि मस्तक पर सिंदूर का तिलक),—**तन्तुः** (वह सूत्र जो विवाह में वर द्वारा कन्या के गले में बांधा जाता है और जिसे स्त्री विधवा होने तक पहनती है) विवाहसूत्र, मंगलसूत्र,—**तृतीया** भाद्रशुक्ल-तृतीया, हरितालिका, तीज,—**देवता** शुभदेवता, या अभिभावक देवता,—**वायनम्** मिष्टान्न का शुभ उपहार या चढ़ावा ।

सौभाग्यवत् (वि०) [सौभाग्य+मतुप्] भाग्यशाली, शुभ, —**ती** विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित है, विवाहित सधवा स्त्री ।

सौभिकः [सौभं कामचारिपुरं तन्निर्माणं शीलमस्य—शौभ+ठक्] जादूगर, ऐन्द्रजालिक ।

सौभ्रात्रम् [सुभ्रातृ+अण्] अच्छा भ्रातृभाव, भाईचारा, बंधुता—सौभ्रात्रमेषां हि कुलानुसारि—रघु० १६।१, १०।८१ ।

सौमनस (वि०) (स्त्री० सा,—सी) [सुमनस्+अण्] 1. भावनानुकूल, सुखद 2. फूलसंबंधी, पुष्पीय,—**सम्** 1. कृपालुता, उदारता, कृपा 2. आनन्द, सन्तोष ।

सौमनसा [सौमनस+टाप्] जायफल का छिल्का ।

सौमनस्यम् [सुमनस्+ष्यञ्] 1. मन का संतोष, आनन्द, प्रसन्नता—रघु० १५।१४, १७।४० 2. श्राद्ध के अवसर पर ब्राह्मण को दिया गया फूलों का उपहार ।

सौमनस्यायनी [सौमनस्य+अय+ल्युट्+ङीप्] मालती लता की मंजरी ।

सौमायनः [सोम+फक्] बुद्ध का पितृपरक नाम ।

सौमिक (वि०) (स्त्री०—की) [सोम+ठक्] 1. सोमरससंबंधी, सोमरस से अनुष्ठित यज्ञ 2. चन्द्रमासम्बन्धी ।

सौमित्रः, सौमित्रिः [सुमित्रा+अण्, इञ् वा] लक्ष्मण का विशेषण —सौमित्रेरपि पत्रिणामविषये तत्र प्रिये क्वासि भोः—उत्तर० ३।४५ ।

सौमिल्लः (पुं०) कालिदास का पूर्ववर्ती एक नाटककार —भासकविसौमिल्लककविमिश्रादीनाम् - मालवि० १ ।

सौमेचकम् (नपुं०) सोना, स्वर्ण ।

सौमेधिकः [सुमेधा+ठक्] मुनि, ऋषि, अलौकिक बुद्धि-सम्पन्न ।

सौमेरुक (वि०) (स्त्री०—की) [सुमेरु+कञ्] सुमेरु संबंधी, सुमेरु से आया हुआ, या प्राप्त,—**कम्** - सोना, स्वर्ण ।

सौम्य (वि०) (स्त्री०—म्या,—म्यी) [सोमो देवतास्य तस्येदं वा अण्] 1. चंद्र संबंधी, चन्द्रमा के लिए पावन 2. सोम के गुणों से युक्त 3. सुन्दर, सुखद, रुचिकर 4. प्रिय, मृदुल, कोमल, स्निग्ध-संरम्भं मैथिलीहासःक्षण-सौम्यां निनाय ताम्-रघु० १२।३६, (इसके संबोधन का रूप 'सौम्य' शब्द 'श्रीमान् जी' 'सम्मान्य' 'भला मानस' अर्थों को प्रकट करता है—प्रीतास्मि ते सौम्य चिराय जीव—रघु० १४।५९, सौम्येति चाभाष्य यथार्थवादी —१४।४४, मेघ० ४९, कु० ४।३५, मा० ९।२५ 5. शुभ —**म्यः** 1. बुधग्रह 2. ब्राह्मण को सम्बोधित करने का समुचित विशेषण—आयुष्मान् भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने मनु० २।१२५ 3. ब्राह्मण 4. गूलर का पेड़ 5. लाल होने से पूर्व की दशा में रुधिर, लसीका, रक्तोदक 6. अन्नरस जो पेट में जाकर जीर्ण होकर बनता है 7. पृथ्वी के नौ खण्डों में से एक, —(पुं० ब० व०) 1. मृगशिरा के पांच नक्षत्रों का पुंज 2. पितृवर्ग विशेष—मनु० ३।१९९ । सम०—**उपचारः** शान्त उपाय, मृदु चिकित्सा,—**कृच्छ्रः**, - **छ्रम्** एक प्रकार की धर्म साधना—तु० याज्ञ० ३।३२२, —**गन्धी** सफेद गुलाब,—**ग्रहः** शान्त और शुभ ग्रह, —**धातुः** कफ, श्लेष्मा, **नामन्** (वि०) जिसका नाम श्रुतिमधुर हो, सुखद हो—मनु० ३।१०, **वारः**, —**वासरः** बुधवार ।

सौर (वि०) (स्त्री०—री) [सूर+अण्] 1. सूरज-सम्बन्धी, सौर्य 2. सूर्य को अर्पित या पावन 3. स्वर्गीय, दिव्य 4. मदिरासम्बन्धी, **रः** 1. सूर्योपासक 2. शनिग्रह 3. सौर्य मास 4. सौर्य दिन 5. तुम्बुरु नाम का पौधा,—**रम्** (ऋग्वेद से उद्धृत) सूर्यसम्बन्धी मन्त्रों का समूह । सम० **नक्तम्** एक विशेष व्रत जो रविवार को किया जाय, **मासः** सौर्य मास (जिसमें तीस वार सूर्य उदय हो और तीस ही बार अस्त हो), - **लोकः** सूर्य लोक ।

सौरथः [सुरथ+अण्] शूरवीर, योद्धा ।

सौरभ (वि०) (स्त्री०—भी) [सुरभि+अण्] सुगन्धित, —**भम्** 1. सुगन्ध—भामि० १।११८, १२१ 2. केसर, ज़ाफरान ।

सौरभेय (वि०) (स्त्री०—यी) [सुरभि+ढक्] सुरभि से सम्बद्ध,—**यः** बैल ।

सौरभी, सौरभेयी [सौरभ+ङीप्, सौरभेय+ङीष्] 1. गाय 2. 'सुरभि' नामक गाय की पुत्री—तां सौरभेयीं सुरभिर्यशोभिः—रघु० २।३ ।

सौरभ्यम् [सुरभि+ष्यञ्] 1. सुगन्ध, खुशबू, मधुर-गन्ध—सौरभ्यं भुवनत्रयेऽपि विदितम् भामि० १।३८, पुनाना सौरभ्यैः - गंगा० ४३, रघु० ५।६९ 2. रोचकता, सौन्दर्य 3. सदाचरण, प्रसिद्धि, कीर्ति, ख्याति ।

सौरसेनाः (पुं०, ब० व०) एक प्रदेश और उसके अधिवासियों का नाम, —**नी** दे० शौरसेनी ।

सौरसेयः [सुरसा+ढक्] स्कन्द का विशेषण ।

सौरसैन्धव (वि०) (स्त्री०—वी) [सुरसिन्धु+अण्] आकाशगंगा सम्बन्धी शि० १३।२७, **वः** सूर्य का घोड़ा ।

सौराज्यम् [सुराज्य+ष्यञ्] अच्छा प्रशासन या राज्य —एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्यरम्यानपरो विदर्भान्—रघु० ५।६० ।

सौराष्ट्र (वि०) (स्त्री०—ष्ट्रा, ष्ट्री) [सुराष्ट्र+अण्] सौराष्ट्र (सूरत) नामक प्रदेश सम्बन्धी या वहाँ से प्राप्त, —**ष्ट्रः** सौराष्ट्र प्रदेश, (पुं० ब० व०) सौराष्ट्र प्रदेश के अधिवासी,—**ष्ट्रम्** पीतल, कांसा ।

सौराष्ट्रकः [सौराष्ट्र+कन्] एक प्रकार का कांसा, फूल ।

सौराष्ट्रिकम् [सुराष्ट्र+ठक्] 1. एक प्रकार का जहर ।

सौरिः [सूरस्यापत्यं पुमान् इञ्] 1. शनिग्रह का नाम 2. असन नामक वृक्ष । सम० - **रत्नम्** एक प्रकार का रत्न, नीलम ।

सौरिक (वि०) (स्त्री०—की) [सुर (रा) (सूर)+ठक्] 1. स्वर्गीय, दिव्य 2. मदिरासम्बन्धी, आसवीय 3. मदिरा पर लगा कर, शुल्क, —**कः** 1. शनि 2. स्वर्ग, वैकुण्ठ 3. कलाल, मदिरा बेचने वाला ।

सौरी [सौर+ङीष्] सूर्य की पत्नी ।

सौरीय (वि०) (स्त्री०—यी) [सूर+छण्] 1. सूर्य सम्बन्धी 2. सूर्य के योग्य, सूर्य के उपयुक्त ।

सौर्य (वि०) (स्त्री०—र्यी) [सूर्य+अण्] सूर्य से सम्बन्ध रखने वाला, सूर्य का ।

सौलभ्यम् [सुलभ+ष्यञ्] 1. प्राप्ति की सुविधा 2. सूकरता, सुलभता, सुगमता ।

सौल्विकः [सुल्व+ठक्] ताम्रकार, कसेरा ।

सौव (वि०) (स्त्री०—वी) [स्व (स्वर्)+अण्] 1. अपनी, निजी सम्पत्ति से सम्बन्ध रखने वाला 2. स्वर्गीय या स्वर्ग सम्बन्धी,—**वम्** आदेश, राजशासन ।

सौवग्रामिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वग्राम+ठक्] अपने निजी गाँव से सम्बन्ध रखने वाला।

सौवर (वि०) (स्त्री०—री) [स्वर+अण्] 1. किसी ध्वनि या संगीत के स्वर से संबंध रखने वाला 2. स्वरसम्बन्धी।

सौवर्चल (वि०) (स्त्री०—ली) [सुवर्चल+अण्] सुवर्चल नामक देश से प्राप्त,—लम् 1. सोंचर नमक 2. सज्जी का खार, रेह।

सौवर्ण (वि०) (स्त्री०—र्णी) [सुवर्ण+अण्] 1. सुनहरी 2. तोल में एक स्वर्णमुद्रा के बराबर।

सौवस्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वस्ति+ठक्] आशीर्वादात्मक,—कः कुलपुरोहित, या ब्राह्मण।

सौवाध्यायिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वाध्याय+ठक्] स्वाध्यायसम्बन्धी, स्वाध्यायी।

सौवास्तव (वि०) (स्त्री०—वी) [सुवास्तु+अण्] अच्छे स्थान पर निर्मित, अच्छी वासभूमि से युक्त।

सौविदः, सौविदल्लः [सु+विद्+क+अण्, सुष्ठु विदन्नृपः तं लाति—ला+क+अण्] अन्तःपुर की रखवाली पर नियुक्त व्यक्ति—शि० ५।१७।

सौवीरम् [सुवीर+अण्] 1. बेर का फल 2. अंजन, सुरमा 3. कांजी,—रः सुवीर देश या वहाँ का अधिवासी ('अधिवासी' के अर्थ में ब० व०)। सम०—**अञ्जनम्** एक प्रकार का अंजन या सुरमा।

सौवीरकः [सौवीर+कन्] 1. बेरी, बेर का पेड़ 2. सुवीर देश का अधिवासी 3. जयद्रथ का नाम,—**कम्** जौ की कांजी।

सौवीर्यम् [सुवीर+ष्यञ्] बड़ी शूरवीरता या विक्रम।

सौशील्यम् [सुशील+ष्यञ्] स्वभाव की श्रेष्ठता, अच्छा नैतिक आचरण, सदाचरण।

सौश्रवसम् [सुश्रवस+अण्] ख्याति, प्रसिद्धि।

सौष्ठवम् [सुष्ठु+अण्] 1. श्रेष्ठता, भलाई, सौन्दर्य, लालित्य, सर्वोपरि सौन्दर्य—सर्वाङ्गसौष्ठवाभिव्यक्तये विरलनेपथ्ययोः पात्रयोः प्रवेशोऽस्तु मालवि० १, शरीरसौष्ठवम् मा० १।१७, "जिसके शरीर की काटछांट या टीपटाप अच्छी न हो" 2. परमकौशल, चातुर्य 3. अधिकता 4. लचक, हल्कापन।

सौस्नातिकः [सुस्नात+ठक्] स्नान मंगलकारी होने के सम्बन्ध में पूछने वाला—सौस्नातिको यस्य भवत्यगस्त्यः—रघु० ६।६१।

सौहार्दः [सुहृद्+अण्] मित्र का पुत्र,—र्दम् हृदय की सरलता, स्नेह, सद्भाव, मैत्री—(वेश्मानि) विश्राण्य सौहार्दनिधिः सुहृद्भ्यः—रघु० १४।१५, सौहार्दहृद्यानि विचेष्टितानि—मा० १।४, मेघ० ११५।

सौहार्द्यम्, सौहृदम्—द्यम् [सुहृद्+ष्यञ्, अण् वा, यत् वा] मित्रता, स्नेह यत्सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति—मृच्छ० १।१३, सखीजनस्ते किमु रूढसौहृदः—विक्रम० १।१०, मा० १।

सौहित्यम् [सुहित+ष्यञ्] 1. तृप्ति, संतुष्टि—शि० ५।६२ 2. पूर्णता, पूर्ति 3. कृपालुता, सद्भावना।

स्कन्द् (भ्वा० आ० स्कन्दते) 1. कूदना 2. उठाना 3. उडेलना, उगलना।

स्कन्द् i (भ्वा० पर० स्कन्दति, स्कन्न) 1. उछलना, कूदना 2. उठाना, ऊपर की ओर उठना, ऊपर को उछलना 3. गिरना, टपकना भट्टि० २२।११ 4. फट जाना, छलकना 5. नष्ट होना, समाप्त होना—चस्कन्दे तप ऐश्वरम् 6. बिखर जाना, रिसना 7. उगलना, ढालना, — प्रेर० (स्कन्दयति—ते) 1. उडेलना, फैलाना, ढालना, उगलना (जैसे वीर्यस्खलन)—एकः शयीत सर्वत्र न रेतः स्कन्दयेत् क्वचित्—मनु० २।१८०, ९।५० 2. छोड़ देना, अवहेलना करना, पास से निकल जाना, अव—, आक्रमण करना, धावा बोलना, आंधी की भांति गरजना —पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनम् शि० १।५१, आ—, आक्रमण करना, धावा बोलना—आस्कन्दल्लक्ष्मणं वाणैरत्यक्रामच्च तं द्रुतम्—भट्टि० १७।८२, परि—, इधर उधर उछलना—मेघनादः परिस्कन्दन् परिस्कन्दन्तमाश्वरिम्। अबध्नादपरिस्कन्दं ब्रह्मपाशेन विस्फुरन् भट्टि० ९।७५, प्र—, 1. आगे को उछलना 2. झपट्टा मारना, आक्रमण करना।
ii (चुरा० उभ० स्कन्दयति—ते) एकत्र करना।

स्कन्दः [स्कन्द्+अच्] 1. उछलना 2. पारा 3. कार्तिकेय का नाम—सेनानीनामहं स्कन्दः—भग० १०।२४, रघु० २।३६, ७।१, मेघ० ४३ 4. शिव का नाम 5. शरीर 6. राजा 7. नदीतट 8. चतुर पुरुष। सम०—**पुराणम्** अठारह पुराणों में से एक,—**षष्ठी** (स्त्री०) चैत्र मास के छठे दिन कार्तिकेय के सम्मान में पर्व।

स्कन्दकः [स्कन्द्+ण्वुल्] 1. उछलने वाला 2. सैनिक।

स्कन्दनम् [स्कंद्+ल्युट्] 1. क्षरण, बहना 2. रेचन, पेट का चलना, (आंतों की या नलों की) शिथिलता 3. जाना, हिलना-जुलना 4. सूखना 5. ठंडक पहुँचा कर रक्त का जमाना।

स्कन्ध् (चुरा० उभ० स्कन्धयति—ते) एकत्र करना।

स्कन्धः [स्कन्घ्यते आरुह्यतेऽसौ सुखेन शाखया वा कर्मणि घञ्, पृषो०] 1. कंधा 2. शरीर 3. वृक्ष का तना —तीव्राघातप्रतिहततरुस्कन्धलग्नैकदन्तः—श० १।३४, रघु० ४।४७, मेघ० ५३ 4. शाखा या बड़ी डाली 5. मानव-ज्ञान की कोई शाखा या विभाग 6. (किसी पुस्तक का) परिच्छेद, अध्याय, खण्ड 7. किसी सेना की टकड़ी 8. सैनिक समुच्चय, समूह 9. ज्ञानेन्द्रियों के पाँच विषय 10. (बौद्ध दर्शन में) जीवन के पाँच तत्त्वरूप—सर्वकायांशशरीरेषु मुक्ताङ्गस्कन्धपञ्चकम्

शि० २।२८ 11. संग्राम, लड़ाई 12. ताजा 13. करार 14. मार्ग, रास्ता 15. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष 16. कंकपक्षी, बगला । सम० आवारः 1. सेना या सेना की टुकड़ी 2. राजा का निवास, राजधानी 3. शिविर,—उपानेय (वि०) जो कंधे पर ढोया जाय, शान्ति बनाये रखने के लिए की जाने वाली संधि जिसमें अधीनता के चिह्न स्वरूप कोई फल या धान्य उपहार में दिया जाय,—चापः बहुंगी, तु० शिक्य ।—तरुः नारियल का पेड़,—देशः कंध, इदमुपहित-सूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्धदेशे—श० १।१८,—परिनिर्वाणम् शरीर के स्कंधों (पांचों तत्त्वों) का पूर्ण लोप या नाश (बौद्ध०),—फलः 1. नारियल का पेड़ 2. बेल का वृक्ष 3. गूलर का पेड़, बंधना एक प्रकार का सोया, मेथी,—मल्लकः कंकपक्षी, बगला,—रुहः वटवृक्ष,—वाहः,—वाहकः बोझा ढोने के लिए सधाया हुआ बैल, लद्दू बैल,—शाखा पेड़ की मुख्य शाखा जो वृक्ष के तने से निकले,—शृङ्गः भैंस,—स्कन्धः प्रत्येक कंधा ।

स्कन्धस् (नपुं०) [स्कन्ध्+असुन्, पृषो०] 1. कंधा 2. वृक्ष का तना ।

स्कन्धिकः [स्कन्ध+ठन्] बोझा ढोने के लिए सधाया हुआ बैल,—तु० 'स्कन्धवाह' ।

स्कन्धिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्कन्ध+इनि] 1. कंधों वाला 2. डालियों वाला, तने वाला, (पुं०) वृक्ष ।

स्कन्न (भू० क० कृ०) [स्कन्द्+क्त] 1. पतित, नीचे गिरा हुआ, उतरा हुआ 2. रिसा हुआ, बूंद बूंद टपका हुआ 3. उगला हुआ, फैलाया हुआ, छिड़का हुआ 4. गया हुआ 5. सूखा हुआ ।

स्कम्भ् (भ्वा० आ०, स्वा० क्र्या० स्कम्भते, स्कम्नोति, स्कम्नाति) 1. रचना 2. रोकना, रुकावट डालना, बाधा डालना, अवरोध करना, दबाना, नियन्त्रित करना—प्रेर० (स्कम्भयति—ते या स्कभयति—ते, वि,—बाधा डालना, अवरोध करना ।

स्कम्भः [स्कम्भ्+घञ्] 1. सहारा, थूणी, टेक 2. आलंब आधार 3. परमेश्वर ।

स्कम्भनम् [स्कम्भ्+ल्युट्] सहारा देने की क्रिया, सहारा, थूणी, टेक ।

स्कान्द (वि०) (स्त्री०—न्दी) [स्कन्द+अण्] 1. स्कन्द-सम्बन्धी 2, शिवसम्बन्धी,—न्दम् स्कन्द पुराण ।

स्कु (स्वा० क्र्या० उभ० स्कुनोति, स्कुनुते, स्कुनाति, स्कुनीते) 1. कूद कर चलना, उछलना, चौकड़ी भरना 2. उठाना, उद्वहन करना 3. ढकना, ऊपर बिछा देना—भट्टि० १७।३२ 4. पहुंचना, प्रति , ढांपना—भट्टि० १८।७३ ।

स्कुन्द् (भ्वा० आ० स्कुन्दते) 1. कूदना 2. उद्वहन करना, उठाना ।

स्तोटिका (स्त्री०) पक्षीविशेष ।

स्खद् (भ्वा० आ० स्खदते) 1. काटना, काट कर टुकड़े टुकड़े करना 2. नष्ट करना 3. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 4. परास्त करना, सर्वथा हरा देना 5. थकाना, श्रांत करना कष्ट देना 6. दृढ़ करना ।

स्खदनम् [स्खद्+ल्युट्] 1. काटना, काटकर टुकड़े-टुकड़े करना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 3. कष्ट देना, दुःखी करना ।

स्खल् (भ्वा० पर० स्खलति) 1. लड़खड़ाना, औंधे मुंह गिरना, नीचे गिरना, फिसलना, डगमगाना—स्खलति चरणं भूमौ न्यस्तं न चार्द्रतमा मही—मृच्छ० ९।१३, ५।२४ 2. डगमगाना, लहराना, थरथराना, डगमग होना 3. आज्ञा भंग किया जाना, उल्लंघित होना (किसी आदेश का)—मुद्रा० ३।२५, रघु० १८।४३ 4. सन्मार्ग से च्युत होना—कि० ९.३७ 5. ग्रस्त होना, उत्तेजित होना—कि० ३।५३, १३।५ 6. त्रुटि करना, बड़ी भूल करना, गलती करना स्खलतो हि करालम्बः सुहृत्सचिवचेष्टितम् हि० ३।१३४, (यहाँ यह 'प्रथम' अर्थ को भी प्रकट करता है) 7. हकलाना, तुतलाना, रुक-रुक कर बोलना—वदन-कमलकं शिशोः स्मरामि स्खलदसमञ्जसमञ्जुजल्पितं ते—उत्तर० ४।४, रघु० ९।७६, कु० ५।५६ 8. विफल होना, कोई प्रभाव न होना—रघु० ११।८३ 9. बूंद बूंद गिरना, टपकना, चूना 10. जाना, हिलना-जुलना 11. ओझल होना 12. एकत्र करना, इकट्ठा करना—प्रेर० (स्खलयति-ते) 1. लड़खड़ाने का कारण बनना, 2. त्रुटि या भूल कराना, डगमगाने या डावांडोल होने का कारण बनना—वचनानि स्खलयन् पदे पदे—कु० ४।१२, स्खलयति वचनं ते संश्रयत्यङ्गमङ्गम्—मा० ३।८, प्र—, धक्कमधक्का होना—रयाः प्रचस्खलतु-श्चाश्वाः भट्टि० १४।९८, वि—, गलती करना, बड़ी भूल करना रघु० १९।२४ ।

स्खलनम् [स्खल्+ल्युट्] 1. लड़खड़ाना, फिसलना, डग-मगाना, नीचे गिर पड़ना 2. डगमगाते हुए चलना 3. सन्मार्ग से विचलन 4. भारी भूल, त्रुटि, गलती 5. विफलता, निराशा, असफलता 6. हकलाना, बोलने में भूल या उच्चारण में अशुद्धि, रुक रुक कर बोलना 7. चूना, टपकना 8. टकराना, उलझना—उत्तर० २।२०, महावीर० ५।४० 9. आपस में घिसना, रगड़ना ।

स्खलित (भू० क० कृ०) [स्खल्+क्त] 1. लड़खड़ाया, फिसला, डगमगाया 2. गिरा, पड़ा 3. थरथराने वाला, लहराने वाला, घटबढ़ होने वाला, अस्थिर 4. नशे में चूर, पियक्कड़ 5. हकलाने वाला, रुक रुक कर

बोलने वाला 6. विक्षुब्ध, बाधित 7. त्रुटि करने वाला, बड़ी भूल करने वाला 8. गिरा हुआ, उद्गीर्ण 9. टपकने वाला, चू कर नीचे गिरने वाला 10. हस्तक्षेप किया गया, रोका हुआ 11. व्याकुल 12. बीता हुआ, तम् 1. लड़खड़ाना, डगमगाना, गिरना 2. सन्मार्ग से विचलन 3. त्रुटि, भूल, गलती, गोत्रस्खलित - कु० ४।८ 4. दोष, पाप, अतिक्रमण 5. धोखा, विश्वासघात 6. झांसा, कूटचाल। सम०—सुभगम् (अव्य०) आकर्षक रीति से चले चलना—मेघ० २८।

स्खुड् (तुदा० पर० स्खुडति) ढकना।

स्तक् (भ्वा० पर० स्तकति) 1. मुकाबला करना 2. टक्कर लेना, प्रतिरोध करना, पीछे ढकेलना।

स्तन् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० स्तनति, स्तनयति–ते, स्तनित) 1. आवाज करना, शब्द करना, गूंजना, प्रतिध्वनि करना 2. कराहना, कठिनाई से सांस लेना, ऊँचा सांस लेना 3. गरजना, दहाड़ना तस्तनुर्जज्वलुर्मम्लुर्जग्लुर्लुलुठिरे क्षताः भट्टि० १४।३०, नि , 1. शब्द करना 2. आह भरना 3. विलाप करना, वि , दहाड़ना।

स्तनः [स्तन्+अच्] 1. स्त्री की छाती—स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशावित्युपमितौ—भर्तृ० ३।२०, (दरिद्राणां मनोरथाः) हृदयेष्वेव लीयन्ते विधवास्त्रीस्तनाविव पंच० २।९१ 2. छाती, किसी भी मादा की औड़ी या चूचुक—अर्धपीतस्तनं मातुरामर्दक्लिष्टकेशरम् श० ७।१४। सम० अंशुकम् स्तन ढकने का कपड़ा, —अग्रः चूची, —अङ्गरागः स्त्री के स्तनों पर लगाया जाने वाला रंग, अन्तरम् 1. हृदय 2. दोनों स्तनों के बीच का स्थान—(न) मृणाल सूत्रं रचितं स्तनान्तरे श० ६।१७, रघु० १०।६२ 3. स्तन का एक चिह्न (जो भावी वैधव्य का सूचक कहा जाता है),—आभोगः 1. स्तनों की पूर्णता या फैलाव 2. चूचियों की गोलाई 3. वह पुरुष जिसके स्त्रियों जैसे बड़े स्तन हों,—तटः, —टम् चूचियों का ढलान, प,—पा, पायक, —पायिन् स्तन पान करने वाला, दुधमुंहा,—पानम् स्तनपान करना, भरः 1. स्तनों की स्थूलता,—पादाग्रस्थितया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रताम्—रत्न० १।१ 2. स्त्री जैसे स्तनों वाला पुरुष, भवः एक प्रकार का रतिबन्ध,—मुखम्, वृतम्,—शिखा चूचुक, चूची।

स्तननम् [स्तन्+ल्युट्] 1. ध्वनन, आवाज, कोलाहल 2. दहाड़ना, गरजना, (बादलों का) गड़गड़ाना 3. कराहना 4. कठिनाई से सांस लेना।

स्तनन्धय (वि०) [स्तनं धयति–धे+खश्, मुम् च] स्तन्यपान करने वाला –यदि बुध्यते हरिशिशुः स्तनन्धयो भविता करेणुपरिशेषिता मही भामि० १।५३, तवाङ्कशायी परिवृत्तभाग्यया मया न दृष्टस्तनयः स्तनन्धयः मा० १०।६, यः शिशु, दुधमुंहा बच्चा रघु० १४।७८, शि० १२।४०।

स्तनयित्नुः [स्तन्+इत्नु] 1. गरजना, गड़गड़ाना, बादलों का कड़कड़ाना 2. बादल उत्तर० ३।७, ५।८ 3. बिजली 4. रोग, बीमारी 5. मृत्यु 6. एक प्रकार का घास।

स्तनित (भू० क० कृ०) [स्तन् कर्तरि क्त] 1. ध्वनित, शब्दायमान, कोलाहलमय- मेघ० २८ 2. गरजने वाला, दहाड़ने वाला, तम् 1. बिजली की कड़कड़ाहट, बादलों की गरज तोयोत्सर्गस्तनितमुखरो मास्म भूर्विक्लवास्ताः मेघ० ३७ 2. गरज, शोर 3. ताली बजाने की आवाज।

स्तन्यम् [स्तने भवं यत्] मां का दूध, क्षीर—पिब स्तन्यं पोत भामि० १।६०। सम० त्यागः मां का दूध छुड़ाना, स्तन्यमोचन स्तन्यत्यागात्प्रभृति सुमुखी दन्तपाञ्चालिकेव मा० १०।५, स्तन्यत्यागं यावत्पुत्रयोरवेक्षस्व उत्तर० ७।

स्तबकः [स्तु+वुन् या स्था+अवक्, पृषो० बवयोरभेदः] गुच्छा, झुण्ड कुसुमस्तबकस्येव द्वे गती स्तो मनस्विनाम्—भर्तृ० २।१०४, रघु० १३।३२, मेघ० ७५, कु० ३।३९।

स्तब्ध (भू० क० कृ०) [स्तम्भ् कर्मणि कर्तरि वा क्त] 1. रोका हुआ, घेराबन्दी किया हुआ, अवरुद्ध 2. लकवे से ग्रस्त, संज्ञाहीन, सुन्न, जड़ीकृत 3. गतिहीन, स्थावर, अचल 4. स्थिर, दृढ़, कड़ा, घोर, कठोर 5. ढीठ, अडिग, कठोरहृदय, निष्ठुर 6. उजड्ड, मोटा। सम० कर्ण (वि०) जिसके कान खड़े हों, रोमन् (पुं०) सूअर, वराह, लोचन (वि०) जिसकी पलकें न झपकती हों (जैसे देवता)।

स्तब्धता,–त्वम् [स्तब्ध+तल्+टाप्, त्व वा] अनम्यता, दृढ़ता, कड़ाई 2. जाड्य, असवेद्यता।

स्तब्धिः (स्त्री०) [स्तम्भ्+क्तिन्] 1. स्थिरता, कड़ापन, सख्ती, अनम्यता 2. दृढ़ता, अचलता 3. जाड्य, असंवेद्यता, जड़ता 4. धृष्टता।

स्तभ् दे० 'स्तम्भ्'।

स्तभः (पुं०) बकरा, मेढा।

स्तभु (नपुं०) = स्तम्भन।

स्तम् (भ्वा० पर० स्तमति) घबरा जाना, व्याकुल होना।

स्तम्बः [स्था+अम्बच् किच्च, पृषो०] 1. घास का पुंज —रघु० ५।१५ 2. अनाज के पौधों की पुली जैसा कि 'स्तम्बकरिता' में 3. झुंड, पुंज, गुच्छा उत्तर० ५।२९, रघु० १५।१९, 4. झाड़ी, झुरमुट 5. गुल्म, प्रकांड रहित झाड़ी 6. हाथी बाँधने का खूंटा 7. खंभा 8. जड़ता, असंवेद्यता (इन दो अर्थों में 'स्तम्भ')

७. पहाड़। सम०—करि (वि०) पुलियाँ बनाने वाला, भरोटा बनाने वाला, (रिः) अनाज, धान्य, —करिता पूला या मुट्ठा बनना, प्रचुर या पुष्कल मात्रा में विकास—न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते—मुद्रा० १।३, घनः 1. खुर्पा (जिससे घास के गुच्छे निराये जांय) 2. (धान्य काटने के लिए) दरांती 3. तिन्नी धान एकत्र करने की टोकरी, —घ्नः दरांती, खुर्पा।

स्तम्बेरमः [स्तम्बे वृक्षादीनां काण्डे गुल्मे गुच्छे वा रमते रम्+अच्, अलुक् स०] हाथी —स्तम्बेरमा मुखरशृंखलकर्षिणस्ते —रघु० ५।८२, शि० ५।३४।

स्तम्भ् (भ्वा० आ०, स्वा० क्र्या० पर० स्तम्भते, स्तम्भोति, स्तम्नाति, स्तम्भित, स्तब्ध; इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् तथा अव के पश्चात् धातु के स् को ष् हो जाता है) 1. रोकना, बाधा डालना, पकड़ना, दबाना—कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः—श० ४।५ 2. दृढ़ करना, कड़ा करना, अचल बनाना 3. जड़ बनाना, शक्तिहीन करना, अनम्य बनाना —प्राणा दध्वंसिरे गात्रं तस्तम्भे च हते प्रिये—भट्टि० १४।५५ 4. टेक लगाना, सहारा देना, थामना, संभाले रखना 5. कड़ा होना, सख्त होना, अटल होना 6. घमंडी होना, उन्नत होना, सीधी गर्दन वाला होना, (निम्नांकित श्लोक में धातु के विभिन्न रूप दर्शाये गए हैं – स्तम्भते पुरुषः प्रायो यौवनेन धनेन च। न स्तम्नाति क्षितोशोऽपि न स्तम्नोति युवाप्यसौ ॥)—प्रेर० (स्तम्भयति ते) 1. रोकना, पकड़ना 2. दृढ़ या कड़ा करना 3. गतिहीन करना 4. टेक लगाना, सहारा देना। सम० अव—, 1. झुकना, निर्भर होना प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य—भग० ९।८ 2. अवरुद्ध करना 3. सहारा देना, टेक लगाना 4. थामना, कौली भरना, आलिंगन करना 5. लपेटना, लिफ़ाफ़े में रखना 6. बाधा डालना, रोकना, पकड़ना, प्रतिबद्ध करना, उद्—, 1. रोकना, रुकावट डालना, पकड़ना 2. सहारा देना, टेक लगाना, थामे रखना, उप—, नि—; रोकना गिरफ्तार करना, पर्यव —, घेरना, पर्यवष्टभ्यतामेतत्करालायतनम् —मा० ५, वि—, 1. रोकना, 2. जमाना, पौधा लगाना, आश्रित होना—अत्युच्छ्रिते मन्त्रिणि पार्थिवे च विष्टभ्य पादावुपतिष्ठते श्रीः —मुद्रा० ४।१३, सम्—, (प्रेर० भी) 1. रोकना, प्रतिबद्ध करना, नियंत्रण करना—प्रयत्नसंस्तम्भितविक्रियाणां कथंचिदीशा मनसां बभूवुः—कु० ३।३४ 2. गतिहीन करना, अनम्य करना कु० ३।७३ 3. हिम्मत बांधना, साहस करना, प्रसन्न होना, स्वस्थचित्त करना, सचेत होना—देवि संस्तम्भयात्मानम्—उत्तर० ४ 4. दृढ़ या अटल करना, भग० ३।४३, समव—, 1. सहारा देना, टेक लगाना 2. सांत्वना देना, प्रोत्साहित करना।

स्तम्भः [स्तम्भ्+अच्] 1. स्थिरता, कड़ापन, सख्ती, अटलता रम्भा स्तम्भं भजति—विक्रम० १८।२९, गात्रस्तम्भः स्तनमुकुलयोरुत्प्रबन्धः प्रकम्पः— मा० २।५, तत्संकल्पोपहितजडिमस्तम्भमभ्येति गात्रम्—१।३५, ४।२ 2. असंवेद्यता, जडता, जाड्य, अनम्यता, लकवा 3. रोक, अवरोध, रुकावट—सोऽपश्यत्प्रणिधानेन सन्ततेः स्तम्भकारणम्—रघु० १।७९, वाक्स्तम्भ नाटयति मा० ८ 4. नियंत्रित करना, दमन करना, दबाना—कृतश्चित्तस्तम्भः प्रतिहतधियामञ्जलिरपि —भर्तृ० ३।६ 5. टेक, सहारा, आलंब 6. स्थूण, खंभा, पोल 7. प्रकांड, (वृक्ष का) तना 8. मूढ़ता, जड़ता 9. भावशून्यता, अनुत्तेजनीयता 10. किसी अलौकिक शक्ति या जादू से भावना या शक्ति का दमन करना। सम०—उत्कीर्ण किसी लकड़ी में खोद कर बनाई गई (मूर्ति), —गर (वि०) 1. गतिहीन करने वाला, जड़ता लाने वाला 2. रोकने वाला, (रः) बाड़, —कारणम् अवरोध या रुकावट का कारण,—पूजा विवाह आदि के अवसर पर बनाए गए अस्थायी मंडपों के स्तम्भों की पूजा।

स्तम्भकिन् (पुं०) चर्ममंडित एक वाद्ययंत्र।

स्तम्भनम् [स्तम्भ्+ल्युट्] 1. रोकना, अवरोध करना, रुकावट डालना, गिरफ्तार करना, दबाना, नियंत्रित करना —लोलोल्लोलक्षुभितकरणोज्जृम्भणस्तम्भनार्थम् —उत्तर० ३।३६ 2. गतिहीन होना, अकड़ाहट, जड़ता 3. शान्त होना, स्वस्थचित्तता' पंच० १।३६० 4. दृढ़ या कड़ा करना, दृढ़ता पूर्वक जमाना 5. टेक देना, सहारा देना 6. रुधिर प्रवाह को रोकना 7. कोई भी चीज जो रक्तस्रावरोधक हो 8. (मंत्रादि के द्वारा) किसी की शक्ति कुंठित करना—दे० स्तंभ (१०),—नः कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

स्तर (वि०) [स्तृ (स्तॄ)+घञ्] फैलाने वाला, विस्तार करने वाला, ढकने वाला, —रः 1. कोई भी बिछाई हुई चीज, रद्दा, तह, परत 2. शय्या, पलंग।

स्तरणम् [स्तृ (स्तॄ)+ल्युट्] फैलाने की क्रिया, बिखेरना, छितराना आदि।

स्तरि (री) मन् (पुं०) [तृ+इ (ई) मनिच्] शय्या, पलंग।

स्तरी [स्तृ कर्मणि ई] 1. धूआँ, वाष्प 2. बछिया 3. बांझ गाय।

स्तवः [स्तु+अप्] 1. प्रशंसा करना, विख्यात करना, स्तुति करना 2. प्रशंसा, स्तुति, स्तोत्र।

स्तवक (वि०) (स्त्री०—विका) [स्तु+वुन्] प्रशंसक,

स्तोता,—कः 1. स्तुति कर्ता, प्रशंसा, स्तुति 3. मंजरियों का गुच्छा 4. फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, गजरा, कुसुम-स्तवक 5. किसी पुस्तक का परिच्छेद, या अनुभाग 6. समुच्चय—तु० 'स्तवक' भी।

स्तवनम् [स्तु+ल्युट्] 1. प्रशंसा करना, सराहना 2. सूक्त।

स्तावः [स्तु+ण्वुल्] प्रशंसा, स्तुति।

स्तावकः [स्तु+ण्वुल्] प्रशंसक, स्तोता, चापलूस।

स्तिघ् (स्वा० आ० स्तिघ्नुते) 1. चढ़ना 2. धावा बोलना 3. रिसना।

स्तिप् (भ्वा० आ० स्तेपते) रिसना, बूंद-बूंद टपकना, क्षरना।

स्तिभिः [स्तम्भ्+इन्, इत्वम्] 1. रुकावट, अवरोध 2. समुद्र, 3. गुल्म, गुच्छा, पुंज।

स्तिम्, स्तीम् (दिवा० पर० स्तिम्यति स्तीम्यति) 1. गीला या तर होना 2. स्थिर या अटल होना, कड़ा होना।

स्तिमित (वि०) [स्तिम् कर्तरि क्तः] 1. गीला, तर 2. (क) निश्चल, निश्चेष्ट, शान्त क्षुभितमुत्कलिकातरलं मनः पय इव स्तिमितस्य महोदधेः—मा० ३।१०, (ख) जमाया हुआ, कठोर, अटल, गतिहीन, स्थिर—वाचस्पतिः सन्नपि सोऽष्टमूर्तौ त्वाशास्यचिन्तास्तिमितो बभूव—कु० ७।८७, २।५९, मा० १।२७, रघु० २।२२, ३।१७, १३।४८, ७९, उत्तर० ६।२५ 3. मुंदा हुआ, बंद—रघु० १।७३ 4. अकड़ा हुआ, लकवाग्रस्त 5. मृदु, कोमल 6. तृप्त, सन्तुष्ट। सम० —वायुः शान्त पवन,—समाधिः स्थिर संचिन्तन।

स्तिमितत्वम् [स्तिमित+त्व] स्थिरता, निश्चेष्टता, शान्ति।

स्तीर्विः [स्तृ+क्विन्] 1. यज्ञ में स्थानापन्न ऋत्विक् 2. घास 3. आकाश, अन्तरिक्ष 4. जल 5. रुधिर 6. इन्द्र का विशेषण।

स्तु (अदा० उभ० स्तौति—स्तवति, स्तुते—स्तुवीते, स्तुत, इच्छा० तुष्टूषति—ते, इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के पश्चात् स्तु के स् को ष् हो जाता है) 1. प्रशंसा करना, सराहना, स्तुति करना, स्तुतिगान करना—, कीर्तिगान करना, ख्याति करना—भामि० १।४१, मुद्रा० ३।१६, भट्टि० ८।९२, १५।६०, २१।३ 2. प्रशंसागान करना, भजन गाना, स्तोत्रों द्वारा पूजा करना, अभि—, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्र—, 1. प्रशंसा करना 2. आरंभ करना, उपक्रम करना, प्रस्तूयताम् विवादवस्तु—मालवि० १ 3. कारण बनना पैदा करना मा० ५।९ सम्, 1. प्रशंसा करना —रघु० १३।६ 2. परिचित होना, जानकार या घनिष्ठ संबंध वाला होना (इस अर्थ में प्रायः 'क्तान्त' प्रयोग) अनेकशः संस्तुतमप्यनल्पा नवं नवं प्रीतिरहो करोति—सि० ३।३१, कि० ३।२; दे० 'संस्तुत' भी।

स्तुकः (पुं०) बालों की चोटी, ग्रंथि या मीढी।

स्तुका [स्तुक+टाप्] 1. बालों की ग्रंथि या मीढी 2. सांड के दोनों सींगों के बीच के घुंघराले बालों का गुच्छा 3. कूल्हा, जंघा।

स्तुच् (भ्वा० आ० स्तोचते) 1. उज्ज्वल होना; चमकना, निर्मल स्वच्छ होना 2. मंगलप्रद या शुभ या सुखद होना।

स्तुत (भू० क० कृ०) [स्तु+क्त] 1. प्रशंसा किया गया, प्रशस्त, स्तुति किया गया 2. खुशामद किया गया।

स्तुतिः (स्त्री०) [स्तु+क्तिन्] 1. प्रशंसा, गुणकीर्तन, सराहना, श्लाघा—स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यन्ते दूराणि चरितानि ते—रघु० १०।३० 2. प्रशंसाकारक सूक्त, स्तोत्र—रघु० ४।६ 3. चापलूसी, खुशामद, झूठी प्रशंसा—भूतार्थव्याहृतिः सा हि नः स्तुतिः परमेष्ठिनः —रघु० १०।३३ 4. दुर्गा का नाम। सम०—गीतम् स्तुतिगान, सूक्त, कीर्तिगान, पदम् प्रशंसा की वस्तु, —पाठकः कीर्तिगायक, प्रशस्तिवाचक, भाट, चारण, संदेशवाहक, वादः प्रशंसायुक्त भाषण, स्तोत्र,—व्रतः भाट।

स्तुत्य (वि०) [स्तु+क्यप्] श्लाघ्य, प्रशंसनीय, सराहनीय रघु० ४।६।

स्तुनकः [स्तु+नकक्] बकरा।

स्तुभ् i (भ्वा० पर० स्तोभति) 1. प्रशंसा करना 2. प्रसिद्ध करना, स्तुतिगान करना, पूजा करना। ii (भ्वा० आ० स्तोभते) 1. रोकना, दबाना 2. ठप करना, सुन्न करना, जडीभूत करना।

स्तुभः [स्तुभ्+क] बकरा।

स्तुम्भ् (स्वा० क्रया० पर० स्तुम्नोति, स्तुम्नाति) 1. रोकना 2. सुन्न करना, जड़ीभूत करना 3. निकाल देना।

स्तूप् (दिवा० पर०, चुरा० उभ० स्तूप्यति, स्तूपयति—ते) 1. ढेर लगाना, संचित करना, चट्टा लगाना, एकत्र करना 2. खड़ा करना, उठाना।

स्तूपः [स्तूप्+अच्] 1. ढेर, चट्टा, टीला (मिट्टी का) 2. बौद्ध स्मारकचिह्न, पावन अवशेषों को (जैसे कि बुद्ध के) रखने के लिए एक प्रकार का स्तंभसदृश स्मृतिचिह्न 3. चिता।

स्तृ i (स्वा० उत्तर० स्तृणोति, स्तृणुते, स्तृत, कर्मवा० स्तर्यते) 1. फैलाना, छितराना, ढकना, बिछाना (महीं) तस्तार सरघाव्याप्तैः स क्षौद्रपटलैरिव —रघु० ४।६३, ७।५८ 2. फैलाना, प्रसार करना, विकीर्ण करना 3. बखेरना, छितराना 4. कपड़े पहनाना, ढांपना, बिछाना, लपेटना 5. मार डालना, प्रेर० (स्तारयति—ते) बिछाना, ढांपना, छितराना

—रक्तेनाचिक्लिदद्भूमि सैन्यैश्चातस्तरद्धतैः—भट्टि० १५।४८, इच्छा० (तिस्तीर्षति —ते)।
ii (स्वा० पर० स्तृणोति) प्रसन्न करना, तृप्त करना।
स्तृ (पुं०) [स्तृ+क्विप्] तारा।
स्तृक्ष (भ्वा० पर० स्तृक्षति) जाना।
स्तृतिः (स्त्री०) [स्तृ+क्तिन्] 1. फैलाना, बिछाना, प्रसार करना 2. ढकना, कपड़े पहनाना।
स्तृह्, स्तृह् (तुदा० पर० स्तृहति, स्तृहति) प्रहार करना, चोट पहुँचाना, मार डालना।
स्तृ (क्र्या० पर० स्तृणाति, स्तृणीते, स्तीर्ण, इच्छा० तिस्तरि (री) षति—ते, तिस्तीर्षते—) ढांपना, बखेरना आदि, दे० 'स्तृ'। **अव**—ढांपना, भरना, बिछा देना—प्रकम्पयन् गामवतस्तरे दिशः—कि० १६। २९, **आ**—ढकना, आच्छादित करना,—रघु० ४।६५, **उप**—, 1. बखेरना 2. क्रम से रखना, **परि**—, 1. फैलाना, विकीर्ण करना, प्रसार करना—भट्टि० १४।११ 2. ढांपना (आलं० से भी) अथ नागयूथमलिनानि जगत्परितस्तमांसि परितस्तरिरे—शि० ९।१८ अभितस्तं पृथासूनुः स्नेहेन परितस्तरे—कि० १३।८ 3. क्रम में रखना, **वि**—, 1. फैलाना, विकीर्ण करना 2. ढांपना, प्रेर०—फैलवाना, प्रसार करवाना —जैसा कि 'पयोधरविस्तारयितृकं यौवनम्' श० १ 2. बढ़ना—रघु० ७।३९ 3. फैलाना, प्रसार करना, **सम्**—, 1. फैलाना, बखेरना—प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः—श० ४।७ 2. बिछाना।
स्तेन् (चुरा० उभ०—'स्तेन' का नामधातु—स्तेनयति-ते) चुराना, लूटना,—मनु० ८।३३३।
स्तेनः [स्तेन् कर्तरि अच्] चोर, लुटेरा—न तं स्तेना न चामित्रा हरन्ति न च नश्यति—मनु० ७।८३, **नम्** चोरी करना, चुराना। सम०—**निग्रहः** 1. चोरों को दिया जाने वाला दण्ड 2. चोरी को रोकना।
स्तेप् i (भ्वा० आ० स्तेपते) रिसना।
ii (चुरा० उभ० स्तेपयति—ते) भेजना, फेंकना।
स्तेमः [स्तिन्+घञ्] नमी, गीलापन।
स्तेयम् [स्तेनस्य भावः यत् न लोपः] 1. चोरी, लूट—कु० २।३५ 2. चुराई हुई या चुराये जाने के योग्य कोई वस्तु 3. कोई निजी या गुप्त चीज।
स्तेयिन् (पुं०) [स्तेय+इनि] 1. चोर, लुटेरा 2. सुनार।
स्तै (भ्वा० पर० स्तायति) पहनना, अलंकृत करना।
स्तैनम् [स्तेन+अण्] चोरी, लूट।
स्तैन्यम् [स्तेनस्य भावः ष्यञ्] चोरी, लूट,—**न्यः** चोर।
स्तैमित्यम् [स्तिमित+ष्यञ्] 1. स्थिरता, कठोरता, अटलता 2. जडता, सुन्नपना।
स्तोक (वि०) [स्तुच्+घञ्] 1. अल्प, थोड़ा—स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्यधोगतिम्—पंच० १।१५०, स्तोकं महद्वा धनम्—भर्तृ० २।४९ 2. छोटा 3. कुछ 4. अधम, नीच—**कः** 1. थोड़ी मात्रा, बूंद 2. चातक पक्षी,—**कम्** (अव्य०) जरा सा, अपेक्षाकृत कम —पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति—श० १।७। सम०—**काय** (वि०) छोटे शरीर वाला, छोटा, ठिगना, लघु—**नम्र**, (वि०) जरा झुका हुआ, थोड़ा सा शिथिल या अवसन्न—श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां—मेघ० ८२।
स्तोककः [स्तोकाय जलबिन्दवे कायति शब्दायते—स्तोक+कै+क] चातक पक्षी—मनु० १२।६७।
स्तोकशः (अव्य०) [स्तोक+शस्] थोड़ा-थोड़ा करके, कमी के साथ।
स्तोतव्य (वि०) [स्तु+तव्यत्] प्रशंसनीय, श्लाघ्य, तारीफ के लायक—स्तोतव्यगुणसम्पन्नः केषां न स्यात्प्रियो जनः।
स्तोतृ (पुं०) [स्तु+तृच्] प्रशंसक, स्तुतिकर्ता।
स्तोत्रम् [स्तु+ष्ट्रन्] 1. प्रशंसा, स्तुति 2. प्रशस्ति, स्तुतिगान।
स्तोत्रियः,—या [स्तोत्र+घ, स्त्रियां टाप् च] एक विशेष प्रकार की ऋचा, स्तोत्र का पद्य।
स्तोभः [स्तुभ्+घञ्] 1. रोकना, अवरुद्ध करना 2. विराम, यति 3. निरादर, तिरस्कार 4. सूक्त, प्रशस्ति 5. सामवेद का एक प्रभाग 6. अन्तर्निविष्ट।
स्तोमः [स्तु+मन्] 1. प्रशस्ति, स्तुति, सूक्त 2. यज्ञ, आहुति—जैसा कि ज्योतिष्टोम या अग्निष्टोम में 3. सोम द्वारा तर्पण 4. संग्रह, समुच्चय, संख्या, समूह, संघात—उत्तर० १।५० 5. बड़ी मात्रा, ढेर—भस्मस्तोमपवित्रलाञ्छनमुरो धत्ते त्वचं रौरवीम्—उत्तर० ४।२०, महावीर० १।१८,—**नम्** 1. सिर 2. धन, दौलत 3. अनाज, धान्य 4. लोहे की नोक वाली छड़ी।
स्तोम्य (वि०) [स्तोम+यत्] श्लाघ्य, प्रशंसनीय।
स्त्यान (वि०) [स्त्यै+क्त] ढेर के रूप में संचित—मा० ५।११, वेणी० १।२१ 2. घना, स्थूल, ठोस 3. मृदु, स्निग्ध, कोमल, चिकना 4. शब्दायमान, मुखर,—**नम्** 1. सघनता, ठोसपना, आकार या फैलाव में वृद्धि—दधति कुहरभाजामत्र भल्लूकयूनामनुरसितगुरूणि स्त्यानमम्बूकृतानि—मा० ९।६, उत्तर० २।२१, महावीर० ५।४१ 2. चिकनाई 3. अमृत 4. ढीलापन, आलस्य 4. प्रतिध्वनि, गूंज।
स्त्यायनम् [स्त्यै+ल्युट्] ढेर के रूप में संचित करना, भीड़ लगाना, समष्टि।
स्त्येनः [स्त्यै+इनच्] 1. अमृत 2. चोर।
स्त्यै (भ्वा० उभ० स्त्यायति-ते) 1. ढेर के रूप में एकत्र किया जाना, इधर-उधर फैलना, विकीर्ण होना —शिशिरकटुकषायः स्त्यायते सल्लकीनाम्—मा० ९।६, २।२१, महावीर० ५।४१ 3. प्रतिध्वनि, गूंज।

स्त्री [स्त्यायेते शुक्रशोणिते यस्याम्--स्त्यै+ड्रप्+ङीप्] 1. नारी, औरत 2. किसी भी जानवर की मादा —गज स्त्री, हरिण स्त्री आदि, श० ५।२२ 3. पत्नी —स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसाम्—मा० ६।१८, मेघ० २८ 4. स्त्रीलिंग, या स्त्रीलिंग का कोई शब्द--आपः स्त्रीभूम्नि—अमर०। सम०—**अगारः**,—**रम्** अन्तःपुर, जनानखाना, —**अध्यक्षः** कंचुकी, --**अभिगमनम्** संभोग, —**आजीवः** 1. अपनी स्त्री के सहारे रहने वाला 2. स्त्रियों से वेश्यावृत्ति कराकर जीवनयापन कराने वाला,—**कामः** 1. स्त्रीसंभोग का इच्छुक, स्त्रियों के प्रति चाव 2. पत्नी की इच्छा,—**कार्यम्** 1. स्त्रियों का व्यवसाय 2. स्त्रियों की टहल, अन्तःपुर की सेवा, —**कुमारम्** एक स्त्री और बच्चा,—**कुसुमम्** रजःस्राव, स्त्रियों म ऋतु-स्राव,—**क्षीरम्** माँ का दूध—मनु० ५।९, —**ग** (वि०) स्त्रियों से संभोग करने वाला,—**गवी** दूध देने वाली गाय,—**गुरुः** दीक्षा या मन्त्र देने वाली या पुरोहितानी,—**गृहम्**=स्त्र्यगारम्, दे०,—**घोषः** पौ फटना, प्रभात, तड़का, —**घ्नः** स्त्रीघाती,—**चरितम्**, —**त्रम्** स्त्री के कर्म,— **चिह्नम्** 1. स्त्रीत्व की विशिष्टता का कोई निशान 2. स्त्रीयोनि, भग,—**चौरः** स्त्री को फुसलाने वाला, लम्पट, —**जननी** केवल कन्याओं को जन्म देने वाली स्त्री, --**जातिः** (स्त्री०) स्त्रीवर्ग, मादा,—**जितः** स्त्री के वश में रहने वाला, जोरू का गुलाम—स्त्रीजितस्पर्शमात्रेण सर्वं पुण्यं विनश्यति—शब्द०, मनु० ४।२१७,—**धनम्** स्त्री की निजी सम्पत्ति जिस पर उसका स्वतन्त्र अधिकार हो, —**धर्मः** 1. स्त्री या पत्नी का कर्तव्य 2. स्त्रीसम्बन्धी नियम 3. रजःस्राव,—**धर्मिणी** रजस्वला स्त्री,—**ध्वजः** किसी भी जानवर की मादा या स्त्रीत्वलिंग, **नाथ** (वि०) स्त्री जिसकी स्वामिनी हो ,—**निबन्धनम्** स्त्री का विशेष कार्य क्षेत्र, गृह्यकर्म, गृहिणी का कार्य —**पण्योपजीविन्** (पुं०) दे० ऊपर 'स्त्र्याजीव',—**परः** स्त्रियों से प्रेम करने वाला, कामी, लम्पट, **पिशाची** राक्षसी जैसी पत्नी,—**पुंसौ** (पुं०, द्वि० व०) 1. पति और पत्नी 2. स्त्री और पुरुष—कु० २।७,—**पुंसलक्षणा** पुरुष के लक्षणों से युक्त स्त्री, मर्दानी स्त्री,—**प्रत्ययः** (व्या० में) स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए शब्द के अन्त में जुड़ने वाला प्रत्यय, --**प्रसङ्गः** (अत्यधिक) संभोग,—**प्रसूः** (स्त्री०) पुत्रियों को जन्म देने वाली स्त्री—याज्ञ० १।७३—**प्रियः** (वि०) जिसको स्त्रियाँ प्यार करें (—**यः**) आम का पेड़,—**बाध्यः** स्त्री द्वारा परेशान किया जाने वाला, --**बुद्धिः** (स्त्री०) 1. स्त्री की समझ 2. स्त्री का परामर्श, स्त्री द्वारा दिया गया उपदेश, —**भोगः** संभोग,—**मन्त्रः** स्त्रीकौशल, स्त्री की सलाह, —**मुखपः** अशोकवृक्ष,—**यन्त्रम्** यन्त्र की भाँति स्त्री, स्त्री के रूप में मशीन या यन्त्र—स्त्रीयन्त्रं केन लोके विषममृतमयं धर्मनाशाय सृष्टम्—पंच० १।१९१, —**रञ्जनम्** पान, ताम्बूल—,**रत्नम्** श्रेष्ठ स्त्री स्त्रीरत्नेषु ममोर्वशी प्रियतमा यूथे तवेयं दशा—विक्रम० ४।२५,—**राज्यम्** स्त्रियों द्वारा शासित राज्य या प्रदेश, —**लिंगम्** 1. (व्या० में) स्त्रीवाचकता 2. स्त्रीयोनि, —**वशः** पत्नी के बस में होना, स्त्री की अधीनता, —**विधेय** (वि०) पत्नी द्वारा शासित, जोरू-भक्त, अपनी स्त्री को बेहद चाहने वाला,—रघु० १९।४, —**विवाहः** स्त्री के साथ विवाह, --**संसर्गः** स्त्रियों का साथ,—**संस्थान**(वि०) स्त्री की आकृति वाला—श० ५।१३९,—**संग्रहणम्** 1. किसी स्त्री का बलात् आलिंगन 2. व्यभिचार, सतीत्वहरण,—**सभम्** स्त्रियों की सभा, —**सम्बन्धः** 1. किसी स्त्री के साथ दाम्पत्य सम्बन्ध 2. वैवाहिक सम्बन्ध 3. स्त्री के साथ सम्बन्ध, —**स्वभावः** 1. स्त्रियों की प्रकृति 2. हीजड़ा,—**हत्या** स्त्री का वध या क़तल,—**हरणम्** 1. स्त्रियों का बलात् अपहरण 2. बलात् सम्भोग, जबरजिनाह ।

स्त्रीतमा, स्त्रीतरा (स्त्री०) कुलीन स्त्री, उत्तम जाति की सुसंस्कृत स्त्री ।

स्त्रीता,—त्वम् [स्त्री+तल्+टाप्, त्व वा] 1. नारीत्व 2. पत्नीत्व 3. स्त्री होने का भाव, स्त्रैणता ।

स्त्रैण (वि०) (स्त्री०—णी) [स्त्रिया इदम् नञ्] 1. मादा, स्त्रीवाचक 2. स्त्रियोचित या स्त्री संबन्धी 3. स्त्रियों में विद्यमान,--**णम्** 1. स्त्रीत्व, स्त्रियों की प्रकृति, स्त्रीवाचकता—उत्तर० ४।११ 2. मादा का चिह्न, स्त्रीपना—तृणे वा स्त्रैणे वा मम समदृशो यांतु दिवसाः—भर्तृ० ३।११३, इदं तत्प्रत्युत्पन्नमति स्त्रैणमिति यदुच्यते—श० ५, तस्य तृणमिव लघुवृत्ति स्त्रैणमाकलयतः—का० 3 स्त्रियों का समूह ।

स्त्रैणता,—त्वम् [स्त्रैण+तल्+टाप्, त्व वा] 1. स्त्री वाचकता, स्त्रीपना 2. स्त्रियों के प्रति अत्यधिक रुचि ।

स्थ (व०) [स्था+क] (समास के अन्त में प्रयुक्त) खड़ा होने वाला, ठहरने वाला, डटा रहने वाला, विद्यमान, मौजूद, वर्तमान आदि—तटस्थ, अंकस्थ, प्रकृतिस्थ, तटस्थ ।

स्थकरम् [=स्थगर, पृषो०] सुपारी ।

स्थग् (भ्वा० पर० या प्रेर० स्थगति, स्थगयति) 1. ढांपना, छिपाना, गुप्त रखना, परदा डालना —पराम्यूहस्थानान्यपि तनुतराणि स्थगयति—मा० १।१४ 2. ढांपना, व्याप्त होना, भरना रवः श्रवणभैरवः स्थगितरोदसीकन्दरः—काव्य० ७ ।

स्थग (वि०) [स्थग्+अच्] 1. जालसाज, बेईमान 2. परित्यक्त, निर्लज्ज, लापरवाह,--**गः** धूर्त, छली ।

स्थगनम् [स्थग्+ल्युट्] छिपाना, गुप्त रखना।
स्थागरम् [थग् अरन्] सुपारी।
स्थगिका [स्थग्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. वेश्या 2. पान की दुकान 3. एक प्रकार की पट्टी।
स्थगित (वि०) [स्थग्+क्त] ढका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त रक्खा हुआ।
स्थगी [स्थग्+क+ङीप्] पान की डिबिया।
स्थगुः [स्थग्+उन्] कूबड़, कुब्ज।
स्थण्डिलम् [स्थल्+इलच्, नुक्, लस्य डः] 1. भूखंड (यज्ञ के लिए चौरस व चौकोर किया हुआ), वेदी—निषेदुषी स्थंडिल एव केवले—कु० ५।१२ 2. बंजर भूमि 3. ढेलों का ढेर 4. सीमा, हद 5. सीमा चिह्न। सम०—शायिन् (पुं०) ('स्थंडिलेशय' भी) वह संन्यासी जो बिना बिस्तर के यज्ञभूमि पर सोता है, —सितकम् वेदी।
स्थपतिः [स्था+क, तस्य पतिः] 1. राजा, प्रभु 2. वास्तुकार 3. रथकार, बढ़ई 4. सारथि 5. बृहस्पति के प्रति बलि देने वाला, बृहस्पति-यज्ञ करने वाला 6. अन्तःपुर रक्षक 7. कुबेर।
स्थपुट (वि०) [तिष्ठति स्था+क, स्थं पुटं यत्र] 1. संकटग्रस्त, विपन्न 2. ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा। सम० गत (वि०) विषम स्थानों में रहने वाला, कठिनाइयों से ग्रस्त अङ्कस्थादस्थिसंस्थं स्थपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति—मा० ५।१६।
स्थल् (भ्वा० पर० स्थलति) दृढ़ता पूर्वक स्थिर रहना, अडिग रहना।
स्थलम् [स्थल्+अच्] 1. कठोर या शुष्क भूमि, सूखी ज़मीन, दृढ़ भू (विप० जल)—भो दुरात्मन् (समुद्र) दीयतां टिट्टिभाण्डानि नो चेत्स्थलतां त्वां नयामि-पंच० १, इसी प्रकार स्थलकमलिनी या स्थलवर्त्मन् 2. समुद्रतट, समुद्रवेला, बालू-तट 3. पृथ्वी, भूमि, ज़मीन 4. जगह, स्थान 5. खेत, भूखंड, ज़िला 6. पड़ाव 7. उभरा हुआ भूखंड, टीला 8. प्रस्ताव, प्रसंग, विषय, विचारणीय बात—विवाद°, विचार° आदि 9. खंड या भाग (जैसे किसी पुस्तक का) 10. तम्बू। सम०—अन्तरम् कोई दूसरी जगह,—आरूढ (वि०) धरा पर उतरा हुआ,—अरविन्दम्,—कमलम्,—कमलिनी पृथ्वी पर उगने वाला कमल—मेघ० ९०, कु० १।३३,—चर (वि०) भूचर, (जो जलचर न हो),—च्युत (वि०) स्थान से पतित, अपनी पदवी से हटाया हुआ,—देवता स्थानीय या ग्राम्यदेवी,—पद्मिनी भूकमलिनी,—मार्गः,—वर्त्मन् (नपुं०) भूमि पर बनी हुई सड़क—स्थलवर्त्मना (भूमार्ग से), रघु० ४।६०,—विग्रहः चौरस भूमि पर लड़ा जाने वाला युद्ध,—शुद्धिः (स्त्री०) किसी भी स्थल की शुद्धि भूमि की सफ़ाई।

स्थला [स्थल+टाप्] ऊँची की हुई सूखी ज़मीन जहाँ जल के निकास का अच्छा प्रबंध हो (विप० स्थली, दे० नी०)।
स्थली [स्थल+ङीष्] 1. सूखी ज़मीन, दृढ़ भूमि 2. भूमि का प्राकृतिक स्थल, भूमि या भूखंड (जैसे कि वनस्थल)—विललाप विकीर्णमूर्धजा समदुःखामिव कुर्वती स्थलीम्—कु० ४।४। सम०—देवता पृथ्वी की देवी, भूमि की अधिष्ठात्री देवी—मेघ० १०६।
स्थलेशय (वि०) [स्थले शेते शी+अच्, अलुक् स०] सूखी ज़मीन पर सोने वाला,—यः कोई भी जल-स्थलचारी जानवर।
स्थविः [स्था+क्वि] 1. जुलाहा 2. स्वर्ग।
स्थविर (वि०) [स्था+किरच्, स्थवादेशः] 1. दृढ़, पक्का, स्थिर 2. बूढ़ा, वृद्ध, पुराना,—रः 1. बूढ़ा पुरुष 2. भिक्षुक 3. ब्राह्मण का नाम,—रा बूढ़ी स्त्री —स्थविरे का त्वम् अयमर्भकः कस्य नयनानन्दकरः —दश०।
स्थविष्ठ (वि०) [अतिशयेन स्थूलः- -स्थूल+इष्ठन् लस्य लोपः] सबसे बड़ा, बहुत हृष्टपुष्ट, सबसे अधिक विस्तृत ('स्थूल' की उत्तमावस्था)।
स्थवीयस् [स्थूल+ईयसुन्, स्थूलशब्दस्य स्थवादेश] सबसे बड़ा, अपेक्षाकृत विस्तृत (स्थूल की मध्यमावस्था)।
स्था (भ्वा० पर० कुछ अर्थों में आत्मनेपद में भी —तिष्ठति ते, स्थित, कर्मवा० स्थीयते, इस धातु के पूर्व इकारान्त उकारान्त उपसर्ग आने पर धातु के 'स' को ष् हो जाता है) 1. खड़ा होना—चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान्—सुभा० 2. ठहरना, डटे रहना, बसना, रहना—ग्रामे गृहे वा तिष्ठति 3. शेष बचना, बाक़ी रह जाना-एको गङ्गदत्तस्तिष्ठति —पंच० ४ 4. विलम्ब करना, प्रतीक्षा करना-किमिति स्थीयते श० २ 5. ठहरना, उपरत होना, रुकना, निश्चेष्ट होना—तिष्ठत्यद क्षणमधिपतिर्ज्योतिषां व्योममध्ये विक्रम० २।१ 6. एक ओर रह जाना —तिष्ठतु तावत्पत्रलेखागमनवृत्तान्तः—का० (इस वृत्तान्त का ध्यान न कीजिए) 7. होना, विद्यमान होना, किसी भी स्थिति या अवस्था में होना, (प्रायः कृदन्त के रूप में प्रयोग)—मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे —कु० १।२, श० १।१, विक्रम० १।१, कालं नयमाना तिष्ठति—पंच० १, मनु ७।८ 8. डटे रहना, अनुरूप होना, आज्ञा मानना, (अधि० के साथ)—शासने तिष्ठ भर्तुः—विक्रम० ५।१७, रघु०, ११।६५ 9. प्रतिबद्ध होना—यदि ते तु न तिष्ठेयुरुपायैः प्रथमैस्त्रिभिः—मनु० ७।१०८ 10. निकट होना—न विप्रं स्वेषु तिष्ठत्सु मृतं शूद्रेण नाययेत्—मनु० ५।१०४ 11. जीवित रहना, सांस लेना—आः क एष मयि स्थिते चन्द्रगुप्त-

मभिमवितुमिच्छति—मुद्रा० १ 12. साथ देना, सहायता करना,—उत्सवे व्यसने चव दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे। राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः—हि० १।७३ 13. आश्रित होना, निर्भर होना 14. करना, अनुष्ठान करना, अपने आपको व्यस्त करना 15. (आ०) सहारा लेना, (मध्यस्थ मान कर उसके पास) जाना, मार्गदर्शन पाना—संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः—कि० ३।१३ 16. (आ०) (सुरतालिंगन के लिए) प्रस्तुत करना, वेश्या के रूप में उपस्थित होना (सम्प्र० के साथ)—गोपी स्मरात् कृष्णाय तिष्ठते —पा० १।३।३४ पर सिद्धा०,—प्रेर० (स्थापयति —ते) 1. खड़ा करना 2. जमाना, जड़ना, स्थापित करना, रखना, प्रस्थापित करना 4. रोकना 5. पकड़ना रोकना—इच्छा० (तिष्ठासति) खड़े होने की इच्छा करना। अति—, अधिक होना, बढ़ जाना—अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्—अधि—, 1. स्थिर होना, अधिकार करना (कर्म० के साथ)—अर्धासनं गोत्रभिदोऽधितस्थौ —रघु० ६।७३, भट्टि० १५।३१ 2. अभ्यास करना (साधना का)—कि० १०।१६ 3. अन्दर होना, रहना, बसना निवास करना,—पातालमधितिष्ठति —रघु० १।८०, श्रीजयदेवभणितमधितिष्ठतु कण्ठतटीमविरतम्—गीत० ११ 4. अधिकार करना, जीतना, परास्त करना, पछाड़ना—संग्रामे तानधिष्ठास्यन्—भट्टि० ९।७२, १६।४० 5. प्राप्त करना —कि० २।३१ 6. नेतृत्व करना, संवहन करना, शासन करना, निदेश देना, प्रधानता करना—दशरथदारानधिष्ठाय—उत्तर० ४ 7. राज्य करना, शासन करना, नियंत्रण करना—भग० ४।६ 8. उपयोग करना, काम में लगाना 9. चढ़ना, स्थापित होना, गद्दी पर बैठना—अचिराधिष्ठितराज्यः शत्रुः—मालवि० १।८, अनु—, 1. करना, संपन्न करना, कार्यान्वित करना, ध्यान देना—अनुतिष्ठस्वात्मनो नियोगम् —मालवि०१ 2. पीछा करना, अभ्यास करना, पालन करना—भग० ३।३१ 3. देना, अनुदान देना, किसी के लिए कुछ करना—(यस्य) शैलाधिपत्यं स्वयमन्वतिष्ठत्—कु० १।१७ 4. निकट खड़े होना, —मनु० ११।११२ 5. राज्य करना, शासन करना 6. नक़ल करना 7. अपने आपको प्रस्तुत करना, अव—, (प्रायः आ०) 1. रहना, टिकना, डटे रहना —जोषं जोषं जोषमेवावतस्थे—भामि० २।१७ अनीत्वा पङ्कतां धूलिमुदकं नावतिष्ठते—शि० २।३४, रघु० २।३१ 2. ठहरना, प्रतीक्षा करना-भट्टि० ८।११ 3. डटे रहना, अनुरूप रहना—भट्टि० ३।१४ 4. जीवित रहना—रघु०८।८७ 5.निश्चेष्ट रहना, रुकना, ठहरना —भग० १।३० ७. आ पड़ना, मिलना, निर्भर होना-मयि सृष्टिर्हि लोकानां रक्षा युष्मास्ववस्थिता—कु० २।२८ 7. अलग खड़े होना, अलग रखना 8. निश्चित या निर्णीत होना (प्रेर०) 1० खड़ा करना, रोकना, पड़ाव डालना 2. प्रस्थापित करना, नींव डालना 3. स्वस्थ होना, सचेत होना, आ—, 1. अधिकार करना 2. चढ़ना, सवार होना—यथा 'एकस्यन्दनमास्थितौ'—रघु० १।३६ में 3. उपयोग करना, अवलंब लेना, सहारा लेना, अनुसरण करना, अभ्यास करना, लेना, धारण करना—यथाहि सद्वृत्तमातिष्ठत्यनुसूयकः—मनु० १०।१२८, २।१३३, १०।१०१ (यह अर्थ नाना प्रकार से—संज्ञा शब्दों के अनुसार जिनके साथ कि शब्द का प्रयोग होता है, बदलता रहता है —दे० कु० ५।२, ८४, मुद्रा० ७।१९, रघु० ६।७२, १५।७९, कु० ६।७२, ७।२९, पंच० ३।२१ आदि) 4. करना, सम्पादन करना, पालन करना 5. अपनाना 6. लक्ष्य बांधना 7. दायित्व लेना 8. विशिष्ट ढंग से आचरण करना, व्यवहार करना 9. निकट खड़े होना, उद्,— 1. खड़े होना, उठना, उठ कर खड़े होना —उत्तिष्ठेत् प्रथमं चास्य—मनु० २।१९४, वचो निशम्योत्थितमुत्थितः सन्—रघु० २।६१ 2. त्याग देना, छोड़ना 3. पलट कर आना—रघु० १६।८३ 4. आगे आना, उदय होना, आगे बढ़ना, फूटना, निकलना—यदुत्तिष्ठति वर्णेभ्यो नृपाणां क्षयि तत्फलम् —श० २।१३ 5. उदय होना, उगना, शक्ति में बढ़ना—शि० २।६ 6. सक्रिय होना, उठना, गतिशील होना—क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप—भग० २।३, ३७ 7. चेष्टा करना, कोशिश करना, (आ०) कि० ११।१३, शि० १४।१७ (प्रेर०) 1. उठाना, उन्नत करना 2. काम करने के लिए उकसाना, उत्तेजित करना, उप—, 1. निकट खड़े होना, हिस्से में मिलना,—नादत्तमुपतिष्ठति—पंच० २।१२३ 2. निकट आना, पहुँचना—कु० २।६४, रघु० १५।७६ 3. प्रतीक्षा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सेवा करना—मनु० २।४८ 4. पूजा करना, प्रार्थना के साथ उपस्थित होना, सेवा करना, प्रणाम करना (आ०)—न त्र्यम्बकादन्यमुपस्थितासौ—भट्टि० १।३, उदितभूयिष्ठ एष भगवांस्तपनस्तमुपतिष्ठे—मा०१, रघु० ४।६, १०।६३, १७।१०, १८।२२ 5. निकट खड़े होना 6. मैथुन के लिए पहुँचना 7. मिलना, संयुक्त होना—गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते—सिद्धा० 8. नेतृत्व करना (आ०) 9. मित्र बनाना (आ०) 10 पहुँचना, निकट खिंचना, आसन्नवर्ती होना 11. द्वेषभावना से पहुँचना 12. उपस्थित होना (आ०) 13. घटित होना, उत्पन्न होना, परि—, घेरना, चारों ओर खड़े होना, पर्यव—, (प्रेर०) स्वस्थचित्त होना, सचेत होना—पर्यवस्था-

पयात्मानम्—विक्रम० १, प्र–, (आ०) 1. कूच करना, विदा होना—पारसीकांस्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना —रघु० ४।६० 2. दृढ़ता पूर्वक खड़े रहना 3. प्रस्थापित होना 4. पहुँचना, निकट आना (प्रेर०) 1. पीछे हटाना 2. भेजना, तितर-बितर करना—तौ दंपती स्वां प्रति राजधानीं प्रस्थापयामास वशी वशिष्ठः—रघु० २।७०, प्रति—, 1. दृढ़ता पूर्वक खड़े रहना, प्रस्थापित होना 2. सहायता किया जाना 3. आश्रित या निर्भर रहना 4. ठहरना, डटे रहना, स्थित रहना, प्रत्यव—, (आ०) विरोध करना, शत्रुवत् व्यवहार करना, आक्षेप करना (किसी तर्क का)—अत्र केचित् प्रत्यवतिष्ठन्ते—शारी०, भामि० १।७७, (प्रेर०) अपने आपको सचेत या स्वस्थ करना, वि—, (आ०) 1. अलग खड़े होना 2. स्थिर रहना, डटे रहना, बस जाना, अचल रहना 3. फैलना, विकीर्ण होना, विप्र—, (आ०) 1. कूच करना 2. फैलना, व्यव—, (आ०) 1. अलग-अलग रक्खा जाना 2. क्रमबद्ध किया जाना 3. निश्चित होना, स्थिर होना, स्थायी होना—वचनीयमिदं व्यवस्थितम्—कु० ४।२१ 4. आश्रित होना, निर्भर होना, (प्रेर०) 1. क्रमबद्ध करना, प्रबंध करना, समंजित करना 2. निश्चित करना, स्थापित करना 3. पृथक् करना, अलग-अलग रखना, सम्—, (आ०) 1. बसना, रहना, परस्पर निकटवर्ती होना —तीक्ष्णादुद्विजते मृदौ परिभवत्रासान्न संतिष्ठते —मुद्रा० ३।५ 2. खड़े होना 3. होना, विद्यमान होना, जीवित होना 4. डटे रहना, आज्ञा मानना, सिद्धान्त का निर्वाह करना—दारिद्र्यात्पुरुषस्य बान्धवजनो वाक्ये न संतिष्ठते—मृच्छ० १।३६ 5. पूरा होना—सद्यः संतिष्ठते यज्ञस्तथा शौचमिति स्थितिः —मनु० ५।९८ (यज्ञपुण्येन युज्यते—कुल्लू०) 6. समाप्त हो जाना, विघ्न पड़ जाना—भट्टि० ८।११ 7. निश्चेष्ट खड़े रहना, स्थिर हो जाना (पर०)—क्षणं न संतिष्ठति जीवलोकः क्षयोदयाभ्यां परिवर्तमानः—हरि० 8. मरना, नष्ट होना (प्रेर०) 1. स्थापित करना, बसाना 2. रखना 3. स्वस्थचित्त होना, सचेत होना देवि संस्थापयात्मानम्—उत्तर० ४ 4. अधीन करना, नियंत्रण में रखना—मनु० ९।२ 5. रोकना, प्रतिबद्ध करना 6. मार डालना, समधि—, प्रधानता करना, शासन करना, प्रशासन करना, अधीक्षण करना, समव—,(आ०) 1. स्थिर रहना, अचल रहना 2. निश्चेष्ट रहना 3. तत्पर रहना (प्रेर०) 1. नींव डालना 2. रोकना,—समा—, 1. सहना, अभ्यास करना—तपो महत्समास्थाय 2. व्यस्त करना, सम्पादन करना 3. प्रयोग में लाना, काम में लगाना 4. अनुसरण करना, पालन करना—मनु० ४।२, ७।४४, समुद्—, 1. खड़ा होना, उठना 2. मिल कर खड़े होना 3. मृत्यु से उठना, फिर जीवित होना, होश में आना 4. उदय होना, फूटना, समुप—1. निकट आना, पास जाना, पहुँचना 2. आक्रमण करना 3. आ पड़ना, घटित होना 4. सट कर खड़े होना, संप्र—, (आ०) कूच करना, विदा होना, संप्रति—, 1. लटकना, आश्रित होना, निर्भर होना 2. दृढ़ होना, स्थिर होना।

स्थाणु (वि०) [स्था+नु, पृषो० णत्वम्] 1. दृढ़, अटल, स्थिर, टिकाऊ, अचल, गतिहीन,—णुः 1. शिव का विशेषण—सः स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः विक्रम० १।१ 2. टेक, पोल, स्तम्भ —किं स्थाणुरयमुत पुरुषः 3. खूँटो, कील 4. धूपघड़ी का शंकु 5. बर्छी, नेज़ा 6. दीमकों का घोंसला, बामी 7. औषधि या सुगन्ध द्रव्य, जीवक (पुं०, नपुं०) शाखा रहित तना, नंगा डंठल, मुंडा पेड़, ठूंठ। सम० —छेदः वह जो वृक्षों के तने काटता है, जो तने को छील कर साफ़ करता है—स्थाणुच्छेदस्य केदारमाहुः शल्यवतो मृगम्—मनु० ९।४४, —भ्रमः किसी थूणी या पोल को कुछ और ही समझ लेना।

स्थाण्डिलः [स्थण्डिल+अण्] 1. वह संन्यासी जो बिना विस्तर के भूमि पर या यज्ञीय भूखंड पर सोता है 2. साधु या धार्मिक भिक्षु।

स्थानम् [स्था+ल्युट्] 1. खड़ा होना, रहना, ठहरना, नैरन्तर्य, निवास स्थान—उत्तर० ३।३२ 2. स्थिर या अटल होना 3. स्थिति, दशा 4. जगह, स्थल, (भवन आदि के लिए) भूमि, संस्थिति—अक्षमालामदत्वास्मात्स्थानात्पदात्पदमपि न गन्तव्यम्—का० 5. संस्थान, स्थिति, अवस्था 6. संबन्ध, हैसियत —'पितृस्थाने' (पिता के स्थान में या पिता की हैसियत से) 7. आवास, घर निवासस्थान स एव (नक्रः) प्रच्युतः स्थानाच्छुनापि परिभूयते—पंच० ३।४६ 8. देश, क्षेत्र, ज़िला, नगर 9. पद, दर्जा, प्रतिष्ठा—अमात्यस्थाने नियोजितः 10. पदार्थ—गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः—उत्तर० ४।११ 11. अवसर, बात, विषय, कारण—पराभ्यूहस्थानान्यपि तनुतराणि स्थगयति—मा० १।१४, स्थानं जरापरिभवस्य तदेव पुंसाम्—सुभा०, इसी प्रकार कलह°, कोप°, विवाद° आदि 12. उचित या उपयुक्त जगह —स्थानेष्वेव नियोज्यन्ते भृत्याश्चाभरणानि च—पंच० १।७२ 13. उचित या योग्य पदार्थ—स्थाने खलु सज्जति दृष्टिः—मालवि० १, दे० 'स्थाने' भी 14. अक्षर का उच्चारणस्थान (यह आठ हैं—अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च—शिक्षा० १३

15. पावन स्थान 16. वेदी 17. नगरस्थ प्रांगण 18. मृत्यु के बाद कर्मानुसार प्राप्त होने वाला लोक 19. (नीति या युद्ध आदि में) दृढ़ता, आक्रमण का मुक़ाबला करने के लिए दृढ़ता, —मनु० ७।१९० 20. पड़ाव, डेरा 21. निश्चेष्ट दशा, उदासीनता, 22. राज्य के मुख्य अंग, किसी राज्य का स्थैर्य —अर्थात् सेना, कोष, नगर और प्रदेश—मनु० ७। ५६ (यहाँ कुल्लू० 'स्थान' का अर्थ करता है "दंड-कोषपुरराष्ट्रात्मकं चतुर्विधम्") 23. सादृश्य, समानता 24. किसी ग्रंथ का भाग या खंड, परिच्छेद या अध्याय आदि 25. अभिनेता का चरित्र 26. अन्तराल, अवसर, अवकाश 27. (संगीत० में) गीत, सुर, स्वर के स्पंदन की मात्रा। सम० **अध्यक्षः** स्थानीय राज्यपाल, स्थान का अधीक्षक, **आसन** (नपुं०, द्वि० व०) बैठा हुआ,—**आसेधः** किसी स्थान पर कैद, कारा, बंधन—तु० आसेध,—**चिन्तकः** सेना के शिविर के लिए स्थान की व्यवस्था करने वाला अधिकारी,—**च्युत** दे० 'स्थानभ्रष्ट',—**पालः** रखवाला, पहरेदार, आरक्षी, —**भ्रष्ट** (वि०) किसी पद से हटाया हुआ, विस्थापित, पदच्युत, बेकार, **माहात्म्यम्** 1. किसी स्थान का गौरव या महत्त्व 2. किसी स्थान में मानी जाने वाली असाधारण पवित्रता या दिव्य गुण,—**योगः** उपयुक्त स्थान का निदेशन - द्रव्याणां स्थानयोगाच्च क्रय-विक्रयमेव च—मनु० ९।३३२,—**स्थ** (वि०) एक ही स्थान पर स्थित, अचल।

स्थानकम् [स्थान+स्वार्थे क] 1. अवस्था, स्थिति 2. नाटकीय व्यापार का एक विशेष स्थल उदा० पताकास्थानक 3. शहर, नगर 4. आलवाल 5. शराब की सतह पर उठा हुआ फेन 6. सस्वर पाठ की एक रीति 7. यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का अनुवाक या प्रभाग।

स्थानतः (अव्य०) [स्थान+तसिल्] 1. अपनी स्थिति या अवस्था के अनुसार 2. अपने उपयुक्त स्थान से 3. उच्चारण करने के अंग के अनुरूप।

स्थानिक (वि०) (स्त्री०—**की**) [स्थान+ठक्] 1. किसी स्थान विशेष से सबंध रखने वाला, स्थानीय 2. (व्या० में) जो किसी अन्य वस्तु के बदले प्रयुक्त हो, या उसका स्थानापन्न हो,—**कः** 1. कोई पदाधिकारी, स्थानविशेष का रक्षक 2. किसी स्थान का शासक।

स्थानिन् (वि०) [स्थानमस्यास्ति रक्ष्यत्वेन इनि] 1. स्थानवाला 2. स्थैर्यसम्पन्न, स्थायी 3. वह जिसका कोई स्थानापन्न हो (पुं०) 1. मूलरूप या मौलिक तत्त्व, जिसके लिए कोई दूसरा स्थानापन्न न हो—स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ—पा० १।१।५६ 2. जिसका अपना स्थान हो, अभिहित।

स्थानीय (वि०) [स्थान+छ] 1. स्थानविशेष से संबद्ध, किसी स्थान का 2. किसी स्थान के लिए उपयुक्त, **यम्** नगर, शहर।

स्थाने (अव्य०) ['स्थान' का अधि० का रूप] 1. ठीक या उपयुक्त स्थान पर, सही ढंग से, उपयुक्त रूप से, ठीक, सचमुच, समुचित रीति से स्थाने वृता भूपतिभिः परोक्षैः—रघु० ७।१३, स्थाने प्राणाः कामिनां दूत्यधीनाः मालवि० ३।१४, कु० ६।६७, ७।६५ 2. के स्थान में, की बजाय, के बदले, स्थानापन्न के रूप में—धातोः स्थाने इवादेशं सुग्रीवं संन्यवेशयत् —रघु० १२।५८ 3. के कारण, के लिए 4. इसी प्रकार, भांति।

स्थापक (वि०) [स्थापयति—स्था+णिच्+ण्वुल्] खड़ा करने वाला, जमाने वाला, नींव डालने वाला, स्थापित करने वाला, विनियमित करने वाला,—**कः** 1. मंच के कार्य का निदेशक, रंगमंच-प्रबंधक, सूत्रधार 2. किसी देवालय का प्रतिष्ठाता, मूर्ति की स्थापना करने वाला।

स्थापत्यः [स्थपति+ष्यञ्] अन्तःपुर का रक्षक, **त्यम्** वास्तु विद्या, भवननिर्माण कला।

स्थापनम् [स्था+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. खड़ा करने की क्रिया, जमाना, नींव डालना, निदेश देना, स्थापित करना, संख्या बनाना 2. विचारों को जमाना, मन को संकेन्द्रित करना, ध्यान, धारणा 3. निवास, आवास 4. पुंसवन संस्कार (जब गर्भवती स्त्री को गर्भस्थ पिण्ड में जीवसंचार का प्रथम लक्षण ज्ञात हो, उस समय यह संस्कार किया जाता है), दे० पुंसवन।

स्थापना [स्था+णिच्+युच्+टाप्, पुक्] 1. रखना, जमाना, नींव रखना, स्थापित करना 2. व्यवस्था करना, विनियमन, (नाटक में) रंगमंच का प्रबन्ध।

स्थापित (भू० क० कृ०) [स्था+णिच्+क्त, पुक्] 1. रखा हुआ, जमाया हुआ, अवस्थित, धरा हुआ 2. नींव डाली हुई, निविष्ट 3. जड़ा हुआ, उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ 4. निदेशित, विनियमित, आदिष्ट, अधिनियम 5. निर्धारित, तय किया हुआ, निश्चित किया हुआ 6. नियत, जिसको कोई पद या कर्तव्य सौंपा गया हो 7. विवाहित, जिसका विवाह हो चुका हो—मा० १०।५ 8. दृढ़, स्थिर।

स्थाप्य (वि०) [स्था+णिच्+ण्यत्, पुकागमः] 1. रक्खे जाने या जमा किये जाने योग्य 2. नींव डाले जाने योग्य, स्थिर या स्थापित किये जाने योग्य, -**प्यम्** धरोहर, अमानत। सम०—**अपहरणम्** धरोहर को वस्तु हड़प कर जाना, अमानत में ख़यानत।

स्थामन् (नपुं०) [स्था+मनिन्] 1. सामर्थ्य, शक्ति, स्थैर्य, जैसा कि 'अश्वत्थामन्' में, दे० 'अश्वत्था-

मन्' के अन्तर्गत महा० का उद्धरण 2. स्थिरता, स्थायित्व।

स्थायिन् (वि०) [स्था+णिनि युक्] 1. खड़ा रहने वाला, टिकने वाला, स्थित रहने वाला (समास के अंत में) 2. सहन करने वाला, निरन्तर चलने वाला, टिकाऊ, टिके रहने वाला—शरीरं क्षणविध्वंसि कल्पांतस्थायिनो गुणाः—सुभा०, कतिपय दिवसस्थायिनी यौवनश्रीः- भर्तृ० २।८२, महावीर ७।१५ 3. जीने वाला, निवास करने वाला, रहने वाला मेघ० २३ 4. स्थिर, दृढ़, पक्का, अपरिवर्ती, जो न बदले—स्थायी भवति (पक्का हो जाता है) (पुं०) 1. नित्य या शाश्वत भावना, (दे० नी० 'स्थायिभाव') शि० २।८७, (नपुं०) 1. कोई भी टिकाऊ वस्तु, दृढ़ स्थिति या दशा। सम०—भावः मन की स्थिर दशा, टिकाऊ या सदा रहने वाली भावना, (कहते हैं इन 'स्थायिभावों से ही काव्यगत विभिन्न रसों की निष्पत्ति होती है, प्रत्येक रस का अपना स्थायिभाव अलग है) स्थायिभाव गिनती में आठ या नौ हैं —रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा। जुगुप्सा विस्मयश्चेत्थमष्टौ प्रोक्ताः शमोऽपि च सा० द० २०६, तु० व्यभिचारिभाव, भाव या विभाव भी।

स्थायुक (वि०) (स्त्री०—का, की) [स्था+उकञ्, युक्] 1. जो ठहरने वाला हो, या जिसमें ठहरने की प्रवृत्ति हो 2. दृढ़, स्थिर, अचल,—कः गाँव का मुखिया या अधीक्षक।

स्थालम् [स्थलति तिष्ठति अन्नाद्यत्र आधारे घञ्] 1. थाल, थाली, तस्तरी 2. कोई भोजनपात्र. पाकयोग्य वर्तन। सम० रूपम् पाकपात्र की आकृति।

स्थाली [स्थाल+ङीप्] 1. मिट्टी का घड़ा या हाँड़ी, रांधने का वर्तन, कड़ाही, बटलोई—नहि भिक्षुकाः सन्तीति स्थाल्यो नाधिश्रीयन्ते सर्व०, स्थाल्यां वैडूर्यमय्यां पचति तिलखलीमिन्धनैश्चन्दनाद्यैः भर्तृ० – २। १०० 2. सोम तैयार करने के काम आने वाला विशेष पात्र, पाटलावृक्ष. तुरही के सदृश फूल। सम०—पाकः एक धार्मिक कृत्य जिसका अनुष्ठान गृहस्थ करते हैं, पुरीषम् पाक पात्र में जमा हुआ मैल या तरौंछ, पुलाकः पाकपात्र में पकाया हुआ चावल, °न्यायः दे० 'न्याय' के अन्तर्गत, विलम् पाकपात्र का भीतरी हिस्सा।

स्थावर (वि०) [स्था+वरच्] 1. एक स्थान पर जमा हुआ, अचल, अडिग, अचर, जड़ (विप० जंगम) —शरीराणां स्थावरजङ्गमानां सुखाय तज्जन्मदिनं बभूव कु० १।२३, ६।६७, ७३ 2. निश्चेष्ट, निष्क्रिय, मन्द 3. नियमित, स्थापित, रः पहाड़—स्थावराणां हिमालयः- भग० १०।२५, रम् कोई भी स्थिर या जड़ पदार्थ (जैसे कि मिट्टी, पत्थर, वृक्ष आदि जो कि ब्रह्मा की सातवीं सृष्टि है तु० मनु० ४१) —मान्यः स मे स्थावरजङ्गमानां सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः रघु० २।४४, कु० ६।५८ 2. धनुष की डोरी 3. अचल संपत्ति, माल असबाब 4. पैतृक या मौरूसी प्राप्त सम्पत्ति। सम०—अस्थावरम्, -जङ्गमम् 1. चल और अचल संपत्ति 2. चेतन और जड़ पदार्थ।

स्थाविर (वि०) (स्त्री०—रा,—री)[स्थविर+अण्] मोटा, दृढ़, – रम् बुढ़ापा।

स्थासकः [स्था+स+स्वार्थादौ क] 1. सुवासित करना, शरीर पर सुगन्धित लेप करना 2. पानी का बुलबुला या कोई तरल पदार्थ—शि० १८।५।

स्थासु (नपुं०) [स्था+सु] शारीरिक बल।

स्थास्नु (वि०) [स्था+स्नु] 1. स्थिर, दृढ़, अचल 2. स्थायी, नित्य टिकाऊ, पायदार—शि० २।९३, कि० २।१९।

स्थित (भू० क० कृ०) [स्था+क्त] 1. खड़ाहुआ, रहा हुआ, ठहरा हुआ 2. खड़ा होने वाला 3. उठकर खड़ा होने वाला, उठा हुआ—स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां ...छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्—रघु० २।६ 4. टिकने वाला, सहारा लेने वाला, जीवित, विद्यमान, मौजूद स्थित—धन्या केयं स्थिता ते शिरसि मुद्रा० १।१, मेघ० ७. (प्रायः क्तान्त के साथ विधेयक के रूप में) विक्रम० १।१, श० १।१, कु० १।१ 5. घटित, हुआ हुआ—कु०४।२७ 6. पड़ाव डाला हुआ, अधिकार किया हुआ, नियुक्त किया हुआ – श० ४।१८ 7. क्रियान्वित करने वाला, डटा रहने वाला, समनुरूप रघु० ५।३३ 8. निश्चेष्ट खड़ा हुआ, रुका हुआ, ठहरा हुआ 9. जमा हुआ, दृढ़तापूर्वक लगा हुआ कु० ५।८२ 10. स्थिर, दृढ़ जैसा कि 'स्थितधी' और 'स्थितप्रज्ञ' में 11. निर्धारित, दृढ़ निश्चय किया हुआ —कु० ४।३९ 12. स्थापित, समादिष्ट 13. आचरण में दृढ़, दृढ़मना 14. ईमानदार, धर्मात्मा 15. प्रतिज्ञा या करार का पक्का 16. सहमत, व्यस्त, संविदाग्रस्त 17. तैयार, निकटस्थ, समीप, - तम् स्वयं खड़ा हुआ (जैसे कि शब्द)। सम० – उपस्थित (वि०) 'इति' शब्द से युक्त या रहित (जैसे कि शब्द), धी(वि०) दृढ़मनस्क, स्थिरमना, शान्त,—पाठ्यम् खड़ी हुई स्त्रीपात्र द्वारा प्राकृत में पाठ,—प्रज्ञ (वि०) निर्णय या समझदारी में दृढ़, सब प्रकार के भ्रमों से मुक्त, सन्तुष्ट—प्रजहाति यदा कामान्सर्वान् पार्थ मनोगतान्। आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते भग० २।५५,—प्रेमन् (पुं०) पक्का या विश्वासपात्र मित्र।

स्थितिः (स्त्री०) [स्था+क्तिन्] 1. खड़े होना, रहना, टिकना, डटे रहना, जीवित होना, ठहरना, निवास-

स्थान—स्थितिं नो रे दध्याः क्षणमपि मदान्धेक्षण सखे—भामि० १।५२, रक्षोगृहे स्थितिर्मूलमग्निशुद्धौ त्वनिश्चयः—उत्तर० १।६ 2. रुकना, चुप होकर खड़े होना, एक ही अवस्था में रहना—प्रस्थितायां प्रतिष्ठेयाः स्थितायां स्थितिमाचरेः—रघु० १।८९ 3. अडिग रहना, जम जाना, स्थिरता, दृढ़ता, लगे रहना, भक्ति मम भूयात् परमात्मनि स्थितिः भामि० ४।२३ 4. हालत, अवस्था, परिस्थिति, दशा 5. प्राकृतिक हालत, प्रकृति, स्वभाव—अथवा स्थितिरियं मन्दमतीनाम्—हि० ४ 6. स्थिरता, स्थायित्व, चिरस्थायित्व, निरन्तरता—वंशस्थितेरधिगमान्महति प्रमोदे विक्रम० ५।१५, कन्यां कुलस्य स्थितये स्थितिज्ञः—कु० १।१८, रघु० ३।२७ 7. आचरण की शुद्धता, कर्तव्यपालन में दृढ़ता, शिष्टता, कर्तव्य, नैतिक सदाचार, औचित्य—रघु० ३।२७, ११।६५, १२।३१, कु० १।१८ 8. अनुशासन का पालन, (किसी राज्य में) सुव्यवस्था की स्थापना—रघु० १।२५, 9. दर्जा, पद, ऊँचा पद या दर्जा 10. निर्वाह, जीवन का बने रहना—मा० ९।३२, रघु० ५।९ 11. जीवन में नैरन्तर्य, रक्षितावस्था (मानव की तीन अवस्थाओं में से एक)—सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः—रघु० २।४४, कु० २।६ 12. यति, विराम, विरति 13. कुशलक्षेम, कल्याण 14. संगति 15. निश्चित नियम, अध्यादेश, आज्ञप्ति, सिद्धांतवाक्य, नीतिवाक्य 16. निश्चित निर्धारण 17. अवधि, सीमा, हद 18. जड़ता, गतिहीनता 19. ग्रहण की अवधि। सम०—स्थापक (वि०) मूल अवस्था में जमाने वाला, पूर्वावस्था को प्राप्त करने की शक्ति रखने वाला, लचीलेपन को धारण करने वाला, —कः लचीलापन, पूर्वावस्था को पुनः प्राप्त करने की सामर्थ्य।

स्थिर (वि०) [स्था+किरच्, म० अ० स्थेयस्, उ० अ० स्थेष्ठ] 1. दृढ़, स्थिरमति, जमा हुआ—भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि—श० ५।२, स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः—विक्रम० १।१, कु० १।३०, रघु० ११।१९ 2. अचल, शान्त, गतिहीन—कु० २।३८ 3. दृढ़तापूर्वक जमा—उत्तर० १।४० 4. स्थायी, नित्य, शाश्वत—मेघ० ५५, मा० १।२५, 5. शान्त, सचेत, स्वस्थचित्त धीर, गंभीर 6. मौन, अक्षुब्ध 7. आचरण में पक्का, दृढ़ 8. संतत, श्रद्धालु, दृढ़-संकल्प 9. निश्चित, विश्वास योग्य 10 कठोर, ठोस 11. मजबूत, अन्तर्दृढ़ 12. कड़ा, निष्करुण, कठोर-हृदय—कु० ५।४७, —रः देव, सुर 2. वृक्ष, 3. पहाड़ 4. सांड 5. शिव का नाम 6. कार्तिकेय का नाम 7. मोक्ष या निर्वाण 8. शनिग्रह (स्थिरीकृ 1. पुष्ट करना, मजबूत करना, समर्थन करना 2. रुकना, दृढ़ करना 3. प्रसन्न करना, तसल्ली देना, आराम पहुँचाना —श० ४, स्थिरीभू— 1. स्थिर या दृढ़ होना 2. शान्त या धीर होना)। सम० अनुराग दृढ़ आसक्ति वाला, स्नेहसिक्त,—आत्मन्,—चित्त, —चेतस्—धी,—बुद्धि, —मति (वि०) 1. दृढ़मना, विचार या संकल्प का पक्का, दृढ़ संकल्प, रघु० ८।२२, शान्त, धीर, अक्षुब्ध, —आयुस्, —जीविन् (वि०) दीर्घजीवी, चिरजीवी, —आरम्भ (वि०) दायित्व निर्वाह में दृढ़, धैर्यशाली, —कुट्टकः 1. लगातार पीसने वाला 2. (बीजग० में) समान भाजक, —गन्धः चंपक फूल, —छदः भोजपत्र का वृक्ष,—छायः 1. यात्रियों को छाया देने वाला 2. वृक्ष, —जिह्वः मछली, —जीविता सेमल (शाल्मली) का पेड़,—दंष्ट्रः सांप,—पुष्पः 1. चंपक वृक्ष 2. बकुल वृक्ष, मौलसिरी,—प्रतिज्ञ (वि०) दृढ़प्रतिज्ञ, हठी, आग्रही 2. वचन का पालन करने वाला, —प्रतिबन्ध (वि०) विरोध करने में दृढ़, हठी—श० २, —फला कुष्मांडी, —योनिः बड़ा भारी वृक्ष जो छाया और शरण दे, —यौवन (वि०) सदा जवान रहने वाला, (—नः) 1. विद्याधर, परी 2. चिरस्थायी तारुण्य, —श्री (वि०) सदा रहने वाली समृद्धि वाला, —संगर (वि०) प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, सच्चा, बात का धनी, —सौहृद (वि०) मित्रता में दृढ़,—स्थायिन् (वि०) दृढ़ या अटल रहने वाला, पूर्णतः शान्त रहने वाला (जैसा कि समाधि में)।

स्थिरता, —त्वम् [स्थिर+तल्+टाप्, त्व वा] 1. दृढ़ता, स्थैर्य, टिकाऊपन 2. दृढ़ और बलशाली प्रयत्न, पौरुष—श० ४।१४ 3. सातत्य, मन की दृढ़ता 4. अचलता।

स्थिरा [स्थिर+टाप्] पृथ्वी।

स्थुड् (तुदा० पर० स्थुडति) ढकना।

स्थुलम् [स्थुड्+अच्, पृषो० डस्य लः] एक प्रकार का लंबा तंबू।

स्थूणा [स्था+नक्, उदन्तादेशः, पृषो०] 1. घर का खंबा सतून, स्तंभ 2. पोल या खंबा—स्थूणानिखनन्यायेन —शारी० 3. लोहमूर्ति या प्रतिमा 4. घन। सम० —निखननन्याय 'न्याय' के नीचे देखो।

स्थूमः (पुं०) 1. प्रकाश 2. चन्द्रमा।

स्थूरः [स्था+ऊरन्] 1. सांड 2. मनुष्य।

स्थूल (वि०) [स्थूल्+अच्, म० अ० स्थवीयस्, उ० अ० स्थविष्ठ] 1. विस्तृत, बड़ा, बृहत्, विशाल, महान्—बहुस्पृशापि स्थूलेन स्थीयते बहिरश्मवत् शि० २।७८ (यहाँ छठा अर्थ भी घटता है), स्थूलहस्तावलेपान् मेघ० १८, १०६, रघु० ६।२८ 2. मोटा, मांसल, हृष्टपुष्ट 3 मजबूत, शक्तिशाली—स्थूलं स्थूलं श्वसिति—श० 'कठिनाई से सांस लेता है

4. बेडौल, भद्दा 5. सम्पूर्ण, साधारण, अनाड़ी (आलं० से भी) जैसा कि 'स्थूलमानम्' में 6. मूर्ख, मूढ़, बुद्धू, नासमझ 7. आलसी, सुस्त, ठग. 8. अयथार्थ, लः कटहल,—लम् 1. ढेर, राशि 2. तंबू 3. पहाड़ की चोटी। सम०—अन्त्रम् बड़ी आंत जो गुदा के पास तक जाती है,—आस्यः साँप, -उच्चयः 1. पर्वत खंड जो गिर कर ऊबड़-खाबड़ टीले जैसा बन गया हो 2. अपूर्णता, कमी, त्रुटि 3. हाथी की मध्यम गति 4. मुंहासा 5. हाथी के दांत का रंध्र, —काय (वि०) मोटा, मांसल,—क्षेडः,—क्ष्वेडः बाण, -चापः धुनकी,—तालः हिंताल,—धी,—मति (वि०) मूर्ख, बुद्धू,—नालः लम्बी जाति का सरकंडा —नास,—नासिक (वि०) मोटी नाक वाला, (—सः,—कः) सूअर, वराह, -पटः—पटम् मोटा कपड़ा,—पट्टः कपास,- पाद (वि०) मोटे पैर वाला, सूजे पैर वाला, (—दः) 1. हाथी 2. श्लीपद रोग से ग्रस्त व्यक्ति, —फलः सेमल (शाल्मली) का वृक्ष, -मानम् मोटा हिसाब, मोटा अन्दाज, -लक्ष, —क्ष्य (वि०) 1. दानशील, वदान्य, उदार 2. समझदार, विद्वान् 3. लाभ-हानि दोनों का ध्यान रखने वाला, -शङ्खा बड़ी योनि वाली स्त्री,—शरीरम् भौतिक और नश्वर शरीर (विप० सूक्ष्म (लिंग) शरीर), —शाटकः,—शाटिः मोटा कपड़ा,—शीर्षिका क्षुद्र-पिपीलिका, छोटी चिऊंटी जिसका सिर, शरीर के अनुपात से बड़ा हो, षट्पदः 1. भौंरा 2. भिड़,—स्कन्धः लकुच वृक्ष, बड़हल का पेड़ —हस्तम् हाथी की सूंड़।

स्थूलक (वि०) [स्थूल+कन्] विस्तृत, बड़ा, महान्, विशाल, कः एक प्रकार की घास या नरकुल (सरकंडा)।

स्थूलता, त्वम् [स्थूल+तल्+टाप्, त्व वा] 1. विस्तार, विशालता, बड़प्पन 2. सुस्ती, जडता।

स्थूलयति (ना० धा० पर०) बड़ा होना, हृष्ट-पुष्ट होना, मोटा होना।

स्थूलिन् (पुं०) [स्थूल+इनि] ऊँट।

स्थेमन् (पुं०) [स्था+इमनिच्] दृढ़ता, स्थिरता, अचलता, अडिगपन—द्राघीयांसः संहताः स्थेमभाजः —शि० १८।३३, न यत्र स्थेमानं दधुरतिभयभ्रान्त-नयनाः—भामि० १।३२।

स्थेय (वि०) [स्था+यत्] जमाये जाने योग्य, रखे जाने योग्य, निश्चित या निर्धारित किये जाने योग्य, —यः (दो दलों के बीच वर्तमान) 1. झगड़े का फ़ैसला करने के लिए छांटा गया व्यक्ति विवाचक, पंच, निर्णायक 2. पुरोहित।

स्थेयस् (वि०) (स्त्री० सी) [स्थिर+ईयसुन्, स्थादेशः म० अ० 'स्थिर' की] दृढ़तर, अपेक्षाकृत बलवान्।

स्थेष्ठ (वि०) [स्थिर+इष्ठन्, स्थादेशः, उ० अ० 'स्थिर की'] अत्यन्त दृढ़, बलवत्तर।

स्थैर्यम् [स्थिर+ष्यञ्] 1. दृढ़ता, स्थिरता, अचलता, निश्चलता 2. निरन्तरता 3. मन की दृढ़ता, संकल्प, स्थायित्व - भग० १३।७ 4. सहनशीलता 5. कड़ापन, ठोसपना।

स्थौणेयः, स्थौणेयकः [स्थूणा+ढक्, ढकञ् वा] एक प्रकार का गंधद्रव्य।

स्थौरम् [स्थूर+अण्] 1. दृढ़ता, सामर्थ्य, शक्ति 2. गधे या घोड़े पर लादने का पूरा बोझ।

स्थौरिन् (नपुं०) [स्थौर+इनि] 1. पीठ पर बोझा ढोने वाला घोड़ा, लद्दू घोड़ा 2. मजबूत घोड़ा।

स्थौल्यम् [स्थूल+ष्यञ्] बड़प्पन, विशालता, हृष्ट-पुष्टता।

स्नपनम् [स्ना+णिच्+ल्युट्, पुक्] 1. छिड़कना, नहलाना 2. स्नान करना, पानी में डुबकी लगाना - रेजे जनैः स्नपनसांद्रतरार्द्रमूर्तिः—शि० ५।५७।

स्नवः [स्नु+अप्] चूना, रिसना, टपकना।

स्नस् (भ्वा० दिवा० पर० स्नसति स्नस्यति) 1. बसना 2. उगलना (जैसे मुंह से), परित्याग करना।

स्ना (अदा० पर० स्नाति, स्नात) 1. स्नान करना, नहाना, पानी में डुबकी लगाना - मृगतृष्णाम्भसि स्नातः 2. गुरुकुल छोड़ते समय स्नान करने के संस्कार का अनुष्ठान करना, प्रेर० (स्नापयति—ते, स्नपयति—ते) नहलाना, गीला करना, तर करना, छिड़कना—(तोयैः) सतूयंमेनां स्नपयांबभूवुः कु० ७।१०, स्मितस्नपिताधरा—गीत० १२, उत्तर० ३।२३, कि० ५।४४, ४७, शि० २।७, ८।३, मेघ० ४३, इच्छा० (सिस्नासति) स्नान करने की इच्छा करना, अप,—मृत्यु के कारण शोक मनाने के पश्चात् स्नान करना, नि,—गहरी डुबकी लगाना अर्थात् पारंगत होना, दे० 'निष्णात'।

स्नातकः [स्ना+क्त+क] 1. ब्रह्मचर्य आश्रम में अध्ययन समाप्त कर अनुष्ठेय स्नान की विधि पूरा करने वाला ब्राह्मण 2. वह ब्राह्मण जो वेदाध्ययन समाप्त कर अभी गुरुकुल से लौटा है और गृहस्थ धर्म में दीक्षित हुआ है 3. वह ब्राह्मण जो किसी धार्मिक विधि को पूरा करने के लिए भिक्षु बना हो मनु० ११।१ 4. पहले तीन वर्णों का कोई पुरुष जो गृहस्थधर्म में दीक्षित हो चुका है।

स्नानम् [स्ना भावे ल्युट्] 1. धोना, मार्जन करना, पानी में डुबकी लगाना - ततः प्रविशति स्नानोत्तीर्णः काश्यपः श० ४ 2. स्नान द्वारा शुद्धि, कोई धार्मिक या सांस्कारिक मार्जन 3. मूर्ति का स्नान कराना 4. कोई, वस्तु जो स्नान या मार्जन में काम आवे। सम० अगारम् स्नानगृह,—द्रोणी स्नान करने की

नांद,—यात्रा ज्येष्ठपूर्णिमा को मनाया जाने वाला पर्व,—वस्त्रम् स्नान का वस्त्र—सकृत् किं पीडितं स्नानवस्त्रं मुञ्चेत् द्रुतं पयः—हि० २।१०६,–विधिः 1. स्नान करने की क्रिया 2. स्नान करने के उचित नियम या रीति ।

स्नानीय (वि०) [स्नानाय हितं छ] स्नान के लिए योग्य, मार्जन के लिए उपयुक्त, स्नान के समय पहना हुआ वस्त्र,—स्नानीयवस्त्रक्रियया पत्रोर्णं वोपयुज्यते —मालवि० ५।१२, –यम् जल या और कोई पदार्थ (जैसे कि उबटना, या सुवासित चूर्ण आदि) जो स्नान के उपयुक्त हो—रघु० १६।२१ ।

स्नापकः [स्ना+णिच्+ण्वुल्, पुक्] अपने स्वामी को स्नान कराने वाला या स्नान के लिए सामग्री लाने वाला नौकर ।

स्नापनम् [स्ना+णिच्+ल्युट्, पुक्] स्नान कराना, या स्नानकर्ता की टहल करना—मनु० २।२०९ ।

स्नायुः [स्नाति शुध्यति दोषोऽनया–स्ना+उण्] 1. कंडरा, पेशी, नस—स्वल्पं स्नायुवसावशेषमलिनं निर्मांसमप्यस्थि गोः—भर्तृ० २।३० 2. धनुष की डोरी । सम०—अर्मन् आँखों का एक विशेष रोग ।

स्नायुकः [स्नायु+कन्] दे० 'स्नायु' ।

स्नावः, स्नावन् (पुं०) [स्ना+वन्, वनिप् वा] कंडरा, पेशी ।

स्निग्ध (वि०) [स्निह्+क्त] 1. प्रिय, स्नेही, हितैषी, अनुरक्त, प्रेमी - मा० ५।२० 2. चिकना, तैलाक्त, मसृण, तेल में भीगा हुआ --उत्पश्यामि त्वयि तटगते स्निग्धभिन्नाञ्जनाभे—मेघ० ५९ स्निग्धवेणीसवर्णे —१८, शि० १२।६३, मा० १०।४ 3. चिपचिपा, लसलसा, लेसदार, लिबलिबा 4. प्रभासित, चमकीला उज्ज्वल, चमकदार—कनकनिकषस्निग्धा विद्युत् प्रिया न ममोर्वशी—विक्रम० ४।१, मेघ० ३७, उत्तर० १।३३, ६।२१ 5. चिकना, स्निग्धकारी 6. गीला, तर 7. शान्त 8. कृपालु, मृदु, सौम्य, मिलनसार —प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः मेघ० १६ 9. प्रिय, रुचिकर, मोहक, रघु० १।३६, उत्तर० २।१४, ३।२२ 10. मोटा, सघन, सटा हुआ—स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु (चक्रे)--मेघ० १ 11. तुला हुआ, जमाया हुआ, (दृष्टि की भांति) टकटकी लगाये हुए,- ग्धः 1. मित्र, स्नेही, मित्रसदृश, हितैषी—विज्ञैः स्निग्धैरुपकृतमपि द्वेष्यतां याति किंचित् - हि० २।१६०, या, स स्निग्धोऽकुशलान्निवारयति यः - सुभा०, पंच० २।१६६ 2. लाल एरण्ड का पौधा 3. एक प्रकार का चीड़ का वृक्ष —ग्धम् 1. तेल 2. मोम 3. प्रकाश, आभा 4. मोटापन, खुरदुरापन । सम०—जनः स्नेही व्यक्ति, हितैषी मित्र—स्निग्धजनसंविभक्तं हि दुःखं सह्यवेदनं भवति —श० ३,—तण्डुलः एक प्रकार का चावल जो जल्दी उगता है,--दृष्टि (वि०) टकटकी लगाकर देखने वाला ।

स्निग्धता,–त्वम् [स्निग्ध+तल्+टाप्, त्व वा] 1. चिकनापन 2. सौम्यता 3. सुकुमारता, स्नेह, प्रेम ।

स्निग्धा [स्निग्ध+टाप्] मज्जा, वसा ।

स्निह् (दिवा० पर० स्निह्यति, स्निग्ध) 1. स्नेह रखना, स्नेहानुभूति होना, प्रेम करना, प्रिय होना (अधि० के साथ–जिससे प्रेम किया जाय)–किं नु खलु बालेऽस्मिन्नौरस इव पुत्रे स्निह्यति मे मनः–श० ७, स च स्निह्यत्यावयोः–उत्तर० ६ (यहाँ 'आवयोः' सम्बन्ध कारक भी हो सकता है) 2. अनायास ही अनुरक्त होना 3. किसी पर प्रसन्न होना, कृपालु होना 4. चिपचिपा होना, लसलसा या लिबलिबा होना 5. चिकना या सौम्य होना, प्रेर० (स्नेहयति - ते) 1. चिकनी-चुपड़ी बातें बनाना, चिकनाना, चिकने पदार्थ से लेप करना, चिकना करना, तेल लगाना 2. प्रेम कराना 3. विघटित करना, नष्ट करना, मार डालना ।

स्नु (अदा० पर० स्नौति, स्नुत) 1. टपकना, स्रवण करना, बूंद-बूंद गिरना, स्रवित होना, पड़ना, रिसना, चूना 2. बहना, धार पड़ना, प्र--,बह निकलना, उडेल देना —प्रस्नुतस्तनी उत्तर० ३ ।

स्नु (पुं०, नपुं०) [स्ना+कु] 1. पहाड़ का समतल भूखंड 2. चोटी, सतह (पहले पाँच वचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व० के पश्चात् विकल्प से 'यह सानु' शब्द के स्थान में प्रयुक्त होता है) ।

स्नु (स्त्री०) [स्नु+क्विप्] स्नायु, कण्डरा, पेशी ।

स्नु (वि०) [स्नु+क्त] रिसा हुआ, बूंद-बूंद करके गिरा हुआ, बहा हुआ आदि ।

स्नुषा [स्नु+सक्+टाप्] पुत्रवधू समुपास्यत पुत्रभोग्यया स्नुषयेवाविकृतेन्द्रियः श्रिया—रघु० ८।१४, १५।७२ ।

स्नुह् (दिवा० पर० स्नुह्यति, स्नुग्ध या स्नूढ) उलटी करना, कै करना ।

स्नेहः [स्निह्+घञ्] 1. अनुराग, प्रेम, कृपालुता, सुकुमारता—स्नेहदाक्षिण्ययोर्योगात् कामीव प्रतिभाति मे विक्रम० २।४ (यहाँ इसमें छठा अर्थ भी घटता है), अस्ति मे सोदरस्नेहोऽप्येतेषु श० १ 2. तैलाक्तता, मसृणता, चिकनापन, चिकनाहट (वैशेषिक के अनुसार २४ गुणों में से एक) 3. नमी 4. चर्बी, वसा, कोई भी चिकना पदार्थ 5. तेल निर्विष्टविषयस्नेहः स दशान्तमुपेयिवान् रघु० १२।१ पंच० १।८७, (यहाँ प्रथम अर्थ भी घटता है) रघु० ४।७५

6. शरीरगत कोई भी तरल पदार्थ जैसे कि वीर्य। सम० —अक्त तेल में भिगोया हुआ, चिकनाया हुआ, चर्बी में लिप्त, -अनुवृत्तिः (स्त्री०) स्निग्ध या मित्रों जैसा मेल-जोल,—आशः दीपक, —छेदः,—भङ्गः मित्रता का टूट जाना, —पूर्वम् (अव्य०) अनुराग पूर्वक,—प्रवृत्तिः (स्त्री०) प्रेम प्रवाह—श० ४।१६, —प्रिय (वि०) जिसे तेल अधिक प्यारा हो, (—यः) दीपक, —भूः श्लेष्मा, —रङ्गः तिल, —वस्तिः (स्त्री०) तेल की सुई लगाना, तेल का अनीमा करना, गुदा के मार्ग से पिचकारी द्वारा तेल डालना,—विमर्दित (वि०) तैल से मालिश किया गया,—व्यक्तिः (स्त्री०) प्रेम का प्रकटीकरण, मित्रता का प्रदर्शन, —(भवति) स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुञ्चतो बाष्पमुष्णम् —मेघ० १२।

स्नेहन् (पुं०) [स्निह्+कनिन्, नि०] 1. मित्र 2. चन्द्रमा 3. एक प्रकार का रोग।

स्नेहन (वि०) [स्निह्+णिच्+ल्युट्] 1. मालिश करने वाला, चिकनाने वाला 2. नष्ट करने वाला, —नम् 1. तेल मालिश, चिकनाना, तेल या उबटना मलना 2. चिकनाहट 3. उबटन, स्निग्धकारी।

स्नेहित (भू० क० कृ०) [स्निह्+णिच्+क्त] 1. प्रेमपात्र 2. कृपालु, स्नेही 3. लिपा हुआ, चिकनाया हुआ, —तः मित्र, प्यारा।

स्नेहिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्निह्+णिनि] 1. अनुरक्त, स्नेह करने वाला, मित्र सदृश 2. तैलाक्त, चिकना, चर्बी युक्त (पुं०) 1. मित्र 2. मालिश करने वाला, लेप करने वाला 3. चित्रकार।

स्नेहुः [स्निह्+उन्] 1. चन्द्रमा 2. एक प्रकार का रोग।

स्नै (भ्वा० पर० स्नायति) पट्टी बांधना, लपेटना, सुडौल करना, आवृत्त करना, परिवेष्टित करना।

स्नैग्ध्यम् [स्निग्ध+ष्यञ्] 1. चिकनाहट, स्निग्धता, फिसलन, चिक्कणता 2. सुकुमारता, प्रियता 3. चिकनापन, मृदुता।

स्पन्द् (भ्वा० आ० स्पन्दते, स्पन्दित) 1. धड़कना, धकधक करना अस्पन्दिष्टाक्षि वामं च —भट्टि० १५।२७, १४।८३ 2. हिलना, कांपना, ठिठुरना 3. जाना, गतिशील होना, परि—,धड़कना, कांपना, वि—, इधर-उधर घूमना, संघर्ष करना।

स्पन्दः [स्पन्द्+घञ्] 1. धड़कन, धकधक 2. कंपकंपी, थरथराहट, गति —मनो मन्दस्पन्दं बहिरपि चिरस्यापि विमृशन्—भर्तृ० ३।५१।

स्पन्दनम् [स्पन्द्+ल्युट्] 1. धड़कना, नाड़ी का फड़कना, थरथराहट, कंपकंपी—वामाक्षिस्पंदनं सूचयित्वा —मा० १, इसी प्रकार अधर°, बाहु°, शरीर° आदि 2. थरथरी, धड़कन 3. अर्भक में जीव का स्फुरण।

स्पन्दित (भू० क० कृ०) [स्पन्द्+क्त] 1. थरथरीयुक्त, ठिठुरा हुआ 2. गया हुआ,—तम् नाडी का स्फुरण, धड़कन, धकधक।

स्पर्ध् (भ्वा० आ० स्पर्धते) 1. स्पृहा करना, होड़ लगाना, मुक़ाबला करना, प्रतिद्वन्द्विता करना, प्रतियोगिता करना, —अस्पर्धिष्ट च रामेण—भट्टि० १५।६५ कस्तैस्सह स्पर्धते —भर्तृ० २।१६ 2. ललकारना, चुनौती देना, उपेक्षा करना, प्रति—, वि—, चुनौती देना, ललकारना।

स्पर्धा [स्पर्ध्+अङ्+टाप्] प्रतियोगिता, प्रतिद्वन्द्विता, होड़—आत्मनस्तु बुधैः स्पर्धा शुद्धधीर्बह्वमन्यत 2. ईर्ष्या, डाह 3. चुनौती 4. समानता।

स्पर्धिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्पर्धा+इनि] 1. प्रतिद्वन्द्विता करने वाला, होड़ करने वाला, प्रतियोगिता करने वाला, प्रतिस्पर्धाशील—तवाधरस्पर्धिषु विद्रुमेषु—रघु० १३।१३, १६।६२ 2. प्रतिस्पर्धी, ईर्ष्यालु 3. घमंडी,—(पुं०) प्रतियोगी, समकक्ष व्यक्ति।

स्पर्श् (चुरा० आ० स्पर्शयते) 1. लेना, पकड़ना, छूना 2. मिलना, संयुक्त होना 3. आलिंगन करना, आश्लेषण।

स्पर्शः [स्पर्श् (स्पृश् वा)+घञ्] 1. छूना, संपर्क (सभी अर्थों में—तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्—श० १।२८, २।७ 2. संयोग (ज्यो० में) 3. संघर्ष, मुठभेड़ 4. भावना, संवेदना, छूने से होने वाला ज्ञान 5. त्वचा का विषय, स्पर्शयोग्यता, स्पर्शगुण - स्पर्शगुणो वायुः —तर्क० 6. प्रभाव, रोग, बीमारी का दौरा 7. रोग, व्याधि, विकृति, आदि या मनोव्यथा 8. (क् से म् तक) पाँचों वर्गों में कोई सा व्यंजन - कादयो मान्ताः स्पर्शाः 9. उपहार, दान, भेंट 10. हवा, वायु 11. आकाश 12. एक रतिबंध,—र्शा कुलटा, पुंश्चली। सम० —अज्ञ (वि०) स्पर्शज्ञान से रहित, संवेदनशून्य —इन्द्रियम् स्पर्श का ज्ञान, या स्पर्शज्ञान प्राप्त करने वाली इन्द्रिय,—उदय (वि०) जिसके पीछे व्यंजन वर्ण हो, —उपलः,—मणिः पारस पत्थर —तन्मात्रम् वह तत्त्व जिसका छूने से ज्ञान हो,—लज्जा छुईमुई का पौधा —वेद्य (वि०) स्पर्श के द्वारा जिसका ज्ञान हो —संचारिन् (वि०) संक्रामक, छूत का,—स्नानम् सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहण आरम्भ होने पर स्नान,—स्पन्दः, —स्पन्दः मेंढक।

स्पर्शन (वि०) (स्त्री०—नी) [स्पर्श् (स्पृश् वा) +ल्युट्] 1. छूने वाला, हाथ लगाने वाला 2. ग्रस्त करने वाला, प्रभाव डालने वाला,—नः हवा, वायु, —नम् 1. छूना, स्पर्श, संपर्क 2. संवेदन, भावना 3. स्पर्शेन्द्रिय या स्पर्शजन्य ज्ञान 4. भेंट, दान।

स्पर्शनकम् [स्पर्शन+कन्] सांख्यदर्शन में प्रयुक्त 'त्वचा' का पर्यायवाची शब्द।

स्पर्शवत् (वि०) [स्पर्श+मतुप्] 1. स्पर्श किये जाने के योग्य 2. मृदु, छूने में रुचिकर या कोमल—कु० १।५५।

स्पर्व् (भ्वा० आ० स्पर्वते) गीला या तर होना।

स्पष्टृ (पुं०) [स्पृश्+तृच्] मनोव्यथा, शरीर में विकार, रोग।

स्पश् (भ्वा० उभ० स्पशति) 1. अवरुद्ध करना 2. दायित्व ग्रहण करना, संपन्न करना 3. नत्थी करना 4. छूना, देखना, निहारना, स्पष्ट दृष्टिगोचर होना, जासूसी करना, भांपना, भेद पाना।

स्पशः [स्पश्+अच्] 1. भेदिया, गुप्तचर,—स्पशो शनैर्गतवति तत्र विद्विषाम् - शि० १७।२०, दे० 'आपस्पश' भी 2. लड़ाई, संग्राम, युद्ध 3. (पुरस्कार पाने के लिए) जंगली जानवरों से लड़ने वाला, या ऐसी लड़ाई।

स्पष्ट (वि०) [स्पश्+क्त] जो साफ़ साफ़ देखा जा सके, व्यक्त, साफ़ दृष्टिगोचर, साफ़, सरल, प्रकट —स्पष्टे जाते प्रत्यूषे—का० 'जब धूप खिल गई थी' स्पष्टाकृतिः—रघु० १८।३०, स्पष्टार्थः—आदि 2. वास्तविक, सच्चा 3. पूरा खिला हुआ, फूला हुआ 4. साफ़ साफ़ देखने वाला,—ष्टम् (अव्य०) 1. स्पष्ट रूप से, साफ़ तौर पर, साफ़-साफ़ 2. खुल्लमखुल्ला, साहस पूर्वक (स्पष्टीकृ साफ़ करना, प्रकट करना, व्याख्या खोल कर कहना)। सम०—गर्भा वह स्त्री जिसके गर्भ के चिह्न साफ़ देख पड़ें,—प्रतिपत्तिः (स्त्री०) स्पष्ट ज्ञान, शुद्ध प्रत्यक्षज्ञान,—भाषिन्,—वक्तृ (वि०) साफ़-साफ़ कहने वाला, मुंहफट, खरा, सरल।

स्पृ (स्वा० पर० स्पृणोति) 1. मुक्त करना, उद्धार करना 2. पुरस्कार देना, अनुदान देना, प्रदान करना 3. रक्षा करना 4. जीवित रहना।

स्पृक्का [स्पृश्+कक् पृषो० शस्य कः] एक जंगली पौधा।

स्पृश् [तुदा० पर० स्पृशति, स्पृष्ट] 1. छूना—स्पृशन्नपि गजो हन्ति- हि० ३।१४, कर्णे परं स्पृशति हन्ति परं समूलम्—पंच० १।३०४ 2. हाथ रखना, थपथपाना, छूना—कु० ३।२२ 3. जुड़ जाना, चिपक जाना, संपृक्त होना 4. पानी से धोना या छिड़काव करना मनु० २।६० 5. जाना, पहुँचना—श० २।१४, रघु० ३।४३ 6. प्राप्त करना, हासिल करना, विशेष स्थिति पर पहुँचना —महोक्षतां वत्सतरः स्पृशन्निव—रघु० ३।३२ 7. कार्य में परिणत करना, प्रभावित करना, ग्रस्त करना, पसीजना, द्रवीभूत होना मुद्रा० ७।१६, कु० ६।९५ 8. संकेत करना, उल्लेख करना—प्रेर० (स्पर्शयति—ते) 1. छुवाना 2. देना, प्रस्तुत करना —गाः कोटिशः स्पर्शयता घटोघ्नीः—रघु० २।४९, अप=उपस्पृश्, अभि—,छूना, उप—,1. छूना 2. शरीर पर पानी के छींटे देना या स्नान करना—मनु० ४। १४३ 3. आचमन करना, पानी देना, कुल्ला करना —स नद्यवस्कन्दमुपास्पृशच्च—भट्टि० २।११, मनु० २।५३, ५।६३, अप उपस्पृश्य 4. स्नान करना—रघु० ५।५९, १८।३१, परि , छूना, सम्—, 1. छूना 2. पानी से छिड़काव करना— मनु० २।५३ 3. सम्पर्क स्थापित करना।

स्पृश् (वि०) [स्पृश्+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) जो छूता है, छूने वाला, ग्रस्त करने वाला, बेधने वाला,—मर्मस्पृश्, हृदिस्पृश् आदि।

स्पृष्ट (भू० क० कृ०) [स्पृश्+क्त] 1. छूआ हुआ, हाथ लगाया हुआ 2. सम्पर्क में आया हुआ, स्पर्शी 3. पहुँचने वाला, उपयोग करने वाला, विस्तार पाने वाला—अस्पृष्टपुरुषान्तरम्—कु० ६।७५ 4. ग्रस्त, पकड़ा हुआ —मेघ० ६९, अनघस्पृष्टम्—रघु० १०।१९ 5. गन्दा, मलिन—मनु० ८।२०५ 6. जिह्वा के पूर्ण स्पर्श से बना हुआ (पांचों वर्गों में से कोई सा वर्ण) अचोऽस्पृष्टा यणस्त्वीषन्नेमस्पृष्टा शलः स्मृताः। शेषाः स्पृष्टा हलः प्रोक्ता निबोधानुप्रदानतः—शिक्षा० ३८।

स्पृष्टिः,—स्पृष्टिका (स्त्री०) [स्पृश्+क्तिन्, स्पृष्टि +कन्+टाप्] छूना, सम्पर्क तद्वयस्य अस्मच्छरीरस्पृष्टिकया शापितोऽसि—मृच्छ० ३।

स्पृह् (चुरा० उभ० स्पृहयति—ते) कामना करना, लालायित होना, इच्छा करना, उत्सुक होना, चाहना (संप्र० के साथ) स्पृहयामि खलु दुर्ललितायास्मै श० ७, तपःक्लेशायापि स्पृहयन्ती का०, न मैथिलेयः स्पृहयांबभूव भर्त्रे दिवो नाप्यलकेश्वराय रघु० १६।४२, भर्तृ० २।४५।

स्पृहणम् [स्पृह्+ल्युट्] इच्छा या कामना करने की क्रिया, लालायित होना।

स्पृहणीय (वि०) [स्पृह्+अनीयर्] चाहने के योग्य, अभिलषणीय, स्पृहा के योग्य, वांछनीय अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः—कु० ३।२०, वन्द्या त्वमेव जगतः स्पृहणीयसिद्धिः मा० १०।२१, परस्परेण स्पृहणीयशोभं न चेदिदं द्वन्द्वमयोजयिष्यत् रघु० ७।१४, कु० ७।६०, उत्तर० ६।४०।

स्पृहयालु (वि०) [स्पृह्+णिच्+आलुच्] इच्छा करने वाला, लालायित, उत्सुक, उत्कण्ठित (संप्र० या अधि० के साथ) भोगेभ्यः स्पृहयालवो न हि वयम् —भर्तृ० ३।६४, तपोवनेषु स्पृहयालुरेव—रघु० १४।४५।

स्पृहा [स्पृह्+अच्+टाप्] इच्छा, उत्सुकता, प्रबल

कामना, लालसा, ईर्ष्या, अभिलाषा—कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्यः पुत्रिणः स्पृहाम्—वेणी० ३।२९, रघु० ८।३४।

स्पृह्य (वि०) [स्पृह्+णिच्+यत्] वांछनीय, स्पर्धा के योग्य,—ह्यः बिजौरा नीबू।

स्पृ (क्या० पर० स्पृणाति) आघात करना, मार डालना।

स्पष्टृ (पुं०) दे० 'स्पष्टृ'।

स्फट् (भ्वा० पर० स्फटति) फट पड़ना, फूलना।

स्फटः [स्फट्+अच्] साँप का फैलाया हुआ फण तु० फट—टा।

स्फटा [स्फट+टाप्] 1. साँप का फैलाया हुआ फण 2. फिटकिरी।

स्फटिकः [स्फटि+कै+क] बिलौर, काचमणि—अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरगभस्तयः सुखं प्रविशन्त्युपदेशगुणाः—का०। सम०—अचलः मेरु पर्वत, —अद्रिः कैलास पहाड़, °भिद् (पुं०) कपूर अश्मन्, —आत्मन्,—मणि (पुं०) शिला बिल्लौर पत्थर।

स्फटिकारिः, स्फटिकारिका (स्त्री०) फिटकिरी।

स्फटिकी [फटिक+ङीप्] फिटकिरी।

स्फण्ट् i (भ्वा० पर० स्फण्टति) फूट पड़ना, खिलना, फूलना।

ii (चुरा० उभ० स्फण्टयति—ते) मखौल करना, मजाक करना, हंसी उड़ाना।

स्फर्द् दे० स्फुर्।

स्फरणम् [स्फर्+ल्युट्] कांपना, थरथराना, धड़कना।

स्फल् (भ्वा० पर० स्फलति) कांपना, थरथराना, धड़कना, लरजना, (चुरा० उभ० या प्रेर० स्फालयति—ते) कंपा देना, हिला देना, आ—, 1. कंपाना, फड़फड़ाना, हिलाना, डुलाना 2. आघात करना, प्रपीडित करना, छपछप करना आस्फालितं यत्प्रमदाकराग्रैः—रघु० १६।१३, उत्तर० ५।१९ 3. आघात करना, अनुचित लाभ उठाना—शि० ११९ 4. (धनुष को) टंकारना।

स्फाटिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्फटिक+अण्] बिल्लौर पत्थर का, कम् बिल्लौर पत्थर।

स्फाटित (भू० क० कृ०) [स्फट्+णिच्+क्त] फाड़ा हुआ, फटा हुआ, फूला हुआ, विदीर्ण किया हुआ।

स्फातिः (स्त्री०) [स्फाय्+क्तिन्, यलोपः] 1. सूजन, शोथ 2. वृद्धि, बढ़ती।

स्फाय् (भ्वा० आ० स्फायते, स्फीत) 1. मोटा होना, बड़ा होना, विस्तारयुक्त होना, विशाल होना 2. सूजना, बढ़ना, फूलना संयुयुधे तयोः कोपः पस्फाये शस्त्रलाघवम् भट्टि० १४।१०९—प्रेर० (स्फावयति—ते) बढ़ाना, विकसित करना, विस्तारयुक्त करना, बड़ा करना—तावत्स्फावयतां शक्तीर्बाणांश्चाकिरतां मुहुः—भट्टि० १७।४३, ४।३३, १२।७६, १५।९९।

स्फार (वि०) [स्फाय्+रक्] 1. विस्तृत, बड़ा, बढ़ा हुआ, फुलाया हुआ—स्फारफुल्लत्फणापीठनियंतृ—आदि—मा० ५।२३, महावीर० ६।३२ 2. अधिक, पुष्कल महावीर० ५।२, भर्तृ० ३।४२ 3. ऊंचा (स्वर), —रः 1. सूजन, वृद्धि, विस्तार, विकास 2. (सोने में पड़ी हुई) फुटकी 3. उभार, गिल्टी 4. धड़कना, थरथरीयुक्त स्पन्दन, धकधक 5. टंकार,—रम् प्रचुरता, आधिक्य, पुष्कलता (स्फारीभू सूज जाना, फूलना, फैलना, बढ़ना, वृद्धि होना —सुस्निग्धा विमुखीभवन्ति सुहृदः स्फारीभवन्त्यापदः मृच्छ० १।३६।

स्फारण [स्फुर्+णिच्+ल्युट्, स्फारादेशः] थरथराहट, स्फुरण, कंपकंपी।

स्फालः [स्फाल्+घञ्] थरथराहट, धकधक, धड़कन, कंपकंपी।

स्फालनम् [स्फाल्+ल्युट्] 1. स्पन्दन, धकधक 2. हिलाना-डुलाना 3. रगड़ना, घिसना 4. थपथपाना, सहलाना (घोड़े आदि को), धीरे-धीरे हाथ फेरना।

स्फिच् (स्त्री०) [स्फाय्+डिच्] चूतड़, कूल्हा,—अंसस्फिक्पृष्ठपिण्डाद्यवयवसुलभान्युग्रपूतानि जग्ध्वा—मा० ५।१६।

स्फिट् (चुरा० उभ० स्फेटयति—ते) 1. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 2. घृणा करना 3. प्रेम करना 4. ढकना।

स्फिट्ट (चुरा० उभ० स्फिट्टयति—ते) चोट पहुँचाना आदि, दे० ऊपर 'स्फिट्'।

स्फिर (वि०) [स्फाय्+किरच्, म० अ० स्फेयस्, उ० अ० स्फेष्ठ] 1. प्रचुर, प्रभूत, बहुत 2. बहुत से, असंख्य 3. विस्तृत, आयत।

स्फीत (भू० क० कृ०) [स्फाय्+क्त, स्फी आदेशः] 1. सूजा हुआ, बढ़ा हुआ—वेणी० ५।४० 2. मोटा, पीन, बड़ा, विस्तृत, विशाल 3. बहुत से, असंख्य, अधिक, पर्याप्त, पुष्कल, प्रचुर 4. पवित्र—भामि० ४।१३, सफल, समृद्ध, फलता-फूलता 6. पैतृक रोग से ग्रस्त (स्फीतीकृत बड़ा करना, विस्तृत करना)।

स्फीतिः [स्फाय्+क्तिन्, स्फी आदेशः] 1. वृद्धि, बढ़ती, विस्तार 2. प्राचुर्य, यथेष्टता, पुष्कलता—धनधान्यस्य च स्फीतिः सदा मे वर्तताँ गृहे 3. समृद्धि।

स्फुट् i (तुदा० पर०, भ्वा० उभ० स्फुटति, स्फोटति—ते, स्फुटित) 1. फट जाना, अकस्मात् फूट जाना, टूट जाना, अचानक विदीर्ण होना, दरार पड़ना, भंग होना —हा हा! देवि स्फुटति हृदयं स्रंसते देहबन्धः—उत्तर० ३।३८, स्फुटति न सा मनसिजविशिखेन गीत० ७, भट्टि० १४।५६ १५।७७ 2. फूलना, खिलना, फूल देना, कुसुमित होना—स्फुटति कुसुमनिकरे विरहिहृदयदलनाय—गीत० ५, पंच० १।१३६ काव्य०

३।१६७ 3. भाग जाना, छलांग लगाना, तितर-बितर करना,—तुरङ्गः पुस्फुटुर्भीताः—भट्टि० १४।६, १०।८ 4. दृष्टिगोचर होना, निगाह में पड़ना, प्रकट होना, स्पष्ट होना।

ii (चुरा० उभ० स्फुटयति—ते) 1. फटना, तरेड़ आना, टूट जाना 2. निगाह में पड़ना,—प्रेर० स्फोटयति—ते, 1. फट कर टुकड़े टुकड़े होना, खंडशः होना, खोल कर फाड़ना, तरेड़ डालना, बांटना 2. प्रकट करना, बतलाना, स्पष्ट करना 3. खोलना, भंडाफोड़ करना 4. चोट पहुँचाना, नष्ट करना, मार डालना 5. पछोड़ना।

स्फुट (वि०) [स्फुट्+क] 1. फट पड़ा, टूट कर टुकड़े हुआ, टूटा हुआ, खंडित 2. खिला हुआ, फूला हुआ, प्रफुल्लित स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्—शि० ६।२५ 3. प्रकटीकृत, प्रदर्शित, स्पष्ट किया हुआ 4. साफ़, स्पष्ट, साफ दिखाई देने वाला या व्यक्त —अत्र स्फुटो न कश्चिदलङ्कारः—काव्य० १, कु० ५।४४, मेघ० ७०, कि० ११।४४ 5. प्रत्यक्ष—उत्तर० ३।४२ 6. श्वेत, उज्ज्वल, शुभ्र—मुक्ताफलं वा स्फुटविद्रुमस्थम्—कु० १।४४ 7. सुविदित, प्रसिद्ध, —स्फुटनृत्यलीलमभवत्सुतनोः—शि० ९।७९ (प्रथित) 8. प्रसारित, विकीर्ण 9. उच्च 10. दृश्यमान, सत्य, —टम् (अव्य०) स्पष्ट रूप से, विशदतया, साफ़ तौर पर, निश्चय ही, प्रकट रूप से। सम० अर्थ (वि०) 1. बोधगम्य, स्पष्ट 2. सार्थक,—तार (वि०) जिसमें तारे रूपी रत्न जड़े हुए हों, उज्ज्वल,—फलम् (ज्या० में) 1. किसी त्रिकोण का यथार्थ क्षेत्रफल 2. किसी गणित का मूलफल,—सारः किसी ग्रह या तारे का वास्तविक आयाम,—सूर्यगतिः (स्त्री०) सूर्य की दृश्यमान या वास्तविक गति।

स्फुटनम् [स्फुट्+ल्युट्] 1. तोड़ कर खोलना, फाड़ देना, फूट जाना, फट कर खुल जाना 2. प्रसार होना, खुलना, प्रफुल्लित होना।

स्फुटिः,—टी (स्त्री०) [स्फुट्+इन्, पक्षे ङीष्] पैरों की खाल का फट जाना, बवाई, पैरों का दुःखना या सूजन।

स्फुटिका [स्फुटि+कन्+टाप्] टूटा हुआ छोटा टुकड़ा, खंड, फांक।

स्फुटित (भू० क० कृ०) [स्फुट्+क्त] 1. फटा हुआ, टूट कर खुला हुआ, खंड-खंड हुआ, तरेड़ आया हुआ 2. मुकुलित, खिला हुआ, प्रफुल्लित (जैसा कि फूल) 3. स्पष्ट किया गया, प्रकट किया गया, दिखलाया गया 4. फाड़ा हुआ, नष्ट 5. हंसी उड़ाया हुआ। सम०—चरण (वि०) जिसके पैर फैले हों, बाहर को निकले हुए चौड़े चपटे पैर वाला।

स्फुट्ट् (चुरा० उभ० स्फुट्टयति—ते) तिरस्कार करना, अपमान करना, निरादर करना।

स्फुड् (तुदा० पर० स्फुडति) ढकना।

स्फुण्ट् i (भ्वा० पर० स्फुण्टति) खोलना, फुलाना।

ii (चुरा० उभ० स्फुण्टयति—ते) मखौल करना, मज़ाक करना, उपहास करना।

स्फुण्ड् (भ्वा० आ०, चुरा० उभ० स्फुण्डते, स्फुण्डयति—ते) दे० 'स्फुण्ट्'।

स्फुत् (अव्य०) एक अनुकरण परक ध्वनि। करः आग, —कारः 'स्फुत्' ध्वनि, चटचटाने की आवाज़।

स्फुर् (तुदा० पर० स्फुरति, स्फुरित) 1. (क) थरथराना, फरकना (जैसे आंख का) शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य श० १।१५, स्फुरता वामकेनापि दाक्षिण्यमवलम्ब्यते—मा० १।८ (ख) हिलना, कांपना, लरजना, थरथराना स्फुरदधरनासापुटतया—उत्तर० १।२९, ६।३३ 2. खसोटना, संघर्ष करना, विक्षुब्ध होना हतं पृथिव्यां करुणं स्फुरन्तम्—राम० 3. कूच करना, फेंकना, आगे उछलना—पुस्फुरुर्वृषभाः परम्—भट्टि० १४।६ 4. पीछे की ओर उछलना, पलट कर आना 5. उछलना, फूट निकला, उद्गत होना, उठना—धर्मतः स्फुरति निर्मलं यशः 6. दृष्टिगोचर होने लगना, दिखाई देने लगना, प्रकट होने लगना, स्पष्ट दिखाई देना, प्रदर्शित होना —मुखात्स्फुरन्तीं को हर्तुमिच्छति हरेः परिभूयं दंष्ट्राम् —मुद्रा० १।८, रचितरुचिरभूषां दृष्टिमोषे प्रदोषे स्फुरति निरवसादां कापि राधां जगाम—गीत० ११ 7. दमक उठना, जगमगाना, चिंगारी उठना, चमकना, झलकना, टिमटिमाना—स्फुरति कुचकुम्भयोरुपरि मणिमञ्जरी रञ्जयतु तव हृदयदेशम् गीत० १०, (तया) स्फुरत्प्रभामण्डलया चकाशे कु० १।२४, रघु० ३।६०, ५।५१, मेघ० १५।२७ 8. चमकना, विशिष्टता दिखाना, प्रमुख होना पंच० १।२७ 9. अचानक मन में फुरना, अकस्मात् स्मृति में आना 10. थरथराते हुए चलना 11. खरोंचना, नष्ट करना —प्रेर० (स्फारयति—ते, स्फोरयति—ते) 1. थरथराना 2. चमकाना, जगमगाना 3. फेंकना, डाल देना, अप— चमक उठना, अभि—1. फैसला, प्रकीर्ण होना, फूलना 2. ज्ञात होना, परि ,धड़कना, फरकना, धकधक करना—तस्याः परिस्फुरितगर्भभरालसायाः—उत्तर० ३।२८, प्र—, 1. फरकना, कांपना 2. फैलना, प्रसृत होना—प्रास्फुरन्नयनम्—महा० 3. दूर-दूर तक फैलना, विख्यात होना—संस्थितस्य गुणोत्कर्षः प्रायः प्रस्फुरति स्फुटम्—सुभा०, वि—, 1. फरकना, कांपना 2. संघर्ष करना 3. चमकना, दमकना उत्तर० ४ 4. (धनुष को) तानना, टंकारना

(इसी अर्थ में प्रेर० रूप प्रयुक्त होता है)—एकोऽपि विस्फुरितमण्डलचापचक्रं कः सिन्धुराजमभिषेणयितुं समर्थः—वेणी० २।२५, कि० १४।३१।

स्फुरः [स्फुर् भावे घञ्] 1. धड़कना, थरथराना, फरकना 2. सूजन 3. ढाल।

स्फुरणम् [स्फुर+ल्युट्] 1. धड़कना, फरकना, थरथराना 2. शरीर के अंगों का (शुभाशुभसूचक) फरकना 3. फूट निकलना, उदित होना, दिखाई देने लगना 4. चमकना, दमकना, जगमगाना, झलकना, टिमटिमाना 5. मन में फुरना, अचानक स्मरण हो आना।

स्फुरत् (वि०) [स्फुर्+शतृ] धड़कने वाला, चमकने वाला। सम० - उल्का उल्कापिंड, टूटा तारा।

स्फुरित (भू० क० कृ०) [स्फुर्+क्त] 1. कंपायमान, धड़कता हुआ 2. हिला-डुला 3. चमकीला, दमकने वाला 4. अस्थिर 5. सूजा हुआ,—तम् 1. धड़कना, फरकना, थरथराहट 2. विक्षोभ या मन का संवेग।

स्फुर्च्छ् (भ्वा० पर० स्फूर्च्छति) 1. फैलना, विस्तृत होना 2. भूल जाना।

स्फुर्ज् (भ्वा० पर० स्फूर्जति) 1. गरजना, गरजनध्वनि, धमाधम होना, विस्फोट होना,—मनु० १।५३ 2. दमकना, चमकना 3. फट पड़ना, फूटना, स्फूर्जत्येव स एष सम्प्रति मम न्यक्कारभिन्नस्थितेः—महावीर० ३।४०, वि—, 1. दहाड़ना, गरजना 2. गूंजना 3. बढ़ना 4. चमकना, प्रतीत होना—अस्त्येवं जड़धामता तु भवतो यद् व्योम्नि विस्फूर्जसे—काव्य० १०।

स्फुल् (तुदा० पर० स्फुलति) 1. कांपना, धड़कना, धकधक करना 2. लपकना, अचानक आ पड़ना 3. स्वस्थचित्त होना 4. मार डालना, नष्ट करना।

स्फुलम् [स्फुल्+क] तंबू, खेमा।

स्फुलनम् [स्फुल्+ल्युट्] कांपना, थरथराना, फरकना।

स्फुलिङ्गः,—गम्, स्फुलिङ्गा [स्फुल्+इङ्गक्] आग की चिंगारी,—स्फुलिंगावस्थया बह्निरेधापेक्ष इव स्थितः—श० ७।१५, वेणी० ६।८।

स्फूर्जः [स्फुर्ज+घञ्] 1. बादलों की गड़गड़ाहट 2. इन्द्र का वज्र 3. अकस्मात् फूट निकलना या उदय होना—जैसा कि 'नर्मस्फूर्ज' में 4. नायक-नायिका का प्रथम मिलन जिसके आरंभ में आनन्द और अन्त में भय की आशंका रहती है।

स्फूर्जथुः [स्फुर्ज्+अथुच्] बिजली की गड़गड़ाहट, गरज।

स्फूर्तिः (स्त्री०) [स्फुर् (स्फुर्च्छ्)+क्तिन्] 1. धड़कन, स्फुरण, थरथराहट 2. छलांग, चौकड़ी 3. कुसुमित, प्रफुल्लित 4. प्रकटीकरण, प्रदर्शन 5. मन में फुरना 6. काव्य की उद्भावना।

स्फूर्तिमत् (वि०) [स्फूर्ति+मतुप्] 1. धड़कने वाला, थरथराने वाला, विक्षुब्ध 2. कोमल हृदय।

स्फेयत् (वि०) अतिशयेन स्फिरः, ईयसुन्, स्फादेशः 'स्फिर की म० अ०] प्रचुर तर, अपेक्षाकृत विस्तारयुक्त।

स्फेष्ठ (वि०) [स्फिर+इष्ठन्, स्फादेशः, 'स्फिर' की उ० अ०] प्रचुरतम, अत्यंत विस्तारयुक्त।

स्फोटः [स्फुट् करणे घञ्] 1. फूट निकलना, चटक कर खुलना, फट पड़ना 2. भेद खुलना जैसा कि 'नर्मस्फोट में 3. सूजन, फोड़ा, रसौली 4. शब्द के सुनने पर मन में आने वाला भाव, शब्द सुन कर मन में उत्पन्न होने वाला विचार—बुधैर्वैयाकरणैः प्रधानभूतस्फोटरूपव्यञ्जकस्य शब्दस्य ध्वनिरिति व्यवहारः कृतः—काव्य० १, सर्व० भी दे० (पाणिनीयदर्शन) 5. मीमांसकों द्वारा माना हुआ नित्य शब्द। सम०—बीजकः भिलावाँ।

स्फोटन (वि०) (स्त्री०—नी) [स्फुट्+ल्युट्] फाड़कर अलग-अलग करना, प्रकट करना, भेद खोलना, स्पष्ट करना,—नः परस्पर मिले हुए व्यंजनों का अलग-अलग उच्चारण,—नम् फाड़ना, अचानक फट पड़ना, टुकड़े टुकड़े होना, चटकना 2. अनाज फटकना 3. अंगुलियों की ग्रन्थियां चटखाना, अंगुलियाँ चटकना 4. दो मिले हुए व्यंजनों का अलग करना।

स्फोटनी [स्फोटन+ङीप्] सूराख करने का औज़ार, जमीन का बरमा, बरमा।

स्फोटा [स्फोट+टाप्] साँप का फैलाया हुआ फण।

स्फोटिका [स्फुट्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] एक पक्षीविशेष।

स्फोरणम् (दे० स्फुरणम्)।

स्फ्यम् [स्फाय्+यत्, नि० साधुः] यज्ञों में प्रयुक्त होने वाला तलवार के आकार का एक उपकरण—मनु० ५।११७, याज्ञ० १।१८४। सम०—वर्तनिः इस उपकरण द्वारा बनाया गया चिह्न (खूड)।

स्मु दे० **स्मृ**।

स्म (अव्य०) [स्मि+ड] एक प्रकार का निपात जो वर्तमान काल की क्रियाओं के साथ (या वर्तमान कालिक कृदंत शब्दों के साथ) जुड़कर भूतकाल का अर्थ देता है—भासुरको नाम सिंहः प्रतिवसति स्म—पंच० क्षीणन्ति स्म प्राणमूल्यैर्यशांसि—शि० १७।१५ 2. शब्दाधिक्य निपात (बहुधा निषेधात्मक निपात के साथ जोड़ा जाता है—भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः—श० ४।१७, मा स्म सीमन्तिनी काचिज्जनयेत्पुत्रमीदृशम्—हि० २।७।

स्मयः [स्मि+अच्] 1. आश्चर्य, अचंभा, ताज्जुब 2. अभिमान, घमंड, हेकड़पना, गर्व तस्मै स्मयावेशविवर्जिताय—रघु० ५।१९, भर्तृ० ३।३, ६९।

स्मरः [स्मृ भावे अप्] 1. प्रत्यास्मरण, याद 2. प्रेम 3. कामदेव, प्रेम का देवता,—स्मरपर्युत्सुक एव माधवः—कु० ४।२८, ४२, ४३, सम०—अङ्कुशः 1. अंगुली का नाखून 2. प्रेमी, कामातुर व्यक्ति,—अगारम्

—कूपकः,—गृहम् मन्दिरम् स्त्री की योनि, भग, —अन्ध (वि०) कामांध, प्रेममुग्ध,—आतुर—आर्त —उत्सुक (वि०) काम से पीडित, कामतप्त, कामदग्ध,—आसवः लार,—कर्मन् (नपुं०) कोई भी कामुकतापूर्ण व्यवहार, स्वैरकृत्य,—गुरुः विष्णु का विशेषण —छत्रम् भगशिश्निका, दशा शरीर की कामजन्य अवस्था (यह दस हैं), ध्वजः 1. पुरुषेन्द्रिय 2. पौराणिक मछली 3. एक वाद्ययंत्र, (जम्) भग,(—जा) चाँदनी रात,—प्रिया रति का विशेषण,—भासित (वि०) कामोद्दीप्त, —मोहः कामजन्य संज्ञाहीनता, प्रणयोन्माद, —लेखनी सारिका पक्षी,—वल्लभः 1. बसंत ऋतु का विशेषण 2. अनिरुद्ध का विशेषण,—वीथिका वेश्या, रंडी,—शासनः शिव का विशेषण, सखः चन्द्रमा, —स्तम्भः शिश्न, पुरुष का लिंग, —स्मर्यः रासभ, गधा —हरः शिव का विशेषण।

स्मरणम् [स्मृ+ल्युट्] 1. स्मृति, याद, प्रत्यास्मरण केवलं स्मरणेनैव पुनासि पुरुषं यतः—रघु० १०।३० 2. चिन्तन करना—यदि हरिस्मरणे सरसं मनः—गीत० १ 3. स्मृति, स्मरणशक्ति 4. परम्परा, परंपरागत विधि इति भृगुस्मरणात् (विप० श्रुति) 5. किसी देवता के नाम का मन में जाप करना 6. खेद से याद करना, खेद करना 7. काव्यगत प्रत्यास्मरण जो एक अलंकार माना जाता है, इसकी परिभाषा है—यथानुभवमर्थस्य दृष्टे तत्सदृशे स्मृतिः स्मरणम्—काव्य० १०। सम०—अनुग्रहः 1. कृपापूर्वक स्मरण करना, 2. स्मरण करने की कृपा—कु० ६।१९,—अपत्यतर्पकः कच्छप, कछुवा, —अयौगपद्यम् प्रत्यास्मरणों की समसामयिकता का अभाव, पदवी मृत्यु।

स्मार (वि०) [स्मर+अण्] कामदेवसंबंधी—स्मारं पुष्पमयं चापं बाणाः पुष्पमया अपि। तथाप्यनङ्गस्त्रैलोक्यं करोति वशमात्मनः —रम् [स्मृ+घञ्] प्रत्यास्मरण, स्मरणशक्ति।

स्मारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [स्मृ+णिच्+ण्वुल्, स्त्रियां टाप् इत्वं च] ध्यान दिलाने वाला, फिर याद कराने वाला,—कम् किसी की स्मृति-रक्षा के अभिप्राय से संस्थापित कोई संस्था (आधुनिक प्रयोग)।

स्मारणम् [स्मृ+णिच्+ल्युट्] मनमें लाना, याद दिलाना, स्मरण कराना।

स्मार्त (वि०) [स्मृतौ विहितः, स्मृतिं वेत्त्यधीते वा अण्] 1. स्मृतिसंबंधी, याद किया हुआ, स्मारक 2. स्मृति के भीतर 3. स्मृति पर आधारित, या स्मृति में अभिलिखित, धर्मशास्त्र में विहित—कर्मस्मार्तंविवाहाग्नौ कुर्वीत प्रत्यहं गृही—याज्ञ० १।९७, मनु० १। १०८ 4. वैध 5. धर्मशास्त्र को मानने वाला 6. गृह्य (जैसे कि अग्नि),—र्तः परंपराप्राप्त धर्म का विशेषज्ञ ब्राह्मण 2. परंपराप्राप्त धर्म का अनुयायी 3. (स्मृतियों के अनुसार चलने वाला एक) संप्रदाय।

स्मि (भ्वा० आ० स्मयते, स्मित) 1. मुस्कराना, हँसना (मंद मंद) —काकुत्स्थ ईषत्स्मयमान आस्त—भट्टि० २।११, १५।८, स्मयमानं वदनाम्बुजं स्मरामि—भामि० २।२७ 2. खिलना, फूलना पंच० १।१३६,—प्रेर० (स्माययति—ते) 1. मुस्कान पैदा करना, मुस्कराहट को जन्म देना 2. हँसना, अपहास करना 3. आश्चर्यान्वित करना (इस अर्थ में—स्मापयते)—इच्छा० (सिस्मयिषते) 1. मुस्कराने की इच्छा करना। उद्—, मुस्कराना, हँसना, वि—, 1. आश्चर्य करना, अचंभे में आना—उभयोर्न तथा लोकः प्रावीण्येन विसिष्मिये—रघु० १५।६५, भट्टि० ५।५१ 2. सराहना 3. घमंडी, अहंमन्य होना—न विस्मयेत तपसा—मनु० ४।२३६, (प्रेर०) मुस्कान पैदा करना, आश्चर्यान्वित कराना, आश्चर्य या अचंभे से भरना—विस्माययन् विस्मितमात्मवृत्तौ—रघु० २।३३, भट्टि० ५।५८, ८।४२।

स्मिट् (चुरा० उभ० स्मेटयति—ते) 1. अपमानित करना, घृणा करना, नफ़रत करना 2. प्रेम करना 3. जाना।

स्मित (भू० क० कृ०) [स्मि+क्त] 1. मुस्कानयुक्त, मुसकराता हुआ 2. फुलाया हुआ, खिला हुआ, प्रफुल्लित, —तम् मुस्कान, मंद हँसी, सस्मितम् मुस्कराहट के साथ, सविलक्षस्मितम् आदि। सम०—दृश् (वि०) मुस्कानयुक्त दृष्टि रखने वाला (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, —पूर्वम् (अव्य०) मुस्कराहट के साथ, मुस्कान से युक्त,—सप्तर्षिभिस्तान् स्मितपूर्वमाह—कु० ७।४७।

स्मील् (भ्वा० पर० स्मीलति) झपकना, आँख से संकेत करना।

स्मृ i (स्वा० पर० स्मृणोति) 1. प्रसन्न होना, संतुष्ट होना 2. प्ररक्षा करना, प्रतिरक्षा करना 3. जीवित रहना।

ii (भ्वा० पर०—महाकाव्यों में आ० भी—स्मरति, स्मृत—कर्मवा० स्मर्यते) 1. (क) याद करना, मन में रखना, प्रत्यास्मरण करना, मन में लाना, विदित होना—स्मरसि सुरसनीरां तत्र गोदावरीं वा स्मरसि च तदुपान्तेष्वावयोर्वर्तनानि—उत्तर० १।२५, (ख) मन में पुकारना, मन से याद करना, सोचना—स्मरात्मनोऽभीष्टदेवताम्—पंच० १, रघु० १५।४५ 2. किसी देवता के नाम का मन में ध्यान करना या मन में जाप करना,—यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरःशुचिः 3. स्मृति में अंकित करना या अभिलेख करना—तथा च स्मरन्ति 4. प्रकथन करना, खयाल करना, सोचना, पंच० १।३० 5. खेद के

साथ याद करना, आतुर होना, उत्कंठित होना, अभिलाषा करना (बहुधा संबंध के साथ) स्मर्तुं दिशन्ति न दिवः सुरसुन्दरीभ्यः—कि० ५।२८, कच्चिद्भर्तुः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति -मेघ० ८५, मुद्रा० ५।१४, प्रेर० (स्मारयति-ते, परन्तु अन्तिम अर्थ को प्रकट करने के लिए स्मरयति-ते) 1. याद कराना, फिर ध्यान दिलाना, मन में लाना, सोचना —अनेन मत्प्रियाभियोगेन स्मारयसि में पूर्वशिष्यां सौदामिनीम् - मा० १, कभी कभी द्विकर्मक के रूप में प्रयुक्त - अपि चन्द्रगुप्तदोषा अतिक्रान्तपार्थिवगुणान् स्मारयन्ति प्रकृतीः—मुद्रा० १, य एव दुःस्मरः कालः तमेव स्मारिता वयम् उत्तर० ६।३४ 2. सूचना देना 3. खेद के साथ स्मरण कराना, लालायित करना, अभिलाष पैदा करना—शि० ६।५६, श० ६४, इच्छा० (सुस्मूर्षते) प्रत्यास्मरण करने की इच्छा करना, अनु , याद करना, प्रत्यास्मरण करना, मन में ध्यान करना, अप—, भूल जाना, प्र—, भूल जाना, वि—, भूल जाना—मधुकर विस्मृतोस्यैनां कथम् श० ५।१, (प्रेर०) भुलाना - उत्तर० १, **सम्** , याद करना, चिन्तन करना—भग० १८।७६, मनु० ४।१४९, (प्रेर०) ध्यान दिलाना, मन में रखना, (पातालं) मामद्य संस्मरयतीव भुजंगलोकः—रत्न० १।१३।

स्मृतिः (स्त्री०) [स्मृ+क्तिन्] 1. याद, प्रत्यास्मरण, स्मरणशक्ति - अश्वत्थामा करधृतधनुः किं न यातः स्मृति ते - वेणी० ३।२१, संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः —तर्क०, स्मृत्युपस्थितौ इमौ द्वौ श्लोकौ—उत्तर० ६ 2. चिन्तन करना, मन में ध्यान करना 3. मानवधर्मशास्त्र, परम्पराप्राप्त धर्मशास्त्र, स्मृतिग्रन्थ (नीति और धर्म से संबद्ध) (विप० श्रुति) 4. धर्मसंहिता, स्मृतिग्रन्थ 5. स्मृति का मूलपाठ, धर्मसूत्र, धर्म के नियम—इति स्मृतेः 6. इच्छा, कामना 7. समझ। सम०—**अन्तरम्** दूसरा स्मृतिग्रन्थ,—**अपेत** (वि०) 1. भूला हुआ 2. शास्त्रविरुद्ध 3. (अतः) अवैध, अन्यायपूर्ण,—**उक्त** (वि०) धर्मशास्त्र में विहित, धर्मसूत्र में प्रतिपादित, **पथः,—विषयः** स्मरणशक्ति का पदार्थ, **स्मृतिपथं,—विषयं गम्** मरना,—भर्तृ० ३।३७, ३८, **प्रत्यवमर्षः** स्मृति की धारणाशक्ति, प्रत्यास्मरण की यथार्थता, **प्रबन्धः** धर्मशास्त्र की कृति,—**भ्रंशः** स्मृति का नष्ट हो जाना, याद न रहना, **रोधः** क्षणिक विस्मरण, स्मृति का नाश—श० ७।३२, —**विभ्रमः** स्मृति की गड़बड़, स्पष्ट याद न रहना —**विरुद्ध** (वि०) अवैध, **विरोधः** 1. धर्म का वैपरीत्य, अवैधता 2. दो या दो से अधिक स्मृतियों का पारस्परिक विरोध—स्मृतिविरोधं परिहरति—शारी०, —**शास्त्रम्** 1. धर्मशास्त्र, धर्मसंहिता, धर्मसूत्र 2. धार्मिक विज्ञान, **शेष** (वि०) उपरत, मृत (कोई व्यक्ति) - **शैथिल्यम्** स्मरणशक्ति की दुर्बलता,—**साध्य** (वि०) धर्मशास्त्रसे सिद्ध होने योग्य,—**हेतुः** प्रत्यास्मरण का कारण मन पर पड़ी हुई छाप, विचारसाहचर्य।

स्मेर (वि०) [स्मि+रन्] 1. मुसकराने वाला - विलोक्य वृद्धोक्षमधिष्ठितं त्वया महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति -कु० ५।७०, भामि० २।४, ३।२, मा० १०।६ 2. खिला हुआ, फूला हुआ, फैलाया हुआ, प्रफुल्लित, अधिकविकसदन्तविस्मयस्मेरतारैः - मा० १।२८, 3. घमंडी 4. व्यक्त। सम०—**विष्किरः** मोर।

स्यदः [स्यन्द्+क] चाल, तीव्रगति, तेजी से चलना, वेग।

स्यन्द् (भ्वा० आ० स्यन्दते, स्यन्न, इच्छा०—सिस्यन्दिषते, सिस्यंत्सति-ते, इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् स्यन्द् के स् को ष् हो जाता है)1. रिसना, चूना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, स्रवित होना, अर्क निकालना, बहना —अयि दलदरविन्द स्यन्दमानं मरन्दं तव किमपि लिहन्तो मञ्जु गुञ्जन्तु भृङ्गाः - भामि० १।५ 2. ढालना, उडेलना 3. भागना, दौड़ना, **अनु**—,बहना, **अभि**—, 1. रिसना, बहना 2. बारिश होना, पानी गिरना —अभिस्यन्दमानमेघमेदुरितनीलिमा गिरिः - उत्तर०२ 3. पिघलना—उत्तर०६, **नि**—,**परि** ,बह निकलना, **प्र** -,बह जाना, **वि** -,बहना—भट्टि० १।७४।

स्यन्दः [स्यन्द भावे घञ्] 1. बहना टपकना 2. तेजी से जाना, चलना 3. गाड़ी, रथ।

स्यन्दन (वि०) (स्त्री०—ना, नी) [स्यन्द्+ल्युट्] 1. जल्दी से जाने वाला, द्रुतगामी, बहने वाला 2. चुस्त, फुर्तीला, शीघ्रगामी—स्यन्दना नो च तुरगाः—कि० १५। १६,—**नः** युद्ध-रथ, गाड़ी या रथ—धर्मारण्यं प्रविशति गजः स्यन्दनालोकभीतः—श० १।३३ 2. वायु, हवा 3. एक प्रकार का वृक्ष. तिनिश, **नम्** 1. बहना, टपकना, रिसना 2. तेजी से जाना, बहना 3. पानी। सम०—**आरोहः** रथ में बैठ कर युद्ध करने वाला।

स्यन्दनिका [स्यन्दन+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्वः] थूक की फुटक।

स्यन्दिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्यन्द्+णिनि] 1. रिसने वाला, बहने वाला, टपकने वाला 2. वेग से जाने वाला 3. गतिशील।

स्यन्दिनी [स्यन्दिन्+ङीप्] 1. लार, थूक 2. वह गाय जो दो बच्चों को एक साथ जन्म दे।

स्यन्न (भू० क० कृ०) [स्यन्द+क्त] रिसा हुआ, टपका हुआ, गिरा हुआ।

स्यम् (भ्वा० पर०, चुरा० उभ० स्यमति, स्यमयति-ते) 1. शब्द करना, जोर से चिल्लाना, चीखना 2. जाना

3. विचार करना, विमर्श करना, चिंतन करना (केवल इस अर्थ में आ०) ।

स्यमन्तकः [स्यम्+अन्त्+कन्] एक मूल्यवान् मणि (कहते हैं कि यह मणि प्रतिदिन आठ स्वर्ण भार दिया करती थी, तथा सब प्रकार के संकट और अपशकुनों से रक्षा करती थी), अधिक वृत्तांत जानने के लिए दे० 'सत्रा-जित्' ।

स्यमि (मी) कः [स्यम्+इकक् ईकक्] 1. बादल 2. वामी 3. एक प्रकार का वृक्ष 4. समय ।

स्यमिका [स्यमिक+टाप्] नील ।

स्यात् (अव्य०) [अस् धातु का विधिलिङ् में, प्र० पु०, ए० व०] ऐसा हो सकता है, शायद, कदाचित् । सम० —**वादः** संभावना की उक्ति, संशयवाद (दर्शन० में), —**वादिन्** (पुं०) संशयवादी, स्याद्वाद का अनुयायी ।

स्यालः दे० 'श्याल' ।

स्यूत (भू० क० कृ) [सिव्+क्त] 1. सुई से सीया हुआ, नत्थी किया हुआ, बुना हुआ (आलं० से भी) चिन्ता-सन्ततितन्तुजालनिबिडस्यूतेव लग्ना प्रिया—मा० ५।१० 2. बींधा हुआ, —**तः** बोरा ।

स्यूतिः [सिव् भावे क्तिन्] 1. सीना, टांका लगाना 2. सुई का काम 3. थैला 4. वंशावली, कुल 5. संतति ।

स्यूनः [सिव्+नक] 1. प्रकाश की किरण 2. सूर्य 3. थैला, बोरा ।

स्यूमः [सिव्+मक्] प्रकाश किरण ।

स्योतः [=स्यूत, पृषो०] बोरा, थैला ।

स्योन (वि०) [=स्यून, पृषो०] सुन्दर, सुखद 2. शुभ, मंगलप्रद, —**नः** 1. प्रकाश की किरण 2. सूर्य 3. बोरा, —**नम्** प्रसन्नता, आनन्द ।

स्रंस् (भ्वा० आ० स्रंसते, स्रस्त) 1. गिरना, नीचे गिर पड़ना—नास्रसत् करिणां ग्रैवं त्रिपदीच्छेदिनामपि—रघु० ४।४८, गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्—भग० १।२९, भट्टि० १४।७२, १५।६१ 2. डूबना, घटना, गिर कर टुकड़े टुकड़े होना—हाहा देवि स्फुटति हृदयं स्रंसते देहबन्धः —उत्तर० ३।३८, मा० ९।२० 3. नीचे लटकना 4. जाना—**प्रेर०** (स्रंसयति-ते) 1. गिराना, खिसकना, लुढ़काना, बाधा डालना—वातोऽपि नास्रंसयदंशुकानि —रघु० ६।७५ 2. शिथिल करना, ढील देना, **वि**—, खिसकना, ढीला होना, (प्रेर०) 1. गिरना, गिरने देना,—विस्रंसयंती नवकर्णिकारम् कु० ३।६२ 2. ढीला करना, शिथिल करना ।

स्रंसः [स्रंस्+घञ्] गिरना, खिसकना ।

स्रंसनम् [स्रंस्+णिच् ल्युट्] 1. गिरना 2. गिराना, नीचे पटकना ।

स्रंसिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [स्रंस्+णिनि] 1. गिरने वाला, खिसकने वाला, लटकने वाला, ढीला होने वाला, मार्ग देने वाला—बंधे स्रंसिनि चैकहस्तयमिताः पर्याकुला मूर्धजाः—श० १।२९ 2. निर्भर, लंबमान, ढीला लटकने वाला ।

स्रंह् (भ्वा० आ० स्रंहते) विश्वास करना, भरोसा करना ।

स्रग्विन् (वि०) (स्त्री० णी) [स्रज्+विनि, म० अ० स्रजीयस्, उ० अ० स्रजिष्ठ] हार या गजरा पहने हुए,—आमुक्ताभरणः स्रग्वी हंसचिह्नदुकूलवान्—रघु० १७।२५ ।

स्रज् (स्त्री०) [सृज्यते—सृज्+क्विन्, नि] गजरा, पुष्पमाला (विशेषतः वह जो मस्तक पर धारण की जाय)—स्रजमपि शिरस्यन्धःक्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया —श० ७।२४ 2. माला, हार । सम० —**दामन्** (स्रग्दामन्) (नपुं०) माला की ग्रंथि या गांठ,—**धर** (वि०) मालाधारी गीत० १२, (—**रा**) एक छंद का नाम ।

स्रज्वा [सृज्+वा, नि०] रस्सी, डोरी, सूत्र ।

स्रदृषू (स्त्री०) अपान वायु ।

स्रम्भ् (भ्वा० आ० स्रंभते, स्रब्ध) विश्वास करना, दे० 'श्रम्', **वि** — 1. विश्वस्त होना 2. आश्वस्त होना ।

स्रवः [स्रु+अप्] 1. चूना, रिसना, बहना 2. बूंद, प्रवाह, सरिता विपुलौ स्नपयन्ती सा स्तनौ नेत्रजलस्रवैः —राम० 3. फौवारा, निर्झर ।

स्रवणम् [स्रु+ल्युट्] 1. बहना, चूना, रिसना 2. पसीना 2. मूत्र ।

स्रवत् (वि०) (स्त्री०—स्रवन्ती) [स्रु+शतृ] बहने वाला, रिसने वाला, चूने वाला । सम० **गर्भा** वह स्त्री जिसका गर्भ गिर गया हो 2. दुर्घटना के कारण गिरे हुए गर्भ वाली गाय ।

स्रवन्ती [स्रवत्+ङीप्] नदी, दरिया—वापीष्विव स्रव-न्तीषु—रघु० १७।६३ ।

स्रष्टृ (पुं०) [सृज्+तृच्] 1. बनाने वाला 2. रचने वाला 3. सृष्टिरचयिता, ब्रह्मा का विशेषण—या सृष्टिः स्रष्टुराद्या श० १।१, तत्स्रष्टुरेकान्तरम् —७।२७ 4. शिव का नाम ।

स्रस्त (भू० क० कृ०) [स्रंस्+क्त] 1. गिरा हुआ, खिसका हुआ, नीचे पड़ा हुआ—स्रस्तं शरं चापमपि स्वहस्तात्—कु० ३।५१, कनकवलयं स्रस्तं स्रस्तं मया प्रतिसार्यते श० ३।१३, कि० ५।३३, मेघ० ६३ 2. लुढ़का हुआ, नीचे लटकता हुआ—विपादस्रस्तस-र्वाङ्गी—मृच्छ० ४।८, स्रस्तांसावतिमात्रलोहिततलौ बाहू घटोत्क्षेपणात् श० १।३० 3. ढीला किया हुआ 4. च्युत, ढीला पड़ा हुआ 5. लंब, नीचे लटकता हुआ 6. अलग किया हुआ । सम० **अङ्ग** (वि०) ढीले अंगों वाला 2. मूर्छित, बेहोश ।

स्रस्तरः [स्रंस्+तरच्, किलान्नलोपः] पलंग या सोफ़ा, (विश्राम करने के लिए) बिछौना शिलातले स्रस्तरमास्तीर्य निषसाद -का०, मनु० २।२०४।

स्राक् (अव्य०) [स्रु+डाक्] फ़ुर्ती से, तेजी से।

स्रावः [स्रु+घञ्] प्रवाह, बहाव, रिसना, बूंद बूंद टपकना।

स्रावक (वि०) (स्त्री०—विका) [स्रु+ण्वुल्] बहाने वाला, उडेलने वाला, रिस कर बहने वाला,—कम् काली मिर्च।

स्रिभ् (भ्वा० पर० स्रेभति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्रिम्भ् (भ्वा० पर० स्रिम्भति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्रिव् (दिवा० पर० स्रीव्यति, स्रुत) 1. जाना, 2. सूख जाना।

स्रु (भ्वा० पर० स्रवति, स्रुत) 1. बहना, धारा निकलना, चूना, रिसना, बूंद बूंद करके गिरना, टपकना न हि निम्वात्स्रवेत्क्षौद्रम् राम० 2. उडेलना, डालना, बहने देना अलोठिष्ट च भूपृष्ठे शोणितं चाप्यसुस्रुवत् —भट्टि० १५।७६, १७।१८ 3. जाना, हिलना-डुलना 4. चूना, खिसक जाना, छीजना, नष्ट होना, कुछ फल न निकलना—स्रवतो ब्रह्म तस्यापि भिन्नभाण्डात्पयो यथा भाग०, भट्टि० ६।१८, मनु० २।७४ 5. इधर उधर फैलाना, सब दिशाओं में पहुँचाना, प्रकट हो जाना (भेद आदि)—प्रेर० (स्रावयति—ते) बहाना, उडेलना, डालना, बखेरना (रक्त आदि) न गात्रात्स्रावयेदसृक्- मनु० ४।१६९ (उपसर्गों से युक्त हो जाने पर धातु के लगभग वही अर्थ रहते हैं)।

स्रुघ्नः (पुं०) एक जनपद या ज़िले का नाम पन्थाः स्रुघ्नमुपतिष्ठते—सिद्धा०, (यह स्थान पाटलिपुत्र से कुछ दूरी पर कम से कम एक दिन यात्रा पर-स्थित था) नु० न हि देवदत्तः स्रुघ्ने संनिधीयमानस्तदहरेव पाटलिपुत्रे संनिधीयते युगपदनेकत्र वृत्तावनेकत्वप्रसङ्गात —शारी०।

स्रुघ्नी [स्रुघ्न+अच्+ङीप्] सज्जी, रेह।

स्रुच् (स्त्री०) [स्रु+क्विप्, चिट् आगमः] लकड़ी का बना एक प्रकार का चमचा जिसके द्वारा यज्ञाग्नि में घी की आहुति दी जाती है, स्रुवा (प्रायः ढाक या खदिर के वृक्षों का बना हुआ)—रघु० ११।२५, मनु० ५।११७, याज्ञ० १।१८३। सम० प्रणालिका चमचे की पनाली।

स्रुत् (वि०) [स्रु+क्विप्, तुक्] (प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त) बहने वाला, गिरने वाला, उडेलने वाला —स्वरेण तस्याममृतस्रुतेव—कु० १।४, ५, शि० ९।६८।

स्रुतिः (स्त्री०) [स्रु+क्तिन्] 1. बहना, रिसना, अर्क निकालना, टपकना, चूना—कीटक्षतिस्रुतिभिरस्रमिवोद्वमन्तः मुद्रा० ६।१३, पदं तुषारस्रुतिधौतरक्तम् —कु० १।५, रघु० १६।४४, कि० ५।४४, १६।२, क्षीरस्रुतिसुरभयः (वाताः)—मेघ० १०७ 'रसप्रवहण या स्राव' 2. रसस्रवण, राल 3. धारा।

स्रुवः,—वा [स्रु+क, स्त्रियां टाप् च] 1. यज्ञ का चमचा 2. निर्झर, झरना या प्रपातिका।

स्रेक् (भ्वा० आ०) जाना, गतिशील होना।

स्रै (भ्वा० पर० स्रायति) 1. उबालना 2. पसीना आना —दे० 'श्रै'।

स्रोतम् [स्रु+तन्] धारा, सरिता। दे० स्रोतस्।

स्रोतस् (नपुं०) [स्रु+तसि] 1. (क) सरिता, धारा प्रवाह, जलप्रवाह—पुरा यत्र स्रोतः पुलिनमधुना तत्र सरिताम्—उत्तर० २।२७, मनु० ३।१६३ (ख) धार, प्रवाहिणी,—नदत्याकाशगङ्गायाः स्रोतस्युद्दामदिग्गजे रघु० १।७८, स्रोतसेवोह्यमानस्य प्रतीपतरणं हि तत्—विक्रम० २।५ 2. सरिता, नदी, स्रोतसामस्मि जाह्नवी-भग० १०।३१ 3. लहर 4. जल 5. शरीरस्थ पोषण-नलिका 6. ज्ञानेन्द्रिय निगृह्य सर्वस्रोतांसि राम० 7. हाथी की सूंड। सम०—अञ्जनम् (स्रोतोऽञ्जनम्) सुरमा,—ईशः सागर,—रन्ध्रम् हाथी की सूंड का छिद्र, नथुना - स्रोतोरन्ध्रध्वनितसुभगं दन्तिभिः पीयमानः—मेघ० ४२, (दे० इस पर मल्लि०) ('श्रोतोरन्ध्र' भी पाठांतर), वहा नदी—स्रोतोवहां पथि निकामजलामतीत्य जातः सखे प्रणयवान् मृगतृष्णिकायाम्—श० ६।१५, कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा मालिनी—६।१६, रघु० ६।५२।

स्रोतस्यः [स्रोतस्+यत्] 1. शिव का नाम 2. चोर।

स्रोतस्वती, स्रोतस्विनी [स्रोतस्+मतुप्+(विनि) +ङीप्, वत्वम्] नदी।

स्व (सार्व० वि०) [स्वन्+ड] 1. अपना, निजी, (आत्मपरक सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त)—स्वनियोगमशून्यं कुरु—श० २, प्रजाः प्रजाः स्वा इव तन्त्रयित्वा ५।५, (इस अर्थ में प्रायः समास में प्रयुक्त—स्वपुत्र, स्वकलत्र, स्वद्रव्य) 2. अन्तर्जात, प्राकृतिक, अन्तर्हित, विशेष, अन्तर्जन्मा— सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्—मेघ० ८०, श० १।१८, स तस्य स्वो भावः प्रकृतिनियतत्वादकृतकः—उत्तर० ६।१४ 3. अपनी जाति से संबंध रखने वाला, अपनी जाति का—शूद्रैव भार्या शूद्रस्य सा च स्वा च विशः स्मृतेः —मनु० ३।१३, ५।१०४,—स्वः 1. रिश्तेदार, बांधव —पंच० २।९६, मनु० २।१०९ 2. आत्मा,—स्वः, स्वम् दौलत, सम्पत्ति—जैसा कि 'निःस्व' में। सम० अक्षपादः न्यायदर्शन पद्धति का अनुयायी,

अक्षरम् अपना निजी हस्तलेख, अधिकारः अपना निजी कर्तव्य या राज्य स्वाधिकारात्प्रमत्तः मेघ० १, स्वाधिकारभूमौ–श० ७, अधिष्ठानम् हठयोग में माने हुए छ चक्रों में से एक, अधीन (वि०) 1. अपने पर आश्रित, आत्मनिर्भर 2. स्वतंत्र 3. अपने वश में 4. अपनी निजी शक्ति में—स्वाधीना वचनीयतापि हि वरं बद्धो न सेवाञ्जलिः मृच्छ० ३।११ °कुशल (वि०) अपनी निजी शक्ति के आधार पर समृद्धिशाली स्वाधीनकुशला सिद्धिमन्तः —श० ४, °पतिका, भर्तृका वह पत्नी जिसका अपने पति पर पूरा नियन्त्रण हो, वह स्त्री जिसका पति पत्नी के वस में हो–अथ सा निर्गता बाधा राधा स्वाधीनभर्तृका निजगाद रतिक्लान्तं क्रान्तं मण्डनवाञ्छया–गीत० १२, दे० सा० द० ११२, तथा आगे,—अध्यायः 1. मन में पाठ करना, मन मन में इसके जप करना 2. वेदों का पढ़ना, वैदिक पाठ, अनुभूतिः (स्त्री०) आत्म अनुभव 2. आत्मज्ञान स्वानुभूत्येकसाराय नमः शांताय तेजसे–भर्तृ० २।१, अन्तम् 1. मन,—भामि० ४।५, महावीर ७।१७ 2. कन्दरा, —अर्थः अपना निजी हित, स्वार्थ सर्वः स्वार्थं समीहते–शि० २।६५ 2 अपना अर्थ भामि० १।७९ (यहाँ दोनों अर्थ—अभिप्रेत हैं) °अनुमानम् निजी अटकल, आगमनात्मक तर्क, अनुमानके दो मुख्य भेदों में से एक, (दूसरा है 'परार्थानुमान) °पण्डित (वि०) 1. अपने निजी कार्यों में चतुर 2. अपना हितसाधन करने में विशेषज्ञ, °पर, °परायण (वि०) अपनी स्वार्थ सिद्धि करने पर तुला हुआ, स्वार्थी, °विघातः अपने उद्देश्य की भग्नाशा, °सिद्धिः (स्त्री०) अपना निजी लक्ष्य पूरा करना, आयत्त (वि०) अपने अधीन, अपने पर आश्रित भर्तृ० २।७ —इच्छा अपनी अभिलाषा, अपनी रुचि, °मृत्युः भीष्म का विशेषण,—उदयः, किसी विशेष स्थान पर किसी स्वर्गीय पिंड या दिव्य चिह्न का उदय होना, उपधिः अचल ग्रह, कम्पनः वायु, हवा, —कर्मिन् (वि०) स्वार्थी, कार्यम् अपना निजी कार्य या स्वार्थ,—गतम् (अव्य०) मन में अपने आपको, एक ओर (नाटयभाषा में), छन्द (वि०) 1. अपनी इच्छा रखने वाला, अनियंत्रित, स्वेच्छाचारी 2. जंगली, (—दः) अपनी निजी इच्छा, छांट कल्पना या मर्जी, स्वतंत्रता, (—दम्) (अव्य०) अपनी इच्छा या मर्जी के अनुसार, स्वेच्छाचारिता के साथ, स्वेच्छा से–स्वच्छन्दं दलदरविन्द ते मरन्दं विन्दन्तो विदधतु गुञ्जितं मिलिन्दाः–भामि० १।१५. ज (वि०) आत्मजात, (—जः) 1. पुत्र, बाल 2. स्वेद, पसीना, (—जम्) रुधिर, —जनः 1. बंधु, रिश्तेदार–इतः प्रत्यादेशात् स्वजनमनुगन्तुं व्यवसिता –श० ६।८, पंच० १।५ 2. अपने निजी पुरुष, बंधुबांधव, अपनी गृहस्थी, तन्त्र (वि०) आत्माश्रित, अनियंत्रित, आत्मनिर्भर, स्वेच्छायुक्त, (—त्रः) अन्धा पुरुष,—देशः अपना देश, जन्मभूमि, °जः °बन्धु अपने देश का आदमी, धर्मः 1. अपना धर्म 2. अपना निजी कर्तव्य, –मनु० १।८८ —९१ 3. विशेषता, अपनी निजी संपत्ति, —पक्षः अपना निजी दल, परमण्डलम् अपना और शत्रु का देश, प्रकाश (वि०) 1. स्वतः स्पष्ट 2. स्वतः चमकदार,—प्रयोगात् (अव्य०) अपने प्रयत्नों के द्वारा, —भट्टः 1. अपना निजी योद्धा 2. शरीर रक्षक,—भावः 1. अपनी स्थिति 2. अन्तर्हित या मूलगुण, प्राकृतिक संविधान, अन्तर्जात या विशिष्ट स्वभाव, प्रकृति या स्वभाव, जैसा कि 'स्वभावो दुरतिक्रमः' में, इसी प्रकार कुटिल°, शुद्ध°, मृदु°- चपल° कठोर° आदि, °उक्तिः (स्त्री०) 1. स्वतः स्फूर्त प्रकटन 2. (अलं० में) एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु का यथावत् या बिल्कुल मिलता-जुलता वर्णन होता है स्वभावोक्तिस्तु डिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम् –काव्य० १०, या, नानावस्थं पदार्थानां रूपं साक्षाद्विवृण्वती—काव्या० २।८ एक सिद्धान्त (यह विश्व, मूलतत्त्वों की अपने अन्तर्जात गुणों के अनुसार, प्राकृतिक तथा आवश्यक क्रिया का परिणाम है और उसी के द्वारा इसकी स्थिति है, इसमें परमात्मा की कोई निमित्तकारणता नहीं), °सिद्धः (वि०) प्राकृतिक, स्वतःस्फूर्तः अन्तर्जात,—भूः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. शिव का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण, योनि (वि०) मातृपक्ष का संबंधी (पुं०, स्त्री०) उत्पत्तिस्थान, जो स्वयं अपना उत्पत्तिस्थान हो, (स्त्री०) कोई बहन या निकटसंबंध वाली कोई स्त्री, रसः 1. प्राकृतिक स्वाद 2. किसी का अपना (अमिश्रित) रस या काव्यगत रस, आत्मानंद,—राज् (पुं०) परमात्मा, —रूप (वि०) 1. समान, समरूप 2. सुन्दर, सुहावना,- प्रिय 3. विद्वान्, समझदार, (—पम्) 1. अपनी शक्ल या सूरत, प्राकृतिक स्थिति या दशा 2. स्वाभाविक चरित्र या रूप, यथार्थ विधान 3. प्रकृति 4. विशिष्ट उद्देश्य 5. प्रकार, किस्म, जाति, °असिद्धिः (स्त्री०) तीन प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, वंश (वि०) 1. स्वनियंत्रित 2. स्वतन्त्र, —वासिनी विवाहित या अविवाहित स्त्री जो वयस्क होने पर भी अपने पिता के घर ही रहती रहे, —वृत्ति (वि०) स्वावलम्बी, अपने प्रयत्नों से ही जीवनयापन करने वाला,—संवृत्त आत्मरक्षित, स्वरक्षित,—संस्था अपने विचारों पर डटे रहना 2. आत्मस्थिरता 3. आत्मलीनता,—स्थ (वि०) 1. अपने पर डटे रहना 2. स्वाश्रित, स्वावलम्बी, विश्वस्त, दृढ़,

पक्का 3. स्वतन्त्र 4. अच्छा करने वाला, स्वस्थ, नीरोग, आराम देना, सुखद स्वस्थ एवास्मि—मा० ४, स्वस्थे को वा न पण्डितः—पंच० १।१२७, दे० 'अस्वस्थ' भी 5. सन्तुष्ट, प्रसन्न, (–स्थम्) (अव्य०) आराम से, सुख पूर्वक, शान्ति से, स्थानम् अपनी जन्मभूमि, अपना निजी आवास स्थल—नक्रः स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति—पंच० ३।४६,—हस्त अपना निजी हाथ या लिखाई, आत्मलेख, दे० 'हस्त' के अन्तर्गत,—हस्तिका कुल्हाड़ी,–हित (वि०) अपने लिए हितकर, (–तम्) अपना निजी लाभ, अपना कल्याण ।

स्वक (वि) [स्व+अकच्] अपना निजी, अपना ।

स्वकीय (वि०) [स्वस्य इदम्–स्व+छ, कुक् आगमः] 1. अपना निजी, अपना 2. अपने परिवार का ।

स्वङ्ग् (भ्वा० पर० स्वङ्गति) जाना, हिलना-जुलना ।

स्वङ्गः [स्वङ्ग्+घञ्] आलिंगन ।

स्वच्छ (वि०) [सुष्ठु अच्छः–प्रा० स०] 1. अत्यन्त साफ, पारदर्शी, विशुद्ध, उज्ज्वल, अल्पपारभासी –स्वच्छस्फटिक, स्वच्छ मुक्ताफलम्–आदि 2. सफेद 3. सुन्दर 4. स्वस्थ, च्छः स्फटिक,—च्छम् मोती । सम०—पत्रम् तालक, सेलखड़ी,—वालुकम् विशुद्ध खड़िया,—मणिः स्फटिक ।

स्वञ्ज् (भ्वा० आ० स्वजते. इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् स्वञ्ज् के स् को ष् हो जाता है) 1. आलिंगन करना, कौली भरना—कथाचिदाचुम्ब्य चिराय सस्वजे—भामि० २।१७८, पर्यश्रुरस्वजत मूर्ध्नि चोपजघ्रौ—रघु० १३।७० 2. घेरना, मरोड़ना, परि—, आलिंगन करना—वत्से परिष्वजस्व मां सखीजनं च श० ४, भामि० २।१७८ ।

स्वठ् (चुरा० उभ० स्व (स्वा) ठयति–ते) 1. जाना 2. समाप्त करना ।

स्वतस् (अव्य०) [स्व+तसिल्] अपने आप, स्वयम् (निजवाचक के अर्थ में प्रयुक्त) ।

स्वत्वम् [स्व+त्व] 1. अपनी विद्यमानता 2. स्वामित्व, स्वामित्व के अधिकार ।

स्वद् i (भ्वा० आ० स्वदते, स्वदित) 1. पसन्द किया जाना, मधुर होना, स्वाद में रुचिकर होना (संप्र० के साथ)—यज्ञदत्ताय स्वदतेऽपूपः—काशिका, अपां हि तृप्ताय न वारिधारा स्वादुः सुगन्धिः स्वदते तुषारा —नै० ३।९३, सस्वदे मुखसुरं प्रमदाभ्यः शि० १०।२३ 2. स्वाद लेना, रस लेना, खाना 3. प्रसन्न करना 4. मधुर करना ।

ii (चुरा० उभ० या प्रेर० स्वादयति–ते) 1. चखाना, खाना 2. रस लेना 3. मधुर करना, आ 1. चखना, खाना (अलं० से भी)—पपावनास्वादितपूर्वमाशुगः—रघु० ३।५४ 2. उपभोग करना —मेघ० ८७ ।

स्वदनम् [स्वद्+ल्युट्] चखना, खाना ।

स्वदित (भू० क० कृ०) [स्वद्+क्त] चखा गया, खाया गया, तम् उद्‌गार विशेष जो श्राद्ध में पितरों को पिंडदान करने के पश्चात् उच्चारित होता है और जिसका अर्थ है भगवान् करें. यह पदार्थ आपको अच्छा लगे, स्वादिष्ट लगे'—मनु० ३।२५१, २५४ ।

स्वधा [स्वद्+आ, पृषो० दस्य धः] 1. अपना निजी स्वभाव या निश्चय, स्वतः स्फूर्तता 2. मृत पूर्वपुरुषों —पितरों—को प्रस्तुत की गई हवि की आहुति —स्वधासंग्रहतत्पराः रघु० १।६६, मनु० ९।१४२, याज्ञ० १।१०२ 3. मूर्त पितरों को प्रस्तुत किया भोजन 4. अन्न या आहुति 5. माया या सांसारिक भ्रम, अव्य० पितरों के सम्मुख आहुति प्रस्तुत करते समय उच्चरित उद्‌गार, (संप्र० के साथ) पितृभ्यः स्वधा सिद्धा० । सम० कर (वि०) पितरों के निमित्त आहुति देने वाला, कारः 1. 'स्वधा' नाम का शब्द—पूतं हि तद्‌गृहं यत्र स्वधाकारः प्रवर्तते, प्रियः अग्नि, आग,—भुज् (पुं०) 1. मृत या देवत्व को प्राप्त पूर्वपुरुष 2. देवता, देव ।

स्वधितिः (पुं०, स्त्री०) स्वधिती [स्वधा+क्तिच्, स्त्रियां ङीष् च] कुल्हाड़ी ।

स्वन् (भ्वा० पर० स्वनति) 1. शब्द करना, कोलाहल करना,–पूर्णाः पेराश्च सस्वनुः—भट्टि० १४।३, वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः अमर० 2. गाना, प्रेर० (स्वनयति–ते) 1. गुंजाना 2. शब्द करना 3. अलंकृत करना (इस अर्थ में 'स्वानयति') ।

स्वनः [स्वन्+अप्] शब्द, कोलाहल—शिवाघोरस्वनां पश्चाद् बुबुधे विकृतेति ताम्—रघु० १२।३९, शंखस्वनः आदि । सम० उत्साहः गेंडा ।

स्वनिः [स्वन्+इन्] ध्वनि, कोलाहल ।

स्वनिक (वि०) [स्वन+ठक्] ध्वनि करने वाला—जैसा कि 'पाणिस्वनिकः' (जो अपने हाथों से तालियाँ बजाता है) में ।

स्वनित (भू० क० कृ०) [स्वन्+क्त] ध्वनित, शब्दायमान, कोलाहल करने वाला, तम् बिजली का शोर, बिजली की गड़गड़ाहट, तु० 'स्तनित' ।

स्वप् (अदा० पर० स्वपिति, सुप्त, भावबा० सुप्यते, इच्छा० सुषुप्सति) (कभी-कभी भ्वा० उभ० स्वपति–ते) सोना, नींद आ जाना, सोने जाना—असंजातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गोगंडिः—काव्य० १०, इतः स्वपिति केशवः भर्तृ० २।७६ 2. तकिये का सहारा लेना, विश्राम करना, लेटना, आराम करना 3. तल्लीन होना—भामि० ४।१९, प्रेर० (स्वापयति–ते) सुलाना

सोने के लिए थपथपाना, अव—,नि,—प्र,—सम् सोना, लेटना—प्रसुप्तलक्षणः मा० ७, कु० २।४२, रघु० ११।४।

स्वप्नः [स्वप्+नक्] 1. सोना, नींद अकाले बोधितो भ्रात्रा प्रियस्वप्नो वृथा भवान्—रघु० १२।८१, ७।६१, १२।७० 2. स्वप्न, ख्वाव, सुपना आना —स्वप्नेन्द्रजालसदृशः खलु जीवलोकः—शान्ति० २।३, स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु—श० ६।९, रघु० १०।६० 3. शिथिलता, आलस्य, तन्द्रा। सम०—**अवस्था** सुपने की दशा,—**उपम** (वि०) 1. सुपने से मिलता जुलता 2. अवास्तविक या (भ्रमात्मक स्वप्न की भांति) —**कर,—कृत्** (वि०) निद्रा लाने वाला, निद्राजनक, आरवापक, **गृहम्,—निकेतनम्** सोने का कमरा, शयनकक्ष,—**दोषः** स्वप्नावस्था में होने वाला शुक्रपात, —**धीगम्य** (वि०) निद्रा जैसी अवस्था में केवल बुद्धि द्वारा अनुभूत होने वाला—मनु० १२।१२२,—**प्रपञ्चः** निद्रावस्था में भ्रम, स्वप्न में प्रकट होने वाला संसार, —**विचारः** स्वप्नों की व्याख्या, **शील** (वि०) जिसे नींद आ रही हो, निद्रालु, ऊंघने वाला,—**सृष्टिः** (स्त्री०) स्वप्नों की रचना, निद्रावस्था में भ्रम।

स्वप्नज् (वि०) [स्वप्+नजिङ्] निद्रालु, सोने वाला, ऊंघने वाला।

स्वयम् (अव्य०) [सु+अय्+अम्] 1. आप, अपने आप (निजवाचकता के रूप में प्रयुक्त तथा प्रत्येक पुरुष में व्यवहार्य - यथा मैं स्वयं, हम स्वयं, वह स्वयं–आदि, कभी कभी बल देने के लिए और सर्वनामों के साथ प्रयुक्त) विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसांप्रतम्—कु० २।५५ यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्–सुभा०, रघु० ११।७, २।५६, मनु० ५।३९ 2. आत्मस्फूर्त अपने आप, अनायास, बिना किसी कष्ट या चेष्टा के, स्वयमेवोत्पद्यन्त एवंविधाः कुलपांशवो निःस्नेहाः पशवः —का०। सम०—**अर्जित** (वि०) आत्मार्जित,—**उक्तिः** (स्त्री०) 1. ऐच्छिक प्रकथन 2. सूचना, अभिसाक्ष्य (विधि में),—**ग्रहः** बलात् ग्रहण कर लेना,—**ग्राह** (वि०) ऐच्छिक, स्वयं चुन लेने वाला, (—**हः**) स्वयं चुन लेना, आत्मचुनाव—कु० २।७, गा० ६।७,—**जात** (वि०) जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो,—**दत्त** (वि०) अपने आप दिया हुआ, (—**त्तः**) वह लड़का जिसने अपने आपको दत्तक पुत्र बनने के लिए दत्तक-ग्राही माता पिता को दे दिया, हिन्दू धर्म शास्त्र में वर्णित बारह पुत्रों में से एक,—**भुः** ब्रह्मा का नाम —शम्भुस्वयम्भुहरयो हरिणेक्षणानां येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः भर्तृ० १।१,—**भुवः** 1. प्रथम मनु 2. ब्रह्मा का नाम 3. शिव का नाम,—**भू** (वि०) आप ही आप उत्पन्न होने वाला, (—**भूः**) 1. ब्रह्मा का नाम 2. विष्णु का नाम 3. शिव का नाम 4. मूर्त 'काल' का नाम 5. कामदेव का नाम, **वरः** अपनी छांट, (दुलहिन द्वारा अपने वर का) अपने आप चुनाव, इच्छानुरूप विवाह,—**वरा** वह कन्या जो अपने पति का आप चुनाव करती है।

स्वर् (चुरा० उभ० स्वरयति-ते) दोष निकालना, कलंक लगाना, बुरा भला कहना, निंदा करना।

स्वर् (अव्य०) [स्वृ+विच्] 1. स्वर्ग, वैकुण्ठ जैसा कि 'स्वर्लोक, स्वर्वेश्या में 2. इन्द्र का स्वर्ग और मृत्यु के पश्चात् पुण्यात्माओं का अस्थायी आवास 3. आकाश, अन्तरिक्ष 4. सूर्य और ध्रुवतारे के बीच का रिक्त स्थान 5. तीनों व्याहृतियों में तीसरी जिसका उच्चारण प्रत्येक ब्राह्मण अपनी दैनिक प्रार्थना में करता है, दे० 'व्याहृति'। सम० **आपगा** गंगा 1. गंगा की स्वर्ग में बहने वाली धारा, मंदाकिनी 2. आकाशगंगा, छायापथ,—**गतिः** (स्त्री०)-**गमनम्** 1. स्वर्ग में जाना, भावी आनंद 2. मृत्युः, **तरुः** (स्वस्तरुः) स्वर्ग का एक वृक्ष, **दृश्** (पुं०) 1. इन्द्र का विशेषण 2. अग्नि का विशेषण 3. सोम का विशेषण,—**नदी** (स्वर्णदी) आकाशगंगा, **मानवः** एक प्रकार का मूल्यवान् पत्थर,—**भानुः** राहु का नाम—तुल्येऽपराधे स्वर्भानुर्भानुमन्तं चिरेण यत्। हिमांशुमाशु ग्रसते तन्म्रदिम्नः स्फुटं फलम्—शि० २।४९, **सुन्दरः** सूर्य, —**मध्यम्** आकाश का मध्य बिन्दु, ऊर्ध्वबिंदु,—**लोकः** दिव्य जगत्, स्वर्गलोक, **वधूः** (स्त्री०) दिव्य कन्या, अप्सरा, **वापी** गंगा,—**वेश्या** स्वर्ग की गणिका, दिव्य परी, अप्सरा,—**वैद्य** (पुं०, द्वि० व०) दो अश्विनीकुमारों का विशेषण, **षा** 1. सोम का विशेषण 2. इन्द्र के वज्र का विशेषण,—**सिन्धु**=स्वर्गंगा।

स्वरः [स्वर्+अच्, स्वृ+अप् वा] 1. शब्द, कोलाहल 2. आवाज़—स्वरेण तस्याममृतस्रुतेव प्रजल्पितायाम-भिजातवाचि कु० १।४५ 3. संगीत के सुर, ध्वनि, लय (सुर सात हैं निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यम-धैवताः। पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः —अमर०) 4. सात की संख्या 5. स्वर अक्षर 6. स्वराघात (यह गिनती में तीन हैं उदात्त, अनुदात्त और स्वरित) 7. श्वासवायु 8. खुर्राटे भरना। सम० **अंशः** आधा या चौथाई स्वर (संगीत० में), —**अन्तरम्** दो स्वरों के उच्चारण के बीच का अवकाश, क्रमभंग,—**उदय** (वि०) जिसके बाद स्वर हो, —**उपध** (वि०) जिसके पूर्व स्वर हो, **ग्रामः** सरगम, स्वरसप्तक, स्वरों का समूह,—**बद्ध** (वि०) ताल स्वर में बंधा हुआ गाना, **भक्तिः** (स्त्री०) र् और ल् के उच्चारण में अन्तर्निविष्ट स्वर की ध्वनि जब इन अक्षरों के पश्चात् कोई ऊष्मवर्ण या कोई अकेला

व्यंजन हो (उदा० वर्प का उच्चारण 'वरिष' है), —भङ्गः 1. उच्चारण की अस्पष्टता, टूटा हुआ उच्चारण, आवाज़ का बैठ जाना,—मण्डलिका एक प्रकार की वीणा, —लासिका बांसुरी, मुरली,—शून्य (वि०) संगीतसुरों से रहित, बेसुरा, संगीत के ताल सुरों से हीन,—संयोगः 1. स्वरों का मिल जाना 2. ध्वनि या स्वरों का मेल—अर्थात् आवाज़—अन्य एवंच स्वरसंयोगः—मृच्छ० १।३, उत्तर० ३, पण्डित कौशिक्या इव स्वरसंयोगः श्रूयते—मालवि० ५, —सङ्क्रमः 1. सुरों के उतार-चढ़ाव का क्रम तं तस्य स्वरसङ्क्रमं मृदुगिरः श्लिष्टं च तन्त्रीस्वनम्—मृच्छ० ३।५ 2. सरगम, —सन्धिः स्वरों का मेल,—सामन् (पुं०, ब० व०) यज्ञीय सत्र में विशेष दिन के विशेषण।

स्वरवत् (वि०) [स्वर+मतुप्] 1. ध्वनियुक्त, निनादी 2. सुरीला 3. स्वरविपयक 4. स्वराघात से युक्त, सस्वर।

स्वरित (वि०) [स्वरो जातोऽस्य इतच्] 1. ध्वनियुक्त 2. ध्वनित, स्वर के रूप में बोला गया 3. उच्चरित 4. स्वरित उच्चारणचिह्न से युक्त,—तः उदात्त (ऊँचे) और अनुदात्त (नीचे) के बीच का स्वर समाहारः स्वरितः—पा० १।२।३१, दे० इस पर सिद्धा०।

स्वरुः [स्वृ+उ] 1. धूप 2. यज्ञीयस्तम्भ का एक अंश 3. यज्ञ 4. वज्र 5. बाण।

स्वरुस् (पुं०) [स्वृ+उस्] वज्र।

स्वर्गः [स्वरितं गीयते—गै+क, सु+ऋज्+घञ्] वैकुंठ, इन्द्र का स्वर्ग, बहिश्त—अहो स्वर्गादधिकतरं निर्वृतिस्थानम्—श० ७। सम०—आपगा स्वर्गीय गंगा, —ओकस् (पुं०) सुर, देव, —गिरिः स्वर्गीय पहाड़, सुमेरु,—द, —प्रद (वि०) स्वर्ग में प्रवेश दिलाने वाला,—द्वारम् स्वर्ग का दरवाजा, वैकुंठ का दरवाजा स्वर्ग में प्रवेश स्वर्गद्वारकपाटपाटनपटुर्धर्मोऽपि नोपार्जितः—भर्तृ० ३।१०, —पतिः, —भर्तृ (पुं०) इन्द्र,—लोकः 1. दिव्य प्रवेश 2. वैकुंठ,—वधूः, —स्त्री (स्त्री०) दिव्य बाला, स्वर्ग की परी, अप्सरा—स्वर्गस्त्रीणां परिष्वङ्गः कथं मर्त्येन लभ्यते,—साधनम् स्वर्ग प्राप्त करने का उपाय।

स्वर्गिन् (पुं०) [स्वर्गोऽस्त्यस्य भोग्यत्वेन इनि] 1. सुर, देव, अमर, त्वमपि विततयज्ञः स्वर्गिणः प्रीणयालम् श० ७।३४, मेघ० ३० 2. मृतक, मरा हुआ पुरुष।

स्वर्गीय, स्वर्ग्य (वि०) [स्वर्ग+छ, यत् वा] 1. स्वर्ग का, दिव्य, दैवी 2. स्वर्ग को ले जाने वाला, स्वर्ग में प्रवेश दिलाने वाला मनु० ४।१३, ५।४८।

स्वर्णम् [सुष्ठु अर्णो वर्णो यस्य] 1. सोना 2. सोने का सिक्का। सम० —अरिः गंधक,—कणः, —कणिका सोने के दाने, —काय (वि०) सुनहरी शरीर वाला, (—यः) गरुड़ का नाम, —कारः सुनार,—गैरिकम् गेरु, लाल खड़िया, —चूडः 1. नीलकंठ 2. मुर्गा,—जम् रांगा, —दीधितिः अग्नि, —पक्षः गरुड़, —पाठकः सुहागा, —पुष्पः चम्पक वृक्ष,—बंधः सोना गिरवी रखना, —भृङ्गारः स्वर्णपात्र, —माक्षिकम् सोनामक्खी नाम का एक खनिज पदार्थ, —रेखा, —लेखा सोने की लकीर, —वणिज् (पुं०) 1. सोने का व्यापारी 2. सर्राफ़, —वर्णा हल्दी।

स्वर्द् (भ्वा० आ० स्वर्दते) चखना, स्वाद लेना।

स्वल् (भ्वा० पर० स्वलति) जाना, हिलना-जुलना।

स्वल्प (वि०) [सुष्ठु अल्पं प्रा० स०, म० अ० स्वल्पीयस्, तथा उ० अ० स्वल्पिष्ठ] 1. बहुत छोटा या थोड़ा, सूक्ष्म, निरर्थक 2. बहुत कम। सम०—आहारः (वि०) बहुत कम खाने वाला, संयमी, मिताहारी, —कङ्कुः चील का एक भेद —बल (वि०) अत्यंत दुर्बल या कमज़ोर,—विषयः 1. नगण्य बात 2. छोटा भाग+व्ययः अत्यन्त कम खर्च, दरिद्रता,—व्रीड (वि०) बहुत कम लज्जा वाला, बेशर्म, निर्लज्ज, —शरीर (वि०) बहुत छोटे क़द का, ठिगना।

स्वल्पक (वि०) [स्वल्प+कन्] बहुत थोड़ा, बहुत छोटा, बहुत कम।

स्वल्पीयस् (वि०) [स्वल्प+ईयसुन् 'स्वल्प' की म० अ०] बहुत कम, अपेक्षाकृत छोटा, अपेक्षाकृत सूक्ष्म।

स्वल्पिष्ठ (वि०) [स्वल्प+इष्ठन्, 'स्वल्प' की उ० अ०] अत्यन्त कम, सबसे छोटा, अत्यन्त सूक्ष्म।

स्वशुरः [=श्वशुरः] अपने पति या पत्नी का पिता, श्वसुर, तु० 'श्वशुर'।

स्वसृ (स्त्री०) [सू+अस्+ऋन्] बहन, भगिनी —स्वसारमादाय विदर्भनाथः पुरप्रवेशाभिमुखो बभूव —रघु० ७।१,२०।

स्वसृत् (वि०) [स्व+सु+क्विप्] अपनी इच्छानुसार जाने या चलने-फिरने वाला।

स्वस्क् (भ्वा० आ० स्वस्कते) दे० 'ष्वक्'।

स्वस्ति (अव्य०) [सु+अस्+क्तिच्, वा अस्तीति विभक्तिरूपकम् अव्ययम्, प्रा० स०] अव्यय, इसका अर्थ है 'क्षेम, कल्याण हो' आशीर्वाद, जय जयकार, जाते समय की नमस्ते (संप्र० के साथ) स्वस्ति भवते श० २, स्वस्त्यस्तु ते रघु० ५।१७ (प्रायः अक्षरारम्भ में प्रयुक्त)। सम०—अयनम् 1. समृद्धि के दिलाने वाला उपाय 2. मन्त्र पाठ या प्रायश्चित्त द्वारा पाप को हटाना 3. दान स्वीकार करने के बाद ब्राह्मण का धन्यवाद करना—प्रास्थानिकं स्वस्त्ययनं प्रयुज्य—रघु० २।७०, —दः,—भावः शिव का विशे-

पण, -मुख: 1. पत्र 2. ब्राह्मण 3. बन्दी, स्तुति पाठक, —वाचनम्, --वाचनकम्, · वाचनिकम् 1. यज्ञ या कोई मांगलिक कार्य आरम्भ करते समय किया जाने वाला एक धार्मिक कृत्य 2. फूलों द्वारा आशीर्वाद या वधाई देने का विशेष कर्म, · वाच्यम् वधाई, आशीर्वाद ।

स्वस्तिक: [स्वस्ति शुभाय हितं क] 1. एक मंगल चिह्न जो किसी शरीर या पदार्थ पर बनाया जाता है (卐) 2. कोई मंगलद्रव्य 3. चार मार्गों का मिलना 4. भुजाओं को व्यत्यस्त रूप से छाती पर रखना जिससे कि एक व्यत्यस्त (×) चिह्न बने — स्तनविनिहितहस्तस्वस्तिकाभिर्वधूभि: - मा० ४।१०, शि० १०।४३ 5. एक विशेष शक्ल का महल 6. चौराहे से बना हुआ एक त्रिभुजाकार चिह्न 7. एक तरह का पिष्टक 8. विषयी, व्यभिचारी 9. लहसुन, - क:, --कम् 1. एक विशेष रूप का मन्दिर या भवन जिसके सामने चबूतरा बना हो 2. एक योगासन ।

स्वस्रीय:, स्वस्रेय: [स्वसृ+छ, ढक् वा] भानजा, बहन का पुत्र ।

स्वस्रीया, स्वस्रेयी [स्वस्रीय+टाप्, स्वस्रेय+ङीप्] भानजी, बहन की पुत्री ।

स्वागतम् [सु+आ+गम्+क्त] शुभागमन, सुखद अगवानी (मुख्यत: संप्र० में रक्खे हुए व्यक्ति को अभिवादन करने में प्रयुक्त) · स्वागतं देव्यै —मालवि० १, (तस्मै) प्रीत: प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार —मेघ० ४, स्वागतं स्वानधीकारान् प्रभावैरवलम्ब्य व: । युगपद् युगबाहुभ्य: प्राप्तेभ्य: प्राज्यविक्रमा: —कु० २।१८ ।

स्वाङ्किक: [स्वाङ्क+ठक्] ढोल बजाने वाला ।

स्वाच्छन्द्यम् [स्वच्छन्दस्य भाव: ष्यञ्] अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने की शक्ति, स्वच्छंदता, स्वतन्त्रता —कन्याप्रदानं स्वाच्छन्द्यादासुरो धर्म उच्यते मनु० ३।३१ (**स्वाच्छन्द्येन, स्वाच्छन्द्यत:** जानबूझ कर, स्वेच्छा से) ।

स्वातन्त्र्यम् [स्वतन्त्र+ष्यञ्] इच्छाशक्ति की स्वतन्त्रता, स्वाधीनता,—न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति · मनु० ९।३, न स्वातन्त्र्यं क्वचित् स्त्रिया: · याज्ञ० १।८५ ।

स्वाति:,—ती (स्त्री०) [स्व+अत्+इन्, पक्षे ङीप्] 1. सूर्य की एक पत्नी 2. तलवार 3. शुभ नक्षत्रपुंज 4. पन्द्रहवां नक्षत्र जो शुभ माना गया है स्वात्यां सागरशुक्तिसम्पुटगतं सन्मौक्तिकं जायते—भर्तृ० २।६७। सम० योग: स्वाती का (चन्द्रमा के साथ) योग ।

स्वाद् दे० 'स्वद्' ।

स्वाद:, स्वादनम् [स्वद् (स्वाद्)+घञ्, ल्युट्, वा] 1. मज़ा, रस 2. चखना, खाना, पीना 3. पसन्द करना, मज़े लेना, उपभोग करना 4. मधुर करना ।

स्वादिमन् (पुं०) [स्वाद+इमनिच्] सुस्वादुता, माधुर्य ।

स्वादिष्ठ (वि०) [स्वादु+इष्ठन्, 'स्वादु' की उ० अ०] अत्यन्त मधुर, सबसे मीठा · किं स्वादिष्ठं जगत्यस्मिन् सदा सद्भि: समागम: ।

स्वादीयस् (वि०) [स्वादु+ईयसुन्, 'स्वादु' की म० अ०] अपेक्षाकृत अधिक मीठा, बहुत मधुर—काव्यामृतरसास्वाद: स्वादीयानमृतादपि ।

स्वादु (वि०) (स्त्री०—दु,—द्वी) [स्वद्+उण्, म० अ० स्वादीयस्, उ० अ० स्वादिष्ठ] 1. मधुर, सुहावना, चखने में अच्छा, जायकेदार, मज़ेदार, रुचिकर, मीठा —तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं स्वादु सुरभि —भर्तृ० ३।९२, मेघ० २४ 2. सुखद, रुचिकर, सुन्दर, प्रिय, मनोहर (पुं०) मधुररस, स्वाद की मिठास, मज़ा 2. शीरा, राब, (नपुं०) माधुर्य, मज़ा, रस —कवि: करोति काव्यानि स्वादु जानाति पण्डित: —सुभा०,—दु: (स्त्री०) अंगूर । सम०— अन्नम् मीठा या चुना हुआ भोजन, स्वादिष्ट खाद्य, पक्वान्न, —अम्ल: अनार का पेड़,—खण्ड: 1. किसी मीठी चीज़ का टुकड़ा 2. गुड़, राब,—फलम् बेर, बदर, -मूलम् गाजर, -रसा 1. द्राक्षा 2. शतावरी पौधा 3. काकोली मूल 4. मदिरा 5. अंगूर, —शुद्धम् 1. सेंधा नमक 2. समुद्री नमक ।

स्वाद्वी [स्वादु+ङीप्] द्राक्षा, अंगूर ।

स्वान: [स्वन्+घञ्] ध्वनि, कोलाहल ।

स्वाप: [स्वप्+घञ्] 1. निद्रा, सोना · उत्तर० १।३७, 2. सुपना आना, स्वप्न 3. निद्रालुता, ऊंघना, आलस्य 4. लकवा, कम्पवायु, सुन्न हो जाना 5. किसी एक नाड़ी पर दबाव से अस्थायी या आंशिक असंवेद्यता, जड़ता ।

स्वापतेयम् [स्वपतेरागतं ढञ्] धन, दौलत, सम्पत्ति—स्वापतेयकृते मर्त्या: किं किं नाम न कुर्वते पंच० २।१५६, शि० १४।९ ।

स्वापद: दे० 'श्वापद' ।

स्वाभाविक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वभावादागत:—ठञ्] अपनी निजी प्रकृति से संबद्ध, अन्तर्जात, अन्तर्हित, विशेष, प्राकृतिक— स्वाभाविकं विनीतत्वं तेषां विनयकर्मणा । मुमूर्च्छ सहजं तेजो हविषेव हविर्भुजाम् रघु० १०।७९, ५।६९, कु० ६।७१, का: (पुं०, ब० व०) बौद्धों का एक सम्प्रदाय जो सभी वस्तुओं को प्रकृति के नियमानुसार बनी मानते हैं ।

स्वामिता,—त्वम् [स्वामि+तल्+टाप्, त्व वा] 1. मालिकपना, प्रभुत्व, मिल्कियत के अधिकार 2. एकायत्तता, प्रभुता ।

स्वामिन् (वि०) (स्त्री० —नी)[स्व-अस्त्यर्थे-मिनि, दीर्घ:] एकायत्त अधिकारों से युक्त —(पुं०) 1. स्वामी;

मालिक, 2. प्रभु, स्वत्वाधिकारी --रघुस्वामिनः सच्चरित्रं--विक्रमांक० १८।१०७ 3. प्रभु, राजा, नरेश 4. पति 5. गुरु 6. विद्वान् ब्राह्मण, अत्यन्त ऊंचे दर्जे का धार्मिक पुरुष या संन्यासी (इस अर्थ में यह शब्द प्रायः नाम के साथ जुड़ता है) 7. कार्तिकेय का विशेषण 8. विष्णु का विशेषण 9. शिव का विशेषण 10. वात्स्यायन मुनि का विशेषण 11. गरुड़ का विशेषण। सम० उपकारकः घोड़ा, - कार्यम् किसी राजा या प्रभु का कार्य, - पाल (पुं०, द्वि० व०) (पशुओं का) मालिक और रखवाला—मनु० ८।५, —भावः मालिक या प्रभु की अवस्था, मालिकपना, —वात्सल्यम् पति या स्वामी के लिए स्नेह,—सद्भावः 1. मालिक या प्रभु की सत्ता 2. मालिक या प्रभु की अच्छाई,—सेवा 1. स्वामी या मालिक की सेवा, टहल 2. पति का आदर, सम्मान।

स्वाम्यम् [स्वामिन्+ष्यञ्] 1. स्वामित्व, प्रभुता, मालिकपना 2. संपत्ति का अधिकार या हक़ 3. राज्य, सर्वोपरिता, शासन।

स्वायंभुव (वि०) (स्त्री०—वी) [स्वयंभू+अण्] 1. ब्रह्मा से सम्बन्ध रखने वाला—कु० २।१ 2. ब्रह्मा से उत्पन्न, --वः प्रथम मनु का विशेषण (क्योंकि वह ब्रह्मा का पुत्र था)।

स्वारसिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वरस+ठक्] अन्तर्वर्ती रस या माधुर्य से ओतप्रोत (काव्यरस)।

स्वारस्यम् [स्वरस+ष्यञ्] 1. स्वाभाविक रस या श्रेष्ठता का रखने वाला 2. लालित्य, योग्यता।

स्वाराज् (पुं०) [स्व+राज्+क्विप्] इन्द्र का विशेषण।

स्वाराज्यम् [स्वराज+ष्यञ्] 1. स्वर्ग का राज्य, इन्द्र का स्वर्ग 2. स्वप्रकाशमान ब्रह्मा से तादात्म्य।

स्वारोचिषः, स्वारोचिस्(पुं०)[स्वरोचिषः अपत्यम्+अण्] द्वितीय मनु का नाम—दे० 'मनु' के अन्तर्गत।

स्वालक्षण्यम् [स्वलक्षण+ष्यञ्] विशेष लक्षण, स्वाभाविक अवस्था, खासियत, मनु ९।१९।

स्वाल्प (वि०) (स्त्री०—ल्पी) [स्वल्प+अण्] 1. थोड़ा, छोटा 2. कुछ, कम,—ल्पम् 1. थोड़ापन, छुटपन 2. संख्या का छोटापन।

स्वास्थ्यम् [स्वस्थ+ष्यञ्] 1. आत्मनिर्भरता, स्वाश्रयता 2. साहस, कृतसंकल्पता, दिलेरी, दृढ़ता 3. तन्दुरुस्ती, नीरोगता 4. समृद्धि, कुशलक्षेम, सुखचैन 5. आराम, संतोष, हिम्मत—लब्धं मया स्वास्थ्यम् श० ४।

स्वाहा [सु+आ+ह्वे+डा] 1. सभी देवताओं को बिना किसी विचार के दी जाने वाली आहुति 2. अग्नि की पत्नी का नाम (अव्य०) देवताओं के उद्देश्य से आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द—इन्द्राय स्वाहा अग्नये स्वाहा। सम०—कारः स्वाहा शब्द का उच्चारण करना—स्वाहास्वधाकारविवर्जितानि श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि,—पतिः,—प्रियः आग,—भुज् (पुं०) सुर, देव।

स्विद् (अव्य०) [स्विद्+क्विप्] प्रश्नवाचक या पृच्छापरक निपात, प्रायः 'सन्देह' 'आश्चर्य' को प्रकट करता है, इसका अर्थ है 'क्या' 'हे' 'ए' 'हा, ओ, हो' की ध्वनि 'क्या ऐसा हो सकता है' आदि; इस अर्थ में तथा अनिश्चयार्थ प्रकट करने के लिए इसे प्रश्नवाचक सर्वनाम के साथ जोड़ दिया जाता है कास्विदवगुण्ठनवती नातिपरिस्फुटशरीरलावण्या--श० ५।१३, मेघ० १४, कभी कभी यह पृथक् रूप से 'या' और 'अथवा' अर्थ को प्रकट करता है; कभी कभी 'नु' 'उत' और 'वा' के साथ जुड़कर; दे० कि० ८।३५, १२। १५, १३।८, १४।६०, 'आहो' के साथ भी।

स्विद् i (दिवा० पर० स्विद्यति, स्विदित या स्विन्न) स्वेद आना, पसीना आना--स्विद्यति कूर्णति वेल्लति—काव्य० १०, उत्तर० ३।४१, कु० ७।७७, मा० १।३५, स त्वां पश्यति कंपते पुलकयत्यानन्दति स्विद्यति गीत० ११।

ii (भ्वा० आ० स्वेदते, स्विन्न या स्वेदित) 1. मालिश किया जाना 2. चिकनाया जाना 3. विक्षुब्ध होना —प्रेर० (स्वेदयति--ते) 1. पसीना लाना 3. गरम करना।

स्वीकरणम्, स्वीकारः, स्वीकृतिः [स्व+च्वि+कृ+ल्युट् (घञ्, क्तिन् वा)] 1. लेना, ग्रहण करना 2. हामी भरना, सहमत होना, प्रतिज्ञा करना, हामी, प्रतिज्ञा 1. वाग्दान, पाणिग्रहण, विवाह।

स्वीय (वि०) [स्व+छ] अपना, अपना निजी—लोकालोकविसारितेन विहितं स्वीयं विशुद्धम् यशः—सा० द० ९७।

स्वृ (भ्वा० पर० स्वरति, इच्छा० सिस्वरति, सुस्वूर्षति) 1. शब्द करना, सस्वर पाठ करना 2. प्रशंसा करना 3. पीडा देना या पीडित होना 4. जाना, अभि—, प्र—, शब्द करना. सम्—, पीड़ा देना (आ०) भट्टि० ९।२८।

स्वृ (क्र्या० प० स्वृणाति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

स्वेक् (भ्वा० आ० स्वेकते) जाना।

स्वेदः [स्विद् भावे घञ्] पसीना, पसेउ, श्रमबिंदु —अङ्गुलिस्वेदेन दूष्येरन्नक्षराणि—विक्रम० २। सम० --उदम्,—उदकम्, - जलम् पसीना, श्रमकण,—चूषकः शीतल मंद पवन, ठंडी हवा (पसीना सुखाना),—ज (वि०) ताप या भाप से उत्पन्न होने वाला, पसीने से उत्पन्न होने वाला (जूं, खटमल आदि जीव)।

स्वैर (वि०) [स्वस्य ईरम् ईर्+अच् वृद्धिः] 1. मनमाना आचरण करने वाला, स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित, निरंकुश—बद्धमिव स्वैरगतिर्जनमिह सुखसंगि-

नमर्वैमि--श० ५।११, अव्याहतैः स्वैरगतैः स तस्याः —रघु० २।५ 2. स्वतंत्र, असंकोच, विश्वस्त, जैसा कि 'स्वैरालाप' मुद्रा० ४।८ 3. मन्थर, मृदु नम्र मुद्रा० १।२ 4. सुस्त, मंद 5. अपनी मर्जी चलाने वाला, ऐच्छिक, यथाकाम,—रम् स्वच्छंदता, स्वेच्छाचारिता, —रम् (अव्य०) 1. इच्छा के अनुसार, मनपसंद, आराम से — सार्थाः स्वैरं स्वकीयेषु चेरुर्वेश्मस्विवाद्रिषु—रघु० १७।६४ 2. अपने आप, स्वतः 3. शनैः शनैः, नम्रता पूर्वक, मृदुता के साथ— उत्तर० ३।२ 4. आहिस्ता से, धीमी आवाज़ में, अस्पष्ट (विप० स्पष्ट)—पश्चात्स्वैरं गज इति किल व्याहृतं सत्यवाचा—वेणी० ३।९ ।

स्वैरता,—त्वम् [स्वैर+तल्+टाप्, त्व वा] स्वेच्छाचारिता, स्वच्छन्दता, स्वतन्त्रता ।

स्वैरिणी [स्वैरिन्+ङीप्] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी याज्ञ० १।६७ ।

स्वैरिन् (वि०) [स्वेन ईरितुं शीलमस्य— स्व+ईर्+णिनि] मनमानी करने वाला, स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित, निरंकुश ।

स्वैरिन्ध्री दे० 'सैरन्ध्री' ।

स्वोरसः (पुं०) तैलीय पदार्थ सिल पर पीसने के बाद उस में लगा हुआ (उस पदार्थ का) अंश या तलछुट ।

स्वोवशीयम् (नपुं०) आनन्द, समृद्धि (विशेषकर भावी जीवन के विषय में) ।

ह

ह (अव्य०) [हा+ड] बलबोधक निपात जो पूर्ववर्ती शब्द पर बल देता है, इसका अर्थ है 'सचमुच' यथार्थ में निश्चय ही आदि, परन्तु कभी कभी इसका उपयोग बिना किसी विशेष अर्थ को प्रकट किये केवल पादपूर्ति के निमित्त भी किया जाता है, विशेष कर वैदिक साहित्य में—तस्य ह शतं जाया बभूवुः, तस्य ह पर्वतनारदौ गृह ऊषतुः आदि—ऐत०, यह कभी कभी संबोधन के लिए भी प्रयुक्त होता है, तिरस्कार या उपहास के लिए विरल प्रयोग—(पुं०) 1. शिव का एक रूप 2. जल 3. आकाश 4. रुधिर ।

हंसः [हस्+अच्, पृषो० वर्णागमः, भवेद्वर्णागमात् हंसः—सिद्धा०] 1. राजहंस, मराल, मुर्गाबी, कारंडव—हंसाः संप्रति पाण्डवा इव वनादज्ञातचर्यां गताः— मृच्छ० ५।६, न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा—सुभा०, रघु० ३।१०, ५।१२, १७।२५ (इस पक्षी का वर्णन जैसा कि संस्कृत के कवियों ने किया है, अधिकतर काव्यात्मक है, उसे ब्रह्मा का वाहन बताया जाता है, बरसात के आरंभ में उसे मानसरोवर की ओर उड़ता हुआ बताया जाता है तु० 'मानस' । एक सामान्य कविसमय के अनुसार हंस को दूध और पानी को पृथक्-पृथक् करने वाला विशेष शक्ति संपन्न पक्षी माना जाता है उदा० सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् पंच० १, हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः श० ६।२७, नीरक्षीरविवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत् । विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः भामि० १।१३, दे० भर्तृ० २।१८ भी 2. परमात्मा, ब्रह्म 3. आत्मा, जीवात्मा 4. प्राण वायुओं में से एक 5. सूर्य 6. शिव 7. विष्णु 8. कामदेव 9. राजा जो महत्त्वाकांक्षी न हो 10 विशेष संप्रदाय का सन्यासी 11. दीक्षागुरु 12. ईर्ष्या, द्वेष से हीन व्यक्ति 13. पर्वत । सम०—अङ्घ्रिः सिंदूर, अधिरूढा सरस्वती का विशेषण, —अभिख्यम् चाँदी, कांता हंसिनी, —कीलकः एक प्रकार का रतिबंध,—गति (वि०) हंस जैसी चाल चलने वाला, राजसी ढंग से इतरा कर चलने वाला गद्गदा मधुरभाषिणी स्त्री,—गामिनी 1. हंस की सी सुन्दर गति वाली स्त्री मनु० ३।१० 2. ब्रह्माणी —तूलः, लम् हंस के मुलायम पर, दाहनम् अगर की लकड़ी,—नादः हंस का कलरव, नादिनी मधुरभाषिणी स्त्रियों का भेद (पतली कमर, बड़े नितंब, गज की चाल और कोयल के स्वर वाली) सुंदर स्त्री गजेन्द्रगमना तन्वी कोकिलालापसंयुता, नितंबे गुर्विणी या स्यात्सा स्मृता हंसनादिनी,—माला हंसों की पंक्ति—कु० १।३०, युवन् (पुं०) जवान हंस, रथः, वाहनः ब्रह्मा के विशेषण,—राजः हंसों का राजा, बड़ा हंस,—लोमशकम्, कासीस,—लोहकम् पीतल,—श्रेणी हंसों की पंक्ति ।

हंसकः [हंस+कन्, हंस+कै+क वा] 1. कारंडव, मराल 2. पैरों का आभूषण, नूपुर, पायजेब सरित इव सविभ्रमप्रपातप्रणदितहंसकभूषणा विरेजुः—शि० ७।२३, (यहाँ यह शब्द 'प्रथम अर्थ' में भी प्रयुक्त हुआ है, दूसरे अर्थों के लिए देखो ऊ० 'हंस) ।

हंसिका, हंसी [हं+कन्+टाप्, इत्वम्, हंस+ङीप्] हंसनी, मादा हंस ।

हंहो (अव्य०) [हम् इत्यव्यक्तं जहाति—हम्+हा+डो] संबोधनात्मक अव्यय जो आवाज देने में प्रयुक्त होता

है जैसे अंग्रेजी का 'हल्लो' (Hallo) शब्द हंहो चिन्मयचित्तचन्द्रमणयः संवर्धयध्वं रसान् —चन्द्रा० १।२ 2. तिरस्कार एवं अभिमानसूचक अव्यय 3. प्रश्न वाचक अव्यय (नाटकों में इस शब्द का प्रयोग मध्यम पात्रों द्वारा प्राय: संबोधन के रूप में किया जाता है हंहो ब्राह्मण मा कुप्य मुद्रा० १)।

हक्कः [हक् इति अव्यक्तं कायति—हक्+कै+क] हाथियों को बुलाना।

हंजा हंजे [हम् इति अव्यक्तं जप्यतेऽत्र हम्+जप्+डा (डे)] संबोधनात्मक अव्यय जो किसी दासी या नौकरानी को बुलाने में प्रयुक्त होता है हंजे कंचणमाले अहम् ईदिसी कडुभासिणी —रत्न० ३।

हट् (भ्वा० पर० हटति, हटित) चमकना, उज्ज्वल होना।

हट्टः [हट्+ट, टस्य नेत्वम्] बाजार, हाट, मेला। सम० —चौरकः वह चोर जो बाजार से चीजे चुराये —गंठकठा, —विलासिनी 1. वारांगना, वेश्या, रंडी 2. एक प्रकार का गंधद्रव्य।

हठः [हठ्+अच्] 1. प्रचण्डता, बल 2. अत्याचार, लूट-खसोट, (हठेन, हठात् —(क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त) बलपूर्वक, प्रचंडता से, अचानक, दुराग्रहपूर्वक —अम्बालिका च चण्डवर्मणा हठात् परिणेतुमात्मभवनमनीयत दश०, वानरान् वारयामास हठेन मघुरेण च राम०। सम०—योगः योग की एक विशेष-रीति या भावचिन्तन व मनन का अभ्यास ('राजयोग' से भिन्नता दिखाने के लिए इसका नाम 'हठयोग' पड़ा; इसका अभ्यास भी कुछ कठिन है, इसके अनुपालन की अनेक रीतियाँ हैं, उदा० एक पैर के बल खड़ा होना, हाथों का ऊपर किये रहना, सिर ऊपर करके धूम्रपान करना आदि),—विद्या बलपूर्वक मनन करने का विज्ञान।

हडिः [हठ्+इन्, पृषो०] काठ की बेड़ी।

हडिः (ड्डि) कः, हड्डिः [हठ्+इकक्, पृषो०, हठ्+इन्, पृषो०, कन् वापि] अत्यंत नीच जाति का पुरुष, भंगी आदि।

हड्डम् [हठ्+ड पृषो०] हड्डी। सम० जम् मज्जा।

हण्डा (अव्य०) [हन्+डा] संबोधनात्मक अव्य० जो निम्न श्रेणी की स्त्रियों को बुलाने में, या निम्नतम जाति (भंगी आदि) के व्यक्तियों द्वारा आपस में एक दूसरे को संबोधित करने में प्रयुक्त होता है हंडे हंजे हलाह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति अमर०, स्त्री० एक बड़ा मिट्टी का बर्तन।

हण्डिका, हण्डी [हण्डा+कन्+टाप्, इत्वम्, हण्ड+ङीप्] हांडी, मिट्टी का एक बर्तन।

हंडे (अव्य०) [हन्+डे] दे० 'हंडा (अव्य०)'।

हत (भू० क० कृ०) [हन्+क्त] 1. मारा गया, वध किया गया 2. चोट पहुँचाई गई, प्रहार किया गया, क्षतिग्रस्त 3. नष्ट, बरबाद 4. वञ्चित, हीन, रहित 5. निराश भग्नाश 6. गुणित—दे० हन्, 'निकम्मा' 'अभिशप्त' 'दयनीय' 'अधम' अर्थों को प्रकट करने के लिए यह समस्त शब्द के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है अनुशयदुःखायदं हतहृदयं संप्रति विबुद्धम् —श० ६।६, कुर्यामुपेक्षां हतजीवितेऽस्मिन्—रघु० १४।६५, हतविधिलसितानां ही विचित्रो विपाकः—शि० ११।६४। सम० आश (वि०) 1. आशा से रहित, निराश, ध्वस्ताश 2. दुर्बल, अशक्त 3. क्रूर, निर्दय, 4. बांझ 5. नीच, दुष्ट, पाजी, अभिशप्त, दुर्वृत्त, —कण्टक (वि०) कांटों से मुक्त, शत्रुओं से रहित, —चित्त (वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ,—त्विष् (वि०) धुंधला —रघु० ३।१५,—दैव (वि०) हतभाग्य, भाग्यहीन, दुर्भाग्यग्रस्त,—प्रभाव (वि०) वीर्य (वि०) शक्तिहीन, निर्वीर्य, बलहीन,—बुद्धि (वि०) ज्ञान से वञ्चित, बेहोश, भाग,—भाग्य (वि०) भाग्यहीन, बदकिस्मत,—मूर्खः बड़ा मूर्ख, बुद्धू,—लक्षण (वि०) शुभलक्षणों से विरहित, अभागा, शेष (वि०) जीवित बचा हुआ,—श्री,—संपद् (वि०) जिसका वैभव नष्ट हो गया हो, धन के न रहने पर जो दरिद्र हो गया हो, साध्वस (वि०) जिसका भय नष्ट हो गया हो, भयमुक्त, निर्भय।

हतक (वि०) [हत+कन्] दुःखी, दुःशील, दुर्वृत्त नीच, दुष्ट (प्राय, समास के अन्त में प्रयुक्त)—न खलु विदितास्ते तत्र निवसन्तश्चाणक्यहतकेन मुद्रा० २, दूषिताःस्थ परिभूताःस्थ रामहतकेन - उत्तर०१,—कः नीच पुरुष, कायर।

हतिः (स्त्री०) [हन्+क्तिन्] 1. हत्या, विनाश 2. प्रहार करना, घायल करना 3. आघात, प्रहार 4. नाश, असफलता 5. त्रुटि, दोष 6. गुणा।

हत्नुः [हन्+क्त्नुः] 1. शस्त्र 2. रोग या बीमारी।

हत्या [हन् भावे क्यप्] वध करना, मार डालना, संहार, क़तल, जघन्य वध जैसे भ्रूणहत्या, गोहत्या, आदि।

हद् (भ्वा० आ० हदते, हन्न) पुरीषोत्सर्जन, मलत्याग करना, —इच्छा० (जिहत्सते)।

हदनम् [हद्+ल्युट्] पुरीषोत्सर्ग, मलत्याग।

हन् (अदा० पर० हन्ति, हत, कर्मवा० हन्यते, प्रेर० घातयति—ते, इच्छा० जिघांसति) 1. मार डालना, वध करना, नाश करना, प्रहार कर देना —त्रयश्च दूषणखरत्रिमूर्धानो रणे हताः - उत्तर० २।१५, हतमपि च हन्त्येव मदनः- ३।१८ 2. आघात करना, पीटना—चण्डी हन्तुमभ्युद्यता मां विद्युद्दाम्ना मेघराजीव विन्ध्यम्—मालवि० ३।२०, शि० ७।५६ 3. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, कष्ट देना, संताप

देना जैसा कि 'कामहत' में 4. डाल देना, छोड़ देना, —भर्तृ० २।७७ 5. हटाना, दूर करना, नष्ट करना, —अम्भोजिनीवननिवासविलासमेव हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता—भर्तृ० २।४८ 6. जीतना, पछाड़ देना, पराजित करना, परास्त करना—विघ्नैः सहस्रगुणितैरपि हन्यमानाः प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति —सुभा० 7. विघ्न डालना, बाधा डालना 8. नष्ट करना, बिगाड़ना—कि० २।३७ 9. उठाना तुरगखुरहतस्तथा हि रेणुः—श० १।३२ 10. गुणा करना (गणित में) 11. जाना (काव्य में इसका इस अर्थ में प्रयोग विरल है, और जब कभी प्रयुक्त होता है तो वह काव्य का एक दोष माना जाता है) उदा० — कुंजं हन्ति कृशोदरी—सा० द० ७, या, तीर्थान्तरेषु स्नानेन समुपार्जितसत्कृतिः । सुरस्रोतस्विनीमेष हन्ति संप्रति सादरम्—काव्य० ७, (असमर्थत्व' दोप का उदाहरण), अति—,अत्यन्त क्षतिग्रस्त करना, अन्तर् बीच में प्रहार करना, अप , 1. हटाना, पीछे धकेलना, नष्ट करना, वध करना 2. दूर करना, हटाना —न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा —उत्तर० २।४, श० ४।७ 3. आक्रमण करना, बलात् ग्रहण करना, अभि—,1. प्रहार करना, आघात करना (आलं० से भी). पीटना—भा० १।३९, मालवि० ५।३ 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, हत्या करना, नष्ट करना 3. प्रहार करना, पीटना (ढोल आदि) भग०—१।१३ 4. आक्रान्त करना, ग्रस्त कर लेना, परास्त करना, अव—, 1. प्रहार करना, मारना, वध करना 2. नष्ट करना, हटाना 3. (अनाज की भांति) कूटना, आ—, 1. आघात पहुँचाना, प्रहार, करना, पीटना—कुट्टिममाजघान का०, कि० ७।१७ (आ० माना जाता है जब पीटा जाने वाला अपना ही कोई अंग हो—आहते शिरः —सिद्धा०, परन्तु भारवि कहता है 'आजघ्ने विषमविलोचनस्य वक्षः—कि० १७।६३, भट्टि० ८।१५, ५।१०२) रघु० ४।२३, १२।७७, कु० ४।२५, ३०, 2. प्रहार करना, (घंटी आदि) बजाना, (ढोल आदि) पीटना,—भट्टि० १।२७, १७।७, मेघ० ६६, रघु० १७।११, उद् , 1. उठाना, उन्नत करना, ऊँचा करना 2. फूलना, घमंडी होना, दे० उद्धत, उप , 1. प्रहार करना, आघात करना 2. बरबाद करना क्षतिग्रस्त करना, नष्ट करना, वध करना - लङ्कां चोपहनिष्यते—भट्टि० १६।१२, ५।१२, भग० ३।२४ 3. पीड़ित करना, ग्रस्त करना, परास्त करना, टपकना दारिद्र्योपहत, मूलोपहत, कामोपहत आदि कु० ५।७६, भर्तृ० २।२६, नि , मार डालना, नष्ट करना भट्टि० २।३४, ६।१०, रघु० ११।७१, याज्ञ० ३।२६२ 2. प्रहार करना, आघात करना, —तानेव सामर्पतया निजघ्नुः रघु० ७।४४, मेघ० ७।२७ 3. जीतना, हराना—दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या—पंच० १।३६१ 4. पीटना, (ढोल आदि) बजाना, भट्टि० १४।२ 5. प्रतीकार करना, निष्फल करना, भग्नाश करना - रघु० १२।९२ 6. (रोग आदि की) चिकित्सा करना 7. अवहेलना करना, 8. हटाना, दूर करना, कि० ५।३६, परा— , 1. जवाबी वार करना, प्रत्याघात करना, पछाड़ देना, पीछे धकेलना, निवारण करना, परास्त कर देना, खदेड़ देना—दैवं यत्पौरुषपराहतं - राम० 2. आक्रमण करना, धावा बोलना कटाक्षपराहतं वदनपङ्कजम् मा० ७ 3. टक्कर मारना, प्रहार करना, प्र , 1. वध करना, क़तल करना, प्राघानिषत रक्षांसि येनाप्तानि वने मम । न प्रहण्मः कथं पापं वद पूर्वापकारिणम्—भट्टि० ९।१०२ 2. प्रहार करना, पीटना, आघात करना - गदाप्रहततनुः 3. प्रहार करना, पीटना, (ढोल आदि) रघु० १९।१५, मेघ० ६४, प्रणि—, वध करना - भट्टि० २।३५, प्रति—, जवाबी वार करना, बदले में प्रहार करना (तं) विध्यन्तमुद्धृतसटाः प्रतिहन्तुमीषुः—रघु० ९।६०, 2. हटाना, परे करना, रोकना, विरोध करना, मुक़ाबला करना—तोयस्येवाप्रतिहतरयः सैकतं सेतुमोघः - उत्तर० ३।३६, प्रतिहतविघ्नाः क्रियाः समवलोक्य - श० १।१३, मेघ० २०, कु० २।४८, विक्रम० २।१ 3. हटाना, खदेड़ना, ढकेलना 4. दूर करना, नष्ट करना यद्यत् पापं प्रतिजहि जगन्नाथ नम्रस्य तन्मे — मा० १।३ 5. प्रतीकार करना, उपचार करना, वि —, 1. वध करना, क़तल करना, नष्ट करना, विध्वस्त करना, संहार करना (अलं) सहसा संहतिमंहसां विहन्तुम् कि० ५।१७, 2. प्रहार करना, जोर से आघात करना 3. अवरोध करना, रुकावट डालना, विरोध करना, मुक़ाबला करना—विघ्नन्ति रक्षांसि वने क्रतूंश्च - भट्टि० १।१९, रघु० ५।२७ 4. अस्वीकार करना, इंकार करना, क्षय होना रघु० २।५८, ११।२ 5. निराशा करना, हताश करना, सम् , 1. सटा कर मिलाना, आपस में जोड़ना हस्तौ संहत्य —मनु० ७।७१ दून एव हि संधत्ते भिनत्त्येव च संहतान्—७।६६ दे० संहत' 2. ढेर लगाना, संग्रह करना, संचय करना 3. संकुचित करना, सिकोड़ना 4. संघर्ष होना 5. प्रहार करना, मार डालना, नष्ट करना, समा , प्रहार करना आघात करना, क्षतिग्रस्त करना।

हन् (वि०) [हन्+क्विप्] वध करने वाला, हत्या करने वाला, नष्ट करने वाला (समास के अन्त में प्रयुक्त)

जैसा कि वृत्रहन्, पितृहन्, मातृहन्, ब्रह्महन् आदि।

हनः [हन्+अच्] वध, हत्या।

हननम् [हन्+ल्युट्] 1. वध करना, हत्या करना, आघात करना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना 3. गुणा।

हनुः–नू (पुं०, स्त्री०) [हन्+उन्, स्त्रीत्वे वा ऊङ्] ठोडी, नु (स्त्री०) 1. जीवन पर आघात करने वाली चीज 2. शस्त्र 3. रोग, बीमारी 4. मृत्यु 5. एक प्रकार की औषधि 6. स्वेच्छाचारिणी स्त्री, वेश्या। सम० ग्रहः बन्द जबड़ा,—मूलम् जबड़े की जड़।

हनु (नू) मत् (पुं०) [हनु(नू)+मतुप्] एक अत्यंत शक्तिशाली वानर का नाम (यह अंजना का पुत्र था, इसके पिता पवन या मरुत् थे, इसी कारण इसे मारुति कहते हैं। ऐसा वर्णन मिलता है कि उसमें असाधारण शक्ति और पराक्रम था जो उसने अपने हृदयाराध्य राम की ओर से कई अवसरों पर प्रकट किया। जब रावण सीता को अपहरण करके लंका में ले गया तो हनुमान् ने समुद्र पार करके उसका पता लगाया तथा अपने स्वामी राम को सूचित किया। लंका के महायुद्ध में उसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया)।

हन्त (अव्य०) [हन्+त] प्रसन्नता, हर्ष, और आकस्मिक हलचल को प्रकट करने वाला अव्यय, हन्त भो लब्धं मया स्वास्थ्यम् श० ४, हन्त प्रवृत्तं संगीतकम् —मालवि० १, 2. करुणा, दया—पुत्रक हन्त ते धानाकाः—गण० 3. शोक, अफसोस—हन्त धिङ् मामघन्यम्—उत्तर० १।४३, स्मरामि हन्त स्मरामि —उत्तर० १, काचमूल्येन विक्रीतो हन्त चिन्तामणि-र्मया—शा० १।१२, मेघ० १०४ 4. सौभाग्य, आशीर्वाद 5. यह बहुधा आरम्भसूचक अव्यय के रूप में भी प्रयुक्त है—हन्त ते कथयिष्यामि—राम०। सम० -उक्तिः (स्त्री०) करुणा, मृदुता आदि द्योतक शोक, खेद आदि शब्दों का कथन,—कारः 1. 'हन्त' विस्मयादिबोधक अव्य० 2. किसी अतिथि को दी जाने वाली भेंट–निवीती हन्तकारेण मनुष्यांस्तर्पयेदथ।

हन्तृ (वि०) (स्त्री० त्री) [हन्+तृच्] 1. प्रहारकर्ता, वधकर्ता, मनु० ५।३४, कु० २।२० 2. जो हटाता है, नष्ट करता है, प्रतीकार करता है,—पुं० 1. हत्यारा क़ातिल 2. चोर, लुटेरा।

हम् (अव्य०) [हा+डमु] 1. क्रोध तथा 2. शिष्टाचार या आदर को प्रकट करने वाला उद्‌गार।

हम्बा (भा) [हम्+भा+अङ्+टाप्, पक्षे पृषो०] गाय, बैल आदि पशुओं के बोलने का शब्द, रांभना। सम० —रवः रांभना।

हय् (भ्वा० पर० हयति, हयित) 1. जाना 2. पूजा करना 3. शब्द करना 4. थक जाना।

हयः [हय् (हि)+अच्] 1. घोड़ा, भग० १।१४, मनु० ८।२२६ रघु० ९।१० 2. एक विशेष श्रेणी का मनुष्य —दे० 'अश्व' के अन्तर्गत 3. 'सात' की संख्या 4. इन्द्र का नाम। सम०—अध्यक्षः घोड़ों का अधीक्षक —आयुर्वेदः अश्वचिकित्साविज्ञान, शालिहोत्रविद्या, आरूढः अश्वारोही, घुड़सवार,—आरोह 1. घुड़सवार 2. घुड़सवारी,—इष्टः जौ,—उत्तमः बढ़िया घोड़ा, कोविदः घोड़ों के प्रबन्ध, प्रशिक्षण तथा चिकित्साविज्ञान से परिचित, ज्ञः घोड़ों का व्यापारी, साइस, पेशेवर घुड़सवार,—द्विषत् (पुं०) भैंसा प्रियः जौ,—प्रिया खजूर का वृक्ष,—मारः,—मारकः गंधयुक्त करवीर, कनेर,—मारणः पावन कनेर,—मेधः अश्वमेध यज्ञ–याज्ञ० १।१८१,—वाहनः कुबेर का विशेषण,—शाला अस्तबल,—शास्त्रम् घोड़ों को सधाना या उनका प्रबन्ध करने की कला, संग्रहणम् घोड़ों का लगाम खींच कर रोकना।

हयङ्कषः [हय+कष्+खच्+मुम्] चालक, रथवान्।

हयी [हय+ङीप्] घोड़ी।

हर (वि०) (स्त्री० रा,—री) [हृ+अच्] 1. ले जाने वाला, हटाने वाला, वञ्चित करने वाला खेदहर, शोकहर 2. लाने वाला, ले जाने वाला, ग्रहण करने वाला अपथहराः—कि० ५।५०, रघु० १२।५१ 3. पकड़ने वाला, ग्रहण करने वाला 4. आकर्षक, मनोहर 5. अभ्यर्थी, दावेदार, अधिकारी–मु० २।१९ 6. अधिकार करने वाला,—कु० १।५०, 7. बाँटने वाला,—रः 1. शिव, कु० १।५०, ३।४०, ६७, मेघ० ७ 2. अग्नि 3. गधा 4. भाजक 5. भिन्न की नीचे की संख्या। सम० गौरी शिव और पार्वती का एक संयुक्त रूप (अर्धनारीनटेश्वर), चूडामणिः शिव की शिखामणि, चन्द्रमा, तेजस् (नपुं०) पारा, नेत्रम् 1. शिव की आँख 2. तीन की संख्या, बीजम् शिव का बीज, पारा,—शेखरा शिव की शिखा, गंगा, सूनुः स्कन्द रघु० ११।८३।

हरकः [हर+कन्] 1. चोरी करने वाला, चोर 2. दुष्ट, 3. भाजक।

हरणम् [हृ+ल्युट्] 1. पकड़ना, ग्रहण करना 2. ले जाना, दूर करना, हटाना, चुराना कन्याहरणम् —मनु० ३।३३, रघु० ११।७४ 3. वञ्चित करना, नष्ट करना, जैसा कि 'प्राणहरणम्' में 4. भाग देना 5. विद्यार्थी को उपहार 6. भुजा 7. वीर्य, शुक्र 8. सोना।

हरि (वि०) [हृ+इन्] 1. हरा, हरा-पीला 2. खाकी, लाख के रंग का, लालीयुक्त भूरा, कपिल -हरियुग्यं रथं तस्मै प्राजिघाय पुरन्दरः रघु० १२।१४, ३।४३ 3. पीला,—रिः 1. विष्णु का नाम—हरिर्यथैकः पुरु-

पोतामः स्मृतः—रघु० ३।४९ 2. इन्द्र का नाम —रघु० ३।५५, ६८, ८।७९ 3. शिव का नाम 4. ब्रह्मा का नाम 5. यम का नाम 6. सूर्य 7. चन्द्रमा 8. मनुष्य 9. प्रकाश की किरण 10. अग्नि 11. पवन 12. सिंह—भामि० १।५०, ५१ 13. घोड़ा 14. इन्द्र का घोड़ा सत्यमतीत्य हरितो हरींश्च वर्तन्ते वाजिनः —श० १, ७।७ 15. लंगूर, बन्दर—उत्तर० ३।४८, रघु० १२।५७ 16. कोयल 17. मेंढक 18. तोता 19. सांप 20. खाकी या पीला रंग 21. मोर 22. भर्तृहरि कवि का नाम। सम०—अक्षः 1. सिंह 2. कुबेर का नाम 3. शिव का नाम, अश्वः 1. इन्द्र 2. शिव, कान्त (वि०) 1. इन्द्र को प्रिय 2. सिंह के समान सुन्दर, केलीयः वंग देश, गन्धः एक प्रकार का चन्दन,—चन्दनः नम् 1. एक प्रकार का पीला चन्दन (लकड़ी या वृक्ष) रघु० ३।५९, ६।६०, श० ७।२, कु० ५।६९ 2. स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक वृक्ष पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः। सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम्—अमर०, (—नम्) 1. ज्योत्स्ना 2. केसर, ज़ाफ़रान 3. कमल का पराग, —तालः (कुछ विद्वान् इसे 'हरित' से व्युत्पन्न मानते हैं) पीले रंग का कबूतर, (—लम्) हरताल हंस० १, शि० ४।२१, कु० ७।२३, ३३, (—ली) दूर्वा घास, दूब, —तालिका भाद्रशुक्ला चतुर्थी 2. दूर्वा घास, —तुरङ्गमः इन्द्र का नाम,—दासः विष्णु का उपासक, —दिनम् विष्णु पूजा का विशेष दिन,—देवः श्रवण नक्षत्र,—द्रवः हरा रस,—द्वारम् एक पुण्यतीर्थस्थान,—नेत्रम् 1. विष्णु की आंख 2. सफ़ेद कमल, (—त्र) उल्लू, —पदम् वसन्त विषुव, प्रियः 1. कदंब का वृक्ष 2. शंख 3. मूर्ख 4. पागल मनुष्य 5. शिव, (—यम्) एक प्रकार का चंदन, प्रिया 1. लक्ष्मी 2. तुलसी का पौधा 3. पृथ्वी 4. द्वादशी,—भुज् (पुं०) सांप, —मन्थः, मन्थकः मटर, चना,—लोचनः 1. केकड़ा 2. उल्लू,—वल्लभा 1. लक्ष्मी 2. तुलसी,—वासरः विष्णु-दिवस, एकादशी, वाहनः 1. गरुड 2. इन्द्र, °दिश् (स्त्री०) पूर्वदिशा,—शरः शिव का विशेषण (त्रिपुर राक्षस के तीनों नगरों को भस्म करने के लिए शिव ने विष्णु को जलते सरकंडे की भांति प्रयुक्त किया),—सखः एक गंधर्व,—संकीर्तनम् विष्णु के नाम का कीर्तन करना, —सुतः—सूनुः अर्जुन का नाम,—हयः 1. इन्द्र रघु० ९।१८, 2. सूर्य,—हरः विष्णु और शिव की एक संयुक्त देवमूर्ति, हेतिः (स्त्री०) 1. इन्द्रधनुष कथमवलोकयेयमधुना हरिहेतिमतीः (ककुभः)—मा० ९।१८ 2. विष्णु का चक्र, °हूतिः चक्रवाक शि० ९।१५।

हरिकः [हरि संज्ञायां कन्] 1. खाकी या भूरे रंग का घोड़ा 2. चोर 3. जुआरी।

हरिण (वि०) (स्त्री०—णी) [हृ+इनन्] 1. फीका, पीला सा 2. लाल या पीला सफ़ेद,—णः 1. मृग, बारहसिंगा (यह पांच प्रकार का बताया गया है—हरिणश्चापि विज्ञेयः पंचभेदोऽत्र भैरव। ऋष्यः खड्गो रुरुश्चैव पृषतश्च मृगस्तथा कालिका०)—अपि प्रसन्नं हरिणेषु ते मनः—कु० ५।३५ 2. सफ़ेद रंग 3. हंस 4. सूर्य 5. विष्णु 6. शिव। सम०—अक्ष (वि०) मृगनयन, हरिण जैसी आंखों वाला,(—क्षी) मृगनयनी सुन्दर आंखों वाली स्त्री,—अङ्कः 1. चन्द्रमा 2. कपूर, कलङ्कः,—धामन् (पुं०) चन्द्रमा,—नयन, नेत्र लोचन (वि०) हरिणाक्ष, मृग जैसी आंखों वाला, —हृदय (वि०) हरिण जैसे दिल वाला, भीरु।

हरिणकः [हरिण+कन्] छोटा हरिण—क्व बत हरिणकानां जीवितं चातिलोलम् श० १।१०।

हरिणी [हरिण+ङीप्] 1. मृगी, मादा हरिण,—चकितहरिणीप्रेक्षणा मेघ० ८२, रघु० ९।५५, १४।६९ 2. स्त्रियों के चार भेदों में से एक ('चित्रिणी' भी कहते हैं) 3. पीले फूल की चमेली 4. सुन्दर स्वर्णमूर्ति 5. एक छन्द का नाम। सम० दृश् (वि०) हरिण जैसी आंखों वाला (स्त्री०), मृगनयनी—किमभवद्विपिने हरिणीदृशः—उत्तर० ३।२७।

हरित् (वि०) [हृ+इति] 1. हरा, हरियाला 2. पीला, पीला सा 3. हरियाली लिये पीला,—(पुं०) 1. हरा या पीला रंग 2. सूर्य का घोड़ा, लाख के रंग का घोड़ा—सत्यमतीत्य हरितो हरींश्च वर्तन्ते वाजिनः—श० १, दिशो हरिद्भिर्हरितामिवेश्वरः—रघु० ३।३०, कु० २।४३ 3. तेज़ घोड़ा 4. सिंह 5. सूर्य 6. विष्णु (पुं०, नपुं०) 1. घास 2. दिशा—रघु० ३।३०। सम०—अन्तः दिशाओं का अन्त, दिगन्त,—भामि० १।६०, अन्तरम् भिन्न प्रदेश, विविध दिशाएँ भामि० १।१५, अश्वः 1. सूर्य, कि० २।४६, रघु० ३।२२, १८।२३, शि० ११।५६ 2. मदार का पौधा, अर्क, गर्भः चौड़े पत्तों की हरी हरी कुशा, मणिः (हरिन्मणिः) मरकत मणि, पन्ना शि० ३।४९, वर्ण (वि०) हरियाली, हरे रंग का।

हरित (वि०) (स्त्री०—ता, हरिणी) [हृ+इतच्] हरा, हरे रंग का, हरा-भरा—रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः —श० ४।१०, कु० ४।१४, मेघ० २१, कि० ५।३८ 2. खाकी,—तः 1. हरा रंग 2. सिंह 3. एक प्रकार का घास। सम० अश्मन् (पुं०) 1. मरकत मणि, पन्ना 2. तूतिया, नीला थोथा,—छद (वि०) हरे हरे पत्तों का।

हरितकम् [हरित+कै+क] 1. साग-भाजी 2. हरा घास शि० ५।५८।

हरिता [हरित+टाप्] 1. दूर्वा घास 2. हरिद्रा 3. भूरे रंग का अंगूर।

हरिताल दे० हरि के नीचे।

हरिद्रा [हरि+द्रु+ड+टाप्] 1. हल्दी 2. पिसी हुई हल्दी - दे० नै० २२।४९ पर मल्लि०। सम०—आभ (वि०) पीले रंग का, --गणपतिः - गणेशः गणेश देव का विशेष रूप,—राग, रागक (वि०) 1. हल्दी के रंग का 2. अनुराग में अस्थिर, (प्रेम में) चंचलमना हलायुध में इसकी परिभाषा क्षणमात्रानुरागश्च हरिद्राराग उच्यते)।

हरियः [हरि+या+क] पीले रंग का घोड़ा।

हरिश्चन्द्रः [हरिः चन्द्र इव, सुडागमः ऋषावेव] सूर्यवंश का एक राजा (यह त्रिशंकु का पुत्र था, अपनी दानशीलता, धर्मिष्ठता तथा सचाई के लिए अत्यंत प्रसिद्ध था। एक बार इसके कुल-पुरोहित वशिष्ठ ने इसकी प्रशंसा विश्वामित्र की उपस्थिति में की, विश्वामित्र ने विश्वास नहीं किया। इस पर विवाद खड़ा हो गया, अंत में यह निर्णय किया गया कि विश्वामित्र स्वयं इसके सत्य की परीक्षा लें। तदनुसार विश्वामित्र ने इसे अत्यंत कठिन परीक्षण में डाला जिससे कि यह पता लग सके कि क्या अब भी यह अपने वचनों पर दृढ़ रहता है। इतना होने पर भी राजा ने उस परीक्षण में उदाहरणीय साहस का परिचय दिया। यद्यपि इसे इस परीक्षा में अपने राज्य से हाथ धोना पड़ा, अपने पत्नी और पुत्र को बेचना पड़ा, यहाँ तक कि अन्त में अपने आपको भी एक चांडाल के घर बेचना पड़ा। अपने अदम्य साहस और सचाई के लिए हरिश्चन्द्र को अपनी पत्नी को मायाविनी मान कर मारने के लिए भी तैयार होना पड़ा, तब कहीं विश्वामित्र ने अपनी हार मानी और योग्य राजा को प्रजा समेत स्वर्ग में ऊँचा आसन दिया गया)।

हरीतकी [हरिं पीतवर्णं फलाद्वारा इता प्राप्ता—हरि+इ क्त+कन्+ङीष्] हर्रे का पेड़।

हर्तृ (वि०) (स्त्री० र्त्री) [हृ+तृच्] उठा कर ले जाने वाला, छीनने वाला, लूटने वाला, ग्रहण करने वाला आदि, - (पुं०) चोर, लुटेरा—भर्तृ० २।१६ 2. सूर्य।

हर्मन् (नपुं०) [हृ+मनिन्] मुँह फाड़ना, जंभाई लेना।

हर्मित (भू० क० कृ०) [हर्मन्+इतच्] 1. जिसने मुँह फाड़ा है, जिसने जम्हाई ली है 2. डाल दिया गया, फेंका गया 3. जलाया गया।

हर्म्यम् [हृ+यत्, मुट् च] 1. प्रासाद, महल, कोई भी विशाल भवन या बड़ी इमारत हर्म्यपृष्ठं समारूढः काकोऽपि गरुडायते—सुभा०, बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या—मेघ०७, ऋतु० १।२८, भट्टि० ८।३६, रघु० ६।४७, कु० ६।४२ 2. तंदूर, अंगीठी, चूल्हा 3. आग का कुंड, यंत्रणा-स्थान, नरक। सम० अङ्गनम्,—णम् महल का आंगन,—स्थलम् महल का कमरा।

हर्षः [हृष्+घञ्] 1. आनन्द, खुशी, प्रसन्नता, संतोष, एक सुखात्मक भाव, आनन्दातिरेक, उल्लास, आह्लाद, प्रमोद - हर्षो हर्षो हृदयवसतिः पञ्चबाणस्तु बाणः—प्रसन्न० १।२२, सहोत्थितः सैनिकहर्षनिःस्वनैः—रघु० ३।६१ 2. पुलक, रोमांच, रोंगटे खड़े होना—जैसा कि 'रोमहर्ष' में 3. 'हर्ष', ३३ या ३४ संचारिभावों में से एक हर्षस्त्विष्टावाप्तेर्मनः प्रसादोऽश्रुगद्गदादिकरः -- सा० द० १९५, या, इष्टप्राप्त्यादिजन्मा सुखविशेषो हर्षः - रस०। सम०—अन्वित (वि०) आनन्दयुक्त, प्रसन्न, इसी प्रकार 'हर्षाविष्ट', उत्कर्षः प्रसन्नता का आधिक्य, आनंदातिरेक, उदयः आनन्द का होना, --कर (वि०) तृप्त करने वाला, प्रसन्न करने वाला, —जड (वि०) मन्द, मारे खुशी के जडवत् हो जाने वाला—रघु० ३।६८,—विवर्धन (वि०) आनंद को बढ़ाने वाला, - स्वनः आनंद की ध्वनि।

हर्षक (वि०) (स्त्री०—र्षका, र्षिका) [हृष्+णिच्+ण्वुल्] खुश करने वाला, प्रसन्न करने वाला, आनंदयुक्त, सुखकर।

हर्षण (वि०) (स्त्री०—णा,—णी) [हृष्+णिच्+ल्युट्] खुशी पैदा करने वाला, प्रसन्न करने वाला, आनंद से भरा हुआ, सुखद,—णः 1. कामदेव के पाँच बाणों में से एक 2. आंख का एक रोग 3. श्राद्ध की एक अधिष्ठात्री देवता,—णम् प्रहर्ष, खुशी, प्रसन्नता, आनन्द, उल्लास - दुर्हृदामप्रहर्षाय सुहृदां हर्षणाय च—महा०।

हर्षयित्नु (वि०) [हृष्+णिच्+इत्नु] आनन्ददायक, सुखकर, खुश करने वाला, प्रसन्नता देने वाला।

हर्षुलः [हृष्+उलच्] 1. हरिण 2. प्रेमी।

हल् (भ्वा० पर० हलति हलित) हल चलाना।

हलम् [हल् घञर्थे करणे क] लांगल, खेत जोतने का एक प्रधान उपकरण—वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम्। हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् -- या—हलं कलयते--गीत० १। सम० आयुधः बलराम का विशेषण, धर,—भृत् (पुं०) 1. हाली, हलचलाने वाला 2. बलराम का नाम केशवधृतहलधररूप जय जगदीश हरे—गीत०, अंसन्यस्ते सति हलभृतो मेचके वाससीव मेघ० ५९,—भूतिः, भृतिः हल चलाना, कृषिकर्म, किसानी, हतिः (स्त्री०) 1. हल के द्वारा प्रहार करना या खूड निकालना 2. जुताई या हल चलाना।

हलहला अहो, वाह रे आदि आश्चर्यसूचक अव्यय।

हला [ह इति लीयते ह+ला+क+टाप्] 1. सखी, सहेली 2. पृथ्वी 3. जल 4. मदिरा (अव्य०) नाटकीय भाषा में) किसी सखी या सहेली को संबोधित करना --हला शकुन्तले अत्रैव तावन्मुहूर्तं तिष्ठ—श० १, तु० 'हंडा' भी।

हलाहलः,–लम् देखो 'हाल (ला) हल'।

हलिः [हल्+इन्] 1. बड़ा हल 2. खूड 3. कृषि।

हलिन् (पुं०) [हल+इनि] 1. हाली, हलवाहा, किसान 2. बलराम। सम० –**प्रियः** कदंब का वृक्ष (–या) मदिरा।

हलिनी [हलिन्+ङीप्] हलों का समूह।

हलीनः [हलाय हितः हल+ख] सागौन का पेड़।

हलीषा [हलस्य ईषा–ष० त०, शक० पररूपम्] हल का दण्ड, हलस।

हल्य (वि०) [हल+यत्] 1. जोतने योग्य, हल चलाये जाने योग्य 2. कुरूप, विकृताकृति।

हल्या [हल्य+टाप्] हलों का समूह।

हल्लकम् [हल्ल्+ण्वुल्] लाल कमल।

हल्लनम् [हल्ल्+ल्युट्] लोटना, इधर-उधर करवट बदलना (सोते समय)।

हल्लीशम् (षम्) [हल्+क्विप् लप् (स्)+अच्, पृषो० ईत्वम्, कर्म० स०] 1. अठारह उपरूपकों में से एक (एक प्रकार का एकांकी नाटक जिसमें प्रधानतः गायन और नृत्य होता है, तथा इसमें एक पुरुष और सात या आठ नर्तकियाँ भाग लेती हैं–सा० द० ५५५ 2. एक प्रकार का वर्तुलाकार नृत्य।

हल्लीशकः [हल्लीश+कन्] घेरा बनाकर नाचना।

हवः [हु+अ, ह्वे+अप्, संप्र०, पृषो० वा] 1. आहुति, यज्ञ 2. आवाहन, प्रार्थना 3. आह्वान, आमन्त्रण 4. आदेश, समादेश 5. बुलावा, बुला भेजना 6. चुनौती, ललकार।

हवनम् [हु+भावे ल्युट्] 1. अग्नि में सामग्री की आहुति देना 2. यज्ञ, आहुति 3. आवाहन 4. बुलावा, आमन्त्रण 5. युद्ध के लिए ललकार। सम० **आयुस्** (पुं०) अग्नि।

हवनीयम् [हु+अनीयर्] 1. कोई भी वस्तु जो आहुति देने के योग्य हो 2. गरम किया हुआ मक्खन या घी।

हवित्री [हु+इत्रन्+ङीप्] हवनकुण्ड जो भूमि में खोद कर बनाया गया हो, (इसमें आहुतियाँ दी जाती हैं)।

हविष्मत् (वि०) [हविस्+मतुप्] आहुतिवाला।

हविष्यम् [हविषे हितम् कर्मणि यत्] 1. कोई वस्तु जो आहुति के लिए उपयुक्त हो –मनु० ३।२५६, ११।७७, १०६, याज्ञ० २।२३९ 2. गर्म किया हुआ मक्खन। सम०–**अन्नम्** व्रत के तथा अन्य पर्वों के अवसर पर खाने योग्य भोज्य पदार्थ, **आशिन्,–भुज्** (पुं०) अग्नि।

हविस् (नपुं०) [हूयते हु कर्मणि असुन्] 1. आहुति या हवनीय द्रव्य –वहति विधिहुतं या हविः–श० १।१, मनु० ३।८७, १३२, ५।७, ६।१२ 2. गर्म किया हुआ मक्खन 3. जल। सम०–**अशनम्** (हविरशनम्) घी या हवनीय द्रव्यों का खाया जाना, (नः) अग्नि, –**गन्धा** (हविर्गन्धा) शमीवृक्ष, जैंड का पेड़, –**गेहम्** (हविर्गेहम्) यज्ञगृह जहाँ अग्नि में आहुति दी जाय, –**भुज्** (हविर्भुज्) अग्नि अन्वासितमरुन्धत्या स्वाहयेव हविर्भुजम्–रघु० १।५६, १०।८०, १३।४१, कु० ५।२०, शि० १।२, काव्य० २।१६८, –**यज्ञः** (हविर्यज्ञः) एक प्रकार का यज्ञ, **याजिन्** (हविर्याजिन्)–(पुं०) पुरोहित।

हव्य (वि०) [हु कर्मणि+यत्] आहुति के रूप में दिया जाने वाला पदार्थ,–**व्यम्** 1. घी 2. देवों को दी जाने वाली आहुति (विप० कव्य) 3. आहुति। सम० –**आशः** अग्नि, **कव्यम्** देवों तथा पितरों को आहुतियाँ–मनु० १।९४, ३।९७, १२८, आगे पीछे,–**वाह्**, –**वाह वाहन** (पुं०) आहुतियों को ले जाने वाला, अग्नि।

हस् (भ्वा० पर० हसति, हसित) 1. मुसकराना, मन्द हंसी हंसना,–हससि यदि किंचिदपि दन्तरुचिकौमुदी हरति दरतिमिरमतिघोरम्–गीत० १०, भट्टि० ७।६३, १४।९३ 2. हंसी उड़ाना, मखौल करना, उपहास करना (कर्म० के साथ)–यमवाप्य विदर्भभूः प्रभुं हसति द्यामपि शक्रभर्तृकाम् नै० २।१६ 3. (अतः) आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना, दूसरे को पीछे छोड़ देना–यो जहासेव वासुदेवम्–का०, शि० १।७१ 4. मिलना-जुलना–श्रिया हसद्भिः कमलानि सस्मितैः –कि० ८।४४ 5. मखौल उड़ाना, दिल्लगी करना 6. खुलना, खिलना, फूलना–हसद्बन्धुजीवप्रसूनैः 7. चमकाना, मांजकर साफ़ करना–भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजाली सुभा०, प्रेर० (हासयति–ते) मंद हंसी हंसना -कु० ७।९५, **अप–**, हंसी उड़ना, तिरस्कार करना, उपहास करना, **अव–**, 1. तिरस्कार करना, बेइज्जती करना 2. आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना–स्थितावहस्येत्र पुरं मघोनः–भट्टि० १।६, **उप–**, उपहास करना, तिरस्कार करना, बुरा भला कहना–, तथा प्रयतेथा यथा नोपहस्यसे जनैः–का०, घट० १७, **परि–**, 1. मखौल करना, हंसी उड़ाना 2. उपहास करना, बुरा-भला कहना, (अतः) आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना, जनानामानन्दः परिहसति निर्वाणपदवीम् गंगा० ५, **प्र**, 1. उपहास करना, ''स्कराना–ततः प्रहस्यापभयः पुरन्दरम् रघु० ३।५१ 3. तिरस्कार करना, बुरा-भला कहना, मखौल उड़ाना–हसन्तं प्रहसन्त्येता रुदन्तं प्ररुदन्ति च–सुभा० 4. चमकाना, शानदार दिखाई देना, **वि–**, 1. मुस्कराना, मन्द मन्द हंसना किंचिद्विहस्यार्थपतिं बभाषे –रघु० २।४६ 2. उपहास करना, बुराभला कहना, अपमान करना–किमिति विषीदसि रोदिषि विकला

विहसति युवतिसभा तव विकला—गीत० ९, गौरी-वक्त्रभ्रुकुटिरचनां या विहस्येव फेनैः—मेघ० ५० ।

हस [हस्+अप्] 1. हंसी, ठहाका 2. उपहास 3. आमोद, प्रमोद, खुशी, प्रसन्नता ।

हसनम् [हस्+ल्युट्] हंसना, ठहाका, अट्टहास ।

हसनी [हसन+ङीप्] उठाऊ चूल्हा, कांगड़ी ।

हसन्ती [हस्+शतृ+ङीप्] 1. उठाऊ अंगीठी 2. एक प्रकार की मल्लिका ।

हसिका [हस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] अट्टहास, उपहास ।

हसित (भू० क० कृ०) [हस्+क्त] 1. जिसकी हंसी की गई हो, हंसना 2. विकसित, फूला हुआ, —**तम्** 1. अट्टहास 2. मखौल, मज़ाक 3. कामदेव का धनुष ।

हस्तः [हस्+तन्, न इट्] हाथ; **हस्तं गतः** हाथ में पड़ा हुआ या अधिकार में आया हुआ,—गौतमीहस्ते विसर्जयिष्यामि—श० ३, (मैं गौतमी के हाथ (द्वारा) इसे भेज दूंगा) इसी प्रकार 'हस्ते पतिता', 'हस्ते संनिहितां कुरु' आदि, शंभुना दत्तहस्ता -मेघ० ६० (शंभु का सहारा लिए हुए), **हस्ते कृ** (हस्तेकृत्य, कृत्वा) हाथ से पकड़ना, ले लेना, हाथ से ले लेना, हाथ में पकड़ लेना, अधिकार कर लेना, लोकोक्ति—हस्तकङ्कणं किं दर्पणे प्रेक्ष्यते (हाथ कंगण को आरसी क्या) अर्थात् हाथ पर रक्खी वस्तु को देखने के लिए शीशे की आवश्यकता नहीं होती 2. हाथी की सूंड़—कु० १।३६ 3. तेरहवां नक्षत्र जिसमें पांच तारे सम्मिलित हैं हाथभर, एक हस्तपरिमाण, (२४ अंगुल या लगभग १८ इंच की लंबाई, जो कोहनी से मध्य अंगुली की नोक तक होती है) 5. हाथ की लिखाई, हस्ताक्षर —धनीवोपगतं दद्यात् स्वहस्तपरिचिह्नितम्—याज्ञ० ३।९३, स्वहस्तकालसंपन्नं शासनम्—१।३२० (तारीख और हस्ताक्षर सहित), धार्यतामयं प्रियायाः स्वहस्तः —विक्रम० २, (मेरी प्रिया का आत्मलेख), २।२० (अतः आलं० से) प्रमाण, संकेत -मुद्रा० ३ 7. सहायता, मदद, सहारा,—वात्याखेदं कृशाङ्ग्याः सुचिरमवयवैर्दत्तहस्ता करोति—वेणी० २।२१ 8. राशि, परिमाण, (बालों का) गुच्छा, रचना में 'केश' 'कच' के साथ —पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे -अमर०, सति विगलितबन्धे केशहस्ते सुकेश्याः सति कुसुमसनाथे किं करोत्येष बर्हीं, - विक्रम० ४।१०,—**स्तम्** धौंकनी । सम०—**अक्षरम्** अपने निजी अक्षर, दस्तखत,—**अग्रम्** अंगुली (क्योंकि हाथ का सिरा यही होती है) —**अंगुलिः** हाथ की कोई सी अंगुलि, **अभ्यस्तः** हाथ से काम करने का अभ्यास, -**अवलम्बः**—**आलम्बनम्** हाथ का सहारा —दत्तहस्तावलम्बे प्रारम्भे—रत्न० (सहारा दिये जाने पर),—**आमलकम्** 'हाथ में रक्खा आंवले का फल' यह एक वाग्धारा है, और उस समय प्रयुक्त होती है जब कभी ऐसी बात का निर्देश करना हो तो बिल्कुल स्पष्ट और अनायास ही बोधगम्य हो;—**आवापः** दस्ताना, हस्तत्राण, (ज्याघातवारण)—विक्र० ५, श० ६ —**कमलम्** 1. हाथ में लिया हुआ कमल 2. कमल जैसा हाथ, **कौशलम्** हाथ की दक्षता,—**क्रिया** हाथ का काम, दस्तकारी, **गत गामिन्** (वि०) हाथ में आया हुआ, अधिकार में आया हुआ, प्राप्त, गृहीत त्वं प्रार्थ्यसे हस्तगता ममैभिः रघु० ७।६७, ८।१, **ग्राहः** हाथ से पकड़ना, **चापल्यम् हस्तकौशल**, —**तलम्** 1. हाथ की हथेली 2. हाथी के सूंड की नोक, —**तालः** हथेली बजाना, तालियां बजाना, **दोषः** हाथ से होने वाली त्रुटि, भूल, **धारणम्**—**वारणम्** (हाथ से) आघात का निवारण करना, **पादम्** हाथ और पैर, न मे हस्तपादं प्रसरति श० ४, **पुच्छम्** कलाई से नीचे का भाग,—**पृष्ठम्** हथेली का पृष्ठभाग, —**प्राप्त** (वि०) 1. हस्तगत 2. उपलब्ध, सुरक्षित, —**प्राप्य** (वि०) जहां आसानी से हाथ पहुंच सके, जो हाथ की पहुंच में हो—हस्तप्राप्यस्तवकनमितो बालमन्दारवृक्षः—मेघ० ७५,—**बिम्बम्** शरीर में उबटन आदि गंध द्रव्यों का लेप, **मणिः** कलाई पर पहना जाने वाला रत्नाभूषण,—**लाघवम्** 1. हाथ की तत्परता या कुशलता 2. हाथ की सफाई, बाजीगरी,—**संवाहनम्** हाथ से मलना या मालिश करना—मेघ० ९६,—**सिद्धिः** (स्त्री०) 1. हाथ का श्रम, हाथ से किया जाने वाला काम 2. भाड़ा, पारिश्रमिक, मज़दूरी, **सूत्रम्** कलाई में धारण किया हुआ मंगलसूत्र या वलय, कड़ा —कु० ७।२५ ।

हस्तकः हस्तवत् [हस्त+कन्] 1. हाथ की अवस्थिति ।

हस्ताहस्ति (वि०) [हस्त+मतुप्] दक्ष, कुशल, चतुर ।

हस्तिकम् (अव्य०) [हस्तैश्च हस्तैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् व० स०, दीर्घ; इत्वम्, अव्ययत्वं च] हाथापाई, हस्ताहस्ति जन्यमजनि दश० ।

हस्तिकम् [हस्तिनां समूहः—कन्] हाथियों का समूह ।

हस्तिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [हस्तः शुंडादण्डोऽस्त्यस्य इनि] 1. करयुक्त 2. सूंडवाला,—(पुं०) हाथी मनु० ७।९६, १२।४३, (हाथी चार प्रकार के बताये जाते हैं—भद्र, मंद्र, मृग और मिश्र) 1. सम० **अध्यक्षः** हाथियों का अधीक्षक, **आयुर्वेदः** हाथियों के रोगों की चिकित्सा से संबद्ध कृति, रचना, **आरोहः** महावत, या हाथी की सवारी करने वाला, **कक्ष्यः** 1. सिंह 2. बाघ —**कर्णः** एरंड का पौधा,—**घ्नः** 1. हाथी को मारने वाला, —**चारिन्** (पुं०) पीलवान,—**दन्तः** 1. हाथी का दांत 2. दीवार में गड़ी हुई खूंटी (—**तम्**) 1. हाथीदांत 2. मूली,—**दन्तकम्** मूली,—**नखम्** पुरद्वार पर बना हुआ मिट्टी का ढूहा,—**पः पकः** पीलवान, हाथी की

सवारी करने वाला—इति बोधयतीव डिंडिमः करिणो हस्तिपकाहतः क्वणन्—हि० २।८६,—मदः मस्त हाथी के मस्तक से चूने वाला मदरस;,—मल्लः 1. ऐरावत 2. गणेश 3. राख का ढेर 4. धूल की बौछार 5. कुहरा,—यूथ,—थम् हाथियों का समूह,—वर्चसम् हाथी की शान, कान्तिः,—वाहः 1. पीलवान 2. हाथियों को हांकने का अंकुश,—षड्गवम् छः हाथियों का समूह, —स्नानम् गजस्नान, हाथी का स्नान अवशेन्द्रिय-चित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया - हि० १।१८—हस्तः हाथी की सूंड।

हस्तिन (ना) पुरम् [अलुक् समास हस्तिना तदाख्यनृपेण चिह्नितं तत्कृतत्वात्] राजा हस्तिन् द्वारा बसाया गया नगर, (वर्तमान दिल्ली से लगभग ५० मील उत्तरपूर्व दिशा में, यही वह नगर है जहाँ महाभारत के कृत्य का केन्द्रीय दृश्य था, इसके अन्य नाम यह हैं—गजाह्वय, नागसाह्वय, नागाह्व और हास्तिन)।

हस्तिनी [हस्तिन्+ङीप्] 1. हथिनी 2. एक प्रकार की औषध और गन्धद्रव्य 3. कामशास्त्र में वर्णित चार प्रकार की स्त्रियों में से एक (इस स्त्री के होठ, अंगुलियाँ और कूल्हे मोटे, तथा स्तन भारी होते हैं, इसका रंग काला और कामलिप्सा अधिक होती है, रतिमंजरी में इसका वर्णन इस प्रकार है—स्थूलाधरा स्थूलनितम्बबिम्बा स्थूलाङ्गुलिः स्थूलकुचा सुशीला। कामोत्सुका गाढरतिप्रिया च नितान्तभोक्त्री-नितंबखर्वा —खलु हस्तिनी स्यात्—(करिणी मता सा)।

हस्त्य (वि०) [हस्त+यत्] 1. हाथ से संबंध रखने वाला 2. हाथ से किया गया 3. हाथ से दिया हुआ।

हहलम् [ह+हल्+अच्] एक प्रकार का घातक विष।

हहा (पुं०) [ह+हा+क्विप्] एक गन्धर्वविशेष—तु० हाहा।

हा (अव्य०) [हा+का] 1. शोक, उदासी, खिन्नता को प्रकट करने वाला अव्यय, आह, हाय, अरे—हा प्रिये जानकि—उत्तर० ३, हा हा देवि स्फुटति हृदयं—उत्तर० ३।३८, हा पितः क्वासि, हे सुभ्रु—भट्टि० ६।११, हा वत्से मालति क्वासि—मा० १० आदि (इस अर्थ में 'हा' प्रायः कर्म० के साथ प्रयुक्त होता है—हा कृष्णाभक्तम्—सिद्धा०) 2. आश्चर्य—हा कथं महाराज-दशरथस्य धर्मदाराः प्रियसखी मे कौसल्या—उत्तर० ४ 3. क्रोध या झिड़की।

हा i (जुहो० आ० जिहीते, हान, कर्मवा० हायते, इच्छा० जिहासते) 1. जाना, हिलना-जुलना—जिहीया विख्यातां स्फुटमिह भवद्बान्धवरथम्—हंस० २८, कि० १३।२३, नलो० १।३८ 2. प्राप्त करना, हासिल करना, उद्—, 1. ऊपर की ओर जाना, (सभी अर्थों में) उठना—यतो रजः पार्थिवमुज्जिहीते—रघु० १३।६४, आविर्भूतानुरागाः क्षणमुदयगिरेरुज्जिहानस्य भानोः - मुद्रा० ४।२१, नै० २२।४५, ५५, उज्जिहीषे महाराज त्वं प्रशान्तो न किं पुनः - भट्टि० १८।२७, 'तुम क्यों नहीं उठते हो अर्थात् जीवित होते हो' कोलाहलो लोकस्योदजिहीत—दश० 'लोगों से एक शोर उठा' 2. जुदा होना, चले जाना—उज्जिहान-जीवितां वराकीं नानुकम्पसे—मा० १० 3. उठाना —शिरसा यूपमुज्जिहीते—कात्या० 4. चढ़ाना, (भौंहें) उठाना, सिकोड़ना—भट्टि० ३।४७, उप—, नीचे आना, उतरना—निजौजसोज्जासयितुं जगद्द्रुहामुपाजिहीथा न महीतलं यदि - शि० १।२१, सम्—, जाना, पहुँचना, उपभोग करना—जनता······समहास्त मुदम्—नलो० १।५४।

ii (अदा० पर० जहाति, हीन) 1. छोड़ना, त्यागना, परिहार करना,—छोड़ देना, तजना, तिलांजलि देना, पदत्याग करना - मूढ जहीहि धनागमतृष्णां कुरु तनुबुद्धे मनसि वितृष्णाम्—मोह० १, सा स्त्रीस्वभावादसहा भरस्य तयोर्द्वयोरेकतरं जहाति—मुद्रा० ४।१३, रघु० ५।७२, ८।५२, १२।२४, १४।६१, ८७, १५।५९, श० ४।१३, भग० २।५०, भट्टि० ३।५३, ५।९१, १०।७१, २०।१०, मेघ० ४९, ६०, भामि० २।१२९, ऋतु० १।३८ 2. पदत्याग करना, जाने देना 3. गिरने देना 4. भूल जाना, उपेक्षा करना, अवहेलना करना 5. बचना, बिदकना—कर्म० (हीयते) 1. छोड़ दिया जाना, कि० १२।१२ 2. निकाल दिया जाना, वञ्चित किया जाना, लुप्त होना (करण० या अपा० के साथ)—विरूपाक्षो जहे प्राणैः—भट्टि० १४।३५, जनयित्वा सुतं तस्यां ब्राह्मण्यादेव हीयते—मनु० ३।१७, ५।१६१, ९।२११ 3. कम होना, थोड़ा हो जाना, प्रायः 'परि' के साथ 4. घटना, कम होना, मुर्झाना, क्षीण होना, आलं० से भी) क्षय को प्राप्त होना —प्रवृद्धो हीयते चन्द्रः समुद्रोऽपि तथाविधः—रघु० १७।७१, हि० प्र० ४२ 5. (जैसे मुक़दमे में) हार जाना—भूपमप्युपन्यस्तं हीयते व्यवहारतः—याज्ञ० २।१९ 6. छूट जाना, भूल जाना 7. कमज़ोर होना —प्रेर० (हापयति-ते) 1. छुड़वाना, परित्यक्त कराना 2. अवहेलना करना, भूलना, अनुष्ठान में देर करना—शि० १६।३३, मनु० ३।७१, ४२१, याज्ञ० १।१२१, इच्छा० (जिहासति) छोड़ने की इच्छा करना, अप,—छोड़ना, त्यागना, तज देना—विललाप स बाष्पगद्गदं सहजामप्यपहाय धीरताम्—रघु० ८।४३ अपा—, छोड़ना, त्यागना, अव—, छोड़ना, वञ्चित होना, परि—, 1. छोड़ना, त्यागना, छोड़ कर चल देना 2. भूल जाना, अवहेलना करना—यथोक्तान्यपि कर्माणि परिहाय—मनु० १२।९२, (कर्मवा०) 1. अल्प

होना, कम होना—आर्यस्य सुविहितप्रयोगतया न किमपि परिहास्यते—श० १ 2. घटिया होना—ओजस्वितया न परिहीयते शच्याः— विक्रम० ३, मालवि० २, प्र—1. छोड़ना, त्यागना, परित्यक्त करना, तिलांजलि देना—प्रजहाति यदा कामान्—भग० २।५५ ३९, मोहमेतौ प्रहास्येते—राम० 2. जाने देना, फेंकना, डाल देना—प्रजहुः शूलपट्टिशान्—भट्टि० १४।२३, वि–, छोड़ना, परित्यक्त करना, तजना, छोड़ देना—विहाय लक्ष्मीपतिलक्ष्म कार्मुकं जटाधरः सन् जुहुधीह पावकम् —कि० १।४४, मेघ० ४१, रघु० २।४०, ५।६७,७३, ६।७, १२।१०२, १४।४८, ६९, कु० २१, (प्रेर०) पुरस्कार देना।

हाङ्गर [हा विषादाय पीड़ायै वा अंगं राति—हा+अङ्ग+रा+क] एक बड़ी मछली।

हाटक (वि०) (स्त्री०—की) [हाटक+अण्] सुनहरी, —कम् सोना। सम०—गिरिः सुमेरु पर्वत।

हात्रम् [हा करणे त्रल्] पारिश्रमिक, मजदूरी, भाड़ा।

हानम् [हा+क्त] 1. छोड़ना, त्यागना, हानि, असफलता 2. बच निकलना 3. पराक्रम, बल।

हानिः (स्त्री०) [हा+क्तिन्, तस्य निः] 1. परित्याग, तिलांजलि 2. हानि, असफलता, अनुपस्थिति, अनस्तित्व —क्वचित् स्फुटालङ्कारविरहेऽपि न काव्यत्वहानिः —काव्य० १, 'इसमें काव्य की हानि नहीं' 3. हानि, नुक़सान, क्षति—ग्रासोद्गलितसिक्थेन का हानिः करिणो भवेत्—सुभा०, का नो हानिः—सर्व० 4. न्यूनता, कमी—यथा हानिः क्रमप्राप्ता तथा वृद्धिः क्रमागता—हरि०, याज्ञ० २।२०७, २४४ 5. अवहेलना, भूलना, भंग—प्रतिज्ञा°, कार्य° 6. नष्ट होना, बर्बाद होना, हानि—कालहानिः—रघु० १३।१६।

हाफिका (स्त्री०) जमुहाई, जृंभा।

हायनः,—नम् [हा+ल्यु] वर्ष,—नः 1. एक प्रकार का चावल 2. शिखा, ज्वाला।

हारः [हृ+घञ्] 1. ले जाना, हटाना, पकड़ना 2. पहुँचाना 3. अपकर्षण, अलगाव 4. वाहक, हरकारा 5. मोतियों की माला, हार—हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले—अमरु० १००, पाण्ड्योऽयमंसार्पितलम्बहारः—रघु० ६।६०, ५।५२, ६।१६, मेघ० ६७, ऋतु० १।४, २।१८ 6. संग्राम, युद्ध 7. (गणि० में) किसी भिन्न का नीचे का अंश 8. भाजक। सम० —आवलिः—ली (स्त्री०) मोतियों की लड़ी—तरुणीस्तन एव शोभते मणिहारावलिरामणीयकम्—नै० २।४४, हारावलीतरलकाञ्चितकाञ्चिदाम—गीत० ११, —गुटि (लि) का माला का दाना या हार का मोती रघु० ५।७०,—यष्टिः हार, मोतियों की लड़ी—दधति-पृथुकुचाग्रैरुन्नतैर्हारयष्टिम्—ऋतु० २।२५, १।८, —हारा एक प्रकार का लालभूरे रंग का अंगूर।

हारकः [हृ+ण्वुल्] 1. चोर, लुटेरा—याज्ञ० ३।२१५ 2. ठग, धूर्त 3. मोतियों की लड़ी 4. (गणि० में) भाजक 5. एक प्रकार की गद्य रचना।

हारि (वि०) [हृ+णिच्+इन्] आकर्षक, मोहक, सुखकर, मनोहर,—रिः (स्त्री०) 1. पराजय 2. खेल में हार 3. यात्रियों का समूह, सार्थवाह। सम०—कण्ठः कोयल।

हारिणिकः [हरिण+ठक्] हरिणों को पकड़ने वाला, शिकारी।

हारित (भू० क० कृ०)[हृ+णिच्+क्त] 1. हरण कराया हुआ, पकड़ाया हुआ 2. उपहार स्वरूप दिया गया, प्रस्तुत किया गया 3. आकृष्ट,—तः 1. हरा रंग 2. एक प्रकार का कबूतर।

हारिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [हारो अस्त्यस्य इनि, हृ+णिनि वा] 1. ले जाने वाला, पहुंचाने वाला, ढोने वाला 2. लूटने वाला, हरण करने वाला—वाजिकुंजराणां च हारिणः—याज्ञ० २।२७३, ३।२०८ 3. पकड़ लेने वाला, बाधा पहुँचाने वाला,—मनु० १२।२८ 4. प्राप्त करने वाला, उपलब्ध करने वाला 5. आकर्षक, मोहक, सुखकर, आह्लादकर, आनन्दप्रद —तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः—श० १।५, शि० १०।१३, ६९, विष्टपहारिणि हरौ—भर्तृ० २।२५ 6. आगे बढ़ने वाला, अग्रगण्य होने वाला 7. हार धारण करने वाला।

हारिद्रः [हरिद्रा+अण्] 1. पीला रंग 2. कदंब का वृक्ष।

हारीतः [हृ+णिच्+ईतच्] 1. एक प्रकार का कबूतर —रघु० ४।४६ 2. धूर्त, ठग 3. एक स्मृतिकार का नाम—याज्ञ० १।४।

हार्दम् [हृदयस्य कर्म युवा० अण् हृदादेशः] 1, स्नेह, प्रेम अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः—कि० १।३३, शि० ९।६९, विक्रम० ५।१० 2. कृपा, सुकुमारता 3. इच्छाशक्ति 4. अभिप्राय, अर्थ।

हार्य (वि०) [हृ+ण्यत्] 1. हरण किये जाने योग्य, ढोये जाने योग्य 2. सहन किये जाने योग्य, ले जाये जाने योग्य—यदृढया वारणराजहार्यया—कु० ५।७० 3. अपहरण किये जाने योग्य, छीने जाने योग्य—रघु० ७।६७ 4. विस्थापित होने योग्य, (हवा आदि के द्वारा) ले जाये जाने योग्य—रघु० १६।४३ 5. (अपने संकल्प से) चलायमान होने योग्य—कु० ५।८ 6. उपलब्ध किये जाने योग्य, जीते जाने योग्य, आकृष्ट किये जाने योग्य, विजित या प्रभावित किये जाने योग्य—वहसि हि धनहार्यं पुण्यभूतं शरीरम्—मृच्छ०

१।३१, कु० ५।५३, मनु० ७।२१७ 7. पकड़े जाने योग्य, लूटे जाने योग्य – मनु० ८।४१७,—र्यः 1. साँप 2. बिभीतक या बहेड़े का वृक्ष 3. (गणि० में) भाज्य ।

हालः [हलो अस्त्यस्य अण्, हल एव वा अण्] 1. हल 2. बलराम का नाम 3. शालिवाहन का नाम । सम० —भृत् (पुं०) बलराम का विशेषण ।

हालकः [हाल+कन्] पीले भूरे रंग का घोड़ा ।

हाल (ला) हलम् [=हलाहल, पृषो०] एक प्रकार का घातक विष जो समुद्रमंथन के परिणाम स्वरूप मिला था । (अत्यन्त विषाक्त होने के कारण यह प्रत्येक वस्तु को भस्म करने लगा, इसलिए इसे शिव जी ने पी लिया) —अहमेव गुरुः सुदारुणानामिति हालाहल मास्म तात दृप्यः/ ननु सन्ति भवादृशानि भूयो भुवनेऽस्मिन् वचनानि दुर्जनानाम्—सुभा० 2. (अतः) घातक विष, या जहर, दे० भामि० १।९५, २।७३, पंच० १।१८३, ('हलाहल' और 'हालहाल' भी लिखा जाता है) ।

हालहली, हाला [हालाहल+ङीप्, हल्+घञ्+टाप्] शराब,—मदिरा—हित्वा हालामभिमतरसां रेवतीलोचनाङ्कम्—मेघ० ४९, पंच० १।५८, शि० १०।२१ ।

हालिकः [हलेन खनति हलः प्रहरणमस्य तस्येदं वा ठक् ठञ् वा] 1. हलवाला, किसान 2. जो हल चलाये (जैसे कि हल में जुता बैल) 3. जो हल के द्वारा युद्ध करता है ।

हालिनी [हल्+णिनि+ङीप्] एक प्रकार की बड़ी छिपकली ।

हाली [हल्+इण्+ङीष्] छोटी साली ।

हालुः [हल्+उण्] दाँत ।

हावः [ह्वे भावे घञ् नि० संप्र०, हुकरणे घञ् वा] 1. बुलावा, आमन्त्रण 2. स्त्रियों की नखरेबाजी जो पुरुषों की रत्यात्मक भावनाओं को उत्तेजित करती है, (प्रेम की) रंगरेली, मधुरभाषण —हावहारि हसितं वचनानां कौशलं दृशि विकारविशेषाः—शि० १०।१३, जगुः सरागं ननृतुः सहावम्/—भट्टि० ३।४३, (उज्ज्वलमणि ने हाव की परिभाषा निम्नांकित की है —ग्रीवारेचकसंयुक्तो भ्रूनेत्रादिविकासकृत् । भावादीषत् प्रकाशो यः स हाव इति कथ्यते ॥ दे० सा० द० १२७ भी ।

हासः [हस्+घञ्] 1. ठहाका, हंसी, मुस्कराहट --भासो हासः—प्रसन्न० १।२२ 2. हर्ष, खुशी, आमोद 3. हास्यध्वनि, हास्यरस, – दे० सा० द० २०७ 4. व्यंग्यपूर्ण हंसी —रघु० १२।३६ 5. खुलना, विकसित होना, फूलना (कमल आदि का) —कूलानि सामर्षतयेव तेनुः सरोजलक्ष्मीं स्थलपद्महासैः—भट्टि० २।३ ।

हासिका [हस्+ण्वुल्+टाप्, इत्वम्] 1. अट्टहास 2. खुशी, आमोद ।

हास्य (वि०) [हस्+ण्यत्] हंसने के योग्य, हास्यास्पद, रघु० २।४३,—स्यम् 1. हंसी —याज्ञ० १।८४ 2. खुशी, मनोरंजन, क्रीड़ा मनु० ९।२२७ 3. मज़ाक, मखौल 4. व्यंग्य, दिल्लगी, ठट्ठा,—स्यः काव्य में वर्णित हास्यरस, परिभाषा—विकृताकारवाग्वेषचेष्टादेः कुहकाद्भवेत् । हास्यो हासस्थायिभावः ('हासो हास्यस्थायिभावः' के स्थान पर) श्वेतः प्रथमदैवतः सा० द० २२८ । सम० —आस्पदम् हंसी की चीज़, हंसी उड़ाने की वस्तु,—पदवी,—मार्गः खिल्ली, दिल्लगी—क्रुद्धैर्नीतस्त्रिभुवनजयी हास्यमार्गं दशास्यः – विक्रम० १८। १०७,– रसः हंसी या आमोदात्मक रस—दे० ऊपर 'हास्य' ।

हास्तिकः [हस्तिन्+ठक्] महावत, या गजारोही,—कम् हाथियों का समूह— शि० ५।३० ।

हास्तिनम् [हस्तिना नृपेण निर्वृत्तम् नगरम्—हस्तिन्+अण्] हस्तिनापुर नगर का नाम ।

हाहा (पुं०) [हा इति शब्दं जहाति—हा+हा+क्विप्] एक गन्धर्व का नाम— (अव्य०) पीड़ा, शोक या आश्चर्य का प्रकट करने वाला उद्गार (यह केवल 'हा' शब्द है, केवल बल देने के लिए इसको 'द्वित्व' कर दिया गया है) । सम०—कारः 1. शोक, विलाप, रोना-धोना 2. युद्ध का शोर, -- रवः 'हा हा' की ध्वनि ।

हि (अव्य०) (इसका प्रयोग वाक्य के आरम्भ में कभी नहीं होता) इसके अर्थ निम्नांकित हैं:—1. इसलिए कि, क्योंकि (तर्कसंगत युक्ति का निर्देश करना) —अग्निरिहास्ति धूमो हि दृश्यते—गण०, रघु० ५।१० 2. निस्सन्देह, निश्चय ही—देवप्रयोगप्रधानं हि नाट्यशास्त्रम्—मालवि० १, न हि कमलिनीं दृष्ट्वा ग्राहमवेक्षते मतङ्गजः—मालवि० ३ 3. उदाहरणस्वरूप, जैसा कि सुविदित है, प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् । सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः —रघु० १।१८ 4. केवल, अकेला (किसी विचार पर बल देने के लिए) मूढो हि मदनेनायास्यते—का० १५५ 5. कभी कभी यह केवल पूरक की भांति ही प्रयुक्त होता है ।

हि (स्वा० पर० हिनोति, हित—प्रेर० हाययति, इच्छा० जिघीषति) 1. भेजना, उकसाना 2. डाल देना, फेंकना, (तीर) चलाना, (बन्दूक) दागना —गदा शक्रजिता जिघ्ये-- भट्टि० १४।३६ 3. उत्तेजित करना, भड़काना, उकसाना, 4. उन्नत करना, आगे बढ़ाना 5. तृप्त करना, प्रसन्न करना, उल्लसित करना 6. जाना, प्रगति करना, प्र —, 1. भेज देना, ढकेलना 2. फेंकना, (तीर) चलाना, (बन्दूक) दाग देना

—विनाशात्तस्य वृक्षस्य रक्षस्तस्मै महोपलं। प्रजिघाय --रघु० १५।२१, भट्टि० १५।१२१ 3. भेजना, प्रेषित करना, मा० १, रघु० ८।७९, ११। ४९, १२।८६, भट्टि० १५।१०४।

हिंस् (भ्वा० रुधा० पर०, चुरा० उभ० हिंसति, हिनस्ति, हिंसयति - ते, हिंसित) 1. प्रहार करना, आघात करना 2. चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, नुक़सान पहुँचाना 3. कष्ट देना, संताप देना—मा० २।१ 4. मार डालना, हत्या करना, बिल्कुल नष्ट कर देना —कीर्ति सूते दुष्कृतं या हिनस्ति उत्तर० ५।३१, रघु० ८।४५, भग० १३।२८, भट्टि० ६।३८, १४।५७, १५।७८।

हिंसक (वि०) [हिंस्+ण्वुल्] हानिकर, अनिष्टकर, क्षतिकर—कः 1. ख़ूंख़ार जानवर, शिकारी जानवर 2. शत्रु 3. अथर्ववेद में निपुण ब्राह्मण।

हिंसनम्, -- ना [हिंस्+ल्युट्] प्रहार करना, चोट मारना, वध करना—मनु० २।१७७, १०।४८, याज्ञ० १।३३।

हिंसा [हिंस्+अ+टाप्] 1. क्षति, उत्पात, बुराई, नुक-सान, चोट, (यह तीन प्रकार की मानी जाती है —कायिक, वाचिक और मानसिक)—अहिंसा परमो धर्मः 2. वध करना, हत्या करना, विध्वंस —रघु० ५।५७, याज्ञ० ३।११३, मनु० १०।६३ 3. लूटना, डाका डालना। सम०—**आत्मक** (वि०) हानिकर, विनाशकारी,—**कर्मन्** (नपुं०) 1. कोई भी हानिकर या क्षति पहुँचाने वाला कृत्य 2. शत्रु का नाश करने में प्रयुक्त जादू, अभिचार—**प्राणिन्** अनिष्टकर जंतु,—**रत** (वि०) उत्पात में संलग्न, —**रुचि** उत्पात करने पर तुला हुआ, —**समुद्भव** (वि०) क्षति से उत्पन्न।

हिंसारुः [हिंसा+आरु] 1. बाघ, चीता 2. कोई भी अनिष्टकर जन्तु।

हिंसालु (वि०) [हिंसा+आलुच्] 1. हानिकर, उत्पाती, चोट पहुँचाने वाला 2. घातक - (पुं०) उत्पाती या जंगली कुत्ता।

हिंसालुक (वि०) [हिंसालु+कन्] उपद्रवी या जंगली कुत्ता।

हिंसीरः [हिंस्+ईरन्] 1. बाघ 2. पक्षी 3. उपद्रवी व्यक्ति।

हिंस्य (वि०) [हिंस्+ण्यत्] जो क्षतिग्रस्त किया जा सके या मारा जा सके—रघु० २।५७, मनु० ५।४१।

हिंस्र (वि०) [हिंस्+र्] 1. हानिकर, अनिष्टकर, उपद्रवी, पीड़ाकर, घातक मनु० ९।८०, १२।५६ 2. भयंकर 3. क्रूर, भीषण, बर्बर—**स्रः** 1. भीषण जन्तु, शिकारी जानवर,—रघु० २।२७ 2. विनाशक 3. शिव 4. भीम। सम०—**पशुः** शिकारी जानवर, —**यन्त्रम्** 1. पिंजरा 2. दुर्भावनापूर्ण अभिप्रायों के लिए प्रयुक्त होने वाला अभिचारमंत्र।

हिक्क् i (भ्वा० उभ० हिक्कति – ते, हिक्कित) 1. अस्पष्ट उच्चारण करना 2. हिचकी लेना।

ii (चुरा० आ० हिल्लयते) चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, वध करना।

हिक्का [हिक्क्+अ+टाप्] 1. अस्पष्ट ध्वनि 2. हिचकी।

हिङ्कारः ['हिम्' इत्यस्य कारः] 1. 'हिम्' की मन्द ध्वनि करना, हुंकार भरना 2. बाघ।

हिङ्गु (पुं०, नपुं०) [हिमं गच्छति—गम्+डु, नि०] 1. हींग का पौधा 2. इस पौधे से तैयार किया गया पदार्थ जो घर में खाद्यपदार्थों में छौंक के लिए प्रयुक्त होता है। सम०—**निर्यासः** 1. हींग के वृक्ष का गोंद के रूप में रस 2. नीम का पेड़,—**पत्रः** इंगुदी का वृक्ष।

हिङ्गुलः, **हिङ्गुलिः**, **हिङ्गुलु** (पुं० नपुं०) [हिङ्गु+ला+क (कि, डु वा)] ईंगुर, सिंदूर।

हिञ्जीरः (पुं०) हाथी के पैरों को बाँधने की बेड़ी या रस्सी।

हिडिम्बः (पुं०) वह राक्षस जिसे भीम ने मारा था,—**बा** हिडिंब की बहन जिसने भीम से विवाह कर लियः था। सम०—**जित्**,—**निषूदन**, **भिद्**,—**रिपु** (पुं०) भीम के विशेषण।

हिण्ड् (भ्वा० आ० हिण्डते, हिण्डित) जाना, घूमना, इधर उधर फिरना, आ—, घूमना, या इधर-उधर फिरना —श० २।

हिण्डनम् [हिण्ड्+ल्युट्] 1. घूमना, इधर-उधर फिरना 2. संभोग 3. लेखन।

हिण्डिकः [हिण्ड्+इन्=हिण्डि+कन्] ज्योतिषी।

हिण्डि (डी) रः [हिण्ड्+ईरन् (इरन्)] 1. समुद्रझाग 2. पुरुष, मर्द 3. बैंगन।

हिण्डी [हिड्+इन्+ङीप्] दुर्गा।

हित (वि०) [धा (हि)+क्त] 1. रखा हुआ, डाला हुआ, पड़ा हुआ 2. थामा हुआ, लिया हुआ 3. उप-युक्त, योग्य, समुचित, अच्छा (संप्र० के साथ)—गोभ्यो हितं गोहितम् 4. उपयोगी, लाभदायक 5. हितकारी, लाभप्रद, रुचिकर, स्वास्थ्यवर्धक (शब्द या भोजन आदि)—हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः—कि० १।४, १४।६३ 6. मित्रवत्, कृपालु, स्नेही, सद्वृत्त (प्रायः अधि० के साथ)—**तः** मित्र, परोपकारी, मित्र जैसा परामर्शदाता—हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः

—कि० ११५, हि० ११३०,—तम् 1. उपकार, लाभ, फ़ायदा 2. कोई भी उपयुक्त या समुचित बात 3. कल्याण, कुशल, क्षेम। सम०—अनुबन्धिन् (वि०) कल्याणप्रद,—अन्वेषिन्,—अर्थिन् कुशलाभिलाषी,—इच्छा सदिच्छा, मंगलकामना,—उक्तिः आरोग्य-वर्धक निदेश, सत्परामर्श, नेक सलाह,—उपदेशः हितकर उपदेश, सत्परामर्श, नेक सलाह,—एषिन् हितेच्छु, भला चाहने वाला, परोपकारी,—करं (वि०) सेवा या कृपापूर्ण कार्य करने वाला, मित्र-सा व्यवहार करने वाला, अनुकूल,—काम (वि०) हितेच्छु, मंगलाकांक्षी,—काम्या दूसरे की मंगलकामना, सदिच्छा,—कारिन्,—,कृत (पुं०) परोपकारी,—प्रणी (पुं०) गुप्तचर—बुद्धि (वि०) मित्र-से मन वाला, सद्भावनापूर्ण,—वाक्यम् मैत्रीपूर्ण परामर्श,—वादिन् (पुं०) सत्परामर्श देने वाला।

हितकः [हित+क] 1. बच्चा 2. किसी पशु का शावक।

हिन्तालः [हीनस्तालो यस्मात्—पृषो०] एक प्रकार का खजूर।

हिन्दोलः [हिल्लोल्+घञ्, पृषो०] 1. हिंडोल, झूला 2. श्रावण के शुक्ल पक्ष में दोलोत्सव के अवसर पर कृष्ण भगवान् की मूर्तियों को ले जाने वाला हिंडोल, या दोलोत्सव।

हिन्दोलकः, हिन्दोला [हिन्दोल+कन्, टाप् वा] झूला, हिंडोला।

हिम (वि०) [हि+मक्] ठंडा, शीतल, सर्द, तुषारयुक्त, ओसीला,—मः 1. जाड़े की मौसम, सर्द ऋतु 2. चंद्रमा 3. हिमालय पर्वत 4. चन्दन का पेड़ 5. कपूर,—मम् कुहरा, पाला—रघु० १।४६, ९।२५, कु० २।१९ 2. बर्फ़, पाला—कु० १।३, ११, रघु० ९।२८, १५। ६६, १६।४४, कि० ५।१२ 3. सर्दी, ठंडक 4. कमल 5. ताजा मक्खन, 6. मोती 7. रात 8. चन्दन की लकड़ी। सम०—अंशुः 1. चन्द्रमा,—मेघ० ८९, रघु० ५।१६, ६।४७, १४।८०, शि० २।४९ 2. कपूर °अभिख्यम् चाँदी,—अचलः—अद्रिः हिमालय पहाड़—कु० १।५४, रघु० ४।७९, १४।१३, °जा, °तनया 1. पार्वती 2. गंगा,—अम्बु,—अम्भस् (नपुं०) 1. शीतल जल 2. ओस—रघु० ५।७०,—अनिलः शीतल वायु,—अब्जम् कमल,—अरातिः 1. आग 2. सूर्य,—आगमः जाड़े का मौसम या सर्द ऋतु—आर्त्तः (वि०) पाले से ठिठुरा हुआ, ठंड से जमा हुआ,—आलयः हिमालय पहाड़—कु० १।१, °सुता पार्वती का विशेषण,—आह्वः—आह्वयः कपूर,—उस्रः चन्द्रमा,—करः 1. चाँद—लुठति न सः हिमकरकिरणेन—गीत० ७ 2. कपूर,—कूटः 1. जाड़े की ऋतु 2. हिमालय पहाड़,—गिरिः हिमालय पहाड़,—गुः चाँद,—जः मैनाक पर्वत,—जा 1. खिरनी का पेड़ 2. पार्वती,—तैलम् एक प्रकार की कपूर की मल्हम,—दीधितिः चन्द्रमा—शि० ९।२९—दुर्दिनम् अति ठंड से कष्ट-दायक दिन, ठंड और बुरा मौसम,—द्युतिः चन्द्रमा,—द्रुह् (पुं०) सूर्य,—ध्वस्त (वि०) पाले से मारा हुआ, कुतरा हुआ या नष्ट हुआ,—प्रस्थः हिमालय पहाड़,—रश्मि (पुं०) चाँद,—वालुका कपूर,—शीतल (वि०) बर्फ़ की भांति ठंडा,—शैलः हिमालय पहाड़,—संहतिः (स्त्री०) बर्फ़ का ढेर,—सरस् 'बर्फ़ की झील, ठंडा पानी—मा० ११३१,—हासकः दलदल में होने वाला खजूर का पेड़।

हिमवत् (वि०) [हिम+मतुप्] हिममय, बर्फीला, कुहरा से युक्त,—(पुं०) हिमालय पहाड़—रघु० ४।७९, विक्रम० ५।२२। सम०—कुक्षिः हिमालय पर्वत की घाटी,—पुरम् हिमालय की राजधानी ओषधिप्रस्थ का नाम,—कु० ६।३३,—सुतः मैनाक पर्वत,—सुता 1. पार्वती 2. गंगा।

हिमानी [महद् हिमम्, हिम+ङीप् आनुक्] बर्फ़ का ढेर, हिम का समूह, हिमसंहति—नगमुपरि हिमानीगौरमा-साद्य जिष्णुः—कि० ४।३८, भामि० १।२५।

हिरणम् [हृ+ल्युट्, नि०] 1. सोना 2. वीर्य 3. कौड़ी।

हिरण्मय (वि०) (स्त्री० -यी) [हिरण+मयट् नि०] सोने का बना हुआ, सुनहरी—हिरण्मयी सीतायाः प्रतिकृतिः—उत्तर० २, रघु० १५।६१,—यः ब्रह्मा देवता।

हिरण्यम् [हिरणमेव स्वार्थे यत्] 1. सोना,—मनु० २।२४६, ८।१८२ 2. सोने का पात्र - मनु० २।२९ 3. चाँदी 4. कोई भी मूल्यवान् धातु 5. दौलत, संपत्ति 6. वीर्य, शुक्र 7. कौड़ी 8. एक विशेष माप 9. सारांश 10. धतूरा 1. सम०—कक्ष (वि०) सुनहरी करधनी पहनने वाला,—कशिपुः राक्षसों के एक प्रसिद्ध राजा का नाम (यह कश्यप और दिति का पुत्र था। यह इतना शक्ति शाली हो गया था कि इसने इन्द्र का राज्य छीन लिया और तीनों लोकों को पीडित करने लगा। इसने बड़े-बड़े देवताओं की निन्दा की, और अपने पुत्र प्रह्लाद को, विष्णु को ही परमात्मा मानने के कारण नाना प्रकार के कष्ट दिये, परन्तु बाद में उसे विष्णु ने नरसिंह का अवतार धारण कर यमपुर भेज दिया—दे० प्रह्लाद),—कोशः सोना और चांदी (चाहे आभूषण बने हों या बिना गढ़ा सोना चाँदी)—गर्भः 1. ब्रह्मा (क्योंकि वह सोने के अंडे से पैदा हुआ) 2. विष्णु का नाम 3. सूक्ष्मशरीर धारण करने वाली आत्मा,—द (वि०) सुवर्ण देने वाला—मनु० ४।२३०, (दः) समुद्र, (दा) पृथ्वी,—नाभः मैनाक पहाड़,—बाहुः 1. शिव का विशेषण 2. सोन नदी,—रेतस् 1. आग—रघु० १८।२५ 2. सूर्य 3. शिव

4. चित्रक या मदार का पौधा,—**वर्णा** नदी,—**वाहः** सोन दरिया ।

हरिण्मय (वि०) (स्त्री०—यी) [हिरण्य+मयट्, नि० मलोपः] सुनहरी ।

हिरुक् (अव्य०) [हि०+उकिक्, रुट्] 1. के बिना, के सिवाय 2. में, बीच में 3. निकट 4. नीचे ।

हिल् (तुदा० पर० हिलति) केलिक्रीड़ा करना, स्वेच्छा से रमण करना, प्रेमालिंगन करना, कामेच्छा प्रकट करना ।

हिल्लः [हिल्+लक्] एक प्रकार का पक्षी ।

हिल्लोलः [हिल्लोल्+अच्] 1. लहर, झाल 2. हिंडोल राग 3. धुन, सनक 4. एक रतिबंध ।

हिल्वलाः (स्त्री०, ब० व०) [=इल्वला, पृषो०] मृगशिरा नक्षत्र के शिर के पास के पाँच छोटे तारे ।

ही (अव्य०) [हि+डी] 1. आश्चर्य प्रकट करने वाला अव्यय - हतविधिलसितानां ही विचित्रो विपाकः—शि० ११।६४, या—ही चित्रं लक्ष्मणेनोचे—भट्टि० १४। ३९ (इस अर्थ में प्रायः नाटकीय भाषा में इसकी आवृत्ति होती है) 2. थकावट, उदासी, खिन्नता तर्क ।

हीन (भू० क० कृ०) [हा+क्त, तस्य नः ईत्वम्] 1. छोड़ा हुआ, परित्यक्त, त्यागा हुआ 2. रहित, वञ्चित, वियुक्त, के बिना (करण० या समास में)—गुणैर्हीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः—सुभा०, इसी प्रकार द्रव्य°, मति° और उत्साह° आदि 3. मुर्झाया हुआ, बर्बाद 4. त्रुटिपूर्ण, सदोष, हीनातिरिक्तगात्रो वा तमप्यपनयेत्ततः—मनु० ३।२४२ 5. घटाया हुआ 6. कम, निम्नतर—मनु० २।१९४ 7. नीच, अधम, कमीना, दुष्ट, **नः** 1. सदोष गवाह 2. अपराधी प्रतिवादी (नारद पाँच प्रकार के बताता है अन्यवादी क्रियाद्वेषी नोपस्थायी निरुत्तरः । आहूतप्रपलायी च हीनः पंचविधः स्मृतः॥) । सम० **अङ्ग** (वि०) अंगहीन, विकलांग, अपाहज, सदोष - मनु० ४।१४१, याज्ञ० १।२२२, **-कुल, ज** (वि०) ओछे कुल में उत्पन्न, नीच परिवार का,—**क्रतु** (वि०) जो अपने यज्ञानुष्ठान में अवहेलना करता है,—**जाति** (वि०) 1. नीच जाति का 2. जाति से बहिष्कृत, बिरादरी से खारिज, पतित,—**योनिः** (स्त्री०) नीची कोटि का जन्मस्थान,—**वर्ण** (वि०) 1. नीच जाति का 2. घटिया दर्जे का,—**वादिन्** (वि०) 1. सदोष बयान देने वाला 2. अपलापी 3. गूंगा, मूक,- **सख्यम्** नीच व्यक्तियों से मेलजोल, सेवा नीच व्यक्तियों की टहल करना ।

हीन्तालः [हीनम्तालो यस्मात्—पृषो०] दलदल में होने वाला खजूर का वृक्ष ।

हीरः [हृ+क, नि०] 1. साँप 2. हार 3. सिंह 4. 'नैषधचरित' काव्य के रचयिता श्री हर्ष के पिता का नाम, —**रः,—रम्** 1. इन्द्र का वज्र 2. हीरा, (नैषधचरित के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में आने वाला) । सम० —**अङ्गः** इन्द्र का वज्र ।

हीरकः [हीर+कन्] हीरा ।

हीरा [हीर+टाप्] 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. चिऊँटी ।

हीलम् [ही विस्मयं लाति ला+क] पौरुषेय वीर्य ।

हीही (अव्य०) [ही+ही] आश्चर्य और प्रमोद को प्रकट करने वाला अव्यय ।

हु (जुहो० पर० जुहोति, हुत— कर्मवा० हूयते, प्रेर० हावयति-ते, इच्छा० जुहूषति) 1. (हवनकुंड में आहुति के रूप में) प्रस्तुत करना, किसी देवता के सम्मान में भेंट देना (कर्म० के साथ), यज्ञ करना— यो मन्त्रपूतां तनुमप्यहौषीत्—रघु० १३,४५, जटाधरः सन् जुहुधीह पावकम्—कि० १।४४ हविर्जुहुधि पावके—भट्टि० २०।११, मनु० ३।८७, याज्ञ० १।९९ 2. यज्ञ का अनुष्ठान करना 3. खाना ।

हुड् i (भ्वा० पर० होडति) जाना ।
ii (तुदा० पर० हुडति) संचय करना ।

हुडः [हुड्+क] 1. मेढ़ा 2. चोरों को दूर रखने के लिए लोहे का कांटा 3. एक प्रकार की बाड़ 4. लोहे का मुद्गर ।

हुडुः [हुड्+कु०] मेंढ़ा—जम्बुको हुडुयुद्धेन— पंच० १।१६२ ।

हुडुक्कः [हुड्+उक्क] बालू की घड़ी के आकार का बना एक छोटा ढोल, नै० १५।१७ 2. एक प्रकार का पक्षी, दात्यूह 3. दरवाजे की कुंडी 4. नशे में चूर पुरुष ।

हुडुत् (नपुं०) [हुड्+उति] 1. साँड का रांभना 2. धमकी का शब्द ।

हुण्डः [हुण्ड्+क] 1. व्याघ्र 2. मेढ़ा 3. बुद्धू 4. ग्रामशूकर 5. राक्षस ।

हुत (भू० क० कृ०) [हु+क्त] 1. आहुति के रूप में आग में डाला हुआ, यज्ञीय भेंट के रूप में होम किया हुआ 2. जिसे आहुति दी जाय—श० ४, रघु० २।७१, ९।३३,—**तः** शिव का नाम,—**तम्** आहुति, चढ़ावा । सम०—**अग्नि** (वि०) जिसने अग्नि में आहुति डाली है—रघु० १।६, **अशनः** 1. अग्नि—समीरणो नोदयिता भवेति व्यादिश्यते केन हुताशनस्य—कु० ३।२१, रघु० ४।१ 2. शिव का नाम °सहायः शिव का विशेषण,—**अशनी** फाल्गुन मास की पूर्णिमा, होलिका, **आशः** आग—प्रदक्षिणीकृत्य हुतं हुताशम्—रघु० २।७१,—**जातवेदस्** (वि०) जिसने अग्नि में आहुति दी है,—**भुज्** (पुं०) आग—नैशस्याचिर्हुतभुज इव च्छिन्नभूयिष्ठधूमा विक्रम० १।९, उत्तर० ५।९, °प्रिया अग्नि की पत्नी स्वाहा,—**वहः** आग—जनाकीर्ण

मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव—श० ५।१०, शीतांशुस्तपनो हिमं हुतवहः - गीत० ९, मेघ० ४३, ऋतु० १।२७,—होमः वह ब्राह्मण जिसने आग में आहुति दी है, (मम्) जला हुआ शाकल्य।

हुम् (अव्य०) [हु+डुमि] (मूल रूप से एक अनुकरणात्मक ध्वनि) निम्नांकित अर्थों को अभिव्यक्त करने वाला अव्यय—1. याद, प्रत्यास्मरण—हुं ज्ञातम्, —या—रामो नाम बभूव हुं तदबला सीतेति हुम् 2. सन्देह—चैत्रो हुं मैत्रो हुम् 3. स्वीकृति—उत्तर० ५।३५ 4. रोष 5. अरुचि 6. भर्त्सना 7. प्रश्नवाचकता (जादू व मंत्रों में 'हुम्' का संप्र० के साथ प्रयोग —उदा० ओं कवचाय हुम्,) (हुंकृ 'हुम्' की ध्वनि करना, दहाड़ना, चिंघाड़ना, रांभना - यथा अनुहुंकृ 'बदले में 'हुम्' की ध्वनि करना अनुहुंकुरुते घनध्वनिं न हि गोमायुरुतानि केसरी—शि० १६।२५), सम०—कारः—कृतिः (स्त्री०) 1. 'हुम्' की ध्वनि करना—पृष्टा पुनः पुनः कान्ता हुंकारैरेव भाषते 2. गर्जना, ललकार - क्षतहुंकारशंसिनः—कु० २।२६, हुंकारेणेव धनुषः स हि विघ्नानपोहति - श० ३।१, रघु० ७।५८, कु० ५।५४ 3. दहाड़ना, रांभना 4. सूअर का घुर्घुराना 5. धनुष की टंकार।

हुर्छ् (भ्वा० पर० हूर्छति) टेढ़ा होना।

हुल् (भ्वा० पर० होलति) 1. जाना 2. ढांपना, छिपाना।

हुलहुली [हुल्+क, द्वित्वम्, ङीप् च] हर्ष के अवसरों पर महिलाओं द्वारा उच्चारण की जाने वाली एक अस्पष्ट हर्षध्वनि।

हुहु (हू) (पुं०) [ह्वे+डु, नि०] एक गन्धर्व विशेष।

हुड् (भ्वा० आ० हूडते) जाना।

हूणः (नः) [ह्वे+नक्, सम्प्र०, पक्षे पृषो० णत्वम्] 1. असभ्य, जंगली, विदेशी—सद्योमुण्डितमत्तहूणचिबुकप्रस्पर्धि नारंगकम् 2. एक सोने का सिक्का, (संभवतः यह हूणों के देश में प्रचलित था),—णाः (पुं०, ब० व०) एक देश या उसके अधिवासियों का नाम—हूणावरोधानां—रघु० ४।६८।

हूत (भू० क० कृ०) [ह्वे+क्त संप्रसारणम्] आमन्त्रित, बुलाया गया, निमन्त्रित - दे० 'ह्वे'।

हूतिः (स्त्री०) [ह्वे+क्तिन्, संप्र०] 1. बुलावा, निमंत्रण 2. चुनौती 3. नाम—जैसा कि 'हरिहेतुहूतिः' में।

हूम् दे० हुम्।

हूरवः [हू इति रवो यस्य - ब० स०] गीदड़।

हूहू (पुं०) [=हुहू पृषो०] गन्धर्व विशेष।

हृ (भ्वा० उभ० हरति-ते, हृत, कर्मवा० ह्रियते) लेना, ढोना, पहुँचाना, आगे आगे चलना (इस अर्थ में बहुधा द्विकर्मक प्रयोग)—अजां ग्रामं हरति - सिद्धा०, संदेशं मे हर धनप्रतिक्रोधविश्लेषितस्य—मेघ० ७, मनु० ४।७४ 2. उठाकर ले जाना, अपहरण करना, दूरी पर ले जाना, भट्टि० ५।४७ 3. अपहृत करना, लूटना, डाका डालना, चुराना—दुर्वृत्ता जारजन्मानो हरिष्यन्तीति शङ्कया भामि० ४।४५, रघु० ३।३९, कु० २।४७, भट्टि० २।३९, मनु० ७।४३ 4. विवस्त्र करना, वञ्चित करना, छीन लेना, अपहरण करना—वृन्तात्श्लथं हरति पुष्पमनोकहानाम् रघु० ५।६९, ३।५४, भट्टि० १५।११६, मनु० ८।३३४ 5. ले जाना, प्रतीकार करना, नष्ट करना तथापि हरते तापं लोकानामुन्नतो घनः भामि० १।४९, रघु० १५।२४, मेघ० ३१ 6. आकृष्ट करना, मुग्ध करना, जीत लेना, प्रभाव डालना, अधीन करना, वशीभूत करना—चेतो न कस्य हरते गतिरङ्गनायाः—भामि० २।१५७, ये भावा हृदयं हरन्ति—१।१०३, तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः श० १।५, मृगया जहार चतुरेव कामिनी —रघु० ९।६९, १०।८३, विक्रम० ४।१०, ऋतु० ६।२०, भग० ६।४४, २।६० मनु० ६।५९ 7. उपलब्ध करना, ग्रहण करना, लेना, प्राप्त करना—ततो विंशं नृपो हरेत् मनु० ८।३९१, १५३, स हरतु सुभगपताकाम्—दश० 8. रखना, अधिकार में करना —भामि० २।१६३ 9. पराभूत करना, ग्रस्त करना —भट्टि० ५।७१, शि० ९।६३ 10. विवाह करना —मनु० ९।९३ 11. बांटना—प्रेर० (हारयति-ते) 1. उड़वा देना, ढुवाना, पहुँचाना, (कोई चीज) किसी के हाथ भिजवाना (करण० के कर्म० के साथ)—भृत्यं भृत्येन वा भारं हारयति—सिद्धा०, जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्—मेघ० ४, मनु० ८।११४ कु० २।३९ 2. अपहृत करवाना, नष्ट करवाना, वञ्चित होना 3. पुरस्कार देना, इच्छा० (जिहीर्षति —ते) लेने की इच्छा करना। अध्या—,न्यूनपद की पूर्ति करना, अनु , 1. नकल करना, मिलना-जुलना —देहबन्धेन स्वरेण च रामभद्रमनुहरति—उत्तर० ४, इसी प्रकार कि० ९।६७ 2. (अपने माता पिता से) मिलना-जुलना (इस अर्थ में आ०) दे० पा० १।३। २१ वार्तिक, अप—, 1. छीन लेना, उड़ा लेना—पश्चात्पुत्रैरपहृतभरः कल्पते विश्रमाय - विक्रम० ३।१ 2. पराङ्मुख होना, मुड़ना—वदनमपहरन्तीं (गौरीम्) कु० ७।९५ 3. लूटना, डाका डालना, चुराना 4. (किसी को) वञ्चित करना, दूर करना, नष्ट करना—त्वं च कीर्तिमपहर्तुमुद्यतः—रघु० ११।७४ 5. आकृष्ट करना, प्रभावित करना, ज़ोर डालना, जीत लेना, वशीभूत करना (न) प्रियतमा यतमानमपाहरत् —रघु० ९।७, इसी प्रकार 'अपह्रिये खलु परिश्रमजनितया निद्रया उत्तर० १, (प्रेर०) (दूसरों से) अपहरण करवाना—कि० १।३१, अभि—,

उठाकर ले जाना, हटाना, **अभ्यव**—,खाना (प्रेर०) खिलाना, भोजन कराना, **आ**—,1. (क) लाना, ले आना · यदेव वव्रे तदपश्यदाहृतम् रघु० ३।९, १४। ७७ (ख) ढोना, पहुँचाना—मनु० ९।५४ 2. निकट लाना, देना—अयाचिताहृतम्—याज्ञ० १।१२५ 3. प्राप्त करना, लेना, हासिल करना—मनु० २। १८३, ७।८०, ८।१५१ 4. रखना, धारण करना —आजह्रतुस्तच्चरणौ पृथिव्यां स्थलारविन्दश्रियम-व्यवस्थाम् कु० १।३३ 6. (यज्ञ का) अनुष्ठान करना स विश्वजितमाजह्रे यज्ञं सर्वस्वदक्षिणम् —रघु० ४।८६, १४।३७ 7. वसूल करना, वापिस लेना 8. कारण बनना, पैदा करना, जन्म देना 9. पहनना, धारण करना 10. आकृष्ट करना 11. हटाना, दूर करना–(प्रेर०) 1. मंगवाना 2. दिलवाना 3. एकत्र करना, परस्पर मिलाना, **उद्**— 1. बचाना, मुक्त करना, उद्धार करना, छुड़ाना–मां तावदुद्धर शुचो दयिताप्रवृत्त्या—विक्रम० ४।१५ 2. खींचना, बाहर निकालना—(शरम्) उद्धर्तुमैच्छत्प्रसभोद्धृतारिः रघु० २।३०, ३।६४ 3. उन्मूलन करना, जड़ से उखाड़ना, उद्धार करना नमयामास नृपाननुद्धरन्—रघु० ८।९, ४।६६, त्रिदिवमुद्धृतदानव-कण्टकम्—श० ७।३ 4. उठाना, ऊपर को करना, उन्नत करना, (हाथ आदि) फैलाना मनु० ४।६२, पंच० १।३६३ 5. (फूल आदि) तोड़ना 6. अवशोषण करना –शि० ३।७५ 7. घटाना, व्यवकलन करना 8. छांटना, चुनना, उद्धृत करना—इदं पद्यं रामायणादुद्धृतम् —(प्रेर०) बाहर निकलवाना—रघु० ९।७४, **उदा**—,1. वर्णन करना, बयान करना, प्रकथन करना कहना, बोलना, उच्चारण करना—उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः–कि० १।२७, मृच्छ० ९।४, चिकित्सका दोषमुदाहरन्ति—मालवि० २, मा० १ 2. पुकारना, नाम लेना—त्वां कामिनो मदनदूतिकामुदाहरन्ति —विक्रम० ४।११, श्रुतान्वितो दशरथ इत्युदाहृतः —भट्टि० १।१ 3. सचित्र बनाना, सोदाहरण निरूपण करना, उदाहरण या चित्र उद्धृत करना, त्वमुदाह्रियस्व कथमन्यथा जनैः शि० १५।२९, **उप**—, 1. ले आना, निकट लाना श० १ 2. प्रस्तुत करना, प्रदान करना, उपहार देना—नीवारभागधेयमस्माकमुपहरन्तु—श० २, मातृभ्यो बलिमुपहर—मृच्छ० १, महावीर० ६।२२, रघु० १४।१९, १६।८०, १९।१२, श० ३ 3. (बलि के रूप में) प्रस्तुत करना, **उपा**—, लाना, ले आना, **निस्**—, 1. बाहर निकालना, खींचना, उद्धृत करना—रघु० १४।४२ 2. शव को बाहर निकालना मनु० ५।९१, याज्ञ० ३।१५ 3. (दोष की भांति) दूर करना, **परि**—, 1. बचना, दूर रहना— स्त्रीसंनिकर्षं परिहर्तुमिच्छन्नन्तर्दधे भूतपतिः स भूतः—कु० ३।७४, मनु० ८।४००, कु० ३।४३ 2. त्यागना, परित्यक्त करना, छोड़ना, तिलांजलि देना—कति न कथितमिदमनुपदमचिरं मा परिहर हरिमतिशयरुचिरम्—गीत० ९ 3. हटाना, नष्ट करना, उत्तर देना, प्रत्याख्यान करना (आक्षेप व आरोप आदि का) ब्रह्मास्य जगतो निमित्तं कारणं प्रकृतिश्चेत्यस्य पक्षस्याक्षेपः स्मृतिनिमित्तः परिहृतः। तर्कनिमित्त इदानीमाक्षेपः परिह्रियते—शा० भा०, मेघ० १४, **प्र**—, 1. प्रहार करना, आघात करना, पीटना · लत्तया प्रहरति 'लात मारता है' रघु० ५। ६८, कु० ३।७०, भट्टि० ९।७ 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, घायल करना (अधि० के साथ) —आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि—श० १। ११, रघु० २।६२, ७।५९, ११।८४, १५।३ 3. आक्रमण करना, हमला करना 4. फेंकना, डालना, प्रक्षेप करना (अधि० या संप्र० के साथ) 5. छापा मारना, **वि**—, 1. ले जाना, पकड़ कर दूर करना, 2. हटाना, नष्ट करना, 3. गिरने देना, (आंसू आदि) ढालना 4. (समय) बिताना 5. मनोरंजन करना, आमोद-प्रमोद में व्यस्त होना, खेलना विहरति हरिरिह सरसवसन्ते गीत० १, **व्यव**—, 1. व्यवहार करना, व्यवसाय करना 2. करना, आचरण करना, व्यापार करना 3. क़ानून की शरण जाना, कचहरी में नालिश करना—अर्थपतिर्व्यवहर्तुमर्थगौरवादभियोक्ष्यते—दश०, **व्या**—, बोलना, कहना, बतलाना, वर्णन करना, प्रकथन करना—कु० २।६२, ६।२, रघु० ११।८३, **सम्**—, 1. लाना, मिला कर खींचना 2. (क) सिकोड़ना, संक्षिप्त करना, भींचना रघु० १०।३२, (ख) गिरा देना संह्रियतामियम्—का० 3. साथ साथ लाना, एकत्र करना, संचय करना 4. नष्ट करना, संहार करना (विप० 'सृज्') अमुं.युगान्तोचितकालनिद्रः संहृत्य लोकान् पुरुषोऽधिशेते रघु० १३।६ 5. वापिस लेना, रोकना, पीछे खींचना —अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितम् श० २।११, ६।४, न हि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चाण्डालवेश्मनः —हि० १।६१, रघु० ४।१६, १२।१०३, भग० २। २८ 6. दमन करना, नियन्त्रण करना, दबाना क्रोधं प्रभो संहर संहरेति यावद्गिरः खे मरुतां चरन्ति—कु० ३।७२ 7. बन्द करना, समाप्त करना—**समा**—, 1. लाना, पहुँचाना, ढोना—सर्व एव समाहारि तदा शैलः सहौषधिः—भट्टि० १५।१०७ 2. संग्रह करना, साथ मिलाना, जोड़ना तत्र स्वयंवर समाहृतराजलोकम्—रघु० ५।६२, भट्टि० ८।६३ 3. खींचना, आकृष्ट करना 4. नष्ट करना, संहार करना—भग० ११।

३२ 5. पूरा करना (यज्ञ आदि) 6. वापिस आना, अपने उचित स्थान को फिर से प्राप्त करना — मनु० ८।३१९ 7. दमन करना, नियन्त्रित करना।

हृ (ह्रि) **णीयते** (ना० धा० आ०) 1. क्रुद्ध होना, 2. लज्जित होना (करण० या संबं० के साथ) —त्वयाद्य तस्मिन्नपि दण्डधारिणा कथं न पत्या धरणी हृणीयते नै० १।१३३, दिवोऽपि वज्रायुधभूषणा या हृणीयते वीरवती न भूमिः भट्टि० २।३८।

हृणी (णि) **या** [हृणी+यक्+अ+टाप्] 1. निन्दा, भर्त्सना 2. लज्जा 3. करुणा।

हृत् (वि०) [हृ+क्विप्, तुक्] (केवल समास के अन्त में) ले जाने वाला, अपहरण करने वाला, हटाने वाला, उठाकर ले जाने वाला, आकर्षक।

हृत (भू० क० कृ०) [हृ+क्त] 1. ले जाया गया 2. अपहरण किया गया 3. मुग्ध किया गया 4. स्वीकृत 5. विभक्त, दे० 'हृ'। सम०—**अधिकार** (वि०) जिसका अधिकार छीन लिया गया है, बाहर निकाला हुआ 2. अपने उचित अधिकारों से वंचित किया गया,—**उत्तरीय** (वि०) जिसका उत्तरीय वस्त्र (चादर दुपट्टा आदि) छीन लिया गया हो **द्रव्य**, —**धन** (वि०) धन दौलत से वंचित,—**सर्वस्व** (वि०) जिसका सब कुछ छीन लिया गया हो, बिल्कुल बर्बाद हो गया हो।

हृतिः (स्त्री०) [हृ+क्तिन्] 1. छीन लेना 2. लूटना, खसोटना 3. विनाश।

हृद् (नपुं०) [=हृत्, पृषो० तस्य दः, हृदयस्य हृदादेशो वा] (इस शब्द के सर्वनामस्थान के कोई रूप नहीं होते, कर्म० द्वि० व० के पश्चात् 'हृदय के स्थान में यह रूप आदेश हो जाता है) 1. मन, दिल 2. छाती, दिल, सीना—इमां हृदि व्यायतपातमक्षिणोत् कु० ५।५४। सम० **आवर्तः** घोड़े की छाती के बाल, —**कम्पः** दिल की कंपन, धड़कन,—**गत** (वि०) 1. मन में आसीन, सोचा हुआ, अभिकल्पित 2. पाला-पोसा गया,—(**तम्**) अभिकल्पना, अर्थ, आशय,—**देशः** हृदयतल -**पिडः**, -**डम्**, दिल, **रोगः** 1. दिल का रोग, दिल की जलन 2. शोक, ग़म, वेदना 3. प्रेम 4. कुंभराशि, **लासः** (**हृल्लासः**) 1. हिचकी 2. अशान्ति, शोक,—**लेखः** (**हृल्लेखः**) 1. ज्ञान, तर्कना 2. दिल की पीडा,—**लेखा** (**हृल्लेखा**) शोक, चिन्ता, —**कंटकः** पेट,—**शोकः** हृदय की जलन, वेदना।

हृदयम् [हृ+कयन्, दुक् आगमः] 1. दिल, आत्मा, मन —हृदये दिग्धशरैरिवाहतः—कु० ४।२५, इसी प्रकार 'अयोहृदयः—रघु० ९।९, पाषाणहृदय आदि 2. वक्षःस्थल, सीना, छाती - बाणभिन्नहृदया निपेतुषी—रघु० ११।१९ 3. प्रेम, अनुराग 4. किसी चीज का रस या आन्तरिक भाग 5. रहस्य विज्ञान, अश्व°, अक्ष°। सम०—**आत्मन्** (पुं०) सारस,—**आविध्** (वि०) हृदयविदारक, दिल को बींधने वाला. भट्टि० ६।७३, —**ईशः ईश्वरः** पति, (—शा,—री) 1. पत्नी 2. गृहिणी,—**कम्पः** दिल का कांपना, धड़कन, **ग्राहिन्** (वि०) मनमोहक,—**चौरः** जो दिल को या प्रेम को चुराता है—**छिद्** (वि०) हृदय-विदारक, हृदय को बींधने वाला,—**विध्**,—**वेधिन्** (वि०) हृदय को बींधने वाला,—**वृत्तिः** (स्त्री०) मन का स्वभाव,—**स्थ** (वि०) हृदय स्थित, मन में विराजमान,—**स्थानम्** छाती, वक्षःस्थल।

हृदयङ्गम (वि०) [हृदय+गम्+खच्, मुम्] 1. हृदय को दहलाने वाला, मर्मस्पर्शी, रोमांचकारी 2. प्रिय, सुन्दर,— मा० १ 3. मधुर, आकर्षक, सुखद, रुचिकर—अहो हृदयङ्गमः परिहासः—मा० ३, वल्लकी च हृदयङ्गमस्वना रघु० १९।१३, कु० २।१६ 4. योग्य, समुचित 5. प्यारा, वल्लभ, आंख का तारा माना हुआ क्व नु ते हृदयङ्गमः सखा कु० ४।२४।

हृदयालु, **हृदयिक हृदयिन्** (वि०) [हृदय+आलुच्, ठन्, इनि वा] कोमलहृदय वाला, अच्छे दिल वाला, स्नेही।

हृदि (दी) **कः** (पुं०) एक यादव राजकुमार।

हृदिस्पृश् (वि०) [हृदि+स्पृश्+क्विन्, अलुक् स०] 1. हृदय को छूने वाला 2. प्रिय, प्यारा 3. रुचिकर, मनोहर, सुन्दर।

हृद्य (वि०) [हृदि स्पृश्यते मनोज्ञत्वात् हृद्+यत्] 1. हार्दिक, दिली, भीतरी 2. जो हृदय को प्रिय लगे, स्निग्ध, प्रिय, अभीष्ट, वल्लभ भामि० १।६९ 3. रुचिकर, सुखकर, मनोहर मा० ४, रघु० ११।६८। सम०—**गन्धः** बेल का पेड़,—**गन्धा** फूलों से खूब लदा हुआ मोतिया।

हृष् (भ्वा० दिवा० पर० हर्षति, हृष्यति, हृष्ट या हृषित) 1. खुश होना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, बाग बाग होना, हर्षोन्मत्त होना—अद्वितीयं रुचात्मानं मत्वा किं चन्द्र हृष्यसि—भामि० २।१०५, भट्टि० १५।१०४, मनु० २।५४ 2. रोमांचित होना, रोंगटे खड़े होना -हृषितास्तनूरुहाः—दश०, हृष्यन्ति रोमकूपानि —महा० 3. खड़ा होना (कोई अन्य वस्तु—उदा० लिङ्ग का) प्रेर० (हर्षयति-ते) प्रसन्न करना, खुश करना, प्रसन्नता से भर जाना, प्र—, 1. प्रसन्न होना, हर्षोन्मत्त होना—न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य—भग० ५। २०, ११।३६ 2. रोंगटे खड़े होना, (शरीर के बाल) खड़े होना, वि —, हर्षोन्मत्त करना, प्रसन्न होना, खुश होना।

हृषित (भू० क० कृ०) [हृष्+क्त] 1. प्रसन्न, खुश,

आनन्दित, उल्लसित, आह्लादित, हर्षोन्मत्त 2. पुलकित, रोमांचित 3. आश्चर्यान्वित 4. झुका हुआ, विनत 5. निराश 6. ताजा ।

हृषीकम् [हृष् + ईकक्] ज्ञानेन्द्रिय । सम०—**ईशः** विष्णु या कृष्ण का विशेषण—भग० १।१५ तथा आगे पीछे (हृषीकाणीन्द्रियाण्याहुस्तेषामीशो यतो भवान् । हृषीकेशस्ततो विष्णो ख्यातो देवेषु केशव—महा०)

हृष्ट (भू० क० कृ०) [हृष् + क्त] प्रसन्न, हर्षयुक्त, (=हृषित) । सम०—**चित्त मानस** (वि०) मन से प्रसन्न, हृदय में खुश, आनन्दित, —**रोमन्** (वि०) (हर्ष के कारण) रोमांचित, पुलकित, —**वदन** (वि०) प्रसन्नमुख,—**संकल्प** (वि०) संतुष्ट, सुखी,—**हृदय** (वि०) प्रसन्नमना, प्रफुल्ल, उल्लसित ।

हृष्टिः (स्त्री०) [हृष् + क्तिन्] 1. आनन्द, उल्लास, हर्ष, खुशी 2. घमंड ।

हे (अव्य०) [हा + डे] 1. संबोधनपरक अव्यय (ओ, अरे)—हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति—भग० ११।४१ हे राजानस्त्यजत सुकविप्रेमबन्धे विरोधम्—विक्रम० १८।१०७ 2. ईर्ष्या, द्वेष, डाह प्रकट करने वाला अव्यय ।

क्का [=हिक्का, पृषो०] हिचकी ।

ः [हेड् + घञ्] 1. प्रकोपन 2. बाधा, अवरोध, विरोध रुकावट 3. क्षति, चोट ।

i (भ्वा० आ० हेडते) अवज्ञा करना, अपमान करना, तिरस्कार करना ।

ii (भ्वा० पर० हेडति) 1. घेरना 2. वस्त्र पहनना ।

[हेड् + घञ्] अवज्ञा, तिरस्कार । सम०—**जः** क्रोध, अप्रसन्नता ।

बुक्कः (पुं०) घोड़ों का व्यापारी ।

(पुं०, स्त्री०)[हन् करणे क्तिन्,नि०] 1. शस्त्र, अस्त्र —समर विजयी हेतिदलितः—भर्तृ० २।४४, रघु० १०।१२ कि० ३।५६, १४।३० 2. आघात, क्षति 3. सूर्य की किरण 4. प्रकाश, आभा 5. ज्वाला ।

हि + तुन्] 1. निमित्त, कारण, उद्देश्य, प्रयोजन —इति हेतुस्तदुद्भवे—काव्य० १, मा० १।२३, रघु० ।१०, मेघ० २५, श० ३।११ 2. स्रोत, मूल—स ता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः—रघु० १।१४, पने प्राणियों को पैदा करने वाले' 3. साधन, उपकरण तर्कयुक्त कारण, अनुमान का कारण, तर्क (पांच ों से युक्त अनुमानप्रक्रिया में द्वितीय अंग) 5. तर्क, शास्त्र 6. कोई भी तर्कयुक्त प्रमाण, या युक्ति साहित्यिक कारण (कुछ विद्वान् इसी को एक अलं- भी मानते हैं)—हेतोर्हेतुमता सार्धमभेदो हेतु- ते (हेतुना, हेतोः कभी कभी हेतौ भी क्रिया- षण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं—'के कारण' 'के निमित्त' 'क्योंकि', (संब० के साथ या समास में प्रयोग—शास्त्रविज्ञानहेतुना, अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्—रघु० २।४७, विस्मृतं कस्य हेतोः—मुद्रा० १।१ आदि) । सम० —**अपदेशः** हेतु का उल्लेख (पंचांगी अनुमान के रूप में), **आभासः** वह हेतु जो किसी कार्य का कारण तो न हो, परन्तु हेतु सा आभासिक हो, कुतर्क, (यह पाँच प्रकार का होता है सव्यभिचार या अनैकांतिक, विरुद्ध, असिद्ध, सत्प्रतिपक्ष और बाधित), —**उपक्षेपः**, **उपन्यासः** कारण देना, तर्क उपस्थित करना, —**वादः** तर्कवितर्क, शास्त्रार्थ,—**शास्त्रम्** तर्कशास्त्र, तर्कयुक्त रचना, स्मृति या श्रुति की प्रामाणिकता पर प्रश्नोत्तर रूप में कृति—मनु० २।११, —**हेतुमत्** (पुं०, द्वि० ब०) कारण और कार्य, °**भावः** कार्य और कारण में विद्यमान संबंध ।

हेतुक (वि०) [हेतु + कन्] (समास के अन्त में प्रयुक्त —**कः** 1. कारण, तर्क 2. उपकरण 3. तार्किक ।

हेतुता,—त्वम् [हेतु + तल् + टाप्, त्व वा] कारणता, कारण की विद्यमानता ।

हेतुमत् (वि०) [हेतु + मतुप्] 1. सकारण 2. कारणयुक्त, तर्कयुक्त, पुं० कार्य ।

हेमम् [हि + मन्] सोना, —**मः** 1. काले या भूरे रंग का घोड़ा 2. सोने का विशेष तोल 3. बुध ग्रह ।

हेमन् (नपुं०) [हि + मनिन्] 1. सोना 2. जल 3. बर्फ 4. धतूरा 5. केसर का फूल । सम०—**अङ्ग** (वि०) सुनहरी, (-**गः**) 1. गरुड 2. सिंह 3. सुमेरु पर्वत 3. ब्रह्मा का नाम 5. विष्णु का नाम 6. चम्पक वृक्ष, —**अङ्गदम्** सोने का बाजूबन्द,—**अद्रिः** सुमेरु पर्वत, —**अम्भोजम्** सुनहरी कमल,—हेमाम्भोजप्रसवि सलिलं मानसस्याददानः—मेघ० ६२,—**अम्भोरुहम्** सुनहरी कमल—कु० २।४४,—**आह्वः** 1. जंगली चम्पक का पौधा 2. धतूरे का पौधा,—**कन्दलः** प्रवाल, मूंगा,—**करः**, —**कर्तृ**,—**कारः कारकः** सुनार—मनु० १२।६१, याज्ञ० ३।१४७,—**किञ्जल्कम्** नागकेसर का फूल,—**कुम्भः** सुनहरी घड़ा, —**कूटः** एक पहाड़ का नाम—श० ७, —**केतकी** केवड़े का पौधा जिसके पीले फूल आते हों, स्वर्ण-केतकी,—**गन्धिनी** रेणुका नामक गन्धद्रव्य, —**गिरिः** सुमेरु पर्वत,—**गौरः** अशोकवृक्ष,—**छन्न** (वि०) सोने से मंढा हुआ, (**न्नम्**) सोने का ढक्कन, —**ज्वालः** अग्नि,—**तारम्** तूतिया,—**दुग्धः**,—**दुग्धकः** गूलर,—**पर्वतः** सुमेरु पर्वत,—**पुष्पः**,—**पुष्पकः** 1. अशोक-वृक्ष 2. लोध्रवृक्ष 3. चम्पक वृक्ष, (नपुं०) 1. अशोक का फूल 2. चीनी गुलाब का फूल,—**ब (व) लम्**, मोती,—**मालिन्** (पुं०) सूर्य,—**यूथिका** सोनजुही, स्वर्णयूथिका,—**रागिणी** (स्त्री०) हल्दी,—**शंखः** विष्णु

का नाम,—शृङ्गम् 1. एक सुनहरी सींग 2. सुनहरी चोटी,—सारम् तूतिया,—सूत्रम्,—सूत्रकम् एक प्रकार का हार।

हेमन्तः,—तम् [हि+झ, मुट् आगमः] छः ऋतुओं में से एक, जाड़े का मौसम (जो मार्गशीर्ष और पौसमास में आता है) नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः। विलीनपद्मः प्रपतत्तुषारो हेमन्तकालः समुपागतः प्रिये—ऋतु० ४।१।

हेमलः [हेम+ला+क] 1. सुनार 2. कसौटी 3. गिरगिट।

हेय (वि०) [हा+यत्] त्याग करने योग्य।

हेरम् [हि+रन्] 1. एक प्रकार का मुकुट या ताज 2. हल्दी।

हेरम्बः [हे शिवे रम्बति रम्ब्+अच्, अलुक् स०] 1. गणेश 2. भैंसा 3. धीरोद्धत नायक। सम०—जननी पार्वती (गणेश की माता जी)।

हेरिकः [हि+रक्, रुट् आगमः] भेदिया, गुप्तचर।

हेलनं—ना [हिल्+ल्युट्] अवज्ञा करना, निरादर करना, तिरस्कार करना, अपमान करना।

हेला [हेड् भावे डस्य लः] 1. तिरस्कार, अनादर, अपमान शि० ११।७२ 2. केलि, क्रीडा, प्रेमालिंगन, दे० सा० द० १२८, दश० २।३२ 3. सुरत की बलवती इच्छा—प्रौढेच्छयाऽतिरूढानां नारीणां सुरतोत्सवे। शृङ्गारशास्त्रतत्त्वज्ञैर्हेला सा परिकीर्तिता॥ 4. आराम, सुविधा—शि० १।३४, हेलया आसानी से, बिना किसी कष्ट या असुविधा के 5. चंद्रिका।

हेलाबुक्कः (पुं०) घोड़ों का व्यापारी।

हेलिः [हिल्+इन्] सूर्य, स्त्री०, केलिक्रीडा, सुरतक्रीडा, प्रेमालिंगन।

हेवाकः (पुं०) [यह शब्द कदाचित् फ़ारसी या अरबी से लिया गया है, 'लटभ' शब्द की भांति इसका प्रयोग भी कल्हण बिल्हण आदि पश्चवर्ती साहित्यकारों द्वारा ही हुआ है] उत्कट इच्छा, तीव्र स्पृहा, उत्कण्ठा—अस्मिन्नासीत्तदनु निबिडाश्लेपहेवाकलीलावेल्लंद्वाहुक्वणितवलया सन्ततं राजलक्ष्मीः—विक्रम० १८।१०१, तु० 'हेवाकिन्'।

हेवाकस (वि०) [संभवतः इस शब्द का 'हेवाक' से कोई संबंध नहीं] अत्यंत, तीव्र, उत्कट, प्रचंड - हेवाकसस्तु शृङ्गारो हावोक्षिभ्रूविकारकृत्—दश० २।३१।

हेवाकिन् (वि०) [हेवाक+इनि] अत्यंत इच्छुक, उत्कंठित (समास में प्रयोग)—जायन्ते महतामहो निरुपमप्रस्थानहेवाकिनां निःसामान्यमहत्त्वयोगपिशुना वार्ता विपत्तावपि—कल्हण।

हेष् (भ्वा० आ० हेषते, हेषित) घोड़े के भांति हिनहिनाना, रेंकना, दहाड़ना।

हेषः, हेषा, हेषितम् [हेष्+घञ्, हेष्+अ+टाप्, हेष्+क्त] हिनहिनाहट, रेंक,—रथाङ्गसंक्रीडितमश्वहेषः—कि० १६।८।

हेषिन् (पुं०) [हेष्+णिनि] घोड़ा।

हेहे (अव्य०) [हे च हे च—द्व० स०] संबोधन परक अव्यय जिसका उपयोग जोर से आवाज़ देने या बुलाने में किया जाता है।

है (अव्य०) [हा+कै] संबोधनात्मक अव्यय।

हैतुक (वि०) (स्त्री०—की) [हेतु+ठण्] 1. कारण परक, कारण मूलक 2. तर्क संबंधी, विवेक परक,—कः 1. तर्कयुक्त हेतुवादी, तार्किक 2. मींमासक 3. तर्कवादी, अनीश्वरवादी, नास्तिक।

हैम (वि०) (स्त्री०—मी) [हिम (हेमन्)+अण्] 1. शीतल, जाड़े का, जाड़े में होने वाला, ठंडा 2. हिम से उत्पन्न—मृणालिनीं हैममिवोपरागम् रघु० १६।७ 2. सुनहरी, सोने का बना हुआ—पादेन हैमं विलिलेख पीठम्—रघु० ६।१५, भट्टि० ५।८९, कु० ६।६,—मम् पाला, ओस, मः शिव का विशेषण। सम०—मुद्रा,—मुद्रिका सुनहरी सिक्का।

हैमन (वि) (स्त्री०—नी) [हेमन्त एव हेमन्ते भवो वा, प्रण्, तलोपः] 1. जाड़े में होने वाला, ठंडा—शि० ६।५५, कि० १७।१२ 2. जाड़े से संबंध रखने वाला अर्थात् लम्बा (जैसे जाड़े की रातें) शि० ६।७७ 3. सर्दी में उगने वाला या जाड़े के उपयुक्त—हैमनैर्निवसनैः सुमध्यमाः—रघु० १९।४१ 4. सुनहरी, सोने का बना हुआ,—नः। मार्गशीर्ष का महीना 2. जाड़े की ऋतु (=हेमन्त)।

हैमन्तिक (वि०) [हेमन्ते काले भवः ठञ्] 1. जाड़े का, ठंडा 2. सर्दी में उत्पन्न होने वाला,—कम् एक प्रकार का चावल।

हैमल दे० 'हेमन्त'।

हैमवत (वि०) (स्त्री०—ती) [हिमवतो अदूरभवो देशः तस्येदं वा अण्] 1. बर्फ़ीला 2. हिमालय पर्वत से निकल कर बहने वाला रघु० १६।४४ 3. हिमालय पर्वत पर उत्पन्न, पला-पोसा, स्थित विद्यमान या संबंध रखने वाला कु० ३।२३, २।६७, —तम् भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।

हैमवती [हैमवत+ङीप्] 1. पार्वती का नाम 2. गंगा का नाम 3. एक प्रकार की हरड़, हरीतकी 4. एक प्रकार की औषधि 5. सन का पौधा, अलसी 6. भूरे रंग की किशमिश।

हैयङ्गवीनम् [ह्यो गोदोहात् भवं ह्यस्गो+ख, नि०] 1. पिछले दिन के दूध से बनाया गया घी, ताजा घी—हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान्—रघु० १।४५, भट्टि० ५।१२ 2. पिछले दिन का मक्खन, ताजा मक्खन।

हैरिकः [हिर+ठक्] चोर।
हैहय (पुं० ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम, —यः 1. यदु के प्रपौत्र का नाम 2. अर्जुन कार्तवीर्य (जिसके एक हज़ार भुजाएँ थी, और जिसे परशुराम ने मार गिराया था)—धेनुवत्सहरणाच्च हैहयस्त्वं च कीर्तिमपहर्तुमुद्यतः—रघु० ११।७४।
हो (अव्य०) [ह्वे+डो, नि] किसी व्यक्ति को बुलाने के लिए प्रयुक्त होने वाला संबोधनात्मक अव्यय, (हे, अरे)।
होड् i (भ्वा० आ० होडते) उपेक्षा करना, अनादर करना।
ii (भ्वा० पर० होडति) जाना।
होडः [होड्+अच्] बेड़ा, नाव।
होतृ (वि०) (स्त्री०—त्री) [हु+तृच्] यजमान, हवन करने वाला,—वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री—श० १।१, —(पुं०) 1. ऋत्विज्, विशेषकर वह जो यज्ञ में ऋग्वेद के मन्त्रों का पाठ करता है 2. यज्ञकर्ता—रघु० १।६२, ८२, मनु० ११।३६।
होत्रम् [हु+ष्ट्रन्] 1. (घी आदि) कोई भी वस्तु जिसकी हवन में आहुति दी जावे 2. हवन में जली हुई सामग्री 3. यज्ञ।
होत्रा [होत्र+टाप्] 1. यज्ञ 2. स्तुति।
होत्रीयः [होत्राय हितं होतुरिदं वा छ) देवों को उद्देश्य करके आहुति देने वाला ऋत्विक्,—यम् यज्ञमंडप।
होमः [हु+मन्] यज्ञाग्नि में घी की आहुति देना, (ब्राह्मणों द्वारा किए जानें वाले दैनिक पंच यज्ञों में से एक जिसे **देवयज्ञ** कहते हैं) 2. हवन, यज्ञ। सम०—**अग्निः** होम की आग,—**कुण्डम्** हवनकुंड, —**तुरङ्गः** यज्ञ का घोड़ा—रघु० ३।३८,—**धान्यम्** तिल,—**धूमः** होम की अग्नि का धुआँ,—**भस्मन्** (नपुं०) हवन की राख,—**वेला** हवन करने का समय श० ४,—**शाला** यज्ञशाला, यज्ञगृह।
होमकः दे० 'होतृ'।
होमिः [हु+इन्, मुट् च] 1. ताया हुआ मक्खन, घी 2. जल 3. अग्नि।
होमिन् (पुं०) [होमोऽस्त्यस्य इनि] होम करने वाला, यजमान, यज्ञकर्ता।
होमीय, होम्य (वि०) [होम+छ, यत् वा] होम से संबद्ध, आहुति दिए जाने के योग्य, हवन संबन्धी, —**म्यम्** घी।
होरा [हु+रन्+टाप्] 1. राशि का उदय 2. राशि की अवधि का अंश 3. एक घंटा 4. चिह्न, रेखा।
होलाका [हु+विच्, तं लाति—ला+क+कन्+टाप्] वसन्त ऋतु के आने पर मनाया गया वसन्तोत्सव, फाल्गुन मास की पूर्णिमा से पूर्व के दस दिन, विशेषतः तीन या चार दिन (इसी पर्व को हम 'होली' कहते हैं) 2. फाल्गुन मास की पूर्णिमा।
होलिका, होली (स्त्री०) होली का त्योहार, दे० 'होळाका'।
हो, होहो (अव्य०) [ह्वे+डो, नि०] संबोधनात्मक अव्यय, हो, अरे, भो।
हौत्रम् [होतुरिदम्, अण्] होता नामक ऋत्विक् का पद।
हौम्यम् [होम+ष्यञ्] ताया हुआ मक्खन, घी।
ह्नु (अदा० आ० ह्नुते, ह्नुत) 1. ले जाना, लूटना, छिपा देना, वञ्चित करना—अध्यगीष्टार्थं शास्त्राणि यमस्याह्नोष्ट विक्रमम्—भट्टि० १५।८८ 2. छिपाना, ढकना, रोकना,—मा० १ 3. किसी से छिपाव करना (सम्प्र०के साथ)—गोपी कृष्णाय ह्नुते—सिद्धा०। अप—, 1. छिपाना, दुराना—मनु० ८।५३, रत्न० २ 2. मुकरना, स्वामित्व को इंकार करना, किसी से कोई चीज़ छिपाना—गुणांश्चापह्नुवेऽस्माकम् —भट्टि० ५।४४, अपह्नुवानस्य जनाय यन्निजाम् (अधीरताम्) नै० १।४९, नि—, 1. छिपाना, गुप्त कर देना—भट्टि० १०।३६ 2. किसी से छिपाना, किसी के सामने मुकर जाना (संप्र० के साथ) —भट्टि० ८।७४।
ह्यस् (अव्य०) [गते अहनि नि०] बीता हुआ कल। सम०—**भव** (वि०) जो कल हुआ था।
ह्यस्तन (वि०) (स्त्री०—नी) [ह्यस्+ट्युल्, तुट्] बीते कल से संबंध रखने वाला—यथा ह्यस्तनी वृत्तिः। सम०—**दिनम्** बीता कल, पिछला दिन।
ह्यस्त्य (वि०) [ह्यस्+त्यप्] कल से संबद्ध, (बीते हुए) कल का।
ह्रदः [ह्राद्+अच्, नि०] 1. गहरा सरोवर, जल का विस्तृत और गहरा तालाब—नै० ३।५३ 2. गहरा छिद्र या विवर—शि० ५।२९ 3. प्रकाश की किरण। सम०—**ग्रहः** मगरमच्छ।
ह्रदिनी [ह्रद+इनि+ङीप्] 1. नदी 2. बिजली।
ह्रद्रोगः [ग्रीकशब्द से व्युत्पन्न] कुम्भराशि।
ह्रस् (भ्वा० पर० ह्रसति, ह्रसित) 1. शब्द करना 2. छोटा होना।
ह्रसिमन् (पुं०) [ह्रस्व+इमनिच्, ह्रसादेशः] हलकापन, छोटापन, लघुता।
ह्रस्व (वि०) [ह्रस्+वन्, म० अ० ह्रसीयस्, उ० अ० ह्रसिष्ठ] 1. लघु, अल्प, थोड़ा 2. ठिगना, क़द में छोटा 3. लघु (विप० दीर्घ—छन्दःशास्त्र में), —**स्वः** बौना। सम०—**अङ्ग** (वि०) ठिगना, गिट्टा, (गः) बौना,—**गर्भः** कुश नामक घास, —**दर्भः** छोटा या श्वेत कुशनामक घास,—**बाहुक**(वि०) छोटी भुजाओं वाला, —**मूर्ति** (वि०) क़द में छोटा, ठिगना, बौना।

ह्राद् (भ्वा० आ० ह्रादते) 1. शब्द करना 2. दहाड़ना ।

ह्रादः [ह्राद्+घञ्] शोर, आवाज—दुन्दुभीनां ह्रादः —कि० १६।८, इसी प्रकार 'धनुर्ह्रादः' आदि ।

ह्रादिन् (वि०) [ह्राद्+णिनि] शब्दायमान, दहाड़ने वाला ।

ह्रादिनी [ह्रादिन्+ङीप्] 1. इन्द्र का वज्र 2. बिजली 3. नदी 4. शल्लकी नामक वृक्ष ।

ह्रासः [ह्रस्+घञ्] 1. शब्द, कोलाहल 2. घटी, कमी, क्षय, अवनति, पतन मनु० १।८५, याज्ञ० २।२४९ 3. छोटी संख्या ।

ह्रिणीयते दे० 'हृणीयते'—महावीर० १।५१ ।

ह्रिणीया [ह्रिणी+यक्+अ+टाप्] 1. भर्त्सना, निन्दा 2. शर्म, लज्जा 3. दया—तु० हृणीया ।

ह्री (जुहो० पर० जिह्रेति, ह्रीण, ह्रीत) 1. शर्माना, विनीत होना 2. लज्जित होना (स्वतंत्र प्रयोग अथवा अपादान सं० के साथ)—जिह्रेम्यार्यपुत्रेण सह गुरुसमीपं गन्तुम् श० ७, अन्योऽन्यस्यापि जिह्रीमः किं पुनः सहवासिनाम्—कि० ११।५८, रघु० १५।६४, १७।७३, भट्टि० ३।५३, ५।१०२, ६।१३२—प्रेर० (ह्रेपयति—ते) शर्मिदा करना, (आलं० से भी) सकौस्तुभं ह्रेपयतीव कृष्णम्—रघु० ६।४९, ह्रेपिता हि बहवो नरेश्वरा—११।४०, किं वा जात्या स्वामिनो ह्रेपयति —शि० १८।२३, कि० ११।६४, १३।४१, वेणी० १।१७ ।

ह्री (स्त्री०) [ह्री+क्विप्] 1. लज्जा—रतेरपि ह्रीपदमादधाना—कु० ३।५७, दारिद्र्याद्ध्रियमेति ह्रीपरिगतः प्रभ्रश्यते तेजसः - मृच्छ० १।१४, रघु० ४।८० 2. शर्मीलापन, विनय—ह्रीसन्नकण्ठी कथमप्युवाच —कु० ७।८५ । सम०—जित,—मूढ (वि०) लज्जा से अभिभूत या व्याकुल ह्रीमूढानां भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः—मेघ० ६८, यन्त्रणा लज्जा का बंधन—रघु० ७।६३ ।

ह्रीका [ह्री+कक्+टाप्] 1. शर्मीलापन, लज्जाशीलता, संकोच 2. भीरुता, डर ।

ह्रीकु (वि०) [ह्री+उन्, कुक् च] 1. शर्मीला, विनीत, संकोचशील 2. भीरु, कुः 1. रांगा 2. लाख ।

ह्रीण, ह्रीत (भू० क० कृ०) [ह्री+क्त, पक्षे तस्य नः] 1. लज्जित—वेणी० २।११ 2. शर्मीला, विनीत—नै० ३।५३ ।

ह्लीवेरम्,—लम् [ह्रियै लज्जायै वेरम् अङ्गम् अस्य क्षुद्रत्वात्, पृषो० वा रस्य लः] एक प्रकार का गन्ध द्रव्य ।

ह्रेष् (भ्वा० आ० ह्रेषते) 1. घोड़े की भांति) हिनहिनाना, रेंकना 2. जाना, सरकना ।

ह्रेषा [ह्रेष्+अ+टाप्] हिनहिनाहट ।

ह्लग् (भ्वा० पर० ह्लगति) ढांपना ।

ह्लत्तिः (स्त्री०) [ह्लाद्+क्तिन्, ह्रस्वता] हर्ष, प्रसन्नता ।

ह्लस् (भ्वा० पर० ह्लसति) शब्द करना ।

ह्लाद् (भ्वा० आ० ह्लादते, ह्लन्न, ह्लादित) 1. प्रसन्न होना, खुश होना, हर्षित होना 2. शब्द करना, आ—, प्र—, हर्षित होना, प्रसन्न होना, खुश होना ।

ह्लादः, ह्लादकः [ह्लाद्+घञ्, ण्वुल् वा] प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास ।

ह्लादनम् [ह्लाद्+ल्युट्] हर्षित होने की क्रिया, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता ।

ह्लादिन् (वि०) [ह्लाद्+णिनि] प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला ।

ह्लादिनी दे० 'ह्रादिनी' ।

ह्वल् (भ्वा० पर० ह्वलति) 1. जाना, हिलना-जुलना 2. थरथराना, कांपना—प्रेर० (ह्वलयति—ते, ह्वालयति —ते, परन्तु पहला रूप उपसर्गयुक्त) हिलाना, कंपकंपी पैदा करना (विशेषतः 'वि' पूर्वक) ।

ह्वानम् [ह्वे+ल्युट्] 1. आमन्त्रण 2. क्रन्दन, शब्द करना ।

ह्वृ (भ्वा० पर० ह्वरति) 1. कुटिल होना 2. आचरण में टेढ़ा होना, ठगना, धोखा खाना 3. कष्टग्रस्त, क्षतिग्रस्त ।

ह्वे (भ्वा० उभ० ह्वयति—ते; हूतः, कर्मवा० हूयते, प्रेर० ह्वापयति—ते; इच्छा० जुहूषति—ते) 1. बुलाना—तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना बन्धुप्रियां बन्धुजनो जुहाव —कु० १।२६ 2. नाम लेकर पुकारना, आवाहन करना, आवाज देना 3. नाम लेना, बुलाना 4. ललकारना 5. प्रतिस्पर्धा करना, होड़ाहोड़ी करना 6. प्रार्थना करना, याचना करना, आ—, 1. बुलाना, निमंत्रित करना—वत्स! इत एवाह्वयेनम्—उत्तर० ६ 2. ललकारना (आ०)—गतभीराह्वत चेदिराण्मुरारिम् —शि० २०।१, कृष्णश्चाणूरमाह्वयते—सिद्धा०, भट्टि० ८।१८, १५।८९, उप—, उपा—, बुलाना, भट्टि० ८।१७, सम्—, समा—, मिलकर बुलाना ।

सम्पूरक

अक्रूरः [न क्रूरः—न० त०] एक यादव का नाम जो कृष्ण का मित्र और चाचा था। (यही वह यादव था जिसने बलराम और कृष्ण को मथुरा में जाकर कंस को मारने की प्रेरणा दी थी। उसने इन दोनों को अपने आने का आशय बतलाया और कहा कि किस प्रकार अधर्मी कंस ने इनके पिता आनकदुंदुभि, राजकुमारी देवकी तथा स्वयं अपने पिता उग्रसेन को अपमानित किया। कृष्ण ने अपने जाने की स्वीकृति दे दी और प्रतिज्ञा की कि मैं उस राक्षस को तीन रात के अन्दर मार डालूंगा। कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति में सफल हुआ) दे० 'सत्राजित्' भी।

अगस्तिः, अगस्त्यः [विन्ध्याख्यम् अगम् अस्यति, अस्+क्तिच् शक०, या अगं विन्ध्याचलं स्त्यायति स्तम्नाति, स्त्यै+क, या अगः कुम्भः तत्र स्त्यानः संहतः इत्यगस्त्यः]—एक प्रसिद्ध ऋषि या मुनि का नाम। ऋग्वेद में अगस्त्य और वशिष्ठ मुनि मित्र और वरुण की सन्तान माने जाते हैं। कहते हैं कि लावण्यमयी अप्सरा उर्वशी को देखकर इनका वीर्य स्खलित हो गया। उसका कुछ भाग एक घड़े में गिर गया तथा कुछ भाग जल में। घड़े से अगस्त्य का जन्म हुआ इसीलिए इसे कुम्भयोनि, कुम्भजन्मा, घटोद्भव, कलशयोनि आदि भी कहते हैं। वर्णन मिलता है कि इसने विन्ध्याचल पर्वत को जो बराबर उठता जा रहा था तथा सूर्यमण्डल पर अधिकार करने ही वाला था, और जिसने इसके रास्ते को रोक दिया था, नीचे हो जाने के लिए कहा। दे० विन्ध्य० (यह आख्यायिका कई विद्वानों के मतानुसार आर्य जाति की दक्षिण देश में विजय और भारत की सभ्यता के प्रति प्रगति का पूर्वाभास देती है) इसके नाम एक अन्य आख्यायिका के अनुसार समुद्र को पी-जाने के कारण पीताब्धि और समुद्रचुलुक आदि भी थे, क्योंकि समुद्र ने अगस्त्य को रुष्ट कर दिया था, और क्योंकि अगस्त्य युद्ध में इन्द्र और देवों की सहायता करना चाहता था जब कि देवों का युद्ध कालेय नामक राक्षसवर्ग से होने लगा था और राक्षस समुद्र में जाकर छिप गये थे और तीनों लोकों को कष्ट देते थे। उसकी पत्नी का नाम लोपामुद्रा था। वह विंध्य के दक्षिण में कुंजर पर्वत पर एक तपोवन में रहता था। उसने दक्षिण में रहने वाले सभी राक्षसों को नियन्त्रण में रक्खा। एक उपाख्यान में वर्णन मिलता है कि किस प्रकार इसने वातापि नामक राक्षस को खा लिया जिसने मेंढे का रूप धारण कर लिया था, और किस प्रकार उसके भाई को जो अपने भाई का बदला लेने आया था, अपनी एक दृष्टि से भस्म कर दिया। अपने वनवास के समय घूमते हुए भगवान् राम सीता और लक्ष्मण सहित उसके आश्रम में गये। वहां अगस्त्य ने इनका बहुत आदर-सत्कार किया और राम का मित्र, सलाहकार और अभिरक्षक बन गया। उसने राम को विष्णु का धनुष तथा कुछ और वस्तुएं दीं (दे० रघु० १५।५५) ज्योतिष में इसे तारा भी माना जाता है- तु० रघु० ४।२१ भी।

अग्निः [अङ्गति ऊर्ध्वं गच्छति अङ्ग्+नि, न लोपश्च] अग्नि का देवता। ब्रह्मा का ज्येष्ठ पुत्र। इसकी पत्नी का नाम स्वाहा है। उससे इसके तीन सन्तान हुई—पावक, पवमान और शुचि। हरिवंश में इसका वर्णन मिलता है कि इसके वस्त्र काले हैं, धुआं ही इसकी टोपी है, तथा शिखाएँ इसका भाला है। इसके रथ में लाल घोड़े जुते हैं। यह मेंढे के साथ या कभी मेंढे पर सवारी करता हुआ वर्णन किया गया है। महाभारत में वर्णन मिलता है कि अग्नि का शौर्य और विक्रम समाप्त हो गया और वह मन्द हो गया, क्योंकि उसने राजा श्वेतकी द्वारा यज्ञों में दी गई आहुतियाँ खा लीं। परन्तु उसने अर्जुन की सहायता से खांडववन को निगलकर अपनी शक्ति फिर प्राप्त कर ली। इस सेवा के उपलक्ष्य में ही अर्जुन को गाण्डीव धनुष दिया गया।

अघः [अघ् कर्तरि अच्] एक राक्षस का नाम। यह बक और पूतना का भाई था तथा कंस का सेनापति। एक बार कंस ने इसे कृष्ण और बलराम को मारने के लिए गोकुल भेजा। उसने वहाँ एक विशालकाय अजगर का रूप धारण कर लिया जो चार योजन लंबा था। इस रूप में वह ग्वालों के मार्ग में लेट गया तथा अपना मुंह पूरा खोल लिया। ग्वालों ने इसे एक पहाड़ी गुफा समझा, वे इसमें घुस गये, सब गौएँ भी इसी में चली गई। परन्तु कृष्ण ने इसे समझ लिया। फलतः उसने अन्दर घुसकर अपना शरीर इतना फुलाया कि वह अजगररूपी राक्षस टुकड़े-टुकड़े हो गया तब कहीं इस प्रकार कृष्ण ने अपने साथियों की रक्षा की।

अंगद [अङ्गं दायति शोधयति भूपयति, अङ्गं द्यति वा, दै या दो+क] तारा नाम की पत्नी से उत्पन्न बालि का एक पुत्र। जब राम ने समस्त सेना के साथ लंका को कूच किया तो अंगद को रावण के पास शान्ति के दूत के रूप में भेजा गया जिससे कि समय रहते रावण अपनी जान बचा सके। परन्तु रावण ने घृणापूर्वक उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया, फलतः काल का ग्रास बना। सुग्रीव के पश्चात् किष्किन्धा का राज्य अंगद को मिला। सामान्य बोलचाल में

वह व्यक्ति जो दो पक्षों के बीच असफल मध्यस्थता करता है, अंगद नाम से पुकारा जाता है ।

अंजना (स्त्री०) मारुति या हनुमान् की माता का नाम । वह कुंजर नामक बानर की कन्या तथा केसरी की पत्नी थी, एक दिन वह एक पहाड़ की चोटी पर बैठी थी, कि उसका वस्त्र ज़रा शरीर से हट गया । वायुदेवता उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया, उसने दृश्य शरीर धारण कर अंजना से अपनी इच्छापूर्ति की याचना की । अंजना ने उससे प्रार्थना की कि आप मेरा सतीत्व नष्ट न करें । वायु ने इस बात को स्वीकार कर लिया, परन्तु कहा कि तुम्हारे शक्ति और कान्ति में मेरे जैसा पुत्र उत्पन्न होगा क्योंकि मैंने तुम्हारी ओर कामवासना की दृष्टि से देखा है । यह कहकर वायु अन्तर्धान हो गया । यह पुत्र ही मारुति या हनुमान् था ।

अत्रिः [अद्+त्रिन्=अत्रि] एक महर्षि का नाम । यह ब्रह्मा की आँख से उत्पन्न होने के कारण ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों या प्रजापतियों में से एक है । इसकी पत्नी का नाम अनसूया था । उससे तीन पुत्र हुए दत्त, दुर्वासा और सोम । रामायण में वर्णन मिलता है कि राम और सीता, अत्रि तथा अनसूया के आश्रम में गये । वहाँ उन्होंने उनका खूब आदर सत्कार किया (दे० अनसूया) । ऋषि के रूप में वह सप्त-ऋषियों में से एक है, ज्योतिष की दृष्टि से वह सप्त-र्षियों में एक तारा है । कहते हैं कि चन्द्रमा इस की आँख से पैदा हुआ—तु० रघु० २।७५ ।

अदितिः [न दीयते खण्डयते वध्यते बृहत्त्वात्—दो+क्तिच्] दक्ष की एक कन्या का नाम जो कश्यप को ब्याही गई : जिस समय विष्णु ने वामनावतार ग्रहण किया तो उस समय वह विष्णु की माता थी। वह इन्द्र की भी माता थी । इसके कारण वह उन अन्य देवताओं की भी माता कहलाती है जो अदितिनदन कहलाते हैं ।

अनिरुद्ध [न निरुद्ध इति ब० स०] प्रद्युम्न के एक पुत्र का नाम । अनिरुद्ध काम का पुत्र और कृष्ण का पोता था । बाणासुर की पुत्री उषा उससे प्रेम करने लगी थी । उसने जादू की शक्ति से अनिरुद्ध को अपने पिता की नगरी शोणितपुर के अपने भवन में मंगवा लिया । (दे० उषा या चित्रलेखा) । बाण ने कुछ रक्षक उसे पकड़ने के लिए भेजे परन्तु पराक्रमी अनिरुद्ध ने उन्हें लोहे की गदा से मौत के घाट उतार दिया । अंततः वह जादू की शक्ति के द्वारा पकड़ लिया गया । जब कृष्ण, बलराम और काम को उसका पता लगा तो वे उसे लेने गये । वहाँ भारी युद्ध हुआ । बाण की यद्यपि शिव और स्कन्द सहायता करते थे, तो भी वह पराजित हो गया, परन्तु शिव के बीच में पड़ने से उसके प्राण बच गये । अनिरुद्ध को उसकी पत्नी उषा सहित द्वारका में अपने घर लाया गया ।

अंधकः [अन्ध+कन्] एक राक्षस का नाम जो कश्यप और दिति का पुत्र था । इसकी शिव ने हत्या कर दी थी । इसके वर्णन मिलता है कि एक हज़ार भुजाएँ और सिर थे, २००० आँखें और पैर थे । वह अंधों की भाँति चलता था इस लिए लोग उसे अंधक कहते थे, चाहे वह पूर्णतः ठीक ठीक देख सकता था । जब उसने स्वर्ग से पारिजात वृक्ष उठा कर ले जाने का प्रयत्न किया तो शिव नें उसकी हत्या कर दी ।

अभिमन्युः (पुं०) अर्जुन के एक पुत्र का नाम । इसकी माता सुभद्रा थी जो श्रीकृष्ण तथा बलराम की बहन थी । जब द्रोण की सलाह के अनुसार कौरवों ने 'चक्रव्यूह' नाम की विशिष्ट सैन्यस्थिति बनाई, और वह भी इस आशा से कि आज अर्जुन दूर है, उसके अतिरिक्त और कोई पांडव इस व्यूह को तोड़ नहीं सकेगा, तो अभिमन्यु अपने चाचा ताउओं को विश्वास दिलाया कि यदि आप लोग मेरी सहायता करें तो मैं अवश्य ही इस व्यूह को तोड़ डालूँगा । तदनुसार वह व्यूह में प्रविष्ट हुआ, कौरवपक्ष के अनेक योद्धाओं को उसने मौत के घाट उतारा । एक बार तो उसने ऐसा घोर पराक्रम दिखाया कि द्रोण, कर्ण दुर्योधन आदि बड़े बड़े महारथी भी उसका मुक़ा-बला न कर सके । परन्तु वह बहुत देर तक इस भीषण युद्ध का सामना न कर सका, अन्त में परास्त हुआ और मारा गया । वह बहुत सुन्दर था । उसकी दो पत्नियाँ थी - बलराम की पुत्री वत्सला, तथा राजा विराट की पुत्री उत्तरा । जिस समय वह मारा गया उस समय उत्तरा गर्भवती थी । उससे परीक्षित का जन्म हुआ । परीक्षित ही बाद में हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बैठा ।

अरुणः [ऋ+उनन्] विनता में कश्यप से उत्पन्न एक पुत्र गरुड था । गरुड का ज्येष्ठ भ्राता ही अरुण बतलाया जाता है । विनता ने समय से पूर्व ही अंडे से बच्चा निकाला, उसकी अभी जंघाएं नहीं बनी थी, इस लिए उसका नाम 'अनूरु' (ऊरुरहित) या 'विपाद' (पैरों से हीन) पड़ गया । अब अरुण सूर्य का सारथि है । उसकी पत्नी श्येनी थी जिससे 'संपाति' और 'जटायु' नामक दो पुत्र पैदा हुए ।

अश्वत्थामन् दे० 'द्रोण' भी ।

अश्विनीकुमार दे० 'संज्ञा'

अष्टावक्रः [अष्टकृत्वः अष्टसु भागेषु वा वक्रः] कहोड के एक पुत्र का नाम । कहोड ऋषि इतने अधिक अध्ययन शील थे कि उन्होंने अपनी पत्नी की उपेक्षा की । इस अवहेलना से क्षुब्ध होकर उसके अजात पुत्र ने जो

अभी गर्भ में ही था, अपने पिता की भर्त्सना की। इस बात से क्रुद्ध होकर पिता ने शाप दिया कि तुम आठ अंगों से टेढ़े-मेढ़े पैदा होगे। एक बार कहोड ने एक बौद्ध से शर्त लगाई और फिर उसमें हार जाने पर कहोंड को नदी में डुबा दिया गया। युवा अष्टावक्र ने उस बौद्ध को परास्त किया और अपने पिता को मुक्त कराया। इस बात से प्रसन्न होकर पिता ने समंगा नदी में स्नान करने के लिए कहा। ऐसा कर वह बिल्कुल सरल अंगों वाला हो गया।

न्याय

1. **विषकृमिन्याय**—विष में पले कीड़ों का नीतिवाक्य। यह उस स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो दूसरों के लिए घातक होते हुए भी उनके लिए ऐसी नहीं होती जो इसमें जन्मे और पले हैं; क्योंकि वह स्थिति तो उनका स्वभाव बन गया है जैसे कि विषकृमि जो विष से ही जन्मा है। विष चाहे दूसरों के लिए घातक हो परन्तु उनके लिए घातक नहीं होता जो उसी विषैली स्थिति में पले हैं।
2. **विषवृक्षन्याय**—विषवृक्ष का नीतिवाक्य। यह उस स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता जो यद्यपि उत्पातमय या आघातपूर्ण है तो भी उस व्यक्ति के द्वारा जिसने उसे बनाया है, नष्ट किये जाने के योग्य नहीं। जैसे कि एक वृक्ष चाहे वह विष का ही क्यों न हो वह भी लगाने वाले के द्वारा काटा नहीं जाता।
3. **स्थालीपुलाकन्याय**—पकते हुए बर्तन में से एक चावल देखने का नीतिवाक्य। देगची में पड़े हुए सभी चावलों पर गर्म पानी का समान प्रभाव पड़ता है। जब एक चावल पका हुआ होता है तो यह अनुमान लगा लिया जाता है कि अन्य सब चावल भी पक गए हैं। अतः यह नीतिवाक्य उस दशा में प्रयुक्त होता है जब समस्त श्रेणी का अनुमान उसके एक भाग को देख कर लगाया जाय। मराठी में इसे ही कहते हैं "शितावरून भाताचीं परीक्षा"।

पण्डावत् (वि०) [पण्डा+मतुप्] बुद्धिमान्—अश्व० ६।

प्रकोपः [प्रा० स०] क्रोध, उत्तेजना, आवेश।

प्राकारः (पुं०) 1. चहारदीवारी, दाड़ा, बाड़ 2. चारों ओर घेरा डालने वाली दीवार, फ़सील—शतमेकोऽपि संधत्ते प्राकारस्थो धनुर्धरः—पंच० १।२२९।

बाली (स्त्री०) एक प्रकार का कान का आभूषण—अश्व० २४।

युधिष्ठिरः [युधि स्थिरः—अलुक् स०, षत्वम्] 'युद्ध में अडिग' पांडवों में ज्येष्ठ राजकुमार। इसे 'धर्म' 'धर्मराज' और 'अजातशत्रु' आदि भी कहते हैं। यह धर्म द्वारा कुन्ती से उत्पन्न हुआ था। सैन्यचातुरी की अपेक्षा यह अपनी सचाई और ईमानदारी के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध था। अठारह दिन के महाभारत के पश्चात् इसे हस्तिनापुर की राजगद्दी पर सम्राट् के रूप में अभिषिक्त किया गया था। उसके पश्चात् इसने बहुत दिनों तक धर्मपूर्वक राज्य किया। इसका अधिक विवरण जानने के लिए दे० 'दुर्योधन')।

वैशम्पायनः (पुं०) व्यास के एक प्रसिद्ध शिष्य का नाम। इसने अपने शिष्य याज्ञवल्क्य को कहा कि वह समस्त यजुर्वेद जो तुमने मुझसे पढ़ा है उगल दो। तदनुसार उगल देने पर वैशम्पायन के अन्य शिष्यों ने तीतर बन कर वह समस्त यजुर्वेद चाट लिया। इसीलिए यजुर्वेद की उस शाखा का नाम 'तैत्तिरीय' पड़ गया। पुराणों का पाठ करने में वैशंपायन अत्यन्त दक्ष और प्रसिद्ध था। कहते हैं कि उसने समस्त महाभारत का पाठ जनमेजय राजा को सुनाया।

हिरण्याक्षः (पुं०) एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम। हिरण्यकशिपु का जुड़वाँ भाई। ब्रह्मा से वरदान पाकर वह ढीठ और अत्याचारी हो गया, उसने पृथ्वी को समेट लिया और उसे लेकर समुद्र की गहराई में चला गया। अत एव विष्णु ने वराह का अवतार धारण किया, राक्षस को यमलोक पहुँचाया और पृथ्वी का उद्धार किया।

परिशिष्ट १

संस्कृत छन्दःशास्त्र

परिचय— संस्कृत छन्दःशास्त्र का सबसे पहला और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पिंगलऋषिप्रणीत छन्दःशास्त्र है। यह आठ अध्यायों का एक सूत्रग्रंथ है। अग्निपुराण में भी पिंगलपद्धति पर आधारित छन्दःशास्त्र का पूर्ण विवरण है। और अनेक ग्रन्थ इसी विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा रचे गये हैं—उदा० श्रुतबोध, वाणीभूषण, वृत्तदर्पण, वृत्तरत्नाकर, वृत्तकौमुदी और छन्दोमंजरी आदि। आगे के पृष्ठों में मुख्यतः छन्दोमंजरी और वृत्तरत्नाकर के आधार पर ही कुछ लिखा गया है। इस परिशिष्ट में वैदिक तथा प्राकृत छन्दों को नहीं रक्खा गया है।

संस्कृत की रचना या तो गद्य में होती है या पद्य में। काव्यरचना प्रायः श्लोकों में होती है। श्लोक या पद्य में चार चरण होते हैं जिन्हें या तो अक्षरों की संख्या से विनियमित किया जाता है अथवा मात्राओं की गिनती से।

पद्य या तो वृत्त होता है अथवा जाति। वृत्त एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में अक्षरों की गिनती और स्थिति के अनुसार निर्धारित किया जाता है। जाति एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में मात्राओं की गिनती के अनुसार निश्चित किया जाता है।

वृत्त तीन प्रकारके होते हैं—(१) समवृत्त—जिसमें श्लोक के चारों चरण समान हों। (२) अर्धसमवृत्त—जिसमें प्रथम तृतीय और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण समान हों। (३) और विषमवृत्त जिसके चारों चरण असमान हों।

अक्षर (वर्ण) एक ऐसा शब्द है जो एक सांस में बोला जाय, अर्थात् एक स्वर, इसके साथ चाहे एक व्यंजन हो, चाहे एक से अधिक और चाहे केवल स्वर ही हो।

अक्षर (वर्ण) लघु भी होता है, गुरु भी जैसा कि उसका स्वर हो ह्रस्व या दीर्घ। अ इ उ ऋ और ऌ ह्रस्व हैं, आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ और औ दीर्घ हैं। परन्तु छन्दःशास्त्र में ह्रस्व स्वर दीर्घ माना जाता है जबकि उसके आगे अनुस्वार या विसर्ग हो, अथवा कोई संयुक्त व्यंजन हो, जैसे कि 'गन्ध' का 'अ' या 'गः'। (प्र, ह्र और ब्र क्र इसके अपवाद हैं। इनके पूर्व का स्वर यद्यपि एक प्रकार की काव्यात्मक छूट के कारण ह्रस्व रह सकता है, उदा० कु० ७।११, या शि० १०।६०; तथापि यहाँ पर समालोचकों ने छन्द को छन्दःशास्त्र के सामान्य नियमों के अनुरूप बनाने के लिए संशोधन भी प्रस्तुत किये हैं)। इसी प्रकार पाद का अन्तिम अक्षर भी छन्द की अपेक्षा के अनुरूप लघु या गुरु माना जा सकता है, वह स्वयं चाहे कुछ ही हो।

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

मात्राओं की संख्या से निर्धारित होने वाले वृत्तों में ह्रस्व स्वर की एक मात्रा होती है, और दीर्घस्वर की दो मात्राएँ।

अक्षरों की संख्या से विनियमित वृत्तों की माप-तोल के लिए, छन्दःशास्त्र के लेखकों ने आठ 'गणों' (अक्षरपाद) की एक युक्ति निकाली है। प्रत्येक गण में तीन अक्षर होते हैं, वे तीनों लघु या गुरु होने के कारण एक दूसरे से भिन्न होते हैं। वे गण नीचे लिखे श्लोक में बतलाये गये हैं।

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो,
भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः,
सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः॥
आदिमध्यावसानेषु यरता यान्ति लाघवम्।
भजसा गौरवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्॥

प्रतीकाक्षरों में अभिव्यक्त (गुरु ऽ, लघु ।) भिन्न-भिन्न गण निम्न प्रकार से दर्शाये जा सकते हैं :—

ऽ ऽ ऽ मगण
। ऽ ऽ यगण
ऽ । ऽ रगण
। । ऽ सगण
ऽ ऽ । तगण
। ऽ । जगण
ऽ । । भगण
। । । नगण

इसी प्रकार 'ल' लघु तथा 'ग' गुरु को प्रकट करता है।

विशेष—प्रत्येक चरण के अक्षरों (वर्णों) की गिनती के अनुसार संस्कृत के छन्दः शास्त्रियों ने वृत्तों का वर्गीकरण किया है। इस प्रकार वे 'समवृत्तों' को छब्बीस

अनुभाग (क)

श्रेणियों में रखते हैं जैसे कि समवृत्तों के प्रत्येक चरण में अक्षरों की संख्या एक से लेकर छब्बीस तक पृथक्-पृथक् हो सकती है। इनमें से प्रत्येक श्रेणी में लघु और गुरु की पृथक्-पृथक् भिन्न-भिन्न स्थिति होने के कारण असंख्य वृत्तों की संभावना हो जाती है। उदाहरणतः छः अक्षरों के प्रत्येक चरण वाली श्रेणी में, (अक्षर चाहे लघु हों या गुरु) संभावित संख्या २×२×२×२×२×२ या $२^६$=६४ होती है, परन्तु प्रयोग में छः वृत्त भी नहीं आते। यही बात छब्बीस अक्षर वाली श्रेणी की है। वहाँ भी वृत्तों की संभावित संख्या $२^{२६}$ या ८७१०८८६४ होती है। परन्तु यदि हम अर्धसमवृत्त या विषमवृत्तों की बात देखें तो वहाँ तो संभावित वृत्तों की विविधता अनन्त है। पिंगल, लीलावती और वृत्तरत्नाकर के अंतिम अध्याय में संभावित विविधताओं की संख्या, उनका स्थान, या उनकी नियमित गणना में किसी एक छंद विशेष की निश्चित जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्देश दिये गए हैं। संभावित वृत्तों के इस विशाल समुदाय की तुलना में कवियों द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले वृत्तों की विविधता नगण्य है। परन्तु यह नगण्य संख्या भी इतनी अधिक है कि इस परिशिष्ट में नहीं रक्खी जा सकती। अतः हम यहाँ निम्न क्रम में केवल उन्हीं वृत्तों का वर्णन करेंगे जो बहुत प्रयुक्त किये जाते हैं अथवा जिनका उल्लेख करना आवश्यक है।

अनुभाग (क) समवृत्त
अनुभाग (ख) अर्धसमवृत्त
अनुभाग (ग) विषमवृत्त
अनुभाग (घ) जाति आदि

नोट—निम्नांकित परिभाषाओं में गणों का प्रतिनिधित्व करने वाले भ म स और ल ग आदि वर्णों के स्वर का बहुधा वृत्त की अपेक्षा के कारण लोप कर दिया जाता है—उदा० 'भ्रम्न' प्रकट करता है म र भ न को, इसी प्रकार 'म्तौ' दर्शाता है म त को। पहली पंक्ति में हमने वृत्त की परिभाषा दी है, दूसरी पंक्ति में गणक्रम और यति—विराम अर्थात् श्लोक या चरण का सस्वर पाठ करने में जहाँ रुकना होता है, और जो कि परिभाषा में करणकारक द्वारा संकेतित किया गया है—(प्रकोष्ठ में अंग्रेजी अंकों द्वारा) प्रकट की जाती है, फिर तीसरी पंक्ति में उदाहरण (इनमें से अधिकांश माघ, भारवि, कालिदास और दंडी की रचनाओं से लिए गए हैं)।

चार वर्णों के चरण वाले वृत्त

(प्रतिष्ठा)

कन्या

परि० ग्मौ चेत्कन्या।
गण० ग, म
उदा० भास्वत्कन्या सैका धन्या।
यस्याः कूले कृष्णोऽखेलत्॥

पाँच वर्णों के चरण वाले वृत्त

(सुप्रतिष्ठा)

पंक्ति

परि० भूमौ गिति पंक्तिः
गण० भ, ग, ग
उदा० कृष्ण सनाथा तर्णकपंक्तिः।
यामुनकच्छे चारु चचार॥

छः वर्णों के चरण वाले वृत्त

गायत्री

(1) तनुमध्यमा

परि० त्यौ चेत्तनुमध्यमा।
गण० त, य।
उदा० मूर्तिर्मुरशत्रोरत्यद्भुतरूपा।
आस्तां मम चित्ते नित्यं तनुमध्या॥

(2) विद्युल्लेखा ('वाणी' भी कहते हैं)

परि० विद्युल्लेखा मो मः।
गण० म, म (३, ३)।
उदा० श्रीदीप्ती ह्रीकीर्ती धीनीती गीः प्रीती।
एधेते द्वे द्वे ते ये नेमे देवेशे॥ काव्य० ३।८६।

(3) शशिवदना

परि० शशिवदना न्यौ।
गण० न, य।
उदा० शशिवदनानां व्रजतरुणीनाम्।
अधरसुधोर्मि मधुरिपुरैच्छत्]

(4) सोमराजी

परि० द्विया सोमराजी।
गण० य, य (2, 4)।
उदा० हरे सोमराजी-समा ते यशः श्रीः।
जगन्मण्डलस्य छिनत्त्यन्धकारम्॥

सात वर्णों के चरण वाले वृत्त

(उष्णिक्)

(1) कुमारललिता

परि० कुमारललिता ज्सगाः।
गण० ज, स, ग (3. 4)।

उदा० मुरारितनुवल्ली कुमारललिता सा ।
व्रजेणनयनानां ततान मुदमुच्चैः ॥

(2) मदलेखा

परि० मस्गौ स्यान्मदलेखा ।
गण० म, स, ग (3. 4) ।
उदा० रङ्गे बाहुविरुणाद् दन्तीन्द्रान्मदलेखा ।
लग्नाभून्मुरशत्रौ कस्तूरीरसचर्चा ।

(3) मधुमती

परि० ननगि मधुमती ।
गण० न, न, ग (5. 2.) ।
उदा० रविदुहितृतटे नवकुसुमततिः ।
व्यधित मधुमती मधुमथनमुदम् ॥

आठ वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अनुष्टुभ्)

(1) अनुष्टुभ्

(इसे 'श्लोक' भी कहते हैं)

इस छन्द के अनेक भेद हैं । परन्तु जिसका सबसे अधिक प्रयोग होता है उसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं, मात्रायें सबकी भिन्न-भिन्न । इस प्रकार प्रत्येक चरण का पांचवां वर्ण लघु, छठा दीर्घ, तथा सातवां वर्ण (प्रथम, तृतीय चरण का) दीर्घ, एवं (द्वितीय तथा चतुर्थचरण का) ह्रस्व होता है ।
श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम् ।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

उदा० वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥रघु० १।१॥

(2) गजगति

परि० नभलगा गजगतिः ।
गण० न, भ, ल, ग (4. 4) ।
उदा० रविसुतापरिसरे विहरतो दृशि हरेः ।
व्रजवधूगजगतिर्मुदमलं व्यतनुत ॥

(3) प्रमाणिका

परि० प्रमाणिका जरौ लगौ ।
गण० ज, र, ल, ग (4. 4) ।
उदा० पुनातु भक्तिरच्युता सदा च्युताङ्घ्रिपद्मयोः ।
श्रुतिस्मृतिप्रमाणिका भवाम्बुराशितारिका ॥

(4) माणवक

परि० भात्तलगा माणवकम् ।
गण० भ, त, ल, ग, (4. 4) ।
उदा० चंचलचूडं चपलैर्वत्सकुलैः केलिपरम् ।
ध्याय सखे स्मेरमुखं नन्दसुतं माणवकम् ॥

(5) विद्युन्माला

परि० मो मो गो गो विद्युन्माला ।
गण० म, म, ग, ग (4. 4) ।
उदा० वासोवल्ली विद्युन्माला बर्हश्रेणी शाक्रश्चापः ।
यस्मिन्नास्तां तापोच्छित्यै गोमध्यस्थः कृष्णाम्भोदः ॥

(6) समानिका

परि० ग्लौ रजौ समानिका तु ।
गण० ग, ल, र, ज (4. 4)
उदा० यस्य कृष्णपादपद्ममस्ति हृत्-तडागसद्म ।
धीः समानिका परेण नोचितात्र मत्सरेण ॥

नौ वर्णों के चरण वाले वृत्त

(बृहती)

(1) भुजगशिशुभृता

परि० भुजगशिशुभृता नौ मः ।
गण० न, न, म (7. 2.)
उदा० ह्रदतटनिकटक्षोणी भुजगशिशुभृता याऽऽसीत् ।
मुररिपुदलिते नागे व्रजजनसुखदा साऽभूत् ॥

(2) भुजङ्गसङ्गता

परि० सजरैर्भुजङ्गसङ्गता ।
गण० स, ज, र (3. 6)
उदा० तरला तरङ्गरिङ्गितैर्यमुना भुजङ्गसङ्गता ।
कथमेति वत्सचारकश्चपलः सदैव तां हरिः ॥

(3) मणिमध्य

परि० स्यान्मणिमध्यं चेद्भमसाः ।
गण० भ, म, स (5.4)
उदा० कालियभोगाभोगगतस्तन्मणिमध्यस्फीतरुचा ।
चित्रपदाभो नन्दसुतश्चारु ननर्त स्मेरमुखः ॥

दस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(पङ्क्ति)

(1) त्वरितगति

परि० त्वरितगतिश्च नजनगैः ।
गण० न, ज, न, ग (5. 5.)
उदा० त्वरितगतिर्व्रजयुवतिस्तरणिसुता विपिनगता ।
मुररिपुणा रतिगुरुणा परिरमिता प्रमदमिता ॥

(2) मत्ता

परि० ज्ञेया मत्ता मभसगसृष्टा ।
गण० म, भ, स, ग (4. 6)
उदा० पीत्वा मत्ता मधु मधुपाली
कालिन्दीये तटवनकुञ्जे ।
उद्दीव्यन्तीर्व्रजजनरामाः
कामासिक्ता मधुजिति चक्रे ॥

(3) रुक्मवती (चम्पकमाला)

परि० रुक्मवती सा यत्र भमस्गाः ।
गण० भ, म, स, ग (5. 5)
उदा० कायमनोवाक्यैः परिशुद्धैः
यस्य सदा कंसद्विषि भक्तिः ।

राज्यपदे हर्म्यालिरुदारा
रुक्मवती विघ्नः खलु तस्य ॥

ग्यारह वर्णों के चरण वाले वृत्त
(त्रिष्टुभ्)
(1) इन्द्रवज्रा

परि० स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ।
गण० त, त, ज, ग, ग (5. 6)
उदा० गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा
रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्तवृष्टौ ।
यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थम्
चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः ॥

(2) उपेन्द्रवज्रा

परि० उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा ।
गण० ज, त, ज, ग, ग (5. 6)
उदा० उपेन्द्रवज्रादिमणिच्छटाभि-
र्विभूषणानां छुरितं वपुस्ते ।
स्मरामि गोपीभिरुपास्यमानम्
सुरद्रुमूले मणिमण्डपस्थम् ॥

(3) उपजाति

परि० अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ
पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु
वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥
गण० जब इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा को एक ही श्लोक में मिला देते हैं तो उसे उपजाति वृत्त कहते हैं । इसके चौदह भेद होते हैं ।
उदा० अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ॥ कु० १।१ ।
दे० रघु० २, ५, ६, ७, १३, १४, १६, १८,; कु०३, कु० १७ आदि । जब अन्य वृत्त भी एक ही श्लोक में मिला दिये जाते हैं तो भी उपजाति ही वृत्त होता है । उदा० माघ कवि के निम्नश्लोक में वंशस्थ और इन्द्रवंशा मिला दिए गए हैं ।
इत्थं रथाश्वेभनिषादिनां प्रगे
गणो नृपाणामथ तोरणाद्बहिः ।
प्रस्थानकालक्षमवेषकल्पना-
कृतक्षणक्षेपमुदैक्षताच्युतम् ॥ शि० १२।१ ।

(4) दोधक

परि० दोधकमिच्छति भत्रितयाद्गौ ।
गण० भ, भ, भ, ग, ग, (6. 5.)
उदा० या न ययौ प्रियमन्यवधूभ्यः
सा रतरागमना यतमानम् ।
तेन सहेह बिभर्ति रहः स्त्री
मार तरागमनायतमानम् ॥शि० ४।४५ ।

(5) भ्रमरविलसितम्

परि० म्भौ न्लौ गःस्याद् भ्रमरविलसितम् ।
गण० म, भ, न, ल, ग (4. 7)
उदा० प्रीत्यै यूनां व्यवहिततपनाः
प्रौढध्वान्तं दिनमिह जलदाः ।
दोषामन्यं विदधति सुरत-
क्रीडायासश्रमशमपटवः ॥ शि० ४।६२ ।

(6) रथोद्धता

परि० रात्परैर्नरलगै रथोद्धता ।
गण० र, न, र, ल, ग (3. 8 या 4. 7)
उदा० कौशिकेन स किल क्षितीश्वरो
राममध्वरविघातशान्तये ।
काकपक्षधरमेत्य याचित-
स्तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते ॥ रघु० ११।१ ।
दे० कु० ८ भी ।

(7) वातोर्मी

परि० वातोर्मीयं गदिता म्भौ तगौ गः ।
गण० म, भ, त, ग, ग (4. 7)
उदा० ध्याता मूर्त्तिः क्षणमप्यच्युतस्य
श्रेणी नाम्नां गदिता हेलयाऽपि ।
संसारेऽस्मिन् दुरितं हन्ति पुंसाम्
वातोर्मी पोतमिवाम्भोधिमध्ये ॥

(8) शालिनी

परि० मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः ।
गण० म, त, त, ग, ग, (4. 7.)
उदा० अंहो हन्ति ज्ञानवृद्धिं विधत्ते
धर्मं दत्ते काममर्थं च सूते ।
मुक्तिं दत्ते सर्वदोपास्यमाना
पुंसां श्रद्धा शालिनी विष्णुभक्तिः ॥

(9) स्वागता

परि० स्वागता रनभगैर्गुरुणा च ।
गण० र, न, भ, ग, ग (3. 8)
उदा० यावदागमयतेऽथ नरेन्द्रान् स स्वयंवरमहाय महीन्द्रः ।
तावदेव ऋषिरिन्द्रदिदृक्षुः नारदस्त्रिदशधाम जगाम ॥
नै० ५।१ ॥
दे० कि०९, शि० १०.

बारह वर्णों के चरण वाले वृत्त
(जगती)
(1) इन्द्रवंशा

परि० तच्चेन्द्रवंशा प्रथमाक्षरे गुरौ ॥
गण० इन्द्रवंशा बिल्कुल वंशस्थविल या वंशस्थ (दे० नी० १३वाँ) के समान है, सिवाय इसके कि इसका प्रथमाक्षर गुरु होता है । त, त, ज, र ।

उदा० दैत्येन्द्रवंशाग्निरुदीर्णदीधितिः
पीताम्बरोऽसौ जगतां तमोपहः ।
यस्मिन् ममज्जुः शलभा इव स्वयम्
ते कंसचाणूरमुखा मखद्विषः ॥

(2) चन्द्रवर्त्म

परि० चन्द्रवर्त्म निगदन्ति रनभसैः ।
गण० र, न, भ, स (4, 8)
उदा० चन्द्रवर्त्म पिहितं घनतिमिरै
राजवर्त्म रहितं जनगमनैः ।
इष्टवर्त्म तदलंकुरु सरसे
कुञ्जवर्त्मनि हरिस्तव कुतुकी ॥

(3) जलधरमाला

परि० अब्ध्यंगैः स्याज्जलधरमालाम्भौ स्मौ ।
गण० म, भ, स, म (4.8)
उदा० या भक्तानां कलिदुरितोत्तप्तानां
तापच्छेदे जलधरमाला नव्या ।
भव्याकारा दिनकरपुत्रीकूले
केलीलोला हरितनुरव्यात् सा वः ॥
दे० कि० ५।२३ ॥

(4) जलोद्धतगति

परि० रसैर्जसजसा जलोद्धतगतिः ।
गण० ज, स, ज, स (6.6)
उदा० समीरशिशिरः शिरस्सु वसताम्
सतां जवनिका निकामसुखिनाम् ।
बिभर्ति जनयन्नयं मुदमपा-
मपायधवला बलाहकततीः ॥ शि० ४।५४ ॥

(5) तामरस

परि० इह वद तामरसं नजजा यः ।
गण० न, ज, ज, य (5.7)
उदा० स्फुटसुषमामकरन्दमनोज्ञम्
प्रजललनानयनालिनिपीतम् ।
तव मुखतामरसं मुरशत्रो
हृदयतडाग विकाशि ममास्तु ॥

(6) तोटक

परि० वद तोटकमब्धिसकारयुतम् ।
गण० स, स, स, स (4.4.4)
उदा० स तथेति विनेतुरुदारमतेः
प्रतिगृह्य वचो विससर्ज मुनिम् ।
तदलब्धपदं हृदि शोकघने
प्रतियातमिवान्तिकमस्य गुरोः ॥ रघु० ८।९१ ॥
दे० शि० ६।७१ ॥

(7) द्रुतविलम्बित

परि० द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ ।
गण० न, भ, भ, र (4.8 या 4.4.4)
उदा० मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना
मम च मुक्तमिदं तमसा मनः ।
मनसिजेन सखे प्रहरिष्यता
धनुषि चूतशरश्च निवेशितः ॥ श० ६ ।
दे० रघु० ९, शि० ६ भी ।

(8) प्रभा

परि० स्वरशरविरतिर्ननौ रौ प्रभा ।
गण० न, न, र, र (7.5)
उदा० अतिसुरभिरभाजि पुष्पश्रिया-
मतनुतरतयेव संतानकः ।
तरुणपरभृतः स्वनं रागिणा-
मतनुतरतये वसन्तानकः ॥ शि० ६।६७ ॥
कि० ५।२१ भी ।

(9) प्रमिताक्षरा

परि० प्रमिताक्षरा सजससैः कथिता ।
गण० स, ज, स, स (5.7)
उदा० विहगाः कदम्बसुरभाविह गाः
कलयन्त्यनुक्षणमनेकलयम् ।
भ्रमयन्नुपैति मुहुरभ्रमयम्,
पवनश्च धूतनवनीपवनः ॥ शि० ४।३६ ॥
कि० ९, शि० ९ ।

(10) भुजंगप्रयात

परि० भुजंगप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः ।
गण० य, य, य, य (6. 6)
उदा० धनैर्निष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति
धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति ।
धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके
धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम् ॥

(11) मणिमाला

परि० त्यौ त्यौ मणिमाला छिन्ना गुहवक्त्रैः ।
गण० त, य, त, य (6. 6)
उदा० प्रह्वामरमौलौ रत्नोपलक्लृप्ते
जातप्रतिबिम्बा शोणा मणिमाला ।
गोविन्दपदाब्जे राजी नखराणा-
मास्तां मम चित्ते ध्वान्तं शमयन्ती ॥

(12) मालती ('यमुना' भी कहते हैं)

परि० भवति नजावथ मालती जरौ ।
गण० न, ज, ज, र (5. 7)
उदा० इह कलयाच्युत केलिकानने
मधुरससौरभसारलोलुपः ।
कुसुमकृतस्मितचारु विभ्रमा-
मलिरपि चुम्बति मालतीं मुहुः ॥

(13) वंशस्थविल (वंशस्थ या वंशस्तनित)

परि० वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ ।
गण० ज, त, ज, र (5. 7)

उदा० तथा समक्षं दहता मनोभवम्
पिनाकिना भग्नमनोरथा सती ।
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती
प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता ॥ कु० ५।१ ।
दे० रघु० ३ भी ।

(14) वैश्वदेवी

परि० बाणाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौ यौ ।
गण० म, म, य, य (5.7)
उदा० अर्चामन्येषां त्वं विहायामराणा-
मद्वैतेनैकं विष्णुमभ्यर्च्य भक्त्या ।
तत्राशेषात्मन्यर्चिते भाविनी ते
भ्रातः संपन्नाराघना वैश्वदेवी ॥

(15) स्रग्विणी

परि० कीर्तितैषा चतूरेफिका स्रग्विणी ।
गण० र, र, र, र (6. 6)
उदा० इन्द्रनीलोपलेनेव या निर्मिता
शातकुम्भद्रवालङ्कृता शोभते ।
नव्यमेघच्छविः पीतवासा हरे-
र्मूर्तिरास्तां जयायोरसि स्रग्विणी ॥

तेरह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिजगती)

(1) कलहंस (सिंहनाद या कुटजा)

परि० सजसाः सगौ च कथितः कलहंसः ।
गण० स, ज, स, स, ग (7. 6)
उदा० यमुना विहारकुतुके कलहंसो
व्रजकामिनीकमलिनीकृतकेलि ।
जनचित्तहारिकलकण्ठनिनादः
प्रमदं तनोतु तव नन्दतनूजः ॥ दे० शि० ६।७३ ।

(2) क्षमा (चन्द्रिका और उत्पलिनी)

परि० तुरगरसयतिनौ ततौ गः क्षमा ।
गण० न, न, त, त, न (7. 6)
उदा० इह दुरधिगमैः किंचिदेवागमैः
सततमसुतरं वर्णयन्त्यन्तरम् ।
अमुमतिविपिनं वेद दिग्व्यापिनम्
पुरुषमिव परं पद्मयोनिः परम् ॥कि० ५।१८।

(3) प्रहर्षिणी

परि० त्र्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् ।
गण० म, न. ज, र, ग (3. 10)
उदा० ते रेखाध्वजकुलिशातपत्रचिह्नं
सम्राजश्चरणयुगं प्रसादलभ्यम् ।
प्रस्थानप्रणतिभिरङ्गुलीषु चक्रु
र्मौलिस्रक्च्युतमकरन्दरेणुगौरम् ॥
रघु० ४।८८, दे० कि० ७, शि० ८ ।

(4) मंजुभाषिणी (सुनन्दिनी, और प्रबोधिता)

परि० सजसा जगौ च यदि मंजुभाषिणी ।
गण० स, ज, स, ज, ग (6. 7)
उदा० यमुनामतीतमथ शुश्रुवानमुम्
तपसस्तनूज इति नाधुनोच्यते ।
स यदाऽचलन्निजपुरादहर्निशम्
नृपतेस्तदादि समचारि वार्तया ॥शि० १३।१।

(5) मत्तमयूरी

परि० वेदैरन्ध्रैर्म्तौ यसगा मत्तमयूरम् ।
गण० म, त, य, स, ग (4. 9)
उदा० दृष्ट्वा दृश्यान्याचरणीयानि विधाय
प्रेक्षाकारी याति पदं मुक्तमपायैः ।
सम्यग्दृष्टिस्तस्य परं पश्यति यस्त्वाम्
यश्चोपास्ते साधु विधेयं स विधत्ते ॥ कि० १८।
२८, शि० ४।४४, ६।७६, रघु० ९।७५ ।

(6) रुचिरा (प्रभावती)

परि० जभौ सजौ गिति रुचिरा चतुर्ग्रहैः ।
गण० ज, भ, स, ज, ग (4. 9)
उदा० कदा मुखं वरतनु कारणादृते
तवागतं क्षणमपि कोपपात्रताम् ।
अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमण्डला
विभावरी कथय कथं भविष्यति ॥ मालवि० ४।१३ ।
दे० भट्टि० १।१, शि० १७ ।

चौदह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(शक्वरी)

(1) अपराजिता

परि० ननरसलघुगैः स्वरैरपराजिता ।
गण० न, न, र, स, ल, ग (7. 7.)
उदा० यदनवधि भुजप्रतापकृतास्पदा
यदुनिचयचमूः परैरपराजिता ।
व्यजयत समरेसमस्तरिपुव्रजम्
स जयति जगतां गतिर्गरुडध्वजः ॥

(2) असंबाधा

परि० म्तौ न्सौ गावक्षग्रहैर्विरतिरसंबाधा ।
गण० म, त, न, स, ग, ग (5. 9)
उदा० वीर्याग्नौ येन ज्वलति रणवशात् क्षिप्रे
दैत्येन्द्रे जाता धरणिरियमसंबाधा ।
धर्मस्थित्यर्थं प्रकटिततनुसम्बन्धः
साधूनां बाधां प्रशमयतु स कंसारिः ॥

(3) पथ्या (मंजरी)

परि० सजसा यलौ च सह गेन पथ्या मता ।
गण० स, ज, स, य, ल, ग (5. 9)
उदा० स्थगयन्त्यमूः शमितचातकार्तस्वरा
जलदास्तडित्तुलितकान्तकार्तस्वराः ।
जगतीरिह स्फुरितचारु चामीकराः
सवितुः क्वचित् कपिशयन्ति चामीकराः ॥
शि० ४।२४

(4) प्रमदा (कुररीरुता)

परि० नजभजला गुरुश्च भवति प्रमदा ।
गण० न, ज, भ, ज, ल, ग (6. 8)
उदा० अनतिचिरोज्झितस्य जलदेन चिर-
स्थितबहुबुद्बुदस्य पयसोऽनुकृतिम् ।
विरलविकीर्णवज्रशकला सकला-
मिह विदधाति धौतकलधौतमही ॥ शि० ४।४१ ।

(5) प्रहरणकलिका

परि० ननभनलगिति प्रहरणकलिका ।
गण० न, न, भ, न, ल, ग (7. 7)
उदा० व्यथयति कुसुमप्रहरणकलिका
प्रमदवनभवा तव धनुषि तता ।
विरहविपदि मे शरणमिह ततो
मधुमथनगुणस्मरणमविरतम् ॥

(6) मध्यक्षामा (हंसश्येनी या कुटिल)

परि० मध्यक्षामायुगदशविरमा म्भौ न्यौ गौ ।
गण० म, भ, न, य, ग, ग (4.10)
उदा० नीतोच्छ्रायं मुहुरशिशिररश्मेरुस्रै-
रानीलाभैर्विरचितपरभागा रत्नैः ।
ज्योत्स्नाशङ्कामिह वितरति हंसश्येनी
मध्येऽप्यह्नः स्फटिकरजतभित्तिच्छाया ॥
कि० ५।३१ ।

(7) वसन्ततिलका

(वसन्ततिलक, उद्धर्षिणी या सिंहोन्नता)

परि० उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।
गण० त, भ, ज, ज, ग, ग (8.6)
उदा० यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना-
माविष्कृतारुणपुरःसर एकतोऽर्कः ।
तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु ॥ श० ४।१ ।

(8) वासन्ती

परि० मात्तो नो मो गौ यदि गदिता वासन्तीयम् ।
गण० म, त, न, म, ग, ग (4,6.4)
उदा० भ्राम्यद्भृङ्गी निर्भरमधुरालापोद्गीतैः
श्रीखण्डाद्रेरद्भुतपवनैर्मन्दान्दोला ।
लीलालोला पल्लवविलसद्धस्तोल्लासैः
कंसारातौ नृत्यति सदृशी वासन्तीयम् ॥

पन्द्रह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिशक्वरी)

(1) तूणक

परि० तूणकं समानिका पदद्वयं विनान्तिमम् ।
गण० र, ज, र, ज, र (4.4.4.3 या 7.8)
उदा० सा सुवर्णकेतकं विकाशि भृङ्गपूरितम्
पञ्चबाणबाणजालपूर्णहेतितूणकम् ।
राधिका वितर्क्य माधवाख्य मासि माधवे
मोहमेति निर्भरं त्वया विना कलानिधे ॥

(2) मालिनी

परि० ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ।
गण० न, न, म, य, य (8.7)
उदा० शशिनमुपगतेयं कौमुदी मेघमुक्तम्
जलनिधिमनुरूपं जह्नुकन्यावतीर्णा ।
इति समगुणयोगप्रीतयस्तत्र पौराः
श्रवणकटु नृपाणामेकवाक्यं विवव्रुः ॥ रघु० ६।८५ ।

(3) लीलाखेल

परि० एकन्यूनौ विद्युन्मालापादौ चेल्लीलाखेलः ।
गण० म, म, म, म, म
उदा० मा कान्ते पक्षस्यान्ते पर्याकाशे देशे स्वाप्सीः
कान्तं वक्त्रं वृत्तं पूर्णं चन्द्रं मत्वा रात्रौ चेत् ।
क्षुत्क्षामः प्राटंश्चेतश्चेतो राहुः क्रूरः प्राद्यात्
तस्माद्ध्वान्ते हर्म्यस्यान्ते शय्यंकांते कर्तव्या ॥
सरस्वती०

(4) शशिकला

परि० गुरुनिधनमनुलघुरिह शशिकला ।
गण० न, न, न, न, स (अन्तिम को छोड़ कर सब लघु)
उदा० मलयजतिलकसमुदितशशिकला
व्रजयुवतिलसदलिक गगनगता ।
सरसिजनयनहृदयसलिलनिधि
व्यतनुत विततरभसपरितरलम् ॥

सोलह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अष्टि)

(1) चित्र

परि० चित्रसंज्ञमीरितं रजौ रजौ रगौ च वृत्तम् ।
गण० र, ज, र, ज, र, ग (8.8 या 4.4.4.4)
उदा० विद्रुमारुणाधरोष्ठशोभिवेणुवाद्यहृष्ट-
वल्लवीजनाङ्गसंगजातमुग्धकण्टकाङ्ग ।
त्वां सदैव वासुदेव पुण्यलभ्यपाद देव
वन्यपुष्पचित्रकेश संस्मरामि गोपवेश ॥

(2) पञ्चचामर

परि० प्रमाणिका पदद्वयं वदन्ति पंचचामरम् ।
(जरौ जरौ ततो जगौ च पंचचामरं वदेत्)
गण० ज, र, ज, र, ज, ग (8.8 या 4.4.4.4)
उदा० सुरद्रुमूलमण्डपे विचित्ररत्ननिर्मिते
लसद्वितानभूषिते सलीलविभ्रमालसम् ।
सुरांगनाभवल्लवीकरप्रपंचचामर—
स्फुरत्समीरवीजितं सदाच्युतं भजामि तम् ॥

(3) वाणिनी

परि० नजभजरैयंदा भवति वाणिनी गयुक्तैः ।
गण० न, ज, भ, ज, र, ग ।

उदा० स्फुरतु ममाननेऽद्य ननु वाणि नीतिरम्यम्
तव चरणप्रसादपरिपाकतः कवित्वम् ।
भवजलराशिपारकरणक्षमं मुकुन्दम्
सततमहं स्तवैः स्वरचितैः स्तवानि नित्यम् ॥

सत्रह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अत्यष्टि)

(1) चित्रलेखा (अतिशायिनी)

परि० ससजा भजगा गु दिक्स्वरैर्भवति चित्रलेखा ।
गण० स, स, ज, भ, ज, ग, ग (10. 7)
उदा० इति धौतपुरंध्रिमत्सरान् सरसि मज्जनेन
श्रियमाप्तवतोऽतिशायिनीमपमलांगभासः ।
अवलोक्य तदैव यादवानपरवारिराशेः
शिशिरेतररोचिषाप्यपां ततिषु मंक्तुमीषे ॥
शि० ८।७१ ।

(2) नर्दटक (कोकिलक)

परि० यदि भवतो नजौ भजजला गुरु नर्दटकम् ।
गण० न, ज, भ, ज, ज, ल, ग (8. 9)
उदा० तरुणतमालनीलबहुलोन्नमदम्बुधराः
शिशिरसमीरणावधूतनूतनवारिकणाः ।
कथमवलोकयेयमधुना हरिहेतिमती–
मंदकलनीलकंठकलहैर्मुखराः ककुभः ॥
मा० ९।१८; दे०५।३१ ।

(3) पृथ्वी

परि० जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः ।
गण० ज, स, ज, स, य, ल, ग (8. 9.)
उदा० इतः स्वपिति केशवः कुलमितस्तदीयद्विषा–
मितश्च शरणार्थिनः शिखरिणां गणाः शेरते ।
इतोऽपि वडवानलः सह समस्तसंवर्तकै–
रहो विततमूर्जितं भरसहं च सिन्धोर्वपुः ॥
भर्तृ० २।७६ ।

(4) मन्दाक्रान्ता

परि० मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।
गण० म, भ, न, त, त, ग, ग (4. 6. 7)
उदा० गोपी भर्तुर्विरहविधुरा काचिदिन्दीवराक्षी
उन्मत्तेव स्खलितकबरी निःश्वसन्ती विशालम् ।
अत्रैवास्ते मुररिपुरिति भ्रान्तिदूतीसहाया
त्यक्त्वा गेहं झटिति यमुनामञ्जुकुञ्जं जगाम ॥
पदांक० १ ।
[समस्त मेघदूत इसी वृत्त में लिखा गया है]

(5) वंशपत्रपतित

परि० दिङ्मुनिवंशपत्रपतितं भरनभनलगैः ।
गण० भ, र, न, भ, न, ल, ग (10. 7)
उदा० दर्पणनिर्मलासु पतिते घनतिमिरमुषि
ज्योतिषि रौप्यभित्तिषु पुरः प्रतिफलति मुहुः ।
व्रीडमसंमुखोऽपि रमणैरपहृतवसनाः
काञ्चनकन्दरासु तरुणीरिह नयति रविः ॥
शि० ४।६७।

(6) शिखरिणी

परि० रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ।
गण० य, न, न, स, भ, ल, ग (6. 11)
उदा० दिगन्ते श्रूयन्ते मदमलिनगण्डाः करटिनः
करिण्यः कारुण्यास्पदमसमशोलाः खलु मृगाः ।
इदानीं लोकेऽस्मिन्ननुपमशिखानां पुनरयम्
नखानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन् मृगपतिः ॥
भामि० १।२ ।

(7) हरिणी

परि० नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता ।
गण० न, स, म, र, स, ल, ग (6. 4. 7)
उदा० सुतनु हृदयात्प्रत्यादेशव्यलीकमपैतु ते
किमपि मनसः संमोहो मे तदा बलवानभूत् ।
प्रबलतमसामेवंप्रायाः शुभेषु हि वृत्तयः
स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया ॥
श० ७।२४ ।

अठारह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(धृति)

(1) कुसुमितलतावेल्लिता

परि० स्याद्भूतर्त्वश्वैः कुसुमितलतावेल्लिता म्तौ नयौ यौ ।
गण० म, त, न, य, य, य (5. 6. 7.)
उदा० क्रीडत्कालिन्दीललितलहरीवारिभिर्दाक्षिणात्यैः
वातैः खेलद्भिः कुसुमितलतावेल्लिता मन्दमन्दम् ।
भृङ्गालीगीतैः किसलयकरोल्लासितैर्लास्यलक्ष्मीम्
तन्वाना चेतो रभसतरलं चक्रपाणेश्चकार ॥

(2) चित्रलेखा

परि० मन्दाक्रान्ता नपरलघुयुता कीर्तिता चित्रलेखा ।
गण० म, भ, न, य, य, य(4. 7. 7.)
उदा० शङ्केऽमुष्मिञ् जगति मृगदृशां साररूपं यदासी–
दाकृष्यैवं व्रजयुवति सभा वेधसा सा व्यधायि ।
नैतादृक्चेत् कथमुदधिसुतामन्तरेणाच्युतस्य
प्रीतं तस्या नयनयुगमभूच्चित्रलेखाद्भुतायाम् ।

(3) नन्दन

परि० भजभजरैस्तु रेफसहितैः शिवैर्हयैर्नन्दनम् ।
गण० न, ज, भ, ज, र, र (11. 7.)
उदा० तरणिसुतातरङ्गपवनैः सलीलमान्दोलितम्
मधुरिपुपादपंकजरजः सुपूतपृथ्वीतलम् ।
मुरहरचित्रचेष्टितकलाकलापसंस्मारकम्,
क्षितितिलनन्दनं व्रज सखे मुखाय वृन्दावनम् ॥

(4) नाराच

परि० इह ननरचतुष्कसृष्टं तु नाराचमाचक्षते ।
गण० न, न, र र, र, र, (8. 5. 5,)

उदा० रघुपतिरपि जातवेदो विशुद्धां प्रगृह्य प्रियाम्
प्रियसुहृदि बिभीषणे संगमय्य श्रियं वैरिणः ।
रविसुतसहितेन तेनानुयातः ससौमित्रिणा
भुजविजितविमानरत्नाधिरूढः प्रतस्थे पुरीम् ॥
रघु० १२।१०४।

(5) शार्दूलललित

परि० मः सो जः सतसा दिनेशऋतुभिः शार्दूलललितम् ।
गण० म, स, ज, स, त, स, (12. 6.)
उदा० कृत्वाकंसमृगे पराक्रमविधिं शार्दूलललितम्
यश्चक्रे क्षितिभारकारिषु दरं चैद्यप्रभृतिषु ।
संतोषं परमं तु देवनिवहे त्रैलोक्यशरणम्,
श्रेयो नः स तनोत्वपारमहिमा लक्ष्मीप्रियतमः ॥

उन्नीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(अतिधृति)

(1) मेघविस्फूर्जिता

परि० रसत्वंश्वैर्यमौन्सौ ररगुरुयुतौ मेघविस्फूर्जिता स्यात् ।
गण० य, म, न, स, र, र, ग (6. 6. 7.)
उदा० कदम्बामोदाढ्या विपिनपवनः केकिनः कान्तकेका
विनिद्राः कन्दल्यो दिशि दिशि मुदा दर्दुरा दृप्तनादाः ।
निशा नृत्यद्विद्युद्विलसितलसन्मेघविस्फूर्जिता चेत्
प्रियः स्वाधीनोऽसौ दनुजदलनो
राज्यमस्मात् किमन्यत् ॥

(2) शार्दूल विक्रीडित

परि० सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ।
गण० म, स, ज, स, त, त, ग (12. 7.)
उदा० वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदसी
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः ।
अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते
स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः ॥
वि० १।१।

(3) सुमधुरा

परि० म्रौ म्भौ मो नो गुरुश्चेद् हयऋतुरसैरुक्ता सुमधुरा ॥
गण० म, र, भ, न, म, न, ग (7. 6. 6.)
उदा० वेदार्थान् प्राकृतस्त्वं वदसि न च ते जिह्वा निपतिता
मध्याह्ने वीक्षसेऽर्कं न तव सहसा दृष्टिर्विचलिता ।
दीप्ताग्नौ पाणिमन्तः क्षिपसि स च ते
दग्धो भवति नो
चारित्र्याच्चारुदत्तं चलयसि न ते देहं हरति भूः ॥
मृच्छ० ९।२१ ।

(4) सुरसा

परि० म्रौ म्नौ यो नो गुरुश्चेत् स्वरमुनिकरणैराह सुरसाम् ।
गण० म, र, भ, न, य, न, ग (7. 7. 5.)
उदा० कामक्रीडासतृष्णो मधुसमयसमारम्भरभसात्
कालिन्दीकूलकुंजे विहरणकुतुकाकृष्टहृदयः ।
गोविन्दो बल्लवीनामधररसमुधां प्राप्य सुरसाम्
शङ्के पीयूषपानैः प्रचुरकृतसुखं व्यस्मरदसौ ॥

बीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(कृति)

(1) गीतिका

परि० सजजा भरौ सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका ।
गण० स, ज, ज, भ, र, स, ल, ग (5.7.8)
उदा० करतालचञ्चलकङ्कणस्वनमिश्रणेन मनोरमा
रमणीयवेणुनिनादरङ्गिमसंगमेन सुखावहा ।
बहलानुरागनिवासरासमुद्भवा भवरागिणम्
विदधौ हरिं खलु वल्लवीजनचारु चामरगीतिका ॥

(2) सुवदना

परि० ज्ञेया सप्ताश्वषड्भिर्मरभनययुता म्लौ गः सुवदना ।
गण० म, र, भ, न, य, भ, ल, ग (7.7.6)
उदा० उत्तुङ्गास्तुङ्गकूलं स्रुतमदसलिलाः प्रस्यन्दिसलिलम्
श्यामा श्यामोपकण्ठद्रुममतिमुखराः कल्लोलमुखरम् ।
स्रोतः खातावसीदत्तटमुरुदशनैरुत्सादिततटाः
शोणं सिन्दूरशोणा मम गजपतयः पास्यन्ति शतशः ॥
मुद्रा० ४।१६ ।

इक्कीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(प्रकृति)

(१) पञ्चकावली (सरसी, धृतश्री)

परि० नजभजजा जरौ नरपते कथिता भुवि पञ्चकावली ।
गण० न, ज, भ, ज, ज, ज, र (7.7.7)
उदा० तुरगशताकुलस्य परितः परमेकतुरङ्गजन्मनः
प्रमथितभूभृतः प्रतिपथं मथितस्य भृशं महीभृता ।
परिचलतो बलानुजबलस्य पुरः सततं धृतश्रिय-
श्चिरगलितश्रियो जलनिधेश्च तदाऽभवदन्तरं महत् ॥
शि० ३।८२ ॥

(2) स्रग्धरा

परि० म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा
कीर्तितेयम् ।
गण० म, र, भ, न, य, य, य (7.7.7)
उदा० या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं
या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा
या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।
यामाहुः सर्वभूतप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥
श० १।१ ।

बाईस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(आकृति)

हंसी

परि० मौ गौ नाश्चत्वारो गो गो
वसुभुवनयतिरिति भवति हंसी ।

गण० म, म, त, न, न, न, त, ग
या (म, म, त, न, न, न, स, ग) (8.14)

उदा० साधं कान्तेनैकान्तेऽसौ विकचकमलमधु सुरभि पिबन्ती
कामक्रीडाकूतस्फीतप्रमदसरसतरमलघु रसन्ती ।
कालिन्दीये पद्मारण्ये पवनपतनपरितरलपरागे
कंसाराते पश्य स्वेच्छं सरभसगतिरिह विलसति हंसी ॥

तेइस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(विकृति)

अद्रितनया

परि० नजभजभाजभौ लघुगुरू बुधैस्तु गदितेयमद्रितनया ।

गण० न, ज, भ, ज, भ, ज, भ, ल, ग (11.12)

उदा० खातरशौर्यपावकशिखापतङ्गनिभमग्नदृप्तदनुजो
जलधिसुताविलासवसतिः सतां गतिरशेषमान्यमहिमा ।
भुवनहितावतारचतुरश्चराचरधरोऽवतीर्ण इह हि
क्षितिवलयेऽस्ति कंसशमनस्त्ववेति तमवोचदद्रितनया ॥

चौबीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(संकृति)

तन्वी

परि० भूतमुनीनैर्यतिरिह भतनाः
स्भौ भनयाश्च यदि भवति तन्वी ।

गण० भ, त, न, स, भ, भ, न, य (5.7.12)

उदा० माधव मुग्धेमधुकरविरुतैः
कोकिलकूजितमलयसमीरैः
कम्पमुपेता मलयजसलिलैः
प्लावनतोऽप्यविगततनुदाहा ।
पद्मपलाशैर्विरचितशयना
देहजसंज्वरभरपरिदूनै—
र्निश्वसती सा मुहुरतिपरुषं
ध्यानलये तव निवसति तन्वी ॥

पच्चीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिकृति)

क्रौञ्चपदा

परि० क्रौञ्चपदा म्भौ स्भौ नननना
नाविषुशरवसुमुनिविरतिरिह भवेत् ।

गण० भ, म, स, भ, न, न, न, न, ग (5.5.8.7)

उदा० क्रौञ्चपदालीचित्रिततीरा
मदकलखगकुलकलकल रुचिरा
फुल्लसरोजश्रेणिविलासा
मधुमुदितमधुपरवरभसकरी ।
फेनविलासप्रोज्ज्वलहासा
ललितलहरिभरपुलकितसुतनुः
पश्य हरेऽसौ कस्य न चेतो
हरति तरलगतिरहिमकिरणजा ॥

छब्बीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(उत्कृति)

भुजंगविजृंभित

परि० वस्वीशाश्वैश्छेदोपेतं ममतननयुगरसलगैर्भुजङ्ग-
विजृम्भितम् ।

गण० म, म, त, न, न, न, र, स, ल, ग (8, 11. 7)

उदा० हेलोदञ्चन्न्यञ्चत्पादप्रकटविकट-
नटनभरो रणत्करतालक-
श्चारुप्रेङ्खन्चूडाबर्हः श्रुतितरलनव-
किसलयस्तरङ्गितहारभृक् ।
त्रस्यन्नागस्त्रीभिर्भक्त्या मुकु-
लितकरकमलयुगं कृतस्तुतिरच्युतः
पायाद्वश्छिन्दन् कालिन्दीह्रदकृत-
निजवसतिबृहद्भुजङ्गविजृम्भितम् ॥

दंडक

जिन वृत्तों के प्रत्येक चरण में सत्ताईस या इससे अधिक वर्ण होते हैं उनका एक सामान्य नाम दंडक है। इस वृत्त की जाति के चरण में वर्णों की संख्या अधिक से अधिक ९९९ बताई जाती है। प्रत्येक चरण में सबसे पहले दो नगण या छः लघु अक्षर होते हैं, शेष या तो रगण होते हैं या यगण या सभी चरण सगण होते हैं। दण्डक की जिन श्रेणियों का बहुधा उल्लेख मिलता है वे हैं—चण्डवृष्टिप्रयात, प्रचितक, मत्तमातंग-लीलाकर, सिंहविक्रान्त, कुसुमस्तवक, अनङ्गशेखर, और संग्राम आदि। अन्तिम प्रकार के दण्डक का उदाहरण मा० ५।२३ है।

अनुभाग (ख)

अर्धसमवृत्त

(1) अपरवक्त्र ('वैतालीय' भी कभी कभी)

परि० अयुजि ननरला गुरुः समे
तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ ।

गण० न, न, र, ल, ग (विषम चरण)
न, ज, ज, र, (सम चरण)

उदा० स्फुटसुमधुरवेणुगीतिभि-
स्तमपरवक्त्रमवेत्य माधवम् ।

मृगयुवतिगणैः समं स्थिता
व्रजवनिता धृतचित्तविभ्रमाः ॥

(2) उपचित्र

परि० विषमे यदि सौ सलगा दले
भौ युजिभाद् गुरुकावुपचित्रम् ।

गण० स, स, स, ल, ग (विषम चरण)
भ, भ, भ, ग, ग (सम चरण)

उदा० मुरवैरिवपुस्तनुतां मुदं
हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तम् ।
गगनं चपलामिलितं यथा
शारदनीरधरैरुपचित्रम् ॥

(3) पुष्पिताग्रा (औपच्छन्दसिक)

परि० अयुजि नयुगरेफतो यकारो
युजि तु नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।

गण० न, न, र, य (विषम चरण)
न, ज, ज, र, ग (सम चरण)

उदा० अथ मदनवधूरुपप्लवान्तं
व्यसनकृशा परिपालयांबभूव ।
शशिन इव दिवातनस्य लेखा
किरणपरिक्षयधूसरा प्रदोषम् ॥ कु० ४।४६ ।

(4) वियोगिनी (वैतालीय या सुन्दरी)

परि० विषमे ससजा गुरुः समे
सभरा लोऽथ गुरु वियोगिनी ।

गण० स, स, ज, ग (विषम चरण)
स, भ, र, ल, ग (सम चरण)

उदा० सहसा विदधीत न क्रिया-
मविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणते हि विमृश्यकारिणम्
गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ कि० २।३० ।

(5) वेगवती

परि० सयुगात् सगुरू विषमे चेद्
भाविह वेगवती युजि भाद्गौ ।

गण० स, स, स, ग (विषम चरण)
भ, भ, भ, ग, ग (सम चरण)

उदा० स्मरवेगवती व्रजरामा
केशववंशरवैरतिमुग्धा ।
रभसान्न गुरून् गणयन्ती
केलिनिकुञ्जगृहाय जगाम ॥

(6) हरिणप्लुता

परि० सयुगात्सलघू विषमे गुरु-
र्युजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ।

गण० स, स, स, ल, ग (विषम चरण)
न, भ, भ, र (सम चरण)

उदा० स्फुटफेनचया हरिणप्लुता
बलिमनोज्ञतटा तरणेः सुता ।
सकलहंसकुलारव शालिनी
विहरतो हरति स्म हरेर्मनः ॥

विशे० अपरवक्त्र या औपच्छन्दसिक और वैतालीय या वियोगिनी प्रायः जाति समझे जाते हैं (दे० अनुभाग घ) । परन्तु कभी कभी गणयोजना में उनकी परिभाषा दी जाती है, इसी लिए वे यहाँ वृत्तों के अन्तर्गत दे दिये गये हैं ।

अनुभाग (ग)

विषमवृत्त (असमवृत्त)

इस श्रेणी के अन्तर्गत उद्गता अत्यंत सामान्य वृत्त कहलाता है ।

परि० प्रथमे सजौ यदि सलौ च
नसजगुरुकाण्यनन्तरम् ।
यद्यथ भनजलगाः स्युरथो
सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता ॥

गण० स, ज, स, ल (प्रथम चरण)
न, स, ज, ग (द्वितीय चरण)
भ, न, ज, ल, ग (तृतीय चरण)
स, ज, स, ज, ग (चतुर्थ चरण)

उदा० अथ वासवस्य वचनेन
रुचिरवदनस्त्रिलोचनम् ।
क्लान्तिरहितमभिराधयितुम्
विधिवत्तपांसि विदधे धनंजयः ॥ कि० १२।१ ।-
दे० शि० १५ भी ।

उद्गता का एक और भेद बताया जाता है जिसके तृतीय चरण में भ, न, ज, ल, ग के स्थान में भ, न, भ, ग होते हैं । वृत्तों के अन्य भेद जिनमें प्रत्येक चरणों के वर्णों की संख्या भिन्न-भिन्न होती है, 'गाथा' के सामान्यशीर्षक के अन्तर्गत बतलाये हैं । चार से भिन्न चरणों की संख्या वाले वृत्तों के लिए भी यही नाम व्यवहृत होता है । जहाँ तक 'उपजाति' का संबंध है वे किसी भी नियमित वृत्त के दो या दो से अधिक चरणों को मिला कर अर्धसमवृत्त या विषमवृत्त बना लिए जाते हैं ।

अनुभाग (घ)

जाति

(यह छन्द मात्राओं की संख्या से विनियमित किये जाते हैं)।

(अ) इस प्रकार के वृत्तों की अत्यन्त सामान्य प्रकार 'आर्या' है। इसके नौ अवान्तर भेद बताये जाते हैं:—

पथ्या विपुला चपला मुखचपला जघनचपला च।
गीत्युपगीत्युद्गीतय आर्यागीतिर्नवैव वार्यायाः॥

इन नौ भेदों में से अन्तिम चार प्रकार ही प्रायः प्रयुक्त होते हैं, इसीलिए इनका उल्लेख किया जाता है।

(1) आर्या

परि० यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या॥ श्रु० ४।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्रायें होती हैं (ह्रस्व स्वर की एक मात्रा तथा दीर्घ की दो मात्रायें गिनी जाती हैं)। दूसरे चरण में अठारह तथा चौथे चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

उदा० प्रतिपक्षेणापि पतिं सेवन्ते भर्तृवत्सलाः साध्व्यः।
अन्यसरितां शतानि हि समुद्रगाः प्रापयन्त्यब्धिम्॥
मालवि० ५।१९।

गोवर्धन की समस्त 'आर्यासप्तशती' इसी छन्द में लिखी गई है।

(2) गीति

परि० आर्यापूर्वार्धसमं द्वितीयमपि भवति यत्र हंसगते।
छन्दोविदस्तदानीं गीतिंताममृतवाणि भाषन्ते॥

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्रायें, और दूसरे तथा चौथे चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं।

उदा० पाटीर तव पटीयान् कः परिपाटीमिमामुरीकर्तुम्।
यत्पिषतामपि नृणां पिष्टोऽपि तनोषि परिमलैः पुष्टिम्॥ भामि० १।१२।

(3) उपगीति

परि० आर्योत्तरार्धतुल्यं प्रथमार्धमपि प्रयुक्तं चेत्।
कामिनि तामुपगीतिं प्रतिभाषन्ते महाकवयः॥
श्रु० ६।

इस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ, और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

उदा० नवगोपसुन्दरीणां रासोल्लासे मुरारातिम्।
अस्मारयदुपगीतिः स्वर्गकुरङ्गीदृशां गीतेः॥

(4) उद्गीति

परि० आर्याशकलद्वितये विपरीते पुनरिहोद्गीतिः।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ होती हैं, द्वितीय चरण में पन्द्रह तथा चतुर्थ चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं।

उदा० नारायणस्य सन्ततमुद्गीतिः संस्मृतिर्भक्त्या।
अर्चायामासक्तिर्दुस्तरसंसारसागरे तरणिः॥

(5) आर्यागीति

परि० आर्या प्राग्दलमन्तेऽधिकगुरु तादृक् परार्धमार्यागीतिः।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में बीस मात्राएँ होती हैं।

उदा० सवधूकाः सुखिनोऽस्मिन्ननवरतममन्दरागतामरसदृशः।
नासेवन्ते रसवन्नवरतममन्दरागतामरसदृशः॥
शि० ४।५१।

नोट—यह पाँचों भेद कभी कभी गणयोजना में भी परिभाषित किये जाते हैं।

(आ) वैतालीय

परि० षड्विषमेऽष्टौ समे कलास्ताश्च समे स्युर्नो निरन्तराः।
न समाऽत्र पराश्रिता कला वैतालीयेऽन्ते रलौ गुरुः॥

यह चार चरण का श्लोक है। इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में चौदह लघु मात्राओं का समय लगता है, और द्वितीय तथा तृतीय चरण में सोलह मात्राओं का। पुनः प्रथम तथा तृतीय चरण में छः मात्राएँ होनी चाहिए। द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में आठ मात्राएँ और उसके पश्चात् रगण (SIS) तथा लघु गुरु (IS) होने चाहिए। आगे नियम इस बात की अपेक्षा करते हैं कि सम चरणों में सभी मात्राएँ ह्रस्व या दीर्घ नहीं होनी चाहिएँ, इसके अतिरिक्त प्रत्येक सम चरण की (अर्थात् द्वितीय, चतुर्थ तथा छठा चरण) मात्राएँ अगले चरणों (अर्थात् तृतीय, पंचम और सप्तम) से संयुक्त नहीं होनी चाहिए।

उदा० कुशलं खलु तुभ्यमेव तद्
वचनं कृष्ण यदभ्यधामहम्।
उपदेशपराः परेष्वपि
स्वविनाशाभिमुखेषु साधवः॥ शि० १६।४१।

(इ) औपच्छन्दसिक

परि० पर्यन्ते यौ तथैव शेषमौपच्छन्दसिकं सुधीभिरुक्तम्।

यह वैतालीय के समान ही है। इसमें प्रत्येक चरण के अन्त में रगण और ल, ग के स्थान में रगण और यगण होने चाहिएँ। दूसरे शब्दों में यह वैतालीय ही है, इसमें केवल प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु जोड़ा हुआ है।

उदा० वपुषा परमेण भूधराणामथ संभाव्यपराक्रमं विभेदे।
मृगमाशु विलोकयांचकार स्थिरदंष्ट्रोग्रमुखं
महेन्द्रसूनुः ॥
कि० १३।१।

इसी प्रकार इसी सर्ग के अगले बावन श्लोकों में। दे० शि० २० भी।

यह बात ध्यान में रखने की है कि वियोगिनी या सुंदरी तथा अपरवक्त्र, वैतालीय की ही विशेषताएँ है, और पुष्पिताग्रा तथा मालभारिणी, औपच्छन्दसिक की। छन्दःशास्त्री वृत्तों की इन दोनों श्रेणियों का प्रतिपादन गणयोजना तथा मात्रा योजना दोनों स्थानों पर करते हैं। इसीलिए यह यहाँ भी दर्शाये गये हैं और अनुभाग (ग) में भी।

(ई) मात्रासमक

मात्रासमक वृत्त में चार चरण होते हैं, और प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ। इसके अत्यन्त सामान्य प्रकार में नवाँ वर्ण लघु और अन्तिम वर्ण दीर्घ होता है। इसकी परिभाषा की है:—मात्रासमकं नवमो ल्गान्त्यः।

परन्तु मात्राओं के ह्रस्व या दीर्घ होने के कारण इस वृत्त के अनेक भेद हो जाते हैं। उदाहरण के रूप में, यदि नवाँ तथा बारहवाँ वर्ण लघु है, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ है, शेष वर्ण ऐच्छिक हैं, तो वह वृत्त वानवासिका कहलाता है। यदि पाँचवाँ, आठवाँ तथा नवाँ ह्रस्व हैं, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं तो वह वृत्त चित्रा कहलाता है। यदि पाँचवाँ और आठवाँ वर्ण ह्रस्व हैं, नवाँ, दसवाँ, पन्द्रहवाँ और सोलहवाँ दीर्घ है तो वह उपचित्रा कहलाता है। यदि पाँचवाँ, आठवाँ और बारहवाँ ह्रस्व हैं, पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं, तथा शेष अनिश्चित हैं, तो वह विश्लोक कहलाता है। कभी कभी एक ही श्लोक में इन वृत्तों के दो या दो से अधिक भेद मिला दिये जाते हैं, उस अवस्था में हम उसे पादाकुलक वृत्त कहते हैं, उसमें कोई विशेष प्रतिबंध भी नहीं रहता है, केवल प्रत्येक चरण में सोलह मात्राओं का होना आवश्यक है।

उदा० मूढ जहीहि धनागमतृष्णां
कुरु तनुबुद्धे मनसि वितृष्णाम् ॥
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं
वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥
मोह० १

परिशिष्ट २

संस्कृत के प्रसिद्ध लेखकों का काल आदि

आर्यभट्ट—एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्, जन्मकाल ४७६ ई०।

उद्भट—अलंकारशास्त्र का एक प्राचीन लेखक। यह काश्मीर के राजा जयापीड की राज्यसभा का मुख्य पंडित था। इसका काल ७७९ से ८१३ ई० तक है।

कय्यट—पतंजलिकृत महाभाष्य पर भाष्यप्रदीप नामक टीका का रचयिता। डाक्टर बुह्लर के मतानुसार यह तेरहवीं शताब्दी से पूर्व नहीं हुआ था।

कल्हण—राजतरंगिणी नामक राजाओं के इतिहास की प्रसिद्ध पुस्तक का रचयिता। यह काश्मीर के राजा जयसिंह का, जिसने ११२९ से ११५० ई० तक राज्य कियां, समकालीन था।

कालिदास—अभिज्ञान शाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र, रघुवंश, कुमारसंभव, मेघदूत और ऋतुसंहार का रचयिता। इसके अतिरिक्त 'नलोदय' तथा अन्य कई छोटे-छोटे काव्यों के रचयिता। कालिदास का सबसे पहला अधिकृत उल्लेख हमें ६३४ ई० (तदनुसार ५५६ शाके) के शिलालेख में मिलता है। इसमें कालिदास और भारवि दोनों को प्रसिद्ध कवि बतलाया गया है। श्लोक यह है:—

येनायोजि न वेश्म,
स्थिरमर्थविघौ विवेकना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्तिः
कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः॥

हर्षचरित के आरंभ में बाण ने कालिदास का उल्लेख किया है। इससे प्रतीत होता है कि कालिदास बाण से पहले अर्थात् सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध से पहले हुआ था। परन्तु सातवीं शताब्दी से कितना पूर्व—इस बात का अभी तक पता नहीं लग सका। मेघदूत के चौदहवें श्लोक की व्याख्या करते हुए मल्लिनाथ ने निचुल और दिङ्नाग को कालिदास का समकालीन बताया है। यदि मल्लिनाथ के इस सुझाव को जिसकी सत्यता में पूरा-पूरा सन्देह है, सही मान लिया जाय तो हमारा कवि कालिदास अवश्य ही छठी शताब्दी के मध्य में रहा होगा। यही काल दिङ्नाग का माना जाता है।

एक बात और है, यदि इसका ठीक निर्णय हो जाय तो कवि के जन्मकाल का सही ज्ञान हो जाय। यह बात है कालिदास द्वारा अपने अभिभावक के रूप में विक्रम का उल्लेख। यह कौन सा विक्रम है, इस बात का अभी पूरी तरह निर्णय नहीं हो पाया है। प्रचलित परंपरा के अनुसार वह विक्रम संवत् का जो ईसा से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ, प्रवर्तक था। यदि इस विचार को सही समझा जाय तो कालिदास निश्चय ही ईसा से पूर्व पहली शताब्दी में हुआ होगा। परन्तु कुछ विद्वान् अभी इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि जिसे हम विक्रम संवत् (ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) कहते हैं वह कोरूर के महायुद्ध के काल के आधार पर बना है। इस युद्ध में विक्रम ने ५४४ ई० में म्लेच्छों को पराजित किया था। और उस समय ६०० वर्ष पीछे ले जाकर (अर्थात् ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) इसका नामकरण किया। यदि यह मत यथार्थ मान लिया जाय—विद्वान् लोग अभी इस बात पर एकमत दिखाई नहीं देते—तो कालिदास छठी शताब्दी में हुए हैं। अभी इस प्रश्न का पूरा समाधान नहीं हो सका है।

क्षेमेन्द्र—काश्मीर का एक प्रसिद्ध कवि, समयमातृका तथा कई अन्य पुस्तकों का रचयिता। यह ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ।

जगद्धर—एक प्रसिद्ध टीकाकार। इसने मालतीमाधव और वेणीसंहार पर टीकाएँ लिखीं। यह चौदहवीं शताब्दी के बाद हुआ।

जगन्नाथ पंडित—एक प्रसिद्ध आधुनिक लेखक। उसका प्रसिद्ध ग्रन्थ रसगंगाधर है जिसमें 'काव्य' विषय का विवेचन है। उसकी अन्य कृतियां हैं—भामिनीविलास, पांच लहरियां (गंगा, पीयूष, सुधा, अमृत,—और करुणा) तथा कुछ अन्य छोटी रचनाएँ। ऐसा माना जाता है कि यह दिल्ली के सम्राट् शाहजहां के काल में हुआ। इसने जहांगीर के राज्य के अन्तिम दिन तथा १६५८ ई० में दारा का अस्थायी राज्य-सिंहासनारोहण देखा होगा। अतः इसका जन्म—और कुछ नहीं तो कार्य काल तो अवश्य—१६२० तथा १६६० ई० के बीच में रहा होगा।

जयदेव—गीतगोविन्द नामक ललित गीतिकाव्य का प्रणेता। यह बंगाल के बीरभूमि जिले के किंदुबिल्व नामक गांव का निवासी था। कहा जाता है कि यह राजा लक्ष्मणसेन के काल में हुआ जिसकी एकात्मता डाक्टर बुह्लर ने बंगाल के वैद्य राजा से की है। इसका शिलालेख विक्रम संवत् ११७३ अर्थात् १११६ ई०

का मिलता है। अतः यह कवि बारहवीं शताब्दी में हुआ होगा।

दंडिन्—यह दशकुमारचरित और काव्यादर्श का रचयिता है छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। माधवाचार्य के मतानुसार यह बाण का समकालीन था।

पतंजलि—महाभाष्य का प्रसिद्ध लेखक। कहते हैं कि यह ईसा से लगभग १५० वर्ष पूर्व हुआ।

नारायण—(भट्टनारायण) -वेणीसंहार का रचयिता। यह नवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ होगा, क्योंकि इसकी रचना का उल्लेख आनन्दवर्धन ने अपने ध्वन्यालोक में बहुत बार किया है। यह कवि अवन्तिवर्मा के राज्यकाल ८५५–८८४ ई० (राजतरंगिणी ५।३४) में हुआ।

बाण—हर्षचरित, कादंबरी और चंडिकाशतक का विख्यात प्रणेता। पार्वतीपरिणय और रत्नावली भी इसी की रचना मानी जाती हैं। इसका काल निर्विवाद रूप से इसके अभिभावक कान्यकुब्ज के राजा श्री हर्षवर्धन द्वारा निश्चित किया गया है। जिस समय ह्यून त्सांग ने समस्त भारत में भ्रमण किया उस समय हर्षवर्धन ने ६२९ से ६४५ ई० तक राज्य किया। इसलिए बाण या तो छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ या सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में। बाण का काल कई और लेखकों के काल का—न्यूनातिन्यून उनका जिनका कि बाण ने हर्षचरित की प्रस्तावना में उल्लेख किया है—परिचायक है।

बिल्हण—महाकाव्य विक्रमांकदेवचरित तथा चौरपंचाशिका का रचयिता। यह ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

भट्टि—यह श्रीस्वामी का पुत्र था। राजा श्रीधरसेन या उसके पुत्र नरेन्द्र के राज्यकाल में श्रीस्वामी वल्लभी में रहा। लैसन के मतानुसार श्रीधर का राज्यकाल ५३० से ५४५ ई० तक था।

भर्तृहरि—शतकत्रय और वाक्यपदीय का रचयिता। तेलंग महाशय के मतानुसार यह ईस्वी सन् की प्रथम शताब्दी के अन्तिम काल में अथवा दूसरी शताब्दी के आरम्भ में हुआ। परंपरा के अनुसार भर्तृहरि, विक्रमराजा का भाई था। और यदि हम इस विक्रम को वही मानें जिसने ५४४ ई० में म्लेच्छों को पराजित किया था, तो हमें समझ लेना चाहिए कि भर्तृहरि छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

भवभूति—महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित का रचयिता। यह विदर्भ का मूल निवासी था, और कान्यकुब्ज के राजा यशोवर्मा के दरबार में रहता था। काश्मीर के राजा ललितादित्य (६९३ से ७२९ ई०) ने इसे परास्त किया था। अतः भवभूति सातवीं शताब्दी के अन्त में हुआ। बाण ने इसके नाम का उल्लेख नहीं किया, अतः यह काल सुसंगत है। कालिदास और भवभूति की समकालीनता के उपाख्यान निरे उपाख्यान होने के कारण स्वीकार्य नहीं है।

भारवि—किरातार्जुनीय काव्य का रचयिता। ६३४ ई० के एक शिलालेख में इसका उल्लेख कालिदास के साथ किया गया है। देखो कालिदास।

भास—बाण और कालिदास ने इसे अपना पूर्ववर्ती बताया है अतः यह सातवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ।

मम्मट—काव्य प्रकाश का रचयिता। यह १२९४ ई० से पूर्व ही हुआ है क्योंकि १२९४ ई० में तो जयन्त ने काव्यप्रकाश पर 'जयन्ती' नामक टीका लिखी है।

मयूर—यह बाण का श्वसुर था। इसने अपने कुष्ठ से मुक्ति पाने के लिए सूर्यशतक की रचना की। यह बाण का समकालीन था।

मुरारि—अनर्घराघव नाटक का रचयिता। रत्नाकर कवि ने (जो नवीं शताब्दी में हुआ) अपने हरविजय। ३८।६७ में इसका उल्लेख किया है। अतः इसे नवीं शताब्दी से पूर्व का ही समझना चाहिए।

रत्नाकर—हरविजय नामक महाकाव्य का रचयिता। अवन्तिवर्मा (८५५-८८४ ई० तक) इस कवि के आश्रयदाता थे।

राजशेखर—बालरामायण, बालभारत और विद्धशालभंजिका का रचयिता। यह भवभूति के पश्चात् दसवीं शताब्दी के अन्त से पूर्व हुआ, अर्थात् यह सातवीं शताब्दी के अन्त और दसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ।

वराहमिहिर—एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्, बृहत्संहितानामक पुस्तक का रचयिता।

विक्रम—देखो कालिदास।

विशाखदत्त मुद्राराक्षस का रचयिता। इस नाटक की रचना का काल तेलंग महाशय के अनुसार सातवीं या आठवीं शताब्दी माना जाता है।

शंकर—वेदान्त दर्शन का प्रसिद्ध आचार्य, तथा शारीरक भाष्य का प्रणेता। इसके अतिरिक्त वेदान्त विषय पर इसकी अनेक रचनाएँ हैं। कहते हैं कि यह ७८८ ई० में उत्पन्न हुआ और ३२ वर्ष की थोड़ी आयु में ही ८२० ई० में परलोकवासी हुआ। परन्तु कुछ विद्वान् लोगों (तैलंग महाशय तथा डाक्टर भंडारकर आदि) ने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि यह छठी या सातवीं शताब्दी में हुआ होगा। मुद्राराक्षस की प्रस्तावना देखिये।

श्रीहर्ष—यह नैषधचरित का प्रसिद्ध रचयिता है। इसके अतिरिक्त इसकी अन्य आठ दस रचनाएँ भी मिलती

हैं। इसे प्राय: बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ मानते हैं। विल्सन कहता है कि १२१३ ई० में अपने पिता कलश के पश्चात् श्रीहर्ष राजगद्दी पर बैठा। अत: रत्नावली नाटिका जो इस राजा द्वारा लिखित मानी जाती है अवश्य अपने राज्य काल के अन्त में १११३ से ११२५ के मध्य लिखी गई होगी। परन्तु 'रत्नावली' को इसके पूर्व का ही मानना पड़ेगा क्योंकि दशरूपमें इसके अनेक उद्धरण उपलब्ध हैं। और दशरूप दशवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में रचा गया।

सुबन्धु वासवदत्ता का रचयिता। इसका उल्लेख बाण ने किया है। अत: यह सातवीं शताब्दी के बाद का नहीं। इसने धर्मकीर्ति द्वारा लिखित बौद्धसंगति नामक एक रचना का उल्लेख किया है। यह पुस्तक छठी शताब्दी में लिखी गई थी।

हर्ष बाण का अभिभावक। ऐसा समझा जाता है कि रत्नावली नाटक बाण ने लिखा और अपने अभिभावक के नाम से प्रकाशित कराया।

प्राचीन भारतवर्ष के महत्त्वपूर्ण भौगोलिक नाम

अंग—गंगा के दक्षिणी तट पर स्थित एक महत्त्वपूर्ण राज्य। इसकी राजधानी चंपा थी, जो अंगपुरी भी कहलाता था। यह नगर शिलाद्वीप के पश्चिम में लगभग २४ मील की दूरी पर विद्यमान था। इसी लिए यह या तो वर्तमान भागलपुर था, अथवा उसके कहीं अत्यंत निकट स्थित था।

अंध्र—एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। यह वर्तमान तेलंगण ही माना जाता है। गोदावरी का मुहाना अंध्रों के अधिकार में था। परन्तु इसकी सीमाएँ संभवतः पश्चिम में घाट, उत्तर में गोदावरी, तथा दक्षिण में कृष्णा नदी थी। कलिंग देश इसकी एक सीमा था (देखो दश० ७ वां उल्लास)। इसकी राजधानी अंध्रनगर संभवतः प्राचीन वेंगी या वेगी थी।

अवंति—नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित एक देश। इसकी राजधानी उज्जयिनी थी जिसे अवंतिपुरी या अवंति और विशाला (मेघ० ३०) भी कहते थे। यह शिप्रा नदी के तट पर स्थित थी। मालवा देश का पश्चिमी भाग है। महाभारत काल में यह देश दक्षिण में नर्मदातट तक तथा पश्चिम में मही के तटों तक फैला हुआ था। अवंति के उत्तर में एक दूसरा राज्य था जिसकी राजधानी चर्मण्वती नदी के तट पर स्थित दसपुर थी, यह ही वर्तमान धौलपुर प्रतीत होता है। यह रन्तिदेव की राजधानी थी।

अश्मक—त्रावणकोर का पुराना नाम।

आनर्त—देखो सौराष्ट्र।

इन्द्रप्रस्थ—(हरिप्रस्थ या शक्रप्रस्थ भी कहलाता है) इसी नगर की वर्तमान दिल्ली से एकरूपता मानी जाती है। यह नगर यमुना के बाईं ओर बसा हुआ था, जब कि वर्तमान दिल्ली दाईं ओर स्थित है।

उत्कल या ओड्र—एक देश का नाम। वर्तमान उड़ीसा जो ताम्रलिप्त के दक्षिण में स्थित है और कपिशा नदी तक फैला हुआ है—तु० रघु ४।३८। इस प्रांत के मुख्य नगर कटक और पुरी हैं जहाँ कि जगन्नाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है।

कनखल—हरद्वार के निकट एक ग्राम का नाम है। यह शैवालिक पहाड़ी के दक्षिणी भाग पर गंगा के किनारे बसा हुआ है। वहाँ के आसपास का पहाड़ भी कनखल कहलाता है।

कपिशा दे० 'सुह्म' के अन्तर्गत।

कलिंग—एक देश का नाम जो उड़ीसा के दक्षिण में स्थित है और गोदावरी के मुहाने तक फैला हुआ है। ब्रिटिशकाल की उत्तरी सरकार से इसकी एकरूपता स्थापित की जाती है। इसकी राजधानी कलिंग नगर प्राचीन काल में समुद्रतट से (तु० दश० ७ वाँ उल्लास) कुछ दूरी पर संभवतः राजमहेन्द्री में थी। दे० 'अंध्र' भी।

कांची—दे० 'द्रविड' के अन्तर्गत।

कामरूप—एक महत्त्वपूर्ण राज्य जो करतोया या सदानीरा के तट से लेकर आसाम की सीमा तक फैला हुआ है। यह उत्तर में हिमालय पर्वत तक तथा पूर्व में चीन की सीमा तक फैला हुआ होगा, क्योंकि यहाँ के राजा ने किरात और चीन की सेना के साथ दुर्योधन की सहायता की थी। इस राज्य की प्राचीन राजधानी लौहित्य या ब्रह्मपुत्र नदी के दूसरी ओर प्राग्ज्योतिष थी। तु० रघु० ४।८१।

कांबोज—एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। यह हिन्दुकुश पहाड़ के उस प्रदेश पर रहते होंगे जहाँ यह बलख से गिलगित को पृथक् करता है, तथा तिब्बत और लद्दाख तक फैला हुआ है। यह प्रदेश घोड़ों के कारण प्रसिद्ध है। यहाँ पर बकरी आदि जानवरों की ऊन से शाल भी बनाये जाते थे। इसके अतिरिक्त यहाँ अखरोट के वृक्ष बहुत पाये जाते हैं। तु० रघु० ४।६९।

कुंतल—चोल देश के उत्तर में स्थित एक देश। ऐसा प्रतीत होता है कि कुरुगदे के दक्षिण में कल्याण या कोलियन दुर्ग इस प्रदेश की राजधानी थी। यह देश हैदराबाद के दक्षिण-पश्चिमी भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

कुरुक्षेत्र—दिल्ली के निकट एक विस्तृत प्रदेश। यहीं कौरव और पांडवों के मध्य महासंग्राम हुआ था। यह थानेश्वर के दक्षिण में इसी नाम के पवित्र सरोवर के निकट एक प्रदेश है जो सरस्वती के दक्षिण से लेकर दृषद्वती के उत्तर तक फैला हुआ है। कभी कभी इस स्थान को 'समंतपंचक' नाम से पुकारते हैं जिसका अर्थ है परशुराम द्वारा वध किये गए क्षत्रियों के रक्त के 'पाँच पोखर'।

कुलूत—एक देश का नाम—वर्तमान कुल्लू प्रदेश। यह प्रदेश जलंधर दोआब से उत्तरपूर्व की ओर शतद्रु (सतलुज) नदी के दाईं ओर स्थित है।

कुशावंती या कुशस्थली—यह दक्षिणकोशल प्रदेश की राजधानी है और विंध्यपर्वत की संकीर्ण घाटी में स्थित है। यह नर्मदा के उत्तर में परन्तु विंध्यपर्वत के दक्षिण में होगा। संभवतः यह वही स्थान है जिसे बुंदेलखंड में हम रामनगर कहते हैं। राजशेखर इस कुशस्थली के स्वामी को मध्यदेशनरेन्द्र अर्थात् मध्यभूमि या बुंदेलखंड का राजा कहते हैं।

केकय—सिंधुदेश की सीमा बनाने वाला केकय एक देश का नाम है।

केरल—कावेरी के उत्तरी समुद्र तथा पश्चिमी घाट की मध्यवर्ती भूमि की लंबी पट्टी। इस प्रदेश की मुख्य नदियाँ हैं नेत्रवती, सरावती तथा कालीनदी। यह काली नदी ही मुरला नदी समझी जाती है। इसका उल्लेख रघु० ४।५५ तथा उत्तर० ३ में किया गया है, यही केरलप्रदेश की मुख्य नदी है। केरल प्रदेश वर्तमान कानड़ा प्रदेश है जिसके साथ संभवतः मलाबार भी जुड़ा हुआ है और कावेरी से परे तक फैला हुआ है।

कोशल—एक प्रदेश का नाम जो रामायण के अनुसार सरयू नदी के तटों के साथ साथ बसा हुआ है। इसके दो भाग हैं—उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल। उत्तर कोशल का नाम 'गन्द' है और यह अयोध्या के उत्तरी प्रदेश को प्रकट करता है जिसमें गन्द तथा वहरायच सम्मिलित हैं। अज, तथा दशरथ आदि राजाओं ने इसी प्रान्त पर राज्य किया। राम की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र कुश ने तो विंध्यपर्वत की संकीर्ण घाटी में स्थित दक्षिणी कोशल की कुशावती राजधानी में राज्य किया, और लव ने उत्तरी कोशल में स्थित श्रावस्ती में रहकर राज्य किया।

कौशांबी—वत्स देश की राजधानी का नाम है। यह नगर इलाहाबाद से लगभग तीस मील की दूरी पर वर्तमान कोसम के निकट स्थित था।

कौशिकी—एक नदी (कुसी) का नाम जो उत्तरी भागलपुर तथा पश्चिमी पूर्णिया से होती हुई दरभंगा के पूर्व में बहती है। इस नदी के तटों के निकट ऋष्यश्रृंग ऋषि का आश्रम था।

गौड या पुंड्र—उत्तरी बंगाल। (पुंड्र मूलरूप से 'पुरी' के वेतस प्रदेश को कहते हैं)।

चेदि—एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। चेदियों को दाहल और त्रैपुर भी कहते हैं। यह लोग नर्मदा के उत्तरी तट पर बसे हुए थे, यह वही लोग थे जिन्हें हम दशार्ण कहते हैं। एक समय इनकी राजधानी त्रिपुरी थी। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि यह लोग मध्यभारत के वर्तमान बुन्देल खण्ड में रहते थे, कुछ लोग यह समझते हैं कि इनका देश वर्तमान चन्दसिल था। जबलपुर से नीचे भेरा घर के आसपास विंध्य और रिक्ष पर्वतों के मध्य में नर्मदा के किनारे पर स्थित माहिष्मती नगरी में हैहय या कलचुरी लोग राज्य करते थे।

चोल—एक देश का नाम जो कावेरी के तट पर बसा हुआ है यह मैसूर प्रदेश का दक्षिणी भाग है। यह प्रदेश कावेरी के परे है। पुलकेशिन् द्वितीय ने इस नदी को पार करके इस देश पर आक्रमण किया था। यही देश बाद में कर्णाटक कहलाने लगा।

जनस्थान—(मानव वसति) यह दण्डक के महावन का एक भाग है। और प्रस्रवण नामक पर्वत के निकट स्थित है। प्रसिद्ध पंचवटी (स्थानीय परम्परा के अनुसार इसी नाम का एक स्थान जो वर्तमान नासिक से लगभग दो मील दूर है) का स्थान इसी प्रदेश में विद्यमान है।

जालन्धर—वर्तमान जलन्धर दोआब। शतद्रु और विपाशा (सतलुज और व्यास) से सिंचित प्रदेश।

ताम्रपर्णी—मलय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम। यह वही नदी प्रतीत होती है जिसे आजकल तांब्रवारी कहते हैं, जो पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलान से निकलकर तिन्नेवली ज़िले में से होती हुई मनार की खाड़ी में गिर जाती है, तु० रघु० ४।४९-५०, और बा० रा० १०।५६।

ताम्रलिप्त—दे० 'सुह्म' के अन्तर्गत।

त्रिगर्त—प्राचीन काल का एक अत्यन्त जलहीन मरु प्रदेश। यह सतलुज का पूर्ववर्ती मरुस्थल था। सरस्वती और सतलुज का मध्यवर्ती भाग भी इसमें सम्मिलित था। उत्तर में लुध्याना और पटियाला है तथा मरुस्थल का कुछ भाग दक्षिण में है।

त्रिपुर-री—चेदि देश की राजधानी 'चन्द्रदुहिता अर्थात् नर्मदा की तरंगों से शब्दायमान' अतएव इस नदी के किनारे स्थित। जबलपुर से ६ मील की दूरी पर स्थित वर्तमान तिवुर को ही त्रिपुर माना जाता है।

दशपुर—दे० 'अवन्ति' के अन्तर्गत।

दशार्ण—एक देश का नाम जिसमें से दशार्ण (दसन) नाम की नदी बहती है। यह मालवा का पूर्वी भाग था। इसकी राजधानी विदिशा नगरी थी जिसे वर्तमान भिलसा माना जाता है। यह वेत्रवती या बेतवा नदी के तट पर स्थित है, तु० मेघ० २४।२५, और कादंबरी। कालिदास ने भी विदिशा नाम की एक नदी का उल्लेख किया है जो संभवतः वही है जिसे हम आजकल व्यास कहते हैं तथा जो बेतवा में मिल जाती है।

द्रविड—कृष्णा और पोलर नदियों के मध्यवर्ती जंगली भाग के दक्षिण में स्थित कोरोमंडल का समस्त समुद्रीतट इसमें सम्मिलित है। परन्तु यदि सीमित

रूप से देखें तो यह प्रदेश कावेरी से परे नहीं फैला है। इसकी राजधानी कांची थी जिसे आजकल कांजीवरम कहते हैं और जो मद्रास के ४२ मील दक्षिण-पश्चिम में वेगवती नदी के किनारे स्थित है।

द्वारका—दे० 'सौराष्ट्र' के अन्तर्गत।

निषध – एक देश का नाम जहां नल का राज्य था। इस की राजधानी अलका थी जो अलकनन्दा नदी के तट पर स्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तरी भारत का वर्तमान कुमायूं प्रदेश इसका एक भाग था। यह एक वर्षपर्वत का नाम भी है।

पंचवटी—दे० 'जनस्थान' के अन्तर्गत।

पंचाल एक प्रसिद्ध प्रदेश का नाम। राजशेखर के अनुसार (बा० रा० १०।८६) यह प्रदेश गंगा यमुना का मध्यवर्ती भाग था, इसीलिए यह गंगा दोआब कहलाता था। द्रुपद के काल में यह प्रदेश चर्मण्वती (चंबल) के तट से लेकर उत्तर में गंगाद्वार तक फैला हुआ था। भागीरथी का उत्तरीभाग उत्तर-पंचाल कहलाता था। और इसकी राजधानी अहिच्छत्र थी। इस प्रदेश का दक्षिणीभाग 'दक्षिणपंचाल' कहलाता था जो द्रुपद की मृत्यु के पश्चात् हस्तिनापुर की राजधानी में विलीन हो गया।

पद्मपुर—भवभूति कवि की जन्मभूमि। यह नगर नागपुर जिले में चन्द्रपुर (वर्तमान चांदा) के निकट कहीं पर बसा हुआ था।

पद्मावती मालवाप्रदेश में सिन्धु नदी के तट पर स्थित वर्तमान नरवाड़ से इसकी एकरूपता मानी जाती है। इसके आस-पास और दूसरी नदियां पारा या पर्वती, लूण, और मधुवर हैं जिनका भवभूति ने पारा लावणी और मधुमती के नाम से उल्लेख किया है यह नगर के आसपास बहने वाली नदियां हैं। भवभूति के मालतीमाधव का वर्णित दृश्य यह नगर है।

पंपा - एक प्रसिद्ध सरोवर का नाम जो आजकल पेन्नसिर कहलाता है। इसके निकट ही ऋष्यमूक पर्वत विद्यमान है। इस नाम की नदी सरोवर से निकली है; विशेषकर इसका उत्तरीभाग चन्द्रदुर्ग के मध्यवर्ती शिलासरोवर से निकला है। यही संभवतः मूल पंपा था, और चन्द्रदुर्ग ही ऋष्यमूक पर्वत। बाद में यह नाम इस सरोवर से नदी में परिवर्तित हो गया जो इससे निकली।

पाटलिपुत्र गंगा और शोण नदी के संगम पर स्थित उत्तरी बिहार या मगध में एक महत्त्वपूर्ण नगर। यह 'कुसुमपुर' या 'पुष्पपुर' भी कहलाता था। संस्कृत के लौकिक साहित्य में इस नाम का उल्लेख मिलता है। कहते हैं कि लगभग अठारहवीं शताब्दी के मध्य में यह नगर एक नदी की बाढ़ की चपेट में आकर नष्ट हो गया।

पांड्य – भारत के बिल्कुल दक्षिण में स्थित एक देश जो चोलदेश के दक्षिणपश्चिम में विद्यमान है। मलयपर्वत और ताम्रपर्णी नदी का स्थान निर्विवाद रूप से निश्चत हो चुका है, तु० वा० रा० २।३१। इस प्रदेश की वर्तमान तिन्नेवली से एकरूपता स्थापित की जा सकती है। रामेश्वर का पावनद्वीप इसी राज्य के अन्तर्गत है। कालिदास ने पांड्यदेश की राजधानी का नाम 'नाग-नगर' बताया है जो संभवतः मद्रास से १६० मील दक्षिण में वर्तमान 'नागपत्तन' ही है, तु० रघु० ६।५९-६४।

पारसीक—पर्शिया देश के रहने वाले लोग। संभवतः यह शब्द उन जातियों के लिए भी व्यवहार में आता था जो भारत की उत्तरपश्चिमी सीमा में सीमावर्ती जिलों में रहते हैं। इनके देश से 'वनायुदेश्य' नाम से घोड़ों के आने का उल्लेख मिलता है।

पारियात्र—भारत की एक मुख्य पर्वतश्रृंखला। संभवतः यह वही है जिसे हम शिवालिक पहाड़ कहते हैं और जो हिमालय के समानान्तर उत्तर पूर्व में गंगा के दोआब की रक्षा करता है।

प्रतिष्ठान पुरूरवस् की राजधानी। पुरूरवा एक प्राचीन काल का चन्द्रवंशी राजा था। यह स्थान प्रयाग या इलाहाबाद के समने स्थित था। हरिवंश पुराण में बताया गया है कि यह स्थान प्रयाग के जिले में गंगा नदी के उत्तरी तट पर बसा हुआ था। कालिदास ने इसे गंगा यमुना के संगम पर स्थित बतलाया है। तु० विक्रम० २।

मगध दक्षिणी बिहार या मगध का देश। इसकी पुरानी राजधानी गिरिव्रज (या राजगृह) थी। इसमें पांच पर्वत – विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि, शोणगिरि और वैभार (व्याहार) गिरि सम्मिलित थे। इसकी दूसरी राजधानी पाटलिपुत्र थी। परवर्ती साहित्य में मगध का नाम कीकट भी आया है।

मत्स्य या विराट—धौलपुर के पश्चिम में स्थित देश। कहा जाता है कि पांडव लोग दशार्ण के उत्तर में शौरसेन तथा रोहितक के भूभाग से होते हुए यमुना के तट इस प्रदेश में आये थे। विराट देश की राजधानी संभवतः वैराट ही थी जो आजकल जयपुर से ४० मील उत्तर में वैरात के नाम से विख्यात है।

मलय भारत की सात मुख्य पर्वत श्रृंखलाओं में से एक। इसकी एकरूपता संभवतः मैसूर के दक्षिण में फैले हुए घाट के दक्षिणी भाग से की जाती है जो ट्रावनकोर की पूर्वी सीमा बनाता है। भवभूति के कथनानुसार यह प्रदेश कावेरी से घिरा हुआ है (महावीर० ५।३ तथा रघु० ४।४६)। कहते हैं कि यहां इलायची, काली मिर्चें, चंदन और सुपारी के

वृक्ष बहुत पाये जाते हैं। रघु० ४।५१ में कालिदास ने बतलाया है कि मलय और दर्दुर यह दो पर्वत दक्षिणी प्रदेश के दो वक्षःस्थल हैं। अतः दर्दुर घाट का वह भाग है जो मैसूर की दक्षिणपूर्वी सीमा बनाता है।

महेन्द्र—भारत की सात मुख्य पर्वतशृंखलाओं में से एक। वर्तमान महेन्द्रमाले से इसकी एकरूपता स्थापित की जाती है जो कि महानदी की घाटी से गंजम को विभक्त करता है। संभवतः इसमें महानदी और गोदावरी का मध्यवर्ती समस्त पूर्वी घाट सम्मिलित था।

महोदय (कान्यकुब्ज या गाधिनगर) यह वही प्रदेश है जो गंगा के किनारे वर्तमान कन्नौज नाम से विख्यात है। सातवीं शताब्दी में यह नगर भारत का अत्यंत प्रसिद्ध स्थान था। तु० वा० रा० १०।८८-८९।

मानस—एक सरोवर का नाम है जो हाटक में स्थित था, जिसे आज कल लद्दाख कहते हैं। हाटक के उत्तर में उत्तरी कुरुओं का देश है जिसका नाम हरिवर्ष है। पूर्वकाल में यह सरोवर किन्नरों के आवास के रूप में विख्यात था। कवियों की उक्ति के अनुसार वर्षा ऋतु के आरम्भ में हंस प्रतिवर्ष यहीं आकर शरण लेते थे।

माहिष्मती—दे० 'चेदि' के अन्तर्गत।

मिथिला—दे० 'विदेह' के अन्तर्गत।

मुरल—दे० 'केरल' के अन्तर्गत।

मेकल अमरकण्टक नाम का पर्वत जहाँ से नर्मदा नदी निकलती है।

लाट—एक देश का नाम जो नर्मदा के पश्चिम में फैला हुआ था। इसमें संभवतः ब्रोच, बड़ौदा और अहमदाबाद सम्मिलित थे। कुछ के मतानुसार खेर भी इसी में सम्मिलित था।

वंग (समतट) पूर्वी बंगाल का एक नाम (उत्तरी बंगाल या गौड देश से बिल्कुल भिन्न है) इसमें बंगाल का समुद्रतट भी सम्मिलित है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी समय तिप्पड़ा और गैरो पहाड़ भी इसमें सम्मिलित थे।

वलभी—दे० 'सौराष्ट्र' के अन्तर्गत।

वाह्लीक, वाहीक पंजाब में रहने वाली जातियों का सामान्य नाम। इनका देश वर्तमान बलख है। कहते हैं कि वे पंजाब के उस भाग में रहते थे जिसे सिन्धु नदी तथा पंजाब की अन्य पांच नदियाँ सींचती हैं, परन्तु भारत की पुण्य भूमि से यह बाहर था। यह देश घोड़ों और हींग के कारण प्रसिद्ध है।

विदर्भ वर्तमान बरार देश। प्राचीन काल में कुंतल के उत्तर में स्थित यह एक बड़ा राज्य था जो कृष्णा के तट से लेकर लगभग नर्मदा के तट तक फैला हुआ था। विशालकाय होने के कारण इसका नाम महाराष्ट्र भी था, तु० वा० रा० १०।७४। कुण्डिनपुर जिसे विदर्भ भी कहते हैं इस देश की प्राचीन राजधानी थी। इसीको संभवतः आजकल बीदर कहते हैं। विदर्भ देश को वरदा नदी ने दो भागों में विभक्त कर दिया है, उत्तरी भाग की राजधानी अमरावती है, तथा दक्षिणी भाग की प्रतिष्ठान।

विदिशा—दे० 'दशार्ण' के अन्तर्गत।

विदेह मगध के पूर्वोत्तर में विद्यमान एक देश। इसकी राजधानी मिथिला थी जो अब मधुबनी के उत्तर में नेपाल में जनकपुर नाम से विख्यात है। प्राचीनकाल में विदेह के अन्तर्गत, नेपाल के एक भाग के अतिरिक्त वह सब स्थान जो अब सीतामढ़ी सीताकुंड अथवा तिरहुत के पुराने जिले का उत्तरी भाग और चम्पारन का उत्तर पश्चिमी भाग कहलाता है, इसमें सम्मिलित थे।

विराट—दे० 'मत्स्य'।

वृन्दावन—'राधा का वन' आज कल मथुरा से कुछ मील उत्तर में एक नगर के रूप में बसा हुआ स्थान। यह यमुना के बायें किनारे स्थित है।

शक—एक जनजाति का नाम जो भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमांत पर बसी हुई थी। संस्कृत के श्रेण्य साहित्य में इसका उल्लेख मिलता है। सिथियंस से इसकी एकरूपता मानी जाती है।

शुक्तिमत् भारत की सात प्रमुख पर्वतशृंखलाओं में से एक। इसकी सही स्थिति का अभी कुछ निर्णय नहीं हो पाया है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि नेपाल के दक्षिण में यह हिमालय पर्वत की एक शाखा है।

श्रावस्ती—उत्तरी कोशल में स्थित एक नगर का नाम जहाँ, कहते हैं कि लव राज्य किया करता था (रघु० १५।९७ में इसीको 'शरावती' का नाम दिया है)। अयोध्या के उत्तर में वर्तमान साहेत माहेत से इसकी एकरूपता मानी जाती है। यह नगर धर्मपत्तन या धर्मपुरी भी कहलाता था।

सह्य—भारत की सात प्रमुख पर्वत शृंखलाओं में से एक। आज कल इसी का नाम सह्याद्रि है। पश्चिमी घाट जो मलय के उत्तर में नीलगिरि के संगम तक फैला है, ही सह्याद्रि है।

सिंधु—दे० 'पद्मावती' के अन्तर्गत।

सिंधुदेशः वर्तमान सिंध प्रदेश जो सिंधु नदी का ऊपरी भाग है।

सुह्म—एक देश का नाम जो वंग के पश्चिम में स्थित है। इसकी राजधानी ताम्रलिप्त (जिसे तामलिप्त, दामलिप्त, ताम्रलिप्ति तथा तमालिनी भी कहते हैं) की

एकरूपता वर्तमान तमलूक से की जाती है। तमलूक कोसी नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। इस कोसी का नाम ही कालिदास ने 'कपिशा' लिखा है। प्राचीन काल में यह नगर समुद्र के अधिक निकट बसा हुआ था। यहाँ पर ही अधिकांश समुद्री व्यापार किया जाता था। सुह्म लोगों को ही कभी कभी राढ के नाम से पुकारते थे, (अर्थात् पश्चिमी बंगाल के लोग)।

सौराष्ट्र—(आनर्त) काठियावाड़ का वर्तमान प्रायद्वीप। द्वारका आनर्तनगरी या अब्धिनगरी कहलाती थी। पुरानी द्वारका वर्तमान द्वारका से दक्षिण पूर्व में ९५ मील स्थित मधुपुर नामक नगर के निकट बसी हुई थी। यह स्थान रैवतक पर्वत के निकट था। ऐसा ज्ञात होता है कि यही वह स्थान है जिसे जूनागढ का निकटवर्ती गिरिनार पर्वत कहते हैं। इस देश की दूसरी राजधानी वलभी प्रतीत होती है। इस नगर के खंडर भावनगर से उत्तर पश्चिम में १० मील की दूरी पर बिल्वी नामक स्थान पर पाँये गये हैं। प्रभास नामक प्रसिद्ध सरोवर इसी देश में समुद्रतट पर स्थित था।

स्रुघ्न—पाटलिपुत्र से थोड़ी दूरी पर यह एक नगर तथा जिला था। यमुना के पुराने तल के तट पर स्थित वर्तमान 'सुंग' से इसकी एकरूपता मानी जाती है।

हस्तिनापुर—'हस्तिन्' नाम का भरतवंश में एक प्रतापी राजा था। उसने ही इस प्रसिद्ध नगर को बसाया था। वर्तमान दिल्ली के उत्तरपूर्व में ५६ मील की दूरी पर यह नगर गंगा की एक पुरानी नहर के किनारे बसा हुआ है।

हेमकूट—'स्वर्णशिखर' पर्वत। यह पर्वत उस पर्वत श्रृंखला में से एक है जो इस महाद्वीप को सात वर्षों (वर्ष पर्वत) में बांटती है। बहुधा ऐसा माना जाता है कि यह पर्वत हिमालय के उत्तर में—या हिमालय और मेरु के बीच में स्थित है तथा किन्नरों के प्रदेश (किंपुरुषवर्ष) की सीमा बनाता है। तु० का० १३६। कालिदास इसके विषय में कहता है—"यह पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों में डूबा हुआ है और सुनहरी पानी का स्रोत है" वे० श० ७।

परिशिष्ट

अंशः [अंश् + अच्] विशिष्ट संगीत-ध्वनि ।

अंशकम् [अंश् + ण्वुल्] सूर्य की दृष्टि से ग्रहों की स्थिति, विवाह का उपयुक्त लग्न—अंशकं वैवाहिकं लग्नं —'नै०' १५।८ पर नारायण ।

अंशुकम् [अंशु + कन् स्वार्थे] नेता, दूध बिलोने की क्रिया में प्रयुक्त रस्सी ।

अंशूदकम् (नपुं०) ओस का पानी ।

अकर्मन् [न० त०] 1. कार्य का अभाव, अकरण प्रतिषेधादकर्म—मी० सू० १०।८।१० 2. वह कार्य जो विधि से स्वीकृत न हो—अकर्म च दारक्रिया या आधानोत्तरकाले—मै० सं० ६।८।१४ पर शा० भा० 3. कार्य करने की उपेक्षा करना—मै०सं० ६।३।३ पर शा० भा० ।

अकलङ्क (वि०) कलंकरहित, निष्कलंक ।

अकल्पनम् [न० त०] अनारोपण ।

अकल्माषः चौथे मनु के पुत्र का नाम ।

अकाण्डताण्डवम् अवांछित हल्लागुल्ला (पांडित्य के निरर्थक प्रदर्शन के विषय में व्यंग्योक्ति) ।

अकालज्ञ (वि०) अनुपयुक्त समय पर करने वाला —अत्यारूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः रघु० १२।३३ ।

अकालिकम् (अ०) अचानक—अकालिकं कुरवो नाभविष्यन् —महा० ५।३२।३० ।

अकिल्विष (वि०) [न० ब०] निष्पाप, तु० अकृतकिल्विष जिसने कोई पाप नहीं किया है ।

अकृतक (वि०) [कृ + क्त, न० त०, स्वार्थे कन्] जो बनाया हुआ न हो, स्वाभाविक—न तस्य स्वो भावः प्रकृतिनियतत्वादकृतकः—उत्तर० ।

अकृत्रिम (वि०) [न० त०] प्राकृतिक, जो मनुष्यकृत न हो ।

अक्कः [अक् + कन्] भंडार-गृह—अक्के चेन्मधु विन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत् ।

अक्ता (स्त्री०) [अञ्ज् + क्त] (वेद०) रात ।

अक्लान्त (वि०) [न० त०] जो थका न हो ।

अक्लीबम् (अ०) पूर्णतः, सचाई के साथ ।

अक्षः [अश् + सः] 1. हिंडोले या पालकी की खिड़की 2. जूआ खेलना । सम० —दण्डः वह लकड़ी जिसमें धुरी लगी रहती है,—दृक्कर्मन् अक्षांश ज्ञान करने के लिए गणित की प्रक्रिया,—विद् जूआ खेलने में निपुण,—शलाका पाँसा,—शालिन्,—शालिक जूआघर का अधीक्षक ।

अक्षयनीवी (स्त्री०) स्थायी धर्मार्थ दान-निधि (बौ०) ।

अक्षय्यभुज् (पुं०) [क्षि + यत्, न० त०, + भुज् + क्विप्] अग्नि—प्रदहेच्च हि तं राजन् कक्षमक्षय्यभुग्यथा—महा० १३।९।२१ ।

अक्षि (नपुं०) [अश् + क्सि] आँख । सम० - आमयः आँख का रोग, आँख दुःखना, श्रवस् (नपुं०) साँप, तु० नयनश्रवस्,—संवित् चाक्षुष संज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान,—सूत्रम् आँख का रेखाज्ञानस्तर (प्रतिमाविद्या विषयक),—स्पन्दनम् आँख का फरकना ।

अक्षौरिमम् [न० त०] वह दिन या नक्षत्र जिसे चूडाकर्म संस्कार या मुंडन के लिए अशुभ माना गया है ।

अक्ष्णया (वेद० अ०) टेढ़े-मेढ़े ढंग से । सम०—रज्जुः (स्त्री०) कर्णरेखा, शु०,—स्तोमीया इष्टका नामक यज्ञ, तै० सं०, श० ।

अखलः [न० त०] उत्तम वैद्य, निद्य ।

अखिलिका (वन०) कारली नामक वनस्पति ।

अगजा [न गच्छति इति अगः, तस्मात् जायते—अग + जन् + ड] पर्वत की पुत्री, पार्वती - अगजाननपद्मार्कं गजाननमहर्निशं, अनेकदं तं भक्तानामेकदन्तमुपास्महे । सम० - जानिः शिव ।

अगण्डः [न० ब०] कबन्ध जिसमें हाथ पैर न हों—अगण्डभूतो विवृतो दावदग्ध इव द्रुमः - रा० ६।६८।५ ।

अगतिः [न० त०] बुरा मार्ग, तु० अपथः ।

अगदः [न० त० गदाभावः] औषधि । सम० - राजः उत्तम औषधि ।

अगर्दभः [न० त०] खच्चर ।

अगाधसत्त्व (वि०) [न० ब०] प्रबल आत्मशक्ति रखने वाला—अगाधसत्त्वो मगधप्रतिष्ठः—रघु० ६।२१ ।

अगुल्मकम् [अगुल्मीभूतं—न० त०] अस्तव्यस्त, विश्रृंखलित (सेना)—गुल्मीभूतमगुल्मकम्—शुक्र० ४।८७० ।

अगोत्र (वि०) जिसका कोई स्रोत या उद्‌गम स्थान न हो—यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रम्—मुंड० १।१।६ ।

अग्निः [अङ्गति ऊर्ध्वं गच्छति अङ्ग् + नि, ङलोपश्च] 1. आग 2. पिंगला नाडी—यत्र सोमः सहाग्निना महा० १४।२०।१० 3. आकाश—अग्निर्मूर्धा—मुंड० २।१।४ । सम० कृतः काजू,—चूडः लाल शिखा वाला एक जंगली पक्षी,—चूर्णम् बारूद,—द्वारम् घर का दरवाजा जो आग्नेय दिशा की ओर है,—यानम् हवाई जहाज—व्योमयानं विमानं स्यादग्नियानं तदेव हि—अ० सं०, वेश्यः 1. एक अध्यापक महा० 2. बाइसवाँ मुहूर्त,—सावर्णिः एक मनु का नाम,

—सूनुः स्कन्द, तु० अग्निभू सेनानीरग्निभूर्गुहः —अम०,—होत्री (स्त्री०) अग्निहोत्र के लिए उपयुक्त गाय—तामग्निहोत्रीमृषयो जगृहुर्ब्रह्मवादिनः —भाग० ८।८।२।

अग्न्या तित्तिर नाम का पक्षी।

अग्रः [अङ्ग्+रक्, इलोपः] पहाड़ की नोक या अगला भाग —अग्रसानुषु नितान्तपिशङ्गैः—कि० ९।७, अग्रम् समय का पूर्ववर्ती भाग नैवेह किंचनाग्र आसीत् — बृ० १।२।१। सम० आसनम् सम्मान का प्रथम पद,—उत्सर्गः वस्तु का पहला अंश छोड़ कर उसे ग्रहण करना,—देवी पटरानी, अग्रमहिषी,—धान्यम् अनाज, गल्ला,—निरूपणम्, भविष्य कथन, भविष्य वाणी करना, पूर्ण निर्णय,—प्रदायिन् जो सबसे पहले देता है—तेषामग्रप्रदायी स्याः कल्पोत्थायी प्रियंवदः —महा० ५।१३५।३५,—भावः पूर्ववर्तिता,—वक्त्रम् शल्योपयोगी उपकरण,—हारः ब्राह्मणों की बस्ती जिसके एक ओर शिव का तथा दूसरी ओर विष्णु का मन्दिर हो, हरेः अयं हारः, हरस्यायं हारः, हारश्च हारश्च हारौ—यस्य सः।

अग्र्या [अग्रे जातः, अग्र+यत्+टाप्] आँवले का वृक्ष।

अघन (वि०) [न० त०] जो घना या ठोस न हो।

अङ्क+अङ्कम् (अङ्काङ्कम्) [अङ्क् कर्तरि करणे वा अच्, अङ्के मध्ये अङ्काः शतपत्रादि चिह्नानि यस्य —ता०] पानी, जल।

अङ्ककारः [अङ्क+कारः] सर्वोत्तम योद्धा,—त्वत्का ङ्कार-विजये तव राम लङ्का···वा० रा० आठवाँ अंक, गौरगुणैरहंकृतिभृतां जैत्राङ्ककारे · नै० १२।६४।

अङ्कित (वि०) [अङ्क्+क्त] चिह्नित, छाप लगा हुआ, गणना किया हुआ, क्रमांकित रावणशराङ्कितकेतुयष्टिं रघु० १२।

अङ्गम् [अम्+गन्] जैन धर्मावलंबियों का प्रधान धार्मिक ग्रन्थ। सम०—क्रमः वह क्रम या नियमित व्यवस्था जिसके अनुसार कर्मकाण्ड की नाना प्रकार की प्रक्रियायें अपने-अपने महत्त्व के अनुसार सम्पन्न की जाती हैं,—मै० सं० ५।१।१४, जम् रुधिर,—भङ्गः शरीर का वह भाग जो गुदा और अंडकोषों का मध्यवर्ती है,—भूमिः चाकू या तलवार का फलका —यदङ्गभूमी बभतुः—नै० १६।२२, —वस्त्रोत्था यूका, जूं,—संहिता शब्द के अन्तर्गत स्वर और व्यंजनों का उच्चारणविषयक सम्बन्ध,—तै० प्रा०, —सुप्तिः शरीर के अङ्गों का सो जाना।

अङ्गना [अङ्ग+न+टाप्] प्रियंगु नामक पौधा जिससे सुगंधित द्रव्य या अभ्यंजन तैयार किए जाते हैं।

अङ्गारः–रम् [अङ्ग+आरन्] जलता हुआ कोयला। सम० —अवक्षेपणम् कोयलों को बुझाने या इधर से उधर हटाने वाला बेलचा,—कर्करि (री) जलते हुए कोयलों पर पकी मोटी रोटी, बाटी,—धारिका अंगीठी, —वृक्षः रक्तकरंजवृक्ष, करौंदा।

अङ्गिकरणिकः [ष० त०] संभवतः अभिलेखाधिकारी, (आजकल के Oath Commissioner) जैसा पद) पञ्जीकार।

अङ्गिका [अङ्ग+इनि+क+टाप्] चोली, अंगिया।

अङ्गुलीवेष्टः [अङ्गुलि+वेष्ट्+घञ्] अँगूठी।

अङ्घो (अ०) क्रोध या शोकद्योतक अव्यय।

अङ्घ्रि (नपुं०) [अङ्घ्+क्रिन्] 1. पैर 2. किसी भी वस्तु का चतुर्थांश। सम० कवचः जूता,—जः शूद्र,—पान (वि०) पैर का अंगूठा चूसने वाला बच्चा, सन्धिः टखना, गिट्टे की हड्डी।

अङ्घ्रिकवारि(नपुं०) दीपक के मध्य का उभरा हुआ भाग, दीप दण्ड।

अचिन्त्यः [न० त० चिन्त्+यत्] पारा, पारद।

अचोदनम् [न० त० चुद्+णिच्+युच्] अव्यादेश, निदेशाभाव—देशकालानामचोदनं प्रयोगे नित्यसमवायात्—मी० सू० ४।२।२३।

अच्छ (अ०) प्राप्ति के भाव को द्योतन करने वाला अव्यय, अच्छशब्दो हि आप्तुमित्यर्थे वर्तते मै० सं० १०।१।९ पर शा० भा०।

अच्युतजल्लकिन् (पुं०) अमरकोश के एक टीकाकार का नाम।

अजमीढः [अजो मीढो यज्ञे सिक्तो यत्र, ब०] सुहोत्र के एक पुत्र का नाम, यह ऋ० ४।४३ सूक्त का ऋषि हुआ है।

अजयोनिजः दक्ष प्रजापति—भाग० ४।३०।४८।

अजनाभः भारतवर्ष का प्राचीन नाम भाग० ११।२।२४।

अजरकः–कम् [न० ब०] अजीर्ण, अपच।

अजहत्स्वार्थवृत्तिः [न जहत्स्वार्थो यत्र, हा+शतृ, न० ब०] वह शब्द जो अपने भाव को सुरक्षित रखता हुआ समस्त पद के अर्थ में कुछ वृद्धि करता है।

अजादिः पाणिनि का एक गण।

अजितकेशकम्बलः पाखण्डी या विधर्मी अध्यापक जिसका बौद्धग्रन्थों में उल्लेख मिलता है।

अज्ञातवस्तुशास्त्रम् पाखण्ड प्रतिपादक शास्त्र।

अञ्जकः विप्रचित्ति के पुत्र का नाम—वि० पु०।

अञ्जलिका [अञ्जलिरिव कायते कै+क, टाप्] मकड़ी से मिलता-जुलता एक कीड़ा। सम० वेधः एक प्रकार का युद्धकौशल—जानन्नञ्जलिकावेधं नापाक्रामत पाण्डवः —महा० ७।२६।२३।

अञ्जिकः यदु के एक पुत्र का नाम।

अञ्जिहिषा [अंह् का सन्नन्त रूप अंह्+सन्+टाप्] जाने की इच्छा भट्टि०।

अट्टाल (वि०) [अट्ट+अल्+अच्] ऊंचा, उत्तुंग।

अट्टालः उत्सेध, बुर्ज,– विष्कम्भचतुरश्रमट्टालकम्—कौ० अ० १।३।

अडागमः [अट्+आगमः] भूतकाल द्योतन करने के लिए धातु के पूर्व लगाये जाने वाला 'अ'—वार्तिक १।३।०।६०।४।

अडुकः हरिण निघ०।

अणुव्रतानि जैनधर्मानुयायी लोगों के लिए बारह सामान्य प्रतिज्ञाएँ।

अण्वम् वेद० सोमरस को छानने की छलनी का छिद्र।

अण्डकः [अम्+ड, स्वार्थे कन्] गोलाकार छत या गुम्बज-शोभनैः पत्रवल्लीभिरण्डकैश्च विभूषितः—म० पु० २६९।२०।

अतन्त्रत्वम् [न० ब०] बाहुल्य, अतिरिक्त मात्रा ऐन्द्रशब्द-स्यातन्त्रत्वात्—मी० सू० पर शा० भा० ६।४।२०।

अतनु (वि०) [न० त०] जो छोटा न हो, बहुत, प्रचुर –वीतप्रभावतनुरप्यतनुप्रभावः कि० १६।६४।

अतसिः (वेद०) [अत्+आसिन्] फेरी देने वाला साधु, भिक्षुक—कन्नव्यो अतसीनां तुरो गृणीत मर्त्यः—ऋ० ८।३।१३।

अतसिका [अत्+असच्+ङीप्+कन्+टाप्] पटसन।

अतिकल्यम् (अ०) प्रभातकाल, बहुत सवेरे नातिकल्यं नातिसायं नातिमध्यन्दिने स्थिते। गच्छेत्…मनु० ४।१४०।

अतिकश (त्रि०) [अतिक्रान्तः कशाम्–अत्या० स०] कोड़े की मार को भी न मानने वाला, उच्छृंखल।

अतिकामकः [प्रा० स०] कुत्ता।

अतिक्रान्ता [अति+क्रम्+क्त+टाप्] हाथी के कामोन्माद की छठी अवस्था अनिक्रान्तावस्थां गजपतिरिदं स्थावरचरं जगत्सर्वं हन्तु समभिलपति क्रोधकलुषः—मा० लो० ९।१७।

अतिक्रान्तिः [अति+क्रम+क्तिन्] सीमा के बाहर निकल जाना, उल्लंघन।

अतिगृहकम् [प्रा० स०] चौवारा, मियानी, —भूमींगृहांश्चैत्य गृहान् गृहातिगृहकानपि—रा० ५।१२।१५।

अतिजित (वि०) [प्रा० स०] पूर्णतया पराजित लोकं ह्यतिजितं कृत्वा—रा० ३।७०।५।

अतिधेनु (वि०) [अतिरिक्ता धेनवो यस्य—ब० स०] जो बढ़िया से बढ़िया गौओं का स्वामी है।

अतिनामन् (पुं०—मा) छठे मन्वन्तर के सप्तर्षि समुदाय के एक ऋषि का नाम।

अतिपातः [अति+पत्+घञ्] ध्वंस, विनाश।

अतिपातित [अति+पत्+णिच्+क्त] 1. स्थगित, विलंबित 2. पूर्णतः टटा हुआ।

अतिपातुक (त्रि०) अतिक्रमणकारी, बढ़कर रथेलक्षालक्ष्मी करैरनिपातुकैः—नै० १९।५।

अतिपरिचयः [प्रा० स०] अत्यधिक घनिष्ठता—लो० अतिपरिचयादवज्ञा।

अतिबाहुः [प्रा० स०] 1. असाधारण रूप से बड़ी भुजाओं वाला 2. चौदहवें मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम 3. एक गन्धर्व का नाम।

अतिभङ्गम् [प्रा० स०] प्रतिमा विद्या की दृष्टि से मूर्ति में दो तीन वक्रिमा या मोड़—मानव० ६७।९५-६।

अतियात (वि०) [प्रा० स०] बहुत तेज़ चलने वाला —महा० ३।२०।१९।

अतिरागः [अत्या० स०] अत्यधिक उत्साह।

अतिरेकः [अत्या० स०] 1. प्राचुर्य 2. बाहुल्य 3. अन्तर —महा० ३।५२।३।

अतिरेचकः एक पौधा जिसका सेवन बहुत दस्तावर होता है।

अतिरोगः क्षय रोग, तपेदिक।

अतिवर्तनम् [अत्या० स०] क्षम्य अपराध दशातिवर्तना-न्याहुः मनु० ८।२९०।

अतिविष्ठित (वि०) [अत्या० स०] 1. बहादुर योद्धा –विलब्धानतिविष्ठितान् रा० ४।१८।३८ 2. सीमा का उल्लंघन करने वाला महा० ३।२१५।१६।

अतिवैशस (वि०) [अत्या० स०] चुभने वाले, दारुण, कठोर– आततायिभिरुत्सृष्टा हिंस्रा वाचोऽतिवैशसाः भाग० ३।१९।२१।

अतिसृष्टिः [अति+सृज्+क्तिन्] उत्कृष्ट रचना।

अतलः [न० त०] खाँसी—निघ०।

अतकः [अत्+कन्] घर का एक कोना, दे० अक्क।

अत्यन्त+अपह्नवः [अत्यन्त+अप्+ह्नु+अप्] बिल्कुल मुकर जाना, पूर्ण विरोध या निराकरण।

अत्यन्त+सहचरित (वि०) निश्चित रूप से साथ जाने वाला—पा० ८।१।१५ वार्तिक।

अत्यन्तीन (वि०) [अत्यन्त+खञ्] 1. अत्यन्त गमन-शील 2. टिकाऊपन।

अत्यर्य-वेदनः [अतिक्रान्तः अर्यम्—विद्+णिच्+ल्युट्] हाथियों का एक भेद जो बहुत ही संवेदनशील होता है जरा से दण्ड को भी नहीं भूलता, –प्राजनाङ्कु-शदण्डेभ्यो दूरादुद्विजते हि यः, स्पृष्टो वा व्यथतेऽत्यर्थं स गजोऽत्यर्यवेदनः—मातङ्ग० ८।१९।

अत्यस्त (वि०) [अति+अस्+क्त] फेंका हुआ, लुढ़काया हुआ, दूर परे उछाला हुआ—पा० २।१।२४—तरङ्गा-त्यस्तः काशिका।

अत्याश्रमः [अति+आ+श्रम्+घञ्] संन्यास, वैराग्य।

अत्याहारयमाण (वि०) [अति+आ+हृ+णिच्+शानच्] बलपूर्वक ग्रहण करने वाला लोभादलश्चातुर्वर्ण्यमत्या-हारयमाणः कौ० अ० १।

अत्रपु (वि०) [न० ब०] टीन का बना हुआ, कलईदार।

अत्रिजात (वि०) [अद्+त्रिन्+जन्+क्त] तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का मनुष्य, द्विज ।

अत्री अत्रि की पत्नी । सम०—चतुरहः एक यज्ञ का नाम । —जातः 1. चन्द्रमा 2. दत्तात्रेय 3. दुर्वासा,- भारद्वाजिका अत्रि वंशियों का भारद्वाजवंशियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध ।

अत्वक्क (वि०) [न० ब०] त्वचारहित, जिस पर खाल न हो ।

अथ (अ०) [अर्थ्+ड, पृषो० रलोपः] मङ्गल सूचक अव्यय जो प्रायः रचनाओं के आरम्भ में प्रयुक्त होता है । सम०—अतः (अयातः), –अनन्तरम् (अयानन्तरम्) इसलिए, अब, इसके पश्चात् –अथातो धर्मजिज्ञासा मनु० १।१।१,- किमु और कितना, और इतना,—तु परन्तु, इसके विपरीत ।

अदर्शनम् [दृश्+ल्युट्, न० त०] भ्रम, माया, अदृश्यता —अदर्शनादापतिताः पुनश्चादर्शनं गताः—महा० ११। २।१३।

अदसीय (वि०) [अदस्+छ] इससे या उससे सम्बन्ध रखने वाला ।

अदुपध (वि०) [अत्+उपध न० ब०] वह शब्द जिसकी उपधा (अन्तिम से पूर्ववर्ती) में 'अ' हो ।

अदृष्टकल्पना किसी अज्ञात पदार्थ या विचार की कल्पना करना ।

अद्भुत (वि०)]अद्+भू+डुतच्] 1. आश्चर्य युक्त 2. ऊँचाई की माप के पाँच अंशों में से एक जहाँ कि ऊँचाई, चौड़ाई से दुगुनी हो –हीनं तु द्वयं तद् द्विगुणं चाद्भुतं कथितम्—मान० ११।२०।२३। सम०—रामायणम् वाल्मीकि द्वारा रचित एक ग्रन्थ,—शान्तिः (स्त्री०) 1. अथर्ववेद का ६७ वाँ परिशिष्ट 2. पुराणों में वर्णित एक व्रत का नाम ।

अद्रिकटकम् [अद्+त्रिन्+कट्+वुन्] पर्वतश्रेणी ।

अद्रेश्य (वि०) जो दिखाई न दे, अदृश्य ।

अद्वारासङ्गः [न० त०] दरवाजे पर अन्दर जाने वालों की पंक्ति का न होना—कार्यार्थिनामद्वारासङ्गं कारयेत् —कौ० अ० १।१९।२६।

अद्वैध (वि०) [न० ब०] अविभक्त, असद्भावनारहित ।

अधम (वि०) [अव्+अम; अवतेः अमः, वस्य पक्षे धः] जो फूंक नहीं मारता, शेखी नहीं बघारता - अधमः कुत्सिते न्यूने अधःस्याध्मानयोरपि –नाना० ।

अधरकण्टकः एक काँटेदार पौधा, धमासा ।

अधःवेदः (अधोवेदः) एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करना ।

अधिकरणम् [अधि+कृ+ल्युट्] 1. वह स्थान जहाँ बहुत लोग एकत्र हों, - महा० १२।५९, ६८ 2. विभाग महा० १२।६९।५४। सम०—लेखक (वि०) अभिलेखाधिकारी जो क्रयपत्र तथा अन्य दस्तावेज अपनी देखरेख में तैयार कराता है, नाजिर ।

अधिगमः [अधि+गम्+घञ्] जानकारी का समाचार – अपनेष्यामि सन्तापं तवाधिगमशंसनात्—राम० ५।३५।७७ ।

अधिपुष्पलिका खदिर का वृक्ष, खैर ।

अधिमखः [अधि+मख्+घञ्] यज्ञ की अधिशासी देवता ।

अधिमुक्तकः [अधि+मुच्+क्त] मालती का एक प्रकार, चमेली ।

अधिमुक्तिका [अधि+मुच्+क्तिन्, स्वार्थे कन्] वह सीपी जिसमें मोती रहता है ।

अधिरोपः [अधि+रुप्+घञ्] दोषारोपण करना ।

अधिरूषित (वि०) [अधि+रूप्+क्त] शृंगारवर्धक लेप से अभ्यक्त मुखमधिरूषितपाण्डुगण्डलेखम्—कि० १०।४६ ।

अधिवासः [अधि+वस्+घञ्] जन्मभूमि, जन्मस्थान – महा० १२।३६।१९ ।

अधिष्ठानम् [अधि+स्था+ल्युट्] 1. अवस्था, आधार 2. नाश –अमित्राणामधिष्ठानाद्वधाद् दुर्योधनस्य च – महा० ९।६१।१४ । सम० अधिकरणम् नगरनिगम, नगरपालिका का कार्यालय ।

अधोनिबन्धः हाथी के कामोन्माद की ऋतु में तीसरी अवस्था – मात० १।९।१४ ।

अध्ययनम् [अधि+इ+ल्युट्] शिक्षा देना, अध्यापन करना कृत्वा चाध्ययनं तेषां शिष्याणां शतमुत्तमम् – महा० १२।३१८।१७ ।

अध्यवसिन् (वि०) [अध्यव+सो+अच्, ततः इनि] किसी व्रत के पालनहेतु किसी एक ही स्थान पर अवरुद्ध हो जाने वाला महा० १२।६४।६ ।

अध्यासित (वि०) [अधि+आस्+णिच्+क्त] बैठा हुआ, बसा हुआ ।

अध्युषित (वि०) [अधि+वस्+क्त] ठहरा हुआ, रहा हुआ, अधिकार किया हुआ ।

अध्यूढः [अधि+वह्+क्त] विवाह से पूर्व गर्भिणी स्त्री का पुत्र · अध्यूढश्च तथाऽपरः—महा० १३।४९।४ ।

अध्वर्युकाण्डम् अध्वर्यु नामक ऋत्विजों के लिए अभिप्रेत मन्त्रों का संग्रह ।

अनक् (वि०) (वेद०) अन्धा ।

अनघ (वि०) [न० ब०] अनथक, बिना थका हुआ—भाग० २।७।३२ । सम० - अष्टमी एक व्रत का नाम –भ० पु० ५५ ।

अनङ्गः [न० ब०] 1. वायु 2. भूत, पिशाच 3. परछाईं, तु० अनङ्गे मन्मथे वायौ पिशाचच्छाययोरपि ।

अनन्तर (वि०) [नास्ति अन्तरं व्यवधानं, मध्यः, अवकाशः

यस्य] सीधा, साक्षात् - अथवा अनन्तरकृतं किञ्चिदेव निदर्शनम्—महा० १२।३०५।९।

अनन्य (वि०) [नास्ति अन्यः विषयो यस्य] जो किसी और के साथ भाग न ले रहा हो, निर्विरोध—अनन्यां पृथिवीं भुंक्ते सर्वभूतहिते रतः—कौ० अ०।

अनपग (वि०) [न० ब०] स्थिर, दृढ़।

अनपवृक्त (वि०) जो त्यागा हुआ न हो, अत्यक्त—न ह्युपेतमनपवृक्तं सच्छक्यमुपेतुम्—मी० सं० १२।१।१२ पर शा० भा०।

अनपार्थ (वि०) [न० ब०] यथार्थ कारण से युक्त, न्याय्य, उचित।

अनभिधानम् [न० त०] 1. अभीप्सित अर्थ का अप्रकाशन 2. व्याकरणसम्मत शब्द जो प्रयोग में न आता हो।

अनभिवादकः [न० त०] विरोध करने वाला, प्रतिवादी—न खलु भवानस्मत्संकल्पानभिवादकः - अवि० १।

अनभ्यन्तर (वि०) [न० ब०] अपरिचित, अनजान, अनभ्यस्त—अनभ्यन्तरे खल्वावां मदनगतस्य वृत्तान्तस्य—श० ३।

अनराल (वि०) [न० ब०] सीधा, अवक्र—यत्स्नेहादनरालनालनलिनीपत्रातपत्रं धृतम् - उत्त० ३।१६।

अनलः [नास्ति अलः पर्याप्तिर्यस्य, अनान् प्राणान् लाति आत्मत्वेन वा] क्रोध, करिणां मुदे सनलदानलदाः - कि० ५।२५। सम०—आत्मजः स्कन्द।

अनवकाशिकः [न० ब०] एक पैर से खड़ा होकर कठोर तपस्या करने वाला—गात्रशय्या अशय्याश्च तथैवानवकाशिकाः—रा० ३।६।३।

अनवक्लृप्तिः (स्त्री०) [अनव+क्लृप्+क्तिन्] असंभावना, अविश्वसनीयता।

अनवगीत (वि०) [न० ब०] निरपराध, निर्दोष—प्रकृत्या कल्याणी मतिरनवगीतः परिचयः - उत्तर० २।२।

अनवद्याङ्गी (स्त्री०) [न० ब०] वह स्त्री जिसके शरीर के अङ्गों में कोई दोष या त्रुटि न हो, अतः देवी का विशेषण।

अनवद्यरागः [न० त०] एक प्रकार का रत्न—कौ० अ० २।११।

अनवर (वि०) [न० ब०] जो अधम न हो, जो घटिया न हो।

अनहंवादिन् (वि०) [अन्+अहंवाद+इनि] अनभिमानी, जो गर्व न करता हो।

अनाक्रन्द (वि०) पीडा से पागल या अत्यन्त व्याकुल—इति लोकमनाक्रन्दं मोहशोकपरिप्लुतम् - महा० १२।३३१।३५।

अनाघ्रात (वि०) [अन्+आ+घ्रा+क्त] न सूंघा हुआ, जो हाथ से न छुआ गया हो—अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः - श० १।

अनावर (वि०) [न० ब०] नंगे सिर वाला, जिसके सिर पर पगड़ी या टोपी कुछ भी न हो।

अनारम्भः [न० त०] शुरू न करना, आरम्भ न होना।

अनार्यता [न० त०] अनुपयुक्तता, अयोग्यता।

अनावाप (वि०) जो किसी नई वस्तु का अधिग्रहण नहीं करता है।

अनाश्वास (वि०) [न० ब०] जिस पर निर्भर न किया जा सके - कर्मण्यस्मिन्ननाश्वासे धूमधूम्रात्मनां भवान् - भाग० १।१८।१२।

अनाश्वासम् (अ०) बिना सांस लिए, बिना आराम किये।

अनास्था (स्त्री०) [अन्+आ+स्था+क+टाप्] 1. असहिष्णुता 2. भरोसे का न होना, धैर्य का अभाव - नै० १।८८ पर ना० भा०।

अनिद (वि०) जो देखा या समझा न जा सके—इत्यभिष्टूय पुरुषं यद्रूपमनिदं यथा - भाग० १०।२।४२।

अनिमित्तम् (क्रि० वि०) जो ज्ञान का वैध साधन न हो, --अनिमित्तं विद्यमानोपलम्भनात्—मी० सं० १।१।४।

अनिमेषः [अ+नि+मिष्+घञ्] रति क्रिया का विशिष्ट प्रकार, मैथुन का विशिष्ट आसन।

अनिरिण (वि०) [अन्+ईर्+इनन्, ह्रस्व] जहाँ किसी प्रकार की उथल-पुथल या ऊँच-नीच न हो—तस्मिन् देशे त्वनिरिणे ते तु युद्धमरोचयन् महा० ९।५५।१८।

अनिर्वचनम् [न० त०] चुप रहना, जोर से न बोलना मी० सू० १०।८।५२ पर शा० भा०।

अनिलभद्रकः एक प्रकार का रथ (आकार की दृष्टि से रथ सात प्रकार—नभस्वत्, प्रभञ्जन, निवात, पवन, परिपद्, इन्द्रक और अनिल - के गिनाये गये हैं - मान० ४३।११२-५।

अनिलम्भसमाधिः ध्यान का एक विशेष प्रकार—बु०।

अनिविष्ट (त्रि०) [अ+नि+विश्+क्त] अविवाहित, —कलत्रं स्वयमनिविष्टः—अवि० १।

अनिष्ठुर (वि०) जो कठोर न हो, या क्रूर न हो।

अनिपुण (वि०) जो निपुण न हो, कुशल न हो।

अनिसर्ग (वि०) अप्राकृतिक।

अनीकस्थानम् [प० त०] सैनिक चौकी—कौ० अ० १।१६।

अनीप्सित (वि०) [अन्+आप्+सन्+क्त] अवांछित, अनचाहा।

अनीर्षु (वि०) [अन्+ईर्ष्य्+उण्, यलोपः] जो ईर्ष्यालु न हो, जो डाह न करे—भृतपुत्रा भृतामात्या भृतदाराह्यनीर्षवः महा० १२।२२१।

अनीह (वि०) [अन्+ईह्+अच्] जो प्रयत्नशील न हो, आलसी।

अनुकच्छम् [प्रा० स०] कच्छ या दलदली भूमि के साथ-साथ - आविर्भूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम् मेघ० १।२१।

अनुकल्पम् [अनु+कॢप्+अच्] 1. घटिया स्थानापत्ति, —ध्वनिभिर्वर्णैरनुकल्पैर्व्यनोदयत्—नै० १७।१२ 2.समान, एक जैसा—ग्रसितुं क्षममम्बुधीन् क्षणादनुकल्पाश्रितचण्डपयावकम् याद० ।

अनुकूलित (वि०) [अनुकूल+इतच्] जिसका स्वागत सत्कार होता है, सम्मानित—मन्त्रिणो नैगमाश्चैव यथार्हमनुकूलिताः—रा० ७।७४।६ ।

अनुक्रमः [अनु+क्रम्+घञ्] दैनिक व्यायाम अश्वान् रक्षत्यनुक्रमः महा० ११।१।२६३ ।

अनुक्षयम् (अ०) हर रात, प्रतिरात्रि ।

अनुगीता (स्त्री०) महाभारत के चौदहवें पर्व का एक अंश ।

अनुघट्ट् (भ्वा०) लम्बाई की ओर से सहलाना, रगड़ना ।

अनुजनः [अनु+जन्+अच्] सेवक, अनुचर ।

अनुज्ञात (वि०) [अनु+ज्ञा+क्त] शिक्षित, शिक्षाप्राप्त —शिष्याणामखिलं कृत्स्नमनुज्ञातं ससंग्रहम् महा० १२।३१८।२४ ।

अनुत्कट (वि०) [अन्+उद्+कटच्] छोटा, थोड़ा ।

अनुत्तालः [अन्+उद्+तल्+घञ्] मधुर स्वर, रसीला गान ।

अनुदिशम् (अ०) [प्रा० स०] प्रत्येक दिशा में ।

अनुद्रष्टृ (त्रि०) [अनु+दृश्+तृच्] हितैषी -अनुसूयुरनुद्रष्टा सत्कृतस्ते पुरोहितः रा० २।१००।११ ।

अनुद्य (वि०) [अन्+वद्+ण्यत्] अनुच्चारणीय — पा० ३।१।१०१ सि० ।

अनुधूपित (त्रि०) (वेद०) खुशामद से फूला हुआ, उद्धत ।

अनुनाथनम् [अनु+नाथ्+ल्युट्] प्रार्थना, याचना, अनुनय युवाभ्यामननाथने मिथः—नै० १६।६४ ।

अनुनिशीयम् (अ०) आधी रात के समय ।

अनुनेय (वि०) [अनु+नी+यत्] अनुसरणीय, अनुशीलनीय ।

अनुपस्कृत (वि०) [अन्+उप+कृ+क्त, सुडागमः] जिसकी बुद्धिमत्ता में कोई सन्देह न किया जा सके तस्मात्स्वधर्ममास्थाय सुव्रताः सत्यवादिनः । लोकस्य गुरवो भूत्वा ते भवन्त्यनुपस्कृताः—महा० १२।११।२५ 2. स्वार्थ को दूर रखने वाला देहत्यागोऽनुपस्कृतः मनु० १०।६२ ।

अनुपात्ययः [अनु+उप+इ+अच्] किसी व्यवस्था का अनु...न करना, अपनी बारी से अपना कार्य करना ।

अनुपालः [अनु+पाल्+अच्] (घोड़े आदि पशुओं का) रक्षक, पालक ।

अनुप्रकीर्ण (त्रि०) [अनुप्र+कृ+क्त] पूर्णतः व्यस्त, आच्छादित सोत्कण्ठैरमरगणैरनुप्रकीर्णान्—कि० ७। २ ।

अनुप्रभवः [अनुप्र+भू+अप्] जन्म-मरण का चक्र ।

अनुप्रवण (वि०) [अनु+प्रु+ल्युट्] रुचिकर, सुहावना —कौतूहलानुप्रवणा हर्षं जनयतीव मे—महा० १२।३७।३।

अनुप्रहित (वि०) [अनु+प्र+धा+क्त] निश्चित, नियत प्रियैषिणानुप्रहिताः शिवेन—कि० १७।३३ ।

अनुभाजित (वि०) [अनु+भज+णिच्+क्त] पूजा किया गया ।

अनुभू (भ्वा०) (वेद०) अनुकूल आचरण करना ।

अनुभावित (वि०) [अनु+भू+णिच्+क्त] अनुभवशील, प्ररक्षित ।

अनुभर्तृ (पुं०) [अनु+भृ+तृच्] भरण पोषण करने वाला, पालन पोषण करने वाला ।

अनुमन्त्रित (वि०) [अनु+मन्त्र्+क्त] संस्कार किया गया, विनियुक्त ।

अनुमात्रा (स्त्री०) प्रस्ताव, संकल्प ।

अनुयुज् (रुध्०) प्रार्थना करना, याचना करना—धार्तराष्ट्रं महामात्यं स्वयं समनुयुङक्ष्महे -महा० ५।७२।३ ।

अनुयुञ्जक (वि०) [अनुयुज्+ण्वुल्] ईर्ष्यालु, डाह करने वाला ।

अनुराद्ध (वि०) [अनु+राध्+क्त] सम्पन्न, अवाप्त ।

अनुरुद्ध (वि०) [अनु+रुध्+क्त] 1. रोका हुआ । 2. विरुद्ध 3. शान्त किया हुआ, सान्त्वना दिया हुआ ।

अनुलोमग (वि०) [अनुगतः लोम, गम्+ड] सीधा जाने वाला, सीधा चलने वाला ।

अनुवाकः [अनूच्यते इति, वच्+घञ्, कुत्वम्] ब्राह्मणग्रन्थों का एक अध्याय या प्रभाग ।

अनुविषयः [अनु+वि+सि+अच्, षत्वम्] रुचि, स्वाद ।

अनुवृत् (सकर्मक क्रिया के रूप में प्रयुक्त) सेवा करना, पूजा करना—सूर्यं चैवान्ववर्तत—रा० ७।१०।८ ।

अनुशाला (स्त्री०) उपकक्ष, छोटा कमरा ।

अनुशिष्ट (वि०) [अनु+शास्+क्त] 1. सुप्रशिक्षित, —तस्मात् पुत्रमनुशिष्टं लोक्यमाहुः बृ० १।५।१७ 2. पूछा गया इति तेनानुशिष्टस्तु वाचं मन्दमुदीरयन् —रा० ६।३०।४ 3. आदिष्ट, निर्दिष्ट—अनुशिष्टोऽस्म्ययोध्यायां गुरुमध्ये महात्मना—रा० १।२६।३ ।

अनुशायिन् (वि०) [अनु+शी+णिच्+इनि] साथ-साथ फैला हुआ ।

अनुश्रविक (वि०) [अनु (श्रु+अप्) श्रव+ठन्] शास्त्रों से संग्रह किया हुआ—पा० यो० ११८ ।

अनुषत्य (वि०) [प्रा० स०] (वेद०) जो सत्य के अनुरूप हो सके ।

अनुसमयः [अनु+सम्+इ+अच्] भिन्न-भिन्न व्यक्ति या प्रसङ्ग के अनुसार भिन्न-भिन्न व्यवहार करना । इसके तीन प्रकार हैं—पदार्थानुसमय, काण्डानुसमय और समुदायानुसमय ।

अनुसंधानम् [अनु+सम्+धा+ल्युट्] गवेषणा, खोज ।

अनुसंधिः [अनु+सम्+धा+कि] पूछ ताछ—नै० २।१२९ ।

अनुसंसृतिः [अनु+सम्+सृ+क्तिन्] जन्म मरण की आवृत्ति ।

अनुसंस्था (भ्वा०) अनुगमन करना, अनुसरण करना ।

अनुसंस्था (स्त्री०) सती प्रथा ।

अनुसृत (वि०) [अनु+सृ+क्त] 1. अनुगत 2. चूने वाला, टपटप गिरने वाला—उष्णार्दिता सानुसृतास्रकण्ठीम् रा० ५।५।२५ ।

अनूक्यम् (वेद०) [अनु+उच् समवाये क निपातः कुत्वम्, यत्] रीढ़ की हड्डी, कशेरुकीय, मेरुदण्ड ।

अनूपय् (भ्वा०) बाढ़ ला देना, भर देना—अनूपयामास विदर्भजाश्रुती नै० १२।६९ ।

अनेकपद (वि०) [न० ब०] अनेक संख्याओं से युक्त, बहुत से अवयवों से बना हुआ ।

अन्तः [अम्+तन्] अन्तिम अंश, अवशिष्ट अंश तेऽनया कात्यायन्याऽन्तं करवाणीति—बृ० २।४।१ । सम० —**ओष्ठः** अधरोष्ठ, निचला होंठ,—**चक्रम्** शकुन, तथा भविष्यसूचक भाव का जानना कौ० अ०, —**परिच्छदः** बर्तन के ऊपर कलई आदि की परत रखना ।

अन्तवान् (पुं०) [अन्त+मतुप्, मस्य वत्वम्] दिशाओं का स्वामी (दिगन्तानामीश्वरः)—महा० ३।१९७।५ ।

अन्तर् (अ०) [अम्+अरन्, तुडागमश्च] (इसका प्रयोग धातुओं के साथ उपसर्ग की भांति होता है, और इसे गति माना जाता है) अन्दर, में, भीतर । सम० —**अङ्गम्** (अन्तरङ्गम्) जो अत्यन्त घनिष्ठ सम्बंध रखता है या जिससे ऊपरी संबंध न होकर घनिष्ठ संबंध रहता है अन्तरङ्गबहिरङ्गयोरन्तरङ्गं बलीयः —मै० सं० १२।२।२९ पर शा० भा०,—**गर्भिणीन्यायः** इस न्याय के अनुसार जब एक बात के भीतर दूसरी बात छिपी रहती है जैसे गर्भाशय में गर्भ, तब इसका प्रयोग होता है—मी० सू० १०।३।६२ पर शा० भा०, —**जानुशयः** जो अपने हाथों को घुटनों के बीच में रख कर सोता है—अन्तर्जानुशयो यस्तु भुञ्जते सक्तभाजनः —महा० ३।५००।३५,—**मुख** (वि०) जिसकी दृष्टि अन्दर की ओर होती है—अन्तर्मुखाः सततमात्मविदो महान्तः—विश्व० १।३९, **वैंशिकः** अन्तःपुर का अधिकारी—समुद्रमुपकरणमन्तर्वंशिक हस्तादादाय परिचरेयुः—कौ० अ० १।२१ ।

अन्तरम् [अन्तं राति ददाति—रा+क] स्तम्भतल का अङ्गमूल (आधार) से सन्धान करना ।

अन्तारः [अन्त+ऋ+अण्] गडरिया, गोपाल—श० चि० ।

अन्धः [अन्ध+अच्] 1. जिसे आँखों से दिखाई न दे, अंधा —अन्धः क्षुधान्धोप्यसौ—विश्व १०१ 2. अस्पष्ट, धुंधला—निःश्वासान्ध इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते रा० ३।१६।१३ ।

अन्नंभट्टः तर्कसंग्रह नामक पुस्तक के रचयिता का नाम ।

अन्नाद (वि०) [अन्नमत्तीति—अद्+अच्] अन्न के खाने वाला—अहमन्नादः तै० १।७ ।

अन्य (वि०) [अन् अघ्न्यादि° य] दूसरा, और, भिन्न । सम०—**अन्य** (वि०) आपसी, पारस्परिक, दे० अन्योन्य, **अपदेशः** किसी और के बहाने अप्रत्यक्ष उक्ति ।

अन्वन्तः [अनु+अन्तः] शय्या, सोफ़ा, मंच, ऊँचा आसन—मान० १६।४३ ।

अन्वर्थनामन् [अनु+अर्थ+नामन्] जिसका नाम उसके अपने चरित्र के अनुसार यथार्थ है, यथा नाम तथा गुण वाला ।

अन्वारभ् (अनु+आ+रभ्) (भ्वा० आ०) (वेद०) अनुरंजन करना, अनुकूल करना, प्रसन्न करना—अग्निमन्वारभामहे ।

अन्वाहार्य (वि०) [अनु+आ+हृ+णिच्+यत्] जो क्रिया बाद में की जाय ।

अन्वयवर्जितः [पं० त०] नीच कुल में उत्पन्न व्यक्ति, अधम, ओछा—लक्ष्मीं प्राप्येवान्वयवर्जितः रा० ।

अन्वयायिन् (वि०) अपत्य, वंशज, सन्तान ।

अन्वित (वि०) [अनु+इ+क्त] युक्त, योग्य—तपसा चान्वितो वेधः रा० ५।३३।१३ ।

अन्वीक्षिक (वि०) [अनु०+ईक्षा+ठक्] हितैषी, बुरा भला देखने वाला—प्रजान्वीक्षिकया बुद्ध्या श्रेयो हृचस्य विचिन्तयन्—रा० ७।३।४ ।

अप्पित्तम् (अपांपित्तम्) अग्नि, आग ।

अप (उप०) [न पाति रक्षति पतनात् पा+ड] धातुओं से पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होता है—अर्थ होता है, ह्रास, कमी, विकृति, विरोध, अभाव आदि । सम० —**अङ्गः** अन्त, समाप्ति, **अस्त** (वि०) परित्यक्त, दूर फेंका हुआ,—**आकीर्ण** (वि०) दूर फेंका हुआ, अस्वीकृत—**कीर्तिः** बदनामी, कलंक, **कोष**(वि०) आच्छादन रहित, म्यान से पृथक् की हुई कोई वस्तु, —**टीक** (वि०) 1. जिसे किसी भाष्य या टीका की सहायता प्राप्त न हो 2. (अ+पटीक) जिस पर कोई ढकना या पदार्थ न हो,—**दश** (वि०) झालर या मगजी न लगा हुआ (वस्त्र)—तथा न्यायवृत्त धार्य न चापदशमेव च महा० १३।१०४।८६,—**दानम्** [अप+दै+ल्युट्] वह आख्यायिका जिसमें भूत और भावी जन्मों का वर्णन हो, **देशः** भय, खतरा —**अपदेशः** पदे लक्ष्ये व्याजप्रसिद्धनिमित्तयोः । औदार्यशौर्यधैर्येषु निःसीमव्यपदेशयोः—नाना०,—**द्रुतम्** झुक कर भागना, दौड़ना—रा० ६।४०।२५, **नयः** अने-

तिकता, दुष्टाचरण,**—नयनः** अन्याय, अनुचित व्यवहार—शृणु राजन् स्थिरो भूत्वा तवापनयनो महान्—महा० ६।१४९।२२,—**नी** (भ्वा०) दुर्व्यवहार करना—शत्रौ हि साहसं यत्तत्किमिवात्रापनीयते रा० ६।६४।१०,—**लीन** (वि०) गुप्त, छिपा हुआ—औपसातमभयादपलीनम्—कि० ९।११,—**वत्स** (वि०) बिना बछड़े का, **वत्सय्** (ना० धा०) ऐसा व्यवहार करना जैसा कि बिना बछड़े वाले के साथ किया जाता है, (न बहुत प्यार, न निर्दयता),—**वरः** अन्दर का कमरा, सुरक्षित कक्ष नै० १८।१८, महा० १२।१३९-४०,—**वर्गः** अवसान, अन्त, **वलित** (वि०) निलम्बित, लटकाया हुआ, **शूद्रः** जो शूद्र न हो, द्विज,—**ष्ठु** (वि०) [अप+स्था+कु] गलत, त्रुटिपूर्ण अपष्ठु पठतः पाठ्यमधिगोष्ठि शठस्य ते नै० १७।९६,—**सृज्** (तुदा०) छोड़ना, त्यागना,—**स्वानः** झंझावात, आंधी,—**हारः** संग्रह, अवाप्ति।

अपरक् (अ०) 1. के सामने 2. पश्चिम की ओर।

अपरान्तः [न० ब०] द्वीप वासी।

अपरापरम् (अ०) [अपर+अपर) आगे और आगे, फिर।

अपाठ्य (वि०) [न० ब०] जो पढ़ा न जा सके।

अपाणिग्रहणम् [न० त०] ब्रह्मचर्य।

अपादानम् [अप्+आ+दा+ल्युट्] स्रोत, कारण नै० २२।१४१।

अपारवार (वि०) [न० ब०] असीम, अपारवारमक्षोभ्यं गाम्भीर्यात्सागरोपमम् रा० ५।३८।४०।

अपिनद्ध (वि०) [अपि नह्+क्त] बन्द, ढका हुआ, गुप्त।

अपिपरिक्लिष्ट (वि०) [अपि परि+क्लिश्+क्त] अत्यन्त उत्पीडित, तंग किया हुआ।

अपिस्वित् (अ०) प्रश्नसूचक अव्यय।

अपीत (वि०) [अपि+इ+क्त] 1. विलीन, अन्तर्गत—लोकानपीतान्द दृशे स्वदेहे—भाग० ३।८।१२ 2. मृत।

अपूर्तिः (स्त्री०) [अ+पृ+क्तिन्] कार्य का पूरा न करना।

अपूर्विन् (वि०) (पुं र्वी) जिसने विवाहित जीवन का अपनी पत्नी के साथ इससे पहले उपभोग न किया हो—अपूर्वी भार्यया चार्थी वरुणः—रा० ३।१८।४।

अपृथक्त्विन् (वि०) जो पुरुष और प्रकृति के भेद को नहीं समझता—"पृथक्त्वं पुंप्रकृत्योर्विवेकः, तदस्यास्तीति पृथक्त्वी, तदन्यस्य" नील०; वर्णाश्रमापृथक्त्वे च दृष्टार्थस्यापृथक्त्विनः—महा० १२।३०८।१७७।

अपेहि (अप+एहि √इ लोट्, म० ए०) दूर हो, जाओ—अम्बष्ठापेहि मार्गात्—नाग०।

अपोहित (वि०) [अप+ऊह्+णिच्+क्त] 1. हटा हुआ, दूर किया हुआ—न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्—कि० २।२७ 2. वादविवाद में निराकृत।

अप्रकट (वि०) [न० ब०] जो प्रकट या व्यक्त न हो, जो स्पष्ट या प्रदर्शित न हो।

अप्रख्यता [न० त०] बदनामी, अपकीर्ति—महा० १२।१५८।५।

अप्रचोदित (वि०) [अ+प्र+चुद्+णिच्+क्त] जिसे अभिप्रेरणा या प्रोत्साहन न मिला हो, अनादिष्ट।

अप्रज्ञात (वि०) [अ+प्र+ज्ञा+क्त] अज्ञात, जो समझ में न आया हो—आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम्—मनु० १।५।

अप्रतिम (वि०) [न० ब०] अनुपयुक्त,—तस्मात्त्वया समारब्धं कर्म ह्यप्रतिमं परैः—रा० ६।१२।३५।

अप्रतिषेधः [न० त०] वह आक्षेप जो विश्वासोत्पादक न हो, अवैध निराकरण।

अप्रतिहतः देवताओं का एक प्रकार अपराजित-अप्रतिहत-जयन्त-वैजयन्त कोष्ठकान्…पुरमध्ये कारयेत्—कौ० अ० २।४।

अप्रवृत्त (वि०) [अ+प्र+वृत्+क्त] 1. जो किसी कार्य में व्यस्त न हो 2. जो संस्थित या प्रतिष्ठापित न हो 3. अनुपयुक्त।

अप्रसहिष्णु (वि०) [अप्र+सह्+इष्णुच्] जो सहन न किया जा सके, जिसका मुकाबला न किया जा सके—जगत्प्रभोरप्रसहिष्णु वैष्णवम् (चक्रम्)—कु० १।५४।

अप्राज्ञ (वि०) [न० ब०] जो जानकार न हो अज्ञानी।

अप्रादेशिक (वि०) [न० ब०] 1. जो कोई सुझाव न दे सके 2. किसी प्रदेशविशेष से सम्बन्ध न रखता हो।

अप्राधान्य (वि०) [न० ब०] जिसका कोई महत्त्व न हो, गौण।

अप्रोक्षित (वि०) [न० ब०] जहाँ छिड़का न हुआ हो, जो पवित्र न किया गया हो।

अप्रोटः एक पक्षिविशेष, कुकुडकुंभा।

अप्सुयोनिः [अलुक् समास] जो जल में पैदा हुआ हो, घोड़ा।

अबद्धवत् (वि०) [अ+बन्ध्+क्तवतु] अर्थहीन, जो व्याकरणसम्मत न हो—यस्मिन्प्रतिश्लोकमबद्धवत्यपि भाग० १।५।११।

अबधा (स्त्री०) किसी त्रिकोण की आधार रेखा का छिन्न अंश या खण्ड।

अबाधित (वि०) [न० ब०] बाधारहित, निर्बाध, अनियन्त्रित, अनिराकृत।

अबीज (वि०) [न० ब०] 1. नपुंसक, निर्वीर्य 2. अकारण,—**जः** (न० त०) मन पर नियन्त्रण,—**जा** एक प्रकार के अंगूर,—**जम्** अनुत्पादक बीज।

अभय (वि०) [न० ब०] प्रतिमा के हाथ की मुद्रा जो भक्त की रक्षा सूचित करती है। सम०—**वरदः**

रक्षण और वर के देने वाला—त्वदन्यः पाणिमभयवरदो दैवतगणः—सौ० ।

अभवत् (वि०) [अ+भू+शतृ] अविद्यमान । सम० —**मतयोगः**—संयोगः, (काव्य) रचना का दोष —इसके अनुसार शब्द और अर्थ का अभिप्रेत संबंध अपेक्षित रहता है जैसे—ईक्षसे यत्कटाक्षेण तदा धन्वी मनोभवः—में 'यत्' और 'तदा' का संबन्ध । अन्य उदाहरणों के लिए दे० सा० द० ५७५ पृष्ठ ।

अभवनिः जन्म का न होना—हरि० ७ ।

अभागिन् (वि०) [न० ब०] 1. अनभ्यस्त—सहते यातनामेतामनर्थानामभागिनी —रा० ५।१६।२१ 2. जिसका कोई भाग न हो ।

अभिकर्षणम् [अभि+कृष्+ल्युट्] कृषि का एक उपकरण ।

अभिगृध्न (वि०) प्रबल लालसा से युक्त, इच्छुक ।

अभिजित् (पुं०) [अभि+जि+क्विप्] पुनर्वसु का पुत्र —हरि०, पुनर्वसु के पिता का नाम वि० पु० ।

अभिज्ञात (वि०) [अभि+ज्ञा+क्त] जानकार, ज्ञाता, जानने वाला ।

अभित्वरमाणकः [अभि+त्वर्+शानच्, कन्] दूत, संदेशहर ।

अभिदेवनम् [अभि+दिव्+ल्युट्] पासे से खेलने की बिसात—महा० ।

अभिद्रुग्ध (वि०) [अभिद्रुह्+क्त] आहत, सताया हुआ ।

अभिधानम् [अभि+धा+ल्युट्] गीत, गायन—षट्पादतन्त्रीमधुराभिधानम् - रा० ४।२८।३६ । सम० —**विप्रतिपत्तिः** शब्द और अर्थ का बेतुकापन, असंगति —मी० सू० ९।३।१३ पर शा० भा० ।

अभिनन्दः (पुं०) 1. अमरकोश के एक टीकाकार का नाम 2. योगवासिष्ठसार के रचयिता का नाम ।

अभिनवकालिदासः आधुनिक कालिदास, यह पद किसी उत्तम कवि को दिया जाता है; माधवीय शंकर विजय का नाम ।

अभिनवगुप्तः नाट्यशास्त्र और ध्वन्यालोक का प्रसिद्ध भाष्यकार ।

अभिनिष्यन्दः [अभि नि+स्यन्द्+घञ्] टपकना, चूना ।

अभिनुन्न (वि०) [अभि+नुद्+क्त] आहत, क्षुब्ध । —खिन्नदण्डकाष्ठाभिनुन्नाङ्गी—महा० १४।५८।२९ ।

अभिपन्न (वि०) [अभि+पद्+क्त] 1. स्वीकृत, स्वीकार किया हुआ (अथवा उपपन्न) 2. प्ररक्षित - महा० १।५०।२० ।

अभिपातः [अभिपत्+णिच्+घञ्] 1. उन्नत होना, उछलना वियदभिपातलाघवेन 2. पतन, विनाश ।

अभिपूर्तम् [अभि+पृ+क्त] जो पूर्णतः सम्पन्न हो चुका है—अथ० ९।५।१३ ।

अभिप्लुत (वि०) [अभि+प्लु+क्त] 1. (भावनाधिक्य से) अभिभूत, व्याकुल 2. स्वीकृत ।

अभिमन्यमान (वि०) [अभिमन्+शानच्] किसी वस्तु पर अवैध अधिकार का इच्छुक—ब्राह्मणकन्यामभिमन्यमानः—कौ० अ० १।६।

अभिमन्युः (पुं०) चाक्षुष मनु के एक पुत्र का नाम ।

अभिरम्भित (वि०) [अभिरभ्+क्त] पकड़ा हुआ, जकड़ा हुआ—कश्मलं महदभिरम्भितः भाग० ५।८।१५।

अभिराधनम् [अभिराध्+ल्युट्] प्रसन्न करना, अनुकूल करना—महा० ३।३०३।१४।

अभिलम्भनम् [अभिलम्भ्+ल्युट्] अधिग्रहण करना —शशंस पित्रे तत्सर्वं वयोरूपाभिलम्भनम्—भाग० ९।३।२३।

अभिवक्तृ (वि०) [अभिवच्+तृच्] जो अभिमानपूर्वक या हेकड़ी के साथ बोलता है—महा० १२।१८०।४८।

अभिशीत (-श्यात) (वि०) [अभि+श्यै+क्त—पा० ६।१।२६] शीतल, ठण्डा ।

अभिश्रुत (वि०) [अभिश्रु+क्त] प्रख्यात, प्रसिद्ध ।

अभिश्वैत्य (वि०) [अभितः श्वैत्यं शुद्धचारित्र्यादिर्यस्य —न० ब०] विशुद्ध चरित्र वाला, सदाचारी ।

अभिषक्त (वि०) [अभि+सञ्ज्+क्त] 1. भूत प्रेतादि से आविष्ट 2. अपमानित, पराभूत 3. तिरस्कृत, अभिशप्त ।

अभिषङ्गः [अभिसञ्ज्+घञ्] मानसिक क्षोभ की स्थिति —उच्चारितं मे मनसोऽभिषङ्गात्—महा० ५।३०।१।

अभिषिक्त (वि०) [अभिषिच्+क्त] राजसिंहासन पर बिठाया हुआ, अभिमन्त्रित जलों से स्नान, राजगद्दी पर आसीन कराया गया ।

अभिषेचनम् [अभिषिच्+ल्युट्] राजतिलक करने की तैयारी—रा० २।१८।३६।

अभिष्टवः [अभि+स्तु+अच्] स्तुति—रामाभिष्टव संयुक्ताः—रा० २।६।१६।

अभिष्टुत (वि०) [अभि+स्तु+क्त] 1. जिसकी स्तुति की गई हो, जिसका कीर्तिगान किया गया हो 2. जिसका राज्याभिषेक कर दिया गया हो—ओङ्काराभिष्टुतं सोमसलिलं पावनं पिबेत्—याज्ञ० ३।३०६।

अभिसंहरणम् [अभि+सम्+हृ+ल्युट्] क्षतिपूर्ति—कौ० अ० ५।

अभिसंहित (वि०) [अभि+सम्+धा+क्त] सम्मिलित, सम्बद्ध रा० ७।८०।११।

अभिसमापन्न (वि०) [अभिसम्+आ+पद्+क्त] आमने सामने होने वाला, सामने होकर मुकाबला करने वाला—नुदत्यभिसमापन्नमङ्गुल्यग्रेण लीलया—रा० ३।१९।३।

अभिसरी (रिः) (स्त्री०) 1. पीछा करना—असुरपुरवधे

गच्छन्त्यभिसारीम् - प्रति० ३।७ 2. सहायता के लिए जाना।

अभिहारः [अभि + हृ + घञ्] निकट लाना – अभिहारोऽभियाने च · · ·

अभूयः संनिवृत्तिः (स्त्री०) फिर वापिस न आना, जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा – गतिस्तव वीतरागाणामभूयः संनिवृत्तये – रघु० १०।२७।

अभ्यपपद् (दिवा आ०) रक्षा करना – नतास्तमभ्यपपद्-कारा यानस्थरागाः – स्वप्न०।

अभ्यवमन् (दिवा० आ०) तिरस्कार करना, तिरस्कार करना।

अभ्यवमन्ता [अभ्यव + मन् + तृच्] अपमान करने वाला।

अभ्यवहारः [अभ्यव + हृ + घञ्] खाने के योग्य, खाद्य – यन्नान्यभ्यवहार्याणि मत्स्यान् च पलानि च – मनु० ४।५०।३५।

अभ्यसनीय } (वि०) [अभ्यस् + अनीयर्, ण्यत् वा]
अभ्यस्य } आवृत्ति करने के योग्य, अभ्यास करने के लायक, अभ्यास किये जाने के लिये।

अभ्याकाशम् (वि०) [प्रा० स०] आकाश के नीचे बिना किसी आश्रय के – अभ्याशमु सततं निरोद्धव्याकाशं विनां स्वयम् – महा० १२।३५।३८।

अभ्याचक्ष् (अदा० प०) 1. ध्यान देना 2. बोलना।

अभ्युपपन्न (वि०) [अभि + उप + पद् + क्त] 1. पहुँचा हुआ, पास गया हुआ 2. भय से आरक्षा के हेतु निकट गया हुआ – अभ्युपपन्नाः खलु तत्र भवानां शरणागत इति श्रयते – मच्छ० ७।

अभ्रमुः (स्त्री०) ऐरावत हाथी की प्रिया हथिनी – ऐरावतस्याभ्रमुः – हर० ३।१२९, अभ्रमुवल्लभः – नै० १।१०८।

अभ्रयन्ती (स्त्री०) [अभ्र + शतृ + ङीप्] 1. बादलों से युक्त दशा – – – – 2. कृत्तिका नक्षत्रपुंज।

अम् (वैद०) (भ्वा० पर०) भयभीत होना, भयभीत होना – – – – ऋ० ८।७३।१०।

अमण्डित (वि०) [न० त०] अनलंकृत, न सजा हुआ।

अमत्सर (वि०) [न० ब०] जो ईर्ष्या न करे, जो घृणा न करे, जो निरीह रहे – यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः – मनु० ३।२३१, मत्सरश्च – – – भाग० २।१५।

अमर (वि०) [मृ + पचाद्यच्] [न० त०] जो मृत्यु को प्राप्त न हो, अनश्वर, – रः (पुं०) देव, गुरु। सम० – गुरुः बृहस्पति, बृहस्पति नामक ग्रह, – चन्द्रः 'बालभारत' का रचयिता, – राजः इन्द्र, देवों का स्वामी।

अमरी (स्त्री०) स्वर्गीय स्त्री, देवी – अमरीकबरीभार-भ्रमरीमुखरीकृतम् – कुव० १।

अमर्दित (वि०) [मृद् + क्त, न० त०] जो मसला न गया हो, जो दबाया न गया हो।

अमर्मवेधिता (स्त्री०) मर्मस्थानों पर न आघात करने का गुण, दूसरों की भावनाओं को अपने वाग्बाणों से छेदना (तीर्थंकर के ३५ वाग्गुणों में से एक)।

अमा [न + मा + क] अमावस्या। सम० – वसुः पुरूरवा के वंश का एक राजा, – सोमवारः वह सोमवार जिस दिन अमावस्या हो, – व्रतम् अमावस्या वाले सोमवार को रखा जाने वाला व्रत, – हठः एक सर्पराक्षस का नाम – महा०।

अमित्रकर्म [न० त०] 1. शत्रुतापूर्ण कार्य, – – – – भागस्य युद्धमित्रकर्म – – – रा० ६।६५।७।

अमुद्र (वि०) [न० ब०] सीमारहित, अमुद्राप्रिय-समुद्रगा – नै० ६।६५।७।

अमूर्तरजस् (पुं०) कुश का एक पुत्र। इसकी राजधानी का नाम वैदर्भी था।

अमृज (वि०) [न० ब०] जिसने स्नान नहीं किया है – परिक्लिष्टैकवसनाममृजां नाथवर्जिताम् – रा० ६। ८१।१०।

अमृत (वि०) [न + मृ + क्त] 1. जो मरा हुआ नहीं 2. जो अमर है। सम० – अंशुकः एक प्रकार का वस्त्र – कौ० अ० २।११, – अग्रभूः इन्द्र का घोड़ा, उच्चैःश्रवा, अमृताग्रजः पुरुषः पुरुषः – शि० २०। ४३, – ईशः (अमृतेश) शिव का नाम – उपस्तरणम् अमृत समान भोजन करने से पूर्व आचमन करने का पानी, – करः, – किरणः अमृत की किरणों वाला, चन्द्रमा, – नन्दनः नन्दन जिसमें ५८ स्तम्भ लगे हों – म० पु० २७०।८, – नादोपनिषद् एक छोटी उपनिषद् का नाम, – बिन्दूपनिषद् अथर्ववेद की एक छोटी उपनिषद्, – मूर्तिः नरकासुर – आत्मन्यवस्थितं सदनावमनमूर्तिना – भाग० ८।१६।१।

अमृषोद्यम् [न + मृषा + वद् + ण्यत्] सत्य उक्ति – भट्टि० ६।५३।

अमोघ (वि०) [न० त०] 1. अचूक, अव्यर्थ। सम० – अक्षी (स्त्री०) (अमोघाक्षी) दाक्षायणी का नाम, – दर्शिनी शिक्षा की एक पुस्तक का मूलपाठ, – वर्ष राष्ट्रकूटवंशी एक राजा का नाम।

अम्बराधिकारिन् [अम्बराधिकार + इनि] राजदरबार का एक वस्त्राधिकारी।

अम्बरीषकः (अम्ब् + अरिष + क नि० दीर्घः) अम्बरीष या गृह ओर उद्यानाः कुबेरेण – नयैरम्बरीषकाः – रामा० १।६५।१६।

अम्बु (नपुं०) [अम्ब् + उण्] जल, पानी। सम० – कन्दः एक जलीय पौधा, सिंघाड़ा, – कुक्कुटी जलीय मुर्गी, – दैवम्, – दैवतम् पूर्वाषाढ नक्षत्र, – नाथः समुद्र,

—पतिः वरुण, —वेगः पानीका बहाव, बाढ़—यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगा—भग० ११।२८।

अम्बुजिनी (स्त्री०) [अम्बुज+णिनि+ङीप्] कमल की बेल। सम० कुटुम्बिन् (पुं०) सूर्य।

अम्मय (अप्+मय) (वि०) जलयुक्त, जलमय—न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः—भाग०।

अयन (वि०) [अय्+ल्युट्] जाने वाला, (प्रयोग प्रायः समस्त पदों में)। सम०—कलाः ग्रहणविषयक विचलन के लिए (मिनटों में) शोधन—सू० सि०, —ग्रहः किसी ग्रह की देशान्तररेखा जब कि वह ग्रहण विषयक विचलन के लिए संयुक्त की गई हो, —सू० सि०,—परिवृत्तिः अयन का बदलना—अयनपरिवृत्तिर्व्यस्तशब्देनोच्यते—गी० सू० ६।५।३७ पर शा० भा०।

अयत्नसाध्य (वि०) जो बिना किसी कठिनाई के सम्पन्न हो जाय।

अयत्नोपात्त (वि०), [अयत्न+उपात्त] जो बिना यत्न के प्राप्त हो जाय।

अयथाभिप्रेताख्यानम् (नपुं०) बुरे समाचार का ऊँचे स्वर से उच्चारण करना या अच्छे समाचार का मन्दस्वर में कहना अयथाभिप्रेताख्यानं नामाप्रियस्योच्चैः, प्रियस्य च नीचैः कथनम्—सि०।

अयस् (वि०) [इ+असुन्] जाने वाला, स्पन्दनशील। सम०—कणपम् एक प्रकार का अस्त्र जो लोहे की बनी गोलियों की बौछार करता है अयःकणपचक्राश्च भुशुण्ड्युद्यतबाहवः—महा० १।२२७।२५।, —पिण्डः तोप का गोला।

अयोगः [न+युज्+घञ्] योगाभ्यास से विचलन, —दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः—भाग० ६।८।१६।

अयोनि (वि०) [न० ब०] अज्ञात माता-पिता की सन्तान—अयोनिं च वियोनिं च न गच्छेत विचक्षणः—महा० १३।१०३।३३।

अरकः [इयति गच्छत्यनेन—ऋ+अच्+स्वार्थे कन्] पहिए का अरा।

अरड्डा (स्त्री०) एक देवी का नाम—गो०।

अरण्यपर्वन् (नपुं०) महाभारत के एक अध्याय का नाम।

अरन्ध्र (वि०) [न० ब०] जिसमें छिद्र न हों—सघन पयोमुच इवारन्ध्राः—कि० १५।४०।

अरव (वि०) [न० ब०] शब्दहीन, जिसमें से कोई आवाज न निकले।

अरस (वि०) [न० ब०] 1. अरसिक, जो ललित कला को न सराह सके—किमस्या नाम स्यादरसपुरुषानादरशतैः—नै० 2. जिसमें कोई सत्व न हो, तेज न हो —अरसो व्याधिजराविनाशधर्मा—बु० च० ५।१२।

अरात् (अ०) तुरन्त, तत्काल—वर्तन्ति यदनीत्या ते तेन साकं पतन्त्यरात्—शुक्र० ४।१२।६६।

अराम (वि०) [न० ब०] अरुचिकर, दुःखद।

अरिकेलिः [ऋ+इन्+केल+इन्] शत्रुलीला, स्त्रीरमण—अरिकेलिः शत्रुलीला स्त्रीरत्योश्चापि कीर्तितः—नाना०।

अरित्रम् [ऋ+इत्र+अरि+त्र, वा] कवच, जो शत्रुओं से रक्षा करे (अरिभ्यः त्रायते) नै० १२।७१।

अरीण (वि०) पूर्ण, भरा हुआ—स्वरमध्वरीणतत्कण्ठः—नै० ६।६५।

अरुज (वि०) [न० ब०] 1. जो रोग को नष्ट करे, रोग नाशक विषेभ्यः खलु सर्वेभ्यः कर्णिकामरुजां स्थिराम्—सु० 2. नीरोग, पीडारहित।

अरुणकेतुब्राह्मणम् (नपुं०) अरुण और केतुओं के ब्राह्मण का नाम।

अरुणपराशराः (पुं०) एक वैदिक शाखा के अनुयायी—अरुणपराशरा नाम शाखिनः—मै० सं० ७।१।८ पर शा० भा०।

अरुद्ध (वि०) [न+रुध्+क्त] निर्बाध, जिसे रोका न गया हो, निर्विघ्न।

अरुन्धतीदर्शनम् (नपुं०) विवाह संस्कार के अवसर पर की जाने वाली एक प्रक्रिया जिसके अनुसार दुलहन को अरुन्धती तारा दिखलाया जाता है।

अरुन्धतीदर्शनन्यायः यह एक न्याय है, इसके अनुसार 'ज्ञात से अज्ञात की भांति क्रमिक शिक्षा ग्रहण की ओर संकेत किया गया है जैसे अरुन्धती को दिखलाने के लिए पहले किसी और ज्ञात तारे की ओर संकेत किया जाय।

अरूप (वि०) (न० ब०) वह यज्ञ जिसमें रूप (द्रव्य और देवता) का अभाव हो।

अरूपिन् (वि०) [न+रूप+णिनि] आकाररहित, बिना किसी रूप का—बाधायासुसैन्यानामप्रमेयानरूपिणः रा० १।२१।१६।

अरोगत्वम् [न० त०] रोग से मुक्त होने की स्थिति।

अर्कः [अर्च्+घञ्, कुत्वम्] 1. सूर्य 2. सूर्यकान्त मणि—अर्कोऽर्कपर्णे स्फटिके—नै०। सम०—ग्रहः सूर्यग्रहण,—ग्रीवः इस नाम का एक 'साम'—पुष्पोत्तरम् इस नाम का एक 'साम',—रेतोजः सूर्य का पुत्र रेवत, —लवणम् यवक्षार।

अर्घः [अघ+घञ्] मूल्य, कीमत। सम०—अपचयः मूल्य कम हो जाना, क़ीमत गिर जाना,—ईश्वरः शिव, —निर्णयः मूल्य निर्धारण।

अर्चनानाः (पुं०) अत्रिकुल से संबंध रखने वाला एक ऋषि।

अर्जित (वि०) [अर्ज्+क्त] अवाप्त, उपार्जित—न मे पित्रार्जितं किञ्चिन्न मया किञ्चिदर्जितम्। अस्ति मे हस्तिशैलाग्रे वस्तु पैतामहं धनम्—वे० दे०।

अर्जुनबवरः अर्जुन नामक पौधे का रेशा, तन्तु ।
अर्जुनसखिः [ब० स०] कृष्ण ।
अर्णम् (नपु०) [ऋ+असुन्, नुट्] 1. पानी, जल 2. रंग —श्रीह्रीविभूत्यात्मवदद्भुतार्णस्—भाग० २।६।४४ । सम०—जः (अर्णोजः) कमल—न्यर्णोदर्णोजनाभः, —रुहम् कमल, पद्म—वरगिरमुपकर्ण्यायमर्णोरुहाक्षी —उत्त० ७।९२ ।

अर्थः [ऋ+थन्] विषय, पदार्थ, उद्देश्य, इच्छा, अभिप्राय । सम०—अतिदेशः (शब्दों के मुक़ाबले में) पदार्थों के विषय में लिङ्ग, वचन आदि का विस्तार अर्थात् एक विषय को ऐसा समझना मानों वे संख्या में बहुत हों, स्त्री को ऐसा समझना मानों वह पुरुष हो—त० वा०, —**अनुपपत्तिः** (स्त्री०) किसी विशेष अर्थ को निकालने या समझाने में कठिनाई,—**अनुबन्धि** भौतिक कुशलक्षेम से युक्त—तत्त्रिकालहितवाक्यं धर्म्यमर्थानुबन्धि च—रा० ५।५१।२१,—**अभिधानम्** अभीष्ट अर्थ का प्रकट करना - त० वा० ३।१।२।५,—**अभिधानम्** (वि०) जिसका नाम प्रयुक्त अर्थ से संबद्ध हो —अर्थाभिधानं प्रयोजनसम्बद्धमभिधानं यस्य, यथा पुरोडाशकपालमिति—मी० सं० ४।१।२६ पर शा० भा०,—**आतुरः** जो लोभी होने के कारण सदैव धन एकत्र करने के लिए दुःखी रहता हो—अर्थातुराणां न गुरुर्न बन्धुः,—**काशिन्** (वि०) जो उपादेय दिखाई दे (परन्तु वस्तुतः वैसा न हो),—**कार्श्यम्** धनसंबंधी कठिनाई - निर्बन्धसंजातरुषार्थकार्श्यमचिन्तयित्वा—रघु० ५।२१,—**किल्बिषिन्** (वि०) रुपये पैसे के विषय में बेईमान व्यक्ति,—**कोविद** (वि०) जो राजनीति के विषय में विशेषज्ञ हो, अनुभवी —उवाच रामो धर्मात्मा पुनरप्यर्थकोविदः—रा० ६।४।८, —**क्रिया** 1. सार्थक कार्य, अर्थात् जो कार्य सचमुच किया ही जाना है (विप० शब्दोक्त क्रिया)—असति शब्दोक्ते अर्थक्रिया भवति - मी० सं० १२।१।१२ पर शा० भा० 2. साभिप्राय क्रिया अर्थात् मुख्य कार्य, —**गतिः** अर्थ या प्रयोजन को समझ लेना, अर्थावगम, —**गुणाः** किसी उक्ति के अभिप्राय की खूबियाँ, —**गृहम्** कोश, खज़ाना—हरि०, **चित्रम्** अर्थों पर आधारित एक अर्थालंकार,—**दर्शकः** अधिनिर्णायक, —**दृश्** (स्त्री०) सत्यता तथा तथ्यों का ध्यान रखना —क्षेमं त्रिलोकगुरुरर्थदृशं च यच्छन्—भाग० १०।८६।२१,—**द्वयविधानम्**, ऐसी विधि जिसके दो अर्थ निकलते हों विधाने चार्थद्वयविधानं दोषः—मी० सं० १०।८।७० पर शा० भा०,—**पदम्** पाणिनि पर एक वार्तिक ससूत्रवृत्त्यर्थपदं महार्थम्—रा० ७।३६।४५, —**भावनम्** किसी विषय पर विचारविमर्श,—**लक्षण** (वि०) जैसा कि आवश्यकता या प्रयोजन के अनुसार निर्धारित हो (विप० शब्दलक्षण),—**विद्या** सांसारिक पदार्थों का ज्ञान,—**विपत्तिः** उद्देश्य की विफलता —समीक्ष्यतामर्थविपत्तिमार्गताम्— रा० २।१९।४०, —**विप्रकर्षः** अभिप्रेत अर्थ को समझने में कठिनाई, —**विभावक** (वि०) धन का देने वाला—विप्रेभ्योऽर्थविभावकः—महा० ३।३३।८४,—**शालिन्** (वि०) धनी पुरुष, धनवान्,—**संग्रहः** लौगाक्षिभास्कर कृत मीमांसा के एक प्रकरण का नाम,—**सतत्त्वम्** सचाई, —किं पुनरत्रार्थसतत्त्वम्—पा० ७।३।७२ पर म० भा०, धन का उपार्जन करना 2. उद्देश्य में सफलता,—**हानिः** (स्त्री०) धन का नाश,—**हारिन्** (वि०) धन के चुराने वाला, जो धन चुराता है ।

अर्थात् (अ०) [अर्थ का अपादान में ए० व०] सच तो यह है कि, तथ्यतः । सम०—**अधिगतम्** (अर्थादधिगतम्) संकेत द्वारा समझा हुआ,—**कृतम्** सचमुच किया हुआ —न चार्थात्कृतं चोदकः प्रापयति मी० सू० ५।२।८ पर शा० भा० ।

अर्थ्य (वि०) [अर्थ+ण्यत्] 1. सच्चा, वास्तविक— अर्थ्यं विज्ञापयन्नेव - रा० ६।१२७।२५ 2. धन प्राप्त करने में चतुर—तमर्थमर्थशास्त्रज्ञाः प्राहुरर्थ्याः सुलक्ष्मण —रा० ३।४३।३३ ।

अर्ध (वि०) [ऋध्+णिच्+अच्] आधा ।

अर्धः [ऋध्+घञ्] 1. वृद्धि 2. भाग, अंश, पक्ष । सम० —**असिः** एक धार की तलवार, छोटी तलवार —अर्धासिभिस्तथा खड्गैः—महा० ७।१३७।१५,—**कर्णः** अर्धव्यास, आधी चौड़ाई, **चित्र** (वि०) अर्धपारदर्शी, एक प्रकार का अंशतः पारदर्शी पत्थर,—**जीविका**, —**ज्या**, चाप को एक सिरे से दूसरे सिरे तक मिलाने वाली लम्बरेखा,—**पञ्चम** (वि०) साढ़े चार, —**प्राणम्** दो भागों का ऐसा संधान करना जैसा कि हृदय के दो टुकड़ों का—मूलाग्रे कीलकं युक्तमर्धप्राणमिति स्मृतम्—मान० १७।९९,—**मागधी** प्राचीन जैन ग्रन्थों में प्रयुक्त प्राकृत बोली,—**वायुः** आंशिक पक्षाघात, एकांगी लकवा,—**वृद्धिः** किसी राशि पर देय ब्याज का आधा भाग,—**शतम्** 1. पचास 2. डेढ़ सौ—मै० सं० ८।२६७,—**समस्या** श्लोक जिसका पूर्वार्ध एक व्यक्ति बोले, तथा उत्तरार्ध दूसरे व्यक्ति द्वारा पूरा किया जाय—नै० ४।१०१, **सहः** उल्लू ।

अर्ध्य (वि०) [अर्ध+य] अधूरा, जो अभी पूरा किया जाना है—अधा ते विष्णो विदुषा चिदर्ध्यः—ऋ० १।१५६।१ ।

अर्पित (वि०) [ऋ+णिच्+क्त] 1. लगाया गया, जड़ा गया—द्रुमाणां विविधैः पुष्पैः परिस्तोममिवार्पितम् —रा० ४।१।८, रघु० ८।८८ 2. उंडेली गई हस्तार्पितैर्नयनवारिभिरेव (शशाप)—रघु० ९।७८ 3. परि-

वर्तित, सौंपा गया—चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे - कु० ३।४२ 4. प्रति पूर्वक=वापिस सौंपा गया - प्रत्यर्पितन्यास इव - श०।

अर्मः,—र्मम्[ऋ+मन्]1. आँख का एक रोग 2. क़ब्रिस्तान।

अर्माः (ब० व०) खंडहर, कूड़ाकर्कट।

अर्ववाहः (पुं०) [ऋ+वनिप्=अर्वन्+वह्+घञ्, न० ब०] घुड़सवार आगच्छन् गुरुतरगर्वमर्ववाहः —शिव० २४।६४।

अर्वाक्तन (वि०) (अर्वाच्+तन) न पहुँचने वाला, पश्चवर्ती, प्रकृतिपुरुषयोरर्वाक्तनाभिर्नामरूपाभी रूप - निरूपणम्—भाग० ५।३।४।

अर्ह (वि०) [अर्ह्+अच्] योग्य समर्थ न त्वां कृमि दशग्रीव भस्म भस्मार्हतेजसा —रा० ५।२२।२०।

अर्हा [अर्ह्+घञ्+टाप्] सोना निघ०।

अलक्तकाङ्क (वि०) [अलक्त+अङ्क] अलक्ता से चिह्नित हैं अङ्ग जिसके-- अलक्तकाङ्कानि पदानि पादयोः —कु० ५।

अलक्षण (वि०) [न० ब०] जो समझ में न आवे—सेयं विष्णोर्महामायाऽबाधयाऽलक्षणा यया भाग० १२।६।२९।

अलक्ष्मन् (वि०) अशुभ लक्षणों से युक्त-अपसव्यं ग्रहाश्चक्रुरलक्ष्माणं दिवाकरम्—महा० ६।१०२।२१।

अलङ्कारमण्डपः [त० स०] शृंगार कक्ष, वह स्थान जहाँ मन्दिर की मूर्तियों का शृंगार किया जाता है।

अलमकः (पुं०) मेंढक, दे० 'अनिमक'।

अलवण (वि०) [न० ब०] लवणरहित, बिना नमक की - महा० १३।११४।१४।

अलसगामिनी (स्त्री०) मनोज्ञ गति से चलने वाली महिला।

अलसिका (स्त्री०) अधिक बार मल त्यागने के कारण उत्पन्न आलस्य या थकान।

अलाञ्छन (a) [न० ब०] निष्कलंक।

अलातशान्तिः (स्त्री०) माण्डूक्योपनिषद् पर गौडपाद की टीका का चतुर्थ पाद।

अलाबुवीणा (स्त्री०) तुम्बी के आकार की बनी वीणा।

अलीकम् [अल्+वीकन्] चिन्ता, शोक—अलीकं मानसं त्वेकं रा० २।१९।६।

अलुप्तमहिमन् (वि०) [न० ब०] जिसकी अक्षुण्ण कीर्ति बनी हुई है।

अलुप्तयशस् (वि०) [न० ब०] जिसकी ख्याति लुप्त नहीं हुई है, यशस्वी।

अलोकव्रतम् [न० त०] आध्यात्मिक मुक्ति के लिए अभिप्रेत व्रत जैसे ब्रह्मचर्य पालन, (इस व्रत की भावना भौतिक सुखों के विरुद्ध है) चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भाग० ८।३।७।

अलोमक, अलोमिक (वि०) [न० ब०] जिसके बाल न उगते हों, बिना बालों का।

अलोलः (पुं) चौदह मात्राओं का एक छन्द।

अल्प (वि०) [अल्+प] थोड़ा, मामूली, नगण्य (विप० महत्, गुरु)। सम०—अचतरम् वह शब्द जिसमें अपेक्षाकृत दूसरे शब्द से कम वर्ण या मात्राएं हों —पा० २।२।३४,—गोधूमः एक प्रकार का गेहूँ जो ज़रा छोटा होता है,—नासिकः एक छोटी दहलीज़ या दालान, मान० ३४।१०६,—पुण्य (वि०) जिसमें धार्मिक मूल्य नगण्य हो,—सत्त्व (वि०) दुर्बल, बलहीन,—सार (वि०) जिसका फल नहीं के बराबर हो।

अल्लकम् (नपुं०) धनिये का बीज।

अल्लका (स्त्री०) धनिये का पौधा।

अवतरम् (अ०) और आगे, आगे दूर —ऋ० १।१२९।६।

अवकीलकः [अव+कील+कन्] अच्चर, खूंटी जो अन्दर ठोकी गई है—क्षुत्पिपासावकीलकम्—महा० १८।४५।३।

अवकृत (वि०) [अव+कृ+क्त] नीचे की ओर बढ़ा हुआ, नीचे की ओर झुका हुआ।

अवकीर्ण (वि०) [अवकृ+क्त] अव्यवस्थित, व्यवस्थासापेक्ष —दृष्ट्वा तथावकीर्णं तु राष्ट्रम् महा० ९।४१।१६।

अवगल् (भ्वा० पर०) नीचे गिर जाना, फिसल जाना सौवर्णवलयमवागलत्कराग्रात् —शि० ८।३४।

अवग्रहधी (पुं०) [न० ब०] दुराग्रही, हठी—कर्मण्यवग्रधियो भगवन्विदामः—भाग० ४।७।२७।

अवघाटकम् (नपुं०) एक प्रकार की माला जो आकार में छोटी होती चली जाय—कौ०, अ० २।११।

अवघात (वि०) दे० 'अवहन्' के नीचे।

अवघुष्ट (वि०) [अव+घुष्+क्त] घोषणा किया गया, अवमानना पूर्वक मुनादी की गई।

अवघ्रात (वि०) [अवघ्रा+क्त] सूंघा हुआ, चूमा गया —अवघ्रातश्च मूर्धनि रा० २।२०।१।

अवघ्रापणम् [अव+घ्रा+णिच्+ल्युट्] सुंघवाना।

अवचरः [अव+चर+अच्] माईस—तुरगावचरं स बोधयित्वा—बु० च० ५।६८।

अवचि (स्वा० पर०) परखना, चुनना, छांटना।

अवचिचीषा [अव+चि+सन्+टाप्] संग्रह करने की इच्छा प्रमदया कुसुमावचिचीषया शि० ६।१०।

अवचूरिः, अवचूरिका वृत्ति, टीका, भाष्य, टिप्पणी।

अवच्छटा विनोदपरक चाल, लीलायुक्त गति—अवच्छटा कापि कटाक्षस्य नै० १६।६४।

अवच्छेद्य (वि०) [अव+छिद्+णिच्+ण्यत्] अलग किये जाने के योग्य, पृथक् किये जाने के लायक।

अवतानः [अव+तनु+घञ्] तन्तु, सूत—लतावतानतः महा० २।२४।२६।

अवतॄ (भ्वा० पर०) पार करना—त्वयाऽवतीर्णोऽर्णं उताप्तकामः—भाग० ३।२४।३४।

अवतरणमङ्गलम् (नपुं०) हार्दिक स्वागत।

अवतरणिका (स्त्री०) संक्षिप्त विवरण।

अवताररहस्यम् (नपुं०) अवतार लेने का भेद।

अवतारोद्देशः (अवतार+उद्देशः) अवतार लेने का प्रयोजन।

अवतारणम् [अव+तृ+णिच्+ल्युट्] उतार, अवतार ... पौष्यं पौलोममास्तीकमादिरंशावतारणम्—महा० १।२।४२।

अवद्यत् (वि०) [अवदो+शतृ] तोड़ने वाला, शतशो विशिखानवद्यते · कि० १५।४८।

अवधिः [अव+धा+कि] शासनादेश, अधिदेश,—वयं तु भरतदेशाऽवधिं कृत्वा हरीश्वर—रा० ४।८।२५। सम० —ज्ञानम् जैन शब्दावली में ज्ञान की तीसरी अवस्था जिसमें इन्द्रियातीत विषयों का ज्ञान भी मनुष्य को हो जाता है।

अवहित (वि०) (वेद) [अव+धा+क्त] मग्न, पतित, —त्रितः कूपेऽवहितो देवान् हवत—ऋ० १।१०५।१७।

अवधारणम् [अव+धृ+णिच्+ल्युट्] (नाम का) उच्चारण करना—न त्वां देवीमहं मन्ये राज्ञः संज्ञावधारणात् रा० ५।३३।१०।

अवधृत (वि०) [अव+धृ+क्त] 1. समझा हुआ, जाना हुआ 2. (ब० व०) इन्द्रियाँ (सांख्य० में)।

अवध्यै (भ्वा० पर०) तिरस्कार करना—सोऽवध्यातः सुरैरेवम्—भाग० ३।१२।६।

अवध्यानम् [अव+ध्यै+ल्युट्] तिरस्कार—यथा तरेसदवध्यानमंहः—भाग० ५।१०।२४।

अवनिः (स्त्री०) [अव्+अनि] 1. भूमि, पृथ्वी 2. नदी। सम० जः मंगल ग्रह,—जा सीता,—भृत् राजा, पहाड़,—सारा केले का पौधा।

अवनिष्ठीव् (दिवा० पर०) किसी पर थूकना अवनिष्ठीवतो दर्पाद् द्वावोष्ठौ छेदयेन्नृपः—मनु० ८।२८२।

अवनेय (वि०) [अव+नी+ण्यत्] अनुसरण कराये जाने योग्य -अरण्येमुनिभिर्जुष्टे अवनेया भविष्यसि—रा० ७।४६।९।

अवन्तिसुन्दरीकथा (स्त्री०) एक रचना जो दण्डी कवि की कृति बताई जाती है।

अवन्तिका (स्त्री०) 1. वर्तमान उज्जैन नगर 2. उज्जैन वासियों की बोली।

अवन्ध्यकोप (वि०) [न० ब०] जिसका क्रोध प्रभाव रखने वाला हैं -अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदाम् कि० १।

अवपतित (वि०) [अवपत्+क्त] नीचे गिरा हुआ—फलैर्वृक्षावपतितैः रा० २।२८।१२।

अवपानम् (वेद०) [अवपा+ल्यु] पीना मापस्थानं महिषेवावपानात्—ऋ० १०।१०६।२।

अवपोथिका (स्त्री०) (पत्थर आदि कोई) वस्तु जो नगर की दीवार से नगर पर आक्रमण करने वाले शत्रुओं पर फेंकी जाय महा०।

अवप्लु (भ्वा० आ०) नीचे छलांग लगानी—स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञां ऋतमधिकर्तुमवप्लुतो रथस्थः भाग० १।९।३७।

अवबोधित (वि०) [अवबुध्+णिच्+क्त] जगाया हुआ —रामो रामावबोधितः—रघु० १२।२३।

अवभङ्गः (वि०) [अवभञ्ज्+घञ्] टूटा हुआ, जिसकी हड्डी टूट गयी हो,—ङ्गः 1. तोड़ देना 2. (नाक या कान का) बींधना।

अवमर्दः [अव+मृद्+घञ्] 1. संघर्ष, हलचल—न त्वां समासाद्य रणावमर्दे—रा० ५।४८।६ 2. एक प्रकार का ग्रहण।

अवमर्दिन् (वि०) [अवमर्द+णिनि] हत्यारा,—महात्मनस्तस्य रणावमर्दिनः—रा० ५।३७।६५।

अवमर्शित (वि०) [अवमृश्+णिच्+क्त] 1. बिगड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ—इति दक्षः कवियंज्ञं भद्ररुद्रावमर्शितम्—भाग० ४।७।४८।

अवमूत्रयत् (वि०) [अवमूत्र+शतृ] मूत्र करके भूमि को गन्दा करने वाला -अवमूत्रयतो मेढ्रम् -मनु० ८।२८२।

अवमेहः [अवमिह्+घञ्] विष्ठा, मल कामं प्रयाहि जहि विश्रवसोऽवमेहम्—भाग० ९।१०।१५।

अवयवप्रसिद्धिः (स्त्री०) (शब्द के) खण्डों का निर्देशन, व्युत्पत्तिपरक सार्थकता -न चावयवप्रसिद्धया समुदायप्रसिद्धिर्बाध्यते—मी० सू० ६।८।४१ पर शा० भा०।

अवयुत्यनुवादः (पुं०) किसी वस्तु का अंशों में उल्लेख करना -एकं वृणीत इत्यवयुत्यनुवादोऽयं त्रयाणामेव मी० सं० ६।१।४३ पर शा० भा०।

अवरक्षणी [अवरक्ष्+ल्युट्+ङीप्] घोड़े को बाँधने की रस्सी—हरि०।

अवरीकृ (अवर+च्वि+कृ—तना० उ०) निकट लाना जवादवरीकृतदूरदृक्पथः—नै० १६।२६।

अवरुदित (वि०) [अवरुद्+क्त] जो आँसुओं के गिरने से अपवित्र हो गया हो अवक्षुतावरुदितं तथा श्राद्धे च वर्जयेत्- महा० १३।९१।४१।

अवरुद्ध (वि०) [अवरुध्+क्त] अत्यन्त व्याकुल—प्रहर्षेणावरुद्धा सा · रा० ६।११३।१४।

अवरोधः [अवरुध्+घञ्] बाध्य करने वाली शक्ति —प्रजानन्दावरोधेन गृहेषु लोकं नियमयत् -भाग० ५।४।१४। सम०—गृहः अन्तःपुर,—जनः अन्तःपुर की महिलाएँ।

अवरोपितः [अवरुह्+णिच्+क्त] 1. सिंहासन से उतारा हुआ, निष्कासित—पुराहं वादिना राम

राज्यात्स्वादवरोपितः—रा० ४।८।३२ 2. घटाया हुआ, ऊनीकृत इतरेष्वागमाद्धर्मः पादशस्त्ववरोपितः—मनु० १।८२।

अवर्णसंयोगः [त० स०] 1. दो भिन्न ध्वनियों का मेल 2. किसी भी वर्ण से संबंध का अभाव।

अवर्तमान (वि०) [न० ब०] जो चालू समय से कोई सम्बन्ध न रक्खे।

अवलम्बित (वि०) [अवलम्ब्+क्त] चिपका हुआ, पकड़ा हुआ, आश्रित—समभिसृत्य रसादवलम्बितः —शि० ६।१०।

अवलेह्य (वि०) [अवलिह्+ण्यत्] चाटने के योग्य।

अवलेखा [अवलिख्+अ, स्त्रियां टाप्] रेखा खींचना, रेखाचित्र बनाना, रेखाकृति।

अवलोकलवः [त० स०] दृष्टि, कटाक्ष।

अवशप्त (वि०) [अवशप्+क्त] अभिशप्त—महा० १३।

अवशॄ (क्र्या० पर०) 1. टूटना 2. चारों ओर बिखर जाना—स तस्या महिमा दृष्ट्वा समन्तादवशीर्यत —रा० १।३७।१३।

अवशीर्ण (वि०) [अव+शॄ+क्त] टूटा हुआ, चूर-चूर किया हुआ।

अवषट्कार (वि०) जिसमें 'वषट्' शब्द का उच्चारण न हो, जिसमें वेद के सांस्कारिक मन्त्रों के उच्चारण की प्रक्रिया न हो।

अवसन्न (वि०) [अवसद्+क्त] बुझा हुआ, उपरत, मृत —ततस्तेष्ववसन्नेषु सेनापतिषु पञ्चसु रा० ५।४६।३८।

अवसरप्रतीक्षिन् (वि०) [त० स०] जो किसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हो।

अवसरान्वेषिन् (वि०) [त० स०] जो किसी अवसर की ताक में हो।

अवसायः [अव+सो+घञ्] जो समाप्त करता है—अवसायो भविष्यामि दुःखस्यास्य कदा न्वहम्-भट्टि० ६।८१।

अवसायक (वि०) [अव+सो+ण्वुल्] विनाशात्मक —अवसायिनः शम्भोः सायकैरवसायः—कैकि० १५।३६।

अवस्कन्दः [अव+स्कन्द्+घञ्] (विधि में) दोषारोपण, इल्ज़ाम।

अवस्कन्न (वि०) [अव+स्कन्द्+क्त] 1. बिखरा हुआ, फैला हुआ 2. आक्रान्त।

अवस्कारः [अव+स्कृ+घञ्] हाथी के चेहरे का आगे की ओर उभरा हुआ भाग मानं० ५।८।१२।

अवस्थानम् [अव+स्था+ल्युट्] 1. महागा योऽवस्थानमनुग्रहः भाग० ३।२७।१६ 2. स्थैर्य, स्थिरता—अलब्धावस्थानः परिक्रामति भाग० ५।२६।१७।

अवस्नात (वि०) [अव+स्ना+क्त] जिसमें किसी ने स्नानकर लिया है, (जल)।

अवस्फूर्ज् (भ्वा० पर०) खुर्राटें भरना, 'घुर्राटा' करना —महा० ६।७।

अवहारः [अव+हृ+घञ्] जो उड़ा कर ले जाता है न जीवस्यावहारो मां करोति सुखिनं यमः भट्टि० ६।८१।

अवह्वे (भ्वा० पर०) (वेद०) पुकारना, बुलाना विशो अद्य मरुतामवह्वये ऋ० ५।५६।१।

अवाछिद् (रुधा० पर०) फाड़ देना, छिन्न-भिन्न कर देना।

अवाञ्चित (वि०) [अवाञ्च्+क्त] नीचे की ओर झुका हुआ।

अवाचीन (वि०) [अवाच्+ख] 1. जो नीची निगाह से देखता है दुर्योधनमवाचीनं राज्यकामुकमातुरम् महा० ८।८।१७ 2. नीच, पापी—बुद्धि तस्यापकर्षन्ति सोऽवाचीनानि पश्यति महा० ५।३४।८१।

अवातल (वि०) जो वातग्रस्त न हो —सु०।

अवान्तरवाक्यम् (नपुं०) मूल कथन के कुछ अंशों को त्याग कर, चयन की हुई उक्ति न च महावाक्ये अवान्तरवाक्यं प्रमाणं भवति मी० सं० ६।४।२५ पर शा० भा०।

अवारित (वि०) [अ+वृ+णिच्+क्त] जिसे रोका न गया हो,—तम् (अ०) बिना किसी रुकावट के। सम०—कवाटद्वार (वि०) नहीं रोका हुआ अर्थात् खुला हुआ है द्वार जिसके लिए।

अवाह्य (वि०) [न+वह्+णिच्+ण्यत्] जो ले जाये जाने के योग्य न हो।

अविकच (वि०) [न० ब०] जो खिला न हो, अर्थात् बन्द (फल)।

अविकारिन् (वि०) [न+विकार+इनि] 1. जिसमें कोई परिवर्तन न हो 2. स्वामिभक्त —स्थाने युद्धे च कुशलानभीरूनविकारिणः मनु० ७।१९०।

अविकार्य (वि०) [न० त०] अपरिवर्त्य अविकार्योऽयमुच्यते भग० २।२५।

अविक्रियात्मक (वि०) [न० ब०] जिसका स्वभाव अपरिवर्त्य हो, जिसकी प्रकृति न बदले।

अविक्षोभ्य (वि०) [न० त०] 1. जिसमें कोई हलचल न हो 2 जो जीते न जा सकें अविक्षोभ्याणि रक्षांसि —रा० ६।५।१३।

अविखण्डित (वि०) [न० त०] अविभक्त, अविकल।

अविगान (वि०) [न० ब०] असस्वर रहित (गायन)।

अविगीत (वि०) [न० त०] विकल करने वाले स्वर जिस में न हों।

अविचक्षण (वि०) [न० त०] 1. अकुशल, जो चतुर न हो, 2. अनजान, अज्ञानी।

अविचिन्त्य (वि०) [न+वि+चिन्त्+ण्यत्] जो समझा न जा सके, जो समझ से बाहर हो।

अविच्छिन्न (व०) [न० त०] साधारण, सामान्य न विशेषेन गन्तव्यमविच्छिन्नेन वा पुनः—महा० १२।१५२।२२।

अवितर्कित (वि०) [न० त०] अप्रत्याशित, जिसके लिए पहले कभी तर्कना न की हो।

अवितर्क्य (वि०) [न० त०] जिसका अनुमान न लगाया जा सके।

अवितृ (वि०) [अव्+णिच्+तृच्] प्ररक्षक,—त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रम् म० ना० २०।३।

अविद (अ०) विस्मयादिद्योतक अव्यय—अर्थ है हन्त, ओह—मृच्छ० १।

अविद् (वि०) [न+विद्+क्विप्] अनजान, अज्ञानी—अविदो भूरितमसो भाग० ३।१०।२०।

अविदूषक (वि०) [न० त०] निरीह, भोलाभाला—अहितं चापि पुरुषं न हिंस्युरविदूषकम्—रा० १।७।११।

अविदूसम् (नपुं०) [अवि+दूस पा० ३।२।३६ वा०] भेड़ का दूध।

अविद्धनस्,—नास् (वि०) [न० ब०] (वह बैल) जिसके नाक में नकेल न डाली गई हो।

अविधायक (वि०) [न+विधा+ण्वुल्] जिसमें विधि या आदेश की शक्ति न हो—नहि विधायकाविधायकयोरेकवाक्यत्वं भवति—मी० सू० १०।८।२० पर शा० भा०।

अविनेय (वि०) [न० त०] 1. जो नियंत्रण में न आ सके 2. जो शिष्य न बन सके।

अविनाशिन् (वि०) [न० त०] जिसका कभी नाश न हो, आत्मा।

अविनिर्णयः [न+विनिर्+नी+अच्] अनिर्णय, निर्णय का अभाव।

अविनीय (वि०) निष्कपट, निर्दोष।

अविपर्ययः [न० त०] विरोध का अभाव, संशय का अभाव, असन्दिग्ध स्थिति अविपर्ययाद्विशुद्धम्—सां० का० ६४।

अविप्रतिपत्तिः (स्त्री०) [न०त०] मतभिन्नता का अभाव—शब्दस्पर्शरूपरसगन्धेष्वविप्रपत्तिः इन्द्रियजयः—कौ० अ० १।६।

अविप्रवासः [न० त०] एकत्र रहना, घनिष्ठ मिलन।

अविप्रहत (वि०) [न० त०] (वह जंगल या मार्ग) जहाँ किसी के पैर न पड़े हों।

अविप्लुत (वि०) [न० त०] अन्यूनीकृत, अविकृत।

अविभासित (वि०) [न० त०] जो हिसाब किताब में न लिया गया हो।

अविरल (वि०) [न० त०] विशाल, स्थूलकाय—अविरलवपुषः सुरेन्द्रगोपः कि० १०।२७।

अविरविकन्यायः (पुं०) व्याकरण का एक न्याय जिसके आधार पर 'अवि' का 'अविक' हो जाता है।

अविरहित (वि०) [न० त०] अवियुक्त, जो कभी पृथक् न किया गया हो—अविरहितमनेकेनाङ्कभाजा फलेन—कि० ५।५२।

अविलक्ष्य (वि०) [न० त०] गुप्त, जिसका मुकाबला न किया जा सके, जिसको रोका न जा सके—अविलक्ष्यमस्त्रमपरम् कि० ६।४०।

अविवक्षितवचनता (स्त्री०) उन मन्त्रों की स्थिति जो अपना शाब्दिक अर्थ प्रकट करने के लिए अभिप्रेत नहीं होते।

अविवक्षितवाच्य (वि०) [न० ब०] ध्वनि काव्य का एक भेद जिसमें शाब्दिक अर्थ अभिप्रेत नहीं है।

अविवेचक (वि०) [न० त०] जो किसी वस्तु के विवेचन की बुद्धि नहीं रखता।

अविवेचना [नवि+विच्+युच्+टाप्] विवेक बुद्धि का अभाव।

अविशयः [अव+शी+अच्] संदेह का अभाव यदि वा अविशये नियमः—मी० सू० ८।३।३१।

अविशेषवचन (वि०) वह कथन जिसमें कोई विशेष विवरण न दिया गया हो—अविशेषितवचनः शब्दो न विशेषेव्यवस्थापितो भविष्यति—मी० सू० ४।३।१५।

अविश्रम्भः [न० त०] विश्वास का अभाव, अविश्वास, अप्रत्यय।

अविषक्त (वि०) [न० ब०] निरवबाध, अनियन्त्रित, जिस पर कोई प्रतिबन्ध न हो तुभ्यं नमस्तेस्त्वविषक्तदृष्टये—भाग० १०।४०।१२, अविषक्तवेगः—कि० १३।२४।

अविषह्य (वि०) [न० ब०] 1. जिसका निर्णय करना कठिन हो—सीमायामविषह्यायाम्—मनु० ८।२६५ 2. जो सहा न जा सके—अविषह्यव्यसनेन धूमिताम्—कि० ४।३० 3. जहाँ पर पहुँचना कठिन हो—चक्षुषामविषह्यम् महा० १४।२०।१३।

अविसंवादः [न० त०] विरोध न प्रकट करना, अपनी प्रतिज्ञा का उल्लंघन करना।

अविहस्त (वि०) [न० ब०] अनुद्विग्न, साहसी अथ भृशमविहस्तस्तत्र कान्तारगर्भे—शिव० ३६।

अविहा (अ०) हन्त ! अहो !।

अविहित (वि०) [न+वि+धा+क्त] जो नियत न किया गया हो, जिसका विधान न किया गया हो।

अवी (स्त्री०) [अवत्यात्मानं लज्जया अव्+ई] रजस्वला स्त्री—उणादि० ३।१५८।

अवीचिसंशोषणः [अवीचि+सम्+शुष्+णिच्+ल्युट्] समाधि का विशेष प्रकार।

अवृष्टिसंरम्भ (वि०) [न० ब०] बारिश के तैयारी किये बिना आरम्भ करने वाला—अवृष्टिसंरम्भमिवाम्बुवाहम्—कु०।

अवेक्षमाण (वि०) [अव+ईक्ष्+शानच्] सध्यान देखने वाला—अवेक्षमाणश्च महीं सर्वांतामन्ववैक्षत—रा० ५।

अवेदविद् (नि०) [अवेद+विद्+क्विप्] वेदों को न जानने वाला।

अवेदविहित (वि०) [अवेद+वि+धा+क्त] जिसका वेद में विधान न हो।

अवेदना [न+विद्+युच्] पीड़ा का अभाव।

अवैयात्यम् (नपुं०) लजाना, लज्जा का भावना रखना।

अवैशेषिक (वि०) [न+विशेष+ठक्] जो किसी विशेष परिणाम को दर्शाने वाला न हो, जिसका कोई फल न निकले—अवैशेषिकोऽयं हेतुः—मी० सू० ११।१।१ पर शा० भा०।

अव्यङ्ग्य (वि०) [न० ब०] 1. निरपराध 2. जिसमें ध्वनि या व्यञ्जना का अभाव हो (काव्य में)।

अव्यतिरेकः [न० त०] अपार्थक्य, निरपवाद, (वि०) [न० ब०] जो भूलने वाला न हो, जो कोई त्रुटि न करे।

अव्यपदेश्य (वि०) [अव्यपदिश्+ण्यत्] जिसकी परिभाषा न की जा सके।

अव्यपोह्य (वि०) [अव्यप]+वह+ण्यत्] जिसको झुठलाया न जा सके, जिससे इंकार न किया जा सके।

अव्ययम् [न० त०] कुशलक्षेम, हित, कल्याण—युधिष्ठिरमथापृच्छत्सर्वांश्च सुहृदोऽव्ययम्—भाग० १०।८३।१।

अव्यवच्छिन्न (वि०) [अव्यव+छिद्+क्त] न टूटा हुआ, जिसमें कोई विघ्न न पड़ा हो, निर्बाध।

अव्यवसायः [अव्यव+सो+घञ्] निर्णायक शक्ति या संकल्प का अभाव।

अव्यवसायिन् (वि०) [अव्यवसाय+णिनि] आलसी, जो निर्णायक बुद्धि से रहित हैं : बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्—भग० २।४१।

अव्यविकन्यायः (पुं०) तु० 'अविरविकन्यायः', यद्यपि 'अवि' का ही 'अविक' बनता है, परन्तु 'अविक' से 'अविकं' (बकरी का मांस) जैसा कोई दूसरा शब्द 'अवि' से नहीं बनता।

अव्याक्षेपः [न+वि+आ+क्षिप्+घञ्] अनियमितता या आरम्भिक कठिनाई का अभाव—अव्याक्षेपो भविष्यन्त्याः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम्—रघु० १०।६।

अव्याजकरुणा (स्त्री०) निष्कपट दया, स्वाभाविक सहानुभूति अव्याजकरुणामूर्तिः ललि०।

अव्याहृतम् (नपुं०) [अव्या+हृ+क्त] चुप रहना, न बोलना—अव्याहृतं व्याहृताच्छ्रेय आहुः—महा० ५।३६।१२।

अशितम् (नपुं०) [अश्+क्त] 1. जो खाया जाय, खाद्य—प्राहुरन्नभक्षणं विप्राह्यशितं नाशितं च तत्—भाग० ९।४।४० 2. वह स्थान जहाँ पर कोई खाया जाता है—अधिकरणवाचिनश्च—पा० २।३।६८।

अशकुनः,—नम् [न० त०] अशुभ शकुन, बुरा शकुन—कलयन्नपि सव्यथोऽवतस्थेऽशकुनेन स्खलितः किलेतरोऽपि—शि० ९।८३।

अशठ (वि०) [न+शठ्+अच्] जो ढीठ न हो, आज्ञाकारी—अजिह्मस्याशठस्य च दासवर्गस्य भागधेयम्—मनु० ३।२४६, इदं ते नातपस्काय नाशठाय—भग०।

अशब्दार्थः (अशब्द+अर्थः) 1. शब्द द्वारा अनभिप्रेत अर्थ 2. वह अर्थ जो प्रत्यक्ष रूप से वाक्य से प्रतीत (अभिहित) न होता हो—अशब्दार्थोऽपि हि प्रतीयते—मै० सं० ४।१।१४ पर शा० भा०।

अशाब्द (वि०) [न+शब्द+अण्] जो शब्दों से प्रतीत न होता हो—मै० सं० ५।१।५।

अशिथिल (वि०) [न० ब०] 1. जो ढीला न हो, कसा हुआ 2. प्रभावशाली।

अशिशिर (वि०) [न० ब०] गर्म। सम०—करः,—किरणः,—रश्मिः सूर्य—नीतोच्छ्रायं मुहुरशिशिररश्मेरुस्रैः—कि० ५।३१।

अशीतल (वि०) [न० ब०] गर्म—दधत्युरोजद्वयमुर्वशीतलम्—शि० ९।८६।

अशीतिद्वयम् (नपुं०) बयासी प्रश्न जो कृष्णयजुर्वेद के सात काण्डों में विभक्त है।

अशुभशंसनम् [अशुभ+शंस्+ल्युट्] बुरा समाचार देना।

अशुभोदयः (अशुभ+उदयः) [अशुभ+उद्+इ+अच्] अशुभ सूचक शकुन।

अशूकजा (स्त्री०) एक प्रकार का चावल।

अशोकज (वि०) जो दुःख या शोक से पैदा न हुआ हो, हर्ष या खुशी से उत्पन्न—अशोकजैः अश्रुबिन्दुभिः—रा० ६।१२५।४२।

अशोभनम् [न+शुभ्+ल्युट्] अपराध, त्रुटि, दोष—रामेण यदि ते पापे किञ्चित्कृतमशोभनम्—रा० २।३८।७।

अश्मवर्षः [ष० त०] 1. ओले पड़ना 2. (शत्रु पर) पत्थर फेंकना।

अश्यानम् [न+श्यै+क्त] अगुरु का एक प्रकार जो जमा हुआ न हो—कौ० अ० २।११।

अश्री [न० त०] दुर्भाग्य, बुरी क़िस्मत।

अश्रीकरम् (नपुं०) [अश्री+कृ+अच्] अशुभ।

अश्वः [अश्नुते अध्वानं व्याप्नोति—महाशनो वा भवति—अश्+क्वन्] घोड़ा। सम०—घासकायस्थः (पुं०) घोड़ों के लिए घास का संभरण करने वाला संविदाकार,—चर्या घोड़े की देख-रेख करने वाला—तस्याश्वचर्यां काकुत्स्थ दृढधन्वा महारथः (अंशुमानकरोत्)—रा० १।३९।६७,—जीवनः

चना,—मन्दुरा अस्तबल, रिपुः भैंसा—भा० प्र०, —सधर्मन् घोड़ों की भांति आचरण करने वाला अश्वसधर्माणो हि मनुष्याः—कौ० अ० २।९, सूत्रम् 'घोड़ों को पालने' के विषय पर एक पुस्तक।

अश्वतरीरथः [रम्यतेऽनेन - रम्+कथन्] खच्चरी द्वारा खींचा जाने वाला रथ।

अश्वत्थः [न श्वः तिष्ठति इति अश्व+स्था+क]पीपल का पेड़। सम०—नारायणः भगवान् विष्णु जिनकी पीपल के वृक्ष के रूप में पूजा की जाती है,—पूजा 'सभी देवता पीपल में रहते हैं' ऐसा समझ उसकी पूजा करना—मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे, अग्रतः शिवरूपाय वृक्षराजाय ते नमः, - प्रदक्षिणम् धार्मिक संस्क्रिया के रूप में पीपल की परिक्रमा करना।

अषडक्ष (वि०) [न+षट्+अक्षि] दे० 'अषडक्षीण'। 'ईन' प्रत्यय स्वार्थ को ही प्रकट करता है। अतः 'अषडक्ष' और 'अषडक्षीण' दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है।

अषडक्षीण (वि०) [न+षट्+अक्षि+ईन] जो छः आँखों से न देखा गया, अर्थात् केवल दो ही व्यक्तियों के द्वारा निर्धारित तथा उन दो को ही ज्ञात (जिसमें तीसरा व्यक्ति सम्मिलित न हो),—णम् (नपुं०) रहस्य, गुप्त बात।

अष्टन् (वि०) [अश् व्याप्तौ कनिन् तुट् च] आठ, (समस्त शब्दों में 'अष्टन्' के न का लोप हो जाता है)। सम० अङ्गम् (अष्टांग) 1. आयुर्वेद पद्धति जिसमें निम्नांकित आठ अंग होते हैं—द्रव्याभिधान, गदनिश्चय, कायसौख्य, शल्यकर्म, भूतनिग्रह, विषनिग्रह, बालवैद्य और रसायन 2. बुद्धि की आठ क्रियायें—शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारणा, चिन्तन, ऊहापोह, अर्थविज्ञान और तत्त्वज्ञान 3. योगाभ्यास के आठ अंग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि,—अधिकाराः सामाजिक व्यवस्था में शक्ति की आठ स्थितियाँ—जल, स्थल, ग्राम, कुल, लेखन, ब्रह्मासन, दण्डविनियोग और पौरोहित्य, अध्यायी (अष्टाध्यायी) 1. पाणिनि का व्याकरण 2. शतपथ ब्राह्मण, अन्नानि भोजन के आठ प्रकार—भोज्य, पेय, चोष्य, लेह्य, खाद्य, चर्व्य, निपेय, और भक्ष्य,—आपाद्य (वि०) आठगुणा अष्टापाद्यं तु शूद्रस्य स्तेये भवति किल्बिषम् मनु० ८।३३७,—उपद्वीपानि छोटे-छोटे आठ द्वीप—स्वर्णप्रस्थ, चन्द्रशुक्ल, आवर्तन, रमणक, मन्दरहरिण, पाञ्चजन्य, सिंहल और लङ्का,—कुलाचलाः आठ मुख्य पर्वत—नील, निषध, माल्यवत्, मलय, विन्ध्य, गन्धमादन, हेमकूट और हिमालय, मर्यादागिरयः आठ मुख्य पहाड़, दे० ऊपर,—गन्धाः मन्दिरों में प्रस्तर मूर्ति की स्थापना के लिए लेई या गारा बनाने में प्रयुक्त आठ सुगन्धित द्रव्य—चन्दन, अगरु, देवदारु, कोलिजन, कुसुम, शैलज, जटामांसी और गोरोचन, तालम् मूर्तिकला में प्रयुक्त होने वाला गज जिसकी लम्बाई उस मूर्ति के समान होती है जो अपने मुख से आठ गुणा होती है,—देहाः स्थूल और सूक्ष्म शरीर जो गिनती में आठ होते हैं स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण, विराट्, हिरण्य, अव्याकृत और मूलप्रकृति, —नागाः 1. आठ साँप—अनन्त, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, शंख, कुलिक, पद्म और महापद्म 2. आठ दिग्गज—ऐरावत, पुंडरीक, वामन, कुमुद, अंजन पुष्पदंत, सार्वभौम और सुप्रतीक, पक्ष (वि०) (ऐसा कमरा या घर जिसमें) एक ही ओर आठ स्तम्भ लगे हुए हों, प्रकृतयः पाँच महाभूत (अग्नि जल, पृथ्वी, आकाश, वायु), मन, बुद्धि और अहंकार, —प्रधानाः राज्य के आठ प्रधान अधिकारी—वैद्य, उपाध्याय, सचिव, मन्त्री, प्रतिनिधि, राजाध्यक्ष, प्रधान और अमात्य,—भैरवाः शिव के आठ गण —असिताङ्ग, संहार, रुरु, काल, क्रोध, ताम्रचूड, चन्द्रचूड, और महाभैरव, भोगाः सुखमय जीवन के आठ तत्त्व,—अन्न, उदक, ताम्बूल, पुष्प, चन्दन, वसन, शय्या और अलंकार,—मङ्गलघृतम् आयुर्वेद की आठ औषधियाँ मिला कर तैयार हुआ घी —प्रश्नः ज्योतिष में प्रश्न विचार प्रणाली के लिए अपनाया गया एक ढंग,—मधु आठ प्रकार का शहद-माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, पौतिक, छात्रक, अर्घ्य, औदाल और दाल, महारसाः आयुर्वेद पद्धति के आठ रस —वैक्रान्तमणि, हिंगुल, पारा, हलाहल, कान्तलोह, अभ्रक, स्वर्णमाक्षी और रौप्यमाक्षी, रोगाः आयुर्वेद में वर्णित आठ प्रधान रोग—वातव्याधि, अश्मरी, कुष्ठ, मेह, उदक, भगन्दर, अर्श और संग्रहणी, —मातृकाः पराशक्ति के आठ अवतार—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, कौबेरी और चामुण्डा, मूर्तयः आठ प्रकार की मूर्तियाँ—शैली, दारुमयी, लौही, लेप्या, लेख्या, सैकती, मनोमयी और मणिमयी, योगिन्यः आठ योगिनियाँ जो पार्वती की सहेलियाँ थीं—मङ्गला, पिङ्गला, धन्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और सङ्कटा, वर्गः एक प्रकार का रेखाचित्र जो किसी विशेष समय पर ग्रहों की यथार्थ स्थिति दर्शाता है,—सिद्धयः दे० अष्टमहासिद्धयः—अणिमा, महिमा, लघिमा प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशिता, वशिता और प्राकाम्य।

अष्टमराशिः [प० त०] किसी व्यक्ति के नक्षत्र की राशि से आठवीं राशि जो प्रायः अशुभ मानी जाती है।

अष्टागव (वि०) [ब० स०] (गाड़ी) जिसमें आठ बैल

जुते हों, --अष्टतः कपाले हविषि, गवि च युक्ते—पा० ६।३।४६ वा०।

अष्टागवम् [अष्टानां गवां समाहारः] आठ गौवों का समूह।

अष्टादश (वि०) [अष्ट च दश च] अठारह। सम० —तत्त्वानि अठारह प्रधान तत्त्व जिनमें महत्, अहङ्कार, मन, पञ्च तन्मात्रा, पञ्च कर्मेन्द्रियाँ तथा पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ गिनी जाती हैं, —धान्यम् अठारह प्रकार का अन्न है—यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्गुकुलत्थकाः, माषा मुद्गा मसूराश्च निष्पावाः श्यामसर्षपाः। गवेधुकाशनीवारा आढक्योऽथ सतीनकाः, चणकाश्चीनकाश्चैव धान्यान्यष्टादशैव तु, —पर्वाणि महाभारत के अठारह खण्ड - आदि, सभा, वन, विराट्, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासि, मौसल, महाप्रस्थानक और स्वर्गारोहण।

अस् (दिवा० पर०) युद्ध करना - युयोध बलिरिन्द्रेण तारकेण गुहोऽस्यत—भाग० ८।१०।२८।

अस्तः [अस्—आधारे क्त, अस्यन्ते सूर्य किरणा यत्र] 1. छिपना, पश्चिमाद्रि 2. सूर्य का छिपना। सम० —निमग्न (वि०) अस्ताचल के पीछे छिपा हुआ —बिम्बमध्यस्तनिमग्नसूर्यम्—रघु० १६।११, —मस्तकः —शिखरः, अस्ताचल की चोटी, —समयः सूर्य छिपने का समय, मृत्यु का समय—करजालमस्तसमयेऽपि सताम्—शि० ९।५।

अस्तिक्षीर (वि०) [अस्ति क्षीरं यस्य—पा० २।२।२४ वा०] जिसके पास दूध हो, दूध रखने वाला।

असङ्क्रान्तः [न+सम्+क्रम्+क्त] अधिमास, मलमास, लौंद का महीना।

असंयाज्य (वि०) [न+सं+यज्+ण्यत्] जिसके साथ मिलकर किसी को यज्ञ करने की अनुमति न हो —मनु०।

असंयोगः [न+सम्+युज्+घञ्] 1. संबंध का अभाव 2. जो संयुक्त व्यञ्जन न हो—पा० १।२।५।

असंरम्भः [न+सम्+रम्भ्+घञ्] निर्भयता, निडरता —महा० १४।३८।२।

असंरोधः [न+सम्+रुध+घञ्] अनाघात।

असंवर (वि०) [न० ब०] जो रोका न जा सके, दुर्निवार —असंवरे शंबरवैरिविक्रमे—नै० १।५३।

असंहार्य (वि०) [न+सम्+हृ+ण्यत्] 1. अजेय, जिसका मुकाबला न किया जा सके - विधिर्नूनमसंहार्यः प्राणिनां प्लवगोत्तम रा० ५।३७।४ 2. जिसे मार्गभ्रष्ट न किया जा सके।

असकृत्कथनम् [असकृत्+कथ्+ल्युट्] आवृत्ति, दोहराना।

असकृद्भवः [असकृत्+भू+अप्] दांत बृ० सं०।

असकौ (असौ) [अदस्+सु, पा० ५।३।७१, कादेशः] 1. यह या वह 2. यह दुष्ट—भार्योढं तमवज्ञाय तस्यै सौमित्रयेऽसकौ—भट्टि० ४।१५।

असक्तिः (स्त्री०) [न+सञ्ज्+क्तिन्] सामान्य सांसारिक बातों की ओर मन का लगाव न होना— असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु —भग० १३।९।

असङ्करः [न+सम्+कृ+अप्] मिलावट (विशेषकर जातियों में) का अनुभव।

असङ्कल्पित (वि०) [न+सम्+कल्प्+क्त] जो कभी कल्पना न किया हो असङ्कल्पितमेवेह यदकस्मात् प्रवर्तते - रा० २।२२।२४।

असङ्गत (वि०)[न+सम्+गम्+क्त] निर्बाध, अनवरुद्ध —शक्तिं क्षिप्तामसङ्गताम्—रा० ६।७०।१३४।

असदाश्रयः [असत्+आ+श्रि+अच्] अयोग्य व्यक्ति से सम्मिलन।

असद्वस्तु (नपुं०) [क० स०] अविद्यमान चीज़।

असद्वादिन् (वि०) [असत्+वाद+णिनि] जो व्यक्ति किसी वस्तु या बात की असत्ता को स्थापित करना चाहता है।

असन्तुष्ट (वि०) [न+सम्+तुष्+क्त] अतृप्त, अप्रसन्न —असन्तुष्टो द्विजो नष्टः—नीति०।

असन्तोषः [न+सम्+तुष्+घञ्] अतृप्ति, अप्रसन्नता।

असन्धानम् [न+सम्+धा+ल्युट्]1. निरुद्देश्यता 2. विलगता, पार्थक्य।

असमभागः [क० स०] जो समान रूप से नहीं बाँटा हुआ है।

असमायुक्त (वि०) [नञ्+सम्+आ+युज्+क्त] जो भलीभांति प्रशिक्षित न किया गया हो।

असमिध्य (अ०) [न+सम्+इध्+ल्यप्] न जला कर।

असमीचीन (वि०) [न+सम्+अञ्च्+क्विन्+ख] जो सही न हो, त्रुटिपूर्ण।

असमृद्धिः (स्त्री०) [न+सम्+ऋध्+क्ति] सफलता का अभाव, किसी भी वस्तु की कमी होना— नात्मानमवमन्येत पूर्वाभिरसमृद्धिभिः—मनु० ४।१३७।

असमेत (वि०) [न+सम्+आ+इ+क्त] जो अभी पहुँचा न हो, अनागत, अनुपस्थित—क्वचिदसमेतपरिच्छदः—मनु०— ९।७०।

असम्पात (वि०) [न० ब०]अनुपस्थित, जो निकट न हो।

असम्पातः[न+सम्+पत्+घञ्]निष्क्रियता, निठल्लापन, कार्य का रुक जाना—असम्पातं करिष्यामि ह्यद्य त्रैलोक्यचारिणाम्—रा० ३।६४।५९।

असम्बद्धार्यव्यवधान (वि०) जिसने असंगत बात को बीच में आकर रोक दिया है—तस्मान्नासम्बद्धार्यव्यवधानैकवाक्यता—मी० सू० ३।१।२१ पर शा० भा०।

असम्बोधः [न+सम्+बुध्+घञ्] समझ का अभाव।

असम्भवत् (वि०)[न+सम्+भू+शतृ] असंभाव्य, अघटनीय।

असम्भावना [न+सम्+भू+णिच्+युच्+टाप्] सम्मान का अभाव।

असम्भावित (वि०) [न+सम्+भू+णिच्+क्त] अयोग्य। सम०—उपमा ऐसी समानता बतलाना जो असंभव हो।

असम्भाष्य (वि०) [न+सम्+भाष्+ण्यत्] जिससे बात करना उचित न हो।

असम्भोज्य (वि०) [न+सम्+भुज्+णिच्+ण्यत्] जो सहभोज में सम्मिलित होने के योग्य न हो—मनु० ९।२३८।

असम्मोहः [न+सम्+मुह्+घञ्] 1. माया या भ्रम से मुक्ति 2. आत्मसंवरण 3. सत्य ज्ञान।

असम्यञ्च् प्रयोगः [असम्यञ्च्+प्र+युज्+घञ्] अशुद्ध व्यवहार, ग़लत परिपाटी।

असव्य (वि०) [न० त०] दक्षिण पार्श्व।

असान्निध्यम् [न+सन्निधि+ष्यञ्] असामीप्य, अनुपस्थिति—असान्निध्यं कथं कृष्ण तवासीद्वृष्णिनन्दन—महा० ३।१४।१।

असामञ्जस्यम् [न+समञ्जस+ष्यञ्] 1. अशुद्धि 2. अनौचित्य।

साम्प्रतिकता (स्त्री०)[न+संप्रति+ठक्+ता] अनुचित व्यवहार करने की अवस्था।

असांप्रदायिक (वि०) [न+सम्प्रदाय+ठक्] जो लोकसम्मत न हो, जो परम्परा के विरुद्ध हो।

असावधान (वि०) [न+सह्+अव+धा+ल्युट्] उपेक्षा करने वाला, प्रमादी, लापरवाह।

असाहसिक (वि०) [न+साहस+ठक्] जो साहस के साथ काम न कर सके या जो बिना विचारे न करे—न सहास्मि साहसमसाहसिकी—शि० ९।५९।

असिचर्या [असि+चर्य+टाप्] शस्त्रास्त्र चलाने का अभ्यास।

असिलता (स्त्री०) तलवार का फल—ददृशुरुल्लसितासिलतासिताः—शि० ६।५१।।

असिहस्तः [न० ब०] जो दाहिने हाथ के तलवार से वार करता हो—महा० ६।९०।४ पर नील०।

असिताञ्जनी (स्त्री०) काली कपास का पौधा।

असिद्ध (वि०) [न+सिध्+क्त] (व्या० में) अक्रियात्मक प्रतिरक्षा अर्थात् रद्द, प्रभावशून्य—पूर्वत्रासिद्धम्—पा० ८।२।१।

असिद्धान्तः [न० त०] ग़लत नियम, त्रुटिपूर्ण राद्धान्त।

असिद्धार्थ (वि०) [न० ब०] जिसने अपने उद्देश्य में सफलता न पाई हो।

असुतृप् (वि०) [असु+तृप्+क्विप्] जो अपने ही सुखोपभोग में मस्त हो, सांसारिक विषय वासनाओं में मग्न—घ्नन्ति ह्यसुतृपो लुब्धाः—भाग० १०।१।६७।

असुगन्ध (वि०) [न० ब०] जिसमें खुशबू न आती हो।

असुतर (वि०) [न० त०] जो आसानी से पार न किया जाय, जिसमें अनायास साफल्य प्राप्त न हो।

असुन्दर (वि०) [न० त०] जो खूबसूरत न हो।

असुरः [असु+र, असुरताः स्थानेषु न सुष्ठुरताः, चपला इत्यर्थः] राक्षस। सम०—असृक् राक्षसों का रुधिर—असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते—दे० मा० ११,—गुरुः 1. शुक्राचार्य 2. शुक्र नाम का ग्रह,—द्रुह्, राक्षसों का शत्रु अर्थात् देव—पुरः क्लिश्नाति सोमं हि सैंहिकेयोऽसुरद्रुहाम्—शि० २।३५।

असुषिर (वि०) [न+शुष्+किरच्, शस्य सः] जिसमें कोई छिद्र न हो, जो दोषी या कपटी न हो।

असूतजरती [असूत+जरती पा० ६।२।४२] वह स्त्री जो बिना किसी बच्चे को जन्म दिये ही बूढ़ी हो गई है।

असूर्त (वि०) [न० ब०] 1. अन्धकारयुक्त 2. अज्ञात, दूरवर्ती। सम०—रजसः वे लोग जो सर्वथा अलग-अलग रहते हैं—असूर्तरजसो नाम धर्मारण्यं महामतिः—रा० १।३२।७।

असृज् (नपुं०) [न+सृज्+क्विन्] 1. रुधिर 2. मंगलग्रह 3. जाफ़रान। सम०—ग्रहः मंगलग्रह,—दिग्ध (वि०) खून से लथपथ।

असेवा [न० त०] अभ्यास का अभाव—न तथैतानि शक्यन्ते सन्नियन्तुमसेवया—मनु० २।९६।

अस्तब्ध (वि०) [न० त०] 1. चुस्त 2. जो घमंडी न हो, हठी न हो—महा० ५।१२।

अस्तोक (वि०) [न० त०] जो थोड़ा न हो, बहुत अधिक।

अस्तोभ (वि०) [न+स्तुभ्+घञ्] बिना किसी अवांछित शब्द के—अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः, बिना किसी रोक टोक के।

अस्त्रम् [अस्यते क्षिप्यते-अस्+ष्ट्रन्] 1. फेंक कर मार करने वाला हथियार 2. तीर, तलवार 3. धनुष। सम०—पातिन् (वि०) गोली मारने वाला—अस्त्रपातिभिरावृतम्—शुक्र० ४।१०३७,—भृत् जो तीर ले जाता है, तीर धारण करने वाला,—यन्त्रम् धनुष, एक प्रकार का संयन्त्र जिसके द्वारा तीरों की मार की जाय—महा० ९।५७।१८।

अस्थानम् [न+त०] असाधारण स्थान या प्रदेश—अस्थानेवोपगतयमुनासङ्गमेवाभिरामा—मेघ०।

अस्थास्नु (वि०) [न+स्था+स्नु] चंचल, अधीर।

अस्थि (नपुं०) [अस्+क्थिन्] 1. हड्डी 2. गुठली, या किसी फल की गिरी। सम०—कुण्डम् एक नरक का नाम,—बन्धनम् स्नायु, कंडरा,—भेदिन् (वि०) जो हड्डी को बींध दे, अत्यन्त कठोर—वाचस्तीक्ष्णाति-

भदिनः—महा० ३।३१२।३,—यज्ञः औध्वंदेहिक क्रिया का एक भाग,—विलयः किसी पवित्र नदी में किसी मृतक की अस्थियों को प्रवाहित करना,—सारः, स्नेहः वसा, मज्जा ।

अस्नात (वि०) [न० त०] जिसने स्नान न किया हो ।

अस्पृष्ट (वि०) [न+स्पृश्+क्त] जो (किसी कथन से) आवृत न हो, (उसके) अंतर्गत न हो - अस्पृष्टपुरुषान्तरं (शब्दम्)—कु० ६।७५ ।

अस्पृष्टमैथुना (वि०) [न० ब०] कुमारी, अक्षतयोनि ।

अस्पृह (वि०) [न० ब०] निरीह, निरिच्छ, जिसे इच्छा न हो ।

अस्फुट (वि०) [न० त०] जो पूर्ण विकसित न हो—अस्फुटावयवभेदसुन्दरम्—नारा० ।

अस्मिमानः [त० स०] स्वाभिमान, अहंकार ।

अस्मृत (वि०) [न० त०] 1. याद न किया हुआ 2. जिसका प्रामाणिक ग्रन्थों में उल्लेख न हो ।

अस्वाधीन (वि०) [न० त०] जो स्वतन्त्र न हो अस्वाधीनं नराधिपं वर्जयन्ति नरा दूरात्—रा० ३।३३।५ ।

अस्विन्न (वि०) [न० त०] जिसे भली भांति उबाला न गया हो ।

अस्वेद्य (वि०) [न+स्विद्+ण्यत्] जिसे पसीना लाने के उपयुक्त न समझा जाय ।

अहृत (वि०+हन्+क्त] जो बजाया न गया हो—अहतायां प्रयाणभेर्याम्—का० ।

अहम् (सर्व०) [अस्मद् का कर्तृकारक एक वचन] मैं । सम० —युस् (पुं०) अहंकारी, जो केवल, अपना ही चिन्तन करे,—स्तम्भः अहङ्कार, घमंड ।

अहिचक्रम् [प० त०] तान्त्रिकों का एक आरेख ।

अहिविषापहा (स्त्री०) [अहिविष+अप+हा+अङ+टाप्] एक पौधे का नाम जिसके सेवन से विष दूर हो जाता है ।

अहोलाभकर (वि०) [अल्पेऽपि, अहोलाभो जात इति विस्मयं कुर्वाणः] थोड़े लाभ से ही संतुष्ट होने वाला व्यक्ति ।

आ

आंहस्पत्य (वि०) [अंहस्पति+यञ्] मलमास संबंधी ।

आकण्ठम् (अव्य०) गले तक । सम०—तृप्त (वि०) स्वादिष्ट भोजनों से गले तक छिका हुआ ।

आकलना [आ+कल्+युच्+टाप्] गिनना, समझ, अनुमान, मूल्य आंकना ।

आकल्पम्, **आकल्पान्तम्** } (अ०) चार युगों के चक्र की अवधि तक, जब तक संसार है तब तक ।

आकाङ्क्षा [आ+काङ्क्ष्+अच्+टाप्] अपेक्षा, आशा —असत्यामाकाङ्क्षायां सन्निधानमकारणम्—मै० सं० ६।४।२३ पर शा० भा० ।

आकाशः,—शम् [आकाशन्ते सूर्यादयोऽत्र—आकाश्+घञ्] 1. आस्मान 2. अन्तरिक्ष 3. मुक्त स्थान । सम० —पथिकः सूर्य, बद्धदृष्टिः,—बद्धलक्ष, जो बिना उद्देश्य से इधर-उधर देखता है, —मुखिनः (ब० व०) शैव सम्प्रदाय के लोग, जो अपना मुंह आकाश की ओर रखते हैं,—मुष्टिहननम् मूर्खता का कार्य जैसे आकाश की ओर घूंसा उठाना, व्यर्थ कार्य,—शयनम् खुली हवा में सोना ।

आकुञ्चनम् [आ+कुञ्च्+ल्युट्] एक प्रकार का युद्ध-कौशल—शुक्र० ४।११०० ।

आकूतम् [आ+कू+क्त] (प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त) प्रस्तुतीकरण—तु० धर्माकूतम् ।

आकूतिः (स्त्री०) [आ+कू+क्तिन्] शतरूपा और मनु की एक कन्या का नाम ।

आकूपारम् (नपुं०) कुछ साम-मन्त्रों के नाम ।

आकरकर्म (नपुं०) [ष० त०] खनिकार्य—कौ० अ० २ ।

आकरग्रन्थः [ष० त०] मूलग्रन्थ, आदिग्रन्थ ।

आकरजम् [ष० त०] रत्न, जड़ाऊ गहना ।

आकारवर्ण (वि०) [न० ब०] रंग और आकार में कमनीय ।

आकृत (वि०) [आ+कृ+क्त] निर्मित, बना हुआ —यद्वा समुद्रे अध्याकृते गृहे —ऋ० ८।१०।१ ।

आकृतिः (स्त्री०) [आ+कृ+क्तिन्] 1. छन्द 2. (गणित) बाईस की संख्या ।

आकृतियोगः [ष० त०] नक्षत्रपुंज ।

आकर्षः [आ+कृष्+घञ्] 1. धनुष आकर्षः शारिफलके द्यूतेऽक्षे कार्मुकेऽपि च —हेम० 2. विषाक्त पौधा —महा० ५।४०।९ ।

आकृष्ट (वि०) [आ+कृष्+क्त] खींचा हुआ, आकर्षित किया हुआ, ऐंचा हुआ ।

आकोपः [आ+कुप्+घञ्] चिड़चिड़ापन, मृदुक्रोध ।

आकौशलम् (नपुं०) [आ+कुशल+अण्] विशेषता का अभाव, नैपुण्य की कमी विवरीतुमयात्मनो गुणान् भृशमाकौशलमार्यचेतसाम्—शि० १६।३० ।

आक्रमः [आ+क्रम्+घञ्] पौड़ी, सीढ़ी का डंडा —केनाक्रमेण यजमानः स्वर्गं लोकमाक्रमते — बृ० ३।१।६ ।

आक्रान्त (वि०) [आ+क्रम्+क्त] 1. अलंकृत, सजा हुआ,—न खलु नरके हाराक्रान्तं घनस्तनमण्डलम् —भर्तृ० ३।६७ 2. आरूढ, चढ़ा हुआ—निर्यंयुस्तुरगाक्रान्ता रा० ६।१२७।१३। सम०—**मति** (वि०) मन से पराजित, अत्यन्त प्रभावित।

आक्रान्तिः (स्त्री०) [आ+क्रम्+क्तिन्] आक्रमण, लूटखसोंट यो भूतानि घनाक्रान्त्या बधात्क्लेशाच्च रक्षति—महा० १२।९७।८।

आक्रीडगिरिः, (**पर्वतः**) [त० स०] आमोद गिरि, आमोद प्रमोद के लिए पहाड़—आक्रीडपर्वतास्तेन कल्पिताः स्वेषु वेश्मसु—कु० २।४३।

आक्लिन्न (वि०) [आ+क्लिद्+क्त] 1. स्विन्न 2. दया से पसीजा हुआ।

आक्षपटलिकः [त० स०] 1. पुरातत्त्व और अभिलेखाधिकारी 2. लेखाधिकारी कौ० अ० २।

आक्षरः [अक्षर+अण्] वर्णमाला संबंधी।

आक्षिप्त [आ+क्षिप्+क्त] प्रक्षिप्त, ठूँसा हुआ।

आक्षेपः [आ+क्षिप्+घञ्] परास, (तीर की) पहुँच —सोऽयं प्राप्तस्तवाक्षेपम्—महा० ७।१०२।६। सम० —**रूपकम्** उपमा अलंकार का वह रूप जिसमें केवल उपमान ही संकेतित हो।

आखण्डलः [आखण्डयति भेदयति पर्वतान्—खण्ड्+डलच्] इन्द्र। सम०—**चापः,**—**धनुः** इन्द्रधनुष, —**सूनुः** इन्द्र का पुत्र अर्थात् अर्जुन—अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः —कि० १।२४।

आखण्डिशाला [ष० त०] दस्तकार या शिल्पी का कारखाना।

आखुवाहनः [ष० त०] गणेश का नाम।

आखेटोपवनम् [त० स०] शिकार या मृगया के लिए राजकीय जंगल।

आख्या (स्त्री) [आख्यायतेऽनया, आ+ख्या+अङ्+टाप्] 1. सूरत, शकल—न हि तस्य विकल्पाख्या या च मद्वीक्षया हता—भाग० ११।१८।३७ 2. सौन्दर्य, मनोज्ञता—वृसीषु रुचिराख्यासु—रा० ७।६०।१२।

आख्यात (वि०) [आ+ख्या+क्त] पुकारा गया,—सेवा श्ववृत्तिराख्याता – मनु० ४।६।

आख्यातम् [आ+ख्या+क्त] आरम्भ करने का शुभ शकुन।

आगतत्वम् (नपुं०) [आगत+त्व] उद्गम, मूल, जन्मस्थान।

आगतसाध्वस (वि०) [न० ब०] डरा हुआ, भीत।

आगमः [आ०+गम्+घञ्] 1. जो बाद में आने वाला है— आगमवन्त्यलोपः स्यात्—मी० सू० १०।५।१ 2. पूजा की एक रीति—लब्धानुग्रह आचार्यात्तेन सन्दर्शितागमः—भाग० ११।३।४८ 3. यात्रा—आगमास्ते शिवास्सन्तु रा० २।२५।२१। सम०—**अपायिन्** (वि०) जिसका स्वभाव उत्पन्न होने और फिर नाश हो जाने का हो, जिसका जन्ममरण होता है—आगमापायिनोऽनित्याः भग० २।२४, —**शास्त्रम्** (नपुं०) 1. 'आगम' से संबंध रखने वाला शास्त्र 2. माण्डूक्य का परिशिष्ट, **श्रुतिः** (स्त्री०) परम्परा।

आगमित (वि०) [आगम्+णिच्+क्त] 1. सीखा हुआ, (किसी से) शिक्षा प्राप्त प्रकृतिस्थमेव निपुणागमितम् शि० ९।७९ 2. पठित, जिसने पढ़ लिया है 3. निश्चय किया हुआ।

आगुल्फम् (नपुं०) जूता—हर्ष०।

अग्निहोत्रिक [अग्निहोत्र+ठक्] अग्निहोत्र से सम्बन्ध रखने वाला।

आग्रयणेष्टिः (स्त्री०) [ष० त०] ऋतु के प्रथम फल की आहुति।

आङ्गिकः [अङ्ग+ठक्] घुटनों से नीचे तक पहुँचने वाला कोट।

आङ्गारिकः [अङ्गार+ठक्] कोयले को जलाने वाला महा० १२।७१।२०।

आङ्गिरस (वि०) [अङ्गिरस्+अण्] विशिष्टता से युक्त वर्ष का नाम आङ्गिरसःत्वब्दभेदे मुनिभेदे तदीरितम् —नाना०।

आचन्द्रतारकम् (अ०) जब तक संसार में चाँद और तारे हैं, अर्थात् सदा के लिए।

आचपराच (वि०) [आ+अञ्च्+क्विन्+परापूर्वक+अण्] इधर उधर घूमने वाला।

आचमनवाहिन् (पुं०) [आचमन+वाह्+णिनि] पानी निकालने वाला, पानी खींच कर निकालने वाला, पनिहारा।

आचान्तिः (स्त्री०) [आ+चम्+क्तिन्] मुखशुद्धि के लिए आचमन करना।

आचरित (वि०) [आचर्+क्त] बसाया हुआ, बसा हुआ —देशमुत्साद्यत्येनमगस्त्याचरितं शुभम् — रा० ११२५। १४।

आचारचक्रिणः [आचार+चक्र+इनि] वैष्णव संप्रदाय के सदस्य।

आचारपुष्पाञ्जलिः (स्त्री०) (प्रवेश करते समय घर के द्वार पर ही) धार्मिक प्रथा के रूप में पुष्पों का उपहार भेंट करना।

आचार्यदेशीय (वि०) [आचार्यदेश+छ] आचार्य से कुछ निम्न पद का (भाष्यकर्ताओं ने इस उपाधि को उन विद्वानों के नामों के साथ जोड़ा है जिनकी उक्ति 'मन्त्र' के एक अंग को ही प्रकट करती है)।

आचार्यसवः [आचार्य+सु+अच्] एकाह—अर्थात् एक दिन तक रहने वाला यज्ञ का नाम।

आचार्यकम् [आचार्य+क] 1. आचार्य का पद—ताण्डवाचार्यकं कुर्वन्निव क्रीडाशिखण्डिनाम्—भा० १।११०६ 2. आचार्य का सम्मान करना चकाराचार्यकं तत्र कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः महा० ७।१४७।६ 3. भाष्यकर्ता या व्याख्याकार का कर्तव्य—श्रुत्यञ्चलाचार्यकम्—विश्व० २८९।

आचेष्टित (वि०) [आ+चेष्ट्+क्त] उपक्रान्त, वचन दिया हुआ, -तम् कार्य, कृत्य, कार्यकलाप।

आच्छन्न (वि०) [आ+छद्+क्त] आवृत, ढका हुआ।

आच्छादनम् [आ+छद्+णिच्+ल्युट्] बिस्तरे की चादर।

आजात (वि०) [आ+जन्+क्त] उच्च कुल में उत्पन्न, यो वै कश्चिदिहाजातः क्षत्रियः क्षत्रकर्मवित्—महा० ५।१३४।३८।

आजानिक (वि०) [आ+जाया (जानि) स्वार्थे कन्] अन्तर्जात, नैसर्गिक आजानिकरागभूमिता—नै० १५।५४, अ० श० ५।

आजपादम् (नपुं०) पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र।

आजिमुखम् [ष० त०] युद्ध का अग्रभाग।

आजीवितान्तम् (अ०) मरने तक, मृत्युपर्यंत।

आज्यग्रहः [ष० त०] घी का कटोरा।

आज्यभागः [ष० त०] घी की आहुति का हिस्सा।

आञ्जनाभ्यञ्जने (नपुं० कर्तृ० द्वि० व०) आँखों का अंजन और पैरों का उबटन।

आञ्जलिकः [अञ्जलि+ठक्] अर्धचन्द्र के आकार का एक तीर।

आटविकः [अटव्यां चरति भवो वा ठक्] जंगली जनजाति का चौधरी—कौ० अ० १।१०।

आढ्यरोगः [आ+ध्यै क पृषो०+रुज्+घञ्] गठिया, सन्धिवात।

आण्डकोशः [अण्ड+अण्+कोशः] अंडे का खोल।

आतङ्कम् [आ+तञ्च्+घञ्, कुत्वम्] भरणी नक्षत्र।

आतप्त (वि०) [आ+तप्+क्त] गर्म किया हुआ, आग में तपाया हुआ।

आतिशायिक (वि०) [अतिशय+ठक्] अतिप्रचुर, बहुत अधिक।

आतिष्ठद्गु (अ०) [तिष्ठन्ति गावः यस्मिन्काले दोहाय] उस समय तक जब तक कि गौएँ दुहे जाने के लिए ठहरती हैं (सायंकाल के बाद एक डेढ़ घंटा तक)—आतिष्ठद्गु जपन् सन्ध्याम् भट्टि० ४।१४।

आत्मन् (पुं०) [अत्+मनिण्] मानसिक गुण—भावशुद्धिर्दया सत्यं संयमश्चात्मसंभवः—महा० १२।१६७।५। (समस्त शब्दों में आत्मन् के 'न्' का लोप हो जाता है)। सम०—**आनन्दः** आत्मा को प्राप्त होने वाला परम सुख, परमानन्द,—**औपम्यम्** स्वसादृश्य, अपनी समानता—आत्मौपम्यन सर्वत्र भग० ६।३२,—**कर्मन्** (नपुं०) अपना कर्तव्य, **ज्योतिः** (नपुं०) आत्मा की प्रभा, तेज **तृप्त** (वि०) अपने में संतुष्ट—आत्मतृप्तश्च मानवः—भग० ३।१७, **प्रत्ययिक** (वि०) अपने अनुभव से जानकारी प्राप्त करने वाला—आत्मप्रत्ययिकं शास्त्रम् · महा० १२।२४६।१३, -**भूः** कामदेव,—**वर्ग्य** (वि०) अपने दल या समुदाय से संबंध रखने वाला, उद्वाहुना जुहुविरे मुहुरात्मवर्ग्यैः—शि० ५।१५, -**संस्थ** (वि०) अपने पर ही दृष्टि जमाये हुए—आत्मसंस्थं मनः कृत्वा—भग० ६।२५, **सतत्त्वम्** दे० आत्मतत्त्वम्,—**स्थ** (वि०) जो अपने अधिकार में हो—आत्मस्थं कुरु शासनम्—रा० २।२११।८।

आत्ययिक (वि०) [अत्यय+ठक्] विलम्बित, जिसमें पहले ही देर हो गई हो—कृत्यमात्ययिकं स्मरन्—रा० ५।५८।४६।

आत्ययिकम् [अत्यय+ठक्] 1. कठिनाई, संकट 2. अनिवार्य कर्तव्य।

आत्रेयी [अत्रेरपत्यं ढक्, स्त्रियां ङीप्] गर्भिणी स्त्री · महा० १२।१६५।५४, आत्रेयीमापन्नगर्भामाहुः—मी० सू० ६। १।७ पर शा० भा०।

आथर्वणम् [अथर्वन्+अण्] जारण मारण टोना, जादू।

आदष्ट (वि०) [आ+दश्+क्त] कुतरा हुआ, चोंच मारा हुआ, ठूंगा हुआ।

आदानम् [आ+दा+ल्युट्] पराभूत करना, पराजित करना—अथवा मन्त्रवद् ब्रूयुरात्मादानाय दुष्कृतम्—महा० १२।२१२।

आदानसमितिः (स्त्री०) जैनियों के पाँच सिद्धान्तों में से एक जिसमें वस्तु को इस प्रकार ग्रहण किया जाता है जिससे कि कोई जीवहत्या न हो।

आदाल्भ्यम् निर्भयता—महा० १२।१२०१५।

आदिः [आ+दा+कि] 1. प्रथम, प्रारम्भिक 2. साम के सात भेदों में से एक—अथ सप्तविधस्य वाचि सप्तविधं सामोपासीत......यदेति स आदिः—छा० २।८।१। सम०—**दीपकम्** दीपकालंकार का एक भेद (जहाँ क्रिया वाक्य के आरम्भ में हो),—**विपुला** आर्या छन्द का एक भेद, **वृक्षः** एक प्रकार का पौधा।

आदित्यदर्शनम् [ष० त०] एक संस्कार जिसमें चार मास के बच्चे को सूर्य दर्शन कराया जाता है।

आदित्यपुराणम् एक उपपुराण का नाम।

आदीनवदर्श (वि०) [आ+दी+क्त+वा+क, दृश्+घञ्] पासे के खेल में अपने साथी खिलाड़ी के प्रति दुर्भावना रखने वाला।

आदेशः [आ+दिश्+घञ्] किसी कार्य को करने का संकल्प, व्रत—उद्धृतं मे स्वयं तोयं व्रतादेशं करिष्यति

—रा० २।२२।२८। सम०—कृत् जो आज्ञा का पालन करता है तवादेशकृतोऽभियान्तु—रा० ५।५२।

आदेशिकः [आदेश+ठक्] भविष्यवक्ता, ज्योतिषी—पुष्प भद्रादिकैरादेशिकैरादिष्टा - स्वप्न० १।

आद्यकालिक (वि०) [आदौ भवः यत्-काल+ठक्] केवल वर्तमान को देखने वाला—आद्यकालिकया बुद्ध्या दूरे श्व इति निर्भयाः—महा० १२।३२१।१४।

आधमर्णिकः [अधम+ऋणिकः] कर्जदार, - मूलात्तु द्विगुणा वृद्धिं गृहीता चाधमर्णिकात् - शुक्र० ४।८८०।

आधानम् [आ+धा+ल्युट्] मैथुन—तवापि मृत्युराधानादकृतप्रज्ञ दर्शितः - भाग० ९।९३६।

आधिः [आ+धा+कि] दण्ड, - एनमाधिं दापयिष्येऽचसमात्तेन भयं क्वचित्—शुक्र० ४।६४१।

आधिमासिक (वि०) [अधिमास+ठक्] अधिमास या मलमास से संबंध रखने वाला—करणाधिष्ठितमाधिमासिकम्—कौ० अ० २।७।

आधिरथिः [अधिरथ+इञ्] अधिरथ का पुत्र, कर्ण—हतं भीष्ममाधिरथिर्विदित्वा—महा० ७।२।१।

आधूत (वि०) [आ+धू+क्त] हिलाया हुआ, क्षुब्ध —पवनाधूतलतासु विभ्रमः—रघु० ६।

आधारः [आ+धृ+घञ्] किरण,—आधारः आलवालेऽम्बुबन्धे च किरणेऽपि च - नाना०। सम०—**चक्रम्** रहस्यमय या अलौकिक चक्र जो शरीर के पश्चवर्ती भाग पर स्थित है—सम्यगाधारचक्रे तरुणमरुणगात्रं वारणास्यं त्रिनेत्रम् - गणेश०।

आनतिकरः [आ+नम्+क्त+कृ+अच्] उपहार, पारितोषिक।

आनद्धः [आ+नह्+क्त] ढोल या थपकी—अमानमानद्धमियत्तयाध्वनीत्—नै० १५।१६।

आनन्दकरः [आनन्द+कृ+अच्] चन्द्रमा,—काष्ठा यथानन्दकरं मनस्तः भाग० १०।२।१८।

आनन्दतीर्थः द्वैतसंप्रदाय का संस्थापक श्री माधवाचार्य।

आनन्दभैरवी संगीत का एक भेद।

आनर्तः,—तम् [आ+नृत्+घञ्] नाच।

आनुजीव्यम् [अनुजीवि+ष्यञ्] सेवक के प्रति नम्रता का व्यवहार— पशुपकुलनिवासादानुजीव्यानभिज्ञः—दूत० १।३९।

आनुपथ्य (वि०) [अनुपथ+ष्यञ्] सड़क के साथ-साथ चलने वाला।

आनुपूर्व्यवत् (वि०) [अनुपूर्व+ष्यञ्,+मतुप्] निश्चित, नियत क्रम को रखने वाला।

अनुयात्रम् [अनुयात्रा+अण्] दे० अनुयात्रिक।

अनुयात्रिकः [अनुयात्रा+ठक्] अनुचर, सेवक।

आनुषङ्गिक (वि०) [अनुषङ्ग+ठक्] 1. गौण कार्य 2. टिकाऊ।

आनृत् (दिवा० पर०) नाचना, उछालना—आनृत्यतः शिखण्डिनो—अथ० ४।३७।७।

आनृशंस्यम् [अनृशंस+ष्यञ् प्ररक्षक की आतुरता—स्त्री प्रपाष्टेति कारुण्यादाश्रितेत्यानृशंस्यतः-रा० ५।१५।५०।

आन्तःपुरिक (वि०) [अन्तःपुर+ठक्] अन्तःपुर से संबंध रखने वाला।

आन्तःपुरी [अन्तःपुरे भवः अण्, स्त्रियां ङीप्] अन्तःपुर की सेविका, नौकरानी—नै० १९।६५ पर नारायण।

आन्तरागारिकः [अन्तरागार+ठक्] कञ्चुकी।

आन्तर्वेदिक (वि०) [अन्तर्वेद+ठञ्] यज्ञवेदी के अन्दर वर्तमान।

आन्यतरेय (वि०) [अन्यतरा+ढक्] किसी अन्य विचारधारा या संप्रदाय से संबंध रखने वाला।

आपच्चिक (वि०) कठिनाइयों को पार करने वाला।

आपणः [आपण्+घञ्] व्यापारिक क्रियाकलाप, वाणिज्य —पिहितापणोदया—रा० २।४८।३७। सम०—**वीथिका** बाजार, - **वेदिका** विक्रयफलक।

आपदेवः वरुण का नाम, एक मीमांसक का नाम।

आपरपक्षीय (वि०) [अपरपक्ष+छ] कृष्णपक्ष से संबन्ध रखने वाला।

आपातमात्र (वि०) क्षणस्थायी, क्षणमात्र रहने वाला।

आपात्य (वि०) आक्रमण की इच्छा से आगे बढ़ता हुआ, (किसी शत्रु पर) टूट पड़ने वाला—आपात्यसैनिकनिराकरणाकुलेन—शि० ५।१५।

आपृष्ट (वि०) [आ पृच्छ्+क्त] 1. सत्कृत 2. पूछा गया—नापृष्टः कस्यचिद्ब्रूयात्।

आपोशानः [प० त०] एक प्रकार के प्रार्थना मंत्र जो भोजन से पूर्व और भोजन के पश्चात् आचमन करते समय बोले जाते हैं नै० १९।२८।

आप्त (वि०) [आप्+क्त] लाभप्रद, उपयोगी—अधिष्ठितं हयज्ञेन सूतेनाप्तोपदेशिना—रा० ६।९०।१०। सम०-**अधीन** (आप्ताधीन) (वि०) विश्वसनीय व्यक्ति पर निर्भर रहने वाला,—**आगमः** (आप्तागमः) विश्वसनीय वैदिक साक्ष्य -परोक्षमाप्तागमात् सिद्धम् - सां० का० ६,—**उक्तिः** (स्त्री०) (आप्तोक्तिः) 1. आगम 2. अनुपंगी 3. सामान्य कथन जो प्रयोगतः मान लिया गया हो,—**उपदेशः** (आप्तोपदेशः) किसी विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा दी गई नसीहत,—**आप्तोर्यामः** एक प्रकार का यज्ञ।

आप्य (वि०) [आपां इदं अण्, स्वार्थे ष्यञ्] पनघोड़ा, एक प्रकार का घोड़ा जो पानी में ही उत्पन्न होता है।

आप्यम् (नपुं०) (वेद०) जल, पानी—पृथिव्याप्यतेजोनिलखानि - श्वेत० २।१२।

आप्यायः [आप्यै+घञ्] पूरा होना, फूलना, मोटा होना।

आप्याय्य (वि०) [आप्यै+ण्यत्] सन्तुष्ट होने के योग्य, प्रसन्न होने के योग्य।

आप्रवण (वि०) [आ+प्रु+ल्युट्] ईषत्प्रवण, कुछ शालीन, थोड़ा शिष्ट।

आप्लुत (वि०) [आप्लु+क्त] ग्रहणग्रस्त—अवाङ्मुखमथो दीनं दृष्ट्वा सोममिवाप्लुतम्—रा० ७।१०६।१।

आप्लुष्ट (वि०) [आप्लुष्+क्त] ईषद्दग्ध, झुलसा हुआ—दिवाकराप्लुष्टविभूषणास्पदाम्—कु० ५।४८।

आफलकः [आ+फल+कन्] घेरा, बाड़ा वार्याफलकपर्यन्तां पिबन्निक्षुमतीं नदीम्—रा० १।७०।३।

आफीनम् (नपुं०) अफीम।

आबद्धमण्डल } (वि०) [न० ब०] गोलाकार चक्र बनाने
आबद्धवलय } वाला।

आबन्धुर (वि०) [आबन्ध्+उरच्] थोड़ा गहरा।

आबालम् (अ०) बच्चे तक, बच्चे से लेकर। सम० **गोपालम्** (अ०) बच्चों और ग्वालों समेत, —**वृद्धम्** (अ०) बच्चों से लेकर बूढ़ों तक।

आब्रह्म (अ०) ब्रह्म तक।

आभङ्गम् (नपुं०) किसी मूर्ति की झुकी हुई मुद्रा।

आभात (वि०) [आभा+क्त] 1. चमकीला, देदीप्यमान 2. प्रतीयमान।

आभासः [आभास्+घञ्] 1. मूर्ति ढालने के नौ पदार्थों में से एक 2. एक प्रकार का भवन 3. पूजा की एक अप्रामाणिक रीति—विधर्मः परधर्मश्च आभास उपमा छलः, अधर्मशाखाः पञ्चेमा धर्मज्ञोऽधर्मवत्त्यजेत्—भाग० ७।१५।१२।

आभास्वरः (पुं०) निम्नांकित बारह विषयों का एक संग्रह तु०—आत्मा ज्ञाता दमो दान्तः शान्तिर्ज्ञानं शमस्तपः, कामः क्रोधो मदो मोहो द्वादशा भास्वरा इमे—तारा०

आभिप्रायिक (वि०) [अभिप्राय+ठक्] ऐच्छिक, इच्छानुगामी।

आभिमन्यवः [अभिमन्यु+अण्] अभिमन्यु का पुत्र, परीक्षित।

आभियोगिक (वि०) [अभियोग+ठक्] दक्षता से किया गया, चतुराई से युक्त।

आभृत (वि०) [आ+भृ+क्त] 1. उपजाया हुआ, पैदा किया हुआ—भाग० ३।२६।६ 2. भरा पूरा, स्थिर—आभृतात्मा मुनिः—भाग० ४।८।५६।

आभ्यागारिक (वि०) [अभ्यागार+ठक्] घर में रखने के योग्य।

आभ्र (वि०) [अभ्र+अण्] अभ्रक से निर्मित—चन्द्राभमाभ्रं तिलकं दधाना—नै० ६।६२।

आमपेशाः [स० त०] कच्ची अवस्था में पीसा गया यव।

आमन्त्रित (वि०) [आ+मन्त्र्+क्त] मन्त्र बोल कर पवित्र किया गया—शराणामामन्त्रितानाम्—महा० ३।२०।२६। सम० **वचनम्** संबोधन अर्थ में प्रयुक्त शब्द,—**विभक्तिः** संबोधन अर्थ को प्रकट करने वाली विभक्ति।

आमन्त्रितम् (नपुं०) [आमन्त्र्+क्त] 1. सम्बोधित करना 2. संलाप 3. संबोधन की विभक्ति।

आमालकः (पुं०) पहाड़ी स्थान।

आमिषार्थी (वि०) [अम् टिषच् दीर्घश्च तमर्थयति इनि] मांस चाहनेवाला, मांस के लिए निवेदन करने वाला।

आमुकुलित (वि०) [आमुकुल+इतच्] थोड़ा सा खुला हुआ।

आमुक्तम् [आमुच्+क्त] कवच।

आमूपः (पुं०) कांटेदार बाँस।

आमोगः (पुं०) कवि की रचना की अंतिम पंक्ति जिसमें कवि का नाम बताया गया हो—यत्रैव कविनामस्यात्स आमोग इतीरितः—संगीत दामोदर।

आम्रः [अम्गत्यादिषु रन्दीर्घश्च] आम का वृक्ष। सम० —**अस्थि** आम की गुठली, आम का बीज,—**पञ्चमः** संगीत का एक विशेष राग,—**फलप्रपाणकम्** आमों के रस से तैयार किया हुआ एक शीतल पेय।

आम्लपञ्चकम् [आम्लपञ्च+कन्] इमली आदि पाँच (बेर, अनार, करौंदा, इमली और कमरक) फलों के रस से तैयार किया गया एक आयुर्वेदिक पदार्थ।

आयः [आ+इ+अच्, अय् घञ् वा] आमदनी का स्रोत—मार्गत्यायशतैरर्थान्—महा० १३।१६३।५। सम० **दर्शिन्** (वि०) राजस्व-समाहर्ता,—**मुखम्** राजस्व के रूप कौ० अ० २।६,—**शरीरम्** आय का शरीर—कौ० अ० २।६।

आयथापुर्यम्,—पूर्व्यम् (नपुं०) ऐसी स्थिति या अवस्था का होना जैसी पहले नहीं थी।

आयत (वि०) [आयम्+क्त] सुप्त, सोया हुआ,—तं नायतं बोधयेदित्याहुः—बृ० ४।३।१६।

आयतिः (स्त्री०) [आ+या+डति] वंश परंपरा, वंशविवरण पीढ़ी—द्रक्ष्यन्ति समरे योधा शलभानामिवायतीः—महा० ७।१५९।७१।

आयस्तम् [आ+यस्+क्त] महान् प्रयत्न, शक्ति का विस्तार—न मे गर्वितमायस्तं सहिष्यति दुरात्मवान्—रा० ४।१६।९।

आयानम् [आ+या+ल्युट्] घोड़े का आभूषण।

आयुष्यमन्त्रः (पुं०) ऋग्वेद का मन्त्र जो "यो ब्रह्मा ब्रह्मण उज्जहार···" से आरंभ होता है।

आयुष्यहोमः [आयुः प्रयोजनमस्य यत्, हु+मन्] यज्ञ विशेष जिसके अनुष्ठान से मनुष्य दीर्घजीवी हो सकता है।

आयोजनम् (अ०) एक योजन की दूरी तक।

आयोदः (पुं०) अयोद का पुत्र मुनि धौम्य।

आरङ्गरः (पुं०) मधुमक्खी (वेद०)—आरङ्गरेव मध्वेरयथे —ऋ० १०।१०६।१० ।
आरण्यकसामन् (नपुं०) सामवेद का एक सूक्त ।
आरम्भः [आ+रभ्+घञ्, मुम्] 1. शुरू 2. पहला अङ्क । सम०—**भाव्यत्वम्** क्रियाशीलता के द्वारा ही उत्पादन की स्थिति—मी० सू० ११।१।२०,—**रुचिः** किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य को शुरू करने में रुचि,—**शूरः** जो व्यक्ति शुरू शुरू में बहुत अधिक उत्साह दिखलाता है ।
आरवडिण्डिमः [ष० त०] एक प्रकार का ढोल—चण्डिरसितरशनारवडिडिममभिसर सरसमलज्जम्—गीत० ११।६ ।
आरासः [आ+रास्+घञ्] घोर शब्द ।
आरीण (वि०) [आ+री+क्त] बिल्कुल सूखा हुआ —आरीणं लवणजलं—भट्टि० १३।४ ।
आरुतम् [आ+रु+क्त] क्रन्दन, विलाप, रोना-धोना —निपेतुः शतशस्तत्र दारुणा दारुणारुताः—रा० ६। १०६।३१ ।
आरुणेयः [आरुणि+ढक्] आरुणि का पुत्र श्वेतकेतु ।
आरोग्यम् [अरोगस्य भावः—ष्यञ्] रोग से मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य । सम०—**अम्बु** (नपुं०) स्वास्थ्यप्रद जल, —**चिन्तामणिः** आयुर्वेद के एक ग्रन्थ का नाम —**प्रतिपद्व्रतम्** स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए एक व्रत ।
आरोपयितृ (वि०) [आ+रूप्+णिच्+तृच्] धारण करने वाला ।
आर्कम् (अ०) [आ+अर्कम्] सूर्य तक आकल्पमार्कमर्हन् भगवन्नमस्ते—भाग० १०।१४।४० ।
आर्चायण (वि०) [न० ब०] ऋचाओं में विद्यमान ।
आर्चीकम् [अर्चा अस्त्यस्य अण्, स्वार्थे कन्] ऋग्वेद के मंत्रों से युक्त, सामवेद ।
आर्जवम् [ऋजोर्भावः अण्] सम्मुख भाग, (अधि० आर्जवे =सम्मुख भाग में सीधा)—देवदत्तस्यार्जवे—मै० सं० ११।११५ पर शा० भा० ।
आर्त (वि०) [आ+ऋ+क्त] असुविधाजनक—आर्ता यस्मिन् काले भवन्ति स आर्तः कालः—मै सं० ६।५। ३७ पर शा० भा० । सम०—**त्राणम्** जो कठिनाइयों में ग्रस्त हैं उनको बचाना ।
आर्तवम् [ऋतुरस्य प्राप्त इति अण्] मासिक ऋतुस्राव, —गिरिकायाः प्रयच्छाशु हास्या आर्तवमद्य वै—महा० १।६३।५५ ।
आर्द्र (वि०) [आ+अर्द्+रक्, दीर्घश्च] गीला, तर । सम०—**एधाग्निः** आग जो गीली लकड़ियों द्वारा सुरक्षित रखी जाती है—यथैवार्द्रैधाग्नेः पृथग्धूमा निस्सरन्ति शत०,—**कपोलितः** उन्माद काल की दूसरी अवस्था में हाथी जब कि उसका गंडस्थल अपने मद से गीला हो जाता है,—**पत्रकः** बाँस,—**भावः** 1. गीलापन 2. कृपा, मृदुता—धनुर्भृतोऽप्यस्य दयार्द्रभावम्—रघु० २।११ ।
आर्द्रिका (स्त्री०) हरा या गीला अदरक ।
आर्द्धम् [ऋध+अण्] प्रचुरता, बाहुल्य ।
आर्धनारीश्वरम् [अर्धनारीश्वर+अण्] भगवान् शिव के अर्धनारीश्वर रूप से सम्बद्ध ।
आर्य (वि०) [ऋ+ण्यत्] 1. आर्यावर्त का निवासी 2. योग्य, आदरणीय, सम्मानयोग्य । सम०—**आगमः** (आर्या+आगमः) आर्य जाति की महिला के पास संभोग की इच्छा से पहुँचना—अन्त्यस्यार्यागमे वधः याज्ञ० २।२९४,—**जुष्ट** (वि०) आर्यजनों के द्वारा अनुमोदित तथा अनुगत,—**मतिः** जिसकी बुद्धि बहुत अच्छी है,—**वाक्** (वि०) आर्य जाति की भाषा बोलने वाला,—**शीलः** उत्तम चरित्र से युक्त, अच्छे शील वाला,—**सिद्धान्तः** आर्यभटकृत ग्रन्थ, स्त्री आर्यमहिला ।
आर्षिक्यम् [ऋषेरिदं अण्, आर्ष+ठक्, ततः ष्यञ्] आर्षधर्म, वह धर्म जिसकी ऋषियों ने स्थापना की है ।
आलकन्दकम् (नपुं०) एक प्रकार का मूँगा, प्रवाल—कौ० अ० २।११ ।
आलग्न (वि०) [आलग्+क्त] पालन करता हुआ, चिपका हुआ, अनुपक्त ।
आलम्बनम् [आलम्ब्+ल्युट्] मन के अनुरूप धर्म ।
आलानम् [आलीयतेऽत्र आली+ल्युट्] लगाव या स्थिरता का बिन्दु, (पोल, खूँटा या रस्सी आदि) —उलूखलं वा यमिनां मनो वा गोपाङ्गनानां कुचकुड्मलं वा मुरारिनाम्नः कलभस्य नूनमालानमासीत् त्रयमेव भूमौ—कृष्ण० ।
आलापा [आलप्+घञ्, टाप्] संगीत की एक मधुर ध्वनि ।
आलापनम् [आ+लप्+णिच्+ल्युट्] संगीत शास्त्र के किसी एक राग की विशेषताओं का वर्णन ।
आलिक्रमः [आ+अल्+इन्—क्रम्+घञ्] एक प्रकार की संगीतरचना, संगीतनिबन्ध ।
आलिजनः [आलि जनः] सहेलियाँ ।
आलेख्यगत (समर्पित) (वि०) [आलेख्यं गतः—स० त०] चित्र में लिखित, चित्रित निशीथदीपाः सहसा हतत्विषो बभूवुरालेख्यसमर्पिता इव रघु० ३।१५ ॥
आलिङ्गय (वि०) [आलिङ्ग्+ण्यत्] आलिङ्गन करने के योग्य नै० ७।६६ ।
आलयः [आलीयतेऽस्मिन् आली+अच्] ग्राम, आवास, —मन्दरस्य च ये कोटिं संश्रिताः केचिदालयाः—रा० ४।४०।२५ ।

आलीन (वि०) [आली+क्त] बन्द, सुप्त—भ्रमरालीनपङ्कजम् ।

आलीढा [आ+लिह्+क्त+टाप्] ऋतुमती स्त्री—नालीढ्या परिहृतं भक्षयीत कदाचन – महा० १८।१०४।९०।

आलुलित (वि०) [आलुल्+क्त] क्षुब्ध, ईषदुद्विग्न, ज़रा सा घबराया हुआ ।

आलेपनम् [आलिम्प्+णिच्+ल्युट्] 1. पानी मिला हुआ आटा जिससे घर का द्वार सजाया जाता है, विशेषतः दक्षिण भारत में—विधुमालेपनपाण्डुरम् —नै० २।२६ 2. रंगना या सफ़ेदी लीपना आलेपनदानपण्डिता—नै० १५।१२ ।

आलोकः [आलोक्+घञ्] 1. केवल दर्शन आलोकमपि रामस्य न पश्यन्ति स्म दुःखिताः—रा० २।४७।२ ।

आलोककः [आलोक्+ण्वुल्] दर्शक, देखन वाला ।

आवपनम् [आवप्+ल्युट्] 1. उद्गमस्थान—यस्य छन्दोमयं ब्रह्म देह आवपनं विभोः भागः १०।८० ।४५ 2. पटसन से निर्मित कपड़ा ।

आवापः [आवप्+घञ्] तान्त्रिकों के मतानुसार मन्त्र की बार-बार आवृत्ति जिससे अनेक कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है—यस्तु आवृत्या उपकरोति स आवापः – मी० सं० ११।१ पर शा० भा० ।

आवरणम् [आवृ+ल्युट्] 1. कवच कि० १७।५९ 2. भ्रम, भ्रान्ति ।

आवरीवस् (वि०) [आवृ—यङ वस्] छादन, चादर, ढकना—शतदूलां० २३ ।

आवर्जक (वि०) [आवृज्+ण्वुल्] आकर्षक ।

आवर्तनम् [आवृत्+ल्युट्] वर्ष, आवर्तनानि चत्वारि – महा० १३।१०७।२५ ।

आवास्य (वि०) [आवस्+णिच्+ण्यत्] बसा हुआ, व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ ईशावास्य मिदं—ईश० १ ।

आवास् (चुरा० पर०) (आ पूर्वक वास्) सम्पन्न करना, वास युक्त करना—आवासयन्तो गन्धेन—रा० २।१०३ । ४१ ।

आविः (स्त्री०) [अवीरेव. स्वार्थे अण्] पीडा, कष्ट, प्रसववेदना ।

आवितन् (तना० आ०) व्याप्त होना,—श्रीँल्लोकानावितन्वानाः भाग० ३।२०।३७ ।

आवित्त (वि०) [आविद्+क्त] विद्यमान ।

आविद्ध (वि०) [आ+व्यध+क्त] पास-पास रक्खा हुआ, छितराया हुआ स पाण्डुराविद्धविमानमालिनीम् रा० ५।२।५३ ।

आविल (वि०) । आविलति दृष्टिं स्तृणाति विल् स्तृतौक धुंधला, अस्पष्ट, जो देख न सके ।

आविर्भूत (वि०) [आविस्+भू+क्त] प्रकट हुआ हुआ, आविर्भूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्—मेघ० ।

आविर्मण्डल (वि०) [न० ब०] जो वृत्त के रूप में दिखाई दे—विषुवति धनुराविर्मण्डलं पाण्डुसूनौ—कि० १४।६५ ।

आविर्हित (वि०) [आविस्+धा+क्त] जो दृश्य बना दिया गया हो ।

आवृत्तम् [आवृत्+क्त] बार-बार प्रार्थना या गीत से देवा को सम्बोधित करना ।

आवृद्धबालकम् (अ०) बूढ़ों से लेकर बच्चों तक ।

आव्यक्त (वि०) [आवि+अञ्च्+क्त] स्पष्ट, सुबोध, तद्वाक्यमाव्यक्तपदं निशम्य—रा० ७।८८।२० ।

आशास् (वेद०) (अदा० आ०) दमन करना—ऋ० २।२८।९ ।

आशावासस् (वि०) [न० ब०] नंगा, नग्न ।

आशिक्षा [आशिक्ष्+अङ+टाप्] सीखने की इच्छा, वाज० ३०।१० ।

आशुकविः [क० स०] जो तुरन्त ही (विना पहले से सोचे) काव्य रचना कर सके ।

आश्रमपरिग्रहः [प० त०] संन्यास (चौथा आश्रम) ग्रहण करना ।

आश्रमवासिपर्वन् [प० त०] महाभारत के पन्द्रहवें पर्व का प्रथम अनुभाग ।

आश्रवः [आश्रु+अच्] सांसारिक कष्ट,—सवितर्कविचारमवाप शान्तं प्रथमं ध्यानमनाश्रवप्रकारम् बु० च० ५।१० ।

आश्लेषणम् [आश्लिष्+ल्युट्] आसक्ति, अनुरक्ति ।

आश्वासिक (वि०) [आश्वास+ठक्] विश्वसनीय, विश्वासपात्र ।

आश्विनचिह्नितम् (नपुं०) शारदीय विषुव ।

आस्,(आः) (अ०) उदासीनता द्योतक अव्यय ननु आस्ते इत्युपवेशने भवति । नावश्यमुपवेशने एव, औदासीन्येपि दृश्यते । मी० सू० ३।६।२४ पर शा० भा० ।

आसक्त (वि०) [आसञ्ज्+क्त] अवरुद्ध, बन्द—कार्तवीर्यभुजासक्तं तज्जलं प्राप्य निर्मलम्—रा० ७।३२।५ ।

आसंज्ञित (वि०) [आसंज्ञा+इतच्] जिसके साथ कोई समझौता हो गया है, सम्मिलित ।

आसद् (प्रेर०) धारणा करना, पहनना—आसाद्य कवचं दिव्यं – र० ७।६।६४ ।

आसक्तिः (स्त्री०) [आसद्+क्तिन्] उलझन, घबराहट —न च ते क्वचिदासक्तिर्बुद्धेः प्रादुर्भविष्यति—महा० १२।५२।१७ ।

आसनम् [आस्+ल्युट्] 1. हौदा, हाथी की ग्रीवा और पीठ का मध्यवर्ती भाग जहाँ हस्त्यारोही बैठता है 2. तटस्थता—कौ० अ० ७।१ 3. पासे के खल में प्रयुक्त मोहरा । सम० – मधूकम् वीर्य ।

आसन्न (वि०) [आसद्+क्त] अवाप्त, प्राप्त—बाह्वोरासन्नां सोतिमात्रं ननन्द—रा० ५।६३।३३। सम० —चर (वि०) आसपास ही घूमने वाला।

आसमुद्रान्तम् (अ०) समुद्र के किनारे तक।

आसुरायणः [आसुरि+फक्] 1. आसुरि की सन्तान 2. एक वैदिक संप्रदाय।

आसेचनक (वि०) [आसिच्+ल्युट्+कन्] अत्यंत मनोहर जो असीम संतोष के देने वाला हो (उदाहरणतः नेत्रासेचनकम्) दे० नैषध० (हिन्दी का संस्करण) पृष्ठ ५५९।

आस्तरकः [आ+स्तृ+ण्वुल्] विस्तर बिछाने वाला —कौ० अ० १।१२।

आस्तारकः [आस्तॄ+घञ्, स्वार्थे कन्] अंगीठी में लगने वाली जाली, जंगला।

आस्तीर्ण (वि०) [आस्तॄ+क्त] 1. बिखरा हुआ, फैला हुआ 2. ढका हुआ।

आस्थानपट्टः-पट्टम् [आस्थान+पट्+क्त] सिंहासन, राजगद्दी—नै० १०।५७।

आस्थेय (वि०) [आस्था+ण्यत्] 1. श्रद्धेय, जिसके पास पहुँच की जाय, जिससे प्रार्थना की जाय 2. आदरणीय।

आस्फुट् (भ्वा० पर०) आन्दोलन करना, हिलाना।

आस्फोटितम् [आस्फुट्+क्त] तालियाँ बजाना, शस्त्रास्त्र से प्रहार करना—आस्फोटितनिनादांश्च—रा० ५।४३।१२, तस्यास्फोटित शब्देन—रा० ५।४।७।

आस्युत् (वि०) [आ+सिव्+क्त] मिला कर सीया हुआ।

आस्रु (वि०) [आश्रु+क्विप्] खूब बहने वाला, धारा प्रवाह से रिसने वाला।

आस्रुपयस् (वि०) [न० ब०] खूब दूध देने वाली गाय —अगाद्धङ्कृते रास्रुपया जवेन—भाग० १०।१३।३०।

आस्वादित (वि०) [आ+स्वद्+णिच्+क्त] जिसने स्वाद ले लिया हो, अनुभवी—मधु नवमनास्वादितरसम् श०।

आहत्य (अ०) [आहन्+ल्यप्] प्रहार करके, मार कर, पीट कर। सम०—वचनम् ललकारने वाला वक्तव्य।

आहारतेजस् (नपुं०) पारा, पारद।

आहार्यशोभा (स्त्री०) बनाया हुआ सौन्दर्य (विप० नैसर्गिक शोभा)।

आहितकः [आ+धा+क्त, स्वार्थे कन्] भाड़े का—कौ० अ० २।१।

आहुत (वि०) [आ+हृ+क्त] कृत्रिम, बनावटी —अहुता हि विषयैकतानता ज्ञानधौतमनसं न लिम्पति —नै० १८।२।

इ

इक्षुः [इष्+क्सु] एक प्रकार का बांस—मौक्तिकैरिक्षुकुक्षिजैः—नै० २०।२१(नारा० भाष्य० इक्षुर्वंशविशेषः)।

इक्षुमती (स्त्री०) [इक्षु+मतुप्+ङीप्] कुरुक्षेत्र प्रदेश में बहने वाली एक नदी।

इक्ष्वारि(लि)कः [इक्षु+अल्+ण्वुल्] नरकुल, सरकंडा।

इङ्गालः [इङ्ग+आलच्] कोयला—वितेनुरिङ्गालमिवायशः परे—सि० सं०, इङ्गालः कारिकाग्निविट् वैज०।

इडा } [इल्+अच्, लस्य डत्वं वा] सामगान में प्रयुक्त
इला } स्तोभ नामक संगीत।

इडाजातः [पं० त०] गुग्गुल।

इण्डीकः (पुं०) कलम घड़ने वाला चाकू।

इतिः (स्त्री०) [इ+क्तिन्] 1. ज्ञान 2. चाल, गति —श० चि०।

इतिक (वि०) [इति+कन्] गतियुक्त, चाल रखने वाला।

इतिहासकथोद्भूतम् [त० स०] किसी पौराणिक आख्यान या महाकाव्य से ली गई कथावस्तु—इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयं, काव्यं कल्पान्तरस्थायि —काव्या०।

इत्कटः (पुं०) एक प्रकार का घास।

इदम्वरम् (नपुं०) नीलकमल—निघ०।

इद्धा (अ०) विशद, प्रकट, स्पष्ट।

इन्दका [इद्+ण्वुल्+टाप्] मृगशीर्षनक्षत्र पुंज में ऊपर रहने वाला तारा।

इन्दिरारमणः [इन्द्+किरच्+टाप्+रम्+ल्युट्] विष्णु —अन्तरा सकलसुन्दरीयुगलमिन्दिरारमणसंचरन् —नारा० ६५।

इन्दुः [उन्द्+उ, ओदेरिच्च] 1. चन्द्रमा 2. अनुस्वार की परिभाषा। सम०—मुखी कमल वेल,—वल्ली सोम का पौधा,—शफरिन् एक पौधे का नाम,—सुतः, —सूनुः बुधनामक ग्रह।

इन्दुकः [इन्दु+कन्] दे० 'इन्दुशफरिन्'।

इन्द्रः [इन्दतीति इन्द+रन्] 1. देवों का स्वामी 2. ज्ञानेद्रियों के पाँच विषय। सम०—आयुधम् 1. इन्द्रधनुष 2. हीरा,—कान्तः चारमंजिले भवन का एक प्रकार —मान०—२१।६०।६८,—छदः (इन्द्रच्छदः) मोतियों की माला, —जः वालि, कर्ण, —जतु (नपुं०) शिलाजीत,—द्युति चन्दन,—प्रमतिः वैदिक ऋषि, पैल आचार्य का शिष्य,—भगिनी पार्वती,—यज्ञः इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए किया जाने वाला यज्ञ—स्वो०

स्माकं घोषस्योचित इन्द्रयज्ञो नामोत्वः भविष्यति —बाल० १,— यानकम् हीरे का एक प्रकार, कौ० अ० २।११,— सावर्णिः चौदहवां मनु० ।

इन्द्रियः [इन्द्र+घ—इय] 1. शक्ति 2. ज्ञानेन्द्रिय । सम० —धारणा ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण,—प्रसङ्गः विषयासक्ति, – संप्रयोगः विषयों से संबद्ध ज्ञानेन्द्रियों की क्रिया ।

इन्धनम् [इन्ध्+णिच्+ल्युट्] इच्छावशेष, वासना—ये तु दग्धेन्धना लोके पुण्यपापविवर्जिताः—महा० १२। ३४८।२ ।

इभकर्णकः (पुं०) 1. एक पौद्धा, तांबड़ा एरंड 2. गणेश ।

इरिणम् (वेद०) [ऋ+इनच्, किदिच्च] चौसर खेलने की बिसात—प्रवातेजा इरिणे वर्वृताना—ऋ० १०।३४।१।

इरिम्बिठिः (पुं०) कण्वकुल के एक ऋषि का नाम जो ऋग्वेद के कई सूक्तों का द्रष्टा है ।

इलिनी (स्त्री०) मेधातिथि की पुत्री ।

इल्यः (पु०) परलोक में होने वाला एक काल्पनिक वृक्ष – स आगच्छतील्यं वृक्षम् – कौषी० १।५ ।

इवोपमा उपमा अलंकार जहाँ रचना में 'इव' शब्द का प्रयोग हुआ हो ।

इशीका हाथी की आँख की एक पुतली ।

इष् (तुदा० पर०) किसी काम को बहुधा करते रहना, बार-बार सम्पन्न करना ।

इच्छामात्रम् (अ०) केवल इच्छा द्वारा रचित—इच्छामात्रं प्रभोः सृष्टिः ।

इच्छारूपम् (नपुं०) 1. मानवीकृत इच्छा 2. इच्छानुरूप माना हुआ शरीर 3. दिव्य शक्ति की प्रथम अभिव्यक्ति ।

इष्टभागिन् (वि०) [इष्ट+भाग+णिनि] जिसकी महत्त्वाकांक्षा पूरी हो गई है—अपूजयन्राघवमिष्टभागिनम् —रा० ६।६७।१७५ ।

इष्टिः (स्त्री०) [इष्+क्तिन्] कविता के रूप में एक परिसंवाद, संग्रहश्लोक ऋ० १।१६६।१४ पर भाष्य । सम०—श्राद्धम् एक विशेष और्ध्वदैहिक क्रिया ।

इषिका, इषीका [इष् गत्यादौ क्वुन्, अत इत्वम्] एक कांटेदार पौधा—संनिकर्षादिषीकाभिर्मोचिता परमाद्भुयात् - रा० २।८।३० ।

इषुपुङ्खा नील का पौधा ।

इषूयति (वेद०) प्रयत्न करना ।

इष्टकामात्रा ईंटों का आकार प्रकार ।

ई

ईक्षणश्रवस् (पुं०) [ब० स०] साँप—एषा नो नैष्ठिकी बुद्धिः सर्वेषामीक्षणश्रवः—महा० १।३७।२९ ।

ईरः [ईर्+अच्] वायु, हवा । सम०–जः,–पुत्रः हनुमान् ।

ईलिनः (पुं०) तंसु के पुत्र और दुष्यन्त के पिता का नाम ।

ईशः [ईश्+क] परमेश्वर, परमात्मा । सम०—आवास्यम् (ईशावास्यम्) ईशोपनिशद् (अपने प्रथमाक्षर के आधार पर)—गीता (स्त्री०) कूर्मपुराण का एक अनुभाग, —दण्डः रथ के धुरे की लकड़ी ।

ईशानकल्पः चार युगों का एक चक्र ।

ईशितव्य (वि०) [ईश्+तव्य] शासन किये जाने के योग्य, नियन्त्रण में रखने के योग्य—ईशितव्यैः किमस्माभिः —भाग० १०।२३।४५ ।

ईश्वरकान्तम् (नपुं०) एक भूखण्ड जिसका समस्त क्षेत्रफल ९६१ वर्ग में विभक्त हो जाता है—मान० ७।४६।४८ ।

ईश्वरकृष्णः (पुं०) सांख्यकारिका का कर्ता ।

ईषत्कार्य (वि०) [ईषत्+कृ+ण्यत्] जो थोड़े से प्रयत्न से सम्पन्न हो सके ईषत्कार्यो वधस्तस्य—महा० ५।७४।२६ ।

ईषल्लभ (वि०) [ईषत्+लभ्+अच्] आसानी से उपलब्ध होने वाला - नै० १२।९३ ।

ईषद्वीर्यः [न० ब०] बदाम का वृक्ष ।

ईसराफः (पुं०) फलितज्योतिष में चौथा योग ।

ईहः (वेद०) [ईह्+अच्] स्तुति ।

उ

उका (स्त्री०) अवशेष, बचाखुचा ।

उक्थम् (नपुं०) [वच्+थक्] 1. जीवन, प्राण—उक्थेन रहितो ह्येष मृतकः प्रोच्यते यथा—भाग० ११।५।६ 2. उपादान कारण—एतदेषामुक्थमतो हि सर्वाणि नामान्युत्तिष्ठन्ति—बृ० १।६।१ ।

उक्थः (पुं०) [वच्+थक्] अग्नि—उक्थो नाम महाभाग त्रिभिरुक्थैरभिष्टुतः - महा० ३।२१९।२५ ।

उखासंभरणम् (नपुं०) शतपथब्राह्मण का छठा अध्याय।

उख्यः (पुं०) [उखायां संस्कृतः] एक वैयाकरण का नाम ।

उखरम् (नपुं०) खारी झील से निकला हुआ नमक, सांभर नमक।

उग्र (वि०) [उच्+रन्, गश्चान्तादेश।] 1. भीषण, क्रूर, दारुण, घोर, प्रचण्ड। सम०—**काली** दुर्गा का एक रूप,—**नृसिंहः** नृसिंह का एक रूप,—**पीठम्** एक भूपरिकल्पना जिसमें क्षेत्रफल ३६ सम भागों में विभक्त होता है—मान० ७।७,—**वीर्यः** हींग,—**श्रवस्** रोमहर्षण के पुत्र का नाम।

उचित (वि०) [उच्+क्त] अन्तर्जात, नैसर्गिक - उचितं च महाबाहुः न जहौ हर्षमात्मवान्–(उचितं=स्वभावसिद्धम्)—रा० २।१९।३७। सम०—**ज्ञ** (वि०) जो औचित्य को समझता है।

उच्च+अवच (उच्चावच) (वि०) [उत्कृष्टं च अपकृष्टं च] ऊँचा-नीचा, छोटा-बड़ा।

उच्चध्वजः शाक्यमुनि का नाम।

उच्चटम् (नपुं०) टीन, रांगा, कलई।

उच्चक् (भ्वा० पर०) टकटकी लगा कर देखना, निडर होकर देखना—भाग० ६।१६।४८।

उच्चयापचयौ [उच्चयः अपचयश्च, द्व० स०] समृद्धि और क्षय, उत्थान और पतन।

उच्चाटित (वि०) [उद्+चट्+णिच्+क्त] उखाड़ा गया, दूर फेंक दिया गया -दशकन्धरो… उच्चाटितः —भाग० ५।२४।२७।

उच्चारप्रस्रावस्थानम् (नपुं०) शौचालय, सण्डास।

उच्चार्यमाण (वि०) [उद्+चर्+णिच्, कर्मणि शानच्] जो बोला जा रहा है।

उच्चुम्ब् (भ्वा० पर०) मुख ऊपर उठाकर चुम्बन करना।

उच्छिखण्ड (वि०) [ब० स०] (मोर की भाँति) अपने परों को ऊँचा किये हुए।

उच्छिष्ट (वि०) [उत्+शिष्+क्त] जूठा, अपवित्र, अशुद्ध - उच्छिष्टमपि चामेध्यम् आहारं तामसप्रियम् —भाग०।

उच्छिष्टमोदनम् (नपुं०) मोम।

उच्छृङ्गित (वि०) [उद्+शृङ्ग+इतच्] जिसने अपने सींग ऊपर को सीधे खड़े किए हुए हैं।

उच्छ्रयः [उद्+श्रि+अच्] एक प्रकार का कलात्मक स्तम्भ (रुद्रदामन का जूनागढस्थित शिलालेख —एप० इंडि० तृतीय० भाग)।

उच्छ्वासः [उद्+श्वस्+घञ्] 1. झाग (जैसे कि समुद्र में)–सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणम् · ऋ० ९। ८६।४३ 2. बढ़ना, उभार होना।

उच्छ्वासिन् (वि०) [उद्+श्वास+णिनि] वियुक्त, विभक्त।

उज्जागरः [उद्+जागृ+घञ्] उत्तेजना, उलटफेर।

उज्जूटित (वि०) [उद्+जूट्+क्त] जिसने अपने सिर के बाल जटा के रूप में शिखा बाँधकर रक्खे हुए हैं।

उज्झटा (स्त्री०) एक प्रकार की झाड़ी।

उज्झित (वि०) [उज्झ्+क्त] 1. परित्यक्त—चिरोज्झितालक्तकपाटलेन ते—कु० ५ 2. निष्कासित, उंडेला हुआ—अविरतोज्झितवारि—कि० ५।६।

उट्टङ्कनम् [उत्+टङ्क्+ल्युट्] 1. छाप लगाना, या अक्षर खोदना 2. आधुनिक टाइप करने की क्रिया।

उडुगणाधिपः [त० स०] चन्द्रमा।

उडुगणाधिम् (नपुं०) मृगशीर्ष नक्षत्रपुंज।

उड्डामरिन् (वि०) [उद्+डामर+णिनि] जो असाधारण रूप से बहुत कोलाहल करता है।

उड्डियानम् (नपुं०) अंगुलियों की विशिष्टमुद्रा।

उड्रम् (नपुं०) 1. जपा, गुडहल 2. पानी।

उत (वि०) [वे+क्त] बुना हुआ, सीया हुआ।

उत्कयति (ना० धा० पर०) बेचैन या आतुर बना देता है—मनस्विनीरुत्कयितुं पटीयसा—शि० १।५९।

उत्कच (वि०) [उत्+कच] जिसके बाल सीधे ऊपर को खड़े हों।

उत्कूर्चक (वि०) [प्रा० स०] जो कूंची अपने हाथ में लेकर ऊपर को उठाये हुए है।

उत्कूलनिकूल (वि०) [उत्क्रान्तः निर्गतश्च कूलात्] किनारे से कभी नीचे कभी ऊपर होकर बहने वाला।

उत्कर्षणम् [उद्+कृष्+ल्युट्] 1. ऊपर को खींचना 2. छील देना, उखाड़ देना।

उत्कर्षणी [उत्कर्षण+ङीप्] एक 'शक्ति' का नाम।

उत्कृष्ट (वि०) [उद्+कृष्+क्त] 1. खुर्चा हुआ—ऐरावतविषाणाग्रैरुत्कृष्टकिणवक्षसम्—रा० ६।४०।५ 2. तोड़ा हुआ - उत्कृष्टपर्णकमला—रा० ५।१९।१५ (उत्कृष्टानि=त्रुटितानि) 3. खींचा हुआ—महा० १४।५९।१०।

उत्कोचः [उद्+कुच्+अञ्] 1. रिश्वत, घूस–उत्कोचैर्वञ्चनाभिश्च कार्याण्यनुविहन्ति च --महा० १२।५६। ५। 2. दण्ड।

उत्कोचिन् (वि०) [उत्कोच+णिनि] जिसे रिश्वत दी जा सके, भ्रष्टाचार में ग्रस्त—उत्कोचिनां मृषोक्तीनां वञ्चकानां च या गतिः—महा० ७।७३।३२।

उत्कोठः (पुं०) [उत्कुठ्+घञ्] कोढ़, कुष्ठ का एक प्रकार।

उत्क्वथ् (भ्वा० पर०) उबाल कर सत्त्व निकालना, कर्म० उबाला जाना, (प्रेम से) उपभुक्त किया जाना।

उत्तान (वि०) [उत्+तनु+घञ्] विस्तारयुक्त, फैला हुआ। सम०—**अर्थ** (वि०) ऊपरी, निस्सार, उथला, —पट्टम् फर्श व्यूढं चोत्तानपट्टं—(आबू शिलालेख —इंडि० एंटी० भाग ९), **हृदय** (वि०) उत्तम हृदय वाला।

उत्तपनः [उत्+तप्+ल्युट्] देदीप्यमान आग।

उत्तम (वि०) [उद्+तमप्] बढ़िया, श्रेष्ठ,—**मः** (पुं०) ध्रुव का सौतेला भाई। सम०—**दशतालम्** मूर्तिकला का शब्द जो मूर्ति की पूर्ण ऊँचाई के १२० सम प्रभागों को इंगित करने के लिए प्रयुक्त होता है —**वयसम्** जीवन की अन्तिम अवस्था—शत० १२।९।१।८, —**व्रता** पतिव्रता स्त्री—हृदयस्येव शोकाग्निसंतप्तस्योत्तमव्रताम्—भट्टि० ९।८७,—**श्रुतः** उच्चतम शिक्षा प्राप्त।

उत्तमर (वि) श्रेष्ठ।

उत्तम्भः [उद्+स्तम्भ्+घञ्] आयताकार संरचना —गरुड़० ४७।२१।

उत्तर (वि०) [उद्+तरप्] 1. उत्तर दिशा 2. ऊपर का, अपेक्षाकृत ऊँचा 3. बाद का 4. आयताकर साँचा —मान० १३।६७ 5. आगे की कार्यवाही, अगली प्रक्रिया—उत्तरं कर्म यत्कार्यं—रा० ५।३ 6. आच्छादन, आवरण—महा० ६।६०।९। सम०—**अगारम्**। (उत्तरागारम्) ऊपर का कमरा, —**अभिमुख** (वि०) उत्तर दिशा की ओर मुड़ा है मुंह जिसका, —**तापनीयम्** नृसिंहतापनीय उपनिषद् का उत्तर भाग, —**नारायणः** पुरुषसूक्त का उत्तर खण्ड, —**वीथिः** (स्त्री०) उत्तरीय मंडल।

उत्तावल (वि०) उतावला, आतुर।

उत्त्रस्त (वि०) [उद्+त्रस्+क्त] डरा हुआ, भयभीत।

उत्थानम् [उद्+स्था+ल्युट्] 1. मठ, विहार 2. युद्ध करने के लिए तैयार सेना की स्थिति युद्धानुकूलव्यापार उत्थानमिति कीर्तितम् (शुक्र० १।३२५। सम०—**वीरः** कर्मशील व्यक्ति, **शीलिन्** (वि०) सक्रिय, परिश्रमी।

उत्पचनिपचा (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्पच+निपच' (अर्थात् पूरी तरह से और भलीभाँति पकाओ) कहा जाय।

उत्पाटयोगः [त० स०] फलित ज्योतिष का एक योग।

उत्पतनिपता (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्पत (ऊपर को उड़ो)+निपत (नीचे उड़ो)' शब्दों को बार-बार कहा जाय।

उत्पातप्रतीकारः (शान्तिः) [ष० त०] अशुभ शकुनों से बचने के लिए शान्ति के उपायों का अवलम्बन, —कौ० अ० २।७।

उत्पत्तिः (स्त्री०) (वेद०) [उद्+पद्+क्तिन्] 1. यज्ञ —उत्पत्तिरिति यजिं ब्रूमः मी०सू० ७।१।३—७ पर शा० भा० 2. मूल विधि, वेद में आधारभूत अध्यादेश, इसे उत्पत्तिश्रुति और उत्पत्तिविधि भी कहते हैं—मनु० ४।३।

उत्पादिका [उद्+पद्+णिच्+ण्वुल्] एक जड़ी बूटी का नाम।

उत्पादित (वि०)[उद्+पद्+णिच्+क्त]पैदा किया गया।

उत्पाद्य (वि०) [उद्+पद्+णिच्+ण्यत्] जो अभी पैदा किया जाना है—लावण्य उत्पाद्य इवास यत्नः —कु० १।३५।

उत्पलिनी [उत्पल+इनि, स्त्रियां ङीष्] एक शब्दकोश का नाम।

उत्प्रेक्षावयवः [ष० त०] एक प्रकार की उपमा।

उत्प्रेक्षावल्लभः एक कवि का नाम।

उत्प्रेक्षित (वि०) तुलना की गई (जैसा कि उपमा में की जाती है)।

उत्प्रेक्षितोपमा उपमा अलंकार का एक भेद।

उत्प्लुत (वि०) [उद्+प्लु+क्त] कूदा हुआ, ऊपर को उछला हुआ।

उत्फुल्ल (वि०) [उद्+फुल्+क्त] उद्धत ढीठ, गुस्ताख।

उत्फुल्लिङ्ग (वि०) [उद्+स्फुलिङ्ग+इङ्गच्] जिसमें स्फुलिङ्ग निकले, चिंगारियाँ उगलने वाला।

उत्सङ्गकः [उद्+सञ्ज्+घञ्, स्वार्थे कन्] हाथ की विशेष मुद्रा।

उत्सक्त (वि०) [उद्+सञ्ज्+क्त] संवर्धमान—उत्सक्ता पाण्डवा नित्यम्—महा० १।१४०।३।

उत्सत्तिः (स्त्री०) [उद्+सञ्ज्+क्तिन्] नाश, विनाश, क्षय।

उत्सन्नकुलधर्मन् (वि०) [ब० स०] जिसकी कुल परम्पराएँ छिन्न-भिन्न हो गई हों—उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन, नरके नियतं वासः—भग० १।४६।

उत्सवोदयम् (नपुं०) मूर्तिकला का शब्द जो मूर्ति की ऊँचाई के अनुसार उसके यान को इङ्गित करे—मान० ६४।९१-९३।

उत्सवविग्रहः [त० स०] जलूस के रूप में निकाली जाने वाली प्रतिमा, मूर्ति (विप० मूलविग्रह)।

उत्साहः [उद्+सह +घञ्] अशिष्टता, उजड्डपन।

उत्साहयोगः [त० स०] अपनी सामर्थ्य या शक्ति का उपयोग करना—चारेणोत्साहयोगेन- मनु० १।२९८।

उत्सेकः [उद्+सिच्+घञ्] उत्साह,—मामकस्यास्य सैन्यस्य हृतोत्सेकस्य सञ्जय—महा० ८।७।१।

उत्सूर्यशायिन् (वि०) [उद्+सूर्यशी+णिच्+इनि] जो सूर्य निकल जाने पर भी सोता रहता है,—महा० १२।२२८।६४।

उत्सृतिः (उच्छृतिः) (स्त्री०) [उद्+सृ (श्रृ)+क्तिन्] उच्चतर जाति—मनु० ५।४०।

उत्सृज् (तुदा० पर०) व्यवस्थित करना, जमाना, निश्चित करना—आत्मानं यूपमुत्सृज्य स यज्ञो अनन्तदक्षिणः—महा० १२।९७।१०।

उत्सर्गः [उद्+सृज्+घञ्] 1. राशि, ढेर—अन्नस्य सुबहून् राजन् उत्सर्गान् पर्वतोपमान् - महा० १४।८५।३८ 2. (पुरोहितों की) सेवाएँ उपलब्ध करना—उत्सर्गे तु प्रधानत्वात् --मी० सू० ३।७।१९ (उत्सर्गः परिक्रयः—शा० भा०)।

उत्सर्गसमितिः (स्त्री०) जैनमत का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार मलमूत्रोत्सर्ग करते समय ऐसी सावधानी बरतना, जिससे कि किसी जीव जन्तु की हत्या न हो।

उत्स्रष्टुकामः, (—मनाः) (वि०) [उत्सृज्+तुमुन्+काम, मनो वा] उत्सर्ग करने की (जाने भी दो, रहने भी दो) इच्छा वाला।

उत्सर्पिन् (वि०) [उत्+सर्प+णिनि] 1. किनारों के बाहर होकर बहने वाला—उत्सर्पिणी न किल तस्य तरङ्गिणी या—नै० ११।७७ 2. बढ़ाने वाला, उठाने वाला।

उत्स्नात (वि०) [उद्+स्ना+क्त] जो स्नान करके बाहर निकल आया है।

उत्स्नेहनम् [उद्+स्निह्+णिच्+ल्युट्] घिसरना, फिसलना, विचलित होना।

उत्स्मितम् [उद्+स्मि+क्त] मुस्कराहट।

उत्स्रोतस् (वि०) [उद्+स्रु+तसि] (जीवन में) ऊपर की ओर रुझान रखने वाला।

उत्स्वापगिरः (ब० व०) नींद में बोले गये शब्द—नै० १२।२५।

उदम् [उन्द्+अच्, नलोपः] पानी, जल।

उदकम् [उन्द्+ण्वुल्, नलोपः] पानी, जल। सम० —अञ्जलिः 1. चुल्लूभर पानी 2. तर्पण करने के निमित्त जल,—क्ष्वेडिका जलक्रीड़ा जिसमें परस्पर एक दूसरे पर जल छिड़का जाता है,—प्रवेशः जलसमाधि, जलप्रवाह,—भूमः जलयुक्त या गीली भूमि, - मञ्जरी (स्त्री०) आयुर्वेद का एक ग्रन्थ, - वाद्यम् जलतरंग नामक एक वाद्ययंत्र जिसमें जल से भरे हुए प्याले छड़ी से छुए जाते हैं।

उदग्रप्लुतत्वम् [उद्गतमग्रं यस्य+प्लु+क्त, तस्य भावः] तेज गति के कारण छलांगें लगाना – पश्योदग्रप्लुतत्वात् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति – श० १।७।

उदग्रनख (वि०) [न० ब०] हस्ताञ्जलि बाँधे हुए · कायेन विनयोपेता मूर्ध्नोदग्रनखेन च—महा० ७।५४।६।

उदञ्चित (वि०) [उद्+अञ्च्+णिच्+क्त] उठाया हुआ, सदञ्चितमुदञ्चितनिकुञ्चितपदम्—पं० तां० स्तु० १।

उदण्ड (वि०) [उद्+अण्ड+अच्] बहुत से अंडे देने वाला।

उदन् (नपुं०) [उन्द्+कनिन्] पानी, जल। सम० —आशयः झील, सरोवर—शरदुदाशये साधुजातसत्सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा—भाग० १०।३१।२, —कोष्ठः जलपात्र, जल कलश,—जम् कमल—शर्वादयोऽङ्घ्र्युदजमध्वमृतासवं ते—भाग० १०।१४।१३, —प्लवः पानी की बाढ़।

उदपास् (उद्+अप्+अस्—दिवा० पर०) फेंक देना, परित्याग कर देना—ज्ञाने प्रयासमुदपास्य नमन्त एव —भाग० १०।१४।३।

उदराग्निः [ष० त०] जठराग्नि, पाचक अग्नि।

उदराटः [उदर+अट्+घञ् – ब० स०] एक प्रकार का कीड़ा जो पेट के बल रेंगता है।

उदर्कः [उद्+ऋच्+घञ्] वृद्धि—सर्वर्द्ध्युपचयोदर्कम् —भाग० ३।२३।१३।

उदवस्य (वि०) [उद्+अव+सो+अच] अन्तिम, आखिरी – भाग० ४।७।५।६।

उदश्रयणम् [उद्+अश्र+क्यङ्+ल्युट्] रुलाना।

उदस्त (वि०) [उद्+अस्+क्त] बाहर निकला हुआ —परिभ्रमद्गात्र उदस्तलोचनः—भाग० ३।१९।२६।

उदस्तात् (अ०) [उद्+अस्ताति] ऊपर—विधूतवल्कोऽथ हरेरुदस्तात्प्रयाति चक्रं नृप शैशुमारम्—भाग० २।२।२४।

उदात्तनायकः (पुं०) महाकाव्य के उपयुक्त नायक का एक भेद—चतुर्वर्गफलोपेतं चतुरोदात्तनायकम्—काव्य० १।

उदात्तराघवः एक नाटक का नाम।

उदात्यूहः (पुं०) एक प्रकार का जल काक।

उदानी (भ्वा० आ०) उठाना, उन्नत करना।

उदारवीर्य (वि०) विपुलशक्तिसम्पन्न, महाबलशाली।

उदारवृत्तार्थपद (वि०) [ब० स०] जिस (रचना) में शब्द, अर्थ और छन्द सभी उत्तम हो।

उदारसत्त्वाभिजन (वि०) [ब० स०] जिसका उत्तम कुल में जन्म हो तथा जिसका चरित्र भी अत्युत्तम हो — उदारसत्त्वाभिजनो हनूमान्—रा० ४।४७।१४।

उदावसुः जनक का एक पुत्र।

उदयः [उद्+इ+अच्] 1. उठना, उगना, ऊपर जाना 2. आरम्भ—अभिगम्योदयं तस्य कार्यस्य प्रत्यवेदयत् --महा० ३।२८२।२२ 3. अचूकपना, अमोघता —पर्याप्तः परवीरघ्नयशस्यस्ते बलोदयः-- रा० ५।५६।११ 4. आयुष्यकर्म, दीर्घजीवी होने का यज्ञ --हस्ते गृहीत्वा सह राममच्युतं नीत्वा स्ववारं कृतवत्ययोदयम् · भाग० १०।११।२० 5. पूर्वी ज्या, प्रथम चान्द्रभवन,—इन्दुः इन्द्रप्रस्थ नगर पुरे कुरूणामुदयेन्दुनाम्नि—महा० ७।२३।२९,—उन्मुख (वि०) उन्नति के द्वार पर, समृद्धि की देहली पर, भास्करः एक प्रकार का कपूर – नै० १८।१०३,—राशिः नक्षत्रपुंज जिसमें कि एक ग्रह क्षितिज में उगता है।

उदित (वि०) [उद्+इ+क्त] 1. विश्रुत, विख्यात --चित्रयोधी समाख्यातो बभूवातिरथोदितः --महा०

१।१३९।१९ 2. आरब्ध, शुरू किया गया—प्रभुभिरुदित क्षत्यै—विश्व० २६ 3. उद्बुद्ध, जागा हुआ तां रात्रिमुषितं रामं सुखोदितमरिन्दमम्—रा० ६। १२१।१।

उदित्वर (वि०) 1. ऊपर जाने वाला, ऊपर उठने वाला अविदितगतिर्दैवोद्रेकादुदित्वरविक्रमः—शिव० १४। १०६ 2. आगे बढ़ने वाला—गोप्तुं शौरिरुदित्वरत्वर उदैद् ग्राहग्रहार्तं गजम्—विश्व० १८।

उदे (उद्+आ+इ—अदा० पर०) ऊपर जाना, उठना, उन्नत होना।

उदेयिवस् (वि०) [उद्+आ+इ (ईयिवस्)] उगा हुआ, उद्भूत, जात—स ख उदेयिवान् सात्वतां कुले —भाग० १०।३१।४।

उद्गद्गदिका (स्त्री०) सुबकियाँ लेना—का०।

उद्गल (वि०) [न० ब०] गर्दन ऊपर उठाये हुए।

उद्गारकमणिः [उद्+गृ+ण्वुल्+मण्+इन्] प्रवाल, मूँगा।

उद्गारः [उद्गृ+घञ्] (समुद्री) झाग।—पश्चिमेन तु तं दृष्ट्वा सागरोद्गारसन्निभम्—रा० ७।३२।९।

उद्गारचूडः (पुं०) एक प्रकार का पक्षी।

उद्गीर्ण (वि०) [उद्+गृ+क्त] 1. वान्त, वमन किया हुआ,—निष्ठ्यूतोद्गीर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यपाश्रयम्। काव्या० 2. बाहर निकाला हुआ, निष्कासित 3. प्रेरित, कराया हुआ—काकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः—गीत० १।३६ 4. उठता हुआ, किनारे से बहता हुआ —उद्गीर्ण इवार्णोघौ—नै० १७।३६।

उद्गानम् [उद्+गै+ल्युट्] सामगन्त्रों के उच्चारण में एक विशेष अवस्था।

उद्गीतक (वि०) [उद्+गै+क्त+कन्] जो ऊँचे स्वर से गायन करता है।

उद्ग्रथनम् [उद्+ग्रथ्+ल्युट्] बालों को संयुक्त करने के लिए पिन—साभिवीक्ष्य दिशः सर्वा वेण्युद्ग्रथनमुत्तमम्—रा० ५।६७।३०।

उद्ग्रीविका [उद्+ग्रीवा+इनि+कन्+टाप्] पंजों पर खड़े होना—उद्ग्रीविकादानमिवान्वभूवन् (रोमाणि) —नै० १४।५३, कामिमिथुननिधुवनलीला दर्शनार्थमिवोद्ग्रीविकाशतदानखिन्नेषु" प्रदीपेषु—वास०।

उद्घट्टनम् [उद्+घट्ट+ल्युट्] (अत्याचार का) आरंभ।

उद्घोण (वि०) [ब० स०] सूअर की भांति जिसके नथुने ऊपर को हों—स्फुरदुद्घोणवदनः—शिव० २२।१३।

उद्दण्डित (वि०) [उद्+दण्ड्+क्त] उठाया हुआ, भक्त कथा०।

उद्दण्डशास्त्रिन् पन्द्रहवीं शताब्दी का तमिलदेशवासी एक महान् विद्वान्।

उद्दलन (वि०) [उद्+दल्+ल्युट्] फाड़ देने वाला।

उद्दालकायनः [उद्दालक+फञ्] उद्दालक की सन्तान।

उद्दीर्ण (वि०) [उद्+दृ+क्त] फटा हुआ।

उद्दीपकः [उद्+दीप्+ण्वुल्] पक्षिविशेष।

उद्दीपका [उद्+दीप्+ण्वुल्+टाप्] एक प्रकार की चिऊँटी।

उद्दूष्य (अ०) [उद्+दूष्+क्त्वा (ल्यप्)] सार्वजनिक रूप से बदनाम करके या दोषारोपण करके शि० २।११३।

उद्देशतः (अ०) [उद्देश+तसिल्] संकेत करके, विशेषरूप से, मुख्य रूप से, स्पष्टरूप से—एष तूद्देशतः प्रोक्तः —भग० १०।४०।

उद्देशपदम् [त० स०] वह शब्द जो कर्तृकारक के रूप में प्रयुक्त है ये यजमाना इत्युद्देशपदम्—मी० सू० ६।६।२० पर शा० भा०।

उद्देश्यक (वि०) [उद्+दिश्+णिच्+ण्यत्] सङ्केत करता हुआ, इंगित से दर्शाता हुआ।

उद्धत (वि०) [उद्+हन्+क्त] 1. भरपूर, भरा हुआ, समृद्ध—ततस्तु धारोद्धतमेघकल्पं—रा० ६।६७।१४२ 2. चमकीला, जगमग होता हुआ,—अन्योन्यं रजसा तेन कौशेयोद्धतपाण्डुना—रा० ६।५५।१९।

उद्धर्ष (वि०) [ब० स०] अधिकता, प्राचुर्य—आपूर्यंत बलोद्धर्षैर्वायुवेगैरिवार्णवः—रा० ६।७४।३५।

उद्धूत (वि०) [उद्+धूञ्+क्त] 1. फेंका हुआ, उछाला हुआ,—उद्धूतमिव सागरम्—महा० ५।१९३।४ 2. अव्यवस्थित, बिखरा हुआ—आसीद्वनमिवोद्धूतं स्त्रीवनं रावणस्य तत्—रा० ५।९।६६ 3. ऊँचा, उन्नत देवदारुभिरुद्धूतैरूर्ध्वबाहुमिव स्थितम्—रा० ५।५६।२९।

उद्धृ (=उद्+हृ) विकृत करना, नष्ट करना—एष त्वां सजनामात्यमुद्धरामि स्थिरो भव—महा० ५।१८९।२३।

उद्धृषित (वि०) [उद्+हृष्+क्त] हर्ष के कारण जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों।

उद्धरणम् [उद्+हृ+ल्युट्] प्रतीक्षा करना, आशा करना —अपि ते ब्राह्मणा भुक्त्वा गताः सोद्धरणान् गृहान् —महा० १३।६०।१४।

उद्धारकविधिः (पुं०) [उद्+हृ+णिच्+ण्वुल्+वि +धा+कि] देने की या भुगतान करने की रीति —तत्कथय कथमस्योद्धारकविधिर्भविष्यति—पंच० २।

उद्धारः [उद्+हृ+घञ्] 1. संकलन 2. (खाने के पश्चात्) जो थालियों में बच जाय, उच्छिष्ट। सम० —कोशः एक ग्रन्थ का नाम,—विभागः अंशों के प्रभाग, विभाजन।

उद्धारित (वि०) [उद्+हृ+णिच्+क्त] निष्कासित मुक्त, छुड़ाया हुआ।

उद्बद्ध (वि०) [उद्+बन्ध्+क्त] 1. बाँधा हुआ 2. बाधित 3. दृढ़, संहत, कसा हुआ ।

उद्बृंहण (वि०) [उद्+बृंह्+ल्युट्] बढाने वाला, सशक्त करने वाला, सामर्थ्य देने वाला ।

उद्भङ्गः [उद्+भञ्ज्+घञ्] तोड़ कर पृथक् कर देना, वियुक्त कर देना ।

उद्भू (भ्वा० पर०, प्रेर०) विचार करना, सोचना -- विक्रम० ९।१९ ।

उद्यतायुध(शस्त्र) (वि०) [ब० स०] जिसने शस्त्र हाथ में ले लिया है ।

उद्यन्धा (स्त्री०) जंगल में या सूखी लकड़ी में रहने वाली एक काली चिऊँटी, दखौड़ी ।

उद्यमित (वि०) [उद्+यम्+णिच्+क्त] काम करने के लिए जिसे प्रेरित किया गया है आत्मनो मधुमदोद्यमितानाम्—कि० ९।६६ ।

उद्यापनिका [उद्+या+णिच्+पुक्+ल्युट्+कन्+टाप्] यात्रा से वापिस घर आना ।

उद्योजित (वि) [उद्+युज्+णिच्+क्त] उठाया हुआ, एक चित्र (जैसे कि बादल) ।

उद्योतः (पुं०) [उत्+द्युत्+घञ्] 1. चमक, उद्दीप्ति, उज्ज्वलता, 2. इस नाम का भाष्य जो रत्नावली, काव्यप्रकाश और महाभाष्यप्रदीप पर उपलब्ध है ।

उद्योतकरः (पुं०) महाभाष्यप्रदीप के भाष्यकार का नाम ।

उद्योतनम् [उद्+द्युत्+णिच्+ल्युट्] चमकने या प्रकाशित होने की क्रिया ।

उद्रिक्तिः [उद्+रिच्+क्तिन्] आधिक्य—शिवमहिम्न स्तोत्र—३० ।

उद्रेचक (वि०) [उद्+रिच्+ण्वुल्] बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला ।

उद्वामिन् (वि०) [उद्+वम्+णिनि] उलटी करने वाला ।

उद्वहः [उद्+वह्+अच्] कुल या वंश में प्रधान व्यक्ति, पुत्र (जैसा कि 'रघूद्वह' में) ।

उद्वाहर्क्षम् (उद्वाह+ऋक्षम्) [त० स०] विवाह के लिए शुभ नक्षत्र । उद्वाहर्क्षं च विज्ञाय रुक्मिण्या मधुसूदनः—भाग० १०।५३ ।

उद्वह्नि (वि०) [ब० स०] चिनगारियाँ या अग्निकण बरसाने वाला (जैसे कि आँख)—उद्वह्निलोचनम् शि० ४।२८ ।

उद्वाश् विलाप करते हुए नाम लेना, शोकाधिक्य के कारण रोने में नाम ले लेकर क्रन्दन करना—उद्वाश्यमानः पितरं सरामम्—भट्टि० ३।३२ ।

उद्विज् (पानी छिड़क कर) मनुष्य को होश में लाना ।

उद्वेगः [उद्+विज्+घञ्] सुपारी—नै० ७।४६ ।

उद्वेगकर, उद्वेगकारक, उद्वेगकारिन् (वि०) [उद्वग+कृ+अच्, ण्वुल्, णिनि वा] चिन्ताजनक, क्षोभ करने वाला, कष्ट कर या दुःखदायी ।

उद्विबर्हणम् [उद्+वि=बृह्+ल्युट्] बचाना, निकालना, उठाना -रसां गताया भुव उद्विबर्हणम्—भाग० ३।१३।४३ ।

उद्वर्तः [उद्+वृत्+घञ्] प्रलयकाल—रा० ६।४४।१८ ।

उद्वृत्त (वि०) [उद्+वृत्+क्त] उलटा हुआ, उद्घाटित, प्रसारित ।

उद्वृत्तः (पुं०) नाचते समय हाथों की मुद्रा ।

उद्वेष्टनीय (वि०) [उद्+वेष्ट्+अनीय] खोलने के योग्य, बन्धनमुक्त करने के लायक—आद्ये बद्धा विरह दिवसे या शिखादाम हित्वा, शापस्यान्ते विगलितशुचा तां मयोद्वेष्टनीयम् मेघ० ९३ ।

उद्व्युदस् (उद्+वि+उद्+अस् भ्वा० पर०) पूर्णतः छोड़ देना, त्याग देना ।

उन्नादः [उद्+नद्+घञ्] कृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

उन्नत (वि०) [उद्+नम्+क्त] ओजस्वी, उल्लासपूर्ण, समाधाय समृद्धार्थाः कर्मसिद्धिभिरुन्नताः—रा० ५। ६१।५ । सम० **कालः** छाया को माप कर समय निर्धारित करने की प्रणाली,—**कोकिला** एक प्रकार का वाद्ययंत्र ।

उन्नतिः [उद्+नम्+क्तिन्] दक्ष की पुत्री जिसका विवाह धर्म के साथ किया गया था ।

उन्नहन (वि०) [उत्+नह्+ल्युट्] अशृंखल, खुला, मुक्त, बन्धन रहित—मत्संश्रयस्य विभवोन्नहनस्य नित्यम्—भाग० ११।१।४ ।

उन्नाहः [उद्+नह्+घञ्] धृष्टता, हेकड़ी, औद्धत्य, अहंकार ।

उन्निद्र (वि०) [उद्गता निद्रा यस्मात् ब० स०] 1. तेजस्वी, देदीप्यमान (जैसे कि चन्द्रमा)—नीत्वा निर्भरमन्मथोत्सवरसैरुन्निद्रचन्द्रा क्षपाः—कलि० 2. (बालों की भांति) सीधा खड़ा होने वाला, फैला हुआ ।

उन्निद्रकम्, उन्निद्रता [उद्+निद्रा+कन्, ता वा] जागरूकता, जागते रहना ।

उन्नेय (वि०) [उद्+नी+ण्यत्] सादृश्य के आधार पर जो अनुमान करने या निर्णय करने के योग्य हो, —शि० भ० १७ ।

उन्मणिः (पुं०) [उत्क्रान्तो मणिम्—अत्या० स०] सतह पर पड़ा हुआ रत्न—गिरयो बिभ्रदुन्मणीन्—भाग० १०।२७।२६ ।

उन्मथनम् [उद्+मथ्+ल्युट्] बिलो देना,—कूर्मे घृतोऽद्रिरमृतोन्मथने स्वपृष्ठे—भाग० ११।४।१८ ।

उन्मत्त (वि०) [उद्+मद्+क्त] 1. बहुत बड़ा, असा-

मान्य- -उन्मत्तवेगाः प्लवगाः—रा० ५।६२।१२, —त्तम् (नपुं०) धतूरे का फूल उन्मत्तमासाद्य हरः स्मरश्च नै० ३।९८ (भा०)।
उन्मनीभू (भ्वा० पर०) उत्तेजित होना, क्षुब्ध होना।
उन्मुखता [उन्मुख+ता] आशंसा या प्रत्याशा की स्थिति।
उन्मुग्ध (वि०) [उद्+मुह्+क्त] 1. उद्विग्न, सम्भ्रान्त 2. मूर्ख, मूढ़।
उन्मृद् (क्र्या० पर०) मसलना, मालिश करना।
उपकर्मन् (नपुं०) उपनयन संस्कार की एक प्रक्रिया जिसमें बालक का सिर सूंघा जाता है।
उपकल्पः [उप+कृप्+अच्, घञ् वा] आभूषण—तपनीयोपकल्पम्—भाग० ३।१८।९।
उपकीचकः [उप+कीच्+वुन् आद्यन्तविपर्यय] बांस के वृक्षों की उपशाखा—विराटनगरे राजन् कीचकादुपकीचकम् - (यहाँ 'विराट' में 'विः+राट' श्लेष भी हो सकता है)।
उपक्रमः [उप+क्रम+घञ्] 1. शौर्य 2. उड़ान 3. व्यवहार प्रतिक्रिया।
उपक्रान्त (वि०) [उप+क्रम्+क्त] 1. आरब्ध 2. अधिगत 3. व्यवहृत।
उपक्षेपक (वि०) [उप+क्षिप्+ण्वुल्] संकेत देने वाला, सुझाव देने वाला।
उपखिलम् (नपुं०) परिशिष्ट का भी परिशिष्ट।
उपगम् (भ्वा० पर०) पूजा करना – सह पत्न्या विशालाक्ष्या नारायणमुपागमत्—रा० २।६।१।
उपगमनम् [उप+गम्+ल्युट्] धारणा, स्वीकृति—अप्राप्तस्य हि प्रापणमुपगमनम् —मी० सू० १२।१।२१ पर शा० भा०
उपजिगमिषु (वि०) [उप+गम्+सन्+उ] पास जाने का इच्छुक,—नीचैर्वास्यत्युपजिगमिषोः—मेघ० ४४।
उपगूढ (वि०) [उप+गुह्+क्त] 1. ग्रस्त, उत्पीडित – कन्योपगूढो नष्टश्रीः कृपणो विषयात्मकः—भाग० ४।२८।६ 2. आच्छादित, ढका हुआ लताभिः पुष्पिताग्राभिरुपगूढानि सर्वतः—रा० ४।१।९।
उपगानम् [उपगै+ल्युट्] सहगामी संगीत।
उपगेयम् [उपगै+यत्] गायन, गीत।
उपग्रस् (भ्वा० पर०) निगलना, हड़प करना, ग्रहणग्रस्त होना।
उपघ्रा (भ्वा० पर०) सूंघना पर्यश्रुरस्वजत मूर्धनि चोपजघ्रौ - रघु० १३।७०।
उपचतुर (वि०) लगभग चार, चार के आसपास।
उपचरणम् [उप+चर्+ल्युट्] निकट जाना, पहुँचना।
उपचरितम् (नपुं०) सन्धि का विशेष नियम।
उपचारः [उप+चर्+घञ्] 1. सेवा, पूजा 2. शिष्टता, सौजन्य। सम० —च्छलम् आलंकारिक रूप से प्रयुक्त किसी उक्ति के शब्दार्थ का उल्लेख करके एक प्रकार का निराकरणीय आभासी अनुमान, —पदम् शिष्टता का शब्द, औपचारिक उच्चारण।
उपच्छन्न (वि०) [उप+छद्+क्त] गुप्त, छिपा हुआ।
उपच्छल् (पर०) क्षीण होना, पकड़ लेना।
उपजानु (वि०) [उप+जन्+ञुण्] घुटने के निकट।
उपतल्पः [उप+तल्+प] 1. ऊपर की मंजिल का कमरा 2. एक प्रकार की लकड़ी की चौकी या स्टूल।
उपतीर्थम् [उप+तॄ+थक्] 1. सरोवर या नदी का तट 2. निकटवर्ती प्रदेश—महा० ५।१५८।७।
उपत्यका [उप+त्यकन्+टाप्] पर्वत की तलहटी का निम्नदेश गिरेरुपत्यकारण्यवासिनं सम्प्राप्ता श० ५।
उपदंशनम् [उप+दंश्+ल्युट्] प्रकरण, प्रसंग—मी० सू० ६।८।३५ पर शा० भा०।
उपदंशितम् [उपदंश्+क्त] प्रकरण बताते हुए उल्लेख करना।
उपदातृ (वि०) [उप+दा+तृच्] देने वाला।
उपदेहः [उप+दिह्+घञ्] लपेटना, लेप करना, चित्रित करना—देहोपदेहात्किरणैर्मणीनाम् नै० १०।९७।
उपदेहिका [उपदेह+कन्+टाप्] दीमक।
उपद्रवः [उपद्रु+घञ्] 1. सप्तांगक साम का छठा भाग। छा० २।८।२ 2. हानि, छीजन—अन्नस्योपद्रवं पश्य मृतो हि किमशिष्यति रा० २।१०८।१४।
उपद्वारम् [अव्य० स०] पार्श्वद्वार।
उपधा (जुहो० उभ०) धोखा देना।
उपधालोपः [ष० त०] अन्तिम से पूर्व का लोप।
उपधान (वि०) [उपधा+ल्युट्] तनाव बढ़ाने के लिए वाद्ययंत्र में के तारों के अंदर रक्खे हुए लकड़ी के टुकड़े - पाशोपधानां ज्यातन्त्रीम्—महा० ४।३५।१६।
उपधानीयम् [उप+धा+अनीयर्] 1. तकिया, गद्देदार बिछावन 2. पायदान।
उपधाव् (भ्वा० उभ०) पूजा करना।
उपनतिः [उप+नम्+क्तिन्] 1. झुकाव 2. देय।
उपनम्र (वि०) [उप+नम्+र] आनेवाला, उपस्थित होने वाला।
उपनिबद्ध (वि०) [उप+नि+बन्ध्+क्त] 1. रचित 2. विमृष्ट -किंचिदुपनिबद्ध उत्तर० ७।
उपनिम्रेड् (भ्वा० पर० आ०) प्रसन्न करना।
उपनिर्गमः [उप+निर्+गम्+खच्] मुख्य सड़क, प्रधान मार्ग।
उपनिर्गमनम् [उप+निर्+गम्+ल्युट्] द्वार, दरवाजा।
उपनिर्हारः [उप+निर्+हृ+घञ्] आक्रमण, हमला —नेदानीमुपनिर्हारं रावणो दातुमर्हति- रा० ६।७५।२।

उपनिविष्ट (वि०) [उप+नि+विश्+क्त] 1. घेरा डालने वाला रखने वाला, अधिकार करने वाला।
उपनिवेशः [उप्+नि+विश्+घञ्] 1. देहात, उपनगर 2. स्थापना।
उपनिषद् [उपनि+षद्+क्विप्] संकेन्द्रण—यदेव विद्यया करोति श्रद्धयोपनिषदा—छा० १।१।१०।
उपनिषेव् (भ्वा० आ०) अपने आपको संलग्न करना।
उपनयः [उप+नी+अच्] (किसी भी शास्त्र में) दीक्षा।
उपनयनम् [उप+नी+ल्युट्] नियोजन, नियुक्ति, अनुप्रयोग।
उपनीत (वि०) [उप+नी+क्त] 1. विवाहित 2. ब्रह्मचर्य आश्रम में दीक्षित।
उपनुन्न (वि०) [उप+नुद्+क्त] उड़ा हुआ, लहरों में बहा हुआ—द्रुतमरुदुपनुन्नैः—शि० ४।६८।
उपनेत्रम् [उप+नी+ष्ट्रन्] ऐनक, चश्मा।
उपन्यस्तम् [उप+नि+अस्+क्त] मल्लयुद्ध के समय हाथों की विशिष्ट मुद्रा—रा० ६।४०।२६।
उपपतित (वि०) [उप+पत्+क्त] उपपातक या किसी सामान्य पाप का अपराधी, नगण्य पाप का दोषी।
उपपत्तिः [उप+पद्+क्तिन्] 1. दुर्घटना, संपात—उपपत्त्योपलब्धेषु लोकेषु च समो भव—महा० १२।२८८। ११ 2. उपयुक्त, तर्कसंगत—उपपत्तिमदूर्जिताश्रयं नृपमूचे वचनं वृकोदरः—कि० २।१।
उपपत्तिपरित्यक्त (वि०) [त० स०] अनिर्वाह्य, अप्रमाणित।
उपपत्तिसमः [त० स०] न्यायशास्त्र में वर्णित विरोध जहाँ दोनों विरुद्ध उक्तियाँ सिद्ध की जा सकती हैं।
उपपन्न (वि०) [उप+पद्+क्त] इच्छानुकूल, रुचिकर—उपपन्नेषु दारेषु पुत्रेषु च विधीयते—रा० २।१०१।१८।
उपपाद्य (वि०) [उप+पद्+ण्यत्] 1. अनुपाल्य 2. प्रमाणसापेक्ष 3. सत्ता में आने वाला।
उपपर्वन् (नपुं०) [प्रा० स०] चन्द्रमा के परिवर्तन से पूर्व का दिन।
उपपादः [उप+पद्+णिच्+घञ्] अतिरिक्त, स्तम्भ।
उपप्लवः [उप+प्लु+अप्] हानि, विफलता—मायया विभ्रमच्चितो न वेद स्मृत्युपप्लवात्—भाग० १०।८४।२५।
उपप्लाव्यम् (नपुं०) मत्स्यदेश की राजधानी का नाम।
उपप्लुत (वि०) [उप+प्लु+क्त] दबाया हुआ, भींचा हुआ—कि० ८।३९।
उपभृ (जुहो० उभ०) धारण करना, वहन करना।
उपभृत (वि०) [उप+भृ+क्त] संगृहीत, निकट लाया गया—शिष्यायोपभृतं तेजो—भाग० ८।१५।२९।
उपभेदः [उप+भिद्+घञ्] उप प्रभाग।
उपमश्रवस् (वि०) (वेद०) [ब० स०] प्रशस्त—यशःस्थापितकविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्- ऋ० २।२३।१।
उपमन्त्रिन् (पुं०) [उपमन्त्र+इनि] 1. अवरपरामर्शदाता, मा मन्त्री 2. संदेशवाहक- स्मररुज उपमन्त्रिन् भव्यतामन्यवार्ता भाग० १०।७१।२९।
उपमा [उप+मा+अङ्+टाप्] धर्मविरुद्ध सिद्धान्त——विधर्मः परधर्मश्च आभास उपमा छलः—भाग० ७।१५।१२।
उपमाव्यतिरेकः (पुं०) तुलना और वैषम्य का संयोग।
उपमर्दनम् [उप+मृद्+ल्युट्] निग्रह, निरोध।
उपमेखलम् (अ०) [प्रा० स०] (पर्वत के) ढलान पर।
उपयापनम् [उप+या णिच्+ल्युट्] 1 निकट पहुँचाना 2. विवाह
उपयुक्तः [प्रा० स०] अधीनस्थ अधिकारी—कौ० अ० २।५।
उपयोगवत् [उपयोग+मतुप्, मस्य वत्वम्] उपयोगी, काम का।
उपयोगशून्य (वि०) [त० स०] व्यर्थ, निरर्थक।
उपयोज्य (वि०) [उप+युज्+ण्यत्] कार्य में लाने के योग्य।
उपरज्य (अ०) [उप+रञ्ज्+क्त (ल्यप्)] काला कर के, मिटा कर।
उपरञ्जक (वि०) [उप+रञ्ज्+ण्वल्] 1. रंगने वाला 2. प्रभावशाली।
उपरतशोणिता (वि०) [ब० स०] वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बन्द हो चुका है।
उपरम्भ् (भ्वा० पर०) प्रतिध्वनि कराना, गुंजाना।
उपरि (अ०) [ऊर्ध्व+रिल्, उप आदेशः] ऊपर, उपरांतवाद। सम०—**काण्डम्** मैत्रायणी संहिता का तीसरा खण्ड,—**तलम्** सतह,—**बृहती** बृहती छंद का एक भेद,—**ष्ठ** (स्थ) ऊपर रक्खा हुआ।
उपरुद्धः [उप+रुध्+क्त] कैदी, रोका हुआ।
उपरोधः [उप+रुध्+घञ्] उच्छेद, लोप, निकालदेना आनर्थक्याद्धि प्राकृतस्योपरोधः स्यात्—मी० सू० ८।४।१५। सम०—**कारिन्** (वि०) विघ्नकारी, रुकावट डालने वाला।
उपलः [उप+ला+क] नकली बन्दूक द्वारा फेंकी गई गोली। सम०—**प्रक्षिन्** (वि०) चक्की पर अनाज पीसने वाला,—**वृष्टिः** ओलों की वर्षा।
उपलब्धिसम [उप+लभ्+क्तिन्+सम्+अच्] न्याय शास्त्र का शब्द जो किसी तर्क का कुतर्क पूर्ण निराकरण दर्शाता है—न्या० द०।
उपलम्भः [उप+लभ्+घञ्, मुम् च] देखना, दर्शन करना।
उपलेपः [उप+लिप्+घञ्] मन्दता, कुन्दता।
उपलेखः [उप+लिख्+घञ्] प्रतिशाख्यों से संबद्ध व्याकरण की एक रचना।
उपलोहम् (नपुं०) [प्रा० स०] गौण धातु, खोटी धातु।

उपबञ्चनम् [उप+बञ्च्+ल्युट्] दुबकना, नीचे झुक कर चलना, लेटकर घिसरना।

उपवञ्चित (वि०) [उप+वञ्च्+क्त] धोखा दिया गया, ठगा गया, निराश

उपवर्तनम् [उप+वृत्+ल्युट्] देश-- स्वभौममेतदुपवर्तनमात्मनैव नै० ११।२८।

उपवसनम् [उप+वस्+ल्युट्] उपवास करना।

उपोषित (वि०) [उप+वस्+क्त] जिसने उपवास रख लिया है।

उपोषितम् (नपुं०) [उप+वस्+क्त] उपवास रखना।

उपोढा [उप+वह+क्त+टाप्] छोटी पत्नी जो पति को अधिक प्रिय हो।

उपविद् (वि०) [उप+विद्+क्विप्] 1. लाभ उठाने वाला, प्राप्त करने वाला 2. जानने वाला, (स्त्री०) 1. अधिग्रहण 2. पृच्छा।

उपविष्ट (वि०) [उप+विश्+क्त]। आसीन, अधिकृत।

उपविष्टक (वि०) [उप+विश्+क्त+कन्] जो अवधि पूर्ण होने पर भी अपने स्थान पर दृढ़ता से जमा हुआ है (जैसे कि गर्भाशय में भ्रूण)।

उपवीक्ष् (उप+वि+ईक्ष्) (आ०) 1. देखना 2. उचित या उपयुक्त समझना।

उपव्रजम् (अ०) [प्रा० स०] ग्वालों की बस्ती के पास।

उपशक् (दिवा० उभ०) 1. यत्न करना, सहायता करना 2. जानना, पूछताछ करना 3. (स्वा० पर०) समर्थ या योग्य होना।

उपशमः [उप+शम्+घञ्] ज्योतिष में बीसवाँ मुहूर्त। सम०—क्षयः (जैन०) मूक रहकर कर्म नाश, कर्म न करना।

उपशयस्थ (वि०) [उपशय+स्था+क] घात में लगा हुआ।

उपशीर्षकम् [उपशीर्ष+कन्] 1. प्रमस्तिक रोग 2. मोतियों का हार।

उपशूरम् (अ०) [प्रा० स०] शौर्य की कमी से।

उपशूर (त्रि०) [प्रा० स०] जिसमें शौर्य की कमी हो।

उपश्रुतिः [उप+श्रु+क्तिन्] 1. जनश्रुति, अफवाह —नोपश्रुतिं कटुकान् महा० ५।३०।५ 2. अन्तर्निविष्ट, समावेशन—यथा त्रयाणां वर्णानां संख्यानोपश्रुतिः पुरा महा० १२।६४।६ 3. एक देवी का नाम—महा० १२।३४२।४८।

उपश्लोकः [उप+श्लोक्+अच्] दसवें मनु के पिता का नाम।

उपष्टम्भक (वि०) [उप्+स्तम्भ्+अच्+कन्] सामर्थ्य देने वाला, पुनर्बलन देने वाला।

उपसंयत (वि०) [उप सम्+यम्+क्त] संयुक्त, पक्का जुड़ा हुआ।

उपसंव्रज् (भ्वा० पर०) अन्दर कदम रखना। घुसना, प्रविष्ट होना।

उपसंसृष्ट (वि०) [उप+सम्+सृज्+क्त] 1. संयुक्त सम्मिलित 2. कष्टग्रस्त, अभिशप्त, निन्दित—ब्रह्मशापोपसंसृष्टे स्वकुले—भाग० ११।३०।२।

उपसंस्कृत (वि०) [उप+सम्+कृ+क्त] 1. निष्पन्न, पक्व, तैयार किया हुआ 2. अलंकृत, भरा हुआ—अमृतोपमतोयाभिः शिवाभिरुपसंस्कृताः—रा० ५।१४।२५।

उपसंहृतिः [उप+सम्+हृ+क्तिन्] 1. उपसंहार, अन्त 2. विपत्ति।

उपसंक्लृप्त (वि०) [उप+सम्+क्लृप्+क्त] ऊपर जमाया हुआ—भाग० ४।९।५५।

उपसंग्रहः [उप+सम्+ग्रह+अच्] तकिया।

उपसञ्ज् (तुदा० आ०) संलग्न होना—अथापि नोपसञ्जेत स्त्रीषु स्त्रैणेषु चार्थवित्—भाग० ११।२६।२२।

उपसदनम् [उपसद्+ल्युट्] आवास, स्थान (जैसा कि 'यज्ञोपसदन' में)।

उपसादनम् [उपसद्+णिच्+ल्युट्] नम्रता पूर्वक किसी के निकट जाना।

उपसन्ध्यम् (अ०) [प्रा० स०] संध्या के निकट—उपसन्ध्यमास्त तनु सानुमतः—शि० ९।५।

उपसाध् (प्रेर० पर०) 1. दमन करना 2. संवारना, व्यवस्थित करना।

उपसर्गः [उप+सृज्+घञ्] बाधा ते समाधावुपसर्गा व्युत्थाने सिद्धयः योग० ३।३९।

उपसर्जनीकृत (वि०) [उपसर्जन+च्वि+कृ+क्त] दमन किया हुआ, दबाया हुआ, गौण बनाया हुआ—यथार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थो व्यङ्क्तः ध्वन्या०।

उपसर्जित (वि०) [उप+सृज्+क्त] व्यस्त, लीन, विदा किया हुआ—तक्षकादात्मनो मृत्युं द्विजपुत्रोपसर्जितात्—भाग० १।१२।२७।

उपसृष्ट (वि०) [उप+सृज्+क्त] 1. छोड़ा हुआ —अश्वत्थाम्नोपसृष्टेन ब्रह्मशीर्ष्णोरुतेजसा भाग० १।१२।१ 2. बरबाद, ध्वस्त—कालोपसृष्टनिगमावन भाग १०।८३।४।

उपसर्पः [उपसृप्+घञ्] तीन वर्ष का हाथी।

उपस्कन्न (वि०) [उप+स्कन्द्+क्त] सगतिक, कष्टग्रस्त, पसीजा हुआ—स्नेहोपस्कन्नहृदया—रा० ६। १११।८७।

उपस्कारः [उप+कृ+घञ्] अचार, चटनी, मिर्चमसाला।

उपस्तीर्ण [उप+स्तृ+क्त] 1. फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ, छितराया हुआ 2. वस्त्रावेष्टित, आच्छादित, ढका हुआ 3. उडेला हुआ।

उपस्थ (त्रि०) [उप+स्था+क] 1. निकटवर्ती, स्थः

(पुं०) आसन-- एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्—भग० १।४७ 2. सतह—तं शयानं धरोपस्थे —भाग० ७।१३।१२ ।

उपस्थानम् [उप+स्था+ल्युट्] न्यायालय का कक्ष — उपस्थानगतः कार्यार्थिनामद्वारासङ्गं कारयेत्—कौ० अ० १।१४ ।

उपस्थापना [उप+स्था+णिच्+युच्+टाप्] जैनसाधु की दीक्षा से संबद्ध संस्कार ।

उपस्थितवक्तृ (पुं०) [उपस्थित+वच्+तृच्] आशुवक्ता ।

उपस्नुत (वि०) [उप+स्नु+क्त] बहती हुई, प्रवहणशील—स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्नुता कि० १।१८ ।

उपस्पर्शनम् [उप+स्पृश्+ल्युट्] उपहार ।

उपहासकम् [उपहस्+घञ्+कन्] दिल्लगी, हास्यपूर्ण उक्ति ।

उपहर्तृ (वि०) [उप+हृ+तृच्] उपहार प्रदान करने वाला, आतिथेयी ।

उपहा (जुहो० आ०) उतरना, नीचे आना- उपाजिहीथा न महीतलं यदि—शि० १।३७ ।

उपहार्यम्, **उपहारकः**, **उपहारिका** [उप+हृ+ण्यत्, ण्वुल्, स्त्रियां टाप् च] उपहार, भेंट ।

उपहितिः (स्त्री०) [उप+धा+क्तिन्] निष्ठा, भक्ति ।

उपहूत (वि०) [उप+ह्वे+क्त] आमन्त्रित, बुलाया गया, आवाहन किया गया ।

उपांशु (अ०) [उपगता अंशवो यत्र- ब० स०] 1. मन्द आवाज में, कान में कहना । सम०- जपः मन ही मन में मन्त्रों का जप करना, ग्रहः यज्ञ में निचोड़ कर निकाले हुए सोमरस का परोसना, दण्डः निजी रूप से दिया गया दण्ड,—वधः गुप्त हत्या ।

उपाकृत (वि०) [उप+आ+कृ+क्त] 1. अभिमन्त्रित 2. उपयोग में लाया गया—यज्ञेषूपाकृतं वित्तं महा० १२।२६८।२२ ।

उपाक्रम् (भ्वा० पर०) टूट पड़ना, हमला बोलना ।

उपाघ्रा (भ्वा० पर०) 1. सूंघना 2. चूमना (जैसा कि 'मूर्ध्न्युपाघ्राय में') ।

उपाङ्गः [प्रा० स०] जैनियों के धार्मिक ग्रंथों का समूह ।

उपात्तविद्यः [ब० स०] जिसने अपनी शिक्षा समाप्त कर ली है—उपात्तविद्यो गुरुदक्षिणार्थी रघु० ५।१ ।

उपादानम् [उप+आ+दा+ल्युट्] सांख्य शास्त्र में वर्णित चार अन्तर्वस्तुओं में से एक प्रकृत्युपादान-कालभागाख्याः—सां० का० ५० ।

उपाधा (जुहो० उभ०) (किसी स्त्री को सतीत्वसमर्पण के लिए). फुसलाना, चरित्रभ्रष्ट करना ।

उपाधिः [उप+आ+धा+कि] 1. किसी क्रिया का गौण उत्पादन, आनुषंगिक प्रयोजन 2. स्थानापत्ति, प्रतिपत्र—उपाधिर्न मया कार्यो वनवासे जुगुप्सितः रा० २।१११।२९ ।

उपाध्वर्युः [प्रा० स०] अध्वर्यु का सहायक ।

उपारमः [उप+आ+रम्+अच्] समाप्ति, अन्त ।

उपारुद् (उदा० पर०) किसी बात के लिए रोना ।

उपार्जित (वि०) [उप+अर्ज्+क्त] 1. उपलब्ध किया हुआ अवाप्त ।

उपालभ् (भ्वा० आ०) (बलि पशु के रूप में) मारने के लिए पकड़ना ।

उपावृत (वि०) [उप+आ+वृ+क्त] ढका हुआ, गुप्त ।

उपाश्लिष्ट (वि०) [उप+आ+श्लिष्+क्त] जिसके आलिङ्गन किया है, या जिसने पकड़ लिया है ।

उपासीन (वि०) [उप+आस्+शानच्, ईत्व] 1. निकटस्थ, आसपास विद्यमान, उपासना करने वाला ।

उपस्थित (वि०) [उप+स्था+क्त] 1. सवार, खड़ा हुआ, 2. घटित, प्रस्तुत, आटपका जैसे कि 'व्यसनं समुपस्थितं' में ।

उपायः [उप+अय्+घञ्] दीक्षा, यज्ञोपवीत संस्कार —उपायेन प्रवतरन्- उपनयनेन सह प्रवतरन्—मै० सं० पर शा० भा० । सम०—विकल्पः वैकल्पिक तरकीब ।

उपेयिवस् (वि०) [उप+इण्+क्वसु–पा० ३।२।१०९] निकट जाने वाला शि० २।११४ ।

उपेक्षणीय (वि०) [उप+ईक्ष्+अनीयर्] उपेक्षा करने के योग्य, नजर अन्दाज करने के लायक, परवाह न करने योग्य ।

उपेडकीय् [ना० धा० पर०—उप+एडक+क्यच्—] ऐसा व्यवहार करना जैसा कि भेड के साथ किया जाता है—पा० ६।१।९४ पर काशिका ।

उपेन्द्र+अपत्यम् [ष० त०] कामदेव ।

उपात्त (वि०) [उप+आ+दा+क्त] अवाप्त, अर्जित —उपात्तविद्यो गुरुदक्षिणार्थी—रघु० ५।१ ।

उभय (वि०) [उभ्+अयट्] दोनों । सम० —**अन्वयिन्** (वि०) जो दोनों अवस्थाओं में लागू हो सके, —**अलङ्कारः** एक अलंकार जिसमें अर्थ और ध्वनि दोनों घट सके, **च्छन्ना** दोनों प्रकार की प्रहेलिकाओं को दर्शाने वाला अलंकार,—**पदिन्** (वि०) जिसमें परस्मै—आत्मने दोनों पद विद्यमान हों, **विपुला** एक छन्द का नाम,—**विभ्रष्ट** (वि०) जो न यहाँ का रहे न वहाँ का, दोनों जगह से असफल, -कच्चिनोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति—भग० ६।३८, —**स्नातक** (वि०) जिसने अपना अध्ययन और ब्रह्मचर्यव्रत दोनों ही समाप्त कर लिये हैं—मनु० ४।३१ पर कुल्लूक ।

उभयतः (अ) [उभय+तसिल्] दोनों ओर से । सम०

--पाश (वि०) जिसके दोनों ओर जाल बिछा हो, --पुच्छ (वि०) जिसके दोनों ओर पूंछ हो प्रज्ञ (वि०) जो बाहर और भीतर दोनों ओर देख सके।
उमामहेश्वरव्रतम् (नपुं०) शिव को प्रसन्न करने के लिए विशेष प्रकार का एक धार्मिक व्रत।
उरगशयनः [ब० स०] शेषनाग पर सोने वाला विष्णु।
उरस् (नपुं०) [ऋ+असुन्, उत्वं रपरश्च] छाती। सम० —कपाटः चौड़ी सबल छाती, —क्षयः तपेदिक, छाती का रोग, —स्तम्भः दमा।
उरुपराक्रम (वि०) [ब० स०] बड़ा शक्तिशाली।
उरुधा (अ०) [उरु+धा] नाना प्रकार से—पश्यतं माययोरुधा - भाग० १।१३।४७।
उर्वशीशापः [ष० त०] उर्वशी का अर्जुन को शाप, जिसके फल-स्वरूप वह हिजड़ा बन गया और यह स्थिति अज्ञातवास में बहुत उपयुक्त रही। (यह उक्ति उस अवस्था में प्रयुक्त होती है जब प्रतीयमान हानिकर घटना लाभदायक सिद्ध हो जाती है)।
उलड् (चुरा० पर० — उलण्डयति) बाहर फेंक देना, प्रक्षेपण (धातुपाठ)।
उलिः, उल्ली (स्त्री०) सफ़ेद प्याज़।
उलूकः [वल्+ऊ, संप्रसारण] एक ऋषि जिसे वैशेषिक का कर्ता कणाद समझा जाता है।
उलूकजित् (पुं०) कौवा।
उलूलि, उलूलु } (वि०) 1. ज़ोर से क्रन्दन करने वाला, कोलाहलमय विवाहादि शुभ अवसरों पर मधुर समवेत गान, विशेषतः स्त्रियों का,—नै० १४।५१, अनर्घ० ३।५५।
उल्वण (वि०) [उत्+व (ब) ण्+अच्, पृषो० साधुः] 1. भयानक 2. पापमय। सम० —रसः शौर्य।
उल्लकः [उद्+लक्+अच्] एक प्रकार की शराब।
उल्लस् (भ्वा० पर० प्रेर०) हिलाना, लहराना—जिह्वाशतान्युल्लासन्त्यजस्रम्—कि० १६।३७।
उल्लसत् (वि०) [उद्+लस्+शतृ] चमकता हुआ।
उल्लाघ (वि०) [उद्+ला+हन्+क] चतुर, प्रसन्न, -घः (पुं०) काली मिर्च।
उवटः (पुं०) ऋग्वेद प्रातिशाख्य तथा यजुर्वेद का भाष्यकर्ता।
उशत् (वि०) [वश्+शतृ] 1. सुन्दर 2. प्रिय, प्यारा 3. पवित्र, निष्पाप 4. अश्लील - वर्जयेदुशतीं वाचम् - महा० १२।२३५।१०।
उशिजः (पुं०) कक्षीवान् के पिता का नाम।
उष्णगुः [ब० स०] सूर्य।
उष्णोष्ण (वि०) [उष्ण+उष्ण] अत्यन्त गर्म —उणोष्ण शीकरसृजः—शि० ५।४५।
उषस् (स्त्री०) [उष्+असि] प्रभात, भोर। सम० करः चाँद, —कलः मुर्गा, - पतिः अनिरुद्ध, - पूजा पौषमास में प्रातः काल की जाने वाली उषा की विशेष पूजा।
उष्ट्रनिषदनम् (नपुं०) योग का एक आसन।
उष्ट्रप्रमाणः (पुं०) आठ पैर का 'शलभ' नामक एक जन्तु।
उष्ट्राक्षः [ब० स०] ऊंट जैसी आँखों वाला (घोड़ा), शालि०।
उष्णीषः [उष्णमीषते हिनस्ति ईष्+क] 1. पगड़ी 2. किसी भवन की चोटी।
उहारः (पुं०) कछुवा।

ऊ

ऊखराः (ब० व०) शैव सम्प्रदाय।
ऊखरजम् (नपुं०) 1. लवणयुक्त भूमि से तैयार किया गया नमक 2. यवक्षार, कलमीशोरा।
ऊतिः (स्त्री०) [अव्+क्तिन्] ऊतक, तांत।
ऊन् (चुरा० पर०) घटना, घटाना।
ऊनातिरिक्त (वि०) अत्यधिक या अतिन्यून।
ऊनाब्दिकम् (नपुं०) [ऊनाब्द+ठक्] वर्ष से पूर्व हीं मनाया जाने वाला श्राद्ध।
ऊनमासिक (वि०) [ऊनमास+ठक्] नियमित मासिक संक्रियाओं के अतिरिक्त जो प्रतिमास श्राद्ध किये जाँय तथा जो दिनों की संख्या गिनकर एक वर्ष के भीतर ही भीतर मनाये जाँय।
ऊरु,+अङ्गम् (ऊर्वङ्गम्) (नपुं०) खुम्भ, खुदरो, छत्रक।
ऊर्जमासः (पुं०) कार्तिक महीना।
ऊर्जमेध (वि०) [ब० स०] असाधारण बुद्धि से युक्त।
ऊर्ध्व (वि०) [उद्+हा+ड, पृषो० ऊर् आदेशः] सीधा, उन्नत, उच्च, - ध्वम् (नपुं०) ऊँचाई, ऊपर। सम० —गमः (पुं०) अग्नि; —तिलकः मस्तक पर जातिसूचक खड़ा तिलक—सूर्यस्पर्धिकिरीटमूर्ध्वतिलकप्रोद्भासि फालान्तरम्—नाराय० २।१। —दृश् (पुं०) कर्कट, केकड़ा, --प्रमाणम् शीर्षलम्ब, उन्नतांश, वालम् चमरी हरिण की पूंछ, —शोधनः रीठे का वृक्ष।
ऊर्मिका [ऋ+मि अर्तेरुच्च, स्वार्थे कन् टाप् च] चिन्ता।
ऊवध्यम् (नपुं०) अधपचा भोजन।
ऊष्मायणम् [ब० स०] ग्रीष्म ऋतु।
ऊहगानम् (नपुं०) सामवेद के तीन प्रभागों में से एक।
ऊहब्राह्मण (स्त्री०) सामवेदब्राह्मण का तीसरा अध्याय।

ऋ

ऋक्ष् (स्वा० पर०) जान से मार देना।

ऋक्षः [ऋष्+स किच्च] एक प्रकार का हरिण --रोहिद्भूतां सोऽन्वधावदृक्षरूपी हृतत्रयः—भाग० ३।३१।३६। सम० - **इष्टिः** (ऋक्षेष्टि) ग्रहमख, तारों के निमित्त यज्ञ, --**जिह्वम्** एक प्रकार का कोढ़,—**नायकः** एक प्रकार की गोलाकार संरचना या निर्माण - अ० तु० १०४,—**प्रियः** बैल,—**विडम्बिन्** (पु०) धोखा देने वाला ज्योतिषी।

ऋग्ब्राह्मणम् (ऋच्+ब्राह्मणम्) ऐतरेय ब्राह्मण।

ऋजुकायः कश्यप मुनि।

ऋजुलेखा सरलरेखा, सीधी लाइन।

ऋण् (तना० पर०) जाना।

ऋणच्छेदः [ऋण+छिद्+घञ्] ऋण का परिशोध।

ऋणनिर्णयपत्रम् (**ऋणपत्रम्**) (नपुं०) ऋण का स्वीकृति सूचक पत्र, रुक्का।

ऋणप्रदातृ [ऋण+प्र+दा+तृ] साहूकार, रुपया उधार देने वाला।

ऋतसामन् (नपुं०) एक साम का नाम

ऋतम्भरा [ऋ+क्त+भृ+अच्, मुमागमः] बुद्धि, प्रज्ञा योग० १।४७।

ऋतुः [ऋ+तु किच्च] मौसम। सम० **चर्या** (जीवधारियों का) ऋतु के अनुकूल व्यवहार,—**जुष्** (स्त्री०) प्रजनन के उपयुक्त समय पर मैथुन में रत महिला,-- **पशुः** ऋतु के अनुकूल यज्ञ में बलि दिये जाने वाला पशु।

ऋद्धम् [ऋध्+क्त] गाहने के पश्चात् अनाज का संग्रह करना।

ऋद्धित (वि०) [ऋद्ध+इतच्] समृद्ध बनाया गया—राजसूयजितांल्लोकान् स्वयमेवासि ऋद्धितान्—महा० १८। ३।२५।

ऋश्यमूकः एक पर्वत का नाम।

ऋषभाचलः (पुं०) शंकराचार्य के जीवन से संबद्ध केरल में एक पर्वत पर स्थित मन्दिर।

ऋषिऋणम् (नपुं०) ऋषियों के प्रति जनसाधारण का कर्तव्य, जन समाज पर ऋषियों का ऋण।

ऋषिका (स्त्री०) ऋग्मन्त्रों की द्रष्ट्री एक स्त्री।

ऋष्टिः (स्त्री०) [ऋष्+क्तिन्] एक प्रकार का वाद्ययंत्र —सतालवीणामुरजर्ष्टिवेणुभिः—भाग० ३। १५।२१।

ए

एकः [इ+कन्] प्रजापति एक इति च प्रजापतेरभिधानमिति - मैं० सं० १०।३।१३ पर शा० भा०,--**कम्** 1. मन--एकं विनिन्ये स जुगोप सप्त - बु० च० २। ४१ 2. एकता। सम० **अक्षरम्** (एकाक्षरम्) पुनीत प्रणव, 'ओम्',--**अग्नि** (वि०) जो केवल एक ही अग्नि को रखता है, - **अङ्कम्** वह नाटक जिसमें एक ही अङ्क हो,--**अङ्गी** अपूर्ण, अधूरा,—°रूपक (अधूरा रूपक या उपमा), **अपचयः**- **अपायः** जिसमें एक अवयव कम हो,—**आहार्य** (वि०) एक सा भोजन करने वाला, जो प्रतिषिद्ध और अनुमत भोजन में विवेक न करे, --**एकश्यम्** अलग-अलग एक एक करके,—**ग्रामीण** (वि०) एक ही गांव का रहने वाला,—**चरः** तपस्वी, संन्यासी - नाराज के जनपदे चरत्येकचरो वशी-- रा० २।६७।२३,—**छत्र** (वि०) जो केवल एक ही छत्र से शासित हो, जहाँ एक ही राजा का राज्य हो,--**जीववादः** (दर्शन० में) केवल जीवात्मा का सिद्धान्त,—**दण्डिन्** (पुं०) संन्यासियों की एक श्रेणी, **धुरीण** (वि०) एक ही भार को उठाने वाला-- तत्कण्ठनालैकधुरीणवीण—नै० ६।६५,—**नयनः** शुक्रग्रह, असुरों का गुरु शुक्राचार्य --(कहते हैं कि वामन ने इनकी एक आँख में तिनका चुभो दिया था), **निपातः** एक अव्यय जो अकेला ही एक शब्द है, **पादिका** एक ही पैर का सहारा लेकर खड़े होना—अथावलम्ब्य क्षणमेकपादिकाम् नै० १।१२१,—**पार्थिवः** एकमात्र शासक, सम्राट् —न केवलं तद् गुरुरेकपार्थिवः - रघु० ३।३१,—**वाक्यम्** वाक्यरचना की दृष्टि से युक्तिसंगत वाक्य,- **वाचक** (वि०) पर्यायवाची,—**वासस्** (वि०) एक ही वस्त्र से आच्छादित,—**विंशक** (वि०) इकीसवाँ,-- **विजयः** पूरी जीत -- कौ० अ० १२, **वीरः** 1. प्रमुख योद्धा 2. स्कन्द के नौ सहायकों में से एक, - **व्यावहारिकाः** बौद्धों की एक शाखा,—**शेपः** एक ही जड़ का वृक्ष।

एकशतम् (नपुं०) एक प्रतिशत।

एकलव्यः (पुं०) द्रोणाचार्य के एक शिष्य का नाम जिसने अपनी गुरुभक्ति के कारण धनुर्विद्या में प्रवीणता प्राप्त की।

एकाष्टका (स्त्री०) माघ मास का आठवाँ दिन।

एकाष्ठी (स्त्री०) कपास का बीज, बिनौला।

एजत् (वि०) [एज्+शतृ] कांपता हुआ, हिलता हुआ।

एणशिशुः (–शावकः) [प० त०]हरिण का बच्चा, छौना ।
एणाङ्कः [ब० स०] चन्द्रमा ।
एणाङ्कचूडः [ब० स०] शिव जी ।
एतत्पर (वि०) इस पर तुला हुआ, इसमें लीन ।
एतनः [आ+इ+तन] 1. निःश्वास, सांस 2. एक प्रकार की मछली ।
एतावन्मात्र (वि०) [एतद्+वतुप्+मात्रच्] इस स्थान तक, इस माप का, इस अंश तक, ऐसा ।
एलादि (वि०) [ब० स०] कुछ आयुर्वेदिक औषधियों का पुञ्ज-जो इलायची से आरम्भ होती हैं ।
एलासुगन्धि (वि०) इलायची की सुगन्ध से युक्त ।
एव (अ०) [इ+वन्] पुनः, फिर—एवशब्दश्च पुनरित्यर्थे भविष्यति—मी० सू० १०-८-३६ पर शा० भा० ।
एष् (भ्वा० उभ०) जानना,—एषितुं प्रेषितो यातो—भट्टि० ५।८२ ।
एषिका [एष्+ण्वुल्+टाप्] लोहे का शहतीर जिसमें कोई छल्ला या टोपी न हो ।
एष्टव्य (वि०) [एष्+तव्य] जिनके लिए प्रयत्न किया जाय, जिनकी लालसा हो, जिनके लिए लालायित हुआ जाय ।

ऐ

ऐककर्म्यम् [एककर्म+ष्यञ्] 1. कार्य की एकता 2. एक ही फल में अंशभागी होने की स्थिति —मी० सू० ११। १।१ पर शा० भा० ।
ऐकगुण्यम् [एकगुण+ष्यञ्] एक इकाई का मूल्य ।
ऐकमुख्यम् [एकमुख+ष्यञ्] 1. पूरा अधिकार 2. अधीनता ।
ऐकान्त्यम् [एकान्त+ष्यञ्] 1. एकान्तता, निरपेक्षता, एकान्तवास 2. मित्रता ।
ऐक्यारोपः [ष० त०] समीकरण ।
ऐतशप्रलापः [ष० त०] अथर्ववेद का एक अनुभाग जिसका द्रष्टा ऐतश ऋषि था (यह भाग कुन्ताप सूक्तों के पश्चात् आता है ।
ऐन (वि०) [इनः सूर्यः, तस्य, इदम्—अण्] सूर्य संबंधी —निर्दर्ण्य वर्णन समानमैनं—रा० च० ६।२५ ।
ऐन्दव (वि०) [इन्दु+अण्] चाँद का उपासक- नैं० ११।७६ । सम०—किशोरः दूज का चाँद—ऐन्दव-किशोर शेखर ऐदम्पर्यं चकास्ति निगमानाम् —मुख० ।
ऐरम् [इरा+अण्] राशि, ढेर ।
ऐशम् [ईश्+ष्यञ्] सर्वोपरिता, सर्वोच्चता ।
ऐश्य (वि०) [ईश्+ष्यत्] ईश संबंधी ।
ऐश्वरकारणिकः [ईश्वर+अण्+करण+ठक्] एक नैयायिक का नाम ।
ऐश्वर्यम् [ईश्वर+ष्यञ्] सर्वशक्तिमत्ता, तथा सर्वव्यापकता की शक्ति —महा० १२।१८४।४० ।

ओ

ओकज (वि०) [उच्+क, नि० चस्य कः, तस्मिन् जायते —जन्+ड] घर में उत्पन्न या पले (गौ आदि पशु) ।
ओकणी [ओ+कण्+अच्+ङीप्] सीमावर्ती जंगल ।
ओघः [उच्+घञ्, पृषो० घ०] तीन वाद्य विधियों में से एक—नागा० १०।१४ ।
ओजस् [उब्ज्+असुन्, बलोपः, गुण] वेग, गति—एष हातिबलः सैन्ये रथेन पवनौजसा—रा० ७।२९।१२ ।
ओजायितम् [ना० धा० ओज+य+क्त] साहसपूर्ण पग, हिम्मत से युक्त व्यवहार ।
ओपशः (वेद०) तकिया, सहारा, अवलम्बन ।
ओलज् (भ्वा० पर०) फेंक देना, उछाल देना ।
ओषधिः [ओष+धा+कि] 1. सोम का पौधा 2. कपूर ।
ओष्ठः [उष्+थन्] होठ । सम०—अवलोप्य (वि०) जो होठों से खाया जा सके,—पाकः सरदी के कारण होठों का फटना ।
ओष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+यत्] ओष्ठ संबंधी, जो होठों पर रहे । सम०—योनि (वि०) जो ओष्ठ्यध्वनि से उत्पन्न हो, स्थान (वि०) जो होठों से उच्चरित हों ।

औ

औग्रसेनः [उग्रसेन+अण्] उग्रसेन का पुत्र कंस।

औच्च्यम् [उच्च+ष्यञ्] देशान्तर, (ग्रह की) दूरी।

औतथ्य (वि०) [उतथ्य+अण्] उतथ्य कुल से संबद्ध, उतथ्य कुल में उत्पन्न।

औत्तमर्णिकम् [उत्तमर्ण+ठक्] कर्ज, ऋण।

औत्थितासनिकः [उत्थितासन+ठक्] बैठने के लिए आसनों का प्रबंध करने वाला अधिकारी—बं० शि० १४९।

औत्पत्तिकम् [उत्पत्ति+ठक्] लक्षण, स्वभाव—औत्पत्तिकेनैव संहननबलोत्पेताः—भाग० ५।२।२१।

औदीच्य (वि०) [उदीची+यत्] उत्तरी देश से संबंध रखने वाला।

औदुम्बरायणः [उदुम्बर+फक्] एक वैयाकरण का नाम।

औद्रङ्गिकः [उद्रङ्ग+ठञ्] 'उद्रंग' अर्थात् कर का संग्राहक —घोषाल० २१०।

औपकुर्वाणक (वि०) [उपकुर्वाण+कक्] किसी नियत अवधि के ब्रह्मचारी 'उपकुर्वाण' से संबद्ध।

औपगविः (पुं०) उद्धव—भाग० ३।४।२७।

औपपत्यम् [उपपति+ष्यञ्] उपपति या जार से प्राप्त होने वाला हर्ष।

औपसन्ध्य (वि०) [उपसन्ध्या+अण्] संध्या आरंभ होने से ज़रा पूर्ववर्ती समय से संबद्ध —रश्मिभिरौपसन्ध्यैः —नै० २२।५६।

औपस्थितिकः [उपस्थिति+ठक्] सेवक —एप भर्तृपादमूलादौपस्थितिको हंसः —प्रतिज्ञा० १।

औम (वि०) [उमा+अण्] उमा संबंधी।

औरस (वि०) [उरसा निर्मितः अण्] 1. शारीरिक —न ह्यस्त्यस्यौरसं बलम् महा० ३।११।३१ 2. नैसर्गिक —शिक्षौरसकृतं बलम्—महा० ७।३७।२०।

और्णस्थानिकः [ऊर्णस्थान+ठक्] ऊन विभाग का अधिकारी।

औषधम् [औषधि+अण्] रोकथाम, मुकाबला, अनिरुद्ध निषधमनौषधं जनः शि० १७।७।

औषधिप्रतिनिधिः (पुं०) किसी औषधि के स्थान में प्रयुक्त होने वाली जड़ी-बूटी।

औष्ट्रिक (वि०) [उष्ट्र+ठक्] ऊंट संबंधी।

औष्ट्रिकः [उष्ट्र+ठक्] 1. ऊंट से प्राप्त (दुग्धादिक) 2. तेली—महा० ८।४५।२५।

क

कम् [कै+ड] 1. बाल, केश 2. महिला का कृत्य 3. बालों का गुच्छा 4. दूध 5. विपत्ति 6. ज़हर 7. भय।

कंशः [कं जलं शेते अत्र] जलपात्र।

कंसकृषः [कंस+कृष्+अच्] श्रीकृष्ण का विशेषण —निपेदिवान् कंसकृषः स विष्टरे—शि० १।१६।

ककुदिन् (वि०) [ककुद्+इनि] नेता, स्वामी —आस्यं विवृत्य ककुदी —महा० १२।२८९।१९।

कक्ष्यम् [कक्ष+यत्] सूखे घास की चरागाह—प्रघक्ष्यति यथा कक्ष्यं चित्रभानुर्हिमात्यये—रा० २।२४।८।

कक्ष्या [कक्ष+यत्+टाप्] 1. सेना का घेरा 2. प्रतिद्वंद्विता 3. प्रतिज्ञा 4. शेष, अवशिष्ट।

कङ्कवासस् (पुं०) [ब० स०] बाण—असंपातं करिष्यन्ति चरन्तः कङ्कवाससः —रा० ५।२१।२६।

कङ्कटेरी (स्त्री) हरिद्रा, हल्दी।

कङ्कणधारणम् [ष० त०] किसी बड़े यज्ञ का उपक्रम सूचक मुख्य पुरोहित या यजमान की कलाई में सूत्रबन्धन या कड़ा पहनाना।

कङ्केलिः (पुं०) वृक्षविशेष जिसमें शरदृतु में फूल आते हैं —पशूनामीशानः प्रमदवनकङ्केलितरवे —सौ०।

कङ्केसिका (स्त्री०) केवल सिर भिगोना, सिर का स्नान।

कच्छः [क+छो+क] घनी बसी हुई बस्ती।

कज्जलिका (स्त्री०) पारे का बना चूर्ण।

कञ्चुकीयः [कञ्चुक+छ] कञ्चुकी, अन्तःपुराध्यक्ष।

कञ्जिनी [कञ्ज+इनि+ङीप्] वेश्या।

कटः [कट्+अच्] 1. चटाई 2. कूल्हा 3. बाण 4. लकड़ी का तख्ता 5. हाथी की कनपटी। सम० कुटिः (पुं०) [ब० स०] फूस की छत वाली झोंपड़ी, —कृत् (पुं०) तिनकों की चटाई बुनने वाला,—पूर्णः हाथी जो अपनी मस्ती या कामोन्माद की पहली अवस्था में हो, —भूः हाथी की कनपटी का प्रदेश, —स्थालम् शव, लाश, —जकः (पुं०) जनसमुदायविशेष—लोके गोपालकमानय कटजकमानयेति यस्यैषा संज्ञा भवति स आनीयते महा० १।१।८, —फलः घूस, रिश्वत—उत्कोचेऽस्त्री कटफलः—नाना०।

कटारिका (स्त्री०) एक छोटी कटार, बर्छी।

कटिनी (पुं०) हस्तिनी।

कटुभङ्गः, **कटुभद्रः** } सूखा अदरक, सोंठ।

कट्ट् (चुरा० पर०) एकत्र करना, मिट्टी से ढकना।

कट्टारिका (स्त्री०) क़साई की छुरी।
कठः [कठ्+अच्] एक ऋषि का नाम जो वैशम्पायन के शिष्य थे। सम० —उपनिषद् एक उपनिषद् का नाम, —कालापाः कठ और कालाप की शाखाएँ —पा० २।४।३ पर महाभाष्य—ये च मे कठकालापा —रा० २।३२।१८, —धूर्तः यजुर्वेद की कठ शाखा में प्रवीण ब्राह्मण।
कठिनम् [कठ इनच्] 1. कुदाल—प्लवे कठिनकाजं च —रा० २।५५।१७ 2. मिट्टी का बर्तन —महा० ३।२९७।१, 3. कंधे पर जमाया हुआ फ़ीता या बाँस जिससे बोझा ढोया जाय —पा० ४।४।७२।
कठिकल्लः (पुं०) एक प्रकार का सेव।
कठुर (वि०) [कठ्+उरच्] कठोर, क्रूर।
कठोरित (वि०) [कठोर+इतच्] कड़ा किया गया, सबल बनाया गया।
कडुली (स्त्री०) एक प्रकार का ढोल।
कडेरः एक देश का नाम।
कणः [कण्+अच्] मगरमच्छ।
कणवीरकः (पुं०) एक प्रकार का संखिया।
कण्टकः [कण्ट्+ण्वुल्] मन दुखाने वाला भाषण।
कण्टकिलः [कण्टक+इलच्] बाँस।
कण्टाफलः [कण्टा+फल्+अच्] सेमल का फल, सेमल का पेड़।
कण्ठः [कण्ठ्+अच्] गला, कण्ठ। सम० —त्रः हार, शुल्ककेयूरकण्ठत्राः महा० ५।१४३।३९, —नालम् कण्ठ की नाली, ग्रीवाप्रदेश, —माला, एक रोग का नाम जो प्रायः गले में होता है, —रोधम् आवाज़ को कम करना।
कण्ठला (स्त्री०) बेत से निर्मित एक टोकरी।
कण्डिल (वि०) [कण्ड्+इलच्] 1. पीए हुए, शराबी, 2. चंचल, उच्छृङ्खल कण्डिललड्डुका मे प्रतिष्ठाः प्रतिज्ञा० ३।
कण्वोपनिषद् (स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम।
कत्ताशब्दः (पुं०) पासे फेंकने का शब्द अरे कत्ताशब्दो निर्नाणकम्प हरति हृदयं मृच्छ० २।५।
कथ् (चुरा० उभ०) स्तुतिगान करना।
कथकटीका (स्त्री०) रामायण पर टीका।
कथन्ता [कथम्+तल्] अवर्णनीय बेचैनी।
कथामात्र (वि०) जो केवल कथा में ही रह गया हो, मृत।
कदम्बः [कद्+अम्बच्] 1. धूल 2. सुगन्धि—कदम्बः पुंसि नीपे स्यात्तिनिशे वरुणद्रुमे। धूल्यां समूहे गन्धे च नाना०। सम० —युद्धम् एक प्रकार श्रृंगाररस का नाटक—वात्स्या०।
कदली [कदल+ङीष्] केला। सम० —क्षता 1. एक प्रकार की ककड़ी 2. एक सुन्दर महिला, —गर्भः केले का गूदा।
कनकम् [कन+वुन्] सोना, —कः (पुं०) 1. पलाश वृक्ष 2. धतूरे का पौधा। सम० —कदली एक प्रकार का केला जिस के पत्ते भूरे होते हैं —क्रीडाशैलः कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीयः —मेघ० ७९,—कारः सुनार, —पट्टम् कपड़ा जिस पर सोने या जरी का काम हुआ हो—पीतं कनकपट्टाभं स्रस्तं तद्वसनं शुभम् —रा० ५।१५।४५, —पर्वतः मेरु पहाड़।
कनपः [कनो दीप्तिर्गतिः शोभा वा पाति सः] एक प्रकार का अस्त्र—महा० ३।२०।३४।
कनिष्कः एक राजा जो पहली शताब्दी में हुआ।
कनिष्ठा [अतिशयेन युवा—युवन्+इष्ठन् कनादेशः] छोटी पत्नी।
कनीनिकम् [कनीन+कन्, इत्वम्] कुछ साममन्त्रों का समूह।
कनीयस् (पुं०) [युवन्+ईयसुन्, कनादेशः] छोटा भाई —कलत्रवानहं बाले कनीयांसं भजस्व मे —रघु० १२ 2. कामोन्मत्त, प्रेमी।
कन्तुः [कम्+तु] प्रेमी।
कन्दरालः [कन्दर+आलच्] अखरोट का वृक्ष।
कन्दर्पः [क कुत्सितो दर्पो यस्मात्—ब० स०] काम देव। सम० —दर्पः कामदेव की शक्ति,—वह्निः कामातुरता के कारण होने वाली गर्मी।
कन्दाशः [ब० स०] जो कन्द अर्थात् जड़ें खाकर जीवित रहता है।
कन्दुकघातः [ष० त०] गेंद को उछालना—आरामसीमनि च कन्दुकघातलीलालीलायमानननयनाम्—नारा०।
कन्यका [कन्या+कन्, ह्रस्वता] दुर्गा।
कन्यका परमेश्वरी कन्या कुमारी की अधिष्ठात्री देवता।
कन्यस् (वि०) 1. छोटा 2. निम्नतर, नीचे का।
कन्यसः (पुं०) सबसे छोटा भाई, सा (स्त्री०) सबसे छोटी अँगुली,—सी सबसे छोटी बहन।
कन्या [कन्+यक्+टाप्] 1. अविवाहित लड़की या पुत्री 2. कुमारी 3. दुर्गा। सम० —दूषकः जो कुमारी कन्या से हठसंभोग या जबरजिनाह करता है, —भैक्ष्यम् लड़की को उपहार के रूप में माँगना, —व्रतस्था मासिकधर्म वाली स्त्री—मयि कन्याव्रतस्थायां —कथा०।
कपाटबन्धनम् [ष० त०] दरवाजा बन्द करना।
कपाटिका (स्त्री०) दरवाजा।
कपालमोक्षः [ष० त०] निर्वाण होने पर संन्यासी की कपालक्रिया जो उसके उन्नत जीवन का सूचक है।
कपिमुष्टिः (स्त्री०) बन्दर की बँधी मुट्ठी, —ः तना हुआ घूसा, (आलं०) दृढ़ रक्त।

कपित्वम् (नपुं०) बन्दर की विशेषता—कपित्वमनवस्थितम्—रा० ५ ।

कपिलवस्तु उस नगर का नाम जहां बुद्ध का जन्म हुआ था ।

कपिला (स्त्री०) एक नदी का नाम जो कावेरी में मिलती है ।

कपोतवृत्तिः (स्त्री०) [ब० स०] अपव्ययी स्वभाव होना, अपने भोजन का कुछ भी प्रबन्ध न करना महा० ३।२६०।५ ।

कपोलताडनम् (नपुं०) अपनी त्रुटि को स्वीकार करने के चिह्न-स्वरूप अपने गालों को थपथपाना ।

कपोलपत्रम् (नपुं०) पत्ते से मिलता-जुलता एक चिह्न गालों पर अङ्कित करना ।

कपोलपालिः (—ली) (स्त्री०) गाल का एक पार्श्व ।

कबलः [क+वल् (वल्)+अच्] दे० 'कवलः' ।

कवलम् (नपुं०) हाथियों का एक प्रकार का प्राकृतिक चारा ।

कमन (वि०) [कम्+ल्युट्] प्रेमी, पति—उदयाचलशृङ्गसङ्गतं कमलिन्याः कमनं व्यभावयत् साहेन्द्र २।१०१ ।

कमला [कमल+अच्+टाप्] नारंगी, संतरा ।

कमलाक्षः [ब० स०] 1. कमल का बीज 2. कमल जैसी आंखों वाला 3. विष्णु ।

कमलीका (स्त्री०) छोटा कमल ।

कम्बलः [कम्ब्+कलच्] हाथी की झूल, गजप्रावरणे चव···नाना० ।

कम्भ (वि०) 1. जलयुक्त 2. प्रसन्न ।

करः [कृ+अप्, अच् वा] 1. हाथ 2. टैक्स, शुल्क । सम० —**कच्छपिका** (स्त्री०) योग की एक मुद्रा जिसमें हाथ कछुए से मिलते-जुलते हो जाते हैं—**कृतात्मन्** (वि०) दरिद्र, जिसका कठिनाई से निर्वाह हो —**तलीकृ** हथेली में रखना, चुल्लू की भांति अञ्जलि में रखना - ततः करतलीकृत्य व्यापि हालाहलं विषम् —भाग० ८।७।४३,—**पात्री** 1. चमड़े का बना हुआ प्याला 2. जो भिक्षा अपने हाथ में ग्रहण करता है —**मर्दः**,—**मर्दी**,—**मर्दकः** एक पौधे का नाम ।

करकवारि [ष० त०] ओलों का पानी—कौ० अ० १।२० ।

करटामुखम् (नपुं०) हाथी की कनपटी पर एक छिद्र जिसमें से हाथी की मदोन्मत्तता के समय तरल पदार्थ बहता है ।

करणम् (नपुं०) [कृ+ल्युट्] ग्रहों की गति के विषय में वराहमिहिर की एक कृति । सम०—**व्यूहम्** ज्योतिषशास्त्र का एक ग्रन्थ,—**विभक्तिः** तृतीया विभक्तिः—सूक्तवाकानेव करणविभक्तिसंयोगात्— मी० सू० ३।२।१२ पर शा० भा० ।

करभः [कृ+अभच्] श्रोणि, कूल्हा ।

करम्भ (वि०) [क+रम्भ्+घञ्] भुना हुआ, तला हुआ—कामाधियस्त्वयि रचिता न परमारोहन्ति यथा करम्भबीजानि - भाग० ६।१६।३९ ।

कराल (वि०) [कर+आ+ला+क] जिसके दांत बाहर को निकले हुए हों ।

करालित (वि०) [कराल+इतच्] 1. सताया हुआ 2. आवर्धित, प्रखर किया हुआ ।

करिन् (पुं०) [कर+इनि] 1. हाथी 2. 'आठ' की संख्या । सम०—**मुक्ता** मोती,—**रतम्** संभोग के समय का विशेष आसन, रतिबन्ध—कि० ५।२३ पर टीका,—**सुन्दरिका** पनसाल, पानी का चिह्न ।

करीरु(—**रू**) (स्त्री०) 1. झींगर 2. हाथी के दांत की जड़ ।

करुणाकरः [करुणा+कृ+अच्] दयालु, करुणा करने वाला ।

करूपः (पुं०) गर्दा, गंदगी, मैल, पाप—निर्मलो निष्करूपश्च शुद्ध इन्द्रो यथाभवत् - रा० १।२४।२१ ।

करूषाः (ब० व०) एक देश का नाम - रा० १।२४ ।

कर्क (वि०) [कृ+क] 1. रत्न, मणि 2. नारियल के खोल से बनाया गया पात्र 3. कंजूस ।

कर्का (स्त्री०) सफ़ेद घोड़ी ।

कर्कन्धुः (—न्धूः) (स्त्री०) [कर्कं कण्टकं दधाति-धा +कू] दस दिन का भ्रूण—दशाहेन तु कर्कन्धूः —भाग० ३।३१।२ ।

कर्कन्धुः (पुं०) बिना पानी का कुआं - उणादि० १।२८ पर भाष्य ।

कर्करेटम् (नपुं०) गर्दन से पकड़ना ।

कर्कश (वि०) [कर्क+श] 1. रूखा, निष्ठुर 2. दुर्व्यसनी,—**शः** (पुं०) काले रंग का गन्ना ।

कर्णः [कर्ण्+अप्] 1. वृत्त की व्यास 2. अन्तर्वर्ती प्रदेश, उपदिशा । सम—**अञ्जलः** (—**लम्**) कर्णपालि, —**कटु** (वि०),—**कठोर** (वि०), सुनने में कष्टप्रद, —**कषायः** कान की मजाद—आपीयतां कर्णकषायशोषान्—भाग० २।६।४६,—**चूलिका** कानों की बाली, —**पुटम्** कान का विवर,—**मलम्** कान की मैल, घूघ,—विष्णुकर्णमलोद्भूतौ—दे० म०,—**मुकुरः** कर्णाभूषण,—**स्रोतस्** (नपुं०) कान बहने पर कान से निकलने वाला मल,—**हर्म्यम्** पार्श्वस्थ बुर्जी ।

कर्णेचुरचुरा (स्त्री०) कानाफ़ूसी, कान में कोई रहस्य की बात कहना ।

कर्णेजयः [कर्णे+जप्+अच् अलुक्समास] 1. कानाफूसी करना 2. संवाददाता संसूचक तवापर्णे कर्णे जपनयनपैशून्यचकिताः - सौ० ।

कर्तरी (स्त्री०) नृत्य का एक भेद ।

कर्तृपदम् (नपुं०) 'कर्ता' को दर्शाने वाला शब्द ।

कर्तृनिष्ठ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से संबद्ध ।

कर्परी कर्परिका [कृप्+अरन् ङीप्, स्त्रियां कन्+टाप्, ह्रस्वश्च] एक प्रकार का अंजन, सुरमा।

कर्पूरमञ्जरी (स्त्री०) राजशेखरकृत एक नाटक।

कर्पूरस्तवः [कर्पूर+स्तु+अप्] तन्त्रशास्त्र में वर्णित स्तुति-गान।

कर्मन् (नपुं०) (कृ+मनिन्] 1. कार्य करने की इन्द्रिय —कर्माणि कर्मभिः कुर्वन्—भाग० ११।३।६ 2. प्रशिक्षण, अभ्यास —कौ० अ० २।२। सम०—**अन्तः** (**कर्मान्तः**) कार्यकर्त्ता कच्चिन्न सर्वे कर्मान्ताः—रा० २।१००।५२,—**अन्तरम्** (**कर्मान्तरम्**) दूसरा कार्य,—**अपनुत्तिः** **कर्मापनुत्तिः**) —(स्त्री) कर्म का नाश,—**आख्या** (**कर्माख्या**) कर्म के आधार पर नामकरण,—**आशयः** (**कर्माशयः**) अच्छे बुरे कर्मों के फलों का संचयस्थान, —**गतिः** पूर्वकृत कर्मों की दशा—सुखासुखो कर्मगति-प्रवृत्तौ—सुभाष०,—**च्छेदः** कर्तव्यकर्म पर उपस्थित न रहने के फलस्वरूप हानि—कौ० अ० २।७,—**देवः** जिसने अपने धर्मपूर्ण कृत्यों के द्वारा देवत्व प्राप्त कर लिया है,—**नामधेयम्** कुछ कारणों के आधार पर नाम रखना यूंही अपनी इच्छा से नहीं,—**निश्चयः** किसी कार्य का निर्णय,—**श्रुतिः** कार्य का आख्यान करने वाली वैदिक उक्ति—कर्मश्रुतेः परार्थत्वात्—मै० सं० ११।२।६।

कर्बूरकः (पुं०) अदरक जैसा एक सुगन्धित पदार्थ जो औषधियों तथा सुगन्ध द्रव्यों के निर्माण में प्रयुक्त होता है, कचोरा।

कल (वि०) [कल्+घञ्] 1. प्रबल 2. (समासान्त में प्रयुक्त) पूर्ण, भरा हुआ—दीनस्य ताम्राश्रुकलस्य राज्ञः—रा० २।१३।२४। सम०—**व्याघ्रः** तेंदुआ और मादा चीता से उत्पन्न संकर नस्ल का जानवर, बाघ।

कलङ्कः (पुं०) [कल्+क्विप्, कल् चासौ अङ्कश्च कर्म० स०] सम्प्रदायद्योतक मस्तक पर तिलक—कलङ्क···· तिलकेऽपि च नाना०।

कलञ्जन्यायः (पुं०) न्याय जिसके अनुसार किसी से संबद्ध निषेध उस कार्य को करने का प्रतिषेध करता है।

कलमगोपवधू (**—गोपी**), (**—गोपालिका**) } (स्त्री०) चावलों के खेत की रखवाली के लिए नियुक्त स्त्री,—शि० ६।४९, जानकी० ११।

कलहनाशनः एक पौधा, करञ्ज।

कला [कल्+कच्+टाप्] 1. हाथी की पूंछ के पास मांसल गद्दी 2. स्वरूप—लीलया दधतः कलाः—भाग० १।१।१७ 3. नाशकारी शक्ति संहृत्य कालकलया—भाग० ११।९।१६। सम०—**कारः** ललितकलाविद्, कलाविज्ञ।

कलावती (स्त्री०) [कला+मतुप्+ङीप्] एक प्रकार की वीणा।

कलिकारकः (पुं०) 1. करञ्ज वृक्ष 2. पक्षिविशेष।

कलिका [कलि+कन्+टाप्] सर्वोत्तम कवि के लिए सम्मानसूचक उपाधि।

कलिल (वि०)[कल+इलच्] 1. विकृत, संदूषित 2. सन्दिग्ध, अनिश्चित—एतस्मात्कारणाच्छ्रेयः कलिलं प्रतिभाति मे—महा० १२।२८७।११।

कलुष (वि०) [कल्+उपच्] 1. गंदा, मैला। सम० —**मानस** (वि०) जहरीला, **दृष्टि** (वि०) बुरी दृष्टि से देखने वाला।

कल्किपुराणम् (नपुं०) एक पुराण का नाम।

कल्पः [क्लृप्+घञ्] आस्था, विश्वास—लौकिके समयाचारे कृतकल्पो विशारदः—रा० २।१।२२। सम०—**वृक्षः**, —**तरुः** कोई व्यक्ति या पदार्थ जो प्रचुर मात्रा में भलाई करे—निगमकल्पतरोर्गलितं फलं—भाग० १।१।३,—**स्थानम्** 1. औषधियों के निर्माण की कला 2. विषविज्ञान, अगदविज्ञान—सुश्रुत।

कल्पकः [क्लृप्+ण्वुल्] 1. वृक्षविशेष, कचोरा 2. (वि०) मानकस्वरूप, निश्चित नियमानुकूल—याजयित्वाश्वमेधैस्तं त्रिभिरुत्तमकल्पकैः—भाग० १।८।६।

कल्पनाशक्तिः (स्त्री०) [ष० त०] विचार बनाने की सामर्थ्य, विचारों की मौलिकता, भावनाशक्ति।

कल्य (वि०) [कला+यत्] ललित कलाओं में दक्ष।

कल्याण (वि०) [कल्य+अण्+घञ्] यथार्थ, प्रमाणित, युक्तियुक्त—कल्याणी वत गाथेयं लौकिकी प्रतिभाति मे—रा० ५।३४।६। सम०—**पञ्चकः** वह घोड़ा जिसका मुख और पैर सफेद हो।

कल्हणः (पुं०) राजतरंगिणी का रचयिता।

कवि (वि०) [कु+इ] 1. सर्वज्ञ 2. बुद्धिमान्—**विः** (पुं०) 1. विचारक, कविता करने वाला 2. वाल्मीकि 3. ब्रह्मा। सम०—**कल्पितम्** कवि की कल्पना,—**परंपरा** कवियों का अनुक्रम—अतिविचित्रकविपरम्परावाहिनि संसारे—ध्वन्या० १,—**हृदयम्** कवि का वास्तविक आशय।

कवित्वम् [कवि+त्व] 1. (वेद) बुद्धिमत्ता 2. कवि कौशल।

कशः [कश्+अच्] चर्बी—कशशब्दो मेदसि प्रसिद्धः—मै० सं० ९।४।२२ पर शा० भा०।

कषाणः [कष्+ल्युट् पृषो० आत्वम्] मसलना, रगड़ पैदा करने वाला—निद्राक्षणोऽद्रिपरिवर्तकषाणकण्डूः—भाग० २।७।१३।

कषायवसनम् [ष० त०] संन्यासियों की पीले से खाकी रंग की वेशभूषा।

कष्टमातुलः (पुं०) सौतेली माँ से उत्पन्न भाई।

कसनः [कस्+ल्युट्] खाँसी। सम०—**उत्पाटनः** (पुं०) एक पौधा जिसके रस के सेवन से खाँसी दूर हो जाती है।

का (स्त्री०) 1. पृथ्वी, धरती 2. दुर्गा देवी।

कांस्यम् [कंस+छ (ईय)+यञ्, छलोपः] कांसी का बना हुआ, पीतल का बना जल पीने का जलपात्र, गिलास। सम०—**उपदोह** (वि०) बर्तन भर कर दूध देने वाला —**दोह** (वि०), —**दोहन** (वि०) दे० 'कांस्योपदोह' —**नीलम्**, —**नीली** तुत्थांजन, कासीस।

काकः [कै+कन्] 1. कौवा 2. पानी में केवल सिर डुबोकर नहाना। सम० **अदनी** गुञ्जा का पौधा,—**उडुम्बरः उडुम्बरिका** अंजीर का पेड़, गूलर, **जम्बुः** गुलाबजामुन का पेड़, **तुण्डम्** विशेष रूप से बनाई हुई बाण की नोंक,—**तिक्ता**, **तुण्डिका**,—**नासा**,—**नासिका** वृक्षों के विभिन्न प्रकार,—**चर्या** (स्त्री०) जो कुछ उपलब्ध हो उसी को पीकर रहने को कौवे की आदत का अनुसरण करना और केवल निरी आवश्यकता पूरी करना एवं गोमृगकाकचर्यया व्रजन्—भाग० ५।५।३४, **मैथुनम्** कौओं की रति क्रिया जिसको देखने पर प्रायश्चित्त करना पड़ता है,—**स्नानम्** कौवे की भांति स्नान करना, —**स्पर्शः** 1. कौवे को छूना जिससे कि फिर स्नान करना पड़ता है 2. मृत्यु के पश्चात् दसवाँ दिन जब चावल का पिण्ड कौवों को दिया जाता है।

काकिणिक (वि०) [काकिणी+ठक्] कौड़ी के मूल्य का निकम्मा, अनुपयोगी।

काक्षीवः (पुं०) एक वृक्ष का नाम, शोभाञ्जन, सौहंजणा।

काचः [कच्+घञ्, कुत्वाभावः] वह मकान जिसमें दक्षिण और उत्तर की ओर कमरे बने हों —बृ० सं० ५३।४०। सम०—**कामलम्** आँख का एक रोग, काच बिन्दू।

काचिमः (पुं०) एक पवित्र वृक्ष (जो मन्दिर के पास उगा हो)।

काच्छपः [कच्छप+अण्] कछुवे से सम्बन्ध रखने वाला।

काञ्छिक (वि०) सुगंधपूर्ण द्रव्यों का निर्माता।

काजम् (नपुं०) लकड़ी की मोगरी।

काञ्चीगुणः [ष० त०] 1, तगड़ी की डोर 2. काञ्ची नामक नगरी की समृद्धि काञ्चीगुणार्कषितसार्थलोका दिग्दक्षिणा कर्कशयत्नभोग्या—जानकी० १।१६।

काठक (वि०) [कठ+वुञ्] कृष्ण यजुर्वेद की कठ संहिता से संबंध रखने वाला।

काण्डपुष्पम् (नपुं०) 'कुन्द' फूल।

काण्डमायनः (पुं०) एक वैयाकरण का नाम।

काण्डानुसमयः (पुं०) पहले एक वस्तु, व्यक्ति या देवता से सम्बद्ध समस्त प्रक्रिया पूरा करना, फिर दूसरे से संबद्ध, फिर तीसरे से, इसी प्रकार चलते रहना।

काण्डेरी (स्त्री०) हल्दी का पौधा, मञ्जिष्ठा का पौधा।

कात्यायनसूत्रम् (नपुं०) कात्यायन का श्रौतसूत्र।

कादम्बरी बाण प्रणीत एक गद्य काव्य (उपन्यास)।

कादिक्षान्तः [क आदि+क्ष—अन्त] व्यञ्जन (क् से लेकर क्ष् की समाप्ति तक जो अक्षर आयं) कादि क्षान्तसमस्तवर्णजननी अन्न०।

कानिष्ठ्यम् [कनिष्ठ+ष्यञ्] सबसे छोटा होने की स्थिति।

कान्तनावकम् (नपुं०) चमड़े का एक भेद कौ० अ० २।११।

कान्तिः [कम्+क्तिन्] लक्ष्मी—ददौ कान्तिः शुभां स्रजम्—भाग० १०।६५।२९।

कान्दिश् (वि०) [काम् दिशम्] भगाया गया, (युद्धादि में डर कर) भागने वाला, दौड़ने वाला।

कापुरुषः [कुत्सितः पुरुषः कोः कदादेशः] नीच व्यक्ति, कायर, ओछा आदमी।

कापेयम् [कपेर्भावः कर्म वा—कपि+ढक्] बन्दर का व्यवहार या आदत।

काबन्ध्यम् [कबन्ध+ष्यञ्] बिना सिर के धड़ का होना।

कामः [कम्+घञ्] 1. इच्छा, चाह 2. स्नेह, प्रेम 3. जीवन का एक उद्देश्य (पुरुषार्थ)। सम० —**आश्रमः** वह आश्रम जहाँ कामदेव ने तपस्या की थी,—**ईश्वरी** कामाक्षी जिसने शिव में कामोत्तेजना जगाने के लिए कामदेव का रूप धारण किया, **कारः** कार्य करने की स्वतंत्रता, अपनी इच्छा के अनुसार काम करना—नात्मनः कामकारो ऽस्ति पुरुषोऽयमनीश्वरः—रा०२।१०१।१८,—**कोटिः** (स्त्री०) 1. इच्छाओं की चरम सीमा 2. अभिलाषाओं की पराकाष्ठा 3. दक्षिण में काञ्चीपुरी में शङ्कराचार्य द्वारा स्थापित आध्यात्मिक संस्था,—**तन्त्रम्** एक रचना, कृति, **दहनम्** फाल्गुन मास में मनाया जाने वाला एक पर्व जिसमें शिव के द्वारा काम को फुसला कर भस्म कर दिया जाता है,—**दानम्** 1. इच्छित पदार्थ का उपहार 2. वेश्याओं द्वारा मनाया जाने वाला एक पर्व,—**धर्मः** शृंगारसिक्त चेष्टा या व्यवहार,—**भाक्** विषय भोगों में भाग लेने वाला —कामानां त्वा कामभाजं—करोमि कठ० १-२४।

कामठकः [कमठ+अण्, स्वार्थेकन्] 1. धृतराष्ट्र का नाम 2. एक साँप का नाम जो 'सर्पसत्र' में भस्म हो गया था।

कामन्दकिः (पुं०) कामन्दकीय नीति का प्रणेता।

कामला [कम्+णिङ्+कलच्+टाप्] केले का पौधा।

कामिकागमः (पुं०) आगम शास्त्र का एक ग्रन्थ।

कामिनी (स्त्री०) [काम+इनि+ङीप्] मादक शराब।

काभीलः (पुं०) एक प्रकार का सुपारी का वृक्ष।

काम्बलिकः [कम्बल+ठक्] दलिया, जौं की लपसी।

काम्बोजः [कम्बोज+अण्] 1. शंख 2. पुन्नाग नामक वृक्ष।

काम्यकः (पुं०) महाभारत में वर्णित एक जंगल का नाम।

कायिन् (वि०) [काय+इनि] बड़े आकार प्रकार का, ---समूलशाखान् पश्यामि निहतान् कायिनो द्रुमान् महा० १२।११३।८।

कायाधवः [कयाधु+अण्] कयाधु का पुत्र, प्रह्लाद।

कारकम् [कृ+ण्वुल्] 1. इन्द्रिय, अंग 2. (व्या० में) वाक्य में संज्ञा और समापिका क्रिया का मध्यवर्ती संबंध। सम० **विभक्तिः** संज्ञा और क्रिया के मध्य संबंध स्थापित करने वाली प्रक्रिया।

कारणम् [कृ+णिच्+ल्युट्] हेतु, निमित्त पूर्व जन्म से आई हुई वृत्ति, पूर्ववासना महा० १२।२११।६। सम० **कारितम्** (अ०) फलस्वरूप---यदि प्रव्राजितो रामो लोभकारणकारितम् रा० २।५८।२८ **अन्तरम्** (**कारणान्तरम्**) 1. भिन्न प्रसंग, परिवर्तन शील हेतु 2. कारण परक हेतु।

कारणता [कारण+तल्+टाप्] कारणपना, हेतुत्व —प्रलयस्थितिसर्गाणामेकः कारणतां गतः---कु० २।६।

कारापकः [कार+आपकः, त० स०] भवन के निर्माण कार्य का अधीक्षक, काम की देखभाल करने वाला।

कारूषाः (ब०व०) 1. एक देश का नाम 2. अन्तवर्ती जाति का (पिता व्रात्यवैश्य तथा माता वैश्य) पुरुष।

कारूषम् (नपुं०) मल या पाप -रा० १।२४।२०।

कार्कलास्यम् [कृकलास+ष्यञ्] छिपकली की स्थिति।

कार्णाट भाषा (स्त्री०) कन्नड़ भाषा।

कार्तिकः [कृत्तिका+अण्] स्कन्द का विशेषण।

कार्पटिकः [कर्पट+ठक्] कपटी, धोखेबाज, ठग।

कार्पासतन्तुः (सूत्रम्) [कर्पासी+अण्=कार्पासस्तस्य तन्तुः ष० त०] कपड़े का धागा।

कार्मणत्वम् [कर्मन्+अण्, तस्य भावः त्वम्] जादू, टोना कार्मणत्वमगमन् रमणेषु—शि० १०।३७।

कार्मान्तिकः (पुं०) उद्योग धन्ध और निर्माणकार्यों का अधीक्षक - कौ० अ० १।१२।

कार्मारिकः [कार्मार+ठक्] बर्छी - कौ० अ० २।३।

कार्यम् [कृ+ण्यत्] शरीर—कार्याश्रयिणश्च कललाद्याः (कार्यशरीरं)—सां० का० ४३। सम० - **अपेक्षिन्** (वि०) किसी विशेष कार्य को करने वाला, —**आश्रयिन्** (वि०) शरीर का सहारा लेने वाला का० ४३, - **व्यसनम्** कार्य में विफलता,—**वशात्** (अ०) किसी प्रयोजन से, किसी काम से।

कालः [कलयति आयुः कल्+णिच्+अच्] 1. सांख्य कारिका में बताये चार पदार्थों में से एक प्रकृत्युपादानकालभागाख्याः - सां० का० ५० 2. समय का कोई भाग। सम०—**अष्टकम्** 1. आषाढ मास कृष्णपक्ष के पहले आठदिन 2. काल भैरव का स्तोत्र जिससे शंकर की स्तुति की गई है, - **आविकः** चैत्रमास —**आम्रः** 1. आम का एक भेद, 2. एक टापू का नाम,—**कञ्जम्** नील कमल, **कण्ठी** कालकण्ठ की पत्नी, पार्वती, **कल्लकः** पनियाला सांप, **जोषकः** जो समय पर मिले उसके भोजन से ही संतुष्ट है, **दष्टः** जिसे सांप ने डस लिया है. **धौतम्** (कलधौतम्) चांदी या सोना,— **पर्यय**. देरी, विलम्ब, वक्तुमर्हसि सुग्रीवं व्यतीतं कालपर्यये, **पुरुषः** यमराज का सेवक, —**रुद्रः** संसार को नष्ट करने के अपने भयकर रूप में विद्यमान रुद्र, **वृतः** कुलत्थ, एक प्रकार की दाल, —**संकर्षिणी** मंत्रविद्या जिससे समय की अवधि कम की जा सके, **सङ्गः** देरी, विलम्ब, - कार्यस्य च कालसङ्गः —रा० ८।३३।५३,—**समन्वित**, (**समायुक्त**), मृत मरा हुआ।

कालङ्कृतः (**कासमर्दः**), खांसी को भगाने वाली औषध।

कालन (वि०) [कल्+णिच्+ल्युट्] नाश करने वाला।

कालिका (स्त्री०) [काल+ठन्] 1. एक प्रकार की साग भाजी 2. तेलन, तेली की स्त्री 3. कुहरा धुंध।

कालित (वि०) [काल+इतच्] मृत, मरा हुआ नाधुना सन्ति कालिताः भाग० १०।५१।१८।

कालिदासः (पुं०) 1. एक यशस्वी कवि और नाटककार का नाम 2. नलोदय और श्रुतबोध के प्रणेताओं की भांति अन्य कवि।

कालिय (वि०) [काल+घ] 1. समय से संबद्ध 2. एक सांप का नाम जिसका कृष्ण ने दमन किया था।

कालीन (वि०) [काल+ख] किसी विशेष कालभाग से संबद्ध।

कालेयाः (पु०, ब० व०) [काली+ढक्] कृष्णयजुर्वेद की शाखा या संप्रदाय।

कालोलः (पुं०) कौवा।

काशिक (वि०) [काशी+ठक्] काशी में बना हुआ, रेशमी वस्त्र, बनारसी कपड़ा।

काशिकाप्रियः (पुं०) धन्वन्तरि।

काशेय (वि०) [काशी+ढक्] काशी का, काशी से संबंध रखने वाला।

काश्मकराष्ट्रक (वि०) हीरों का एक भेद- कौ० अ० २।११।

काश्यपेय (वि०) [कश्यप (अदिति)+ढक्] सूर्य, गरुड़ और बारह आदित्यों का विशेषण, —**यः** (पुं०) दारुक, कृष्ण का सारथि।

काषण (त्रि०) कच्चा, जो पका न हो।

काषायवसना [ब० स०] विधवा।

काष्ठम् [काश्+क्थन्] लकड़ी। सम० —**अधिरोहणम्** चिता में बैठना, **पूलकः** लकड़ियों का गट्ठा, **भारः** लकड़ियों का बोझ।

काष्ठा (स्त्री०) 1. पीला रंग 2. शारीरिक रूप या मुद्रा —काष्ठां भगवतो ध्यायेत् —भाग० ३।२८।१२ ।

कासनाशिनी [ष० त०] खांसी या दमे का नाश करने वाली औषधि का पौधा ।

काहन् (नपुं०) [क+अहन्] ब्रह्मा का एक दिन (=१००० युग) ।

काहारकः (पुं०) एक जाति का नाम जिसके लोग पालकियों में सवारियों को ढोते हैं ।

कि (जुहो० पर०) चिकेति, जानना ।

किङ्किरिः (स्त्री०) [किं किरतीति—कॄ+क, स्त्रियां—ङ्] कोयल ।

किञ्चन्यम् [किञ्चन+ष्यञ्] संपत्ति—किञ्चन्ये नास्ति बन्धनम् ·महा० १२।३२०।५० ।

किट्टिमम् (नपुं०) मैला पानी ।

किम् [कु+डिमु बा०] समासान्त शब्दों में प्रायः 'कु' के स्थान में प्रयुक्त होता है, और 'तुच्छता', 'घटियापन' दोष या ह्रास का अर्थ प्रकट करता है । सम० —**कथिका** (स्त्री०) संदेह, संकोच, —**कृते** (अ०) किसलिए, —**ज** (वि०) जो कहीं उत्पन्न हुआ हो, जिसका नीचकुल में जन्म हुआ हो, —**तुघ्नः** 'करण' नामक काल के ग्यारह भागों में से एक, —**नु** (अ०) परन्तु फिर भी, तो भी —किन्नु चित्तं मनुष्याणामनित्यमिति मे मतम् रा० २।४।२७, —**पाक** (वि०) अपरिपक्व, अज्ञानी, —**पाकः** आयुर्वेद शास्त्र में वर्णित एक जड़ी बूटी, —**पुरुषः** 1. अर्धदेव 2. घटिया मनुष्य, —**राजन्** बुरा राजा, —**विवक्षा** निन्दा, बुराई ।

किंवरः (पुं०) मगरमच्छ, घड़ियाल ।

किमीय (वि०) [किम्+छ] किसका, किससे संबंध रखने वाला ।

कियत् (वि०) [किमिदंभ्यां बोधः] (पुं० —कियान्, स्त्री० कियती, नपुं० कियत्) 1. कितना अधिक, कितना बड़ा, कितना 2. कुछ, थोड़ा सा । सम० **एतद्** किस महत्त्व का, अर्थात् तुच्छ, अतिसामान्य, —**मात्रः** नगण्य, तुच्छ बात ।

किराटः (पुं०) बेईमान सौदागर, निर्लज्ज व्यापारी—भाग० १२।३।३५ ।

किरातकः [किरं पर्यन्तभूमिं अतति गच्छतीति,स्वार्थे कन्] किरात जाति का मनुष्य ।

किर्मीरत्वच् [ब० स०] सन्तरे का पेड़ ।

किलकिलितम् (नपुं०) हर्षसूचक ध्वनियाँ ।

किलाटः (पुं०) जमा हुआ दूध ।

किलातः (पुं०) बौना, क़द में छोटा ।

किल्बिषम् [किल्+टिषच्, बुक्] 1. संकट, पाप पितेव पुत्रं धर्माद्धि त्रातुमर्हसि किल्बिषात्—रा० १।६२।७ 2. धोखा, जालसाजी ।

किशोरः [किम्+शॄ+ओरन्, किमोन्त्यलोपः, धातोष्टिलोपः] किसी जानवर का बच्चा, शिशु, शावक ।

कीकट (वि०) [की+कट्+अच्] 1. निर्धन, बेचारा कंजूस, लालची ।

कीकसास्थि(नपुं०) [की+कस्+अच्—ष० त०] कशेरुका, मेरुदण्ड, रीढ़ की हड्डी ।

कीचकः [चीक्+वुन्, आद्यन्तविपर्ययश्च] बांस जो हवा भर जाने पर शब्द करता है—कीचका वेणवस्ते स्युः ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः केवल 'बांस' के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त—स कीचकैर्मारुतपूर्णरन्ध्रैः कु० १।८, रघु० २।१२ ।

कीचकवधः [ष० त० कीचक+हन्+अप्, वधादेशः] 1. भीम के द्वारा कीचक की हत्या 2. एक नाटक का नाम ।

कीटः [कीट्+अच्] 1. कीड़ा । सम०—**अवपन्न** (वि०) कोई वस्तु जिसमें कीड़ा लग गया हो, कीड़े से खाई हुई,—**उत्करः** वमी, —तत्र कीटोत्कराकीर्ण कथा० १०१।२९०।११, —**नामा**, **पावकां**,—**पादी**,—**माता** (स्त्री०) एक पौधे का नाम ।

कीनाश (वि०) [क्लिश्—कन्, ईत्वं, लस्य लोपो नामागमश्च] 1. धरती जोतने वाला 2. निर्धन, दरिद्र 3. गुप्त हत्या—उपांशुघातिनि—नाना० 4. क्रूर ।

कीरिभारा (स्त्री०) जूँ ।

कीर्तनीय, कीर्तन्य (वि०) [कृत्+अनीय, ण्यत् वा] स्तुति किये जाने के योग्य, जिसके यश या कीर्ति का गान किया जाय

कीर्तिः (स्त्री०) [कृत्+क्तिन्] 1. यश, ख्याति 2. कृपा, प्रसाद । सम० —**मात्रशेषः** जो केवल ख्याति या यश के संसार में ही जीवित है, मृत,—**स्तम्भः** यश या ख्याति के कृत्य का खम्बा ।

कीर्तितव्य (वि०) [कृत्+तव्य] जिसकी स्तुति की जाती है ।

कीलः [कील्+घञ्] 1. जुआरी 2. मूठ, दस्ता ।

कीलप्रतिकीलन्यायः (पुं०) एक न्याय जिसके अनुसार क्रिया एक में रहती है तो प्रतिक्रिया दूसरों में रहती है—पा० २।२।६ पर म० भा० ।

कीलालिन् [कीलाल+इनि] छिपकिली, गिरगिट ।

कीशपर्णः, (—पर्णिन्) [ब० स०] अपामार्ग नाम का पौधा ।

कु (अ०) [कु+डु] बुराई, ह्रास, अवमूल्य, पाप, ओछापन और कमी को प्रकट करने वाला अव्यय । सम० —**चरः** घूमने वाला,—**जः**,—**पुत्रः** मंगल,—**वलयम्** मण्डल,—**वाच्** (पुं०) गीदड़,—**बोधम्** शरारत से भरा प्रश्न, —**तपः** 1. एक प्रकार का कम्बल जो पहाड़ी बकरियों के बालों से बनता है 2. दिन का आठवाँ मुहूर्त 3. दोहता

या भानजा 4. सूर्य, द्वारम् पिछला दरवाजा, नखम् बुरा नाखून, भोंडे या मैले नाखून, --नीतः गलत राय —पटः, – पटम् चीवर, चिथड़ा,—पात्रम् अयोग्य व्यक्ति,—मेरुः दक्षिणी ध्रुवबिन्दु,—लक्षण (वि०) खोटे चिह्नों से युक्त,-- विक्रमः अस्थानप्रयुक्त शूरवीरता,– वेधस् (पुं०) बुरी आदत ।

कुकूलाग्निः (पुं०) भूसी या बुरादे से निर्मित आग, -- कथा० ११७।९२ ।

कुक्कुटः [कुक्+क्विप्, केन कुटति – कुट्+क] 1. मुर्गा, आग की चिंगारी । सम०—अण्डम् मुर्गी का अण्डा,-- आभः,—अहिः एक प्रकार का साँप, —आसनम् योग का एक आसन ।

कुक्षिगत (वि०) [कुक्ष्यां गत इति त० स०] गर्भस्थ, ---दिष्ट्याम्ब ते कुक्षिगतः पुमान्—भाग० १० ।

कुचः [कुच्+क] स्तन, उरोज, चूची । सम०— कुम्भः तरुण युवती के स्तन,—कुड्मलम् कली के आकार का स्तन— गोपाङ्गनानां कुचकुड्मलं वा—कृष्ण०, – कुङ्कुमम् स्तन पर रोली या केसर का लेप ।

कुजाष्टमः [ब० स०] ग्रहों की विशेष स्थिति जब कि मंगल लग्न से आठवें घर में हो ।

कुञ्जरः [कुञ्ज+र] 1. हाथी 2. सिर 3. आभूषण 4. आठ की संख्या । सम०—अरिः सिंह, आरोहः महावत,—च्छायः (गजच्छायः) ज्योतिष का एक योग जिसमें चन्द्रमा मघा नक्षत्र में और सूर्य हस्त नक्षत्र में विराजमान होता है ।

कुटिल (वि०) [कुट्+इलच्] कपटी, वक्र, टेढ़ा, बेईमान । सम०--अलकम्, कुन्तलम् टेढ़ी अलकें, टेढ़ी जुल्फें -- कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां —भाग० १०।३५, –चित्तम् कपटपूर्णमन, टेढा मन –कुशेशयनिवेशिनीं कुटिलचित्तविद्वेषिणीम्–नव रत्न० ।

कुटी (स्त्री०) [कुटि+ङीप्] झोपड़ी ।

कुटुम्बिनी [कुटुम्ब+इन्+ङीप्] 1. गृहिणी 2. घर की सेविका या नौकरानी ।

कुटुम्बिता,—त्वम् [कुटुम्बिन्+ता, त्व] 1. गृहस्थ होने की स्थिति 2. पारिवारिक एकता या सम्बन्ध 3. एक परिवार की भाँति रहना ।

कुट्टनम् [कुट्ट्+ल्युट्] 1. काटना 2. पीसना 3. मुक्का बंद करके मस्तक के दोनों ओर थपथपाना, यह गणेश को प्रसन्न करने का चिह्न है ।

कुड्डालः कुदाल, मिट्टी खोदने की फाली ।

कुणपाशन (वि०) [कुणप+अश्+ल्युट्] मुर्दों को खाने वाला ।

कुणपी [कुण्+कपन्+ङीप्] एक छोटा पक्षी ।

कुणालः (पुं०) एक देश का नाम,–अयं कुणालो बहुसागर प्रिये विराजते नैकद्विजातिमण्डनः–जानकी० २० ।

कुण्डः [कुण्+ड] पानी का बर्तन, पानी का करवा । सम०—पाय्यः [कुण्डेन पीयते अत्र क्रतौ] एक यज्ञ का नाम, भेदिन (वि०) अनाड़ी, भद्दा, फूहड़ ।

कुण्डकः [कुण्ड+कन्] बर्तन---कथा० ४।४७ ।

कुण्डलिका (स्त्री०) कुण्डली, वृत्त ।

कुण्डलिन् (वि०) [कुण्डल+इनि] गोलाकार,—ली (पुं०) सुनहरा पहाड़ ।

कुण्डलिनी (स्त्री०) [कुण्डलिन्+ङीप्] योग शास्त्र में एक नाड़ी का नाम ।

कुण्डिका (स्त्री०) [कुण्ड+कन्+टाप्] एक छोटा जोहड़, पोखर -नवा कण्डिका पा० १।१।४४ पर म० भा० ।

कुतपसप्तकम् [ष० त०] सात वस्तुएँ जो श्राद्ध के अवसर पर मृतक के सम्मानार्थ दान की जायँ---यथा शृङ्गपात्र, ऊर्णावस्त्र, रौप्यधातु, कुशतृण, सवत्सा धेनु, अपराह्णकाल, और कृष्णतिल ।

कुतपाष्टकम् [ष० त०] आठ वस्तुएँ जो श्राद्ध के लिए शुभ मानी जाती हैं- यथा मध्याह्न, शृङ्गपात्र, ऊर्णावस्त्र, रौप्य, दर्भ, सवत्सा धेनु, तिल और दौहित्र ।

कुतुकित, (—किन्) (वि०) [कुतुक+इतच्, इनि वा] उत्सुक, जिज्ञासु ।

कुतृणम् (नपुं०) पनीला पौधा ।

कुतोनिमित्त (वि०) किस कारण या हेतु को लिये हुए —कुतोनिमित्तः शोकस्ते –रा० २।७४।२० ।

कुत्सला (स्त्री०) नील का पौधा ।

कुथकः [कुथ्+अच्, स्वार्थे कन्] रंग-बिरंगा कपड़ा ।

कुधिः (पुं०) उल्लू ।

कुन्द् (चुरा० पर०) झूठ बोलना ।

कुन्ददन्त (वि०) [ब० स०] जिसके दाँत कुन्द फूल की भाँति श्वेत तथा चमकीले हों ।

कुपित (वि०) [कुप्+क्त] क्रोध दिलाया हुआ, क्रुद्ध, नाराज, क्रोधी ।

कुप्यधौतम् [गुप्+क्यप्, कुत्वं] चाँदी ।

कुबेर (वि०) [कुत्सितं बेरं शरीरं यस्य, ब० स०] 1. भद्दा, भद्दे अङ्गों वाला ।

कुभ्रामि (वि०) प्रकाशपरावर्ती - कौ० अ० २।११ ।

कुमार् (चुरा० पर०) आग से खेलना ।

कुमारः [कम्+आरन्, उत उपधायाः] एक धर्मशास्त्र का प्रणेता, रम् (नपुं०) विशुद्ध सोना । सम० ---दासः, 'जानकीहरण' का प्रणेता, एक कवि का नाम, · ललिता (स्त्री०) 1. रंगरेली, मृदु कामक्रीडा 2. एक छन्द का नाम जिसके एक चरण में सात मात्राएँ होती हैं,—संभवम् कालिदासकृत एक काव्य का नाम ।

कुमारिकापुरम् (नपुं०) कन्याओं की व्यायामशाला महा० ४।११।१२, दश० २।

कुमालकः (पुं०) मालवदेश के एक प्रदेश का नाम।

कुमुदः,—दम् [कौ मोदते इति कुमुदम्] 1. सफेद कमल जो चन्द्रोदय होने पर खिलता कहा जाता है 2. लाल कमल 3. विष्णु का विशेषण 4. कपूर। सम० —आनन्द (वि०) चन्द्रमा,—गन्ध्या कमल की सुगन्ध से युक्त महिला।

कुम्पः (पुं०) लुंजा, जिसके हाथ विकृत हों।

कुम्बकुरीरः (पुं०) स्त्रियों के लिए सिर पर पहनने का वस्त्र।

कुम्भः [कु+उम्भ्+अच्] घड़ा, जलपात्र। सम०—उदरः शिव का एक भूतगण, सेवक—रघु० २।३५। —उलूकः उल्लू का एक भेद,—महा० १३।१११। १०१, पञ्जरः आला, ताक।

कुम्भिन् (वि०) [कुम्भ+इनि] आठ की संख्या।

कुम्भिनी (स्त्री०) [कुम्भिन्+ङीप्] 1. पृथ्वी 2. जमाल गोटे का पौधा।

कुम्भीनसी (स्त्री०) लवणासुर की माता, रावण की बहन।

कुम्भीमुखम् (नपुं०) एक प्रकार का घाव, व्रण।

कुरङ्गलाञ्छनः [ब० स०] चन्द्रमा।

कुरुपञ्चालाः (ब० व०) एक देश का नाम।

कुरुबिल्वः (पुं०) लालमणि, पद्मरागमणि।

कुलम् [कुल्+क] 1. वंश, परिवार 2. समूह 3. रेवड़। सम० अन्तस्था देवी का विशेषण,—आख्या, पारिवारिक नाम, वंशद्योतक नाम,—आपीडः,—शेखरः परिवार की कीर्ति या यश,—करणिः आनुवंशिक लेखपाल या अधिकारी,—कलङ्कः परिवार के लिए अपयश,—कुण्डाल्या कौल वृत्त में स्थित, देवी का एक नाम, गरिमा (पुं०) कुल का गौरव या मर्यादा, जाया उच्चकुल में उत्पन्न महिला,—दूषण (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, नाशन (वि०) परिवार को नष्ट करने वाला, पांसनः जो अपने कुल को कलङ्कित करता है,—पालकम् सन्तरा, नारङ्गी, भरः (कुलम्भरः) परिवार का पालनपोषण करने वाला,—बीजः शिल्पी संघ का मुखिया,—मार्गः कौलों का सिद्धान्त, सन्निधिः (पुं०) आदरणीय साक्षी की उपस्थिति—मी० सू० ८।१९४।२०१।

कुलमितिका (स्त्री०) एक प्रकार की दरियाँ—कौ० अ० २।११।

कुलिकः (पुं०) [कुल+ठन्] 1. एक काँटेदार पौधा 'मान्दि' 2. शिकारी—कुलिकरुतमिवाज्ञा कृष्णवध्वो हरिण्यः भाग० १०।८७।१९।

कुली (स्त्री०) परिवारों का समूह।

कुला (स्त्री०) लाल रंग का संखिया, मनशिल।

कुलाटः (पुं०) एक प्रकार की मछली।

कुलालचक्रम् [प० त०] कुम्हार का चाक।

कुलिङ्गः [कु+लिङ्ग्+अच्] 1. साँप महा० १२। १०१।७ 2. हाथी—कुलिङ्गो भूमिकूष्माण्डे मतङ्गज-भुजङ्गयोः—मेदिनी।

कुल्फः (वेद०) टखना,—ऋ० ७।५०।२। सम० -दघ्न (वि०) टखने तक गहरा—शत० १२।

कुल्माषः [कुल्+क्विप्, कुल् मापोऽस्मिन् ब० स०] 1. खिचड़ी जिसमें आधे उबले चावल और दाल हो 2. एक प्रकार का रोग।

कुल्लूकः (पुं०) मनुस्मृति का एक टीकाकार।

कुशी [कुश+ङीष्] गूलर की लकड़ी का टुकड़ा जो स्तोत्र के अन्तर्गत साम मंत्रों की संख्या गिनने के काम आता है- छन्दोगस्तोत्रगणनाशङ्कासु—नाना०।

कुशमुष्टिः [ष० त०] मुट्ठी भर 'कुश' घास।

कुशिकाः (ब० व०) कुशिक मुनि की सन्तान।

कुशेशयनिवेशिनी (स्त्री०) लक्ष्मी देवी।

कुष्ठः [कुष्+क्थन्] कूल्हे में पड़ा गड्ढा।

कूष्माण्डहोमः (पुं) किसी भी बड़े धार्मिक आयोजन से पूर्व किया जाने वाला हवन।

कुसुमम् [कुस्+उम] 1. फूल 2. फल। सम०—अञ्जलिः उदयनाचार्य की एक रचना,—द्रुमः फूलों से भरपूर वृक्ष,—धयः (कुसुमन्धयः) मधुमक्खी—उदलसद्दलसत्कुसुमन्धयः— रा० च०।

कुसुमयति (कुसुम—ना० धा०, लट्) फूल उत्पन्न करता है, या फूलों से सजाता है।

कुस्तुम्बरी (स्त्री०) एक पौधे का नाम।

कुहकवृत्तिः (स्त्री०) धूर्तता, चालाकी।

कुहरः [कुह्+रा+क] भीतरी खिड़की।

कुहूकालः [ष० त०] चान्द्रमास का अन्तिम दिन जबकि चन्द्रमा अदृश्य होता है।

कुहूमुखः [ब० स०] 1. भारतीय कोयल 2. संकट।

कुहूमुखम् [प० त०] नया चाँद।

कुह्वानम् [कु+ह्वे+ल्युट्] अमंगल ध्वनि।

कूटम् [कूट+अच्] खोटा सिक्का -कूटं हि निपादानामेव उपकारकं नार्याणाम् मी० सू० ६।१।५२ पर शा० भा०। सम० - रचना चाल, दाव पेंच, लेखः बनावटी या जाली दस्तावेज, —सङ्क्रान्तिः आधीरात बीतने पर जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि पर संक्रमण करता है, - हेमन् खोटा सोना।

कूपः [कु+पक्, दीर्घश्च] 1. कुआँ 2. छिद्र यथा रोमकूप, 3. जड़। सम० -- कारः, खनकः कुआँ खोदने वाला, चक्रम् पानी का चक्र या पहिया,—दण्डः मस्तूल—क्षोणीनौकूपदण्डः दश० १।१ स्थानम् कुएं का स्थान।

कूबरस्थानम् [त० स०] गाड़ी में बैठने का स्थान ।

कूर्मः [की जले ऊर्मिवेगोऽस्य—पृषो०] कछुवा । सम० —आसनम् योग की एक विशेष मुद्रा,—द्वादशी पौषमास के शुक्लपक्ष का ग्यारहवाँ दिन,—पुराणम् एक पुराण का नाम ।

कूर्मक (वि०) कछुवे जैसा बना हुआ ।

कूर्मिका [कूर्म+कन् स्त्रियां टाप्, उपधाया इत्वम्,] एक वाद्ययन्त्र ।

कूलिका [कूल+कन्+टाप्, इत्वम्] वीणा का निचला भाग ।

कृ (तना० उभ०) एकत्र करना, लेना—आदाने करोति शब्दः - मी० सू० ४।२।६ ।

कृकरच्छटः [ब० स०] आरा ।

कृकलः (पुं०) 1. एक प्रकार का तीतर 2. पाँच प्राणों में से एक ।

कृच्छ्र (वि०) [कृती+छ+रक्] 1. कष्टप्रद, दुःखदायी । सम० —अर्धः केवल छः दिन तक रहने वाली तपश्चर्या,—कृत् (वि०) तपस्वी,—सन्तपनम् एक प्रकार का प्रायश्चित्तपरक व्रत ।

कृतम् [कृ+क्त] जादू, टोना । सम०—अर्थ (वि०) कृतार्थ [ब० स०] जिसने अपना प्रयोजन सिद्ध कर लिया है, अतः अब और कुछ करने में असमर्थ है —सकृत्कृत्वा कृतार्थः शब्दः—मी० सू० ६।२।२७ पर शा० भा०, —कर (वि०),—कारिन् (वि०) किए हुए कार्य को करने वाला, निरर्थक - कृतकरो हि विधिरनर्थकः स्यात्— मी० सू० १०।५।५८ पर शा० भा०,—तीर्थ (वि०) जिसने सुगम या आसान बना दिया, —दार (वि०) विवाहित —दूषणम् किये हुए को खराब करना,—मन्यु (वि०) क्रुद्ध, नाराज, - मालः चितकबरा, बारहसिंगा, कृष्णहरिण,—विद् (वि०) कृतज्ञ, —तन्यापवर्ग्यशरणं तव पादमूलं विस्मयंते कृतविदा—भाग० ४।९।८,— श्मश्रुः जिसने मूँछें भी साफ़ करा ली हैं,—संस्कारः 1. जिसने शोधनात्मक सब प्रक्रियाएँ पूरी कर ली हैं 2. सज्जित, तैयार ।

कृतवत् (वि०) [कृत+मतुप्] जिसने कार्य करा लिया है—कृतवानसि विप्रियं न मे – कु० ४।७ ।

कृतिः (स्त्री०) [कृ+क्तिन्] 1. वर्गद्योतक संख्या, 2. क्रिया 3. चाकू, 4. जादूगरनी । सम० - साध्यत्वम् प्रयत्न करके संपन्न होने की स्थिति ।

कृत्यम् [कृ+क्यप्] 1. जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य 2. कार्य 3. प्रयोजन । सम० —अकृत्यम् कर्तव्य अकर्तव्य में (विवेक करना),—विधिः (पुं०) नियम, उपदेश,—शेष (वि०) जिसने अपना कार्य पूरा नहीं किया है ।

कृत्यम् [कृन्त्+यत्] वास्तुकार का एक उपकरण—महा० १।१९४।६ ।

कृत्यवत् (वि०) [कृत्य+मतुप्] 1. जिसके पास करने के लिए कार्य है 2. जिससे कोई प्रार्थना की गई है 3. चाहने वाला, प्रबल इच्छुक रा० ७।९२।१५ ।

कृन्तनिका [कृन्त्+ल्युट्=कृन्तनं, स्वार्थे कन्, इत्वम्] एक छोटा चाकू ।

कृत्वा-चिन्ता (लोकोक्तिः) प्राक्कल्पनापरक बात पर विचारविमर्श करना—मै० सं० १०।२ । ४९ और ६।८।४२ पर शा० भा० ।

कृपा+आकरः, सागरः,—सिन्धुः (पुं०) अत्यन्त कृपालु ।

कृश (वि०) [कृश्+क्त, नि०] 1. दुर्बल, बलहीन 2. नगण्य 3. निर्धन 4. तुच्छ । सम० अतिथि (वि०) जो अपने अतिथियों को भूखा रखता है महा० १२।८।२४,—गवः जिसकी गौवें भूखी रहती हैं,—भृत्यः जिसके नौकर भूखे रहते हैं ।

कृशानुयन्त्रम् (नपुं०) तोप ।

कृष् (तुदा० पर०) खुरचना, विरेखण करना ।

कृषिद्विष्टः एक प्रकार का चिड़ा ।

कृषिपाराशरः,-संग्रहः (पुं०) कृषि शास्त्र पर एक संग्रह ग्रंथ ।

कृष्ण (वि०) [कृष्+नक्] 1. काला 2. दुष्ट 3. शूद्र 4. भलावां (रीठा) जिससे धोबी कपड़ों पर चिह्न लगाता है —महा० १२।२९१।१० । सम०—कञ्चुकः काले चने,—च्छविः (स्त्री०) 1. बारहसिंगा की खाल 2. काला बादल—कृष्णच्छविसमा कृष्णा महा० ४।६।९,—तालुः एक प्रकार का घोड़ा जिसका तालु काला होता है, द्वादशी आषाढ़ के कृष्णपक्ष में बारहवां दिन, बीजम् तरबूज, भस्मन् पारद शुल्वीय,—मृत्तिका 1. काली मिट्टी 2. बारूद ।

कृष्णा (स्त्री०) यमुना नदी ।

क्लृप् (प्रेर०) ग्रहण करना, स्वीकार करना—नातो ह्यन्यमकल्पयन्—रा० २।९११।६५ ।

केतुमालः,-लम् जम्बू द्वीप का पश्चिमी भाग ।

केदारः [केन जलेन दारोऽस्य ब० स०] संगीत शास्त्र में एक राग का नाम ।

केदारकः [केदार+स्वार्थे कन्] चावलों का खेत ।

केन्द्रम् (नपुं०) जन्म कुण्डली में पहला, चौथा, सातवाँ एवं दसवाँ स्थान ।

केरलजातकम्,
केरलतन्त्रम्
केरल माहात्म्यम्
केरलसिद्धान्तः } ग्रन्थों के नाम ।

केलिः (पुं० स्त्री०) [केल्+इन्] हँसीमजाक, दिल्लगी, रंगरेली । सम० कलहः हँसी मजाक में झगड़ा, —पल्वलम् आमोद सरोवर,—वनम् प्रमोदवन ।

केवलव्यतिरेकिन् (पुं०) न्याय सिद्धान्त के अनुसार अनुमान के केवल एक प्रकार से संबन्ध रखने वाला ।

केवलाद्वैतम् (नपुं०) दर्शन शास्त्र की एक शाखा ।

केवलिन् (वि०) [केवल+इनि] (जैन०) जिसने उच्चतम ज्ञान प्राप्त कर लिया है ।

केशः [क्लिश्+अन् लो लोपश्च] 1. बालक 2. सिर के बाल । सम०—**आकर्षणम्** चुटिया पकड़ कर किसी महिला को खींचना एवं उसका अपमान करना, —**कारम्** एक प्रकार का गन्ना, **कारिन्** (वि०) जो बालों को संवारता है, - **ग्रन्थिः** चुटिया वेणी, —**धारणम्** बाल रखना,—**लुञ्चकः** एक जैन साधु का नाम,— **वपनम्** बाल कटवाना, मुण्डन कराना —**व्यरोपणम्** अपमान के चिह्नस्वरूप किसी दूसरे की चुटिया पकड़ना—रघु० ३।५६ ।

केशवस्वामिन् (पुं०) एक वैयाकरण का नाम ।

केश्य (वि०) [केश+य] 1. बालों की वृद्धि के अनुकूल 2. बालों में लगाया हुआ, -- **श्यम्** (नपुं०) सार्वजनिक निन्दा, बदनामी, लोकापवाद ।

केसराल (वि०) [केसर+आलच्] अयाल से समृद्ध, तन्तुबाहुल्य से युक्त ।

केसरिणी [केसर+इनि, स्त्रियां ङीप्] सिंहिनी, शेरनी ।

कैमर्थक्यम् (नपुं०) [किमर्थक+ष्यञ्] प्रयोजन का अभाव—कैमर्थक्यान्नियमो भवति--पा० १।४।३ पर म० भा० ।

कैमर्थ्यम् [किमर्थ+ष्यञ्] कारण, प्रयोजन ।

कैयटः (पुं०) पतंजलिकृत महाभाष्य के टीकाकार वैयाकरण का नाम ।

कैलातकम् (नपुं०) एक प्रकार का शहद, शराब ।

कैशोरवयस् (वि०) [ब० स०] कुमार, किशोरावस्था का बालक ।

कोकडः (पुं०) भारतीय लोमड़ ।

कोकयुः (पुं०) वनकपोत, जंगली कबूतर ।

कोकनदिनी [कोकनद+इनि+ङीप्] लाल कमल—न भेकः कोकनदिनीकिञ्जल्कास्वादकोविदः—कथा० ३०।७८ ।

कोकिलकः (पुं०) एक छन्द का नाम ।

कोटपः, —**पालः** (पुं०) किले का संरक्षक, गढ़नायक ।

कोटिः (स्त्री०) [कुट्+इञ्] असंख्य, अगणित,—कोट्यप्रतस्ते सुभृताश्च योधाः—रा० ५।५१ । सम०— —**होमः** एक प्रकार का यज्ञीय अनुष्ठान ।

कोणवृत्तम् (नपुं०) उत्तरपूर्व से लेकर दक्षिण पश्चिम तक फैला हुआ शीर्षवृत्त या इसके विपरीत ।

कोन्वशिरः (पुं०) वह क्षत्रिय जिसको ब्राह्मण ने शूद्र हो जाने का शाप दे दिया है ।

कोपजन्मन् (वि०) [ब० स०] क्रोध से उत्पन्न ।

कोपारुण (वि०) [ब० स०] क्रोध के कारण लाल — कोपारुणं मुनिरधारयदक्षिकोणम्— नील० ।

कोमल (वि०) [कु०+कलच्, मुट्, नि० गुणः] मृदु, मुलायम नरम,—**लम्** (नपुं०) रेशम ।

कोमला (स्त्री०) एक प्रकार का छुआरा ।

कोरकित (वि०) [कोरक+इतच्] कलियों से आच्छादित - नै० ३।१२१ ।

कोलकम् [कुल्+अच्, स्वार्थे कन्] 1. एक प्रकार का गाँव -- मान० ९।४८६ 2. एक प्रकार का गढ़ - मान० १०।४१ 3. वे फलादिक जो नींव के गर्त में प्रयुक्त होते हैं ।

कोशः [कुश्+घञ्, अच् वा] 1. कमल का परिच्छद 2. मांस का टुकड़ा 3. वह प्याला जिसमें युद्धविराम के सन्धिपत्र को सत्यांकित करने के चिह्न स्वरूप पेय पदार्थ उडेला जाता है—देवी कोशमपाययत्—राज० ७।८ । सम०— **वेश्मन्** कोशागार—भाण्डं च स्थापयामास तदीये कोशवेश्मनि --कथा० २४।१३३ ।

कोशातकः [कोश+अत्+क्वुन्] बाल ।

कोष्ठीकृ (तना० उभ०) घेरना, घेरा डालना—कोष्ठीकृत्य च तं वीरम्—महा० ६।१०१।३२ ।

कोहल (वि०) [कौ हलति स्पर्धते अच् पृषो०] अस्पष्ट बोलनेवाला,—**लः** (पुं०) एक प्राकृत भाषा के वैयाकरण का नाम ।

कौचपक (वि०) एक प्रकार की दरी--कौ० अ० २।११ ।

कौज (वि०) [कुज+ठक्] कुज अर्थात मंगल से संबंध रखने वाला ।

कौट्टन्यम् [कुट्टनी+ष्यञ्] कुट्टनी के द्वारा युवतियों को दुराचरण में प्रवृत्त कराना ।

कौण्डिन्यः [कुण्डिन+ष्यञ्] एक ऋषि का नाम ।

कौतुकवत् (अ०) [कुतुक+अण्, मतुप्] जिज्ञासा के रूप में ।

कौथुमः 1. सामवेद की एक शाखा का नाम 2. इस शाखा का अनुयायी ब्राह्मण ।

कौमार (वि०) [कुमार+अण्] 1. मुख्य सृष्टि, मुख्य अवतार—स एव प्रथमं देवः कौमारं सर्गमास्थितः —भाग० १।३।६ । सम०—**तन्त्रम्** आयुर्वेद शास्त्र का एक अनुभाग जिसमें बच्चों के पालनपोषण का वर्णन है,—**व्रतम्** ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना ।

कौर्णेयः (पुं०) 1. राक्षस 2. वायु 3. शिव 4. अग्नि 5. तपस्या में संलग्न ।

कौलमार्गः [कुल+अण्+मृग+घञ्, ष० त०] कौलों का सिद्धान्त ।

कौलालः [कुलाल+अण् स्वार्थे] कुम्हार ।

कौविन्दी [कुविन्द+अण्, स्त्रियां ङीप्] जुलाहे की स्त्री ।

कौशिकः [कुश+ठञ्] गोंद गुग्गुल, बेरोजा ।

कौशीतकी (स्त्री०) अगस्त्य मुनि की पत्नी।

कौषीतकम् } (नपुं०) एक ब्राह्मणग्रन्थ का नाम।
कौषीतकि }

कौस्तुभः [कुस्तुभ+अण्] घोड़े की गर्दन पर बालों का गुच्छा, अयाल।

क्करटः (पुं०) लवा, चंडूल (पक्षी)।

क्रत्वर्थः [त० स०] यज्ञ के प्रयोजन को पूरा करने के लिए साधनभूत सामग्री—मैं० सं० ४।१।२ पर शा० भा०।

क्रतुफलम् [ष० त०] यज्ञ का फल!

क्रद् (भ्वा० आ०) 1. घबरा जाना 2. दुःखी होना।

क्रप् (चुरा० पर०- क्रापयति) स्पष्ट रूप से बोलना।

क्रमः [क्रम्+घञ्] 1. पग, क़दम 2. पैर 3. गति, चाल। सम० —भाविन् (वि०) उत्तरोत्तर, क्रमिक, —माला, - रेखा,— शिक्षा वेद पाठ करने की नाना प्रणालियाँ, योगेन (अ०) नियमित ढंग से।

क्रियमाणकम् [कृ+कर्मणि यक्+शानच्, स्वार्थे कन्] साहित्यिक निबन्ध - बृ० सं० १।५।

क्रिया [कृ+श, रिङ आदेशः, इयङ] संरचना, कर्म। सम० —अर्थ (वि०) 1. वैदिक निषेध जिसके द्वारा किसी कर्तव्य में लगने का निर्देश किया जाता है 2. किसी कार्य के लिए उपयोगी अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशम् कु० ५।३३. —आरम्भः पकाना, —तन्त्रम् चार तन्त्रों में से एक।

क्रयविक्रयिन् (वि०) [क्रयविक्रय+इनि] जो कम मूल्य पर वस्तु खरीद कर अधिक मूल्य पर बेच देता है, सौदा करने वाला।

क्रीडनकतया (अ०) [क्रीड्+ल्युट्, स्वार्थे कन्, तस्य भावः, तल्] किसी बात को खेल की वस्तु की भाँति ग्रहण करना भाग० ५।२६।३२।

क्रीडा [क्रीड्+अ+टाप्] 1. संगीत में एक प्रकार की माप 2. खेल का मैदान। सम०—परिच्छदः खिलौना।

क्रीडितम् [क्रीड्+क्त] खेल।

क्रोधः [क्रुध्+घञ्] 1. रहस्यपूर्ण अक्षर 'हुम्' या 'ह्रुम्' 2. संवत्सरचक्र में ५९ वाँ वर्ष ('क्रोधन' भी)।

क्रोशः [क्रुश्+घञ्] ४८ मिनट का समय।

क्रूर (वि०) [कृत+रक्, धातोः क्रूः] 1. कठोर, कड़ा 2. निर्दय 3. कर्कशध्वनि—क्रूरक्वणत्कङ्कणानि—म०वी० १।३५ —रम् (नपुं०) उग्रता के साथ। सम० —धरिस (वि०) दारुण, भयानक।

क्रोडकान्ता (स्त्री०) पृथ्वी, धरती।

क्रोडीकृ [क्रोड+च्वि+कृ तना० उभ०] गले लगाना, आलिङ्गन करना।

क्रौड (वि०) [क्रोड+अण्] 1. सूअर से संबंध रखने वाला 2. वराह अवतार से सम्बन्ध रखने वाला।

क्लान्तमनस् (वि०) [ब० स०] निढाल, स्फूर्तिहीन।

क्लेदित (वि०) [क्लिद्+णिच्+क्त] मलिन, दूषित।

क्लिश्नत् (वि०) [क्लिश्+ना+शतृ] हटाता हुआ, दूर करता हुआ—मुद्रा० ३।२०।

क्लिष्ट (वि०) [क्लिश्+क्त] दुःखदायी, कष्टकर।

क्लिष्टा (स्त्री०) पातञ्जल योगशास्त्र में बताई हुई चित्त-वृत्ति का एक भेद।

क्वाणः [क्वण्+घञ्] ध्वनि, स्वनं।

क्वथित (वि०) [क्वथ्+क्त] 1. उबाला हुआ 2. गर्म, —तम् (नपुं०) मादक शराब।

क्षणः,-णम् [क्षण्+अच्] निर्णय, सङ्कल्प गन्तुं भूमिं कृतक्षणाः—महा० १।६४।५१। सम० - अर्धम् आधा मिनट, —भङ्गवादः बौद्धों का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु लगातार क्षीण होती रहती है, —वीर्यम् शुभ समय।

क्षणेपाकः [अलुक् समास] एक मिनट में पकी हुई वस्तु।

क्षतात्रवम् [ष० त०] रुधिर, शोणित।

क्षतिः (स्त्री०) [क्षण्+क्तिन्] मृत्यु, निधन।

क्षत्तृ (पुं०) [क्षद्+तृच्] रक्षक।

क्षत्रविद्या, (-वेदः) युद्धकला, युद्धशास्त्र।

क्षमापनम् [क्षमा ना० धा०, णिच्+ल्युट्] क्षमा मांगना। सम०—स्तोत्रम् क्षमा मांगते समय स्तुति-गान।

क्षम्य (वि०) [क्षमा+य] पृथ्वी में होने वाला, भौमिक, पार्थिव (वेद०)।

क्षारक्षत (वि०) [त० स०] यवक्षार से दुष्प्रभावित।

क्षाराष्टकम् (नपुं०) आयुर्वेदिक आठ द्रव्यों का संग्रह। इसी प्रकार (क्षारषट्क, तथा क्षारपञ्चक)।

क्षा (स्त्री०) 1. पृथ्वी, धरती 2. निद्रा, नींद।

क्षाणम् (नपुं०) जलना, जला हुआ स्थान।

क्षामेष्टिन्यायः (पुं०) मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार निमित्त को दर्शाने वाले हेतुमत्कारण की रचना इस प्रकार की जाय जिससे कि इसमें नित्य या अनिवार्य परिस्थिति को दूर रक्खा जा सके—मी० सू० ६।४।१७-२१ पर शा० भा०।

क्षयतिथिः, (-अहः) सूर्योदय से न आरम्भ होने वाला चान्द्र दिवस।

क्षयमासः [ष० त०] ('मलमासः' भी) वह मास जिसमें दो संक्रान्तियाँ आ पड़ें, और जो किसी मंगल या धार्मिक काल के लिए शुभ न माना जाता हो।

क्षयोपशमः (पुं०) [त० स०] सक्रिय रहने या होने की इच्छा को सर्वथा नष्ट करने की जैनियों की संकल्पना।

क्षितिः [क्षि+क्तिन्] समृद्धि—क्षिते रोहः प्रवहः शश्वदेव—महा० १३।७६।१०। सम०—क्षमा धरती की भाँति सहनशील —क्षितिक्षमा पुष्करसन्निभाक्षी—रा०

५,—स्पर्शः धरती छूना (जैसे कि सद्यःप्रसूत बच्चे ने जन्म लेकर धरती छूई),—स्पृश् पृथ्वी का धरती का वासी, भूमि पर रहने वाला।

क्षीणता [क्षि+क्त+तल् स्त्रियां टाप्] क्षय, कृशता तथा बलहीनता की दशा।

क्षिप् (तु० उभ०) 1. शीघ्रता से चलना 2. मर जाना 3. (गणित०) जोड़ना।

क्षिप्त (वि०) [क्षिप्+क्त] 1. फेंका गया, बखेरा गया 2. परित्यक्त 3. उपेक्षित। सम०—उत्तरम् ऐसा भाषण जो उत्तर के योग्य न हो,—योनिः नीच जाति में उत्पन्न।

क्षिप्तिः [क्षिप्+क्तिन्] रहस्य का भंडाफोड़ (नाटक में)।

क्षिप्रनिश्चय (वि०) [ब० स०] जो शीघ्र ही निश्चय कर लेता है आयत्यां गुणदोषज्ञस्तदात्वे क्षिप्रनिश्चयः —मनु० ७।१७९।

क्षिप्रसन्धिः (पुं०) एक प्रकार की संधि जो दो सहवर्ती स्वरों में से पहले को अर्धस्वर में बदल कर हो सकती है।

क्षेपणिकः [क्षेपण+ठञ्] मल्लाह, नाविक।

क्षीरः,(—रम्) [घस्+ईरन्, उपधालोपः घस्य ककारः षत्वं च] 1. दूध 2. रस 3. पानी। सम०—उत्तरा जमाया हुआ दूध,—त्वम् ताज़ा मक्खन,—कुण्डलम् दुग्धपात्र—कथा० ६३।१८८,—व्रतम् प्रतिज्ञा के फलस्वरूप केवल दूध पीकर निर्वाह करना।

क्षीरस्यति (ना० धा० पर०) दूध की इच्छा करना —क्षीरस्यति माणवकः पा० ७।१।५१ पर म०भा०।

[क्षु] (क्र्या० उभ०) कूदना, उछलना (स्वा० पर० भी) —क्षुणाति च क्षुणीते च क्षुणोत्याप्लवनेऽपि च। छन्दते क्षुन्दते चापि षडाप्लवनवाचिनः इति भट्टमल्लः।

क्षुद्र (वि०) [क्षुद्+रक्] 1. छोटा 2. सामान्य 3. तुच्छ 4. क्रूर 5. गरीब। सम० तातः पिता का भ्राता, चाचा,—पदम् लम्बाई नापने का एक गज,—शार्दूलः चीता।

क्षुद्रकः [क्षुद्र+कन्] 1. जो तिरस्कार करता है 2. एक प्रकार का बाण।

क्षोदः [क्षुद्+घञ्] 1. बूंद 2. लौंदा, टुकड़ा 3. गांठा।

क्षुधाशान्तिः } भूख शान्त करना।
क्षुद्शान्तिः }

क्षुन्द् (भ्वा० आ०) कूदना (दे० 'क्षु' भी)।

क्षुरनक्षत्रम् (नपुं०) जो क्षौरकर्म, या हजामत बनवाने के लिए शुभनक्षत्र हो।

क्षेत्रलिप्ता (स्त्री०) [ष० त०] क्रान्तिवृत्त की कला।

क्षेत्रांशः [ष० त०] क्रान्तिवृत्त का अंश या घात।

क्षेमेन्द्रः (पुं०) बृहत्कथामंजरी का प्रणेता एक कश्मीरी कवि।

क्षौद्रक्यम् [क्षुद्रक+ष्यञ्] सूक्ष्मता।

क्षौरपव्यम् (नपुं०) मजबूती से बनाया गया भवन।

क्ष्मावलयः [ष० त०] क्षितिज।

ख

खसूचिः (पुं०, स्त्री०) 1. तिरस्कारसूचक अभिख्या (समासान्त में) जैसा कि 'वैयाकरणखसूचिः' (बुरा वैयाकरण—जो अपने ज्ञान को भूल गया)।

खजिका (स्त्री०) भूख लगाने वाली औषधि।

खट्टकः (पुं०) [खट्ट्+अच्, स्वार्थे कन्] खाट, आसन।

खड्गः [खड्+गन्] तलवार। सम०—धारा तलवार का फला,—धाराव्रतम् अत्यन्त कठिन कार्य,—विद्या तलवार चलाने की कला।

खण्ड (वि०) [खण्ड्+घञ्] 1. टूटा हुआ, फटा हुआ 2. दूषित —डः,—ण्डम् महाद्वीप, महादेश। सम० —इन्दुः दूज का चांद—खण्डेन्दुकृतशेखरम् (शिवम्) —वेदपा०,—तालः संगीत शास्त्र में माप।

खण्डनखण्डखाद्यम् (नपुं०) हर्षकृत एक वेदान्त शास्त्र का ग्रन्थ।

खण्डिकोपाध्यायः (पुं०) क्षुब्ध अध्यापक, उत्तेजित अध्यापक —खण्डिकोपाध्यायः शिष्याय चपेटिकां ददाति —पा० १।१।१ पर म० भा०।

खण्डितव्रत (वि०) [ब० स०] जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी है।

खण्डिन् (वि०) [खण्ड+इनि] एक प्रकार की दाल, पीले मूंग।

खण्डीरः (पुं०) दे० 'खण्डिन्'।

खतमालः (पुं०) 1. धूआं 2. बादल।

खनिका [खन्+इन्, स्वार्थे कन्, स्त्रियां टाप्] पोखर, ताल।

खरः [ख+रा+क] 1. गधा, खच्चर 2. उदग्र, कठोर 3. तीक्ष्ण, तेज 4. सघन 5. क्रूर 6. ६० वर्ष के चक्र में पच्चीसवां वर्ष। सम०—कण्डूयनम्, बुराई को और अधिक करना,—गेहम् तम्बू,—चर्मा (वि०) मगरमच्छ, वृषभ (वि०) गधा, जडबुद्धि,—सारम् लोहा,—स्पर्श (वि०) गर्म, प्रचण्ड (आंधी, झक्कड़) —वायुर्वातिखरस्पर्शः —भाग० १।१४।१६।

खरक (वि०) जिसकी सतह खुरदरी हो ऐसा (मोती) —कौ० अ० २।११।

खरोष्ठी (स्त्री०) एक प्रकार की वर्णमाला।

खर्जूरिका (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।

खर्बूरम् (नपुं०) नारियल की गिरी, गोला, खोपा।

खर्मम् (नपुं०) 1. रेशम 2. शौर्य 3. कठोरता।

खर्वटः [खर्व्+अटन्] एक इस प्रकार की बस्ती जो पर्वत की तलहटी या नदी के किनारे बसी हो और जिसके निवासियों का व्यवसाय प्रायः वणिज्व्यापार हो। यह गाँव और नगर के बीच की बस्ती के लक्षणों से युक्त होती है।

खर्वाट दे० 'खल्वाट' भीमसेन प्रमथितादुर्योधनवरूथिनी, शिखा खर्वाटकस्येव कर्णमूलमुपागता नाभ०।

खर्वित (वि०) [खर्व+इतच्] जो बौना बन गया हो।

खर्वेतर (वि०) [त० स०] जो नगण्य न हो, जो छोटा न हो।

खलिन् (वि०) [खल+इनि] खल से युक्त, तलछट वाला, . ली (पुं०) शिव।

खलीकृत (वि०) [खल+च्वि+कृ+क्त] अपमानित—ब्राह्मणस्त्वया खलीकृतः—नाग० ३।

खलिशः }
खल्लिशः } एक प्रकार की मछली।

खल्वः (पुं०) फली, बाल।

खा [खव्+ड+टाप्] 1. पार्वती 2. धरती 3. लक्ष्मी 4. वक्तृता—खोमा क्ष्मा कमला च गीः—एकार्थ०।

खानपानम् (नपुं०) खाना पीना।

खानोदकः (पुं०) नारियल का पेड़।

खुरशालः (पुं०) खुरशाल देश में उत्पन्न एक उत्तम नस्ल का घोड़ा—शालि० ११।७।

खेलीरकः (पुं०) खोखला बाँस।

खेचरी (स्त्री०) एक प्रकार की योगसिद्धि जिसके द्वारा योगी आकाश में उड़ सके—एवं सखीभिरुक्ताहं खेचरीसिद्धिलोलुपा कथा० २०।१०५।

खेटः [खिट्+अच्, खे अटति--अट्+अच्] ग्राम, गाँव।

खोरकः (पुं०) किसी जानवर के खुर में होने वाला विशेष रोग।

ख्यातिः (स्त्री०) [ख्या+क्तिन्] दर्शनशास्त्र का एक सिद्धान्त—विकल्पः ख्यातिवादिनाम्—भाग० ११। १६।२४।

ग

गः [गै+क] 1. शिव 2. विष्णु—गः प्रीतोभवः श्रीपतिरुत्तमः—एकार्थ०

गगनम् [गच्छत्यस्मिन् गम्+ल्युट्, ग आदेशः] 1. आकाश, अन्तरिक्ष 2. शून्य 3. स्वर्ग। सम० - रोमन्थः असङ्गति, व्यर्थ पदार्थ, लिह् (वि०) आकाश तक पहुँचने वाला —दे० अभ्रंलिह्।

गङ्गासप्तमी (स्त्री०) वैशाख मास के शुक्ल पक्ष का सातवाँ दिन।

गजः [गज्+अच्] 1. हाथी 2. आठ की सख्या 3. लम्बाई नापने का गज 4. एक राक्षस जिसे शिव जी ने मार दिया था। सम० गणिका हथिनी जिसका प्रयोग जंगली हाथी को पकड़ने के लिए किया जाता है स्वतनुवितरणेन तं प्रलोभ्य द्विपमिव वन्यमिहोपनेतुकामा सखि गजगणिकेव चेष्टितासि—जानकी० १६।५२, —गौरीव्रतम् भाद्रपद मास में स्त्रियों द्वारा मनाया जाने वाला व्रत, निमीलिका किसी वस्तु की ओर झूठ-मूठ देखना, जानबूझ कर न देखना,—पुष्पी एक लता का नाम— गजपुष्पीमिमां फुल्लामुत्पाटय शुभलक्षणाम् रा० ४।१२।३९,—बन्धः 1. थूड़ी जिससे हाथी बांधा जाता है 3. एक प्रकार की संभोग मुद्रा 3. जंगली हाथी को पकड़ने की प्रकिया नाना०।

गजिन् (वि०) [गज+इनि] गजारोही, हाथी की सवारी करने वाला।

गड्डुकः [=गडुक, पृषो०] 1. तकिया 2. एक प्रकार का जलपात्र।

गणः [गण्+अच्] 1. समूह, संग्रह, समुदाय, रेवड़, लहंडा 2. श्रेणी 3. शिव के अनुचर, जिनका अधीक्षक गणेश है, उपदेव 4 समाज 5. मण्डल 6. जाति। सम० —रत्नमहो..धिः व्याकरणगत गणों पर वर्धमान कृत एक ग्रन्थ,—वल्लभः सेनापति—रा० २।८१।१२।

गणनपत्रिका संगणक, जिसमें विशेष प्रकार के शोधित अङ्कों की सारणी दी हुई होती है—राज० ६।३६।

गणितम् [गण्+क्त] व्यवहार- वेत्तुमर्हति राजेन्द्र स्वाध्यायगणितं महत् महा० १२।६२।९।

गण्यमानम् [गण्+यक्+शानच्] किसी रचना या निर्माण की सापेक्ष ऊँचाई।

गण्डः [गण्ड्+अच्] 1. गाल 2. हाथी की कनपटी 3. बुलबुला 4. फोड़ा, रसौली 5. जोड़, गाँठ। सम०—कूपः पहाड़ की सतह, अधित्यका,—भेदः चोर—गण्डभेददास्याः शीलं जानन्नपि—अवि० २।

गण्डूषः [गण्ड्+ऊषन्] एक प्रकार की शराब।

गत (वि०) [गम्+क्त] 1. गया हुआ, बीता हुआ 2. मृत,

3. ज्ञात । सम०-- आगतम् (गतागतम्) [द्व० स०] भूत और भविष्यत् (का वर्णन)—वंशस्यास्य गतागतम्— रा० ७।५१।२३,—मनस्क (वि०) मग्न, लीन, श्रम: (वि०) जो अपनी थकावट का ध्यान नहीं करता है।

गतिमत् (वि०) [गति+मतुप्] उपायज्ञ, तरकीब या रीति का जानकार-- महा० १२।२८६।७।

गत्वर (वि०) [गम्+क्वरप्, अनुनासिकलोप:, तुक् च] तेज चलने वाला,—त्वर: (पुं०) एक प्रकार का घोड़ा।

गद: [गद्+अच्] 1. कृष्ण के भाई का नाम 2. कुबेर, 3. शस्त्रास्त्र, हथियार—आयुधे धनदे रोगे पुंसि कृष्णानुजेऽपि च नाना० ।

गदि: (स्त्री०) [गद्+इ] व्याख्यान, वक्तृता —एवं गदि: कर्मगतिविसर्ग: भाग० ११।१२।१९।

गन्ध: [गन्ध्+अच्] 1. गुणों में समानता, सम्बन्ध, बन्धुता 2. गन्धक 3. चन्दन चूरा 4. पड़ोसी । सम०—हस्तिन् हाथी जिसकी मधुर गन्ध इधर-उधर फैलती है, वह गुणों में उत्तम हाथी माना जाता है।

गन्धकपेषिका (वि०) [ष० त०] सेविका जो गन्ध द्रव्य और चन्दन पीस कर तैयार करती है।

गन्धि (वि०) [गन्ध्+इ] केवल नामधारी, बहाना करने वाला- सोऽपि त्वया हतस्तात रिपुणा भ्रातृगन्धिना —रा० ७।२४।२९।

गन्धर्वतैलम् (नपुं०) [ति० स०] एरण्ड का तेल।

ग (गा) न्धार: (पुं०) 1. संगीत में तीसरा स्वर, एक विशेष प्रकार का राग।

गमनम् [गम्+ल्युट्] जानना, समझना नाञ्ज: स्वरूपगमने प्रभवन्ति भूम्न:--भाग० ८।७।३४।

गर्गसंहिता (स्त्री०) गर्ग द्वारा प्रणीत एक ज्योतिष का ग्रन्थ।

गर्जरम् (नपुं०) एक प्रकार का घास।

गर्भ: [गृ+भन्] 1. गर्भाशय, पेट 2. भ्रूण, कलल 3. अग्नि 4. आहार। सम०—ग्राहिका (स्त्री०) धात्री, दाई कथा० ३४,--न्यास: आधार रखना, नींव डालना --भाजनम् नींव का गड्ढा,--संभव: गर्भाशय से जन्म होना।

गर्भिका (स्त्री०) किसी प्रकार के मल या संदूषण अन्त:प्रवेश।

गर्भेदृप्त: } (वि०) [सप्तमी अलुक् समास] कायर, मन्द-
गर्भेशूर } बुद्धि, जड।

गल: [गल्+अच्] 1. एक प्रकार की मछली 2. एक प्रकार की घास।

गलु: (पु०) [गल्+उण] एक प्रकार का रत्न।

गवामय: (पुं०) एक वर्ष तक रहने वाला सत्रयाग।

गव्य (त्रि०) [गो+यत्] गाय से मिलने वाला पदार्थ, घी, दूध आदि,—व्यम् (नपुं०) गवामयनम् नाम का एक श्रौत यज्ञ--'गवामयनं ब्रूम:—मै० सं० ८।१।१८ पर शा० भा०।

गहन (वि०) [गह्+ल्युट्] 1. गहरा, सघन, घिनका 2. समझने में कठिन 3. ऐसा स्थान जो पार न किया जा सके।

गह्वरी [गह्वर+ङीप्] पृथ्वी।

गह्वरित (वि०) [गह्वर+इतच्] लीन, मग्न—याज्ञसेन्या वच: श्रुत्वा कृष्णो गह्वरितोऽभवत्—महा० ३।६८।४५।

गाङ्गेय (वि०) [गङ्गा+ढक्] गङ्गा में, गङ्गा पर, या गङ्गा से उत्पन्न होने वाला,--य: भीष्म,--यम् 1. सोना 2. मोथा घास।

गाढतरम् (अ०) 1. अधिक कस कर, सटा कर 2. अपेक्षाकृत अधिक गहनता से।

गाढवचस् (पुं०) [ब० स०] मेंढक।

गाढावटी (स्त्री०) एक प्रकार की भारतीय शतरंज।

गाणनिक्यम् [गणनिक+ष्यञ्] लेखाकार का कार्य —अक्षपटले गाणनिक्याधिकार:—कौ० अ० २।७।

गाण्डी (स्त्री०) गैंडा।

गात्रचेष्टनम् (नपुं०) आकर्षी संवेदन।

गात्रिका (स्त्री०) चोली।

गान्धर्वकला,- विद्या, } संगीत की ललित कला, संगीत का
--वेद:,--शास्त्रम् } सिद्धान्त, संगीतविज्ञान।

गान्धारी [गान्धारस्यापत्यं इञ्] 1. एक प्रकार का मादक द्रव्य 2. बाईं आँख की शिरा।

गान्धारीग्राम: (पुं०) एक प्रकार का संगीतमान।

गाम्भीर्यम् [गम्भीर+ष्यञ्] 1. मर्यादा 2. उदारता 3. संतुलन।

गार्जर: (पुं०) गाजर।

गार्हकमेधिका: [गृहकमेधिन्+ठक्] गृहस्थ के धर्म, गृहस्थ के कर्तव्य।

गिर् (गिरा) (स्त्री०) [गृ+क्विप् टाप् वा] 1. बुद्धि —दे० गिर्धी:-- एकार्थ० 2. सुना हुआ ज्ञान गिरा वाऽशंसामि तपसा ह्यनन्तो—महा० १।३।५७ (टीका)।

गिरा [गृ+क्विप् टाप् वा] स्तुति (वेद०)।

गिरित्र: [गिरि+त्रल्] शिव--भाग० ८।६।१५।

गिरिधातु: (पुं०) गेरू।

गिलत् (वि०) [गिल्+शतृ] निगलने वाला—गिलन्त्य इव चाङ्गानि—भाग०-१०।१३।३१।

गीतगोविन्दम् (नपुं०) जयदेव निर्मित एक गीतिकाव्य।

गीतबन्धनम् (नपुं०) संगीत के सस्वर पाठ के उपयुक्त एक महाकाव्य।

गीतमोदिन् (पुं०) किन्नर।

गीति: [गै+क्तिन्] एक गेय साम।

गुटिकास्त्रम् (नपुं०) 'Y' के आकार की एक यष्टिका जिसके साथ एक डोरी बंधी होती है, इससे पक्षियों पर पत्थर के टुकड़े फेंके जाते हैं इसका नाम है "गोफिया"।

गुटिकायन्त्रम् (नपुं०) बन्दूक, नलिका।

गुडः [गुड्+अच्] गोली, बटिका—शार्ङ्ग० १३।१।

गुणः [गुण्+अच्] 1. किसी वस्तु की विशेषता चाहे अच्छी हो या बुरी 2. धागा, डोरी 3. शरीर के (सत्व, रज तथा तम) धर्म। सम०—**कल्पना** किसी वाक्य का अर्थ करते समय आलङ्कारिक भावना को सङ्केत करना,—**कारः** (गणित०) गुणक, गुणा करने वाला,—**गौरी** अपने उत्तम गुणों से देदीप्यमान महिला—अनृतगिरं गुणगौरि मा कृथा माम्—शि०,—**भावः** किसी अन्य वस्तु की तुलना में गौण पद—परार्थता हि गुणभावः—मै० सं० ४।३।१ पर शा० भा०,—**वादः** 1. गौण अर्थ को सूचित करने वाली उक्ति 2. अन्य तर्कों का विरोध करने वाली उक्ति,—**विभाग** (वि०) [ब० स०] पदार्थ के अन्य पहलुओं में से किसी विशेषता को पृथक् करके दर्शाने वाला, **विशेषः** विशेष लक्षण, भिन्न प्रकार की विशेषता, **विशेषाः** बाहरी ज्ञानेन्द्रियां, मन और अहंकार—गुणविशेषाः नाह्येन्द्रियमनोऽहङ्काराश्च—सां० का० ३६, **संग्रहः** अच्छे गुणों का एकत्रीकरण।

गुदनिर्गमः [ष० त०] अर्शादि रोग के कारण कांच बाहर निकल आना।

गुप्तगृहम् (नपुं) शयनकक्ष, शयनागार।

गुप्तधनम् (नपुं०) [कर्म० स०] छिपा हुआ धन।

गुमटी (स्त्री०) अवगुण्ठनवती महिला, बुर्के वाली स्त्री।

गुरु (वि०) [गृ+कु, उत्वम्] 1. भारी (विप० लघु) 2. बड़ा 3. लम्बा 4. कठिन 5. आदरणीय 6. शक्तिशाली,—**रुः** (पुं०) 1. पिता, प्रपिता, पितामह, पूर्वज 2. सम्माननीय महापुरुष 3. शिक्षक, अध्यापक 4. स्वामी 5. बृहस्पति। सम०—**उपदेशः** 1. अध्यापक द्वारा दीक्षा 2. शिक्षकों या बड़ों द्वारा दी गई नसीहत,—**कण्ठः** मोर,—**कुलम्** 1. गुरु का वासस्थान सावास विद्यापीठ जहाँ अध्यापक और छात्र मिल कर रहें,—**कुलवासः** गुरुकुल में रहकर विद्याध्ययन करना,—**गृहम्** 1. शिक्षक का घर 2. बृहस्पति का घर (जन्मपत्रिका में),—**भावः** महत्त्व, गुरुत्व,—**धर्चोघ्नः** नींबू, गलगल,—**वर्तिता** बड़ों के प्रति सम्मान भाव प्रदर्शित करना निवेद्य गुरवे राज्यं भजिष्ये गुरुवर्तिताम्—रा० २।११५।१९,—**श्रुतिः** गायत्रीमंत्र—जपमानो गुरुश्रुतिम् महा० १३।३६।६,—**स्वम्** शिक्षक का धन, संपत्ति।

गुलिकः (पुं०) 1. एक उपग्रह (शनि का पुत्र) जो केरल देश में माना जाता है 2. विष से बुझा तीर 3. दिग्गज—गुलिको मन्दतनये रसबद्धास्त्रदेशयोः, दिङ्नागे—नाना०। सम०—**कालः** प्रतिदिन का वह समय जो अशुभ माना जाता है।

गुलिका (स्त्री०) गोली—एकाऽपि गुलिका तत्र नलिका यन्त्रनिर्गता—शिव०।

गुल्मः [गुड्+मक्, डस्य लः] 1. युद्धशिविर 2. सैनिक-तंबू। सम०—**कुष्ठम्** एक प्रकार का कोढ़।

गुह्य (वि०) [गुह्+यत्] 1. छिपाने के योग्य 2. रहस्य,—**ह्यम्** (नपुं०) गुप्त स्थान—मैथुनं सततं धर्म्यं गुह्ये चैव समाचरेत्—महा० १२।१९३।१७। सम०—**विद्या** गुप्त रूप से—और लोगों से गुप्त रख कर—गुरुमंत्र की दीक्षा देना, अथवा अभ्यास कराना।

गूढ (वि०) [गुह्+क्त] 1. गुप्त, छिपा हुआ 2. आच्छादित 3. अदृश्य 4. रहस्य,—**ढम्** (नपुं०) एक शब्दालंकार। सम०—**अर्थ** (वि०) आन्तर अर्थ रखने वाला,—**आलेख्यम्** कूटलेख,—कौ० अ० १।१२।

गृत्समदः (पुं०) एक वैदिक ऋषि का नाम (इसका पुराणों में भी उल्लेख है)।

गृद्ध (वि०) [गृध्+क्त] इच्छुक, लालायित, उत्सुक, किसी वस्तु को अत्यन्त चाहने वाला—गृद्धां वाससि संभ्रान्तां—महा० १।७२।६।

गृद्धिन् (वि०) [गृद्ध+इन्] दे० 'गृद्ध'।

गृध्य (त्रि०) [गृध्+यत्] जिसे उत्सुकता पूर्वक बहुत चाहा जाय, जिसके लिए प्रबल लालसा की जाय।

गृह् (चुरा० आ०) स्वीकार करना, प्राप्त करना, ग्रहण करना, लेना, मिलाना, लीन करना।

गृहम् [ग्रह्+क] 1. घर, आवास, भवन 2. पत्नी 3. गृहस्थ जीवन 4. जन्मकुंडली का घर 5. (शतरंज आदि खेल का) घर। सम०—**आरम्भः** घर का निर्माण,—**ईश्वरी** घर की स्वामिनी, गृहिणी,—**चेतस्**,—**सक्त** (वि०) अपने घर की याद करने वाला, जिसका मन अपने घर की ओर ही लगा हो,—**दारु** (नपुं०) घर में लगा खम्बा, स्तम्भ—नरपतिबले पार्श्वयाते स्थितं गृहदारुवत्—महा० ४।३,—**पतिः** 1. घर का स्वामी 2. गृहस्थ 3. गाँव का मुखिया—मृच्छ० २,—**पिण्डी** भौंरा, भूगर्भ,—**पोतकः** भवन बनाने के लिए संकेतित स्थान,—**पोषणम्** गृहस्थ का निर्वाह,—**मार्जनी** 1. घर को झाड़ू से साफ़ करने वाली 2. बुहारी की मूठ,—**शायिन्** (पुं०) कबूतर।

गृहकम् [गृह+कन्] घर का बगीचा, वाटिका।

गृह्य (वि०) [गृह्+क्यप्] 1. घरेलू 2. पालतू 3. पुरस्लक्ष्य, प्रत्यक्षज्ञेय—श्वेता० १।१,—**गृह्यम्** (नपुं०) घरेलू काम, गृहस्थ का यज्ञीय अनुष्ठान म०

—सूत्रम् सूत्रों का संकलन जिसमें गृह्य यज्ञों के विधान का वर्णन है जैसे कि आपस्तम्बगृह्यसूत्र या बौधायन गृह्यसूत्र ।

गातुः [गै+तुन्] 1. गीत 2. गायक 3. मधुमक्खी ।

गायः (वेद०) गीत (समास में प्रयुक्त होने पर इसका अर्थ है 'स्तुति के योग्य' 'स्तुत्य' जैसा कि 'उरुगाय' में) ।

गो (पुं०, स्त्री०) [गम्+डो] 1. पशु 2. गौ 3. कोई भी पदार्थ जो गौ से प्राप्त हो 4. आकाश 5. इन्द्र का वज्र 6. प्रकाश, किरण 7. हीरा 8. स्वर्ग 9. बाण । सम० - **ग्रहणम्** गौएँ पकड़ना, गौएँ चुराना,—**चर्या** पशु की भाँति केवल अपना भौतिक सुख खोजना —**जिह्विका** काकलक, काग,—**जीव** (वि०) गोदुग्ध का व्यवसाय करने वाला, घोसी,—**पथः** अथर्ववेद का एक ब्राह्मण, —**पर्वतम्** उस पहाड़ का नाम जहाँ पाणिनि ने तपस्या की थी - अरुणा०, उत्त० २।६८, —**मण्डीरः** एक जल पक्षी,—**मध्यमध्य** (वि०) छरहरा, पतली कमर वाला,—**मूत्रकः** वैदूर्य नामक मणि, —**मूत्रकम्** गदायुद्ध में पैंतराबदल चाल—महा० ९।५८।२३,—**लोमिका** सफ़ेद दूब,—**वरम्** गाय के गोबर का चूरा,—**विषाणिकः** गाय के सींग से निर्मित एक संगीत उपकरण (इसे 'शृंग' भी कहते हैं) —महा० ६।४४।४,—**सावित्री** गायत्रीमंत्र,—**हरणम्** दे० 'गोग्रहणम्' ।

गोम् (चुरा० पर०) गोबर से लीपना, गोबरी फेरना ।

गोमत् (वेद०) [गो+मतुप्] गौओं से समृद्ध स्थान ।

गोमयपायसीयन्यायः (पुं०) एक ही स्रोत से उत्पन्न दो वस्तुओं के गुणों की भिन्नता-जैसे, दूध और गोबर ।

गोमिन् [गोम्+णिनि] वैश्य—गोमिनः कारयेत्करम् —महा० १२।८७।३५ ।

गोजिकाणः (पुं०) एक प्रकार का घोड़ा ('गोजिकण' नामक स्थान में पैदा होने के कारण यह नाम पड़ा) ।

गोजी (स्त्री०) नासापट, नासिका के बीच का पर्दा ।

गोणः [गुण्+घञ्] बैल ।

गोणी [गोण+ङीप्] गाय ।

गोलक्रीडा (स्त्री०) गेंद से खेलना, गेंद का खेल ।

गोलदीपिका ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम ।

गोलशास्त्रम् (नपुं०) 1. भूगोल 2. गणित ज्योतिष ।

गोल्यः मैनाक पर्वत ।

गौडपादः 'अद्वैतवाद' पर लिखने वाला प्रसिद्ध लेखक ।

गौडमालवः (पुं०) संगीतशास्त्र के एक राग का नाम ।

गौधारः,—धेयः,—धेरः (पुं०) गोह (जो प्रायः वृक्षों की दरारों में पाई जाती है) ।

गौराङ्गः [ब० स०] 1. शिव 2. श्री चैतन्य देव, सन्त और गायक ।

गौरी [गौर+ङीप्] 1. एक नागकन्या 2. एक नदी का नाम 3. रात 4. पार्वती । सम०— **पूजा** माघ मास के शुक्लपक्ष के चौथे दिन मनाया जाने वाला पर्व ।

गौह्यक (वि०) [गुह्यक+अण्] गुह्यकों से संबंध रखने वाला ।

ग्रन्थिः [ग्रन्थ्+इन्] 1. पुस्तक का कठिन स्थल —ग्रन्थग्रन्थिं तदा चक्रे मुनिर्गूढं कुतूहलात्—महा० १।१।८० 2. घण्टी, जंग–कथा० ६५।१३५ । सम० – **वज्रकः** एक प्रकार का फौलाद, इस्पात ।

ग्रन्थिकः [ग्रन्थि+कै+क] बाँस का अंकुर ।

ग्रन्थिकम् (नपुं०) 1. पीपलामूल 2. गुग्गुल ।

ग्रासप्रमाणम् [ग्रस्+घञ्=ग्रासस्य प्रमाणम् – ष० त०] एक ग्रास का माप ।

ग्रहः [ग्रह्+अच्] 1. युद्ध की तैयारी 2. अतिथि-यथा सिद्धस्य चान्नस्य ग्रहायाग्रं प्रदीयते—महा १३।१००।६ । सम०—**अग्रेसरः** चन्द्रमा,—**कुण्डलिका,—चक्रम्,** —**स्थितिः** जन्मकुण्डली, किसी भी समय ग्रहों की बताई हुई दशा,—**गणितम्** फलित ज्योतिष का गणित भाग,—**ग्रामणी** सूर्य,—**चारनिबन्धः** ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम, - **लाघवम्** ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम,—**स्वरः** संगीत गान का पहला स्वर ।

ग्रहणीकपाटः [ष० त०] अतिसार की औषधि ।

ग्राहः [ग्रह्+घञ्] 1. मूठ 2. लकवा ।

ग्राह्यम् [ग्रह+ण्यत्] ज्ञानेन्द्रियों द्वारा संकल्पना का विषय ।

ग्राह्यः [ग्रह+ण्यत्] एक ग्रस्त ग्रह ।

ग्रामः [ग्रस्+मन्, आदन्तादेशः] 1. गाँव, पल्ली 2. वंश, समुदाय 1. समुच्चय, संग्रह । सम०—**कायस्थः** ग्रामीण लिपिक, - **गृह्यकः** गांव का बढ़ई,—**णीः** (पुं०) सूर्य के अनुचरों का नेता, उपदेवता,—**धर्मः** गाँव की प्रथा,रीतिरिवाज,—**धान्यम्** गाँव में उत्पन्न अन्न, **पुरुषः** गांव का मुखिया,- **विशेषः** संगीत का विशिष्ट स्वर--स्फुटीभवद्ग्रामविशेषमूर्च्छना—शि०, – **वृद्धः** गाँव का बड़ा बूढ़ा– प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान् – मेघ० ३० ।

ग्राम्यवादिन् (पुं०) गाँव का आक्षेपक, गांव की ओर से बोलने वाला -तै सं० २।३।१।३ ।

ग्रामेयकम् (नपुं०) चन्दन का एक भेद ।

ग्रीष्म (वि०) [ग्रस्+मनिन्] गर्म; उष्ण । **ग्रीष्मः** (पुं०) ग्रीष्म ऋतु । सम०—**वनम्** उपवन या वाटिका जो ग्रीष्म ऋतु का विश्राम स्थल हो–कथा० १२२।६५,—**हासम्** गुम्फमय बीज जो ग्रीष्मर्तु में हवा में इधर उधर उड़ते हैं ।

ग्लपनम् [ग्लै+णिच्+ल्युट्,पुक् ह्रस्वश्च] 1. मुरझाना कुम्हलाना 2. विश्राम करना—सान्द्रोद्यानद्रुमाग्रग्लपनपिशुनितात्यन्ततीव्राभितापः—रत्ना० ४।१४ ।

ग्लपित (वि०) [ग्लै+णिच्+क्त, पुक्, ह्रस्वश्च] 1 क्लान्त, झुलसा हुआ, छितराया हुआ—कि० १४।६४, रघु० १६।३८ 2. टुकड़े टुकड़े किया हुआ—लाङ्गलग्लपितग्रीवाः—रा० ७।७।४७।

घ

घटः [घट्+अच्] 1. सिर—समाघिभेदे ना शिरः कूट-कटेषु च—मेदिनी०, महा० १।१५५।३८ 2. मिट्टी का जलपात्र 3. कुम्भराशि। सम० **उदरः** गणेश का नाम,—**कञ्चुकि** (नपुं०) तान्त्रिक और शाक्तों की एक रस्म (इसमें विभिन्न महिलाओं की चोलियाँ एक घड़े में डाल दी जाती हैं और फिर उपस्थित महानुभावों में से प्रत्येक एक एक चोली निकालता है, तथा जिस महिला की वह चोली होती है, उसके साथ उस पुरुष को संभोग करने की अनुमति है)—**योनिः**,—**भवः**, जन्मा अगस्त्य मुनि।

घटा [घट् भावे अङ्, स्त्रियां टाप्] लोहे की प्लेट जिस पर आघात करके समय की सूचना दी जाती है।

घटिकामण्डलम् (नपुं०) विषुवद्वृत्त।

घटिकायन्त्रम् (नपुं०) घंटा।

घटीयन्त्रम् (नपुं०) 1. रहट, पानी निकालने का यन्त्र 2. अतिमार—भाव० ७।१६।२८।

घट्टित (वि०) [घट्ट्+क्त] 1. मण्डयुक्त, कलफदार—पञ्च० ६।३ 2. दबाया हुआ, भींचा हुआ, पीसा हुआ।

घण्टाकर्णः (पुं०) 1. शिव का एक गण 2. एक राक्षस का नाम।

घण्टारवः (पुं०) [ष० त०] 1. घण्टे की आवाज कोदण्डघण्टारवः—हनु० 2. सण की एक जाति घण्टारवः शणसुमे घण्टानादे······नाना०।

घण्टिका (स्त्री०) [घण्ट्+ण्वुल्, इत्वम्] काग, काकल, उपजिह्वा।

घण्टालः [घण्ट्+आलच्] हाथी सूक्ति० ५।६६।

घण्टिकः [घण्ट+ठञ्] घड़ियाल, मगरमच्छ।

घन (वि०) [हन् मूर्तौ अप्, घनादेशश्च] 1. सघन, दृढ़, ठोस 2. मोटा, मटा हुआ 3. पूर्ण विकसित 4. गहरा 5. निर्बाध 6. स्थायी 7. पूर्ण,—**नः** (पुं०) 1. बादल 2. लोहे की गदा 3. शरीर 4. समुच्चय 5. वेद का सस्वर पाठविशेष, **घनम्** (नपुं०) 1. घंटा, जंग 2. लोहा 3. खाल, वल्कल। सम०—**ऊरु** मोटी जंघाओं से युक्त महिला—कुरु घनोरु पदानि शनैः शनैः—वेणी० २।२०,—**क्षम** (वि०) हथौड़े के आघात के उपयुक्त—भाव० ६।२६।५३,—**मानम्** किसी रचना या निर्माण का बाहरी माप,—**संवृतिः** कड़ी गोपनीयता।

घनता, घनत्वम् [घन+तल्+त्व] 1. सघनता, सटा होना 2. दृढ़ता, ठोसपना।

घर्घरः (पुं०) [घृ+यङ्—लुक्+अच्] मन्दिर का एक विशेष प्रकार का निर्माण।

घर्म (वि०) [घृ+मक्, नि० गुणः] गर्म,—**र्मः** (पुं०) 1. गर्मी 2. ग्रीष्म ऋतु 3. पसीना 4. प्रवर्ग्य संस्कार 5. एक देवता का नाम—घर्मः स्यादातपे ग्रीष्मे प्रवर्ग्ये देवतान्तरे। सम०—**जातिः** पसीने से उत्पन्न जीव, दे० 'स्वेदज'।

घर्षणालः [घर्षण+आलच्] पीसने वाला, बट्टा, लोढी।

घाटणम् [घट्+णिच्+ल्युट्] चटखनी, कुंडा।

घातः [हन्+णिच्+घञ्] हण्टर लगाना कोशाधिष्ठितस्य कोशावच्छेदे घातः—कौ० अ० २।५। सम०—**कृच्छ्रम्** (नपुं०) एक प्रकार का मूत्ररोग, **दिवसः** अशुभ दिन, जन्मनक्षत्र से सातवाँ नक्षत्र।

घुणक्षत, घुणजग्ध, घुणभुक्त [घुण+क=घुण+क्षण (अद्) (भुज्)+क्त] कीड़े से खाया हुआ, घुण लगा हुआ—श्रीनिर्मितप्राप्तघुणक्षतैकवर्णोपमावाच्यमलं ममार्ज—शि० ३।५८।

घुमघुमित (वि०) [घुमघुम+इतच्] सुगन्धित, सुरभित, खुशबूदार।

घुष्टान्नम् (नपुं०) ढिंढोरा पीट कर सबको अन्नदान करना मनु० ४।२०९।

घृत (वि०) [घृ+क्त] 1. छिड़का हुआ 2. चमकीला,—**तम्** (नपुं०) 1. घी 2. मक्खन 3. शराब मधुच्युतो घृतपृक्ता महा० १।९२।१५। सम०—**अक्त** (वि०) घी से चुपड़ा हुआ, घी से युक्त,—**गन्धः** घोड़ों का एक भेद जिसमें घी की सुगन्ध आती है,—**प्राशः**, **प्राशनम्** घी पीना **प्लुत** (वि०) घी से चुपड़ा हुआ,—**हेतुः** मक्खन।

घृणा [घृ+नक्] शर्म की भावना।

घृणिन् [घृण+इनि] लज्जालु, शर्मीला।

घोणा [घुण्+अच्+टाप्] 1. (उल्लू की) चोंच 2. (रथ में) पहिये की नाभि।

घोषः [घुष्+घञ्] सस्वर पाठ, मन्त्रोच्चारण—शुश्राव ब्रह्मघोषांश्च विरात्रे ब्रह्मरक्षसाम् रा० ५। सम०—**यात्रा** सामूहिक रूप से गोपालों के स्थान पर जाना, सामूहिक तीर्थ यात्रा, **वर्ण** घोष प्रयत्न वाला अक्षर, स्वन युक्त या निनादी अक्षरः, **वृद्धः** ग्रामीण

ग्वाले—हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान्—रघु० १।४५ ।

घ्रंस्, घ्रंसः (वेद०) [घ्रंस्+क्विप्, अच् वा] सूर्य की गर्मी, चिलचिलाती धूप ।

घ्राण (वि०) [घ्रा+क्त] सूंघा हुआ, —णः,—णम् 1. गन्ध 2. गन्ध आना 3. नाक । स०—पुटः नथुना, —स्कन्दः नाक बजाना, सिनकना ।

च

चकोरदृश्,—अक्ष (वि०) [ब० स०] चकोर जैसी आँखों वाला, सुन्दर आँखों वाला—अनुचकार चकोरदृशां यतः—शि० ६।४८।

चक्रम् [क्रियते अनेन, कृ घञर्थे क, नि० द्वित्वम्] 1. गाड़ी का पहिया 2. कुम्हार का चाक 3. गोल तीक्ष्ण अस्त्र 4. तेल का कोल्हू 5. वृत्त । सम०—अरः,—अरम् पहिये का अरा,—अश्मन् एक प्रकार का पत्थर फेंकने का यंत्र,—ईश्वरी जैनियों की विद्या देवी, सरस्वती, —गजः गरजता हुआ बादल,—वर्मन् कश्मीर के एक राजा का नाम —राज० ५।२८७।

चक्षुष्यम् [चक्षुष्+यत्] आँखों के लिए मल्हम ।

चञ्चूर्यमाण (वि०) अशिष्टता पूर्वक अंगविक्षेप करने वाला, अश्लील इंगित करने वाला—भट्टि० ४।१९।

चटकामुखः [ब० स०] एक विशेष प्रकार का बाण ।

चटुलय् (ना० धा० पर०) इधर-उधर घूमना—चञ्चूपुटं चटुलयन्ति चिरं चकोराः—भामि० ८१।९९।

चतुर्, (सं० वि०) [चत्+उरन्] (रचना में 'चतुर्' का 'र्' बदल कर विसर्ग, श, ष, या स् हो जाता है) चार । सम०—अङ्गिकः (चतुरङ्गिकः) एक घोड़ा जिसके मस्तक पर बालों के चार घूंघर लहराते हों, —काष्ठम् (चतुष्काष्ठम्) (अ०) चारों दिशाओं में, —चित्यः (चतुश्चित्यः) उभरी हुई वर्गाकार बनी चौंतरी—महा० १४।८४।३२,—पादम् (चतुष्पादम्) धनुर्विज्ञान जिसमें चार (ग्रहण, धारण, प्रयोग और प्रतिकार) भाग होते हैं,—मेधः (चतुर्मेधः) जिसने चार बड़े यज्ञों—अश्वमेध, पुरुषमेध, पितृमेध और सर्वमेध—का अनुष्ठान सम्पन्न कर लिया है,—सनः (चतुस्सनः) सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार नाम के चारों रूप धारण करने वाला विष्णु ।

चतुष्क (वि०) [चतुरवयवं चत्वारोऽवयवा यस्य वा कन्] 1. चार की संख्या से युक्त,—ष्कम् चार पायों वाला स्टूल, चौकी ।

चन्दनपङ्कः [ष० त०] चन्दन का लेप—हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतलः—भोज० ।

चन्द्र (वि०) [चन्द्+णिच्+रक्] 1. चमकीला, उज्ज्वल, देदीप्यमान 2. सुन्दर,—न्द्रः (पुं०) 1. चन्द्रमा, चाँद 2. कपूर 3. मोर की पूंछ का चन्दा 4. पानी । सम०—कला एक प्रकार का ढोल,—कुल्या एक नदी का नाम,—प्रज्ञप्तिः (स्त्री०) जैनियों का छठा उपाङ्ग, —प्रासादः चबूतरा, खुली छत ।

चन्द्रटः (पुं०) आयुर्वेद विषय पर प्राचीन ग्रन्थकर्ता —सुश्रुत भूमिका ।

चन्द्रा (स्त्री०) गाय मी० सू० १०।३।४९ पर शा० भा० ।

चपेटी (स्त्री०) भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष का छठा दिन ।

चमकसूक्तम् (नपुं०) वेद का एक सूक्त जिसके प्रत्येक मन्त्र में 'च मे' की आवृत्ति की जाती है ।

चमसोद्भेदः (पुं०) एक तीर्थस्थान जहाँ से सरस्वती नदी निकलती है ।

चम्पा (स्त्री०) अङ्गदेश की राजधानी (वर्तमान भागलपुर) ।

चयाट्टः (पुं०) वप्र, बुर्ज—चयाट्टमस्तकन्यस्तनालायन्त्रसुदुर्गमे—शिव० ९।५१ ।

चरः [चर्+अच्] वायु, हवा—क्वाहं तमोमहदहंखचराग्निवार्भूसंवेष्टिताण्डघटसप्तवितस्तिकायः—भाग० १०।१४।११ । सम०—गृहम् मेष, कर्क, तुला और मकर के घर ।

चरकः (पुं०) भारतीय आयुर्वेद का एक प्रवर्तक तथा चरकसंहिता का लेखक ।

चरणम् [चर्+ल्युट्] 1. ब्रह्मचर्य के कड़े नियमों को पालन करने वाला अध्येता—महा० ५।३०।७ 2. पर । सम०—उपधानम् पायदान,—व्यूहः एक ग्रन्थ जिसमें वेद की शाखाओं का वर्णन है ।

चर्चुरम् (नपुं०) दाँतों के कटकटाने का शब्द—मिश्रं दधद्दशनचर्चुरशब्दमश्वः—शि० ५।५८ ।

चर्पटः [चृप्+अटन्] चीवर, चिथड़ा ।

चर्मण्णः (पुं०) (वेद०) चमड़े का कवच धारण करनेवाला योद्धा चर्मण्णा अभितो जनाः—ऋक्० ८।५।३८ ।

चर्मरङ्गाः (पुं० ब० व०) मध्य भारत की एक जाति —बृ० सं० १४ ।

चलदङ्गः [चलत्+अङ्ग] एक प्रकार की मछली ।

चलद्विषः (पुं०) कोकिला, भारतीय कोयल ।

चाक्षुष्यम् [चाक्षुष्+यत्] एक प्रकार का आँखों का अंजन ।

चातुरः [चतुर् एव, स्वार्थे अण्] एक छोटा गावदुम तकिया ।

चातुरन्त (वि०) [चतुरन्त+अण्] चारों समुद्रों तक समस्त पृथ्वी को अधिकार में करने वाला ।

चातुरीकः [चातुरी+कप्] 1. हंस 2. एक प्रकार की बत्तख —कलहंसे च कारण्डे चातुरीकः पुमानयम् —नाना० ।

चारः [चर एव, अण्] 1. गति, चाल, भ्रमण 2. पैदल सैर करना 3. कारागार 4. हथकड़ी बेड़ी 5. पीपली का वृक्ष, प्रियाल का पेड़ ।

चार्या (स्त्री०) 1. पथ, मार्ग, आठ हाथ चौड़ी सड़क —कौ० अ० १।३ ।

चार्वाकः [चारः लोकसंमतं वाकोवाक्यं यस्य—पृषो०] दर्शनशास्त्र की चार्वाक शाखा का अनुयायी ।

चिकित्सा [कित्+सन्+अ, स्त्रियां टाप्] दण्ड—प्रमत्तस्य ते करोमि चिकित्सा दण्डपाणिरिव जनतायाः —भाग० ५।१०।७ ।

चिकित्सु (वि०) [कित्+सन्+उ] बुद्धिमान् चालाक अथ० १०।१।१ ।

चिञ्चाम्लम् [ष० त०] इमली से तैयार किया गया जूष या झोल ।

चित्तम् [चित्+क्त] 1. हृदय, मन 2. ज्ञान—चित्तं चित्तादुपागम्य मुनिरासीत संयतः । यच्चित्तं तन्मयो वश्यं गुह्यमेतत्सनातनम् महा० १४।५१।२७ । सम० —अर्पित (वि०) दिल में प्ररक्षित चित्तार्पितनैषधेश्वरा—नैषध० ९।३१, नाथः हृदय का स्वामी —चित्तनाथमभिशङ्कितवत्या शि० १०।२८ ।

चित्तिः (स्त्री०) [चित्+क्तिन्] 1. मानसिक अवस्था —आकूतीनां च चित्तीनां प्रवर्तक नतास्मि ते— महा० ३।२६३।१० 2. ज्ञानेन्द्रिय यं चेकितानमनुचित्तय उच्चकन्ति—भाग० ६।१६।४८ 3. संध्यान, मनन चित्तिः स्रुक् चित्तमाज्यम्—तै० आ० ३।१ ।

चित्य (वि०) [चिता+यत्] चिता से संबंध रखने वाला चित्तमाल्याङ्गरागश्च आयसाभरणोऽभवत्—रा० ६।५८।११ ।

चित्रम् [चित्र्+अच्, चि+ष्ट्रन् वा] कमल का फूल —मङ्गले तिलके हम्नि पद्मे नपुंसकम् — नाना० ।

चिन्तामणिः (पुं०) एक प्रकार का घोड़ा जिसकी गर्दन पर बालों का बड़ा घूंघर हो ।

चीचीकूची (स्त्री०) अनुकरणमूलक शब्द जो पक्षियों के कलरव को प्रकट करता है ।

चीनदारु (पुं०) दारचीनी ।

चीरल्लिः (पुं०) एक प्रकार की बड़ी मछली ।

चीरी (स्त्री०) [चीरि+ङीष्] झींगुर, ('चीरीवाकः' भी) इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

चोदना [चुद्+युच्+टाप्] (पूर्वमीमांसा में) 'अपूर्व' नामक श्रेणी—चोदनेत्यपूर्वं ब्रूमः मी० सू० ७।१।७ पर शा० भा० ।

चुमचुमायनम् (नपुं०) किसी घाव में खुजलाहट होना सुश्रुत० १।४२।११ ।

चुमुरिः (पुं०) एक राक्षस का नाम ।

चेरिका जुलाहों की एक उपनगरी—तदेव चेरिका प्रोक्ता नागरी तन्तुवायभूः —कामिकागम २०।१५।६६, मान० १०।८५-८८ ।

चैत्याग्निः [ष० त०] पुनीत अग्नि, यज्ञीय अग्नि—पञ्च० १।६ ।

चौर्णेय (वि०) [चूर्णा+ढक्] केरल प्रदेश के पास 'चूर्णा' नामक नदी से प्राप्त मोती कौ० अ० २।११ ।

च्यवनः (पुं०) [च्यु+णिच्+ल्युट्] एक ऋषि का नाम ।

छ

छत्रीकृ (छत्र+च्वि+तना० उभ०) छत्री की भाँति प्रयुक्त करना ।

छन्दस् (नपुं०) [छन्दयति—छन्द्+असुन्] एक पर्व, त्योहार —वेदे वाक्ये वृत्तभेदे उत्सवेऽपि नपुंसकम् —नाना० ।

छम्बङ्कारम् (अ०) विफल कराने के लिए, जिससे कि सफलता न मिले —कथा० १२।४ ।

छम्बट्कर (वि०) [छम्बट्+कृ+अच्] नष्ट भ्रष्ट करने वाला, —करी (स्त्री०)—एषा घोरतमा सन्ध्या लोकछम्ब (म्फ) ट्करी प्रभो —भाग० ३।१८।२६ ।

छम्बट्कारः [छम्बट्+कृ+घञ्] नाश, ध्वंस, विनाश ।

छलः [छल्+अच्] एक प्रकार का झगड़ा जिसमें असंगत तर्क का प्रयोग किया जाय ।

छाया [छो+य+टाप्] प्राकृत मूल पाठ का संस्कृत भाषान्तर ।

छिद्रम् [छिद्+रक्] 1. प्रभाग भूमिछिद्रविधानम् —कौ० अ० २।२ 2. स्थान भाग० ६।२६।३४ 3. आकाश, अन्तरिक्ष —भाग० १२।४।३० ।

छेदनम् [छिद्+ल्युट्] आयुर्वेद में एक प्रकार की शल्य-प्रक्रिया ।

छुच्छुः (पुं०) एक प्रकार का जन्तु —बृ० सं० ८६।३७ ।

छुरितम् [छुर्+क्त] काट, खरोंच ।

छुरिका (स्त्री०) बाँझ गाय ।

छेला (फेला) भवन के आधारगर्त में बना वज्रकोष्ठ या तहखाना—कामिकागम० ३१।७४ ।

जगद्गुरुः [ष० त०] श्री शंकराचार्य का नाम ।

जगच्चन्द्रिका (स्त्री०) ब्रह्मसंहिता पर भट्टोत्पलकृत एक टीका ।

जगच्चित्रम् (नपुं०) विश्व का एक आश्चर्य पश्येदानीं जगच्चित्रम्--रा० ७।३४।९ ।

जगतीपतिः [ष० त०] शासक, राजा त्रिःसप्तकृत्वो जगतीपतीनाम् कि० ३।१८ ।

जङ्घापथः (पुं०) पगडण्डी ।

जङ्घाबलम् [ष० त०] दुम दबा कर भागना ।

जटापाठः (पुं०) वेद मन्त्रों के मूलपाठ को सस्वर पढ़ने की एक रीति ।

जटावल्लभः (पुं०) 'जटापाठ' की प्रणाली से वेदपाठ करने में प्रवीण विद्वान् पुरुष ।

जनः [जन्+अच्] 1. प्राणधारी, जीव 2. मनुष्य 3. एक व्यक्ति 4. राष्ट्र, जाति । सम०--आश्रयः विष्णुकुण्डी वंश के राजा की उपाधि, जिसे ज्ञानाश्रयी छन्दोविचिति का प्रणेता समझा जाता है, --जल्पः लोकोक्ति, कहावत, किंवदन्ती, --मारः महामारी ।

जनंसह (वि०) लोगों का दमन करने वाला--मत्रासाह्लो जनभक्षो जनंसहः--ऋक्० २।२१।३ ।

जपत् (वि०) [जप्+शतृ] संन्यासी (साधारणतः 'जपतां वरः' प्रयोग प्रचलित) ।

जम्बुमालिन् (पुं०) रावण की सेना के एक राक्षस का नाम ।

जम्भसाधक (वि०) आयुर्वेद का ज्ञान रखने वाला--इति ते कथयन्ति स्म ब्राह्मणा जम्भसाधकाः--महा० ५। ६४।२० ।

जम्भकः [जभ्+ण्वुल्, नुम्] 1. द्रोही, विश्वासघाती -- साधु भो जम्भक साधु - दूत० 2. औषधोपचार - ५।६४।१६ ।

जयन्तिः (स्त्री०) तराजू की डण्डी ।

जर्भरि (वि०) (वेद०) सहारा देने वाला मृण्येव जर्भरी तुर्फरी तु ऋक्० १०।१०६।६ ।

जलम् [जल्+अच्] 1. पानी 2. सुगंधयुक्त औषध का पौधा 3. गाय का भ्रूण । सम०--आगमः वर्षा ऋतु, --प्रपातः झरना, --शर्करा ओला, करका,--स्रावः आँख का एक रोग ।

जलाषभेषज (वि०) [ब० स०] उपचारक औषधियाँ रखने वाला--रुद्रं जलाषभेषजम् -ऋक्० १।४३।४ ।

जवस् (नपुं०) [जव्+असुन्] (वेद०) गति, चाल, शीघ्रता, पयोभिर्जन्वे अपां जवांसि--ऋक्० ४।२१।८ ।

जातकचक्रम् (नपुं०) जन्मकुंडली, जन्मपत्रिका ।

जातिक्षयः [ष० त०] जन्म का अन्त, जन्म से मुक्ति --बु० च० १।७४ ।

जातिगृद्धिः (स्त्री०) [जाति+गृध्+क्तिन्] जन्म लेना --जातिगृद्धयाभिपन्नाः -- महा० ५।६०।९ ।

जातूभर्मन् (वेद०) (वि०) सदैव पोषण करने वाला--स जातूभर्मा श्रद्दधान ओजः-- ऋक्० १।१०३।३ ।

जानराज्यम् [जनराज+ष्यञ्] प्रभुसत्ता--वाज० ९।४० ।

जानश्रुतिः (पुं०) छान्दोग्य उपनिषद् में वर्णित एक राजा का नाम ।

जामदग्न्यः [जमदग्नि+अण्] परशुराम ।

जामातृबन्धकम् (नपुं०) स्त्रीधन, दहेज ।

जारणम् [जॄ+णिच्+ल्युट्] 1. क्षीण करना 2. धातुओं पर जारेय की पर्त चढ़ाना ।

जारूथ्य (वि०) 1. स्तुति के योग्य-- निरर्गलान् सजारूथ्यान्--महा० ९।४९।३ 2. जिसमें तीन बार दक्षिणा दी जाय - जारूथ्यान् त्रिगुणदक्षिणानित्यर्जुनमिश्रः --महा० ३।२९१।७० पर टीका 3. आमिषोपहार में समृद्ध ।

जालकम् (नपुं०) एक प्रकार का वृक्ष --भाग० ८।२।१९ ।

जालोरः (पुं०) कश्मीर में एक अग्रहार--विहारमग्रहारं च जालोराख्यं च निर्ममे -- राज० १।९८ ।

जयः [जि+अच्] 1. महाभारत का एक विशेषण--देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्-- महा० १।१।१ 2. जयजयकारों से पूर्ण विजय जयेन वर्धयित्वा च - रा० ७।२३।३ । सम०--(अजय)=जयाजयौ (--अपजयौ) जीत तथा हार, -गत (वि०) जीतने वाला, विजयी उक्तविपरीतलक्षणसंपन्नो जयगतो विनिर्दिष्टः - बृ० सं० १७।१० ।

जितहस्त (वि०) [ब० स०] जिसने अपने हाथ को अभ्यस्त कर लिया है ।

जित्यः [जि+क्यप्] एक उपकरण जिसके द्वारा जुते हुए खेत को समस्तर किया जाता है ।

जिल्लिकाः (ब० व०) एक राष्ट्र का नाम--महा० ६। ९।५९ ।

जिह्मेतर (वि०) [त० स०] जो आलसी न हो-- जिह्मेतरैर्ब्रह्म तदप्यवाप्यम् नै० ३।६३ ।

जिह्मित (वि०) [जिह्म+इतच्] 1. व्याकुल - परिश्रम जिह्मितेक्षणम् - कि० १०।१० 2. टेढ़ा बनाया हुआ, झुका हुआ (जैसा कि 'जिह्मगति' में) ।

जीमूतप्रभः [ब० स०] एक प्रकार का रत्न --कौ० अ० २।११ ।

जीवकोशः (पुं०) सूक्ष्म शरीर, लिङ्गशरीर भाग० १०।८७।४८ ।

जीवन्तिका (स्त्री०) [जीव्+शतृ+ङीप्, कन्, ह्रस्वश्च] 1. सद्योजात शिशुओं की देखभाल करने वाली देवी 2. एक पौधे का नाम ।

जीविका (स्त्री०) [जीव्+अकन्, अत इत्वम्] ज़िन्दगी कृपणा वर्तयिष्यामि कथं कृपणजीविका— रा० २। २०।८७।

जुकुटम् (नपुं०) सफ़ेद बैंगन का पौधा।

जुगुप्सितम् [गुप्+सन्+क्त] घृणित कार्य, अरुचिकर कृत्य —कर्मजुगुप्सितेन— भाग० १।७।४२।

जूर्य (वेद०) (वि०) [जृ+य] पुराना —ऋक् ६।२।७।

जोषवाकः (पुं०) निरर्थक बात करना— जोषवाकं वदतः —ऋक्० ६।५९।४।

जूतिः (स्त्री०) [जू+क्तिन्] मन का संकेन्द्रीकरण—ऐत० उ० ५।२।

जैमिनिः (पुं०) एक प्रसिद्ध मुनि जो दर्शन शास्त्र की पूर्वमीमांसा के प्रवर्तक थे। सम०—भागवतम् भागवत का आधुनिक संस्करण, -भारतम् महाभारत का आधुनिक संस्करण, -शाखा सामवेद की एक शाखा,—सूत्रम् एक ग्रन्थ का नाम।

जैमिनीय (वि०) [जैमिनि+छ] जैमिनी द्वारा रचित, या उनसे संबद्ध।

जैयटः (पुं०) कैयट के पिता का नाम।

जोन्ताला (स्त्री०) जौ।

जोषम् (अ०) [जुष्+घञ्] चुपचाप, जैसा कि ('जोषमास्त्व'—चुप रहो) में।

जोष्य (वि) [जुष्+ण्यत्] प्रिय, स्नेहार्ह।

ज्ञंमन्य (वि०) अपने आप को बुद्धिमान् समझने वाला।

ज्ञातान्वयः (पुं०) प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न होने वाला पुत्र।

ज्ञातिचेलम् (नपुं०) नीच कुल में उत्पन्न व्यक्ति विभिन्नकर्माशयवाक् कुले नो मा ज्ञातिचेलं भुवि कस्यचिन् भूत्— भट्टि० १२।७८।

ज्ञातिप्रायः (पुं०) संबन्धियों के लिए आहार, जातिभोजन —प्रक्षाल्य हस्तावाचम्य ज्ञातिप्रायं प्रकल्पयेत् मनु० ३।२६४।

ज्ञानम् [ज्ञा+ल्युट्] जानकारी का साधन —मै० सं० १।१।५ 2. सम्मति बलदेवस्य वाक्यं तु मम ज्ञाने न युज्यते—महा० ५।४।३। सम० अग्निः ज्ञान की आग ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन भग० ४।३७,— घनः (पुं०) शुद्धज्ञान, केवलज्ञान निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च भाग० ८।३।१२,—पूर्व (वि०) खूब सोचा हुआ, पहले से पूरी जानकारी प्राप्त किए हुए, वृद्ध (वि०) ज्ञान या जानकारी में बड़ा-बूढ़ा।

ज्ञानिन (वि०) [ज्ञान+इनि] बुद्धिमान्, समझदार, —(पुं०) बुध ग्रह— ज्ञानी सर्वज्ञसौम्ययोः— नाना०।

ज्मन् (वे०) पृथ्वी पर, धरती पर (केवल अधि० में प्रयोग) अभिऋत्वेन्द्र भूरधज्मन्—ऋक्० ७।२१।६।

ज्या [ज्या+अङ+टाप्] 1. एक प्रकार की लकड़ी की सोटी 2. सेना का पृष्ठभाग—ज्या भूमिमौर्व्योः शम्यायां वाहिन्याः पृष्ठभागके नाना०।

ज्येष्ठः [वृद्ध (प्रशस्य)+इष्ठन्, ज्यादेशः] 1. सबसे बड़ा 2. सर्वोत्तम 3. उच्चतम,—(पुं०) एक चांद्र मास का नाम। सम० -राज् (पुं०) प्रभुसत्ता संपन्न राजा—ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पतिं—ऋक्० २।२३।१, सामन् एक विशेष साम।

ज्येष्ठा (स्त्री०) 1. लक्ष्मी देवी की बड़ी बहन वारुणी 2. एक देवी का नाम।

ज्योक् (अ०) (वेद०) चिरकाल तक, दीर्घ समय तक —ज्योक् च सूर्यं दृशे —ऋक्० १।२३।२१।

ज्योग्जीवनम् (नपुं०) दीर्घकाल तक जीना, लम्बी आयु होना।

ज्योतिस् (नपुं०) [द्युत् इसुन्, आदेर्दस्य जः] 1. प्रकाश, कान्ति, आभा, चमक 2. बिजली 3. गाय —मी० सू० १०।३।४१ पर शा० भा०।

ज्वरः [ज्वर्+अ] 1. ताप, बुखार 2. मानसिक ताप। सम०— अन्तकः शिव का विशेष रूप,—अरिः ज्वर नाशक औषधि, हर (वि०) ज्वरप्रशामक, ज्वर नाशक।

ज्वलनाश्मन् (पुं०) सूर्यकान्त मणि।

ज्वाला [ज्वल्+ण+टाप्] 1. आग की लपट, अग्निशिखा 2. दग्धान्न। सम०—मालिन् (पुं०) शिव देवता, मालिनी (स्त्री०) दुर्गा का एक रूप —ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवह्निप्राकारमध्यगा—ललिता०, मुखी (स्त्री०) दुर्गा का एक विशेष रूप ज्वालामुखी तवज्वाला अभेद्या सर्वसन्धिषु— वाराह पुराण में देवीकवच०, रासभकामयः नाम० दद्रु।

झ

झञ्झानिलः (पुं०) ओलों की बौछार, आंधी के साथ ओलों का पड़ना।

झम्पः, झम्पा [झम्+प, स्त्रियां टाप्] 1. उछल-कूद 2. मछली। सम० अशिन् (पुं०) मछ्याला, मछुआ खाने वाला,—तालः एक प्रकार की संगीत की ताल, गायन की माप, -नृत्यम् एक प्रकार का नाच।

झल्झलः (झलझलः) (पुं०) (आभूषणों की) चौंधियाने वाली चमक।

झषराजः [ष० त०] मगरमच्छ।
झाङ्कारिन् (वि०) [झाङ्कार+इनि] 'झङ्कार' ध्वनि को करने वाला।
झिः 1. चन्द्रमा की कला 2. बन्दर।
झिल्लिन् (पुं०) एक वृष्णि का नाम।
झीः (पुं०) हाथी।
झुः 1. ध्रुव तारा 2. समूह 3. अरुण देव।
झोः कर्ण का नाम।
झौः स्वर्ग।
झौलिकम् (नपुं०) 1. पान आदि रखने का बक्स, पानदान 2. झोला, थैला।

ञ

ञः (पुं०) 1. गायक 2. 'गरगर' का शब्द 3. सांड़ 4. शुक्र 5. पाँच की संख्या।

ट

टङ्कः [टङ्क्+घञ्, वा] 1. टखना—टङ्कोऽस्त्री टङ्कणे गुल्फे—नाना० 2. (संगीत में) एक प्रकार का माप, 3. टकसाल। सम०—पतिः टकसालाध्यक्ष,—शाला टकसाल।
टङ्कित (वि०) [टङ्क+कृ+क्त] बांधा हुआ—नाकृष्टं न च टङ्कितं—हनु०।
टङ्कृतम् [टङ्क्+क्त] टङ्कार, टनटन।
टोपरः (पुं०) छोटा थैला।

ठ

ठक्कः (पुं०) सौदागर, व्यापारी।
ठिण्ठा (स्त्री०) जूआघर—क्रुद्धः स सम्यग्ठिण्ठायां कितवान् स्वानभाषत कथा० ९२।१२१।

ड

डमरिन् (पुं०) [डमर+इनि] एक प्रकार का ढोल।
डम्बरः [डम्ब्+अरन्] उच्चस्वर का घोष।
डिका (स्त्री०) एक बहुत छोटा पंखदार कीड़ा (जैसे कि पिस्सू)।
डिम्बः [डिम्ब्+घञ्] 1. गुंजायमान शिखर, कोलाहलमय चोटी—नै० २२।५३ 2. शरीर—कोष्टा डिम्बं व्यष्वणद्—शि० १८।७७ 3. बुद्धू, जड़—राज० ७।१०७२।
डिम्भः [डिम्भ्+अच्] पौधे का अंकुर, अँखुवा—नै० ८।२।
डेरिका (स्त्री०) छछूंदर।

ढ

ढक्कनम् [ढक्क्+ल्युट्] द्वार बन्द करना।
ढक्कारी (स्त्री०) दुर्गा की मूर्ति की तान्त्रिक पूजा।
ढौकित (वि०) [ढौक्+क्त] निकट लाया हुआ।

त

तक्रम् [तक्+रक्] छाछ, मट्ठा। सम०—**कूर्चिका** राबड़ी, उबाली हुई छाछ, —**पिण्डः** छाछ (को कपड़े में से छानने के पश्चात् रहा अवशेष), पपड़ी।

तटः [तट्+अच्] 1. ढलान, कगार, किनारा 2. क्षितिज। सम०—**द्रुमः** नदी किनारे का वृक्ष, **पातः** किनारे का तोड़ कर गिराना, **भूः** किनारे की धरती।

तटिनीपतिः [ष० त०] नदियों का स्वामी, समुद्र।

तण्डुरीणः [तण्डुर+ख] कीड़ा, कृमि, कीट।

तत्प्रख्यन्यायः (पुं०) मीमांसा शास्त्र का एक नियम जिसके अनुसार किसी यज्ञ का नाम उसकी अभिव्यक्ति के अनुकूल रक्खा जाता है।

तत्त्वम् (नपुं०) शरीर महा० १२।२६७।९। सम० —**अभ्यासः** वास्तविकता का बार बार अध्ययन एवं तत्त्वाभ्यासात्—सां० का० ६४, **दर्शिन्** (वि०) असलियत को जानने वाला,—**भावः** प्रकृति, वास्तविक सत्ता,—**संख्यानम्** सांख्य सिद्धान्त का विशेषण —भाग० ३।२४।१०।

तथावादिन् (वि०) [तथा+वाद+इनि] वैसा होने का दावा करने वाला

तद् (सर्व० वि०) 1. किसी अनुपस्थित वस्तु या व्यक्ति का उल्लेख करने वाला सर्वनाम। सम० **अन्य** (वि०) उसको छोड़ कर कोई दूसरा, **अपेक्ष** (वि०) उसका खयाल करने वाला,—**कालीन** (वि०) उसी काल से सम्बन्ध रखने वाला,—**देश्य** (वि०) उसी देश से सम्बन्ध रखने वाला,—**धर्म्य** (वि०) उसी गुण में भाग लेने वाला,—**भव** (वि०) उसी संस्कृत से जन्म लेने वाला, प्राकृत का एक भेद—तद्भवस्तत्समो देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः—काव्या० १,—**रूपः** (वि०) उसी प्रकार के रूप वाला,—**तद्विद्यः** उसका ज्ञाता, किसी विशेष क्षेत्र में प्रामाणिकता रखने वाला, —**संख्याक** (वि०) उस अंक के समान।

तदादितदन्तन्यायः (पुं०) मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार उत्कर्ष की उक्ति में आरम्भ से लेकर वह सब विवरण सम्मिलित होता है जिसके लिए वह दिया जाता है और साथ ही अपकर्ष की उक्ति अन्त तक उस सभी विवरण पर लागू है जिसके लिए वह दिया जाता है।

तद्व्यपदेशन्यायः (पुं०) ऊपर बताये गये 'तत्प्रख्यन्याय' के समान।

ततत्वम् (नपुं०) सङ्गीत में आवाज को लम्बा करना, सङ्गीत की गति धीमी करना।

तनु (वि०) [तन्+उन्] 1. पतला, दुबला, कृश 2. सुकुमार 3. बढ़िया, नाजुक 4. थोड़ा, छोटा, स्वल्प,—(स्त्री०) 1. शरीर, व्यक्ति 2. प्रकृति 3. त्वचा, खाल। सम०—**उद्भव** पंख,—**करणम्** (तनूकरणम्) पतला करना,—**धी** ओछे मन वाला।

तन्तुकरणम् (नपुं०) कातना, तार निकालना।

तन्तुकार्यम् (नपुं०) जाला।

तन्त्रम् [तन्त्र्+अच्] 1. खड्डी 2. धागा 3. सतत श्रेणी 4. रस्म, व्यवस्था, संस्कार आदि धार्मिक कार्यों का नियमित आदेश 5. मुख्य बात 6. प्रधान सिद्धान्त, नियत 7. ऐसे कृत्यों का समूह जो अनेक प्रधान कार्यों में समान हो—यत्सकृत्कृतं बहूनामुपकरोति तत्तन्त्रमित्युच्यते—मी० सं० ११।१।१ पर शा० भा० 2. विश्व की व्यवस्था यतः प्रवर्तते तन्त्रम् महा० १४।२।१४,—**ज्ञः** विशेषज्ञ,—**युक्तिः** किसी एक संधि का आयोजन कौ० अ० १५।

तन्त्रिभाण्डम् (नपुं०) [ष० त०] भारतीय वीणा।

तन्त्रिल (वि०) [तन्त्र+इलच्] प्रशासनकार्य में कुशल त्वं तन्त्रिलः सेनापती राज्ञः प्रत्ययितः—मृच्छ० ६।१६।१७।

तपर्तुः (तप+ऋतुः) ग्रीष्म ऋतु—तपर्तुमूर्तावपि मेदसां भरा—नै० १।४१।

तपस् (नपुं०) [तत्+असुन्] 1. गर्मी, आग, प्रकाश 2. पीडा, कष्ट 3. तपस्या 4 दण्ड। सम० **अर्थीय** (वि०) तपश्चरण के लिए अभिप्रेत—तपोऽर्थीयं ब्राह्मणी धत्त गर्भम्—महा० ११।२६।५,—**कृश** (वि०) तपश्चरण के कारण दुर्बल,—**मूल** (वि०) तपस्या से उत्पन्न,—**वृद्ध** (वि०) कठोर तपस्या के फलस्वरूप बूढ़ा।

तप्त (वि०) [तप्+क्त] 1. गर्म किया हुआ, जला हुआ 2. पिघला हुआ 3. पीडित, कष्टग्रस्त 4. अभ्यस्त। सम०—**कुम्भः**,—**कूपः** एक नरक का नाम, —**तप्त** (वि०) बार बार उबाला हुआ, बार बार गरम किया हुआ,—**मुद्रा** किसी गर्म धातु की छाप से शरीर पर किसी दिव्य शस्त्र के रूप में अधिकार चिह्न अंकित करना,—**रूपम्**,—**रूपकम्** शुद्ध की हुई चांदी,—**वालुकाः** वालू के गर्म कण।

तापिन् (वि०) [ताप+इनि] पीडा पहुँचाने वाला —कि० ०।४२।

तरङ्गमालिन् (पुं०) समुद्र।

तरङ्गवती नदी, दरिया।

तरलकरण (वि०) [ब० स०) चञ्चल तथा दुर्बल ज्ञानेन्द्रियों वाला।

तरुकोटरम् (नपुं०) [ष० त०] वृक्ष की कोटर या खोखर।

तरुतूलिका }
तरुधूलिका } चमगीदड़।

तदता (स्त्री०) ताज़गी, ताज़ापन ।
तर्कोटः (पुं०) भिखारी, मांगने वाला ।
तर्कमुद्रा (स्त्री०) हाथ की विशेष स्थिति ।
तलोदरी (स्त्री०) गृहिणी, पत्नी ।
तलवः (पुं०) अपनी हथेली से वाद्ययन्त्र को बजाने वाला संगीतकार । सम०—**कारः** सामवेद की एक शाखा ।
तलित (वि०) [तल्+क्त] 1. तला हुआ 2. तलीदार ।
तलिन (वि०) [तल्+इनन्] ढका हुआ— विक्रमांक० १४।६१ । सम०—**उदरी** पतली कमर वाली महिला ।
तवकः (पुं०) धोखा, जालसाज़ी तवकः कपटेऽपि च --नाना० ।
तसरिका (स्त्री०) बुनना, बुनावट ।
तस्वी (स्त्री०) (ज्योतिष शास्त्र का शब्द) षट् कोण ।
ताजिकः (पुं०) 1. मध्यवर्ती एशिया में रहने वाली एक जाति 2. एक उत्तम प्रकार के घोड़े की नस्ल ।
ताण्ड्यब्राह्मणम् (नपुं०) सामवेद के एक ब्राह्मणग्रन्थ का नाम ।
तात्कर्म्यम् (नपुं०) [तत्कर्म+ष्यञ्] व्यवसाय की समानता ।
तात्पर्यार्थः (पुं०) किसी उक्ति का सही अर्थ ।
तादात्विकः (पुं०) अपव्ययी, - यो यद् यद् उत्पद्यते तत्तद् भक्षयति स तादात्विकः , कौ० अ० २।९ ।
ताद्धर्म्यम् (नपुं०) [तद्धर्म+ष्यञ्] गुणों में समानता ।
ताद्रूप्यम् (नपुं०) [तद्रूप+ष्यञ्] रूप की समानता ।
तापसकः [तापस+क] (=कुतापसः) आचारभ्रष्ट संन्यासी ।
तामसः (पुं०) चौथे मनु का नाम ।
तार (वि०) [तृ+णिच्+अच्] 1. ऊँचा 2. प्रबल 3. चमकीला 4. उत्तम,—**रः** (पुं०) धागा, तार ।
तारणेयः [तारणा+ढक्] कन्या से उत्पन्न, कानीन, कर्ण 2. सूर्य का भक्त ।
तारा [तार+टाप्] 1. आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक 2. संगीत के एक राग का नाम ।
तारिका (स्त्री०) [तृ+णिच्+ण्वुल्] एक प्रकार की शराब ।
तार्णसम् (नपुं०) एक प्रकार का चन्दन जिसका रंग तोते के पंखों जैसा होता है -- कौ० अ० २।११ ।
तालः [तल् एव अण्] 1. ताड़ का वृक्ष 2. तालियाँ बजाना 3. फट-फट करना 4. हाथ की हथेली 5. तलवार की मूठ 6. ताला, चटखनी । सम०—**ज्ञः** जो संगीतशास्त्र की ताल को जानता है, **धारकः** नर्तक, नाचने वाला, –**नवमी** भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष का नवाँ दिन,—**फलम्** ताड़ के वृक्ष का फल,—**भङ्गः** संगीत में गान की ताल व लय के मान को सुरक्षित रखने में त्रुटि, ताल का टूट जाना ।
तावत्फल (वि०) [ब० स०] उतना सा ही फल भोगने वाला ।
तिग्मार्चि [ब० स०] सूर्य ।
तितिलम् (नपुं०) 1. ज्योतिषशास्त्र में एक करण 2. तिलों का चिउड़ा, चौले ।
तिथिः [अत्+इथिन्, पृषो०] 1. चान्द्रदिवस 2. पन्द्रह की संख्या । सम०—**अर्धः** (तिथ्यर्धः) एक करण (आधी तिथि), —**प्रलयाः** (ब० व०) किसी भी निर्दिष्ट अवधि में सौर और चान्द्र दिवसों का अन्तर ।
तिमिः [तिम्+इन्] 1. समुद्र 2. मीन राशि । सम० -- **घातिन्** (वि०) मछियारा, मछलियाँ पकड़ने वाला, - **मालिन्** समुद्र ।
तिमिला (स्त्री०) संगीत का एक उपकरण, तबला ।
तिरस्कारिन् (वि०) [तिरस्कार+इनि] ज्ञात करने वाला, आगे बढ़ जाने वाला,— देवि त्वन्मुखपङ्कजेन शशिनः शोभातिरस्कारिणा -- रत्न० १।२४ ।
तिर्यच्, तिर्यञ्च (वि०) 1. टेढ़ा, तिरछा, वक्र 2. घुमावदार 3. अन्तर्वर्ती,—(पुं०),—(नपुं०) 1. जानवर, जन्तु (टेढ़ा-मेढ़ा चलने वाला, लेट कर चलने वाला -- सीधे खड़े होकर चलने वाले मनुष्य से भिन्न) 2. पक्षी 3. पौधे । सम०—**ज** (वि०) किसी जानवर से उत्पन्न, ज्या टेढ़ी ज्या ।
तिलः [तिल्+क] तिल का पौधा । सम०—**कठः** तिलकुट,—**मयूरः** मोर की एक जाति ।
तिल्हन् (पुं०) 1. रोग 2. चावल, धान्य 3. धनुष 4. भलाई ।
तीक्ष्णकण्टकः [ब० स०] तेज़ काँटेदार पौधा ।
तीक्ष्णमार्गः [ब० स०] तलवार—सासृग्राजिस्तीक्ष्णमार्गस्य मार्गः—शि० १८।२० ।
तीर्थचर्या (स्त्री०) [ष० त०] तीर्थ यात्रा ।
तीव्रद्युतिः [ब० स०] सूर्य, सूरज ।
तीव्रा (स्त्री०) 1. काली सरसों 2. संगीत का एक स्वर ।
तु (अं०) निस्सन्देह—तु शब्दः संशयव्यावृत्त्यर्थः—मै० सं० १०।३।७४ पर शा० भा० ।
तुङ्ग (वि०) 1. ऊँचा 2. लम्बा 3. मुख्य 4. प्रबल,—**ङ्गः** (पुं०) पुन्नाग वृक्ष – नाना० ।
तुङ्गिमन् (पुं०) [तुङ्ग+इमनिच्] ऊँचाई— कृतनिश्चयिनो वन्द्यास्तुङ्गिमा नोपभुज्यते—पंच० २।१४६ ।
तुच्छदय (वि०) [ब० स०] दयारहित, निर्दय ।
तुच्छप्राय (वि०) [ब० स०] नगण्य ।
तुञ्ज् (भ्वा० पर०) निकालना, भींचकर निकालना, रस निकालना ।

तुञ्जः [तुञ्ज्+अच्] दबाव।
तोधः [तुद्+घञ्] दबाव—मात० १।३१।
तुन्दिलित (वि०) [तुन्दिल+इतच्] जिसकी तोंद फूल गई है, मोटे पेट वाला।
तुम्बारम् (नपुं०) तुम्बा।
तुर्ययन्त्रम् (नपुं०) (कोणनापने का) पादयन्त्र।
तुला [तुल्+अङ] 1. घर की छत के नीचे की ओर ढलवां लगा हुआ शहतीर 2. तराजू की डंडी। सम० --**अधिरोहणम्** मिलता-जुलता, **अनुमानम्** सादृश्य, सादृश्य पर आधारित अनुमान,--**धारणम्** तराजू पर रखना अर्थात् तोलना।
तुल्य (वि०) [तुलया संमितं यत्] 1. उसी प्रकार का, वैसा ही, मिलता-जुलता 2. उपयुक्त 3. अभिन्न, वही —**ल्यम्** (अ०) 1. एक साथ 2. समान रूप से। सम०—**कक्ष** (वि०) समान, बराबर,—**नक्तंदिन** (वि०) 1. जब रात और दिन दोनों समान हों 2. रात और दिन में कोई भेद न करने वाला, —**निन्दास्तुति** (वि०) अपनी प्रशंसा या अपयश दोनों की ओर से उदासीन, **मूल्य** (वि०) समान मूल्य का, एक सी क़ीमत का,—**योनिः** उसी वंश का, उसी कुल में उत्पन्न,—**वयस्** (वि०) समान आयु का, बराबर की उम्र का, **संख्य** (वि०) समान संख्या का।
तुल्यशः (अ०) समान भागों में, बराबर बराबर।
तुलसि दे० तुलसी, (कविता में 'तुलसी' को 'तुलसि' भी लिख देते हैं)।
तुद् (तुदा० पर०) चोट पहुँचाना, तंग करना, कष्ट देना, पीड़ित करना।
तूणी (स्त्री०) नील का पौधा।
तूतकम् (नपुं०) नीला थोथा।
तूलपीठी,-लासिका (स्त्री०) तकुवा, कातते समय जिस पर लपेटा जाता है।
तूष्णींदण्डः (पुं०) गुप्त रूप से दिया गया दण्ड—कौ० अ० १।११।
तृचः, तृचम् [त्रि+ऋच्] ऋग्वेद के तीन मन्त्रों का समूह।
तृणम् [तृह्+क्न, हलोपश्च] 1. घास 2. तिनका 3. तिनकों की बनी (चटाई आदि) कोई वस्तु। सम० **गणना** तिनके की भांति तुच्छ समझना—तृण गणना गुणरागिणां धनेषु—विक्रमांक० ६।२; —**पूलिकः** मानवी गर्भस्राव चरक० ४।४।१,—**भुज्** (वि०) घास खाने वाला, तृण भक्षी, **शालः** सुपारी का पेड़, -**वृ**.**बः** एक प्रकार की भिर्र।
तृणता [तृण+तल्] 1. तिनके का गुण, निकम्मापन 2. धनुष शि० १९।६१।
तृण्ण (वि०) (वेद०) [तृद्+क्त] फटा हुआ, फाड़ा हुआ।
तृप्तता [तृप्त+तल्] सन्तोष, तृप्ति।
तरपतिः [ष० त०] तरणी या नावों का अधीक्षक।
तरणितनया [ष० त०] यमुना नदी।
तारकम् [तृ+णिच्+ण्वुल्] तारा—शान्तर्क्षग्रहतारकम् —भाग० १३।३।१।
तेजस् (नपुं०) [तिज्+असुन्] 1. क्रोध 2. सूर्य। सम० **पुञ्जः** प्रभापुञ्ज, कान्ति का संग्रह।
तैजस (वि०) [तेजस्+अण्] राजस गुणों से युक्त, —वैकारिकस्तैजसश्च नामसश्चेत्यहं त्रिधा भाग० ३।५।३०।
तैजसम् (नपुं०) 1. ज्ञानेन्द्रियों का समूह 2. चेतन सृष्टि।
तैमित्यम् (नपुं०) मन्दता, जाड्य, जड़ता।
तैर्यग्योन (वि०) [ब० स०] जीव जन्तुओं की सृष्टि से सम्बन्ध रखने वाला।
तैलम् [तिलस्य तत्सदृशस्य वा विकारः अण्] 1. तेल 2. लोबान। सम०—**अम्बुका** तेलचट्टा नामक कीड़ा, —**किट्टम्** खली, **पकः, पायिकः** तेल पीने वाला कीड़ा, तेलचट्टा,+**पूर** (वि०) जो तेल से भरा हुआ हो अतैलपूराः सुरतप्रदीपाः—कु० १।१०।
तोटक (वि०) [तोट+कन्] झगड़ालू,--**कः** (पुं०) शंकर का शिष्य, —**कम्** (त्रोटकम्) एक छन्द का नाम।
तोयम् [तु+यत् नि०] 1. पानी 2. पूर्वाषाढा नक्षत्रपुंज। सम० **अग्निः** जलवर्ती आग, वाडवानल,—**अञ्जलिः** देवों और पितरों को संतृप्त करने के निमित्त अञ्जलि भर जल से तर्पण करना।
तोरणम् [तुर्+युच्, आधारे ल्युट्] 1. डाटदार द्वार 2. बाहरी दरवाजा 3. अस्थायी अलङ्कृत द्वार 4. तराजू को लटकाने के लिए एक त्रिकोणीय ढांचा।
तौच्छ्यम् [तुच्छ+ष्यञ्] तुच्छता, नगण्यता।
तौरङ्गिक (वि०) [तुरङ्ग+ठक्] घुड़सवार।
तौरुष्किक (वि०) [तुरुष्क+ठक्] तुर्की जाति से सम्बद्ध।
त्यक्तविधि (वि०) [ब० स०] नियमों का उल्लङ्घन करने वाला।
त्यद् (सर्व० वि०) (कर्तृ० ए० व०— **स्यः** (पुं०) (वेद०) अदृश्य सच्च त्यच्चाभवत्—तै० उ०।
त्याजित (वि०) [त्यज्+णिच्+क्त] 1. वञ्चित —घर्मोष्मणा त्याजितमार्द्रभावम्—कु० ७।१४ 2. निष्कासित।
त्रयी (स्त्री०) [त्रय+ङीप्] 1. वेदत्रयी (ऋग्यजुःसाम) 2. तिगुना 3. विवाहित स्त्री (माता) जिसका पति और बच्चे जीवित हैं। सम०—**मय** (वि०) जो

तीनों (वेदों) से युक्त एकक है, – विद्य (वि०) जो तीनों वेदों में निष्णात है,—वेद्य (वि०) जो तीनों वेदों के द्वारा जाना जा सकता है—त्रयीवेद्यं हृद्यं त्रिपुरहरमाद्यं त्रिनयनम् –आनन्द० २,—संवरणम् छिपाने या गुप्त रखने की तीन बातें (स्वरन्ध्रगोपन, पररन्ध्रान्वेषणगोपन और मन्त्रगोपन) अर्थात् अपनी दुर्बलता, शत्रु की दुर्बलता और अपनी नीति।

त्रि (सं० वि०) [तृ+ड्रि] तीन। सम०—**अङ्गुलम्** तीन अंगुल चौड़ाई की माप,—**आर्षेयाः** (ब० व०) 1. तीन पुरुष बहरा, गूंगा और अंधा 2. तीन ऋषियों से युक्त प्रवर,—**कटु** (कटुकम्) सोंठ पीपर और मिर्च का समाहार,—**करणम्** मन, बचन और कर्म से युक्त कार्यकलाप,—**करणी** और से तिगुना लंबा किसी वर्ग का पार्श्व,—**काण्डम्** अमर कोश नामक ग्रन्थ, **गुणाकृतम्** तीन बार हल से कृष्ट, जिसमें तीन बार हल चल चुका है, **जातम्** तीन मसालों (जायफल, इलायची, दारचीनी) का मिश्रण,—**णेमि** (वि०) जिसमें तीन पुट्ठियाँ लगी हों भाग० ३।८।२०,—**नेत्रफलः** नारियल,—**पिटकम्** बौद्धों के तीन धार्मिक पुस्तकों के संग्रह,—**भङ्गम्** शरीर की ऐसी मुद्रा जिसमें तीन झुकाव हो,—**मदः** तिगुना अहंकार,—**मलम्**, मल मत्र और कफ तीनों मल,—**यव** (त्रि०) तोल में तीन जौ के बराबर, —**लोहकम्** सोना, चाँदी और ताँबा तीन धातुएँ, —**वली** (स्त्री०) (किसी महिला) के पेट की तीन वलियां,—**वली** गुदा,—**वृत्तिः** यज्ञ, भैक्ष्य और अध्ययन के द्वारा जीविका,—**शर्करा** तीन प्रकार की शक्कर,—**सवनम्** (सवणम्) त्रैकालिक यज्ञ, **सरः** मिला कर उबाले हुए, दूध, तिल और चावल —**साधन** (वि०) तीन प्रकार के साधन जिसे प्राप्त हैं, **सामन्** (वि०) ऊह, रहस्य और प्रकृति नाम के तीनों सामों को गाने वाला,—**सुपर्णः**,—**सुपर्णम्** तीन ऋचाएँ —ऋक्० १०।११४।३-५।

त्रिकत्रयम् (नपुं०) त्रिफला, त्रिकटु और त्रिमद का समिश्रण।

त्रैराशिक (वि०) [त्रिराशि+ठक्] तीन राशियों से सम्बन्ध रखने वाला।

त्रैवेदिक (वि०) [त्रिवेद+ठक्] तीनों वेदों से सम्बन्ध रखने वाला।

त्वञ्च् (भ्वा० पर०) 1. जाना 2. सिकुड़ना।

त्वरता [त्वर+तल्] शीघ्रता।

त्वरम् (अ०) [त्वर्+अच्] जल्दी से, शीघ्रतापूर्वक।

त्वष्टिः [त्वक्ष्+क्तिन्] बढ़ईगिरी।

त्वाष्ट्र (वि०) [त्वष्ट्र+अण्] त्वष्टा से संबंध रखने वाला।

त्वाष्ट्री [त्वष्ट्र+ङीप्] 'चित्रा' नक्षत्र पुंज।

थ

थुड् (तुदा० पर०) 1. ढकना, पर्दा डालना 2. छिपाना, गुप्त रखना।

थोडनम् [थुड्+ल्युट्] 1. ढकना 2. लपेटना।

द

दंशित (वि०) [दंश्+क्त] किसी विषय में ग्रस्त —दंशितो भव कर्मणि—महा० १२।२२।९।

दंस् (चुरा० आ०) 1. डंक मारना 2. देखना।

दक्ष् (भ्वा० प्रेर०) 1. प्रसन्न करना 2. सशक्त बनाना —दक्षयन्द्विजगणानपूयत—शि० १४।३५।

दक्षता [दक्ष्+अच्, भावे तल्] कुशलता, नैपुण्य।

दक्षिण (वि०) [दक्ष्+इनन्] अनुकूल।

दक्षिणाम्नायः (पुं०) दक्षिणावर्त से सम्बन्ध रखने वाली तांत्रिक संप्रदाय की पुनीत पीठ।

दक्षिणा (अ०) [दक्षिण+टाप्] 1. दक्षिण की ओर, दाईं ओर 2. दक्षिणदेश से,—**गा** (स्त्री०) (यज्ञादि धार्मिक कृत्यों की समाप्ति पर) ब्राह्मणवर्ग को दी जाने वाली भेंट। सम०—**पथिक** (वि०) दक्षिणावर्त से सम्बन्ध रखने वाला,—**प्रतीची** दक्षिण-पश्चिम,—**प्रत्यच्** (वि०) दक्षिण-पश्चिमी,—**मूर्तिः** (पुं०) शिव का एक रूप।

दण्डः [दण्ड्+अच्] 1. डंडा, लाठी, मुद्गर, गदा 2. हाथी की सूँड 3. छतरी की मूठ 4. जुरमाना 5. हलस 6. राज्यतंत्र—कौ० अ० १।५ 7. आघात, चोट —न्यासो दण्डस्य भूतेषु—भाग० ७।१५।८। सम०

—आघातः डंडे की चोट,—असनम् एक प्रकार का आसन, भूमि पर लम्बा लेट जाना, उद्यमः दण्डित करने की धमकी देना,—कलितम् मापने के गज की भांति बार-बार आवृत्ति करना – मी० सू० १०।५। ८३ पर शा० भा०,—कल्पः दण्डग्रस्त करना, दण्ड देना कौ० अ० ४,—निधानम् क्षमा करना, —लेशम् थोड़ा सा दण्ड मनु० ८।५१, वाचिक (वि०) वास्तविक या शाब्दिक (प्रहार),- वारित (वि०) दण्डित होने के डर से कोई काम न करने वाला, दण्ड के डर से रुका हुआ।

दधृष् (वि०) ढीठ, साहसी, गुस्ताख़ सुग्रीवो निनदन् दधृक्—भट्टि० ६।११७।

दध्नः (पुं०) यम का विशेषण।

दन्तः [दम्+तन्] 1. दाँत 2. हाथी का दाँत 3. बाण की नोक 4. पहाड़ की चोटी 5. बत्तीस की संख्या। सम०—उच्छिष्टम् दाँतों में लगा हुआ भोजन का अंश, पत्रिका कंघी,— बीजः अनार, (दन्तबीजः भी) व्यापारः हाथी के दाँत का कार्य।

दन्द्रम्यमाण (वि०) [द्रम्+यङ+शानच्] भिन्न-भिन्न दिशाओं में चक्कर काटता हुआ—कठ० १।२।५।

दमघोषः (पुं०) एक राजा का नाम, शिशुपाल का पिता।

दमनकः (पुं०) पञ्चतन्त्र की कहानियों में एक गीदड़ का नाम।

दम्भचर्या (स्त्री०) [ष० त०] धोखा, छल, कपट का आचरण।

दरम् [दृ+अप्] 1. विवर, कन्दरा 2. शंख, (श०) ज़रा सा कुछ। सम०—दलित (वि०) ज़रा सा खुला हुआ,- दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा —सौन्दर्य०,—मन्थर (वि०) ईषन्मन्द, ज़रा धीमा।

दर्भलवणम् [ष० त०) घास काटने का यंत्र।

दर्विका (स्त्री०) आँखों का अंजन।

दशन् [सं० वि०) दस। सम०—क्षीर (वि०) जिसमें दस भाग दूध हो,—धर्मः कष्ट, विपत्ति, योजनम् दस योजन की दूरी।

दशा (स्त्री०) [दश+अङ, नि० टाप्] 1. किसी कपड़े की किनारी, गोट, मगज़ी 2. लैम्प की बत्ती 3. आयु 4. अवस्था 5. हालत 6. ग्रहों की स्थिति। सम० अंशः,-भागः बुरा समय—रा० ३।७२।८, - फलम् जन्म पत्री में निर्देशित किसी विशेष समय का फल।

दग्ध (वि०) [दह्+क्त] 1. जला हुआ 2. शोकग्रस्त, दुःखी 3. अमंगल 4. सूखा। सम०—जठरम् जला पेट, भूखा पेट, ग़रीबी से मारा हुआ,—व्रणः जल जाने से होने वाला घाव।

दत्त (वि०) [दा+क्त] दिया हुआ। सम०—क्षण (वि०) जिसे कोई अवसर दिया गया है,—दृष्टि (वि०) जिसने ध्यान लगाया हुआ है, जो देख रहा है।

दत्तकचन्द्रिका (स्त्री०) धर्मशास्त्र का एक ग्रन्थ।

ददातिः (पुं०) स्वामित्व का परिवर्तन—अथ ददातिः किंलक्षणकः इति–मी० सू० ४।२।२८ पर शा० भा०।

दहनर्क्षम् (दहन+ऋक्षम्) (नपुं०) कृत्तिका नक्षत्रपुंज।

दानम् [दा+ल्युट्] 1. देना 2. सौंपना 3. उपहार 4. दान 5. हाथी के गंडस्थल से बहने वाला रस। सम०—परिमिता उदारता, दानशीलता की सीमा, —वर्षिन् (वि०) मदोन्मत्त हाथी।

देय (वि०) [दा+यत्] समर्पण करने योग्य (मार्ग) पन्था देयो वरस्य मनु० २।१३८।

दाक्षिकन्या (स्त्री०) वाह्लीक देश में स्थित एक स्थान का नाम।

दाडिमबीजः (पुं०) [ष० त०] अनार का बीज।

दाम्नी (स्त्री०) माला।

दायः [दा+घञ्] 1. उपहार 2. वैवाहिक उपहार 3. भाग 4. बपौती, बरासत 5. सम्बन्धी, रिश्तेदार। सम० विभागः संपत्ति का बटवारा।

दाराधिगमनम् [ष० त०] विवाह।

दारुमत्स्याह्वयः (पुं०) गोह।

दारुहारः (पुं०) लकड़हारा।

दारणम् [दृ+णिच्+उनन्] 1. क्रूरता, भीषणता 2. कठोर, प्रतिकूल नक्षत्र मृग, पुष्य, ज्येष्ठा और मूल।

दारोदर (वि०) जूए से संबद्ध, जुआ विषयक।

दार्विका (स्त्री०) एक प्रकार का आँखों का अंजन।

दार्वी (स्त्री०) [दारु+अण्+ङीप्] 1. दारुहल्दी 2. हल्दी का पौधा।

दार्षद (वि०) (दी स्त्री०) [दृषद्+अण्] 1. पथरीला 2. जो पत्थर पर पीसा जाय।

दार्ष्टान्त (वि०) [दृष्टान्त+अण्] सादृश्य की सहायता से व्याख्या किया गया, उदाहरण देकर समझाया गया।

दार्ष्टान्तिक (वि०) [दृष्टान्त+ठक्] जो उपमा देकर किसी बात को समझाता है।

दालवः (पुं०) एक प्रकार का विष।

दाल्भ्यः (पुं०) एक वैयाकरण का नाम।

दाशरथ (वि०) [दशरथ+अण्] 1. यज्ञ से सम्बन्ध रखने वाला—मैद्दा० १२।८।३७ पर टीका।

दाशराज्ञ (वि०) [दशराजन्+अण्] दस राजाओं से सम्बन्ध रखने वाला।

दासमीयः (पुं०) [दासं गृहशूद्रं भिमते मानयन्ति मैथुना-

थिन्यस्ताः दासम्यः तज्जः] उच्च वर्ण की स्त्री में शूद्र पिता के द्वारा उत्पादित पुत्र ।

दिनकृतम् (नपुं०) [ष० त०] नित्य का कार्यक्रम ।

दिनस्पृश् (नपुं०) [दिनस्पृश्+क्विप्] चान्द्रदिवस जो सप्ताह के तीन दिनों के साथ मेल खाता है ।

दिवसावसानम् (नपुं०) संध्याकाल ।

दिवसीकृ (तना० उभ०) रात को दिन में परिणत करना —निशा दिवसीकृता मृच्छ० ४।३ ।

दिवानक्तम् (अ०) [द्व० स०] दिन रात ।

दिव्यावदानम् (नपुं०) बौद्धधर्म का एक ग्रन्थ ।

दिव्यधुनी (स्त्री०) गंगा नदी ।

दिगवस्थानम् [दिक्+अवस्थानम्] अन्तरिक्ष ।

दिग्भ्रमः [दिश्+भ्रमः] दिशा की भ्रान्ति होना ।

दिक्शूलम् [दिश्+शूलम्] दिशाशूल, यात्रियों को किन्हीं विशिष्ट दिनों में विशेष दिशाओं में जाने का प्रतिषेधक योग ।

दिष्ट (वि०) [दिश्+क्त] 1. संकेतित, दर्शाया हुआ 2. वर्णित, उल्लिखित 3. निश्चित, नियत,—**ष्टः** (पुं०) समय, —**ष्टम्** (नपुं०) 1. नियतन 2. भाग्य । सम० गतिः मृत्यु,—**दृश्** न्यायकारी परमात्मा —यस्य तुष्यति दिष्टदृक् -भाग० ४।२१।२३, —**भाज्** (पुं०) परमात्मा,—**भुक्** (वि०) जो अपने कर्मों का फल भोगता है ।

दिष्टिवृद्धिः (स्त्री०) [ष० त०] बधाई, अभिनन्दन, साधुवाद ।

देशना (स्त्री०) [दिश्+युच्+टाप्] निदेश, अध्यादेश —वैकृतीषु देशनासु प्राकृतं धर्मजातमपेक्ष्यते-मी० सू० १०।१।१ पर शा० भा० ।

दीनता (स्त्री०) [दीन+तल्] दुर्बलता, बलहीनता ।

दीक्ष् (भ्वा०, प्रेर० आ०) प्रेरित करना, प्रोत्साहित करना—तत्कलमस्तमदिदीक्षतक्षणं - नै० १८।१२० ।

दीक्षणीयेष्टिः उपनयन संस्कार से पूर्व अनुष्ठेय यज्ञ ।

दीक्षाश्रमः (पुं०) वानप्रस्थाश्रम ।

दीक्षायूपः (पुं०) [त० स०] यज्ञ की स्थूणा ।

दीपः [दीप्+णिच्+अच्] लैम्प, दीपक । सम० —**अङ्कुरः** लैम्प की लौ, दीवे की लौ,—**उच्छिष्टम्** दीवे की स्याही, **दण्डः** दीवट, दीपक रखने की यष्टि ।

दीप्त (वि०) [दीप्+क्त] 1. जला हुआ, प्रकाशित, सुलगाया हुआ 2. उत्तेजित, प्रदीप्त 3. उज्ज्वल,—**प्तः** (पुं०) 1. सिंह 2. नींबू का पेड़,—**प्तम्** (नपुं०) सोना । सम० आस्यः साँप, **निर्णयः** निश्चित एवं वास्तविक परिणाम,—**निर्णय** (वि०) जिसने अपना पक्का निर्णय कर लिया है ।

दीप्यकम् [दीप्+यत्+कन्] 1. मोर की शिखा 2. 'दीपक' नाम का एक अलंकार, उसी का दूसरा नाम ।

दीर्घ (वि०) [दृ+घञ्, बा०] 1. लम्बा, दूरगामी 2. देर तक रहने वाला, टिकाऊ 3. गहरा 4. ऊँचा । सम० —**अपाङ्ग** (वि०) बड़े कटाक्षों से युक्त (मृग) —**अपेक्षिन्** (वि०) लिहाज़ करने वाला, सचेत, सावधान,—**चतुरस्रः** दीर्घायत,—**तमस्** (पुं०) एक ऋषि का नाम, **द्वेषिन्** (वि०) जो देर तक वैर-विरोध रखता है, **पत्रकः** 1. गन्ना 2. एक प्रकार का लहसुन,—**पुच्छः** साँप,—**बाहु** (वि०) लम्बी भुजाओं वाला, **वर्च्छिका**, घड़ियाल, मगरमच्छ ।

दुःखम् [दुःख्+अच्] 1. अप्रसन्नता, कष्ट, पीडा 2. कठिनाई, असुविधा । सम० **गतम्** विपत्ति, संकट, —**जीविन्** (वि०) कष्ट में जीवन व्यतीत करने वाला,—**त्रयम्** तीन प्रकार का दुःख- आधिभौतिक, आधिदैविक, और आध्यात्मिक,—**दुःखम्** (अ०) बड़ी कठिनाई के साथ,—**दुःखिन्** (वि०) 1. जिसे दुःख पर दुःख उठाने पड़े 2. जो दूसरों के दुःख से दुःखी हो,—**लभ्य** (वि०) जो कठिनाई से काटा जा सके ।

दुःखाकृत (वि०) [दुःख+आ+कृ+क्त] आहत, दलित, परेशान- नै०२२।१३८ ।

दुकूलपट्टः (पुं०) रेशमी पट्टा या सिर की पट्टी ।

दुन्दुभिः (पुं० स्त्री) [दुन्दु+भण्+ड+ङ्] 1. एक प्रकार का बड़ा ढोल 2. विष्णु 3. कृष्ण 4. एक प्रकार का विष 5. संवत्सर चक्र में ५६ वाँ वर्ष ।

दुर् (अ०) ['दुस्' का पर्याय वाची उपसर्ग+दु+रुक्] यह उपसर्ग 'बुरा' 'कठोर' या 'कठिन' के अर्थ को प्रकट करने के लिए नाम पद तथा क्रिया पदों के पूर्व जोड़ा जाता है । सम० **अक्षरम्** अमंगल सूचक शब्द,—**अपवादः** पिशुनवाक्य, लोकापवाद,—**अवच्छद** (वि०) जिसका गुप्त रखना कठिन है,—**अवसित** (वि०) सीमारहित, अगाध, जो मापा न जा सके, —**आढ्य** (वि०) निर्धन, धनहीन,—**आधिः** (पुं०) 1. कष्ट, मानसिक चिन्ता 2. क्रोध,—**आपूर** (वि०) जिसका भरना कठिन हो, जिसको सन्तुष्ट न किया जा सके,—**आमोदः** दुर्गन्ध, सड़ांद,—**आवर्त** (वि०) जिसे विश्वास न दिलाया जा सके, जो किसी प्रकार अपने मतानुकूल न किया जा सके,—**आसद** (वि०) 1. जिसे प्राप्त करना कठिन हो 2. अजेय, जिसपर आक्रमण न किया जा सके 3. जिसका सहन करना कठिन हो,—**उदय** (वि०) जो आसानी से प्रकट न हो सके, **उदर्क** (वि०) जिसका बुरा परिणाम हो, जिसका कोई फल न निकले, **उपसर्पिन्** (वि०) जो असावधानता पूर्वक पहुँच रहा है, जो सावधानी

से पास नहीं जाता है,—गुणितम् (नपुं०) जिसका भलीप्रकार अध्ययन नहीं किया गया—शास्त्रं दुर्गुणितं यथा—अवि० २।४,—गोष्ठी कुसंगति, षड्यंत्र, —नयः 1. बुरी रणनीति 2. अनैतिकता 3. धृष्ठता —नृपः बुरा राजा,—न्यस्त (वि०) दुर्व्यवस्थित, —बाध (वि०) प्रतिबंधरहित, —बुध (वि०) दुर्मना, दुष्ट मन वाला, —भिषज्यम् (नपुं०) अचिकित्स्यता, असाध्यता—बृ० उ० ४।३।१४, —मङ्कु (वि०) ढीठ, आज्ञा न मानने वाला, —मरम् (नपुं०) कठिन मृत्यु, अप्राकृतिक मरण,—मर्षित (वि०) उकसाया हुआ, भड़काया हुआ,—मैत्र शत्रु, वैरी, —ग्रामः ब्राह्मणों (अग्रहारोपजीवी) की बस्ती के पास बसा हुआ गाँव, —विद्ध (वि०) जिसमें छिद्र ठीक प्रकार न हुआ हो (मोती), —विमर्श (वि०) जिसकी परीक्षा करना कठिन हो,—विवाहः अनियमित विवाह, —व्यवहृतिः (स्त्री०) मिथ्या अभियोग, झूठा आरोप।

दुरोणम् (वेद०) आवास,—अतिथिर्दुरोणसद्—ऋक् ४।४०।५।

दूषक (वि०) [दुष्+णिच्+ण्वुल्] अधार्मिक, धर्महीन।

दोषः [दुष्+घञ्] 1. अपराध, बट्टा, निन्दा, त्रुटि 2. पाप, जुर्म 3. अवगुण, दुःस्वभाव 4. वात पित्त कफ का विकार। सम०—अक्षरम् दोषारोपण, दोषारोप का शब्द,—आविष्कारणम् दोषों को प्रकट करना,—निरूपणम् त्रुटियों का संकेत करना।

दुस् [दु+सुक्] संज्ञा पदों के साथ, कभी-कभी क्रियापदों के साथ भी, लगने वाला उपसर्ग, इसका अर्थ है 'बुरा' 'दुष्ट' 'घटिया' 'कठिन' आदि ('दुस्' का 'स्' स्वरों तथा हृष् वर्णों से पूर्व 'र्' में; छ् से पूर्व 'श्' में तथा क् प् से पूर्व 'ष्' में बदल जाता है)। सम०—उपस्थान (वि०) अगम्य, पहुँच के बाहर, —कुलम् अधम कुल—स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि—मनु० २।२३८,—कुह (वि०) पाखण्डी, दम्भी०—बुद्ध १।१८, —क्रीत (वि०) जो उचित रूप से न खरीदा गया हो,—चिक्यम् ज्योतिष शास्त्र में लग्न से तीसरी राशि,—प्रक्रिया नगण्य अधिकार—राज० ८।४, —प्रतीक (वि०) पहचानने में कठिन—प्रद (वि०) दुःखदायी, पीडाकर—अद्य भीताः पलायन्तु दुष्प्रदास्ते दिशो दश—रा० २।१०६।२९,—मरम् असामयिक और दुःखद मृत्यु,—सधः 1. कुत्ता 2. मुर्गा,—संस्थित (वि०) देखने में कुरूप, निन्द्य, कलङ्कयुक्त,—स्थम् (अ०) बुरा, अस्वस्थ—दुःस्थं तिष्ठसि यच्च पथ्यमधुना कर्तास्मि तच्छोष्यसि—अमरु०।

दुग्धकूपिका (स्त्री०) एक प्रकार की रोटी।

दुग्धाक्षः (पुं०) एक प्रकार की मूल्यवान् मणि।

दुहिलितिका (स्त्री०) एक प्रकार की जानवरों की खाल जिस पर बाल बहुत लगे होते हैं—कौ० अ० २।११।

दूतः [दु+क्त, दीर्घः] 1. हरकारा 2. एलची, राजदूत। सम०—काव्यम् 'दूतसम्प्रेषण' के विषय का काव्य, जैसे मेघदूत, —वधः (—वध्या) दूत की हत्या करना —दूतवध्यां विगर्हता—रा० ६।५३,—संपातः,—संप्रेषणम् दूत भेजना।

दूत्यम् [दूत+यत्] दूत का कार्य।

दूर (वि०) [दुर्+इण्+रक्, धातोर्लोपः] 1. फ़ासले पर, दूरी पर, दूर 2. अत्यन्त, बहुत अधिक। सम० —अपेत (वि०) प्रकरण से बाहर, अप्रासंगिक, असंगत, —आगत (वि०) दूरी से आये हुए, —उत्सारित (वि०) दूर भगाया हुआ,—गामिन् (पुं०) बाण, —पात, —पातिन् (वि०) जो दूर से निशाना लगा सकता है—शास्त्रविद्भिरनाधृष्यो दूरपाती दृढव्रतः —महा० ५।१६५।२५, —पातनम् दूर तक निशाना लगाना, —श्रवणम्–श्रुतिः दूर से सुनना (एक 'सिद्धि' का भेद), —श्रवस् (त्रि०) दूर-दूर तक विख्यात।

दूरता,-त्वम् [दूर+तल्, त्व] दूरी, फ़ासला।

दृङ्कः (पुं०) धरती में खोद कर बनाया हुआ चूल्हा।

दृढ (वि०) [दृह्+क्त, नि० नलोपः] 1. स्थिर, मज़बूत, अटल, अडिग, अथक 2. ठोस 3. पुष्टीकृत 4. धैर्यवान् 5. सटा हुआ। सम० —धृति (वि०) दृढ निश्चय, साहसी, —नाभः अस्त्र का प्रभाव रोकने वाला मंत्र —रा० १।२९।५, —पृष्ठकः कछुवा,—भूमिः यौगिक अध्ययन में जिसने मन को केन्द्रित कर लिया है,—भेदिन्, —वेधिन् (पुं०) अच्छा तीरन्दाज, —मन्यु (वि०) प्रचण्ड क्रोधी—भार्गवाय दृढमन्यवे पुनः—रघु० ११।६४—वृक्षः नारियल का पेड़।

दृतिः (पुं०, स्त्री०) [दॄ+क्तिन् ह्रस्वः,] पिचकारी या नल—ता देवरानुत सखीन्सिषिचुर्दृतीभिः—भाग० १०।७५।१७।

दर्पोपशान्तिः (स्त्री०) घमंड चूर-चूर करना।

दर्शंदर्शम् (अ०) हर दृष्टि में, प्रत्येक दृष्टि में।

दर्शपूर्णमासन्यायः (पुं०) ऐसा नियम जिसके आधार पर वह कार्य जो अनेक फलों का उत्पादक है, एक समय में केवल एक ही फल उत्पन्न कर सकता है, अनेक नहीं—मी० सू० ४।३।२५-२८।

दर्शनम् [दृश्+ल्युट्] 1. देखना 2. प्रकट करना 3. जानना 4. दृष्टि 5. निश्चयात्मक कथन, उक्ति —दर्शनादर्शनयोश्च दर्शनं प्रमाणम् मी० सं० १०।७।३६ पर शा० भा०।

दर्शनीयतम (वि०) [दृश्+अनीयर्+तमप्] जो देखने में अत्यन्त सुन्दर है—दर्शनीयतमं शान्तम् भाग०।

दर्शनीयमानिन् (वि०) [दर्शनीयमान+इनि] जो अपने सौन्दर्य का अभिमान करता है, घमंडी।

दिदृक्षा (स्त्री०) [दृश्+सन्+अ+टाप्] देखने की इच्छा।

दिदृक्षु (वि०) [दृश्+सन्+उ] जो देखने का इच्छुक है।

दृश् (स्त्री०) [दृश्+क्विप्] 1. दृष्टि 2. आंख। सम० —**अञ्चलः** (दृगञ्चलः) कटाक्ष, कनखी,—**छत्रम्** (दृक्छत्रम्) पलक,—**निमीलनम्** (दृङ्निमीलनम्) आँख मिचौनी, बच्चों का एक खेल,—**प्रसादा** (दृक्प्रसादा) एक नीला पत्थर जो अंजन की भांति प्रयुक्त किया जाता है, **संगमः** दृष्टिमिलन, नजर मिलना।

दृशालुः (पुं०) [दृश्+आलुच्] सूर्य।

दृश्यम् [दृश्+क्यप्] 1. देखे जाने योग्य 2. सुन्दर 3. काव्य का एक भेद जो देखने के उपयुक्त है (विप० श्रव्य)। सम०—**इतर** (वि०) जो दिखाई न दे, —**स्थापित** (वि०) आकर्षक रीति से रक्खा हुआ जिससे सभी उसको देख सकें दृश्यस्थापितमृद्भैक्षाभाण्डमृगाजिनाम्—कथा० २४।९२।

दृष्टसार (वि०) [ष० त०] जिसका बल या सामर्थ्य प्रमाणित हो चुका है—दृष्टसारमथ रुद्रकार्मुके रघु० ११।

दृष्टिः (स्त्री०) [दृश्+क्तिन्] 1. नजर, देखना 2. मानसिक रूप से देखना 3. जानना 4. आँख 5. सिद्धान्त (दे० दर्शन)। सम०—**प्रसादः** दृष्टि की कृपा, दर्शन का अनुग्रह,—**मण्डलम्** 1. आँख की पुतली 2. दृष्टिक्षेत्र,—**रागः** आँख द्वारा प्रेमाभिव्यक्ति,—भवन्तमन्तरेण कीदृशोऽस्याः दृष्टिरागः श० २।११-१२, —**संभेदः** पारस्परिक अवलोकन—त्वयापि न निरूपिता अनयोर्दृष्टिसंभेदः—महा० ७।

दृषदश्मन् (पुं०) चक्की का ऊपर का पाट।

दृषत्सारम् [ष० त०] लोहा - दृषत्सारस्तत्त्वामृतमपि —म० वी० ६।५२।

देव (वि०) [दिव्+अच्] 1. दिव्य, स्वर्गीय 2. उज्ज्वल 3. पूजनीय, माननीय, —**वः** (पुं०) 1. देवता 2. वर्षा का देवता 3. दिव्य मनुष्य, ब्राह्मण—दे० भूदेव 4. देवर, पति का भाई,—**वम्** (नपुं०) ज्ञानेन्द्रिय। सम०—**अर्पणम्** 1. देवों के प्रति उपहार 2. वेद—महा० १३।८६।१७ पर टीका, **कुसुमम्** इलायची,—**खातम्, खातकम्** 1. पहाड़ की कन्दरा 2. सरोवर 3. मन्दिर का निकटवर्ती तालाब,—**गान्धारी** संगीतशास्त्र में एक राग का नाम, **ग्रहः** भूत-प्रेतों की श्रेणी जो उन्माद पैदा करती है,—**तर्पणम्** जल के उपहार से देवों को तृप्त करना,—**दैवत्य** (वि०) जो देवताओं का भवितव्य हो, उनके भाग्य से लिखा हो,—**धिष्ण्यम्** देवों का रथ, विमान,—**नक्षत्रम्** दक्षिणी दिशा में पहले चौदह नक्षत्रों का नाम,—**निन्दा** नास्तिकता,—**निर्माल्यम्** देवताओं को उपहार देने में प्रयुक्त (फूल, माला आदि),—**पुरोहितः** 1. देवों का अपना पुरोहित 2. बृहस्पति ग्रह,—**प्रसूतः** (वि०) प्रकृति से उत्पन्न (जल आदि), —**भोगः** स्वर्गीय भोग, स्वर्गीय हर्ष, —**माया** दिव्य भ्रम – तां देवमायामिव वीरमोहिनीम् भाग० १०,—**मार्गः** 1. वायु, अन्तरिक्ष 2. गुदा देवमार्गं च दर्शितम् -रा० ५।६२, —**रातः** परीक्षित् का विशेषण,—**लक्ष्मम्** ब्राह्मणत्व का चिह्न, यज्ञोपवीत, **सत्यम्** दिव्य सचाई,—**हूः** बायाँ कान—भाग० ४।२५।५१।

देवितव्य (वि०) [दिव्+तव्यत्] जूए में दाँव पर लगाने योग्य।

देवीपुराणम् (नपुं०) एक उपपुराण का नाम।

देवीभागवतम् (नपुं०) एक महापुराण का नाम।

देवीमाहात्म्यम् (नपुं०) मार्कण्डेय पुराण का एक भाग जिसे सप्तशती कहते हैं।

देशः [दिश्+अच्] 1. स्थान 2. प्रदेश 3. क्षेत्र 4. प्रान्त 5. विभाग 6. संस्थान 7. अध्यादेश। सम०—**अटनम्** किसी देश में भ्रमण करना,—**कण्टकः** सामाजिक बुराई, देश की प्रगति में बाधक, **कालज्ञ** (वि०) जो व्यक्ति कार्य करने के सही स्थान और समय को जानता है, —**विद्ध** (वि०) ठीक तरह से विधा हुआ (मोती) दर्शक की सापेक्ष स्थिति के आधार पर बना गोल घेरा।

देशकः [दिश्+ण्वुल्] संकेतक, ज्ञापक, अनुबोधक। सम० **पट्टम्** (नपुं०) छत्रक, खुम्भी।

देशिकरूपिणी (स्त्री०) अध्यापिका के रूप में देवी, ललिता का विशेषण।

देष्टव्य (वि०) [दिश्+तव्यत्] इंगित या संकीर्तित किये जाने के योग्य।

देहः,—हम् [दिह्+घञ्] 1. काया, शरीर 2. व्यक्ति 3. रूप। सम० - **आसवः** मूत्र,—**कृत्** 1. पाँच तत्त्व 2. पिता - अनरण्यस्य देहकृत् - भाग० ९।७।४, —**तन्त्र** (वि०) शरीर धारी, मूर्तरूप धारण करने वाला, **पातः** मृत्यु,—**भेदः** मृत्यु,—**यापनम्** शरीर का पालन पोषण करना,—**विसर्जनम्** मृत्यु,—**वृन्तम्** नाभि,—**सारः** मज्जा।

देहिका (स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा।

दैक्ष (वि०) [दीक्षा+अण्] 'अग्नीषोम' यज्ञ की दीक्षा लेने वाला।

दैप (वि०) [दीप+अण्] दीपक से सम्बन्ध रखने वाला।

दैव (वि०) [देव+अण्] 1. देवताओं से सम्बन्ध रखने

वाला 2. दिव्य, स्वर्गीय 3. भाग्य पर निर्भर । सम० —**इज्य** (वि०) बृहस्पति के लिए पुनीत, —**ऊढा** 'दैव' विवाह की रीति के अनुसार विवाहित स्त्री, —**चिन्ता** भाग्यवाद,—**रक्षित** (वि०) अन्तर्जात, नैसर्गिक,—**रक्षित** (वि०) देवों से जिसकी रक्षा की गई है—अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं—सुभाष०, —**विद्** (पुं०) ज्योतिषी,—**हत** (वि०) जिससे देव घृणा करते हों, भाग्य का मारा ।

दैवतसरित् (स्त्री०) गंगा नदी ।

दैवसिक (वि०) [दिवस+ठक्] एक दिन में जो घटित हो ।

दैवाकरिः (पुं०) 1. शनि ग्रह 2. यम 3. यमुना नदी ।

दैशिक (वि०) [देश+ठञ्] गुरु के द्वारा शिक्षा प्राप्त ।

दोधकम् (नपुं०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और एक गुरु को मिला कर दस वर्ण हों ।

दोलाचलचित्तवृत्ति (वि०) जिसका मन हिंडोले की भाँति इधर उधर झूल रहा है ।

दोलाचलयन्त्रम् (नपुं०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा कुछ औषधियाँ तैयार की जाती हैं ।

दोलालोल (वि०) अनिश्चित ।

दोस् (पुं०, नपुं०) [दम्यतेऽनेन दम् दोऽसि अर्धर्चा०] ('दोषन्' शब्द को विकल्प से द्वितीया विभक्ति के द्विवचन के पश्चात् 'दोस्' आदेश हो जाता है) 1. भुजा 2. किसी वर्ग या त्रिकोण की भुजा 3. अठारह इँच की माप —मात० १०।१४ ।

दोहददुःखशीलता (स्त्री०) गर्भावस्था का बोझा—उपेत्य सा दोहददुःखशीलताम्—रघु० ३।६ ।

दौरुधरी (स्त्री०) बृहस्पति और शुक्र ग्रह का चन्द्रमा के साथ संयोग—जातकों के लिए अत्यन्त मङ्गलमय समझा जाता है ।

दौर्जन (वि०) [दुर्जन+अण्] दुष्ट पुरुष से सम्बन्ध ।

दौर्भिक्षम् (नपुं०) [दर्भिक्ष+अण्] अकाल पड़ना, दुर्भिक्ष होना ।

दौर्वृत्यम् (नपुं०) [दुर्वृत्त+ष्यञ्] आज्ञा न मानना ।

दौस्थ्यम् (नपुं०) [दुस्थ+ष्यञ्] दुःखद स्थिति ।

दौहृदिकः [दोहद+ठक्] प्राकृतिक दृश्यों का माली नै० ६।६१ ।

द्युपथः [ष० त०] हवाई मार्ग ।

द्युरत्नम् (नपुं०) सूर्य ।

द्युसैन्धवः (पुं०) इन्द्र का घोड़ा, उच्चैःश्रवा ।

द्यूतः,-तम् [दिव्+क्त,ऊठ् अर्धर्चा०] 1. जूआ खेलना, पासों से खेलना 2. युद्ध, संग्राम 3. जीता हुआ पारितोषिक । सम०—**धर्मः** जूआ खेलने के नियम, —**मण्डलम्** जूआघर,—**लेखकः** जो जूए के खेल के प्राप्तांक लिखता है ।

द्योकारः (पुं०) स्थपति, वास्तुकार, सौधशिल्पी ।

द्रङ्गः,-ङ्गा नगर, पुरी—राज० ।

द्रवत् (वि०) [द्रु+शतृ] 1. दौड़ता हुआ, बहता हुआ 2. चूता हुआ, टपकता हुआ, बूंद बूंद गिरता हुआ ।

द्रविः (पुं०) (वेद०) धातुओं को गलाने वाला ।

द्रविडशिशुः (पुं०) द्रविड देश का पुत्र, शैवसंप्रदाय का एक सन्त—दयावत्या दत्तं द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत्—सौन्दर्य० ।

द्रविणोदः (पुं०) अग्नि, आग ।

द्रविणोदयः [ष० त०] धन की प्राप्ति ।

द्रव्यम् [द्रु+यत्] ऋग्वेद का मन्त्र जो साम के रूप में प्रयुक्त किया जाता है—द्रव्यशब्दस्तु छन्दोगैः ऋक्षु आचरितः—मै सं० ७।२।१४ पर शा० भा० । सम० —**शुद्धिः** धर्म कार्य के लिए प्रयुक्त पदार्थ की पवित्रता ।

द्रष्टुकाम (वि०) दर्शनाभिलाषी, देखने का इच्छुक (पाणिनि के अनुसार 'काम और मनस्' के पूर्व 'तुम्' के 'म्' का लोप हो जाता है) ।

द्रष्टुमनस् (वि०) दे० 'द्रष्टुकाम' ।

द्राक्केन्द्रम् (नपुं०) अपने अधिकतम वेग के बिन्दु से ग्रह की दूरी ।

द्राक्षापाकः (पुं०) काव्यशैली का एक प्रकार जिसमें रचना सरल और मधुर हो (विप० नारिकेलपाकः) ।

द्राक्षासवः अंगूरों की शराब जो पुष्टिवर्धक के रूप में प्रयुक्त होती हैं ।

द्राघिष्ठ (वि०) [दीर्घ+इष्ठन्] सबसे लम्बा, अत्यन्त लम्बा,—**ष्ठः**(पुं०) रीछ ।

द्राह्यायणः सामवेदियों के सम्प्रदाय के लिए लिखित श्रौतसूत्र के कर्ता का नाम ।

द्रुपाद (वि०) लम्बे पैर वाला ।

द्रुतगति (वि०) [ब० स०] द्रुत गति से जाने वाला ।

द्रुतमध्या दे० द्रुतविलम्बित ।

द्रुमः [द्रुः शाखास्त्यस्य, मः] 1. वृक्ष 2. कल्पवृक्ष 3. कुबेर का विशेषण । सम०—**अब्जम्** कर्णिकार वृक्ष, कनियर का पौधा,—**खण्डः,**—**षण्डः** वृक्षों की वाटिका, कुंज, —**निर्यासः** वृक्ष का रस, लोबान, **वासिन्** (पुं०) बन्दर ।

द्रेक्काणः } **द्रेष्काणः** } (पुं) राशि की अवधि का तीसरा भाग ।

द्रोणकम् (नपुं०) [द्रुण्+अच्, कन्] समुद्र के किनारे का नगर जिसमें किलाबन्दी की गई हो ।

द्रोणम्पच (वि०) आतिथ्य सत्कार करने में उदार ।

द्रौणेयम् (नपुं०) एक प्रकार का नमक ।

द्रौहिक (वि०) [द्रोह+ठक्] सदैव घृणा का पात्र ।
द्वन्द्वम् [द्वौ द्वौ सहाभिव्यक्तौ-द्विशब्दस्य द्वित्वं पूर्वपदस्य अम्भावः, उत्तरपदस्य नपुंसकत्वं—नि०] एक ओर, एकान्त स्थान, द्वन्द्वे ह्येतत् वक्तव्यम् रा० ७। १०३।१३,—**आलापः** दो व्यक्तियों के मध्य वार्तालाप, --**गर्भ** (वि०) बहुव्रीहि समास जिसके मध्य द्वन्द्व निहित हो,- **दुःखम्** हर्ष और शोक आदि की परस्पर विरोधी भावनाओं से उत्पन्न दुःख ।
द्वार्ग (वि०) [द्वार्+ग] दरवाजे पर खड़ा हुआ ।
द्वारम् [द्वृ+णिच्+अच्] 1. दरवाजा 2. प्रवेश द्वार 3. शरीर के नौ द्वार । सम०—**बाहुः** (पुं०) चौखट, —**अररिः** किवाड़ का पट या पल्ला, **वंशः** सरदल ।
द्वि (सं वि०) [द्वृ+डि] दो । सम० **अन्तर** (वि०) दो घटकों द्वारा अन्तरित, **अवर** (वि०) न्यूनातिन्यून दो,—**आम्नात** (वि०) दो बार वर्णित,- **आह्निक** (वि०) हर तीसरे दिन होने वाला (बुखार) —**एकान्तरम्** एक अंश या दो अंश से वियुक्त द्व्येकान्तरासु जातानां धर्म्यं विद्यादिमं विधिम्—मनु० १०।७,—**कर** (वि०) दो प्रयोजन पूरा करने वाला, —**कार्षापणिक** (वि०) दो कार्षापण के मूल्य का, —**चन्द्रधीः** आँख में खराबी के कारण दो चन्द्रदर्शन की भ्रान्ति,- **जः** ब्रह्मचारी, **जातिः** जिसके दो पत्नियाँ हैं, **फालबद्धः** 1. दो ओर बँटे बाल 2. जिसने अपने बालों को कंघी करके दो भागों में बाँट दिया है, **बाहुः** मनुष्य कथा० ५३।९४, —**भातम्** संध्या समय,-- **मुनि** (अ०) दो मुनि --पाणिनि और कात्यायन, **वक्त्रः** दो मुंह वाला साँप, **वर्गः** प्रकृति और पुरुष का जोड़ा, **व्याम** (द्वि०) बारह फ़ुट लम्बा (व्याम= ६ फ़ुट),-- **स्थ**, (—**ष्ठ**) (वि०) दो अर्थ प्रकट करने वाला—भवन्ति च द्विष्ठानि वाक्यानि मी० सू० ४।३।४ पर शा० भा० ।
द्विक (वि०) [द्वि+क] 1. दोहरा, दो तह का 2. दूसरा 3. दूसरी बार घटित होने वाला,—**कः** 1. कौवा 2. चक्रवाक पक्षी । सम०—**पृष्ठः** दो कूब वाला ऊँट ।
द्वितीयगामिन् (वि०) जो दूसरे पदार्थ पर घटता हो द्वितीयगामी न हि शब्द एष नः रघु० ३।४९ ।
द्वेपस्थ (वि०) घृणा करने वाला ।
द्वीपवासिन् (वि०) टापू पर रहने वाला,—**वासी** (पु०) खञ्जरीट पक्षी ।
द्वैधीकरणम् (नपुं०) दो भाग करना ।
द्वैहकाल्यम् (वि० सद्यस्कालता, ऐककाल्य) दो दिन तक अनुष्ठान चलते रहने की विशेषता ।

ध

धगिति (अ०) एक क्षण में, अकस्मात् ।
धनम् [धन्+अच्] 1. सम्पत्ति, दौलत, कोष, रुपया पैसा 2. कोई भी मूल्यवान् सामान, प्रियतम कोष 3. लूटमार का धन 4. पारितोषिक 5. धनिष्ठा' नक्षत्र 6. जमा का चिह्न (विप० ऋण) । सम०—**आदानम्** धन ग्रहण करना, **आशा** (स्त्री०) धन की इच्छा —**धान्यम्** रुपया पैसा तथा अनाज,—**सूः** (पुं०) द्विशाखी पूंछ वाला किरौला नामक पक्षी, **सूः** (स्त्री०) वह माता जिसके कन्याएँ ही हों ।
धनिन् (वि०) [धन+इनि] वैश्य जाति ऊरुजा धनिनो राजन्—महा० १२।२९६।६ ।
धनुरासनम् (नपुं०) योगशास्त्र में वर्णित एक कायिक मुद्रा ।
धनुर्ग्रहम् (नपुं०) एक माप, २७ अंगुल की माप, एक हस्तपरिमाण की माप ।
धन्वनम् [धन्व्+ल्युट्] 1. धनुष 2. इन्द्रधनुष 3. धनुराशि ।
धमधमाय् (ना० धा०) जगमगाना, निगल जाना ।
धरः [धृ+अच्] तलवार । सम०- **रम्** (नपुं०) विष, जहर ।
धरणीतलम् [ष० त०] धरती की सतह ।
धरणीबिडौजः (पुं०) [ष० त०] राजा ।
धरा [धृ+अच्+टाप्] पृथ्वी, धरती । सम०—**उपस्थः** (पुं०) पृथ्वीतल, धरती की सतह ।
धरित्रीभृत् (पुं०) [धरित्री+भृ+क्विप्] राजा ।
धर्मः [धृ+मन्] 1. किसी जाति के परम्परागत अनुष्ठान, 2. विधि, व्यवहार, प्रथा 3. नैतिक गुण 4. गुण, सचाई 5. चार पुरुषार्थों में से एक 6. कर्तव्य 7. न्याय । सम०- **अक्षरम्** पवित्र मंत्र, आस्था का नियम, **अपदेशः** धर्मानुष्ठान का बहाना धर्मापदेशात् त्यजतश्च राज्यम् रा० ५।३८, **अयनम्** विधि का क्रम, **अहन्** (नपुं०) कल जो बीत चुका, **आकृतम्** रामायण की एक टीका का नाम,--**ईप्सु** (वि०) धर्मलाभ प्राप्त करने का इच्छुक,- **उपचायिन्** (वि०) धर्मवृद्ध, धार्मिक,—**च्छलः** धर्म का कपटपूर्ण उल्लङ्घन, **दक्षिणा** धर्मशिक्षा का शुल्क, **परिणामः** हृदय में सदाचरण का उद्बोधन, - **प्रतिरूपकः** कपटधर्म, छद्म धर्म,—**प्रधान** (वि०) पवित्राचरण में मुख्य, **प्रेक्ष्य** (वि०) धार्मिक, गुणी, **बाह्य** (वि०) धर्म से पराङ्मुख, धर्म विरोधी,—**शुद्धिः** आचरण की

पवित्रता,—समयः वैध दायित्व,—सूत्रम् जैमिनिकृत पूर्वमीमांसा पर लिखा गया ग्रन्थ ।

धर्षणम् [धृष्+ल्युट्] 1. साहस, धृष्टता 2. हराना, पराजय —धर्षणं यत्र न प्राप्तो रावणो राक्षसेश्वरः–रा० ७।३१।३ ।

धातुः [धा+तुन्] 1. घटक, अवयव 2. तत्त्व, प्राथमिक द्रव्य 3. रस, अर्क । सम० गर्भः,—स्तूपः भस्म रखने का पात्र,—चूर्णम् पिसा हुआ खनिज पदार्थ,—प्रसक्त (वि०) रसायन कार्य में व्यस्त ।

धातुकः,-कम् शिलाजीत ।

धातृ (पुं०) [धा+तृच्] भाग्य, क़िस्मत ।

धात्रीपुष्पिका (स्त्री०) एक वृक्ष का नाम ।

धान्यम् [धान+यत्] अनाज, अन्न । सम० खलः खलिहान,—चौरः अन्न चुराने वाला, मुष्टिः मुट्ठी भर अनाज ।

धाममानिन् (वि०) [धामन्+मान+इनि, नलोपः] भौतिक सत्ता में विश्वास रखने वाला—नैवेशितुं प्रभुर्भूम्न ईश्वरो धाममानिनां भाग० ३।११।३८ ।

धामवत् (वि०) [धाम+मतुप्] शक्तिशाली, मज़बूत पुरस्सरा धामवतां यशोधनाः कि० १।४३ ।

धाय्या (स्त्री०) [सामिधेनी ऋग् या समिदाधाने पठ्यते] 1. यज्ञाग्नि को सुलगाते समय गाया जाने वाला प्रार्थना मंत्र 2. इन्धन -- क्रोधाग्नौ निजतातनिग्रहकथाधाय्यासमुद्दीपिते—राम० २।६, नै० १।५६ ।

धारणम् [धृ+णिच्+ल्युट्] पीड़ा को शान्त करने के लिए मन्त्र । सम० - मन्त्रम् एक प्रकार का ताबीज़ ।

धारणा [धृ+णिच्+युच्+टाप्] योग का एक अङ्ग । सम० -आत्मक (वि०) जो अपने आपको आसानी से स्वस्थचित्त या प्रशान्त कर लेता है ।

धारयिष्णुता [धृ+णिच्+इष्णुच्+तल्] सहनशक्ति, सहिष्णुता ।

धारा (स्त्री०) मालवा देश की एक नगरी ।

धारा [धृ+णिच्+अङ+टाप्] 1. पानी की धार, गिरते हुए किसी तरल पदार्थ की पंक्ति 2. बौछार 3. लगातार पंक्ति 4. घड़े में छिद्र 5. किसी वस्तु का किनारा । सम०—आवर्तः भंवर, फिरकी,—ईश्वरः राजा भोज, - संपातः लगातार बौछार,—शीत (वि०) धारोष्ण दूध ठंडा किया हुआ ।

धार्मिकः [धर्म+ठक्] 1. न्यायकर्ता 2. धर्मान्ध, कट्टरपन्थी 3. बाजीगर ।

धावितृ (पुं०) [धाव्+तृच्] दौड़ने वाला गौर्वोढारं धावितारं तुरङ्गी—महा० ११।२६।५ ।

धित (वि०) [धा+क्त] 1. रक्खा गया, अर्पण किया गया 2. संतुष्ट, प्रसन्न ।

धिग्वादः [धिक्+वद्+घञ्] भर्त्सनापूर्ण उक्ति, निन्दा ।

धिष्ठित (वि०) [अधि+स्था+क्त, दे० पिधानं] 1. सुस्थापित 2. खाई में सुरक्षित—शाल्वो वैहायसं चापि तत्पुरं व्यूह्यधिष्ठितः—महा० ३।१५।३ 3. ठहरा हुआ, निश्चित ।

धीः [ध्यै भावे क्विप् संप्रसारणं च] 1. बुद्धि 2. मन, 3. विचार 4. कल्पना 5. प्रार्थना 6. यज्ञ 7. (जन्मकुंडली में) लग्न से पाँचवां घर । सम०—विभ्रमः दृष्टिभ्रम ।

धुन्धुकम् (नपुं०) 1. लकड़ी में विशेष प्रकार का दोष 2. वृक्ष के तने में छिद्र जो उसके क्षय का चिह्न है ।

धुन्धुरिः,—री (स्त्री०) एक प्रकार का वाद्ययंत्र, संगीतउपकरण ।

धुर्यवाहः (पुं०) बोझा ढोने वाला जानवर ।

धुर्यता [धुरं वहति यत्, तस्य भावः, तल्] नेतृत्व ।

धूणकः (पुं०) लोबान ।

धूतगुणः जिसने तीनो गुणों को पार कर लिया है, जो अब भौतिक सुखों से परे पहुँच गया है, संन्यासी ।

धूपः [धूप्+अच्] 1. सुगन्ध 2. सुगन्धयुक्त वाष्प या धूआँ । सम०—नेत्रम् धूमनलिका, हुक्के की नली,- वर्तिः एक प्रकार की सिगरेट ।

धूमः [धू+मक्] 1. धुआँ 2. वाष्प 3. कुहरा, धुंध । सम० उपहत (वि०) धूएँ के कारण अंधा हुआ, —निर्गमनम् चिमनी जिसमें से धूआँ निकलता है, - महिषी धुंध, कुहरा,—योनिः बादल ।

धूमरी (स्त्री०) धुंध, कुहरा ।

धूम्र [धूमं तद्वर्णं राति रा+क] 1. धुएँ के रंग का 2. भूरा —म्रः ऊँट ।

धूलिधूसरित (वि०) मिट्टी में लोटने से भूरा हुआ—गोधूलिधूसरितकोमलकुन्तलाग्रम्- कृष्ण० ।

धृ (भ्वा०; तुदा० आ०) इरादा करना, मन करना ।

धृत [धृ+क्त] संकल्प किया हुआ, दृढ़,—रिपुनिग्रहे धृतः —रा० ४।२७।४७ । सम०—उत्सेक (वि०) घमण्डी, —एकवेणि (वि०) एक चोटी धारी—शि० ७।२१, —गर्भ (वि०) गर्भिणी,—मानस पक्के इरादे वाला, दृढ़मना ।

धृतिः [धृ+क्तिन्] 1. एक छन्द का नाम 2. अठारह की संख्या ।

धृष्टकेतुः (पुं०) धृष्टद्युम्न के पुत्र का नाम ।

धृष्टवादिन् (वि०) निर्भीक होकर बोलने वाला ।

धेनुः [धयति सुतान्—धे+नु, इच्च] 1. गाय 2. दूध देने वाली गौ 3. पृथ्वी 4. घोड़ी मी० सू० ७।४।७ पर शा० भा० ।

धेनुका (स्त्री०) 1. हथिनी 2. दुधारू गाय 3. उपहार 4. खड्ग 5. पार्वती ।

धेय (वि०) [धे+ण्यत्] कार्य में परिणेय, प्रयोज्य, —अव्याकुलं प्रकृतमुत्तरधेय कर्म—शि० ५।६०।

धैर्यम् [धीरस्य भावः—ष्यञ्] 1. दृढ़ता, सामर्थ्य, टिकाऊपन 2. स्वस्थचित्तता, प्रशान्ति 3. साहस। सम० —**कलित** (वि०) धीर, अक्षुब्ध,—**वृत्तिः** धीरज से पूर्ण आचरण।

धौत (वि०) [धाव्+क्त] 1. धोया हुआ, प्रक्षालित, स्वच्छ किया हुआ 2. उज्वल किया हुआ, चमकाया हुआ 3. उज्वल, चमकीला। सम०—**अपाङ्ग** (वि०) जिसकी कनखियाँ चमकीली हों, **आत्मन्** (वि०) पवित्र हृदय वाला।

धौतेयम् [धौति+ढक्] सैन्धव, पहाड़ी नमक, लाहौरी नमक।

धौम्यः (पुं०) एक ऋषि का नाम।

ध्यानधिष्ण्य (वि०) ध्यान का अभ्यास करने के योग्य।

ध्यानमुद्रा [प० त०] ध्यान या चिन्तन करने की विशेष स्थिति या मुद्रा।

ध्रुव (वि०) [ध्रु+क] स्थिर, अचल, स्थायी, अनिवार्य, —**वः** (पुं०) 1. खूटी नाना० 2. ज्योतिष का एक योग 3. मूलबिन्दु 4. ध्रुव तारा,—**वम्** (नपुं०) निश्चित किया बिन्दु, **वा** (स्त्री०) धनुष की डोरी। सम०—**केतुः** एक प्रकार की उल्का, टूटा हुआ तारा, —**गतिः** निश्चित मार्ग,—**मण्डलम्** ध्रुवीय क्षेत्र,—**यष्टिः** ध्रुवों की धारा, **शील** (वि०) जिसका आवास निश्चित है।

ध्वंसः [ध्वंस्+घञ्] 1. अधःपतन, डूबना 2. लुप्त होना, ओझल होना 3. नाश, विनाश, खंडहर। सम० —**अभावः** पदार्थ के विनाश से उत्पन्न अभाव या सत्ताहीनता,—**कारिन्** (वि०) 1. नाश करने वाला 2. उल्लंघन करने वाला।

ध्वस्ताक्ष (वि०) [ब० स०] जिसकी आँखें डूब गई हों (जैसी कि मृत्यु के समय) : प्रकीर्णकेशं ध्वस्ताक्षम्—भाग० ७।२।३०।

ध्वजः [ध्वज्+अच्] 1. खड्ग का एक भाग 2. झंडा 3. पूज्य व्यक्ति 4. ध्वजा की यष्टि 5. चिह्न, प्रतीक। सम० **आरोहणम्** झंडा फहराना, **आरोहः** झंडे पर एक प्रकार की सजावट, **उच्छ्रयः** धूर्तता, पाखंड।

ध्वजिन् (वि०) [ध्वज+इनि] धूर्त, पाखंडी—माल० १२।१५८।१८।

ध्वनिनाला (स्त्री०) 1. वीणा 2. एक प्रकार का लम्बोतरा ढोल, तासा।

ध्वान्तजालम् रात्रि का आवरण, अंधकार का समूह।

न

नंष्टृ (वि०) [नंश्+तृच्] हानिकारक, विनाशक।

नंहसः [हसन्ति विकसन्ति ते हंसाः नमन्तो हंसा येषां ते नंहसाः] अपने भक्तों पर कृपा करने वाला महा० १।१७०।१५ पर टीका।

नकुलः [नास्ति कुलं यस्य, समासे नञो नलोपः प्रकृतिभावात्] नीच कुल में उत्पन्न—नकुलः पाण्डुतनये सर्पभुक्कुलहीनयोः नाना०। सम० **ईशः** तान्त्रिक पूजा की एक रीति,—**द्वेषी** साँप नकुलद्वेषी तथा पिशुनः वास०।

नक्तन्तन (वि०) [नक्तं+तन] रात्रि से संबंध रखने वाला रात का।

नक्रकेतनः [ब० स०] कामदेव।

नक्रमक्षिका (स्त्री०) [प० त०] जल की मक्खी।

नक्षत्रम् [नक्षति नक्ष्+अत्रन्] 1. तारा 2. तारापुंज, 3. मोती 4. सत्ताइस मोतियों की माला। सम० —**इष्टिः** एक यज्ञ का नाम, **उपजीविन्** (पुं०) ज्योतिषी,—**भोगः** नक्षत्र की कालावधि,—**लोकः** तारों का प्रदेश।

नखन्यासः [प० त०] नाखून अन्तर्विष्ट करना, पंजा घुसेड़ देना।

नगापगा } (स्त्री०) पहाड़ी नदी।
नगनदी }

नगरमण्डना (स्त्री०) वेश्या।

नगरिन् (पुं०) [नगर+इनि] नगरपाल।

नग्नहु (नपुं०) आसव तैयार करने के लिए उठाया गया खमीर, किण्वन।

नग्नचर्या (स्त्री०) नग्न रहने की प्रतिज्ञा।

नग्नाचार्यः (पुं०) चारण, भाट, स्तुति पाठक।

नटनारायणः (पुं०) संगीत शास्त्र में वर्णित एक राग।

नटवत् (वि०) [नट+मतुप्] नाटक के पात्र की भांति व्यवहार करने वाला।

नडमीनः (पुं०) एक प्रकार की मछली।

नतनाभि (वि०) [ब० स०] सुकुमार, तन्वी—तस्याः प्रविष्टा नतनाभिरन्ध्रं रराज तन्वी नवलोमराजिः कु० १।३८।

नत्यूहः (पुं०) एक प्रकार का पक्षी—रा० २।५६।९।

नत्रम् (नपुं०) एक प्रकार का नाच।

नदीकूलम् [प० त०] नदी का किनारा, नदी तट।

नदीतर (वि०) [नदीं तरतीति तृ+अच्] नदी को पार करने वाला।

नदीमार्गः [ष० त०] नदी का जलमार्ग ।
नदीमुखम् [ष० त०] नदी का मुहाना, जहाँ से नदी निकलती है, नदी का उद्गम-स्थान ।
ननान्दृपतिः [ष० त०] ननदोई, पति की बहन का पति ।
नन्दकः [नन्द्+ण्वुल्] एक रत्न का नाम कौ० अ० २।११ ।
नन्दन (वि०) [नन्द्+ल्युट्] आनन्द देने वाला, प्रसन्न करने वाला, **नः** (पुं०) 1. पुत्र 2. मेंढक,—**ना** (स्त्री) पुत्री,—**नम्** इन्द्र का नन्दन वन । सम० **जम्** पीली चन्दन की लकड़ी,—**द्रुमः** नन्दन वन का वृक्ष, पारिजातवृक्ष, कल्पवृक्ष,—**वनम्** दिव्य वाटिका, इन्द्र का उपवन ।
नन्दिः (पुं०, स्त्री०) [नन्द्+इन्] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी,—**दिः** (पुं०) 1. विष्णु 2. शिव 3. शिव का गण 4. (नाटक में) नान्दी का पाठ करने वाला । सम० **देवी** हिमालय की एक चोटी,—**नागरी** एक लिपि (लिखावट) का नाम,—**पुराणम्** एक उपपुराण,—**वर्धनः** मित्र ।
नन्दिसुतः [नन्दिन्+सुतः, नलोपः] व्याडि मुनि ।
नन्दी (स्त्री०) [नन्दि+ङीप्] दुर्गा देवी ।
नभिः [नभ्+इन्] पहिया ।
नभोरूप (वि०) [नह्+असुन् भश्चान्तादेशः—ब० स०] अन्धकारयुक्त, काला ।
नभोवीथी [नभस्+वीथी] सूर्य का मार्ग, हवाई मार्ग ।
नमश्चमसः (पुं०) [नमस्+चमसः] 1. एक प्रकार का यज्ञपाक 2. चन्द्रमा ।
नम्रनासिक (वि०) [ब० स०] चपटी और मोटी नाक वाला ।
नयनम् [नी+ल्युट्] 1. नेतृत्व करना 2. निकट ले जाना 3. आँख । सम० **अञ्चलः** 1. आँख का कोना 2. कटाक्ष, कनखी, **चरितम्** 1. कटाक्ष, कनखी 2. दृक्पात, दृष्टिपात, **जम्** आँसू, **बुद्बुदम्** आँख का गोलक ।
नरः [नृ+अच्] 1. मनुष्य 2. व्यक्ति । सम०—**चिह्नम्** मूँछें, **देवः** राजा ।
नरकचतुर्दशी दीपावली का दिन ।
नरकवासः (पुं०) नरक में रहना ।
नराचः (पुं०) एक छन्द का नाम ।
नर्दटकः (पुं०) एक छन्द का नाम ।
नर्मस्फोटः [नर्मन्+स्फोटः, नलोपः] 1. प्रेम के आदि-चिह्न 2. मुहासा ।
नर्मालापः [नर्मन्+आलापः, नलोपः] प्रेम वार्ता, आमोद-प्रमोद की बातचीत ।
नर्मोक्तिः (स्त्री०) [नर्मन्+उक्तिः, नलोपः] हास्यपरक अभिव्यक्ति ।
नर्मय् (ना० धा०) रिझाना, दिल बहलाना ।
नर्मायितम् [नर्मय्+क्त] खेल, क्रीडा ।
नलः (पुं०) [नल्+अच्] 1. संवत्सर 2. लम्बाई की माप जो चार हाथ के बराबर होती है । सम०—**तूला** एक प्रकार का जलीय जन्तु, **पाकः** राजा नल द्वारा तैयार किया गया स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ ।
नलिका (स्त्री०) नली ।
नलिनी (स्त्री०) [नल्+णिनि+ङीप्] 1. कमल का पौधा 2. कमलों से सुवासित सरोवर 3. धुंध 4. नथना 5. इन्द्र पुरी,(शक्रपुरी)। सम०—**दलम्**,—**पत्रम्** कमल का पत्ता ।
नवद्वीपः (पुं०) एक टापू का नाम। यह गङ्गा और जलङ्गी के संगम पर बंगाल में एक स्थान है जिसे आजकल 'नदिया' कहते हैं ।
नवश्राद्धम् (नपुं०) मृत्यु के पश्चात् विषम दिनों में अनुष्ठित श्राद्ध ।
नवीभावः [नव+च्वि+भू+घञ्] नया होना ।
नवन् (सं० वि०) [नु+कनिन्, वा० गुणः] (ब० व०) नौ, नौ की संख्या । सम०—**कपालः** नौ कपाल जैसे ठीकरों में पकाए हुए पिण्ड का उपहार,—**ग्व** (वि०) नौगुणा, नौ तह का,—**चण्डिका** (स्त्री०) दुर्गादेवी के नौ रूप (शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, महागौरी, कालरात्रि और सिद्धिदा),—**धातुः** (पुं०) नौ धातु (हेमताररना-गाश्च ताम्ररङ्गे च तीक्ष्णकम् । कांस्यकं कान्तलोहं च धातवो नव कीर्तिताः), **पञ्चमम्** विवाह के विषय में जन्मकुण्डली में एक अमंगल योग जब कि दुल्हन की जन्मराशि दूल्हे की जन्मराशि से पाँचवें या नवें हों ।
नष्ट (वि०) [नश्+क्त] 1. खोया हुआ, अन्तर्हित, ओझल 2. मृत, ध्वस्त 3. विकृत, बिगड़ा हुआ 4. वञ्चित 5. भ्रष्ट,—**ष्टम्** (नपुं०) 1. नाश 2. अन्तर्धान । सम०—**चन्द्रः** भाद्रपद मास की चतुर्थी तिथि जब कि चन्द्रमा का देखना निषिद्ध है, **दृष्टि** (वि०) अन्धा,—**धी** (वि०) भूल जाने वाला, ध्यान न देने वाला, **बीज** (वि०) नपुंसक, पुंस्त्वहीन, **रूप** (वि०) अदृश्य ।
नशाकः (पुं०) एक प्रकार का कौवा ।
नाकः [न कम् अकं दुःखम्, तन्नास्ति यत्र] 1. स्वर्ग 2. अन्तरिक्ष 3. सूर्य । सम० **नदी** स्वर्गीय नदी, स्वर्गंगा, **नारी**. अप्सरा,—**लोकः** स्वर्गलोक, दिव्यलोक ।
नाकुः (पुं०) वाल्मीकि मुनि ।
नागः [न गच्छति इति अगः, न अग इति नागः] 1. साँप 2. हाथी 3. बादल 4. विगुल,—**गम्** 1. टीन 2. जस्ता 3. रांगा 4. एक प्रकार का रतिबन्ध । सम०—**आरूढ**

(वि०) हाथी पर सवार, — केतुः कर्ण का विशेषण, —द्वीपम् भारत वर्ष का एक टापू, — नासोरु (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी सुन्दर जंघाएँ आकार प्रकार में हाथी की सूंड़ से मिलती जुलती हैं, — पर्णी पान का पौधा, — बन्धः एक प्रकार का नाम, — रिपुः गरुड़ ।

नागरकः [नगर+अण्, स्वार्थे कन्] नगर पिता ।

नागरकाः परस्पर विरोधी ग्रह ।

नागरवृत्तिः [ष० त०] नागरिकों की शिष्टता, शिष्टाचार, शालीनता ।

नागार्जुनः (पुं०) एक बौद्ध शिक्षक का नाम ।

नागोजीभट्टः (पुं०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण का नाम ।

नाटकम् [नट्+ण्वुल्] 1. दृश्य काव्य 2. नाट्यरचना के मुख्य दस भेदों में प्रथम भेद । सम० — प्रपञ्चः नाटक करने की व्यवस्था, — प्रयोगः नाटक का अभिनय करना, — रङ्गः नाटक का रङ्गमञ्च, — लक्षणम्, नाट्यरचना विषयक विविध नियम ।

नाट्यम् [नट+ष्यञ्] 1. नाच 2. नाटक प्रस्तुत करना, अभिनय करना 3. नृत्यकला 4. नाटक के पात्र की वेशभूषा । सम० — अङ्गानि नृत्य के दस भाग, — आगारम् नृत्यकक्ष, वाचघर, — रासकम् एक प्रकार का एकाङ्की नाटक, — वेदः नाट्यशास्त्र या नाट्यकला का विज्ञान ।

नाडी [नड्+णिच्+इन्=नाडि+ङीप्] 1. पौधे का नलिकामय डण्ठल 2. कमल का खोखला काण्ड 3. शरीर का नलिकायुक्त अंग (जैसे कि शिरा या धमनी) । सम० — चक्रम् मूलाधार आदि शरीर के स्नायुओं के तन्त्री केन्द्रों का समूह, — पात्रम् जलघड़ी, — ग्रन्थः ज्योतिष की नाडी शाखा पर एक पुस्तक ।

नाणकम् (नपुं०) सिक्का, मुद्राङ्कित कोई वस्तु । सम० — परीक्षा सिक्के को परखना, — परीक्षिन् (वि०) सिक्कों का पारखी, परीक्षक ।

नाथितम् [नाथ्+क्त] माँग, प्रार्थना ।

नानर्दमान (वि०) [नर्द्+यङ+शानच्] उच्च स्वर से शब्द करने वाला ।

नाना (अ०) [न+नाञ्] 1. भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न रीति से, विविध प्रकार से 2. स्पष्ट रूप से, पृथक् रूप से 3. विना 4. (समस्त विशेषणों में प्रयुक्त) बहुत से । सम० — आश्रय (वि०) जिसके बहुत से आवास या घर हैं, — गोत्र (वि०) विविध गोत्रों से सम्बन्ध रखने वाला, — धर्मन् (वि०) भिन्न रीति-रिवाजों वाला. — भाव (वि०) भिन्न प्रकृति वाला ।

नानात्वम् (नपुं०) विविधता की स्थिति ।

नान्दन (वि०) [नन्दन+अण्] सुखद, हर्षप्रद — सैषा विदृतिर्नाम द्वास्तदेतन्नान्दनम् — ऐत० उप० ३।१२ ।

नाभस्वत (वि०) [नभस्वत्+अण्] वायु से संबन्ध रखने वाला ।

नाभागः (पुं०) एक राजा का नाम, वैवस्वत मनु का पुत्र, अम्बरीष का पिता ।

नाभिः,-भी (पुं० स्त्री०) [नह्+इञ्, भश्चान्तादेशः] 1. सुंडी 2. सुंडी के समान कोई भी गहराई — पुं० 1. पहिए की नाह 2. केन्द्र, मुख्य बिन्दु 3. खेत । सम० — गन्धः कस्तूरी की बू या गन्ध, — वर्षम् जम्बू द्वीप के नौ वर्षों में से एक ।

नाभोगः [न+आभोगः] 1. देवता 2. साँप — नाभोगभोज्यो हरिणाधिरूढः सोऽयं गरुत्मानिव राजतीन्दुः — रा० च० ६।८४ ।

नामावशेष (वि०) [ब० स०] जिसका केवल नाम ही रह गया है, मृतक ।

नायकायते (ना० धा० आ०) 1. नायक का अभिनय करना 2. मोतियों के हार में केन्द्रीय रत्न या मणि का काम देना ।

नाराचः [नरान् आचायति — आ+चम्+ड, स्वार्थे अण्, नारम् आचामति वा] 1. पूर्वदिशा को जाने वाली सड़क 2. मूर्ति को उसके स्थान पर जमाने के लिए धातु की बनी चटखनी या कील ।

नारायणास्त्रम् (नपुं०) एक अस्त्र का नाम ।

नारायणसूक्तम् (नपुं०) ऋग्वेद का पुरुष सूक्त ।

नारीनाथ (वि०) [ब० स०] जिसके स्वामित्व अधिकार किसी स्त्री के पास हैं ।

नारीमणिः (स्त्री०) [ष० त०] स्त्रीरत्न ।

नालायन्त्रम् 1. तोप 2. निगल, नाली ।

नासत्यौ (पुं०, द्वि० व०) [नास्ति असत्यं यस्य, न० ब०, नञः प्रकृतिवद्भावः] दोनों अश्विनीकुमार ।

नासान्तिक (वि०) [नासा+अन्तिक] नाक तक पहुँचने वाला (लकड़ी आदि) ।

नासावेधः (पुं०) [ष० त०] नाक का बींधना, नासिकावेध संस्कार ।

नासिकः (पुं०) महाराष्ट्र प्रान्त में स्थित एक पुण्यस्थान ।

नाहलः (पुं०) जातिच्युत समुदाय का व्यक्ति, जातिबहिष्कृत ।

निःक्षत्र (वि०) [ब० स०] क्षत्रिय रहित ।

निःशङ्क (वि०) [ब० स०] निडर, निर्भय, संकोचहीन ।

निःशब्द (वि०) [ब० स०] शब्द रहित, जहाँ कोलाहल न हो ।

निःशस्त्र (वि०) [ब० स०] शस्त्रहीन, जिसके पास कोई हथियार नहीं ।

निःश्रेयसम् (नपुं०) [निश्चितं श्रेयः नि०] 1. मुक्ति, मोक्ष 2. आनन्द 3. आस्था, विश्वास ।

निःसंशय (वि०) [ब० स०] निःसन्दिग्ध, निश्चित ।

निःसंग (वि०) [ब० स०] 1. अनासक्त 2. मुक्त 3. स्वार्थरहित ।
निःसत्त्व (वि०) [ब० स०] 1. असार 2. बलहीन 3. नगण्य ।
निःसीमन् (वि०) [ब० स०] सीमा रहित ।
निःस्नेह (वि०) [ब० स०] 1. रूखा 2. भावशून्य ।
निःस्पन्द (वि०) [ब० स०] निश्चल, गतिहीन ।
निःस्पृह (वि०) [ब० स०] 1. इच्छारहित 2. सन्तुष्ट ।
निःस्व (वि०) [ब० स०] अर्थहीन, निर्धन ।
निःस्वन (वि०) [ब० स०] निश्शब्द, शब्द रहित ।
निःस्वनः (पुं०) [निः+स्वन्+अच्] शब्द, ध्वनि ।
निकटवर्तिन् (वि०) [निकट+वृत्+णिनि] निकटस्थ, जो पास ही विद्यमान हो ।
निकषणः [नि+कष्+ल्युट्] दे० 'निकषः' कसौटी ।
निकषायित (वि०) [निकष+क्यङ+णिच्+क्त] जो किसी बात के लिए प्रमाण या कसौटी मान लिया गया हो (उदा०--वैदूष्यनिकषायितेयं सभा) ।
निकाशः [नि+काश्+घञ्] 1. प्रकाश 2. रहस्य—निकाशस्तु प्रकाशे स्यात्सदृशे रहसि स्मृतः नाना० ।
निकृष्टकर्मन् (वि०) [ब० स०] जो निन्द्य कार्यों के करने में व्यस्त है ।
निक्रन्दित (वि०) [नि+क्रन्द+क्त] जिसने खूब क्रन्दन किया हो, शोर मचाया हो (दूषित स्वर से पाठ किया हो) ।
निक्षिप्त (वि०) [नि+क्षिप्+क्त] नियुक्त ।
निखिलेन (अ०) पूर्णतः, सब मिलाकर ।
निगादः [नि+गद्+घञ्] सस्वर पाठ ।
निगमः [नि+गम्+अच्] 1. प्रतिज्ञा स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञां ऋतमधिकर्तुमवप्लुतो—भाग० १।९।३७ 2. प्राप्ति—पन्था मन्निगमः स्मृतः—भाग० ११। १९।४२ ।
निगमनसूत्रम् (नपुं०) वह सूत्र जो किसी अनुमान वाक्य का उपसंहार करता है ।
निगमात् (अ०) सारांशतः, संक्षेप से—भाग० १०।१३।३९ ।
निगुप् (भ्वा० पर०) छिपाना, गुप्त रखना ।
निगीर्णचारिन् (वि०) [क० स०] अज्ञात होकर घूमने वाला ।
निगोजाहकः (पुं०) बिच्छू ।
निग्रहः [नि+ग्रह्+अच्] अतिक्रमण--निग्रहाद्धर्मशास्त्राणां महा० १२।२४।१३ ।
निग्रहणम् [नि+ग्रह्+ल्युट्] युद्ध, लड़ाई ।
निघ्नान (वि०) [नि+हन्+शानच्] नाशकर्ता, जो नष्ट करता है ।
निचित [नि+चि+क्त] बद्धकोष्ठ, मलावरुद्ध ।
निचुलः [नि+चुल्+क] 1. कमल 2. नारियल का पेड़ —नाना० ।
निचुलय् (चुरा० उभ०) बक्स में बन्द करना, ढकना --निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृताम् —सौन्दर्य० ।
नितम्बः [निभृतं तम्यते कामुकैः--नि+तम्ब्+अच्] 1. कूल्हा 2. वीणा का स्वनशील फलक 3. ढलान 4. चट्टान ।
नितान्तकठिन (वि०) बहुत कठोर, अत्यन्त कड़ा ।
नित्य (वि०) [नियमेन भवं - नि+त्यप्] 1. अनवरत, लगातार, शाश्वत 2. अनश्वर 3. नियमित, स्थिर 4. आवश्यक 5. सामान्य (विप० नैमित्तिक) । सम०—**अनुबद्ध** (वि०) सदैव संबद्ध,—**अनुवादः** तथ्य की नग्नोक्ति—मै० सं० ४।१।४५, **अभियुक्त** (वि०) लगातार किसी न किसी कार्य में लीन, **कालम्** (अ०) सदैव, हर समय,—**जात** (वि०) लगातार उत्पन्न अथ चैनं नित्यजातं भग० २।२६, **बुद्धि** (वि०) सभी बातों को सतत या निरन्तर मानने वाला, **भावः** शाश्वतता, नैरन्तर्य, **समः** एक विचार कि सभी वस्तुएँ सदैव एक समान रहती हैं ।
निदाघः [नि+दह्+घञ्, कुत्वम्] आन्तरिक गर्मी । सम० **धामन्** (पुं०) सूर्य निदाघधामानमिवाधिदीधितम् शि० १।२४ ।
निर्दर्शित (वि०) [नि+दृश्+णिच्+क्त] प्रदर्शित, चित्रित, प्रमाणित ।
निर्दर्शिन् (वि०) [नि+दृश्+णिच्+णिनि] पथप्रदर्शक, उदाहरण प्रस्तुत करने वाला सतां बुद्धि पुरस्कृत्य सर्वलोकनिदर्शिनीम् रा० २।१०८।१८ ।
निद्रादरिद्र (वि०) [ब० स०] 'अनिद्रा' रोग से ग्रस्त ।
निधनम् (नपुं०) [निवृत्तं धनं यस्मात्--डुधाञ्+क्यु] जन्मकुंडली में लग्न से छटी राशि ।
निधानम् [नि+धा+ल्युट्] धरोहर ।
निन्दनोपमा (स्त्री०) निन्दोपलक्षित उपमा, ऐसी तुलना जिसमें निन्दा प्रकट हो ।
निपत् (भ्वा० पर०) विफल होना, अपरिपक्व अवस्था म ही नष्ट हो जाना (जैसे गर्भपात) ।
निपाकः [नि+पच्+घञ्] 1. पसीना 2. (कच्चे फल को) पकाना ।
निपातः [नि+पत्+घञ्] मिलकर आना, समागम --यासामेव निपातेन कललं नाम जायते —महा० १२।३२०।११५ ।
निफेनम् (नपुं०) अफ़ीम ।
निर्बर्हित (वि०) [नि+बर्ह्+क्त] नष्ट किया गया, दूर किया गया कृतः कृतार्थोऽस्मि निर्बर्हितांहसा—शि० १।२९ ।
निबिडित (वि०) [नि+वि (बि) ड्+क्त] 1. गुरूकृत,

भारी बनाया हुआ, भीड़ से युक्त, मोटा, 2. दावकर सटाया हुआ, भींचा हुआ —लङ्काभर्तुर्निविडित—बा० रा० ५।१९ ।

निभृत (वि०) [नि+भृ+क्त] 1. भरा हुआ 2. गुप्त 3. मूक 4. विनीत 5. दृढ़ 6. एकाकी 7. निष्क्रिय, आलसी । सम०—**आचार** (वि०) दृढ़ आचरण का व्यक्ति,—**स्थित** (वि०) गुप्तरूप से विद्यमान ।

निमः (पुं०) लकड़ी की खूंटी, मेख ।

निमित (वि०) [नि+मा+क्त] 1. दे० 'निर्मित': उत्पादित 2. मापा गया ।

निमित्तम् [नि+मिद्+क्त] 1. ज्ञान का साधन—तस्य निमित्तपरीष्टिः—मी० सू० १।१।३ 2. कार्य, उत्सव —एतान्येव निमित्तानि मुनीनामूर्ध्वरेतसाम्—महा० १२।६१।६ । सम०—**ज्ञः** (पुं०) शकुन के आधार पर भविष्यवाणी करने वाला ज्योतिषी,—**नैमित्तिकम्** कार्य और कारण,—**मात्रम्** केवल उपकरण स्वरूप कारण—भाग० ११।२३ ।

निमेषान्तरम् [ष० त०] एक क्षण का अन्तराल ।

निम्न (वि०) [नि+म्ना+क] 1. गहरा, नीचा 2. अधम कार्य—निम्नेष्वीहां करिष्यन्ति—महा० ३।१९०।२६ । सम०—**अभिमुख** (वि०) निम्नतर स्तर की ओर बहने वाला कु० ५।५ ।

निम्नित (वि०) [निम्न+इतच्] गहरा, डूबा हुआ ।

निम्बपञ्चकम् (नपुं०) नीम वृक्ष से उत्पन्न पाँच पदार्थ —पत्त, फूल, त्वचा, फल और जड ।

निम्बूकपञ्चकम् (नपुं०) नींबू के पाँच भेद (सन्तरा, मुसम्वी, नारंगी, खट्टा या गलगल, कागज़ी नींबू) ।

नियत (वि०) [नि+यम्+क्त] 1. रोका हुआ, बांधा हुआ 2. आश्रित 3. (व्या० में) अनुदान सहित उच्चरित ।

नियमः [नि+यम्+अप्] 1. गुप्त रखना—मन्त्रस्य नियमं कुर्यात् महा० ५।१४१।२० 2. प्रयत्न—महा० २।४६।२० । सम० **हेतुः** विनियमन का कारण, नियमित रखने का कारण ।

नियुक्त (वि०) [नि+युज्+क्त] उपयोग में लाया गया, काम पर लगाया गया ।

नियोक्तव्य (वि०) [नि+युज्+तव्यत्] 1. जिसको कोई कार्य सौंपा जाय 2. नियुक्त किये जाने योग्य 3. जिस पर अभियोग चलाया जाय—मनु० ८।१८१ ।

नियोगः [नि+युज्+घञ्] 1. अपरिवर्त्य नियम—न चैष नियोगो वृत्तिपक्षे नित्यः समास इति—मी० सू० १०।६।५ पर शा० भा० 2. सही, यथार्थ—कि० १०।१६ ।

निरग्र (क) (वि०) [निर्+अग्र (क)] जो राशि बिना कुछ शेष रहे, पूरी पूरी बँट सके ।

निरधिष्ठान (वि०) [ब० स०] 1. असहाय 2. स्वतंत्र

निरनुग्रह (वि०) [ब० स०] निर्दय, कृपाशून्य, अकृपालु ।

निरनुनासिक (वि०) जो वर्ण नाक से निरपेक्ष हो, जिसमें नाक की सहायता की आवश्यकता न हो ।

निरनुनासिकम् (नपुं०) नारायण भट्ट की एक रचना जिसमें कोई अनुनासिक वर्ण प्रयुक्त नहीं हुआ ।

निरन्धस् (वि०) [ब० स०] भूखा, निराहार ।

निरपवाद (वि०) [ब० स०] 1. कलङ्करहित 2. जिसमें कोई अपवाद न हो ।

निरलंकृतिः (स्त्री०) (काव्य में) अलंकार का अभाव, सरलता ।

निरवसाद (वि०) [ब० स०] प्रसन्न, खुश ।

निरायति (वि०) [ब० स०] जिसका अन्त दूर नहीं है — नियता लघुता निरायतेः—कि० २।१४ ।

निरारम्भ (वि०) [ब० स०] सब प्रकार का कार्य करने से मुक्त (अच्छी भावना से), निष्क्रिय ।

निरावर्ण (वि०) [ब० स०] स्फुट, स्पष्ट, प्रकट ।

निरुपभोग (वि०) [ब० स०] उपभोग शून्य ।

निरुपाधिक (वि०) [ब० स०] जिसमें कोई शर्त न हो, निरपेक्ष ।

निर्दाक्षिण्य (वि०) [ब० स०] जिसमें शिष्टता या शालीनता न हो, अभद्र ।

निर्धौत (वि०) [निर्+धाव्+क्त] धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ—निर्धौतदानामलगण्डभित्तिः—रघु० २।४३ ।

निर्नायक (वि०) [ब० स०] जिसका कोई नेता न हो ।

निर्बीज (वि०) [ब० स०] नपुंसक, नामर्द, निश्शक्त ।

निर्मन्तु (वि०) [ब० स०] निष्कलंक, निरीह, ।

निर्मान (वि०) [ब० स०] 1. आत्मविश्वास से हीन 2. जिसमें स्वाभिमान न हो ।

निर्लक्ष्य (वि०) [ब० स०] अदृश्य, जो दिखाई न दे ।

निर्लून (वि०) [ब० स०] पूरी तरह कटा हुआ ।

निर्वत्सल (वि०) [ब० स०] स्नेहहीन, जिसमें वात्सल्य का अभाव हो ।

निर्विषङ्ग (वि०) [ब० स०] अनासक्त, उदासीन ।

निर्वृत्तिः (स्त्री०) निष्पन्नता, निष्पत्ति ।

निर्वैलक्ष्य (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज, बेशर्म ।

निर्व्यवधान (वि०) [ब० स०] व्यवधानरहित, मुक्त, अनाच्छादित, खुला (स्थान) ।

निर्व्यवस्थ (वि०) [ब० स०] जिसमें कोई व्यवस्था न रहे, इधर उधर भटकने वाला, असंगत गतियुक्त ।

निर्व्यावृत्ति (वि०) [ब० स०] जिससे कुछ प्राप्ति न हो ।

निर्व्रीड (वि०) [ब० स०] निर्लज्ज, बेशर्म ।

निरयः [निर्+इ+अच्] दे० 'निलयः'—आवासनिरयाद्वीरो निरयादिव सानुजः—रा० च० २। सम० —वर्त्मन् (नपुं०) भौतिक अस्तित्व—यासां गृहे निरयवर्त्मनि वर्ततां वः—भाग० १०।८२।३१।

निरस्तसंख्य (वि०) [ब० स०] अनन्त, असंख्य, अनगिनत।

निराकृत (वि०) [ब० स०] 1. निराकरण किया गया 2. तिरस्कृत।

निरुद्ध (वि०) [नि+रुध्+क्त] 1. अवरुद्ध 2. भरा पूरा, पूर्ण। सम०—वृत्ति (वि०) कार्य करने में जिसकी गति अवरुद्ध हो गई है - वाष्पनिरुद्धवृत्तिकण्ठम्।

निरोधः [नि+रुध्+घञ्] लय, बुझ जाना।

निरूपक (वि०) [नि+रूप्+ण्वुल्] 1. निरूपण करने वाला, पर्यवेक्षक 2. निश्चय करने वाला, घटक।

निरूपित (वि०) [नि+रूप्+क्त] 1. चिह्नित, अंकित 2. नियुक्त 3. निशाना बनाया गया, इंगित।

निर्ऋतिः (स्त्री०) [निर्+ऋ+क्तिन्] 1. मूल नक्षत्र 2. आठ वसुओं में से एक 3. ग्यारह रुद्रों में से एक।

निर्गलित (वि०) [निर्+गल्+क्त] 1. बहा हुआ 2. घुला हुआ, पिघला हुआ।

निर्णयोपमा (स्त्री०) अनुमान पर आश्रित उपमा—काव्या० २।२७।

निर्णिक्त (वि०) [निर्णिज्+क्त] 1. घुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2. प्रायश्चित्त किया हुआ। सम०—बाहुवलय (वि०) जिसके कड़े या चूड़ियाँ स्वच्छ करके चमका दी गई हों,—मनस् (वि०) स्वच्छहृदय, निर्मल मन वाला।

निर्देशः [निर्+दिश्+घञ्] करार, प्रतिज्ञा—महा० १३।२३।७०।

निर्देश्य (वि०) [निर्+दिश्+यत्] 1. संकेत किये जाने के योग्य 2. निश्चित किये जाने योग्य 3. उद्घोष्य 4. जिसमें पवित्रता होनी चाहिए सुरापानं ब्रह्महत्या ……अनिर्देश्यानि मन्यन्ते महा० १२।१६५।३४।

निर्धूननम् [निर्+धूञ्+ल्युट्] दीर्घ निःश्वास, लहरों की भाँति उठना गिरना।

निर्बन्धपृष्ट (वि०) [त० स०] जिससे आग्रह पूर्वक कोई बात पूछी गई है।

निर्बन्धिन् (वि०) [निर्बन्ध+इनि] आग्रह करने वाला।

निर्भर्त्सनम् [निर्+भर्त्स्+ल्युट्] धमकी देना, अपशब्द कहना, झिड़की देना।

निर्माथिन् (वि०) [निर्माथ+इनि] कुचलने वाला, विलोने वाला, पीस डालने वाला।

निर्मा [निर्+मा+अङ्] मूल्य, माप, सम।।

निर्माणम् [निर्+मा+ल्युट्] बनना, जन्म होना—पूर्वनिर्माणबद्धा हि कालस्य गतिरीदृशी—ख० ७। १६०।२।

निर्यत् (वि०) [निर्+या+शतृ] बाहर जाता हुआ, निकलता हुआ।

निर्याणम् [निर्+या+ल्युट्] नगर से बाहर जाने का मार्ग।

निर्याणिक (वि०) [निर्याण+ठक्] मोक्ष की ओर ले जाने वाला।

निर्यामकः [निर्+यम्+णिच्+ण्वुल्] सहायक।

निर्योगः [निर्+युज्+घञ्] 1. पूरा करना, सम्पन्न करना, बनाव शृंगार करना—निर्योगात् भूषणान्माल्यात् सर्वेभ्योऽर्घं प्रदाय मे—प्रति० १।२६ 2. गाय को खूंटे से बांधने का रस्सा—भाग० १०।२१।१९।

निर्लोच्य (अ०) [निर्+लुच्+ल्यप्] सोचविचार कर।

निर्वचनम् [निर्+वच्+ल्युट्] स्तुति—महा० १। १०९।२३।

निर्वापः [निर्+वप्+घञ्] प्रदान करना, अर्पण करना।

निर्वापित (वि०) [निर्+वप्+णिच्+क्त] बुझाया हुआ।

निर्वासित (वि०) [निर्+वस्+णिच्+क्त] बहिष्कृत, निष्कासित।

निर्वास्य (वि०) [निर्+वस्+णिच्+यत्] बहिष्कार्य, देश से निकालने के योग्य।

निर्विश् (तुदा० पर०) 1. घर में बस जाना 2. प्रविष्ट होना 3. आगे जाना 4. ऋण परिशोध करना—निर्वेष्टव्यं मया तत्र महा० ५।१४६।१५ 5. किसी के साथ रहना—शुश्रूषणे प्रावृषि निर्विविक्षताम्—भाग० १५।२३।

निर्विष्ट (वि०) [निर्+विश्+क्त] 1. घुसा हुआ, चिपका रहा, जुड़ा रहा 2. शिविर में वर्तमान, डेरा डाले हुए।

निर्वेशः [निर्+विश्+घञ्] 1. प्रविष्ट होना—आत्मनिर्वेशमात्रेण तिर्यग्गतमुलूखलम्—भाग० १०।१०।२६ 2. बदला लेना - भाग० १०।४४।३९।

निर्वारित (वि०) [निर्+वृ+णिच्+क्त] हटाया हुआ, रोका हुआ।

निर्वृत्तमात्र (वि०) जो अभी-अभी समाप्त किया हो।

निर्व्यञ्जक (वि०) [निर्+व्यञ्ज्+ण्वुल्] संकेत करता हुआ, दिग्दर्शन करता हुआ—स्नेहस्य निर्व्यञ्जकः —महावी० ५।६२।

निर्विद्ध (वि०) [निर्+व्यध्+क्त] 1. घायल 2. वियुक्त।

निर्वेशः [निर्+अव+घञ्] 1. अन्दर घुस जाना 2. अन्तर्दृष्टि ।

निर्व्युषित (वि०) [निर्+वि+वस्+क्त] व्यय किया गया, बीत गया, अतीत ।

निर्व्यूढ (वि०) [निर्वि+ऊह्+क्त] 1. समरव्यूह में व्यवस्थित 2. सफ़ल 3. बाहर धकेला गया ।

निर्व्यूढिः [निर्वि+ऊह्+क्तिन्] उच्चतम बिन्दु या अंश ।

निर्व्यूहः [निर्वि+ऊह्+अच्] खूंटी—महा० ३।१६०।३९ ।

निर्हरणम् [निर्+हृ+ल्युट्] विषहर, विषनाशक ।

निर्हारिः [निर्+हृ+घञ्] घटाना ।

निर्हारिन् (वि०) [निर्हार+इनि] 1. फैलाने वाला 2. एक प्रकार की सुगन्ध जो और सब सुगन्धों से बढ़िया हो ।

निर्ह्रासः [निर्+ह्रस्+घञ्] छोटा करना, संकुचित करना ।

निलयनम् [नि+ली+ल्युट्] घर, आवास, निवास ।

निलायनम् [नि+ली+णिच्+ल्युट्] आँखमिचौनी का खेल खेलना—भाग० १०।११।५९ ।

निवहः [नि+वह्+अच्] हत्या, वध ।

निवातकवचाः (पुं०) (ब० व०) एक जनजाति का नाम ।

निवापः [नि+वप्+घञ्] 1. बीज, अन्न के दाने 2. श्राद्ध के अवसर पर पितृतर्पण 3. उपहार । सम० —अञ्जलिः तर्पण के लिए दोनों हाथों की अञ्जलि में लिया हुआ पानी,—अन्नम् यज्ञीय आहार ।

निवारकः [नि+वृ+णिच्+ण्वुल्] प्रतिरक्षक ।

निवासः [नि+वस्+घञ्] 1. घर, मकान, आवास । सम०—भूमिः रहने का स्थान, रचना भवन, मन्दिर, —स्थानम् रहने की जगह ।

निविश् (तुदा० आ०) 1. फेंकना, बन्दूक का निशाना बनाना 2. (मन को) प्रभावित करना ।

निविष्ट (वि०) [नि+विश्+क्त] कृष्ट, आवर्धित (देश)।

निवृत् (भ्वा० आ०) 1. वापिस आना 2. भाग जाना 3. बच निकलना 4. समाप्त होना 5. सम्पन्न होना, प्रेर० बाल छोटे कराना ।

निवृत्त (वि०) [नि+वृत्+क्त] जमा हुआ, व्यवस्थित, विनियमित (जैसे कि सूर्य) । सम०—यौवन (वि०) जिसे फिर जवानी दी गई हो, जिसकी जवानी लौट आई हो ।

निशारत्नम् [ष० त०] 1. चन्द्रमा 2. कपूर ।

निशिचारः [सप्तम्यलुक् समास] निशाचर, राक्षस, पिशाच ।

निश्चायः [निः+चि+घञ्] समाज, सत्संग ।

निश्चारकम् [निः+चर्+ण्वुल्] 1. पुरीषोत्सर्जन 2. वायु, हवा 3. धृष्टता, दुराग्रह, हठ ।

निश्चितार्थ (वि०) [ब० स०] 1. जिसने अपना मन पक्का कर लिया है 2. यथार्थ न्याय करने वाला ।

निश्राणः [नि+श्रि+शानच्] सान, सिल्ली, शाण-प्रस्तर ।

निषादस्थपतिन्यायः (पुं०) एक नियम जिसके आधार पर कर्मधारय और तत्पुरुष दोनों समासों की प्राप्ति होने पर, पूर्ववर्ती अर्थात् कर्मधारय ही बलीयान् होता है ।

निषेकः [नि+षिच्+घञ्] आसुत, स्रव, अर्क ।

निषेक्तृ (पुं०) [नि+षिच्+तृच्] पिता, जनक ।

निषेधिन् (वि०) [निषेध+इनि] 1. प्रत्याख्यान करने वाला, वर्जन करने वाला 2. आगे बढ़ने वाला ।

निष्क्रम् [निष्क्+अच्] विदाई, प्रस्थान, खानगी ।

निष्कल (वि०) [निष्कल्+अच्] (संगीत० में) अनुच्चरित या अव्यक्त (वाणी) ।

निष्कालनम् [निष्कल्+णिच्+ल्युट्] दूर भगाना, हटाना ।

निष्कृतिः [निः+कृ+क्तिन्] भर्त्सना, झिड़की स्त्रिया-स्तयापचारिण्या निष्कृतिः स्याददूषिका—महा० १२। ३४।३० ।

निष्कर्षम् [निः+कृष्+अच्] टैक्स लेने के लिए प्रजा का उत्पीडन ।

निष्क्रान्त (वि०) [निः+क्रम्+क्त] 1. बाहर निकला हुआ 2. आगे आया हुआ—अर्धनिष्क्रान्त एवासौ—दु० स० ३।३४ ।

निष्टनः [निः+तनु+अच्] कराहना, आह भरना—रा० ७।२१।१२ ।

निष्ठापित (वि०) [निः+स्था+णिच्+क्त] सम्पन्न, पूरा किया गया—माल० ६ ।

निष्ठानित (वि०) [निष्ठान+इतच्] मिर्च मसालों के छौंक से युक्त, अचार चटनी आदि सहित ।

निष्ठित (वि०) [नि+ष्ठिव्+क्त] जिसके ऊपर थूका गया हो भाग० ११।२२।५९ ।

निष्पातः [निः+पत्+घञ्] धड़कन, कम्पन ।

निष्पन्द (वि०) [नि+स्पन्द्+अच्] गतिहीन, अचल, स्थिर, न्दः (पुं०) मित्रता का बन्धन—आर्योऽयं देवि निष्पन्दः—रा० ३।५५।३५ ।

निष्पूर्तम् [निः+पृ+क्त] धर्मशाला, धर्मार्थ बना विश्रामभवन ।

निष्कोश (वि०) [ब० स०] बिना म्यान का ।

निश्चक्रिक (वि०) [ब० स०] बिना किसी चालाकी के, ईमानदार, सच्चा ।

निष्पक्व (वि०) [निस्+पच्+क्त] भली-भाँति पकाया हुआ ।

निष्परामर्श (वि०) [ब० स०] जिसे कोई उपदेश न मिला हो, असहाय ।

निष्पुराण (वि०) [ब० स०] अश्रुतपूर्व, नया, नूतन ।

निष्प्रतिग्रह (वि०) [ब० स०] जो दान ग्रहण नहीं करता हैं, उपहार नहीं लेता है।
निष्प्रत्याश (वि०) [ब० स०] निराश, हताश।
निष्प्रवणि (वि०) [ब० स०] जो खड्डी से अभी आया है, नया (कपड़ा)।
निःशर्कर (वि०) [ब० स०] जिसमें कंकड़ न हों, रोड़े आदियों से मुक्त।
निःसह (वि०) [ब० स०] 1. क्लान्त 2. असहिष्णु।
निःसूत्र (वि०) [ब० स०] असहाय, साहाय्यहीन।
निःस्वन (वि०) [ब० स०] शब्दहीन, जिसमें से कोई आवाज न निकले।
निःस्पर्श (वि०) [ब० स०] कठोर, कड़ा, रूखा।
निसर्गनिपुण (वि०) [पं० त०] स्वभावतः चतुर।
निसृष्ट (वि०) [नि+सृज्+क्त] सुलगाया हुआ (जैसे आग)।
निस्तुषत्वम् [ब० स०] तुषों का न होना, दोषराहित्य, दोषों का अभाव।
निस्तोदः [निः+तुद्+घञ्] गुभ जाना, चुभ जाना, डंक मारना।
निहित (वि०) [नि+धा+क्त] (सेना की भाँति) कैम्प लगाए हुए, शिविरस्थ। सम०—दण्ड (वि०) कोमल हृदय, कृपालु।
निह्नवः [नि+ह्नु+अप्] 1. मुकर जाना 2. वचन-विरोध, विरोधोक्ति।
नीचगामिन् (वि०) अधम मार्ग का अनुसरण करने वाला।
नीतिशतकम् (नपुं०) भर्तृहरिकृत नीतिविषयक सौ श्लोकों का संग्रह।
नीरचर (वि०) [त० स०] जल में रहने वाला, जल में घूमने वाला।
नीरङ्गी (स्त्री०) हल्दी।
नीराजित (वि०) [निर्+राज्+क्त] देवतार्चन के दीप तथा ज्योति से सुसज्जित, प्रभासित।
नीलपिटः (पुं०) राजकीय प्रशस्तियों तथा समाचारों का संग्रह।
नीलस्नेहः (पुं०) अतिशय प्रेम।
नीविः,-वी (स्त्री०) [नि+व्ये+इञ्, य लोप, पूर्वस्य दीर्घः] कारागार— नीवी स्याद्बन्धनागारे धने स्त्रीवस्त्रबन्धने —नाना०।
नुत्तिः [नुद्+क्तिन्] हटाना, दूर करना।
ननंभावः (पुं०) सम्भाव्यता, प्रायिकता।
नूनंभावात् (अ०) कदाचित्, सम्भवतः।
नृ [नी+ऋन् डिच्च] (पुं० कर्तृ० ए० व० ना) 1. मनुष्य, व्यक्ति (चाहे पुरुष हो या स्त्री) 2. मनुष्य जाति 3. पुंल्लिंग शब्द 4. नेता। सम०—कारः मनुष्योचित कार्य, शौर्य,—जग्ध (वि०) मनुष्यभक्षी —पाय्यम् बड़ा भवन, बड़ा कमरा,—वाह्यम् पालकी।
नृत्तम्, नृत्यम् (नपुं०) [नृत्+क्त, क्यप् वा] नाच, अभिनय। सम०—हस्तः नाचते समय हाथों की स्थिति।
नेती (स्त्री०) योग की एक क्रिया—नाक में डोरी डाल कर मुंह में से निकालना।
नेत्रम् [नी+ष्ट्रन्] 1. खटमल—नाना० 2. वक्कल, वृक्ष की छाल—नाना० 3. आँख। सम० कार्मणम् आँखों के लिए एक जादू, चपल (वि०) जिसकी आँखें अधिक झपकती हों, आँखें झपकाने वाला,—पाकः आँखों की सूजन,—बन्धः 1. आँख मिचौनी खेलना 2. आँखों में धूल झोंकना, —श्रवस् साँप।
नेत्र्यम् (नपुं०) आँखों के लिए उपयुक्त।
नेदीयोमरण (वि०) [ब० स०] जिसकी मृत्यु निकट ही हैं, मरणासन्न—राज० ४।३१।
नेदिवस् (वि०) शब्दायमान, कोलाहल करने वाला।
नेपथ्यगृहम् (नपुं०) श्रृंगार भवन, प्रसाधनकक्ष।
नेमितुम्बारम् (नपुं०) पहिए का घेरा और नाभि।
नेय (वि०) [नी+ण्यत्] 1. ले जाये जाने के योग्य 2. शिक्षा दिये जाने के योग्य—अनेयः शिक्षयितुमयोग्यः—महा० ५।७४।४ पर टीका।
नैककोटिसारः (पुं०) करोड़पति, कोट्यधीश।
नैगमः [निगम+अण्] यास्ककृत निरुक्त का एक काण्ड। सम०—काण्डः दे० 'नैगम'।
नैद्र (वि०) [निद्रा+अण्] 1. शयालु, निद्रालु 2. बन्द (फूल जिसकी पंखड़ी अभी बन्द हों)।
नैमित्तिक (वि०) [निमित्त+ठक्] 1. किसी कारण से संबद्ध 2. असाधारण। सम०—कर्मन् (नपुं०) किसी विशेष कारण से होने वाला संस्कार (विप० नित्यकर्म), —लयः ब्रह्म में लीन हो जाना, ब्राह्मलय (यह लय चार हजार वर्ष के उपरान्त होता है।
नैर्ऋत्य (वि०) [निर्ऋति+अण्] दक्षिण-पश्चिम दिशाओं से संबंध रखने वाला।
नैश्चिन्त्यम् [निश्चिन्त+ष्यञ्] चिन्ता से मुक्त होना।
नैष्कर्तृक (वि०) [निष्कर्तृ+ठञ्] लकड़ी काटने वाला।
नैष्कर्म्यम् [निष्कर्म+ष्यञ्] भौतिक भुखों के प्रति उदासीनता (बुद्ध०)।
नैष्ठिक (वि०) [निष्ठा+ठक्] 1. अन्तिम, उपसंहार परक 2. निश्चित 3. उच्चतम, पूर्ण 4. आभार्य, अनिवार्य—महा० १२।६३।२३। सम० ब्रह्मचारिन् (वि०) जीवनपर्यन्त ब्रह्मचर्य पालन करने वाला।
नैहारः [नीहार+अण्] कुहरा या धुंध से संबन्ध रखने वाला।
नौक्रमः [ष० त०] किश्तियों से बनाया गया पुल।

न्यन्तः [नि+अन्त] 1. सामीप्य, सन्निकटता 2. पश्चिमी पार्श्व—रा० २।६८।१२।

न्यवग्रहः [नि+अव+ग्रह्+अच्] समस्त शब्द के प्रथम खण्ड का अन्तिम स्वर जिस पर स्वराङ्कन नहीं किया गया है।

न्यस्त (वि०) [नि+अस्+क्त] 1. धारण किया हुआ, वस्त्र पहनें हुए 2. (स्वर की भांति) मन्दस्वर से युक्त। सम० – अस्तव्य (वि०) रख दिए जाने के योग्य, स्थिर किये जाने योग्य,—चिह्न (वि०) बाह्य चिह्न से मुक्त।

न्यासः [नि+अस्+घञ्] लिखित पाठ्य या साहित्यिक मूल पाठ।

न्यायः [नि+इ+घञ्] 1. प्रणाली, रीति, नियम, व्यवस्था 2. औचित्य 3. विधि 4. धर्म 5. न्यायालय द्वारा उद्घोषित निर्णय 6. नीति 7. अच्छा प्रशासन 8. सादृश्य 9. विश्वव्यापी नियय। सम०—आगत (वि०) ईमानदारी से प्राप्त,—आभासः मिथ्यातर्क जिसमें सत्य की झलक आती हो, एक रूपता का आभास,–उपेत (वि०) न्यायानुमत, न्याय्य, अनुमति-प्राप्त, सही ढंग से माना हुआ,—निर्वपण (वि०) यथार्थ न्याय करने वाला,—विद्या,-शास्त्रम् तर्कविद्या, तर्कशास्त्र,—संबद्ध (वि०) युक्तियुक्त, तर्कसंगत।

न्यूनपञ्चाशद्भावः (पुं०) ऐसा मूर्ख व्यक्ति जिसमें मानवता के गुण पचास प्रतिशत से भी कम हों।

न्यूनता (स्त्री०) 1. कमी, हीनता 2. घटियापन, अधूरापन।

प

पंश्,-स् (भ्वा० चुरा० पर०) नष्ट करना।

पक्तिः [पच्+क्तिन्] पवित्रीकरण,—शरीरपक्तिः कर्माणि—महा० १२।२७०।३८।

पक्व (वि०) [पच्+क्त, तस्य वः] 1. पका हुआ, भुना हुआ, उबाला हुआ 2. पूर्णविकसित। सम०—कषाय (वि०) जिसके मनोवेग और विषय वासनाएँ शान्त हो गई हैं,—गात्र (वि०) पके गात वाला, दुर्बल शरीर, क्षीणकाय।

पङ्क्ति [पञ्च्+क्तिन्] 1. एक छन्द का नाम 2. लाइन, श्रेणी। सम०—क्रमः आनुपूर्व्य, परम्परा, क्रमिक अनुगमन।

पङ्क्तिशः (अं०) पंक्तिवार, लाइनों में।

पङ्गुवासरः (पुं०) शनिवार।

पक्षः [पक्ष्+अच्] (वेद०) सूर्य, दे० ३।५३।१६ पर सायण०। सम०—अध्यायः तर्कशास्त्र,—निक्षेपः एक पक्ष का ही विचार करना, किसी का पक्षपात करना,—भेदः किसी तर्क के दोनों पहलुओं में विवेक करना,—वधः पक्षाघात, शरीर के एक पक्ष में लकवा,—वायुः,—वातः पक्षाघात, अधांग में फ़ालिज,—पक्षकः पंखा।

पक्षितीर्थम् (नपुं०) दक्षिण भारत में एक पुण्य तीर्थ।

पक्ष्मन् [पक्ष्+मनिन्] 1. गलमुच्छ - सिंहस्य पक्ष्माणि मुखाल्लुनासि—महा० ३।२६८।६ 2. (हरिण के) बाल - निसर्गचित्रोज्ज्वलसूक्ष्मपक्ष्मणा—शि० १।८।

पक्ष्मलदृश् (स्त्री०) [पक्ष्मल+दृश्+क्विप्] जिस स्त्री की पलकें लम्बी हों।

पचमानक (वि०) [पच्+शानच्, स्वार्थे कन्] अपना भोजन स्वयं पकाने वाला।

पञ्चनिका (स्त्री०) हल का एक भाग।

पञ्चन् (सं० वि०—सदैव ब० व०) [पञ्च्+कनिन्] (समास में 'पञ्चन्' के अन्तिम 'न्' का लोप हो जाता है) पाँच। सम०—आननः,—आस्यः 1. सिंह 2. किसी भी एक विषय में अन्यतम जैसे कि 'वैद्य पञ्चानन',—आयतनम्,—आयतनी पञ्च देवताओं (सूर्य, अम्बिका, विष्णु, गणपति और शङ्कर) का समूह जो दैनिक पूजा में सम्मिलित हैं,—उपचारः पूजा के पाँच पदार्थ (गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य),—कृत्यम् दिव्य शक्तियों के पांच कार्य-सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोधान और अनुग्रह,—चामरम् एक छन्द का नाम,—धारणक पाँचों तत्त्वों की सहायता से स्थिर या जीवित,—पादिका शंकर के ब्रह्म सूत्रभाष्य पर पद्मपादाचार्य रचित टीका,—रात्रम् (नपुं०) 1. भासकृत एक नाटक का नाम, दर्शन शास्त्र पर नारद द्वारा रचित एक ग्रंथ,—शीलम् सामाजिक आचरण के पाँच नियम जिन का प्रचार बुद्ध ने किया था,—शुक्लम् उत्तरायण, शुक्लपक्ष, दिन, हरिवासर और सिद्ध क्षेत्र का संयोग,—सिद्धान्ती (स्त्री०) ज्योतिष के पाँच सिद्धान्त।

पञ्चम (वि०) [पञ्चन्+डट्+मट्] पाँचवां। सम०—आस्यः कोयल,—स्वरम् संगीत के स्वर का नाम।

पञ्जिका (स्त्री०) रजिस्टर या अभिलेख पुस्तिका।

पञ्चीकरणम् [पञ्च+च्वि+कृ+ल्युट्] पाँचों तत्त्वों का मेल जिससे फिर नाना प्रकार के पदार्थों का निर्माण होता है ।

पटः-टम् [पट्+क] कपड़ा, वस्त्र । सम०— अञ्चलः वस्त्र की गोट, झालर,—उत्तरीयम् चुन्नी, चादर, ओढ़ने का वस्त्र,—वाद्यम् मजीरा, करताल, झांझ, —वासकः सुगन्धित चूर्ण ।

पटलकः,—कम् [पट्+कलच्, स्वार्थे कन् च] 1. पर्दा, घूंघट 2. पैकट ।

पटलिका (स्त्री०) राशि, समुच्चय जैसा कि 'धूलिपटलिका' में ।

पटहवेला [ष० त०] वह समय जब कि ढोल बजाया जाता है ।

पटुकरण (वि०) [ब० स०] जिसके अंग स्वस्थ हैं —सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः —मेघ० ५ ।

पट्टः,—ट्टम् [पट्+क्त, इडभावः] 1. (लिखने के लिए) तख्ती 2. राजकीय प्रशस्ति 3. रेशम । सम० —अंशुकः रेशमी वस्त्र,—बन्धः,—बन्धनम् सिर पर पगड़ी बांधना, या मुकुट बांधना ।

पट्टकिलः [पट्ट+कन्+इलच्] एक भुखण्ड को किराये पर जोतने वाला, पट्टेदार ।

पणः [पण्+अप्] 1. पासे से खेलना, दाँव लगाकर खेलना 2. दांव लगा कर, या होड़ बद कर खेलना 3. दाँव पर लगाई हुई वस्तु 4. शर्त 5. पैसा । सम०—अयः लाभ ग्रहण करना,—क्रिया 1. दाँव पर रखना 2. संघर्ष करना, मुकाबला करना ।

पण्य (वि०) [पण्+यत्] 1. बेचने के योग्य, विक्रयार्थ पदार्थ 2. व्यापार, वाणिज्य 3. मूल्य । सम० —जनः व्यापारी,—दासी भाड़े की सेविका, —परिणीता रखैल स्त्री,—संस्था वर्तनों की दुकान ।

पणफरम् (नपुं०) जन्मकुंडली में लग्न से दूसरा, आठवाँ, पाँचवाँ और ग्यारहवाँ स्थान ।

पण्डिती (स्त्री) विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता ।

पण्डः,—ण्डः (पुं०) हीजड़ा, क्लीब ।

पतङ्गः [पतन् गच्छतीति गम्+ड नि०] 1. घोड़ा 2. सूर्य 3. गेंद 4. पारा 5. टिड्डा । सम० शावः पक्षी का बच्चा ।

पतङ्गिका [पतङ्ग+कन्+टाप्, इत्वम्] (स्त्री०) 1. धनुष की डोरी 2. छोटा पक्षी 3. मधुमक्षिका ।

पतत्प्रकर्ष (वि०) 1. जो तर्कसंगत न हो 2. काव्य सौन्दर्य से रहित ।

पताकः [पत्+आक] बाण का निशान लगाते समय अंगुलियों की विशेष मुद्रा ।

पताका [पत्+आक+टाप्] प्रचार, प्रसार—रम्या इति प्राप्तवतीः पताकाः—शि० ३।५३ । सम० —दण्डः ध्वजयष्टिका, झंडे का डंडा ।

पताकिन् (वि०) [पताक+इनि] झंडाधारी, पुं० रथ ।

पतितगर्भा (स्त्री०) [ब० स०] वह स्त्री जिसका गर्भपात हो गया हो ।

पतितवृत्त (वि०) [ब० स०] लम्पटता का जीवन बिताने वाला, अय्याश ।

पत्काषिन् (पुं०) पदाति, पैदल सिपाही ।

पत्त्यध्यक्षः [पत्ति+अध्यक्ष] पैदल सेना का दलनायक, ब्रिगेडियर, उपचमूपति ।

पत्रम् [पत्+ष्ट्रन्] 1. पत्ता (वृक्ष का) 2. (फूल की) पत्ती 3. पत्र, चिट्ठी 4. पक्षी का बाजू 5. तलवार या चाकू का फल । सम०—तण्डुला स्त्री, महिला, —दारकः आरा, लकड़ी आदि चीरने का यन्त्र, —न्यासः बाण में तीर लगाना,—पिशाचिका पत्तों की बनी टोपी ।

पत्रल (वि०) [पत्र+लच्] पत्तों से समृद्ध ।

पथिकः [पथिन्+ष्कन्] मार्ग चलने वाला, यात्री । सम०—जनः एक यात्री, या यात्रियों का समूह ।

पथिन् (पुं०) [पथ्+इनि] 1. मार्ग 2. यात्रा 3. पराश सम०-अशनम् मार्ग में खाने के लिए भोज्य पदार्थ ।

पदम् [पद्+अच्] 1. पैर 2. पग 3. पदचिह्न 4. सिक्का —अष्टापद पदस्थाने दक्षमुद्रेव लक्ष्यते - महा० १२। २९८।४० । सम०—कमलम् चरण कमल, पैर रूपी कमल,—जातम् शब्द समूह,—रचना 1. साहित्यिक कृति 2. शब्द विन्यास,—सन्धिः शब्दों का श्रुतिमधुर मेल ।

पदातिलव (वि०) अतिनम्र, अत्यन्त विनीत ।

पदीकृ (तना० उभ०) वर्गमूल निकालना ।

पद्मम् [पद्+मन्] 1. कमल 2. शरीर की विशेषस्थिति, पद्मासन लगा कर बैठना 3. इन्द्रजाल से संबद्ध आठ प्रकार के कोषों में से 'पद्मिनी' नामक कोष । सम० —प्रिया 1. लक्ष्मी का विशेषण 2. जरत्कारु की पत्नी मनसा देवी,—मुद्रा तन्त्रशास्त्र का प्रतीक ।

पद्मशः (अ०) [पद्म+शस्] अरबों की संख्या में ।

पद्मिनीकण्टकः (पुं०) एक प्रकार का कोढ़ ।

पद्रः (पुं०) [पद्+रक्] ग्राम मार्ग ।

पनस्यु (वि०) प्रशंसा के योग्य बात प्रकट करने वाला, यशस्वी ।

पपी (पुं०) [पा+ई, द्वित्वं किच्च] 1. सूर्य 2. चन्द्रमा ।

पयोरयः [ष० त०] नदी की धारा ।

पर (वि०) [पृ+अप्, अच् वा] 1. दूसरा 2. दूर का 3. इसके बाद का 4. उच्चतर श्रेष्ठ 5. उच्चतम,

प्रमुख 6. विदेशी 7. प्रतिकूल 8. अन्तिम,—रः (पुं०) 1. दूसरा 2. शत्रु 3. सर्वशक्तिमान्,—रम् (नपुं०) 1. उच्चतम बिन्दु 2. परमात्मा 3. मोक्ष 4. शब्द का गौण अर्थ 5. भावी लोक, इससे परे की दुनिया। सम०—अयनम् (परायणम्) 1. उच्चतम पदार्थ 2. सारांश 3. दृढ़ भक्ति, 4. धार्मिक आश्रम,—अर्थः 1. मुक्ति-महा० १२।२८८ ।९ 2. दूसरों के लिए उपयोगी पदार्थ—संघात-परार्थत्वात्—सां० का० १७,—अर्घ्य (वि०) दिव्य— असावाटीत् संख्ये परार्घ्यवत्—भट्टि० ९।६४,—अवसथशायिन् (वि०) दूसरे के घर सोने वाला,—आचित (वि०) दूसरों के द्वारा पालित पोषित, दास,—उद्वहः कोयल,—उपसर्पणम् दूसरों के निकट जाना,—काल (वि०) भावी समय से संबंध रखने वाला,—तर्कुकः भिखारी, भिक्षुक,—तल्पगामिन् (वि०) दूसरे की पत्नी के साथ सोने वाला,—परिग्रहः दूसरों की संपत्ति (जैसे कि 'पत्नी') श० ५,—परिभवः दूसरों से अपमान या तिरस्कार प्राप्त करना,—पाकनिवृत्त (वि०) जो दूसरों के यहाँ भोजन नहीं करता,—पाकरत (वि०) जो अपने पालन पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर करता है,—पाकरुचिः दूसरों के घर पके भोजन की चाह करना।

परथा (अ०) [पर+थाल्] अन्यथा, वरना—चोल० ५।५।

परम (वि०) [परं परत्वं माति-क] 1. अत्यन्त दूर का, अन्तिम 2. उच्चतम, श्रेष्ठतम, महत्तम 3. मुख्य, प्रमुख, प्रधान,—मम् (अ०) 1. अच्छा, बहुत अच्छा, हां 2. अत्यन्त। सम०—अक्षरम् पुनीत अक्षर 'ॐ',—आयुधम् चक्र नामक शस्त्र—रा० ६।५८।१२,—काष्ठः मङ्गलमय क्षण,—गहन (वि०) अत्यन्त रहस्ययुक्त,—पुंस् परमात्मा, परमपुरुष,—परम (वि०) अत्यन्त श्रेष्ठ,—राजः सर्वोपरि राजा,—समुदय (वि०) अत्यन्त सफल,—सम्मत (वि०) परमादरणीय, अत्यन्त माननीय।

परम्परयात (वि०) [त० स०] परम्परा प्राप्त, क्रमानुसार प्राप्त।

परम्परसम्बन्धः (पुं०) अप्रत्यक्ष सम्बन्ध।

परम्परित (वि०) [परम्परा+इतच्] शृंखला के रूप में, श्रेणीबद्ध।

परममुद्रा (स्त्री०) [त० स०] तंत्रशास्त्र में वर्णित अंगस्थिति।

परस्परविलक्षण (वि०) आपस में एक दूसरे का विरोध करने वाला।

परस्परव्यावृत्तिः (स्त्री०) आपसी निराकरण, पारस्परिक बहिष्करण।

पराक् दे० 'पराच्'।

पराकृष्ट (वि०) [परा+कृष्+क्त] तिरस्कृत, अप्रतिष्ठित, निरादृत।

पराक्षिप्त (वि०) [परा+क्षिप्+क्त] उथलपुथल, बलात् दूर किया गया।

परागः [परा+गम्+ड] सुगन्धित चूर्ण, पुष्परज।

पराच् (वि०) [परा+अञ्च्+क्विन्] अनावृत्त, जो दोहराया न गया हो—अनभ्यासे पराक् शब्दस्य तादर्थ्यात्—मैं० सं० १०।९।४५ पर शा० भा०। सम०—दृश् (वि०) बहिर्मुखी, जिसने अपनी आंख बाहरी संसार की ओर लगाई हुई है।

पराचीन (वि०) [पराच्+ख] 1. अनुपयुक्त 2. बाहरी।

पराडीनम् [परा+डी+ल्युट्] पीछे की ओर उड़ना पश्चाद्‌गतिः पराडीनम्—महा० ८।४१।२७।

पराभवः (पुं०) [परा+भू+अप्] ६० वर्ष के संवत्सर चक्र में चालीसवाँ वर्ष।

परासिक्त (वि०) [परा+सिच्+क्त] फेंका हुआ, दूर डाला हुआ।

परासेधः (पुं०) बन्दी बनाना, कारागार में डालना।

परिकल्पित (वि०) [परि+क्लृप्+ल्युट्] विभक्त, बँटा हुआ।

परिक्रमः [परि+क्रम्+घञ्] नदी के प्रवाह का अनुसरण करना। सम०—सहः बकरी।

परिक्रिया (स्त्री०) [प्रा० स०] व्यायाम करना।

परिक्षत (वि०) [परि+क्षण्+क्त] घायल, आहत।

परिक्षिप् (तुदा० पर०) बुरा भला कहना—प्रणयाच्चाभिमानाच्च परिचिक्षेप राघवम्—रा० २।३०।२।

परिगाढ (वि०) [परि+गाह्+क्त] बहुत अधिक, अत्यन्त।

परिगुणित (वि०) [परि+गुण्+क्त] 1. जोड़ कर या गुणा करके परिवर्धित 2. पुनरुक्त, पुनरावृत्त।

परिग्रहः [परि+ग्रह्+अच्] 1. शरीर 2. प्रशासन। सम०—पत्नियों की बड़ी संख्या—परिग्रहबहुत्वेपि द्वे प्रतिष्ठे—श० ३।

परिग्राह्य (वि०) [परि+ग्रह्+णिच्+ण्यत्] नम्रता तथा शिष्टता पूर्वक सम्बोधित किये जाने के योग्य।

परिघगुरु (वि०) [क० स०] लोहे की भाँति भारी।

परिघस्तम्भः (पुं०) चौखट, दरवाजे की बाजू।

परिघ्रा (जुहो० पर०) सर्वत्र चुम्बन करना।

परिचरणतन्त्रम् (नपुं०) श्राद्ध के अनुष्ठान की विशेष रीति।

परिचारिका [परि+चर्+णिच्+ण्वुल्+टाप्] सेविका दासी, सेवा करने वाली नौकरानी।

परिचारितम् [परि+चर्+णिच्+क्त] आमोद, प्रमोद ।
परिच्यवनम् [परि+च्यु+ल्युट्] 1. पतित होना, गिर जाना 2. विचलित होना, भटकना ।
परिजीर्ण (वि०) [परि+जॄ+क्त] 1. घिसा हुआ, मुरझाया हुआ 2. पचाया हुआ ।
परिणामः [परि+नम्+घञ्] 1. परिवर्तन, रूपान्तरण 2. पचाना 3. फल 4. पकना, पूर्णतः विकसित होना 5. अन्त, समाप्ति 6. बुढ़ापा । सम० -- अम् अपच के कारण उत्पन्न उदर पीडा,—मुख (वि०) लगभग समाप्त होने को,—वादः विकासवाद का सांख्य सिद्धान्त ।
परिणीतिः (स्त्री०) [परि+नी+क्तिन्] विवाह ।
परिणेतव्य (वि०) [परि+नी+तव्यत्] 1. जिसका अभी विवाह होना है 2. जिसका विनिमय होना है ।
परितापिन् (वि०) [परिताप+णिनि] तङ्ग करने वाला, उत्पीडक, कष्ट देने वाला ।
परितृप्तिः [परि+तृप्+क्तिन्] पूर्ण सन्तोष ।
परितृषित (वि०) [परि+तृष्+क्त] लालायित, उत्सुक, आतुरतापूर्वक प्रबल इच्छा रखने वाला ।
परित्यज् (भ्वा० पर०) किश्ती से उतरना ।
परित्याज्य (वि०) [परि+त्यज्+णिच्+यत्] भुलाये जाने योग्य, त्याग दिए जाने के योग्य ।
परिदिष्ट (वि०) [परि+दिश्+क्त] जतलाया गया, ध्यान दिलाया गया ।
परिधिः [परि+धा+कि] 1. दीवार बाड़ 2. चन्द्र या सूर्य के चारों ओर धुन्धला आभास 3. क्षितिज, दिशा । सम०—उपान्त (वि०) समुद्र ही जिसकी सीमा है ।
परिधारणा (स्त्री०) संतोष, धैर्य ।
परिधीर (वि०) [प्रा० स०] बहुत गहरा (जैसे स्वर या शब्द) ।
परिध्वंसः [परि+ध्वंस्+घञ्] 1. वर्ण संकरता 2. ग्रहण ।
परिनिष्ठित (वि०) [परि+नि+स्था+क्त] 1. नितान्त पूर्ण 2. सम्पन्न --परिनिष्ठितकार्यो हि --महा० १२। २३८।१३ ।
परिपिच्छम् (नपुं०) मोर का पंख, चन्दा; चन्दे को सजावट की दृष्टि से लगाना—गुञ्जावतंसपरिपिच्छल-सन्मुखाय—भाग० १०।१४।१ ।
परिपृच्छिक (वि०) [परिपृच्छा+ठक्] जिसे कोई वस्तु माँगने पर ही मिलती है ।
परिप्लोषः [परिप्लुष्+घञ्] आन्तरिक गर्मी ।
परिबर्हः [परिब(व) र्ह्+घञ्] सजावट का सामान, चंवर आदि राजचिह्न—भाग० ४।३।९ ।
परिबोधः [परिबुध्+घञ्] तर्क, युक्ति, कारण ।
परिभाण्डम् [परिभण्+ड+अण्] गृहस्थ की आवश्यकताएँ ।
परिभू (भ्वा० पर०) 1. आगे बढ़ जाना 2. सुखा देना, संतृप्त करना—एवमेवेन्द्रियग्रामं शनैः संपरिभावयेत् —महा० १२।१९५।१९ ।
परिभवनिधानम् [ष० त०] घृणा का पदार्थ, घृणा का पात्र ।
परिभावना [परि भू+णिच्+युच्] 1. घृणा 2. (नाटक०) जिज्ञासा को जगाने वाले शब्द ।
परिभूत (वि०) [परि भू+क्त] 1. पराजित, हराया हुआ 2. अपमानित ।
परिभृष्ट (वि०) [परि+भ्रस्ज्+क्त] तला हुआ, भुना हुआ ।
परिमण्डित (वि०) [परि+मण्ड्+क्त] अलंकृत, सुभूषित, सजाया हुआ ।
परिमितवयस् (वि०) [ब० स०] बाल्य अवस्था का, बच्चा, थोड़ी उम्र का ।
परिमोटनम् [परिमुट्+ल्युट्] चटकाना, फोड़ना, तोड़ना ।
परियन्त्रणा [परि+यन्त्र्+युच्+टाप्] प्रतिबन्ध, रोक ।
परिरब्ध (वि०) [परि+रभ्+क्त] आलिङ्गित ।
परिलङ्घनम् (नपुं०) [परि+लङ्घ्+ल्युट्] 1. ऊपर से फांदना 2. अतिक्रमण करना ।
परिलीढ (वि०) [परि+लिह्+क्त] चारों ओर से चाटा हुआ ।
परिलोलित (वि०) [परिलुल्+णिच्+क्त] उछाला हुआ ।
परिवत्सः (पुं०) बछड़ा, गाय का बच्चा ।
परि (री) वादकथा [ष० त०] निन्दनीय बात चीत, बदनामी की बातें ।
परि (री) वादकरः (पुं०) [अपवाद, मिथ्यानिन्दा, कलंक ।
परिवर्जित (वि०) [परि+वृज्+णिच्+क्त] लपेटा हुआ, कुण्डलित किया हुआ, लच्छा बनाया हुआ । सम०--संख्य (वि०) असंख्य, अनगिनत ।
परिविंशत् (वि०) पूरे बीस कम से कम बीस ।
परिविष्ट (वि०) [परि+विश्+क्त] 1. घेरा हुआ 2. वस्त्राच्छादित, वस्त्र पहने हुए 3. उपहृत (जैसे कि भोजन) ।
परि (री) वर्तः [परिवृत्+घञ्] अव्यवस्था, व्यतिक्रम ।
परिवर्तित (वि०) [परिवृत्+क्त] 1. एक ओर किया हुआ, हटाया हुआ 2. पूरी तरह खोज किया गया ।
परिवृक्ण (वि०) [परि+व्रश्च्+क्त] विकृति, कटा-छटा, खण्डित ।
परिवे (भ्वा० उभ०) 1. अन्तर्ग्रथित करना, जोड़ना 2. बांधना ।

परिवेल्लित (वि०) [परिवेल्ल्+क्त] घिरा हुआ —भामि० २।१८।

परिशङ्का [परिशङ्क्+अ+टाप्] 1. संशय, आशंका 2. आशा, प्रत्याशा।

परिशब्दित (वि०) [परिशब्द्+क्त] सम्प्रेषित, वर्णित।

परिशुश्रूषा [परिश्रू+सन्+टाप्, द्वित्वम्] बिना विचार आज्ञापालन।

परिष्प (स्प) न्दः [परिस्पन्द्+घञ्] शौर्य, पराक्रम।

परिसंचक्ष् (अदा० आ०) 1. पृथक् करना, निकाल देना मै० सं० १।१।६१ पर शा० भा० 2. गिनना।

परिसामन् (नपुं०) सामसूक्त जिसकी विरल आवृत्ति होती है।

परिसरः [परि+सृ+घ] शिरा, धमनी, वाहिनी।

परिस्कन्धः [परि+स्कन्ध्+घञ्] संग्रह, समुच्चय।

परिस्तोमः [परि+स्तोम्+अच्] 1. रंगीन कपड़ा जो हाथी पर डाला जाता है 2. यज्ञपात्र।

परिस्नुत (वि०) [परि+स्नु+क्त] बहा हुआ, बूंद-बूंद करके टपका हुआ।

परिहूत (वि०) [परि+ह्वे+क्त] आमंत्रित, बुलाया हुआ।

परिहृ (भ्वा० पर०) 1. निराकरण करना 2. आवृत्ति करना 3. पोषण करना।

परिहारः [परि+हृ+घञ्] 1. त्यागना, छोड़ना 2. हटाना, दूर करना 3. निराकरण करना 4. टालना 5. शुल्क से मुक्ति। सम०—विशुद्धिः (स्त्री०) तपश्चरण द्वारा पवित्रीकरण (जैन०),—सू वह गाय जो बहुत अधिक दिनों के पश्चात् बछड़ा सूती है।

परीष्ट (वि०) [परि+इष्+क्त] वाञ्छनीय, उत्तम, बढ़िया—अन्ते परीष्टगतये हरये नमस्ते—भाग० ६।९।४५।

परुषाक्षेपः [क० स०] कठोर शब्दों में व्यक्त किया गया आक्षेप, ऐतराज।

परेतकल्पः (पुं०) मृतप्राय, मरे हुए के समान।

परेतकालः (पुं०) मृत्यु का समय।

परोक्षजित् (वि०) [परोक्ष+जि+क्विप्] जो विजय प्राप्त करता हुआ किसी से देखा नहीं जाता हैं, अदृष्ट-विजयी।

परोक्षबुद्धि (वि०) [ब० स०] तटस्थ, उदासीन।

पर्णनालः (पुं०) पत्ते के रूप में डंठल।

पर्णालः [पर्ण+आलच्] 1. किश्ती 2. एकाकी संघर्ष।

पर्पटौदनः [द्व० स०] पर्पटमिश्रित चावल।

पर्यंकबद्ध (वि०) [त० स०] वीरासन पर विराजमान।

पर्यन्तस्थित (वि०) [त० स०] सीमा पर विद्यमान।

पर्ययः [परि+इ+अच्] हानि, नाश—स्कन्धपर्ययः—महा० १२।१५।२६।

पर्यवस्थित (वि०) [परि+अव+स्था+क्त] 1. पड़ाव डाला हुआ 2. अधिकृत 3. स्वस्थ, शान्त।

पर्यादानम् [परि+आ+दा+ल्युट्] अन्त, समाप्ति।

पर्याप्तिकाम (वि०) [ब० स०] जिसकी इच्छाएँ पूर्ण हो गई हों।

पर्यापतत (वि०) [परि+आ+पत्+शतृ] शीघ्रता करता हुआ, तेज़ी के साथ दौड़ता हुआ।

पर्याम्नात (वि०) [परि+आ+म्ना+क्त] विख्यात, प्रसिद्ध।

पर्यायः [परि+इ+घञ्] 1. अन्त—पर्यायकाले धर्मस्य प्राप्ते कलिरजायत—महा० ५।७४।१२ 2. एक अलंकार का नाम—काव्य० १०, चन्द्रा० ५।१०८, सा० द० ७३३। सम०—क्रमः परम्परा का सिलसिला।

पर्यायत (वि०) [परि+आ+यम्+क्त] अत्यन्त लम्बा।

पर्यासित (वि०) [परि+अस्+णिच्+क्त] रद्दी किया गया, नष्ट किया गया—परैरपर्यासितवीर्यसंपदाम्—कि० १।४१।

पर्युदासः [परि+उद्+अस्+घञ्] 'नञ्' के प्रयोग द्वारा निषेधार्थककृति—(अब्राह्मणम् आनय)—दे० मै० सं० १०।८।१-४ पर शा० भा०।

पर्युपासीन (वि०) [परि+उप+आस्+शानच्, ईत्वम्] 1. बैठा हुआ 2. घिरा हुआ।

पर्युषित (वि०) [परि+वस्+णिच्+क्त] जिसके ऊपर से रात बीत गई हो, बासी, जो ताज़ा न हो (जैसे रात का रक्खा भोजन)। सम०—वाक्यम् वह वचन जिसका पालन न किया गया हो, टूटी हुई प्रतिज्ञा।

पर्युष्ट (वि०) [परि+वस्+क्त] बासी।

पर्वतः [पर्व+अतच्] 1. पहाड़ 2. एक ऋषि का नाम। सम०—उपत्यका पहाड़ की तलहटी में स्थित समतल भूमि,—रोधस् (नपुं०) पहाड़ी ढलान।

पर्वन् (नपुं०) [पॄ+वनिप्] 1. गाँठ, जोड़ 2. पोरी, अंश 3. अंग 4. अनुभाग। सम०—आस्फोटः अँगुलियाँ चटखाना (अभिशाप का चिह्न समझा जाता है),—विपद् चन्द्रमा।

पलः [पल्+अच्] भूसी, छिल्का,—लम् 1. मांस 2. ४ कर्ष का बट्टा 3. समय की माप 4. एक छोटी तोल। सम०—अन्नम् मांस से मिले चावल।

पलालः [पल्+आलच्] भूसी, तुष, तिनके। सम० —भारकः तिनकों का बोझ, भूसी का भार।

पलिः (स्त्री०) [पल्+इञ्] हाथी के मस्तक से ठीक ऊपर का भाग।

पलित (वि०) [पल्+क्त] बूढ़ा, जिसके बाल पक गये हों, जिसके सिर के बाल सफ़ेद हो गये हों,—तम् 1. सफ़ेद बाल 2. कीच पाश। सम०—छद्मन् सफ़ेद

बालों के बहाने--कैकेयी शङ्कयेवाह पलितछद्मना जरा—रघु० १२।२,--दर्शनम् सफ़ेद बालों का दिखाई देना।
पल्यशनः (पुं०) बिच्छू।
पल्लवः [पल्+क्विप्, लू+अप्, पल् चासौ लवश्च, क० स०] 1. अङ्कुर, 2. कली 3. विस्तार 4. शक्ति 5. घास की पत्ती 6. कङ्कण 7. वस्त्र का किनारा 8. प्रेम 9. कामकेलि 10. कहानी, कथा।
पल्लवनम् [पल्+क्विप्, लू+ल्युट्, पल् चासौ लवनश्च, क० स०] निरर्थक वक्तृता।
पवनम् [पू+ल्युट्] 1. पवित्र करना 2. पिछोड़ना 3. छलनी 4. पानी 5. कुम्हार का आँवा। सम० —चक्रम् बवंडर, भभूला,—पदवी आकाश का प्रदेश।
पवमानसखः [ब० स०] अग्नि।
पवित्र (वि०) [पू+इत्र] 1. पावन, निष्पाप 2. मन को शुद्ध करने का साधन 3. सोमरस को छानने का वस्त्र, छलना या पोना।
पवित्रीकरणम् [पवित्र+च्वि+कृ+ल्युट्] 1. पवित्र करना 2. पवित्र करने का साधन।
पशु (अ०) [दृश्+कु, पशादेशः] देखो! कितना अच्छा!,–शुः (पुं०) पालतू जानवर, मवेशी। सम० —एकत्वन्यायः मीमांसा का नियम जिसके आधार पर वाक्य का मुख्यार्थ क्रिया के द्वारा संयुक्त होकर अभिप्रेत वचन को अभिव्यक्त करता है, मैं० सं० ४।१।११।१६ पर शा० भा०,—मतम् मिथ्या सिद्धांत, —समाम्नायः प्राणिजात के नामों का संग्रह।
पश्चावहः (अ०) [पश्चात्+अहः] तीसरा पहर।
पश्चादुक्तिः (स्त्री०) [पश्चात्+उक्तिः] आवृत्ति, दोहराना।
पश्चिमोत्तर (वि०) [ब० स०] उत्तरपश्चिमी।
पश्चिमसन्ध्या (स्त्री०) सायंकालीन झुटपुटा।
पश्य (वि०) [दृश्+अच् पश्यादेशः] जो केवल देखता रहता है—ददर्श पश्यामिव···पुरम्—नै० १६।१२२।
पष्ठौही (स्त्री०) बछिया—महा० १३।९३।३२।
पातव्य (वि०) [पा+तव्यत्] 1. पीने के योग्य, पेय 2. रक्षा किये जाने के योग्य।
पांसुः [पंस्+कु, दीर्घः] चूर्ण, धूल। सम०—क्रीडनम् धूल में खेलना, गुण्ठित (वि०) धूल से भरा हुआ, लवणम् एक प्रकार का नमक।
पांसक (वि०) [पंस्+णिच्+ण्वुल्] भ्रष्ट करने वाला, बिगाड़ने वाला।
पांसवः (पुं०) विकलांग।
पाकः [पच्+घञ्] शोथ, सूजन। सम०—क्रिया पकाने की क्रिया।
पाजस्यम् (नपुं०) 1. जानवर का पेट 2. पार्श्व भाग।

पाञ्चरात्रम् (नपुं०) 1. एक वैष्णव सम्प्रदाय तथा उसके सिद्धान्त, भक्तिमार्ग 2. पाञ्चरात्र सम्प्रदाय के शास्त्र, आगम।
पाञ्चालेयः [पाञ्चाली+ढक्] पाञ्चाली का पुत्र।
पाटलकीटः (पुं०) एक प्रकार का कीड़ा।
पाट्युपकरः [पाटी+उपकरः] मुख्य लेखाधिकारी।
पाठक्रमः (पुं०) [ष० त०] मूलपाठ के अनुक्रम के अनुसार निर्धारित पाठ।
पाठभेदः [स० त०] मूलपाठ के रूपान्तर, अवान्तर पाठ।
पाठ्यपुस्तकम् (नपुं०) किसी श्रेणी के लिए निर्धारित पुस्तक।
पाणिः [पण् –इण्, आयाभावः] हाथ। सम०—कच्छपिका (स्त्री०) एक प्रकार की मुद्रा,—गत (वि०) निकट ही,—वाक्यम् हाथ की सफ़ाई,—वादः 1. तालियाँ बजाना 2. ढोल बजाना 3. केरल प्रदेश के ढोलकियों का समुदाय।
पाण्डवप्रियः [ब० स०] कृष्ण का विशेषण।
पाण्डिमन् (पुं०) [पाण्डु+इमनिच्] सफ़ेदी।
पाण्डुलोहम् (नपुं०) चाँदी।
पातः [पत्+घञ्] (मल्हम, चाकू आदि का) प्रयोग।
पातालमूलम् (नपुं०) पाताल लोक की निम्न सतह।
पात्र (वि०) [पातात् त्रायते इति] पापों से छुटकारा दिलाने वाला—सर्वेषामेव पात्राणां परपात्रं महेश्वरः—ना० पा०।
पात्रम् [पा+ष्ट्रन्] 1. प्याला, कटोरा 2. बर्तन 3. आशय 4. योग्य व्यक्ति 5. नाटक में अभिनेता 6. राजा का मंत्री 7. दरिया का पाट 8. योग्यता औचित्य। सम०—उपकरणम् अलङ्करण के बर्तन, सजावट के पात्र जैसे चौरी आदि,—प्रवेशः (नाट० में) रङ्गमंच पर अभिनेता का आगमन, —मेलनम् भिन्न-भिन्न प्रकार का अभिनय कराने के लिए, अभिनेताओं का एकत्रीकरण,—शोधनम् किसी उपहार को ग्रहण करने के योग्य व्यक्ति की योग्यता की परीक्षा करना,—संस्कारः किसी पात्र या बर्तन को पवित्र करना।
पात्रकरणम् (नपुं०) विवाह—ममैव पात्रीकरणेऽग्निसाक्षिक—नै० ६।६८।
पादः [पद्+घञ्] मशक की तली में छिद्र—तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृतेः पादादिवोदकम्—मनु० २।९९। सम०—कृच्छ्रम् एक प्रकार का व्रत जिसमें हर तीसरे दिन उपवास रखना पड़ता है,—निकेतः पादपीठ, मूँढा, स्टूल,—पद्धतिः (स्त्री०) पदचिह्न, —परिचारकः चरण सेवक, विनीत सेवक,—भटः पदाति, पैदल सिपाही,—लग्नः पैर में चिपका हुआ,

संहिता कविता के चरणों का जोड़, . हीनजलम् वह पानी जिसका कुछ अंश उबाला हुआ हो ।

पादाकुलकम् (नपुं०) एक छन्द का नाम ।

पानीयपृष्ठजा (स्त्री०) मोथा नाम का घास जो पानी के किनारे उगता है ।

पान्थदुर्गा (स्त्री०) [ष० त०] मार्गव्यापिनी देवी आलिङ्ग्य नीत्वाकृत पान्थ दुर्गाम् नै० २४।३७ ।

पाप (वि०) [पा+प] 1. बुरा, दुष्ट 2. अभिशप्त, विनाशकारी, शरारत से भरा हुआ 3. नीच, अधम । सम वंश (वि०) नीच कुल में उत्पन्न, विनिग्रहः दुष्टता को रोकना,—शमन (वि०) पाप कर्म को रोकने वाला ।

पायसपिण्डारकः (पुं०) खीर खाने वाला ।

पायितम् (नपुं०) उदकदान, उपहार में दिया गया जल ।

पारः [पृ+घञ्] 1. नदी का दूसरा किनारा 2. पार कर लेना 3. सम्पन्न करना 4. पारा 5. अन्त, किनारा 6. संरक्षक - तस्माद् भयाद् येन स नोऽस्तु पारः —भाग० ६।९ - २४ 2. अन्त - महिम्नः पारं ते —म० स्त०। सम०—नेतृ (वि०) जो किसी व्यक्ति को किसी कार्य में दक्ष बना देता है ।

पारतल्पिकम् [परतल्प+ठक्] व्यभिचार ।

पारमार्थिकसत्ता (स्त्री०) परम सत्य का अस्तित्व ।

पारमिता [पारम् इतः प्राप्तः—पारमित—अलुक् स० —स्त्रियां टाप्] संपूर्ण निष्पत्ति, पूर्णता ।

पारमेश्वर (वि०) [परमेश्वर+अण्] परमेश्वर से संबद्ध ।

पारम्पर्यक्रमः [परम्परा+ष्यञ्] परम्परा-प्राप्त अनुक्रम ।

पारषदम् (नपुं०) सदस्यता, किसी सभा का सदस्य बनना । भाग० ११।१६।१७ ।

पारावतघ्नी (स्त्री०) सरस्वती नदी ।

पारिणामिक (वि०) [परिणाम्+ठक्] 1. पचने के योग्य, जो हज़म हो सके 2. जिसमें विकार हो सके, परिवर्त्य ।

पारिपन्थिकः [परिपन्था+ठक्] चलती सड़क पर लूटने वाला, डाकू ।

पारिप्लवदृष्टि (वि०) [ब० स०] चंचल आँखों वाला ।

पारिप्लवमति (वि०) [ब० स०] चंचल मन वाला ।

पारुषिक (वि०) [परुष+ठक्] कठोर, दारुण ।

पार्यवसानिक (वि०) [पर्यवसान+ठक्] समाप्ति के निकट आने वाला ।

पार्श्वः (पुं०), [पर्शु+अण्] 1. एक ऋषि, जैनियों के २३ वें तीर्थंकर का विशेषण 2. पार्श्वभाग । सम० —अपवृत्त (वि०) एक ओर को झुका हुआ (हीरे का एक दोष), आर्तिः शरीर के पार्श्वभाग में पीड़ा, उपपीडम् (अ०) (इतना हंसना कि जिससे) पार्श्वभाग दुखने लगे,—वक्त्रः शिव का एक विशेषण ।

पार्ष्णिविग्रहः [ष० त०] सेना के पिछली ओर आक्रमण करना ।

पालनम् [पाल्+ल्युट्] (शस्त्रों को शाण पर रख कर) तीक्ष्ण-तेज़ करना ।

पालाशविधिः [पलाश+अण् तस्य विधिः] ढाक की लकड़ियों से मृतक का दाह संस्कार करना ।

पालिज्वरः (पुं०) एक प्रकार का बुखार ।

पाल्लविक (वि०) [पल्लव+ठक्] विसारी, विसरणशील, विच्युत ।

पावकमणिः (पुं०) [ष० त०] सूर्यकान्त मणि ।

पावकशिखः [ब० स०] ज़ाफरान, अग्निशिख, केसर ।

पावकार्चिः (स्त्री०) [ष० त०] अग्नि की ज्वाला ।

पावित (वि०) [पू+णिच्+क्त] पवित्र किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ ।

पाव्य (वि०) [पू+णिच्+ण्यत्] पवित्र किये जाने योग्य ।

पाशिन् (पुं०) [पाश+इनि] रस्सी, बेड़ी पाशीकल्पमायतामाचकर्ष शि० १८।५७ ।

पाशुपतव्रतम् (नपुं०) पाशुपत सिद्धान्तों के लिए किया गया उपवास, व्रत ।

पिककूजनम् (ष० त०) कोयल की कूक ।

पिङ्गमूलः [ब० स०] गाजर ।

पिङ्गालम् (नपुं०) गाजर ।

पिच्छास्रावः (पुं०) चिपचिपा थूक ।

पिञ्जरिकम् (नपुं०) एक प्रकार का संगीत-उपकरण ।

पिटङ्काशः (पुं०) एक प्रकार की छोटी मछली ।

पिठरपाकः (पुं०) कार्यकारण का मेल ।

पिठरी (स्त्री०) कड़ाही, जिसमें कुछ उबाला जाय ।

पिण्ड (वि०) [पिण्ड+अच्] 1. ठोस 2. सटा हुआ, सघन । सम० अक्षर (वि०) संयुक्त व्यञ्जनों से युक्त शब्द, निवृत्ति सपिण्ड बन्धुता की समाप्ति, पितृयज्ञः अमावस्या को संध्यासमय पितरों के प्रति आहुति देना, विषमः (पुं०) अपहरण की रीति, गबन का तरीका—कौ० अ० २।८।२६ ।

पितुपणिः (पुं०) भोजन-प्रदाता (सोम का विशेषण) ।

पितृत्रयम् [ष० त०] पिता, पितामह तथा प्रपितामह ।

पितृवासरपर्वन् (नपुं०) पितरों की पूजा का शुभ समय ।

पित्तम् [अपि+दो+क्त, अपेः अकारलोपः] एक तरल पदार्थ जो शरीर के भीतर यकृत में बनता है । सम०—धर (वि०) पित्त प्रकृति का व्यक्ति,—धरा (स्त्री०) शरीर में पित्ताशय ।

पिधातव्य (वि०) [अपि+धा+तव्यत्, अपेः अलोपः] बन्द किए जाने के योग्य ।

पिनह्य (अ०) पहन कर ।

पिन्यासः (पुं०) हींग ।

पिप्पलः (पुं०) 1. पिप्पल नाम का वृक्ष 2. कर्मजन्य फल, कर्म का फल—मुण्ड० ३।१।१। सम०—अदः 1. एक मुनि का नाम 'पिप्पलाद' 2. पिप्पल के बरबंटे खाने वाला 3. विषयवासना में लिप्त।

पिब (वि०) [पा+अच्, पिबादेशः] पीने वाला नल-च्छायपिबापि दृष्टिः—नै० ६।३४।

पिशितम् [पिश्+क्त] 1. मांस 2. अल्पांश। सम० —पिण्डः 1. मांस का टुकड़ा 2. तिरस्कारसूचक शब्द जो शरीर को इंगित करे; -प्ररोहः मांस का उभार, रसौली।

पिशुनित (वि०) [पिशुन+इतच्] प्रकट किया गया, प्रदर्शित।

पिष्ट (वि०) [पिष्+क्त] 1. पीसा हुआ 2. गूंदा हुआ। सम०—अद (वि०) आटा खाने वाला,—पाकः पकाया हुआ आटा (रोरी, पूरी आदि)।

पिष्टातः [पिष्ट+अत्+अण्] सुगन्धित चूर्ण, अबीर जो होली के अवसर पर एक दूसरे पर छिड़क दिया जाता है।

पिस्पृक्षु (वि०) [स्पृश्+सन्+उ] 1. छूने की इच्छा वाला 2. आचमन करने का इच्छुक।

पीठाधिकारः (पुं०) [ष० त०] किसी पद पर नियुक्ति।

पीड् (चुरा० उभ०) शब्द करना—श्रुतिसमधिकमुच्चैः पञ्चमं पीडयन्तः—शि० ११।१

पीडास्थानम् [ष० त०] (फ० ज्यो० में) ग्रह की किसी अशुभ स्थान पर स्थिति।

पीत (वि०) [पा+क्त] 1. पीया हुआ 2. भिगोया हुआ 3. बाष्पीकृत 4. छिड़का हुआ। सम० —उदका वह गाय जो पानी पी चुकी है पीतोदका जग्धतृणा कठ०,—निद्र (वि०) नींद में डूबा हुआ, मारुतः एक प्रकार का साँप,—स्फोटः खुंजली।

पीयूषभानुः,—(धामन्) (पुं०) [ब० स०] चन्द्रमा।

पुंस् (पुं०) [पा+डुमसुन्] 1. जीवित प्राणी 2. एक प्रकार का नरक—अपत्यमस्मि ते पुंसस्त्राणात् महा० १४।९०।६३। सम०—लक्षणन् मानवीरूप, मानवी सूरत।

पुच्चुकः (पुं०) द्वितीय वर्ष में चल रहा हाथी—मात० ५।३।

पुञ्जिक (का) **स्तना** (स्त्री०) एक स्वर्गीय अप्सरा का नाम।

पुटः,-टम् [पुट्+क] 1. तह 2. अंजलि 3. दोना। सम०—अञ्जलिः दोनों हथेलियों को मिला कर प्याले की भाँति बना लेना,—धेनुः बछड़े वाली गौ जिसका अभी पूर्ण विकास नहीं हुआ है।

पुटनम् [पुट्+ल्युट्] आच्छादित करना, ढकना।

पुण्डरीकम् [पुण्ड्+ईकन्, रक् नि०] एक यज्ञ का नाम।

पुण्य (वि०) [पू+यत् णुगागमः, ह्रस्वः] 1. पवित्र, पुनीत 2. अच्छा गुणयुक्त 3. मंगलमय, शुभ 4. सुन्दर, मनोज्ञ, रोचक 5. मधुर—ण्यम् (नपुं०) 1. जन्मलग्न से सातवाँ घर 2. मेष, कर्क, तुला और मकर का संयोग। सम०—निवह (वि०) गुणयुक्त, गुणी, शाला धर्मार्थ भवन, दान-घर, संचयः धार्मिक गुणों का संग्रह।

पुत्रप्रवरः [स० त०] ज्येष्ठ पुत्र।

पुत्रसूः (स्त्री०) [ष० त०] पुत्र की माँ।

पोथित (वि०) [पुथ्+णिच्+क्त] आघात पहुँचाया हुआ, मारा हुआ, नष्ट किया हुआ।

पुनर् (अ०) [पन्+अर्, उत्वम्] फिर, दोबारा, नये सिरे से। सम० अन्वयः वापसी, लौटना कि वा गतोऽस्य पुनरन्वयमन्यलोकम्—भाग० ६।१४।५७ —अपगमः दोबारा चले जाना,—उत्पादनम् फिर उपजाना, पैदा करना,—क्रिया आवृत्ति करना, दोह-राना,—नवा एक प्रकार का शाक जिसकी पत्तियाँ गोल लाल रंग की होती हैं।—स्नानम् दोबारा नहाना।

पुपूषा [पू+स्+अ, धातोर्द्वित्वम्] पवित्र करने की इच्छा।

पुरनारी (स्त्री०) [ष० त०] नगरवेश्या।

पुरंध्रिका (स्त्री०) [पुर+धृ+खच्, स्वार्थे कन्] पत्नी।

पुरस्कारः [पुरस्+कृ+घञ्] 1. प्रस्तुत करना, परिचय देना 2. अपने आपको प्रकट करना—कर्महेतुपुरस्कारं भूतेषु परिवर्तते—महा० १२।१९।१९।

पुरस्कृत्य (अ०) [पुरस्+कृ+ल्यप्] कृते, के विषय में उल्लेख करके, के कारण।

पुरोभक्तका (स्त्री०) प्रातराश, नाश्ता।

पुराण (वि०) [पुरा नवम्—नि०] 1. पुराना 2. बूढ़ा 3. घिसा पिटा,—णम् 1. बीती हुई घटना 2. विख्यात धार्मिक पुस्तकें जो गिनती में १८ हैं, तथा व्यास द्वारा रचित माने जाते हैं। सम०—अन्तरम् दूसरा पुराण। प्रोक्त (वि०) 1. पुराणों में कहा हुआ 2. प्राचीनों द्वारा बतलाया हुआ,—विद्या, वेदः पुराणों का ज्ञान, पुराणों में वर्णित पाण्डित्य।

पुराषाद् (वेद०) अनकों का विजेता, बहुतों को हरानेवाला।

पुरीषभेदः [पृ+ईषन् किच्च,+भिद्+घञ्] अतिसार, दस्त लगना, संग्रहणी।

पुरुकृत्, **पुरुकृत्वन्** } (वि०) अचूक, प्रभावशाली।

पुरुषः [पुरि देहे शेते शी+ड पृषो०] 1. नर, मनुष्य (विप० स्त्री) 2. आत्मा। सम० मानिन् (वि०) अपने आपको साहसी प्रकट करने वाला,—शीर्षकः एक प्रकार का शस्त्र जिसका प्रयोग चोर सेंध लगाने में करते हैं,—सारः श्रेष्टतम नर।

पुल्कः [पुल्+ण्वुल्] गुच्छा, झुंड ।

पुलिंदः (पुं०) शिकारी, (ब० व०) एक जंगली जाति ।

पुल्कसः (पुं०) एक मिश्रित जाति का नाम भाग० ९।२१।१० ।

पुष्ट (वि०) [पुष्+क्त] 1. पाला पोसा 2. फलता फूलता 3. समृद्ध 4. पूर्ण । सम०—अङ्ग (वि०) मोटे अंगों वाला, जिसे अच्छे पदार्थ भोजन में मिलते रहे हैं—अर्थ (वि०) जो अर्थ की दृष्टि से पूर्णतः स्पष्ट हो ।

पुष्टिः [पुष्+क्तिन्] बहुत से अनुष्ठानों के नाम जो कल्याण की दृष्टि से किये जाते हैं, पुष्टिकर्म । सम०—मार्गः वल्लभाचार्य द्वारा माने गये सिद्धान्तों का समुच्चय ।

पुष्करम् [पुष्कं पुष्टिं राति-रा+क] 1. नीला कमल 2. हाथी के सूंड का किनारा—मात० २।२ । सम० —विष्टरः ब्रह्मा, परमेश्वर,—विष्टरा लक्ष्मी देवी —पुष्टिं कृपीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः—कनक० ।

पुष्पम् [पुष्प्+अच्] 1. फूल 2. पुष्परागमणि 3. कुबेर का रथ । सम०—अम्बु फूलों का शहद,—आस्तरकः, —आस्तरणम् फूलों से सजावट करने की कला, —पदवी कपाटिका,—यमकम् अनुप्रास अलंकार का एक भेद ।

पुष्पंधः (पुं०) जाति से बहिष्कृत महिला में ब्राह्मण द्वारा उत्पादित संतान ।

पुष्परागः [ष० त०] एक प्रकार की मणि—कौ० अ० २।११।२९ ।

पुस्तम् [पुस्त्+अच्] 1. कोई वस्तु जो मिट्टी, लकड़ी या धातु की बनी हो 2. पुस्तक, हस्तलिखित, पांडुलिपि । सम०—पालः भू-अभिलेखों को सुरक्षा पूर्वक रखने वाला ।

पुस्तकः,—कम् [पुस्त+कन्] 1. पाण्डुलिपि 2. एक उभरा हुआ आभूषण । सम०—आगारम् पुस्तकालय, —आस्तरणम् बस्ता, वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें बाँधी जाती हैं,—मुद्रा एक प्रकार की तांत्रिक मुद्रा ।

पूतक्रतुः [ब० स०] इन्द्र का विशेषण ।

पूगी (स्त्री०) सुपारी का पेड़ ।

पूजा [पूज्+अ] आदर, सम्मान, पूजा । सम० उपकरणम् पूजा करने का सामान,—गृहम् गार्हं पूजा का स्थान ।

पूयः [पूय्+अच्] मवाद, किसी फोड़े या फुंसी से निकलने वाला, पीप । सम०—उदः, —वहः, एक प्रकार का नरक ।

पूरक (वि०) [पूर्+ण्वुल्] 1. भरने वाला, पूरा करने वाला,—कः (पुं०) बाढ़, जलप्लावन—सिन्धवाङ्ग नस्त्वदधरामृतपूरकेण—भाग० १०।२९।३५ ।

पूर्ण (वि०) [पुर्+क्त] सर्वव्यापक, सर्वत्र उपस्थित । सम० अभिषेकः एक प्रकार का धार्मिक स्नान जिसका कौलतंत्र में विधान निहित है । उत्सङ्गा (वि०) ऐसी गर्भवती जिसके थोड़े ही दिनों में बच्चा होने वाला है, आसन्नप्रसवा,—प्रज्ञः (पुं०) 1. जिसका ज्ञान पूर्णतः विकसित हो चुका हो 2. द्वैत संप्रदाय के प्रवर्तक माधव का विशेषण ।

पूर्व (वि०) [पूर्व+अच्] 1. पहला, प्रथम 2. पूर्वी, पूर्वदेश 3. प्राचीन, पहला । सम० --अवसायिन् (वि०) जो बात पहले घटती है—पूर्वावसायिन्यश्च बलीयांसो जघन्यावसायिभ्यः—मै० सं० १२।२।३४ पर शा० भा० । —निमित्तम् शकुन, -निविष्ट (वि०) जो पहले ही रचा हुआ है—मनु० ९।२८१, —पश्चात्, पश्चिम (अ०) पूर्व से लेकर पश्चिम तक,—मारिन् (वि०) पति (या पत्नी) से पहले मरने वाला,—विद् (वि०) जो भूतकाल की बात जानता है, विप्रतिषेधः पहली उक्ति का विरोध करने वाला कथन,—विहित (वि०) जो पहले ही निर्णीत हो चुका हो ।

पूषानुजः [पूषन्+अनुजः] वृष्टि का देवता--प्रास्यद् द्रोणसुतो बाणान् वृष्टिं पूषानुजो यथा महा० ८। २०।२९ ।

पृणाका (स्त्री०) किसी जानवर का मादा-बच्चा ।

पृतनापतिः (पुं०) [ष० त०] सेनापति ।

पृथक् (अ०) [प्रथ्+अज्, कित्, संप्रसारणम्] 1. अलग 2. अलग-अलग 3. के बिना, के सिवाय । सम० —कार्यम् अलग काम, धर्मिन् (वि०) जो द्वैत सिद्धान्त को मानने वाला है,—बीजः भिलावा,-- योगकरणम् एक व्याकरणनियम का दो भागों में जुदा जुदा करना ।

पृथक्त्वनिवेशः (पुं०) जुदाई पर डटे रहना संख्यायाश्च पृथक्त्वनिवेशात्—मी० सू० १०।५।१७ ।

पृथिवीभृत् (पुं०) [पृथिवीं बिभर्त्तीति---भृ+क्विप्] पर्वत, पहाड़ ।

पृथु (वि०) [प्रथ्+कु, संप्रसारणम्] 1. विशाल, विस्तृत 2. प्रचुर पुष्कल 3. बड़ा, 4. असंख्य । सम०—कीर्ति (वि०) दूर-दूर तक विख्यात,—दर्शिन् (वि०) दूरदर्शी, दीर्घदृष्टि ।

पृश्नि (वि०) [स्पृश् नि० किच्च पृषो० सलोपः] 1. ठिगना 2. सुकुमार 3. चितकबरा,—श्निः (स्त्री०) 1. चितकबरी गाय 2. पृथ्वी ।

पृषत्कः [पृष्+अति=पृषत्+कन्] 1. गोल धब्बा 2. बाप की शरव्या ।

पृष्ठम् [पृष्-(स्पृश्)+थक् नि०] 1. पीठ 2. पुस्तक के पत्र का एक पार्श्व 3. शेष । सम० —आक्षेपः पीठ में

बड़ी तीव्र पीड़ा,–गामिन् (वि०) स्वामिभक्त, अनुचर, —तापः मध्याह्न, दोपहर, —भङ्गः युद्ध में लड़ने की एक रीति।

पृष्ठ्यम् [पृष्ठ+यत्] 1. मेरुदण्ड 2. सामसंग्रह।

पेचकः [पच्+वुन्, इत्वम्] मार्ग में बना यात्रियों के लिए शरणगृह मान०।

पेट्टालः,–लम्
पेट्टालकः,–कम् } टोकरी, पेटी।

पेण्डः (पुं०) मार्ग, रास्ता।

पेलिनी [पेल+इनि, स्त्रियां ङीप्] गांठगोभी, पातगोभी।

पेशस् (नपुं०) [पेश+असिच्] 1. रूप 2. सोना 3. आभा 4. सजावट। सम० कारिन् 1. भिर्र 2. सुनार, —कृत् (पुं०) 1. हाथ 2. भिर्र भाग० ७।१।२८।

पेशिः (स्त्री०) [पिश्+इन्] छाछ, तक्र।

पेषीकृ (तना० उभ०) कुचलना, पीस देना।

पैङ्गलः [पिङ्गल+अण्] पिंगल का पुत्र या शिष्य।

पैङ्गलम् [पिङ्गल+अण्] पिङ्गल मुनि कृत पुस्तिका।

पैतापुत्रीय (वि०) [पितापुत्र+छ] पिता और पुत्र से संबंध रखने वाला।

पैप्पलादः [पिप्पलाद+अण्] अथर्ववेद की एक शाखा।

पैशुनिक (वि०) [पिशुन+ठक्] मिथ्यानिन्दात्मक, अपवाद परक।

पोतायितम् (नपुं०) [पू+तन्=पोत+क्यच्+क्त] 1. शिशु की भाँति आचरण करना 2. होठ और तालु की सहायता से उच्चरित हाथी की चिंघाड़।

पोत्रिप्रवरः [पू+त्र=पोत्र+इनि=पोत्रिन्, तेषु प्रवरः] विष्णु भगवान् वाराहावतार हिरण्याक्षे पोत्रिप्रवरवपुषा देव भवता– नारायण।य०।

पोप्लूयमान (वि०) [प्लू+यङ्+शानच्, द्वित्वम्] बार बार तैरता हुआ लगातार तैरने वाला या बहने वाला।

पौण्ड्रवर्धनः (पुं०) बिहार प्रदेश का नाम।

पौत्रजीविकम् (नपुं०) पुत्रं जीव पौधे के बीजों से बना ताबीज़।

पौरन्ध्र (वि०) [पुरन्ध्र+अण्] स्त्रीवाची, नारीजातीय।

पौषधः (पुं०) उपवास का दिन।

प्रउगम् (नपुं०) त्रिकोण।

प्रकच (वि०) [ब० स०] जिसके बाल सीधे खड़े हों।

प्रकाङ्क्षा [प्र+काङ्क्ष्+अङ्] भूख, बुभुक्षा।

प्रकाशः [प्र+काश्+घञ्] ज्ञान। सम० करः प्रकट करने वाला, व्यक्त करने वाला।

प्रकृ (तना० उभ०) विवेक करना, भेद करना—मोहात् प्रकुरुते भवान्—महा० ५।१६८।१८।

प्रकरः [प्र+कृ+अच्] धोना, मांजना, साफ़ करना अत्रामत्रप्रकरकरणे वर्ततेऽसौ नियुक्तिः– विश्व० १५४।

प्रकरणम् [प्र+कृ+ल्युट्] प्रसंग। सम०—समः समान औचित्य और समान बल के दो तर्क।

प्रकर्म (नपुं०) मैथुन, संभोग (जैसा कि कौ० अ० में कन्याप्रकर्म)।

प्रकृतिः [प्र+कृ+क्तिन्] परम पुरुष परमात्मा के आठ रूप—भग० ७।४। सम०—अमित्रः सामान्य शत्रु, —कल्याण (वि०) नैसर्गिक सौन्दर्य से युक्त, स्वाभाविक सुन्दर,—भोजनम् यथारीति आहार, यथावत् भोजन।

प्रकृतिमत् (वि०) [प्रकृति+मतुप्] 1. नैसर्गिक, सामान्य 2. सात्त्विक वृत्ति का महानुभाव रा० २।७७।२१।

प्रक्रिया [प्र+कृ+श] (आयु० में) योग, नुस्खा।

प्रकृष् (तुदा० पर०) वेग से खींचना।

प्रकर्षः [प्र+कृष्+घञ्] विश्वजनीन।

प्रकर्षित (वि०) [प्र+कृष्+णिच्+क्त] फैलाया हुआ, बाहर निकाला हुआ।

प्रक्रमः [प्र+क्रम्+घञ्] चर्चा के बिन्दु पर पहुँचना। सम०—निरुद्ध (वि०) आरंभ में ही रुका हुआ।

प्रक्षपणम् [प्र+क्षि+णिच्+ल्युट्, प्रगागमः] विनाश, —राज०।

प्रख्या [प्र+ख्या+अङ्+टाप्] उज्ज्वलता, आभा, कान्ति।

प्रगुणीभू (प्रगुण+च्वि+भू भ्वा० पर०) अपने आपको योग्य बनाना, पात्रता प्राप्त करना।

प्रग्रहः [प्र+ग्रह्+अप्] 1. राजसभासदों को उपहार —कौ० अ० २।७।२५ 2. जोड़ के रखना 3. धृष्टता।

प्रचकित (वि०) [प्र+चक्+क्त] भय के कारण थर-थर काँपता हुआ।

प्रचण्ड (वि०) [प्रा० स०] प्रखर, अत्यन्त तीव्र। सम० प्रतापः शक्तिशाली तेज,—भैरवः एक नाटक का नाम।

प्रचर्या [प्र+चर्+यत्+टाप्] प्रक्रिया।

प्रचारः [प्र+चर्+घञ्] सरकारी घोषणा, सार्वजनिक उद्घोष।

प्रचलित (वि०) [प्र+चल्+क्त] घबराया हुआ। तम् (नपुं०) विदाई, विसर्जन।

प्रचला (स्त्री०) [प्र+चल्+अच्+टाप्] गिरगिट।

प्रचुरपरिभवः [क० स०] भारी अपमान, बड़ा तिरस्कार।

प्रच्छन्नबौद्धः (पु०) वेदान्ती के वेश में छिपा हुआ बौद्ध।

प्रच्यावुक (वि०) [प्र+च्यु+उकञ्] क्षणभंगुर, सहज में टूट जाने वाला, भिदुर।

प्रजननकुशल (वि०) प्रसूति कार्य में दक्ष।

प्रजा [प्र+जन्+ड+टाप्] संवत्सर बुद्ध०।

प्रजागरणम् [प्र+जागृ+ल्युट्] जागते रहना।

प्रजृम्भ् (भ्वा० आ०) जम्हाई लेना।

प्रज्ञप्त (वि०) [प्र+ज्ञा+णिच्+क्त] 1. आदिष्ट, आज्ञा दिया हुआ 2. व्यवस्थित—बुद्ध० ।

प्रज्ञा [प्र+ज्ञा+अङ्+टाप्] प्रकृष्ट बुद्धि, बुद्ध० । सम० अस्त्रम् 1. एक अस्त्र का नाम 2. बुद्धि रूपी शस्त्र, —घनः केवल बुद्धि (जैसे चिद्घन), पारमिता पारदर्शी गुण बुद्ध०; —मात्रा ज्ञानेन्द्रिय ।

प्रणमित (वि०) [प्र+नम्+णिच्+क्त] झुकाया हुआ, नमस्कार करने के लिए जिसका सिर झुकाया गया है ।

प्रणाय्य (वि०) [प्र+नी+ण्यत्] योग्य, उपयुक्त (वेद०) ।

प्रणिधिः [प्र+नि+धा+कि] हाथी को हाँकने की रीति —मात० १२।६।८ ।

प्रणिधेयम् [प्र+नि+धा+यत्] 1. गुप्तचर भेजना 2. काम पर लगाना, उपयोग में लाना ।

प्रणयः [प्र+नी+अच्] 1. विवाह 2. मैत्री 3. अनुग्रह 4. विनय । सम० मानः प्रेम के कारण ईर्ष्या, - विमुख (वि०) 1. प्रेम के विपरीत 2. मैत्री करने में अनुत्सुक ।

प्रणयनम् [प्र+नी+ल्युट्] 1. (दण्ड) देना 2. (संप्रदाय) स्थापित करना ।

प्रणीत (वि०) [प्र+नी+क्त] 1. प्रस्तुत किया हुआ 2. कार्यान्वित किया हुआ 3. सिखलाया हुआ 4. लिखा हुआ, रचा हुआ । सम० अग्निः यज्ञ के निमित्त अभिमंत्रित की गई आग, आपः (ब० व०) पवित्र जल ।

प्रतन (वि०) [प्र+ट्यु, तुट्] पुराना, प्राचीन । सम० —हविस् (नपुं०) आहुति देने के लिए अभिप्रेत पुराना घी ।

प्रतानः [प्र+तन्+घञ्] प्रसार, विस्तार, फैलाव ।

प्रतपः [प्र+तप्+अच्] सूर्य की गर्मी, धूप ।

प्रतापः [प्र+तप्+घञ् [अन्तिम चेतावनी देना कौ० अ० ११९६ ।

प्रतमाम् (अ०) विशेष रूप से, खास तौर से ।

प्रति (अ०) [प्रथ्+डति] 1. धातु के उपसृष्ट होकर इसका अर्थ है (क) की ओर, की दिशा में (ख) वापिस, बदले में, फिर (ग) के विरुद्ध, के प्रतिकूल (घ) ऊपर 2. शब्दों के पूर्व लग कर इसका अर्थ होता है (क) समानता, (ख) विरुद्ध, विरोध में तथा (ग) प्रतिद्वन्द्विता । सम० अनुप्रासः अनुप्रास का एक भेद,—अरिः मुक़ाबले का प्रतिपक्षी,—अर्कः झूठ-मूठ का सूर्य, बनावटी सूर्य,— आर्द्र (वि०) बिल्कुल ताज़ा, आसङ्गः संयोग, संबंध, आह्वयः गूँज, प्रतिध्वनि, कर्मन् (नपुं०) व्रत और उपवास,—कारः नक़ल करना —रा० २।३७।३७ पर टीका कूलिक (वि०) विरोधी,—क्रिया व्यवहार, आचरण न हि युक्ता तवैतस्य रूपस्यैवं प्रतिक्रिया—रा० ७।१७।४ चक्रम् शत्रु की सेना,—दूतः बदले में भेजा गया दूत या संदेशवाहक, विषम् विषहर, विष को दूर करने वाली औषध,—वृषः विरोधी सांड ।

प्रतिगद् (भ्वा० पर०) उत्तर देना ।

प्रतिगरः [प्रतिगृ+अच्] ललकार का उत्तर देना —ओमित्यध्वर्युः प्रतिगरं प्रतिगृह्णाति—तै० उ० १।८।१ ।

प्रतिघातः [प्रतिहन्+णिच्+अप्] 1. ग़बन कौ० अ० २।८।२६ 2. नाश, अवमान—भाग० ५।९।१३ ।

प्रतिचारः [प्रतिचर्+घञ्] व्यक्तिगत बनाव शृंगार ।

प्रतिज्ञा (प्रति+ज्ञा+अङ+टाप्] निश्चित समझना, .. कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति भग० ९।३१ । सम० परिपालनम्,–पालनम् अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना,—पारणम् अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना ।

प्रतिदुह् (नपुं०) ताज़ा दूध ।

प्रतिदूषित (वि०) [प्रतिदुष्+णिच्+क्त] कलुषित, भ्रष्ट, मिलावटी ।

प्रतिनियमः [प्रतिनि+यम्+अच्] पृथक् नियतीकरण —सां० का० १८ ।

प्रतिनिष्क्रयः [प्रतिनिस्+क्री+अच्] प्रतिहिंसा, बदला लेना ।

प्रतिनिष्पूत (वि०) [प्रतिनिस्+पू+क्त] साफ़ किया हुआ, पछोड़ा हुआ ।

प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [प्रतिपद्+क्तिन्] 1. प्राप्ति, अवाप्ति 2. प्रत्यक्षीकरण, अवेक्षण 3. यथार्थ ज्ञान 4. स्वीकृति 5. आरम्भ 6. सङ्कल्प 7. समाचार 8. उपाय 9. बुद्धि 10. उन्नति 11. प्रयोग 12. प्रसिद्धि 13. विश्वासी सम० पराङ्मुख (वि०) ढीठ, न दबने वाला, —प्रदानम् उन्नत पद अर्पण करना ।

प्रतिपत्पाठः (पुं०) प्रतिपदा वाले अनध्याय दिन के पढ़ना —प्रतिपत्पाठशीलस्य विद्येव तनुतां गता—रा० ५ ।

प्रतिपादित (वि०) [प्रति+पद्+णिच्+क्त] प्रकट किया गया ।

प्रतिपाद्य (वि०) [प्रतिपद्+णिच्+ण्यत्] चर्चा करने के योग्य, व्यवहार में लाने के योग्य ।

प्रतिपाद्यमान (वि०) [प्रतिपद्+णिच्+य+शानच्] 1. दिया जाता हुआ, उपहृत किया जाता हुआ 2. व्यवहृत किया जाता हुआ 3. चर्चा के अन्तर्गत ।

प्रतिपानम् [प्रतिपा+ल्युट्] पीने का पानी ।

प्रतिपूर्ण (वि०) [प्रति पृ+क्त] प्रसारित, फैलाया हुआ, प्रशस्त ।

प्रतिब(व)न्धी (स्त्री०) प्रत्यारोप, प्रत्युत्तर - हृदाभिनन्द्य प्रतिवन्ध्यनुत्तरः नै० ९।१७ ।

प्रतिब्रू (अदा० पर०) 1. उत्तर देना, 2. (आ०) मुकर जाना।

प्रतिभा [प्रति+भा+क+टाप्] उचाटपना, ध्यानापकर्षण निद्रां च प्रतिभां चैव ज्ञानाभ्यासेन तत्त्ववित् —महा० १२।२७४।७।

प्रतिभोजनम् [प्रतिभुज्+ल्युट्] विहित पथ्य, नियत किया हुआ आहार।

प्रतिमागृहम् [ष० त०] मूर्तियों का घर।

प्रतियातनिद्र [(वि०) ब० स०] जागा हुआ, जागरूक।

प्रतियातबुद्धि (वि०) [ब० स०] जिसे (पिछली भूली बातें) याद आ गई हों।

प्रतियोगः [प्रति युज्+घञ्] प्रत्युत्तर, प्रत्युक्तिवचन —बु०च० ४।४१।

प्रतियोद्धृ [प्रति+युध्+तृच्] युद्ध में प्रतिपक्षी।

प्रतिरूढ (वि०) [प्रति+रुह्+क्त] 1: प्रविष्ट, अधिकृत 2.. स्थापित—भाग० १०।३०।३।

प्रतिवक्तव्य (वि०) [प्रति+वच्+तव्यत्] 1. उत्तर दिये जाने के योग्य 2. वादविवाद किये जाने के योग्य।

प्रतिविधातव्यम् (भाव० क्रि०) ध्यान (सावधानी) रखना चाहिए।

प्रतिविशेषः [प्रा० स०] विशेषता, विलक्षणता!

प्रतिव्याहारः [प्रति वि+आ+हृ+घञ्] उत्तर, जवाब।

प्रतिशीर्षकम् [प्रा० स०] निष्कृतिधन, वन्दी मोचन धन। रा० २।५५ पर मल्लि०।

प्रतिश्रयः [प्रति+श्रि+अच्] आश्रम, मठ (जहां सदाव्रत लगा रहता है)।

प्रतिषेधः [प्रति+सिध्+घञ्] 1. निषेधात्मकता का ध्यान दिलाना 2. बाधा।

प्रतिष्ठा [प्रति+स्था+अङ्+टाप्] व्रत की पूर्ति।

प्रतिष्ठापनम् [प्रति+स्था+णिच्+ल्युट्] समर्थन।

प्रतिष्ठासु (वि०) [प्रति+स्था+सन्+उ] कहीं पर बस जाने का इच्छुक।

प्रतिष्ठित (वि०) [प्रति+स्था+णिच्+क्त] पूरा किया हुआ महा० ३।८५।११४।

प्रतिसंयात (वि०) [प्रतिसम्+या+क्त] आक्रमणकारी, हमला करने वाला।

प्रतिसंरुद्ध (वि०) [प्रतिसम्+रुध+क्त] संकुचित किया हुआ।

प्रतिसंक्रमः [प्रतिसम्+क्रम्+अच्] [विच्छेद विघटन।

प्रतिसङ्ख्यानम् [प्रतिसम्+ख्या+ल्युट्] 1. किसी बात का शान्तिपूर्वक विचार करना 2. सांख्य दर्शन।

प्रतिसंधानम् [प्रतिसम्+धा+ल्युट्] 1. स्मृति, याद 2. उपचार, चिकित्सा।

प्रतिसमासित (वि०) [प्रतिसमास+इतच्] समीकृत, बराबर किया हुआ।

प्रतिसरबन्धः [ष० त०] किसी भी मंगलमय कार्य के आरंभ के अवसर पर हाथ की कलाई में राखी या पहुँची (पुनीत कलावा) बाँधना।

प्रतिस्वम् (अ०) एक-एक करके, एकैकशः।

प्रतिहत (वि०) [प्रति+हन्+क्त] 1. चौंधियायी हुई (आँखें) 2. कुण्ठित, ठूंठा।

प्रतिहारः [प्रति+हृ+घञ्] आगमन की सूचना देना —रा० ७।१।७।

प्रती (प्रति+इ—अदा० पर०) (शत्रु का) मुकाबला करना,—ससैन्यानहं तांश्च प्रतीयां रणमूर्धनि महा० ५।१७२।१३।

प्रतीतात्मन् [प्रति+इत+आत्मन्] विश्वस्त, दृढ़।

प्रतीकम् [प्रति+कन्+नि० दीर्घः] 1. चिह्न 2. प्रतिलिपि। सम० **दर्शनम्** चिह्नपरक संकल्पना।

प्रतीचीन (वि०) [प्रत्यञ्च+ख, अलोपः, नलोपः, दीर्घश्च] अन्तर्मुखी, अन्दर की ओर मुड़ा हुआ।

प्रतीपदीपकम् (नपुं०) दीपक अलंकार का एक भेद।

प्रतूलिका (स्त्री०) एक प्रकार की शय्या।

प्रत्यक्ष (वि०) [अक्षणः प्रति] 1. आँखों को जो दिखाई दे, दर्शनीय 2. नयनगोचर, 3. स्पष्ट, साफ़। सम०—**पर** (वि०) प्रत्यक्ष को ही उच्चतम प्रमाण मानने वाला, —**विधानम्** स्पष्ट विधि, स्पष्ट आदेश, **विषयीभू** दृष्टिपरास के अन्तर्गत आना।

प्रत्यक्षरम् (अ०) प्रत्येक अक्षर पर—प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रपञ्च वासव०।

प्रत्यक्प्रवण (प्रत्यञ्च्+प्रवण) (वि०) आत्मोन्मुख, एक आत्मा का भक्त।

प्रत्यभिज्ञादर्शनम् (नपुं०) शैवदर्शन पर लिखा गया एक ग्रन्थ।

प्रत्यभिनन्द् (भ्वा० चुरा० पर०) 1. बदले में नमस्कार करना 2. स्वागत करना।

प्रत्यभ्युत्थानम् (नपुं०) [प्रति+अभि+उद्+स्था+ल्युट्] अतिथि का स्वागत करने के लिए अपने आसन से उठना।

प्रत्ययः [प्रति+इ+अच्] इन्द्रियों का कार्य—सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे भाग० ८।३।१४।

प्रत्यर्चनम् [प्रति+अर्च्+ल्युट्] बदले में नमस्कार करना।

प्रत्यवकर्शन (त्रि०) [प्रति+अव+कृश्+ल्युट्] विफलकर, संहारकारी।

प्रत्यवस्थापनम् [प्रति+अव+स्था+णिच्+ल्युट्] सुखद, विश्रान्तिदायक, स्फूर्तिजनक।

प्रत्यवेक्षणा (स्त्री०) [प्रति+अव+ईक्ष्+युच्+टाप्] पाँच प्रकार के ज्ञानों मे से एक (बुद्ध० में)।

प्रत्यस्त (वि०) [प्रति+अस्+क्त] फेंका हुआ, छोड़ा हुआ—प्रत्यस्तव्यसने माल० १०।२३।

प्रत्याचक्षाणक (वि०) [प्रति+आ+चक्ष्+शानच्, स्वार्थे कन्] निराकरण करने की इच्छा वाला, आक्षेप करने का इच्छुक।

प्रत्यापन्न (वि०) [प्रति+आ+पद्+क्त] 1. वापिस आया हुआ, फिर से एकत्र किया हुआ 2. वहकाया हुआ, बदले हुए मन वाला, विपरीत दृष्टिकोण वाला। —महा० १२।२९१।८।

प्रत्यासत्तिः (स्त्री०) [प्रति+आ+सद्+क्तिन्] प्रसन्नता हर्षोत्फुल्लता।

प्रत्याहारः [प्रति+आ+हृ+घञ्] प्रस्तावना या आमुख, का विशेष भाग (नाट्य०)।

प्रत्युत्पन्नजातिः (स्त्री०) गुणासहित समीकरण।

प्रत्युपस्थित (वि०) [प्रति+उप+स्था+क्त] 1. समूहगत 2. एकत्र होना, दबाव होना (जैसे मूत्रोत्सर्ग का) 3. विमुख, विपरीत हुआ—श्रेयसि प्रत्युपस्थिते महा० १२।२८, ७५७।

प्रत्यूढ (वि०) [प्रति+वह्+क्त] 1. प्रत्याख्यात, अस्वीकृत 2. उपेक्षित 3. मात दिया हुआ।

प्रथमकविः (पुं०) वाल्मीकि का विशेषण।

प्रदक्षिण (वि०) [प्रा० स०] चतुर, दक्ष, निपुण—तानुवाच विनीतात्मा सूतपुत्रः प्रदक्षिणः—रा० २।१६।५।

प्रदा (जुहो० उभ०) ऋण परिशोध करना।

प्रदानम् [प्र+दो+ल्युट्] खण्डन करना, निराकरण करना असदेव हि धर्मस्य प्रदानं धर्म आसुरः—महा० १३।४५।८।

प्रदानकृपण (वि०) [प्र+दा+ल्युट्, प्रदाने कृपणः—त० स०] दरिद्र, उपहारादि समय पर न देने वाला।

प्रदेशः (पुं०) [प्र+दिश्+घञ्] स्वातंत्र्य के क्षेत्र में एक बाधा (जैन०)।

प्रदेहनम् [प्र+दिह्+ल्युट्] लीपना, पोतना।

प्रधनाङ्गणम् [प० त०] युद्ध का अग्रभाग।

प्रधानकारणवादः (पुं०) सांख्य का सिद्धान्त कि प्रधान ही मूल कारण है।

प्रधानवादिन् (वि०) जो व्यक्ति सांख्य के प्रधानकारण को मानने वाला है।

प्रधावितिका (स्त्री०) बच कर निकल भागने का मार्ग।

प्रपञ्चः [प्र+पञ्च्+घञ्] हास्यास्पद वार्तालाप (नाट्य०)।

प्रपतनम् [प्र+पत्+ल्युट्] आक्रमण, धावा।

प्रपुराण (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त पुराना।

प्रपूरणम् [प्र+पृ+ल्युट्] धनुष की डोरी को झुकाना, और बाँध देना।

प्रबुद्धता [प्र+बुध्+क्त+ता] प्रज्ञा, बुद्धि।

प्रभग्न (वि०) [प्र+भज्+क्त] टूट कर टुकड़े-टुकड़े हुआ, कुचला हुआ, हराया हुआ।

प्रभद्रक (वि०) अत्यन्त सुन्दर।

प्रभवः [प्र+भू+अप्] समृद्धि,—प्रभावार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्—महा० १२।१०९।१०।

प्रभा [प्र+भा+अङ्+टाप्] पद्मरागमणि। सम० —भिद् (वि०) उज्ज्वल—कि० १६।५८।

प्रभातकरणीयम् [स० त०] प्रातः काल अनुष्ठेय।

प्रभावन (वि०) [प्र+भू+णिच्+ल्युट्] 1. प्रमुख, प्रभावशाली 2. सृजनात्मक शक्ति, 3. मूल 4. खोलने वाला—तदस्त्रं तस्य वीरस्य स्वर्गमार्गप्रभावनम्—रा० ४।१७।८।

प्रभाषित (वि०) [प्र+भाष्+क्त] कथित, उद्घोषित।

प्रभुसम्मित (वि०) स्वामी के समान—यद्वेदात्प्रभुसम्मितात्—सा० द०।

प्रभुत्वाक्षेपः (पु०) [प० त०] आदेश के वचन द्वारा उठाया गया आक्षेप—का० २।१३८।

प्रभेदः [प्र+भिद्+घञ्] उद्गम स्थान (जैसे नदी का)।

प्रमाथिन् (वि०) [प्र+मथ्+इनि] नाड़ियों में से रसों का उत्पादक।

प्रमद्वरा (स्त्री०) रुरु नामक मुनि की पत्नी।

प्रमहस् (वि०) [ब० स०] बड़ा शक्तिशाली, प्रतापी, तेजस्वी।

प्रमाणम् [प्र+मा+ल्युट्] एक प्रकार की माप (संगीत०)। जैसे द्रुतप्रमाण।

प्रमाणानुरूप (वि०) किसी व्यक्ति की शारीरिक शक्ति और डीलडौल के अनुरूप।

प्रमाणतः (अ०) [प्रमाण+तसिल्] माप या तोल के अनुसार।

प्रमात्वम् (नपुं०) निर्विकल्प प्रत्यक्ष ज्ञान की यथार्थता।

प्रमितिः [प्र+मा+क्तिन्] प्रकटीकरण, अभिव्यक्ति।

प्रमोदः [प्र+मुद्+घञ्] 1. गुणी पुरुष का हर्ष, उल्लास (जैन०) 2. एक वर्ष का नाम।

प्रयत्नगौरवम् [ष० त०] यत्नों की गहनता, परिश्रम की गहराई।

प्रयतात्मन्, } (वि०) पुनीत मन वाला, जिसने अपने मन
प्रयतमानस } को संयत कर लिया है। भग० ९।२६।

प्रयतपाणि (वि०) [ब० स०] सम्मान में हाथ जोड़े हुए।

प्रयन्तृ (पुं०) चालक, उकसाने वाला, भड़काने वाला प्रेरक।

प्रया (अदा० पर०) ग्रस्त होना, अपने ऊपर लेना, उठाना।

प्रयुक्त (वि०) [प्रयुज्+क्त] 1. प्रकल्पित, उपाय द्वारा काम चलाया हुआ 2. खींची हुई (जैसे तलवार)।

प्रयुक्तसत्कार (वि०) [ब० स०] जिसका स्वागत सत्कार किया गया है—प्रयुक्तसत्कारविशेषमात्मना न मां परं संप्रतिपत्तुमर्हसि—कु० ५।

प्रयोक्तृ (पुं०) [प्र+युज्+तृच्] प्रापक, समाहर्ता।

प्रयोगः [प्र+युज्+घञ्] 1. उपयोग में लाना, इस्तेमाल करना, काम 2. यथावत् रूप, सामान्य उपयोग 3. फेंकना, फेंक कर मार करना, (विप० संहार) 4. प्रदर्शन, अनुष्ठान 5. अभ्यास, परीक्षणात्मक उपयोग 6. प्रक्रिया क्रम 7. कार्य 8. सस्वर पाठ 9. आरम्भ 10. योजना, तरकीब 11. साधन, उपाय। सम० —ग्रहणम् व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त करना, -चतुर (वि०), -निपुण (वि०) व्यवहार में प्रयुक्त करने में दक्ष, स्वयं अभ्यास करने में होशियार,—शास्त्रम् कल्पसूत्र, -विद् (वि०) जो किसी वस्तु के व्यवहार को जानता है।

प्रलम्बबाहु } (वि०) [ब० स०] जिसकी भुजाएँ
प्रलम्बभुज } लम्बी हैं।

प्रलयः [प्र+ली+अच्] 1. आध्यात्मिक लय 2. मूर्छा, बेहोशी।

प्रलापिता [प्रलाप+इनि+तल्+टाप्] प्रेम संबंधी बातचीत।

प्रलुप्त (वि०) [प्र+लुप्+क्त] लूटा हुआ।

प्रलुब्ध (वि०) [प्र+लुभ्+क्त] 1. ठग, वञ्चक 2. लोभ में फँसाया हुआ।

प्रलोपः [प्र+लुप्+घञ्] नाश, संहार।

प्रवणम् [प्रु+ल्युट्] पहुँच, पैठ।

प्रवणायितम् [प्रवण+क्यच्+क्त] इच्छा, झुकाव।

प्रवादः [प्र+वद्+घञ्] झूठा आरोप - शि० १। ४४।

प्रवर (वि०) [प्र+वृ+अप्] 1. मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम 2. सबसे बड़ा,—रः (पुं०) 1. बुलावा 2. अग्निहोत्र के अवसर पर ब्राह्मण द्वारा अग्नि का विशेष आवाहन 3. पूर्वज 4. कुल, वंश 5. गोत्र प्रवर्तक ऋषि 6. सन्तति 7. चादर,—रा (स्त्री०) गोदावरी में गिरने वाली एक नदी,—रम् (नपुं०) अगर की लकड़ी, चंदन। सम०—धातुः मूल्यवान् धातु, -ललितम् एक छन्द का नाम।

प्रवासपर (वि०) परदेश में रहने का व्यसनी।

प्रवास्य (वि०) [प्र+वस्+णिच्+ण्यत्] निर्वासित किये जाने के योग्य।

प्रवातशयनम् (नपुं०) ऐसे स्थान पर सोना जहाँ खिड़की या वातायनों के द्वारा हवा खूब आती जाती हो।

प्रविचारः [प्र+वि+चर्+घञ्] विवेक, प्रभाग, जाति, प्रकार।

प्रविचारित (वि०) [प्रविचार+इतच्] परीक्षित, सावधानतापूर्वक विचार किया गया।

प्रविरत (वि०) [प्र+वि+रम्+क्त] जो किसी बात से पराङ्मुख हो गया हो, दूर रहने वाला।

प्रवेशः [प्र+विश्+घञ्] 1. रीति, विन्यास 2. रोजगार जैसा कि (मुसलप्रवेशः) में।

प्रविषयः (पुं०) क्षेत्र, परास, पहुँच।

प्रवृत्त (वि०) [प्र+वृ+क्त] 1. बहने वाला—प्रवृत्तमुदकं वायु · महा० १४।४६।१२ 2. आघात करने वाला, चोट पहुँचाने वाला 3. परिचारित, घुमाया हुआ। सम०—चक्रता (स्त्री०) प्रभुसत्ता—याज्ञ० १।२६६।

प्रवृत्तिः[प्र+वृत्+क्तिन्] 1. गुणक (गणित०) 2. उदय, उद्गम 3. प्रकट होना 4. आरम्भ 5. आचरण 6. काम, रोजगार 7. प्रयोग 8. सार्थकता, अर्थ 9. समाचार 10. भाग्य, क़िस्मत 11. प्रत्यक्ष ज्ञान। सम०—पुरुषः समाचारों का अभिकर्ता. -लेखः अध्यादेश, विज्ञानम् बाहरी संसार का ज्ञान।

प्रव्याहरणम् [प्र+वि+आ+हृ+ल्युट्] वाक्शक्ति।

प्रव्रज्यायोगः [ष० त०] ज्योतिष का एक योग जो संन्यास लेने का निर्देश करता है।

प्रशंस् (भ्वा० आ०) भविष्यवाणी करना।

प्रशंसालापः [ष० त०] अभिनन्दन, जयघोष।

प्रशस्तिः [प्र+शंस्+क्तिन्] प्रचार, विज्ञापन।

प्रशमनम् [प्र+शम्+ल्युट्] शान्ति की स्थापना (किसी राजनीतिक संकट के पश्चात्)।

प्रशून (वि०) [प्र+शु+क्त, तस्य नत्वम्] सूजा हुआ।

प्रश्नः [प्रच्छ+नङ्] 1. सवाल, पृच्छा, पूछताछ 2. न्यायिक पूछताछ 3. विवादास्पद बिन्दु 4. समस्या 5. किसी पुस्तक का छोटा अध्याय। सम०—कथा पूछताछ पर समाप्त होने वाली कहानी,—वादिन् ज्योतिषी, आगे होने वाली बात बताने वाला,—विचारः भविष्यकथन विषयक ज्योतिष की एक शाखा।

प्रसक्त (वि०) [प्र+सञ्ज्+क्त] अत्यन्त आसक्त, किसी बात से चिपका हुआ।

प्रसङ्गः [प्र+सञ्ज्+घञ्] 1. बढ़ाया हुआ प्रयोग -- अन्यत्र कृतस्यान्यत्रासक्तिः प्रसङ्गः- मी० सू० १२।१।१ पर शा० भा० 2. गौण घटना या कथावस्तु। सम०—समः तर्कसंगत हेत्वाभास जहाँ स्वयं 'प्रमाण' भी सिद्ध किया जाता है।

प्रसञ्जित (वि०) [प्र+सञ्ज्+णिच्+क्त] सत्ताप्राप्त, अस्तित्व में आया हुआ—प्रसह्य वर्षासु ऋतौ प्रसञ्जिते— नै० ९।९६।

प्रसादः [प्र+सद्+घञ्] भोजन पचने के पश्चात् उसका पोषक रस।

प्रसेदिवस्(वि०)[प्र+सद्+वस्] जो प्रसन्न हो चुका है।

प्रसन्दानम् [प्र+सम्+दो+ल्युट्] रज्जु, रस्सी, बेड़ी।

प्रसह्य (अ०) [प्र+सह्+ल्यप्] 1. जीत कर 2. अवश्य ही, निश्चित रूप से। सम०- कारिन् (वि०) भीषण कार्य करने वाला प्रबल वेग से क्रियाशील।

प्रसवकालः [ष० त०] प्रसूतिकाल, बच्चा जनने का समय।

प्रसूतिः [प्र+सू+क्तिन्) उद्भव, उत्पत्ति, कारण–कि० ४।३२।

प्रसृ (भ्वा० पर०) 1. विषण्ण होना (जैसा कि शरीर के तीनों दोषों का) 2. अनुसरण करना 3. संप्रसारण अर्थात् अर्धस्वरों को उसके संवादी स्वर में बदलना।

प्रसरः [प्र+सृ+अप्] परास (जैसा कि 'दृष्टिप्रसर' में)।

प्रसारः [प्र+सृ+घञ्] 1. व्यापारी की दुकान 2. (धूल) उड़ाना 3. फैलाव।

प्रसारितमात्र (वि०) [ब० स०] जिसके अंग बहुत फैले हुए हों।

प्रसृप् (भ्वा० पर०) छा जाना, फैल जाना (जैसे कि अन्धकार)।

प्रस्कन्न (वि०) [प्र+स्कन्द्+क्त] आक्रान्त, जिसके ऊपर धावा बोला गया हो।

प्रस्तरप्रहरणन्यायः [प० त०] मीमांसा का व्याख्याविषयक एक सिद्धान्त जिसके अनुसार करण द्वारा प्रतिपादित विषयवस्तु की अपेक्षा कर्म द्वारा विहित वर्णन अधिक प्रबल होता है।

प्रस्तावः [प्र+स्तु+घञ्] 1. व्याख्यान का विषय, शीर्षक 2. नाटक की प्रस्तावना 3. साम के परिचायक शब्द।

प्रस्तोतृ (पुं०) [प्र+स्तु+तृच्] उद्गाता की सहायता करने वाला यज्ञीय पुरोहित, ऋत्विज।

प्रस्तोभः [प्र+स्तुभ्+घञ्] संदर्भ, उल्लेख—भाग० ९।१३।२६।

प्रस्थानम् [प्र+स्था+ल्युट्] 1. दर्शनशास्त्र की एक शाखा 2. धार्मिक भिक्षावृत्ति, प्रवज्या—सप्रस्थानाः क्षात्रधर्माः विशिष्टाः–महा० १२।६४।२२। सम० मङ्गलम् यात्रा आरंभ करते समय माङ्गलिक प्रक्रियाएँ।

प्रस्नवः [प्र+स्नु+अप्] 1. धारा (जैसे कि दूध की) 2. [ब० व०] आँसू 3. मूत्र।

प्रस्पर्धिन् (वि०) [प्र+स्पर्धा+इनि] होड़ करने वाला, बराबरी करने वाला।

प्रस्फार (वि०) [प्र+स्फर्+घञ्] सूजा हुआ, फूला हुआ।

प्रहतमुरज (वि०) [ब० स०] जहाँ पर ढोल बजते हों —संगीताय प्रहतमुरजाः–मेघ०।

प्रहतिः [प्र+हन्+क्तिन्] आघात, चोप, थप्पड़।

प्रहा (जुहो० पर०) छोड़ देना, हार जाना।

प्रहि (स्वा० पर०) मुड़ना, उन्मुख होना।

प्रहितङ्गम (वि०) संदेश लेकर जाने वाला।

प्रहरणकलिका (स्त्री०) एक छन्द का नाम।

प्रहारः [प्र+हृ+घञ्] 1. युद्ध 2. हार (गले में पहनने का)।

प्रांशुः [ब० स०] लम्बे क़द का व्यक्ति, क़द्दावर—प्रांशुलभ्ये – रघु० १।२। सम०– प्राकार (वि०) जिसकी ऊँची दीवारें हों।

प्राकारधरणी [स० त०] दीवार के ऊपर बना चबूतरा।

प्राकारस्थ (वि०) [स० त०] जो फ़सील पर खड़ा हो।

प्राकृतमानुषः [क० स०] साधारण मनुष्य।

प्राक्तन (वि०) [प्राक्+तन्] 1. पुराना, पिछला, भूत काल का 2. अतीत समय का, पहला, पहले जन्म का, नम् भाग्य। सम० कर्मन् (नपुं०) पूर्वजन्म में किया गया कार्य, भाग्य,—जन्मन् (नपुं०) पूर्व जन्म।

प्रागल्भी [प्रगल्भ++अण्+ङीप्] 1. साहस 2. दृढ़ता।

प्रागल्भ्यम् (नपुं०) [प्रगल्भ+ष्यञ्] प्रगल्भता, वीरता चतुरता। सम० बुद्धिः (स्त्री०) निर्णय करने का साहस, न्याय-साहस।

प्रागुण्यम् [प्रगुण+ष्यञ्] सही स्थिति, यथार्थ दशा, दिशा, अनुदेश।

प्राघूर्णिका (स्त्री०) अतिथि सत्कार, पाहुनों का स्वागत।

प्राच् (वि०) [प्र+अञ्च्+क्विन्] 1. सामने का, आगे का 2. पूर्वी 3. पहला। सम० उत्पत्तिः (किसी रोग का) पहला दर्शन, वचनम् प्राचीन उक्ति, पहले का कथन।

प्राचार (वि०) सामान्य प्रथाओं के विरुद्ध, साधारण अनुष्ठान और संस्थानों के विपरीत।

प्राचार्यः (पुं०) [प्रकृष्ट आचार्यः] 1. अध्यापक का अध्यापक 2. सेवानिवृत्त अध्यापक।

प्राचीनमूल (वि०) [ब० स०] जिसकी जड़ें पूर्व दिशा की ओर मुड़ी हुई हों।

प्राच्यपदवृत्तिः (स्त्री०) एक नियम जिसके अनुसार 'अ' से पूर्व किन्हीं विशेष अवस्थाओं में 'ए' अपरिवर्तित अवस्था में रहता है।

प्राच्यवृत्तिः (स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।

प्राजापत्यम् [प्रजापति+ष्यञ्] 1. प्रजननात्मक शक्ति 2. एक यज्ञ का नाम।

प्राज्ञ (वि०) [प्रज्ञ एव–स्वार्थे अण्] 1. बुद्धिमान् 2. समझदार, विद्वान्, ज्ञः (पुं०) 1. बुद्धिमान् या विद्वान् 2. एक प्रकार का तोता 3. व्यक्तिगत बुद्धिमत्ता 4. परमेश्वर।

प्राज्ञता, **प्राज्ञत्वम्** } [प्राज्ञ्+तल्, त्व, वा] बुद्धिमत्ता।

प्राणः [प्र+अन्+घञ्] 1. जीवन, जान 2. आहार, अन्न। सम० कर्मन् (नपुं०) जीवन कार्य, परिक्षीण (वि०) जिसके जीवन का अन्त निकट है, परित्राणम् किसी के जीवन की रक्षा करना, बचाना,- वल्लभा प्राणप्रिया,- विद्या प्राणायाम की विद्या।

प्रातः (अ०) [प्र+अत्+अरन्] 1. पौ फटने पर, प्रभात वेला में, तड़के, सवेरे 2. कल सवेरे। सम० अनुवाकः

वह सूक्त जिससे प्रातः सवन का उपक्रम होता है, —चन्द्रः प्रभातकाल का चन्द्रमा।

प्रातिकामिन् (पुं०) सेवक या दूत।

प्रातिनिधिकः [प्रतिनिधि+ठक्] 1. स्थानापन्न 2. प्रतिताधिकार, प्रतिनिधित्व।

प्रातीप्यम् [प्रतीप्+ष्यञ्] शत्रुता, विरोध।

प्रात्यक्षिक (वि०) [प्रत्यक्ष+ठक्] आँखों को दिखाई देने वाला।

प्रादेशमात्र (वि०) [प्रदेशमात्र+अण्] जरा सा, विचार मात्र देने के लिए, —म् (नपुं०) एक बालिस्त की माप, पूरी अंगुलियों को फैलाकर अंगूठे के किनारे से तर्जनी अंगुली के किनारे तक की माप—उपविश्य दर्भाग्रे प्रादेशमात्रे प्रच्छिनत्ति न नखेन खादिरगृह्यसू० २।२।

प्राध्व (वि०) [प्रकृष्टोऽध्व अच् समासः] 1. यात्रा पर गया हुआ 2. पूर्वोदाहरण, निदर्शन 3. बन्धन।

प्रान्तः [प्रकृष्टोऽन्तः] 1. किनारा, गोट 2. कोण (आँख, ओष्ठ आदि का) 3. सीमा 4. अन्तिम किनारा। सम० **निवासिन्** सीमान्त प्रदेश का रहने वाला —**भूमौ** (अ०) अन्त में, आखिर कार।

प्रापणम् [प्र+आप्+ल्युट्] व्याख्या, विवरण, चित्रण।

प्रापिपयिषु (वि०) [प्र+आप्+णिच्+सन्+उ] पहुँचान की इच्छा वाला।

प्राप्त (वि०) [प्र+आप्+क्त] किसी पूर्वोदाहरण के अनुसार या पूर्वतर्क का अनुगामी। सम०—**क्रम** (वि०) योग्य, उपयुक्त,—**भाव** (वि०) 1. बुद्धिमान् 2. सुन्दर।

प्राप्तिः (स्त्री०) [प्र+आप्+क्तिन्] 1. किसी वस्तु का निरीक्षण करने पर लगाया गया अनुमान 2. (ज्योति० में) ग्यारहवां चान्द्रघर।

प्राप्य (अ०) [प्र+आप्+ल्यप्] प्राप्त करके, उपलब्ध करके। सम० **कारिन्** (वि०) कार्य में नियुक्त होकर ही प्रभावशाली, **रूप** (वि०) अनायास ही प्राप्त होने वाला।

प्रायणम् [प्र+अय्+ल्युट्] दूध में तैयार किया हुआ भोजन।

प्रायत्यम् [प्रयत+ष्यञ्] पवित्रता, स्वच्छता।

प्रायुस् (नपुं०) बढ़ी हुई जीवन शक्ति, दीर्घतर जीवन।

प्रारब्ध (वि०) [प्र+आ+रभ्+क्त] आरंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ। सम०—**कर्मन्**, **कार्य** (वि०) जिसने अपना कार्य आरंभ कर दिया है, **कर्मन्** (नपुं०) वह कार्य जो फल देने लगा है।

प्रार्जयितृ (वि०) [प्र+अर्ज्+णिच्+तृच्] जो अनुदान देता है।

प्रार्थ् (चुरा० आ०) आश्रय लेना, सहारा लेना।

प्रार्थ्य (वि०) [प्र+अर्थ+ण्यत्] 1. चाहने योग्य 2. वाञ्छनीय।

प्रालेयम् [प्रलय+अण्] प्रलय से सम्बन्ध रखने वाला।

प्रावर्तिक (वि०) [प्रवृत+ठक्] वह क्रम जो किसी कार्य पद्धति में सर्व प्रथम अपनाया जाकर बाद में पश्चवर्ती सभी कार्यों में अपनाया जाय, जिससे कि कार्य में पद्धति की एकता बनी रहे।

प्रावादुकः [प्र+वद्+उकञ्] वाद-विवाद में प्रति पक्षी।

प्रासादः [प्र+सद्+घञ्] 1. महल, भवन 2. राज भवन 3. मन्दिर 4. चबूतरा 5. वेदिका। सम०—**गर्भः** महल का आन्तरिक कमरा,—**शिखरः** महल की चोटी।

प्राह्वनीय (वि०) [प्र+आ+ह्वे+अनीय] अतिथि की भाँति स्वागत किये जाने के योग्य।

प्राहुणः [प्र+आ+घूर्ण्+क] अतिथि, पाहुना।

प्रिय (वि०) [प्री+क] 1. प्यारा, अनुकूल 2. सुखद, 3. अभिलषित 4. भक्त, अनुरक्त,—**यः** (पुं०) 1. प्रेमी, पति 2. हरिण 3. जामाता,—**या** (स्त्री) 1. पत्नी 2. महिला 3. छोटी इलायची,—**यम्** (नपुं०) 1. प्रेम 2. कृपा, प्रसाद 3. सुखद समाचार। सम०— **आलापिन्** (वि०) मिष्टभाषी, मीठा बोलने वाला, **असु** (वि०) जिसे अपनी जान बहुत प्यारी हो, जीवन को चाहने वाला, **कलह** (वि०) झगड़ालू,—**जीविता** प्राणों का प्रेम,—**संप्रहार** (वि०) मुकदमे बाजी को पसंद करने वाला।

प्रियंवद (वि०) [प्रियं ददाति—दा+श] अभीष्ट और सुखद वस्तु का दाता।

प्रीतिः [प्री+क्तिच्] 1. प्रबल इच्छा 2. संगीत की श्रुति। सम० **संयोगः** मैत्री संबन्ध, **संगतिः** मित्रों का सम्मिलन।

प्रेतः [प्र+इ+क्त] 1. नरक में रहने वाला 2. इस संसार से गया हुआ, मृत 3. पितर। सम०—**अयनः** एक विशेष नरक,—**पात्रम्** और्ध्वदेहिक क्रिया के अवसर पर प्रयुक्त किया जाने वाला बर्तन।

प्रेक्षणालम्भम् (नपुं०) (स्त्रियों की ओर) देखना या (उन्हें) स्पर्श करना।

प्रेक्षा [प्र+इक्ष्+अ+टाप्] कान्ति, आभा प्रेक्षा क्षिपन्तं हरितोपलाद्रेः भाग० ३।८।२४। सम० **पूर्वम्** (अ) देखभाल कर, जान बूझ कर, **प्रपञ्चः** रंगमञ्च पर खेला जाने वाला नाटक।

प्रेमार्द्र (वि०) [तृ० त० स०] प्रेम से पसीजा हुआ।

प्रैयकम् (नपुं) एक प्रकार का चमड़ा कौ० अ० २।११।२९।

प्रैयरूपकम् (नपुं०) सौन्दर्य, लावण्य नै० ५।६६।

प्रोच्चल् (भ्वा० पर०) यात्रा पर प्रस्थान करने वाला।

प्रोच्चाटना [प्र+उत्+चट्+णिच्+युच्+टाप्] 1. (भूतप्रेतादि को) भगाना 2. विनाश।

प्रोतघन (वि०) [ब० स०] बादलों में डूबा हुआ।
प्रोतशूल (वि०) [ब० स०] शलाका पर रक्खा हुआ।
प्रोत्तान (वि०) [प्र+उत्+घञ्] फैलाया हुआ।
प्रोत्ताल (वि०) [प्रकर्षेणोत्तालः--प्रा० स०] ऊँचे स्वर से बोलने वाला।
प्रोदर (वि०) [ब० स०] बड़े पेट वाला।
प्रोद्वीचि (वि०) [प्रा० स०] लहराता हुआ, घटबढ़ होता हुआ।
प्रोन्नमित (वि०) [प्र+उत्+नम्+णिच्+क्त] उठाया हुआ, उभारा हुआ।
प्रोर्णु (अदा० उभ०) अच्छी तरह ढक लेना, चादर लपेट लेना।
प्रौढ (वि०) [प्र+ऊढ – वह्+क्त] 1. विशाल, बड़ा 2. व्यस्त, घिरा हुआ। सम०—प्रियः साहसी और विश्वास पात्र स्त्री,—मनोरमा सिद्धान्त कौमुदी पर एक टीका।
प्रौढिः [प्र+वह्+क्तिन्] औत्सुक्य, उत्कटता, (चरित्र की) गहराई।
प्रौक्त (वि०) अर्थ सम्पन्न, अर्थ युक्त।
प्लक्ष द्वारम् (नपुं०) पार्श्वद्वार, भवन के पक्ष का द्वार। —म० पु० २६४।१५।
प्लवः [प्लु+अच्] 1. एक जलचर 2. एक संवत्सर का नाम। सम०—कुम्भः तैराक की सहायता के लिए घड़े जैसा बर्तन।
प्लावयितृ (वि०) [प्लु+णिच्+तृच्] मल्लाह, नाविक।
प्लुतमेदः (पुं०) एक प्रकार का संगीत माप।

फ

फणभरः [फणं बिभर्तीति-भृ+अच्] साँप।
फणितल्पगः (पुं०) विष्णु का विशेषण।
फणिर्जकः (पुं०) तुलसी का एक भेद, सफेद मरवा।
फण्डः (पुं०) हरी प्याज़।
फलम् [फल्+अच्] 1. क्षतिपूर्ति, प्रतिपूर्ति 2. स्कन्धास्थि, अंसफलक 3. उपज 4. फल 5. परिणाम 6. कृत्य 7. उद्देश्य, प्रयोजन 8. उपयोग, लाभ 9. सन्तान, 10 (तलवार का) फलक 11. तीर की नोक। सम० —अधिकारः परिश्रम का दावा,—अपूर्वम् यज्ञ का अदृष्ट परिणाम,—उपयोगः फल का आनन्द लेना, —ग्रन्थः 'ग्रहों का मानवकुल पर प्रभाव' विषयक ज्योतिष का एक ग्रन्थ,—भावना परिणाम का अधिग्रहण,—भुज् (पुं०) बन्दर, मूलम् (नपुं०) फल और जड़ें,—वर्तिः (स्त्री०) कपड़े की बनी बत्ती जिसे चिकना करके अनीमा के लिए गुदा में रक्खा जाता है,—स्थापनम् 'सीमन्तोन्नयन' नामक संस्कार।
फलकम् [फल+कन्] 1. तख्ता, फट्टा 2. टिकिया 3. कूल्हा 4. हाथ की हथेली 5. लाभ 6. बाण का मुंह 7. आर्तव, ऋतुस्राव 8. लकड़ी का पटड़ा 9. (कपड़ा बुनने के लिए) वृक्ष की छाल सन आदि। सम०—परिधानम् वस्त्रों के रूप में वृक्षछाल धारण करना।
फलिः (पुं०) [फल्+इ] एक प्रकार की मछली।
फल्गुवाक् मिथ्यापन, झूठपना।
फालिका (स्त्री०) ग्रास, टुकड़ा—मृदुव्यंजनमांसफालिकाम् —नै० १६।८२।
फाल्गुनेयः [फल्गुनी+ढक्] अर्जुन का पुत्र, अभिमन्यु।
फिट्सूत्रम् व्याकरण का एक ग्रन्थ जिसके रचयिता शान्तनवाचार्य थे।
फुट्टिका (स्त्री०) एक प्रकार का बुना हुआ कपड़ा।
फुत्कृतिः (स्त्री०) [फुत्क+क्तिन्] फूंक मारना, 'सीसी' शब्द करना।
फुलिङ्गः (पुं०) [आं० फिरङ्ग] उपदंश, गर्मी का रोग।
फुल्लवदन (वि०) [ब० स०] प्रसन्नमुख, खुश दिखाई देने वाला।
फेञ्जकः (पुं०) एक प्रकार का पक्षी।
फेनधर्मन् (वि०) क्षणभंगुर, क्षणस्थायी, बुलबुले की भांति अस्थिर—महा० ३।३५।२।
फेनायितम् [ना० धा० फेन+क्यच्+क्त] मुख के पार्श्ववर्ती भाग से की गई हाथी की कड़कयुक्त गर्जन, चिंघाड़ मात० २।१३।
फेलुकः अंडकोष, फोता, मुष्क।

बकः [वङ्क्+अच्, पृषो०] खान से धातुओं तथा अन्य खनिज पदार्थों को निकालने का एक उपकरण। सम०—**चिञ्चका,—चिञ्ची** एक प्रकार की मछली।

बकाची (स्त्री०) एक प्रकार की मछली।

बटुकः [वटु+कन्] 1. लड़का, बच्चा 2. मन्दबुद्धि बालक। सम०—**भैरवः** भैरव का एक रूप।

बडिशम् (नपुं०) शल्योपयोगी उपकरण।

बत (अ०) यथार्थतः उक्त, ठीक कहा हुआ कल्याणी बत गाथेयम्—रा० ५।३४।६।

बद्वम् बड़ी संख्या (सायण के मत से सौ करोड़ की संख्या, औरों के मत से एक हजार करोड़)।

बन्दिः [बन्द्+इ] 1. बन्धन, कैद 2. बन्दी, क़ैदी। सम०—**ग्रहः** बन्दी बनाना, **ग्राहः** सेंध लगाने वाला, —**ग्राहम्** (अ०) बन्दी के रूप में ग्रहण करना, —**पालः** काराध्यक्ष, **शूला** वारांगना, वेश्या।

बद्ध (वि०) [बन्ध्+क्त] 1. परिरक्षित 2. बन्धा हुआ, 3. शृंखलित 4. प्रतिबद्ध 5. संहित 6. दृढ़ 7. जड़ा हुआ 8. रचित 9. संकुचित। सम०—**अवस्थिति** (वि०) सतत, अनवरत, **आदर** (वि०) व्यसनग्रस्त—बद्धादरोऽपि परदारपरिग्रहे त्वम् रा० च० ५, —**मण्डल** (वि०) वर्तुलाकार, मंडली में अवस्थित, —**मूत्र** (वि०) जिसने मूत्र रोक लिया है।

बन्धः [बन्ध्+घञ्] 1., बन्धन 2. केशबन्ध, चोटिला 3. शृंखला, बेड़ी। सम०—**कर्तृ** (पुं०) बांधने वाला,—**मुद्रा** बेड़ी की छाप।

बन्धनम् [बन्ध्+ल्युट्] सांसारिकबन्धन (विप० मोक्ष)। सम० **रक्षिन्** (वि०) काराध्यक्ष।

बन्धनिकः [बन्धन+ठन्] काराध्यक्ष।

बन्धुः [बन्ध्+उ] 1. रिश्तेदार, सम्बन्धी 2. एक दूसरे से सम्बद्ध, भाई 3. मित्र 4. नियंत्रक, शासक 5. ज्योतिष की दृष्टि से तीसरा घर। सम०—**दायादः** रिश्तेदार, उत्तराधिकारी,—**प्रिय** (वि०) सम्बन्धियों का प्यारा।

बन्धुरित (वि०) [बन्धुर+इतच्] प्रवृत्त, मुड़ा हुआ।

बन्धूकृ (तना० उभ०) मित्र बनाना।

बन्धूर (वि०) [बन्ध्+ऊरच्] 1. तरंगित, लहरियादार 2. सुखद, प्रसन्नता देने वाला।

बभ्रुकः [भृ+कु, द्वित्वं; बभ्रु+उ वा, स्वार्थे कन् च] एक नक्षत्रपुंज।

बर्बरः (पुं०) 1. वह हाथी जिसने चौथे वर्ष में पदार्पण कर लिया है मात० ५।५ 2. घुंघराला। सम० —**अलका** (स्त्री) वह स्त्री जिसके मस्तक के घुंघराले बाल हैं।

बर्बरीकम् (नपुं०) 1. घुंघराले बाल 2. सफ़ेद चन्दन की लकड़ी।

बर्हः,—र्हम् [बर्ह्+अच्] 1. मोर का चंदा 2. पक्षी की पुंछ 3. मोर की पूंछ 4. पत्ता 5. वृन्द। सम०—**अवतंस** (वि०) जिसने सिर को पंख लगाकर अलंकृत किया हुआ है,—**नेत्रम्** मोर की पूंछ पर बना आँख जैसा चिह्न।

बर्हिन्यायः (पुं०) मीमांसा का व्याख्याविषयक एक नियम जिसके आधार पर गौण अर्थ की अपेक्षा प्राथमिक अर्थ को प्रधानता दी जाती है—मी० सू० ३।२।१-२।

बर्हिणवासस् (नपुं०) पंखों से बना बाण, वह तीर जिसमें पर लगा है।

बलम् [बल्+अच्] 1. शक्ति, सामर्थ्य 2. सेना 3. मोटापा 4. शरीर, आकृति 5. वीर्य 6. रुधिर 7. अङ्कुर 8. शक्ति का देवता 9. हाथ, क्रान्ते विष्णुबले शक्रः —महा० १२।२३९।८ 10. प्रयत्न। सम०—**अर्थिन्** (वि०) शक्ति या सामर्थ्य का इच्छुक,—**उपादानम्** सेना में भर्ती होना—कौ० अ०,—**तापनः** इन्द्र का विशेषण,—**पुच्छकः** कौवा, **पृष्ठकः** हरिण विशेष, —**मुख्यः** सेनापति,—**वर्जित** (वि०) बलहीन, दुर्बल, —**समुत्थानम्** सशक्त सेना की भर्ती करना।

बलकः (पुं०) स्वप्न।

बलवत् (वि०) [बल+मतुप्] 1. बलवान्, शक्ति संपन्न, प्रबल 2. सघन, मोटा 3. अधिक महत्त्वपूर्ण 4. ससैन्य (पुं०) 1. आठवाँ मुहूर्त 2. श्लेष्मा, कफ, बलगम —**ती** (स्त्री०) छोटी इलायची।

बलासः (पुं०) 1. एक प्रकार का रोग 2. क्षय, तपेदिक़।

बलाहकः [बल+आ+हा+क्वुन्] 1. बादल 2. एक पर्वत 3. विष्णु का एक घोड़ा 4. सांप की एक प्रकार।

बलिः [बल्+इन्] 1. यज्ञ में आहुति, उपहार 2. भूत यज्ञ 3. पूजा, अर्चना 4. उच्छिष्ट भोजन 5. देवता पर चढ़ाया गया उपहार 6. शुल्क, कर 7. चँवर का दस्ता 8. एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम। सम०—**क्रिया** मस्तक पर एक रेखा,—**बन्धनम्** एक नाटक का नाम जो पाणिनि द्वारा रचित समझा जाता है,—**बन्धनः** (पुं०) विष्णु का विशेषण, **विधानम्** उपहार रूप में बलि देना,—**षड्भागः** आय का छठा भाग जो राजा को कर के रूप में दिया जाता है—अरक्षितारं राजानं बलिषड्भागहारिणम् मनु० ८।३०८,—**होमः** अग्नि में आहुति देना।

बलीशः (पुं०) 1. कौवा 2. चालाक, धूर्त, मक्कार।

बस्तमारम् (अ०) बकरे की हत्या के ढंग पर।

बस्तिः [बस्त्+इ, बवयोरभेद] 1. मूत्राशय 2. सांभर झील से उत्पन्न नमक।

बस्तिकः (पुं०) एक प्रकार का बाण जिसकी नोंक शरीर से खींचते समय उसी में रह जाती है—महा० ७। १८९।११ पर भाष्य।

बहिस् (अ०) [वह् + इसुन्] 1. के बाहर, बाहर 2. घर के बाहर 3. बाह्यरूप से 4. पृथक् रूप से 5. सिवाय। सम० —**अङ्ग** (वि०) बाहरी, दूर से संबन्ध रखने वाला—अन्तरङ्गबहिरङ्गयोरन्तरङ्गं बलीयः मै० सं० १२।२।२९ पर शा० भा०, —**दृश** (बहिर्दृश) (अ०) अतिरिक्त या फ़ालतू दिखाई देने वाला, —**पवमानम्** सोमयाग में प्रयुक्त सामतंत्र, **प्रज्ञ** (वि०) जिसकी योग्यता बाह्य पदार्थों की हो, —**मनस्** (वि०) जो मन से बाहर हो, —**मनस्क** (वि०) जो मानस क्षेत्र की बात न हो, —**यूति** (वि०) जो बाहर बँधा हुआ या रक्खा हुआ हो, —**र्वातन्** (वि०) बाहर रहने वाला, —**व्यसनिन्** (वि०) लंपट, कामुक, इन्द्रियपरायण, —**स्थ**, —**स्थित** (वि०) बाहरी, बाहर का, —**कार्य** (वि०) निकाल बाहर फेंकने के योग्य।

बहु (वि०) [बंह् + कु, नलोपः] (हु, —ह्वी, भूयस्, भूयिष्ठ) 1. बहुत, पुष्कल, प्रचुर 2. बहुत से, असंख्य 3. बड़ा, विशाल। सम० —**उपयुक्त** (वि०) जो कई प्रकार से काम का हो, —**क्षारम्** साबुन, —**क्षीरा** अधिक दूध देने वाली गाय, **गुरुः** जिसने अध्ययन बहुत कुछ किया है परन्तु भली प्रकार नहीं, **दोहना** दे० बहुक्षीरा, बहुत दूध देने वाली गाय, **नाडिकः** शरीर, काया, —**प्रकृति** (वि०) जिसमें क्रियापरक तत्त्व बहुत हों (जैसे समस्त शब्द), —**प्रज्ञ** (वि०) बहुत बुद्धिमान्, बड़ा समझदार, **प्रत्यर्थिक** (वि०) जिसके प्रतिपक्षी और प्रतिद्वन्द्वी अनेक हों, **प्रत्यवाय** (वि०) जिसके मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ हों, **रजस्** (वि०) बहुत धूल से भरा हुआ, —**वादिन्** (वि०) बहुत बोलने वाला, **शस्त** (वि०) बहुत उत्तम, **संख्यकः** (वि०) अनगिनत, **सत्त्व** (वि०) जिसके पास बहुत से पशु हों, **साहस्र** (वि०) हज़ारों की संख्या में।

बहुल (वि०) [बंह् + कुलच्, नलोपः] (म० —बंहीयस्, उ० —बंहिष्ठ) 1. मोटा, सघन, सटा हुआ 2. चौड़ा, पुष्कल 3. प्रचुर, यथेष्ट 4. असंख्य, अनगिनत 5. समृद्ध 6. काला, कृष्ण। सम० —**अश्वः** एक राजा का नाम, —**पक्षशितिमन्** कृष्णपक्ष का अंधकार —कूजायुजा बहुलपक्षशितिम्नि सीम्ना—नै० २१।१२४।

बाणः [बण् + घञ्] 1. तीर 2. निशाना 3. बाण की नोक 4. ऐन, औड़ी (गाय की) 5. शरीर 6. एक राक्षस, बलि का पुत्र 7. एक कवि का नाम जिसने कादम्बरी और हर्षचरित लिखे हैं 8. अग्नि 9. पाँच की संख्या का प्रतीक 10. चाप की शरज्या। सम० —**निकृत** (वि०) बाण से बिंधा हुआ, —**पत्रः** (पुं०) एक पक्षी, —**लिङ्गम्** नर्मदा नदी पर उपलब्ध एक श्वेत पत्थर जिसे शिवलिङ्ग के रूप में पूजा जाता है।

बादरिः (पुं०) एक दार्शनिक का नाम।

बाधानिवृत्तिः (स्त्री०) [पं० त०] भूत प्रेत की पीडा से मुक्ति।

बाधक (वि०) [बाध् + ण्वुल्] पीडादायक, छेड़छाड़ करने वाला।

बाधयितृ (पुं०)[बाध् + णिच् + तृच्] बाधा पहुँचाने वाला, हानि पहुँचाने वाला।

बाध्यबाधकता (स्त्री०) अत्याचारग्रस्त और अत्याचारी की अन्योन्यक्रिया, पीडित और पीडक का पारस्परिक प्रभाव।

बान्धवः [बन्धु + अण्] हितैषी —पैतृष्वस्रेयप्रीत्यर्थं तद्गोत्रस्यात्तबान्धवः भाग० १।१९।३५।

बार्हस्पत्याः [बृहस्पति + यक्] राजनीति पर लिखने वालों की शाखा जिसका उल्लेख कौटिल्य ने किया है—कौ० प्र० १।१५।

बाल (वि०) [बल् + ण, बाल् + अच्] 1. बालक, बच्चा 2. अविकसित (पुरुष या वस्तु) 3. नवोदित (जैसा कि सूर्य या उसकी किरणें) 4. अंजान, —**लः** (पुं०) 1. बच्चा 2. अवयस्क 3. मूर्ख 4. भोलाभाला 5. पाँच वर्ष का हाथी 6. नारियल। सम० —**अरिष्टः** बच्चों को दाँत निकलने का कष्ट, —**आमयः** बच्चों की बीमारी, बालरोग, **चिकित्सा** बच्चों के रोगों का इलाज, **चुम्बालः** मछली, —**चूतः** आम का पौधा, —**मनोरमा** सिद्धान्तकौमुदी पर लिखी गई टीका —**मरणम्** मूर्ख की मृत्यु, —**यतिः** बालसंन्यासी, —**व्रतः** मञ्जुघोष (बौद्धश्रमण) का विशेषण।

बालकः [बाल + कन्] 1. बालक, बच्चा 2. आवश्यक 3. बुद्धू 4. कड़ा 5. हाथी या घोड़े की पूँछ 6. बाल 7. पाँच वर्ष का हाथी—शि० ५।४७।

बाला [बाल + टाप्] दुर्गा का विशिष्ट रूप। सम० —**मन्त्रः** बालादेवी का पुनीत मंत्र।

बालिशमति (वि०) बच्चों जैसी छोटी बुद्धि वाला, बालबुद्धि।

बालेयशाकः एक प्रकार का शाक।

बाष्कलः एक अध्यापक, पैल ऋषि का शिष्य, ऋग्वेदशाखा का संस्थापक।

बाष्पविक्लव (वि०) आँसुओं से अभिभूत।

बास्तिकम्[बास्त + ठक्] बकरियों का झुंड—रा० २।७७।१२।

बाहिरिकः विदेशी, दूसरे देश का न च बाहिरिकान् कुर्यात् पुरराष्ट्रोपघानकान् – कौ० अ० ९।४।२२।

बाहुः [बाध् + कु, हकारादेशः] 1. भुजा 2. चौखट का बाजू 3. पशु का अगला पाँव 4. (ज्या० में) समकोण त्रिकोण की आधार रेखा 5. रथ का पोल 6. सूर्य घड़ी पर शङ्कु की छाया 7. बारह अंगुल की नाप, एक हाथ की नाप 8. धनुष का अवयव। सम०

—अन्तरम् छाती— वाह्वन्तरे मवुजितः श्रितकौस्तुभे या—कनक०, तरणम् भुजाओं से तैर कर नदी पार करना,—निःसृतम् युद्ध की एक विधा जिसके अनुसार शत्रु के हाथ की तलवार नीचे गिरवा दी जाती है, प्रचालकम् (अ०) भुजाएँ हिलाना, —लोहम् घण्टी बनाने के काम आने वाला धातु, —विघट्टनम्, विघट्टितम् मल्लयुद्ध की एक विशेष मुद्रा।

बाह्य (वि०) [वहिर्भवः—ष्यञ्] 1. बाहर का, बाहरी 2. जाति बहिष्कृत 3. सार्वजनिक, **ह्यः** (पुं०) 1. विदेशी 2. बिरादरी से निष्कासित 3. प्रतिलोम संबंध से उत्पन्न सन्तान। सम० अर्थः शब्द का अतिरिक्त, फ़ालतू अर्थ,—कक्षः बाहर की ओर का कमरा,—करणम् बाहरी ज्ञानेन्द्रिय,—प्रयत्नः ध्वनियों के उच्चारण के समय बाह्य प्रयत्न।

बिठकम् (नपुं०) आकाश निरु० ६।३०।

बिडालव्रतिक (वि०) [व० स०] पाखण्डी, कपटी, धूर्त।

बिन्दुः [बिन्द्+उ] 1. बूंद, कण 2. गोल चिह्न 3. हाथी के शरीर पर रंगीन निशान 4. शून्य, सिफ़र 5. (ज्या० में) ऐसा चिह्न जिसकी लम्बाई, चौड़ाई कुछ भी न हो 6. पानी की एक बूंद 7. अक्षर के ऊपर लगा बिन्दु जो अनुस्वार का कार्य करता है 8. पांडुलिपियों में मिटाये गये शब्द के ऊपर शून्य चिह्न (जो प्रकट करता है कि यह शब्द मिटाया नहीं जाना चाहिए था) 9. (नाट्य० में) विशिष्ट चिह्न जो किसी गौण घटना का आकस्मिक विकास प्रकट करता है 10. (दर्शन० में) चिच्छक्ति की विशिष्ट अवस्था। सम० च्युतकः एक प्रकार की शब्दक्रीडा —नै० ९।१०४,—प्रतिष्ठामय (वि०) अनुस्वार पर आधारित,—माधवः विष्णु का रूप।

बिम्बः [वी+वन्, नि०] 1. सूर्य या चन्द्र का मंडल 2. कोई भी थाली की भाँति गोल तलीय वस्तु 3. प्रतिमा, छाया, अक्स 4. दर्पण 5. मर्तवान 6. तुलित पदार्थ (विप० प्रतिबिम्ब) 7. मूर्ति, आकृति 8. साँचा, उभरा हुआ चित्र।

बिम्बिनी [बिम्ब्+इन्+ङीप्] आँख की पुतली।

बिम्बिसारः मगध के एक राजा का नाम जो गौतमबुद्ध का समसामयिक था।

बिरुदः 1. एक पदक या उपाधि जो श्रेष्ठता का द्योतक है 2. स्तुतिपाद, प्रशस्ति।

बिलायनम् [ष० त०] अन्तर्भौमिक गुफा।

बिसम् [बिस्+क] 1. कमलतन्तु 2. कमल का तन्तुमय काण्ड 3. कमल का पौधा। सम०—ऊर्णा कमलतन्तु की ऊन, गुणः कमलतन्तुओं से बनी रस्सी, प्रसूनम् कमल फूल,—वर्तिः कमलतन्तु से बनी बत्ती।

बिसिनीपत्रम् कमल का पत्ता।

बीजम् [वि+जन्+ड, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. बीज, बीज का दाना 2. बीजाणु, तत्त्व 3. मूल, स्रोत 4. वीर्य 5. कथावस्तु का बीज 6. बीजगणित 7. सचाई 8. आशय 9. प्राथमिक जननाणु का संकलक 10. विश्लेषण 11. जन्म के समय शिशु के हाथों की मुद्रा। सम० अंघ्रिकः ऊँट,—अर्थ (वि०) प्रजननार्थी, निर्वापणम् बीज बोना, प्ररोहिन् (वि०) बीज से उगने वाला,—वापः बीज बोना,—स्नेहः ढाक का वृक्ष।

बीजाकृत (वि०) (खेत) जिसमें बोने के पश्चात् हल चला दिया जाय।

बुद्ध (वि०) [बुध्+क्त] 1. ज्ञात 2. जागरित 3. प्रकाशित 4. विकसित,—द्धः (पुं०) 1. विद्वान् पुरुष 2. (बुद्ध मतानुसार) वह व्यक्ति जिसने 'सत्य ज्ञान' जान लिया है तथा जो स्वयं निर्वाण प्राप्त करने से पूर्व संसार को मोक्ष का मार्ग बतलाता है 3. परमात्मा।

बुद्धिः (स्त्री०) [बुध्+क्तिन्] 1. प्रत्यक्षीकरण, समझ 2. प्रज्ञा, मति, मेधा 3. सूचना, जानकारी 4. विवेक 5. मन 6. मति, विश्वास, विचार 7. इरादा, प्रयोजन, अभिकल्प 8. होश में आना, सुधबुध प्राप्त करना 9. सांख्य के २५ पदार्थों में दूसरा 10. प्रकृति 11. उपाय 12. ज्योतिष की दृष्टि से पाँचवाँ घर। सम०—अधिक (वि०) श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त,—च्छाया बुद्धि की आत्मा पर प्रतिवर्त क्रिया,—प्रागल्भी समझ की स्वस्थता,—मोहः विचार मूढ़ता, लाघवम् निर्णयविषयक हलकापन, न्यायलघिमा, नासमझी, —वर्जित (वि०) निर्बुद्धि, बुद्धिहीन, वैभवम् बुद्धि की शक्ति, बुद्धि का ऐश्वर्य।

बुभूषु (वि०) [भू+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] 1. समृद्ध होने का इच्छुक 2. कल्याण चाहने वाला।

बुरुडः (पुं०) टोकरी बनाने वाला।

बुसा (स्त्री०) [बुस्+अच्+टाप्] (नाट्य० में) छोटी बहन।

बृसय (वि०) (वेद०) प्रबल, बलशाली, बड़ा—बृसयशब्दो बृहच्छब्दार्थं गमयति मी० सू० १०।१।३२ पर शा० भा०।

बृहत् (वि०) [बृह्+अति] 1. बड़ा, विशाल 2 चौड़ा, प्रशस्त विस्तृत 3. पुष्कल 4. प्रबल, शक्तिशाली 5. लंबा, ऊँचा 6. पूर्ण विकसित 7. संपृक्त, सटा हुआ 8. प्राचीनतम, सबसे पुराना 9. उज्ज्वल 10. स्पष्ट; (पुं०) विष्णु;—ती (स्त्री०) 1. बड़ी वीणा 2. नारद की वीणा 3. छत्तीस की संख्या का प्रतीक 4. पीठ और छाती के बीच का भाग 5. आशय 6. वाणी 7. सफ़ेद अंडाकार बैंगन (नपुं०) 1. वेद 2. ब्रह्मा 3. नैष्ठिक

ब्रह्मचर्यं सावित्रं प्राजापत्यं च ब्राह्मं चाथ बृहत्तथा —भाग० ३।१२।४२। सम० —उत्तरतापिनी एक उपनिषद् का नाम,—तेजस् (पुं०) बृहस्पति ग्रह,—देवता वैदिक देवता विषयक एक ग्रंथ,—नारदीयम् एक उपनिषद् का नाम,—संहिता वराहमिहिर रचित ज्योतिष का एक ग्रंथ,—सामन् सामवेद का एक मंत्र —भग० १०।३५।

बृहस्पतिचक्रम् (नपुं०) साठ वर्षों (संवत्सरों) का काल।

बैल (वि०) [बिल+अण्] बिलों में रहने वाला।

बोक्काणः (पुं०) घोड़े की नाक पर लटकता हुआ थैला जिसमें उसका खाद्य पदार्थ रक्खा रहता है।

बोधायनः (पुं०) एक सूत्रकार का नाम।

बोधिः (बुध+इन्) 1. पूर्ण ज्ञान या प्रकाश 2. बौद्ध श्रमण की उज्ज्वल बुद्धि 3. पुनीत बटवृक्ष 4. मुर्गा 5. बुद्ध का विशेषण। सम०—अङ्गम् पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपेक्षित वस्तु।

बौद्धावतारः (पुं०) बुद्ध के रूप में भगवान् का अवतार।

ब्रध्नः (पुं०) 1. सूर्य 2. वृक्षमूल 3. दिन 4. आंक या मदार का पौधा 5. सीसा 6. घोड़ा 7. शिव या ब्रह्मा का विशेषण 8. तीर की नोक 9. एक रोग का नाम। सम०—बिम्बन्,—मण्डलम्, सूर्यमण्डल।

ब्रह्मन् (नपुं०) [बृंह्+मनिन्, नकारस्याकारे ऋतोरत्वम्] 1. परमपुरुष, परमात्मा 2. अर्थवादपरक सूक्त 3. पुनीत पाठ 4. वेद 5. पुनीत अक्षर ॐ—एकाक्षरं परं ब्रह्म मनु० २।८३ 6. ब्राह्मणजाति 7. ब्राह्मण की शक्ति 8. धार्मिक तपश्चरण 9. ब्रह्मचर्य, सतीत्व 10. मोक्ष 11. वेद का ब्राह्मणभाग 12. धन 13. आहार 14. सचाई 15. ब्राह्मण 16. ब्राह्मणत्व 17. आत्मा। सम०—किल्विषम् ब्राह्मणों के प्रति किया गया अपराध,—कूटः बड़ा विद्वान्,—गीता (स्त्री०) ब्रह्मा का उपदेश जैसा कि महा० के अनुशासनपर्व में दिया गया है,—जिज्ञासा परमात्मा को जानने की इच्छा,—तन्त्रम् वेद की शिक्षा,—दूषक (वि०) वेद के मूलपाठ को दूषित करने वाला,—पारः सब प्रकार के पुनीत ज्ञान का अन्तिम उद्देश्य,—बलम् ब्रह्मविषयक शक्ति,—बिन्दुः वेदपाठ करते समय मुख से निकली थूक की बूंद,—भूमिजा एक प्रकार की मिर्च,—मुहूर्तः दिन का आरंभिक भाग, ब्राह्मवेला,—रात्रः उषःकाल,—वादः परमात्मा से संबंध रखने वाला व्याख्यान,—श्री एक साममंत्र का नाम।

ब्रह्मण्वत् (पुं०) [ब्रह्मन्+मतुप्] अग्नि का विशेषण।

ब्रह्मीभूतः (पुं०) 1. जिसने ब्रह्मा के साथ सायुज्य प्राप्त कर लिया है (यह संन्यासियों के विषय में कहा गया ह जो इस शरीर को त्याग देते हैं) 2. शङ्कराचार्य।

ब्राह्मनिधिः (पुं०) ब्राह्मणों, पुरोहितों तथा याजकों के लिए बनाई गई निधि।

ब्राह्मण (वि०) [ब्रह्म वेत्त्यधीते वा ब्रह्म+अण्] 1. ब्राह्मण विषयक 2. ब्राह्मण के योग्य 3. ब्राह्मण द्वारा दिया गया, 4. धर्म पूजा विषयक 5. ब्रह्म को जानने वाला —णः 1. चारों वर्णों में से पहले वर्णों से संबद्ध 2. (पुरुष के मुख से उत्पन्न) ब्राह्मण 3. पुरोहित 4. अग्नि का विशेषण 5. अट्ठाइसवां नक्षत्र,—णम् 1. ब्राह्मणसमाज 2. वेद का वह भाग जिसमें विभिन्न यज्ञों के अवसर पर सूक्तों के प्रयोग का विधान विहित है, यह मन्त्रभाग से बिल्कुल पृथक् है। सम० —अवदर्शनम् ब्राह्मण भाग में विहित निर्देश का अभाव —मनु० १०।४३,—प्रसङ्गः 'ब्राह्मण' नाम,—प्रातिवेश्यः पड़ौसी ब्राह्मण,—भावः ब्राह्मण होने की स्थिति।

भ

भक्तम् [भज्+क्त] 1. भाग, अंश 2. आहार 3. भात, उबले हुए चावल 4. अनाज 5. पानी में उबाला हुआ अन्न 6. पूजा, अर्चा 7. वेतन, पारिश्रमिक 8. एक दिन का भोजन —यस्य त्रैवार्षिकं भक्तं पर्याप्तं भृत्यवृत्तये —मनु० ११।७। सम०—अग्रः, अग्रम् उपाहारशाला, जलपानगृह, कृत्यम् भोजन की तैयारी —साधनम् दाल की तश्तरी, सिक्थम् भात का मांड।

भक्तिः (स्त्री०) [भज्+क्तिन्] 1. विभाजन 2. गौण अर्थ, आलंकारिक अर्थ 3. (किसी रोग के प्रति) शरीर की उन्मुखता। सम०—गम्य (वि०) जो भक्ति के द्वारा प्राप्त किया जा सके, जहाँ श्रद्धा और भक्ति से पहुँचा जाय,—गन्धि (वि०) जिसमें भक्ति की गन्धमात्र हो अर्थात् थोड़ी भक्ति वाला व्यक्ति,—वश्य (वि०) जो भक्ति के द्वारा वश में किया जा सके।

भक्ष्य (वि०) [भक्ष्+ण्यत्] खाने के योग्य, भोजन के लिए उपयुक्त,—क्ष्यम् (नपुं०) 1. खाने का पदार्थ, आहार,—भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिर्विपत्तेरेव कारणम्—हि० १।५८ 2. जल। सम०—अभक्ष्यम् अनुमत और निषिद्ध भोजन,—भोज्यम् सब प्रकार के भोजन से युक्त।

भगः,—गम् [भज्+घ] 1. सूर्य 2. चाँद ३. शिव का रूप 4. सौभाग्य, प्रसन्नता 5. समृद्धि 6. यश, कीर्ति

7. सौन्दर्य 8. श्रेष्ठता 9. प्रेम, प्यार 10. कामकेलि, 11. योनि 12. गुण, धर्म 13. प्रयत्न 14. अरुचि, विराग 15. मोक्ष 16. सामर्थ्य 17. सर्वशक्तिमत्ता 18. प्रेम और विवाह की अधिष्ठात्री देवता आदित्य 19. ज्ञान 20. इच्छा 21. अणिमा। सम० ईश: भाग्य का देवता, काम (वि०) संभोग के आनंद का इच्छुक, --वृत्तिः (स्त्री०) वेश्यावृति, वृत्ति (वि०) वेश्यावृत्ति से निर्वाह करने वाला।

भगवत्पादा: आदि शंकराचार्य की सम्मान सूचक उपाधि।

भग्न (वि०) [भञ्ज+क्त] 1. टूटा हुआ 2. हताश, विफल 3. अवरुद्ध, स्थगित 4. नष्ट 5. ध्वस्त 6. ढाया हुआ। सम० अस्थि (वि०) जिसकी हड्डियाँ टूट गई हैं,--कूवर (वि०) जिसका ऊपर का ढांचा टूट गया है (जैसे रथ),—ताल: (संगीत०) एक प्रकार की माप,—परिणाम (वि०) पूरा करने से रोकने वाला।

भङ्गः [भञ्ज+घञ्] 1. (बुद्ध०) विश्व में निरन्तर होने वाला क्षय 2. (जैन०) 'स्यात्' से आरम्भ होने वाला तार्किक सूत्र।

भङ्गिः [भञ्ज+इन्, कुत्वम्; स्त्रियां ङीष्] 1. टूटना 2. हिलना 3. झुकना 4. तरंग 5. बाढ़ 6. विशिष्ट प्रथा, ढंग नानाश्रमलतापुष्पभङ्गीरचितकुन्तलाम् भारत०। सम० भाषणम् कूटनीति से युक्त भाषण, विकारः अपनी मुखमुद्रा को विकृत करना।

भङ्गिनी [भङ्गिन्+ङीप्] नदी, दरिया--आत्ममौलिमणिकान्तिभङ्गिनीम् नै० १८।१३७।

भञ्जना [भञ्ज्+युच्+टाप्] व्याख्या।

भट्टनारायणः 'वेणीसंहार' नाटक का प्रणेता।

भट्टिः 'भट्टि काव्य' का रचयिता।

भट्टोजिः एक वैयाकरण का नाम।

भण्डुक: एक प्रकार की मछली।

भद्र (वि०) [भन्द्+रक्, नलोप:] 1. अच्छा, प्रसन्न, समृद्ध 2. शुभ, मांगलिक 3. श्रेष्ठ, प्रमुख 4. कृपालु 5. मुखद 6. सुन्दर 7. वाञ्छनीय 8. प्रिय 9. दक्ष। सम०—कल्पः बौद्धों के अनुसार वर्तमान युग,—निधिः उपहार के लिए बने पात्र, वाच् (स्त्री०) शुभ वक्तृता, विराज एक छन्द का नाम।

भद्रक [भद्र+कन्] 1. सुन्दर 2. शुभ 3. सज्जन - कम् (नपुं०) 1. बैठने का विशिष्ट आसन 2. अन्तःपुर।

भद्राकरणम् मुण्डन, समस्त सिर मुंडवाना।

भयालु वि०) [भय+आलुच्] भीरु कायर।

भरः [भृ+अप्] पराक्रम, श्रेष्ठता, प्रमुखता न खलु वयभा जात्यैवार्य स्वकार्यसहो भरः--वि० ५।१८।

भरतशास्त्रम् नाटयकला।

भर्गस् (नपुं०) [भृज्+असुन्] आभा, कान्ति, चमक।

भर्तव्य (वि०) [भृ+तव्य] 1. सहन करने या ढोने योग्य 2. भाड़े के योग्य, पालन पोषण किये जाने के योग्य।

भर्तृ (पुं०) [भृ+तृच्] 1. पति, 2. स्वामी 3. नेता, सेनापति 4. पालक पोषक, रक्षक 5. सृष्टिकर्ता 6. विष्णु। सम० चित्त (वि०) पति के विषय में सोचनेवाला, देवता पति को देवता मानना, लोकः पति का संसार,—हार्यधन (वि०) जिसकी संपत्ति उसके स्वामी द्वारा जब्त की जा सके, हीना पति द्वारा परित्यक्ता।

भवः [भू+अप्] 1. सत्ता, अस्तित्व 2. जन्म, उपज 3. स्रोत, उद्गम 4. सांसारिक सत्ता, सांसारिक जीवन 5. स्वास्थ्य, समृद्धि 6. देवता 7. शिव 8. अविग्रहण, प्राप्ति 9. श्रेष्ठता। सम० --अग्रम् संसार का सबसे अधिक दूरवर्ती किनारा, भङ्गः जन्म मरण से मुक्ति, --भावन (वि०) कल्याणकारी, भीरु (वि०) संसार के अस्तित्व से डरने वाला,—भोगः सांसारिक सुखों का आनन्द लेना, शेखरः चन्द्रमा,—संगिन् (वि०) भौतिक संसार में अनुरक्त,—संततिः (स्त्री०) जन्म मरण का तांता।

भवद्वसु (वि०) [ब० स०] धनवान्, दौलतमंद।

भवनम् [भू+ल्युट्] जन्माङ्ग, जन्मकुंडली, जन्म-नक्षत्र।

भव्यमनस् (वि०) अच्छे सङ्कल्पों वाला।

भावत्क (वि०) [भवत्+कक्] आप से संबंध रखने वाला भावत्करिव धवलैर्यशःप्रवा हैः--रा० च० ७।२।

भषी (स्त्री०) कुतिया, भौंकने वाली।

भस्मन् (नपुं०) [भस्+मनिन्] 1. राख 2. शरीर पर लगाई जाने वाली भभूत, राख। सम०—अङ्गः एक प्रकार का कबूतर, अङ्गरागः शरीर पर भस्म रमाना, --अवलेपः शरीर पर भस्म लीपना—अवशेष (वि०) जो केवल राख के रूप में बच गया है, --गुण्ठनम् शरीर पर भस्म पोतना,--गात्रः कामदेव, चयः राख का ढेर।

भा (अदा० पर०) 1. चमकना 2. फूंक मारना।

बभौ (भा धातु, लिट् लकार, प्र० पु०, ए० व०) 1. चमका 2. प्रसन्न हुआ 3. हुआ 4. हवा चली --बभौ मरुत्वान् विकृतः स-मुद्रो, बभौ मरुत्वान् विकृतः समुद्रः, बभौ मरुत्वान् विकृतः समुद्रो, बभौ मरुत्वान् विकृतः समुद्रः। (सभी अर्थों में प्रयुक्त) - भट्टि० १०।१९।

भागः [भज्+घञ्] 1. शुल्क--कौ० अ० २।६।६४ 2. चार आध्यात्मिकों में से एक (सांख्य०) सां० का० ५० 3. ग्यारह की संख्या 4. भाग, अंश 5. भाग्य, किस्मत 6. चौथाई भाग। सम०—अप-

हारिन् जो अपना भाग ले लेता है,—धनम् कोष, —पत्रम्—लेख्यम् विभाजन का दस्तावेज़ ।

भागिन् (वि०) [भाग+इनि] अत्यन्त उपयोगी ।

भागुरिः एक विख्यात वैयाकरण और स्मृतिकार का नाम ।

भाग्य (वि०) [भज्+ण्यत्, कुत्वम्] 1. बांटे जाने के योग्य 2. हिस्से का अधिकारी 3. भाग्यशाली, किस्मतवाला,—ग्यम् (नपुं०) 1. भाग्य, किस्मत 2. अच्छी किस्मत, सौभाग्य 3. समृद्धि 4. कल्याण, शुभ । सम०—संक्षयः बुरी किस्मत, उन्नतिः भाग्य का उदय होगा,—ऋक्षम् पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र ।

भाङ्गकः चीथड़ा ।

भाजक् (अ०) जल्दी से, तेज़ी से ।

भाजनविषमः गलत उपायों के द्वारा गबन करना—कौ० अ० २।८।२१ ।

भाण्डम् [भाण्ड्+अच्] 1. सामान 2. पूंजी, मूलधन 3. बर्तन । सम० गोपकः बर्तन रखने वाला ।

भानतः (अ०) प्रतीति के परिणामस्वरूप ।

भानव (वि०) [भानु+अण्] सूर्यसंबंधी ।

भानुभूः यमुना नदी का विशेषण ।

भामहः अलंकारशास्त्र का एक विख्यात लेखक ।

भारः [भृ+घञ्] 1. बोझा 2. आधिक्य 3. परिश्रम 4. बड़ी राशि 5. किसी पर डाला गया कार्यभार । सम०—अवतरणम् बोझा कम करना,—आक्रान्ता एक छन्द का नाम,—उद्धरणम् बोझा उठाना,—ऊढिः (स्त्री०) भारवहन करना, बोझ उठाना,—गः खच्चर ।

भारिका राशि, ढेर ।

भारती 1. वक्तृता, शब्द, वाक्पटुता 2. वाणी की देवता 3. नाटयकला 4. किसी पात्र की संस्कृत वक्तृता 5. सन्यासियों के दस भेदों में एक—गोस्वामिन् ।

भारत (वि०) [भरतस्येदम्—अण्] भरतवंशी,—तः 1. भरतकुल में उत्पन्न (जैसे विदुर, धृतराष्ट्र, अर्जुन) 2. भारतवर्ष का निवासी 3. अग्नि,—तम् (नपुं०) 1. भारतवर्ष देश 2. संस्कृत का एक महान् काव्य (इसके लेखक व्यास या कृष्णद्वैपायन माने जाते हैं) 3. संगीतशास्त्र तथा नाटयकला । सम०—आख्यानम्, इतिहासः, कथा भरतकुल के राजाओं की कहानी, महाभारत काव्य,—सावित्री एक स्तोत्र का नाम —इमां भारतसावित्रीं प्रातरुत्थाय यः पठेत्—महा० १८।५।६४ ।

भारद्वाजः [भरद्वाज+अण्] 1. भरद्वाज गोत्र से संबंध रखने वाला 2. राजनीति का एक लेखक जिसका कौटिल्य ने उल्लेख किया है ।

भारविः किरातार्जुनीय काव्य का रचयिता ।

भारुषः 1. अविवाहित वैश्य कन्या में वैश्यव्रात्य के द्वारा उत्पादित पुत्र 2. शक्ति की पूजा करने वाला ।

भार्गवः [भृगु+अण्] ज्योतिषी, भविष्यवक्ता—भार्गवी शुक्रदेवजो वैज० ।

भार्यापतित्वम् दाम्पत्य संबन्ध ।

भाल्लविः सामवेद की एक शाखा ।

भावः [भू+घञ्] 1. सत्ता, अस्तित्व 2. कल्याण—भावमिच्छति सर्वस्य—महा० ५।३६।१६ 3. प्ररक्षण—द्रोणस्याभाभावे तु—महा० ७।२५।६४ 4. भाग्य 5. वासना, अतीत संकल्पनाओं की सुध 6. छः अवस्था अस्ति, वर्धते, विपरिणमति आदि । सम० कर्तृकः भाववाचक क्रिया, गतिः (स्त्री) मानवी भावनाओं को प्रकट करने की शक्ति—भावगतिराकृतीनाम् प्रतिमा० ३,—चेष्टितम् प्रेमद्योतक संकेत या चेष्टाएँ, निर्वृत्तिः भौतिक सृष्टि सां का० ५२, —नेरिः एक प्रकार का नाच, शबलत्वम् नाना प्रकार की भावनाओं का मिश्रण ।

भावंगम् (वि०) मनोहर, सुहावना ।

भावयितृ (वि०) [भू+णिच्+तृच्] प्ररक्षक, प्रोन्नायक क्रोधो भावयिता पुनः—महा० ३।२९।१ ।

भावित (वि०) [भू+णिच्+क्त] 1. अभिनिर्दिष्ट, स्थिर किया हुआ, गड़ाया हुआ 2. अधिकार में किया हुआ, गृही, पकड़ा हुआ—दुदुहुः पृथुभावित।म् —भाग० ४।१८।१३ 3. निमग्न, लीन, पूर्ण—रथाङ्गपाणेरनुभावभावितम्—भाग० १२।१०।४२ 4. प्रसन्न, हृष्ट । सम० भावन् (वि०) स्वयं को आगे बढ़ाने वाला, तथा औरों की सहायता करने वाला ।

भाव्य (वि०) [भू+ण्यत्] 1. भावी 2. जो सम्पन्न हो सके 3. सिद्ध दोष होना व्यवरैः साक्षिभिर्भाव्यो नृपब्राह्मणसन्निधौ मनु० ८।६० ।

भाषापत्रम् आवेदन पत्र—शुक्र० २।३०९ ।

भाषासमितिः वाणी का नियन्त्रण (जैन०) ।

भाषितृ (वि०) [भाष्+तृच्] बोलने वाला, बातें करने वाला ।

भाष्यभूत (वि०) टीका या भाष्य का काम देने वाला —भाष्यभूता भवन्तु मे—शि० २।२४ ।

भासः एक प्रसिद्ध नाटककार, स्वप्नवासवदत्तम् आदि नाटकों का प्रणेता ।

भिक्षा [भिक्ष्+अ] 1. जीवन निर्वाह का एक साधन 2. मांगना । सम०—भुज् (वि०) भिक्षावृत्ति से निर्वाह करने वाला ।

भिक्षुः [भिक्ष्+उन्] 1. भिखारी 2. साधु 3. संन्यासी 4. श्रमण । सम०—भावः श्रमणता, साधुता ।

भिङ्गिसी कम्बल का एक भेद—कौ० अ० २।११।२९ ।

भिद् (रुधा० पर०) 1. टुकड़े टुकड़े करना, काटना 2. व्याख्या करना—वचांसि योगग्रथितानि साधो न नः क्षमन्ते मनसापि भेत्तुम्—भाग० ५।१०।८ ।

भिद्यापनम् तुड़वाना, कुचलवाना।

भिन्न (वि०) [भिद्+क्त] 1. टूटा हुआ, फाड़ा हुआ, चीरा हुआ 2. पृथक् किया हुआ, बांटा हुआ 3. विपाक्त—भिन्नवृत्तिता— मनु० १२।३३ 4. रोमाञ्चित (जैसे रोंगटे खड़े हुए)—रा० ६।१०।१८ 5. जिसे घूस दी गई है। सम०—**कर्ण** (वि०) 1.जिसने कानों को बांट दिया है 2. जिसके कान बींध दिये गये हैं, **कुम्भः** जिसने अपने अनिवार्य कर्तव्य (पितृ ऋण आदि) सम्पन्न कर लिए हैं, —**हृतिः** (स्त्री०) भिन्न राशियों का भाग।

भीत (वि०) [भी+क्त] 1. डरा हुआ, आतङ्कित 2. डरपोक, कायर 3. भयग्रस्त। सम०—**गायनः** लज्जाशील गायक, शर्मीला गाने वाला,—**चारिन्** (वि०) कातरभाव से व्यवहार करने वाला,—**चित्त** (वि०) मन में डरने वाला।

भीतिः [भी+क्तिन्] 1. डर, आशङ्का, त्रास 2. खतरा जोखिम 3. कंपकंपी। सम० **कृत्** (वि०) डर पैदा करने वाला, **छिद्** (वि०) डर दूर करने वाला।

भीम (वि०) [भी+मक्] भयानक, डरावना, भयपूर्ण, —**मः** (पुं०) 1. शिव का विशेषण 2. परमपुरुष 3. भयानक रस 4. दूसरा पांडव, **मम्** (नपुं०) भय, त्रास। सम०—**अञ्जस्** (वि०) भीषण शक्ति वाला, **पाकः** पूरी तरह पका हुआ भोजन, **रथः** 1. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम 2. श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

भीष्म (वि०) [भी+णिच्+सुक्+मक्] डरावना, भयानक, भयपूर्ण,—**ष्मः** 1. भयानक रस 2. राक्षस, पिशाच, भूतप्रेत 3. शिव का विशेषण 4. शन्तनु के द्वारा गंगा में उत्पादित पुत्र। सम० **पर्वन्** महाभारत का छठा पर्व (अध्याय),—**स्तवराजः** महाभारत में शान्तिपर्व के ४७वें अध्याय में निहित भीष्म की प्रार्थना।

भुक्तमात्रे (अ०) खाने के तुरन्त पश्चात्।

भुग्न (वि०) [भुज+क्त] 1. विनीत, नत 2. वक्रीकृत, मुड़ा हुआ 3. टूटा हुआ 4. हताश, विनम्रीकृत।

भुजः [भुज्+क] 1. बाहु, भुजा 2. हाथ 3. हाथी की सूंड 4. गणित में आकृति का एक पार्श्व जैसे त्रिभुज में 5. त्रिकोण का आधार 6. वृक्ष की शाखा। सम० —**अङ्कः** आलिङ्गन,—**अर्पणम्** निर्वाह के अनुदान, —**आकम्बुः** शंख, **छाया** किसी की भुजाओं द्वारा दिया गया प्ररक्षण,—**वीर्य** (वि०) प्रबल भुजाओं वाला।

भुजगः [भुज्+क=भुज+गम्+ड] सांप, सर्प, गी आश्लेषा नक्षत्र। सम० **वलयः** कड़े की भांति कलाई में गोलाकार लिपटा हुआ सांप,—**शायिन्** विष्णु का विशेषण।

भुजंगः [भुज+गम्+खच्, मुम्] 1. सांप 2. जार, प्रेमी 3. पति, स्वामी 4. आश्लेषा नक्षत्र 5. इल्लती 6. राजा का बदचलन मित्र। सम०—**प्रयातम्** एक छन्द का नाम, **संगता** एक छन्द का नाम, **शिशु** एक छन्द का नाम।

भुजा [भुज्+टाप्] ज्यामिति की आकृति का पार्श्व।

भुजाभुजि (अ०) हाथापाई, हाथों की (लड़ाई)।

भुवनम् [भू+क्युन्] 1. संसार, (संसार की संख्या तीन है या चौदह) त्रिभुवन, चतुर्दशभुवनानि 2. धरती 3. स्वर्ग 4. जन्तु, प्राणी 5. मानव। सम०—**ईश्वरी** पार्वती का रूप,—**तलम्** धरती की सतह,—**भावनः** —सृष्टि का कर्ता।

भूः (स्त्री०) [भू+क्विप्] 1. पृथ्वी 2. विश्व 3. धरती। सम० **छाया, छायम्** धरती की छाया,—**तुम्बी** एक प्रकार की ककड़ी, - **पलः** एक प्रकार का चूहा, —**भा** पृथ्वी की छाया, ग्रहण,—**लिङ्गशकुनः** पक्षियों की एक जाति—महा० १२।१६९।१०,—**शय्या** भूमि पर सोना,—**स्फोटः** कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी।

भूत [भू+क्त] 1. होने वाला, वर्तमान 2. उत्पादित, निर्मित 3. वस्तुतः होने वाला, सत्य 4. सही, उचित, उपयुक्त 5. अतीत, बीता हुआ 6. प्राप्त 7. मिश्रित 8. समान। सम० **अनुवादः** बीती हुई बात, या निष्ठित तथ्य का उल्लेख करना,—**अभिषङ्गः**—**आवेशः** भूतप्रेत का किसी पर चढ़ना,—**मानिन्** (पुं०) जो सबकी अवमानना करता है, सबसे घृणा करने वाला, —**कोटिः** निरपेक्ष शून्यता, —**गत्या** सचाई के साथ, **गुणः** तत्त्वों का गुण,—**जननी** सब प्राणियों की माता,—**तन्मात्रम्** सूक्ष्मतत्त्व,—**पालः** जीवित प्राणधारियों का संरक्षक,—**भव** (वि०) सभी प्राणियों में रहने वाला, **भृत्** (वि०) जन्तुओं या तत्त्वों का पालनपोषण करने वाला,—**मातृका** पृथ्वी,—**सृज्** (पुं०) ब्रह्मा का विशेषण।

भूतिः (स्त्री०) [भू+क्तिन्] 1. सत्ता, अस्तित्व 2. जन्म, उपज 3. कल्याण, कुशलमंगल, समृद्धि 4. सफलता 5. धन, दौलत 6. शान, आभा, कान्ति 7. राख। सम० **अर्थम्** (अ०) समृद्धि के लिए, **सृज्** (वि०) कल्याणोत्पादक।

भूमिः (स्त्री०) [भू+मि] 1. ज्यामिति की आकृतियों की आधाररेखा 2. किसी चित्र का रेखाचित्र 3. धरती, पृथ्वी। सम०—**अनृतम्** भूमि के विषय में झूठी गवाही,—**खर्जूरिका** खजूर वृक्ष का एक प्रकार, —**छत्रम्** कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी, **तनयः** मंगलग्रह, —**परिमाणम्** वर्गमाप,—**रथिकः** भूमि पर

रथ हाँकने वाला,—समीकृत (वि०) भूमि जैसा बराबर किया हुआ, फर्श के साथ मिलाया हुआ, —संभवः, —सुतः 1. मंगलग्रह 2. नरकासुर ।

भूयस् (वि०) [बहु+ईयसुन्] 1. अपेक्षाकृत अधिक 2. अधिक बड़ा 3. अधिक आवश्यक । सम०—**काम** (वि०) बहुत अधिक इच्छुक,—**भावः** वृद्धि, विकास, —**मात्रम्** अधिकतर अधिकांश ।

भूरि (वि०) [भू+क्रिन्] बहुत, पुष्कल, असंख्य, पुष्कल । सम०—**कालम्** (अ०) बहुत समय तक,—**कृत्वम्** (अ०) बहुत बार, बार-बार, **गुण** (वि०) 1. बहुत अधिक बढ़ता हुआ 2. भांति-भांति के फल देनेवाला, —**फेना** पौधों की एक जाति,—**भोज** (वि०) नानाप्रकार से सुखोपभोग करने वाला ।

भूरिशः (अ०) [भूरि+शस्] विविध प्रकार से, नाना प्रकार से ।

भूषणवासांसि (नपुं० ब० व०) वस्त्र और आभूषण ।

भृ (जुहो० पर०) संतुलित रखना, समसंतुलन करना ।

भृतक (वि०) [भृत+कन्] 1. पालन पोषण किया हुआ 2. किराये का, **कः** (पुं०) भाड़े का सेवक । सम० —**अध्यापनम्** वैतनिक अध्यापक द्वारा दिया गया शिक्षण **भृतिः** मजदूरी, पारिश्रमिक, किराया ।

भृतिः [भृ+क्तिन्] 1. सहन करना, सहारना, सहारा देना 2. भरणपोषण 3. आहार 4. ले जाना, नेतृत्व करना 5. मूलधन 6. पारिश्रमिक । सम० **अर्थम्** निर्वाह के निमित्त, जीविका के लिए ।

भृगुः (पुं०) 1. एक मुनि का नाम 2. जमदग्नि का नाम 3. शुक्र का विशेषण 4. शुक्र नामक ग्रह 5. चट्टान 6. पठार 7. शिव का विशेषण 8. शुक्रवार । सम० **कच्छः** कच्छम् नर्मदा नदी पर एक तीर्थस्थान, —**पतनम्** चट्टान से गिरना,—**पातः** चट्टान से कूदना, छलांग लगाना, **भृङ्गः** एक प्रकार का संगीत का माप,—**अभीष्टः** आम का वृक्ष ।

भृशदण्ड (वि०) कठोर दण्ड देने वाला ।

भेदः [भिद्+घञ्] 1. दारुण पीड़ा 2. ग्रहों का योग 3. पक्षाघात 4. सिकुड़ना 5. समभुज त्रिकोण की कर्ण रेखा ।

भेदक (वि०) [भि+ण्वुल्] 1. वियोजक, विभाजक, तोड़ने वाला 2. नाशक 3. विवेचक 4. रेचक 5. (खानों को) मोड़ने वाला 6. पथभ्रष्ट करने वाला ।

भेदन (वि०) [भिद्+णिच्+ल्युट्] 1. तोड़ने वाला, विभाजक 2. रेचक,—**नम्** (किसी पशु का) नासा-छेदन करना ।

भेलनम् (नपुं०) तैरना ।

भेषज (वि०) [भेषं रोगभयं जयति-जि+ड] स्वस्थ करने वाला, चिकित्सा किये जाने योग्य, **जम्** (नपुं०) 1. औषधि 2. उपचार 3. रोगनाशक मंत्र । सम० —**करणम्** औषधियों का तैयार करना, **कृत** (वि०) स्वस्थ किया हुआ, **वीर्यम्** औषधियों की स्वास्थ्यकर शक्ति ।

भोगः [भुज्+घञ्] 1. खाना, खा लेना 2. सुखोपभोग 3. वस्तु 4. उपयोगिता, उपयोग 5. शासन करना 6. उपयोग, प्रयोग 7. सहन करना 8. अनुभव करना, संकल्पना 9. स्त्रीसंभोग 10 आनन्द लेना 11 आहार 12. लाभ 13. आय 14. धन । सम०—**नाथः** पोषक, भरणपोषण करने वाला,—**पत्रम्** किराये का दस्ता-वेज़, —**भुज्** (वि०) सुखोपभोग करनेवाला ।

भोगिराजः [प० त०] शेषनाग ।

भोग्यवस्तु विलास की सामग्री ।

भोज (वि०) [भुज्+अच्] 1. सुखोपभोग देने वाला 2. उदार, दानशील,—**जः** (पुं०) 1. एक प्रसिद्ध राजा का नाम 2. विदर्भदेश का राजा । सम० —**चम्पू** भोज द्वारा रचित रामायण चम्पू, —**प्रबन्धः** बल्लाल की भोजविषयक कृति ।

भोलः वैश्य द्वारा नटी में उत्पादित पुत्र ।

भौजिष्यम् (नपुं०) दासता, सेवकत्व ।

भौत (वि०) [भूत+अण्] 1. प्राणिसंबन्धी 2. भौतिक 3. पागल, **तः** 1. भूत पिशाचों की पूजा करने वाला 2. भूतयज्ञ । सम० **प्रिय** (वि०) मूढ, दुर्बुद्धि ।

भौमम् [भूमि+अण्] 1. तत्त्वविषयक वस्तु 2. फर्श 3. भवन की ऊपर की मंजिलें—सप्तभौमाष्टभौमैश्च —रा० ५।२।५० ।

भौमी [भौम+ङीप्] सीता का विशेषण ।

भ्रंशः [भ्रंश्+घञ्] 1. गिरना, फिसल जाना, अधः-पतन 2. ह्रास, मुर्झाना 3. नाश, ध्वंस 4. दूर भाग जाना 5. ओझल होना 6. (नाट्य० में) उत्तेजना के कारण वाक्स्खलन ।

भ्रष्ट (वि०)[भ्रंश+क्त] 1. गिरा हुआ, पतित 2. मुर्झाया हुआ 3. भागकर जो बच गया । सम०—**अधिकार** (वि०) जिससे अधिकार छीन लिये गये हों, पदच्युत, **क्रिय** (वि०) जो विहित कर्म करने में असफल रहा,—**योग** (वि०) जो भक्ति से पतित हो गया हो ।

भ्रम् (भ्वा०, दिवा० पर०) लड़खड़ाना, घबड़ाना ।

भ्रम् (प्रेर०) 1 ढिंढोरा पीटना 2. अव्यवस्थित करना ।

भ्रमः [भ्रम्+घञ्] 1. छाता, छतरी 2. वृत्त ।

भ्रमरः [भ्रम्+करन्] 1. मधुमक्खी 2. प्रेमी 3. कुम्हार का चाक 4. जवान 5. लट्टू । सम०—**निकरः** मधु-मक्खियों का छत्ता, —**पदम्** एक छन्द ।

भ्रमरित् (वि०) [भ्रमर+इतच्] जो नीला हो गया है —यदतिविमलनीलवेश्मरश्मिभ्रमरितभाः—नै० २।१०३ ।

भ्रमिः (स्त्री०) [भ्रम्+इ] मूर्छा, बेहोशी।

भ्रान्त (वि०) [भ्रम्+क्त] 1. इधर-उधर घूमा हुआ 2. चक्कर खाया हुआ 3. भूला भटका 4. घबड़ाया हुआ। सम०—चिन्त (वि०) मन में घबराया हुआ।

भ्रू (स्त्री०) [भ्रम्+डू] भौं, आंख की भौं। सम० —वञ्चितम् चुपके-चुपके झांकना, छिपकर देखना, विजृम्भः भौंहों को मोड़ना, भौंहे चढ़ाना।

म

मकरः [मं विषं किरति-कृ+अच्] 1. मगरमच्छ 2. मकर-राशि 3. मकर की आकृति का कुण्डल। सम० आसनम् एक प्रकार का योग का आसन,—वाहनः वरुण।

मकरन्दः [मकर+दो+क, मुमादेशः] 1. पुष्परस, मधु 2. चमेली का फूल 3. कोयल 4. सुगन्धयुक्त आम का वृक्ष 5. (संगीत० में) एक प्रकार का माप।

मकरन्दिका एक छन्द का नाम।

मकूलकः (पुं०) 1. कली 2. दन्ती नाम का वृक्ष।

मखमृगव्याधः (पुं०) शिव का विशेषण।

मगन्दः (पुं०) कुसीदक, सूदखोर।

मगधदेशः (पुं०) मगध नाम का देश।

मड्डुकः (पुं०) एक प्रकार का वाद्ययन्त्र।

मङ्गल (वि०) [मङ्ग्+अलच्] 1. शुभ, सौभाग्यशाली 2. समृद्ध 3. वीर,—लम् (नपुं०) 1. माङ्गलिकता, प्रसन्नता, कल्याण 2. शुभ शकुन 3. आशीर्वाद 4. माङ्गलिक संस्कार (जैसे कि विवाह) 5. हल्दी,—लः (पुं०) 1. मङ्गलग्रह 2. अग्नि। सम० —आवह (वि०) शुभ,—ध्वनिः माङ्गलिक स्वर, —भेरी माङ्गलिक अवसरों पर बजाया जाने वाला ढोल।

मज्जनः [मस्ज्+ल्युट्] आठ वर्ष का हाथी—मात० ५।९।

मञ्चनृत्यम् एक प्रकार का नाच।

मञ्जुनादः मधुर ध्वनि मञ्जीरं मञ्जुनादैरिव पदभजनं श्रेय इत्यालपन्तम्—नारा० १००।९।

मञ्जुभद्रः एक जिन का नाम।

मञ्जुश्रीः एक बोधिसत्त्व का नाम।

मठाधिपतिः [ष० त०] 1. किसी धर्मसंघ का प्रधान 2. मठ का अधीक्षक।

मठाम्नायः [ष० त०] विविध आध्यात्मिक श्रेणियों से संबद्ध कोई रचना।

मणिः [मण्+इन्] 1. रत्न, जवाहर 2. आभूषण 3. सर्वोत्तम पदार्थ 4. चुम्बक 5. कलाई 6. अयस्कान्त मणि 7. स्फटिक। सम०—काञ्चनयोगः उपयुक्त वस्तुओं का विरल मेल,—तुलाकोटिः जड़ाऊ पायजेब,—प्रभा एक छन्द का नाम,—विग्रह (वि०) रत्नजटित।

मण्डजातम् (नपुं०) जमा हुआ दूध, दही।

मण्डपीठिका परकार के दो चतुर्थांश।

मण्डनकालः श्रृंगार (प्रसाधन) समय—मामक्षमं मण्डनकालहानेः—रघु० १३।

मण्डनप्रियः (वि०) अलंकारप्रिय, आभूषणों का शौकीन।

मण्डलम् [मण्ड्+कलच्] 1. गोलाकार वस्तु, पहिया, अंगूठी, परिधि 2. सूर्य परिवेश, चन्द्र परिवेश 3. समुदाय, संग्रह, सेना 4. समाज 5. वर्तुलाकार गति 6. द्यूत पट्ट। सम०—आसन (वि०) वृत्त में बैठा हुआ,—कविः कठ कवि, तुक्कड़ कवि,—नाभिः वृत्त का केन्द्र, माडः मंडवा, प्रशाला,—वाटः उद्यान।

मण्डलकम् [मण्डल+कन्] 1. बाण विद्या में वर्णित एक विशेष मुद्रा 2. जादू की शक्तियों से युक्त एक वृत्त।

मण्डूकम् ढाल की मूठ।

मण्डूकपर्णा ब्राह्मी की जाति का एक पौधा।

मण्डूकपर्णिका दे० 'मण्डूकपर्णा'।

मण्डूकपर्णी दे० 'मण्डूकपर्णा'।

मतभेदः [स० त०] मतों में अन्तर, सम्मतियों की भिन्नता।

मतिः [मन्+क्तिन्] 1. बुद्धि, समझ, ज्ञान, निर्णयशक्ति 2. मन, हृदय 3. विचार, विश्वास, सम्मति, दृष्टिकोण 4. इरादा, प्रयोजन 5. प्रस्ताव, संकल्प 6. आदर, सम्मान 7. इच्छा 8. उपदेश 9. स्मृति 10. भक्ति, प्रार्थना। सम० कर्मन् बौद्धिक कार्य, गतिः (स्त्री०) चिन्तन क्रम, - दर्शनम् विचारों का अध्ययन।

मत्ताक्रीडा एक छन्द का नाम।

मत्तवारणः,—णम् 1. किसी भवन की चहारदिवारी 2. खूंटी या ब्रैकेट 3. चारपाई, पलंग।

मत्स्यः [मद्+स्यन्] 1. मछली 2. मत्स्य देश का राजा। सम०—उद्वर्तनम् एक प्रकार का नाच,—आजीवः मछियारा, मछली का व्यापार करने वाला,—सन्तानिकः पकी हुई मछली चटनी के साथ।

मथ्य (वि०) [मथ्+ण्यत्] मन्थन क्रिया के द्वारा प्राप्य, मथकर निकाला जाने वाला।

मदः [मद्+अच्] 1. सौन्दर्य 2. जन्मकुंडली में सातवां घर 3. अभिमान 4. पागलपन 5. अत्यन्त आवेश 6. हाथी के मस्तक से चूने वाला रस 7. प्रेम, मस्ती 8. सुरा,

शराब, 9. मधु 10. वीर्य 11. सोम 12. नद। सम० —भङ्गः घमंड का टूट जाना,—मत्ता एक छन्द का नाम।

मदनम् [मद्+ल्युट्] 1. नशा करना 2. उल्लास, हर्षातिरेक, नः 1. जन्मकुंडली में सातवाँ घर 2. एक प्रकार की संगीतमाप। सम०—अत्ययः नशे का आधिक्य, मदातिरेक।

मदिरामदान्ध (वि०) शराब पीकर धुत्त, अत्यंत नशे में।

मद्यकुम्भः शराब की सुराही, सुरा पात्र।

मद्यबीजम् खमीर उठाने के लिए औषधि।

मद्रदेशः मद्रों का देश।

मद्रनाभः एक संकर जाति।

मधु (नपुं०) [मन्+उ, नस्य धः] 1. शहद 2. फूलों का रस 3. मधुमक्खियों का छत्ता 2. मोम। सम०—पाका तरबूज,—पात्रम् सुरापात्र, मांसम् शराब और मांस, —वल्ली 1. एक प्रकार का अंगूर 2. मीठा नींबू।

मधुकाश्रयम् मोम।

मधुमती [मधु+मतुप्+ङीप्] 1. एक नदी का नाम 2. एक बेल का नाम 3. 'मधु वाता ऋतायते' से आरंभ होने वाली तीन ऋचाएँ।

मधुरस्वनः [ब० स०] शंख।

मधुराङ्गकः कषाय स्वाद, तीखा स्वाद।

मध्यमणिन्यायः एक नियम जिसके आधार पर मुख्य वस्तु दोनों पार्श्वों के बीच में रहे जैसे कि हार में मणि।

मध्यकम् सामान्य संपत्ति।

मध्यम (वि०) [मध्ये भवः म] 1. बीच का, केन्द्रीय 2. अन्तवर्ती 3. मध्यवर्ती,—मः 1. नितान्त बीच का पुत्र 2. राज्यपाल 3. भीम का विशेषण (मध्यमव्यायोग), -मम् (नपुं०) 1. जो अतिप्रशंसनीय न हो 2. ग्रहण का मध्यवर्ती बिन्दु। सम गतिः किसी ग्रह की औसत चाल, ग्रामः (संगीत० में) मध्यवर्ती लय, व्यायोगः भासकृत एक नाटक।

मध्यमीय (वि०) [मध्यम+छ] बीच का, केन्द्रीय।

मध्योदात्त (वि०) ऐसा शब्द जिसके मध्यवर्ती अक्षर पर उदात्त स्वर हो।

मन् (दिवा० तना० आ०) स्वीकार करना, सहमत होना।

मनस् (नपुं०) [मन्+असुन्] 1. मन, हृदय, समझ, बुद्धि 2. (दर्शन० में) संज्ञान व प्रज्ञान का एक अन्तर्वर्ती अंग, वह उपकरण जिसके द्वारा ज्ञानेन्द्रियों के विषय आत्मा को प्रभावित करते हैं 3. अन्तःकरण 4. अभिकल्प 5. संकल्प। सम०—ग्राह्य (वि०) मन से ग्रहण किये जाने के योग्य,—ग्लानिः मन का अवसाद,—धारणम् अनुग्रह की संराधना करना —पर्यायः सत्य के प्रत्यक्षीकरण में अन्तिम के पूर्व की स्थिति (जैन०),—रागः हृदयानुराग, प्रेम,—समृद्धिः मन का सन्तोष,—संवरः मन का दमन।

मनुः [मन्+उ] मानसिक शक्तियाँ देहोऽसवोऽक्षा मनवो भूतमात्रा—भाग० ६।४।२५।

मनुस्मृति मनुसंहिता, मनु द्वारा प्रणीत धर्मशास्त्र।

मनुष्ययानम् [प० त०] पालकी, शिविका।

मनुष्यसंकल्पः मानव की इच्छा।

मनोन्मनी दुर्गा का एक रूप।

मन्त्रः [मन्त्र्+अच्] 1. विष्णु का नाम, शिव का नाम 2. जन्मकुंडली में पाँचवाँ घर 3. वैदिक सूक्त 4. वेद का वह अंश जिसमें संहिता सम्मिलित है 5. प्रार्थना 6. गुप्त योजना 7. नय, नीति। सम० कर्कश (वि०) दृढ़नीति का समर्थक, - जागरः रात के जागरण के अवसर पर मन्त्रों का सस्वर पाठ,—रक्षा किसी नीति, विचार या रहस्य को गुप्त रखना, —संवरणम् किसी रहस्य, मन्त्रणा या नीति को गुप्त रखना,—स्नानम् स्नान करने के स्थान पर 'अघमर्षण' मन्त्रों का सस्वर पाठ करना।

मन्थ् (भ्वा० क्र्या० पर०) मिश्रित करना, मिला देना।

मन्थः [मन्थ्+घञ्] 1. मथना, बिलोना, हिलाना 2. मार डालना, नाश करना 3. मिश्रित पेय 4. रई, बिलोने का उपकरण, मन्थनदण्ड 5. सूर्य 6. आँखों के रोहे 7. पेय तैयार करने के लिए आयुर्वेद का एक योग। सम० विष्कम्भः मन्थनदण्ड।

मन्द (वि०) [मन्द्+अच्] 1. ढीला, शिथिल, निष्क्रियात्मक, अलस 2. शीतल, उदासीन 3. मूढ, दुर्बुद्धि, मूर्ख 4. नीचा, गहरा, खोखला 5. मृदु, सुकुमार 6. छोटा 7. दुर्बल, न्दः (पुं०) 1. शनिग्रह 2. यम का विशेषण। सम०—आस्यम् संकोच, झिझक, कर्मन् (वि०) कार्य करने में शिथिल,—जरस् (वि०) शनैः शनैः बूढ़ा होने वाला, पुण्य (वि०) दुर्भाग्यग्रस्त, बदकिस्मत।

मन्दामणिः पानी भरने का बड़ा घड़ा।

मन्दिरम् [मन्द्+किरच्] 1. भवन 2. आवास 3. नगर 4. शिविर 5. देवालय 6. काया, शरीर।

मन्दुरा [मन्द्+उरच्] 1. अश्वशाला, अस्तबल, तबेला 2. शय्या, चटाई। सम० पतिः,—पालः अश्वशाला का प्रबन्धकर्ता, भूषणम् बन्दरों की एक जाति।

मन्युसूक्तम् (नपुं०) मन्यु नामक सूक्त जो ऋग्वेद के दसवें मण्डल के ८३ व ८४वें सूक्त हैं।

ममतायुक्त (वि०) 1. अहंमन्य 2. कंजूस।

ममताशून्य (वि०) 1. अहंशून्य 2. अनासक्त।

मयिवसु (वि०) मेरे प्रति शुभ।

मयूखमालिन् (पुं०) सूर्य, सूरज।

मयूरः [मी ऊरन्] 1. मोर 2. एक प्रकार का फूल 3. एक

कवि का नाम (सूर्यशतक का प्रणेता) 1. सम० - **नृत्यम्** मोर का नाच, **पिच्छम्** मोर का चंदा।

मयूरिका (स्त्री०) 1. नथ, नाक का छल्ला 2 एक जहरीला जंतु।

मरकतश्याम (वि०) पन्ने जैसा काला, ऐसा काला जैसा कि मरकतमणि - माता मरकतश्यामा मातङ्गी मदशालिनी —श्याम०।

मरणम् [मृ+ल्युट्] 1. मरना मृत्यु 2. एक प्रकार का विष 3. अवसान 4. जन्मकुंडली में आठवाँ घर 5. शरण, शरणालय। सम०—**दशा** मृत्यु का समय, —**शील** (वि०) मर्त्य, मरणधर्मा।

मरीचिः [मृ+ईचि] 1. प्रकाश की किरण 2 प्रकाशकण 3. प्रकाश 4. मृगतृष्णा 5. आग की चिंगारी। सम० —**पाः** (मरीचिपाः) ऋषिवर्ग जो सूर्य की किरणें पीकर जीवित रहते हैं—रा० ३।६।२।

मरुः [मृ+उ] 1. रेगिस्तान, निर्जल प्रदेश 2. पहाड़, चट्टान 3. कुरबक नाम का पौधा 4. मद्यपान का त्याग। सम० —**प्रपतनम्** पहाड़ से छलांग लगाना।

मरुत् (पुं०) [मृ+उति] 1. वायु, हवा, समीर 2. प्राण वायु 3. वायु का देवता 4. देवता 5. मरुबक नाम का पौधा 6. सोना 7. सौन्दर्य। सम० **वृधा**, **वृधा** कावेरी नदी।

मर्जू (पुं०) [मृज्+ऊ] 1. धोबी 2. पीठमर्द, (स्त्री०) सफाई, पवित्रता।

मर्मन् (नपुं०) [मृ+मनिन्] 1. शरीर का महत्त्वपूर्ण भाग (शरीर का दुर्बल या सुकुमार अंग) 2. त्रुटि, विफलता 3. हृदय 4. गुप्त अर्थ 5. रहस्य 6. सत्यता। सम०—**घातः** मर्मस्थान पर आघात करना, —**जम्** रुधिर।

मर्यादा [मर्या (सीमा)+दा+क] 1. सीमा 2. अन्त 3. किनारा, तट 4. चिह्न 5. नैतिकता की सीमा प्रचलित नियम, प्रचलन 6. औचित्य का सिद्धान्त 7. करार। सम० **बन्धः** सीमा के अन्दर रहना, —**वचनम्** सीमाविषयक वक्तव्य,—**व्यतिक्रमः** सीमा का उल्लंघन।

मल (वि०) [मृज्+कल, टिलोपः] 1. मैला, गन्दा 2. लालची 3. दुष्ट, - **लः** **लम्** 1. मैल, गन्दगी, धूल अपवित्रता 2. विष्ठा, बीट 3. धातुओं का मोर्चा 4. शरीर के मल 5. कपूर 6. कमाया हुआ चमड़ा 7. वात, पित्त तथा कफ नामक दोष। सम० —**अपहा** एक नदी का नाम,—**पङ्किन्** (वि०) धूल या गन्दगी से भरा हुआ।

मल्लनालः (संगीत०) एक प्रकार की माप।

महत् (वि०) (म० महीयस्, उ० महिष्ठ) [मह्+अति] 1. बड़ा, विशाल, विस्तृत 2. पुष्कल, असंख्य 3. दीर्घ, विस्तृत 4. प्रबल, बलशाली 5. महत्त्वपूर्ण, आवश्यक 6. ऊँचा, प्रमुख, पूज्य। सम०—**आयुधम्** महान् शस्त्र, बड़ा भारी हथियार,—**औषधिः** (स्त्री०) एक आश्चर्य जनक बूटी, **कुलम्** उत्तम घराना, **द्वन्द्वः** सैनिक, जत्था,—**फलः** बेल का वृक्ष,—**व्यतिक्रमः** 1 भारी अतिक्रमण 2. महान् पुरुष का अनादर।

महा (कर्मधारय और बहुव्रीहि समास के आरंभ में 'महत्' शब्द का स्थानापन्न—इसके कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं)। सम० **अनिलः** बवंडर महानिलेनेव निदाघजं रजः - कि० १४।५९, **आरम्भः** महान् कार्य, विशाल पैमाने पर कार्य का आरंभ करना, **आलयः** देवालय, मन्दिर, तीर्थ स्थान **आलयामावस्या** वह अमावस्या जिससे महालयपक्षः आरंभ होता है,—**आलयपक्षः** माघ और पौष मास का पुनीत पितृपक्ष, **आलयश्राद्धः** महालय पक्ष में श्राद्ध करना, **ऊर्मिन्** (पुं०) समुद्र,—**ओघ** (वि०) प्रबल धाराओं से युक्त,—**कल्पः** ब्रह्मा के सौ वर्ष,—**चक्रम्** शक्ति की पूजा में रहस्यमय चक्र, **जङ्घः** ऊँट,—**जवः** बारहसिगा हरिण,—**दंष्ट्रः** बड़े व्याघ्र की एक जाति,—**दुर्गम्** महान् संकट, - **पराकः** एक प्रकार की तपस्या, —**पुराणम्** अठारह पुराणों में एक पुराण, **प्रश्नः** एक जटिल सवाल, **बिसी** एक प्रकार का चमड़ा,—**भाण्डम्** मुख्य कोष, **मृत्युंजयः** 1. मृत्यु के विजेता शिव को प्रसन्न करने का मन्त्र 2. एक औषधि का नाम,—**यानम्** एक बड़ी सवारी (पश्चवर्ती बौद्ध शिक्षण), **रवः** मेंढक, **रुजः** (वि०) अत्यन्त पीड़ाकर,—**लयः** 1. महा प्रलय 2. परमपुरुष जिसमें सब महाभूत लीन हो जाते हैं,—**विपुला** एक प्रकार का छन्द,—**शिवरात्रिः** फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष का चौदहवाँ दिन, शिवपूजा का माङ्गलिक दिवस, **श्लक्ष्णा** रेत, बालू,—**सन्निः** (पुं०) एक प्रकार का संगीत माप,—**सुधा** चाँदी।

महिनम् (नपुं०) प्रभुसत्ता, उपनिवेश।

महिमन् (पुं०) [महत्+इमनिच्] आठ सिद्धियों में से एक।

महिषमर्दिनी दुर्गादेवी।

मही [मह्+अच्+ङीप्] 1. पृथ्वी, धरती, भूमि 2. भूसंपत्ति, जायदाद 3. देश, राजधानी 4. खम्बात की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी 5. (ज्या० में) किसी आकृति की आधाररेखा 6. विशाल सेना 7. गाय। सम० **जीवा** क्षितिज, - **पृष्ठम्**, धरातल, भूमि की सतह, —**करोति** बड़ा बनाता है, प्रोन्नत करता है।

मांसम् [मन्+स, दीर्घश्च] 1. गोश्त, 2. मछली का मांस 3. फल का मांसल भाग,-**सः** 1. कीड़ा 2. संकर जाति, जो मांस बेचती है। सम० —**कामः** मांस का शौक़ीन, **कीलः** रसौली, **चक्षुः** नंगी आँख,—**परिवर्जनम्** मांस-भक्षण का त्याग।

मांसीयते (ना० धा० पर०) मांस के लिए लालायित रहना।
माक्षिकधातुः एक प्रकार का खनिज धातु।
मागधः [मगध+अण्] 1. मगध देश का राजा 2. साहित्य क्षेत्र में काव्यशैली का एक प्रकार।
मातङ्गलीला हस्तिविज्ञान पर एक कृति।
मातुलाहिः एक प्रकार का साँप।
मातृ (स्त्री०) [मान्+तृच्, नलोपः] 1. माता, जननी 2. स्त्रियों के प्रति आदर या सम्मान सूचक संबोधन 3. गाय 4. लक्ष्मी या दुर्गा का विशेषण 5. धरती माता। सम०—**दोषः** माता का दोष, **भक्तिः** माता के प्रति आदर सम्मान, —**शासितः** मूर्खव्यक्ति, सीधा सादा, भोंदू।
मातृका ग्रीवा की ८ नाड़ियाँ, शिराएँ।
मातृतः (अ०) मातृपरक पक्ष की ओर।
मात्र (वि०) [मा+त्रन्] आरम्भिक विषय।
मात्रा [मात्र+टाप्] 1. परिमाण 2. क्षण 3. अणु 4. अंश 5. वृत्त, विचार 6. धन 7. तत्त्व 8. भौतिक संसार 9. नागरी अक्षरों में स्वरों का चिह्न 10. कान की बाली 11. आभूषण 12. इन्द्रियों का कार्य 13. विकार। सम० **अङ्गुलम्** लगभग एक इंच की माप।

मात्स्यन्यायः एक सिद्धान्त जिसमें बड़ा छोटे को दबाता है, हर बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है।
माधवनिदानम् आयुर्वेद की एक कृति।
माधवी पशुओं की बहुतायत।
मानः [मन्+घञ्] 1. आदर, सम्मान 2. घमंड, अभिमान, अहंकार 3. आत्माभिमान, आत्मगौरव, —**नम्** 1. माप 2. निष्ठित मापदण्ड 3. आयाम। सम० —**अन्ध** (वि०) घमंड के कारण अंधा,—**अर्ह** (वि०) सम्मान के योग्य, आदर का अधिकारी,—**अवभङ्गः** प्रतिष्ठा भङ्ग होना, क्रोध का नाश,—**विषमः** खोटे बाँटों से तोलकर या मिथ्या मापकर गबन करना, ठगना—कौ० अ० २।८।२६, **सारः** अभिमान की बड़ी मात्रा।
मानसपूजा मानसिक पूजा।
मानुषम् [मनोरथम्—अण् सुक् च] 1. मानवता, मनुष्यत्व 2. मनुष्य की परिपक्वावस्था, पूर्ण पुरुषत्व। सम० —**अधमः** नीच पुरुष, ओछा मनुष्य।
मन्द्यव्याजः [प० त०] रोग का बहाना।
माया 1. दुर्गा का नाम 2. दक्षता, कला।

य

यकृत् [यं संयमं करोति कृ+क्विप् तुक् च] जिगर। सम०—**वैरिन्** (पुं०) औषध का एक पौधा, रक्तरोहड़ा।
यक्षः [यक्ष्+घञ्] 1. देवयोनि विशेष, जो कुबेर के सेवक हैं 2. भूतप्रेत 3. इन्द्र का महल 4. कुबेर 5. पूजा 6. कुत्ता। सम०—**धूपः** गूगल, लोबान।
यज्ञः [यज्+न] 1. यज्ञ, यज्ञीय संस्कार 2. पूजा की प्रक्रिया 3. अग्नि 4. विष्णु। सम०—**आयुधम्** यज्ञ में प्रयुक्त किया जाने वाला उपकरण,—**गुह्यः** कृष्ण, —**पत्नी** यजमान की पत्नी,—**शिष्टम्** यज्ञ का अवशिष्ट अंश—यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः —भग० ३।१३, **संस्तरः** यज्ञ की वेदी की स्थापना तथा इष्टकाचयन।
यज्ञायज्ञीयम् 1. सामसूक्त 2. गरुड के दोनों पंखों का प्रतीकात्मक नाम।
यत्नवत् (वि०) क्रियाशील, परिश्रमी, प्रयत्न करने वाला।
यतगिर (वि०) [ब० स०] चुप रहने वाला, जिसने अपनी वाणी को नियन्त्रित रक्खा है।
यतमैथुन (वि०) [ब० स०] जिसने मैथुन त्याग दिया है।
यतिचान्द्रायणम् विशेष प्रकार का तपश्चरण।
यत्रकामम् (अ०) जहाँ किसी का मन चाहे, इच्छानुसार।

यत्रकामावसायः योग की एक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य अपने आपको जहाँ चाहे ले जा सकता है।
यत्रसायंगृह (वि०) जहाँ सन्ध्या हो जाय या सूर्यास्त हो जाय वहीं ठहर जाने वाला व्यक्ति।
यथा (अ०) [यद् प्रकारे थाल्] जिस ढंग, जिस रीति से, जैसे, जिस प्रकार। सम०—**अनूक्तम्** (अ०) जैसा कि बतलाया गया है, या निर्देश किया गया है—मया यथानूक्तमवादि ते हरेः ··चेष्टितम् भाग० ३।१९। ३२,—**आश्रयम्** (अ०) आधार के अनुसार—सां० का० ४१, **उद्गत** (वि०) ज्ञानशून्य, मूर्ख, —**उद्गमनम्** (अ०) आरोह अनुपात के अनुसार, —**उपचारम्** (अ०) औचित्य के अनुरूप, शिष्टाचार-सापेक्ष, **उपदिष्ट** (वि०) जैसा निर्देश दिया गया हो, या जैसा परामर्श दिया गया हो,—**कारम्** (अ०) जिस किसी रीति से,—पा० ३।४।२८, —**क्लृप्ति** (अ०) समुचित रीति से, **क्षिप्रम्** (अ०) जितनी जल्दी हो सके,—**चित्तम्** (अ०) अपनी इच्छा के अनुसार, **तथ्यम्** (अ०) सचमुच, वास्तव में, —**न्यासम्** (अ०) जैसा कि विधान है, जैसा कि मूल पाठ में है,—**न्युप्त** (वि०) जैसा कि धरती में डाला गया है,—**पण्यम्** (अ०) विक्रेय वस्तु के मूल्य के

अनुसार, प्रत्यहंम् (अ०) योग्यता के अनुसार --प्रविष्टम् (अ०) जैसा अनुकूल हो, जैसा कि उपयुक्त हो, --प्रस्तावम् (अ०) सबसे पहले उपयुक्त अवसर पर, प्रस्तुतम् (अ०) 1. अन्त में 2. प्रस्तुत विषय के अनुरूप,—भूयस् (अ०) वरीयता के अनुकूल,—मूल्यम् (अ०) मूल्य के अनुसार,—रसम् (अ०) रस या स्वाद के अनुकूल, लब्ध (वि०) जैसा कि वस्तुतः प्राप्त हो चुका है, विनियोगम् (अ०) निर्दिष्ट प्राथमिकता के अनुसार,—व्युत्पत्ति (अ०) ज्ञान की गहराई के अनुकूल,—शब्दार्थम् शब्द के अर्थों के अनुसार -- यथाशब्दार्थं प्रवृत्तिः, मै० सं० ११।१।२६ पर भाष्य,—संस्यम् (अ०) परिस्थिति के अनुकूल,-- सवनम् ऋतु के अनुकूल, सारम् गुण के अनुसार, स्थूलम् (अ०) जैसा कि अतिरिक्त रीति से कहा गया है, स्व (वि०) अपने अपने आवास या स्थान के अनुसार।

यदवधि (अ०) जिस समय से।

यदात्मक (वि०) जिस सत्ता परक।

यद्वद (वि०) इच्छानुसार बोलने वाला।

यदीय (वि०) [यद्+छ] जिसका, जिससे संबद्ध।

यन्त्रम् [यन्त्र्+अच्] 1. जो रोकता, या बांधता है 2. सहारा, थूनी 3. बेड़ी, हथकड़ी 4. शल्य क्रिया का उपकरण (शस्त्र) 5. मशीन, संयत्र 6. कुंडी, ताला, चाबी 7. प्रतिबन्ध, शक्ति 8. तावीज 9. छिद्र करने की मशीन। सम०—आरूढ (वि०) घूमने वाली मशीन पर चढ़ा हुआ, भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया-भग०,—कोविदः यन्त्रकार, मशीन पर कार्य करने वाला—रा० २।८०।२,—गृहम् यन्त्रागार, जहां किसी को यन्त्रणा दी जाती है, —धारागृहम् वह स्थान जहां फौवारा लगा हुआ हो, —सूत्रम् गुड़िया या पुत्तलिका को रंगमंच पर हिलाने वाली डोरी।

यन्त्रकम् [यन्त्र+कन्] 1. हाथ से चलायी जाने वाली मशीन, खैराद 2. सामान का बंडल निधीयमाने भरभाजि यन्त्रके—कि० १२।९।

यन्त्रिका [यन्त्र्+ण्वुल्] छोटी साली, पत्नी की छोटी बहन।

यन्त्रित (वि०) [यन्त्र्+क्त] 1. भड़काया हुआ 2. नियमों से नियन्त्रित या प्रतिबद्ध 3. तनाव को बढ़ाने के लिये निकाला हुआ 4. आकृष्ट अथवा मदभिस्नेहाद्भवती यन्त्रिताशया भाग० १०।२९।२३।

यम (वि०) [यम्+घञ्] 1. यमल, जोड़आ 2 दोहरा, —मः 1. प्रतिबन्ध, नियन्त्रण, दमन 2. आत्मसंयम 3. कोई नैतिक कर्तव्य (विप० नियम) 4. योग के आठ अङ्गों में से एक 5. मृत्यु का देवता 6. शनि 7. कौवा 8. 'दो' की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 9. लगाम 10 चालक, रथवान,—मम् 1. जोड़ा 2. संयुक्त व्यंजन,—मी यमुना नदी,—मौ (पुं० द्वि० व०) 1. युगल, जोड़आ—धृति संयमौ यमौ —कि० १।३६ 2. अश्विनीकुमार। सम० अनुजा यमुना नदी, घण्टः ज्योतिष का एक अशुभ योग, —द्रुमः सप्तपर्ण वृक्ष, पटः, पट्टिका कपड़े की एक पट्टी जिस पर यम, यम के अनुचर तथा नारकीय यातनाओं का चित्रण अङ्कित रहता है यावदेतद् गृहं प्रविश्य यमपटं दर्शयन् गीतानि गायामि —मुद्रा० १।१८,—व्रतम् 1. यम को प्रसन्न करने के लिए व्रत रखना 2. निष्पक्ष दण्ड विधान—मनु० ९।३०७,—शासनः शिव, यमशासनालयक्षमाधरस्पर्धनमाचचार सः—रा० च० २।१२,—श्रायम् यम का वासस्थान।

यमककाव्यम् यमक-प्रधान कविता, वह काव्य जिसमें यमक अलंकार की बहुतायत हो।

यमलार्जुनौ दो अर्जुन के वृक्ष (जिनको कृष्ण ने बचपन में उखाड़ दिया था)।

यमिका एक प्रकार की सूखी खांसी।

यमेरुका एक प्रकार का घण्टा जिस पर आघात करके समय की सूचना दी जाती है।

यवः [यु+अच्] 1. जौ 2. महीने का पहला पक्ष 3. गति, चाल 4. ज्योतिष का एक योग 5. जव, वेग 6. दुगुना उन्नतोदर शीशा 7. एक टापू का नाम। सम० द्वीप. वर्तमान जावा टापू,—नालः एक प्रकार का खाद्य पौधा।

यवनाचार्यः ज्योतिष के 'ताजिक' नाम की कृति का विख्यात प्रणेता।

यवनिका -- यवनी पर्दा।

यशस् (नपुं०) [अश् स्तुतौ असुन् धातोः ल्युट् च] 1. कीर्ति ख्याति, प्रसिद्ध 2. पूज्य व्यक्ति 3. प्रसाद 4. धन 5. आहार 6. जल 7. विरल गुणों का एकत्र संग्रह 8. परोक्ष कीर्ति— छा० उ० ३।१८।३। सम० धा कीर्ति प्रदान करने वाला।

यष्टिः (स्त्री०) [यज्+क्तिन् नि० न संप्रसारणम्] 1. लकड़ी 2. गदा 3. स्तम्भ 4. सहारा, टेक 5. ध्वजदंड 6. डोरी, धागा 7. हार, लड़ी। सम०—आघातः डंडे की मार,— उत्थानम् लकड़ी की सहायता से उठना,—यन्त्रम् समय को मापने के लिए ज्योतिष का एक साधन।

यस्मात् (अ०) 1. जिससे, जब से, जिस बात से 2. ताकि, जिससे कि।

या (अदा० पर०) विदा करना।

यागः [यज्+घञ्, कुत्वम्] 1. यज्ञ, आहुति 2. उपस्थान

उपहार, प्रदान । सम०—**कण्टक** 1. बुरा यजमान 2. जो यज्ञ को विगाड़ता है,—**संप्रदानम्** यज्ञीय पदार्थ को लेने वाला—पा० ४।२।२४ पर काशिका, —**सूत्रम्** यज्ञीय यज्ञोपवीत, जनेऊ ।

याच्ञा [याच्+नङ्] 1. माँगना । 2. साधुता 3. प्रार्थना. सम०—**जीविका,—जीवनम्** भिक्षावृत्ति पर जीने वाला,—**भङ्गः** प्रार्थना को ठुकरा देना ।

याजुकः यजमान, यज्ञ करने वाला ।

याज्ञसेनः } शिखण्डी का पैतृक नाम ।
याज्ञसेनिः } महा० ७।१४।४४

याज्या [यज्+णिच्+यत्+टाप्] आहुति देते समय प्रयुक्त किया जाने वाला यज्ञीय नियम ।

यातिकः [यात+ठक्] यात्री ।

यातुनारी राक्षसी, पिशाचिनी वभ्राम त्रिजगती या तु यातुनारी—रा० च० ७।१० ।

यात्यः नरक में रहने वाला ।

यात्राकर (वि०) जीवन का सहारा देने वाला (साधन)

यात्रादानम् यात्रा पर जाते समय दिया गया उपहार ।

याथात्म्यम् [यथात्मा+ष्यञ्] वास्तविक स्वभाव या प्रयोजन ।

यानम् [या+ल्युट्] 1. जलयान, पोत 2. जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति का उपाय तु० महायान, हीनयान 3. वायवी रथ, हवाई गाड़ी । सम०—**आस्तरणम्** गाड़ी की गद्दी, बैठने का आसन—मृच्छ०,—**स्वामिन्** गाड़ी का मालिक ।

याम (वि०) (स्त्री०—मी) [यम+अण्] यम से संबन्ध रखने वाला—याभिश्चिरं यातनाः—मुकुन्द० १०,—**मः** (पुं०) देवों का समुदाय—यामैः परिवृतो देवैः—भाग० ८।१।१८ । सम०—**नादिन्** मुर्गा,—**पालः** समय पालक,—**भद्रः** मंच ।

यामिकाचरः } 1. राक्षस 2. उल्लू ।
यामिनीचरः }

यामलम् तन्त्रग्रन्थ ।

यामिः,—मी, [या+मि, ङीप् वा] 1. दक्षिणी दिशा 2. भरणी नामक नक्षत्र ।

यावकः—कम् [यव+अण्, स्वार्थे कन्] एक व्रत जिस में जौ खाकर रहना पड़ता है ।

यावदध्ययनम् (अ०) पढ़ने के समय, विद्यार्थी अवस्था में ।

यावत्संपातम् (अ०) जहाँ तक संभव हो ।

यावतिथ (वि०) जहाँ तक, जिस बिन्दु तक, जिस अंश तक ।

यावनीप्रिया पान की बेल ।

यावसिकः [यवस+ठक्] घसियारा, घास काटने वाला ।

युक्त (वि०) [युज्+क्त] 1. जुड़ा हुआ, मिला हुआ बाँधा हुआ 2. जुए में जोड़ा हुआ 3. व्यवस्थित 4. समवेत 5, संपन्न, भरा हुआ 6. स्थिर किया हुआ, जमाया हुआ 7. संवद्ध 8. सिद्ध, अनुमित 9. सक्रिय, परिश्रमी 10. (ज्यो०) सयुक्त, मिला हुआ । सम० —**चेष्ट** (वि०) उचित कार्य में संलग्न,—**वादिन्** (वि०) उपयुक्त बात कहने वाला ।

युक्तकम् [युक्त+कन्] जोड़ा ।

युगम् [युज्+घञ्, कुत्वं, न गुणः] 1. जूआ 2. जोड़ा 3. चन्द्रमा की सापेक्ष स्थिति । सम० **धुर्** (स्त्री०) जूए की कील, **मात्रम्** जूए की लंबाई के बराबर माप अर्थात् चार हाथ की लम्बाई,—**वरत्रम्** जूए का फीता या तस्मा ।

युगन्धरः,—रम् गाड़ी की वह लकड़ी जिसमें जूआ लगा रहता है ।

युगन्धरा एक देवी योगिनी योगदा योग्या योगानन्दा युगन्धरा—ललिता० ।

युगी (स्त्री०) बहुतायत योधयुग्या शूरसमृद्ध्या युजे रौणादिकः किः—कुत्वमार्षम्—महाभाष्य ५।६३।३ पर टीका ।

युग्म (वि०) [युज्+मक्] सम, दो से भाग होने वाली संख्या,—**ग्मम्** 1. जोड़ा 2. संघ, जंकशन 3. संगम 4. युगल 5. मिथुन राशि । सम०—**चारिन्** (वि०) जोड़े के रूप में घूमने वाला,—**विपुला** एक छंद का नाम,—**शुक्लम्** आँखों में दो सफेदी के बिन्दु ।

युङ्ग् } (भ्वा० पर०) छोड़ देना, त्याग देना ।
युञ्ज् }

युङ्गिन् (पुं०) [युङ्ग्+इनि] एक संकर जाति ।

युछ, युच्छ् (भ्वा० पर०) 1. भूल करना, भटक जाना 2. विदा होना, चले जाना ।

युद्धम् [युध्+क्त] 1. लड़ाई, संग्राम, झड़प, संघर्ष, समर 2. ग्रहों का विरोध या संघर्ष । सम० **अपहारिकम्** युद्ध में जीतने पर प्राप्त सामग्री, संपत्ति, **गान्ध—र्वम्** रणभेरी, युद्ध का गीत, **तन्त्रम्** युद्ध विज्ञान, सैनिक शिक्षा, **ध्वानः** युद्ध का आक्रन्द, **योजक** (वि०) युद्ध भड़काने वाला,—**व्यतिक्रमः** युद्ध कला के नियमों का उल्लंघन ।

युद्धकम् [युद्ध+कन्] संग्राम, रण, समर, लड़ाई ।

युधिक (वि०) [युध्+ठन्] लड़ाकू, योद्धा, लड़ने वाला ।

योद्धृ (पुं०) [युध्+तृच्] योद्धा, सिपाही ।

युयुक्खुरः चीता या भेड़िये की जाति का जन्तु, क्षुद्र व्याघ्र, बिज्जू ।

युवन् (वि०) [यु+कनिन्] 1. जवान 2. हृष्ट-पुष्ट 3. उत्तम, श्रेष्ठ(पुं० युवा)4. साठ वर्ष का हाथी 5. एक संवत्सर । सम० **जानिः** वह पुरुष जिसकी पत्नी जवान है, युवजानिर्धनुष्पाणिः—भट्टि० ५।१३, —**पलित** (वि०) समय से पूर्व जिसके बाल पक गये हैं,—पा० २।१।६७ पर भाष्य,—**हन्** शिशु हत्या ।

युवकः [युवन् +कन्, नलोपः] जवान,तरुण ।

युवानक (वि०) [युवन्+आनक न लोपः] तरुण, जवान ।

युवतिः [युवन्+ति] जवान स्त्री, तरुणी । सम०—**इष्टा** पीले रंग की चमेली,—**जनः** तरुणी स्त्रियाँ ।

युष्मदर्थम् (अ०) आपके लिए, आपकी खातिर ।

युष्मदायत्त (वि०) जो कुछ आपके अधीन है, आपके नियन्त्रण में है ।

युष्मद्वाच्यम् (व्या०) मध्यम पुरुष ।

युष्मद्विध (वि०) आप जैसा, आपकी तरह का ।

युष्मत्क (वि०) आपका, आपसे संबंध रखने वाला ।

यूकालिक्षम् 1. जूँ और उसका अंडा (लीक) 2. लीक ।

यूथम् [यु+थक्, पृषो० दीर्घः] रेवड़, लहंडा, समूह, समुदाय । सम०—**चारिन्** (वि०) जो सामूहिक रूप से (हाथियों की भाँति) घूमता है, किसी रेवड़ में या लहंडे में,—**परिभ्रष्ट** (वि०) अपने समूह से भटका हुआ, **बन्धः** रेवड़, लहंडा ।

यूथशः (अ०) [यूथ+शस्] रेवड़ में, लहंडे में, पंक्ति में ।

यूपः [यु+पक्, पृषो० दीर्घः] 1. यज्ञीय स्थूणा (जो प्रायः बाँस या खैर की लकड़ी की होती है) जिससे यज्ञीय पशु बाँध दिया जाता है 2. विजयस्तम्भ । सम० **कर्मन्यायः** वह नियम जिसके अनुसार विकृति से संबद्ध किसी विवरण का उत्कर्ष या अपकर्ष केवल उसी विवरण तक लागू रहेगा जिससे कि तदादि-तदन्त न्याय का उपयोग न हो सके—मी० सं० ५।१। २७ पर शा० भा० ।

योगः [युज्+घञ्, कुत्वम्] 1. आक्रमण—योगमाज्ञापयामास शिवस्य विषयं प्रति—शिव० १३।७, 2. सतत संसक्ति, लगातार मिलाना—मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी—भग० १३।१० 3. समता, साम्य—समत्वं योग उच्यते—भग० २।४० 4. दुःख के जोड़ों से छुटकारा—दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम् भग० 5. मिलाना, जोड़ना 6. संपर्क 7. उपयोग 8. परिणाम 9. जूआ । सम०—**अभ्यासिन्** (वि०) जो योग का अभ्यास करता है, —**आख्या** केवल आकस्मिक संपर्क के कारण व्युत्पन्न नाम—एषा योगाख्या योगमात्रापेक्षा न भूतवर्तमानभविष्यत्संबन्धापेक्षा मी० सू० १।३।२१ पर शा० भा०—**आपत्तिः** प्रचलन में परिवर्तन,—**क्षेमः** 1. समृद्धि, सुरक्षा 2. कल्याण, भलाई 3. धार्मिक कार्यों के निमित्त कल्पित संपत्ति—मनु० ९।२१९, —**दण्डः** योग की शक्ति से युक्त छड़ी जादू की छड़ी,—**नाविकः**,—नाविक, एक प्रकार की मछली, —**पदम्** स्वसंकेन्द्रण की स्थिति,—**पानम्** मूर्छा लाने वाले पदार्थों से युक्तशराब, पीनक,—**पीठम्** योग का अभ्यास करते समय बैठने की विशेष मुद्रा, —**पुरुषः** गुप्तचर,—यथा योगपुरुषैरन्यान् राजाधितिष्ठति—कौ० अ० १।२१,—**भ्रष्ट** (वि०) जो योग के मार्ग से पतित हो गया है—शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते—भग०,—**यात्रा** परमेश्वर से सायुज्य प्राप्त करने का मार्ग,—**युक्त** (वि०) योगमार्ग में संलग्न—योगयुक्तो भवार्जुन—भग० ८।२७,—**वामनम्** गुप्त उपाय,कूटयुक्ति, कपटयोजना, कौ० अ०,—**वाहक** (वि०) विघटनकारी (रसायन०),—**विद्या** योगशास्त्र,—**संसिद्धिः** योगाभ्यास में पूर्णसाफल्य प्राप्त करना,—**सिद्धिन्यायः** एक न्याय जिसके अनुसार नाना प्रकार के फलों को देने वाली एक विशिष्ट प्रक्रिया एक समय में केवल एक ही फल दे सकती है, दूसरा फल प्राप्त करने के लिए उस प्रक्रिया का पृथक् रूप से दूसरा प्रयोग करना पड़ेगा मी० सू० ४।३।२७-२८ पर शा० भा० ।

यौगिक (वि०) [योग+ठक्] अभ्यास के लिए अयुक्त (जैसा कि 'यौगिकं चापं' तीरन्दाजी अभ्यास प्राप्त करने के लिए धनुष) ।

योग्य (वि०) [युज्+ण्यत्, योग+यत् वा] 1. उपयुक्त, समुचित 2. पात्र 3. उपयोगी, कामचलाऊ—**ग्यः** (पुं०) 1. पुष्य नक्षत्र 2. भारवाही पशु,—**ग्यम्** 1. सवारी, गाड़ी 2. चन्दन 3 रोटी 4. दूध ।

योग्या [योग्य+टाप्] 1. एक देवी का नाम—योगिनी योगदा योग्या—ललिता० 2. पृथ्वी 3. सूर्य की पत्नी का नाम ।

योजनम् [युज्+ल्युट्] 1. जोड़ना, मिलाना 2. तत्परता व्यवस्था 3. परमात्मा 4. अंगुली 5. चार कोस की दूरी ।

योजित (वि०) [युज्+णिच्+क्त] 1. जूए में जोता हुआ 2. प्रयुक्त, काम में लिया गया 3. मिला, संयुक्त 4. सम्पन्न ।

योधेयः [योधा+ढक्] 1. योद्धा, एक वंश का नाम ।

योन (वि०) [योनि+अण्] वंश या कुल से संबन्ध रखने वाला ।

योनिः [यु+नि] 1. ऋग्वेद की वह आधारभूत ऋचा जिस पर 'साम' का निर्माण हुआ 2. तांबा 3. मूल कारण 4. समझ का स्रोत—योनिर्ज्ञप्तिकारणं 'वेदोऽखिलो धर्ममूल'मित्यादिनोक्तमित्यर्थः—मी० सू० २।२५ पर शा० भा० 5. इच्छा—योनिपातालदुस्तराम्—महा० १२।२५०।१५ । सम०—**गुणः** गर्भाशय या मूलस्थान से व्युत्पन्न गुण,—**दोषः** 1. योनिसंबन्धी विकार 2. स्त्री की जननेन्द्रिय में कोई दोष,—**मुक्त** (वि०) जन्म मरण के चक्र से छुटकारा पाये हुए,—**मुद्रा** अंगुलियों द्वारा ऐसी

विशिष्ट आकृति बनाना जो स्त्री की योनि से मिलती जुलती हो,—संवरणम्,—संवृत्तिः योनि या भग को सिकोड़ना,—संकटम् पुनर्जन्म ।

योषाग्राहः } **योषिद्ग्राहः** } विधवा स्त्री से विवाह करने वाला, मृतक व्यक्ति की पत्नी को ग्रहण करने वाला ।

यौगपदम् दे० यौगपद्यम् ।

यौगपद्यम् [युगपद्+य] भिन्न भिन्न स्थानों से एक ही साथ एक वस्तु को देखना—आदित्यवद्यौगपद्यम् मी० सू० १।१।५ ।

यौन (वि०) [योनि+अण्] (समास में) 1. मूल स्थान, उद्गमस्थान—यत्राग्नियौनाश्च वसन्ति लोकाः—महा० १३।१०२।२५ 2. गर्भाधानसंस्कार । सम०—**अनुबन्धः** रक्तसम्बन्ध,—यौनानुबन्धं च समीक्ष्य कार्ये—कौ० अ० २।१०,—**सम्बन्धः** दे० यौनानुबन्ध ।

यौनिकः [योनि+ठक्] मध्यम वायु, सुहावनी हवा ।

यौवनम् [युवन्+अण्] जवानी, वयस्कता । सम०—**आरूढ** (वि०) किशोर, वयस्क,—**उद्भेदः** 1. जवानी के आवेश का मादक उत्साह 2. यौन प्रेम, काम वासना 3. जवानी की कली का खिलना 4. वयस्कता प्राप्त करना—**कण्टकः**,—**कण्टकम्**,—**पिडिका** यौवनारम्भ का संकेत करने वाली चेहरे पर छोटी-छोटी फ़िसियाँ, **प्रान्तः** जवानी के किनारे पर,—**श्रीः** जवानी का सौन्दर्य ।

यौवनीय (वि०) युवक, तरुण ।

य्वागुली चावलों का मांड, यवागू ।

र

रकसा (स्त्री०) कोढ़ का एक भेद ।

रक्त (वि०) [रञ्ज्+क्त] 1. रङ्गा हुआ, रंगीन 2. लाल 3. प्रिय, प्यारा 4. सुन्दर, सुहावना 5. अनुस्वार युक्त (स्वर),—**क्तः** (पुं०) 1. लाल रंग 2. मंगल ग्रह 3. शिव,—**क्तम्** (नपुं०) 1. रुधिर, खून 2. ताँबा 3. ज़ाफ़रान 4. सिन्दूर 5. आँखों का एक रोग 6. लाल चन्दन,—**क्ता** (स्त्री०) 1 लाख 2. गुञ्जा 3. आग की सात लपटों में से एक । सम०—**कुमुदम्** लाल कमलिनी,—**च्छद** (वि०) लाल पत्तों वाला,—**पद्मम्** लाल कमल,—**बीजः** 1. एक राक्षस जिसको दुर्गा देवी ने मारा था 2. अनार का वृक्ष,—**विकारः** रुधिर का ह्रास,—**ष्ठीवी** रुधिर थूकने वाला,—**स्रावः** शरीर के अन्दर नस फट जाने से रक्त बहना ।

रक्ष् (भ्वा० पर०) सावधान होना, जागरूक होना ।

रक्षा [रक्ष्+अ+टाप्] 1. बचाना, रखना 2. सावधानी, सुरक्षा 3. चौकीदारी 4. रक्षा तावीज 5. भस्म 6, रक्षाबन्धन, पहुँची 7. लाख । सम०—**प्रतिसरः** कलाई पर तावीज की भाँति बाँधी जाने वाली पहुँची, रक्षाबन्धन,—**महौषधिः** रक्षा करने की श्रेष्ठतम औषधि ।

रक्षितकम् [रक्ष्+क्त, स्वार्थे कन्] सुरक्षा ।

रघुः सूर्यवंश का एक प्रतापी राजा, दिलीप का पुत्र और अज का पिता । सम०—**उद्वहः** रघुवंश में सर्वोत्तम, राम,—**कारः** 'रघुवंश' नामक काव्य का प्रणेता कालिदास ।

रङ्ख् (भ्वा० पर०) जाना ।

रङ्गः [रञ्ज्+घञ्] 1. रंग, वर्ण 2. मंच, क्रीडागार, आमोद का सार्वजनिक स्थान 3. श्रोतृवर्ग 4. रणक्षेत्र 5. नाचना, गाना, अभिनय करना । सम०—**क्षारः** सुहागा,—**तालः** एक प्रकार का सङ्गीत का माप,—**दः** सुहागा,—**नाथः**, **राजः**, **धामन्**,—**शायिन्** विष्णु के विशेषण (मद्रास राज्य के श्रीरङ्गम् स्थान पर स्थित मन्दिर), **प्रवेशः** रङ्गमञ्च पर पधारना, वेदी पर उपस्थित होना, **मङ्गलम्** वेदी पर 'आवाहन' उत्सव मनाना ।

रचनम् [रच्+ल्युट्] 1. योजना, उपाय 2. बाग में पंख जमाना ।

रचित (वि०) [रच्+क्त] आविष्कृत, निर्मित । सम०—**पूर्व** (वि०) जो पहले ही बन चुका है ।

रजयित्री [रञ्ज्+तृच्+ङीप्] स्त्री चित्रकार ।

रजस् (नपुं०) [रञ्ज्+असुन्, नलोपः] 1. धूल, गर्द 2. पुष्प की धूल, पराग 3. अन्धेरा 4. आवेश, नैतिक अन्धकार 5. तीनों गुणों में दूसरा 6. भाप 7. बादल या वर्षा का पानी 8. पाप—प्रायश्चित्तं च कुर्वन्ति तेन तच्छाम्यते रजः—रा० ४।८।३४ । सम०—**जुष्** (वि०) रजोगुण से युक्त, **मेघः** धूल का बादल,—**विधूम्र** (वि०) धूल से भूरे रङ्ग का हुआ—युधि तुरगरजो विधूम्रविष्वक्····· भाग० १।९।३४ ।

रणः, **णम्** [रण्+अप्] 1. युद्ध, लड़ाई 2. युद्धक्षेत्र । सम०—**अतिथिः** युद्ध चाहने वाला अतिथि—श्लाघ्यः प्राप्तो रणातिथिः पञ्च० २।१३,—**मार्गः** युद्धक्षेत्र में लड़ने की रीति,—**रणायित** (वि०) 'रण-रण' शब्द करता हुआ,—**रसिक** (वि०) लड़ाई का इच्छुक.—**शूरः**, **शौण्डः** युद्ध कला में प्रवीण ।

रण्डाश्रमिन् (वि०) जो पैंतालीस वर्ष की आयु के पश्चात् विधुर हो जाता है ।

रतोत्सवः कामकेलि, शृंगार परक क्रीडा ।

रतवैपरीत्यम् सम्भोग या मैथुन की प्रक्रिया जिसमें स्त्री पुरुष की भाँति आचरण करती है ।

रतिः [रम्+क्तिन्] 1. हर्ष, आह्लाद 2. आसक्ति, अनुराग 3. यौनसुख 4. संभोग, मैथुन 5. कामदेव की पत्नी 6. चन्द्रमा की छठी कला । सम० **खेदः** मैथुन करने से उत्पन्न थकावट, **पाशः,—बन्धः** मैथुन करने की विशिष्ट रीति,—**रहस्यम्** कोक्कोक पंडित द्वारा प्रणीत 'कामशास्त्र',—**सुन्दरः** एक प्रकार का रतिबंध ।

रतूः (स्त्री०) 1. दिव्यनदी, स्वर्गंगा 2. सत्य से युक्त शब्द या भाषण रतूस्यात् सत्यभाषकः कोश० ।

रत्नम् [रम्+न, तान्तादेशः] 1. रत्न, जवाहर, मूल्यवान् पत्थर 2. कोई भी अमूल्य पदार्थ 3. कोई भी उत्तम या श्रेष्ठ वस्तु 4. जल 5 चुम्बक । सम०—**अङ्गः** मूंगा,—**अचलः** आख्यानों में वर्णित लंका में स्थित एक पहाड़,—**कुम्भः** रत्नों से भरा हुआ घड़ा, **कूटः** एक पहाड़ का नाम, **गर्भः** 1. कुबेर 2. समुद्र,—**गर्भगणपतिः** गणपति की एक विशेष मूर्ति,—**च्छाया** रत्नों की कान्ति रत्नच्छायाव्यतिकरमिव प्रेक्ष्यमेतत् पुरस्तात् —मेघ०,—**धेनुः** रत्नों के ढेर में (दान के लिए) दी जाने वाली प्रतीकात्मक गाय, **पञ्चकम्** पाँच रत्न—सोना, चाँदी, मोती, हीरा, और मूंगा, —**वरम्** सोना ।

रथः [रम्+कथन्] 1. गाड़ी, बहली 2. पैर 3. अंग, भाग, 4. शरीर 5. हर्ष, आह्लाद । सम० **आरोहः** जो रथ पर बैठ कर युद्ध करता है, **उडुपः,—उडुपम्** रथ का ढांचा,—**घोषः** रथ के चलने का 'घरघर' शब्द,—**वारकः** शूद्र द्वारा सैरन्ध्री में उत्पन्न पुत्र, —**विज्ञानम्,—विद्या** रथ हाँकने की कला ।

रथन्तरम् एक साम का नाम ।

रथिन् (वि०) [रथ+इनि] 1. रथ में सवार 2. रथ का स्वामी,—(पुं०) 1. क्षत्रिय जाति का पुरुष 2. रथ पर बैठ कर युद्ध करने वाला योद्धा ।

रथ्या [रथ+यत्+टाप्] 1. सड़क 2. सड़कों का संगम स्थान 3. बहुत से रथ या गाड़ियाँ । सम०—**मुखम्** किसी सड़क पर प्रविष्ट होने का द्वार,—**मृगः** गली का कुत्ता ।

रदनः [रद्+ल्युट्] दाँत ।

रदनम् [रद्+ल्युट्] फाड़ना, कुतरना, खुरचना ।

रन्ता (स्त्री०) गाय ।

रन्ध्रम् [रध्+रक्, नुमागमः] 1. छिद्र 2. जन्मकुंडली में लग्न से आठवाँ घर । सम०—**गुप्तिः** दोषों या त्रुटियों का छिपाना ।

रभसः [रभ्+असच्] विष, जहर ।

रमणकः [रम्+ल्युट्, कन्] एक द्वीप का नाम ।

रम्या [रम्+यत्+टाप्] (संगीत०) श्रुति का एक भेद ।

रवणः [रु+युच्] 1. ऊँट 2. कोयल 3. मधुमक्खी 4. ध्वनि 5. एक बड़ा खीरा ।

रविः [रु+अच्(इ)] 1. सूर्य 2. पर्वत 3. मदार का पौधा 4. बारह की संख्या । सम० **इष्टः** नारंगी, संतरा, —**ध्वजः** दिन,—**बिम्बः** सूर्यमंडल,—**सारथिः** 1. अरुण 2. उषःकाल ।

रशना [अश्+युच्, रशादेशः] 1. रस्सी 2. लगाम 3. तगड़ी । सम०—**पदम्** कूल्हा,—**ग्राहः** रथवान, मालिन् सूर्य ।

रसः [रस्+अच्] 1. (वृक्षों का) रस 2. तरल पदार्थ 3. सुरा, पेय 4. घूंट, (दवा की) मात्रा 5. स्वाद, रस 6. प्रेम 7. प्रेम, अनुराग 8. हर्ष, आमोद 9. (साहित्यिक) रस 10. सत, अर्क 11. वीर्य 12. पारा 13. विष 14. गन्ने का रस 15. पिघला हुआ मक्खन 16. अमृत 17. रसा (शाक भाजी का) 18. हरा प्याज 19. सोना 20. छः की संख्या का प्रतीक 21 रसग्रहण करने का अंग जिह्वा भाग०८।२०।२७ 22. पिघली हुई धातु । सम०—**इक्षुः** गन्ना,—**उत्पत्तिः** (अलं०) 1. रस की निष्पत्ति 2. संजीवन रस की उपज,—**घन** (वि०) रस से भरा हुआ,—**ज्ञानम्** भैषज्यविज्ञान,—**तन्मात्रम्** रस या स्वाद का सूक्ष्म तत्त्व,—**निवृत्तिः** स्वाद का न होना, रसहीनता, —**भेदः** पारे का निर्माण ।

रसना [रस्+युच्] जिह्वा । सम० **अग्रम्** जिह्वा का अग्रभाग,—**मूलम्** जिह्वा की जड़ ।

रसवत्ता [रस+मतुप्+तल्+टाप्] कला की परख-सा रसवत्ता विहता —वासव० ।

रसातलम् [प० त०] 1. सात लोकों में से एक, पृथ्वी के नीचे का लोक, पाताल 2. लग्न से (जन्मकुंडली में) चौथा घर ।

रस्या [रस्+यत्+टाप्] एक देवी का नाम ।

रहस्यत्रयम् विशिष्ट द्वैत शाखा के तीन मुख्य सिद्धान्त (ईश्वर, चित् और अचित्) ।

रहितात्मन् [ब० स०] जिसके आत्मा न हो (अर्थात् जो अपने आत्मा की बात का आदर न करता हो) ।

राक्षसः [रक्षस्+अण्] 1. भूत प्रेत, पिशाच 2. हिन्दुओं में आठ प्रकार के विवाहों में से एक 3. एक संवत्सर का नाम ।

रागः [रञ्ज्+घञ्] 1. प्रज्वलन 2. मिर्चमसाला 3. प्रेम, आवेश, यौनभावना 4. लालिमा । सम०—**वर्धनः** एक प्रकार का (संगीत का) माप ।

राघवायणम् रामायण ।

राघवीयम् राघव की एक रचना, कृति ।

राजन् [राज्+कनिन्] सोम का पौधा—ऐन्द्रश्च विधिवद्दत्तो राजा चाभिषुतोऽनघः— रा० १।१४।६। सम० —**उपसेवा,** राजा की सेवा करना,—**गुह्यम्** ऊँचे दर्जे का रहस्य,—**देयम्** (भागम्) राजकीय दावा, —**पट्टिका** (स्त्री०) चातकपक्षी,—**पिण्डः** राजा से आजीविका,—**प्रसादः** राजा का अनुग्रह, **महिषी** पटरानी,—**मार्तण्डः** 1. (संगीत०) एक प्रकार की माप 2. इस नाम का एक ग्रन्थ,—**राज्यम्** कुबेर का राज्य,—**लिङ्गम्** एक राजचिह्न, **वर्चस्** शाही मर्यादा, —**वल्लभः** राजा का प्रिय व्यक्ति, **वृत्तम्** राजा का आचरण,—**स्थानीयः** राजा का प्रतिनिधि, वाइसराय।

राजन्य (वि०) [राजन्+यत्,] राजकीय, शाही, **न्यः** क्षत्रिय जाति का पुरुष। सम० **बन्धुः** क्षत्रिय।

राज्यम् [राजन्+यत्, नलोपः] 1. राजकीय अधिकार, प्रभुसत्ता 2. राजधानी, देश, साम्राज्य 3. प्रशासन 4. सरकार। सम०—**अधिदेवता** राज्य की प्रधानता करने वाली देवता, अभिभावकदेव, **परिक्रिया** प्रशासन, **लक्ष्मीः—श्रीः,** प्रभुसत्ता की कीर्ति, —**स्थितिः** सरकार।

राजिः—जी (स्त्री०) [राज्+इन्, ङीप् वा] 1. पंक्ति 2. काली सरसों 3. धारीदार साँप 4. खेत 5. ताल जिह्वा, काकल। सम० **फला** एक प्रकार की ककड़ी।

राणायनीयः 1. एक आचार्य का नाम 2. वैदिक शाखा का प्रवर्तक।

रात (वि०) प्रदत्त, अनुदत्त।

रात्रिः,—त्री [रा+त्रिप्, ङीप् वा] 1. रात 2. रात का अंधकार 3. हल्दी 4. ब्रह्मा के चार रूपों में से एक 5. दिन रात—मँ० स० ८।१।१६ पर शा० भा०। सम० —**आगमः** रात का आना, **द्विषः** सूर्य,—**नाथः** चन्द्रमा —**भुजङ्गः**—**मणिः** चन्द्रमा,—**सत्रन्यायः** मीमांसा का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार अर्थवाद में वर्णित फल ही ग्रहण किया जाता है जब कि विधि में कर्मफल का वर्णन न किया गया हो।

राधा [राध्+अच्+टाप्] 1. वैशाख महीने की पूर्णिमा 2. भक्तिमत्ता।

राम (वि०) [रम्+घञ्, ण वा] 1. आह्लादमय, सुखद, सुहावना 2. सुन्दर, लावण्यमय 3. श्वेत, **मः** तीन ख्याति प्राप्त व्यक्ति (क) जमदग्नि का पुत्र परशुराम (ख) वसुदेव का पुत्र बलराम जिसका भाई कृष्ण था (ग) दशरथ और कौशल्या का पुत्र रामचन्द्र, सीताराम। सम० **काण्डः** गन्ने का एक भेद, तापन, —**तापनी,** **तापनीय उपनिषद्** एक उपनिषद् का नाम,—**लीला** उत्तरभारत में नवरात्र के दिनों में 'रामायण' का नाटक के रूप में प्रस्तुतीकरण।

रमणीयता [रम्+अनीय+तल्] सौन्दर्य, चारुता।

रामण्यकम् सौन्दर्य, मनोज्ञता।

रामा (स्त्री०) एक छन्द का नाम।

रावितम् [रु+णिच्+क्त] ध्वनि, स्वन—स्यन्दनेभ्यश्च्युता वीरा शङ्खरावितदुर्बलाः रा० ७।७।१२।

राशिः [अश्+इञ्, धातोरुडागमश्च] 1. ढेर, संग्रह, समुच्चय 2. संख्या (गणित में) 3. ज्योतिष का घर जिसमें २¼ नक्षत्र सम्मिलित होते हैं। सम०—**गत** (वि०) बीजगणित विषयक,—**पः** ज्योतिष के एक घर का स्वामी, दे० राश्यधिप।

राष्ट्रकः [राष्ट्र+कन्] दे० राष्ट्रिक।

राष्ट्रिकः [राष्ट्र+ठक्] 1. किसी देश का निवासी 2. राज्य का शासक 3. राज्यपाल।

रासः[रास्+घञ्] 1. कोलाहल 2. शोर 3. वक्ता 4. एक प्रकार का नृत्य 5. शृंखला 6. खेल, नाटक। सम० —**केलिः** वर्तुलाकार नाच जिसमें कृष्ण और गोपिकाएँ सम्मिलित होती हैं।

रासायन (वि०) [रसायन+अण्] रसायनसंबंधी।

रासायनिक (वि० [रसायन+ठक्] रसायन संबंधी।

रिक्तीकृ (तना० पर०) 1. रिक्त करना, खाली करना 2. ले जाना, चुरा लेना 2. चले जाना।

रिक्थजातम् (नपुं०) (किसी मृतक व्यक्ति की) समस्त संपत्ति संपूर्ण आस्ति।

रिष्टः [रिष्+क्त] तलवार, कृपाण।

रीतिः [री+क्तिन्] नैसर्गिक संपत्ति, स्वाभाविक गुण।

रुक्म (वि०) [रुच्+मन्, नि० कुत्वम्] 1. उज्ज्वल, चमकदार 2. सुनहरी,—**क्मः**। स्वर्णभूषण 2. धतूरा। सम०—**आभ** (वि०) सोने की भाँति चमकीला—**पात्री** सुनहरी तश्तरी, **पुङ्ख** (वि०) 1. स्वर्णशर से युक्त सुनहरी बाण वाला 2. सुनहरी मूठ वाला।

रुचिप्रद (वि०) स्वादिष्ट, भूख लगाने वाला।

रुचिर (वि०) [रुच्+किरच्] सुहावना, सुखद अथ वासवस्य वचनेन रुचिरवदनस्त्रिलोचनम्— कि० १२।१। सम०—**अङ्गदः** विष्णु का नाम।

रुचिष्य (वि०) [रुच्+किष्यन्] भूखवर्धक, भूख लगाने वाला।

रुण्डः [रुण्ड्+अच्] घोड़ी और खच्चर के मेल से उत्पन्न।

रुद्र (वि०) [रुद्+रक्] 1. भयानक, भयंकर 2. विशाल —**द्रः** 1. ग्यारह देवगण, जो शिव का ही अपकृष्ट रूप है, शिव उनमें मुख्य है 2. अग्नि 3. ग्यारह की संख्या 4. यजुर्वेद का सूक्त जिसमें रुद्र को संबोधित किया गया है। सम० **प्रयागः** एक तीर्थकेन्द्र का नाम,—**यामलम्** एक तन्त्र ग्रन्थ का नाम,—**वीणा** एक प्रकार की वीणा।

रुद्रटः अलंकार शास्त्र के एक लेखक का नाम।

रुद्धा [रुध्+क्त+टाप्] घेरा डालना ।
रुद्धमूत्र (वि०) [ब० स०] मूत्रावरोध से रुग्ण व्यक्ति ।
रुधिरः,--रम् [रुध्+किरच्] 1. लाल रंग 2. मंगल ग्रह 3. खून, रक्त 4. जाफ़रान । सम० प्लावित (वि०) खून में भीगा हुआ ।
रुरुत्सा [रुध्+सन्+टाप्, धातोर्द्वित्वम्] अवरोध करने की इच्छा ।
रुवथः [रु+अथः, कित्] कुत्ता ।
रूढ (वि०) [रुह्+क्त] 1. चढ़ा हुआ, सवार, लदा हुआ 2. दूर-दूर तक विख्यात—आसक्ता धूरियं रूढा—कि० ११।७।७ । सम० वंश (वि०) उच्च कुल का,—व्रण (वि०) जिसके घाव भर गये हों ।
रूढिः [रुह्+क्तिन्] 1. वृद्धि, विकास 2. जन्म 3. निर्णय 4. प्रथा, रिवाज 5. प्रचलित अर्थ ।
रूक्ष (वि०) [रूक्ष्+अच्] 1. कठोर, रूखा 2. तीखा, चटपटा 3. चिकनाई से रहित (जैसे भोजन)—क्षः 1. वृक्ष 2. कठोरता, रूखापन,—क्षम् 1. दही की मोटी तह 2. काली मिर्च । सम० भावः रूखा भाव, अमित्रत्व का रुझान,—वालुकम् मधु मक्खियों से प्राप्त शहद ।
रूक्षित (वि०) [रूक्ष्+क्त] कोपाविष्ट, क्रुद्ध ।
रूप् (चुरा० उभ०) वर्णन करना—सविस्मयं रूपयतो नभश्चरान्—कि० ८।२६ ।
रूपम् [रूप्+क, अच् वा] 1. सूरत, आकृति 2. रंग का भेद (काला, पीला आदि) 3. कोई भी दृश्य पदार्थ 4. नैसर्गिक स्थिति, प्राकृतिक दशा 5. सिक्का (जैसे कि रुपया) । सम०—उपजीवनम् सुन्दर या मोहक रूप के द्वारा जीविका लाभ करना महा० १२। २९४।५,—ध्येयम् सौन्दर्य, खूब सूरती—परिकल्पना रूप मरना, रूप धारण करना,—भागापवादः किसी इकाई को भिन्नों में परिवर्तित करना, विभागः किसी पूर्णांक को भिन्न राशियों में विभक्त करना—नृत्यम् एक प्रकार का नाच ।
रूप्यम् [रूप्+यत्] 1. चाँदी 2. मुद्राङ्कित सिक्का 3. नेत्रांजन । सम०—धौतम् चाँदी ।
रूष (वि०) [रूष्+अच्] कड़वा ।
रेखामात्रम् (अ०) पंक्ति से भी, रेखा द्वारा भी ।
रेणुः (पुं०, स्त्री०) [रीयतेः णुः] 1. धूल, धूल कण, रेत 2. फूलों की रज 3. एक विशेष माप-तोल । सम०—उत्पातः धूल का उठना,—गर्भः एक घंटे तक चलने वाली बालू की घड़ी ।

रेणुकातनयः, **रेणुकासुतः** [ष० त०] परशुराम का विशेषण ।
रेतस् (नपुं०) [री+असुन्, तुट् च] 1. वीर्य, बीज 2. धारा, प्रवाह 3. प्रजा, सन्तान 4. पारा 5. पाप । सम० सेकः मैथुन, संभोग,—स्खलनम्, वीर्य का गिर जाना ।
रेफः 1. 'बरर' शब्द 2. 'र्' अक्षर 3. शब्द कण्ठे च सामानि समस्तरेफान्—भाग० ८।२०।२५ । सम०—विपुला एक छन्द का नाम, संधिः 'र्' का श्रुति-मधुर मल ।
रैवतः [रेवती+अण्] 1. बादल 2. पाँचवें मनु का नाम ।
रोक्यम् [रोक+यत्] रुधिर, खून ।
रोगः [रुज्+घञ्] 1. बीमारी, कष्ट 2. रुग्ण स्थान । सम० उल्बणता रोगों का फूटना, ज्ञः डाक्टर, रोगियों का चिकित्सक,—ज्ञानम् रोग का निदान,—प्रेष्ठः बुखार,—शमः रोग का दूर हो जाना ।
रोचकः [रुच्+ण्वुल्] शीशे का काम करने वाला या कृत्रिम आभूषणों का निर्माता,—रा० २।८३।१३ ।
रोधस् (नपुं०) [रुध्+असुन्] 1. तट, किनारा 2. पहाड़ का ढलान (जैसा कि 'पर्वतरोधस्' में) ।
रोपः [रुह्+णिच्, ह्रस्व पः, कर्मणि अच्] 1. रोपण करना, पौध लगाना 2. स्थापित करना 3. बाण, तीर । सम० शिखी बाणों से उत्पन्न अग्नि—नै० ४।८७ ।
रोपित (वि०) [रुह्+णिच्+क्त] 1. पौध लगाई हुई 2. जड़ा हुआ रत्न 3. निशाना बांधा हुआ (बाण) ।
रोमन् (नपुं०) [रु+मनिन्] 1. शरीर के बाल 2. पक्षियों के पंख 3. मछलियों की त्वचा । सम०—सूची बालों में लगाने की सूई ।
रोमश (वि०) [रोम+श] 1. बालों वाला, ऊनी 2 स्वरों के अशुद्ध उच्चारण से युक्त ।
रोमशी [रोमश+ङीप्] गिलहरी ।
रोषणता [रोषण+तल्] क्रोध, गुस्सा ।
रोहः [रुह्+अच्] 1. ऊँचाई 2. वृद्धि, विकास 3. कली, अंकुर 4. जननात्मक कारण ।
रोहिणी [रोह+इनि+ङीप्] 1. लाल रंग की गाय 2. पाँच तारों का पुंज—रोहिणी नक्षत्र 3. वसुदेव की पत्नी और बलराम की माँ 4. बिजली 5. एक प्रकार का इस्पात । सम०—तनयः बलराम,—योगः रोहिणी का चन्द्रमा के साथ संयोग ।
रौद्र (वि०) [रुद्र+अण्] 1. रुद्र की भाँति प्रचण्ड 2. भीषण भयंकर 3. रुद्र विषयक, रुद्र संबंधी ।

लक्षम् [लक्ष्+अच्] 1. एक लाख 2. चिह्न, निशान 3. दिखावा, बहाना, धोखा। सम०—**अर्चनम्** एक लाख फूलों के उपहार से पूजा करना,—**दीपः** मन्दिर में एक लाख दीपक एक साथ जलाना।

लक्षणम् [लक्ष्+ल्युट्] 1. चिह्न, संकेतक, टोकन 2. परिभाषा 3. शरीर पर सौभाग्यशाली चिह्न 4. नाम 5. उद्देश्य 6. मैथुनेन्द्रिय। सम०—**कर्मन्** (नपुं०) परिभाषा।

लक्षणा 1. दुर्योधन की पुत्री का नाम 2. तीन शब्दशक्तियों में से एक।

लक्षितलक्षणा संकेत द्योतक इंगित, गौण संकेत, एक ऐसा संकेत जिससे कोई अन्य संकेत मिले मं० स० १०। ५।५८ पर शा० भा०।

लक्ष्मन् (नपुं०) [लक्ष्+मनिन्] 1. चिह्न 2. धब्बा 3. परिभाषा 4. मुख्य, प्रधान 5. मोती।

लक्ष्मी [लक्ष्+ई, मुट् च] 1. दौलत, समृद्धि, धन 2. सौभाग्य, खुशक़िस्मती 3. सौन्दर्य, आभा, कान्ति 4. धन की देवता। सम०—**कटाक्षः** धन की देवता का आशीर्वाद, अनुग्रह,—**नारायणः** विष्णु का विशेषण,—**विवर्तः** भाग्य का फेर,—**सनाथ** (वि०) सौन्दर्य से युक्त, सौभाग्यशाली।

लक्ष्यम् [लक्ष्+यत्] 1. ध्येय, उद्देश्य 2. चिह्न, टोकन 3. वह वस्तु जिसकी परिभाषा की गई है 4. गौण अर्थ, अप्रत्यक्ष अर्थ। सम० **अभिहरणम्** पारितोषिक, ले उड़ना,—**ग्रहः** निशाना बांधना,—**सिद्धिः**, अपने उद्देश्य में सफलता।

लग्न (वि०) [लग्+क्त] शुभ, मांगलिक,—**ग्नम्** 1. वह बिन्दु जहाँ ग्रहपथ मिलते हैं 2. क्रान्तिवृत्त का बिन्दु जो किसी दत्त काल में क्षितिज या याम्योत्तर रेखा पर होता है। सम०—**पत्रिका** जन्म समय या विवाह संस्कार के मुहूर्तादिक विवरण से युक्त एक मांगलिक पत्रिका, जन्मपत्रिका, या विवाह पत्रिका।

लगणः पलकों का एक विशेष रोग।

लगुडहस्तः [ब० स०] दण्डधारी।

लघु (वि०) [लङ्घ्+कु, नलोपः] 1. हल्का 2. छोटा 3. थोड़ा, संक्षिप्त 4. मामूली 5. ओछा, अधम, 6. दुर्बल 7. चुस्त, फ़ुर्तीला 8. द्रुत 9. आसान 10. मृदु 11. सुखद 12. प्रिय, सुन्दर 13. सब प्रकार के भारों से मुक्त —अनोकशायी लघुरल्पप्रचारः—महा० १। ९१।५। सम० **कोष्ठ** (वि०) हल्के पेट वाला —**कौमुदी** व्याकरण की एक पुस्तक,—**तालः** संगीत की माप का एक भेद,—**नालिका** छोटी नली, —**पाक** (वि०) आसानी से पचन योग्य,—**प्रमाण** (वि०) आकार प्रकार में छोटा सा **योगवासिष्ठम्** योग-वासिष्ठ का सारसंग्रह, **शेखर** संगीत की एक माप।

लघूकृ (तना० उभ०) 1. हल्का करना, बोझ घटाना 2. छोटा करना, घटाना।

लघ्वी (स्त्री०) [लघु+ङीप्] छोटी, थोड़ी, कम लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।

लङ्गनी [लङ्गन+ङीप्] लकड़ी या रस्सी जिस पर कपड़े सुखाने के लिए लटका दिये जाँय।

लङ्गिमन् [लङ्ग्+इमनिच्] 1. सौन्दर्य 2. संघ, एकता।

लङ्घनम् [लङ्घ्+ल्युट्] 1. अतिक्रमण 2. उपवास करना 3. मैथुन, गर्भाधान।

लज्जाकृतिः (स्त्री०) लज्जा का झूठ मूठ प्रदर्शन।

लतारदः (पुं०) हाथी।

लब्ध (वि०) [लभ्+क्त] 1. प्राप्त, अवाप्त 2. गृहीत 3. प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त, समझा गया 4. (भाग करने के फलस्वरूप) प्राप्त, उपलब्ध। सम०—**अनुज्ञ** (वि०) जिसने अनुमति प्राप्त कर ली है,—**तीर्थ** (वि०) जिसने अवसर से लाभ उठा लिया है, —**प्रतिष्ठ** (वि०) जिसने कीर्ति प्राप्त कर ली है, जिसने अपनी साख जमा ली है, सम्मानित,—**प्रसर** (वि०) स्वतंत्रतापूर्वक इधर-उधर घूमने वाला, **प्रसाद** (वि०) अनुग्रह-प्राप्त, प्रिय,—**श्रुत** (वि०) विद्वान्, **संज्ञ** (वि०) जिसने सुधबुध प्राप्त कर ली है, जो होश में आ गया है।

लम्बवक्त्रा एक प्रकार की मिर्च।

लम्बरा कम्बल का एक भेद।

लम्भा एक प्रकार का बाड़ा, घेर।

लयशुद्ध (वि०) (संगीत०) वह गाना जिसकी लय और ताल सही हो, जिसमें सामंजस्य हो।

ललन्तिका मस्तक के ऊपर पहना जाने वाला एक आभूषण झूमर, शृंगारपट्टी—ललन्तिकालसत्फाला—(ललिता त्रिशती स्तोत्र)।

ललामन् [लल्+इमनिच्] 1. आभूषण, अलंकार 2. एक छन्द का नाम।

ललित (वि०) [लल्+क्त] 1. मनोरम, सुन्दर 2. सुखद सुहावना। सम०—**प्रियः** (संगीत०) एक गान की लय या माप,—**वनिता** सुन्दर स्त्री, **विस्तरः** बुद्ध के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ,—**विस्तारः** एक छन्द का नाम।

ललिता संगीत की एक लय।

ललिताम्बिका
ललितादेवी } ललिता देवी।

ललितासहस्रनामन् ललिता के हज़ार नाम।

लवः [लू+अप्] 1. तोड़ना, काटना 2. खेती काटना,

लावनी करना। सम०—इप्सु (वि०) खेती काटने का इच्छुक।

लवङ्गः [लू+अङ्गच्] लौंग का पौधा,—ङ्गम् लौंग। सम० - कालिका लौंग।

लवणः [लू+ल्युट्, पृषो० णत्वम्] 1. नमकीन स्वाद 2. एक राक्षस का नाम 3. एक नरक का नाम, —णम् 1. नमक 2. कृत्रिम नमक। सम०—पाटलिका नमक की थैली,—शाकम् नमकीन सब्जी।

लवणित (वि०) [लवण+इतच्] नमकीन, लवणयुक्त।

लसदंशु (वि०) [ब० स०] जिसकी किरणें चमकती हैं।

लाक्षारसः महावर या अलक्त का रस—लाक्षारससवर्णाभा—ललिता त्रिशती स्तोत्र।

लाङ्गलम् [लङ्ग्+कलच् पृषो० वृद्धिः] 1. हल 2. हलकी शक्ल का शहतीर 3. ताड़ का वृक्ष 4. वृक्ष से फल एकत्र करने का बांस 5. एक फूल का नाम।

लाङ्गला नारियल का पेड़।

लाङ्गली केवांच का वृक्ष, गजपीपल—निवृत्तगृहसङ्गतिर्भ्रमत एव तन्व्यास्तवस्तनद्वयमियद्वपुः पथिक जातमुद्यौवनं इतीव वदति स्फुटं कुसुमहस्तमुद्यम्य सा भ्रमद्भ्रमरमण्डलक्वणितपेशला लाङ्गली—जानकी० ११। ९५।

लाङ्गुलचालनम्, लाङ्गुलविक्षेपः } पूंछ हिलाना।

लाजपेयाः चावल का मांड।

लाभः [लभ्+घञ्] 1. गड़ा हुआ धन—मनु० १०। ११५ 2. फायदा, आय। सम०—विद् (वि०) जो यह समझता है कि लाभ क्या चीज है—लेभे लाभ विदां वरः—रा० च०।

लालाधः अपस्मार, मिर्गी।

लावः लवा नामक पक्षी, बटेर।

लावाणकः एक द्वीप का नाम।

लासनम् पकड़ना, ग्रहण करना—तोमराङ्कुशलासनैः —महा० ७।१४२।४५।

लासिक (वि०) [लस+ठक्] नाचने वाला—शि० १३।६६।

लिखितृ (पुं०) [लिख्+तृच्] चित्रकार।

लिगुः [लिग्+कुः] 1. हरिण 2. मूर्ख, बुद्धू 3. ऋषि, मुनि।

लिङ्गम् [लिङ्ग+अच्] 1. चिह्न निशान 2. प्रतीक, विशिष्टता 2. रोग का लक्षण 4. शारीरिक सत्ता —योगेन धृत्युद्यमसत्त्वयुक्तो लिङ्गं व्यपोहेत् कुशलोऽहमाख्यम्—भाग० ५।५।१३। सम० आयताः वीर शैवों का संप्रदाय,—पीठम् 'शिवलिङ्ग' मूर्ति जिस पर विराजमान है वह चौकी,—शास्त्रम् लिङ्ग ज्ञान पर व्याकरण का एक ग्रन्थ।

लिङ्गालिका चुहिया, छोटी मूसी।

लिपिः [लिप्+इक्] 1. लेप 2. लेख 3. अक्षर, वर्णमाला 4. बाहरी सूरत। सम०—कर्मन् (नपुं०) आलेख, चित्रण,—संनाहः कलाई पर पहनी जाने वाली पहुँची, रक्षात्रन्धन।

लिप्तम् [लिप्+क्त] 1. लिपा हुआ, सना हुआ, 2. खाया हुआ, 3. बलगम, कफ। सम०—वासित लिपी हुई सुगन्ध से सुगन्धित,—हस्त (वि०) सने हुए हाथों वाला।

लुञ्चितकेशः जिसने अपने बाल छंटवा कर छोटे करा लिए हैं।

लुञ्ज् (चुरा० उभ०) बोलना, चमकना।

लुण्ठनम् [लुण्ठ्+ल्युट्] 1. लूटना 2. विरोध करना, बाधा डालना।

लुप् (व्या० में) लुप्त होना, मिटना, भूलचूक होना।

लुम्बिनी बुद्ध का जन्मस्थान।

लुस्तम् धनुष का किनारा।

लूतातः चींटा, मकौड़ा।

लून (वि०) [लू+क्त] 1. कटा हुआ 2. तोड़ा हुआ 3. (फूल आदि) एकत्र किये हुए। सम०—पापः, —दुष्कृतः जिसका पापों से छुटकारा हो चुका है, —विष (वि०) जिसकी पूंछ में विष लगा हो।

लेखः [लिख्+घञ्] 1. लेख, लिखित दस्तावेज 2. परमात्मा, देवता 3. खरोंच। सम०—अनुजीविन् भगवान् का सेवक,—प्रभुः इन्द्र—लब्धं न लेखप्रभुणापि पातुं—नै० २२।११८,—स्खलितम् लिपिकार से की गई अशुद्धि।

लेखिका थोड़ा आघात, सहलाना।

लेखित (वि०) [लिख्+णिच्+क्त] लिखाया गया।

लेला (केवल करण कारक—लेलया—के रूप में प्रयुक्त) कांपना, हिलना।

लेलितकः गंधक।

लैङ्ग (वि०) [लिङ्ग+अण्] शब्द के लिङ्ग से संबंध रखने वाला,—ङ्गम् अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम। सम०—धूमः अज्ञानी पुरोहित।

लोकः [लोक्+घञ्] 1. संसार, विश्व का एक भाग 2. पृथ्वी, भूलोक 3. मनुष्य जाति 4. प्रजा 5. समूह 6. क्षेत्र 7. दृष्टि 8. वास्तविक स्थिति, प्रकाश —इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम्—भाग० ८।३।२५ 9. विषय, भोग्यवस्तु—उपपत्त्योपलब्धेषु लोकेषु च समो भव—महा० १२।२८८।११। सम०—अनुग्रहः मनुष्य जाति की समृद्धि,—अनुवृत्तम् लोकमत के अनुसार, जनसाधारण की आज्ञाकारिता,—अभिलक्षित (वि०) जिसे जनता चाहे, जनप्रिय,—उपक्रोशनम् लोगों में बुरी अफ़-

फैलाना—दश० २।२,—दम्भक (वि०) समाज को धोखा देने वाला, सामाजिक ठग, धर्मः सांसारिक कर्तव्य, नाथः सूर्य,—परोक्ष (वि०) संसार से छिपा हुआ,-प्रत्ययः सबका विश्वास, विश्व का प्रावल्य,—भर्तृ (वि०) जनसाधारण का पालक पोषक, —यक्षः संसार के प्रति भला रहने की इच्छा लोकैषणा—महा० १०।१८।५ पर शा० भा०,—रावण (वि०) संसार को कष्ट देने वाला—रा० ३।३३।१, —वर्तनम् लोकव्यवहार जिससे संसार की स्थिति बनी रहे,—विरुद्ध (वि०) लोकमत के विपरीत, —विसर्गः 1. संसार का अन्त 2. गौण सृष्टि, —संबाधः जनसमुदाय,—सुन्दर (वि०) जिसके सौन्दर्य की सब लोग प्रशंसा करें।

लोकसात् (अ०) लोगों की भलाई के लिए।

लोचनम् [लोच्+ल्युट्] 1. दर्शन, दृष्टि, ईक्षण 2. आँख। सम०—अञ्चलः आँख की कोर,-आपातः झांकी, —आवरणम् पलक,—परुष (वि०) देखने में विकराल।

लोभः [लुभ्+घञ्] 1. लालच, लालसा 2. इच्छा, प्रबल चाह 3. विस्मय, घबराहट, उलझन। सम० —अभिपातिन् (वि०) जो लालसा के कारण भागता है,—मोहित (वि०) लालच से अन्धा।

लोमटकः लोमड़।

लोमविष (वि०) [ब० स०] जिसके बालों में जहर भरा हो।

लोमशकर्णः बिल में रहने वाले जन्तुओं की एक जाति।

लोलकर्ण (वि०) प्रत्येक की सुनने वाला।

लोलम्बः भौंरा, भ्रमर।

लोष्टगुटिका मिट्टी की गोली।

लोष्टायते (ना०० धा० आ०) ढेले के समान समझना।

लोहः [लूयतेऽनेन—लू+ह] 1. लोहा 2. इस्पात 3. तांबा 4. सोना 5. अगर की लकड़ी। सम०—अग्रम् लोहे की नोक,—उच्छिष्टम्—उत्थम्-किट्टम्-मलम् लोहे का जंग,-कुम्भी लोहे की घड़िया,—चर्मवत् धातु की तश्तरी से ढका हुआ, मात्रः बर्छी।

लोहित (वि०) [रुह्+इतन्, रस्य लः] 1. आँख की पलकों का एक रोग 2. एक प्रकार का मूल्यवान् पत्थर, रत्न।

लोह्यम पीतल।

लौकिक (वि०) [लोक+ठक्] 1. सांसारिक 2. सामान्य 3. दैनिक जीवन संबंधी। सम०—अग्निः सामान्य आग जो यज्ञ कार्यों में प्रयुक्त न होती हो,—न्यायः सामान्यतः माना हुआ न्याय।

लौहशास्त्रम् धातुविज्ञान, धातुशोधन विद्या।

व

वंशः [वम्+श] 1. संगीत का एक विशेष स्वर 2. बांस 3. अहंकार, अभिमान 4. कुल। सम०—कर्मन् बांस की दस्तकारी,—कृत्यम् बंसरी बजाना, धरः किसी कुल में उत्पन्न,—पत्रपतितम् सत्रह मात्राओं का एक छन्द,—पात्रम् बांस की बनी टोकरी, —बाह्यः कुल से निष्कासित,—ब्राह्मणम् सामवेद ब्राह्मण का मूल पाठ, लून (वि०) संसार में अकेला —वनम् बांसों का जंगल,-वर्धनः पुत्र,—विस्तरः वंशावली—स्थविलम् एक छन्द का नाम।

वंश्यः वन्धुः, संबंधी, अपने कुल का।

वक्तुकाम (वि०) बोलने की इच्छा वाला,

वक्तुमनस् (वि०) बोलने का इच्छुक।

वक्तृप्रयोक्तृ (वि०) सिद्धान्तिक और प्रायोगिक (राजनीतिज्ञ)।

वक्र (वि०) [वङ्क्+रन् पृषो० नलोपः] 1. टेढ़ा, मुड़ा हुआ 2. गोलमोल, अप्रत्यक्ष 3. घुंघराले 4. बेईमान, कपटी, जालसाज, क्रः—1. मंगलग्रह 2. शनिग्रह, क्रम् 1. (ग्रह की) टेढ़ी चाल 2. नदी का मोड़। सम० —आख्यम् टीन, जस्त,—इतर (वि०) सीधा, कीलः अङ्कुश,—गुल्फः ऊँट,—तालम् एक विशेष वातोपकरण,—रेखा टेढ़ी लाइन।

वङ्गेरिका, } वङ्गेरी } चंगेरी, बांस आदि की बनी टोकरी।

वचनम् [वच्+ल्युट्] 1. बोलने की क्रिया 2. वक्तृता 3. पाठ करना 4. उपदेश, धार्मिक पुस्तक का अंश 5. आज्ञा, आदेश 6. परामर्श, अनुदेश। सम० अवक्षेपः अपशब्दों से युक्त बात, उपन्यासः सुझावात्मक वक्तृता, क्रिया आज्ञाकारिता, गोचर (वि०) बात चीत का विषय बनाने वाला, गौरवम् शब्दों का आदर करना—पितुर्वचनगौरवात्—रा० १,—व्यक्तिः किसी उक्ति की यथार्थ सार्थकता।

वचोहरः दूत, राजदूत।

वचस्विन् (वि०) वाक्पटु, बोलने में चतुर—इतीरिते वचसि वचस्विनामुना—शि० १७।१।

उक्तवर्जम् (अ०) सिवाय उसके जो कह दिया है।

उक्तिः [वच्+क्तिन्] 1. न्याय, कहावत 2. वाक्य

3. वक्तृता, वक्तव्य, अभिव्यक्ति 3. शब्द की वाक्य शक्ति ।

वज्रः [वज्+रन्] 1. बिजली, इन्द्र का शस्त्र 2. रत्न की सूई 3. रत्न, जवाहर 4. एक प्रकार का कुश ग्रास 5. एक प्रकार का सैन्य व्यूह । सम० **अंशुकम्** धारी दार कपड़ा,—**अङ्कित** (वि०) 'वज्रायुध के चिह्न से मुद्रित,—**आकार** (वि०), **आकृति** (वि०) वज्र की शक्ल वाला—**कीटः** एक प्रकार का कीडा, —**पञ्जरः** सुरक्षित आश्रयगृह, —**मुखः** 1. एक प्रकार का कीड़ा 2. एक प्रकार की समाधि ।

वज्रकम् [वज्र+कन्] हीरा, जवाहर ।

वटः [वट्+अच्] 1. बड़ का पेड़ 2. गंधक 3. शतरंज की गोट । सम० **दलः**,—**पत्रम्**,—**पुटम्** बड़ का पत्ता ।

वडवा [बल+वा+क+टाप] 1. घोड़ी 2. एक नक्षत्र-पुंज जिसे 'घोड़ी के सिर' के प्रतीक से व्यक्त किया जाता है ।

वणिज् (पुं०) [पण्+इजि, पस्य वः] 1. व्यापारी, सौदागर 2. तुला राशि । सम० **कटकः** काफला, —**वहः** ऊँट, **वीथी** बाजार ।

वत् ['मतुप्'] अधिकरण अर्थ में तथा 'योग्य' अर्थ में लगने वाला मत्वर्थीय प्रत्यय—मै० सं० १६।२।५१ पर शा० भा० ।

वतु (अ०) विस्मयादि द्योतक अव्यय । 'सुनो' 'बस' 'चुप' अर्थ को प्रकट करता है ।

वत्सः [वद्+सः] 1. बछड़ा 2. लड़का, पुत्र 3. सन्तान, बच्चा 4. वर्ष, 5. एक देश का नाम । सम०—**अनुसारिणी** लघु और दीर्घ मात्रा का मध्यवर्ती क्रम भंग या अन्तर, **पदम्** तीर्थ, घाट, उतार ।

वत्सायितः [वत्स+क्यच्+णिच्+क्त] बछड़े के रूप में संवर्तित वत्सायितस्त्वमय गोपमगाशितस्त्वम् —नारा० ।

वदनम् [वद्+ल्युट्] 1. चेहरा 2. मुख 3. सूरत 4. सामने का पक्ष 5. पहेलो राशि 6 त्रिकोण का शिखर । सम० **आमोदमदिरा** मुख में मधुरगंध से युक्त सुरा,—**उदरम्** जबड़ा, **पङ्कजम्** मुखारविन्द, कमल जैसा मुख,—**पवनः** श्वास, साँस ।

वधः [हन्+अप्, वधादेशः] 1. भग्नाशा 2. (बीज० में) गुणनफल 3. हत्या, कतल । सम० **राशिः** जन्माङ्ग में छठा घर ।

वधिकः,-**कम्** कस्तूरी, मुश्क ।

वधूकालः वह समय जब कि कन्या दुलहिन बनती है ।

वधूवरम् नवविवाहित दम्पति ।

वध्यवासस् [प० न०] लालरंग के वस्त्र जो प्राणदण्ड प्राप्त पुरुष को फांसी देने के समय पहिनाये जाते हैं ।

वनम् [वन्+अच्] 1. जंगल 2. वृक्षों का झुंड 3. घर 4. फव्वारा 5. जल 6. लकड़ी का पात्र 7. प्रकाश की किरण 8. पर्वत । सम०—**आश** (वि०) केवल जल पीकर जीने वाला, **उपलः** गोबर के उपल, गोहे,—**ओषधिः** जंगली जड़ी बूटी,—**भूषणी** कोयल, **हासः** काश नाम का घास ।

वन्दनकम् सम्मानपूर्ण अभिवादन ।

वन्य (वि०) [वन+यत्] 1. जंगली 2. लकड़ी का बना हुआ, **न्यः** (पुं०) बन्दर—जघ्नुर्वन्यॉश्च नैर्ऋताः—रा० ३।२८७।२९ । सम०—**वृत्ति** (वि०) जंगली उपज पर ही रहने वाला ।

वपनम् [वप्+ल्युट्] 1. बीज बोना 2. हजामत करना 3. वीर्य 4. क्षुर, उस्तरा 5. करीने से रखना, व्यवस्थित करना ।

वपा [वप्+अच्+टाप्] 1. चर्बी 2. बिल, विवर 3. दीमकों द्वारा बनी नमी 4. उभरी हुई मांसल नाभि ।

वपुष्मत् (वि०) [वपुस्+मत्] 1. शरीर धारी 2. हृष्ट-पुष्ट 3. क्षतविक्षत, खण्डित ।

वप्रः-प्रम् [वप्+रन्] 1. फसील, परिवार, परकोटा 2. ढलान 3. समुच्चय 4. भवन की नींव ।

वप्रा वाटिका की क्यारी ।

वमथुः [वम्+अथुच्] खाँसी ।

वमनः [वम्+ल्युट्] 1. रूई का छीजन 2. सन, सुतली, पटुआ ।

वयोबाल (वि०) अवयस्क बालक, थोड़ी आयु का बालक ।

वयुनम् [वय्+ननन्] (वेद०) कर्म, कार्य – विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्—ईश० १८ ।

वर (वि०) [वृ+अप्] उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया, अनमोल, —**रः** 1. वरदान 2. उपहार, पारितोषिक 3. इच्छा 4. प्रार्थना 5. दान 6. दूल्हा 7. जामाता । सम० **अरणिः** माता—रा० ७।२३।२२, —**आरुहः** बैल, —**इन्द्री** पुराना गौंड देश,—**प्रेषणम्** विवाह संस्कार का एक भाग जिसके अनुसार दुल्हे के मित्र किसी विशेष परिवार में दुलहन की खोज के लिए जाते हैं —**पुरुषाः** श्रेष्ठजन, **लक्षणम्** विवाह में संस्कार की बातें ।

वरासिः [ब० स०] खड्गधारी, तलवार रखने वाला ।

वराहपुराणम् अठारह पुराणों में से एक ।

वरिवसितृ (वि०) [वृ+असुन्—वरिवस्+तृच्] पूजा करने वाला—न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि —शिव०

वरिवस्यति (ना० धा० पर०) अनुग्रह करना, कृपा करना ।

वरुणात्मजः [प० त०] जमदग्नि ऋषि का नाम ।
वरेण्यः गणेशमाहात्म्य में वर्णित एक राजा का नाम ।
वर्गाष्टकम् [ष० त०] व्यंजनों के आठ समूह ।
वर्गोत्तमम् 1. अनुनासिक वर्ण 2. ज्योतिष में किसी ग्रह विशेष की उच्चता को प्रकट करने वाला शब्द ।
वर्गीकृत (वि०) [वर्ग+च्वि+कृ+क्त] श्रेणियों में विभक्त जिसके समुदाय बने हुए हों ।
वर्णः [वर्ण+अच्] 1. रंग 2. सूरत, शक्ल 3. मनुष्यों की जाति 4. अक्षर, ध्वनि 5. शब्द, मात्रा 6. यश 7. प्रशंसा 8. चोंगा 9. गीतक्रम । सम० अनुप्रासः अक्षरों का अनुप्रास अलंकार,—अन्तरम् 1. भिन्न जाति 2. स्थानापन्न अक्षर,—अवकृष्टः शूद्र-- अवर (वि०) जाति की दृष्टि से अधम ओछा,—तर्णकम् ऊनी कालीन,--परिचयः संगीत में दक्षता,-- भेदिनी मोटा अनाज, (बाजरा, कोदों), विक्रिया 1. अक्षरों में परिवर्तन 2. जाति में परिवर्तन ।
वर्णकः [वर्ण+ण्वुल्] 1. वक्ता, वर्णन करने वाला 2. आदर्श, नमूना ।
वर्णिः [वर्ण्+इन्] 1. सोना 2. सुगन्ध ।
वर्तनम् [वृत्+ल्युट्] 1. होना, रहना 2. ठहरना, बसना 3. कर्म, गति 4. जीविका 5. जीवित रहने का साधन 6. आचरण, व्यवहार 7. मजदूरी, वेतन 8. तकवा 9. जिससे रंगा जाय निहितमलक्तवर्तनाभिताम्रम् —कि० १०।४२ 10. बार बार दोहराया गया शब्द 11. काढ़ा बनाना । सम०— विनियोगः मजदूरी बाँटना ।
वर्तमानम् [वृत्+शानच्] विद्यमान काल, मौजूदा समय । सम०— आक्षेपः वर्तमान का विरोध,—कालः मौजूदा समय ।
वर्तिः [वृत्+इन्] अस्थिभङ्ग के कारक सूजन ।
वर्तिका [वृत्+तिकन्] यष्टिका, लाठी—पलाशवर्तिकामेकां वहतः संहतान् पथि महा० १।३१।८ ।
वर्तित [वृत्+क्त] 1. मुड़ा हुआ, लुढ़का हुआ 2. उत्पादित निष्पन्न 4. खर्च किया हुआ, बीता हुआ ।
वर्तिन् (वि०) [वृत्+णिनि] आज्ञा मानने वाला ।
वर्त्मन् (नपुं०) [वृत्+मनिन्] 1. पथ, मार्ग, रास्ता 2. कमरा,कक्ष 3. पलक 4. किनारा । सम० —आयासः यात्रा के परिणामस्वरूप थकान । —पातनम् ताक में रहना, ताड़ में रखना ।
वर्त्स्यंत् (वि०) [वृत्+स्य+शतृ] होने वाला, प्रगति करने के लिए तत्पर ।
वर्धम् [वर्ध्+अच्] चमड़े का तस्मा या फीता ।
वर्धकी वेश्या, व्यभिचारिणी स्त्री ।
वर्धनक (वि०) [वृध्+णिच्+ल्युट्, स्वार्थे कन्] आह्लादकर, हर्षप्रद, आनन्ददायक
वर्धमानः [वृध्+शानच्] 1. जैनियों का २४ वाँ तीर्थंकर 2. पूर्व दिशा का दिक्पाल हाथी । सम०—गृहम् आमोद घर— रा० २।१७।१८ ।
वर्धमानकः [वर्धमान+कन्] हाथों में दीपक लेकर नाचने वालों की मण्डली ।
वर्धापनिकम् 1. बधाई 2. बधाई के चिह्नस्वरूप उपहार ।
वर्धापिका परिचारिका, नर्स ।
वर्ध्मः हर्णिया रोग ।
वर्षः [वृष्+घञ्] 1. वर्षा होना 2. छिड़काव 3. वर्ष (केवल नपुं० में) 4. महाद्वीप 5. बादल 6. दिन —रा० ७।७३।५ पर टीका 7. वासस्थान । सम० —कालः बरसात की ऋतु, गणः वर्षों की लम्बी शृंखला,—पदम् पत्रा, कलेण्डर, रात्रः बरसा का मौसम ।
वर्षा [वर्ष्+अच्+टाप्] (स्त्रीलिंग ब० व० में प्रयुक्त) बरसात, वर्षा ऋतु । सम० —अघोषः बड़ा मेंढक, —भू (पुं०) 1. मेंढक 2. इन्द्रवधू नामक कीड़ा वीरबहूटी, मदः मोर ।
वर्षीयस (वि०) [वृद्ध+ईयसुन्, वर्षादेशः] बहुत बूढ़ा या पुराना ।
वर्षीयस् (वि०) [वृष्+ईयसुन्] बौछार करने वाला, —तपः कृशा देवमीढा आसीद्वर्षीयसी मही—भाग० १०।२०।७ ।
वर्ष्मवीर्यम् [प० त०] शरीर का बल ।
वलना [वल्+युच्] घुमाव, फिराव ।
वलितम् [वल्+क्त] काली मिर्च ।
वलजः अन्न का संग्रह—कर्षकेण वलजान् पुपूषता—शि० १४।७ ।
वलम्बः [अव+लम्ब्+अच्, भागुरिमते अकारलोपः] लम्ब रेखा ।
वलभिनिवेशः [स० त०] ऊपर का कमरा ।
वलयम् [वल्+अयन्] समुदाय ।
वलिः [वल्+इन्] 1. तह, झुर्री (खाल पर) 2. पेट के ऊपर के भाग में तह 3. चौरी की मूठ --रत्नच्छायाखचितवलिभिश्चामरैः क्लान्तहस्ता मेघ० ३७ । सम० —पलितम् झुर्रियाँ और सफ़ेद बाल (जो बुढ़ापे का चिह्न हैं), —शानः बादल—नैष० १।१० ।
वल्कः [वल्+क] 1. वृक्ष की छाल, वक्कल 2. मछली की खाल 3. वस्त्र । सम० - फलः अनार का पेड़, वासस् (नपुं०) वक्कल की बनी हुई पोशाक ।
वल्कलिन् (वि०) [वल्कल+णिनि] 1. वल्कल देने वाला (वृक्ष) 2. वल्कल से आच्छादित ।
वल्गकः [वल्ग्+अच्, स्वार्थे कन्] कूदने वाला, नाचने वाला ।
वल्मीकः [वल्+ईक, मुट् च] 1. बमी, दीमकों से

बनाया गया मिट्टी का ढेर 2. शरीर के कुछ भागों में सूजन 3. वाल्मीकि महाकवि । सम०—जः,—जन्मा ऋषि वाल्मीकि का विशेषण,—भौमम्,—राशिः वमी।

वल्लभगणिः कोशकार ।

वल्लभजनः स्वामिनी, प्रिया ।

वल्शः शाखा, टहनी —अव्यक्तमूलं भुवनाङ्घ्रिपेन्द्रमहीन्द्र-भोगैरविवीतवल्शम्—भाग० ३।८।२९ ।

वशालोभः पालतू हथिनी को उपयोग में लाकर जंगली हाथी को पकड़ने की रीति नात० १०१७ ।

वशीकृत (वि०) [वश+च्वि+कृ+क्त] 1. अभिभूत 2. वश में किया हुआ ।

वशीभूत (वि०) [वश+च्वि+भू+क्त] आज्ञाकारी, वश में हुआ ।

वश्यम् [वश्+यत्] 1. जो वश में किया जा सके 2. लौंग ।

वशना [वश्+युच्+टाप्] एक प्रकार का कंठाभूषण, हार ।

वषट्कृत (वि०) अग्नि में उपहृत—प्राज्यमाज्यमसकृद्वषट्कृतम् शि० १४।२५ ।

वसनम् [वस्+ल्युट्] 1. घेरा 2. दालचीनी के वृक्ष का पत्ता 3. तगड़ी (स्त्रियों का एक आभूषण) 4. रहना, निवास करना । सम०—सद्मन् तम्बू, टैंट ।

वसन्तदूती कोयल ।

वसामेहः [ष० त०] एक प्रकार का मधुमेह ।

वसुः [वस्+उन्] 1. घी, घृत (जैसा कि 'वसोर्धारा' में), 2. धन, दौलत, रत्न, जवाहर 3. सोना 4. जल। सम० उत्तमः भीष्म,—धारिणी वरा, पृथ्वी, पालः राजा,—भम् धनिष्ठा नक्षत्र, रोचिस् अग्नि ।

वसोर्धारा रुद्र के निमित्त किए जाने वाले यज्ञ के अन्त में उपहृत हवि की अनवरत धारा ।

वस्तिः (पुं०, स्त्री०) [वस्+तिः] 1. वसना, रहना 2. मूत्राशय 3. श्रोणि, पेड़ू । सम०— कर्मन् (नपुं०) अनीमा करना, कोशः मूत्राशय,—बिलम् मूत्राशय का विवर, छिद्र, रन्ध्र ।

वस्तु (नपुं०) [वस्+तुन्] 1. वास्तविकता 2. चीज 3. धन-धान्य 4. सामग्री (जिससे कोई वस्तु बनाई जाय 5. अभिकल्पना, योजना । सम०—क्षणात् (अ०) ठीक समय पर, तन्त्र (वि०) वस्तुनिष्ठ, विषयपरक, निर्देशः 1. विषय सूची 2. एक प्रकार की नान्दी,—पुरुषः नायक—अथवा सद्वस्तु पुरुष बहुमानात् विक्रम० १।२,—भावः वास्तविकता,—भूत (वि०) सारभुक्त, तथ्यपूर्ण, यथार्थ,—विनिमयः अदल-बदल का व्यापार,—शक्तितस् (अ०) परिस्थितियों के कारण,—शून्य (वि०) अवास्तविक, —स्थिति वास्तविकता ।

वस्यस् (वि०) 1. अत्युत्तम 2. अपेक्षाकृत धनवान्, 3.श्रेयान्, अधिक समृद्ध(वेद०) - श्रेयान् वस्यसोऽसानि स्वाहा तै० उ० ।

वहा [वह्+अच्+टाप्] नदी, दरिया ।

वहनभङ्गः [ष० त०] जहाज का टूट जाना ।

वहित्रम् [वह्+इत्र] 1. किश्ती, पोत 2. चौकोर रथ, वर्गाकार या चतुष्कोण रथ ।

वह्निः [वह्+नि] 1. अग्नि 2. जठराग्नि 3. पाचक अग्नि 4. सवारी 5. यजमान 6. भारवाही जन्तु 7. तीन की संख्या । सम०— उत्पातः अग्निमय उल्का,—कोणः दक्षिणपूर्वी दिशा—कोपः, दावाग्नि, पतनम् स्वयं अग्नि की चिता में बैठ कर आत्माहुति करना—बीजम् सोना,—मारकम् पानी, जल, शेखरम् केसर, कुंकुम, जाफ़रान, संस्कारः दाहसंस्कार, अन्त्येष्टि क्रिया, —साक्षिकम् अग्नि का साक्षी करके ।

वह्निसात्कृ आग लगा देना, अग्नि में जला देना ।

वा (भ्वा० अदा० पर०) सूंघना ।

वाकोपवाकम् दो व्यक्तियों की बातचीत, वक्तृता और उत्तर ।

वाकोवाक्यम् तर्क शास्त्र, न्यायशास्त्र ।

वाक्यम् [वच्+ण्यत्, चस्य कः] 1. वक्तव्य 2. उक्ति 3. आदेश 4. सगाई । सम०—आडम्बरः बड़े-बड़े शब्दों से युक्त भाषा,—ग्रहः जिह्वा में लकवे का होना, —परिसमाप्तिः (स्त्री०) वक्तव्य की संपूर्ति, विलेखः लेखाधिकारी, हिसाब-किताब रखने वाला अधिकारी, सारथिः अधिवक्ता, किसी की ओर से बोलने वाला ।

वाग्मिन् (वि०) [वाच्+ग्मिन् चस्य कः तस्य लोपः] 1. वाक्पटु 2. शब्दों से पूर्ण (पुं०) 1. वक्ता, बोलने वाला 2. बृहस्पति 3. विष्णु 4. तोता ।

वाच् (स्त्री०) [वच्+क्विप्, दीर्घः] 1. वाणी की देवता सरस्वती । सम०— अपेत (वि०) गूंगा,—आम्भृणी 1. सरस्वती के प्रसाद को प्राप्त कराने वाले ऋग् मन्त्रों का समूह 2. एक वैदिक ऋषि का नाम. उत्तरम् वक्तव्य की समाप्ति या उपसंहार,—केलि, —केली बुद्धि की चतुराई के युक्त वार्तालाप,—गुम्फः कोरी बातचीत,—जीवनः विदूषक, ठिठोलिया,- निमित्तम् किसी उक्ति से प्रबोधन या चेतावनी—तच्चाकर्ण्य वाङ्निमित्तज्ञः पितरि सुतरां जीविताशां शिथिलीचकार – हर्ष० ५,—पथः वाणी का परास,—पाटवम् वाणी की चतुराई,—पारीणः अभिव्यक्ति के परास को पार कर जाने वाला व्यक्ति, वाणी में पारङ्गत, भटः (वाग्भटः) 1. आयुर्वेद विषय का प्रसिद्ध लेखक 2. अलंकार शास्त्र का एक प्रणेता, विद् (त्रि०) तर्क और युक्तियाँ देने में प्रवीण, विनिःसृत [illegible]

के द्वारा प्रस्तुत,—**विस्तरः** वाग्विस्तार, वाक्प्रपंच, वहुभापिता, **सन्तक्षणम्** सोपालंभ उक्ति, व्यंग्यवाक्य, —**सङ्गः** शतरंजी वक्तृता, वहुविध भाषण, **स्तब्ध** (वि०) जिसकी वाणी रुक गई है, जो बोल नहीं सकता।

वाचयितृ (वि०) [वच्+णिच्+तृच्] जो सस्वर पाठ की व्यवस्था करता है।

वाचस्पतिः [षष्ठी अलुक् समास] 1. वाणी का स्वामी 2. वेद—महा० १४।२१।९ 3. एक कोशकार का नाम।

वाचस्पतिमिश्रः तन्त्रवार्तिक के प्रणेता का नाम।

वाच्य (वि०) [वच्+ण्यत्] 1. कहे जाने योग्य 2. अभिधा द्वारा प्रकट अर्थ 3. निन्दनीय। सम० **लिङ्ग** (वि०) विशेषणपरक, **वर्जितम्** कूटोक्ति, अभिधा शक्ति के द्वारा दुर्बोध उक्ति, **वाचकभावः** शब्द और अर्थ की स्थिति।

वाजित (वि०) [वाज+इतच्] पंखयुक्त (जैसे कि बाण)।

वाजिन् (वि०) [वाज+इनि] 1. पक्षी प्राणिवाजिनिषेवितात्—महा० ७।१४।१६ 2. सात की संख्या। सम०—**गन्धः** एक वृक्ष का नाम,—**विष्ठा** बड़ का वृक्ष, गूलर।

वाट (वि०) [वट+अण्] बड़ का वृक्ष। —**टः** (पुं०) जिला। सम० **शृङ्खला** बाड़।

वाडवहरणम् साँड़ घोड़े को दिया जाने वाला चारा।

वाडवहारकः समुद्री दानव।

वाणः [वण्+घञ्] ध्वनन—वार्णवार्णैः समासक्तम् —कि० १५।१०। सम०—**शब्दः** वंसरी की आवाज़।

वात (वि०) [वा+क्त] 1. हवा से उड़ाया हुआ 2. इच्छित, अभिलषित,—**तः** 1. वायु 2. वायु की अधिष्ठात्री देवता 3. शरीर के तीन दोषों में से एक 4. गठिया 5. जोड़ों की सूजन 6. वायु सरना, शरीर से वायु का निकलना। सम०—**अदः** वदाम का पेड़, **अशनः** साँप—वाताशनोऽहमिति किं विनतासुतस्य श्वासानिलाय भुजगः स्पृहयालुतालुः—रा० च० ५, —**आख्यम्** ऐसा भवन जिसमें दो कमरे हों एक का मुँह दक्षिण की ओर दूसरे का पूर्व की ओर,—**आहार** (वि०) जो वायु के ही सहारे जीवित रहता है,—**क्षोभ** शरीर में वायुप्रकोप के कारण हुआ रोग **चक्रम्** परकार से गोलाकार चिह्न लगाना **पटः** जहाज़ का पाल, **पुरीशः** केरल में गुरुवयूर नामक स्थान पर देवता. **रथः** बादल, **सञ्चारः** सूखी खांसी।

वातन्धम (वि०) [द्वितीया अलुक्] फूंक मारने वाला।

वातासह (वि०) गठिया रोग से ग्रस्त।

वातिक (वि०) [वात+ठक्] 1. मोटापा या वादी से ग्रस्त 2. खुशामदी 3. बाजीगर 4. चातक पक्षी।

वादनक्षत्रमाला मीमांसकों के आक्रमण का उत्तर देने वाला वेदान्त का ग्रन्थ।

वादित्रम् [वद्+णित्रन्] वाद्ययन्त्र, संगीत का उपकरण। सम० **लगुडः** ढोलक बजाने की लकड़ी।

वाद्यकम् [वाद्य+कन्] संगीत का उपकरण।

वाद्गलम् होठ।

वाधूलम् तैत्तिरीय शाखा का श्रौतसूत्र।

वार्नचित्रम् विविध रंग का कम्बल।

वानदण्डः जुलाहे की खड्डी।

वान्त (वि०) [वम्+क्त] 1. उगला हुआ, थूका हुआ 2. उद्वमन किया हुआ 3. गिराया हुआ। सम० **प्रदः** कुत्ता,—**आशिन्** (पुं०) 1. राक्षस जो विष्ठा पर निर्वाह करता है 2. वह व्यक्ति जो भोजन के लिए अपना गोत्र या वंशावली का उद्धरण देता है, **वृष्टि** (वि०) वह बादल जो पानी वरसा चुका है मेघ०।

वापी [वप्+इञ्, ङीप्] बावड़ी, बड़ा कुआँ। सम० **जलम्** सरोवर का पानी।

वाम (वि०) [वम्+ण अथवा वा+मन्] 1. बाँया 2. उल्टा, विपरीत, विरोधी 3. क्रूर, कठोर 4. दुष्ट 5. मनोरम,—**मः** 1. कामदेव 2. साँप 3. छाती, ऐन, औड़ी 4. निषिद्ध कार्य (जैसे सुरापान), **मम्** 1. संपत्ति, दौलत 2. दुर्भाग्य, विपत्ति 3. कमनीय वस्तु। सम० **अङ्गी** (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, कामिनी, —**इतर** (वि०) दायाँ,—**कुक्षिः** बाईं कोख,—**नयना** (स्त्री०) मनोहर आँखों वाली स्त्री, **स्वभाव** (वि०) उत्तम चरित्रयुक्त व्यक्ति—निरीक्ष्य कृष्णापकृतं गुरोस्सुतं वामस्वभावा कृपया ननाम च—भाग० १।७।४२,—**हस्तः** बकरी के गले का निरर्थक स्तन।

वामदेव्यम् साममंत्र समूह जिसका नाम उसके प्रवर्तक ऋषि वामदेव के नाम पर पड़ गया।

वामनीकृत (वि०) [वामन+च्वि+कृ+क्त] बौना बना हुआ, क़द में छोटा बनाया हुआ।

वायसविद्या शकुन की विद्या जो कौवों के निरीक्षण से जानी जाती है।

वायुकुम्भः हाथी के चेहरे का एक भाग—मात० १०।१।

वायुभक्षः 1. जो वायु खाकर जीवित रहता है 2. साँप।

वायुस्कन्धः वायुप्रदेश।

वार्घटीयन्त्रम् रहट, पानी निकालने का यन्त्र।

वार्धनी पानी की सुराही।

वारण (वि०) [वृ+णिच्+ल्युट्] हटाने वाली,—**णम्** 1. हटाना, रोकना 2. विघ्न, बाधा 3. दरवाजा, किवाड़,—**णः** 1. हाथी 2. कवच 3. हाथी की सूँड 4. अंकुश। सम० **कृच्छ्रः** एक व्रत का नाम, —**पुष्पः** पौधे की एक जाति।

वाराशिः [वार्+राशिः] समुद्र ।
वारि (नपुं०) [वृ+इञ्] 1. पानी 2. तरल या पिघला हुआ या बहने वाला पदार्थ । सम०—**कूटः** गाँव के चारों ओर की खाई, परिखा, **पिण्डः** चट्टान का मेंढक,—**भवः** शंख, **साम्यन्** दूध ।
वारुणी [वरुण+अण्] शराब का विशेष प्रकार, वारुणीं मदिरां पीत्वा—भाग० १।१५।२३ ।
वारुण्डः 1. समुद्रतट, समुद्रवेला 2. अग्नि 3. किवाड़ का दल ।
वार्तानुकर्षक:
वार्तायनः } 1. चर 2. दूत 3. वृत्तवाहक ।
वार्तकर्मन् (नपुं०) खेती और मुर्गी पालन का व्यवसाय ।
वार्तपतिः नियोजक, काम देने वाला, स्वामी ।
वार्त्रघ्नीन्यायः मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार विवरण यदि मुख्य सामग्री के साथ उपयुक्त न लगे तो उसे सहायक सामग्री के साथ जोड़ दिया जाय—मी० सू० ३।१।२३ पर शा० भा० ।
वार्दरम् 1. रेशम 2. जल 3. दक्षिणावर्त शंख ।
वार्दलम् बरसात का दिन ।
वार्धेयम् एक प्रकार का नमक ।
वार्ध्राणस् 1. एक पक्षी 2. बूढ़ी बकरी ।
वालुकायन्त्रम् रेत से स्नान करना, शरीर पर रेत मलना ।
वावात (वि०) प्रिय, प्रीतिभाजन, स्नेहभाजन ।
वासः [वस्+घञ्] 1. सुगन्ध 2. रहना 3. आवास 4. एक दिन की यात्रा 5. वासमा 6. स्वरूप, आकृति । सम०—**पर्ययः** आवासस्थान का परिवर्तन,—**प्रासादः** महल ।
वासना [वास्+युच्+टाप्] (गणित०) प्रमाण, प्रदर्शन ।
वासनामय (वि०) भाव तथा भावनाओं से युक्त ।
वासित (वि०) [वास्+क्त] पवित्रीकृत, शिक्षित, उन्नीत, सुधारा गया - नै० २१।११९ ।
वासरः,—रम् [वास्+अर] दिन, - **रः** 1. समय, बारी 2. एक नाग का नाम । सम०—**कन्यका** रात, —**कृत्**, **मणिः** सूर्य ।
वासविः 1. इन्द्र का पुत्र जयन्त 2. अर्जुन 3. वालि ।
वासवेयः [वासवी+ढक्] व्यास का नाम—महा० १।१।५९ ।
वासस् [वस्+णिच्+असुन्] 1. वस्त्र 2. कफ़न 3. पर्दा । सम०—**उदकम्** वस्त्र को निचोड़ने पर उससे निकला हुआ पानी जो प्रेतात्माओं को उपहृत किया जाता है—**वृक्षः** आश्रयपादप, शरण प्रदान करने वाला पेड़ ।
वासिष्ठम् रक्त, रुधिर, खून ।
वासिष्ठरामायणम् एक ग्रन्थ का नाम (यह ज्ञानवासिष्ठ के नाम से भी प्रसिद्ध है) ।
वास्तु (पुं०, नपुं०) [वस्+तुण्] 1. भवन बनाने के निमित्त नियत भूमिखण्ड 2. आवास 3. सभाभवन सम०—**कर्मन्** (नपुं०) 1. भवन निर्माण करना, भवन निर्माण का प्रारूप,— **ज्ञानम्** वास्तु कला, भवन निर्माण का प्रारूप या अभिकल्प, **देवता** भवन की अधिष्ठात्री देवता,— **विद्या** स्थापत्य कला, भवन-निर्माण विज्ञान,—**विधानम्** भवन संरचना, ।
वास्तुक (वि०) यज्ञ भूमि पर अवशिष्ट रही सामग्री - उवाचोत्तरतोऽभ्येत्य ममेदं वास्तुकं वसु—भाग० ९।४।६ ।
वास्रः दिवस, दिन ।
वाहः [वह्+घञ्] 1. ले जाने वाला 2. कुली 3. भारवाहक 4. घोड़ा 5. बैल 6. भैंसा 7. सवारी । सम० - **वारः** घुड़सवार, **रिपुः** भैंसा, **वाहः** रथवान, रथ को हाँकने वाला—स्ववाहवाहोचितवेषपेशलः —नै० १।६६,—**वाहनम्** चम्पू · रा० २।५२।६, **वाहम्** (पुं०) अग्नि ।
विराज् पक्षियों का राजा, बाज पक्षी ।
विक (वि०) [ब० स०] 1. जलहीन 2. अप्रसन्न ।
विकच (वि०) [विकच्+अच्] 1. खिला हुआ, खुला हुआ 2. फैला हुआ, बखेरा हुआ 3. केशशून्य, 4. चमकीला, देदीप्यमान—चन्द्रांशुविकचप्रख्यम्—रा० २।१५।९। सम०—**श्री** (वि०) उज्ज्वल सौ से युक्त, अनिन्द्य लावण्य से सम्पन्न ।
विकचित (वि०) [विकच+इतच्] खुला हुआ, खिला हुआ ।
विकटः गणेश,—**टम्** 1. रसौली 2. चन्दन, 3. सफ़ेद संखिया ।
विकथा असंगत बातें ।
विकर्तृ (वि०) [वि+कृ+तृच्] बाधा डालने वाला —राक्षसा ये विकर्तारः—रा० १।११।१० ।
विकवच (वि०) [ब० स०] कवचहीन, जिसके पास जिरह बख्तर न हो ।
विकाङ्क्षा [वि+काङ्क्ष्+अङ+टाप्] 1. मिथ्या उक्ति 2. इच्छा न होना 3. संकोच ।
विकार्यः [वि+कृ+ण्यत्] अहं, अहंकार, अभिमान ।
विकाशः [वि+काश्+अच्] उज्ज्वलता ।
विकुक्षि (वि०) बड़े पेट वाला, उभरी हुई तोंद वाला ।
विकूबर (वि०) जिसमें कोई लम्बी लकड़ी न लगी हो ।
विकृ (तना० उभ०) बदनाम करना, कलङ्क लगाना अनार्य इति मामार्याः""""विकरिष्यन्ति—रा० २।१२।७८ ।
विकृत (वि०) [वि+कृ+क्त] 1. परिवर्तित, बदला हुआ 2. अपूर्ण, अधूरा 3. अप्राकृतिक 4. आश्चर्यजनक 5. विरक्त, - **तम्** (नपुं०) 1. परिवर्तन 2. रोग 3. अरुचि 4. गर्भस्राव—मनु० १।२४७ 5. दुष्कृत्य —रा०—७।६५।३४ ।

विकटनितम्बा 1. एक कवयित्री का नाम 2. डा० राघवन रचित 'एकांकी'।

विकृतिः [वि+कृ+क्तिन्] 1. शत्रुता 2. आभास 3. गर्भस्राव 4. व्युत्पन्न (व्या० में)।

विकर्षणम् [वि+कृष्+ल्युट्] 1. भोजन से विरक्ति 2. अन्वेषण।

विकृष्टसीमान्त (वि०) जिसकी सीमाएँ वर्धित की गई हैं।

विकृ (तुदा० पर०) 1. उडेलना 2. (ठंडी सांस) आह भरना।

विकिरः [वि+कृ+अच्] कुछ गौण पितरों को प्रसन्न करने के लिए बखेरा गया चावल।

विकिरान्नम् दे० 'विकिरः'।

विक्लृप् (भ्वा० आ०) 1. दुविधा का वर्णन करना 2. विचार करना।

विकल्पः [विक्लृप्+घञ्] 1. उत्पत्ति—भा० ११।२५। २७ 2. मान लेना, उक्ति 3. उत्प्रेक्षा, कल्पका।

विकल्पित (वि०) [विक्लृप्+क्त] 1. तत्पर, व्यवस्थित 2. संदिग्ध, कल्पित 3. विभक्त।

विकेशतारका धूमकेतु, पुच्छलतारा।

विक्रम् (भ्वा० आ०) पराक्रम दिखाना।

विक्रमः [विक्रम्+घञ्] 1. गुरु स्वर, उदात्त स्वराघात 2. जन्म कुण्डली में लग्न से तीसरा घर।

विक्रमितम् [विक्रम्+णिच्+क्त] पराक्रम, शौर्य।

विक्रिया [विकृ+श+टाप्] 1. चोट, आघात, हानि 2. लोप।

विक्रयः [वि+क्री+अच्] 1. विक्री 2. विक्रयमूल्य 3. मण्डी। सम० - पत्रम् विक्री की दस्तावेज - वीथिः बाजार।

विक्रीडः [वि+क्रीड्+अच्] 1. खेल का मैदान 2. खिलौना।

विक्रोष्टृ (पुं०) [विक्रुश्+तृच् [जो सहायता की पुकार करता है।

विक्लवम् [वि+क्लु+अच्] क्षोभ—रा० २।४४।२५।

विक्लवता [विक्लव+तल्+टाप्] भीरुता, कायरता भवति हि विक्लवता गुणोऽङ्गनानाम् - शि० ७।४३।

विक्षिप् (तुदा० पर०) 1. दबाना 2. उछालना 3. (धनुष) झुकाना।

विक्षिप्त (वि०) [विक्षिप्+क्त] विस्तारित, प्रसारित फैलाया गया।

विक्षेपः [विक्षिप्+घञ्] 1. अवहेलना (जैसा कि 'समय विक्षेप' में 2. विस्तार।

विगतक्लम (वि०) [ब० स०] जिसकी थकान दूर हो गई है।

विगतासु (वि०) [ब० स०] निष्प्राण, मृतक।

विगद (वि०) [ब० स०] रोग से मुक्त।

विगर्हिताचार (वि०) [ब० स०] जिसका आचरण निंद्य है, घृणित आचरण से युक्त।

विग्रहग्रहणम् [ष० त०] रूप धारण करना, शरीर या मूर्ति धारण करना।

विग्रहेच्छुः [ष० त०] लड़ाई का इच्छुक।

विग्रहिन् (पुं०) [विग्रह+इनि] युद्ध मंत्री।

विघसम् [वि+अद्+अप्, घसादेशः] 1. मोम 2. अधचबा कौर। सम०—आशः (पुं०) जो खाने से बचे हुए उच्छिष्ट भोजन को करता है, कौवा।

विघ्नोपशान्तिः बाधाओं को हटाना।

विचक्ष (अदा० आ०) 1. कहना, घोषणा करना 2. प्रकट करना 3. सोचना, अटकल लगाना।

विचटनम् [विचट्+ल्युट्] तोड़ना।

विचन्द्र (वि०) [ब० स०] चन्द्रहीन, चन्द्रमा से रहित।

विचर् (भ्वा० पर०) 1. चरना, घास खाना 2. भूल हो जाना, गलती करना—हविषि व्यचरत्तेन वषट्कारं गृणन् द्विजः—भाग० ९।१।१५।

विचर (वि०) [विचर्+अच्] भ्रान्त, विचलित—न त्वं धर्मं विचरं सञ्जयेह—महा० ५।२९।४।

विचारमूढ (वि०) 1. मूर्ख, 2. निर्णय करने में अज्ञानी।

विचर्मन् (वि०) कवचहीन, जिसके पास जिरह बख्तर न हो।

विचलित (वि०) [विचल्+क्त] 1. पथभ्रष्ट, सहीमार्ग से भटका हुआ 2. अवलुप्त, अन्धा किआ हुआ।

विचालिन् (वि०) [विचाल+इनि] अस्थिर, परिवर्त्य, अस्फुट,—विचाली हि संवत्सरशब्दः—मी० सू० ६। ७।३८ पर शा० भा०।

विचिकित्सित (वि०) संदिग्ध, संदेह पूर्ण।

विचित्रित (वि०) [विचित्र+इतच्] रंगा हुआ, सजाया हुआ, रंगविरंगा।

विचिन्तनम् [विचिन्त्+ल्युट्] 1. विचार, चिन्तनम् 2. देख-भाल, चिन्ता, फ़िक्र।

विचिन्ता [विचिन्त्+अच्+टाप्] दे० 'विचिन्तनम्'।

विचेयम् [विचि+ण्यत्] गवेषणीय।

विचेष्टनम् [विचेष्ट्+ल्युट्] हाथ पैर हिलाना, प्रयास करना।

विचेष्टा [विचेस्ट्+अङ+टाप्] 1. प्रयत्न 2. गति 3. संचरण।

विच्छिन्न (वि०) [विच्छिद्+क्त] 1. चीरा हुआ, फाड़ा हुआ 2. तोड़ा हुआ, बांटा हुआ 3. चितकबरा 4. समाप्त किया हुआ 5. गुप्त 6. उबटन आदि लेप किया हुआ। सम०—आहुतिः आहुति देना—भङ्ग करके, औपासनम् नित्य सन्ध्योपासना करना जिसका नैरन्तर्य भङ्ग हो गया हो—अर्थात् कभी करना

कभी न करना, —प्रसर (वि०) जिसकी प्रगति में वाघा पड़ गई है, मद्य (वि०) जिसने सुरापान छोड़ दिया है ।

विच्छेदः [विच्छिद्+घञ्] भेद, प्रकार ।

विच्छुरणम् [विच्छुर्+ल्युट्] बिखेरना, छिटकाना, बुरकना ।

विजङ्घ (वि०) [ब० स०] जिसके पहिये न हों, चक्रहीन (रथ) ।

विजन्या (वि०) गर्भिणी ।

विजल (वि०) [ब० स०] जलहीन, जहाँ पानी न हो ।

विजर्जर (वि०) 1. जीर्णशीर्ण, टूटा-फूटा 2. विध्वस्त, उच्छिन्न ।

विजयः [विजि+अच्] 1. जीत, फ़तह 2. एक विशिष्ट मुहूर्त 3. तीसरा महीना 4. एक प्रकार का सैन्यव्यूह। सम०—ऊर्जित (वि०) जीत (फ़तह) से प्रोत्साहित, —दण्डः सेना की एक विशेष टुकड़ी ।

विजिघित्स (वि०) [ब० स०] जिसकी भूख नष्ट हो गई हो ।

विजिहीर्षा [वि+हृ+सन्+अ+टाप्] इधर-उधर घूमने या खेलने की इच्छा ।

विजृम्भिका 1. सांस लेने के लिए मुंह खोलना 2. जम्हाई लेना ।

विजृम्भित [विजृम्भ्+क्त] 1. जो जम्हाई ले चुका है 2. जम्हाई लेने वाला ।

विज्जिका एक कवयित्री का नाम नीलोत्पलदलश्यामां विज्जिकां मामजानता । वृथैव दण्डिना प्रोक्ता सर्वशुक्ला सरस्वती ।। (उस कवयित्री का अब तक यही एक श्लोक उपलब्ध हुआ है) ।

विज्ञानम् [विज्ञा+ल्युट्] 1. ज्ञान का अंग या बुद्धि 2. इन्द्रियातीत ज्ञान ।

विज्ञानभिक्षुः एक बौद्ध लेखक का नाम ।

विज्ञानस्कन्धः बौद्ध दर्शन के पाँच स्कन्धों में से एक ।

विज्ञेय (वि०) [वि ज्ञा+ण्यत्] 1. जानने के योग्य संज्ञेय 2. जिसकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए 3. जिसका ध्यान रक्खा जाय ।

विज्य (वि०) [ब० स०] जिसमें डोरी या ज्या न हो (धनुष) ।

विटकान्ता 1. हल्दी, हरिद्रा 2. हल्दी का पौधा ।

विटङ्कः (वि०) उत्तम, सुन्दर, मनोरम —केयूरकुण्डलकिरीटविटङ्कवेषी भाग० ३।१५।२७ ।

विटपः [विट+पा+क] लता, बेल (जैसा कि 'भ्रूविटप' में) ।

विडम्बक (वि०) [वि+डम्ब्+ण्वुल्] नक़ल करने वाला —परमम्बुदकदम्बकविडम्बकरालम् —पतंजलि का तांडवस्तोत्र ।

विडम्ब्यम् [विडम्ब्+यत्] दिल्लगी की चीज, उपहास की वस्तु ।

वितर्कः [वितर्क्+अच्] 1. मिथ्या अनुमान 2. इरादा । सम०—पदवी अनुमान के क्षेत्र के अन्तर्गत ।

वितानः,-नम् [वितन+घञ्] 1. शामियाना, चंदोआ 2. राशि, ढेर 3. बहुतायत 4. अनुष्ठान 5. निष्पत्ति ।

वितानकः [वितान+कन्] राशि, ढेर ।

वितार (वि०) [प्रा० ब०] 1. जिसमें तारे न हों (आकाश) 2. धूमकेतु के शीर्षभाग से रहित ।

वितृप्त (वि०) [वितृप्+क्त] संतुष्ट, संतृप्त ।

वित्तविश्राणनम् मूल्यवान उपहारों का वितरण ।

विदत् (वि०) [विद्+शतृ] 1. जानने वाला 2. समझदार ।

विदितात्मन् (वि०) [ब० स०] 1. जो अपने आपको जानता है 2. प्रसिद्ध ।

विदुरः [विद्+कुरच्] वेत्ता, ज्ञाता ।

विदुषः दे० 'विदुर' ।

विदुषी जानने वाली, समझदार स्त्री ।

विदग्ध (वि०) [विदह्+क्त] 1. परिपक्व 2. दक्ष 3. भूरा, ईषद्रक्त, कुछ-कुछ लाल 4. जला हुआ, भस्मीभूत 5. पचा हुआ । सम०—परिषद् (स्त्री०) चतुर पुरुषों का समाज,—मुखमण्डनम् एक ग्रन्थ का नाम, वचन (वि०) वाग्मी, वाक्पटु ।

विदण्डः दरवाजे की कुंजी ।

विदश (वि०) [ब० स०] जिसके मग़ज़ी या झालर अथवा किनारी न लगी हो, (वस्त्र) ।

विदायः [फ़ारसी का शब्द] 1. विदा करना 2. प्रभाग ।

विदुरनीतिः } महाभारत के पाँचवें पर्व में ३३ से ४०
विदुरप्रजागरः } तक अध्याय । यहाँ धृतराष्ट्र ने नीति पर व्याख्यान दिया है ।

विदूर संश्रव (वि०) जो दूर से सुनाई दे ।

विदृतिः (स्त्री०) खोपड़ी की सन्धि या सीवन ।

विदेशज (वि०) विदेश में उत्पन्न ।

विदेहमुक्तिः (स्त्री०) मोक्ष के कारण जन्म मरण से अर्थात् शरीर से छुटकारा ।

विदोहः [विदुह्+घञ्] अतिरिक्त लाभ ।

विद्धसालभञ्जिका हर्षदेवकृत एक नाटक ।

विद्या [विद्+क्यप्+टाप्] 1. दुर्गा देवी 2. सरस्वती देवी 3 ज्ञान, शिक्षा । सम०—आतुर (वि०) जो ज्ञान प्राप्त करने के लिए उतावला हो—विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा—नीति० —ईशः शिव का नाम, —कोशगृहम्,—कोशसंग्रह,—कोशसमाश्रयः, पुस्तकालय, —बलम् जादू की शक्ति,—भाज् (वि०) शिक्षित, पढ़ालिखा,— वंशः अध्ययन की किसी विशिष्टशाखा के अध्यापकों की कालक्रमानुसार सूची ।

विद्युत्सम्पातम् (अ०)एक क्षण में. बिजली जैसी तेजी से ।

विद्योत (वि०) [विद्युत+घञ्] चकाचौंध करने वाला, चमचमाने वाला ।

विद्रुतिः [वि+द्रु+क्तिन्] दौड़ जाना, भाग जाना ।

विद्राण (वि०) [वि+द्रा+क्त, नस्य णत्वम्] 1. जागरूक, निद्रारहित 2. निराश, उदास—द्रविणविद्राणवणिजि—हर्ष० ७ ।

विद्वद्गोष्ठी, **विद्वत्सवस्**, **विद्वत्सभा** } विद्वान् पुरुषों की सभा विद्वन्मण्डली ।

विधन (वि०) [प्रा० ब०] निर्धन, धनहीन ।

विधर्म (वि०) 1. अधर्मी, अन्यायी 2. अधर्मकार्य जो अच्छे आशय से किया गया हो ।

विधर्मिन् (वि०) [विधर्म+इनि] 1. भिन्न वर्ग से संबंध रखने वाला (विप० सधर्मिन्) 2. अधर्मी ।

विधा (जुहो० उभ०) लीन करना, उपभोग करना ।

विधा [वि+धा+क्विप्] उच्चारण ।

विधातृ (पुं०) [वि+धा+तृच्] माया, भ्रान्ति ।

विधानम् [विधा+ल्युट्] 1. प्रयत्न, प्रयास 2. उपचार 3. भाग्य, नियति 4. विधि 5. (नाटक०) विभिन्न रसों का संघर्ष ।

विधिः [वि+धा+कि] 1. उपयोग, प्रयोग 2. अनुष्ठान, अभ्यास 3. प्रणाली, रीति, ढंग 4. नियम 5. क़ानून (विप० अर्थवाद) 6. धर्मकृत्य 7. व्यवहार 8. आचरण 9. सृष्टि 10. निर्माण 11. भाग्य 12. हाथी का आहार 13. वैद्य 14. उपाय, तरकीब । सम० **अन्तः** विधिपरक मूल पाठ का उपसंहारात्मक भाग,—**अर्थः** विधि का आशय, **कर** (वि०) विधान को कार्य में परिणत करने वाला,—**यज्ञः** विधिविधान के अनुसार अनुष्ठित यज्ञ.—**लक्षणम** विधि का स्वरूप, **लोपः** विधान का अतिक्रमण,—**विपर्ययः**,—**विपर्यासः** दुर्भाग्य, —**विभक्तिः** (स्त्री०) विधिलिङ् के प्रत्यय —**वशात्** (अ०) भाग्य से,—विधिवशाद्दूरबन्धुर्गतोहम् मेघ० ६ ।

विधुः [व्यध्+कु] 1. चन्द्रमा 2. कपूर 3. राक्षस 4. प्रायश्चित्ताहुति । सम० **परिध्वंसः** चन्द्रग्रहण, **मण्डलम्** चन्द्रमा का परिवेश,—**मासः** चान्द्र महीना ।

विधुर (वि०) [विगता धूर्यस्य अच् समा०] 1. विवश, असहाय—प्रतिक्रियायै विधुरः—कि० १७।४१ 2. अशक्त, अवसन्न—हयैश्च विधुरग्रीवैः—महा० ७।१४६।२५ ।

विधुरित (वि०) [विधुर+इतच्] विवर्ण, कान्तिहीन ।

विधूम (वि०) [प्रा० ब०] धूएँ से रहित ।

विधारणम् [विधृ+णिच्+ल्युट्] गिरफ्तार करना, रोकना ।

विध्र (वि०) [विध्र+क्रन्, नलोपश्च] निष्कलंक, कलंकरहित ।

विनग्न (वि०) [वि+नज्+क्त] बिल्कुल नंगा, विवस्त्र ।

विनर्दिन् (वि०) [विनर्द्+णिनि] गरजने वाला (साम मन्त्रों के पाठ करने की एक रीति ।

विनयः [वि+नी+अप्] 1. दण्ड—शीलवृत्तमविज्ञाय धास्यामि विनयं परम् महा० ३।३०६।१९ 2. कार्यालय ।

विनयकर्मन् (नपुं०) [ष० त०] निर्देश, शिक्षण ।

विनाशकालः [ष० त०] विपत्ति का समय ।

विनाशहेतु (वि०) [ब० स०] जो नाश का कारण हो ।

विनाकृत (वि०) [विना+कृ+क्त] 1. वञ्चित, रहित, मुक्त 2. वियुक्त, एकाकी ।

विनाभावः वियोग—व्यक्तं दैवादहं मन्ये राघवस्य विनाभवम् रा० ७।५०।४ ।

विनायकः [वि+नी+ण्वुल्] नेता, अग्रणी ।

विनिकृत (वि०) [वि+नि+कृ+क्त] दुर्व्यवहारग्रस्त, आहत, विकलीकृत ।

विनिगमना [वि+नि+गम्+युच्+टाप्] संकल्प, निश्चित उपसंहार, कुछ स्वीकार करके शेष को निकाल देना —मै० सं० १०।५।५९ पर शा० भा० ।

विनिबर्हण (वि०) [नि+नि+बर्ह्+ल्युट्] परास्त करने वाला, हराने वाला ।

विनियुज् (रुधा० उभ०) (बाण) छोड़ना, (बाण) मारना ।

विनियोक्तृ (वि०) [वि+नि+युज्+तृच्] काम देने वाला, स्वामी ।

विनियोगः [वि+नि युज्+घञ्] 1. प्रयोग, उपयोग 2. सहसम्बन्ध ।

विनिर्वृत्त (वि०) [वि निः+वृत्+क्त] 1. पैदा हुआ, निकल आया 2. संपूर्ण हुआ, पूरा हुआ ।

विनिवेशनम् [विनि+विश्+णिच्+ल्युट्] उठान, निर्माण ।

विनिहित (वि०) [विनि+धा+क्त] 1. रक्खा हुआ, पड़ा हुआ 2. नियुक्त 3. जड़ा हुआ ।

विनिह्नुत् (वि०) [विनि+ह्नु+वत] 1. मुकरा हुआ, न अपनाया हुआ 2. छिपा हुआ, छिपाया हुआ ।

विनी (भ्वा० पर०) दूर रहना, दूर करना—विनीय भयमात्मनः—महा० ९।३१।२९ ।

विनीत (वि०) [विनी+क्त] फैलाया हुआ ।

विनीतवेषः सामान्य वेषभूषा ।

विनेयः [वि+नी+ण्यत्] शिष्य, छात्र विनीतविनेयभृङ्गाः ।

विनोदपरः, **विनोदरसिकः** } क्रीडाशील, मनोरंजन में व्यस्त, आमोदप्रिय ।

विनोदस्थानम् मनोरंजन का स्थान, वन विहार ।

विन्यसनम् [विनि+अस्+ल्युट्] रखना, धरना ।

विन्यासः [विनि+अस्+घञ्] 1. (शस्त्र) धारण करना 2. बीच में घसेड़ना 3. गति (अंगों की) स्थिति ।

विपक्षः [प्रा० ब०] 1. निष्पक्षता, तटस्थता 2. वह दिन जब कि चन्द्रमा एक पक्ष से दूसरे पक्ष में संक्रमण करता है।

विपाटः[विपट्+घञ्]एक प्रकार का वाण, तीर-- विपाटपञ्जरेण—शि० २०।१७।

विपाटित (वि०) [विपट्+णिच् क्त] फाड़ा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

विपणः [वि+पण्+अच्] कार्यभार ग्रहण, व्यापार, व्यवसाय—न तत्र विपणः कार्यः खरकण्डूयनं हि तत् —महा० ३।३३।६६।

विपणिजीविका [ष० त०] क्रयविक्रय या व्यापार के द्वारा जीवननिर्वाह करना।

विपणिवीथी [प० त०] मण्डी, बाज़ार।

विपण्यु (वि०) 1. जिसने व्यवसाय छोड़ दिया है 2. तटस्थ, उदासीन।

विपत्तिः [विपद्+क्तिन्] अवसान, समाप्ति।

विपत्तिकालः [ष० त०] विपत्ति का समय।

विपन्नदीधिति (वि०) [ब० स०] कान्तिहीन, निष्प्रभ।

विपरिक्रान्त (वि०) साहसी, बलशाली।

विपर्ययः [वि०+परि+इ+अच्] मिथ्याबोध, ग़लतफ़हमी —ईशादपेतस्य विपर्ययोऽस्मृतिः—भाग० ११।२।३७।

विपर्यासः [विपरि+अस्+घञ्] 1. ह्रास 2. मृत्यु०। सम०—उपमा, उल्टी उपमा।

विपाकः [वि०+पच्+घञ्] कुम्हलाना, मुरझाना। सम० —दारुण (वि०) परिणाम में भयंकर,—दोषः अग्निमांद्य, अजीर्ण।

विपिनौकस् (पुं०) [ब० स०] 1. लंगूर 2. जंगली जन्तु।

विपुंसक(वि०)[प्रा० ब०] पुंस्त्वहीन, जिसमें पौरुष न हो।

विपुलग्रीव (वि०) [ब० स०] लम्बी गर्दन वाला।

विपुष्ट (वि०) [वि+पुष्+क्त] जिसे पूरा आहार न मिला हो, जिसे पूरा पोषण न मिला हो।

विपूयकम् [वि+पू+क्यप्, स्वार्थे कन् च] सड़ांध, दुर्गंध।

विप्रः [वप्+रन्, अत इत्वम्] भाद्रपद का महीना। सम० —ब्राह्मण माता पिता की जारज सन्तान।

विप्रकृ (तना० उभ०) नियत करना, (साक्षी के रूप में) स्वीकार करना।

विप्रकारः [विप्र+कृ+घञ्] 1. विविधरीति 2. दुष्कृत्य, गलत तरीक़ा।

विप्रकृतिः [वि+प्र+कृ+क्तिन्] परिवर्तन।

विप्रकर्षः [विप्र+कृष्+घञ्] 1. खींचकर दूर करना 2. (व्या० में) से व्यंजनों के बीच में कोई स्वर जो उन दोनों की भिन्नता दर्शावे।

विप्रतिपद (दिवा० आ०) मिथ्या उत्तर देना।

विप्रतिपत्तिः [वि+प्रति+पद्+क्तिन्] 1. विरोधी भावना 2. ग़लती, त्रुटि।

विप्रतिपन्न (वि०) [विप्रति+पद्+क्त] परस्पर संयुक्त, आपस में मिले हुए। सम०—बुद्धि (वि०) मिथ्या विचार या धारणा रखने वाला।

विप्रत्ययः [वि+प्रति+इ+अच्] अविश्वास,—यदि विप्रत्ययो ह्येष—महा० १२।१११।५५।

विप्रथित (वि०) [वि+प्रथ्+क्त] प्रसिद्ध, यशस्वी।

विप्रधर्षः [विप्र+धृष्+घञ्] तंग करना, सताना।

विप्रलम्भित (वि०) [विप्र+लम्भ्+क्त] 1. अपमानित 2. अतिक्रान्त।

विप्रलीन (वि०) [विप्र+ली+क्त] तितर-बितर किया हुआ, छिन्न-भिन्न किया हुआ।

विप्रलुम्पक (वि०) [विप्र+लुप्+ण्वुल्, मुमागमः] लुटेरा, डाकू।

विप्रलोकः [विप्र+लोक्+घञ्] बहेलिया, चिड़ीमार।

विप्रवादः [विप्र+वद्+घञ्] असहमति, मतिभिन्नता।

विप्रवसित (वि०) [विप्र+वस्+णिच्+क्त] प्रवास के लिए गया हुआ, जो परदेश में चला गया है।

विप्रहत (वि०) [विप्र+हन्+क्त] 1. पटक दिया हुआ, गिराया हुआ 2. कुचला हुआ, रौंदा हुआ।

विप्रहीण (वि०) [विप्र+हि+क्त] वञ्चित, विरहित।

विप्रुष् (स्त्री०) बोलते समय मुंह से निकले थूक के कण।

विप्लवः [वि+प्लु+अप्] पोतभंग, जहाज का विनाश।

विप्लुतभाषिन् (वि०) असंगत बोलने वाला, हकलाने वाला।

विप्लुतिः [वि+प्लु+क्तिन्] विनाश, ध्वंस।

विबन्धु (वि०) [ब० स०] बन्धुहीन, जिसका कोई सगा-सम्बन्धी न हो—भ्रातुर्यविष्ठस्य सुतान् विबन्धून् —भाग० ३।१।६।

विबुधः [वि+बुध्+क] 1. बुद्धिमान्, विद्वान् पुरुष 2. देवता 3. चन्द्रमा। सम०—अनुचरः दिव्य सेवक, —आवासः देवमन्दिर,—इतरः राक्षस।

विबुभूषा [वि+भू+सन्+अङ्+टाप्] अपने आप को प्रकट करने की इच्छा।

विभज् (म्वा० उभ०) 1. अलग कर देना, दूर भगा देना —विभक्तरक्षः संबाधम्—रा० ५।५३।७३ 2. खोलना 3. बांटना।

विभङ्गः [वि+भञ्ज्+घञ्] लहर।

विभङ्गुर (वि०) [वि+भञ्ज्+उरच्] अस्थिर, चंचल।

विभवः [वि+भू+अच्] प्ररक्षा, बचाव—नियन्ता जन्तूनां निखिलजगदुत्पादविभवप्रतिक्षेपे—विश्व०।

विभानुगा [विभा+अनुगा] छाया।

विभागरेखा [ष० त०] विभाजन रेखा।

विभावर (वि०) [विभा+वनिप्, र आदेशः] उज्वल चमकदार, चमकीला—विभावरीं सर्वभूतप्रतिष्ठां गङ्गां गता—महा० १३।२६।८६।

विभिद् (रुधा० उभ०) अतिक्रमण करना, उल्लङ्घन करना।

विभेदः [विभिद्+घञ्] सिकुड़न, (भौंहें) सिकोड़ना।

विभी (वि०) निर्भय, निडर।

विभीषणः एक राक्षस का नाम, रावण का भाई।

विभुता सर्वोपरि सत्ता, यश, कीर्ति।

विभुग्न (वि०) [वि+भुज्+क्त] मुड़ा हुआ, झुका हुआ, दमन किया हुआ।

विभावनम् [वि+भू+णिच्+ल्युट्] 1. विकास 2. परक्षा 3. दृष्टि, दर्शन।

विभाव्य [विभू+णिच्+ण्यत्] चिन्तनीय, विचारणीय।

विभूतिः [वि+भू+क्तिन्] 1. लक्ष्मी 2. योग्यताएँ—क्षेत्रज्ञ एता मनसो विभूतीः—भाग० ५।११।१२।

विभ्रंशः [वि+भ्रंश्+घञ्] 1. अतिसार, बार-बार दस्त आना 2. उलटफेर, अस्तव्यस्तता।

विमद्य (वि०) [प्रा० ब०] मद्यपान से मुक्त।

विमर्दनम् [वि+मृद्+ल्युट्] 1. सुगन्ध, खुशबू 2. परिघर्षण, चबाना, पीसना 3. संघर्ष।

विमर्षिन् (वि०) [विमृष्+णिनि] असहिष्णु, अनिच्छुक, विमनस्क।

विमात्रा (वि०) मापतोल में बराबर।

विमानः [वि+मा+ल्युट्] 1. खुली पालकी 2. जहाज़ में रहने वाली किश्ती। सम० —वाहः पालकी उठाने वाला।

विमार्गदृष्टि (वि०) बुरी राह पर आँख रखने वाला, बुरे रास्ते को देखने वाला।

विमुक्ति (वि०) [वि+मुच्+क्त] आवेगरहित, शान्तचित्त, निरपेक्ष।

विमुक्तमौनम् (अ०) मौनभंग करके।

विमुक्तशाप (वि०) [प्रा० ब०] शाप के प्रभाव से मुक्त।

विमूढसंज्ञ (वि०) [ब० स०] घबराया हुआ, बेहोश।

विमूढात्मन् (वि०) [ब० स०] घबराया हुआ, बेहोश।

विमूर्छित (वि०) [वि+मूर्छ्+क्त] 1. पूर्ण, सब मिला हुआ 2. जमा हुआ, मूर्छा में ग्रस्त।

विमृशः [वि+मृश्+अच्] अनुचिन्तन, सोचविचार, —भाग० ४।२२।२१।

विमोघ (वि०) बिल्कुल फल रहित, निष्फल।

वियत्पताका [ष० त०] बिजली।

वियत्पथः [ष० त०] अन्तरिक्ष।

वियतम् (अ०) अन्तराल पर अवकाश देकर।

वियन्तृ (वि०) [वि+यम्+तृच्] चालकरहित, जिसमें चालक न हो।

वियुज् (रुधा० आ०) 1. (प्रतिज्ञा) भंग करना 2. लूटना 3. घटाना।

विमुज्य [वियुज्+ल्यप्] वियुक्त होकर, पृथक् एक एक करके व्यक्तिशः।

वियोजनम् [वियुज्+ल्युट्] 1. वियोग 2. घटाना।

वियोनिः भिन्न जाति की स्त्री—महा० १३।१४५।५२।

वियोनि (वि०) [प्रा० ब०] 1. नीच कुल में उत्पन्न 2. भगरहित।

वियोनिजः पक्षी, परिंदा।

विरजा एक नदी का नाम।

विरक्तप्रकृति (वि०) [ब० स०] जिसकी प्रजा उदासीन हो, निर्लिप्त हो।

विरण्य (वि०) विस्तृत, विस्तारयुक्त, दूरतक फैला हुआ।

विरथ्या 1. बुरा मार्ग 2. उपमार्ग, छोटी गली।

विरतप्रसंगः वह बात या विषय जिसकी चर्चा बन्द हो गई हो

विरलभक्ति (वि०) नीरस, उकता देने वाला।

विराज् [विराज्+क्विप्] ब्रह्माण्ड, विश्व। सम० —सुतः (विराट्सुतः) स्वर्गीय पितरों की एक श्रेणी।

विरात्रः, -त्रम् [प्रा० ब०] रात का तीसरा पहर—शुश्राव ब्रह्मघोषांश्च विरात्रे ब्रह्मरक्षसाम्—रा० ५।२६।

विरावण (वि०) [वि०+रु+णिच्+ल्युट्] शोरगुल कराने वाला, हल्लागुल्ला मचवाने वाला।

विरिक्त (वि०) [वि+रिच्+क्त] जिसे दस्त करा दिये गये हों, खाली कराया हुआ।

विरिक्तिः [विरिच्+क्तिन्] विरेचन, दस्त करवाना।

विरुज् (स्त्री०) [वि+रुज्+क्विप्] दारुण पीडा।

विरुज् (वि०) नीरोग, स्वस्थ।

विरुद्धरूपकम् एक अलङ्कार जहां उपमेय बिल्कुल समान न हो।

विरोधः [वि+रुध्+घञ्] 1. वैपरीत्य, बाधा, विघ्न 2. प्रतिबन्ध 3. शत्रुता 4. कलह 5. असहमति 6. संकट। सम० आभासः वह अलंकार जहाँ विरोध प्रतीत होता हो, परन्तु वस्तुतः कोई विरोध न हो,—उपमा वैपरीत्य पर आधारित उपमा, —परिहारः 1. विरोध का दूर होना, सामंजस्य स्थापित होना 2. प्रतीयमान विरोध की व्याख्या।

विरलः एक प्रकार का साँप।

विरूढ (वि०) [वि+रुह्+क्त] (घाव) भरा हुआ, स्वस्थ 2. अंकुरित 3. चढ़ा हुआ। सम० -बोध (वि०) जिसकी बुद्धि परिपक्व हो गई हो।

विरोचनम् [वि+रुच्+युच्] प्रकाश, चमक, दीप्ति।

विरोचिष्णु (वि+रुच्+इष्णुच्) चमकीला, उज्ज्वल।

विलक्ष (वि०) [प्रा० ब०] 1. जिसका कोई विशेष चिह्न या लक्ष्य न हो 2. (तीर) जिसका निशाना चूक गया हो।

विलग्न (वि०) [विलग्+क्त] 1. लटकता हुआ 2. पिंजरबद्ध (पक्षी)।

विलापनम् [वि+लप्+णिच्+ल्युट्] रुलाने वाला, विलाप का कारण।

विलम्ब् (भ्वा० आ०) सहारा लेना, निर्भर करना।

विलासः [विलस्+घञ्] 1. सजीवता, हावभाव 2. कामुकता, लंपटता।

विलायः **विलायनम्** } [वि+ली+णिच्+घञ्, ल्युट् वा] घोल देना, मिलादेना, (चीनी की भाँति) मिला, देना।

विलिङ्ग (वि०) [प्रा० ब०] भिन्न लिङ्ग का।

विलिम्पित (वि०) [विलिम्प्+क्त] सना हुआ, लिपा हुआ, लेपा हुआ।

विलेपिन् (वि०) लसदार, चिपका हुआ।

विलीन (वि०) [विली+क्त] मन में बैठाया हुआ।

विलोप्तृ (पुं०) [विलुप्+णिच्+तृच्] डाकू, लुटेरा।

विलोभनीय (वि०) [वि+लुभ्+अनीय] ललचाने वाला, मुग्ध करने वाला।

विलोचनपथः दृष्टि क्षेत्र, दृष्टि का परास।

विलोमपाठः विपरीत क्रम से सस्वर पाठ।

विलोमविधिः किसी कार्य के विपरीत अनुष्ठान का विधान करने वाला नियम।

विवक्षितान्यतरवाच्यम् एक प्रकार का व्यङ्ग्यार्थ।

विवदनम् [वि+वद्+ल्युट्] कलह झगड़ा, मुक़दमेबाजी।

विवधा [प्रा० स०] 1. जूआ 2. हथकड़ी, बेड़ी।

विवरम् [वि+वृ+अच्] पाताल लोक।

विवर्णित (वि०) [विवर्ण+इतच्] अननुमोदित, अस्वीकृत।

विवल् (भ्वा० पर०) कूदना, उछलना, फांदना।

विवस्वती (स्त्री०) [विवस्वत्+ङीप्] सूर्य देव की नगरी।

विवाहनेपथ्यम् दुलहिन की वेशभूषा।

विविक्त (वि०) [विविच्+क्त] जिसने समझ लिया, या सही अनुमान लगा लिया विविक्त परव्यथो —भाग० ५।२६।१७।

विविित्सा [विद्+सन्+अङ+टाप्] जानने की इच्छा।

विवीताध्यक्षः चरभूमि का अधीक्षक।

विवृ (स्वा० क्र्या० उभ०) 1. म्यान से तलवार निकालना 2. कंघे से (बालों को) माँग फाड़ना।

विवृतम् [विवृ+क्त] अनाहत, जिसके घाव नहीं हुआ।

विवृतपौरुष (वि०) अपने पराक्रम का प्रदर्शन करने वाला।

विवर्जित (वि०) [विवृज्+क्त] वह जिससे कोई वस्तु ले ली जाय, वञ्चित, विरहित।

विवृत् (भ्वा० आ०) रूपान्तर करना उभे सह विवर्तेत —महा० १२।१७४।२२।

विवर्तनम् [विवृत्+ल्युट्] रूपान्तरण।

विवृत्ताक्षः [ब० स०] मुर्गा।

विवेकमन्थरता निर्णय करने में अशक्तता।

विवेकविरह, अज्ञान, ज्ञान का अभाव।

विश् (तुदा० पर०) 1. रंगमंच पर प्रकट होना 2. संयुक्त होना 3. आ पड़ना 4. (किसी कार्य में) व्यस्त हो जाना।

विश् (पुं०) [विश+क्विप्] 1. बस्ती 2. संपत्ति, दौलत।

विशङ्कनीय (वि०) [वि+शङ्क्+अनीय] प्रष्टव्य, पूछने के योग्य, शङ्का किये जाने के योग्य, जिस पर शङ्का की जा सके।

विशद (वि०) [वि+शद्+अच्] 1. सुकुमार, मृदु 2. दक्ष।

विशल्यकरणी शस्त्रों के लगाने से उत्पन्न घावों को स्वस्थ करने की विशेष जड़ी-बूटी।

विशसनम् [विशस्+ल्युट्] 1. युद्ध 2. काटना 3. वध करना, हत्या करना।

विशारद (वि०) [विशाल+दा+क] 1. प्रवीण 2. बुद्धिमान्, 3. प्रसिद्ध 4. साहसी 5. सौन्दर्योपपन्न शरद् ऋतु सम्बन्धी 6. वक्तृत्व शक्ति से रहित।

विशालकुलम् उत्तम परिवार, प्रसिद्ध वंश।

विशिखा [विशिख+टाप्] रुग्णालय।

विशेषकरणम् उन्नति, सुधार।

विशेषधर्मः विशेष कर्तव्य, विशिष्ट धर्मकृत्य या यज्ञ-अनुष्ठान।

विशेषणासिद्धः एक प्रकार का हेत्वाभास।

विशेषणपदम् 1. विशेषता द्योतक शब्द 2. सम्मान सूचक उपाधि।

विशेषतः (अ०) अनुपात की दृष्टि से निःस्वेभ्यो देयमेतेभ्यो दानं विद्या विशेषतः—मनु० ११।२।

विशुद्धधी निर्मल मन या उज्ज्वल बुद्धि वाला।

विशुद्धसत्त्व (नि०) सच्चरित्र, सदाचारी।

विशुद्धिः [विशुध्+क्तिन्] 1. ऋण परिशोध करना 2. प्रायश्चित्त।

विशृंखला 'देवी' का विशेषण।

विशीर्ण (वि०) [विशॄ+क्त] 1. रगड़ा हुआ 2. विफलीभूत 3. गिरा हुआ (गर्भ आदि)।

विश्रान्तकथ (वि०) [ब० स०] 1. वक्तृत्व शक्तिहीन, मूक 2. मृत।

विश्रामः [वि+श्रम्+घञ्] आराम करने का स्थान।

विश्रब्धप्रलापिन् **विश्रब्धालापिन्** (वि०) विश्वस्त या गुप्त बातें करने वाला।

विश्रब्धसुप्त (वि०) शान्ति पूर्वक सोने वाला।
विश्विः [विश्+क्विन्] मृत्यु।
विश्वगोचर (वि०) सबके लिए सुगम, जहाँ सबकी पहुँच हो।
विश्वजीवः विश्वात्मा, ईश्वर।
विश्वाधारः विश्व का सहारा, ईश्वर।
विश्वेदेवाः पितरों की एक श्रेणी, देववर्ग।
विट्कृमिः अँतड़ियों में पड़ने वाला कीड़ा।
विड्घातः मूत्रकृच्छ्रता, मूत्रावरोध।
विड्भङ्गः अतीसार, दस्तों का लगना।
विड्भुज् (वि०) मल खाकर रहने वाला, गुबरैला।
विषज्वरः भैंसा।
विषतन्त्रम् विषविज्ञान, (सर्पादि विषैले जन्तुओं का विष दूर करने की प्रक्रिया।
विषक्त (वि०) [वि+षञ्ज्+क्त] 1. व्यस्त, चिपका हुआ 2. अतिविस्तारित।
विषादनम् [वि+षद्+णिच्+ल्युट्] कष्ट देना, सताना।
विषम (वि०) [प्रा० ब०] 1. जो पूरा न बँट सके 2. अनुपयुक्त। सम०—**बाणः** कामदेव,—**नेत्रम्** शिव की तीसरी आँख,—**नेत्रः** शिव का एक विशेषण,—**वृत्तम्** छंद जिसके चरण सम न हों।
विषयः [वि+सि+अच्, षत्वम्] 1. ज्ञानेन्द्रियों द्वारा गृहीत होने वाला पदार्थ 2. भौतिक पदार्थ 3. इन्द्रियजन्य आनन्द। सम०—**निह्नुतिः** किसी बात को मुकर जाना,—**पराङ्मुख** भौतिक विषय सुखों से विमुख।
विषयीकरणम् [विषय+च्वि+कृ+ल्युट्] किसी वस्तु को चिन्तन का विषय बनाना।
विषह्य (वि०) [वि+सह्+यत्] जीतने के योग्य।
विषाणः [विष्+कानच्] 1. चोटी 2. चूची 3. अपनी प्रकार का उत्तमोत्तम।
विषुवसमयः वह समय जब दिन रात का मान बराबर होता है।
विष्टम्भ् (स्वा० क्रया० पर०) 1. समर्थन करना, प्रबल बनाना 2. व्याप्त होना, छा जाना।
विष्टिकरः दासों का स्वामी, बेगार में पकड़े मजदूरों का स्वामी।
विष्टिकारिन् बेगार में पकड़ा गया मजदूर जिसे कोई पारिश्रमिक भी नहीं दिया जाता है।
विष्ठाशिन् [विष्ठा+आशिन्] सूअर, जो मल खाता है।
विष्णुः [विष्+नुक्] 1. त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) में दूसरा 2. अग्नि 3. पावन पुरुष 4. स्मृतिकार 5. एक वसु 6. श्रवण नक्षत्रपुंज (इसका अधिष्ठात्री देवता विष्णु है) 7. चैत्र का महीना। सम०—**कान्ता** विभिन्न पौधों के नाम,—**दत्तः** परीक्षित राजा का नाम,—**धर्मोत्तरपुराणम्** एक उपपुराण का नाम, **प्रिया** 1. तुलसी का पौधा 2. लक्ष्मी का नाम—**लिङ्गी** बटेर।
विष्वग्गति (वि०) [विष्वच्+गति] सर्वत्र जाने वाला प्रत्येक विषय में प्रविष्ट होने वाला।
विष्वग्लोपः [विष्वच्+लोपः] घबराहट, बाधा, विघ्न।
विसदृश (वि०) असमान, असमरूप।
विसंमूढ (वि०) नितांत घबराया हुआ।
विसा कमल नाल (=बिसा)
विसृज् (तुदा० पर०) (आ० भी) (प्रेर०) प्रकट करना, भेद खोलना, (समाचार) प्रकाशित करना।
विसृज्यम् [विसृज्+यत्] जो मुक्त किये जाने के योग्य है, सृष्टि, संसार का रचना—कालो वशीकृत-विसृज्य विसर्गशक्तिः भाग० ७।९।२२।
विसर्गः [विसृज्+घञ्] विनाश, सृष्टि का लोप।
विसृप (भ्वा० पर०) फैलाना, प्रसारित करना।
विसर्पिन् [विसृप्+णिनि] 1. रेंगने वाला 2. फूट कर निकलने वाला 3. सरकने वाला 4. फैलने वाला (बेल की भाँति)।
विस्पन्दः [विस्पन्द्+घञ्] बूंद, कण।
विस्फूर्जः [विस्फूर्ज्+घञ्] दहाड़ना चिंघाड़ना, गरजना।
विस्फोटकः [विस्फुट्+ण्वुल्] 1. फोड़ा, फुंसी 2. एक प्रकार का कोढ़।
विस्मयपदम् आश्चर्य का विषय।
विस्रगन्धः कच्चे मांस की गन्ध।
विहृति (स्त्री०) [वि+हन्+क्तिन्] प्रतिघात, अपसारण, विफलता, भग्नाशा, मनोभिः सोद्वेगैः प्रणय—विहतिध्वस्तरुचयः कि० १०।६३।
विहाय (अ०) [वि+हा+ल्यप्] 1.…से अधिक, के अतिरिक्त 2. होते हुए भी 3. सिवाय, छोड़ कर।
विहित प्रतिषिद्ध (वि०) जिसका विधान और निषेध दोनों किये गये हों।
विहरणम् [वि+हृ—ल्युट्] खोलना, फैलाना।
विहारः [वि+हृ+घञ्] (मीमांसा) अग्नित्रय, (गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण)।
विहारभूमिः गोचरभूमि, चरागाह।
विह्वलचेतस् (वि०) [ब० स०] उदास, खिन्नमना जिसका मन बहुत व्याकुल हो।
वीचिक्षोभ लहरों का उठना, तरंगों से उत्पन्न हलचल।
वीणापाणिः नारदमुनि।
वीतमत्सर (वि०) ईर्ष्या द्वेषादि से मुक्त।
वीरकाम (वि०) पुत्रैषी, पुत्र का इच्छुक।
वीरपत्नी [ष० त०] शूरवीर की पत्नी, नायिका।

वीरवादः [ष० त०] शक्ति का दावा, वीरता जन्य कीर्ति।

वीरव्रत (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पर अटल, दृढ़ संकल्प वाला।

वीरकः [वीर+कन्] 1. 'करवीर' नाम का पौधा 2. नायक 3. एक शिवगण का नाम।

वीर्यम् [वीर्+यत्] 1. विष 2. सोका 3. पुंस्त्व, जनन—शक्ति 4. वीज, धातु। सम०—आधानम् गर्भाधान,—शुल्क (वि०) चुनौती देकर युद्ध, शक्ति के बल पर स्रोत।

वृतिद्रुमः [ष० त०] सीमावर्ती वृक्ष।

वृतिमार्गः [ष० त०] ऐसी सड़क जिसके दोनों ओर बाड़ लगी हो।

वृकः [वृ+कक्] 1. भेड़िया 2. सूर्य।

वृकधूर्तकः 1. रीछ 2. गीदड़।

वृक्षामयः [ष० त०] लाख, रेजन (वेरजा)।

वृत्तम् [वृत्+क्त] 1. रूपान्तरण 2. अधिचक्र।

वृत्तबन्धः छन्दोबद्ध रचना।

वृत्तयुक्त (वि०) गुणों से सम्पन्न।

वृत्त्यर्थम् (अ०) जीविका के लिए।

वृत्तिमूलम् जीविका की व्यवस्था, जीविका का आधार।

वृथान्नम् [वृथा+अन्नम्] केवल एक व्यक्ति के अपने उपभोग के लिए आहार।

वृथार्तवा [वृथा+आर्तवा] बांझ स्त्री।

वृद्धयुवतिः (स्त्री०) 1. कुट्टिनी 2. दाई, धात्री।

वृद्धिः (स्त्री०) [वृध्+क्तिन्] 1. आघात, चोट (वृध् हिंसायाम्) 2. भूमि का ऊँचा करना 3. लम्बा करना।

वृन्दम् [वृ+दन्, नुम्] गुच्छा, झुंड।

वृषः [वृष्+क] 1. जल 2. भवननिर्माण के लिए भूखंड 3. नरजन्तु 4. सांड। सम०—लक्षणा मरदानी स्त्री,—सृक्विन् (पुं०) भिड़।

वृषभयानम् बैल गाड़ी।

वृषलः [वृष्+कलच्] 1. नाचने वाला 2. बैल।

वृषलीफेनः [ष० त०] ओष्ठ की आर्द्रता।

वृष्णिपालः ग्वाला, गडरिया।

वेडधरः सौन्दर्य का अभिमान।

वेणिः [वेण्+इन्] 1. फिर संयुक्त की गई संपत्ति जो पहले से बंटी हुई थी 2. जल प्रवाह, झरना।

वेणुदलम् बाँस का फट्टा।

वेणुयवः बाँस का चावल, बांसवीज।

वेतालपञ्चविंशतिः पच्चीस कहानियों की एक कृति।

वेदः [विद्+अच्, घञ् वा] 1. ज्ञान 2. हिन्दुओं की पुनीत धर्म पुस्तक -ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद 3. 'कुश' का गुच्छा 4. विष्णु। सम० —अनध्ययनम् वह अवकाश का दिन जिस दिन वेद का पढ़ना निषिद्ध हो, बाह्य (वि०) 1. वेद के विपरीत 2. वेदाध्ययन के क्षेत्र से बाहर,—वादः वेदों के विषय में होने वाली धर्मान्ध व्यक्तियों की बहस वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः—भग०,—श्रुतिः ईश्वरीय ज्ञान का दैवी संदेश।

वेदिमेखला वेदी के चारों ओर की सीमा को बाँधने वाली रस्सी।

वेधः (पुं०) [विधा+असुन्, गुणः] ज्योतिष का पारिभाषिक शब्द जिसका अर्थ है ग्रहों की स्थिति का निर्धारण।

वेलातिक्रमः [प० त०] सीमा का उल्लंघन।

वेलातिग (वि०) किनारे से बाहर रहने वाला।

वेश्यापतिः [प० त०] जार, वेश्या का पति।

वेश्यापुत्रः [प० त०] वेश्या का पुत्र, अवैध पुत्र, हरामी।

वेष्टनम् [वेष्ट्+ल्युट्] दियाम, एक सिरे से दूसरे सिरे तक का सारा फैलाव।

वैकारिक (वि०) [विकार+ठक्] 1. परिवर्तनीय 2. सत्त्व से संबद्ध—वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेत्यहं त्रिधा—भाग० ३।५।३०।

वैकार्यम् विकार, परिवर्तन।

वैकृतम् [विकृत+अण्] कपट, धोखा।

वैजन्यम् [विजन+ष्यञ्] निर्जनता, एकान्त।

वैडूर्यम् एक प्रकार का रत्न।

वैतानसूत्रम् यज्ञविषयक कुछ सूत्र।

वैदुरिकम् [विदुर+ठक्] विदुर का सिद्धांत।

वैद्यविद्या [प० त०] आयुर्वेद शास्त्र।

वैधर्म्यसमः असमानता के कोणों पर आधारित तर्कसंग भ्रान्ति, हेत्वाभास।

वैभावर (वि०) [विभावर+अण्] रात परक।

वैयवहारिक (वि०) [व्यवहार+ठक्] व्यवहारसिद्ध, रूढ़, प्रचलित।

वैयाकरणखसूचिः केवल वैयाकरण का विडम्बनाद्योतक शब्द।

वैरायितम् [वैर+क्यच्+क्त] शत्रुता, द्वेष, विरोध।

वैराग्यम् [विराग+ष्यञ्] वर्ण या रंग का लोप।

वैराग्यशतकम् भर्तृहरिकृत एक काव्यरचना।

वैवस्वतमन्वन्तरम् सातवाँ मन्वन्तर, वर्तमान समय।

वैशसम् [विशस+अण्] हिंसा भाग० ५।९।१५।

वैश्वस्त्यम् [विश्वस्त+ष्यञ्] विधवापन।

वैष्टिकः बेगार करने वाला, जिसे कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़े।

वैष्णवस्थानकम् (नाटक०) रंगमंचपर लम्बे-लम्बे डग भर कर इधर-उधर टहलना।

वोलकः आवर्त, भँवर, बवंडर।

व्यक्षः विषुवद् रेखा, भूमध्यरेखा।
व्यङ्कुश (वि०) अनियंत्रित, निरंकुश।
व्यङ्गः [प्रा० ब०] इस्पात।
व्यजनक्रिया पंखा झलना।
व्यञ्जना शुद्ध उच्चारण, स्पष्ट उच्चारण—हीनव्यंञ्जनया प्रेक्ष्य—रा० २।६४।११।
व्यतिकरः 1. उत्तेजना, उकसाहट -भाग० २।५।२२ 2. विनाश—भाग० १।७।३२।
व्यतिक्रमः [वि+अति+क्रम्+घञ्] उल्लंघन, अतिक्रमण —तयोर्व्यतिक्रमं दृष्ट्वा—महा० ३।१२।३९।
व्यतिषङ्गः [वि+अति+सञ्ज्+घञ्] 1. प्रतियुद्ध, शत्रु से भिड़ंत 2. विनिमय।
व्यथित (वि०) [व्यथ्+क्त] 1. कष्टग्रस्त, पीडित 2. क्षुब्ध, डरा हुआ।
व्यपायनम् [वि+अप+आ+इ+ल्युट्] अपगमन, पलायन, पीछे हटना।
व्यपवर्गः [वि+अप+वृज्+घञ्] 1. प्रभाग 2. समाप्ति।
व्यपाश्रयः [वि+अप+आ+श्रि+अच्] आश्रयस्थान, सहारा।
व्यपोह् (भ्वा० पर०) 1. प्रायश्चित्त करना 2. स्वस्थ होना 3. दूर भगाना।
व्यभिचारकृत् (वि०) अनुचित यौन संबंध करने वाला।
व्यभिचारिन् (वि०) [वि+अभि+चर्+णिच्+णिनि] 1. कुमार्गगामी, दुश्चरित्र 2. अस्थायी।
व्ययः [वि+इ+अच्] (व्या० में) रूपान्तर, शब्द या धातु का विभक्ति में प्रत्यय लगा कर रूप बनाना।
व्ययशेषः खर्च काट कर बची हुई राशि, निवलशेष।
व्यवच्छेदः [वि+अव+छिद्+घञ्] विनाश।
व्यवधानम् [वि+अव+धा+ल्युट्] (मीमांसा) दुरूह रचना, क्लिष्ट रचना।
व्यवहित (वि०) [वि+अव+धा+क्त] दूर पार का, दूरवर्ती। सम० कल्पना शब्दों की एक रचना प्रणाली जिसमें एक दूसरे से वियुक्त शब्दों को मिला कर एक वाक्य बनाया जाय।
व्यवसर्गः [वि+अव+सृज्+घञ्] परित्याग।
व्यवसायात्मक (वि०) उत्साह से पूर्ण।
व्यवसायात्मिका (स्त्री०) दृढ़संकल्प से युक्त।
व्यवस्थानम् [वि+अव+स्था+ल्युट्] निश्चित सीमा।
व्यवस्थितविकल्पः निश्चित विकल्प।
व्यवहारः [वि+अव+हृ+घञ्] 1. संविदा 2. गणित के घात या बल 3. व्यापार 4. मुकदमा 5. प्रथा, रीतिरिवाज। सम०—अर्थिन् (वि०) वादी, मुद्दई, —वादिन् (वि०) जो प्रचलन के आधार पर तर्क करता है।
व्यवहृतम् [वि+अव+हृ+क्त] व्यापारिक लेन-देन।
व्यवायः [वि+अव+अय्+घञ्] 1. दूरी, पार्थक्य 2. प्रवेश, घुसाना।
व्यसनब्रह्मचारिन् (वि०) साथ-साथ दुःख भोगने वाला।
व्यसनावापः विपत्ति का घर।
व्यस्तपुच्छ (वि०) फैलाई हुई पूँछ वाला।
व्यस्तिका (अ०) बाहों को फैलाकर तथा पैरों को चौड़ा करके (खड़ा होना)।
व्याकृ (तना० उभ०) भविष्यवाणी करना (बुद्ध०)।
व्याकरणम् [वि+आ+कृ+ल्युट्] 1. भेद, अन्तर 2. भविष्यवाणी।
व्याकोच (वि०) (फूल की भांति) खिला हुआ, पूर्ण विकसित।
व्याकोपः [वि+आ+कुप्+घञ्] विरोध, खंडन।
व्याक्रोशः [वि+आ+क्रुश्+घञ्] चिल्ला-चिल्ला कर गालियाँ देना, भर्त्सना करना।
व्याघारित (वि०) जिस पर घी (या तेल) का छींटा दिया गया हो (इसी अर्थ में अभिघारित भी)।
व्याघूर्णित (वि०) [वि+आ+घूर्ण्+क्त] लुढ़का हुआ, चक्कर खाया हुआ, व्याघूर्णजगदण्डकुण्डकुहरो ··खः —नारा०।
व्याघूर्णत् (वि०) [वि+आ+घूर्ण्+शतृ] लुढ़कता हुआ, चक्कर खाता हुआ।
व्याजनिद्रा झूठमूठ की नींद, दड़ मार कर सोना।
व्याजव्यवहारः कौशलपूर्ण व्यवहार।
व्याजिह्म (वि०) [वि+हा+मन्, द्वित्वादि नि०] कुटिल, तोड़ा-मरोड़ा हुआ, झुका हुआ घूमपटलव्याजिह्मरत्नत्विषः—नाग० ५।१७।
व्याधिनिग्रहः रोग को नियंत्रित करना।
व्याधिस्थानम् शरीर।
व्याप्तिवादः विश्वव्यापकता का सिद्धान्त।
व्यापारक (वि०) [वि+आ+पृ+णिच्+ण्वुल्] व्यापारग्रस्त व्यवसाय में लगा हुआ।
व्यामिश्र (वि०) [वि+आ+मिश्र्+अच्] 1. असंगत 2. मिला-जुला 3. संदिग्ध, भ्रामक—व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे—भग० ३।२।
व्यामिश्रकम् [वि+आ+मिश्र्+ण्वुल्] नाटकीय समालाप जिसमें विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग हुआ हो —रा० २।१।२७ पर टीका।
व्यायामः [वि+आ+यम्+घञ्] सैनिक अभ्यास, फौज की क़वायद।
व्यावर्जित (वि०) [वि+आ+वृज्+क्त] झुका हुआ।
व्यावहारिकसत्ता भौतिक अस्तित्व।
व्यावृत्त (वि०)[वि+आ+वृत्+क्त] परिवर्जित—महा० १२।१४१।१५।
व्यासपीठम् पुराणों के व्याख्याता का पद या गद्दी।

व्यासपूजा गुरु और व्यास की पूजा जो आषाढ़ी पूर्णिमा को होती है।
व्याससमासौ (द्वि० व०) वैयक्तिक तथा सामूहिक रूप से।
व्युत्क्रान्तजीवित (वि०) मृत, निर्जीव।
व्युत्था (भ्वा० आ०) 1. जीत लेना 2. दूर करना।
व्युपरत (वि०) [वि+उप+रम्+क्त] विश्रान्त, समाप्त, मृत।
व्यूहविभागः सेना को भिन्न-भिन्न व्यूहों में बाँटना।
व्येक (वि०) जिसमें एक कम हो।
व्योमरत्नम् सूर्य।
व्योमसंभवा चितकबरी गाय।
व्रजभाषा मथुरा के आस-पास बोली जाने वाली भाषा।
व्रतः,—तम् [व्रज्+घ, जस्य तः] मानसिक क्रिया कलाप व्रतमिति च मानसं कर्म उच्यते—मी० सू० ६।२।२० पर शा० भा०। सम०—**धारणम्** एक धार्मिक व्रत का धारण करना।
व्रात्यकाण्डः अथर्ववेद का एक काण्ड।
व्रात्यचर्या आहिण्डक या अवधूत का जीवन।
व्रीडादानम् संकोच एवं नम्रतापूर्वक दिया गया उपहार।
व्रीहिवापम् चावल की पौधा लगाना।
व्लेष्कः पाश, जाल।

श

शंस् (भ्वा० पर०) उन ऋग्मन्त्रों में स्तुति गान करना जो गायन के लिए निर्धारित नहीं किये गये—अप्रगीतेषु शंसति—मी० सं० ७।२।१७ पर शा० भा०।
शंसित (वि०) [शंस्+क्त] ध्यान दिया गया या मान लिया गया—जैसा कि "शंसितव्रतः" में।
शंस्य (वि०) [शंस्+ण्यत्] 1. प्रशंसा के योग्य 2. ऊँचे स्वर से पठित।
शकटव्यूहः एक विशेष प्रकार का सैनिक व्यूह।
शकुलादनी 1. भूकीट, केंचुआ 2. एक जड़ीबूटी (कटकी)।
शक्तिध्वजः कार्तिकेय।
शक्य (वि०) [शक्+ण्यत्] श्रुतिमधुर—शक्यः प्रियंवदः प्रोक्तः—इति हलायुधः—दश० २।५।
शक्रकाष्ठा पूर्व दिशा।
शङ्काभियोगः दोषारोपण करना या संदेह करना।
शङ्कराचार्यः वेदान्तदर्शन का महत्तम आचार्य, अद्वैतवाद का प्रवर्तक जिसने ब्राह्मण्य धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए षण्मत की स्थापना की।
शङ्कुपुच्छम् (मधुमक्खी या भीड़ आदि) कोड़ों का डंक।
शङ्कुफला शमी वृक्ष, जँडी का वृक्ष।
शङ्खः [शम्+ख] शंख का बना कंकण। सम०—**आवर्तः** शंख का झुकाव या गोलाई का मोड़, शंबुकावर्त,—**वलयः** शंख से निर्मित कड़ा, **वेला** शंखध्वनि के द्वारा संकेतित समय।
शतम् (नपुं०) 1. सौ 2. कोई बड़ी संख्या। सम०—**चन्द्रः** तलवार या ढाल जो सौ चन्द्राङ्कनों से सुसज्जित हो,—**चरणा** शतपदी, कनखजूरा,—**पोनः** चलनी,—**मयूखः** चन्द्रमा,—**लोचनः** इन्द्र का विशेषण।
शत्रुः [शद्+त्रुन्] 1. दुश्मन, रिपु 2. विजेता, हराने वाला। सम०—**निबर्हण** (वि०) शत्रुओं का नाश करने वाला,—**कुलम्** रिपु का घर,—**लाव** (वि०) शत्रुओं को मारने वाला।
शनिचक्रम् 'शनि की स्थिति से' शुभाशुभ जानने का एक आलेख, चित्र।
शपित (वि०) [शप्+क्त] शाप दिया हुआ।
शपथकरणम् शपथ उठाना।
शपथपूर्वकम् (अ०) शपथ उठाकर (कहना या करना)।
शफरुकः पेटी, बर्तन—हर्ष० ४।
शब्दः [शब्द+घञ्] 1. आवाज (श्रुति विषय और आकाश का गुण) 2. ध्वनि, रव (पक्षियों या विभिन्न प्राणियों का) 3. पद, सार्थक शब्द 4. व्याकरण 5. ख्याति लब्धशब्देन कौसल्ये—रा० २।६३।११ 6. पुनीत प्रणव (ओम्)। सम०—**अक्षरम्** पुनीत प्रणव,—**इन्द्रियम्** कान, **गोचरः** 1. वाणी का विषय 2. श्रव्य, **वैलक्षण्यम्** शाब्दिक भिन्नता,—**संज्ञा** व्याकरण का एक पारिभाषिक शब्द,—पा० १।१।६८,—**स्मृतिः** (स्त्री०) भाषा विज्ञान।
शमात्मक (वि०) शान्त, स्वभाव से शान्तिप्रिय।
शमोपन्यासः शान्ति के लिए बोलने वाला, शान्ति की वकालत करने वाला।
शमनीय (वि०) [शम्+अनीय] शान्ति देने योग्य, मन को शान्ति प्रदान करने योग्य।
शमीकुणः वह समय जब कि शमी वृक्ष के फल आता है।
शम्भुतेजस् 1. शिव की आभा 2. स्कन्द का विशेषण।
शम्या [शम्+यत्+टाप्] 1. लकड़ी या चौखट 2. जूए की कील 3. एक प्रकार की वीणा 4. यज्ञपात्र 5. एक प्रकार का शल्यचिकित्सापरक उपकरण। सम०—**क्षेपः,—पातः** दूरी जहाँ तक कोई लकड़ी फेंकी जा सके।

शयनम् [शी+ल्युट्] 1. सोना, लेटना 2. बिस्तरा, खाट 3. सहवास, यौनसंबंध। सम०—**पालिका** सेविका जो राजा की शय्या बिछाती है,—**भूमिः** शयन कक्ष, सोने का कमरा।

शरक्षेपः वाण फेंकने की दूरी का परास।

शरणम् [शॄ+ल्युट्] 1. प्ररक्षण, सहायता 2. शरणागार, शरणाश्रम 3. आवास, घर 4. विश्रामस्थल 5. आहत करना, हत्या करना। सम०—**आगतिः** प्ररक्षणार्थ पहुँचना,—**आलयः** शरणगृह,—**द** (वि०),—**प्रद** (वि०) शरण देने वाला।

शरज्ज्योत्स्ना [शरद्+ज्योत्सना] शरदृतु की चाँदनी,—शरज्ज्योत्स्नाशुद्धां शशियुतजटाजूटमकुटाम्–सौन्दर्य लहरी।

शरीरचिन्ता शरीर की देखभाल।

शरीरधातुः बुद्ध के शरीर की अवशिष्ट भस्म।

शरीराकारः, } शारीरिक दर्शन, देह का आकार-प्रकार,
शरीराकृतिः } सूरत, शक्ल, शरीर का डीलडौल।

शर्करा [शॄ+करन्, कस्य नेत्वम्] 1. गन्ने से निर्मित शक्कर 2. कङ्कड़ 3. पत्थरों के टुकड़ों से बहुल भूमि 4. रेत 5. ठीकरा 6. सुनहरी भूमि—स्तिमितजलो मणिशङ्खशर्करः–रा० २।८१।१६।

शर्कराल (वि०) [शर्करा+अलच्] कङ्कड़ के कणों से युक्त (जैसे कि रेतीले तट की हवा)।

शर्मण्य (वि०) [शर्मन्+य] शरण देने वाला, प्ररक्षण देने वाला।

शलाका [शल्+आकः] 1. खूंटी, कील 2. अंगुली—शलाकानखपातैश्च—महा० ४।१३।२९। सम०—**परीक्षा** विद्यार्थी की परीक्षा लेने की रीति जिसके अनुसार पुस्तक में कहीं भी शलाका से संकेत किया जा सकता है,—**पुरुषाः** ६३ दिव्य जैन,—**यन्त्रम्** शल्य चिकित्सा से संबद्ध एक उपकरण,—**कर्तृ** (पुं०) जर्राह, शल्यचिकित्सक,—**क्रिया** शरीर में घुसे हुए कांटे आदि किसी पदार्थ को बाहर निकालना, -**पर्वन्** महाभारत का नवां खण्ड (पर्व)।

शवशयनम् क़ब्रिस्तान।

शवशिबिका अर्थी, शव को ले जाने वाली पालकी।

शवशष्कुली एक प्रकार की मछली।

शस्त्रम् [शस्+ष्ट्रन्] 1. हथियार 2. लोहा 3. इस्पात 4. स्तोत्र। सम०—**कर्मन्** शल्यक्रिया,—**निपातनम्** शल्यक्रिया,—**व्यवहारः** हथियार चलाने का अभ्यास।

शाककलम्बकः लशुन, प्याज जैसी एक गांठदार कन्द।

शाकपात्रम् सब्जी की तश्तरी।

शाखा परम्परा प्राप्त वेद का पाठ, किसी विशेष शाखा द्वारा अनुसृत वेद पाठ जैसे शाकल शाखा, आश्वलायन शाखा, बाष्कल शाखा आदि। सम०—**अध्येतृ** वेद की किसी विशेष शाखा के पाठ का पढ़ने वाला विद्यार्थी,—**वातः** वायु के कारण अंगों में पीड़ा।

शाङ्करपीठः शङ्कराचार्य द्वारा स्थापित पाँच आध्यात्मिक केन्द्रों में से कोई सा एक।

शाङ्खायनः वेद का एक अध्यापक।

शाण्डिल्यस्मृतिः शाण्डिल्य द्वारा प्रणीत एक धर्मग्रन्थ या विधि की पुस्तक।

शातक्रतव (वि०) [शतक्रतु+अण्] इन्द्र संबन्धी।

शातनम् [शो+णिच्, तङ्+ल्युट्] पैनाना, तेज़ करना, चमकाना।

शान्त (वि०) [शम्+क्त] प्रभावहीन किया हुआ, ठूँठा किया हुआ। सम०—**गुण** (वि०) उपरत, मृत —नृपे शान्तगुणे जाते—रा० २।६५।२४,—**रजस्** (वि०) 1. धूल रहित 2. निरावेश।

शान्तिः (स्त्री०) [शम्+क्तिन] विनाश, अन्त। सम०—**कर्मन्** पाप को दूर करने का कोई धार्मिक अनुष्ठान,—**वाचनम्** ऐसे वेद मंत्रों का सस्वर पाठ जो पाप को दूर करने वाले समझे जाते हैं।

शापग्रस्त (वि०) शाप के दुष्प्रभाव से जकड़ा हुआ।

शापाम्बु } शाप का उच्चारण करते समय दिये जाने
शापोदकम् } वाले पानी के छींटे।

शाबरभाष्यम् मीमांसा सूत्रों पर किया गया भाष्य।

शामित्रम् [शम्+णिच्+इत्रच्] पशु बलि देने का स्थान।

शाम्बरिकः [शम्बर+ठक्] बाज़ीगर।

शारद (वि०) [शरद्+अण्] चतुर, निपुण।

शारद्वतः 'कृप' का नाम।

शारिशृङ्खला एक प्रकार का पासा, शतरंज खेलने की गोट।

शार्व (वि०) [शर्व+अण्] शिव से सम्बन्ध रखने वाला।

शालङ्कायनः एक ऋषि का नाम।

शालङ्किः पाणिनि का नाम।

शाश (वि०) [शश+अण्] खरगोश से प्राप्त, खरगोश सम्बन्धी।

शासनम् [शास्+ल्युट्] 1. धार्मिक सिद्धान्त 2. संदेश। सम०—**दूषक** (वि०) आदेश का पालन न करने वाला,—**लङ्घनम्** आज्ञा का उल्लंघन करना।

शास्त्रम् [शास्+ष्ट्रन्] 1. आदेश, आज्ञा 2. पावन, शिक्षण, वेद का आदेश 3. ज्ञान का कोई विभाग 4. किसी विषय का सैद्धान्तिक पहलू—इमं मां च शास्त्रे च विमृशतु—माल० १। सम०—**अन्वित** (वि०) शास्त्रीय नियमों के अनुकूल,—**वक्तृ** (पुं०) शास्त्रीय पुस्तकों का व्याख्याता,—**वर्जित** (वि०) सब प्रकार के नियम या विधि से मुक्त,—**वादः** शास्त्र के आधार पर दिया गया तर्क।

शिक्यपाशः छींका लटकाने के लिए रस्सी।

शिक्षा [शिक्ष्+अ+टाप्] 1. दण्ड 2. गुरु के निकट विद्याभ्यास 3. उपदेश 4. सलाह। सम०—**आचार** (वि०) (गुरु के) उपदेशों के अनुसार आचरण करने वाला।

शिखण्डकः [शिखण्ड+कन्] 1. कूल्हे के नीचे शरीर का मांसल भाग 2. शैववाद में मुक्ति की एक विशेष अवस्था।

शिखाबन्ध सिर के बालों का गुच्छा, चोटी बांधना।

शिखिन् (वि०) [शिखा+इनि] 1. नोकदार 2. चोटीधारी 3. ज्ञान की चोटी पर पहुँचा हुआ 4. अभिमानी (पुं०) 1. मोर 2. अग्नि। सम० **कणः** आग की चिनगारी,—**भूः** स्कन्द का नाम, **मृत्युः** कामदेव।

शिलाक्षरम् 1. प्रस्तरमुद्रण, पत्थर के द्वारा छापने की प्रक्रिया 2. शिलालेख, पत्थर पर खुदवाया हुआ अनुशासन।

शिलानिर्यासः शिलाजतु, शीलाजीत।

शिलाशित (वि०) पत्थर पर बनाया हुआ।

शिलीपदः पादस्फीति, फील पाँव रोग।

शिल्पगेहम् शिल्पकार का कारखाना, कारीगर के काम करने का स्थान।

शिल्पजीविन् (त्रि०) कारीगरी का काम करके जीविकोपार्जन करने वाला व्यक्ति, शिल्पी।

शिव (वि०) [शो+वन् पृषो०] 1. शुभ, मंगलमय, सौभाग्यसूचक 2. स्वस्थ, प्रसन्न, भाग्यशाली, (पुं०) 1. हिन्दुओं के त्रिदेव में से तीसरा 2. पारा 3. सुरा, स्पिरिट 4. समय 5. तक्र, छाछ। सम० **अद्वैतः** शैववाद का दर्शनशास्त्र, **अर्कमणिदीपिका** अप्पयदीक्षित द्वारा रचित शैववाद पर एक ग्रन्थ,—**कामसुन्दरी** पार्वती का विशेषण, **पदम्** मोक्ष, मुक्ति, **बीजम्** पारा।

शिशयिषा [शी+सन्+अङ+टाप् धातोर्द्वित्वम्] सोने की इच्छा।

शिशिरमथित (त्रि०) सर्दी से ठिठुरा हुआ।

शिशुः [शो+कु, सन्वद्भावः, द्वित्वम्] 1. बच्चा, बाल 2. किसी भी जन्तु का बच्चा (बछड़ा, पिल्ला, बिलौटना आदि) 3. छठें वर्ष में हाथी। सम० —**नामन्** (पुं०) ऊँट।

शिश्नम्भर (त्रि०) विषयी, कामलोलुप।

शिष्टविगर्हणम् बुद्धिमान् व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली निन्दा।

शिष्टसम्मत (त्रि०) विद्वान् पुरुषों द्वारा माना हुआ।

शीघ्रकेन्द्रम् ग्रहसंयोग से दूरी, फासला।

शीघ्रपरिधिः (पुं०) ग्रहसंयोग का अधिचक्र।

शीकर (वि०) 1. मनोरम, रमणीय 2. आनन्दप्रद, सुखमय।

शीर्षच्छेदिक, **शीर्षच्छेद्य** } (वि०) फांसी पर चढ़ाये जाने के योग्य,—शीर्षच्छेद्यः स ते राम तं हत्वा जीवय द्विजम्—उत्तर० २।२८।

शीर्षत्राणम् शिरस्त्राण, टोप।

शीर्षपट्टकः दुपट्टा, साफा, पगड़ी।

शुकसप्ततिः एक तोते के द्वारा अपनी स्वामिनी को सुनाई गई सत्तर कहानियों का संग्रह।

शुक्रम् [शुच्+रक्, नि० कुत्वम्] 1. उज्ज्वलता 2. सोना दौलत 3. वीर्य 4. किसी चीज का सत् 5. पुंस्त्वशक्ति, स्त्रीत्वशक्ति। सम०—**कृच्छ्रम्** मूत्रकृच्छ्र रोग,—**दोषः** वीर्य का दोष।

शुक्लम् [शुच्+लुक्, कुत्वम्] 1. उज्ज्वलता 2. श्वेत धब्बा 3. चाँदी 4. आँख की सफेदी का रोग। सम०—**जीवः** एक प्रकार का पौधा,—**देह**(वि०)पवित्र शरीर वाला।

शुचियन्त्रम् एक मशीन जिसके द्वारा आतिशबाजी का प्रदर्शन किया जाता है।

शुचिश्रवस् (पुं०) विष्णु का नाम।

शुचिषद् (वि०) सन्मार्ग पर चलने वाला।

शुण्डमूषिका छछुन्दर।

शुण्डादण्डः हाथी का सूंड।

शुद्ध (वि०) [शुध+क्त] 1. जांचा हुआ, आजमाया हुआ, परीक्षित 2. पवित्र, निष्कलंक 3. ईमानदार, धर्मात्मा 4. विशुद्ध, खालिस जिसमें कुछ मिलावट न हो (विप० मिश्र)। सम०—**अद्वैतम्** अद्वैत की वह स्थिति जहाँ कि जीव और ईश्वर का सायुज्य मायारहित माना जाता है,—**बोध** (वि०) (वेदान्त०) विशुद्ध ज्ञान से युक्त, **भाव** (वि०) पवित्र मन वाला, **विष्कम्भकः** नाटक का वह भाग जहाँ केवल संस्कृत बोलने वाले पात्र ही दिखाई दें।

शुद्धिः [शुध्+क्तिन्] (गणित० में) शेष न छोड़ना।

शुभमङ्गलम् सौभाग्य, कल्याण, अभ्युदय।

शुल्काध्यक्षः चुंगी का अध्यक्ष।

शुल्बसूत्रम् सूत्रग्रन्थ जिसमें श्रौत यज्ञकृत्यों की विविध गणनप्रक्रिया समाविष्ट है।

शुष्ककासः सूखी खाँसी।

शुष्करुदितम् ऐसा रोना जिसमें आँसू न आयें।

शूकः [शिव+कक्, संप्रसारणम्] 1. प्रकिण्व, सुरामण्ड 2. खमीर।

शूद्रः [शुच्+रक्, पृषो० चस्य दः दीर्घश्च] हिन्दु समाज में चौथे वर्ण का पुरुष (कहा जाता है कि वह पुरुष के पैरों से उत्पन्न हुआ—पद्भ्यां शूद्रोऽजायत—ऋ० १०।९०।१२।)। सम०—**अन्नम्** शूद्र द्वारा दिया गया या परोसा गया भोजन,—**घ्न** (वि०) शूद्र की हत्या करने वाला,—**वृत्तिः** शूद्र का व्यवसाय, **संस्पर्शः** शूद्र से छू जाना।

शूरः [शूर+जष्] 1. नायक, योद्धा 2. शेर 3. रीछ 4. सूर्य 5. साल का वृक्ष 6. मदार का पौधा 7. चित्रक वृक्ष 8. कुत्ता 9. मुर्गा। सम०—वादः बौद्धों का अनस्तित्व सिद्धांत।
शूलः [शूल्+क] 1. विक्रय 2. बेचने योग्य पदार्थ 3. नोकदार हथियार 4. लोहे की सलाख (जिस पर रख कर मांस भूना जाता है) 5. किसी भी प्रकार का दर्द 6. मृत्यु। सम०—अङ्कः शिव का विशेषण —ये समाराध्य शूलाङ्कं—महा० १०।७।४७,—अवतंसित (वि०) सलाख पर लटकाया हुआ, सूली पर चढ़ाया हुआ, —आरोपः सूली पर चढ़ाना।
शूल्यमांसम् भुना हुआ मांस।
शूष (वि०) [शूष्+अच्] 1. गुंजायमान 2. साहसी।
शृङ्गम् [शृ+गन् मुम्,ह्रस्वश्च] 1. सींग 2. पर्वत की चोटी 3. ऊँचाई 4. स्त्री का स्तन 5. एक विशेष प्रकार का सैनिक व्यूह। सम०—ग्राहिका 1. प्रत्यक्ष रीति 2. (तर्क० में) एक पक्ष लेना।
शृङ्गिन् (वि०) [शृङ्ग+इनि] सींगों वाला जानवर (पुं०) बैल।
शृतपाक (वि०) पूर्णतः पका हुआ।
शृतशीत (वि०) उबाल कर ठंडा किया हुआ।
शेषः [शिष्+अच्] 1. अङ्गभूत वस्तु 2. प्रसाद, कृपा।
शेषाचलः } तिरुपति की पहाड़ियाँ।
शेषाद्रिः }
शैक्यः [शिक्य+अण्] 1. एक प्रकार का गोफिया 2. लटकाया हुआ बर्तन।
शैथिल्यम् [शिथिल+ष्यञ्] 1. अस्थिरता 2. शिथिलता, सुस्ती 3. (दृष्टि की) शून्यता 4. अवहेलना।
शैलगुरु (वि०) पहाड़ जैसा भारी।
शैलबीजम् भिलावाँ।
शैलूषी [शिलूष+अण्+ङीप्] नटी, नर्तकी।
शोकनिहत } (वि०) शोकपीड़ित, ग़म का मारा।
शोकहत }
शोणः [शोण्+अच्] लाल।
शोणितप (वि०) [शोणित+पा+क] रुधिर पीने वाला।
शोणितपित्तम् रुधिरस्राव।
शोधः [शुध्+घञ्] शुद्धि, सफ़ाई, विरेचन।
शोधनम् [शुध्+णिच्+ल्युट्] 1. मार्जन, परिष्करण 2. पाप अपराधादि से शुद्धि।
शोभनाचरितम् सुन्दर आचरण, सदाचरण।
शोली वनहरिद्रा, पीली हल्दी।
शोषयित्नुः [शुष्+इत्नुच्] सूर्य।
शौक्लेयः 1. गरुड़ 2. बाज़, श्येन।
शौचम् [शुचि+अण्] (तर्पण के लिए) जल।
शौण्डीर्यम् [शौण्डीर+ष्यञ्] 1. शूरवीरता, पराक्रम 2. अभिमान, घमंड।
शौर्यकम् (नपुं०) शूरवीरता का कार्य।
शौव (वि०) [श्वन्+अण्, टिलोपः] आगामी कल से संबंध रखने वाला।
श्मश्रुकरः नाई, हजामत बनाने वाला।
श्मश्रुशेखरः नारियल का पेड़।
श्यामः [श्यै+मक्] तमाल का पेड़।
श्यामवल्ली काली मिर्च।
श्यामा दुर्गादेवी का तान्त्रिक रूप।
श्येनकपोतीय (वि०) आकस्मिक संकट।
श्येनपातः बाज़ का झपट्टा।
श्रद्धाजाडयम् अंध विश्वास।
श्रद्धेय (वि०) [श्रत्+धा+ण्यत्] विश्वासपात्र,—श्रद्धेयाः विप्रलब्धारः—कि० ११।३५।
श्रम् (प्रेर०—श्र-श्रामयति) 1. थकाना 2. जीतना, हराना।
श्रमविनोदः क्लांति दूर करना, विश्राम करना।
श्रमार्त (वि०) थक कर चूर-चूर, थकान से पीड़ित।
श्रवपत्रम् कान की बाली।
श्रवणम्,—णः [श्रु+ल्युट्] 1. कान 2. त्रिकोण की एक रेखा 3. सुनने की क्रिया। सम०—पुटकः कर्णविवर, —पूरकः कान की बाली, कर्णफूल,—प्राघुणिकः श्रवण गोचर वस्तु, कानों में आना,—भृत (वि०) कहा गया।
श्राद्धमित्रः श्राद्ध के द्वारा बनाया गया मित्र।
श्राद्धार्ह } (वि०) श्राद्ध के लिए उपयुक्त।
श्राद्धेय }
श्रावकः [श्रु+ण्वुल्] वह ध्वनि जो दूर से सुनी जाय।
श्रितक्षम (वि०) स्वस्थ, शान्त।
श्रितसत्त्व (वि०) जिसने साहस का आश्रय लिया है, साहसी, दिलेर।
श्री [श्रि+क्विप्, नि० दीर्घः] वेदत्रयी, तीनों वेद।
श्रीमुकुटम् सोना, स्वर्ण।
श्रीमत् (पुं०) 1. तोता 2. सांड।
श्रुतिः [श्रु+क्तिन्] 1. वाणी 2. कीर्ति 3. उपयोग, लाभ 4. विद्वत्ता, पांडित्य। सम० अर्थः वैदिक अर्थसूचन, —जातिः नाना प्रकार के दिक्स्वर, दूषक (वि०) कानों को कष्ट देने वाला,—वेधः कान बींधना—शिरस् उपनिषदें श्रुतिशिरस्सीमन्तमुक्तामणिम् — प्रताप० १।१।
श्रेयोभिकांक्षिन् (वि०) कल्याण चाहने वाला।
श्रेष्ठवेधिका कस्तूरी।
श्रेष्ठान्वयः (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न।
श्रोणिबिम्बम् गोल नितम्ब -श्रोणिबिंबचलदम्बरं भजत गसकेलिरसडम्बरम्—नारा०।

श्रौतस्मार्त (द्वि० व०) वेद और स्मृति से संबंध रखने वाला।
श्लथबन्धनम् 1. पुट्ठों का विश्राम देना 2. ढीली गांठ।
श्लाघाविपर्ययः शेखी बघारने का अभाव, प्रशंसा या चापलूसी का न होना।
श्लिष्टरूपकम् श्लेषयुक्त रूपक अलंकार, जिस रूपक के एक से अधिक अर्थ होते हों।
श्लेषः [श्लिष्+घञ्] 1. आलिंगन, मैथुन 2. व्याकरण विषयक आगम संयोग 3. एक शब्दालंकार जहाँ एक शब्द के कई अर्थों द्वारा काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है।
श्लेषोपमा उपमा अलंकार जिसके दो अर्थ होते हों।
श्लेष्मकटाहः थूकदान।
श्लोक्य (वि०) [श्लोक्+ण्यत्] प्रशंसनीय।
श्वजीविका कुत्ते का जीवन, दासता।
श्वदंष्ट्रा 1. कुत्ते की दाढ़ 2. गोखरू का पौधा।
श्वयीचिः [श्वयतेः चित्] चन्द्रमा।
श्वसुरगृहम् श्वसुरालय।
श्वसनमनोग (वि०) वायु और मन की भाँति चंचल।
श्वसनरन्ध्रम् (नाक का) नथना।
श्वसनसमीरणम् श्वास, साँस।
श्वासः [श्वस्+घञ्] व्यञ्जनों के उच्चारण में महाप्राणता।
श्वस्प्रभृति (अ०) आगामी कल से लेकर।
श्वोवसीयस् (वि०) प्रसन्न, शुभ, मङ्गलमय।
श्वेतः [श्वित्+अच्, घञ् वा] 1. सफेद बकरी 2. धूमकेतु, पुच्छलतारा 3. चाँदी का सिक्का 4. जीरे का बीज 5. शंख 6. सफेद रंग 7. शुक्र तारा। सम० अंशुः चन्द्रमा,—अश्वः अर्जुन, कपोतः 1. एक प्रकार का चूहा 2. एक प्रकार का साँप,—क्षारः यवक्षार, शोरा, —रसः छाछ और पानी बराबर-बराबर मिले हुए —वाराहः कल्प का नाम जो आजकल बीत रहा है।

ष

षडंशः छठा भाग।
षडष्टकम् फलित ज्योतिष का एक योग।
षडूर्मिः अस्तित्व की छः लहरें।
षट्पदः 1. मधुमक्खी, भौंरा 2. गीति छन्द।
षड्ऋतु (पुं०, ब० व०) छः ऋतुएँ।
षड्भाववादः 'द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय' इन छः द्रव्यों की स्वीकृति पर आधारित सिद्धान्त।
षाडवः 1. रसराग की एक जाति जिसमें केवल छः स्वर जाते हैं 2. मिठाई, हलवाई का कार्य।
षोडशाहः शाक्तशाखा का एक चक्र।

स

संयत् (स्त्री०) [सम्+यत्+क्विप्] युद्ध, लड़ाई, संग्राम। सम०—वाम (वि०) उस सबको एकत्र करने वाला जो सुखद है।
संयन्त्रित (वि०) [संयन्त्र+इतच्] रोका हुआ, बन्द किया हुआ।
संयम् (भ्वा० पर०) 1. रोकना, दमन करना, दबाना 2. सटाना, भींचना।
संयतमैथुन (वि०) जिसने मैथुन करना त्याग दिया है।
संयतिः [सम्+यम्+क्तिन्] तपश्चर्या, निरोध, संयमन।
संयमः [सम्+यम्+अप्] प्रयत्न, उद्योग।
संयोगः [सम्+युज्+घञ्] 1. (दर्शन०) भौतिक संपर्क 2. शारीरिक संपर्क 3. योगफल। सम०—विधिः 1. सम्मिश्रण की प्रणाली 2. जीव और ईश्वर के सायुज्य को दर्शानेवाली वेदान्त की उक्ति।
संयुतिः [सम्+यु+क्तिन्] (गणित०) दो या दो से अधिक संख्याओं का योगफल।
संरभ् (भ्वा० आ०) डरना—प्रवृत्तं रज इत्येव तत्र संरभ्य चिन्तयेत्—महा० १२।१९४।३२।
संरब्धनेत्र (वि०) जिसकी आँखें सूज गई हों।
संरब्धमान (वि०) जिसके अभिमान को आघात लग चुका है।
संरम्भः [सम्+रभ्+घञ्, मुम्] 1. घृणा, द्वेष—संरम्भयोगेन विन्दते तत्स्वरूपताम् भाग० ७।१।२८ 2. (युद्ध का) वेग, आक्रमण की प्रचण्डता।
संराद्धिः [सम्+राध्+क्तिन्] निष्पत्ति, सफलता।
संरुद्ध (वि०) [सम्+रुध्+क्त] 1. बाधायुक्त (गति) फाल्गुनो गात्रसंरुद्धो देवदेवेन भारत—महा० ३।३९।६२ 2. नाकाबन्द।

संरोधः [सम्+रुध्+घञ्] बंधन, क़ैद ।

संरूढ (वि०) [सम्+रुह्+क्त] जो गहराई तक घुसा हुआ हो—ततो मामतिविश्वस्तं संरूढशरविक्षतम – महा० ३।१७४।२ ।

संवत्सरनिरोधः एक वर्ष की क़ैद ।

संवद् (भ्वा० पर०) परस्पर मिलाना ।

संवदनम् [संवद्+ल्युट्] संदेश ।

संवादः [सम्+वद्+घञ्] अभियोग, मुक़दमा ।

संवर्गविद्या (दर्शन०) अवशोषण या विश्लेषण का शास्त्र ।

संवासः [सम्+वस्+घञ्] सहवास ।

संवहनम् [सम्+वह्+ल्युट्] 1. मार्गदर्शन करना, नेतृत्व करना 2. प्रदर्शन करना, दिखलाना ।

संविग्न (वि०) [सम्+विज्+क्त] 1. क्षुब्ध, उत्तेजित 2. भयभीत, डरा हुआ 3. इधर-उधर चक्कर लगाता हुआ ।

संविज्ञानम् [सम्+वि+ज्ञा+ल्युट्] 1. सहमति, अनुमोदन 3. सम्यक् ज्ञान 4. प्रत्यक्ष ज्ञान ।

संविद् [सम्+विद्+क्विप्] 1. मतैक्य—स्तुतीरलभमानानां संविदं वेद निश्चितान् महा० १२।१५१।६ 2. मित्रता—संविदा देयम् – तै० उ० १।११।१३ ।

संविध् (स्त्री०) [सम्+वि+धा+क्विप्] व्यवस्था—रावणः संविधं चक्रे महा० ३।२८४।२ ।

संविभक्त (वि०) [सम्+वि+भज्+क्त] बांटा हुआ, विभाजित, पृथक् किया हुआ ।

संवेशः [सम्+विश्+घञ्] कुर्सी ।

संवेशनम् [सम्+विश्+ल्युट्] सोना, नींद लेना संवेशनोत्थापनयोः—प्रतिमा० ।

संवारः सम्+वृ+घञ्] बाधा, विघ्न ।

संवृतसंवार्य (वि०) जो गोपनीय बातों को गुप्त रखता है ।

संवर्तः [सम्+वृत्+घञ्] सिकोड़ना, सिकुड़न,—पर्यायात् क्षणदृष्टनष्टककुभः संवर्तविस्तारयोः म० वी० ५।१ ।

संवर्तित (वि०) [सम्+वृत्+क्त] 1. लिपटा हुआ, लपेटा हुआ 2. बराबर आया हुआ ।

संवृद्धिः [सम्+वृध्+क्तिन्] पूर्णवृद्धि, अभ्युदय, शक्ति ।

संव्यस् (दिवा० पर०) व्यवस्थित करना, एकत्र करना ।

संव्यूहः [सम्+वि+ऊह्+घञ्] व्यवस्था, क्रमस्थापन ।

संशित (वि०) [सम्+शो+क्त] अपने संकल्प को दृढ़ता पूर्वक निभाने वाला (जैसा कि 'संशितव्रत' कड़ाई के साथ अपना व्रत पूरा करने वाला) ।

संशयाक्षेपः एक अलंकार जिसमें संदेह का निवारण समाविष्ट होता है ।

संशयोपमा संदेह के रूप में न्यस्त तुलना ।

संशुध् (दिवा० पर०) शुद्ध करना, सुरक्षित रखना (आक्रमण से)—संशोध्य त्रिविधं मार्गं—मनु० ७।१८५ ।

संश्रि (भ्वा० उभ०) संभोगसुख के लिए पहुँचना ।

संश्रयः [सम्+श्रि+अच्] 1. आसक्ति 2. किसी पदार्थ का कोई अंश ।

संश्रवस् (नपुं०) [सम्+श्रु+असुन्] पूरी कीर्ति या ख्याति ।

संश्लिष्ट (वि०) [सम्+श्लिष्+क्त] मिश्रित, अव्यवस्थित,—ष्टम् (नपुं०) राशि, ढेर ।

संसक्त (वि०) [सम्+सञ्ज्+क्त] 1. विषयासक्त 2. अनुरक्त ।

संसज्जमान (वि०) [सम्+सञ्ज्+शानच्] 1. साथ लगने वाला 2. संकोच करने वाला, झिझकने वाला,—वाङ्मात्रेण न भावेन वाचा संसज्जमानया—रा० २।२५।३९ ।

संसदनम् [सम्+सद्+ल्युट्] खिन्नता, अवसाद ।

संसिद्धिः [सम्+सिध्+क्तिन्] 1. अन्तिम परिणाम 2. अन्तिम शब्द ।

संसृ (भ्वा० पर०) 1. स्थगित करना, उठा रखना 2. काम में लगाना ।

संसारसागरः
संसाराब्धिः
संसारार्णवः } जन्म मरण का समुद्र ।

संसारपङ्कः संसार रूपी कीचड़ ।

संसारवृक्षः सांसारिक जीवन रूपी वृक्ष ।

संसेव् (भ्वा० आ०) 1. सम्मिलन करना 2. सेवा करना, सेवा में प्रस्तुत रहना 3. व्यसनी होना ।

संसेवा [सम्+सेव्+अङ+टाप्] 1. (किसी सभा, समाज में) नित्यप्रति जाना 2. उपयोग, काम में लगाना 3. आदर सत्कार, पूजा अर्चना ।

संस्कृ (तना० उभ०) 1. संचय करना—ये पक्षापरपक्षदोषसहिताः पापानि संस्कुर्वते—मृच्छ० ९।४ 2. यथार्थता पर पहुँचना (गणित०) ।

संस्कारवती (स्त्री) जिसे चमका कर उज्ज्वल कर दिया गया है—संस्कारवत्येव गिरा मनीषी—कु० १।२८ ।

संस्कारवत्त्वम् प्रमार्जन, परिष्कार—कि० १७।६ ।

संस्कृतात्मन् (वि०) आध्यात्मिक अनुशासन. या धर्मकृत्यों के द्वारा जिसने अपने आपको पवित्र कर लिया है ।

संस्कृतिः [सम्+कृ+क्तिन्] 1. परिष्कार 2. तैयारी 3. पूर्णता 4. मनोविकास ।

संस्तम्भनम् [सम्+स्तम्भ्+ल्युट्] रोकना, बंधन में डालना, पकड़लेना ।

संस्तीर्ण (वि०) [सम्+स्तॄ+क्त] छितराया हुआ, बखेरा हुआ—समिद्वन्तः प्रान्त संस्तीर्णदर्भाः—श० ४।८ ।

संस्था (भ्वा० आ०-प्रेर०) 1. (नगर) निर्माण करना 2. पुनः स्थापित करना 3 दाह संस्कार करना, (जैसे अस्थिस्थापनम्) अस्थि प्रवाहित करना, या जल समाधि देना।

संस्था [सम्+स्था+अङ+टाप्] 1. सहमति कृतां संस्थामतिक्रान्ताः---रा० ४।५७।१८ 2. दाह संस्कार 3. सिपाही, गुप्तचर।

संस्थावृक्षः गमले में लगा पौधा कौ० अ० १।२०।

संस्थानम् [सम्+स्था+ल्युट्] 1. सरकार को संस्थित रखने का कार्य—कौ० अ० २।७ 2. भाग, प्रभाग, खंड 3. सौन्दर्य, कीर्ति।

संस्थित (वि०) [सम्+स्था+क्त] सुव्यवस्थित संस्थितदोर्विषाणः—रा० ३।३१।४६।

संस्थितिः (स्त्री०) [सम्+स्था+क्तिन्] 1. एक ही अवस्था में पंक्ति बद्ध रहना 2. महत्त्व देना 3. रूप, शक्ल 4. सातत्य, नैरन्तर्य।

संहत (वि०) [सम्+हन्+क्त] 1. सुदृढ़ अंगों वाला 2. मारा गया।

संहतहस्त (वि०) एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए।

संहतिः [सम्+हन्+क्तिन्] 1. संधि, (कपड़े की) सीयन 2. मोटा होना, सूजन।

संहृ (भ्वा० पर०) विपथगामी करना, भटकाना, भ्रष्ट करना—शूरान् भक्तानसंहार्यान्—महा० १२।५७। २३ पर भाष्य।

संहाररुद्रः संहार करने वाला रुद्र देवता।

सकर (वि०) 1. कर युक्त, हाथों वाला 2. कर लगाने योग्य 3. किरणों से युक्त।

सक्लीलः वह पुरुष जो इतना पुंस्त्वहीन है कि स्वयं संभोग करने के पूर्व अपनी स्त्री को परपुरुष के पास भेजता है।

सकृत्स्नायिन् (वि०) केवल एक बार स्नान करने वाला —मनु० ११।२१४।

सकृदाहृत (वि०) जो राशि एक किश्तों में न चुकाकर एकमुश्त चुकाई गई हो।

सकृद्गतिः संभावनामात्र, केवल एक ही विकल्प।

सकृद्विभात (वि०) जो तुरन्त प्रकट हो गया है।

सगतिक (वि०) संबंधबोधक अव्यय से जुड़ा हुआ।

सङ्कटहरचतुर्थी गणेश की पूजा करने का शुभ दिन माघ कृष्ण या भाद्रकृष्ण चतुर्थी।

सङ्कालनम् [सम्+कल्+णिच्+ल्युट्] दाहसंस्कार।

सङ्कर्षणः [सम्+कृष्+ल्युट्] अहंकार।

सङ्करः [सम्+कृ+अच्] गोबर।

सङ्करज } (वि०) जिसके मातापिता भिन्न-भिन्न जाति
सङ्करजात } के हों, मिश्र मातापिता की सन्तान।

सङ्करीकरणम् जातियों का मिश्रण।

सङ्कल्प् (भ्वा० आ०) और्ध्वदेहिक कृत्य करना। अन्त्येष्टि करना।

सङ्कल्पप्रभव (वि०) इच्छा से ही उत्पन्न, मानस —संकल्पप्रभवान् कामान् भग०।

सङ्कल्पमूल (वि०) किसी इच्छा पर आधारित।

सङ्क्रन्दः [सम्+क्रन्द्+घञ्] 1. युद्ध, लड़ाई 2. विलाप।

सङ्क्रमणम् [सम्+क्रम्+ल्युट्] मृत्यु—रा० २।१३।१२।

सङ्क्रोशः [सम्+क्रुश्+घञ्] ऊँचे स्वर से विलाप करना।

सङ्क्लिष्ट (वि०) [सम्+क्लिश्+क्त] 1. जिस पर खरोंच आ गई हो 2. जिस पर धब्बा आदि पड़ गया हो, धूमिल, मलिन।

सङ्क्षयः [सम्+क्षि+अच्] 1. शरणागार, घर 2. मृत्यु।

सङ्क्षेपः [सम्+क्षिप्+घञ्] विनाश।

सङ्क्षोभणम् [सम्+क्षुभ्+ल्युट्] शोक का प्रबल आघात, धक्का।

सङ्ख्या [सम्+ख्या+अङ+टाप्] 1. युद्ध, लड़ाई 2. नाम 3. ज्यामितिपरक शंकु।

सङ्ख्यापदम् अंक।

सङ्गम् (भ्वा० आ० प्रेर०) 1. दे देना, सौंप देना 2. हत्या करना।

सङ्गतगात्र (वि०) जिसके शरीर में झुर्रियाँ पड़ गई हैं, या सिकुड़ गया है।

सङ्गतिः [सम्+गम्+क्तिन्] (मीमांसा०) अधिकरण के पाँच अंगों में से एक।

सङ्गुप्तिः [सम्+गुप्+क्तिन्] 1. प्ररक्षण 2. गोपन, गुप्त रखना।

सङ्गोपनम् [सम्+गुप्+ल्युट्] सर्वथा गुप्त रखना।

सङ्ग्रहः [सम्+ग्रह्+अप्] छोड़े हुए शस्त्रास्त्रों को वापिस ग्रहण करना।

सङ्ग्रामकर्मन् (नपुं०) युद्ध करना, लड़ाई लड़ना।

सङ्ग्राममूर्धन् (पुं०) युद्ध का अग्रिम क्षेत्र।

सङ्घवृत्तम् निगम आदि संकायों का मिलकर कार्य करने का ढंग (आचरण) कौ० अ० ११।

सङ्घातः [सम्+हन्+घञ्] 1. बहाव— यस्य शोणितसंघाता—महा० १२।९८।३१ 2. कठोर भाग 3. युद्ध 4. हड्डी 5. गहनता 6. समूह।

सङ्घातचारिन् (वि०) समूह में मिलकर चलने वाला।

सङ्घातमृत्युः सबकी एकदम मृत्यु।

सङ्घातशिला कड़ा पत्थर जिसपर (नारियल जैसी) वस्तुएँ तोड़ी जाती हैं, पत्थर जैसा कठिन पदार्थ।

सङ्घर्षः [सम्+घृष्+घञ्] 1. शत्रुता 2. कामोत्तेजना।

सङ्घर्षा तरल लाख।

सचराचर (वि०) चल तथा अचल वस्तुओं समेत।

सजागर (वि०) जागरूक, सावधान, सतर्क।

सज्ज (वि०) [सज्ज्+अच्] 1. सूत में पिरोया हुआ 2. धनुष की डोरी पर ताना हुआ।

सञ्चक: [सम्+चि+ड, स्वार्थेकन्] साँचा (जैसा कि ईंट पाथने वाले प्रयुक्त करते हैं)।

सञ्चार: [सम्+चर्+णिच्+घञ्] 1. मुग्ध करना —संचारः श्रवणदर्शनाभ्यां परमोहनम्—महा० १२।५९।४८ पर भाष्य 2. (जंगली जानवरों के) पदचिह्न।

सञ्चष्कारयिषु (वि०) शौचसंबंधी धर्मकृत्यों का अनुष्ठान कराने का इच्छुक।

सञ्जनन (वि०) [सम्+जन्+ल्युट्] पैदा करने वाला, उत्पादक।

सञ्जातनिर्वेद (वि०) खिन्न, अवसन्न, उदास।

सञ्जातविश्रम्भ (वि० विश्वस्त, भरोसे वाला।

सञ्जप् (भ्वा० पर०) प्रतिवेदन देना, वक्तव्य देना।

संजिहान (वि०) [सम्+हा+शानच् धातोर्द्वित्वम्] त्यागने वाला, छोड़ने वाला।

संज्ञक (वि०) [संज्ञ+कन्] नाश करने वाला—कदा वयं करिष्यामः संन्यासं दुःखसंज्ञकम्—महा० १२।२७९।३।

संज्ञपित (वि०) [सम्+ज्ञा+णिच्+क्त, पुकागमः] बलि दिया गया, नष्ट किया गया—भाग० ४।२८।२६।

संज्ञा [सम्+ज्ञा+क] 1. पगडंडी, पदचिह्न 2. दिशा 3. पारिभाषिक शब्द।

संज्ञासूत्रम् वह सूत्र जिसके आधार पर किसी पारिभाषिक शब्द का निर्माण होता है।

सटाक्षेपः अयाल (केसर) का लहराना—सटाक्षेपक्षिप्त-नक्षत्रसंहतिः—दुर्गा० ७।

सतोद (वि०) पीडित, चुभन जैसी पीडा से ग्रस्त।

सत्क्रिया समारोह, अनुष्ठान।

सत्तम (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ (समस्त शब्दों के अन्त में प्रयुक्त जैसे आचार्यसत्तमः)।

सत्त्रम् [सद्+ष्ट्रन्] बनावटी रूप, छद्मवेष।

सत्त्रिन् (पुं०) [सत्त्र+इनि] 1. सहपाठी कौ० अ० १।११ 2 विदेशस्थ राजदूत।

सत्त्वम् [सत्+त्व] 1. बुद्धि 2. सूक्ष्म शरीर।

सत्त्वतनुः विष्णु का विशेषण।

सत्त्वयोगः 1. मर्यादा 2. जीवन-प्रकाशन, प्राण प्रदान —चित्रे निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा—श० २।१०।

सत्यम् [सत्+यत्] 1. मोक्ष 2. सचाई 3. निष्कपटता 4. पवित्रता 5. प्रतिज्ञा 6. जल 7. ईश्वर। सम० —आश्रमः संन्यास,—क्रिया, शपथ ग्रहण करना, —भेदिन् (वि०) प्रतिज्ञा भंग करने वाला, —मानम् वास्तविक माप, —लौकिकम् आध्यात्मिक और भौतिक विषय,—वादिन् (वि०) सच बोलने वाला, —संश्रवः सच्ची प्रतिज्ञा, —सङ्कल्प (वि०) जिसका प्रयोजन या धारणा सत्य है।

सत्रन्यायः मीमांसा का एक नियम जिसके आधार पर एक से अधिक स्वामियों द्वारा अनुष्ठान होने पर यज्ञ में एक ही स्वामी को प्रतिनिधित्व दिया जाता है—मी० सू० ६।३।२२ पर शा० भा०।

सत्रिन् (पुं०) [सत्र+इनि] सहयोगी, सहपाठी।

सदर्थः मुख्य विषय या प्रकरण।

सद् [सद्+क्विप्] सभा—भाग० ७।१।२१।

सदोजिरम् [सदस्+अजिरम्] दालान, दहलीज।

सदसस्पतिः [अलुक् समास] सभापति।

सदोत्थायिन् (वि०) सदैव सक्रिय।

सदाभव (वि०) सदा रहने वाला, शाश्वत।

सदृक्षविनिमय (वि०) समान विषयों में भूल करने वाला।

सद्धर्मः वास्तविक कर्तव्य।

सद्यस्कार (वि०) तुरन्त ही अनुष्ठित होने वाला।

सद्यस्प्रक्षालक (वि०) जिसके पास केवल एक ही दिन की भोजन सामग्री विद्यमान है—सद्यः प्रक्षालको वा स्यान्माससंचयिकोपि वा—मनु० ६।१८।

सनत्सुजातः ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में एक।

सनत्सुजीयम् महाभारत का एक अध्याय जिसमें सनत्सुजात का दार्शनिक व्याख्यान निहित है।

सनातनधर्मः वेदों में प्रतिपादित अत्यन्त प्राचीन धर्म।

सनिकार: (वि०) अपमानजनक।

सन्तानक: [सम्+तन्+घञ्+कन्] 1. स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक, कल्पतरु या उसका फूल 2. लोक-विशेष।

सन्तोषणम् [सम्+तुष्+णिच्+ल्युट्] सुख देना, प्रसन्नता देना, संतुष्ट करना।

सन्तृण (वि०) [सम्+तृद्+क्त] संयुक्त, मिलाकर बांधा हुआ।

सन्तारः [सम्+तॄ+घञ्] 1. पार करना 2. तीर्थ, घाट।

सन्दंशः [सम्+दंश्+अच्] 1. पुस्तक का एक अनुभाग 2. गांव का एक किनारा।

सन्दानम् [सम्+दो+ल्युट्] हाथी के गण्डस्थल का वह भाग जहाँ से दान झरता है।

सन्देशपदानि संदेश के शब्द।

सन्दिग्धपुनरुक्तत्वम् (अलं०) अनिश्चयता के कारण दोबारा कहना।

सन्देहालङ्कारः अलंकार विशेष जिसमें संदेह बना रहता है।

सन्देह्य (वि०) [सम्+दिह्+ण्यत्] संदिग्ध, संदेह से पूर्ण।

सन्दृब्ध (वि०) [सम्+दृभ्+क्त] मिलाकर धागे में पिरोया हुआ।

सन्दर्शः [सम्+दृश्+घञ्] प्रतीति, दृष्टि ।

सन्दर्शनम् [सम्+दृश्+ल्युट्] काम, उपयोग ।

सन्धिः [सम्+धा+कि] भूखंड जो मन्दिर के लिए धर्मार्थ दिया गया हो चोल० १ में डा० राघवन की टिप्पणी वृत्तिसन्धिप्रतिपादकः ।

सन्धिन् (पुं०) [सम्+धा+इनि] संधि इत्यादि का काम करने वाला मन्त्री ।

सन्ध्यापयोदः संध्याकालीन बादल ।

सन्नजिह्व (वि०) जिसकी जिह्वा बंधी हुई है, जो चुप है ।

सन्नधी (वि०) हतोत्साह, उत्साहहीन ।

सन्नभाव (वि०) निराश ।

सन्नवाच् (वि०) मन्द स्वर से बोलने वाला ।

सन्नादः [सम्+नद्+घञ्] शोरगुल, हुल्लड़ ।

सन्नत (वि०) [सम्+नम्+क्त] पूर्ण, भरा हुआ --परमानन्दसन्नतो मन्त्री दश० १।३ ।

सन्नतगात्री झुके हुए शरीर वाली महिला ।

सन्नतभ्रू (वि०) भृकुटिविलासयुक्त, त्यौरी चढ़ाए हुए ।

सन्नद्धयोध (वि०) जिसकी सेना लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार है ।

सन्निकर्षः [सम्+नि+कृष्+घञ्] 1. आधुनिक विषय या विचार वेदांश्चैके सन्निकर्षं पुरुषाख्या—मी० सू० १।१।२७ ।

सन्निपत्य (अ०) [सम्+नि+पत्+य (क्त्वा)], तुरन्त, प्रत्यक्ष, सीधे ।

सन्निपत्योपकारिन (वि०) भाग या अङ्ग जो सीधा प्रधान का काम दे—मी० सू० १२।१।१९ पर शा० भा० ।

सन्निपातः [सम्+नि+पत्+घञ्] 1. मैथुन 2. युद्ध 3. ग्रहों का विशेष संयोग ।

सन्निपातिन् (वि०) [सन्निपात+इनि] ऐसा अंग जो प्रधान का कार्य करे—मन्त्राच्च सन्निपातित्वात् —मी० सू० १२।१।१९ ।

सन्निभृत (वि०) [सम्+नि+भृ+क्त] 1. गुप्त 2. चतुर, शिष्ट ।

सन्निरुद्ध (वि०) [सम्+नि+रुध्+क्त] 1. नियन्त्रित, रोका हुआ 2. पूर्ण, भरा हुआ ।

सन्निरोधः [सम्+नि+रुध्+घञ्] 1. क़ैद 2. संकीर्णता ।

सन्निवायः [सम्+नि+वे+घञ्] सम्मिश्रण, समुच्चय ।

सन्निवेशः [सम्+नि+विश्+घञ्] डेरा डालना, शिविर स्थापित करना (जैसा कि "सेनासन्निवेशः") ।

सन्निसर्गः [सम्+नि+सृज्+घञ्] अच्छा स्वभाव, भलमनसाहत, उदाराशयता ।

सन्नी (भ्वा० पर०) भरना, पूर्ण करना ।

सन्न्यासः [सम्+नि+अस्+घञ्] ठहराव, करार ।

सपत्राकृत (वि०) अत्यन्त घायल ।

सपरिच्छद् (वि०) आवश्यक वस्तुओं से सुसज्जित, दलबल के साथ ।

सपरिहारम् (अ०) आरक्षण सहित ।

सपर्यापर्यायः पूजाकृत्यों की माला—सकलमिदमात्मार्पणदृशा सपर्यापर्यायस्तव जननि यत्ते विलसितम् --सौन्दर्य० ।

सप्तकोण (वि०) सात कोनों वाला ।

सप्तपातालम् सात पातालों का समूह ।

सप्तमन्त्रः } **सप्तरुचिः** } अग्नि, आग ।

सप्तस्वरः संगीत के सात स्वर (अर्थात्—सा, रि, ग, म, प, ध, नी) ।

सप्तास्र (वि०) सात कोनों वाला ।

सप्रज्ञातम् दे० 'सम्प्रज्ञातम्' ।

सप्रतीक्षम् (अ०) बहुत प्रतीक्षा के पश्चात् ।

सप्रमाण (वि०) 1. साधिकारिक 2. समान आकार-प्रकार का ।

सप्रेष्य (वि०) अनुचरों द्वारा सेवित ।

सभक्षः एक ही भोजनशाला में भोजन करने वाला, सहभोजी ।

सभा [सह+भा+क+टाप्, सहस्य सः] 1. यात्रियों के लिए अतिथिशाला 2. भोजनशाला ।

सभागृहम् } **सभामण्डपः** } सभा भवन ।

सभामध्ये (अ०) सभा में ।

सभायोग्य (वि०) सभा के लिए उपयुक्त ।

सभाजित (वि०) [सभाज्+क्त] सम्मानित ।

सभोद्देशः (सभा+उद्देशः) सभाभवन के आगास का स्थान ।

सम (वि०) [सम्+अच्] 1. नियमित, सामान्य 2. सरल, सुविधाजनक 3. बराबर, वैसा ही । सम०—**अङ्घ्रिक** (वि०) समान रूप से पैरों पर खड़ा हुआ,—**अर्थिन्** (वि०) समानता चाहने वाला,—**आत्मक** (वि०) समान से युक्त,—**कक्ष** (वि०) समान भार वाला, जिनके उत्तरदायित्व एक से हों,—**गतिः** वायु, सर्वत्र समान रूप से गति करने वाला—भत्युश्चापरिहारवान् समगतिः कालेन —महा० १२।२९८।१५,—**धर्म** (वि०) एक से स्वभाव वाला,—**मात्र** (वि०) एक से डीलडौल का, एक सी मापतोल का,—**वर्तिन्** (वि०) 1. निष्पक्ष 2. समान दूरी पर होने वाला, --**विभक्त** (वि०) समान रूप से बँटा हुआ, —**विषमम्** ऊबड़खाबड़, कहीं से नीचा तो कहीं से ऊँचा, **श्रुति** (वि०) समान अन्तराल से युक्त (संगीत०),—**श्रेणिः** सीधी पंक्ति, **अग्रणी** सब से आगे रहने वाला, - **अतिक्रान्त** (वि०) 1. संपूर्ण में से घूमा हुआ 2. जो व्यतीत हो गया, गुजरा हुआ

3. उल्लंघन किया हुआ,—अधिगमः पूरी समझ, —अनुवर्तिन् (वि०) आज्ञाकारी,—अभिद्रुत (वि०) पिल पड़ने वाला,—अभ्याशः निकटता, उपस्थिति।
समयच्युतिः ठीक समय का चूकना।
समयज्ञः 1. उपयुक्त समय का ज्ञाता 2. जो अपने मूल वचनों को याद रखता है।
समयविद्या ज्योतिष, भविष्यज्ञान।
समरागमः लड़ाई का फूट पड़ना।
समर्थक (वि०) [समर्थ्+ण्वुल्] 1. समर्थन करने वाला, प्रमाणित करने वाला 2. सक्षम, योग्य,—कम् (नपुं०) अगर काष्ठ, चन्दन की लकड़ी।
समर्थनम् [समर्थ्+ल्युट्] किसी हानि या अपराध की क्षति पूर्ति करना।
समर्यादम् (अ०) निश्चय से, यथार्थ रूप से।
समवस्कन्दः [सम्+अव+स्कन्द्+घञ्] दुर्गप्राचीर, परकोटा।
समवहारः [सम्+अव+हृ+घञ्] मिश्रण, संग्रह।
समवेक्षणम् [सम्+अव+ईक्ष्+ल्युट्] निरीक्षण, मुआयना।
समवेतार्थ (वि०) सार्थक, शिक्षाप्रद, बोधगम्य।
समस्यापूरणम् / **समस्यापूर्तिः** } किसी ऐसे श्लोक की पूर्ति करना जिसका पहला चरण दिया गया हो।
समातीत (वि०) एक वर्ष से अधिक आयु का, जो एक वर्ष पूरा कर चुका है।
समाक्रान्त (वि०) [सम्+आ+क्रम+क्त] 1. रौंदा हुआ, कुचला हुआ 2. जिस पर आक्रमण कर दिया गया है।
समाक्षिक (वि०) शहद मिला हुआ पदार्थ।
समाख्या [सम्+आ+ख्या+अङ+टाप्] व्याख्या।
समाचेष्टितम् [सम्+आ+चेष्ट्+क्त] 1. व्यवहार 2. प्रक्रिया।
समाजः [सम्+आ+अज्+घञ्] समागम, समुदाय, —भाग० १०।६०।३८।
समातत(वि०) [सम्+आ+तन्+क्त] 1. विस्तारित फैलाया हुआ 2. लगातार।
समादिष्ट [सम+दिश्+क्त] निर्धारित, आदिष्ट।
समाधा (जुहो० पर०) 1. (वस्त्र) पहनना 2. रूप भरना 3. प्रदर्शित करना 4. स्वीकार करना।
समाधानम् [समा+धा+ल्युट्] 1. (किसी उक्ति का) प्रमाण 2. समझौता कर लेना, समस्या का हल कर लेना।
समाधानरूपकम् रूपक अलंकार का एक भेद जिसमें किसी उक्ति का औचित्य सम्मिलित होता है।
समाधिभृत् (पुं०) ध्यान में लीन, समाधि में स्थित।
समाधियोगः ध्यान-मन का अभ्यास।
समाधूत (वि०) [समा+धूञ्+क्त] बखेरा हुआ।
समान (वि०) [सम+अन्+अण्] 1. साधारण 2. समस्त (संख्या०) 3. बराबर का, वैसा ही। सम० —करण (वि०) उच्चारण की समान इन्द्रिय वाला, एक ही उच्चारण स्थान वाला (स्वर)।
समानप्रतिपत्ति (वि०) 1. समान अनुराग वाला 2. व्यवहार कुशल, बुद्धिमान्।
समानमान (वि०) समान रूप से सम्मानित।
समानरुचि (वि०) एक सी रुचि वाला।
समापिका शब्द खण्ड का वह भाग जो वाक्य की पूर्ति करता है।
समाप्तिः [सम्+आप्+क्तिन्] (शरीर का) विघटन, मृत्यु मनु० २।२४४।
समापत्तिः [सम्+आ+पद्+क्तिन्] 1. मूल रूप को धारण करना 2. संपूर्ति।
समाम्नात (वि०) [सम्+आ+म्ना+क्त] 1. दोहराया गया, साथ ही वर्णन किया गया 2. परम्परा से प्राप्त।
समाम्नायः [सम्+आ+म्ना+य] 1. सामान्यतः वेदपाठ 2. परंपरा से प्राप्त शास्त्रीय वचनों का संग्रह।
समारम्भः [सम्+आ+रभ्+घञ्, मुम्] साहसिक कार्य की भावना, साहसपूर्ण कार्य।
समाराधनम् [सम्+आ+राध्+ल्युट्] प्रसन्न करना, आराधना।
समारूढ (वि०) [सम्+आ+रुह्+क्त] सवार, चढ़ा हुआ।
समारोपितकार्मुक (वि०) जिसने धनुष तान लिया है।
समार्ष (वि०) एक ही प्रवर से संबद्ध, समान प्रवर वाला।
समालोकनम् [सम्+आ+लोक्+ल्युट्] 1. निरीक्षण 2. संविचार, मनन।
समाविद्ध (वि०) [सम्+आ+व्यध्+क्त, संप्रसारणम्] 1. कम्पित, क्षुब्ध 2. प्रहृत, आघात प्राप्त।
समाविष्ट (वि०) [सम्+आ+विश्+क्त] भरा हुआ, युक्त (जैसाकि 'कौतूहलसमाविष्ट')।
समाश्वस्त (वि०) [सम्+आ+श्वस्+क्त] 1. ढाढस बंधाया हुआ, सांत्वना दी हुई 2. विश्वास करने वाला।
समाहृत (वि०) [सम्+आ+हृ+क्त] खींचा हुआ (जैसे धनुष की डोरी')।
समाहृत्य (अ०) [सम्+आ+हृ+य (क्त्वा)] सब एक दम मिल कर।
समाहित (वि०) [सम्+आ+धा+क्त] 1. समान, साधारण 2. मिलता जुलता 3. प्रेषित।
समितिः [सम्+इ+क्तिन्] सदाचरण का नियम (जैन०)।

समिधाधानम् 1. यज्ञाग्नि पर समिधाएं रखना 2. ब्रह्मचारी के लिए विहित दैनिक अग्निहोत्र ।
समीक्षा [सम्+ईक्ष्+अङ+टाप्] 1. देखने की इच्छा, दिदृक्षा 2. आध्यात्मिक ज्ञान ।
समीरणः [सम्+ईर्+णिच्+ल्युट्] पाँच की संख्या ।
समुच्चयालङ्कारः एक अलंकार का नाम ।
समुच्चयोपमा समुच्चयालंकार से बनी उपमा ।
समुच्छ्रयः [सम्+उत्+श्रि+अच्] 1. संचय 2. युद्ध, लड़ाई 3. वृद्धि. विकास ।
समुच्छ्रित (वि०) [सम्+उत्+श्रि+क्त] 1. खूब उठाया हुआ 2. हिलोरें लेता हुआ ।
समुत्कट (वि०) ऊँचा, समुन्नत ।
समुत्थानम् [सम्+उत्+स्था+ल्युट्] 1. उद्योग —महा० १२।२३।१० 2. (झंडा) लहराना 3. (पेट की) सूजन ।
समुदायवाचक (वि०) वस्तुओं के संग्रह को प्रकट करने वाला (शब्द) ।
समुदायशब्दः 'संग्रह' की अभिव्यक्ति करने वाला शब्द ।
समुद्धत (वि०) [सम्+उत्+हन्+क्त] गहन, प्रचण्ड,
समुद्यत (वि०) [सम्+उत्+यम्+क्त] 1. उठाया हुआ, समुन्नत 2. तैयार, तत्पर 3. निष्पन्न ।
समुद्रः अत्यन्त ऊँची संख्या ।
समुद्रदयिता, **समुद्र पत्नी**, **समुद्र योषित्** } नदी, दरिया ।
समुपष्टम्भः [सम्+उप+स्तंभ्+घञ्] सहारा, टेक । ४२३
सम्पातः [सम्+पत्+घञ्] संप्रेषण. (जैसा कि 'दूतसंपात' में) ।
सम्पद् (स्त्री०) [सम्+पद्+क्विप्] अधिग्रहण ।
सम्पन्नम् [सम्+पद्+क्त] पर्याप्त (श्राद्ध के पश्चात् संतोष का चिह्न) ।
सम्परेत (वि०) [सम्+पर+इ+क्त] मृत ।
सम्पुढ; [सम्+पुट्+क] गोलार्द्ध ।
सम्पूर्णकाम (वि०) जिसकी कामना पूरी हो गई हो ।
सम्पूर्णफलभाज् (वि०) पूरा फल पाने वाला ।
सम्पर्कः [सम्+पृच्+घञ्] योगफल ।
सम्पृक्त (वि०) [सम्+पृच्+क्त] मित्र बना हुआ ।
सम्प्रज्ञातः [सम्+प्र+ज्ञा+क्त] योग की एक समाधि जिसमें मनन का विषय स्पष्ट रहता है (विप०) असंप्रज्ञात) ।
सम्प्रतिपत्तिः [सम्+प्र+पद्+क्तिन्] प्रत्युत्पन्नमतित्व ।
सम्प्रदायप्रद्योतक: वैदिक परम्परा को दर्शाने वाला—सम्प्रदायप्रद्योतको अनुग्राहकश्चेति पातञ्जलाः ।
सम्प्रदायविगमः परम्परा का लोप ।
सम्प्रयुक्त (वि०) [सम्+प्र+युज्+क्त] प्रेरित, प्रोत्साहित ।
सम्प्रयोगः (वि०) [सम्+प्र+युज्+घञ्] (ज्योति०) चन्द्रमा और नक्षत्रों का संयोग ।
सम्प्रसादः [सम्+प्र+सद्+घञ्] मानसिक शान्ति ।
सम्प्राप्त (वि०) [सम्+प्र+आप्+क्त] पहुँचा हुआ, प्रकट हुआ, अधिगत ।
सम्प्लवः [सम्+प्लु+अप्] 1. अव्यवस्था 2. अवनति 3 तुमुल 4. अन्त, समाप्ति ।
सम्भिन्न (वि०) [सम्+भिद्+क्त] 1. ठोस, भरा हुआ 2. द्रोही, देशद्रोही ।
सम्भेदः [सम्+भिद्+घञ्] 1. मुट्ठी भींचना, घूसा तानना 2. विद्रोह 3. बगावत, देशद्रोह ।
सम्भोगवेश्मन् रखैल का घर ।
सम्भवः [सम्+भू+अप्] 1. शक्य बात 2. संपत्ति, धन -- महा० १३।६४।११ 3. ज्ञान ईशोप० १३ ।
सम्भविष्णु (वि०)[सम्+भू+इष्णुच्] उत्पादक रचयिता ।
सम्भावित (वि०) [सम्+भू+णिच्+क्त] जिसके घटने की आशा हो—त्वयि सम्भावितवृत्ति पौरुषम् कि० २।७ ।
संभावितम् अनुमान ।
सम्भृ (जुहो० उभ०) उठाना—दक्षिणं दक्षिणः काले सम्भृत्य स्वभुजं तदा—महा० ६।९७।८२ ।
सम्भृत (वि०) [सम्+भृ+क्त] 1. सम्मानित 2. ऊँची (ध्वनि) ।
सम्भृतश्रुत (वि०) ज्ञान से युक्त ।
सम्भृतसंभार (वि०) सर्वथा उद्यत, पूरी तरह तैयार ।
सम्भृतस्नेह (वि०) अनुराग से युक्त, अनुरक्त ।
सम्भ्रान्तमनस् (वि०) घबराये हुए मन वाला ।
सम्मतिः [सम्+मन्+क्तिन्] सम्मान देना ।
सम्मतिपत्रकम् न्यायाधिकरण का निर्णय—शुक्र०२।३०४ ।
सम्मित (वि०) [सम्+मा+क्त] 1. समान महत्त्व का —पुराणं ब्रह्मसम्मितम्—भाग० १।३।४० 2. भाग्यलेख —महा० ५।६८।१ ।
सम्मुखीन (वि०) [सम्मुख+खञ्] योग्य, उपयुक्त ।
सम्मूर्च्छनम् [सम्+मुर्च्छ्+ल्युट्] मिश्रण ।
सम्मर्दः [संमृद्+घञ्] (लहरों की) टक्कर ।
सम्यग्ज्ञानम् सही ज्ञान, सच्ची जानकारी ।
सम्यग्दृष्टिः अन्तर्दृष्टि, अन्तरवलोकन ।
सरः [सृ+अच्] (काव्य०) ह्रस्व स्वर ।
सरस (वि०) काव्यरस से परिपूर्ण—कल्याणिनीं सरसचित्रपदां गुणाढ्याम्—शिवानन्द० १०० ।
सर्गः [सृज्+घञ्] 1. शस्त्रास्त्रों का उत्पादन,—सर्गाणां चान्ववेक्षणम् महा० १२।५९।४४ 2. शब्द के अन्त में महाप्राणता (विसर्ग भी) ।

सर्पगतिः [ष० त०] सांप की चाल, (कुश्ती या मल्लयुद्ध में गति)।

सर्पबन्धः कौशल, विधि, सूक्ष्मयुक्ति।

सर्व (सर्व० वि०) [सृतमनेन विश्वम् — सृ + व] 1. सब, प्रत्येक 2. समस्त, सब मिल कर। सम०—**अभावः** सब का अनस्तित्व, सब की विफलता, **अर्थचिन्तकः** महाप्रशासक,—**अदिन्** (वि०) सब कुछ खा जाने वाला,—**अस्तित्ववादः** एक सिद्धान्त जिसके आधार पर सभी वस्तुएँ वास्तविक मानी जाती हैं,—**काम्यः** जिससे सब प्रेम करें, **दृश्** (वि०) सब कुछ देखने वाला, —**प्रथमम्** (अ०) सबसे पहले,—**वेशिन्** (पुं०) नट, नाटक का पात्र,—**संस्थ** (वि०) सर्वव्यापक —**सत्त्वः** :पि-शान्तो यथैव उत नवंसखैश्चरामि —भाग० १०। ८५।४५. **सम्पातः** वह सब जो अवशिष्ट बचा है, **स्वारः** एक वैदिक याग जिसमें असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति के लिए आत्मबलिदान का विधान है।

सर्वत्रगत (वि०) सर्वव्यापक, विश्वव्यापी।

सर्वथा (अ०) [सर्व + थाल्] सब प्रकार से।

सलिलकर्मन् (नपुं०) जल से तर्पण।

सलिलप्रियः सूअर।

सलिलरयः [ष० त०] जल के प्रवाह की शक्ति।

सवम् [सू—सु + अच्] (वेद०) आदेश, आज्ञा।

सवनकर्मन् (नपुं०) नित्य होने वाला पुनीत वैदिक धर्मकृत्य —अग्निहोत्रादिक।

सवर्ण (वि०) समान 'हर' वाली भिन्नराशि।

सविकार (वि०) 1. अपनी अन्य उपजसमेत 2. सड़ने वाला, जो सड़ गल रहा हो।

सवितृतनयः [ष० त०] शनि ग्रह।

सवितृदैवतम् हस्त नक्षत्र।

सव्रीडलक्षणम् (अ०) लज्जा के साथ, घबराहट या उलझन के साथ।

सव्य (वि०) [सू + यत्] अनभिघृत, जिस पर घी न छिड़का गया हो, शुष्क—मी० सू० ४।१।३६ पर शा० भा०।

सव्यापसव्य (वि०) 1. बायां और दायां 2. तान्त्रिक पूजा की स्मार्त तथा कौल रीतियाँ—सव्यापसव्यमार्गस्था —ललित०।

सशूकः ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाला।

सस्यपालः खेत का रखवाला।

सस्यमञ्जरी अनाज की बाल।

सस्यवेदः कृषिविज्ञान।

सस्यशूकम् अनाज (गहूँ जौ आदि) का ठूंठ, अनाज की बाल।

सह (वि०) [सह् + अच्] 1. धीर 2. सशक्त, **हः** (पुं०) मार्गशीर्ष का महीना, **हम्** (नपुं०) एक प्रकार का नमक (अ०) के साथ, सहित। सम० —**अपवाद** (वि०) असहमत होने वाला, **आलापः** समालाप, मिल कर बातचीत करना, **उत्थायिन्** (वि०) विद्रोही, षड्यन्त्रकारी, **कर्तृ** (पुं०) सहकारी —**सद्वासनम्** एक ही खाट पर मिलकर बैठना,—**भावः** 1. साहचर्य 2. सहानुवर्तिता,—**संसर्गः** शारीरिक संपर्क।

सहसादृष्टः गोद लिया हुआ पुत्र।

सहस्रम् [समानं हसति —हस् + र] 1. हजार 2. बड़ी संख्या। सम०—**अरः**, **अरम्** सिर की चोटी में उलटे कमल के समान गर्त जो आत्मा का आसन माना जाता है, **गुः** इन्द्र का विशेषण, सूर्य का विशेषण,—**दलम्** कमल का फूल,—**भोजनम्** विष्णु के हजार नामों के पाठ करने के समान एक हजार ब्राह्मणों को भोजन कराना (प्रायश्चित्त कर्म)। —**भिद्** (पुं०) कस्तूरी,—**वेधिन्** (पुं०) कस्तूरी

सहायार्थम् (अ०) साथ के लिए, सहायता के लिए।

सांवर्तक (वि०) प्रलय काल में [illegible] वाला।

सांसर्गिक (वि०) [संसर्ग + ठञ्] संसर्ग से उत्पन्न छूत के (रोग)।

सांस्कारिक (वि०) [संस्कार + ठञ्] 1. संस्कारों से संबन्ध रखने वाला 2. (आधुनिक बोल चाल में) सांस्कृतिक।

साकमेधीयन्यायः मीमांसा का एक नियम जब कि विकृति में उसकी अपनी प्रकृति के गुण या धर्म नहीं पाये जाते मी० सू० ५।१।१९-२२ पर शा० भा०।

साकूतस्मितम् सार्थक मुस्कराहट।

साक्षात्क्रिया अन्तर्ज्ञान परक प्रत्यक्षज्ञान।

साक्षिपरीक्षा साक्षी का परीक्षण।

साक्षिवादः साक्षिसिद्धान्त।

सागरमेखला पृथ्वी, धरती।

सागरसुता लक्ष्मी।

सागरावर्तः समुद्र की खाड़ी।

साङ्केत्यम् [संकेत + ष्यञ्] 1. सहमति 2. दत्तकार्य 3. चिह्न, या उपनाम—साङ्केत्यं पारिहास्यं वा…… वैकुण्ठनामग्रहणम् भाग०६।२।

साङ्ख्यकारिका सांख्यदर्शन पर ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित एक ग्रन्थ।

साङ्गोपाङ्ग (वि०) अपने मुख्य तथा सहायक अंगों सहित (वेद०)।

साचिव्याक्षेपः (अलं०) स्वीकृति के बहाने एक आक्षेप।

सातिशय (वि०) अत्यधिक, श्रेष्ठतम।

सात्म्य (वि०) स्वास्थ्यकर, प्रकृति के अनुकूल।

सात्म्यः 1. आदत, स्वभाव 2. प्रकृति के अनुकूल होने का भाव।

सात्म्यम् समता, बराबरी ।
सात्त्विकः [सत्त्व+ठञ्] शरद् ऋतु की रात्रि ।
सात्वतः 1. भक्त 2. पांचरात्र शाखा से संबंध रखने वाला , **सात्वतर्षभः** कृष्ण का विशेषण ।
साधक (वि०) [साध्+ण्वुल्] उपसंहारात्मक, उपसंहार परक ।
साधनम् [साध्+ल्युट्] 1. उपकरण, अभिकरण 2. तैयारी 3. संगणना ।
साधनीभू (भ्वा० पर०) साधन होना, उपाय होना ।
साधनीय (वि०) [साध्+अनीय) 1. सिद्ध करने योग्य, कार्य को संपन्न करने के लिए उपयोगी 2. प्राप्त करने योग्य ।
साधितव्यापक (वि०) सिद्ध करने योग्य वस्तु में अन्तर्हित तत्त्व के लिए तर्कशास्त्र का पारिभाषिक शब्द ।
साधर्म्यसमः झूठमूठ का आक्षेप (तर्क०) ।
साधारणः न्याय में एक नियम जो मध्यवर्ती हो और सर्वत्र समान रूप से लागू हो ।
साधारणपक्षः समान घटक, मध्यवर्ती तथ्य ।
साधारणीभू (भ्वा० पर०) समान होना ।
साधु (वि०) [साध्+उन्] 1. अच्छा, उत्तम 2. योग्य, उचित 3. भला, गुणी 4. सही 5. सुखद । सम० —कृत (वि०) उचित रूप में किया हुआ,—देवी सास, —मत (वि०) सुविचारित, शील (वि०) धर्मात्मा, —संमत (वि०) भले व्यक्तियों को मान्य ।
सान्तराल (वि०) [ब० स०] अन्तराल या अवकाश सहित ।
सान्तानिकः [सन्तान+ठञ्] सन्तान का इच्छुक—नाहं त्वां भस्मसात् कुर्यां स्त्रियं सान्तानिकः सति भाग० ९।१४।९ ।
सान्द्रस्पर्श (वि०) जो छूने में मृदु हो, चिपचिपा हो ।
सान्द्रानन्दः आध्यात्मिक सुख—सान्द्रानन्दावबोधात्मकमनुपमितम् —नारा० १।१ ।
सामग्र्यम् [समग्र-ष्यञ्] कल्याण, कुशलक्षेम—अयि लक्ष्मण सीतायाः सामग्र्यं प्राप्नुयामहे—रा० ३।५७।२० ।
सामन् (नपुं०) [सो+मनिन्] आवाज, शब्द, ध्वनि स्वरः सामशब्देन लोके अभिधीयते —मी० सू० ७।२।७ पर शा० भा० । सम० कल्प् मित्र के स्वर में, —प्रधान (वि०) पूर्णतः कृपालु या मित्रसदृश, —विधानम् 1. एक ब्राह्मण का मूल पाठ 2. साम का प्रयोग ।
सामन्तचक्रम् अधीनस्थ राजाओं का मण्डल ।
सामन्तवासिन् (वि०) पड़ोसी ।
समयिकम् [समय+ठन्] 1. समानता 2. संपत्ति विषयक लेखपत्र ।
सामान्यम् [समान+ष्यञ्] 1. सामान्य वक्तव्य 2. एक अर्थालंकार 3. सार्वजनिक कार्य 4. साधारण लक्षण 5. पहचान । सम० धर्मः (अलं०) (उपमान और उपमेय) का समान गुण,—वाचिन् (वि०) समानता को कहने वाला,—शासनम् वह आज्ञा जो सब पर लागू हो ।
सामिष (वि०) मांसयुक्त ।
सामुदायिक (वि०) [समुदाय+ठन्] समूह से संबंध रखने वाला, सामूहिक ।
साम्परायः 1. सहायक 2. आवश्यकता, 3. संकट ।
साम्परायिक (वि०) [संपराय+ठक्] 1. पारलौकिक, 2. दाहकर्म संबंधी— रा० ४।३।४० ।
साम्यम् [सम+ष्यञ्] 1. माप 2. समय ।
सायः [सो+घञ्] 1. समाप्ति, अन्त 2. सध्या 3. वाण । सम० —अशनम् सायंकाल का भोजन,—धूर्तः 1. शठ 2. चन्द्रमा,—मण्डनम् सूर्यास्त ।
सायम्प्रातः (अ०) सवेरे शाम ।
सायंसवनम् सायंकालीन धर्मानुष्ठान ।
सायुध (वि०) सशस्त्र ।
सारः— रस् [सृ+घञ् अच् वा] 1. क्रम, गति 2. मुख्यअंश 3. गोवर 4. मवाद, पस । सम०—गात्र (वि०) सबल अंगों वाला,—गुणः प्रधानगुण या धर्म गुरु (वि०) बोझल, बोझ के कारण भारी,—फल्गु (वि०) बढ़िया और घटिया, उपयोगी और व्यर्थ, —मार्गणम् गूदे या वसा का ढूंढना ।
सारङ्गी संगीत का एक विशेष राग ।
सारणिकघ्नः लुटेरा, डाकू ।
सारथिः [सृ+अथिण्, सह रथेन सरथः (घोटकः तत्र नियुक्तः) इञ् वा] 1. रथवान् 2. पथप्रदर्शक ।
सारसाक्षम् एक प्रकार का लाल ।
सारसाक्षी कमल जैसी सुन्दर आँखों वाली महिला, पद्मलोचना ।
सारसनम् वक्षस्त्राण, कवच ।
सार्थहीन (वि०) समूह से छूटा हुआ, यूथभ्रष्ट ।
सार्धवार्षिक (वि०) डेढ़ वर्ष तक रहने वाला ।
सार्धवत्सरम् डेढ़ वर्ष ।
सालङ्कार (वि०) सुभूषित, अलंकारों से युक्त ।
सावधारण (वि०) सीमित, नियन्त्रित ।
सावशेषजीवित (वि०) जिसका जीवन अभी शेष है, जिसने अभी, और जीना है ।
सावष्टम्भवास्तु वह भवन, जिसके दोनों ओर दो खुली पार्श्ववीथियां (खुले दालान) हों ।
सावित्रीसूत्रम् यज्ञोपवीत ।
साश्चर्यचर्य (वि०) आश्चर्ययुक्त आचरण वाला ।
सासहि (वि०) [सह+यङ्] 1. सहनशील 2. जो प्रतिपक्षी का मुकाबला कर सके 3. जीतने वाला ।
सास्थि (वि०) हड्डियों से युक्त ।

सास्थिस्वानम् (अ०) हड्डियों की चटखने की ध्वनि के साथ।
साहसकरणम् प्रचण्ड कार्य, अंधाधुंध काम करना।
साहसिक्यम् उतावलापन।
साहस्र (वि०)[सहस्र+अण्] हजारों, असंख्य, अनगिनत।
साहाय्यकर (वि०) सहायता करने वाला।
साहाय्यदानम् सहायता देना।
सिंहः [हिंस्+अच्, पृषो०] एक प्रकार की संगीत ध्वनि।
सिंहमलम् एक प्रकार का पीतल।
सिच् (तुदा० उभ०) भिगोना, डुबकी लेना।
सिञ्जिनी [शिञ्जा+इनि, पृषो०] धनुष की ज्या या डोरी।
सिता [सो+क्त, स्त्रियां टाप्] 1. चीनी, खांड 2. गंगा।
सितासित (वि०) श्वेत और काला मिला हुआ।
सितकण्ठः सफेद गरदन वाला, चातक पक्षी, जलकुक्कुट।
सितच्छदः राजहंस, मराल, हंसनी।
सितपक्षः हंस, मराल, हंसनी।
सितवारणः सफेदहाथी, सितकुञ्जर।
सिताखण्डः एक प्रकार की खांड, मिस्री का डला।
सिद्ध (वि०) [सिध्+क्त] 1. निश्चित, अपरिवर्तनीय 2. विशिष्ट, पक्का 3. सफल,—**द्धः** (पुं०) जिसे इसी जीवन में सिद्धि प्राप्त हो गई है। सम०—**अञ्जनम्** एक प्रकार का अंजन (कहते हैं, इसके प्रयोग से भूगर्भ की वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं),—**अर्थकः** सफ़ेद सरसों,—**आदेशः** 1. ऋषि की भविष्य वाणी 2. भविष्य वक्ता, ज्योतिषी,—**औषधम्** विशिष्ट औषधोपचार,—**काम** (वि०) जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं,—**पथः** आकाश—**सिद्ध** पूर्णतः अचूक,—**हेमन्** शुद्ध स्वर्ण खरा सोना।
सिद्धिः (स्त्री०) [सिध्+क्तिन्] अचूकपना, पर्याप्ति।
सिद्धिविनायकः गणेश का एक रूप।
सिन्दूरगणपतिः गणेश की मूर्ति।
सिन्धुमन्थजम् सेंधा नमक।
सिन्धुसौवीराः सिन्धु नदी के आसपास के प्रदेश में रहने वाले।
सिरापत्रः पीपल का वृक्ष।
सिरामूलम् नाभि।
सिराल (वि०) [सिर+आलच्] अनन्त नसों वाला, नसनाड़ियों के जाल से युक्त।
सिष्णासु (वि०) [स्ना+सन्+उ, धातोर्द्वित्वम्] स्नान करने की इच्छा वाला।
सिसिक्षा [सिच्+सन्+आ, धातोर्द्वित्वम्] छिड़कने की इच्छा।
सीताध्यक्षः कृषिका अधीक्षक।
सीधुपानम् मद्यपान, शराब पीना।
सीमाज्ञानम् [सीमा+अज्ञानम्] सीमा की जानकारी न होना।
सीमाकृषाण (वि०) सीमाचिह्न के किनारे हल चलाने वाला।
सीमासेतुः पर्वतशृंखला या बाँध आदि जो सीमा का काम दे।
सीरवाहकः हलवाहा, कृषक, खेतिहर।
सुकण्डुः खुजली।
सुकल्प (वि०) दक्ष, सुयोग्य।
सुकल्पित (वि०) सुसज्जित, हथियारों से लैस।
सुक्रयः अच्छा सौदा।
सुक्षेत्र (वि०) अच्छी कोख से उत्पन्न।
सुघोष (वि०) मधुरध्वनि से युक्त, मीठी आवाज़ वाला।
सुचर्मन् भूर्ज वृक्ष, भोजपत्र।
सुतप्त (वि०) 1. अत्यन्त पीडित 2. कष्टग्रस्त 3. अत्यन्त कठोर (तपश्चरण)।
सुतान (वि०) सुरीला, मधुरस्वर से युक्त।
सुतार (वि०) 1. अत्यंत उज्ज्वल 2. बहुत ऊँचे स्वर वाला 3. जिसकी आँखों की पुतलियाँ अत्यंत सुन्दर हैं।
सुतारा मौनस्वीकृति के नौ भेदों में से एक (सांख्य०)।
सुदक्षिण (वि०) 1. अत्यंत कुशल 2. अतिविनम्र।
सुदुश्चर (वि०) सुदुर्गम, जो बड़ी कठिनाई से किया जा सके।
सुदुश्चिकित्स (वि०) असाध्य रोग से ग्रस्त, जिसके रोग की प्रायः चिकित्सा न हो सके।
सुदेशिकः अच्छा पथप्रदर्शक या अध्यापक।
सुनन्दम् बलराम की गदा।
सुनिर्णिक्त (वि०) भली प्रकार चमकाया हुआ।
सुपठ (वि०) सुवाच्य, जो पढ़ा जा सके।
सुपर्णः पक्षी, परिंदा।
सुपेशस् (वि०) सुन्दर, सुकुमार।
सुप्रमाण (वि०) बहुत बड़े आकार का।
सुबभ्रु (वि०) गहरा भूरा, धूसर।
सुभगा 1. सुहागिन 2. कस्तूरी।
सुभीरुकम् चाँदी।
सुभूतिः [सु+भू+क्तिन्] 1. मंगल, समृद्धि 2. तीतर पक्षी।
सुमन्दभाज् (वि०) अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण।
सुमर्षण (वि०) [सु+मृष्+ल्युट्] सहनशील।
सुमृत (वि०) बिल्कुल ठण्डा, बिल्कुल मुर्दा।
सुलग्नः शुभ मुहूर्त।
सुवर्तुलः तरबूज़।
सुविचक्षण (वि०) अत्यन्त चतुर।
सुविध्वस्त (वि०) पूर्ण विनाशित।
सुविविक्त (वि०) 1. अकेला 2. निर्णीत।

सुसंवृतिः (स्त्री०) [सु+सम्+वृ+क्तिन्] भली प्रकार छिपाना ।
सुसन्ध (वि०) अपने वचन का पालन करने वाला ।
सुसन्नत (वि०) ठीक निशाने पर लगा (तीर आदि) ।
सुसेव्य (वि०) सेवा किए जाने योग्य, जिसका आसानी से अनुसरण किया जा सके ।
सुखाधिष्ठानम् आनन्द का स्थान ।
सुखाभियोज्य (वि०) जिस पर आसानी से चढ़ाई की जा सके ।
सुखाराध्य (वि०) जिसकी सेवा आसानी से की जा सके, जो आसानी से प्रसन्न किया जा सके ।
सुखप्रश्नः कुशलक्षेम पूछना ।
सुखबद्ध (वि०) मनोरम, प्रिय, प्यारा ।
सुखवेदनम् आनन्द की अनुभूति ।
सुखसेव्य (वि०) दे० 'सुसेव्य' सुलभ' ।
सुधाकण्ठः कोयल ।
सुधाकारः सफ़ेदी (चूना) करने वाला ।
सुधाक्षालित (वि०) सफ़ेदी किया हुआ ।
सुधायोनिः चन्द्रमा ।
सुधाशर्करः चूने का पत्थर ।
सुनफा ज्योतिषशास्त्र का एक योग ।
सुनीथ (वि०) [सु+नी+क्थन्] विवेकपूर्ण व्यवहार से युक्त, दूरदर्शी, मनीषी ।
सुन्दरकाण्डम् रामायण का पाँचवाँ काण्ड ।
सुप्तघ्नः,—घातकः सोते हुए को मारने वाला, धोखेबाज़, हत्यारा ।
सुराद्रिः, **सुरपर्वतः** } मेरु पर्वत, सुमेरु पहाड़ ।
सुरेभः (सुर+इभ) ऐरावत हाथी ।
सुरेष्टः (सु+इष्ट) साल का वृक्ष ।
सुरोपम (वि०) (सुर+उपम) देवसमान ।
सुरगण्डः एक प्रकार का फोड़ा, छिद्रार्बुद, ज़हरबाद ।
सुरतटिनी,—तरङ्गिणी,—धुनी,—नदी,—सरित्,—आपगा (स्त्री०) गंगानदी ।
सुरपादपः कल्पवृक्ष ।
सुरविलासिनी अप्सरा ।
सुरश्वेता छिपकली ।
सुरभिगोत्रम् पशु, गौएँ, बैल ।
सुराजीविन् (वि०) शराब बेचने वाला, कलाल ।
सुराभागः खमीर ।
सुवर्णचोरिका सोने की चोरी ।
सुवर्णधेनुः स्वर्ण निर्मित गाय जो उपहार में दी जाय ।
सुवर्णभाण्डम् रत्नमंजूषा ।
सुवर्णरोमन् (पुं०) सुनहरी रोमों वाला मेष ।
सुवर्णसानुः मेरु पर्वत ।
सुषिः (स्त्री०) छिद्र, सूराख ('सुषिर' का वैदिक रूप)
सुषुप्सा [स्वप्+सन्+अ+टाप् धातोर्द्वित्वम्] सोने की इच्छा ।
सूक्ष्मम् [सूच्+मन् सुक् च नेट्] 1. दांत का खोखलापन 2. वसा, चर्बी 3. कण । सम०—**बलः** सरसों,—**भूतम्** सूक्ष्म तत्त्व, **मति** (वि०) तीक्ष्णबुद्धिवाला, —**शरीरम्** सूक्ष्म शरीर (विप० स्थूल शरीर), —**स्फोटः** एक प्रकार का कोढ़ ।
सूचनी विषयों की तालिका या सूचि ।
सूची [सूच्+ङीप्] (दरवाज़े की) चटखनी ।
सूचीकर्मन् (नपुं०) सिलाई का कार्य ।
सूचीरदनः नेवला ।
सूचीशिखा सूई की नोक ।
सूचीकर्णः सूई का छिद्र ।
सूचीसूत्रम् सीने के लिए धागा ।
सूतः सञ्जय ।
सूतपौराणिकः पुराणों में वर्णित चारण (कहते हैं कि उसने ही समस्त महाभारत और पुराण सुनाए थे) ।
सूतिमारुतः प्रसव वेदना ।
सूत्रम् [सूत्र्+अच्] 1. मेखला 2. रेखाचित्र, आरेख 3. संकेत आमुख 4. धागा, डोरा 5. रेशा । सम० —**अध्यक्षः** वयनाध्यक्ष, बुनाई का अधीक्षक,—**क्रीडा** रस्सियों का खेल, (६४ कलाओं में से एक) । —**ग्रन्थः** सूत्रों की पुस्तक, **धृक्** (पुं०) 1. सूत्रधार शिल्पी 2. रंगमंच का प्रबंधक, **पातः** 1. माप वाले सूत्र से मापने का कार्य करना 2. कार्य का आरंभ, —**स्थानम्** आयुर्वेद के एक ग्रंथ का प्रथम खण्ड ।
सूदाध्यक्षः प्रधान रसोइया ।
सूदशास्त्रम् पाक विज्ञान ।
सूनसायकः-शूरः कामदेव—सूननायकनिदेशविभ्रमैरप्रतीतचरवेदनोदयम् नै० १८।१२९ ('सूननायक' पाठ भी मिलता है) ।
सूनाध्यक्षः (सूना+अध्यक्ष) बूचड़ खाने का अधीक्षक ।
सूपश्रेष्ठः मूंग, मूंग की फली ।
सूपायः (सु+उपायः) अच्छा साधन, तरकीब ।
सूरिः [सू+क्रिन्] बृहस्पति ।
सूर्यद्वारम् उत्तरायण मार्ग ।
सूर्यवारः रविवार, आदित्यवार ।
सूर्याणी सूर्य की पत्नी ।
सृ (भ्वा०, ज्यो० पर०) पार करना, आर-पार जाना, प्रेर० प्रकट करना, व्यक्त करना ।
सृका [सृ+कक्+टाप्] 1. गीदड़ 2. सारस ।
सृङ्का (स्त्री०) 1. झन-झन करती हुई रत्नों की लड़ी 2. मार्ग, पथ ।
सृतिः [सृ+क्तिन्] 1. जन्म-मरण का चक्र—स्यान्मे

तवाङ्घ्रिशरणं सृतिभिर्भ्रमन्त्या---भाग० १०।६०।४३ 2. सृष्टि ।

सेकः [सिच् + घञ्] नहाने के लिए फ़ौवारा ।

सेचनम् [सिच् + ल्युट्] 1. निर्गमन, उद्गार 2. अभिषेक ।

सेतुः [सि + तुन्] 1. जलाशय, सरोवर 2. व्याख्या-परक भाष्य ।

सेतुसामन् सामविशेष ।

सेनापत्यम् सेना पति का पद ।

सेनावाहः सेनाधीश, सेनाध्यक्ष ।

सेनास्थः सैनिक, सिपाही ।

सेवनी 1. सूई 2. सीवन, टांका 3. सिर की दो हड्डियों का जोड़ ।

सेविन् (वि०) [सेव् + णिनि] व्यसनी, उपासक, आराधक ।

सेश्वर (वि०) ईश्वर की सत्ता मानने वाला ।

सेश्वरवादः ईश्वर की सत्ता के समर्थन में तर्क ।

सेश्वरसाङ्ख्यम् सांख्य को एक शाखा जो ईश्वर की सत्ता को मानती है ।

सैकतिनी [सिकता + इन् + ङीप्] रेत से भरी हुई ।

सैन्यम् [सेना + ष्य] शिविर ।

सैन्यक्षोभः सेना का विद्रोह ।

सोत्प्रेक्षम् (अ०) असावधानी से, उदासीनता के साथ ।

सोत्सेक (वि०) अभिमानी, घमंडी ।

सोदय (वि०) 1. उदय से संबंध रखने वाला 2. सूद सहित, व्याज के साथ ।

सोपग्रहम् (अ०) मैत्रीपूर्ण ढंग से ।

सोपस्कर (वि०) सहायक वस्तुओं से युक्त ।

सोपादान (वि०) सामग्री से युक्त ।

सोमः [सू + मन्] 1. लंगूर 2. एक पितर 3. सोमवार ।

सोमप्रवाकः सोमयाग के लिए पुरोहितों को नियत करने के अधिकारों से सम्पन्न व्यक्ति ।

सोमसद् (पुं०) पितरों की एक विशेष शाखा ।

सोर्णभ्रू (वि०) जिसकी दोनों भौंहों के बीच में बालों का एक वृत्त है ।

सौखरात्रिक (वि०) [सुखरात्रि + ठक्] जो दूसरे व्यक्ति को पूछता है कि तुम रात को तो सुख से सोये हो ।

सौत्रिकः [सूत्र + ठन्] 1. जुलाहा 2. बुना हुआ कपड़ा ।

सौधोत्सङ्गः [ष० त०] महल की उभरी हुई खुली छत ।

सौभपतिः शाल्वों का राजा ।

सौमङ्गल्यम् [सुमङ्गल + ष्यञ्] सौभाग्य की मंगलमय स्थिति, कल्याण, समृद्धि ।

सौम्य (वि०) [सोम + अण्] उत्तर दिशा से संबंध रखने वाला ।

सौम्यः [सोम + अण्] 1. ब्राह्मण को संबोधित करने का उपयुक्त विशेषण--आयुष्मन् भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने---मनु० २।१२५ 2. शुभ ग्रह 3. विनीत छात्र 4. बायाँ हाथ 5. मार्गशीर्ष का महीना ।

सौरमानम् [ष० त०] सूर्य की गति पर आधारित ज्योतिष की संगणना ।

सौरत (वि०) [सुरत + अण्] संभोग संबंधी ।

सौस्वर्यम् [सुस्वर + ष्यञ्] सुस्वरता, स्वरमाधुर्य, स्वरयोजना ।

स्कन्दः [स्कन्द् + अच्] 1. क्षरण 2. ध्वंस ।

स्कन्दजननी पार्वती ।

स्कन्दपुत्रः स्कन्द का बेटा (चोर के लिए प्रयुक्त शिष्ट नाम) ।

स्कन्धः [स्कन्ध् + घञ्] 1. कंधा 2. खंड, अंश, भाग 3. पेड़ का तना 4. ग्रन्थ का अध्याय 5. सेना का कोई भाग 6. पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के विषय ।

स्कन्धघनः संज्ञान मी० सू० १।१।५ पर शा० भा० ।

स्खलनम् [स्खल् + ल्युट्] वीर्यपात ।

स्खलित (वि०) [स्खल् + क्त] 1. घायल 2. अपूर्ण अधूरा ।

स्खलितम् (नपुं०) हानि, विनाश ।

स्तक- बूंद, कण, तैलस्य घृतस्य वा स्तकाः---मी० सू० ९।२।२७ पर शा० भा० ।

स्तनकुड्मलम् स्त्री के उठते हुए स्तन ।

स्तनचूचुकम् चूची, ढेपनी ।

स्तनमध्यः चूची, ढेपनी ।

स्तनमध्यम् दोनों स्तनों के बीच का अन्तराल ।

स्तनाभुज (वि०) अपने स्तनों से दूध पिलाने वाला पशु (गाय) ।

स्तनितकुमाराः (जैन०) देवताओं की एक श्रेणी ।

स्तनितसुभगम् (अ०) सुखद गर्जनध्वनि के साथ ।

स्तन्यप (वि०) स्तन पान करने वाला, दुधमुँहा बच्चा ।

स्तब्धपाद (वि०) जिसके पैर गतिहीन हो गये हों, अकड़ गये हों ।

स्तब्धकर,---बाहु (वि०) जिसके हाथ निश्चेष्ट हो गये हों ।

स्तब्धमति (वि०) जिसकी बुद्धि कुंठित हो गई हो, मंदबुद्धि ।

स्तम्भ (भ्वा० आ०) अधिकार करना, फैलाना, प्रेर० दबाना, रोकना ।

स्तम्भः [स्तम्भ् + घञ्] 1. अकड़ाहट, निश्चेष्टता 2. भराव, भरती ।

स्तम्भितबाष्पवृत्ति (वि०) जिसने अश्रुपात रोक लिया, आँसू रोकने वाला ।

स्तम्भितान्तर्जलौघः बादल जिसने समस्त पानी को अपने अन्दर रोक लिया है---भेग० ।

स्ताम्बेरमः [स्तम्बेरम + अण्] हाथी से संबंध रखने वाला ।

स्तिमितनयन (वि०) टकटकी लगा कर दृष्टि जमाये हुए ।

स्तिमितप्रवाह (वि०) बहुत धीमी गति से बहने वाला।
स्तीर्विः [स्तृ+क्विन्] भय, डर।
स्तेन् (चुरा० उभ०) असत्य भाषण से वाणी को अपवित्र करना—तां तु यः स्तेनयेद्वाचम् - मनु० ४।२५६।
स्तोकतमस् (वि०) कुछ काला, जिसमें थोड़ा अंधेरा हो।
स्तोकायुस् (वि०) थोड़ी आयु वाला।
स्तोभः 'साम' के रूप में गाये जाने वाले ऋग् मन्त्रों की साम की अपेक्षा विविक्तध्वनि—य ऋगक्षरेभ्योऽधिको न च तैः सवर्णः स स्तोभो नाम - मी० सू० ९।२।३९ पर शा० भा०।
स्तोमक्षार साबुन।
स्त्री [स्त्यै+ड्रट्+ङीप्] दीमक, सफेद चींटी।
स्त्रीकितवः स्त्रियों को फुसला कर छलने वाला।
स्त्रीविषयः मैथुन।
स्थपत्यः कञ्चुकी—स्थपत्यशुद्धान्त जनः परीता—जानकी० ७।१।
स्थलकमलः (पुं०) स्थलपद्म, (लाङ्गली) भूकमल, स्थल पर उगने वाला कमल पुष्प।
स्थलीशायिन् (वि०) बिना कुछ बिछाये (खोरड़े) भूमि पर सोने वाला।
स्थविरद्युति (वि०) बूढ़ों की मर्यादा रखने वाला।
स्थाणुः [स्था+नु, पृषो० णत्वम्] 1. तना, पेड़ का ठूंठ 2. बैठने की एक विशेष मुद्रा।
स्थाणुभूत (वि०) जो पेड़ के ठूंठ की तरह गति हीन हो गया हो।
स्थानम् [स्था+ल्युट्] 1. जीवन क्रम 2. जीवित रहना 3. युद्ध में आक्रमण की एक रीति 4. ज्ञानेन्द्रिय।
स्थानकुटिकासनम् घर छोड़कर झोंपड़ी में रहना - शिरसो मुण्डनाद्वापि न स्थानकुटिकासनात्—महा० ३।२००। १०४।
स्थानेपतित (वि०) [अलुक्समास] दूसरे के स्थान पर अधिकार करने वाला।
स्थापनम् [स्था+णिच्+ल्युट्, पुकागमः] 1. बाँधना 2. दीर्घायु होना 3. भाण्डार।
स्थापना [स्थापन+टाप्] 1. नाटक की प्रस्तावना या आमुख 2. भण्डार भरना।
स्थाप्य (वि०) [स्था+णिच्+ण्यत्] 1. बंद किये जाने या कैद किये जाने योग्य 2. (शोक में) डूब जाने योग्य।
स्थायिता 1. नैरन्तर्य 2. टिकाऊपन।
स्थालीपुरीषम् पाकपात्र की तली में जमी तरौंछ या मैल।
स्थितलिङ्ग (वि०) वह पुरुष जिसका लिङ्ग उत्तेजनावस्था में है।
स्थितसंङ्केत,—संविद (वि०) प्रतिज्ञा का पालन करने वाला।

स्थितिज्ञ (वि०) नैतिकता की सीमा को जानने वाला।
स्थितिभिद् (वि०) सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने वाला।
स्थिर (वि०) [स्था+किरच्] 1. दृढ़, जमा हुआ 2. अचल, निश्चेष्ट 3. स्थायी 4. निरावेश 5. कठोर सख्त 6. ठोस 7. मजबूत। सम०—अपाय (वि०) क्षयशील, जिसका निरंतर ह्रास हो रहा है, —आयति (वि०) टिकाऊ, देर तक चलने वाला,—वाच् (वि०) जिसकी बात का विश्वास किया जाय,—विक्रम (वि०) दृढ़ता पूर्वक कदम बढ़ाने वाला।
स्थूणाकर्णः 1. एक प्रकार का सैन्यव्यूह 2. रुद्र का एक रूप 3. शिव का एक अनुचर।
स्थूरीपृष्ठः वह घोड़ा जो अभी सवारी करने के काम न आया हो—शि० १८।२२।
स्थूल (वि०) [स्थूल्+अच्] जो बारीकी या ब्यौरे (व्याख्या या विवरण) के साथ न देकर मोटे तौर पर दिया गया हो, भौतिक। सम०—इच्छ (वि०) जिसकी इच्छाएँ बहुत बढ़ी हुई हों,—काष्ठाग्निः स्कंधाग्नि, पेड़ के जलते हुए तने की आग,—प्रपञ्चः भौतिक संसार।
स्थैयम् [स्थिर+ष्यञ्] इन्द्रियों का दमन या नियन्त्रण।
स्नानकलशः, कुम्भः नहाने के लिये जल का घड़ा।
स्नानतीर्थम् नहाने के लिए पुण्यस्थान, घाट।
स्नानशाटी नहाने का जांघिया, अधोवस्त्र।
स्नायुबन्धः धनुष की डोरी, ज्या।
स्नायुस्पन्दः नाड़ी।
स्नेहकुम्भः तेल रखने का बर्तन।
स्नेहकेसरिन् (पुं०) एरंड।
स्नेहविमर्दित (वि०) जिसके शरीर में तेल मला गया हो।
स्पन्द् (भ्वा० आ०) अकस्मात् फिर जान आ जाना, नाड़ी चलने लगना।
स्पर्शानुकूल (वि०) छूने पर अच्छा लगने वाला।
स्पर्शक्लिष्ट,—खर (वि०) छूने में रूखा या पीडाकर।
स्पर्शगुणः [ष० त०] छूने का गुण (जैसे कि वायु का।
स्पष्टाक्षर (वि०) स्पष्टरूप से बोला गया।
स्पृष्टपूर्व (वि०) जिसे पहले छू चुके हैं।
स्पृष्टमात्र (वि०) जिसे केवल छूआ ही गया है।
स्फीत (वि०) [स्फाय्+क्त, स्फीभावः] बढ़ा, हुआ, फूला हुआ।
स्फीतानन्द (वि०) अत्यन्त प्रसन्न, परम आनन्दित।
स्फुट् (भ्वा० तुदा० पर०) 1. फूट पड़ना, फटना, टूटना 2. खिलना, फूलना 3. (रोग) शान्त होना।
स्फुट (वि०) [स्फुट्+क] अद्भुत असाधारण।
स्फुरणम् [स्फुर्+ल्युट्] फूलना, बढ़ना, विस्तृत होना।

स्फूर्तिः (स्त्री०) [स्फुर्+क्तिन् आत्मश्लाघा करना, डींग मारना, शेखी बघारना ।
स्मरोद्दीपन (वि०) कामोद्दीपक, प्रेम का जमाने वाला ।
स्मरकथा प्रणयालाप, प्रेमालाप ।
स्मरशास्त्रम् कामशास्त्र ।
स्मार्तविधिः, -प्रयोगः स्मृतियों में विहित प्रक्रिया ।
स्मयदानम् दिखावटी दान ।
स्मयनुत्तिः गर्व चूर करना ।
स्मरमान (वि०) जो आश्चर्य करता है ।
स्मृ (भ्वा० पर०) शिक्षा देना ।
स्मृतम् [स्मृ+क्त] स्मरण, याद ।
स्मृतमात्र (वि०) जिसको केवल स्मरण ही किया हो, ज्योंही सोचा त्योंही ।
स्मृतितन्त्रम् विधिग्रन्थ ।
स्मृतिविनयः अपने कर्तव्य का ध्यान दिलाने के लिए अभिप्रेत डांट फटकार ।
स्यन्दः [स्यन्द्+घञ्] 1. बूंद-बूंद टपकना, पसीना 2. आँख का रोग विशेष 3. चन्द्रमा ।
स्रंस् (भ्वा० आ०) नष्ट होना ठहरना ।
स्रस्तहस्त (वि०) जिसने पकड ढीली कर दी हो ।
स्रवन्मध्यः मूल्यवान् रत्न जिसके बीच से पानी झरता दिखाई देता है ।
स्रुग्जिह्वः अग्नि, आग ।
स्रोतस् (नपुं०) 1. शरीर के रंध्र (जो पुरुषों में ९ तथा स्त्रियों में ११ होते हैं) 2. वंश परम्परा ।
स्वार्जित (वि०) अपना कमाया हुआ ।
स्वानन्दः अपने, आप में आनन्द ।
स्वकर्मस्थ (वि०) अपने कर्म में लीन, अपने काम में व्यस्त ।
स्वकृतम् अपना किया हुआ कार्य ।
स्वगोचर (वि०) अपने कार्य तक ही सीमित ।
स्वबीजः आत्मा ।
स्वमनीषा अपना मत या विचार ।
स्वयुतिः आधाररेखा जो कर्ण तथा लम्ब रेखा के सिरों को मिलाती है ।
स्वतन्त्रता 1. स्वातन्त्र्य, स्वाधीनता 2. मौलिकता ।
स्वप्नान्तिकम् स्वप्नकालिक चेतना ।
स्वप्नज (वि०) नींद में उत्पन्न ।
स्वयमधिगत (वि०) 1. खुद प्राप्त किया हुआ 2. स्वयं पढ़ा हुआ ।
स्वयमीश्वरः वह जो अपना पूर्ण प्रभु हो, परमेश्वर ।
स्वयमुद्यत (वि०) स्वेच्छा से तैयार ।
स्वरतिक्रमः स्वर्ग को लांघकर वैकुण्ठ पहुँचना ।
स्वर्मणिः सूर्य ।
स्वर्यानम् मृत्यु ।
स्वर्योषित् अप्सरा ।
स्वराङ्कः एक प्रकार की संगीत रचना ।
स्वरोपघातः स्वरभंग ।
स्वरकम्पः स्वर का हिलना ।
स्वरच्छिद्रम् बाँसुरी का स्वरवाला छेद ।
स्वरब्रह्मन् नादब्रह्म,
स्वरविभक्तिः स्वरों का पृथक्करण ।
स्वरशास्त्रम् ध्वनिविज्ञान, स्वरविज्ञान ।
स्वरित (वि०) [स्वर+इतच्] 1. युक्त, मिश्रित 2. उच्चरित, ध्वनित 3. उदात्त अनुदात्त के बीच का स्वर, मध्यमस्वर ।
स्वर्गगतिः—गमनम् मृत्यु, स्वर्ग चले जाना ।
स्वर्गमार्गः 1. स्वर्ग जाने का मार्ग 2. स्वर्गंगा ।
स्वर्णरेतस् (पुं०) सूर्य ।
स्वल्पाङ्गुलिः कनिष्ठिका, कन्नी अंगुलि ।
स्वल्पदृश् (वि०) अदूरदर्शी
स्वल्पस्मृति (वि०) जिसे बहुत कम याद रहे ।
स्वस्तिकर्मन् (नपुं०) कल्याण करना ।
स्वस्तिकारः स्वस्ति का उच्चारण करने वाला वंदी, चारण ।
स्वस्तिकः स्वस्तिपाठ करने वाला, चारण ।
स्वागतप्रश्नः मिलने पर स्वास्थ्यादि के संबंध में पूछना, कुशल क्षेम की पृच्छा ।
स्वादः (काव्य के श्रवण या पठन से) रसानुभव ।
स्वादुपिण्डा पिंडखजूर ।
स्वादुलुङ्गी मीठा नीबू ।
स्वापव्यसनम् निद्रालुता ।
स्वामिन् (पुं०) 1. यज्ञ का यजमान 2. मन्दिर में स्थापित देवमूर्ति ।
स्वाम्यम् (शरीर और आत्मा की) स्वस्थ स्थिति ।
स्वायत्त (वि०) जो अपने ही अधिन हो, अपने ही अधिकार में हो ।
स्विद्दित (वि०) 1. जिसे पसीना निकल आया हो, पसीने से तर 2. पिघला हुला पसीजा हुआ ।
स्विष्ट (वि०) वांछित, प्रिय, सुपूजित ।
स्वेदनयन्त्रम् जिससे बफारा दिया जाय, पसीना लाने वाला यंत्र ।
स्वैरकथा अबाधित वार्तालाप ।
स्वैरविहारिन् इच्छानुसार भ्रमण करने वाला ।
स्वैरिणी चमगादड़ ।

ह

हंसः [हस्+अच्, पृषो० वर्णागमः] 1. घोड़ा 2. उत्तम, श्रेष्ठ (जब समासान्त में प्रयुक्त हो] 3. चाँदी 4. बड़ी बड़ी झीलों में रहने वाला एक जलपक्षी 5. आत्मा, जीवात्मा। सम०—उदकम् एक प्रकार की पुष्टिदायक मदिरा,—च्छत्रम् सोंठ,—द्वारम् मानस झील के पास की एक घाटी—हंसद्वारं भृगुपतियशोवर्त्म यत्क्रौञ्चरन्ध्रम्—मेघ०,—संदेशः वेदान्तदेशिक द्वारा रचित एक गीतिकाव्य।

हक्काहक्कः चुनौती, ललकार।

हट्टः [हट्+ट, टस्य नेत्वम्] मंडी, बाजार, मेला। सम०—अध्यक्षः मंडी का अधीक्षक,—वाहिनी बाजार में बनी हुई पानी निकलने की नाली,—वेश्माली बाजार की गली।

हठपर्णी 1. मोथा 2. शैवाल।

हत्याविन् (पुं०) जो हिंसा का प्रचार करता है।

हद् (अदा० पर०) दूर करना, नष्ट करना।

हत (वि०) [हन्+क्त] 1. पीडित, घायल 2. बलात्कार किया हुआ, भ्रष्ट किया हुआ 3. सदोष 4. शापग्रस्त, विपद्ग्रस्त। सम०—उत्तर (वि०) निरुत्तर, जो कुछ जवाब न दे सके,—किल्बिष (वि०) जिसके पाप नष्ट हो गये हों.—त्रप (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म,—विनय (वि०) जिसमें शिष्टता न हो, बेश्या।

हनुभेदः 1. जबड़े का खुलना 2. एक प्रकार का ग्रहण

हनुस्वनः जबड़े से निकलनेवाला स्वर।

हनुमज्जयन्ती चैत्रशुक्ला पूर्णा जो हनुमान् जी का मांगलिक दिवस है।

हयः [हय्+अच्] 1. धनुराशि 2. घोड़ा। सम०—अङ्कः धनुराशि,—आलयः,—शाला घुड़साल, अस्तबल अश्वशाला,—च्छटा अश्वदल,—ग्रीवः—मुखः—वदनः 1. विष्णु का एक रूप 2. एक राक्षस का नाम।

हयिः (पुं०) [हय्+इन्] कामना, इच्छा, अभिलाषा।

हरः [हृ+अच्] 1. शिव 2. अग्नि 3. गधा 4. भाजक 5. पकड़ना, लेना। सम०—अद्रिः कैलाश पर्वत,—वल्लभः धतूरे का फल,—सखः कुबेर।

हरिः [हृ+इन्] 1. विष्णु 2. इन्द्र 3. सूर्य 4. अग्नि 4. वायु 6. सिंह 7. घोड़ा 8. बन्दर 9. कोयल 10. साँप 11. मोर 12. सिंह राशि। सम०—चापः इन्द्रधनुष,—बीजम् हरताल,—मेधः (पुं०) विष्णु।

हरिणलाञ्छनः चन्द्रमा।

हरित्पतिः दिशा का स्वामी।

हरितकपिश (वि०) पीलापन लिये हुए भूरा।

हरितोपलः मरकतमणि।

हरिताङ्गः हरिताल पक्षी, एक प्रकार का कबूतर।

हर्मुटः 1. सूर्य 2. कछुवा।

हर्म्यतलम्,—पृष्ठम्,—चन्द्रशाला चौबारा, मकान की ऊपर की मंजिल।

हर्षः [हृष्+घञ्] 1. जननेन्द्रिय की उत्तेजना 2. प्रबल इच्छा 3. प्रसन्नता। सम०—जम् वीर्य,—संपुटः एक प्रकार का रतिबंध,—स्वनः आनन्द ध्वनि।

हलम् [हल्+क] 1. हल 2. कुरूपता 3. बाधा 4. कलह सम०—ककुद् (स्त्री०) हल का वह भाग जिसके निचले भाग में फाली लगी होती है,—दण्डः हलस, हल की लम्बी लकड़ी जिसमें जूआ लगाते हैं,—मार्गः जुताई से बनी लकीर, सूड, —मुखम् फाल।

हविष्मती कामधेनु का विशेषण।

हसन्ती 1. दीवट 2. एक प्रकार की परी।

हस्तः [हस्+तन्] 1. हाथ 2. हाथी का सूँड 3. हस्त नक्षत्र 4. भुजा। सम०—च्युतः (वि०) जो बच निकला हो,—दोषम् (अ०) हाथों में,—वाम (वि०) बाईं ओर स्थित,—विन्यासः हाथों की स्थिति—स्वस्तिकः हाथों को स्वस्तिक की शक्ल में रखना।

हस्त्याजीवः पीलवान, हस्तिव्यवसायी।

हस्तिनासा हाथी की सूँड।

हस्तिमुखः—वक्त्रः,—वदनः गणेश।

हाकारः विस्मयादिद्योतक 'हा' ध्वनि।

हात (वि०) [हा+क्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

हानम् [हा+ल्युट्] 1. छोड़ना, त्यागना 2. हानि, विफलता 3. अभाव, कमी 4. पराक्रम, बल 5. विश्रान्ति, विराम, अवसान।

हाटकहाटिका मिट्टी का बर्तन।

हारित (वि०) [हृ+णिच्+क्त] 1. खोया गया, चुराया हुआ 2. मात दिया हुआ, आगे बढ़ा हुआ।

हारिद्रः एक वानस्पतिक विष।

हार्य (वि०) [हृ+ण्यत्] 1. हटाये जाने योग्य 2. मनोहर, आकर्षक।

हासनिकः खेल का साथी, सह क्रीडक।

हिंसनीय (वि०) [हिंस्+अनीय] मार डाले जाने योग्य, हिंसा से पीडित किये जाने योग्य।

हिंसास्पदम् प्रहार्य, आक्रमणीय।

हिंसाप्राय (वि०) बहुधा हानिकारक।

हिंस्रः [हिंस्+र] दूसरों के उत्पीडन में आनन्द मानने वाला व्यक्ति।

हिक्किका, हिक्कातम्, हिक्का } हिचकी का रोग।

हिताशंसा 1. भला चाहना 2. अभिनन्दन, बधाई।

हितप्रवृत्त (वि०) भलाई में लगा हुआ।
हितवादः मैत्रीपूर्ण परामर्श, सत्परामर्श, भलाई की बात।
हिन्दुधर्मः हिन्द (भारत) देश में रहने वालों का धर्म।
हिमम् [हि+मक्] 1. पाला, कुहरा 2. ठंड 3 कमल 4. ताज़ा मक्खन 5. मोती 6. रात 7. चंदन। सम० —**अभ्रः** कपूर, **ऋतुः** जाड़े का मौसम, **खण्डम्** ओला,—**ज्योतिस्** चन्द्रमा,—**क्षतिः** धुंध, कोहरा, —**शर्करा** एक प्रकार की खांड।
हिरण्यकर्तृ,—**कारः** स्वर्णकार, सुनार।
हिरण्यवर्चस् (वि०) सुनहरी आभा से युक्त।
हीन (वि०) [हा+क्त, तस्य नः, ईत्वं च] 1. जो मुक़दमा हार गया है 2. यूथभ्रष्ट 3. परित्यक्त, मुर्झाया हुआ 4. क्षीण। सम० —**पक्ष** (वि०) अरक्षित पुं० दलील की दृष्टि से कमज़ोर पक्ष,—**सामन्तः** गद्दी से उतारा हुआ अधीनस्थ राजा,—**सन्धिः** अधम राजा के साथ की गई सन्धि।
हुतशेषम् यज्ञशेष, हवन का बचा हुआ अंश।
हुण्डः (पुं०) (स्त्री०) [हुण्ड्+इन्] पिंडित ओदन।
हृद् (नपुं०) [हृत्, पृषो० तस्य दः] (इस शब्द के पहले पाँच रूप नहीं होते, शेष वचनों में यह विकल्प से 'हृदय' के स्थान में आदेश होता है) 1. मन, दिल 2. आत्मा 3. किसी भी वस्तु का सत् 4. छाती। सम०—**आमयः** हृदय का रोग,—**द्योतन** (वि०) दिल को तोड़ने वाला,—**सारः** साहस, हिम्मत; —**स्तम्भः** हृदय को लकवा मार जाना, —**स्फोटः** हृदय का विदीर्ण होना।
हृदयम् [हृ+कयन्, दुकागमः] 1. मन, दिल, आत्मा 2. छाती 3. प्रेम, अनुराग 3. दिव्य ज्ञान 4. वस्तु का सत् 5. इच्छा, प्रयोजन। सम०—**उदङ्कः** आह भरना, —**उद्वेष्टनम्** दिल का सिकुड़ना,—**क्षोभः** दिल की धड़कन,—**जः** पुत्र,—**ज्ञः** जो दिल की बात जानता है, —**दौर्बल्यम्** दिल की कमजोरी,—**शैथिल्यम्** विषण्णता, अवसाद।

हृद्य (वि०) [हृद्+यत्] स्वादिष्ट, रुचिकर।
हृषित (वि०) [हृष्+क्त, वा० इट्] कुंठित, ठूंठा।
हेतिः (पुं०) (स्त्री०) [हन्+क्तिन्, नि०] नया अंकुर।
हेतुः [हि+तुन्] 1. प्रेरणार्थक क्रिया का अभिकर्ता—पा० १।४।५५ 2. प्राथमिक कारण (बुद्ध०) 3. बाह्य संसार और उसके विषय (पाशुपत०) 4. मूल्य, क़ीमत —धान्यखारीक्रये हेतुः—राज० ५।७१ 5. कारण। सम० अवधारणम् तर्क करना (नाटक), —**उपमा** तर्क युक्त उपमा अलंकार, तर्क संगत तुलना,—**दृष्टिः** कारण की परीक्षा,—**रूपकम्** एक प्रकार का रूपकालंकार,—**विशेषोक्तिः** एक अलंकार जिसमें दो पदार्थों का अंतर तर्क देकर बतलाया जाता है —काव्य० २।३२८–९।
हेतुवन्निगदः वेद के मूल पाठ का लेखांश जिसके साथ प्रयोजन भी दिया गया हो —मी० सू० ४।२।४२ पर शा० भा०।
हेमन् (नपुं०) [हि+मनिन्] 1. स्वर्ण, सोना 2. जल 3. बर्फ़ 4. धतूरा 5. केसर का फूल 6. बुधग्रह 7. जाड़े की ऋतु। सम०—**कलशः** सोने की कलसी, स्वर्ण निर्मित शृंगकलश,—**गर्भ** (वि०) जिसके अंदर सोना हो,—**घ्नम्** सीसा,—**घ्नी** हल्दी,—**माक्षिकम्** सोना-माखी (एक उपधातु),—**व्याकरणम्** हेमचन्द्र प्रणीत व्याकरण का एक ग्रन्थ।
हैडिम्बः } [हिडिम्बा+अण्, इञ् वा] हिडिंबा का पुत्र,
हैडिम्बिः } घटोत्कच।
होतृकर्मन् यज्ञ में होता का कार्य।
होतृप्रवरः होता का वरण करना।
होतृस(ष)दनम् होता का आसन।
होलाकाधिकरणन्यायः मीमांसा का एक नियम। इसके अनुसार यदि स्मृति या कल्पसूत्र की कोई उक्ति श्रुति द्वारा समर्थन नहीं प्राप्त कर सकी, तो उसके समर्थन में वेद का कोई अन्य सामान्य मंत्र, अनुमान के आधार पर ढूंढना चाहिए—मी० सू० २।३।२५–२८।
ह्रस्व (वि०) [ह्रस्+वन्] जो महत्त्वपूर्ण न हो, अनावश्यक, नगण्य।
ह्रासः [ह्रस्+घञ्] 1. ध्वनि, आवाज़ 2. क्षय, क्षीणता, अभाव, कमी 3. छोटी संख्या।
ह्रीका [ह्री+कक्] 1. लज्जा 2. भय,—**कः** (पुं०) 1. पिता 2. नेवला।
ह्रीपदम् लज्जा का कारण।

———